संतों का जीवन

रॉस्टोव के संत दमित्रि (तुप्तालो)

रूसी में संतों के जीवन, रोस्तोव के संत डेमेट्रियस के चेती-मनेई के अनुसार संकलित

* * *

वषिय-सूची:

परिचय.....*12*

जनवरी.....*28*

1 जनवरी.....**28**

2 जनवरी.....**52**

3 जनवरी.....**68**

4 जनवरी.....**79**

5 जनवरी.....**90**

6 जनवरी.....**108**

7 जनवरी.....**124**

8 जनवरी.....**145**

9 जनवरी.....**165**

10 जनवरी.....**181**

11 जनवरी.....**192**

12 जनवरी.....**209**

13 जनवरी.....**218**

14 जनवरी.....**227**

15 जनवरी.....**257**

16 जनवरी.....**303**

17 जनवरी.....**307**

18 जनवरी.....**324**

19 जनवरी.....**339**

20 जनवरी.....**350**

21 जनवरी.....**354**

22 जनवरी.....**373**

23 जनवरी.....384
24 जनवरी.....393
25 जनवरी.....409
26 जनवरी.....436
27 जनवरी.....460
28 जनवरी.....490
29 जनवरी.....502
30 जनवरी.....510
31 जनवरी.....530
फरवरी*.....*549
1 फरवरी.....549
2 फरवरी.....580
3 फरवरी.....599
4 फरवरी.....631
5 फरवरी.....646
6 फरवरी.....675
7 फरवरी.....683
8 फरवरी.....699
9 फरवरी.....712
10 फरवरी.....716
11 फरवरी.....725
12 फरवरी.....728
13 फरवरी.....732
14 फरवरी.....738
15 फरवरी.....747
16 फरवरी.....751
17 फरवरी.....757
18 फरवरी.....771
19 फरवरी.....788
20 फरवरी.....801
21 फरवरी.....823
22 फरवरी.....834
23 फरवरी.....838

24 फरवरी.....851
25 फरवरी.....862
26 फरवरी.....876
27 फरवरी.....888
28 फरवरी.....896
मार्च*.....*900
1 मार्च.....900
2 मार्च.....904
3 मार्च.....910
4 मार्च.....920
5 मार्च.....931
6 मार्च.....935
7 मार्च.....950
8 मार्च.....957
9 मार्च.....966
10 मार्च.....973
11 मार्च.....982
12 मार्च.....995
13 मार्च.....999
14 मार्च.....1004
14 मार्च.....1006
15 मार्च.....1027
16 मार्च.....1040
17 मार्च.....1047
18 मार्च.....1069
19 मार्च.....1078
20 मार्च.....1093
21 मार्च.....1099
22 मार्च.....1104
23 मार्च.....1113
24 मार्च.....1130
25 मार्च.....1147
26 मार्च.....1163

27 मार्च 1166
28 मार्च 1179
29 मार्च 1182
30 मार्च 1186
31 मार्च 1205
अप्रैल.....1214
1 अप्रैल 1214
2 अप्रैल 1226
3 अप्रैल 1235
4 अप्रैल 1237
5 अप्रैल 1245
6 अप्रैल 1255
7 अप्रैल 1258
8 अप्रैल 1265
9 अप्रैल 1308
10 अप्रैल 1319
11 अप्रैल 1325
12 अप्रैल 1329
13 अप्रैल 1338
14 अप्रैल 1367
15 अप्रैल 1382
16 अप्रैल 1385
17 अप्रैल 1395
18 अप्रैल 1405
19 अप्रैल 1423
20 अप्रैल 1431
21 अप्रैल 1436
22 अप्रैल 1442
23 अप्रैल 1445
24 अप्रैल 1449
25 अप्रैल 1453
26 अप्रैल 1462
27 अप्रैल 1471

28 अप्रैल **1481**
29 अप्रैल **1485**
30 अप्रैल **1492**
मई ***1511***
1 मई **1511**
2 मई **1516**
3 मई **1520**
4 मई **1525**
5 मई **1531**
6 मई **1552**
7 मई **1574**
8 मई **1578**
9 मई **1587**
10 मई **1603**
11 मई **1606**
12 मई **1612**
13 मई **1614**
14 मई **1620**
15 मई **1656**
16 मई **1680**
17 मई **1712**
18 मई **1722**
19 मई **1733**
20 मई **1743**
21 मई **1753**
22 मई **1769**
23 मई **1783**
24 मई **1792**
25 मई **1828**
26 मई **1858**
27 मई **1879**
28 मई **1886**
29 मई **1912**

30 मई 1921
31 मई 1923
जून *1939*
1 जून 1940
2 जून 1946
3 जून 1954
4 जून 1974
5 जून 1982
6 जून 1991
7 जून 2010
8 जून 2012
9 जून 2017
10 जून 2024
11 जून 2030
12 जून 2037
13 जून 2041
14 जून 2044
15 जून 2059
16 जून 2074
17 जून 2083
18 जून 2092
19 जून 2098
20 जून 2107
21 जून 2118
22 जून 2124
23 जून 2138
24 जून 2152
25 जून 2166
26 जून 2187
27 जून 2194
28 जून 2214
29 जून 2250
30 जून 2252

जुलाई.....*2257*
1 जुलाई 2257
2 जुलाई 2264
3 जुलाई 2290
4 जुलाई 2299
5 जुलाई 2304
6 जुलाई 2310
7 जुलाई 2320
8 जुलाई 2327
9 जुलाई 2345
10 जुलाई 2367
11 जुलाई 2374
12 जुलाई 2379
13 जुलाई 2406
14 जुलाई 2407
15 जुलाई 2419
16 जुलाई 2425
17 जुलाई 2440
18 जुलाई 2449
19 जुलाई 2466
20 जुलाई 2476
21 जुलाई 2489
22 जुलाई 2503
23 जुलाई 2537
24 जुलाई 2558
25 जुलाई 2578
26 जुलाई 2586
27 जुलाई 2594
28 जुलाई 2599
29 जुलाई 2602
30 जुलाई 2609
31 जुलाई 2615
अगस्त.....*2625*

1 अगस्त.....2625
2 अगस्त.....2635
3 अगस्त.....2649
4 अगस्त.....2680
5 अगस्त.....2700
6 अगस्त.....2709
7 अगस्त.....2717
8 अगस्त.....2737
9 अगस्त.....2744
10 अगस्त.....2755
11 अगस्त.....2761
12 अगस्त.....2768
13 अगस्त.....2777
14 अगस्त.....2781
15 अगस्त.....2791
16 अगस्त.....2798
17 अगस्त.....2801
18 अगस्त.....2809
19 अगस्त.....2821
20 अगस्त.....2828
21 अगस्त.....2837
22 अगस्त.....2841
23 अगस्त.....2847
24 अगस्त.....2854
25 अगस्त.....2871
26 अगस्त.....2875
27 अगस्त.....2877
28 अगस्त.....2897
29 अगस्त.....2913
30 अगस्त.....2920
31 अगस्त.....2932
सतिंबर.....2938
1 सतिंबर.....2938

2 सतिंबर.....**2944**
3 सतिंबर.....**2956**
4 सतिंबर.....**2962**
5 सतिंबर.....**2968**
6 सतिंबर.....**2980**
7 सतिंबर.....**2992**
8 सतिंबर.....**3000**
9 सतिंबर.....**3014**
10 सतिंबर.....**3027**
11 सतिंबर.....**3034**
12 सतिंबर.....**3042**
13 सतिंबर.....**3078**
सतिंबर– अक्टूबर*.....*Error! Bookmark not defined.
14 सतिंबर.....**3096**
15 सतिंबर.....**3119**
16 सतिंबर.....**3128**
17 सतिंबर.....**3136**
18 सतिंबर.....**3158**
19 सतिंबर.....**3164**
20 सतिंबर.....**3180**
21 सतिंबर.....**3189**
22 सतिंबर.....**3194**
23 सतिंबर.....**3206**
24 सतिंबर.....**3221**
25 सतिंबर.....**3236**
26 सतिंबर.....**3241**
27 सतिंबर.....**3250**
28 सतिंबर.....**3255**
29 सतिंबर.....**3259**
30 सतिंबर.....**3269**
अक्टूबर*.....*3277
1 अक्टूबर.....**3277**
2 अक्टूबर.....**3280**

3 अक्टूबर 3289
4 अक्टूबर 3308
5 अक्टूबर 3327
6 अक्टूबर 3340
7 अक्टूबर 3346
8 अक्टूबर 3364
9 अक्टूबर 3403
10 अक्टूबर 3418
11 अक्टूबर 3429
12 अक्टूबर 3439
13 अक्टूबर 3451
14 अक्टूबर 3462
15 अक्टूबर 3479
16 अक्टूबर 3500
17 अक्टूबर 3508
18 अक्टूबर 3521
19 अक्टूबर 3536
20 अक्टूबर 3546
21 अक्टूबर 3561
22 अक्टूबर 3571
23 अक्टूबर 3588
24 अक्टूबर 3595
25 अक्टूबर 3605
26 अक्टूबर 3634
27 अक्टूबर 3644
28 अक्टूबर 3658
29 अक्टूबर 3679
30 अक्टूबर 3683
31 अक्टूबर 3689
नवंबर.....*3696*
1 नवंबर 3696
2 नवंबर 3707
3 नवंबर 3719

4 नवंबर **3734**
5 नवंबर **3747**
6 नवंबर **3753**
7 नवंबर **3769**
8 नवंबर **3771**
9 नवंबर **3780**
10 नवंबर **3783**
11 नवंबर **3788**
12 नवंबर **3806**
13 नवंबर **3809**
14 नवंबर **3812**
15 नवंबर **3817**
16 नवंबर **3826**
17 नवंबर **3838**
18 नवंबर **3853**
19 नवंबर **3869**
20 नवंबर **3881**
21 नवंबर **3888**
22 नवंबर **3893**
23 नवंबर **3912**
24 नवंबर **3918**
25 नवंबर **3961**
26 नवंबर **3977**
27 नवंबर **4013**
28 नवंबर **4035**
29 नवंबर **4047**
30 नवंबर **4052**
दसिंबर ***4072***
1 दसिंबर **4072**
2 दसिंबर **4080**
3 दसिंबर **4113**
4 दसिंबर **4130**
5 दसिंबर **4137**

6 दसिंबर **4147**
7 दसिंबर **4169**
8 दसिंबर **4193**
9 दसिंबर **4206**
10 दसिंबर **4212**
11 दसिंबर **4222**
12 दसिंबर **4251**
13 दसिंबर **4253**
14 दसिंबर **4266**
15 दसिंबर **4283**
16 दसिंबर **4290**
17 दसिंबर **4305**
18 दसिंबर **4331**
19 दसिंबर **4363**
20 दसिंबर **4385**
21 दसिंबर **4403**
22 दसिंबर **4407**
23 दसिंबर **4412**
24 दसिंबर **4428**
25 दसिंबर **4448**
26 दसिंबर **4461**
27 दसिंबर **4483**
28 दसिंबर **4496**
29 दसिंबर **4507**
30 दसिंबर **4513**
31 दसिंबर **4528**

परचिय

सेंट डेमेट्रयिस ऑफ रोस्टोव के मनिेई-चेती लंबे समय से रूसी ऑर्थोडॉक्स लोगों के लिए एक पसंदीदा पठन रहे हैं और आज भी हैं। स्लावोनकि भाषा में लखि गए, मनिेई-चेती 17वीं और 19वीं शताब्दी के दौरान बड़ी संख्या में बड़े पैमाने पर प्रसारति कए गए थे। वे आज भी मुद्रति होते रहते हैं, और उनकी मांग में कोई कमी नहीं दखि रही है। हालाँकि, हाल के वर्षों में, इस मांग के साथ-साथ, मॉस्को सनिोडल प्रटिंगि हाउस को माइनई-चेती को रूसी में प्रकाशति करने के अनुरोध

प्राप्त होने शुरू हो गए हैं। इस तरह के अनुरोधों की संख्या साल-दर-साल बढ़ रही है, जो इस तरह के प्रकाशन की तत्काल आवश्यकता का स्पष्ट प्रमाण है। इस आवश्यकता को पूरा करने के लिए, मॉस्को सनिोडल प्रटिंगि हाउस के नदिेशक, एस. डी. वॉइट ने मेनाइया-चेती का रूसी अनुवाद में प्रकाशन करने का कार्यभार संभाला। इस संबंध में उनकी याचकिा को श्री के. पी. से प्रबुद्ध सहानुभूति और ऊर्जावान समर्थन मलिा। पोबेडोनोत्सेव, पवत्रि सनिोड के मुख्य अभयिोजक, और उनके सहयोगी पी. आई. ओस्त्रोउमोव की यह मांग सफल रही, और मई 1900 में पवत्रि सनिोड ने मॉस्को सनिोडल प्रटिंगि हाउस को रूसी में मेनाइया-चेतखि के पहले संस्करण के साथ आगे बढ़ने की अनुमति दी।

इस व्यापक संस्करण को तैयार करने के लिए, मॉस्को प्रटिंगि हाउस में एक आयोग का गठन कयिा गया, जसिमें कई धार्मकि और धर्मनरिपेक्ष हस्तयिाँ शामलि थीं, जनिमें अधकिांश उच्च धर्मशास्त्रीय education[1] वाले थे। इस आयोग के अध्यक्ष मोज़ाइसक के बशिप, हज़ि ग्रेस पार्थेनयिस हैं, जन्हिें पवत्रि सनिड के नर्णिय द्वारा मेनायोन-चेती के नए संस्करण की सेंसरशपि का कार्य भी सौंपा गया है। तैयार की गई योजना के अनुसार, यह संस्करण सेंट डेमेट्रयिस के मेनायोन-चेती के पाठ पर आधारति है। इसके अलावा, जनि मामलों में माइनई में केवल कसिी संत की स्मृति का उल्लेख होता है, तो उनके बारे में जानकारी प्रोलॉग से ली जाती है। संतों के जीवन के पाठ के साथ वभिन्नि व्याख्यात्मक टप्पिणयिाँ भी दी गई हैं। इस संस्करण में स्थानीय रूप से पूजे जाने वाले रूसी, दक्षणि स्लाव और जॉर्जयिाई संतों के जीवन भी शामलि होंगे। जहाँ तक रूसी संतों का सवाल है, आयोग को हमारे देश की वभिन्नि पुस्तकालयों और मठों में रखे पांडुलपियिों का सहारा लेकर, कई जीवन-चरत्रिों को फरि से संकलति करना होगा।

चूंकि नई जीवनी-संग्रहों के संकलन के लिए वभिन्नि संस्थानों के साथ लंबी शोध और पत्राचार की आवश्यकता होती है, और इस लंबे समय से प्रतीक्षति कार्य के प्रकाशन में देरी न हो, इसलिए यह नर्णिय लयिा गया है कि रूसी संतों की जीवनी-संग्रहों को जैसे ही वे तैयार हो जाती हैं, अलग-अलग अंकों में छापा जाए, जन्हिें बाद में चार-महीने के खंडों के लिए वशिेष पूरक खंडों में संकलति कयिा जाएगा, जबकि, फलिहाल, आगामी मासकि खंडों में दमित्रिी ऑफ रोस्तोव की 'माइनेया-चेत्ये' में पाई जाने वाली संपूर्ण और संक्षप्ति जीवनी-साहत्यि शामलि होंगे। रूसी संतों के जीवन के संकलन के लिए जीवनी-साहत्यि का चयन और संपादन करते समय, आयोग मॉस्को थयिोलॉजकिल अकादमी और मॉस्को वश्विवद्यिालय के प्रोफेसर वी. ओ. क्ल्यूचेव्स्की के दशिानर्देशों का पालन करता है।

इस प्रकाशन में उसी वश्विवद्यिालय के एक प्रोफेसर, एम. आई. सोकोलोव भी भाग ले रहे हैं, जन्हिोंने रूसी संतों—रॉस्टोव और यारोस्लाव के—और कुछ स्लाव संतों के जीवन संकलति करने का कार्य संभाला है। मनिेई-चेतयि के प्रकाशन पर संपादकीय कार्य मुद्रणालय के प्रबंधक के सहायक, ए. एस. ऑर्लोव, और मुद्रणालय में प्रूफरीडर, ए. एन. सोलोव्योव को सौंपा गया है।

'संतों का जीवन और उनकी स्तुति तारों की चमक के समान है: क्योंकि जैसे तारे, स्वर्ग में अपनी जगहों पर दृढ़ता से स्थापति, स्वर्ग के नीचे की पूरी दुनिया को रोशन करते हैं, वैसे ही वे भारतीयों को दखिाई देते हैं और सीथयिनों से छपि नहीं हैं; वे पृथ्वी को रोशन करते हैं और समुद्र पर चमकते हैं, और नौकाओं का मार्गदर्शन करते हैं; और यद्यपि हम उनकी बड़ी संख्या के कारण उनके नाम नहीं जानते, फरि भी हम उनकी तेजस्वी भलाई से चकति होते हैं। संतों का तेज भी ऐसा ही है: यद्यपि उनके अवशेष समाधयिों में बंद हैं, परन्तु संसार में उनकी शक्ति सांसारकि सीमाओं से बंधी नहीं है; हम उनके जीवन पर अचंभति होते हैं और उस महमिा से चकति होते हैं जसिसे परमेश्वर उन लोगों को गौरवान्वति करते हैं जो उन्हें प्रसन्न करते हैं।'

समीओन मेटाफ्रastes

* * *

अपने उन शक्षिकों को याद करो जन्हिोंने तुम्हें परमेश्वर का वचन प्रचार कयिा, और उनके चले जाने के ढंग पर ध्यान देकर, उनके वश्विास का अनुकरण करो।

---

[1] आयोग में नम्निलखिति सदस्य शामलि हैं: आर्चप्रीस्ट पी. ए. स्मरिनोव; और नम्निलखिति पादरी: आई. वी. आर्सेनेव, एन. वी. आर्सेनेव, एम. आई. बेल्याचेव, एच. एम. मलिोव्स्की, एस. डी. मुरेटोव, ए. ए. पोलोजोव, ए. एम. प्यटक्रिेस्टोव्स्की, पी. आई. प्यट्नत्स्की, आई. आर. सोलोव्योव, एस. वी. स्ट्राखोव, आई. आई. फुदेल – श्री: एस. के. बोगोयावलेन्स्की, एम. ओ. वर्झबोलोवचि, वी. पी. डोरोफेव, ए. वी. ज्वेरेव, ए. डी. इतालस्की, एन. आई. केद्रोव, पोगोझेव ई. एन., पोगोरेलोव वी. ए., रोज़ानोव एच. पी., स्ट्रुज़ेंत्सोव एम. आई., ट्रुश के. ए., उशाकोव डी. एन. – श्री: कसातकनि एस. वी., मोल्चानोव एस. आई., पोक्रोव्स्की ए. ए., साखारोव एस. एन., सर्गेव्स्की एच. एफ., सोबोलेव ए. एम., स्टावरोव्स्की एस. आई., ट्रॉइट्स्की एन. आई. (अंतमि आठ संपादकीय कार्य में शामलि हैं)।

पवित्र तपस्वियों और धर्म-घोषकों के जीवन और कर्मों के वृत्तांत और अभिलेख, जिन्होंने विभिन्न धार्मिक कृत्यों द्वारा ईश्वर को प्रसन्न किया है, ईसाई चर्च में इसके आरंभिक दिनों से ही मौजूद हैं। इन विवरणों की नींव संत लूक सुसमाचारकर्ता ने रखी थी, जिन्होंने प्रेरितों के काम की पुस्तक में, हमारे उद्धारकर्ता के प्रमुख शिष्यों और उनके अन्य अनुयायियों के कारनामों और कष्टों का वर्णन किया। कुछ समय पहले, पवित्र प्रेरित पौलुस ने अपने एक पत्र में मसीहियों को अपने आध्यात्मिक मार्गदर्शकों को स्मरण करने की आज्ञा दी, जिन्होंने अपने जीवन और शहादत के माध्यम से मसीह में अपने विश्वास की गवाही दी थी। दिव्य रूप से प्रेरित कथावाचक के उदाहरण का अनुसरण करते हुए और प्रमुख प्रेरित की आज्ञा का पालन करते हुए, ईसाइयों ने हमेशा संतों के जीवन और कार्यों के रिकॉर्ड को सावधानीपूर्वक संरक्षित किया है।

सबसे शुरुआती रिकॉर्ड और विवरण पवित्र शहीदों से संबंधित थे। ईसाई धर्म के प्रसार और स्थापना में शहादत ने बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। अपने विश्वास के लिए बहादुरी से मृत्यु का सामना करने वाले शहीदों के दृढ़ संकल्प और अटूट निश्चय का प्रभाव मूर्तिपूजकों के हृदयों पर इतना गहरा पड़ा कि यह असामान्य नहीं था कि यातना देने वाले स्वयं, अपने पीड़ितों की नम्रता को देखकर, ईसाई धर्म अपना लेते थे। इस प्रकार, टर्टुलियन के शब्दों में, ईसाई शहीदों का रक्त नए ईसाइयों का बीज था।

पवित्र शहीदों की मृत्यु के दिनों को सटीक रूप से दर्ज करके, ईसाई उन दिनों पर उनकी स्मृति का जश्न मनाने के लिए इकट्ठा होते थे। कार्थेज के संत साइप्रियन ने अपने पुरोहितों को लिखा, 'उन दिनों को चिह्नित करो, जिस दिन मसीह के स्वीकारकर्ता मरते हैं, ताकि हमें शहीदों के साथ उनकी स्मृति का जश्न मनाने का अवसर मिल सके।' इस उद्देश्य के लिए, ईसाई चर्च के पास विशेष लिपिकि थे जो जेलों और अदालतों में ईसाइयों के साथ जो कुछ भी होता था, उसे दर्ज करते थे। ऐसे लिपिकों को, जैसा कि अच्छी तरह से ज्ञात है, ईसाइयों के पहले-पहले उत्पीड़न के दौरान रोम के विभिन्न जिलों में सेंट क्लाइमेस द्वारा नियुक्त किया गया था। इस तथ्य के बावजूद कि मूर्तिपूजक सरकार ने इन लिपिकों को मृत्युदंड की धमकी दी, ईसाइयों के उत्पीड़न की पूरी अवधि के दौरान रिकॉर्ड बिना रुके जारी रहे[2] । ये रिकॉर्ड, जिनमें कभी-कभी न्यायाधीश-यातनाकर्ताओं द्वारा पूछे गए प्रश्नों और शहीदों के उनके उत्तरों के बारे में विस्तृत जानकारी मिल सकती है, 'एक्ट्स ऑफ द मार्टयर्स' (शहीदों के कृत्य) के नाम से जाने जाते हैं। ऐसे कार्यों में शहीदों के मुकदमों के दौरान संकलित पूरे मुकदमे शामिल हैं। ये आधिकारिक अदालत के रिकॉर्ड की प्रतियां हैं, जिन्हें ईसाइयों ने पैगनों से बड़ी कीमत पर खरीदा था।

शहीदों की मृत्यु के दिनों को न केवल उन चर्चों में मनाया जाता था जिनसे ये शहीद संबंधित थे, बल्कि अन्य सभी चर्चों में भी मनाया जाता था, क्योंकि प्रत्येक चर्च के ईसाई अन्य चर्चों को उन शहीदों के बारे में सूचित करते थे जो उनके बीच शहीद हुए थे। इस प्रकार, स्मyrna की कलीसिया, जिसमें संत پولीकार्प ने शहादत प्राप्त की, ने इस संबंध में फिलाडेल्फिया की कलीसिया को एक संदेश भेजा और अनुरोध किया कि इस संदेश को अन्य कलीसियाओं तक पहुँचाया जाए। पवित्र शहीदों के दुःखों के वृत्तांतों को बहुत सम्मान दिया जाता था। इन्हें कलीसिया की सभाओं में पवित्र धर्मग्रंथों

---

[2] यह लंबे समय से स्वीकार किया गया है कि ईसाइयों पर दस उत्पीड़न हुए थे, जो निम्नलिखित सम्राटों द्वारा किए गए थे: नीरो (54–68), डोमिशियन (81–96), ट्राजन (98–117), मार्कस ऑरेलियस (161–180), सेप्टिमियस सेवेरस (193–211), मैक्सिमिनस (235–238), डेसियस (249–261), वैलेरियन (253–259), ऑरेलियन (270–276) और डायोक्लेटियन (284–305)। वास्तव में, सामान्य, व्यापक उत्पीड़न के दस से भी कम उदाहरण थे, जबकि अलग-थलग और छिटपुट उत्पीड़न के उदाहरण कहीं अधिक थे। सभी प्राचीन ईसाइयों ने उत्पीड़न का कारण शैतान की दुर्भावना को माना, जिसने ईसाई चर्च के खिलाफ युद्ध छेड़ा और ईसाइयों के उत्पीड़न के माध्यम से—जो सबसे प्रभावी साधनों में से एक था—इसके प्रसार को रोकने की कोशिश की। यह दृष्टिकोण सेसरिया के यूसेबियस ने अपनी *इतिहास* में व्यक्त किया था। जहाँ तक रोमन राज्य का सवाल है, उसके दृष्टिकोण से ईसाइयों पर अत्याचार करने के कई कारण थे। ईसाइयों को सीज़र की गरिमा के अपराधी माना जाता था, जो शाही प्रतिमाओं को शराब चढ़ाने और धूप जलाने से इनकार करते थे; वे राज्य के देवताओं से धर्मत्यागी और कानून द्वारा निषिद्ध धर्म के अनुयायी थे। पगानों ने चमत्कारिक उपचारों को कानून द्वारा निषिद्ध जादू-टोने का कार्य माना। ईसाई धर्म ने पगन व्यवस्था को पूरी तरह से खारिज कर दिया था: इसका धर्म, राज्य, जीवन शैली, रीति-रिवाज, और सामाजिक व पारिवारिक जीवन। सम्राट और शासक ईसाइयों को षड्यंत्रकारी और विद्रोही मानते थे जो राज्य और समाज की नींव को कमजोर कर रहे थे; पुरोहितों ने उनके खिलाफ शत्रुता भड़काई, क्योंकि ईसाई उन पर से विश्वास को कम कर रहे थे: शिक्षित लोग, जो विज्ञान और कलाओं का सम्मान करते थे, ईसाई धर्म को एक क्रूर और खतरनाक अंधविश्वास के रूप में देखते थे; अनपढ़ जनसमूह, जो मूर्तियों और मूर्तिपूजक त्योहारों से अंधाधुंध लगाव रखता था, ईसाइयों को अधर्मी मानता था और उनके खिलाफ दंड के निष्पादन और मूर्तिपूजक कानून के प्रवर्तन में उत्साहपूर्वक सहायता करता था।

के ठीक बाद पढ़ा जाता था। जैसा कि संत इग्नेशियस द गॉड-बेयरर की शहादत के कृत्यों से अनुमान लगाया जा सकता है, यह रिवाज दूसरी शताब्दी में ही मौजूद था। शहीद यूस्ट्रैटियस की प्राचीन संजीवनी-कथा में भी संतों के दुखों के वृत्तांतों को पढ़ने का समय निर्दिष्ट है - अर्थात्, भजन-गायन के बाद मैटिन्स में। और 418 में, कार्थेज की परिषद ने एक नियम पारित किया कि शहीदों के पर्व के दिनों में, चर्च में उनके कष्टों के वृत्तांत पढ़े जाएँ।

जब ईसाइयों पर अत्याचार बंद हो गया और मसीह की कलीसिया ने राज्य के भीतर एक प्रमुख स्थिति हासिल कर ली, तो उसमें देखभाल करने वाले और समझदार व्यक्ति उभरे जिन्होंने शहीदों से संबंधित सभी रिकॉर्ड और विवरण संकलित करने का कार्य खुद पर लिया। इन संकलकों में से पहला *पम्फिलिया का यूसेबियस* था, जो सेसरिया का बिशप था[3] । उन्होंने सबसे पहले सम्राट डायोक्लेटियन के अधीन पीड़ित फिलिस्तीनी शहीदों के जीवन का संकलन किया। फिर, परंपरा के अनुसार, उन्होंने कॉन्स्टेंटाइन महान से ग्रीको-रोमन साम्राज्य के सभी न्यायिक अभिलेखों से शहादत के कृत्यों को निकालने का आग्रह किया। शाही फरमान द्वारा, ऐसे सभी रिकॉर्ड यूसेबियस को भेजे गए, और इन कार्यों के आधार पर, उन्होंने 'प्राचीन शहीदताओं का संग्रह' संकलित किया। इस संग्रह में सभी धर्मप्रांतों के शहीदों, बिशपों, कन्फेशनरों, पवित्र महिलाओं और कुंवारी महिलाओं के वृत्तांत शामिल थे। कुछ के अनुसार, इसमें बीस पुस्तकें थीं; दूसरों के अनुसार, सोलह। लेकिन 7वीं शताब्दी की शुरुआत तक, यूसेबियस का संग्रह इतना दुर्लभ हो गया था कि इसका कोई भी प्रति अलेक्जेंड्रियाई या रोमन चर्चों में नहीं मिल सका। इसलिए यह आश्चर्य की बात नहीं है कि यूसेबियस का कार्य अपनी संपूर्णता में संरक्षित नहीं रहा है, और इसका केवल कुछ हिस्सा ही अन्य लेखकों की रचनाओं में पाया जा सकता है। पूरी संभावना है कि यूसेबियस की पुस्तक को इसके प्रकाशन के तुरंत बाद ही जीवनी-लेखन के बाद के संग्रहकर्ताओं और संकलकों द्वारा प्रसारित और पूरक किया गया था, जिसके कारण इसने जल्द ही अपना मूल स्वरूप और अपने पहले संकलक का नाम खो दिया। इसके अलावा, यूसेबियस के पूरे कार्य की प्रतिलिपि बनाने में होने वाली कठिनाई और उच्च लागत को देखते हुए, इसे खंडों में विभाजित कर दिया गया, जो विभिन्न देशों की बाद की रचनाओं में पाए जाते हैं।

यूसेबियस के अलावा, मेसोपोटामिया के बिशप संत मरूफा भी संतों के जीवन संकलित करने के अपने कार्य के लिए प्रसिद्ध हैं। उन्होंने फारस में उत्पीड़ित शहीदों के दुखों का ऐतिहासिक सटीकता के साथ वर्णन किया। 'जहाँ तक,' संत *मारूफा* कहते हैं, 'उन शहीदों का सवाल है, जिनकी यातनाओं, सज़ाओं और मौतों का मैंने वर्णन किया है, मैं उनमें से कुछ का प्रत्यक्षदर्शी था, क्योंकि उन्होंने मेरे अपने समय में कष्ट झेले थे। जहाँ तक पहले शहीदों के इतिहास की बात है, मैंने इसे बुजुर्ग बिशपों और सत्यवादी, भरोसेमंद पुरोहितों के विवरणों के आधार पर लिखा है, जो स्वयं अपने समय में हुए शहीदों के कार्यों के प्रत्यक्षदर्शी थे।"

शहीदों के रक्त के द्वारा अपनी कलीसिया का प्रसार और स्थापना करने के बाद, जिन्होंने साहसी सहनशीलता और अनगिनत कष्टों के द्वारा अपने विश्वास की सच्चाई की गवाही दी[4] , हमारे प्रभु यीशु मसीह ने अपने अनुयायियों के उद्धार और महिमा के लिए अन्य मार्गों की भी ओर संकेत किया। मसीह की कलीसिया को हिला देने वाले, पर उसे नष्ट न करने वाले, भीषण उत्पीड़नों के बाद, प्रभु ने उसे शांति और सुकून प्रदान किया, और उसी समय उसके भीतर नए संत प्रकट किए। ईसाइयों के बीच महान तपस्वी उभरे, कुछ ईश्वर के वचन के उपदेश और प्रचार के लिए प्रसिद्ध हुए, कुछ अपने जीवन की पवित्रता और दूसरों को सद्गुणों में शिक्षित करने के लिए, कुछ अपने उपवास और देह तथा वासनाओं की स्वैच्छिक संयम-साधना के लिए, और कुछ अन्य विभिन्न प्रकार के कार्यों और कृत्यों के लिए प्रसिद्ध हुए। जिस प्रकार ईसाई शहीदों के दुखों का विस्तार से वर्णन किया गया था, उसी प्रकार इन नए तपस्वियों के कार्यों को भी विस्मृति में नहीं जाने दिया गया। ईश्वर के संतों के चर्च संबंधी विवरणों की एक नई श्रृंखला * * सामने आई। हमें ये विवरण, कुछ

---

[3] *यूसेबियस* (268–340), जो लंबे समय तक फिलिस्तीन के केसरिया में बिशप रहे और अपने समय की कई महान घटनाओं में गहराई से शामिल थे, को चर्च इतिहास के पिता और, अधिक सामान्य रूप से, एक धर्मशास्त्री के रूप में जाना जाता है, जिनकी रचनाओं को ईसाई चर्च के भीतर बहुत सम्मान दिया जाता था। वे अपनी व्यापक विद्वता के लिए विशिष्ट थे, यह एक गुण था जो उनके दोस्त पैम्फिलस, जो सेज़रिया के चर्च के एक पादरी थे, से बहुत प्रभावित था। उनकी दोस्ती इतनी घनिष्ठ और सच्ची थी कि अपने दोस्त की याद में, यूसेबियस ने अपना नाम बदलकर पैम्फिलस यूसेबियस रख लिया और वे यूसेबियस पैम्फिलस के नाम से जाने गए।

[4] ग्रीक में, एक शहीद को μάρτυς (मार्त्यस) कहा जाता है, जिसका अर्थ है *'साक्षी'* (सत्य के लिए), इसीलिए शहीदों के रिकॉर्ड को *शहीद-वृत्त (martyrologies)* कहा जाता है।

चर्च-ऐतिहासिक कृतियों के अलावा, विभिन्न कम या ज्यादा संक्षिप्त संग्रहों में मिलते हैं, जैसे कि पैट्रिका, सिनाक्सारिया और इसी तरह के अन्य संग्रह[5] ।

कई ग्रीक पैटेरिका, जिन्हें सामूहिक रूप से πατερικα, γερονιτικα, μοναχικα βιβλια के नाम से जाना जाता था, का संकलन 15वीं और 16वीं शताब्दी के दौरान किया गया था। इनमें से सबसे प्रसिद्ध हैं:

1) मिस्र का *द ग्रेट लिमोनार*[6] , जो आज तक संरक्षित नहीं है, और जिससे स्केट पेटेरिकॉन और अल्फाबेटिकल पेटेरिकॉन (पवित्र बुजुर्गों के कथन) का उद्भव हुआ;

2) *लाउसाइक*, जो मिस्र के तपस्वियों के जीवन का वर्णन करता है, जिनके जीवन का वर्णन 5वीं शताब्दी में कैपाडोसिया के शासक लाउसा के लिए प्रत्यक्षदर्शी बिशप पैलाडियस द्वारा किया गया था;

3) *ईश्वर-प्रेमियों का इतिहास*, अर्थात् सीरियाई तपस्वियों का, जिसे साइरस के थियोडोरेट († 457) ने संकलित किया था;

४) **द कन्वर्सेशन* (या डायलॉग)*, जिसमें इतालवी तपस्वियों के जीवन और चमत्कारों का वर्णन है, जिसे लगभग ५९३ में संत ग्रेगरी द ग्रेट ने लिखा था, जिन्हें इस कृति के बाद 'द डायलॉजिस्ट' की उपाधि मिली, और एक सौ पैंसठ साल बाद लैटिन से ग्रीक में अनुवादित किया गया;

5) *आध्यात्मिक घास का मैदान*, जिसमें फिलिस्तीन, मिस्र और सीरिया के पूजनीय पिताओं के कथन, चमत्कार और कर्म शामिल हैं, जिसे भिक्षु जॉन मॉस्कस (मृत्यु 622) ने संकलित किया था।

उपरोक्त सभी कृतियाँ – शहादत के वृत्तांत, तपस्वियों और अन्य लोगों के बारे में सूचनाओं के संग्रह – मासिक कैलेंडर, सिनैक्सरिया और *'मेनायोन-चेती'* (अर्थात् संतों के जीवन और कार्यों पर मासिक पठन) के लिए आधार के रूप में काम करती थीं।

ग्रीक मासिक कैलेंडर और सिनाक्सारिया से निम्नलिखित ज्ञात हैं:

1) सम्राट बेसिल के आदेश पर संकलित *मेनोलॉजियन* (10वीं-11वीं शताब्दी में);

2) *पीटर का साइनाक्सारियन*, जो संरचना में बेसिल के मासिक कैलेंडर से पुराना है (सबसे पुरानी पांडुलिपि 1249 की है);

3) 11वीं-12वीं शताब्दी का *क्लारोमोंटेन साइनैक्सारियन*, जो संरचना में पीटर के साइनैक्सारियन के समान है।

इसके अतिरिक्त, दो प्रकार के छंद सिनाक्सारियन थे, जिन्हें ऐसा नाम इसलिए दिया गया क्योंकि उनमें प्रत्येक विवरण से पहले संतों के सम्मान में दो या तीन छंद होते थे। छंद सिनाक्सारियन का संकलन 12वीं-13वीं शताब्दी में उपरोक्त गैर-छंद संस्करणों के आधार पर किया गया था।

थियोडोर द स्टुडाइट के अनुसार, 8वीं शताब्दी के अंत तक, ईसाई चर्च के भीतर 'मेनायोन-चेटिये' की बारह पुस्तकें पहले से ही मौजूद थीं। उनकी सामग्री विविध थी। संतों के जीवन के अलावा, उनमें महान त्योहारों के लिए सबसे प्रसिद्ध चर्च पिताओं के शब्द भी शामिल होने लगे। कुछ शहीद होने के वृत्तांत या संन्यासियों की प्राचीन कथाओं को स्तुति-प्रबंधों में फिर से संकलित किया जाने लगा। इसके अलावा, कुछ प्राचीन संतों की जीवन-कथाओं को एक नए, अधिक सुरुचिपूर्ण और सुंदर शैली में फिर से लिखा जाने लगा।

[7]इस बाद वाले विधा में, प्रसिद्ध *सिमियोन मेटाफ्रास्टेस ने* अपनी कृतियों से सभी को पीछे छोड़ दिया। सम्राट कॉन्स्टेंटिनोपल के आदेश पर, उन्हें यथासंभव सभी प्राचीन संतों की जीवनियाँ एकत्र करने और उन्हें महीने और तारीख के अनुसार व्यवस्थित करने का कार्य सौंपा गया था। पवित्र तपस्वियों की महिमा के लिए महान उत्साह से प्रेरित होकर, सिमियन ने न केवल उनके जीवन के वृत्तांतों को एकत्र किया, बल्कि उनमें से कई का संशोधन भी किया, कुछ को संक्षिप्त किया, और, सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि उन्होंने प्राचीन, बोझिल और अक्सर अस्पष्ट भाषा को एक ऐसी शैली से

---

[5] रूसी में *'पेटेरिकॉन'* (πατερικόν – जिसका अर्थ βιβλίον है) का अर्थ है 'फादर्स की *पुस्तक*', यानी फादर्स द्वारा या उनके बारे में एक पुस्तक। यह उन संकलनों को दिया गया नाम है जिनमें तपस्वियों या उनके नैतिक उपदेशों के संक्षिप्त विवरण होते हैं। – *सिनाक्सारियन* (ग्रीक शब्द συνάγω – 'इकट्ठा करना, एक साथ लाना' से) – ईसाई चर्च की सभाओं में पढ़ने के लिए एक संग्रह, जिसमें संतों के कर्मों और शहीदों के दुखों का संक्षिप्त विवरण, साथ ही संपूर्ण जीवनियाँ शामिल हैं, जिन्हें बाद में 'प्रोलॉग्स' के नाम से जाना जाने लगा।

[6] *लिमोनार* – ग्रीक शब्द λειμών – घास का मैदान, चरागाह से।

[7] सम्राट कॉन्स्टेंटिन सप्तम ने 912 से 959 तक शासन किया और वे विद्वान लेखों के प्रति अपने प्रेम के लिए प्रसिद्ध थे। उनके शासनकाल के दौरान ही, 957 में, ग्रैंड प्रिंसेस ओल्गा ने कॉन्स्टेंटिनोपल में पवित्र बपतिस्मा ग्रहण किया था।

बदल दिया जो अपने समय के लिए स्पष्ट और परिष्कृत थी[8] । कुछ का अनुमान है कि सिमियिन द्वारा संशोधित जीवनी-ग्रंथों की संख्या लगभग पाँच सौ है। इसके अतिरिक्त, उन्होंने शून्य से एक सौ बाईस जीवनी-ग्रंथ रचे। मेटाफ्रास्टस ने संतों की जीवनी-ग्रंथों में प्रभु, परमेश्वर की माता और कुछ अन्य संतों के पर्वों के लिए प्रशंसा और शिक्षा के शब्द जोड़े, जिन्हें उन्होंने चर्च के महान पितरों और शिक्षकों की रचनाओं से चुना था।

प्रारंभिक ईसाई चर्च और रूसी चर्च दोनों में, दिव्य लिटिर्जी के दौरान संतों के जीवन को पढ़ने की प्रथा का सख्ती से पालन किया जाता था। इन्हें मैटिन्स में, कैनन की छठी ओड के बाद, कोंडाक और इकोस के बाद पढ़ना अधिक आम था, जिससे संक्षिप्त प्रस्तावना-शैली का जीवन बहुत मिलता-जुलता था[9] । परिणामस्वरूप, रूसी चर्च में बहुत शुरुआत से ही प्रोलॉग का एक स्लावोनिक अनुवाद मौजूद था। शुरुआत में इसे सिनैक्सारियन के नाम से जाना जाता था; बाद में, अपनी पहली प्रविष्टि – πρόλογος, यानी 'प्रस्तावना' – के बाद, *इसे प्रोलॉग* कहा जाने लगा।

स्लावोनिक प्रोलॉग के तीन प्रकार थे।

पहला सम्राट बेसिल के ग्रीक मासिक कैलेंडर पर आधारित था, जिसे 11वीं शताब्दी के दूसरे भाग में स्टुडाइट भिक्षु इलियास (सेंट पीटर के सिनाक्सारियन से प्रविष्टियाँ) और मोकिसिया के मेट्रोपॉलिटिन कांस्टेंटिन (पैंसठ विस्तृत कथाएँ) द्वारा पूरक बनाया गया था।

प्रोलॉग का दूसरा प्रकार स्लावों द्वारा पहले प्रकार और प्राचीन मेनाइया-चेतिया के आधार पर संकलित किया गया था।

तीसरा *एक छंद संस्करण* है, जिसे 14वीं शताब्दी में ग्रीक छंद प्रस्तावना *[10] * के सबसे शुरुआती रूप से अनुवादित किया गया था।

मेनाइया-चेती का स्लावोनिक अनुवाद भी स्लावोनिक साहित्य की शुरुआती शताब्दियों का माना जाता है। बेशक, मेनाइया-चेती की सभी बारह पुस्तकें उस अवधि से संरक्षित नहीं हैं: विशेष रूप से, 11वीं शताब्दी से, एक दक्षिण स्लावोनिक पांडुलिपि में मार्च की एक पुस्तक संरक्षित है, जबकि 12वीं शताब्दी से, मई की पुस्तक का एक अंश संरक्षित है[11] । हालाँकि, 15वीं सदी की पांडुलिपियों (13वीं या 14वीं सदी की कोई पांडुलिपि नहीं है), जो बहुत प्राचीन पांडुलिपियों की नकल करती हैं, के आधार पर यह मानना उचित है कि 10वीं-11वीं शताब्दियों में स्लावों के पास सभी बारह महीनों के लिए मेनायोन का एक पूरा अनुवाद था। स्लावोनिक अनुवाद ग्रीक मेनाइया से किया गया था, जिसमें मेटाफ्रास्टस द्वारा केवल मामूली संशोधन किए गए थे।

पैटेरिका स्लावोनिक अनुवादों में बहुत जल्दी दिखाई दिए। स्लावोनिक पांडुलिपियों में, 'स्किटि पैटेरिकन' नाम का उपयोग आम तौर पर विभिन्न संरचनाओं वाले पैटेरिका के लिए बिना किसी भेदभाव के किया जाता है, हालांकि अधिकांश

---

[8] इसके लिए, सिमियोन को मेटाफ्रास्टेस नाम दिया गया, जिसका अर्थ है 'कथावाचक' या 'पाराफ्रेज़र'। सिमीओन का जन्म कॉन्स्टेंटिनोपल में हुआ था, उन्होंने उच्च सांसारिक और धर्मशास्त्रीय शिक्षा प्राप्त की, सम्राट के सचिव के रूप में कार्य किया, महत्वपूर्ण राजनयिक मिशन पूरे किए, और वह कॉन्स्टेंटिनोपल के चर्च के ग्रैंड लोगोथेते, एक कुलीन और साम्राज्य के मैजिस्टर थे। ग्रीक चर्च में, सिमीओन मेटाफ्रैस्टेस को संतों में गिना जाता है।

[9] *कोंडाक* संक्षेप में, वर्णनात्मक रूप में, संत के जीवन की मुख्य विशेषताओं का वर्णन करता है; *इकोस,* इन विशेषताओं के आधार पर, संत की स्तुति करता है, प्रत्येक विशेषता की शुरुआत 'हेल!' ('हेल!') के उद्घोष से करता है। रूसी संतों के सबसे पुराने जीवन, अपनी संरचना में, मूल रूप से विस्तृत कोंडाक और इकोस हैं।

[10] पहले प्रकार की सबसे पुरानी पांडुलिपियाँ इस प्रकार हैं: 1) *लोबकोव्स्की पांडुलिपि* (मॉस्को एडिनोवेरी मठ की पुस्तकालय में), जिसमें सितंबर का अर्ध-वार्षिक भाग है; इसकी तारीख 1262 मानी जाती है; 2) *सेंट सोफिया पांडुलिपि* (सेंट पीटर्सबर्ग थियोलॉजिकल अकादमी की पुस्तकालय में), जो 1250 से पहले लिखी गई थी, और जो वर्ष के सितंबर वाले आधे हिस्से को भी कवर करती है; 3) *टाइपोग्राफिकल पांडुलिपि* (मॉस्को सिनोडल प्रिंटिंग हाउस की लाइब्रेरी में), जो 13वीं-14वीं शताब्दी की है, जिसमें 24 मार्च से 25 अगस्त तक की कथाएँ और स्मरणोत्सव शामिल हैं। स्लावोनिक पार्चमेंट प्रोलॉग का सबसे बड़ा संग्रह (30 से अधिक पांडुलिपियाँ) मॉस्को सिनोडल प्रिंटिंग हाउस की उसी लाइब्रेरी में रखा है। दूसरे प्रकार की सबसे पुरानी प्रति 14वीं सदी का *एक मुद्रित संस्करण* है; छंद प्रोलॉग की सबसे पुरानी प्रति 1370 की *एक सर्बियाई* प्रति है (जो मॉस्को मठ ऑफ द samo फाथ की पुस्तकालय में है)। मुद्रित प्रोलॉग उपरोक्त तीनों संस्करणों से संकलित किया गया था। इसका पहला संस्करण 1641 में प्रकाशित हुआ था – जिसमें सितंबर का पहला आधा हिस्सा शामिल था; प्रोलॉग पहली बार 1642-1643 में अपनी पूरी तरह से प्रकाशित हुआ। मुद्रण प्रक्रिया के दौरान इसमें कई सुधार और जोड़ किए गए।

[11] 11वीं सदी का एक मेनायोन – जिसमें मार्च का महीना शामिल है – ग्रोड्नो गवर्नोरेट के बियिलस्टोक शहर के पास सुप्रास्ल मठ में खोजा गया था और इसलिए इसे आमतौर पर 'सुप्रास्ल पांडुलिपि' कहा जाता है; 12वीं सदी का एक मेनायोन – जिसमें मई का महीना शामिल है – मॉस्को कैथेड्रल ऑफ द डॉर्मिशन की लाइब्रेरी में रखा है।

मामलों में लमिोनार को 'सनिाई पैटेरकिन' या 'फ्लावर गार्डन' के रूप में संदर्भति कयिा जाता है। सनिई और स्केट पैट्रकिा की रूसी पांडुलपियिाँ 12वीं-13वीं शताब्दी की हैं और 13वीं सदी के कई लेखकों को इनके बारे में पता था। 16वीं शताब्दी से, पैट्रकिा को कई प्रतयिों में संरक्षति कयिा गया और उनका व्यापक रूप से उपयोग कयिा गया।

रूस में प्रकाशति पहला पैटेरकिॉन – *द स्परिचिुअल मेडो* – 1628 में प्रकाशति हुआ। *द डस्किोर्सेज ऑफ़ सेंट ग्रेगरी द डायलॉजस्टि* का अनुवाद 1671 में समियिन ऑफ़ पोलोत्स्क द्वारा कयिा गया था।

प्राचीन काल में, *पैनेग्यरकि* (βιβλία πανηγυρικά) का अनुवाद ग्रीक से स्लावोनकि में कयिा गया था। वे दो प्रकारों में वभिाजति हैं।

पहला – *माइनई* – अपनी प्रवष्टियिों की व्यवस्था में मासकि माइनई के क्रम का अनुसरण करता है; वशिेष रूप से, इसकी प्रवष्टियिाँ पूरे वर्ष में महीने और तारीख के अनुसार पर्वों के अनुसार व्यवस्थति की जाती हैं, जसिकी शुरुआत सतिंबर से होती है। इस प्रकार में प्रभु और परमेश्वर की माता के पर्वों के लिए स्तुति-वचन, संतों के जीवन, और पर्वों तथा चर्च समारोहों की उत्पत्ति के वृत्तांत शामलि हैं।

फेस्टल बुक का दूसरा प्रकार – *ट्रायोडयिन* – में प्रवेश-लखिति लेंटन और पास्काल ट्रायोड्स के क्रम में, अर्थात् सप्ताह के अनुसार, 'सार्वजनकि अधकिारी और फरीसी' के रवविार से लेकर 'सभी संतों' के रवविार तक व्यवस्थति हैं। इस प्रकार की अधकिांश प्रवष्टियिाँ सप्ताह के महत्व से संबंधति उपदेशों और कई प्रशंसात्मक शब्दों से मलिकर बनी होती हैं।

माइनी फेस्टल कैलेंडर, जसिका बुल्गारयिा में अनुवाद हुआ, बहुत जल्दी रूस पहुँच गया, क्योंकि इसकी 12वीं सदी की एक रूसी प्रति मौजूद है। रूस में माइनी फेस्टल कैलेंडर में हुए परविर्तनों का इतहिास मुख्य रूप से इस प्रकार सारांशति कयिा जा सकता है:

1) ग्रीक हागीओग्राफी की संख्या में कमी,

2) रूसी प्रवष्टियिों का समावेश,

3) ट्रायोडयिन के साथ वलिय।

18वीं शताब्दी में, प्राचीन माइनी फेस्टल पुस्तकों के मॉडल पर, एक नई पुस्तक संकलति की गई, जो आंशकि रूप से मुद्रति प्रस्तावनाओं और सुसमाचारों पर आधारति थी।

त्रयिोडयिन का बुल्गारयिा में भी अनुवाद कयिा गया था। रूस में इस प्रकार के धर्मनरिपेक्ष कैलेंडर में हुए परविर्तनों में शामलि हैं:

1) टुरोव के बशिप सरिलि (12वीं सदी) के शब्दों को शामलि करना, और

2) 15वीं शताब्दी में ग्रेगरी त्सम्ब्लक के शब्दों को शामलि कयिा गया (श्री उवारोव के पुस्तकालय में सबसे पुरानी पांडुलपि, दिनांक 1473–1477[12])।

साथ ही, जैसे-जैसे रूसी चर्च का धीरे-धीरे वकिास हुआ, रूसी संतों की जीवनी-ग्रंथों की संख्या भी धीरे-धीरे बढ़ी। इस प्रकार के कार्यों के पहले संकलनकर्ता थे: जैकब द ब्लैक-रोब्ड (द मॉक) (1074–1088), जन्हिें संतों बोरसि और ग्लेब के जीवन का श्रेय दयिा जाता है, और परम आदरणीय नेस्टर, जन्होंने दो वृत्तांत लखि – एक संतों बोरसि और ग्लेब पर, और दूसरा परम आदरणीय थयिोडोसयिस ऑफ द केव्स पर।

15वीं सदी के साहत्यि में *'केव्स का पैटेरकिॉन* (*Paterikon of the Caves*) का उदय हुआ, जसिे ग्रीक पैटेरकिॉन्स की नकल में संकलति कयिा गया था[13] । यह केव्स मठ के तपस्वयिों और स्वयं मठ के बारे में संक्षप्ति, चमत्कारों से भरी कहानयिों का एक संग्रह था। पेटेरकिॉन, व्लादमिीर के बशिप साइमन ([14]) और कीव केव्स मठ के एक भक्षिु पॉलीकार्प की कहानयिों पर आधारति है।

---

[12] ट्रायोडयिन का प्रकाशन 1647 में ('सोबोर्नकि के नाम से ज्ञात पुस्तक') हुआ था। 1700 में, इस संस्करण को यूनानी और स्लावोनकि ग्रंथों के आधार पर संशोधति कयिा गया था।

[13] द स्परिचिुअल मेडो, द लावसाइक, द अल्फाबेटकिल पैट्रकिॉन, और अन्य। कीव केव्स पैट्रकिॉन की सबसे पुरानी पांडुलपि 1406 की है; इसे ट्वर के बशिप आर्सेनयिस के लिए प्रतलिपि बनाया गया था, और अब इसे इम्पीरयिल पब्लकि लाइब्रेरी में रखा गया है।

[14] *संत साइमन*, कीव-पेचेरस्क लाव्रा के एक भक्षिु और व्लादमिीर के नेटविटी मठ के मठाधीश, 1215 में व्लादमिीर और सुज़दल के बशिप बने और 1226 में उनकी मृत्यु हो गई। उनके अवशेष कीव गुफाओं में हैं; उनका पर्व दविस 10 मई है।

साइमन की चौदह कहानियाँ पॉलीकार्प को लिखे एक पत्र के रूप में लिखी गई हैं। उनमें से नौ गुफाओं के चमत्कार करने वालों के जीवन का वर्णन करती हैं, और पाँच गुफाओं में मुख्य चर्च के निर्माण के समय हुए चमत्कारों का वर्णन करती हैं।

पॉलिकार्प ने साइमन के अपने विवरणों पर आधारित, साइमन के कथा संग्रह में ग्यारह कथाएँ लिखकर पूरकता की, जो गुफाओं के आर्चिमांड्राइट अकिंडिनि को लिखे गए एक पत्र के रूप में भी थीं।

पैटेरिकॉन के इन मुख्य खंडों में बाद में कुछ बाद के लेखों और एक पूर्ववर्ती अवधि के कार्यों के साथ पूरक किया गया: पैटेरिकॉन की शुरुआत में रखा गया और नेस्टर द्वारा लिखा गया, आदरणीय थियोडोसियस का जीवन; और 'क्यों कीव गुफाओं का मठ ऐसा नाम पड़ा' की व्याख्या करने वाली कहानियाँ और गुफाओं के पहले संतों के बारे में विवरण, जो प्राइमरी क्रॉनिकल से लिए गए हैं और पैट्रिकॉन में इन्हें उसी नेस्टर का लिखा हुआ बताया गया है, लेकिन इन्हें आदरणीय थियोडोसियस के एक नौसिखिए और शिष्य, संभवतःसिल्वेस्टर ने रचा था, जो बाद में कीव के सेंट माइकल मठ के मठाधीश बने। हम तक पहुँची पेचेर्स्क पैट्रिकॉन की बड़ी संख्या में प्रतियाँ इस तथ्य की गवाही देती हैं कि यह हमारे पूर्वजों की एक पसंदीदा पुस्तक थी[15] ।

रूसी संतों के जीवन की शुरुआत में मुख्य रूप से संत के एक रिकॉर्ड, या 'स्मारिका' के रूप में थे। ये शुष्क, संक्षिप्त विवरण थे, जिन्हें कभी-कभी किसी पात्र की वाणी या बाइबिल के उद्धरणों से ही जीवंत किया जाता था। लेकिन 15वीं शताब्दी से आगे, अनुवादित ग्रीक संतों की जीवन-कथाओं के प्रसार और विशेष रूप से, धार्मिक भाषणकला—जैसे संतों के पर्वों पर प्रशंसात्मक भाषण और उपदेश—के प्रभाव में, रूसी संतों के जीवन ने एक नया रूप ले लिया।

इस प्रकार का पहला कार्य संत साइप्रियन द्वारा रचित, महानगरपाल संत पीटर का जीवन था। जीवन की प्रस्तावना में लेखक कहते हैं, 'धर्मी लोगों की प्रशंसा उचित है,' और 'मैं, चरवाहे के प्रति प्रेम से प्रेरित होकर, संत को एक छोटा सा श्रद्धांजलि अर्पित करना चाहता हूँ।' संत के जीवन-चरित्र को एक प्रशंसा-भाषण के रूप में देखते हुए, साइप्रियन को संत पीटर की पिछली जीवन-कथा बहुत सरल और शुष्क, तथा ऐसे उद्देश्य के लिए अनुपयुक्त लगी। इसलिए उन्होंने एक नई, अधिक विस्तृत और अलंकृत जीवन-कथा लिखी, जिसका समापन संत को एक गंभीर प्रशंसा-भाषण के साथ किया।

रूसी संतों के जीवन के क्षेत्र में यह नई दिशा भिक्षु एपिफानियस[16] द्वारा और स्थापित और विकसित की गई। उनके द्वारा संकलित पर्म के स्टीफन और रडोन्येज़ के सर्गियस के जीवन में, अलंकारिक उपकरणों का प्रचुर उपयोग किया गया है और 'वाक्पटुता', या अलंकारिक कलात्मकता को पर्याप्त अवसर दिया गया है।

[17]हालांकि, रूसी संतों के जीवन के संकलन में सबसे प्रमुख व्यक्ति लोगोथेटे पाचोमियस थे। अपने समकालीन रूस के धार्मिक जगत में, उन्हें विद्वता का प्रतिनिधि माना जाता था, जो बुद्धि और ज्ञान में सभी से श्रेष्ठ थे। परिणामस्वरूप, ग्रैंड प्रिंस, मेट्रोपॉलिटिन, नोवगोरोड के बिशप और ट्रिनिटी-सर्गेस मठ के मठाधीश सभी ने पाचोमियस से किसी न किसी

---

[15] अपनी सदियों पुरानी मौजूदगी के दौरान, कीव-पेचेर्स्क पैटेरिकॉन में पेचेर्स्क लावरा से जुड़े व्यक्तियों द्वारा कई संशोधन किए गए। इनमें सबसे महत्वपूर्ण थे: 1) 1460 में, इसके प्रविष्टियों को कैसियन, जो एक पुरोहित और बाद में पेचेर्स्क मठ के मठाधीश बने, के आदेश पर पूरक और व्यवस्थित किया गया; 2) 1847 और 1866 के बीच, कीव-पेचेर्स्क लावरा के आर्चिमैंड्राइट जोसेफ त्रिज़ना के आदेश पर पैट्रिकॉन में संशोधन किया गया और उसमें वृत्तांत प्रविष्टियों से पूरक सामग्री जोड़ी गई; 3) 1661 में, उसी लावरा के आर्चिमैंड्राइट इनोकेन्टी गिज़ेल के आशीर्वाद से, इसे मुद्रित किया गया; पेटेरिकॉन के इस संस्करण में पेचेर्स्क तपस्वियों की पूरी तरह से संपूर्ण जीवनी-ग्रंथों की एक शृंखला शामिल है; परिणामस्वरूप, प्राचीन पेटेरिकॉन के पत्रों और कथाओं को खंडों में विभाजित किया गया था, जिनमें से प्रत्येक में किसी विशेष तपस्वी के बारे में जानकारी थी, और वे एक-दूसरे के पूरक थे; 4) हालाँकि, 1661 के रूसी संस्करण से पहले, कीव पैट्रिकोन को मस्तिस्लाव के बिशप, सिल्वेस्टर कोसोव द्वारा पोलिश में संक्षिप्त रूप में प्रकाशित किया गया था, ओशान और मोगिलेव ने 1635 में, मेट्रोपॉलिटिन पीटर मोहिला की इच्छानुसार, उन लैटिन-पोलिश लेखकों का मुकाबला करने के उद्देश्य से इसका प्रकाशन किया, जो गुफाओं के संन्यासियों की पवित्रता पर आपत्ति जताते थे और यह दावा करते थे कि कीव को पूर्वी पैट्रिआर्क के बजाय पोप के माध्यम से ईसाई धर्म द्वारा प्रबुद्ध किया गया था।

[16] *परमज्ञ एपिफानियस*, आदरणीय सर्गियस के एक शिष्य, 14वीं शताब्दी के अंत और 15वीं शताब्दी की शुरुआत में रहते थे; उन्होंने कॉन्स्टेंटिनोपल, माउंट एथोस और यरूशलेम में समय बिताया; 1420 में ट्रिनिटी-सर्गियस लावरा में एक हाइरोमोंक और आध्यात्मिक पिता के रूप में उनकी मृत्यु हो गई।

[17] *पाचोमियस*, जो जन्म से सर्ब और माउंट अथोस के एक भिक्षु थे, लगभग 1440 में मास्को पहुँचे। उन्होंने ट्रिनिटी लावरा में बीस साल बिताए, जहाँ उन्होंने संतों की जीवनियाँ संकलित करने और किताबों की नकल करने का काम किया। नोवगोरोड के आर्चबिशप जोनाह ने उन्हें नोवगोरोड के संतों की जीवनियाँ संकलित करने के लिए बुलाया।

संत के बारे में लिखने का अनुरोध किया। अपने कार्यों में, पाचोमियस ने जीवनी-साहित्य का मानक साहित्यिक रूप स्थापित किया, जिसकी बाद में रूसी 'जीवनीकारों' द्वारा व्यापक रूप से नकल की गई।

रूसी संतों की जीवनी-लेखन के इतिहास में एक नए युग की शुरुआत मेट्रोपॉलिटन मकरिई के कार्यों से हुई, विशेष रूप से 'रूसी चर्च के इतिहास' ([18]) से। उनका युग, सामान्य रूप से, रूसी संतों की नई जीवनी से समृद्ध था। इस प्रचुरता का कारण 1547 और 1549 के परिषदों में कई संतों का संत-पद पर आसीन होना है। इनमें से पहली परिषद के बाद, धर्मप्रांत के बिशपों ने नए महान चमत्कार करने वालों के जीवन, कैनन और चमत्कारों का संकलन किया और, 1549 की परिषद में उन्हें प्रामाणिकता प्रदान करने के बाद, यह स्थापित किया कि किए नए प्रकट हुए रूसी संतों के पर्व इन जीवन और कैनन के अनुसार मनाए जाने चाहिए। लेकिन मैकारियस का मुख्य कार्य उनका *ग्रेट मेनायोन-चेती* था।

नोवगोरोड के आर्चबिशप रहते हुए, मकरियस ने अपने समय के सभी आध्यात्मिक साहित्य को संकलित करने का कार्य शुरू किया था, उनके अपने शब्दों में, 'रूसी भूमि में पाए जाने वाले किसी भी मूल्य की सभी पुस्तकें'। मकाराईयस स्वयं इस कार्य के बारे में इस प्रकार कहते हैं: 'मैंने ये पवित्र और महान पुस्तकें वेलिकी नोवगोरोड में लिखीं, जब मैं वहाँ आर्चबिशप था, और मैंने उन्हें बारह वर्षों की अवधि में एक ही स्थान पर लिखा, एकत्रित और संकलित किया[19] , काफी संसाधनों और कई अलग-अलग लेखकों के साथ, न तो धन और न ही किसी सम्मान की परवाह किए बिना; लेकिन सबसे बढ़कर, मैंने विदेशी और प्राचीन कहावतों को संशोधित करने, उनका रूसी भाषा में अनुवाद करने का श्रम उठाया, और जिस हद तक ईश्वर ने हमें समझ प्रदान की, हम उतना ही सुधार करने में सक्षम हुए; जबकि अन्य आज तक बिना सुधार के बने हुए हैं, और हमने इन्हें उन लोगों के लिए छोड़ दिया है जो ईश्वर की मदद से हमारे बाद इन्हें सुधार सकें।' मॉस्को में, मकरिई ने अपने संग्रह में उन कई कृतियों को जोड़ा जो उनके मूल नोवगोरोड संकलन में शामिल नहीं थीं।

मकरियस की 'मिनेई-चेत' की सामग्री अत्यधिक विविध है। प्रत्येक तिथि के अंतर्गत, दो 'prologues[20] ' होते हैं, जिनमें संत के जीवन या शहादत, दिन के पर्व, और विभिन्न संक्षिप्त शिक्षाप्रद लेखों पर संक्षिप्त जानकारी होती है जो सीधे तौर पर दिन के पर्व से संबंधित नहीं होते; इसके बाद संतों के विस्तृत जीवन, अवशेषों की खोज के वृत्तांत—जो पहले कई संग्रहों में या अलग-अलग ग्रंथों के रूप में मौजूद थे—और प्रशंसा और गंभीरता के शब्द आते हैं, जिन्हें 'सोलेमनिटीज़' (solemnities) के नाम से जाने जाने वाले विशेष संग्रहों में शामिल किया गया था। इसके अतिरिक्त, मकार्येव्स्की माइन में उस समय के ज्ञात आध्यात्मिक साहित्य के अन्य कार्य, पवित्र धर्मग्रंथों का अधिकांश भाग, पवित्र पिताओं के साथ-साथ स्लावोनिक और रूसी धर्मगुरुओं और आध्यात्मिक लेखकों के कई कार्य, संतों के जीवनचरित (जिसमें कीव-पेचेरस्क लाव्रा का भी शामिल है) और इसी तरह के अन्य कार्य शामिल हैं[21] । सामान्य रूप से, यह उस समय के रूसी आध्यात्मिक विद्वता का एक व्यापक विश्वकोश था।

---

[18] *मकाराईयस* (1482–1564) – सर्व रूस के मेट्रोपॉलिटन, बोरोव्स्क के पूजनीय पाफनुटियस के शिष्य; 1526 में, जब वे मोजाइस्क-लुझेट्स्की मठ में आर्चिमांड्राइट थे, उन्हें नोवगोरोड का आर्चबिशप नियुक्त किया गया, और 1542 में उन्हें मास्को का मेट्रोपॉलिटन पदभार सौंपा गया। उन्हें इवान द टेरिबल का अनुग्रह और सभी समकालीन लोगों का सम्मान प्राप्त था, चाहे वे किसी भी राजनीतिक गुट से संबंधित हों। रूसी चर्च और साहित्य के इतिहास में मकरियस का एक प्रमुख स्थान है। मॉस्को के मेट्रोपॉलिटन के रूप में उनके कार्यकाल के दौरान सबसे महत्वपूर्ण घटनाएँ थीं: 1) 1547 और 1549 के धार्मिक परिषदें, 2) 1551 का स्टोग्लाव परिषद, और 3) 1563 में मास्को में पहली मुद्रण प्रेस का उद्घाटन। प्राचीन संतों की जीवनियों को इकट्ठा करने और रूसी संतों की नई जीवनियाँ संकलित करने के लिए, मकरिय ने अपने चारों ओर कई विद्वानों को इकट्ठा किया, जिनमें वह स्वयं न केवल नेता और संपादक थे, बल्कि एक उत्साही योगदानकर्ता भी थे।

[19] अर्थात्, वर्ष 1529–1541। यहाँ उद्धृत मैकारियस के शब्द तथाकथित 'क्रॉनिकल' में पाए जाते हैं, जो 'माइनेया' के साथ संलग्न है। उसी 'क्रॉनिकल' से यह स्पष्ट होता है कि 'माइनेया' में सूचीबद्ध बिशपों में से एक को 1552 में 'कैथेड्रल ऑफ द डॉर्मिशन' में शामिल किया गया था और यह कि यह कार्य संभवतः उसी समय पूरा हुआ था। इसलिए ऐसा माना जाता है कि 'माइनेया' का संकलन कम से कम बीस वर्षों तक जारी रहा।

[20] स्लावों द्वारा रचित प्रस्तावना का दूसरा प्रकार छंदबद्ध है।

[21] मकारी के मेनाइया की ज्ञात प्रतियों में से, सबसे महत्वपूर्ण इस प्रकार हैं: 1) *ज़ार की प्रति*, जिसे मकारी ने ज़ार इवान द टेरिबल को भेंट की थी और जो संभवतः मूल रूप से ज़ार के कक्षों में रखी गई थी, अब मॉस्को सिनोडल लाइब्रेरी में रखी गई है। 2) *उस्पेंस्की प्रति*, जिसे मकारी ने डॉर्मिशन कैथेड्रल को भेंट की थी, वह भी वहीं रखी गई है; 3) *सोफियस्की प्रति*, जिसे मकारी ने 1541 में नोवगोरोड में सेंट सोफिया कैथेड्रल को भेंट की थी, वह सेंट पीटर्सबर्ग थियोलॉजिकल अकादमी की पुस्तकालय में रखी गई है। इन पांडुलिपियों में से, केवल एक ही पूरी तरह से संपूर्ण है - अर्थात्, उस्पेंस्की प्रति। ज़ार के मेनियन से मार्च और अप्रैल के महीने गायब हैं, जबकि सेंट सोफिया मेनियन में केवल सात महीने (सितंबर–नवंबर, फरवरी, मई–जुलाई) शामिल हैं। मकरियस के मेनियनों का प्रकाशन वर्तमान में सार्वजनिक शिक्षा मंत्रालय के अधीन पुरातत्व आयोग द्वारा किया जा रहा है।

1600 में, मास्को के चुदोव मठ में, तेरह खंडों में चेती-मिनेई संकलन पूरा हुआ, 'चूंकि नवंबर का महीना दो भागों में विभाजित है'। वर्तमान में, केवल ग्यारह खंड ही बचे हैं। प्रत्येक महीने की प्रस्तावना में उनकी सामग्री को इस प्रकार परिभाषित किया गया है: 'और उनमें उत्सवी पाठ और भविष्यसूचक उपदेश, प्रेरितों के कष्ट और प्रशंसा, सभी संतों का जीवन, पवित्र शहीदों और पवित्र शहीदाओं के कष्ट, आदरणीय और ईश्वर-वाहक पिताओं का जीवन और कर्म, पवित्र आदरणीय महिलाओं के कष्ट और कर्म, और, नए चमत्कार-कर्मियों के साथ, साथ ही कीव गुफाओं का पैट्रिकॉन और अन्य पुस्तकें..." वैसे, बाद वालों में सिनाई का पैट्रिकॉन और पोप ग्रेगरी द ग्रेट के रोमन प्रवचन भी शामिल हैं। चुदोव के मेट्रोपॉलिटन मकारी का चेती-मिनेई, मकारी के चेती-मिनेई से उनके प्रस्तावनाओं की कमी और गंभीरता कैलेंडर से कम उधार लेने के कारण भिन्न है; इसमें मकारी के संग्रह में शामिल नहीं की गई नई प्रविष्टियाँ भी हैं।

मकारी की 'मिनेई' के एक सदी बाद, 1627 और 1632 के बीच, ट्रिनिटी-सर्गीय मठ के संन्यासी जर्मन तुलुपोव द्वारा 'चेतई मिनेई' संकलित की गई थी। इनमें लगभग पूरी तरह से रूसी संतों के जीवन और कविदंतियाँ शामिल हैं।

लगभग उसी समय, सेर्गेव पोसाद में चर्च ऑफ द नेटिविटी ऑफ़ क्राइस्ट के पुरोहित, जॉन मल्युटिन, अपनी खुद की मिनेई पर काम कर रहे थे। उन्होंने अपने तीन बच्चों के साथ मिलकर संतों के जीवन को लिखने में आठ साल (1646–1654) बिताए। प्रस्तावना में वे कहते हैं, 'मैंने मठवासी माइनई-चेती से लिखा है', यानी जर्मन तुलुपोव द्वारा संकलित ट्रिनिटी लावरा के माइनई से। 1642–1643 के मुद्रित 'प्रोलॉग' के आधार पर कुछ अतिरिक्त सामग्री जोड़ी गई थी। इओआन मल्युटिन ने केवल प्रविष्टियों को संकलित ही नहीं किया, बल्कि उन पर पुनःकाम भी किया। उनके 'माइनेया' में रूसी संतों की कई ऐसी प्रविष्टियाँ और जीवन-चरित शामिल हैं जो 'मकार्येव्स्की माइनेया' में नहीं मिलते। प्रत्येक महीने के उपसंहार में निम्नलिखित चौपाई शामिल है: 'क्योंकि आकाश की ऊँचाई अथाह है, पृथ्वी की चौड़ाई और लंबाई अपार हैं, समुद्र की गहराई अथाह है, और संतों के चमत्कार अनगनित और समझ से परे हैं'[22] ।

जबकि उत्तरी रूसी में प्राचीन साहित्य के स्मारक—संतों की जीवनी सहित—अछूते रहे, दक्षिणी रूसी चर्च, टाटार आक्रमणों और पोलिश तथा लिथुआनियाई लोगों द्वारा किए गए विनाश के परिणामस्वरूप, कई अनमोल आध्यात्मिक पुस्तकों से वंचित हो गई, और उनके साथ संतों के जीवन से भी। परिणामस्वरूप, जो लोग आत्मा के उद्धार के लिए पठन की चाह रखते थे, उन्हें यहाँ पोलिश में अनुवादित पश्चिमी शहीद-चरित्रों से ही काम चलाना पड़ा, जो मुख्यतः ऑर्थोडॉक्सी की भावना के विपरीत थे। ऐसी कष्टप्रद कठिनाइयों का निवारण करने की इच्छा से, कीव के मेट्रोपॉलिटन पीटर मोहिला ([23]) स्लावोनिक भाषा में संतों के जीवन की प्रकाशित करने को लेकर गहरी चिंता व्यक्त करते थे। इस उद्देश्य के लिए, उन्होंने यूनानी की जीवनी का एक नया अनुवाद करने की योजना बनाई और माउंट अथोस से सिमोन मेटाफ्रास्ट की जीवनी की एक प्रति पहले ही प्राप्त कर ली थी। हालाँकि, कीव के प्रसिद्ध प्रायमेट की अकस्मात मृत्यु ने उन्हें अपने कल्पित कार्य को पूरा करने से रोक दिया।

[24]उनकी मृत्यु के बाद, कीव-पेचेरस्क लावरा के आर्चिमैंड्राइट इन्नोकेन्टी गिज़ेल ने संतों के जीवन के प्रकाशन का कार्य बड़े उत्साह से संभाल लिया। पीटर मोहिला द्वारा पहले से तैयार इस कार्य की सामग्री के अलावा, इन्नोकेन्टी ने मास्को के पैट्रिआर्क, जोआकिम से मैकारियस का ग्रेट मेनायोन-चेट्टी का अनुरोध किया, जिनके पहले तीन महीने उन्हें भेज दिए गए। हालाँकि, उस समय के सैन्य उथल-पुथल के कारण, जिसने शांति से विद्वितापूर्ण कार्यों को आगे बढ़ाना असंभव बना दिया था, इनोकेन्टी का यह महान कार्य पूरा करना नसीब नहीं हुआ।

उनके उत्तराधिकारी, आर्चिमैंड्राइट वरलाम[25] , संतों के जीवन के प्रस्तावित प्रकाशन के प्रति पूरी सहानुभूति रखते हुए, इसे साकार करने के लिए हर संभव प्रयास किया। हालाँकि, उन्होंने स्वयं इस कार्य को करने का निश्चय नहीं किया, बल्कि इसके लिए अधिक सक्षम और अन्य मामलों से कम विचलित रहने वाले व्यक्ति की तलाश शुरू कर दी।

---

[22] चुडोव और मिलियुटिन मेनिया मास्को सिनोडल पुस्तकालय में रखे गए हैं, जबकि तुलुपोव मेनिया ट्रिनिटी-सर्गीय लाव्रा की पुस्तकालय में हैं।

[23] मोल्दाविया और वलाचिया के राजकुमार के पुत्र *पेट्रो मोहिला* (1596–1647) को 1627 में कीव-पेचेरस्क लाव्रा का आर्चिमैंड्राइट चुना गया और 1633 में मेट्रोपॉलिटन के रूप में अभिषिक्त किया गया।

[24] प्रूसिया के मूल निवासी *इनोसेंट गिसेल*, अपनी युवावस्था में कीव चले गए, ऑर्थोडॉक्स धर्म अपना लिया, और बाद में कीव स्कूल के रेक्टर बने; 1656 से अपनी मृत्यु तक, उन्होंने कीव-पेचेरस्क लाव्रा के आर्चिमांड्राइट के रूप में कार्य किया।

[25] *यासिनि के बरलाम*, जो कीव स्कूल में एक छात्र थे और बाद में इसके रेक्टर तथा कीव लावरा के मठाधीश बने, एक विद्वान व्यक्ति थे। 1690 में, उन्हें कीव के मेट्रोपॉलिटन के रूप में अभिषिक्त किया गया।

उनकी पसंद बट्यूरनि के कुरुपत्स्की मठ के एक भक्षिु, दमित्रिी (जन्म का नाम डैनयिल टुपालो) पर पड़ी, और इसने रूसी संतों की जीवनी-लेखन के इतहिास में एक नरि्णायक मोड़ को चहि्नति कयिा।

कीव स्कूल में एक प्रतभिाशाली, असाधारण रूप से मेहनती और वनिम्र छात्र, जसिे उस समय की सैन्य परस्थितियिों के कारण अपना पाठ्यक्रम पूरा करने से पहले ही स्कूल छोड़ने के लिए मजबूर होना पड़ा, दमित्रिी ने अपनी युवावस्था में ही संन्यास की शपथ ले ली। कम उम्र में ही स्कूल छोड़ देने के बावजूद, उन्होंने लोगों की धार्मकि भावनाओं के साथ घनष्ठि संबंध बनाए रखा और उनकी आध्यात्मकि जरूरतों को अच्छी तरह समझते थे। एकांतप्रयि और चंतिनशील स्वभाव के साथ-साथ वद्वितापूर्ण कार्यों के प्रतगिहरे लगाव के कारण, दमित्रिी को मठ में पर्याप्त अवकाश मलिा, जसिसे वह स्कूल में शुरू की गई अपनी शक्षिा को स्वतंत्र रूप से पूरा कर सके और अपनी असाधारण प्रतभिा को नखिार सके। जब तक आर्चमिंड्राइट वरलाम उनके पास अपना प्रस्ताव लेकर पहुँचे, तब तक दमित्रिी पश्चमिी रूस में पहले से ही एक प्रसद्धि उपदेशक बन चुके थे, और बशिप तथा मठ उनके हृदयस्पर्शी शब्द सुनने के लिए प्रतस्पिर्धा कर रहे थे।

दमित्रिी ने उस कार्य को उसी तरह शुरू कयिा, जैसे वह हमेशा कसिी भी महत्वपूर्ण कार्य की शुरुआत करता था, नस्वािर्थ उत्साह और अपनी क्षमताओं पर अवश्विास के साथ। आर्कमिंड्राइट वरलाम ने उनके बारे में लखिा, 'शुरुआत से ही एक मेहनती व्यक्त,ि हालांकि दीनतापूर्ण आत्म-त्याग की एक लंबी अवधि के बाद, उसने ईश्वर की मदद और परम पवत्रि मसीह की माता और सभी संतों की प्रार्थनाओं में अपनी आशा रखकर, उसे सौंपा गया कार्य पूरा करने का बीड़ा उठाया।' दमित्रिि के अपने ववरिण से यह स्पष्ट है कि वह कभी-कभी मैटन्सि (प्रार्थना सभा) तक अपने काम में बैठे रहते थे, और अपने असाधारण दर्शनों में सोते समय भी इसे जारी रखते थे[26] ।

संत दमित्रिी ने 1684 में अपना महान कार्य शुरू कयिा। 1685 में, कीव मेट्रोपोलसि, जो तब तक कॉन्स्टेंटनिोपल के पैट्रआिर्क के अधीन था, को अंततःमास्को के पैट्रआिर्क के अधकिार में रख दयिा गया। बाद वाले ने तुरंत यह मांग की कि कीव मेट्रोपोलसि के भीतर सभी प्रमुख पदानुक्रम संबंधी नरि्णय और वद्वितापूर्ण उपक्रम केवल उनके आशीर्वाद से ही हों। परणिामस्वरूप, जब सेंट डेमेट्रयिस के लिए मकरयिेव्स्की मेनायोन का अगला भाग (जो दसिंबर, जनवरी और फरवरी महीनों को कवर करता है) आवश्यक था, तो आर्चमिंड्राइट बरलाम ने, पैट्रआिर्क से ये कतिाबें भेजने का अनुरोध करते हुए, उनसे आशीर्वाद और समीक्षा के लिए संतों की नई जीवनी प्रस्तुत करने का वादा कयिा। हालाँकि, जल्द ही पैट्रआिर्क ने मेनाइया को वापस करने की मांग की। मास्को को अनुरोधति पुस्तकें एक वशिेष दूत द्वारा भेजते हुए, संत डेमेट्रयिस ने पैट्रआिर्क को नम्निलखिति पत्र (1688) भेजा:

'आपकी पवत्रिता, हमारे पति और महा-पशुपालक के समक्ष, मैं, आपके झुंड का एक भेड़-बकरयिा—यद्यपि सबसे छोटा और सबसे अज्ञात— मेरी इस खराब लखिावट के साथ (क्योंकि मैं स्वयं इसे नहीं लखि सकता था), मैं आपके पवत्रि चरणों में आकर गरिता हूँ, ताकि मैं अपने परम पवत्रि महा-चौपालपालक द्वारा नाम से जाना और संबोधति कयिा जाने योग्य समझा जाऊँ... आपकी पवत्रिता ने इन पुस्तकों के बारे में लखिने की कृपा की.... ये पुस्तकें अब तक बट्यूरनि मठ में मेरे अयोग्य हाथों में रखी गई हैं और इनका सावधानीपूर्वक अध्ययन कयिा गया है। इनसे मुझे बहुत लाभ हुआ है और मैं स्वयं को संतों के जीवन से सहमत पाता हूँ जैसा कि उसमें दर्ज है, मैं अब उन्हें कृतज्ञतापूर्वक परम पावन के समक्ष प्रस्तुत करता हूँ और आपको सूचति करता हूँ कि, लटििल रूस की चर्च द्वारा मुझे सौंपी गई पवत्रि आज्ञाकारति में, ईश्वर की सहायता से, अपनी दुर्बल क्षमता के अनुसार परश्रिम करके, मैंने मास्को और सम्पूर्ण रूस के महाधर्माध्यक्ष, धन्य मकारयिस के महान ग्रंथों से प्रतलिपि बिनाई है, और अन्य ईसाई इतहिासकारों से, *मैंने संतों के जीवन छह महीनों के लिए लखिे हैं*, जो सतिंबर के पहले दनि से शुरू होकर फरवरी के आखरिी दनि समाप्त होते हैं, उन सभी महान पवत्रि पुस्तकों के अनुसार, संतों द्वारा कए गए सभी इतहिासों, कथाओं और कार्यों में, उनके तपस्या के प्रयासों और कष्टों में। और जो संतों के जीवन पहले ही लखिे जा चुके थे, वे अधकिांशतःहमें कुछ कुलीन पुरुषों द्वारा, और सबसे बढ़कर गुफाओं की पवत्रि लाव्रा में सुनाए गए थे। अब, कई लोगों की कृपा और इच्छा के जवाब में, मैं ईसाइयों के आध्यात्मकि लाभ के लिए, *उन्हें मुद्रति रूप में प्रकाशति करना* चाहूँगा; इस उद्देश्य के लिए, मैं वशिेष रूप से गुफाओं के परम पूजनीय आर्चमिंड्राइट के बार-बार लखिे गए लेखों से प्रोत्साहति हूँ। *इस कार्य के लिए*, जो मुझे वश्विास है कि ईश्वर की कलीसयिा के योग्य है, *मैं आपकी* परम पावन आर्चपास्टोरल *आशीर्वाद की कामना करता हूँ* मैं प्रार्थना

[26] इस पुस्तक में 21 सतिंबर को संत डेमेट्रयिस का जीवन देखें।

करता हूँ कि आपकी महाधर्माध्यक्षीय आशीर्वाद से निर्देशित, शिक्षित और समर्थित होकर, मैं चर्च के विचारार्थ इन्हें प्रस्तुत करके और इन छह महीनों के लेखों को मुद्रित करके, अपने सामने का कार्य अच्छी तरह से कर सकूँ, जिन्हें, जब ईश्वर की सहायता और आपके अर्चपास्टोरल आशीर्वाद से, पूरा कर प्रकाशित कर दिया जाएगा, तब (यदि प्रभु चाहें और हम जीवित रहें) हम शेष कार्यों के लिए आगे बढ़ेंगे और अन्य पवित्र पुस्तकों के संबंध में आपके पवित्र पाद के समक्ष नमन करने आएँगे।' हालाँकि, इस पत्र का कोई जवाब नहीं आया। फिर, अगले वर्ष, 1689 में, कीव लाव्रा ने मेनायोन-चेती के पहले भाग को छापना शुरू किया और उसी वर्ष इसे पूरा किया, जिसकी लागत और जिम्मेदारी उसने स्वयं उठाई। अपने वादे के विपरीत, आर्चमिांड्राइट वरलाम ने प्रकाशन के लिए तैयार पांडुलिपियों को पैट्रिआर्क को नहीं भेजा, बल्कि उनका अंतिम समीक्षण स्वयं और बुजुर्गों की परिषद के लिए आरक्षित कर लिया। पैट्रिआर्क ने तुरंत एक फटकार पत्र भेजा, जिसमें उन्होंने अपनी समीक्षा और आशीर्वाद के बिना पुस्तक के छपने पर अपनी नाराज़गी व्यक्त की, प्रकाशन में कई त्रुटियों की ओर इशारा किया, और आदेश दिया कि त्रुटियों वाले पृष्ठों को सुधारे हुए पृष्ठों से बदल दिया जाए, और यह कि उनकी अनुमति के बिना 'मिनेई-चेती' के कोई और खंड नहीं छापे जाएँ। हालाँकि, ये फटकारें केवल प्रकाशकों के लिए थीं।

जहाँ तक मेनाइया के संकलक का सवाल है, उसी वर्ष, 1689 के अंत में, उन्होंने व्यक्तिगत रूप से अपने काम को जारी रखने के लिए पैट्रिआर्क का आशीर्वाद प्राप्त किया। और अगले वर्ष, 1690 में, वार्लाम, जो अब कीव के मेट्रोपॉलिटिन थे, मास्को के नए पैट्रिआर्क एड्रियन से दिमित्री के लिए एक आशीर्वाद और एक प्रशंसा पत्र लेकर आए। अपने धन्यवाद के जवाब में, संत दिमित्री ने पैट्रिआर्क से दिसंबर, जनवरी और फरवरी के लिए एक बार फिर मकरियेव्स्की मेनाइया भेजने का अनुरोध किया। 'यदि आपकी महाधर्म-गौण कृपा हो, उन्होंने लिखा, 'जिन संतों के जीवन के बारे में हम लिख रहे हैं, उनके जीवन में सामंजस्य बनाए रखने के लिए, क्या आप कृपा करके आदेश देंगे कि उपर्युक्त महीनों के लिए ये तीन पवित्र पुस्तकें उचित समय पर मेरे जैसे अयोग्य व्यक्ति को भेजी जाएँ; मैं ईश्वर की सहायता से, *दिन-रात उनका अध्ययन करने*, उनसे बहुत लाभ उठाने और दुनिया के लाभ के लिए उन्हें मुद्रित करने का प्रयास करूँगा।'

मांगी गई पुस्तकें प्राप्त करने के बाद, संत डेमेट्रियस ने जल्द ही मेनायोन का दूसरा तिमाही (दिसंबर, जनवरी और फरवरी) प्रकाशन के लिए तैयार किया और 9 मई 1692 को, इसे व्यक्तिगत रूप से कीव-पेचेरस्क लाव्रा के मुद्रणालय में पहुँचाया। हालाँकि, यह पुस्तक फरवरी 1695 तक प्रकाशित नहीं हुई। इस देरी का कारण संभवतः मेट्रोपॉलिटिन वरलाम द्वारा इन पुस्तकों की सावधानीपूर्वक समीक्षा करना था। इसके अलावा, संकलक स्वयं, डैनज़िग से 'बोलैंडा की पुस्तकें' प्राप्त करने के बाद, मुद्रण के लिए तैयार पाठ की तुलना उनके साथ करना और इसे और अधिक विस्तार से संशोधित करना चाहते थे। चेती-मिनेई के दूसरे खंड की प्रस्तावना में, संत डेमेट्रियस ने पहले संस्करण के कुछ संदिग्ध अंशों और त्रुटियों को सुधार दिया।

इन पुस्तकों को मॉस्को में पैट्रिआर्क के पास भेजा गया, जिन्हें सेंट डेमेट्रियस ने अन्य बातों के अलावा लिखा कि वह पुस्तक आर्चपास्टर की अति कृपापूर्ण दया के प्रतीक के रूप में प्रस्तुत कर रहे थे, जिन्होंने 'अयोग्य' संकलक को लिखित आशीर्वाद से प्रोत्साहित करने की कृपा की थी, ताकि वह उन पर सौंपी गई जिम्मेदारी को पूरा करने का प्रयास कर सके, पवित्र लोगों के जीवन के लेखन पर अपनी पूरी क्षमता से परिश्रम कर रहा था और 'जो कुछ मैंने लिखा है उसे चर्च के निर्णय के लिए, और अधिक उपयुक्त रूप से ईश्वर-प्राज्ञ आर्चबिशप, कीव के महाधर्माध्यक्ष उनकी उत्कृष्टता वरलाम के समक्ष प्रस्तुत कर रहा था'। संत डेमेट्रियस ने आगे लिखा, 'जहाँ तक आपके आर्चपास्टोरल आशीर्वाद का प्रश्न है, मैंने इसे इस नई पुस्तक में भी शामिल करने की स्वतंत्रता ली है, ताकि इसके अधिक शोभायमान होने और इसमें संकलित पवित्र और चमत्कारी कृत्यों की निर्विवाद विश्वसनीयता के लिए, जिन्हें संत सिमियन मेटाफ्रastes और कई अन्य इतिहासकारों ने संकलित किया है।' संत दिमित्रीयस ने पुस्तक के अगले, तीसरे भाग के लिए भी पैट्रिआर्क से ऐसी ही आशीर्वाद मांगी, ताकि कीव के मेट्रोपॉलिटिन वरलाम 'उस चीज़ को विवेक से पढ़ सकें जिसे मैंने, एक पापी ने, प्रभु की सहायता से और आपके महाधर्मोपाध्याय आशीर्वाद से, ठीक वैसे ही जैसे उन्होंने पहले दो त्रैमासिक पुस्तकें पढ़ी हैं; और हो सकता है कि परम पावनता कृपा करके इस मामले के संबंध में उनकी उत्कृष्टता को अलग से लिखें। जहाँ तक मेरे सामने के मामले का प्रश्न है, और धन्य मकारियस, मॉस्को और समस्त रूस के मेट्रोपॉलिटिन, की महान मेनाइया-चेती का, जो परम पावन के कैथेड्रल चर्च में पाई जाती है, तीन महीनों—मार्च, अप्रैल, मई – मैं विनम्रतापूर्वक आपकी पावनता से निवेदन करता हूँ कि कृपया उन्हें कुछ समय के लिए मुझे भेज दें, ठीक वैसे ही जैसे वे पिछले महीनों में मुझे भेजे गए थे, संतों के लिखित जीवन के संबंध में सहमति के लिए।"

इसके बाद, संत डेमेट्रियस को पैट्रआर्क एड्रयिन से अनुमोदन का एक नया पत्र मलिा, जसिमें उन्होंने लखिा: 'हम प्रभु से प्रार्थना करते हैं कि वे *शेष छह महीनों के* कार्य को पूरा करने में आपकी सहायता करें, जसि भी प्रकार आप, चर्च के एक पुत्र के रूप में, उनकी कृपा से परश्रिम करें, और आप इस कार्य को—जो परमेश्वर को प्रसन्न करने वाला और चर्च के लिए लाभकारी है—सफल समापन तक पहुँचाएँ; इसके लिए हम बार-बार अपना आशीर्वाद प्रदान करते हैं। आप, चर्च के एक पुत्र और हमारे धर्मप्रांत के एक ईसाई के रूप में, सामान्य भलाई के लिए और हमारे अनुरोध पर, प्रयास करें... उन लोगों की शाश्वत महमिा और अनंत स्मृति के लिए जन्हिोंने इस उपक्रम की पहली कल्पना की; क्योंकि हम चाहते हैं कि अच्छे स्वास्थ्य, संतोष और समृद्धि में... आप पूर्णता में अपने दनि जी सकें और स्वर्ग में प्रभु के सामने, ईश्वर द्वारा स्थापति पवत्रि मंडली के बीच खड़े होने के योग्य माने जाएँ'। प्रसन्न और उत्साहति होकर, दमित्रिी ने माइनई-चेती के तीसरे भाग को प्रकाशन के लिए तैयार करना शुरू कयिा, जो 1700 में मुद्रति हुआ। अंतमि भाग उनकी महान आर्चपास्टोरल कष्टों के बीच, जब वे रोस्तोव में थे, पूरा हुआ और सतिंबर 1705 में प्रकाशति हुआ।

संत डेमेट्रियस के *मनिेई-चेती* में संतों के जीवन के अतरिक्ति, प्रभु और परमेश्वर की माता के पर्वों के लिए, अवशेषों के स्थानांतरण को चह्निति करने वाले पर्वों के लिए सनिाक्सारयिा, तथा शकि्षाप्रद शब्द भी शामलि हैं, जनिकी सामग्री पर्व के इतहिास से ली गई है; ये शब्द या तो चर्च के प्राचीन पतिरों में से कसिी एक के या स्वयं संत डेमेट्रियस के माने जाते हैं। जैसा कि मेनायोन के पहले और दूसरे भाग से पहले रखे गए 'शकि्षकों, लेखकों, इतहिासकारों और कथाकारों' की दो सूचयिों से देखा जा सकता है, संत डेमेट्रियस ने कई और ववििधि स्रोतों का सहारा लयिा। इन सूचयिों में चर्च के सबसे प्रमुख धर्मपति और शकि्षकों की एक लंबी शृंखला शामलि है, जनिकी रचनाएँ हमें ग्रीक या लैटनि में प्राप्त हुई हैं, साथ ही प्राचीन चर्च के इतहिासकार और वर्णति घटनाओं के कई समकालीन और प्रत्यक्षदर्शी भी शामलि हैं। इसके अलावा, संत डेमेट्रियस ने संकीर्ण-चरत्रिों के भीतर ही अपने द्वारा उपयोग कएि गए स्रोतों का भी संकेत दयिा है। इन वशिष्टि संदर्भों में, समियिोन मेटाफ्रastes का नाम सबसे अधकि बार आता है।

जहाँ तक रूसी और स्लाव संतों के जीवन का प्रश्न है, संत डेमेट्रियस ने मकारी के 'मेनायोन-चेती', 'प्रोलॉग्स', 'केव्स का पैट्रकिॉन', और कीव-पेचेरस्क लावरा तथा अन्य रूसी मठों के वभिन्नि संग्रहों का सहारा लयिा। उपरोक्त कृतयिों के अलावा, संत दमित्रिी के पास सुरयिा की *लाइव्स ऑफ द सेंट्स*[27] और बोलैंडस्टि्स द्वारा प्रकाशति *एक्ट्स ऑफ द सेंट्स*[28] भी उपलब्ध थीं। इन कृतयिों में से पहली इसलिए महत्वपूर्ण थी क्योंकि इसमें मेटाफ्रास्टस को श्रेय दी गई जीवनयिाँ शामलि थीं, जबकि दूसरी, जो पहली से काफी बाद में प्रकाशति हुई, में संतों के वृत्तांतों के मूल ग्रीक पाठ शामलि थे।

अपने *माइनी-चेती* का संकलन करते समय, संत डेमेट्रियस ने अक्सर मूल कथाओं का शाब्दकि अनुवाद स्लावोनकि भाषा में कयिा या प्राचीन स्लावोनकि भाषा को सुलभ बनाने के उद्देश्य से सुधार कयिा, ताकि सामग्री में कोई बदलाव कएि बनिा उसे समझना आसान हो सके। लेकनि अधकिांशत; उन्हें वभिन्नि स्रोतों से ववििरण संकलति करने पड़ते थे। ऐसे मामलों में, वभिन्नि सामग्रयिों को एक साथ लाते हुए, संत डेमेट्रियस या तो एक स्रोत में जो कुछ भी गायब था उसे दूसरे स्रोत की सामग्री से पूरक करते थे, या मूल पाठ के स्वरूप को बदल देते थे—उदाहरण के लिए, एक प्रशंसा-भाषण या अंतमि संस्कार के भाषण को एक सरल ऐतहिासकि ववििरण में बदलना—या कथा के समर्थन में अन्य इतहिासकारों के बयानों का हवाला देते थे, या केवल उनका उल्लेख करते थे। अक्सर, संत डेमेट्रियस मूल पाठ को संक्षप्ति कर देते थे। इन संक्षप्तिकिरणों में प्रस्तावना और नष्किर्ष को छोड़ना, और कभी-कभी संत के जीवन की घटनाओं और परस्थितियिों

---

[27] कोलोन के एक भकि्षु, *लॉरेंटयिस सुरयिस* ने, 1569 और 1575 के बीच अपना ग्रंथ, *वतिाई सेनेतोरम ओरएिंटसि एट ऑक्सडिेंटसि*, पहली बार प्रकाशति कयिा। 1618 तक, इसका चौथा संस्करण पहले ही प्रकाशति हो चुका था।

[28] *बोलैंडस्टि्स* एंटवर्प में वद्विान भकि्षु थे जो संतों के जीवन के अध्ययन और प्रकाशन में लगे हुए थे, यह एक परयिोजना थी जसिे 1643 में जॉन बोलैंड द्वारा शुरू कयिा गया था। बोलैंडस्टि्स के प्रकाशन (एक्टा सैंक्टोरम) में पूर्वी और पश्चमिी चर्चों के सभी संतों के वृत्तांत शामलि थे। अधकितर, बोलैंडस्टिों ने संतों के जीवन और कार्यों से संबंधति मौलकि और प्राचीन स्रोत प्रकाशति कएि। शुरुआत में, उन्होंने ग्रीक ववििरणों को केवल लैटनि अनुवाद में शामलि कयिा, लेकनि बाद में उन्होंने ग्रीक मूल को ही शामलि करना शुरू कर दयिा। कार्यों के प्रकाशन से पहले आमतौर पर संत के सम्मान में उत्सव की उत्पत्ति, उनके जीवन और मृत्यु की तारीखों, और उनकी अवशेषों के स्थानांतरण की तारीख पर व्यापक आलोचनात्मक अध्ययन कएि जाते हैं। जैसा कि मॉस्को थयिोलॉजकिल अकादमी की पुस्तकालय में रखे गए संत डेमेट्रियस से संबंधति 'प्रोलॉग' की एक प्रति में कनिारे पर लखिे नोट्स से देखा जा सकता है, उन्होंने बोलैंडस्टि्स संस्करण के पहले छह खंडों (जो जनवरी से मई तक के महीनों को कवर करते हैं) का उपयोग कयिा।

के विवरण में कुछ विवरणों को छोड़ना शामिल था। इन संक्षिप्तिकरणों को आवश्यक मानते हुए, डेमेट्रियस अपने मेनायोन-चेती के दूसरे भाग की प्रस्तावना में इस बारे में बात करते हैं:

'इस पुस्तक में जो कुछ भी लिखा है, जैसा कि वास्तव में पहली पुस्तक में भी है, वह संक्षिप्त रूप में लिखा गया है; और जैसे इतिहास की महान, प्रचुर नदियों से, चर्च के प्रचुर अभिलेखों से, यह पुस्तक एक छोटे जहाज़ द्वारा खींची गई है। क्योंकि यदि कोई संतों के सभी कर्मों, कथाओं और चमत्कारों को एक ही, अखंड कथा में दर्ज करना चाहे, तो उसके पूरे जीवन का समय भी इसके लिए पर्याप्त नहीं होगा, जैसा कि प्राचीन धार्मिक लेखकों के साथ भी हुआ था। इसके अलावा, मानवीय दुर्बलता के कारण, यहाँ जो कुछ भी लिखा गया है, उसे संक्षिप्त किया गया है, ताकि प्रत्येक संत का जीवन उनकी स्मृति में बिना थकान के पढ़ा जा सके। क्योंकि यदि लोग, जो वैसे भी दुर्बल हैं, कुछ संक्षिप्त शब्दों को भी सम्मान देने या सुनने की कृपा नहीं करते, तो वे लंबी-लंबी पठनों से कितनी अधिक थकेंगे। वास्तव में, कई संतों के जीवन 'ग्रेट रीडिंग्स' और अन्य पांडुलिपि पुस्तकों में इतने विस्तृत हैं—जो शब्दों की प्रचुरता के साथ लिखे गए हैं—कि उन्हें में से किसी एक को भी दो या तीन दिनों में, ध्यान से पढ़ने पर भी, पढ़ पाना मुश्किल है। इसी कारण, इस पुस्तक में इन्हें संक्षिप्त किया गया है, जो संतों के एक-एक कार्य का वर्णन करती है, साथ ही अनावश्यक शब्दों और लंबी-लंबी अंशों को छोड़ दिया गया है।"

यहाँ तक कि जब संत मेनाइऑन-चेती के अंतिम खंड में व्यस्त थे, तब भी कीव-पेचेरस्क लाव्रा के आर्चिमांड्राइट जोआसाफ क्रोकॉव्स्की ने उनसे एक नया कार्य करने का अनुरोध किया। संत ने स्वयं इस मामले के संबंध में अपने मित्र थियोलॉगस[29] को निम्नलिखित लिखा। 'मैं आपको सूचित करता हूँ, महाशय,' गुफाओं के अयोग्य फादर आर्चिमांड्राइट ने मुझसे लिखा, 'कि वे चाहते हैं कि मैं *पहली* तीन-महीने की *खंड—जिसमें* सितंबर, अक्टूबर और नवंबर *शामिल हैं—को दूसरी छपाई के लिए एक बार फिर से संशोधित करना शुरू करूँ* और उन संतों के जीवन को जोड़कर इसे *पहले से अधिक पूर्ण बनाऊँ*, जो इस जीवन से चल बसे हैं।'

इस अनुरोध के जवाब में, संत ने अपनी मृत्यु तक अपने कार्य में सुधार करने का ध्यान रखा और उसमें कुछ सुधार किए। इन सुधारों को माइनई-चेती के दूसरे संस्करण में शामिल किया गया, जिस पर कीव लाव्रा ने संत की मृत्यु के एक साल बाद काम शुरू किया। पहला खंड 1711 में, और दूसरा 1714 में मुद्रित हुआ – दोनों आर्चिमांड्राइट अथानासियस मस्लिाव्स्की के अधीन; तीसरा 1716 में आर्चिमांड्राइट इओनिकियोस सेन्यूटोविच के अधीन प्रकाशित हुआ। जहाँ तक चौथे भाग की बात है, जब यह अभी भी मुद्रण की प्रक्रिया में था, 1718 में लगी एक आग के दौरान यह आग की लपटों का शिकार हो गया, जिसने कीव के मुद्रण गृह और पुस्तकालय को पूरी तरह से नष्ट कर दिया।

दो सौ वर्षों तक, रूस के सभी क्षेत्रों के शिक्षित लोगों ने सेंट डिमिट्रि ऑफ रोस्टोव के चेती-मिनेई को भक्तिपूर्वक पढ़ा, जबकि निरक्षरों ने उन्हें सुना, जिसमें उन्होंने नैतिक शिक्षा और चर्च के इतिहास के ज्ञान का एक अक्षय स्रोत पाया, और अपने संकलक का नाम श्रद्धापूर्वक लिया।

1741 में, कीव-पेचेरस्क लाव्रा ने सेंट दिमित्रि ऑफ रोस्तोव के चेती-मिनेई का प्रकाशन फिर से शुरू करने का इरादा किया। उससे ठीक पहले, लाव्रा को पवित्र धर्मसभा से एक फरमान मिला था जिसमें उसे निर्देश दिया गया था कि 'पिछले धार्मिक संस्करणों को छोड़कर कोई भी नई रचनाएँ न छापे; और यहाँ तक कि उन पुराने धार्मिक पुस्तकों को भी छापने से पहले महान रूसी मुहरों वाले समान धार्मिक पुस्तकों के साथ मिलान किया जाए, ताकि उनमें कोई विसंगति या विशेष बोलचाल की भिन्नता न हो; और यह कि कोई भी अन्य पुस्तकें, चाहे वे पुराने या नए संस्करण हों, आध्यात्मिक कॉलेज को पहले सूचित किए बिना और उसकी अनुमति प्राप्त किए बिना नहीं छापी जानी चाहिए, ताकि ऐसी पुस्तकों में पूर्वी चर्च के प्रति कोई विरोध या महान रूसी परंपरा के साथ कोई असहमति उत्पन्न न हो'।

इस फरमान के बाद, कीव-पेचेरस्क लाव्रा के आर्चिमैंड्राइट तिमोफी श्चेरबात्स्की ने पवित्र सिनिड से लाव्रा को मेनायोन का तीसरा संस्करण छापने की अनुमति देने का अनुरोध किया। अनुमति दे दी गई, लेकिन इस शर्त पर कि 'पवित्र संतों के जीवन वाली इन पुस्तकों को, प्रेस में भेजने से पहले, आर्चिमांड्राइट द्वारा अन्य विद्वानों और पवित्र धर्मग्रंथ तथा चर्च के इतिहास दोनों में पारंगत लोगों के साथ मिलकर अत्यंत सावधानी से पूरी तरह से जांची जाए; और यदि उसमें कुछ भी ऐसा पाया जाता है जो पवित्र धर्मग्रंथ के विपरीत है, आध्यात्मिक विनियमों और फरमानों के विपरीत हो, या यदि कुछ भी अविश्वसनीय पाया जाए और विश्वास के चर्च शिक्षकों और इतिहासकारों द्वारा पुष्टि नि किया गया

[29] मास्को के मुद्रण कार्यालय में प्रूफरीडर।

हो, बल्कि अत्यधिक संदिग्ध हो, तो इसे संबंधित संत के जीवन के अंत में नोट किया जाना चाहिए, या, यदि संभव हो, तो सुधार किया जाना चाहिए। जहाँ तक छंद-रचना और बोली का प्रश्न है, इनका हर तरह से महान रूसी पुस्तकों के अनुरूप होना अनिवार्य है।' यह आदेश प्राप्त करने पर, आर्किमैंड्राइट ने उत्तर दिया कि उसके पास न तो इस कार्य को सौंपने के लिए पर्याप्त संख्या में सक्षम लोग थे, और न ही वे सभी प्राचीन पुस्तकें थीं जिनके खिलाफ संतों के जीवन की जाँच की जानी चाहिए थी, क्योंकि मठ की पुस्तकालय 1718 में पूरी तरह से जल गई थी। सर्वपवित्र सिनॉड ने आर्चिमैंड्राइट को इन पुस्तकों की एक सूची संकलित करने और भेजने का आदेश दिया, इस शर्त पर कि वे मास्को में, या तो सिनॉडल पुस्तकालय में या मुद्रण गृह की पुस्तकालयों में मिल जाएँगी। हालाँकि, यह सूची कभी संकलित नहीं की गई।

इस बीच, पवित्र सिनिड और विदेश मामलों के बोर्ड को मोंटेनेग्रो के मेट्रोपॉलिटन से 'मिनेई-चेतिये' के प्रकाशन में तेजी लाने का अनुरोध मिला। मेट्रोपॉलिटन ने लिखा, 'चूंकि सिर्बियाई, बुल्गारियाई, डलमाटियाई और क्रोएशियाई लोग सभी ऐसे पुस्तकों को प्राप्त करने की सच्ची इच्छा रखते हैं, लेकिन उन्हें प्राप्त करने के लिए कहीं कोई जगह नहीं है।' इस इच्छा को पूरा करने के लिए, पवित्र सिनिड ने स्वयं मेनाइया-चेतिया प्रकाशित करने का निर्णय लिया और इसका संशोधन नोवगोरोड थियोलॉजिकल सेमिनरी के रेक्टर, आर्चिमैंड्राइट जोआसाफ मिटकेविच को सौंपा, जो उस समय सेंट पीटर्सबर्ग में रह रहे थे। (बाद में बेलोग्राद के बिशप) और हिएरोडीकन निकोडेमस पुचेन्कोव, अलेक्जेंडर नेवस्की सेमिनरी के रेक्टर। उनकी सहायता के लिए, विभिन्न शैक्षिक और ऐतिहासिक कृतियों के अलावा, उन्हें हायरमोंक स्टीफन प्रिबिलोविच के 'प्रोलॉग्स पर टीका'[30] , कीव लावरा से भेजे गए अंश, और रोस्तोव के मेट्रोपॉलिटन आर्सेनियस की टिप्पणियाँ[31] प्रदान की गईं, जिन्हें उसी समय सेंट डेमेट्रियस का जीवन लिखने का काम सौंपा गया था।

जोआसाफ और निकोडेमस ने 6 नवंबर 1755 को उन्हें सौंजे गए कार्य को पूरा करना शुरू किया और अगले वर्ष, 1756, के अक्टूबर तक अपना काम पूरा कर लिया। उनके संशोधनों में लिटिल रूसी शब्दों को स्लावोनिक-रूसी शब्दों से बदलना, साधारण भाषा को अधिक उत्कृष्ट शैली से प्रतिस्थापित करना, और कुछ अभिव्यक्तियों और यहां तक कि पूरे अंशों को पूरी तरह से छोड़ देना शामिल था। इन संशोधनों के अलावा, *मिनेई-चेती* में 'महान रूसी व्याकरण के अनुसार - स्लावोनिक बोली की प्रकृति के अनुरूप, शब्दों के क्रम और प्रत्ययों को बदलकर' सुधार करना आवश्यक समझा गया। यह कार्य पूरी तरह से मुद्रणालय के प्रूफरीडरों को सौंपा गया था। 31 दिसंबर 1756 को मॉस्को मुद्रणालय में मुद्रण शुरू हुआ, और 1759 में माइनई-चेतीख का सिनोडल संस्करण प्रकाशित हुआ, जिसे आज तक बिना किसी बदलाव के पुनर्मुद्रित किया जाता रहा है।

परम पवित्र सिनिड के आदेश पर, जोआसाफ और निकोदेमस ने 'मिनेई-चेती' के नए संस्करण के लिए एक विशेष प्रस्तावना रची, जो आज भी मुद्रित होती है। इस प्रस्तावना में, अन्य बातों के अलावा, पाठकों के एक प्रश्न की पूर्वधारणा की गई है: 'क्या किसी के लिए संत डेमेट्रियस के बाद, जो अपनी महान बुद्धि और ज्ञान, अपने जीवन की पवित्रता, और अंत में, अपनी अकथुण्णता और चमत्कारों के लिए प्रसिद्ध थे, कुछ भी संशोधित करना उचित है?' इसके जवाब में, विस्तार से बताया गया है कि 'सबसे पवित्र सिनिड द्वारा उन मेनाइया-चेतिख में संशोधन क्यों किया गया था'। केसरिया के यूसेबियस, साइमियन मेटाफ्रैस्टेस और मेट्रोपॉलिटन मकारियस के कार्यों का संदर्भ देते हुए, प्रस्तावना के लेखक कहते हैं: 'और मसीह के संत डेमेट्रियस, पूरी विनम्रता के साथ, पहले खंड में की गई अपनी चूकों और गलतियों को स्वीकार करते हैं, और उन्हें स्वयं सुधारने के बाद, वह अपनी पुस्तकों में पाए जाने वाले अन्य किसी भी (त्रुटियों) को समीक्षा और सुधार के लिए चर्च के समक्ष प्रस्तुत करते हैं, यह जानते हुए कि किसी भी ऐतिहासिक सत्य को अधिक विश्वसनीय साक्ष्य द्वारा प्रतिस्थापित किया जा सकता है।"

प्रारंभिक ईसाइयों ने संतों के जीवन को पढ़ने का मुख्य उद्देश्य उनके नैतिक और शिक्षाप्रद मूल्य को माना। एक या दूसरे उत्पीड़न के दौरान अपने उत्पीड़कों से आने वाले सभी खतरों और सभी प्रलोभनों का सामना करने के लिए, ईसाइयों ने शहीदों के वृत्तांतों में मिले धैर्य, भक्ति और ईश्वर के प्रति प्रेम के महान उदाहरणों से स्वयं को सुसज्जित और मजबूत किया। एक बार जब उत्पीड़न समाप्त हो गए, तो ईसाइयों ने स्वयं को संतों के जीवन को पढ़ने के लिए भी बड़े उत्साह से समर्पित कर दिया - दुनिया के प्रलोभनों से खुद को बचाने के लिए। संतों के प्राचीन जीवन का आध्यात्मिक और नैतिक लाभ निम्नलिखित शब्दों में जीवंत रूप से दर्शाया गया है: 'यदि ईश्वर की कलीसिया को उनमें लाभ न दिखता,

---

[30] कीव अकादमी में एक शिक्षक, फिर मास्को अकादमी में, और अंत में अलेक्जेंडर नेवस्की लावरा में एक हायरोमोंक।

[31] *अर्सेनी मात्सेविच* (1697–1772) ने 1742 से 1765 तक रोस्तोव के धर्मप्रांत का प्रशासन संभाला।

तो वह उन्हें स्वीकार न करती: क्योंकि वे चालाक झूठों या अलंकारिक फूल-फूलों से नहीं बने हैं, बल्कि उनके शब्द पूरी तरह से सच्चे और विनम्र हैं, जो हृदय को तोड़ने और आत्मा को नरम करने में सक्षम हैं; क्योंकि वे उन लोगों के लिए मीठे और वास्तव में लाभकारी हैं जो वास्तव में मोक्ष की इच्छा रखते हैं।'

प्रारंभिक चर्च में ऐसा ही था, और यहाँ भी ऐसा ही था। पुराने रूसी संतों की जीवनीकारों में से एक हमें बताता है कि रूसी पाठक इन विवरणों में क्या खोजता था। 'संतों के जीवन,' वह कहते हैं, 'आत्मा में ईश्वर का भय उत्पन्न करते हैं, निर्भयता को दूर करते हैं, बुराई को त्यागने और अच्छाई को अपनाने की ओर ले जाते हैं: क्योंकि जो लोग इन जीवन-चरित्रों को देखते हैं, वे अपने कर्मों को समझते हैं और बुरे विचारों को त्यागने का संकल्प लेते हैं; क्योंकि سنتوں का जीवन हमारी आत्माओं के लिए एक प्रकाश और ज्ञानोदय है।' एक प्राचीन रूसी संग्रह में, हमें निम्नलिखित प्रार्थनापूर्ण अपील मिलती है: 'मुझे अपनी अज्ञात और छिपी हुई बुद्धि का ज्ञान प्रदान करें, क्योंकि हे ईश्वर, मैं आप पर भरोसा करता हूँ, ताकि आप अपनी बुद्धिमत्ता के प्रकाश से मेरे मन और विचारों को प्रबुद्ध करें, केवल लिखित का सम्मान करने के लिए नहीं, बल्कि उसे व्यवहार में लाने के लिए भी, ताकि मैं *संतों की* शिक्षाओं और *जीवन को* अपने लिए एक पाप के रूप में न *पढ़ूँ*, बल्कि अपनी आत्मा के नवीनीकरण, प्रबोधन और मोक्ष के लिए, और शाश्वत जीवन में मेरे प्रवेश के लिए।" संत डेमेट्रियस ने देखा कि उनके समय में कई लोग, जागने के बाद, अपनी प्रार्थनाओं के बीच , यह अपना कर्तव्य मानते थे कि वे प्रभु से विनती करें और उस दिन के संत से प्रार्थना करें, और साथ ही उस संत के जीवन की मुख्य घटनाओं को याद करने का प्रयास करते थे, भले ही यह प्रयास प्रस्तावनाओं[32] के संक्षिप्त अंशों से ही क्यों न हो।

वास्तव में, जो लोग आध्यात्मिक शिक्षा और निर्माण की तलाश में हैं, वे संतों के जीवन में अपनी इच्छा को संतुष्ट करने के लिए प्रचुर पोषण पाएंगे। ईश्वर की शक्ति के अनेक प्रकटीकरण—शहीदों के निडर साहस और अजेय धैर्य में, और उन पर तथा उनके माध्यम से हुए चमत्कारों में—सूचनात्मक हैं। इसी तरह, उस दृढ़ विश्वास की शक्ति भी शिक्षाप्रद है, जिसके साथ विश्वास के सिद्धांत को इसके रक्षकों द्वारा समझाया जाता है। शहीदों के मुकदमों में उनके उत्तरों में, विश्वास की सच्चाई का दावा करने वालों की जीवंत आवाज़ सुनाई देती है, जो इसकी दैवीय गरिमा में पूर्ण विश्वास और अपने बलिदान के रक्त से अपनी स्वीकारोक्ति को सील करने की तत्परता के साथ होती है।

विश्वास के स्वीकारकर्त्ता, जिन सत्यों की वे घोषणा करते थे, उनके बचाव में बहुत कम बोलते थे, और वे सरलता से बोलते थे; फिर भी उनके उत्तर इतने ईमानदार, इतने दृढ़ थे, कि केवल सबसे कठोर यातना देने वाले ही उस सत्य को देखने में विफल हो सकते थे जो उनमें से झलकता था।जिस प्रकार चर्च के धर्मपिता और शिक्षकों के लेखों में, संतों के जीवन में और शहादत के वृत्तांतों में, विभिन्न धर्मशास्त्रीय सच्चाइयों की पुष्टि और स्पष्टीकरण तथा झूठी शिक्षाओं का खंडन मिलता है। उन पवित्र धर्मगुरुओं और तपस्वियों के जीवन में, जिन्होंने विधर्मियों के विरुद्ध ऑर्थोडॉक्सी की रक्षा की और कलीसिया की शिक्षाओं के प्रति अपनी निष्ठा के लिए कष्ट सहे, उन सिद्धांतों की एक स्पष्ट व्याख्या भी देखी जा सकती है, जिनके लिए उन्होंने कष्ट सहे, और इन सिद्धांतों के विपरीत त्रुटियों के विरुद्ध एक चेतावनी भी। इस संबंध में, प्रतिमा पूजन के रक्षकों के जीवन और कष्ट विशेष रूप से शिक्षाप्रद हैं।

संतों के जीवन में, एक ईसाई को जीवन में आने वाली विभिन्न कठिनाइयों को हल करने के लिए अक्सर मार्गदर्शन मिल सकता है। इसीलिए बड़े तपस्वियों के पास जीवन की हर असाधारण परिस्थिति के लिए संतों के जीवन से उपयुक्त उदाहरण हमेशा होते हैं। आइए याद करें कि स्वयं प्रभु ने भी, फरीसियों के इस प्रश्न का समाधान करते हुए कि क्या भूखे होने पर सप्तम दिन (शब्बाथ) पर अनाज तोड़ा जा सकता है, दाऊद के उदाहरण की ओर इशारा किया था। इससे यह स्पष्ट होता है कि जब भी कानून में स्पष्ट रूप से निर्दिष्ट नहीं किए गए किसी कार्य की अनुमति या अस्वीकृति के बारे में कोई संदेह हो, तो कोई भी पवित्र पुरुषों के उदाहरणों से मार्गदर्शन ले सकता है।

सामान्य रूप से, संतों का जीवन एक ऐसा अथाह खजाना है जिससे हर कोई आध्यात्मिक जीवन में सफल होने के लिए आवश्यक सब कुछ प्राप्त कर सकता है।

'संतों के जीवन की पुस्तकें,' जैसा कि 'मिने-चेतिया' की प्रस्तावना में कहा गया है, 'आपको, हे धर्मनिष्ठ पाठक, आपकी आत्मा के लाभ के लिए प्रस्तुत की जाती हैं; अब जो आवश्यक है वह केवल उत्साह और उन्हें पढ़ने की इच्छा

---

[32] संयोग से, इस परिस्थिति ने संत डेमेट्रियस को **शहीदों का संक्षिप्त जीवन** नामक एक नया कार्य शुरू करने के लिए प्रेरित किया। इसके प्रस्तावना में, वे लिखते हैं: 'विभिन्न स्रोतों से संतों के जीवन को संक्षेप में तीन-तीन महीने की अवधि में चार पुस्तकों में संकलित करने के बाद, हमने इस छोटे से खंड में मासिक कैलेंडर के अनुसार व्यवस्थित एक और भी संक्षिप्त संस्करण संकलित करने और प्राचीन रीति के अनुसार इसे *मार्टायरोलॉजी* नाम देने का संकल्प लिया।' अज्ञात कारणों से, इस कार्य को बिल्कुल शुरुआत में ही छोड़ दिया गया था।

है, और जब आप उन्हें पढ़ेंगे, तो आप ईश्वर की बुद्धि और महानता पर आश्चर्यचकित और श्रद्धावनत हुए बिना नहीं रह सकते। क्योंकि आप देखेंगे कि उसने मानवता के सामने अपनी महिमा तक ले जाने वाले कितने विविध मार्ग निर्धारित किए हैं। हर पद और वर्ग के लोग इन पुस्तकों में अपने लिए पर्याप्त उदाहरण पाएंगे: सर्वोच्च अधिकारी अपने जैसे ईश्वर के अभिषिक्त लोगों को पाएंगे, जिन्होंने दया और सत्य से अपने राज्यों पर शासन किया, मसीह की कलीसिया की रक्षा की और उसे विकसित किया; मसीह की कलीसिया के चरवाहे – महान कलीसिया के पिता और संत, जिन्होंने अच्छी तरह से चरवाहा किया और विश्वास के लिए संघर्ष किया, और अब प्रधान चरवाहे के साथ आनंदित हैं; जो एकांत जीवन को चुनने वाले थे – तपस्वी, प्रार्थना करने वाले पुरुष, स्वैच्छिक शहीद और अन्य जिन्होंने कठिनाइयों के माध्यम से स्वर्ग के राज्य को प्राप्त किया और अब उसकी आनंद में आनंदित होते हैं; कमांडर और सैनिक – वे योद्धा जिन्होंने सांसारिक राजाओं की सेवा करते हुए स्वर्गीय राजा की भी सेवा की, और जिन्होंने शारीरिक शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने के बाद, आत्मा के शत्रुओं पर भी विजय प्राप्त की, और अब मसीह, जो उनके संघर्षों के कर्ता हैं, के साथ आनंदित होते हैं; न्यायाधीश और नागरिक मजिस्ट्रेट – जो न्याय से प्रेम करते हैं और अदालत में दया दिखाने में गर्व महसूस करते हैं, न तो रिश्वत लेते हैं और न ही पक्षपात करते हैं, बल्कि अनाथ और गरीब दोनों को समान रूप से न्याय देते हैं; व्यापारी – न तो सूदखोर और न ही अनुचित साधनों से लाभ कमाने के इच्छुक, बल्कि वे जिन्होंने धार्मिक साधनों से स्वर्ग के राज्य को खरीदा है; साधारण लोग – वे जो, उनकी तरह, आत्मा की धार्मिकता, निष्कलंक परिश्रम और ईसाई सद्गुणों का जीवन जिए, और एक ऐसी जगह पर पहुँचे हैं जहाँ बहुत से लोग अपनी सारी महिमा और वैभव के साथ भी नहीं पहुँचते। अब बस इतना ही बाकी है कि हर कोई उनके उदाहरण का पालन करे और उनके द्वारा निर्धारित मार्ग पर चले'।

जनवरी

1 जनवरी

19 दिसंबर (पुराना तरीका)

शहीद संत बोनफेस का कष्टकर्म

19 दिसंबर को स्मरण किया जाता है

एक समय रोम में अग्लाइडा नाम की एक महिला रहती थी; उसके पिता, अक्काकियोस, कभी शहर के राज्यपाल रहे थे। युवा और सुंदर होने, माता-पिता से विरासत में मिली विशाल संपत्ति की मालिक होने, और एक वैध पति के बिना स्वतंत्रता का जीवन जीने के कारण, वह अपनी दुर्बल देह की कामनाओं के वश में होकर, व्यभिचार और पाप में अपने दिन बिताती थी। उसके पास एक वफादार नौकर था जो उसके घर और संपत्तियों का प्रबंधन करता था; वह जवान और सुंदर था। उसका नाम वोनफिटियस था, और अग्लाइडा उसके साथ एक अवैध संबंध में रहती थी, अपनी कामुक इच्छाओं को पूरा करती थी। और इस बारे में बात करने में कोई शर्म नहीं है, क्योंकि आगे जो विवरण दिया गया है, वह उनके जीवन के धन्य और अद्भुत परिवर्तन से संबंधित है; क्योंकि जब संतों की प्रशंसा की जाती है, तो उनके पिछले पापों को नहीं छिपाया जाता, ताकि यह दिखाया जा सके कि वे सभी अपने युवा दिनों से धन्य और धर्मी नहीं थे, बल्कि, दूसरों की तरह, उनका शरीर भी नश्वर था; फिर भी सच्ची पश्चाताप के माध्यम से, उनके भीतर बेहतर के लिए एक परिवर्तन और महान सद्गुणों के कारण, वे अपनी पवित्रता के लिए प्रसिद्ध हुए। यह संतों के जीवनचरित में इसलिए वर्णित है ताकि हम भी, पापियों के रूप में, निराश न हों, बल्कि बिना देरी के सुधार करने के लिए तत्पर हों, यह जानते हुए कि ईश्वर की मदद से और पाप करने के बाद भी, पवित्र बनना संभव है, बशर्ते कि हम स्वयं इसकी इच्छा करें और इसके लिए प्रयास करें। और वास्तव में, वह हृदय-प्रसन्न करने वाला वृत्तांत कितना अद्भुत है, जिसमें हम सुनते हैं कि एक पापी, जिसे मोक्ष की कोई आशा नहीं थी, वह सभी अपेक्षाओं से परे, एक संत और उससे भी बढ़कर, संत बोनफेस की तरह मसीह के लिए एक

शहीद बन जाता है, जो अपने व्यभिचारी जीवन के दौरान पाप का दास था, लेकिन बाद में एक कन्फेशर बन गया, एक पराक्रमी तपस्वी और मसीह के लिए एक गौरवशाली पीड़ित। अपने पतित जीवन के दौरान, बोनफेस पाप का दास था; फिर भी उसमें कुछ प्रशंसनीय गुण थे: वह गरीबों पर दयालु था, यात्रियों के प्रति स्नेही था, और दुर्भाग्य में पड़े सभी लोगों के प्रति संवेदनशील था; कुछ को उसने उदारतापूर्वक दान दिया, दूसरों को प्रेम से सांत्वना दी, और अन्य को करुणा से सहायता प्रदान की। सुधार की दृढ़ इच्छा रखते हुए, बोनफिस अक्सर ईश्वर से प्रार्थना करते थे कि वह उन्हें शैतान की चालों से बचाए और उन्हें अपनी इच्छाओं और जुनून पर काबू पाने में मदद करे। और प्रभु ने अपने सेवक को तुच्छ नहीं जाना, और न ही उसे पाप की गंदगी में और भी गहरे डूबने दिया, बल्कि उन्होंने ऐसा प्रबंध किया कि उसके अपवित्र कर्म उसके ही रक्त के बहाए जाने से धो दिए जाएँ; और इसी कृत्य के द्वारा, उसकी आत्मा, मानो एक शाही बैंगनी चोगा बन गई और शहीद के मुकुट से विभूषित हुई। यह इस प्रकार हुआ।

उस समय ईसाइयों पर कठोर उत्पीड़न हो रहा था; मूर्तिपूजक अंधकार ने पूरे पूर्व को ढक लिया था, और कई विश्वासियों को मसीह के लिए यातनाएँ दी गईं और मृत्युदंड दिया गया। लेडी बोनफिस अग्लाइडा को एक उदधारकारी विचार और अपने घर में शहीद के अवशेष रखने की एक प्रबल, अदम्य इच्छा हुई। चूंकि बोनफिस से अधिक वफादार या अधिक परिश्रमी कोई नौकर नहीं था, इसलिए उन्होंने उसे बुलाया, अपनी इच्छा उसे बताई, और निजी तौर पर कहा:

'हे मसीह में मेरे भाइयो, तुम स्वयं जानते हो कि हम अपने पापों से कितने कलंकित हो गए हैं, और आने वाले जीवन तथा अपनी मुक्ति की हमें कोई परवाह नहीं है; तो फिर हम परमेश्वर के भयानक न्याय के समक्ष कैसे उपस्थित होंगे, जहाँ हमें हमारे कर्मों के अनुसार भयानक यातनाओं की सज़ा दी जाएगी? लेकिन मैंने एक धार्मिक व्यक्ति से सुना है कि यदि कोई मसीह के शहीदों के अवशेषों का स्वामी है और उनका सम्मान करता है, तो उसे मोक्ष की ओर सहायता प्राप्त होती है, और उस व्यक्ति के घर में पाप नहीं बढ़ता, ताकि ऐसा व्यक्ति उस शाश्वत आनंद को भी प्राप्त कर सके जिसके योग्य पवित्र शहीदों को समझा गया था। अब, वे कहते हैं, कि कई लोग मसीह के लिए महान कार्य कर रहे हैं, और अपने शरीर को यातनाओं के हवाले करके, उन्हें शहादत के मुकुट प्राप्त हो रहे हैं। मेरी एक बात मानो: अब समय आ गया है कि तुम मुझे दिखाओ कि तुम मुझसे सचमुच प्रेम करते हो। उन प्रदेशों में शीघ्रता से जाओ जहाँ ईसाइयों पर अत्याचार चरम पर है, और मेरे लिए किसी पवित्र शहीद के अवशेष लाने का प्रयत्न करो, ताकि मैं उन्हें सम्मानपूर्वक अपने घर में स्थापित कर सकूँ, उस शहीद के नाम एक चर्च बना सकूँ, और हमेशा उसे परमेश्वर के सामने अपना रक्षक, संरक्षक और अनवरत मध्यस्थ बना सकूँ।

अगलाइदा की बात सुनकर, बोनफिस खुशी-खुशी उसके प्रस्ताव पर सहमत हो गए और यात्रा पर निकलने के लिए अपनी पूरी तत्परता व्यक्त की। उसकी मालकिन ने उसे बहुत सारा सोना दिया, क्योंकि बिना उपहार और सोने के शहीदों के शरीर प्राप्त करना असंभव था: धर्मद्रोही यातना देने वालों ने, शहीदों की अवशेषों के प्रति ईसाइयों के महान प्रेम और उत्साह को देखकर, उन्हें मुफ्त में नहीं दिया, बल्कि ऊँचे दामों पर बेचा, जिससे उन्होंने अपने लिए एक अच्छी-खासी आय सुनिश्चित की। ओनुप्रियस ने अपनी स्वामिनी से बहुत सारा सोना लिया—कुछ शहीदों की अवशेषों के लिए भुगतान करने के लिए, और कुछ गरीबों को दान देने के लिए—और उसने शहीदों के पवित्र शरीरों को कफ़न देने के लिए आवश्यक सुगंधित धूप, लिनिन के कपड़े और अन्य सभी चीजों की एक बड़ी विविधता भी तैयार की। अपने साथ कई और दास, सहायक और घोड़े लेकर, वह अपनी यात्रा पर निकल पड़ा। जब वह घर से निकल रहा था, तो उसने अपनी रखैल से हँसते हुए कहा:

'और क्या होगा, मेरी मालकिन, अगर मुझे कोई शहीद का शरीर न मिले, और मेरा अपना शरीर, जो मसीह के लिए यातनाओं से ग्रस्त हो, तुम्हारे पास लाया जाए—तो क्या तुम उसे सम्मान के साथ स्वीकार करोगी?'

अगलाइडा हँसते हुए उसे शराबी और पापी कहकर डाँटते हुए बोली:

'अब उपहास का समय नहीं है, मेरे भाई, बल्कि श्रद्धा का समय है। आपको अपनी यात्रा के दौरान सभी दुराचार और उपहास से सावधानीपूर्वक खुद को बचाना होगा: एक पवित्र कार्य को सम्मानपूर्वक और शिष्टता से किया जाना चाहिए, और इस यात्रा पर आपको विनम्र और संयमी रहना होगा; याद रखें कि आप पवित्र अवशेषों की सेवा करने वाले हैं, जिन्हें हम न केवल छूने, बल्कि देखने के भी लायक नहीं हैं। शांति से जाओ; ईश्वर, जिसने एक सेवक का रूप धारण किया और हमारे लिए अपना रक्त बहाया, हमारे पापों को क्षमा करे और अपना स्वर्गदूत तुम्हारे पास भेजे, जो तुम्हें एक अच्छे और सुरक्षित मार्ग पर मार्गदर्शन करे।

बोनफिस ने अपनी मालकनि की बात को दलि पर लयिा और अपने सफर पर नकिल पड़ा, यह सोचते हुए कि उसे अपने अपवत्रि, पापी हाथों से क्या छूना होगा। बोनफिस अपने अतीत के पापों पर शोक करने लगा और उपवास करने का संकल्प लयिा: न मांस खाना, न शराब पीना, बल्कि ईमानदारी से और बार-बार प्रार्थना करना, ताकि वह ईश्वर के भय को प्राप्त कर सके। अब, भय ही सतर्कता का पिता है, और सतर्कता ही आंतरकि शांति की माता है, जिससे पश्चाताप की शुरुआत और जड़ उत्पन्न होती है। इस प्रकार, बोनफिस ने अपने भीतर पश्चाताप की जड़ लगाई; ईश्वर के भय, आत्म-परीक्षण और अखंड प्रार्थना से शुरुआत करते हुए, उन्होंने अपने भीतर पूर्णता के जीवन की इच्छा को वकिसति कयिा।

जब बोनोफेस एशयिा माइनर पहुँचे और प्रसद्धि सलिसियिाई शहर तारसस में प्रवेश कयिा[33] , तब सम्राट डायोक्लेटयिन और उनके सह-शासक मैक्समियिन के अधीन ईसाइयों का एक भयंकर उत्पीड़न चल रहा था, और वशि्वासयिों को कठोर यातनाएँ दी जा रही थीं। अपनी नौकरों को सराय में छोड़कर, उसने उन्हें वशि्राम करने का आदेश दयिा, जबकि वह स्वयं बनिा वशि्राम कएि तुरंत शहीदों के दुखों का साक्षी बनने चला गया, जनिके बारे में उसने पहले सुना था। यातना स्थल पर पहुँचने पर, बोनफास ने देखा कि ईसाइयों पर दी जा रही यातनाएँ देखने के लएि एक बड़ी भीड़ इकट्ठी हो चुकी थी। उन पर सभी एक ही अपराध का आरोप लगाया गया था: ईसाई धर्म और एक पवत्रि जीवन; फरि भी उन पर कएि गए यातनाएं ववििधि और असमान थीं: एक को उल्टा लटकाया गया था, जबकि उसके नीचे जमीन पर आग जल रही थी, एक को चार खंभों से क्रूस के आकार में बांधा गया था; एक का शरीर आरी से दो हस्सिों में काटा हुआ पड़ा था; कुछ को उनके अत्याचारयिों ने तेज औजारों से खुरोचा था; एक की आँखें नकिाल दी गई थीं; एक के अंग काट दएि गए थे; एक को खंभे पर ठोंका गया और, जमीन से ऊपर उठाए जाने के बाद, खंभे को जमीन में इस तरह ठोक दयिा गया कि वह उसकी गर्दन तक पहुँच गया; एक के हड्डयिाँ तोड़ दी गईं; एक के हाथ-पैर काट दएि गए, और वह एक गेंद की तरह जमीन पर लुढ़कता रहा; फरि भी हर चेहरे पर एक आध्यात्मकि आनंद दखिाई दे रहा था, क्योंकि एक मनुष्य के लएि असहनीय यातनाओं को सहते हुए, वे ईश्वर की कृपा से मजबूत हो गए थे। धन्य बोनोफेस यह सब ध्यान से देख रहे थे, कभी शहीदों के बहादुरी भरे धैर्य पर आश्चर्य करते हुए, तो कभी अपने लएि भी ऐसे ही मुकुट की लालसा करते हुए; फरि, दव्यि उत्साह से भरकर और उस स्थान के बीच में खड़े होकर, उन्होंने उन सभी को गले लगाना शुरू कर दयिा जन्हिोंने स्वयं को शहीद घोषति कयिा था—उनमें पहले से ही लगभग बीस लोग थे—और, इतनी ऊँची आवाज़ में कि सब सुन सकें, उन्होंने उद्घोष कयिा:

'महान है ईसाई ईश्वर! महान हैं वे, क्योंकि वे अपने सेवकों की सहायता करते हैं और इतनी बड़ी यातनाओं में उन्हें बल देते हैं!'

यह कहने के बाद, उन्होंने एक बार फरि शहीदों को चूमना और स्नेह से उनके पैरों को चूमना शुरू कर दयिा; और जनिके पैर नहीं थे, उन्होंने उनके शरीर के शेष अंगों को चूमा। जब वह शहीदों को गले लगाते, तो उन्हें अपनी छाती से लगा लेते, और उन्हें 'धन्य' कहते, क्योंकि उन्होंने बहादुरी से अपने संक्षप्ति कष्टों को सहन कयिा था, वे तुरंत शाश्वत वशि्राम, सांत्वना और अनंत आनंद प्राप्त करेंगे; उसी समय, बोनफेस ने अपने लएि भी प्रार्थना की, कि वह भी ऐसे पराक्रम में शहीदों का साथी और पराक्रमों के दाता – मसीह – से प्राप्त होने वाले मुकुट का सहभागी बन सके। सारी भीड़ ने उसकी ओर देखा, वशिेष रूप से उस न्यायाधीश ने जो पवत्रि शहीदों को यातना दे रहा था। अपने सामने बोनफास के रूप में एक अजनबी और अज्ञात व्यक्ति को देखकर, उसने पूछा: वह कौन था और कहाँ से आया था? और तुरंत उसे पकड़कर अपने सामने लाने का आदेश देकर, उसने पूछा:

'तुम कौन हो?'

'एक ईसाई!' संत ने उत्तर दयिा।

लेकनि न्यायाधीश उसका नाम और वह कहाँ से आया था, यह जानना चाहता था। जवाब में, संत ने कहा:

'मेरा पहला और सबसे प्रयि नाम ईसाई है; मैं रोम से यहाँ आया हूँ, और यदि आप मेरे माता-पिता द्वारा दएि गए नाम को जानना चाहते हैं, तो मुझे बोनफेस कहा जाता है।'

---

[33] सलिसियिा – एशयिा माइनर का एक दक्षणि-पूर्वी रोमन प्रांत। – तारस – इस प्रांत का एक बड़ा और घनी आबादी वाला शहर, जो इसके दक्षणिी भाग में, सडिनस नदी के कनिारे एक उपजाऊ मैदान पर स्थति है, जो शहर से बहुत दूर नहीं भूमध्य सागर में मलिती है – आज भी एक काफी महत्वपूर्ण व्यापारकि केंद्र बना हुआ है।

न्यायाधीश ने कहा, 'तो फरि, बोनफिेस, हमारे देवताओं की पूजा करो, इससे पहले कि मैं तुम्हारे मांस-पेशियों और हड्डियों को चीर-फाड़ कर उनका बलदिान चढ़ा दूँ। तब तुम्हें कई आशीर्वाद मलिेंगे, तुम देवताओं को प्रसन्न करोगे, तुम्हें उन यातनाओं से बचा लयिा जाएगा जो तुम्हारे सरि पर मंडरा रही हैं, और तुम हमें से कई उपहार प्राप्त करोगे।'

इसके जवाब में, वोनफितउिस ने कहा:

'मुझे तुम्हारे शब्दों का जवाब भी नहीं देना चाहएि, लेकनि मैं एक बार फरि वही कहूँगा जो मैं कई बार कह चुका हूँ: मैं एक ईसाई हूँ, और तुम मुझसे बस यही सुनोगे; और अगर तुम यह सुनना नहीं चाहते, तो मेरी जो इच्छा हो, सो करो!'

जैसे ही बोनफास ने ये शब्द कहे, न्यायाधीश ने तुरंत आदेश दयिा कि उसे नग्न कर दयिा जाए, उल्टा लटका दयिा जाए और बुरी तरह कोड़ा मारा जाए। और संत को इतनी बुरी तरह कोड़ा मारा गया कि उनके शरीर से मांस के पूरे टुकड़े गरि गए, जसिसे उनकी हड्डयिाँ नंगी हो गईं। हालाँकि, जैसे कि उसे कोई दर्द महसूस नहीं हो रहा था और उसे लग रहे घावों की कोई परवाह नहीं थी, उसने अपनी नगिाह केवल पवत्रि शहीदों पर टकिा रखी, उनके दुख में अपने लिए एक उदाहरण देखा और इस तथ्य में सांत्वना ली कि उसे भी उनके साथ मसीह के लिए पीड़ा सहने योग्य समझा गया था। फरि यातना देने वाले ने आदेश दयिा कि उसकी यातना को थोड़ा कम कयिा जाए और, एक बार फरि शब्दों से उसे मनाने का प्रयास करते हुए, कहा:

'बोनोफ़ेस, तुम्हारे इस यातना के आरंभ को तुम्हारे लिए एक चेतावनी समझो कि तुम्हें कौन सा मार्ग चुनना चाहएि: तुमने अब तक असहनीय पीड़ा सह ली है; होश में आओ, हे नीच, और अपनी बलदिान अर्पति करो, अन्यथा तुम्हें तुरंत और भी अधकि और अधकि कष्टदायक यातनाओं का सामना करना पड़ेगा।'

संत ने उत्तर दयिा:

'हे पागल! तुम मुझसे ऐसा अश्लील काम करने का आदेश क्यों देते हो! मैं तो तुम्हारे देवताओं का नाम सुनना भी बर्दाश्त नहीं कर सकता, फरि भी तुम मुझसे उनके लिए बलदिान करने को कहते हो!'

तब न्यायाधीश ने बड़े क्रोध में आदेश दयिा कि उसके हाथों और पैरों के नाखूनों के नीचे तेज सुइयाँ घुसा दी जाएँ, लेकनि संत ने अपनी दृष्टि और मन स्वर्ग की ओर उठाकर इसे मौन रूप से सह लयिा। तब न्यायाधीश ने एक नया यातना-तरीका सोचा: उसने टनि पघिलाकर संत के मुँह में डालने का आदेश दयिा। जब टनि पघिलाया जा रहा था, संत ने अपने हाथ स्वर्ग की ओर उठाकर प्रार्थना की:

'हे प्रभु मेरे ईश्वर, यीशु मसीह, जन्हिोंने मुझे सहनी पड़ी यातनाओं में बल दयिा है, अब मेरे साथ रहो, और मेरे दुख को कम करो। आप ही मेरा एकमात्र सहारा हैं: तो मुझे एक स्पष्ट संकेत दें कि आप मुझे शैतान और इस अन्यायपूर्ण न्यायाधीश पर वजिय प्राप्त करने में मदद कर रहे हैं: आपके लिए, जैसा कि आप स्वयं जानते हैं, मैं कष्ट सह रहा हूँ।

यह प्रार्थना समाप्त करने के बाद, बोनफिेस ने पवत्रि शहीदों से वनिती की कि वे अपनी प्रार्थनाओं के माध्यम से इस भयानक यातना को सहने में उसकी मदद करें। यातना देने वालों ने, उसके पास आकर, लोहे के औजारों से उसका मुँह खोलकर उसके गले में पघिला हुआ सीसा डाल दयिा, लेकनि उन्होंने संत को कोई नुकसान नहीं पहुँचाया। यातना स्थल पर मौजूद लोग, ऐसी क्रूरता देखकर काँप उठे और चल्लिाने लगे:

'महान है ईसाई परमेश्वर! महान है राजा – मसीह! हम सभी आप में वश्विास करते हैं, हे प्रभु!'

इस प्रकार पुकार लगाते हुए, वे सभी नजदीकी मूर्तपिूजक मंदरि पर टूट पड़े, उसे नष्ट करने के इरादे से, जबकि उन्होंने ज़ोर-ज़ोर से न्यायाधीश की नदिा की और उसे मारने की कोशशि में उस पर पत्थर फेंके। न्यायाधीश, न्यायाधीश की कुर्सी से उठकर, शर्म के मारे अपने घर भाग गया, जबकि बोनफिेस ने आदेश दयिा कि उसे पहरे में रखा जाए।

सुबह, जब हंगामा शांत हो गया और लोकप्रयि वद्रिोह थम गया, तो न्यायाधीश फरि से बेंच पर आया और बोनफिेस को बुलाकर उसने मसीह के नाम का अपमान कयिा और जसि तरह मसीह को सूली पर चढ़ाया गया था, उसका मज़ाक उड़ाया। संत, अपने प्रभु के वरिुद्ध की गई अपमानजनक बातों को सहन न कर सके, उन्होंने स्वयं कई ऐसे शब्द कहे जसिसे न्यायाधीश को बहुत क्रोध आया, और उन्होंने नर्जिीव देवताओं का तरिस्कार करते हुए उनकी पूजा करने वालों की अंधाधुंध और मूर्खता की नदिा की; और ऐसा करने से उन्होंने न्यायाधीश को और भी अधकि क्रोधति कर दयिा, जसिने तुरंत एक कड़ाही में पचि (कोयला) गर्म करने और पवत्रि को उसमें फेंकने का आदेश दयिा। लेकनि प्रभु ने अपने सेवक को नहीं छोड़ा: अचानक स्वर्ग से एक स्वर्गदूत उतरा और कड़ाही में शहीद पर पानी छड़िका; और जब तारकोल डाला गया, तो चारों ओर एक प्रचंड आग भड़क उठी, जसिने पास खड़े कई अधर्मी मूर्तपिूजकों को झुलसा दयिा। हालाँकि, संत तारकोल या आग से बल्किुल भी प्रभावति हुए बनिा सुरक्षति बाहर आ गए। तब यातना देने वाले ने मसीह की शक्ति को

देखकर डर गया कि कहीं उसे स्वयं को यातना न झेलनी पड़े, और उसने तुरंत बोनफिस का सिर कलम करने का आदेश दिया। सैनिकों ने शहीद को पकड़ लिया और उसे मृत्युदंड के स्थान पर ले गए। हालाँकि, संत ने प्रार्थना करने के लिए थोड़ा समय मांगा, पूर्व की ओर मुड़े और प्रार्थना की:

'हे प्रभु, हे प्रभु परमेश्वर! मुझ पर अपनी दया करें और मेरा सहायक बनें, ताकि शत्रु, मेरे मूर्खता में किए गए पापों के कारण, स्वर्ग के मेरे मार्ग को न रोक सके, बल्कि मेरी आत्मा को शांति से ग्रहण करें और मुझे उन पवित्र शहीदों में गिनें जिन्होंने आपके लिए अपना रक्त बहाया और अंत तक विश्वास बनाए रखा; और तेरे बहुमूल्य लहू से खरीदी गई भेड़ों के झुंड—हे मसीह, तेरे लोग, जो मुझे प्रिय हैं—को हर बुराई और मूर्तिपूजक भ्रम से बचा, क्योंकि तू धन्य है और सदैव जीवित रहता है!

इस प्रकार प्रार्थना करने के बाद, बोनफेस ने तलवार के नीचे अपना सिर झुकाया और उनका सिर कलम कर दिया गया; उनके घाव से दूध के साथ-साथ खून भी बहा। यह चमत्कार देखकर अविश्वासियों ने तुरंत मसीह की ओर मुंह किया—जिनकी संख्या लगभग 550 लोगों की थी—और अपनी घृणित मूर्तियों को त्यागकर, विश्वासियों में शामिल हो गए। संत बोनफिस की मृत्यु ऐसी ही थी, जिन्होंने अपने घर से निकलते समय अपनी मालकिन से हँसते हुए वह बात कही थी, जिसे उन्होंने वास्तव में करके सिद्ध कर दिखाया: '[34] '।

इस बीच, बोनफिस के मित्र और अग्लाइडा के सेवक, जो अवशेषों की खोज में उनके साथ आए थे, सराय में बैठे थे, उन्हें इस बात का कुछ भी पता नहीं था कि क्या हुआ था, और वे बोनफिस का इंतजार कर रहे थे। जब तक वह शाम तक नहीं लौटा, वे हैरान हो गए; और जब वह पूरी रात और अगली सुबह तक भी नहीं आया, तो उन्होंने उस पर अंदाज़ा लगाना और उसकी बुराई करना शुरू कर दिया (जैसा कि उन्होंने बाद में खुद बताया), यह मानते हुए कि वह कहीं नशे में हो गया होगा और वेश्याओं के साथ अपना समय बिता रहा होगा:

वे हँसते हुए बोले, 'तो हमारे बोनफिस ने इस तरह पवित्र अवशेषों की खोज की है!'

लेकिन जब वह अगली रात या तीसरे दिन भी वापस नहीं आया, तो वे परेशान हो गए और उसके बारे में पता लगाने निकले, पूरे शहर में घूम-घूम कर उसके बारे में पूछते रहे। संयोग से, या यूँ कहें कि ईश्वर की कृपा से, उनकी मुलाकात एक आदमी से हुई जो टीकाकार[35] का भाई था, और उन्होंने उससे पूछा कि क्या उसने यहाँ आए एक यात्री को देखा है। उसने जवाब दिया कि कल एक विदेशी व्यक्ति को, जिसने यातना स्थल पर मसीह के लिए कष्ट सहे थे, मृत्युदंड सुनाया गया था और तलवार से उसका सिर कलम कर दिया गया था।

उसने कहा, 'मुझे नहीं पता, क्या वही है जिसे आप ढूंढ रहे हैं? मुझे बताइए, वह कैसा दिखता है?'

उन्होंने बोनफिस के हुलिया का वर्णन किया—कि वह कद में छोटा था और उसके बाल लाल थे—और उसके चेहरे की अन्य विशिष्ट विशेषताओं का भी उल्लेख किया। फिर उस आदमी ने उनसे कहा:

'निश्चित रूप से यही वह व्यक्ति है जिसे आप ढूंढ रहे हैं!'

लेकिन उन्होंने उस पर विश्वास नहीं किया, कहते हुए:

'तुम उस आदमी को नहीं जानते जिसे हम ढूंढ रहे हैं।'

और, जैसे ही वे आपस में बात कर रहे थे, उन्होंने वोनफिटियस के पूर्व चरित्र को याद किया, उसका तिरस्कार किया और कहा:

'निश्चय ही कोई शराबी और व्यभिचारी मसीह के लिए कष्ट नहीं सहता?!'

लेकिन टिप्पणीकार का भाई अपनी बात पर अड़ा रहा।

उसने कहा, 'बाहरी तौर पर, कल और परसों सचमुच तुम्हारे बताए हुलिया के एक आदमी को अदालत में यातना दी गई थी, लेकिन तुम्हें क्या रोक रहा है? जाओ और खुद देखो उसका शव वहीं पड़ा है जहाँ उसका सिर कलम किया गया था।'

वे उस आदमी का पीछा करते हुए शहादत स्थल पर पहुँचे, जहाँ शहीदों के शवों को ईसाइयों द्वारा चुराए जाने से रोकने के लिए एक सैन्य गार्ड तैनात था। रास्ता दिखाने वाले आदमी ने वहाँ पड़े सिर कलम किए हुए शहीद की ओर इशारा किया और कहा:

'क्या यह वही नहीं है जिसे आप ढूंढ रहे हैं?'

---

[34] शहीद संत बोनफेस ने 19 दिसंबर 290 को कष्ट सहे और मृत्यु को प्राप्त हुए।

[35] कमेंटरी (commentarii) के कार्यालय और कर्तव्यों के लिए, पृष्ठ 987, टिप्पणी 1 देखें।

जब उन्होंने शहीद का शरीर देखा, तो वे तुरंत अपने दोस्त को पहचानने लगे; और जब उसका सिर, जो अलग पड़ा था, उसके धड़ पर रखा गया, तो वे पूरी तरह से यकीन कर गए कि वह बोनफिस ही था, और वे बहुत हैरान रह गए; उसी समय, उन्हें शर्म भी आने लगी, क्योंकि उन्होंने उसके बारे में बुरा सोचा और बुरा कहा था, और उन्हें डर सताने लगा कि संत को दोषी ठहराने और उनके जीवन का मज़ाक उड़ाने के लिए, उनके दिल के विचारों और नेक इरादों को जाने बिना, उन पर दंड आ सकता है।

जब वे संत के चेहरे को निहार रहे थे और अत्यंत आश्चर्य से भर गए थे, तो उन्होंने अचानक देखा कि बोनफिस धीरे-धीरे अपनी आँखें खोल रहे थे और उन पर स्नेह से नज़र डाल रहे थे, मानो वे उनके मित्र हों; उनके होंठों पर मुस्कान थी, और उनका चेहरा दीप्तिमान था, मानो यह दिखाने के लिए कि वह उनके द्वारा की गई सभी गलतियों को माफ कर रहे थे।

वे भयभीत भी थे और अत्यंत प्रसन्न भी, और गर्म आँसू बहाते हुए, वे उनके लिए रोए, कहते हुए:

'मसीह के सेवक, हमारे पापों को क्षमा करें, क्योंकि हमने अन्यायपूर्वक आपके जीवन को दोषी ठहराया और जल्दबाजी में आपको अपमानित किया!'

तब उन्होंने उन दुष्ट लोगों को 500 सोने के सिक्के दे दिए और संत बोनफिस का शरीर और सिर ले लिया; उन्हें सुगंधित इत्रों से अभ्यंग करके, उन्हें साफ-सुथले कफ़न में लपेटा और, एक अवशेष-पात्र में रखकर, शहीद का शरीर अपनी मालकिन के पास ले जाने के लिए घर के लिए रवाना हो गए। जैसे ही वे रोम के पास पहुँचे, ईश्वर के एक स्वर्गदूत अग्लाइडा को एक सपने में दिखाई दिए और कहा:

'उसका स्वागत करने के लिए तैयार हो जाओ जो कभी तुम्हारा सेवक था लेकिन अब हमारा भाई और सहकर्मी बन गया है; उसको ग्रहण करो जो तुम्हारा दास था लेकिन अब तुम्हारा स्वामी होगा, और उसका सम्मान करो, क्योंकि वह तुम्हारी आत्मा का रक्षक और तुम्हारे जीवन का संरक्षक है।'

जब वह जागी, तो वह विस्मय से भर गई; तुरंत ही अपने साथ कई सम्मानित पुरोहितों को लेकर, वह पवित्र शहीद बोनफेस से मिलने के लिए बाहर निकली, जिसे उसने पहले एक दास के रूप में विदा किया था, और उनके लौटने पर उसने उन्हें अपने घर में आँसुओं के साथ, सम्मानपूर्वक, अपने स्वामी के रूप में स्वागत किया। और उसे वह भविष्यवाणी याद आई जो संत ने अपनी यात्रा पर निकलते समय कही थी, और उसने ईश्वर का धन्यवाद किया, जिन्होंने ऐसा प्रबंध किया था कि संत बोनोफेस, अपने और उसके पापों के लिए, ईश्वर को प्रसन्न करने वाला बलिदान बन गए। रोम से 50 स्टेडियम दूर स्थित अपनी संपत्ति पर[36] , अगलाइडा ने पवित्र शहीद बोनफेस के सम्मान में एक अद्भुत चर्च बनवाया, और शहीद की मध्यस्थता से कई चमत्कार होने के बाद, उसमें उनके पवित्र अवशेष रख दिए: अनगिनत तरीकों से बीमारों को ठीक किया गया, लोगों से दुष्ट आत्माओं को निकाला गया, और संत की कब्र पर प्रार्थना करने वाले कई लोगों की प्रार्थनाएँ स्वीकार हुईं।

बाद में, धन्य अग्लाइडा ने स्वयं अपनी सारी संपत्ति गरीबों और ज़रूरतमंदों में बाँट दी और संसार का त्याग कर दिया; और, गहरे पश्चाताप में अगले 18 वर्ष जीने के बाद, वह शांतिपूर्वक निधन कर गईं और पवित्र शहीद बोनफेस से पुनर्मिलन को प्राप्त हुईं, तथा उनके मकबरे के पास दफनाई गईं[37] ।

इस प्रकार, संतों के इस जोड़े ने, अपने पूर्व जीवन को चमत्कारिक रूप से बदलकर, एक धन्य अंत प्राप्त किया: एक, अपने रक्त से अपने पाप धोकर, शहीद के मुकुट का योग्य समझा गया, जबकि दूसरे ने, आँसुओं और संयम के जीवन के द्वारा, स्वयं को सांसारिक कलंक से शुद्ध किया; और दोनों प्रभु यीशु मसीह के सामने धर्मी और निर्दोष पाए गए, जिसकी महिमा युगानुयुग होती रहे। आमीन।

---

[36] स्टेडियम लंबाई की एक इकाई है जो 88 फathom के बराबर होती है; परिणामस्वरूप, 50 स्टेडियम लगभग 9 वर्स्ट से थोड़ा कम हैं। सेंट बोनफेस का सिर बाद में वर्ष 1200 में रूसी तीर्थयात्री एंथनी द्वारा कॉन्स्टेंटिनोपल में देखा गया था। रोम में सेंट बोनफेस के चर्च के ऊपर, जो उनके लिए अग्लाइडा द्वारा बनाया गया था, बाद में सेंट एलेक्सियस, जो ईश्वर के एक पुरुष थे, को समर्पित एक अधिक विशाल चर्च का निर्माण किया गया; अवशेषों को निचले चर्च से नए ऊपरी चर्च में स्थानांतरित कर दिया गया, जिसकी सैक्रीस्टी में अब उनके पूजनीय सिर अलग-अलग रखे गए हैं।

[37] माउंट अथोस के मठाधीश निकोडेमस द्वारा लिखित पवित्र शहीदों के रोमन कृत्यों और ग्रीक सिनैक्सारियन के अनुसार, अग्लाइडा को उसके पराक्रमी कार्यों के बाद चमत्कार करने और दुष्ट आत्माओं को भगाने का वरदान भी मिला; उसे संतों में गिना जाता है, और उसका पर्व पवित्र शहीद बोनफिस के पर्व के साथ मनाया जाता है।

संत बोनफिेस दयालु, फेरेंटयिम के बशिप का जीवन

19 दसिंबर को स्मरणोत्सव

संत बोनफेस[38] इटली के टस्कन क्षेत्र[39] के मूल नविासी थे। बचपन से ही वह गरीबों के प्रतअिपने प्रेम के लिए प्रसद्धि थे; जब भी वह कसिी को नग्न देखते, तो अपने कपड़े उतारकर उस नग्न व्यक्तकिो पहना देते थे, जसिके कारण कभी-कभी वह बनिा चोगा[40] के घर आते थे, और उनकी माँ, जो स्वयं एक गरीब वधिवा थीं, अक्सर उन पर क्रोधति होतीं और कहतीं:

'तुम यह व्यर्थ कर रहे हो, स्वयं गरीब होते हुए गरीबों को कपड़े पहना रहे हो।'

एक दनि वह अपने अनाज के भंडार में गई, जहाँ पूरे साल के लिए रोटी रखी गई थी, और पाया कवि वह खाली है: उनके बेटे बोनोफ़ेस ने चुपके से वह सब गरीबों को दे दयिा था, और उनकी माँ अपना चेहरा पीटते हुए रोने लगी और चल्लिाने लगी:

'हाय रे मेरी कस्मित! पूरे साल के लिए भोजन कहाँ से लाऊँगी, और अपना तथा अपने परविार का पेट कैसे भरूँगी?'

बोनफिैस उसके पास आया और उसे सांत्वना देने लगा; लेकनि जब, उसके कड़वी रोने के बाद भी, वह अपनी बातों से उसे शांत नहीं कर सका, तो उसने उससे एक पल के लिए अनाजघर से बाहर नकिलने की वनिती की। जब उसकी माँ बाहर चली गईं, तो बोनफिैस ने अनाजघर का दरवाज़ा बंद कयिा, ज़मीन पर गरि पड़ा और ईश्वर से प्रार्थना करने लगा – और तुरंत ही अनाजघर गेहूँ से भर गया। बोनफिैस ने ईश्वर का धन्यवाद कयिा और अपनी माँ को बुलाया; जब उन्होंने अनाज से भरा अनाजघर देखा, तो उनका मन प्रसन्न हुआ और उन्होंने ईश्वर की महमिा की। उस समय से, उसने अपने बेटे को गरीबों को अपनी इच्छानुसार देने से फरि कभी नहीं रोका, क्योंकि उसने उसमें इतना बड़ा वश्विास देखा कि वह दान देकर गरीब नहीं होता था और जो कुछ भी वह स्वयं ईश्वर से माँगता था, उसे प्राप्त कर लेता था। बोनफिेस की माँ अपने घर में मुर्गयिाँ पालती थी, जन्हिें एक लोमड़ी चुरा ले जाती थी, जसिसे उस गरीब वधिवा को नुकसान होता था। एक दनि, युवा बोनफिेस अपने दरवाज़े पर खड़ा था, उसने हमेशा की तरह लोमड़ी को आते, एक पक्षी को झपटते और पहाड़यिों में भागते हुए देखा। अपनी माँ की पीड़ा से दुखी होकर, वह चर्च की ओर भागा, ज़मीन पर गरि पड़ा और प्रार्थना में, लोमड़ी के बारे में ईश्वर से शकिायत करते हुए कहा:

'हे प्रभु, क्या यह सचमुच आपकी इच्छा है कि मैं अपनी माँ की मेहनत पर नरि्भर न रह सकूँ? फरि भी, यहाँ एक लोमड़ी आकर हमारा भोजन चुरा लेती है!'

अपनी प्रार्थना के बाद, बोनफिेस घर लौटा और उसने ठीक उसी लोमड़ी को देखा जो उनके आँगन में आई थी, जो अपने मुँह में चोरी कयिा हुआ पक्षी लिए हुए थी; उसने बोनफिेस के सामने पक्षी को जीवति छोड़ दयिा, और फरि तुरंत मर गई। इस प्रकार ईश्वर उन लोगों की सुनते हैं जो छोटे-छोटे मामलों में भी उन पर अपना भरोसा रखते हैं, क्योंकि वे हमारे प्रतमिहान परमप्रबंध रखते हैं, ताकि हम उनसे थोड़ा पाकर भी, यथासंभव और भी अधकि पाने की आशा रख सकें।

बाद में संत बोनफिेस को फेरेंटयिम शहर का बशिप नयिुक्त कयिा गया[41] , और उनके कई चमत्कारों का वर्णन प्रेस्बटिर गैव्डेनयिस द्वारा कयिा गया है, जो संत के सेवक थे और उन्होंने उनके द्वारा कए गए सभी कार्यों को अपनी आँखों से देखा था। फेरेंटयिम का बशिप पद बहुत गरीबी में था, जो धार्मकि लोगों के लिए वनिम्रता की रक्षक के रूप में कार्य करता है; बशिप के पास अपना भरण-पोषण करने के लिए चर्च की कोई संपत्तनिहीं थी, सवािय चर्च के एक दाख की बारी से होने वाली आय के। एक बार ओलावृष्टकिा एक भारी तूफान आया जसिने फल दे रहे सभी अंगूरों की बेलों को नष्ट कर दयिा, जसिसे कुछ बेलों पर केवल कुछ ही गुच्छे बचे। धन्य बोनफिेस ने, दाख की बारी में प्रवेश करने पर, देखा कि सब कुछ नष्ट हो गया था और उन्होंने ईश्वर का धन्यवाद करना शुरू कर दयिा कि, अपनी गरीबी में, वह अब और भी बड़ी दरद्रिता सहन कर रहे थे। जब अंगूर पकने का समय आया, तो बोनफिेस ने, अपने रविाज़ के अनुसार, एक पहरेदार नयिुक्त कयिा और बचे हुए अंगूरों की मँजों की सावधानीपूर्वक रखवाली करने का आदेश दयिा। एक दनि उन्होंने अपने

---

[38] संत बोनफिेस दयालु 6वीं शताब्दी में रहते थे।

[39] टस्कनी – जसिे इट्रूरयिा के नाम से भी जाना जाता है – मध्य इटली का एक प्राचीन क्षेत्र है, जो रोम के उत्तर में टायरनीयन सागर और एपेनाइन पहाड़ों के बीच स्थति है।

[40] कथिॉन एक अंतर्वस्त्र (एक ट्यूनकि) के लिए ग्रीक नाम है; पूर्वी लोगों में, 'स्वति' या 'स्वट्का' एक बाहरी वस्त्र को संदर्भति करता है जो साधारण और मोटा होता है।

[41] फेरेन्टयिम – इटली में प्राचीन एट्रूरयिा का एक शहर, जो अब फेरेन्टो के खंडहर के रूप में जाना जाता है।

पोते, पुरोहति कॉन्स्टेंटयिस को, बशिप के घर में शराब के सभी बर्तन धोने और, रविाज़ के अनुसार, उन पर कोयला लगाने का नर्दिेश दयिा। यह सुनकर, पादरी यह देखकर बहुत हैरान हुआ कि शराब न होने के बावजूद, वह शराब के बर्तनों को तैयार करने का आदेश दे रहा था। यह पूछने की हम्मित न करते हुए कि बर्तनों को क्यों तैयार करने की आवश्यकता है, लेकनि आदेश का पालन करते हुए, उसने सब कुछ रीति के अनुसार कयिा। अनूप्रयिस, दाख की बारी में जाकर अंगूर की कुछ गुच्छयिाँ इकट्ठी करने के बाद, उन्हें शराब की चक्की पर ले गए[42] और सभी को कमरे से बाहर जाने का आदेश दयिा, जबकि वे स्वयं एक लड़के के साथ रुके रहे, जसिे उन्होंने इन कुछ ही गुच्छयिों को शराब की चक्की में नचिोड़ने का नर्दिेश दयिा। जब शराब की प्रेस से शराब धीरे-धीरे बहने लगी, तो संत ने उसे एक पात्र में इकट्ठा कयिा और उसे आशीर्वाद देने के लिए धीरे-धीरे सभी तैयार कए गए जगों में डाल दयिा, शराब को इस तरह बाँटा कि बर्तन मुश्कलि से ही उससे गीले हुए। इस प्रकार, बोनफिेस ने सभी पात्रों को आशीर्वाद दयिा, प्रज़िबाइटर को बुलाया और उसे गरीबों को बुलाने का आदेश दयिा, ताकि, जैसा कि रविाज था, वे आकर पात्रों में रखे नए शराब का कुछ हस्सिा ले सकें। फरि शराब की प्रेस में शराब बढ़ने लगी, जसिसे गरीबों द्वारा लाए गए सभी पात्र भर गए। संत ने यह देखकर कि आए हुए सभी लोगों के लिए पर्याप्त शराब थी, लड़के को शराब की चक्की छोड़ने का आदेश दयिा, शराब के गोदाम को सील कर दयिा, उस पर मुहर लगा दी, और चर्च में चले गए। तीन दनि बाद, बोनफिेस ने पुरोहति कॉन्स्टेंटयिस को बुलाया और प्रार्थना करने के बाद, शराबखाने का दरवाज़ा खोला; वहाँ उन्होंने देखा कि सभी बर्तन और घड़े, जनिमें आशीर्वाद के लिए थोड़ा-थोड़ा करके शराब डाली गई थी, झागदार शराब से लबालब भरे थे, इतना कि वह बाहर बह रही थी कनिारों से ऊपर बह रही थी; यहाँ तक कि जमीन भी शराब से सराबोर हो गई थी, और यदि बिशिप ने तहखाने में प्रवेश करने में थोड़ी भी देरी की होती, तो पूरी जमीन बहती हुई शराब से ढक जाती। जब पादरी ने यह देखकर बहुत आश्चर्य कयिा, तो संत ने उन्हें व्यर्थ मानवीय महमिा के भय और उससे बचते हुए, इस बारे में कसिी से भी बात न करने का आदेश दयिा। एक अन्य अवसर पर, जब पवत्रि शहीद प्रोकलस का पर्व मनाया जा रहा था, उसी शहर का एक कुलीन व्यक्ति, जसिका नाम फॉर्चुनाटस था, ने पवत्रि शहीद की सेवा संपन्न होने के बाद संत बोनफिेस से अपने घर आकर आशीर्वाद देने के लिए कहा; संत ने उसे मना नहीं कयिा, क्योंकि फॉर्चुनाटस ने उससे वश्विास और सच्चे प्रेम से कहा था। बोनफिेस, दव्यि लटिर्जी का अनुष्ठान करने के बाद, भोजन के लिए फॉर्चुनाटस के घर गए। इससे पहले कि वह, अपनी प्रथा के अनुसार, भोजन से पहले प्रार्थना कर पाते, एक मसखरा एक बंदर के साथ दरवाज़े पर आ खड़ा हुआ और झाँझ बजाने लगा[43] । संत, झाँझों की आवाज़ सुनकर, क्रोधति हो गए और कहा:

'हाय, यह दुष्ट आदमी मर गया है, सचमुच मर गया है! मैं भोजन करने आया हूँ और मैंने अभी तक परमेश्वर की प्रथागत स्तुति के लिए अपना मुँह खोलने का समय भी नहीं नकिाला है, जब कि उसने तो पहले ही मुझे बाधति कर दयिा है, एक बंदर के साथ आकर और खड़खड़ियाँ बजाकर!'

उन्होंने आगे कहा:

'जाओ, उसे खाना-पीना दो, पर जान लो कि वह मर चुका है।'

वह दुष्ट आदमी, रोटी और शराब लेकर, फाटक से बाहर जाने ही वाला था, कि अचानक पीछे से एक बड़ा पत्थर गरिकर उसके सरि पर लगा; वह मसखरा जमीन पर गरि पड़ा और आधा-मरा, लोगों की बाहों में अपने घर ले जाया गया, और ठीक अगले ही दनि, जैसा कि संत ने भवष्यिवाणी की थी, उसकी मृत्यु हो गई। इस प्रकार ईश्वर के पवत्रि संतों का आदर और सम्मान करना चाहिए, क्योंकि वे ईश्वर के मंदरि हैं और ईश्वर उनमें वास करते हैं। जब कोई संत क्रोधति होता है, तो उसमें वास करने वाला ईश्वर भी क्रोधति होता है, और फरि वह संत जसिने उसका अपमान कयिा है, उसे एक ही शब्द से दंडति कर सकता है। एक अन्य अवसर पर, वही पादरी कॉन्स्टैंटयिस, जो संत का पोता था, ने अपना घोड़ा बीस सोने के सक्किों में बेच दयिा, और उन्हें एक संदूकच[44] में रखकर अपने काम में लग गया। अचानक, बड़ी संख्या में भखिारी बशिप के पास आए और उन्हें लगातार परेशान करते हुए उनसे कसिी तरह की मदद करने का आग्रह करने लगे। संत के पास देने के लिए कुछ न होने के कारण वे मन ही मन दुखी हुए, क्योंकि वे भखिारयिों को बनिा मदद के वापस नहीं भेजना चाहते थे;

---

[42] टोचलिो – एक गड्ढा जसिमें पके अंगूरों को उनके रस से शराब बनाने के लिए नचिोड़ा जाता था; अंगूरों को या तो एक वशिेष उपकरण का उपयोग करके या बस पैरों से कुचला जाता था।

[43] सबिल – एक प्राचीन ताल वाद्य यंत्र है जो धातु की एक डस्कि से बना होता था, जसिके केंद्र में दाहनि हाथ में बांधने के लिए एक पट्टा या रस्सी लगी होती थी। सबिल को बाएं हाथ में पहने दूसरे सबिल से टकराया जाता था, जसिसे ध्वनि उत्पन्न होती थी।

[44] कैस्कट एक छोटा बक्सा है।

लेकिन कांस्टेंटियस को घोड़े के लिए मिले पैसों को याद करते हुए, वे उस कमरे में गए जहाँ उनका संदूक रखा था, और अपराध-बोध के भाव से उसे आशीर्वाद देकर खोला, सोने के सिक्के निकालकर गरीबों को दे दिए। जब पादरी लौटा और उसने संदूक खुला देखा, और उसमें कोई पैसा नहीं पाया, तो वह बहुत नाराज़ हो गया, उसने बड़ा हंगामा मचा दिया और गुस्से में चिल्लाने लगा:

'मैं यहाँ बिल्कुल नहीं रह सकता!'

उसकी आवाज़ सुनकर बिशप के घर में मौजूद सभी लोग इकट्ठा हो गए; बिशप स्वयं आए और उन्होंने उसे सांत्वना देना शुरू किया, उससे स्नेहपूर्वक बात की। लेकिन उसने संत से चिढ़कर जवाब दिया:

यहाँ सभी लोग अच्छी तरह से जी रहे हैं, लेकिन मेरे पास रहने के लिए कोई जगह नहीं है और मैं शांति से नहीं रह सकता; मुझे मेरा पैसा दे दो और मैं तुम्हें छोड़ दूँगा।

बिशप परम पवित्र ईश्वर माता के चर्च गए, अपना फेलोनियन[45] पहना, और हाथ उठाकर तथा आँखें आकाश की ओर करके प्रार्थना की कि प्रभु उन्हें कहीं से उतने ही सोने के सिक्के भेजें जितने उन्होंने पुरोहित से लिए थे, ताकि वे उन्हें वापस कर सकें और उनका क्रोध शांत कर सकें। प्रार्थना करते समय, संत ने अपनी दृष्टि अपने ऊपर केंद्रित की और देखा कि उनके वक्षस्थल के क्रॉस पर अचानक बीस सोने के सिक्के प्रकट हो गए थे; वे उनके ऊपर उठाए हुए हाथों के बीच पड़े थे, और ऐसे चमक रहे थे मानो अभी-अभी बनाए गए हों और आग से निकाले गए हों। ईश्वर का धन्यवाद करने के बाद, बिशप चर्च से बाहर निकले और उस क्रोधित पादरी के कपड़ों पर पैसे फेंकते हुए कहा:

'लो, यह पैसा ले लो जिसके बारे में तुम शोक मना रहे थे, और यह जान लो कि मेरी मृत्यु के बाद, तुम्हारी कंजूसी के कारण, तुम इस चर्च के बिशप नहीं बनोगे!'

वास्तव में, ठीक वैसा ही हुआ: उस पुरोहित ने बिशप की पदवी हासिल करने के लिए ही पैसे इकट्ठा कर रखे थे, लेकिन ईश्वर के पुरुष द्वारा कहा गया वचन कभी व्यर्थ नहीं जाता, और कॉन्स्टैंटियस ने अपना जीवन एक पुरोहित के पद पर ही समाप्त किया।

एक बार, गोथिया के दो व्यक्ति रावेना शहर[46] की यात्रा कर रहे थे और एक यात्री के रूप में, संत बोनोफ़ेस ने बिशप के आवास में उनका गर्मजोशी से स्वागत किया। जब वे जा रहे थे, तो बोनोफ़ेस ने उन्हें विदा करते हुए स्वयं एक लकड़ी के पात्र में शराब डाली और उन्हें यात्रा के लिए आशीर्वाद के प्रतीक के रूप में दे दिया। पात्र छोटा था, इसलिए वह शराब केवल एक भोजन के लिए ही पर्याप्त थी। वे उसे लेकर चले गए, और जब समय आया, तो उन्होंने इस पात्र से शराब पी; फिर भी पात्र में रखी शराब बिल्कुल भी कम नहीं हुई, और पात्र हमेशा भरा ही रहा। रावेना में कई दिन बिताने के बाद, यात्री लौटे और एक बार फिर संत के पास आए, उन्होंने उनके आशीर्वाद के लिए धन्यवाद दिया, और उसी शराब वाले पात्र को उनके पास लाए, यह बताते हुए कि अपनी पूरी यात्रा के दौरान उन्होंने कहीं और कोई दूसरी शराब नहीं पी थी; फिर भी पात्र में रखी शराब अभी भी खत्म नहीं हुई थी।

और हमें उस देश के एक ईमानदार पुरोहित द्वारा सुनाई गई घटना का उल्लेख करना भी नहीं भूलना चाहिए।

'एक बार,' पुरोहित कहते हैं, 'संत बोनफेस अपनी दाख की बारी में गए और उन्होंने इतनी बड़ी संख्या में कीड़ों को देखा कि पूरी बारी उन से ढकी हुई थी, और सारी पत्तियाँ नष्ट होने वाली थीं। और संत ने कीड़ों से कहा: 'मैं तुम्हें हमारे प्रभु यीशु मसीह के नाम की शपथ दिलाता हूँ, यहाँ से चले जाओ, और फिर इस घास को खाने की हिम्मत मत करना।' और तुरंत ही, ईश्वर के सेवक के वचन पर, कीड़ों का सारा झुंड दाख की बारी से चला गया, और एक भी नहीं बचा।

प्रभु परमेश्वर, जो अपने संतों को महिमा देते हैं और अपने भयकर्ताओं की इच्छाओं को पूरा करते हैं, स्वयं उनमें सदा के लिए महिमा पाएँ। आमीन।

---

[45] फेलोनियन पुरोहितों के परिधानों में से एक, एक लंबा चोगा है। प्राचीन काल में, फेलोनियन को धार्मिक अनुष्ठानों के दौरान पुरोहितों और बिशप दोनों द्वारा पहना जाता था। आजकल, इसे केवल पादरी ही पहनते हैं।

[46] रावेना – एड्रियाटिक सागर पर एक बंदरगाह वाला शहर, जो एपेनाइन प्रायद्वीप के उत्तर-पूर्वी तट पर स्थित है। सम्राट ऑगस्टस ने इसे बड़े पैमाने पर किलेबंदी की, और इसे इटली का एक गढ़ माना जाता था। पश्चिमी रोमन साम्राज्य के सम्राटों ने, होनोरियस से शुरू होकर, यहीं अपना निवास बनाया था। रावेना आज भी मौजूद है और इसी नाम के इतालवी क्षेत्र का प्रमुख, समृद्ध शहर है।

ओमरिस के आर्चबशिप संत ग्रेगरी का जीवन।

19 दसिंबर को स्मरणोत्सव

संत ग्रेगरी ने शुरुआत में मेडिओलानम शहर में सेवा की, जहाँ, दविय चुनाव द्वारा, वे डीकन के पद पर चर्च मंत्रालय की दीवट पर चमके; बाद में, अन्य शहरों और गांवों में उन्होंने मसीह के नाम के प्रचारक और मूर्तपिूजक चापलूसी के उन्मूलनकर्ता के रूप में कार्य कयिा। ग्रेगरी धर्मनष्ठि माता-पतिा अगपयिस और थयिोडोटा के पुत्र थे; उनका पालन-पोषण धर्म और ईश्वर के भय में हुआ था और ईश्वर की कृपा से परपिूर्ण अपने युवा काल से ही, वे चमत्कार करने वाले और रोगों को दूर करने वाले थे। प्रभु उन्हें बशिप के पद पर सेवा के लिए तैयार कर रहे थे, जसिे उन्होंने उन्हें दर्शनों और पवत्रि पतिाओं की अंतर्दृष्टि के माध्यम से प्रकट कयिा। जब ग्रेगरी एक नश्चिति तपस्वी से मलिने के लिए मलिान आए, तो उन्होंने ग्रेगरी के पूरे भवष्यि की भवष्यिवाणी की; क्योंकि वह एक दूरदर्शी व्यक्ति थे, और उन्होंने ग्रेगरी के आने की भी पूर्व सूचना पा ली थी, जबकि ग्रेगरी उनसे अभी भी तीस पड़ाव[47] दूर थे, यह तथ्य जसिे तपस्वी ने अपने सेवक से कहा था। एक अन्य वृद्ध भक्षिु[48] भी थे, जो ईश्वर के लिए संसार से अलग हो गए थे और पहाड़ों में रहते थे। ग्रेगरी, उस वृद्ध के बारे में जानकर, उनके पास गए। जब वे उस पहाड़ के पास पहुँचे जहाँ यह संत रहते थे, तो उन्होंने हवा में आग का एक स्तंभ देखा और डर के मारे जमीन पर गरि पड़े। तब, हम्मित जुटाकर, वह उठा और यह देखने गया कि यह अग्नमिय दृश्य क्या था। दूर से उसे यह एक लौ प्रतीत हुई, लेकनि जब वह पास गया, तो उसने एक संन्यासी को अपनी ओर आते हुए देखा, जसिने पास आकर उसे चूमा और उसे ग्रेगरी कहा, भले ही वह उससे पहले कभी नहीं मलिा था। ग्रेगरी इस महान संन्यासी के साथ दो दनि रहे और उन्हें अद्भुत दर्शन प्राप्त हुए। आधी रात को उन्होंने इस धर्मपरायण व्यक्ति को प्रार्थना में अपने हाथ फैलाए हुए, जमीन से उठकर हवा में खड़े होते देखा। ग्रेगरी इस दर्शन को देखकर चकति रह गए, जबकि सुबह संन्यासी ने उन्हें अपने पास बुलाकर शांत और सौम्य स्वर में कहा:

'जाओ, मेरे मत्रि और भाई! और जो मैं तुमसे कहने वाला हूँ उसे सुनो; क्योंकि तुम मेरे पास इसी लिए आए हो—यह जानने के लिए कि तुम्हारे वषिय में मुझे जो कुछ प्रकट कयिा गया है, वह सब जानो। तुम रोम देखोगे, पवत्रि शहीदों बोनफिेस और अग्लाइडा के चर्च में प्रार्थना करोगे, और वहाँ से तुम्हें अलेक्जेंड्रयिा के लिए समुद्र-यात्रा करनी है, फरि सत्य का वचन प्रचार करने के लिए इथयिोपयिा जाओ, और ओमरिाइट शहर नाग्रेन[49] आओ, जसिे ओमरिाइट राजा दुनान ने जीत लयिा है और जसिे प्रेरतिकि शक्षिा के प्रचार की आवश्यकता है; वहाँ, महान और गौरवशाली कार्य करने के बाद, तुम मर जाओगे और धर्मी लोगों के नविास में प्रवेश करोगे। हालाँकि, तुम्हें ओमरिाइट में रहने वाले वद्रिोही यहूदयिों के हाथों बहुत कष्ट सहना पड़ेगा, और तुम अपने अनुग्रहकारी सहायक, जो तुम्हारा मार्गदर्शन और शक्षिा देंगे, की सहायता से उनमें से कई को ईश्वर की ओर मोड़ दोगे। वहाँ, अलेक्जेंड्रयिा के पैट्रिआर्क द्वारा तुम्हें आर्चबशिप के पद के लिए अभषिक्ति भी कयिा जाएगा।

यह सुनकर, धन्य ग्रेगरी ने कहना शुरू कयिा कि वह उस बात के लायक नहीं था जसिकी भवष्यिवाणी वृद्ध उसे कर रहे थे, और वह तपस्वी के साथ थोड़ी देर और रहना चाहता था। तब उस दूरदर्शी व्यक्ति ने ग्रेगरी को उस दर्शन के बारे में बताया जो ग्रेगरी ने स्वयं देखा था। उसने प्रमुख प्रेरतिों, पतरस और पौलुस को ग्रेगरी के कंधों पर ओमोफोरीयोन[50]

---

[47] 'पॉपलसि' दूरी की एक इकाई है, जो 690 फथॉम के बराबर होती है। तीस 'पॉपलसि' लगभग 41 वर्स्ट की दूरी के बराबर होते हैं।

[48] स्कमिनकि एक भक्षिु है जसिने स्कीमा ग्रहण की है। स्कमिा एक ग्रीक शब्द (sxiya) है जसिका अर्थ 'छवि', 'रूप' या 'पद' है। स्कमिा मठवाद के उच्चतम चरण को संदर्भति करता है, जो आत्म-त्याग और मसीह की सेवा की नई और सबसे कठोर प्रतज्ञिाओं से जुड़ा है; यह संसार से पूर्णतःवरिक्ति है, मसीह के साथ एक होने की महान इच्छा (Phil 1:2)।

[49] ओमरिाइट्स दक्षणि अरब के नविासी थे जो अरब की खाड़ी के पास रहते थे। ईसाई धर्म की शुरुआती शताब्दयिों में, अरब में ग्यारह वभिन्नि जनजातयिों का नविास था, जनिमें से केवल दो—ओमरिाइट्स और सबाई—ने ईसाई धर्म को अपनाया था। अन्य जनजातयिाँ, यहूदयिों के साथ नरिंतर संपर्क में होने के कारण, काफी हद तक यहूदी कानून का पालन करती थीं। ओमरिाइट्स का धर्मांतरण भारत के थयिोफलिस द्वारा कयिा गया था, जो इथयिोपयिाई राजधानी अक्सुम के दूसरे बशिप थे। – नाग्रेन या अनाग्रेन – अरब की खाड़ी के तट पर एक वशिाल और घनी आबादी वाला शहर, जसिके नविासी, बनिा कसिी अपवाद के, ईसाई धर्म का पालन करते थे।

[50] ओमोफोरीयम – (ग्रीक में 'कंधा-वाहक' के लिए) सात एपस्किोपल (धर्मप्रांतीय) परधिानों में से एक, जसिे कंधों पर रखा जाता है और सामने तथा पीछे से लटकाया जाता है, और जसि पर चार क्रॉस लगे होते हैं। प्रतीकात्मक रूप से, ओमोफोरीयॉन खोए हुए भेड़यि, यानी मानवता का प्रतनिधित्वि करता है; उसे पाकर, प्रभु ने उसे अपने कंधों पर उठा लयिा और उसे अपनी ही भेड़ों, यानी स्वर्गदूतों के साथ एक कर दयिा। क्रॉस के माध्यम से, बशिप मसीह के दुख-संकट का अनुसरण करने के अपने संकल्प को दर्शाते हैं: जैसे उन्होंने अपने कंधों पर अपना क्रॉस उठाया और उन्हें सूली पर चढ़ाया गया, वैसे ही बशिप भी मसीह के क्रॉस को अपने कंधों पर उठाते हैं, और पीड़ा से नहीं बचते; क्योंकि क्रॉस पीड़ा का प्रतीक है।

रखते हुए देखा था, जो उस पुरोहतित्व की कृपा का पूर्वसंकेत था जो ग्रेगरी को प्राप्त होने वाला था। धन्य ग्रेगरी उस वृद्ध की अद्भुत सूझ-बूझ पर बहुत चकति हुए, जनिसे नजिी तौर पर जो उन्होंने स्वयं देखा था भी छपिा नहीं था, और उन्होंने कहा:

'महमिा परमेश्वर की हो, जो अपने प्रेम करने वालों के माध्यम से इस प्रकार कार्य करते हैं; प्रभु की इच्छा पूरी हो!'

दो दनि बाद, उस वृद्ध ने उसे स्नेहपूर्वक चूमकर वदिाई दी, और ग्रेगरी ऐसे धर्मपरायण व्यक्तसि बछिड़ने का शोक मनाते हुए, उनके प्रतप्रिेम से जलते हुए और उन्हें लगातार याद करते हुए प्रस्थान कर गए। वहाँ से ग्रेगरी पहले कार्थेज गए[51] और वहाँ लंबे समय तक रहे, परमेश्वर का वचन प्रचार करते हुए और हर तरह की बीमारयिों को ठीक करते हुए। तब, ईश्वर की आज्ञा से, वह रोम के लिए रवाना हुआ और पवत्रि शहीद बोनफेस और अग्लाइडा के चर्च में प्रार्थना की। जब वह पवत्रि प्रेरति पतरस की कब्र पर पहुँचा और आँसुओं से जमीन पर गरि पड़ा, तो उसे एक दर्शन हुआ: उसके सामने उसने स्वर्ग के द्वार खुले हुए देखे, और एक असाधारण प्रकाश चमक रहा था। और देखो, संत पतरस प्रेरति, अपने दाहनिे हाथ में एक चाबी पकड़े हुए, स्वर्ग के द्वारों से बाहर आए, बड़ी महमिा और एक तेजस्वी मुखमंडल के साथ उनके पास आए, और एक तेज दृष्टसि देखते हुए कहा:

'मैं यहाँ प्रभु की कृपा से आया हूँ; परन्तु इससे पहले, अन्य प्रेरतिों के साथ, मैं ओमरीत के नगर नाग्राँ में था, उन लोगों के पास खड़ा था जो डुनान के यहूदी लोगों के हाथों हमारे प्रभु यीशु मसीह के लिए पीड़ा सह रहे थे, और उनमें से प्रत्येक को धार्मकिता में बल दे रहा था। ईश्वर की सहायता से, उन्होंने सभी ने उस अधर्मी यहूदी की इच्छा का वरिोध कयिा, धार्मकिता में दृढ़ रहे, सत्य के लिए कष्ट सहे, और अब स्वर्ग में उन पूर्वजों के साथ हैं जनिहें अमर महमिा प्रदान की गई है। मैं इस नगर का भ्रमण करने के लिए यहाँ आया हूँ, जबकमिेरा भाई पौलुस, जो कलीसयिाओं का रक्षक है, यरूशलेम में मुझसे अलग हो गया और फारस चला गया। जहाँ तक तुम्हारा सवाल है, मेरे बच्चे, जैसे-जैसे तुम इस अच्छे मार्ग पर चलते जाओ, प्रभु को प्रसन्न करने का यत्न करो, नरिन्तर उसकी व्यवस्था सीखते रहो, यह जानते हुए कइिस संसार का जीवन और वैभव एक सपने और एक छाया की तरह बीत जाते हैं; तुम धन्य होगे यदि, जैसे तुमने आरम्भ कयिा है, वैसे ही तुम प्रभु की इच्छा में चलते हुए अपनी यात्रा पूरी करो, और तुम बहुतों को परमेश्वर के भय की ओर ले जाओगे। स्वर्ग में प्रभु स्वयं आपके लिए एक सहिासन तैयार कर रहे हैं, और आप हमारे साथ अपना प्रतफिल प्राप्त करेंगे।

यह कहकर, प्रेरति चले गए, और वह दर्शन समाप्त हो गया। ग्रेगरी, होश में आकर, एक बार फरि से जमीन पर गरि पड़े, और स्वयं को दुखी और पापी कहने लगे। एक लंबी प्रार्थना के बाद, वह अपने नविास स्थान पर गया और उसी रात, एक सपने में, उसने पवत्रि प्रेरति पौलुस को उसे तेल का एक पात्र देते हुए देखा: यह उसके लिए नरि्धारति पुरोहतित्व और बशिप पद की कृपा का संकेत था। ग्रेगरी ने अपने सपने में प्रेरति के हाथों से यह तेल लेकर, तुरंत जाग उठा, प्रसन्न हुआ, और गाया: *'मेरे हृदय से उत्तम वचन बहे हैं'* (भजन संहति 44:2, 8), क्योंकि परमेश्वर ने मुझे आनंद के तेल से अभषिेक कयिा है।

तब वह रोम से नकिलकर अलेक्ज़ेंड्रयिा के लिए रवाना हुआ, नरिंतर अपना हृदय ईश्वर की ओर मोड़ता हुआ, सद्गुणों में दनि-प्रतदिनि अधकि परपिूर्ण होता गया और दैवीय ज्ञान-बुद्धि तथा ईश्वर की महान् अनुदाओं से परपिूर्ण हो गया। उस समय, जब धार्मकि राजा शासन कर रहे थे—ग्रीस में Justin[52] और इथयिोपयिा में Elezwoy—ओमरीत की भूमि पर शासन करने वाले Dunaan ने ईसाइयों के खलिाफ उत्पीड़न शुरू कयिा और अपने राज्य से मसीह का नाम ही मटिा देने का प्रयास कयिा। चालाकी से, उसने नाग्रेन के गौरवशाली शहर पर कब्जा कर लयिा, जहाँ मसीह में वश्विास करने वाले थे, और अनगनित मसीहयिों को मौत के घाट उतार दयिा: कुछ को उसने फांसी पर जला दयिा, दूसरों को तलवार से मार डाला, और उसने धर्मपरायण राजकुमार अरेफू को सबसे प्रतष्ठिति नागरकिों के साथ मार डाला। यह सुनकर, धर्मनरिपेक्ष राजा जस्टनि और एलेज्वॉय ने बहाए गए ईसाइयों के नरि्दोष रक्त पर गहरा शोक व्यक्त कयिा; जस्टनि

---

[51] कार्थेज – उत्तरी अफ्रीका में सबसे प्राचीन और प्रसदि्ध फ़निशियिाई उपनविेश, जो प्राचीन इतहिास में अपनी शक्तकि शखिर पर पहुँचा और 146 ईसा पूर्व में नष्ट हो गया – प्राचीन कार्थेज के खंडहरों पर, प्रारंभकि रोमन सम्राटों के शासनकाल के दौरान, एक नया कार्थेज उभरा, जो बहुत लंबे समय तक बड़ी भव्यता के साथ फलता-फूलता रहा। कार्थेज में, मूर्तपिूजक ग्रीक-रोमन पंथ अत्यधकि वकिसति था, और इसके प्रत्यक्ष परणिामस्वरूप, अंधवश्विास और जादू-टोना लंबे समय तक बना रहा, और तथाकथति 'जादुई कलाएं' फलती-फूलती रहीं।

[52] बाइज़ेंटाइन सम्राट जस्टनि प्रथम ने 518 से 527 तक शासन कयिा।

ने एलेज्वॉय को लखिा[53] , और उनसे अनुरोध कयिा कि वे दुष्ट दुनान के खलिाफ युद्ध करें, ताकि बहाए गए नरि्दोष रक्त का बदला लयिा जा सके। प्रशंसनीय राजा एलेज्वॉय, जो उत्साह से भरपूर थे, ने अपनी पूरी सेना इकट्ठी की और दुष्ट राजा डुनान के खलिाफ युद्ध करने चले गए[54] । इस महान युद्ध के दौरान, एलेज्वॉय ने ईश्वर की मदद से डुनान की रेजमिेंटों को परास्त कर दयिा और उसकी पूरी सेना का पूरी तरह से नाश कर दयिा, जबकि वह स्वयं और उसके रशि्तेदार तलवार से मारे गए। दुनन के राज्य पर कब्ज़ा करने के बाद, एलेज्वॉय ने उत्साहपूर्वक यहूदी और मूर्तपिूजक भ्रांतयिों से इसे शुद्ध करना शुरू कर दयिा, और हमारे प्रभु यीशु मसीह के नाम की महमिा को पूरे राज्य में फैलाया। ओमरिति में रहने वाले कई यहूदयिों और मूर्तपिूजकों ने बपतस्मिा लेने की इच्छा व्यक्त की, लेकनि उनके पास न तो कोई बशिप था, न ही कोई पुरोहति, न ही कोई डीकन, और न ही कोई एक भी पादरी था, क्योंकि डुनान द्वारा पूरी धार्मकि पदानुक्रम को समाप्त कर दयिा गया था। तब धन्य एलेज्वॉय ने अलेक्जेंड्रयिा के पैट्रआिर्क से अपील की। ओमरीिथ की भूमि में ईसाई धर्म को बहाल करने में ईश्वर ने कैसे मदद की, यह वसि्तार से बताने के बाद, राजा ने पैट्रआिर्क से वनिती की कि वे एक ऐसे व्यक्ति को चुनें जो बुद्धमिान, सदाचारी और पवत्रि शास्त्रों का जानकार हो, और उसे बशिप के पद पर नयिुक्त कर चर्च के लिए आवश्यक सभी चीजों के साथ ओमरीिथ के क्षेत्र में भेज दें। जब यह संदेश अलेक्जेंड्रयिा पहुँचा, तो पैट्रआिर्क ने सभी ईसाइयों के साथ मलिकर अधर्मी लोगों के वरिुद्ध ईसाइयों की सहायता के लिए स्वर्ग से भेजी गई ईश्वर की मदद पर प्रसन्नता व्यक्त की, और एक योग्य व्यक्ति की लगन से तलाश शुरू की ताकि उसे बशिप के रूप में अभषिेक करके बनिा कसिी देरी के एलेज्वू के पास भेज सकें। कई पुरुषों को पैट्रआिर्क के सामने लाया गया, लेकनि उनमें से कोई भी उन्हें बशिप के पद के योग्य नहीं लगा। फरि, रात के दौरान, पैट्रआिर्क ने ईश्वर से एक भक्तपिूर्ण प्रार्थना की, यह प्रार्थना करते हुए कि प्रभु स्वयं एक ऐसे पुरुष को चुनें और उसे इंगति करें जो ऐसी सेवा के लिए योग्य हो। जब वह प्रार्थना कर रहे थे, तब पवत्रि प्रेरति मार्क एक दर्शन में महाधर्माध्यक्ष के सामने प्रकट हुए और उन्हें आज्ञा दी कि वे उस डकिन ग्रेगरी को ढूंढें, जो हाल ही में अलेक्जेंड्रयिा आया था और लयिोन्टयिस नामक एक व्यक्ति के यहाँ ठहरा हुआ था, उसे बशिप के पद पर नयिुक्त करें और उसे एलेउससि भेजें, क्योंकि प्रभु ने ग्रेगरी को ठीक इसी उद्देश्य के लिए यहाँ लाया था। अगली सुबह, पैट्रआिर्क ने तुरंत लयिोन्टयिस के घर की तलाश कराई; उसे ढूंढ लेने पर, उसने वहाँ रह रहे ग्रेगरी को बुलाया और उससे पूछा कि वह कौन है और कहाँ से आया है। तब पैट्रआिर्क ने उसे अपने दर्शन के बारे में बताकर और चर्च की आवश्यकता समझाकर, उसे बशिप का पद स्वीकार करने के लिए मनाना शुरू कयिा। ग्रेगरी, हालांकि, उस तपस्वी के शब्दों को याद करते हुए, जसिने मेडओिलानम में उसे बताया था कि वह अलेक्जेंड्रयिा के पैट्रआिर्क के अभषिेक द्वारा आर्चबशिप का पद प्राप्त करेगा, भावुक हो गया और कहा:

'प्रभु की इच्छा पूरी हो: प्रभु की आज्ञा के अनुसार, आपकी इच्छा के अनुसार करें, महाशय।'

पैट्रआिर्क ने तुरंत ग्रेगरी को एक पादरी के रूप में नयिुक्त कयिा और फरि उन्हें आर्चबशिप के रूप में अभषिेक कयिा। उसी क्षण, एक अद्भुत चमत्कार हुआ: सेवा और अभषिेक के दौरान, ग्रेगरी का चेहरा बदल गया, वह आग की तरह दमकने लगा, पवत्रि आत्मा की कृपा से जगमगा रहा था, जबकि उसके वस्त्रों से सुगंधति मुर्रा का धुआं और एक ऐसी खुशबू नकिल रही थी, जसिकी मीठी सुगंध से पूरी चर्च भर गई। यह पूरी सेवा के दौरान जारी रहा; सभी की नगिाहें संत ग्रेगरी पर टकिी थीं, और सभी ऐसे चमत्कार को देखकर चकति थे। एलेज़वो के दूतों ने भी इसका साक्षात्कार कयिा, वे भी चकति थे, और बाद में उन्होंने जो कुछ भी देखा था, उसकी रपिोर्ट ज़ार को दी। उनके अभषिेक और पैट्रआिर्क के साथ एक आध्यात्मकि वार्ता के बाद, संत ग्रेगरी को एलेज्वो के दूतों के साथ वदिा कयिा गया, उनके पद के अनुरूप पुरोहतिों और एक चर्च की स्थापना के लिए आवश्यक सभी चीजों के साथ। वे जल्द ही इथयिोपयिा पहुँचे, और बाद में ओमरिटि की भूमि में। राजा एलेज्वॉय ग्रेगरी के आगमन से बहुत प्रसन्न हुए, और जब उन्हें यह पता चला कि ग्रेगरी को दविय प्रकटीकरण द्वारा चुना गया था और उनके अभषिेक के दौरान पवत्रि आत्मा की कृपा चमत्कारकि रूप से उन पर प्रकट हुई थी[55] , तो वे और भी अधकि प्रसन्न हुए। उन्होंने ग्रेगरी का बड़े सम्मान से स्वागत कयिा, उनका गर्मजोशी से अभनिंदन कयिा, और पूरा क्षेत्र उनकी सेवा में रख दयिा। ओमरिाइट क्षेत्र के शहरों से होते हुए ग्रेगरी के साथ यात्रा

---

[53] बाइज़ेंटाइन सम्राट ने नाग्रेन शहर के नविासयिों के भाग्य में गहरी रुचि ली, क्योंकि यह शहर, जसिे 25 ईस्वी में रोमन जनरल एलयिस गैलस द्वारा जीता गया था, रोमन सम्राटों के संरक्षण में था।

[54] इथयिोपयिा के राजा ने ईसाई ओमरिाइट्स की रक्षा करना अपना कर्तव्य माना क्योंकि उन्होंने स्वयं ईसाई धर्म इथयिोपयिा से ही ग्रहण कयिा था और, पूरी संभावना है, वे अक्सुम के मेट्रोपोलसि के धार्मकि अधकिार क्षेत्र के अधीन थे।

[55] दीक्षा – एक पवत्रि पद या पदवी प्रदान करना।

करते समय, राजा ने नए चर्च बनाए, दुष्ट डुनान द्वारा मसीह के लिए शहीद हुए पवित्र शहीदों के मकबरों को सजाया, और अविश्वासियों को बपतिस्मा दिलाया। नगरन शहर में, एलेज़वो ने शहीद अरेफा के पुत्र को राजकुमार नियुक्त किया और वहाँ मसीह के पुनरुत्थान के सम्मान में एक भव्य चर्च, परमेश्वर की अति पवित्र माता के सम्मान में एक और चर्च, और तीसरा पवित्र शहीद अरेफा और उनके साथ पीड़ित लोगों के नाम पर बनाया, जो उस घर से बहुत दूर नहीं था जहाँ पवित्र शहीद कभी रहते थे। अन्य नगरों में भी कई चर्च बनाए गए, जिन्हें ग्रेगरी ने स्वयं पवित्र किया और जहाँ उन्होंने पुरोहितों और डिकन्स की नियुक्ति की, तथा उन्हें मसीह के झुंड की देखभाल का दायित्व सौंपा। धन्य राजा एलेज़वो डुनान की मृत्यु के बाद लगभग 36 महीने ओमरिटि की भूमि में रहे, और वहाँ सभी चीजों को अच्छी तरह से व्यवस्थित करने के बाद, वे इथियोपिया की भूमि में अपने सिंहासन पर लौटना चाहते थे। संत ग्रेगरी के साथ सभी कुलीनों, राजकुमारों, बोयारों और सलाहकारों को बुलाने के बाद, उन्होंने उनसे परामर्श करना शुरू किया कि ओमरिटि के राज्य के राजा के रूप में किस व्यक्ति—धार्मिक, बुद्धिमान, विनम्र और ईश्वर-भयभीत—को चुना और अभिषिक्त किया जाए। सभी सलाहकारों ने राजा को उत्तर दिया:

'जिसको आप जानते हों, और जिसे ईश्वर आपको प्रकट करें, उसे नियुक्त करें; क्योंकि बुद्धिमत्ता में या राजसी मुकुट के योग्य आपके जैसा कोई और हमारे पास नहीं है।'

तब राजा ने आर्चबिशप की ओर मुड़कर कहा:

'यह आपकी ज़िम्मेदारी है, माननीय पिता और हमारे गुरु! यहाँ आपके सामने सभी राजकुमार, कुलीन, योद्धा, ऊँचे और नीचे सभी मौजूद हैं; जिसे आप चाहें उसे बुलाएँ और, हमारे प्रभु यीशु मसीह के नाम पर, उसे राज्य के लिए अभिषिक्त करें; जहाँ तक हम सभी का सवाल है जो इथियोपिया से आए हैं, यदि ईश्वर चाहे, तो हम घर लौटना चाहेंगे।'

पवित्र आर्चबिशप ने उत्तर दिया:

'हे धर्मनिरपेक्ष राजा, आपने यह स्पष्ट रूप से देखा है: जैसे आपका हृदय ईश्वर के हाथ में है, वैसे ही आपके शब्द भी ईश्वर द्वारा दिए गए हैं। हर मामले में, पहले स्वर्गीय पिता, जो स्वर्ग में हैं, से परामर्श करना और जैसा वे आज्ञा दें, वैसा करना हमेशा सही होता है।'

यह कहकर, धन्य व्यक्ति अपनी कुर्सी से उठे, उनसे थोड़ी दूर चले गए, और पूर्व की ओर मुड़कर घुटनों के बल झुक गए। उन्होंने अपनी आँखें और मन स्वर्ग की ओर उठाकर और अपने हाथ ऊपर उठाकर, उन्होंने बड़ी लगन और लंबे समय तक प्रार्थना की कि ईश्वर, जो प्रत्येक व्यक्ति के जीवन और विचारों को जानता है, उन्हें राज्य के योग्य एक पुरुष दिखाए। जब महाधर्माध्यक्ष प्रार्थना कर रहे थे, अचानक प्रभु की एक अदृश्य शक्ति ने अव्राम नामक एक व्यक्ति को हवा में उठा लिया और उसे राजा एलेज़्वो के सामने रख दिया। सभी लोग लंबे समय तक भय से चिल्लाते रहे:

'हे प्रभु, दया करें!'

लेकिन आर्चबिशप ने कहा:

'देखो, यह वही आदमी है जिसे तुम राजा बनाने की मांग कर रहे थे; उसे यहीं राजा रहने दो। हम उससे एकमत रहेंगे, और ईश्वर हर बात में हमारी मदद करेगा।'

और इस दैवीय व्यवस्था पर सभी के बीच बहुत आनंद हुआ। इसके बाद, राजा एलेज़्वॉय ने ईश्वर द्वारा प्रकट किए गए अव्राम को लिया, उसे परम पवित्र त्रिमूर्ति के चर्च में ले गए, जो अफ़ारा के शाही शहर में स्थित था, उसे शाही बैंगनी वस्त्र पहनाया[56] और उसके सिर पर एक मुकुट रखा[57] , जिसके पश्चात् संत ग्रेगरी ने उन पर अभिषेक किया और राजाओं तथा सभी लोगों के लिए निरिक्त बलिदान अर्पित किया गया, और दोनों राजाओं ने महाधर्माध्यक्ष के हाथों से दिव्य रहस्य प्राप्त किए। समारोह के समापन पर, उपस्थित सभी लोग उद्घोषित हुए:

'इथियोपिया के राजा एलेज़वु दीर्घायु हों! और ओमरिटि के मसीह-प्रेमी राजा अव्रामियस दीर्घायु हों!'

और एक बार फिर उन्होंने एक साथ दोहराया:

'दीर्घायु हों एलेज़्वु और अव्रामी, धर्मनिष्ठ और ईश्वर-प्रेमी राजा!'

और उन्होंने 'मेनी इयर्स' भजन तीन बार गाया। फिर सभी ने पुकारा:

---

[56] पोर्फ़िरी – एक बैंगनी, महँगा वस्त्र, जो आमतौर पर शासकों के बाहरी, औपचारिक परिधान का गठन करता है।

[57] डायडेम प्राचीन राजाओं द्वारा पहना जाने वाला एक हेडबैंड है – एक शाही मुकुट।

'हमारे परम पवत्रि आर्चबशिप, मार्गदर्शक और शक्षिक ग्रेगरी को, दीर्घायु प्राप्त हो, वे शांतपिूर्ण, स्वस्थ और दीर्घायु जीवन जएिँ; और संपूर्ण ईसाई सेना और सभी वशि्वासयिों को, दीर्घायु प्राप्त हो!'

इसके बाद, शाही कक्षों में प्रवेश करने पर, सभी ने प्रसन्नता मनाई और दावत की, अपने उद्धारकर्ता प्रभु ईश्वर और अपने धर्मपरायण राजाओं का धन्यवाद करते हुए।

एलेज्वॉय ओमरिीट की भूमि में और तीस दनि रहे, उन्होंने नए राजा को धार्मकिता में, राज्य को न्यायपूर्वक संगठति और शासति करने में, और हर बात में अपने आध्यात्मकि पति, महाधर्माध्यक्ष ग्रेगरी, की आज्ञा मानने में शक्षिा और मार्गदर्शन दयिा। इथयिोपयिाई सेना से 15,000 पराक्रमी पुरुषों को चुनकर, एलेज्वॉय उन्हें नए राजा की सहायता करने और राज्य की रक्षा करने के लिए छोड़ गए, और इथयिोपयिा लौट आए। यहाँ, कुछ ही समय बाद, अपना सांसारकि साम्राज्य त्यागकर, वे मरुभूमि में चले गए, जहाँ एक मठ के पास, उन्होंने खुद को एक अँधेरी कोठरी में बंद कर लयिा और अपनी मृत्यु तक वहाँ से बाहर नहीं नकिले, वहाँ रहने वाले संतों से खड़िकी के माध्यम से भोजन प्राप्त करते थे; और एक तपस्वी का कठोर जीवन जीने के बाद, वे स्वर्ग के राज्य के लिए प्रस्थान कर गए[58] । इतने कुलीन और धनी राजा ने सभी के लिए नम्रता और स्वैच्छकि गरीबी का उदाहरण प्रस्तुत कयिा! उनके नधिन के बाद, भक्षिुओं ने नम्निलखिति घटना सुनाई। मठ से कसिी काम से भेजा गया एक युवा भाई अक्सर एक शराबखाने में जाता था, जहाँ शराब के नशे में मस्त रहते हुए, वह अशुद्ध कामुक वासना के पाप में पड़ जाता था। और इस प्रकार, एक दनि, अपना सामान्य पाप करने के बाद और मरुभूमि से होते हुए मठ लौटते हुए, वह खुद को एक ऐसी जगह पर पाया जहाँ से गुज़रना असंभव था, जहाँ एक बड़े साँप ने उस पर वार करने के लिए छलांग लगाई। भक्षिु साँप से बचने की कोशशि में इधर-उधर भागने लगा, लेकनि साँप ने तेजी से उसे पकड़ लयिा। जब भक्षिु अंततःएक ऐसे कोने में फँस गया जहाँ भागने के लिए कोई जगह नहीं बची थी, तो साँप उसे नगिलने के लिए झपट पड़ा; लेकनि फरि भक्षिु, धन्य राजा एलेज्वो को याद करते हुए, साँप की ओर मुड़ा और कहा:

'धर्मी और परम पवत्रि एलेज्वो की प्रार्थनाओं के बल पर – मुझसे दूर हो जा।'

साँप, मानो एलेज्वो के पवत्रि नाम से लज्जति होकर, रुक गया और, ईश्वर की आज्ञा से, मानव स्वर प्राप्त कर, संन्यासी से बोला:

'मैं तुम्हें कैसे छोड़ दूँ, जब परमेश्वर का स्वर्गदूत मेरे पास आया और मुझे तुम्हें तुम्हारी अशुद्धता और पापों के कारण नगिलने का आदेश दयिा, क्योंकि तुमने, पवत्रिता से प्रभु की सेवा करने की कसम खाकर, अपने शरीर को पाप से मैला कयिा है और इस प्रकार पवत्रि आत्मा को क्रोधति कयिा है?'

भक्षिु ने जब साँप को मानव स्वर में बोलते और अपने कर्मों की नदिा करते सुना, तो वह चुप हो गया, काँपने लगा और उससे दया करने की प्रार्थना करते हुए शपथ लेने लगा। साँप ने उससे कहा:

'तुम मुझसे क्यों वनिती कर रहे हो? पहले मुझसे यह कसम खाओ कि तुम अब अपनी कामुक इच्छाओं के आगे नहीं झुकोगे, और तब मैं तुम्हें छोड़ दूँगा।'

भक्षिु ने शपथ लेनी शुरू की, कहते हुए:

'मैं स्वर्ग में वास करने वाले ईश्वर की कसम खाता हूँ, और धर्मी राजा एलेज्वो की प्रार्थनाओं की कसम खाता हूँ, कि मैं अब अपने प्रभु का अपमान नहीं करूँगा, जनिका मैंने अब कामुक अशुद्धता के माध्यम से अपमान कयिा है।'

भक्षिु के ये शब्द कहते ही अचानक स्वर्ग से आग गरि पड़ी और उसके सामने साँप को जला दयिा। भय और कांपते हुए, भक्षिु अपने मठ चला गया, और फरि कभी पाप नहीं कयिा, बल्कि उसने अपना जीवन पवत्रि पश्चाताप में समाप्त कयिा।

धार्मकि राजा अव्राम के शासनकाल में, आर्चबशिप ग्रेगरी ने कई शहरों में वद्विान और वाक्पटु पुरुषों को बशिप नयिुक्त कयिा और राजा को सलाह दी कि वह अपने राज्य में रहने वाले यहूदयिों और मूर्तपिूजकों को बपतस्मिा लेने का आदेश दे, अन्यथा उन्हें मृत्युदंड दे। राजा के इस आदेश के जारी होने के बाद, बहुत से यहूदी और मूर्तपिूजक, अपनी पत्नयिों और बच्चों सहति, मृत्यु के भय से पवत्रि बपतस्मिा ग्रहण करने लगे। फरि यहूदयिों में से बुजुर्गों और कानून में सबसे अधकि पारंगत लोगों ने, जो सभी शहरों से इकट्ठा हुए थे, एक गुप्त बैठक की यह चर्चा करने के लिए कि उन्हें क्या करना चाहिए, और आपस में तर्क कयिा:

---

[58] इथयिोपयिा के धन्य राजा एलेज्वो की मृत्यु लगभग 553–555 के आसपास हुई। चर्च उनके पर्व दविस को 24 अक्टूबर को मनाता है।

'यदि हम बपतिस्मा नहीं लेते हैं, तो राजा की आज्ञा से, हम, हमारी पत्नियाँ और हमारे बच्चे सभी को मार डाला जाएगा।'

उनमें से कुछ ने कहा:

'अकाल मृत्यु से बचने के लिए, हम राजा की इच्छा का पालन करें, लेकिन गुप्त रूप से अपने धर्म पर दृढ़ रहें।'

हालाँकि, दूसरों ने सलाह दी कि उन्हें पाखंडी नहीं बनना चाहिए, बल्कि खुले तौर पर अपने यहूदी कानून का पालन करना चाहिए, ताकि (जैसा कि उन्होंने कहा) मनुष्य के हाथ से बचने के बाद, वे प्रतिशोधी—ईश्वर—के हाथ में न पड़ें और, उससे भी बदतर, नष्ट न हो जाएँ। कुछ ने आपत्ति जताई:

– हम देखते हैं कि हमारे ईश्वर ने हमसे यह करतब करने की मांग नहीं की है, क्योंकि उन्होंने हमारे धर्मपरायण राजा दुनान और उसकी पूरी सेना को एलेज्वॉय के हाथों में सौंप दिया, और हमें नहीं पता कि हमें क्या करना चाहिए।

अन्य लोगों ने कहा:

'यदि हम अपने धर्म को सुरक्षित रखना चाहते हैं और क्षति से बचे रहना चाहते हैं, तो आइए हम इस भूमि से एक-एक करके गुप्त रूप से भागें, प्रत्येक अपना-अपना सामान लेकर, कहीं ऐसा न हो कि हम अपने शरीर और अपनी आत्मा दोनों को नष्ट कर दें।'

अन्य लोगों ने आपत्ति जताई:

'अगर हम भागने की कोशिश करेंगे, तो ईसाई हमें देख लेंगे और हमें मार डालेंगे।'

और वे सभी यह सोचकर हक्के-बक्के रह गए कि अब क्या करें। हालाँकि, उनके बीच कानून का एक बहुत ही बुद्धिमान शिक्षक था, जिसका नाम एरवान था, जो पुराना नियम पूरी तरह से जानता था और बहुत वाक्पटु था; उसने उनसे कहा:

तुम सब व्यर्थ बात कर रहे हो, और जो तुम प्रस्तावित कर रहे हो उसे व्यवहार में नहीं लाया जा सकता; लेकिन अगर तुम मेरी बात सुनने को तैयार हो, तो चलो हम सब मिलकर राजा और आर्चबिशप ग्रेगरी के पास चलते हैं और उनसे अनुरोध करते हैं कि वे अपनी मर्जी से उन शिक्षकों को नियुक्त करें जो विश्वास और कानून के मामलों में हमारे साथ प्रतिस्पर्धा करना चाहते हैं। यदि वे हमें हरा देते हैं, तो हम स्वेच्छा से ईसाई बन जाएँगे; लेकिन यदि वे स्वयं ही गलत साबित हो जाते हैं, तो वे खुद देख लेंगे कि वे अन्यायपूर्वक हमें अपने धर्म को त्यागने के लिए मजबूर कर रहे हैं। आइए, उन्हें परीक्षा में डालें और पता लगाएँ कि उनका विश्वास कैसा है। यदि यह सत्य है, तो हम विश्वास कर लेंगे कि मिसीहा पहले ही आ चुके हैं, भले ही हमें इसकी जानकारी न थी। लेकिन यदि उनका विश्वास झूठा सिद्ध हो जाता है, तो यह हमारे लिए स्पष्ट हो जाएगा कि हम ईश्वर के लिए मर रहे हैं, और हम उत्साह के साथ मृत्यु को स्वीकार करेंगे।

जब एरवान ने ये शब्द कहे, तो सभी भयभीत हो गए और कहने लगे:

'हम देख सकते हैं कि आप ईसाइयों की मदद कर रहे हैं; क्या आप नहीं जानते कि हमारा धर्म सत्य है? हम इसे कैसे त्याग सकते हैं?'

एरवान ने उत्तर दिया:

भाइयों, मैंने तुमसे एक भी कपटी वचन नहीं कहा है, पर यह जान लो: किसी न किसी तरह, तुम्हें बपतिस्मा लेने के लिए विवश होना ही पड़ेगा। यदि आप मेरी नहीं सुनते, तो मैं आप में से प्रत्येक के सामने निर्दोष रहूँगा, क्योंकि भले ही आप उनकी आस्था को बहस के द्वारा परखें नहीं, तब भी आपको उसे परखे बिना स्वीकार करना होगा और उनके आदेश का पालन करना होगा; लेकिन यदि आप उनकी आस्था को स्वीकार नहीं करते, तो वे आपको मार डालेंगे।"

यह सुनकर, वे सभी एरवान की सलाह पर चले और एक याचिका तैयार कर राजा को भेज दी। राजा ने उसे पढ़कर बहुत क्रोधित हो गया और उन्हें सभी को मौत की सज़ा देने के लिए तैयार था, लेकिन उसने खुद को रोक लिया, क्योंकि वह ग्रेगरी से सलाह किए बिना कोई कार्रवाई नहीं करना चाहता था, जिसे उसने वह याचिका सौंप दी। धन्य ने उसे पढ़कर कहा:

'यहूदी अच्छी और बुद्धिमानी भरी बात कहते हैं जब वे कहते हैं कि जबरदस्ती की तुलना में, अपनी इच्छा से, विश्वास की गहराई से मानना बेहतर है। हे राजा, उन पर दया करें; उन्हें पहले हमारे साथ बहस करने दें, और बाद में, आप उनके साथ अपनी इच्छा के अनुसार करें।'

[59]राजा संत की सलाह से सहमत हो गया, और यहूदियों को बहस की तैयारी के लिए चालीस दिन दे दिए गए, ताकि वे अपने इच्छित शिक्षकों को चुन सकें और बिना किसी डर के बहस में आ सकें। जब समय पूरा हो गया, तो यहूदियों की एक विशाल भीड़ इकट्ठा हुई, जिसके साथ कई सबसे बुद्धिमान रब्बी भी थे, जो कानून में पारंगत थे और बहस के लिए तैयार थे। धर्म पर बहस राजधानी अफ़ारा में हुई, जिसमें राजा अपनी पूरी परिषद के साथ, आर्चबिशप पूरी धार्मिक पादरी मंडली के साथ, और बहस सुनने आए एक बड़ी ईसाई मंडली उपस्थित थी। यहूदी भी अपने लिपिकारों, विद्वानों और शिक्षकों के साथ उपस्थित हुए। यहूदियों ने बिशप एरवान को अपना मुख्य वक्ता पेश किया, जो कानून और भविष्यवाणी की पुस्तकों में पारंगत और दर्शनशास्त्र में निपुण था। जब एक निश्चित संकेत पर सन्नाटा छा गया, तो आर्चबिशप और एरवान के बीच चर्चा और बहस शुरू हुई[60] ।

बहस का सार इस प्रकार था:

एक लंबे मौन के बाद, जिसके दौरान सभी ने बातचीत सुनने की तैयारी की, पवित्र आर्चबिशप ग्रेगरी ने बुद्धिमान यहूदी शिक्षक एरवान और पूरी सभा से इस प्रकार कहना शुरू किया:

'अब जब रात बीत चुकी है और धार्मिकता का सूर्य उदय हो चुका है, तो तुम क्यों बहस करते हो, उसकी रोशनी का विरोध करते हो और उस पर विश्वास करने से इनकार करते हो?'

एर्वान ने कहा:

'यदि धर्म का सूर्य प्रकट हो गया है, और हम, जैसा आप कहते हैं, सच्चे ईश्वर में विश्वास करते हुए उसकी रोशनी का विरोध करते हैं, तो आप, एक विदेशी सिद्धांत का पालन करने वाले मूर्तिपूजक होने के नाते, सत्य की रोशनी का और भी अधिक विरोध करते हैं, और ईश्वर द्वारा हमें दिए गए दैवीय कानून की निंदा करते हैं।'

आर्चबिशप ने उत्तर दिया:

'हम मूर्तिपूजकों में से हैं, लेकिन प्राणी और सृष्टि के रूप में हम किसके हैं?'

एरवान ने उत्तर दिया:

– स्पष्ट रूप से, हम ईश्वर की सृष्टि और कृति हैं। आर्चबिशप ने कहा:

'यदि हम, आपकी तरह, ईश्वर की रचनाएँ हैं, तो आपने हम पर क्या बड़ी श्रेष्ठता प्राप्त कर ली है?'

एर्वान ने आपत्ति जताई:

– मिस्रवासियों पर हमारी श्रेष्ठता।

'यह अच्छी बात है कि आपने मिस्रवासियों का ज़िक्र किया,' आर्चबिशप ने जवाब दिया, 'तो हमें उन पर अपनी श्रेष्ठता दिखाएँ!'

एर्वान ने कहा:

'क्या तुमने मिस्र की भूमि में, लाल सागर में और मरुभूमि में उन महान चमत्कारों के बारे में नहीं पढ़ा है, जो ईश्वर ने इज़राइल के निर्गमन के बाद मूसा के माध्यम से किए थे: कैसे उन्होंने मिस्रवासियों को डुबो दिया और इज़राइल को बचाया?'

आर्चबिशप ने उत्तर दिया:

'तुम्हारे और मिस्रियों के बीच कोई अंतर नहीं है, क्योंकि उनके ईश्वर ने उन्हें समुद्र में डुबो दिया, जबकि उसने तुम्हें तुम्हारी दुष्टता के कारण भूमि पर ही नष्ट कर दिया।' लाल सागर को जैसे सूखी ज़मीन पर पार करने के बाद, तुम तट पर डूब गए, और अपने जीवन का अंत मरुभूमि में दुख में किया; क्योंकि छह लाख से अधिक लोगों में से, केवल दो—कलेब और यहोशू—को प्रतिज्ञात देश[61] देखने के योग्य माना गया। तो फिर, ईश्वर ने तुम्हें मिस्रवासियों से किस प्रकार श्रेष्ठ माना?

एर्वान ने पूछा:

'जंगल में परमेश्वर ने किसके लिए मन्ना भेजा?' आर्चबिशप ने कहा:

'आपको क्या लगता है कि कौन-सा बेहतर है: मिस्र में खाया गया मांस, या मरुभूमि में भेजा गया मन्ना?'

---

[59] रब्बी एक यहूदी शिक्षक होता है।

[60] इन बहसों के संबंध में, जैसा कि संत डेमेट्रियस लिखते हैं, मकरियस के मेनाओन-चेती में एक अलग पुस्तक है जिसे उन्होंने भाषणों की बहुतायत, पूछे गए प्रश्नों और उत्तरों, और सामान्य रूप से, पाठ की विशाल मात्रा के कारण शामिल नहीं किया है।

[61] गिनती 14:24, 30; गिनती 26:65; गिनती 32:1; व्यवस्थाविवरण 1:36।

एरवान ने उत्तर दिया:

'स्पष्ट रूप से, मन्ना बेहतर है।'

आर्चबिशप ने आपत्ति जताई:

– तो फिर, आप बर्तन में पकाए गए सूअर के मांस, लहसुन, प्याज और मिस्र के सभी भोजन (गिनती 11:5) के लिए तरसकर पीछे क्यों मुड़े, जबकि आप मन्ना से नफरत करने लगे?

इसके बाद, पवित्र त्रिमूर्ति के संबंध में एक बहस शुरू हुई।

एर्वान ने कहा:

'ईसाई तीन देवताओं की पूजा करके कानून के विरुद्ध कैसे काम करते हैं: पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा, जबकि परमेश्वर ने सीनाई पर कहा था: *"हे इस्राएल, सुन: यहोवा हमारा परमेश्वर, यहोवा एक है; और उसके सिवाय और कोई परमेश्वर नहीं है"* (व्यवस्थाविवरण 6:4)? क्या ईसाई इसलिए एक ईश्वर की नहीं बल्कि तीन की पूजा करके कानून के विरुद्ध कार्य कर रहे हैं?"

आर्चबिशप ने उत्तर में कहा कि हम एक ही ईश्वर की, जो सभी का सृष्टिकर्ता है, केवल तीन व्यक्तियों—पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा—में ही पूजा करते हैं, फिर भी एक ही दिव्यता में, और उन्होंने प्रमाण के रूप में दाऊद के इन शब्दों का हवाला दिया। *'प्रभु के वचन से आकाश बने, और उनके मुख के श्वास से उनकी सारी सेना'* (भजन संहिता 32:6)। ग्रेगरी ने इस कथन का अर्थ इस प्रकार समझाया: प्रभु परमपिता परमेश्वर हैं, उनका वचन पुत्र परमेश्वर हैं, और उनके होठों का प्राण पवित्र आत्मा परमेश्वर हैं: इस प्रकार तीन दिव्य व्यक्ति प्रकट होते हैं, जबकि ईश्वरत्व एक है, क्योंकि पुत्र और आत्मा एकसार, सह-शाश्वत, सह-सार और पिता के साथ सह-सिंहासनधारी हैं। संत ग्रेगरी ने प्रभु के सूली पर चढ़ाए जाने और मृत्यु के संबंध में यहूदियों के विरुद्ध पुराने नियम की लिखितों, भविष्यवाणियों और पूर्वानुमानों का भी हवाला दिया, जैसे: *'और तेरा प्राण तेरी आँखों के सामने तराजू पर टंगा रहेगा'* (व्यवस्थाविवरण 28:66): 'वह आएगा और उसके भोजन में एक विषैला वृक्ष डालेगा' (यिर्मयाह 11:19), – और इस तथ्य के बारे में कि नूह का जहाज़ क्रूस का पूर्वाभास था, शेchem के बगीचे के बारे में, जिसमें इसहाक की बलि के दौरान एक मेमने को प्रतिस्थापित किया गया था (उत्पत्ति 22:13), यूसुफ की लाठी, जिसके सिर पर याकूब ने झुककर प्रणाम किया (उत्पत्ति 47:31), याकूब द्वारा यूसुफ के पुत्रों को दिया गया क्रूस के आकार का आशीर्वाद (उत्पत्ति 48:13–15), मूसा की लाठी, जिसने समुद्र को विभाजित किया (निर्गमन 14:11–29), अमालेकियों पर विजय सुनिश्चित करने के लिए मूसा द्वारा अपने हाथ उठाना (निर्गमन 17:8–14), मरुभूमि में लटकाया गया कांस्य का सर्प (गिनती 21:4–9), माराह में कड़वे पानी को मीठा करने वाला वृक्ष (निर्गमन 15:22–26), और व्यवस्था में पाए गए कई अन्य रहस्यमय भविष्यवाणियों का उल्लेख किया। और बहस शाम तक चलती रही, जिसमें प्रत्येक पक्ष जोरदार तर्क कर रहा था और दूसरे के खिलाफ आपत्तियां उठा रहा था; फिर भी महाधर्माध्यक्ष सभी चर्चाओं में विजयी रहे, क्योंकि पवित्र आत्मा उनके द्वारा बोल रहा था, जैसा कि पवित्रशास्त्र में लिखा है: *'क्योंकि यह तुम नहीं हो जो बोलते हो, बल्कि तुम्हारे पिता का आत्मा है जो तुम में बोलता है'* (मत्ती 10:20)। जैसे ही शाम हुई और बहस अभी तक खत्म नहीं हुई थी, राजा अपनी सीट से उठ गया, और महाधर्माध्यक्ष भी उठ गया, और सभा भंग हो गई, और चर्चा को सुबह तक के लिए स्थगित कर दिया गया। हालाँकि, यहूदियों ने एरवान को घेर लिया, वे खुशी मना रहे थे, उसे गले लगा रहे थे और चूम रहे थे, और ईसाइयों के खिलाफ पर्याप्त दृढ़ता से आपत्ति जताने के लिए उसकी प्रशंसा कर रहे थे। इस पर, एरवान ने उनसे कहा:

'प्रार्थना करो कि सिच्चा परमेश्वर हमारी सहायता करे, क्योंकि तुम स्वयं देख सकते हो कि महाधर्माध्यक्ष कितना चालाक आदमी है, और उसे हराना कितना मुश्किल है।'

हालाँकि, उन्होंने उसे बिना डर और साहस के साथ उससे बात करने के लिए प्रोत्साहित किया। सुबह, सभा फिर से इकट्ठा हुई, और जब राजा और आर्चबिशप प्रकट हुए, और यहूदी एरवान के साथ पहुँचे, तो बहस फिर से शुरू हुई; फिर भी न तो उस दिन, न तीसरे, न चौथे, और न ही पाँचवें दिन बहस समाप्त हुई। इन दिनों के दौरान, राजा संपूर्ण सिक्लाइट के साथ बहसों में उपस्थित रहता था, वक्ताओं को आनंदपूर्वक सुनता था और अपने परम पवित्र आर्चबिशप पर ईश्वर द्वारा प्रदान की गई बुद्धि और समझ में हर्षित होता था। वास्तव में, सुनने और याद रखने के लिए बहुत कुछ था, क्योंकि कई भविष्यसूचक कथनों की व्याख्या की गई और धर्मग्रंथ के कई रहस्यमय अंशों को स्पष्ट किया गया। यीशु मसीह के अवतार और परम पवित्र कुँवारी के संबंध में चर्चा में, आर्चबिशप ने भविष्यवक्ता यशायाह के शब्दों का हवाला दिया: *'देखो, एक कुँवारी गर्भधारण करेगी और एक पुत्र को जन्म देगी'* (यशायाह 7:14)। एरवान के इस आपत्ति के जवाब में

कि मरियम ने केवल एक इंसान को जन्म दिया था, न कि स्वयं ईश्वर को, महाधर्माध्यक्ष ने इन शब्दों के साथ उत्तर दिया: *'और वे उसका नाम इम्मानुएल रखेंगे, जिसका अर्थ है "परमेश्वर हमारे संग"'* (मत्ती 1:23)।

एर्वान ने कहा:

– एक स्त्री की कोख में ईश्वरत्व की अद्भुत महिमा कैसे समा सकती है?

आर्चबिशप ने उत्तर दिया:

– ठीक उसी तरह जैसे अब्राहम के निवास में मम्रे की ओक के नीचे परमेश्वर मौजूद थे, जब वे अब्राहम के साथ भोजन करने आए थे (उत्पत्ति 18)।

एर्वान ने आपत्ति जताई:

'तो फिर दिव्यता की अग्नि ने एक महिला के शरीर को कैसे नष्ट नहीं किया?'

आर्चबिशप ने उत्तर दिया:

'जैसे सिनाई पर्वत पर झाड़ी आग में नष्ट नहीं हुई (निर्गमन 3:2–4), वैसे ही दिव्यता ने कुंवारी के गर्भ को हानि नहीं पहुँचाई: कुंवारी ने जन्म दिया, और कुंवारी ही बनी रही।'

एरवान ने आपत्ति जताई:

'कन्या से जन्म मायाजाल था, वास्तविक नहीं, क्योंकि जन्म के समय गर्भाशय के बिना क्षति के रहना असंभव है, और यह सभी के लिए स्पष्ट है कि यह असत्य है।'

आर्चबिशप ने उत्तर दिया:

'जब हबक्कूक दानियेल के साथ सिंहों के बिल में गया, और बिल के द्वार बंद करके मुहर कर दी गई थी, तो मुझे बताओ, वह द्वार खोले बिना और मुहर तोड़े बिना कैसे गया और बाहर आया?' (दानियेल 14:30–40.)

बहस के अंत में, तीसरे दिन, एरवान ने भागने का प्रयास किया, लेकिन यहूदियों ने उसे मजबूती से पकड़ लिया और कहा:

'यदि तुम हमें छोड़कर चले गए, तो हम सब बर्बाद हो जाएँगे। थोड़ी देर और रुको, हर तरह से बहस करते रहो— निश्चय ही ईश्वर हमें नहीं छोड़ेंगे? भले ही हम इस बहस में हार जाएँ, हमारे पास प्रतिरोध के अन्य साधन हैं जिनसे वे हम पर विजय नहीं पा सकते।'

जब बहस के दौरान, एरवान ने मसीहियों को प्रतिमाओं की पूजा करने के लिए फटकारना शुरू किया, प्रतिमाओं को 'मूर्ति' और उनके सामने झुकने वालों को 'मूर्तिपूजक' और 'ईश्वर के विधान के शत्रु' कहा, और कहा कि ईश्वर ने आज्ञा दी थी कि कोई मूर्ति या कोई प्रतिरूप नहीं बनाया जाना चाहिए[62] , तो महाधर्माध्यक्ष ने उससे पूछा:

'जब नूह के दिनों में महाप्रलय आया, तो वह कैसे बचा?'

एर्वान ने उत्तर दिया:

'लकड़ी से बनी एक कश्ती के द्वारा।'

आर्चबिशप ने आपत्ति जताई:

'क्या ईश्वर नाव के बिना नूह को बाढ़ से बचा सकते थे, या नहीं, आप क्या सोचते हैं?'

एर्वान ने उत्तर दिया:

'मुझे लगता है कि वह कर सकता था, क्योंकि कहा जाता है कि ईश्वर के लिए सब कुछ संभव है।'

आर्चबिशप ने आपत्ति जताई:

'और अगर ईश्वर ऐसा कर सकता था, तो धर्मी व्यक्ति को बचाने के लिए कश्ती की आवश्यकता क्यों पड़ी? क्या इससे यह नहीं निष्कर्ष निकलता कि नोआ को अपनी मुक्ति के लिए ईश्वर की बजाय कश्ती का धन्यवाद करना चाहिए था?'

एर्वान ने उत्तर दिया:

'नहीं – प्रशंसा ईश्वर की करनी चाहिए, किसी निर्जीव सृष्टि की नहीं।'

आर्चबिशप ने कहा:

---

[62] दस आज्ञाओं की दूसरी आज्ञा।

'फिर भी आप मानते हैं कि ईश्वर ने नोआ की मुक्ति एक निर्जीव सृष्टि—जहाज़—के माध्यम से की। उसी तरह, ईश्वर हमें इन दृश्यमान प्रतिमाओं के माध्यम से अपनी कृपा प्रदान करते हैं, क्योंकि यद्यपि वे निर्जीव हैं, फिर भी वे हमारी मुक्ति के लिए ही बनाए गए हैं।' जब हम प्रतिमाओं को निहारते हैं, तो हमारा मन मूल आदर्श की ओर उठता है और हम ईश्वरीय उत्साह से प्रेरित होते हैं: क्योंकि हम एक मूर्ति का चित्रण नहीं करते, बल्कि प्रभु यीशु मसीह का उनके मानव स्वरूप में चित्रण करते हैं, न कि उनके ईश्वरत्व में, जो अकथनीय है। और जैसे नूह ने जलयान में अपनी मुक्ति के लिए एक वेदी बनाकर परमेश्वर का धन्यवाद किया, वैसे ही हम भी मसीह परमेश्वर की प्रतिमा बनाकर धन्यवाद करते हैं, ताकि उनके भौतिक चिंतन के द्वारा हम मानसिक प्रलय से उद्धार पा सकें। हम, एक तरह से, एक अन्य जलयान के माध्यम से उसकी मानवता को स्वीकार करते हैं, जिसके द्वारा उसने हमारे पापों को उठाया और, अपनी दिव्यता से हमें पवित्र करके, हमें स्वर्ग तक उठाया। हम उसको रंगों से चित्रित करते हैं जिसे भौतिक आँखों से देखा गया था, उसकी मानवता के सबसे शुद्ध स्वरूप को दर्शाते हुए; और, इस देहधारी स्वरूप के आवरण में, हम उसकी दिव्यता की और, उसमें, पिता और पवित्र आत्मा का उचित श्रद्धा के साथ सम्मान करते हैं।

एर्वान ने, तथापि, पवित्र प्रतिमाओं के विरुद्ध अपमान करना जारी रखते हुए कहा:

'मैं तुम्हारी ईसाई कल्पनाओं पर हैरान हूँ, जो दावा करती हैं कि ईश्वर अपनी कृपा दीवारों और तख्तों पर चित्रित प्रतिमाओं को भेजता है, जो न कभी चली हैं और न कभी बोली हैं।'

आर्चबिशप ने उत्तर में पूछा:

'मुझे बताओ, एरवान, ईश्वर ने एलिया की मूर्ति पर अपनी कृपा क्यों प्रदान की[63] , जो कृपा उन्होंने एलिशा को नहीं दी, और उन्होंने एक जीवित पैगंबर के बजाय एक निर्जीव मूर्ति को क्यों प्राथमिकता दी, जबकि पैगंबर स्वयं यॉर्डन नदी को पार नहीं कर सकता था, लेकिन अपनी लाठी से पानी को चीरकर सूखी जमीन पर चल गया, और जो चमत्कार एलिशा नहीं कर सका, वह निर्जीव मूर्ति करने में सक्षम थी (2 राजा 2:13–15)। यह मूसा को क्यों नहीं मिला, जिन्होंने मिस्र की भूमि में चमत्कार किए, बल्कि उनके عصا को मिला, जिसे परमेश्वर ने चमत्कारिक शक्ति प्रदान की, और उसके द्वारा पानी को रक्त में बदल दिया, समुद्र को विभाजित किया, और कई अन्य अद्भुत और महिमामय चमत्कार किए? इसके अलावा, तम्बू[64] , वाचा का संदूक[65] , मन्ना[66] वाली स्वर्ण मटकी[67] , पट्टियाँ और हारून की लाठी, वेदी, धूपदान और सात शाखाओं वाला दीपकदान—क्या इन सभी में परमेश्वर का अनुग्रह नहीं था, भले ही वे निर्जीव थे, और मानव हाथों द्वारा दिखाई देने वाली और छूने योग्य सामग्रियों से बने थे? फिर भी वे ईश्वर की महिमा से आच्छादित थे, एक बादल से परिपूर्ण और घिरे हुए थे, और केवल याजकों तथा लेवियों को ही वे सुलभ थे; कोई भी उन्हें छू नहीं सकता था, क्योंकि वे दैवीय और पवित्र थे। यदि पुराने नियम में ऐसा था, तो हमें नए नियम में पवित्र प्रतिमाओं पर प्रदान की गई कृपा पर आश्चर्य क्यों होना चाहिए?

एर्वान ने फिर आपत्ति जताई:

'भजन संहिता में लिखा है: *"परन्तु उनकी मूर्तियाँ चाँदी और सोने की हैं, मनुष्य के हाथों का काम"* (भजन संहिता 113:12): इसलिए तुम्हारी प्रतिमाएँ मूर्तियाँ हैं, क्योंकि वे मनुष्य के हाथों से बनी हैं।'

आर्चबिशप ने उत्तर दिया:

– मुझे इस दृष्टिकोण से कोई आपत्ति नहीं है कि जो मूर्तिपूजक ईश्वर को नहीं जानते, उनकी मूर्तियाँ, सारत; मूर्तियाँ ही हैं, क्योंकि उन्हें उन लोगों के समान बताया गया है जिन्होंने अपना जीवन ईश्वरहीन पतन में जिया: जादूगर, जादू-टोना करने वाले, हत्यारे, व्यभिचारी, और जिन सभी का ऐसे जीवन के परिणामस्वरूप एक दुखद मृत्यु हुई; उनकी स्मृति में, कुछ लोगों ने '' मूर्तियाँ बनाईं, और बाद की पीढ़ियों ने, शैतान द्वारा बहकाए और अंधे किए जाकर, उन्हें देवता

---

[63] मिलो – भेड़ की खाल; – एक बाहरी वस्त्र, एक लबादा, एक बरसाती कोट।

[64] मण्डप – यहूदियों का वह पोर्टेबल पवित्र स्थल, जिसे उन्होंने मरुभूमि में अपनी भटकन के दौरान प्रभु की आज्ञा और निर्देश पर बनाया था, और जो सुलैमान द्वारा यरूशलेम में भव्य मंदिर के निर्माण तक उनके साथ रहा।

[65] वाचा का सन्दूक – मूसा द्वारा निर्मित एक संदूक; वाचा यहूदी लोगों की सबसे पवित्र वस्तु थी। यह देवदार की लकड़ी से बना था और इसके अंदर और बाहर दोनों तरफ शुद्ध सोने की परत चढ़ी हुई थी। इसमें वे पट्टियाँ (पत्थर की स्लैब) थीं जिन पर दस आज्ञाएँ अंकित थीं, एक सुनहरी पात्र जिसमें मन्ना था, जिस पर यहूदी मरुभूमि में भटकते समय जीवित रहे, और हारून की लाठी, जिस पर फूल खिले थे।

[66] मन्ना – वह चमत्कारी भोजन जिसे ईश्वर ने इज़राइलियों को उनके चालीस साल के मरुभूमि के सफर के दौरान स्वर्ग से भेजा था।

[67] स्टाम्ना एक घड़े के आकार का पात्र है।

बना दिया और उनकी पूजा करने लगे। तुमने भी ऐसा ही किया, मूर्तियों की पूजा की, उन्हें अपने बेटों और बेटियों की बलि चढ़ाई, निर्दोष रक्त बहाया—अपने बेटों और बेटियों का रक्त, जिन्हें तुमने कनानी मूर्तियों को बलिदान किया, जो मूर्तियाँ ही हैं। लेकिन जब हम अब परमेश्वर के संतों की छवियाँ बनाते हैं, तो वे मूर्तियाँ नहीं, बल्कि सम्माननीय प्रतिमाएँ हैं। हम उन लोगों की समानता चित्रित करते हैं जिन्होंने परमेश्वर को जाना, उस पर विश्वास किया, धार्मिकता के द्वारा उसे प्रसन्न किया, जो ईमानदार, पवित्र और परमेश्वर के प्रिय थे, और जिन्होंने परमेश्वर की कृपा से कई चमत्कार किए। उन्होंने मृतकों को जीवित किया, बीमारों, अंधों, लंगड़ों और पक्षाघातग्रस्तों को चंगा किया; उन्होंने कोढ़ियों को शुद्ध किया और दुष्टात्माओं को भगाया; उनका निधन सम्मानजनक था, और उनकी स्मृति शाश्वत और गौरवमय है: *'प्रभु की दृष्टि में अपने संतों की मृत्यु अनमोल है!' उनकी स्मृति कभी हिलने वाली नहीं है; धर्मी की स्मृति युग-युग तक रहेगी'* (भजन संहिता 115:6, 111:6)।

जब एरवान ने फिर से इतना धर्मनिंदापूर्ण भाषण दिया, यह दावा करते हुए कि प्रतिमाएँ मूर्तियों से अलग नहीं हैं, तो आर्चबिशप ने कहा:

'तेरा वस्त्र, एरवान, और मिलाप का तम्बू—दोनों ऊन और सनी के बने हैं—लेकिन क्या उनमें समान शक्ति है? क्या तेरी लाठी और हारून की लाठी, जो कठोर बनी रही, को समान सम्मान प्राप्त है? घड़ा—जो तेरे घर में है—और मन्ना वाला पात्र—क्या वे समान हैं? वह संदूक जिसमें आप शरीर के लिए आवश्यक वस्तुएँ रखते हैं, और वाचा का संदूक – क्या उनकी महिमा एक समान है? प्रकाश के लिए आप अपने घर में जो आग और तेल जलाते हैं – क्या आप उनकी तुलना सुनहरे सात-शाखाओं वाले दीपक से करेंगे? वह घर जिसमें आप रहते हैं, और सुलैमान द्वारा निर्मित मंदिर – क्या आप एक की तुलना दूसरे से करेंगे? कदापि नहीं; फिर भी आप इन सभी चीज़ों का अतुलनीय रूप से अधिक सम्मान करते हैं, क्योंकि कभी-कभी दिव्य अनुग्रह उन पर विराम लेता था। इसी प्रकार यह भी समझें कि एक वस्तु एक मूर्ति है—एक दुष्ट व्यक्ति की प्रतिमा जिसे नरक में डाला गया है—और दूसरी परमेश्वर के एक पवित्र सेवक की प्रतिमा है, जिससे उस पर चित्रित व्यक्ति की प्रार्थनाओं के द्वारा प्रभु का दिव्य अनुग्रह हम पर बरसता है।

एरवान ने स्वर्गदूतों के बारे में भी कहा, कि वे अदेह हैं, जैसा लिखा है: *'वह अपने स्वर्गदूतों को आत्मा बनाता है'* (भजन संहिता 103:4), और फिर भी, ईसाई लज्जा के बिना, उन्हें प्रतिमाओं पर चित्रित करते हैं, अदेह आत्माओं को देहधारी रूप देते हैं। इस पर महाधर्माध्यक्ष ने उत्तर दिया:

'तुम नहीं जानते कि तुम क्या कह रहे हो, क्योंकि हमने स्वयं तुमसे ही स्वर्गदूतों को चित्रित करना सीखा है।'

एरवान ने आपत्ति जताई:

'हमने ऐसा कभी नहीं किया है।'

आर्चबिशप ने पूछा:

'क्या तुमने पूरा पुराना नियम पढ़ा है और यह नहीं सीखा?'

एरवान ने प्रत्युत्तर दिया:

'मैं प्रभु की कसम खाकर कहता हूँ कि मुझे ऐसा कोई समय ज्ञात नहीं जब हमारे बीच स्वर्गदूतों की मूर्तियाँ कभी चित्रित या पूजी गई हों!'

इस पर आर्चबिशप ने उत्तर दिया:

'सचमुच, आपने ही यह बात उठाई है: जब सुलैमान ने परमेश्वर के लिए मंदिर का निर्माण किया, तो क्या उसने परम पवित्र स्थान के ऊपर महिमा के करूब नहीं स्थापित किए, जो वेदी पर छाए हुए थे?' और क्या उसने पवित्र स्थान के पहले और दूसरे द्वार के ऊपर भी करूब नहीं रखे थे? वास्तव में, मूसा द्वारा स्थापित तम्बू में – क्या वाचा के संदूक के ऊपर करूबों की प्रतिमाएँ नहीं थीं, और क्या परदों पर करूबों के चेहरे कढ़े नहीं थे? और क्या ये सभी स्वर्गदूतों की प्रतिमाएँ, तम्बू और मंदिर के साथ, आपके द्वारा पूजी नहीं जाती थीं? तो, यदि आपने अमूर्त प्राणियों को चित्रित करके उनका सम्मान किया है, तो आप हमें उन संतों के चेहरों को चित्रित करने और पूजने के लिए क्यों दोष देते हैं, जिन्होंने देह में रहते हुए ईश्वर को प्रसन्न किया?

बहस के चौथे दिन यह और इसी तरह की बहुत सी बातें कही गईं; लेकिन जब शाम हो गई, और राजा तथा आर्चबिशप अपनी सीटों से उठ खड़े हुए, तो सभा तितर-बितर हो गई, इस उम्मीद में कि बिहस सुबह तक समाप्त हो जाएगी और विजेता की विजय का साक्षी बनना संभव होगा। यहूदी एरवान के लिए प्रसन्न हुए कि उसने अच्छी तरह उत्तर दिया और आर्चबिशप से प्रश्न पूछे, और उसे प्रोत्साहित करते हुए उन्होंने उससे कहा:

'तुम अच्छा कर रहे हो; डरो मत, बल्कि दृढ़ रहो, क्योंकि हम देखते हैं कि ईश्वर तुम्हारे साथ है। अपने दिल को डरने न दो, क्योंकि यह स्पष्ट है कि राजा तुम दोनों की बात खुशी से सुन रहा है।'

हालाँकि, एरवान ने उनसे उत्तर दिया:

'भाइयो, मेरी राय में, वह व्यक्ति बुद्धि और वाक्पटुता में मुझसे कहीं अधिक है, और मेरे लिए उसे हराना असंभव है; आपने स्वयं सुना है कि उसने मेरे सभी तर्कों को खंडित कर उन्हें शर्मिंदा किया और उन्हें निरर्थक साबित किया है।'

अगले दिन बहुत सुबह, जब यहूदियों में सबसे बुद्धिमान एक बार फिर यर्वन के पास आए, तो उन्होंने उनसे कहा:

'भाइयो, मैं तुमसे सच कहूँगा: मैं आर्चबिशप से हार जाऊँगा, क्योंकि कल रात एक दर्शन में मैंने मूसा और यीशु को देखा, जिनके बारे में हम विवाद कर रहे थे। मैंने उन्हें किसी पवित्र स्थल की छत पर खड़े और बातें करते हुए देखा, और मैंने मूसा को यीशु के सामने झुकते हुए और अपने हाथ छाती से चिपकाए हुए देखा, मानो वे बंधे हों, और यीशु के सामने, जैसे उनके प्रभु परमेश्वर के सामने, विस्मित खड़े थे। मैं इस पर चकित था, और जब मेरा मुँह खुला, तो मैंने कहा:

'महाशय, मूसा, क्या यह उचित है जो आप कर रहे हैं?'

लेकिन, मेरी ओर मुड़कर, उन्होंने मुझे रोकते हुए कहा:

'चुप हो जाओ! मैं अपने प्रभु की उपासना करके पाप नहीं कर रहा हूँ, क्योंकि मैं तुम्हारे जैसे नहीं हूँ और मैं अपने सृष्टिकर्ता और प्रभु की गवाही देता हूँ। तुम सत्य का विरोध करके धर्मी महाधर्माध्यक्ष को क्यों परेशान कर रहे हो? आने वाले दिन तुम उससे पराजित हो जाओगे और मेरी तरह प्रभु यीशु मसीह की उपासना करोगे।'

'भाइयो, मैंने यह देखा है, परन्तु मुझे इसका अर्थ नहीं पता; तथापि, मैं महाधर्माध्यक्ष का विरोध करना जारी रखूँगा, और हमारे विधान पर जोर दूँगा, जब तक कि परमेश्वर स्वयं अपनी इच्छा से मामलों को व्यवस्थित न कर दें।'

इसे सुनकर कई लोग संदेह और भ्रम से भर गए। जब वह दिन आया और परिषद बुलाई गई, तो राजा अपनी परिषद के साथ, आर्चबिशप अपने पुरोहितों के साथ, और लोगों की एक बड़ी भीड़ इकट्ठा हो गई थी; एर्वान भी उसकी सहायता कर रहे कानून के शिक्षकों के साथ उपस्थित हुआ, और बहसें फिर से शुरू हो गईं, ठीक वैसे ही जैसे अतीत में हुआ करती थीं। एक विद्वान नोटरी, ए[68] , जो आर्चबिशप का सेवक था और जिसे वह अलेक्जेंड्रिया से अपने साथ लाया था, एक संक्षिप्त लेखक होने के कारण, वहाँ उपस्थित था और उसने आर्चबिशप और एरवान दोनों द्वारा दिए गए सभी भाषणों को दर्ज किया। पवित्र आत्मा की मदद से, जो आर्चबिशप के होठों से बोल रहा था, विरोधी पक्ष पराजित हुआ, जबकि हमारी ओर, जो प्रभु में थी, विजयी हुई। आर्चबिशप हर बहस में विजयी रहे, जबकि एरवान और उसकी सहायता कर रहे यहूदी लिपिक कमजोर होते गए; फिर भी उनकी द्वेषपूर्णता ने उन्हें अंधा कर दिया था, उनके कान बहरे थे, और उनकी आँखें सच्चाई के प्रति बंद थीं। और यह आवश्यक था कि संत के शब्दों के बाद विश्वास की शक्ति और एक चमत्कार हो, जो द्वेष से भर गए लोगों को बेनकाब करे और उनके अविश्वास को शर्मिंदा करे—जो वास्तव में इस प्रकार हुआ।

जब यर्वान अंततः बहस में पराजित हो रहा था, तो वह चिल्लाया:

'हम लंबी बहसों में समय क्यों बर्बाद कर रहे हैं! मैं इस विवाद का निपटारा करूँगा। यदि आप चाहते हैं, महाधर्माध्यक्ष, कि मैं यीशु पर विश्वास करूँ, कि वह सच्चे ईश्वर हैं, तो उन्हें मुझे जीवित दिखाएँ, ताकि मैं उन्हें देख सकूँ और उनसे बात कर सकूँ; और तब मैं यह स्वीकार करूँगा कि आप ईसाइयों ने हम पर विजय प्राप्त की है और हमें हरा दिया है।'

जब यर्वन ने यह कहा, तो यहूदियों की सभा ने पुकारा:

'हे गुरु, हम आपसे विनती करते हैं, भटक न जाएँ, कहीं आप ईसाई न बन जाएँ; अधिक साहसी बनें और सत्य पर दृढ़ रहें, क्योंकि आप जानते हैं कि हमारे पूर्वजों के एक ईश्वर से अधिक सत्य कुछ भी नहीं है।'

एरवान ने उनसे गुस्से में कहा:

'तुम यह कैसी बकवास कर रहे हो? सुनो, अगर वह मुझे यह विश्वास दिला दे कि भविष्यवक्ताओं द्वारा जिसकी भविष्यवाणी की गई थी, वह मौजूद है, तो तुम और किसका इंतज़ार करना चाहते हो?'

आर्चबिशप ने, यह देखकर कि वह सच्चे मन से बोल रहा था और चापलूसी नहीं कर रहा था, उससे कहा:

---

[68] नोटरी – एक लिपिक; यह शब्द साम्राज्यिक सचिवों, जो सबसे महत्वपूर्ण राज्य बैठकों के कार्यवृत्त रखते थे, और पादरी-प्रधानों के सचिवों, दोनों के लिए प्रयुक्त होता था।

एर्वान, तुम एक बड़ी परीक्षा पेश कर रहे हो, और तुम्हारी मांग हमारी शक्ति से परे है, क्योंकि तुम मनुष्यों से नहीं बल्कि ईश्वर से मांग रहे हो; फिर भी, ताकि तुम और तुम्हारे साथ वाले विश्वास कर सकें, और ताकि विश्वासियों के हृदय को बल मिले, ईश्वर इसे करने के लिए पर्याप्त शक्तिशाली है। बस मुझे एक बार और हमेशा के लिए बता दो, तुम चाहते हो कि मैं तुम्हें कैसे विश्वास दिलाऊँ?'

एर्वान ने उत्तर दिया:

'अपने प्रभु से विनती करो, यदि वह स्वर्ग में है, जैसा तुम कहते हो, कि वह यहाँ उतर आए और मुझे प्रकट हो, ताकि मैं उससे बात कर सकूँ; और मैं प्रभु की शपथ खाता हूँ कि मैं तुरंत उस पर विश्वास कर लूँगा और बपतिस्मा लूँगा।'

जब यर्वान ने यह कहा, तो यहूदियों की सारी भीड़ चिल्ला उठी:

'वास्तव में, आर्चबिशप, अपने शब्दों की सच्चाई हमें व्यवहार में साबित करें; हमें अपना मसीह दिखाएँ, ताकि, कोई जवाब न पाकर, हम भयभीत होकर उस पर विश्वास कर सकें।'

और, चिल्लाते हुए, वे सभी संत ग्रेगरी पर टूट पड़े, यह मांग करते हुए कि वह उन्हें मसीह को मूर्त रूप में दिखाएं, यदि वह अपने सूली पर चढ़ाए जाने और मृत्यु के बाद जीवित थे। फिर यहूदियों ने आपस में कहना शुरू कर दिया:

'यदि आर्चबिशप हमें अपना मसीह दिखा देते हैं, तो हम क्या करेंगे? हाय हमारा हाल! अपनी इच्छा के विरुद्ध हमें ईसाई बनना पड़ेगा।'

हालाँकि, अन्य लोगों ने कहा:

'यदि वह हमें मसीह दिखाता है, तो हमें उस पर विश्वास क्यों नहीं करना चाहिए?'

फिर भी अन्य लोगों ने कहा:

'उसे कैसे दिखाया जा सकता है जो एक मारे गए आदमी की तरह मर गया है, और उसके मरने के दिन से इतने साल बीत चुके हैं? तो फिर, उसका शरीर और आत्मा कहाँ मिलेंगे, जब कब्र में उसकी सभी हड्डियाँ और नसें बहुत पहले ही राख में मिल गई हैं?'

आर्चबिशप ने मामले के महत्व पर विचार करते हुए और उनके दृढ़ आग्रह को देखकर, अपना पूरा भरोसा प्रभु पर रख लिया और मन ही मन सोचा कि यदि वह प्रभु मसीह से उनकी प्रार्थना स्वीकार करने का निवेदन नहीं करते, तो विरोधी पक्ष को बड़ी विजय प्राप्त होगी, यहूदी विजयी निकलेंगे, जबकि ईसाइयों को पराजित दिखाया जाएगा, और हमारे शत्रु ईसाइयों का उपहास और निंदा करेंगे। और आशा के साथ उन्होंने यहूदियों की सभा से कहा:

'यदि मसीह चाहेंगे, तो मैं उन्हें तुम्हें दिखा सकूँगा। परन्तु तुम भलीभाँति जानते हो कि यदि मैं उन्हें तुम्हें दिखाऊँ और तुम उन पर विश्वास करने से इनकार कर दो, तो तलवार तुरंत ही तुम सबको नाश कर देगी; परन्तु यदि मैं अपनी ही अयोग्यता के कारण अपने प्रभु को तुम्हें नहीं दिखा पाता, तो तुम अपनी इच्छा के अनुसार करो।'

यह सुनकर यहूदी दुखी भी हुए और प्रसन्न भी: दुखी इसलिए क्योंकि उन्हें डर था कि यदि वह उन्हें मसीह दिखा देगा, तो उन्हें अपनी इच्छा के विरुद्ध, उस पर विश्वास करने के लिए मजबूर होना पड़ेगा; प्रसन्न, हालांकि, इस आशा में कि वह उन्हें मसीह नहीं दिखाएगा, और तब वे अपने धर्म पर बने रहने के लिए स्वतंत्र रह सकेंगे। लेकिन ये बातें आर्चबिशप एर्वान और उनके साथ मौजूद व्यवस्था के सबसे बुद्धिमान शिक्षकों को भाईं; उन्होंने एक-दूसरे से कहा:

'यह असंभव है कि हमारे पूर्वजों द्वारा मार डाला गया कोई व्यक्ति, जो मर गया और एक कब्र में बंद किया गया था, और जिसके शरीर को उसके शिष्यों द्वारा चुरा लिया गया था, वह 500 साल बाद भी जीवित हो सकता है।'

संत ग्रेगरी, सुसमाचार में प्रभु के वचन जानते हुए: *'यदि तुममें सरसों के दाने के बराबर भी विश्वास हो, तो तुम इस पहाड़ से कहोगे, "यहाँ से उठकर वहाँ गिर जा," और वह गिर जाएगा; और तुम्हारे लिए कुछ भी असंभव नहीं होगा'* (मत्ती 17:20), और उन्हें मन में रखते हुए, ईश्वर में अटूट विश्वास और उन पर दृढ़ भरोसा रखते हुए, अपनी सीट से उठे और थोड़ी दूरी पर चले गए – प्रार्थना के लिए अधिक उपयुक्त स्थान पर। ज़ार, सभी लोगों के साथ, ईश्वर के सामने ऐसी महान निर्भीकता और आर्चबिशप के विश्वास को देखकर चकित और विस्मित रह गए कि उन्होंने ऐसा भयावह कार्य करने की हिम्मत की, और वे यह देखने के लिए भयभीत होकर इंतजार करने लगे कि क्या होगा। संत, सभा से थोड़ी दूरी पर चले जाने के बाद, उन्होंने क्रॉस का चिह्न बनाया और प्रार्थना करना शुरू कर दिया। विनम्रता से अपने घुटने टेककर और अपना सम्पूर्ण अस्तित्व स्वर्ग की ओर मोड़कर, उन्होंने उपस्थित सभी के सुनने के लिए लंबे समय तक और ऊँचे स्वर में प्रार्थना की, जिसमें उन्होंने परमेश्वर के वचन के अवतार के सभी रहस्यों और मनुष्यों के बीच मसीह के सम्पूर्ण

जीवन को याद कयिा, उनके जन्म से लेकर उनकी स्वेच्छा से हुई पीड़ा, क्रूस, उनकी मृत्यु, तीसरे दनि का पुनरुत्थान, और स्वर्ग में आरोहण तक। और अंत में, उन्होंने कहा:

'हे प्रभु, स्वयं को इन लोगों के सामने प्रकट कर, जो द्वेष से कठोर और अंधा हो गए हैं; अपने पवत्रि नाम के लिए स्वयं को प्रकट कर, और उन्हें अपनी आँखों से तेरा जीवन-दायक मानवत्व दखिा, जसिमें तूने हमारे लिए स्वयं को परधिानति कयिा, और जसिसे तू स्वर्ग में आरोहण कयिा, ताकि तुझे देखकर, वे तुझ पर, सच्चे परमेश्वर पर, और जसिने तुझे भेजा—पति और पवत्रि आत्मा—उन पर वशि्वास करें।

जैसे ही उसने अपनी प्रार्थना समाप्त की, और सभी ध्यान से उसे नहिार रहे थे, अचानक एक भूकंप आया और पूर्व से गरज की एक भयंकर गड़गड़ाहट सुनाई दी, जसिसे पृथ्वी कांप उठी, और सभी डर के मारे जमीन पर गरि पड़े। जब वे अपने भय से उबरकर धीरे-धीरे अपने पैरों पर खड़े हुए और अपनी दृष्टि पूर्व की ओर उठाई, तो उन्होंने देखा कि स्वर्ग खुल गया था और एक उज्ज्वल बादल, जसिमें अग्नि की लपटें और सूर्य की करिणें थीं, वहाँ से पृथ्वी पर उतर रहा था। बादल के बीच एक पुरुष दखिाई दे रहे थे, जो मनुष्यों के सभी पुत्रों में सबसे सुंदर थे, हमारे प्रभु यीशु मसीह, जनिका चेहरा अकथनीय रूप से चमक रहा था और उनके वस्त्र बजिली की तरह दमक रहे थे। एक अद्भुत गति से, बादल पर पैर रखते हुए, वे पृथ्वी के नकिट आए और बादल पर महाधर्माध्यक्ष के सामने ऊँचे खड़े हो गए, और अपनी उस सुंदरता से सभी की आँखें और हृदय अपनी ओर खींच लिए, जसिका वर्णन कोई भी जीभ नहीं कर सकती। उनकी महमिा के भय से, जसिे देखना असहनीय था, ठीक वैसे ही जैसे शष्यि एक बार टाबोर पर्वत पर थे, इसलिए सभी भूमि पर साष्टांग दण्डवत् हो गए—राजा अपने कुलीनों के साथ, और सभी लोग, जवान और बूढ़े एक समान; जबकि यहूदी, बड़े भय से ग्रस्त होकर, इधर-उधर भागने लगे, वे भागने की कोशशि कर रहे थे, क्योंकि दविय प्रकाश की करिणों ने उन्हें झुलसा दयिा था, और प्रभु की महमिा, जसिे वे देख नहीं सकते थे, ने उन्हें बड़े भय से भर दयिा था। लेकनि वे न तो भाग सके और न ही उस जगह से हलि सके, क्योंकि एक अदृश्य शक्ति ने उन्हें जकड़ रखा था। हालाँकि, महाधर्माध्यक्ष, जो स्वर्ग से बल प्राप्त कर चुके थे, ने एरवान को ऊँचे स्वर में पुकारा:

'एरवान, देखो उस एक को, जसिके बारे में तुमने कहानयिों में इतना सुना है; उस पर दृष्टि डालो और वशि्वास करो कि वह एक पवत्रितम, एक प्रभु, यीशु मसीह, परमपति की महमिा के लिए है, आमीन।'

लेकनि एरवान स्तब्ध हो गया और उत्तर नहीं दे सका। और प्रभु की वाणी सुनाई दी:

'महाधर्माध्यक्ष की प्रार्थना के द्वारा, वही जो तुम्हारे पूर्वजों द्वारा सूली पर चढ़ाया गया था, तुम्हें चंगा करता है।'

यह आवाज सुनकर वे और भी अधकि कांप उठे और भय से जमीन पर गरि पड़े। और जैसे एक बार दमश्कि के मार्ग पर शौल के साथ हुआ था, जब स्वर्ग से एक ज्योति उसके चारों ओर चमक उठी और ऊँचे स्थान से एक आवाज सुनाई दी, और वह जमीन पर गरि पड़ा और यद्यपि उसकी आँखें खुली थीं, फरि भी उसने कुछ नहीं देखा (प्रेरतिों के काम 9:3-8), वैसे ही वे भी अंधे हो गए; यद्यपि उनकी आँखें खुली थीं, फरि भी उन्होंने कुछ नहीं देखा, बल्कि केवल शोक मनाया और कड़ुवाहट से रोए। यह सब होने के बाद, प्रभु के मुख के सामने एक दविय ध्वनि सुनाई दी, और वह तेज बादल जो प्रभु के पैरों के नीचे था, उन्हें सभी की दृष्टि से छपिा ले गया; जैसे-जैसे वह ऊपर उठते गए, वह उनके पीछे चारों ओर धीरे-धीरे घना होता गया, जब तक कि दविय महमिा स्वर्ग में वलिीन नहीं हो गई और जो कुछ भी देखा गया था वह दृष्टि से ओझल नहीं हो गया। राजा और सभी ईसाइयों ने प्रभु का अनुसरण करते हुए, लंबे समय तक नडिर होकर पुकारा:

'हे प्रभु, दया करें!'

इस बीच, धर्मी आर्चबशिप, जमीन पर मुंह के बल लेटे हुए, आंसुओं से भरी आँखों के साथ लोगों के लिए प्रभु से प्रार्थना कर रहे थे। इसके बाद, परषिद में इकट्ठा हुए सभी लोगों—तसर अपने मंत्रमिंडल और लोगों के साथ—ने आर्चबशिप ग्रेगरी का वशिेष सम्मान और श्रद्धा के साथ सम्मान करना शुरू कर दयिा, और वे उनकी पवत्रिता और उनकी प्रार्थना की शक्ति से चकति थे। हालांकि, यहूदयिों ने एक-दूसरे से पूछा:

– 'भाई, क्या तुम कुछ देख रहे हो?'

और प्रत्येक ने उत्तर दयिा:

'मुझे कुछ भी नहीं दखि रहा है।'

और वे सभी एरवान की ओर चलि्ला उठे:

'गुरुजी, हम क्या करें?'

यर्वान ने उत्तर दिया:

'क्या केवल तुम ही ईसाई ईश्वर को देखकर अंधा हो गए हो, या ईसाइयों को भी यही भाग्य मिला है?'

यह सुनकर, ईसाइयों ने कहा:

'मसीह की कृपा से, हम स्पष्ट रूप से देखते हैं, और हमारी आँखें अब पहले से अधिक स्वस्थ हैं; केवल तुम ही अपने अविश्वास के कारण अंधे हो। *"हे प्रतिशोध के परमेश्वर, हे प्रभु, प्रतिशोध के परमेश्वर, अपना परिचय दे"* (भजन संहिता 93:1); उसने तुम्हारी दृष्टि छीन ली है, क्योंकि तुम, जो अयोग्य हो, उसे देख चुके हो।'

तब एरवान ने सभी यहूदियों के साथ मिलकर आँसुओं के साथ आर्चबिशप से विनती की कि वे उनकी अंधी आँखों को ठीक करें और पवित्र बपतिस्मा प्रदान करें। आर्चबिशप ने उनसे पूछा: क्या वे प्रभु यीशु मसीह में सच्चे मन से विश्वास करते हैं? और उन्होंने सभी ने गवाही दी कि वे दृढ़ विश्वास के साथ विश्वास करते हैं। तुरंत, आर्चबिशप ने अपने साथ मौजूद बिशपों और पुरोहितों के साथ मिलकर उन्हें उपदेश दिया और बपतिस्मा का संस्कार देने की प्रक्रिया शुरू की। जब यहूदी पवित्र बपतिस्मा के पात्र में प्रवेश कि[69] , तो ऐसा लगा जैसे उनकी आँखों से एक प्रकार की पट्टी तुरंत उतर गई हो, और वे सभी *अपनी* शारीरिक और आध्यात्मिक दोनों आँखों से देखने लगे, *'क्योंकि धार्मिकता के लिए हृदय में विश्वास करना और मुक्ति के लिए मुख से प्रभु यीशु मसीह की घोषणा करना है'* (रोमियों 10:10), और सभी को पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम पर बपतिस्मा दिया गया, जिसकी शुरुआत एरवान से हुई, जिनके लिए स्वयं राजा ने बपतिस्मा के कुंड पर गॉडफादर का काम किया और जिन्हें पवित्र बपतिस्मा में 'लेव' नाम दिया गया; राजा ने उन्हें अपने सिनक्लाइट में स्वीकार किया, और उन्हें एक विद्वान और सम्मान के योग्य व्यक्ति के रूप में एक पैट्रिसियन[70] बनाया। एर्वान को अपनी प्रारंभिक भूल पर गहरा पछतावा हुआ और वह विस्मय और आश्चर्य से भर गया, और निरंतर अपने मन में प्रभु के दर्शन को याद करता रहा।

उसने कहा, 'यह कैसे है कि प्रिभु यीशु मसीह जीवित हैं—उन्हें जिसे हमारे पूर्वजों ने सूली पर चढ़ाया और दफनाया था, और जिसे हम मृत समझते थे?'

और आँखों में आँसू लिए वह चिल्लाया:

'प्रभु यीशु मसीह, जीवते परमेश्वर के पुत्र! मेरी अज्ञानता में किए गए पाप के लिए मुझे क्षमा करें।'

जहाँ तक पवित्र आर्चबिशप एरवान का प्रश्न है, उन्होंने उन्हें परमेश्वर के एक स्वर्गदूत के रूप में सम्मानित किया और उनसे अलग होना नहीं चाहते थे। इस प्रकार ओमरीत की भूमि पवित्र विश्वास के प्रकाश से प्रबुद्ध हुई: सभी शहरों और गांवों में, न केवल यहूदियों बल्कि मूर्तिपूजकों को भी बपतिस्मा दिया गया। और पूरी भूमि में महान आनंद हुआ; लोगों के साथ-साथ स्वर्गदूत भी मानव आत्माओं के इस धर्म परिवर्तन और पश्चाताप पर प्रसन्न हुए, और ईश्वर, जो सभी लोगों के उद्धार की कामना करते हैं, की महिमा हुई।

इसके बाद, महाधर्माध्यक्ष संत ग्रेगरी ने राजा को यह आदेश देने की सलाह दी कि यहूदी अपने आप में न रहें, बल्कि ईसाइयों के बीच बसें, ताकि वे गुप्त सभाएँ या बैठकें न कर सकें। राजा ने निम्नलिखित आदेश जारी किया:

'कोई यहूदी अपनी बेटी का विवाह यहूदी वंश के पुरुष से न करे, बल्कि उसे दामाद के रूप में एक ईसाई ले; और यहूदी का बेटा यहूदी बेटियों में से वधू न लाए, बल्कि उसे एक ईसाई वधू चाहिए; और यदि कोई इस कानून को तोड़ने की हिम्मत करता है, तो उसे तलवार से मार डाला जाएगा।'

आर्चबिशप ने यह इसलिए किया ताकि यहूदी लोग, ईसाइयों के साथ मिल-जुलकर, कुछ ही वर्षों में अपने प्राचीन पुराने नियम के धर्म और रीति-रिवाजों को पूरी तरह से भूल जाएँ। हर ओर सन्नाटा छा गया; चारों ओर पूर्ण विनम्रता और धार्मिकता की किरणें बिखर रही थीं। राजा और आर्चबिशप ईश्वर के समक्ष परिश्रमपूर्वक कार्य करते थे, प्रभु मसीह की स्तुति में पूरी रात जागते, मानव आत्माओं के मोक्ष का ध्यान रखते और दया तथा न्याय से राज्य का शासन करते थे। धार्मिक राजा अव्राम, ओमरीत की भूमि में 30 वर्ष तक रहने के बाद, सेंट ग्रेगरी द्वारा अपने मृत्यु के दिन की सूचना मिलने पर, निधन हो गए और अफ़ारा शहर में सम्मान के साथ दफनाए गए। राजा की मृत्यु के तुरंत बाद, हमारे पवित्र पिता ग्रेगरी ने अपनी भेड़ों का चरवाहा बनकर, प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं की नींव पर विश्वास स्थापित किया, और ईश्वर की महिमा के लिए कई चिह्न और चमत्कार किए, तथा 19 दिसंबर को अपना जीवन समाप्त किया और उसी शहर में, महान

---

[69] बपतिस्मा का फव्वारा – बपतिस्मा संस्कार में प्रयुक्त एक पात्र।

[70] अर्थात्, उन्हें उच्चतम वर्ग में गिना जाता था, जो हमारी वंशानुगत कुलीनता के अनुरूप था।

चर्च[71] के तहखाने में सम्मान के साथ उन्हें वदिा दी गई। ओमरिटि क्षेत्र का सारा जनसमूह उनके लिए रोया, और सबसे बढ़कर बपतस्मिा लेने वाले यहूदी, क्योंकि वह एक अच्छे और दयालु पति था, जो लोगों को प्रयि थे और परमेश्वर को स्वीकार्य थे, जनिके सामने संत ग्रेगरी अब अन्य पवत्रि धर्मगुरुओं के बीच खड़े हैं, और उनके साथ पति, पुत्र और पवत्रि आत्मा की महमिा सदैव और युगानुयुग करते हैं। आमीन।

पवत्रि शहीदों एलयिाह, प्रोबस और एरसि का स्मरणोत्सव

19 दसिंबर को स्मरण

संत एलयिाह, प्रोव और एरसि मस्रि के मूल नविासी थे। उन्होंने ईसाई धर्म अपनाया और ईश्वर की महमिा के प्रति उत्साह से, वे उन लोगों से मलिने जाते थे जो मसीह के लिए कालकोठरयिों में बंद थे, उन्हें उनके कष्टों के बीच सांत्वना देते और उनके घावों को भरते थे। एक दनि वे सलिसिया के क्षेत्र[72] में गए और अस्कालोन[73] शहर में प्रवेश करते ही उन्हें शहर के दरवाजों पर ही क्रूर मूर्तपिूजक रक्षकों ने हरिासत में ले लिया, जन्होंने उन्हें जासूस समझ लिया और राजकुमार फर्मलियिन के सामने पेश कर दिया। राजकुमार के सामने पूछताछ के दौरान, उन्होंने खुद को ईसाई घोषति किया और परणिामस्वरूप उन्हें क्रूर यातनाओं का सामना करना पड़ा। संत एरसि ने सबसे पहले अनेक यातनाएँ झेलीं और उन्हें खंभे पर जलाने की सज़ा दी गई। फरि संत प्रोव को यातनाएँ दी गईं और तलवार से उनका सरि कलम कर दिया गया। अंत में, बहुत कष्ट सहने के बाद, संत एलिया[74] का भी तलवार से सरि कलम कर दिया गया।

पवत्रि शहीदों पॉलएिवक्टस और टमिोथी की स्मृति

19 दसिंबर को स्मरण किया जाता है

पवत्रि शहीद पॉलएिक्टस केसरिया के मूल नविासी थे[75] , जहाँ उन्होंने सुसमाचार का बड़े सफलतापूर्वक प्रचार किया, और कई अवशि्वासयिों को मूर्तपिूजा से पवत्रि ईसाई धर्म में परविर्तति किया। अपने प्रचार के लिए, उन्हें गरिफ्तार कर जेल में डाल दिया गया। मसीह का त्याग करने के लिए लगातार समझाने के बाद, उसके पूरे शरीर को लोहे के पंजे से फाड़ दिया गया; फरि उसकी जबड़ा तोड़ दी गई और उसे एक तपती भट्टी में फेंक दिया गया।

उसी समय, मौरटिानिया[76] में, डकिन टमिोथी ने मसीह के धर्म का सफलतापूर्वक प्रचार किया। इसके लिए, उन्हें कई और गंभीर कष्टों से गुजरना पड़ा। उन्हें जेल में डाल दिया गया, भूख और प्यास से पीड़ति किया गया, और मूर्तयिों को बलदिान चढ़ाने के लिए व्यर्थ उपदेश देने के बाद जब उन्हें कैद से बाहर नकिाला गया, तो वे प्रार्थना करते हुए अपने लिए तैयार की गई जलती हुई चति ' ' पर चढ़ गए और अपना प्राण ईश्वर को सौंप दिया। उनके अवशेषों को मौरटिानिया के क्षेत्र '[77] ' में वशि्वासयिों द्वारा सम्मानपूर्वक दफनाया गया।

2 जनवरी

20 दसिंबर (पुराने कैलेंडर के अनुसार)

---

[71] संत ग्रेगरी की मृत्यु लगभग 552 में हुई।
[72] सलिसिया – एशिया माइनर का एक दक्षणि-पूर्वी तटीय क्षेत्र।
[73] अश्कलॉन – फलिस्तीन में भूमध्य सागर के कनिारे स्थति एक प्राचीन फलिस्तीनी नगर।
[74] इन सभी शहीदों ने वर्ष 308 में कष्ट सहे।
[75] यह, बेशक, एशिया माइनर के पूर्वी भाग में स्थति कैपाडोसिया के सेज़ारिया को संदर्भति करता है।
[76] मॉरटिानिया – उत्तरी अफ्रीका में एक रोमन तटीय प्रांत।
[77] पवत्रि शहीदों पोलीएक्टस और डकिन थमिोथी ने चौथी शताब्दी की शुरुआत में यातनाएँ भोगीं।

संत इग्नेशयिस द गॉड-बेयरर की शहादत।

20 दसिंबर को स्मरणोत्सव

जब ट्राजन ने रोमन सहिासन संभाला[78] , तब अंतीयक के चर्च के बशिप संत इग्नेशयिस थे, जो नाम और कर्म दोनों से 'ईश्वर-वाहक' के रूप में जाने जाते थे, और उन्होंने प्रेरति पतरस के उत्तराधकिारी संत इवोद का स्थान लयिा था। सीरयिा की शानदार राजधानी रोमन साम्राज्य के भीतर रोम के बाद सबसे बड़ा शहर था और इसकी आबादी लगभग 200,000 थी। यह संतों पतरस और पवत्रि पौलुस प्रेरतिों के उपदेश देने के कार्यों का स्थल था, और उनके नधिन के बाद, एशयिा माइनर में संत यूहन्ना प्रेरति की सेवा भी यहाँ तक पहुँची। आज, अंत्योख एशयिाई तुर्की में अंताकया नामक एक गरीब छोटा शहर है, जो समुद्र से लगभग 10 वर्स्ट (लगभग 100 कलिोमीटर) दूर स्थति है। – संत पतरस प्रेरति ने ईस्वी 47 से 67 तक अंतीयकयिा के चर्च का नेतृत्व कयिा; उनके उत्तराधकिारी, संत एवोद प्रेरति ने ईस्वी 68 तक; और संत इग्नाशयिस ईश्वर-वाहक ने ईस्वी 68 से 107 तक। इस दव्यि इग्नाशयिस ईश्वर-वाहक के बारे में कहा जाता है कि जब वे एक शशिु थे[79] , तब जबकि प्रभु यीशु मसीह पृथ्वी पर लोगों के बीच रह रहे थे और उन्हें परमेश्वर के राज्य के बारे में सखिा रहे थे, इग्नाशयिस के माता-पतिा एक बार भीड़ में खड़े थे, अपने बच्चे के साथ, उद्धारकर्ता के होठों से नकिलते परमेश्वर के वचनों को सुन रहे थे। उन्हें देखते ही प्रभु ने लड़के इग्नाशयिस को अपने पास बुलाया, उसे लोगों के बीच खड़ा कयिा, उसे गले लगाया और अपनी बाहों में उठाकर कहा:

'यदि तुम न लौटकर बालकों के समान न बनोगे, तो स्वर्ग के राज्य में प्रवेश न करोगे; और जो कोई मेरे नाम पर ऐसे एक बालक का स्वागत करता है, वह मेरा स्वागत करता है' (मत्ती 18:3, 5; मरकुस 9:37; लूका 9:48)।

इस प्रकार संत इग्नासयिस को 'ईश्वर का वाहक' कहा जाने लगा, क्योंकि वे मसीह के अवतार की बाहों में उठाए गए थे, और क्योंकि वे अपने हृदय और अपने होठों में ईश्वर को धारण करते थे[80] , संत पौलुस प्रेरति के समान एक पात्र, जसिे राष्ट्रों और राजाओं के सामने ईश्वर का नाम धारण करने के लिए चुना गया था। वह शुरू में संत जॉन द थयिोलोजयिन[81] के शष्यि थे, संत पॉलीकार्प, स्मर्ना के बशिप[82] के साथ। फरि, सभी पवत्रि प्रेरतिों की सलाह पर, उन्हें अंतीयक में बशिप नयिुक्त कयिा गया, जहाँ अन्य स्थानों की तुलना में ईसाई नाम पहले प्रकट हुआ था[83] । चर्च का प्रभार संभालने के बाद, उन्होंने धर्मपरायणता का प्रचार करने में कोई कसर नहीं छोड़ी, और हर काम में प्रेरतिों जैसा उत्साह दखिाया। इन पवत्रि धर्मगुरु ने चर्च में स्वर्गदूतों के गायन-दलों की तरह, दो गायन-दलों द्वारा दव्यि भजनों का गायन करने की प्रथा स्थापति की; क्योंकि, एक दव्यि प्रकटवाणी प्राप्त करने पर, उन्होंने देखा कि कैसे स्वर्गदूतों के गायन-दल बारी-बारी से गाते थे: जब एक गाता था, तो दूसरा चुप रहता था; जब दूसरा गाता था, तो पहला सुनता था; और जब एक भजन समाप्त कर लेता था, दूसरा शुरू कर देता; इस प्रकार, स्वर्गदूतों के गायन मंडलों ने पवत्रि त्रमिूर्त की महमिा की, जैसे कि वे भजन एक-दूसरे को सौंप रहे हों। यह प्रकाशन प्राप्त करने के बाद, संत इग्नेशयिस ने सबसे पहले अपनी अंकोना की कलीसयिा में पवत्रि भजनों का यह क्रम स्थापति कयिा, और वहां से यह सुंदर अनुष्ठान सभी कलीसयिाओं में अपनाया

---

[78] सम्राट ट्राजन ने 98 से 117 तक शासन कयिा।

[79] संत इग्नेशयिस के जन्म के स्थान और समय या उनके प्रारंभकि पालन-पोषण के बारे में कोई नश्चिति जानकारी नहीं है। वह सीरयिाई मूल के थे; उनके सीरयिाई नाम, नुरोनो, का अर्थ है 'आग जैसा', जैसे इग्नेशयिस का भी अर्थ है, जो लैटनि शब्द ignis - आग से लयिा गया माना जाता है।

[80] 'ईश्वर-वाहक' (Θεοφόρος) की उपाधि, जो दूसरों ने संत इग्नासयिस को दी थी और जसिका उन्होंने अपने पत्रों में स्वयं उपयोग कयिा, का अर्थ, उनकी अपनी व्याख्या के अनुसार, एक ऐसा व्यक्ति था 'जसिके हृदय में मसीह हैं'। इस कविदंती का कि यीशु मसीह ने संत इग्नेशयिस को अपनी बाहों में उठाया था, पहली बार सिमिओन मेटाफ्रastes की रचनाओं में उल्लेख मलिता है, जहाँ से इसे बाद में संत डेमेट्रयिस के 'चेतीई माइनई' में शामलि कयिा गया। इस कविदंती के माध्यम से, संत इग्नेशयिस का उपनाम Θεόφορος, यानी 'ईश्वर-वाहक', को बदलकर Θεοφόρος, यानी 'ईश्वर द्वारा वहन कयिा गया' कर दयिा गया।

[81] संत ग्रेगरी द डायलॉजसि्ट लखिते हैं कि संत इग्नेशयिस प्रेरति पतरस के भी शष्यि थे, जबकि अन्य लोग कहते हैं कि वे प्रेरति पौलुस के शष्यि थे। 'संत जॉन क्रसिोस्टोम प्रेरतिों के बारे में उनके शब्दों में और उस में भी बोलते हैं जो अकथनीय है।' (संत इग्नेशयिस पर 42वीं होमीली देखें)।

[82] पवत्रि प्रेरति यूहन्ना द्वारा स्मyrna के बशिप के रूप में अभषिक्ति, संत पॉलकिार्प संत इग्नेशयिस के एक करीबी दोस्त थे और ईश्वर की कलीसयिाओं के लिए उनकी चति साझा करते थे; उनके नधिन के बाद भी, वह 'पूरे एशयिा के नेता' बने रहे। संत पॉलकिार्प का पर्व 23 फरवरी को मनाया जाता है।

[83] प्रेरतिों के काम 11 में, अंतीयक में प्रेरति बरनबास के बारे में कहा गया *है: 'वे एक पूरे वर्ष तक मंडली में इकट्ठा होते रहे और बहुत से लोगों को सखिाते रहे, और अंतीयक में चेले पहली बार मसीही* कहलाए'।

गया[84] । यह ईश्वर-धारी बशिप चर्च के अनुष्ठानों के एक अच्छे प्रशासक, मसीह के संस्कारों के एक पूर्ण सेवक[85] , और बाद में एक शहीद थे, जन्हिें चीजों द्वारा खाए जाने के लिए जानवरों के सामने फेंक दिया गया था, जैसा कि नीचे वर्णित किया जाएगा। स्कैथियनों के खलिाफ एक कठनि युद्ध में[86] , सम्राट ट्राजन विजयी हुआ। यह मानते हुए कि उसने अपने मूर्तपिूजक देवताओं की सहायता से अपने शत्रुओं पर विजय प्राप्त की है, ट्राजन इस पर उनका धन्यवाद करने के लिए व्यापक बलदिान करना चाहता था, ताकि भविष्य में देवता उसके युद्धों और उसके शासन की सफलता सुनश्चिति करते रहें। फरि ईसाइयों का एक कठोर उत्पीड़न शुरू हुआ। सम्राट को पता चला कि ईसाई न केवल विधर्मी देवताओं को बलदिान देने से इनकार करते थे, बल्कि उनके झूठ को उजागर करते हुए उनकी नदिा भी करते थे; और इसलिए उन्होंने आदेश दिया कि जो ईसाई उनके आदेश की अवज्ञा करते हैं, उन्हें हर जगह मौत की सज़ा दी जाए। जब यह सम्राट अर्मेनियाई और पर्शियों के खलिाफ एक और अभियान पर नकिला, तो वह खुद को एंटओिक में पाया, और वहाँ संत इग्नेशियस द गॉड-बेयरर पर उनके सामने इस आधार पर बदनामी की गई कि वह मसीह—जन्हिें पलितुस ने मृत्युदंड दिया था और सूली पर चढ़ाया गया था—को ईश्वर के रूप में सम्मानति करते थे, और उन्होंने कुँवारीपन के संरक्षण, धन के त्याग, और जीवन की सभी सुख-सुविधाओं के संबंध में कानून स्थापति कए[87] । यह सुनकर, ट्राजन ने संत को बुलाया और अपनी पूरी परषिद की उपस्थतिि में उनसे कहा:

'क्या तुम ही, तथाकथति ईश्वर-वाहक, हमारे आदेश की अवहेलना कर रहे हो और पूरे एंटओिक को भ्रष्ट कर रहे हो, उसे अपने मसीह के पदचन्हिों पर चला रहे हो?'

दव्यि इग्नाशियस ने उत्तर दिया:

'हाँ, मैं ही हूँ।'

सम्राट ने पूछा:

'तुम्हारे खतिाब "ईश्वर-वाहक" का क्या अर्थ है?'

संत ने उत्तर दिया:

'जो अपने आत्मा में मसीह ईश्वर को धारण करता है, वही ईश्वर-वाहक है।'

– तो, – ज़ार ने पूछा, – क्या तुम अपने भीतर मसीह को धारण करते हो?

संत ने उत्तर दिया:

– वास्तव में मैं ऐसा ही करता हूँ, क्योंकि लिखा है: 'मैं *उन में* वास करूँगा *और उनके बीच चलूँगा*' (2 कुरन्थियों 6:16)। राजा ने कहा:

'तो फरि, आपकी राय में, हम हमेशा अपने देवताओं को अपनी स्मृतमिें क्यों नहीं धारण करते और उन्हें अपने शत्रुओं के वरिुद्ध अपने सहायक क्यों नहीं बनाते?'

ईश्वर-वाहक ने उत्तर दिया:

'मुझे दुख है कि आप मूर्तियों को "देवता" कहते हैं, क्योंकि केवल एक ही सच्चा ईश्वर है, जो स्वर्ग, पृथ्वी, समुद्र और उनमें जो कुछ भी है, उसका सृष्टकिर्ता है; केवल एक ही प्रभु है, यीशु मसीह, परमेश्वर का एकलौता पुत्र, और उसका राज्य अनंतकाल तक रहेगा। हे राजा, यदि आप उन्हें जान गए होते, तो आपका बैंगनी चोगा, आपका ताज और आपका सहिासन और भी अधकि शक्तशिाली हो जाता।

---

[84] चर्च के इतहिासकार सोक्रेट्स ने इसकी पुष्टि की है। यह तथाकथति 'एंटीफोनल भजन' है, जसिका उपयोग आज भी चर्च की सेवाओं में किया जाता है और यह पुराने नयिम के भजनों या उनसे लिए गए प्रसद्धि अंशों से मलिकर बना है, जसिे दो गायन मंडली द्वारा बारी-बारी से, पद दर पद, प्रस्तुत किया जाता है।

[85] चर्च में अपनी चालीस साल की सेवा के दौरान, संत जॉन क्राइसोस्टोम के शब्दों में, संत इग्नेशियस सद्गुणों के एक आदर्श थे। डोमशियिन (95–96 ईस्वी) के अधीन उत्पीड़न के दौरान, जैसा कि उनके शष्यि लखिते हैं, 'उन्होंने प्रार्थना और उपवास के लंगर, अथक शक्षिण, और आत्मा के उत्साह से इस उथल-पुथल का मुकाबला किया, ताकि कोई भी कमजोर या अनुभवहीन व्यक्ति बिह न जाए'... उन कष्टों के दौरान और बाद में, 'ईश्वर के पुरोहति ने धर्मग्रंथ की व्याख्या के माध्यम से प्रत्येक व्यक्ति की आत्मा को प्रबुद्ध किया'।

[86] यह वर्ष 106 का था।

[87] इस बदिु से आगे, वृत्तांत संत इग्नाशियस की शहादत का वर्णन करता है। इस पर विस्तृत जानकारी उनकी शहादत के उन विविरणों में संरक्षति है जो प्रत्यक्षदर्शियों—उन साथियों—ने लखिी थी, जन्हिोंने उन्हें अंत्योखिया से रोम तक साथ लिया था। सामान्यतःमाना जाता है कि ये डीकन फलिो और अगाथोनडिस थे, जनिका उल्लेख संत इग्नाशियस ने स्मर्नावासयिों और फलिाडेल्फयिावासयिों को लखिे अपने पत्रों में किया है।

राजा ने कहा, 'इग्नाशियस!' 'जो तुम कह रहे हो उसे बंद करो और इसके बजाय मेरी बात सुनो: यदि तुम मुझे खुश करना चाहते हो और मेरे दोस्तों में गिने जाना चाहते हो, तो हमारे साथ देवताओं को बलिदान चढ़ाओ, और तुम तुरंत महान डायो[88] के हमारे महापुजारी बन जाओगे और सिक्लाइट के पिता कहलाओगे।'

संत ने उत्तर दिया:

'डाया का महापुजारी बनने से मुझे क्या लाभ, जबकि मैं मसीह का बिशप हूँ, जिसकी मैं सदैव स्तुति करता हूँ और स्वयं को पूर्ण रूप से बलिदान करने का प्रयास करता हूँ, ताकि मैं अपने भीतर उसकी स्वैच्छिक मृत्यु की समानता धारण कर सकूँ?'

राजा ने कहा:

'आप स्वयं को बलिदान के रूप में किसे अर्पित करना चाहते हैं? उस व्यक्ति को जिसे पोंटियस पिलातुस ने क्रूस पर ठोक दिया था?'

संत ने उत्तर दिया:

'मैं उस पर बलिदान हो जाऊँ जिसने पाप को क्रूस पर ठोक दिया, पाप के राजकुमार शैतान को कुचल दिया, और क्रूस के द्वारा उसकी सारी शक्ति पर विजय प्राप्त की।'

राजा ने कहा:

'मुझे ऐसा लगता है, इग्नाशियस, कि तुममें सही समझ और विवेक की कमी है: अगर तुम यह पूरी तरह समझते कि राजा की इच्छा का पालन करना और सभी के साथ देवताओं को बलिदान देना कितना लाभदायक है, तो तुम ईसाई लेखों से इतने बहक नहीं गए होते।'

ईश्वर-वाहक, और भी दृढ़ होकर, ने कहा:

'चाहे तुम मुझे जानवरों के सामने फेंक दो कि वे मुझे नोच-नोच कर खा जाएँ, या मुझे सूली पर चढ़ा दो, या तलवार के घाट उतार दो या आग में डाल दो, मैं कभी भी राक्षसों को बलिदान नहीं चढ़ाऊँगा।' मैं मृत्यु से नहीं डरता, न ही मैं अस्थायी आशीर्वादों की कामना करता हूँ; मैं केवल शाश्वत आशीर्वादों की कामना करता हूँ, और मैं हर तरह से केवल अपने ईश्वर मसीह के पास आने का प्रयास करता हूँ, जिन्होंने मेरे लिए मरने की कृपा की।"

उस समय, सिनिड में उपस्थित लोगों ने, इग्नाशियस को गलत साबित करने की इच्छा से, कहा:

'तुम कहते हो कि तुम्हारा ईश्वर मृत है; एक मृत व्यक्ति किसी की कैसे मदद कर सकता है, और वह भी जिसने एक अपमानजनक मृत्यु पाई हो? दूसरी ओर, हमारे देवता वास्तव में अमर हैं और उन्हें ऐसा ही माना जाता है।'

ईश्वर-वाहक ने उत्तर दिया:

'मेरे प्रभु और परमेश्वर, यीशु मसीह, हमारे लिए देहधारी हुए और, हमारे उद्धार के लिए, स्वेच्छा से सूली पर चढ़ाए जाने, मृत्यु और दफ़नाए जाने को स्वीकार किया; फिर वे तीसरे दिन पुनर्जीवित हुए, उसने शत्रु की शक्ति को उलट दिया और पराजित किया, स्वर्ग में आरोहण किया, जहाँ से वह आया था, ताकि हमें हमारी पतन से उबार सके और हमें उस स्वर्ग में वापस ले जा सके जहाँ से हमें निकाल दिया गया था, और हमें पहले से कहीं अधिक आशीर्वाद प्रदान किए। फिर भी, आपके पूजे जाने वाले देवताओं में से किसी ने भी ऐसा कुछ नहीं किया है; वे दुष्ट और अधर्मी पुरुष थे जिन्होंने बहुत नुकसान पहुँचाया, और उन्होंने मूर्ख लोगों को अपनी दिव्यता की केवल कुछ तुच्छ सी धारणाओं के साथ ही छोड़ दिया है। जब बाद में उनसे झूठ का पर्दा हटा दिया गया, तो यह स्पष्ट हो गया कि वे वास्तव में क्या थे और वे कितनी शर्मनाक मौत मरे।

जब संत इग्नेशियस ने यह कहा, तो राजा और सिक्लाइट, इस डर से कि वह उनके देवताओं का और अपमान कर सकता है, ने उसे जेल ले जाने का आदेश दिया। राजा स्वयं पूरी रात जागता रहा, यह सोचते हुए कि वह इग्नेशियस की जान लेने के लिए किस प्रकार की मृत्युदंड का उपयोग कर सकता है, और उसने उसे जंगली जानवरों द्वारा खाए जाने के लिए दंडित करने का फैसला किया, क्योंकि वह इसे मृत्यु का सबसे क्रूर रूप मानता था। सुबह उन्होंने यह परिषद में घोषित किया; सभी सहमत थे, लेकिन उन्होंने उन्हें अंतीयक में जानवरों के हवाले न करने की सलाह दी, कहीं ऐसा न हो कि अपने धर्म के लिए शहीद होकर वे अपने साथियों में महिमामय हो जाएँ, और अन्य लोग उन्हें देखकर अपने ईसाई धर्म में दृढ़ हो जाएँ। इसलिए उन्होंने सुझाव दिया कि उसे बेड़ियों में जकड़कर रोम ले जाया जाए और वहाँ जानवरों के सामने फेंक दिया

[88] ज़ीउस, जिसे ज़ीउस और जुपिटर के नाम से भी जाना जाता था, यूनानियों और रोमनों का प्रमुख मूर्तिपूजक देवता था।

जाए; क्योंकि वहाँ, लंबी यात्रा से थके होने के कारण, उसकी फांसी और भी अधिक कष्टदायक होगी, और कोई भी रोमी यह नहीं पहचान पाएगा कि वह कौन था; वे सोचेंगे कि कोई दुष्ट व्यक्ति मिर गया है, और उसकी कोई याद नहीं रहेगी। यह सलाह सम्राट को भाई, और उसने इग्नेशियस पर मृत्युदंड की घोषणा की, यह आदेश देते हुए कि उसे एक उत्सव के दौरान, सभी लोगों की उपस्थिति में, रोम में जानवरों के सामने टुकड़े-टुकड़े किए जाने के लिए फेंक दिया जाए। इस प्रकार संत को अधर्मी लोगों द्वारा दंडित किया गया, मानो यह स्वर्गदूतों और मनुष्यों के लिए लज्जा का कारण हो (1 कुरिन्थियों 4:9)।

ईश्वर-धारी इग्नाशियस, अपने विरुद्ध यह सज़ा सुनकर, पुकार उठे:

'मैं तुझसे धन्यवाद करता हूँ, हे प्रभु, कि तूने मुझे तेरे प्रति पूर्ण प्रेम की गवाही देने के योग्य समझा और मुझे लोहे की जंजीरों से बाँधने में प्रसन्न हुआ, ठीक वैसे ही जैसे तूने अपने प्रेरित पौलुस को बाँधा था।'

उन्होंने खुशी-खुशी उन बेड़ियों को स्वीकार कर लिया, मानो वे मोतियों का एक सुंदर हार हों—एक कीमती आभूषण जिसके साथ वे आने वाले जीवन में फिर से उठना चाहते थे[89] । राजा अपनी सेना के साथ युद्ध के लिए रवाना हुआ, जबकि दिव्य शहीद को भारी बेड़ियों में जकड़कर दस क्रूर और निर्दयी सैनिकों के हवाले कर रोम भेज दिया गया। जब वह अंतीयक से रवाना हुआ, तो उसने चर्च के लिए पूरी लगन से प्रार्थना की और अपनी भेड़ों के झुंड को ईश्वर के हवाले कर दिया । सभी विश्वासियों ने उनके लिए रोया और कड़वाहट से विलाप किया, जबकि अन्य, जो गहरे प्रेम से उनसे बँधे थे, उनका अनुसरण करने के लिए यात्रा पर निकल पड़े। अंतियोक से बहुत दूर नहीं, सेल्यूकिया में बंदरगाह के पास, संत इग्नेशियस सैनिकों के साथ एक जहाज पर सवार हुए, जो एशिया माइनर[90] के तट के साथ-साथ चलने वाला था, और एक लंबी और खतरनाक यात्रा के बाद स्मिर्ना पहुँचे। वहाँ इग्नासियस ने दिव्य प्रेरित, स्मिर्ना के बिशप, अपने सह-शिष्य संत पॉलीकार्प से भेंट की और उनका अभिवादन किया, और उनके साथ धर्मपरायण वार्तालाप में सांत्वना पाई, अपने बंधनों में आनंदित हुए और अपनी बेड़ियों पर गर्व किया। क्योंकि उनके लिए इन बेड़ियों से बड़ा सम्मान और क्या हो सकता था, जिनमें उन्हें अपने प्रभु के लिए जकड़ा गया था? वे एशिया की कलीसियाओं और शहरों से आए अन्य बिशपों, पुरोहितों और डिकनों से भी मिले, जो उन्हें देखने और उनके मुख से दिव्य वचन सुनने के लिए उमड़ पड़े थे। शब्द और उदाहरण द्वारा ईसाइयों को उनके विश्वास में मज़बूत करते हुए, उन्हें उस समय उत्पन्न और फैल रही विधिर्मियों से सावधान रहने और प्रेरितों की परंपराओं को दृढ़ता से थामे रहने के लिए और अधिक प्रोत्साहित करते हुए, संत इग्नेशियस ने पॉलीकार्प और वास्तव में पूरी कलीसिया से विनती की कि वे उनके लिए प्रार्थना करें, ताकि वे जल्द ही जानवरों का भोजन बन सकें और प्रभु के साक्षात सामने उपस्थित हो सकें, जिनकी ओर उसकी आत्मा लालायित थी। यह देखकर कि वे दुखी थे और वे उसकी मृत्यु या उनसे अलगाव नहीं चाहते थे, इग्नाजियस को डर था कि रोम के वे विश्वासी भी परेशान हो जाएँगे, वे उसे जानवरों के हवाले होते हुए नहीं देख पाएँगे, और उसके रास्ते में कोई बाधा डाल देंगे; वे तो उन लोगों के खिलाफ भी हाथ उठा सकते थे जिन्हें उसे जानवरों के हवाले करने का आदेश दिया गया था, और इस प्रकार वे उसके शहीद होने के खुले दरवाजे को बंद कर देते, और उस मृत्यु को भी जिसे वह इतनी लालसा करता था। इसलिए उन्होंने उन्हें अपने लिए प्रार्थना करने का अनुरोध भेजने का निर्णय लिया, ताकि उनके कष्टों का मार्ग छोटा न हो जाए, बल्कि वे जानवरों द्वारा चीर-फाड़ कर अपने प्रिय प्रभु के पास चले जाएँ।

उन्होंने इस प्रकार लिखा:

– इग्नाशियस, कलीसिया का ईश्वर-वाहक, परम-पिता और उनके एकमात्र पुत्र, यीशु मसीह की महिमा से सुशोभित, उस परमेश्वर की इच्छा से प्रिय और प्रबुद्ध, जिसकी दृष्टि में यीशु मसीह के प्रेम द्वारा जो कुछ भी पूरा हुआ है, वह सब प्रिय है, हमारे ईश्वर, – रोम के प्रांत की राजधानी में अध्यक्षता करने वाली कलीसिया को, जो ईश्वर-भक्ति से परिपूर्ण, महिमामय, धन्य, प्रशंसनीय, सम्माननीय, पवित्र और प्रेम में श्रेष्ठ है, और मसीह का नाम धारण करती है, जो पिता के नाम पर है, जिन्हें मैं पिता के पुत्र, यीशु मसीह के नाम पर नमस्कार भेजता हूँ, – उन लोगों को जो उसकी प्रत्येक आज्ञा में शरीर और आत्मा से एक-दूसरे के साथ एकजुट हैं, जिन्होंने अविभाज्य रूप से परमेश्वर की कृपा की पूर्णता प्राप्त की है, हर विदेशी दाग से शुद्ध[91] , और हमारे परमेश्वर, यीशु मसीह में प्रचुर आनंदित होना चाहते

---

[89] संत इग्नेशियस का एफिसियों के नाम पत्र देखें।

[90] इसका कारण यह है कि दोषियों को किसी विशेष, निर्धारित जहाज पर नहीं भेजा गया था, बल्कि उस जहाज पर भेजा गया था जो उपलब्ध था, और जो आवश्यकतानुसार चलकर कहीं एक जगह या दूसरी जगह रुकता था।

[91] अर्थात् झूठी शिक्षाएँ

हैं। – परमेश्वर से प्रार्थना के द्वारा, मुझे वह प्राप्त हुआ है जिसके लिए मैं बहुत समय से प्रार्थना करता था: कि मैं आपके परमेश्वर-योग्य चेहरों को देखूँ। मसीह के लिए बँधकर, मैं आपको चूमने की आशा करता हूँ, यदि परमेश्वर की इच्छा मुझे अंत तक पहुँचने के योग्य समझे। एक अच्छी शुरुआत हो चुकी है: क्या मैं, ईश्वर की कृपा से, बिना किसी बाधा के अपनी पुकार को पूरा कर पाऊँगा? क्योंकि मुझे डर है कि आपका प्रेम मुझे नुकसान पहुँचा सकता है, क्योंकि आपके लिए जो आप चाहते हैं वह करना आसान है, जबकि यदि आप मुझ पर तरस खाते हैं तो मेरे लिए ईश्वर तक पहुँचना कठिन हो जाएगा। मैं चाहता हूँ कि आप कृपया मनुष्यों को नहीं, बल्कि ईश्वर को प्रसन्न करें, जैसे कि आप अभी उन्हें प्रसन्न कर रहे हैं। क्योंकि न तो मुझे फिर से ईश्वर तक पहुँचने का इतना अनुकूल अवसर मिलेगा, और न ही आप चुप रहने से किसी बेहतर कर्म द्वारा खुद को विशिष्ट बनाएँगे। यदि आप मेरे बारे में चुप रहेंगे, तो मैं ईश्वर का हो जाऊँगा; लेकिन यदि आप मेरे शरीर के प्रति प्रेम दिखाते हैं, तो मुझे एक बार फिर से अखाड़े में उतरना पड़ेगा[92] । मेरे लिए और कुछ मत करो, सिवाय इसके कि जब वेदी तैयार है तो मुझे ईश्वर को बलिदान करने सुनिश्चित करो; और फिर, प्रेम से, एक गायन मंडली बनाओ और मसीह यीशु में परमपिता की स्तुति का एक भजन गाओ, कि ईश्वर ने सीरिया के बिशप को पूर्व से पश्चिम बुलाए जाने के योग्य समझा है। मेरे लिए ईश्वर के पास जाना अद्भुत है, ताकि मैं उसमें चमक सकूँ। आपने कभी किसी से ईर्ष्या नहीं की, और दूसरों को भी ऐसा ही करने की शिक्षा दी है। काश आप अपने उपदेशों में जो सिखाते हैं, उसे अपने कर्मों से भी पुष्ट करते[93] । मेरे लिए परमेश्वर से केवल यही प्रार्थना करें कि मुझे अंतर्मन और बाहरी शक्ति मिले, ताकि मैं केवल बोलने तक ही सीमित न रहूँ, बल्कि इच्छा भी करूँ; ताकि मुझे केवल ईसाई कहा ही न जाए, बल्कि मैं वास्तव में एक ईसाई बनूँ। यदि मैं वास्तव में खुद को ऐसा साबित करता हूँ, तो मैं खुद को ऐसा कह सकता हूँ, और केवल तभी मैं सच्चा विश्वासी हो सकता हूँ, जब दुनिया मुझे अब और न देखे। कोई भी दृश्यमान चीज़ शाश्वत नहीं है: *'जो देखा जाता है वह अस्थायी है, पर जो अदृश्य है वह शाश्वत है'* (2 कुरिन्थियों 4:18)। हमारे ईश्वर, यीशु मसीह, तब अधिक महिमा में होते हैं जब वे पिता के साथ होते हैं। मसीही जीवन मौन विश्वास में नहीं, बल्कि मनुष्य के कर्मों की महानता में निहित है, विशेषकर तब जब संसार उससे घृणा करता हो। मैं मंडलों को लिख रहा हूँ और सभी को यह बता रहा हूँ कि मैं स्वेच्छा से परमेश्वर के लिए मर रहा हूँ, जब तक कि आप मुझे ऐसा करने से न रोकें। मैं तुमसे विनती करता हूँ: मुझे समय से पहले अकाल मृत्यु का प्रेम मत दिखाओ। मुझे जानवरों का भोजन बनने दो और उनके द्वारा ईश्वर तक पहुँचने दो। मैं ईश्वर का गेहूँ हूँ: जानवरों के दाँत मुझे पीस डालें, ताकि मैं मसीह की शुद्ध रोटी बन सकूँ। इन जानवरों को लाड़-प्यार करना बेहतर है, ताकि वे मेरी कब्र बन जाएँ और मेरे शरीर का कोई भी हिस्सा पीछे न बचे, कहीं मैं अपनी मृत्यु के बाद किसी के लिए बोझ न बन जाऊँ। तब मैं वास्तव में मसीह का चेला बनूँगा, जब मेरा शरीर भी दुनिया की नज़रों से ओझल हो जाएगा। मेरे लिए मसीह से प्रार्थना करें, कि इन साधनों के द्वारा मैं परमेश्वर के लिए एक बलिदान बन सकूँ। मैं तुम्हें उस तरह आज्ञा नहीं देता जैसे पतरस और पौलुस ने दी। वे प्रेरित हैं, पर मैं एक दण्डित मनुष्य हूँ; वे स्वतंत्र हैं, पर मैं अभी भी एक दास हूँ। फिर भी, यदि मैं दुख सहूँ, तो मैं यीशु द्वारा मुक्त कर दिया जाऊँगा और उनमें एक स्वतंत्र मनुष्य के रूप में फिर से उठूँगा। अब, अपनी बेड़ियों में रहते हुए, मैं तुम्हें सिखाता हूँ कि किसी भी सांसारिक या व्यर्थ की वस्तु की इच्छा न करो। सीरिया से रोम तक की यात्रा में, ज़मीन और समुद्र दोनों मार्गों से, दिन-रात, मैं पहले से ही जंगली जानवरों से लड़ रहा हूँ, दस तेंदुओं के साथ बँधा हुआ हूँ—यानी सैनिकों का एक दल जो उन पर दिखाए गए अनुग्रह के कारण और भी अधिक क्रूर हो जाता है[94] । उनकी अपमानजनक बातों से मैं और अधिक सीखता हूँ, पर मैं इसे बहाना नहीं बनाता (1 कुरिन्थियों 4:9)। हे, काश मुझे मेरे लिए तैयार किए गए जंगली जानवरों से बचाया न जाए! मैं प्रार्थना करता हूँ कि वे मुझे अपनी भयानक भूख के साथ झपट पड़ें। मैं उन्हें इस तरह लुभावूँगा कि वे मुझे एक ही बार में खा जाएँ, बजाय इसके कि, जैसा उन्होंने कुछ लोगों के साथ किया, उनसे डरकर उन्हें अछूता छोड़ दें। और यदि वे अपनी इच्छा से ऐसा नहीं करना चाहते, तो मैं उन्हें मजबूर कर दूँगा। मुझे क्षमा करें; मैं जानता हूँ कि मेरे लिए क्या अच्छा है। मैं तो अभी-अभी शिष्य बनने की शुरुआत कर रहा हूँ। न तो दृश्य और न ही अदृश्य—कुछ भी मुझे यीशु मसीह के पास आने से नहीं रोक सकता। आग और क्रूस, जानवरों के झुंड, अंग-भंग, चीर-फाड़, हड्डियों का कुचल जाना, अंगों का कट जाना, मेरे पूरे शरीर का चूर-चूर हो जाना, और शैतान के भीषण यातनाएँ—सब मुझ पर आ पड़ें—बशर्ते मैं मसीह को प्राप्त कर सकूँ। इस संसार के सुख और इस युग के राज्य मुझे किसी काम के नहीं होंगे। सारी पृथ्वी पर राज्य करने से तो यीशु मसीह के लिए मरना मेरे लिए बेहतर है: *'एक मनुष्य*

---

[92] अर्थात्, इस जीवन के दौरान।

[93] संत इग्नातिउस यहाँ मसीह के लिए मरने की महिमा के बारे में बात करते हैं।

[94] इग्नाशियस के रक्षकों को ईसाइयों द्वारा दी गई उन उपहारों का संदर्भ, ताकि उनकी कठोरता को नरम किया जा सके।

को सारी दुनिया मिल जाए और अपनी आत्मा खो दे, तो उसे क्या लाभ होगा?' (मत्ती 16:26)। मैं उसको खोजता हूँ जो हमारे लिए मरा; मैं उसको तरसता हूँ जो हमारे लिए फिर जी उठा। मैं अपना भला चाहता हूँ: भाइयों, मुझे क्षमा करो! मुझे जीने से न रोको; मेरे लिए मृत्यु की कामना न करो। मैं परमेश्वर का होना चाहता हूँ; मुझे संसार के हवाले न करो। मुझे शुद्ध प्रकाश में जाने दो: वहाँ पहुँचकर, मैं परमेश्वर का मनुष्य बन जाऊँगा। मुझे अपने परमेश्वर के दुखों का अनुकरण करने दो। जो कोई अपने भीतर उसे रखता है, वह समझ ले कि मैं क्या चाहता हूँ, और मेरी व्यस्तता को देखकर मुझ पर तरस खाए। इस संसार का राजकुमार मुझे धोखा देना चाहता है और मेरी उस इच्छा को नष्ट करना चाहता है, जो परमेश्वर की ओर निर्देशित है। तुम में से कोई भी जो वहाँ है, उसकी सहायता न करे। बल्कि, मेरे हो—अर्थात्, ईश्वर के। उन लोगों जैसे न बनो जो यीशु मसीह को पुकारते तो हैं पर संसार से प्रेम करते हैं। तुम्हारे भीतर ईर्ष्या न रहने दो। और यदि मैं व्यक्तिगत रूप से तुमसे कुछ और भी मांगूँ, तो मेरी न सुनना: उस बात पर अधिक विश्वास करो जो मैं अब तुम्हें लिख रहा हूँ। मैं तुम्हें लिख रहा हूँ, जबकि मैं जीवित हूँ, पर मरने की इच्छा से जल रहा हूँ। मेरे प्रेम को सूली पर चढ़ा दिया गया है, और मुझ में कोई ऐसी आग नहीं है जो सांसारिक जगत से प्रेम करती हो, बल्कि मुझ में बोलने वाला जीवित जल[95] , मुझ से भीतर से पुकारता है: 'पिता के पास जाओ'। मुझे नश्वर भोजन में, और न ही इस जीवन के सुखों में कोई मिठास नहीं मिलती। मैं परमेश्वर का रोटी, स्वर्गीय रोटी, जीवन की रोटी चाहता हूँ, जो परमेश्वर के पुत्र, यीशु मसीह का शरीर है, जो दाऊद और इब्राहीम के वंश से इन अंतिम दिनों में जन्मे थे। और मैं परमेश्वर का पेय - उसका लहू चाहता हूँ, जो अविनाशी प्रेम और अनंत जीवन है। मैं अब मनुष्यों का जीवन जीना नहीं चाहता। और यह तब होगा जब आप ऐसा चाहेंगे। अतः मैं आपसे विनती करता हूँ, कि आप इसे चाहें, ताकि आप भी अनुग्रह प्राप्त कर सकें। मैं आपको इस संक्षिप्त पत्र में लिखता हूँ। मेरा और यीशु मसीह का विश्वास कीजिए—जिनके होंठ झूठ नहीं बोलते, जिनके द्वारा पिता ने सचमुच में बात की है—वे आपको प्रकट कर देंगे कि मैं सत्य बोलता हूँ। मेरे लिए प्रार्थना करें, कि मैं सफल हो सकूँ। मैंने यह आपको मांस के अनुसार नहीं, बल्कि परमेश्वर के मन के अनुसार लिखा है। यदि मैं दुख सहता हूँ, तो इसका अर्थ है कि आप मुझसे प्रेम करते हैं; यदि, हालाँकि, मुझे योग्य नहीं समझा जाता है, तो इसका अर्थ है कि आप मुझसे घृणा करते हैं। अपने प्रार्थनाओं में सीरियाई चर्च को याद रखना: ईश्वर अब मेरी जगह उसका चरवाहा है। केवल यीशु मसीह ही, आपके प्रेम के साथ, इसका संचालन करेंगे। जहाँ तक मेरी बात है, मुझे इसके सदस्यों में से एक कहा जाने पर शर्म आती है, क्योंकि मैं इसके लायक नहीं हूँ, मैं उनमें से सबसे छोटा और एक बहिष्कृत हूँ। लेकिन अगर मैं ईश्वर तक पहुँचता हूँ, तो उनकी कृपा से मैं कुछ बनूँगा। – मेरी आत्मा आपको नमस्कार करती है, और उन कलीसियाओं का प्रेम भी जो मुझे यीशु मसीह के नाम पर, एक साधारण यात्री के रूप में नहीं, बल्कि एक अतिथि के रूप में स्वीकार किया[96] । क्योंकि वे कलीसियाएँ भी जो मेरे सांसारिक यात्रा के मार्ग से बाहर थीं, वे भी शहर में मुझे मिलने के लिए बाहर आईं। मैं आपको स्मyrna से सबसे धन्य एफिसियों के द्वारा यह लिख रहा हूँ। मेरे साथ, कई अन्य लोगों के अलावा, क्रोकस है – एक नाम जिसे मैं प्रिय मानता हूँ। जहाँ तक उन लोगों का सवाल है, जो परमेश्वर की महिमा के लिए, मुझसे पहले सीरिया से रोम गए, मुझे लगता है कि आप उन्हें पहले से जानते हैं: उन्हें बता देना कि मैं पास ही हूँ। वे सभी परमेश्वर और आप लोगों के योग्य हैं : आपको हर तरह से उनका हौसला बढ़ाना चाहिए। – मैंने यह पत्र आपको सेप्टेंबर की कैलेंड्स से नौ दिन पहले लिखा था[97] , यानी 28 अगस्त को[98] । यीशु मसीह के धीरज में अंत तक स्थिर रहो। आमीन।

इग्नाशियस ने यह संदेश एफिसुस के कुछ ईसाइयों के साथ भेजा जो उनके साथ थे, और जो रोम के लिए सबसे छोटे मार्ग से रवाना हुए[99] । कुछ समय बाद, संत स्वयं सैनिकों के साथ स्मyrna से चले गए और ट्रोआस पहुँचे। वहाँ उन्हें यह

---

[95] जीवित जल, अर्थात् पवित्र आत्मा, जो शहादत में प्रेरित और बल प्रदान करता है। देखें यूहन्ना 4:10; यूहन्ना 7:3।

[96] अर्थात्, ऐसे प्रेम के साथ जैसे इग्नाशियस उनके अपने बिशप हों।

[97] यह गणना रोमन कैलेंडर के अनुसार थी।

[98] वर्ष 107 में

[99] स्मyrna से रोम के लिए दो मार्ग थे – एक समुद्र मार्ग, द्वीपसमूह और भूमध्य सागर के रास्ते, और दूसरा स्थल मार्ग, मैसेडोनिया होते हुए। इग्नाशियस को दूसरे मार्ग से ले जाया गया, जबकि एफिसुस के ईसाई समुद्र यात्रा करके इग्नाशियस के पत्रों को उसके आगमन से पहले रोम पहुँचा सकते थे। लेकिन ज़मीनी मार्ग से भी, वे स्वाभाविक रूप से इग्नाशियस से पहले रोम पहुँच गए होते, जो वृद्धावस्था से बोझिल थे और स्मyrna में ठहर गए थे। स्मyrna से, संत इग्नेशियस ने एफिसियों, मैग्नेशियनों (आयोनिया में मींडर के पास मैग्नेशिया शहर) और ट्रालियनों (एशिया में) को तीन पत्र भेजे, जिन्होंने पवित्र कैदी का अभिवादन करने के लिए स्मyrna में अपने बिशप, प्रेस्बिटर और डीकन भेजे थे। इन पत्रों में, संत इग्नेशियस ने चर्च को उनके प्रति दिखाए गए प्रेम के लिए धन्यवाद दिया, उनकी मंडली को आत्मा की एकता बनाए रखने और बिशपों और पुरोहितों की आज्ञा मानने के लिए प्रोत्साहित किया, और झूठे शिक्षकों - यहूदीकरण करने वाले ईसाइयों, जो ईसाई धर्म को केवल यहूदी धर्म

शुभ समाचार मिला कि अंतीयक में उत्पीड़न शांत हो गया था और चर्च में शांति बहाल हो गई थी। अपनी सभी प्रार्थनाओं में अपनी अनाथ गरिजाघर को याद करते हुए, उन्होंने सभी विश्वासियों से इसके लिए प्रार्थना करने का आग्रह किया: अपने झुंड की शांति पर उनकी खुशी जितनी अधिक थी, उतनी ही शांति से उन्होंने मृत्यु का सामना किया। इस मानसिकता में, उन्होंने (सिलिसिया में) फिलाडेल्फियाई और स्मर्नाई लोगों को पत्र लिखे, जिसमें उन्होंने ईसाइयों से अंतीयक की कलीसिया की आनंदमय घटनाओं में सक्रिय भाग लेने का आग्रह किया; और विशेष रूप से, उन्होंने संत पॉलीकार्प को लिखा, स्मर्ना के बिशप को पत्र लिखकर उनसे अनुरोध किया कि वे वहां की कलीसिया को सांत्वना देने के लिए एक पुरोहित को अंतीयक भेजें, और उन्हें यह निर्देश दिया कि वे अन्य कलीसियाओं को भी लिखें ताकि वे भी ऐसा ही करें[100] . ट्रॉय से, संत इग्नेशियस नेपेल्स (मैसेडोनिया में) के लिए समुद्र यात्रा की, फिलिप्पोपोलिस और मैसेडोनिया से पैदल यात्रा की, रास्ते में गिरिजाघरों का दौरा किया, उनमें उपदेश दिया, कमजोर भाइयों को निर्देश और प्रोत्साहन दिया, और सभी को एक प्रसन्न और संयमित जीवन जीने के लिए भी प्रोत्साहित किया। एपिरस से होकर गुज़रने के बाद, संत इग्नेशियस ने एपिडाम्नस में फिर से एक जहाज पकड़ा और एड्रियाटिक तथा टायरेनियन सागरों को पार करके इटली के लिए रवाना हुए। जब उन्होंने दूर से पुटेओली (कैम्पानिया का एक शहर) देखा, तो वे वहाँ किनारे पर उतरना चाहते थे, ताकि वे उसी मार्ग से रोम पहुँच सकें जिस पर प्रेरित पौलुस एक बार इसी तरह के मिशन पर गए थे। लेकिन एक तेज हवा ने जहाज को तट तक पहुँचने से रोक दिया, और संत इग्नेशियस एक ही दिन में रोम के पास पोर्टस के बंदरगाह पर पहुँच गए। सैनिक मनोरंजन देखने के लिए रोम की ओर दौड़ रहे थे, जो पहले ही समाप्त होने वाला था[101] । इस बीच, अंफ़ियालोपोलिस के बिशप के आगमन की खबर फैल गई थी, और इकट्ठा हुए ईसाई दोनों ही, खुशी और गहरे दुख से भरकर, उनका स्वागत करने के लिए बाहर निकले। कुछ लोगों को उम्मीद थी कि वे लोगों को धर्मी पुरुष की मृत्यु के खूनी तमाशे को त्यागने के लिए मना लेंगे। लेकिन इग्नेशियस ने, उनके प्रति प्रेम से, उनसे ऐसा न करने का आग्रह किया; और, उपस्थित भाइयों के साथ घुटने टेककर, उन्होंने चर्चों के लिए, उत्पीड़न के अंत के लिए, और भाइयों - विश्वासियों के बीच पारस्परिक प्रेम के संरक्षण के लिए परमेश्वर के पुत्र से प्रार्थना की। तब संत इग्नासियस को रोम ले जाया गया और शाही फरमान द्वारा शहर के एपार्क को सौंप दिया गया। इग्नासियस ईश्वर-वाहक को देखकर और शाही पत्र पढ़कर, एपार्क ने तुरंत जानवरों को तैयार करने का आदेश दिया। मनोरंजन का दिन आ गया, और संत को उनके मृत्युदंड के स्थान पर ले जाया गया; यह तमाशा देखने के लिए पूरा शहर इकट्ठा हो गया था, क्योंकि यह खबर दूर-दूर तक फैल गई थी कि स्यरियाक के बिशप को जानवरों के सामने फेंका जाएगा। अखाड़े में रखे जाने पर, संत ने एक तेजस्वी मुखमंडल के साथ लोगों की ओर मुड़कर देखा, अपने साहसी आत्मा पर गर्व करते हुए और इस बात की प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कि वह मसीह के लिए मृत्यु स्वीकार कर रहे थे, और जोर से चिल्लाए:

रोम के पुरुषों, जो मेरे इस वर्तमान पराक्रम के साक्षी बन रहे हैं! आप जानते हैं कि मैं किसी दुष्ट कर्म के लिए मृत्युदंड का सामना नहीं कर रहा हूँ, न ही मुझे किसी अपराध के लिए मृत्युदंड सुनाया गया है, बल्कि अपने एकमात्र ईश्वर के लिए, जिनके प्रेम ने मुझे आलिंगन किया है और जिनकी मैं दृढ़ता से आकांक्षा करता हूँ। मैं उसकी गेहूँ हूँ, और मैं जानवरों के दाँतों से पीसा जाऊँगा, ताकि मैं उसके लिए शुद्ध रोटी बन सकूँ।

संत के ये शब्द कहते ही सिंह उन पर टूट पड़े। वे तुरंत झपट पड़े, संत को टुकड़े-टुकड़े कर खा गए और केवल उनकी कठोर हड्डियाँ ही छोड़ दीं। और संत की यह इच्छा कि जानवर ही उनकी कब्र बनें, पूरी हुई, और ईश्वर ने संत की इच्छानुसार ऐसा होने दिया। वह अपने सामने के सिंहों को शांत कर सकते थे, जैसा उन्होंने पवित्र नबी दानियेल के सामने खाई में और संत थेक्ला के शहादत के समय किया था, अपने पवित्र नाम की महिमा के लिए; फिर भी उन्होंने ऐसा नहीं किया, बल्कि अपनी सर्वशक्तिमान शक्ति की महिमा करने के बजाय अपने सेवक की इच्छा और अनुरोध को पूरा

का पूरक मानते थे, और डोकेटिस्ट, जिन्होंने उद्धारकर्ता के जन्म, पीड़ा और पुनरुत्थान की सच्चाई को अस्वीकार कर दिया और उनमें किसी भी मानवीय गुण को बिल्कुल नहीं मानते थे।

[100] इस प्रकार, संत इग्नेशियस के सात पत्र ही बचे हैं। वे मूल रूप से ग्रीक में लिखे गए थे, और बाद में उनका अनुवाद सिरियाक, अर्मेनियाई, बाद में स्लावोनिक, और हाल ही में रूसी में किया गया। इन पत्रों की सामग्री मुख्य रूप से ईसाइयों को चर्च की आंतरिक और बाहरी एकता बनाए रखने के लिए प्रोत्साहन देने पर आधारित है; इस कारण से, सेंट इग्नेशियस को सही मायने में एकता का शिक्षक कहा जा सकता है, ठीक वैसे ही जैसे उन्होंने स्वयं को एकता के लिए निहित व्यक्ति माना (फिलाडेल्फियन्स को लिखे पत्र में)। इसके अलावा, उनमें से अधिकांश समकालीन विधर्मों के खिलाफ निर्देशित हैं।

[101] ये तमाशे और खेल तथाकथित 'सैटर्नलिया' थे, जिनका निरंतरता और समापन 'सिगिलारिया' था; ये 17 दिसंबर से शुरू होकर सात दिनों तक चलते थे, उस स्वर्ण युग की स्मृति में जो, रोमन मूर्तिपूजकों के अनुसार, उनके देवता सैटर्न के शासनकाल के दौरान अस्तित्व में था।

करना चुना। संत इग्नेशियस द गॉड-बेयरर की मृत्यु ऐसी थी, उनका पराक्रम ऐसा था, और ईश्वर के प्रति उनका प्रेम ऐसा था।

जब यह तमाशा समाप्त हो गया, तो रोम के विश्वासियों ने—जिन्हें संत ने स्मyrna से लिखा था—और उनके साथ आए कुछ लोगों ने शहीद की बची हुई हड्डियों को इकट्ठा किया; और, उनके लिए बेइंतहा रोते हुए, उन्होंने उन्हें 107 ईस्वी के 20 दिसंबर को शहर के बाहर एक विशेष स्थान पर सम्मान के साथ दफनाया[102] ।

संत इग्नेशियस की शहादत के इतिहासकार इस प्रकार वर्णन करते हैं, 'हमने, यह सब अपनी आँखों से देखने के बाद, पूरी रात घर में आँसू बहाते हुए, घुटने टेककर प्रार्थना करते हुए बिताई, और प्रभु से प्रार्थना की कि जो कुछ हुआ है, उसके लिए हमें सांत्वना दें।' बाद में जब हम थोड़ी देर के लिए सो गए, तो हम में से कुछ ने संत इग्नेशियस को अचानक हमारे सामने प्रकट होते और हमें गले लगाते देखा; अन्य ने उन्हें हमारे लिए प्रार्थना करते देखा; जबकि कुछ अन्य ने उन्हें पसीने से लथपथ देखा, मानो किसी महान श्रम के बाद, और प्रभु के सामने खड़े थे। यह देखकर प्रसन्न होकर और इन स्वप्न-दृश्यों की व्याख्या करने के बाद, हमने सभी अच्छी चीजों के दाता, ईश्वर की स्तुति की; हमने उस पवित्र पुरुष का सम्मान किया और उनके निधन के दिन और वर्ष को नोट किया, ताकि उनके शहादत के दिन एकत्र होकर, हम मसीह के इस तपस्वी और वीर शहीद के साथ एकता में रह सकें।

संत इग्नेशियस की मृत्यु, उनकी साहसी उदारता और यह जानकर कि उन्होंने अपने प्रभु मसीह के लिए बिना भय और आनंद के साथ अपनी मृत्यु को वरण किया, सम्राट ट्राजन को उनके लिए शोक हुआ। यह भी सुनकर कि ईसाई अच्छे और सौम्य लोग थे, जो संयम का जीवन जीते थे, पवित्रता से प्रेम करते थे, सभी बुरे कर्मों से दूर रहते थे, निष्कलंक जीवन जीते थे और किसी भी तरह से उसके राज्य के विरोधी नहीं थे, बल्कि केवल एक ही मसीह की पूजा करते थे, सम्मान देते थे, ट्रोजन ने उन्हें मृत्युदंड के लिए खोजने का आदेश नहीं दिया, बल्कि उन्हें शांति से रहने दिया। इसके बाद, संत इग्नेशियस द गॉड-बेयरर के पवित्र अवशेषों को शहर की सुरक्षा के लिए, बीमारों के उपचार के लिए, और इस चरवाहे के पूरे झुंड के आनंद के लिए सम्मानपूर्वक एंटिओक[103] में स्थानांतरित किया गया, त्रिमूर्ति में एक परमेश्वर की महिमा के लिए, जिसकी सर्वदा और सर्वदा सभी द्वारा महिमा की जाती है। आमीन।

कॉन्टाकियन, स्वर 3:

यह तेजस्वी दिन सबको खलिहान में जन्मे मसीह के संबंध में आपके महिमामय कृत्यों की घोषणा करता है: क्योंकि, प्रेम से उनमें आनंदित होने की लालसा में, आपने जंगली जानवरों द्वारा खाए जाने का प्रयास किया। इसी कारण से आपको ईश्वर-वाहक, सर्व-ज्ञानी इग्नाशियस कहा गया।

एंटीओक के बिशप, संत फिलोजियन की स्मृति

20 दिसंबर को स्मरणोत्सव

बचपन से ही, धन्य फिलोगियन ने उत्साह के साथ दिव्य धर्मग्रंथों का अध्ययन किया और ईश्वर की सहायता से उनमें पूरी तरह से पारंगत हो गए; पवित्र शिक्षा को अपने मार्गदर्शन के सिद्धांत के रूप में अपनाकर, वे अपने जीवन की

---

[102] रोस्तोव के संत डेमेट्रियस के चेती-मिनेई में, संत इग्नेशियस के जीवन में निम्नलिखित वृत्तांत शामिल है: 'कुछ लोग संत इग्नेशियस द गॉड-बेयरर के बारे में यह भी बताते हैं। जब उन्हें जंगली जानवरों द्वारा खाए जाने के लिए ले जाया गया और उनके होठों पर लगातार यीशु मसीह का नाम था, तो दुष्टों ने उनसे पूछा कि वह उस नाम को लगातार क्यों दोहरा रहे थे। संत ने उत्तर दिया कि यीशु मसीह का नाम उनके हृदय में अंकित था और उन्होंने अपने होठों से उसी की स्वीकारोक्ति की जिसे वह हमेशा अपने हृदय में धारण करते थे। जब जानवरों ने संत को खा लिया, तो ईश्वर की इच्छा से उनका हृदय उनकी हड्डियों के बीच अक्षुण्ण रहा, जानवरों द्वारा अछूता। इसे पाकर, अविश्वासियों ने संत इग्नेशियस के शब्दों को याद किया और यह जानने की इच्छा से कि क्या उन्होंने जो कहा था वह सच था, उन्होंने उनके हृदय को दो भागों में काट दिया। और उन्होंने, कटे हुए हृदय के दोनों भीतरी हिस्सों पर, सुनहरे अक्षरों में एक शिलालेख पाया: 'यीशु मसीह'। इस प्रकार संत इग्नेशियस नाम और वास्तविकता दोनों में 'ईश्वर-वाहक' थे, जो हमेशा अपने हृदय में ईश्वर मसीह को धारण करते थे, और उनका ईश्वर-सचेत मन इतनी स्पष्टता से अंकित था मानो किसी सरकंडे की कलम से लिखा गया हो।

[103] संत इग्नेशियस के अवशेषों के स्थानांतरण का उत्सव 29 जनवरी को मनाया जाता है।

पवत्रिता से प्रकाशमान हुए। फलिोगयिन की एक पत्नी और एक बेटी थी और, एक वकील होने के नाते, वे अक्सर अदालत में जाते थे: वहाँ वे हमेशा उत्पीड़तिों की रक्षा करते थे, उन्हें मदद का हाथ बढ़ाते थे और वधिवाओं, अनाथों, बेसहारा और गरीबों के उत्पीड़कन के खलिाफ खड़े होते थे। और वे अपने सदाचारी जीवन के द्वारा चमके। अपनी पत्नी की मृत्यु के बाद, उन्हें बशिप के पद पर पदोन्नत कयिा गया[104] । उस समय, ईसाई चर्च के भीतर बहुत उथल-पुथल थी: यद्यपि तब मूर्तपिूजकों द्वारा ईसाइयों पर अत्याचार बंद हो गया था[105] , चर्च पर और भी भयंकर तूफ़ान आए, अर्थात्, वधिर्मी उपद्रव शुरू हो गए। फ़लिोयोगयिन, एक बशिप और एक अच्छे चरवाहे के रूप में, अपनी भेड़ों की रक्षा में दृढ़ रहे और अपनी बुद्धमित्ता से, वधिर्मी कपटपूर्ण तर्क का वश्लिेषण करके और उसका खंडन करके इन उथल-पुथल को शांत कर दयिा। इसके लिए, उन्हें संत जॉन क्राइसोस्टोम[106] द्वारा प्रशंसा से सम्मानति कयिा गया, जो उनके जीवन का और भी वस्तिार से वर्णन करते हैं। इस प्रकार, एक धार्मकि, दैवीय जीवन जीने और ईश्वर को प्रसन्न करने वाले तरीके से अपने सुपुर्द कएि गए आध्यात्मकि झुंड का चरवाहा करने के बाद, संत फलिोजयिन ने शांतपिूर्वक स्वर्गीय पति के महमिामय धामों के लिए प्रस्थान कयिा[107] ।

सर्बयिा के आर्चबशिप संत डेनयिल का जीवन

20 दसिंबर को स्मरण कयिा जाता है

पवत्रि सर्बयिाई आर्चबशिप डैनयिल प्राचीन सर्बयिा के सबसे गौरवशाली काल में, सर्बयिाई राजाओं स्टीफन उरोश द्वतिीय मलिुटनि[108] , डेचानी के स्टीफन उरोश तृतीय और स्टीफन डुसान के शासनकाल के दौरान रहते थे। वह एक कुलीन शासक परविार से थे और अमीर माता-पति के पुत्र थे[109] , जनिके कई बेटे और बेटयिाँ थीं, जो सभी, हालांकि, डैनयिल के बचपन में ही मर चुके थे। बचपन में, दानयिल ने अपने माता-पति से पढ़ना और लखिना सीखने के लिए उसे एक शक्षिक के पास भेजने के लिए कहा, लेकनि अपने अन्य बच्चों की मृत्यु से दुखी, उसके पति और माता अपने बेटे से अलग नहीं होना चाहते थे। हालाँकि, लड़के ने अपनी बात पर अड़े रहे: उसने एक रश्तिेदार को अपनी मदद के लिए मना लयिा और अपने माता-पति को बताए बनिा, उसके साथ शक्षिक के पास चला गया। शक्षिक जानता था कि उसके पास कसिका बेटा लाया गया है और उसने बड़ी सावधानी से उसे पढ़ाना शुरू कर दयिा। बच्चे ने असाधारण क्षमता और लगन दखिाई, जसिसे वह जल्द ही स्कूल में अपने साथयिों और सहपाठयिों से आगे नकिल गया और स्वयं दूसरों को पढ़ाने में सक्षम हो गया।

पहले तो उसके माता-पति बहुत परेशान थे, लेकनि जब उन्हें पता चला कि उनका बेटा कहाँ है और वह कतिना अच्छा कर रहा है, तो वे स्थतिि को स्वीकार कर गए और सब कुछ ईश्वर की इच्छा पर छोड़ दयिा।

इस बीच, उस युवक में ब्रह्मचर्य, पवत्रिता, उपवास, जागरण और प्रार्थना के प्रतिइच्छा वकिसति होने लगी—ये वे गुण हैं जो शक्तशिाली पुरुषों को वशिष्टि बनाते हैं—और वह तपस्वी जीवन की ओर आकर्षति हो गया। वह संन्यासयिों से मलिने लगा, उन्हें उचति सम्मान देता और संन्यासी जीवन के बारे में बातचीत करता, जसिसे जल्द ही उसके भीतर स्वयं संन्यासी बनने की इच्छा जागृत हुई, और उसने संन्यास की दीक्षा प्रदान करने के लिए ईश्वर से प्रार्थना की। उस समय भी, पवत्रि नगर यरूशलेम और पवत्रि पर्वत एथोस पर चमत्कारों के बारे में बहुत कुछ सुनकर, वह इन पवत्रि स्थानों की यात्रा करने की प्रबल इच्छा से भर गया था। लेकनि इसके लिए समय अभी नहीं आया था।

---

[104] अपनी पत्नी की मृत्यु के बाद, फलिोजयिन को लोगों द्वारा अदालत से जबरदस्ती ले जाया गया और उनकी धार्मकिता को देखते हुए, उन्हें 318 में बशिप नयिुक्त कयिा गया।

[105] ईसाई धर्म का अंतमि उत्पीड़न सम्राट मैक्समियिन और गैलेरयिस (305–311) और लकिनियिस (307–324) के समय में हुआ था। इस दौरान, फलिोजयिन ने सत्य और न्याय के प्रतिअपने प्रेम के कारण, ईसाई धर्म और उत्पीड़ति ईसाइयों का सफलतापूर्वक बचाव कयिा, और खुद को एक कन्फेशर (धर्म-स्वीकारक) साबति कयिा। हालाँकि, जब संत कोंस्टेंटनि द इक्वल-टू-द-अपोस्टल्स के समय से सताए गए धर्म ने मूर्तपिूजा पर वजिय प्राप्त की, तो मसीह के चर्च के शत्रु, शैतान, की नई साजशिों ने एरयिन संप्रदाय को जन्म दयिा। लेकनि फलिोज़यिन, जनिहें लोगों ने बशिप के रूप में चुना था और जनिहोंने अपने युवा से ही अच्छी शक्षिा प्राप्त की थी, ने झूठी वधिर्मी कल्पनाओं की पुरज़ोर नदिा की।

[106] संत जॉन क्राइसोस्टोम ने 386 में फलिोगोनयिस के लिए एक प्रशंसा-भाषण दयिा।

[107] उनका लगभग 323 में शांतपिूर्वक नधिन हो गया।

[108] मलिुटनि ने 1262 से 1320 तक शासन कयिा।

[109] डैनयिल के जन्म का वर्ष और स्थान, साथ ही उसका धर्मनरिपेक्ष नाम, अज्ञात है।

जब दानयिल वयस्क हुआ, तो सर्बयिाई राजा स्टीफन उरोश मलिुटनि ने उसकी कुलीन गुणों के बारे में सुनकर उसे अपने दरबार में बुलाया, उसे पसंद कयिा और उसे अपने नकिटतम सहयोगयिों में शामलि कर लयिा। हालाँकि उसका कुलीन जन्म और शासक के प्रति उसकी नकिटता थी, फरि भी डैनयिल अहंकारी नहीं हुआ; दरबार में भी वह वनिम्रता से रहता था और एक क्षण के लिए भी उसने संन्यासी जीवन के वचिार को नहीं छोड़ा।

धार्मकि राजा मलिुटनि अक्सर अपने राज्य भर में तीर्थयात्राएं करते थे, चर्चों और मठों का दौरा करते थे, पवत्रि अवशेषों की पूजा करते थे और उदार दान देते थे। ऐसी ही एक यात्रा पर, डैनयिल राजा के अनुचर दल में शामलि थे। सोपोचानी में पवत्रि त्रमिूर्ति मठ में एक पड़ाव के दौरान[110] , डैनयिल—जसिे संतों से बात करना हमेशा पसंद था—एक ऐसे संत से मलिा जो उसकी इच्छाओं के बलि्कुल अनुकूल था। उसे इस संत में एक अच्छा सलाहकार और सहायक मलिा, जसिने उस युवा कुलीन व्यक्ति को संन्यास की शपथ लेने में सहायता करने के लिए सहमति दे दी।

जब राजा मलिुटनि और उनके अनुचर सोपोच की अपनी तीर्थयात्रा पूरी कर चुके थे, और अपने श्रम के बाद सभी आराम करने के लिए चले गए थे, तो वह धर्मपरायण युवक, उपर्युक्त भक्षिु की मदद से, रात के अँधेरे में चुपके से मठ से नकिल गया। उनके नए मार्गदर्शक उन्हें इब्री नदी पर स्थति सेंट नकिोलस के कोन्चुल मठ ले गए; वहाँ, उस मठ के मठाध्यक्ष नकिोडेमस—जो स्वयं शाही दरबार से भागे हुए थे—के अधीन, उनका मुंडन कयिा गया और उन्हें डेनयिल नाम दयिा गया।

बहुत लंबे समय से संन्यासी जीवन की आकांक्षा रखने वाले डैनयिल, जसिे इसे अपनाने के योग्य समझा गया, ने बड़ी लगन से अपने संन्यासी व्रतों को पूरा करना शुरू कर दयिा; दूसरों के साथ लगन से चर्च की सेवाओं में भाग लेते और दनि भर सभी संन्यासी कार्यों को करते हुए, डैनयिल अपनी रातें एकांत में जागरण, ईश्वर के ध्यान और अखंड प्रार्थना में लगाकर बताता था। प्रार्थना, पश्चाताप और प्रायश्चति के आँसू, उपवास और अन्य तपस्या के कार्यों ने जल्द ही उसे अन्य भक्षिुओं के लिए एक आदर्श बना दयिा। उनके कार्यों की ख्याति मठ की दीवारों से भी परे फैल गई। जल्द ही वह उस समय के सर्बयिाई आर्चबशिप यूस्टैथयिस द्वतीय[111] के ध्यान में आए, जो उन्हें अपने पास बुलाना चाहते थे क्योंकि उन्हें प्रबुद्ध और धार्मकि पुरोहतिों की आवश्यकता थी। यूस्टैथयिस ने डैनयिल को एक से अधकि बार बुलाया, लेकनि लंबे समय से इच्छति मठवासी जीवन का आदी हो चुके उस प्रतष्ठिति भक्षिु ने उस स्थान को छोड़ने से इनकार कर दयिा जहाँ उसने अपने संकल्प लिए थे; परणिामस्वरूप, आर्चबशिप को राजा मलिुटनि से अपील करनी पड़ी, ताकि शासक स्वयं उस भक्षिु को आर्चबशिप के समक्ष उपस्थति होने का आदेश दे सकें।

यूस्टैथयिस द्वारा अनुकूल रूप से स्वीकार कयिे जाने पर, डैनयिल को जल्द ही उनके द्वारा एक हायरोमोंक के रूप में अभषिक्ति कयिा गया और आर्चबशिप द्वारा अपनी अदालत में बनाए रखा गया, जो ज़चि के मठ में स्थति थी[112] ।

आर्चबशिप की सेवा में रहते हुए, दानयिल ने अपना तपस्वी जीवन जारी रखा, और कसिी भी तरह से अपने संन्यासी व्रतों का उल्लंघन नहीं कयिा। हालाँकि, उसी समय डैनयिल ने आर्चबशिप द्वारा सौंके गए वभिन्नि कार्यों को पूरा कयिा और चर्च के प्रशासन से संबंधति मामलों में सेवा की। डैनयिल अपने सुंदर चेहरे और सुरीली आवाज़ के लिए प्रसद्धि था, और उसमें 'राजाओं के सामने बुद्धमिानी और समझदारी से बोलने का प्रभु का वरदान' था, जैसा कि भवषि्यवक्ता यशायाह द्वारा वर्णति है।

डैनयिल लंबे समय से पवत्रि माउंट अथोस को देखने की इच्छा रखता था। वास्तव में, पहले सर्बयिाई शासक, संत स्टीफन नेमान्या—पहले सर्बयिाई आर्चबशिप, संत सावा के पति—ने माउंट अथोस पर सर्बयिाई हलिेंडर मठ की स्थापना की, जहाँ स्टीफन स्वयं, साधु का नाम समियिन नेमान्या लेकर, एक भक्षिु के रूप में रहे, और उनके पुत्र, संत सावा ने भी ऐसा ही कयिा। इस प्रकार माउंट अथोस पर स्थति हलिेंडर मठ, हमेशा के लिए सर्बों के लिए सबसे कीमती तीर्थस्थल बन गया। राजा मलिुटनि ने इसका नवीनीकरण कयिा; प्राचीन, साधारण आश्रम के स्थान पर, उन्होंने समुद्र तट से कुछ दूरी पर एक भव्य मठ का नरि्माण कयिा। तत्कालीन मठाध्यक्ष, करियिाकोस के अनुरोध पर, मलिुटनि ने

---

[110] सापोका और सापोकानी नगर रास्का नदी के उद्गम स्थल पर स्थति हैं, जो पुरानी सर्बयिा के नोवी पाज़ार से तीन घंटे की सवारी पर है; अब, नेमान्यचि राजवंश के एक जागीर, ट्रॉइट्स्की मठ के अवशेष केवल खंडहर ही बचे हैं।

[111] यूस्टैथयिस द्वतीय 1286 से 1304 तक सर्बयिा के आर्चबशिप थे।

[112] ज़ीचा मठ (ज़ीचा, ज़दि्चा), जो आज भी मौजूद है, इब्रा नदी के दाहनिे कनिारे पर स्थति है, ठीक उस स्थान के पास जहाँ यह सर्बयिाई मोराव नदी में मलिती है, जो वर्तमान सर्बयिाई राज्य की सीमाओं के भीतर है।

समुद्र डाकुओं से मठ की रक्षा के लिए, ठीक समुद्र तट पर एक परिग, या कलिबंदी मीनार, का नरि्माण कयिा, जसिमें उद्धारकर्ता को समर्पति एक चर्च भी था।

उपरोक्त मठाधीश, करियिाकोस, जल्द ही नधिन हो गए। आर्चबशिप यूस्टैथयिस और राजा मलिुटनि, एक योग्य उत्तराधकिारी के चुनाव को लेकर चतिति, परामर्श के लिए एक धर्मसभा बुलाई, जसिने सर्वसम्मत सि ह्येरोमोंक डैनयिल को चुना। और इस प्रकार डेनयिल, जो लंबे समय से पवत्रि माउंट अथोस को देखने के लिए तरस रहे थे, को सीधे ही हलिंडर मठ के मठाधीश के रूप में नयिुक्त कयिा गया, जो उस समय पहले से ही प्रसद्धि था और सर्बों के लिए वशिेष महत्व रखता था।

जसि समय ईश्वर ने डेनयिल को हलिंडर का मठाधीश नयिुक्त करने की कृपा की, वह न केवल पवत्रि माउंट अथोस के लिए, बल्कि पूरे ग्रीस के साम्राज्य के लिए भी एक कठनि और परीक्षा का समय था। उस समय, ऑटोमन तुर्क पहले से ही कॉन्स्टेंटनिोपल पर आगे बढ़ रहे थे; वे न केवल एशयिा से दबाव डाल रहे थे, बल्कि वे समुद्र पार करके यूरोप पर आक्रमण करने का भी प्रयास कर रहे थे। ग्रीक सम्राटों ने अवशि्वासयिों से ईसाइयों की रक्षा के लिए हर संभव उपाय कयिा। अपनी सेनाओं के अलावा, उन्होंने बाहरी सहायता प्राप्त करने का हर संभव प्रयास कयिा। इस प्रकार, सर्बयिाई राजा मलिुटनि ने एशयिा में तुर्कों के खलिाफ ग्रीक सम्राट एंड्रोनकिस द एल्डर की सहायता की। बाद में, ग्रीक ज़ार को भाड़े के सैनकिों, यानी स्पेनशि कैटलान की मदद लेनी पड़ी। वभिन्नि राष्ट्रीयताओं से आए इन भाड़े के सैनकिों ने अपने संधकिा सम्मान नहीं कयिा; वे जल्द ही तुर्कों के साथ गठबंधन में आ गए, और सहयोगी और रक्षक होने से वे ऑर्थोडॉक्स ईसाई साम्राज्य के क्रूर दुश्मन बन गए। उन्होंने पूरे बाल्कन प्रायद्वीप में लूटपाट की, तबाही मचाई और घर जला दिए। समुद्री डाकू, वशिेष रूप से वेनसि के, ग्रीक सागरों के तटों पर उत्पात मचा रहे थे। न तो भूमि-आधारति दुश्मनों—कातालानयिों—और न ही समुद्र-आधारति दुश्मनों—मुख्य रूप से वेनसि के—ने ई और पवत्रि माउंट अथोस को चैन से रहने दयिा। एथोस के मठों की संपत्तकि बारे में अतशियोक्तपिूर्ण अफवाहों ने लुटेरों को आकर्षति कयिा, जन्होंने आबादी पर कोई दया नहीं दखिाई और पद या उम्र के बीच कोई भेदभाव कए बनिा, लोगों को बंदी बनाया, मार डाला और लूटपाट की।

माउंट अथोस पर स्थति सर्बयिाई हलिंडर मठ भी इन लुटेरों से नहीं बच पाया, जो यद्यपि ईसाई थे, लेकनि लैटनि थे।

ऐसे ही कठनि समय के दौरान संत डेनयिल को हलिंडर का मठाधीश नयिुक्त कयिा गया था।

राजा मलिुटनि और आर्चबशिप यूस्टैथयिस ने डेनयिल को पवत्रि हलिंडर मठ के लिए भव्य उपहारों के साथ वदिा कयिा। माउंट अथोस पर मठवासी जीवन को समर्पति होने की लंबे समय से इच्छा रखने वाले संत डेनयिल ने खुशी-खुशी अपनी पुरानी आशाओं को पूरा करना शुरू कर दयिा। उन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन मठवासी तपस्या को समर्पति कर दयिा, और दृढ़ता से उन सभी प्रलोभनों पर वजिय प्राप्त की जो दुश्मन, यानी शैतान ने, उनके मोक्ष के मार्ग पर कई अलग-अलग तरीकों से डाले। मठाध्यक्ष के उदाहरण और उनके प्रभावशाली नरि्देशों और शकि्षाओं ने मठ के भीतर भक्ति, मानसकि एकता, व्यवस्था और पारस्परकि प्रेम को बढ़ावा दयिा और फैलाया।

लेकनि अपनी आध्यात्मकि उपलब्धयिों के अलावा, मठाधीश डेनयिल को उपर्युक्त डाकुओं से मठ की रक्षा के लिए शारीरकि लड़ाई में भी उतरना पड़ा, जन्होंने पूरे पवत्रि पर्वत को तबाह और बर्बाद कर दयिा था। कई भकि्षु और आम स्थानीय नविासी, जनिमें महलिाएँ और बच्चे भी शामलि थे, आश्रय और भोजन की तलाश में मज़बूत और सुव्यवस्थति हलिंडर मठ में शरण लेने भागे।

मठ का सारा अनाज पीड़ति आबादी को खलिाने के लिए दे दयिा गया, लेकनि वह भी अंततःसमाप्त हो गया। अकाल दूर-दूर तक फैल रहा था। तबाह हो चुकी भूमि में लोग और यहाँ तक कि पशु-पक्षी भी भूख से मर रहे थे। इस असहनीय वपित्तकि सामने, हलिंडर मठ के भकि्षुओं ने भी सुरक्षा की तलाश में इधर-उधर बखिरना शुरू कर दयिा, लेकनि वे भी या तो दुश्मन द्वारा दास बना लिए गए या भूख से मर गए। केवल मठाधीश, डैनयिल, जो अपने संकल्प में अडगि थे, ने हम्मित नहीं हारी। साढ़े तीन साल तक वह कलिबंदी मठ में डटा रहा। दुश्मन बार-बार मठ के द्वारों तक आए, दीवारों पर चढ़े, लेकनि बनिा सफलता के पीछे हट गए और लौटने की कसम खाए। डैनयिल ने वहां बचे हुए लोगों के साथ और प्रभु ईश्वर से लगातार प्रार्थना करते हुए, मठ की अथक रक्षा की।

मंडरा रहे भयानक खतरे को देखते हुए, देखभाल करने वाले और दूरदर्शी मठाधीश ने, मठ में शरण लेने वालों से यह वादा और जमानत लेकर कि वे इसकी रक्षा करेंगे, इसके खजाने को बचाने और खतरे से बचने के लिए अस्थायी रूप से अपने संरक्षक, सर्बियाई राजा मिलुटिन के पास शरण लेने का संकल्प लिया।

मठ में रहने वालों को सोने की एक बड़ी राशि देने के बाद, डैनियल, मठ समुदाय के कुछ सदस्यों के साथ, पवित्र बर्तन और गहने—यहाँ तक कि मठ के पशु-धन—लेकर दुश्मन द्वारा कब्जा किए गए और तबाह किए गए क्षेत्रों से होते हुए सर्बिया के लिए रवाना हो गए। ईश्वर की कृपा से, हर तरह के खतरों के बीच, वह सुरक्षित रूप से उस समय के सर्बियाई राजधानी, स्कोप्जे शहर में पहुँच गया। राजा मिलुटिन ने आबट डैनियल का खुशी-खुशी स्वागत किया और उनसे अनुरोध किया कि वे खतरा टल जाने तक उनके साथ ही रहें। लेकिन डैनियल, मठ के खजाने और पशुधन को मिलुटिन के पास सुरक्षित रखने के लिए सौंपकर, वापस चल पड़ा, कुछ भी सहने, यहाँ तक कि शहादत देने के लिए तैयार था।

वापसी की यात्रा में, उन्हें एक बार फिर डाकुओं और दुश्मनों से कई खतरों का सामना करना पड़ा। एक समय पर, एक स्थानीय सरदार ने उन्हें पकड़कर लूटने की मंशा से उन पर हमला किया, लेकिन डैनियल के साथ आए लोगों ने हमलावरों को सफलतापूर्वक काबू कर लिया, दुश्मन को बांध दिया, उसे अपने साथ ले गए, और केवल तभी उसे रिहा किया जब वे उसके क्षेत्र की सीमाओं से बाहर थे।

हिलैंडर मठ लौटने पर, महाधर्माध्यक्ष डैनियल ने सबसे पहले भविष्य में मठ को उन दुश्मनों से बचाने और सुरक्षित रखने के लिए कदम उठाए, जो माउंट अथोस और आसपास के क्षेत्रों में तबाही मचाते रहे। कई भरोसेमंद लोगों को पैसे देकर, उन्होंने उन्हें ब्रेड खरीदने और मठ की रक्षा के लिए सशस्त्र लोगों को काम पर रखने के लिए समुद्री बंदरगाहों पर भेज दिया। इस प्रकार मठ की रक्षा सुनिश्चित करने के बाद, डेनियल स्वयं माउंट अथोस पर रूसिक मठ में अपने आध्यात्मिक पिता से आध्यात्मिक परामर्श लेने और अपनी सुरक्षा के लिए भी चले गए, क्योंकि दुश्मन हिलैंडर के मठाध्यक्ष को पकड़ने का अवसर ढूंढ रहे थे। हिलैंडर मठ के दो गद्दार अपने मठाध्यक्ष को धोखा देकर उसे दुश्मनों के हवाले करने के इरादे से रुसिक गए। लेकिन दूरदर्शी और सूक्ष्मदर्शी डेनियल ने उन्हें बेअसर कर दिया, भले ही दुश्मनों ने रुसिक की घेराबंदी कर ली थी और उसे जलाने तथा डेनियल को पकड़ने का प्रयास किया था। लेकिन ईश्वर ने डेनियल को इस खतरे से बचाया: दुश्मन आपस में ही लड़ पड़े और अप्रत्याशित रूप से मठ से पीछे हट गए।

आने वाले खतरे से मुक्ति के लिए ईश्वर का धन्यवाद करने के बाद, डेनियल अपने आध्यात्मिक बच्चों और साथियों के साथ, समुद्र तट पर स्थित ज़िरोपोतामो के एथोनाइट मठ के लिए रवाना हुए, जिसकी स्थापना और व्यवस्था भी सर्बिया के आर्चबिशप, संत सावा द्वारा की गई थी। यहाँ, दानियिल ने स्वयं और अपने माता-पिता को स्मरण के लिए सिनाडिकॉन में प्रवेश कराया और प्रार्थना में कई दिन बिताने के बाद, अपने मठ, हिलैंडर लौट आए।

इस बीच, बाहरी दुश्मन, जिन्होंने तीन साल से भी अधिक समय तक भयंकर आपदाएं और तबाही मचाई थी, धीरे-धीरे माउंट अथोस से पीछे हटने लगे, और वहां धीरे-धीरे शांति बिहाल होने लगी। ग्रीक ज़ार एंड्रोनिकोस और सर्बियाई राजा मिलुटिन ने इन दुश्मनों को वश में करने और भगाने में सहायता की।

एक बार माउंट अथोस पर शांति और सुव्यवस्था बहाल हो जाने के बाद, डैनियल, जिसने इतनी अथक और उत्साहपूर्वक सर्बियाई तीर्थस्थल की रक्षा की थी, ने मौन और एकांतवादी जीवन के लिए, हिलैंडर की मठाधीश पदवी त्यागने का संकल्प लिया, उसे अपने शिष्य निकोडेमस को सौंप दिया, और कैरीज़ के अथोनाइट मठ में चले गए। वहाँ संत सावा की कोठरी थी, जो संत सावा के नियमों के अनुसार मौन और एकांत जीवन के लिए थी, जिनके अनुसार उन्होंने स्वयं, वहाँ एक भिक्षु के रूप में रहते हुए, प्रार्थनाएँ, रात्रि जागरण, प्रणाम और भजन-गायन किया था। इस कोठरी में बस जाने के बाद, डेनियल ने स्वयं को पूरी तरह से आध्यात्मिक तपस्या में समर्पित कर दिया, जिसकी ख्याति पूरे माउंट अथोस में फैल गई, जिससे कई लोग आध्यात्मिक सांत्वना और मार्गदर्शन की तलाश में उनके पास आने लगे।

जिस समय दानियिल कैरिस के तपस्थल में तपस्या कर रहे थे, उसी समय उनके स्वदेश सर्बिया में युद्ध छिड़ गया: राजा मिलुटिन के भाई, ड्रैगुगिन ने, हंगरी के राजा की मदद से, अपने बेटे उरोशिच के लिए उरोश मिलुटिन को सर्बियाई सिंहासन से वंचित करने के उद्देश्य से उन पर विद्रोह कर दिया था। मिलुटिन खुद को बहुत खतरे में पाया। शत्रु के आक्रमण के भय से, उन्होंने अपना खजाना बांजा मठ में इकट्ठा किया, लेकिन उनके पास कोई भरोसेमंद व्यक्ति नहीं था जिसे वे इसकी सुरक्षा के लिए सौंप सकें। उस समय, बिशप की मृत्यु के बाद, बांजा का धार्मिक पद खाली था। और इस प्रकार राजा मिलुटिन ने हिलैंडर के पूर्व मठाधीश, ऊर्जावान डैनियल को याद किया, और कैरिस में उनके पास एक के बाद एक दूत भेजे, उन्हें अपने दरबार में बुलाते हुए। अपने एकांत तपस्वी जीवन के प्रति समर्पित, डैनियल ने लंबे समय

तक मना कर दिया, लेकिन राजा की लगातार विनतियों ने उन्हें मानने के लिए मजबूर कर दिया, और इस प्रकार वह राजा मिलुटिन के सामने उपस्थित हुए। राजा ने अपनी गंभीर परिस्थितियों को समझाया और बान्स्को मठ में एकत्रित खजाने को सौंपते हुए, डेनियल से उन्हें अपनी सुरक्षा में लेने के लिए कहा और उन्हें बान्स्को का बिशप पद प्रस्तावित किया। दानियल पवित्र पहाड़ पर अपने एकांत जीवन को छोड़ने के लिए बहुत अनिच्छुक थे, लेकिन राजा मिलुटिन ने अंततःउन्हें उपरोक्त प्रस्ताव को स्वीकार करने के लिए मना लिया, और युद्ध के सफलतापूर्वक समाप्त होने के बाद उन्हें पवित्र पहाड़ पर लौटने की अनुमति देने का वादा किया।

जब राजा मिलुटिन अपने भाई ड्रैगुगिन के नेतृत्व में हुए विद्रोह से उत्पन्न कठिनाइयों पर सफलतापूर्वक काबू पा चुके थे, डैनियल ने एक बार फिर पवित्र पहाड़ पर लौटने का अनुरोध किया, और भले ही राजा ने उन्हें सर्बिया में रहने के लिए कितना भी आग्रह किया, वह फिर भी एक बार फिर अपने प्रिय हिलेंडर में चले गए, जहाँ, उपर्युक्त परिग, या मीनार में निवास कर, उन्होंने एक बार फिर तपस्वी जीवन को समर्पित कर दिया। हमेशा की तरह, लेकिन अब विशेष रूप से, उन्होंने खुद को पवित्र धर्मग्रंथों को पढ़ने और उनका अध्ययन करने में समर्पित कर दिया।

संत डैनियल लंबे समय से पवित्र शहर यरूशलेम की यात्रा करने और ईसाई पवित्र स्थलों का सम्मान करने की इच्छा से प्रेरित थे। और अब उन्हें विश्वास था कि, आखिरकार, अपनी योजना को पूरा करने का समय आ गया है। उन्होंने यरूशलेम की अपनी यात्रा की तैयारी शुरू कर दी।

यह जानकर, सर्बियाई राजा मिलुटिन बहुत दुखी हुआ: वह नहीं चाहता था कि डैनियल उसे पूरी तरह से छोड़ दे; उसे एक ऐसे व्यक्ति के रूप में उसकी आवश्यकता थी जिस पर वह भरोसा कर सके, और जो विभिन्न प्रकार की ठोस सलाह और सहायता प्रदान कर सके। राजा ने डैनियल से अपनी योजनाओं को स्थगित करने और यरूशलेम की यात्रा करने के बजाय सर्बिया लौटने का आग्रह करना शुरू कर दिया, जहाँ विभिन्न कर्तव्य और सम्मान उसकी प्रतीक्षा कर रहे थे। डैनियल राजा के आग्रह के आगे झुक गया। बान्स्को के बिशिपपद को समाप्त कर उसे एक मठ में बदल दिया गया, जबकि डैनियल को सर्बियाई आर्चबिशप सावा III के साथ रहने की अनुमति दी गई, जिन्होंने अपने स्वयं के घर में उनके लिए एक कोठरी आरक्षित की, ताकि वे उनके भविष्य के उत्तराधिकारी बन सकें: क्योंकि मिलुटिन, डैनियल को सर्बिया लौटने के लिए मनाते हुए, उससे सेंट सावा के भविष्य के सर्बियाई आर्चबिशप पद का वादा कर चुके थे।

सावा III की कुछ ही समय बाद मृत्यु हो गई। हालाँकि, अज्ञात कारणों से, उनके उत्तराधिकारी के रूप में डेनियल को नहीं बल्कि उनके शिष्य, हिलेंडर के मठाधीश निकोडेमस को चुना गया; इस बीच, डेनियल को खोलम के डायोसीस का नियुक्त किया गया[113] ।

20 अक्टूबर 1320 को, धर्मपरायण सर्बियाई राजा स्टीफन उरोश II मिलुटिन का निधन हो गया; उन्होंने तीस वर्षों तक सर्बिया पर शासन किया, इसकी सीमाओं का विस्तार किया और देश को महान महिमा प्रदान की। डेनियल को राजा की बीमारी के बारे में सूचित किया गया था और वह उनकी मृत्यु और अंतिम संस्कार के समय उपस्थित थे, जो बान्या में सेंट स्टीफन मठ में मिलुटिन की स्मृति सभा के दौरान हुआ, जहाँ डेनियल ने पहले बिशप के रूप में सेवा की थी।

मिलुटिन के पुत्र, डेचानी के संत स्टीफन उरोश तृतीय[114] , ने सर्बियाई सिंहासन संभाला।

अपने राज्याभिषेक के तुरंत बाद, उन्होंने बिशप डेनियल को बुलाया और उसे अपने करीबी दायरे में शामिल कर लिया; अपने पिता के अधीन कई वर्षों तक सेवा करने के दौरान, और विशेष रूप से बड़ी विपत्ति के समय में एक सहायक और रक्षक के रूप में, वह अपनी युवावस्था से ही उसे एक बुद्धिमान सलाहकार के रूप में प्यार और महत्व देने लगा था।

इसी दानियल के मध्यस्थता और समर्थन के कारण स्टेफान ऑफ़ डेचानी को कॉन्स्टेंटिनोपल में कैद से रिहाई और अपने पिता के साथ अंतिम सुलह प्राप्त हुई।

इस प्रकार डेनियल सर्बियाई राजा का स्थायी शिक्षक, सलाहकार और सहायक बन गया। डेचानी के स्टेफान के शासन के आरंभ में, देश के भीतर और विदेशों से दोनों ओर से कठिनाइयाँ उत्पन्न हुईं। नए राजा को आंतरिक दुश्मनों—उनके प्रतिद्वंद्वियों जिन्होंने विद्रोह कर दिया था, अर्थात् उनके चचेरे भाई राजा ड्रागुटिन के पुत्र व्लादिस्लाव, और उनके पिता की ओर से उनके सगे भाई कॉन्स्टेंटिन—से खुद का बचाव करना पड़ा। उसे बाहरी दुश्मनों से भी अपनी और सर्बिया की रक्षा करनी थी। बुल्गारिया के ज़ार माइकल ने अपनी पत्नी नेदा, जो स्टेफान ऑफ़ डेचानी की बहन थीं, को

[113] खोल्म या ज़ाहोल्म का धर्मप्रांत वर्तमान हर्जेगोविना में स्थित था।

[114] 6 जनवरी 1321; 11 नवंबर के अंतर्गत डेचानी के संत स्टीफन का जीवन देखें।

नरि्वासति कर दयिा था, और वह सर्बों के खलिाफ यूनानयिों के साथ मेल-मलिाप और गठबंधन की तलाश में था। स्टेफान ऑफ़ डेचानी को हथयिारों के बल पर अपनी रक्षा करने के साथ-साथ शांतसिमझौतों और वार्ता का भी सहारा लेना पड़ा। उस समय, बशिप डैनयिल से अधकि सक्षम कोई भी ऐसे वार्तालाप के लिए नहीं था, जनिके पास सांसारकि अनुभव का खजाना और असाधारण वाक्पटुता थी, और सबसे बढ़कर, राजाओं के सामने बोलने का वरदान था। और इस प्रकार, डेचानी के राजा स्टीफन के अनुरोध और नरि्देशों पर, डैनयिल ने बुल्गारयिा के त्ज़ार माइकल और कॉन्स्टेंटनिोपल के त्ज़ार, एंड्रोनकिोस द यंगर के लिए एक राजनयकि मशिन को सफलतापूर्वक पूरा कयिा।

अपने शासक के लिए वभिन्नि कार्य करते हुए, डैनयिल अपने प्रयि अथोस के पवत्रि पर्वत को नहीं भूल सके और, जब भी संभव होता, तब भी वहाँ जाते थे; फरि भी वे अब वहाँ लंबे समय तक नहीं ठहर पाते थे। इस प्रकार, उपर्युक्त राजनयकि मशिनों को पूरा करने के बाद, वह एक बार फरि से अथोस में संन्यास लेने वाले थे, लेकनि 13 मई 1323 को सर्बयिाई आर्चबशिप नकिोडेमस की मृत्यु ने उन्हें सर्बयिा लौटने के लिए मजबूर कर दयिा। उस वर्ष की 14 सतिंबर को, राजा द्वारा बुलाई गई पुरोहतिों और कुलीनों की एक परषिद ने सर्वसम्मतसि डेनयिल को 'सभी सर्बयिाई और पोमेरेनयिन भूमकिा आर्चबशिप' घोषति कयिा। तब उनकी आयु 50 वर्ष थी।

आर्चबशिप के सहिासन पर बैठने के बाद, डेनयिल ने अपना पूरा जीवन चर्च और अपने प्रयि स्वदेश की भलाई के लिए समर्पति कर दयिा। बेशक, सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण, उन्होंने चर्च के आंतरकि और बाहरी दोनों सुधारों पर अपना ध्यान केंद्रति कयिा। एक प्रबुद्ध व्यक्तकि रूप में, उन्होंने धर्मग्रंथों के अध्ययन को प्रोत्साहति करके, स्कूलों की स्थापना करके और पुस्तकों का वतिरण करके पुरोहति वर्ग के बीच शक्षिा के स्तर को ऊँचा उठाने का प्रयास कयिा।

धार्मकि पूजा और पुरोहति वर्ग के जीवन में, उन्होंने सख्त अनुष्ठान, व्यवस्था और वैभव को लागू करने का ध्यान रखा। उन्होंने यह सुनश्चिति करने के लिए बहुत प्रयास कयिा कचिर्चों में आवश्यक पुस्तकें हों; कई ऐसी पुस्तकें धार्मकि उपयोग में लाई गईं जो पहले सर्बों के पास नहीं थीं।

अपने लंबे जीवन के दौरान, आर्चबशिप डैनयिल ने नरि्माण और प्रशासन के मामलों में व्यापक अनुभव प्राप्त कयिा। सर्बयिाई चर्च के प्रशासन में सर्वोच्च पद संभालने के बाद, उन्होंने अपने वशिाल ज्ञान और अनुभव को अपने सामने मौजूद कार्य पर लागू कयिा। सर्बयिाई राजा के समर्थन से, उन्हें अपने प्रबल उत्साह से प्रेरति होकर, सर्बयिाई चर्चों के बाहरी सुधार का कार्य करने का हर अवसर मलिा: उन्होंने भव्य नए चर्च बनाए, पुराने चर्चों का जीर्णोद्धार और पुनर्नरि्माण कयिा, उन्हें अंदर और बाहर से सजाया, उन्हें चर्च के फर्नीचर, पवत्रि वस्त्र और कतिाबें प्रदान कीं, और उन्हें आइकन और भत्तिचित्रिों से सजाया। चर्चों का नरि्माण और सजावट करने के लिए, उन्होंने आवश्यक—और अक्सर महंगी—सामग्री स्वयं सर्बयिा के भीतर और उसकी सीमाओं से बाहर से प्राप्त की, और कारीगरों तथा वस्तुओं, दोनों को काम सौंपा; उदाहरण के लिए, चर्चों के लिए घंटयिाँ एड्रयिाटकि तट से मंगवाई गई थीं।

उन्होंने जीचे और पेच में दो आर्चबशिपल कैथेड्रल मठों में चर्चों के नरि्माण और सजावट के लिए बहुत प्रयास और सावधानी बरती। इनमें से एक स्थल पर, सर्बयिा और उससे परे अपनी कई और ववििधि यात्राओं के दौरान सामना कए गए खतरों से बचे रहने के आभार के प्रतीक के रूप में, उन्होंने ईश्वर की माता के सम्मान में एक भव्य चर्च का नरि्माण कयिा, जसिे कॉन्स्टेंटनिोपल की ओडगिट्रियिा के नाम से जाना जाता है, जसिमें दो पार्श्व चैपल थे – एक जॉन द बैपटस्टि को और दूसरा सर्बयिा के आर्चबशिप सेंट आर्सेनयिस को समर्पति – और ठीक इसके बगल में, चमत्कार करने वाले सेंट नकिोलस को समर्पति एक छोटा चर्च। अंदर और बाहर दोनों तरफ से शानदार ढंग से सजाने और इसमें सभी आवश्यक चीजें प्रदान करने के बाद, उन्होंने यह आदेश दयिा कइस चर्च में सेवाएं यूनानी भक्षिुओं द्वारा यूनानी पूजा-संबंधी पुस्तकों ( ) के अनुसार और यूनानी मठों की रीतयिों के अनुसार आयोजति की जानी चाहए। अन्यत्र, पवत्रि प्रेरतिों और संत डेमेट्रयिस के पहले से मौजूद चर्चों, और उसने जो ईश्वर की माता का चर्च बनवाया था, के साथ-साथ, उसने एक सामुदायकि भोजनशाला जोड़ी, जो ग्रीक चर्चों के मॉडल पर बनाई गई थी, कीमती सामग्रयिों से नरि्मति और अंदर तथा बाहर वभिन्नि सजावटों से सुसज्जति थी, और पास में, एक परिग, या कलिेबंदी मीनार, जसिके शीर्ष पर संत डेनयिल द स्टाइलाइट को समर्पति एक चर्च था।

सर्बयिा के वभिन्नि हस्सिों में, जैसे कमिग्लचि के कलि में, एलीस, लज़िसि और अन्य शहरों में, आर्चबशिप डेनयिल ने चर्च से संबंधति कई चर्चों, मठों और अन्य भवनों का या तो नए सरि से नरि्माण कयिा या उनका जीर्णोद्धार कयिा।

चर्च और अन्य भवनों के निर्माण के अलावा, डैनियल ने यह सुनिश्चित किया कि जहाँ भी मठ और चर्च थे, वहाँ विभिन्न चर्च संस्थानों की जरूरतों को पूरा करने के लिए सब्जी के बगीचे, फलों के बाग, अंगूर के बाग और, आम तौर पर, कृषि भूमि स्थापित की जाए और उसकी खेती की जाए।

आर्चबिशप डैनियल का शासन सर्बियाई चर्च के लिए आंतरिक और बाहरी समृद्धि का स्वर्ण युग था; उस अवधि के कई ऐतिहासिक स्मारक आज भी मौजूद हैं।

डेचानी के स्टीफन के अधीन, डैनियल एक स्थायी और प्रमुख सलाहकार के रूप में कार्यरत थे। जब सर्बिया और बुल्गारिया के बीच युद्ध छिड़ गया, और जब डेचानी के स्टीफन अपने बेटे स्टीफन डुसान के साथ एक अभियान पर निकले, तो डैनियल को शाही परिवार के संरक्षक और देश के प्रमुख शासक के रूप में छोड़ दिया गया था। राजा ने युद्ध के मैदान से आर्चबिशप डेनियल को संदेश भेजा, और आर्चबिशप ने विजय के लिए प्रार्थनाओं का आयोजन किया; और जब वेल्बुगा की लड़ाई में, सर्बों ने बुल्गारियाई लोगों पर निर्णायक विजय प्राप्त की, तो डेनियल ने पूरे सर्बियाई क्षेत्रों में धन्यवाद सेवाएं आयोजित करने का आदेश दिया। डेचानी के राजा स्टीफन ने, अपने ऊपर प्रदान की गई विजय के लिए प्रभु ईश्वर के प्रति कृतज्ञता के प्रतीक के रूप में, बुल्गारियाई लोगों की हार के बाद युद्ध के लूट के रूप में प्राप्त खजाने का उपयोग करके अपने लिए एक स्मारक बनाने का संकल्प लिया: डेचानी में प्रभु के स्वर्गारोहण का भव्य चर्च। आर्चबिशप डेनियल ने इस कीमती और कलात्मक रूप से शानदार चर्च के स्थल के चयन और निर्माण में सबसे सक्रिय भूमिका निभाई; वह न केवल मठ के संस्थापक और निर्माता थे, बल्कि एक वित्तीय योगदानकर्ता भी थे: उन्होंने चर्च के एक हिस्से को अपनी स्मृति में बनाने के लिए अपने निजी धन का उपयोग किया[115] ।

शत्रुओं पर विजय का जश्न मनाने के तुरंत बाद, आर्चबिशप डेनियल को सर्बियाई गृहयुद्ध की कठिन परिस्थितियों को सहना पड़ा, जिसमें डेचानी के धर्मनिरपेक्ष राजा स्टीफन को अपने ही बेटे, स्टीफन डुसान की जानकारी में काम कर रहे हत्यारों के हाथों शहीद होना था[116] ।

स्टेफान डुशान, सर्बिया के एकमात्र शासक बनकर, सैन्य बल से राज्य की सीमाओं का विस्तार किया और सर्बिया तथा सर्बियाई चर्च को नई महिमा प्रदान की। कुछ ग्रीक क्षेत्रों पर विजय प्राप्त करने के बाद, उन्होंने सर्बों और ग्रीकों के ज़ार की उपाधि धारण की, और सर्बियाई आर्चबिशप को सर्बियाई पैट्रिआर्क के पद पर पदोन्नत किया। यह 1346 में हुआ, लेकिन आर्चबिशप डैनियल इन घटनाओं को देखने के लिए जीवित नहीं रहे: उनका 20 दिसंबर 1337 को शांतिपूर्वक निधन हो गया।

संत आर्चबिशप डैनियल न केवल एक धर्मनिष्ठ तपस्वी, चर्च और राज्य के नेता के रूप में, बल्कि एक प्रबुद्ध विद्वान और लेखक के रूप में भी प्रसिद्ध हैं। उनके शिष्य, जिन्होंने उनकी जीवनी लिखी, इस बात की गवाही देते हैं कि डेनियल असाधारण विद्वान थे, उन्हें पढ़ने और दूसरों को ज्ञान देने का शौक था, और उन्होंने सर्बिया में पुस्तकों के प्रसार को बढ़ावा देने के लिए प्रयास किए—न केवल मौजूदा कृतियों की नई प्रतियां छापकर, बल्कि नई कृतियों का संकलन और अनुवाद करके भी। डेनियल स्वयं इन दोनों प्रयासों में अपने पूरे जीवन में अथक परिश्रम करते रहे। एक लेखक के रूप में, उन्होंने *द लाइव्स ऑफ द किंग्स एंड आर्चबिशप्स ऑफ सर्बिया* नामक एक विस्तृत और अमूल्य कृति छोड़ी। डेनियल अपने देशभूमि से बहुत प्यार करते थे और उन्होंने यह सुनिश्चित किया कि पूर्व राजाओं और आर्चबिशपों के कारनामे और कार्य—जिनमें से कई को संत के रूप में मान्यता दी गई है—भुलाए नहीं जाएँगे[117] । अपने उदाहरण और प्रयासों के माध्यम से, डेनियल ने अपने समय में सर्बियाई साहित्य के विकास में, विशेष रूप से हिलेंडर मठ में, बहुत बड़ा योगदान दिया, जिसे वह प्रिय मानते थे और जो लंबे समय से सर्बियाई आध्यात्मिक ज्ञानोदय का केंद्र रहा था।

---

[115] इन सभी घटनाओं के बारे में और अधिक जानकारी के लिए, इन मेनाइया-चेतिया में 11 नवंबर के अंतर्गत सेंट स्टीफन ऑफ डेचानी का उपर्युक्त जीवन-चरित देखें।

[116] उसी जीवन-चरित्र को देखें।

[117] डैनियल की यह कृति, जिसे कभी-कभी वंशावली या शाही वृत्तांत कहा जाता है, बाद के परिवर्धन के साथ मुद्रित की गई है, जिसमें उनके एक शिष्य द्वारा लिखित डैनियल का जीवन भी शामिल है, जिसे पृष्ठ 1016 पर टिप्पणी में बताए गए संस्करण में डैनिसिक द्वारा प्रकाशित किया गया था।

3 जनवरी

21 दसिंबर (पुराने कैलेंडर के अनुसार)

पवत्रि शहीद कुंवारी जुलयिाना और उनके साथयिों का कष्टकथा

21 दसिंबर को स्मरण कयिा जाता है

नष्ठिाहीन रोमन सम्राटों—पूर्व में डायोक्लेटयिन और पश्चमि में मैक्समियिन—के शासनकाल में, बाइज़ेंटाइन शहर नकिोमेडयिा में मूर्तपिूजा प्रचलति थी[118] । उस समय, वहाँ अफ्रकिनस नामक एक धनी और कुलीन व्यक्तरिहता था, जो मूर्तपिूजा में गहराई से समर्पति था; उसकी जुलयिाना नाम की एक बेटी थी। जब जूलयिानयिा परपिक्व होने लगी और सुंदरता से खलि उठी, और साथ ही बुद्धमित्ता और अच्छे चरत्रि का भी प्रदर्शन करने लगी, तो साम्राज्य के एक अधकिारी, जसिका नाम एलेउसयिस था, ने अन्य दावेदारों को पीछे छोड़ते हुए, पहले ही उससे सगाई कर ली; हालाँकि, ववािह की पूर्णता तब तक के लिए स्थगति कर दी गई जब तक वह वयस्क नहीं हो गई। इस बीच, जुलयिाना ने मसीह के बारे में सुसमाचार का संदेश सुनकर, उस पर वशि्वास कयिा और एक गुप्त ईसाई बन गई। आकाश, पृथ्वी, समुद्र और अग्नकिो देखकर, उसने उस एक को खोजा जसिने इन सभी चीजों को बनाया था, और सृष्टकिे माध्यम से उसने सृष्टकिर्ता को पहचानना सीखा, जैसा कपिवत्रि प्रेरति पौलुस कहते हैं: 'उसकी अतुलनीय महमिा, उसकी अनंत शक्तऔिर दविय स्वभाव, संसार की सृष्टकिे समय से ही, बनाई गई चीजों में स्पष्ट रूप से देखे गए हैं' (रोमयिों 1:20)। और उसने अपने हृदय में मनन कयिा: 'केवल एक ही सच्चा परमेश्वर है, जसिकी हमें आराधना करनी चाहिए!' नर्जिीव मूर्तयिाँ, तथापि, देवता नहीं, बल्करिाक्षसों का नविासस्थान हैं।' उस समय से, उसने स्वयं को प्रार्थना और पवत्रि धर्मग्रंथों के पाठ के लिए गंभीरता से समर्पति कर दयिा, और दनि-रात प्रभु की व्यवस्था का अध्ययन कयिा – अपने पति से गुप्त रूप से, जो एक उत्साही मूर्तपिूजक के रूप में राक्षसों का मत्रि और ईसाइयों का शत्रु था। जहाँ तक जुलयिाना की माँ का सवाल है, यद्यपि वह भी एक मूर्तपिूजक थी, उसने ईसाई धर्म को भी अस्वीकार नहीं कयिा। हालाँकि, उसने कसिी भी धर्म पर वशिेष ध्यान नहीं दयिा - न तो उसने मूर्तयिों की भक्तमिें उत्साह दखिाया और न ही मसीह का सम्मान कयिा, और इसलिए इस बात पर भी उसने कोई ध्यान नहीं दयिा कि उसकी बेटी कसि धर्म का पालन करती थी। इस प्रकार, जहाँ उसकी माँ उदासीन थी, वहीं धन्य जुलयिाना आसानी से अपने पति से मसीह में अपने वशि्वास को छपिाने में सक्षम थी और प्रार्थना तथा पवत्रि धर्मग्रंथों के अध्ययन में खुद को समर्पति कर सकी। ईश्वर के प्रतिप्रेम से अपने हृदय को भरकर और धार्मकिता में दृढ़ होकर, वह इस बात पर वचिार करने लगी कि वह अपनी सगाई कैसे तोड़ सकती है और एक अधर्मी व्यक्तसि ववािह से कैसे बच सकती है, एक मूर्तपिूजक से अपनी कुँवारी अवस्था को अक्षुण्ण कैसे रख सकती है, और शैतान के सेवक से अपने शरीर को शुद्ध कैसे रख सकती है।

इसलिए, जैसे-जैसे शादी का समय नज़दीक आता गया, जुलयिाना ने अपने मंगेतर, एलीसयिस को संदेश भेजा, जसिमें कहा गया:

'शादी की व्यर्थ तैयारी मत करो; यह जान लो: मैं तुमसे तब तक शादी करने के लिए राज़ी नहीं होऊँगी जब तक तुम इस प्रांत के राज्यपाल नहीं बन जाते।'

इस प्रकार संत ने कार्य कयिा, इस वशि्वास के साथ कि एलेउसयिस इस पद को कभी प्राप्त नहीं कर सकता, और इस तरह उसने उससे ववािह करने से बचने की आशा की। लेकनि एलेयुसयिस, जो उसकी मोहब्बत में मंत्रमुग्ध था, ने बहुत लगन से एपार्क के पद के लिए प्रयास करना शुरू कर दयिा – कभी सच्ची वनितयिों से, कभी शानदार उपहारों से, और कभी प्रभावशाली मध्यस्थों के माध्यम से – और राजा से उस पद से सम्मानति करने का आग्रह करने लगा। और लंबे समय के बाद, अपनी अधकिांश संपत्तबिर्बाद करने के बाद, उसने एक राक्षस की सहायता से बड़ी कठनिाई से अपनी इच्छा पूरी की; क्योंकि शैतान, पवत्रि कन्या के अच्छे इरादों को वफिल करना चाहता था, उसने एलेउसयिस की सहायता की। राज्यपाल बन जाने के बाद, उसने तुरंत अपनी मंगेतर को संदेश भेजा, जसिमें कहा गया:

---

[118] नकिोमेडयिा के लिए, पृष्ठ 954, टप्पिणी 7 देखें।

'खुशी मनाओ, जूलियाना, कि तुम्हारा मंगेतर मैं हूँ, एक महिमामय पुरुष, क्योंकि मैं एक राज्यपाल हूँ! अत; विवाह के लिए स्वयं को तैयार करो।'

जुलियाना ने, यह देखकर कि वह किसी बनावटी बहाने से एलीसियस के जाल से नहीं बच पाई थी, खुलकर वह सब कुछ प्रकट कर दिया जो वह लंबे समय से अपने दिल में छिपाए हुए थी, और दूतों के माध्यम से उसे इस प्रकार जवाब दिया:

– यह अच्छा है कि आपको एक धर्मप्रांत का बिशप नियुक्त किया गया है; लेकिन यदि आप मेरे ईश्वर की उपासना नहीं करते और प्रभु यीशु मसीह की सेवा नहीं करते, जिसकी मैं सेवा करती हूँ, तो अपने लिए कोई दूसरी वधू ढूंढ लीजिए; आप मेरे लिए स्वीकार्य नहीं हैं, क्योंकि मैं ऐसा पति नहीं चाहती जो मेरे समान विश्वास का अंगीकार न करता हो।

यह सुनकर, एलेउसियस अपनी मंगेतर के इस बदलाव पर हैरान रह गया और उसे बहुत गुस्सा आया। उसने उसके पिता, अफ्रीकनस को बुलाया और उससे पूछताछ करने लगा:

'तुम्हारी बेटी हमारे देवताओं को भी क्यों अस्वीकार कर रही है, और मेरी अवहेलना क्यों कर रही है?'

इसी समय, एलेउसियस ने अफ्रीकनस को संदेशवाहियों द्वारा बताई गई उसकी कही हुई सारी बातें सुनाईं।

यह सुनकर अफ्रिकिनस हैरान रह गया, इस अप्रत्याशित घटनाक्रम पर आश्चर्यचकित था, और वह जूलियाना पर उतना ही क्रोधित था जितना कि एपार्क था, क्योंकि वह स्वयं अपने दुष्ट देवताओं का एक उत्साही उपासक था। घर लौटकर, उसने अपनी बेटी से धीरे और पिता की तरह पूछना शुरू किया:

'मुझसे बताओ, मेरी प्रिय बेटी और मेरी आँखों की रोशनी, तुम विवाह से मुँह क्यों मोड़ रही हो और एपार्क का प्रस्ताव क्यों ठुकरा रही हो?'

जुलियाना, जो इसका नाम तक सुनना भी नहीं चाहती थी, ने उत्तर दिया:

'बस करो, पिताजी! क्योंकि मैं अपनी आशा—मेरे प्रभु यीशु मसीह—की कसम खाती हूँ कि एलीउसिस मुझसे तब तक विवाह नहीं करेगा जब तक वह पहले मेरे विश्वास को नहीं स्वीकार करता; क्योंकि शरीर में तो एक हो जाना परन्तु आत्मा में अलग रहना, और एक दूसरे से बैर रखना, यह कैसा विवाह है?'

तब जूलिया के पिता, क्रोध से विक्षिप्त होकर, चिल्लाए:

'क्या तुम पागल हो, हे दुर्भाग्यपूर्ण नारी, या तुम्हें दुख में आनंद आता है?'

'मैं तो मसीह के लिए दुख सहना पसंद करती हूँ,' पवित्र कन्या ने उत्तर दिया।

'मैं महान देवताओं—अपोलो और आर्टेमिस[119] की शपथ खाता हूँ, कि मैं तुम्हारे शरीर को जानवरों और कुत्तों को नोचने के लिए दे दूँगा।'

संत ने उत्तर दिया:

'तो फिर तुम देर क्यों कर रहे हो! कुत्ते आने दो, जानवर आने दो, और मेरे लिए एक मौत के बजाय—अगर संभव हो तो—कई मौतें हों, क्योंकि मैं मसीह के लिए कई बार मरकर और हर बार उसका इनाम पाकर आनंदित होऊँगी।'

तब उसके पिता ने चालाकी से उसे अपनी इच्छा के अनुसार झुकाने के लिए अपना क्रोध त्याग दिया और कोमल स्वर में उससे विनती करने लगे कि वह उनकी अवज्ञा न करे। वह, अच्छी आशा से परिपूर्ण, विरोध करने लगी और निडर होकर बोली:

'क्या तुम भी अपने बहरे देवताओं की तरह हो, क्योंकि तुम्हारे कान तो हैं पर सुनते नहीं? क्या मैंने तुम्हें कसम देकर नहीं बताया था कि मेरा एलेउसिस से कोई मेलजोल नहीं हो सकता जब तक कि वह पहले मेरे मसीह की पूजा करने के लिए सहमत न हो जाए?'

यह सुनकर, उसके पिता ने उसे उसके कमरे में बंद कर दिया। फिर वह उसे फिर से बाहर ले आया और, दयालु और कोमल शब्दों और अपनी आँखों में आँसुओं के साथ, संत को देवताओं का सम्मान करने और एलेउसिस से प्रेम करने के लिए मनाने लगा। लेकिन उस साहसी युवती ने एक बार फिर पुकारा:

---

[119] अपोलो – प्राचीन यूनानियों और रोमनों द्वारा सबसे अधिक पूजे जाने वाले मूर्तिपूजक देवताओं में से एक, जिन्हें सूर्य और बौद्धिक प्रबोधन के देवता, साथ ही सार्वजनिक व्यवस्था, कानून के संरक्षक और भविष्यवाणी के देवता के रूप में माना जाता था। आर्टिमिस – जिन्हें डायना के नाम से भी जाना जाता है – यूनानियों के बीच एक प्रसिद्ध पैगन देवी थीं; वह चंद्रमा का प्रतीक थीं और उन्हें जंगलों तथा शिकार की संरक्षक माना जाता था। इस देवी की पूजा बड़े वैभव और धूमधाम के साथ की जाती थी।

'मैं देवताओं को बलदिान नहीं चढ़ाऊँगी, मैं मूर्तयिों की पूजा नहीं करूँगी, मैं अधर्मी एलेउसीस से प्रेम नहीं करूँगी! मैं केवल मसीह की पूजा करती हूँ, मैं मसीह का सम्मान करती हूँ, मैं मसीह से प्रेम करती हूँ!'

तब उसका पति, क्रोधति होकर, जुलयिाना को पकड़कर बेरहमी से पीटने लगा: उसे ज़मीन पर फेंककर, उसने उसके बाल पकड़कर खींचा और उसके पैरों तले कुचल दयिा – एक अभभिावक के रूप में नहीं, बल्कि एक अत्याचारी के रूप में, जसिमें माता-पति जैसा थोड़ा भी स्नेह नहीं था और अपने उग्र क्रोध और अनयिंत्रति रोष में, वह अपनी बेटी के प्रति अपने स्वाभाविक प्रेम को भूल गया था। और उसने तब तक उसे पीटा जब तक कि वह स्वयं थक नहीं गया, जसिसे वह धन्य कन्या मुश्कलि से जीवति बची। इसके बाद, उसने उसे उसके मंगेतर—एपार्क एलोसयिस—के पास भेज दयिा, ताकि वह उसके साथ अपनी इच्छा से जैसा चाहे वैसा कर सके। उसने, उसकी ओर से ठुकराए जाने पर, उसके प्रति प्रचंड क्रोध से भर गया: वह उसके प्रति आग उगलता और दाँत पीसता रहा, उसने यह एक बड़ी अपमान की बात मानी कि उसने उसे तुच्छ समझा और उसके प्यार को ठुकरा दयिा। इसलिए, वह इस बात से अत्यंत प्रसन्न था कि वह उसके हाथों में सौंप दी गई थी और उसे उस पर अधकिार मलि गया था। और इसलिए उसने उसे सार्वजनकि मुकदमे में खड़ा करने का नश्चिय कयिा (क्योंकि वह एक राज्यपाल था), दखिावे के लिए देवताओं का अपमान करने के आरोप में, लेकनि वास्तव में उससे हुई तरिस्कार की बदला लेने के लिए। न्यायाधीश की कुर्सी पर बैठकर, उसने आदेश दयिा कि मिसीह के मेमने को पूछताछ के लिए पेश कयिा जाए।

जब पवत्रि कुंवारी जूलयिाना अपने मंगेतर, एलेउसयिस, के सामने प्रकट हुईं और अपने मुख की सुंदरता से भोर की तरह चमकीं, तो सभी ने उनकी सुंदरता को देखकर अपनी नगिाहें उन पर टकिा लीं। एलेउसयिस, जैसे ही उन्होंने पवत्रि कुंवारी जूलयिाना को देखा, तुरंत ही उनका हृदय नरम हो गया, और उनका क्रोध प्रेम में बदल गया। पहले तो वह उसके प्रति एक भी कठोर शब्द नहीं बोल सका, बल्कि किन्या को पाने की इच्छा से अभभिूत होकर, शांति और कोमलता से बात करने लगा। उसने उससे कहा:

'मेरी बात मानो, हे अति सुन्दरी कन्या, कि यदि तुम मुझे अपना पति चुनोगी, तो तुम उन सभी दुखद यातनाओं से मुक्त हो जाओगी जो तुम्हारा इंतज़ार कर रही हैं, भले ही तुम देवताओं को बलदिान देने से इनकार कर दो। मैं तुम्हें ऐसा करने के लिए मजबूर नहीं करूँगा – बस मुझसे ववािह करने के लिए राज़ी हो जाओ।'

इस पर मसीह की वधू ने उत्तर दयिा:

'कोई शब्द, कोई यातना, यहाँ तक कि मृत्यु भी मुझे तब तक तुम्हारे साथ ववािह करने के लिए मजबूर नहीं कर सकती, जब तक तुम ईसाई नहीं बन जाते और पवत्रि बपतस्मिा ग्रहण नहीं कर लेते।'

'और मैं ऐसा ही करता, मेरी प्रयि,' एलीसयिस ने उत्तर दयिा, 'यदि मुझे राजा के क्रोध का भय न होता: क्योंकि जब राजा को यह पता चलेगा, तो वह न केवल मुझे इस उच्च पद से, बल्कि मेरे जीवन से भी वंचति कर देगा।'

संत ने कहा:

'यदि तुम अपने राजा से इतना डरते हो—एक नश्वर, अस्थायी शासक जसिके पास केवल शरीर पर ही शक्ति है, आत्मा पर नहीं—तो मैं उस अमर राजा से कैसे न डरूँ, जसिके पास सभी राजाओं पर शक्ति है और जो हर जीवति प्राणी और आत्मा पर शासन करता है, और मैं उसके शत्रु के साथ वैवाहकि बंधन में कैसे बँध सकती हूँ?! यदि आपके कसिी सेवक ने आपके शत्रु से मत्रिता कर ली, तो क्या आपको अच्छा लगेगा, या क्या आप अपने सेवक पर क्रोधति नहीं होंगे? अत; स्वयं को धोखा न दें, मुझे मनाने की आशा में व्यर्थ बातें न करें। यदि तुम चाहो, तो स्वयं मेरे ईश्वर की ओर मुड़ जाओ; यदि तुम ऐसा नहीं करते, तो मुझे मार डालो, मुझे आग में फेंक दो, मुझे घावों से ढक दो, मुझे जानवरों के आगे डाल दो और मुझे वह सब यातनाएँ दो जो तुम्हें पसंद हों, लेकनि मैं तुम्हारी आज्ञा नहीं मानूँगा, क्योंकि तुम मुझे घृणति हो; तुम्हारे साथ मलिन मेरे लिए राक्षसों के साथ मत्रिता के समान है, और तुमसे ववािह मेरी आँखों के सामने रखे गए एक बदबूदार ताबूत के समान है।

यह सुनकर, एलीसयिस क्रोध से भर गया और उसका चेहरा बदल गया, क्योंकि जब प्रेम का तरिस्कार और घृणा की जाती है तो वह अशुद्ध हो जाता है। उसने आदेश दयिा कि जुलयिाना को नग्न कर दयिा जाए और उसे क्रूस के आकार में फैला दयिा जाए, उसके हाथों और पैरों में रस्सयिों से बांध दयिा जाए, और फरि सूखे टेंडन और डंडों से क्रूरतापूर्वक पटिवाया जाए। और संत को छह सैनकिों ने लंबी अवधि तक कोड़ों से पीटा, जब तक कि यातना देने वाले स्वयं ही थक नहीं गए। वह, यद्यपि स्वभाव से एक नाजुक पात्र थी, ने साहस के साथ यातनाओं को सहन कयिा।

सैनकिों को कोड़ा मारना बंद करने का आदेश देने के बाद, एपार्क ने जुलयिाना से कहा:

'जुलीयाना, यह तो तुम्हारे कष्टों की केवल शुरुआत है; यदि तुम महान आर्टेमिस को बलिदान नहीं चढ़ाती हो तो तुम्हारे लिए इससे भी कहीं अधिक बड़े कष्ट प्रतीक्षा कर रहे हैं।'

लेकिन शहीद ने, एलीउसिस की बात सुनने के बजाय यातनाएँ सहने को तरजीह देते हुए, जिसने अभी भी उसे अपनी इच्छा के अनुसार करने के लिए मनाने की उम्मीद की थी, जवाब दिया:

'सचमुच, तुम पागल और लापरवाह हो! तुमने मुझे यातनाएँ देना अभी तक क्यों शुरू नहीं किया? किसका इंतज़ार कर रहे हो? मैं तुम्हारे मुझे यातना देने से कहीं ज़्यादा उसे सहने के लिए तैयार हूँ।'

तब संत को उसके बालों से लटका दिया गया और दिन के काफी हिस्से तक उसी तरह लटका रहने दिया गया, जिससे उसके सिर की त्वचा उसके शरीर से छिल गई, उसका चेहरा सूज गया, और उसकी भौहें ऊपर की ओर खिंच गईं। हालाँकि, एलीसिस, उसके प्रति अपने प्रेम के कारण, अभी भी कुछ उम्मीद पाले हुए, ने उसे नरमी से खुद को बचाने के लिए कहा। जब उनके कोमल शब्दों और विनतियों का कोई असर नहीं हुआ, तो वह और भी क्रोधित हो गया और आदेश दिया कि उसके बगल की ओर को लाल-गरम लोहे से झुलसा दिया जाए और उसके शरीर के अन्य हिस्सों में आग लगा दी जाए; फिर, उसके हाथ बांधकर और उसकी जांघ में एक तेज लोहा घुसाकर, वह उसे, मुश्किल से जीवित, एक कालकोठरी में फेंक दिया।

कारागार में, संत जुलियाना ज़मीन पर लोट-लोट कर रोती रहीं और ईश्वर से पुकार लगाई:

'हे प्रभु मेरे परमेश्वर, सर्वशक्तिमान, शक्ति में अजेय और कर्मों में महान! मुझसे ये दुख दूर करो और मुझे उन कष्टों से बचाओ जो मुझ पर आए हैं, जैसे आपने दानियेल को सिंहों से और थेक्ला को आग और जंगली जानवरों से बचाया था!' मेरे पिता और मेरी माता ने मुझे त्याग दिया है—लेकिन हे प्रभु, मुझसे मुख न मोड़ें; बल्कि, जैसे आपने एक बार इस्राएलियों को समुद्र पार करते समय सुरक्षित रखा और उनके शत्रुओं को डुबा दिया, वैसे ही अब मेरी रक्षा करें। और ओ अजेय राजा! एलीउसिस को कुचल डालो, जो मुझ पर उठ खड़ा हुआ है, और उसके साथ शैतान को भी, जो मेरे उद्धार में बाधा डालना चाहता है!

जब जुलियाना इस प्रकार ईश्वर से प्रार्थना कर रही थी, और प्रार्थना अभी भी उसके होंठों पर थी, अदृश्य शत्रु—शैतान—ने स्वयं को एक तेजस्वी देवदूत के रूप में बदल लिया, दृश्यमान रूप में उसके सामने प्रकट हुआ और कहा:

'देख, जुलियाना, तू भयंकर यातनाएँ सह रही है, फिर भी एलेउसियस ने तेरे लिए और भी अधिक भयंकर और वास्तव में असहनीय यातनाएँ तैयार की हैं। जब तुझे कालकोठरी से बाहर निकाला जाए, तो तुरंत देवताओं को बलिदान अर्पित कर, क्योंकि तब तू यातनाओं की तीव्रता को और सहन नहीं कर पाएगी।'

संत ने पूछा:

'तुम कौन हो?'

शैतान ने उत्तर दिया:

'मैं एक देवदूत हूँ, और चूँकि ईश्वर आपकी बहुत परवाह करते हैं, उन्होंने मुझे आपके पास भेजा है, क्योंकि वे चाहते थे कि आप राज्यपाल की आज्ञा मान लें ताकि आपका शरीर इतने सारे यातनाओं से नष्ट न हो जाए। प्रभु दयालु हैं और आपके पीड़ित शरीर की कमजोरी के कारण वे आपको यह माफ कर देंगे।'

यह सुनकर, शहीद चकित और भ्रमित हो गईं, क्योंकि उन्होंने देखा कि जो प्रकट हुआ था, वह रूप में एक देवदूत था, लेकिन अपने शब्दों में एक शत्रु था। इसलिए, अपने हृदय की गहराई से आह भरते हुए, आँखों में आँसू लिए, उन्होंने कहा:

'हे मेरे प्रभु, हे ब्रह्मांड के स्रष्टा, जिसकी स्वर्गदूतों का समूह स्तुति करता है और जिसके सामने राक्षसों की भीड़ कांपती है! मुझे तुच्छ न समझो, जो तेरे ही खातिर दुख सह रही हूँ, कहीं ऐसा न हो कि मेरा शत्रु मिठास को कड़वाहट में मिलाकर मुझे दे। बताओ, वह कौन है जिसने मुझसे ऐसे शब्द कहे? वह कौन है जो स्वयं को तेरा दास कहता है?

इस प्रकार संत ने पुकारा, और तुरंत ही उनकी सुन ली गई, क्योंकि स्वर्ग से एक आवाज़ गूँजी:

'हौसला रखो, जुलियाना! मैं तुम्हारे साथ हूँ! जहाँ तक उस की बात है जो तुम्हारे पास आया है, उसके साथ जैसा चाहो वैसा करो: मैं तुम्हें उस पर अधिकार और शक्ति देता हूँ – और उससे खुद पता करो कि वह कौन है और वह तुम्हारे पास क्यों आया है।

इसके बाद, निम्नलिखित चमत्कार हुआ: तुरंत ही बेड़ियाँ ढीली हो गईं और लोहा उसकी जाँघों से गिर पड़ा, और फिर संत जमीन से उठ खड़ी हुईं, शरीर से स्वस्थ और मजबूत, जबकि शैतान, जो ईश्वर की शक्ति से मजबूती से पकड़ा

गया था, वहाँ अदृश्य बेड़ियों से बँधा हुआ, भागने में असमर्थ खड़ा रहा। पवित्र शहीद ने उसे ऐसे पकड़ लिया जैसे वह एक ऐसा कैदी हो जिसे रिहा नहीं किया जा सकता, और मानो अदालत में उससे पूछताछ कर रहे हों, यह पूछना शुरू कर दिया कि वह कौन था, कहाँ से आया था, और उसे किसने भेजा था। शैतान, झूठों से भरा होने के बावजूद, सृष्टिकर्ता की यातना देने वाली शक्ति से विवश हो गया और अपनी इच्छा के विरुद्ध, सच बोलने लगा।

उसने कहा, 'मैं शैतान हूँ, अँधेरे के प्रमुख राजकुमारों में से एक, जिसे मेरे पिता ने तुम्हें बहकाने और धोखा देने के लिए भेजा है; क्योंकि हम तुम्हारी प्रार्थनाओं, तुम्हारी कुँवारी पवित्रता और तुम्हारे साहसी धैर्य से बहुत कष्ट झेल चुके हैं।' मैं ही वह हूँ जिसने एक बार स्वर्ग में हव्वा को ईश्वर की आज्ञा का उल्लंघन करने की सलाह दी थी, जिससे उसका पतन हुआ। मैंने काइन को अपने भाई एबेल को मारने के लिए उकसाया। मैंने नबूकदनेसर को दुरा के मैदान में एक सुनहरी मूर्ति खड़ी करने की शिक्षा दी। मैंने यहूदियों को मूर्तियाँ पूजने के लिए बहकाया। मैंने बुद्धिमान सुलैमान को महिलाओं के प्रति जुनून जगाकर पागल कर दिया। मैंने हेरोद को शिशुओं का कत्लेआम करने के लिए उकसाया, और यहूदा को गुरु का विश्वासघात करने और खुद को फांसी देने के लिए। मैंने यहूदियों को स्तेफन पर पत्थर फेंककर उसकी हत्या करने के लिए उकसाया; मैंने नीरो को पतरस को उल्टा सूली पर चढ़ाने और तलवार से पौलुस का सिर कलम करने के लिए उकसाया।

यह सुनकर, संत जुलियाना ने एक नया चमत्कार किया, क्योंकि उन्होंने उसे अन्य रस्सियों से बाँध दिया और उस पर घाव किए (उन अदृश्य घावों के अलावा जिनसे शैतान को परमेश्वर ने बाँधा था), और उसे बाँधने के बाद, उन्होंने उसे पीटना शुरू कर दिया। और आश्चर्य की बात यह है कि संत एक अदेह और अमूर्त आत्मा को भौतिक रस्सियों से बाँधने और उसे पीटने में सक्षम थीं! क्योंकि ईश्वर की शक्ति, जिसने उसे ऐसे बंधनों में जकड़ रखा था जिनसे उसके पास भागने का कोई साधन नहीं था और जिसने उसे दंडित किया—यद्यपि अदृश्य रूप से, फिर भी वास्तविक पीड़ा के साथ—ने उसे अपनी प्रिय वधू की शक्ति में सौंप दिया। और राक्षस ने उस कन्या के हाथों पीड़ा को ऐसे सहा मानो वह स्वयं ईश्वर के हाथों से हो, क्योंकि शारीरिक पिटाई के साथ-साथ, राक्षस को एक अदृश्य घाव भी मिला—वही घाव जिससे शैतान का एक सेवक वास्तव में पीड़ित होता है।

'हाय मेरे लिए,' वह चिल्लाया, 'अब मैं क्या करूँ, और मैं कैसे बचूँगा?! मैंने कई लोगों को धोखा दिया है और उन पर विपत्ति लाई है, फिर भी अब मैं खुद धोखा खा गया हूँ और विपत्ति में पड़ गया हूँ। मैंने कई लोगों पर घाव किए हैं, फिर भी अब मैं खुद उस कन्या के हाथों से बँधा हूँ और उन्हीं से घायल हूँ। मैंने कई लोगों को अपना दास बनाया है, पर अब मैं स्वयं कैद और दास बना हुआ हूँ। हे मेरे पिता—शैतान! तुमने मुझे यहाँ क्यों भेजा? क्या तुम्हें यह नहीं पता था कि कुँवारीपन से मज़बूत कुछ भी नहीं और शहीदों की प्रार्थनाओं से अधिक शक्तिशाली कुछ भी नहीं है?

इस प्रकार संत जुलियाना ने राक्षस को सारी रात तकड़ोली, और सुबह गवर्नर ने आदेश दिया कि यदि वह अभी भी जीवित है, तो उसे कालकोठरी से बाहर लाया जाए। जैसे ही वह चली, संत ने राक्षस को अपने पीछे-पीछे घसीटा और उसे सड़क पर पड़े कीचड़ के एक ढेर में फेंक दिया। फिर वह एलीसियस के सामने प्रकट हुई, अपनी पूर्व सुंदरता और मुखमंडल की शोभा से दमकती हुई, और शरीर से स्वस्थ, मानो उसने कभी कोई यातना सहन ही न की हो। हैरान होकर, यातना देने वाले ने उससे कहा:

'मुझसे बताओ, जुलियाना, तुम्हें ऐसी जादू-टोना कब और कैसे सिखाया गया? और किस कला से तुम अपने घावों से इतनी जल्दी ठीक हो गईं, कि उनमें से एक निशान भी तुम पर नहीं बचा?'

संत ने उत्तर दिया:

मैं जादू-टोने की कला के बारे में कुछ नहीं जानता, लेकिन मुझे ईश्वर की अकथनीय और सर्वशक्तिमान शक्ति द्वारा चंगा किया गया है, जिसने न केवल तुम्हें, बल्कि तुम्हारे पिता—शैतान—को भी शर्मिंदा किया है और मुझे तुम दोनों से कहीं अधिक शक्तिशाली बना दिया है। तुम और तुम्हारा स्वामी—शैतान—मेरे चरणों में पड़े हो, क्योंकि मैंने तुम्हारे प्रभु, जिसकी तुम सेवा करते हो, को बाँध दिया है और तुम्हारे यातनाओं को ऐसे मिटा दिया है मानो वे कभी थीं ही नहीं। इस प्रकार मेरे मसीह ने यहाँ आपकी शक्ति को नष्ट कर दिया है, जबकि वहाँ उन्होंने आपके, आपके पिता और आपके सेवकों के लिए शाश्वत अग्नि और भयानक तारतारस, घोर अंधकार और अनंत कीड़ों से भरी एक जगह तैयार की है, जिसे आप जल्द ही प्राप्त करेंगे।

तब यातना देने वाले ने, संत के मुख से शाश्वत अग्नि के बारे में सुनकर, तुरंत एक बड़ी अस्थायी आग तैयार करने का आदेश दिया; और भट्टी को प्रचंड आग से भड़काया गया, और संत को उसमें फेंक दिया गया। वह, तथापि, आग की

लपटों के बीच अक्षुण्ण खड़ी होकर, वहाँ प्रभु से प्रार्थना करने लगी और उसकी आँखों से आँसू बहने लगे – और अचानक ये छोटे-छोटे आँसू, मानो, दो बड़े झरने बन गए और सारी आग को बुझा दिया।

निकोमेडिया के सभी लोग इस चमत्कार से बहुत चकित हुए, और लगभग पाँच सौ पुरुष और एक सौ तीस महिलाएँ मसीह पर विश्वास करने लगीं। उन सभी ने, मानो एक ही स्वर में, पुकारा:

'केवल एक ही ईश्वर है, उसी की शहीद जुलियाना महिमा करती है, और हम उसी में विश्वास करते हैं, तथा मूर्तिपूजा का परित्याग करते हैं। 'हम ईसाई हैं! तलवार हम पर टूट पड़े, आग हम पर बरसे, सबसे भयानक मृत्यु हम पर आ पड़े—हम एक सच्चे ईश्वर के लिए जुलियाना के साथ मरने को तैयार हैं!'

जब उन्होंने यह सबके सुनने के लिए पुकारा, तो राज्यपाल ने तुरंत सशस्त्र सैनिकों को लाने का आदेश दिया और तमाशा देखने के लिए इकट्ठा हुई भीड़ से सभी विश्वासियों को अलग करने के बाद, आदेश दिया कि उन्हें तलवार से सिर कलम कर दिया जाए, जो कि पूरा किया गया। और वे सभी खुशी-खुशी तलवार के नीचे अपना सिर झुका लिया और मसीह के लिए मर गए, और अपने ही खून में बपतिस्मा प्राप्त किया। इसके बाद, यातना देने वाले ने, बेहिसाब क्रोध से उबलते हुए, आदेश दिया कि संत के कपड़े उतारकर उसे एक उबलते हुए बर्तन में फेंक दिया जाए और उसे लंबे समय तक उबाला जाए, मानो वह कोई भोजन हो। लेकिन यह कड़ाही, मानो संत के लिए उसकी कठिनाइयों के बाद एक गर्म स्नान थी, क्योंकि इसने उसके शरीर को बिल्कुल भी नुकसान नहीं पहुँचाया, बल्कि उसे इस तरह धोया, जैसे बपतिस्मा के कुंड में, क्योंकि प्रभु का स्वर्गदूत उसके पास उतरा और उसे सुरक्षित रखा। हालाँकि, भट्टी की आग पास खड़े लोगों की ओर बढ़ी और वही किया जो एक बार बेबीलोन की भट्टी के साथ हुआ था - यह उन सभी को जला गई जहाँ तक यह पहुँची। इसके बाद, कड़ाही फट गई, और शहीद उसमें से बिना किसी चोट के बाहर निकलीं। लोग आश्चर्य से उनके चारों ओर इकट्ठा हो गए, मानो वह एक ऊँची मीनार हों, क्योंकि वास्तव में संत सभी से ऊँची हो गई थीं।

यह सब देखकर, यातना देने वाला यह सोचकर हक्का-बक्का रह गया कि अब और क्या करे, क्योंकि उसकी सभी यातनाएँ अपना उद्देश्य पूरा करने में विफल रही थीं। यह महसूस करते हुए कि उस युवती ने उसका मज़ाक उड़ाया और उसे शर्मिंदा किया है, वह अपने बाल नोचने, अपना चेहरा खरोंचने, अपने कपड़े फाड़ने लगा और, अपने प्रचंड क्रोध में, अपने देवताओं के खिलाफ कई अपमानजनक और अभद्र शब्द बोले - कि, उनकी सेवा करते हुए, वह एक भी युवती को हरा नहीं सका था। फिर उसने पवित्र शहीद जुलियाना को तलवार से सिर कलम करने की सज़ा सुनाई।

जहाँ तक उस शैतान का सवाल है, जिसे संत ने कालकोठरी में बाँध रखा था, वह एक बार फिर प्रकट हुआ और, थोड़ी दूरी पर खड़ा होकर (क्योंकि वह अभी भी पवित्र शहीद से डरता था और उसे उसके दिए गए प्रहार याद थे), एक मनुष्य के रूप में—साक्षात—उसकी मृत्यु की सज़ा पर प्रसन्न हुआ और सैनिकों को उसे जल्दी से पकड़कर मौत की सज़ा देने के लिए उकसाया। जब पवित्र कन्या ने उस पर एक तीखी नज़र डाली, तो वह तुरंत काँप उठा और चिल्लाया:

'हाय, मेरी दुर्दशा! यह निर्दयी कन्या मुझे फिर से अपने हाथों से पकड़ना चाहती है!'

और, यह सबके सुनने के लिए ज़ोर से चिल्लाकर, शैतान गायब हो गया।

सैनिकों ने शहीद को पकड़कर उसे सिर कलम करने के स्थान पर ले गए, और संत आनंद और प्रसन्नता से, जैसे किसी विवाह में दुल्हन के कक्ष की ओर जाती हो, जल्दी-जल्दी चल पड़ी। एक प्रार्थना करने के बाद, उन्होंने अपनी पवित्र कलीस को तलवार के नीचे झुकाया और उनका सिर कलम कर दिया गया। इस प्रकार वह अपने प्रियतम वर - प्रभु मसीह के साथ एक हो गईं, जिनके लिए उन्होंने आनंदपूर्वक कष्ट सहे थे[120] ।

सोफिया नाम की एक रोमन महिला, जो उस समय अपने किसी निजी काम से निकोमेडिया में थी और रोम लौट रही थी, ने अपने साथ मसीह की शहीद जुलियाना का शरीर ले लिया। इसे अपने घर ले आने के बाद, उसने बाद में जुलियाना को समर्पित एक भव्य चर्च का निर्माण किया, जो ऐसी शहीद के योग्य था, और उसमें उसके पवित्र अवशेषों को सम्मानपूर्वक स्थापित किया।

जहाँ तक एलीउसिस का सवाल है, उसे जल्द ही ईश्वर का दंड मिला: जब वह समुद्र पार कर रहा था, तो एक तूफान आया, जिसने जहाज को तोड़ दिया, और उसमें सवार सभी लोग डूब गए। हालाँकि, एलेउसिस स्वयं - अपनी बड़ी दुर्भाग्य और यातना में - डूबने से बच गया और एक द्वीप पर आकर किनारे पर आ गया, जहाँ कुत्तों ने उसे टुकड़ों में फाड़ डाला।

---

[120] संत जुलियाना, एक कुंवारी, ने 500 पुरुषों और 130 अन्य लोगों के साथ मिलकर 304 ईस्वी में शहादत प्राप्त की।

इस प्रकार वह दुष्ट व्यक्ति अपमान में ही नष्ट हो गया, और उसे अपने कर्मों का उचित प्रतिफल मिला – निर्दोष और पवित्र कन्या जुलियाना की हत्या का।

यही थी मसीह की वधू, जुलियाना की शहादत और उसकी पीड़ादायक मृत्यु।

उनकी सगाई अपने जीवन के नौवें वर्ष में एलेयुसियस से हुई थी, और अपने अठारहवें वर्ष में वह अपने रक्त के द्वारा अमर वर के साथ एक हो गईं, क्योंकि उन्होंने उनके लिए अपनी आत्मा अर्पित कर दी थी; और अब वह प्रभु मसीह के साथ स्वर्गीय महल में आनंदित हैं, और प्रत्येक प्राणी द्वारा सदा-सदा के लिए महिमामंडित हैं। आमीन।

कॉन्टाकियन, स्वर 3:

हे कन्या, कुँवारीपन के गुणों से पवित्र और अब शहादत की मालाओं से सुशोभित, ज़रूरतमंदों और बीमारों को चंगा करो, और जो तुम्हारे अवशेषों के पास आते हैं उन्हें मोक्ष प्रदान करो: क्योंकि मसीह दिव्य अनुग्रह और अनंत जीवन प्रदान करते हैं।

कीव और सम्पूर्ण रूस के मेट्रोपॉलिटन संत पीटर का जीवन

स्मरणोत्सव 21 दिसंबर को

कीव और समस्त रूस के मेट्रोपॉलिटन संत पीटर का जन्म वोल्हिनिया की भूमि में[121] , धर्मपरायण ईसाई माता-पिता के घर हुआ था[122] । जब वह अपनी माँ के गर्भ में था, एक रविवार की सुबह उसकी माँ को एक दिव्य दर्शन हुआ: उन्हें ऐसा प्रतीत हुआ मानो वे अपनी बाहों में एक मेमने को पकड़े हुए हों, जिसके सींगों से एक घने पत्तों वाला पेड़ उग रहा था जिस पर बहुत सारे फल और फूल थे; उसकी शाखाओं के बीच कई मोमबत्तियाँ थीं - जो चमक रही थीं और एक मीठी सुगंध बिखेर रही थीं।

जागने पर, उनकी माँ इस अद्भुत दृष्टि से चकित थीं, लेकिन बाद में प्रभु ने अपने पुत्र को अपनी प्रतिभाओं से समृद्ध करके इस दृष्टि को साकार किया।

सात वर्ष की आयु में, संत पीटर को पवित्र शास्त्र पढ़ने के लिए भेजा गया, लेकिन शुरू में वह अच्छी तरह से नहीं सीख पाया, जिससे उसके माता-पिता को बहुत दुख हुआ। हालाँकि, ऐसा इसलिए था ताकि वह मनुष्यों से नहीं बल्कि ईश्वर से विद्वता प्राप्त कर सके। और वास्तव में, संत पीटर ने इस तरह ही विद्वता प्राप्त की।

एक दिन उन्होंने सपने में देखा कि एक पुरोहित के वस्त्रों में सजे एक व्यक्ति उनके पास आए और कहा:

'मेरे बच्चे, अपना मुँह खोलो!'

जब पीटर ने ऐसा किया, तो आगंतुक ने अपने दाहिने हाथ से उसकी जीभ को छुआ और, उसे आशीर्वाद देने के बाद, उसके गले को मिठास से भर दिया।

जागने पर, लड़के ने किसी को नहीं देखा, लेकिन उसने अपने दिल में एक तरह की मिठास और आनंद महसूस किया।

उस समय से, संत पतरस ने यह जल्दी से समझना शुरू कर दिया कि उनके गुरु उन्हें क्या सिखा रहे थे; जल्द ही, उन्होंने पूरे पवित्र शास्त्र का अध्ययन कर लिया और ज्ञान में अपने सभी साथियों से आगे निकल गए।

जब पतरस बारह वर्ष के हुए, तो वे अपने जन्मस्थान के पास एक मठ में चले गए और भाईचारे में स्वीकार कर लिए गए; वहाँ उन्होंने अपने मठ के कर्तव्यों का पालन किया, रसोई में पानी और लकड़ी लाना, भाइयों की खुरदरी चोगा धोना, और सर्दी या गर्मी में कभी भी अपने नियम से विचलित नहीं हुए। वे चर्च की प्रार्थना सभा में सबसे पहले पहुँचते और सबसे अंत में जाते थे; वे चर्च में श्रद्धापूर्वक खड़े रहते, पवित्र शास्त्रों को ध्यानपूर्वक सुनते, कभी दीवार से नहीं सटते – वे हमेशा अपने गुरु की आज्ञा का पालन करते और विनम्रता तथा मौन से भाइयों की सेवा करते थे। मठाधीश के

[121] वोल्हिनिया – रूस का दक्षिण-पश्चिमी भाग।

[122] संत पीटर के माता-पिता संपन्न थे और बोयार या व्यापारी वर्ग से थे, यही कारण है कि संत पीटर बाद में अपने खर्च पर एक मठ बना सके।

आदेश से, उन्हें डीकन के रूप में अभषिक्ति कयि गया, आ र बाद में प्रेस्बटिर बनाया गया। उन्होंने पवत्रि प्रतमिाएँ[123] बनाना सीखा और, चत्रि बनाते समय, वे अपने पूरे मन और वचिारों से सांसारकि मामलों से खुद को अलग कर लेते थे; ईश्वर के चतिन से भरकर, उन्होंने एक सदाचारी जीवन के लिए लगन से प्रयास कयि।

उस मठ में काफी लंबे समय तक रहने के बाद, मठाधीश की आज्ञा से, संत पीटर एक सुनसान स्थान पर चले गए और रेट नदी के कनिारे[124] के लिए एक तपोवन स्थापति कयि। वहाँ उन्होंने हमारे उद्धारकर्ता यीशु मसीह को समर्पति एक चर्च का नरि्माण कयि, और थोड़े ही समय में बड़ी संख्या में भाई उनके साथ जुड़ने के लिए वहाँ इकट्ठा हो गए।

संत दयालु और वनिम्र थे, और खुद को सभी से छोटा मानते थे; उन्होंने सभी को नम्रता से सखिाया और नयिमति रूप से दान दयि, कभी भी कसिी भखिारी या यात्री को मदद दिए बनि वापस नहीं कयि, जसिसे उनके सदाचारी जीवन की खबर राजकुमार तक पहुँच गई। इस कारण से, सभी उनका सम्मान करते थे, और हर कोई उनके उपदेशों पर ध्यान देता था।

उस समय, मेट्रोपॉलटिन मैक्समिस[125] कॉन्स्टेंटनिोपल से रस में आए और लोगों को दव्यि शक्षिाओं में शक्षिति कयि। अपने भाइयों के साथ आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए उनके पास जाने पर, संत पीटर ने उन्हें परम पवत्रि ईश्वर की माता का एक चत्रि भेंट कयि, जसिे उन्होंने स्वयं बनाया था। परमधर्मपति ने उन्हें और उनके भाइयों को आशीर्वाद दयि और पवत्रि प्रतमिा को स्वीकार कर उसे बड़े सम्मान के साथ अपने पास रख लयि।

कुछ ही समय बाद - जब संत मैक्समिस का नधिन हो गया - एक गेरोंटयिस[126] ने बशिप का पद हड़पने की हम्मित की, उसने बशिप के वस्त्र, पवत्रि भंडार और चरवाहक का डंडा, साथ ही वह प्रतमिा भी ले ली जसिे पीटर ने पेंट कयि था और संत मैक्समिस को भेंट की थी, और रूस का मेट्रोपॉलटिन बनने की इच्छा से कॉन्स्टेंटनिोपल के लिए रवाना हो गया।

तब वोल्हनियि क्षेत्र के राजकुमार[127] ने धन्य पीटर को कोंस्टेंटनिोपल जाकर कीव के मेट्रोपोलसि के सहिासन के लिए अभषिक्ति होने के लिए मनाना शुरू कर दयि – कभी सीधे उनसे वनिती करके, तो कभी बोयारों के माध्यम से उन्हें मनाकर – क्योंकि कोई भी जेरोंटयिस की इस दुस्साहस के प्रति सहानुभूति नहीं रखता था, जसि पर उसने बनि परामर्श या चुनाव के पवत्रि पद पर जबरदस्ती कब्जा कर लयि था: *'वह द्वार से नहीं आया, बल्कि किसी और मार्ग से चढ़कर भीतर आ गया'* (यूहन्ना 10:1)।

हालाँकि धन्य पीटर लंबे समय तक अनचि्छुक रहे और उन्होंने मना कर दयि, लेकनि अंतत; राजकुमार, बोयारों और बशिपों की परषिद द्वारा वनिती कएि जाने पर, वे रवाना हो गए; और राजकुमार ने उनके बारे में परम पावन पैट्रआर्क और उनकी पूरी परषिद को एक संदेश भेजा, जसिमें उन्होंने पीटर को बशिप के सहिासन पर देखने की अपनी इच्छा व्यक्त की।

जब जेरोंटयिस कॉन्स्टेंटनिोपल के लिए समुद्रयात्रा पर नकिला, तो यह यात्रा उसके लिए प्रतकिूल साबति हुई: एक भयंकर तूफ़ान उठा, जसिमें वपिरीत हवाएँ और लहरें थीं, जसिसे उसने यात्रा में बहुत समय खो दयि। हालाँकि, धन्य पीटर के लिए उसी समुद्र में शांत और अनुकूल हवा थी, और वह जैसे सपने में समुद्र पार कर गया।

उसी समय, जेरोंटयिस को परमेश्वर की अति पवत्रि माता की उपर्युक्त प्रतमिा का दर्शन हुआ, जसिने उससे कहा:

---

[123] एक प्राचीन संतों के जीवन-चरति के अनुसार, सेंट पीटर ने प्रतमिा चत्रिकला की कला में इतनी महारत हासलि कर ली कि वह एक 'अद्भुत प्रतमिा-चत्रिकार' बन गए। उनके द्वारा बनाई गई ईश्वर की माता की दो प्रतमिाएँ, जो मास्को में डॉर्मशिन के ग्रेट कैथेड्रल में आज भी संरक्षति हैं, इस बात की गवाही देती हैं: ईश्वर की माता का नधिन और दूसरी, उनके नाम पर, जसिे आमतौर पर पेट्रोव्स्काया प्रतमिा के नाम से जाना जाता है।

[124] यह स्थल हालचि-वोल्हनियि के सामंतशाही की राजधानी ल्ववि के उत्तर में स्थति था; राता नदी आज के ऑस्ट्रयिाई पूर्वी गैलसियि से होकर बहती है और अपर वेस्टर्न बग में इसकी बाईं तट पर मलिती है। – संत पीटर का मठ, जो उद्धारकर्ता (रूपान्तरण) के सम्मान में बनाया गया था, अब मौजूद नहीं है; उसकी जगह एक गाँव है, जसिमें उद्धारकर्ता को समर्पति एक पैरशि चर्च भी है।

[125] ग्रीक मूल के संत मैक्समिस ने 1283 से 1304 तक रूसी चर्च का नेतृत्व कयि।

[126] व्लादमिीर के मठाधीशों में से एक।

[127] यह, बेशक, गैलीसयिा-वोल्हनियि के राजकुमार यूरी ल्वोवचि की ओर इशारा करता है, जो जेरोंटयिस के दमनकारी रवैये से और भी अधकि नाराज़ थे क्योंकि वोल्हनियि में कीव से दूर स्थति व्लादमिीर तक धर्मपीठ के स्थानांतरण से असंतुष्ट लोग मेट्रोपॉलटिन का मुख्यालय दक्षणि में कहीं स्थापति करना चाहते थे; वशिेष रूप से राजकुमार यूरी चाहते थे कि मेट्रोपॉलटिन का मुख्यालय हालचि में हो। राजकुमार यूरी एक शक्तशिाली व्यक्ति थे, जो पूरे गैलीसयिा पर शासन करते थे; उन्हें 'रूस के ज़ार' की उपाधि भी दी गई थी।

'हे वरषि्ठ, व्यर्थ में परशि्रम करते हो, क्योंकि तुम उस बशिप के पद को प्राप्त नहीं करोगे जसिकी तुम खोज कर रहे हो। लेकनि जसिने मुझे चत्रिति कयिा – रट्स के मठाधीश पीटर – जो मेरे पुत्र और ईश्वर, और मेरे, एक सेवक है, उसे बशिप के सहिासन पर स्थापति कयिा जाएगा और वह उनके लोगों का सही तरीके से चरवाहा होगा, जनिके लिए मेरे पुत्र – प्रभु मसीह – ने अपना रक्त बहाया, जो मैंने स्वयं उन्हें दयिा था, और ईश्वर को प्रयि लगने वाला जीवन जीने के बाद, अपने वृद्धावस्था में वह आनंदपूर्वक सर्व के प्रभु के पास प्रस्थान करेगा।

जेरोन्टयिस भयभीत होकर जाग उठा और उसने सभी को उस दर्शन के बारे में बताया।

अंतत; संत पीटर कॉन्स्टेंटनिोपल पहुँचे; उस समय, अथेनासयिस कॉन्स्टेंटनिोपल के पैट्रआिर्क थे – एक अद्भुत व्यक्ति जिन्होंने अपने सद्गुणों से सार्वभौमकि धर्मपीठ को सुशोभति कयिा[128] । जब पतरस महाधर्माध्यक्ष के सामने आए, तो चर्च सुगंधति खुशबू से भर गया; ऊपर से प्रकाशति होकर, महाधर्माध्यक्ष ने महसूस कयिा कि यह सुगंध पतरस के आगमन के कारण थी, और उन्होंने उन्हें आनंदपूर्वक आशीर्वाद दयिा। फरि, उनके आगमन का कारण जानने के बाद, महाधर्माध्यक्ष ने पवत्रि बशिपों की एक परषिद बुलाई, और उन्होंने इस मामले की प्रथागत जांच की। पतरस को बशिप के पद के लिए योग्य माना गया, क्योंकि उन्हें जन्म से पहले ही इसके लिए पूर्वनरि्धारति कयिा गया था।

इस प्रकार, दैवीय अनुष्ठान का अनुष्ठान करते हुए, पैट्रआिर्क ने इस अद्भुत पीटर को बशिप की सेवा के लिए अभषिकि्त कयिा[129] ; उस क्षण, अभषिेक के दौरान इस ईश्वर-पुरुष का मुख इतना तेजस्वी हो गया कि सभी चकति रह गए और कहने लगे:

'नशि्चय ही, यह पुरुष ईश्वर की आज्ञा से हमारे पास आया है,' और सभी आध्यात्मकि आनंद से भर गए।

कुछ दनिों बाद, जेरोंटयिस कॉन्स्टेंटनिोपल पहुँचा और (अपनी इच्छा के वरिुद्ध) उसने अपने साथ घटी हर बात का वर्णन कयिा। पैट्रआिर्क ने उससे बशिप के परधिान, पूजनीय प्रतमिा, चरवाहे का दंड और चर्च के बर्तन लेकर, वे सभी सच्चे चरवाहे - पतरस को सौंप दिए।

इसके बाद, परम पावन पैट्रआिर्क ने कई दनिों तक पवत्रि और धन्य पेत्रुस को वसि्तार से उपदेश देकर और उन्हें आशीर्वाद देकर, उन्हें सम्मान के साथ कॉन्स्टेंटनिोपल से वदिा कयिा।

संत पतरस, अपने मेट्रोपॉलटिन क्षेत्र में पहुँचने पर, सभी को शांति और आशीर्वाद देने लगे और ईश्वर द्वारा उन्हें सौंपी गई भेड़ों के झुंड को लगन से सखिाते हुए एक स्थान से दूसरे स्थान की यात्रा करते रहे[130] ।

लेकनि धूर्त शत्रु यह सहन नहीं कर सका और उसने संत पतरस के खलिाफ एक साजशि रची, कुछ लोगों में यह वचिार डाल दयिा कि उन्हें उन्हें संत के रूप में स्वीकार नहीं करना चाहिए। हालाँकि, उनमें से कई ने बाद में पश्चाताप कयिा, संत को स्वीकार कयिा और, उनके प्रति समर्पण करके, उनसे क्षमा प्राप्त की।

कुछ समय बाद, धूर्त शत्रु ने ट्वेर के बशिप एंड्रयू[131] के मन में संत पीटर के प्रति ईर्ष्या जगाई, जो अपनी जीभ पर काबू नहीं रख सके और उस धर्मी पुरुष के बारे में झूठी अफवाहें फैलाने लगे और कई झूठे और अपमानजनक शब्द लखिकर उन्हें परम पावन पैट्रआिर्क अथानासयिस को भेज दयिा। पैट्रआिर्क चकति रह गए और उन्हें इस पर वशि्वास करना कठनि लगा; फरि भी, उन्होंने चर्च के एक पुरोहति को रूसी भूमि पर भेजा, और फरि पेरयिास्लाव शहर में एक परषिद बुलाई गई[132] । उस परषिद में रोस्तोव के बशिप समियिन, आदरणीय प्रोखोरस, कीव गुफाओं के मठाधीश, राजकुमार, बोयार, पुरोहति, भकि्षु और अन्य बहुत से लोग उपस्थति थे। जब ट्वेर के बशिप एंड्रयू को परषिद में बुलाया गया, तो मामले की जांच शुरू हुई, और जब झूठे गवाहों ने पीटर के खलिाफ गवाही दी, तो बड़ी गड़बड़ी मच गई। बुराई के उत्प्रेरक की पहचान सबके सामने आ गई। एंड्रयू की दुर्भावना और बदनामी उजागर हो गई, और उस कपटी बदनामी करने वाले

---

[128] अथानासयिस द्वतिीय – 1303 से 1311 तक कॉन्स्टेंटनिोपल के पैट्रआिर्क।

[129] मेट्रोपॉलटिन मैक्समिस की मृत्यु के तीन साल बाद, सन् 1308 में सेंट पीटर को 'ऑल रस' का मेट्रोपॉलटिन नयिुक्त कयिा गया।

[130] उनके अभषिेक के अगले वर्ष, मेट्रोपॉलटिन सेंट पीटर व्लादमिीर चले गए, जहाँ पहले ही सभी रूस के मेट्रोपॉलटिन का पद स्थापति कयिा जा चुका था। फरि उन्होंने धर्मप्रांतों का नरीक्षण करना शुरू कयिा: इस प्रकार उन्होंने नोवगोरोड, ब्रायansk और अन्य शहरों तथा क्षेत्रों का दौरा कयिा।

[131] ट्वेर के बशिप एंड्रयू लथिुआनयिा के ग्रैंड ड्यूक के वंश से थे। उनके मन में मेट्रोपॉलटिन का पद हासलि करने की महत्वाकांक्षा थी। उनके वंश की कुलीनता और दक्षणि द्वारा चुने गए मेट्रोपॉलटिन को लेकर कुछ लोगों की असंतोष ने उनके सर्वोच्च पद प्राप्त करने के सपने को हवा दी। बाद में, अपने पद से हटाए जाने के बाद, उनकी मृत्यु 1323 में शोषा नदी (वोल्गा की एक दाहनिी सहायक नदी) पर स्थति मदर ऑफ गॉड के मठ में हुई, जसिकी स्थापना उन्होंने पहले की थी।

[132] परषिद् 1310 या 1311 की शुरुआत में पेरयिास्लाव-ज़ालेस्की में बुलाई गई थी - जो अब व्लादमिीर गवर्नोरेट में एक जलिा शहर है।

को सभी के सामने शर्मदिगी और अपमान झेलना पड़ा। हालाँकि, संत पीटर ने उसे कोई नुकसान नहीं पहुँचाया, बल्कि उसे क्षमा कर दिया और सभी को पर्याप्त रूप से समझा-बुझाकर परिषद को शांतिपूर्वक समाप्त कर दिया। उन्होंने स्वयं अपने कार्यों में लग गए, उन्हें दिए गए प्रतिभा को सौ गुना बढ़ा दिया और अनाथों के लिए एक पिता का काम किया।

उस समय, सेयत नाम का एक विधर्मी[133] प्रकट हुआ, जो मसीह की कलीसिया और ऑर्थोडॉक्स धर्म के विपरीत सिद्धांतों का प्रचार करता था; परमेश्वर के पवित्र ने उसे चर्च से बहिष्कृत कर दिया, और उस दुष्ट विधर्मी का शीघ्र ही एक हिंसक अंत हो गया।

इसके बाद, ईश्वर के सेवक पीटर मास्को के गौरवशाली शहर में पहुँचे, जो उस समय धर्मपरायण महा राजकुमार जॉन दानिलोविच[134] के शासन में था, जो हर सद्गुण से सुशोभित, गरीबों और पुरोहितों के प्रति दयालु, चर्चों से प्रेम करने वाले और पवित्र पुस्तकों के प्रति समर्पित व्यक्ति थे। संत को वह बहुत भाया और उन्होंने अन्य स्थानों की तुलना में उस शहर में अधिक समय बिताना शुरू कर दिया[135] । उन्होंने धर्मनिष्ठ राजकुमार को मॉस्को में हमारे परम पवित्र प्रभु की माता, सदा कुंवारी मरियम के सुप्त होने को समर्पित एक पत्थर का चर्च बनाने की सलाह दी, इस प्रकार उन्हें मनाते हुए:

'यदि तुम मेरी बात मानो, मेरे पुत्र, और परमेश्वर की परम पवित्र माता के लिए एक चर्च बनाओ, तो तुम स्वयं सभी अन्य राजकुमारों से ऊपर महिमामय हो जाओगे, और तुम्हारा शहर महिमामय होगा: पवित्र पुरुष उसमें निवास करेंगे, इसके हाथ अपने शत्रुओं के विरुद्ध उठेंगे, परमेश्वर इसमें महिमामय होगा, और मेरी अस्थियाँ यहाँ विश्राम करेंगी।'

संत की सलाह मानकर, राजकुमार ने चर्च के निर्माण की देखरेख शुरू कर दी[136] । एक बार चर्च की नींव रख दी जाने के बाद, इसके निर्माण का काम प्रतिदिन चलता रहा, और संत स्वयं यह सुनिश्चित करते थे कि यह परियोजना बिना किसी रुकावट के आगे बढ़े।

संत पीटर के धन्य निधन से ठीक पहले, राजकुमार इओआन दानिलोविच ने निम्नलिखित सपना देखा। उन्होंने एक ऊँचा पहाड़ देखा, जिसकी चोटी बर्फ से ढकी हुई थी, और अचानक बर्फ पिघलकर गायब हो गई। जब राजकुमार ने यह प्रभावशाली सपना संत को सुनाया, तो संत ने कहा:

'ओ राजकुमार, वह ऊँचा पहाड़ आप हैं, और बर्फ मैं हूँ, यह दीन व्यक्ति, जिसे जल्द ही इस जीवन से अनंत जीवन में प्रस्थान करना है।'

दिव्य प्रकटदेश द्वारा अपने निकटवर्ती निधन का पूर्वाभास पाकर, ईश्वर के उस पवित्र पुरुष ने अपनी समाधि स्वयं अपने हाथों से, उस समय निर्माणाधीन 'परम पवित्र ईश्वर माता' के चर्च में वेदी के पास बनाई। और जब समाधि तैयार हो गई, तो उन्हें अपने निधन के संबंध में ईश्वर से फिर एक प्रकटदेश प्राप्त हुआ। आनंद से भरकर, संत चर्च गए और दिव्य लिटिर्जी का अनुष्ठान किया, सभी ऑर्थोडॉक्स सम्राटों और राजकुमारों, अपने आध्यात्मिक पुत्र - धार्मिक राजकुमार जॉन - और रूसी भूमि के सभी धर्मनिष्ठ ईसाइयों के लिए प्रार्थना की; फिर उन्होंने दिवंगतों के लिए स्मरणोत्सव अर्पित किया और पवित्र कम्युनियन ग्रहण किया। चर्च से लौटने पर, उन्होंने सभी पुरोहितों को बुलाया

---

[133] वृत्तांतों के अनुसार, 'सेइता' शब्द का उपयोग लगातार इस्लाम के शिक्षकों को संदर्भित करने के लिए किया जाता है, जिसे उस समय खान उज़्बेक टटारों के बीच इतनी लगन से फैला रहा था; हालाँकि, उपरोक्त सेइता पर सेंट पीटर द्वारा लगाए गए विधर्मी का दर्जा और चर्च से बहिष्कार यह दर्शाता है कि वह एक ईसाई था जिन्होंने ईसाई सिद्धांत को बुरी तरह विकृत कर दिया था; तथापि, 'सेइता' नाम उन्हें इस्लाम के कुछ सिद्धांतों के प्रति उनके आकर्षण के कारण दिया गया था। कुछ विवरणों के अनुसार, सेयत नोवगोरोड का एक प्रोटोप्रेज़बिटिर था जो मुसलमानों के कामुक जीवन के जुनून से मोहित हो गया था और उसने संन्यासी ब्रह्मचर्य के विरुद्ध इतनी ज़ोरदार तरीके से उपदेश दिया कि कई संन्यासियों ने संन्यासी जीवन त्याग दिया और विवाह कर लिया। संत द्वारा धर्मप्रांतों का निरीक्षण करने के दौरान सेयत का भंडाफोड़ हुआ।

[134] यह, बेशक, मॉस्को के ग्रैंड प्रिंस जॉन प्रथम दानिलोविच कालिता को संदर्भित करता है, जो सेंट अलेक्ज़ेंडर नेवस्की और मॉस्को के प्रिंसिपिल्टी के संस्थापक सेंट डैनियल के पोते थे; उन्होंने 1328 से 1340 तक शासन किया; उन्हें कालीता कहा जाता था क्योंकि, गरीबों के प्रति अपने प्रेम के कारण, वह हमेशा उनके बीच बांटने के लिए अपने साथ एक कालीता (एक थैला) पैसे रखता था।

[135] पवित्र पतरस, अनुग्रह से प्रकाशित होकर, मास्को के महान भविष्य की भविष्यवाणी की; यद्यपि उस समय यह एक कम आबादी वाला शहर था, उन्होंने देखा कि मास्को रूस के खंडित और तबाह क्षेत्रों को अपनी छत्रछाया में ले लेगा, और उन्होंने व्लादिमीर में दफनाए जाने के बजाय, हमेशा के लिए मास्को में रहने और वहीं दफनाए जाने का संकल्प लिया। इस प्रकार, मेट्रोपॉलिटिन का पद व्लादिमीर से मॉस्को में स्थानांतरित कर दिया गया, जिससे मॉस्को का उत्थान हुआ और उस समय के अपनज राजकुमारों के आंतरिक संघर्ष के बीच शांति और रूस की महानता के लिए एक ठोस नींव रखी गई।

[136] अर्थात्, डोर्मिशन कैथेड्रल; बाद में, महान राजकुमार इवान तृतीय वासिलीविच के शासनकाल के दौरान, आज जो कैथेड्रल खड़ा है, वह मूल कैथेड्रल की जगह पर बनाया गया और 1470 में इसे समर्पित किया गया।

और अपनी प्रथागत शिक्षा देने के बाद, उन्हें विदा कर दिया। उस समय, उन्होंने गरीबों और ज़रूरतमंदों, चर्चों, मठों और पुरोहितों में बहुत दान दिया। इस बीच, उनका शरीर तेजी से कमजोर होता जा रहा था। जब उनके निधन का दिन आया, तो संत ने कप्तान वेल्यामिनोव को बुलाया, जो उस समय शहर का शासन कर रहे थे (क्योंकि राजकुमार स्वयं उस समय शहर में नहीं थे), और उनसे कहा:

'देखो, मेरे बच्चे, मैं इस जीवन से जा रहा हूँ; मेरे प्रिय पुत्र, राजकुमार जॉन, और उनकी संतानों को, मैं हमेशा के लिए दया, शांति और ईश्वर का आशीर्वाद विरासत में देता हूँ।'

तब, और इंतजाम करने के बाद, संत पीटर ने उन्हें चर्च का निर्माण पूरा करने के लिए पैसे का एक थैला दिया। सभी को विदा कहने के बाद, उन्होंने वेस्पर्स (सायं प्रार्थना) गाना शुरू किया, और जब प्रार्थना अभी भी उनके होठों पर थी और उन्होंने स्वयं अपने हाथ ईश्वर की ओर उठाए हुए थे, तो उनकी आत्मा प्रभु के पास चली गई[137] ।

संत के निधन की खबर सुनकर, राजकुमार सभी बोयारों के साथ शोक में शहर की ओर भागा; सभी लोग रोए और उनके निधन पर शोक मनाया। उनके पवित्र शरीर को एक ताबूत पर रखकर, उन्हें रीति के अनुसार चर्च ले जाया गया[138] ।

उस समय, अविश्वास से ग्रस्त एक व्यक्ति ऑर्थोडॉक्स भीड़ के बीच से संत के शव तक पहुँचा और मन ही मन उनका अपमान करने लगा, यह सोचते हुए:

'यह कौन सा मृतक है जिसे स्वयं राजकुमार और इतने सारे लोग विदा कर रहे हैं, और उसे इतना सम्मान क्यों दिया जा रहा है?'

जैसे ही उसने यह सोचा, उसने तुरंत संत को उनके ताबूत पर बैठे देखा, जो कब्र तक ले जाए जाने तक लगातार दोनों ओर के लोगों को आशीर्वाद दे रहे थे। तब वह आदमी ईश्वर के सेवक की पवित्रता में विश्वास करने लगा और लोगों को वह सब बताया जो उसने देखा था। पतरस के पवित्र अवशेषों को चर्च में लाने के बाद, उन्हें एक पत्थर की कब्र में रख दिया गया जिसे उन्होंने स्वयं तैयार किया था, जहाँ वे आज भी मौजूद हैं, और विश्वास के साथ आने वालों के लिए विभिन्न चमत्कार करते हैं। एक युवक का जन्म से ही हाथ सुस्त और पूरी तरह से अचल थे, इसलिए वह उन्हें अपने मुँह तक नहीं उठा सकता था। वह इस संत की कब्र पर आँसुओं के साथ प्रार्थना करने आया, और तुरंत उसके हाथ मजबूत हो गए और स्वस्थ हो गए। संत ने एक विकृत व्यक्ति को भी ठीक किया और एक बहरे व्यक्ति की सुनने की शक्ति वापस कर दी। और कई वर्षों से अंधा रहे एक व्यक्ति के लिए, जब वह आया और प्रार्थना की, तो उसकी आँखें अचानक खुल गईं। कई अन्य आशीर्वाद आज भी चमत्कारिक रूप से उन लोगों पर बरसते रहते हैं जो विश्वास के साथ संत पीटर की पवित्र कब्र पर आते हैं – यह सब परमेश्वर के सम्मान और महिमा के लिए है, जिसकी त्रिमूर्ति में अनंत काल तक महिमा होती है। आमीन।

---

[137] मेट्रोपॉलिटन सेंट पीटर का 21 दिसंबर 1326 को निधन हो गया।

[138] मेट्रोपॉलिटन पीटर के पवित्र अवशेषों को डोर्मिशन चर्च में दफनाया गया, जिसकी उन्होंने शुरुआत की थी लेकिन इसे पूरा नहीं किया था; चर्च को ठीक अगले वर्ष, 1327 में पूरा कर समर्पित कर दिया गया। तोखतामिश के आक्रमण के दौरान, तातारों ने खजाना खोजने की उम्मीद में संत मेट्रोपॉलिटन पीटर की कब्र को लूट लिया; उसी समय, डॉर्मिशन कैथेड्रल में एक विनाशकारी आग लग गई। 1471 में, जब डॉर्मिशन के पुराने कैथेड्रल को ध्वस्त कर दिया गया और एक नए का निर्माण शुरू हुआ, तो बुलाई गई पवित्र धर्मसभा ने संत के अवशेषों को हटाने का निर्णय लिया। उनकी कफ़न आग में नष्ट पाई गई, लेकिन इस संत, जो ईश्वर के पुरुष थे, के अवशेष पूरे और सुरक्षित रहे। उनके अवशेषों का स्थानांतरण किया गया, और इसकी स्मृति में 24 अगस्त को स्थानांतरण दिवस के रूप में एक पर्व दिवस स्थापित किया गया। मास्को के प्रथम पदानुक्रमक की अवशेष खुले में रखे गए थे, लेकिन पोलिश लोगों के आक्रमण के बाद, जिन्होंने कीमती चांदी का अवशेष पात्र चुरा लिया था, उन्हें एक गुप्त स्थान पर रख दिया गया और वे 1812 तक वहीं रहे। उस वर्ष, नेपोलियन ने संत की कब्र खोली, संभवतः टोकतामिश के ही इरादे से। मास्को से फ्रांसीसी वापसी के बाद, मास्को के आर्चबिशप अगस्टीन ने मेट्रोपॉलिटन पीटर के अक्षुण्ण अवशेषों का भव्य अनावरण किया; इन्हें 30 अगस्त 1813 को कैथेड्रल ऑफ द डॉर्मिशन के अभिषेक के दौरान जुलूस में ले जाया गया था। संत पीटर के दो प्रवचन, परिपत्र पत्रों के रूप में, संरक्षित हैं।

ट्रोपारयिन, स्वर 4:

हे भूमि जो कभी बाँझ थी, अब आनंदति हो: क्योंकि मसीह ने तेरे भीतर एक दीपक प्रकट कयिा है, जो संसार में चमकता है और हमारी दुर्बलताओं तथा बीमारयिों को चंगा करता है। उसी के लिए, नडिर होकर हर्षति और आनंदति हो: क्योंकि वही संत है जो परमप्रभु के इस प्रकाश का कार्य करता है।

एक और ट्रोपारयिन, स्वर 8:

हे मास्को के परम धन्य नगर, आनन्दति हो, क्योंकि तेरे भीतर सूर्य के प्रभात के समान बशिप पीटर हैं, जो अपने चमत्कारों से पूरे रूस को प्रकाशति करते हैं: क्योंकि वे उन लोगों से दुर्बलताओं को दूर करते हैं और रोगों को अंधकार की भाँति भगा देते हैं जो उन पर पुकारते हैं: हे परमेश्वर के परम श्रेष्ठ पुरोहति, आनन्दति हो, जो तेरे द्वारा तेरी भेड़-बकरयिों के लिए यह प्रकाश कार्य करते हैं।

कॉन्टाकयिन, स्वर 8:

हम आज अपने देश के चुने हुए और अद्भुत चमत्कार करने वाले के पास प्रेम से दौड़ते हैं, और ईश्वर-वाहक के लिए एक स्तुति-गीत रचते हैं: क्योंकि, प्रभु के सामने साहस रखते हुए, हमें अनेक कष्टों से बचाओ, ताकि हम तुम्हें पुकार सकें: हे हमारे नगर की शक्ति, हर्षति हो।

पवित्र शहीद थेमस्टिोकल्स की स्मृति

21 दसिंबर को स्मरणोत्सव

संत थेमस्टिोकल्स डेसयिस के शासनकाल में रहते थे और लसियिा के मयरा नगर में एक चरवाहा थे[139] । उस समय, स्थानीय प्रांतीय राज्यपाल एस्क्लेपयिस ने राजा के आदेश पर ईसाइयों पर अत्याचार शुरू कयिा और, अन्य बातों के अलावा, संत डायोस्कोरडिस[140] की तलाश कर रहा था, जो छपिकर पहाड़ों में भाग गया था। दयिोस्कॉरड्सि को खोजने के लिए भेजी गई खोजी टुकड़ी को थमिीस्टोकल्स मलिा, जो भेड़ों की देखभाल कर रहा था, और उन्होंने उससे दयिोस्कॉरड्सि के बारे में पूछा, लेकनि उसने छपि रहे व्यक्ति का ठकिाना नहीं बताया, और कहा:

'यहाँ कोई नहीं है!'

लेकनि उसने खुद को ईसाई घोषति करके और उनके सामने मसीह की गवाही देकर खुद का भेद खोल दयिा; तब थेमस्टिोकल्स को उस क्षेत्र के शासक एस्क्लेपयिस के सामने लाया गया। राजकुमार ने उसे कोड़े मारने का आदेश दयिा – और संत के पेट पर तब तक कोड़े मारे गए जब तक वह फट नहीं गया; फरि उसे एक पेड़ से लटका दयिा गया। बाद में, उसे पेड़ से उतारने के बाद, शहीद को नुकीले काँटों वाली लोहे की जाली पर घसीटा गया, जसिसे उसका पूरा शरीर चीर-फाड़ कर टुकड़े-टुकड़े हो गया। इस प्रकार उन्होंने अपनी आत्मा ईश्वर को सौंप दी[141] ।

4 जनवरी

22 दसिंबर (पुराना तरीका)

---

[139] लसियिा - एशयिा माइनर का एक दक्षणिी तटीय क्षेत्र - पम्फलियिा के प्रान्त का एक हस्सिा था। सम्राट थयिोडोसयिस ने इसे पम्फलियिा से अलग कर दयिा, और मायरा इसकी राजधानी बन गई। 395 के बाद, लसियिा बीजान्टनि साम्राज्य का एक प्रांत बन गया; 6वीं शताब्दी से यह मुस्लमि शासन के अधीन रहा है।

[140] संत डायोस्कोराइड्स का पर्व दविस भी 21 दसिंबर को होता है।

[141] संत थेमस्टिोकल्स की मृत्यु 251 में हुई।

बंधन से मुक्तदिाता पवत्रि महा-शहीद अनास्तासयिा, उनके शक्षिक क्रसिोगोनस, थयिोडोटा, और उनके साथ कष्ट सहने वालों की शहादत

22 दसिंबर को स्मरणोत्सव

संत अनास्तासयिा का जन्म प्रसद्धि रोम नगर में हुआ था। वह अपनी कुलीनता, आत्मा और शरीर की सुंदरता, अपने अच्छे चरत्रि और अपनी नम्रता के लिए वशिष्टि थीं। उनके पतिा, जनिका नाम प्रेटेक्स्टैटस था, एक सेनेटर थे और हेलैनकि मूर्तपिूजक धर्म का पालन करते थे। उनकी माँ, जनिका नाम फाउस्टा था, मसीह में वश्विास रखती थीं। एक छोटी लड़की के रूप में, अनास्तासयिा को उसकी माँ ने एक योग्य व्यक्तकिी देखभाल में सौंपा, जो अपने ज्ञान और उससे भी अधकि अपनी धार्मकिता के लिए प्रसद्धि था। उसका नाम क्रसिोगोनस था। वह एक ईसाई था, जो मसीह की दैवीय शक्षिाओं में पारंगत था, और बाद में शहीद हो गया। इस पवत्रि व्यक्तसि, अनास्तासयिा ने न केवल पढ़ना और लखिना सीखा; उसने उस ईश्वर को भी जानना सीखा जो सभी दृश्य और अदृश्य चीजों का स्रोत है, हृदय की सभी धार्मकि इच्छाओं का लक्ष्य है, एकमात्र सच्चा ईश्वर, सभी चीजों का स्रष्टा और पूर्णकर्ता है। और उसने लगन से ईसाई कतिाबें पढ़ना शुरू कर दयिा, दनि-रात प्रभु के वधिान का अध्ययन कयिा, और ईश्वर के प्रतपि्रेम में अपने हृदय को मजबूत कयिा।

जब अनास्तासयिा ने क्रसिोगोनस के साथ अपनी पढ़ाई पूरी कर ली, तो उसे सर्वसम्मतसि एक बुद्धमिान और सुंदर कन्या के रूप में प्रशंसति कयिा गया।

इस बीच, अनास्तासयिा की धन्य माता, फाउस्टा का नधिन हो गया। हालाँकि, उनके पतिा ने उनकी इच्छा के वरिुद्ध, उन्हें एक पोंपलियस नामक व्यक्तसि सगाई कर दी, जो सीनेटोरयिल वंश का था और हेलेनकि धर्म का अनुयायी था; और अनास्तासयिा को उसके मंगेतर के घर ले जाया गया—वश्विासयिों को अवश्विासयिों के पास, मसीह के मेमने को भेड़यि के पास। लेकनि ईश्वर, जनिके समक्ष वह वलिाप करती थी, जनिसे वह दनि-रात प्रार्थना करती थी, उन्होंने उसकी रक्षा की। संत ने अपनी कुँवारी अवस्था नहीं खोई, और उसके अश्लील पतनि उसके पवत्रि शरीर को अपवत्रि नहीं कयिा। अनास्तासयिा ने यह दखिावा कयिा कि वह एक पुरानी और ﻻﻋﻼﺝ स्त्री रोग से पीड़ति है, और दावा कयिा कि वह अपने पतकि प्रतअिपनी पत्नयिों जैसी कर्तव्य-नष्पिादन नहीं कर सकती। कभी-कभी, उसका पतजिबरदस्ती और संघर्ष करके अपनी वासना को शांत करने की कोशशि करता, लेकनि अनास्तासयिा, अपने रक्षक देवदूत की अदृश्य मदद से, उसकी पकड़ से छूट जाती थी - और इस प्रकार वह एक नर्दिोष कुंवारी बनी रही।

अक्सर, अपने भव्य वस्त्र और कीमती आभूषण उतारकर और गुप्त रूप से भखिारी के फटे-पुराने कपड़े पहनकर, अनास्तासयिा घर से नकिल जाती थीं, और यह बात एक नौकरानी के अलावा कसिी को पता नहीं चलती थी, जो हर समय उनके साथ रहती थी। इस दासी के साथ, अनास्तासयिा सभी काल-कोठरयिों में जाती, प्रवेश पाने के लिए पहरेदारों को सोने की रश्वित देती, मसीह के लिए पीड़तिों से मलिती, और उनकी यथासंभव श्रद्धा और उत्साह के साथ सेवा करती। वह कैदयिों के हाथ-पैर धोती, कीचड़-भरे उनके उलझे बालों में कंघी करती, उनका खून पोंछती, साफ कपड़े से उनके घावों पर पट्टी बांधती और उन सभी को भोजन व पेय देती। फरि, उनकी पर्याप्त सेवा करने के बाद, वह घर लौट आती।

इन गतविधियिों के लिए अक्सर उसे घर से बाहर जाना पड़ता था, और यह उसके पतकि नज़रों से छपिा नहीं रहा। उसे पता चला कि अनास्तासयिा कैदयिों से मलि रही थी और वह उससे और भी ज़्यादा क्रोधति हो गया, खासकर इसलिए क्योंकि वह पहले से ही संत से इस बात पर नाराज़ था कि वह उसके साथ वैवाहकि जीवन साझा करने से इनकार कर रही थी, और इस वजह से उसने उसका बहुत उत्पीड़न कयिा था। जहाँ तक अनास्तासयिा की गतविधियिों का सवाल है, उसे उनके बारे में उसकी साथी दासी से पता चला; इस वश्विासघाती महलिा ने उसे सब कुछ बता दयिा।

अनास्तासयिा को बेरहमी से पीटने के बाद, उसके गैर-कानूनी पतनि संत को एक अलग कमरे में बंद कर दयिा, और उस पर एक पहरेदार लगा दयिा ताकि वह कमरे से बाहर न नकिल सके। और संत की आत्मा मसीह के लिए कैदयिों के लिए दुखी थी, कि वह उनसे मलिने, उनकी सेवा करने, या उन्हें उनकी सभी आवश्यक चीजें प्रदान करने में असमर्थ थी। अनास्तासयिा का दलि वशिेष रूप से अपने पवत्रि शक्षिक, क्रसिोगोनस के लिए तड़प रहा था, जसिे वह देख नहीं सकती थी।

अब दो साल से, संत क्रसिोगोनस जेल में रहते हुए कई तरह की यातनाएँ सह रहे थे। जब वह आज़ाद थी, तो अनास्तासयिा अक्सर उनसे मलिने आती थी। लेकनि अब, कैद में और कड़ी नगिरानी में होने के कारण, वह अपने गुरु से मलिने में असमर्थ थी।

इस धर्मपरायण पत्नी के पतिा, प्रेटेक्सस्टैट की मृत्यु के बाद अनास्तासयिा के पतनि उस पर वशिेष रूप से अत्याचार करना शुरू कर दयिा; प्रेटेक्सस्टैट की संपूर्ण वशिाल संपत्तवि रिासत में अनास्तासयिा को, उसकी एकमात्र बेटी के रूप में, मलि गई, क्योंकि उसके न तो कोई अन्य संतान थे और न ही कोई रश्तिेदार। और इसलएि पोम्पीलयिस ने अपने ससुर की मृत्यु का फायदा उठाते हुए और अनास्तासयिा के अपनी कामुक इच्छाओं के आगे झुकने से इनकार करने के प्रतघिृणा से प्रेरति होकर, उसकी हत्या की साजशि रची ताकि वह उसकी सारी संपत्तका वारसि बन सके और कसिी और की कीमत पर दूसरी पत्नी के साथ रह सके। संत को एक कैदी और दासी की तरह मानते हुए, वह उसे प्रतदिनि यातना देता और प्रताड़ति करता था। यह बात एक पत्र से ज्ञात होती है जो उन्होंने गुप्त रूप से क्रसिोगोनस को लखिा था और एक वृद्ध महलिा के माध्यम से भेजा था। वह पत्र इस प्रकार है: 'क्रसिोगोनस को, मसीह के पवत्रि स्वीकारकर्ता, अनास्तासयिा की ओर से। मेरे पतिा मूर्तपिूजक थे; लेकनि मेरी माँ, फाउस्टा, हमेशा एक शुद्ध और धार्मकि ईसाई जीवन जीती थीं। और उन्होंने मुझे मेरे जन्म से ही एक ईसाई के रूप में पाला। उनकी मृत्यु के बाद, मैंने एक मूर्तपिूजक से ववािह का भारी बोझ उठाया। लेकनि, मेरे प्रतईश्वर की दया से, मैंने बीमारी का बहाना करके सफलतापूर्वक उसके साथ शारीरकि संबंध बनाने से बच लयिा, और अब, दनि-रात, मैं अपने प्रभु यीशु मसीह के चरणों से चपिकी रहती हूँ। हालाँकि, मेरा पतमिेरी वरिासत को अयोग्य और नीच मूर्तपिूजकों के साथ बर्बाद करता है, और मेरी संपत्तका घमंड करता है मानो वह उसकी अपनी हो; जबकमिुझे, एक जादूगरनी और उसके वधिर्मी धर्म की वरिोधी के रूप में, इतनी भयंकर कैद में रखता है कमिेरे पास अपनी आत्मा को प्रभु को सौंपने और मृतक होकर गरि पड़ने के सविा कोई चारा नहीं है। बेशक, मुझे इस बात पर आनन्दति होना चाहए कि प्रभु के लए दुख सहने के बाद, मैं उनका नाम स्वीकार करते हुए मरूँगी; फरि भी, मैं यह देखकर गहराई से दुखी हूँ कमिेरे सारे धन-संपत्त, जो मैंने परमेश्वर को देने का वादा कयिा था, दुष्ट और परमेश्वर का वरिोध करने वाले लोगों के हाथों बर्बाद हो रहे हैं। इसलएि मैं आपसे वनिती करती हूँ, हे परमेश्वर के मनुष्य, कि आप प्रभु मसीह से मन लगाकर प्रार्थना करें कि या तो वह मेरे पतका जीवन बचा लें, यदि उन्हें पता है कि वह एक दनि वश्विास में आएगा, या, यदि वह अवश्विास में बना रहता है, तो वह उसे जीवतिों से अलग हो जाने और उन लोगों के लए मार्ग बनाने की आज्ञा दें जो परमेश्वर का सम्मान करते हैं। ईश्वर के पुत्र की गवाही देने से इनकार करने और जो उसकी गवाही देते हैं उन्हें रोकने की अपेक्षा उसके लए मरना बेहतर है। मैं मसीह को गवाह के रूप में बुलाती हूँ कि, यदि मुझे मुक्त कर दयिा गया, तो मैं अपना जीवन संतों की सेवा में समर्पति कर दूँगी और उनकी लगन से देखभाल करूँगी, जैसा कि मैंने पहले ही करना शुरू कर दयिा है... वदिा, हे ईश्वर के मनुष्य, और मुझ पर दया करो।' इस पत्र के जवाब में, संत अनास्तासयिा को नम्निलखिति उत्तर मलिा: 'क्रसिोगोनस की ओर से अनास्तासयिा को। तुम तक, जो इस संसार के तूफान और उथल-पुथल से परेशान हो, पानी पर चलने वाले मसीह शीघ्र ही आएँगे, और एक ही शब्द से वे तुम्हारे वरिुद्ध उठ रहे शत्रु की नदिा की हवाओं को शांत कर देंगे। तूफ़ानी समुद्र के बीच में, मसीह की धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा करो, जो तुम्हारे पास आएंगे, और भवष्यिवक्ता के शब्दों के साथ अवरिाम पुकार लगाओ: *'हे मेरी आत्मा, तू क्यों उदास है, और तू क्यों व्याकुल है? परमेश्वर में आशा रख, क्योंकि मैं अभी भी उसकी स्तुतकि रूँगा, जो मेरा उद्धारकर्ता और मेरा परमेश्वर है'* (भजन संहति 41:6)। ईश्वर से दोगुना पुरस्कार की अपेक्षा करें। क्योंकि आपकी सांसारकि वरिासत आपको वापस कर दी जाएगी, और स्वर्गीय वरिासत आपको प्रदान की जाएगी: प्रभु कभी-कभी बुराई को होने देते हैं और कुछ समय के लए अपनी कृपा रोक लेते हैं, ताकि हम अपनी सुरक्षा को लेकर आत्मसंतुष्ट न हो जाएँ। जब आप देखें कि धर्मपरायण लोग वपित्तमिें हैं तो नराश न हों। प्रभु आपको अस्वीकार नहीं कर रहे हैं, बल्कि आपकी परीक्षा ले रहे हैं। यह भी जान लें कि मानव हाथों द्वारा दी गई सुरक्षा स्थायी नहीं है, जैसा कि पवत्रिशास्त्र के वचन में कहा गया है: *'जो मनुष्य पर भरोसा करता है, वह श्रापति है, और जो प्रभु पर भरोसा करता है, वह धन्य है'* (यर. 17:5, 7)। सभी पापों से दृढ़ता और प्रसन्नचत्ति होकर अपना रक्षण करो, और एकमात्र परमेश्वर से सांत्वना ढूंढो, उसकी पवत्रि आज्ञाओं का पालन करते हुए। शांतकि समय शीघ्र ही आपके पास लौट आएंगे। जसि प्रकार रात के अंधकार के बाद एक उज्ज्वल दनि नकिलता है, और जसि प्रकार एक कठोर सर्दी के बाद एक गर्म वसंत आता है, उसी प्रकार आपके लए सुनहरे और स्पष्ट दनि आएंगे; और तब आप मसीह के नाम के लए पीड़ति होने वालों को अस्थायी सांत्वना देंगे, जबकि आपको स्वयं नस्सिंदेह अनंत आनंद प्रदान कयिा जाएगा... 'प्रभु में उद्धार पाएँ, और मेरे लए प्रार्थना करें।'

जल्द ही अनास्तासिया को अपने निर्दयी, अधर्मी पति के हाथों और भी घोर अपमान सहना पड़ा, और उसने संत क्रिसोगोनस को एक और पत्र लिखा। उसमें यह लिखा था: 'मसीह के स्वीकारकर्ता क्रिसोगोनस को, अनास्तासिया की ओर से। मुझे याद रखना और मेरे लिए प्रार्थना करना, कि वह प्रभु, जिसके लिए मैं ये यातनाएँ सहन कर रही हूँ—जिनके बारे में तुम्हारे पास भेजी गई वृद्ध महिला तुम्हें बताएगी—मेरी आत्मा को स्वीकार करे।'

संत ने उन्हें उत्तर दिया: 'क्रिसोगोनस की ओर से अनास्तासिया को। प्रकाश से पहले हमेशा अंधकार होता है, और बीमारी के बाद स्वास्थ्य अक्सर लौट आता है, और मृत्यु के बाद हमें जीवन का वादा किया गया है। सभी का अंत एक ही है, चाहे भाग्यशाली हों या पीड़ित, ताकि शोक करने वालों पर निराशा हावी न हो, और ताकि आनंद में लोग घमंड के आगे न झुकें। एक ही समुद्र है जिस पर हमारे जीवन की छोटी नावें चलती हैं, और एक ही नाविक के साथ हमारी आत्मा अपनी यात्रा करती है। कुछ के पास मज़बूत जहाज़ होते हैं जो तूफानों से अछूते निकल जाते हैं, जबकि अन्य के पास कमज़ोर नावें होती हैं जो शांत पानी में भी डूबने के खतरे में रहती हैं। जिनके बारे में उद्धार के बंदरगाह तक पहुँचने का विचार नहीं है, उनके लिए विनाश का समय नज़दीक आ रहा है। लेकिन तुम, मसीह की निर्मल दासी, अपने पूरे मन से मसीह के क्रूस से चिपकी रहो और प्रभु के काम के लिए स्वयं को तैयार करो; और जब तुम अपनी स्वेच्छा से मसीह की सेवा करोगी, तो तुम अपनी पीड़ाओं से विजयी होकर मसीह के साथ धन्य जीवन में प्रवेश करोगी।"

इस पत्र में, संत क्रिसोगोनस ने उनके क्रूर पति, पोंपिलियस के निकट विनाश की भविष्यवाणी की थी। और वास्तव में, उन्हें जल्द ही फारस के राजा के पास राजदूत के रूप में भेज दिया गया। अपनी यात्रा पर निकलते हुए, उन्हें समुद्र पार करना पड़ा। जिस जहाज पर वह सवार था, वह एक अचानक आए तूफान में डूब गया। इस प्रकार यह दुखी व्यक्ति मर गया। संत अनास्तासिया, अपनी कुँवारी अवस्था की रक्षा करते हुए, एक पक्षी की तरह शिकारी के जाल से बच निकलीं। अपनी स्वतंत्रता के साथ-साथ, उन्हें अपने माता-पिता द्वारा छोड़ी गई पूरी विरासत भी प्राप्त हुई। और इस प्रकार उसने, अब किसी से बाधित हुए बिना, कालकोठरियों में बंद लोगों से मिलने जाना शुरू कर दिया। उसने मसीह के कष्ट सहने वालों की सेवा केवल अपनी संपत्ति से ही नहीं की। इसके साथ ही, उसने उन्हें सांत्वना दी और अपने बुद्धिमानी भरे शब्दों से, उन्हें साहसी धैर्य और मसीह के लिए निडर मृत्यु के लिए प्रेरित किया।

उस समय, सम्राट डायोक्लेटियन एक्विलिया में थे[142] और उन्होंने यह सुनिश्चित करने के लिए अपने सभी प्रयास किए कि एक भी ईसाई गुप्त रूप से उनकी पकड़ से न बच सके। उसे रोम से सूचना मिली कि जेलें ईसाइयों की एक बड़ी भीड़ से भरी हुई थीं, कि विभिन्न यातनाओं के बावजूद, उन्होंने अपने मसीह का त्याग नहीं किया, और इस सब में उन्हें ईसाई शिक्षक क्रिसोगोनस से बल मिला, जिसके प्रति वे आज्ञाकारी थे, और हर बात में उसके निर्देशों का पालन करते थे। राजा ने आदेश दिया कि सभी ईसाइयों को यातनाएँ दी जाएँ और उन्हें मृत्युदंड दिया जाए, और क्रिसोगोनस को उसके पास भेजा जाए। उसने तर्क दिया कि यदि वह क्रिसोगोनस की दृढ़ता को तोड़ सके, तो वह अन्य ईसाइयों को भी आसानी से वश में कर लेगा।

जब क्रिसोगोनस को अपने मुकदमे के लिए राजा के सामने लाया जा रहा था, तो अनास्तासिया दूर से अपने शिक्षक का पीछा कर रही थी।

पवित्र पुरुष को देखकर राजा ने उससे बात करना शुरू किया, और उसे कोमलता से मसीह का त्याग करने के लिए प्रेरित किया।

'मेरी अच्छी सलाह मानो, क्रिसोगोनस,' अधर्मी शासक ने कहा, 'हमारे धर्म में शामिल हो जाओ, जो देवताओं को प्रसन्न करे वही करो, और जो सुखद हो उसे चुनो, दुखद को नहीं, और जो उपयोगी हो उसे चुनो, निरर्थक को नहीं। 'जान लो कि न केवल तुम्हें यातनाओं से मुक्ति मिलेगी और वह स्वतंत्रता प्राप्त होगी जिसकी तुम इतनी लालसा करते हो, बल्कि तुम महान नगर रोम के शासक भी बनोगे।'

संत ने उत्तर दिया:

---

[142] अक्विलिया उत्तरी इटली का एक शहर है, जिसकी स्थापना एक रोमन कॉलोनी के रूप में हुई थी। यह एड्रियाटिक सागर से थोड़ी दूरी पर नटिसोन नदी पर स्थित था। अपनी स्थापना के तुरंत बाद, अक्विलिया एक प्रमुख व्यापारिक केंद्र बन गया, जिसके माध्यम से सैन्य सड़कें उत्तर की ओर और एड्रियाटिक सागर के आसपास के पूर्वी क्षेत्रों की ओर जाती थीं। साम्राज्य काल के दौरान, यह इटली का प्रवेश द्वार था, और इसलिए वहाँ अक्सर सैनिकों को तैनात किया जाता था। बाद में, इस शहर को एक क्रूर बर्बर लोगों - हूणों - द्वारा पूरी तरह से नष्ट कर दिया गया, और इसके कुछ निवासी पो नदी की लैगून में भाग गए, जहाँ उन्होंने वेनिस की स्थापना में भाग लिया।

'मैं एकमात्र ईश्वर को जान चुका हूँ, और वह मुझसे सभी प्रकाश से अधिक प्रिय और सभी स्वतंत्रता से अधिक वांछनीय है। वह मुझसे सभी जीवन से अधिक प्रिय और सभी खजाने से अधिक लाभकारी है। मैं उसी में अपने हृदय से विश्वास करता हूँ, अपने होठों से उसकी गवाही देता हूँ, अपनी आत्मा से उसका सम्मान करता हूँ, और सभी की दृष्टि के सामने उसके सामने अपने घुटने टेकता हूँ। जहाँ तक आपके कई देवताओं का सम्मान करने की बात है, जिनमें राक्षस वास करते हैं, मैं ऐसा नहीं करूँगा; मैं उनके बारे में ठीक वैसे ही सोचता हूँ जैसे सुकराते[143] ने सोचा था, जिसने उनके बारे में कहा था: 'हर तरह से उनसे दूर रहना चाहिए, क्योंकि वे लोगों को बहकाते हैं और आत्मा को नष्ट करने वाले कुख्यात हैं।' जहाँ तक आप द्वारा दिए गए उपहारों और सम्मान की बात है, मैं उन्हें एक सपने या अंधकार से अधिक मूल्यवान नहीं समझता।

राजा अब क्रिसोगोनस से ऐसे साहसी शब्द सुनना बर्दाश्त नहीं कर सका, और उसने अपने सैनिकों को आदेश दिया कि उसे पकड़ो, किसी सुनसान जगह ले जाओ, और उसका सिर काट दो। संत का शरीर समुद्र तट पर फेंका गया[144], जो ज़ोइलस नामक एक पवित्र जीवन वाले पुरोहित और तीन कुंवारी बहनों—अगापिया, खियोनिया और इरिना—के आवास से बहुत दूर नहीं था। इस पुरोहित को ईश्वर के एक प्रकट वचन से संत क्रिसोगोनस के शरीर के बारे में पता चला; उन्होंने इसे, कटे हुए सिर के साथ, एक अवशेष पात्र में रखा और इसे अपने ही घर में छिपा दिया[145]। तीस दिन बीत जाने के बाद, संत क्रिसोगोनस एक दर्शन में उनके सामने प्रकट हुए और कहा:

'जान लो कि अगले नौ दिनों के भीतर, तुम्हारे पास रहने वाली मसीह की तीन कुँवारियाँ यातनाओं में डाली जाएँगी। तुम, हालाँकि, प्रभु की दासी अनास्तासिया से कहना कि वह उनकी देखभाल करे, और उन्हें तब तक धैर्य बनाए रखने के लिए प्रोत्साहित करे जब तक कि उन्हें शहीदों के फूलमालाओं से नहीं सजाया जाता। तुम्हें भी यह अच्छी आशा रखनी चाहिए कि तुम अपने परिश्रम का मीठा फल पाओगे। शीघ्र ही, तुम भी इस सांसारिक जीवन से मुक्त हो जाओगे और उन लोगों के साथ मसीह के पास ले जाए जाओगे जिन्होंने उनके लिए कष्ट सहे हैं।

संत अनास्तासिया को भी वही प्रकाशन हुआ। और इस प्रकार, परमेश्वर की आत्मा से प्रेरित होकर, वह एक ऐसे पुरोहित के घर गईं जिसे वह पहले कभी नहीं मिली थीं और उनसे पूछा:

'वे कुंवारी कहाँ हैं जिनके शहीद होने का दर्शन उसे हुआ था?'

तब, यह जानने के बाद कि वे कहाँ रहती थीं, वह उनके पास गईं और उनके साथ रात बिताई, और उनसे परमेश्वर के प्रति प्रेम और आत्मा के उद्धार के बारे में बात की। और अपने शब्दों से उन्होंने उन्हें अपने वधू-वर, मसीह के लिए, रक्त तक दृढ़ रहने के लिए प्रोत्साहित किया। पादरी ज़ोइलस के घर, उन्होंने मसीह के पवित्र शहीद, क्रिसोगोनस, अपने प्रिय शिक्षक के अवशेष देखे, और उन पर गर्म आँसुओं से भरकर रोईं, और स्वयं को उनके प्रार्थनाओं के भरोसे छोड़ दिया। फिर वह एक्विलिया लौट आईं।

थोड़ी ही देर बाद, पादरी ज़ोइलस को संत क्रिसोगोनस की भविष्यवाणी सच हुई। नौ दिन बीत जाने के बाद, यह पादरी प्रभु के पास चला गया, जबकि पवित्र कुंवारी अगपिया, खियोनिया और इरिना को गिरफ्तार कर पूछताछ के लिए सम्राट डायोक्लेटियन के सामने लाया गया। उसने उन्हें मूर्तियों की बलि चढ़ाने के लिए बार-बार समझाया, बारी-बारी से चापलूसी और धमकियों का सहारा लिया, लेकिन उन्हें मनाने में असफल रहा और अंत में उन्हें कैद कर दिया।

हालाँकि, संत अनास्तासिया, अपनी आदत के अनुसार कैदियों से मिलने आईं, और उन पवित्र कुंवारीयों के पास आईं और उन्हें सांत्वना दी, उनमें मसीह की अटूट मदद पर विश्वास और प्रभु के दुश्मनों पर एक शानदार जीत की आशा जगाई।

---

[143] सुकरात एक प्राचीन यूनानी ऋषि और दार्शनिक थे जो ईसा पूर्व 5वीं और 4वीं शताब्दी की शुरुआत में एथेंस में रहते थे। वे एक उच्च विचारधारा के धनी थे जो अपने समकालीनों से बहुत आगे थी। संयोग से, वह कई पगन देवताओं में विश्वास नहीं करते थे और एकैकवादी थे, यानी, उनका मानना था कि केवल एक ही ईश्वर है। इसी कारण से, सुकरात पर अधर्मी होने का आरोप लगाया गया और, इसके लिए, साथ ही कथित तौर पर युवा पुरुषों को भ्रष्ट करने के लिए (जो अनुचित था), उन्हें जहर देकर मौत की सजा सुनाई गई। 399 ईसा पूर्व में, सुकरात ने अपने शिष्यों और प्रशंसकों से घिरे हुए हेमलॉक का एक प्याला पिया और उनकी मृत्यु हो गई। इस दार्शनिक के शिष्यों में, प्लेटो सबसे प्रसिद्ध हैं; अपने गुरु की तरह, वह भी एक एक ईश्वरवादी थे।

[144] यह, बेशक, एड्रियाटिक सागर को संदर्भित करता है, जो भूमध्य सागर की एक खाड़ी है और इटली तथा बाल्कन प्रायद्वीप के बीच स्थित है।

[145] बाद में, संत क्रिसोगोनस का पवित्र सिर रोम में स्थानांतरित कर दिया गया, जहाँ सिम्माखुस (498–514) के पोपत्व के समय ही, शहीद को समर्पित एक चर्च था और उनका सिर वहाँ रखा गया था। हालाँकि, संत का शरीर वेनिस में है।

इस बीच, राजा को राजकीय कार्य से मैसेडोनिया की यात्रा करनी पड़ी[146] , इसलिए उन पवित्र कुंवारी कन्याओं को यातना देने वाले डुलकशियिस के हवाले कर दिया गया, जिसने उन्हें यातना दी और प्रताड़ित किया, और फिर उन्हें एक निश्चित काउंट, सिसिनियस[147] को यातना देने के लिए सौंप दिया। बाद वाले ने संत अगपिया और खियोनिया को आग में डाल दिया। वहाँ उन्होंने अपनी आत्माएँ ईश्वर को सौंप दीं, और अपने शरीर को आग में अखंड तथा अक्षुण्ण छोड़ दिया। जहाँ तक संत इरीना का प्रश्न है, सिसिनिया के एक सैनिक ने उन्हें एक शक्तिशाली धनुष से तीर मारकर घायल कर दिया, जिसके बाद संत का निधन हो गया। संत अनास्तासिया ने उनके पवित्र शरीरों को लिया, उन्हें सुगंधित तेलों से महकते सफेद कफ़न में लपेटा, और श्रद्धापूर्वक उन्हें एक चुनी हुई जगह पर रख दिया, इस प्रकार उनके दुखों को शांत किया।

इसके बाद, अनास्तासिया एक शहर से दूसरे शहर और एक देश से दूसरे देश की यात्रा करने लगीं; जहाँ भी वह जाती थीं, वह दासता में रखे ईसाइयों की सेवा करती थीं, कैदियों को अपने खर्च पर भोजन और पेय, कपड़े और सभी आवश्यक चीजें प्रदान करती थीं, और बीमारों को चिकित्सा देखभाल प्रदान करती थीं। वह उन सभी के लिए सांत्वना का स्रोत थीं जो बहुत कष्टग्रस्त और शारीरिक रूप से थके हुए थे, और उन्होंने अपनी निजी संपत्ति का उपयोग करके उन्हें उनके लंबे समय से चले आ रहे, गंभीर बंधनों से राहत दिलाई। इसीलिए अनास्तासिया को 'बंधन मुक्तिदाता' का नाम दिया गया, क्योंकि अपनी गुप्त देखभाल के माध्यम से उन्होंने कई लोगों को उनके बंधनों से मुक्त किया। कुछ को उसने राहत दी; दूसरों के घावों को उसने अपने हाथों से सिलकर अ रोगी घावों को ठीक कर दिया; और कुछ अन्य, जो आधे मृत थे, उन्हें उसने अपनी देखभाल से पुनर्जीवित किया, और उन्हें उन नई यातनाओं के लिए स्वास्थ्य और शक्ति प्रदान की जो उनका इंतजार कर रही थीं।

बीमारों और दुर्भाग्यशाली लोगों की मदद करने के लिए उत्सुक, उन्होंने चिकित्सा की कला सीखी और स्वयं घायलों का इलाज किया। वह उन लोगों को अपनी बाहों में उठाने से नहीं हिचकिचाई जो मसीह के लिए टूटे या चीर दिए गए अपने हाथों और पैरों का उपयोग नहीं कर सकते थे – और उसने स्वयं उन्हें खाना खिलाया, उन्हें पानी पिलाया, उनके मवाद को साफ़ किया, और उनके घावों पर पट्टी बांधी। और उसकी एकमात्र खुशी और आनंद उन्हीं लोगों के माध्यम से स्वयं मसीह की सेवा करने में था, जो मसीह के सबसे मधुर नाम की घोषणा करने के लिए पीड़ित हुए थे। उन्होंने अपनी सारी शक्ति इसी में लगा दी, हर संभव तरीके से इसके लिए प्रयास किया, और इस कार्य में अपनी पूरी आत्मा से परिश्रम करते हुए, उन्होंने अपनी स्वाभाविक दुर्बलता पर विजय प्राप्त की, और अपनी उदारता और साहस, ईश्वर और अपने पड़ोसी के प्रति अपने प्रेम, और पवित्र शहीदों के प्रति अपनी देखभाल से खुद को विशिष्ट बनाया, जो हमेशा ईश्वर के करीब होते हैं और जिनके बारे में उन्होंने दाऊद के साथ मिलकर कहा: *'हे परमेश्वर, तेरे विचार मेरे लिए कितने अनमोल हैं'* (भजन संहिता 138:17)।

जब मैसेडोनिया में अपने सामान्य कार्यों के सिलसिले में घूमते हुए, संत अनास्तासिया द डिलीवरीर की मुलाकात थियोडोशिया नाम की एक बहुत ही युवा विधवा से हुई, जो मूल रूप से बिथिनिया क्षेत्र के निकिया शहर की रहने वाली थी[148] । अपने पति की मृत्यु के बाद, वह अपने तीन शिशु बेटों के साथ रह गईं और मैसेडोनिया में रहती थीं, तथा अपनी विधवावस्था के दिनों को ईसाई धर्म के उत्साही पालन और धार्मिक कार्यों में व्यतीत करती थीं। धन्य अनास्तासिया अक्सर इस विधवा के पास रहती थीं; वह उन्हें मसीह की एक वफादार सेविका के रूप में प्रेम करती थीं और ईश्वर के प्रति परम प्रेम के बारे में उनके साथ मीठी बातचीत में सांत्वना पाती थीं, जिसके लिए इतने सारे संतों ने अपनी जान दे दी थी। समय के साथ, यह बात पता चल गई कि थियोडोटा एक ईसाई थी, और उस सदाचारी विधवा को गिरफ्तार कर पूछताछ के लिए राजा के सामने लाया गया।

जब वह उस अधर्मी दरबार में खड़ी थी, तो राजा के एक परिचारक, जिसका नाम ल्यूकेडियस था, उसकी सुंदरता से मोहित हो गया, क्योंकि वह सुन्दर और तेजस्वी थी। उसने राजा से विनती की कि थियोडोटा को मृत्युदंड न दें, बल्कि उसे उससे विवाह करने के लिए उसे दे दें। राजा मान गया, इस उम्मीद में कि एक पति उसे मूर्तिपूजा के लिए अधिक आसानी से धर्मांतरित कर देगा।

---

[146] मैसेडोनिया उस देश का नाम था जो हेलेस (ग्रीस) के उत्तर में, एड्रियाटिक सागर और द्वीपसमूह के बीच स्थित था। आज, यह क्षेत्र दो प्रांतों से मिलकर बना है जो यूरोपीय तुर्की का हिस्सा हैं: एक पूर्व में, जिसका प्राचीन नाम मैसेडोनिया है, और दूसरा पश्चिम में, जिसे अल्बानिया के नाम से जाना जाता है।

[147] 'कोमाइट्स' शब्द का अर्थ प्रांतों में उच्चतम रैंक के अधिकारियों के परिचारकों (अनुचर) से था, और बाद में सम्राटों के परिचारकों से था।

[148] निकाया बिथिनिया से ज़्यादा दूर नहीं स्थित एक शहर था।

ल्यूकाडियिस ने थियोडोटा और उसके बच्चों को अपने घर में ले लिया, और उसे मसीह का त्याग करने और उसकी पत्नी बनने के लिए मनाने हेतु हर संभव साधन—बिनती करना, मिन्नतें करना, फुसलाना और धमकी देना—अपनाया। थियोडोटा ने उससे उत्तर दिया:

'यदि आप मुझे अपनी पत्नी बनाने का प्रयास इसलिए कर रहे हैं क्योंकि आप मेरे धन-संपत्ति के लालची हैं, तो मैं खुशी-खुशी आपको सब कुछ दे दूँगी; लेकिन मुझे मसीह की सेवा करने दें, ताकि इन सभी धन-संपत्तियों के बदले में मैं केवल मसीह को ही विरासत में प्राप्त करूँ। लेकिन अगर तुम मुझे इसलिए चाहते हो क्योंकि तुम मेरी सुंदरता से आकर्षित हो और मुझे मेरे मसीह से दूर करने का सोचते हो, तो जान लो कि तुम असंभव के लिए प्रयास कर रहे हो। क्योंकि मेरे मन को मसीह से अलग करना और तुम्हारे साथ विवाह के लिए मुझे मजबूर करना, इन दोनों में से पहला काम तुम्हारे लिए आसान होगा।

उस समय, ल्यूकेडियिस को राजा के साथ जाना पड़ा, जो एक यात्रा पर जा रहे थे। और इस प्रकार वह रवाना हो गया, और थियोडोटा को अपने घर पर छोड़ गया, और लंबे समय तक वापस नहीं आया। थियोडोटा, कुछ राहत महसूस करते हुए, संत अनास्तासिया के साथ मिलकर कैदियों की सेवा करने लगीं, बीमारों को ठीक करने लगीं, मृतकों को دفनाने लगीं, और जीवित लोगों को महान कार्यों के लिए प्रोत्साहित करने लगीं। और इस प्रकार डायोक्लेटियिन को एक बार फिर यह बताया गया कि शहरों की जेलें ईसाइयों से भरी हुई थीं, और अन्य कैदियों को रखने के लिए कहीं जगह नहीं थी। तब उस दुष्ट उत्पीड़क ने आदेश दिया कि सभी कैदियों को विभिन्न प्रकार के मृत्युदंडों से मार डाला जाए, ताकि कालकोठरियाँ खाली हो जाएँ और अन्य ईसाइयों को रखा जा सके। इस उद्देश्य के लिए एक ही रात निर्धारित की गई, जिसके दौरान शहीदों की एक बड़ी भीड़ उस दिन के लिए बुला ली गई जो कभी फीका नहीं पड़ता – प्रभु मसीह। कुछ तलवार से मारे गए, कुछ डुबो दिए गए, कुछ आग के भट्टों में जला दिए गए, जबकि अन्य धरती की कोख में जीवित ही समा गए: गहरे खाई और गड्ढे लोगों से भर दिए गए और मिट्टी व पत्थरों से ढक दिए गए।

अगली सुबह, मसीह-प्रेमी और धन्य अनास्तासिया, अपनी आदत के अनुसार, एक कुएँ पर आईं और वहाँ सम्मानित शहीदों में से किसी को न पाकर, उन्होंने हवा को करुण क्रंदन और सिसकियों से भर दिया। जब वहाँ मौजूद सैनिकों ने उनसे पूछा कि वह इतनी रो क्यों रही हैं, तो उन्होंने उत्तर दिया:

'मैं अपने ईश्वर के सेवकों को ढूंढ रही हूँ, जो कल इस कालकोठरी में थे, लेकिन अब मुझे नहीं पता कि वे कहाँ हैं।'

[149]सैनिकों को यह समझते हुए कि वह एक ईसाई है, उन्होंने तुरंत उसे पकड़ लिया और इल्यूरियिन प्रांत के राज्यपाल फ्लोरस के पास ले गए। जब संत को राज्यपाल के सामने लाया गया, तो उसने उससे पूछा:

'क्या तुम ईसाई हो?'

संत अनास्तासिया ने उत्तर दिया:

'सचमुच, मैं एक ईसाई हूँ। जो तुम्हें घृणित लगता है, वह मेरे लिए अनमोल है। और ईसाई का नाम, जिसे तुम अपमान समझते हो, मेरे लिए सम्मानजनक और गौरवशाली है।'

तब राज्यपाल ने अनास्तासिया से उसकी उत्पत्ति के बारे में पूछना शुरू किया और जब यह जानकर कि वह एक प्रतिष्ठित रोमन परिवार से थी, तो आश्चर्य से पूछा:

'रोम, अपने गौरवशाली स्वदेश को छोड़कर यहाँ आने के लिए आपको किसने प्रेरित किया?'

संत ने उत्तर दिया:

'मेरे प्रभु की आवाज़ के सिवाय और कुछ नहीं, जो मुझे अपने पास बुला रही थी। उस आवाज़ पर ध्यान देते हुए, मैंने अपना वतन और अपने दोस्तों को छोड़ दिया, अपने मसीह का क्रूस उठा लिया, और मसीह का अनुसरण करने के लिए प्रसन्नता और आनंद से निकल पड़ी।'

पालक ने उत्तर दिया:

'यह मसीह कौन है जिसकी आप घोषणा करते हैं?' अनास्तासिया ने उत्तर दिया:

---

[149] इलिरिया एड्रियाटिक सागर के पूर्वी तट पर स्थित था, जिसकी उत्तरी-पश्चिम में सावा नदी और दक्षिण-पूर्व में ड्रिना नदी से सीमा लगती थी। आज, इस क्षेत्र में डलमेशिया और बोस्निया और हर्जेगोविना, साथ ही अल्बानिया का एक छोटा सा हिस्सा शामिल है। इलिरिया मैसेडोनिया के पास स्थित था, इसलिए संत अनास्तासिया, मैसेडोनिया के कालकोठरियों में कैदियों के बीच धर्मार्थ कार्य करते हुए, इलिरियाई क्षेत्र में भी प्रवेश कर सकती थीं, और इसीलिए उन्हें इलिरियाई गवर्नर के हवाले कर दिया गया।

'ऐसा कोई स्थान नहीं है जहाँ मसीह नहीं है। वह स्वर्ग में, समुद्र में और पृथ्वी पर है; वह उन सभी में वास करता है जो उसकी पुकार लगाते हैं और उसका भय मानते हैं, उनके मन को प्रकाशित करते हुए और हमेशा उनके साथ रहता है।'

इगेमोन ने पूछा:

'तो फिर ये लोग कहाँ हैं जो आपके मसीह से डरते हैं, जिनकी आप बात करते हैं? हमें बताइए, ताकि हम उन्हें पहचान सकें।'

संत ने उत्तर दिया:

'अब तक वे पृथ्वी पर हमारे साथ, देह में रहते थे; परन्तु अब, इस संसार को पीछे छोड़कर, वे स्वर्ग में हैं और ऊँचे से हम पर दृष्टि रखते हैं। यह परमानंद उन्हें उनकी मृत्यु द्वारा प्राप्त हुआ, जिसे उन्होंने मसीह के लिए स्वीकार किया था। और मैं भी उनके बीच होना चाहता हूँ और उसी मार्ग पर चलना चाहता हूँ जिस पर वे चले।'

पालक उसके बारे में तब तक कुछ नहीं कर सकता था जब तक सम्राट को उसकी सूचना नहीं मिल जाती, और इसलिए, अनास्तासिया के बारे में सब कुछ बताकर, उसने इसे एक विशेष रिपोर्ट में डायोक्लेटियन के पास भेज दिया। डायोक्लेटियन अनास्तासिया के माता-पिता और उसके पति के साथ-साथ स्वयं अनास्तासिया को भी जानता था। यह महसूस करते हुए कि वह अपने माता-पिता से विरासत में मिली संपत्ति को गरीब ईसाइयों पर खर्च कर रही थी, उसने संत को अपने सामने पेश करने का आदेश दिया; और उसे देखकर, उसने उसकी संपत्ति के बारे में उससे पूछना शुरू कर दिया, क्योंकि वह अपने देवताओं से भी अधिक धन-संपत्ति से प्यार करता था।

'तुम्हारे पिता ने तुम्हें जो धन-संपत्ति विरासत में दी है, वह कहाँ है?' संत ने साहसपूर्वक उत्तर दिया:

'यदि मेरे पास अभी भी कोई खजाना या संपत्ति बची होती, जिससे मैं अपने मसीह के सेवकों की सेवा कर सकती, तो मैं खुद को उन लोगों के हाथों में सौंपने की हिम्मत न करती जो मसीहियों का खून चाहते हैं। लेकिन अब मैंने अपनी सारी संपत्ति, जिसे मैंने मसीह के लिए बलिदान कर दिया है, खर्च कर दिया है, और मेरे पास अब मेरा शरीर ही बचा है; इसलिए, मैं उसे भी अपने ईश्वर को एक उपहार के रूप में अर्पित करने के लिए लालायित हूँ।

संत को इतनी स्वतंत्रता से बोलते देख, और उसकी हिम्मत को भांपकर, राजा ने उससे शब्दों में जीतने या उसकी संपत्ति में से कुछ भी प्राप्त करने की सारी आशा छोड़ दी, जिसके बारे में उसने अभी-अभी सुना था कि वह समाप्त हो चुकी थी। उसे उससे और बात करने से डर लगा, कहीं वह अपने बुद्धिमान शब्दों से उसे शर्मिंदा न कर दे, और उसने उसे प्रांतीय राज्यपाल के पास ले जाने का आदेश दिया, यह कहते हुए:

'महामहिम के लिए एक पागल औरत से बातचीत करना उचित नहीं है।'

प्रांतीय राज्यपाल ने संत अनास्तासिया से विनम्रतापूर्वक पूछा:

'तुम देवताओं को बलिदान चढ़ाने से क्यों इनकार करती हो, जैसा तुम्हारे पिता करते थे? तुमने उन्हें क्यों त्याग दिया और मसीह की पूजा करने क्यों आई? निस्संदेह तुम उसे नहीं जानती: वह यहूदियों के बीच पैदा हुआ था और उन्हें ही अपराधी मानकर मार डाला गया था।'

अनास्तासिया ने उत्तर दिया:

'मेरे घर में भी सोने, चांदी और काँसे के देवता और देवियाँ थीं। मैंने देखा कि वे वहाँ व्यर्थ खड़े रहते थे, केवल पक्षियों के बैठने और मकड़ियों व मक्खियों के रहने के लिए। इसलिए, मैंने उन देवताओं और देवियों को आग में डाल दिया, और उन्हें पक्षियों, मकड़ियों और मक्खियों द्वारा पहुँचाई गई अपमान से मुक्त कर दिया। और आग से वे के सोने, चांदी और तांबे के सिक्कों के रूप में निकले। उस पैसे से मैंने कई भूखे लोगों को खाना खिलाया, नंगों को कपड़े दिए, बीमारों की मदद की, और ज़रूरतमंदों की ज़रूरतें पूरी कीं। और इस प्रकार, उन देवताओं से जो निष्क्रिय और बेकार खड़े थे, मैंने कई लोगों को लाभ पहुँचाया।

ये शब्द सुनते ही प्रांतीय राज्यपाल क्रोधित होकर चिल्लाया:

'मैं तुम्हारे इस अधर्मी कृत्य के बारे में सुनना भी नहीं चाहता।' तब संत मुस्कुरा कर बोले:

'न्यायाधीश, मैं तुम्हारी इस तर्कशक्ति पर हैरान हूँ। तुम मेरे इस काम को धर्महीन कृत्य कैसे कह सकते हो? अगर उन निर्जीव मूर्तियों में एक भी भावना या कोई शक्ति होती, तो उन्हें अपने विनाशकों के हाथों से खुद को आज़ाद कराने से, या अपने विनाशकों से बदला लेने से, या कम से कम, चिल्लाकर आपसे मदद माँगने से क्या रोकता? फिर भी वे अपनी ही मौजूदगी से अनजान हैं; उन्हें नहीं पता कि उनके साथ क्या किया जा रहा है।"

संत के भाषण को बीच में काटते हुए, न्यायाधीश ने कहा:

'हमारे दैवीय राजा ने तुम्हें आज्ञा दी है—कि सभी अनावश्यक बातों को त्याग दो—कि दो में से एक काम करो: या तो देवताओं को बलदिान देने के लिए सहमति दो, या एक भयानक मृत्यु को प्राप्त करो।'

संत ने उत्तर दिया कि मसीह के लिए मरना नष्ट हो जाना नहीं, बल्कि अनंत जीवन में प्रवेश करना है।

[150]लंबी बहस के बाद, जब देखा कि संत अडिग हैं, तो प्रांतीय राज्यपाल ने इसकी सूचना सम्राट को दी। डायोक्लेटियन, अत्यधिक क्रोधित होकर, यह सोचने लगा कि संत अनास्तासिया के साथ क्या किया जाए। उनके एक दरबारी ने सम्राट को सलाह दी कि उसे कैपिटोलिन के पुजारी उल्पियन के हवाले कर दिया जाए, ताकि वह उसे मसीह का त्याग करने के लिए मना सके, या यातनाओं के माध्यम से ऐसा करने के लिए मजबूर कर सके, या, यदि वह झुकने से इनकार कर दे, तो उसे मौत की सजा दे सके; और यदि उसकी मृत्यु के बाद कोई संपत्ति बची, तो उसे कैपिटोलिन ले जाया जाएगा। राजा इस सलाह से प्रसन्न हुआ, और उसने संत अनास्तासिया को सभी देवताओं के प्रधान पुरोहित, उल्पियन के हवाले कर दिया।

उलपियन ने सम्मानपूर्वक उसे अपने घर ले आया, इस उम्मीद में कि वह धमकियों के बजाय चापलूसी से उसे मना लेगा। बहुत से सौम्य आग्रह के बाद, उसने उसके सामने विपरीत वस्तुओं का विकल्प रखा, जिसमें दुनिया की सारी भव्यता और यातना के हर संभव उपकरण समाहित थे, और उन्हें एक-दूसरे के बगल में रख दिया: एक तरफ़ कीमती पत्थर; दूसरी तरफ़ दोधारी तलवारें; यहाँ, कीमती क्रिस्टल की जड़ाई से सुसज्जित सुनहरे सोफे; वहाँ, जलते कोयलों से भरे लाल-गरम लोहे के बिस्तर; यहाँ, हार[151] , बालियाँ, और सोने और मोती के विभिन्न आभूषण; वहाँ, बेड़ियाँ, जंजीरें और लोहे के बंधन। यहाँ चमकीले दर्पण और हर तरह के महिलाओं के आभूषण हैं, जबकि दूसरी ओर मांस नोचने के लिए बनी लोहे की कंघियाँ और कांटे हैं। एक ओर कीमती वस्त्र हैं; दूसरी ओर, टूटे हुए शीशे के टुकड़े और लकड़ी की छीलन, जिनसे यातना देने वाले आम तौर पर शहीदों पर किए गए घावों में रगड़ते थे।

इस विश्वासघाती और चालाक आदमी ने ऐसा क्यों किया? उसने विलासिता की चीज़ों के साथ-साथ यातना के उपकरण क्यों रखे; आनंद देने वाली चीज़ों के साथ-साथ निराशा पैदा करने वाली चीज़ें; और शांति देने वाली चीज़ों के साथ-साथ भयानक चीज़ें? ताकि वह पहले से मसीह की दुल्हन को लुभा सके या बाद वालों से उसका भय पैदा कर सके। लेकिन उसने इन सब पर कोई ध्यान नहीं दिया: वह आराम देने वाली किसी भी चीज़ की इच्छा नहीं करती थी; वह दुख और निराशा पैदा करने वाली वस्तुओं से न तो डरती थी और न ही भागना चाहती थी; और उसने यातना के उपकरणों को महिलाओं के आभूषणों की तुलना में अधिक उत्सुकता से देखा। इस प्रकार, जैसा कि भविष्यवक्ता कहता है, वह शापित व्यक्ति पर यह घटित हुआ: *'दुष्ट ने स्वयं को धोखा दिया है'* (भजन संहिता 36:12)—और विश्वासघाती पुरोहित, यह जाने बिना ही, ने सब कुछ अपनी ही अपमान और लज्जा के लिए व्यवस्थित कर दिया; क्योंकि तब अनास्तासिया ने मसीह के लिए और भी अधिक साहस और प्रेम का प्रदर्शन किया, जिससे मूर्तिपूजक पुरोहित की विश्वासघाती योजना की पूर्ण निरर्थकता और उसकी चालाकी की व्यर्थता उजागर हो गई। जब उसने संत से कहा:

'दोनों में से जो चाहो चुन लो।'

उसने, अपने सामने रखे गए ऐश्वर्य और कीमती खजाने को देखकर, कहा:

'यह सब, हे शैतान, तेरा और तेरी सेवा करने वालों का है, जिनके साथ तू भी अनंतकालिक विनाश में पड़ेगा।'

तब, बेड़ियों और यातना के उपकरणों को देखकर, संत अनास्तासिया ने घोषणा की:

'इन चीज़ों से घिरी हुई, मैं अपने प्रिय वर-वर—मसीह—के लिए और भी सुंदर और मनोहर हो जाऊँगी। मैं इसे चुनती हूँ, और उसे अस्वीकार करती हूँ; मैं इसे अपने प्रिय प्रभु की खातिर प्रेम करती हूँ, और उससे घृणा करती हूँ।'

---

[150] कैपिटोलिन – रोम का केंद्रीय किला, जो कैपिटोलिन पहाड़ी पर स्थित था, जहाँ साम्राज्य के उच्चतम सरकारी संस्थान केंद्रित थे। यहाँ जुपिटर कैपिटोलिनिस का मंदिर था, जिसे रोम का प्रमुख तीर्थस्थल माना जाता था और जहाँ सीनेट अक्सर धार्मिक और राजकीय मामलों पर बैठकें करती थी। यह मंदिर दो बार नष्ट किया गया था, और दोनों ही मौकों पर इसे बड़ी भव्यता के साथ फिर से बनाया गया था। इसे आखिरी बार सम्राट डोमिशियन (ईस्वी 62 या 70 में) द्वारा पुनर्निर्मित किया गया था। मूर्तिपूजक रोम में जुपिटर कैपिटोलिनिस के मंदिर के महापुजारी को बहुत सम्मान प्राप्त था और राज्य में उसका अत्यधिक महत्व था।

[151] मोनिस्ट्रा एक गर्दन का आभूषण है जो एक माला या डोरी से बना होता है जिसमें सिक्कों को माला की तरह पिरोया जाता है। मोनिस्टा का एक दिलचस्प उदाहरण रावेना (इटली) में, सेंट वाइटलिस चर्च में, एक मोज़ेक में पाया जा सकता है, जिसमें सम्राज्ञी थियोडोरा को महिलाओं के साथ दर्शाया गया है; सभी महिलाएं मोनिस्टा पहने हुए हैं, कुछ दूसरों की तुलना में अधिक विस्तृत और कई पंक्तियों के आभूषणों से बने हुए हैं।

तब पुरोहति ने, उस पर तरस खाकर और इस आशा को न छोड़ते हुए कि वह अपना मन बदल सकती है, उसे वचिार करने के लिए तीन दनि का समय दे दयिा। लेकनि शहीद, उदास होकर, बोलीं:

'वलिंब क्यों? तुम मुझे तुरंत क्यों नहीं पीड़ा पहुँचाना चाहते? तुम मुझसे अब जो सुनोगे, वही अंतमि बात होगी: मैं तुम्हारे देवताओं को बलदिान नहीं चढ़ाऊँगी, और न ही मैं तुम्हारी या तुम्हारे राजा की इच्छा पूरी करूँगी; परन्तु मैं युगों के राजा, मेरे एकमात्र अमर परमेश्वर की स्तुति का बलदिान चढ़ाऊँगी, जसिके लिए मैं अपनी आत्मा अर्पति करती हूँ। जहाँ तक उन यातनाओं का प्रश्न है जनिसे तुम मुझे डरा रहे हो, मैं उनका तरिस्कार करती हूँ, क्योंकि मैं मसीह के सवि और कुछ नहीं चाहती, जसिमें अनन्त जीवन है।

पुजारी ने उससे पूछा:

'क्या तुम भी मसीह की तरह की मृत्यु अपने लिए चुनती हो?'

शहीद, मसीह की मृत्यु के बारे में सुनकर, आनंदति हो गई और कहा:

'आमेन, आमेन! मेरे साथ भी ऐसा ही हो, हे मसीह, मेरे राजा!'

पुरोहति ने पूछा:

'"आमेन" शब्द का क्या अर्थ है?'

संत ने उत्तर दयिा:

'तुम इस शब्द, "[152] " को समझने या उच्चारण करने, दोनों के ही अयोग्य हो। कोई भी समझदार व्यक्ति कीमती मूर्रा को सड़ी हुई मटकी में नहीं डालता।'

[153]तब उल्पयिन ने आदेश दयिा कि संत अनास्तासयिा को तीन दनिों के लिए कुछ ऐसी महलिाओं के पास ले जाया जाए जनि्हें वह जानती थी, जो कभी उसकी पड़ोसी और दोस्त हुआ करती थीं, ताकि वे उसे अपने पूर्वजों के देवताओं के पास लौटने के लिए मना सकें। उन चालाक और अधर्मी महलिाओं ने क्या कुछ नहीं कयिा! उन्होंने अनास्तासयिा को दुनयिा की सुंदरता और मठिास की याद दलिाते हुए क्या-क्या सलाह, क्या-क्या कोमल और मनोहर शब्द फुसफुसाए! लेकनि वह संत उस बधरि के समान थीं जो सुनता नहीं, और उस मूक के समान थीं जो अपने होंठ नहीं खोलती। उन तीन दनिों के दौरान उन्होंने न तो भोजन ग्रहण कयिा और न ही कुछ पयिा, बल्कि अपने हृदय में अपने वधू-वर, मसीह से, अनवरत पुकार लगाती रहीं। तीन दनिों के बाद, महापुजारी उल्पयिन ने, यह देखकर कि संत अनास्तासयिा अपने धर्म के बयानों में एक अटूट स्तंभ और एक अचल पर्वत की तरह अडगि थीं, उन्हें यातना देने की सज़ा सुनाई। लेकनि पहले, इस दुष्ट व्यक्ति ने, उसकी सुंदरता से मोहति होकर, मसीह की पवत्रि कबूतर को अपनी अशुद्धता से कलंकति करने का प्रयास कयिा। हालाँकि, जब इस अधर्मी व्यक्ति ने उसे छूने का प्रयास कयिा, तो वह अचानक अंधा हो गया; उसके सरि में एक भयानक दर्द उठा, और, जैसे पागल हो गया हो, वह चलि्लाया और अपने देवताओं से मदद की भीख माँगने लगा। उसने आदेश दयिा कि उसे मूर्तपिूजक मंदरि ले जाया जाए, इस उम्मीद में कि उसे उन लोगों से मदद मलिेगी जनिकी वह सेवा करता था, लेकनि मदद के बजाय, उसे बहुत नुकसान हुआ, और जीवन के बजाय - मृत्यु; क्योंकि उसने अपनी दुष्ट आत्मा को त्याग दयिा और अपने देवताओं के पास - नरक में - जाने के लिए नकिल पड़ा। इस चमत्कार की खबर दूर-दूर तक फैल गई, जबकि पवत्रि शहीद अनास्तासयिा को कोई नुकसान नहीं हुआ। उस स्थान को छोड़कर, वह अपनी पूर्वोक्त आध्यात्मकि बहन थयिोडोटा के पास गई, जो अभी भी शहर के राज्यपाल ल्यूकेडयिस के घर में ठहरी हुई थी, और उसने उसे वस्तिार से सब कुछ बताया जो उसने सहा था, और उस चमत्कार के बारे में भी बताया जो परमेश्वर ने उसके माध्यम से कयिा था, और उस पर अपनी दया दखिाई थी। कुछ ही समय बाद, ल्यूकेडयिस बथिनियिा से लौट आया। उसने अपनी पुरानी आदतें फरि से शुरू कर दीं और पहले की तरह, बारी-बारी से चापलूसी और धमकयिों से थयिोडोटा को दो दुष्टतापूर्ण कार्य करने के लिए मनाने की कोशशि की – उसके अधर्मी देवताओं की पूजा करना और उसके साथ एक ऐसा ववािह करना जो उसके लिए शर्मनाक और घृणति था। अंत में, अपने सभी प्रयासों को समाप्त कर देने और यह महसूस करते हुए कि जब तक अनास्तासयिा वहाँ रहेगी तब तक वह कुछ भी हासलि नहीं कर सकता, वह क्रूर व्यक्ति और भी अधकि क्रोध से भर गया:

---

[152] आमीन एक हब्रि शब्द है जसिका अर्थ है: सचमुच, वास्तव में, ऐसा ही हो। यह शब्द पुराने और नए नयिम दोनों की पवत्रि पुस्तकों में अक्सर आता है, और एक अवसर पर इसका प्रयोग स्वयं परमेश्वर के पुत्र के लिए भी कयिा गया है, जो अनंत सत्य हैं (प्रकाशतिवाक्य 3:14)। प्राचीन काल से, 'आमीन' शब्द का उपयोग ईसाई पूजा में भी कयिा जाता रहा है।

[153] एन्फपिेट्स उच्चतम क्षेत्रीय राज्यपाल का पदनाम था, जसिके अधकिार के अधीन कई प्रांत थे, जनिमें से प्रत्येक का अपना शासक होता था, जसि हेगेमोन के नाम से जाना जाता था।

उसने अनास्तासयिा को बँधवाकर मुकदमे के लिए पेश कयिा, जबकि उसने थयिोडोटा को उसके बच्चों के साथ बँधे हुए, बथिनियिा में एम्फीपेट नकिति के पास भेजा, और उसे एक पत्र में थयिोडोटा के बारे में सब कुछ बता दयिा था।

जब धन्य थयिोडोटा को इस प्रोकॉन्सल के सामने लाया गया, तो उसने पूछताछ के दौरान उसे यातनाओं से डराना शुरू कर दयिा। इस पर थयिोडोटा का सबसे बड़ा बेटा, एवोड नामक एक छोटा लड़का, प्रोकॉन्सल से बोला:

'हे न्यायाधीश, हम उन यातनाओं से नहीं डरते जो शरीर को क्षीण करती हैं, बल्कि आत्मा को अमरत्व प्रदान करती हैं। बल्कि, हम उस ईश्वर से डरते हैं, जो आत्मा और शरीर दोनों को अग्नमिय गेहेन्ना में नष्ट कर सकता है।'

ये शब्द सुनते ही, न्यायाधीश ने आदेश दयिा कि लिड़के को उसकी माँ के सामने ही तब तक कोड़ा मारा जाए जब तक कि वह खून से लथपथ न हो जाए। यह देखकर उसकी माँ प्रसन्न हुई और उसने दविय शब्दों से अपने पुत्र को बल दयिा, उसे हर पीड़ा को साहस से सहने के लिए प्रोत्साहति कयिा। इस यातना के बाद, थयिोडोटा को गरि्टक नामक एक नरि्लज्ज व्यक्ति के हवाले कर दयिा गया, ताकि वह उसे अपवत्रि कर सके। लेकनि जैसे ही वह परमेश्वर की पवत्रि दासी के पास पहुँचा और उसे छूने का प्रयास कयिा, उसने उसके बगल में एक तेजस्वी युवक को खड़ा देखा; उस युवक ने धमकी भरी नज़रों से उसे देखा और उसके चेहरे पर इतनी ज़ोर से मुक्का मारा कि वह खून से लथपथ हो गया। एम्फीपैटस ने इस चमत्कार को स्पष्ट रूप से देखा, लेकनि उसने परमेश्वर को पहचानने के बजाय, जो पवत्रिों की पवत्रिता की रक्षा करता है, वह और भी अधकि क्रोधति हो गया, और इसे जादू-टोने का परणिाम मान लयिा। उसने भट्टी को यथासंभव गर्म करने और माँ और उसके तीन बच्चों को उसमें फेंकने का आदेश दयिा। और संत थयिोडोटा, अपने गर्भ के धन्य फलों के साथ, ईश्वर को प्रसन्न करने वाला बलदिान बन गईं: वह आग की लपटों में मर गईं[154] ।

उस समय, संत अनास्तासयिा को इल्लरियिन राज्यपाल द्वारा बेड़ियों में जकड़कर रखा गया था।

यह आदमी लालची था, और यह सुनकर कि अनास्तासयिा के पास बहुत सारी संपत्ति है, उसने उसे गुप्त रूप से अपने पास लाने का आदेश दयिा और उससे कहा:

'मैं जानता हूँ कि तुम अमीर हो और तुम्हारे पास बहुत पैसा और संपत्ति है। फरि भी तुम ईसाई धर्म का पालन करती हो, जसिे तुम स्वयं छपिाती नहीं हो। तो अपने मसीह की आज्ञा का पालन करो, जो तुम्हें सभी धन-दौलत को तुच्छ समझने और गरीब होने की आज्ञा देता है। अपनी संपत्ति मुझे सौंप दो और मुझे अपनी जायदाद का वारसि बना लो।' ऐसा करने से आपको दोहरा लाभ होगा: आप मसीह की आज्ञा का पालन करेंगी और हमारे हाथों से मुक्त होकर, आप बनिा कसिी भय या बाधा के अपने ईश्वर की सेवा कर सकेंगी।

अत्यंत बुद्धमिान अनास्तासयिा ने समझदारी से उत्तर दयिा:

'सुसमाचार में मेरे प्रभु का एक वचन है: *"अपना सामान बेच डालो और गरीबों को दे दो, और तुम्हारे लिए स्वर्ग में खज़ाना रहेगा"* (मत्ती 19:21)। कौन इतना मूर्ख होगा कि एक धनी व्यक्ति को वह दे दे जो गरीबों का है? कसिमें इतना अभाव होगा कि वह आपको—जो वलिासति में डूबे हुए हैं और सुख-भोग में जीवन यापन करते हैं—गरीबों का भोजन दे दे? यदि मैं तुम्हें भूखा-प्यासा, नग्न और बीमार देखूँ, और एक कालकोठरी में बंद देखूँ, तो मैं तुम्हारे लिए, जैसा कि उचति है, वह सब कुछ करूँगी जो मसीह ने हमें आज्ञा दी है: मैं तुम्हें खाना खलिाऊँगी, पानी पलिाऊँगी, कपड़े दूँगी, तुम्हें देखने आऊँगी, तुम्हारी सेवा करूँगी, और तुम्हारी मदद करूँगी, और तुम्हें वह सब कुछ प्रदान करूँगी जसिकी तुम्हें ज़रूरत है (मत्ती 26:34–45)।

इन शब्दों से राज्यपाल क्रोधति हो गया और अपने गुस्से में, उसने संत को एक अंधेरी कोठरी में बंद करने और तीस दनिों तक भूखा रखने का आदेश दयिा। लेकनि वह अपनी आशा—प्रभु मसीह—से जीवति रही: वह उसकी मीठी पोषण और उसके दुख में उसका सांत्वना थे। हर रात पवत्रि शहीद थयिोडोटा उसे दखिाई देतीं, उसके हृदय को आनंद से भरतीं और उसे बल प्रदान करतीं। अनास्तासयिा ने उस धन्य आत्मा से लंबी बात की और उससे कई प्रश्न पूछे। अन्य बातों के अलावा, उसने उससे पूछा:

'मौत के बाद आप मेरे पास कैसे आती हैं?'

थयिोडोटा ने उसे समझाया कि शहीदों की आत्माओं को ईश्वर द्वारा एक वशिेष अनुग्रह प्रदान कयिा जाता है, ताकि इस पृथ्वी से उनके प्रस्थान के बाद भी, वे अपनी इच्छानुसार कसिी के पास आ सकें, उनसे बातचीत कर सकें और उन्हें सांत्वना दे सकें।

---

[154] संत थयिोडोटा और उनके बेटों के दुख और शहादत का स्थान बथिनियिा का नकियिा शहर था।

तीस दनि बीत जाने के बाद, राज्यपाल ने जब देखा कि अनास्तासिया भूख से कमज़ोर नहीं हुई थी और स्वस्थ तथा तेजस्वी बनी हुई थी, तो वह रक्षकों पर इस शक में आग-बबूला हो गया कि वे उसे भोजन पहुँचा रहे थे। अंत में, उसने उसे एक अधिक सुरक्षित कालकोठरी में रखने का आदेश दिया, प्रवेश द्वार को अपनी मुहर से सील कर दिया, और सबसे भरोसेमंद पहरेदारों को तैनात कर, संत अनास्तासिया को और तीस दिनों तक भूखा और प्यासा रखा। और इस समय के दौरान, पवित्र शहीद ने दिन-रात केवल अपने आँसुओं पर जीवन यापन किया और ईश्वर से भक्तिपूर्वक प्रार्थना की। इन तीस दिनों के अंत में, राज्यपाल ने अनास्तासिया को कालकोठरी से बाहर निकाला और यह देखकर कि उसका चेहरा नहीं बदला था, उसे विभिन्न अपराधों के लिए मृत्युदंड पाए अन्य लोगों के साथ मृत्युदंड सुना दिया। यह आदेश दिया गया कि उन सभी को समुद्र में डुबो दिया जाए।

दोषियों में यूटकियिन नाम का एक धार्मिक व्यक्ति भी था, जिससे मसीह के लिए उसकी सारी संपत्ति छीन ली गई थी; उसे भी उसी मृत्युदंड की सजा दी गई। और इस प्रकार वे सभी एक जहाज पर चढ़ा दिए गए और समुद्र में ले जाया गए। जब वे गहरे पानी में पहुँच गए, तो सैनिकों ने जहाज में कई छेद कर दिए, जबकि वे स्वयं एक नाव में चढ़ गए जो इस उद्देश्य के लिए विशेष रूप से तैयार की गई थी और किनारे की ओर नौका चलाकर चले गए। और जैसे ही जहाज़ डूबने वाला था, जहाज़ पर सवार लोगों ने अचानक पवित्र शहीद थियोडोटा को पाल संभालते और जहाज़ को तट की ओर ले जाते देखा, जहाँ वह जल्द ही पहुँच गया। डूबने से अपनी मुक्ति देखकर, वे सभी आश्चर्यचकित हो गए और यूटकियिन और अनास्तासिया नामक दो ईसाइयों के पैरों पर गिर पड़े, और उनसे ईसाई धर्म की शिक्षा देने का आग्रह किया।

सुरक्षित रूप से किनारे पर पहुँचने के बाद, उन्होंने यूटकियिन और अनास्तासिया से धर्म की शिक्षा प्राप्त की और बपतिस्मा लिया। कुल मिलाकर एक सौ बीस आत्माएँ थीं जो डूबने से बच गई थीं और मसीह में विश्वास करने लगी थीं।

जब राज्यपाल को जल्द ही इस बात की जानकारी मिली, तो वह क्रोध से आग-बबूला हो गया और उन्हें पकड़ने तथा हर तरह की यातनाएँ देकर मार डालने का आदेश जारी किया; जहाँ तक शहीद अनास्तासिया का सवाल है, उसने उसे चार खंभों के बीच खींचकर जलाने का आदेश दिया। इस प्रकार बंधन से मुक्ति पाने वाली धन्य शहीद ने अपना बलिदान पूरा किया – वह देह के बंधनों से मुक्त हो गईं और स्वर्ग की प्रतीक्षित स्वतंत्रता में चली गईं[155] । उनकी पवित्र देह, जो आग से अछूती थी, अपोलोनारिया नामक एक धर्मनिष्ठ महिला ने इगमेन की पत्नी से प्राप्त की, जिसने उसे अपने अंगूर के बाग में सम्मानपूर्वक दफनाया। समय आने पर, जब चर्च पर अत्याचार समाप्त हो गया, तो उसने शहीद की कब्र के ऊपर एक चर्च का निर्माण किया।

कई और वर्ष बीत गए, और संत अनास्तासिया के पवित्र अवशेष प्रसिद्ध हो गए। फिर, उन्हें बड़े सम्मान के साथ, शहर की सुरक्षा और मोक्ष के लिए, हमारे ईश्वर मसीह की महिमा के लिए, साम्राज्यीय शहर कॉन्स्टेंटिनोपल में स्थानांतरित कर दिया गया, जो पिता और पवित्र आत्मा के साथ, एक ईश्वरत्व में, सदा के लिए महिमामय हैं। आमीन।

कॉन्टाकियन, स्वर 2:

जो लोग परीक्षाओं और दुखों के बीच आपकी कलीसिया की शरण लेते हैं, उन्हें आप अनास्तासिया में निवास करने वाली दैवीय कृपा से धन्य वरदान प्रदान करती हैं: क्योंकि आप सदा संसार पर चंगाई प्रदान करती हैं।

5 जनवरी

23 दिसंबर (पुराना कैलेंडर)

[155] यह लगभग 304 ईस्वी, 22 दिसंबर को हुआ था।

हमारे पवत्रि पति नफिोन, साइप्रस के बशिप का जीवन

23 दसिंबर को स्मरणोत्सव

आदरणीय नफिोन पफ्लागोनयिा क्षेत्र के, प्लाजयिन नगर के नविासी थे[156] , और वे अगपटिस नामक एक प्रतष्ठिति व्यक्ति के पुत्र थे। अपने युवा दनिों में, उन्हें राज्यपाल सव्वेटयिस के हवाले कर दयिा गया था, जन्हिें सम्राट कॉन्स्टेंटनि द ग्रेट द्वारा कॉन्स्टेंटनिोपल से पफ्लागोनयिा भेजा गया था। तब राज्यपाल ने उस लड़के को अपने मुख्य प्रबंधक[157] के साथ अपनी पत्नी से शक्षिा ग्रहण करने के लिए कॉन्स्टेंटनिोपल भेजा। वहाँ, उस लड़के ने राज्यपाल के घर में रहने वाले पादरी पीटर के अधीन अध्ययन करना शुरू कयिा, और उसने लगन से और सफलतापूर्वक अध्ययन कयिा, क्योंकि वह पढ़ाई में प्रतभिाशाली था। छोटी उम्र से ही, नफिॉन दयालु, सौम्य, वनिम्र और नम्र था, और उसे चर्च जाना पसंद था। हालाँकि, जब वह कशिोरावस्था में पहुँचा, तो वह धीरे-धीरे बुरे साथयिों के बहकावे में आने लगा: युवा पुरुष, यदि उनका पालन-पोषण ईश्वर के भय में नहीं होता है, तो वे बुरे उदाहरणों से आसानी से प्रभावति हो जाते हैं। और ठीक उसी तरह, वयस्कों में भी, एक अच्छा व्यक्ति दुष्टों द्वारा आसानी से बहकाया जाता है, जैसा कि कहा गया है: *'तुम वद्रिोहयिों द्वारा बहकाए जाओगे'* (भजन संहति 17:27), यह युवाओं के बीच और भी अधकि बार होता है, जो स्वाभावकि रूप से अच्छाई की तुलना में बुराई की ओर अधकि झुकाव रखते हैं, जैसा कि लिखा है: *'मनुष्य का मन उसकी जवानी से ही बुरा है'* (उत्पत्ति 8:21)। और इस प्रकार युवा नफिॉन ने एक आलसी और सुस्त जीवन जीना शुरू कर दयिा, बनिा कसिी रोक-टोक के खाने-पीने और मद्यपान में लप्ति रहने लगा; उसने बगिड़ैल युवकों से फजिूल की बातें और अभद्र भाषा सीखी; वह स्कोमोरोख्स के प्रदर्शनों में जाने लगा, और फरि दुष्ट कर्मों में लप्ति हो गया, अपनी सारी रातें अपने साथयिों के साथ अन्याय में बतिाने लगा, और अपने आपको अशुद्ध पापों से कलंकति करने लगा, और इस सब के ऊपर, उसने सब से चोरी करना, झगड़ना और लड़ाई करना शुरू कर दयिा, और वह दूसरे युवकों के लिए एक प्रलोभन था, क्योंकि न केवल उसने स्वयं हर तरह के अन्याय कए, बल्कि उसने कई अन्य लोगों को भी उसी में फँसाया। नफिोंट का एक परचिति, जसिका नाम वासलिी था, लगातार उससे कहता था:

'हाय तेरी कस्मित, नफिोंट! तू शरीर से ज़दिा है, लेकनि तेरी आत्मा पहले ही मर चुकी है, और तेरा सर्फि़ साया ही लोगों के बीच घूम रहा है।'

लेकनि नफिोंट या तो इन बातों पर ध्यान नहीं देता या अपने पापों पर रोते और वलिाप करते हुए टूट पड़ता; फरि भी, अपनी बुरी आदतों को जारी रखते हुए, वह दुष्ट कर्मों में ऐसे डूब रहा था जैसे समुद्र में, और, अपनी मुक्ति से पूरी तरह नराश होकर, वह कहता:

'मैं तो पहले ही बर्बाद हो चुका हूँ और पश्चाताप की राह पर वापस नहीं लौट सकता - तो कम से कम मैं यहाँ इस दुनयिा की सुख-सुवधिाओं का आनंद तो लूँगा।'

और शैतान ने नफिोंट के दलि को इतना कठोर कर दयिा था कि वह अब बलि्कुल भी प्रार्थना नहीं कर सकता था: क्योंकि ऐसा लगता था मानो उसके दलि पर हमेशा एक पत्थर पड़ा हो। और वह महलिा जसिके साथ नफिोंट रहता था, उसके पतति जीवन को देखकर, भारी मन से बोली:

'हाय मेरा क्या हुआ!'

और कई बार उसने उसे समझाया, उससे झगड़ा कयिा, डांटा और पीटा, लेकनि वह सुधरने वाला नहीं रहा। यह इस बात को दर्शाने के लिए बताया गया है कि ईश्वर की दया कतिनी महान है, जसिके द्वारा वह अयोग्य लोगों से सज्जन और पापयिों से धर्मी बनाता है - और यह कि मानव जाति के प्रति ईश्वर के प्रेम से बढ़कर कोई पाप नहीं है। यह हम पापयिों के लिए एक उदाहरण हो, ताकि हम, जो अनेक अपराधों में डूबे हुए हैं, नराश न हों, बल्कि पश्चाताप के द्वारा सुधारे जाएँ, जैसे नफिॉन सुधारा गया था। क्योंकि वह, यों कहए, पाप का पात्र था, परन्तु बाद में, सच्चे पश्चाताप के द्वारा, पवत्रि आत्मा का पात्र बन गया, जैसा कि हम अब नम्निलखिति वृत्तांत से जानेंगे।

नफिॉन का नकिोदेमस नाम का एक मत्रि था। एक दनि, नफिॉन उसके पास आया; नकिोदेमस ने उसे देखा और उसके चेहरे को देखकर स्तब्ध रह गया। नफिॉन ने उससे पूछा:

---

[156] एशयिा माइनर के उत्तरी भाग में।

[157] प्रोटो-वेस्टएिरयिन – कॉन्स्टेंटनिोपल के शाही दरबार के कार्यालयों में से एक। प्रोटो-वेस्टएिरयिन के पास शाही वस्त्रों की समग्र देखरेख होती थी।

'तुम मुझे ऐसे क्यों देख रहे हो जैसे मैं कोई अजनबी हूँ?'

निकोदेमस ने उत्तर दिया

'भाई, मेरी बात मानो, मैंने तुम्हें पहले कभी इस हालत में नहीं देखा: तुम्हारा चेहरा एक इथियोपियाई के चेहरे जितना भयानक है।'

इन शब्दों को सुनकर वह युवक डर गया, और साथ ही उसे शर्म भी आई; अपने हाथ से अपना चेहरा ढककर, वह दुख में चला गया। रास्ते में, उसने अपने आप से कहा:

– हाय मुझ पापी की! अगर इस दुनिया में ही मेरा आत्मा और शरीर काला है, तो परमेश्वर के न्याय में मैं कैसा होऊँगा? मैं परमेश्वर के साक्षात सामने कैसे प्रकट होऊँगा? हाय मुझ दीन-हीन मनुष्य की! अब तू कहाँ है, हे मेरी आत्मा? हाय मुझ पर! मैं क्या करूँ? क्या मैं अब भी पश्चाताप कर सकता हूँ? क्या कोई है जो मुझे पश्चाताप का मार्ग दिखा सके और मुझे बता सके कि क्या मैं अब भी उद्धार पा सकता हूँ? मैं ईश्वर से कैसे कहूँ, 'मुझ पर दया करो!' – जबकि मैंने उनके सामने इतने दुष्ट कर्म किए हैं?

और निकोन ने इसके अलावा भी अपने आप से बहुत कुछ कहा; अंत में, वह दुखी और थका हुआ घर लौट आया, उसके भीतर विरोधी विचारों का संघर्ष हो रहा था। एक अच्छे विचार ने उससे कहा, 'आज रात ईश्वर से प्रार्थना कर: वह तेरे साथ अपनी इच्छा के अनुसार व्यवहार करेगा।' लेकिन एक बुरे विचार ने इसका विरोध करते हुए कहा, 'यदि तू प्रार्थना करने उठेगा, तो तू अपना होश खो देगा, तू एक पवित्र मूर्ख बन जाएगा, और सब लोग तुझ पर हँसेंगे।'

शैतान ने उसके मन में भय भर दिया और उसकी आत्मा को बहुत कष्ट पहुँचाया। लेकिन उसने कुछ हिम्मत जुटाकर अपने आप से कहा:

'जब मैं व्यभिचार में डूबा जीवन जी रहा था, तो मुझे कभी कोई नुकसान नहीं हुआ; तो अब, जब मैं ईश्वर से प्रार्थना करना चाहता हूँ, तो मुझे कोई नुकसान नहीं होगा, है ना? शापित हो जा, ऐ अशुद्ध और चालाक दानव, जो मेरे मन में ये विचार डाल रहा है!'

उस रात, निकोन अपने बिस्तर से उठे और छाती पीटते हुए रोने लगे, और कहने लगे:

'पहले के वर्षों में मैं कितनी धार्मिकता और सदाचार से रहता था; लेकिन अब, मैं अपने पापों से बुरी तरह घायल होकर मर चुका हूँ। लेकिन, *"हे प्रभु मेरे परमेश्वर, मैं तुझ में शरण लेता हूँ; मुझे बचा, कहीं ऐसा न हो कि शैतान एक सिंह की तरह मेरी आत्मा को छीन ले और फाड़ डाले, जब मुझे बचाने वाला कोई न हो"* (भजन संहिता 7:3)।'

जब वह प्रार्थना में खड़ा था, पूर्व की ओर देखते हुए, अचानक एक घना अंधकार उस पर छा गया, जो उसके पास आता गया और उसे कमजोरी, बीमारी और असीम भय में डुबो गया। भयभीत होकर, निकों अपने बिस्तर पर लेट गया, और अपने पापों पर रोते और विलाप करते हुए पड़ा रहा। सुबह वह चर्च गया; अपनी आँखें उठाकर, उसने परमेश्वर की माता, सर्वपवित्र कुँवारी मरियम के प्रतिमाचित्र को देखा, और पुकारा:

'हे ईसाइयों की मध्यस्थ, हे आनंदमयी और पवित्र एक, मुझ पर दया करो! अपनी महान दया से मेरी सहायता करो, क्योंकि आप पश्चाताप करने वालों की आशा और शरण हैं।'

इन शब्दों पर, परमेश्वर की माता की प्रतिमा मुस्कुराई, और उनका मुख आनंदित हो गया। निकोन इस चमत्कार को देखकर चकित रह गया; वह आनंदित हुआ और उसका हृदय प्रसन्न हो गया, और उसने कहा:

'हे मानवजाति के प्रति ईश्वर के प्रेम की गहराई! हे प्रभु, तेरा दयालुता कितना महान है, जो तू उन पर दिखाता है जिन्होंने तेरे सामने पाप किया है! उनके लिए तूने अपनी परम पवित्र माता को दिया है, ताकि वह तेरी महिमा के सामने मध्यस्थता कर सकें!'

एक लंबी प्रार्थना के बाद, प्रेम से परमेश्वर की परम पवित्र माता की प्रतिमा को चूमकर, वह बाहर गया, अपने आप से कहता हुआ:

'देख, हे दीन आत्मा, परमेश्वर हमसे कितना प्रेम करते हैं, फिर भी हम स्वयं उनसे दूर भागते हैं: देख, उन्होंने हमें अपनी परम पवित्र माता को हमारी मध्यस्थ के रूप में दिया है, फिर भी हम इस सहायक को भी अस्वीकार कर देते हैं।'

उसके बाद, शैतान उसे एक सपने में एक ऐसे जवान लड़के के रूप में दिखाई दिया जो कभी उसका दुष्टता में साथी था; वह वहां उदास खड़ा था, मानो गहरे दुख में हो; निकोन ने उसे देखा और कहा:

'तुम इतने दुखी क्यों हो?'

शैतान ने उत्तर दिया:

'आज तीन दनि हो गए जब तुम अपने मत्रि नकिोदेमस के पास गए और वशि्वास से मुँह मोड़ लयिा: यही बात मुझे दुख पहुँचाती है, और मैं यह सहन नहीं कर सकता कि तुमने मुझे ठुकरा दयिा है।'

तब नफिॉन ने कहा:

'तुम्हें यह इतना दुख क्यों हो रहा है?'

लेकनि शैतान मुड़ गया और उसने उसे कोई जवाब नहीं दयिा। तुरंत नफिॉन जाग उठा; उसे एहसास हुआ कि उसके पश्चाताप से शैतान दुखी था। वह जल्दी से उठा, चर्च गया और परम पवत्रि ईश्वर की माता की उस प्रतमिा पर अपना मन और आँखें टकिाकर प्रार्थना करने लगा, जब तक कि उसने उन्हें फरि से मुस्कुराते हुए नहीं देखा और अपने हृदय में दवि्य मठिास महसूस नहीं की।

एक दनि, प्रार्थना करने के लएि चर्च जाते समय, नफिॉन ने सड़क पर एक आदमी को अपमानजनक व्यवहार करते देखा और मन ही मन उसकी नदिा की। ईश्वर के घर में प्रवेश करने पर और, अपनी आदत के अनुसार, प्रतमिा को देखने पर, उसने अचानक ईश्वर की अतपिवत्रि माता को क्रोधति और कठोर चेहरे के साथ, उससे मुंह मोड़े हुए देखा। नफिोन भयभीत हो गया और अपनी दृष्टनिीची करके, मन ही मन कहने लगा:

'हाय, मैं पापी! मुझे केवल एक ही आनंद था—हे देवी, आपकी परम पवत्रि प्रतमिा; अब वह भी मुँह फेर रही है, और कसिलएि, मुझे नहीं पता!'

तब, मन में वचिार करते हुए, उसे अचानक याद आया कि उसने पापी को कैसे दोषी ठहराया था, और उसे एहसास हुआ कि ईश्वर की माता ने उससे अपना मुख इसलएि मोड़ा था। ऊँचे स्वर में रोते हुए, उसने कहा:

'हे ईश्वर, मुझे, एक पापी को, क्षमा करें: क्योंकि मैंने आपके गौरव और आपके अधकिार का अतक्रिमण कयिा है और आपके न्याय के सामने अपने पड़ोसी को दोषी ठहराया है; लेकनि हे प्रभु, मुझ पर दया करें, क्योंकि मेरी आत्मा आप पर भरोसा करती है – अब से मैं फरि कभी अपने भाई को दोषी नहीं ठहराऊंगा।'

नफिोन ने रोते हुए वस्तिार से कहा, और प्रतमिा को एक बार फरि देखकर पाया कि वह पहले की तरह मुस्कुरा रही थी; और तब से उसने कसिी पर भी नर्णिय सुनाने से बचने के लएि बहुत सावधानी बरती। ऐसा हमेशा होता था कि जब भी वह कसिी भी तरह से पाप करता, तो परमेश्वर की अतपिवत्रि माता की प्रतमिा अपना मुख फेर लेती थी, और इससे नफिों को एक सबक मलि जाता था और वह अपने आपको सुधार लेता था।

एक दनि, जब नफिोंट बाल्टी से कुएँ से पानी नकिाल रहा था, तो शैतान ने उसे धक्का दे दयिा; और वह दोनों पैरों से फसिलकर कुएँ में गरि पड़ा। गरिते समय, वह बाल्टी से चपिक गया और चल्लिाया:

'हे माता, मेरी मदद करो!'

और तुरंत ही वह कुएँ के ऊपर एक लट्ठी पर बनिा कसिी चोट के खड़ा हुआ। उस समय से, यह महसूस करते हुए कि परमेश्वर की माता उसकी रक्षा कर रही थीं, नफिॉन के होठों पर हमेशा उनका नाम रहता था। इसके बाद, वह बीमार पड़ गया – मसीह के पुनरुत्थान के पर्व से लेकर मध्य-लेंट तक – और इस बीमारी के दौरान उसने कुछ और नहीं कहा सवािय:

'महमिा मेरे ईश्वर को, महमिा मेरी सहायकिा, सर्व-पवत्रि कुँवारी मरयिम को।'

मध्य-लेंट बुधवार से पहले वाले सोमवार को, उन्होंने इस प्रकार प्रार्थना की:

'हे मेरे प्रभु परमेश्वर, यह अनुग्रह कर कि मैं मध्य-लेंट पर तेरे पवत्रि रहस्यों में भाग ले सकूँ, क्योंकि मेरी आत्मा तेरे शरीर से पोषण पाने की अत्यंत इच्छा रखती है।'

तब वह सो गया, और उसे एक दर्शन हुआ: दो अत्यंत तेजस्वी महलिाएँ मर्रिा-वाहकों की तरह उसके बस्तिर के पास से गुज़रीं – एक, शाही बैंगनी चोगा पहने हुए, जैतून की टहनी पकड़े हुए थी; दूसरी, जो उसकी तरह ही थी, उसके पीछे-पीछे एक छोटा पात्र लेकर चल रही थी जसिमें कुछ पवत्रि अवशेष थे और पवत्रि तेल में डुबोई हुई एक टहनी थी; बस्तिर के पास पहुँचकर, वे रुक गईं। और शाही बैंगनी वस्त्र वाली महलिा ने दूसरी से कहा:

'देखो, अनास्तासयिा, यह युवक कसि बीमारी से पीड़ति है?' अनास्तासयिा ने अपनी[158] को उत्तर दयिा:

'मेरी मालकनि, वह अपनी अनयिंत्रति जीभ के कारण पीड़ति है; क्योंकि जब वह स्वस्थ था, तो उसके होंठ बोलना कभी बंद नहीं करते थे, और अब प्रभु उसे दंड दे रहे हैं ताकि वह संसार के सभी लोगों के साथ दंडति न हो; क्योंकि ईश्वर

[158] यह, बेशक, पवत्रि शहीद अनास्तासयिा, दासत्व से मुक्तदिाता, का संदर्भ है, जनिका पर्व दविस 22 दसिंबर को मनाया जाता है।

उससे बहुत प्रेम करते हैं और उसे दंड दे रहे हैं; और आप, मेरी मालकनि, यदि आप चाहें, तो उस पर दया करें और उसकी मदद करें।'

शाही बैंगनी परिधान में सजी रानी ने उत्तर दिया:

– मैं उस पर दया करूँगी; बस उसे वहाँ ले चलो जहाँ हम जा रहे हैं। अनास्तासिया ने उसका हाथ पकड़ा और उसे पवित्र प्रेरितों के चर्च में ले गई। फिर रानी, शाही बैंगनी रंग के परिधान में, उससे बोली:

'वेदी पर जल रहे दीपक का कुछ तेल लो और उसे सिर से पैर तक अभिषेक करो।'

तो उसने उस पर अभिषेक किया और कहा:

'देखो, हे देवी, मैंने आपकी आज्ञा का पालन किया है।'

शाही बैंगनी वस्त्र धारण किए महिला मुस्कुराई और बोली:

'यह दया का वह संकेत है जिसके लिए हम आए हैं।'

और उसने निफिॉन को अपने हाथ में पकड़ी हुई जैतून की टहनी देते हुए कहा:

'देखो और समझो कि यह टहनी प्रभु की कृपा से है; मैं यह तुम्हें इसलिए देती हूँ क्योंकि अब परम उदार ईश्वर की दया तुम पर बरस चुकी है, और अब तुम्हें राक्षसों से लड़ना है और उन्हें उतनी ही आसानी से परास्त करना है जितनी आसानी से तुम किसी सरकंडे या सूखे पुआल को कर सकते हो।'

निफिोन उनके चरणों में झुक गया और, जागने पर, उसे एहसास हुआ कि यह दर्शन परमेश्वर की परम पवित्र माता का आशीर्वाद था; वह तुरंत स्वस्थ हो गया और अपने बिस्तर से उठ गया। मंगलवार को उसने खुद को मजबूत करने के लिए कुछ भोजन लिया, और मध्य-लेंट के ठीक उसी दिन वह चर्च आया और, बड़ी खुशी के साथ, दिव्य रहस्यों को ग्रहण किया। इस प्रकार, ईश्वर की सहायता से, धन्य निफिोंट ने अपना पूर्व पापी जीवन त्याग दिया, संसार से अलग हो गए और एक भिक्षु बन गए। उन्होंने तपस्या में खुद को समर्पित कर दिया और अपने शरीर को दंडित करते हुए तथा उसे अपनी आत्मा के अधीन करते हुए, कठोर तपस्या और सख्त पश्चाताप में अपने दिन बिताए। वह व्यर्थ की बातों से अपने होठों की रक्षा करने का बहुत ध्यान रखते थे, और उससे भी अधिक अश्लील भाषा और बदनामी से, और यह नियम बना लिया था कि यदि किभी लापरवाही से कोई अश्लील या अपमानजनक शब्द बोल दिया, तो वे अपने चेहरे पर चालीस बार जोर से प्रहार करेंगे। हालाँकि, कभी-कभी वे अपने मुँह में एक पत्थर रख लेते थे और उसे लंबे समय तक वहीं रखते थे, और अपने आप से कहते थे:

'हे अधर्मी, किसी भी दुष्ट वचन को बोलने से तो पत्थर खाना तेरे लिए बेहतर है।'

अक्सर, झोपड़ी में खुद को बंद करके और नग्न होकर, वह अपने पूरे शरीर पर हाथ में आने वाली किसी भी चीज़ से इतनी ज़ोर से प्रहार करता कि किभी-कभी उसके घावों से मांस के टुकड़े गिर पड़ते। इस प्रकार वह अपने अदृश्य शत्रु के विरुद्ध दृढ़ता से लड़ता था, पर शत्रु भी उसके विरुद्ध एक भयंकर युद्ध छेड़े हुए था, उस पर हर प्रकार की बुराइयाँ डालता और उसकी अजेय साहस को जीतने का प्रयास करता था। जब वह प्रार्थना कर रहा होता, तो राक्षस उसके सामने प्रकट होता - कभी-कभी एक पक्षी के रूप में जो उसके सामने फड़फड़ाता, कभी-कभी एक काले कुत्ते के रूप में जो उस पर झपटता - उसे डराने और उसकी प्रार्थना में बाधा डालने के लिए, लेकिन वह क्रॉस के चिह्न से राक्षस को भगा देता। जब उसे भूख लगती, तो दानव उसके लिए तरह-तरह की मछलियाँ और मांस के व्यंजन तथा स्वादिष्ट भोजन लाता, लेकिन वह धन्य व्यक्ति तब कहता:

– भोजन हमें ईश्वर के करीब नहीं लाएगा[159] , – अपना भोजन खाओ, शैतान, या इसे उन लोगों तक पहुँचाओ जो अपने पेट को अपना ईश्वर मानते हैं।

जब भी संत जागते थे, तो शैतान उन पर झपकी और गहरी नींद ला देता था, लेकिन वह धन्य व्यक्ति, यह महसूस करते हुए, एक लाठी उठा लेते और खुद को बुरी तरह पीटते हुए कहते:

'मैंने तुम्हें खाना-पीना दिया है, फिर भी तुम सोना चाहते हो: लो, मैं तुम्हें इस लाठी से शांत कर दूँगा।'

यदि उन्हें कभी कोई कामुक इच्छा होती, तो वे पूरे एक सप्ताह तक अपने मुँह में एक निवाला भी नहीं डालते, और अपने भीतर की उस कामुक इच्छा को मार डालने तक खुद को भूखा-प्यासा रखते; और जब उन्हें तीव्र प्यास सताती, तो वे अपने लिए पानी डालते, उसे अपने सामने रख लेते, और उसे घूरते हुए कहते:

---

[159] तुलना करें 1 कुरिन्थियों 8:8 से।

'यह पानी कतिना स्वादष्टि है!'

फरि, मुँह में थोड़ा पानी लेकर, वह उसे अपनी जीभ से चखता और उसे जमीन पर गरि देता। शैतान उस धन्य व्यक्ति के धैर्य को सहन नहीं कर सका और ज़ोर से चल्लिाया:

'नफिोन, तुमने मुझे हरा दयिा है!'

लेकनि संत नफिॉन ने, राक्षसों पर अपनी वजिय को अपनी उपलब्धयिों और आत्म-संयम के बजाय ईश्वर की शक्ति और मदद का परणिाम मानते हुए, उन्हें उत्तर दयिा:

'तुम्हें हराने वाला मैं नहीं हूँ, बल्कि हमारे ईश्वर की शक्ति है, जो अपने सेवकों की रक्षा करती है।'

भगवान ने नफिॉन पर एक परीक्षा आने दी ताकि, कड़ाही में सोने की तरह परखे जाने पर, वह स्वयं को प्रभु की कृपा का योग्य साबति कर सके; यह परीक्षा उसके मन के भ्रष्ट होने में थी, और यह शैतान के प्रभाव में चार साल तक चली। एक दनि, नफिोंट शाम से सुबह तक प्रार्थना में खड़ा था जब अचानक उसने दाईं ओर से बाईं ओर तक फैलती एक भयानक आवाज़ सुनी। संत भयभीत हो गया और सोचने लगा कि यह आवाज क्या थी; तुरंत शैतान एक ज़ोरदार दहाड़ और क्रोध के साथ प्रकट हुआ, और उसने संत में इतना डर भर दयिा कि उसका मन भ्रमति हो गया। जैसे ही वह होश में आया, उसने प्रार्थना करने और क्रॉस का चह्नि बनाने की इच्छा की, तभी शैतान ने उस पर हमला करते हुए कहा:

'अपनी प्रार्थना छोड़ दो, और तब मैं तुमसे नहीं लड़ूँगा!'

लेकनि धन्य संत ने उत्तर दयिा:

'मैं तेरा आज्ञाकारी कभी नहीं बनूँगा, अशुद्ध आत्मा: अगर ईश्वर ने मुझे नष्ट करने का आदेश दयिा है, तो मैं इसे कृतज्ञता से स्वीकार करता हूँ; लेकनि अगर नहीं, तो जल्द ही, ईश्वर की मदद से, मैं तुझ पर वजिय प्राप्त करूँगा!'

इस पर शैतान ने कहा:

'नफिॉन, तुम गलत हो; कोई ईश्वर नहीं है, क्योंकि वह कहाँ है?' इस प्रकार राक्षस उससे अनवरत बोलता रहा, उसके मन को भ्रष्ट और कलुषति करते हुए। लेकनि संत ने उससे उत्तर दयिा:

'हे शैतान, तुम एक पागल की तरह बोलते हो, क्योंकि *"मूर्ख ने अपने मन में कहा है, 'परमेश्वर नहीं है'"* (भजन संहति 13:1)।

वह प्रार्थना करना चाहता था, लेकनि कर नहीं सकता था: वह शब्द तो बोलता था, पर उसका मन उसकी आज्ञा नहीं मानता था। संत बहुत दुखी हुआ, उसका मन भ्रमति हो गया; उस समय से वह होश खो बैठा और कष्ट सहने लगा, और जब भी वह कुछ होश में आता, तो दानव फरि से, बनिा रुके, उससे कहता: 'ईश्वर नहीं है' – लेकनि संत ने उत्तर दयिा:

'भले ही मैं व्यभचिार करूँ, भले ही मैं हत्या करूँ, भले ही मैं कोई और पाप करूँ, मैं अपने मसीह से मुँह नहीं मोड़ूँगा।'

लेकनि शैतान ने उससे फरि कहा:

'तुम क्या कह रहे हो: क्या कोई मसीह है? कोई मसीह नहीं है: मैं ही सब पर राज करता हूँ और हर चीज़ पर शासन करता हूँ; तुम्हें कसिने बताया कि कोई ईश्वर या मसीह है?'

'हे अंधकार की शक्ति, तुम मुझे धोखा नहीं दे सकते!' संत ने उत्तर दयिा। 'मुझसे दूर हो जा, हे सर्व सत्य का शत्रु!'

लेकनि शैतान पीछे नहीं हटा और उसने उससे संघर्ष करना जारी रखा, उसके मन को भ्रमति करते हुए और उसे यह कहने के लिए मजबूर करते हुए, 'ईश्वर नहीं है।' इस प्रकार, चार वर्षों तक, संत ने शैतान से संघर्ष कयिा और खुद को प्रार्थना करने के लिए मजबूर कयिा। एक दनि, प्रार्थना करते समय, ईश्वर के अस्तत्वि पर संदेह करने लगे, तब उन्होंने उद्धारकर्ता के आइकन को देखा और अपने हृदय की गहराई से एक आह भरते हुए, आइकन की ओर अपने हाथ फैलाए और कहा:

'हे ईश्वर, मेरे ईश्वर, आपने मुझे क्यों त्याग दयिा?[160] मुझे यह बताएं कि आप ही ईश्वर हैं और आप के सवि कोई और नहीं है, कहीं मैं शत्रु की बातों के आगे न झुक जाऊं।'

ये शब्द कहते ही, उसने देखा कि आइकन पर मसीह का चेहरा सूर्य की तरह चमक रहा था, और साथ ही उसने एक अकथनीय सुगंध को सूंघा। भय से, वह यह कहते हुए जमीन पर गरि पड़ा:

'हे प्रभु, मुझे क्षमा करें, क्योंकि मैंने आप पर संदेह करके आपको परीक्षा में डाला; अब मैं वश्विास करता हूँ कि आप ही एकमात्र परमेश्वर और सभी सृष्टि के सृष्टिकर्ता हैं।'

---

[160] भजन संहति 21:1 से एक अभव्यिक्ति।

ज़मीन पर लेटे हुए, उसने अपना सिर घुमाया और उद्धारकर्ता की प्रतिमा को देखा, और एक चमत्कार देखा: प्रभु की प्रतिमा ने अपनी आँखें और भौंहें हिलाईं, मानो वह कोई जीवित व्यक्ति हो। निफोन ने पुकारा:

'धन्य हो मेरे ईश्वर, और धन्य हो उनका महिमामय नाम, अब और हमेशा के लिए, आमीन!'

उस समय से निफॉन पर ईश्वर की कृपा बनी रही, क्योंकि उसकी चार साल की परीक्षा अब समाप्त हो चुकी थी; उसके बाद, उसका मुख हमेशा प्रसन्न और दीप्तिमान रहता था, इतना कि कुछ लोग चकित हो गए और कहने लगे:

'इसका क्या मतलब है? इतने सालों तक वह उदास रहता था, और अब वह प्रसन्न और हर्षित है?'

हालाँकि, संत ने राक्षसों के विरुद्ध साहस दिखाया; उनका मज़ाक उड़ाते हुए, वह कहते थे:

'वे कहाँ हैं जो दावा करते थे कि ईश्वर नहीं है?' और उसने निरंतर प्रार्थना के द्वारा उन पर विजय प्राप्त की। अपने अतीत के पापों पर चिंतन करते हुए, उसने अपने आप से कहा:

'आओ, पापी निफोंट, चलो हम चर्च जाएँ और प्रभु के सामने अपने पापों का इकरार करें; वहाँ दयालु पिता हमारा इंतज़ार कर रहे हैं।'

और वह चर्च गया। चर्च के दरवाजों के पास पहुँचकर, निफॉन ने अपने हाथ ऊपर उठाए और, एक कड़वी कराह के साथ, पुकार लगाई:

'हे प्रभु यीशु मसीह, मेरे ईश्वर, मुझे स्वीकार करें, जो आत्मा और मन से मृत हूँ। इस ईश्वरनिन्दक और पापी को, जो आत्मा और शरीर से अशुद्ध है, स्वीकार करें और अपना मुख मुझसे न मोड़ें; हे प्रभु, यह न कहें: 'मैं नहीं जानता कि तुम कौन हो,' परन्तु मेरी विनती की आवाज़ सुनो और मुझे बचाओ, क्योंकि तुम पापियों की मृत्यु नहीं चाहते, और मैं तब तक तुमसे मुँह नहीं मोड़ूँगा जब तक तुम मुझे न सुन लो और मेरे पापों को क्षमा न कर दो।

जब वह प्रार्थना कर रहा था, तो अचानक स्वर्ग से एक महान ध्वनि सुनाई दी, और संत, आनंद से भरकर, ने एक बादल में प्रकट हुए एक तेजस्वी पुरुष का मुख देखा; और वह उसकी फैली हुई बाहें देख सकता था, जिनसे उसने धन्य को गले लगाया, ठीक वैसे ही जैसे एक बार व्यर्थ पुत्र के पिता ने किया था (लूका 15:20), और उसे गर्दन पर चूमा, यह कहते हुए:

'मेरे दुखी पुत्र, यहाँ आकर तूने अच्छा किया! मैं तेरे लिए बहुत शोकित और व्याकुल हुआ हूँ; मेरा हृदय उत्सुकता से जलता था, यह सोचकर कि तू मुझसे कब मुड़ेगा, साँझ को या भोर को; अब मैं आनन्दित हूँ, अब मैं प्रसन्न हूँ, यह देखकर कि तू अपने पूरे हृदय से मुझसे मुड़ आया है।'

बाद में निफॉन ने अपने शिष्य को यह बात सुनाई, और ऐसा करते हुए वे कड़वे आँसुओं से रो पड़े। इसके बाद, जब वह फिर से प्रार्थना कर रहा था, तो परमेश्वर का एक स्वर्गदूत मुर्र से भरा एक प्याला लेकर प्रकट हुआ, जिसे उसने उसके सिर पर डाल दिया, और वह स्थान एक मीठी सुगंध से भर गया; इसी तरह, जब वह अपने शरीर पर चोटें पहुँचा रहा था, और अपने आप को घाव दे रहा था, तो स्वर्गदूत ने उतरकर उसके चारों ओर धूप जलाई, जिससे पूरे स्थान में एक मीठी सुगंध फैल गई।

धन्य निफॉन की आध्यात्मिक आँखें इतनी प्रबुद्ध थीं कि वह मानव हृदयों के रहस्यों को जानता था; वह स्वर्गदूतों से दोस्तों की तरह खुले तौर पर बात करता था, और राक्षसों को स्पष्ट रूप से देखता था। एक बार, सेंट अनास्तासिया के चर्च से अपनी झोपड़ी जाते समय, उन्होंने एक वेश्या के घर के दरवाज़े पर एक युवक के रूप में एक देवदूत को बुरी तरह रोते हुए देखा, और उससे उसके रोने का कारण पूछा। देवदूत ने जवाब दिया:

'मुझे ईश्वर ने एक विशेष पुरुष की निगरानी के लिए भेजा है जो इस समय एक वेश्या के साथ इस घर में सो रहा है और इस प्रकार क्रूरतापूर्वक मेरा अपमान कर रहा है; मैं उसके द्वारा की जा रही दुष्टता को सहन नहीं कर सकता—मैं कैसे न रोऊँ जब मैं देखता हूँ कि ईश्वर की प्रतिमा किस अंधकार में डूब गई है?'

परम-धन्य ने उससे कहा:

'तो फिर आप उसे दंड क्यों नहीं देते, ताकि वह पाप से मुँह मोड़ ले?'

देवदूत ने उत्तर दिया, 'मैं उसके पास जाने में असमर्थ हूँ, क्योंकि जब से उसने पाप करना शुरू किया है, वह राक्षसों का दास हो गया है, और मेरा उस पर कोई अधिकार नहीं है: क्योंकि ईश्वर ने मनुष्य को स्वतंत्र इच्छा के साथ बनाया और उसे संकीर्ण और चौड़ी दोनों राहें दिखाईं, ताकि वह अपनी पसंद की राह पर चल सके।'

तब संत निफॉन ने अपने शिष्य से कहा:

'व्यभचिार के पाप से अधकि घृणति कुछ भी नहीं है; फरि भी, यदकिोई व्यभचिर पश्चाताप करता है, तो ईश्वर उसे अन्य अपराधयिों की तुलना में पहले स्वीकार कर लेते हैं, क्योंकयिह पाप शैतान के उकसावे से, मनुष्य की अपनी प्रकृतसिे ही उत्पन्न होता है, और इस वासना को परश्रिमी प्रार्थना, कठोर उपवास और शरीर को कष्ट देने के वभिन्नि साधनों द्वारा दूर कयिा जाता है।'

संत यह भी देख सकते थे कि कैसे दुष्टात्माएँ लोगों के बीच घूमती हैं और उन्हें प्रलोभति करती हैं, उनमें नदिा, बदनामी, झगड़े और वभिन्नि प्रकार के दुख भरती हैं। एक बार उन्होंने एक आदमी को काम करते देखा, और देखो, एक राक्षस उसके पास आया और उसके कान में फुसफुसाने लगा; कुछ दूरी पर एक और आदमी काम कर रहा था, और एक राक्षस आकर उसके कान में भी फुसफुसाया; फरि, अपना काम छोड़कर, वे झगड़ने लगे। परन्तु धन्य पुरुष उठे और कहा:

'हे शैतानी प्रलोभन! तुम लोगों के बीच वैरभाव कैसे बोते हो!'

एक बार, अहंकार के दैत्य ने उस पर हमला कयिा और कहा:

'अब तुम चमत्कार करना शुरू करोगे, और पृथ्वी पर तुम्हारा नाम महमिामय होगा, क्योंकि तुमने परमेश्वर को प्रसन्न कयिा है।'

लेकनि आदरणीय ने उस दानव से कहा:

'रुको, और मैं तुम्हारे लिए एक चमत्कार करूँगा।'

और, अपने सामने एक पत्थर पाकर, उसने कहा:

'मैं तुझसे कहता हूँ, पत्थर, यहाँ से हट जा और कसिी दूसरे स्थान पर चला जा।'

लेकनि पत्थर स्थरि पड़ा रहा। तब संत ने दानव से कहा:

'यह रहा तुम्हारा उपहार, शैतान!'

और उसने उसके मुँह पर थूक दयिा, फरि प्रार्थना की, और शैतान तुरंत ही गायब हो गया। एक अन्य अवसर पर, नफिॉन ने एक चर्च के मंत्री को देखा, जसिके पीछे एक दानव चल रहा था, जो उसके मन में दुष्ट और ईश्वरनन्दिापूर्ण वचिार डाल रहा था; यह व्यक्ति, शैतान की चालाकी को भांपकर, अक्सर मुड़कर दानव पर थूक देता था। परम धन्य ने दुष्ट आत्मा से कहा:

'हे शैतान, ईश्वर के सेवकों को परेशान करना बंद कर! यदयिह आत्मा वनिाश को प्राप्त हो जाए तो तुझे क्या लाभ?'

दानव ने उत्तर दयिा:

'हमें इससे कुछ नहीं मलिता, लेकनि हमें हमारे राजा और हमारे ऊपर शासन करने वाले राजकुमारों से लोगों के खलिाफ लड़ने का आदेश मलिा है। अगर राजकुमारों को पता चल गया कि हम लोगों के खलिाफ नहीं लड़ रहे हैं, तो वे हमें बेरहमी से पीटेंगे।'

एक बार फरि धन्य व्यक्ति ने एक भक्षिु को चलते हुए और एक प्रार्थना बुदबुदाते हुए देखा, जबकि उसके मुँह से एक अग्नि की लपट नकिली और स्वर्ग तक पहुँच गई; उसके साथ उसका स्वर्गदूत चल रहा था, जसिके हाथों में एक अग्नि का भाला था, जसिसे वह उस भक्षिु से राक्षसों को भगा रहा था। मसीह के पुनरुत्थान के पर्व की पूर्व संध्या पर, पवत्रि शनविार की शाम को, नफिॉन मंडली के साथ चर्च में खड़ा था और उसने परमेश्वर की अतपिवत्रि माता को प्रेरतिों और संतों की भीड़ के साथ देखा; वह चर्च में आई थीं और उपस्थति लोगों को मातृ स्नेह से देख रही थीं। यदवि ह उनमें से कसिी को अपनी मुक्ति के लिए चतिति देखती, तो वह बहुत प्रसन्न होती; लेकनि लापरवाहों को देखकर, वह अपना सरि हलिाती और रोती; फरि भी, अपने हाथ फैलाकर, वह उन सभी के लिए ईश्वर से प्रार्थना करती, कि वे सभी मुक्ति प्राप्त कर सकें। यह देखकर, रेवरेंड फादर शब्दों से परे आनंदति हुए कि परमेश्वर की अतपिवत्रि माता ने ईसाइयों को नहीं छोड़ा, बल्कि लगातार उनकी मदद करती थीं; और उनके लिए व्यक्तगित रूप से, वह एक सहायक और रक्षक थीं।

एक बार, जब नफिोन सो रहे थे, तो शैतान अचानक हाथ में हथयिार लेकर प्रकट हुआ और उन पर कूद पड़ा, उनका वध करने का इरादा रखता था; लेकनि, ईश्वर की शक्ति से रोका गया, वह संत को कोई हानि पहुँचाने में असमर्थ रहा और दाँत पीसते हुए यह कहते हुए भाग गया:

'हे मरयिम! तुम हमेशा मुझे इस व्यक्ति से दूर भगा देती हो जो मुझ पर इतना क्रूर है!'

रेवरेंड फादर के पास अपने शब्दों से पीड़तिों को शक्षिति करने और सांत्वना देने का वरदान था। एक भाई दुख में संत के पास आया और पूछा:

'मैं क्या करूँ, पतिाजी?' दुष्ट राक्षस मुझे बहुत सताते हैं: चाहे मैं खा रहा होऊँ, पी रहा होऊँ, या प्रार्थना में खड़ा होऊँ, वे मेरे हृदय में कभी वधिर्म, तो कभी मेरे प्रभु यीशु मसीह और उनकी अतिपवित्र माता, और पवित्र प्रतमिाओं के वरिुद्ध घोर अपमान भर देते हैं; मुझे डर है कि एक दनि स्वर्ग से आग बरसेगी और मुझे जदिा जला देगी।"

संत ने उसे उत्तर दयिा:

'मेरी बात मानो, भाई। जब समुद्र उग्र होता है, तो वह लहरें खड़ी करता है और उन्हें चट्टानों से टकराता है; फरि भी लहरें एक बार फरि से समुद्र में लौट आती हैं। इसी प्रकार शैतान द्वारा भेजे गए बुरे वचिार मानव आत्मा को प्रभावति करते हैं; और यदि कोई व्यक्ति उसकी बात मानता है और उसका अनुसरण करता है, तो वह नष्ट हो जाता है, ठीक वैसे ही जैसे कई लोग उसके आगे झुककर नष्ट हो गए हैं। लेकनि यदि कोई, बुरे वचिारों के खलिाफ संघर्ष में, हार नहीं मानता, बल्कि और भी अधकि साहस जुटाकर उनका वरिोध करता है, और शैतान को तुच्छ समझता है, तो शैतान की दुष्टता उसी पर लौट आती है, जबकि उस व्यक्ति को ईश्वर से पुरस्कार मलिता है। और तुम, मेरे बच्चे, धैर्य रखो; प्रार्थना और उपवास के द्वारा शैतान का वरिोध करो, और वह जल्द ही तुमसे दूर भाग जाएगा। बदनामी और क्रोध से सावधान रहो, क्योंकि वे कसिी भी अन्य चीज़ से अधकि ईश्वर नदिा को भड़काते हैं।

इस प्रकार, अपने भाई को उपदेश देकर, उन्होंने उसे शांति से वदिा कर दयिा। और रेवरेंड फादर को भी रोगों को ठीक करने का वरदान प्राप्त था। एक महलिा दाँत दर्द से पीड़ति होकर उनके पास आई और संत से उसे ठीक करने की वनिती की। उन्होंने उससे कहा:

'हम पापी और दुखी लोग हैं, और हम आपको तब तक ठीक नहीं कर सकते जब तक कि स्वयं ईश्वर आप पर दया न करें।'

और ये शब्द कहकर, नफिॉन चर्च में गए, प्रार्थना की, और परम पवित्र माता परमेश्वर की प्रतमिा के सामने रखे दीपक से तेल लेकर, उन्होंने रोगी के पूरे सूजे हुए चेहरे पर अभषिेक कयिा – और तुरंत दर्द बंद हो गया; चंगा हो जाने पर, वह महलिा परमेश्वर की स्तुति करती हुई चली गई। उन्होंने एक अन्य महलिा को भी ठीक कयिा, जो पहले उनके लिए भोजन लाती थी, जब वह बीमार पड़ गई और मौत के कगार पर थी; उन्होंने प्रार्थना के माध्यम से उसे ठीक कयिा, और वह ठीक हो गई। अपनी दव्यि दृष्टि वाली आँखों से, वह मानव आत्माओं को शरीर से नकिलते हुए देख सकता था। एक बार, सेंट अनास्तासयिा के चर्च में प्रार्थना करते हुए, उसने अपनी आँखें स्वर्ग की ओर उठाईं और स्वर्ग को खुलते देखा और कई स्वर्गदूतों को देखा, जनिमें से कुछ पृथ्वी पर उतर रहे थे, जबकि अन्य मानव आत्माओं को स्वर्ग ले जा रहे थे। और देखो, उसने दो स्वर्गदूतों को एक आत्मा को लेकर ऊपर जाते हुए देखा। और जब वे कर वसूलने वालों के चौकी के पास पहुँचे, तो पशिाच-ग्रस्त कर वसूलने वाले बाहर आए और क्रोधति होकर बोले:

'यह हमारी आत्मा है; तुम्हारी हम्मित कैसे हुई इसे हमसे परे ले जाने की?'

देवदूतों ने उत्तर दयिा:

'उस पर तुम्हारे पास ऐसा क्या नशिान है जो उसे तुम्हारा मानने पर मजबूर करे?'

दैत्यों ने कहा:

'उसने अपनी मृत्यु तक पापों से स्वयं को कलंकति कयिा, न केवल स्वाभावकि पापों से, बल्कि अस्वाभावकि पापों से भी; इसके अलावा, उसने अपने पड़ोसी को दोषी ठहराया, और बनिा पश्चाताप के मर गई। इस पर तुम्हारा क्या कहना है?'

'हम वशि्वास नहीं करते,' स्वर्गदूतों ने उत्तर दयिा, 'न तुम और न ही तुम्हारे पति शैतान, जब तक कि हम इस आत्मा के रक्षक स्वर्गदूत से परामर्श नहीं कर लेते।'

जब उससे पूछा गया, तो उसने कहा:

'यह सच है कि इस आत्मा ने बहुत पाप कयिा, लेकनि जब वह बीमार पड़ी, तो वह रोने लगी और ईश्वर के सामने अपने पापों का इकरार करने लगी; और अगर ईश्वर ने उसे क्षमा कर दयिा है, तो वह जानते हैं क्यों: उनके पास शक्ति है। उनके धर्मी न्याय की महमिा हो!'

तब स्वर्गदूतों ने राक्षसों को लज्जति कर, उस आत्मा के साथ स्वर्ग के द्वारों में प्रवेश कयिा।

तब धन्य ने देखा कि स्वर्गदूत एक और आत्मा को ले जा रहे थे, जबकि राक्षस उनका सामना करने के लिए चलि्लाते हुए दौड़ पड़े:

'तुम क्या कर रहे हो, आत्माओं को पहचाने बिना उन्हें उठाए ले जा रहे हो, जैसे कि, उदाहरण के लिए, तुम इस आत्मा को ले जा रहे हो—जो लालची, प्रतिशोधी और एक चोर है!'

देवदूतों ने उत्तर दिया:

'हम अच्छी तरह जानते हैं कि, यद्यपि उसने ये सब काम किए, उसने रोया और शोक मनाया, अपने पापों का इकरार किया और दान दिया; इसके लिए, ईश्वर ने उसे क्षमा कर दिया है।'

हालाँकि, राक्षसों ने कहना शुरू कर दिया:

'अगर यह आत्मा भी ईश्वर की दया की पात्र है, तो आगे बढ़ो और दुनिया भर के सभी पापियों को ले जाओ! फिर हम मेहनत क्यों करें!'

देवदूतों ने उत्तर दिया:

'जो भी पापी विनम्रता और आँसुओं के साथ अपने पापों का इकरार करते हैं, उन्हें ईश्वर की दया से क्षमा मिल जाएगी, लेकिन जो बिना पश्चाताप के मर जाते हैं, उनका ईश्वर द्वारा न्याय किया जाएगा।'

इस प्रकार दुष्ट आत्माओं को लज्जित करके, स्वर्गदूत आगे बढ़ गए। संत ने एक ईश्वर-प्रेमी व्यक्ति की आत्मा को भी जाते हुए देखा—एक पवित्र और दयालु व्यक्ति जो सभी से प्रेम करता था; राक्षसों ने, उसे दूर से देखकर, अपने दाँत पीसे, जबकि ईश्वर के स्वर्गदूत स्वर्ग के द्वारों से उसकी ओर मिलने आए और इस प्रकार उस आत्मा का स्वागत किया।

'महिमा तेरी हो, हे मसीह हमारे परमेश्वर, कि तूने उसे शत्रु के हाथ में नहीं छोड़ा, बल्कि उसे नरक की गहराइयों से उबार लिया।'

कुछ समय बाद, धन्य निफॉन ने राक्षसों को एक आत्मा को नरक में घसीटते हुए देखा। यह एक नौकर की आत्मा थी जिसे उसके मालिक ने भूखा रखा था और पीटा था; ऐसी यातना सहन न कर पाकर, और शैतान के उकसावे पर, उसने एक रस्सी लेकर फांसी लगा ली। इस बीच, उसका रक्षक स्वर्गदूत कुछ दूरी पर पीछे-पीछे बहुत रोते हुए चल रहा था, जबकि राक्षस प्रसन्न हो रहे थे। उस रोते हुए स्वर्गदूत को ईश्वर ने आदेश दिया कि वह रोम नगर जाए और एक नवजात शिशु की रक्षा करे जिसका उसी क्षण वहाँ बपतिस्मा हो रहा था। रेवरेंड ने एक और आत्मा को भी देखा जिसे स्वर्गदूतों द्वारा हवा में ले जाया जा रहा था, जबकि राक्षसों का एक झुंड उनका स्वागत करने के लिए बाहर आया; वे आत्मा की यात्रा के चौथे पड़ाव तक भी नहीं पहुँचे थे कि राक्षसों ने उस आत्मा को पवित्र स्वर्गदूतों के हाथों से छीन लिया और उसे तिरिस्कार से गर्त में फेंक दिया। यह सेंट एलेयुथेरीअस के चर्च के एक पुरोहित की आत्मा थी; इस पुरोहित ने व्यभिचार, जादू-टोने और डकैती के माध्यम से लगातार ईश्वर के क्रोध को भड़काया था, और वह पश्चाताप किए बिना अचानक मर गया, जिससे राक्षसों को प्रसन्नता हुई।

रेवरेंड ने कॉन्स्टेंटिनोपल में परमेश्वर की परम पवित्र माता को समर्पित एक चर्च का निर्माण किया; वह वहीं रहते थे और कई अविश्वासियों को ईसाई धर्म में परिवर्तित किया। शैतान यह बर्दाश्त नहीं कर सका कि निफिोन ने कई लोगों को राक्षसों के प्रलोभनों से दूर कर दिया था, और वह लगभग एक हजार राक्षसों की भीड़ के साथ उसके पास आया; उन्होंने रात में संत पर हमला किया और उन्हें पीड़ा पहुँचाने की कोशिश की; उसका पूरा आवास राक्षसों से भर गया था। लेकिन उसने उन्हें क्रूस की शक्ति से फटकारा और, ईश्वर की मदद और एक पवित्र देवदूत की सहायता से, उन्हें एक-एक करके पकड़ लिया, और प्रत्येक को हजार बार मारा जब तक कि उन्होंने यह शपथ नहीं ली कि वे उस स्थान के पास भी कभी नहीं आएंगे जहाँ निफॉन का नाम लिया गया था।

एक दिन भाइयों के साथ आत्मा के लाभ के बारे में बातचीत करते हुए, निफॉन ने निम्नलिखित बात याद की।

वे कहते हैं, 'इस शहर में, एक कुलीन कुल के व्यक्ति, बेसिल नामक एक दास था, जो पेशे से दर्जी, बुरे चरित्र का, गंदी जबान वाला, अवज्ञाकारी और एक मसखरा था; वह अपना सारा समय खेल-कूद और व्यभिचारियों के साथ कामुक, अशुद्ध पापों में बिताता था, और अपने मालिक की नसीहतों पर कोई ध्यान नहीं देता था। तथापि, दयालु प्रभु की अद्भुत व्यवस्था से, वह इस प्रकार बच गया: ईश्वर की अनुमति से, लोगों के पापों के दंड स्वरूप, देश में एक बड़ी अकाल पड़ी, और मालिकों ने भोजन की कमी के कारण अपने दासों को भगाना शुरू कर दिया; वासीली के मालिक ने भी उसे भगा दिया। बेसिल चला गया और पहले ही दिन, भोजन खरीदने के लिए अपने कपड़े बेच दिए; बाद में, वह नग्न घूमने और भीख माँगने लगा, लेकिन तब सर्दी का मौसम था, और वह ठंड से काँप रहा था और ठिठुर रहा था। अंत में, थक हारकर, वह सड़क पर लेट गया; कुछ समय बाद, उसके पैरों की उंगलियों सड़ने लगीं, और फिर उसके पैर खुद सड़ने लगे। वासिली ने यह सब अपने

पापों की सजा मानकर सह लिया, और सिवाय इसके कुछ नहीं कहा: 'हर चीज़ के लिए परमेश्वर की महिमा!' इस प्रकार वह दो महीने तक सड़क पर, बिना किसी आश्रय के पड़ा रहा, अपने पापों पर रोता और विलाप करता रहा। संयोग से, निकिफिोर नाम का एक धर्मनिष्ठ ईसाई उसी सड़क पर से गुजर रहा था। पीड़ित वासिली को देखकर, उसने अपने नौकरों को उसे अपने घर ले जाने का आदेश दिया, जहाँ उसने प्यार से उसका सांत्वना दी, अपने हाथों से उसके लिए बिस्तर लगाया, और उसे खाना खिलाया। दो सप्ताह बाद, एक शनिवार को, बीमार वासिली बोलने लगा:

'हे पवित्र स्वर्गदूतों, आपके आगमन से मैं अत्यंत प्रसन्न हूँ; थोड़ी देर विश्राम करो, और फिर चलो।'

लेकिन उन्होंने कहा:

'नहीं, जल्दी चलो, क्योंकि प्रभु तुम्हें बुला रहे हैं।'

बेसिल ने जवाब दिया, 'थोड़ी देर और रुकिए, जब तक कि मैं अपना कर्ज चुका न लूँ। मैंने अपने एक दोस्त से दस तांबे के सिक्के उधार लिए थे और अभी तक उन्हें वापस नहीं किया है; कहीं शैतान मुझे इसी वजह से हवा में रोक न दे।'

और स्वर्गदूत तब तक प्रतीक्षा करते रहे जब तक कि बेसिल ने दस तांबे के सिक्के इकट्ठा करके उस व्यक्ति को नहीं भेज दिए जिसके वह ऋणी था; और फिर उसने अपनी आत्मा ईश्वर को सौंप दी।

निफोंट ने निष्कर्ष निकाला, "बच्चों, तुम देखो, ईश्वर के मार्ग ऐसे ही होते हैं, और कैसे, अपनी इच्छा के अनुसार, वह पापी को बचाता है।"

एक दिन, आशीर्वादित अपने शिष्य के साथ तथाकथित अपोनियस के महलों से सटे चर्च में प्रार्थना करने आए, जहाँ संत दिव्य अनुष्ठान का अनुष्ठान कर रहे थे; और तब संत की आध्यात्मिक आँखें खुल गईं, और उन्होंने स्वर्ग से उतरती हुई एक आग को देखा जो वेदी और बिशप को ढक रही थी; जब 'पवित्र, पवित्र, पवित्र' का गायन हो रहा था, तो चार स्वर्गदूत प्रकट हुए और वे भी गायन मंडली के साथ गाने लगे। और जब प्रेरित-पत्र पढ़ा जा रहा था, तो उन्होंने देखा कि प्रेरित संत पौलुस पाठक को पीछे से देख रहे थे; और जब उन्होंने सुसमाचार पढ़ना शुरू किया, तो शब्द दीयों की तरह स्वर्ग की ओर उठ रहे थे। उपहारों की प्रस्तुति के दौरान, चर्च का पर्दा हट गया और स्वर्ग खुल गया, और एक अद्भुत सुगंध महसूस हुई; फिर स्वर्गदूत उतरने लगे, यह गाते हुए: 'मसीह परमेश्वर की महिमा!' वे एक सुंदर युवक को लाए, उसे डिस्कोस ([161]) पर रखा, और स्वयं सिंहासन के चारों ओर खड़े होकर पवित्र उपहारों की सेवा करने लगे, जबकि दो सेराफिम और दो करूब, उसके सिर के ऊपर मंडराते हुए, उसे अपने पंखों से ढक रहे थे। जब उपहारों के अभिषेक और भयानक संस्कार के उत्सव का समय आया, तो सबसे तेजस्वी स्वर्गदूतों में से एक आगे बढ़ा, उसने एक चाकू उठाया, और उस युवक का वध कर दिया; उसने खून को पवित्र प्याले में बहने दिया और, युवक को डिस्कस पर रखकर, विनम्रतापूर्वक अपनी जगह पर लौट गया। तब दैवी रहस्यों का ग्रहण शुरू हुआ, और धन्य ने देखा कि परमप्रसाद ग्रहण करने वालों में से कुछ के चेहरे सूर्य की तरह चमकदार थे, जबकि अन्य के चेहरे इथियोपियाई लोगों की तरह काले और उदास थे। वहाँ खड़े स्वर्गदूतों ने प्रत्येक व्यक्ति के पास आते ही देखा, और जो परमप्रसाद ग्रहण करने के योग्य थे, उन्हें मुकुट पहनाया, जबकि अयोग्य लोगों से मुँह मोड़ लिया और उनसे घृणा व्यक्त की। पवित्र सेवा के समापन पर, उन्होंने देखा कि वह युवक अचानक स्वस्थ हो गया था - स्वर्गदूतों की बाहों में - और स्वर्ग में आरोहण कर गया। बाद में, रेवरेंड ने स्वयं यह अपने शिष्य को सुनाया, जिसने इसे कई लोगों के लाभ के लिए दर्ज किया।

एक बार, जब संत स्वयं द्वारा निर्मित परमेश्वर की अति पवित्र माता के चर्च की ओर जा रहे थे, तो उन्होंने सड़क पर एक इथियोपियाई को बहुत दुखी दिखाई दिया; यह राक्षसों का एक राजकुमार था, और अन्य राक्षस उसका पीछा कर रहे थे। जब वे पास आए और चर्च के भजन सुनने लगे, तो छोटे राक्षसों ने अपने राजकुमार को डाँटना शुरू कर दिया, और कहा:

---

[161] डिस्कोस (ग्रीक में 'बर्तन' या 'थाली') वह पात्र है जिस पर मेमना रखा जाता है, अर्थात् प्रसफोरा का वह हिस्सा जो लिटिर्जी के दौरान, पवित्र आत्मा के आह्वान द्वारा, मसीह के सच्चे शरीर में परिवर्तित हो जाता है। प्रोस्कोमेडिया के दौरान, जब प्रसफोरा से मेमने को निकालकर डिस्कोस पर रखा जाता है, तो प्रभु के जन्म का स्मरण किया जाता है, और डिस्कोस उस खलिहान का प्रतीक है जिसमें शिशु यीशु को लिटाया गया था। इसी कारण, डिस्कोस को कभी-कभी शिशु ईश्वर-मानव को खलिहान में लेटे हुए दिखाया जाता है। हालाँकि, उसी समय, प्रॉस्कोमेडिया के दौरान, जब डिस्कोस पर मेम्ने को चीरा जाता है और उपहार वेदी से सिंहासन पर स्थानांतरित किए जाते हैं, तो क्रूस पर प्रभु के दुख, उनकी मृत्यु और कब्र में उनके रखे जाने की स्मृति मनाई जाती है, और डिस्कोस गोलगोथा और उद्धारकर्ता की कब्र का प्रतीक है।

'देखो, जनि लोगों को हम कभी अपनी शक्ति में रखते थे, वे यीशु के नाम का महिमामंडन कैसे करते हैं – तो फरि, हमारी शक्ति कहाँ है? इसे परास्त कर दयिा गया है, और हमारा राज्य नष्ट हो गया है।' इस प्रकार राक्षसों ने अपने राजकुमार का अपमान कयिा, लेकनि उसने उनसे कहा:

'दुखी मत हो, हतोत्साहति मत हो; मैं जल्द ही यह सुनश्चिति करूँगा कि ईसाई यीशु को त्याग दें और इसके बजाय हमारी महिमा करें।'

वे थोड़ी दूर चले और तीस आदमयिों से मलि; राक्षसों का राजा उनमें से एक के पास गया और उसके कान में फुसफुसाया – और उस आदमी का दमिाग़ खराब हो गया; वह अभद्र बातें करने, हँसने और शर्मनाक गीत गाने लगा। फरि वे एक संगीतकार से मलि जो अपना वाद्य बजाते हुए जा रहा था। धन्य ने देखा कि एक इथयिोपयिाई ने उन्हें एक ही रस्सी से बाँध दयिा और संगीतकार के पीछे-पीछे खींचने लगा, और वे सब नाचते हुए उसका अनुसरण करने लगे; एक बड़ी भीड़ उनसे जुड़ गई, और वे अपने रास्ते चले गए – नाचते और अश्लील गीत गाते हुए: क्योंकि राक्षस उन्हें दलि से पकड़कर खींच रहे थे। एक धनी व्यक्ति, जो अपने घर से यह सब देख रहा था, ने संगीतकार को एक तांबे का सक्का दयिा ताकि वे उसके सामने नाच सकें। जब संगीतकार ने सक्का अपनी जेब में डाला, तो राक्षसों ने उसे ले लयिा और उसे नरक में अपने पति शैतान के पास भेज दयिा, और उससे कहा:

'खुश हो जाओ, हमारे पति! यह अल्लेजयिन है, हमारा राजकुमार, जसिने तुम्हारे लिए हमारे दुश्मनों—ईसाइयों—द्वारा लाई गई एक भेंट भेजी है, जन्हिोंने प्रदर्शनों के लिए तांबे के सक्के दिए थे।'

इसे लेकर, शैतान प्रसन्न हुआ और बोला:

'मेरे बच्चों, हमारी भेंट बढ़ाने के लिए अपनी पूरी कोशशि करो, और ईसाइयों को हरा दो।'

और फरि उसने सक्का संगीतकार की जेब में वापस रख दयिा। लेकनि धन्य नफिॉन ने, अपनी आध्यात्मकि आँखों से यह देखकर, दुख के साथ कहा:

'खेलों के माध्यम से राक्षसों को बलदिान चढ़ाने वालों पर वनिाश आ पड़े!'

और उन्होंने अपने श्रोताओं को दुष्ट और अव्यवस्थति खेलों से सावधान रहने की चेतावनी दी, क्योंकि वे शैतान से आते हैं। एक बार, प्रार्थना के बाद, संत आध्यात्मकि आनंद की अवस्था में थे और उन्होंने एक वशिाल मैदान देखा, जसिकी लंबाई और चौड़ाई समान थी, जसि पर इथयिोपयिाई लोगों की एक भीड़ खड़ी थी, जो रेजमिेंटों में वभिाजति थी; कुल मलिाकर तीन सौ पैंसठ रेजमिेंट थे – जो घातक पापों की संख्या के अनुरूप थे। उनमें से सबसे गहरे रंग का एक इथयिोपयिाई योद्धाओं की गनिती कर रहा था और युद्ध के लिए सेनाओं को व्यवस्थति कर रहा था, और उसने कहा:

'मेरी ओर देखो और कसिी बात का भय मत करो: मेरी शक्ति तुम्हारे साथ होगी!'

कई राक्षसों ने वभिन्नि प्रकार के अनेक हथयिार लाए और उन्हें रेजमिेंटों में बाँट दयिा। फरि शैतान ने प्रत्येक रेजमिेंट को जादू-टोने और मंत्र-मंत्रण की शक्ति प्रदान की, और उन्हें मसीह की कलीसयिा के वरिुद्ध पूरी पृथ्वी पर भेज दयिा। जब धन्य नफिॉन यह सब देख रहे थे, तो उन्होंने अचानक एक आवाज सुनी:

'नफिॉन, पूर्व की ओर मुड़ो और देखो।'

वह मुड़ा और उसने एक मैदान देखा, जो देखने में शुद्ध और सुंदर था, और उस पर अनगनित भीड़ खड़ी थी—इथयिोपयिाई लोगों से भी बड़ी—सफेद वस्त्रों में सजे लाखों योद्धा, सभी युद्ध के लिए सज्जति थे। फरि एक पुरुष प्रकट हुआ, जो सूर्य से भी अधकि तेजस्वी था, और उसने कहा:

'सेनाओं के प्रभु इस प्रकार आज्ञा देते हैं: सारी पृथ्वी पर जाओ, ईसाइयों की सहायता करो और उनके जीवन की रक्षा करो।'

यह देखकर, पूजनीय पति ने परमेश्वर की महिमा की, जो अपनी कलीसयिा की सहायता करते हैं।

अब माननीय नफिॉन वृद्धावस्था के करीब पहुँच रहे थे। उनके लिए बशिप का पद ग्रहण करने का समय आ गया था, जसिकी भवष्यिवाणी उन्हें ईश्वर ने नम्निलखिति दृष्टि में की थी। उन्होंने भेड़ों की एक बड़ी भीड़ से भरा एक मैदान देखा, फरि भी उनमें कोई चरवाहा नहीं था। धन्य व्यक्ति ने सोचा:

'नश्चिय ही ये भेड़ें, बनिा चरवाहे के, भेड़यिे से नहीं डरतीं?' तुरंत, एक पवत्रि रूप वाला व्यक्ति, जो पवत्रि प्रेरति पौलुस के समान था, प्रकट हुआ और कहा:

'तुम बेकार खड़े होकर राजा की भेड़ों को घूर क्यों रहे हो? तुम उनकी देखभाल क्यों नहीं कर रहे हो?'

धन्य नफिॉन ने उत्तर दयिा:

'मैं राजा की भेड़ों की देखभाल कैसे कर सकता हूँ? मैं इस काम से अपरचिति हूँ और बहुत कमजोर हूँ।'

और जो व्यक्ति प्रकट हुआ था, उसने कहा:

'राजा ने तुम्हें थोड़ी देर के लिए उनकी देखभाल करने का आदेश दिया है; बाद में, आराम करने के बाद, तुम्हें एक बड़ा इनाम मिलेगा।'

और इन शब्दों के साथ, उन्होंने उसे एक लाठी दी, भेड़ों और बाड़े का प्रभार सौंपा, और चले गए। जागने पर, धन्य व्यक्ति ने सोचा: 'इसका क्या मतलब है?' – और उन्हें एहसास हुआ कि जो व्यक्ति उनके सामने प्रकट हुआ था वह पवित्र प्रेरित पौलुस थे, भेड़ें लोग थीं, और बाड़ा चर्च था; वह बहुत डरा हुआ था, कि कहीं उसे शाही शहर[162] में बिशप न बना दिया जाए। और निफॉन ने अपने आप से कहा: 'क्या मैंने ईश्वर से प्रार्थना नहीं की थी कि मैं किसी पर शासन न करूँ? और अब वह मुझे अधिकार देना चाहता है! मैं वही करूँगा जो नबी योना ने किया (योना 2), और यहाँ से भाग जाऊँगा!' अपने शिष्य को साथ लेकर, वह अपनी कुटिया से निकल गया और एक जहाज पर चढ़ गया। एक हल्की हवा के साथ, जहाज जल्दी ही अलेक्जेंड्रिया पहुँच गया, जहाँ तब अलेक्जेंड्रिया के पैट्रिआर्क अलेक्जेंडर[163] थे, जिन्होंने डायोक्लेटियन के अधीन मसीह के लिए पीड़ित हुए पतरस के बाद चर्च का नेतृत्व किया था। उसी दिन, साइप्रस द्वीप से कॉन्स्टेंस शहर के निवासी आए और उन्होंने पैट्रिआर्क अलेक्जेंडर से उनके लिए एक बिशप नियुक्त करने का अनुरोध किया, जिसे भी वे योग्य समझें, क्योंकि उनके चरवाहे, क्रिस्टोफ़र नामक एक पवित्र और सम्माननीय व्यक्ति का निधन हो गया था। पैट्रिआर्क ने उनसे कहा:

'थोड़ी देर प्रतीक्षा करो, जब तक कि ईश्वर मुझे ऐसा पुरुष न दिखा दे।'

और उसी रात, पैट्रिआर्क ने पवित्र प्रेरित पौलुस को देखा, जिन्होंने उनसे पूछा:

'तुम कॉन्स्टेंस नगर के बिशप के रूप में किसे नियुक्त करोगे?'

पैट्रिआर्क ने उत्तर दिया:

'मुझे नहीं पता: जिसे ईश्वर चुनेगा।'

प्रकट हुई आकृति ने कहा:

'ईश्वर तुम्हें एक योग्य उम्मीदवार दिखाएगा; बस कल पूरी पुरोहित मंडली के साथ चर्च में रहना और जो लोग प्रवेश करें उन्हें देखना: और जिसे तुम हर तरह से मेरे जैसा देखो, उसी व्यक्ति को तुम अपनी मंडली का दायित्व सौंप देना।'

अगली सुबह, पैट्रिआर्क चर्च में बैठ गए, यह देखने के लिए कि प्रवेश करने वालों में से कौन आगंतुक जैसा दिखेगा। हालाँकि, निफोन, इस बारे में कुछ भी नहीं जानते हुए, चर्च गए और रास्ते में अपने शिष्य से कहा:

'मेरे हृदय में दुख और आनंद का मिश्रण है: मुझे आश्चर्य है कि कहीं हम पर कोई आपदा न आ जाए!'

और ये शब्द कहकर वह चर्च में प्रवेश कर गया। उसे देखते ही, पैट्रिआर्क ने अपने आर्चडीकन से कहा:

'देखो, अथानासियस, क्या इस आदमी का चेहरा संत पौलुस प्रेरित की प्रतिमा से मिलता-जुलता नहीं है?'

'हाँ, फादर,' आर्चडीकन ने उत्तर दिया, 'वास्तव में ऐसा ही है, और वह मसीह की कलीसिया के चरवाहे बनने के योग्य हैं: मैं देखता हूँ कि परमेश्वर का एक स्वर्गदूत उनके साथ चल रहा है और उनसे बात कर रहा है; इसके अलावा, उनके सिर पर कीमती रत्नों का एक मुकुट दिखाई दे रहा है।'

तब पैट्रिआर्क ने संत को इशारा किया, उनका अभिवादन किया, और वे अपनी-अपनी जगह पर बैठ गए। आर्चडीकन ने निफॉन से मुस्कुराते हुए कहा:

'पिताजी, आप भागे क्यों? आप अब अपनी इच्छा के विरुद्ध यहाँ आए हैं।'

जब उस धन्य व्यक्ति को यह एहसास हुआ कि उसके साथ क्या होने वाला है, तो उन्होंने एक आह भरते हुए कहा:

'हाय मेरे लिए! मैं एक पापी हूँ और ऐसे अधिकार को स्वीकार करने के लिए अयोग्य हूँ!'

पैट्रिआर्क ने उत्तर दिया:

'काश मैं इतना अयोग्य ही होता!'

---

[162] अर्थात्, कॉन्स्टेंटिनोपल में।

[163] संत अलेक्जेंडर 312 से 326 तक अलेक्जेंड्रिया के पैट्रिआर्क थे; उनका पर्व दिवस 29 मई को मनाया जाता है।

और ये शब्द कहकर वे उठे, और उन्होंने दैवीय पूजा आरंभ की, और पूजनीय नफिॉन को पुरोहति के पद पर नयिुक्त कयिा; फरि, कई दनिों के दौरान, उन्होंने उन्हें डकिन और प्रेस्बटिर के रूप में नयिुक्त कयिा; और बाद में उन्हें बशिप के पद पर पदोन्नत कयिा, जसिसे ईश्वर द्वारा भेजे गए ऐसे चरवाहे को पाकर सभी को सार्वभौमकि आनंद हुआ। बशिप के रूप में अभषिेक के बाद, नफिॉन तीन दनिों तक अलेक्जेंड्रयिा में रहे, और वहाँ के पवत्रि पुरुषों से बातचीत की। इसके बाद, पैट्रआर्क ने नफिॉन को उनके धर्मप्रांत में भेज दयिा, और सम्मान के प्रतीक के रूप में अपने आर्चडीकन और अन्य पवत्रि पुरुषों को उनके साथ भेजा। वे 4 सतिंबर को साइप्रस के शहर कॉन्स्टेंस पहुँचे; भेड़ों का झुंड उन्हें सौंपने के बाद, दूत परमेश्वर की स्तुतकिरते हुए अलेक्जेंड्रयिा लौट आए। ईश्वर के पवत्रि पुरुष, नफिोन ने, मसीह के झुंड का लगन से चरवाहा करना और वशि्वासयिों की मुक्तकिा ध्यान रखना शुरू कर दयिा। वह अनाथों और वधिवाओं के लिए एक पति, एक चकित्सिक जो बीमारों का बनिा शुल्क इलाज करते थे, और दुर्बल लोगों के लिए एक परोपकारी थे; इसके अलावा, उन्होंने कई चमत्कार कए, जन्हिें पूरी तरह गनिना असंभव है, और इस कारण सभी उन्हें बहुत प्यार करते थे और उनका सम्मान करते थे। अपनी भेड़ों की नश्निंकोच देखभाल करते हुए, उन्होंने एक बार एक लंबे इथयिोपयिाई को देखा, जो एक लाठी पर सहारा लेकर, जैसे दुख में हो, शहर की ओर चल रहा था, और रास्ते में बार-बार आराम कर रहा था। संत को एहसास हुआ कयिह शैतान था और उन्होंने उसे पुकारा।

'मैं तुझसे कहता हूँ, हे नीच, तू यहाँ आने की हम्मित कैसे और क्यों कर सका?'

इथयिोपयिाई ने उस पर ऐसे घूरकर देखा जैसे वह उसे खा जाना चाहता हो, और कहा:

'मैंने सुना था कतिुम यहाँ हो, और मैं तुम्हें और तुम्हारी भेड़ों को कुचलने आया हूँ।'

लेकनि संत ने उससे कहा:

'अरे नीच! तू खुद कुचला हुआ है, और फरि भी तू मुझे कुचलना चाहता है? मैंने देखा ककिैसे एक तपस्वी ने तुझसे लड़ा, और तेरे तीस राक्षस उसके साथ संघर्ष में थक गए; कौन तेरी इस कमजोरी पर हँसेगा!'

'इस पर आश्चर्य मत करो,' शैतान ने कहा, 'अगर मेरे पास अपनी पुरानी ताकत होती, तो तुम्हें कुचलना मेरे लिए कुछ भी नहीं होता, लेकनि जब से यीशु को सूली पर चढ़ाया गया है, मैं वास्तव में कमजोर हो गया हूँ।'

संत ने उत्तर दयिा:

'और अब, अगर मैं अपने मसीह से प्रार्थना करूँ, तो तुम्हारा क्या होगा, हे लज्जाहीन!'

'मुझे पता है,' शैतान ने जवाब दयिा, 'कतिुम बहुत कुछ कर सकते हो, लेकनि मुझे नुकसान मत पहुँचाओ; मैं तुम्हारे शहर को छोड़ दूँगा और फरि कभी उसके पास नहीं आऊँगा।'

यह देखकर, संत ने ईश्वर का धन्यवाद कयिा कवि ह उनकी रक्षा करते हैं और अपने झुंड को दुष्ट शैतान से बचाते हैं।

कुछ समय तक मसीह के चर्च का नेतृत्व करने के बाद, संत नफिॉन अपने मृत्यु के समय के करीब पहुँच गए, जसिकी उन्होंने तीन दनि पहले ही भवषि्यवाणी कर दी थी। तब महान अथेनासयिस उनके पास आए; वे पहले एक आर्चडीकन थे, और बाद में, अलेक्जेंडर की मृत्यु के बाद, उन्होंने अलेक्जेंड्रयिा के चर्च का पदभार संभाला[164] । उन्हें ईश्वर द्वारा नफिॉन की नकिट मृत्यु की पूर्व सूचना दी गई थी, और इसलिए वे अपने संपूर्ण पुरोहति वर्ग के साथ ईश्वर के संत को अंतमि बार वदिाई देने आए। नफिॉन ने, अथेनासयिस को देखकर, उनसे पूछा:

'हे धन्य पति, आप एक पापी मनुष्य के पास आने की जहमत क्यों उठाई?'

'मुझे पता चला है,' अथानासयिस ने उत्तर दयिा, 'कआप कल स्वर्गीय यरूशलेम के लिए प्रस्थान कर रहे हैं, और मैं आपसे बात करने आया हूँ। मैं आपसे वनिती करता हूँ, जब आप परमेश्वर के सहिासन के सामने खड़े हों, तो मुझे वहाँ याद करना, ताकमिुझे भी प्रभु से दया मलि सके।'

'और आप भी, पतिाजी,' संत ने कहा, 'जब आप दव्यि लटिर्जी का अनुष्ठान करें, तो मेरी दीनता को याद करें।'

उसी रात, संत नफिॉन ने अपने और अपने झुंड के लिए देर तक प्रार्थना की। और प्रभु का स्वर्गदूत उन्हें दखिाई दयिा, जो उन्हें सांत्वना देने और यह समाचार लाने के लिए आया था कउिनके लिए अनंत वशि्राम तैयार कयिा गया है। सुबह के भजनों के दौरान, उन्हें एक शारीरकि बीमारी से बहुत कष्ट होने लगा, और इसलिए उन्होंने अपने शष्यि से कहा:

---

[164] संत अथेनासयिस महान 326 से अलेक्जेंड्रयिा के पैट्रआर्क थे; यह महान संत एरयिन वधिर्मीयों के खलिाफ ऑर्थोडॉक्सी के एक उत्साही रक्षक थे। संत अथेनासयिस ने कई लेखन छोड़े, जो कसिी भी दुश्मन के सामने ऑर्थोडॉक्सी की अवनिाशीता के एक स्थायी स्मारक के रूप में खड़े हैं। उनकी मृत्यु 373 में हुई। चर्च द्वारा उनका पर्व 18 जनवरी को मनाया जाता है।

'मेरे पुत्र, मेरे लिए जमीन पर एक चटाई बिछा दो।'

और जब शिष्य ने उनका आदेश पूरा कर दिया, तो निफोन पूरी तरह बीमार होकर उस पर लेट गए। जैसे ही दिन चढ़ा, महात्मा अथेनासियस उनके पास आए और उनके पास बैठकर पूछा:

'पिताजी, क्या बीमारी में किसी मनुष्य को कोई लाभ होता है, या नहीं?'

संत ने उत्तर दिया:

'जैसे आग में शुद्ध होने पर सोना अपनी अशुद्धियों से मुक्त हो जाता है, वैसे ही एक व्यक्ति भी बीमारी के माध्यम से अपने पापों से मुक्त हो जाता है।'

फिर, थोड़ी देर रुकने के बाद, वह रोया; फिर मुस्कुराया, और उसका चेहरा खिल उठा, और उसने कहा:

'मैं आपको नमस्कार करता हूँ, हे पवित्र स्वर्गदूत!'

थोड़ी देर बाद, उन्होंने कहा:

'हे पवित्र शहीदों, आनंदित हो!' और उसका चेहरा और भी अधिक चमक उठा। कुछ देर बाद, उन्होंने जोड़ा:

'आप पर अनुग्रह हो, धन्य नबियों!'

तब संत अथेनासियस की आध्यात्मिक आँखें खुल गईं, और उन्होंने देखा कि धन्य को संतों के सभी वर्गों द्वारा, प्रत्येक व्यक्तिगत रूप से, अभिवादन किया जा रहा था। फिर निफोन ने प्रसन्नता से कहा:

'मैं आपको नमस्कार करता हूँ, पुरोहितों, आदरणीय पिताओं और सभी संतों!' – और चुप हो गया। कुछ ही देर बाद, वह चिल्लाया:

'हे आनंदित, आनंदित हो, मेरी दीप्तिमान ज्योति, मेरे सहायक और मेरी शक्ति; मैं तुम्हें महिमामय करता हूँ, हे शुभ, क्योंकि मैं तुम्हारी दया और अनुग्रह को याद करता हूँ!'

इसके बाद वह मौन हो गए, और उनका चेहरा सूर्य की तरह चमकने लगा, जिससे वहाँ उपस्थित सभी लोग विस्मित हो गए। एक सुगंधित खुशबू महसूस की जा सकती थी, और जल्द ही स्वर्ग से एक आवाज़ सुनाई दी, जो उन्हें शाश्वत विश्राम के लिए बुला रही थी। इस प्रकार उन्होंने 23 दिसंबर को अपना सम्मानित और पवित्र आत्मा ईश्वर के हाथों में सौंप दिया। पूरे शहर में विलाप और कड़वी कराहट मच गई, और संत निफॉन को पवित्र प्रेरितों के महान चर्च में सम्मान के साथ दफनाया गया, और उन्होंने उस एक की महिमा की जो पापियों पर दयालु है, संतों में अद्भुत है, पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा, अब और हमेशा और युगों-युगों तक। आमीन।

क्रीट के दस पवित्र शहीदों का कष्टकथा

23 दिसंबर को स्मरण किया जाता है

[165][166]रोमन सम्राट, डिसियस ने, डिसियस—जो उसके ही नाम का था—को क्रीट द्वीप का राज्यपाल नियुक्त किया[167] ; यह डिसियस क्रूरता, यातना और ईसाइयों के उत्पीड़न में अपने सम्राट जैसा ही था। क्रीट द्वीप पर पहुँचने पर, डेसियस ने तुरंत आदेश दिया कि मिसीह में सभी विश्वासियों को ढूंढकर यातना देने के लिए उसके सामने लाया जाए। और इस प्रकार उन्होंने विश्वास में दृढ़ मसीहियों को उसके सामने लाना शुरू कर दिया और, बहुत यातना और पीड़ा के बाद, उन्हें विभिन्न तरीकों से मार डाला। उस समय, दस अत्यंत गौरवशाली पुरुषों को पकड़कर यातना देने वाले के सामने लाया गया। वे विभिन्न शहरों के निवासी थे: गोरगिस शहर से - थियोडुलस, सैटरनिस, यूफोरस, गेलासियस और यूनसियिस; कओस से - ज़ोतिकस; एपिने से - पोम्पेयस और अगथोपस; किडोनिया से - बेसलिडिस; हेराक्लिया से - इवेरेस्टस; फिर भी वे सभी समान रूप से शाश्वत स्वर्गीय आनंद के लिए प्रयासरत थे। वे अपने यातनादाता के सामने उपस्थित हुए – और

---

[165] गॉर्टिना, या गॉर्टिन – प्राचीन काल में क्रीट द्वीप पर एक महत्वपूर्ण शहर था, जो लेफ़िया नदी (अब इएरोपोटामोस) पर स्थित था। इस प्राचीन शहर के खंडहर आज भी मौजूद हैं।

[166] कियोस, एपिनियस, किडोनिया और हेराक्लिया क्रीट द्वीप के विभिन्न शहर हैं।

[167] क्रीट द्वीप (जिसे कैंडिया के नाम से भी जाना जाता है) भूमध्य सागर के पूर्वी भाग में स्थित है। अपनी विशालता और उपजाऊपन के कारण, यह पहले भूमध्य सागर के 'द्वीपों की रानी' के रूप में जाना जाता था। यहाँ ईसाई धर्म का आरंभ प्रेरितों के समय से ही हो गया था; इसकी नींव प्रेरितों पर पवित्र आत्मा के अवतरण के प्रत्यक्षदर्शियों द्वारा रखी गई थी, क्योंकि उस घटना में क्रीटवासी उपस्थित थे (प्रेरितों के काम 2:11)। बाद में प्रेरित पौलुस द्वारा इसे यहाँ स्थापित और फैलाया गया

उन्होंने कतिने साहसकि शब्द बोले, कतिनी बहादुरी दखिाई, कतिनी यातनाएँ सहन कीं, और अपने धैर्य से कतिनी पीड़ाओं पर वजिय प्राप्त की! उन्हें पीटा गया, यातनाएँ दी गईं, जमीन पर घसीटा गया, पत्थर मारे गए, उनका मज़ाक उड़ाया गया और उन पर थूक दयिा गया; इस प्रकार, तीस दनिों तक उन्होंने हर प्रकार के अत्याचार को सहन कयिा। 28 दसिंबर को एक मुकदमा नरि्धारति कयिा गया था, और जब राज्यपाल अपनी सीट पर बैठ गया, तो वीरता और साहस से परपिूर्ण शहीदों को उनके अंतमि नरि्णय के लिए उसके सामने लाया गया। हालाँकि, राज्यपाल क्रोध के उन्माद में, अपने क्रूर हाथों से पवत्रि शहीदों को नष्ट करने के लिए लालायति था, जबकि वे अपनी अंतमि साँस तक सहन करने के लिए तैयार थे। हत्यारे राज्यपाल ने उन पर क्रोध से दृष्टि डाली और कहा:

'तुम क्या पागल हो, क्योंकि न तो ववेिक ने और न ही समय ने तुम्हें सखिाया है कि क्या अच्छा है?'

फरि, मानो उसने अपने क्रोध से ही उनमें पहले ही भय पैदा कर दयिा हो, उसने कहा:

'बलदिान चढ़ाओ; यदि नहीं, तो मैं तुमसे और कुछ नहीं कहूँगा, और तुम जान जाओगे कि डेसयिस कैसा होता है, जसिका आज्ञापालन करने से तुम इनकार करते हो!'

इस पर शहीदों ने उत्तर दयिा:

'हेगेमोन! हमने तुम्हें बहुत पहले ही, शब्दों और कर्मों दोनों से, दखिा दयिा है कि हम देवताओं को कोई बलदिान नहीं चढ़ाएंगे, और न ही हम तुम्हारे आदेश के आगे झुकेंगे।'

गवर्नर ने उनकी बात काटते हुए कहा:

'तो तुम उन यातनाओं के बारे में बलि्कुल भी नहीं सोचते जो तुम्हारा इंतज़ार कर रही हैं, हे अधर्मी लोगों?'

पवत्रि लोगों ने उत्तर दयिा, 'हम यातना से बलि्कुल भी नहीं डरते, हम तो तुम्हारे इस उपकार के लिए भी बहुत आभारी हैं कि तुमने हमारे लिए ऐसा आध्यात्मकि भोज—अर्थात् मसीह के लिए दुःख सहना—तैयार कयिा है और हमें यह परोसा है।'

राज्यपाल ने कहा:

'ऐसा नहीं होगा: तुम उन महान देवताओं की शक्ति को जानोगे जनिकी तुम नरि्लज्जतापूर्वक नदिा करते हो, यहाँ मौजूद कई बुद्धमिान पुरुषों के सामने, जो देवताओं में अग्रणी दयिा और हेरा का सम्मान करते हैं, रेया और अन्य देवता[168] ; अब तुम ऐसे कष्टों से गुजरोगे कि न केवल तुम्हारा साहस समाप्त हो जाएगा, बल्कि तुम जैसे अन्य—वदि्रोही, यदि वास्तव में कोई मलिते हैं—वे भी भयभीत हो जाएंगे।

इस पर, दृढ़ आत्मा वाले पुरुषों ने एक बार फरि उत्तर दयिा:

हेगेमोन, हमसे दयि और उसकी माता रेया के बारे में बात मत करो! यह हमारे लिए कोई नई बात नहीं है: हम अपने पूर्वजों से सुनी हुई बातों से उसकी उत्पत्ति, जीवन और चरित्र को जानते हैं। वह इतना असंयमी और इतना दुष्ट था कि उसने न केवल महलिाओं के साथ बल्कि पुरुषों के साथ भी व्यभचिार कयिा; जादू-टोने और जादुई छल-कपट के द्वारा उसने अपना असली रूप बदलकर दूसरा रूप धारण कर लयिा, यह सब और भी बड़े व्यभचिार के लिए था, और वह लगातार शर्मनाक कृत्यों से स्वयं को कलंकति करता रहा। कुछ लोगों ने, उसी जुनून में आकर, उसकी घृणति कृत्यों की नकल की – क्योंकि बुराई की नकल करने से आसान और क्या हो सकता है? – उन्होंने उसे देवता घोषति कयिा, मंदरि बनाए, और उसके लिए बलदिान चढ़ाने लगे, ताकि जो वे स्वयं चाहते थे वह देवता को प्रसन्न करने वाला प्रतीत हो, और ताकि व्यभचिार और कामुक जीवन न केवल परमेश्वर के प्रति घृणति न माना जाए, बल्कि, हाय! उसे परमेश्वर को प्रसन्न करने वाला माना जाए।

ईश्वर के संतों ने ऐसा कहा, जबकि राज्यपाल क्रोध से भर गया था, यह समझते हुए कि वे सही थे; भीड़ और भी उग्र हो गई, शहीदों पर टूट पड़ी, और उन्हें अपने हाथों से चीर-फाड़ डालती, यदि डेसयिस ने अपनी आवाज़ और हाथ के इशारे से लोगों के बीच के हंगामे और शोर को न दबा दयिा होता। शांति बहाल करने के बाद, वह यह सोचने लगा कि वह शहीदों के लिए कैसी क्रूर मृत्यु रच सकता है। और तुरंत, राज्यपाल के आदेश पर, यातना देने वालों ने संतों को यातना देने के लिए पकड़ लयिा, और उन्हें वभिन्नि प्रकार की यातनाओं—जो सभी समान रूप से क्रूर और पीड़ादायक थीं—के अधीन करना शुरू कर दयिा। उनमें से एक को फांसी दी गई और उसके मांस को लोहे की पंजों से नोचा गया: उसकी टेंडन (अस्थबिंध) बाहर नकिाल दी गईं, और उसके शरीर के टुकड़े जमीन पर गरि पड़े। दूसरों को पसलयिों में हड्डी तक पत्थरों और नुकीले

[168] डाई या ज़्यूस, हेरा और रेया के लिए, पृष्ठ 989 पर टप्पिणी 1 देखें।

खंभों से मारा गया; कुछ और पर सीसे के भारी वारों ने उनके जोड़ों को चकनाचूर कर दिया, उनकी हड्डियाँ टूटकर बिखर गईं। प्रत्येक को एक अलग तरीके से यातना दी गई। ऐसी क्रूर यातनाओं के बारे में सुनना भी दर्दनाक है; जैसे दयालु लोगों के लिए इस पीड़ा को देखना असहनीय होता है, वैसे ही इसका विस्तृत वर्णन सुनना भी कष्टप्रद है। फिर भी शहीदों ने उन यातनाओं को पूर्ण शांति से सहन किया—या, अधिक सटीक रूप से कहें तो, उन्हें आनंद के साथ झेला—और आसपास खड़े लोगों को ऐसा लगा कि वे दर्द से पीड़ित नहीं थे, बल्कि अपनी यातनाओं की अपर्याप्तता पर पछता रहे थे और इससे भी बड़ी यातनाओं की कामना कर रहे थे। हर कोई उन्हें देखने के लिए उमड़ पड़ा, मानो वे कोई नई और अद्भुत चीज़ हों - श्रद्धालु और अविश्वासी दोनों; श्रद्धालु, जो अपने विश्वास को गुप्त रखते थे, पीड़ितों के साहस पर आश्चर्य करने और इस प्रकार अपने स्वयं के विश्वास को मजबूत करने के लिए जल्दी से आगे बढ़े, जबकि अविश्वासियों ने संतों की सहनशीलता का मज़ाक उड़ाने की कोशिश की और, उनके भयानक यातनाओं को निहारते हुए, उनके दुख में आनंद लिया। वे न केवल थोड़ी भी दया नहीं दिखा रहे थे, बल्कि उन्होंने राज्यपाल और यातना देने वालों को और भी अधिक क्रूरता के लिए उकसाया। उनके प्रोत्साहन से, राज्यपाल ने आदेश दिए, और यातना देने वालों ने उन्हें अंजाम दिया, जबकि उद्घोषक चिल्लाया:

'अपने आप को बचाओ, अपने वरिष्ठों के आगे झुक जाओ, देवताओं को बलिदान चढ़ाओ।'

फिर भी, इतनी क्रूर यातनाओं के बीच, शहीदों ने अपने साहस और धैर्य में सभी को पीछे छोड़ दिया: लोगों को, उद्घोषक को, यातना देने वालों को, स्वयं राज्यपाल को, और सबसे बढ़कर उनके शत्रु—शैतान और उसकी सारी शक्ति को। सभी शहीदों ने, मानो एक स्वर में, पुकारा:

'हम मसीही हैं, मसीह का बलिदान, मसीह के लिए मारे गए; भले ही हमें दस हज़ार बार मरना पड़े, हम खुशी-खुशी मरेंगे!'

जब पवित्र शहीदों ने अपनी सभी यातनाओं की कोई परवाह नहीं की, तो डेसियस, जो सैतान का उत्साही सेवक था, उन्हें मनाने या बलिदान करने के लिए मजबूर करने की आशा खोकर, उन पर मृत्युदंड की घोषणा कर दी। संतों को शहर से बहुत दूर नहीं एक स्थान पर तलवार से सिर कलम करने के लिए ले जाया गया, जिसे उस भूमि के निवासी एलोनियन कहते थे। वहाँ जाते समय, शहीदों ने कुछ नया और असाधारण प्रदर्शित किया: अपनी सारी यातनाओं के दौरान वे उद्देश्य में एकजुट और एक मन के रहे थे, लेकिन अंत के करीब वे केवल इस बात पर बहस करने लगे कि उनमें से सबसे पहले तलवार का सामना कौन करेगा और मुकुट प्राप्त करेगा। लेकिन इस विवाद को थियोडुलस – इन पवित्र शहीदों में से एक – ने समाप्त कर दिया – – यह कहते हुए कि उनमें से पहला वही होगा जो, बाकी सभी के बाद, अपनी गर्दन तलवार के हवाले करेगा: यदि अपने सभी अन्य दोस्तों को सिर कलम होते और मरते हुए देखकर, वह बिल्कुल भी नहीं डरा, कोई दुख नहीं दिखाया, और अपने चेहरे पर कोई भाव परिवर्तन भी नहीं किया, तो वह वास्तव में खुद को सबसे गौरवशाली तपस्वी और विजेता साबित करेगा। सभी थिओडुलस के शब्दों से सहमत हुए। सबसे पहले, उन्होंने ईश्वर को एक भजन गाया:

– *'धन्य है यहोवा, जिसने हमें उनके दाँतों का आहार नहीं बनाया! हमारी आत्मा शिकारी के फंदे से, पक्षी के समान निकल भागी है'* (भजन संहिता 123:6-7)। फिर, नियत स्थान पर पहुँचकर, उनमें से प्रत्येक ने निम्नलिखित प्रार्थना कही:

– 'हे प्रभु, अपने दासों को क्षमा कर, और हमारे लिए, हमारे स्वजनों और मित्रों के लिए, और पूरे स्वदेश के लिए हमारे रक्त का बहाव स्वीकार कर; वे अज्ञानता के अंधकार से मुक्त हों और, प्रबुद्ध नेत्रों से, ईसाई धर्म को देखें, और तुझे, सच्चे प्रकाश, शाश्वत राजा को जानें!'

उनकी प्रार्थना के बाद, उनके पवित्र और विजयी सिर एक-एक करके काट दिए गए, जबकि उनकी आत्माएँ आनंदपूर्वक मसीह ईश्वर के पास आरोहण कर गईं। सिर कलम किए जाने के बाद, जब यातना देने वाले चले गए, तो उस स्थान पर बचे हुए कुछ ईसाइयों ने शहीदों के पवित्र शरीरों को इकट्ठा किया और उन्हें सम्मान के साथ दफनाया[169] ।

जब उत्पीड़न समाप्त हो गया और धर्मपरायणता एक बार फिर से चमक उठी, तो गॉर्टिना के धन्य पादरी पॉल, कॉन्स्टेंटिनोपल पहुँचे और उन्होंने संतों के शरीरों को अलोनिया से - जहाँ उन्हें तलवार से सिर कलम करने के बाद दफनाया गया था - गॉर्टिना ले जाने की अनुमति मांगी। क्रीट लौटकर और ईसाइयों की एक बड़ी भीड़ के साथ अलोनिया के स्थल पर पहुँचकर, जिनमें से कुछ संत शहीदों की शहादत के समय मौजूद थे, और उन्हें ढकने वाली मिट्टी को हटाने के बाद, उन्होंने उनके शरीरों को ईश्वर की इच्छा से संरक्षित, जैसे अभी भी नम हों, बिना किसी नुकसान और अखंड पाया - और

[169] यह दूसरी शताब्दी के मध्य में था।

उन्हें शहर की सुरक्षा और सभी की सहायता के लिए सम्मान के साथ स्थानांतरित कर दिया आवश्यकता में। उनकी प्रार्थनाओं के द्वारा, हम भी हमारे प्रभु यीशु मसीह की अनुग्रह और प्रेम से, उनके लिए तैयार की गई स्वर्गीय आशीषों में सहभागी होने के योग्य ठहरें, जिनके साथ पिता और पवित्र आत्मा का भी अनंत काल तक सम्मान और महिमा हो। आमीन।

कॉन्टाकियन, स्वर 4:

शहीदों के सम्मानजनक दुख-कष्ट से भोर उदित हुई है, जो हमारे लिए खलिहान में जन्मे एकमात्र के आगमन का पूर्वसंकेत है, जिन्हें कुँवारी ने बिना बीज के जन्म दिया।

नेओकेसरिया के बिशप संत पॉल का स्मरणोत्सव

23 दिसंबर को स्मरण किया जाता है

हमारे पवित्र पिता पॉल, जब नीओकेसरिया के बिशप के रूप में सेवा कर रहे थे[170] , अपनी सद्गुणों के लिए इतने प्रसिद्ध हो गए कि उनका चमत्कारिक नाम उस समय निकोमेडिया में शासन करने वाले लिसिनियस[171] के ध्यान में आ गया। लिसिनियस, ने ईसाइयों के खिलाफ एक क्रूर उत्पीड़न शुरू करते हुए, पॉल को अपनी उपस्थिति में बुलाया। और जब दूतों ने संत को सम्राट के दरबार में लाया, तो उन्होंने पहले उसे धमकियों से डराने की कोशिश की और भूखा रखा, और फिर उसे पीटना शुरू कर दिया। संत ने यह सब धैर्यपूर्वक सहन किया, और सभी उसके धैर्य को देखकर चकित रह गए। इसके बाद, उसे यातना की एक और विधि का सामना करना पड़ा: एक लोहार ने चिमटे से, आग की चिंगारियाँ उगलते हुए एक लाल-गरम लोहे का छल्ला संत की हथेली पर रख दिया; संत ने दूसरे हाथ से उस छल्ले को ढक लिया, और दोनों हाथों को हथकड़ियों में जकड़कर तब तक पकड़े रहा जब तक लोहा ठंडा नहीं हो गया। परिणामस्वरूप, संत के हाथों की मांसपेशियाँ सिकुड़ गईं और सुन्न हो गईं, जिससे उनकी उंगलियाँ अब मुड़ या सीधी नहीं हो सकती थीं। फिर पूजनीय संत को बाँधकर यूफ्रेटिस नदी के किनारे ले जाया गया, जहाँ उन्हें कैद कर दिया गया।

जब सम्राट कॉन्स्टेंटाइन महान रोम छोड़कर, अंततः पूर्व में सिंहासन पर आसीन हुए और उस अवसर पर जारी एक फरमान में अपनी इच्छा व्यक्त की कि उनके सभी प्रजाजन ईसाई हों, तब मसीह के नाम के लिए निर्वासन और कारावास में रहे सभी लोगों को उनकी स्वतंत्रता प्रदान कर दी गई, और प्रत्येक अपने स्वदेश लौट गया। उस समय, हमारे पवित्र पिता पॉल, जिन्हें भी मुक्त कर दिया गया था, ने अपना आसन बिशप के सिंहासन पर ग्रहण किया और भक्ति से प्रकाशित हुए, ठीक वैसे ही जैसे उन्होंने पहले तब किया था जब वे एक तपस्वी थे, और निकिया में आयोजित प्रथम सार्वभौमिक परिषद[172] में अन्य 318 पवित्र पिताओं के साथ उपस्थित थे, संत पॉल उन लोगों में से थे जिन्होंने अपने शरीर पर प्रभु यीशु के घावों को वहन किया[173] : परिषद में उपस्थित कुछ पिताओं ने अपने हाथ खो दिए थे, कुछ ने अपने कान, कुछ ने अपनी नाक, अन्य ने अपनी आँखें खो दी थीं, या उन्हें कोई अन्य शारीरिक चोट लगी थी; कुछ ने मसीह के लिए लाठियों से पिटाई, टूटी हड्डियाँ और उखड़े हुए जोड़ झेले, जबकि अन्य ने जलना और अपने अंगों का छीलना सहन किया। उनमें धन्य पौलुस भी थे, जो मसीह के विश्वास के लिए एक सदाचारी शहीद थे, क्योंकि उन पर भी लाठियों से पिटाई के निशान थे, और उनके पवित्र हाथ जल जाने के कारण सूख गए थे और अब काम नहीं करते थे। यह परिषद दुष्ट विधर्मी

---

[170] धन्य थियोडोरेट, पॉल को नेओकेसरेया का बिशप बताते हैं – जो यूफ्रेटिस नदी के तट पर स्थित एक किला है।

[171] लिसिनियस ने 307 से 324 तक रोमन साम्राज्य के पूर्वी भाग पर शासन किया, शुरुआत में सम्राट गैलेरियस के साथ सह-शासक के रूप में, और बाद में स्वतंत्र रूप से। जहाँ एक ओर पश्चिम में कॉन्स्टेंटाइन महान सम्राट बने, वहीं लिकिनियस – जो एक मूर्तिपूजक था – ने शुरुआत में ईसाइयों के साथ लगभग अनुकूल व्यवहार किया, लेकिन जब कॉन्स्टेंटाइन ने दृढ़ता से खुद को ईसाई धर्म के रक्षक के रूप में घोषित कर दिया, लिसिनियस मसीह की कलीसिया का एक क्रूर उत्पीड़क बन गया, उसे शक था कि कॉन्स्टेंटाइन पूर्व पर भी नियंत्रण करना चाहता है, और उसके अपने ईसाई प्रजाजन कॉन्स्टेंटाइन से सहानुभूति रखते हैं और उसके अधीन होना चाहते हैं।

[172] 325 में,

[173] प्रेरित पौलुस के उदाहरण का अनुसरण करते हुए, जो गलातियों 6:17 में उद्घोषित करते हैं, 'क्योंकि मैं अपने शरीर पर प्रभु यीशु के घावों के चिन्हों को लिए फिरता हूँ।'

एरियस के वरिुद्ध बुलाई गई थी, जसिे तब दैवीय न्याय द्वारा दोषी ठहराया गया। परषिद के बाद, धर्मपतिागण सम्राट के समक्ष प्रस्तुत कएि गए। तत्पश्चात् धन्य सम्राट कॉन्स्टेंटाइन ने धन्य पॉल के हाथों को पकड़ा और उन्हें चूमकर तथा अपनी आँखों और शरीर के अन्य अंगों से लगाकर उद्घोषणा की:

'हमारे परमेश्वर मसीह के लिए इतना दुख सहने वाले का स्वागत करने और इन झुलसे हुए, अब असहाय हाथों को चूमने में हमें बहुत आनंद हो रहा है।'

तब धन्य पौलुस अपने नगर, अपने बशिप के पद पर लौट आए और अपनी भेड़ों के झुंड की कई वर्षों तक देखभाल करने के बाद, प्रभु के पास शांतपिूर्वक परलोक सधिार गए।

6 जनवरी

24 दसिंबर (पुराना संस्करण)

पवत्रि पूजनीय शहीद यूजेनयिा का जीवन और शहादत।

24 दसिंबर को स्मरणोत्सव

रोमन सम्राट कोमोडस के शासन के सातवें वर्ष में, जो अपने पति मार्कस ऑरेलयिस के बाद सहिासन पर बैठा था[174] , फलिपि नामक एक प्रतष्ठिति कुलीन व्यक्ति को पूरे मस्रि का राज्यपाल नयिुक्त कयिा गया। यह नयिुक्ति मलिने पर, फलिपि अपनी पत्नी क्लॉडयिा और अपने बच्चों के साथ रोम से अलेक्जेंड्रयिा चला गया। उनके दो पुत्र, एवटिस और सेरजयिस, और एक पुत्री, यूजेनयिा थीं, जो रूप से सुंदर और आत्मा से पवत्रि थीं; यह वृत्तांत उसी के जीवन को बयां करने के लिए है।

फलिपि ने मस्रि पर रोमन कानूनों और अपने पूर्वजों की प्रथाओं के अनुसार शासन कयिा। उसे जादूगरों और जादू-टोना करने वालों से गहरी घृणा थी और वह हर संभव तरीके से उनका उत्पीड़न करता था। वह यहूदयिों को भी पसंद नहीं करता था, इस हद तक कि वह यहूदी नाम सुनना भी बर्दाश्त नहीं कर सकता था। वह ईसाइयों के प्रति बहुत कृपालु था और, यद्यपि उसने शाही फरमान द्वारा उन्हें अलेक्जेंड्रयिा से नकिाल दयिा था, फरि भी उसने उन्हें उस शहर के उपनगरों में शांतपिूर्वक बसने और अपने ईश्वर की पूजा करने की अनुमति दी। फलिपि ईसाइयों का उनके जीवन की पवत्रिता और उनकी बुद्धमित्ता के लिए सम्मान करता था। वह स्वयं ग्रीक दर्शन में रुचि रखता था, जसिमें उसने अपनी बेटी यूजेनयिा को भी शकि्षिति कयिा, ताकि वह दर्शन का ठोस ज्ञान प्राप्त कर सके। इसके अलावा, फलिपि ने यूजेनयिा को लैटनि और ग्रीक धाराप्रवाह और प्रभावशाली ढंग से बोलना सखिाया। एक स्पष्ट मन और लगन होने के कारण, यूजेनयिा अपनी पढ़ाई में आसानी से उत्कृष्ट हो गई। जो कुछ भी उसने एक बार सुना या पढ़ा था, वह हमेशा दृढ़ता से याद रखती थी, और उसे अपने दलि में इस तरह संजोए रखती थी जैसे वह कसिी तांबे की पट्टकिा पर उकेरा गया हो। वह चेहरे से सुंदर और कद-काठी से सुडौल भी थी, लेकनि उससे भी बेहतर और अधकि सुंदर थी उसके वचिारों की पवत्रिता और उसकी कुंवारी पवत्रिता। इसी कारण, रोम के सबसे प्रतष्ठिति गणमान्य व्यक्तयिों में से एक, एक्वलिनिस, उसे अपने बेटे, एक्वलियिस के साथ सगाई करना चाहते थे। लेकनि जब उसके माता-पति ने उससे पूछा कि क्या वह इस कुलीन युवक से शादी करने के लिए सहमत होगी, तो यूजेनयिा ने जवाब दयिा:

'पति का चुनाव उसकी वंशावली के आधार पर नहीं, बल्कि उसके जीवन-यापन के आधार पर करना चाहिए, क्योंकि परविार के साथ नहीं, बल्कि पति के साथ ही जीवन बतिाना होता है।'

अन्य कुलीन और धनी युवक भी उससे सगाई करना चाहते थे, लेकनि उसने सभी को यह बहाना बनाकर मना कर दयिा कि उनका जीवन-शैली उसके अनुकूल नहीं है, जबकि वास्तव में वह अपनी कुँवारी पवत्रिता के प्रति प्रेम के कारण ववािह से बच रही थी, क्योंकि उसकी एकमात्र इच्छा और चति कुँवारी बने रहने की थी।

---

[174] मार्कस ऑरेलयिस, रोमन सम्राट, 161 से 180 तक शासन कयिा। कॉमोडस, उनके पुत्र, ने 180 से 192 तक शासन कयिा।

इस प्रकार यह सुंदर और पवित्र पात्र दिव्य अनुग्रह प्राप्त करने के लिए तैयार हो गया, और शीघ्र ही सच्चा विश्वास उसके अच्छे कर्मों के साथ आया, और यूजेनिया, हृदय से पवित्र, भक्ति के शुद्ध स्रोत से जल ग्रहण करने लगी। निम्नलिखित घटना ने उसके ईश्वर की ओर मुड़ने की शुरुआत को चिह्नित किया। संयोग से, या कहें तो दैवीय कृपा से, वह संयोगवश संत पौलुस प्रेरित के पत्र पढ़ने लगी। ध्यान से पढ़कर और उसके अर्थ को समझकर, यूजेनिया को उस एक सच्चे ईश्वर के अस्तित्व का पता चला जिसने ब्रह्मांड की रचना की थी; और तुरंत ही उसका मन प्रबुद्ध हो गया, क्योंकि वह लंबे समय से शुद्ध हो चुका था और पवित्र आत्मा को प्राप्त करने के लिए तैयार था। अपने हृदय में वह मसीह में दृढ़ता से विश्वास करती थी, लेकिन अपने माता-पिता के क्रोध से डरकर, वह अपने होठों से खुले तौर पर उसकी स्वीकारोक्ति करने की हिम्मत नहीं कर सकी।

जब राजा के आदेश से ईसाइयों को अलेक्जेंड्रिया से निकाल दिया गया—जिनकी शिक्षाओं को सुनने की यूजेनिया बहुत इच्छुक थी—तो उसने अपने माता-पिता से ग्रामीण एकांत में आराम करने के बहाने अपनी सबसे नजदीकी संपत्ति में से एक का दौरा करने की अनुमति मांगी, लेकिन वास्तव में ताकि वह अपनी इच्छा पूरी कर सके। यूजेनिया के इरादों से अनजान, उसके माता-पिता ने उसे उस संपत्ति पर जाने की अनुमति दे दी। जब वह अपने हजामों और नौकरों के साथ अपने रथ में ईसाइयों की बस्तियों में से एक में स्थित एक मठ के पास से गुज़र रही थी, तो यूजेनिया ने दीवार के पीछे से भिक्षुओं को गाते हुए सुना: *'पराए देवता सब दैत्य हैं, परन्तु यहोवा ने आकाश बनाया* (भजन संहिता 95:5)। ये शब्द सुनकर और अपने पिता की भूल पर लज्जित होकर, उसने अपनी आत्मा की गहराई से एक आह भरी और अपने दो खसरों से कहा, जिनमें से एक का नाम प्रोटोस और दूसरे का हायसिंथ था:

'तुमने मेरे साथ विस्तार से विज्ञान का अध्ययन किया है; हमने मिलकर दार्शनिकों की शिक्षाओं को समझा है: सुकरात, अरस्तू और प्लेटो, स्टोइकों की प्रसिद्ध त्रुटियाँ और एपिक्यूरस के विचार[175] , और इसी तरह हमने अन्य सोफिस्टों और कवियों की कृतियों को पढ़ा और अध्ययन किया है। आप निश्चित रूप से समझते हैं कि यह सब केवल कविदंतियाँ हैं, जिनके समर्थन में शायद ही कुछ है, सिवाय सत्य के एक ऐसे आभास के जो कई लोगों को धोखा देता है। इसके अलावा, यह हमारे लिए कोई रहस्य नहीं है कि यूनानी अपनी बुद्धि का कैसे घमंड करते हैं: उनमें से कुछ यह साबित करने के लिए हर संभव प्रयास करते हैं कि ईश्वर का कोई अस्तित्व ही नहीं है, जबकि अन्य मानते हैं कि कई देवता हैं, और कुछ को श्रेष्ठ तथा अन्य को नीच समझते हैं। हालाँकि, ईसाई एक ही कथन से उन सभी को परास्त कर देते हैं, कहते हुए: *'जाति-धर्म वालों के सब देवता राक्षस हैं'* (भजन संहिता 95:5), क्योंकि इन , जाति-धर्म वालों के देवताओं में विश्वास करना पूर्ण पागलपन है और विनाश की ओर ले जाता है। लेकिन ईसाई शिक्षा: *'प्रभु ने आकाशों की रचना की'* (भजन संहिता 95:5), खुले तौर पर एक ईश्वर को स्वीकार करती है और हमें हमारे सामान्य प्रभु का ज्ञान देती है। उनके प्रेरित पौलुस इसी के अनुसार सिखाते हैं; मैंने कल और परसों उनके लेख पढ़े, जो एक परमेश्वर के अस्तित्व को साबित करते हैं। और मैं इस प्रेरित के वचनों पर विश्वास करती हूँ, क्योंकि वे बहुत स्पष्ट और विश्वसनीय हैं, क्योंकि वे विश्वास को कर्मों पर आधारित करते हैं। अपने पत्रों में, प्रेरित स्पष्ट रूप से मोक्ष का मार्ग बताता है, और आप, यदि आप चाहें, तो उसकी मार्गदर्शिका का पालन कर सकते हैं। जहाँ तक मेरा सवाल है, मुझे अब आपकी मालकिन नहीं कहा जाएगा, बल्कि आपकी बहन और सह-सेविका कहा जाएगा, क्योंकि हमारा एक ही प्रभु और पिता है—ईश्वर। तो आइए हम भाइयों की तरह एक हृदय और एक मन के हों, और एक साथ मसीह की ओर मुड़ने का संकल्प लें। मैंने सुना है कि ईसाई बिशप एलियास ने यहाँ एक मठ बनवाया था, जहाँ भिक्षु दिन-रात भजनों से निरंतर परमेश्वर की स्तुति करते हैं। बिशप ने मठ का प्रभार थियोडोर नामक एक पादरी को सौंपा, जिनके चमत्कारिक कार्यों के बारे में कहा जाता है कि वे अपनी प्रार्थनाओं के द्वारा अंधों को दृष्टि प्रदान करते हैं, दुष्ट आत्माओं को भगाते हैं और एक ही शब्द से हर प्रकार की बीमारियों को ठीक कर देते हैं। यह भी कहा जाता है कि किसी भी परिस्थिति में महिलाओं को इस मठ में प्रवेश करने की अनुमति नहीं है। इसलिए, मेरे बाल छोटे काट दो, मुझे पुरुषों के कपड़े पहना दो, और मुझे रात में वहाँ ले जाओ। हम देर शाम को शहर लौटने की व्यवस्था करेंगे; सभी नौकर रथ के आगे चलें, जबकि तुम दोनों पीछे-पीछे चलो। मैं चुपचाप रथ से उतर जाऊँगी और हम किसी के ध्यान में आए बिना निकल जाएँगे; रथ खाली ही घर लौट जाएगा, जबकि हम ईश्वर के सेवकों के पास जाएँगे।

यूजेनिया के शब्दों और उसकी योजना दोनों ही नपुंसकों को भा गई, और जब रात हुई, तो उन्होंने वैसा ही किया जैसा पहले से तय था। शाम के देर से, शहर लौटते समय, उन्होंने गुप्त रूप से यूजेनिया को रथ से नीचे उतरने में मदद की,

[175] सुकरात, प्लेटो (उनके शिष्य), अरस्तू (प्लेटो के शिष्य) और एपिक्यूरस प्रसिद्ध यूनानी दार्शनिक थे जो ईसा पूर्व चौथी शताब्दी में रहते थे।

ताकि नौकरों में से किसी को पता न चले; खुद को छिपाने के बाद, उन्होंने उसे पुरुषों के कपड़े पहनाए, उसकी कुंवारी के बाल काट दिए, और मठ के लिए निकल पड़े। मठ पहुँचने से पहले, उन्होंने हेलियोपोलिस के बिशप धन्य एलियाह[176] को आते हुए देखा। मिस्र में यह रिवाज था कि जब कोई बिशप मठों और चर्चों का दौरा करता था, तो लोग भजनों के साथ उसका साथ देते थे। तो बिशप एलिया के साथ भी ऐसा ही था: उनके आगे और पीछे लगभग दस हज़ार पुरुष चल रहे थे, जो गाते और जयकारे लगाते हुए कह रहे थे:

– *'धर्मी का मार्ग समतल है; हे यहोवा, तू धर्मी का मार्ग समतल कर'* (यशायाह 26:7)।

ये शब्द सुनकर यूजेनिया ने अपनी सहेलियों से कहा:

'इन छंदों के अर्थ पर विचार करो और ध्यान दो कि उनका हर शब्द हम पर कैसे लागू होता है। जब हम सच्चे परमेश्वर के बारे में बात कर रहे थे, तो हमने *यह* गीत सुना: *"जाति-जाति के देवता दैत्य हैं, परन्तु यहोवा ने आकाश को बनाया"* (भजन संहिता 95:5)। अब, जब हम मूर्तिपूजा से मुँह मोड़कर उस मार्ग पर चल पड़े हैं जिससे हम मसीह के पास आना चाहते हैं, तो यहाँ कई हज़ार लोग हैं जो हमसे मिलते हुए एक स्वर में गा रहे हैं: *'धर्मियों का मार्ग समतल है; हे यहोवा, तू धर्मियों का मार्ग समतल करता है'* (यशायाह 26:7)। और मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि यह संयोग से नहीं, बल्कि दैवीय व्यवस्था से हुआ है। आइए देखें कि ये लोग कहाँ जा रहे हैं, और यदि यह उसी मठ की ओर है जहाँ हम जा रहे हैं, तो हम उनसे मिल जाएँगे और, मानो, उनके मित्रों के रूप में साथ-साथ चलेंगे।

चलते-गाते लोगों के साथ मिल जाने के बाद, उन्होंने रास्ते में एक आदमी से पूछा:

'अपने चारों ओर खड़े लोगों के बीच गधे पर सवार यह वृद्ध व्यक्ति कौन है?'

और उन्होंने उत्तर में सुना कि वह बिशप एली थे, जो अपने बचपन से ही एक ईसाई थे और एक मठ में पले-बढ़े थे। जब, एक छोटे लड़के के रूप में, उन्हें पड़ोसी से आग लाने भेजा जाता था, तो वह अपने कपड़ों की तहों में जलते हुए कोयले ले जाते थे, और उनके कपड़े जलते नहीं थे: अपने बचपन में भी वह परमेश्वर को इतने प्रिय थे।

'कुछ दिन पहले,' पूछे गए आदमी ने कहना जारी रखा, 'ज़ारिन नाम का एक जादूगर इन इलाकों में प्रकट हुआ, जो विभिन्न तरकीबों और जादू-टोनों से लोगों को बहका रहा था: उसने बिशप एलिया को एक धोखेबाज़ कहा, जबकि अपने बारे में दावा किया कि वह मसीह द्वारा लोगों के पास भेजा गया एक अच्छा शिक्षक था। और इस प्रकार बहुत से ईसाई इकट्ठा हुए और हमारे पिता के पास आए, जिन्हें आप यहाँ देखते हैं, और कहा: 'हम सुनते हैं कि ज़ारिन यह दावा कर रहा है कि उसे मसीह ने भेजा है; इसलिए, या तो उसे अपनी संगति में स्वीकार करें, या, यदि उसके शब्द झूठे हैं, तो उसे अस्वीकार करें, और हम आप में से उस व्यक्ति का अनुसरण करेंगे जो इस वाद-विवाद में विजयी होगा।' महाधर्माध्यक्ष संत एलियास ज़ारिन के साथ बहस के लिए सहमत हो गए: उन्होंने अपनी आशा मसीह में रखी, ठीक वैसे ही जैसे ज़ारिन ने अपनी आशा अपने राक्षसों में रखी। बहस के लिए एक दिन निर्धारित किया गया और हेलियोपोलिस के केंद्र में एक स्थान तैयार किया गया। जादूगर ज़ारिन अपने जादुई मंत्रों के साथ प्रकट हुआ, जबकि बिशप ईश्वर से प्रेरित वचनों के साथ आए और लोगों को आशीर्वाद देने के बाद कहा: *'इस से तुम परमेश्वर की आत्मा को पहचानो: हर वह आत्मा जो यह मानती है कि यीशु मसीह देह में आया, वह परमेश्वर की ओर से है'* (1 यूहन्ना 4:2)। फिर उन्होंने ज़ारिन की ओर मुड़कर उसके साथ एक महान वाद-विवाद शुरू किया। लेकिन जादूगर अपनी छल-कपट में चालाक, अपने वचनों में घमंडी और बेबाक था; उसने सत्य की शक्ति से नहीं, बल्कि शिरमनाक वाक्पटुता से हावी होने की कोशिश की। इसलिए, नम्र और सौम्य बिशप उसे बहस में हरा नहीं सके, और लोग इस बात से दुखी हुए कि बहस में ज़ारी बिशप पर भारी पड़ रहा था। यह देखकर, एलियास ने हंगामा बंद करने की मांग की और लोगों से कहा: हमें अब प्रेरित पौलुस की उस आज्ञा का पालन करना चाहिए, जो वह अपने शिष्य तिमोथी को देते हैं: *'बेकार की बहसों में मत पड़ो, जिनसे किसी का कोई लाभ नहीं होता, बल्कि सुनने वालों में भ्रम ही पैदा होता है'* (2 तिमोथी 2:14)। लेकिन कहीं ऐसा न सोचा जाए कि हम प्रेरित की इस गवाही का हवाला सत्य स्थापित करने के लिए नहीं, बल्कि डर के मारे दे रहे हैं – नगर के बीच में एक बड़ी आग जलाई जाए और हम दोनों उसमें उतरें; हम में से जो जलकर नष्ट नहीं होगा, वही मसीह का सच्चा दूत होगा। यह प्रस्ताव पूरे भीड़ को भा गया, और तुरंत एक बड़ी आग जला दी गई। बिशप ने जादूगर को आग में आने के लिए कहा, लेकिन उसने उत्तर दिया: 'पहले तुम आग में प्रवेश करो, क्योंकि यह परीक्षा तुमने ही प्रस्तावित की है।' क्रॉस का चिह्न बनाकर और अपने हाथ स्वर्ग की ओर उठाकर, बिशप अलाव के केंद्र में चले गए और लगभग आधे घंटे तक वहां खड़े रहे, बड़ी लपटों से घिरे होने के बावजूद, उन

[176] हेलिओपोलिस निचले (उत्तरी) मिस्र का एक शहर है।

पर जरा भी झुलसने का असर नहीं हुआ: आग ने न तो उनके बाल छुए और न ही उनके कपड़े। उन्होंने ज़ारयिा को भी आग में आने के लिए कहा, लेकिन जादूगर, डर के मारे, भागने की कोशिश करने लगा। तब भीड़ ने उसे पकड़ लिया और जबरदस्ती आग में फेंक दिया। जादूगर तुरंत जलने लगा और पूरी तरह से भस्म हो जाता, अगर पवित्र बिशप एलियास ने उसे आधे जले हुए लेकिन जीवित अवस्था में लपटों से बचा न लिया होता। इसके बाद, जादूगर को हेलीओपोलिस की सीमाओं से अपमानपूर्वक निर्वासित कर दिया गया। जहाँ तक उस बिशप का सवाल है जिसे आप यहाँ देखते हैं, वह जहाँ भी जाता है, लोग दिव्य भजनों के साथ उसका साथ देते हैं।

जब उसने यह वृत्तांत सुना, तो धन्य यूजेनिया आत्मा में आनंदित हुई, चकित हुई, गहरी आह भरी और, अंत में, उस व्यक्ति से विनम्रतापूर्वक विनती करने लगी जिससे वह बात कर रही थी (उसका नाम यूट्रोपियस था):

'मैं आपसे विनती करती हूँ, मेरे स्वामी, कि आप उन लोगों के बारे में पवित्र बिशप को बताएँ जो मूर्तियों से मुँह मोड़कर मसीह की ओर मुड़ना चाहते हैं। हम भाई हैं और हमने आपसी सहमति से ईसाई बनने और इस मठ में एक साथ रहने का निर्णय लिया है, ताकि हम कभी एक-दूसरे से अलग न हों।'

उस आदमी ने जवाब दिया, 'अभी के लिए इस बारे में और कुछ मत कहो, जब तक कि बिशप मठ में प्रवेश नहीं कर लेते और अपनी यात्रा से थोड़ा आराम नहीं कर लेते; और जब समय सही होगा, तो मैं, जैसा आप चाहती हैं, उन्हें आपके बारे में बता दूँगा।'

जैसे ही वे मठ के पास पहुँचे, भिक्षु बिशप से मिलने के लिए बाहर आए और गाए: *'हे परमेश्वर, हम ने तेरी दया तेरे लोगों के बीच ग्रहण की है*' (भजन संहिता 47:10)।

बिशप और लोगों के साथ, यूजेनिया—जो अपने वस्त्रों और छोटे बालों में एक युवक जैसी दिखती थी—और उसके नपुंसक मठ में प्रवेश कर गए। चर्च में दैवीय पूजा संपन्न करने और शाम को दस बजे, उपवास करने वालों के बीच प्रथा के अनुसार, हल्का भोजन करने के बाद, संत एलियास ने अपने कार्यों से विश्राम किया और एक सपने में निम्नलिखित दर्शन देखा: कुछ पुरुष अपने कंधों पर एक महिला की मूर्ति उठाए हुए थे, और उसे हेलनिक देवियों में से एक जैसी मानकर बलिदान और पूजा के साथ एक देवता के रूप में सम्मानित कर रहे थे। बिशप के लिए यह देखना दुखद था कि कैसे लोग मूर्तिपूजा में पड़कर भटक रहे थे, और उन्होंने उनके बीच खड़ी देवी को संबोधित करते हुए कहा:

'क्या यह तुम्हारे लिए उचित है, जो ईश्वर की एक रचना हो, कि लोग तुम्हें ईश्वर के रूप में सम्मान दें और तुम उनसे वह पूजा स्वीकार करो जो केवल ईश्वर को ही अर्पित की जाती है?'

ये शब्द सुनते ही, देवी ने तुरंत उन पुरुषों को छोड़ दिया जो उसकी पूजा कर रहे थे और बिशप के पीछे चल पड़ी, यह कहते हुए:

'मैं तुम्हें तब तक नहीं छोड़ूँगी और न ही मुड़ूँगी जब तक तुम मुझे मेरे सृष्टिकर्ता और रचयिता तक नहीं ले जाओगे और मुझे उसी के हवाले नहीं कर दोगे।'

अपने नींद से चौंककर जागे, बिशप ने इस दर्शन पर मनन किया। और फिर यूट्रोपियस अंदर आया और कहा:

'आपकी कृपा! तीन युवक, जन्म से भाई, जिन्होंने सर्वसम्मति से मूर्तिपूजा का त्याग कर दिया है और इस मठ में मसीह की सेवा करने वालों में गिने जाने की इच्छा रखते हैं, आज आपके पीछे मठ में प्रवेश किए और आँसुओं से भरी आँखों के साथ मुझसे विनती की कि मैं उनकी उपस्थिति की सूचना आपकी पवित्रता को दूँ।'

बिशप ने बड़ी प्रसन्नता से उद्घोष किया:

– हे प्रभु यीशु मसीह, मैं आपका धन्यवाद करता हूँ कि आपने मुझे आज ऐसी आनंददायक खबर सुनने का सौभाग्य प्रदान किया!

और उन्होंने उन तीनों युवकों को तुरंत अपने पास बुलाने का आदेश दिया। जब वे अकेले आए और बिशप के सामने खड़े हो गए, तो उस पवित्र व्यक्ति ने पहले एक प्रार्थना की, और फिर यूजेनिया से पिता समान और स्नेहपूर्वक बात करनी शुरू की, उनके नाम, उत्पत्ति और मातृभूमि के बारे में पूछा। लड़कियों जैसी शर्मीलापन से, यूजेनिया ने विनम्रता से जवाब दिया:

'हम गौरवशाली रोम नगर से आए हैं, और रोम ही हमारा वतन है। हम खून के रिश्ते से भाई हैं। हम में से पहला प्रोट है, दूसरे का नाम हायसिंथ है, और मेरा नाम यूजीन है।'

उसे स्नेहपूर्वक देखते हुए, बिशप एलिया ने कहा:

'तुम्हें यूजेनिया, यूजेनिया कहकर सही ही बुलाया जाता है! तुम्हारा नाम, "[177] ", तुम्हारी आत्मा के अनुरूप है, क्योंकि तुममें एक कुलीन, पुरुष-सुलभ आत्मा है और तुम हर तरह से एक पुरुष हो।' अपने मन में अपने निर्णय पर दृढ़ रहो, अपनी नारी स्वभाव पर विजय प्राप्त करो, और तुम पुरुषत्व से परिपूर्ण हो जाओगी और मसीह में स्थिर हो जाओगी, जिनके लिए तुम, एक पत्नी होते हुए भी, स्वयं को पति के रूप में प्रस्तुत करती हो, ईश्वर के प्रति प्रेम से अपनी नारी आकृति और नाम बदलकर। मैं यह आपसे इसलिए कह रहा हूँ, न तो आपको फटकारने के लिए, और न ही आपकी नारी प्रकृति की निंदा करने के लिए, और न ही आपके इरादे से आपको हटाने की इच्छा से, बल्कि इसलिए कि आप जान सकें कि परमेश्वर आपकी कितनी परवाह करते हैं—वह जिन्होंने मुझ पर आप सब कुछ प्रकट किया है, और कुछ भी छिपाया नहीं है: कि आप कौन हैं, आप मेरे पास कैसे आएँगी, और आपके साथ और कौन मेरे पास आएगा। तो, यूजेनिया, यह साबित करने का प्रयास करो कि तुम आत्मा में भी उतनी ही बहादुर हो जितनी तुम दिखावे में हो: क्योंकि मेरे प्रभु ने मुझे यह भी बताया है कि तुमने स्वयं को उनके लिए एक पवित्र पात्र के रूप में तैयार किया है, अपनी कुँवारी अवस्था को बिना किसी दाग के बनाए रखते हुए और सांसारिक जीवन के प्रलोभनों को ठुकराते हुए।

तब संत ने प्रोट और याकिनफ की ओर मुड़कर कहा:

'तुम नाम के लिए दास हो, परन्तु आत्मा में स्वतंत्र हो, क्योंकि तुम्हारी आत्मा सांसारिक किसी भी वस्तु की दास नहीं है। इसलिए, यह मैं नहीं, बल्कि प्रभु यीशु मसीह स्वयं हैं जो तुमसे कहते हैं: *"मैं तुम्हें अब दास नहीं कहता, बल्कि मित्र कहता हूँ"* (यूहन्ना 15:15)। ऐसी स्वतंत्रता के लिए धन्य हो, परन्तु मसीह के साथ अपनी संगति और एकता के लिए और भी धन्य हो: क्योंकि तुम सबने एकमत होकर उनका जुआ उठाने के लिए सहमति दी है, और धन्य यूजेनिया को उसके संकल्प में किसी भी प्रकार से बाधा नहीं पहुँचाई है, बल्कि उसके साथ मिलकर तुम प्रभु की सेवा करने के उत्साह और इच्छा से जलते हो। और जब वह इस जीवन से प्रस्थान करेगी, तो आपको भी, उसके साथ ही, प्रभु द्वारा वही मुकुट और पुरस्कार प्रदान किए जाएँगे जो उसे मिलेंगे।

यूजेनिया, नपुंसकों और बिशप के बीच इस बातचीत के दौरान कोई मौजूद नहीं था। बिशप एलियास ने यूजेनिया को पुरुषों के वस्त्रों में रहने का आदेश दिया, क्योंकि कोई भी उसके रहस्य को नहीं जानता था। और उसने, नपुंसकों के साथ, तब तक मठ नहीं छोड़ा जब तक कि बिशप ने उन सभी को बपतिस्मा नहीं दे दिया और उन्हें मठवासी समुदाय में शामिल नहीं कर लिया।

अब हम जानेंगे कि संत, प्रोटोस और हायसिथ के साथ, गुप्त रूप से रथ से उतरने के क्षण से क्या हुआ, जब दास इस बात से अनजान थे, और कैसे उनके माता-पिता ने उनके लिए शोक मनाया।

खाली रथ अपने रास्ते पर चलता रहा और घर के पास पहुँच चुका था, जबकि दास उसके आगे-आगे चल रहे थे, यह जाने बिना कि क्या हुआ था। घर के नौकर यूजेनिया से मिलने के लिए दीपक लेकर बाहर आए। रथ के पास पहुँचने पर, उन्होंने उसे खाली पाया और अपनी मालकिन को न देखकर वे बहुत हैरान हो गए। उसके पिता, माता, भाई और सभी नौकरों में हड़कंप मच गया, और हर तरफ़ चीख-पुकार, रोना-धोना और ज़ोर-ज़ोर से विलाप गूँज उठा। पूरे शहर में खोजबीन शुरू हो गई, और अलेक्ज़ेंड्रिया के लोग इस बात पर हैरान थे कि राज्यपाल की बेटी का क्या हुआ। यूजेनिया की तलाश में अनगिनत दास चारों ओर भेजे गए। उन्होंने न केवल पूरे शहर, बल्कि मिस्र के पूरे देश में खोज की, और रास्ते में या लोगों के घरों में मिले किसी भी व्यक्ति—व्यापारियों, किसानों और यात्रियों—को भी नज़रअंदाज़ नहीं किया, फिर भी उन्हें उस अनमोल मोती के बारे में कहीं कुछ भी पता नहीं चल सका, जिसे सर्वोच्च के दायें हाथ ने नियत समय तक अपनी तिजोरी में रखा था।

दिन-रात, उसके माता-पिता यूजेनिया के लिए रोते और बेसुध होकर विलाप करते थे, अक्सर उसका नाम पुकारते हुए, अपने चेहरे नोचते हुए, अपने सिर पर राख डालते हुए, और थकान और हृदय-विदारक दुख से जमीन पर गिर पड़ते थे।

वे पुकारते हुए कहने लगे, 'एवजेनिया, हमारी प्रिय बेटी, हमारी रौशनी, तुम हमारी नज़रों से कहाँ छिप गईं? हमारी सांत्वना, तुमने शरण कहाँ ली है? हमारी आशा, क्या तुम सचमुच खत्म हो गईं?'

और उसके माता-पिता अपनी बेटी के लिए रोए, उसके भाई अपनी बहन के लिए रोए, जबकि दास-दासियाँ अपनी मालकिन के लिए आँसू बहा रहे थे। सभी नागरिक भी यूजेनिया के लिए शोक मना रहे थे और उनके दयालु स्वामी और शासक के दुख में सहानुभूति रखते थे। तब उन्होंने भविष्यवक्ताओं और जादूगरों से परामर्श करना शुरू कर दिया और मूर्तियों को अनेक बलिदान चढ़ाने लगे, इस आशा में कि शायद कोई देवता लापता युवती के बारे में कुछ बताए। लेकिन वे उनसे भी

---

[177] यूजेनिया, ग्रीक से अनुवादित, का अर्थ है 'कुलीन' या 'साहसी'।

कुछ नहीं जान सके। कपटी और अज्ञानी भविष्यवक्ता और जादूगर चुप रहे, जबकि मूर्तियाँ निर्जीव थीं। अंत में, अलेक्जेंड्रिया के एक निवासी ने शासक को सांत्वना देने के लिए एक कथा गढ़ी, जो इस प्रकार थी: उन्होंने दावा किया कि उन्हें पता चला है कि देवताओं को यूजेनिया की सुंदरता बहुत भाई, उन्होंने उसे स्वर्ग में ले जाकर अपनी कतार में शामिल कर लिया है। दुखी पिता इस कथा पर विश्वास कर गया, उसे अपने दुख में कुछ सांत्वना मिली और बड़ी कठिनाई से उसने अपने आँसू खुशी में बदल दिए। उसने तुरंत अपनी प्रिय पुत्री की तरह दिखने वाली एक मूर्ति सोने से बनवाने का आदेश दिया; उसने उसे अलेक्जेंड्रिया में एक प्रमुख स्थान पर स्थापित किया और नए त्योहारों और कई बलिदानों के साथ सार्वजनिक रूप से यूजेनिया की एक नई देवी के रूप में पूजा करने लगा। इस तरह, उसे उम्मीद थी कि उसका दुख कम हो जाएगा। हालाँकि, यूजेनिया की माँ क्लॉडिया और उसके भाई, एवटि और सेरजियस, इस कहानी पर विश्वास नहीं करते थे और वे यूजेनिया के लिए लगातार और बिना सांत्वना पाए रोते रहे।

इस बीच, वह धन्य कन्या, जिसने पुरुषों के वस्त्रों और एक पुरुष के नाम के नीचे स्वयं को छिपा रखा था और अपने कठोर जीवन-यापन के कारण एक पुरुष मानी जाती थी, उपर्युक्त मठ में रहती थी, अपने मठ के कर्तव्यों को लगन से पूरा करते हुए और ईश्वर की सेवा करते हुए। वह दिव्य ज्ञान में इतनी अधिक निपुण हो गई कि, दो वर्षों के भीतर, उसने संपूर्ण पवित्र शास्त्र को याद कर लिया था: और उसकी आत्मा इतनी शांति से परिपूर्ण थी कि हर कोई उसे स्वर्गदूतों में से एक मानता था। कोई भी उसकी नारी प्रकृति को पहचान नहीं सका, जो मसीह की शक्ति और उसकी निष्कलंक कुँवारी अवस्था से छिपी हुई थी, जबकि उसका जीवन-यापन और उसका सदाचारी चरित्र लोगों को आश्चर्यचकित कर देता था। उनकी वाणी विनिम्र, मैत्रीपूर्ण, सौम्य और संक्षिप्त थी, जो ईश्वर के भय और शिक्षा से परिपूर्ण थी। चर्च की सेवा में कोई उनसे पहले नहीं आता था, और कोई उनसे बाद में नहीं जाता था। वह सभी के लिए लाभ और निर्माण का स्रोत थीं: उन्होंने दुखी लोगों को सांत्वना दी और जो आनंदित थे उनके साथ आनंद मनाया; उन्होंने क्रोध और उग्रता से ग्रस्त लोगों को एक ही शब्द से विनिम्र बनाया; जहाँ तक अहंकारी लोगों का सवाल है, उनके विनिम्र जीवन के दर्शन का ही इतना प्रभाव पड़ा कि इसने तुरंत उनके अहंकार को कुचल दिया और उन्हें नम्र बना दिया।

थोड़े ही समय बाद, उन्हें ईश्वर से चमत्कार करने का वरदान मिला। जब भी वे किसी बीमार व्यक्ति से मिलने जातीं, तो उनकी उपस्थिति मात्र से ही उनकी बीमारी तुरंत दूर हो जाती थी, और वह व्यक्ति पूरी तरह से स्वस्थ हो जाता था। उनके दो ख़ास नौकर, प्रोट और याकिनफ, हमेशा उनके साथ रहते थे और जीवन में उनके अनुकरण करते थे; वे उनके वफ़ादार सेवक और मित्र थे।

ईश्वर के प्रति परिवर्तित होने के तीन साल बाद, उस मठ के प्रधान की मृत्यु हो गई, और एकत्रित भ्राताओं ने एक स्वर में उस धन्य महिला से अपनी प्रधान बनने का आग्रह किया: वे ईश्वर द्वारा संरक्षित रहस्य से अनजान थे, कि उनकी यूजेनिया स्वभाव से पुरुष नहीं बल्कि एक महिला थी। उन्होंने उसका बुद्धिमान, निर्दोष और ईश्वर-प्रसन्न जीवन देखा, जो उस मठ के सभी तपस्वियों के जीवन से कहीं बढ़कर था, और इसलिए उन्होंने अंततः उससे विनती की और उस पर अपना अधिकार स्वीकार करने का आग्रह किया। एक ओर, यह डरते हुए कि एक महिला के रूप में पुरुषों पर शासन करना अनुचित और गैरकानूनी होगा; दूसरी ओर, इतने सारे सम्मानित भिक्षुओं की सच्ची विनितियों को धोखा देने और अस्वीकार करने में शर्म महसूस करते हुए, संत ने उनसे कहा:

'मैं आपसे विनती करती हूँ, भाइयों, पवित्र सुसमाचार यहाँ लाओ।'

और जब उसे लाया गया, तो उन्होंने कहना जारी रखा:

'ईसाइयों के लिए, किसी भी चुनाव के मामले में, सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण रूप से स्वयं प्रभु मसीह से परामर्श करना उचित है। आइए देखें कि इस मामले में मसीह हमें क्या आज्ञा देते हैं, और हम उनकी इच्छा का पालन करेंगे।'

जब संपूर्ण समुदाय की उपस्थिति में सुसमाचार खोला गया, तो उन्हें निम्नलिखित शब्द मिले: *'तुम में जो बड़ा होना चाहता है, वह तुम्हारा सेवक बने, और जो पहिला होना चाहता है, वह तुम्हारा दास बने'* (मत्ती 20:26-27)।

इन शब्दों को पढ़ते ही, संत ने उद्घोष किया:

'मैं यहाँ हूँ, मसीह की आज्ञा और आपके अनुरोध का पालन करते हुए। मुझे आपके प्रेम का सेवक और दास बनने दीजिए।'

और उसकी सहमति पर सभी आनंदित हुए। और यूजीन के नाम से जाना जाने वाला व्यक्ति—जो वास्तव में यूजेनिया थी—ने उस मठ का मठाध्यक्ष पद संभाला, और, मानो, सभी के लिए एक बंदी और सेवक बन गई, जो पूरे समुदाय के लिए

अथक परशि्रम करती थी, पानी ढोती थी, लकड़ी काटती थी, सभी कोठरियों की सफाई करती थी, और सभी की बड़ी लगन से सेवा करती थी। अपने रहने की व्यवस्था के लिए, एवजेनिया ने द्वारपाल की कोठरी को चुना, ताकि अपनी कोठरी की गुणवत्ता के कारण वह दूसरों से श्रेष्ठ न दिखाई दे। मठ के कार्यों में परशि्रम करते हुए, वह कभी भी प्रथागत चर्च सेवाओं, अर्थात् मैटिन्स, द आवर्स (और विशेष दिनों पर, लिटिर्जी) और वेस्पर्स को नहीं छोड़ती थी। और उसे ऐसा लगता था कि कोई भी घंटा जिसमें वह ईश्वर की स्तुति नहीं करती थी, व्यर्थ में बर्बाद हो जाता है, और उसने यह सुनिश्चित करने का पूरा ध्यान रखा कि एक भी घंटा ईश्वर की महिमा किए बिना न बीते। उसके हाथों में काम और उसके होठों पर अनवरत प्रार्थना रहती थी। और उसे अशुद्ध आत्माओं पर अधिकार मिला कि वह उन्हें लोगों से निकाल सके, और उसे विभिन्न चमत्कार करने की कृपा प्राप्त हुई, जिनका विस्तार से वर्णन करने का समय पर्याप्त नहीं है। लेकिन आइए हम बताते हैं कि संत का उत्पीड़न कैसे शुरू हुआ, साथ ही उसके जीवन का बाकी हिस्सा और उसके दुखों का अंत।

अलेक्जेंड्रिया में मेलान्थी नाम की एक महिला थी, जो संपत्ति में तो धनी थी, लेकिन पुण्य कर्मों से वंचित थी। वह बुखार से बीमार पड़ गई और एक साल से अधिक समय तक उससे पीड़ित रही। उसकी संपत्ति उस मठ के पास स्थित थी जहाँ यूजेनिया रहती थी। एक दिन यह सुनकर कि यूजेनिया नामक एक संन्यासी हर तरह की बीमारियों को ठीक करती है, वह उसके पास दौड़ी और उससे अपनी बीमारी से ठीक करने की विनती करने लगी। उस पर दया करके यूजेनिया ने उस पर पवित्र तेल का अभिषेक किया, और उसने तुरंत अपने भीतर की वह सब कुछ बाहर निकाल दिया जो हानिकारक था और उसकी बीमारी का कारण बन रहा था; ठीक हो जाने पर, वह पैदल ही अपनी संपत्ति पर लौट आई। कुछ ही समय बाद, उसने शुद्ध चांदी के तीन पात्र तैयार किए और उन्हें पैसे से भरकर, उसे मिली चिकित्सा के लिए कृतज्ञता स्वरूप अपने निस्वार्थ उपचारक के पास भेज दिए। लेकिन यूजेनिया ने यह उपहार स्वीकार नहीं किया और इसे वापस भेजते हुए कहा:

'हमारे प्रभु की सभी कृपाओं से हम प्रचुर रूप से धन्य हैं। मैं तुम्हें सलाह देती हूँ, मेरी प्रिय मेलानिया, कि तुम यह सब गरीबों और ज़रूरतमंदों में बाँट दो।'

अपने उपहार वापस लौटाए देख, मेलानिया बहुत दुखी हुई। कन्वेंट पहुँचने पर, उसने हर संभव विनती और अनुरोध के साथ यूजेनिया से प्रार्थना की कि वह उसके लाए उपहारों को अस्वीकार न करे! आखिरकार, बड़ी मुश्किल से, वह मठाधीश यूजीन को यह आदेश देने के लिए मनाने में सफल हो गई कि उन बर्तनों को चर्च की पवित्र भंडारगृह में ले जाया जाए, जहाँ दिव्य सेवा की वस्तुएँ रखी जाती थीं।

उस समय से मेलानिया अक्सर यूजीन से मिलने लगी और उससे गहराई से प्यार करने लगी, यह जाने बिना कि एक महिला उसके पुरुषों के कपड़ों और नाम के नीचे छिपी हुई थी। उसे इतना जवान और सुंदर देखकर, मेलानिया ने यह कल्पना भी नहीं की थी कि इतना युवा पुरुष हमेशा ब्रह्मचर्य में रह सकता है; उसने अपनी स्वस्थता का श्रेय उसकी पवित्रता को नहीं, बल्कि उसकी चिकित्सा कौशल को देना शुरू कर दिया। और इस प्रकार, दिन-प्रतिदिन, वह उससे शारीरिक संबंध बनाने की एक लगातार बढ़ती हुई इच्छा में डूबती गई, और अपनी इस इच्छा को पूरा करने के लिए केवल एक उपयुक्त समय और स्थान की तलाश कर रही थी। और फिर एक दिन, मठ से बहुत दूर न होने वाली अपनी संपत्ति पर, मेलानिया, उस युवा भिक्षु के प्रति अशुद्ध कामुकता से ग्रस्त होकर, बीमारी का बहाना करने लगी और उसे बुलाया, उससे निजी तौर पर मिलने और उसकी मदद करने के लिए कहा, ठीक वैसे ही जैसे उसने पहली बार किया था।

पहुँचने पर, धन्य यूजेनिया मेलानिया के बिस्तर के पास बैठ गई; मेलानिया बीमारी से नहीं, बल्कि कामुक इच्छा से पीड़ित थी। यूजेनिया के चेहरे को निहारते हुए, मेलानिया अब और अधिक समय तक अपने भीतर लंबे समय से दबी आग को छिपा नहीं सकी। उसने अपने निर्लज्ज होंठ खोले और वासना भरे शब्द बोलने लगी, उसे बहकाते हुए और पाप में खींचते हुए, ठीक वैसे ही जैसे मिस्र की स्त्री, पوتیफर की पत्नी, ने एक बार यूसुफ को बहकाया था (उत्पत्ति 39:7–20)।

उसने कहा, 'मैं तुम्हारे लिए एक असहनीय इच्छा और प्रेम से ग्रस्त हूँ, और मेरी आत्मा तब तक चैन नहीं पाएगी जब तक तुम मेरी सारी संपत्ति और मेरे पति के स्वामी बनने के लिए सहमत नहीं हो जाते।' तुम अनावश्यक संयम से व्यर्थ ही अपने आपको क्यों कष्ट देते हो और जानबूझकर अपने यौवन के दिनों को गरीबी और अभाव में क्यों बर्बाद करते हो, जिससे तुम्हारा शरीर बहुत थक जाता है और तुम्हारे चेहरे की सुंदरता फीकी पड़ जाती है? देखो, विशाल संपत्तियाँ; देखो, सोने और चांदी, कीमती पत्थरों और महंगे वस्त्रों की भरमार; पुरुष और महिला दासों की एक बड़ी संख्या! और अंत में, मैं यहाँ हूँ—एक युवा और सुंदर महिला, जो इस साल ही विधवा हुई हूँ, और ऊपर से निस्संतान भी, ताकि मेरी संपत्ति का कोई वारिस न हो। इसे स्वयं विरासत में पाओ और मेरे स्वामी और मालिक बन जाओ।

मेलान्थी ने यूजेनिया को बहकाने की कोशिश करते हुए यह सब और भी बहुत कुछ कहा। लेकिन पूजनीय यूजेनिया, इस वेश्या की निर्लज्जता से लज्जित होकर, कठोर स्वर में उत्तर दिया:

'चुप हो जा, औरत, चुप हो जा! और प्राचीन साँप के विष से मुझे नुकसान पहुँचाने की कोशिश मत कर। मैं देखती हूँ कि तूने खुद को शैतान के लिए एक बड़ा निवास स्थान बना लिया है; ईश्वर के सेवकों से दूर हो जा, हे प्रलोभीणी; तेरी संपत्ति तुझ जैसी कामुक लोगों को विरासत में मिले; पर हमारी संपत्ति मसीह के साथ गरीबी में है। जहाँ तक विवाह का प्रश्न है, हमारा मन भी कभी सांसारिक सुखों के विचारों को न पालें। हे धन्य पवित्रता, हम तुम्हें नश्वर धन के लिए नहीं बेचेंगे! हे पवित्र कुँवारी, हम तुम्हें व्यभिचार से कलंकित नहीं करेंगे! हे परमेश्वर की माता और कुँवारी, जिन पर मैं अपना भरोसा रखती हूँ, मैं अपनी कसमें नहीं तोड़ूँगी! हमारा केवल एक विवाह है—मसीह के प्रति हमारा प्रेम; हमारा केवल एक धन है—स्वर्ग में तैयार की गई आशीषें; हमारा केवल एक वारिस है—सत्य का ज्ञान!

यह कहकर, वह धन्य महिला तुरंत उठकर अपनी कन्वेंट चली गईं, जबकि मेलान्थी, अपार लज्जा और साथ ही क्रोध से भरकर, शहर की ओर चल दी और राज्यपाल के सामने उपस्थिति होकर, उससे कहा:

एक ईसाई युवक, जो खुद को डॉक्टर बताता है और मेरी संपत्ति के पास ही एक मठ में रहता है, मेरे घर आया, और मैंने उसे मेरा इलाज करने के उद्देश्य से अपने शयनकक्ष में प्रवेश करने की अनुमति दी। लेकिन उसने, मुझे उन अपमानजनक और निर्लज्ज महिलाओं में से एक समझकर, मुझे दुष्टता के लिए मजबूर करना शुरू कर दिया, पहले चापलूसी भरे शब्दों से, और फिर जबरदस्ती करने की कोशिश की; और अगर मैं चिल्लाती नहीं, और मेरी नौकरानी मेरी पुकार पर मदद के लिए दौड़ती नहीं, तो यह निर्लज्ज युवक निश्चित रूप से मुझे जबरदस्ती अपवित्र कर देता, जैसे कोई बर्बर बंदी के साथ बलात्कार करता है।

मेलान्फिया के शब्दों से शासक को बहुत क्रोध आया, और उसने तुरंत नौकरों को न केवल चिकित्सक के रूप में जाने जाने वाले युवक यूजीन को, बल्कि उसके साथ रहने वाले सभी लोगों को गिरफ्तार करने के लिए भेजा, और उन्हें लोहे की बेड़ियों में जकड़कर कैद में रख दिया। लेकिन चूँकि एक ही कालकोठरी में यूजेनिया के साथ मौजूद सभी भिक्षुओं को नहीं रखा जा सकता था, इसलिए उन्हें विभिन्न कालकोठरियों में बाँट दिया गया। इस घटना की खबर न केवल पूरे अलेक्जेंड्रिया में बल्कि पिड़ोसी शहरों में भी फैल गई, और ईसाइयों को मूर्तिपूजकों के हाथों बहुत अपमान और गाली-गलौज सहनी पड़ी , क्योंकि जो भी मेलान्थी का बयान सुनता था, वह उसके शब्दों को सच मानता था, क्योंकि वह मूर्तिपूजकों के बीच अपनी ईमानदारी और कुलीन जन्म के लिए प्रसिद्ध थी।

संन्यासियों के मुकदमे और फांसी के लिए एक तारीख तय की गई; राज्यपाल का इरादा उनमें से कुछ को जानवरों के आगे फेंकने, कुछ को खंभे से जलाने, कुछ को पेड़ से लटकाने, और बाकी को यातना की विभिन्न अन्य शैलियों से मारने का था। और इस प्रकार, जब निर्धारित दिन आ गया, तो न केवल शहर से बल्कि उसके आसपास के सभी क्षेत्रों से एक बड़ी भीड़ इकट्ठा हो गई। बहुत से ईसाई भी इकट्ठा हुए थे, जिनमें कई वरिष्ठ पादरी और कई बिशप शामिल थे: वे इन निर्दोष ईश्वर के सेवकों की मृत्यु का साक्षी बनने, उनके अवशेषों को इकट्ठा करने और उन्हें उचित अंतिम संस्कार देने आए थे।

जैसे ही राज्यपाल फिलिप अपने बेटों एवटिस और सेर्जिउस के साथ पहुँचे और न्यायाधीश के लिए आरक्षित सामान्य स्थान पर अपना आसन ग्रहण किया, धन्य यूजेनिया—जिसका रहस्य अभी भी किसी को पता नहीं था—को तुरंत उसके खासों और अन्य भिक्षुओं के साथ अखाड़े के केंद्र में लाया गया, जो सभी भारी लोहे की जंजीरों में जकड़े हुए थे। तब भीड़ ने ज़ोर से पुकारा:

'इन अधर्मी अपराधियों का नाश हो!'

हालाँकि, राज्यपाल ने आदेश दिया कि 'दुष्टों की राजकुमारी' (जैसा कि वे उसे कहते थे), मसीह के निर्दोष मेमने को, मुकदमे के लिए उसके पास लाया जाए; यातना के सभी उपकरण उसके सामने रख दिए जाएँ; और जल्लाद तैयार और धमकी भरे अंदाज़ में खड़े रहें।

और संत यूजेनिया अपने पिता और भाइयों के सामने मुकदमे में खड़ी थीं, किसी भी बुराई से निर्दोष, एक पुरुष के संन्यासी वस्त्रों में छिपी हुई और अपना सिर झुकाए हुए, ताकि उन्हें तुरंत पहचाना न जा सके। उसकी ओर मुड़कर, राज्यपाल ने धमकी भरे लहजे में पूछा:

'बताओ, हे अधर्मी ईसाई, क्या तुम्हारे मसीह ने तुम्हें घृणित कृत्य करने और चालाकी से सम्मानित महिलाओं को अपनी दुष्ट इच्छाओं को पूरा करने के लिए बहकाने का आदेश दिया था?' बताओ, हे दुष्ट पुरुष, तुमने सबसे प्रतिष्ठित

लेडी मेलान्फयिा के घर में घुसने और उनकी अतपिवत्रि शुद्धता को कलंकति करने की हम्मित कैसे की? चतुराई से डॉक्टर का भेष धारण करके, तुमने खुद को एक दुश्मन और एक बलात्कारी साबति कयिा है। और इसलिए तुम्हें तुम्हारे इस नरि्लज्ज और दुस्साहसी इरादे के लिए एक उपयुक्त सज़ा मलिेगी, और, दुष्ट होने के कारण, तुम एक दुष्ट मौत से मारे जाओगे।

इस प्रकार राज्यपाल ने बड़े क्रोध में कहा, तब धन्य यूजेनयिा ने नम्रतापूर्वक उत्तर दयिा:

'मेरे प्रभु, यीशु मसीह, जनिकी मैं सेवा करती हूँ, वे पवत्रिता सखिाते हैं और उन लोगों को अनंत जीवन का वादा करते हैं जो अपनी नरि्दोष कुँवारी अवस्था को बनाए रखते हैं। हम तुरंत साबति कर सकते हैं कमिेलानयिा पर हम झूठा आरोप लगा रही है। लेकनि हमारे लिए यह बेहतर है कहिम स्वयं कष्ट सहें और अपने धैर्य का फल न खोएं, बजाय इसके कवि पराजति और बेनकाब होकर कसिी भी हानकिो सहन करे। हालाँकि, यदिआप अपने राजाओं के नाम की कसम खाकर मुझसे वादा करें कआिप इस झूठी गवाह को कोई हानिनहीं पहुँचाएँगे, तो हम अब उससे उस पाप के बारे में पूछताछ करेंगे जसिका वह हम पर अन्यायपूर्वक आरोप लगा रही है, और हम देखेंगे कवि वह स्वयं ही उसमें दोषी पाई जाएगी।

जब राज्यपाल ने उससे शपथ ले ली और उसकी मांग पूरी करने का वादा कर दयिा, तो यूजेनयिा मेलानयिा की ओर मुड़कर बोली:

'मेलान्फयिा, तुम्हारा नाम ही—[178] —अंधकार और भ्रष्टाचार की गवाही देता है! तुमने अपनी झूठी बदनामी से ईसाइयों पर कई तरह की यातनाएँ लाई हैं। तो फरि, ज़ोर लगाओ कहिमें यातना दी जाए, जलाया जाए और पीटा जाए! लेकनि यह जान लो कमिसीह के सेवक वैसे नहीं हैं जैसे तुम उन्हें झूठमूट चत्रिति करती हो। तो फरि, उस दासी को लाओ जसिे तुमने हमारे पाप की गवाह के रूप में नामति कयिा है, ताकि झूठ उसके ही मुँह से बेनकाब हो जाए और सच स्पष्ट हो जाए।

लेकनि सामने लाई गई दासी अपनी मालकनि को खुश करने के लिए झूठ पर झूठ बोलती गई, क्योंकवि वह उसकी खलिाफ़ कैसे कुछ कह सकती थी?

उसने कहा, 'मैं जानती हूँ कयिह नरि्लज्ज युवक अक्सर साधारण महलिाओं के साथ पाप करता है; वह अभद्र है, उसने कई बार मुझ पर हाथ साफ करने की कोशशि की है, और अंत में, मेरी मालकनि पर भी हाथ उठाने की हम्मित कर बैठा।' दनि के पहले घंटे में उसके शयनकक्ष में प्रवेश कर, उसने पहले एक डॉक्टर की तरह उससे उसकी सेहत के बारे में पूछा; फरि उसने अभद्र शब्द कहना शुरू कर दयि और, अंत में, उसका बलात्कार करने का प्रयास कयिा, और शायद वह अपना यह दुष्ट कृत्य कर भी देता अगर मैंने तुरंत ही अन्य नौकरानयिों को नहीं बुलाया होता और अपनी मालकनि को इस कामुक के चंगुल से नहीं छुड़ाया होता।

न्यायाधीश ने अन्य नौकरानयिों को तलब करने का आदेश दयिा, लेकनि उन्होंने भी अपनी मालकनि की सहायता करते हुए भकि्षु यूजीन के खलिाफ गवाही दी। फरि गवर्नर ने, बहुत गुस्से में, कहा:

'तुम्हारे बचाव में तुम क्या कह सकते हो, हे दुष्ट व्यक्ति, जब इतने सारे गवाह तुम पर हावी हो गए हैं और तुम्हारी दुष्टता को उजागर कर चुके हैं?'

'अब बोलने का समय है,' संत यूजेनयिा ने उत्तर दयिा, 'क्योंकमिौन का समय समाप्त हो गया है। सत्य को स्वतंत्र रूप से स्वीकार करने का समय आ गया है, कहीं ऐसा न हो कहिम पर थोपे जा रहे झूठ अत्यधकि रूप से वजिय प्राप्त कर लें, और कहीं ऐसा न हो कमिूर्तपिूजकों के बीच ईसाइयों के बारे में बुरी अफवाहें फैलें। सचमुच, मैं अपने जीवन के अंत तक अपना रहस्य छपिाए रखना चाहती थी, और इस प्रकार, मसीह के भवष्यि के न्याय में, हमारे वरिुद्ध लगाए गए झूठों को उजागर करने और उनके सामने अपनी पवत्रिता साबति करने के लिए, जसिके प्रेम में मैंने इसे छपिाए रखा था। जसिे मैंने अब तक बड़ी सावधानी से छपिाए रखा है, उसे मुझे अब प्रकट करना होगा, ताकि अधर्म का वजिय न हो, और मूर्तपिूजक दुष्टता एक धर्मनष्ठि और पवत्रि ईसाई जीवन का उपहास न करे। मैं यह सत्य अहंकार के लिए नहीं, बल्कयिीशु मसीह के नाम की महमिा के लिए प्रकट करूँगा; क्योंकइिस पवत्रि नाम की शक्ति ऐसी है कपिरमेश्वर के भय में रहने वाली पत्नयिाँ भी अपने पतयिों के समान सम्मान की अधकिारी हो जाती हैं, और एक लगि के लोग दूसरे लगि के लोगों से वश्विास में श्रेष्ठ नहीं हो सकते, जैसा कईसाई शकि्षक, प्रेरति पौलुस कहते हैं: परमेश्वर के सामने पतऔिर पत्नी में कोई भेद नहीं है, *'क्योंकतिुम सब मसीह यीशु में एक हो'* (गलातयिों 3:28)। और इस प्रकार मैं भी, उस मसीह के लिए जसि पर मैं वश्विास करती थी, जसिे मैं अपनी पूरी आत्मा से प्रेम करती थी और जसि पर मैंने अपनी सारी आशा रखी थी, इस इच्छा

[178] मेलानयिा, ग्रीक भाषा से अनुवादति, का अर्थ है 'काले बालों वाली'।

से प्रेरित हुई कि मैं अपने जीवन-यापन के तरीके और बाहरी रूप में स्त्री होने के बजाय पुरुष बनूँ, अपनी कुँवारी अवस्था को एकमात्र, सबसे पवित्र और अमर स्वर्गीय वरा के लिए सुरक्षित रखते हुए।

यह कहकर, उसने अपने वस्त्र ऊपर से फाड़ दिए, जिससे उसके पवित्र और शुद्ध कुँवारी देह का एक भाग प्रकट हो गया, और राज्यपाल ने देखा कि वह एक स्त्री थी। तब यूजेनिया ने उससे कहा:

'हे स्वामी, आप देह के अनुसार मेरे पिता हैं, क्लॉडियस मेरी माता हैं, और अवटि और सेर्गीयस, जो आपके साथ बैठे हैं, मेरे भाई हैं। जहाँ तक मेरी बात है, मैं आपकी पुत्री यूजेनिया हूँ, जिसने मसीह के प्रेम के लिए संसार और उसके सभी सुखों का त्याग कर दिया है; यहाँ प्रोट और हायसंथि हैं, मेरे खसरे, जिनके साथ मैंने मसीह की शिक्षाओं को अपनाया। और मसीह ने मुझ पर इतना अनुग्रह किया है कि, अपनी दया से, उन्होंने मुझे सभी वासनाओं और जुनूनों की विजेता बना दिया है, और मेरा दृढ़ विश्वास है कि वह मुझे बिल्कुल वैसा ही रखेंगे जैसा मैं अभी हूँ, अंत तक।

उसने अपनी बात पूरी भी नहीं की थी कि उसके पिता और भाइयों ने, उसकी बातों और उसके चेहरे के कुछ हाव-भावों के आधार पर (क्योंकि वे ध्यान से उसे निहार रहे थे), यह पहचान लिया कि वह वास्तव में यूजेनिया ही थी। तुरंत, अकथनीय आनंद और आँसुओं से अभिभूत होकर, वे अपनी सीटों से कूद पड़े और उसकी ओर दौड़े, उसे गले लगाया, चूमा, और यूजेनिया को अचानक पाकर आनंद के आँसू बहाए, जिसके बिना इस दुनिया की रोशनी भी उन्हें आनंद नहीं दे पा रही थी। उसकी माँ, क्लॉडिया को तुरंत सूचित किया गया कि उनकी बेटी एवजेनिया मिल गई है। वह दौड़कर आई और अपनी प्रिय यूजेनिया को देखकर उसने अपनी पूरी क्षमता से उसकी सेवा की, उसे सबसे कोमल शब्दों से नवाजा, और अपनी बेटी को ऐसे निहारती रही मानो वह मृतकों में से जी उठी हो। यह सब देखकर भीड़ चकित रह गई और जोर से चिल्लाई:

'एक मसीह, एक सच्चा ईश्वर, ईसाई ईश्वर!'

और शहीदों के शवों को दफनाने के लिए अपने बिशपों और प्रेस्बिटरों के साथ आए ईसाइयों की भीड़ ने भी अकथनीय आनंद से भरकर गाया: *'हे प्रभु, तेरा दाहिना हाथ शक्ति में महिमामय हुआ; हे प्रभु, तेरा दाहिना हाथ ने शत्रु को मार गिराया।' हमारे परमेश्वर के समान कौन इतना महान देवता है, जो गुप्त को प्रकट करता है और रहस्य को उजागर करता है; वह बुद्धिमानों को उनकी ही चालाकी में फँसा देता है* (निर्गमन 15:6; भजन संहिता 76:14; अय्यूब 5:13)।

तब उन्होंने सोने के बुने हुए और कीमती रत्नों से जड़े वस्त्र लाए, जिनमें यूजेनिया के माता-पिता और भाइयों ने उसकी मर्जी के खिलाफ उसे लपेट दिया, और उसे एक ऊँचे स्थान पर बिठा दिया ताकि सब उसे देख सकें और खोई हुई की वापसी पर उनके साथ आनंदित हो सकें। तुरन्त ही, यूजेनिया के साथ बेड़ियों में जकड़े हुए भिक्षुओं को उनके बंधनों से मुक्त कर दिया गया; उनके साथ दयालुता से व्यवहार किया गया और उन्हें मसीह के सच्चे सेवकों के रूप में सम्मानित किया गया।

लेकिन मेलान्थी भय और लज्जा से भर गई, और वह न्याय की जगह से निकली भी नहीं थी कि स्वर्ग से आग उसकी हवेली पर बरस पड़ी और उसे उसकी सारी संपत्ति और खजाने सहित जला कर राख कर दिया, ताकि उसका कोई भी निशान न बचे। और अलेक्ज़ेंड्रिया तथा पूरे मिस्र में सभी विश्वासियों के बीच बहुत आनंद हुआ - विशेष रूप से तब जब राज्यपाल फिलिप स्वयं, अपनी पत्नी, अपने बेटों और अपने पूरे परिवार के साथ बपतिस्मा ग्रहण कर हमारे प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास करने लगे; तब बहुत से मूर्तिपूजकों ने पवित्र बपतिस्मा ग्रहण किया, और मसीह की कलीसिया में शांति पुनर्स्थापित हुई।

[179]इन घटनाओं के तुरंत बाद, राज्यपाल फिलिप ने सम्राटों सेवरस और एंटोनिनिस को एक पत्र भेजा, जिसमें उन्होंने लिखा कि रोमन साम्राज्य के हित में यह नहीं था कि ईसाइयों को शहरों से निकाला जाए, क्योंकि वे लोगों की सामान्य भलाई के लिए आवश्यक थे। राजाओं ने उनकी सलाह पर ध्यान दिया, और मिस्र के सभी शहरों में ईसाइयों ने अपने घर, ज़मीन, चर्च और सम्मान वापस पा लिए, और वे शांति का आनंद लेने लगे – और ईसाई धर्म की भक्ति फिलने-फूलने लगी।

लेकिन पवित्रता के साथ हमेशा दुश्मन की ईर्ष्या रहती है, और पाप सद्गुण के खिलाफ युद्ध छेड़ता है। इसलिए अब भी, अलेक्ज़ेंड्रिया के कुछ सबसे प्रमुख मूर्तिपूजकों के लिए यह देखना मुश्किल था कि कैसे, दिन-ब-दिन, ईसाइयों की संख्या बढ़ रही थी, जबकि मूर्तियों की पूजा करने वालों की संख्या लगातार घटती जा रही थी। अपने पिता शैतान से सिखाए गए, वे शासक फिलिप के खिलाफ निंदा लेकर राजाओं के पास गए।

---

[179] रोमन सम्राट सेप्टिमियस सेवेरस (193–211) ने अपने पुत्र एंटोनिनिस को सह-शासक बनाया था।

उन्होंने कहा, 'पूरे नौ वर्षों से, फलिपि ने मिस्र के देश पर अच्छी तरह शासन किया है और शाही कानूनों का सख्ती से पालन किया है। लेकिन अब हम नहीं जानते कि वह क्या हो गया है: वह इतना बदल गया है। उसने हमारे पूर्वजों के देवताओं की पूजा छोड़ दी है और पूरे लोगों को उस की पूजा करने के लिए ले जा रहा है जिसे (जैसा कि हर कोई दावा करता है) यहूदियों ने फिलिस्तीन में सूली पर चढ़ाकर मार डाला था। अब आपके शाही कानूनों का कोई सम्मान या उचित पालन नहीं रह गया है। उन्होंने हम सभी की तुलना में धर्महीन ईसाइयों को प्राथमिकता दी है; उनमें से कई, जब हमारे देवताओं के मंदिरों में जाते हैं, तो उन पर अनगिनत अपमानों की बौछार कर देते हैं, उन्हें पेड़, असंवेदनशील पत्थर और निर्जीव मूर्तियाँ कहकर संबोधित करते हैं।

ऐसे और इसी तरह के शब्दों से उन्होंने दोनों राजाओं को फलिपि के विरुद्ध क्रोधित किया, और उन्होंने उसे निम्नलिखित संदेश भेजा:

'हे परम दिव्य राजा, आपसे पूर्व के शासक ने, आपकी धार्मिकता और पूर्वजों के रोमन देवताओं के प्रति आपकी श्रद्धा को जानते हुए, आपको अलेक्जेंड्रिया में केवल एक राज्यपाल के रूप में ही नहीं, बल्कि मिस्र के राजा के रूप में नियुक्त किया था, और यह आदेश दिया था कि आप अपनी मृत्यु तक इस भूमि पर बिना किसी बाधा के शासन करें, और आपके स्थान पर किसी और को नियुक्त नहीं किया जाना चाहिए। हमने भी इस सम्मान को अटूट रूप से बनाए रखा है, लेकिन केवल तब तक जब तक आप देवताओं के मित्र और सेवक थे। अब, हालाँकि, हम सुनते हैं कि आपने देवताओं को त्याग दिया है और हमारे प्रति शत्रुतापूर्ण हैं। इसलिए हम आदेश देते हैं कि आप या तो रोमन देवताओं की अपनी पूर्व पूजा पर लौट आएं और पहले की तरह सम्मान और महिमा का आनंद लेते रहें, या, यदि आप देवताओं को अस्वीकार करना बंद नहीं करते हैं, तो तुरंत अपना पद छोड़ दें और अपनी संपत्तियों का त्याग कर दें।

राजा का पत्र पढ़ने के बाद, राज्यपाल ने बीमारी का बहाना किया ताकि उसे अपना सारा सामान बेचने और उसे आंशिक रूप से चर्चों को और आंशिक रूप से गरीबों को बाँटने का समय मिल सके।

धन्य फिलिपि में वाक्पटुता का वरदान था और अपने भाषणों के माध्यम से उन्होंने कई प्रतिष्ठित ग्रीकों को ईसाई धर्म अपनाने के लिए मनाया और धर्मांतरित किया, साथ ही जो लोग अपने विश्वास में कमजोर और डगमगा रहे थे, उन्हें मजबूत और दृढ़ बनाया।

जब उसकी संपत्ति बेचकर बाँट दी गई, तो उसने राज्यपाल का पद छोड़ दिया, और तुरंत अलेक्जेंड्रिया के सभी ईसाइयों ने उसे अपना बिशप चुन लिया। कुछ समय बाद, टेरेन्टियस नामक एक और गवर्नर उसकी जगह लेने के लिए रोम से आया; वह फिलिपि को मारना चाहता था, लेकिन लोगों से डरता था, क्योंकि सभी अपने बिशप के लिए अपनी जान देने को तैयार थे। इसलिए उसने गुप्त हत्यारों को काम पर रखा, जिन्होंने संत के कक्ष में प्रवेश करके उन्हें अकेले, ईश्वर से प्रार्थना करते हुए पाया, तो उन्होंने अपनी तलवारों से उनका सिर कलम कर दिया और भाग गए। यह खबर तुरंत पूरे शहर में फैल गई, और हर जगह भारी रोना-धोना, विलाप और अफरा-तफरी मच गई। इस डर से कि लोग उसकी विश्वासघात को जान जाएँ, टेरेन्टियस ने हत्यारों को तुरंत ढूंढने का आदेश दिया और उन्हें भारी बेड़ियों में जकड़कर कैद कर दिया, मानो उन्हें क्रूर यातनाओं और मृत्युदंड देने का इरादा हो। फिर भी, धन्य बिशप फिलिपि अपने घावों के बाद तीन दिन तक जीवित रहे और प्रभु में शहीद होकर उन्हें शहीद का मुकुट प्रदान किया गया। उन्होंने एक साल और तीन महीने तक बिशप के रूप में सेवा की। उन्हें शहर के भीतर इज़ियम नामक स्थान पर, उसी चर्च में दफनाया गया जिसे उन्होंने स्वयं बनवाया था।

[180]कुछ समय तक हत्यारों को जेल में रखने के बाद, राज्यपाल टेरेन्टियस ने उन्हें, दिखावे के लिए राजा की आज्ञा से, रिहा कर दिया, और तब सभी को एहसास हुआ कि पवित्र बिशप को उनके आदेश पर ही मारा गया था। अपने पति की मृत्यु के बाद, संत यूजेनिया ने अपने चारों ओर ईसाई कन्याओं को इकट्ठा किया और उनके साथ मिलकर पवित्रता का जीवन जीते हुए ईश्वर की सेवा करती रहीं, जबकि उनकी माँ, क्लॉडिया ने, आतिथ्य का एक विशाल घर बनवाया और यात्रियों तथा बीमारों की सेवा में स्वयं को समर्पित कर दिया। काफी समय बाद, वह अपने दोनों बेटों और अपनी धन्य बेटी यूजेनिया के साथ अपने स्वदेश, रोम लौट आईं, और अपनी संपत्ति पर बस गईं। रोमन सरकार ने अवितस और सेरजियस का अनुकूल रूप से स्वागत किया, और उनमें से एक को कार्थेज का राज्यपाल नियुक्त किया गया, जबकि दूसरा अफ्रीका में राजा का उपराज्यपाल बन गया।

---

[180] उत्तरी अफ्रीका का एक प्राचीन शहर। आज, ट्यूनिस उसी स्थान पर स्थित है।

इस बीच, संत यूजेनिया, रोम में रहते हुए, गुप्त रूप से कई कुंवारी लड़कियों—जो कुलीन व्यक्तियों की बेटियां थीं—को ईसा मसीह की ओर ले गईं और उन्हें अपनी कुंवारी अवस्था बनाए रखने के लिए प्रोत्साहित किया। उस समय, रोम में शाही वंश की एक युवा कुंवारी, जिसका नाम वासिल्ला था, रहती थी, जो अपने माता-पिता की मृत्यु के बाद अनाथ हो गई थी। जब तक वह वयस्क नहीं हो गई, तब तक उसे उसके चाचा एलिन की देखभाल में सौंपा गया था, और राजाओं ने उसकी सगाई पोंपेई नामक एक युवक से कर दी थी, जो अपनी बहादुरी और कुलीनता के लिए प्रसिद्ध था। लेकिन शादी कई वर्षों तक टाल दी गई, क्योंकि अपने माता-पिता की मृत्यु के बाद वासिल्ला अभी भी बहुत छोटी थी। मसीह के नाम, यूजेनिया के बारे में, उसके पवित्र और सदाचारी जीवन, और मसीह की शक्ति से हुए चमत्कारों के बारे में अक्सर सुनने से, उसका आत्मा उत्साहित हो उठा, क्योंकि प्रभु, अपने रहस्यमय तरीकों से, उसे अपने स्वर्गीय निवास में बुला रहे थे। उसकी दो इच्छाएँ थीं: मसीह के बारे में सच्चाई जानना और यूजेनिया को देखना। लेकिन वह व्यक्तिगत रूप से उसके पास जाकर उससे बात नहीं कर सकती थी, एक तो इस डर से कि कहीं उसका मंगेतर न जान जाए, और दूसरी उस समय रोम में ईसाइयों पर हो रहे अत्याचार के कारण। इसलिए, वासिल्ला ने अपने प्रति विफादार एक नौकर को यूजेनिया के पास भेजा, और उससे कहा कि वह उसे मसीह के बारे में बताए—भले ही केवल लिखित रूप में—और यह सिखाए कि किसी को उन पर कैसे विश्वास करना चाहिए।

इस संदेश से संत यूजेनिया अत्यंत प्रसन्न हुईं। अपनी माँ और नपुंसकों के साथ यह निर्णय लेने के बाद कि एक पत्र किसी व्यक्ति द्वारा बोले गए शब्दों जितना प्रभावी रूप से सिखा नहीं सकता, उन्होंने नपुंसकों को खुद को तैयार करने का आदेश दिया, यह इच्छा व्यक्त करते हुए कि उन्हें वसिला के लिए एक उपहार के रूप में भेजा जाए। उन्हें भेजते समय, यूजेनिया ने लिखा:

'प्यारी बहन वासिला, मैं तुम्हें उपहार स्वरूप अपने दो वफादार सेवक, ख़ास पुरुष प्रोटस और याकिन्फ़ोस भेजती हूँ, जो मेरे साथ मेरे बचपन से बड़े हुए हैं; ये मेरे तरफ़ से तुम्हारे लिए एक जीवित पत्र हों।'

वासिला ने खुशी-खुशी उन नपुंसकों को स्वीकार किया, जो सेवक तो प्रतीत होते थे लेकिन वास्तव में मसीह के प्रेरित थे। वे दिन-रात उससे बातचीत करते हुए उसे पवित्र विश्वास की शिक्षा देते रहे, क्योंकि वह उनके होठों से निकलने वाले दैवीय वचनों को ध्यान, आनंद और भक्ति के साथ लगातार सुनती थी, और उसने पूरे दिल से सभी चीजों के स्रष्टा, एकमात्र ईसाई ईश्वर में विश्वास किया। जब पोप, धन्य कॉर्नेलियस[181] को इस बात की सूचना मिली, तो वे गुप्त रूप से उनके पास आए और उन्हें पवित्र त्रिमूर्ति के नाम पर बपतिस्मा दिया। इसके बाद, उनके चाचा एलिन भी मसीह में विश्वास करने लगे, ताकि वासिला आसानी से यूजेनिया से मिल सकें और उनके साथ पवित्र और सुखद बातचीत का आनंद ले सकें। हर रात, यूजेनिया बिना किसी बाधा के अपने चाचा की सुरक्षा में उसके घर आती थी।

इस प्रकार, संत यूजेनिया और उनकी धन्य माता क्लॉडिया ने कई लोगों को मसीह की ओर ले आए। रोम की सभी ईसाई विधवाओं ने क्लॉडिया के यहाँ और युवा महिलाओं ने यूजेनिया के यहाँ शरण ली, और उनके साथ शरीर और आत्मा दोनों को विश्राम मिला। हर शनिवार शाम, रोम के पोप संत कोर्नेलियस, क्लाउडिया के घर प्रार्थनाएँ और भजन भेजते थे[182] , ताकि वे पूरी रात प्रार्थना करें और ईश्वर की महिमा करें; और सुबह, जब मुर्गी बाँग देती थी, वह स्वयं उनके पास आते, मसीह की ओर मुड़ने वालों को बपतिस्मा देते, दैवीय धर्मविधि का अनुष्ठान करते और सभी महिलाओं को पवित्र रहस्य प्रदान करते। और ईश्वर की कलीसिया उत्पीड़न के बीच, कांटों में कमल की तरह, बढ़ी और फलती-फूलती रही। हे, पवित्र कुंवारी यूजेनिया और वासिला ने कितनी कुंवारी कन्याओं का मार्गदर्शन ईश्वर की ओर किया, संत क्लॉडिया ने कितनी महिलाओं का मार्गदर्शन उनकी ओर किया, और धन्य नपुंसकों प्रोट और हायसिंथ ने कितने युवा पुरुषों का मार्गदर्शन उनकी ओर किया!

हालाँकि, जब अधर्मी राजा वेलेरियन और गैलिनिस[183] सत्ता में आए, तो ईसाइयों पर अत्याचार तेज हो गया। राजाओं ने सभी ईसाई शिक्षकों को मौत की सजा़ देने का फरमान जारी किया, और सबसे पहले उन्होंने पोप, संत कॉर्नेलियस को मारने के लिए उनकी तलाश शुरू की।

उस समय संत वासिली से मिलने के बाद, संत यूजेनिया ने उनसे कहा:

---

[181] संत कॉर्नेलियस, रोम के पोप, ने 251 से 252 तक रोमन चर्च का नेतृत्व किया।

[182] यानी, पूजा-संबंधी पुस्तकें, जो उस समय दुर्लभ थीं और व्यापक रूप से उपलब्ध नहीं थीं।

[183] वैलेरियन – रोमन सम्राट, 253 से 260 तक शासन किया। उनके पुत्र गैलिनिस ने 260 से 268 तक शासन किया।

'प्रभु ने मुझे यह भी प्रकट किया है कि आप जल्द ही अपनी कुँवारी अवस्था के लिए शहीद का मुकुट प्राप्त करेंगी।'

वासलिया ने उत्तर दिया, 'प्रभु मुझ पर भी कृपा करके आपके बारे में यह प्रकट किया है कि आपको दोहरा शहीद का ताज मिलेगा – एक अलेक्जेंड्रिया में आप द्वारा सहन किए गए दुख और कष्टों के लिए, और दूसरा उस रक्त के लिए जो आप मसीह के लिए पीड़ा सहते हुए बहाएंगी।'

तब धन्य यूजेनिया ने स्वर्ग की ओर अपने हाथ उठाए और कहा:

'हे प्रभु यीशु, परम-प्रभु के पुत्र, कुँवारी, आपकी अति पवित्र माता से उत्पन्न, हमारे उद्धार के लिए, आप उन सभी कुँवारियों को, जिन्हें आपने मुझे सौंपा है, उनकी अक्षय कुँवारी अवस्था में, अपनी महिमा के अनंत राज्य में प्रवेश कराएँ!'

तब ब्लेस्ड यूजेनिया ने उसकी और वासिला के साथ बैठी मसीह की कुंवारी कन्याओं की भीड़ की ओर मुड़कर कहा:

– अंगूर की तुड़ाई का समय आ गया है, जब गुच्छों की छँटाई की जाती है और फिर उन्हें राजसी मेज पर शराब के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। और एक भी महान साम्राज्य या प्रतिष्ठित पद नहीं है जो इन गुच्छों के रक्त से सुसज्जित न हो। इसी प्रकार, हे मेरे अंगों और मेरे हृदय के गुच्छो, प्रभु के लिए तैयार हो जाओ। पवित्रता हमें ईश्वर के करीब लाती है; पवित्रता हमें स्वर्गदूतों के समान बनाती है; यह शाश्वत जीवन की जननी, पवित्रता की संगिनी, स्वर्ग का सुरक्षित मार्ग, आनंद की स्वामिनी, चमत्कारी शक्ति की अगुआ, विश्वास का आलिंगन और मुकुट, प्रेम की शक्ति और पुष्टि है। हमें किसी भी चीज़ के लिए उतनी अधिक कोशिश नहीं करनी चाहिए, और न ही किसी चीज़ की इतनी गहरी परवाह करनी चाहिए, जितनी कि निर्मल कुँवारी अवस्था में बने रहने के लिए; फिर भी कुँवारी अवस्था के लिए मरना और भी अधिक गौरवशाली है। इस संसार के वे व्यर्थ और भ्रामक सुख क्या हैं, जो जब आते हैं तो अस्थायी आनंद लाते हैं, लेकिन जब वे लुप्त हो जाते हैं, तो अनंत कष्ट देते हैं; जो क्षणिक हँसी लाते हैं केवल शाश्वत विलाप करने के लिए; जो सुख के शीघ्र मुरझाने वाले फूल दिखाते हैं केवल अनंत दुख लाने के लिए; इस वर्तमान युग में एक सुखद जीवन का वादा करें, केवल आने वाले युग में आपको शाश्वत यातना में डालने के लिए। इन सब के लिए, हे अति प्रिय कुंवारी कन्याओं, जिन्होंने अब तक कुंवारी के संघर्ष में मेरे साथ प्रयास किया है, जैसे आपने शुरू किया था, वैसे ही प्रभु के प्रेम में बने रहो। तुम्हारे लिए क्षणिक विलाप के दिन आ गए हैं, ताकि तुम अनंतकाल में आनंदित और हर्षित हो सको। जहाँ तक मेरी बात है, मैं तुम्हें पवित्र आत्मा के सुपुर्द करता हूँ और विश्वास करता हूँ कि वह तुम्हें पवित्र और निर्दोष रखेंगे। अब मेरे भौतिक चेहरे को देखने की और इच्छा मत करो, बल्कि मेरी कृत्यों और कर्मों को आध्यात्मिक नेत्रों से देखो।

उन्हें यह उपदेश देने के बाद, यूजेनिया ने उनमें से प्रत्येक को चूमा और रो रहे लोगों को सांत्वना दी; फिर, वासिया के साथ मिलकर प्रार्थना करने और एक-दूसरे को चूमने के बाद, वे अलग हो गए। उसी दिन, संत वासिया की एक दासी अपनी मालकिन के मंगेतर, पोंपेई, के पास गई और उससे कहा:

'हे स्वामी, मैं जानती हूँ कि राजाओं ने मेरी स्वामिनी का विवाह आपसे करने का वादा किया था, और अब छह वर्षों से अधिक समय से आप बिना विवाह किए उनकी वयस्क होने का इंतज़ार कर रहे हैं। मैं अब आपको यह बताने आई हूँ कि आपको अब उससे विवाह नहीं करना पड़ेगा, क्योंकि उसके चाचा और संरक्षक एक ईसाई हैं, और वह स्वयं भी पूरे मन से ईसाई धर्म की ओर मुड़ गई है और अब न केवल आपसे, बल्कि पूरी दुनिया से भी घृणा करती है। उसके पास यूजेनिया द्वारा भेजे गए दो खसासे हैं, और वह उन्हें अपने स्वामी के रूप में पूजती है, और उनके पैरों को प्रतिदिन इस तरह चूमती है मानो वे अमर देवता हों। ये खसासे, वास्तव में, ईसाई जादू-टोने के शिक्षक हैं।

दासी की बातों ने पोम्पी को प्रचंड क्रोध से भर दिया; वह झपटकर खड़ा हुआ और तुरंत एलीन से मिलने निकल पड़ा, जो वासिलिया की शिक्षिका थी।

उसने उससे कहा, 'हाल ही में मैंने विवाह करने का निर्णय लिया है। अतः मुझे उस कन्या को देखने की अनुमति दो जिसे अजेय राजाओं ने मुझे अपनी पत्नी के रूप में प्रदान किया है।'

ट्यूटर को तुरंत एहसास हो गया कि पोम्पे को उनके ईसाई धर्म अपनाने के बारे में पता चल गया है, और उसने जवाब दिया:

'जब वासिलिया छोटी और अपरिपक्व थी, तो मैंने उसे अपनी आँख के तारे की तरह संजोया और संरक्षित किया, और उसे उसकी हैसियत के अनुसार पाला-पोसा। लेकिन अब वह परिपक्वता और विवेक की आयु को प्राप्त कर रही है,

और अपने कुलीन जन्म के कारण वह पूरी तरह से स्वतंत्र रहना चाहती है और किसी के अधीन नहीं होना चाहती। अत; आपको उसे देखने की अनुमति देना मेरे अधिकार में नहीं है: यह उसकी अपनी सहमति पर निर्भर करता है।

और भी अधिक क्रोधित होकर, पोम्पेई वासिलिया के घर गया और दरवाज़े पर धड़ाधड़ करने लगा, और द्वारपालों को आदेश दिया कि वे वासिलिया को उसके आगमन की सूचना दें।

लेकिन, उसके आगमन के बारे में जानकर, वासिलिया ने उसे अंदर आने से इनकार कर दिया। उसने जवाब दिया, 'एक युवक के लिए एक युवती के साथ अकेले में बातचीत करना उचित नहीं है; और न ही एक युवती के लिए किसी पुरुष का चेहरा देखना भी उचित है। इसके अलावा, मुझे नहीं पता कि पोंपेई मुझसे किस इरादे से आया है।'

शर्मिंदगी के साथ पीछे हटने के बाद, पोम्पे ने कुछ कुलीनों को ढूंढा और उनके साथ मिलकर राजाओं के पैरों पर गिर पड़ा, अपनी मंगेतर और यूजेनिया के बारे में शिकायत करते हुए।

उसने कहा, 'हे अतिशय प्रसिद्ध राजाओं, अपने रोमन प्रजाजनों की सहायता करें और यूजेनिया द्वारा प्रचारित नए ईश्वर के विश्वास को शहर से निर्वासित कर दें। काफी समय से, ये लोग जो खुद को ईसाई कहते हैं, लोगों को नुकसान पहुँचा रहे हैं। वे हमारे कानूनों को रौंदते हैं, हमारे देवताओं का तिरस्कार करते हैं मानो वे व्यर्थ की मूर्तियाँ हों, और प्रकृति के नियमों को ही तोड़ते हैं, एक दुल्हन को उस दूल्हे से शादी करने से रोकते हैं जिसके साथ उसकी सगाई हुई है। अगर शादियाँ नहीं होंगी, तो लोग कहाँ से पैदा होंगे? और अगर वे पैदा नहीं होंगे, तो आप किस पर शासन करेंगे? रोमन लोगों की सेनाएँ और शक्ति कहाँ से आएगी? हमारे दुश्मनों को कौन हराएगा? हमारा देश कैसे जीवित रहेगा, और मानव जीवन कैसे आगे बढ़ेगा?

पॉम्पी ने इसी तरह के मामलों पर विस्तार से बात की, और वे फूट-फूट कर रो पड़े। राजा गैलियस ने अपने सभी कुलीनों के साथ मिलकर उन पर तरस खाया और तुरंत एक आदेश जारी किया कि किन्या वासिla या तो अपने मंगेतर से शादी करने के लिए राजी हो जाए या तलवार से मौत की सजा दी जाए। जहाँ तक यूजेनिया का सवाल था, उसने आदेश दिया कि वह देवताओं को बलिदान चढ़ाए या यातनाओं में मर जाए। इसके अलावा, राजा ने आदेश दिया कि सभी ईसाइयों को मौत की सज़ा दी जाए – और केवल ईसाइयों को ही नहीं, बल्कि जो कोई भी ईसाइयों को आश्रय देने की हिम्मत करेगा, उसे भी मौत की सज़ा दी जाएगी।

जब राजा का फरमान पवित्र कुंवारी वासिलिया तक पहुँचा, तो उसने ज़ोर से और निडर होकर उत्तर दिया:

'मेरे वधूवर राजाओं के राजा, मसीह, परमेश्वर के पुत्र हैं, और उनके सिवा मैं किसी अन्य नश्वर पुरुष को जानना नहीं चाहती।'

ये शब्द सुनते ही, उसे तुरंत तलवार से मार डाला गया। दो पवित्र नपुंसकों, प्रोट और याकफि को भी पकड़ लिया गया और घृणित देवता दिया[184] की पूजा करने के लिए मूर्तिपूजक मंदिर में घसीट कर ले जाया गया। लेकिन जैसे ही संतों ने मंदिर में प्रवेश किया, मूर्ति उनके पैरों तले गिर पड़ी और धूल और राख में टूटकर बिखर गई। शहर के राज्यपाल, निकिटियस, को जब यह पता चला, तो उसने उनके सिर कलम करने का आदेश दिया, यह मानते हुए कि उन्होंने अपनी जादू-टोने से देवता दिया को नष्ट कर दिया था। जहाँ तक संत यूजेनिया का सवाल है, उसने उसे अपनी उपस्थिति में बुलाया और जादू-टोने की कला के बारे में उससे पूछताछ करने लगा। जवाब में, संत ने उस एक सच्चे ईश्वर के बारे में विस्तार से और बड़ी बुद्धिमानी से बात करना शुरू कर दिया, जिसके नाम से ही राक्षस डरकर कांप उठते हैं, और वे मूर्तियों के साथ ही गिर पड़ते हैं। उसकी बातों पर ध्यान दिए बिना, शासक ने उसे डायना के मंदिर में बलिदान के लिए ले जाने का आदेश दिया, लेकिन वह उसमें प्रवेश भी नहीं कर पाई थी कि मूर्ति सहित मंदिर ढह गया। यह जानकर, राजा ने उसके गले में पत्थर बाँधकर उसे टायबर नदी में फेंकने का आदेश दिया। लेकिन जब ऐसा किया गया, तो पत्थर तुरंत ढीला हो गया और संत पानी पर सूखी ज़मीन की तरह चली गईं। फिर उन्हें फिर से पकड़ लिया गया और एक तेज़ जलती हुई भट्टी में फेंक दिया गया, लेकिन भट्टी अचानक ठंडी हो गई, जिससे संत को कोई भी नुकसान नहीं हुआ, और वह पूरी तरह से सुरक्षित इससे बाहर निकल आईं। तब उसे एक गहरे और अँधेरे कालकोठरी में डाल दिया गया और दस दिनों तक भूखा रखा गया,

---

[184] संत यूजेनिया, क्लॉडिया, बासिला, प्रोटस और हायसिंथ का निधन लगभग 262 ईस्वी में हुआ। 366 में पोप डमासस के पोन्तिफिकेट के दौरान प्रोटस और हायसिंथ की कब्रें खोली गईं, और जल्द ही उनके ऊपर एक चर्च का निर्माण किया गया। वर्तमान में, प्रोटस के अवशेष रोम में फ्लोरेंटाइन के सेंट जॉन द बैपटिस्ट चर्च में; हायसिंथ के अवशेष ओस्टिया में सेंट पॉल चर्च में; यूजेनिया के अवशेष बारह प्रेरितों के चर्च में; और वासिलिया के अवशेष प्रैक्सेडिस के चर्च में हैं।

लेकिन दिव्य अनुग्रह की किरण संत पर कभी नहीं रुकी, और स्वर्ग से उसके लिए भोजन भेजा गया। कालकोठरी में, हमारे प्रभु यीशु मसीह यूजिनिया के सामने प्रकट हुए और कहा:

'मैं तुम्हारा उद्धारकर्ता हूँ, जिसे तुमने अपनी पूरी आत्मा और पूरे हृदय से प्रेम किया है और जिसके लिए तुम ये कष्ट सह रही हो। मैं तुम्हें महान महिमा का वस्त्र पहनाऊँगा और तुम्हें अनुपम आनंद से भर दूँगा। यह भी आपके लिए एक संकेत हो: मैं आपको उसी दिन अपने स्वर्गीय निवासों में स्वीकार करूँगा जिस दिन मैं एक शुद्ध, कुंवारी गर्भ से पृथ्वी पर पैदा हुआ था।

प्रभु के इस प्रकट होने से पवित्र कुंवारी का हृदय अकथनीय आनंद से भर गया, और वह शरीर से विदा होने के समय की प्रसन्नता से प्रतीक्षा करने लगी। स्वयं मसीह के जन्म के दिन, उसे कालकोठरी में एक जल्लाद भेजा गया, जिसने उसे तलवार से मार डाला[185] ।

इस प्रकार पवित्र और सम्माननीय कुंवारी यूजेनिया का सांसारिक जीवन और पृथ्वी पर उसके दुख समाप्त हुए, और शाश्वत तथा धन्य जीवन की शुरुआत हुई। उनकी धन्य माता, क्लॉडिया, अपने परिवार के साथ, उनके पवित्र और सम्मानित शरीर को ले गईं और उसे रोम से बहुत दूर नहीं, पारिवारिक संपत्ति पर दफना दिया, जहाँ संत यूजेनिया ने अपने जीवनकाल में कई विश्वासियों के शरीर दफनाए थे।

एक रात, जब उसकी माँ उसकी कब्र पर रो रही थीं, तो संत यूजेनिया अन्य कई कुंवारीयों के साथ और महान महिमा से घिरी हुई, उनके सामने प्रकट हुईं, और कहा:

'प्रसन्न हो और आनंदित रहो, मेरी माता, क्योंकि मसीह ने मुझे संतों के आनंद में और मेरे पिता को पुरखों की संख्या में पहुँचा दिया है: पुनरुत्थान के दिन वह तुम्हें भी अनंत आनंद में ग्रहण करेंगे। मेरे भाइयों, अपने बेटों को आज्ञा दो, कि वे बपतिस्मा में मिली अपनी ईसाई पुकार को अंत तक निष्ठापूर्वक निभाएँ, कि वे केवल शरीर से ही नहीं बल्कि आत्मा से भी मेरे भाई बनें, और इस प्रकार हम अपने पूरे परिवार को परमेश्वर को एक मनोहर भेंट के रूप में अर्पित कर सकें।

जैसे ही संत ने अपनी माता से इस प्रकार कहा, स्वर्गदूतों की भीड़ की आवाज़ें सुनाई दीं, जो पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा, त्रिमूर्ति में एक ईश्वर की स्तुति और महिमा कर रहे थे; उन्हें, हम पापियों से भी, युगों-युगों तक महिमा और स्तुति मिले। आमीन।

आदरणीय संन्यासी निकोलस की स्मृति

24 दिसंबर को स्मरणोत्सव

हमारे पूजनीय पिता निकोलस मूल रूप से यूनानी ज़ार निकिफिोरोस के अधीन एक सैन्य कमांडर थे[186] और उनके अधीन कई सैन्य रेजिमेंट थे। एक बार, जब राजा निकिफिोरस बुल्गारियाई लोगों के साथ युद्ध में थे, निकोलस भी अपने सैनिकों के साथ एक अभियान पर निकले: शाम को, वे एक सराय में गए, सराय के मालिक के साथ भोजन किया और प्रार्थना करने के बाद सोने चले गए। लेकिन रात की दूसरी और तीसरी पहर के दौरान[187] , सरायकिन की बेटी, पाप की शैतानी इच्छा से प्रेरित होकर, चुपके से सेनापति के बिस्तर के पास आई, उसे जगाया, और पापी शब्दों से उसे व्यभिचार के लिए लुभाने लगी।

"हे कन्या, अपनी शैतानी, उन्मत्त वासना से मुंह मोड़ ले," वोइवोड ने उससे कहा, "और न तो अपनी कुँवारी अवस्था को कलंकित करने का प्रयास कर, और न ही मुझे, एक दीन आत्मा को, नरक की गहराइयों में धकेलने का!"

---

[185] धन्य जेरोम के कैलेंडर और कुछ अन्य स्रोतों के अनुसार, संत यूजेनिया ने 25 दिसंबर को शहादत प्राप्त की।

[186] बाइज़ेंटाइन सम्राट निकिफ़ोरस प्रथम ने 802 से 811 तक शासन किया।

[187] प्राचीन काल में, घरों और शहरों को दुश्मन के हमलों और अन्य खतरों से बचाने के लिए, पहरेदारों को कई पालियों में बांटा जाता था ताकि पहरेदारी के नियमित परिवर्तन से थकान न हो। इसी कारण से, समय की गणना पहरे के आधार पर की जाती थी – पहला पहरा, दूसरा पहरा, और इसी तरह।

थोड़ी शर्म महसूस करते हुए, वह पीछे हट गई, लेकिन कुछ ही देर बाद वह फिर से उसके पास आई, और उस पवित्र पुरुष को पाप के लिए लुभाने लगी। राज्यपाल ने उसे एक बार फिर से भगा दिया, लेकिन वह शैतान की कामुक वासना से भड़की हुई, तीसरी बार उसके पास आई। तब धन्य राज्यपाल ने उससे कहा:

'हे दुष्टा, जो हर तरह की निर्लज्जता और पागलपन से भरी है, जो अपनी वासनाओं की दास है! क्या तू नहीं देखती कि राक्षस तुझे भड़का रहे हैं, जो तेरी कुँवारी अवस्था को कलंकित करने और तुझे तेरे पूरे परिवार और सभी लोगों के लिए उपहास और कलंक बनाने की इच्छा रखते हैं, और साथ ही तेरी आत्मा को शाश्वत यातना में डालना चाहते हैं? क्या तुम यह भी नहीं देखती कि मैं, यद्यपि अयोग्य हूँ, एक विदेशी लोगों के खिलाफ एक खूनी युद्ध छेड़ने जा रहा हूँ? तो फिर मैं युद्ध में जाकर अपने शरीर को कैसे अपवित्र करूँ! नहीं, ईश्वर मेरी मदद करेगा, और मैं खुद को अपवित्र नहीं करूँगा!"

उसने उस निर्लज्ज कन्या से यह और भी बहुत कुछ कहा और, लज्जित होकर, उसे भेज दिया। जब दिन चढ़ा, तो राज्यपाल उठे और, प्रार्थना करने के बाद, अपनी यात्रा पर निकल पड़े। अगली रात, एक सपने में, उन्होंने खुद को किसी अलौकिक स्थान पर खड़ा हुआ देखा। उसके बगल में एक शक्तिशाली व्यक्ति बैठा था, जिसका दाहिना पैर बाएँ पैर पर रखा हुआ था।

'क्या तुम दोनों ओर उन योद्धाओं को देख रहे हो?' उन्होंने निकोलस से पूछा।

उसने उत्तर दिया, 'हाँ, मेरे स्वामी, मैं देखता हूँ कि यूनानी बुल्गारियाई लोगों को हरा रहे हैं।'

तब उस पुरुष ने जो धर्मी सेनापति के सामने प्रकट हुआ था, उससे कहा:

'हम पर देखो।'

महाबली की ओर देखकर, कमांडर ने देखा कि उन्होंने अपनी बाईं टांग को अपनी दाहिनी टांग पर चढ़ा रखा था। इसके बाद, धर्मात्मा निकोलस ने योद्धाओं की ओर मुड़कर देखा और देखा कि बुल्गारियाई फिर से ताकतवर हो गए थे और निर्दयता से ग्रीक रेजिमेंटों को पराजित कर रहे थे।

जब लड़ाई समाप्त हो गई, तो पराक्रमी ने धर्मात्मा सेनापति से कहा:

'मारे गए लोगों के शवों की बारीकी से जाँच करो और मुझे बताओ कि तुम क्या देखते हो।'

चारों ओर देखने पर, कमांडर ने देखा कि पूरा मैदान मृतकों की लाशों से भरा पड़ा था, जबकि उनके बीच में एक ही जगह थी, जो घास से ढकी और खाली थी, और एक आदमी के लेटने के लिए बस पर्याप्त थी।

'प्रभु,' उसने कहा, 'पूरा मैदान उन यूनानियों की लाशों से भरा पड़ा है जिन्हें निर्दयता से मार डाला गया था, सिवाय एक ही जगह के जहाँ एक व्यक्ति लेट सकता है।'

'इसका क्या अर्थ निकाला?' शक्तिमान ने पूछा।

गवर्नर ने उनसे उत्तर दिया:

'हे प्रभु, मैं अज्ञानी और अनपढ़ हूँ, और मैं यह नहीं समझता।'

तब उस भयानक मनुष्य ने उससे कहा:

'यह खाली, घास से ढकी जगह, जो एक आदमी के लेटने के लिए ठीक पर्याप्त है, तुम्हारे लिए तैयार की गई थी। तुम्हें वहाँ अपने दोस्तों के साथ मारे जाने और इसकी खालीपन को भरने के लिए लेटना था। लेकिन कल रात से ही तुमने बहादुरी से उस विश्वासघाती साँप को अपने से दूर भगा दिया, जिसने तीन बार तुमसे कुश्ती की, तुम्हें पाप करने के लिए उकसाया और तुम्हें मारने की कोशिश की, इस प्रकार तुमने खुद को मृत्यु से बचाया है: तुमने इस घास से ढकी जगह को खाली छोड़ दिया है, और अपने शरीर के साथ अपनी आत्मा को भी बचाया है। अपने शेष जीवन के लिए, मृत्यु से बचाए जाने के बाद, तुम मेरी सेवा करोगे।

यह सब देखकर और सुनकर, धर्मी निकोलस भय से ग्रस्त हो गए; वे डर और आतंक से भरकर अपनी नींद से जागे, और उठकर अपने योद्धाओं के लिए परमेश्वर से प्रार्थना करने लगे। जब लड़ाई शुरू हुई और दोनों पक्षों ने बड़ी क्रूरता से लड़ाई की, तो पहले तो यूनानियों ने बढ़त बना ली और बुल्गारियाई लोगों को परास्त कर दिया, लेकिन फिर बुल्गारियाई लोग अचानक एकजुट हो गए और यूनानियों पर हावी होने लगे। उग्र जानवरों की तरह, उन्होंने बहादुरी से यूनानी पंक्तियों पर धावा बोल दिया और यूनानियों को पीछे धकेल दिया, उन्हें बेरहमी से कुचल दिया। शीघ्र ही पूरी ग्रीक सेना बुल्गारियाई तलवारों का शिकार हो गई, और ज़ार निकिफोरस स्वयं मुश्किल से कुछ साथियों के साथ भागने में सफल रहे।

तब यूनानी रेजमिंटों के कमांडर, धन्य निकोलस ने, अपना सपना साकार होते देख, मृत्यु से अपनी मुक्ति के लिए ईश्वर का धन्यवाद किया और अपना पद त्यागकर एक मठ में चले गए, जहाँ वे अवर्णनीय दुख से रोते हुए शहीद सैनिकों के लिए शोक मना रहे थे। पवित्र स्कीमा धारण करने और कई वर्षों तक उत्साहपूर्वक ईश्वर की सेवा करने के बाद, वह प्रबुद्ध और महान संतों में से एक बन गए। उनके साथ उन्हें हमारे प्रभु मसीह यीशु के साथ स्वर्ग में एक स्थान प्राप्त हुआ, जिनका महिमा युगानुयुग हो। आमीन।

7 जनवरी

25 दिसंबर (पुराना कैलेंडर)

प्रभु परमेश्वर और हमारे उद्धारकर्ता यीशु मसीह का जन्म।

25 दिसंबर को स्मरणोत्सव

यीशु मसीह का जन्म इस प्रकार हुआ: यह उनकी परम धन्य माता, परम पवित्र कुँवारी मरियम के, जोसफ नामक एक धर्मी पुरुष से सगाई के बाद हुआ, जो पहले से ही वृद्ध हो चुके थे (क्योंकि वे अस्सी वर्ष के थे)। संत ग्रेगरी ऑफ नसि (188) और साइप्रस के संत एपफिनियस की गवाही के अनुसार, सबसे पवित्र कुँवारी को विवाह के आवरण में उन्हें सौंपा गया था, ताकि वह उनकी कुँवारीपन की रक्षा कर सकें और उनकी देखभाल कर सकें। वे एक साथ रहने भी नहीं शुरू हुए थे कि यह स्पष्ट हो गया कि वह पवित्र आत्मा से गर्भधारण कर चुकी थीं। जोसेफ मरियम के नाममात्र के पति थे, लेकिन वास्तव में वे उनकी कुँवारी पवित्रता के संरक्षक थे, जो ईश्वर को समर्पित थी, और उनके निर्दोष जीवन के साक्षी थे। क्योंकि प्रभु को यह उचित लगा कि वे शैतान से सबसे पवित्र कुँवारी से अपने अवतार के रहस्य को छिपाएँ, और इस उद्देश्य के लिए उन्होंने अपनी माता की कुँवारीपन को विवाह के आवरण से ढक दिया, ताकि शत्रु यह न जान सके कि वही वह कुँवारी थी जिसके बारे में यशायाह ने भविष्यवाणी की थी: *'देखो, एक कुँवारी गर्भधारण करेगी'* (यशायाह 7:14)। अलेक्जेंड्रिया के आर्चबिशप सेंट अथेनासियस[189] , निम्नलिखित शब्दों में इसकी गवाही देते हैं: 'जोसेफ का विवाह यूसुफ के साथ इसलिए हुआ था ताकि वह रहस्य सेवा कर सके, ताकि कुँवारी, मानो एक पति होने के नाते, महिमामय हो सके[190] , और ताकि इस मामले की सच्चाई स्वयं शैतान से छिपी रहे, कहीं वह यह न जान जाए कि क्या होने वाला था, अर्थात्, कि कैसे परमेश्वर ने मनुष्यों के साथ रहने की कृपा की' (मसीह के जन्म पर प्रवचन)। और संत बेसिल द ग्रेट[191]

---

[188] संत ग्रेगरी ऑफ निसि्सा, सेंट बेसिल द ग्रेट के भाई, जो कैपाडोसिया के निसि्सा के बिशप थे, चौथी शताब्दी के सबसे प्रसिद्ध चर्च पिताओं में से एक, जो एरियनवाद के खिलाफ अपने उत्साही संघर्ष और अपने कई कार्यों—धर्मशास्त्रीय, दार्शनिक और उपदेशात्मक—के लिए जाने जाते हैं, जिनमें से सबसे उल्लेखनीय निम्नलिखित हैं: द ग्रेट कैटेकेटिकल ओरेशन, जिसमें पवित्र पिता यहूदियों और मूर्तिपूजकों को ईसाई धर्म की सच्चाई के बारे में मनाने के लिए एक आदर्श प्रस्तुत करते हैं; उनके भाई, संत बेसिल द ग्रेट की मृत्यु के बाद, संत ग्रेगरी और उनकी बहन, आदरणीय मक्रिना के बीच आत्मा और पुनरुत्थान पर एक संवाद; इसके बाद विभिन्न विधर्मियों के खिलाफ कई कृतियाँ, साथ ही पवित्र धर्मग्रंथ पर कई प्रवचन और उपदेश भी दिए। सेंट ग्रेगरी की मृत्यु 394 में हुई। चर्च उनके पर्व का उत्सव 10 जनवरी को मनाती है।

[189] संत अथेनासियस महान, अलेक्जेंड्रिया के आर्चबिशप, एरियन संप्रदाय के विरुद्ध ऑर्थोडॉक्सी के एक प्रसिद्ध रक्षक, सत्य के लिए एक बहादुर स्वीकारकर्ता और शहीद, जिन्होंने अलेक्जेंड्रिया की कलीसिया के प्रमुख के रूप में अपने लंबे कार्यकाल के दौरान पाँच निर्वासन सहन किए और अंततः कई परीक्षणों और उत्पीड़नों के बाद, 373 में निधन कर गए। उन्होंने परमेश्वर के पुत्र के संबंध में ऑर्थोडॉक्स सिद्धांत के बचाव में व्यापक रूप से लिखा। उनकी सबसे प्रसिद्ध कृतियाँ इस प्रकार हैं: 'ग्रीकों के विरुद्ध' (काता 'एल्लिनोन'), जिसमें उन्होंने मूर्तिपूजा का खंडन किया है, इसके बाद कई ऐसी कृतियाँ हैं जिनका उद्देश्य एरियस की शिक्षाओं का खंडन करना और परमेश्वर पिता के साथ परमेश्वर के पुत्र की एकसारता के ऑर्थोडॉक्स सिद्धांत का बचाव करना है। उन्होंने कुछ व्याख्यात्मक कार्य भी लिखे, जैसे कि भजन संहिता पर एक टीका और कई अन्य ग्रंथ। चर्च 2 मई और 18 जनवरी को संत अथेनासियस का स्मरणोत्सव मनाती है।

[190] यह ज्ञात है कि मिसीहा के आगमन से पहले यहूदियों में, कुँवारीपन को कुछ हद तक नीचा समझा जाता था, और केवल विवाह को ही एक पूर्ण रूप से धन्य अवस्था माना जाता था।

[191] कपाडोसिया के सेसरिया के आर्चबिशप, चौथी शताब्दी के सबसे महान संतों में से एक, सेंट बेसिल द ग्रेट को, सेंट ग्रेगरी द थियोलोजियन और सेंट जॉन क्राइसोस्टोम के साथ, 'सार्वभौमिक शिक्षक' की उपाधि से सम्मानित किया गया था। अपने धार्मिक परिवार में एक सच्ची ईसाई परवरिश और बाद में फिलिस्तीन के सेज़रिया और एथेंस के स्कूलों में व्यापक शैक्षणिक शिक्षा प्राप्त करने के बाद, उन्होंने चर्च के लिए सबसे

कहते हैं: 'जोसेफ के साथ सगाई इस दुनिया के राजकुमार (अर्थात् शैतान) से परमेश्वर के पुत्र के अवतार को छिपाने के लिए हुई थी' (मसीह के जन्म पर प्रवचन)। सेंट जॉन ऑफ डेमास्कस[192] भी यही कहते हैं: 'जोसेफ मरी के पति के रूप में खुद को सगाई कर लेते हैं ताकि शैतान, कुंवारी से मसीह के जन्म के बारे में अनजान, पीछे हट जाए, यानी हेरोद को उकसाना बंद कर दे और यहूदियों को ईर्ष्या के लिए प्रेरित करना बंद कर दे। क्योंकि जिस समय से यशायाह ने भविष्यवाणी की, *'देखो, एक कुँवारी गर्भधारण करेगी और एक पुत्र को जन्म देगी'* (यशा. 7:14), उसी समय से शैतान ने सभी कुँवारियों पर कड़ी नजर रखी, कहीं उनमें से कोई पति के बिना गर्भधारण न कर ले और कुँवारी रहते हुए ही प्रसव न कर दे। ईश्वर की व्यवस्था से पवित्र कन्या मरियम का विवाह जोसेफ से तय हुआ, ताकि परमेश्वर की अति पवित्र माता की कुँवारीपन और परमेश्वर के वचन के अवतार दोनों ही अंधकार के राजकुमार से छिपे रहें। वैवाहिक संबंध के पूर्ण होने से पहले ही, पवित्र कन्या मरियम को पवित्र आत्मा से गर्भधारण किया हुआ पाया गया, और उनकी पवित्र कोख, जिसमें अकल्पनीय ईश्वर थे, बढ़ने लगी। उसकी गर्भावस्था तब विशेष रूप से स्पष्ट हो गई जब, एलिजाबेथ के साथ तीन महीने बिताने के बाद, वह अपने घर लौटी (लूका 1:56), और उसके भीतर दिव्य शिशु दिन-प्रतिदिन बढ़ता गया, जबकि शिशु मसीह के जन्म का दिन और भी निकट आता गया। यह देखकर, यूसुफ़ बहुत हैरान और दुखी हो गया, क्योंकि उसने सोचा कि उसने अपनी पवित्रता का व्रत तोड़ दिया है। बड़े संकट में, उस धर्मी बूढ़े ने कहा: 'यह कैसे हो सकता है? मैंने उसे नहीं जाना, न ही मैंने उसके बारे में मन में पाप किया है, फिर भी वह गर्भवती है। हाय, यह कैसे हुआ? किसने उसे बहकाया है? और मुझे नहीं पता कि क्या करूँ। क्या मैं उसे कानून तोड़ने वाली के रूप में दोष दूँ, या उस शर्म के कारण चुप रहूँ जो तब उस पर और मुझ पर आएगी? यदि मैं उस पर आरोप लगाऊँ, तो, बेशक, उसे मूसा के कानून के अनुसार पत्थर मारकर मार दिया जाएगा, और मैं, मानो, एक अत्याचारी के रूप में सामने आऊँगा जिसने उसे एक क्रूर मृत्यु की सजा दी है। हालाँकि, यदि मैं उस पर आरोप नहीं लगाता, तो मैं व्यभिचारियों के साथ मिल गया समझा जाऊँगा। तो फिर, मैं क्या करूँ? मैं असमंजस में हूँ। क्या मैं उसे चुपके से जाने दूँ, ताकि वह जहाँ चाहे चली जाए? या क्या मैं स्वयं उससे दूर किसी दूर देश भाग जाऊँ, ताकि मेरी आँखें ऐसी बेइज्जती का साक्षात्कार न करें?' इस प्रकार मनन करते हुए, धर्मी यूसुफ कन्या मरियम के पास आए और उनसे बात की, जैसा कि यरूशलेम के संत सोफ्रोनीयस गवाही देते हैं: 'मरियम, यह मैं तुममें क्या देख रहा हूँ? सम्मान लज्जा में बदल गया है; आनंद दुख में। मेरी प्रशंसा लाने के बजाय, तुमने मुझे अपमान दिलाया है। मैंने तुम्हें चर्च के पुरोहितों से निर्दोष पाया था, और अब मैं क्या देख रहा हूँ?'[193] । और अलेक्जेंड्रिया के संत अथेनासियस इसी घटना का वर्णन इस प्रकार करते हैं: 'जब यूसुफ ने देखा कि कुँवारी मरियम गर्भवती हैं, परन्तु यह न जानते हुए कि उनके गर्भ में क्या महान खजाना है, उन्होंने भ्रम में उनसे पूछा: 'मरियम, तुम्हें क्या हो गया है? क्या तुम पवित्र कन्या नहीं हो, जो मंदिर के पवित्र प्रांगण में पली-बढ़ी हो? क्या तुम मरियम नहीं हो, जो पुरुषों के चेहरे तक नहीं देखती थीं? क्या तुम वही मरियम नहीं हो, जिसे पुरोहित विवाह के लिए मना नहीं सके थे? क्या तुम वही मरियम नहीं हो, जिसने कुँवारीपन के गुलदस्ते को मुरझाए बिना रखने का वादा किया था? तुम्हारी पवित्रता का महल कहाँ है? वह कक्ष कहाँ है जिसने तुम्हारी कुँवारी पवित्रता की रक्षा की? तुम्हारा लज्जाशील मुखमंडल कहाँ है? 'मुझे शर्म आती है, फिर भी तुम निर्भीक हो, क्योंकि मैं तुम्हारे पाप को छिपाता हूँ।' जब यूसुफ ने यह सब उससे कहा, तो अहो, वह निर्दोष मेमना, वह निष्कलंक कबूतर, वह पवित्र कुँवारी कितनी लज्जित हुई, उसका मुख यूसुफ के शब्दों से लज्जा से लाल हो गया! वह उसे वह शुभ समाचार बताने की हिम्मत नहीं कर सकी जो महादूत ने उसे दिया था, न ही वह भविष्यवाणी जो एलिजाबेथ ने उसके बारे में कही थी—वह ऐसा करने की हिम्मत

कठिन समय में अपनी सेवा शुरू की, जब एरियन विवादों के कारण बड़ी उथल-पुथल मची हुई थी और चर्च दो फाड़ हो रहा था। पॉन्टिक रेगिस्तान में एक लंबे समय के बाद, जहाँ उन्होंने परम तपस्या का जीवन जिया, उन्हें 364 में एक प्रेस्बिटर के रूप में नियुक्त किया गया, और 370 में वह केसरिया के बिशप बने। इस पद पर रहते हुए, उन्होंने एरियनवाद के खिलाफ ऑर्थोडॉक्सी (सही आस्था) की दृढ़ता से रक्षा की और तत्कालीन सम्राट वैलेंस—जो एरियन विधर्म के एक कट्टर अनुयायी थे—के उन्हें अपने पक्ष में करने के कड़े प्रयासों के बावजूद, वे ऑर्थोडॉक्स आस्था की रक्षा में अडिग रहे। उनके कई कार्यों में, निम्नलिखित विशेष रूप से प्रसिद्ध हैं: सृष्टि के छह दिनों पर प्रवचन, भविष्यवक्ता यशायाह पर प्रवचन, भजन-संग्रह पर प्रवचन, एरियनों के खिलाफ कई ग्रंथ, मठ के नियम, लिटिर्जी (पूजा विधि), कई उपदेश, पत्र और प्रार्थनाएं, और अन्य। सेंट बेसिल का 379 में निधन हो गया। उनका पर्व 1 जनवरी को मनाया जाता है।

[192] सेंट जॉन ऑफ डेमास्कस, जो शुरू में दमिश्क के गवर्नर थे और बाद में सेंट सव्वास द सैंक्चुराइज्ड की प्रसिद्ध यरूशलेम लावरा में एक भिक्षु बने, प्रतिमा-विरोधी विधर्म के खिलाफ ऑर्थोडॉक्सी के एक प्रसिद्ध रक्षक थे और ऑर्थोडॉक्स विश्वास (पहली 'डॉगमैटिक्स') की सटीक व्याख्या के साथ-साथ कई चर्च भजनों के लेखक भी थे। उनकी मृत्यु 8वीं शताब्दी के अंत में हुई। उनका पर्व 4 दिसंबर को मनाया जाता है।

[193] मसीह के जन्म की पूर्व संध्या की सेवा से, पहले शाही घंटे का ट्रॉपारियन।

इसलिए नहीं कर सकी क्योंकि उसे डर था कि वह घमंडी और प्रशंसा की भूखी लगेगी। इस बात की गवाही उपरोक्त संत अथेनासियस भी देते हैं, जो यूसुफ से बात करते समय उनके मुख से निम्नलिखित शब्द कहते हैं: 'यदि मैं आपको अपने बारे में बताऊँ, तो मैं आपको व्यर्थ की लगूँगी। थोड़ी देर और धैर्य रखें, यूसुफ, और चरवाहे मेरे बारे में सच्चाई आपको बताएँगे।' कन्या मरियम ने जोसेफ की हैरानी के जवाब में केवल एक बात कही: 'जिस प्रभु ने मुझे आज तक निर्मल कुँवारी अवस्था में सुरक्षित रखा है, उसकी कसम, मैंने किसी पाप को नहीं जाना, मुझ पर किसी ने हाथ नहीं उठाया, और जो मेरे गर्भ में है, वह ईश्वर की इच्छा और ईश्वर के कार्य से है।' हालाँकि, जोसेफ, एक इंसान होने के नाते, उन्होंने इंसानी तौर पर सोचा और उन्हें शक हुआ कि उनकी गर्भधारण पाप के कारण हुआ है। लेकिन, एक धर्मी व्यक्ति होने के नाते, वह उन्हें बेनकाब नहीं करना चाहते थे, बल्कि उन्हें चुपके से भेज देने का इरादा रखते थे, या (जैसा कि सिरियाक अनुवाद में लिखा है) उन्होंने उन्हें गुप्त रूप से छोड़ देने का निश्चय किया, यानी, उनसे दूर चले जाने का। जैसे ही वह यह सोच ही रहा था, प्रभु का स्वर्गदूत एक स्वप्न में उसके पास आकर बोला, 'हे दाऊद के पुत्र यूसुफ, मरियम को अपनी पत्नी बनाने से मत डर।' इसलिए स्वर्गदूत ने पवित्र कन्या को यूसुफ की पत्नी कहा, ताकि उसके व्यभिचार के संदेह का खंडन हो सके (क्योंकि यूसुफ ने सोचा था कि मरियम ने व्यभिचार से गर्भधारण किया है)। वह स्वर्गदूत, मानो, यूसुफ से कह रहा था: 'वह तुम्हारी मंगेतर पत्नी है, और किसी दूसरे पति की नहीं है।' धन्य थियोफिलिक्ट इस बारे में निम्नलिखित कहते हैं: [194]

'देवदूत मरियम को यूसुफ की पत्नी कहता है, जिससे यह स्पष्ट हो कि यद्यपि वह उससे सगाईशुदा थी, उसने स्वयं को किसी अन्य पुरुष के साथ कलंकित नहीं किया था। और साथ ही उसकी कुँवारीपन के साथ वैध विवाह का भी सम्मान हो।' संत बेसिल महान इसी प्रकार तर्क करते हैं: 'देवदूत ने मरियम को कुंवारी और एक पति के लिए सगाई की हुई, दोनों कहा, ताकि उनकी कुंवारीपन का सम्मान हो और उनके विवाह की निंदा न की जाए। पवित्र जन्म के लिए कुंवारीपन को आवश्यक चुना गया था, जबकि सगाई—जो विवाह की शुरुआत है—कानून के अनुसार की गई थी ताकि कोई यह न सोचे कि यह जन्म अवैध तरीके से हुआ है, और यह भी ताकि जोसेफ मरियम की पवित्रता के एक स्थायी गवाह बन सकें, कहीं ऐसा न हो कि उन्हें अपनी कुँवारी अवस्था को कलंकित करने का दोष दिया जाए। उनके पास (जोसेफ के रूप में) एक मंगetar पति थी जो उनके जीवन का गवाह और संरक्षक था' (मसीह के जन्म पर उपदेश)। देवदूत यूसुफ से कहते हैं: 'मरियम को अपनी पत्नी बनाने से न डरना।' इन शब्दों का अर्थ है: 'अपनी सगाई के अनुसार अपनी पत्नी को लो, और कन्या को ईश्वर से किए अपने व्रत के अनुसार (जैसा कि सेंट ग्रेगरी ऑफ निसा और ब्लेस्ड जेरोम बताते हैं), क्योंकि वह इज़राइल के लोगों में पहली कुंवारी है जिसने ईश्वर से अपनी कुंवारी अवस्था को अपनी मृत्यु तक अक्षुण्ण रखने का व्रत लिया था। परन्तु ध्यान दो, क्योंकि जो उसमें गर्भ में आया है, वह पवित्र आत्मा से है। वह एक पुत्र को जन्म देगी, और तुम्हें उसका नाम रखना है—तुम्हें एक पिता की तरह उसका नाम रखना है, भले ही तुमने उसके जन्म में भाग नहीं लिया, क्योंकि यह परंपरा है कि पिता अपने बच्चों का नाम रखते हैं, जैसे अब्राहम ने अपने पुत्र का नाम इसहाक रखा था (उत्पत्ति 21:2)। इसी प्रकार, यद्यपि आप शिशु के प्राकृतिक पिता नहीं बल्कि केवल नाममात्र के पिता हैं, फिर भी आप उन्हें एक नाम देकर एक पिता के रूप में उनकी सेवा करेंगे।' स्वर्गदूत की ओर से धन्य थियोफिलिक्ट यूसुफ से इस प्रकार कहते हैं: 'यद्यपि शिशु के जन्म में आपकी कोई भूमिका नहीं थी, मैं आपको यह पदवी (पिता की) देना चाहता हूँ, ताकि आप उसे एक नाम दे सकें; आप उसका नाम रखेंगे, भले ही वह आपका अपना बच्चा नहीं है; इसके माध्यम से आप उसके लिए वह करेंगे जो एक पिता के लिए उपयुक्त है। तो फिर क्या नाम? यीशु, जिसका अर्थ है उद्धारकर्ता, क्योंकि वह अपने लोगों को उनके पापों से बचाएगा।' जोसेफ, अपनी नींद से जागकर, प्रभु के स्वर्गदूत के आज्ञानुसार चलने लगे, और अपनी मंगेतर को—जिन्हें उन्होंने प्रभु की कुंवारी के रूप में प्रेम से सम्मानित किया और उद्धारकर्ता की माता के रूप में श्रद्धा और भय के साथ उनकी सेवा की—अपने घर ले आए। उन्होंने उन्हें अपनी मंगेतर के रूप में स्वीकार किया, प्रभु की कुँवारी के रूप में प्रेम से उन्हें महान सम्मान दिया, और उद्धारकर्ता की माता के रूप में भक्ति और श्रद्धा से उनकी सेवा की। *'और जब तक उसने प्रसव नहीं कर दिया, तब तक वह उसे नहीं जानता था'* (मत्ती 1:25), अर्थात् (थेयोफिलिक्ट की व्याख्या के अनुसार) वह उसे कभी पत्नी के रूप में नहीं जानता था। क्योंकि वह, धर्मी होते हुए, उसे कैसे जान सकता था, जिसे प्रभु के मंदिर से विवाह के लिए नहीं, बल्कि विवाह के बहाने उसकी कुँवारीपन की रक्षा के लिए उसे सौंपा गया था? वह प्रभु की कन्या को कैसे छू सकता था, जिसने परमेश्वर से शाश्वत कुँवारीपन का व्रत लिया था? वह

[194] धन्य थियोफिलैक्ट, बुल्गारिया में ओहरिड के आर्चबिशप, जो अपनी चार सुसमाचारों पर की गई व्याख्या के लिए जाने जाते हैं, जिसमें वे कई मामलों में जॉन क्रिसोस्टोम का अनुसरण करते हैं। उनकी मृत्यु लगभग 1085 में हुई।

अपने प्रभु और सृष्टकिर्ता की नष्किलंक माता को कैसे छू सकता था? जहाँ तक सुसमाचार के कथन 'जब तक उसने जन्म नहीं दयिा' की बात है, यह धर्मग्रंथ में एक प्रचलति अभव्यिक्तहै, जो 'जब तक' शब्द का उपयोग एक अनश्चिति काल को दर्शाने के लएि करती है। क्योंकदिाऊद भी कहते हैं: 'यहोवा ने मेरे प्रभु से कहा: *"मेरे दाहनिे बैठ, जब तक मैं तेरे बैरी को तेरे पैरों के नीचे आसन न कर दूँ"* (भजन संहति 109:1)[195] । यहाँ का अर्थ यह नहीं है कप्रिभु पुत्र, प्रभु पति के दाहनिे हाथ पर केवल तब तक ही बैठेंगे जब तक वे अपने शत्रुओं को अपने पैरों तले नहीं ला देते; बल्कयिह है कि, अपने शत्रुओं के पैरों तले वश में हो जाने के बाद भी, प्रभु पुत्र एक वजिेता के रूप में, अनंत काल तक और भी अधकि महमिा में बैठे रहेंगे। इसी प्रकार, संत जोसेफ के वषिय में लखिा है: *'और जब तक उसने जन्म नहीं दयिा तब तक वह उसे नहीं जानता था'* (मत्ती 1:25) – इस अर्थ में नहीं कबिाद में वह उसे जानेगा, जैसा ककिुछ वधिर्मी सोचते थे [196] , एक शकि्षा जो ऑर्थोडॉक्स चर्च के लएि अपरचिति है; बल्कइिस अर्थ में कि, ऐसे पुत्र के जन्म के बाद, जो देहधारी परमेश्वर थे, और उनके जन्म के समय हुए ऐसे महान चमत्कारों के बाद, जनिके जोसेफ प्रत्यक्षदर्शी थे, इस धर्मपरायण वृद्ध ने न केवल उन्हें छूने की हम्मिति नहीं की, बल्कउिन्हें गहराई से सम्मानति भी कयिा, जैसे एक सेवक अपनी स्वामनिी का सम्मान करता है, और उन्हें ईश्वर की माता के रूप में भय और कांपते हुए सेवा की। 'तब तक' वाक्यांश के संबंध में, संत थयिोफलिक्ट नम्निलखिति टप्पिणी करते हैं: 'पवत्रिशास्त्र आमतौर पर इस तरह से बोलता है, ठीक वैसे ही जैसे यह प्रलय के संबंध में करता है: *"कौवा तब तक जहाज़ पर वापस नहीं आएगा जब तक कपृथ्वी से पानी गायब नहीं हो जाता"* (उत्पत्तिि 8:7), और कौवा बाद में भी वापस नहीं आया।

और मसीह कहते हैं: *'और देखो, मैं युग के अन्त तक सदा तुम्हारे संग हूँ'* (मत्ती 28:20)। लेकनि क्या वह युग के अन्त के बाद हमारे साथ नहीं रहेंगे? इसके वपिरीत, तब और भी अधकि, अनन्त काल तक, वह हमारे साथ रहेंगे। तो यहाँ कहा गया है: 'जब तक उसने जन्म नहीं दे दयिा था', अर्थात्, जोसेफ ने परम पवत्रि कुँवारी को न तो मसीह के जन्म से पहले और न ही बाद में जाना, ठीक उसी तरह जैसे प्रभु युगों के दौरान और युगों के अंत के बाद भी हमसे अनवरत रूप से साथ रहेंगे। और वास्तव में, जब उसे उसकी अकथनीय जन्म की बात पता चली, तो जोसेफ पवत्रितम कुँवारी को छू भी कैसे सकता था?'

उद्धारकर्ता के जन्म के बाद परमेश्वर की परम पवत्रि माता की नर्दिोष कुँवारीपन इस तथ्य से भी स्पष्ट रूप से प्रकट होता है कजिब यूसुफ ने गर्भवती कुँवारी के बारे में संदेह करना शुरू कर दयिा और यह भी सोचा कक्यिा उसकी कुँवारीपन छीन ली गई थी, तो एक स्वर्गदूत उसे दखिाई दयिा और उसने मरयिम को उसकी पत्नी कहा: 'डरो मत,' उसने कहा, 'मरयिम को अपनी पत्नी बना लो,' इस प्रकार व्यभचिार के उसके संदेह का खंडन कयिा (जैसा कऊिपर उल्लेख कयिा गया है)। लेकनि, जब वही स्वर्गदूत मसीह के बेतलहम और मस्रि में जन्म के बाद यूसुफ के पास आया—जब तक कइिस धर्मी वृद्ध को मरयिम की पवत्रिता और पवत्रि आत्मा से गर्भ में आए दैवी शशिु के बारे में पहले ही प्रकटवाणी मलि चुकी थी—तो स्वर्गदूत ने अब परम पवत्रि कुँवारी मरयिम को उसकी पत्नी नहीं कहा, बल्कि केवल बालक की माता के रूप में, क्योंकि सुसमाचार में इस प्रकार लखिा है: 'जब वे चले गए, तो प्रभु का एक स्वर्गदूत जोसेफ को स्वप्न में दखिाई दयिा और कहा, *"उठो, बालक और उसकी माता* (और अपनी पत्नी नहीं) *को लेकर मस्रि भाग जाओ"'* (मत्ती 2:13)। और फरि मस्रि में, स्वर्गदूत यूसुफ से कहते हैं: *'उठो, बालक और उसकी माता को ले जाओ, और इस्राएल के देश में जाओ'* (मत्ती 2:20), जसिसे यह स्पष्ट होता है कवि यूसुफ को ववािह की ओर नहीं, बल्कबिालक और उसकी माता की सेवा की ओर नर्दिेशति कर रहे थे। इस प्रकार, न केवल यूसुफ ने मरयिम को अपनी पत्नी के रूप में तब तक नहीं जाना जब तक कउिन्होंने अपने प्रथम-जनति पुत्र को जन्म नहीं दयिा था, बल्कदिैवी शशिु के जन्म के बाद भी वह एक नर्दिोष कुँवारी बनी रहीं, जैसा कसिभी महान चर्च फादर्स सर्वसम्मतसिे गवाही देते हैं।

---

[195] यह भजन भवष्यिद्वाणी या मसीही भजनों में से एक है, क्योंकयिह मसीहा, मसीह के अपने शत्रुओं पर वजिय और उनकी पवत्रि मानवता के गौरव के बारे में बताता है।

[196] जो वधिर्मी परम पवत्रि कुँवारी मरयिम की शाश्वत कुँवारीपन को नकारते थे, वे, प्रथम, चौथी शताब्दी में अरब में तथाकथति एंटडिनिोमारयिन थे, जनिके वरिुद्ध साइप्रस के संत एपफिानयिस ने लखिा; फरि, चौथी शताब्दी के अंत के आसपास, हेल्वडियिस, भकि्षु जोवनियिन, और सार्डसि के बशिप बोनोस थे। धन्य जेरोम ने हेल्वडियिस और जोवनियिन के वरिुद्ध लखिा।

यह भी वर्णित है कि[197] जब परम पवित्र कुँवारी मरियम गर्भवती थीं, तो अन्नि नामक एक लेखक (जोसेफ को स्वर्गदूत के प्रकट होने के बाद), उनके घर आकर गर्भवती कुँवारी को देखकर, महायाजक और संपूर्ण महासभा के पास दौड़ा और उनसे कहा: 'कि बिढ़ई यूसुफ़, जिसे तुम धर्मी कहते हो, ने एक अपराध किया है: उसने उस कुँवारी को, जिसे प्रभु के मंदिर से उसकी हिफाज़त के लिए उसके हवाले किया गया था, गुप्त रूप से कलंकित और अपवित्र किया है, और अब वह गर्भवती है।' महायाजक द्वारा भेजे गए सेवक यूसुफ़ के घर गए और उन्हें मरियम के गर्भवती होने का पता चला, ठीक वैसे ही जैसे लेखक ने उन्हें बताया था। वे उसे, यूसुफ़ के साथ, ले गए और महायाजक तथा संपूर्ण महासभा के सामने पेश कर दिया। तब महायाजक ने पवित्र कन्या मरियम से कहा: 'क्या तुमने अपने प्रभु परमेश्वर को भूल गईं, तुम जो पवित्रतम स्थान में पली-बढ़ी थीं, जिन्हें स्वर्गदूतों के हाथों से भोजन मिला और जिन्होंने स्वर्गदूतों का गायन सुना! तुमने यह क्या किया है?' उसने रोते हुए उत्तर दिया: 'जिस प्रभु परमेश्वर के जीवित रहने की कसम मैं खाती हूँ, मैं पवित्र हूँ और किसी पुरुष को नहीं जानती।' तब महायाजक ने यूसुफ से कहा, 'तुमने क्या किया है?' उसने उत्तर दिया, 'जिस प्रभु मेरा परमेश्वर है, उसकी कसम, मैं उस पर निर्दोष हूँ।' तब महायाजक ने उससे कहा: 'चूँकि तुमने परमेश्वर के सामर्थी हाथ के सामने अपना सिर नहीं झुकाया, ताकि तुम्हारी संतति को आशीष मिले, और चूँकि तुमने इज़राएल के पुत्रों के ज्ञान के बिना, गुप्त रूप से उस कन्या के साथ संभोग किया जो यहोवा को भेंट के रूप में समर्पित थी, इसलिए तुम्हें उसके साथ परीक्षा का जल पीना होगा[198] , ताकि यहोवा सभी के सामने तुम्हारा पाप प्रकट करे।'

और परमेश्वर ने मूसा के द्वारा ऐसा न्याय स्थापित किया, जैसा कि मूसा की चौथी पुस्तक (गिनती) में, अध्याय 5 में लिखा है: यदि किसी पुरुष या महिला पर व्यभिचार का संदेह हो और वह सत्य स्वीकार न करे, तो ऐसे व्यक्ति को प्रभु के मंदिर में विशेष पवित्र अनुष्ठानों और एक विशिष्ट समारोह के साथ शपथ का जल पिलाया जाता था। और ईश्वर के न्याय से, इसे पीने के बाद, व्यभिचारी पर निन्दा का चिह्न प्रकट होता था, एक ऐसा चिह्न जो किए गए अधर्म को प्रकट करता था। यही पानी था जिसे महायाजक ने उचित विधि के अनुसार पहले यूसुफ को और फिर मरियम को पिलाया; और उस पर दोष-चिह्न नहीं दिखा, जिससे लोग यह देखकर चकित रह गए कि उसका पाप प्रकट नहीं हुआ था। तब महायाजक ने उनसे कहा:

'चूंकि प्रभु परमेश्वर ने तुम्हारा पाप प्रकट नहीं किया है, इसलिए शांति से जाओ।'

और उसने उन्हें विदा किया। यूसुफ, कुँवारी मरियम को लेकर, अपने घर गया, और इस्राएल के परमेश्वर की स्तुति और आनंद करते हुए।

[199]इसके बाद, सम्राट अगस्टस का एक फरमान निकला कि सारी दुनिया में जनगणना कराई जाए, और हर कोई अपना-अपना नाम दर्ज कराने के लिए अपने-अपने नगर में चला गया। इसलिये यूसुफ़ गलील के नासरत नगर से यहूदा के दाऊद के नगर बेतलहम को रवाना हुआ, क्योंकि वह दाऊद के घराने और वंश से था, ताकि अपनी मंगेतर मरियम के साथ पंजीकरण कराए, जो गर्भवती थी। बेथलहम यरूशलेम से दूर नहीं, दक्षिण में, हब्रोन की ओर पहाड़ी इलाके में जाने वाले रास्ते पर बसा एक छोटा सा शहर है, पुरोहितों का नगर, जहाँ जकरिया का घर स्थित था, और जहाँ महापवित्र कन्या ने, महादूत द्वारा घोषणा के बाद, बपतिस्मा देने वाले यूहन्ना की माँ एलिजाबेथ से भेंट की और उन्हें नमस्कार किया। इस

---

[197] यह वृत्तांत अपोक्रीफ़ल जेम्स के सुसमाचार (तथाकथित 'जेम्स का पहला सुसमाचार'), के अध्याय 15 और 16 में निहित है। यह कई अन्य अपोक्रीफ़ल लेखों में भी दोहराया गया है, उदाहरण के लिए 'मैरी के जन्म और उद्धारकर्ता के बचपन का इतिहास' में, यद्यपि कुछ भिन्नताओं के साथ।

[198] यह, बेशक, उस प्रसिद्ध अनुष्ठान को संदर्भित करता है, जो मूसा की व्यवस्था (गिनती 5) के अनुसार, तब किया जाता था जब कोई पति अपनी पत्नी पर व्यभिचार का संदेह करता था। आरोपी महिला को पुरोहित के सामने लाया जाता था, जो बलिदान चढ़ाने के बाद, मिट्टी के पात्र में पवित्र जल भरता था, उसमें तंबू या मंदिर (जब मंदिर ने तंबू की जगह ले ली थी) के फर्श की धूल मिलाता था, पत्नी का सिर ढकता था और फिर, उसके हाथों में रोटी का भोग रखकर, और, उस पानी को अपने हाथ में पकड़े हुए, उस पर एक गंभीर मंत्र पढ़ता था, ऐसा कि यदि वह निर्दोष होती, तो यह पानी उसके लिए दंड नहीं होता, लेकिन यदि वह दोषी होती, तो यह उस पर एक शाप होता, जिससे उसकी जांघें सूख जातीं और उसकी योनि सूज जाती। कई अन्य अनुष्ठानों के बाद, पुरोहित पत्नी को यह पानी पिला देता था। यह ध्यान देने योग्य है कि, अपोक्रीफल सुसमाचार के विवरण के अनुसार, यह अनुष्ठान स्वयं महापुजारी (और कोई पुजारी नहीं) ने किया था, और यह केवल कुंवारी मरियम पर ही नहीं, बल्कि यूसुफ पर भी किया गया था।

[199] ऑगस्टस, पहला रोमन सम्राट (15 ईसा पूर्व - 14 ईस्वी)। उनका पूरा नाम गाइउस जूलियस सीज़र ऑक्टेवियनस ऑगस्टस था। वह ऑक्टेवियस और एक्टिया के पुत्र थे, जो जूलियस की बेटी और जूलियस सीज़र की बहन थीं। एक्टियम की लड़ाई, जिसमें उन्होंने मार्क एंटनी को हराया, ने उन्हें विशाल रोमन साम्राज्य का एकमात्र शासक बना दिया। उनके शासनकाल के दौरान, सुसमाचार के वृत्तांत (लूका 2:1) में उल्लिखित जनगणना पूरे साम्राज्य में कराई गई थी, और इसी ने संत जोसेफ और धन्य कुँवारी मरियम को बेथलहम की यात्रा करने के लिए प्रेरित किया।

प्रकार बेतलहम यरूशलेम और हेब्रोन के बीच आधी दूरी पर स्थति है, और यह गलील के नगर नासरत से तीन दनि की यात्रा, या उससे थोड़ा अधकि दूरी पर है। बेथलहम को दाऊद का नगर कहा जाता है क्योंकि दाऊद वहीं पैदा हुए थे और वहीं उन्हें राजा बनाने का अभषिक कयिा गया था; राहेल की मृत्यु भी वहीं हुई थी, और कहा जाता है कि दाऊद के पतिा यशै का मकबरा वहीं है (उत्पत्ति 35:19)। बेथलहम का पूर्व नाम एप्रथ्थाह था, लेकनि याकूब ने वहाँ अपने झुंडों की रखवाली करते समय, आत्मा द्वारा पूर्वदृष्टि प्राप्त करके और यह भवषि्यवाणी करते हुए कि उस स्थान पर स्वर्ग से उतरने वाली रोटी (यूहन्ना 6:51), अर्थात् प्रभु मसीह का जन्म होगा, उस स्थान का नाम 'रोटी का घर' (बेथलहम) रखा। और बेतलहम के पास, पूर्व की ओर, दाऊद के कुएँ के सामने—जसिके पास एक बार उसे बहुत प्यास लगी थी और उसने कहा, *'गेट के पास बेतलहम के कुएँ से मुझे पीने के लिए पानी कौन देगा?'* (2 शमूएल 23:15)—उस चट्टानी पहाड़ी में एक गुफा है जसि पर बेतलहम नगर बसा है। इस गुफा से बहुत दूर नहीं, सलोमी का एक खेत था, जो बेथलहम की ही नविासी थीं और कुँवारी मरयिम तथा यूसुफ दोनों की रशि्तेदार थीं।

और जैसे ही यूसुफ़ शहर के पास पहुँचा, उस पवत्रि वधू के लिए, जसिने कभी पति को नहीं जाना था, प्रसव का समय आ गया, और उसने रात बतिाने के लिए एक जगह ढूँढना शुरू कर दयिा, जहाँ वह माँ-बनने वाली अपने गर्भ के धन्य फल को जन्म देने के लिए एक आरामदायक स्थान पा सके। लेकनि उसे अपने लिए कोई आश्रय नहीं मलिा, क्योंकि पंजीकरण के लिए आए लोगों की भारी भीड़ ने न केवल सार्वजनकि सराय को पूरी तरह से भर दयिा था, बल्कि पूरा शहर भी भर गया था। इसलिए, यूसुफ उस गुफा में चला गया, क्योंकि सिराय में उनके लिए कोई जगह नहीं थी, और दनि भी समाप्त होने को था। वह गुफा पशुओं के लिए आश्रय के रूप में काम करती थी, और वहीं पर सबसे पवत्रि और सबसे धन्य कुँवारी ने आधी रात को परमेश्वर से भक्तपिूर्वक प्रार्थना की; और परमेश्वर के ध्यान में पूरी तरह से मग्न होकर तथा प्रभु की लालसा और प्रेम से जलते हुए, उन्होंने हमारे प्रभु यीशु मसीह को बनिा कसिी पीड़ा के, 25 दसिंबर को जन्म दयिा[200] । यह उचति था कि जिसिने ववािह की मठिास के बनिा गर्भधारण कयिा, उसने बनिा पीड़ा के प्रसव कयिा: उन्होंने कहा, 'मैं कसिी पुरुष को नहीं जानती' ( ); 'मैंने ववािह की मठिास का अनुभव नहीं कयिा है' ([201])। और चूँकि उन्होंने पवत्रिता में गर्भधारण कयिा, इसलिए उन्होंने बनिा पीड़ा के प्रसव भी कयिा, जैसा कि सेंट ग्रेगरी ऑफ नसिा कहते हैं: 'एक कुंवारी ने गर्भ धारण कयिा, एक कुंवारी ने गर्भ में धारण कयिा, एक कुंवारी ने जन्म दयिा, एक कुंवारी कुंवारी ही रही; पृथ्वी पर ऐसा चमत्कार कभी नहीं हुआ' (मसीह के जन्म पर उपदेश)। और संत दमास्कस कहते हैं: 'सभी प्राचीन चमत्कारों में एक नया चमत्कार: क्योंकि किसिने कभी एक ऐसी माँ को जाना है जसिने बनिा पति के जन्म दयिा हो?'[202] . परम पवत्रि कुँवारी ने पति के बनिा मसीह को जन्म दयिा, ठीक वैसे ही जैसे आदम ने पत्नी के बनिा हव्वा को जन्म दयिा था, जसिके बारे में संत क्रसिोस्टोम[203] कहते हैं: 'जैसे आदम ने पत्नी के बनिा एक पत्नी को जन्म दयिा, वैसे ही यहाँ कुँवारी ने पति के बनिा एक पति को जन्म दयिा, इस प्रकार हव्वा के लिए पतयिों का बदला चुकाया। आदम अपने शरीर से एक पसली नकिाले जाने के बाद भी अखंड रहे, और कन्या शशिु के जन्म के बाद भी अक्षुण्ण रहीं' (मसीह के जन्म पर प्रवचन)। और इस प्रकार वह पूरा हुआ जो, मानो, जलते हुए झाड़ और लाल सागर द्वारा छाया में पूर्व-चत्रिति कयिा गया था: 'जैसे झाड़ आग से नष्ट नहीं हुई' (जैसा कि चर्च गाती है), 'वैसे ही तुमने कुंवारी रहते हुए जन्म दयिा'[204] । और एक अन्य अंश में: 'समुद्र पार करने

---

[200] यह परंपरा कि मसीह का जन्म 25 दसिंबर को हुआ था, बहुत प्राचीन है। इतनी जल्दी कि प्रेरतिकि संवधिानों (पुस्तक V, अध्याय 12) में कहा गया है: 'हे भाइयों, पर्व के दनिों का पालन करो, और सबसे पहले, मसीह के जन्म के दनि का, जसिे तुम्हें दसवें महीने (दसिंबर) के 25वें दनि मनाना है।' और दूसरी शताब्दी में, अलेक्जेंड्रयिा के क्लेमेंट ने 25 दसिंबर को मसीह के जन्म दविस के रूप में पहचाना। हालाँकि, पहली तीन शताब्दयिों के दौरान, जब उत्पीड़न ने ईसाई पूजा की स्वतंत्रता को प्रतबिंधति कर दयिा था, तो पूर्व के कुछ हस्सिों में मसीह के जन्म का पर्व जनवरी में एपफिेनी के पर्व के साथ मलिा दयिा गया था। यह प्रथा आज भी अर्मेनयिाई लोगों में जारी है।

[201] परम पवत्रि थओटोकोस की घोषणा का दूसरा स्टचिैरा, 'हे प्रभु, मैंने पुकारा है' पर।

[202] भजनसंगीत पर स्टचिैरा, स्वर 2।

[203] संत जॉन क्रसिोस्टोम, कॉन्स्टेंटनिोपल के आर्चबशिप, चौथी शताब्दी के अंत और पाँचवीं शताब्दी की शुरुआत के एक प्रसदि्ध चर्च फादर थे, जो अपनी अनगनित प्रवचनों के लिए वशिेष रूप से प्रसदि्ध हुए। उनकी असाधारण वाक्पटुता के कारण ही उन्हें क्रसिोस्टोम का नाम मलिा। उन्होंने अपने जीवन का शुरुआती हस्सिा (और अधकिांश हस्सिा) एंटओक में एक पुरोहति के रूप में बतिाया, और चौथी शताब्दी के अंत में, उन्होंने कॉन्स्टेंटनिोपल के आर्चबशिप का पदभार संभाला। अपने जीवन के इस अंतमि दौर में, उन्हें सम्राट की पत्नी सम्राज्ञी यूडोक्सिया के हाथों बहुत उत्पीड़न सहना पड़ा उनकी स्मृति 13 नवंबर और 30 जनवरी को मनाई जाती है। वे वर्ष के अधकिांश समय में ऑर्थोडॉक्स चर्च में मनाए जाने वाले अनुष्ठान के रचयति हैं।

[204] दूसरे स्वर का धर्मशास्त्रीय भजन।

योग्य नहीं रहा: अमृतलक्ष्मी, इम्मानुएल के जन्म के बाद भी अक्षुण्ण रहीं[205] । इस प्रकार, अपनी कुँवारीपन से समझौता कि बिना, सदा-कुँवारी मरियम ने अवतारित ईश्वर को जन्म दिया। और यह जन्म दाई की सामान्य सहायता और देखभाल के बिना हुआ, जैसा कि अलेक्जेंड्रिया के संत अथेनासियस गवाही देते हैं जब वे सुसमाचार के निम्नलिखित शब्दों पर चर्चा करते हैं: *'और उसने अपने प्रथम-जन्मे पुत्र को जन्म दिया, और उसे लपेटकर पालने में लिटा दिया* (लूका 2:7), वे कहते हैं: 'देखो, कुंवारी का रहस्यमय जन्म: उसने स्वयं जन्म दिया, और उसने स्वयं शिशु को लपेटा। सांसारिक महिलाओं में, एक जन्म देती है जबकि दूसरी लपेटती है, लेकिन परम पवित्र कुंवारी के साथ ऐसा नहीं है। उन्होंने स्वयं जन्म दिया, और स्वयं ही उन्हें लपेटा; यद्यपि वह एक वेदना-रहित माँ और एक अप्रशिक्षित दाई थीं, फिर भी उन्होंने किसी को भी अपने अशुद्ध हाथों से उस परम-शुद्ध जन्म को छूने की अनुमति नहीं दी: उन्होंने स्वयं ही अपने से जन्मे बच्चे की सेवा की, और उन्हें लपेटा, और उन्हें एक तब में लिटाया।" संत साइप्रियन भी इसी प्रकार कहते हैं: 'प्रसव के समय और प्रसव के बाद, कन्या दिव्य शक्ति से कुँवारी रहीं – उन्होंने बिना पीड़ा के जन्म दिया और उन्हें दाई की कोई सहायता नहीं चाहिए थी, बल्कि वे स्वयं ही माँ और दाई दोनों थीं, और इसलिए उन्होंने अपने शिशु की श्रद्धापूर्वक देखभाल की: वह उसे छूती हैं, उसे गले लगाती हैं, उसे चूमती हैं, उसे स्तनपान कराती हैं, और यह सब किसी भी बीमारी, जन्म के समय स्वाभाविक रूप से होने वाली किसी भी दुर्बलता के बिना, प्रसन्नतापूर्वक करती हैं। इस प्रकार, उन्होंने स्वयं अपने कन्या-हथियारों से अपने अमर जन्म (दिव्य शिशु) की देखभाल की, जब वे अपनी वृद्ध चचेरी बहन सलोमी की प्रतीक्षा कर रही थीं, जिसे सबसे पवित्र कुँवारी की सहायता के लिए यूसुफ लाने गए थे। लेकिन जब तक सलोमी पहुँची, तब तक यह कार्य पहले ही हो चुका था, क्योंकि जिसने जन्म दिया था, वही सेवा भी कर रही थी, शिशु को गोद में उठाकर, उन्हें लपेटकर और उन्हें खलिहान में रखकर।

पवित्र हयरोमार्टायर ज़ीनोन, बिशप, आगे बताते हैं कि जब दाई आई, तो उसने यह विश्वास नहीं किया कि जन्म कुंवारी और पीड़ा रहित था, और दाइयों की प्रथागत प्रथाओं के माध्यम से यह पता लगाने की कोशिश की कि क्या यह जन्म वास्तव में ऐसा ही था। लेकिन अपने इस दुस्साहसी कृत्य की सजा के रूप में वह तुरंत ही दंडित हो गई, क्योंकि उसका हाथ, जिसने उस परीक्षण को करने की हिम्मत की थी, अचानक एक जलन वाली बीमारी से बुरी तरह सूज गया और सूख गया। जब उस पीड़ित महिला ने अपना हाथ दैवी शिशु पर रखा, तो वह तुरंत चंगी हो गई और पहले की तरह स्वस्थ हो गई। तब सलोमी ने विश्वास किया कि माता कुंवारी थीं और शिशु ईश्वर थे[206] ।

इसके बाद, पावन माता और अपने नवजात शिशु की असाधारण सेविका ने, अपने सबसे प्यारे शिशु को लिनिन के लपेटने वाले कपड़ों में लपेटा—जो सफेद, शुद्ध और उत्तम थे, इस उद्देश्य के लिए पहले से तैयार किए गए थे और नासरत से लाए गए थे—और उसे उसी गुफा में स्थित खलिहान में लिटा दिया, उसने उसी के सामने ईश्वर और अपने सृष्टिकर्ता के रूप में नमन किया, जैसा कि धन्य जोसेफ , कैनन के रचयिता[207] , याद करते हैं जब वे सर्वशुद्ध कुंवारी को इन शब्दों से संबोधित करते हैं: 'हे अवतारधारी की कुँवारी, मानव रूप में परिणत, उसे अपनी बाहों में थामे और एक माँ की तरह उसकी पूजा करते और उसे चूमते हुए: "मेरे बच्चे," तुमने कहा, "अत्यंत प्रिय, इस प्रकार मैं तुम्हें थामे हूँ, जो अपनी हथेली में सारी सृष्टि को थामे है"'[208] . यह निश्चित है कि ईश्वर की माता अपने ही जन्म दिए हुए के सामने, जो तब में लेटा था, भूमि पर झुक गईं, जबकि दैवीय सेनाएँ आश्चर्य से अदृश्य रूप में उन्हें घेरे हुए थीं।

और एक बैल और एक गधे को खलिहान से बाँध दिया गया था, ताकि पवित्रशास्त्र की यह बात पूरी हो सके: 'बैल अपने मालिक को और गधा अपने स्वामी के खलिहान को जानता है' (यशायाह 1:3)। और ये बैल और गधा यूसुफ़ द्वारा नासरत से लाए गए थे। गधे को गर्भवती कुँवारी के लिए लाया गया था, ताकि यात्रा के दौरान वह उसे अपनी पीठ पर बिठा सके, जबकि यूसुफ़ ने बैल को बेचने और सीज़र के आदेश द्वारा लगाए गए आवश्यक कर का भुगतान करने के लिए लाया था, साथ ही अपने लिए आवश्यक सभी चीजें खरीदने के लिए भी। ये दोनों मूक पशु, खलिहान के पास खड़े होकर, अपनी

---

[205] 5वें स्वर का धर्मशास्त्रीय।

[206] यह विवरण 'जेम्स की पहली सुसमाचार' से लिया गया है।

[207] कैनन के रचयिता, संत जोसेफ द हिमोग्राफर, सिसिली के मूल निवासी थे और बाद में थेस्सालोनिकी के एक मठ में एक भिक्षु बने। सम्राट लियो द आर्मेनियन के अधीन प्रतिमा-विरोधी उत्पीड़न के दौरान, उन्होंने ऑर्थोडॉक्स धर्म के लिए बहुत कष्ट सहे। एक अन्य प्रतिमा-विरोधी सम्राट, थियोफिलस के अधीन, उन्हें खेरसोनस में निर्वासित कर दिया गया था, जहाँ से उन्हें सम्राज्ञी थियोडोरा ने वापस बुलाया था। उनकी मृत्यु 883 में हुई। उनकी स्मृति 4 अप्रैल को कई भजनों के साथ मनाई जाती है, और विशेष रूप से बड़ी संख्या में कैनन (लगभग 48) के साथ।

[208] 23 दिसंबर को मसीह के जन्म की पूर्व संध्या की सेवा में, संध्या के समय, ओड 9 पर एक ट्रोपेरियन शामिल है।

साँस से शिशु को गर्म कर रहे थे, क्योंकि उस समय सर्दी का मौसम था, और इस प्रकार उन्होंने अपने प्रभु और सृष्टिकर्ता की सेवा की[209] । जोसेफ ने, अपनी ओर से, नवजात शिशु और उनकी माता दोनों की पूजा की, क्योंकि तब उन्हें एहसास हुआ कि उनसे जन्मा शिशु पवित्र आत्मा से गर्भ में धारण हुआ था, जैसा कि संत अथेनासियस भी कहते हैं: 'सचमुच, जोसेफ उसे तब तक नहीं जानते थे जब तक उसने अपने प्रथम-जनमे पुत्र को जन्म नहीं दिया; जब तक कुँवारी ने अपने गर्भ में संकल्पित शिशु को धारण किया, जोसेफ उसे नहीं जानते थे; वह नहीं जानते थे कि उसके भीतर क्या था, और न ही वह जानते थे कि उसके भीतर क्या हो रहा था। लेकिन जब उसने जन्म दिया, तब उसे पता चला; तब जोसेफ को वर्जिन के बारे में पता चला कि उसकी शक्ति क्या थी, और वह क्या बनने के लिए योग्य ठहराई गई थी। तब उसे पता चला, जब उसने वर्जिन को अपने स्तनों से दूध पिलाते हुए देखा और साथ ही अपनी कुँवारीपन की अक्षय शोभा को भी बनाए रखा। तब उसे पता चला, जब वर्जिन ने बच्चे को जन्म दिया लेकिन प्रसव पीड़ा का अनुभव नहीं किया। तभी उसे एहसास हुआ कि अपरिष्कृत पत्थर आध्यात्मिक पत्थर[210] को स्तनपान करा रहा था। तभी जोसेफ को एहसास हुआ कि यशायाह ने उनके बारे में लिखा था: 'देखो, एक कुँवारी गर्भ धारण करेगी'। संत अथेनासियस के ये शब्द इस बात की गवाही देते हैं कि उस समय यूसुफ ने रहस्य की शक्ति को पहचाना और, इसे पहचानने के बाद, भय और आनंद के साथ पूजा की, और मसीह के रूप में अवतार लेने वाले ईश्वर का धन्यवाद किया, जिन्होंने उन्हें इस रहस्य का प्रत्यक्षदर्शी और सेवक बनने के लिए योग्य समझा था। – जहाँ तक मसीह के जन्म के समय का प्रश्न है, कई विश्वसनीय लेखक बताते हैं कि यह सबाथ के बाद और प्रभु के दिन से पहले आधी रात का समय था, और यह विवरण छठी सार्वभौमिक परिषद[211] के अनुरूप है, जो प्रभु के दिन (रविवार) के उत्सव को इस प्रकार समझाती है: 'क्योंकि उसी दिन परमेश्वर ने प्रकाश की सृष्टि की; उसी दिन प्रभु ने जन्म लेने की कृपा की; उसी दिन यूहन्ना ने उसे यॉर्डन नदी में बपतिस्मा दिया; उसी दिन मानव जाति के परम दयालु उद्धारकर्ता, हमारे उद्धार के लिए, मरे हुओं में से जी उठे; और उसी दिन उन्होंने अपने शिष्यों पर पवित्र आत्मा को उंडेल दिया।' क्योंकि जैसे, एक विश्वसनीय परंपरा के अनुसार, शुक्रवार को घोषणा के समय कुँवारी के गर्भ में उनकी संकल्पना हुई थी, और शुक्रवार को उन्होंने पीड़ा सहन की, वैसे ही रविवार को उनका जन्म हुआ और रविवार को ही वे पुनर्जीवित हुए। और मसीह का रविवार को जन्म लेना उपयुक्त था, वह दिन जब परमेश्वर ने कहा: *'प्रकाश हो'* (उत्पत्ति 1:3); और जिस दिन *'प्रकाश हुआ'* (उत्पत्ति 1:3), उसी दिन स्वयं प्रकाश, यानी अनंत प्रकाश, का संसार पर चमकना उचित था। जहाँ तक इस बात का संबंध है कि मसीह को रात में और उसके एक विशिष्ट घड़ी पर जन्म लेना था, इसकी भविष्यद्वाणी सोलोमन की बुद्धि की पुस्तक में की गई थी, जहाँ इस प्रकार लिखा है: *'क्योंकि जब सब कुछ गहरी शांति में डूबा था, और रात अपने मध्य बिंदु पर पहुँच चुकी थी, तब आपका सर्वशक्तिमान वचन स्वर्गीय सिंहासनों से नश्वर पृथ्वी के केंद्र में एक पराक्रमी योद्धा की तरह अवतरित हुआ'* (Wis. 18:14–15)[212] । मसीह के जन्म के समय ब्रह्मांड में भी महान चमत्कार हुए। इस प्रकार, ठीक उसी घड़ी जब हमारे प्रभु पवित्रता से सीलबंद कुंवारी के द्वारों से अवतरित हुए, उस गुफा में एक चट्टान से अचानक पानी का एक झरना फूट पड़ा, जबकि रोम में तेल का एक स्रोत धरती से निकला और टिबर नदी में बह गया। 'शाश्वत' नामक मूर्तिपूजक मंदिर नष्ट हो गया; मूर्तियाँ चकनाचूर हो गईं, और उसी स्थान पर आकाश में तीन सूर्य दिखाई दिए। इस बीच, उसी रात स्पेन में, सूरज से भी ज्यादा चमकीला एक बादल दिखाई दिया, और यहूदियों के देश में, सर्दियों के बावजूद एंगाडो के अंगूर के बाग़ खिल उठे[213] । हालांकि, सबसे अद्भुत

---

[209] यह विवरण अपोक्रीफ़ल सुसमाचारों से भी लिया गया है। उदाहरण के लिए, यह 'उद्धारकर्ता के बचपन का इतिहास' में पाया जा सकता है।

[210] ये शब्द स्पष्ट रूप से पवित्र धर्मग्रंथ के दो अंशों का संदर्भ देते हैं: दानिय़ेल 2 (जहाँ पवित्र भविष्यवक्ता दानिय़ेल राजा नबूकदनेसर को मूर्ति के अपने स्वप्न की व्याख्या करते हैं, और जहाँ अति पवित्र कन्या और मानव हाथों के बिना एक अछूते पहाड़ से टूटकर निकले पत्थर द्वारा मसीह के अलौकिक जन्म का पूर्वसंकेत मिलता है), साथ ही 1 कुरिन्थियों। 10:4 (जहाँ प्रेरित पौलुस पत्थर के बारे में बात करते हैं।

[211] छठी सार्वभौमिक परिषद की स्थापना 680 में, सम्राट कॉन्स्टेंटिन पोगानाटस के शासनकाल में, मोनोथेलिटिक विधर्म को संबोधित करने के लिए की गई थी, जो यह सिखाता था कि अवतारित मसीहा यीशु में एक ही इच्छा थी, और इसने इस विधर्म की निंदा की। यह परिषद कॉन्स्टेंटिनोपल में हुई।

[212] सोलोमन की बुद्धि की पुस्तक (बुद्धि 18:14–15) का यह अंश, वास्तव में, उसी रात को संदर्भित करता है जब, ईश्वर की सर्वशक्तिमान शक्ति से, मिस्र के पहलौठों को मार गिराया गया था, जबकि विनाश के दूत द्वारा यहूदियों के पहलौठों को बचाया गया था। संत डेमेट्रियस इस अंश को मसीह के जन्म की धन्य रात के बारे में एक भविष्यवाणी के रूप में उद्धृत करते हैं - संभवतःइस आधार पर कि, जैसे उस रात (मिस्र में) परमेश्वर के लोगों के लिए उद्धारकारी थी, वैसे ही इस रात (बेथलहम में) ने सभी लोगों को उद्धार दिया।

[213] संभावना है कि ये विवरण रोस्तोव के संत डेमेट्रियस द्वारा मसीह के जन्म के बारे में पश्चिमी परंपराओं से लिए गए थे, जिनमें से कुछ हमारे पुराने रूसी पांडुलिपि और मुद्रित संग्रहों में भी शामिल हो गए।

वह था जसिका वर्णन सुसमाचार में कयिा गया है, जब स्वर्गदूत गाते हुए स्वर्ग से उतरे और लोगों के सामने स्पष्ट रूप से प्रकट हुए। यह इस प्रकार हुआ। धन्य जेरोम की गवाही के अनुसार, जसि गुफा में मसीह का जन्म हुआ था, उसके सामने अदर नाम का एक बहुत ऊँचा मीनार था, जसिमें चरवाहे रहते थे। उसी रात, उनमें से तीन अपने झुंड की रखवाली कर रहे थे, और देखो, स्वर्गदूतों के सेनापति (जो, संत साइप्रयिन के अनुसार, पवित्र दूत गब्रयिल थे) बड़े तेजस्वति में, स्वर्गीय महमिा से प्रकाशमान होते हुए, उनके सामने प्रकट हुए, जसिसे उन्होंने उन्हें प्रकाशति कर दयिा; उसे देखकर वे बहुत डर गए। लेकनि प्रकट हुआ वह स्वर्गदूत, उन्हें अपना भय त्यागने और न डरने की आज्ञा देते हुए, उन्हें उस आनंद की घोषणा करने लगा जो उद्धारकर्ता के जन्म से सारी दुनयिा में आया था। उसी समय, उसने उन्हें अपने संदेश की सच्चाई का संकेत भी दखिाया: *'तुम एक शशिु को पाएँगे,'* उसने कहा, *'जो लपेटों में लपिटा हुआ और एक [illegible] में पड़ा हुआ होगा।' जब देवदूत उनसे बात कर ही रहा था, अचानक स्वर्ग के बहुत से स्वर्गदूतों का एक समूह आकाश में गूँज उठा, जो परमेश्वर की महमिा कर रहे थे और गा रहे थे: 'परममहमिा परमेश्वर को हो, और पृथ्वी पर शांति और मनुष्यों में प्रसन्नता।'* (लूका 2:12-14); इस दैवीय दर्शन और स्वर्गदूतों के गायन के बाद, चरवाहों ने एक-दूसरे से सलाह-मशवरिा करके यह देखने के लिए बेतलहम की ओर दौड़ लगाई कि क्या स्वर्गदूत के शब्द सच थे, और वे गए और परम पवित्र कुँवारी मरयिम, परमेश्वर की माता, और संत जोसेफ को देखा, उनके मंगेतर, साथ ही खलहिान में लेटे हुए लपेटे हुए शशिु को भी देखा। और इस पर बनिा कसिी संदेह के वशि्वास करते हुए कि यह मसीहा प्रभु यीशु थे, जो मानव जाति को बचाने आए थे, उन्होंने उनकी आराधना की और जो कुछ उन्होंने देखा और सुना था, और जो कुछ स्वर्गदूत ने उन्हें इस शशिु के बारे में बताया था, वह सब उन्होंने बता दयिा। और जो कोई भी उन्हें सुन रहा था—जोसेफ, सलोमे, और जो उस समय वहाँ आए हुए थे—वे चरवाहों के शब्दों पर अचंभति थे; लेकनि सबसे बढ़कर, सर्व-शुद्ध कुँवारी माता, जन्हिोंने बनिा पीड़ा के जन्म दयिा था, ने इन सभी शब्दों को अपने हृदय में संजोकर रखा और उन पर मनन कयिा। और चरवाहे लौट गए, परमेश्वर की महमिा और स्तुति करते हुए। इस प्रकार हमारे प्रभु यीशु मसीह का जन्म पूरा हुआ; उसी को, हम पापयिों की ओर से भी, सम्मान और महमिा, आराधना और धन्यवाद हो, उसके पति जो आदि से रहति हैं और सनातन आत्मा के साथ, अब और सदा और युगानुयुग। आमीन।

ट्रोपारयिन, स्वर 4:

हे मसीह हमारे ईश्वर, तेरे जन्म के समय तर्क की ज्योति संसार में प्रकट हुई: क्योंकि इसके द्वारा तारों की सेवा करने वालों ने तारे से यह सीखा कि वे तुझे, धार्मकिता के सूर्य, की पूजा करें और तुझे पूर्व की ऊँचाइयों से मार्गदर्शन करें: हे प्रभु, महमिा तुझे हो।

कॉन्टाकयिन, स्वर 3:

आज कुँवारी कन्या ने सनातन पुत्र को जन्म दयिा, और पृथ्वी ने अगम्य को एक तृणशाला अर्पति की; स्वर्गदूत और चरवाहे स्तुति करते हैं, जबकि ज्योतषिी तारे के साथ यात्रा करते हैं: हमारे लिए, हे बालक, सनातन ईश्वर का जन्म हुआ।

मसीह के जन्म पर उपदेश

25 दसिंबर को स्मरणोत्सव

स्वर्गीय दूत बेथलहम के चरवाहों को उद्धारकर्ता के संसार में आगमन का यह संकेत दखिाता है: एक पालने में लपिटा एक शशिु। क्योंकि वह उनसे इस प्रकार कहता है: *'तुम एक शशिु को लपिटा हुआ पाओगे, जो पालने में पड़ा होगा'* (लूका 2:11-12)। शायद कोई सोचे कि यह कोई बड़ी नशिानी नहीं है—एक लपेटे हुए शशिु को देखना—क्योंकि हर नवजात शशिु को आमतौर पर लपेटा जाता है। यह एक बड़ा संकेत होता अगर स्वर्गदूत ने मसीह के जन्म की गवाही और स्पष्ट

पुष्टि के रूप में कुछ असाधारण दिखाया होता, जैसे मगों को पूर्व में तारा, या जैसा सिबिलि[214] ने अगस्टस को सूर्य में एक युवती को अपनी बाहों में एक शिशु को लिए हुए दिखाया था। लेकिन यदि कोई उस लिपटे हुए शिशु में घटित हो रहे रहस्यों को आध्यात्मिक नेत्र से देखना चाहे, तो वे देखेंगे और पहचान लेंगे कि चरवाहों को स्वर्गदूत द्वारा बताया गया संकेत—एक खलिहान में लेटे हुए लिपटे हुए शिशु—एक महान संकेत है। क्योंकि यह शिशु वही है, जिसके जन्म ने संसार को परमेश्वर के ज्ञान का प्रकाश दिखाया है, जो तारों और सूर्य से भी अधिक तेजस्वी है; उसकी लपेटने की चादरें बादलों से भी अधिक विशाल हैं, और उसका तृणभोग परमधाम से भी अधिक विशाल है, क्योंकि उसमें अगणनीय मसीह परमेश्वर लेटे थे। तो आइए, हम अपना मन मसीह के शिशुत्व की ओर मोड़ें। क्योंकि जिसने युगों की रचना की और अनंत काल से हमारे लिए हमारा उद्धार तैयार किया—वह हमारे स्वभाव की दुर्बलता को नया करने के लिए पृथ्वी पर एक शिशु के रूप में प्रकट हुआ: *'तुम्हें एक शिशु मिलेगा,'* स्वर्गदूत ने कहा।

शायद किसी की यह राय हो सकती है कि मसीह को दुनिया में एक शिशु के रूप में नहीं, बल्कि एक बलशाली के रूप में आना चाहिए था, दाऊद की भविष्यवाणी के अनुसार, जिसने मसीहा के आगमन की इस प्रकार भविष्यवाणी की थी: *'वह अपने कक्ष से एक दूल्हे की तरह निकलता है'* (भजन संहिता 18:6) (अर्थात् परम पवित्र कुँवारी के गर्भ से), *'एक बलवान की तरह अपना मार्ग तय करते हुए आनंदित होता है'* (भजन संहिता 18:6)[215] । शायद इसीलिए स्वर्गदूत कहते हैं: 'आपको एक शिशु मिलेगा', न कि एक बलवान। लेकिन यदि हम मसीह के शिशुत्व पर विचार करें, तो हमें स्वर्गदूत के शब्दों का एक और कारण मिलेगा। जैसे मसीह का जन्म एक सामान्य मानव जन्म के विपरीत था, बल्कि असाधारण और अलौकिक था, वैसे ही उनका शिशुत्व भी असाधारण था और अन्य शिशुओं से भिन्न था। सभी नवजात शिशु नाजुक और बिना समझ के होते हैं; उनमें अपनी कोई ताकत नहीं होती और वे कुछ भी करने में असमर्थ होते हैं, जब तक कि विकास की एक लंबी अवधि के बाद, ताकत और समझ उनके भीतर प्रकट होना और विकसित होना शुरू नहीं हो जाती। लेकिन यह नवजात शिशु, हमारे प्रभु यीशु मसीह, शक्ति और समझ दोनों के साथ पैदा हुए हैं। इसीलिए स्वर्गदूत इस शिशु की ओर इशारा करते हैं, जो अजेय शक्ति और अनुपम ज्ञान के साथ पैदा हुए हैं, एक चमत्कार के रूप में, जो अपनी तरह का अद्वितीय है और जिसे पहले दुनिया में कभी नहीं देखा गया। जहाँ तक उनकी अजेय शक्ति और सामर्थ्य की बात है, कलीसिया इस पर्व के दिन इसके बारे में बोलने में विफल नहीं रही है, जब वह यशायाह नबी के साथ गाती है: *'एक शक्तिशाली परमेश्वर, शांति का राजकुमार'* (यशायाह 9:6)। कहीं यह कहा गया है कि शेर को उसके पंजे से पहचाना जाता है। यहूदा के कुल के शेर, मसीह, अपने शुरुआती दिनों से ही (यानी, अपने शिशुकाल से) स्वयं को *इस रूप में* प्रकट करते हैं *कि 'यहोवा सामर्थी और पराक्रमी है; यहोवा युद्ध में पराक्रमी है'* (भजन संहिता 23:8)। आइए हम यह देखें कि नवजात शिशु की सामर्थ्य और शक्ति कितनी महान है। जैसे ही उनके जन्म की खबर फैलने लगी, *'हेरोदस घबरा गया, और उसके साथ सारा यरूशलेम भी'* (मत्ती 2:3)। शिशु ने अभी तक कुछ नहीं कहा है, फिर भी वह पहले से ही उन लोगों में भय पैदा कर देता है जिन्होंने पृथ्वी पर अपना नाम बनाया है; वह अभी भी लपेटे में है, फिर भी उसने पहले से ही अपने उत्पीड़कों को भय से भर दिया है; वह अभी भी तो में है, फिर भी उसने पहले से ही राजसी सिंहासन पर बैठे को हिला दिया है।

सबसे कुशल चिकित्सकों में से एक बताते हैं कि जो लोग दुनिया में महान, प्रतिष्ठित और प्रसिद्ध होने, या राजा और पराक्रमी योद्धा बनने के लिए नियत होते हैं - उनके अनुसार, ऐसे लोगों की विशेषता यह होती है कि वे बहुत कम उम्र (यानी शैशवावस्था) से ही अपनी भविष्य की शक्ति और कार्यों का पूर्वाभास देते हैं। इसके अलावा, यही चिकित्सक यह बताता है कि पेरीक्लीज़[216] का जन्म अभी हुआ नहीं था, फिर भी उसने अपने सपनों के माध्यम से यूनानियों के दिलों में पहले ही डर पैदा कर दिया था; सिकंदर[217] का जन्म अभी हुआ नहीं था, फिर भी सभी उसे पहले से ही जुपिटर का पुत्र[218] और राज्य का शासक कहते थे। अन्यत्र यह वर्णित है कि चींटियों ने गेहूं के दाने लाकर फ्रीजिया के राजा माइडस[219] के मुंह

---

[214] सिबिलें मूर्तिवादियों में महिला भविष्यवक्ता थीं। प्राचीन ईसाई लेखकों ने उनमें से कुछ, जैसे कुमा की सिबिलि, एरिट्रिया की सिबिलि और अन्य को, उद्धारकर्ता और सामान्य रूप से नए नियम के समयों से संबंधित भविष्यवाणियों का श्रेय दिया।

[215] शाब्दिक रूप से, भजन संहिता 18 का यह अंश सूर्य को संदर्भित करता है, जिसकी भजनकार तुलना एक वर और अपने महल से निकलने वाले एक विशालकाय से करता है। संत डेमेट्रियस इसमें मसीहा, यानी मसीह के, संसार में आगमन का एक भविष्यसूचक संकेत देखते हैं।

[216] पेरीक्लीज़ – प्राचीन एथेंस के एक प्रसिद्ध राजनेता, जो ईसा पूर्व 5वीं शताब्दी में रहते थे।

[217] अर्थात्, प्रसिद्ध सिकंदर महान, लगभग पूरे पूर्व का प्रख्यात विजेता, जो ईसा पूर्व चौथी शताब्दी में रहते थे।

[218] जुपिटर या ज़ीउस – प्राचीन यूनानियों और रोमनों का प्रमुख देवता (जुपिटर रोमन नाम है; ज़ीउस या ज़ेव्स यूनानी नाम है)।

[219] माइडस – एक अर्ध-पौराणिक फ्राइजियाई राजा, जिसके बारे में कई किंवदंतियाँ संरक्षित हैं।

में रख दिए, जब वह अभी शिशु था और सो रहा था, इस प्रकार उसकी भविष्य की असीम संपदा का पूर्वाभास हुआ। इसी प्रकार हमारे राजा और प्रभु, नवजात शिशु, अपनी शिशु अवस्था में ही अपनी भविष्य की शक्तियों और कार्यों के स्पष्ट संकेत प्रकट करते हैं। यह संकेत कि उनकी दिव्य व्यवस्था द्वारा, सबसे दूर के देशों से सोना, लवंग और मूर उनके पास लाए जाते हैं, उन भविष्य की संपत्तियों की ओर इशारा करता है जो उनके प्रेमियों के लिए तैयार की गई हैं। मृत्यु और शैतान पर उनकी भविष्य की विजय, और सभी नरक पर उनकी जीत, इस तथ्य से संकेतित होती है कि वह हेरोद और पूरे यरूशलेम को चकित और स्तब्ध कर देते हैं। दृश्य और अदृश्य संसार पर उनका वह अधिकार, जो उनकी मानवता पर प्रदान क , और जिसके बारे में वह उचित समय पर कहेंगे: *'स्वर्ग और पृथ्वी पर सब अधिकार मुझे दिया गया है'* (मत्ती 28:18), इस तथ्य से संकेतित होता है कि अपनी इच्छा से, स्वर्गदूत और चरवाहे उनके जन्म के समय सेवा करते हैं, जबकि पूर्व के राजा उनकी उपासना करने आते हैं, दाऊद की भविष्यवाणी के अनुसार: *'और पृथ्वी के सब राज्य उसकी उपासना करेंगे'* (भजन संहिता 71:11)। क्योंकि यह भविष्यवाणी अब पूरी हो गई है, जब उन्हें, राजाओं के राजा के रूप में, तीन सांसारिक राजाओं द्वारा पूजा और उपहारों से सम्मानित किया गया। हिप्पो के चर्च के प्रमुख, धन्य ऑगस्टीन[220] , इस बारे में निम्नलिखित सुंदर बात कहते हैं: 'हे प्रभु यीशु, तेरे जन्म के ऐसे चिन्ह हैं: इससे पहले कि समुद्र की लहरें तेरे पैरों तले शांत हों, जब तू समुद्र पर चलता है; इससे पहले कि हिवाएँ तेरे आज्ञा से चुप हो जाएँ; इससे पहले कि आपके वचन से मरे हुए को जिलाया जाए; इससे पहले कि आपके मरने के समय सूर्य अंधकारमय हो जाए, और कब्र से आपके पुनरुत्थान पर पृथ्वी काँप जाए, और आपके स्वर्गारोहण पर स्वर्ग खुल जाएँ; इन सभी और अन्य अद्भुत कार्यों को करने से पहले – इससे भी पहले, आप अभी भी अपनी माँ की बाहों में उठाए जाते हैं और साथ ही स्वयं को संपूर्ण जगत के प्रभु के रूप में प्रकट करते हैं'। नवजात शिशु, हमारे प्रभु यीशु मसीह, की शक्ति और सामर्थ्य इतनी महान है कि अपने शिशु-काल में भी वे स्पष्ट रूप से स्वयं को सर्वशक्तिमान प्रभु के रूप में प्रकट करते हैं: 'परमेश्वर की शक्ति महान है; वास्तव में, परमेश्वर की सामर्थ्य दुर्बलता में सिद्ध होती है' (2 कुरिन्थियों 12:9)। क्योंकि शिशु के छोटे और नाजुक अंगों में हम यीशु मसीह की महान शक्ति देखते हैं, जिसकी ओर कलीसिया इशारा करती है जब वह नवजात प्रभु की तुलना एक मेमने से करती है, और जब वह उन्हें मेमना कहती है, और चरवाहों की आराधना के खड़े हुए प्रार्थना में इन शब्दों के साथ उनकी महिमा करती है: वे उन्हें निर्दोष मेमने के रूप में देखते हैं, जिन्हें मरियम के गर्भ में पोषित किया गया था, और वे गाते हैं: हे मेमने और चरवाहे की माता, आनन्दित हो[221] ।

यहाँ, कुँवारी से जन्मे मसीह की तुलना एक मेमने से की गई है और उन्हें मेमना कहा गया है। लेकिन एक मेमने में क्या शक्ति, क्या सामर्थ्य निहित है? एक ऐसी शक्ति जो वास्तव में अजेय है, जैसा कि हम आगे देखेंगे। एक बार, धर्मशास्त्री यूहन्ना ने अपने प्रकाशन में विभिन्न स्थानों से निकलते हुए विभिन्न जानवरों और साँपों को देखा – समुद्र से, गहरे गर्त से और मरुभूमि से – जिनके कई भयानक सिर और घातक विष से भरे चौड़े मुँह थे – और जिनका केवल दर्शन ही अत्यंत भयानक था! वे सभी एक मेम्ने के विरुद्ध उठ खड़े होते हैं, जैसा कि पवित्रशास्त्र कहता है: *'वे मेम्ने से युद्ध करेंगे'* (प्रकाशितवाक्य 17:14)। शायद, उन साँपों और जानवरों तथा मेम्ने के बीच इस संघर्ष को देखकर, कोई यह सोचे कि सबसे कमजोर जानवर भी तुरंत मेम्ने को पकड़कर उसके टुकड़े-टुकड़े कर देगा, ताकि बड़े जानवरों के पास लड़ने के लिए कोई न बचे। लेकिन मेम्ने की शक्ति को देखो: उसने स्वयं को उनके विरुद्ध इतनी दृढ़ता से सशस्त्र कर लिया है कि वह सारी पशु-शक्ति अचानक, उसकी क्रिया से, गिर जाती है और पृथ्वी में डूब जाती है, जैसा लिखा है: *'मेम्ना उन पर विजय प्राप्त करेगा, क्योंकि वह प्रभुओं का प्रभु और राजाओं का राजा है'* (प्रकाशितवाक्य 17:14)। सचमुच, यही मेम्ने की महान शक्ति है! यह मेम्ना परमेश्वर के पुत्र का प्रतीक है; जबकि साँप और जानवर राक्षसों और उनके सेवकों का प्रतीक हैं। यहाँ एक विचारणीय बात है: स्वर्गदूत ने, इन छवियों के माध्यम से परमेश्वर के पुत्र का अपने शत्रुओं के विरुद्ध संघर्ष दिखाने के बाद, उन्हें उनके वास्तविक नाम से क्यों नहीं बुलाया—वह नाम जो परम पवित्र कुँवारी को सुसमाचार में स्वर्ग से लाया गया था और उनके खतना के समय दिया गया था? उसने यह क्यों नहीं कहा, 'ये यीशु मसीह के विरुद्ध युद्ध करेंगे', बल्कि इसके बजाय कहा: 'ये मेम्ने से युद्ध करेंगे'? वास्तव में, ऐसा इसलिए है क्योंकि अपने जन्म के समय ही, नामकरण का इंतज़ार किए बिना, उन्होंने अपने शत्रुओं को परास्त कर दिया। जब वे अभी भी भूसे पर एक मेम्ने की तरह लेटे हैं, तब वे पहले से ही काल्पनिक साँपों और जानवरों को कुचल रहे हैं; एक सरकंडे की तरह, वे उन्हें इस तरह

---

[220] धन्य ऑगस्टीन, उत्तरी अफ्रीका में हिप्पो के बिशप, पश्चिमी चर्च के एक प्रसिद्ध फादर, जिन्होंने धर्मशास्त्रीय विषयों पर कई कृतियाँ, साथ ही पवित्र धर्मग्रंथ की विभिन्न पुस्तकों और विशिष्ट अंशों पर कई टीकाएँ भी छोड़ीं। उनकी मृत्यु 430 में हुई।

[221] इकोस 4.

चूर-चूर कर देते हैं जैसे वे मट्टिी के बर्तन हों। भवष्यिवाणी में यह अच्छी तरह लखिा है: *'और वे उसका नाम महेर-शलाल-अश-बाज़ रखेंगे; क्योंकि बच्चा "मेरे पिता" या "मेरी माता" कहने में सक्षम होने से पहले, दमश्कि की संपत्ति और सामरयिा का लूट का माल अस्सूर के राजा के सामने ले जाया जाएगा'* (यशायाह 8:3-4)[222] । यह नवजात मेमना उस समय का इंतजार नहीं करता जब वह एक शेर बन जाएगा, और उसके बारे में कहा जाएगा: 'यह वजिेता यहूदा के कुल का शेर है' (प्रकाशतिवाक्य 5:5)। यह शशिु उस समय का इंतजार नहीं करता जब वह एक दैत्य की तरह शक्ति में बढ़ेगा। यह बालक उस समय का इंतजार नहीं करता जब उसकी कोमल भुजाएँ शमिशोन जैसी शक्ति प्राप्त करेंगी[223] । फरि भी, इससे पहले कि वह अपनी माता का दूध पीना शुरू करे, वह अपने शत्रुओं को परास्त कर देता है । इससे पहले कि वह अपने होठों से अपना नाम या अपनी अति पवत्रि माता का नाम उच्चारति कर सके, वह अयोग्यों के नाम जीवन की पुस्तक से मटिा देता है। इस शशिु के पुरुषों जैसी शक्ति प्राप्त करने से पहले ही, जैसे-जैसे वह बढ़ता है, वह शक्तशिाली लोगों को उनके सहिासनों से उखाड़ फेंकता है: *'मेमना उन पर वजिय प्राप्त करेगा; क्योंकि वह प्रभुओं का प्रभु और राजाओं का राजा है'* (प्रकाशतिवाक्य 17:14)। हमारे मेमने की शक्ति ऐसी है, दव्यि शशिु की अजेय शक्ति ऐसी है, जसिके साथ वह पैदा हुआ है!

वे, इसके अलावा, ज्ञान के साथ पैदा होते हैं, क्योंकि जो अपने शशिुकाल में ही शक्ति और सामर्थ्य रखते हैं, उनके पास ज्ञान भी होता है। *'महान है हमारा प्रभु, और महान है उसकी सामर्थ्य; उसका ज्ञान असीम है'* (भजन संहति 146:5)। क्या कोई ऐसा शशिु है जसिके लिए नम्निलखिति वचन उपयुक्त हों: *'वृद्धों से अधकि समझदार'* (भजन संहति 118:100)? ये वचन केवल दव्यि शशिु पर ही लागू होते हैं। साधारण शशिु जन्म के समय कुछ भी नहीं समझते जब तक कि वे बड़े न हो जाएँ, और बड़े होने पर भी, उन्हें समझने के लिए शक्षिा की आवश्यकता होती है। यह दव्यि शशिु, हालाँकि, जैसे कि वे अपनी उत्पत्ति से पहले स्वयं बुद्धि थे, वैसे ही अपनी उत्पत्ति में बुद्धि की गहराई और दव्यिता का मन हैं (रोमयिों 11:33)। अपने शशिु-काल में वे समय की शर्तों के अधीन हैं, फरि भी अपनी बुद्धि में वे पूर्व-शाश्वत हैं। हमारे लिए एक शशिु का जन्म हुआ है, और एक 'वृद्ध पुरुष' अर्थात् एक सम्माननीय बुजुर्ग के सदृश, भवष्यिवक्ता दानयिेल ने परमेश्वर को देखा (दानयिेल 7:9-13)[224] , बालक, और (साथ ही) पिता को, जैसा कि भवष्यिवक्ता यशायाह अब उनके जन्म के समय उनके बारे में कहते हैं: *'आने वाले युग का पिता'* (यशायाह 9:6)। यह उपाधि 'पिता' बच्चों के लिए नहीं, बल्कि पुरुषों के लिए उपयुक्त है, और कसिी ने भी पहले कभी अपनी माँ के दूध से पोषति एक शशिु को पिता नहीं कहा है। फरि भी, भवष्यिवक्ता बनिा कसिी हचिकचिाहट के नवजात मसीह को 'पिता' कहते हैं। ऐसा क्यों है? यह दखिाने के लिए कि उस दव्यि शशिु में वही मन, वही बुद्धि है, जो प्राचीनकाल के पिता में थी। जैसे सबसे बुद्धमिान पिता अपने बच्चों के साथ व्यवहार करते हैं, वैसे ही परमेश्वर की परम पवत्रि माता से जन्मे इस स्वर्गीय शशिु, मसीह, हमारे साथ व्यवहार करते हैं। और यह वह संकेत है जसिसे हमें यह नश्चिय होता है कि उद्धारकर्ता अब हमारे लिए जन्म ले चुके हैं: क्योंकि अपने शशिु-काल में ही वे हमारे लिए एक पिता हैं। तो फरि, वे हमारे लिए कसि प्रकार पिता हैं? आइए सुनते हैं कि यह कैसे होता है: स्वयं जन्म लेकर, वह एक ही समय में हमें मृत्यु से जीवन में पुनर्जीवति करता है, ठीक वैसे ही जैसे सुसमाचार की कथा में व्यभचिारी पुत्र के पिता ने कयिा, जो पहले मृत था और फरि जीवति हो गया। उस पिता ने, अपने मृत पुत्र को जीवति करने के लिए, अपनी बाहें उसकी गर्दन के चारों ओर डाल दीं और उसे चूमा। यह पतिृवत् चुंबन पुत्र के लिए इस बात का संकेत था कि उसके पाप—जो उसकी आध्यात्मकि मृत्यु का कारण थे—क्षमा कर दिए गए थे; क्योंकि पाप से मृत्यु आती है; और एक बार जब क्षमा के माध्यम से इन पापों, मृत्यु के कारणों, को पापी से हटा दयिा गया, तो मृत व्यक्ति तुरंत जीवति हो उठा। क्योंकि जैसे रात के बाद दनि आता है, वैसे ही, एक बार कसिी व्यक्ति से अंधकारमय, पापी मृत्यु दूर हो जाने पर, परमेश्वर का अनुग्रह—जो आत्मा के लिए जीवन है—चमकने लगता है। सचमुच ऐसा ही है, कि मसीह हमारे

---

[222] यह उस आज्ञा को बताता है जो प्रभु ने यशायाह नबी को अपने पुत्र का नाम रखने के लिए दी थी, 'उसे शीघ्र ही बंदी बना लयिा जाएगा, व्यर्थ (अचानक) उसे उखाड़ दयिा जाएगा' (पिता की महमिा, क्रसिमस की पूर्व संध्या पर घंटों में)। इस नाम का उद्देश्य भवष्यिवक्ता के समकालीनों के लिए सीरयिा और इज़राइल के राज्यों पर यहूदी लोगों की नकिटवर्ती वजिय का एक संकेत देना था। कुछ टीकाकार भवष्यिवक्ता के पुत्र के इस रहस्यमय नामकरण में, एक प्रकार से, मसीहा की महमिा और शक्ति की पूर्वसूचना देखते हैं। इसी अर्थ में संत डेमेट्रयिस ने इस अंश में इसका हवाला दयिा है।

[223] शमिशोन, इज़राइल के न्यायाधीशों में से एक, जो अपनी असाधारण ताकत के लिए प्रसद्धि था। शमिशोन की कहानी न्यायाधीशों 13; न्यायाधीशों 14; न्यायाधीशों 15; न्यायाधीशों 16 में बताई गई है।

[224] वृद्धावस्था ईश्वर की अनंतता का प्रतीक थी। इस अंश में, संत डेमेट्रयिस, शशिु यीशु को 'दनिों का प्राचीन' कहकर, ईश्वर के रूप में उनके पूर्व-शाश्वत अस्तत्वि की ओर संकेत करना चाहते हैं।

उद्धारकर्ता ने हमें अपने जन्म पर चूमा; उन्होंने, जिन्होंने पाप के लिए मर गए थे, हमें अपने अनुग्रह के द्वारा जीवन वापस दिया, और इस प्रकार वे अपने शिशु रूप में हमारे लिए एक परम बुद्धिमान पिता हैं। और यह समझने के लिए कि हमारे उद्धारकर्ता मसीह ने हमें अपने जन्म पर चूमा, आइए हम विचार करें कि कैसे, गीतों के गीत में, एक ईश्वर-प्रेमी आत्मा परमेश्वर के साथ मिलन की अपनी इच्छा को इतनी तीव्रता से व्यक्त करती है: *'मुझे अपने मुख के चुंबनों से चूमो!'* (गीतों का गीत 1:1)[225] . क्या हम जानना चाहते हैं कि वह कौन है जो ईश्वर के चुंबन की लालसा करता है? आइए हम संत एम्ब्रोस[226] को सुनें, जो कहते हैं कि हमारी प्रकृति, हमारा शरीर, ही वह है जो परमेश्वर के पुत्र के अवतार के माध्यम से परमेश्वर के प्रेम और परमेश्वर की निकटता को प्राप्त करने की इच्छा रखता है, ताकि वह उसे, मानो, आमने-सामने देख सके, और उसे, मानो, मुख से मुख मिलाकर, एक पवित्र चुंबन दे सके। यह शिक्षक इसके बारे में इस प्रकार कहते हैं: 'आओ हम यह समझें कि (प्रेम-गीत में वर्णित वह ईश्वर-प्रेमी मुख) वह मांस है जो आदम के व्यक्तित्व में, सांप के विष से कलंकित हो गया था और पाप की दुर्गंध से सड़ रहा था। कई भविष्यवाणियों से यह जानकर कि ईश्वर आएँगे, जिन्होंने साँप के छल को समाप्त कर दिया और पवित्र आत्मा की कृपा प्रदान की, वह इस प्रकार प्रार्थना करती है: 'काश वह मुझे अपने होठों के चुंबन से चूमता?' और संत क्रिसोस्टोम , अन्यजातियों से इकट्ठी कलीसिया की ओर से इस प्रकार कहते हैं: 'मैं, अन्यजातियों की कलीसिया, यह चाहती हूँ कि वह मुझसे मूसा, यशायाह, यिर्मयाह और अन्य भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा बात करे, इससे कहीं अधिक कि वह स्वयं मुझसे संवाद करे। तो वह स्वयं प्रकट हों, और मैं उनसे आमने-सामने बात करूँगी। वह आएं और मुझे अपने होठों के चुंबन से चूमें। मैं यिर्मयाह को उनके बारे में ऐसा कहते हुए सुनती हूँ: *'सब कुछ से बढ़कर मन धोखेबाज़ है और असाध्य; उसे कौन समझ सकता है?'* (यर. 17:9)[227] ? मैं केवल उसी की कामना करता हूँ, कि वह प्रकट हो और मुझे अपने होठों के चुम्बन से चूमे। मैं अमोस को उनके विषय में इस प्रकार बोलते हुए सुनता हूँ: *'देखो, एक मनुष्य कठोर पत्थर की दीवार पर खड़ा था, और उसके हाथ में एक कठोर पत्थर था'* (अमोस 7:7)[228] । 'किन्तु मैं स्वयं उसी की खोज करती हूँ, कि वह आए और मुझे अपने होठों के चुम्बन से चूमे।' इन पवित्र शिक्षकों के शब्दों से स्पष्ट रूप से प्रकट होता है कि ईश्वर का हमारे स्वभाव के साथ चुम्बन परमेश्वर के पुत्र का अवतार ही है। क्योंकि जैसे एक चुंबन में होंठ होंठों से मिलते हैं, वैसे ही उद्धारकर्ता के अवतार में दिव्य स्वभाव मानव स्वभाव के साथ एकीकृत और उससे जुड़ा हुआ था। इस प्रकार, उनके जन्म के समय, हमारे उद्धारकर्ता मसीह ने एक पिता की तरह हमें चूमा, जैसा कि दाऊद ने भविष्यवाणी की थी जब उन्होंने कहा: *'धर्म और शान्ति ने चूम लिया'* (भजन संहिता 84:11), इस अंश में टीकाकार यूथमियस (ज़िगाबेन) 'शान्ति' से अभिप्रेत दैवी स्वभाव को मानते हैं, क्योंकि केवल परमेश्वर ही धर्मी न्यायी हैं, और 'धर्म' से उनका तात्पर्य मसीह में मानव स्वभाव से है, क्योंकि इस स्वभाव में निहित सच्ची नम्रता के कारण। इसलिए इन दो स्वभावों के बारे में कहा गया है कि उन्होंने एक-दूसरे को चूमा है, जिसका अर्थ है कि मसीह में वे घनिष्ठ मिलन, सामंजस्य और पारस्परिक सहमति में हैं। [229]

यह भी सत्य है कि इस चुंबन के द्वारा, हमारे उद्धारकर्ता मसीह ने, अपने जन्म के समय, हमें पाप की मृत्यु से दिव्य अनुग्रह के जीवन में पुनर्जन्म दिया है। राजाओं की चौथी पुस्तक (4 राजा 4:28–30, 34–35) में हम निम्नलिखित पढ़ते हैं। जब शुनेमी स्त्री ने पर्वत कार्मेल पर ठहरे हुए भविष्यवक्ता एलिशा से अपने घर आने का अनुरोध किया उसके मृत पुत्र को पुनर्जीवित करें, तो भविष्यवक्ता स्वयं तुरंत नहीं गए, बल्कि पहले उन्होंने अपने सेवक गेहाजी को अपनी छड़ी के साथ भेजा, ताकि वह छड़ी लड़के के मुख पर रख सके; लेकिन मृत लड़के ने कोई आवाज़ नहीं की और गेहाजी की ओर कोई ध्यान नहीं दिया। जब स्वयं भविष्यवक्ता मृत लड़के के पास आए, तो उन्होंने अपने होंठ लड़के के होंठों पर रखे

---

[225] उद्धृत पाठ गीतों का गीत 1:1 से लिया गया है, जिसमें दुल्हन, अपने दूल्हे से चुंबन प्राप्त करने की तीव्र इच्छा रखती है, मानव जाति का प्रतिनिधित्व करती है, जो उद्धारकर्ता को शीघ्र देखने और उनसे मोक्ष प्राप्त करने की तीव्र इच्छा रखती है।

[226] मिलान के बिशप संत अम्ब्रोज़, जो, कहा जा सकता है, सार्वभौमिक चर्च के पश्चिमी भाग के लिए उतने ही महत्वपूर्ण थे, जितने कि संत बेसिल महान पूर्वी भाग के लिए थे; क्योंकि सेंट एम्ब्रोज़, सेंट बेसिल की तरह, विशेष रूप से एरियनवाद के खिलाफ ऑर्थोडॉक्सी के एक उत्साही समर्थक और रक्षक के रूप में प्रसिद्ध थे। उन्होंने कई लेख भी छोड़े हैं, जिनमें वे आंशिक रूप से परमेश्वर के वचन की व्याख्या करते हैं, आंशिक रूप से विश्वास के सिद्धांत को प्रस्तुत करते हैं, और आंशिक रूप से ईसाई सद्गुणों पर निर्देश देते हैं। – सेंट एम्ब्रोज़ का 397 में निधन हुआ। उनका पर्व 7 दिसंबर को मनाया जाता है।

[227] यहाँ उद्धृत यिर्मयाह की भविष्यवाणी को परमेश्वर के पुत्र के अवतार की अपारदर्शिता के प्रतीक के रूप में लिया गया है।

[228] यहाँ उद्धृत आमोस की भविष्यवाणी में, परमधर्मपिता मसीहा की दिव्य शक्ति की पूर्वसूचना देखते हैं।

[229] यूथमियस ज़िगाबेन (या ज़िगाडेन), 12वीं शताब्दी के पहले भाग में कॉन्स्टेंटिनोपल के एक भिक्षु, एक प्रसिद्ध धर्मशास्त्री और पवित्र शास्त्र के व्याख्याकार थे। अपनी टीकाओं में, वह कोई मौलिक लेखक नहीं थे, बल्कि केवल पूर्व पैट्रिस्टिक व्याख्याओं के संकलक थे।

और उस पर फूँक मारी – और देखो, लड़के ने अपनी आँखें खोल दीं। ध्यान दें कि कैसे जीवन मृत लड़के को भविष्यवक्ता के होंठ उसके होंठों पर रखने से मिला, ठीक वैसे ही जैसे एक चुंबन में होता है। सचमुच, वहाँ एक चुंबन था, जब होंठ लड़के के होंठों पर रखे गए, और उन होंठों के चुंबन के द्वारा मृतक को जीवन मिला। यह मसीह के अवतार का एक पूर्वाभास था। मृत्यु, जो पाप के द्वारा संसार में आई थी, ने पहले लड़के, आदम को छीन लिया था, जिसने जीना मुश्किल से ही शुरू किया था। मनुष्य स्वभाव, एक स्त्री की भाँति, कोमलता से परमेश्वर से पुकारता है: *'हे यहोवा! आकाश को झुका, और उतर आ'* (भजन संहिता 143:5); *'अपना मुख चमका, और हम बचेंगे'* (भजन संहिता 79:4)। प्रभु परमेश्वर स्वयं तुरंत नहीं आते, बल्कि, जैसे एलिशा ने अपने दास को भेजा था, वैसे ही प्रभु पहले अपने दासों—व्यवस्था की लाठी वाले भविष्यद्वक्ताओं—को भेजते हैं, ताकि वे इस लाठी को इस युवक पर, आदम की संतान पर रख सकें; लेकिन यह युवक अभी जीवन में नहीं आया था, और लोग अभी भी मृत्यु के अंधकार और छाया में निवास करते थे[230] . लेकिन जब प्रभु स्वयं अपने अवतार में आए और, जैसा कि कहा जाता है, उन्होंने अपनी दिव्यता के होंठ मानवता के होंठों से लगाए, और हमें अपने होंठों के चुंबन से चूमा, तो वह युवक तुरंत उठ खड़ा हुआ, मरे हुए जीवित हो उठे (*महान डोकसोलॉजी से पहले परमेश्वर की माता का पुनरुत्थान*), – हम मसीह के जन्म के समय मृत्यु से जीवन में उठाए गए। यह एक पुरानी कहानी की तरह है। एक दयालु मित्र, यह देखकर कि उसके प्रिय मित्र को शत्रु की विषाक्त तलवार से घाव लगा है, उसे उसके घातक घाव से ठीक करने का कोई उपाय खोजने के लिए उसने बड़ी सावधानी उठाई। लेकिन फिर डॉक्टर उसे बताते हैं कि घाव असाध्य है, क्योंकि ज़हर में डूबी तलवार ने न केवल मांस को भेदकर एक गहरा घाव दिया, बल्कि उसी ज़हर से पूरे शरीर को दूषित कर दिया, इसलिए उसके दोस्त की मृत्यु निश्चित है, जब तक कि कोई इस तरह अपनी सेहत की कीमत पर उसे न बचा ले: अपने होठों को अपने मित्र के घाव पर रखकर उसमें से विष चूसकर: 'तब,' चिकित्सक कहते हैं, 'आपका मित्र आसानी से ठीक हो जाएगा, लेकिन जिसने विष चूसा होगा, वह निश्चित रूप से मर जाएगा।' यह सुनकर, एक सच्चा दोस्त, भले ही वह अपने जीवन को अधिक महत्व नहीं देता था, फिर भी, अपने दोस्त से अधिक प्रेम करते हुए और अपने दोस्त के स्वास्थ्य को अपने जीवन से ऊपर रखते हुए, – ने अपने मित्र को उपरोक्त तरीके से ठीक किया – घाव पर अपने होंठ रखकर और विष चूसकर, और अपनी मृत्यु के द्वारा अपने मित्र को स्वास्थ्य प्रदान किया। इसी प्रकार, हमारे प्रभु परमेश्वर ने हमसे, अर्थात् पाप के राजकुमार द्वारा चलाए गए पाप की विषैली तलवार से घायल हुए से, व्यवहार किया। कोई भी हमें हमारे घाव से ठीक नहीं कर सकता था या हमें मृत्यु से नहीं बचा सकता था, जब तक कि पहले हमसे घातक हानि को दूर न कर दिया जाता। ऐसा कोई पूर्ण चिकित्सक नहीं मिला, जब तक कि सर्वोच्च स्वयं, करूबों पर विराजमान, आत्माओं और शरीरों के पूर्ण चिकित्सक और सृष्टिकर्ता, ने अपने होंठ—अर्थात् अपने पुत्र—को लागू नहीं किया; क्योंकि जैसे पवित्र आत्मा को धर्मग्रंथ में पिता की उंगली कहा गया है: *'मैं परमेश्वर की उंगली से दुष्टात्माओं को निकालता हूँ'* प्रभु कहते हैं, '(लूका 11:20)'; वैसे ही परमेश्वर पुत्र को पिता का मुख कहा गया है, जैसा लिखा है: *'अपने मुख के साँस से—उनकी सारी सेना'* (भजन संहिता 32:6)। इस प्रकार, मैं कहता हूँ, प्रभु परमेश्वर ने मानव जाति के प्रति प्रेम के कारण हमारे स्वभाव के घाव पर अपना मुख—अर्थात् अपने प्रिय पुत्र को—स्थापित किया: क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम किया कि उसने अपनी एकलौते पुत्र को उनके लिए दे दिया (यूहन्ना 3:16)। तो, 'होठों' से मेरा क्या तात्पर्य है? परमेश्वर पुत्र ने, हमारी घायल प्रकृति के साथ स्वयं को एक करके, उस पापी विष को अपने ऊपर ले लिया: संसार के पापों को अपने ऊपर लेकर, उन्होंने हमारे पापों को उठा लिया और हमें चंगा किया, हमारे बदले में अपनी ही भलाई की पेशकश की। इसके द्वारा उन्होंने अपने चुंबन के माध्यम से, अर्थात् देहधारण के द्वारा, हमें अनुग्रह के जीवन के लिए नया जन्म दिया, और इस प्रकार, अपने शिशु-काल में, उन्होंने स्वयं को हमारा उद्धारकर्ता, हमारे सर्व-ज्ञानी पिता, हमारे कुशल चिकित्सक और हमारे सबसे प्रिय मित्र के रूप में प्रकट किया। तो फिर, मसीह के शिशुत्व को देखो, कि मसीह कैसे जन्म लेते हैं: अजेय शक्ति और अगम्य बुद्धि के साथ। और स्वर्गदूत ने चरवाहों को उद्धारकर्ता के संसार में आगमन का चिह्न—शिशु—ठीक ही बताया है—एक ऐसा शिशु जो असाधारण है और अपने जन्म में किसी अन्य शिशु से भिन्न है: एक ऐसा शिशु जो शक्तिशाली और बुद्धिमान है, एक ऐसा बालक जो सामर्थी और ज्ञान से परिपूर्ण है। यह तुम्हारे लिए संकेत है: तुम्हें एक शिशु मिलेगा, और एक शिशु जो लपेटे हुए कपड़ों में लिपटा होगा, क्योंकि उस शिशु के लपेटे हुए कपड़े भी रहस्य से भरे हैं। संत अम्ब्रोज़ कहते हैं: 'मसीह को लपेटे हुए कपड़ों में लपेटा गया है ताकि तुम नश्वरता के फटे-पुराने कपड़ों से मुक्त हो सको। यही है मसीह के लपेटे जाने का रहस्य: कि हम भ्रष्टता के उन खुरदरे फटे-पुराने कपड़ों को उतार फेंकें

[230] तुलना करें लूका 1:79 से।

जनिसे मृत्यु ने हमें पहनाया है।' आइए संत अम्ब्रोज़ के शब्दों पर ध्यान से वचिार करें। उन्होंने 'एक फटा-पुराना कपड़ा' क्यों नहीं कहा, बल्कि 'वे फटे-पुराने कपड़े जिन्हें तुमने उतार फेंका है!' क्यों कहा। मेरा मानना है कि वह यहाँ आदम के वस्त्रों का उल्लेख कर रहे हैं, क्योंकि आदम के पतन के बाद, उसके पास दो वस्त्र थे: एक पत्तियों का और एक चमड़े का। पत्तियों का वस्त्र स्वर्ग में था, जिसे आदम और हव्वा ने अपने लिए बनाया था: *'उन्होंने अंजीर की पत्तियाँ सिलकर अपने लिए कमरबंद बनाए'* (उत्पत्ति 3:7)। दूसरी ओर, चमड़े का वस्त्र स्वर्ग के बाहर था, जब परमेश्वर ने आदम और उसकी पत्नी के लिए 'चमड़े के वस्त्र' बनाए और उन्हें इन वस्त्रों से पहनाया (उत्पत्ति 3:21)। ये दोनों वस्त्र नश्वर थे, क्योंकि वे पत्तियाँ भी उसी पेड़ से आई थीं जिसने मनुष्य के लिए मृत्यु लाई थी; वास्तव में, कुछ चर्च शिक्षक मानते हैं कि जिस पेड़ का फल आदम को खाने से मना किया गया था, वह अंजीर का पेड़ था। और चमड़ा एक मारे गए जानवर से आया था। पत्तों का वस्त्र आदम की अवज्ञा का प्रतीक था, जिसके द्वारा वह एक पेड़ की पत्ती की तरह परमेश्वर से दूर हो गया, जबकि चमड़े का वस्त्र शारीरिक वासना, या अनियंत्रित इच्छा का संकेत था। हालाँकि, मसीह, जो नए आदम हैं, को इन दोनों वस्त्रों से मानव जाति को मुक्त करने के लिए लपेटों में लपेटा गया था, अर्थात्: अवज्ञा और मौन इच्छाओं से; क्योंकि उनके पवित्र लपेटने के वस्त्र रहस्यमय रूप से आज्ञाकारिता और पवित्रता दोनों का प्रतीक हैं - वे आज्ञाकारिता का प्रतीक हैं, जैसा कि उपर्युक्त चर्च फादर, संत एम्ब्रोज़, बताते हैं।

'इस रहस्य पर वचिार करो,' वह कहते हैं, 'एक कुँवारी के गर्भ से एक सेवक और (साथ ही) प्रभु दोनों उत्पन्न हुए: एक सेवक, परिश्रम करने के लिए, क्योंकि जो लपेटे कपड़ों से घिरा होता है वह सेवा के लिए तैयार होता है; प्रभु, हालांकि, राज्य करने के लिए। 'वह सेवा अच्छी है जिसने उसे वह नाम दिलाया जो हर नाम से ऊपर है; क्योंकि जो दूसरों के लिए अपमान है, वह मसीह के लिए महिमा है।' आइए इन शब्दों पर वचिार करें। जो कोई स्वयं को लपेटने के कपड़ों से तैयार करता है, वह स्वयं को सेवा के लिए तैयार करता है। इस प्रकार, कमरबंध मसीह की आज्ञाकारिता को व्यक्त करते हैं, क्योंकि जो काम करता है और सेवा करता है, वह एक शिष्य है। और एक शिष्य के लिए यह उचित है कि वह स्वयं कमरबंध बांधे, सुसमाचार में एक विशेष स्वामी की आज्ञा के अनुसार: *'मेरा भोजन तैयार करो, और स्वयं कमरबंध बांधकर मेरी सेवा करो'* (लूका 17:8)। और हमारे प्रभु ने स्वयं शिष्य की भूमिका ग्रहण की, क्योंकि वे अपने विषय में कहते हैं: 'वे मेरी सेवा करने नहीं आएंगे, परन्तु मैं उनकी सेवा करूंगा' ([231]); वे हमारी सेवा करने के लिए स्वयं को लपेटने वाले वस्त्रों से कमर कसते हैं, सुसमाचार के वचनों के अनुसार: *'मैं तुम से सच कहता हूं, वह कमर कसकर उन्हें बिठाएगा, और आकर उनकी सेवा करेगा'* (लूका 12:37)। और अपनी आज्ञाकारी सेवा के द्वारा, वह आदम की अवज्ञा का उपचार करते हैं। पुराना आदम अवज्ञाकारी था, जबकि नया आदम *'मृत्यु तक आज्ञाकारी' था* (फिलि. 2:8)। इस प्रकार, आदम की अवज्ञा के फटे-पुराने वस्त्र मसीह की आज्ञाकारिता के लपेटे हुए वस्त्रों से सिल दिए जाते हैं। जहाँ तक पवित्रता का प्रश्न है, हम इसे प्रभु के लपेटने के वस्त्रों में रहस्यमय रूप से चित्रित देखेंगे, यदि हम इस पर वचिार करें कि पुराने आदम को चमड़े के वस्त्र पहनाए गए थे, जबकि नए आदम को (जैसा कि विश्वसनीय रूप से ज्ञात है) सूती लपेटने के वस्त्रों में लपेटा गया था, जिन्हें परमेश्वर की परम पवित्र माता ने पहले से ही इस उद्देश्य के लिए तैयार किया था। लोगों के बीच अक्सर ऐसा होता है कि बाहरी पोशाक किसी व्यक्ति के आंतरिक विचारों और चरित्र के अनुरूप होती है, ताकि बाहरी दिखावट के माध्यम से किसी व्यक्ति का आंतरिक हृदय स्पष्ट रूप से प्रकट हो जाए (2 कुरिन्थियों 4:16)। घमंडी हेरोद[232] ने प्रेरितों के काम की पुस्तक में उल्लिखित दिन पर, शाही वस्त्र पहने; और क्या ये वस्त्र उसके भीतरी घमंड के अनुरूप नहीं थे? वास्तव में वे थे, जैसा कि पवित्रशास्त्र गवाही देता है: *'अपने सिंहासन पर बैठा'* (घमंड से लोगों के सामने), *'उन्हें संबोधित करते हुए'* (प्रेरितों के काम 12:21)। उसके घमंडी और दिखावटी परिधान के माध्यम से उसका भीतरी गर्व स्पष्ट रूप से प्रकट हुआ था। विनिम्र और ईश्वर-भयभीत रानी एस्तेर[233] ने भी एक बार, उचित समय पर, शाही गरिमा के आभूषण धारण किए थे, लेकिन घमंड के कारण नहीं, बल्कि यहूदी लोगों को खतरे के कारण; और तीन दिन

---

[231] तुलना करें मत्ती 20:28; मरकुस 10:46।

[232] अर्थात् हेरोद अग्रिप्पा, जिसे रोमन सम्राट कैलिगुला ने यहूदिया का राज्यपाल नियुक्त किया था। यहूदियों की कृपा प्राप्त करने के लिए, उसने ईसाइयों पर अत्याचार शुरू किया और ज़ेबेदी के पुत्र संत जेम्स को मृत्युदंड दिया, जबकि उसने संत पतरस को कैद कर दिया, जिन्हें एक स्वर्गदूत द्वारा चमत्कारिक रूप से जेल से रिहा किया गया था। हेरोद अग्रिप्पा की मृत्यु सीज़रिया में सार्वजनिक रूप से चौक में शाही वस्त्र पहनकर प्रकट होने के कुछ ही समय बाद हुई, जब चापलूसों ने उसे देवता कहना शुरू कर दिया (देखें प्रेरितों के काम 12:21-23),

[233] एस्तेर, एक धर्मनिष्ठ यहूदी महिला जो फारस के राजा अहश्वेरूश (संभवतः आर्टेक्सर्क्स लोंगिमैनस) की पत्नी बनीं और उन्होंने दुष्ट कुलीन हामान द्वारा अपने लोगों के खिलाफ योजनाबद्ध नरसंहार से अपने लोगों को बचाया। इसका वर्णन एस्तेर की पुस्तक में किया गया है।

बीत जाने के बाद, जब उसने प्रार्थना करना समाप्त कर लिया, तो उसने अपना शोक-वस्त्र उतार दिया और अपना उत्सव का वस्त्र पहन लिया (एस्तेर 4–5)। क्या उसके ये बाद वाले वस्त्र उसकी तेजस्वी आत्मा और उसके अच्छे और शुद्ध इरादे के अनुरूप नहीं थे? निश्चित रूप से ऐसा ही था, जैसा कि धर्मग्रंथ कहता है: *'और स्वयं को शोभायमान बनाकर, उसने सर्व-दृष्टा और उद्धारकर्ता परमेश्वर से प्रार्थना की'* (एस्तेर 5:1), ताकि उसकी बाहरी सुंदरता उसकी आंतरिक, आध्यात्मिक सुंदरता के अनुरूप हो। आइए हम आदम को भी याद करें। जब उसने स्वर्ग में पाप किया, तो वह, मानो, एक जंगली जानवर बन गया: एक जानवर, क्योंकि उसने निषिद्ध फल चुराया था; और जंगली, क्योंकि तब वह जंगल के एक जानवर की तरह भागने और छिपने लगा। उसके पशुवत् स्वभाव के अनुरूप पशु की खाल के वस्त्र होने ही थे, ताकि उसका आंतरिक स्वभाव और बाहरी परिधान एक-दूसरे से मेल खाते रहें। नाइसा के संत ग्रेगरी (मूसा के जीवन के अपने वृत्तांत में) इसे इसी तरह समझते हैं, और इस विषय पर निम्नलिखित कहते हैं: 'जो लोग अपनी पशु-प्रवृत्ति के कारण अपनी आत्मा को कलंकित कर चुके हैं, उन्हें पशुओं की खाल पहननी चाहिए।' समझें कि पुराना आदम फटे-पुराने कपड़ों में क्यों लिपटा था, और नया आदम, मसीह, सूती कपड़ों में क्यों लिपटा है। ग्रिगोरी और इसिडोर[234] की गवाही के अनुसार, पवित्र शास्त्र में लिनन पवित्रता का प्रतीक है – यही कारण है कि, पुराने नियम में, याजकों के वस्त्र लिनन के बने होते थे, जो याजकों की निर्दोष और शुद्ध सेवा का प्रतीक थे। धन्य जेरोम इस बात से सहमत हैं; फैबियोला[235] को लिखे अपने पत्र में, वे कहते हैं: 'जब हम, मसीह में स्वयं को वस्त्र पहनाने की तैयारी करते हुए, अपने चमड़े के वस्त्र उतार देते हैं, तब हम सूती वस्त्र पहनते हैं, जो हर प्रकार की अशुद्धि से मुक्त और हर दृष्टि से शुद्ध हैं।' सूती वस्त्र शुद्धता का प्रतीक हैं, परन्तु, हे! कितना शुद्ध है मसीह हमारा उद्धारकर्ता! *'उसके हाथ निर्दोष हैं, और उसका हृदय शुद्ध है; वह कोई पाप नहीं करता, और उसके मुँह में कोई छल नहीं पाया जाता'* (भजन संहिता 23:4; भजन संहिता 31:2)। वह इतना शुद्ध है कि पवित्र शास्त्र के अनुसार, सबसे शुद्ध और सबसे चमकीले तारे भी उसकी पवित्रता के सामने फीके पड़ जाते हैं: *'तारे भी उसकी दृष्टि में अशुद्ध हैं'* (अय्यूब 25:5)। और इतने परम शुद्ध शिशु के लिए, जो परम शुद्ध कुँवारी से जन्मे थे, चमड़े या पशु की खाल के वस्त्र पहनना उचित नहीं था, बल्कि शुद्ध सूती और सफेद लपेटने वाले कपड़े पहनना उचित था, ताकि आंतरिक और बाहरी पवित्रता के बीच एक पारस्परिक सामंजस्य हो सके। लेकिन यह लपेटने के कपड़ों के महत्व का अंत नहीं है। आदम को जानवर की खाल क्यों पहनाई गई, जबकि मसीह को सूती लपेटने के कपड़े पहनाए गए? खाल किसी भी अन्य चीज़ की तुलना में शरीर से अधिक बँधी होती है। और इस प्रकार चमड़ा शरीर से इतनी कसकर चिपक जाता है कि उसे बड़ी मुश्किल से ही फाड़ा जा सकता है, जबकि लिनन का मांस से कोई संबंध नहीं है; यह अपने आप में अस्तित्व रखता है और मांस के साथ उसका ऐसा कोई बंधन नहीं है। इसी में वह परम कारण निहित है कि आदम को चमड़े के वस्त्र पहनाए गए, जबकि मसीह को लिनन के वस्त्र पहनाए गए। आदम देहधारी था: वह अपने शरीर के मांस को इतना प्यार करता था कि वह सबसे बुरे हालात में भी - जब उसने परमेश्वर को क्रोधित किया - उसे त्यागना नहीं चाहता था, लेकिन उसके साथ, चमड़ी और मांस के साथ, उसने अपने सृष्टिकर्ता को क्रोधित किया; इसीलिए प्रभु ने उसे देहधारी, चमड़े के फटे-पुराने कपड़ों में लपेटा, जैसा कोई *'देह की बातों में* मन लगाता *है'* (रोमियों 8:5)। मसीह, यद्यपि वे देह में प्रकट हुए, तथापि सभी देह से परे थे, क्योंकि वे स्वयं पवित्रता का स्रोत थे। इसलिए, उन्हें सूती लिनन के वस्त्रों में लपेटा गया, जिसका देह से कोई संबंध नहीं था, और इसके द्वारा उन्होंने कामुक इच्छा और अनकही वासना की चमड़े की पोशाक को भंग कर दिया। मसीह के लपेटने के वस्त्रों के रहस्य पर विचार करें: ये लपेटने के वस्त्र हमारे पापी घावों के लिए मरहम हैं; ये हमारी आँखों से आँसू पोंछते हैं; ये हमें परमेश्वर के साथ सबसे घनिष्ठ मिलन और उनके प्रति पूर्ण प्रेम के लिए अविभाज्य रूप से बाँधते हैं। यहाँ तक कि वह खलिहान भी जिसमें लपेटे हुए शिशु लेटे थे, रहस्यमय महत्व से रहित नहीं है। आइए सुनते हैं कि धन्य थियोडोरेट of इस बारे में क्या कहते हैं: वे कहते हैं, 'देखो, उस का नम्र निवास जो स्वर्ग को समृद्ध करता है; देखो उस का अस्तबल जिसने करूबों पर उपवेश किया है; उसकी स्वर्गीय संपदा पर मनन करते हुए, उसकी सांसारिक गरीबी को देखो। दया से परिपूर्ण ईश्वर, हमारी गरीबी में समृद्धि लाने के लिए स्वयं गरीब हो गए; और इसी कारण स्वर्ग के राजा को एक खलिहान में रखा गया, ताकि हम उनकी स्वैच्छिक गरीबी और विनम्रता को सीख सकें।" और संत साइप्रियन कहते हैं: 'उन्हें खलिहान में रखा गया है ताकि हम, एक पशुवत जीवन शैली को त्यागकर, घास (पाप के सुख) से नहीं, बल्कि स्वर्गीय रोटी से पोषित हों।' और थियोडोरेट भी कहते हैं: 'ईश्वर का वचन खलिहान में रखा गया है ताकि जो

---

[234] पेलुसियम के पूजनीय इसिडोर, 5वीं शताब्दी के एक मिस्र के तपस्वी, 200 पत्रों के लेखक जिनमें उन्होंने पवित्र धर्मग्रंथ के कई अंशों की व्याख्या की है। उनका पर्व दिवस 4 फरवरी को मनाया जाता है।

[235] फाबियोला, एक कुलीन रोमन महिला और धन्य जेरोम की शिष्या, जिनके साथ उनका पत्र-व्यवहार था।

बोलते हैं और जो नहीं बोलते (अर्थात्, धर्मी और पापी) दोनों ही स्वतंत्र रूप से और बिना किसी बाधा के उद्धार करने वाले भोजन में भाग ले सकें।' [236]

प्रभु के תיבה का रहस्य ऐसा ही है, और उद्धारकर्ता के संसार में आगमन का स्पष्ट संकेत ऐसा ही है, जैसा स्वर्गदूत ने चरवाहों को बताया था: תיבה में लेटा हुआ लपेटा हुआ शिशु। और सचमुच यह एक बड़ा संकेत है, क्योंकि यह महान रहस्यों से भरा है, जैसा कि हमने पहले ही सुना है।

अतः सारी सृष्टि हमारे लिए जन्मे उस दिव्य शिशु को सम्मान, कृतज्ञता और पूजा अर्पित करे, और सारी पीढ़ियाँ सदा के लिए उनकी जन्मदात्री, परम पवित्र और परम धन्य कुँवारी मरियम की महिमा और स्तुति करें। आमीन।

मगसिसों द्वारा पूजा की कथा

25 दिसंबर को स्मरण किया जाता है

[237]'यीशु यहूदा के बेतलहम में राजा हेरोद के दिनों में जन्मे... और पूर्व से मगि आए' (मत्ती 2:1) – न किसी एक पूर्वी देश से, बल्कि विभिन्न देशों से, जैसा कि पवित्र पिताओं की रचनाओं से स्पष्ट है, जो इस विषय में विभिन्न प्रकार से लिखते हैं। उनमें से कुछ का मानना है कि मगिध ईरान से थे[238] ; यह मत सेंट क्रिसोस्टोम, सेंट सिरिल ऑफ़ अलेक्जेंड्रिया, थियोफिलैक्ट और अन्य लोगों का है – इस आधार पर कि ज्योतिष की कला विशेष रूप से उसी देश में फलती-फूलती थी[239] और वहाँ कोई भी इस कला का अध्ययन किए बिना राजा नहीं बन सकता था। हालांकि, अन्य लोगों का मानना है कि मगिस् अरब के थे[240] ; यह विचार सेंट जस्टिन द मार्टायर[241] , सेंट साइप्रियन और सेंट एपिफेनियस का है – इस आधार पर कि यह देश सोने, लबान और मुर्रा में बहुत समृद्ध था[242] । और कुछ का मानना है कि मगिस् इथियोपिया से आए थे[243] ; क्योंकि शेबा की रानी, यानी इथियोपियाई रानी, एक बार वहाँ से यरूशलेम सोलोमन की बुद्धि सुनने आई थी[244] , जो धन्य जेरोम की व्याख्या के अनुसार, वर्तमान घटना का पूर्वाभास था, अर्थात्: मगों का आध्यात्मिक सोलोमन - मसीह के पास आना, जो परमेश्वर की बुद्धि हैं (धन्य जेरोम, यशायाह नबी पर भाष्य)। और दाऊद कहते हैं: *'इथियोपिया परमेश्वर की ओर अपने हाथ फैलाएगा'* (भजन संहिता 67:32)। इसके अलावा, उल्लिखित सभी देश—जो एक-दूसरे के पूर्वी और पड़ोसी थे—सोने, लेबनान और मसालों से भरपूर थे; उन सभी में जादू-टोने और ज्योतिष का प्रचलन व्यापक था; इसके अलावा, इन देशों के बुद्धिमान लोग बालाक की उस भविष्यवाणी से अनभिज्ञ नहीं थे, जो उस तारे के बारे में थी जो चमकेगा, यह एक ऐसी भविष्यवाणी थी जो पीढ़ी दर पीढ़ी उनके बीच आंशिक रूप से मौखिक रूप से और आंशिक रूप से लिखित रूप में चली आ रही थी। कोई यह सोच सकता है कि सबसे संभावित व्याख्या यह है कि मगों में से एक फारस का, दूसरा अरब का और तीसरा इथियोपिया का था, क्योंकि दाऊद की भविष्यवाणी में विभिन्न देशों से उनकी उत्पत्ति का

---

[236] धन्य थियोडोरेट, सीरिया के सिरिनस के बिशप, जो विशेष रूप से पवित्र धर्मग्रंथ पर अपनी टीकाओं के लिए जाने जाते हैं। वे 5वीं शताब्दी में रहते थे।

[237] बिलाम – एक भविष्यवक्ता जिसे मोआब के राजा बालक ने यहूदियों को शाप देने के लिए मेसोपोटामिया से बुलाया था, लेकिन जिसने परमेश्वर की आत्मा के अचानक हस्तक्षेप से यहूदी लोगों पर आशीष का उच्चारण किया और ऐसा करते हुए मसीहा के आगमन की भविष्यवाणी की (याकूब के तारे के संबंध में बिलाम की भविष्यवाणी)। गिनती 22:23–24 देखें।

[238] पर्सिया – एक देश जो एक ओर अरब और एशिया माइनर, तथा दूसरी ओर भारत और तुर्केस्तान के बीच स्थित था।

[239] यह कला लोगों के भाग्य का निर्धारण करने और तारों तथा अन्य खगोलीय पिंडों की गति और उनकी विभिन्न स्थितियों के आधार पर भविष्य की घटनाओं की भविष्यवाणी करने में निहित थी।

[240] अरबिया, दक्षिण-पश्चिमी एशिया का एक विशाल देश, जो सीरिया और फिलिस्तीन के दक्षिण में प्रायद्वीप पर स्थित है।

[241] संत जस्टिन शहीद, जो पहले एक मूर्तिपूजक थे, बाद में ईसाई धर्म में परिवर्तित हो गए और उन्होंने अपने ईसाई विश्वास के साथ दर्शनशास्त्र का अध्ययन जोड़ा। उनकी रचनाओं में विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं ईसाइयों के पक्ष में सम्राटों एंटोनिनिस पियस और मार्कस ऑरेलियस को प्रस्तुत किए गए दो रक्षा भाषण (या अपोलॉजी), साथ ही यहूदी ट्रिफो के साथ उनका संवाद। सेंट जस्टिन ने मार्कस ऑरेलियस के उत्पीड़न के दौरान शहादत प्राप्त की। चर्च द्वारा उनका पर्व दिवस 1 जून को मनाया जाता है।

[242] लेबनान – पूजा में धूप के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला एक प्रकार का सुगंधित राल। लोहबान – पौधे की उत्पत्ति का एक सुगंधित पदार्थ (लोहबान के पेड़ की छाल से निकलने वाला रस), जिसका उपयोग मृतकों के दफ़न और शरीर को सड़ने से बचाने के लिए किया जाता है।

[243] इथियोपिया, अफ्रीका में लाल सागर के तट पर स्थित एक देश, जिसे अब अबिसिनिया के नाम से जाना जाता है।

[244] देखें 3 राजा 10:1–13।

संकेत मलिता है, जहाँ कहा गया है: *'फारस और द्वीपों के राजा उसे कर देंगे; अरब और शेबा के राजा उपहार लाएंगे'* (भजन संहति 71:10)। यह मसीह के पास उपहार लेकर आने वाले मगों के बारे में दाऊद की भवष्यिवाणी थी, जैसा कि पवित्र शास्त्रों के व्याख्याकार सुझाते हैं। दाऊद के शब्द: 'फारसियों के राजा' का अर्थ है 'समुद्र के पार से', क्योंकि 'फारसि' का अर्थ है 'समुद्र'; इस प्रकार, यहाँ फारस को समुद्र के उस पार स्थति समझना चाहिए[245] । 'अरब के राजा' स्पष्ट रूप से अरब को संदर्भति करता है। और दाऊद इथयिोपयिा को संदर्भति करते हैं जब वे कहते हैं: 'और शेबा उपहार लाएगी', क्योंकि शेबा एक ऐसा शहर है जो पूरे इथयिोपयिा की राजधानी है। इस प्रकार, वे तीनों मग थे, जो फारस, अरब और इथयिोपयिा से थे। उन्हें 'मग' कहा जाता है, न कि इस अर्थ में कि वे दैवीय जादू-टोने और दुर्भावनापूर्ण जादू में लगे लोग थे, बल्कि इसलिए क्योंकि अरबों, सीरयिाई, फारसयिों, इथयिोपयिाई और अन्य पूर्वी लोगों में अपने बुद्धमिान और ज्योतषियिों को 'मग' कहना प्रचलन था। और ये मागी जादूगरों और जादू-टोना करने वालों में से नहीं थे, बल्कि सबसे बुद्धमिान ज्योतषियिों और दार्शनकिों में से थे[246] । उन्हें 'राजा' भी इसलिए कहा जाता है, न कि शक्तशिाली राजाओं और कई देशों के शासकों के अर्थ में, बल्कि इसलिए कि उनमें से प्रत्येक को अपना शहर या एक वशिष्टि राज्य प्राप्त हुआ था। क्योंकि पवित्र शास्त्र व्यक्तगित शहरों के शासकों को 'राजा' कहने की प्रथा रखता है, जैसा कि उत्पत्ति 14 से स्पष्ट है। जहाँ तक इन राजाओं के उन सटीक शहरों का सवाल है, जहाँ से वे आए थे, इस बारे में कोई वश्विसनीय जानकारी नहीं है; यह केवल इतना ज्ञात है कि वे पूर्वी देशों से थे और उनकी संख्या तीन थी, जो उनके द्वारा लाए गए तीन उपहारों: सोना, लहसुन और मूर्रा से मेल खाती है। यद्यपि उनमें से प्रत्येक अपने-अपने देश से रवाना हुआ, तथापि, एक ही तारे के मार्गदर्शन में, वे ईश्वर की व्यवस्था से, अपनी यात्रा के दौरान एक साथ आए और, एक-दूसरे के इरादों को जानकर, उस तारे का अनुसरण करते हुए एक साथ यात्रा की, जसिके बारे में सबसे प्रसद्धि ज्योतषिी बलिाम ने एक बार भवष्यिवाणी की थी, कहते हुए: *'यहोशापाट से एक तारा उदय होगा, और इस्राएल से एक राजदण्ड उठेगा'* (गनिती 24:17)। तो, यह तारा क्या था? क्रसिोस्टोम और थयिोफलिैक्ट का मानना है कि यह स्वर्गीय या दृश्यमान प्रकाशमानों में से एक नहीं था, बल्कि एक तारे के स्थान पर प्रकट हुई एक दव्यि और दैवीय शक्ति थी। क्योंकि सभी तारे संसार की सृष्टि के समय से ही मौजूद हैं, जबकि यह तारा युगों के अंत में, परमेश्वर के वचन के अवतार के समय प्रकट हुआ। सभी तारों की अपनी जगह स्वर्ग में है, लेकनि यह तारा हवा में दखिाई देता था; सभी तारे आमतौर पर पूर्व से पश्चमि की ओर चलते हैं, लेकनि यह तारा असामान्य रूप से पूर्व से दक्षणि की ओर, यरूशलेम की ओर बढ़ा; सभी तारे केवल रात में चमकते हैं, फरि भी यह तारा दनि में भी सूर्य की तरह चमका, और अपने तेज और भव्यता दोनों में स्वर्गीय तारों से अतुलनीय रूप से श्रेष्ठ था; सभी तारों का, अन्य खगोलीय पंडिों—सूर्य, चंद्रमा और स्वर्गीय पंडिों के पूरे क्षेत्र—के साथ, अपना एक नश्चिति गति और मार्ग होता है, जबकि यह तारा कभी चलता था और कभी स्थरि रहता था, जैसा कि थयिोफलिैक्ट कहते हैं: 'जब मगस्त्री यात्रा कर रहे थे, तो तारा उनके साथ चलता था, और जब वे वश्राम करते थे, तो वह भी स्थरि रहता था'। जहाँ तक तारे के प्रकट होने के समय का प्रश्न है, वभिन्नि टीकाकारों की अलग-अलग राय है: कुछ कहते हैं कि यह कुँवारी से उद्धारकर्ता के जन्म की उसी रात और उसी घड़ी प्रकट हुआ, लेकनि यह दृष्टकिोण अवश्विसनीय है; क्योंकि यदि तारा उस समय प्रकट हुआ होता, तो मगस्त्रियों ने इतनी कम अवधि में इतनी दूर से यरूशलेम तक की यात्रा कैसे की होती? दव्यि शशिु के जन्म के चालीस दनि बाद, और मंदरि में वधिवित शुद्धकिरण संस्कार संपन्न होने के पश्चात्, यूसुफ़ बनिा कसिी देरी के नासरत स्थति अपने घर से नकिल पड़े, साथ में केवल यात्रा के लिए आवश्यक सामान लेकर, और मस्रि की ओर बढ़ चले। हालाँकि कुछ लोग कहते हैं कि उन ज्योतषियिों ने तेज घोड़े लिए और बहुत तेज़ी से यात्रा करके, मसीह के जन्म के 13वें दनि बेथलहम पहुँचे, फरि भी यह अवश्विसनीय है। आखरिकार, वे राजा थे, तेज यात्री नहीं, और वे उपहारों और कई सेवकों के साथ यात्रा करते थे, जैसा कि उनके शाही पद और सम्मान के अनुरूप था, साथ ही जानवरों और यात्रा के लिए आवश्यक सामान के साथ; तो फरि फारस, अरब और इथयिोपयिा से बेथलहम शहर तक 13 दनिों में पहुँचना कैसे संभव हो सकता था? इसके अलावा, हेरोद द्वारा उन्हें कुछ समय के लिए यरूशलेम में रोका गया था, जब तक कि मुख्य याजकों और शास्त्रयिों से परामर्श करने के बाद यह स्पष्ट नहीं हो गया कि मसीह यहूदयिा के बेतलहम में पैदा होने वाले थे। हालांकि, अन्य टीकाकार, जनिमें संत एपफिानयिस भी शामलि हैं, का मानना है कि तारा मसीह के जन्म के समय दखिाई

---

[245] यह कहना पूरी तरह से सटीक नहीं है कि फारस, फलिस्तीन के समुद्र के पार है, क्योंकि फारस की खाड़ी फारस को केवल अरब से अलग करती है।

[246] दार्शनकि वे लोग थे जो दुनयिा और मानव जाति की उत्पत्ति से संबंधति प्रश्नों, साथ ही सद्गुण की प्रकृति, अस्तित्व में आने वाली सभी चीजों के अंतमि उद्देश्य, मानव जीवन के अर्थ और कई अन्य मामलों का अध्ययन करते थे।

दयिा था, लेकनि मगसि दो साल बाद उनकी पूजा करने आए और उन्होंने मसीह बालक को पहले से ही दो साल का पाया। यह दृष्टकिोण इस तथ्य पर आधारति है कि हेरोद ने मगों से सावधानीपूर्वक पता लगाए गए समय के अनुसार, दो साल और उससे कम उम्र के शशिुओं की हत्या का आदेश दयिा था। लेकनि संत थयिोफलिैक्ट स्पष्ट रूप से इस वचिार को 'गलत' ( ) कहते हैं, क्योंकि चर्च का एक ऐसा दृष्टकिोण है जसिे सभी स्वीकार करते हैं, जसिके अनुसार उन मगों ने बेथलहम में मसीह की पूजा तब की जब वह अभी भी गुफा में थे; और दो साल बाद, मसीह न केवल बेथलहम में नहीं थे, बल्कि वे फलिस्तिीन में भी नहीं थे, बल्कि मस्रि में थे। क्योंकि, जैसा कि कहा जाता है, संत लूकस की गवाही के अनुसार, मंदरि में चालीसवें दनि की शुद्धि के बाद, जहाँ वृद्ध सिमीओन प्रभु से मलि, और प्रभु के वधिान के अनुसार सब कुछ हो जाने के बाद, संत जोसेफ और सर्वपवत्रि कुँवारी मरयिम, शशिु के साथ, तुरंत यहूदयिा में नहीं, बल्कि गलील लौट गए; वे बेतलहम में नहीं, बल्कि अपने नगर नासरत लौट गए; और नासरत से, स्वर्गदूत के आदेश पर, वे मस्रि के लिए रवाना हो गए। तो फरि, दो साल बाद, मगस्सियिों ने बेतलहम में मसीह को कैसे खोज लयिा होगा? प्राचीन यूनानी इतहिासकार नकिफिोरस ([247]) बताते हैं कि तारा जन्म से दो साल पहले पूर्व में दखिाई दयिा था, और मगस्सियिों ने यरूशलेम तक दो साल की यात्रा की, ताकि वे जन्म के ठीक उसी घड़ी पहुँच गए। जाहरि है, यह इतहिासकार भी सुसमाचार में दो साल और उससे कम उम्र के बच्चों के कत्लेआम के बारे में लखिी बात से सहमत है, लेकनि उसका ववरिण भी अवश्वसनीय है। क्योंकि उन ज्योतषियिों को पूर्वी देशों से दो साल की यात्रा की क्या आवश्यकता थी, जहाँ से कोई दो या तीन महीनों में यरूशलेम पहुँच सकता है? भले ही उन्होंने राजाओं के अनुरूप धीरे और लंबे समय तक यात्रा की हो, फरि भी यह अवश्वसनीय है कि उन्होंने यात्रा पर छह या सात महीने से अधकि समय बतिाया होगा, क्योंकि पूर्वी देश—जैसे फारस, अरब और इथयिोपयिा—यरूशलेम से इतने दूर नहीं हैं कि उनके और उस शहर के बीच की यात्रा में दो साल लग सकते हैं। तो तारे के प्रकट होने के समय के संबंध में कौन सा दृष्टकिोण वश्वसनीय है? मेरा मानना है कि यह संत जॉन क्रसिोस्टोम और थयिोफलिैक्ट का दृष्टकिोण है। ये चर्च फादर्स कहते हैं: 'तारा मसीह के जन्म से पहले मगों को दखिाई दयिा। चूँकि उन्हें यात्रा में बहुत समय बतिाना था, इसलिए तारा उन्हें उद्धारकर्ता के जन्म से बहुत पहले दखिाई दयिा, ताकि जब वे बेथलहम पहुँचे, तो वे मसीह की पूजा कर सकें जब वह अभी भी लपेटों में थे। हम ध्यान दें कि ये चर्च फादर्स उस तारे के लिए दो साल की अवधि नरि्दष्टि नहीं करते हैं, बल्कि केवल 'काफी पहले' कहते हैं, जैसे कि 'कई महीने' कहना हो। क्रसिोस्टोम और थयिोफलिैक्ट की इस व्याख्या के आधार पर—जसिके अनुसार तारा मसीह के जन्म के समय से पहले दखिाई दयिा था—यह समझना उचति है कि ठीक उसी दनि और घड़ी पर, जब महादूत की घोषणा और पवत्रि आत्मा की प्रेरणा से, वचन देहधारी हुआ, जो जन्म से नौ महीने पहले, कुँवारी के नष्किलंक गर्भ में गर्भधारी हुआ था, तारा पूर्व में प्रकट हुआ। इसे इस प्रकार समझने से, हम उपर्युक्त शक्षिकों की गवाही से वचिलति नहीं होंगे और, साथ ही, हम उस अवश्वसनीय धारणा को खारजि कर देंगे कि मगस्सियिों को अपनी यात्रा में दो साल की देरी हुई थी; जहाँ तक मारे गए शशिुओं की दो साल की आयु का प्रश्न है, इस पर आगे उनके स्मरण दविस पर चर्चा की जाएगी। तो, जैसा कि हमने अभी कहा है, मसीह के जन्म से नौ महीने पहले, घोषणा के समय, मगों ने पूर्व में एक तारा देखा और, शुरू में, आश्चर्य और हैरानी में, इस बात पर वचिार कयिा कि यह कसि प्रकार का तारा हो सकता है। क्या यह कसिी प्रकार का उल्का पडि[248] था, जो आकाश में चमक रहा था और कसिी दुर्भाग्य का संकेत दे रहा था, ठीक वैसे ही जैसे धूमकेतु करते हैं[249] ? और वास्तव में, उस तारे ने उन देशों में हत्यारे दुश्मन के लिए दुर्भाग्य का पूर्वाभास दयिा, अर्थात्: मूर्तयिों का पतन, राक्षसों का नष्किासन, और पवत्रि धर्म का उज्ज्वल प्रकाश। तब, यह समझते हुए कि यह तारा कोई संयोग नहीं बल्कि दैवीय स्वभाव और दैवीय समानता वाला था, मगों ने बालाक की प्राचीन भवष्यिवाणी को याद कयिा, और एरट्रियिा की भारतीय सबिलि[250] द्वारा उसी तारे के बारे में बताई गई बात से भी प्रबुद्ध हुए; और, वशिेष रूप से, जैसा कि रोम के पोप, संत लयिो, बताते हैं, स्वयं

---

[247] नकिफ़ोरस कैलस्टिोस, 14वीं सदी के एक ग्रीक इतहिासकार, जन्होंने हमें अपनी *चर्च का इतहिास* (*History of the Church*) प्रदान की।

[248] उल्कापडि – नवीनतम सद्धिांत के अनुसार, एक वखिंडति ग्रह (ग्रह एक चलता हुआ तारा है) के टुकड़े, जो कभी-कभी पृथ्वी की सतह पर गरिते हैं।

[249] धूमकेतु एक खगोलीय पडि है जो आकाश में नयिमति मार्ग का अनुसरण नहीं करता है, बल्कि लंबे अंतराल पर दखिाई देता है। प्राचीन मान्यताओं के अनुसार, वभिन्नि समयों पर धूमकेतुओं ने वभिन्नि आपदाओं और दुर्भाग्यों की भवष्यिवाणी की है।

[250] एरथि्रयिन सबिलि, अर्थात् एरथि्रे शहर की, जो शायद इथयिोपयिा में लाल सागर के तट पर स्थति था, जसिे अब अबसिनियिा के नाम से जाना जाता है। यहाँ, एरथि्रयिन सबिलि को गलत तरीके से भारतीय कहा गया है। – हालाँकि, तीन अन्य एरथि्रे भी थे: एक ग्रीस में, बोएशयिा में; दूसरा एशयिा माइनर में; और तीसरा एटोला में।

ईश्वर द्वारा गुप्त रूप से यह निर्देश दिए जाने के बाद कि संपूर्ण ब्रह्मांड के प्रभु और राजा के जन्म का समय आ गया है, जिनका जन्म इस्राएल में होना था, ठीक वैसे ही जैसे बिलाम ने भविष्यवाणी की थी: *'इस्राएल से एक पुरुष उत्पन्न होगा'* (गिनती 24:17), – और यह उसी का तारा था, जिसकी पुराने समय से भविष्यवाणी की गई थी। निस्संदेह यह मानते हुए कि वास्तव में ऐसा ही था, और यात्रा की सभी तैयारियाँ करने के बाद, वे अपनी-अपनी भूमि से निकल पड़े और, जैसा कि पहले ही कहा जा चुका है, अपनी यात्रा के दौरान एक-दूसरे से मिले और सामंजस्य के साथ आगे बढ़े। इस बीच, तारे के प्रकट होने के नौ महीने का समय समाप्त होने को था, और मसीह के जन्म का समय नज़दीक आ रहा था। वे फ़िलिस्तीन की सीमाओं के पास पहुँचे और अंततः मसीह के जन्म के दिन ही यहूदिया की राजधानी—यरूशलेम—पहुँचे। जैसे ही वे यरूशलेम के पास पहुँचे, वह तारा जो उनका मार्गदर्शन कर रहा था , अचानक दृष्टि से ओझल हो गया; क्योंकि यदि वही तारा यरूशलेम में चमका होता, तो लोग निश्चित रूप से उसे देखते और उसका अनुसरण करके मगों के साथ मसीह के पास चले जाते। तब हेरोद और सनेगॉग के ईर्ष्यालु यहूदी नेताओं दोनों को पता चल जाता कि नवजात मसीह कहाँ थे, और ईर्ष्या के कारण वे समय से पहले ही उनकी हत्या कर देते। लेकिन ईश्वर की व्यवस्था, जो हमारे उद्धार का सर्वोत्तम प्रबंध करती है, ने तारे को अदृश्य होने का आदेश दिया—आंशिक रूप से ताकि शिशु की खोज करने वाले गुफा का स्थान न खोज सकें, आंशिक रूप से क्योंकि दुष्ट यहूदी लोगों की आँखें उस अद्भुत तारे को देखने के अयोग्य थीं, और आंशिक रूप से उनकी आस्था की परीक्षा के लिए: – कि क्या वे उन ज्योतिषियों के शब्दों पर विश्वास करेंगे जिन्होंने मसीहा के आगमन की घोषणा की थी, और क्या वे मसीहा, संसार के उद्धारकर्ता को जानना चाहेंगे; और यदि वे ऐसा नहीं करते, तो यह उनके लिए और भी बड़ी निंदा का कारण बने। इस प्रकार धन्य थियोफिलैक्ट इस मामले पर तर्क करते हैं: वे कहते हैं, 'ज्योतिषी किस उद्देश्य से आए थे? यहूदियों की निंदा के लिए; क्योंकि यदि मगिस, जो मूर्तिपूजक थे, विश्वास कर गए, तो यहूदी क्या उत्तर दे सकते हैं? मगिस मसीह की पूजा करने के लिए इतने दूर के देशों से आए, जबकि यहूदियों ने, उनके बीच होते हुए भी, उनका उत्पीड़न किया।"

मगि यरूशलेम की राजधानी में प्रवेश करते ही, नवजात राजा के बारे में पूछा: *'यहूदियों का वह राजा कहाँ है जो जन्मा है? क्योंकि हमने पूर्व में उसका तारा देखा है और उसकी आराधना करने आए हैं'* (मत्ती 2:2)। और तुरंत ही यह समाचार लोगों को चकित कर गया और राजा हेरोद तथा यरूशलेम के सभी शासकों को बेचैन कर दिया। राजा ने सभी मुख्य याजकों और शास्त्रियों को इकट्ठा करके उनसे पूछा:

'मसीह कहाँ जन्म लेगा?'

उसे डर सताने लगा कि कहीं उसका राज्य उससे छीन न लिया जाए, और वह इस बात पर विचार करने लगा कि वह नवजात राजा को कैसे मार डाले। यह जानकर कि मसीह का जन्म बेतलहम में होना है, उसने मगिस को बुलाया और उनसे तारे के प्रकट होने के समय के बारे में पूछताछ की। तब, अपनी धूर्तता छिपाते हुए, एक अधर्मी विचार और एक दुष्ट इरादा मन में रखकर, उसने चालाकी से कहा:

'जाकर उस बालक के विषय में ठीक-ठीक पता लगाओ; और जब तुम उसे पा लो, तो मुझे समाचार देना, ताकि मैं भी आकर उसे दण्डवत करूँ' (मत्ती 2:8)।

जब मगिस ने यरूशलेम छोड़ दिया, तो जो तारा उनका मार्गदर्शन कर रहा था, वह तुरंत प्रकट हुआ और उनके आगे-आगे चला, और वे उसके फिर से प्रकट होने पर बहुत प्रसन्न हुए। और वह उनके आगे-आगे तब तक चला जब तक कि उसने उन्हें बेतलहम, गुफा तक नहीं पहुंचा दिया, और उस स्थान के ऊपर आकर ठहर गया जहाँ शिशु लेटा था। तारा उस निवास के ऊपर आकर ठहर गया जहाँ शिशु लेटा था; अर्थात्, वह ऊपर से उतरकर पृथ्वी के निकट आ गया। अन्यथा, यदि वह और नीचे नहीं आता, तो यह जानना असंभव होता कि वह किस स्थान के ऊपर था। संत क्रिसोस्टोम के अनुयायी, धन्य थियोफिलिक्ट की भी यही राय है: वे कहते हैं, 'यह एक असाधारण संकेत था, क्योंकि तारा ऊँचे से उतर आया और, पृथ्वी पर आकर, मगों को स्थान दिखा गया। क्योंकि यदि वह ऊँचे पर ही रहता, तो वे यह कैसे जानते कि मसीह किस विशेष स्थान पर थे? क्योंकि प्रत्येक तारा कई स्थानों का अधिष्ठाता होता है। जिस प्रकार आप अक्सर अपने घर के ऊपर चंद्रमा को देखते हैं, उसी प्रकार मुझे लगता है कि यह मेरे घर के ऊपर है, और सभी को ऐसा ही लगता है, अर्थात्: मानो चंद्रमा या कोई तारा केवल उनके ऊपर ही ठहरा हो। इसी तरह, वह तारा मसीह की ओर स्पष्ट रूप से इशारा नहीं कर सकता था यदि वह नीचे आकर शिशु के सिर के ऊपर नहीं रुका होता।" और इस चमत्कार से यह स्पष्ट है कि वह तारा आकाशमंडल के तारों में से एक नहीं था, बल्कि ईश्वर की एक विशेष शक्ति थी। इस प्रकार, जब वे घर में प्रवेश किए, तो मगिस ने उसी को पाया जिसकी वे तलाश कर रहे थे, जैसा कि सुसमाचार में वर्णित है। इसी आधार पर, कई लोगों का

मानना है कि उन्होंने मसीह को किसी गुफा में नहीं, बल्कि शहर के घरों में से एक में पाया, क्योंकि सुसमाचार में गुफा के बजाय एक घर का उल्लेख है। इस दृष्टिकोण के अनुसार, सुसमाचार ऐसा कहता प्रतीत होता है: 'जब जनगणना के लिए आए लोगों की भीड़ तितर-बितर हो गई, तो बेथलहम के नागरिकों के लिए सार्वजनिक आवास और अन्य घर उपलब्ध हो गए; तब ही माता और शिशु को गुफा से निकालकर एक घर में ले जाया गया। लेकिन पवित्र शहीद जस्टिन, क्रिसोस्टोम, निस्सा के ग्रेगरी और जेरोम का कहना है कि प्रभु अपनी शुद्धि के समय तक उसी गुफा में रहे जहाँ उनका जन्म हुआ था, जो चालीसवें दिन हुआ था, और वहीं मगसि ने उन्हें पाया था। और ऐसा इसलिए हुआ ताकि सांसारिक राजा यह सीख सकें कि नवजात राजा का राज्य गरीबी, विनम्रता और सांसारिक महिमा के अस्वीकार में निहित है, न कि धन-संपत्ति, व्यर्थता और महलों में। इसका उद्देश्य यह भी था कि उनका विश्वास और भी स्पष्ट रूप से प्रकट हो, जिसके कारण उन्होंने उसे पाकर न तो अपनी यात्रा पर पछतावा किया और न ही शिकायत की—उसके लिए उन्होंने इतनी लंबी यात्रा की थी और उसे शाही महलों में खोजने की आशा की थी—इतनी गरीबी में।

गुफा में प्रभु को पाकर, मगसियों ने गिरकर उनकी आराधना की; अर्थात्, केवल भक्ति से नहीं, बल्कि ईश्वर के योग्य आराधना के साथ, न केवल एक मनुष्य के रूप में बल्कि ईश्वर के रूप में भी, क्योंकि, जैसा कि संत आइरेनियस और पोप लियो कहते हैं: वे मगसि, जो प्रभु की कृपा से रहस्यमय रूप से प्रबुद्ध थे, शिशु को देखकर पहचान गए और विश्वास कर लिया कि वह परमेश्वर थे, और इसलिए उन्होंने उनकी न केवल राजा के रूप में, बल्कि परमेश्वर के रूप में भी आराधना की - परमेश्वर के योग्य आराधना के एक रूप से। इसीलिए लिखा है: *"वे गिरे पड़े और अपने खजाने खोलकर, उन्होंने उसे उपहार भेंट किए"* (मत्ती 2:11), इस आज्ञा को पूरा करते हुए: *'वे प्रभु के सामने खाली हाथ न आएं* (निर्गमन 23:15)। तो, ये उपहार क्या थे? सोना, लोबान और मूर: सोना एक राजा के लिए, लोबान परमेश्वर के लिए, और मूर एक नश्वर मनुष्य के लिए (धन्य थियोफिलैक्ट)। क्योंकि यहूदी मृतक के शरीर पर मूर को लगाते थे, ताकि वह अक्षुण्ण बना रहे। इस प्रकार तीनों राजाओं ने त्रिमूर्ति के एक सदस्य को तीन उपहारों से सम्मानित किया, और इन उपहारों के माध्यम से उन्होंने उनमें दो स्वभावों की स्वीकारोक्ति की। संत लियो इस बारे में निम्नलिखित कहते हैं: वे ईश्वर के लिए धूप, मनुष्य के लिए मिसिक, और राजा के लिए सोना लाते हैं, और इस प्रकार एकता में दैवीय और मानवीय स्वभावों का सही मायने में सम्मान करते हैं; वे इसे अपने हृदय में मानते हैं और अपने उपहारों के माध्यम से इसका प्रचार करते हैं।'

उन्हें एक स्वर्गदूत से स्वप्न में यह संदेश मिला कि वे हेरोद के पास न लौटें—जो दुष्टता से षड्यंत्र रच रहा था और नवजात राजा को मारने का इरादा रखता था—तो मगसियों ने एक अलग मार्ग से, प्रत्येक अपने-अपने देश में वापसी की, और वहाँ मसीह के शिक्षक और प्रचारक बन गए, निकिफोरोस की विश्वसनीय गवाही के अनुसार, क्योंकि, परमेश्वर के पुत्र मसीह के संसार में आगमन का प्रचार करते हुए, उन्होंने लोगों को उसी में विश्वास करना सिखाया, जैसे उन्होंने स्वयं विश्वास किया था, और इसमें कोई संदेह नहीं है कि अपनी मृत्यु के बाद उन्हें संतों में गिने जाने के योग्य समझा गया। और उनके नाम ये हैं: पहला – मेल्चियोर, एक बूढ़ा आदमी जिसके सफेद बाल, लंबे बाल और दाढ़ी थी; उसने राजा और प्रभु के लिए सोना लाया। दूसरे थे गैस्पार, युवा और बिना दाढ़ी वाले, सुर्ख रंगत वाले; उन्होंने मनुष्य बने ईश्वर के लिए लोबान लाया। तीसरे थे बालथासर, गहरे रंगत वाले, लंबी दाढ़ी वाले; उन्होंने नश्वर मनुष्य के पुत्र के लिए मूर लाया। कई वर्षों के बाद, उनके शरीरों को पहले कॉन्स्टेंटिनोपल, फिर मिलान ([251]) और फिर कोलोन ([252]) ले जाया गया, मसीह ईश्वर के अवतार के सम्मान में, जिनके प्रति, उनकी माता के साथ, हमसे सदैव और अनंत काल तक महिमा हो। आमीन।

कॉन्टाकियन, स्वर 6:

हे प्रभु, जो पिता से दिन के आरंभ से भी पहले, बिना माता के, उत्पन्न हुए, और जो आज स्वयं से बिना पिता के पृथ्वी पर अवतार धारण किए हैं: इसीलिए तारा मगों को शुभ समाचार सुनाता है, जबकि स्वर्गदूत, चरवाहों के साथ, हे अनुग्रह से परिपूर्ण, आपकी अकथनीय जन्म-कथा का गायन करते हैं।

---

[251] मेडियोलन, अब मिलान, उत्तरी इटली का एक शहर, प्राचीन लिगुरिया की राजधानी।

[252] कोलोन (प्राचीन कोलोनिया एग्रिप्पिना), जर्मनी में राइन नदी पर एक प्राचीन शहर है, जो अपने भव्य कैथेड्रल के लिए प्रसिद्ध है, जिसमें, पश्चिमी ईसाइयों की पवित्र मान्यता के अनुसार, तीन ज्योतिषियों के अवशेष रखे गए हैं। संत डेमेट्रियस भी कोलोन को इस अवशेष का संरक्षक मानते हैं।

8 जनवरी

26 दसिंबर (पुराना संस्करण)

बालक यीशु के साथ अतपिवत्रि कुँवारी मरयिम का मस्रि की ओर पलायन का वृत्तांत

26 दसिंबर को स्मरणोत्सव

जब ज्योतषियिों ने बेतलहम से प्रस्थान कर लयिा, प्रभु का एक स्वर्गदूत यूसुफ को स्वप्न में दखिाई दयिा, और उसे आज्ञा दी कि वह नवजात शशिु यीशु मसीह और उनकी माता, परम पवत्रि कुँवारी मरयिम, के साथ मस्रि भाग जाए और वहाँ तब तक रहे जब तक उसे लौटने के लिए कहा न जाए, क्योंकि हेरोद शशिु को नष्ट करने के लिए उसकी खोज करना चाहता था। यूसुफ उठे, शशिु और उनकी माता को रात में लेकर मस्रि के लिए रवाना हो गए। लेकनि पहले, मस्रि के लिए प्रस्थान करने से पहले, उन्होंने सोलोमन के मंदरि में प्रभु की व्यवस्था द्वारा नर्धिारति सभी बातों का पालन कयिा, क्योंकि परमेश्वर की अतपिवत्रि और नर्दिोष माता के शुद्धकिरण के दनि पहले ही आ चुके थे, और उसी मंदरि में वृद्ध समिीओन और भवष्यिवक्ता अन्ना ने हमारे प्रभु से भेंट की। तब, वधिि के अनुसार जो कुछ भी नर्धिारति था, उसे पूरा करने के बाद, यूसुफ़ नासरत, अपने घर चला गया। क्योंकि संत लूकस कहते हैं: *'और जब उन्होंने प्रभु की वधिि के अनुसार सब कुछ पूरा कर लयिा, तो वे गलील, अपने नगर नासरत लौट आए'* (लूका 2:39)। इससे स्पष्ट है कि वे बेतलहम से तुरंत मस्रि के लिए नहीं नकिले, बल्कि पहले प्रभु के मंदरि गए, फरि नासरत गए, और अंत में मस्रि गए। इसका प्रमाण संत थयिोफलिक्ट ने मत्ती के सुसमाचार पर अपनी टीका में भी दयिा है, जहाँ वे लखिते हैं: 'प्रश्न: यह कैसे है कि सुसमाचारकार लूका कहते हैं कि प्रभु अपने जन्म के चालीस दनि बाद और वृद्ध समिीओन द्वारा प्रभु को समर्पति कए जाने के बाद नासरत गए? फरि भी यहाँ संत मत्ती कहते हैं कि वह मस्रि से लौटने के बाद ही नासरत आए? उत्तर: जानए कि सुसमाचार लेखक लूका उस बात का उल्लेख करते हैं जसिे सुसमाचार लेखक मत्ती ने छोड़ दयिा था, अर्थात् कि प्रभु (जैसा लूका कहते हैं) अपने जन्म के बाद नासरत गए। दूसरी ओर, मत्ती इस बात का वर्णन करते हैं कि बाद में क्या हुआ, अर्थात्: कैसे हमारे प्रभु मस्रि भाग गए और कैसे, वहाँ से लौटने पर, वे नासरत वापस चले गए। आम तौर पर, सुसमाचार लेखक एक-दूसरे का खंडन नहीं करते हैं; बस इतना है कि लूका मसीह के बेतलहम से नासरत के लिए प्रस्थान के बारे में बात करता है, जबकि मत्ती उनके मस्रि से नासरत लौटने का वर्णन करता है।" इस प्रकार, प्रभु के मंदरि से नकिलने के बाद, पवत्रि यात्रयिों ने पहले नासरत के लिए प्रस्थान कयिा और तुरंत अपने घर के संबंध में व्यवस्था की; फरि, यात्रा के लिए आवश्यक सभी चीजें इकट्ठा करने के बाद, वे रात में जल्दी रवाना हो गए (ताकि उनके नकिटतम पड़ोसयिों को पता न चल जाए) मस्रि के मार्ग पर। वे अपने साथ सेवा के लिए, जोसेफ के सबसे बड़े बेटे जेम्स को भी ले गए, जन्हिें बाद में प्रभु का भाई कहा गया, जैसा कि 23 अक्टूबर के चर्च भजन से स्पष्ट है, जो इस प्रकार है: 'तू दव्यि रहस्यों का एक भाई, एक शष्यि और एक प्रत्यक्षदर्शी के रूप में प्रकट हुआ, जो उसके साथ भागकर मस्रि में यूसुफ के साथ था'[253] । इससे यह स्पष्ट है कि याकूब भी पवत्रि परविार के मस्रि के प्रवास पर उनके साथ गए, और यात्रा के दौरान उनकी सेवा की। और प्रभु आंशकि रूप से यह दखिाने के लिए मस्रि भाग गए कि वे एक सच्चे अवतारति मनुष्य हैं, न कि कोई आत्मा या प्रेत (जैसा कि संत एफ्रेम रूपांतरण पर अपने प्रवचन में इंगति करते हैं, जब वे कहते हैं: 'यदि वह मांस में नहीं होता, तो जोसेफ कसिके साथ मस्रि भाग गया?'); और आंशकि रूप से हमें मानव क्रोध और रोष से भागना सखिाने के लिए, बजाय इसके कि हम गर्व से उनका वरिोध करें। क्रसिोस्टोम भी इसी प्रकार समझाते हैं: उन्होंने कहा, 'अपनी पलायन में, प्रभु हमें क्रोध के आगे झुकना सखिाते हैं, यानी मानवीय क्रोध से भागना। और यदि सर्वशक्तमिान भागते हैं, तो हम, अपने अहंकार में, इससे यह सीखते हैं कि खुद को खतरे में न डालें।' मस्रि की ओर प्रभु के पलायन का उद्देश्य मस्रि को मूर्तयिों से शुद्ध करना भी था और, जैसा कि संत पोप लयिो कहते हैं, ताकि उसी भूमि में परम पवत्रि बलि का संस्कार तैयार कयिा जा सके जहाँ, पहली बार, मेम्ने के वध के माध्यम से, क्रूस के उद्धारक चहि्न और प्रभु के पासोवर का पूर्वसंकेत दयिा गया था।

---

[253] स्टचिरा पर, दूसरा स्टचिरा।

यह इसलिए भी था ताकि यशायाह की निम्नलिखित भविष्यवाणी पूरी हो सके: *'प्रभु एक हल्के बादल पर सवार होकर मिस्र आएंगे; और मिस्र के देवताओं की मूर्तियाँ उनकी उपस्थिति से काँप उठेंगी'* (यशायाह 19:1)। इस अंश में, संत अम्ब्रोज़ 'बादल' से सबसे पवित्र कुंवारी का संदर्भ लेते हैं, जिन्होंने प्रभु को अपनी बाहों में लेकर मिस्र की यात्रा की, और मिस्र के देवताओं की मूर्तियाँ गिर पड़ीं। वह बादल, परम पवित्र कुँवारी, प्रकाशमयी हैं, क्योंकि वे किसी भी पाप, सांसारिक इच्छा या विवाह के ज्ञान से मुक्त हैं।

यह भी वर्णित है कि जब धर्मी यूसुफ, परम पवित्र कुँवारी और शिशु यीशु मिस्र की यात्रा कर रहे थे, तो एक सुनसान जगह पर डाकुओं ने उन पर हमला किया; डाकुओं ने उनसे वह गधा छीनने की कोशिश की जिस पर वे अपनी यात्रा के लिए आवश्यक कुछ आवश्यक वस्तुएँ ले जा रहे थे, और जिस पर वे स्वयं कभी-कभी सवार होते थे। हालाँकि उन लुटेरों में से एक ने, असाधारण सुंदरता वाले शिशु को देखकर और उस सुंदरता पर चकित होकर, कहा:

'यदि ईश्वर मानव रूप धारण करें, तो वे इस बालक से अधिक सुंदर नहीं होना चाहेंगे।'

यह कहकर, उसने अपने साथियों, अन्य डाकुओं को रोक दिया और उन्हें इन यात्रियों को किसी भी तरह से नुकसान पहुँचाने की अनुमति नहीं दी। फिर परमेश्वर की अति पवित्र माता ने उस डाकू से कहा:

'जान लो कि इस शिशु ने तुम्हें उसकी रक्षा करने के लिए उदारतापूर्वक पुरस्कृत किया है।'

यह अपराधी वही था, जिसे बाद में मसीह के सूली पर चढ़ाए जाने के समय दाईं ओर सूली पर चढ़ाया गया था, और जिसे प्रभु ने कहा: *'आज तुम मेरे साथ स्वर्ग में होओगे'* (लूका 23:43)। और परमेश्वर की माता की भविष्यवाणी पूरी हुई कि 'यह बालक तुम्हें प्रतिफल देगा'।

जब वे मिस्र की भूमि में प्रवेश कर थेबाइड की सीमाओं के भीतर पहुँचे, तो वे हर्मोपोलीस शहर के पास पहुँचे[254]। इस शहर के प्रवेश द्वार के पास 'पर्सिया' नाम का एक बहुत ही सुंदर पेड़ था, जिसे स्थानीय निवासी, अपनी मूर्तिपूजक प्रथा के अनुसार, उसकी ऊँचाई और भव्य सुंदरता के कारण एक देवता के रूप में पूजित जाता था, उसकी पूजा की जाती थी और उसे बलिदान चढ़ाए जाते थे, क्योंकि उस पेड़ में एक राक्षस रहता था जिसे वे पूजते थे। जब परमेश्वर की अति पवित्र माता, दैवी शिशु के साथ, उस वृक्ष के पास पहुँचीं, तो वह तुरंत जोर से हिल गया, क्योंकि यीशु के आगमन से डरकर दानव भाग गया। और उस वृक्ष ने अपने मुकुट को सीधे जमीन तक झुका दिया, अपने स्रष्टा और उनकी माता, परम पवित्र कुँवारी को उचित श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए; इसके अलावा, इसने अपनी कई पत्तियों वाली शाखाओं की छाया से उन्हें तपती धूप से बचाया, इस प्रकार थके हुए, परम पवित्र यात्रियों को विश्राम करने में सक्षम बनाया। और इस झुकी हुई अवस्था में, वह पेड़ मिस्र में प्रभु के आगमन का एक स्पष्ट संकेत बना रहा। जब प्रभु, अपनी माता और यूसुफ के साथ, इस पेड़ के नीचे विश्राम कर चुके, तो इसमें चंगा करने की शक्ति आ गई, क्योंकि इसकी टहनियों से हर तरह की बीमारियाँ ठीक हो जाती थीं। इसके बाद, पवित्र यात्रियों ने पहले उस शहर और उसमें स्थित मूर्तिपूजक मंदिर में प्रवेश किया, और तुरंत ही सभी मूर्तियाँ जमीन पर गिर पड़ीं। पैलाडियस अपने *लौसाइओस*[255] में इस मंदिर का उल्लेख करते हैं: वे कहते हैं, 'हमने वहाँ (हर्मोपोलीस में) एक मूर्तिपूजक मंदिर देखा जिसमें, उद्धारकर्ता के आगमन के समय, सभी मूर्तियाँ जमीन पर लोटकर गिर पड़ीं। इसी प्रकार, 'सरिंस' नामक एक गाँव में, जब मसीह पवित्रतम माता के साथ एक मंदिर में प्रवेश किए, तो उसमें रखे तीन सौ पैंसठ मूर्तियाँ गिर पड़ीं।[256]

---

[254] थेबाइड प्राचीन मिस्र के शहर थेब्स का क्षेत्र है, जो प्राचीन काल में प्रसिद्ध था; इस नाम को इसके प्रमुख शहर के नाम पर पूरे ऊपरी (दक्षिणी) मिस्र के लिए भी लागू किया गया था। हर्मोपोलिस प्राचीन मिस्र के प्रमुख शहरों में से एक था, जो मूर्तिपूजा के एक प्रमुख धार्मिक केंद्र के रूप में कार्य करता था।

[255] हेलेनोपोलिस के पल्लाडियस (लगभग 368–430) गालाटिया के मूल निवासी थे; 388 में वह अलेक्जेंड्रिया पहुँचे, जहाँ से वे बाद में मौन में तपस्या करने के लिए पास के रेगिस्तान में चले गए, और बाद में बेथलहम चले गए; 399 में उन्हें एशिया माइनर के बिथिनिया में हेलेनोपोलिस का बिशप चुना गया। बाद में, सम्राट आर्कैडियस ने उन्हें सेंट जॉन क्रिसोस्टोम के समर्थक होने के कारण ऊपरी मिस्र में निर्वासित कर दिया, जहाँ से उन्हें 408 में एंटिनोए स्थानांतरित किया गया, और 412 में हेलेनोपोलिस में उनके पद पर बहाल कर दिया गया। 420 में, कैपाडोसिया के प्रीफेक्ट लाव्स के अनुरोध पर, उन्होंने पवित्र तपस्वियों के जीवन और उनके कार्यों के विवरणों का एक संग्रह संकलित किया, जिसे उन्होंने उनके सम्मान में 'लवसाइक' नाम दिया। – हेलेनोपोलिस के पल्लाडियस का स्मरणोत्सव चीज़ सैटरडे को होता है।

[256] परम पवित्र कुँवारी मरियम की शिशु यीशु और संत के साथ यात्रा से संबंधित सभी विवरण, तथा मसीह के जन्म से संबंधित विवरण, अपोक्रीफ़ल सुसमाचारों से लिए गए हैं, विशेष रूप से तथाकथित 'बाल्यकाल का सुसमाचार' से। मिस्र में धन्य कुँवारी मरियम और शिशु यीशु तथा संत की यात्रा और वहाँ उनके प्रवास का पूरा विवरण, साथ ही मसीह के जन्म से संबंधित विवरण, अपोक्रीफ़ल सुसमाचारों से लिए गए हैं, विशेष रूप से तथाकथित 'मसीहा के शिशुकाल का सुसमाचार' से और एक अपोक्रीफ़ल कृति से जिसे ' 'मरियम के जन्म का इतिहास और उद्धारकर्ता का बाल्यकाल' –

वास्तव में, मिस्र भर में, प्रभु के आगमन के समय, मूर्तियाँ चकनाचूर हो गईं और राक्षस उनसे भाग गए; और इस घटना में वह पूरा हुआ जिसकी भविष्यवाणी पवित्र भविष्यवक्ता यिर्मयाह ने मिस्र में रहते हुए की थी, जब उन्होंने कहा था: 'सभी मूर्तियाँ गिर जाएँगी, और देवताओं की सभी प्रतिमाएँ चकनाचूर हो जाएँगी जब कुँवारी माता यहाँ खलिहान में जन्मे शिशु के साथ आएँगी।' यरमियाह की इस भविष्यवाणी के समय से, मिस्रवासियों में एक रिवाज था कि वे कुँवारी को एक बिस्तर पर विश्राम करते हुए चित्रित करते थे, जिसके बगल में एक खलिहान में जन्मा शिशु लिपटों में लिपटा हुआ लेटा होता था, और इस प्रतिमा की पूजा करते थे। जब राजा टॉलेमी ने एक बार मिस्र के पुरोहितों से पूछा कि वे ऐसा क्यों करते हैं, तो उन्होंने जवाब दिया, 'यह एक रहस्य है जो एक पवित्र पैगंबर द्वारा हमारे सबसे प्राचीन पूर्वजों को प्रकट किया गया था, और हम उस भविष्यवाणी की पूर्ति और इस रहस्य के उद्घाटन की प्रतीक्षा कर रहे हैं।'

इसके बाद, पवित्र यात्री हर्मोपोलीस शहर से थोड़ा हटकर, रहने के लिए एक जगह की तलाश में 'नटारेआ' नामक एक गाँव में गए, जो हेलियोपोलिस से बहुत दूर नहीं था[257] । यूसुफ ने सबसे पवित्र कुँवारी मरियम को प्रभु यीशु के साथ इस गाँव के पास छोड़ दिया, जबकि वह स्वयं आवश्यक चीजें प्राप्त करने के लिए गाँव में चले गए। और वह अंजीर का पेड़, जिसने पवित्र यात्रियों को अपनी छाया में आश्रय दिया था, ऊपर से नीचे तक फट गया और अपने मुकुट को नीचे लाया, और मानो उनके सिरों पर एक छतरी या तंबू बना दिया: और नीचे, इसकी जड़ों में, उस दरार में आराम करने के लिए उपयुक्त एक तरह की खोह बन गई, और वहाँ सर्व पवित्र कुँवारी बालक के साथ लेट गईं और अपनी यात्रा से विश्राम किया। उस स्थान को आज भी बहुत श्रद्धा से देखा जाता है, न केवल ईसाइयों द्वारा बल्कि सारासेनों द्वारा भी, जो आज भी (जैसा कि विश्वसनीय प्रत्यक्षदर्शियों द्वारा वर्णित है) उस पेड़ की दरार में तेल का दीपक जलाते हैं, उन पवित्र कुँवारी और शिशु के सम्मान में जो वहाँ विश्राम कर चुके थे। जोसेफ और परमेश्वर की अति पवित्र माता उस गाँव में ही रहना चाहते थे, और उस पेड़ के पास ही अपने लिए एक झोपड़ी पाकर, वे वहाँ रहने लगे। दिव्य शिशु की शक्ति से एक और चमत्कार हुआ, क्योंकि ठीक वहीं, उनके निवास के पास और उस अद्भुत वृक्ष के पास, जीवित जल का एक झरना अचानक प्रकट हुआ, जिससे परम पवित्र कुँवारी ने अपनी आवश्यकताओं के लिए पानी निकाला और जिसमें उन्होंने अपने शिशु को स्नान कराया। वह कुआँ आज भी मौजूद है, उसका पानी बहुत ठंडा और स्वास्थ्यवर्धक है। और इससे भी आश्चर्य की बात यह है कि, पूरे मिस्र देश में, यह जीवित जल का एकमात्र स्रोत है, और वह उस गाँव में प्रसिद्ध है। इस प्रकार ईश्वर की परम पवित्र माता के मिस्र में मसीह के साथ प्रवास का वृत्तांत समाप्त होता है, जहाँ वे कई वर्षों तक रहे। हालाँकि, इस बारे में कोई सटीक जानकारी नहीं है कि प्रभु ने मिस्र में कितने साल बिताए। संत एपिफानियस दो साल, निकिफोरोस तीन साल, और जॉर्ज केड्रिन पाँच साल कहते हैं; अन्य, जैसे कि अलेक्जेंड्रिया के अम्मोनियुस , का मानना है कि यह सात साल था। किसी भी स्थिति में, इस बात में कोई संदेह नहीं है कि वे हेरोद की मृत्यु तक *वहाँ रहे*, जैसा कि सुसमाचार में कहा गया है: *'और वह हेरोद की मृत्यु तक वहाँ रहा'* (मत्ती 2:15)।

बेथलहम के शिशुओं के वध के बाद और शापित हेरोद के दुखद अंत के बाद, प्रभु का स्वर्गदूत फिर से यूसुफ को स्वप्न में दिखाई दिया, और उसे मिस्र की भूमि से इज़राइल की भूमि में लौटने की आज्ञा दी, *'क्योंकि,'* उसने कहा, *'जो शिशु का प्राण लेना चाहते थे, वे मर गए* हैं'। यूसुफ़ उठा, बालक और उसकी माता को लेकर यहूदिया गया, जो इस्राएल देश का सबसे उत्तम और सबसे बड़ा भाग था। परन्तु जब उसने सुना कि उसके पिता हेरोदेस के स्थान पर यहूदिया में आर्कलिाउस राज्य कर रहा है, तो वह वहाँ जाने से डर गया। क्योंकि हेरोद के तीन पुत्र थे: सबसे बड़ा आर्कलिाउस; दूसरा हेरोद अँटीपास; और तीसरा, सबसे छोटा, फिलिप। अपने पिता की मृत्यु के बाद, वे सभी प्रतिद्वंद्विता के कारण रोम के लिए, सीज़र के पास चले गए, क्योंकि उनमें से प्रत्येक अपने पिता का राज्य विरासत में लेना चाहता था। सीज़र ने उनमें से किसी को भी राजशाही का सम्मान देने से इनकार कर दिया, और राज्य को चार भागों में विभाजित कर दिया, जिन्हें उन्होंने टेट्रार्की कहा। बड़े भाई आर्कलिाउस को उसने यहूदिया; हेरोद अंटपास को गलील; और सबसे छोटे भाई फिलिप को ट्राकोनिटिस का क्षेत्र दिया; उन्होंने अबीलीन का क्षेत्र लाइसानियास को दिया, जो लाइसानियास द एल्डर का सबसे छोटा बेटा था, जो कभी हेरोद का दोस्त था लेकिन बाद में उससे ईर्ष्या के कारण मारा गया था। सभी को रोम से निकालते हुए, सीज़र ने आर्कलिाउस को राजा का खिताब देने का वादा किया, बशर्ते कि वह अपने हिस्से का अच्छे और ईमानदार ढंग से शासन करे। लेकिन आर्कलिाउस अपने क्रूर पिता से बेहतर नहीं था, उसने कई लोगों को यातना दी और

उनके परिवार के मिस्र में प्रवेश करने पर मिस्र की मूर्तियों के गिरने के बारे में परंपरा का उल्लेख उद्धारकर्ता को समर्पित अकैथिस्ट में भी किया गया है, जहाँ कहा गया है: 'हे हमारे उद्धारकर्ता, मूर्तियाँ आपकी शक्ति का सामना न कर सकीं, और गिर पड़ीं' (इकोस 6)।

[257] हेलिओपोलिस निचले (उत्तरी) मिस्र का एक शहर है।

मार डाला; क्योंकि यरूशलेम पहुँचने पर, उसने तुरंत और अन्यायपूर्ण ढंग से तीन हजार लोगों को मार डाला, और कई नागरिकों को एक पर्व के दिन, मंदिर के बीच में, यहूदियों की पूरी सभा के सामने यातना देने का आदेश दिया। इस क्रूरता के कारण, कुछ वर्षों बाद उस पर झूठा आरोप लगाया गया, उसे उसकी शक्ति से वंचित कर निर्वासित कर दिया गया। जब वह लौटा, तो यूसुफ़ ने सुना कि वह दुष्ट आर्कलिाउस राज कर रहा था, यद्यपि राजसी उपाधि के बिना, और वह यहूदिया में जाने से डर गया; परन्तु उसी स्वर्गदूत से, जो पहले उसे दिखाई दिया था, स्वप्न में संदेश पाकर, वह गलील प्रदेश में, हेरोद अंताकिस के अधिकार क्षेत्र में, गया, आर्केलाउस का भाई, क्योंकि यह हेरोद अपने भाई की तुलना में अधिक सौम्यता से लोगों पर शासन करता था; और यूसुफ नासरत नगर में, अपने घर में बस गया, जहाँ वे पहले रहते थे, ताकि प्रभु मसीह के विषय में भविष्यद्वक्ताओं द्वारा जो कहा गया था, वह पूरा हो, अर्थात् कि उसे नासरी कहा जाएगा। उसकी महिमा युगानुयुग होती रहे। आमीन।

धर्मी राजा दाऊद का जीवन[258]

26 दिसंबर को स्मरण किया जाता है

पवित्र राजा और नबी दाऊद यहूदा के कुल से थे। उनके पिता, येशै, बेतलेहेम नगर के बुजुर्गों में से एक थे और उनके आठ पुत्र थे, जिनमें दाऊद सबसे छोटे थे। जब दाऊद किशोरावस्था में पहुँचे, तो उनके पिता ने उन्हें अपने झुंडों की देखभाल करने का काम सौंपा। वह लड़का झुंडों के बीच एकांत में रहता था, अपने पिता की संपत्ति की रक्षा करता था; जब भी कोई शेर या भालू आता और झुंड से एक भेड़ उठा ले जाता, तो दाऊद उसका पीछा करता और शिकार को छीन लाता; जब भी कोई जानवर उस पर झपटता, तो दाऊद उसे उसके मुखोट से पकड़ लेता, उसे गिरा देता और मार डालता। प्रभु उस युवक की रक्षा करते थे, क्योंकि वह धर्मपरायण था और आलस्य से प्रेम नहीं करता था; उसने अपने लिए एक तार वाला वाद्य यंत्र बनाया और अपने खाली समय में, गाने और उसे बजाने का अभ्यास करता था। दाऊद ने इस कला के लिए ईश्वर-प्रदत्त प्रतिभा का उपयोग ईश्वर की सेवा और उनके पवित्र नाम की महिमा के लिए किया; ईश्वर के चिंतन में निरंतर मग्न रहते हुए, वह लड़का तार छेड़कर स्वर्गीय पिता की बुद्धि और भलाई के बारे में गाता था, जो ईश्वर की सारी सृष्टि और मानव जीवन में प्रकट हुई थी।

उस समय, शाऊल इस्राएल का राजा था। अपने कुछ कार्यों के माध्यम से, उसने प्रभु की आज्ञाओं की अवज्ञा दिखाई और यह दिखाया कि उसने राजाओं के राजा की इच्छा और दया से ऊपर अपनी ही शक्ति और इच्छाओं को रखा। तब प्रभु ने भविष्यवक्ता शमूएल को आज्ञा दी कि वह शाऊल को यह घोषित करे:

'क्योंकि तूने यहोवा के वचन को तुच्छ जाना है, इसलिये उसने तुझे तुच्छ जाना है, कि तू अब राजा न रहे।'

थोड़ी ही देर बाद, प्रभु ने बेतलेहेम के येशै के पास शमूएल को भेजा, और प्रभु ने कहा, 'क्योंकि "मैंने उसके पुत्रों में अपने लिए एक राजा देखा है।"' बेथलहम पहुँचने पर, नबी ने शहर के बुजुर्गों को इस्राएल के परमेश्वर को बलिदान चढ़ाने की तैयारी करने का निर्देश दिया, और यिशै तथा उनके बेटों को भी उनके साथ शामिल होने के लिए आमंत्रित किया। जब यिशै के बेटे आए, तो सामूएल ने उनमें से सबसे बड़े, एलियाब को देखकर सोचा कि वही परमेश्वर का चुना हुआ है, लेकिन परमेश्वर ने नबी से कहा:

'उसके कद-काठी और रूप-रंग पर मत देख; क्योंकि मैंने उसे अस्वीकार कर दिया है। मैं मनुष्य की तरह नहीं देखता, क्योंकि मनुष्य बाहरी दिखावट पर देखता है, परन्तु यहोवा हृदय पर देखता है।'

और शमूएल को यहोयादा के साथ रहे उसके सात बेटों में से किसी के विषय में कोई दर्शन नहीं हुआ; इसलिए उसने यहोयादा से पूछा कि क्या उसके सभी बेटे उपस्थित हैं। बूढ़े ने उत्तर दिया कि एक और बेटा है जो भेड़ों की देखभाल कर रहा है; नबी ने आज्ञा दी कि उस लड़के को बुला भेजा जाए। जब दाऊद आया, तो यहोवा ने शमूएल से कहा:

'उठ, उसे अभिषेक कर, क्योंकि यही वह है।'

---

[258] धर्मी राजा दाऊद और मंगनीकर्ता यूसुफ का स्मरणोत्सव मसीह के जन्म के बाद वाले सप्ताह में होता है, जिसे इसीलिए ईश्वर-वाहक का सप्ताह कहा जाता है। यदि यह सप्ताह 1 जनवरी को, यानी मसीह के जन्म के पर्व के बाद पड़ता है, तो उपर्युक्त संतों के सम्मान में सेवा 26 दिसंबर को मनाई जाती है।

नबी ने अपने साथ लाया हुआ तेल का सींग लिया और दाऊद को उसके भाइयों के बीच अभिषेक किया। और उस दिन से यहोवा का आत्मा दाऊद पर उतरता रहा। तब शमूएल बेतलेहेम से चला गया, और वह लड़का अपने काम पर लौट गया।

लेकिन यहोवा का आत्मा साऊल से दूर हो गया, और वह पागलपन के दौरे से पीड़ित हो गया; इस बीमारी के दौरे बहुत पीड़ादायक थे, और साऊल लगातार चिड़चिड़ा रहता था, और दुष्ट विचारों से पीड़ित था। तब दरबारियों ने अपने स्वामी को वीणा बजाने में निपुण एक व्यक्ति को बुलाने की सलाह दी, ताकि उसकी संगीत से राजा को उसके दौरे के दौरान शांति मिल सके। साऊल मान गया, और फिर एक दरबारी ने दाऊद की ओर इशारा किया। राजा की आज्ञा से, अठारह वर्षीय उस गड़रिये को राजमहल में बुलाया गया; जब भी शाऊल पीड़ा में होता, दाऊद अपना वीणा बजाता, जिससे परमेश्वर प्रसन्न होता, और शाऊल को बेहतर और अधिक सुकून महसूस होता, और दुष्ट आत्मा उससे दूर हो जाती। राजा को दाऊद बहुत भाया, और वह उनका ढाल-वाहक बन गया; फिर भी दरबार में उसकी सेवा निरंतर नहीं थी, और वह लंबे समय के लिए अपने गृहनगर लौट जाता था, जहाँ वह एक गड़रिये के रूप में अपना काम जारी रखता था।

[259][260]इसके तुरंत बाद, फिलिष्टियों ने इज़राइल की भूमि पर आक्रमण किया। यहूदा के गोत्र के क्षेत्र में प्रवेश करने के बाद, उन्होंने एफेस-दममि में सोकोह और अजकेह के बीच अपना डेरा डाला। शाऊल और इस्राएली सेना दो वर्स्ट दक्षिण में ठहर गए; दोनों शिविरों के बीच एक विशाल घाटी थी। फिलिष्टियों ने प्राचीन काल की प्रथा के अनुसार युद्ध को एक द्वंद्वयुद्ध से समाप्त करने का निर्णय लिया, और उनके शिविर से गाथ का मूल का, अनाकीम वंश का विशालकाय गोलियाथ बाहर आया[261] । उसकी ऊँचाई छह कोहनी और एक स्पैन (लगभग 6 फीट 9 इंच) थी[262] , यानी 4 अर्शिन और 14 वर्शोक; वह पूर्ण कांस्य कवच पहने हुए था: पाँच हज़ार शेकेल वज़नी स्केल आर्मर[263] , एक हेलमेट, पैरों का कवच और एक ढाल; उसके हाथों में साठ शेकेल वज़नी एक लोहे का भाला था। इस्राएली सेना की ओर मुड़कर गोलियाथ ने पुकारा:

'तुम अपने में से एक आदमी चुन लो, और उसे मेरे पास उतर आने दो; यदि वह मुझे मार डाले, तो हम तुम्हारे दास बन जाएँगे; परन्तु यदि मैं उसे हरा दूँ, तो तुम हमारे दास बनकर हमारी सेवा करोगे।'

उस विशालकाय की भयानक आकृति से इस्राएलियों के हृदय में आतंक छा गया, और उनमें से किसी ने भी गोलियाथ से एक-एक करके लड़ने की हिम्मत नहीं की; वह दिन-प्रतिदिन और अधिक घमंडी होता गया और चालीस दिनों तक इस्राएलियों का उपहास करता रहा।

उस समय दाऊद के भाई उन सैनिकों में थे जो फिलिस्तीनियों से लड़ने गए थे; एक दिन, यिशै ने अपने सबसे छोटे बेटे को सेना में अपने भाइयों का हालचाल लेने और उनके लिए कुछ भोजन ले जाने के लिए भेजा। जैसे ही वह जवान सेना के आपूर्ति शिविर में पहुँचा, सैनिकों को कतारबद्ध किया जा रहा था और वे एक चीख के साथ युद्ध की तैयारी कर रहे थे; दाऊद अपने भाइयों से मिलने के लिए इस्राएल की सेना की कतारों में दौड़ गया। जब वह उनसे बात कर ही रहा था, तभी गोलियात फलस्तीनियों की पंक्ति से निकलकर आया और अपने घमंड भरे शब्द बोलने लगा; उस विशालकाय को देखकर इस्राएली डरकर भाग गए, और अपनी पंक्तियों में उन्होंने कहा:

'यदि कोई गोलियथ को मार डाले, तो राजा उसे बहुत धन-संपत्ति देगा, अपनी बेटी का विवाह उससे कर देगा, और इस्राएल में उसके पिता के घराने को स्वतंत्र कर देगा।'

यिस्सै के जवान पुत्र को उस अमालेकी दैत्य के अहंकार पर गहरा क्रोध आया।

दाऊद ने इस्राएली योद्धाओं से क्रोधित होकर कहा, 'इस खतना न किए हुए अफ़ीमी को जीवते परमेश्वर की सेना का इस प्रकार अपमान करने की हिम्मत कैसे हुई?'

---

[259] फिलिस्तीनी – हाम के पुत्र मेशेम के वंशज; यह लोग, जो मिस्रियों के संबंधित थे, शेफेला घाटी में भूमध्य सागर के तट पर, फिलिस्तीन के दक्षिण-पश्चिमी भाग में रहते थे।

[260] सोखोफ़, जो अब शुवेइके है, यरूशलेम से 24 वर्स्ट दक्षिण-पश्चिम में पहाड़ी इलाके में एक शहर है। अज़ेक, जो अब दैर अल-अज़बेक है, सोखोफ़ से 13 वर्स्ट उत्तर में स्थित है। एफ़ेस-दामिम ('रक्त की सीमा') आज के बैद-फ़ज़ेब ('रक्तपात का घर') के स्थान पर स्थित था – अज़ेक से दो वर्स्ट दक्षिण में।

[261] यहूदी जासूसों ने अनाक के बेटों को दैत्य कहा (गिनती 13:34); गथ में उनकी बस्ती के लिए, देखें यहोशू 11:22।

[262] यहूदी लंबाई की माप: एक क्यूबिट 12 वर्शाक के बराबर होता है; एक पायडेन 6 वर्शाक होता है।

[263] एक हिब्रू शेकेल का वजन 3 ज़ोल था। 34, 40 डॉल।

उस जवान के शब्द राजा तक पहुँचे, और उसने उसे अपने पास बुलाया। दाऊद के शब्दों में ईश्वर की मदद में एक महान विश्वास भरा था जब उसने साऊल से गोलियथ से लड़ने की अनुमति माँगी, इसलिए राजा ने अंततः कहा:

'जाओ, और प्रभु तेरे संग रहे।' दाऊद ने उस सैनिक कवच को पहनने से इनकार कर दिया जो उसे साऊल के आदेश पर पहनाया गया था, क्योंकि वह उससे अपरिचित था। उसने अपनी गड़रिये की लाठी, अपनी चरखी और अपना थैला लिया, जिसमें उसने नाले से उठाए गए पाँच चिकने पत्थर रख लिए, और इस वेशभूषा में वह गोलियथ से लड़ने के लिए निकल पड़ा।

फिलिस्तीनी दैत्य के तानों और अपमानों का जवाब देते हुए दाऊद ने कहा:

'तू तलवार, भाला और ढाल लेकर मेरे विरुद्ध आता है, परन्तु मैं सेनाओं के यहोवा, इस्राएल के सेनाओं के परमेश्वर के नाम में तेरे विरुद्ध आता हूँ, जिसको तूने तुच्छ जाना है। अब यहोवा तुझे मेरे हाथ में सौंपेगा, और मैं तुझे मार गिराऊँगा और तेरा सिर काट डालूँगा; मैं तेरा शव और पलिश्ती सेना के शव आकाश के पक्षियों और पृथ्वी के जानवरों को दूँगा, और सारी पृथ्वी जान जाएगी कि इस्राएल में एक परमेश्वर है। और यह सारी मंडली जान जाएगी कि यहोवा तलवार और भाले से नहीं बचाता।

और उस युवक का परमेश्वर की सहायता पर भरोसा उसे लज्जित नहीं होने दिया: दाऊद की गुलेल से कुशलतापूर्वक फेंका गया एक पत्थर उस दैत्य के माथे पर इतनी ज़ोर से लगा कि गोलियाथ ज़मीन पर गिर पड़ा; फिर दाऊद उसके पास दौड़ा और अपनी ही तलवार से उसका सिर काट दिया। दाऊद के पराक्रम से चकित होकर, पलिश्ती भाग खड़े हुए, जबकि इस्राएली सेना ने उनका शिविर जब्त कर लिया और विजय-स्वरूप दुश्मन का पीछा करते हुए अपनी भूमि की सीमाओं तक पहुँच गई।

मारे गए दैत्य का सिर अपने हाथों में लेकर दाऊद साऊल के सामने उपस्थित हुआ। प्रसन्न राजा ने उस युवक को अपने पास रख लिया और पूरे राष्ट्र की प्रसन्नता के लिए, उसे सेनापति के पद पर पदोन्नत कर दिया। जब विजेता घर लौटे, तो उन्हें रास्ते में इज़राइल के हर शहर में शानदार स्वागत मिला, और महिलाएँ तबले और झनझनियाँ बजाते हुए नाचने लगीं, और एक विजय गीत गाने लगीं जिसका अंतरा था:

'शाऊल ने हज़ारों को मारा है, और दाऊद ने दस हज़ारों को।'

दाऊद के प्रति लोगों के प्रेम का यह प्रदर्शन राजा को अप्रसन्न कर गया; साऊल को भविष्यवक्ता से पता चला कि प्रभु ने उसे राजा के पद से हटा दिया है और राज्य किसी और को दे दिया है। राजा ने दाऊद को अपना उत्तराधिकारी मानना शुरू कर दिया और उस युवक पर संदेह करने लगा। इससे साऊल को सताने वाली गंभीर पीड़ा और भी बढ़ गई, और राजा कभी-कभी क्रोध से भर जाता था; इन दौरों के दौरान दो मौकों पर, उसने दाऊद पर भाला फेंका, जो राजा को शांत करने के लिए वीणा बजा रहा था; लेकिन वह युवक, जो परमेश्वर की आत्मा द्वारा संरक्षित था, मृत्यु से बच गया। इसके बाद, शाऊल दाऊद से डरने लगा और उसे एक हजार सैनिकों का सेनानायक नियुक्त करके दूर भेज दिया। इस पद पर, दाऊद ने सभी मामलों में समझदारी से काम लिया, जिससे लोगों का उसके प्रति प्रेम और भी बढ़ गया, जो शाऊल को बहुत अप्रिय लगा, और उसने दाऊद की मृत्यु की चाहत करने लगा।

शुरू में, राजा ने विश्वासघात किया, और दाऊद को फिलिष्टियों के खिलाफ खतरनाक अभियानों पर भेजा। साऊल ने साज़िश रची, 'मेरा हाथ उस पर न पड़े, बल्कि फिलिष्टियों का हाथ उस पर पड़े।' जब राजा ने दाऊद को युद्ध पर भेजा, तो उससे अपनी सबसे बड़ी बेटी मेराब का हाथ देने का वादा किया; हालाँकि, उसने उसे किसी और को दे दिया, और दाऊद को अपनी दूसरी बेटी मीकाल का हाथ इस शर्त पर देने की पेशकश की कि दाऊद एक और, उससे भी अधिक खतरनाक अभियान पर जाए।

'जब मैं तो बस एक गरीब और तुच्छ आदमी हूँ, तो राजा का दामाद बनना आसान है क्या?' उस युवा कमांडर ने ऐसे चापलूसी भरे प्रस्तावों का विनम्रता से जवाब दिया।

प्रभु ने अपने चुने हुए की रक्षा की, और वह हर बार विजयी होकर लौटा, जिससे उसका नाम प्रसिद्ध हो गया, और शाऊल को उसे मीकाल देना पड़ा, जो दाऊद से प्रेम करती थी। इसके बाद, शाऊल की ईर्ष्या और भी बढ़ गई; वह जीवन भर के लिए दाऊद का दुश्मन बन गया और उसने खुले तौर पर अपने दामाद को मारने के इरादे का इज़हार करना शुरू कर दिया।

साल के बेटों में से एक, पराक्रमी योनातान, गोलियाथ पर विजय के बाद से ही दाऊद से अपनी आत्मा की तरह प्रेम करता था; एक गहरी मित्रता ने दोनों युवकों को एक साथ बाँध रखा था। अपने पिता की बुरी मंशा को जानते हुए, योनातान ने साल से कहा:

'राजा अपने सेवक दाऊद के विरुद्ध पाप न करें, क्योंकि उसने आपको किसी भी प्रकार से ठेस नहीं पहुँचाई है, और उसके काम आपके लिए बहुत लाभदायक रहे हैं; उसने उस अमालेकी को मार गिराने के लिए अपनी जान जोखिम में डाली, और यहोवा ने इस्राएल के सब लोगों के लिए एक बड़ी मुक्ति की; तुमने यह देखा और आनंदित हुए। तो फिर, तुम निर्दोष रक्त के विरुद्ध पाप क्यों करना चाहते हो और बिना कारण के दाऊद को मार डालना चाहते हो?

राजा ने कसम खाई कि वह दाऊद को नहीं मारेंगे, और राजा तथा उनके दामाद के बीच एक अच्छा रिश्ता स्थापित हो गया, हालांकि यह अल्पकालिक था; जल्द ही फिलिष्टियों के साथ युद्ध छिड़ गया, जिसमें दाऊद ने निर्णायक विजय प्राप्त की। तब, क्रोध के एक दौरे में, शाऊल ने एक बार फिर दाऊद को—जो उसके सामने वीणा बजा रहा था—अपनी भाले से दीवार से ठोक देने का प्रयास किया। दाऊद बच निकलने में सफल रहा और अपने ही घर में शरण ले ली। राजा ने घर को घेरने के लिए सैनिक भेजे ताकि जब दाऊद बाहर आए तो वे उसे पकड़कर मार सकें। निर्दोष पीड़ित की स्थिति निराशाजनक थी, लेकिन दाऊद ने निराश नहीं हुआ; इसके बजाय, उसने प्रार्थना में सांत्वना और मदद मांगी, जिसका एक चित्रण उसकी 58वीं प्रेरित भजन में मिलता है।

'हे मेरे परमेश्वर, मुझे मेरे शत्रुओं से छुड़ा,' दाऊद ने पुकारा, 'उनसे मेरी रक्षा कर जो मुझ पर उठते हैं। क्योंकि देखो, वे मेरी जान के लिए घात लगाते हैं; शक्तिशाली लोग मुझ पर इकट्ठा होते हैं—हे प्रभु, मेरे अपराध के लिए नहीं, न ही मेरे पाप के लिए; बिना किसी कारण के वे मुझ पर टूट पड़ते हैं और हथियारबंद हो जाते हैं।' मेरी सहायता के लिए आओ और मेरी ओर देखो। उनमें बल है, परन्तु मैं तुझ में शरण लेता हूँ, क्योंकि परमेश्वर मेरा रक्षक है।

इस प्रकार दाऊद ने पुकारा, और यहोवा ने उसे उसकी प्रेम करने वाली पत्नी के हाथ से निश्चित मृत्यु से बचाया, जिसने रस्सी से खिड़की से अपने पति को नीचे उतारा।

तब से दाऊद की भटकन शुरू हो गई। राजा अपने दामाद का पीछा *'पहाड़ों में तीतर की तरह'* करता रहा (1 शमूएल 26:20)। दाऊद को न तो इस्राएल के बस्तियों में और न ही पड़ोसी फिलिस्तीनियों के शहरों में कोई शरण मिली, जो उसकी पिछली जीतों को याद करते थे। योनातान ने व्यर्थ में राजा को शांत करने की कोशिश की, जिसने यहाँ तक कि दाऊद की पत्नी का विवाह किसी दूसरे आदमी से कर दिया; महापुजारी अहीमेलेक और उसके पूरे परिवार को शाऊल ने मार डाला, जिसे शक था कि वह अपने दामाद के प्रति सहानुभूति रखता था[264] । हालाँकि, दाऊद अपने माता-पिता को मोआब के राजा की देखभाल में रखकर राजा के क्रोध से बचाने में सफल रहा[265] । नबी गाद के माध्यम से परमेश्वर से प्राप्त एक प्रकाशन के बाद, दाऊद यहूदा के कुल के प्रदेश में आ गया और बेतलेहेम के दक्षिण में पहाड़ी और रेगिस्तानी क्षेत्रों में राजा से वहाँ छिप गया; साऊल से असंतुष्ट सभी लोग उसके इर्द-गिर्द इकट्ठा होने लगे, ताकि कुछ ही समय में दाऊद पहले से ही 400 तक पुरुषों के एक दल का नेता बन गया, जो सभी पराक्रमी और योद्धा थे। इस दल के साथ, दाऊद—हालाँकि खुद राजा द्वारा पीछा किया जा रहा था—फिर भी अपने लोगों की सेवा करने में कामयाब रहा; उसने केइला नामक शहर से फिलिष्टियों को भगा दिया, जिस पर उन्होंने कब्जा कर लिया था और जो यहूदा की पहाड़ियों में स्थित था, और उन पहाड़ियों में चर रहे झुंडों को रेगिस्तानी लुटेरों के हमलों से बचाया।

दाऊद ने अपना जीवन परमेश्वर की इच्छा के भरोसे छोड़ दिया, और यहोवा ने अपने अभिषिक्त की रक्षा की; इस प्रकार, जब दाऊद कैला में था और शाऊल ने उसे वहाँ पकड़ने का इरादा किया, तो यहोवा ने दाऊद को यह खुलासा किया कि नगर के लोग उसे राजा के हवाले कर देंगे, यही कारण है कि दाऊद और उसकी टोली उस नगर से निकल गए और *'जहाँ कहीं वे जा सकते थे, वहाँ चले गए'* (1 शमूएल 23:13)। मृत सागर के पश्चिमी तट पर, सिफ और माओन के पहाड़ी, बंजर रेगिस्तानों में शरण लेने के बाद, दाऊद राजा की सेना द्वारा लगभग घेर लिया गया था, लेकिन उसी समय साऊल को फिलिस्तीनियों के हमले की खबर मिली और उसे अपना पीछा अस्थायी रूप से रोकने के लिए मजबूर होना पड़ा। शत्रु को खदेड़ने के बाद, राजा अपनी सेना के साथ जंगल से दाऊद को पकड़ने के लिए लौटा। इस खतरनाक इलाके में भगोड़ों की तलाश करते समय, जो दर्रों और गुफाओं से भरा था, एक बार साऊल एक ऐसी गुफा में घुस गया जहाँ उस समय दाऊद

---

[264] जब दाऊद अपनी भटकन के दौरान अहिमेलक के पास आया, तो अहिमेलक ने उसे शोवाना रोटी और गोलियाथ की तलवार दे दी। यह खबर साऊल तक पहुँची, और इसीलिए उसे महापुजारी पर दाऊद के प्रति सहानुभूति रखने का संदेह हुआ।

[265] मोआबियों का वंश लोत के पुत्र मनाह से चला था; वे मृत सागर के पूर्व में रहते थे।

अपने कुछ अनुयायियों के साथ छपिा हुआ था। अँधेरे में छपिे दुश्मनों से अनजान, शाऊल ने अपना लबादा उतार लयिा; इस बीच, दाऊद के आसपास के लोगों ने राजा को पहचान लयिा और अपने नेता से कहा:

'यह वही दनि है जसिके वषिय में यहोवा ने तुम से कहा था: "देख, मैं तेरे शत्रु को तेरे वश में कर दूँगा, और तू उस से अपनी इच्छा के अनुसार कर सकेगा।"'

दाऊद ने उत्तर दयिा:

'परमेश्वर न करे कि मैं अपने स्वामी, परमेश्वर के अभषिक्ति पर अपना हाथ उठाऊँ, क्योंकि वह परमेश्वर का अभषिक्ति है।'

उसने सावधानी से साऊल के खलिौने का एक कनिारा काट दयिा, और जब राजा गुफा से बाहर आ गया और कुछ दूरी पर चला गया, तो उसने उसे पुकारा। साऊल ने पीछे मुड़कर देखा, और दाऊद, उसके सामने जमीन पर झुककर, राजा से आग्रह करने लगा कि वह इस दुर्भावनापूर्ण बदनामी पर वशि्वास न करे।

'मेरे पति,' युवक ने कहा, 'मेरे हाथ में आपकी पोशाक का कनिारा देखिए; मैंने आपकी पोशाक का कनिारा तो काट दयिा, पर आपको नहीं मारा। जानिए और नशि्चति हो जाइए कि मेरे हाथ में कोई बुराई या छल नहीं है, और मैंने आपके खलिाफ कोई पाप नहीं कयिा है , फरि भी आप मेरी जान लेने की कोशशि कर रहे हैं। प्रभु मेरे और तेरे बीच न्याय करे, और प्रभु मुझ पर तेरा प्रतशिोध ले; परन्तु मेरा हाथ तुझ पर न होगा। प्रभु मेरा मुकदमा सुनकर न्याय करेगा, और मुझे तेरे हाथ से छुड़ाएगा।

साऊल उस व्यक्ति की उदारता से बहुत प्रभावति हुआ जसिे वह सता रहा था, और आँसू भरी आँखों से उसने अपनी गलती स्वीकार की; इसके बाद, राजा अपनी राजधानी लौट गया, जबकि दाऊद रेगस्तिान में भटकता रहा।

साऊल को दाऊद का नेक काम ज्यादा समय तक याद नहीं रहा। अपनी संदेह करने वाली प्रकृति, दाऊद की बढ़ती ताकत—और उससे सहानुभूति रखने वालों की लगातार बढ़ती संख्या—ने राजा को उसका पीछा फरि से शुरू करने के लिए प्रेरति कयिा, और तीन हज़ार आदमयिों के दल के साथ, साऊल एक बार फरि से जंगल की ओर नकिल पड़ा। दाऊद राजा की गतविधियिों पर बारीकी से नजर रखता रहा, और जब राजा ने एक पहाड़ी की चोटी पर डेरा डाला, तो दाऊद ने एक पहाड़ पर ऐसी जगह मोर्चा संभाला जहाँ से राजा का शविरि दखिाई दे रहा था। साल की सेनाओं की सटीक ताकत का पता लगाने के लिए, दाऊद अपने एक अनुयायी, अबीशै के साथ, रात में राजा के शविरि में चुपके से घुस गया; राजा के सेनापति इतने लापरवाह थे कि राजा के तंबू पर एक पहरेदार भी नहीं था, और दाऊद और उसका साथी उसमें घुस गए। साऊल गहरी नींद में सो रहा था, और उसके सरि के पास जमीन में एक भाला गड़ा हुआ था। अबीशाई ने उस भाले से साऊल को मार डालने के लिए स्वयंसेवा की, लेकनि दाऊद ने कहा:

'यहोवा के जीवति रहने की शपथ! परमेश्वर उसे मार डाले; या तो उसका समय आ जाएगा और वह मर जाएगा, या वह युद्ध में जाकर मारा जाएगा; परन्तु परमेश्वर कभी मुझे यह अनुमति न दे कि मैं यहोवा के अभषिक्ति पर अपना हाथ उठाऊँ!'

उसने तम्बू में रखा भाला और पानी का पात्र उठा लयिा, ताकि साऊल को दखिा सके कि राजा की जान एक बार फरि से उसके हाथ में थी, और कसिी के भी ध्यान में आए बनिा वह शविरि से नकिल गया। अपने शविरि में लौटने पर,

दाऊद ने अपने स्वामी की ठीक से रक्षा न कर पाने के लिए राजा के सेनापतयिों को ऊँचे स्वर में फटकारना शुरू कर दयिा। साऊल ने दाऊद की आवाज़ सुनी और दूर से ही उससे बोला।

राजा ने कहा:

'मैंने पाप कयिा है; लौट आ, मेरे पुत्र दाऊद, क्योंकि मैं तुझे कुछ भी नहीं करूँगा, क्योंकि मेरा जीवन अब तेरी दृष्टि में बहुमूल्य है; मैंने मूर्खता की है और बहुत बड़ा पाप कयिा है।'

दाऊद ने उत्तर दयिा:

'राजा की भाला यहाँ है; जवानों में से कोई एक आकर उसे ले जाए। और यहोवा हर एक मनुष्य को उसकी धार्मकिता और उसकी सच्चाई के अनुसार प्रतफिल दे; क्योंकि यहोवा ने राजा को मेरे हाथ में दयिा, और मैं अपने हाथ को यहोवा के अभषिक्ति पर नहीं उठाऊँगा।' और जैसे तेरा जीवन मेरी दृष्टि में अनमोल था, वैसे ही मेरा जीवन भी यहोवा की दृष्टि में अनमोल रहे; और वह मुझे सब क्लेश से बचाए और छुड़ाए।

जब वे अलग हुए, तो साऊल ने यहोवा के नाम पर दाऊद को आशीर्वाद दयिा, और वे फरि कभी एक-दूसरे को नहीं मलिे।

दाऊद के पास साऊल के अच्छे इरादों और वादों पर भरोसा न करने के कई कारण थे, और इसलिए उसने अपने लिए इस्राएल के राज्य की सीमाओं को छोड़कर पलिश्तियों की भूमि में बसना अधिक सुरक्षित समझा। इसके दक्षिणी सीमा पर ज़िकलग शहर था, जिसे फिलिस्तीनी राजा ने दाऊद और उसके 600 अनुयायियों के लिए निवास स्थान के रूप में अलग रखा था। वहाँ से, दाऊद ने मरुभूमि के निवासियों पर छापे मारे, जो इस्राएली लोगों के पुराने दुश्मन थे। इस बीच, फिलिस्तीनी राजा ने इस्राएल के देश पर एक जबरदस्त आक्रमण किया और दाऊद तथा उसकी टुकड़ी से इसमें भाग लेने की मांग की। यह दाऊद के लिए, जो अपने लोगों से बहुत प्यार करता था, इस मांग को पूरा करना असहनीय रूप से कठिन था; फिर भी यहाँ भी, ईश्वर की मदद—जिस पर उसने हमेशा अपना दृढ़ विश्वास रखा था—उसका साथ नहीं छोड़ी: फिलिस्तीनी राजकुमारों को संदेह था कि एक यहूदी होने के नाते, वह अपने देश के दुश्मनों के लिए एक वफादार सहयोगी नहीं हो सकता, और उन्होंने जोर देकर कहा कि दाऊद ज़िकलग लौट आए। वापस आते समय, उसे पता चला कि अमालेकियों ने उसके नगर को लूट लिया था[266] , जिन्होंने उसके और उसके अनुयायियों, दोनों के परिवारों और संपत्ति पर कब्ज़ा कर लिया था, और उन्हें रेगिस्तान में ले गए थे। दाऊद के अपने ही साथियों में हंगामा मच गया; अपने बेटों और बेटियों के दुश्मन द्वारा कैद किए जाने के दुख में, दाऊद के साथी उसे पत्थर मारना चाहते थे। लेकिन दाऊद ने अपने प्रभु परमेश्वर में हिम्मत ली, लुटेरों का पीछा किया और उनका सारा माल बरामद कर लिया।

इस बीच, गिलबोई की पहाड़ियों पर फिलिस्तीनियों और इस्राएलियों के बीच युद्ध का अंत इस्राएलियों की पराजय में हुआ[267] ; इस लड़ाई में शाऊल और उसका पुत्र योनातान मारे गए। उनकी मृत्यु का समाचार दाऊद के पास एक अमालेकी ने लाया, जिसने यह भी बताया कि साऊल के अनुरोध पर, जब फिलिष्टी उसका पीछा कर रहे थे, तब उसने उसे मार डाला था। यह वृत्तांत सुनकर दाऊद ने कहा:

'तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई प्रभु के अभिषिक्त को मारने के लिए हाथ उठाने की?'

और उसने उस दूत को मार डालने का आदेश दिया। दाऊद ने एक प्रेरित गीत में उस शाऊल के लिए, जिसने उसका पीछा किया था, और अपने प्रिय मित्र योनातान के लिए अपनी सच्ची और गहरी शोक-भावना व्यक्त की:

भजनकार उद्घोष करता है, 'हे गिलबो के पहाड़ों, न तो तुम पर ओस पड़े और न ही वर्षा, और न ही तुम पर फलदायी खेत हों; क्योंकि वहाँ पराक्रमी की ढाल, साऊल की ढाल, फेंकी गई, यद्यपि वह तेल से अभिषिक्त था।' साoul और योनातान, जो अपने जीवन में प्रिय और एकजुट थे, मृत्यु में भी अलग नहीं हुए; वे गरुड़ से भी अधिक तेज और शेरों से भी अधिक शक्तिशाली थे। मैं तेरे लिए शोक करता हूँ, हे मेरे भाई योनातान; तू मुझे अतिशय प्रिय था; मेरा प्रति तेरा प्रेम स्त्री के प्रेम से भी अधिक था।

साउल और योनातान के लिए शोक मनाने के बाद, दाऊद दिव्य प्रकाशन द्वारा यहूदा के कुल के प्रदेश में गया और अपने सभी साथियों के साथ हेब्रोन में बस गया[268] । वहाँ, दाऊद का तेल से अभिषेक किया गया और उसे इज़राइल के राज्य के दक्षिणी भाग का राजा घोषित किया गया[269] , जबकि शेष राज्य पर शाऊल का पुत्र इश्बोशेत का शासन था, जिसे सेनापति अबीनेर ने राजा बनाया था। राज्य का विभाजन लगभग दो साल तक चला, लेकिन, भविष्यवक्ता शमूएल के द्वारा परमेश्वर के वचन के अनुसार, इस्राएल पर अधिकार साऊल के घराने में नहीं रह सकता था। जेबोशी को उसके ही अंगरक्षकों में से दो विश्वासघात करने वालों ने मार डाला; हत्यारों ने इनाम पाने की आशा में उसका सिर दाऊद के पास ले आए। लेकिन दाऊद ने अपने प्रतिद्वंद्वी की मृत्यु पर शोक मनाने के बाद, उद्घोष किया:

'जिस यहोवा के जीते रहने की कसम! जिसने मेरी आत्मा को हर संकट से बचाया है! यदि मैंने उस आदमी को पकड़कर मार डाला होता जिसने मुझे यह खबर दी थी कि शाऊल मर गया है—वह जो खुद को शुभ समाचार लाने वाला समझता था—ज़िकलग में, तो उसे इनाम देने के बजाय, अब जब दुष्ट लोगों ने एक निर्दोष आदमी को उसके ही घर में, उसके बिस्तर पर, मार डाला है, तो क्या मैं तुम्हारे हाथों से खून का बदला न लूँ और तुम्हें पृथ्वी के मुख से मिटा न डालूँ!

और हत्यारों को मार डाला गया। इसके बाद, इस्राएल के सभी गोत्रों के प्रतिनिधि हेब्रोन में इकट्ठा हुए, और लोगों के व्यापक उत्सव के बीच, दाऊद को पूरे इस्राएल का राजा अभिषिक्त किया गया।

---

[266] अमालेकी एसाव के वंशज थे; यह लोग फिलिष्टियों के देश और मिस्र के बीच के प्रदेशों में रहते थे।

[267] ये पहाड़ दक्षिण से एस्द्रेलोन की घाटी के चारों ओर मुड़े हुए हैं, जो गलील को सामरिया से अलग करती है।

[268] हेब्रोन फ़िलिस्तीन के सबसे पुराने शहरों में से एक है: यह बेथलेहेम से लगभग 20 वर्स्ट दक्षिण में स्थित है और यह पैगंबर अब्राहम, इसहाक और याकूब तथा उनके परिवारों की कब्रों का घर है (राहेल को छोड़कर, जो बेथलेहेम में दफ़न हैं)।

[269] यह लगभग ईसा पूर्व 1055 का समय था।

दाऊद का पहला काम राज्य के लिए एक नई राजधानी स्थापित करना था; इस उद्देश्य के लिए, उन्होंने यहूदा और बेन्यामीन के गोत्रों की सीमा पर स्थित एक मजबूत किले को चुना, जो कनानी यबूसी लोगों के नियंत्रण में था; जब उन्होंने स्वेच्छा से इसे दाऊद के हवाले करने से इनकार कर दिया, उसके सेनापति योआब ने किले पर आक्रमण कर उसे जीत लिया; दाऊद ने इस किले का नाम यरूशलेम रखा, अर्थात् शांति का नगर, और वहाँ अपना नया महल बनवाया; नया राजधानी शहर जल्द ही भव्यता और समृद्धि से फल-फूल उठा और बाद में मानव जाति के उद्धार में सबसे महत्वपूर्ण घटनाओं के स्थल के रूप में, दुनिया का सबसे प्रसिद्ध शहर बन गया। अपनी राजधानी को पवित्र करने और प्रभु की महिमा के निवास स्थान के निकट रहने के लिए, दाऊद ने यरूशलेम में एक तम्बू स्थापित किया, जो हर तरह से उस तम्बू के समान था जिसे मूसा ने परमेश्वर की आज्ञा से जंगल में बनाया था, और जो दाऊद के समय में गिब्योन में स्थित था[270] । यहीं पर उन्होंने परमेश्वर के लोगों की सबसे पवित्र वस्तु, वाचा का सन्दूक, किरियात-येआरिम से लाया[271] । इस वस्तु का स्थानांतरण बड़ी गंभीरता से हुआ। इस जुलूस में सत्तर हजार तक इस्राएलियों ने भाग लिया। शुरुआत में, संधि-पेटिका को एक रथ पर ले जाया गया था, लेकिन चूंकि जब रथ हिल गया तो प्रभु ने उसे स्थिर करने के लिए उसे छूने की हिम्मत करने वाले एक इस्राएली को मार डाला, इसलिए बाकी यात्रा के लिए संधि-पेटिका को लेवी के याजक कुल के सदस्यों के कंधों पर ले जाया गया। मंजर उठाने वालों द्वारा हर छह कदम पर, एक जवान सांड और एक भेड़ का बलिदान प्रभु को चढ़ाया जाता था। जुलूस भजनों के गायन, तुरहियों और अन्य वाद्य यंत्रों की तेज ध्वनियों, और लोगों के आनंदित जयकारों के साथ आगे बढ़ा। राजा स्वयं, भक्तिपूर्ण हर्षोल्लास में, प्रभु की संधि-पेटी के सामने नाचे, उन्होंने अपने शाही वस्त्र उतार कर अपने याजकीय सूती वस्त्र धारण कर रखे थे। जब संधि-पेटी को तम्बू में उसकी जगह पर स्थापित कर दिया गया, तो दाऊद ने प्रभु को होमबलि और मेलबलि अर्पित की और सेनाओं के प्रभु के नाम पर लोगों को आशीष दी। उनकी पत्नी मीकाल, जिसे दाऊद ने शाऊल की मृत्यु के बाद अपनी पत्नी के रूप में वापस ले लिया था, ने प्रभु की संदूक को लाए जाने के दौरान उनके व्यवहार के लिए राजा को फटकारा, क्योंकि उसके अनुसार यह महिलाओं की नजर में भी राजसी गरिमा का अपमान था। लेकिन दाऊद ने उत्तर दिया:

'मैं यहोवा के सामने नाचूँगा और कूदूँगा; मैं अपने आप को और भी नीचा करूँगा और अपनी ही दृष्टि में और भी तुच्छ बनूँगा, और जिन दासीओं का तुम उल्लेख करती हो, उनकी दृष्टि में मैं महिमा पाऊँगा।'

जैसे गिबियोन में प्राचीन तम्बू के साथ हुआ था, वैसे ही परमेश्वर के सन्दूक के साथ भी, 'जिस पर सेनाओं के यहोवा का नाम अंकित है, जो करूबों पर विराजमान है', दाऊद ने मूसा के द्वारा दिए गए कानून के अनुसार आराधना का एक क्रम स्थापित किया। इस उद्देश्य के लिए, उन्होंने लेवियों के वंशजों को, जिन्हें परमेश्वर की सेवा के लिए नियुक्त किया गया था, पालियों में विभाजित किया, और उनके बीच कर्तव्य सौंपे। उचित मंडली बनाने और उपासना के लिए भजन रचने के साथ-साथ 'नगाड़े, झनझना और विभिन्न वाद्ययंत्रों को बजाकर' परमेश्वर की महिमा करने के लिए सबसे विशिष्ट संगीतकारों और गायकों को चुना गया। ऐसे पुरुष हेमान, आसाफ और एथान थे, और उनके प्रमुख स्वयं दाऊद थे, जिन्होंने परीक्षा के वर्षों के दौरान विशेष विवेक के साथ परमेश्वर की व्यवस्था के मार्गों में गहराई से अध्ययन किया था और प्रेरित भजनों में लगातार अपनी धार्मिक भावनाओं को व्यक्त किया था।

इन पवित्र गीतों में, दाऊद ने उत्पीड़न के कारण हुई अन्यायपूर्ण पीड़ा के बोझ और गहराई को चित्रित किया; अपने भजनों के माध्यम से, उसने भय के समय में स्वयं को सांत्वना दी, अपनी पीड़ा को कम किया, और मानव अन्याय पर अपने धर्मपरायण क्रोध और आक्रोश को शांत किया; उनमें, उन्होंने ईश्वर के समक्ष अपनी गहरी पीड़ा व्यक्त की और उनकी सहायता माँगी; अपने भजनों के माध्यम से, दाऊद ने अपनी पीड़ा को बिना शिकायत के सहने के लिए अपने आत्मबल को मजबूत किया, अपने सहायक के रूप में ईश्वर में अपनी आशा को दृढ़ किया, और खतरों के बीच उनकी अटूट देखभाल और सुरक्षा के लिए उनकी स्तुति और धन्यवाद अर्पित किया। साथ ही, छुटकारे की आशा के साथ अपने दुखों का वर्णन करते हुए, सताए हुए भजन-लेखक, एक भविष्यसूचक आत्मा में, अपने भजनों में स्वयं को दूर के भविष्य में ले जाता और पीड़ित एक – मसीह – पर मनन करता; उनके निर्दोष दुखों में, नबी-भजनकार ने बुराई पर एक सार्वभौमिक विजय और धार्मिकता के एक नए राज्य के उदय की भविष्यवाणी की[272] । जब दाऊद पूरे इस्राएल का राजा बना, तो उसने

---

[270] अब यह यरूशलेम से उत्तर में दो घंटे की यात्रा पर स्थित एल-जिब गाँव है।

[271] किरियथ-येआरिम – गिबियोन के पास एक कनानी नगर।

[272] भजन संहिता 33; भजन संहिता 51; भजन संहिता 53; भजन संहिता 55; भजन संहिता 56; भजन संहिता 58; भजन संहिता 14.

अपने लोगों में वशि्वास और भक्ति की भावना[273] , देशभक्ति[274] , साहस[275] , न्याय[276] और अन्य सद्गुणों को स्थापति करने के लिए गीत के अपने महान उपहार का उपयोग कयिा। दाऊद के शासनकाल के सभी सबसे महत्वपूर्ण घटनाओं के साथ शासक-भजनकार की धार्मकि आत्मा के संगीतपूर्ण प्रवाह जुड़े हुए थे। सरिख के बुद्धमिान पुत्र की गवाही के अनुसार, दाऊद *'अपने प्रत्येक कर्म के बाद सर्वोच्च को स्तुति के शब्दों के साथ धन्यवाद अर्पति करता था; वह पूरे हृदय से गाता और अपने स्रष्टा से प्रेम करता था।' और उसने वेदी के सामने गायकों को बठिाया, ताकि उनकी आवाज़ भजनों को मधुर बना सके; उसने उत्सवों को वैभव प्रदान कयिा और समयों को ठीक-ठीक नर्धिारति कयिा, ताकि वे उसके पवत्रि नाम की स्तुति करें और प्रातकाल से ही पवत्रिस्थान में गूँज उठें* (सरि. 47:9–12)।

प्रभु के नाम का महमिामंडन करने के लिए उत्सुक होकर, दाऊद ने नबी नातान से कहा:

'मैं तो देवदार की लकड़ी के घर में रहता हूँ, जबकि परमेश्वर का संदूक एक तम्बू के नीचे रहता है।'

नबी ने प्रभु के लिए एक स्थायी मंदरि बनाने के राजा के इरादे को मंजूरी दे दी, लेकनि उसी रात उन्हें प्रभु से एक प्रकटवाणी प्राप्त हुई, जसिे उन्होंने दाऊद तक पहुँचाया। प्रभु ने नबी के माध्यम से दाऊद से कहा:

'जब तेरे दनि पूरे हो जाएँ और तू अपने पुरखाओं के पास जा वशि्राम कर, तब मैं तेरे बाद तेरे वंशज को उत्थान दूँगा, जो तेरे ही शरीर से होगा, और मैं उसके राज्य को दृढ़ करूँगा। वह मेरे नाम के लिए एक भवन बनाएगा, और मैं उसके राज्य के सहिासन को सदा के लिए दृढ़ करूँगा। मैं उसका पति बनूँगा, और वह मेरा पुत्र होगा; और यदि वह पाप करे, तो मैं उसे मनुष्यों की लाठी और मनुष्यों के बेटों की चाबुक से दंड दूँगा, पर मैं अपना अनुग्रह उससे नहीं हटाऊँगा, जैसा मैंने शाऊल से हटा दयिा था, जसिे मैंने तेरे सामने त्याग दयिा था। और तेरा घराना और तेरा राज्य मैं उसे मनुष्यों की लाठी और आदमयिों के बंधनों से अनुशासति करूँगा, तथापि मैं अपना अनुग्रह उससे न हटाऊँगा, जैसा मैंने शाऊल से हटा दयिा था, जसिे मैंने तुम्हारे सामने त्याग दयिा था। तेरा घर और तेरा राज्य मेरी ओर से सदा के लिए स्थरि रहेंगे, और तेरा सहिासन सदा के लिए स्थरि रहेगा।

यह ऊँचा वादा, जो दाऊद और उसकी संतान पर परमेश्वर की वशिेष कृपा का सबसे महत्वपूर्ण प्रमाण था, ने राजा की अपने राज्य के भवषि्य के भाग्य के बारे में भवषि्यद्वाणी की दृष्टि को स्पष्ट और ऊँचा कयिा। भवषि्यवक्ता-भजनकार को इस वादे में दाऊद के पुत्र के आने वाले शाश्वत राज्य के बारे में भजनों का एक अक्षय स्रोत मलिता है, मसीह, संसार के उद्धारकर्ता, जन्हिें वह परमेश्वर के सनातन पुत्र के रूप में स्वीकार करता है, और स्वयं को उसका सेवक कहता है; आसपास के राष्ट्रों पर अपनी वजियों में, दाऊद मसीह के शत्रुओं की पराजय और उसके प्रभुत्व का सार्वभौमकि प्रसार देखता है, और गंभीर भजनों में मसीह के राज्य की भवषि्य की महमिा की घोषणा करता है।

और दाऊद ने पूरे इस्राएल पर शासन कयिा, और अपने सभी लोगों के लिए न्याय और धार्मकिता का प्रशासन कयिा। इस्राएल के राज्य में आंतरकि व्यवस्था स्थापति करने में, जो शाऊल के अंतमि वर्षों के दौरान उथल-पुथल में पड़ गया था, दाऊद मुख्य रूप से ईश्वर, इस्राएल के स्वर्गीय राजा, जन्हिें वह अपना प्रतनिधि मानता था, को प्रसन्न करने और लोगों की भलाई के प्रति चिंतति था। उसके पूरे जीवन का एकमात्र उद्देश्य ईश्वर द्वारा दयिा गया वधिान को पूरा करना और उसे अपने सभी प्रजाजनों पर बाध्यकारी बनाना था। दाऊद के शासन के कारण, उसकी राजधानी यरूशलेम, उसकी मृत्यु के बाद भी कई वर्षों तक एक 'वफादार राजधानी, जो न्याय से परपिूर्ण थी' बनी रही। दैवीय इच्छा के प्रति दाऊद की पूर्ण आज्ञाकारति को वदिेशी राष्ट्रों पर उसकी शानदार वजियों से मुकुट मलिा; उसके शासन के तहत, इस्राएल का राज्य उन सीमाओं तक पहुँच गया जो वाचा बनते समय इब्राहीम के वंशजों को दी गई थीं। दाऊद की वजियों के कारण, उसका साम्राज्य लाल सागर से लेकर फरात नदी तक फैला हुआ था, जो दक्षणि में अरब रेगस्तिान तक, उत्तर में सीरयिा तक और पश्चमि में भूमध्य सागर तक पहुँचता था। उस समय, इज़राइल एक शक्तशिाली राज्य था, जो कई अधीनस्थ लोगों पर शासन करता था; यह आंतरकि रूप से और युद्ध के लूट के माल से दोनों ही तरह से समृद्ध था, और यहूदी राजा के प्रजाजनों और उनकी संपत्ति के लिए पूर्ण सुरक्षा का आनंद लेता था। ईश्वर की दया के इतने स्पष्ट प्रकटीकरणों का सामना करते हुए, दाऊद के लिए केवल इतना ही बचा था कि वह वनिम्रता से ईश्वर का धन्यवाद करे

---

[273] भजन संहति 1; भजन संहति 11; भजन संहति 13; भजन संहति 14; भजन संहति 18; भजन संहति 23; भजन संहति 28; भजन संहति 35; भजन संहति 63; भजन संहति 103; भजन संहति 104; भजन संहति 121; भजन संहति 144.

[274] भजन संहति 132.

[275] भजन संहति 9; भजन संहति 19; भजन संहति 20; भजन संहति 32, आदि।

[276] भजन संहति 14; भजन संहति 36, आदि।

और उनके पवित्र नाम की महिमा के लिए भलाई करे। फिर भी, मानव स्वभाव में अंतर्निहित कमजोरियाँ और दुर्बलताएँ दाऊद से भी अपरिचित नहीं थीं; सांसारिक महिमा और वैभव से घिरे होने के कारण, उन्होंने इन कमजोरियों को प्रकट होने दिया, जिसके परिणाम उनके लिए बहुत गंभीर साबित हुए।

पूर्व के अन्य शासकों की तरह, दाऊद की कई पत्नियाँ और रखेलियाँ थीं; इससे जुड़ी शाही दरबार की विलासिता और वैभव ने दाऊद के नैतिक चरित्र पर लापरवाह और बिगड़ने वाला प्रभाव डाला। इसलिए, जब एक दिन, अपने महल की छत पर टहलते हुए, उसने पड़ोसी आंगन में एक सुंदर स्त्री को स्नान करते देखा, तो उसने अपनी पापी वासना को दबाने से इनकार कर दिया और आदेश दिया कि उस स्त्री को उसके पास लाया जाए। यह महिला, जिसका नाम बतशेबा था, दाऊद के एक सेनापति, ऊरीया की पत्नी थी, जो उस समय एक सैन्य अभियान पर गया हुआ था, और वह राजा से गर्भवती हो गई। यह जानने पर, दाऊद ने शुरू में अपने पाप को उसके पति से छिपाने की कोशिश की; इसके लिए, उसने उसे अपनी पत्नी के साथ रहने के लिए यरूशलेम बुलाया, लेकिन जब इसमें विफलता मिली, तो उसने अपने सेनापति को युद्ध के दौरान ऊरीया को सबसे खतरनाक स्थिति में रखने का आदेश दिया। ऊरीया युद्ध में मारा गया, और बतशेबा दाऊद की पत्नी बन गई और उसने एक पुत्र को जन्म दिया। और दाऊद ने जो यह काम किया था, वह यहोवा की दृष्टि में बुरा था। राजा को डाँटने के लिए, नबी नातान उसके पास आए और यहोवा के नाम पर दाऊद से कहा:

'तूने यहोवा के वचन को तुच्छ जाना और उसके दृष्टि में बुरा काम किया है। इसलिये तलवार तेरे घर से कभी दूर न होगी, क्योंकि तूने मुझे तुच्छ जाना और ऊरियाह के घरवाली को ले लिया है।'

साथ ही, नबी ने बतशेबा के बच्चे की निकट मृत्यु की भविष्यवाणी की। बच्चा वास्तव में बीमार पड़ गया, और सात दिनों तक दाऊद ने बिना खाए-पिए, पूर्ण एकांत में बच्चे के लिए प्रार्थना की। जब बच्चा मर गया, दाऊद ने विनिम्रता से परमेश्वर की इच्छा के प्रति समर्पण किया; यह समर्पण उतना ही पूर्ण था जितना कि उसने किया हुआ पाप उसके सच्चे और गहरे पश्चाताप के कारण था। उसके टूटे हुए हृदय की अभिव्यक्ति एक उत्कट प्रायश्चित्तीय भजन में हुई, जो हमेशा के लिए हर पश्चाताप करने वाले पापी के लिए पश्चाताप की प्रार्थना बन गया है (भजन संहिता 50)।

किए गए अपराध के लिए ईश्वर का न्याय शीघ्र ही दाऊद के घर में कई घृणित और खूनी घटनाओं के माध्यम से प्रकट हुआ। विभिन्न पत्नियों से हुए दाऊद के दो प्रिय बेटों, सुंदर अम्नोन और अबीशालोम के बीच एक घातक विवाद छिड़ गया, क्योंकि अम्नोन ने अबीशालोम की बहन, तामार का अपहरण कर लिया था; और भाई ने एक भोज के दौरान अम्नोन की विश्वासघात से हत्या करके इस अपमान का बदला लिया, जिसके बाद वह देश से भाग गया। राजा अपने प्रिय पुत्रों की मृत्यु पर गहरा शोक मना रहा था, और कई वर्षों बाद ही उसने अबसालोम को राजमहल लौटने की अनुमति दी। इस महान दयालुता के कार्य के लिए, उस बिगड़ैल पुत्र ने अपने पिता का अहसानफरामोशी से बदला चुकाया। उसने दाऊद के खिलाफ विद्रोह भड़काया, जो अब एक बूढ़े व्यक्ति थे; आम लोगों की जरूरतों के प्रति अपनी चापलूसी और चापलूसी भरी चिंता के कारण, अबीशालोम अपने चारों ओर अनुयायियों की भीड़ इकट्ठा करने में कामयाब रहा और हेब्रोन में खुद को राजा घोषित कर दिया; एक शक्तिशाली साजिश आकार लेने लगी, और लोग अबीशालोम के पास आने लगे और उसकी संख्या बढ़ गई।

यह सुनकर, दाऊद ने अपने कुछ सबसे करीबी सहयोगियों के साथ, अपनी सुरक्षा के लिए यॉर्डन के पार की भूमि में जाने का फैसला किया; महायाजक वाचा के संदूक के साथ राजा के साथ जाना चाहते थे।

लेकिन दाऊद ने महायाजक से कहा:

'परमेश्वर के संदूक को नगर में वापस ले जाओ, और उसे उसकी जगह रहने दो। यदि मैं प्रभु की दृष्टि में अनुग्रह पाऊँ, तो वह मुझे वापस लाएगा और मुझे उसे और उसके निवास-स्थान को देखने देगा। परन्तु यदि वह कहे, "मुझे तुम से प्रसन्नता नहीं हुई," तो मैं यहाँ हूँ; जैसा वह उचित समझे, वैसा ही मुझ पर करे।'

सैडर की नाली[277] को पार करने के बाद, दाऊद जैतून के पहाड़ पर चढ़ा; चलते समय वह रो रहा था, उसका सिर ढका हुआ था, और वह नंगे पाँव चला; और उसके साथ जो सब लोग थे, उन्होंने अपने सिर ढक लिए और रोते हुए चले। लोगों में से श्रेष्ठ लोग वृद्ध राजा की कड़वी दुर्दशा पर सहानुभूति रखते थे, लेकिन ऐसे भी थे जिन्होंने इस अवसर का लाभ उठाकर पीड़ित का बेखौफ अपमान किया। इस प्रकार शाऊल के घराने का एक सेमी नामक व्यक्ति अभद्रता से राजा

[277] यह धारा यरूशलेम के पूर्वी भाग में बहती थी।

की निंदा करने लगा, और उस पर पत्थर तथा कीचड़ फेंकने लगा; इस पर क्रुद्ध होकर, दाऊद के साथियों ने उस अभद्र व्यक्ति को मार डालने की अनुमति माँगी, लेकिन पीड़ित ने कहा:

'उसे रहने दो; मुझे गाली देने दो, क्योंकि यहोवा ने उसे ऐसा करने की आज्ञा दी है। शायद यहोवा मेरी इस अपमानित दशा पर दृष्टि डालेंगे और उसकी इस समय की गाली के बदले में मुझ पर अनुग्रह करेंगे।'

ईश्वर की दया में यही आशा *[278] * नामक मार्मिक भजनों में झलकती है, जिनमें उस कठिन समय के दौरान, वृद्ध दाऊद ने अपने आत्मा की व्यथा प्रभु के समक्ष व्यक्त की, क्योंकि एक पिता और शासक के रूप में उनकी भावनाएँ आहत हुई थीं।

और यहोवा ने अपने दास को उस विपत्ति से बचाया जो उस पर आई थी। यॉर्डन के उस पार एक शक्तिशाली सेना न्यायसंगत राजा के चारों ओर इकट्ठी हो गई थी, और दाऊद ने इसकी कमान अपने विश्वसनीय जनरलों, योआब, अबीशाई और एफ्राइम को सौंप दी। उनकी सलाह पर, अपनी ही सेना की पंक्तियों के पीछे रहकर, दाऊद ने कमांडरों से अपने पूर्व पुत्र के जीवन को क्षमा करने की विनती की। हालाँकि, उसकी विनती पर कोई ध्यान नहीं दिया गया: जब अबेशalom की सेना पराजित हो गई, तो वह खुद भागने की कोशिश करने लगा; जंगल में घोड़े पर चढ़कर भागते समय, अबेशalom के घने बाल एक ओक के पेड़ की शाखाओं में उलझ गए और वह उससे लटकता रह गया; यहीं पर योआब उसके पास पहुँचा और उसे तीर मार दिया; विद्रोही राजकुमार के क्षत-विक्षत शरीर को एक गड्ढे में फेंक दिया गया, जिसे बाद में पत्थरों के एक बड़े ढेर से ढक दिया गया, यह मूसा की व्यवस्था की आज्ञा के अनुसार था कि अवज्ञाकारी बच्चों को पत्थर मारकर मार डाला जाए। यह जानकर, उस दुखी पिता को अपने बेटे द्वारा की गई बुराइयाँ याद नहीं रहीं; वह अपने कक्ष में गया और रोया, और चलते-चलते कहने लगा:

'अभागे अबशालोम, मेरे बेटे, मेरे बेटे अबशालोम! हे, काश कोई मुझे तेरी जगह मरने देता, अबशालोम, मेरे बेटे, मेरे बेटे!'

दाऊद ने इस्राएल के देश पर परमेश्वर द्वारा लाई गई विपत्तियों के कारण भी गहरे शोक का अनुभव किया; ये तीन साल का अकाल और तीन दिन की महामारी थीं। दाऊद ने इन परीक्षाओं को प्रभु की इच्छा के प्रति विनम्रता और समर्पण के साथ सहन किया, और अपने तथा अपनी प्रजा के पापों के लिए प्रार्थनाओं और होमबलि के द्वारा परमेश्वर के न्याय को शांत किया।

दाऊद ने अपने शासन के अंतिम वर्ष, जो अखंड शांति में बीते, उस महान कार्य की तैयारी में बिताए जो परमेश्वर की इच्छा से उसके उत्तराधिकारी द्वारा किया जाना था, अर्थात् यहोवा के मंदिर का निर्माण। पवित्र भवन की सभी संरचनाओं के लिए ब्लूप्रिंट तैयार किए गए, और सभी पूजा-सम्बन्धी फर्नीचर के लिए डिज़ाइन तैयार किए गए; मंदिर के पूर्ण निर्माण के लिए आवश्यक सभी सामग्रियाँ एकत्र की गईं, साथ ही हर प्रकार के कारीगर भी। दाऊद ने यह सब, अपने जीवित रहते और लोगों के बुज़ुर्गों की उपस्थिति में, अपने पुत्र सुलैमान को सौंप दिया, जो प्रभु के वचन के अनुसार, सिंहासन पर उसका उत्तराधिकारी बनने वाला था; उसी समय, बुज़ुर्गों ने अपनी इच्छा से उदार दान दिया, और लोग उनके उत्साह पर प्रसन्न हुए। एक प्रेरित प्रार्थना में, राजा ने प्रभु को वे खजाने समर्पित किए जो उसने स्वयं मंदिर के निर्माण के लिए इकट्ठे किए थे, और साथ ही इस महान कार्य के लिए अपने प्रजाजनों द्वारा स्वेच्छा से दी गई भेंटें भी।

'मैं कौन हूँ,' दाऊद पुकारता है, 'और मेरी प्रजा कौन है, कि हम ऐसी भेंट चढ़ा सकें! फिर भी सब कुछ तेरे ही पास से है, और जो कुछ हमने तेरे हाथ से पाया है, वही हमने तुझे लौटा दिया है।' मैं जानता हूँ, हे मेरे परमेश्वर, कि आप हृदय की परीक्षा करते हैं और निष्ठा को पसंद करते हैं; मैंने यह सब एक निष्ठावान हृदय से अर्पित किया है, और अब मैं देखता हूँ कि यहाँ मौजूद आपके लोग भी आनंद के साथ आपको अर्पण कर रहे हैं। हे प्रभु, हमारे पिता आब्राहम, इसहाक और इस्राएल के परमेश्वर! अपने लोगों के बीच हृदय की इस वृत्ति को सदा के लिए बनाए रखो, और उनके हृदयों को अपनी ओर निर्देशित करो। और मेरे पुत्र सोलोमन के लिए, उसे एक धर्मी हृदय प्रदान करो, ताकि वह तुम्हारे आज्ञाओं, तुम्हारे विधानों और तुम्हारे नियमों का पालन करे, और इन सब को पूरा करे, और उस मंदिर का निर्माण करे जिसके लिए मैंने तैयारी की है।

---

[278] भजन संहिता 6; भजन संहिता 31; भजन संहिता 37; भजन संहिता 38; भजन संहिता 142।

कुछ ही समय बाद, दाऊद ने सुलैमान को राजा बनाया, और उसे प्रधान याजक जद्कूक ने अभषिेक कयिा; सारा जनसमूह आनंदति हुआ, और दाऊद के सभी सेवकों ने उसे बधाई दी, जबकि वृद्ध राजा, जो दुर्बलता से थका हुआ था, अपने बस्तिर से उठकर झुक गया और कहा:

'धन्य है यहोवा, इस्राएल का परमेश्वर, जसिने आज मेरे अपने वंश में से एक को मेरे सहिासन पर बठिाया है, और मेरी आँखों ने यह देखा है।'

और यहोवा ने इस्राएल के सब की आँखों के सामने सोलोमन को महान कयिा और उस पर राज-तलिक लगाया, जैसा कि इस्राएल के कसिी भी राजा पर पहले कभी नहीं लगा था। और यहेशू के पुत्र दाऊद ने पूरे इस्राएल पर राज्य कयिा; उसके राज्य का समय चालीस वर्ष था: उसने हेब्रोन में सात वर्ष और यरूशलेम में तेईस वर्ष राज्य कयिा। और वह जीवन, धन-संपत्ति और महमिा से परपिूर्ण होकर वृद्धावस्था में मर गया, और उसके पुत्र सुलैमान ने उसके स्थान पर राज्य कयिा।

पवत्रि प्रेरति पतरस राजा दाऊद को एक भवषि्यवक्ता कहते हैं (प्रेरतिों के काम 2:30)। अलेक्जेंड्रयिा के संत अथानासयिस, भजन संहति 20 पर अपनी व्याख्या में सखिाते हैं: 'राजा दाऊद को इस तथ्य से ही महमिामंडति कयिा गया है कि सिंसार के लिए उद्धार उनके वंश से उत्पन्न हुआ। क्योंकि उन्होंने इसका गंभीरता से आग्रह कयिा और इसके लिए प्रार्थना की। इसलिए, यह उसे शुद्ध सोने के मुकुट के समान प्रदान कयिा गया (भजन संहति 20:4), जसिसे उसका सरि महमिामय हुआ। क्योंकि दाऊद को प्रभु और उनके पुत्र के साथ, जो देह में थे, सभी राष्ट्रों में महमिा दी जाती है। वास्तव में, यह उद्धार उसके लिए न केवल एक मुकुट था, बल्कि एक इच्छा, और दीर्घायु, और महमिा, और वैभव, और आनंद, और हर्ष, और आशा, और अटूट दया भी था'। भजन संहति 50 के शब्दों पर अपनी व्याख्या में: *'मैं दुष्टों को तेरे मार्ग सखिाऊँगा, और अधर्मी तेरी ओर फरिेंगे'* (भजन संहति 50:15), संत जॉन क्राइसोस्टोम भजनकार के मुख से प्रभु के प्रति निम्निलखिति स्वीकारोक्ति रिखता है:

– आपने मुझे इतना सम्मान दयिा है कि आपने मुझे अपने पुत्र का प्रकाशन कयिा और उसे मुझे जानवाया; मैं यह जान गया हूँ कि आपका एक पुत्र है जसिने मानव स्वभाव धारण कयिा; मैं यह जान गया हूँ कि आपका कोई है जो आपके दाहनि हाथ पर वरिाजमान है; और मैंने संपूर्ण ब्रह्मांड में क्रूस का प्रचार कयिा है, उनके दफ़न, अधोलोक में उनके अवतरण, उनके पुनरुत्थान; मैंने उनके न्याय, अन्यजातयिों के उद्धार, प्रेरतिों के बुलावे, यहूदयिों के अस्वीकार, कलीसयिा के बुलावे, कुँवारयिों के समूह, और उनके तेरे दाहनि हाथ पर बैठने के बारे में कहा है।' – 'तो, दाऊद,' पवत्रि पति आगे कहते हैं, 'तुमने हर चीज़ के बारे में भवषि्यवाणयिाँ प्रचार की हैं: तो फरि तुम क्यों पुकारते हो: *"हे परमेश्वर, मुझ में एक नया और नरि्मल हृदय रच; और मुझ में एक दृढ़ आत्मा फरि से स्थापति कर"* (भजन संहति 50:12)? तुम एक राजा हो, तुम राजमुकुट पहनते हो, तुम बैंगनी वस्त्र धारण करते हो। लेकनि, – वह कहता है, – यह सब घास के समान है, एक रात और एक स्वप्न; मैं एक दूसरे प्रकार की सुंदरता की खोज करता हूँ। मुझे पवत्रि आत्मा प्रदान करें, ताकि आप मुझसे फरि से बोलें और मैं आपसे बोल सकूँ। आत्मा मुझसे चला गया है, ठीक वैसे जैसे एक कबूतर गंदगी देखकर उड़ जाता है; मैं उसे वापस लाना चाहता हूँ, और फरि मैं आकर आपके साक्षात उपस्थति होऊँगा; लेकनि अब मैं यह सहन नहीं कर सकता, क्योंकि मैंने तेरे सामने अपनी नरि्भीकता खो दी है। देखो, दाऊद परमेश्वर के सामने कैसे अंगीकार करता है। तो फरि देखो, पाप कतिनी बड़ी बुराई है: व्यभचिार, हत्या, व्यवस्था का उल्लंघन, प्रभु की आज्ञाओं का उल्लंघन। मैं यह नबी की नदिा करने के लिए नहीं कह रहा हूँ, बल्कि उसकी शीघ्र पश्चाताप को दखिाने के लिए कह रहा हूँ। पाप तो जल्दी हो गया, लेकनि पश्चाताप उससे भी जल्दी हुआ। उरयि्याह की पत्नी के साथ पाप करने के बाद, वह इस पाप से पीड़ति हो गया और जब वह भजन लखिने लगा, तो उसने पुकारा:

'हे *परमेश्वर, अपनी महान् दया के अनुसार मुझ पर दया करें* (भजन संहति 50)।

और अपने पूर्ण पश्चाताप के द्वारा, उसे अपने पाप की पूर्ण क्षमा प्राप्त हुई। और धर्मी राजा—नबी—के चरत्रि लक्षणों में, और परीक्षाओं से भरे उसके जीवन के परस्थितियिों में, ईश्वर-ज्ञानी पति, देह के अनुसार दाऊद के पुत्र, हमारे प्रभु यीशु मसीह और उनके सांसारकि जीवन की पूर्वछाया देखते हैं। संत जॉन क्राइसोस्टोम, दाऊद की वनिम्रता, नम्रता और कोमलता पर चतिन करते हुए, सखिाते हैं:

'और नम्र दाऊद ने गोलयिाथ को मार गरिाया, सेना को परास्त कयिा और वजिय प्राप्त की। सामान्य तौर पर, नम्र लोगों का स्वभाव होता है कि वे अपने साथ हुए अन्याय को क्षमा कर दें और दूसरों के साथ हुए अन्याय का बदला लें। यही वह है जो मसीह ने कयिा।' अलेक्जेंड्रयिा के संत अथेनासयिस, भजन संहति 51, 56 और 58 पर अपनी टीकाओं में

गवाही देते हैं कि ये भजन, जो शाऊल के हाथों दाऊद की विपत्तियों को दर्शाते हैं, हमारे प्रभु यीशु मसीह का पूर्वसंकेत देते हैं, जिन्होंने कृतघ्न इस्राएलियों पर अनुग्रह किया (जिनका प्रतिनिधित्व साउल ने किया) और उनकी बदनामी से सताए गए, ने यहूदा के व्यक्तित्व का पूर्वाभास दिया और इस्राएल के दुष्टता के कारण ईश्वर के मार्गदर्शन से वंचित हो जाने के बाद सभी अन्यजातियों के आह्वान की घोषणा की। तदनुसार, हमारे प्रभु यीशु मसीह को भविष्यद्वक्ताओं में अक्सर दाऊद के नाम से दर्शाया गया है; मसीहियों को दाऊद की संतान कहा जाता है; उद्धारकर्ता मसीह का राज्य दाऊद की कुंजी है; उनका सिंहासन दाऊद का सिंहासन है; और मसीह की कलीसिया को दाऊद का घर कहा जाता है।

दाऊद की दैवीय रूप से प्रेरित रचनाओं को बाद में भजनों की एक ही पुस्तक, या भजन संहिता में संकलित किया गया; अलेक्जेंड्रिया के संत अथेनासियस गवाही देते हैं कि यह काम एक भविष्यवक्ता द्वारा किया गया था। धन्य थियोडोरेट, भजनों पर अपनी व्याख्या में, सिखाते हैं: कुछ लोग कहते हैं कि सभी भजन दाऊद के नहीं हैं, बल्कि कुछ अन्य लोगों द्वारा लिखे गए थे। क्योंकि, इस प्रकार शिलालेखों की व्याख्या करके, उन्होंने कुछ भजन इदथुम को, कुछ एफाम को, कुछ कोरह के बेटों को, और कुछ अन्य आसाफ को सौंप दिए, क्योंकि उन्होंने इतिहास की पुस्तक से सीखा था कि और वे भी भविष्यद्वक्ता थे। मैं इस मामले पर कोई दावा नहीं करता। क्योंकि इससे मुझे क्या लाभ होगा यदि सभी भजन दाऊद के हों, या यदि कुछ उपरोक्त उल्लेखित लोगों को भी श्रेय दिया गया हो, जबकि यह स्पष्ट है कि वे सभी पवित्र आत्मा की प्रेरणा से लिखे गए थे? हम जानते हैं कि इतिहास की पुस्तक दिव्य नबी दाऊद और उन अन्य लोगों दोनों को नबी के रूप में संदर्भित करती है। एक नबी का यह स्वभाव है कि वह अपनी जीभ को आत्मा की कृपा का साधन बनाता है, जैसा कि भजन-संग्रह में कहा गया है: 'मेरी जीभ एक चतुर लेखक की कलम है' (भजन संहिता 44:2)। हालाँकि, बहुमत के निर्णय को ही मान लिया जाए, क्योंकि अधिकांश लेखकों ने यह दावा किया है कि भजन दाऊद के हैं।"

संत बेसिल द ग्रेट ने ईसाई जीवन के लिए भजन संहिता के महान महत्व का वर्णन इस प्रकार किया है: *'सारी पवित्रशास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचित है और लाभदायक है'* (2 तीमु. 3:16); इसे पवित्र आत्मा द्वारा लिखा गया था ताकि इसमें, आत्माओं के लिए एक सामान्य औषधि-पेटिका की तरह, हम सभी—मानव—अपनी-अपनी पीड़ा से चंगाई पा सकें। क्योंकि कहा गया है: *'कोमलता बड़े पापों को ढाँप देती है'* (उपदेशक 10:4)। लेकिन भविष्यवक्ता एक बात सिखाते हैं, और इतिहासकार दूसरी; एक में, व्यवस्था निर्देश देती है, जबकि दूसरे में, उपदेश के रूप में सलाह दी जाती है; भजन संहिता की पुस्तक, हालांकि, अपने भीतर सभी पुस्तकों से उपयोगी बातों को समाहित करती है। यह भविष्य के बारे में भविष्यवाणी करती है, अतीत की घटनाओं को याद दिलाती है, जीने के लिए कानून प्रदान करती है, और आचरण के नियम प्रस्तुत करती है। संक्षेप में, यह सुदृढ़ शिक्षाओं का एक सार्वभौमिक खजाना है और यह सावधानीपूर्वक प्रत्येक व्यक्ति के लिए लाभदायक चीज़ों की तलाश करता है। यह आत्मा के पुराने घावों को भी भरती है, हाल ही में घायल हुए लोगों को शीघ्र स्वास्थ्य लाभ पहुँचाती है, जो अस्वस्थ है उसे पुनर्स्थापित करती है और जो स्वस्थ है उसे बनाए रखती है; और, सामान्य रूप से, यह उन जुनूनों को यथासंभव जड़ से उखाड़ फेंकती है जो मानव जीवन में विभिन्न रूपों में आत्माओं पर हावी होते हैं। इसके अलावा, यह व्यक्ति में एक प्रकार की शांत प्रसन्नता और आनंद भरता है, जो मन को पवित्र बनाता है। भजन आत्मा के लिए शांति है, शांति का दूत है; यह विद्रोही और बेचैन विचारों को शांत करता है; यह आत्मा की चिड़चिड़ाहट को कम करता है और अतिशयता को रोकता है। एक भजन मित्रता का मध्यस्थ है, दूर रहने वालों के बीच एक बंधन है, मतभेद रखने वालों के बीच मेल-मिलाप है। क्योंकि वह व्यक्ति जिसे आपने ईश्वर के प्रति एक ही स्वर में स्तुति की है, उसे कौन अब अपना शत्रु मान सकता है? इसलिए, भजन-गायन हमें सबसे बड़ी आशीर्वादों में से एक प्रदान करता है - प्रेम, सामूहिक गायन को एकता के बंधन के रूप में रचकर और लोगों को एक ही, सामंजस्यपूर्ण स्वर में एक साथ लाकर। भजन राक्षसों से एक शरण है, स्वर्गदूतों की सुरक्षा में आने का एक साधन है, रात के डर के खिलाफ एक हथियार है, दिन के श्रम से एक राहत है, शिशुओं के लिए सुरक्षा है, जीवन के प्रौढ़ काल में एक आभूषण है, बुजुर्गों के लिए सांत्वना है, और महिलाओं के लिए सबसे उपयुक्त आभूषण है। भजन रेगिस्तानों में वास करता है और बाजारों में पवित्रता लाता है। नवागंतुकों के लिए, यह शिक्षा की नींव है; प्रगति करने वालों के लिए, ज्ञान में वृद्धि है; सिद्ध लोगों के लिए, पुष्टि है: यह चर्च की आवाज़ है। यह शिक्षक की एक बुद्धिमानी भरी रचना है, जो हमारे लिए उपयोगी चीज़ों को एक साथ गाने और सीखने की व्यवस्था करता है। सिखों को मधुर गायन के आनंद के साथ मिलाया गया है, ताकि सुखद और नीरसता से राहत के साथ-साथ, हम बिना ध्यान दिए, वचन में जो उपयोगी है उसे भी ग्रहण कर सकें। क्योंकि जो कुछ जबरदस्ती सीखा जाता है वह हमारे साथ लंबे समय तक नहीं रहता, लेकिन जो कुछ प्रेरणा और आनंद के साथ ग्रहण किया जाता है वह हमारी आत्मा में अधिक दृढ़ता से जड़ जमाता है'। 'भजन संहिता में, निम्नलिखित भी आश्चर्यजनक है: – जैसा

कि अलेक्जेंड्रिया के संत अथेनासियस सिखाते हैं – अन्य पुस्तकों में, जब संत बोलते हैं और जो कुछ भी वे कहते हैं, पाठक इसे विशेष रूप से उन लोगों से जोड़ते हैं जिनके बारे में यह लिखा गया है, और श्रोता खुद को पाठ में वर्णित व्यक्तियों से अलग करते हैं; और यदि वे वर्णित कृत्यों पर आश्चर्य करते हैं और उनका अनुकरण करने की आकांक्षा रखते हैं, तो यह सब अनुकरण के समान है। लेकिन जो कोई भी भजन संहिता को हाथ में लेता है: जबकि उद्धारकर्ता के बारे में भविष्यवाणियाँ अन्य धर्मग्रंथों की तरह ही सामान्य आश्चर्य और श्रद्धा के साथ पढ़ी जाती हैं, अन्य भजन इस तरह से पढ़े जाते हैं जैसे कि वे स्वयं के शब्द हों, और श्रोता, मानो ये शब्द स्वयं बोल रहा हो, गहरे भावुक हो उठता है, और भजनों के सभी शब्द उसके लिए प्रिय हो जाते हैं, मानो वे वास्तव में उसके अपने हों।"

'हम सभी पिता परमेश्वर, राजा दाऊद की स्तुति करें; क्योंकि उनसे कुँवारी का अंकुर निकलेगा, और उनसे मसीह का फूल खिलेगा, और धूल से वे आदम और हव्वा को उठाएंगे, क्योंकि वे अनुग्रहकारी हैं' (दिन का स्टिचेरा, 'हे प्रभु, मैंने पुकारा' पर)।

परम पवित्र कुँवारी मरियम की मंगनी में बंधे संत जोसेफ की स्मृति

26 दिसंबर को स्मरण किया जाता है

संत जोसेफ राजसी वंश से थे, दाऊद और सुलैमान के घर से; वे मत्फत के पोते, एलिएज़र के परपोते, जन्म से याकूब के पुत्र और दत्तक कानून के अनुसार एलियाह के पुत्र थे[279] । उनके दादा मत्फत, जो उनके पिता याकूब के पिता थे, का निधन हो चुका था। मत्थथ की पत्नी, जो याकूब की माता थीं, बाद में नप्ताली कुल के दाऊद के पुत्र मेल्चियास से विवाह कर लीं, और उन्होंने एलियाह को जन्म दिया। हालाँकि एलियाह ने विवाह किया और बिना संतान के मर गया; और उसके बाद, याकूब—जो एक ही माँ का भाई था लेकिन एक ही पिता का नहीं—ने उसकी पत्नी को अपनी पत्नी बना लिया, क्योंकि कानून यह निर्धारित करता था कि यदि कोई व्यक्ति बिना संतान के मर जाता है, तो उसका भाई उसकी पत्नी को ले लेगा और अपने भाई की संतान को जन्म देगा। इसी कानून के अनुसार याकूब ने अपने भाई की पत्नी को लिया और इस पवित्र मंगेतर यूसुफ के पिता बने; और यूसुफ, जैसा कि पहले ही कहा जा चुका है, दोनों के पुत्र थे: स्वभाव से, याकूब के; और कानून से, एलियाह के। यही कारण है कि सुसमाचार लेखक संत लूकस ने, मसीह की वंशावली देते हुए, एलिया को यूसुफ का पिता बताया, और मसीह के बारे में इस प्रकार कहा: *'वह, जैसा कि सोचा जाता था, यूसुफ का पुत्र, एलिया का पुत्र, मत्ती का पुत्र था'* (लूका 3:23-24), और याकूब के बजाय एलिया का नाम लिया। – इस संत जोसेफ के संबंध में पश्चिमी और पूर्वी ईसाइयों के बीच अलग-अलग विचार हैं। पश्चिमी ईसाई कहते हैं कि वह अपनी मृत्यु तक कुंवारी रहे, उन्होंने कभी विवाह नहीं किया, जबकि पूर्वी ईसाई मानते हैं कि उनकी एक पत्नी थी और उनके बच्चे थे। इस प्रकार, एक प्राचीन यूनानी इतिहासकार निकिफिोरस, सेंट हिप्पोलिटिस का अनुसरण करते हुए, बताता है कि उसने सलोमी से विवाह किया था, लेकिन (वह जोड़ता है) यह मत सोचिए कि यह वही सलोमी थी जो बेथलहम में थी और जिसे प्रभु की धर्ममाता कहा जाता था; यह एक अलग सलोमी थी। क्योंकि पहली (सलोमी) एलिजाबेथ और परम पवित्र थियोटोकोस की रिश्तेदार थी, जबकि यह (सलोमी) अग्रदूत के पिता जकरियाह के भाई हग्गै की बेटी थी; और हग्गै और जकरियाह दोनों याजक बराकियाह के पुत्र थे। हग्गै की बेटी इस सलोमी को अपनी पत्नी के रूप में रखकर, संत जोसेफ के चार पुत्र हुए: याकूब, शिमोन, यहूदा और योसिया, और दो बेटियाँ, एस्तेर और फामार, या, जैसा कि अन्य कहते हैं, मार्था; जबकि पवित्र मिरा-वाहकों के सप्ताह के लिए सिनाक्सारियन एक तीसरी बेटी सलोमी का भी उल्लेख करता है, जिसकी शादी ज़ेबेदी से हुई थी। जहाँ तक जॉर्जी केड्रिन का सवाल है, जोसेफ की दो बेटियों का उल्लेख करने के बाद, वह कहते हैं कि उनमें से एक, मरियम, जोसेफ के भाई क्लेओपास से शादीशुदा थी, जोसेफ के मिस्र से लौटने के बाद; लेकिन ऐसा प्रतीत होता है कि मरियम वही व्यक्ति

---

[279] लेविरेट विवाह के कानून में यह प्रावधान था कि यदि कोई पति बिना संतान छोड़े मर जाता है, तो उसका जीवित भाई, प्राचीन रीति-रिवाज (उत्पत्ति 38 और बाद के अंश) के अनुसार, जीजा (जबाम, लेवीर) के रूप में, अपने भाई की विधवा (अपनी भाभी) से विवाह करने के लिए बाध्य था। यह कानून व्यवस्था मूसा द्वारा व्यवस्थाविवरण (व्यवस्थाविवरण 25:5–10) में दी गई है। यहाँ यह ध्यान देने योग्य है कि लेवीरेट विवाह पूर्व के कई लोगों में भी मौजूद है, उदाहरण के लिए फारसी, भारतीय, अफगान, ड्रूज़, अधिकांश काकेशियन जनजातियों, और अन्य लोगों में। लेविरेट विवाह के कानून के तहत, ऐसे विवाह से पैदा हुए बच्चों को उस व्यक्ति का बच्चा माना जाता था, जिसकी विधवा को जीजा ने इस कानून के तहत अपनी पत्नी बनाया था; 'अपने भाई की वंशावली को बहाल करना' का यही मतलब था।

है जो मार्था या फामार है[280] । वह कोई भी बेटी क्यों न रही हो, और यूसुफ की कतिनी भी बेटियाँ क्यों न रही हों, यह कसिी भी स्थतिि में संदेह से परे है कि यूसुफ की शादी हुई थी और उनके पुत्र और पुत्रयिाँ थीं। अपनी पत्नी सलोमी की मृत्यु के बाद, संत यूसुफ काफी समय तक वधिुर रहे, और उन्होंने अपना समय पवत्रिता में बताया। पवत्रि सुसमाचार में, उनके पवत्रि और नरि्दोष जीवन की गवाही नम्निलखिति शब्दों द्वारा दी गई है, जो संक्षप्ति होने पर भी अत्यधकि प्रशंसनीय हैं: *'परन्तु उसके पति यूसुफ, जो धर्मी मनुष्य था'* (मत्ती 1:19)। और इससे बड़ी गवाही और क्या हो सकती है? वह इतने धर्मी थे कि अपनी पवत्रिता से, उन्होंने अन्य धर्मी पूर्वजों और कुलपतयिों से बढ़कर स्थान प्राप्त कयिा। क्योंकि परम पवत्रि कुँवारी, ईश्वर की माता के मंगेतार और नाममात्र के पति बनने के योग्य कौन था? और मसीह के सगाई वाले पति बनने का ऐसा सम्मान कसिे प्रदान कयिा गया? सचमुच, प्रभु ने इस मनुष्य को अपने हृदय के अनुसार पाया, जन्हिें उन्होंने अपनी *'अज्ञात और गुप्त बुद्धि'* (भजन संहति 50:8) प्रकट की, और उन्हें हमारे उद्धार के रहस्य का सेवक बनाया। वास्तव में, अपने सदाचारी जीवन की पूर्णता के कारण, वह ऐसे सम्मान और ऐसे मंत्रालय के योग्य थे। जब वे पहले से ही एक वृद्ध व्यक्ति थे, लगभग अस्सी वर्ष के, तब अति पवत्रि कुँवारी मरयिम का सगाई के लिए उनसे ववािह तय हुआ और उन्हें उनकी कुँवारीता की रक्षा के लिए सौंपा गया (और यह एक शारीरकि, वास्तवकि ववािह के लिए नहीं था)। और उन्होंने उनकी सेवा पूरी श्रद्धा और भय के साथ की, परमेश्वर की माता के रूप में, और स्वयं तथा संपूर्ण वश्वि की स्वामनिी और मालकनि के रूप में (जसिकी उन्हें एक स्वप्न में प्रकट हुए स्वर्गदूत द्वारा पुष्टि की गई थी), साथ ही मस्रि की ओर पलायन के दौरान और वहाँ से लौटने पर, और जब वे नासरत में नविास करते थे, तब भी उन्होंने दव्यि शशिु की देखभाल की, जो उनकी माता से जन्मे थे, और अपनी मेहनत से उनका भरण-पोषण कयिा, क्योंकि वह एक बढ़ई और साधारण साधन-संपन्न व्यक्ति थे, यद्यपि उनका वंश राजसी था। क्योंकि प्रभु ने गरीबी में जन्म लेना चाहा, उन्होंने राजसी वंश से केवल अपना शरीर लयिा, लेकनि राजसी महमिा, धन या प्रभुत्व नहीं। इसलिए, उन्होंने अपनी परम पवत्रि माता को एक गरीब महलिा के रूप में और अपने पालक पति को एक गरीब आदमी के रूप में रखना उचति समझा, और वनिम्रता का एक उदाहरण प्रस्तुत कयिा।[281] , संत जोसेफ ने एक सौ दस वर्ष की आयु जीतने के बाद शांतपिूर्वक देह त्यागा और शयिोल में अपने पतिरों के पास चले गए[282] , वहाँ यह आनंददायक और सच्ची सुसमाचार लेकर कि बहुप्रतीक्षति मसीहा आ गए थे—वे जन्हिोंने मानव जाति को मुक्त और बचाना था, प्रभु मसीह, जनिका युगानुयुग महमिा हो। आमीन।

ट्रोपारयिन, स्वर 2:

हे जोसेफ, दाऊद के धर्मनष्ठि पति के चमत्कारों का प्रचार करो: तुमने कुँवारी को प्रसव करते देखा, तुमने चरवाहों के साथ धन्यवाद कयिा, तुमने मगों के साथ पूजा की, स्वर्गदूत से संदेश प्राप्त करके: मसीह परमेश्वर से हमारी आत्माओं को बचाने के लिए प्रार्थना करो।

कॉन्टाकयिन, स्वर 3:

आज दाऊद दव्यि आनंद से भर गया है, जबकि यूसुफ़ याकूब के साथ मलिकर स्तुति करता है: क्योंकि मिसीह के साथ संबंध के द्वारा मुकुट प्राप्त करके, वे आनंदति हैं और उस की महमिा करते हैं जो पृथ्वी पर अकथनीय रूप से जन्म लयिा: हे उदार प्रभु, जो तेरा सम्मान करते हैं उन्हें बचा।

---

[280] यहाँ यह ध्यान देने योग्य है कि जॉर्जयिाई संतों की कैलेंडर में, पवत्रि मरि्रा-वाहकों के बीच, सेंट फामर (तमाड़ा नाम से) की भी पूजा की जाती है। स्पष्ट रूप से, जॉर्जयिाई चर्च द्वारा संरक्षति परंपरा उस ववरिण के समान है जसिके अनुसार फामारेह यूसुफ की बेटी और बाद में, अपनी बहन सलोमी (धर्मनष्ठि बुजुर्ग की दूसरी बेटी) के साथ, एक मरि्रा-वाहक हो सकती है।

[281] धर्मी यूसुफ की 110 वर्ष की आयु के संबंध में यह परंपरा उस वृत्तांत के अनुरूप है जसिमें कहा गया है कि उनका नधिन 111 वर्ष की आयु में हुआ था, जैसा कि अपोक्रीफल 'इतहिास ऑफ जोसेफ द कारपेंटर' में उल्लेख है।

[282] शेओल – नरक, मृतकों का नविास।

सार्डसि के पवत्रि शहीद और बशिप, संत यूथमिीयस का स्मरणोत्सव

26 दसिंबर को स्मरण कयिा जाता है

संत यूथमिीयस काले और आइरीन के शासनकाल में रहते थे[283] और अपनी धार्मकिता के लिए इतने प्रसद्धि हुए कि वे मसीह की कलीसयिा के भीतर अपने मठवासी जीवन के माध्यम से एक तेजस्वी तारे की तरह चमके। इसके लिए, उन्हें बशिप के पद से सम्मानति कयिा गया[284] और उन्होंने नाइकेया के दूसरे परषिद – सातवें सार्वभौमकि परषिद[285] में भाग लयिा, जहाँ उन्होंने नडिरता और उत्साह के साथ वधिर्मयिों के खलिाफ लड़ाई लड़ी और उन्हें शर्मदिा कयिा; उन्हें सम्राटों द्वारा वभिन्नि सरकारी मशिनों पर उन क्षेत्रों में भी भेजा गया जहाँ वद्रिोह और बगावत व्याप्त थी। जब नकिफ़ोरस[286] सहिासन पर आसीन हुआ, तो संत यूथमिीयस को अन्य ऑर्थोडॉक्स बशिपों के साथ पश्चमिी पतलारयिा[287] में नर्विासति कर दयिा गया, कथति तौर पर एक युवती[288] के जबरन मुंडन के लिए, और उस समय से लेकर अपनी शहादत तक वह कभी अपने धर्मप्रांत में वापस नहीं आए और न ही उसका शासन कयिा। उन्नीस साल बाद, जब ग्रीक राज्य में दानव-सदृश लयिो[289] ने शाही सहिासन संभाला, तो संत को नर्विासन से बुलाया गया[290] , सम्राट के सामने लाया गया और प्रतमिाओं की पूजा के संबंध में उनसे पूछताछ की गई: अपने रविाज़ के अनुसार, उन्होंने साहसपूर्वक वधिर्मी अधर्म की नदिा की और अपने अत्याचारी पर चर्च से बहषि्कार की घोषणा की। राजा संन्यासी पर बहुत क्रोधति हुआ और उसे एक बार फरि अस्स शहर[291] में नर्विासति कर दयिा। थोड़ी ही देर बाद, सम्राट लयिो को पदच्युत कर दयिा गया और उसकी तलवार से मृत्यु हो गई; उनके उत्तराधकिारी सम्राट माइकल, , थे जन्हिें हकलाने वाले के नाम से जाना जाता था। इस सम्राट के अधीन, आदरणीय व्यक्तकिो अस से बुलाया गया, और उन्हें प्रतमिाओं की पूजा त्यागने के लिए मजबूर कयिा गया; लेकनि उन्होंने नडिर होकर सभी के सुनने के लिए नम्निलखिति शब्द कहे:

'जो भी हमारे प्रभु यीशु मसीह की प्रतमिा की, उनके मानव स्वरूप में, पूजा नहीं करता, हम उसे शाप देते हैं।'

इसके लिए, उन्हें पहले कोड़ों से पीटा गया और फरि क्रीट नर्विासति कर दयिा गया[292] , जहाँ उन्हें एक अंधेरी कोठरी में कैद कर दयिा गया और, इसके अलावा, क्रूर यातनाएँ दी गईं: उन्हें चार खंभों पर फैलाकर बैलों की नसों से पीटा गया, जसिसे उनका शरीर कई घावों से ढक गया और सूज गया। थोड़ी ही देर बाद, पवत्रि कन्फेशर ने शांतपिूर्वक अपना प्राण ईश्वर को सौंप दयिा[293] ।

---

[283] कांस्टेंटनि और आइरीन ने शासन कयिा: पहला 780 से 797 तक, और दूसरी 797 से 802 तक।

[284] संत यूथमियिस सार्डसि (माइसयिा, एशयिा माइनर में) के बशिप थे।

[285] आइकॉन-वरिोधयिों के वरिुद्ध यह परषिद 787 में हुई।

[286] नकिफिोरस ने 802 से 811 तक शासन कयिा।

[287] पतालारेआ ससिलिी और ट्यूनीशयिा के बीच एक द्वीप है, जो अफ्रीका के करीब है।

[288] वास्तव में, हालांकि, उन्हें उस कानूनहीन सम्राट की नदिा करने के लिए दोषी ठहराया गया था जसिने उन सभी के खलिाफ उत्पीड़न भड़काया था, जन्होंने स्टुडाइट भक्षिुओं के साथ मलिकर, बहषि्कृत—लेकनि बाद में सम्राट नकिफ़ोरस द्वारा पुनर्स्थापति—ओइकनोमोस जोसेफ के साथ कोई संचार न करने से इनकार कर दयिा था, जो सम्राट कॉन्स्टेंटनि VI का थयिोडोटा के साथ ववािह आयोजति करने के लिए दोषी थे, जबकि उनकी पहली पत्नी अभी भी जीवति थी।

[289] लेओ पंचम आर्मेनयिाई – बीजान्टनि सम्राट, 813 से 820 तक शासन कयिा।

[290] चर्च के एक स्तंभ, संत यूथमियिस, नर्विासन में भी एक प्रकाशस्तंभ बने रहे; मान्यवर थयिोडोर द स्टुडाइट के अनुसार, उन्होंने अपनी मधुर शक्षिाओं के माध्यम से कई लोगों को ज्ञान प्रदान कयिा और उन्हें ईश्वर की ओर ले गए, जसिसे वधिर्मी सम्राट को कष्ट हुआ। 815 में पूछताछ के लिए कैद से बुलाए जाने पर, संत यूथमियिस ने पैट्रआर्क नकिफ़ोरस और अन्य ऑर्थोडॉक्स बशिपों के साथ मलिकर, उत्साहपूर्वक सम्राट की मूर्तभिंजन की नीतकिी नदिा की।

[291] अस एड्रामटियिम की खाड़ी पर, मसियिा में एक कलिबंद शहर है।

[292] अन्य ववरिणों के अनुसार, संत यूथमियिस को ब्लैक सी पर स्थति अक्रटि में कैद कयिा गया था।

[293] संत यूथमियिस का नधिन लगभग 840 में, माइकल द्वतिीय हकला सम्राट के पुत्र थयिोफलिस के शासनकाल के दौरान हुआ। नकिोडेमस के अनुसार, संत यूथमियिस कन्फेशर के अवशेष अंकीयलस में रखे गए हैं, जो ब्लैक सी के तट पर थ्रेस का एक शहर है, और ये कई चमत्कारों का स्रोत हैं।

आदरणीय इवेरेस्ट की स्मृति

26 दिसंबर को स्मरण किया जाता है

संत इवेरेस्ट, एशिया माइनर के गलाटिया के धर्मप्रांत के मूल निवासी, कुलीन माता-पिता के यहाँ पैदा हुए थे, हालाँकि उनके नाम अज्ञात हैं। उस समय बाइज़ेंटाइन साम्राज्य का सम्राट लियो था, जो प्रतिमा पूजा का एक क्रूर उत्पीड़क था, जो तलवार से मारा गया, और इस प्रकार परमेश्वर के शत्रु के रूप में एक उपयुक्त अंत को प्राप्त हुआ। उनके उत्तराधिकारी माइकल[294] थे, जिन्होंने भी ऑर्थोडॉक्सी के प्रति संदिग्ध शत्रुता रखी।

एक युवा व्यक्ति के रूप में, एवरेस्ट ने वयस्कता प्राप्त करने पर एक ठोस शिक्षा प्राप्त की और प्रेरितों की भाँति सभी के लिए सब कुछ बन गया (1 कुरिन्थियों 9:22): अपने माता-पिता के प्रति आज्ञाकारी, अपने साथियों और पड़ोसियों के प्रति मैत्रीपूर्ण, अजनबियों और अपने लोगों दोनों के प्रति दयालु, हमेशा और हर बात में सत्यवादी, और अपने प्रेम के द्वारा सभी के प्रति विचारशील। इसलिए, अपनी युवावस्था से ही, एवारेस्ट दिव्य आज्ञाओं के अनुसार जीने की प्रबल इच्छा से भर गया और उसने संन्यासी जीवन से प्रेम करने लगा। इस बीच, उनके पिता व्यापार के सिलसिले में कॉन्स्टेंटिनोपल के लिए रवाना हुए, और एवरस्ट भी उनके साथ चले गए। वहाँ उन्हें उनके एक रिश्तेदार, पैट्रिसियन व्रिएनिस ने आश्रय दिया, जिन्होंने समाज में सम्मान का पद प्राप्त किया था। कुछ दिनों बाद, सम्राज्ञी थियोडोरा को बुल्गारियाई लोगों के पास एक राजदूत भेजने की आवश्यकता थी[295] ; उपर्युक्त पैट्रिसियन व्रिएनियस को राजदूत नियुक्त किया गया। वह सदाचारी इवेरेस्ट को अपने साथ ले गए। जब वे स्कुपेल नामक एक स्थान पर पहुँचे[296] , तो वे रुके और कुछ समय के लिए वहीं रहे। यहाँ, धन्य इवेरेस्ट को ईश्वर की विशेष कृपा से एक पादरी नियुक्त किया गया; और बाद में, तपस्वी जीवन जीते हुए, उन्होंने वह प्राप्त किया जिसकी उनकी आत्मा हमेशा प्रेम से आकांक्षा करती थी – उन्होंने मठवासी संन्यास की शपथ ली, इस प्रकार प्रभु का जुआ अपने ऊपर ले लिया, जिसकी उन्होंने इतनी लालसा की थी। संयोग से, इस समय उनके हाथ एक सदा-स्मरणीय एफ्रेम की पुस्तक लग गई; उसे पढ़कर और उसमें निहित शिक्षाओं से मोहित होकर, एवारेस्ट एफ्रेम की धर्मपरायण शिक्षाओं का एक उत्साही अनुयायी बन गया, और उसके आध्यात्मिक स्वभाव और सदाचारी जीवन के कारण उसे अपनी यात्रा के लिए सुरक्षित पारगमन के पत्र सौंपे गए और प्रार्थनाओं के साथ स्टुडियन मठ[297] भेजा गया। इस मठ में पहुँचने पर, उन्हें इसके समुदाय में स्वीकार कर लिया गया और उन्होंने खुद को पूरी तरह से मठवासी तपस्या के लिए समर्पित कर दिया; एक भाई को आध्यात्मिक जीवन में विशेष रूप से उन्नत पाकर, वे उसके करीब आ गए और उन्होंने अपने प्रयासों को दोगुना कर दिया, पूर्णता की ओर बढ़ने में इस भाई से प्रतिस्पर्धा करने का प्रयास किया, भले ही दूसरों ने इस पर ध्यान नहीं दिया । उसका भोजन रोटी का एक छोटा टुकड़ा था, और वह भी सूखा; पके हुए भोजन के लिए, एवरेस्ट सप्ताह में केवल एक बार ही इसे खाता था। जहाँ तक उनके अन्य कारनामों और परिश्रमों का सवाल है, उन सभी का वर्णन करना असंभव है; बस इतना कहना काफी है कि वह अपने नंगे कंधों पर भारी लोहे की जंजीरों को ढोते थे और उनके कमरबंध कसे हुए थे। और उस समय उन्होंने अपने सदाचारी जीवन

---

[294] सम्राट माइकल द्वितीय हकला, 820 में सिंहासन पर बैठने के बाद, उन्होंने पैट्रिआर्क निकिफ़ोरस, पूजनीय थियोडोर द स्टुडाइट और अन्य ऑर्थोडॉक्स ईसाइयों को — जो लियो द आर्मेनियाई के अधीन प्रतिमाओं की पूजा के लिए सताए गए थे — कैद से मुक्त कर दिया, लेकिन उन्होंने प्रतिमाओं की पूजा को बहाल नहीं किया, केवल निजी घरों में प्रतिमाओं की बार-बार पूजा की अनुमति दी।

[295] बुल्गारियाई, एक बर्बर लोगों ने, लगभग 817 में, तबाही मचाई, एड्रियानोपल शहर पर कब्ज़ा कर लिया और आर्चबिशप मैनुअल को बंदी बना लिया (उनकी और उनके साथ पीड़ित 377 शहीदों की स्मृति 22 जनवरी को मनाई जाती है); बाद में, उन्हें ग्रीकों के साथ शांति बनाने और यहां तक कि जिमानत पर जाने के लिए मजबूर होना पड़ा, जिनमें बुल्गारियाई राजकुमार बोरिस की बहन भी शामिल थी। फिर उन्होंने कॉन्स्टेंटिनोपल में ईसाई पालन-पोषण प्राप्त किया और थियोडोरा नाम से बपतिस्मा लिया। 850 के बाद, वह बुल्गारिया लौट आईं और अपने भाई को ईसाई धर्म अपनाने के लिए प्रोत्साहित किया। आंशिक रूप से उनके प्रभाव के कारण, राजकुमार बोरिस ईसाई धर्म में परिवर्तित हो गए, 864 में बपतिस्मा लिया और माइकल नाम रखा गया।

[296] स्कुपेल – स्कोप्ला – बाल्कन प्रायद्वीप पर अल्बानिया का एक इलाका।

[297] कॉन्स्टेंटिनोपल में स्टूडियोन मठ – मध्य-5वीं शताब्दी में सम्राट लियो द ग्रेट के शासनकाल में, और सम्राट के अधीन स्थापित। कॉन्स्टेंटाइन कोप्रोन्यमस ने 8वीं शताब्दी के दूसरे भाग में इसकी स्थापना की; इसे प्रतिमा-भंजकों के हाथों बहुत क्षति पहुँची और यह सम्माननीय थियोडोर स्टुडाइट्स के अधीन अपनी प्रसिद्धि के शिखर पर पहुँचा, जिन्होंने प्रतिमा-भंजकों के खिलाफ ऑर्थोडॉक्स का नेतृत्व किया; 15वीं शताब्दी के मध्य में, तुर्कों ने मठ को नष्ट कर दिया और चर्च को मस्जिद में बदल दिया।

से सभी को पीछे छोड़ दिया और पचहत्तर वर्ष तक इस दैवीय तरीके से जीवन जीने के बाद, उन्होंने अपनी आत्मा प्रभु को सौंप दी[298] ।

सनिाद के पूजनीय कॉन्स्टेंटनि की स्मृति

26 दसिंबर को स्मरण किया जाता है

आदरणीय कॉन्स्टेंटनि का जन्म सनिाडा नगर में हुआ था[299] और वे यहूदी वंश के थे। जब वे एक छोटे लड़के थे, तो एक बार अपनी माँ के साथ जाते समय, उन्होंने एक ईसाई को हाँफते हुए और अपने मुँह पर क्रॉस का चह्नि बनाते हुए देखा। उसकी नकल करते हुए, उन्होंने भी ऐसा ही करना शुरू कर दिया। इस बीच, इस बाहरी अनुकरण ने उन्हें ईसाई वशि्वास के आंतरकि सार में गहरी रुचि लेने के लिए प्रेरति किया। अपनी आत्मा में उन्होंने परमेश्वर की कृपा का आलंगिन महसूस किया, और उनका चेहरा प्रकाशमान हो गया; एक रहस्यमय मार्गदर्शन से ऊपर से प्रबुद्ध होकर, कई दनिों तक तो वे शारीरकि भोजन के बारे में भी भूल गए, उन्हें भूख ही नहीं लगी। यह उनके आस-पास के लोगों के लिए एक ठोकर का कारण बना (1 कुरन्थियिों 1:23): एक बार एक यहूदी युवती ने हम्मित करके उनका मज़ाक उड़ाया, लेकनि इसी कारण से वह पहले पवत्रि क्रूस के चह्नि से गरि पड़ी, और फरि जीवति कर दी गई। इस प्रकार एक शुद्ध, वशि्वास करने वाले हृदय से प्रभु की आवाज़ सुनकर (इब्रानयिों 4:7), उसने अपने परविार को छोड़ दिया और, मानो एक दविय बादल[300] द्वारा नरि्देशति होकर, 'आध्यात्मकि उद्धार' नामक एक स्थान पर पहुँचा, जहाँ उस समय बड़े पुरुष रहते थे, जो सद्गुणों और मठ के महान कार्यों से दमक रहे थे। इन भकि्षुओं के मठाधीश से अपना परचिय देने के बाद, उसने उन्हें अपने बारे में सब कुछ वस्तिार से बताया; मठाधीश ने एक क्रॉस लाने का आदेश दिया और उसे चूमने का आदेश दिया। धन्य व्यक्ति ने आनंदपूर्वक पवत्रि क्रूस को चूमना शुरू किया और उसे अपने सरि पर रख लिया, जसि पर सर्व-सम्मानति हथियार का चह्नि तुरंत अंकति हो गया, जो उसके मरने तक अक्षुण्ण बना रहा। इसके बाद, उन्हें पवत्रि बपतस्मिा के योग्य समझा गया और उनका नाम कॉन्स्टेंटाइन रखा गया। बपतस्मिा के बाद, वह पास की एक जगह पर चला गया और वहाँ उसने तपस्वी जीवन के प्रति उत्साही होकर खुद को समर्पति कर दिया; संन्यास के व्रत लेने की इच्छा से, सरि मुंडवाने से पहले ही वह अपनी कठोर धार्मकिता में सभी से आगे नकिल गया था, और उसने अपने जीवन को पवत्रि प्रेरति पौलुस के उदाहरण और शकि्षाओं के अनुसार व्यवस्थति किया। जब कॉन्स्टेंटाइन ने ईश्वर के प्रति अपने संन्यासी व्रत का उच्चारण किया, तो वह स्थान सुगंधति खुशबू से भर गया, और चर्च के दरवाज़े अपने आप उसके सामने खुल गए। अपने हृदय की पवत्रिता के कारण, उन्हें एक और वशिेष वरदान मलिा: उनमें दूरदर्शति का वरदान था, क्योंकि प्रत्येक भाई के वचिार भी उनके सामने उजागर हो जाते थे। इस मठ से, वे ओलंपस पर्वत की यात्रा पर नकिले[301] ; फरि वे अटालिया आए[302] , एक तेज बहाव वाली नदी को अद्भुत तरीके से पार करने के बाद, लशिया में मायरा और कई अन्य स्थानों का दौरा किया, और एक बार फरि ओलंपस पर्वत लौट आए। यहाँ कॉन्स्टेंटनि ने चालीस दनि बनिा भोजन के बतिाए, कमर तक जमीन में दफ़न होकर। फरि, अपनी इच्छा के वरिुद्ध, उन्हें पुरोहति नयिुक्त किया गया और, अपने तपस्या कार्यों को जारी रखते हुए, वे अत्रयिा[303] की यात्रा पर चले गए। आठ महीने पहले, उन्होंने अपनी मृत्यु की भवष्यिवाणी की थी और, इस भवष्यिवाणी के अनुसार, वे प्रभु के पास शांतपिूर्वक चले गए[304] ।

---

[298] सेंट एवरेस्ट का लगभग 825 में नधिन हो गया। उन्हें कोकोरोव मठ में दफनाया गया था।

[299] सनिाड या सन्निाडी – उत्तरी फ्रीजिया में एक शहर, एक पर्वत श्रृंखला के पास जहाँ प्रसद्धि सन्निाडी संगमरमर की खदानें स्थति थीं। आज, एस्ककिार के पास के खंडहर गैसाफ के नाम से जाने जाते हैं।

[300] नरि्गमन 13:21। संत जसि स्थान पर पहुँचे, वह सीरिया में सनिाई पर्वत था, जहाँ तीसरी शताब्दी से ही पवत्रि तपस्वी रहते आ रहे थे।

[301] एशिया माइनर में माउंट ओलंपस, जसिके आसपास उन दनिों प्रसद्धि मठ थे, जहाँ महान तपस्वी जैसे कि जॉन द ग्रेट आदि अपने तप का अभ्यास करते थे।

[302] अटालिया, पम्फलिया का एक तटीय शहर, जसिकी स्थापना ईसा पूर्व आधी सदी पहले अटालस द्वतिीय फलिडेल्फस ने की थी और जसिका नाम उनके नाम पर रखा गया था।

[303] एट्रोया – माउंट ओलंपस के पास स्थति एक नगर।

[304] संत कॉन्स्टेंटनि ने 8वीं शताब्दी में तपस्या की और अपना संयम जीवन जिया।

9 जनवरी

27 दसिंबर (पुराना संस्करण)

पहले शहीद और महादीकन संत स्टीफन का कष्टकथा

27 दसिंबर को स्मरणोत्सव

जब हमारे प्रभु यीशु मसीह ने हमारे उद्धार के रहस्य को पूरा करके स्वर्ग में आरोहण कयि और पवत्रि आत्मा को पति से आग की जह्वि के रूप में प्रेरतिों पर उतारा (प्रेरतिों के काम 2:1–4), और प्रारंभकि कलीसयि (यरूशलेम में) बढ़ने लगी, तो उसमें शीघ्र ही हेलेनस्टिकि मूल के ईसाइयों[305] और यहूदी मूल के ईसाइयों के बीच असहमत उत्पन्न हो गई। यह उन हेलेनों का उल्लेख नहीं करता जो मूर्तयिों की पूजा करते थे और जन्हिें पवत्रि शास्त्र आमतौर पर 'पगान' कहता था। उस समय, मसीह में वश्विास तक अन्यजातयिों की पहुँच अभी तक नहीं खोली गई थी, और न ही उन्हें उद्धार का वचन प्रचारति कयि गया था; महादीकन स्तेफानुस की हत्या के बाद भी, कुछ समय तक अन्यजातयिों को वश्विासयिों की सभा में प्रवेश नहीं दयि गया था। पहला अन्यजात जिो मसीही बना, वह शतानुशार कुरनेलयिुस था (प्रेरतिों के काम 10), लेकनि जैसे ही संत पतरस ने उसे बपतस्मि दयि, खतना कए हुए यहूदयिों में से ईसाइयों को पतरस के खतना न कए हुए लोगों के पास जाने पर आपत्ति हुई, और उन्होंने उस पर तब तक बड़बड़ाया जब तक उसने उन्हें उस दर्शन के बारे में नहीं बताया जो उसे हुआ था—कि कैसे स्वर्ग से एक चादर उतरी थी (प्रेरतिों के काम 11:5–18)। तब वे आश्वस्त हुए और परमेश्वर की महमिा करने लगे, यह कहते हुए:

'ऐसा प्रतीत होता है कि परमेश्वर ने अन्यजातयिों को भी जीवन की ओर ले जाने वाला पश्चाताप प्रदान कयि है।'

इस प्रकार, संत स्तेफन के जीवनकाल में, यहूदयिों के वरिुद्ध यहूदी-वरिोधी हेलेनस्टि्स ने बड़बड़ाया नहीं, बल्कि उन लोगों ने बड़बड़ाया जो स्वयं यहूदी मूल के थे और मूसा द्वारा दए गए उसी कानून का पालन करते थे, फरि भी वभिन्नि देशों में बखिर गए थे (जैसा कि संत याकूब प्रेरति अपनी पत्रिका में लखिते हैं: *'वदिेशों में बखिरे हुए बारह गोत्रों को नमस्कार'* (याकूब 1:1), और जन्हिोंने हेलेनकि भाषा (लेकनि वश्विास या रीति-रिवाजों को नहीं) अपना लयि था; इसीलए यरूशलेम में रहने वालों ने उन्हें हेलेन कहा। क्रसिोस्टोम भी इसी तरह का वचिार व्यक्त करते हैं: 'मेरा मानना है कि प्रेरतिों के काम की पुस्तक में उल्लेखति हेलेनयिों को केवल इसलए हेलेनी कहा जाता था क्योंकि वे यहूदी होते हुए भी ग्रीक बोलते थे।' इन्हीं हेलेनस्टिकि ईसाइयों के बीच यरूशलेम के यहूदी ईसाइयों के वरिुद्ध एक शकिायत उत्पन्न हुई, यह शकिायत कि हेलेनस्टिों की वधिवाओं को दैनकि कार्यों के आवंटन में उपेक्षति कयि जा रहा था: या तो उन्हें तुच्छ काम सौंपे जाते थे, या उन्हें भोजन और वस्त्रों का एक छोटा और गरीब हस्सिा दयि जाता था।

इस स्थति को देखते हुए, पवत्रि बारह प्रेरतिों ने उस समय उपस्थति सभी वश्विासयिों को इकट्ठा कयि और उनसे कहा:

'मेजों की सेवा करने के लए हमें परमेश्वर के वचन की उपेक्षा करना उचति नहीं है। इसलए, भाइयो, अपने बीच से सात पुरुषों को चुन लो, जो पवत्रि आत्मा और ज्ञान से परपिूर्ण हों, जन्हिें हम इस काम के लए नयिुक्त करेंगे, जबकि हम स्वयं प्रार्थना और वचन की सेवा में लगे रहेंगे' (प्रेरतिों के काम 6:2–4)।

पवत्रि प्रेरतिों के इस प्रस्ताव को वश्विासयिों की पूरी सभा ने मंजूरी दे दी, जन्हिोंने तुरंत चुना: स्तेफन, जो वश्विास और पवत्रि आत्मा से परपिूर्ण था; फलिपि; प्रोकोरस; नकिानोर; तमिोन; पार्मेनास; और नकिोलस, जो अंताकयि का रहने वाला था।

इन चुने हुए पुरुषों के नाम ही यह दर्शाते हैं कि वे यरूशलेम में रहने वाले यहूदयिों में से नहीं थे, बल्कि उन लोगों में से थे जो हेलेनस्टिकि देशों में रहते थे, क्योंकि उनके नाम यहूदी नहीं बल्कि हेलेनस्टिकि हैं। इनमें से, स्तेफन सऊल का रश्तिेदार था, जसि बाद में प्रभु ने—पौलुस के नाम से—वश्विास और प्रेरतिकि सेवा के लए बुलाया था; पौलुस, अपनी ओर

---

[305] 'हेलेन्स' शब्द से तात्पर्य मूर्तपिूजक दुनयि के वभिन्नि देशों में रहने वाले यहूदयिों से था जो व्यापक रूप से प्रचलति हेलेनकि (ग्रीक) भाषा बोलते थे; वे त्योहारों के लए यरूशलेम आते थे और वहाँ लंबे समय तक रहते थे।

से, कलिकिया के तार्सस नगर का मूल निवासी था[306] । इसलिए इन सात पुरुषों को हेलेनों में से गरीब विधवाओं की सेवा के लिए चुना गया, ताकि हेलेन, जो अब तक अपनी विधवाओं की उपेक्षा पर दुखी थे, आखिरकार आश्वस्त हो सकें और शिकायत करना बंद कर दें।

इन सभी चुने हुए पुरुषों को प्रेरितों के सामने लाया गया, जिन्होंने प्रार्थना की, उन पर अपने हाथ रखे और उन्हें डिकन (सेवक) के रूप में नियुक्त किया।

उनमें सबसे प्रमुख स्तेफन थे, जो विश्वास और सामर्थ्य से परिपूर्ण थे, और इसलिए उन्हें आर्चडिकन कहा जाता था। परमेश्वर की कृपा से, उन्होंने विश्वासियों के बीच कई चिह्न और आश्चर्य किए; और यदि उनके चमत्कारों का उल्लेख पवित्र शास्त्र में नहीं है, तो यह किसी भी तरह से आश्चर्य की बात नहीं है, क्योंकि स्वयं प्रभु मसीह के कार्यों के बारे में भी कहा गया है: *'यदि हर एक काम का विस्तार से लिखा जाए, तो मुझे लगता है कि लिखित पुस्तकों को स्वयं संसार भी समा नहीं सकता'* (यूहन्ना 21:25)। फिर भी, यह यकीन के साथ कहा जा सकता है कि संत स्तेफन ने, सबसे पहले के प्रेरितों की तरह, बीमारों पर हाथ रखा, और वे चंगे हो गए। इसके अलावा, वह वचन और कर्म में महान सामर्थ्य वाले व्यक्ति थे; उन्होंने विश्वासियों को उनके विश्वास में दृढ़ किया, जबकि अविश्वासी यहूदियों को डाँटा, और उन्हें व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओं से यह साबित किया कि उन्होंने अन्यायपूर्वक, ईर्ष्या के कारण, परमेश्वर के पुत्र, मसीहा को मार डाला था, जिसका वे सदियों से इंतजार कर रहे थे। और जब यहूदियों, फरीसियों, सदूकियों और हेलेनिस्टिक यहूदियों के बीच हमारे प्रभु यीशु मसीह के विषय में एक विवाद छिड़ गया, कुछ कह रहे थे कि वह एक नबी थे, और अन्य कह रहे थे कि वह एक धोखेबाज़ थे, और कुछ अन्य कह रहे थे कि वह परमेश्वर का पुत्र था, संत स्तेफन, मंच पर चढ़कर, सभी को प्रभु मसीह के विषय में उपदेश देने लगे, यह कहते हुए:

– भाइयो! तुम में बढ़ती हुई कलह का क्या कारण है, और सारा यरूशलेम गुटों में क्यों बँटा हुआ है? धन्य है तुम में वह जो हमारे प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास करता है, क्योंकि उन्होंने हमें हमारे पापों से छुटकारा दिलाने के लिए स्वर्ग से उतरकर, संसार की नींव पड़ने से पहले चुनी गई, परम पवित्र और निर्दोष कुँवारी से जन्म लिया, उसने स्वयं पर हमारी दुर्बलताएँ और व्याधियाँ उठाईं और उन्हें वहन किया, अंधों को दृष्टि दी, कोढ़ियों को शुद्ध किया, और दुष्टात्माओं को निकाल दिया।

परन्तु जब उन्होंने उसकी बातें सुनीं, तो वे उससे वाद-विवाद करने लगे, और उसे खण्डन करने तथा उस प्रभु का अपमान करने का यत्न करने लगे, जिसकी वह प्रचार कर रहा था, जैसा कि प्रेरितों के काम की पुस्तक में लिखा है:

'स्वतंत्र लोगों के सभा-घर' कहे जाने वाले कुछ यहूदी, जो विभिन्न दूर-दराज के देशों में यूनानियों के बीच रहते थे, उनका यरूशलेम में अपने स्वयं के सिनेगॉग थे।

क्योंकि विभिन्न दूर-दराज के देशों में यूनानियों के बीच रहने वाले यहूदियों के अपने अलग-अलग सिनेगॉग यरूशलेम में थे। और इस प्रकार, मुख्य यहूदी सिनेगॉग के अलावा, यरूशलेम में विभिन्न प्रवासियों, या विभिन्न देशों में रहने वाले यहूदियों की कई सिनेगॉग थीं, और प्रत्येक देश से यहूदी अपने बच्चों को विशेष रूप से परमेश्वर की व्यवस्था का अध्ययन करने के लिए यरूशलेम में अपनी ही सिनेगॉग में भेजते थे। इसके अलावा, वे स्वयं, सालमी के मंदिर में वार्षिक रूप से पूजा करने के लिए आकर, अपनी ही सिनागॉग में ठहरते, वहाँ इकट्ठा होते और वहाँ अध्ययन करते थे, जैसा कि प्रेरितों के काम की पुस्तक के दूसरे अध्याय से स्पष्ट है: 'यरूशलेम में यहूदी थे, जो स्वर्ग के नीचे हर राष्ट्र के धर्मनिष्ठ पुरुष थे, पर्थियन, मीदी और एलामी' और अन्य (प्रेरितों के काम 2:5–9), अर्थात् पर्शिया, मीदीया, एलाम[307] , और वहाँ उल्लेख किए गए अन्य देशों में रहने वाले यहूदी, जो अब त्योहार के लिए यरूशलेम आए थे। तदनुसार, यरूशलेम में किलिकिया, अलेक्जेंड्रिया और सिरीएने की सभाएँ थीं[308] । जहाँ तक लिबर्टाइन सभा का सवाल है[309] , कहा जाता है कि यह यहूदियों

---

[306] सिलिसिया एशिया माइनर के दक्षिण-पूर्व में एक तटीय क्षेत्र है। तारस सिलिसिया की राजधानी है और आज भी एक समृद्ध शहर बना हुआ है।

[307] ये सभी पहले के शक्तिशाली साम्राज्यों के प्रांत थे, जिन्हें बाद में रोमन साम्राज्य ने अपने अधीन कर लिया था; वे कैस्पियन सागर और फारस की खाड़ी के बीच स्थित थे। पार्थिया कैस्पियन सागर के दक्षिण-पूर्व में एक बड़ा देश है। मीडिया ईरान का पश्चिमी भाग है, जो कैस्पियन सागर के दक्षिण में स्थित है। एलाम एक देश था जो मेसोपोटामिया के परे, टिग्रिस नदी के दूसरी ओर और उस नदी के साथ दक्षिण की ओर फारस की खाड़ी तक फैला हुआ था।

[308] सिरिनिका – ऊपरी लीबिया में एक क्षेत्र, जो अफ्रीका के उत्तरी तट पर, मिस्र के पश्चिम में स्थित है।

[309] लिबर्टाइन्स (लैटिन शब्द 'मुक्त' या 'मुक्त किए गए लोगों' से) – यहूदी जिन्हें रोमनों ने उनके साथ युद्धों के दौरान, विशेष रूप से पोंपे के अधीन, लगभग 60 ईसा पूर्व में हराया था।

के एक विशिष्ट समूह का घर था, जो अपनी वंशावली उन लोगों से जोड़ते थे जिन्हें कभी रोमन पोंपे द्वारा बंदी बनाया गया था[310] , फिर मुक्त कर दिया गया था, और इसलिए उन्हें 'लिबेरी' कहा जाता था, जिसका अर्थ है 'मुक्त'। इसी तरह, सेंट जॉन क्राइसोस्टोम कहते हैं: 'लिबर्टाइन वे लोग थे जिन्हें रोमनों ने स्वतंत्रता प्रदान की थी। और चूंकि यरूशलेम विभिन्न देशों के प्रवासियों का घर था, वहाँ उनकी अपनी सिनागॉग थीं, जहाँ वे व्यवस्था की पठन सुनते और प्रार्थना करते थे।'

यीशु मसीह ने इन्हीं सभाओं में—लिबर्टाइन, साइरीन और अन्य लोगों को—स्टीफ़न के साथ बहस करते हुए, उस बुद्धि और आत्मा का सामना नहीं कर सके, जिससे वह बोलते थे; और उस समय, संत स्टीफ़न ने सत्य के वचन के द्वारा, दुनिया के तीन हिस्सों—यूरोप, एशिया और अफ्रीका; उसने यूरोप को यूरोप में स्थित रोम से आए लिबर्टाइनों के व्यक्तियों में जीता; उसने एशिया को एशिया के मूलनिवासी सिलिसियनों के व्यक्तियों में जीता; और उसने अफ्रीका को सिरिनियनों और अलेक्जेंड्रियावासियों के व्यक्तियों में जीता, जो अफ्रीकी मूल के थे।

हालाँकि, वे सतेन द्वारा प्रचारित सत्य—जो सूर्य से भी अधिक उज्ज्वल था—के विरुद्ध कुछ भी कहने में असमर्थ थे, वे उसके प्रति क्रोध से भर गए और ईर्ष्या से भरकर, उन्होंने अपने कुछ समान विचारधारा वाले अनुयायियों को, जो झूठ बोलने के आदी थे, उकसाया कि वे यहूदियों के मुख्य सिनेगॉग के सामने यह घोषणा करें कि उन्होंने स्तेफन को मूसा और परमेश्वर के विरुद्ध अपमानजनक शब्द कहते सुना था। इस प्रकार लोगों, बुजुर्गों और धर्मशास्त्रियों को भड़काने के बाद, उन्होंने संत स्तेफन पर हमला किया, उसे पकड़ लिया और महायाजकों तथा व्यवस्था के शिक्षकों की भीड़ के सामने सिनागॉग में ले आए; वहाँ उन्होंने झूठे गवाह भी पेश किए जिन्होंने दावा किया:

'यह आदमी इस पवित्र स्थान और व्यवस्था के विरुद्ध अपमानजनक बातें करना बंद नहीं करता, और हमने उसे यह कहते सुना है कि नासरी यीशु इस स्थान को नष्ट कर देगा और उन रीति-रिवाजों को बदल देगा जो मूसा ने हम पर स्थापित किए हैं।'

परन्तु संत स्तेफन उस घातक सभा के बीच परमेश्वर के स्वर्गदूत के समान अडिग खड़े रहे, दिव्य अनुग्रह के प्रकाश से दीप्तमान, ठीक वैसे ही जैसे एक समय मूसा रहे थे: क्योंकि उनके मुख का तेज बदल गया था, और सभा में उपस्थित सभी लोगों ने, उन्हें देखकर, उनका मुख एक स्वर्गदूत के मुख के समान देखा।

मुख्य याजक ने उससे पूछा:

'क्या वह सच है जो गवाह तुम्हारे बारे में कह रहे हैं?'

संत ने अपना मुँह खोलकर एक लंबा भाषण दिया। उन्होंने अब्राहम से शुरुआत की, जिन्हें मसीहा के आगमन का वादा सबसे पहले मिला था, और फिर मूसा तक का पूरा इतिहास सुनाया, और उनके बारे में परम श्रद्धा और सम्मान के साथ बात की, और इस प्रकार उन्होंने झूठे गवाहों को स्पष्ट रूप से खारिज कर दिया, यह दिखाते हुए कि वे स्वयं किसी भी तरह से मूसा या मूसा के माध्यम से दिए गए परमेश्वर के कानून के प्रति निंदक नहीं थे; और उन्होंने और भी स्पष्ट रूप से यह साबित किया कि उनके पूर्वज ही निंदक थे।

उसने कहा, 'हमारे पूर्वजों ने उसकी आज्ञा मानने से इनकार कर दिया, परन्तु उसे अस्वीकार कर दिया और अपने मन फिरौन की ओर मोड़ लिए' (प्रेरितों के काम 7:39)।

तब, एक और बदनामी का खंडन करते हुए—अर्थात्, कि उसने पवित्र स्थान के विरुद्ध ईश्वरनिन्दा की थी—उसने कहा:

'सुलेमान ने उसके लिए एक मन्दिर बनाया' (प्रेरितों के काम 7:47)।

इन शब्दों से ऐसा प्रतीत हुआ कि वह कह रहे थे: 'मैं उस पवित्र स्थान का सम्मान करता हूँ, जिसे राजा सुलैमान ने परमेश्वर की इच्छा से बुद्धिमानी से बनाया था और जो प्रभु की महिमा से, जो एक बादल में प्रकट हुई थी, पवित्र किया गया था; मैं उस मंदिर का सम्मान करता हूँ, जिसे मनुष्यों ने ईश्वर की महिमा के लिए बनाया है, लेकिन साथ ही मैं यह स्वीकार करता हूँ कि ईश्वर अनिर्वचनीय, अकल्पित मंदिरों में, अर्थात् शुद्ध मानवीय आत्माओं में निवास करना पसंद करते हैं।"

---

[310] पॉम्पे – एक प्रसिद्ध रोमन सेनापति और विजेता, जिसने रोम में गणराज्य के विनाश के बाद, ट्रायम्विरि में से एक के रूप में, साम्राज्य के एक तिहाई हिस्से पर निरंकुशतापूर्वक शासन किया।

उसने कहा, 'परमप्रभु मानव हाथों से बने मंदरिों में नहीं रहता, जैसा कि परमेश्वर ने भविष्यवक्ता के द्वारा कहा है: *"स्वर्ग मेरा सिंहासन है, और पृथ्वी मेरा पादपीठ है; तो तुम मेरे लिए घर कहाँ बनाओगे, परमप्रभु कहता है, और मेरी विश्राम-स्थली कहाँ है? क्योंकि ये सब मेरे हाथ ने बनाया है"* (यशायाह 66:1–2)।

अंत में, दिव्य उत्साह से भरकर, जैसे एक बार एलियाह भरे थे, संत स्तेफन ने पूरी सभा के विरुद्ध निंदा का भाषण दिया:

'हे कठोर गर्दन वालों, अनाड़ी हृदय और कानों के, तुम सदा पवित्र आत्मा का विरोध करते हो, जैसा तुम्हारे पूर्वज किया करते थे। तुम्हारे पूर्वजों ने किस भविष्यवक्ता को नहीं सताया? उन्होंने तो उन लोगों को मार डाला जिन्होंने उस धर्मी (वादा किए गए मसीहा) के आने की भविष्यवाणी की थी, जिसके द्रोही और हत्यारे तुम अब बन गए हो' (प्रेरितों के काम 7:51)।

संत के इन शब्दों ने महायाजक और शास्त्रियों में अपार क्रोध उत्पन्न कर दिया, और जब उन्होंने यह सुना, तो वे अपने हृदय में क्रोध से भर गए और उसके प्रति दाँत पीसे।

लेकिन स्तेफन ने उनके क्रोध की कोई परवाह नहीं की, क्योंकि वह पवित्र आत्मा से भरपूर था, जिसने उसे साहसी और दैवीय प्रेरित बनाया। उसने स्वर्ग की ओर देखकर परमेश्वर की महिमा को देखा। तब तक, वह केवल उसे देखने की इच्छा से प्रेरित था, और पूर्ण विश्वास के साथ दृढ़ता से उसे प्राप्त करने की आशा रखता था; लेकिन अब, अपनी मृत्यु से पहले ही, उसने उस पर मनन करना शुरू कर दिया और, मृत्यु के करीब पहुँचते हुए, उसे आनंद की शुरुआत के रूप में स्वीकार किया; उन्होंने स्वयं प्रभु यीशु मसीह को भी स्वर्ग में खड़े देखा, मानो वह उनकी प्रतीक्षा कर रहे हों कि जब वह अंततः अपने शरीर से मुक्त हो जाए, तो वह उनके पास शीघ्रता से जा सके; और जहाँ स्वयं प्रभु हैं, वहाँ उनका सेवक be[311] भी होगा।

और जो उसने देखा, उसे उसने सबको घोषित किया, ऊँचे स्वर में पुकार कर:

'देखो, मैं स्वर्ग को खुला हुआ देखता हूँ, और मनुष्य का पुत्र परमेश्वर के दाहिने ओर खड़ा है' (प्रेरितों के काम 7:56)।

उसने इस दर्शन को छिपाया नहीं, जैसा कि पवित्र पुरुष आमतौर पर करते थे; क्योंकि विनम्रता के कारण, वे परमेश्वर द्वारा भेजे गए दर्शनों को प्रकट नहीं करते थे। इसके बजाय, उसने यह गौरवशाली प्रकाशन सभी को घोषित किया, ताकि विश्वासियों का विश्वास दृढ़ हो और अविश्वासियों को लज्जा उठानी पड़े। उन्होंने यह इसलिए भी किया, ताकि उनके बाद आने वाले भविष्य के शहीदों को आश्वस्त कर सकें कि मसीह के लिए पीड़ा सहने वालों के लिए स्वर्ग में आरोहण में कोई बाधा नहीं है, न ही कोई परीक्षा सहनी पड़ती है; बल्कि, एक सीधा और निर्बाध मार्ग खुला हुआ है, स्वर्ग पूरी तरह से खुला है, और इनाम तैयार है। स्वयं परमपवित्र प्रभु प्रतीक्षा कर रहे हैं; स्वर्ग के द्वार पर स्वयं प्रभु की महिमा शहीद से मिलती है। और इस प्रकार पवित्र प्रथम शहीद ने सभी को यह घोषणा की कि वह देख सकता है, मानो इस प्रकार वह अपने पीछे आने वालों को भी उसी शहीद के मुकुट के लिए बुला रहा हो।

परन्तु ईर्ष्यालु यहूदी, जो नबियों को मारने के आदी थे और स्वयं प्रभु, जो व्यवस्था और नबियों की पूर्ति हैं, के विरुद्ध विद्रोह कर चुके थे, वे सत्य के वचन को सहन न कर सके, क्योंकि वे स्वयं कपटी थे, और उन्होंने संत स्तेफन के प्रकाशन को सुनने से इनकार कर दिया; परन्तु उन्होंने एक ऊँची चीख मचाई, अपने कानों पर हाथ रख लिए और एक स्वर में उस पर टूट पड़े, अपने हत्यारे हाथ उस पर रखे, उसे नगर के बाहर ले गए—जैसे उन्होंने पहले प्रभु यीशु के साथ किया था, जिन्होंने दीवारों के बाहर दुःख सहने की कृपा की थी—और प्रभु के भले और विश्वासयोग्य सेवक पर पत्थर फेंके। और संत पर पत्थर फेंकना आसान बनाने के लिए, झूठे गवाहों और हत्यारों ने अपने बाहरी वस्त्र उतारकर साऊल नामक एक जवान आदमी के पैरों तले रख दिए, जो यद्यपि मारे जा रहे व्यक्ति का रिश्तेदार और हितैषी था, फिर भी पुराने नियम के प्रति अंधा उत्साह के कारण दूसरों से भी अधिक क्रोधित था। साoul – जैसा कि प्रेरितों के काम में लिखा है – ने उसकी हत्या को मंजूरी दी (प्रेरितों के काम 8:1)। और संत जॉन क्राइसोस्टोम इस बारे में निम्नलिखित कहते हैं: 'साऊल इस बात पर शोक मना रहा था कि उसके पास स्तेफन को उन सभी हाथों से मारने के लिए पर्याप्त हाथ नहीं थे, और वह केवल इस बात से संतुष्ट था कि शहीद को झूठे गवाहों के कई हाथों से पीटा जा रहा था, जिनके वस्त्रों की वह रखवाली कर रहा था।'

---

[311] उद्धारकर्ता के वचनों के अनुसार। देखें यूहन्ना 12:26।

ठीक उसी क्षण जब संत स्टीफन को इफ्ताद घाटी में (जो यरूशलेम और जैतून के पहाड़ के बीच, सेद्रोन धारा के कनिारे स्थति है, जसिके कनिारे कई पत्थरों से बछिे हुए थे) मारा जा रहा था, दूर, एक हल्की ऊँचाई पर, पहाड़ से नीचे देखते हुए, परम पवत्रि कुँवारी मरयिम, संत जॉन द थयिोलोजयिन के साथ, स्टीफन के लिए प्रभु और अपने पुत्र से वनिम्रतापूर्वक प्रार्थना कर रही थीं, कि वह उसे धैर्य में मजबूत करें और उसकी आत्मा को अपने हाथों में स्वीकार करें। हे, पवत्रि प्रथम शहीद की मृत्यु कतिनी मधुर थी, क्रूर पत्थरबाजी के बीच भी, जब स्वर्ग की ऊँचाइयों से परम मधुर यीशु, और पृथ्वी के पर्वत से परम मधुर माता अपने प्रयि शष्यि के साथ, उनके इस पराक्रम को नहिार रहे थे! और संत स्तेफन, उन पर गरिते पत्थरों की लगातार बौछार के नीचे, उनका सारा शरीर खून से लथपथ, उनकी शक्ति क्षीण हो रही थी, और जैसे ही वे देह के बंधनों से मुक्त हो रहे थे, वे अपने लिए नहीं बल्कि उन्हें मारने वालों के लिए अपने हृदय में दुखी हुए, और अपनी मृत्यु से पहले उनके लिए अपनी तुलना में अधकि गंभीरता से प्रार्थना की: क्योंकि अपने वषिय में, सीधे खड़े होकर, उन्होंने कहा:

'हे प्रभु यीशु, मेरी आत्मा ग्रहण कर' (प्रेरतिों के काम 7:59)। फरि, घुटने टेककर, उन्होंने अपने हत्यारों के लिए प्रार्थना की, यह कहते हुए:

'हे प्रभु, इस पाप को इनसे न ले लेना' (प्रेरतिों के काम 7:60)।

इन शब्दों के साथ, संत ने अपनी पवत्रि आत्मा को मसीह के हवाले कर दयिा। इस प्रकार इस अच्छे तपस्वी का नधिन हुआ; इस प्रकार पहला शहीद, मानो, गाढ़े लाल फूलों और खून से सने पत्थरों से मुकुटधारी हुआ, और उस खुले स्वर्ग में प्रवेश कयिा जसिे उसने देखा था, महमिा के प्रभु और राजा के पास, ताकि वह शाश्वत राज्य में उनके साथ राज्य करे।

पेंटेकोस्ट के कुछ ही समय बाद उन्हें पवत्रि प्रेरतिों द्वारा एक आर्चडीकन के रूप में नयिुक्त कयिा गया था, और प्रभु के स्वर्गारोहण के बाद, उसी वर्ष 27 दसिंबर को, लगभग 30 वर्ष की आयु में उन्होंने शहादत प्राप्त की। वे रूप से सुंदर थे, लेकनि आत्मा से और भी अधकि सुंदर थे।

हालाँकि, उनके पवत्रि शरीर को जंगली जानवरों और पक्षयिों द्वारा खाए जाने के लिए छोड़ दयिा गया था, और वह दनि-रात बनिा दफ़नाए पड़ा रहा। अगले ही दनि रात तक ऐसा नहीं हुआ था कि गमलीएल[312] , यरूशलेम में कानून के एक प्रसद्धि यहूदी शक्षिक (जो स्वयं बाद में अपने पुत्र आवव के साथ मसीह में वश्विास करने लगे), ने सम्मानति और वफादार पुरुषों को भेजा, जो, उन्होंने गुप्त रूप से संत के शरीर को ले जाकर यरूशलेम से 20 स्टेडयिम[313] दूर स्थति अपनी संपत्ति, जसिे क़फ़ार गमाला कहा जाता था, में दफनाया और वहाँ उन्हें सम्मानपूर्वक, बहुत रोते हुए दफनाया। क्रसिोस्टोम कहते हैं, 'और कौन उस नम्र मेमने को देखकर नहीं रोएगा, जसिे पत्थर मार-मार कर मौत के घाट उतार दयिा गया और जो वहां नर्जिीव पड़ा है!'

कई वर्षों बाद, धर्मपरायण ग्रीक रानी यूडॉक्सयिा, जो थयिोडोसयिस द यंगर की पत्नी थीं[314] , यरूशलेम आईं और ठीक उसी स्थान पर जहाँ पवत्रि प्रथरमर्त्य स्तेफन को मार डाला गया था और उनकी कीमती रक्त से भूमि रंजति हो गई थी , उन्होंने मसीह परमेश्वर की महमिा के लिए उनके नाम पर एक सुंदर चर्च का नर्मिाण कयिा[315] , जसिकी महमिा युगानुयुग होती रहे। आमेन।

ट्रोपारयिन, स्वर 4:

हे मसीह के प्रथम शहीद और प्रेरति, तूने सत्कर्मों में परश्रिम कयिा और उत्पीड़कों की दुष्टता को उजागर कयिा: क्योंकि, अधर्मी लोगों के हाथों पत्थर मार-मार कर हत्या कएि जाने के बाद, तूने स्वर्ग में दाहनिे हाथ से मुकुट प्राप्त कयिा, और ईश्वर से पुकार कर कहा: 'हे प्रभु, इस पाप को उनसे न जोड़ना।'

---

[312] गमालएिल – एक प्रसद्धि यहूदी धर्मशास्त्र शक्षिक, जो यरूशलेम के सनेद्रीन में उच्च पद पर आसीन थे और पूरे राष्ट्र द्वारा सम्मानति थे, इतना कि उन्हें 'धर्म की महमिा' कहा जाता था। परंपरा के अनुसार, उन्हें उनके पुत्र आवव के साथ प्रेरति पतरस और यूहन्ना ने बपतस्मिा दयिा था।

[313] लगभग साढ़े तीन वर्स्ट।

[314] थयिोडोसयिस द्वतिीय, या युवा, ने 408 से 450 तक शासन कयिा।

[315] चर्च का 460 में अभषिेक कयिा गया था; यह इतना वशिाल था कि इसमें 10,000 तक लोग समा सकते थे।

कॉन्टाकयिन, स्वर 3:

कल प्रभु हमारे पास देह में आए, और आज एक दास देह त्यागता है: कल जो राज्य करते हैं वे देह में जन्मे; आज एक दास को पत्थर मारकर मार डाला जाता है। इसी कारण, प्रथम शहीद और दैवी स्तेफन अपने अंत को प्राप्त करते हैं।

पवत्रि पूजनीय शहीद और स्वीकारकर्ता थयिोडोर तथा उनके भाई, पूजनीय थयिोफानेस का जीवन और कष्टकाल[316] , जैसा कि दर्ज है

27 दसिंबर को स्मरण कयिा जाता है

मसीह के लिए पीड़ा सहने वाले शहीदों में से, कुछ ने ईसाई धर्म के लिए संघर्ष कयिा, वे वधिर्मी लोगों के वरिुद्ध खड़े हुए जनि्होंने अपने मूर्तपिूजक भ्रम की रक्षा की, जबकि अन्य, जनि्होंने असंगत वशि्वास रखने वाले अपने ही ईसाइयों के वरिुद्ध सच्चे धर्म के लिए संघर्ष कयिा, उन्होंने भी पहले वालों से कम परीक्षण नहीं झेले, जसिके लिए उन्हें उनके समान मुकुट प्राप्त हुए। इनमें से दूसरे समूह में अद्भुत और महान थयिोडोर हैं।

थयिोडोर का पालन-पोषण फलिस्तिीन में हुआ, वह भूमि जसिे ईश्वर ने अब्राहम को वरिासत में दी थी और जसिे सही मायने में प्रतज्ञिात भूमि कहा जाता है, क्योंकि न केवल सभी नबयिों और कुलपतयिों का समूह वहीं से आया, बल्कि स्वयं मसीह, देह के अनुसार, वहीं पैदा हुए थे, जैसे कि सभी ईश्वर-प्रसन्न प्रेरति भी। उसी भूमि ने संसार को वशि्वास का यह दीपक और धर्म का स्तंभ – संत थयिोडोर – भी प्रदान कयिा, जो अपने कुलीन parents[317] के लिए प्रसद्धि थे, जनिकी संपूर्ण संपत्ति और धन इस तथ्य में नहिति था कि उन्हें ईसाई कहा जाता था, और वे पवत्रि शहर यरूशलेम में रहते थे।

अपनी युवावस्था में ही संत थयिोडोर ने महान ज्ञान प्राप्त कर लयिा था, और अपने कशिोरावस्था में ही उनका मन उनके वर्षों से परे था; बचकाने खेलों में लगे रहने या तमाशों से मोहति होने के बजाय, वह लगातार ईश्वर के मंदरिों में रहते थे, और उनके लिए अच्छे और सम्मानजनक कार्यों को देखना और उनसे सीखना इससे अधकि सुखद कुछ भी नहीं था। साथ ही, उन्होंने अपने माता-पति के प्रति पूर्ण आज्ञाकारति भी दखिाई। संक्षेप में, आदरणीय संत ने, एक फलदायी बगीचे की तरह, अपने जीवन की शुरुआत से ही यह दखिा दयिा था कि वे भवषि्य में क्या बनेंगे।

[318]जब वह बड़ा हुआ, तो उसके माता-पति ने उसे संत सावस के मठ[319] में एक वद्विान और सदाचारी पुरोहति के पास भेजा, ताकि वह पवत्रि धर्मग्रंथों का अध्ययन कर सके और साथ ही, ईश्वर का भय भी सीख सके। थयिोडोर का थयिोफेंस नाम का एक भाई था, जो उम्र में उससे छोटा लेकनि सद्गुणों में उसका बराबर का था। अपने बड़े भाई के साथ, उसे उसी पुरोहति ने पढ़ाया था। तीव्र बुद्धि के धनी, थयिोडोर ने उसे सखिाई गई सभी वद्वितापूर्ण ज्ञान में शीघ्र ही महारत हासलि कर ली। इतने पर संतुष्ट न होकर, और उच्च ज्ञान प्राप्त करने का प्रयास करते हुए, वह मठ से नकिल गया और एक बुद्धमिान वृद्ध व्यक्ति को ढूंढकर, उससे शषि्य बनाने का आग्रह कयिा। इस व्यक्ति से, संत थयिोडोर ने न केवल सभी बाहरी ज्ञान में पूरी तरह से महारत हासलि की, बल्कि आध्यात्मकि मार्गदर्शन में भी एक ठोस नींव प्राप्त की। उन्होंने बड़े भाई से संसार और सभी सांसारकि चीजों को तुच्छ समझना सीखा, और सांसारकि तथा आध्यात्मकि दोनों अनुशासन में पूर्ण महारत हासलि करने के बाद, वे एक बार फरि से संत सावा के मठ में लौट आए।

भकिषु बनकर और ईश्वर को प्रसन्न करने वाले कर्म करते हुए, थयिोडोर ने अपने जीवन-यापन के तरीके से कई लोगों को पीछे छोड़ दयिा। उससे अधकि वनिम्र और कौन था? उससे अधकि द्वेष-रहति और कौन था? उससे अधकि संयमी और कौन था? वह इस बात को उससे बेहतर कौन जानता था कि कब चुप रहना चाहिए, कब बोलना चाहिए, या कोई कार्य

---

[316] 'साधुओं के जीवन' के अक्टूबर अंक में, पृष्ठ 245 पर, सेंट थयिोफेन्स की छवि देखें।

[317] आदरणीय के पति पादरी योना थे, जनिका पर्व दविस 5 दसिंबर को होता है। पादरी योना की स्मृति 22 सतिंबर को मनाई जाती है।

[318] बाहरी बुद्धि सांसारकि बुद्धि के समान है, जसिे धार्मकि ज्ञान, जसिे आध्यात्मकि या आंतरकि बुद्धि कहा जाता है, के वपिरीत ऐसा कहा जाता था।

[319] यह, बेशक, वही साव्वा द सैंक्चुडाइड का मठ है, जहाँ सेंट थयिोडोरस के पति का बाद में नधिन हुआ था।

करना चाहिए, ताकि तो मौन भंग हो, न ही सही समय पर कुछ उपयोगी कहने का अवसर चूक जाए, और न ही किसी मठ के कार्य की उपेक्षा हो? थेओडोर जितने ने अपने शरीर को कष्ट दिया, अपनी जीभ और आँखों को नियंत्रित किया, और बुरे विचारों के हमलों को दूर भगाया, उतना और किसने किया है? उनके इन गुणों के कारण, ईश्वर की कृपा से और संपूर्ण मठवासी समुदाय के अनुरोध पर, यरूशलेम के पवित्र बिशप ने उन्हें पुरोहित पद की दीक्षा दी। इस प्रकार, संत सावा के मठ में वह एक परिश्रमी मधुमक्खी की तरह थे, जो व्यस्त होकर सद्गुणों का अमृत एकत्र कर रही थी। थियोडोर के बारे में यह भी कहा जाना चाहिए कि उसकी तुलना भविष्यवक्ता यिर्मयाह से की गई थी, जिन्हें कहा गया था: *'मैंने तुम्हें गर्भ में बनाने से पहले ही तुम्हें जान लिया था, और तुम्हारे जन्म से पहले ही मैंने तुम्हें अलग कर रखा था'* (यिर्म. 1:5)। क्योंकि जब वह अभी भी लाव्रा[320] में एक युवक था और उपयुक्त पुरोहित से पढ़ना-लिखना सीख रहा था, तब इस ईश्वर-प्रेरित व्यक्ति ने उसके बारे में भविष्यवाणी की कि यह सुंदर युवक मसीह के लिए शहीद की मृत्यु के साथ अपने संन्यास के सांसारिक जीवन का अंत करेगा। यह बाद में सच साबित हुआ, जैसा कि निम्नलिखित विवरण से पता चलेगा।

उस समय, प्रतिमा-भंजक विधिर्म एक बार फिर भड़क उठा; इसे लियो द इसाउरियन[321] , कॉन्स्टेंटिन कॉप्रोन्यमस[322] और उनके पुत्र लियो[323] के शासन के बाद चर्च से उखाड़ दिया गया था, और धर्मनिष्ठ सम्राज्ञी आइरीन और उनके पुत्र कॉन्स्टेंटिन[324] द्वारा बुलाई गई सातवीं सार्वभौमिक परिषद[325] द्वारा इसकी निंदा की गई थी। इस विधिर्म को दुष्ट त्ज़ार लियो द आर्मेनियन[326] ने पुनर्जीवित किया था, जिनके प्रारंभिक जीवन के बारे में यहाँ कुछ शब्द कहना उचित होगा। निकिफ़ोरस[327] के शासनकाल में, वह पहले आर्मेनियाई गार्ड का कमांडर था, और बाद में एक प्रतिष्ठित अधिकारी और पूर्वी सेना का कमांडर बना। फिर उसने चालाकी से सिंहासन पर चढ़कर, अच्छे और धार्मिक राजा माइकल, जिन्हें रंगवा उपनाम से जाना जाता था, को पदच्युत कर दिया[328] , जिन्हें उसने संन्यास की शपथ लेने के लिए मजबूर किया; इसी समय, उसने अपने बेटों इग्नेशियस और थियोफिलैक्ट को नपुंसक बनवा दिया और माइकल को उसकी पत्नी और बच्चों के साथ निर्वासन में भेज दिया।

जब परम पावन पैट्रिआर्क निकिफिोरस कैथेड्रल चर्च में लियो द आर्मेनियन को ताज पहना रहे थे और उसके सिर पर मुकुट रख रहे थे, तो उन्हें अपने हाथों में काँटों जैसा दर्द महसूस हुआ, मानो संत के हाथों में मुकुट काँटों का ताज बन गया हो, जो दर्दनाक चुभन दे रहा था, और तब परम पावन पैट्रिआर्क को एहसास हुआ कि यह उन महान दुखों और विपत्तियों का एक स्पष्ट संकेत था, जो यह राजा बाद में मसीह की कलीसिया पर लाएगा।

शुरू में, दुष्ट ज़ार ने अपने भीतर छिपी विधिर्म को छिपा रखा था और सिंहासन पर अपनी स्थिति पिक्की होने तक, एक तरह से, धार्मिक दिखाई दिया। लेकिन बुल्गारियाई लोगों के साथ महान युद्ध के बाद, जिसमें वह एक गौरवशाली विजेता के रूप में उभरा, उसने अंततः अपने भीतर छिपे द्वेष के विष को बाहर उगल दिया, और खुले तौर पर खुद को एक मूर्तिभंजक के रूप में प्रकट किया। यह इस प्रकार शुरू हुआ: युद्ध से लौटने पर, ज़ार ने एक ऐसे तपस्वी को याद किया जिसने एक बार भविष्यवाणी की थी कि वह ज़ार बनेगा—एक भविष्यवाणी जो सच हुई थी। इस भविष्यवाणी के लिए उसे धन्यवाद देना चाहकर, ज़ार ने एक विश्वसनीय सेवक के माध्यम से उसे विभिन्न उपहार भेजे: सोने और चांदी के बर्तन,

---

[320] संत सावस की लावरा या मठ।

[321] सम्राट लियो द इसाउरियन (717–741) पहले प्रतिमा-भंजक थे जिन्होंने एक फरमान जारी किया था कि चर्चों से पवित्र प्रतिमाओं को हटाकर नष्ट कर दिया जाए।

[322] सम्राट कॉन्स्टेंटिन कॉप्रोन्यमस (741–775) ने मूर्तिभंजनवाद के विधिर्म का पुरज़ोर समर्थन किया। उन्होंने कॉन्स्टेंटिनोपल में एक परिषद बुलाई, जिसे उन्होंने सार्वभौमिक परिषद कहा, जिसमें प्रतिमाओं की पूजा को अस्वीकार कर दिया गया।

[323] सम्राट लियो, जिन्हें खज़ार के नाम से जाना जाता है, ने 775 से 780 तक शासन किया। उन्होंने मूर्तिभंजन का समर्थन किया, लेकिन केवल आधे मन से।

[324] संत आइरीन, सम्राट और लीओ द खज़ार की पत्नी, ने शुरू में, अपने पति की मृत्यु के बाद, अपने छोटे बेटे, सम्राट कॉन्स्टेंटिन पोर्फिरोजेनिटिस (780 से 792 तक), की ओर से साम्राज्य पर शासन किया, जब वह नाबालिग था, और बाद में अपने अधिकार से (797 से 802 तक)।

[325] सातवीं सार्वभौमिक परिषद 887 में निकिया में बुलाई गई थी। इसने प्रतिमाओं की पूजा की पुष्टि की और कांस्टेंटिन कोप्रोन्यमस के अधीन आयोजित परिषद को विधिर्मी घोषित कर दिया।

[326] सम्राट लियो द आर्मेनियन ने 813 से 820 तक शासन किया।

[327] सम्राट निकिफ़ोरस प्रथम ने 802 से 811 तक शासन किया।

[328] सम्राट माइकल प्रथम रंगाब ने 811 से 813 तक शासन किया।

तरह-तरह के स्वादिष्ट व्यंजन और भारतीय इत्र[329] । हालाँकि, ज़ार के के दूत को वहाँ तपस्वी नहीं मिला, क्योंकि उनका निधन हो चुका था; इसके बजाय, उनका शिष्य साव्वती उसी तपस्थली में रह रहा था। ज़ार के दूत ने उसे अपने गुरु के लिए भेजे गए शाही उपहार स्वीकार करने और ज़ार के लिए प्रार्थना करने के लिए मनाना शुरू कर दिया। लेकिन सावती ने उपहारों को, और साथ ही उन्हें लाने वाले को भी ठुकरा दिया, और ज़ार को सिंहासन के अयोग्य घोषित कर दिया क्योंकि वह प्रतिमाओं की पूजा करता था और पूर्व सम्राज्ञी इरिना और पूर्व पादरी तारस द्वारा स्थापित सिद्धांतों का पालन करता था। साथ ही, उस दुष्ट व्यक्ति ने इरिना और तारासियस की बदनामी की, उसने पहली को 'मादा-लोमड़ी' और दूसरे को 'लोगों को भड़काने वाला' कहा; जहाँ तक ज़ार लियो का सवाल है, उसने उसे अपने राज्य और जीवन से जल्द ही वंचित कर देने की धमकी दी, जब तक कि वह थोड़े ही समय में मूर्तियों को मूर्तिपूजा के रूप में त्याग नहीं देता।

[330]सम्राट के पास लौटने पर, दूत ने भिक्षु से जो कुछ भी सुना था, वह सब बता दिया और उसी विषय पर भिक्षु का एक लिखित संदेश भी सौंप दिया। हैरान होकर, राजा ने अपने सबसे भरोसेमंद सलाहकारों में से एक, थियोडोतस नामक व्यक्ति को बुलाया, जो मेलिसिया का एक कुलीन था, माइकल का बेटा था और जिसे कैसिटिर के उपनाम से जाना जाता था, और उससे निजी तौर पर सलाह-मशविरा किया कि क्या किया जाए। थेओडोटस लंबे समय से प्रतिमा-भंग के संप्रदाय से प्रभावित था और वह खुले तौर पर अपनी अधर्मी भावनाओं को व्यक्त करने के लिए बस एक उपयुक्त अवसर का इंतजार कर रहा था। उसने ज़ार को निम्नलिखित सलाह दी:

'दागेस्तान मठ में,' उसने कहा, 'एक पवित्र संन्यासी, एक चमत्कारी और एक द्रष्टा रहते हैं: हमें उनसे बात करनी चाहिए और उनकी सलाह पर अमल करना चाहिए।'

जब ज़ार उससे सहमत हो गया, तो थियोडोतस उस संन्यासी से मिलने के लिए गुप्त रूप से दागेस्तान मठ की ओर भागा, जो वास्तव में एक विधर्मी था। वहाँ पहुँचने पर, उसने कहा:

– आज रात, राजा साधारण वेश धारण कर आपके पास आएगा, ताकि वह आस्था और अन्य विषयों पर चर्चा कर सके, और आपकी बुद्धिमानी भरी सलाह ले सके। आप, बदले में, उसे पूर्व राजा लियो द इसाउरियन की अस्वीकृत शिक्षाओं को अपनाने और ईश्वर के चर्चों से मूर्तियों (जैसा कि उस नीच व्यक्ति ने पवित्र प्रतिमाओं को कहा) को बाहर फेंकने के लिए मनाना होगा। फिर यह कहकर उसे डराने का प्रयास करो कि यदि उसने ऐसा नहीं किया, तो वह जल्द ही न केवल अपनी जान बल्कि अपना राज्य भी खो देगा; लेकिन यदि वह ऐसा करने का वादा करता है, तो उसे भविष्यवाणी की तरह एक लंबा जीवन और एक समृद्ध शासन का पूर्वानुमान सुनाओ।

इस प्रकार, विधर्मी थियोडोडस ने विधर्मी भिक्षु के साथ मिलकर, राजा को—जिसका मन उनकी साज़िश से आसानी से प्रभावित हो जाता था—अपनी दुष्टता में फँसाने की साज़िश रची। थियोडोतस की धूर्तता के बारे में कुछ भी न जानते हुए, राजा रात में उठा और, (ताकि पहचाना न जा सके) फटे-पुराने कपड़े पहनकर, इस झूठे चमत्कार करने वाले और धोखेबाज़ नबी के पास गया। उनके मार्गदर्शक स्वयं थियोडोटस ही थे। जब वे उपर्युक्त भिक्षु के आवास पर पहुँचे और बातचीत पहले ही शुरू हो चुकी थी, तो भिक्षु, राजा के बगल में खड़ा होकर और मानो दिव्य प्रकाशन से उसकी शाही पदवी को पहचानकर, आश्चर्य से बोला:

'हे राजा, आपने इन फटे-पुराने कपड़ों के नीचे अपनी राजसी गरिमा को हमसे छिपाकर गलत किया है। लेकिन भले ही आपने ऐसा किया हो, पवित्र आत्मा की कृपा हमें अधिक समय तक अज्ञानता में नहीं रहने देगी और उसने यह प्रकट कर दिया है कि आप एक राजा हैं, कोई साधारण व्यक्ति नहीं।'

राजा इन शब्दों से भयभीत हो गया और संन्यासी की पवित्रता तथा अंतर्दृष्टि से प्रभावित होकर, उसने उसकी भविष्यवाणी करने की शक्ति और चमत्कार करने की क्षमता पर विश्वास कर लिया। वह भिक्षु के हर आदेश को बिना किसी संदेह के मान गया, और उस विधर्मी की सलाह—जो आत्मा के लिए विनाशकारी और साँप के विष से भरी थी—को आत्मा के लिए सही और लाभकारी मान लिया। तुरंत, उसने उस संन्यासी की सभी सलाहों पर अमल करने का वादा किया, जिसे स्वयं की तरह एक विधर्मी थियोडोडोटस ने सिखाया था, और पवित्र प्रतिमाओं के खिलाफ उत्पीड़न शुरू करने के दुष्ट इरादे से भरकर चल दिया। और इस प्रकार, एक प्रचंड तूफान की तरह, उस अधर्मी ज़ार ने मसीह की कलीसिया की शांति भंग करनी शुरू कर दी।

---

[329] भारतीय सुगंध – भारत से लाई गई सुगंध। भारत – पूर्वी एशिया की बड़ी दक्षिणी प्रायद्वीप पर स्थित एक देश – लंबे समय से अपनी सुगंधित पौधों के लिए प्रसिद्ध है।

[330] मेलिसा – फ्रीजिया का एक शहर, जो एशिया माइनर प्रायद्वीप के पश्चिमी भाग के पूरे मध्य भाग को घेरे हुए था।

उसने परम पावन पैट्रआिर्क नकिफिोरस को, जनि्होंने उसके दुष्ट इरादे के आगे समर्पण नहीं कयिा था, प्रोकॉनसि्सॉस[331] नरि्वासति कर दयिा; इसी तरह, उसने 'द ग्रेट वलिेज'[332] नामक मठ के मठाधीश थयिोफेनेस, थयिोडोर द स्टुडाइट[333] और कई अन्य महान और दैवीय रूप से प्रेरति पतिाओं को, जनि्होंने उसका पुरज़ोर वरिोध कयिा था, दूर-दराज़ के देशों में नरि्वासति और कैद कर दयिा। जहाँ तक पादरशाही सहिासन का प्रश्न है, मसीह के पुनरुत्थान के उसी दनि, , उसने उपर्युक्त वधिर्मी थयिोडोटस ऑफ मेलसियिा, जसिे कैसटिर उपनाम दयिा गया था, को सहिासन पर बठिाया। और वह, यों कहें तो, *'पवत्रि स्थान में वरिानपन की घृणा'* था (मत्ती 24:15; दानयिेल 9:27)।

तब परमेश्वर ने, राजा के दुष्टता के वरिुद्ध अपने धर्मी क्रोध में, उसे अपने न्याय से दंडति करने में देरी नहीं की और वदिेशी जनजातयिों द्वारा एक अचानक आक्रमण की अनुमतदिी। ये पूर्वी रेगस्तिानों में रहने वाले अरब थे; अपनी सारी सेनाएँ इकट्ठा करके, उन्होंने ग्रीक क्षेत्रों पर आक्रमण कयिा, भूमकिो उजाड़ दयिा, फलिस्तिीनी मठों पर हमला कयिा और, अन्य मठों के साथ-साथ, संत सावस के मठ पर भी हमला कयिा, जहाँ धन्य थयिोडोर अपने भाई थयिोफेनेस के साथ एक भकि्षु के रूप में रहते थे। पवत्रि नगर यरूशलेम के सर्वधर्मगुरु ने यह महसूस कयिा कयिह पापों के लिए एक दंड और पवत्रि प्रतमिाओं के अपमान और अस्वीकृतकि लिए ईश्वर के क्रोध का परणिाम था। ऑर्थोडॉक्सी के प्रतउित्साह से प्रेरति होकर, उन्होंने इस आग को बुझाने और उन लोगों द्वारा कएि गए दुष्ट कार्यों को उजागर करने का एक तरीका खोजना शुरू कर दयिा, जनि्होंने संतों की परंपराओं का उल्लंघन कयिा और नवाचारों को पेश कयिा। कुछ खोजबीन के बाद, उन्हें इस कार्य के लिए उपयुक्त व्यक्तकि रूप में आदरणीय थयिोडोर मलि, जो अपने धार्मकि जीवन और ज्ञान के लिए प्रसद्धि थे, जो दैवीय उत्साह से भरपूर थे और अटूट साहस के साथ ऑर्थोडॉक्सी की रक्षा करते थे। प्रार्थना से उसकी रक्षा करते हुए और मसीह में आशा से उसे बल प्रदान कर, पैट्रआिर्क ने उसे उस अत्याचार का वरिोध करने के लिए शाही नगर भेजा।

धन्य थयिोडोर ने, एक आज्ञाकारी पुत्र की तरह, आज्ञा पालन करने से इनकार नहीं कयिा। सच्चे धर्म के लिए न केवल अनगनित कठनिाइयों को सहने, बल्कपिीड़ा स्वीकार करने और पवत्रि प्रतमिाओं के सम्मान के लिए अपना जीवन भी बलदिान करने के लिए तैयार, उन्होंने खुशी-खुशी आज्ञा का पालन कयिा। अपने भाई थयिोफेनेस को साथ लेकर, थयिोडोर अपनी यात्रा पर नकिल पड़े और जल्द ही शाही राजधानी पहुँच गए। वहाँ, सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण, उन्होंने नडिर होकर एक भाड़े के सैनकि को वधिर्मी घोषति कयिा जो कोई चरवाहा नहीं था—अर्थात् मेलसियिा का थयिोडोडस, कॉन्स्टेंटनिोपल का झूठा पैट्रआिर्क। रेवरेंड ने खुले तौर पर उन पर अपनी देखरेख में आने वालों को भ्रष्ट करने, मसीह के झुंड की आध्यात्मकि भेड़ों को वधिर्मी सद्धिांत के हानकिारक भोजन से नष्ट करने, और रूढ़वािदी चर्च को तबाह करने तथा अंधवश्विास का एक मंदरि खड़ा करने का आरोप लगाया। तब स्वयं सम्राट के समक्ष उपस्थति होकर, और अपने होठों पर—तलवार की तरह तीखे—ईश्वर के वचन के साथ, थयिोडोर ने सम्राट को चेतावनी देना शुरू कयिा, और स्पष्ट रूप से यह साबति कयिा कयिह न केवल अपनी आत्मा को नष्ट कर रहा था, बल्कधिोखे से लोगों को भ्रष्ट करके ईश्वर के लोगों को भी वनिाश की ओर ले जा रहा था। साथ ही, उन्होंने उससे वनिती की कयिह अपनी अधर्मी कल्पनाओं को त्यागकर धर्मपरायणता पर लौट आए।

उसने कहा, 'शायद, इस प्रकार आप प्रभु को प्रसन्न कर लेंगे और उस ईश्वर के क्रोध के पूरे प्याले को नहीं पएिंगे जो आपके ऊपर मंडरा रहा है।'

उस आदमी की स्पष्टवादति, उसके शब्दों की प्रभावशीलता, उसके व्यवहार की कोमलता और उसके नडिर साहस से प्रभावति होकर, राजा ने नम्रतापूर्वक फटकार को स्वीकार कर लयिा। उसे दूसरी बार बुलाकर, राजा ने दोस्ताना अंदाज में उससे बातचीत शुरू की, और पूछा कयिह कौन था, कहाँ से आया था और वह अपनी साहसी बातों से क्या हासलि करना चाहता था। राजा को अपने देश के बारे में और यह बताते हुए कयिह फलिस्तिीन से आया था, संत ने अपनी यात्रा का कारण भी समझाया, अर्थात् वह जानबूझकर ईश्वर के सम्मान की रक्षा में खुले तौर पर बोलने के लिए उसके पास आया

---

[331] प्रोकोनसिोस – मार्मारा सागर में एक द्वीप, जसिे अब मारयिारा के नाम से जाना जाता है; यह आइकॉनोकलास्टकि उथल-पुथल के दौरान कई धर्मनष्ठिों के लिए नरि्वासन का स्थान था।

[332] बेशक, संत थयिोफेंस, एक कॉन्स्टेंटनिोपोलटिन कुलीन व्यक्तकि पुत्र थे, जनि्होंने सम्राट लयिो द खज़ार की मृत्यु के बाद संन्यास की शपथ ली, जनिके अधीन उन्होंने एक उच्च पद धारण कयिा था। उनका पर्व दविस 12 मार्च को नदी रविडका के तट पर, वुडलैंड सग्रियिन पहाड़ों में मनाया जाता है।

[333] थयिोडोर द स्टुडाइट – प्रसद्धि स्टुडयिो मठ के मठाध्यक्ष। उनका पर्व दविस 11 नवंबर को मनाया जाता है।

था, यह देखकर कि कैसे स्वर्गीय राजा की प्रतिमाओं में उनका अपमान किया जा रहा था और उनके सेवकों के रूप में उनका अपमान किया जा रहा था, जिन्हें अन्यायपूर्ण रूप से सताया जा रहा था।

उन्होंने कहा, 'स्वर्गीय राजा से अधिक एक सांसारिक राजा से डरना उचित नहीं है; यदि राजा ईश्वर के क्रोध को भड़काते हैं तो उन्हें फटकारना हमारा कर्तव्य है।'

तब रेवरेंड फादर ने पवित्र विश्वास के सिद्धांतों की व्याख्या करनी शुरू की और दैवीय प्रतिमाओं के प्रति उचित श्रद्धा सिखाई। पवित्र धर्मग्रंथ के कई अंशों का हवाला देते हुए, उन्होंने कहा कि पवित्र प्रतिमाओं की श्रद्धा मसीह के प्रति हमारे प्रेम और लालसा का एक संकेत है, साथ ही यह हमारे विश्वास और उनके अवतार की हमारी स्वीकारोक्ति का एक प्रमाण भी है। राजा ने उसके साथ लंबी बहस की, अपनी अंधश्रद्धा के आधार पर कई आपत्तियां उठाईं, लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ, क्योंकि उस धर्मनिष्ठ व्यक्ति के शब्द अटल थे, और उसका विश्वास एक ठोस दीवार की तरह अटूट था। एक लंबी बहस के बाद, थियोडोर बहस में राजा पर हावी हो गया और उसे उसके विचारों की अन्यायपूर्णता साबित कर दी। तब उस दुष्ट राजा ने क्या किया? उसने चापलूसी से उस अडिग व्यक्ति को हिलाने का निश्चय किया, और वनितियों, उपहारों और सम्मान के वादों के माध्यम से थियोडोर को अपने पक्ष में लाने का प्रयास किया, लेकिन उसे कोई सफलता नहीं मिली। राजा के बहुत मनाने के बाद, संत ने उससे निडर और निर्भीक होकर कहा:

'हे राजा, तुमने उन व्रतों को भूल गए हो, जो तुमने ईश्वर से तब किए थे जब बिशप ने तुम्हारे सिर पर मुकुट रखा था। अपनी आत्मा को बचाओ; चर्च को उसकी शोभा लौटा दो; ईश्वर, जो धर्मी और शक्तिशाली न्यायाधीश हैं, के विरुद्ध युद्ध मत करो!'

तब राजा ने अपनी दिखावटी नम्रता को अपने नाम के अनुरूप, अपने स्वाभाविक, पशु-सदृश क्रोध में बदल दिया। उसने आदेश दिया कि मसीह के स्वीकारकर्ता थियोडोर और उनके भाई थियोफानेस को लंबे समय तक और बुरी तरह पीटा जाए, और फिर ने उन्हें नदी के मुहाने पर निर्वासित कर दिया, और किसी को भी उन्हें भोजन, पेय या कपड़े देने से मना कर दिया, ताकि, जैसा कि दुष्ट राजा ने कहा, 'दुष्ट एक दयनीय मृत्यु से मर जाएँ'।

लेकिन जब संत मसीह की प्रतिमाओं के लिए कष्ट झेल रहे थे, ठंड, भूख और प्यास से त्रस्त थे, तब 'प्रतिशोध के स्वामी, ईश्वर' ने उस अधर्मी पर अपना न्यायसंगत निर्णय सुनाने में देरी नहीं की। जल्द ही, जिसने जानवरों का नाम और क्रूरता साझा की थी, उसे भी उन्हीं की तरह मृत्यु मिली, क्योंकि उसे एक जानवर की तरह छुरा घोंपकर मार डाला गया। इस मृत्यु की भविष्यवाणी ज़ार की माँ को उनके दुष्ट पुत्र की मृत्यु से ठीक पहले प्राप्त एक विशेष प्रकटिकरण में की गई थी। वह कई वर्षों से विधवा थीं और संयम का जीवन जीती थीं। एक दिन, एक सपने में, उसे निम्नलिखित दर्शन हुआ: उसे ऐसा लगा कि वह ब्लाचेर्ना में सर्व पवित्र वर्जिन मैरी के चर्च की ओर जा रही थी[334] , और, दरवाजे में प्रवेश करने पर, वह एक अत्यंत तेजस्वी वर्जिन से मिली, जो सफेद वस्त्रों में लिबिड़े पुरुषों की भीड़ से घिरी हुई थी, जबकि चर्च खून की धाराओं से भर गया था। कन्या ने सफेद वस्त्रों में लिपटे एक पुरुष को आज्ञा दी कि वह कुछ खून उठाकर एक मिट्टी के पात्र में भर दे और उसे दुष्ट राजा की माँ को दे दे ताकि वह उसे पी सके। यह देखकर, राजा की माँ ने भय से कहा:

'मैंने अपनी विधवा होने के कारण कई वर्षों से मांस नहीं खाया है, और न ही मैंने कभी अपने मुँह में कुछ खूनी चीज़ डाली है। मैं यह खून कैसे पी सकती हूँ?'

तब परम पवित्र कुँवारी ने उससे क्रोधित होकर पूछा:

'तो फिर, तुम्हारा बेटा खून से भरा क्यों रहता है, और इस प्रकार मुझे और मेरे दिव्य पुत्र को क्रोधित क्यों करता है?'

यहीं पर सपना समाप्त हो गया, और रानी तुरंत भय और कांपते हुए जाग उठीं। उस समय से, उन्होंने अपने राजसी पुत्र से अनवरत और आँसुओं के साथ विनती करना शुरू कर दिया कि वह पवित्र प्रतिमाओं को नष्ट करना और उनके

---

[334] ब्लाचेर्ना शहर के पश्चिमी हिस्से में स्थित कॉन्स्टेंटिनोपल का एक जिला है। बीजान्टिन साम्राज्य के स्वर्ण युग के दौरान, यह अपनी पवित्र स्थलों के लिए पूरे पूर्व में प्रसिद्ध था। ब्लाचेर्ना विशेष रूप से ईश्वर की माता के चर्च के लिए प्रसिद्ध था, जिसे सम्राट लियो प्रथम महान (457–474) ने बनवाया था, जिनके शासनकाल में 474 में पवित्र भूमि से लाए गए ईश्वर की परम पवित्र माता के पवित्र वस्त्र इसी चर्च में रखे गए थे। यहाँ, वर्जिन मैरी के परिधानों के साथ-साथ, उनके सिर पर ओढ़ने वाला वस्त्र (ओमोफोरीयम) और उनकी कमरपट्टा का एक हिस्सा सोने की जड़त वाले अवशेष-पात्र में रखा गया था।

कारण ईसाईयों का खून बहाना बंद कर दे। लेकिन दूसरा यहूदा, विधर्म का एक आज्ञाकारी सेवक और एक धूर्त धोखेबाज़, सुधरे हुए नहीं रहा।

थोड़ी ही देर बाद, उसकी पीड़ादायक मृत्यु से छह दिन पहले, एक दूसरा दर्शन हुआ, इस बार स्वयं ज़ार को। उस दर्शन में, परम पवित्र तारासियस उसे दिखाई दिए—एक ऐसे व्यक्ति जो बहुत पहले ही गुजर चुके थे और जो आइरीन और कॉन्स्टेंटिन के शासनकाल के दौरान पैट्रिआर्क रहे थे। बड़े क्रोध में, तारासियस ने उस दृष्टि में माइकल नामक एक व्यक्ति को तसर पर तलवार से वार करने का आदेश दिया। आदेश का पालन करते हुए, माइकल ने तसर पर अपनी तलवार से एक ज़ोरदार वार किया और उसे भेद दिया। तसर ने यह सब स्वयं देखा और बड़े भय से जाग उठा, यह सोचते हुए कि इसका क्या मतलब हो सकता है।

यह मानते हुए कि सेंट तारासियस के मठ में एक माइकल नाम का व्यक्ति रहता था और वह उनकी हत्या की साजिश रच रहा था, उन्होंने तुरंत संन्यासियों को बुलाया और माइकल के बारे में पूछताछ करते हुए, उन्हें तब तक हथकड़ी में बाँधने का आदेश दिया जब तक वे अपने बीच के माइकल को नहीं सौंप देते।

उस समय, माइकल नाम का एक सैन्य कमांडर, जिसका उपनाम ट्रैवलियस या वाल्वोस था[335] , जो एमोरा का मूल निवासी था[336] , कॉन्स्टेंटिनोपल में रहता था। वह पहले सम्राटीय सिंहासन पर चढ़ने में लियो की बहुत मदद कर चुका था; वह उससे वफादार था और उसे बहुत मान देता था, इतना कि लियो उसके बेटे का गॉडफादर भी बन गया था। हालाँकि, बाद में, किसी कारण से राजा से नाराज़ होकर, माइकल ने अपनी दोस्ती को दुश्मनी में बदल दिया और अपने दोस्तों के साथ दावत के दौरान—अक्सर नशे में—लापरवाही से राजा के बारे में बुरा-भला कहा। जब ज़ार को पता चला कि माइकल उससे शत्रुता रखता है, तो ज़ार के कुछ गुप्त दुश्मन भी उससे जुड़ गए, और वे काफी संख्या में थे; उन्होंने ज़ार को मारने और माइकल को सिंहासन पर बिठाने की साजिश रची। माइकल अपनी ज़बान बंद नहीं रख सका, और उसने कहीं यह घमंड कर दिया कि वह ज़ार बनेगा। इस बात की खबर ज़ार को मिलते ही, उसने तुरंत माइकल को गिरफ्तार कर लिया और उसे ज़िंदा जलाने की सज़ा सुना दी। माइकल को, हाथ-पैर बाँधकर, पहले से ही स्नानागार की भट्टी की ओर ले जाया जा रहा था, जिसके पास ज़ार खुद मौजूद था, ताकि वह उसकी मौत का साक्षी बन सके। यह घटना 24 दिसंबर को, मसीह के जन्म की पूर्व संध्या पर हुई। यह जानकर राजा की पत्नी थियोडोसियस अपने कक्ष से बाहर भागी और गुस्से में राजा को डाँटने लगी, यहाँ तक कि उन्होंने उसे धर्महीन भी कहा क्योंकि वह उस पवित्र दिन का भी सम्मान नहीं कर सका जिस दिन उसे दिव्य रहस्यों ( ) को प्राप्त करना था। राजा ने उनकी बात मानी और माइकल को वापस लाने का आदेश दिया, तथा उसे जलाने को बाद के समय के लिए टाल दिया; फिर, रानी की ओर मुड़कर, उन्होंने कहा:

'मैंने वैसा ही किया है जैसा तुमने कहा था, मेरी पत्नी, और आज मैंने तुम्हारी क्रोधित चेतावनी पर ध्यान दिया है, लेकिन तुम खुद और हमारे बच्चे देखेंगे कि आगे क्या होता है।'

इन शब्दों के साथ, उस कानून-विहीन राजा ने अनजाने में अपने बारे में एक भविष्यवाणी कर दी, क्योंकि उसकी मृत्यु निकट थी।

ज़ार ने बेड़ियों में जकड़े माइकल की रखवाली का काम महल के एक रक्षक, जिसका नाम पापियस था, को सौंप दिया, जबकि उसने स्वयं कैदी की बेड़ियों की चाबियाँ ले लीं और पूरी रात जागते और दुख में बिताई – उसका मन बेचैन था, उसे समझ नहीं आ रहा था कि क्या करे। उठकर ज़ार कैदी को देखने गया—यह देखने के लिए कि वह क्या कर रहा था: क्या वह रो रहा था और विलाप कर रहा था, जैसा कि आमतौर पर मृत्युदंड पाए लोगों के साथ होता है? पापियास के कक्ष का गुप्त दरवाज़ा धीरे से खोलकर, उसने कुछ बिल्कुल अप्रत्याशित देखा: माइकल, जिसे वह विलाप करते और दुखी पाना चाहता था, पापियास के ऊँचे और भव्य बिस्तर पर गहरी नींद में सो रहा था, जबकि पापियास खुद नंगे फर्श पर झपकी ले रहा था। राजा यह देखकर स्तब्ध रह गया कि मृत्युदंड प्राप्त कैदी के साथ इतना सम्मान और शांतिपूर्ण व्यवहार किया जा रहा है, और वह गुस्से में वहाँ से चला गया, यह धमकी देते हुए कि वह न केवल माइकल बल्कि पापियास को भी नष्ट कर देगा। यह बात उसी कमरे में मौजूद एक छोटे लड़के ने सुन ली। राजा को पहचानकर, उसने माइकल और पापियास को जगाया और उन्हें बताया कि राजा आ गया है और उसने दोनों को मौत की सजा देने की धमकी दी है। सभी भय से भर गए।

---

[335] नाम: 'ट्रावलियस' लैटिन है, जबकि 'वाल्वोस' (बाल्बा) ग्रीक है। रूसी में, दोनों का अर्थ 'जीभ-बंधित' है। यह माइकल बाद में सम्राट बना और 820 से 829 तक शासन किया।

[336] अमोरेआ एशिया माइनर के फ्राइजिया प्रांत में एक शहर है।

फरि माइकल ने, पापयिास से कोई वरिोध न पाकर, एक थयिोक्टस्टिस नामक व्यक्तकिो अपने साथयिों के पास यह आज्ञा देकर भेजा कवि ह उनसे कहे:

'यदि तुम उस बात को तुरंत, बनिा कसिी देरी के, पूरा नहीं करते जसि पर हम सहमत हुए हैं, तो कल मैं राजा को तुम्हारे बारे में बताऊँगा और तुम में से प्रत्येक को अलग-अलग दोषी ठहराऊँगा, ताकि न केवल मुझे एक भयानक मृत्यु मलि, बल्कि तुम सभी भी मेरे साथ मर जाओ।'

इस धमकी से षड्यंत्रकारी भयभीत हो गए और एकत्रति होकर, वे इस बात पर वचिार करने लगे कि वे स्वयं को और माइकल को आने वाली आपदा और मृत्यु से कैसे बचा सकते हैं। आधी रात थी, और चर्चों में मसीह के जन्म के लिए पारंपरकि पूरी रात की प्रार्थना सभा शुरू हो रही थी। एक-दूसरे से सलाह-मशवरिा करने के बाद, उन्होंने अपने हथयिार कपड़ों के नीचे छपिा लिए और शाही महल की ओर जाने वाले तथाकथति 'हाथी पेड़ों' की ओर चल पड़े। वहाँ, उन दरवाजों से महल के चर्च में प्रवेश कर रहे शाही गायक मंडली के गायकों के बीच घुल-मलिकर, वे भी उनके साथ चर्च में प्रवेश कर गए, मानो वे प्रार्थना सभा में शामलि होने आए हों। ज़ार भी चर्च में आ गया और, जैसा कि वह आमतौर पर करता था, दाहनिी ओर के कोरस के बरामदे में खड़ा होकर, खुद चर्च का गायन शुरू कर दयिा, उसकी आवाज़ बहुत तेज़ थी।

वे पहले ही कैनन गा चुके थे और सातवें ओड के पास पहुँच रहे थे, तभी साज़शिकर्ताओं ने एक-दूसरे से फुसफुसाना शुरू कर दयिा:

'हम यहाँ खड़े-खड़े कुछ नहीं कर रहे, क्यों? गायन जल्द ही खत्म हो जाएगा। हम कसिका इंतज़ार कर रहे हैं?'

उसी क्षण, ज़ार ने मसीह के जन्म के पर्व के लिए दूसरे कैनन का सातवां इरमोस ज़ोर से गाना शुरू कर दयिा। और इसलिए साज़शिकर्ताओं में से एक, अपने कपड़ों के नीचे से तलवार नकिालकर, ज़ार पर झपट पड़ा, लेकनि चूक गया: उसने ज़ार के बजाय, दाहनिी मंडली के कोयरमास्टर को मारा, शायद इसलिए क्योंकि कोयरमास्टर की ऊंचाई ज़ार के समान थी, या शायद इसलिए क्योंकि ठंड के कारण, ज़ार की तरह ही, उसका सरि ढका हुआ था; जब कोयरमास्टर ने अपना सरि खुला कयिा, तो गलती स्पष्ट हो गई। ज़ार स्वयं, उनकी साज़शि को भांपकर, वेदी की ओर भागे और, क्रूस को पकड़कर, दरवाज़े पर उसका इस्तेमाल कर साज़शिकर्ताओं के वारों से अपनी रक्षा करने लगे। लेकनि तभी वशिालकाय एक भयंकर योद्धा आगे आया। इस योद्धा को देखकर, ज़ार ने ईश्वर की वेदी का स्मरण करते हुए उससे खुद को नुकसान न पहुँचाने की वनिती की।

'अब मंत्रों का समय नहीं, बल्कि मारने का है,' योद्धा ने जवाब दयिा, और उसने लेव द आर्मेनयिन पर अपने हथयिार से एक ज़ोरदार वार कयिा, जसिसे वह बुरी तरह घायल हो गया और उसका हाथ क्रूस के सरि के साथ कट गया। फरि बाकी योद्धाओं ने राजा के शरीर पर ताबड़तोड़ वार करना शुरू कर दयिा। फर्श पर गरिते हुए, लेव अपने ही खून के दलदल में पड़ा था और अभी भी सांस ले रहा था। यह देखकर कि वह अभी भी सांस ले रहा है, योद्धाओं में से एक ने उसका सरि काट दयिा।

इस प्रकार, एक जानवर की तरह काटे जाने के बाद, उस अधर्मी ज़ार ने भयानक पीड़ा के बीच भोर के समय अपनी अंतमि सांस ली। उसे ठीक उसी जगह पर मार डाला गया था जहाँ उसने पहली बार उद्धारकर्ता की प्रतमिा को ज़मीन पर फेंकने, उस पर थूकने और उसे पैरों तले कुचलने की हमि्मत की थी। लेव द आर्मेनयिन ने 7 साल और 5 महीने तक शासन कयिा, लेकनि अपनी क्रूरता में वह चर्च के महान प्राचीन उत्पीड़कوں का प्रतद्विंद्वी था। हत्या के बाद, उसके शरीर को शहर के चौक में फेंक दयिा गया और वह पूरे दनि बनिा दफनाए वहीं पड़ा रहा। और उसकी मृत्यु पर शोक मनाने वाला कोई नहीं था; वास्तव में, पूरा शहर आनंदति हुआ।

यह भी कहा जाता है कि जिसि घड़ी इस शापति मूर्त-अपमानकर्ता की हत्या हुई, उसी घड़ी स्वर्ग से एक आनंदमय स्वर सुना गया, जो कई लोगों को दुष्ट राजा की मृत्यु की सूचना दे रहा था। कुछ नावकिों ने यह स्वर सुनकर समय नोट कर लयिा और बाद में उन्हें पता चला कि ठीक उसी क्षण वह रक्तपपिासु तानाशाह—जो, जइस , उसके नाम के अनुसार, एक जानवर के समान था—वास्तव में मर चुका था। जहाँ तक उसके अपने बच्चों का सवाल है, उन्होंने उससे दोगुनी पीड़ा झेली जो उसने अपने पूर्ववर्ती, ज़ार माइकल रंगावा के बच्चों पर डाली थी: जैसा कि ऊपर पहले ही उल्लेख कयिा गया है, उसने माइकल के दो बेटों को नपुंसक बना दयिा था; ठीक उसी तरह, उसके अपने चार बेटों को भी नपुंसक बना दयिा गया: बेसलि, जसिका नाम कॉन्स्टेंटाइन रखा गया और जसिका भाग्य राज करने का था, सावटयि, ग्रेगरी और थयिोडोसयिस। बाद वाला अपनी खुशनुमाई के बाद हुई बीमारी को सहन नहीं कर सका; वह मर गया और अपने पति के बगल में दफ़नाया गया, जबकि

बेसलि, जसिका नाम कॉन्स्टेंटाइन रखा गया था, उसी बीमारी से लकवाग्रस्त हो गया। उन सभी को अपनी माँ के साथ कैद कर दयिा गया।

लयिो की हत्या के बाद, सैनकि माइकल के पास गए और उसे पैरों में बेड़यिाँ डालकर शाही सहिासन पर बठिा दयिा (क्योंकि, जैसा कहा गया था, बेड़यिों की चाबी स्वयं राजा लयिो के पास रखी गई थी)।

फरि, जब दनि चढ़ आया, तो उन्होंने बेड़यिाँ तोड़ दीं और उसे गरिजाघर ले गए। इस प्रकार ट्रावलयिा का माइकल मसीह के जन्म के दनि ही राज्याभषिति हुआ।

माइकल के सहिासनारोहण के तुरंत बाद, मसीह के सभी स्वीकारकर्त्ताओं को कैद से रहिा कर दयिा गया और वे बनिा कसिी बाधा के अपने घर लौट आए। यद्यपि निए ज़ार माइकल ऑर्थोडॉक्स नहीं थे और उसी मूर्त-विरिोधी वधिर्म के अनुयायी थे, फरि भी उन्होंने ऑर्थोडॉक्स लोगों पर अत्याचार नहीं कयिा, और सभी को अपनी इच्छानुसार वशि्वास करने की स्वतंत्रता प्रदान की। वह परमेश्वर के वचन से अनभज्ञि व्यक्ति था और कतिाबें पढ़ने में संलग्न नहीं था, बल्कि सांसारकि व्यर्थताओं और दैनकि जीवन की चतिाओं में पूरी तरह से डूबा हुआ था।

तथापि, धन्य थयिोडोर और उनके भाई थयिोफेनेस अपने स्वदेश—पैलेस्टाइन—नहीं लौटे, बल्कि कॉन्स्टेंटनिोपल लौटे, जो उपदेश देने के लिए उन्हें सौंपा गया मशिन क्षेत्र था, और उन्होंने खुले तौर पर धार्मकिता का प्रचार करना शुरू कर दयिा, कई लोगों को मूर्त-भंजन की वधिर्म से दूर कयिा और उन्हें सच्चे धर्म की शकि्षा दी।

उस समय, कॉन्स्टेंटनिोपल में जॉन नाम का एक व्यक्ति रहिता था[337] , जो सम्राट के समान ही वधिर्म का अनुयायी था और उसके पास उससे बहुत अधकि प्रभाव था। संन्यासी का भेष धारण करके और पाखंडपूर्वक स्वयं को सदाचार का आदर्श प्रस्तुत करते हुए, उसने न केवल सम्राट को बल्कि सर्वोच्च सरकार के कई सदस्यों को भी धोखा दयिा, ताकि वे उसकी बात पर ध्यान दें और हर मामले में उसकी चालाक सलाह पर चलें। वह स्वयं एक वधिर्मी होते हुए भी, वधिर्मी थयिोडोटस के उत्तराधकिारी के रूप में पैट्रआिर्कात्मक सहिासन पर आसीन हो गया। थेओडोर और थयिोफानेस—ऑर्थोडॉक्सी के ये दो दीपक जनि्होंने पूरे शाही शहर को रोशन कयिा—को स्वतंत्र नहीं देखना चाहकर, उसने उन्हें कैद कर दयिा; फरि, चर्चा के लिए उन्हें अपने पास बुलाकर, उसने उनसे लंबी बहस की, लेकनि, उन्हें हरा न पाने पर, उसने इस संबंध में एक वशिेष शाही फरमान हासलि कर लयिा और उन्हें शहर से नर्विासति कर दयिा। (क्योंकि वह ज़ार का शकि्षक और मुख्य सलाहकार था)। इस आदेश द्वारा, संत थयिोडोर और थयिोफानेस को सोस्फेनयिस नामक एक भूमि में नर्विासति कर दयिा गया[338] । लेकनि इन सम्मानति कन्फेशर्स के लिए, यह वदिेशी भूमि मसीह के लिए, एक तरह से, उनका स्वदेश बन गई, क्योंकि वे मसीह की प्रतमिाओं के लिए कहीं भी पीड़ा सहने को तैयार थे।

थोड़ी ही देर बाद, ज़ार माइकल की मृत्यु हो गई, और सहिासन पर अपने पुत्र थयिोफलिस[339] को छोड़ गए, जो कसिी भी अन्य व्यक्ति से अधकि उत्साहपूर्वक प्रतमिा-वरिोधी वधिर्म में डूबे हुए थे और जनि्होंने एक बार फरि चर्च के खलिाफ उत्पीड़न शुरू कर दयिा। एक बार फरि, पवत्रि प्रतमिाओं को अलग रख दयिा गया और उनका अपमान कयिा गया; एक बार फरि, ऑर्थोडॉक्स के लिए यातनाएं, कालकोठरयिाँ और मुकदमे तैयार कए गए; और एक बार फरि, हर तरह की अन्यायपूर्ण यातनाएं फरि से शुरू हो गईं। कई लोग यातनाओं से डरकर आज्ञा मान गए, हालांकि बाद में उन्होंने पश्चाताप कयिा। इस समय, थयिोडोर पर भी नई यातनाएँ आईं। सम्राट के ध्यान में यह बात आई कि वह अपने वशि्वास की घोषणा में अटूट और अपने वचन में अडगि था, और जसि प्रकार वह स्वयं प्रतमिाओं का सम्मान करता था, उसी प्रकार उसने दूसरों को भी ऐसा करने की शकि्षा दी[340] । तुरंत, अधर्मी ज़ार ने आदेश दयिा कि पूजनीय थयिोडोर को मुकदमे के लिए लाया जाए, और इस प्रकार, ज़ार के आदेश पर, धन्य व्यक्ति को अपने भाई थयिोफ़ेनेस और अन्य ऑर्थोडॉक्स वशि्वासयिों के साथ यातना देने के लिए शहर के प्रफिेक्ट के सामने लाया गया। जब, एक लंबे मौखकि ववािद के बाद, और शासक की चापलूसी और धमकयिों के बावजूद, थयिोडोर उसकी बात मानने को तैयार नहीं हुआ, तो उस धन्य व्यक्ति को नग्न कर दयिा गया और मोटे चाबुक से लंबे समय तक बुरी तरह पीटा गया। जब उसके यातना देने वालों ने उसे

---

[337] यह, बेशक, जॉन द ग्रामरयिन की ओर इशारा करता है, जो ज़ार थयिोफलिस के शकि्षक थे, जो बाद में (832 से 842 तक) कॉन्स्टेंटनिोपल के पैट्रआिर्क बने; उनकी मृत्यु कैद में हुई।

[338] सोस्टेनीज़ – कॉन्स्टेंटनिोपल के आसपास का एक इलाका।

[339] सम्राट थयिोफलिस ने 829 से 842 तक शासन कयिा।

[340] सेंट थयिोडोर के शैक्षकि कार्य की वरिासत उन उपदेशों पर आधारति है जो आज भी मौजूद हैं। उन्हें 'प्रतमिाओं की पूजा पर चतिन' और 'ऑर्थोडॉक्स वशि्वास पर' नामक पुस्तक का श्रेय भी दयिा जाता है।

पीटना बंद कयि, तो वह अदालत के बीच में, नग्न और खून से लथपथ, खड़ा था, जो मसीह के लिए प्राप्त घावों से स्वर्गदूतों और मनुष्यों के सामने सुसज्जति था। राज्यपाल को यह दृश्य अश्लील लगा, लेकनि संत ने कहा:

'मैं एक योद्धा हूँ और अपने प्रभु की प्रतमिाओं के लिए दुश्मनों से लड़ने आया हूँ; योद्धा आमतौर पर नग्न होकर ही युद्ध में जाते हैं। यदमिैं तुम्हारे हाथों घायल हो रहे कसिी वशि्वासी को थका हुआ देखूँ, तो मैं तुरंत उसकी जगह पर अपने शरीर को प्रहारों के लिए पेश कर दूँगा। और इस तरह मैं उसके धैर्य की कमी की भरपाई करूँगा।' यही कारण है कमिैं यहाँ नग्न खड़ा हूँ!

हे पराक्रमी पुरुष! हे स्वतंत्र वाणी! हे ईश्वर के प्रतउित्साह! इसके बाद, थयिोडोर और उसके भाई को एक बार फरि अफुसयिा में नरि्वासन के लिए भेजा गया[341] । वे रास्ते में और उस स्थान पर जो-जो कष्ट सहन करते हुए आए, उन्हें कौन गनि सकता है: बेड़यिाँ, तूफ़ान, भूख, तपती धूप, रात की ठंड, बदनामी, रोज़ाना मौत के करीब जाना और दंगे? ताज़ा घावों, प्रहारों, कान काटने को कौन वस्तिार से बयां कर सकता है? इतना कहना ही काफी है कउिन्होंने मसीह के लिए, अपने लंबे नरि्वासन के साथ, इन सभी यातनाओं को खुशी-खुशी सहन कयि।

दो साल बीत गए, और एक बार फरि, राजा की आज्ञा से, उन्हें कॉन्स्टेंटनिोपल लाया गया और मुकदमे के लिए स्वयं राजा के सामने पेश कयि गया: क्योंकविह उन्हें अपनी मूर्तपिूजा की ओर मोड़ने के लिए बहुत उत्सुक था। इस दौरान उन्होंने जो कुछ सहा, वह उस पत्र से स्पष्ट है जो उन्होंने बाद में साइज़किस के बशिप जॉन को लखिा था[342] । इस पत्र में, वे स्वयं अपने बारे में नम्निलखिति का वर्णन करते हैं: 'जब हमें शाही महल में लाया गया और हम दरवाजे से प्रवेश कर रहे थे, तो सम्राट हमें सबसे भयानक और क्रोध से ओत-प्रोत दखिाई दए। दरबारीयों की भीड़ ने हमें चारों ओर से घेर लयि, और हमने दूर से ही सम्राट को प्रणाम कयि।

हालाँकि, उन्होंने एक तीखे स्वर में और कठोर शब्दों का उपयोग करते हुए, हमें अपने पास आने का आदेश दयि और पूछा:

'तुम कसि देश में पैदा हुए थे?'

जब हमने उत्तर दयि, 'मोआब के देश में'[343] , तो उन्होंने फरि पूछा:

'तो फरि, तुम यहाँ क्यों आए हो?'

और हमारे जवाब देने से पहले ही, उसने हमें चेहरे पर मारने का आदेश दे दयि। और वे काफी देर तक हम पर जोरदार प्रहार करते रहे, जसिसे हम लगभग फर्श पर गरि पड़े; और, (थयिोडोर के अनुसार) अगर मैं मुझे मारने वाले आदमी के वस्त्र से नहीं चपिका रहता, तो मैं राजा के सहिासन के पैर के पास गरि पड़ता, लेकनि उसके वस्त्र को कसकर पकड़े रहने से, जब प्रहार पड़ते रहे तब भी मैं डटा रहा। जब उन्होंने हमें पीटना बंद कयि, तो ज़ार ने फरि पूछा:

'तुम यहाँ क्यों आए हो?'

हम चुप रहे और नीचे देखते रहे, क्योंकहिम अभी तक प्रहारों से हुई पीड़ा से उबर नहीं पाए थे। फरि राजा क्रोधति होकर एक पास के अधकिारी की ओर मुड़ा और, अत्यधकि क्रोध से जलते हुए और अभद्र गालयिाँ देते हुए, कहा:

'इन्हें यहाँ से ले जाओ और इनके चेहरों पर दाग़ लगाकर दो सरासनों[344] को सौंप दो, ताकविे इन्हें अपनी भूमपिर ले जा सकें।'

कुछ दूर एक कवखिड़ा था, जसिके हाथों में हमारे बारे में पहले से ही लखिी हुई पंक्तयिों वाला एक चर्मपत्र था।

ज़ार ने उन्हें पढ़ने का आदेश दयि और कहा:

'यदछिंद खराब हों, तो इससे नराश न होना।'

जसि पर उन्होंने उत्तर दयि:

'ऐसे छंद उनके लिए शर्म की बात हैं।' उपस्थति कसिी अन्य ने टपि्पणी की:

'मेरे स्वामी, वे श्रेष्ठतम के भी योग्य नहीं हैं।'

तब नम्निलखिति छंद पढ़े गए:

---

[341] अफूसयिा, जसि ओफयिस के नाम से भी जाना जाता है, कॉन्स्टेंटनिोपल के पास एक द्वीप है।

[342] क्यज़िकोस एशयिा माइनर के उत्तर-पश्चमिी भाग में, मरमरा सागर के दक्षणिी तट पर स्थति एक शहर है।

[343] मोआब का देश फलिस्तिीन में, मृत सागर के पूर्वी तट पर स्थति था। इसकी सीमाएँ थीं: पश्चमि में मृत सागर; उत्तर में रूबेन का कुल; पूर्व में अरब का रेगस्तिान; और दक्षणि में एदोम।

[344] यह शब्द ईसाई लेखकों द्वारा सभी मुसलमानों, और वशिेष रूप से अरबों को संदर्भति करने के लिए उपयोग कयि जाता था।

चूंकि हर कोई शहर घूमना पसंद करता है,
जहाँ परमेश्वर के वचन के सबसे पवित्र चरण खड़े हुए
ब्रह्मांड को पुनर्स्थापित करने के लिए, –
उस अति सम्मानित स्थान पर प्रकट हुए
और ये कपटी और अशुद्ध पात्र।
वहाँ कई शर्मनाक कृत्य करने के बाद,
अविश्वास और दुष्टता के कारण,
उन्हें वहाँ से धर्मत्यागी घोषित कर भगा दिया गया;
लेकिन राजसी नगर में भाग जाने पर,
उन्होंने वहाँ भी अपनी उन्मत्त तबाही नहीं रोकी।
इसलिए, उनके चेहरों पर खलनायक का ठप्पा लगा दिया गया,
उन्हें फिर से दोषी ठहराया गया और निर्वासित कर दिया गया।

छंदों का पाठ सुनने के बाद, राजा ने हमें हिरासत में लेने का आदेश दिया (इस प्रकार संतों ने स्वयं के बारे में कहा)। जब हम जा रहे थे, तो किसी ने हमें रोक लिया और वापस लौटने का आदेश देकर हमें जल्दी से राजा के पास ले आया।

हमें देखकर, राजा ने कहा:

'मुझे ऐसा लगता है कि जब तुम जा रहे थे, तो तुमने आपस में कहा था, "हमने राजा का अपमान किया है।" लेकिन पहले मैं खुद तुम्हारा अपमान करूँगा, और फिर मैं तुम्हें जाने दूँगा।'

यह कहकर उसने हमें नग्न होने का आदेश दिया। जब हम दोनों नग्न हो गए, तो उन्होंने पहले मुझे पीटना शुरू किया (थियोडोर कहता है), जबकि राजा स्वयं यातना देने वालों की मदद कर रहा था और लगातार चिल्ला रहा था:

'इसे और ज़ोर से मारो!'

और उन्होंने मुझ पर बिना किसी दया या करुणा के कंधों और छाती पर वार किया। जब वे मुझे पीट रहे थे, तो मैं ज़ोर से चिल्लाया:

'हे ज़ार, हमने आपके खिलाफ कोई पाप नहीं किया है!'

और भी:

'हे प्रभु, दया करो! हे परमेश्वर की अति पवित्र माता, हमारी सहायता करो!'

तब उन्होंने मेरे भाई को पीटना शुरू कर दिया, जिसने उसी तरह पुकारा:

'हे परमेश्वर की अति पवित्र माता, जो अपने पुत्र के साथ मिस्र भाग गई थीं, मेरी पीड़ा पर दृष्टि डालिए! हे प्रभु, हे प्रभु, जो शक्तिशाली के हाथों से दुर्बलों को छुड़ाते हैं, हमसे अपनी सहायता न रोकिए!'

हमारा मन भरकर मज़ाक उड़ाने के बाद, राजा ने फिर से हमें हिरासत में लेने का आदेश दिया।'

यह सब कुछ वीर शहीदों ने स्वयं कज़िंचि के बिशप को लिखे एक पत्र में लिखा था।

चार दिन बाद, उन्हें एक बार फिर एपार्क के सामने लाया गया, जिन्होंने उनके साथ स्नेहपूर्वक बात की:

'बस एक बार हमारे साथ पवित्र रहस्यों में भाग लो, और मैं तुम्हें जहाँ चाहो वहाँ जाने दूँगा।'

लेकिन धन्य थियोडोर ने उनसे उत्तर दिया:

'एपार्क, आपका प्रस्ताव वैसा ही है जैसे कोई मुझसे कहे: "मैं आपसे केवल एक ही बात मांगता हूँ—मुझे आपका सिर काट लेने दो, और फिर आप जहाँ चाहें जा सकते हैं।" यह जान लें: हमें सच्चे धर्म से भटकाना उतना ही मुश्किल है जितना कि आकाश और पृथ्वी को उल्टा-पुल्टा करना, ताकि पृथ्वी ऊपर हो और आकाश नीचे।'

तब एपार्क ने उनके चेहरों पर उपरोक्त छंदों को दागने का आदेश दिया। शहीदों के हाल ही में लगे घाव अभी भरे नहीं थे और उन्हें भयंकर दर्द हो रहा था। इसके बावजूद, उन्हें लकड़ी की तख्तियों पर मुँह ऊपर की ओर करके लिटाया गया, और उनके चेहरों को विशेष रूप से तैयार किए गए औजारों से छेदकर उन पर उपरोक्त छंदों को दागा गया। दिन भर उन्हें इस दाह-चिह्न से पीड़ा दी गई, और जब सूर्य अस्त हो गया और संध्या छा गई, तब यातना देने वालों ने अपनी यातना बंद की। जब वे एपार्क से विदा हुए, तो दाह-चिह्नित शहीदों ने कहा:

'यहाँ जो भी हैं, वे सब जान लें कि स्वर्ग की रखवाली करने वाले करूब, हमारे चेहरे पर ये अंकन देखकर, हमारे आगमन पर एक ओर हट जाएँगे और अपने अग्नि-शस्त्र नीचे कर देंगे, और हमें स्वर्ग में निश्चित प्रवेश देंगे। क्योंकि

अब तक कसिी भी युग में हम पर इस प्रकार की यातना का यह नया रूप कभी नहीं लगाया गया। और वैसे भी, ये नशिान मसीह के चेहरे पर भी होंगे, और इसका दोष आप पर पड़ेगा, क्योंकि वे कहते हैं: *'जसि प्रकार तुमने मेरे इन सबसे छोटे भाइयों में से कसिी एक के लिए कयिा, तुमने मेरे लिए कयिा'* (मत्ती 25:40)।

पवत्रि प्रतमिाओं के लिए सहे गए इस नए और अमानवीय यातना के बाद, जब खून अभी भी बह रहा था, संतों को कैद कर दयिा गया; और फरि, उस समय के पैट्रआिर्क, उपर्युक्त जॉन के आदेश से, उन्हें एक बार फरि बथिनियिा के अपामयिा में नर्विासति कर दयिा गया[345] । साथ ही, एक आदेश जारी कयिा गया कि जब वे वहाँ मर जाएँ, तो उनके शवों को उचति दफन न दयिा जाए, बल्कि उन्हें जानवरों के शवों की तरह शहर से बहुत दूर फेंक दयिा जाए। नर्विासन के स्थान पर जाते समय, पवत्रि कबुलीदाताओं का उस द्वीप से गुजरना हुआ जहाँ उस समय संत मेथोडयिस भी पवत्रि प्रतमिाओं के लिए नर्विासन में रह रहे थे। उन्हें वहाँ दो डाकुओं के साथ एक कब्र-गुफा में बंद कयिा गया था और एक मछुआरे से भोजन प्राप्त करते थे। रास्ते में इस मछुआरे से मलिने पर, संतों ने उसी से संत मेथोडयिस के बारे में सब कुछ जाना। साथ चल रहे सैनकिों की क्रूरता के कारण, वे उन्हें व्यक्तगित रूप से नहीं देख सके, इसलिए उन्होंने उसी मछुआरे के माध्यम से उन्हें नम्निलखिति छोटी कवति लखिी और भेजी:

जीवति मृतक और जीवन-प्रदाता मृतक के लिए,
उसके लिए जो पृथ्वी पर रहता है और पृथ्वी पर पैर रखता है,
लखिति पंक्तयिाँ लखिते हैं, एक कैदी के कैदी।

इन छंदों को पढ़कर संत मेथोडयिस को आत्मा में सांत्वना मलिी, और मछुआरे के वृत्तांत से सम्माननीय कष्ट-सहने वालों के बारे में जानकर, उन्होंने ईश्वर का धन्यवाद कयिा, जन्हिोंने उन्हें ऐसी वीरता के लिए शक्ति प्रदान की थी, और उत्तर में नम्निलखिति छंद लखि:

जो स्वर्गीय पुस्तकों में अंकति हैं,
दो, जनिके चेहरों पर अंकति है,
जो अपनी मृत्यु से पहले ही दफ़न कर दिए गए,
जन्हिें जीवति दफनाया गया है, अपने साथी द्वारा अभविादन कयिा जाता है।

सैनकिों द्वारा escorted होकर, पूजनीय संत अपामयिा पहुँचे, जनिके माथे पर मसीह में उनके धर्मपरायण वशि्वास के स्पष्ट चह्नि थे; वहाँ उन्हें जेल में डाल दयिा गया। पहले से ही वृद्ध, पूजनीय थयिोडोर वहाँ अपने अनेक घावों और सहन की गई कठनिाइयों के कारण चल बसे। पहले शहीद संत स्टीफन के पर्व के दनि, वह प्रभु में नदि्रति हुए और शाश्वत वशि्राम में प्रवेश कर गए, तथा मसीह के लिए उठाई गई बेड़यिों में अपने अत्यधकि कष्ट सहने वाले शरीर को पीछे छोड़ गए। उनके शरीर और आत्मा के भाई, पूजनीय थयिोफानेस ने, अपने भाई से बछिड़ने पर शोक मनाने और उनके लिए अंतमि संस्कार के भजन गाने के बाद, उन्हें एक लकड़ी के ताबूत में लटिा दयिा। कहा जाता है कि अपने गुणों में महान एक वृद्ध संत, पूज्य थयिोडोर के नधिन के समय अपामेआ में थे और उन्होंने स्वर्गदूतों का गायन सुना, जो उच्च स्वर्ग से शहीद की आत्मा के स्वर्ग में स्वर्गदूतों के साथ गंभीर आरोहण की घोषणा कर रहा था।

राजा थयिोफलिस की मृत्यु के बाद, चर्च में शांति बहाल हो गई। धर्मपरायण रानी थयिोडोरा ने अपने पुत्र माइकल[346] के साथ मलिकर सभी पवत्रि पतिाओं को कैद से मुक्त कर दयिा और उन्हें सम्मान और प्रशंसा प्रदान की। उस समय, संत थयिोफानेस को भी उनकी कैद से रहिा कर दयिा गया था। दूसरों के साथ, वह कन्स्टेंटनिोपल आए, अपने माथे पर वधिर्म पर अपनी वजिय का चह्नि धारण कए हुए, और पवत्रि पतिाओं के बीच स्वर्गदूतों में से एक करूब के रूप

[345] बथिनियिा में अपामयिा का नाम सीरयिा में अपामयिा से अलग करने के लिए रखा गया था। बथिनियिा एशयिा माइनर का एक उत्तर-पश्चमिी क्षेत्र है।

[346] सम्राट माइकल तृतीय (842–867) चार साल की उम्र में सहिासन पर बैठे, और इसलिए 855 तक राज्य पर उनकी माँ, सेंट थयिोडोरा, का शासन रहा।

में पूजे गए। महान उपवास के पहले सप्ताह के दौरान, पवित्र प्रतिमाओं को बड़ी धूमधाम से चर्च में लाया गया[347] । इस उत्सव के लिए, धन्य थियोफानेस ने एक सुंदर कैनन रची और गाई[348] ।

बाद में उन्हें निकिया का मेट्रोपॉलिटन नियुक्त किया गया और पवित्र पैट्रिआर्क मेथोडियस द्वारा अभिषिक्त किया गया, जो वही थे जिन्हें पहले एक कब्र में कैद किया गया था। इस प्रकार, ऑर्थोडॉक्सी का प्रकाश चमका, और मसीह की कृपा से आइकन-विरोधी विधर्म की अंधकारमयता—जिन्होंने 120 वर्षों तक परमेश्वर की कलीसिया को परेशान और अंधा किया था—पूरी तरह से दूर हो गई।

थोड़ी ही देर बाद, मसीह के स्वीकारकर्ता, पूजनीय थियोडोर[349] के अवशेष अपामिया से कालसेडॉन[350] ले जाए गए, और उनके द्वारा मसीह परमेश्वर की महिमा के लिए कई चमत्कारिक उपचार हुए, जो पिता और पवित्र आत्मा के साथ युगानुयुग महिमामय हैं। आमीन।

कॉन्स्टेंटिनोपल के आर्चबिशप संत थियोडोर का स्मरणोत्सव

27 दिसंबर को स्मरणोत्सव

संत थियोडोर कॉन्स्टेंटिनोपल के मूल निवासी थे, जहाँ उनका पालन-पोषण भी हुआ। जब वे परिपक्व हुए, तो अपनी महान धार्मिकता के कारण उन्हें सबसे पहले 'ग्रेट' ई चर्च[351] के प्रेस्बिटिर के रूप में नियुक्त किया गया; बाद में उन्हें सिसिलोस[352] और स्केउओफिलाक्स[353] नियुक्त किया गया। उनके परम पावन कन्स्टेंटिनोपल के पैट्रिआर्क के निधन के बाद, सभी बोयारों, स्वयं त्ज़ार, और विशेष रूप से पवित्र सिनिड द्वारा उन्हें चर्च का प्रभार संभालने के लिए बाध्य किया गया और उन्हें कन्स्टेंटिनोपल के पैट्रिआर्क के पद पर पदोन्नत किया गया[354] . कुछ समय बाद, अपने शत्रुओं द्वारा की गई दुर्भावनापूर्ण बदनामी के कारण, उन्हें पैट्रिआर्क के सिंहासन से हटा दिया गया; लेकिन अंततः सत्य की विजय हुई, और संत थियोडोर को एक बार फिर कॉन्स्टेंटिनोपल के पैट्रिआर्क के रूप में सिंहासनारूढ़ किया गया[355] । ईश्वर की कलीसिया का कुशलतापूर्वक शासन करने के बाद, वे दो वर्ष से कुछ अधिक समय बाद प्रभु के पास शांतिपूर्वक परलोक सिधार गए[356] ।

10 जनवरी

28 दिसंबर (पुराना संस्करण)

---

[347] यह 19 फरवरी 842 को हुआ। इस दिन को ऑर्थोडॉक्सी का पर्व घोषित किया गया और इसे ग्रेट लेन्ट के पहले रविवार को वार्षिक रूप से मनाया जाना था।

[348] थियोफेनेस ने ऑर्थोडॉक्सी के बचाव में कई कृतियाँ छोड़ीं; वह विशेष रूप से 148 कैननों के लेखक के रूप में प्रसिद्ध हैं। उनके उत्कृष्ट कैननों में ऑर्थोडॉक्सी सप्ताह के लिए कैनन, प्रेरितों को समर्पित सभी कैनन, और विभिन्न संतों के लिए कैनन शामिल हैं। इसके अलावा, संत थियोफेनेस ने कुछ पर्वों के लिए स्टिचिरा रचे।

[349] यह तब था जब उनके भाई थियोफानेस जीवित थे; उन्होंने सेंट थियोडोरा के लिए एक कैनन लिखा था, जिसका एक्रोस्टिक था: 'मैं तुम्हारे लिए सच्ची प्रशंसा रचता हूँ, भाई'।

[350] चाल्सेडॉन कॉन्स्टेंटिनोपल के सामने, बोस्फोरस के एशिया माइनर तट पर स्थित था।

[351] अर्थात्, सेंट सोफिया कैथेड्रल।

[352] सिंसेलस – पादरियाध्यक्षीय परिषद का एक सदस्य जो चर्च प्रशासन के मामलों के लिए जिम्मेदार होता था। सिंसेलस पादरियाध्यक्षों के लिए विभिन्न कार्य करते थे, उनके जीवन के प्रत्यक्ष साक्षी थे, लगातार उनके साथ रहते थे, और अक्सर उनकी मृत्यु के बाद उनका स्थान ले लेते थे।

[353] स्केवोफिलाक्स – पवित्र पात्रों का संरक्षक, सैक्रिस्टन।

[354] यह 676 में था।

[355] सेंट थियोडोर को 678 में पैट्रिआर्खल सिंहासन से हटा दिया गया था और 683 में पुनर्स्थापित किया गया था।

[356] संत थियोडोर का लगभग 686 में निधन हो गया।

नकिोमेडयिा में जलाए गए बीस हजार शहीदों का दुःख

28 दसिंबर को स्मरणोत्सव

सम्राट मैक्समियिन[357] के शासन के दूसरे वर्ष में, जब ईसाइयों पर एक क्रूर अत्याचार पहले ही तैयार कयिा जा रहा था, मसीह का पवत्रि वश्विास स्थापति हो रहा था और फल-फूल रहा था, और कलीसयिा के ईश्वर-धारी चरवाहों और शक्षिकों ने खुले तौर पर ऑर्थोडॉक्स सद्धिांतों की घोषणा की। उस समय उनमें से एक थे संत सरिील, नकिोमेडयिा की कलीसयिा के प्रतष्ठिति बशिप[358] , जो अपने धर्मी जीवन और वचन के वरदान के लिए वख्यिात थे। अपने उपदेश के माध्यम से, ईसाई धर्म पहले ही शाही दरबारों तक पहुँचने लगा था। सम्राट के कई करीबी नौकर मूर्तयिों का त्याग करके मसीह की ओर मुड़ने लगे थे। यह जानकर, मैक्समियिन ने मसीह की कलीसयिा के खलिाफ तुरंत उत्पीड़न शुरू करने का संकल्प लयिा, लेकनि उस समय वह बर्बर लोगों के साथ युद्ध का सामना कर रहा था; इसलिए उसने पहले अपने बाहरी दुश्मनों के खलिाफ हथयिार उठाने और उन्हें हराने का नश्चिय कयिा, और फरि घर पर युद्ध घोषति करने का – दुश्मनों के खलिाफ नहीं, बल्कि अपने ही प्रजाजनों और वफादार सहायकों, उन ईसाइयों के खलिाफ, जो अपनी प्रार्थनाओं और सच्चे वश्विास के माध्यम से मातृभूमि को मजबूत कर रहे थे। जब वह इथयिोपयिाई लोगों के खलिाफ युद्ध करने के लिए नकिोमेडयिा से रवाना हुआ, तो पवत्रि वश्विास का प्रकाश और भी अधकि चमका, और अवश्विासयिों को प्रकाशति कयिा; जबकि, इस बीच, मसीह की सेना संख्या में बढ़ी और आने वाले संघर्ष के लिए तैयार हुई।

उस समय नकिोमेडयिा में डोम्ना नाम की एक सुंदर कन्या थी, जो शाही महलों में पली-बढ़ी थी। राजा ने उसे अपने दुष्ट देवताओं के हवाले कर दयिा, उसे अपनी कुँवारी अवस्था बनाए रखने का आदेश दयिा, और उसे अपने महल में मुख्य मूर्तपिूजक पुजारीनी बना दयिा।

ईश्वर की कृपा से, उसके हाथों में नए नयिम की एक पुस्तक आई; जब उसने उसे पढ़ा, तो उसकी आत्मा प्रबुद्ध होने लगी। उसने इतने बड़े आध्यात्मकि खजाने को पाने पर आनंद मनाया, एक ईश्वर में ईसाइयों के महान वश्विास को देखकर चकति हुई, और अपने हृदय में इस बात का दुःख कयिा कि तब तक वह अज्ञानता और भ्रम के अंधकार में थी। ईसाई धर्म को और पूरी तरह से जानने और उसे अपनाने के लिए उत्सुक होकर, उसने एक कुलीन व्यक्ति की बेटी, एक ईसाई युवती को बुलाने में कोई समय बर्बाद नहीं कयिा, और उससे शक्षिा प्राप्त करने के बाद, वह सभी से गुप्त रूप से, रात में पवत्रि बशिप सरिलि के पास चल दी। कन्या को पवत्रि धर्मग्रंथों में पर्याप्त रूप से शक्षिति करने और उसे क्रॉस के चह्नि से आशीर्वाद देने के बाद, बशिप ने उसे '[359] ' घोषति कयिा और उसे एक पवत्रि डीकन, एगापयिस नामक के हवाले कर दयिा, ताकि, उनके मार्गदर्शन में, वह उपवास और प्रार्थना के माध्यम से पवत्रि बपतस्मिा के लिए खुद को तैयार कर सके। डोम्ना ने उससे कहा गया सब कुछ गुप्त रूप से कयिा, ताकि उसके एक खसरे[360] को छोड़कर कोई और इसके बारे में न जाने, जसिका स्वभाव भी उसके जैसा ही कोमल था, जसिका नाम इंडसि था, जो उसके साथ पवत्रि धर्म में परविर्तति हो गया था और बपतस्मिा ग्रहण करने की तैयारी भी कर रहा था। जब बशिप द्वारा नर्धिारति अवधि समाप्त हो गई, तो डोम्ना और इंडसि का बपतस्मिा हुआ। इस प्रकार, वह कन्या, जसिकी आयु चौदह वर्ष से अधकि नहीं थी, अपने पहले जन्म—भौतकि जन्म—के तुरंत बाद, दूसरे जन्म—आध्यात्मकि जन्म—को प्राप्त हुई।

महल लौटने पर, उसने उस समय से प्रार्थना, उपवास और पवत्रि शास्त्रों के अध्ययन के अलावा कसिी और चीज़ को नहीं कयिा। एक दनि, प्रेरतिों के काम (Acts of the Apostles) पढ़ते समय, वह नम्निलखिति अंश पर आईं: *'क्योंकि जनिके पास भी जमीन या मकान थे, वे उन्हें बेचकर बक्रिी से प्राप्त धन लाते और प्रेरतिों के पैरों तले रख देते थे'* (प्रेरतिों के काम 4:34-35)।

---

[357] मैक्समियिन II गैलेरयिस – रोमन सम्राट डायोक्लेटयिन के दामाद और सह-शासक, और बाद में उनके उत्तराधकिारी (305–311)।

[358] नकिोमेडयिा – एशयिा माइनर में मार्मारा सागर के तट पर एक समृद्ध शहर, डायोक्लेटयिन और उनके उत्तराधकिारयिों के अधीन रोमन साम्राज्य के पूर्वी भाग की राजधानी

[359] 'कैटेकुमेनेट' पवत्रि बपतस्मिा प्राप्त करने की तैयारी कर रहे लोगों के लिए शक्षिा की प्रारंभकि अवधि और वश्विास की सच्चाइयों में उनकी शक्षिा का समय था। यह 40 दनिों से लेकर 3 वर्षों तक चलता था, हालांकि कभी-कभी परस्थितियिों के आधार पर इसे कुछ दनिों तक कम कर दयिा जाता था।

[360] शब्द 'हजिड़ा' का शाब्दकि अर्थ 'नपुंसक पुरुष' है। प्राचीन काल में, कुलीन महलिाओं के साथ हजिड़ों का होना एक प्रथा थी, जो शाही दरबार में एक प्रमुख स्थान रखते थे।

संत डोम्ना ने भी ऐसा ही करने का नश्चिय कयिा। अपने सारे सामान—सोना-चांदी, मोती और कीमती पत्थर, महँगे वस्त्र और अपने सभी युवती-सुलभ आभूषण—को इकट्ठा करके, वह गुप्त रूप से उन्हें अपने आध्यात्मकि पतिा, संत सरिलि के पास ले गई। अपना सब कुछ उनके चरणों में रखकर, जैसे कि प्रेरतिों के चरणों में रख रही हो, उसने उनसे वनिती की कि वे इन सभी चीजों की बक्रिी से प्राप्त धन को अपनी ही हाथों से ज़रूरतमंदों में बाँट दें, और उन्होंने वैसा ही कयिा। कुछ ही समय बाद, संत सरिलि का नधिन हो गया और वे ईश्वर के पास चले गए। उनकी सभी शक्षिाओं को अपने हृदय में गहराई से संजोते हुए, डोम्ना ने दनि-रात ईश्वर को प्रसन्न करने का प्रयास कयिा, और अपने समान वचिारधारा वाले साथी और आध्यात्मकि भाई, नपुंसक इंडसि के साथ उत्साहपूर्वक उनकी सेवा की, जनिके साथ वह जल और आत्मा से पुनर्जीवति हुई थी[361] । प्रभु की व्यवस्था का अध्ययन करते हुए, वे रोज़ाना देर शाम तक उपवास करते थे; उनका भोजन, जो देर शाम लयिा जाता था, में पुरानी रोटी और पानी शामलि होता था; और राजा द्वारा प्रदान कयिा गया तथा उन्हें रोज़ाना परोसा जाने वाला भोजन भूखों को तृप्त कर देता था, क्योंकि वे सब कुछ गुप्त रूप से गरीबों में बाँट देते थे। ऐसा ईश्वरीय जीवन जीते हुए, वे पहाड़ी पर बसा एक नगर (मत्ती 5:14) की तरह छपिे नहीं रह सकते थे, भले ही उन्होंने स्वयं को छपिाने के लिए हर संभव सावधानी बरती। उनकी धार्मकिता एक बुशेल के नीचे से हटाए गए दीपक (मत्ती 5:15) और खेत में मलिे खजाने (मत्ती 13:14) की तरह प्रकट हुई। इस प्रकार ईश्वर को यह उचति लगा कि यह पवत्रि दंपति विश्वासयिों के लिए एक आदर्श और अवश्वासयिों के लिए लज्जा का कारण बने।

मुख्य नपुंसक, जो पूरे महल का प्रशासन करता था और शाही भोजन की देखरेख करता था, को डोम्ना और इंदसि के दैनकि उपवास के बारे में पता चला। उनके जीवन की कठोरता देखकर चकति होने के बजाय, उसने यातनाओं का सहारा लयिा और उन्हें लंबे समय तक पीटा, और उनसे यह कबूल करवाने के लिए मजबूर कयिा कि वे उन्हें दिए गए भोजन का उपयोग कसि लिए कर रहे थे; लेकनि उन्होंने अपनी सदाचार को छपिाया और इसे स्वीकार करने से इनकार कर दयिा। तब एक नपुंसक, जो जन्म और धर्म से फारसी था, पास आया और मुख्य नपुंसक को उनकी सदाचार के बारे में बताने लगा, उसे इस तरह पेश करते हुए मानो यह कोई दुष्टता हो, और अपने बयान के साथ बदनामी और अपमान भी जोड़ रहा था। उसने डोम्ना और इंडसि द्वारा अपनाए गए सौम्य और पवत्रि जीवन, भोजन से उनकी परहेज़गारी, और इस बात का वर्णन कयिा कि वे उनके पास लाया गया भोजन गरीब ईसाइयों, जो राजा के दुश्मन थे, में कैसे बाँट देती थीं।

'यदि आप सत्य जानना चाहते हैं,' उसने नष्किर्ष नकिाला, 'तो उनके भंडार खोलें, और आप देखेंगे कि मेरे शब्द सत्य हैं।'

तब मुख्य नपुंसक, जो राजमहल का व्यवस्थापक भी था, चाबयिाँ लेकर उनके आवासों और भंडारगृहों का नरिीक्षण करने गया; उन्हें खोलने पर, उन्हें पवत्रि क्रूस, नए नयिम की एक पुस्तक, जमीन पर बछिी दो सरकंडों की चटाइयाँ, एक मट्टिी का धूपदान, एक मोमबत्ती और सबसे पवत्रि रहस्यों[362] वाली एक छोटी लकड़ी की पात्र के अलावा और कुछ नहीं मलिा।

तब उसने उनसे पूछा, 'लेकनि सोना कहाँ है? कीमती वस्त्र और अन्य मूल्यवान वस्तुएँ और आभूषण कहाँ हैं?'

कोई जवाब न मलिने पर, उसने डोम्ना और इंडसि को फरि से यातना दी, लेकनि कोई फायदा नहीं हुआ। फरि उसने उन्हें एक दूसरे स्थान पर ले जाकर तब तक हरिासत में रखने का आदेश दयिा जब तक कि वह राजा को उनकी रपिोर्ट न दे सके। जब पवत्रि कन्या को कैद के लिए उसके नविास से बाहर ले जाया गया, तो उसने गुप्त रूप से नए नयिम के धर्मग्रंथों की एक पुस्तक ली और उसे अपने कपड़ों में छपिा लयिा: वह पुस्तक छोटी और छपिाने में आसान थी; और इंदसि ने भी इसी तरह, दविय रहस्यों से भरा एक छोटा पात्र ले लयिा। दोनों को लंबे समय तक बंदी बनाकर भूखा-प्यासा रखा गया: इस प्रकार उनके अन्यायपूर्ण यातनाकर्ता, ' ', ने यह आदेश दयिा था कि जो भूखे को भोजन कराते हैं, उन्हें स्वयं भूख से मरना चाहए। खाने के बनिा लंबे समय तक रहने के कारण वह युवती बीमार पड़ गई; लेकनि वह जो पक्षयिों और जानवरों की परवाह करता है, जो अपना हाथ खोलता है और अपनी इच्छा के अनुसार हर जीवति प्राणी को तृप्त करता है (भजन संहति 144:16), प्रभु, जो सबकी आवश्यकताएँ पूरी करते हैं, ने अपने उन सेवकों को नहीं छोड़ा, जो लंबे समय की भूख से कमजोर हो गए थे: एक ही रात में उन्होंने अपने स्वर्गदूतों को उनके पास भेजा, जनिहोंने अंधकार में उन्हें स्वर्गीय प्रकाश से प्रकाशति कयिा, उन्हें एक अद्भुत भोज – स्वर्गीय भोजन और असाधारण पेय – की पेशकश की और चले गए। डोम्ना

---

[361] सुसमाचार की अभव्यिक्ति के अनुसार; मत्ती 3:5 देखें।

[362] प्रारंभकि शताब्दयिों के ईसाइयों में, प्रतदिनि पवत्रि सहभागति ग्रहण करना प्रथा थी; लेकनि चूँकि हर दनि धर्मवधिि का अनुष्ठान करना संभव नहीं था, इसलिए पवत्रि रहस्यों को वश्वासयिों को घर ले जाने के लिए दयिा जाता था।

और इंडसि, जब उन्होंने जो कुछ भी उन्हें परोसा गया था, उसका स्वाद चखा, तो वे बलवान हो गए और उन्होंने अपनी झेली हुई दुख-तकलीफों को भूल गए। देवदूतों के दर्शन से सांत्वना पाकर और स्वर्गीय भोजन से तृप्त होकर, उनके चेहरे खलि उठे और, मानो आनंद के सभागारों में बैठे हों, उन्होंने गाया: *'जैसे मेरा प्राण मधु और तेल से तृप्त हुआ है, वैसे मेरा मुँह आनंदपूर्ण स्वर में तेरी स्तुति करता है... हे परमेश्वर! तू मेरा परमेश्वर है; मैं तुझे भोर होते ही ढूंढता हूँ; मेरी आत्मा तुझी के लिए तरसती है; मेरा शरीर एक उजाड़, सूखी और जलहीन भूमि में तुझी के लिए लालायति है'* (भजन संहिता 62:6, 2)।

थोड़ी ही देर बाद, मुख्य खसास यह देखने आया कि क्या वे भूख से बेहाल हो गए हैं, क्योंकि उसे लगा कि इस तरह वह उन्हें अपना आज्ञाकार होने के लिए मजबूर कर सकता है। लेकनि, उन्हें प्रसन्न, दमकते चेहरों और हर्षति आत्माओं के साथ देखकर, उसने अपने क्रोधति और क्रूर व्यवहार को—जसिसे वह कुछ भी हासलि नहीं कर पाया था—नकली सौम्यता के लिए बदल दयिा; उसने उन्हें पहले की तरह अपने मूल नविास में लौटने का आदेश दयिा और उन्हें उनकी ज़रूरत की हर चीज़—खाना और कपड़े, सोना और चांदी, और महलिाओं के आभूषण—प्रचुर मात्रा में प्रदान की, और उन्हें उससे कम कुछ भी नहीं दयिा जतिना उसने पहले दयिा था। लेकनि सेंट डोम्ना ने एक बार फरि से गुप्त रूप से सब कुछ गरीबों में बाँट दयिा—सरि्फ भोजन ही नहीं, बल्कि कीमती वस्त्र भी। जब उसने देखा कि भखिारयिों की भीड़ उसकी ओर इस तरह उमड़ रही थी मानो वह उनकी परोपकारी हो, तो उसने अपने रत्न और मोतयिों से जड़े कमरबंद और अपने अन्य सभी आभूषण उठाए और उन्हें डीकन अलम्पियिस के पास भेज दयिा, यह अनुरोध करते हुए कि वह उन सभी को बेच दे और उससे प्राप्त धन का उपयोग भखिारयिों को खलिाने के लिए करे। तब इस पर वचिार करते हुए कि वह पापयिों के बीच रहने और मूर्तपिूजक दुष्टता से भरे महल में रहने से कैसे बचे, संत डोम्ना को परमेश्वर के पुरुष दाऊद याद आए, जो साऊल से भाग गए थे और गत के राजा अखीश के सामने पागल होने का नाटक कयिा था (1 शमूएल 21:13)। खुद को पागल होने का नाटक करते हुए, वह जमीन पर गरिने, लार टपकाने, कांपने और चलि्लाने लगी। यह जानकर, शाही महल का मुख्य नपुंसक परेशान हो गया, और यह सोचने लगा कि वह उसे कैसे ठीक कर सकता है। यह सुनकर कि ईसाई ऐसी बीमारयिों को ठीक कर सकते हैं, उसने ईसाई बशिप, संत एंफमिस को बुलाया और उस युवती को उसके हवाले कर दयिा, ताकि वह राजा के युद्ध से लौटने से पहले उसे ठीक कर सके; उसने उसे देखने के लिए खसासे इंदसि को भी नयिुक्त कयिा।

बशिप ने डोम्ना के मन की मंशा को भाँप लयिा और स्वेच्छा से उसे स्वीकार कर लयिा तथा उसे एक मठ में भेज दयिा। डोम्ना, अपनी ओर से, अत्यधकि प्रसन्न हुई और इस बात से आनंदति थी कि वह अधर्मी लोगों के बीच रहने से मुक्त हो गई थी और उसे ईसाइयों के बीच रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था।

कुछ समय बाद, मैक्समियिन युद्ध से वजियी होकर लौटा। अपनी वजिय का श्रेय, युद्ध में सर्वशक्तमिान परमेश्वर को देने के बजाय, उसने अपनी नर्जिीव मूर्तयिों को दयिा, और उनसे अस्वीकार्य बलदिानों द्वारा धन्यवाद करना चाहा, और साथ ही, ईसाइयों पर अत्याचार करना शुरू करना चाहा। शहर के केंद्र में इस तमाशे के लिए एक स्थान तैयार करके, वह अपने महल से सोने और चांदी की मूर्तयिाँ वहाँ लाया, उन्हें शाही सहिासन पर बठिाया और फूलों से उनका मुकुट सजाकर, उनके लिए मोटे बैलों की बलि चढ़ाने लगा। राजा ने पुरोहतिों को आज्ञा दी कि वे बलि का रक्त चारों ओर खड़े लोगों पर छड़िकें। तुरंत, दर्शकों में मौजूद ईसाइयों ने भीड़ से बाहर नकिलना शुरू कर दयिा ताकि वे मूर्तपिूजक बलि के रक्त के छड़िकाव से अपवत्रि न हो जाएँ। यह देखकर, राजा ने लोगों को संबोधति करते हुए ऊँचे स्वर में बोलना शुरू कयिा:

'हे लोगों, तुम कहाँ जा रहे हो जो प्रकाश के बजाय अंधकार को पसंद करते हो, और उन देवताओं के अस्तत्वि में वशि्वास नहीं करते जनि पर यह ब्रह्मांड नर्भिर करता है? क्या तुम इन सच्ची उत्सवों और वजियों को नहीं देखते? क्या तुम नहीं देखते कि पुरानी आशीर्वादों में कतिनी आशीर्वादें जुड़ गई हैं, कैसे सब कुछ शांति से बना हुआ है, कैसे प्रतदिनि नई आशीर्वादें आती हैं, और कैसे अब हमारे पास ऐसी चीजें हैं जो पहले हमारे पास नहीं थीं? क्या तुम नहीं देखते कि हमारी महमिा कैसे बढ़ रही है, हमारा राज्य कैसे फैल रहा है, कैसे कुछ शहरों को वश में कर लयिा गया है, जबकि अन्य को भी हम वश में करेंगे? क्या तुम यह नहीं देख सकते कि अन्य लोगों के राज्य हमारे अधीन कएि जा रहे हैं, और कैसे सब कुछ हमारी इच्छा के अनुसार हो रहा है? यह सब कसिकी कृपा से पूरा हो रहा है, अगर उन देवताओं की कृपा से नहीं जनिकी हम सेवा करते हैं? देवताओं द्वारा प्रदान कयिा गया अनुकूल मौसम, मध्यम वर्षा, और फलों की प्रचुरता तुम्हें इस बात का वशि्वास दलिाए।

उस अधर्मी राजा ने ऐसा कहा, जो झूठ को सच बता रहा था, और वह और भी बहुत कुछ कहना चाहता था, लेकिन प्रभु, जिसके बारे में कहा गया है, *'प्रभु के न्याय सत्य हैं, वे सभी धर्मी हैं'* (भजन संहिता 18:10), ने सत्य के ऊपर घमंड करने और स्वयं को ऊँचा उठाने के लिए और झूठ बोलने की अनुमति नहीं दी: अचानक, दिन-दहाड़े और दोपहर की धूप में, भयानक गरज की गड़गड़ाहट गूँजी; आकाश काले बादलों से अँधकारमय हो गया; तेज हवा और तूफान के साथ, बिजली और ओले के साथ भारी बारिश हुई। इस प्रकार दुष्टों के प्रति ईश्वर का क्रोध स्पष्ट रूप से प्रकट हुआ: कुछ लोग, , गरज से भयभीत होकर, मृतक की भाँति गिर पड़े; अन्य, भागने के लिए दौड़ते हुए, एक-दूसरे के पैरों तले कुचल गए, और कई लोग भीड़ में पैरों तले कुचलकर अपनी जान गंवा बैठे; राजा स्वयं, भय और आतंक से ग्रस्त होकर, लज्जा के साथ महल में भाग गया। इस प्रकार यह तमाशा समाप्त हुआ, और अपने घृणित बलिदानों सहित अधर्मी उत्सव बाधित हो गया। भारी बारिश से नदियाँ उफान पर आ गईं और खेतों में बाढ़ आ गई, जिससे किसानों की सारी मेहनत बर्बाद हो गई, क्योंकि यह फसल काटने का समय था। फिर भी यह सब इसलिए हुआ ताकि दुष्ट लोग स्वर्ग में रहने वाले एकमात्र परमेश्वर के शक्तिशाली हाथ को जान सकें। लेकिन दुष्ट-हृदय राजा, द्वेष से अंधा हो गया था, उसने यह नहीं समझा: सच्चे परमेश्वर की शक्ति को पहचानने के बजाय, वह और भी बड़े पागलपन में पड़ गया, उस भयानक प्रभु के विरुद्ध युद्ध छेड़कर जो राजाओं का प्राण लेता है (भजन संहिता 75:13)।

थोड़ी ही देर बाद, महल में खड़े अपने बारह मुख्य झूठे देवताओं की सेवा करने वाले पुरोहितों में डोम्ना और इंडिसि को न पाकर, राजा ने पूछा कि वे कहाँ हैं। यह सुनकर कि डोम्ना होश खो चुकी थी और इस बीमारी के इलाज में निपुण लोगों की देखभाल में थी, और यह कि इंडिसि को उसकी रक्षा और सेवा के लिए उसके साथ नियुक्त किया गया था, मॅक्सिमियिन उस मुख्य नपुंसक पर बहुत क्रोधित हुआ जिसने उन्हें देवताओं की सेवा से मुक्त किया था; उसने उसे उसके पद से हटा दिया और उसे सबसे शर्मनाक अपमान की सजा दी, और क्लॉडियोपोलिस में ऊंटों की देखभाल के लिए नियुक्त कर दिया[363] । फिर इंडिसि को बुलाकर, राजा ने उसे उसके पूर्व कर्तव्य पर बहाल कर दिया: शाही महल में खड़े देवताओं की सेवा करना। लेकिन राजा को खबर न रहते हुए, इंडिसि केवल उसी एक सच्चे ईश्वर की सेवा करता रहा जिसमें उसका विश्वास था। इस बीच, मैक्सिमियिन ने मसीह की कलीसिया का खुलेआम उत्पीड़न करना शुरू कर दिया, पवित्र गिरिजाघरों को लूटने और मूर्तिपूजक पूजा स्थल बनाने लगा। उसने पूरे साम्राज्य में क्रूर लोगों को राज्यपाल नियुक्त किया, जिन्हें बिना किसी दया के ईसाइयों को यातना देने का काम सौंपा गया था। सम्राट स्वयं यातना देने वालों में सबसे प्रमुख और सबसे निर्दयी था; उसने ईसाइयों को मार डाला और उनका संहार किया और निर्दोषों का खून ऐसे बहाया मानो वह पानी हो। कभी-कभी उसने उन्हें चालाकी भरे शब्दों से धोखा देने की कोशिश की, और बाद में जो लोग उसके विश्वासघाती धोखे के आगे नहीं झुके, उन्हें यातना और मृत्यु के हवाले कर दिया। सबसे पवित्र बिशप एंफमिस को खोजते समय, जो एक निश्चित स्थान पर छिपे रहे थे, और उन्हें न पाकर, मैक्सिमियिन एक बार स्वयं सशस्त्र सैनिकों की भीड़ के साथ एक ईसाई चर्च में घुस गया, जैसे भेड़ों के झुंड में एक भेड़िया। सभा को संबोधित करते हुए, उसने चापलूसी और धमकियों के साथ बारी-बारी से, सभी को अपनी भूल में खींचने की कोशिश की। अंत में, उसने कहा:

'अपने व्यर्थ के विश्वास को त्याग दो; यदि तुम इसे नहीं त्यागते, तो दंड आने में देर नहीं लगेगी। क्या तुम इस चर्च को देखते हो जिसमें तुम इकट्ठा हुए हो: मैं इसे जल्द ही तुम्हारे साथ जला दूँगा।'

एक ईसाई पुरोहित, संत ग्लाइसियस, साहसपूर्वक उनके सामने खड़े हो गए और अपने निडर शब्दों से उस अधर्मी व्यक्ति को शर्मिंदा कर दिया:

उसने कहा, 'हे राजा, जिन उपहारों का तुमने वादा किया है, वे हमें आकर्षित नहीं करते; और न ही हम तुम्हारी धमकियों से डरते हैं।' हम इस संसार की सभी चीज़ों को एक सपने की तरह मानते हैं; वास्तव में, हम इसे दुख और ईश्वर की सज़ा का कारण भी मानेंगे कि हम मसीह के लिए सबसे कठोर यातनाओं को सहन नहीं करते। तुम बर्बर लोगों पर विजय का ढिंढोरा पीटते हो, फिर भी तुम ईसाई महिलाओं और बच्चों के हाथों भी हार जाते हो, क्योंकि हमारे मसीह की शक्ति स्पष्ट रूप से अजेय है। हाल ही में हुई गरज और बिजली, असाधारण कोलाहल और बारिश को कौन भूल सकता है? आप में से कई लोग अचानक मर गए, और पृथ्वी के फल एक अप्रत्याशित बाढ़ से नष्ट हो गए। यह ईश्वर के क्रोध का एक स्पष्ट संकेत था, जो इस तथ्य से उत्तेजित हुआ कि आप सब कुछ सच्चे ईश्वर के बजाय अपने झूठे देवताओं को अर्पित करते हैं। हम तुम्हारे उत्पीड़नों से नहीं डरते: सर्व के राजा ने हमें स्वर्ग से एक ऐसा हथियार प्रदान किया है, जिससे हम

---

[363] क्लाउडियोपोलिस एशिया माइनर के सिलिसिया क्षेत्र का एक शहर था।

भी खुद को लैस करते हैं और अपनी रक्षा करते हैं, ठीक वैसे ही जैसे तुम अब अपने सैनिकों के साथ करते हो। तुमसे लड़ते हुए, हम दृढ़ता से एक अद्भुत विजय प्राप्त करने की आशा करते हैं, क्योंकि जब हम मारे जाते हैं, तो हम विजयी होते हैं, और जब हम गिरते हैं, तो हम विजय प्राप्त करते हैं।

हालाँकि इन शब्दों को सुनकर राजा अपने हृदय में बहुत क्रोधित हुआ, फिर भी वह किसी को नुकसान पहुँचाए बिना चर्च से चला गया। और चर्च में उपस्थित धर्मनिष्ठ लोगों ने ऐसे निर्भय होने के लिए धन्य ग्लाइसरियस की स्तुति की। हालाँकि, लंबे समय तक अपने क्रोध पर काबू न रख पाने के कारण, राजा ने जल्द ही ग्लाइसेरियस को पकड़ने, उसे अपनी अन्यायपूर्ण अदालत में लाने और बिना किसी मुकदमे के क्रूरता से पीटने का आदेश दिया। और उन्होंने शहीद को तब तक पीटा जब तक कि यातना देने वाले स्वयं ही थक नहीं गए। जब उसे पीटा जा रहा था, तो उद्घोषक ने घोषणा की:

'कम बोलो, ग्लासियस; अहंकारी, विद्रोही या अभद्र मत बनो; राजा और रोमन कानूनों का सम्मान करो।'

हालाँकि, शहीद, अपने अत्याचारियों से अधिक शक्तिशाली होकर, अपने स्वर्गीय राजा से पुकार कर बोले: 'हे प्रभु यीशु मसीह! जैसे आपने मुझमें आपकी महिमा करने की शक्ति दी है, वैसे ही मुझमें आपके लिए दुख सहने की शक्ति दीजिए, ताकि इन कष्टों के द्वारा मैं एक महान पुरस्कार का पात्र बन सकूँ।'

जैसे आग भड़क उठती है, वैसे ही यातनाकर्ता मैक्सिमियन का क्रोध इन शब्दों से और भी भड़क उठा। वह स्वयं यातना के समय उपस्थित था ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि जल्लाद शहीद के शरीर पर और भी क्रूर प्रहार और घाव करें, जब तक कि धरती उसके रक्त से सराबोर न हो जाए और मांस-पेशियों से रहित हड्डियाँ दिखाई न देने लगें; जब तक शहीद का प्रत्येक अंग चूर-चूर न हो जाए; और फिर भी उसकी जीभ स्वतंत्र रूप से बोलती रही:

'मैं एक ईसाई हूँ, मसीह का सेवक, एकमात्र सच्चे ईश्वर का; केवल वही मेरा प्रभु है, केवल वही मेरा राजा है!'

ग्लाइसेरियस से ऐसे शब्द और अधिक सुनने को सहन न कर पाने पर, यातना देने वाले ने उसे शहर के बाहर जला देने का आदेश दिया। और वह परमेश्वर के लिए एक सुगंधित भेंट और एक मनभावन होमबलि बन गया।

शीघ्र ही एक और अधर्मी मूर्तिपूजक त्योहार आ गया। बलि के जानवरों को बारह प्रमुख देवताओं के मंदिर में ले जाया गया, जो महल के भीतर स्थित था। सफेद वस्त्रों में चल रहे पुरोहितों को देखकर, और उनमें इंदिसि को न पाकर, राजा ने पूछा कि वह कहाँ है। हालाँकि, इंदिसि ने बोरा का कपड़ा पहन लिया था और दुष्टों के विनाश पर विलाप और रोते हुए अपने कक्ष में खुद को बंद कर लिया था। यह बात राजा को बताई गई। इंडिसि को तुरंत अपने पास बुलाकर और उसे शोक-संतोष के वस्त्रों में देखकर, राजा को समझ आ गया कि क्या हो रहा है; और, उसके धर्म या उसके जीवन के बारे में पूछे बिना, उसने आदेश दिया कि उसके हाथों, पैरों और गर्दन पर बेड़ियाँ डाल दी जाएँ, और उसे एक कालकोठरी में डाल दिया जाए। तब उसने डोम्ना के बारे में फिर से पूछना शुरू कर दिया, जो उससे पहले कहा गया था वह भूल गया था, और अपने गुस्से में, जैसे नशे में हो, वह बार-बार दोहराता रहा:

'तो फिर डोम्ना कहाँ है? डायना और मिनर्वा की पुजारीनी कहाँ है?'

उसे एक बार फिर बताया गया कि वह पागल हो गई थी, और इसी कारण मुख्य नपुंसक ने उसे महल से निकाल दिया था। उसी क्षण मुख्य नपुंसक को याद करते हुए, राजा ने उसे सिर कलम करने और डोम्ना को हर जगह खोजने का आदेश दिया। यह शाही फरमान उस मठ में भी पहुँच गया जहाँ डोम्ना ठहरी हुई थी। यह समझते हुए कि उसे छिपाना असंभव था, मठ की प्रमुख, अगथिया ने, उसके बाल पुरुषों की तरह छोटे काट दिए और उसे पुरुषों के कपड़े पहना दिए। फिर उसे एक भावुक प्रार्थना से सुरक्षित कर, उसने डोम्ना को अपने पवित्र निवास से बाहर भेज दिया ताकि वह युवती पुरुषों के बीच पुरुष के भेष में छिप सके और पहचानी न जा सके। जो लोग डोम्ना को ढूंढ रहे थे, वे उसे कहीं नहीं ढूंढ पाए। इससे राजा का गुस्सा और भी बढ़ गया; उसने सभी मठों को लूटने और युवतियों का अपमान करने और हिंसा द्वारा उन्हें कलंकित करने का आदेश दिया। और तुरंत ही, पूरे शहर पर ऐसी आपदाएं और तबाही आने लगीं मानो वह बर्बर लोगों द्वारा बंदी बना लिया गया हो। जो कुंवारी शारीरिक रूप से मजबूत थीं, वे पहाड़ों और रेगिस्तानों में भाग गईं, गुफाओं और धरती की गहराइयों में छिप गईं, क्योंकि वे कानूनहीन पुरुषों के बीच रहकर नीच लोगों के हाथों पड़ने के बजाय जंगली जानवरों के बीच रहकर उनके द्वारा टुकड़े-टुकड़े हो जाना पसंद करती थीं। जो कुंवारी भाग नहीं सकीं, उन्हें पकड़ लिया गया; कुछ को मुकदमे और यातना के लिए घसीटा गया, जबकि अन्य को अपवित्र करने के लिए सार्वजनिक वेश्यालयों में ले जाया गया। फिर भी, मसीह की शक्ति ने उन सभी को मजबूत किया और उन्हें शर्म और अपवित्रता से बचाया। उनमें थियोफाइला नाम की एक थी, जो अपनी सुंदरता और आकर्षण, अपने जीवन की कुलीनता और पवित्रता के कारण कुंवारी कन्याओं में विशेष

रूप से वशिष्टि और तारों के बीच चंद्रमा की तरह चमकती थी। जब नरि्लज्ज सैनकिों ने उसे जबरदस्ती वेश्यालय में घसीटकर ले गए, तो उसने अपनी आँखें और हाथ स्वर्ग की ओर उठाए और आँसुओं के साथ पुकारी:

'हे मेरे यीशु, मेरे प्रेम, मेरे प्रकाश, मेरे प्राण, मेरी कुँवारीपन और मेरे जीवन के रक्षक, अपनी वधू पर दृष्टि डालो! मुझ पर दृष्टि डालो, हे मेरे अदृश्य वरा, और मेरी सहायता के लिए शीघ्र आओ, कहीं ऐसा न हो कि तुझसे किया गया मेरी कुँवारीपन का व्रत टूट जाए, क्योंकि अब प्रार्थना करने का भी समय नहीं है! जिस आत्मा में तेरा नाम स्वीकार किया गया है, उसे जानवरों के हवाले न कर, कहीं ऐसा न हो कि भेड़िये तेरी भेड़ को चीर-फाड़ डालें। हे मेरे वधूवर! अपनी वधू की रक्षा कर। हे पवित्रिता के स्रोत! मेरी कुँवारी अवस्था की रक्षा कर, ताकि स्वर्गदूतों द्वारा महिमामंडित तेरा नाम महिमामंडित हो।

इस प्रकार उसने प्रार्थना की, और ईश्वर पहले से ही उसकी प्रार्थना का उत्तर देने की तैयारी कर रहे थे। जब उसे खुले पापियों के अशुद्ध आवास में ले जाया गया, तो एक सैनिक प्रवेश किया, जो मसीह की निर्दोष वधू को कलंकित करने की अशुद्ध इच्छा से भरा था; और देखो, जैसे ही वह उसके पास पहुँचा, वह तुरंत जमीन पर मृत पड़ा और अपनी अंतिम साँसें छोड़ते हुए उसके पैरों तले लेट गया। इस बीच, अन्य सैनिक बाहर खड़े थे, उनका बाहर आने का इंतज़ार कर रहे थे, इस बात से नाराज़ थे कि वह इतना समय लगा रहा था और खुद वहाँ प्रवेश करने की इच्छा कर रहे थे। आखिरकार, उनमें से एक, पापी इच्छा से भरा और अब और इंतजार न कर पाकर, अंदर गया और अपने दोस्त को मृत देखकर दहशत से भर गया। जब उसने उस पवित्र कन्या पर चमकती हुई अगम्य ज्योति को भी देखा, तो उसकी दृष्टि तुरंत चली गई; अंधा हो जाने पर, वह बाहर निकलने का रास्ता खोजने के लिए अपने हाथों से दीवार को टटोलने लगा, लेकिन वह नहीं निकल सका। कई अन्य लोग जो शर्मनाक ढंग से और अशुद्ध इरादों से कन्या के कक्ष में प्रवेश कर चुके थे, उनका भी यही हश्र हुआ। यह बात बाहर खड़े लोगों को पता चल गई, और वे सभी एकत्रित हुए—कामोत्तेजना से नहीं, बल्कि यह देखने के लिए कि क्या हुआ था—और उन्होंने कन्या को विनम्रतापूर्वक बैठे और एक छोटी सी किताब पढ़ते हुए देखा: यह सुसमाचार था, जिसे वह अपने पास रखती थी; उसके पास एक सुंदर युवक खड़ा था, जो अकथनीय प्रकाश से दमक रहा था, और जिसकी आँखें बिजली की तरह तीव्र थीं। उस युवक को देखकर दुष्ट पुरुष तुरंत बड़े भय से भाग गए; जबकि अन्य चिल्ला उठे:

'ईसाई ईश्वर के समान कौन है?'

जब रात हुई, तो वह तेजस्वी युवक उस लड़की को वहाँ से बाहर ले गया, उसे बड़े चर्च में ले गया और, उसे बरामदे पर बिठाकर, कहा:

'तुम्हें शांति मिले।'

फिर वह विदा हो गया, जिससे पवित्र कन्या थियोफाइला भय और आनंद दोनों से भर गई: भय, क्योंकि उसका रक्षक चला गया था; आनंद, क्योंकि वह कानूनविहीन पुरुषों की चंगुल से सुरक्षित बच निकली थी। चर्च के दरवाज़ों के पास पहुँचकर, उसने खटखटाना शुरू किया और दरवाज़े खोलने के लिए कहा, क्योंकि अंदर इकट्ठा हुए ईसाई, दुष्ट मूर्तिपूजकों के डर से, परमेश्वर के लिए पूरी रात जागरण करने के लिए दरवाज़े बंद कर चुके थे। एक डिकन ने अंदर से पूछा कि कौन खटखटा रहा है; थियोफाइला की आवाज़ सुनकर और पहचानकर, उसने चर्च में इकट्ठी मंडली को यह घोषणा की। जब दरवाज़ा खोला गया, तो पूरी मंडली पवित्र कन्या की ओर दौड़ी: सभी को न केवल उसके कुलीन जन्म बल्कि उसके जीवन की पवित्रता का भी पता था। वे सभी कितनी प्रसन्नता और कितने आँसुओं के साथ परमेश्वर की स्तुति करने लगे, जब उन्हें पता चला कि उसे दुष्टों के अत्याचार से कैसे बचाया गया था, और प्रभु ने उस पर कितनी दया दिखाई थी, और अपनी सामर्थी भुजा से उसकी कुँवारी अवस्था को अक्षुण्ण रखा था! क्योंकि उसने परमेश्वर के महिमामय चमत्कारों को नहीं छिपाया, जिन्हें छिपाया नहीं जाना चाहिए बल्कि प्रचारित किया जाना चाहिए। पवित्र कन्या, साष्टांग दंडवत प्रणाम करते हुए, चर्च के फर्श को आनंद के आँसुओं से तर कर दिया, और सभी ने प्रभु मसीह को सामूहिक धन्यवाद अर्पित किया।

उस समय, शाही दरबार के कुछ सबसे प्रतिष्ठित कुलीनों और प्रमुख सेवकों पर राजा के सामने ईसाई धर्म का अनुयायी होने का आरोप लगाया गया था। उनमें एक डोरोथियस नामक व्यक्ति था, जो अपने सैन्य पराक्रम और नागरिक योग्यता के लिए प्रसिद्ध था, और जिसे इटली का राज्यपाल का खिताब प्राप्त था; उनके साथ मार्दोनीयस और मगिदोनीयस और अन्य गणमान्य व्यक्ति भी थे, जो अपनी उपलब्धियों के लिए, लेकिन उससे भी अधिक अपने विश्वास और धार्मिकता के लिए प्रसिद्ध थे। जब उन्हें पूछताछ के लिए लाया गया, तो राजा ने शुरू में उन्हें कड़ी फटकार लगाई,

और फरि उन्हें लंबी और नरि्दयतापूर्वक पटिाई करने का आदेश दयिा; उन्हें बेड़यिों में जकड़कर जेल में डाल दयिा गया। ऐसा कोई दनि नहीं बीतता था जब ईसाइयों को पकड़कर, यातनाएँ दी जाएँ और वभिन्नि प्रकार की मृत्युदंड की सजाएँ दी जाएँ। लेकनि फरि मसीह के जन्म का पर्व आ गया[364] , और नवजात शशिु को एक भव्य भेंट अर्पति की जानी थी। सभी वशि्वासी चर्च में इकट्ठा हुए। फरि दुष्ट मैक्समियिन के दुष्ट सेवक, उसके सामने आकर, बोले:

'हे राजा! आज ईसाइयों का एक बड़ा पर्व का दनि है; उन्होंने एक कल्पना गढ़ी है कि यह उनके ईश्वर का जन्मदनि है, और वे सभी इस घटना का जश्न मनाने के लिए चर्च में इकट्ठा हुए हैं। इसलिए, सुनश्चिति करें कि कोई भी पकड़ से न छूट जाए: सैनकिों को आदेश दें कि वे उनके चर्च के प्रवेश द्वार पर अपनी स्थतिि ले लें, और चर्च के द्वार के सामने हमारे देवताओं का एक वेदी स्थापति कयिा जाए; घोषणाकारों को आदेश दें कि वे उन्हें तुरंत चर्च छोड़ने और देवताओं को बलदिान चढ़ाने का हुक्म दें। यदि वे आज्ञा मानते हैं, तो आप उनके साथ अपनी शाही इच्छा के अनुसार व्यवहार कर सकते हैं। लेकनि यदि आप हमारी सलाह मानने की कृपा करें, तो सैनकिों को आज्ञा दें कि वे चर्च को चारों ओर से घेर लें, उस पर आग लगा दें और हर उस ईसाई को नष्ट कर दें जो आपके सामने आत्मसमर्पण नहीं करता। इस प्रकार अपने राज्य के लिए खतरनाक और हानकिारक लोगों को एक ही बार में समाप्त करके, आप भवषि्य की चति से मुक्त हो जाएँगे।

वे अभी अपनी बात पूरी भी नहीं कर पाए थे कि मैक्समियिन ने उनकी बात काटते हुए कहा:

'मैं महान देवताओं की कसम खाता हूँ कि मैं स्वयं लंबे समय से ऐसा करने की योजना बना रहा था, और मुझे नहीं पता कि अब तक मेरी योजना को अंजाम देने से कसिने रोका था! हे देवताओं, अब आपको बहुत-बहुत धन्यवाद, क्योंकि आपने ही ऐसा प्रबंध कयिा है कि हमारी रयिासत के लिए लाभकारी वही योजना, सही समय पर मेरे सेवकों के मन में आई है।'

और उसने तुरंत अपने अंगरक्षकों के प्रमुख को एक बड़ी सेना के साथ नकिलने का आदेश दयिा, कि वह ईसाई चर्च को भांग, लकड़ी की छीलन और अन्य अत्यधकि ज्वलनशील पदार्थों से घेर ले, और उसके सभी नकिास द्वारों की सावधानीपूर्वक, हथयिार तानकर, पहरेदारी करे, ताकि एक भी ईसाई उनकी पकड़ से न बच सके। जब यह सब कर दयिा गया, तो राजा द्वारा भेजा गया एक उद्घोषक चर्च में प्रवेश कयिा और बीच में खड़े होकर ज़ोर से उद्घोषणा की:

'हे इकट्ठे हुए लोगों! मैक्समियिन, ब्रह्मांड के स्वामी, जन्हिोंने मुझे तुम्हारे पास भेजा है, वह तुम्हें दो वकिल्पों में से एक चुनने का अवसर देता है: या तो चर्च छोड़ दो और तुरंत देवताओं को बलदिान चढ़ाओ, और तुम जीवति रहोगे; इसके लिए वेदी पहले ही दरवाजों पर तैयार कर दी गई है; या, यदि आप अवज्ञा करते हैं, तो आप सभी यहाँ एक भयानक मृत्यु का सामना करेंगे: आग पहले से ही तैयार है और चर्च झाड़यिों से घरि हुआ है। इसलिए, जल्दी से चुनें कि आप क्या चाहते हैं। यह कहकर वह चुप हो गया। फरि महादीकन, जो वेदी के पास खड़ा था और जसिका हृदय दव्यि अनुग्रह की अग्नि से प्रज्वलति हो गया था, ने लोगों से कहा:

'हे प्रयि और समान वचिारधारा वाले भाइयो! क्या आप नहीं जानते कि बेबीलोन में तीन युवकों ने क्या कयिा था[365] , जनिके सच्चे वशि्वास में अटूट साहस और दृढ़ता ने हमें अकथनीय आश्चर्य से भर दयिा था, जब कुछ दनि पहले हमने उनकी स्मृति मनाई थी—कि कैसे उन्होंने स्वयं एक भजन गाया और सारी सृष्टि से सर्व के प्रभु की स्तुति करने का आह्वान कयिा, मानो वे आग के बीच नहीं, बल्कि नाजुक फूलों के बीच टहल रहे हों! और हमने न केवल उनका सम्मान कयिा, बल्कि उनके मुकुटों में भागीदार होने की भी इच्छा की। आइए, हम भी उन तीन युवकों से उदाहरण लें, क्योंकि स्वयं यह समय हमें इसके लिए बुला रहा है: क्योंकि राजा मैक्समियिन नबूकदनेसर के समान है; यद्यपि नाम में वे भन्नि हैं, परन्तु वे अपनी क्रूरता और अधर्मीपन में एक-दूसरे के बहुत समान और सहमत हैं। क्या यह हमारे लिए शर्म की बात नहीं होगी, जब वे लड़के—जो संख्या में केवल तीन थे और सच्चे वशि्वास के लिए कसिी महान कार्य का कोई उदाहरण नहीं था—इतनी गौरवमय रूप से लड़े; जबकि हम उनसे कहीं अधकि संख्या में हैं, वास्तव में लगभग अगणति; हम में से कई पहले से ही वृद्ध हैं, और हमारे सामने मसीह के लिए साहसी पीड़ा के इतने सारे उदाहरण हैं: तो क्या हमें, इतनी संख्या और उम्र होते हुए भी, यह दखिाने में शर्म नहीं आनी चाहिए कि हम इस क्षणभंगुर जीवन से जुड़े हुए हैं, कायर और डरपोक बनकर, वर्तमान समय का पूरा लाभ उठाने में असफल रहें, जो हमें एक बड़ी उपलब्धि मानकर वीरता के लिए बुलाता है – ईश्वर के लिए इस क्षणकि जीवन को तरिस्कार न करें, जसिने हमें बनाया और हमारे लिए अपनी आत्मा को मृत्यु के

[364] यह वर्ष 303 ईस्वी में था।

[365] अर्थात् अनान्यास, अजर्यास और मसिैल (दानयिेल 3), जनिका पर्व 17 दसिंबर को मनाया जाता है।

हवाले कर दिया, और अपनी मृत्यु के माध्यम से अपने दृढ़ और अटूट विश्वास की गवाही न दें?! और सचमुच, यह एक अपार अपमान होगा। मैं यह उस स्थिति में कह रहा हूँ कि यदि हमारे दुख के बाद कोई पुरस्कार न भी मिले। लेकिन इस युग की पीड़ाएँ कब्र के पार हमारे लिए प्रतीक्षा कर रहे पुरस्कार की तुलना में तुच्छ हैं: इस सांसारिक, दुखद और क्षणिक अस्तित्व के स्थान पर हमारे लिए शाश्वत और पीड़ा रहित जीवन निहित है; क्षणिक महिमा के स्थान पर अक्षय महिमा; अछूता धन; और एक ऐसी खुशी जो कभी दुख को स्थान नहीं देती। तब निश्चय ही, हम इस सांसारिक जीवन की और लालसा नहीं करेंगे! क्या हम समय अनुकूल रहते हुए, मसीह के लिए मरकर उस अनंत जीवन को और शीघ्र प्राप्त करने का प्रयत्न नहीं करेंगे? हे भाइयों, प्रभु की वेदी को देखो, और यह जान लो कि हमारे सच्चे प्रभु और परमेश्वर अब हमारे लिए एक बलिदान के रूप में उस पर अर्पित किए जा रहे हैं। क्या हम भी इस पवित्र स्थान पर उसके लिए अपनी आत्मा नहीं रखेंगे? और क्या हम उन्हें एक होमबलि, एक बलिदान के रूप में उसे अर्पित नहीं करेंगे?

इस प्रकार पवित्र आर्चडीकन ने कहा, और सभी मसीह के लिए मरने की प्रबल इच्छा से भर गए और एक स्वर में चिल्ला उठे:

'हम ईसाई हैं, हम ईसाई हैं, हे राजा, और हम तुम्हारे झूठे देवताओं की पूजा नहीं करते!'

यह खबर मैक्सिमिनिस को दी गई, जिसने तब चर्च के साथ-साथ अंदर मौजूद सभी ईसाइयों को जलाने का आदेश दिया। इस बीच, विश्वासियों ने अपने बीच के उन सभी लोगों को, जो कैटेकुमेन थे, चर्च में इकट्ठा किया और उन्हें चार समूहों में बाँट दिया, ताकि वे उन पर पवित्र बपतिस्मा का कार्य शीघ्रता से कर सकें। बपतिस्मा और क्रिस्माशन का कार्य संपन्न होने के बाद, सभी ने पवित्र सहभागिता ग्रहण की। जब यह हो रहा था, तो अधर्मी राजा की आज्ञा पर सैनिकों ने चर्च के चारों ओर झाड़ियों और पुआल में आग लगा दी; इसकी दीवारों में भी जल्द ही आग लग गई, और चारों ओर से उठती हुई विशाल लपटें आकाश की ओर बढ़ गईं और अंदर तक घुसकर, सब कुछ तेजी से भस्म कर गईं। जलते हुए ईसाइयों ने परमेश्वर को ऊँचे स्वर में पुकारा, तीन जवानों का भजन गाया और हर प्राणी को गाने में शामिल होने के लिए बुलाया। और अपने भजन समाप्त करने से पहले ही, उन्होंने अपनी पवित्र आत्माओं को प्रभु के हाथों में सौंप दिया, जो शांति के लिए बलिदान किए गए निर्दोष मेमने के लिए एक प्रसन्नतादायक बलिदान थी। जिन लोगों को जिंदा जला दिया गया, उनकी संख्या बीस हज़ार तक पहुँच गई। इस प्रकार, पवित्र शहीदों का महिमामय दल, आनंद के अनंत भोज का उत्सव मनाने के लिए, संघर्षरत कलीसिया से विजयी कलीसिया में चला गया।

पाँच दिन बाद भी आग चर्च के अवशेषों को भस्म कर रही थी और धुआँ अभी भी उठ रहा था; फिर भी न तो जले हुए शवों से कोई बदबू आ रही थी, बल्कि धुआँ स्वयं अत्यंत असाधारण और सुगंधित था; खण्डहरों से एक महान सुगंध हवा में फैल गई, और एक सुनहरी किरण दिखाई दे रही थी, जैसी पूर्व में सूर्योदय के समय दिखाई देती है। हालाँकि, मैक्सिमियिन, यह मानकर कि उसने शहर के सभी ईसाइयों को पहले ही नष्ट और समाप्त कर दिया है, ने अपना ध्यान खेलों, घुड़दौड़ और विभिन्न तमाशों पर केंद्रित कर दिया।

जहाँ यह तमाशा आयोजित किया जाता था, उसके पास निकोमेडिया में पगन देवी सीरेस को समर्पित एक बड़ा मंदिर था[366] । एक अवसर पर, अपनी पूरी सेना और लोगों के साथ उसकी मूर्ति के पास आकर, सम्राट मैक्सिमियिन ने देवी को बलिदान चढ़ाया। तब सैनिकों में से एक, ज़ेनो नामक एक कमांडर, जो सच्चे धर्म के प्रति उत्साह से प्रेरित था और ऐसी अधर्मीता का दृश्य सहन नहीं कर सका, एक ऊँची जगह पर खड़ा हुआ और राजा को संबोधित करते हुए चिल्लाया:

हे राजा, आप मूर्खतापूर्ण पत्थरों और एक बिरि वृक्ष को बलिदान चढ़ाकर भूल कर रहे हैं। यह वास्तव में राक्षसों का एक धोखा है, जो इसके पूजकों के विनाश की ओर ले जाता है। हे मॅक्सिमियिन, विचार करो, और अपनी आध्यात्मिक आँखों के साथ-साथ अपनी शारीरिक आँखें भी स्वर्ग की ओर मोड़कर, अपने दृश्यमान सृष्टि से सृष्टिकर्ता को पहचानों। सृष्टि के माध्यम से जानें कि उसका स्रष्टा कैसा है, और भक्ति के साथ ईश्वर की उपासना करना सीखें— वह जो मूक पशुओं के रक्त और बलि के धुएँ में कोई आनंद नहीं लेता, बल्कि निर्दोष मानव आत्माओं और शुद्ध हृदयों में लेता है!

---

[366] सेरेस या डेमेटर – कृषि और प्रजनन की ग्रीको-रोमन देवी। उनके सम्मान में बहुत व्यापक रूप से मनाए जाने वाले त्योहार अनैतिकता से भरे होते थे।

यह सुनकर, मैक्समियिन ने आदेश दयिा कि ज़िनोन के मुँह को पत्थरों से कुचल दयिा जाए और उसके चेहरे और दाँतों को तोड़ दयिा जाए, और फरि, जब वह मुश्कलि से ज़दिा था, तो उसे शहर से बाहर ले जाकर तलवार से मार डाला जाए। इस प्रकार पवत्रि शहीद ज़िनोन को शहीद का मुकुट पहनाया गया।

इस बीच, संत डोरोथेयस, इंडसि और अपने बाकी साथयिों के साथ बेड़यिों में जकड़े हुए बैठे थे। धन्य बशिप एम्फमिस ने अपने आश्रय स्थल से बार-बार संदेश भेजकर उनका हालचाल लयिा, उन्हें मजबूत कयिा, वश्विास में दृढ़ रहने के लिए प्रोत्साहति कयिा, और उन्हें वीरतापूर्ण कार्यों के लिए प्रेरति कयिा। एक दनि, दुष्टों ने डकिन थयिोफलिस को पकड़ लयिा, जो अम्फमिस का संदेश लेकर शहीदों के पास जा रहे थे, और उसे राजा के सामने ले आए। बशिप का संदेश पढ़कर राजा आग-बबूला हो गया, क्योंकि उसमें वह नहीं था जो उसे पसंद आता था, बल्कि वह था जो संतों के लिए फायदेमंद था। उसने तुरंत डोरोथयिस और उसके साथयिों को उसके सामने लाने का आदेश दयिा; क्रोध से उन्हें घूरते और डांटते हुए, उसने उनसे एंफमिस के पत्र पढ़वाए। हालाँकि, डीकन को देखकर वे अपने दलि में प्रसन्न हुए और दूर से ही चमकती आँखों और प्रसन्न चेहरों से उनका अभविादन कयिा, जबकि संत के शब्द उनके दलिों में अंकति थे। डीकन को क्रोध से घूरते हुए, राजा ने धमकी भरे लहजे में उससे कहा:

'मुझे बता, हे नीच, यह पत्र तुझे कसिने दयिा और वह कहाँ छपिा है?'

डीकन ने पहले मन ही मन ईश्वर से प्रार्थना की और फरि नडिर होकर उत्तर दयिा:

'यह पत्र मुझे एक चरवाहे ने दयिा था, जो भले ही अब अपनी भेड़ों से दूर है, पर उन्हें धर्मपरायणता के लिए प्रोत्साहति करता है और आग्रह करता है। वशिेष रूप से अब, भेड़यिों और अन्य जानवरों के आक्रमण के बारे में जानकर, वह अपनी भेड़ों को ज़ोर से आज्ञा देता है और घोषणा करता है कि उन्हें क्या करना चाहए। फरि भी, जो वचन वह प्रचार करता है वे उसके अपने नहीं हैं, बल्कि हमारे सर्वोच्च और प्रथम चरवाहे से उधार लिए गए हैं, जन्होंने कहा: *'और जो शरीर को तो मार डालते हैं, पर आत्मा को नहीं मार सकते, उनसे मत डर; बल्कि उसी से डर, जो आत्मा और शरीर दोनों को गेहन्ना में नाश कर सकता है'* (मत्ती 10:28)। मैंने अब आपको बता दयिा है कि यह संदेश मुझे कसिने दयिा है, लेकनि जहाँ तक उसको भेजे वाले के बारे में बात है, वह मैं नहीं बताऊँगा: यह तो सरासर मूर्खता होगी कि मैं, अपने चरवाहे से इतना कुछ भला पाकर, उसका वश्विासघाती बन जाऊँ; वह हमारी मदद के बनिा भी जल्द ही प्रकट हो जाएगा, क्योंकि पहाड़ पर बसा हुआ नगर छपि नहीं सकता (मत्ती 5:14), जैसा कि दविय स्वर द्वारा घोषति कयिा गया है।

दीकन के साहसी शब्दों को और सहन न कर पाने के कारण, राजा ने आदेश दयिा कि उसकी कुलीन जीभ को तुरंत काट दयिा जाए, और फरि उसे शहर के बाहर पत्थरों और तीरों से मार डाला जाए। फरि उसने शेष पवत्रि शहीदों को यातनाओं के वभिन्नि साधनों से मार डाला: डोरोथयिस का सरि कलम कर दयिा गया, मार्दोनीयस को जदिा जला दयिा गया, मगिदोनयिस को एक गड्ढे में जदिा दफना दयिा गया, जबकि गोरगोनयिस, इंडसि और पीटर को गर्दन में चक्की के पाट बाँधकर समुद्र में फेंक दयिा गया। इस प्रकार मसीह के इन वीर शहीदों ने अपने पराक्रम को पूरा कयिा और वभिन्नि प्रकार की मृत्युओं के माध्यम से, एक ही मार्ग द्वारा प्रभु परमेश्वर के पास प्रस्थान कयिा।

इस बीच, संत डोम्ना एक पहाड़ की गुफा में छपिी हुई थीं, और आसपास उगने वाले पौधों पर जीवति थीं। पवत्रि शहीदों की मृत्यु का समाचार सुनकर, उनका आत्मा इस बात से प्रसन्न हुआ कि वे इस दुखद जीवन की घाटी से अनंत आनंद की प्रतीक्षति भूमि में चले गए थे। वह वशिेष रूप से इंदसि के लिए प्रसन्न हुई, जो वश्विास में उसका आध्यात्मकि भाई और बपतस्मिा द्वारा उसके आध्यात्मकि पुनर्जन्म में साथी था। जब वह अपने इस कार्य के लिए स्वयं को तैयार कर रही थी और ऊपर से सहायता मांग रही थी, तब उसे अपने लिए दुख हुआ कि उन सभी में से वह अकेली ही अभी तक शहादत के उसी मार्ग से प्रभु के पास नहीं गई थी। फरि वह पहाड़ से उतरकर उसी पुरुषों के वस्त्र को पहनकर शहर में प्रवेश कयिा जसिमें उसकी आध्यात्मकि माता, अगथयिा, ने उसे पहनाया था। जब उसे धन्य अगथयिा नहीं मलिी, जसिे वह खोजने आई थी, तो डोम्ना को एहसास हुआ कि उसे चर्च में अन्य कई कुंवारी लड़कयिों के साथ जदिा जला दयिा गया था, और वह जोर-जोर से रोई; उसने उसकी मृत्यु पर शोक नहीं क , बल्कि इस बात पर वलिाप कयिा कि वह स्वयं मसीह के लिए उसके साथ मरने की योग्य नहीं समझी गई थी। और जलकर खाक हो चुकी चर्च की जगह पर खड़ी होकर, डोम्ना रोई और वलिाप करने लगी, और अपने आँसुओं से राख को भीगों दयिा। जब रात हो गई, तो वह समुद्र तट पर चली गई, जहाँ इंडसि और अन्य शहीदों को डुबो दयिा गया था। और वहाँ, मछली पकड़ने के लिए अपने जाल तैयार कर रहे मछुआरों ने, पवत्रि कन्या को देखकर और उसके पुरुषों के वस्त्रों के कारण उसे एक पुरुष समझकर, उससे कहा:

'आओ और हमारी मदद करो, युवक; अगर कुछ पकड़ा तो तुम्हें हस्सिा देंगे।'

वह स्वेच्छा से उनकी मदद करने चली गई। जब उन्होंने अपना जाल फेंक दिया और फिर उसे किनारे पर खींच रहे थे, तो उन्हें जाल में इतना वजन महसूस हुआ कि वे उसे बड़ी मुश्किल से जमीन पर खींच सके। यह चाँदनी रात थी, और उन्होंने मछलियों की भीड़ देखी, और पकड़ में तीन शहीदों, गोरगोनियस, इंडिस और पीटर के शव पड़े थे। मछली पकड़ने वाले बहुत डर गए; उन्होंने जल्दी से अपने जाल और पकड़ का सामान इकट्ठा किया, और शवों को जमीन पर रखकर, दूसरी किनारे की ओर जाने के लिए अपनी नाव पर चढ़ गए। उन्होंने उस युवक को, जिसे वे अपना साथी समझ रहे थे, अपने साथ चलने के लिए पुकारा, लेकिन उसने उनके साथ जाने से इनकार कर दिया। तब उन्होंने उसकी मेहनत के बदले में पकड़ी हुई मछलियों का एक हिस्सा और थोड़ी सी रोटी दे दी, और वहाँ से चल पड़े। पवित्र कुंवारी डोम्ना शहीदों के शवों के पास गईं और, उन सभी को पहचानते हुए—विशेषकर अपनी प्रिय इंदिस को—अनकही आनंद के साथ, उन्हें गले लगाकर और चूमने लगीं, और उन पर भर-भरकर गरम आँसू बहाने लगीं। वह अपने पैरों पर खड़ी हुई, उसने समुद्र में एक जहाज देखा, जो किनारे के करीब आ रहा था और केवल चप्पूओं से चल रहा था, उसकी पालें नीचे झुकी हुई थीं। पवित्र शहीदों के शवों को वहीं छोड़कर, डोम्ना जहाज के पास गई और नाविकों की ओर मुड़कर उन्हें अपनी मछलियाँ दिखाईं। यह सोचकर कि मछलियाँ बिक्री के लिए हैं और उन्हें खरीदने की इच्छा से, जहाज के कप्तान ने कीमत पूछी, लेकिन डोम्ना ने उससे उन्हें मुफ्त में ले लेने के लिए कहा। तब, हैरान होकर, उसने कहा:

'मसीह के नाम पर, सच बताओ: तुम यह मछली कितने में बेच रहे हो?'

मसीह का नाम सुनते ही, संत डोम्ना को एहसास हुआ कि जिहाज पर मौजूद लोग ईसाई थे और उन्होंने उन्हें पवित्र शहीदों के शवों के बारे में, उन पर किए गए सभी अत्याचारों के बारे में, और उनके नामों के बारे में बताया। तुरंत, जहाज़ के कप्तान ने अपने साथियों के साथ मिलकर साफ़ सूती कपड़े और सुगंधित तेल लाए; संतों के शवों को लपेटकर, वह उन्हें शहर की दीवार तक ले गया, जहाँ नदी के पास के द्वार पर संत डोरोथियस की मृत्यु हुई थी। वहाँ उन्होंने शहीदों के शवों को श्रद्धापूर्वक दफ़नाया। यह जानकर कि डोम्ना भी उनके धर्म की अनुयायी है, और उसे एक युवक समझकर, जहाज के कप्तान ने उससे विनती करनी शुरू कर दी कि वह उसके साथ जहाज पर आ जाए।

उसने कहा, 'आओ हम अपने जीवन के अंत तक अविभाज्य रहें।'

लेकिन उसने इनकार कर दिया और उससे अपने रास्ते पर आगे बढ़ने के लिए कहा।

उसने कहा, 'मैं यहीं रहूँगी, क्योंकि मेरे जीवन का अंत निकट है, और मैं नहीं चाहती कि मेरा शरीर संतों के शरीरों से अलग हो, जिनके साथ मैं अपने जीवनकाल में आत्मा और विश्वास में एकजुट थी।'

तब कप्तान ने उसे पर्याप्त मात्रा में सोना दिया—किसी भी भौतिक आवश्यकता के लिए नहीं, क्योंकि उसे ऐसी कोई आवश्यकता नहीं थी, बल्कि संतों के मकबरों का सम्मान करने के लिए इत्र और धूप के लिए—और वह अपनी यात्रा पर चल पड़ा। हालाँकि, संत डोम्ना दिन-रात शहीदों के मकबरों के पास रहती थीं, उन्हें धूप और इत्र अर्पित करती थीं और आँसुओं के साथ प्रार्थना करती थीं।

लेकिन प्रकाश के कार्य का अंधकार में चलने वालों से छिपा रहना असंभव था, और न ही संत डोम्ना की शहादत की इच्छा का अधूरा रहना संभव था, क्योंकि उनकी पवित्रता और धार्मिकता ने उन्हें उजागर कर दिया था। राजा को यह सूचना मिली कि एक युवक ईसाई कब्रों पर जा रहा था और वहाँ धूप जला रहा था। राजा हँसा और कहा:

'यह उचित है कि वह भी उन्हीं की तरह मृत्यु का सामना करे, ताकि वह अनुभव से सीख सके कि ऐसे लोगों को दिया गया सम्मान कितना व्यर्थ है, जो मृत्यु के बाद अब कुछ भी नहीं माने जाते।'

यह कहकर, उसने तुरंत उसका सिर कलम करने का आदेश दिया। और संत डोम्ना को पवित्र शहीदों के मकबरों पर प्रार्थना करते समय तलवार से मार डाला गया। दुष्टों ने उनके पवित्र शरीर को जला दिया। उसी समय, लंबे यातनाओं के बाद, पवित्र शहीद यूथमियस को भी तलवार से मार डाला गया। इस प्रकार निकोमेडिया अपने शहीदों से तारों की तरह सुशोभित हुई, और अद्भुत ग्लाइसरीअस, सबसे धन्य ज़ेनो और थियोफिलिस के साथ शहीदों की संख्या बीस हज़ार हो गई; उनमें डोरोथियस, मार्डोनीउस और मिग्डोनियस, इंडिस, Gorgonius[367] और पीटर, और तीन पवित्र कुंवारी अगथिया, थियोफाइला और सुंदर डोम्ना भी शामिल हुए; और इस पूरे समूह का चरमोत्कर्ष यूथमियस थे, जो ख्रीस्त, सच्चे परमेश्वर की महिमा के लिए था, जिसे पिता और पवित्र आत्मा के साथ, युगानुयुग सम्मान और महिमा प्राप्त हो। आमेन।

---

[367] संत गॉर्गन शहीद के अवशेष बाद में रोम भेज दिए गए।

ट्रोपारयिन, स्वर 2:

हे प्रभु के कष्ट-सहने वालों, धन्य है वह भूमि जो आपके रक्त से सनी है, और पवित्र हैं वे स्थान जिन्होंने आपके शरीरों को ग्रहण किया: क्योंकि आपके संघर्ष में आपने शत्रु को पराजित किया और निडर होकर मसीह की घोषणा की। हम प्रार्थना करते हैं कि हे धन्य लोगों, आप हमारे आत्माओं के उद्धार के लिए मसीह के समक्ष मध्यस्थता करें।

कॉन्टाकयिन, स्वर 2:

हे शहीदों, पवित्र विश्वास में दृढ़ रहो, जिन्होंने दुख की अग्नि से दो अंधकारों पर विजय प्राप्त की, और कन्या से उत्पन्न हुए की ओर पुकारते हुए कहा: हे शाश्वत ईश्वर, अपनी खातिर हमारी होमबलि स्वीकार करें, जैसे फारस के राजाओं के उपहार—सोना, मूर्रा और लबान।

11 जनवरी

29 दिसंबर (पुराना संस्करण)

बेथलहम में हेरोद द्वारा वध किए गए चौदह हजार शिशुओं का स्मरणोत्सव

29 दिसंबर को स्मरणोत्सव

हेरोद, यह देखकर कि ज्योतिषियों ने उसका मज़ाक उड़ाया था, बहुत क्रुद्ध हो गया (मत्ती 2:16)। तो, वह किस पर क्रुद्ध हुआ? एक ओर, उन ज्योतिषियों पर जिन्होंने उसका मज़ाक उड़ाया था; और दूसरी ओर, यहूदियों के नवजात राजा पर। वह मगिस्सों से इस बात पर क्रोधित था कि वे उसके पास वापस नहीं आए थे और न ही शिशु के बारे में उसे बताया था; और वह मसीह से इस डर से क्रोधित था कि वह उससे उसका राज्य छीन लेंगे; क्योंकि, यह न जानते हुए कि मसीह का राज्य *'इस संसार का नहीं है'* (यूहन्ना 18:36), हेरोद का मानना था कि मसीह एक सांसारिक राज्य पर शासन करेंगे। तो, उस दुष्ट हेरोद ने क्या किया, जो न तो मगों से बदला ले सकता था, क्योंकि वे पहले ही चले गए थे, और न ही मसीह को मार सकता था, क्योंकि वे नहीं मिले? उसने अपना क्रोध निर्दोष शिशुओं पर उतारा। ठीक वैसे ही, एक क्रूर जानवर, जब घायल होता है, तो अक्सर उसे घायल करने वाले की परवाह नहीं करता, बल्कि सीधे अपनी आँखों के सामने जो कुछ भी आता है, उस पर झपटता है, और अपने क्रोध में उसे ऐसे चीर-फाड़ करता है मानो वही उसके घाव का जिम्मेदार अपराधी हो; इसी प्रकार हेरोद ने भी, क्रोध से पीड़ित होकर, और अपने क्रोध के लिए कोई अपराधी न पाकर, अपना प्रकोप उन शिशुओं पर उतारा, जो उसके सामने किसी भी तरह से दोषी नहीं थे। उसने युद्ध के लिए सजे-धजे सैनिकों को *'दो साल और उससे कम उम्र के बेतलहम और उसके आस-पास के सभी नर बच्चों को मार डालने* के लिए भेजा, *उस समय के अनुसार जो उसने मगिस से पता लगाया था'* (मत्ती 2:16)। हेरोद को उस समय का स्मरण था जो मगिस ने तारे के प्रकट होने के लिए बताया था, जो संत जॉन क्राइसोस्टोम और संत थियोफिलैक्ट की व्याख्या के अनुसार, मसीह के जन्म से भी पहले प्रकट हुआ था। लेकिन ठीक-ठीक कितनी देर पहले? यदि यह घोषणा के ठीक उसी घड़ी प्रकट हुआ था, तो परम पवित्र थियोटोकोस की घोषणा से मसीह के जन्म तक नौ महीने बीत चुके थे। लेकिन मगिस आयदस ठीक क्रिसमस के दिन ही यरूशलेम पहुँचे और बेतलहम में मसीह की आराधना की, और एक अलग मार्ग से अपने देश लौट गए: इसलिए हेरोद को तुरंत एहसास नहीं हुआ कि मगिस ने उसका मज़ाक उड़ाया था, बल्कि उसने पहले तो यह मान लिया कि वे जिस शिशु को ढूंढ रहे थे, उसे न पाकर और अपनी गलती से शर्मिंदा होकर, उसके सामने आने की हिम्मत नहीं कर पाए और शर्म के मारे चुपके से अपने देश लौट गए। फिर, चालीस दिन बाद, सुलैमान के मंदिर में एक शानदार घटना हुई: वहाँ वृद्ध सिमीओन और भविष्यवक्ता अन्ना ने दिव्य शिशु से भेंट की, जिन्हें उनकी शुद्धिकरण के दिन परमेश्वर की माता ने लाया

था[368] , और उन्होंने मसीह की गवाही दी और लोगों को उनके बारे में खुशी की खबर का खुले तौर पर प्रचार किया। प्रभु के समर्पण के पर्व के दौरान मन्दिर में जो कुछ भी हुआ था, उसकी खबर यरूशलेम में फैल गई और राजा तक पहुँची। तब हेरोद को एहसास हुआ कि यह वही बालक था जिसे वह ढूंढ रहा था, और जो बात मगियों ने नवजात राजा के बारे में कही थी—जिसे उन्होंने बेतलहम में पाया था लेकिन हेरोद के अधिकार का तिरस्कार कर उसके पास वापस नहीं आए थे—वह सच थी। अधर्मी हेरोद अत्यधिक क्रोधित हो गया। उसने तुरंत ही चालाकी और गुप्त साज़िशों के ज़रिए उस शिशु को खोजने की कोशिश शुरू कर दी, लेकिन वह उसे खोज नहीं सका, क्योंकि जोसेफ को प्राप्त दर्शन के तुरंत बाद ही वह उसके साथ मिस्र भाग गया था। मसीह को खोजने के हेरोद के प्रयास एक साल तक जारी रहे। इसके बाद, किसी कारणवश, उसे सीज़र से मिलने के लिए रोम की यात्रा करनी पड़ी, और हेरोद इस बात से बहुत परेशान था कि उसे अभी तक वह बालक नहीं मिला था जिसे वह ढूंढ रहा था, क्योंकि उसे डर था कि उसकी अनुपस्थिति में कोई नया राजा मिल सकता है और लोगों के बीच प्रसिद्ध हो सकता है, और यहूदियों का राज्य उससे छीन सकता है। इसलिए, उसने तुरंत अपने मन में बेतलेहेम के सभी बच्चों का कत्ल करने का निश्चय किया, ताकि नवजात राजा को भी उनके साथ नष्ट कर सके। और यह कानूनहीन शिशु-हत्या मसीह के जन्म के बाद पहले वर्ष में, 29 दिसंबर को हुई; इस दिन, चर्च शहीद हुए शिशुओं की स्मृति में श्रद्धांजलि अर्पित करती है। तारा प्रकट हुए एक साल और नौ महीने बीत चुके थे। जहाँ तक हेरोद द्वारा दो साल और उससे कम उम्र के बच्चों के कत्लेआम की बात है, उसने यह डर और अधिक सुरक्षा के लिए किया था। इस प्रकार संत क्रिसोस्टोम कहते हैं: 'इस बात पर आश्चर्यचकित न हों कि हेरोद ने दो साल और उससे कम उम्र के बच्चों की हत्या का आदेश दिया: यातना देने वाले में क्रोध और भय का मेल था; इसलिए हेरोद अत्यंत सतर्क हो गया, और बड़े डर के मारे उसने बड़े बच्चों को भी मौत की सज़ा दे दी।' इसी के अनुसार, यूथिमियस भी कहते हैं[369] : 'हेरोद का मानना था कि तारा मगों को तुरंत नहीं दिखा था, बल्कि बिच्चा उसके प्रकट होने से बहुत पहले ही पैदा हो गया था। इसलिए अधिक सुरक्षा के लिए, उसने समय को दो साल आगे लाने का आदेश दिया।'

शिशुओं को विभिन्न तरीकों से मार डाला गया: कुछ को तलवार से काटा गया, दूसरों को पत्थरों और दीवारों से पटक-पटक कर मारा गया, कुछ को जमीन पर फेंककर पैरों तले कुचल दिया गया, नग्न हाथों से घुटन कर मारा गया, टुकड़े-टुकड़े कर दिया गया, भेद दिया गया, या दो हिस्सों में काट दिया गया। माताएं जोर-जोर से रोईं: उनकी तीव्र विलाप-ध्वनि स्वर्ग तक पहुंची; वे अपने बाल और कपड़े फाड़ रही थीं और स्वयं को सता रही थीं, जिससे भविष्यवक्ता यिर्मयाह के वचन पूरे हुए: *'रामाह में एक आवाज सुनाई देती है, रोना और विलाप और एक बड़ा शोर; राहेल अपने बच्चों के लिए रोती है और सांत्वना स्वीकार नहीं करती, क्योंकि वे अब नहीं रहे'* (यिर्म. 31:15; मत्ती 2:18)।

रामा बेन्यामीन कुल के क्षेत्र में एक पहाड़ी पर बसा एक नगर का नाम था। हालाँकि, कुछ लोग राहेल को 'बेथलहम' भी कहते थे, क्योंकि वहाँ कुलपिता याकूब की पत्नी और बेन्यामीन की माँ राहेल को दफनाया गया था। उनके मकबरे के कारण ही बेथलहम को 'राहेल' के नाम से जाना जाने लगा। इस प्रकार, जब राहेल में—अर्थात् बेतलेहेम में—शिशुओं का वध किया जा रहा था, तो अपनी मारे गए बच्चों के शोक में विलाप करती माताओं का रोना, कराहना और बड़े-बड़े चीखना-चिल्लाना रामह नगर में सुना जा सकता था, जो बेतलेहेम से बहुत दूर नहीं था। इस विलाप का आंशिक वर्णन दो संत जॉन: क्रिसोस्टोम और डमास्कस ने किया है। पहला निम्नलिखित का वर्णन करता है।

यह देखकर, माताओं ने हत्यारों से पूछा:

'तुम हमारे बच्चों को क्यों मार रहे हो? उन्होंने ज़ार या तुमसे क्या बुरा किया है?'

और इस बेतुकी हत्या को किए जाने का कारण बताने वाला कोई नहीं था; उनके गहरे दुख में उन्हें सांत्वना देने वाला कोई नहीं था। उन्होंने सैनिकों से पुकारा:

'हमें छोड़ दो, हमें छोड़ दो! क्या तुम्हारे भी माँ नहीं हैं? क्या तुम माँ के प्यार को नहीं जानते? क्या तुम्हारी पत्नियाँ नहीं हैं? क्या तुम्हारी अपनी माँ ने तुमसे प्यार नहीं किया? क्या तुम्हें डर नहीं लगता कि तुम्हारे अपने बच्चों पर भी यही हाल आएगा? हम पर दया करो! हमसे हमारे बच्चों को न छीनो, पहले हमें मार डालो, क्योंकि हम अपने बच्चों की मौत

---

[368] मूसा की व्यवस्था के अनुसार, एक शिशु की माता (यदि शिशु पुरुष हो तो 40 दिनों के बाद, और यदि शिशु महिला हो तो 80 दिनों के बाद) को मंदिर में याजक के पास जाकर परमेश्वर को एक वर्ष का मेमना या दो कबूतर अर्पित करना आवश्यक था। इस संस्कार को शुद्धिकरण कहा जाता था। (लैव. 12:2–5)

[369] यूथिमियस ज़िगाबेनस, 12वीं सदी के एक बीजान्टिन धर्मशास्त्री; उन्होंने विधर्मों के इतिहास और चार सुसमाचारों, भजनों तथा गीतों के गीत पर टीकाएँ लिखीं।

बर्दाश्त नहीं कर सकते! हमें खुद मार डालो! अगर हमारे बच्चों ने तुम्हें कोई नुकसान पहुँचाया है, तो हम उनके साथ मरना चाहेंगे!

इस प्रकार वे अपने हृदय के कष्ट में पुकार उठे; और, दुख से पागल होकर और सारी लाज त्यागकर, उन्होंने अपने कपड़े फाड़े, दुख में अपनी छाती पीटी, अपने चेहरे नोचे, अपने बाल उखाड़े, और स्वर्ग से गवाह बनने को कहा, ईश्वर से पुकारते हुए:

– हे हमारे प्रभु, हे ईश्वर! राजा की इस महान क्रूरता का क्या अर्थ है? वह आपकी सृष्टि के विरुद्ध उठ खड़ा हुआ है: आपने बनाया, और वह मारता है; आपने हमें बच्चे दिए, और वह उन्हें हमसे छीन लेता है! हमने दुनिया में लड़कों को क्यों जन्म दिया, अगर हमारे शिशुओं को ऐसी क्रूर मृत्यु का सामना करना है?

सेंट जॉन ऑफ़ डमास्कस इस विलाप को इस प्रकार वर्णित करते हैं: माएँ, प्रसव की पीड़ा सहने के बाद, अपने मारे गए शिशुओं के शवों के पास बैठी थीं, उनके बाल बिखरे हुए थे, वे अपने हाथ आकाश की ओर उठाए हुए थीं; उन्होंने अपने बाल नोचे, उन पर धूल छिड़क दी, आकाश को गवाह बनने के लिए पुकारा, और, कड़वी रोते हुए, अनुपस्थित हेरोद से इस प्रकार बात की, मानो वह मौजूद हो:

हे राजा, हमारे विरुद्ध आपके इस आदेश का क्या अर्थ है? क्या आप अपने ही बच्चों के पिता नहीं हैं? क्या आप नहीं जानते कि माता-पिता को अपने बच्चों से कितना प्रेम होता है? क्या तारे ने आपको ठेस पहुँचाई है? लेकिन फिर, आप अपना तीर आकाश पर क्यों नहीं चलाते, बल्कि हमारी छातियों का दूध सुखा देते हैं? क्या मगसियों ने तुम्हें कोई हानि पहुँचाई ? लेकिन फिर, तुम फारस से युद्ध क्यों नहीं करते, बल्कि बेथलहम के बच्चों को वंचित क्यों करते हो? यदि एक नया राजा पैदा हुआ है और तुमने उसके बारे में किताबों से जाना है, तो गैब्रियल को पकड़ो और उसे जेल में डाल दो।

पवित्र शिशुओं के कत्लेआम के तुरंत बाद, जिनकी संख्या चौदह हजार थी, ईश्वर का न्याय स्वयं हत्यारे, राजा हेरोद पर हुआ। उसका अंत क्रूर था, जैसा कि संत थियोफिलैक्ट बताते हैं: बुखार और एक आंतरिक बीमारी से ग्रस्त, सूजी हुई टाँगों, बंद नथुनों, पूरे शरीर के कांपने और उसके सभी अंगों के सड़ने के साथ, वह दुष्ट राजा कीड़ों द्वारा खाया गया, भयानक पीड़ा में अपनी अंतिम सांस ली। यह भी कहा जाता है कि बेतलेहेम के शिशुओं का वध करना उसके लिए पर्याप्त नहीं था; अपनी मृत्यु के क्षण में भी, उसने यरूशलेम के कई सबसे प्रतिष्ठित और प्रसिद्ध नागरिकों को मार डाला: इस प्रकार उसने यहूदियों के महायाजक हिरकानस को, साथ ही लोगों के उन सभी महायाजकों और लिखारी लोगों को भी फांसी दी, जिनसे उसने पहले पूछा था: 'मसीह कहाँ पैदा होगा?' – और जिसने उसे उत्तर दिया था: 'यहूदा के बेतलहम में'।

उसने बाद में उन सभी को तलवार से मार डाला। और यह उन पर ईश्वर का एक धार्मिक न्याय था, ताकि वे सभी, हेरोद के साथ, भयानक यातना में नष्ट हो गए, ठीक वैसे ही जैसे स्वर्गदूत ने मिस्र में यूसुफ को पूर्व में बताया था:

'जो बालक के प्राण के खोजी थे, वे नाश हो गए।'

स्पष्ट रूप से, केवल हेरोद ही नहीं बल्कि उसके सभी सलाहकार, महायाजक और धर्मशास्त्री उसे ढूंढ रहे थे। इसलिए, केवल हेरोद ही नहीं बल्कि वे सभी भी मारे गए जिन्होंने उसके साथ मिलकर उस शिशु का जीवन लेने की कोशिश की थी। उसे स्वयं परमेश्वर ने मृत्युदंड दिया, जबकि इन्हें हेरोद ने मार डाला। वे उसी के कारण एक क्रूर अंत से मिले, जिसके प्रति वे सहानुभूति रखते थे। और यह तथ्य कि उन्होंने सभी ने मसीह को मारने की कोशिश की और हेरोद के साथ एकमत थे, निम्नलिखित से स्पष्ट है: जब धर्मनिष्ठ वृद्ध सिमीओन, जिन्हें परमेश्वर का ग्रहणकर्ता कहा जाता था, जो मन्दिर में और सभी लोगों के सामने मसीह के विषय में गवाही दे चुके थे, का निधन हो गया, तो उन्होंने एक ऐसे पवित्र पुरुष, एक अति बुद्धिमान शिक्षक, एक दूरदर्शी भविष्यवक्ता और सभी द्वारा सम्मानित एक वृद्ध को उचित अंत्येष्टि से वंचित कर दिया। उन्होंने पवित्र भविष्यवक्ता जकरियाह को भी इसलिए मार डाला क्योंकि उन्होंने परम पवित्र कुँवारी—जो अपने शुद्धिकरण के लिए शिशु के साथ मंदिर में आई थीं—को युवतियों के बीच खड़ा कर दिया था, जहाँ विवाहित महिलाओं का खड़ा होना उचित नहीं था। इसका उल्लेख नाइसा के ग्रेगरी, अलेक्जेंड्रिया के सिरील और क्रीट के एंड्रयू ने किया है।

जब लिखारी और फरीसियों ने यह देखा, तो वे क्रुद्ध हो गए; लेकिन जकरिया ने उनका विरोध करते हुए यह दावा किया कि यह माता प्रसव के बाद भी एक पवित्र कुँवारी ही रहीं। उन्होंने उसकी बात पर विश्वास नहीं किया, और इसलिए संत ने कहा कि मानव स्वभाव, सभी प्राणियों के साथ, अपने सृष्टा के अधीन है, और यह उनकी सर्वशक्तिमान इच्छा के भीतर है कि वह अपनी सृष्टि को अपनी इच्छानुसार व्यवस्थित करे, और यह सुनिश्चित करे कि कुँवारी ने प्रसव दिया और प्रसव के बाद भी कुँवारी बनी रही।

उन्होंने कहा, 'इसीलिए, मैंने इस माता को एक सच्ची कुँवारी के रूप में, कन्याओं के समूह में स्वीकार किया है।'

लिखारी ज़करियाह के विरुद्ध अपने हृदय में क्रोधित थे, क्योंकि वे उसे कानून का एक स्पष्ट उल्लंघनकर्ता मानते थे; और ईर्ष्या से भरकर, वे इस बात पर क्रोधित थे कि शिशु की माता को कुंवारी कन्याओं में रखा गया था और शिशु के बारे में ऐसी गवाहियाँ दी जा रही थीं। उन्होंने अपने भाव हेरोद से नहीं छिपाए, बल्कि उन्हें उसके सामने प्रकट कर दिया, और तुरंत शिशु की तलाश में लग गए, लेकिन उन्हें वह नहीं मिला, क्योंकि इस बीच जोसेफ मरियम के साथ मिस्र भाग गया था। उस समय से, धर्मशास्त्री संत जकरियाह और उनके साथ, वृद्ध सिमीओन से बहुत क्रोधित हो गए। सिमीओन जल्द ही निधन हो गए, और उन्होंने उन्हें उचित दफन से वंचित कर दिया। हालाँकि, जकरियाह को बाद में उनकी मांग पर हेरोद द्वारा मृत्युदंड दिया गया। बेथलहम के शिशुओं के कत्लेआम के दौरान, संत जकर्याह को अपने पुत्र यूहन्ना को मृत्युदंड देने के लिए सौंपने से इनकार करने पर चर्च और वेदी के बीच मार डाला गया था। इस प्रकार धर्मशास्त्रियों और फरीसियों ने पवित्र कन्या के बारे में उनकी गवाही और उन्हें मंदिर में युवा कुंवारियों के बीच रखने के लिए उनसे बदला लिया। इसके तुरंत बाद, उन्हें स्वयं अपने ही राजा, हेरोद के हाथों उचित सज़ा मिली। उन्होंने जिस पैमाने से दूसरों को परखा, उसी पैमाने से उन्हें भी परखा गया। उनके अलावा, हेरोद ने 70 सबसे बुद्धिमान लोगों के सिर भी कलम करवा दिए; उनकी सभा को सनेड्रिन कहा जाता था[370] । उसने उनमें से केवल एक को बख्शा, लेकिन उस आदमी को भी उसने अंधा करवा दिया। उस समय यरूशलेम में दो सबसे बुद्धिमान, प्रसिद्ध और सार्वभौमिक रूप से प्रिय शिक्षक थे: यहूदा, जिन्हें अव्रफियिस के नाम से जाना जाता था, और मैथ्यू गारगुलोएउस; उन्होंने उन्हें उनके कुछ दोस्तों के साथ जिंदा जलाने का आदेश दिया; लेकिन इससे पहले ही, हेरोद अपने ही परिवार के खिलाफ क्रूर हो चुका था: उसने अपने भाई फेरोर, अपनी बहन सलोमी और उसके पति, जो दाऊद के वंश से थे; अपनी पत्नी मारीम्ने – जो भी दाऊद के वंश से थीं[371] ; उससे जन्मे अपने बेटे एंटिपेटर; और फिर दो अन्य बेटों, अरिस्तोबुलस और अलेक्जेंडर को मार डाला; और उसने बिना कारण के कई अन्य लोगों को भी मौत की सजा दी। अंत में, जब वह अपनी मृत्युशय्या पर पड़ा था, तो हेरोद ने अपने सबसे वफादार सैनिकों को यह आज्ञा दी—अन्य प्रतिष्ठित यहूदी पुरुषों के संबंध में, जिन्हें उसने अभी भी बड़ी संख्या में जंजीरों में बाँध रखा था—कि जैसे ही उसकी मृत्यु हो जाए, सैनिकों को इन सभी कैदियों को तुरंत मार डालना चाहिए: ताकि यहूदी उसकी मृत्यु पर न जश्न मनाएँ, बल्कि अपने इतने सारे लोगों को मरा हुआ देखकर रोएँ[372] । इस प्रकार वह दुष्ट व्यक्ति, अपने साथ कई लोगों को बर्बाद करने के बाद, एक दुष्ट मृत्यु से मर गया। वह अपने साथियों के साथ अधोलोक में चला गया। जहाँ तक मसीह के लिए वध किए गए पवित्र शिशुओं का प्रश्न है, उन्होंने स्वर्ग में स्वर्गदूतों के साथ अपनी जगह ले ली, क्योंकि ऐसे बच्चों का ही स्वर्ग का राज्य सचमुच में है (लूका 18:16) हमारे प्रभु मसीह के विषय में, जिनका महिमा युगानुयुग हो। आमीन।

हमारे पूजनीय पिता मार्सेलस का जीवन, 'निद्रारहितों के मठ' के मठाध्यक्ष

29 दिसंबर को स्मरणोत्सव

आदरणीय मार्सेलस सीरिया के अपामिया शहर के मूल निवासी थे और एक प्रतिष्ठित तथा धनी ईसाई परिवार से थे। कम उम्र में ही अपने माता-पिता को खो देने के बाद, वे विभिन्न विज्ञानों का अध्ययन करने के लिए महान शहर अंत्योखिया गए, जिनमें उन्होंने जल्द ही पूरी तरह से महारत हासिल कर ली; इसके बाद वे आंतरिक, आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त करने के लिए भी उत्सुक हो गए। इस उद्देश्य के लिए, मार्सेलस ने एफ़िसुस की यात्रा करने का संकल्प लिया, जहाँ, जैसा कि उन्होंने सुना था, कई पुरुष थे जो सद्गुणों में पूर्ण थे। अंताकिया से निकलने के बाद, उन्होंने पहले अपने पिता से मिली पूरी धनी विरासत, जो अपामेया में थी, गरीबों में बाँट दी; और इस प्रकार सभी सांसारिक चीजों का त्याग करने के बाद, वे जल्द ही एफ़िसुस पहुँच गए। वहाँ एक धार्मिक व्यक्ति के साथ रहने के बाद, उन्होंने एक निश्चित प्रमोतस के

---

[370] सनहेड्रिन यहूदियों की सर्वोच्च अदालत थी, जो राज्य के मामलों का भी संचालन करती थी; यह 70–72 सदस्यों से मिलकर बनी थी और इसकी अध्यक्षता महापुजारी करता था।

[371] हेरोद को दाऊद की वंशावली से मसीहा के जन्म के बारे में भविष्यवाणियों का पता था। इस कारण से, उसने अपने समय में रहने वाले दाऊद के सभी वंशजों का संहार करने की कोशिश की, यहाँ तक कि अपने ही रिश्तेदारों को भी नहीं बख्शा।

[372] सौभाग्य से, यह आदेश लागू नहीं किया गया।

मार्गदर्शन में सदाचार के लिए खुद को समर्पित कर दिया, जिन्होंने उच्चतम आध्यात्मिक पूर्णता प्राप्त की थी। और धन्य मार्सेलस को उनके और एफेसस के अन्य पवित्र पुरुषों के सदाचारी जीवन को देखकर महान आध्यात्मिक लाभ हुआ। जैसे कोई विभिन्न फूलों से अपना हार बुनता हो, वैसे ही उन्होंने विभिन्न गुणों को विकसित किया, और उनके सामने ईश्वर को प्रसन्न करने वाले जीवन के विभिन्न उदाहरण थे। स्वैच्छिक गरीबी में रहते हुए, वह अपने हाथों की मेहनत से अपनी शारीरिक आवश्यकताओं के लिए आवश्यक चीजें कमाता था। सुलेख में निपुण, वह अपनी रातें प्रार्थना में और दिन किताबें नकल करने में बिताता था; वह इन किताबों को उचित मूल्य पर बेचता था, उस पैसे का कुछ हिस्सा अपनी जरूरतों के लिए रखता और बाकी गरीबों में बाँट देता था। इस प्रकार उसके सदाचारी जीवन की शुरुआत हुई। बाद में यह सुनकर कि बाइज़ेन्टियम में एक अबा अलेक्ज़ेंडर[373] रहते थे—जो कर्म और वचन दोनों में महान ज्ञान और विद्वता वाले व्यक्ति थे, और जो कई लोगों को मोक्ष की ओर ले जाने में सक्षम थे—मार्सेलस एफ़िसुस से निकलकर उनके पास तेज़ी से चल पड़ा। उस समय, संत अलेक्ज़ेंडर अपने भाइयों के साथ संत मीना के चर्च में ठहरे हुए थे; हालाँकि, बाद में उन्होंने समुद्र तट पर प्रसिद्ध मठ का निर्माण किया, जहाँ उन्होंने एक नया नियम शुरू किया जिसमें दिन-रात अखंड भजन-गायन के माध्यम से ईश्वर की महिमा करने की आवश्यकता थी: भाई निर्धारित समय पर बारी-बारी से चर्च में गाते थे। बिज़ांतियम पहुँचने पर, मार्सेलस की इस मठ के जेम्स नामक एक भिक्षु से मुलाकात हुई, जिसने तब उसे अबा अलेक्ज़ेंडर के पास ले गया। मठाध्यक्ष ने उसमें ईश्वर की कृपा को देखकर, उसे संन्यासी का वेश पहनाया, और मार्सेलस तथा जेम्स के विषय में भविष्यवाणी की कि उन्हें अनेक दिव्य वरदानों से सम्मानित किया जाएगा। विशेष रूप से, उन दोनों के बारे में बात करते हुए, उन्होंने कहा:

'एंड्रयू मसीह के पदचिन्हों पर चलने वाला पहला था, लेकिन यूहन्ना उससे आगे निकल गया।'

[374]उसने जेम्स को 'एंड्रू' और मार्सेलस को 'जॉन' नाम दिया, क्योंकि उसने देखा कि दोनों ईश्वर के प्रति अपनी भक्ति में समान रूप से उत्साही थे; और जहाँ जेम्स, प्रेरित एंड्रू की तरह, मसीह का जुआ उठाने वाले पहले व्यक्ति थे, वहीं मार्सेलस, प्रेरित जॉन की तरह, कई वरदानों में उनसे श्रेष्ठ थे। और मार्सेलस अपनी निर्मल कुँवारीता और ईश्वर-प्रेरित बुद्धि में वास्तव में संत जॉन – कन्या और धर्मशास्त्री – के समान थे। इस मठ में पर्याप्त समय तक परिश्रम करने के बाद, मार्सेलस को दूरदर्शिता का वरदान प्राप्त हुआ; और, अपने शिक्षक, अबा अलेक्ज़ेंडर की निकट मृत्यु तथा इस तथ्य की पूर्वदृष्टि प्राप्त कर कि अबा के निधन पर, मठाध्यक्षता का सम्मान उसे प्रदान किया जाएगा, मार्सेलस ने गुप्त रूप से मठ छोड़ दिया: क्योंकि वह अभी भी युवा था, वह बुजुर्गों पर शासन नहीं करना चाहता था या अपने स्वयं के अधीनस्थ नहीं रखना चाहता था, बल्कि किसी और के मार्गदर्शन में रहना पसंद करता था। वह पड़ोसी क्षेत्रों में यात्रा करने लगा, उन संतों से मिलने लगा जो विभिन्न तरीकों से तपस्या का अभ्यास करते थे और उनमें से प्रत्येक से विशेष लाभ प्राप्त करता था। इस बीच, संत अलेक्ज़ेंडर प्रभु के पास चले गए थे। पूरी समुदाय ने सर्वसम्मति से मार्सेलस को उनकी जगह लेने की इच्छा व्यक्त की और उन्हें कहीं न पाकर दुखी हो गए। मार्सेलस को न पाकर, उन्होंने एक निश्चित जॉन को, जो एक वृद्ध और विवेकी व्यक्ति थे, मठ का मठाधीश नियुक्त किया। इस नियुक्ति के बारे में जानकर, संत मार्सेलस तुरंत अपने मठ लौट आए, और पूरी समुदाय ने उनकी वापसी पर प्रसन्नता व्यक्त की। अबा जॉन उन्हें बहुत सम्मान देते थे, क्योंकि वह उनके लिए बहुत उपयोगी थे, मानो उनका दाहिना हाथ हों। कुछ समय बाद, बाबा जॉन ने मठ को बिथिनिया में एक और अधिक एकांत स्थान पर स्थानांतरित कर दिया, जो सोस्थेनेस शहर के सामने स्थित था।[375] इस स्थान का नाम इरिनीयम था, जिसका अर्थ है 'शांतिपूर्ण', क्योंकि यह स्थान सांसारिक गपशप और कोलाहल से दूर, साधुओं के लिए वास्तव में एक शांतिपूर्ण आश्रय था। स्थानांतरित मठ ने आदरणीय अलेक्ज़ेंडर द्वारा स्थापित अपने पूर्व नियम को भी निष्ठापूर्वक बनाए रखा, जिसके अनुसार भाइयों को चर्च में दिन-रात बारी-बारी से ईश्वर की महिमा करनी होती थी: इसी नियम के कारण मठ को 'अनिद्र मठ' का नाम मिला था। नई जगह पर पूरा निर्माण कार्य और मठ की देखभाल मार्सेलस को सौंपी गई, जो हर मामले में एक वफादार और कुशल व्यक्ति थे। जल्द ही उन्हें स्वयं मठ का नेतृत्व करना था, यह एक ऐसी बात थी जिसे उन्होंने अपनी सूक्ष्मदर्शी आँखों से पहले ही देख लिया था, और जो कुछ भाइयों को ईश्वर द्वारा भी बताई गई थी। एक पड़ोसी मठ के मठाध्यक्ष—मेसेडोनियस (वह मेसेडोनियस नहीं जो एक

---

[373] उनका पर्व दिवस 23 फरवरी है। 'अब्बा' का हिब्रू में अर्थ 'पिता' है; यह शब्द पूर्व में मठवासी जीवन में आध्यात्मिक गुरुओं को संदर्भित करने के लिए उपयोग किया जाता था।

[374] सोस्थेनेस – कॉन्स्टेंटिनोपल के आसपास स्थित एक छोटा सा शहर।

[375] बिथिनिया - एशिया माइनर का एक क्षेत्र, जो ब्लैक सी और मरमरा सागर के तट पर स्थित था, जिसकी राजधानी निकोमेडिया थी।

आध्यात्मिक विद्रोही था, बल्कि कोई और: पहला बहिष्कृतों में से था[376] , जबकि दूसरा सम्मानितों में से था)— एक दूरदर्शी व्यक्ति थे, जिन्होंने परम पूज्य मार्सेलस को भविष्यवाणी की कि वह न केवल वचन के झुंड के लिए एक चरवाहा होंगे, बल्कि उनके सदाचारी जीवन और पवित्रता के कारण उनका नाम पूरे देश में महिमामय होगा।

उन्होंने कहा, 'कई यूनानी और अन्यजाति, जो उनसे शिक्षा पाएँगे, अपनी पारंपरिक भ्रांति को त्याग देंगे और परमेश्वर की ओर मुड़ेंगे, और परमेश्वर उनकी दयालुता से महिमा पाएगा।'

हालाँकि, आदरणीय मार्सेलस इतने विनम्र थे कि वे स्वयं मठ के गधों की देखभाल करने से भी नहीं हिचकिचाते थे, और भाइयों को उन्हें—जो वचन के झुंड के चरवाहे बनने के योग्य थे—इन मूक जानवरों की देखभाल बंद करने के लिए मनाने में बड़ी मुश्किल से कामयाबी मिली।

कुछ ही समय बाद, बाबा जॉन प्रभु के पास चले गए, और धन्य मार्सेलस को निर्विरोध मठ का मठाधीश नियुक्त किया गया। वह गरीबों के प्रति अत्यंत दयालु थे, और हर दिन भूखे लोगों की भीड़ को भोजन कराते थे। और ईश्वर ने उनकी अच्छी सेवा को आशीर्वाद दिया: जैसे उसने एक बार पाँच हजार लोगों को खिलाने के लिए पाँच रोटियों और दो मछलियों को बढ़ाया था (मत्ती 14:18-21), वैसे ही मार्सेलस के मठ में भी थोड़ी मात्रा में भोजन अदृश्य रूप से और चमत्कारिक रूप से बढ़ गया, ताकि न केवल भाइयों के लिए, बल्कि भिखारियों और यात्रियों की भीड़ के दैनिक भरण-पोषण के लिए पर्याप्त भोजन हो, जैसा कि आगे बताया जाएगा।

मार्सेलस का आध्यात्मिक झुंड बढ़ गया, और भाइयों की संख्या प्रतिदिन बढ़ती गई। मार्सेलस के चारों ओर उनके गुणों के कारण इतने बड़ी संख्या में ईश्वर के पुरुषों के इकट्ठा होने के कारण, एक अधिक विशाल घेरा, प्रार्थना के लिए एक बड़ा चर्च, भोजन की प्रचुर आपूर्ति, और मानव जीवन की अन्य आवश्यकताओं की आवश्यकता थी; हालाँकि, तब तक मार्सेलस ने गरीबों की देखभाल के लिए अपने सभी संसाधन खर्च कर दिए थे। लेकिन ईश्वर, जिन पर उस सम्मानित व्यक्ति ने अपनी सारी आशा लगा रखी थी, ने अपने सेवकों को नहीं छोड़ा और निम्नलिखित तरीके से सब कुछ आवश्यक प्रदान किया।

फारेट्रियस नाम का एक व्यक्ति था, जिसके पास बहुत धन था। धार्मिक जीवन से प्रभावित होकर, वह पूजनीय मार्सेलस के पास आया, अपने साथ अपने दो बेटों को लाया, जो अभी भी छोटे लड़के थे, और उसने भिक्षु बनने की अपनी इच्छा व्यक्त की। उसने अपनी सारी संपत्ति मठ को विरासत में दे दी और जल्द ही अपने दोनों बेटों के साथ मिलकर भिक्षु के रूप में दीक्षा प्राप्त कर ली। उसने जिस संपत्ति का दान किया था, उस पर सबसे पहले एक नया पत्थर का चर्च बनाया गया—जो सुंदर और विशाल था; फिर पूरे मठ के परिसर का पुनर्निर्माण किया गया और कई नए कक्ष बनाए गए, जबकि जर्जर कक्षों का नवीनीकरण किया गया। इसके अलावा, एक अस्पताल और एक अतिथि गृह भी स्थापित किया गया, और सभी आवश्यक भवनों का निर्माण पूरा हो गया। भोजन, वस्त्र और अन्य आवश्यक वस्तुएँ भी फारेट्रियस द्वारा दान किए गए धन का उपयोग करके मठ के लिए प्राप्त की गईं। इस प्रकार परमेश्वर, जो प्रदान करने वाले हैं, विश्वासियों की देखभाल करते हैं। *'पहले परमेश्वर के राज्य और उसकी धार्मिकता की खोज करो, और ये सब बातें तुम्हें मिलेंगी'* (मत्ती 6:33)। और आदरणीय मार्सेलस की कीर्ति और उनके मठ में स्थापित अखंड स्तुति दूर-दूर तक फैल गई; कई लोगों ने इस नियम का अनुसरण किया और इसे अपने स्वयं के मठों में लागू किया, आदरणीय व्यक्ति से मार्गदर्शन की तलाश में। और जैसे एदन से नदियाँ बहती थीं[377] , वैसे ही मार्सेलस के मठ से मठवासी जीवन के नियम और रीति-रिवाज तथा चर्च के अखंड भजन विभिन्न देशों और शहरों में स्थित सभी मठों में फैल गए। हर मठ में, मठाधीश मार्सेलस के मठ के भिक्षु होते थे, और हर जगह 'निर्विरोधियों' के संप्रदाय का पालन किया जाता था, क्योंकि मार्सेलस उस संप्रदाय के प्रमुख, आर्चिमांड्राइट, कानून-निर्माता और उस भूमि में मौजूद सभी मठों के प्रशासक थे। और मार्सेल की शिक्षाओं का अनुसरण करते हुए, उपर्युक्त दूरदर्शी मैसेडोन की भविष्यवाणी के अनुसार, कई यूनानी और बर्बर लोग सच्चे ईश्वर की ओर मुड़े। इस प्रकार, दिन-रात ईश्वर की स्तुति करने वाले, पृथ्वी के स्वर्गदूतों की कतारें दिन-प्रतिदिन बढ़ती गईं।

अब आदरणीय मार्सेलस के चमत्कारों का वर्णन करना उचित है।

---

[376] मसीही-विरोधी मेसेडोनियस ने पवित्र आत्मा को परमेश्वर के रूप में स्वीकार नहीं किया, बल्कि उन्हें एक ऐसा प्राणी माना जो पिता और पुत्र की दिव्यता और महिमा में कोई भागीदार नहीं है। मेसेडोनियस के मसीही-विरोधी मत को 381 में दूसरे सार्वभौमिक परिषद में निंदा किया गया था।

[377] अर्थात्, पहले मनुष्यों के एडेन के बगीचे से। उससे चार नदियाँ निकलती थीं: पिशन, गिहोन, टिग्रिस और फरात (देखें उत्पत्ति 2:10–14)।

तीन बशिपों को बर्बर लोगों ने बंदी बना लयिा था; कैद से रहिा होकर वे घर लौट रहे थे, लेकनि जब उनका रास्ता आदरणीय मार्सेलस के मठ के पास से गुज़र रहा था, तो वे सड़क से हटकर उन्हें देखने चले गए। उन्होंने उनका गर्मजोशी से स्वागत कयिा और उन्हें आराम दयिा; और जब वे फरि से नकिलने वाले थे, तो उन्होंने उन्हें यात्रा के लिए कुछ देना चाहा, क्योंकि वे बहुत गरीब आदमी थे। अपने व्यवस्थापक, जसिका नाम जूलयिन था, को बुलाकर, पूजनीय ने पूछा कि उसके खजाने में कतिना पैसा है।

'दस चाँदी के सक्कि'[378] ने उत्तर दयिा।

तब मार्केल ने आदेश दयिा कि सारा पैसा तीन बशिपों को दे दयिा जाए, लेकनि प्रबंधक ने जाकर उनमें से प्रत्येक को केवल एक चांदी का सक्कि दयिा और बाकी मठ की ज़रूरतों के लिए रख लयिा। आत्मा द्वारा यह जानकर, संत ने व्यवस्थापक को बुलाया और उसे आदेश दयिा कि वह शेष चांदी के सक्के बशिपों को बनिा चूके दे दे। तब व्यवस्थापक ने उन्हें प्रत्येक को दो और सक्के दए; इस प्रकार नौ खर्च करने के बाद भी, उसने दसवां सक्कि रख लयिा, जो वह हर दनि मठ में आने वाले भखिारयिों के लिए करता था। इसके बाद, आत्मा से प्रेरति एक धार्मकि व्यक्ति, रेवरेंड फादर के पास आया और मठ की ज़रूरतों के लिए उसे नब्बे प्रतभिा[379] सोने की दी। तब रेवरेंड फादर मार्सेलस ने व्यवस्थापक जूलयिन को बुलाया और क्रोध में आकर उसकी कंजूसी के लिए उसे डाँटने लगे:

'देखो, ईश्वर इस धर्मनष्ठि व्यक्ति के हाथ सौ प्रतभिाएँ भेजना चाहते थे, लेकनि चूँकि तुमने मेरी आज्ञा की अवज्ञा करते हुए एक चाँदी का सक्कि रोक लयिा, हमारे सामान्य प्रदाता, जो हमें सौ गुना पुरस्कार देना चाहते थे, ने हमें दस प्रतभिाओं से वंचति कर दयिा है।'

शर्मदिा होकर, व्यवस्थापक उनके पैरों पर गरि पड़ा और क्षमा याचना करने लगा।

रेवरेंड के पास बीमारों को ठीक करने की कृपा भी थी: उन्होंने एक ही स्पर्श से भक्षिु एल्पडियिस को ठीक कर दयिा, जसिके मुँह में एक दर्दनाक ट्यूमर था। उन्होंने अपने स्पर्श से भक्षिु स्टीफन को भी ठीक कयिा, जो पेट की एक गंभीर बीमारी से पीड़ति था, ऐसी कि किसी भी इलाज से उसे फायदा नहीं हुआ था और वह अपनी जान से भी हार चुका था: संत ने उसके पेट और रीढ़ की हड्डी को छूकर उसे ठीक कर दयिा। जब उपर्युक्त व्यवस्थापक जूलयिन बीमार पड़ गया और मृत्यु के कगार पर था, तो रेवरेंड ने उसे दोहरा उपचार - आध्यात्मकि और शारीरकि - प्रदान कयिा: सबसे पहले, उन्होंने उसे मठाधीश की आज्ञाओं की अवहेलना न करने और अस्थायी धन में अपनी आशा न रखने, बल्कि ईश्वर पर भरोसा करने की शक्षिा दी, जो सभी की समान रूप से परवाह करते हैं; और इस प्रकार उसकी आत्मा को सही मार्ग पर लाने के बाद, उन्होंने उसे उसके शारीरकि रोग से भी ठीक कर दयिा।

हमें एक और भी अधकि चमत्कारकि घटना का वर्णन करना चाहए। एक यहूदी एक असाध्य रोग से पीड़ति था: उसके पूरे शरीर पर बदबूदार घाव थे। जब सभी चकित्सिकों के प्रयास व्यर्थ साबति हो गए और उस बीमार व्यक्ति ने इलाज की आशा छोड़ दी, तो वह अपनी अंतमि आशा के रूप में उस सम्माननीय मार्सेलस, जो एक शीघ्र और नस्विार्थ उपचारक थे, के पास गया। सम्माननीय पादरी ने उस यहूदी से उसके धर्म के बारे में पूछा और, उसकी दुष्टता के बारे में जानने पर, कहा कि जब तक वह पहले अपनी दुष्टता का परत्यिाग नहीं कर लेता और ईसाई धर्म को नहीं अपना लेता, तब तक उसका उपचार नहीं हो सकता। यहूदी ने वादा कयिा कि ठीक होते ही वह तुरंत मसीह की ओर मुड़ जाएगा। उसकी वनिती मानते हुए, एल्डर ने अपनी प्रार्थना से उस बीमार व्यक्ति को ठीक कर दयिा, और ठीक हुआ व्यक्ति तुरंत ही ईसाई धर्म अपना गया। लेकनि चार दनि भी नहीं बीते थे कि यहूदी अपने बुरे रास्तों पर लौट आया। उसकी पुरानी बीमारी भी लौट आई: जैसे ही उसके धर्म परविर्तन के बाद उसे चंगा कयिा गया था, वैसे ही उसके धर्मत्याग के बाद उसकी पुरानी बीमारी लौट आई। अपनी इच्छा के वरिुद्ध, संत को एक बार फरि खोजने के लिए ववश होकर, उसने फरि से अपनी दुष्टता का त्याग कयिा, धार्मकिता को अपनाया, और दयालु पति की दया मांगी। एक बार फरि ठीक हो जाने के बाद, कुछ ही दनिों में वह फरि से, *'कीचड़ में लोटने वाले सूअर की तरह'* (2 पतरस 2:22), एक और भी अधकि गंभीर बीमारी से ग्रस्त हो गया।

तब उस दुष्ट मनुष्य ने क्या कयिा? उसने फरि से नर्लिज्जतापूर्वक संत को खोजा। और ऐसा ही बार-बार होता रहा। अंत में, पूजनीय ने उससे कहा:

---

[378] एक चांदी का सक्कि (चांदी का डेनारयिस) 22 कोपेक के बराबर था।

[379] एक टैलेंट का मूल्य लगभग 1,500 रूबल था।

'हे मनुष्य, यह जान ले: तू मुझे नहीं बल्कि मसीह को धोखा दे रहा है; क्योंकि मैं नहीं बल्कि मसीह तुझे चंगा करते हैं, और तू अपने हृदय की दुष्टता को उनकी सर्व-दर्शी आँखों से नहीं छिपा सकता, जबकि अपने होठों से उनकी महिमा करते हुए भी तेरा हृदय उनसे दूर है (मत्ती 15:8), – शब्दों में भक्ति का दिखावा करते हो, जबकि कर्म में तुम अपनी पुरानी दुष्टता पर लौट जाते हो। किसी भी छल के बिना, पूरे हृदय से मसीह की ओर लौट आओ, और तुम तुरंत न केवल शरीर से, बल्कि आत्मा से भी चंगा हो जाओगे।

परन्तु अधर्मी और मूर्ख यहूदी ने संत को उत्तर दिया:

– 'मुझे जो कुछ भी सहना पड़े, मैं कभी भी अपने पूर्वजों के धर्म को नहीं छोड़ूँगा।'

ये शब्द सुनकर, पूजनीय पिता चुपचाप उससे चले गए, और यहूदी, मठ से थोड़ी दूरी पर जाने के बाद, अचानक गिर पड़ा और शरीर तथा आत्मा दोनों में मर गया। यह जानकर, पवित्र पिता रोए और कहा: *'अपने प्रभु परमेश्वर की परीक्षा न लेना'* (व्यवस्थाविवरण 6:16)।

लेकिन आइए हम विश्वासियों के चंगा होने के वृत्तांत को जारी रखें। किर नामक एक व्यक्ति, जो बाद में मठवासी जीवन में एक महान हस्ती बने और कई लोगों के लिए लाभ और शक्ति का स्रोत रहे, मठवासी संस्कार लेने से पहले कुश्ती में महान शारीरिक शक्ति और कौशल के धनी थे। अप्रत्याशित रूप से, ईश्वर की अनुमति से, शैतान ने उसे सिर से पैर तक एक फोड़ा वाली बीमारी से पीड़ित कर दिया, ठीक वैसे ही जैसे उसने एक बार यॉब को पीड़ित किया था, और न केवल उसकी सारी त्वचा सड़ गई, बल्कि उसका मांस और अस्थिबंधन भी सड़ गए, जिससे केवल उसकी हड्डियाँ ही दिखाई दे रही थीं। इस व्यक्ति के दुख का वर्णन करना असंभव है। और किसी भी मानवीय उपचार से उसके ठीक होना असंभव था, बल्कि केवल दैवीय उपचार से ही संभव था, जिसके दाता संत मार्सेलस थे। जब वह बीमार व्यक्ति रोते हुए और उपचार की भीख माँगते हुए उनके पैरों पर गिर पड़ा, तो उस धन्य व्यक्ति ने तुरंत अपने हाथ स्वर्ग की ओर उठाए और, जैसा कि उनका रिवाज था, उस बीमार व्यक्ति के लिए एक भक्तिपूर्ण प्रार्थना की। तब, अपने हाथ से उसके घावों को छूते हुए, उन्होंने कहा:

'हे पुण्यपुरुष! यह उचित नहीं है कि ये कष्ट तुम पर हावी हों, और न ही यह उचित है कि जो अदृश्य शत्रुओं से लड़ता है, वह शरीर की चिंता करे। विश्वास रखो, और यदि तुम सर्वोच्च को अपना शरणस्थान चुनोगे (भजन संहिता 90:9), तो यह फोड़ा तुम्हारे शरीर के मंदिर से दूर हो जाएगा।'

इस प्रकार संत ने कहा, और वह बीमारी तुरंत उस व्यक्ति को छोड़ गई। उसके घावों पर मांस उगने लगा, जो सभी को दिखाई दे रहा था – ठीक वैसे ही जैसे यह यहेज़केल की भविष्यवाणी में वर्णित है (यहेज़केल 38:8); उसकी अस्थि-बंधियाँ ठीक हो गईं, जोड़ मजबूत हो गए और त्वचा से ढक गए; और साइरस, सभी उम्मीदों से परे, बहुत जल्दी ठीक हो गया। और ईश्वर की दी गई कृपा से, ईश्वर के इस सेवक ने न केवल उन लोगों पर चमत्कारिक चंगाई की, जिन्हें उसने अपने हाथों से छुआ, बल्कि उन लोगों पर भी जो उससे दूर थे।

एक डीकन, यूजीन, की पत्नी को प्रसव का समय आ गया था, लेकिन वह प्रसव नहीं कर पा रही थी – और न तो डॉक्टर और न ही दाइयाँ उसकी मदद कर सकीं। हर कोई पहले ही उसके जीवन से निराश हो चुका था, और वह बेहोश पड़ी थी। तब उसका पति, डीकन यूजीन, आदरणीय के पैरों पर गिर पड़ा और आँसुओं के साथ उससे मदद की विनती करने लगा। रेवरेंड फादर ने प्रार्थना की और कुछ रोटी पर आशीर्वाद देकर उसे डीकन को दे दिया ताकि वह उसे जल्द से जल्द उस बीमार महिला की छाती पर रख सके। और जैसे ही यह किया गया, महिला ने एक बच्चे को जन्म दिया और उसकी पीड़ा दूर हो गई।

जब वह होश में आई, तो उसने पूछना शुरू किया:

'वह भिक्षु कहाँ है जिसने मेरे दुख को समाप्त किया? वह कहाँ है जिसने मुझे मृत्यु से बचाया?'

जब उससे पूछा गया कि वह संन्यासी कौन था जिसके बारे में वह बात कर रही थी, और वह कैसा दिखता था, तो उस महिला ने उस संन्यासी के रूप का वर्णन किया जो उसे दिखाई दिया था, और सभी को एहसास हुआ कि वह आदरणीय मार्सेलस ही थे, जो उसे दिखाई दिए थे और उसे मृत्यु से बचाया था।

इस धन्य पिता ने संन्यासी जीवन में इतनी पूर्णता प्राप्त कर ली थी कि, अपनी पवित्रता और पुण्य के कारण, देवदूत उनके साथ निवास करते थे। यूफ्रेटिस नदी के किनारे स्थित एक मठ के मठाध्यक्ष सेरजियस[380] , ने रेवरेंड फादर

[380] एक प्रमुख नदी जो फारस की खाड़ी में बहती है, इसका स्रोत आर्मेनिया के पहाड़ों में है।

के बारे में बहुत कुछ सुनकर, उन्हें देखने आए और उन्होंने मार्सेलस के बारे में जो कुछ बताया गया था, उससे कहीं अधिक देखा। एक बार, जब वे प्रार्थना में एक साथ खड़े थे, तो सर्जियस ने देखा कि जब पूजनीय मार्सेलस घुटने के बल झुके, तो दो तेजस्वी स्वर्गदूतों ने उनके दोनों ओर से सहारा दिया और उन्हें जमीन से उठा लिया, जबकि प्रार्थना के दौरान उनका चेहरा बिजली की तरह चमक उठा। यह देखकर सेरजियस भय से कांप उठा, और उसका प्राण भय के मारे लगभग शरीर से निकल गया।

ईश्वर ने अन्य महान संतों को भी अपने संत, मार्सेलस, के बारे में प्रकटियाँ प्रदान कीं। डेस मठ के मठाधीश एलिशा, संत को देखना और उनके जीवन के बारे में जानना चाहते थे; जब उन्होंने इसके लिए ईश्वर से प्रार्थना की, तो प्रभु ने उन्हें एक दर्शन में मार्सेलस को ठीक उसी रूप में दिखाया जैसा वह बाहरी रूप में थे, और उन्हें उनके गुणों की महानता का ज्ञान कराया। इसके बाद एलिशा ने यह सब संत मार्सेलस के शिष्य पीटर को सुनाया, जो संयोग से उनके साथ ठहरे हुए थे।

[381]पोम्पेया शहर में, यूक्सिन सागर के तट पर स्थित मठ के मठाध्यक्ष गावडियोल को यह प्रकट हुआ कि मार्केल को ईश्वर द्वारा व्यवस्थाविवेचक मूसा के समान अनुग्रह प्रदान किया गया था। गावडियोल ने यह बात मार्केल के एक शिष्य यूलासियस के समक्ष प्रमाणित की। निस्संदेह, आदरणीय संत में भविष्यवाणी का वरदान था, क्योंकि उन्होंने जो कुछ भी किसी के लिए भविष्यवाणी की, वह हमेशा सच होता था। एक बार, एक बिशप—जो बहुत कंजूस आदमी था—उसके पास आया। धन्य व्यक्ति ने उससे गरीबों को देने के लिए दो ज़्लैटनिक[382] उधार देने के लिए कहा, लेकिन बिशप ने मना कर दिया और वे नहीं दिए, यह कहते हुए कि उसके पास स्वयं कुछ भी नहीं है। तब आदरणीय व्यक्ति ने भविष्यवाणी करते हुए उससे कहा:

'जल्द ही तुम्हारा अपना शरीर भी नहीं रहेगा, जिसे कब्र ले लेगी, जबकि तुम्हारा सोना मठ समुदाय को मिलेगा।'

और ऐसा ही हुआ। दो दिन भी नहीं बीते थे कि बिशप की मृत्यु हो गई, और उनकी संपत्ति उनकी भविष्यवाणी के अनुसार परम पूजनीय के मठ को सौंप दी गई। परम पूजनीय दूर की बात को भी ऐसे देख लेते थे जैसे वह हाथ में हो। एक बार, उनके शिष्य किसी मठ संबंधी आवश्यकता के लिए जहाजों में यूक्सिन सागर पार कर रहे थे। एक बड़ी आंधी आई; समुद्र उफन रहा था, और वे पहले ही अपनी जान से हाथ धोने की उम्मीद कर चुके थे; उसी क्षण, पूज्यनीय उनके सामने प्रकट हुए और उन्हें बचाकर सुरक्षित बंदरगाह पर ले आए। जब वे एन्सीरा शहर में थे[383] , तो उनमें से एक, जिसका नाम पॉल था, गंभीर रूप से बीमार पड़ गया, और उसके साथ मौजूद भिक्षु पहले ही उसे वहीं छोड़कर जाने पर विचार कर रहे थे। तब वह बीमार व्यक्ति, अपने हृदय की गहराई से आह भरते हुए, आँसुओं के साथ चिल्लाया:

'फादर मार्सेलस, आपकी प्रार्थनाएँ कहाँ हैं? आपने मुझे ईश्वर के हवाले किया था, फिर भी मैं यहाँ मर रहा हूँ; और सबसे दुखद बात यह है कि मैं आपके झुंड से बाहर और अपने भाइयों से दूर मर रहा हूँ!'

एन्किरिया नगर में उस बीमार व्यक्ति ने आँसुओं के साथ ऐसा कहा, और मठ में रहने वाले आदरणीय पिता ने उसकी विलाप-पुकार सुनी और अपने शिष्य कैसरियस से कहा कि मिशिन पर भेजे गए भाइयों में से एक संकट में और बीमार है। वे उठे, उन्होंने उसके लिए प्रार्थना की, और पौलुस तुरंत स्वस्थ हो गया। हालाँकि, सीसारीयस ने समय पर ध्यान दिया, और जब भाई लौट आए, तो यह पता चला कि पौलुस अंकीरा में ठीक उसी घड़ी स्वस्थ हो गया था जब पवित्र पिता, उसकी बीमारी की पूर्वानुमान लगाते हुए, उसके लिए प्रार्थना कर रहे थे।

एक बार, ईश्वर ने देश में एक बड़ी अकाल भेज दी। मठ के अनाज भंडार के व्यवस्थापक, मलख नामक एक व्यक्ति, आदरणीय पिता के पास आया और बताया कि अनाज खत्म हो रहा था और मुश्किल से दस दिनों तक ही रोटी के लिए पर्याप्त अनाज बचा था।

'जाओ,' संत ने उत्तर दिया, 'और अपना कर्तव्य निभाओ, किसी भी बात की चिंता मत करो।'

यह मानकर कि बाबा को उम्मीद थी कि कहीं दूर से भरपूर रोटी आएगी, माल्च ने अपनी आदत के अनुसार न केवल भाइयों की जरूरतों को पूरा करने के लिए, बल्कि गरीबों को भी अनाजखाने से रोटी बांटना जारी रखा। पाँच दिन बीत गए; अब

---

[381] अब इसे ब्लैक सी (काला सागर) के नाम से जाना जाता है। पहले इसे अक्सिन सागर, यानी 'दुर्भाग्यपूर्ण' कहा जाता था, क्योंकि इसमें तूफान आते थे; लेकिन जब इसके तटों पर धीरे-धीरे यूनानियों ने बसाहट करनी शुरू कर दी, तो उन्होंने इसका नाम बदलकर यूक्सिन सागर, यानी 'आतिथ्यपूर्ण' रख दिया।

[382] एक ज़्लाटनिक (सोने का डेनारियस) 25 चाँदी के डेनारियस के बराबर होता है, यानी लगभग 5 रूबल 60 कोपेक।

[383] एन्किरा, जिसे अब अंगोरा कहा जाता है, एशिया माइनर के गालाटिया क्षेत्र में एक प्राचीन शहर है।

अनाजघर में बहुत कम रोटी बची थी, और मलख एक बार फरि मठाधीश के पास गया, और बताया कि अनाज खत्म हो रहा है। लेकनि मठाधीश ने, ठीक वैसे ही जैसे उन्होंने पहली बार कयिा था, उसे अपनी जम्मिेदारयिों पर वापस भेज दयिा, और उसे इसके बारे में चतिा न करने का नरि्देश दयिा। दो दनि बाद, अनागार में कुछ भी नहीं बचा था, और माल्च उलझन में भकि्षु-प्रधान के पास लौट आया। पूजनीय पतिा उठे, अनागार में गए और माल्च को उसे खोलने का आदेश दयिा।

हालाँकि मिल्च ने कसम खाई कि एक भी दाना नहीं बचा है और इसे खोलने का कोई फायदा नहीं है; फरि भी, उसने ऐसा कयिा। और वहाँ उसने अनाज का गोदाम हर तरह के अनाज से भरा हुआ देखा, और वह भय से भर गया; हालाँकि, पूजनीय ने उसे उसके अवशि्वास के लिए फटकारा। और उस समय से अकाल समाप्त होने तक अनाजघर कभी खाली नहीं हुआ: चाहे व्यवस्थापक एक दनि में जतिना भी अनाज खर्च कर दे, वह अगले दनि उतना ही भरा रहता। और इस प्रकार, अकाल के दौरान, पूजनीय पतिा ने न केवल भाइयों को, बल्कि भखिारयिों और बेसहारा लोगों, यात्रयिों और के आगंतुकों की एक बड़ी भीड़ को भी खलिाया। प्रभु के ये सभी कार्य, जो उनके सेवक मार्सेलस द्वारा कए गए थे, अद्भुत हैं, लेकनि इससे भी अधकि अद्भुत घटनाएँ घटति होती हैं।

[384]एक पॉल नामक व्यक्ति – जो ऊपर वर्णति नहीं है, बल्कि एक अलग मठ का एक अन्य भकि्षु था – जो एक गंभीर बीमारी से पीड़ति था, ने संत के पास एक संदेशवाहक भेजा और उनसे आने का आग्रह कयिा। मार्केल के मठ पहुँचने पर, दूत ने उन्हें काल्सेडन के बशिप के साथ चर्च के सद्धिांतों पर चर्चा करते हुए पाया, और संत तब तक बीमार व्यक्ति से मलिने के लिए नकिल नहीं सके जब तक उन्होंने चर्च के मामलों के संबंध में बशिप के साथ अपनी बातचीत समाप्त नहीं कर ली। इस बीच, वह बीमार व्यक्ति चिल बसा था, और जब तक सम्माननीय पतिा पहुँचे, मृतक के सभी संस्कार पहले ही संपन्न हो चुके थे और उसके शरीर को दफनाने के लिए ले जाया जा रहा था। महान श्रद्धा के धनी, पवत्रि पतिा ने अपनी भौतकि और आध्यात्मकि दृष्टि आकाश की ओर उठाई, अपनी आदत के अनुसार अपने हृदय के गुप्त कक्ष में ईश्वर से भक्तपिूर्वक प्रार्थना की, और मृतक पर अपना हाथ रखा। उपस्थति लोगों में से कुछ मन ही मन उनका उपहास करने लगे, यह कहते हुए:

'क्या इस बूढ़े आदमी को वशि्वास नहीं है कि उसका भाई मर गया है, कि वह उसे अपने हाथ से परख रहा है?'

जब वे यह सोच ही रहे थे, और संत मृतक को अपने हाथ से छू ही रहे थे, कि वह अचानक जीवति हो उठा, उठ खड़ा हुआ, अपने बस्तिर पर बैठ गया, और बोलने लगा। इस अद्भुत चमत्कार से सभी भय और वस्मिय से भर गए, लेकनि पादरी ने उपस्थति लोगों को इसके बारे में बात करने से मना कर दयिा; फरि भी, पादरी में परमेश्वर की महमिा और उनके उत्कृष्ट उपहारों को छपिाया नहीं जा सका।

हमें उस शक्ति और अधकिार के बारे में भी बात करनी चाहए जो पूजनीय मार्सेलस के पास राक्षसों पर था। एक प्रचंड हवा से उड़ती धूल की तरह, राक्षस उनकी प्रार्थनाओं से लोगों से बाहर नकिल जाते थे। एक बार, राक्षसों द्वारा क्रूरतापूर्वक पीड़ति चार राक्षसी व्यक्ति उनके पास लाए गए, और उन्होंने संत से पुकारा:

'हमें नकिल जाने की आज्ञा दीजए, क्योंकि आप पर हम पर अधकिार है!'

लेकनि संत चुप रहे और उन्होंने उनकी ओर देखा भी नहीं; उन्होंने केवल मन ही मन ईश्वर से प्रार्थना की:

'प्रभु, अपनी सृष्टि पिर दया करें!'

वे राक्षसों की चालाकी से अच्छी तरह वाकफि थे, जो अपनी छलपूर्ण बातों से उन्हें अहंकार में फँसाने की कोशशि करते थे। और जब तक संत चुप रहे, राक्षस उनकी वनिम्रता से पराजति होकर चले गए।

लेकनि हमारे पूजनीय पतिा के चमत्कारों का वस्तिार से वर्णन कौन कर पाएगा? उस पर वरिाजमान ईश्वर की कृपा का माप कौन लगा सकता है? उनके महान वशि्वास को, जसिके द्वारा वे ऐसे कार्य करने में सक्षम थे, कौन शब्दों में बयां कर सकता है? उन्हें सभी को गनिने के लिए पर्याप्त समय भी नहीं होगा। यहाँ उनके अनगनित चमत्कारों में से एक है, जो हमारी शकि्षा और उस ईश्वर की महमिा के लिए पर्याप्त है, जो अपने संतों में अद्भुत है। एक बार, बज़िान्टयिम में एक बड़ी आग लग गई, और पूरा शहर लपटों में घरि गया, जो अपने नविासयिों के पापों के लिए ईश्वर द्वारा दंडति कयिा गया था। आग की उस बेकाबू ताकत को बुझाने का कोई तरीका नहीं था, जो एक प्रचंड आंधी की तरह सब कुछ नगिल रही थी और सब कुछ राख में बदल रही थी। अब इस बात की भी कोई उम्मीद नहीं बची थी कि आग से एक भी घर बच पाएगा, क्योंकि पूरा शहर पूरी तरह से लपटों में घरि चुका था। यह जानकर, पूजनीय मार्सेलस ने स्वर्ग की ओर अपने हाथ उठाकर

[384] काल्सेडोन – एशयिा माइनर में मार्मारा सागर के तट पर स्थति एक शहर, जो चौथे सार्वभौमकि परषिद के स्थल के रूप में प्रसद्धि है।

और अपनी आँखों से आँसू बहाकर प्रार्थना करना शुरू कर दिया। और देखो, आग तुरंत रुक गई और और नहीं फैली, और शहर का आधा हिस्सा बच गया, क्योंकि पूजनीय व्यक्ति की आँसुओं की बूंदों से, मानो किसी बड़ी बारिश से, पूरी आग की शक्ति अचानक बुझ गई।

उसके बाद, निम्नलिखित भी हुआ। अर्दावुरियस नामक एक कुलीन व्यक्ति, जो अस्पर का पुत्र था, स्वभाव से क्रूर और आस्था से एरियन था, अपने एक अधीनस्थ, जॉन नामक व्यक्ति, पर क्रोधित हो गया और उसे मारना चाहता था। छिपाने के लिए कहीं जगह न पाकर, जॉन आदरणीय मार्सेलस के मठ में भाग गया। आर्दावुरियस को यह पता चला और उसने उसे वहाँ से लाने के लिए नौकर भेजे, लेकिन माननीय मार्केल ने उसे सौंप दिया नहीं। उस कुलीन व्यक्ति ने फिर से मार्केल के पास नौकर भेजे, एक अनुरोध—और साथ ही एक धमकी—के साथ कि जॉन को तुरंत सौंप दिया जाए, लेकिन माननीय मार्केल ने उन्हें खाली हाथ लौटा दिया। तब, अपने क्रोध में, अर्दावुरी ने जॉन को मठ से जबरदस्ती हटाने और प्रतिरोध करने वाले किसी भी व्यक्ति को तलवार से मार डालने के लिए सशस्त्र सैनिक भेजे। और इसलिए, जब सैनिक अपने हथियार लेकर मठ को घेर चुके थे और दीवारों पर चढ़ने ही वाले थे, तो भ्राताओं ने संत के पास आकर, रोते हुए, उनसे जॉन को सैनिकों के हवाले करने की विनती की, ताकि वे भी उनके कारण अन्याय से नष्ट न हो जाएँ। लेकिन पूज्य पिताजी ने भाइयों की नहीं सुनी (क्योंकि वह परम दयालु थे और एक निर्दोष व्यक्ति को मृत्यु के घाट उतारना नहीं चाहते थे), और उन्होंने आध्यात्मिक हथियार, यानी पवित्र क्रूस की शक्ति का सहारा लिया; उससे अपनी ढाल बनाकर, वह स्वयं सैनिकों का सामना करने के लिए बाहर निकल पड़े। और तुरंत सभी सैनिकों पर एक महान भय छा गया: उन्होंने सूर्य की तरह चमकते हुए क्रूस को देखा, और उसके चारों ओर एक बड़ी लपट, बिजली और गर्जना। अपने हथियार फेंककर, वे भयभीत होकर उस व्यक्ति के पास भाग गए जिसने उन्हें भेजा था। यह सुनकर, अर्दावुरी स्वयं भयभीत हो गया और, अपने क्रोध को शांत करके, जॉन को क्षमा कर दिया।

चूँकि यहाँ अर्दावुरियस और उसके पिता अस्पार का उल्लेख किया गया है, तो उनके मरने का वृत्तांत सुनाना अनुचित नहीं होगा, जैसा कि रेवरेंड को प्रकट किया गया था। अस्पार, जो गोथिक कबीले के एल्डेनबर्क ([385]) वंश से था, कुलीनता और शक्ति में राजा के बाद दूसरे स्थान पर था, और संपूर्ण ग्रीक सेना का सेनापति था। उनके दो बेटे थे: बड़ा, अर्दावुरियस, और छोटा, पैट्रिसियस। उन्होंने कई तरीकों से राजा का विरोध करने की कोशिश की और अपने पूरे परिवार के साथ मिलकर गुप्त रूप से शाही परिवार के प्रति शत्रुता पाल रखी थी; अस्पार ने एरियनों की मदद करके मसीह के चर्च को बहुत नुकसान पहुँचाया। धार्मिक और मसीह-प्रेमी राजा लियो[386] , जिन्हें महान के नाम से जाना जाता है, विनम्र और ईश्वर-भयभीत थे, और उन्होंने कुछ समय के लिए यह सब सहन किया, आंशिक रूप से दया के कारण, और आंशिक रूप से इसलिए कि यूनानी सेना की संपूर्ण शक्ति—जिनमें तब कई एरियन थे—अस्पर के परिवार के प्रति विफादार थी और उसके आदेशों का पालन करती थी: यह दुष्ट कुल कुछ ही समय बाद विनाश के लिए नियत था। आदरणीय मार्सेलस ने स्वप्न में उनके बारे में यह दृष्टि देखी: एक सिंह एक साँप से लड़ रहा था, जो विशालकाय होने के कारण अपनी पूँछ से उस पर वार कर रहा था और उस पर हावी हो रहा था। पराजित सिंह दुखी था और व्यर्थ ही साँप के चारों ओर चक्कर लगा रहा था, क्योंकि वह उसे कोई नुकसान पहुँचाने में असमर्थ था। तब दोनों—शेर और साँप—संघर्ष से थककर विश्राम करने लेट गए। थोड़ी देर बाद, शेर ने विश्राम कर लिया और, अपनी ताकत जुटाकर, अचानक, जैसे नींद से जाग उठा हो, बड़ी क्रूरता से साँप पर टूट पड़ा और उसे ज़मीन पर पटककर हरा दिया। एक दर्शन में यह सब देखकर, अबा मार्केल ने भविष्यवाणी की कि अस्पर और उसका पूरा परिवार राजा के हाथों नष्ट हो जाएगा; क्योंकि जिस सिंह को उन्होंने देखा था, वह राजा लियो का पूर्वसंकेत था, जबकि महान सर्प अस्पर का प्रतिनिधित्व करता था, जो वास्तव में एक सर्प था, जो ऑर्थोडॉक्सी को घायल कर रहा था और अपनी एरियन दुष्टता से उसे नुकसान पहुँचा रहा था। अल्पा समय में ही, संत की दृष्टि और भविष्यवाणी सच साबित हुई। धर्मपरायण राजा लियो, अपनी दया और कृपा के कारण, अस्पर और उसके बेटों को अपने साथ सुलह करना चाहता था, उन्हें दुश्मन से दोस्त बनाना चाहता था, और उसने उन्हें धर्मपरायणता की राह पर लाने का भी प्रयास किया। इसलिए, उन्होंने अपनी बेटी अरीएडने का विवाह अस्पर के सबसे छोटे बेटे, पैट्रिसियस से कर दिया, जिसे वह अपना उत्तराधिकारी नियुक्त करना चाहते थे, क्योंकि उनके अपने कोई बेटा नहीं था और उन्होंने अपने दामाद को सिंहासन पर बिठाने की योजना बनाई थी। लेकिन तब धर्मपरायण लोगों के बीच एक हलचल मच गई: सभी

---

[385] गोथ – एक जर्मनिक जनजाति जो मूल रूप से बाल्टिक सागर के दक्षिण-पूर्व में रहती थी। बाद में वे पूर्वी और पश्चिमी समूहों में विभाजित हो गए और लगभग पूरे यूरोप में बस गए। गोथों ने ईसाई धर्म को अपना लिया, लेकिन विकृत रूप में – एरियन संप्रदाय के रूप में।

[386] उन्होंने 457 से 474 तक शासन किया।

को डर था कि अरिअनों के अपमानजनक आरोपों और दुर्भावना से मसीह की कलीसिया का अंत तक अपमान होगा, क्योंकि राजा का दामाद एक अरिअन था। सभी ऑर्थोडॉक्स, बिशपों और पुरोहितों के साथ इकट्ठा होकर और अपने साथ पवित्र वृद्ध मार्सेलस को लेकर, हिप्पोड्रोम में राजा के पास गए[387] और उससे कहा कि एक विधर्मी को सिंहासन पर न बिठाए, बल्कि राजा का दामाद या तो एरियन विधर्म का त्याग करे या, यदि वह उसमें दृढ़ रहना चाहता है, तो राजसी पद स्वीकार न करे।

जनता को शांत करने के लिए, राजा लियो ने हर संभव तरीके से अपने दामाद को ऑर्थोडॉक्स धर्म में वापस लाने का वादा किया। और यद्यपि दामाद, चालाकी से ही सही, सच्चे धर्म में शामिल हो गया, लोगों में हो रही बड़बड़ाहट थमी नहीं। इस समय, अस्पर की साजिशें और दुर्भावना उजागर हो गईं - यह बात सामने आई कि वह न केवल राजसी ताज का लालच रखता था, बल्कि अपने बेटों के साथ मिलकर राजा का सिर भी चाहता था और उसे मारने का इरादा रखता था। तब सारा जनसमूह अस्पर के घर के विरुद्ध उठ खड़ा हुआ, जो उसकी विश्वासघात को सहन नहीं कर सकता था, और हर तरह से उसे नष्ट करने का प्रयास किया; लेकिन अस्पर, डरकर, अपने बेटों के साथ कालसीडोन भाग गया और शहीद यूफेमिया के चर्च में खुद को बंद कर लिया, जबकि सैनिकों की एक भीड़ चर्च के चारों ओर खड़ी होकर उसकी सुरक्षा की रखवाली कर रही थी। हालाँकि, राजा के सुलह के शब्दों के बाद, वह वहाँ से बाहर निकला और एक बार फिर कॉन्स्टेंटिनोपल लौट आया। कुछ ही समय बाद, राजा के आदेश पर ज़ेनो ने स्वयं अस्पर और उसके बेटे अर्डवूरी दोनों को मार डाला; जबकि राजा के दामाद, पैट्रिसियस को निर्वासित कर दिया गया, और राजकुमारी एरियाडने, जिससे उसकी सगाई हुई थी, की शादी ज़ेनो से कर दी गई, जिसने बाद में, राजा लियो की मृत्यु के बाद, यूनानी राज्य का नियंत्रण संभाल लिया[388] । इस प्रकार संत की भविष्यवाणी के अनुसार, लियो द्वारा पराजित, अस्पर्स का दुष्ट वंश नष्ट हो गया।

लेकिन आइए एक बार फिर सम्माननीय मार्सेलस पर लौटें। जब लोग, बिशपों और पुरोहितों के साथ-साथ सम्माननीय मार्सेलस भी, हिप्पोड्रोम में राजा लियो के पास जा रहे थे, तो कई श्रद्धालुओं को यह सौभाग्य मिला कि उन्होंने देखा कि कैसे परमेश्वर का एक स्वर्गदूत, सफेद वस्त्र पहने और सुनहरी कमरबंद से सुसज्जित एक सुंदर युवक के रूप में, संत मार्सेलस के साथ चल रहा था और उसकी बांह पकड़कर सहारा दे रहा था; उन्होंने यह पूरे समय देखा जब वह लोगों के साथ चल रहा था और जब वह अपने निवास के दरवाजों तक लौट रहा था। उसे दरवाजों तक पहुँचाने के बाद, वह देवदूत अदृश्य हो गया। इससे यह स्पष्ट है कि हमारे धन्य पिता मार्सेलस को ईश्वर से कितना गहरा प्रेम था, क्योंकि उन्होंने मार्सेलस की सेवा करने, और उसकी यात्रा में उसका मार्गदर्शन और रक्षा करने के लिए अपने स्वर्गदूतों को भेजा। और धर्मग्रंथ के वचन उसकी ओर से पूरे हुए: *'वह अपने स्वर्गदूतों को तेरे विषय में आज्ञा देगा—कि वे तुझे सब मार्गों में सम्हालें* (भजन संहिता 90:11)।

संन्यासी तपस्या में साठ वर्ष बिताने के बाद, पूजनीय मार्सेलस अंततः अपने धन्य निधन के करीब आ गए। और वह अपने विवेक में नबियों के समान, अपने विश्वास और ईश्वर में अटूट भरोसे में पुरखों के समान, और अपने दैनिक तपस्या में शहीदों के समान थे; ईश्वर के अपने दर्शन में, वह नबी मूसा के समान थे, जिनके बराबर वे अनुग्रह, नम्रता में थे —विश्वास के प्रति उत्साह में, प्रेरित पतरस; पवित्रता और धर्मशास्त्र में, यूहन्ना; और चंगा करने की कृपा में, सभी प्रेरितों के बराबर थे, क्योंकि वे सभी के लिए चंगा करने का स्रोत और अद्भुत आशीर्वादों की नदी थे। जब रेवरेंड फादर अपनी मृत्युशय्या पर लेटे थे, तो बहुत से भिक्षु आँसू बहाते हुए उनके चारों ओर इकट्ठा हो गए। उनमें एक कुलीन जन्म के लुसियन नामक व्यक्ति भी थे, जिन्होंने सभी सांसारिक चीजों का त्याग कर दिया था, भिक्षु जीवन में प्रवेश किया था और सदाचारी जीवन में दूसरों से आगे थे; दूसरों से भी ज्यादा विलाप करते हुए, उसने संत से विनती की कि वे उसे अपने मार्गदर्शन के बिना न छोड़ें, जैसे कि बिना पतवार के, इस सांसारिक जीवन के समुद्र में प्रलोभन की लहरों के बीच भटक जाने के लिए, बल्कि उसे अपने साथ ले जाएँ। उसे देखते हुए, आदरणीय पिता ने कहा:

'हौसला रखो, मेरे बच्चे, क्योंकि मेरे प्रस्थान के तुरंत बाद तुम भी मेरे पदचिह्नों पर चलोगे।'

पड़ोसी मठों से मठाधीश और भिक्षु इकट्ठा हुए, जबकि बिशप और कुलीनों का साम्राज्यिक शहर से आकर उस बीमार संत से मिलने और उन्हें अंतिम चूमन देने के लिए आगमन हुआ। हालांकि, पूजनीय फादर ने उनमें से प्रत्येक को उपयुक्त निर्देश दिए और उनके साथ आत्मा की भलाई और शाश्वत जीवन के बारे में विस्तार से बात की। फिर उन्होंने

[387] हिप्पोड्रोम घुड़दौड़ के लिए एक स्थल था; इसका उपयोग सभी प्रकार के बड़े सार्वजनिक समारोहों के लिए भी किया जाता था।
[388] ज़ेनो ने 474 से 476 तक शासन किया।

उनसे कुछ समय के लिए उन्हें अकेला छोड़ देने को कहा, जैसे यह संकेत देने के लिए कि वह थोड़ी देर सोना चाहते थे। जब सभी चले गए, तो वह एक धन्य और शाश्वत निद्रा में लीन हो गए, और अपनी पवित्र आत्मा को ईश्वर के हाथों में सौंप दिया[389] । उन्हें उसी चर्च में दफनाया गया जिसे उन्होंने स्वयं बनवाया था। धन्य लूसियन उनकी कफ़न पर बिना रुके रोए, और पांचवें दिन रेवरेंड उन्हें एक दर्शन में दिखाई दिए और कहा:

'तुम शोक क्यों कर रहे हो? क्या तुम्हें विश्वास नहीं है कि मैंने तुम्हारे लिए ईश्वर से मध्यस्थता की है, और तुम बहुत जल्द मेरे साथ होगे?'

इस दर्शन के तीसरे दिन बाद, लूसियन प्रभु में सो गए, अपने पिता और गुरु से आठ दिन अधिक जीवित रहने के बाद। इस प्रकार, उनके निधन के बाद भी, पूजनीय मार्सेलस ने अपनी भविष्यवाणी को पूरा किया, और वादे के अनुसार, जल्द ही अपने प्रिय शिष्य लूसियन को अपने पास ले गए, और उन संतों के सामने प्रकट हुए, जिनके समकक्ष उन्हें अपने सदाचारी जीवन के द्वारा माना गया था, सभी संतों में परम पवित्र, अपने प्रभु के साथ अनंत आनंद और प्रसन्नता में; हे प्रभु यीशु मसीह की कृपा से, हम भी उनकी प्रार्थनाओं के द्वारा इसके योग्य ठहराए जाएँ, जिनका महिमा युगानुयुग हो। आमीन।

आदरणीय मार्क गुफा-निवासी और थियोफिलस रोने वाले के जीवन।

29 दिसंबर को स्मरणोत्सव

धन्य मार्क के जीवनकाल के समय का सबसे अच्छा प्रमाण यह है कि, उनके जीवनकाल के दौरान, हमारे पूजनीय पिता थियोडोसियस के पवित्र अवशेष एक गुफा से पवित्र महान चर्च में स्थानांतरित किए गए थे। पवित्र स्वर्गदूतों के जीवन-मार्ग को अपनाकर, धन्य मार्क एक गुफा में बस गए और वहाँ रहने लगे, उन्होंने न केवल प्रार्थना के अभ्यास[390] के लिए, बल्कि दिवंगत भाइयों के दफन के लिए भी, अपने हाथों से कई कक्ष खोदने में स्वयं को समर्पित कर दिया, और खोदी हुई मिट्टी को अपने कंधों पर ढोकर बाहर ले जाते थे। इस प्रकार वह इस दैवी कार्य में अथक परिश्रम करता रहा, स्वर्ग में महान पुरस्कार की प्रतीक्षा करते हुए, फिर भी पृथ्वी पर उसे प्राप्त नहीं करना चाहता था; क्योंकि जब भी कोई उसे उसके श्रम के बदले में कुछ स्वीकार करने के लिए मजबूर करता, तो वह तुरंत जो कुछ भी प्राप्त करता उसे गरीबों को दे देता था। इसके अलावा, उस धन्य व्यक्ति ने लोहे का एक कमरबंद कसा हुआ था, जिसे वह अपने पूरे जीवन भर पहने रहता था, और दिन-रात प्रार्थना में बिताता था। अपने अखंड प्रार्थना के साथ-साथ, धन्य मार्क ने कठोर उपवास का भी अभ्यास किया; क्योंकि प्रभु स्वयं ने उपवास को प्रार्थना के साथ जोड़ा है[391] ; इसलिए, पूजनीय पिता ने एक खोखले तांबे के क्रूस से भी संयमपूर्वक पानी पिया, और उसे इस धर्मी माप से नापा। इस प्रकार , उन्होंने अंततः मानव जाति के प्राचीन शत्रु, 'जो आत्मा के पीछे लालसा करता है'[392] , को परास्त किया, और अपने शरीर को न केवल बंदी बनाकर, बल्कि परिश्रम और बेड़ियों द्वारा, नींद और भूख से परहेज़ करके, न केवल एक अंधेरी गुफा में मौन से, बल्कि पृथ्वी खोदकर, लोहे के कमरबंद, जागरण और उपवास द्वारा भी मृत्यु के घाट उतारा। देवदूत के रूप में रहते हुए, संत ने अपने कर्म से स्वयं को, मानो, अदेह प्रकट किया, ताकि वह मृत्यु से न डरे; बल्कि, मृत्यु उसके स्वर से डरती थी, जैसे महादूत की तुरही से, क्योंकि हमारे पूजनीय पिता मार्क को प्रभु से चमत्कार करने की ऐसी शक्ति प्राप्त हुई थी कि मृतक भी उसके आदेशों का पालन करते थे, जैसा कि अनेक चमत्कारों से प्रमाणित हुआ। एक अवसर पर, जब वह अपनी आदत के अनुसार एक कब्र खोद रहे थे, तो लंबे समय तक काम करने के बाद वे थक गए और उन्होंने उसे बहुत संकीर्ण और अपर्याप्त छोड़ दिया। ऐसा हुआ कि एक भिक्षु, जो पहले से बीमार था, की मृत्यु हो गई, और उसके दफ़न के लिए मार्क द्वारा खोदी गई कब्र के अलावा कोई और जगह नहीं थी। मृतक को गुफा में ले जाया गया, और वे उसे उस तंग कब्र में बड़ी मुश्किल से समा सके। तब भाइयों ने मार्क के खिलाफ शिकायत करनी शुरू कर दी, और कहा कि कब्र की तंग होने

---

[389] आदरणीय मार्सेलस की मृत्यु लगभग 486 में हुई।

[390] कीव केव्स मठ के भिक्षुओं की एकांत प्रार्थना के लिए गुफाओं में जाने की एक प्रथा थी। इस उद्देश्य के लिए, उन्होंने गुफा की दीवारों में खोखले स्थान बनाए, जिन्हें आज भी गुफाओं में देखा जा सकता है।

[391] जैसा कि दुष्टात्माओं को निकालने के संबंध में प्रभु यीशु मसीह के वचनों से देखा जा सकता है: *'इस प्रकार की किसी वस्तु से नहीं, परन्तु प्रार्थना और उपवास से ही निकलती है'* (मत्ती 17:21)।

[392] अर्थात्, शरीर, जो हमेशा आत्मा के विरुद्ध होता है (गलातियों 5:17)।

के कारण वे मृतक को ठीक से नहीं सुला सकते थे और न ही उस पर तेल डाल सकते थे। लेकिन, उस तपस्वी ने नम्रता से उनके सामने सिर झुकाया और कहा:

'मुझे क्षमा करें, पिताओं; अपनी कमज़ोरी के कारण मैं कब्र पूरी नहीं कर सका।'

लेकिन उन्होंने उस पर और भी कड़ी फटकार लगाना और डाँटना जारी रखा। तब धन्य ने मृतक से कहा:

'भाई, चूंकि जगह इतनी तंग है, तुम खुद एक तरफ हट जाओ और तेल लेकर उस पर डाल लो।'

मृत व्यक्ति ने तुरंत अपना हाथ बढ़ाया और थोड़ा उठकर तेल ग्रहण किया, उसने अपने चेहरे और छाती पर क्रूस का आकार बनाकर अभिषेक किया, और पात्र वापस कर दिया; फिर, सभी के सामने, वह लेट गया, आराम से लेट गया, और विश्राम करने लगा।

ऐसे अद्भुत चमत्कार को देखकर, सभी पर बड़ा भय और विस्मय छा गया।

एक अन्य अवसर पर, एक भाई लंबी बीमारी के बाद निधन हो गया। उसके एक मित्र ने, रिवाज़ के अनुसार, उसे स्पंज से पोंछा, और फिर गुफा में गया, यह देखने की इच्छा से कि उसके प्रिय मित्र का शरीर कहाँ विश्राम के लिए रखा जाएगा, और उसने धन्य तपस्वी मार्क से इसके बारे में पूछा।

धन्य तपस्वी ने उत्तर दिया:

'जाओ और अपने भाई से कहो कि वह अगली सुबह तक प्रतीक्षा करे, जब तक मैं उसके लिए कब्र खोदता हूँ, और फिर वह शाश्वत जीवन की विश्राम-स्थली में प्रवेश कर जाएगा।'

भाई ने संन्यासी से उत्तर दिया, 'पिताजी, मैंने तो उसके मृत शरीर को पहले ही स्पंज से पोंछ दिया है; तो अब आप मुझे यह किससे कहने के लिए भेज रहे हैं?'

मार्क ने उससे फिर कहा, 'तुम देख सकते हो कि जगह अभी तैयार नहीं है, और मैं तुमसे कहता हूँ: जाओ और मृतक से कहो: पापी मार्क तुमसे इस प्रकार कहता है: भाई, आज का दिन यहीं ठहरो, जब तक मैं तुम्हारे लिए एक कब्र तैयार करूँ, और फिर मैं तुम्हें सूचित करूँगा, और कल तुम मसीह के पास जाओगे, जिनकी तुम लालसा करते हो।'

भाई ने आज्ञा मानी और मठ पहुँचने पर उसने देखा कि सारी समुदाय मृतक के लिए प्रथागत मंत्रोच्चार कर रही थी। फिर उसने मृतक से कहा:

'भाई! मार्क कहते हैं कि तुम्हारी कब्र अभी तैयार नहीं है; इसलिए कल तक यहीं रुको।'

जैसे ही उसने ये शब्द कहे, सभी को आश्चर्यचकित करते हुए, मृत व्यक्ति ने तुरंत अपनी आँखें खोल दीं, और उसकी आत्मा वापस आ गई। और वह उस दिन और पूरी रात जीवित रहा, किसी से एक भी शब्द नहीं बोला, बल्कि बिस खुली आँखों से घूरता रहा। और सुबह, वही भाई यह देखने के लिए फिर से गुफा में गया कि क्या जगह तैयार हो गई है। संत मार्क ने उससे कहा:

'जाकर उस व्यक्ति से कहो जो जीवित हो उठा है: मार्क तुमसे कहते हैं: इस क्षणिक जीवन को छोड़ो और शाश्वत जीवन में प्रवेश करो; अपनी आत्मा ईश्वर को सौंप दो, और अपने शरीर को यहाँ गुफा में पवित्र संतों के साथ रखवा दो। क्योंकि देखो, कब्र तुम्हारे लिए पहले से ही तैयार है।'

उस भाई ने लौटकर यह सब कुछ उस जीवित हुए व्यक्ति को बताया; उसने तुरंत अपनी आँखें बंद कर लीं, अपनी आत्मा ईश्वर के हाथों में सौंप दी, और उसे सम्मानपूर्वक तैयार कब्र में, गुफा में, सुला दिया गया। और सभी इस अति महिमामय चमत्कार पर आश्चर्यचकित हुए, कि कैसे मृतक धन्य व्यक्ति के वचन से जीवित हो उठा और फिर उसके वचन पर मर गया, और उन्होंने परमेश्वर की आत्मीयता से महिमा की।

एक अन्य अवसर पर, निम्नलिखित घटना घटी। उसी पेचेर्स्क मठ में दो भाई, जॉन और थियोफिलिस थे, जो एक-दूसरे के प्रति अत्यंत प्रेम रखते थे; अपने युवा काल से ही वे हर बात में एकमत थे और समान उत्साह के साथ ईश्वर की सेवा करते थे। उन्होंने धन्य मार्क से यह अनुरोध किया कि जब प्रभु उन्हें मरने का आदेश दें, तो उनके दफन के लिए एक ही कब्र खोद दें। बहुत समय बाद, बड़े भाई थियोफिलिस मठ के काम से कहीं चले गए, जबकि छोटे भाई जॉन, जो परमेश्वर को प्रसन्न कर चुके थे, बीमार पड़ गए, मर गए, और उन्हें तैयार की गई जगह पर, की गुफा में सुला दिया गया। कुछ दिनों बाद, थियोफिलिस लौटा और अपने भाई की मृत्यु की खबर सुनकर बहुत दुखी हुआ। वह अपने साथ कुछ भाइयों को लेकर उस गुफा में गया, यह देखने की इच्छा से कि मृतक को कहाँ सुलाया गया था। लेकिन जब उसने देखा कि उसे उनके ऊपरी स्थान वाली सामूहिक कब्र में सुलाया गया था, तो थियोफिलिस को बहुत गुस्सा आया और वह मार्क के खिलाफ कड़वाहट से बड़बड़ाने लगा, यह कहते हुए:

'तुमने मेरे भाई को मेरी जगह क्यों लटिाया, क्योंकि मैं उससे बड़ा हूँ!'

लेकनि वनिम्र गुफा-नविासी ने उसके सामने सरि झुकाया और कहा:

'मुझे क्षमा करो, भाई, मैंने पाप कयिा है।'

फरि, मृतक की ओर मुड़कर, उसने कहा:

'भाई, उठो और यह जगह अपने बड़े भाई को दे दो; तुम स्वयं नचिले बस्तिर पर लेट जाओ।'

और तुरंत, उस धन्य व्यक्ति के वचन पर, मृतक उठ खड़ा हुआ और नचिले बस्तिर पर लेट गया। थयिोफलिस के साथ आए सभी लोगों ने इस चमत्कार को देखा और वे बड़े भय और आतंक से भर गए। जहाँ तक उस भाई का सवाल है जसिने धन्य मार्क के खलिाफ बड़बड़ाया था, वह उनके पैरों पर गरि पड़ा, क्षमा याचना करने लगा: 'पतिाजी, मैंने अपना भाई उसकी जगह से हटाने के लिए मजबूर करके पाप कयिा है,' उसने कहा, 'मैं आपसे वनिती करता हूँ: उसे फरि से अपनी पुरानी जगह पर लेटने की आज्ञा दें।'

लेकनि धन्य व्यक्ति ने उससे उत्तर दयिा:

'प्रभु ने स्वयं ऐसा प्रबंध कयिा है कि इस मृतक का शरीर, आपके प्रति अपने प्रेम को दखिा सके, जो उसने मृत्यु के बाद भी बनाए रखा, आपकी वरषि्ठता के प्रति समर्पण करके और आप दोनों के लिए तैयार की गई सामान्य कब्र के ऊपरी हस्सि से हटकर। प्रभु ने यह इस लिए व्यवस्थति कयिा है कि आपके बड़बड़ाने के कारण हममें उत्पन्न हुई शत्रुता का अंत हो जाए, और ताकि आपके मन में मेरे प्रति कोई द्वेष या वैरभाव न रहे। जहाँ तक मृतकों को जीवति करने की बात है, वह ईश्वर का कार्य है; परन्तु मैं एक पापी मनुष्य हूँ, और इसलिए मैं इस मृतक से यह नहीं कह सकता: 'उठो और ऊपर की जगह पर फरि से लेट जाओ।' उससे आज्ञा करो: क्या वह तुम्हारी आज्ञा नहीं मानेगा? यह भी जान लो कि तुम्हें अब गुफा छोड़नी नहीं चाहिए थी, ताकि तुम तुरंत ही अपनी वरषि्ठता का उत्तराधकिारी बन सकते और यहीं सुलाए जा सकते। परन्तु चूँकि तुम अभी प्रस्थान के लिए तैयार नहीं हो, जाओ और अपनी आत्मा के उद्धार का ध्यान रखो, और कुछ ही दनिों में तुम्हें यहाँ लाया जाएगा।

यह सुनकर थयिोफलिस शोक से भर गया, यह वश्विास करते हुए कि वह वहीं गरिकर मर जाएगा, और उसे मठ तक पहुँचने की भी कोई आशा नहीं थी। बड़ी कठनिाई से उसने अपना आप संभाला, अपनी कोठरी में लौट आया, और अवरिल वलिाप करने लगा। उसने अपना सारा सामान दान कर दयिा, अपने लिए केवल एक कमीज़ और एक लबादा रख लयिा। वह हर दनि अपनी मृत्यु के समय का इंतजार करता था, और कोई भी उसे कड़वी रोदन से नहीं रोक सकता था; जो लोग उसे सांत्वना देना चाहते थे, वे ही उसे और अधकि रुला देते थे। वे उसे कोई स्वादषि्ट भोजन चखने के लिए भी कभी मना नहीं सके: दनि-रात उसके आँसू ही उसकी रोटी थे (भजन संहति 41:4)। जब दनि का उदय होता, तो वह अपने आँसुओं से अपना चेहरा धोता और कहता:

'मुझे नहीं पता कि मैं शाम तक जीवति रहूँगा या नहीं।'

और जब रात होती, तो वह एक बार फरि आँसुओं से अपनी आँखों की रोशनी को धुंधला कर लेता, यह कहते हुए:

'कौन जाने कि मैं भोर तक जीवति रहूँगा कि नहीं!' कई लोग, सुबह उठने के बाद, शाम तक या मृत्यु की नींद के सवि कसिी और नींद तक नहीं पहुँचे; और कई लोग, सो जाने के बाद, अपने बस्तिरों से नहीं उठे। तो फरि, मुझे यह समाचार मलिते हुए कि मैं जल्द ही मरने वाला हूँ, मैं जीवति रहने की आशा कैसे कर सकता हूँ?

और रोते-रोते तथा नरिंतर उपवास करते हुए, उन्होंने प्रार्थना की कि प्रभु अपनी असीम उदारता से उन्हें पश्चाताप के लिए समय प्रदान करें। कई वर्षों तक इस प्रकार करते रहने से, उन्होंने अपने शरीर को इतना थका दयिा था कि उसकी हड्डयिाँ गनिती जा सकती थीं, और अपनी अत्यधकि आँसुओं के कारण उनकी दृष्टि चली गई थी।

हमारे पूजनीय पति मार्क ने, प्रभु के पास अपने प्रस्थान के समय का पूर्वाभास पाकर, थयिोफलिस को बुलाया और उससे कहा:

'भाई, मुझे क्षमा करना कि मैंने तुम्हें इतना गहरा दुःख पहुँचाया, और मेरे लिए ईश्वर से प्रार्थना करना, क्योंकि देखो, मैं इस संसार से जा चुका हूँ।' यदि मुझे हम्मित हो, तो मैं आपके लिए प्रभु से प्रार्थना करना नहीं भूलूँगा, कि वह हम दोनों को अपना परम पवत्रि मुख दखिाए, वहाँ एक-दूसरे को देखने का सौभाग्य दे, और हमारे पूजनीय पतिाओं, गुफाओं के एंथनी और थयिोडोरस के साथ रहने का अवसर दे।

हालाँकि थयिोफलिस ने आँसुओं के साथ उनसे उत्तर दयिा:

'पतिाजी, आप मुझे क्यों छोड़ रहे हैं? या तो मुझे अपने साथ ले चलिए, या मुझे यहाँ दृष्टि प्रदान कीजिए। मैं जानता हूँ कि अपने पापों के कारण, जब आपने मेरे मृत भाई को जीवित किया था, तो मैं आपके सामने ही गुफा में मृत पड़ा होता; परन्तु, आपकी पवित्र प्रार्थनाओं के कारण, प्रभु ने मुझे क्षमा कर दिया, मेरे पश्चाताप की प्रतीक्षा करते हुए। और अब आप मुझे वह दे सकते हैं जो मैं आपसे मांगता हूँ: कि मैं या तो आपके साथ प्रभु के पास जाऊँ, या अपनी दृष्टि फिरि से प्राप्त करूँ।"

'दुखी मत हो, भाई,' पूजनीय मार्क ने उत्तर दिया, 'कि तुम्हारी शारीरिक आँखें प्रभु के लिए अंधी हो गई हैं, क्योंकि तुमने अपनी आध्यात्मिक आँखों से सच्ची समझ देखी और प्राप्त की है, और मैं इसे एक आशीर्वाद मानता हूँ कि मैं तुम्हारी अंधापन का कारण बन् : मैंने आपकी आत्मा के हित की कामना करते हुए, और आपके सांसारिक अहंकार को नम्रता में लाने की इच्छा से आपके मृत्यु की भविष्यवाणी की, क्योंकि *'टूटा और कुचला हुआ हृदय'* (और वह नहीं जो वरिष्ठता का घमंड करता हो) *'हे परमेश्वर, तू तुच्छ नहीं जानेगा'* (भजन संहिता 50:19)। इसलिए, तुम्हें इस क्षणिक प्रकाश को देखने की कोई आवश्यकता नहीं है, बल्कि प्रभु से प्रार्थना करो कि तुम अनंत प्रकाश में उनकी महिमा को देख सको। और मृत्यु की इच्छा मत करो: वह आएगी, तुम्हारी इच्छा के विरुद्ध भी। परन्तु यह तुम्हारे प्रस्थान का तुम्हारे लिए एक संकेत हो: अपनी मृत्यु से तीन दिन पहले, तुम्हारी अन्धता दूर हो जाएगी, और तुम दृष्टि प्राप्त करके प्रभु के पास प्रस्थान करोगे, और वहाँ तुम अनन्त प्रकाश और अनुपम महिमा को देखोगे।

थेओफिलिस के निधन के बारे में यह भविष्यवाणी छोड़कर, हमारे आदरणीय पिता मार्क ने स्वयं प्रभु में अपना सांसारिक जीवन समाप्त किया और स्वर्ग में अनंत जीवन में प्रवेश किया, पुनरुत्थान के स्वयं लेखक,[393] यीशु, और सभी पवित्र भविष्यवक्ताओं के साथ, एक ऐसे व्यक्ति के रूप में जिसने मृतकों को आज्ञा दी और भविष्यवाणी की। उनके चमत्कारी अवशेष उस गुफा में संजोए गए हैं जहाँ उन्होंने स्वयं अपनी कब्र खोदी थी, और वे उन सभी पर अक्षय उपचार प्रदान करते हैं जो विश्वास के साथ उनकी पवित्र कब्र पर आते हैं; वहाँ वे लोहे की ज़ंजीरें भी रखी हैं जो रेवरेंड फादर ने पहनी थीं, और तांबा का वह क्रॉस जिससे उन्होंने पानी पिया था, और जिसे उन्होंने अपने होठों से इतना पवित्र किया कि उसमें चमत्कारी शक्ति आ गई। क्योंकि जो कोई भी विश्वास के साथ और उपवास करते हुए इस पूजनीय क्रॉस से पवित्र जल पीने आता है, उसे किसी भी औषधीय जल की तुलना में अधिक निश्चित रूप से चमत्कारिक उपचार प्राप्त होता है।

जहाँ तक धन्य थियोफिलिस का सवाल है, उनका रोना दोगुना हो गया; वे अपने पिता और गुरु, आदरणीय मार्क से अपनी वियोग और अपनी मृत्यु, जो उन्हें किसी भी दिन होने की उम्मीद थी, दोनों पर जोर-जोर से रोए। गुफा-निवासी की भविष्यवाणी को याद करते हुए, उन्होंने आँसुओं की नदी बहाई, फिर भी परिणामस्वरूप वे और भी बढ़ गए। धन्य थियोफिलिस की एक आदत थी: जब भी वह प्रार्थना में लीन होते और उनकी आँखों से भरपूर आँसू बहते, तो वे अपने नीचे एक पात्र रख लेते थे, जिस पर वे रोते थे; और कई वर्षों में उन्होंने उसे अपनी आँसुओं से लबालब भर दिया। शीघ्र ही, आदरणीय मार्क के वचन के अनुसार, उसकी दृष्टि वापस आ गई। तब थियोफिलिस को एहसास हुआ कि उसकी मृत्यु निकट है। इसलिए, उसने ईश्वर से विनती करना शुरू कर दिया कि उसकी आँसूएँ उन्हें प्रसन्न करें, और स्वर्ग की ओर हाथ उठाकर, इस प्रकार कहा:

'हे प्रभु, मानवजाति के प्रेमी, प्रभु यीशु मसीह, मेरे परमेश्वर! आप जो पापियों की मृत्यु नहीं चाहते, बल्कि उनके मन फिराने की प्रतीक्षा करते हैं; आप जो हमारी कमजोरियों को जानते हैं, परम पवित्र राजा, हे परम सान्त्वनादाता, रोगियों के स्वास्थ्य, पापियों के उद्धार, थके हुए की शक्ति, और गिरे हुए के सहारा—मैं इस घड़ी आपसे प्रार्थना करता हूँ! मेरे ऊपर, जो कि अयोग्य हूँ, अपनी दया दिखाएँ, और मेरे कड़वे आँसुओं की वर्षा को स्वीकार करें! मुझ पर अपनी कृपा की अक्षय गहराइयाँ उंडेलें, और यह अनुग्रह करें कि मैं इस जीवन की परीक्षाओं में प्रलोभन का शिकार न होऊँ[394] और न ही अंधकार के राजकुमार की शक्ति के अधीन पड़ूँ, आपके महान संतों, हमारे पूजनीय पिताओं की प्रार्थनाओं के द्वारा, एंटनी और गुफाओं के थियोडोसियस, और सभी संतों ने जो आदिकाल से आपको प्रसन्न किया है।

जब धन्य थियोफिलिस ने यह प्रार्थना कही, तो प्रभु का एक स्वर्गदूत एक सुंदर युवक के रूप में उसके सामने प्रकट हुआ और कहा:

---

[393] अर्थात्, जिन्होंने पुनरुत्थान की शुरुआत की, मृतकों में से पहले उठने वाले।

[394] शब्द 'मथिरस्ट्वो' का शाब्दिक अर्थ है: एक सीमा शुल्क घर जहाँ शुल्क वसूला जाता था; विस्तार से कहें तो, लूट-खसूट और अत्याचार का स्थान। आध्यात्मिक अर्थ में, 'मथिरस्ट्वो' शब्द शरीर छोड़ने के बाद, उस पर ईश्वर के न्याय से पहले, दुष्ट आत्माओं द्वारा हवा में दी जाने वाली आत्मा की यातनाओं को संदर्भित करता है।

'थेओफलिस, तुम अच्छी प्रार्थना करते हो, परन्तु तुम अपने बहाए हुए आँसुओं की संख्या का घमंड क्यों करते हो?'

और स्वर्गदूत ने उसे अपना पात्र दिखाया, जो थियोफलिस के पात्र से कहीं बड़ा था, और जो कीमती मूर के इत्र जैसी सुगंध से भरा हुआ था।

'ये हैं तुम्हारे आँसू,' देवदूत ने कहा, 'जो तुमने प्रार्थना में अपने हृदय से बहाए और जिन्हें तुमने अपने हाथ से, तौलिये से या अपने कपड़ों से पोंछा, या जो तुम्हारी आँखों से गिरकर जमीन पर गिर गए। मैंने उन्हें इस पात्र में एकत्र किया है और अपने प्रभु और सृष्टिकर्ता की आज्ञा से संरक्षित किया है। और अब मुझे तुम्हें शुभ समाचार देने के लिए भेजा गया है, ताकि तुम उस तक आनंद के साथ जा सको जिसने कहा: *'धन्य हैं जो शोक करते हैं, क्योंकि उन्हें सांत्वना दी जाएगी'* (मत्ती 5:4)।

यह कहकर और पात्र को वहीं छोड़कर, स्वर्गदूत अदृश्य हो गया। धन्य थियोफलिस ने मठाधीश को बुलाया, उसे स्वर्गदूत के प्रकट होने और उसके वचनों के बारे में बताया, और उसे आँसुओं से भरे दोनों पात्र भी दिखाए: एक उनके अपने आँसुओं का, और दूसरा स्वर्गदूत के आँसुओं का, जो किसी भी इत्र से भी अधिक सुगंधित थे, और निवेदन किया कि उनके देहांत पर, उन्हें उनके शरीर पर डाल दिया जाए। अपनी दृष्टि वापस पाने के तीसरे दिन, वह परम पवित्र त्रिमूर्ति के दर्शन के लिए प्रभु के पास चले गए। उनके पवित्र शरीर को उनकी प्रिय बहन, धन्य योहन, के पास, पवित्र मरकुस के समीप, गुफा में सुलाया गया। और उन्होंने उन्हें 'दिव्य पात्र' से अभिषिक्त किया, जिससे पूरी गुफा सुगंध से भर गई। फिर उन्होंने उन पर आँसुओं का एक और पात्र ढाला, ताकि जो पृथ्वी पर आँसुओं से बोया था, वह स्वर्ग में आनंद से कटनी कर सके। उन्हें यह आनंद उनके पूजनीय गुरु, गुफा-निवासी और चमत्कार-कर्ता मार्क की मध्यस्थता से, और ईश्वर की कृपा से प्राप्त हुआ; त्रिमूर्ति में महिमामय, उसी को सर्व महिमा अर्पित हो, अब और सदा के लिए और युगों-युगों तक। आमीन।

आदरणीय थैडियस, कबुलीदाने वाले की स्मृति[395]

29 दिसंबर को स्मरणोत्सव

परम पूज्य थैडियस प्रतिमा-भंजक विधर्म के शासनकाल में रहते थे। जब उन्हें, अन्य लोगों के साथ, पकड़कर मुकदमे के लिए लाया गया, तो दुष्ट प्रतिमा-भंजकों ने उन्हें एक पवित्र प्रतिमा को पैरों तले कुचलने के लिए मजबूर करने का प्रयास किया, लेकिन वे ऐसा करने में असमर्थ रहे। तो उन्होंने ऐसा किया: उन्होंने उद्धारकर्ता के प्रतिमा को ज़मीन पर रख दिया और जबरदस्ती संत थैडियस को उस पर बिठा दिया; और यद्यपि उन्होंने अपनी पूरी ताकत से विरोध किया, फिर भी उन्हें, अपनी इच्छा के विरुद्ध, बलवान पुरुषों द्वारा उस पर दबाए जाने के कारण, पवित्र प्रतिमा पर पैर रखने के लिए मजबूर किया गया। तब यातना देने वाले ने उनसे कहा:

'यहाँ तुम अपने ही मसीह की प्रतिमा को रौंद रहे हो; तो फिर तुम हमारा विरोध क्यों करते हो? अब तुम्हें हमारे साथ सहमत होना ही होगा।'

लेकिन मसीह के स्वीकारकर्ता ने उत्तर दिया:

'हे शापित, दुष्ट मनुष्य, जो हर प्रकार की अशुद्धियों से भरा है! मैंने यह अपनी इच्छा से नहीं किया—ईश्वर न करे—बल्कि तुम्हारी विश्वासघात और अन्यायपूर्ण निर्णय के कारण मुझे जबरदस्ती करने के लिए मजबूर किया गया। मैं तो अपने प्रभु मसीह की प्रतिमा की पूजा करता हूँ, और उसे चूमता हूँ, और मैं इसके लिए आनन्दपूर्वक मरना चाहता हूँ।'

इन शब्दों से लज्जित होकर, दुष्ट यातना देने वाले ने संत को डंडों से तब तक पीटने का आदेश दिया जब तक कि वह मर न जाए। और जब उन्होंने यह तय कर लिया कि वह मर चुका है, तो उन्होंने उसे उसके पैरों से पकड़कर शहर से बाहर घसीटा। जैसे मृतक की तरह, बाजार और कीचड़ से होकर घसीटे जाने के बाद, संत थैडियस को शहर की दीवार के

---

[395] 'कन्फैसर' वे लोग हैं जिन्होंने विश्वास के लिए हो रहे उत्पीड़न के दौरान खुलेआम खुद को ईसाई बताया और यातनाएँ सहन कीं, फिर भी जीवित रहे। ईसाइयों में उनकी विशेष प्रतिष्ठा थी: इसीलिए उन्हें गिर चुके या अपने विश्वास से मुंह मोड़ चुके लोगों को चर्च में पुनःशामिल करने का अधिकार प्राप्त था।

नीचे फेंक दिया गया। वहाँ एक धर्मनिष्ठ ईसाई ने उन्हें पाया और जब वे अभी भी साँस ले रहे थे, तो उन्होंने उनके शरीर से कीचड़ धोया। इसके बाद, संत थैडियस तीन दिन और जीवित रहे और उन्होंने अपना प्राण ईश्वर को अर्पित कर दिया[396] ।

12 जनवरी

30 दिसंबर (पुराना तरीका)

पवित्र शहीद कुंवारी अनिसिया का कष्टकथा

30 दिसंबर को स्मरणोत्सव

दुष्ट सम्राट मैक्सिमियन के शासनकाल में[397] , थ्रेसैलोनिका के गौरवशाली नगर में[398] एक युवती रहती थी, जिसका नाम अनीसिया था, जो धनी ईसाई माता-पिता की बेटी थी, जिन्होंने उसे ईश्वर के भय में पाला, ताकि वह वर्षों की अपेक्षा गुणों में अधिक तेजी से बढ़े, क्योंकि उसके माता-पिता ने उसे दूध के बजाय विश्वास और धार्मिकता के सत्यों से पोषित किया। जब उसकी शैशवावस्था समाप्त हो गई और अनिसिया एक सुंदर युवती बन गई, तो उसके माता-पिता ने उसे धर्मग्रंथों की सारी बुद्धिमत्ता में सावधानीपूर्वक शिक्षित किया। बुद्धि से संपन्न, अनिसिया ने सब कुछ जल्दी और आसानी से सीख लिया और अपने कार्यों में अपने ज्ञान का योग्य फल दिया। ईश्वर की आत्मा से परिपूर्ण , उसमें वास्तव में एक दैवी स्वभाव था, जबकि उसका चेहरा अतुलनीय सुंदरता से दमकता था। उस समय, वह शायद ही कभी घर से बाहर निकलती थी और अपने कमरे में अपनी युवा सुंदरता को छिपाए हुए, अक्सर दुख के साथ अपने आप से कहती थी:

'हे युवा जीवन के धोखेबाज़, जो कुछ को नष्ट करता है और स्वयं दूसरों द्वारा नष्ट हो जाता है! वृद्धावस्था अच्छी है, परन्तु हाय मेरी दुर्दशा! समय की लंबाई मुझे दुख से भर देती है, क्योंकि मुझे इसके लिए कई साल इंतज़ार करना होगा; कई साल मुझे स्वर्ग से अलग करते हैं!'

और एनीशिया मसीह से सहायता की याचना करना कभी बंद नहीं करती थी, वह घुटनों के बल झुककर जमीन पर भरपूर आँसू बहाती थी। जब उसके माता-पिता का निधन हो गया और वह अपने पिता की संपत्ति की वारिस बनी, तो वह इस बात पर विचार करने लगी कि उसे अपनी संपत्ति का क्या करना चाहिए। क्योंकि उसके माता-पिता ने चाँदी और सोने का विशाल खजाना, विशाल संपत्तियाँ, विशाल झुंड, अनगिनत पुरुष और महिला दास, रेशम और सोने की कढ़ाई वाले कपड़ों के अनमोल वस्त्र, और मोतियों तथा कीमती पत्थरों से सुसज्जित सुनहरे पात्र, जो अपनी भव्यता में शानदार थे, इकट्ठा कर रखे थे। यह सब देखकर, संत एनीशिया ने कहा:

'इतनी सांसारिक संपत्ति के बीच कोई कैसे बच सकता है? कोई प्राचीन सर्प, शैतान, के सिर पर कैसे पैर रख सकता है, और उसकी शक्ति पर कैसे विजय प्राप्त कर सकता है? लेकिन मुझे पता है कि क्या करना है: मैं उस सर्प की ही चालाकी का इस्तेमाल उसके खिलाफ करूँगी। जिस प्रकार वह स्वयं हर साल अपनी पुरानी खाल उतारकर खुद को नया करता है, उसी प्रकार मैं भी अपनी संपत्ति से छुटकारा पाऊँगी। क्योंकि वे उन लोगों को बहुत नुकसान पहुँचाती हैं जो उनका बुरा उपयोग करते हैं और उन सभी को एक लाइलाज जहर से मार डालती हैं जो उन्हें संचित करते हैं; जबकि कंजूस और निर्दयी उनकी बेड़ियों और जालों में बँधे रहते हैं। जायदाद का स्वामित्व क्रोध को बढ़ावा देता है और धोखे और अन्यायपूर्ण साधनों से धन संचय की ओर ले जाता है; महँगे वस्त्र व्यर्थ के आचरण को सिखाते हैं और मनुष्य को पाप की ओर ले जाते हैं; सोने की जंजीरें और हार मनुष्य को गर्व से सिर उठाने के लिए मजबूर करते हैं, क्योंकि वे चाहते हैं कि लोग उन्हें देखें और उनकी प्रशंसा करें। मैं उनके साथ ऐसा व्यवहार करूँगी: मैं उनकी स्वाभाविक स्वामिनी बनूँगी, इससे

---

[396] आदरणीय थैडियस द कन्फैसर की मृत्यु 818 में हुई।

[397] सम्राट मैक्सिमियन ने 284 से 305 तक शासन किया।

[398] थेस्सालोनिकी - मैसेडोनिया का एक बहुत ही महत्वपूर्ण, प्राचीन शहर, जो एजियन सागर (द्वीपसमूह) पर थेस्सालोनिकी की बड़ी खाड़ी या फर्ला की खाड़ी के अंदर स्थित है। आज, यह शहर, जिसे थेस्सालोनिकी के नाम से जाना जाता है, कॉन्स्टेंटिनोपल के बाद यूरोपीय तुर्की में एक बहुत बड़ी आबादी वाला प्रमुख वाणिज्यिक और विनिर्माण केंद्र है।

पहले कि वे मुझ पर अस्वाभावकि प्रभुत्व जमा लें। मैं सचमुच उनकी स्वामनिी बनूँगी और उन्हें सामान्य भलाई के लिए बाँटूँगी, साथ ही साथ उनके द्वारा उत्पन्न प्रलोभनों से बचूँगी। मैं उनके लिए एक मजबूत सुरक्षा-व्यवस्था ढूंढूंगी: मैं उन्हें, जैसे कसिी कोष को सौंपते हैं, वधिवाओं, अनाथों और गरीबों के घरों को सौंप दूंगी। और मेरा जमानतदार, प्रभु, वशि्वासयोग्य है, जो मुझे न केवल दोगुना, बल्कि सौ गुना फल देगा, और मुझे अनंत जीवन का सहभागी बनाएगा। मैं सब कुछ दे दूँगी ताकि मुझे सब कुछ सौ गुना होकर पूरी तरह वापस मलि सके, और, इसे दे देने के बाद, मैं मसीह का क्रूस उठा लूँगी। क्योंकि तब मेरे लिए मसीह का अनुसरण करना आसान होगा, सांसारकि चीज़ों को पृथ्वी पर छोड़कर, ताकि मैं स्वर्ग में स्वर्गदूतों के साथ रह सकूँ। वनिाशकारी और अशुद्ध जीवन से बचना और अमर जीवन तथा आध्यात्मकि कर्मों की इच्छा करना बेहतर है। मैं अस्थायी को शाश्वत के लिए बदलूँगा: मैं एक अमर ववािह का सम्मान करूँगा, पवत्रि रहूँगा, और अपने शरीर को सृष्टकिर्ता के लिए शुद्ध रखूँगा। अब सौदा करने का समय है, जब तक बाज़ार खुला है। ईश्वर करे कि उत्पीड़न और कष्ट मेरे लिए स्वर्ग में इनाम का कारण बनें। ईश्वर करे कि मेरे यातना देने वाले और मेरे दुख मेरे लिए स्वर्ग की खुशयिों का मार्ग खोलें, और मेरे घाव और मेरी जेल मुझे मसीह के महल तक ले जाएँ; क्योंकि केवल पुरुष ही इनाम नहीं पाते, बल्कि महलिाएँ भी मुकुटों की योग्य मानी जाती हैं।

इस प्रकार उसने अपने मन में कहा और आँसुओं के साथ प्रार्थना की:

हे प्रभु, यीशु मसीह! मेरी रोशनी! अमरत्व के स्रोत! अक्षयत्व की जड़, जो एक कुँवारी के गर्भ में अकथनीय रूप से गर्भ धारण हुए, और जन्हिोंने अपने जन्म के बाद अपनी परम पवत्रि माता को क्षय से बचाया! हे दयालु प्रभु, कृपा करें कि मैं भी कुँवारयिों में गनिी जाऊँ और आपके महल से वंचति न रहूँ! मुझे बुद्धमिान कुँवारयिों में गनि लीजएि (मत्ती 25:1–12) और यह अनुग्रह कीजएि कि मैं एक अवलिुप्त दीपक के साथ आपसे मलिूँ, ताकि मैं बनिा कसिी दोष के अपना कार्य पूरा करके आपकी महमिा में सहभागी हो सकूँ!

इस प्रकार प्रार्थना करने के बाद, संत एनीशयिा ने तुरंत अपनी सारी संपत्ति बेच दी, और ऐसा न तो उस मूल्य पर कयिा, जतिनी उसकी कीमत थी, और न ही बाजार के लेन-देन में प्रचलति तरीके से। क्योंकि उन्होंने खरीदार से कहा:

'जान लो कि ये बकिने वाली वस्तुएँ गरीबों और ज़रूरतमंदों की हैं। इसलिए, एक उचति मूल्य नर्धिारति करो, ताकि तुम्हें भी कुछ इनाम मलि सके, क्योंकि प्रभु धर्मी है और धार्मकिता से प्रेम करता है, और धार्मकिता के अनुसार इनाम देता है।'

जब सारी संपत्ति बिकि गई, तो उन्होंने उससे प्राप्त धन को गरीबों और जेल में पीड़ति लोगों में बाँटना शुरू कर दयिा। स्वयं सभी काल-कोठरयिों में प्रवेश करते हुए, संत ने न केवल आवश्यक सभी चीजें उपलब्ध कराईं, बल्कि कैदयिों की सेवा भी अपने हाथों से की, वशिेष रूप से उन लोगों की जो बहुत यातना और चोट के बाद अपनी देखभाल करने में असमर्थ थे। वह ऐसे लोगों की देखभाल करती थीं, उन्हें मलहम लगाती थीं और उनके घावों पर पट्टी बाँधती थीं; उन्होंने दुख में डूबे लोगों को सांत्वना दी, बस्तिर पर पड़े रोगयिों से मुलाकात की और अपनी संपत्ति से उनकी सहायता की; वह चौराहों और गलयिों में घूमीं और उदार हाथ से, सभी गरीबों और गंदगी में पड़े बीमारों को, जहाँ भी उन्हें मलि, भरपूर सहायता प्रदान की। ऐसा करते हुए, उन्होंने अपने आप से कहा:

'मैं धन-संपत्ति में न तो सांत्वना ढूंढूँगी और न ही सुख, जो न्याय के दनि पानी की एक बूंद के बराबर भी नहीं होगा।'

जब एनीशयिा ने अपना सब कुछ, आखरिी सक्कि के तक खर्च कर दयिा, और अपने लिए कुछ भी नहीं छोड़ा, तो वह एक छोटे से कमरे में अलग-थलग हो गई और, अपनी मेहनत से, अपने शरीर के लिए आवश्यक भोजन प्रदान करना शुरू कर दयिा, प्रेरति के वचनों का पालन करते हुए: *'यदि कोई काम नहीं करना चाहता, तो उसे खाना भी नहीं चाहिए* (2 थस्सिलुनीकयिों 3:10), क्योंकि ईसाइयों के लिए यह उचति है कि वे अपने हाथों की मेहनत से अपना भरण-पोषण करें। प्रार्थना और उपवास में स्वयं को समर्पति करते हुए, अनसियिा इस प्रकार रहती थीं मानो वे अदेह हों। तपस्या और कठोर जीवन की आदी होकर, वह अपने दनि श्रम और पवत्रि धर्मग्रंथों को पढ़ने में, और अपनी रातें भजन-गायन और प्रार्थना में बतिाती थीं। ज़मीन ही उसका बस्तिर थी; नरम बस्तिर के बजाय उसके पास केवल एक खपच्चयिों का चटाई था; गर्म कंबलों के बजाय वह पतले-पतले कपड़े पहनती थी; वह बहुत कम सोती थी, क्योंकि वह अपने आप से कहा करती थी:

'जब मेरा दुश्मन जाग रहा हो तो मेरे लिए सोना सुरक्षति नहीं है।'

साथ ही, संन्यासनिी ने भरपूर आँसू बहाए, और उसकी आहें उसके होठों से नकिलने वाले शब्दों से भी अधकि थीं। वह दव्यि प्रेम में इतनी गहराई से डूबी हुई थी कि जब वह प्रार्थना में घुटनों के बल झुकती थी, तो उसे ऐसा लगता था मानो

वह उद्धारकर्ता के पैरों पर गिर रही है और उन्हें चूम रही है, और अपने बालों से प्रभु के पैरों की धूल पोंछ रही है[399] । यह विचार उसके भीतर आँसुओं की धाराएँ बहा गया, ठीक वैसे ही जैसे प्राचीन काल की उस स्त्री ने रोते हुए प्रभु के पैरों को अपनी आँसुओं से धोया और उन्हें अपने सिर के बालों से पोंछा था (लूका 7:36–50); और उसमें शरीर के बंधनों से मुक्त होकर मसीह के साथ रहने की अनवरत इच्छा थी। और जब वह प्रार्थना करती, तो वह अपनी छाती पर हाथ मारती और कहती:

– सर्वशक्तिमान प्रभु, परमेश्वर, अपने एकलौते पुत्र, हमारे प्रभु, परमेश्वर और उद्धारकर्ता यीशु मसीह के पिता, जो अपनी महिमा के सिंहासन पर विराजमान हैं! आप, जिनकी सेवा हजारों-हजारों महादूत करते हैं, और जिनके सामने '[400] ' की भीड़ खड़ी रहती है, जो आपके सिंहासन, प्रभुत्व, प्रधानताओं और शक्तियों की आज्ञा का पालन करती है; आप जिनकी केरूबी स्तुति करते हैं और सेराफ़ी निरंतर महिमा करते हैं[401] , तीन-पवित्र भजन का उद्घोष करते हुए! आप, जिन्होंने आपके विरुद्ध विद्रोह करने वाली आत्माओं को नरक की खाइयों में डाल दिया, और साँप—जिसे आपकी कृपा से वंचित कर दिया गया था—को अटूट जंजीरों से बाँध दिया; आपने उसका सिंहासन पृथ्वी पर गिरा दिया, उसे उसकी स्वर्गीय सेवा और धन्य जीवन से वंचित कर दिया, और क्रूस की लज्जा द्वारा उसके घमंड को कुचल दिया! आप, जिन्होंने हमें अपनी निर्मल गर्भ से परमेश्वर का वचन, हमारी आत्माओं का अनंत उद्धारकर्ता भेजा, जो पवित्र आत्मा और कुँवारी मरियम से उत्पन्न हुए, और उनके द्वारा खोए हुए को ढूँढ़ा, कमज़ोरों को बल दिया, और टूटे-दिल वालों को चंगा किया! मैं, आपकी विनम्र और पापी दासी, पूरे हृदय से आपको पुकारती हूँ। हे प्रभु, जो प्रत्येक मनुष्य के विचारों को जानते हैं, जिन्होंने मेरे हृदय में आपके प्रति उत्कट प्रेम जगाया है, आओ और मुझे, अपनी अयोग्य दासी को, बचाओ, क्योंकि मैं आपको चाहती हूँ, मैं आपको खोजती हूँ, और मैं अपनी सारी शक्ति से आपसे चिपकी हूँ। हे प्रभु परमेश्वर और पुत्र, मेरे इस प्रार्थना को स्वीकार कीजिए, जो एक पश्चात्तापी हृदय और नम्र आत्मा से आपके समक्ष अर्पित की गई है। हे यीशु मसीह, मुझे तुच्छ न समझो, जिसके लिए आपको सूली पर चढ़ाया गया, गालों पर थप्पड़ मारा गया, और जिसके लिए आपने सिरके में मिला हुआ पित्त पिया, एक कड़वी मृत्यु का स्वाद चखा, तीसरे दिन मरे हुओं में से जी उठे, स्वर्ग में आरोहण किया, और पिता के दाहिने हाथ बैठ गए: मुझे लज्जित न करें या अपनी दासियों में से मुझे बाहर न निकालें, बल्कि मुझे आपके पवित्र क्रूस के सदृश एक ईसाई मृत्यु प्रदान करें! मुझे अपने दुखों में सहभागी बनाएं, ताकि मैं आपके सामने प्रकट होने के योग्य बन सकूँ। मुझे आपके प्रति विश्वासयोग्य बनाए रखें! *'तेरा भय मेरे शरीर को कम्पित कर देता है, और मैं तेरे न्याय से डरता हूँ'* (भजन संहिता 118:120), *'मेरी आँखें फेर दो, ताकि वे व्यर्थता पर न देखें; मुझे अपने मार्ग में जीवित रख* (भजन संहिता 118:37), परन्तु *'मेरी आँखें खोल'*, मैं तुझ से विनती करता हूँ, *'ताकि मैं तेरे नियम के आश्चर्यकर्म देख सकूँ'* (भजन संहिता 118:18)। भजन संहिता 118–। मैं अपनी माँ के गर्भ से ही आपके भरोसे हूँ; आप ही मेरे प्रभु हैं! *'क्योंकि मेरे पिता और मेरी माता ने मुझे त्याग दिया है'* (भजन संहिता 26:10)। परन्तु हे यहोवा, तूने मुझे अपना लिया है। मेरे मार्गों को सीधा कर, ताकि तेरा दास लज्जित न हो, परन्तु *'मुझे अपनी अनुग्रह का कोई चिन्ह दिखा'* (भजन संहिता 85:17) और मेरी विनती मान, क्योंकि *हे यहोवा! मेरी सारी इच्छाएँ तेरे सामने हैं, और मेरी आह तुझ से छिपी नहीं है'* (भजन संहिता 37:10)। और मैं फिर से तुझ से प्रार्थना करता हूँ, हे परमेश्वर पिता, मेरी सहायता कर, कि तेरे दास पर कोई पाप न पाया जाए; क्योंकि मैं अपना बलिदान तुझे अर्पण करता हूँ। तब मुझे भेड़ों और बछड़ों की होमबलि और के रूप में मोटे मेमनों की भीड़ के रूप में स्वीकार करें; मेरी बलिदान आपके सामने हो। और यह अनुग्रह करें कि मैं आपके निर्दोष मेमने, यीशु मसीह का अनुसरण करूँ, जिसके द्वारा पवित्र आत्मा सहित आपको युगानुयुग महिमा, सम्मान और शक्ति प्राप्त हो, आमीन।

इस प्रकार प्रार्थना करने के बाद, संत एनीशिया उठीं और उन्होंने क्रॉस का चिह्न बनाया। मानव जाति के धूर्त शत्रु ने यह सब देखा और वह उनके दैवीय और स्वर्गीय जीवन को सहन नहीं कर सका। उसने देखा कि वह आत्मा में पहले से ही स्वर्ग में उपस्थित थी और मसीह के लिए पीड़ा सहने की पूरी आकांक्षा रखती थी; और उसने उसके प्रति अपने दाँत पीसे और उसके कक्ष को हिलाने और पलटने का प्रयास किया: लेकिन, उसे क्रूस के चिह्न से हर तरफ से सुरक्षित देखकर, वह अदृश्य प्रहारों से भगाया गया हो, वैसे ही भाग गया। हालाँकि, कभी-कभी वह संत में आलस्य और

---

[399] संत अनसिया की दैवीय लिटिर्जी, 'हे प्रभु, मैंने पुकारा है' पर दूसरा स्टिचेरा।

[400] अंधकार के दस हजार।

[401] सराफ़ीम, खेरुबिम, सिंहासन, प्रभुत्व, शक्तियाँ, प्रधानताएँ, महादूत और स्वर्गदूत – दैवीय आदेश, जिनमें से पवित्र चर्च कुल नौ को मान्यता देता है।

निराशा की भावना भरने में सफल हो जाता था; फिर भी वह तुरंत उसकी विश्वासघात को कुचल देती थी, और निरंतर प्रार्थना से स्वयं को एक दीवार की तरह ढक लेती थी। और सत्य का शत्रु दुखी हुआ और अपने आप से कहने लगा:

'हाय मुझ पर, शापित पर! मैंने अपने पीछे-पीछे स्वर्ग से स्वर्गदूतों को नीचे खींचा है; मैंने कई शक्तिशाली लोगों को वश में किया है; फिर भी अब युवक और युवतियाँ मुझ पर हँसते हैं। वे जीवन से अधिक मृत्यु से प्रेम करते हैं, और, उससे मुकुटित होकर, वे स्वर्ग की ओर दौड़ पड़ते हैं, इस दुनिया को मेरे लिए खाली छोड़कर। शहीद हुए हज़ारों की लहू ने मुझे सांत्वना दी, लेकिन उनके विश्वास, उनके कर्म और उनके उपदेशों ने पूरे शहरों और राष्ट्रों को बदल दिया है। मेरे मंदिर नष्ट किए जा रहे हैं, मेरे भविष्यवाणी केंद्र मौन हो गए हैं, मेरे वेदी उलट दिए जा रहे हैं, और जो पुरोहित कभी आनंदित होते थे, वे अब निराशा से भर गए हैं। मेरे विनाश के लिए, हर जगह क्रूस खड़ा किया जा रहा है और मेरा राज्य खंडहर में बदल रहा है, क्योंकि जो अपने कष्टों में आनंदित थे, वे अपनी कब्रों में भयानक हैं: वे मुझे जलाते हैं, मुझे पीटते हैं और मुझे हर जगह से भगा देते हैं; और जो मैंने उनके खिलाफ रचा था, वह मेरे लिए एक और भी बड़ी विपत्ति बन गया है। लेकिन मैं जानता हूँ कि उनके साथ क्या करना है: मैंने एक नई युक्ति सोची है।

और तुरंत शत्रु निम्नलिखित योजना बनाता है: पवित्र शहीदों की महिमा को विस्मृति की धूल में दफनाने की इच्छा से, ताकि आने वाली पीढ़ियाँ उन्हें याद न करें, उनके कार्यों को अज्ञात कर दें और उन्हें किसी भी रिकॉर्ड से वंचित कर दें, ईर्ष्यालु ने यह व्यवस्था की कि ईसाइयों को बिना मुकदमे या न्याय के हर जगह मौत के घाट उतार दिया जाए, अब राजाओं और सैन्य कमांडरों द्वारा नहीं, बल्कि सबसे सामान्य और सबसे नीच लोगों द्वारा। दुष्ट शत्रु को यह एहसास नहीं था कि ईश्वर शब्दों की नहीं, बल्कि केवल सद्भावना की मांग करते हैं।

कई ईसाइयों का संहार करने के बाद, शैतान के उकसावे पर, मैक्सिमियिन ने थकान का नाटक किया। निष्पापों के रक्त से तृप्त होकर, वह एक रक्तरंजित दरिंदे की तरह हो गया, जो जब मांस से तृप्त हो जाता है और अब और खाना नहीं चाहता, तो ऐसा प्रतीत होता है मानो वह शांत हो और गुजर रहे जानवरों पर कोई ध्यान नहीं देता; इसी तरह इस दुष्ट यातनाकर्ता ने भी, हत्या से विमुख होकर, सौम्यता का नाटक किया। उसने कहा:

'ईसाई राजा की उपस्थिति में मृत्युदंड के योग्य नहीं हैं। उनकी पूछताछ करने और उनका न्याय करने, या उनके शब्दों और कर्मों को दर्ज करने की क्या आवश्यकता है?' क्योंकि इन अभिलेखों को वही लोग पढ़ेंगे और पीढ़ी-दर-पीढ़ी आगे बढ़ाएंगे जो उसी ईसाई धर्म को मानते हैं, और फिर उनकी स्मृति का हमेशा के लिए जश्न मनाया जाएगा। तो फिर, मैं ऐसा आदेश क्यों न दूँ कि उन्हें बिना पूछताछ या अभिलेखों के, जानवरों की तरह काट दिया जाए, ताकि उनकी मृत्यु अज्ञात रह जाए और उनकी स्मृति को मौन में दबा दिया जाए?'

यह निर्णय लेने के बाद, दुष्ट राजा ने तुरंत पूरे देश में एक फरमान जारी किया, ताकि जो कोई भी चाहे, वह बिना किसी मुकदमे या हत्या की सज़ा के डर के, ईसाइयों को मार सके। और इस प्रकार अनगिनत ईसाइयों को हर देश, शहर और गाँव में, चौराहों और सड़कों पर, प्रतिदिन मौत के घाट उतार दिया गया। जो कोई भी किसी विश्वासी से मिलता, जैसे ही उसे यह पता चलता कि वह एक ईसाई है, वह तुरंत, बिना एक शब्द बोले, हाथ में जो कुछ भी आता, उससे उस पर वार करता, या उसे चाकू मारता, या तलवार या किसी अन्य हथियार से—चाहे वह पत्थर हो या लाठी—काटकर गिरा देता और उसे एक जानवर की तरह मार डालता, ताकि धर्मग्रंथ के वचन पूरे हों: *'परन्तु तेरे नाम के कारण हम दिन भर वध के लिये घातक ठहराए जाते हैं; हम ऐसे गिने जाते हैं जैसे वध के लिये भेड़ें'* (भजन संहिता 43:23)।

ईसाइयों के लिए उन क्रूर समयों में, संत अनिसिया, मसीह के लिए मरने की इच्छा से जलते हुए दिल के साथ, एक बार आत्मा से प्रेरित होकर अपने कक्ष से निकलीं और प्रभु के मंदिर के लिए निकल पड़ीं। जब वह तथाकथित कसान्ट्रियोटियन द्वार से गुज़रीं, तो उन्होंने भीड़ में हलचल सुनी। उस दिन अधर्मी सूर्य के त्योहार का उत्सव मना रहे थे और अपनी अशुद्ध बलिदान चढ़ा रहे थे। और देखो, राजा के एक सैनिक ने, उसकी ओर आते हुए, उस सुंदर कन्या, संत अनिसिया को देखा, और स्वयं शैतान के उकसाने पर, उसे रोक लिया और कहा:

'रुक जा, कन्या, और मुझे बता कि तू कहाँ जा रही है?'

उसकी निर्लज्जता और दुस्साहस को देखकर, और इसे शत्रु द्वारा दी गई परीक्षा मानकर, उसने उसी के सामने क्रॉस का चिह्न बनाया। लेकिन सैनिक उस कुंवारी की पवित्र मौनता से लज्जित नहीं हुआ; बल्कि, उसे अपने लिए अपमान और तिरस्कार की अभिव्यक्ति मानकर, उसने उसे एक जानवर की तरह पकड़ लिया, जैसे एक भेड़िया भेड़ को पकड़ता है, क्योंकि वास्तव में वह एक जानवर से भी अधिक क्रूर था, और धमकी भरे स्वर में उसने उससे पूछा कि वह कौन थी

और कहाँ से आ रही थी। उसकी पकड़ से आजाद होने और उसकी अभद्र, स्थिर निगाहों से खुद को मुक्त करने की चाह में, मसीह की उस मेमनी ने एक सौम्य उत्तर देकर उससे छुटकारा पाने की कोशिश की और कहा:

'मैं मसीह की दासी हूँ और चर्च जा रही हूँ।'

लेकिन उस निर्लज्ज योद्धा ने, अपने भीतर के राक्षस के उकसावे पर, पलटकर कहा:

'मैं तुम्हें जाने नहीं दूँगा, लेकिन मैं तुम्हें उस जगह ले जाऊँगा जहाँ हमारे देवताओं को बलिदान चढ़ाया जाता है, क्योंकि आज हम सूर्य का त्योहार मना रहे हैं।'

जैसे ही वह बोला, उसने जबरदस्ती उसके सिर से घूंघट हटाने की कोशिश की, ताकि उसका चेहरा पूरी तरह से दिख जाए; लेकिन उसने बहादुरी से उसका विरोध किया और अपने सिर को खुला करने की अनुमति नहीं दी; इसके बजाय, उसने उसके चेहरे पर थूक दिया और घोषणा की:

'हे शैतान, ईश्वर न करे!'

तब सैनिक, मसीह का नाम सहन न कर सका, उसने अपनी तलवार खींची और उसकी बगल में वार कर उसे भेद दिया। पवित्र कन्या ज़मीन पर गिर पड़ी और जैसे ही उसका खून बहने लगा, उसने अपनी पवित्र आत्मा अपने प्रभु मसीह के हाथों में सौंप दी, जिससे वह प्रेम करती थी और जिसके लिए उसने अपने पूरे जीवन में मरने की तीव्र इच्छा की थी। जो राहगीर इस घटना के साक्षी बने, वे उसके चारों ओर इकट्ठा हो गए जब वह खून के एक तालाब में मृत पड़ी थी; कुछ लोग उसके युवा जीवन और क्रूर मृत्यु पर रोए, जबकि अन्य उस अधर्मी राजा के खिलाफ बड़बड़ाए जिसने निर्दोष लोगों को नष्ट करने के लिए इतना कठोर कानून बनाया था। कुछ विश्वासियों ने उसके पवित्र अवशेषों को लिया और उन्हें सम्मानपूर्वक इकट्ठा करके, कासान्ट्रियोटियन गेट्स से दो वर्स्ट दूर, सार्वजनिक सड़क के बाईं ओर दफना दिया। बाद में, एनीशिया के दफन स्थल पर एक प्रार्थना घर बनाया गया। यह उस समय हुआ जब पृथ्वी पर मैक्सिमियिन का शासन था, जबकि हमारे प्रभु यीशु मसीह का विश्वासियों पर युगानुयुग राज्य था। उसी को, पिता और पवित्र आत्मा के साथ, अब और सदा और युगानुयुग सम्मान और महिमा मिले। आमीन।

पवित्र शहीद फिलिटर का स्मरणोत्सव

30 दिसंबर को स्मरणोत्सव

एक बार, जब डायोक्लेटियन निकोमेडिया पहुँचे, तो उन्हें एक ईसाई के बारे में सूचना दी गई। सम्राट ने तुरंत उसे अपने पास बुलाया और यह आदेश दिया कि उसे उनके सामने लाया जाए, और उसे देखकर चकित रह गए: संत लम्बे और अत्यंत सुंदर थे। इसलिए, डायोक्लेटियन ने उन्हें आदमी नहीं, बल्कि एक देवता कहा। और सम्राट ने उनसे कहा:

'बताओ – तुम कहाँ से हो? और तुम्हारा नाम क्या है? और तुम्हारी पृष्ठभूमि क्या है?'

संत ने उत्तर दिया:

'मैं यहीं निकोमेडिया में जन्मा और पला-बढ़ा हूँ; मैं एक राज्यपाल का पुत्र हूँ, आस्था से एक ईसाई हूँ, और मैं ईसाइयों के बीच रहता हूँ।'

राजा ने उसे पास बुलाया और पहले तो उसे मीठी-मीठी बातों से प्रभावित करने की कोशिश की, जबकि साथ ही हमारे प्रभु यीशु मसीह के खिलाफ अपमानजनक शब्द भी बोले। संत उस ईश्वर-निन्दक से अलग हो गए और, अपनी आँखें आकाश की ओर उठाकर, कहा:

'जिस किसी ने भी मेरे मसीह की निंदा करने की हिम्मत की है, उसका मुँह बंद हो जाए, चाहे वह राजा हो या कोई और।'

तत्काल एक भूकंप आया और गरज की एक भयंकर गड़गड़ाहट हुई, जिससे राजा और उसके आसपास के लोग काँप उठे। इसके बाद, फिलिटर को एक जलती हुई भट्टी में फेंक दिया गया। लेकिन संत ने प्रार्थना की – और भट्टी ढह गई, आग बुझ गई, और वह बिना किसी चोट के बाहर निकल आया। राजा, अभी-अभी घटित चमत्कार से प्रभावित होकर, और उसकी सुंदरता तथा कुलीन वंश से भी प्रभावित होकर, उसे जहाँ चाहें वहाँ जाने की स्वतंत्रता प्रदान कर दी।

बाद में, जब निकोमेडिया में मैक्सिमियन[402] का शासन था, तो संत पर फिर से राजा के सामने झूठा आरोप लगाया गया; और फिर से, जब उन्हें राजा के सामने लाया गया, तो उन्होंने हमारे ईश्वर मसीह, संपूर्ण दुनिया के सृष्टिकर्ता और पालनहार होने की स्वीकारोक्ति की। इसके लिए, उन्होंने पहले उसे डंडों से पीटना शुरू किया: यातना देने वाले, अपने जोश में, इतनी अधिक थकान से ग्रस्त हो गए कि वे स्वयं मुश्किल से जीवित जमीन पर गिर पड़े, जबकि संत को बिल्कुल भी दर्द महसूस नहीं हो रहा था, मानो यह कोई और हो रहा हो, न कि वह: इस प्रकार मसीह ने उसे मजबूत किया। तब उसे फांसी दी गई और उसकी खाल उधेड़ दी गई; बाद में, उसे चीर-फाड़ करने के लिए जानवरों के सामने फेंक दिया गया, लेकिन जानवर बस संत के पैरों तले लेटे रहे ; – उसे जबरदस्ती मंदिर में ले जाया गया ताकि मूर्तियों की पूजा करने के लिए मजबूर किया जा सके, लेकिन शहीद ने ईश्वर से प्रार्थना की, और मूर्तियाँ चूर-चूर होकर जमीन पर गिर पड़ीं। तब राजा ने संत को तलवार से मार डालने का आदेश दिया, लेकिन जिस सेवक ने उन्हें पकड़ा था, उसका हाथ तुरंत सूख गया; राजा के आदेश को पूरा करने वाले एक अन्य अमलदार के साथ भी यही हुआ: – जैसे ही उसने संत के सिर पर तलवार उठाई, उसका हाथ सूख गया। इसके बाद, शहीद को जेल में डाल दिया गया और बेड़ियों में जकड़ दिया गया। और चूँकि उसने समर्पण की ओर थोड़ी भी प्रवृत्ति नहीं दिखाई, राजा ने उसे निर्वासन की सजा सुनाई और Prokonnis[403] में भेज दिया, जहाँ उसे जकड़े हुए ही भेजा गया था। रास्ते में, उन्होंने कई चमत्कार किए: उन्होंने दुष्टात्माओं को भगाया, कोढ़ियों को स्वच्छ किया और हर तरह की अन्य बीमारियों को ठीक किया; एक ही शब्द से उन्होंने मूर्तियों को गिरा दिया; उन्होंने एक भव्य रूप से निर्मित मूर्तिपूजक मंदिर को छुआ, और वह अपनी नींव तक ढह गया। इन सभी चमत्कारिक संकेतों, और विशेष रूप से आखिरी वाले—मंदिर के विनाश—ने कई लोगों को मसीह में विश्वास करने के लिए प्रेरित किया, जिसमें वे छह सैनिक और उनके कमांडर भी शामिल थे, जिन्हें संत को निर्वासित करने के लिए भेजा गया था।

जब शहीद और उनके साथी Sigrian[404] के प्रदेश में पहुँचे, जहाँ संत ने कई चमत्कार भी किए, तो उनके आसपास के लोगों ने बताया कि पास ही Evvios[405] नाम का एक व्यक्ति रहता था, जो एक ईसाई था और राजकुमार के हाथों मसीह के लिए कई क्रूर यातनाएँ सह चुका था, फिर भी वह सुरक्षित था और महान चमत्कार कर रहा था। यह सुनकर, संत फिलिटर ने एव्वियोस से मिलने जाने का निश्चय किया। उसी क्षण, प्रभु का एक स्वर्गदूत धन्य एव्वियोस के पास प्रकट हुआ और कहा:

'अपनी कुटिया छोड़ो और फिलिटिर, अपने साथी पीड़ित से मिलने के लिए एक निश्चित स्थान पर जाओ।'

तपस्वी तुरंत अपनी कुटिया छोड़कर उस पहाड़ से उतरने लगे जिस पर वे रहते थे। इस बीच, फिलिटिर, एक स्थानीय ग्रामीण के निर्देशों का पालन करते हुए और एव्वियोस से मिलने जा रहे थे, ने सेनापति और छह सैनिकों के साथ मिलकर सिग्रियिन पर्वत पर चढ़ना शुरू कर दिया, जो ईमान लाए थे, बपतिस्मा लिया था, और हर समय उनके साथ रहना चाहते थे। थोड़ी दूरी चलने के बाद, वे धन्य एवियोट से मिले जो उनसे मिलने नीचे आ रहे थे, और एक-दूसरे को देखकर वे परस्पर आनंद से भर गए। आत्मा में आनंदित होकर, वे सभी संत एवियोट के निवास तक पहाड़ पर चढ़े और वहाँ सात दिनों तक एक साथ रहे। और धन्य फिलिटर उस निद्रा में लीन हो गए जिसकी उन्होंने इतनी प्रेमपूर्वक कामना की थी: वे मसीह परमेश्वर के पास चले गए, जिन्हें वे प्रेम करते थे और जिन्होंने उन्हें प्रेम किया, और उन्होंने अपनी आत्मा को उनके हाथों में सौंप दिया[406] । धन्य एव्वियोस ने उन्हें उनके निवास स्थान पर दफनाया। ग्यारह दिन बाद, संत के साथ आए एस्कॉर्ट के कमांडर और छह सैनिक भी परलोक सिधार गए, और उन्हें सभी को पवित्र शहीद की अवशेषों के पास दफनाया गया।

आदरणीय ज़ो[illegible]ोस, अनाथ-पोषक का पर्व दिवस

30 दिसंबर को स्मरणोत्सव

---

[402] मैक्सिमियन द्वितीय गैलेरियस, सम्राट डायोक्लेटियन के दामाद और उत्तराधिकारी, ने 306 से 311 तक रोमन साम्राज्य के पूर्वी आधे हिस्से पर शासन किया।

[403] प्रोकॉन्नसि – मार्मारा सागर में एक द्वीप, जिसे अब मार्मारा के नाम से जाना जाता है।

[404] सिग्रियिन का क्षेत्र – एशिया माइनर में साइज़िकस के पास एक पहाड़ी इलाका।

[405] 18 दिसंबर को संत एवियोत शहीद की स्मृति।

[406] संत फिलिटिर शहीद की मृत्यु वर्ष 311 में हुई थी।

आदरणीय ज़ोקטיस एक कुलीन और प्रतष्ठिति परविार से थे और उनका जन्म रोम शहर में हुआ था। छोटी उम्र से ही, उन्होंने सांसारकि और आध्यात्मकि ज्ञान के सभी प्रकारों का अध्ययन कयिा, जसिके परणिामस्वरूप उन्हें पहले ईसाई सम्राट, कॉन्स्टेंटाइन द ग्रेट की कृपा प्राप्त हुई। जब इस धर्मपरायण शासक ने साम्राज्य की राजधानी रोम से कॉन्स्टेंटनिोपल[407] में स्थानांतरति की, तो धन्य ज़ोקטיस, सम्राट के अन्य करीबी सदस्यों के साथ, उस शहर में चले गए और वहाँ उन्हें मजस्टि्रेट के पद[408] से सम्मानति कयिा गया।

लेकनि जल्द ही, सांसारकि सम्मान और व्यर्थता को त्यागकर, उन्होंने संन्यास ग्रहण कर लयिा। जैसे अब्राहम ने अपना तम्बू खोला था, वैसे ही संत ज़ोקטיस ने गरीबों का स्वागत करने और उन्हें भोजन कराने के लएि अपना घर खोला; उन्होंने बेघर, यात्रयिों और बीमारों को अपने अतथिि गृह में आश्रय दयिा, और वधिवाओं, अशक्तों और अनाथों के लएि एक सच्चे पतिा थे।

उस समय, शहर में एक बीमारी - कोढ़ - फैली हुई थी, जो पूर्व में हमेशा से प्रचलति थी। इस बीमारी के प्रसार को रोकने के लएि, हर कुष्ठरोगी को समुद्र में फेंकने का आदेश दयिा गया था। दयालु ज़ोटकिोस, दैवी प्रेम से प्रेरति होकर, राजा के पास गए और उससे कहा:

'हे राजा! मुझे, अपने इस सेवक को, यथासंभव सोना प्रदान करें, ताकि मैं आपके राजसी आभूषणों के लएि कीमती मोती और चमचमाते रत्न खरीद सकूँ, क्योंकि मैं ऐसे मामलों में बहुत कुशल हूँ।'

राजा, जो ज़ोटकिोस से प्रेम करता था, ने आदेश दयिा कि उसकी प्रार्थना स्वीकार की जाए, और इस ईश्वर-प्रेमी और सद्गुणों से परपिूर्ण सेवक ने सोना लेकर, आनंद और हर्ष के साथ शाही महल छोड़ दयिा। उन्होंने सोने का सबसे अच्छा उपयोग कयिा: संत ज़ोटकिस ने इसका उपयोग उन दुर्भाग्यपूर्ण कोढ़यिों को सैनकिों से छुड़ाने के लएि कयिा, जन्हिें एपार्क ने पकड़कर समुद्र में फेंकने का आदेश दयिा था, और उन्हें अपनी देखभाल में ले लयिा। कॉन्स्टेंटनिोपल के पास, बोस्फोरस के दूसरी ओर के एक पहाड़ पर, उन्होंने कुष्ठरोगयिों के लएि अस्पताल बनाए और उनकी देखभाल की। इस प्रकार उन्होंने महान कॉन्स्टेंटाइन द्वारा उन्हें दयिा गया सारा सोना कुष्ठरोगयिों और बीमारों पर खर्च कर दयिा।

इस बीच, यह धर्मपरायण सम्राट मर गया और उसका बेटा, कॉन्स्टेंटयिस[409] , सहिासन पर बैठा; उसने अपने पतिा की धर्मपरायणता का अनुकरण नहीं कयिा: वह एरयिन वधिर्म में पड़ गया और ऑर्थोडॉक्स (सही आस्था वाले) लोगों का उत्पीड़न कयिा। संत ज़ोקטיस को भी उसके हाथों पीड़ा सहनी पड़ी। दुर्भावनापूर्ण लोगों द्वारा एक बदनाम करने वाले आरोप के बाद, जन्हिोंने उससे कहा कि ज़ोקטיस ने कीमती पत्थर खरीदने के लएि अपने पतिा से सोना लयिा था, राजा ने ज़ोקטיस को बुलाया और उससे पूछा:

'क्या तुमने हमारे राजसी पतिा से इतनी सोना लेकर हमारे घर के लएि मोती और अन्य कीमती पत्थर तैयार कर लएि हैं?'

ज़ोटकि ने उत्तर दयिा:

'हे राजा, एक जहाज तैयार करो, और मैं तुम्हें ऐसा धन-संपत्ति दखिाऊंगा जो तुम्हारे पास पहले कभी नहीं रही।'

फरि, राजा के साथ बोस्फोरस के दूसरे कनिारे पर पहुँचकर, वह उसे अस्पतालों में ले गया और कुष्ठरोगयिों तथा बीमारों की ओर इशारा करते हुए कहा:

'हे राजा, देखो ये शानदार पत्थर और चमकते मोती, जो मैंने तुम्हारे उद्धार के लएि बड़ी मेहनत और भारी कीमत पर प्राप्त कएि हैं।'

राजा संत पर क्रोधति हो गया और उसे जंगली गधों से बाँधकर खेतों और सड़कों से होते हुए ले जाने का आदेश दयिा। घोड़ों द्वारा चट्टानों पर घसीटे जाने से, पूजनीय संत ने भयंकर यातना झेली: तेज पत्थरों से उनके सभी अंग-प्रत्यंग क्षत-वक्षित हो गए; और जब घोड़ों ने उन्हें पहाड़ से नीचे फेंका, तो उनकी हड्डयिाँ तक चूर-चूर हो गईं, और उन्होंने

---

[407] वर्ष 330 में इस शहर को वधिवित रूप से पवत्रि घोषति कयिा गया और इसका नाम बदलकर न्यू रोम कर दयिा गया, जो इसके पूर्व नाम बाइज़ेन्टयिम की जगह था। हालाँकि, यह नाम शायद ही कभी बाइज़ेन्टयिम के लएि इस्तेमाल कयिा जाता था, जसिे कॉन्स्टेंटनि द ग्रेट के बाद, मुख्य रूप से कॉन्स्टेंटनिोपल के नाम से जाना जाता था, यानी कॉन्स्टेंटनि का शहर।

[408] मैगस्टिर का शाब्दकि अर्थ 'शक्षिक' है; लेकनि बाइज़ेन्टाइन सम्राटों के अधीन, यह उपाधि उच्चतम दरबारी पदों में से एक को दर्शाती थी, जो आज के न्यायालय मंत्री के समान था।

[409] सम्राट कॉन्स्टैंटयिस ने 337 से 361 तक शासन कयिा।

अपना प्राण प्रभु के हाथों में सौंप दिया[410] । और ठीक उसी स्थान पर जहाँ उनकी मृत्यु हुई, शुद्ध और मीठे पानी का एक झरना फूट निकला, और इस पानी से हर प्रकार की बीमारियाँ ठीक हो गईं, ईश्वर के संत की महिमा के लिए, त्रिमूर्ति में एक ईश्वर की महिमा और सम्मान के लिए, जिसकी सभी द्वारा सदा-सदा महिमा की जाती है और जिसकी आराधना की जाती है। आमीन।

कैसरिया की पूजनीय थियोडोरा की स्मृति

30 दिसंबर को स्मरणोत्सव

आदरणीय थियोडोरा कैसरिया में सेंट ऐनी मठ में एक मठी के रूप में रहती थीं; वह लियो द इसाउरियन और उनके पुत्र कॉन्स्टेंटिन कॉप्रोन्यमस के शासनकाल में रहती थीं[411] और उनका जन्म कुलीन तथा प्रतिष्ठित कुल में हुआ था; उनके पिता, जिनका नाम थियोफिलिस था, पैट्रिसियन की उच्च पदवी पर थे, जबकि उनकी माता का नाम थियोडोरा था। कई वर्षों तक बाँझ रहने के कारण वह गहरे दुख में थी और उसने ईश्वर से विनम्रतापूर्वक प्रार्थना की; विशेष रूप से, उसने अश्रुपूरित निवेदन के साथ परमेश्वर की अतिपवित्र माता की ओर रुख किया और उसे एक ऐसा वरदान मिला जिसने उसे धर्मपरायण एनी, परमेश्वर की माता की माता, के समान बना दिया: थियोडोरा की बाँझपन दूर हो गया, वह गर्भवती हुई और एक पुत्री को जन्म दिया। जब उसकी बेटी बड़ी हो गई, तो उसकी माँ उसे जन्म से ही ईश्वर को समर्पित एक के रूप में संत ऐनी के चर्च में ले गई। युवा थियोडोरा को कन्वेंट में स्वीकार कर लिया गया, जहाँ वह एक धर्मनिष्ठ एबेस के दयालु मार्गदर्शन में रहने लगी और उसे पवित्र धर्मग्रंथों का ज्ञान दिया गया। इस बीच, उस युवा संन्यासिनी का ईश्वर-भयभीत, सदाचारी जीवन सर्व-चतुर शैतान के लिए असहनीय था, जिसने इसमें अपनी ही अपमान का स्रोत देखा। और इसलिए उसने सम्राट लियो द आइकॉनोकलास्ट के मन में उस निर्दोष मेमने का विवाह अपने दरबारी अधिकारियों में से एक के साथ कर देने का विचार डाला। उसे जबरदस्ती ले जाया गया और मठ में अपनी बहनों से अलग होने के अत्यंत दुख के साथ कॉन्स्टेंटिनोपल लाया गया। यहाँ, उसकी शादी के लिए सब कुछ पहले से ही तैयार था; सम्राट के आदेश से, दूल्हे का कमरा भी तैयार कर दिया गया था। लेकिन इस दुष्ट योजना का परिणाम अप्रत्याशित रूप से निम्नलिखित हुआ: ईश्वर, जिन्होंने एक बार साराह के प्रति कामुक वासना से ग्रस्त मिस्र के शासक को दंडित किया था (उत्पत्ति 12:10–20) और जिन्होंने रिप्सिमिया की पवित्रता भंग करने का प्रयास करने वाले तिरिदातस की शक्ति को उखाड़ फेंका था[412] , ने चमत्कारिक रूप से थियोडोरा को भी जबरन विवाह द्वारा अपवित्र होने से बचाया। शादी के भोज के दौरान, स्कैथियनों ने राजधानी पर हमला कर दिया[413] ; दूल्हे को तुरंत दुश्मन के खिलाफ भेजा गया और वह पहली ही झड़प में मारा गया। इस बीच, इस सामान्य अफरा-तफरी के बीच, मसीह के निर्दोष मेमने थियोडोरा ने इस हंगामे से मिले अवसर का लाभ उठाते हुए, शादी के भोज में मौजूद लोगों की नज़रों से बचकर निकल गई और अपना सोना लेकर, चाँदी, रत्न और कीमती पत्थरों से जड़े वस्त्र लेकर, वह समुद्र तट पर गई, एक जहाज पर चढ़ी और आनंदित होकर तथा हर चीज़ के लिए ईश्वर का धन्यवाद करते हुए अपनी मठ में लौट आई। बाद में, जब राजा के एक अधिकारी को थियोडोरा के भागने की खबर मिली, तो वह मठ पहुँचा और उसने उसे पहले ही संन्यास की शपथ ले चुकी और फटेहाल कपड़े पहने पाया, तो सर्वशक्तिमान ईश्वर की कृपा से उसने उसे चैन से रहने दिया। इस प्रकार अपने उत्पीड़कों से मुक्त होकर, पूजनीय थियोडोरा ने अपनी तपस्या

---

[410] यह चौथी शताब्दी के मध्य के आसपास था।

[411] लियो तृतीय इसाउरियन ने 717 से 741 तक शासन किया; उनके बाद उनके पुत्र कॉन्स्टेंटिन पंचम कॉप्रोनमस (741–775) ने शासन संभाला; ये सम्राट पहले प्रतिमा-विरोधी थे।

[412] आर्मेनिया के राजा टिरिडेट्स, रोमन सम्राट डायोक्लेटियन के मित्र थे; बाद वाले ने ईसाई महिला रिप्सिमिया को अपनी पत्नी बनाने का इरादा किया था, लेकिन वह भाग गई और आर्मेनिया के एक मठ में शरण ले ली। डायोक्लेटियन ने टिरिडेट्स से उसे खोजकर उसके पास भेजने के लिए कहा, या, यदि वह चाहे, तो उसे अपनी पत्नी बना ले। रिप्सिमिया की असाधारण सुंदरता के बारे में जानकर, तिरिडेट्स उसे पाने की तीव्र इच्छा से भर गया और उसके लिए संदेशवाहक भेजे; लेकिन समृद्ध उपहार लेकर आए राजदूतों पर एक गरज के साथ बिजली गिरि गई और वे पूरी तरह से भयभीत होकर लौट आए। क्रोधित राजा ने एक पूरा सैन्य दल भेजा; रिप्सिमिया को राजा के सामने लाया गया और उसके शयनकक्ष में ले जाया गया। राजा ने उसके साथ बलात्कार करने का प्रयास किया, लेकिन - गॉथ और फारसियों का विजेता होने के बावजूद - वह उस कन्या, मसीह की दुल्हन पर विजय प्राप्त करने में असमर्थ रहा।

[413] स्किथिया नाम बाइजेंटाइयम और पोंटस (ब्लैक सी) के तट के उत्तर-पूर्व में स्थित देश को दिया गया था।

से अपने शरीर को इतना क्षीण कर लिया कि उनकी हड्डियाँ उनकी त्वचा के आर-पार दिखाई देने लगीं। उसका भोजन केवल एक छोटा सा रोटी का टुकड़ा था, और वह भी हर दो-तीन दिनों में एक बार ही। उसका एकमात्र वस्त्र मोटे ऊन का बना था; उसका बिस्तर नुकीले पत्थरों से बिछा हुआ और मोटे फटे कपड़ों से ढका हुआ था: इस प्रकार वह अपनी अनैच्छिक, भारी नींद के दौरान भी जागती रहती थी, और अक्सर पूरी रात जागती रहती थी। इन कृत्यों से संतुष्ट न होकर, उसने अपने शरीर को लोहे की जंजीरों से बाँध लिया और इस प्रकार अपने सभी जोड़ों और अंगों को इतना थका दिया कि उसकी हड्डियों से दुर्गंध निकलने लगी। और इस प्रकार, कई वर्षों तक, हर सद्गुण में बढ़ती हुई, वह एक कालातीत और आनंदमय जीवन में प्रवेश कर गई[414] ।

कॉन्स्टेंटिनोपल की पूजनीय थियोडोरा का स्मरणोत्सव

30 दिसंबर को स्मरणोत्सव

आदरणीय थियोडोरा की उत्पत्ति यूनानी थी, उनके पास बहुत धन-संपत्ति थी, और उन्होंने शुरुआत में एक ईसाई विवाह में जीवन व्यतीत किया। अपने पति की मृत्यु के बाद, उन्होंने प्रभु की आज्ञा के अनुसार, *'अपना क्रूस उठाया'* और मसीह का अनुसरण करने के लिए साधु जीवन में प्रवेश किया (मरकुस 8:34; मत्ती 16:24)। यह रोमानुस[415] के शासनकाल के दौरान था, जब आदरणीय बेसिल द न्यू जीवित थे; वे थियोडोरा के घर में, उनके लिए विशेष रूप से व्यवस्थित एक प्रार्थना कक्ष में रहते थे, और उनके मार्गदर्शन में उन्होंने एक धार्मिक जीवन व्यतीत किया। एक वृद्ध आयु तक जीवित रहने के बाद, उनका निधन दिसंबर के तीसरे दिन हुआ। और जब पूजनीय थियोडोरा की आत्मा, उनके शरीर से अलग होकर, पवित्र स्वर्गदूतों द्वारा ले जाई जा रही थी, तो पूजनीय बेसिल ने विचारपूर्वक, उनकी आत्मा की सहायता के लिए, अपनी छाती से एक छोटी सी पेटी निकालकर उन्हें एक प्रकार का मोचन-धन दे दिया।

बेसिल का ग्रेगरी नाम का एक शिष्य था, जिसने उनसे विनम्रतापूर्वक पूछा:

'थियोडोरा कहाँ है?'

और इस प्रकार एक दिन, जब ग्रेगरी सो रहा था, तो एक तेजस्वी युवक उसके सामने प्रकट हुआ और कहा:

'जल्दी जाओ; पूज्य बेसिल तुम्हें थियोडोरा दिखाने के लिए बुला रहे हैं।'

ग्रेगरी को तुरंत स्वर्ग के द्वार पर ले जाया गया, फिर पवित्र स्थानों में ले जाया गया, और वहाँ उसने पूजनीय बेसिल और थियोडोरा को देखा, और वे सभी एक साथ आनंदित हुए। और ग्रेगरी ने पूछा:

'देवी थियोडोरा! आपने मृत्यु के भयानक क्षण को कैसे सहन किया, और आपने खुद को दुष्ट आत्माओं से कैसे मुक्त किया?'

उसने फिर घटनाओं को क्रम से सुनाया:

'जब मेरी आत्मा मेरे शरीर से अलग हुई, तो मैंने भयानक इथियोपियाई लोगों को देखा जिन्होंने मुझे एक लकड़ी दिखाई जिस पर मेरे सभी प्रारंभिक कर्म अंकित थे और वे सूअरों की तरह चिल्लाते हुए मेरे प्रति अपने दाँत पीस रहे थे। फिर स्वर्गदूत मुझे ले गए और मुझे यातनाओं से होकर ले गए। पहला परीक्षण झूठ था; दूसरा, बदनामी; तीसरा, ईर्ष्या; चौथा, अहंकार से उत्पन्न झूठी संवेदनशीलता; पांचवां, क्रोध और उग्रता; छठा, घमंड; सातवां, दुर्व्यवहार और अश्लीलता; आठवां, लालच और चापलूसी; नौवाँ – दंभ; दसवाँ – लालच; ग्यारहवाँ – मद्यपान; बारहवाँ – प्रतिशोधी स्वभाव; तेरहवाँ – जादू-टोना; चौदहवाँ – तंत्र-मंत्र और तावीज़ों का उपयोग; पंद्रहवां – अत्याहार और मूर्तिपूजा; सोलहवां – व्यभिचार; सत्रहवां – हत्या; अठारहवां – चोरी; उन्नीसवां – वेश्यावृत्ति; बीसवां – दया की कमी। और यदि किसी भी कष्ट-घर पर, मेरे पुण्यों का प्रमाण ही मेरे उद्धार के लिए अपर्याप्त था, तो देवदूत पूजनीय बेसिल के पुण्यों के भंडार से मेरे पुण्यों में वृद्धि कर देते थे। इस प्रकार मैं सभी कर-घरों से बिना किसी बाधा के गुज़र गया और इस धन्य स्थान में प्रवेश कर गया। लेकिन यदि कोई आत्मा पापी होती है, तो उसे उन इथियोपियाई लोगों के हवाले कर दिया जाता है, और वे, उसे यातनाएँ देते हुए, उसे यातनाओं में ले जाएँगे।

---

[414] आदरणीय थियोडोरा की मृत्यु 8वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में हुई।

[415] सम्राट रोमानोस प्रथम लेकपेनोस ने 919 से 944 तक बिज़ान्टियम पर शासन किया।

और तुरंत ग्रेगरी जाग उठा और उसने हमें वह सब बताया जो उसने स्वप्न-सा आनंदमय समाधि की अवस्था में देखा और सुना था। यह सुनकर हम चकित रह गए और हमने महान ईश्वर और हमारे उद्धारकर्ता का धन्यवाद किया, जिन्होंने थियोडोर को स्वर्गीय निवासों में अपनी ही कतार में स्थान प्रदान किया था।

13 जनवरी

31 दिसंबर (पुराने तरीके से)

हमारी पूजनीय माता मेलानिया रोमन का जीवन।

31 दिसंबर को स्मरणोत्सव

जैसे एक अच्छे वृक्ष से अच्छा फल निकलता है, वैसे ही एक पवित्र मूल से एक पवित्र शाखा फलती-फूलती है। हम यह उदाहरण पूजनीय मेलानिया के जीवन में देखते हैं, जो धर्मनिष्ठ ईसाई माता-पिता की संतान थीं। उनके पिता और दादा उच्चतम रैंक के सेनेटरों में से थे। जब वह वयस्क हुईं, तो मेलानिया ने अपनी कुँवारी अवस्था को अछूता रखने की तीव्र इच्छा व्यक्त की और अक्सर अपने माता-पिता से पूरी ताकत से विनती करती थीं कि वे ऐसा करने की अनुमति दें। हालाँकि, चूँकि वह उनकी एकमात्र बेटी थी और उनके अनगिनत साम्राज्यों और धन-संपत्ति का कोई और वारिस नहीं था, जब संत चौदह वर्ष की हुईं, तो उन्होंने उनकी मर्जी के खिलाफ, समान कुलीनता वाले अपिनियानुस नामक सत्रह वर्षीय युवक से उनका विवाह कर दिया। एक बार विवाह संपन्न हो जाने के बाद, मेलानिया ने अपने संकल्प और इच्छा—यदि अपनी कुँवारीपन नहीं तो कम से कम अपनी पवित्रता को बनाए रखने की—को नहीं छोड़ा, और उसने अपने पति को ब्रह्मचर्य का पालन करने के लिए मनाने हेतु अपनी पूरी शक्ति लगा दी, और अक्सर उसे समझाते हुए आँसुओं के साथ कहती थी:

'हम कितने खुश होंगे अगर हम पवित्रता में एक साथ रहें, अपने युवा दिनों में बिना शारीरिक संबंध के ईश्वर की सेवा करें—जो मैं हमेशा से चाहती थी और अभी भी चाहती हूँ! तब हम एक साथ एक अद्भुत, ईश्वर-प्रसन्न जीवन जिएंगे। लेकिन अगर आपकी युवावस्था की इतनी विशिष्ट प्रवृत्ति, कामवासना, आप पर हावी हो जाती है और मेरी विनती को पूरा करने से रोकती है, कि आप अपनी कामुक इच्छाओं पर काबू नहीं पा सकते—तो मुझे छोड़ दें और मेरी इच्छा के रास्ते में न खड़े हों। मेरी स्वतंत्रता के बदले में, मैं तुम्हें अपना सारा धन, अपने पुरुष और महिला दास, अपने खजाने, अपना सोना और चाँदी, और अपनी अन्य अनगिनत संपत्तियाँ भेंट करती हूँ। इन सभी चीज़ों पर अधिकार कर लो, लेकिन मुझे केवल शारीरिक संबंधों से मुक्त रहने दो।

ये शब्द सुनकर, अपिनियानुस ने उसकी विनती को पूरी तरह से अस्वीकार नहीं किया, और न ही उसने उसे अपनी पूरी सहमति दे दी; उसने केवल दयालुता से जवाब दिया:

'यह तब तक नहीं हो सकता जब तक हमारे उत्तराधिकारी का जन्म नहीं हो जाता। जब हमें ऐसा उत्तराधिकारी मिल जाएगा, तो मैं भी आपके इस नेक इरादे में पीछे नहीं रहूँगा, क्योंकि यह सही नहीं है कि पत्नी अपने पति से अच्छे कर्मों और ईश्वर की खोज में आगे निकल जाए।' आओ हम तब तक प्रतीक्षा करें जब तक ईश्वर हमें हमारे विवाह का फल न दे दें, और फिर हम उस जीवन के अनुरूप आगे बढ़ेंगे जिसकी आप आकांक्षा करती हैं।

मेलानिया अपने पति के प्रस्ताव के लिए सहमत हो गईं, और देखो तो, ईश्वर ने उन्हें एक बेटी दी। उसकी जन्म लेने पर, मेलानिया ने उसकी ओर से पवित्रता का व्रत लिया, मानो कोई कर्ज चुका रही हों: वह चाहती थीं कि उनकी बेटी वह करे जिसे वह खुद अपनी मर्जी के खिलाफ शादी हो जाने के कारण करने में असमर्थ रहीं।

तब, जीवन के एक अलग तरीके के लिए तैयारी करते हुए, उन्होंने संयम और शरीर के तप के आदी होने लगी: उन्होंने उपवास किया, शरीर के सभी सुखों से खुद को वंचित किया, सुंदर कपड़े या कीमती महिलाओं के आभूषण पहनने से इनकार कर दिया, और स्नानागार नहीं गईं। और जब उसके पति या माता-पिता उसे स्नानागार जाने के लिए मनाते, तो वह अपना शरीर नहीं खोलती और केवल अपना चेहरा धोकर चली आती; इसके अलावा, उसने अपनी दासियों को इसके बारे में

किसी को न बताने का आदेश दिया और उन्हें चुप रहने के लिए उपहार दिए। साथ ही, उसने अपने पति से अपना वादा पूरा करने की मांग की:

उसने कहा, 'हमारे पास पहले से ही हमारी संपत्ति की एक उत्तराधिकारिणी है। तो चलो वैवाहिक संबंधों के बिना ही रहते हैं, जैसा आपने वादा किया था।'

लेकिन उसने अपनी पत्नी की बातों पर ध्यान नहीं दिया।

मेलानिया, उसका इनकार देख, एक अज्ञात भूमि में गुप्त रूप से भाग जाने का संकल्प लेती है, अपने पिता, माता, पति, बच्चे और अपनी सारी संपत्ति को पीछे छोड़कर: ईश्वर के लिए उसकी लालसा और पवित्रता में रहने की इच्छा इतनी प्रबल थी। अगर कुछ समझदार लोगों की सलाह ने उन्हें रोका न होता, तो वह तुरंत ऐसा कर देतीं, जिन्होंने उन्हें प्रेरित के निम्नलिखित शब्दों की याद दिलाई: *'विवाहितों से यह आज्ञा मैं नहीं, बल्कि प्रभु देते हैं: पत्नी को अपने पति से अलग नहीं होना चाहिए*, और यह भी: *'हे पत्नी, तुम्हें क्या पता कि तुम अपने पति को बचाओगी या नहीं? या तुम, पति, कैसे जानते हो कि तुम अपनी पत्नी को बचाओगे?'* (1 कुरिन्थियों 7:10–16)।

इस प्रकार, अपने पति की मुक्ति के विचारों में मग्न, उसने भागने की अपनी योजना को त्याग दिया। हालाँकि, उसे अपनी पत्नियों जैसी कर्तव्यों को पूरा करना मुश्किल लगा। उसने गुप्त रूप से अपने कपड़ों के नीचे एक खुरदरी बाल वाली कमीज़ पहनी थी, और केवल तब ही वह उसे उतारती थी जब उसे पता होता था कि वह अपने पति के साथ अकेली होगी, ताकि वह उसके जीवन की सच्चाई का पता न लगा सके। लेकिन एक दिन उसके पिता की बहन को इस बारे में पता चल गया और उसने उस रोंगटे वाले वस्त्र का मज़ाक उड़ाना शुरू कर दिया, और इस वजह से संत का उपहास करने और उन्हें कोसने लगी। मेलानिया ने आँसू भरी आँखों से उससे विनती की कि वह जो कुछ भी जान गई है, वह किसी को न बताए। कुछ ही समय बाद, मेलानिया दूसरी बार गर्भवती हो गई, और प्रसव का समय नज़दीक आ रहा था। पवित्र शहीद लॉरेंस का पर्व का दिन आ गया। संत ने पूरी रात बिना सोए, घुटनों के बल प्रार्थना करते और भजन गाते हुए बिताई। साथ ही, वह प्रसव की प्राकृतिक पीड़ा को सहने का प्रयास कर रही थी। सुबह हो गई, लेकिन उसने अपनी कठिन प्रार्थना बंद नहीं की। प्रसव की पीड़ा अत्यधिक तीव्र हो गई, फिर भी वह प्रार्थना में घुटनों के बल झुकी रही; अंततः वह पूरी रात की प्रार्थना और प्रसव की प्राकृतिक पीड़ा से अभिभूत हो गई। फिर, अत्यधिक पीड़ा में, उसने एक लड़के को जन्म दिया। पवित्र बपतिस्मा प्राप्त करने के बाद, शिशु तुरंत इस संसार से स्वर्गीय स्वदेश के लिए प्रस्थान कर गया। इस प्रसव के बाद, मेलानिया गंभीर रूप से बीमार पड़ गई और मृत्यु के कगार पर थी। उसका पति, उसके बिस्तर के पास खड़ा था, जो उसके लिए पीड़ा और दुख से स्वयं मुश्किल से जीवित था। अपने दुख में, वह चर्च की ओर भागा, जहाँ, रोते हुए, उसने ईश्वर से अपनी प्रिय पत्नी को ठीक करने के लिए प्रार्थना की। मेलानिया ने, यह देखकर कि अपने पति को अपनी योजना के साथ जाने के लिए मनाने का सही समय आ गया है, जब वह अभी भी चर्च में था, उसे संदेश भेजा:

'यदि तुम चाहते हो कि हम दोनों जीवित रहें, तो ईश्वर के सामने यह व्रत लो कि तुम मुझे फिर कभी छूओगे नहीं, और हम दोनों अपने शेष जीवन पवित्रता से जिएँगे।'

मेलानिया के पति, जो उससे शब्दों से परे प्यार करते थे और अपने स्वास्थ्य से भी अधिक उसके स्वास्थ्य को महत्व देते थे, ने उसकी इच्छा का पालन किया और ईश्वर के सामने उसके साथ पवित्रता में रहने की कसम खाई। जब संदेशवाहक वापस आया और मेलानिया को यह बताया, तो वह प्रसन्न हुई और उसे बहुत राहत महसूस हुई। उसकी शारीरिक बीमारी आध्यात्मिक आनंद में बदल गई, और मेलानिया ने सर्वोच्च की महिमा की, जिन्होंने उसकी बीमारी के माध्यम से उसके हृदय की सबसे प्रिय इच्छा को पूरा करके उसकी मदद की थी।

जब मेलानिया अपनी बीमारी से उबरी, तब तक उनकी बेटी—जो कुँवारीपन का एक सुंदर फूल थी और जिसे उन्होंने ईश्वर को समर्पित किया था—उनके पास लौट चुकी थी। उसकी मृत्यु ने एपिनियन को अपनी पवित्रता बनाए रखने के लिए और भी अधिक प्रेरित किया, और मेलानिया ने भी इस उद्देश्य के लिए उसे निरंतर प्रोत्साहित करना जारी रखा।

जब उनकी बेटी का निधन हो गया, तो उसने कहा, 'क्या तुम देखती हो, कि कैसे ईश्वर स्वयं हमें एक पवित्र जीवन की ओर बुलाते हैं? यदि उन्हें हमारा शारीरिक विवाह जारी रखना पसंद होता, तो वे हमारे बच्चों को हमसे नहीं छीनते।'

इस प्रकार, अपिनियानुस और मेलानिया, एक स्वाभाविक, शारीरिक विवाह में रहने के बाद, एक उच्चतर, आध्यात्मिक विवाह में प्रवेश किया, और एक-दूसरे को सदाचार में प्रोत्साहित किया, तथा उपवास, प्रार्थना, परिश्रम और शरीर के संयम का अभ्यास किया। वे गरीबों के माध्यम से अपनी सारी संपत्ति मिसीह को देने पर सहमत हुए, जबकि वे स्वयं पूरी तरह से संसार का त्याग कर भिक्षु बन जाएँगे। लेकिन मेलानिया के माता-पिता ऐसा करने के लिए बिल्कुल भी

तैयार नहीं थे। और इस प्रकार, एक रात, जब अपनियिानुस और मेलानयिा इस बात से गहराई से व्यथति थे और संसार के जटलि फंदों ( ) से खुद को कैसे मुक्त करें, इस पर एक-दूसरे से सलाह-मशवरिा कर रहे थे, तो अचानक स्वर्ग से दविय अनुग्रह उन पर अवतरति हुआ। उन्हें स्वर्ग से उतरती एक महान सुगंध का अनुभव हुआ, जसिे मन समझ नहीं सकता और भाषा वर्णन नहीं कर सकती, और वे इतनी आध्यात्मकि आनंद से भर गए कि उन्होंने अपना सारा दुख भूल गए। उस समय से, संतों में आध्यात्मकि आशीर्वादों की एक और भी बड़ी प्यास जाग उठी: संसार और उसमें जो कुछ भी है, वह सब उनके लिए घृणति हो गया था, और उन्होंने सब कुछ त्यागकर कहीं भाग जाने और भकि्षु बनने का संकल्प लयिा। लेकनि दैवीय व्यवस्था ने उनकी इच्छा की पूर्तकि लिए उनके लिए एक अलग मार्ग तैयार कयिा था।

शीघ्र ही मेलानयिा के पतिा का नधिन हो गया, और एपनियिन और मेलानयिा अपनी इच्छा के अनुसार कार्य करने के लिए स्वतंत्र हो गए। लेकनि चूँकि उनके पास बहुत सारी संपत्तथिी, जसिे उन्होंने मसीह को समर्पति करने का संकल्प लयिा था, इसलिए उन्होंने तुरंत ही संसार और अपनी मातृभूमकिो नहीं छोड़ा। जब तक उन्होंने सब कुछ गरीबों में बाँट नहीं दयिा, तब तक उन्होंने रोम के बाहरी इलाके में अपनी एक संपत्तकिो अपना नविास चुना और वहाँ कठोर ब्रह्मचर्य का पालन करते हुए रहे। जसि समय इस धन्य जोड़े ने अपने लिए ऐसा ईश्वर-प्रसन्न जीवन चुना था, उस समय अपनियिानुस अपने 24वें वर्ष में प्रवेश कर रहा था, जबकि मेलानयिा अपने 20वें वर्ष के अंत में पहुँच रही थी[416] । यह वास्तव में एक बड़ा चमत्कार है कि उन वर्षों में, जब युवा आमतौर पर कामुक जुनून की आग से जलते हैं, यह पवत्रि जोड़ा, कामुक स्वभाव से ऊपर उठकर जीवन जीते हुए, बेबीलोन की भट्टी में युवकों की तरह अछूता रहा।

यह सब मेलानयिा के मार्गदर्शन में हुआ। वह, प्रभु की एक बुद्धमिान दासी के रूप में, स्वयं और अपने पतदिोनों पर कड़ी नगिरानी रखती थीं, ताकि वह उनके लिए प्रभु के मार्ग पर एक शकि्षकिा, एक सलाहकार और एक मार्गदर्शक थीं। ऐसा अद्भुत जीवन जीते हुए, उन्होंने अपनी संपत्तयिाँ बेच दीं और ज़रूरतमंदों को खुले हाथों सहायता प्रदान की।

उस समय, ईश्वर ने उन्हें एक परीक्षा भेजी। अपनियिन का भाई, सेवरस नाम का, इस धन्य जोड़े द्वारा अपनाए गए जीवन को देखकर, अपनियिन और मेलानयिा को नरिर्थक समझने लगा और उनसे उनकी कुछ संपत्तयिाँ छीनने लगा। जब उसने देखा कि वे कोई वरिोध नहीं कर रहे हैं और उनसे ली गई संपत्तकिी परवाह नहीं कर रहे हैं, तो उसने और साजशि रचनी शुरू कर दी, सब कुछ अपने नाम कर लयिा। अपनियिन और मेलानयिा ने अपनी कोमलता में इसे सहन कयिा, और अपनी आशा ईश्वर में रखी। उन्हें केवल एक बात से दुख हुआ: यह देखकर कि वे संपत्तयिाँ जो उन्होंने मसीह के लिए अलग रखी थीं, एक ईर्ष्यालु व्यक्तकि हाथों में जा रही थीं, उन्होंने इस बात पर शोक व्यक्त कयिा कि गरीबों की संपत्तलिूटी जा रही थी। लेकनि प्रभु, जो अपने सेवकों की रक्षा करते हैं और उन्हें अन्याय करने वालों के हाथ से छुड़ाते हैं, ने सेवरस के वरिुद्ध धर्मपरायण रानी वेरनि[417] को खड़ा कयिा। उन्होंने अपनियिानुस और मेलानयिा के धर्मपरायण जीवन के बारे में सुना था और जब उन्हें पता चला कि सेवरस उनकी संपत्तयिाँ जब्त कर रहा है, तो उन्होंने उन्हें अपने पास बुलाया और सम्मानपूर्वक स्वागत कयिा। जब वह धर्मनष्ठि जोड़ा फटे-पुराने कपड़ों में और नम्र आचरण के साथ रानी के सामने उपस्थति हुआ, तो रानी उनकी गरीबी और वनिम्रता देखकर बहुत आश्चर्यचकति हुईं; फरि, मेलानयिा को गले लगाते हुए, उन्होंने उससे कहा: 'धन्य हैं आप, जन्हिोंने अपने लिए ऐसा जीवन चुना है!' साथ ही, रानी ने उनकी ओर से सेवरस से बदला लेने का वादा कयिा। लेकनि मेलानयिा और एपनियिन ने उनसे बदला न लेने, बल्कि केवल सेवरस को समझाने का आग्रह कयिा ताकि वह उन्हें और कोई हानि न पहुँचाए।

उन्होंने कहा, 'हमारे लिए, कसिी को अन्याय करने से बेहतर है कि हम अन्याय सहन करें, क्योंकि पवत्रि धर्मग्रंथ आज्ञा देते हैं कि यदि कोई तुम्हें एक गाल पर मारता है, तो तुम उसे दूसरा भी फेर दो (मत्ती 5:39)।' हे देवी, हम आपकी हमारी रक्षा करने की कृपा-पूर्ण इच्छा के लिए धन्यवाद देते हैं, लेकनि हम आपसे सेवरस पर प्रतशिोध लेने का अनुरोध नहीं करते हैं। इसके वपिरीत, हम प्रार्थना करते हैं कि हमारे कारण उन्हें कोई हानि न पहुँचे। हमारे लिए इतना ही काफी है कि अब से वह हमें बुरा व्यवहार करना बंद कर दे और वह चीज़ छीनना बंद कर दे जो हमारी नहीं, बल्कि मसीह और मसीह के सेवकों, अनाथों और वधिवाओं, और बेसहारा और गरीबों की है।

उन्होंने सम्राज्ञी से यह भी अनुरोध कयिा कि उन्हें अपनी वशिाल संपत्तयिों को स्वतंत्र रूप से और बनिा कसिी बाधा के बेचने की अनुमतदिें, जनिमें न केवल इटली, रोमन प्रांत में, बल्कि Sicily[418] , स्पेन, गॉल और ब्रटिेन में स्थति

[416] मेलानयिा के जीवन में यह बदलाव 401 में हुआ।

[417] वेरीना सम्राट होनोरयिस की पत्नी थीं, जन्हिोंने 396 से 423 तक रोमन साम्राज्य के पश्चमिी भाग पर शासन कयिा।

[418] ससिलिी एपनीन प्रायद्वीप (इटली) के दक्षणि-पश्चमिी सरि के पास भूमध्य सागर में एक बड़ा द्वीप है।

शहर और गाँव भी शामलि थे। मेलानयिा के माता-पतिा इतने अमीर थे कि राजा को छोड़कर उनसे अधकि अमीर कोई नहीं था। रानी ने एपनियिानुस और मेलानयिा की मांग मान ली, और उन्हें अपनी सभी संपत्तयिों को बनिा कसिी बाधा के बेचने की स्वतंत्रता दी गई, चाहे वे कहीं भी स्थति हों। मेलानयिा राजा की बहन को कुछ कीमती उपहार देना चाहती थीं, लेकनि बाद वाली ने कुछ भी स्वीकार करने से इनकार कर दयिा, क्योंकि वह मसीह को दए गए संपत्ति से कुछ भी लेना धर्मद्रोह मानती थीं।

अंत में, अपनियिानुस और मेलानयिा शाही महलों से बहुत सम्मान के साथ अपने नविास स्थान पर लौट आए।

उनके पास मौजूद धन-संपत्ति की सीमा—जो उन्होंने मसीह को दे दी—इस तथ्य से आंकी जा सकती है कि, उस समय, कोई भी रोम में उनके घर को उचति मूल्य पर नहीं खरीद सकता था। बाद में, जब बर्बर लोगों ने घर में आग लगा दी और आग से वह बुरी तरह क्षतग्रिस्त हो गया, तब जाकर उसे उसके मूल्य से कम में बेचा गया, और उसकी बक्रिी से प्राप्त धन गरीबों में बाँट दयिा गया। इस प्रकार, यह नश्चिति रूप से कहा जा सकता है कि एपनियिानुस और मेलानयिा ने यॉब की तुलना में ईश्वर के प्रति अधकि भक्ति दिखाई। क्योंकि यॉब ने अपनी मर्जी के खलिाफ अपनी संपत्ति से वंचति होने पर ईश्वर का धन्यवाद कयिा, जबकि उन्होंने स्वेच्छा से ऐसी संपत्ति का त्याग कर दयिा, और गरीबी का जीवन अपनाया। शुरू में, ऐसा जीवन उनके लिए दुख से भरा और बहुत कठनि लगा, लेकनि बाद में यह आसान और हर तरह के आराम से भर गया: क्योंकि मिसीह का *'जोड़' 'भला'* है और *उनका 'बोझ हल्का'* है (मत्ती 11:30)।

शैतान ने उस धर्मनषि्ठ दंपति को लालच से लुभाने की कोशशि की। एक दनि, जब उनकी संपत्तयिों की बक्रिी से उनके पास बहुत सारा सोना आया, तो उसने उनके दलिों में सोने के लिए एक वशिेष जुनून भरना शुरू कर दयिा। लेकनि मेलानयिा ने, प्राचीन सांप की चालाकी को पहचानते हुए, तुरंत उसके सरि को कुचल दयिा, सोने को धूल समझकर उसे गरीबों पर बेहचिक खर्च कर दयिा। धन्य ने अपने बारे में नम्निलखिति बातें बताईं:

'मेरे पास एक संपत्ति थी जसिमें एक ऊँचे और सुंदर स्थान पर एक घर था; यह हमारी सभी संपत्तयिों में सबसे बेहतरीन थी। एक तरफ समुद्र था, और पहाड़ी से जहाजों को नौकायन करते और मछली पकड़ने वाले मछुआरों को देखा जा सकता था। दूसरी ओर ऊँचे पेड़ खड़े थे; वहाँ बोए हुए खेत, बगीचे और हरे-भरे अंगूर के बाग़ दखिाई देते थे; एक जगह शानदार स्नान के तालाब थे, तो दूसरी जगह प्राकृतकि झरने; वहाँ वभिन्नि पक्षयिों का गीत सुनाई देता था, जबकि यहाँ उनके लिए बनाए गए बाड़ों में हर तरह के जानवर थे, और उनका शकिार सफल होता था। और शत्रु ने मेरे मन में यह डाला कि मैं इस संपत्ति को उसकी सुंदरता के लिए रखूँ और इसे बेचूँ नहीं, बल्कि इसे अपने लिए रखूँ, ताकि मैं वहाँ रह सकूँ। लेकनि, ईश्वर की कृपा से, मुझे एहसास हुआ कि ये शत्रु की युक्तयिाँ थीं, और, स्वर्गीय नविासों की ओर अपना मन मोड़ते हुए, मैंने तुरंत उस संपत्ति को बेच दयिा और उसकी आय अपने मसीह को दे दी।

धार्मकि दंपति द्वारा इटली में अपनी संपत्तयिाँ बेचने के बाद, उनका दान, प्रचंड नदयिों की तरह, पृथ्वी के चारों कोनों तक पहुँचा। उन्होंने मेसोपोटामयिा, फनिसिियिा, सीरयिा, मस्रि और फलिस्तीन में - चर्चों और मठों, पुरुषों और महलिाओं दोनों के लिए, आश्रय-गृहों और अस्पतालों के लिए, अनाथों और वधिवाओं के लिए, कैद और काल-कोठरयिों में बंद लोगों के लिए, और बंदयिों की रहिाई के लिए भी - प्रचुर दान भेजा। उनके हाथों से बहने वाली उदारता से पश्चमि और पूर्व दोनों भर गए थे। कभी-कभी वे शांत और कम आबादी वाले स्थानों पर पूरे द्वीप खरीद लेते थे और वहाँ मठ बनाकर उन्हें पुरोहतिों की देखभाल में सौंप देते थे। उन्होंने हर जगह पवत्रि चर्चों को सोने और चांदी से, पुरोहतिों के सोने के कढ़ाई वाले परधिानों से सजाया, और चर्च की भव्यता के लिए कसिी भी खर्च को नहीं बख्शा। फरि, इटली में अपनी ज़मीनों का एक छोटा सा हस्सिा बेचे बनिा छोड़कर, वे अपनी माँ मेलानयिा के साथ, जो तब भी जीवति थीं, एक जहाज पर चढ़े और ससिलिी के लिए रवाना हो गए, आंशकि रूप से वहाँ अपनी संपत्तयिाँ स्वयं बेचने के लिए, और आंशकि रूप से अपने आध्यात्मकि पति, धन्य बशिप पॉलनिस से मलिने के लिए।

[419]उनके प्रस्थान के तुरंत बाद, बर्बर लोगों ने रोम पर हमला कयिा और तलवार और आग से शहर के आसपास के पूरे ग्रामीण इलाकों और पूरे इटली को तबाह कर दयिा। संतों ने ईश्वर की मदद से इस वपित्ति के आने से पहले अपनी संपत्तयिाँ बेचकर बहुत अच्छा कयिा। क्योंकि जो कुछ व्यर्थ में नष्ट होने के लिए नयित था, वह उनके लिए शाश्वत जीवन में सौगुना पुरस्कार में बदल गया। इसके अलावा, उन्होंने इटली छोड़कर अपनी शारीरकि सेहत को भी सुरक्षति रखा, ठीक

[419] यह, बेशक, गोथों को संदर्भति करता है, एक जर्मनकि जनजाति जिसिने 408, 409 और 410 में रोम की घेराबंदी की और अंततः उसे लूट लयिा।

वैसे ही जैसे लूत ने बर्बरों द्वारा सोडोम के भयंकर विनाश से पहले उसे छोड़ दिया था[420] । सिसिली की यात्रा करने और रास्ते में नोला के बिशप सेंट पॉलिनिस से मिलने के बाद[421] , उन्होंने वहां अपनी पूर्व संपत्तियों से संबंधित मामलों को निपटाया और लीबिया तथा कार्थेज के लिए रवाना हो गए[422] ।

जब वे समुद्र पार कर रहे थे, एक भयंकर तूफ़ान और एक प्रचंड आँधी उठ खड़ी हुई, जो कई दिनों तक चली। जहाज पर ताज़ा पानी पहले ही कम पड़ गया था, जबकि वहाँ कई नौकर और नौकरानी थे, और वे सभी तीव्र प्यास से त्रस्त थे। संत मेलानिया को जब यह एहसास हुआ कि प्रभु ने उनके द्वारा लीबिया के लिए चुने गए मार्ग को आशीर्वाद नहीं दिया है, तो उन्होंने पालों को हवा की दिशा में मोड़ने का आदेश दिया, और ईश्वर पर भरोसा किया कि वह जहाज को वहाँ ले जाएगा जहाँ वह चाहे। हवा के सहारे बहते हुए, वे एक द्वीप पर पहुँचे। उनके आने से ठीक पहले, बर्बर लोगों ने अचानक द्वीप पर हमला कर दिया था, उसे अपने कब्जे में ले लिया था, और बहुत सारे पुरुषों और महिलाओं को ले गए थे; उन्होंने बचे हुए निवासियों को संदेश भेजा कि, यदि वे चाहें, तो उन्हें जल्द से जल्द बंदियों के लिए फिरौती का भुगतान करना चाहिए: अन्यथा, सभी बंदियों का सिर कलम कर दिया जाएगा। द्वीप के निवासी गहरे संकट में थे, क्योंकि अपने सीमित साधनों के कारण, कुछ ही लोग फिरौती का भुगतान कर सके।

उस समय, मेलानिया और एपिनियिनस को ले जा रही एक जहाज उस द्वीप पर आकर रुकी। उस द्वीप के बिशप ने, यह सुनकर कि रोम से एक जहाज वहाँ रुका है, बंदियों को छुड़ाने के लिए मदद माँगने आए और उन्हें उम्मीद से कहीं ज़्यादा मदद मिली। उन पर दया करके, मेलानिया और एपिनियिन ने सभी बंदियों को छुड़ाने के लिए जितने सोने की आवश्यकता थी, उतना दे दिया। जब वे उस द्वीप से प्रस्थान करने लगे, तो एक सौम्य और अनुकूल हवा चली, और वे जल्द ही कार्थेज पहुँच गए। वहाँ उतरने के बाद, उन्होंने चर्चों और मठों को लाभ पहुँचाते हुए और गरीबों तथा बीमारों की दुर्दशा को कम करते हुए, अपने परोपकार के प्रचुर कार्य किए।

इन पुण्य कार्यों को करते हुए, वे कार्थेज से बहुत दूर नहीं, टैगास्टे नामक एक शहर में बस गए। टैगास्टे के बिशप अलिपियस थे, जो धन्य ऑगस्टीन के मित्र थे[423] , एक वाक्पटु और शिक्षण में निपुण व्यक्ति, जिन्होंने अपने पास आने वाले सभी लोगों को बुद्धिमानी से उपदेश दिया। इस अच्छे चरवाहे से प्रेम करने के बाद, एपिनियिन और संत मेलानिया ने उनके चर्च को भव्य रूप से सजाया और उसके लिए कई संपत्तियाँ खरीदीं; इसके अलावा, उन्होंने वहाँ दो मठ स्थापित किए, एक पुरुषों के लिए—जिसमें अस्सी भिक्षु रहते थे—और दूसरा महिलाओं के लिए—जिसमें एक सौ तीस नन रहती थीं—और इन मठों को ज़मीन और सभी आवश्यक चीज़ें प्रदान कीं। संत मेलानिया ने धीरे-धीरे और भी कठोर उपवास करने की आदत डालनी शुरू कर दी: पहले वह एक दिन छोड़कर, फिर दो दिन में एक बार भोजन करती थीं, और अंत में शनिवार और रविवार को छोड़कर पूरे सप्ताह बिना भोजन के रह जाती थीं। कभी-कभी वह किताबें लिखती थीं, क्योंकि वह बहुत खूबसूरती से और बिना गलतियों के लिखती थीं; अन्य समय में वह गरीबों के लिए कपड़े बनाती थीं। वह नकल की गई किताबों को बेचने के लिए भेजती थीं, और इस मेहनत से कमाया गया पैसा गरीबों में बाँट देती थीं। उन्होंने खुद को पूरी लगन से पवित्र शास्त्रों को पढ़ने के लिए भी समर्पित कर दिया। जब उनके हाथ काम या लिखने से थक जाते थे, तो वह पढ़ने का अभ्यास करती थीं, मानो अपनी आँखों को कुछ करने के लिए दे रही हों। हालाँकि, यदि लंबी पढ़ाई से उसकी आँखें थक जातीं, तो उसकी सुनने की शक्ति उसकी सहायता के लिए आ जाती, क्योंकि वह दूसरों को पढ़ने का निर्देश देती और खुद सुनती रहती। वह साल में तीन बार पुराना और नया नियम पढ़ने की आदत रखती थी; और वह सबसे महत्वपूर्ण अंशों को अपनी स्मृति में रखती थी और उन्हें लगातार अपने होठों पर रखती थी। वह रात में मुश्किल से दो घंटे सोती थी, और तब भी बिस्तर पर नहीं, बल्कि फिर्श पर, एक मोटे तख्त पर। वह कहा करती थीं कि मनुष्य को हमेशा सतर्क रहना चाहिए, क्योंकि हम नहीं जानते कि चोर किस घड़ी आएगा।

---

[420] लूत यहूदी लोगों के पूर्वज अब्राहम के भतीजे थे। अपने चाचा से अलग होने के बाद, वह अपने परिवार के साथ सदोम में बस गए - यह एक घाटी में स्थित शहर था, जिसके स्थान पर बाद में मृत सागर का गठन हुआ। जब सदोम के लोगों ने अपने पापों द्वारा परमेश्वर का क्रोध भड़काया और परमेश्वर ने सदोम को विनाश की सजा दी, तो लूत, जिसे एक स्वर्गदूत द्वारा पहले ही चेतावनी दी जा चुकी थी, अपनी पत्नी और बेटियों के साथ सदोम से भाग गया।

[421] नोला शहर दक्षिणी इटली में, कैम्पानिया में स्थित था। सेंट पॉलिनिस 409 से 431 तक नोला के बिशप थे। उनका पर्व दिवस 23 जनवरी को होता है,

[422] उत्तरी अफ्रीका में, लगभग सीधे इटली के विपरीत।

[423] 391 में अलीपियस को टागास्टे के बिशप पद पर चुना गया था

उन्होंने अपनी सेवा करने वाली युवा महलिाओं में इस तपस्वी जीवन शैली को स्थापति कयि; लेकनि उन्होंने कई युवा पुरुषों को भी पवत्रिता से जीने और अपनी कुँवारी अवस्था बनाए रखने के लिए मनाया। उन्होंने कई अवशि्वासयिों को मसीह के प्रतआिकर्षति कयि और उन्हें ईश्वर की ओर ले गईं।

कार्थेज में सात साल रहने के बाद, मेलानयि यरूशलेम में पवत्रि स्थानों को देखना चाहती थीं। अपनी माँ और एपनियिस—जो कभी उनके पतथि लेकनि अब उनके आध्यात्मकि भाई और साथी थे—के साथ एक जहाज पर सवार होकर, वे उनके साथ समुद्र पार रवाना हुईं। जसि जहाज पर वे यात्रा कर रहे थे, वह अनुकूल हवा की मदद से सुरक्षति रूप से अलेक्जेंड्रयि में पहुँच गया। वहाँ अलेक्जेंड्रयि के आर्चबशिप, संत सरिलि ने उनका सवागत कयि। उसकी संगतकिा आनंद लेने के बाद, वे एक बार फरि समुद्र यात्रा पर नकिले और पवत्रि नगर यरूशलेम पहुँचे। वहाँ पहुँचने पर, अपने हृदय में गहरी भावना और अकथनीय आनंद के साथ, उन्होंने उन पवत्रि स्थानों का दौरा कयि जन्हिें हमारे प्रभु और परमेश्वर की अतपिवत्रि माता ने अपने पवत्रितम पदचन्हिों से पवत्रि कयि था। पवत्रि सेपल्चर पर, धन्य मेलानयि प्रार्थना करने के लिए हर रात शाम से ही ठहरती थीं। वहाँ वह प्रभु मसीह से भक्तपिूर्वक प्रार्थना करती थीं, पवत्रि सेपल्चर के सामने प्रणाम करते हुए रोती थीं, उसे गले लगाती थीं और चूमती थीं।

जब मेलानयि और एपनियिानुस यरूशलेम में ठहरे हुए थे, तो उनके एक वफादार मत्रि ने इटली में उनकी बची हुई संपत्तबिेच दी और उसका पैसा यरूशलेम में उन्हें भेज दयि।

यरूशलेम में कुछ समय बतिाने के बाद, वे मस्रि की यात्रा करके वहां के मरुभूमकि संतों से मलिना और अपनी संपत्तसि उनका समर्थन करना चाहते थे। वे समुद्र मार्ग से रवाना हुए, और अपनी बहुत बूढ़ी और थकी हुई मां को पवत्रि शहर में पीछे छोड़ गए। साथ ही, उन्हें जैतून की पहाड़ी पर उनके लिए एक घर बनाने का काम सौंपा गया था।

मस्रि में, मेलानयि ने अपने आध्यात्मकि भाई, एपनियिन के साथ, मरुभूमकि संतों से मुलाकात की और उनके दैवीय रूप से प्रेरति शब्दों से महान आध्यात्मकि लाभ प्राप्त कयि। साथ ही, उन्होंने ज़रूरतमंदों के प्रतमिहान उदारता दखिाई। फरि भी, उन्हें ऐसे कई सांसारकि मोह से परे रहने वाले संतों से भी मलिना हुआ जन्होंने उन्हें दए गए दान को स्वीकार करने से इनकार कर दयि और सोने से ऐसे मुंह मोड़ लयि जैसे वह सांप का नख हो। उनमें एफेशयिन नाम का एक संत था, जसिने उनके कुछ सोने के सक्कि स्वीकार करने के बहुत अनुरोध करने के बावजूद, ऐसा करने से इनकार कर दयि। जब वह उनकी कुटयि में घूमी और संन्यासी की संपत्तकि जाँच की, तो मेलानयि को केवल एक पुआल की चटाई और एक पानी का घड़ा, थोड़ी सी सूखी रोटी और नमक वाला एक डब्बिा मलि। उसने चुपचाप सोने को इस डब्बिे में रख दयि और उस पर नमक डाल दयि। जब वे तपस्वी के आवास से चले गए, तो मेलानयि का यह काम उस बूढ़े आदमी की नज़र से नहीं छूटा। सोना पाकर, वह उनके पीछे भागा, और ज़ोर से चल्लिाकर उन्हें रुकने और उसका इंतज़ार करने के लिए कहने लगा। जब वे रुके, तो बूढ़े आदमी ने उन्हें अपने हाथ में पकड़े सोने को दखिाया और कहा:

'मुझे इसकी कोई ज़रूरत नहीं है: मुझे नहीं पता कमिैं इसके साथ क्या करूँ; अपना खजाना वापस ले लो।'

उन्होंने उत्तर दयि:

'अगर तुम्हें इसकी ज़रूरत नहीं है, तो इसे दूसरों को दे दो।'

लेकनि बूढ़े ने आपत्तजिताई:

'यहाँ इसे कसिको और कसिलिए चाहिए? आप देख सकते हैं कयिह जगह सुनसान है।'

वे फरि भी बुज़ुर्ग से अपना सोना वापस लेने से इनकार कर गए, तो उसने उसे नदी में फेंक दयि और अपनी कुटयि में लौट गया।

इसके बाद, यात्री एक बार फरि अलेक्जेंड्रयि पहुँचे, फरि नट्रियि[424] , और हर जगह संन्यासयिों के आवासों का दौरा कयि, जैसे मधुमक्खयिाँ फूलों से फूलों तक उड़ती हैं और उनसे मधु इकट्ठा करती हैं। फरि वे पवत्रि तपस्वयिों से प्राप्त कई शकि्षाप्रद सबकों से समृद्ध होकर यरूशलेम लौट आए। और, जैसा कउिन्होंने आशा की थी, उन्हें जैतून के पहाड़ पर उनके लिए तैयार एक घर मलि। वहाँ वे बस गए।

मेलानयि ने खुद को एक तंग कोठरी में बंद कर लयि, यह संकल्प लेते हुए कवि ह कसिी से नहीं मलिेगी, और न ही कोई उसे देखेगा। सप्ताह में केवल एक बार उनकी माँ और उनके आध्यात्मकि भाई, एपनियिन, उनसे मलिने आते थे।

---

[424] नट्रियि अलेक्जेंड्रयि के दक्षणि में, नील नदी के पश्चमि में, लीबयि के रेगस्तिान के पास एक पहाड़ है। इस पहाड़ का नाम इसके पास की झीलों में पाए जाने वाले नाइट्रे से पड़ा है।

उन्होंने इस एकांत में चौदह साल बिताए। इस दौरान, मेलानिया की माँ का निधन हो गया, जो पुण्य कर्मों और धन्य आशा से परिपूर्ण थीं। संत ने अपनी दिवंगत माँ की स्मृति में उचित अनुष्ठान करने के बाद, एक बार फिर से एक और भी तंग और बहुत अंधेरी कमरे में खुद को अलग कर लिया, जहाँ उन्होंने एक साल बिताया। उनकी ख्याति दूर-दूर तक फैल गई, और कई लोग आध्यात्मिक मार्गदर्शन के लिए उनके पास आने लगे। फिर मेलानिया दूसरों के मोक्ष की सेवा करने के लिए अपने एकांत से बाहर आईं। उन्होंने एक मठ की स्थापना की, जहाँ नब्बे से अधिक युवतियाँ एकत्रित हुईं। कई स्पष्ट रूप से पापी महिलाएँ भी उनके पास आईं, और पश्चाताप के मार्ग पर उनके मार्गदर्शन में, उन्होंने ईश्वर को प्रसन्न करने वाला जीवन जीना शुरू कर दिया। मेलानिया ने अपने मठ के लिए एक अधिष्ठात्री चुनी, जबकि उन्होंने स्वयं सभी की नौकरानी की तरह सेवा की और एक माँ की तरह सभी की देखभाल की। उन्होंने बहनों को विभिन्न सद्गुण सिखाए: सबसे पहले, पवित्रता; फिर प्रेम, जिसके बिना कोई भी सद्गुण पूर्ण नहीं हो सकता; इसके बाद विनम्रता, आज्ञाकारिता, धैर्य और दया। उन्हें प्रेरित करने के लिए, उन्होंने उन्हें निम्नलिखित कहानी सुनाई। 'एक बार, एक युवक एक महान संन्यासी के पास उनका शिष्य बनने की इच्छा से आया। और उस वृद्ध ने, शुरू से ही यह दिखाते हुए कि एक शिष्य कैसा होना चाहिए, उसे एक लाठी लेने और द्वार के पास खंभे पर अपनी पूरी ताकत से वार करने, उस पर कूदने और उसे लात मारने का आदेश दिया। शिष्य ने वृद्ध की आज्ञा मानते हुए, उस निर्जीव खंभे पर अपनी पूरी ताकत से वार किया। वृद्ध ने उस युवक से पूछा:

'क्या इस स्तंभ ने, जिस पर तुम वार कर रहे थे, तुम्हें कोई विरोध किया, या बुरा माना? क्या यह अपनी जगह से हिला, या तुम पर झपट पड़ा?'

युवक ने उत्तर दिया:

'नहीं!'

तब वृद्ध ने कहा:

'तो फिर उस पर और ज़ोर से वार करो, और अपने वारों के साथ सबसे कठोर शब्द भी कहो: उसका मज़ाक उड़ाओ, उस पर ताना मारो, उसका अपमान करो, उसे गालियाँ दो, और हर तरह से उसकी निंदा करो।'

जब उस युवक ने ऐसा कर लिया, तो बुजुर्ग ने पूछा:

'क्या उस अपमानित स्तंभ ने तुम पर क्रोध किया, क्या उसने तुम्हारे खिलाफ कुछ कहा? क्या उसने विरोध किया या तुम्हें फटकारा?'

युवक ने उत्तर दिया:

'नहीं, पिताजी! और एक ऐसा स्तंभ जो असंवेदनशील और निर्जीव है, वह गुस्सा कैसे हो सकता है?'

बड़े ने फिर कहा:

'यदि तुम इस स्तंभ जैसे बन सको—जो तुम्हें मारते हैं, उनसे क्रोधित न हो, प्रहारों से न भागो, जो आज्ञा देते हैं, उनका विरोध न करो, और अपमान का उत्तर अपमान से न दो—यदि, हर तरह के दुखों के बीच, तुम एक स्तंभ की तरह अडिग रहो, तो आओ और हमारे शिष्य बन जाओ। अन्यथा, हमारे द्वार के पास भी मत आना।

इस दृष्टांत के माध्यम से, धन्य ने बहनों को धैर्य और कोमलता सिखाई, और वे इस उदाहरण से प्रेरित हुईं, जो उनके लाभ के लिए था। अपने द्वारा स्थापित मठ की बहनों को निर्देश और मार्गदर्शन देते हुए, संत मेलानिया ने उसी समय उस मठ के भीतर एक भव्य चर्च का निर्माण किया और यह सुनिश्चित किया कि इसे भविष्यवक्ता जकरियाह, पहले शहीद स्टीफन, और चालीस शहीदों की पवित्र अवशेषों से समर्पित किया जाए।

इन घटनाओं के बाद, उनके आध्यात्मिक भाई—जो पहले उनके पति थे—धन्य अपिनियन, प्रभु परमेश्वर को प्रसन्न करके, एक भिक्षु के रूप में रहते हुए ही उनके पास चले गए। मेलानिया ने उन्हें सम्मान के साथ दफनाया और फिर अपने निकट मृत्यु के अनुमान में, अपने निधन की तैयारी करने लगीं। लेकिन ईश्वर की इच्छा ने दूसरों के उद्धार के लिए उनका जीवन लंबा कर दिया। अपिनियन की मृत्यु के बाद, मेलानिया ने पुरुषों के लिए एक और मठ की स्थापना की और ईश्वर की महिमा के लिए अपनी अंतिम संपत्ति भी इस पर खर्च कर दी। इस प्रकार, जो पहले से ही आत्मा में गरीबी को अपना चुकी थीं, वे शरीर में भी गरीब हो गईं।

उस समय मेलानिया के पास कॉन्स्टेंटिनोपल से उसके चाचा रोमन वोलुसियानुस का एक संदेश आया। यह वोलुसियानुस, जिसे तब तक रोमन एम्फीपेट[425] नियुक्त किया जा चुका था, पश्चिमी सम्राट के एक विशेष मिशन पर बाइजेंशियम भेजा गया था। पूर्व में पहुँचने पर, वह अपनी भतीजी, आदरणीय मेलानिया से मिलना चाहता था। इसलिए उसने यरूशलेम में उसके पास एक संदेशवाहक भेजा, और उससे वज़िान्टियम में उससे मिलने आने का अनुरोध किया। शुरू में, मेलानिया अपने चाचा के पास जाने के लिए अनिच्छुक थी, क्योंकि वह हेलेनिक बहुदेववाद का पालन करते थे; लेकिन बाद में, अपने आध्यात्मिक पिताओं की सलाह पर, वह उन्हें ईश्वर की ओर मोड़ने की आशा से प्रेरित होकर, उनके पास जाने के लिए निकल पड़ी। रास्ते में, हर उस नगर में जहाँ संत रुकीं, उन्हें बहुत सम्मान दिया गया, क्योंकि ईश्वर उन लोगों को महिमामय बनाता है जो उसकी महिमा करते हैं। बिशपों और पुरोहितों, नगर के बुज़ुर्गों और लोगों ने उनका स्वागत किया, और सभी ने उन्हें प्यार से स्वीकार किया, मानो वे स्वर्ग से आई कोई अतिथि हों, क्योंकि उनके सद्गुणों और पवित्र जीवन का प्रकाश पूरी दुनिया में फैल गया था। राजधानी में स्वयं, सम्राट थियोडोसियस द यंगर, उनकी महारानी यूडोक्सिया, और पैट्रिआर्क प्रोकल्स द्वारा भी उनका उसी प्रकार बड़े सम्मान से स्वागत किया गया। उसे अपने चाचा वोलुसियानुस बीमार मिले। उसे देखकर उसके चाचा उसके संन्यासी परिधान और शरीर की तपस्या से बहुत चकित हुए, क्योंकि लंबे समय के उपवास और परिश्रम से उसका चेहरा क्षीण हो गया था और उसकी पूर्व सुंदरता फीकी पड़ गई थी। और वोलुसियानुस ने कहा:

'मेरी प्रिय मेलानिया, तुम्हारा यह क्या हाल हो गया है!'

लेकिन इस पर लंबा क्यों ठहरें? आंशिक रूप से मेलानिया का अपना चरित्र, आंशिक रूप से संत प्रोकॉस का प्रभाव, लेकिन सबसे बढ़कर मसीह की इस धर्मनिष्ठ दासी की दैवीय प्रेरित बातचीत और उसके सार्थक उपदेशों ने जल्द ही यह परिणाम ला दिया कि उसके चाचा ने हेलेनिक अधर्म का त्याग कर दिया और पवित्र बपतिस्मा ग्रहण किया। पवित्र संस्कार प्राप्त करने के कुछ ही दिनों बाद उन्होंने अपना प्राण ईश्वर को अर्पित कर दिया और उन्हें स्वयं संत मेलानिया ने ही दफनाया।

बाइज़ेन्टियम में अपने काफी लंबे प्रवास के दौरान, मेलानिया ने कई लोगों को नेस्टोरियन विधर्म से सच्चे धर्म में परिवर्तित किया—जो उस समय चर्च के भीतर बहुत बड़ा भ्रम पैदा कर रहा था—और कई ऑर्थोडॉक्स विश्वासियों को धर्म-त्याग से भी बचाया; क्योंकि प्रभु ने उसे ऐसी कृपा प्रदान की थी कि नेस्टोरियनों के विधर्मी और तर्क-कुशल तर्क किसी भी तरह से उस पर हावी नहीं हो सकते थे। परम पूजनीय एक, जिन्होंने अपने जीवन के सभी वर्ष पवित्र शास्त्रों को पढ़ने में समर्पित किए थे और जो पवित्र आत्मा की कृपा से परिपूर्ण थीं, उन्हें शास्त्रों का पूर्ण ज्ञान था। सुबह से शाम तक, विभिन्न लोग उनसे बात करते और ऑर्थोडॉक्सी के बारे में पूछते, और वह बुद्धिमानी से जवाब देतीं, जिससे पूरा राजधानी शहर उनकी बुद्धिमानी से चकित रह गया। बाद में, वह धन्य महिला एक बार फिर यरूशलेम लौट आईं और, जब उनका अंत निकट आया, तो उन्होंने एक अच्छे प्रस्थान के लिए खुद को तैयार किया।

उन्हें चंगा करने का वरदान मिला था, और उन्होंने कई बीमारियों को ठीक किया। उनके द्वारा किए गए इन चंगाइयों में से, हम कुछ का वर्णन करेंगे, जो उनके भीतर वास करने वाले ईश्वर की कृपा के प्रमाण के रूप में हैं।

रानी यूडोक्सिया[426] , जिन्होंने पूजनीय मेलानिया को अपनी आध्यात्मिक माता नियुक्त किया था, यरूशलेम आईं, आंशिक रूप से पवित्र स्थानों का सम्मान करने और आंशिक रूप से अपनी आध्यात्मिक माता से मिलने के लिए।

रास्ते में, उसका टखना मुड़ गया और उसे इतनी पीड़ा हुई कि वह एक कदम भी नहीं चल सकती थी। लेकिन जैसे ही संत मेलानिया ने उसके टखने को केवल छुआ, वह ठीक हो गया।

एक युवती एक राक्षस द्वारा पीड़ित थी, जिसने उसके होंठ इतनी कसकर बंद कर दिए थे कि वह उन्हें खोल नहीं सकती थी; वह न तो एक शब्द बोल सकती थी और न ही कोई भोजन चख सकती थी, और उसकी मृत्यु निश्चित थी – राक्षस के यातनाओं की तुलना में लंबे समय तक भूखे रहने से पहले ही। संत मेलानिया ने प्रार्थना के माध्यम से इस महिला को पवित्र तेल से अभिषिक्त करके चंगा कर दिया। दैत्य उससे चला गया, और उसके होंठ ईश्वर की स्तुति और धन्यवाद करने के लिए खुल गए; और भोजन का स्वाद चखने के बाद, वह स्वस्थ हो गई।

---

[425] एम्फिपिटस – कई प्रांतों पर مشتمل एक क्षेत्र का राज्यपाल।

[426] सम्राज्ञी यूडॉक्सिया – पूर्वी सम्राट थियोडोसियस द्वितीय की पत्नी, जिन्होंने 408 से 450 तक शासन किया।

एक और महलिा गर्भवती थी और प्रसव का समय आ गया था; लेकनि वह ऐसा नहीं कर सकी, क्योंकि उसके गर्भ में बच्चा मर गया था। भयानक दर्द से पीड़ति, वह मौत के कगार पर थी। लेकनि संत मेलानयिा ने अपनी प्रार्थनाओं के माध्यम से इस महलिा की मदद की। जैसे ही उस बीमार महलिा के सीने पर एक पट्टा बांधा गया, वह अपने बोझ से मुक्त हो गई: मृत भ्रूण उसके अंदर से बाहर आ गया, उसे राहत मलिी, और वह बोलने लगी, जबकि पहले वह एक भी शब्द नहीं बोल पा रही थी।

ईश्वर के पास अपने प्रस्थान की पूर्वानुमान लगाते हुए, उस सम्माननीय महलिा ने यरूशलेम और आसपास के क्षेत्रों, बेथलहम और गलील में पवत्रि स्थलों का दौरा कयिा। जब मसीह के जन्म का पर्व आया, तो वह उस गुफा में पूरी रात की प्रार्थना सभा में उपस्थति थीं जहाँ मसीह का जन्म हुआ था, और वहाँ उन्होंने अपनी एक बहन, जो उनकी रश्तिेदार थीं और जो लगातार उनके साथ रहती थीं, से कहा कि यह आखरिी बार था जब वह उनके साथ मसीह के जन्म का पर्व मना रही थीं। इन शब्दों को सुनकर संत की रश्तिेदार जोर-जोर से रो पड़ी। फरि, प्रथम शहीद संत स्टीफन के पर्व के दनि, मेलानयिा ने उनके चर्च में, जो उन्होंने बनवाई थी, पूरी रात जागरण कयिा। जब बहन ने प्रथम शहीद संत स्टीफन की शहादत का वृत्तांत पढ़ा, तो उसने अपनी ओर से यह भी जोड़ दयिा कि वह यह उन्हें आखरिी बार पढ़कर सुना रही थी। तब बहनों के बीच आँसुओं की एक बड़ी बौछार आ गई: उन्हें एहसास हुआ कि संत जल्द ही इस दुनयिा को छोड़ देंगी। हालाँकि, मेलानयिा ने, जैसा कि उनका रवािज था, उन्हें अपने दैवीय प्रेरति शब्दों से काफी देर तक सांत्वना दी और उन्हें सदाचार का उपदेश दयिा। फरि वह चर्च में गईं और प्रार्थना करने लगीं:

'हे प्रभु मेरे परमेश्वर, जनि्हें मैंने आरंभ से ही चुना और प्रेम कयिा है, जनि्हें मैंने एक सांसारकि पति, धन-संपत्ति, महमिा और इस संसार के सुखों से बढ़कर पसंद कयिा है, जनिके हाथ में मैंने अपने जन्म के क्षण से ही अपना शरीर और आत्मा सौंप दयिा है, जनिके लिए मैंने संयम का अभ्यास कयिा है, यहाँ तक कि मेरी हड्डयिाँ भी मेरे शरीर से चपिकी रहीं, – जनि्होंने मेरे दाहनि हाथ का मार्गदर्शन कयिा और अपनी प्रेरणा से मुझे शक्षिति कयिा – और अब मेरी प्रार्थना की पुकार सुनें। और मेरी ये आँसू मेरी ओर आपकी दया की धाराओं को प्रवाहति करें। मुझे मेरे जान-बूझकर और अनजाने में कए गए पापों से शुद्ध कीजए। मेरे लिए आपके पास जाने का एक ऐसा मार्ग तैयार कीजए जो सभी भ्रम और बाधाओं से मुक्त हो, ताकि हवा के दुष्ट आत्माएँ मुझे पीछे न रोक सकें। हे अमर, आप हमारी नश्वर प्रकृति को जानते हैं। हे मानवता के प्रेमी, आप जानते हैं कि कोई भी मनुष्य दोष रहति नहीं है; ऐसा कोई नहीं है जसिमें शत्रु को कोई दोष न मलि जाए, भले ही वह केवल एक दनि ही क्यों न जए। परन्तु हे प्रभु, आप मेरे सभी पापों को अनदेखा करके, मुझे अपने न्याय में शुद्ध करें।

इस प्रकार संत मेलानयिा ने प्रार्थना की, और, अपनी प्रार्थना समाप्त करने से पहले ही, उन्हें शारीरकि दर्द महसूस होने लगा। फरि भी, भले ही वह अपनी बीमारी से थक चुकी थीं, उन्होंने अपने कार्य नहीं छोड़े; वह नयिमति चर्च सेवा में शामलि हुईं और सुबह से ही अपनी बहनों को अपनी शक्षिाओं से शक्षिति करती रहीं। तब उन्होंने बशिप एलेउथेरोपोलसि[427] के हाथों से परम पवत्रि और दव्यि रहस्य प्राप्त कए, जो पुरोहतिों के साथ उन्हें मलिने आए थे, और मृत्यु की प्रतीक्षा करने लगीं। इसी समय, उन्होंने अपनी रश्तिेदार को, जो संत से बछिड़ने पर गहरा शोक मना रही थी, और सभी बहनों को सांत्वना दी; और सभी को अंतमि चुंबन के साथ वदिा कहने के बाद, उन्होंने नम्निलखिति शब्द कहे:

'जैसा ईश्वर को उचति लगा, वैसा ही हुआ।'

इन शब्दों के साथ, एक साधारण बस्तिर पर लेटी हुई, उन्होंने अपनी आत्मा ईश्वर के हाथों में सौंप दी, अपनी आँखें कसकर बंद कर लीं और क्रॉस के चह्नि में अपने हाथ छाती पर जोड़ लए[428] ।

पवत्रि शहर के आसपास के सभी मठों के भक्षिु और भक्षिुणयिाँ उनके अंतमि संस्कार के लिए इकट्ठा हुए; उन्होंने पूरी रात उनके लिए भजन गाए, और फरि उन्हें सम्मान के साथ दफनाया। उनकी पवत्रि आत्मा प्रभु परमेश्वर के पास चली गई, जनि्हें उन्होंने प्रेम कयिा था और जनिके लिए उन्होंने अपने जीवन के सभी दनिों में परश्रिम कयिा था। और अब, सभी संतों के साथ, उनकी महमिा में सहभागी होकर, वह हमारे पापयिों के लिए पति, पुत्र और पवत्रि आत्मा, त्रमिूर्ति में एक परमेश्वर से प्रार्थना करती हैं। उसकी महमिा युगानुयुग होती रहे। आमीन।

---

[427] एलेउथेरोपोलसि – दक्षणिी फलिस्तिीन में, यरूशलेम और गाज़ा के बीच सड़क पर एक शहर। आज, शेफ़ेला मैदान के यहूदा के पहाड़ी क्षेत्र में बदलने वाले स्थान पर एक गाँव स्थति है। इस गाँव से दूर नहीं प्राचीन एलेउथेरोपोलसि के खंडहर पड़े हैं।

[428] वर्ष 439 का 31 दसिंबर था।

14 जनवरी

1 जनवरी (पुराना तरीका)

मसीह के खतना पर वचन

1 जनवरी का स्मरणोत्सव

हमारे प्रभु यीशु मसीह ने, अपने जन्म के आठ दिन बाद, खतना करवाने की कृपा की। एक ओर, उन्होंने इसे व्यवस्था को पूरा करने के लिए करवाया: *'मैं व्यवस्था को रद्द करने नहीं आया हूँ'* उन्होंने कहा, *'बल्कि उसे पूरा करने आया हूँ'* (मत्ती 5:17); क्योंकि उन्होंने व्यवस्था का पालन इसलिये किया कि जो लोग इसके बन्धन में बँधे हुए थे, उन्हें इससे मुक्त कर सकें, जैसा कि प्रेरित कहते हैं: *'परमेश्वर ने अपने पुत्र को भेजा, जो व्यवस्था के अधीन था, ताकि व्यवस्था के अधीन वालों को छुड़ा ले'* (गलातियों 4:5)। दूसरी ओर, उन्होंने यह दिखाने के लिए खतना कराया कि उन्होंने वास्तव में मानव देह धारण किया था, और उन विधर्मी आवाज़ों को चुप कराने के लिए जो यह दावा करती थीं कि मसीह ने अपने ऊपर सच्चा मानव देह नहीं लिया, बल्कि केवल एक भ्रामक रूप में पैदा हुए थे[429] । इस प्रकार, उनका खतना इसलिए किया गया ताकि उनकी मानवता प्रकट हो सके। क्योंकि यदि उसने हमारा शरीर न लिया होता, तो एक भूत—और शरीर नहीं—का खतना कैसे हो सकता था? संत एफ्रेम सीरियाई कहते हैं: 'यदि मसीह शरीर नहीं थे, तो यूसुफ ने किसका खतना किया?' लेकिन चूँकि वह वास्तव में देहधारी थे, उन्हें एक मनुष्य के रूप में खतना किया गया, और शिशु वास्तव में मनुष्य के पुत्र के रूप में अपने ही रक्त से लथपथ हो गए; उन्होंने पीड़ा में दुख भोगा और रोया, जैसा कि मानवीय स्वभाव वाले के लिए उचित है।' इसके अलावा, उन्होंने हमारे लिए आध्यात्मिक खतना स्थापित करने के लिए शारीरिक खतना करवाया[430] ; क्योंकि, देह के विषय में पुराने विधान को समाप्त करके[431] , उन्होंने एक नए, आध्यात्मिक विधान की शुरुआत की। और जैसे पुराने नियम का देहधारी मनुष्य ने अपने इंद्रिय देह का खतना किया, वैसे ही नए आध्यात्मिक मनुष्य को आत्मा की कामनाओं का खतना करना चाहिए: क्रोध, रोष, ईर्ष्या, अहंकार, अशुद्ध इच्छाएं और अन्य पाप और पापी वासनाएं। उन्हें आठवें दिन खतना किया गया क्योंकि, अपने रक्त के माध्यम से, उन्होंने हमारे लिए आने वाले जीवन का पूर्वाभास दिया, जिसे चर्च के शिक्षकों द्वारा आम तौर पर आठवां दिन या युग कहा जाता है। इस प्रकार, प्रभु के खतने पर कैनन के लेखक संत स्टीफन[432] कहते हैं: 'यह आठवें युग के अनंत जीवन का पूर्वाभास देता है, जिसमें प्रभु का मांस में खतना किया गया था'[433] । और नाइसा के संत ग्रेगरी कहते हैं: 'व्यवस्था के अनुसार, खतना आठवें दिन किया जाना था, संख्या आठ आने वाले आठवें युग का पूर्वाभास देती है'[434] । यह जानना भी उचित है कि पुराने नियम में खतना बपतिस्मा और मूल पाप की शुद्धि की पूर्वसूचना के रूप में स्थापित किया गया था, यद्यपि उस पाप का खतने से पूर्णतः शोधन नहीं हुआ था—जो तब तक संभव नहीं था जब तक मसीह ने स्वेच्छा से अपने दुखों में हमारे लिए अपना सबसे पवित्र रक्त नहीं बहाया। खतना केवल सच्ची शुद्धि की एक पूर्वसूचना थी, न कि स्वयं सच्ची शुद्धि, जिसे हमारे प्रभु ने संसार से पाप को दूर करके और उसे क्रूस पर चढ़ाकर पूरा किया[435] , और पुराने नियम के खतने के स्थान पर, जल और आत्मा के साथ

---

[429] डॉसेटिस्ट के नाम से जाने जाने वाले विधर्मी यह सिखाते थे कि ईश्वर स्वयं पर नाजुक मानवीय देह धारण नहीं कर सकता था, और यह केवल लोगों को ऐसा प्रतीत हुआ कि मसीह ने पीड़ा सहन की और मृत्यु हो गई।

[430] अर्थात्, बपतिस्मा, जो जैसा कि नीचे बताया गया है, एक व्यक्ति से पापी वासनाओं को दूर करता है।

[431] पुरानी वाचा में मुख्य रूप से किसी व्यक्ति की बाहरी भलाई से संबंधित प्रावधान थे

[432] स्टेफन सावित

[433] प्रभु के खतना की सेवा, कैनन, चौथा ओड।

[434] पवित्र शास्त्र में सात संख्या पूर्णता को दर्शाती है। इसलिए, इस संसार में जीवन की संपूर्ण अवधि को दर्शाने के लिए, पवित्र पिताओं ने 'सात शताब्दियाँ' या 'सात दिन' का प्रयोग किया, जबकि आठवीं शताब्दी या दिन, स्वाभाविक रूप से, आने वाले जीवन को इंगित करने के लिए ही था।

[435] कुल. 2:14. पाप रास्ते में खड़ा था, अर्थात् पाप ने एक बाधा, एक अवरोध के रूप में काम किया, जो मनुष्य को परमेश्वर से अलग करता था। लेकिन फिर पाप को क्रूस पर ठोक दिया गया, अर्थात् उसे उसकी सारी शक्ति से वंचित कर दिया गया और अब वह मनुष्य को परमेश्वर के साथ एकता में प्रवेश करने से नहीं रोक सकता था।

अनुग्रह का नया बपतस्मिा स्थापति कयिा। उन दनिों में खतना, मानो, प्रथम माता-पति के पाप के लिए एक दंड और इस बात का संकेत था कि खतना कए जाने वाले शशिु का गर्भधारण अधर्म में हुआ था, जैसा कि दाऊद कहते हैं, और उसकी माँ ने उसे पाप में जन्म दयिा था (भजन संहति 50:7), यही कारण है कि घाव बच्चे के शरीर पर बना रहता था। लेकनि हमारे प्रभु पाप रहति थे; क्योंकि यद्यपि वे हर तरह से हम जैसे थे, फरि भी उन्होंने स्वयं कोई पाप नहीं उठाया। जसि प्रकार मस्रि देश में मूसा द्वारा स्थापति काँसे का सर्प रूप में एक सर्प के समान था, पर उसमें सर्प का वषि नहीं था (गनिती 21:9), उसी प्रकार मसीह भी एक सच्चे मनुष्य थे, फरि भी मानव पाप से अछूते थे, और एक अलौककि तरीके से उत्पन्न हुए, एक पवत्रि और कुंवारी माता से । चूंकि वह नर्दिोष था और स्वयं वधि-वधिाता था, इसलिए उसे उस दर्दनाक, वैध खतना संस्कार से गुजरने की भी आवश्यकता नहीं थी; लेकनि चूँकि वह संपूर्ण जगत के पाप स्वयं पर लेने आए थे, और जैसा प्रेरति कहते हैं, परमेश्वर ने उसे, जो पाप को नहीं जानता था, हमारे लिए पाप की बलि बना दयिा (2 कुरन्थियिों 5:21), इसलिए उसने, पापरहति होते हुए भी, एक पापी के समान खतना करवाया। और अपने खतना के समय, प्रभु ने हमें अपने जन्म की अपेक्षा अधकि महान वनिम्रता प्रकट की। क्योंकि अपने जन्म में उन्होंने एक मनुष्य का रूप धारण कयिा, प्रेरति के वचन के अनुसार: *'मनुष्य के समान पाए गए, और रूप में मनुष्य के तुल्य'* (फलि. 2:7); परन्तु अपने खतना में उन्होंने स्वयं पर एक पापी का रूप धारण कयिा, और एक पापी के रूप में पाप के कारण होने वाले दर्द को सहन कयिा। और यद्यपि वह कसिी भी बात के दोषी नहीं थे, फरि भी उन्होंने एक नर्दिोष के रूप में दुख उठाया, मानो दाऊद की इस बात को दोहराते हुए: 'जो मैंने नहीं लयिा है, उसे मुझे देना होगा' (भजन संहति 68:5), अर्थात्, 'उस पाप के लिए जसिमें मेरा कोई हाथ नहीं है, मैं खतना के दर्द को स्वीकार करता हूँ।' अपने खतने के द्वारा, उन्होंने हमारे लिए अपने दुखों की शुरुआत की और उस प्याले को पीना शुरू कयिा जसिे उन्हें अंत तक पीना था, जब, क्रूस पर लटके हुए, उन्होंने घोषणा की: *'पूरा हो गया'* (यूहन्ना 19:30)! अब वह अपनी खतना की गई त्वचा से रक्त की बूँदें बहाता है, और बाद में यह उसके पूरे शरीर से धाराओं में बहेगा। वह शशिु अवस्था में ही दुख सहना शुरू कर देते हैं और दुख सहने के आदी हैं, ताकि एक पूर्ण मनुष्य बनकर, वे और भी अधकि कठनि कष्टों को सहन कर सकें; क्योंकि मनुष्य को बचपन से ही साहस के कार्यों में प्रशक्षिति कयिा जाना चाहिए। मानव जीवन, जो परश्रिम से भरा है, एक दनि के समान है, जसिकी सुबह जन्म है और शाम मृत्यु है। इस प्रकार, सुबह से ही, अपने पालने के वस्त्रों से, मसीह, दव्यि-मानव, अपने कार्य, अपनी मेहनत पर नकिल पड़ते हैं—वे अपनी जवानी से ही परश्रिम कर रहे हैं और अपने कार्य में शाम तक लगे रहते हैं (भजन संहति 103:23), उस शाम तक जब सूरज डूबता है और संपूर्ण पृथ्वी पर अंधकार छा जाता है, नौवें घंटे तक। और वह यहूदयिों से कहते हैं: *'मेरा पति अपने काम में लगा हुआ है, और मैं भी अपना काम कर रहा हूँ'* (यूहन्ना 5:17)। तो फरि, प्रभु हमारे लिए क्या कर रहे हैं? – हमारा उद्धार: *'जो पृथ्वी पर उद्धार लाता है'* (भजन संहति 73:12)। और इस कार्य को पूर्णता तक पहुँचाने के लिए, वह सुबह से, अपनी जवानी से ही इसे आरंभ करते हैं, शारीरकि पीड़ा सहना शुरू करते हैं, और साथ ही हमारे लिए, अपने ही बच्चों के लिए, अपने हृदय में पीड़ा सहते हैं, जब तक कि स्वयं—मसीह—हमारे भीतर गढ़े नहीं जाते[436] ।

वह सुबह से ही अपने रक्त से बोने का कार्य आरंभ करते हैं, ताकि संध्या के समय वे हमारे उद्धार का महमिामय फल काट सकें। उनके खतना के समय, प्रयि शशिु को यीशु नाम दयिा गया, जसिे महादूत गब्रयिल ने स्वर्ग से तब लाया था जब उसने सबसे पवत्रि कुँवारी मरयिम को गर्भधारण की घोषणा की थी, इससे पहले कि वह उनके गर्भ में गर्भधारण हुए, अर्थात्, इससे पहले कि सबसे पवत्रि कुँवारी ने प्रचारक के वचनों को स्वीकार कयिा, इससे पहले कि उन्होंने कहा: *'देख, मैं प्रभु की दासी हूँ; मुझमें तेरा वचन पूरा हो!'* (लूका 1:38)। क्योंकि, उसके इन शब्दों पर, परमेश्वर का वचन तुरंत देहधारी हो गया, और उसके अत्यंत शुद्ध और पवत्रि गर्भ में वास करने लगा। इस प्रकार, गर्भधारण से पहले स्वर्गदूत द्वारा दयिा गया परम पवत्रि नाम 'यीशु', प्रभु मसीह को उनके खतना के समय प्रदान कयिा गया, जो हमारे उद्धार की घोषणा के रूप में था; क्योंकि यीशु नाम का अर्थ 'उद्धार' है, जैसा कि उसी स्वर्गदूत ने समझाया जब वह यूसुफ को स्वप्न में दखिाई दयिा, और कहा: *'तू उसका नाम यीशु रखना, क्योंकि वह अपने लोगों को उनके पापों से बचाएगा'* (मत्ती 1:21)। और पवत्रि प्रेरति पतरस यीशु के नाम की गवाही इन शब्दों में देते हैं: *'स्वर्ग के नीचे मनुष्यों को ऐसा कोई और नाम नहीं दयिा गया है जसिसे हमें उद्धार मलिना चाहिए'* (प्रेरतिों के काम 4:12)। यह उद्धारकर्ता नाम, यीशु, सभी युगों से पहले त्रमिूर्ति की परषिद में तैयार कयिा गया था, लखिा गया था और हमारे उद्धार के लिए अब तक संरक्षति रखा गया है;

---

[436] गलातयिों 4:19. 'ताकि प्रतमिा बन जाए' – मसीह की प्रतमिा स्पष्ट रूप से हम पर अंकति है, ताकि हम 'ईसाई' नाम के लिए पूरी तरह से योग्य बन सकें।

लेकिन अब, एक अनमोल मोती की तरह, इसे मानव जाति की मुक्ति के लिए स्वर्गीय खजाने से निकाला गया है और यूसुफ के माध्यम से सभी के लिए प्रकट किया गया है। इस नाम में परमेश्वर का सत्य और ज्ञान प्रकट होता है (भजन संहिता 50:8)। इस नाम ने, भविष्यवक्ता के वचन के अनुसार, सूर्य की भाँति अपनी किरणों से संसार को प्रकाशित किया है: *'किन्तु जो मेरे नाम का आदर करते हैं, उनके लिए धार्मिकता का सूर्य उदय होगा'* (मलाकी 4:2)। सुगंधित गंधरस की तरह, इसने अपनी सुगंध से ब्रह्मांड को भर दिया है: 'जो गंधरस डाला गया है,' जैसा कि धर्मग्रंथ कहता है, 'वह तुम्हारे इत्रों की सुगंध से है' (प्रेम गीत 1:2); उसका नाम पात्र में बचा हुआ गंधरस नहीं है, बल्कि वह है जो डाला गया है। जब तक अत्तर पात्र में बंद रहता है, उसकी सुगंध वहीं सीमित रहती है; लेकिन जब वह बह निकलता है, तो वह तुरंत ही अपनी सुगंध से हवा को भर देता है। यीशु के नाम की शक्ति तब तक अज्ञात थी, जब तक वह शाश्वत परिषद में, मानो एक पात्र में, छिपी हुई थी। लेकिन जैसे ही वह नाम स्वर्ग से पृथ्वी पर उंडेल दिया गया, वैसे ही, शिशु के खतना के समय उंडेलने गए सुगंधित लोहबान की तरह, इसने तुरंत ही संपूर्ण ब्रह्मांड को अनुग्रह की सुगंध से भर दिया, और अब सभी राष्ट्र यह स्वीकार करते हैं कि प्रभु यीशु मसीह, परमपिता परमेश्वर की महिमा के लिए,[437] हैं। यीशु के नाम की शक्ति अब प्रकट हो गई है, क्योंकि उस अद्भुत नाम, यीशु ने, स्वर्गदूतों को आश्चर्य से भर दिया है, मानव जाति को आनंद दिया है, और दुष्टात्माओं में आतंक भर दिया है, क्योंकि दुष्टात्माएँ भी विश्वास करती हैं और काँपती हैं (याकूब 2:19); उसी नाम से नरक कांपता है, अधोलोक हिलता है, अँधेरे का राजकुमार गायब हो जाता है, मूर्तियाँ गिर जाती हैं, मूर्तिपूजा का अंधकार दूर हो जाता है, और उसकी जगह पर भक्ति की रोशनी चमक उठती है और संसार में आने वाले हर व्यक्ति को प्रकाशित करती है (यूहन्ना 1:9)। यह नाम हर नाम से ऊपर है, ताकि यीशु के नाम पर स्वर्ग में और पृथ्वी पर और पृथ्वी के नीचे हर घुटना झुक जाए (फिलिप्पियों 2:10)। यीशु का यह नाम शत्रुओं के विरुद्ध एक शक्तिशाली हथियार है, जैसा कि संत जॉन क्लाइमक्स कहते हैं: 'हमेशा योद्धाओं को यीशु के नाम से गिरा दो, क्योंकि तुम्हें इसके जैसे शक्तिशाली कोई हथियार न तो स्वर्ग में मिलेगा और न ही पृथ्वी पर।' मसीह यीशु से प्रेम करने वाले हृदय के लिए यह सबसे कीमती नाम, यीशु, कितना मधुर है! जो इसे धारण करते हैं, उनके लिए यह कितना आनंददायक है! क्योंकि यीशु ही सारा प्रेम, सारी मिठास हैं। यीशु के इस परम पवित्र नाम को यीशु के दास और बंदी, जो उनके प्रेम में बंदी बना लिया गया है, कितना प्रिय है! यीशु मन में हैं, यीशु होंठों पर हैं, यीशु वहाँ हैं जहाँ हृदय धार्मिकता के लिए विश्वास करता है, यीशु वहाँ हैं जहाँ मुँह उद्धार के लिए स्वीकार करता है (रोमियों 10:10)। चाहे आप चल रहे हों, शांत बैठे हों, या काम कर रहे हों – यीशु हमेशा आपकी आँखों के सामने हैं। प्रेरित ने कहा, 'क्योंकि मैंने यह ठान लिया था, कि मैं तुम्हारे बीच केवल यीशु को ही जानूँ' (1 कुरिन्थियों 2:2)। क्योंकि जो लोग उससे चिपके रहते हैं, उनके लिए यीशु मन का ज्ञान, आत्मा की सुन्दरता, शरीर के लिए स्वास्थ्य, हृदय के लिए आनंद, कष्टों में सहायक, दुखों में आनंद, बीमारी में उपचार, सभी कष्टों में सांत्वना, और उद्धार की आशा हैं; और जो उनसे प्रेम करते हैं, उनके लिए, वह स्वयं ही पुरस्कार और प्रतिफल हैं।

जेरोम के अनुसार, ईश्वर का अकथनीय नाम एक बार एक सुनहरी प्लेट पर अंकित किया गया था जिसे महापुजारी अपने माथे पर पहनता था[438] ; लेकिन अब यीशु का दिव्य नाम उनके सच्चे रक्त से अंकित है, जो उनके खतना के समय बहा था। यह अब भौतिक सोने पर नहीं, बल्कि आध्यात्मिक सोने पर अंकित है, अर्थात् यीशु के सेवकों के हृदयों और होंठों पर, ठीक वैसे ही जैसे यह उस व्यक्ति पर अंकित था जिसके बारे में मसीह ने कहा था: *'क्योंकि वह मेरी नाम की घोषणा करने के लिए मेरा चुना हुआ पात्र है'* (प्रेरितों के काम 9:15)। सभी से मधुर, यीशु, यह चाहते हैं कि उनका नाम, सबसे मीठे पेय की तरह, एक पात्र में रखा जाए; क्योंकि वह प्रेम से उनका स्वाद चखने वालों सभी के लिए सचमुच मधुर हैं, जिनके लिए भजनकार ये शब्द कहते हैं: *'स्वाद चखो और देखो कि यहोवा भला है'* (भजन संहिता 33:9)! उसे चखने के बाद, भविष्यवक्ता पुकारता है: *'हे प्रभु, मैं तुझ से प्रेम करूँगा, जो मेरी शक्ति है'* (भजन संहिता 17:2)! उसे चखने के बाद, पवित्र प्रेरित पतरस भी कहते हैं: *'देखो, हम ने सब कुछ छोड़ कर तेरा अनुसरण किया है; हम किस के पास जाएँ? तेरे पास अनन्त जीवन के वचन हैं'* (मत्ती 19:27; यूहन्ना 6:68)। इस मिठास से, पवित्र शहीदों के कठोर यातनाएँ इतनी कम हो गईं कि वे सबसे भयानक मृत्यु से भी नहीं डरे। उन्होंने पुकारा, 'कौन हमें परमेश्वर के प्रेम से अलग कर सकता है? न संकट, न क्लेश, न तलवार, न जीवन; क्योंकि प्रेम मृत्यु के समान प्रबल है' (रोमियों 8:35, 38; गीतों का गीत 8:6)। तो फिर, वह अनुपम मिठास—यीशु का नाम—किस पात्र में धारण किया जाना पसंद करती है? निश्चय ही सोने के एक पात्र में, जो

---

[437] फिलि. 2:11. अर्थात्, प्रभु यीशु ने उस कार्य के द्वारा परमेश्वर पिता का गौरव बढ़ाया जो उन्होंने स्वयं अपने ऊपर लिया था

[438] महायाजक के सिर पर पहनाए जाने वाले मुकुट से जुड़ी छोटी सुनहरी प्लेट पर परमेश्वर के नाम (यहोवा) का लेख अंकित था।

परीक्षाओं और वपित्तयों की भट्टी में परखा गया हो, जो यीशु के लिए प्राप्त घावों से, मानो, कीमती रत्नों से सुसज्जति हो—और जो कहता है: *'क्योंकि मैं अपने शरीर पर प्रभु यीशु के घावों के चिह्न लिए फिरता हूँ'* (गलातियों 6:17)। उस मठिास को ऐसे ही पात्र की आवश्यकता है; यीशु का नाम ऐसे ही पात्र में वहन कयिा जाना चाहता है। यह व्यर्थ नहीं है कि यीशु ने अपने खतना के समय अपना नाम ग्रहण करते समय अपना लहू बहाया; इससे ऐसा प्रतीत होता है कि वह कह रहे हैं कि उनके नाम को वहन करने वाला पात्र लहू से रंगा हुआ होना चाहिए। क्योंकि जब प्रभु ने अपने नाम को महमिामय करने के लिए एक पात्र चुना—अर्थात् प्रेरति पौलुस—तो उन्होंने तुरंत जोड़ दयिा: *'और मैं उसे दखिाऊँगा कि उसे मेरे नाम के लिए कितिनी पीड़ा सहनी पड़ेगी'* (प्रेरतिों के काम 9:16)। देखो मेरी वह पात्र, जो खून से सनी और घावों से भरी है—इस प्रकार यीशु का नाम खून की लाली में, उन लोगों की बीमारयिों और पीड़ाओं में अंकति है जो पाप के वरिुद्ध संघर्ष करते हुए, खून बहाने की हद तक दृढ़ बने रहते हैं (इब्रानयिों 12:4)।

इसलिए, हे यीशु के सबसे मधुर नाम, हम आपको प्रेम से चूमते हैं! हे सबसे मधुर और सर्व-दयालु यीशु, हम आपके परम पवत्रि नाम की भक्तपिूर्वक आराधना करते हैं! हम आपके परम उत्तम नाम, उद्धारकर्ता यीशु की स्तुति करते हैं; हे कोमल शशिु और सद्धि प्रभु, हम आपके खतना के समय बहाए गए आपके लहू से चपिके रहते हैं! हम आपके परम पवत्रि नाम के लिए, हमारे लिए बहाए गए आपके परम कीमती रक्त के लिए, और आपकी नष्किलंक माता के लिए, जन्हिोंने आपको बनिा कसिी दोष के जन्म दयिा, आपके असीम दयालुता का आह्वान करते हैं - हे यीशु, अपने आप से हमारे हृदयों को मीठा करें! हे यीशु, अपने नाम से हमें हर जगह रक्षा और सुरक्षा प्रदान करें! हे यीशु, अपने सेवकों को उसी नाम से चह्निति और मुहरबंद करें, ताकि हम आपके आने वाले राज्य में स्वीकार कएि जा सकें, और वहाँ, स्वर्गदूतों के साथ, आपके परम सम्मानति और महमिामय नाम की अनंत काल तक महमिा और स्तुति करें। आमेन।

ट्रोपारयिन, स्वर 1:

हे यीशु, तू अनारंभकि पति और अपनी दव्यि आत्मा के साथ स्वर्ग में अग्नि के सहिासन पर वरिाजमान है, और फरि भी तूने अपनी माता, कन्या, जसिने पति को नहीं जाना, के गर्भ से पृथ्वी पर जन्म लेने की कृपा की: इसी कारण से तू आठवें दनि एक मनुष्य के रूप में खतना कयिा गया। तेरी सर्व-सद्भावना को महमिा, तेरी परम-प्रबन्धकता को महमिा, तेरी अवतरणशीलता को महमिा, हे मानवजाति के एकमात्र प्रेमी।

कॉन्टाकयिन, स्वर 3:

प्रभु सभी के खतना को सहन करते हैं और, एक भले व्यक्ति के रूप में, मानव अपराधों को दूर करते हैं: वह आज संसार को मोक्ष प्रदान करते हैं। और स्वर्ग में सृष्टकिर्ता का पदानुक्रमति, और मसीह का प्रकाश-वाहक दव्यि प्रबंधक, बेसलि, आनंदति होता है।

हमारे पवत्रि पति बेसलि द ग्रेट, केसरयिा के आर्चबशिप का जीवन

1 जनवरी को स्मरणोत्सव

ईश्वर के महान सेवक और चर्च के ईश्वर-ज्ञानी शकि्षक बेसलि का जन्म लगभग 330 ईस्वी में, सम्राट कॉन्स्टेंटनि महान के शासनकाल के दौरान, कैपाडोसयिा के शहर सेज़ारयिा[439] में कुलीन और धर्मपरायण माता-पति के यहाँ हुआ था। कॉन्स्टेंटनि महान ने 324 से 337 तक शासन कयिा। उनके पति का नाम भी बेसलि था[440] , और उनकी माँ

[439] कैपाडोसयिा - एशयिा माइनर के पूर्व में स्थति रोमन साम्राज्य का एक प्रांत - बेसलि द ग्रेट के समय में अपने नविासयिों के वद्विता के लिए प्रसद्धि था। 11वीं शताब्दी के अंत में, कापडोसयिा तुर्की के शासन में आ गया और तब से उनके नयिंत्रण में ही रहा है। केसरयिा कापडोसयिा का प्रमुख शहर है; केसरयिा की कलीसयिा लंबे समय से अपने आर्चपास्टर्स (प्रमुख पादरयिों) के वद्विान होने के लिए प्रसद्धि है। सेंट ग्रेगरी द थयिोलोजयिन, जन्हिोंने यहीं अपनी शकि्षा शुरू की थी, केसरयिा को शकि्षा की राजधानी कहते हैं।

[440] बेसलि के पति, जनिका नाम भी बेसलि था, जो अपनी परोपकारति के लिए जाने जाते थे, का ववािह एमलियिा नाम की एक कुलीन और धनी युवती से हुआ था। इस ववािह से, पांच बेटयिां और पांच बेटे हुए। सबसे बड़ी बेटी, मैक्रनिा, इस समृद्ध ववािह के प्रति वफादार रहीं, और उन्होंने अपना

एमेलयिा थीं। उनकी धर्मपरायण दादी, मैक्रनिा, जन्हिोंने अपनी युवावस्था में स्वयं संत ग्रेगरी द वंडरवर्कर से शक्षिा प्राप्त करने का सौभाग्य प्राप्त कयिा था, और उनकी माँ, धर्मपरायण एमेलयिा, ने उनके आत्मा में भक्तकि पहले बीज बोए। बेसलि के पतिा ने, अपनी ओर से, न केवल उसे ईसाई धर्म में शक्षिति कयिा बल्कि उसे सांसारकि वज्ञिान भी सखिाए, जनिसे वह अच्छी तरह वाकफि थे, क्योंकि वे स्वयं वाक्पटुता—अर्थात सार्वजनकि भाषण की कला—और दर्शनशास्त्र पढ़ाते थे। जब बेसलि लगभग 14 वर्ष के थे, तो उनके पतिा का नधिन हो गया, और अनाथ बेसलि ने अपनी दादी मैक्रनिा के साथ दो या तीन साल बतिाए, जो नेओकेसरयिा से बहुत दूर नहीं, आयरसि नदी के पास[441] , अपनी दादी के स्वामत्वि वाले एक देहाती घर में रहती थीं, जसिे बाद में एक मठ में बदल दयिा गया था। वहाँ से, बेसलि अक्सर अपनी माँ से मलिने के लिए सेसरयिा की यात्रा करता था, जो अपने अन्य बच्चों के साथ उस शहर—अपने गृहनगर—में रहती थीं।

मक्रनिा की मृत्यु के बाद, 17 वर्षीय बेसलि स्थानीय स्कूलों में वभिन्नि वषियों का अध्ययन करने के लिए एक बार फरि से सेसरयिा में बस गया। अपने असाधारण तीव्र बुद्धकि कारण, बेसलि जल्द ही ज्ञान में अपने शक्षिकों के बराबर हो गया और, आगे की शक्षिा की तलाश में, कॉन्स्टेंटनिोपल के लिए रवाना हो गया, जहाँ उस समय युवा सोफस्टि लबिानयिस[442] अपनी वाक्पटुता के लिए प्रसद्धि थे। लेकनि बेसलि वहाँ भी ज्यादा समय तक नहीं रुका और एथेंस चला गया – वह शहर जो सभी हेलेनकि ज्ञान का पालना था[443] । एथेंस में, उन्होंने यूबुलस नामक एक प्रसद्धि पैगन शक्षिक के व्याख्यानों में भाग लेना शुरू कर दयिा, साथ ही दो अन्य प्रतष्ठिति एथेनयिन शक्षिकों, आइबेरयिस और प्रोरेसयिास के स्कूलों में भी पढ़ाई की[444] । उस समय बेसलि की उम्र छब्बीस वर्ष थी, और उन्होंने अपनी पढ़ाई में असाधारण लगन दखिाई, साथ ही अपने जीवन की पवत्रिता के लिए सार्वभौमकि स्वीकृतभिी अर्जति की। एथेन्स में वे केवल दो मार्ग जानते थे – एक चर्च की ओर जाता था, और दूसरा स्कूल की ओर। एथेंस में, बेसलि एक अन्य प्रसद्धि संत – ग्रेगरी द थयिोलॉजस्टि के दोस्त बने, जो उस समय एथेनयिन स्कूलों में अध्ययन कर रहे थे[445] । बेसलि और ग्रेगरी, अपने सद्गुण, नम्रता और पवत्रिता में एक समान थे, वे एक-दूसरे से इस तरह प्यार करते थे जैसे उनका एक ही आत्मा हो - और उन्होंने इसके बाद हमेशा के लिए इस पारस्परकि प्रेम को बनाए रखा। बेसलि अपनी पढ़ाई में इतने तल्लीन थे कि अपनी कतिाबों में डूबे रहने के कारण, वे अक्सर खाना भी खाना भूल जाते थे। उन्होंने व्याकरण, वाक्पटुता, खगोल वज्ञिान, दर्शन, भौतकिी, चकित्सिा और प्राकृतकि वज्ञिानों का अध्ययन कयिा। लेकनि ये सभी सांसारकि, पृथ्वी से संबंधति वज्ञिान उसकी आत्मा को संतुष्ट नहीं कर सके, जो एक उच्च, दव्यि ज्ञान की तलाश में थी; और एथेंस में लगभग पाँच साल बतिाने के बाद, बेसलि ने महसूस कयिा कि सांसारकि ज्ञान उसे ईसाई पूर्णता के लिए एक ठोस आधार प्रदान नहीं कर

जीवन पवत्रिता में समर्पति कर दयिा (उनका पर्व दविस 19 जुलाई को है)। पाँच भाइयों में से, एक की बचपन में ही मृत्यु हो गई; तीन बशिप बने और उन्हें संत घोषति कयिा गया; पाँचवाँ शकिार करते समय मर गया। जो जीवति बचे, उनमें सबसे बड़ा बेटा बेसलि था, उसके बाद ग्रेगरी था, जो बाद में नाइसा का बशिप बना (10 जनवरी को स्मरण कयिा जाता है), और पीटर, जो शुरू में एक साधारण तपस्वी था, बाद में सेबास्टे का बशिप बना (9 जनवरी को स्मरण कयिा जाता है)। – बेसलि के पतिा ने शायद अपनी मृत्यु से ठीक पहले एक पुजारी के रूप में संन्यास ग्रहण कर लयिा था, जैसा कि इस तथ्य से अनुमान लगाया जा सकता है कि ग्रेगरी द थयिोलॉजस्टि, बेसलि द ग्रेट की माँ को एक पुजारी की पत्नी के रूप में संदर्भति करते हैं।

[441] न्यूकेसरयिा – जसिे अब नक्सिार के नाम से जाना जाता है – उत्तरी एशयिा माइनर में पोंटस पोलेमोनयिाकस की राजधानी है, जो अपनी सुंदरता के लिए प्रसद्धि है; यह वशिेष रूप से 315 में वहाँ आयोजति सार्वभौमकि परषिद के लिए प्रसद्धि है। आइरसि पोंटस में एक नदी है, जो एंटटिावर्स पर्वत से नकिलती है।

[442] सोफ़स्टि वे वद्विान थे जो मुख्य रूप से अलंकारशास्त्र के अध्ययन और शक्षिण को समर्पति थे। – लबिानयिस ने बेसलि के साथ पत्राचार बनाए रखा, यहाँ तक कि बेसलि के बशिप बनने के बाद भी।

[443] एथेंस – ग्रीस की राजधानी, जसिने लंबे समय से ग्रीक बौद्धकिता और प्रतभिा के सर्वश्रेष्ठ लोगों को आकर्षति कयिा है। सॉक्रेटीस और प्लेटो जैसे प्रसद्धि दार्शनकि, साथ ही एस्कलिास, सोफोक्लीज़, यूरपिडिीज़ और अन्य कवभिी यहाँ रहते थे। – 'हेलेनकि ज्ञान' से, बेशक, मूर्तपिूजक वद्विता और मूर्तपिूजक शक्षिा का तात्पर्य है।

[444] प्रोएरेसयिस, उस समय के दर्शनशास्त्र के सबसे प्रसद्धि शक्षिक, एक ईसाई थे, जैसा कि इस तथ्य से स्पष्ट है कि उन्होंने तब अपना स्कूल बंद कर दयिा जब सम्राट जूलयिन ने ईसाइयों को दर्शनशास्त्र पढ़ाने से मना कर दयिा था। इबेरयिस द्वारा अपनाए गए धर्म के बारे में कुछ भी ज्ञात नहीं है।

[445] ग्रेगरी (नाज़यिान्ज़स के) ने बाद में कुछ समय के लिए कॉन्स्टेंटनिोपल के पैट्रआर्क के रूप में सेवा की और वे अपनी गहन रचनाओं के लिए प्रसद्धि हैं, जसिके लिए उन्हें 'द थयिोलोजयिन' की उपाधि दी गई। वे सीज़रयिा में रहते हुए ही बेसलि को जानते थे, लेकनि एथेंस में रहते हुए ही वे उनके घनष्ठि मत्रि बने। उनका पर्व दविस 25 जनवरी है।

सकता। इसलिए, उन्होंने उन भूमिओं के लिए निकलने का संकल्प लिया जहाँ ईसाई तपस्वी रहते थे, और जहाँ वे स्वयं को सच्ची ईसाई शिक्षा से पूरी तरह परिचित कर सकें।

इस प्रकार, जबकि ग्रेगरी द थियोलोजियन खुद वाक्पटुता के शिक्षक बनकर एथेन्स में रहे, बेसिल मिस्र चले गए, जहाँ मठवासी जीवन फल-फूल रहा था[446] । वहाँ, एक आर्किमैंड्राइट पोर्फिरी के घर पर, उन्हें धर्मशास्त्रीय ग्रंथों का एक बड़ा संग्रह मिला, जिसे उन्होंने एक साल तक पढ़ने में बिताया, और साथ ही साथ तपस्या के अनुशासन का भी अभ्यास किया। मिस्र में, बेसिल ने अपने समय के प्रसिद्ध तपस्वियों – थेबाइड में रहने वाले पाकोमियस, मैकारियस द एल्डर और मैकारियस ऑफ़ अलेक्ज़ेंड्रिया, पाफनुटियस, पॉल और अन्य – के जीवन का अवलोकन किया। मिस्र से, बेसिल पवित्र स्थानों का दौरा करने और वहाँ के तपस्वियों के जीवन से खुद को परिचित कराने के लिए फिलिस्तीन, सीरिया और मेसोपोटामिया के लिए रवाना हुए। लेकिन फिलिस्तीन जाते समय, वह एथेंस में रुके, जहाँ उन्होंने अपने पूर्व शिक्षक, यूबुलस से बातचीत की, और अन्य यूनानी दार्शनिकों के साथ सच्चे धर्म पर बहस भी की।

अपने शिक्षक को सच्चे धर्म में परिवर्तित करने और इस प्रकार उससे मिली दया का बदला चुकाने की इच्छा से, बेसिल ने पूरे शहर में उसकी तलाश शुरू कर दी। वह उसे लंबे समय तक नहीं ढूंढ सका, लेकिन अंततः शहर की दीवारों के बाहर, वह उससे तब मिला जब इवबुल अन्य दार्शनिकों के साथ किसी महत्वपूर्ण मामले पर चर्चा कर रहा था। बहस सुनने के बाद और अपना नाम बताए बिना, बेसिल बातचीत में शामिल हो गया, उसने तुरंत कठिन प्रश्न का समाधान कर दिया, और फिर अपने शिक्षक से एक नया प्रश्न पूछा। जब श्रोता इस बात से हैरान थे कि इतने प्रसिद्ध यूवुलस का इस तरह से जवाब देकर मुकाबला कौन कर सकता है, तो बाद वाले ने कहा:

'यह या तो कोई देवता है, या फिर बेसिल[447] है।'

बेसिल को पहचान लेने पर, एवलुस ने अपने दोस्तों और शिष्यों को भेज दिया, और बेसिल को अपने घर ले गए, जहाँ उन्होंने पूरे तीन दिन बातचीत में बिताए, और मुश्किल से ही कुछ खाना खाया। अन्य बातों के अलावा, एवलुस ने बेसिल से पूछा कि उनकी राय में दर्शन का सार क्या है।

'दर्शन का सार,' बेसिल ने उत्तर दिया, 'इस तथ्य में निहित है कि यह मनुष्य को मृत्यु की याद दिलाता है[448] ।'

साथ ही, उन्होंने इवुल को दुनिया और उसकी सभी सुख-सुविधाओं की क्षणभंगुरता के बारे में बताया, जो शुरू में तो सचमुच मीठी लगती हैं, लेकिन बाद में उन लोगों के लिए अत्यंत कड़वी हो जाती हैं जो उनसे बहुत अधिक जुड़ जाते हैं।

बेसिल ने कहा, 'इन सुखों के साथ, एक अलग तरह का, स्वर्गीय मूल का सांत्वना है। कोई एक ही समय में दोनों का आनंद नहीं ले सकता - *"कोई भी दो स्वामियों की सेवा नहीं कर सकता"* (मत्ती 6:24), – फिर भी, सांसारिक चिंताओं में बंधे लोगों के लिए जहाँ तक संभव है, हम सच्चे ज्ञान की रोटी तोड़ते हैं और, उन लोगों के लिए, जो अपनी ही गलती से भी, सद्गुण के वस्त्र से वंचित हो गए हैं, हम उन्हें अच्छे कर्मों की शरण में लाते हैं, उन पर वैसे ही दया करते हैं जैसे हम सड़क पर किसी नग्न व्यक्ति पर करते हैं।

इसके बाद, वासिली ने एवुल से पश्चाताप की शक्ति के बारे में बात करना शुरू किया, उसने उन सद्गुणों और दुर्गुणों के चित्रों का वर्णन किया जो उसने एक बार देखे थे—जो बारी-बारी से किसी व्यक्ति को अपनी ओर खींचते हैं—और पश्चाताप के चित्र का, जिसके चारों ओर विभिन्न सद्गुण खड़े हैं, जैसे कि उसकी 'daughters[449] '।

'लेकिन हमें, एवुल, ऐसे कृत्रिम प्रभाव के साधनों का सहारा लेने की कोई आवश्यकता नहीं है,' बेसिल ने जोड़ा, 'हमारे पास स्वयं सत्य है, जिसे कोई भी सच्चे मन से खोजने वाला समझ सकता है। वास्तव में, हमारा विश्वास है कि हम सभी एक दिन पुनर्जीवित होंगे – कुछ अनंत जीवन के लिए, और अन्य अनंत यातना और लज्जा के लिए। नबियों ने हमें इसके बारे में स्पष्ट रूप से बताया है: यशायाह, यिर्मयाह, दानियेल और दाऊद, और दिव्य प्रेरित पौलुस, और साथ ही स्वयं प्रभु, जो हमें पश्चाताप के लिए बुलाते हैं, जिन्होंने खोए हुए भेड़िये को ढूंढा, और जिन्होंने पश्चाताप के साथ लौटने

---

[446] मिस्र लंबे समय से एक ऐसी जगह रहा है जहाँ ईसाई तपस्वी जीवन विशेष रूप से अच्छी तरह से विकसित था। इसी तरह, वहाँ बहुत सारे ईसाई विद्वान थे, जिनमें से सबसे प्रसिद्ध ओरिजिन और अलेक्ज़ेंड्रिया के क्लेमेंट थे।

[447] अर्थात्, यूबुलस के अनुसार, बेसिल के पास एक ऐसा मन था जो सामान्य मानवीय बुद्धि के मापदंड से परे था, और इस संबंध में वह देवताओं के करीब पहुँच गया।

[448] दूसरे शब्दों में, केवल वे लोग जो मृत्यु को एक नए जीवन में संक्रमण के रूप में देखते हैं और इसलिए इस दुनिया को बिना किसी डर के छोड़ते हैं, 'दार्शनिक' की सम्मानजनक उपाधि के हकदार हैं।

[449] प्राचीन काल में नैतिकतावादी अपने श्रोताओं पर अधिक प्रभाव डालने के लिए इस प्रकार की कल्पनाओं का अक्सर उपयोग करते थे।

वाले व्यर्थ पुत्र को प्रेम से गले लगाकर, उसे चूमकर, सुंदर वस्त्रों और एक अंगूठी से सजाया, और उसके लिए एक भोज तैयार किया (लूका 15)। वह ग्यारहवें घंटे पर आने वालों को भी उतना ही पुरस्कार देता है, जितना कि दिन भर की मेहनत और गर्मी सहने वालों को देता है[450] । वह हम पर, जो पश्चाताप करते हैं और जल और आत्मा से जन्मते हैं, यह वरदान करता है जो लिखा है: 'न किसी ने देखा है, न किसी ने सुना है, और न किसी मनुष्य के हृदय में यह बात उत्पन्न हुई है कि परमेश्वर ने अपने प्रेम करने वालों के लिए क्या-क्या तैयार किया है'[451] ।

जब बेसिल ने यूबुलस को संक्षेप में हमारे उद्धार की इमारत का इतिहास सुनाया, जो आदम के पतन से शुरू होकर मसीह उद्धारकर्ता की शिक्षा पर समाप्त होता है, तब यूबुलस ने उद्घोष किया:

'हे स्वर्ग से भेजे गए बेसिल! आपके द्वारा मैं एक ईश्वर, सर्वशक्तिमान पिता, सभी चीजों के सृष्टिकर्ता में विश्वास करता हूँ, और मैं मृतकों के पुनरुत्थान और आने वाली दुनिया के जीवन की प्रतीक्षा करता हूँ, आमीन। और ईश्वर में मेरे विश्वास का प्रमाण यह है: मैं अपना बाकी जीवन आपके साथ बिताऊँगा, और अब मैं जल और आत्मा से जन्म लेना चाहता हूँ।'

तब बेसिल ने कहा:

'धन्य हो हमारा परमेश्वर अब से अनंतकाल तक, जिसने हे एवबुल, तेरे मन को सत्य के प्रकाश से प्रबुद्ध किया है, और तुझे घोर भ्रम से निकालकर अपने प्रेम के ज्ञान तक पहुँचाया है। यदि, जैसा आपने कहा है, आप मेरे साथ रहना चाहते हैं, तो मैं आपको समझाऊंगा कि हमें अपने उद्धार की देखभाल कैसे करनी है, इस सांसारिक जीवन के जालों से खुद को मुक्त करते हुए। आइए हम अपनी सारी संपत्ति बेच दें और उसका पैसा गरीबों को दे दें, और आइए हम स्वयं पवित्र शहर जाएँ और वहाँ के चमत्कार देखें[452] ; वहाँ हमारा विश्वास और भी अधिक दृढ़ होगा।

इस प्रकार अपनी सारी संपत्ति ज़रूरतमंदों में बाँटने और बपतिस्मा लेने वालों के लिए आवश्यक[453] , सफेद वस्त्र खरीदने के बाद, वे यरूशलेम के लिए रवाना हुए, और रास्ते में कई लोगों को सच्चे धर्म में परिवर्तित करते हुए चले।

अंतियोकिया पहुँचने पर[454] , वे एक सराय में गए। उस समय सरायकिया का बेटा, फिलॉक्सिनस, दरवाज़े के पास गहरे दुख में बैठा था। सोफिस्ट लिबानुस के शिष्य के रूप में, उसने उनसे होमर की कुछ पंक्तियाँ[455] उधार ली थीं ताकि उन्हें एक वाक्पटु भाषण में ढाल सके, लेकिन वह ऐसा करने में असमर्थ था और खुद को ऐसी मुश्किल में पाकर वह बहुत परेशान था। बेसिल ने उसे उदास देखकर पूछा:

'तुम उदास क्यों हो, युवक?'

फिलोक्सेनस ने उत्तर दिया:

'भले ही मैं आपको अपने दुख का कारण बता दूँ, मुझे आपसे क्या लाभ होगा?'

जब बेसिल ने ज़िद की और वादा किया कि युवक द्वारा अपना दुख बताने का कोई व्यर्थ नहीं जाएगा, तो उस लड़के ने उसे सोफिस्ट और उन छंदों के बारे में बताया, और यह भी कहा कि उसके दुख का कारण यह था कि वह उन छंदों के अर्थ को स्पष्ट रूप से व्यक्त नहीं कर पा रहा था। बेसिल ने उन श्लोकों को लेकर उन्हें सरल भाषा में समझाना शुरू किया; वह लड़का, जो आश्चर्यचकित और प्रसन्न दोनों था, उससे उस अनुवाद को अपने लिए लिखने के लिए कहने लगा। फिर बेसिल ने उन होमर के श्लोकों का अनुवाद तीन अलग-अलग तरीकों से लिख दिया, और वह लड़का, उस अनुवाद को खुशी से लेकर, सुबह-सुबह अपने शिक्षक लिबानियस के पास गया। उन्हें पढ़कर लिबानियस चकित रह गए और कहा:

'मैं दैवीय व्यवस्था की कसम खाता हूँ कि आज के दार्शनिकों में कोई भी ऐसा अर्थ नहीं दे सकता! तो फिर, यह तुम्हारे लिए किसने लिखा, फिलॉक्सनस?'

लड़के ने उत्तर दिया:

'मेरे घर पर एक यात्री ठहरा हुआ है जिसने यह व्याख्या बहुत जल्दी और बिना किसी कठिनाई के लिखी है।'

---

[450] अर्थात्, गर्मी, झुलसा देने वाली गर्मी, जो विशेष रूप से पूर्व में तीव्र होती है (मत्ती 20:12)।

[451] अर्थात्, कुछ ऐसा जिसे हम अब कल्पना भी नहीं कर सकते (1 कुरिन्थियों 2:9)।

[452] अर्थात्, विभिन्न रुचिकर स्थान, जैसे मसीह की कब्र, गोलगोथा और इसी तरह के अन्य स्थान।

[453] अब और प्राचीन काल में, नव-बपतिस्मा ग्रहण करने वालों ने पाप से शुद्ध होने के प्रतीक के रूप में सफेद वस्त्र धारण किए।

[454] यह, बेशक, सीरिया में ओरोन्टिस नदी पर स्थित अंतीयकिया को संदर्भित करता है, जिसे 'महान' के नाम से जाना जाता था।

[455] होमर – सबसे महान यूनानी कवि, जो ईसा पूर्व 9वीं शताब्दी में रहते थे; उन्होंने प्रसिद्ध महाकाव्य लिखे: *इलियड* और *ओडिसी*।

लावयिन तुरंत इस यात्री से मलिने के लिए सराय की ओर भागा; वहाँ बेसलि और यूबुलस को देखकर, वह उनके अप्रत्याशति आगमन से चकति और उन्हें देखकर प्रसन्न हुआ। उसने उनसे अपने घर पर ठहरने के लिए कहा और जब वे उसके पास आए, तो उसने उन्हें एक शानदार भोजन परोसा। लेकनि बेसलि और एवबुल ने, जैसा कि उनका रविाज था, थोड़ी सी रोटी और पानी चखकर, सभी अच्छी चीजों के दाता ईश्वर का धन्यवाद कयिा। इसके बाद, लबिानयिस ने उनसे वभिन्नि sofistical प्रश्न पूछना शुरू कर दयिा, जबकि उन्होंने उसे ईसाई धर्म पर एक प्रवचन दयिा। लबिानयिस ने ध्यान से उनकी बात सुनने के बाद कहा कि इस संदेश को स्वीकार करने का समय उसके लिए अभी नहीं आया है, लेकनि यदि दैवीय इच्छा ऐसी ही रही, तो कोई भी ईसाई धर्म के उपदेशों का वरिोध नहीं कर पाएगा[456] ।

'बेसलि, आप मुझ पर बहुत बड़ा उपकार करेंगे,' उन्होंने नष्किर्ष नकिाला, 'यदि आप मेरे साथ मौजूद शष्यिों के लाभ के लिए अपनी शक्षिा को समझाने से इनकार न करें।'

शीघ्र ही लविानयिस के शष्यि इकट्ठा हो गए, और बेसलि ने उन्हें आत्मा की पवत्रिता, शरीर पर आत्म-नयिंत्रण, वनिम्र आचरण, कोमल स्वर, नम्र भाषण, भोजन और पेय में संयम, अपने बड़ों की उपस्थतिि में मौन, बुद्धमिानों के शब्दों पर ध्यान, अपने वरष्ठिों के प्रति आज्ञाकारति, और अपने साथयिों तथा नम्नि पद वालों के प्रति सच्चा प्रेम; ताकि वे दुष्टों, कामुक और सांसारकि सुखों में लप्ति लोगों से दूरी बनाए रखें; ताकि वे कम बोलें और अधकि सुनें और चंतिन करें; ताकि वे अपनी वाणी में लापरवाह न हों, बातूनी न हों, दूसरों पर अभद्रता से न हँसें, वनिम्रता से स्वयं को सुसज्जति करें, अनैतकि महलिाओं से बातचीत न करें, अपनी आँखें नीचे रखें और अपने मन को दुख की ओर मोड़ें, ववािदों से बचें, शक्षिक का पद न माँगें, और इस दुनयिा के सम्मान को कुछ भी न समझें। लेकनि यदि कोई अपने पड़ोसी के लाभ के लिए कुछ करता है, तो उसे परमेश्वर से पुरस्कार और हमारे प्रभु यीशु मसीह से अनंत प्रतफिल की आशा करनी चाहए। बेसलि ने लबिानयिस के शष्यिों से इस प्रकार कहा, और उन्होंने बड़ी वस्मिय के साथ उनकी बात सुनी; इसके बाद, वह यूबुलस के साथ फरि से रास्ते पर चल पड़ा।

जब वे यरूशलेम पहुँचे और आस्था और प्रेम के साथ सभी पवत्रि स्थानों का भ्रमण कयिा, वहाँ सभी चीजों के एकमात्र सृष्टकिर्ता, परमेश्वर से प्रार्थना करने के बाद, वे उस शहर के बशिप, मैक्समिस[457] के पास गए और उनसे यॉर्डन नदी में उनका बपतस्मिा देने के लिए कहा[458] । बशिप ने, उनकी महान आस्था को देखकर, उनकी प्रार्थना स्वीकार कर ली: अपने पुरोहतिों को साथ लेकर, वह बेसलि और यूवल के साथ यॉर्डन की ओर चल पड़े। जब वे कनिारे पर रुके, तो बेसलि ज़मीन पर गरि पड़ा और, आँसुओं के साथ, उसने ईश्वर से प्रार्थना की कि वह उसके वश्विास को मज़बूत करने के लिए कोई संकेत दखिाए। फरि, काँपते हुए उठ खड़ा हुआ, उसने अपने कपड़े उतार दिए, और उनके साथ *'पुराने मनुष्य के पूर्व जीवन को त्याग दयिा'*[459] और, पानी में प्रवेश करके, प्रार्थना की। जब संत उसे बपतस्मिा देने के लिए आगे आए, तो अचानक एक अग्नि-सी बजिली उन पर गरिी, और उस बजिली से नकिली एक कबूतर जॉर्डन नदी में कूद पड़ी; पानी को हलिाने के बाद, वह स्वर्ग में उड़ गई[460] । कनिारे पर खड़े लोग यह देखकर वस्मिति हो गए और उन्होंने ईश्वर की स्तुति की। बपतस्मिा ग्रहण करने के बाद, बेसलि पानी से बाहर नकिले, और बशिप, ईश्वर के प्रति उनके प्रेम से चकति होकर, एक प्रार्थना करते हुए उन्हें मसीह के पुनरुत्थान के वस्त्र से परधिानति कयिा[461] । उन्होंने यूबुलस को भी बपतस्मिा दयिा, और फरि उन दोनों को मूर के तेल से अभषिेक कयिा और उन्हें दव्यि उपहार प्रदान कए।

पवत्रि नगर लौटने पर, बेसलि और एवबुल वहाँ एक वर्ष तक रहे। फरि वे अंतीयक के लिए रवाना हुए, जहाँ बेसलि को आर्चबशिप मेलेटयिस द्वारा एक डकिन नयिुक्त कयिा गया, और बाद में उन्होंने स्वयं को धर्मग्रंथों की व्याख्या

---

[456] अर्थात्, दर्शन और मूर्तपिूजक धर्म को ईसाई आस्था से बदलने का समय अभी नहीं आया था। लबिानयिस एक मूर्तपिूजक के रूप में मरे (लगभग 391, एंटओिक में)।

[457] मैक्समिस तृतीय – यरूशलेम के पैट्रआर्क – 333 से 350 तक।

[458] प्रारंभकि ईसाइयों ने पवत्रि बपतस्मिा ग्रहण करने में बहुत देरी की – आंशकि रूप से वनिम्रता के कारण, आंशकि रूप से इस आधार पर कि, अपनी मृत्यु से ठीक पहले बपतस्मिा लेने से, उन्हें बपतस्मिा के माध्यम से अपने सभी पापों की क्षमा प्राप्त होगी।

[459] अर्थात्, वे अपने पूर्वजों से वरिासत में मलिी मूल पाप से मुक्त हो गए (इफसियिों 4:22)।

[460] यह चमत्कार उस समय की याद दलिाता था जब उद्धारकर्ता मसीह को यॉर्डन में बपतस्मिा देते समय कबूतर के रूप में पवत्रि आत्मा उन पर अवतरति हुए थे।

[461] प्रभु यीशु मसीह, कब्र में रहते हुए, सफेद कफ़न में लपिटे हुए थे।

करने के लिए समर्पित कर दिया[462] । कुछ ही समय बाद, वे एवबुल के साथ अपने पैतृक प्रदेश, कैपाडोसिया के लिए रवाना हो गए। जैसे ही वे केसरिया शहर के पास पहुँचे, केसरिया के आर्चबिशप लियोन्टियस को एक सपने में उनके आगमन की सूचना दी गई और बताया गया कि बेसिल समय आने पर उस शहर के आर्चबिशप बनेंगे। इसलिए, आर्चबिशप ने अपने आर्चडीकन[463] और कई प्रतिष्ठित पुरोहितों को बुलाया, और उन्हें शहर के पूर्वी द्वारों पर भेज दिया, यह निर्देश देते हुए कि वे वहां मिलने वाले दो यात्रियों को सम्मानपूर्वक उनके सामने लाएं। वे गए और जब बेसिल और एवुलस शहर में प्रवेश कर रहे थे तो उनसे मिलकर उन्हें आर्चबिशप के पास ले गए; जब उन्होंने उन्हें देखा तो वे चकित रह गए, क्योंकि यह वही लोग थे जिन्हें उन्होंने अपने सपने में देखा था – और उन्होंने ईश्वर की स्तुति की। उनसे पूछने के बाद कि वे कहाँ से आ रहे हैं और उनके नाम क्या हैं , और उनके नाम जानने के बाद, उन्होंने आदेश दिया कि उन्हें भोज कक्ष में ले जाया जाए और भोजन कराया जाए; जबकि उन्होंने स्वयं, अपने पुरोहितों और शहर के गणमान्य व्यक्तियों को बुलाकर, उन्हें

---

[462] संत बेसिल द ग्रेट कई कृतियों के लेखक हैं। जिस प्रकार संत बेसिल के सभी कार्य असाधारण भव्यता और महत्व से युक्त थे, उसी प्रकार उनकी सभी रचनाएँ भी ईसाई गरिमा और भव्यता की उसी भावना से ओत-प्रोत हैं। अपने कार्यों में, वे एक उपदेशक, एक धर्मशास्त्रीय वाद-विवादकर्ता, पवित्र धर्मग्रंथों के व्याख्याकार, नैतिकता और धार्मिकता के शिक्षक, और अंत में, चर्च की धार्मिक अनुष्ठानों के आयोजक के रूप में प्रकट होते हैं। उनके प्रवचनों में, उनकी शक्ति और प्रेरणा के मामले में निम्नलिखित को सर्वश्रेष्ठ माना जाता है: सूदखोरों के विरुद्ध, मद्यपान और विलासिता के विरुद्ध, महिमा पर, और अकाल पर। अपने पत्रों में, संत बेसिल अपने समय की घटनाओं का जीवंत चित्रण करते हैं; कई पत्रों में प्रेम, नम्रता, अपराधों की क्षमा, बच्चों के पालन-पोषण, अमीरों की लालच और घमंड के खिलाफ, व्यर्थ की कसमों के खिलाफ, या भिक्षुओं को आध्यात्मिक सलाह देने पर उत्कृष्ट निर्देश शामिल हैं। एक धर्मशास्त्री और वाद-विवादकर्ता के रूप में, वे हमें एरियन के झूठे शिक्षक यूनोमियस के खिलाफ लिखी अपनी तीन पुस्तकों में, और पवित्र आत्मा की दिव्यता के संबंध में सेबेलीउस और एनोमियन के खिलाफ अपने प्रबंध में प्रकट होते हैं। इसके अलावा, महान बेसिल ने एटियस के खिलाफ पवित्र आत्मा पर एक अलग पुस्तक लिखी, जिसके पक्ष में यूनोमियस भी एक पैरोकार था। संत बेसिल के धर्मशास्त्रीय कार्यों में कुछ उपदेश और पत्र भी शामिल हैं। पवित्र धर्मग्रंथ के व्याख्याकार के रूप में, संत बेसिल को 'उत्पत्ति की पुस्तक' पर अपने नौ उपदेशों के लिए विशेष ख्याति मिली, जिसमें उन्होंने न केवल परमेश्वर के वचन, बल्कि दर्शन और प्राकृतिक विज्ञान में भी अपनी महारत का प्रदर्शन किया। भजन संहिता और यशायाह की पुस्तक के पहले 16 अध्यायों पर उनके उपदेश भी प्रसिद्ध हैं। 'छह दिन' पर और भजन संहिता पर दोनों उपदेश चर्च में दिए गए थे और इसलिए, व्याख्या के साथ-साथ, उनमें उत्साहवर्धन, सांत्वना और शिक्षाएँ भी शामिल हैं। उन्होंने अपनी प्रसिद्ध रचना 'पैगन लेखकों का उपयोग कैसे करें, इस पर युवा पुरुषों के लिए निर्देश' और तपस्या पर दो पुस्तकों में भक्ति के विषय को संबोधित किया। कुछ बिशपों को लिखे बेसिल द ग्रेट के पत्रों को उनके कैननिक कार्यों में गिना जाता है। – ग्रेगरी द थियोलोजियन, बेसिल द ग्रेट के कार्यों की योग्यता के बारे में इस प्रकार कहते हैं: 'हर जगह, एकमात्र और सबसे बड़ी प्रसन्नता बेसिल के लेखन और कार्य हैं। उनके बाद, लेखकों को उनके लेखन के अलावा किसी अन्य धन की आवश्यकता नहीं है। वे अकेले ही सभी अन्य लोगों के स्थान पर, छात्रों की शिक्षा के लिए पर्याप्त हो गए हैं।' 'जो कोई भी एक उत्कृष्ट सार्वजनिक वक्ता बनना चाहता है,' विद्वान पैट्रिआर्क फोतियस कहते हैं, 'उसे न तो डेमोस्थनीज की और न ही प्लेटो की आवश्यकता है, बशर्ते वह बेसिल के शब्दों को अपना आदर्श माने और उनका अध्ययन करे।' अपने सभी शब्दों में, संत बेसिल सर्वोपरि हैं। उनमें, विशेष रूप से, एक भाषा है जो शुद्ध, सुंदर और भव्य है; अपने विचारों के क्रम में, वे प्रथम स्थान पर हैं। वे प्रभावशीलता को सुखदता और स्पष्टता के साथ मिलाते हैं।" संत ग्रेगरी द थियोलोजियन संत बेसिल के ज्ञान और लेखन के बारे में इस प्रकार कहते हैं: 'बेसिल से अधिक कौन ज्ञान के प्रकाश से प्रबुद्ध हुआ है, ने आत्मा की गहराइयों में झाँका है, और ईश्वर के साथ मिलकर ईश्वर के बारे में ज्ञात सभी बातों का अन्वेषण किया है? बेसिल में, सदाचार ही उनकी सुंदरता थी, धर्मशास्त्र उनकी भव्यता थी, उनका मार्ग ईश्वर की ओर एक अनवरत प्रयास और आरोहण था, और उनकी शक्ति विचन के बोने और वितरित करने में निहित थी। और इसलिए मैं बिना किसी संकोच के कह सकता हूँ: 'उनकी आवाज़ सारी पृथ्वी पर फैल गई है, और उनके वचन ब्रह्मांड के छोर तक पहुँच गए हैं, और उनके वचन ब्रह्मांड के छोर तक,' जैसा कि संत पौलुस ने प्रेरितों के बारे में कहा था (रोमियों 10:18).... – जब मैं उनके *सिक्स डेज़* को अपने हाथों में लेकर उसे ज़ोर से पढ़ता हूँ; तब मैं सृष्टिकर्ता से संवाद करता हूँ, सृष्टि के नियमों को समझता हूँ, और पहले से भी अधिक सृष्टिकर्ता की महिमा को निहारता हूँ – जिसका मार्गदर्शक केवल दृष्टि रही है। जब मेरे सामने झूठे शिक्षकों के विरुद्ध उनकी फटकार के शब्द होते हैं: तब मैं सदोम की आग देखता हूँ, जिसमें कपटी और अधर्मी जीभ भस्म हो जाती हैं। जब मैं आत्मा के बारे में शब्द पढ़ता हूँ; तब मैं उस ईश्वर को फिर से खोजता हूँ जिसे मैं अपना मानता हूँ और अपने भीतर सत्य को घोषित करने का साहस महसूस करता हूँ, उसकी धर्मशास्त्र और चिंतन की सीढ़ियाँ चढ़ते हुए। जब मैं उनके अन्य व्याख्याओं को पढ़ता हूँ, जिन्हें वह सीमित समझ वाले लोगों के लिए भी समझाते हैं: तब मैं इस बात का आश्वस्त हो जाता हूँ कि किसी एक अक्षर पर अटकना नहीं है, न ही केवल सतह को देखना है, बल्कि आगे बढ़ना है, एक गहराई से दूसरी गहराई में जाना है, गहराई को गहराई से बुलाना है और प्रकाश से प्रकाश प्राप्त करना है, जब तक कि मैं सर्वोच्च अर्थ को प्राप्त न कर लूँ। जब मैं तपस्वियों की उसकी प्रशंसाओं की ओर मुड़ता हूँ, तो मैं अपना शरीर भूल जाता हूँ, जिनकी वह प्रशंसा करता है, उनके साथ संवाद करता हूँ, और वीरतापूर्ण कार्यों के लिए प्रेरित हो जाता हूँ। जब मैं नैतिकता और क्रम पर उनके शब्द पढ़ता हूँ; तब मैं आत्मा और शरीर से शुद्ध हो जाता हूँ, मैं ईश्वर को प्रसन्न करने वाला एक मंदिर बन जाता हूँ, एक ऐसा वाद्ययंत्र जिसमें पवित्र आत्मा ईश्वर की महिमा और शक्ति के भजनकार की तरह वादन करता है, और इसके माध्यम से मैं रूपांतरित हो जाता हूँ, मैं सही मार्ग पर आ जाता हूँ, मैं एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में बदल जाता हूँ, मैं एक दिव्य रूपांतरण द्वारा रूपांतरित हो जाता हूँ।" (संत बेसिल के लिए ग्रेगरी द थियोलोजियन का अंतिम संस्कार भाषण)।

[463] प्रारंभिक चर्च में आर्चडीकनों का बिशपों के सबसे करीबी सहायकों के रूप में बहुत महत्व था।

वह सब कुछ बताया जो परमेश्वर से प्राप्त एक दर्शन में बेसलि के बारे में उन पर प्रकट हुआ था। फरि पुरोहति एक स्वर में बोले:

'चूँकि आपके पुण्य जीवन के कारण, ईश्वर ने आपके सहिासन का एक उत्तराधकिारी नयिुक्त कयिा है, आप उसके साथ जैसा उचति समझें, वैसा ही व्यवहार करें; क्योंकि सचिमुच, वह व्यक्ति जिसे ईश्वर की इच्छा सीधे-सीधे नयिुक्त करती है, वह हर सम्मान का पात्र है।'

तब आर्चबशिप ने बेसलि और एवबुल को अपने पास बुलाया और उनकी समझ की सीमा जानने के लिए उनके साथ धर्मग्रंथों पर चर्चा करने लगे। जब उन्होंने उनके शब्द सुने, तो वे उनकी बुद्धमित्ता की गहराई से चकति हो गए और उन्हें अपनी उपस्थति में रखकर वशिेष सम्मान दयिा। जहाँ तक बेसलि का सवाल है, सीज़रयिा में रहते हुए, उन्होंने वही जीवन जयिा जो उन्होंने मस्रि, फलिस्तीन, सीरयिा और मेसोपोटामयिा की यात्रा के दौरान कई तपस्वयिों से सीखा था, और उन भूमओिं में रहने वाले तपस्वी संतों का अवलोकन कयिा था। इस प्रकार, उनके जीवन के तरीके का अनुकरण करके, वह एक भक्तपिूर्ण भक्षिु बन गया, और सेसरयिा के आर्चबशिप, यूसेबयिस[464] ने उसे एक पादरी नयिुक्त कयिा और सेसरयिा में भक्षिुओं का नेता बनाया। पादरी का पद ग्रहण करने के बाद, संत बेसलि ने अपना सारा समय इस मंत्रालय के कर्तव्यों को समर्पति कर दयिा, यहाँ तक कि उन्होंने अपने पूर्व मत्रिों के साथ पत्र-व्यवहार करना भी बंद कर दयिा[465] । उन्होंने जनि भक्षिुओं को इकट्ठा कयिा था, उनकी देखभाल, परमेश्वर के वचन का प्रचार, और अन्य पादरयिों के कर्तव्यों ने उन्हें बाहरी गतविधियिों से वचिलति होने नहीं दयिा। साथ ही, अपनी नई भूमकिा में, उन्होंने जल्द ही इतना सम्मान अर्जति कर लयिा कि स्वयं आर्चबशिप को भी वह सम्मान नहीं मलिा—क्योंकि वे अभी तक धार्मकि मामलों में पर्याप्त अनुभवी नहीं थे, क्योंकि उन्हें कैटेकुमेन (बपतस्मिा की तैयारी करने वालों) में से केसरयिा के सनिेड्रयिन के रूप में चुना गया था। लेकनि अपने पुरोहति बनने के एक साल बाद ही, बशिप यूसेबयिस ने मानवीय दुर्बलता के कारण, बेसलि के प्रति ईर्ष्या और द्वेष पालना शुरू कर दयिा। यह जानकर कि लोग उनसे ईर्ष्या करने लगे हैं और ईर्ष्या का वषिय बनना न चाहकर, संत बेसलि पोंटकि रेगस्तिान[466] चले गए। पोंटकि रेगस्तिान में, बेसलि इरसि नदी के पास चले गए – उस क्षेत्र में जहाँ उनकी माँ एमेलयिा और उनकी बहन मैक्रनिा पहले ही एकांतवास कर चुकी थीं – और जो उनके स्वामतिव में था। मक्रनिा ने वहाँ एक मठ स्थापति कयिा था। पास ही, घने जंगल से ढके और ठंडी, साफ़ धाराओं से सचिति एक ऊँचे पहाड़ की तलहटी में, बेसलि ने नविास कयिा। अपनी अखंड शांति के कारण यह मरुभूमि बेसलि को इतनी प्रयि लगी कि उसने अपना बाकी जीवन वहीं बतिाने का इरादा कयिा। यहाँ उसने उन महान पुरुषों के कारनामों की नकल की जन्हिें उसने सीरयिा और मस्रि में देखा था। वह अत्यंत अभाव में रहता था, उसके पास खुद को ढकने के लिए केवल एक वस्त्र था -

---

[464] यूसेबयिस को लोगों के अनुरोध पर, सीधे सविलि सेवा से बशिप के पद पर नयिुक्त कयिा गया था और इसलिए वह एक धर्मशास्त्री और वश्विास के शक्षिक के रूप में कोई वशिेष अधकिार नहीं रख सकते थे।

[465] उस समय उनका सबसे महत्वपूर्ण कर्तव्यों में से एक परमेश्वर का वचन प्रचार करना था। वह अक्सर न केवल दैनकि रूप से, बल्कि दनि में दो बार, सुबह और शाम को उपदेश देते थे। कभी-कभी, एक चर्च में उपदेश देने के बाद, वह दूसरे में उपदेश देने जाते थे। अपने उपदेशों में, बेसलि ने मन और हृदय दोनों को ईसाई सद्गुणों की सुंदरता को जीवंत और प्रभावशाली ढंग से प्रकट कयिा और दुर्गुणों की नीचता की नदिा की; उन्होंने लोगों को पहले वाले के लिए प्रयास करने और बाद वाले से दूर रहने के लिए प्रोत्साहति कयिा, और सभी को पूर्णता का मार्ग दखिाया, क्योंकि वे स्वयं एक अनुभवी तपस्वी थे। उनकी टीकाएँ, सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण रूप से, अपने श्रोताओं के आध्यात्मकि नरि्माण के लिए हैं। चाहे वह सृष्टि की कहानी की व्याख्या कर रहे हों, उनका उद्देश्य, सबसे पहले, यह दखिाना है कि 'दुनयिा ईश्वर के ज्ञान का एक वद्यिालय है' (छह दनिों में सृष्टि पर प्रथम उपदेश), और इस प्रकार अपने श्रोताओं में सृष्टकिर्ता की बुद्धमित्ता और भलाई के प्रति एक वस्मिय की भावना जगाना, जो उनकी रचनाओं में प्रकट होती है—छोटी और बड़ी, सुंदर, ववििध और अनगनित। दूसरे, वह यह दखिाना चाहते हैं कि प्रकृति हमेशा मनुष्य को एक सदाचारी नैतकि जीवन जीना सखिाती है। चार पैरों वाले जानवरों, पक्षयिों, मछलयिों और सरीसृपों का जीवन-यापन का तरीका, वशिेषताएँ और आदतें—वे सभी, यहाँ तक कि जो केवल एक दनि के लिए जीते हैं—उन्हें पृथ्वी के स्वामी—मनुष्य के लिए शक्षिाप्रद सबक नकिालने का अवसर प्रदान करती हैं। चाहे वह भजन संहति की व्याख्या कर रहे हों—जो, उनके अपने शब्दों में, अन्य लेखों में उपयोगी सभी बातों को अपने भीतर समेटे हुए है: भवष्यिवाणयिाँ, इतहिास और शक्षिा—वे मुख्य रूप से भजनकार की बातों को ईसाई के जीवन और गतविधियिों पर लागू करते हैं।

[466] पोंटस एशयिा माइनर में, ब्लैक सी के दक्षणिी तट पर, नयिोकेसरेया से बहुत दूर नहीं, एक क्षेत्र है। पोंटकि मरुभूमि बंजर थी, और इसकी जलवायु अच्छे स्वास्थ्य के लिए अनुकूल नहीं थी। जसि झोपड़ी में बेसलि वहाँ रहते थे, उसमें न तो मज़बूत दरवाज़े थे, न ही एक उचति चूल्हा, और न ही कोई छत थी। यह सच है कि भोजन के समय कसिी प्रकार का गर्म व्यंजन परोसा जाता था, लेकनि, ग्रेगरी द थयिोलोजयिन के अनुसार, इसके साथ इतनी कठोर रोटी होती थी कि, जब उसे काटा जाता, तो दांत पहले उस पर फसिल जाते और फरि उसमें अटक जाते। सामूहकि प्रार्थनाओं, पवत्रि शास्त्रों और वद्विान लेखों के अध्ययन के अलावा, बेसलि द ग्रेट, ग्रेगरी द थयिोलोजयिन और वहाँ के अन्य भक्षिु स्वयं लकड़ी लाने, पत्थर तोड़ने, सब्जी के बगीचे की देखभाल करने और स्वयं खाद का एक बड़ा ठेला खींचने में लगे रहते थे।

एक ट्यूनकि और एक लबादा; वह एक बाल वाली कमीज़ भी पहनता था, लेकनि केवल रात में ताकि यह दखिाई न दे; वह रोटी और पानी पर गुज़ारा करता था, इस मामूली भोजन में नमक और जड़ों से स्वाद बढ़ाता था। अपने कठोर संयम के कारण, वह बहुत पीला और दुबला-पतला हो गया और अत्यधकि थकान की स्थतिमें पहुँच गया। वह न तो कभी स्नानागार गया और न ही आग जलाई। लेकनि बेसलि अकेले अपने लिए नहीं जयिा: उसने भक्षिुओं का एक समुदाय इकट्ठा कयिा; अपने पत्रों के माध्यम से, उसने अपने दोस्त ग्रेगरी को रेगस्तिान में उसके साथ शामलि होने के लिए आमंत्रति कयिा।

अपने एकांत में, बेसलि और ग्रेगरी सब कुछ साथ करते थे; वे साथ प्रार्थना करते थे; दोनों ने सांसारकि कतिाबें पढ़ना छोड़ दयिा, जनि पर उन्होंने पहले बहुत समय बतिाया था, और खुद को केवल पवत्रि धर्मग्रंथों को समर्पति कर दयिा। इसे और गहराई से अध्ययन करने की इच्छा से, उन्होंने चर्च के पतिाओं और उनसे पहले के लेखकों, वशिष रूप से ओरजिन की रचनाएँ पढ़ीं। यहीं पर, पवत्रि आत्मा के मार्गदर्शन में, बेसलि और ग्रेगरी ने मठवासी सामुदायकि जीवन के नयिम लखि, जनिके द्वारा आज भी पूर्वी चर्च के भक्षिु काफी हद तक शासति होते हैं[467] ।

जहाँ तक उनके शारीरकि जीवन का सवाल है, बेसलि और ग्रेगरी को सहनशीलता में आनंद मलिता था; वे अपने हाथों से काम करते थे, जलाऊ लकड़ी उठाते, पत्थर तोड़ते, पेड़ लगाते और पानी देते, खाद ढोते और भारी बोझ उठाते थे, जसिके कारण उनके हाथों की मोच लंबे समय तक बनी रहती थी। उनके आवास पर न तो कोई छत थी और न ही कोई द्वार; वहाँ कभी आग या धुआँ नहीं होता था। वे जो रोटी खाते थे, वह इतनी सूखी और खराब पकी होती थी कि उसे मुश्कलि से चबाया जा सकता था।

हालांकि, वह समय आया जब बेसलि और ग्रेगरी दोनों को रेगस्तिान छोड़ना पड़ा, क्योंकि चर्च को उनकी सेवाओं की आवश्यकता थी, जो उस समय वधिर्मयिों द्वारा परेशान की जा रही थी। ग्रेगरी के पति, ग्रेगरी—जो एक वृद्ध व्यक्ति थे और इसलिए उनमें दृढ़ संकल्प के साथ वधिर्मयिों से लड़ने की ताकत नहीं थी—उन्हें ऑर्थोडॉक्स की सहायता के लिए नाज़ियानज़स ले गए; जहाँ तक बेसलि का सवाल है, उन्हें सेसरयिा के आर्चबशिप यूसेबयिस ने वापस आने के लिए मनाया था, जो एक पत्र में उनसे सुलह कर चुके थे और उन्होंने उन्हें चर्च की मदद करने के लिए कहा था, जो एरयिनों के हमले के अधीन था[468] । धन्य बेसलि ने, चर्च की ज़रूरत को देखते हुए और एक तपस्वी के जीवन की तुलना में उसकी भलाई को प्राथमकिता देते हुए, अपने एकांत को छोड़ दयिा और सेसरयिा चले गए, जहाँ उन्होंने अपने शब्दों और लेखों के माध्यम से वधिर्म के खलिाफ ऑर्थोडॉक्स धर्म की रक्षा करते हुए, लगन से परश्रिम कयिा। जब आर्चबशिप यूसेबयिस का नधिन हुआ, और उन्होंने अपनी अंतमि साँस बेसलि के हाथों में ली, तो बेसलि को आर्चबशिप का पद दयिा गया और बशिपों की परषिद द्वारा उनका अभषिेक कयिा गया। उन बशिपों में नाज़ियांज़स के ग्रेगरी के पति, वृद्ध ग्रेगरी भी थे। वृद्धावस्था से कमज़ोर और थके होने के कारण, उन्होंने आदेश दयिा कि उन्हें बेसलि को आर्चबशिप का पद स्वीकार करने के लिए मनाने और कसिी एरयिन को सहिासन पर बैठने से रोकने के लिए केसरयिा ले जाया जाए।

बेसलि ने मसीह की कलीसयिा का सफलतापूर्वक शासन कयिा; उन्होंने अपने भाई, पीटर को एक पुरोहति के रूप में नयिुक्त कयिा ताकि वह कलीसयिा के काम में उनकी सहायता कर सके, और बाद में उसे सेबास्टे शहर का बशिप नयिुक्त कयिा[469] । इस समय, उनकी माँ, धन्य एमेलयिा, 90 से अधकि वर्ष की आयु जीने के बाद प्रभु के पास चल बसीं।

कुछ समय बाद, धन्य बेसलि ने ईश्वर से अपने मन को प्रबुद्ध करने का आग्रह कयिा, ताकि वह अपने शब्दों में ईश्वर को नर्मिल बलदिान अर्पति कर सकें, और इस उद्देश्य के लिए उन पर पवत्रि आत्मा की कृपा हो[470] । छह दनि

---

[467] ये नयिम पूरे पूर्व के भक्षिुओं के जीवन के लिए, और वशिष रूप से हमारे रूसी भक्षिुओं के लिए, एक मार्गदर्शक के रूप में काम करते थे, और करते रहते हैं। अपने नयिमों में, बेसलि ने एकान्तवासी या एकांत जीवन की तुलना में सामुदायकि जीवन को प्राथमकिता दी है, क्योंकि दूसरों के साथ रहने से, एक भक्षिु को ईसाई प्रेम के उद्देश्य की सेवा करने का अधकि अवसर मलिता है। बेसलि ने भक्षिुओं के लिए मठाधीश के प्रतनिशिर्त आज्ञाकारति का कर्तव्य नर्धिारति कयिा, और यह नर्देश दयिा कि उन्हें राहगीरों के प्रतआतथि्य भाव रखना चाहिए, हालांकि वह उन्हें वशिष भोजन देने से मना करते हैं। बासलि के नयिमों के अनुसार, उपवास, प्रार्थना और नरिंतर परश्रिम - ये वे गतविधियिाँ हैं जनिमें भक्षिुओं को स्वयं को समर्पति करना चाहिए; हालाँकि, उन्हें अपने आस-पास के ज़रूरतमंद और बीमार लोगों की ज़रूरतों को नहीं भूलना चाहिए, जनि्हें देखभाल की आवश्यकता है।

[468] एरयिन, एक वधिर्मी संप्रदाय, यह सखिाता था कि मसीह एक सृजति प्राणी थे, शाश्वत नहीं, और परमेश्वर पति के समान स्वभाव के नहीं थे। इस वधिर्म का नाम अलेक्जेंड्रयिा के चर्च के एक पादरी एरयिस के नाम पर पड़ा, जसिने वर्ष 319 में इन वचिारों का प्रचार करना शुरू कयिा था।

[469] सेबास्टे – काप्पाडोसयिा में एक शहर।

[470] कॉन्स्टेंटनिोपल के आर्चबशिप प्रोकलस (5वीं शताब्दी के मध्य में) का कहना है कि संत बेसलि ने एक संक्षप्ति पूजा-वधिरिची क्योंकि उनके समय के कई ईसाइयों ने चर्च सेवा की लंबाई से असंतोष व्यक्त करना शुरू कर दयिा था। इस उद्देश्य के लिए, उन्होंने पारंपरकि सामूहकि

बाद, सातवें दिन, जब बेसलि चर्च में वेदी के सामने खड़े होकर रोटी और प्याला अर्पित करने लगे, तो प्रभु स्वयं प्रेरितों के साथ एक दर्शन में उनके सामने प्रकट हुए, और कहा:

'तुम्हारी प्रार्थना पर, तुम्हारे होंठों में स्तुति भर जाए, ताकि तुम अपनी ही प्रार्थनाएँ उच्चारित करते हुए रक्तहीन सेवा कर सको।'

इसके बाद, बेसलि ने ये शब्द बोलना और लिखना शुरू किया: 'मेरा मुँह स्तुति से भर जाए; मैं तेरी महिमा का गायन करूँ', 'हे प्रभु परमेश्वर, हमें सृजित करो और हमें इस जीवन में लाओ', और पवित्र अनुष्ठान की अन्य प्रार्थनाएँ। प्रार्थना के अंत में, उन्होंने रोटी उठाई, और इन शब्दों के साथ भक्तिपूर्वक प्रार्थना की: 'हे सर्वशक्तिमान , हे प्रभु यीशु मसीह हमारे परमेश्वर, स्वर्ग में, जो तेरे सिंहासन का निवास स्थान है, और तेरे राज्य के सिंहासन पर सुन; और आकर हमें पवित्र कर, और इस पर्वत पर अपना सिंहासन ग्रहण कर, और अपनी अदृश्यता में हमारे साथ यहाँ वास कर; और अपने हाथ से यह अनुग्रह कर, कि तू हम सब पर, अपनी प्रजा पर, अपना परम पवित्र शरीर और लहू प्रदान कर'[471] । जब संत यह कर रहे थे, तब यूबुलस और वरिष्ठ पुरोहितों ने वेदी और संत को रोशन करते हुए एक स्वर्गीय प्रकाश देखा, साथ ही सफेद वस्त्रों में कुछ तेजस्वी पुरुषों को भी देखा जो संत बेसलि के चारों ओर खड़े थे। यह देखकर वे महान भय से भर गए और प्रणाम कर रोने लगे तथा ईश्वर की स्तुति करने लगे।

उस समय, बेसलि ने एक सुनार को बुलाया और उसे शुद्ध सोने से एक कबूतर बनाने का आदेश दिया – ठीक उसी कबूतर के समान जो यॉर्डन नदी के ऊपर प्रकट हुआ था – और उसे पवित्र वेदी के ऊपर रख दिया, ताकि वह, मानो, दैवीय रहस्यों की रक्षा कर सके।

प्रभु ईश्वर ने कुछ चमत्कारिक संकेतों के माध्यम से अपने जीवनकाल में ही बेसलि की पवित्रता की गवाही दी। एक बार, जब वे दैवीय अनुष्ठान का अनुष्ठान कर रहे थे, एक यहूदी, पवित्र रहस्यों की प्रकृति का पता लगाने की इच्छा से, एक ईसाई होने का नाटक करते हुए अन्य विश्वासियों में शामिल हो गया, और चर्च में प्रवेश करने पर, उसने देखा कि संत बेसलि एक शिशु को अपने हाथों में पकड़े हुए थे और उसे टुकड़ों में तोड़ रहे थे। जब श्रद्धालुओं ने संत के हाथों से संस्कार ग्रहण करना शुरू किया, तो यहूदी भी आगे आया, और संत ने उसे भी, जैसा कि उन्होंने अन्य ईसाइयों को दिया था, पवित्र उपहार का एक हिस्सा दिया। इन्हें अपने हाथों में लेकर, यहूदी ने देखा कि यह वास्तव में मांस था, और जब वह कलश के पास गया, तो उसने देखा कि उसमें असली खून था। उसने पवित्र भोज के अवशेषों को छिपा लिया और घर लौटने पर, उन्हें अपनी पत्नी को दिखाया और उसे वह सब कुछ बताया जो उसने अपनी आँखों से देखा था। यह मानते हुए कि ईसाई संस्कार वास्तव में अद्भुत और गौरवशाली था, वह अगले सुबह धन्य बेसलि के पास गया और उससे पवित्र बपतिस्मा प्रदान करने का अनुरोध किया। बेसलि ने ईश्वर को धन्यवाद देने के बाद, तुरंत उस यहूदी और उसके पूरे परिवार का बपतिस्मा कर दिया।

एक बार, जब संत सड़क पर चल रहे थे, तो एक गरीब महिला, जिसके साथ किसी अधिकारी ने अन्याय किया था, बेसलि के पैरों पर गिर पड़ी और उनसे विनती करने लगी कि वे उसके लिए उस अधिकारी को पत्र लिखें, क्योंकि संत एक ऐसे व्यक्ति थे जिन्हें वह अधिकारी बहुत मानता था। संत ने एक कागज़ का पन्ना लेक[472] , अधिकारी को निम्नलिखित लिखा: 'यह गरीब महिला मुझसे यह कहने आई है कि मेरी ओर से एक पत्र आपके लिए बहुत मायने रखेगा। यदि ऐसा है, तो कृपया इसे करम में साबित करें और इस महिला पर दया करें।' ये शब्द लिखने के बाद, संत ने उस गरीब महिला को पर्चमेंट दे दिया, और वह उसे लेकर अपनी अधिष्ठात्री के पास चली गई। पत्र पढ़ने के बाद, उसने संत को जवाब में निम्नलिखित लिखा: 'आपके पत्र के अनुसार, हे पवित्र पिता, मैं उस महिला पर दया करना चाहूँगा, लेकिन मैं ऐसा नहीं कर सकता, क्योंकि वह सामान्य कर के अधीन है।' संत ने उन्हें फिर से इस प्रकार लिखा: 'यदि आप चाहते थे, लेकिन नहीं कर सके, तो यह ठीक है; लेकिन यदि आप कर सकते थे, फिर भी नहीं करना चाहते थे, तो ईश्वर स्वयं आपको ज़रूरतमंदों में डाल देंगे, ताकि आप वह न कर सकें जो आप चाहते हैं।' संत के ये शब्द जल्द ही सच साबित हुए: इसके कुछ ही समय बाद, राजा उस अधिकारी से नाराज़ हो गया, क्योंकि उसे पता चला कि वह लोगों पर बहुत अत्याचार कर रहा था, और उसे हथकड़ी पहना दी ताकि वह उन सभी से माफी मांग सके जिनके साथ उसने अन्याय किया था। जेल से, उस अधिकारी ने संत बेसलि

प्रार्थनाओं को छोटा किया, और साथ ही पुरोहितों की प्रार्थनाओं का विस्तार किया। – लिटर्जी के अतिरिक्त, संत बेसलि महान ने रचित किया: क) कम्युनियन से पहले एक प्रार्थना; ख) पेंटेकोस्ट की पूर्व संध्या पर प्रार्थनाएँ; और ग) भूत-ग्रस्त व्यक्ति पर एक प्रार्थना और मंत्र।

[471] संत बेसलि द ग्रेट की लिटर्जी से एक प्रार्थना।

[472] चार्टर – प्राचीन काल में लिखा जाने वाला पापिरस या पार्चमेंट; एक पांडुलिपि, एक लपेटा हुआ दस्तावेज़ (3 मैकाबीज़ 4:15; 2 यूहन्ना 1:12)।

को एक वनिती भेजी, जसिमें उनसे अपने लिए दया करने और राजा के समक्ष अपनी ओर से मध्यस्थता करने का अनुरोध किया गया। बेसलि राजा के पास उसका पक्ष रखने के लिए दौड़े, और छह दनि बाद एक फरमान आया, जसिमें उस अधकिारी को उसकी सज़ा से मुक्त कर दिया गया। उस अधकिारी ने, यह देखकर कि संत उसके प्रति कितने दयालु थे, अपना धन्यवाद प्रकट करने के लिए उनके पास दौड़ा, और उस उपर्युक्त गरीब महलिा को उसने अपनी संपत्ति से, उससे ली गई राशि का दोगुना वापस कर दिया।

उस समय जब ईश्वर के इस सेवक, महान बेसलि, कैपैडोसिया के सेज़रिया में मसीह के पवित्र वशि्वास के लिए बहादुरी से लड़ रहे थे[473] , सम्राट जूलियन द एपोस्टेट, जो एक ईश्वर-नन्दिक और ईसाइयों का बड़ा उत्पीड़क था[474] , जो घमंड करता था कि वह ईसाइयों को नष्ट कर देगा, पारसियों के खलिाफ युद्ध के लिए मार्च कर रहा था। उस समय, संत बेसलि चर्च में परम पवित्र ईश्वर की माता की एक प्रतमिा के सामने प्रार्थना कर रहे थे, जसिके चरणों में भाले वाले एक योद्धा के रूप में चित्रति पवित्र महान शहीद मर्करी की एक प्रतमिा रखी थी। योद्धा मर्करी ने कैपाडोसिया के सेज़रिया में शहीद होकर मृत्यु प्राप्त की (उनका पर्व दविस 24 नवंबर है)। उन्होंने प्रार्थना की कि ईश्वर ईसाइयों के उत्पीड़क और वनिाशक जूलियन को फारसी युद्ध से जीवति लौटने न दें। और फरि उन्होंने देखा कि परमेश्वर की अति पवित्र माता के पास खड़ी संत मर्करी की प्रतमिा बदल गई थी, और शहीद का रूप थोड़ी देर के लिए अदृश्य हो गया था। थोड़ी ही देर बाद, शहीद फरि से प्रकट हुए, लेकनि खून से सनी भाला लिए हुए। ठीक उसी क्षण, पवित्र कुँवारी मरयिम द्वारा परमेश्वर के शत्रु का नाश करने के लिए भेजे गए पवित्र शहीद मर्करीयस ने पर्सयिन युद्ध में जूलियन को भेद दिया।

संत बेसलि द ग्रेट के पास भी ऐसा ही अनुग्रह-पूर्ण वरदान था। जब, लटिर्जी के दौरान, उन्होंने पवित्र उपहार उठाए, तो दविय उपहारों को धारण किए हुए एक सुनहरी कबूतर, जो पवित्र वेदी के ऊपर मंडरा रहा था, ईश्वर की शक्ति से प्रेरति होकर, तीन बार काँप उठा। एक अवसर पर, जब बेसलि धर्मवधि का अनुष्ठान कर रहे थे और पवित्र उपहार उठा रहे थे, तो कबूतर का सामान्य संकेत—जसिकी कम्पन पवित्र आत्मा के अवतरण का संकेत करती थी—नहीं हुआ। जब बेसलि इस कारण पर वचिार कर रहे थे, तो उन्होंने देखा कि रपिडिा[475] को पकड़े हुए एक डकिन चर्च में खड़ी एक महलिा को घूर रहा था। बेसलि ने उस डकिन को पवित्र वेदी से दूर हटने का आदेश दिया और उस पर एक प्रायश्चति लगाया: सात दनिों तक उपवास करना और प्रार्थना करना, पूरी रात बनि सोए प्रार्थना में बतिाना, और अपनी संपत्ति से गरीबों को दान देना। उस समय से, संत बेसलि ने वेदी के सामने चर्च में एक पर्दा और एक वभिाजन खड़ा करने का आदेश दिया, ताकि जब दैवीय अनुष्ठान मनाया जा रहा हो तो कोई भी महलिा पवित्र स्थल में न देख सके; उन्होंने यह भी आदेश दिया कि जो लोग अवज्ञा करते हैं उन्हें चर्च से हटा दिया जाए और पवित्र सहभागति से बहष्कृत कर दिया जाए[476] ।

जब संत बेसलि एक बशिप थे, मसीह की कलीसिया पर सम्राट वैलेंस ([477]) द्वारा अत्याचार किया गया, जो एरयिन वधिर्म से अंधा हो गया था। कई ऑर्थोडॉक्स बशिपों को उनके पदों से हटाकर उसने उनकी जगह एरयिनों को स्थापति किया, जबकि अन्य—कमजोर दलि और डरपोक—को अपने वधिर्म में शामलि होने के लिए मजबूर किया। वह भीतर से क्रोधति और पीड़ति था, यह देखकर कि बेसलि नडिर होकर अपने सहिासन पर बना रहा, जैसे अपने वशि्वास का अटूट स्तंभ, और दूसरों को प्रोत्साहति और प्रेरति करता रहा कि वे एरयिनवाद को एक झूठे, ईश्वर के प्रति घृणति सद्धिांत के रूप में तरिस्कार करें। अपने अधीन क्षेत्रों की यात्रा करते हुए और हर जगह ऑर्थोडॉक्स का बुरी तरह उत्पीड़न

---

[473] चर्च के इतहिासकार सोजोमेन कहते हैं, 'अगर बेसलि नहीं होते, तो यूनोमयिस का संप्रदाय टॉरस तक और अपोलनिारसि का संप्रदाय टॉरस से मस्रि तक फैल जाता।'

[474] जूलियन द एपोस्टेट ने 361 से 363 तक शासन किया। सम्राट बनने पर, उसने ईसाई धर्म का त्याग कर दिया और मूरतपिूजा की बहाली को अपना जीवन-कार्य बना लिया; इसीलिए उसे 'धर्मत्यागी' कहा जाता है।

[475] रपिडिा – (ग्रीक: ओपाचलो, मक्खयिों को भगाने का एक उपकरण)। ये काफी लंबे हैंडल वाली धातु की डस्कि होती हैं, जनि पर छह-पंखों वाले सेराफमि की छवि अंकति होती है। बशिप की सेवा के दौरान, डकिन पवित्र उपहारों पर मक्खी न गरिने देने के लिए उन्हें पंखे की तरह फहराते और लहराते हैं; साथ ही, रपिडिा हमें याद दलिाते हैं कि पवित्र स्वर्गदूत, जनिकी छवयिाँ उन पर अंकति हैं, पवित्र अनुष्ठान के दौरान हमारे साथ उपस्थति रहते हैं और सह-आराधना करते हैं। रपिडिा का उपयोग बशिप की सेवा के दौरान किया जाता है; पुरोहति की सेवा के दौरान, उनकी जगह एक घूंघट ले लेता है।

[476] दरअसल, पर्दे चर्च के उस हस्सि के सामने लगाए जाते थे जहाँ महलिाएँ खड़ी होती थीं; यूखरस्ति के समारोह के दौरान इन पर्दों को नीचे कर दिया जाता था, और महलिाओं को, चर्च से बाहर नकिाल दिए जाने की सज़ा के तहत, उस समय उन्हें उठाने से मना किया गया था। इस बीच, वेदी को चर्च के बाकी हस्सिों से एक जालीदार पर्दे से अलग किया गया था, जो बाद में आज के आइकनोस्टासिस (प्रतमिा-पट) में वकिसति हो गया।

[477] सम्राट वैलेंस ने 364 से 378 तक शासन किया।

करते हुए, राजा, अंतीयक जाते समय, कैपाडोसिया के सेज़रिया पहुँचा और वहाँ बेसलि को अरिअनिवाद का पक्ष लेने के लिए मनाने हेतु हर संभव साधन अपनाने लगा। उन्होंने अपने जनरलों, कुलीनों और सलाहकारों को निर्देश दिया कि वे एक ओर वनितियों और वादों, और दूसरी ओर धमकियों के माध्यम से बेसलि को राजा की इच्छा पूरी करने के लिए मनाएँ। राजा के समान विचारधारा वाले सहयोगियों ने भी संत से ऐसा करने के लिए लगातार आग्रह किया; इसके अलावा, कुछ कुलीन महिलाओं जिन्हें राजा की कृपा प्राप्त थी, उन्होंने अपने खसासों को संत के पास भेजना शुरू कर दिया, और उन्हें गंभीरता से सलाह दी कि वे राजा के विचारों के अनुरूप सोचें। लेकिन कोई भी इस धर्मगुरु को, जो अपने विश्वास में अटूट थे, ऑर्थोडॉक्सी का त्याग करने के लिए मजबूर नहीं कर सका। अंत में, एपार्क मोडेस्ट[478] ने बेसलि को अपने समक्ष बुलाया और जब वह चापलूसी भरे वादों से उसे ऑर्थोडॉक्सी का त्याग करने के लिए मना नहीं सके, तो उन्होंने उसकी संपत्ति की जब्ती, निर्वासन और मृत्यु से उसे गुस्से में धमकाना शुरू कर दिया। हालाँकि, संत ने उनके धमकियों का साहसपूर्वक जवाब दिया:

'यदि आप मुझसे मेरी संपत्ति छीन लेते हैं, तो आप न तो उससे स्वयं को धनी बनाएंगे और न ही मुझे गरीबी में धकेलेंगे। मुझे लगता है कि आपको मेरे इन फटे-पुराने कपड़ों या उन कुछ किताबों की कोई ज़रूरत नहीं है, जिनमें मेरी सारी संपत्ति समाहित है।' मेरे लिए कोई निर्वासन नहीं है, क्योंकि मैं किसी स्थान से बंधा नहीं हूँ; और जिस स्थान पर मैं अब रहता हूँ वह मेरा नहीं है, और जहाँ भी मुझे भेजा जाएगा, वह स्थान मेरा होगा। बल्कि यह कहना बेहतर होगा: हर जगह ईश्वर का स्थान है, जहाँ भी मैं *एक अजनबी और यात्री* हूँ (भजन संहिता 38:13)। और यातनाएँ मुझे क्या नुकसान पहुँचा सकती हैं? – मैं इतना कमजोर हूँ कि केवल पहला ही वार मुझे दर्द पहुँचाएगा। जहाँ तक मृत्यु का सवाल है, वह मेरे लिए एक आशीर्वाद है: वह मुझे परमेश्वर के पास और भी शीघ्र ले जाएगी, जिनके लिए मैं जीता और परिश्रम करता हूँ, और जिनकी ओर मैं लंबे समय से प्रयत्नशील रहा हूँ।

इन शब्दों से चकित होकर, राज्यपाल ने बेसलि से कहा:

'मुझसे पहले कभी किसी ने इतनी बेबाकी से बात नहीं की!'

'हाँ,' संत ने उत्तर दिया, 'क्योंकि आपने पहले कभी किसी बिशप से बात नहीं की है।' अन्य सभी मामलों में हम नम्रता और विनम्रता दिखाते हैं, लेकिन जब ईश्वर की बात आती है, और जब वे उसकी अवज्ञा करने की हिम्मत करते हैं, – तब, बाकी सब कुछ तुच्छ समझकर, हम केवल उसी की ओर देखते हैं; तब आग, तलवार, जंगली जानवर और लोहा, जो शरीर को पीड़ित करते हैं, हमें डराने के बजाय प्रसन्न करेंगे।

संत बेसलि की दृढ़ता और निडरता के बारे में वैलेंस को रिपोर्ट करते हुए, मोडेस्ट ने कहा:

'हे राजा, हम चर्च के प्रमुख से पराजित हैं। यह व्यक्ति धमकियों से ऊपर, तर्कों से अधिक दृढ़ और मान्यताओं से अधिक शक्तिशाली है।'

इसके बाद, राजा ने बेसलि को परेशान न करने का आदेश दिया और, यद्यपि वह उससे मेलजोल करने से इनकार कर गया, यह दिखाने में शर्मिंदा होकर कि वह बदल गया है, उसने एक अधिक स्वीकार्य बहाना खोजना शुरू कर दिया।

प्रभु के प्रकट होने के पर्व का दिन आ गया। राजा अपने अनुचरों के साथ उस चर्च में प्रवेश किया जहाँ बेसलि पूजा का अनुष्ठान कर रहे थे और मंडली के बीच मिलकर, इस प्रकार चर्च के साथ एकता का दिखावा करना चाहा। चर्च की भव्यता और व्यवस्था को निहारते और श्रद्धालुओं के गायन और प्रार्थनाओं को सुनते हुए, राजा चकित हो गया और उसने कहा कि अपनी एरियन चर्चों में उसने कभी भी ऐसी व्यवस्था और भव्यता नहीं देखी थी। संत बेसलि राजा के पास गए और उनसे बातचीत करने लगे, उन्हें पवित्र धर्मग्रंथ से उपदेश देते हुए; नाजियांज़स के ग्रेगरी, जो उस समय वहाँ मौजूद थे, इस बातचीत को सुन रहे थे और बाद में इसके बारे में लिखा। उस समय से, राजा ने बेसलि को अधिक अनुकूल दृष्टि से देखना शुरू कर दिया। हालाँकि, अंफ़ियोपोलिस लौटने पर, वह दुष्ट लोगों द्वारा उकसाए जाने पर बेसलि पर फिर से गुस्सा हो गया; उनके द्वारा लगाए गए बदनाम करने वाले आरोपों पर विश्वास करते हुए, उसने बेसलि को निर्वासन की सजा सुनाई। लेकिन जब सम्राट इस सजा पर हस्ताक्षर करने ही वाला था, तो जिस सिंहासन पर वह बैठा था वह हिलने लगा, और वह छड़ी[479] जिससे वह दस्तावेज़ पर हस्ताक्षर करने वाला था, टूट गई। शाह ने एक और कलम उठाई, लेकिन उसके साथ भी वही हुआ; तीसरे के साथ भी वही हुआ। तब उसका हाथ काँपने लगा, और वह भयभीत हो गया; इस में ईश्वर

[478] यह एपार्क पूरे पूर्व का शासक और, साथ ही, प्रेटोरियन गार्ड या शाही गार्ड का कमांडर था।

[479] जिस उपकरण से प्राचीन लोग लिखते थे, वह कलम, पेंसिल या स्टाइलस जैसी कोई चीज़ थी (देखें भजन संहिता 44:1–3)।

की शक्ति को पहचानते हुए, शाह ने वह दस्तावेज़ फाड़ दिया। लेकिन ऑर्थोडॉक्स के दुश्मनों ने एक बार फिर बेसिल के संबंध में राजा को लगातार परेशान करना शुरू कर दिया, और उससे उसे चैन से न रहने देने का आग्रह किया, और राजा ने बेसिल को अंतिओक लाने के लिए अनास्तासियस नामक एक सम्मानित व्यक्ति को भेजा। जब यह सम्मानित व्यक्ति केसरिया पहुँचा और बेसिल को राजा की आज्ञा के बारे में सूचित किया, तो संत ने उत्तर दिया:

'मेरे पुत्र, कुछ समय पहले मुझे पता चला कि राजा ने मूर्खों की सलाह मानकर, मुझे कैद करने का आदेश देने वाले एक फरमान पर हस्ताक्षर करने का प्रयास करते हुए तीन बेंत तोड़ दिए और इस प्रकार सत्य को छिपा दिया। निर्जीव खपच्चियों ने उनकी अदम्य उत्कटता को रोके रखा, और वे अपने अन्यायपूर्ण निर्णय के हथियार बनने के बजाय टूट जाना पसंद करते थे।

एंटीओक लाए जाने के बाद, बेसिल एपार्क की अदालत में पेश हुए, और जब उनसे पूछा गया, 'आप राजा द्वारा प्रचारित आस्था का पालन क्यों नहीं करते?', तो उन्होंने उत्तर दिया:

'ऐसा कभी नहीं होगा कि मैं सच्चे ईसाई धर्म से भटककर, अधर्मी एरियन सिद्धांत का अनुयायी बनूँ; क्योंकि मुझे अपने पूर्वजों से एकसार[480] में आस्था विरासत में मिली है, जिसकी मैं घोषणा करता हूँ और महिमा करता हूँ।'

न्यायाधीश ने उसे मृत्यु की धमकी दी, लेकिन बेसिल ने उत्तर दिया:

– तो क्या? मुझे सत्य के लिए पीड़ा सहने दो और देह के बंधनों से मुक्त होने दो; मैं लंबे समय से इसकी कामना करता हूँ – बस अपने वादे से मुकरना नहीं।

एपार्क ने राजा को बताया कि बेसिल धमकियों से नहीं डरता था, उसकी आस्था को नहीं डिगाया जा सकता था, और उसका हृदय अडिग और दृढ़ था। क्रोध से आग-बबूला राजा, बेसिल को नष्ट करने का तरीका सोचने लगा। लेकिन उसी क्षण, राजा का पुत्र, गालाट, अचानक बीमार पड़ गया, और डॉक्टरों ने पहले ही उसे मृतप्राय घोषित कर दिया था। उसकी माँ, राजा के सामने आकर, उससे गुस्से में बोली:

'चूंकि तुम झूठे विश्वासों पर अड़े हो और ईश्वर के बिशप को सता रहे हो, इसीलिए यह लड़का मर रहा है।'

यह सुनकर, वैलेंटस ने बेसिल को बुलाया और उससे कहा:

'यदि आपके धर्म की शिक्षाएँ ईश्वर को प्रसन्न करती हैं, तो अपनी प्रार्थनाओं से मेरे पुत्र को ठीक कर दो!'

संत ने उत्तर दिया:

'हे राजा! यदि आप ऑर्थोडॉक्स धर्म अपना लेते हैं और चर्चों को शांति प्रदान करते हैं, तो आपका पुत्र जीवित रहेगा।'

जब राजा ने ऐसा करने का वादा किया, तो संत बेसिल तुरंत प्रार्थना के लिए ईश्वर की ओर मुड़े, और प्रभु ने राजा के पुत्र को बीमारी से राहत दी। इसके बाद, बेसिल को सम्मान के साथ उनके धर्मप्रांत में वापस भेज दिया गया। एरियनों ने यह सुनकर और देखकर ईर्ष्या और द्वेष से भर गए और राजा से कहा:

'हम भी ऐसा कर सकते थे!'

उन्होंने फिर से राजा को गुमराह किया, जिससे वह अपने बेटे का बपतिस्मा कराने से उन्हें नहीं रोक सका। लेकिन जब एरियनों ने राजकुमार को बपतिस्मा देने के लिए ले जाया, तो वह तुरंत उनकी बाहों में ही मर गया। उपर्युक्त अनास्तासियस ने यह अपने आँखों से देखा और पश्चिमी सम्राट वैलेंटाइनियन[481] को इसकी सूचना दी, जो पूर्वी सम्राट वैलेंस के भाई थे। इस चमत्कार से चकित वैलेंटाइनियन ने ईश्वर की स्तुति की और अनास्तासियस के माध्यम से संत बेसिल को महान उपहार भेजे; उन्हें प्राप्त करने पर, बेसिल ने अपने धर्मप्रांत के शहरों में अस्पतालों की स्थापना की और वहाँ कई दुर्बल और बेसहारा लोगों को आश्रय प्रदान किया।

नाज़ियांज़ुस के धन्य ग्रेगरी आगे बताते हैं कि संत बेसिल ने मॉडेस्टस, उस एपार्क जो उनके प्रति बहुत कठोर रहा था, को भी अपनी प्रार्थनाओं के द्वारा एक गंभीर बीमारी से ठीक कर दिया, जब मॉडेस्टस ने अपनी बीमारी में विनम्रतापूर्वक उनकी पवित्र मध्यस्थता से मदद मांगी।

कुछ समय बाद, राजा के एक रिश्तेदार यूसेबियस को मॉडेस्टस की जगह एपार्क नियुक्त किया गया। उस समय केसरिया में वेस्टियाना नाम की एक विधवा रहती थी - वह अरक्स की बेटी थी, जो सीनेट का सदस्य था, और वह एक युवा,

---

[480] अर्थात्, परमेश्वर का पुत्र परमपिता परमेश्वर के समान सार का है और उसके समान है।

[481] वालेंटाइनियन ने 364 से 376 तक शासन किया।

अमीर और बहुत सुंदर महिला थी। एपार्क यूसेबियस इस विधवा को एक विशेष व्यक्ति से जबरदस्ती शादी करने के लिए मजबूर करना चाहता था; लेकिन वह पवित्रचित्त थी और ईश्वर की महिमा के लिए अपनी विधवा की पवित्रता को अक्षुण्ण रखना चाहती थी, इसलिए उसने शादी करने से इनकार कर दिया। जब उसे पता चला कि उनका इरादा उसे जबरदस्ती अगवा करके शादी के लिए मजबूर करने का है, तो वह चर्च में भाग गई और ईश्वर के बिशप, संत बेसिलि[482] के चरणों में गिर पड़ी। उन्होंने उसे अपनी सुरक्षा में लेकर, उसे लेने आए लोगों को सौंपने से इनकार कर दिया, और बाद में उसे गुप्त रूप से एक मठ में, अपनी बहन, पूजनीय मक्रिना के पास भेज दिया। धन्य बेसिलि पर क्रोधित होकर, एपार्क ने चर्च से विधवा को जबरदस्ती पकड़ने के लिए सैनिक भेजे; और जब वह वहाँ नहीं मिली, तो उसने आदेश दिया कि उसे संत के शयनकक्ष में तलाशा जाए। एपार्क, जो कि एक कुख्यात चरित्र का व्यक्ति था, ने सोचा कि बेसिलि ने उसे पापी इरादे से अपने पास रखा था और अपने शयनकक्ष में छिपा दिया था। हालाँकि, जब उसे कहीं नहीं मिला, तो उसने बेसिलि को अपने सामने पेश होने का आदेश दिया और बड़े क्रोध से उसे गाली दी, तथा विधवा को सौंपने तक उसे यातना देने की धमकी दी। लेकिन संत बेसिलि ने यातना सहने के लिए खुद को तैयार दिखाया।

उन्होंने कहा, 'यदि आप मेरे शरीर को लोहे से खुरचने का आदेश देते हैं, तो आप मेरे जिगर को ठीक कर देंगे, जो, जैसा कि आप देख सकते हैं, मुझे बहुत कष्ट दे रहा है[483] ।'

उस क्षण, घटना की जानकारी मिलते ही, नागरिक—सिर्फ पुरुष ही नहीं, बल्कि महिलाएँ भी—हथियारों और लाठियों के साथ ईपार्क के महल की ओर दौड़ पड़े, ताकि वे अपने पवित्र पिता और चरवाहे के लिए उसे मार सकें। और अगर संत बेसिलि ने लोगों को शांत न किया होता, तो ईपार्क मारा गया होता। एपार्क, ऐसी जन आक्रोश को देखकर, बहुत डरा और संत को बिना किसी चोट के आजाद छोड़ दिया।

हेलाडियस, जो संत बेसिलि के चमत्कारों के प्रत्यक्षदर्शी और बिशप की गद्दी पर उनके उत्तराधिकारी—एक सदाचारी और पवित्र व्यक्ति—थे, ने निम्नलिखित बात बताई। प्रोटेरियस नामक एक ऑर्थोडॉक्स सेनेटर ने, पवित्र स्थानों की यात्रा के दौरान, अपनी बेटी को एक मठ में ईश्वर की सेवा के लिए सौंपने का निश्चय किया; लेकिन शैतान, जो भलाई का पुराना दुश्मन है, ने प्रोटेरियस के एक नौकर के मन में अपने मालिक की बेटी के प्रति एक जुनून जगा दिया। यह महसूस करते हुए कि उसकी इच्छा अधूरी थी और युवती से अपने जुनून के बारे में कुछ कहने की हिम्मत न करते हुए, वह नौकर उस शहर में रहने वाले एक जादूगर के पास गया और उसे अपनी दुर्दशा के बारे में बताया। उसने जादूगर से बहुत सारा सोना देने का वादा किया, बशर्ते कि वह अपनी जादू-टोने का इस्तेमाल करके उसे अपने मालिक की बेटी से शादी करने में मदद करे। जादूगर ने पहले तो मना कर दिया, लेकिन अंत में कहा:

'यदि आप चाहें, तो मैं आपको अपने स्वामी, शैतान के पास भेज दूँगा; वह इस मामले में आपकी मदद करेगा, बशर्ते आप भी उसकी आज्ञा का पालन करें।'

बेचारे दास ने उत्तर दिया:

'वह मुझसे जो कुछ भी करने को कहेगा, मैं करने का वादा करता हूँ।'

फिर जादूगर ने कहा:

'क्या तुम अपने मसीह का त्याग करोगे और इस आशय का एक बयान पर हस्ताक्षर करोगे?'

नौकर ने उत्तर दिया:

'मैं वह भी करने को तैयार हूँ, बशर्ते मुझे वह मिल जाए जो मैं चाहता हूँ।'

'अगर तुम ऐसा वादा करोगे,' जादूगर ने कहा, 'तो मैं भी तुम्हारा सहायक बनूँगा।'

तब, एक कागज़ का टुकड़ा लेकर, उसने शैतान को निम्नलिखित लिखा:

– चूँकि यह मेरा कर्तव्य है, हे स्वामी, कि मैं लोगों को ईसाई धर्म से दूर करने और आपके प्रजाजनों की संख्या बढ़ाने के लिए उन्हें आपके अधीन लाने का प्रयास करूँ, अतः मैं अब आपके पास इस पत्र के वाहक को भेजता हूँ, जो एक युवती के प्रति जुनून में डूबा हुआ एक युवक है, और मैं उसकी ओर से आपसे अनुरोध करता हूँ कि आप उसकी इच्छा को

---

[482] प्राचीन काल में, कॉन्स्टेंटाइन महान के समय से, चर्चों को तथाकथित आश्रय का अधिकार प्रदान किया गया था: अन्यायपूर्ण रूप से सताए गए लोग उनमें शरण लेते थे, और इस प्रकार अधिकारियों के पास उनकी बेगुनाही का पता लगाने का समय होता था।

[483] बेसिलि द ग्रेट अत्यंत नाजुक स्वास्थ्य वाले व्यक्ति थे और अक्सर पूरी तरह से शारीरिक शक्तिहीन हो जाते थे। उन्होंने स्वयं लिखा, 'लगातार और गंभीर बुखारों ने मेरे शरीर को इतना कमजोर कर दिया है कि मैं मकड़ी के जाले से अलग नहीं हूँ। हर रास्ता मेरे लिए अतिकठिन है; हवा का हर झोंका तैराकों द्वारा सामना किए जाने वाले उथल-पुथल से भी अधिक खतरनाक है... एक बीमारी के बाद दूसरी बीमारी आती है।"

पूरा करने में उसकी सहायता करें। इसके द्वारा, मैं भी महमिामय होऊँगा, और मैं आपके लिए और अधकि प्रशंसकों को आकर्षति करूँगा।

शैतान को यह संदेश लखिने के बाद, जादूगर ने इसे उस युवक को दे दयिा और उसे इन शब्दों के साथ भेज दयिा:

'रात के इस घड़ी जाओ और हेलेनकि कब्रस्तिान[484] में खड़े हो जाओ, कागज़ को ऊँचा पकड़े हुए; फरि जो तुम्हें शैतान तक ले जाएँगे वे तुरंत तुम्हारे सामने प्रकट होंगे।'

बेचारा दास जल्दी से नकिल पड़ा और कब्रस्तिान में रुककर राक्षसों को बुलाने लगा। और तुरंत ही दुष्ट आत्माएँ उसके सामने प्रकट हो गईं और उस भ्रामति युवक को खुशी-खुशी अपने राजकुमार के पास ले गईं। उसे एक ऊँचे सहिासन पर बैठा हुआ, दुष्ट आत्माओं की भीड़ से घरिा हुआ देखकर, दास ने जादूगर का पत्र उसे सौंप दयिा। शैतान ने पत्र लेकर दास से कहा:

'क्या तुम मुझ पर वशि्वास करते हो?'

उस आदमी ने जवाब दयिा, 'मैं करता हूँ।'

शैतान ने फरि पूछा:

'क्या तुम अपने मसीह का त्याग करते हो?'

'हाँ,' नौकर ने उत्तर दयिा।

तब शैतान ने उससे कहा:

'तुम ईसाई मुझे अक्सर धोखा देते हो: जब तुम मुझसे मदद मांगते हो, तो तुम मेरे पास आते हो, लेकनि जब तुम अपना उद्देश्य हासलि कर लेते हो, तो तुम मुझे फरि से त्याग देते हो और अपने मसीह की ओर मुड़ जाते हो, जो दयालु और कृपालु होने के कारण, तुम्हें स्वीकार कर लेते हैं। 'तो मुझे एक लखिति वचन दे दो कि तुम स्वेच्छा से मसीह और अपने बपतस्मिा का त्याग करते हो, और हमेशा के लिए मेरे होने का वादा करते हो, और यह कि न्याय के दनि से तुम मेरे साथ अनंत यातना सहोगे: ऐसी स्थतिि में, मैं तुम्हारी इच्छा पूरी करूँगा।'

दास ने वह दस्तावेज़ लयिा और उस पर वही लखि दयिा जो शैतान उससे लखिवाना चाहता था। तब आत्माओं का वनिाशक, प्राचीन साँप (अर्थात् शैतान), ने व्यभचिार के दानवों को भेजा, और उन्होंने कन्या में युवक के लिए इतना प्रबल प्रेम जगा दयिा कि, कामुक वासना से अभभिूत होकर, वह जमीन पर गरि पड़ी और अपने पति से पुकार कर बोली:

'मेरे पर दया करो, अपनी बेटी पर दया करो, और मुझे हमारे नौकर से ब्याह दे दो, जसिसे मैं पूरे दलि से प्यार करने लगी हूँ। अगर तुम मेरे लिए, अपनी इकलौती बेटी के लिए, ऐसा नहीं करोगे, तो तुम जल्द ही मुझे भयानक पीड़ा में मरते हुए देखोगे और तुम्हें कयामत के दनि मेरे लिए जवाब देना होगा।'

यह सुनकर, उसके पति भय से भर गए और चलि्ला उठे:

'हाय, मैं पापी! मेरी बेटी को क्या हो गया है? मेरे खजाने को कसिने मुझसे चुरा लयिा है? मेरी संतान को कसिने बहकाया है? कसिने मेरी आँखों की रोशनी को मंद कर दयिा है?' मेरी बेटी, मैं तुम्हारा ववािह स्वर्गीय वरा के साथ करना चाहता था, ताकि तुम स्वर्गदूतों के समान बनो और भजनों और आत्मकि गीतों (इफसियिों 5:19) में परमेश्वर की महमिा करो, और मैं स्वयं तुम्हारे लिए मोक्ष प्राप्त करने की आशा रखता था; फरि भी तुम नरि्लज्जता से ववािह पर अड़ी हुई हो! मेरी बेटी, मुझे अपने दुख में पाताल लोक तक मत खींचो; एक दास से ववािह करके अपने कुलीन पद पर कलंक मत लगाओ।

लेकनि उसने, अपने पति की बातों की परवाह कए बनि, केवल इतना कहा:

'अगर तुम मेरी इच्छा के अनुसार नहीं करोगे, तो मैं अपनी जान दे दूँगी।'

उसका पति, यह नहीं जानता था कि क्या करे, और अपने रशि्तेदारों और दोस्तों की सलाह पर, इस बात पर सहमत हो गया कि उसकी इच्छा पूरी करना ही बेहतर होगा बजाय इसके कि वह एक भयानक मौत मरे। अपने दास को बुलाकर, उसने अपनी बेटी को एक बड़ी संपत्ति के साथ पत्नी के रूप में दे दयिा, और अपनी बेटी से कहा:

'तो जा, दुर्भाग्यपूर्ण लड़की, और शादी कर ले! लेकनि मुझे लगता है कि बाद में तुझे अपने इस काम का बहुत पछतावा होगा, और इससे तुझे कोई फायदा नहीं होगा।'

---

[484] पगनों की कब्रों को, अशुद्ध माना जाने के कारण, प्रारंभकि ईसाइयों द्वारा राक्षसों का पसंदीदा नविास स्थान माना जाता था।

इस विवाह के कुछ समय बाद और शैतान का काम पूरा हो जाने पर, यह स्पष्ट हो गया कि नववविवाहित चर्च नहीं जाता था और न ही पवित्र संस्कार ग्रहण करता था। यह बात उसकी दुर्भाग्यपूर्ण पत्नी के ध्यान में लाई गई:

उन्होंने उससे कहा, 'क्या तुम्हें नहीं पता कि तुम्हारा पति, जिसे तुमने चुना है, ईसाई नहीं है, बल्कि मसीह के धर्म से पराये हैं?'

यह सुनकर वह शोक से भर गई; वह जमीन पर गिर पड़ी, अपनी नाखूनों से अपना चेहरा खुरचने लगी, अपने हाथों से थके बिना अपनी छाती पीटने लगी, और चिल्लाई:

'जो कोई भी अपने माता-पिता की अवज्ञा करता है, वह कभी नहीं बचा है! मेरी लाज का हाल मेरे पिता को कौन सुनाएगा? हाय, मैं दुखिया औरत! मैं किस तबाही में गिर पड़ी हूँ! मैं जन्मी ही क्यों, और जन्मते ही क्यों नहीं मर गई?'

जब वह इस प्रकार रो रही थी, तो उसके पति ने उसे सुना और उसके रोने का कारण पूछने के लिए उसके पास दौड़ आए। यह जानने पर कि क्या हुआ था, उन्होंने उसे सांत्वना देना शुरू किया, यह कहते हुए कि उसके बारे में उसे झूठ बोला गया था, और उसे आश्वासन दिया कि वह एक ईसाई है। वह, उनके शब्दों से कुछ शांत होकर, उनसे कहने लगी:

'यदि तुम मुझे पूरी तरह से विश्वास दिलाना चाहते हो और मेरी दुखी आत्मा से दुख दूर करना चाहते हो, तो सुबह मेरे साथ चर्च चलो और मेरे सामने परम पवित्र संस्कार ग्रहण करो: तब मैं तुम पर विश्वास करूँगी।'

उसके दुर्भाग्यपूर्ण पति ने, यह देखकर कि वह सच्चाई छिपा नहीं सकता, अपनी इच्छा के विरुद्ध, उसे अपने बारे में सब कुछ बताने के लिए मजबूर हो गया - कि कैसे उसने अपनी आत्मा शैतान को बेच दी थी। वह, हालांकि, अपनी नारी दुर्बलता को भूलकर, सेंट बेसिल के पास दौड़ी और उनसे पुकार कर कहा:

'हे मसीह के शिष्य, मुझ पर दया करो, इस अवज्ञाकारी बेटी पर दया करो जिसने अपने पिता की इच्छा का उल्लंघन किया है और शैतान के प्रलोभन के आगे आत्मसमर्पण कर दिया है!' – और उसने उसे अपने पति के बारे में सब कुछ विस्तार से बताया।

संत ने उसके पति को बुलाया और उससे पूछा कि क्या उसकी पत्नी उसके बारे में जो कह रही थी वह सच था। उसने आँसुओं में जवाब दिया:

'हाँ, हे ईश्वर के पवित्र पुरुष, यह सब सच है! और यदि मैं चुप रहूँगा, तो मेरे कर्म मेरे विरुद्ध पुकारेंगे,' और उसने क्रम से सब कुछ बयां किया कि कैसे उसने खुद को दुष्टात्माओं के हवाले कर दिया था।

तब संत ने कहा:

'क्या तुम हमारे प्रभु, यीशु मसीह के पास लौटना चाहते हो?'

'हाँ, मैं चाहता हूँ, लेकिन मैं नहीं कर सकता,' उसने जवाब दिया।

बेसिल ने पूछा, 'क्यों नहीं?'

'क्योंकि,' उस आदमी ने जवाब दिया, 'मैंने मसीह का त्याग करने और खुद को शैतान के हवाले करने वाला एक दस्तावेज़ पर हस्ताक्षर किए हैं।'

लेकिन बेसिल ने कहा:

'इस पर शोक न करें, क्योंकि ईश्वर दयालु है और पश्चाताप करने वालों को स्वीकार करता है।'

इस बीच उसकी पत्नी संत के चरणों में गिर पड़ी और उनसे विनती करते हुए बोली:

'हे मसीह के शिष्य! हमारी हर संभव सहायता करो।'

तब संत ने उस आदमी से कहा:

'क्या तुम विश्वास करते हो कि तुम अभी भी उद्धार पा सकते हो?'

उसने उत्तर दिया:

'मैं विश्वास करता हूँ, महोदय; मेरे अविश्वास में सहायता करें।'

इसके बाद, संत ने उसका हाथ पकड़ा, उस पर क्रॉस का चिह्न बनाया, और उसे चर्च के प्रांगण के भीतर एक कमरे में बंद कर दिया, और उसे ईश्वर से अखंड रूप से प्रार्थना करने का आदेश दिया। वे स्वयं तीन दिनों तक प्रार्थना में रहे, और फिर उन्होंने उस पश्चातापी से मुलाकात की और उससे पूछा:

'तुम्हें कैसा महसूस हो रहा है, मेरे बच्चे?'

युवक ने उत्तर दिया, 'महाशय, मैं अत्यंत दयनीय अवस्था में हूँ, मैं राक्षसों की चीखें, न भयावह दृश्य, न तीर चलने की आवाज़, और न ही भाले के वार सहन कर सकता हूँ। क्योंकि राक्षस, मेरी रसीद अपने हाथों में लेकर, मुझे कोसते हुए कहते हैं: "तुम हमारे पास आए हो, हम तुम्हारे पास नहीं!"'

तब संत ने कहा:

'डरो मत, मेरे बच्चे, बल्कि विश्वास रखो।'

और, उसे थोड़ा सा खाना देकर, उसने उस पर क्रॉस का चिह्न बनाया और उसे फिर से बंद कर दिया। कुछ दिनों बाद, वह एक बार फिर उससे मिलने आया और कहा:

'तुम कैसे हो, मेरे बच्चे?'

लड़के ने उत्तर दिया:

'मैं अभी भी उनकी धमकियाँ और चिल्लाहटें दूर से सुन सकता हूँ, लेकिन मैं उन्हें देख नहीं सकता।'

बेसिल ने उसे थोड़ा भोजन देकर और उसके लिए प्रार्थना करके, उसे फिर से बंद कर दिया और चला गया। फिर, चालीसवें दिन, वह उसके पास आया और पूछा:

'तुम कैसे हो, मेरे बच्चे?'

उसने उत्तर दिया:

'खैर, हे पवित्र पिता, क्योंकि मैंने आपको एक सपने में मेरे लिए लड़ते और शैतान पर विजय प्राप्त करते देखा था।'

एक प्रार्थना करने के बाद, संत उसे कोठरी से बाहर ले गए और उसे अपनी कोठरी में ले आए। अगले सुबह, उन्होंने पूरी चर्च की पादरी मंडली, भिक्षुओं और सभी ईश्वर-भयभीत लोगों को बुलाया, और कहा:

[485]– हे भाइयों, हम मानवजाति के प्रेमी परमेश्वर की स्तुति करें, क्योंकि अब भला चरवाहा अपनी खोई हुई भेड़ को अपनी काँख पर उठाकर चर्च में लाना चाहता है: इस रात हमें उसकी दया का आह्वान करना चाहिए, ताकि वह हमारी आत्माओं के शत्रु को परास्त कर लज्जित कर दे।

विश्वासी चर्च में इकट्ठा हुए और पश्चातापी के लिए सारी रात प्रार्थना करते रहे, पुकारते हुए: 'हे प्रभु, दया करें।'

जब सुबह हुई, तो बेसिल ने उस पश्चातापी को हाथ से पकड़कर, भजनों और स्तुतियों का गायन करते हुए, सभी लोगों के साथ उसे चर्च में ले गए। और देखो, शैतान निर्लज्जतापूर्वक अपनी सारी विनाशकारी शक्ति के साथ अदृश्य रूप में वहाँ आया, यह चाहकर कि वह उस युवक को संत के हाथों से छीन ले। लेकिन वह युवक चिल्लाने लगा:

– हे परमेश्वर के पवित्र जन, मेरी सहायता करो!

लेकिन शैतान ने उस युवक पर इतनी निर्भीकता और निर्लज्जता से हमला किया कि उसने संत बेसिल को भी दर्द पहुँचाया, और युवक को अपने साथ खींच लिया। तब धन्य संत ने शैतान से ये शब्द कहे:

'हे अत्यंत निर्लज्ज हत्यारे, हे अंधकार और विनाश के राजकुमार! क्या तेरा अपना विनाश—जो तूने अपने और अपने साथियों पर खुद लाया है—तेरे लिए पर्याप्त नहीं है? क्या तू मेरे ईश्वर की रचनाओं को सताना कभी बंद नहीं करेगा?'

लेकिन शैतान ने उस पर चिल्लाकर कहा:

'बज़ील, तुम मेरा अन्याय कर रहे हो!' – और कई लोगों ने इस शैतानी आवाज़ को सुना। फिर संत ने कहा:

'ईश्वर न करे, हे शैतान!'

लेकिन शैतान ने उससे फिर कहा:

'बेसिल, तुम मेरा अन्याय कर रहे हो! क्योंकि मैं नहीं था जो उसके पास गया, बल्कि वह था जो मेरे पास आया: उसने अपने मसीह का त्याग किया, मुझे एक लिखित घोषणापत्र दिया, जिसे मैं अपने हाथ में पकड़े हुए हूँ, और जिसे मैं न्याय के दिन सार्वभौमिक न्यायाधीश को दिखाऊँगा।'

इस पर बेसिल ने उत्तर दिया:

'धन्य है प्रभु मेरा ईश्वर! ये लोग अपने हाथ, जो स्वर्ग की ओर उठाए हुए हैं[486] , तब तक नहीं नीचे करेंगे, जब तक तुम वह रसीद नहीं सौंप देते।'

---

[485] अपने कंधों पर उठा लेना, ठीक वैसे ही जैसे एक पूर्वी चरवाहा एक थके हुए छोटे भेड़ को अपने कंधों पर उठा लेता है।

[486] प्रारंभिक ईसाइयों में प्रार्थना के दौरान स्वर्ग की ओर अपने हाथ उठाने की प्रथा थी। इसलिए, हमारे चर्च के भजन में कहा गया है: 'मेरे हाथ उठाना एक संध्याकालीन बलिदान है' (वेस्पर्स के लिए स्टिचेरा)।

तब, लोगों की ओर मुड़कर, संत ने कहा:

'दुख में अपने हाथ उठाओ और पुकारो: "हे प्रभु, दया करो!"' और इस प्रकार, जब लोगों ने अपने हाथ आकाश की ओर उठाए और लंबे समय तक आँसुओं के साथ पुकारते रहे, 'हे प्रभु, दया करें!', तो उस युवक की रसीद, सभी के सामने, हवा में सीधे संत बेसलि के हाथों में चली गई। यह रसीद लेकर, संत ने आनंद मनाया और ईश्वर का धन्यवाद कयि, और फरि उस युवक से ऊँचे स्वर में कहा:

'भाई, क्या तुम जानते हो कि यह रसीद क्या है?'

युवक ने उत्तर दयि:

'हाँ, पवत्रि पति, यह मेरी रसीद है; मैंने इसे अपने हाथ से लखि है।'

संत बेसलि ने तुरंत ही सबके सामने उसे फाड़ दयि और उस युवक को चर्च के अंदर ले जाकर उसे दव्यि रहस्य प्रदान कयि तथा उपस्थति सभी लोगों को एक शानदार भोजन परोसा। इसके बाद, युवक को उपदेश देकर और उसके जीवन के लिए उचति नयिम नर्धिारति करके, उन्होंने उसे उसकी पत्नी के पास वापस भेज दयि, जबकि वह युवक बनि रुके ईश्वर की स्तुति और धन्यवाद करता रहा।

उसी हेलाडयिस ने संत बेसलि के बारे में नम्निलखिति बात बताई। एक बार, हमारे महान पति बेसलि, दव्यि अनुग्रह से प्रकाशति होकर, अपने पुरोहतिों से बोले:

'आओ, मेरे बच्चों, मेरा अनुसरण करो, और हम परमेश्वर की महमिा देखेंगे, और साथ में हम अपने प्रभु की महमिा करेंगे।'

ये शब्द कहकर, वह शहर से नकिल गया, लेकनि कसिी को नहीं पता था कि वह कहाँ जाना चाहता था। उस समय, एक गाँव में, अनास्तासयिस नाम का एक पुरोहति अपनी पत्नी थयिोग्नयिा के साथ रहता था। वे चालीस वर्षों तक पवत्रिता से एक साथ रहे थे, और कई लोग सोचते थे कि थयिोग्नयिा बाँझ थी, क्योंकि किसी को भी उनकी गुप्त रूप से रखी गई पवत्रिता के बारे में पता नहीं था। हालाँकि, अनास्तासयिस अपने पवत्रि जीवन के कारण, पवत्रि आत्मा की कृपा प्राप्त करने के योग्य माने गए, और वे दैवीय अंतर्दृष्टि वाले व्यक्ति थे। अपने आत्मा में यह पूर्वानुमान लगाते हुए कि बेसलि उनसे मलिने आना चाहते थे, उन्होंने थयिोग्नयिा से कहा:

'मैं खेत में काम करने जा रहा हूँ, लेकनि तुम, मेरी बहन, घर की सफाई करो और दनि के नौवें घंटे पर, मोमबत्तयिाँ जलाकर, पवत्रि आर्चबशिप बेसलि का स्वागत करने बाहर जाना, क्योंकि वह हम पापयिों से मलिने आ रहे हैं।'

वह अपने स्वामी की बातों से चकति रह गई, लेकनि उसने उनका आदेश पालन कयि। जब संत बेसलि अनास्तासयिस के घर से बहुत दूर नहीं थे, तो थयिोग्नयिा उनका स्वागत करने बाहर गई और उनके सामने झुक गई।

'क्या आप कुशल हैं, देवी थयिोग्नयिा?' बेसलि ने पूछा। लेकनि, अपना नाम सुनकर वह भयभीत हो गई और बोली:

'मैं ठीक हूँ, हे पवत्रि प्रभु!'

तब संत ने कहा:

'मास्टर अनास्तासयिस का भाई कहाँ है?'

उसने उत्तर दयि:

'वह मेरा भाई नहीं, बल्कि मेरा पति है; वह खेतों में गया है।'

तब बेसलि ने कहा:

'वह घर पर है – चति मत करो!'

यह सुनकर वह और भी अधकि भयभीत हो गई, क्योंकि उसे एहसास हो गया था कि संत ने उनका रहस्य जान लयि था, और काँपते हुए वह संत के पैरों पर गरि पड़ी और कहा:

'हे ईश्वर के संत, मेरे लिए प्रार्थना करें, जो एक पापी हूँ, क्योंकि मैं देखती हूँ कि आप महान और अद्भुत कार्य करने में सक्षम हैं।'

संत ने उसके लिए प्रार्थना की और अपने रास्ते चल दिए। जब वह पादरी के घर में प्रवेश कर रहे थे, तो अनास्तासयिस स्वयं उनका स्वागत करने बाहर आए और संत के पैरों को चूमकर बोले:

'यह कैसे हुआ कि मेरे प्रभु के संत मेरे पास आए हैं?'

उस संत ने भी बदले में प्रभु के नाम पर उसे चूमकर अभविादन कयि और कहा:

'यह अच्छा है कि मुझे तुम मिल गए, हे मसीह के शिष्य; चलो हम चर्च चलते हैं और दैवीय धर्मविधि का अनुष्ठान करते हैं।'

अब वह पुरोहित शनिवार और रविवार को छोड़कर सप्ताह के हर दिन उपवास करने का आदी था, और वह रोटी और पानी के सिवा कुछ नहीं खाता था। जब वे चर्च पहुँचे, तो संत बेसिल ने अनास्तासियस को लिटिर्जी (प्रार्थना सभा) का अनुष्ठान करने का निर्देश दिया, लेकिन उसने यह कहते हुए मना कर दिया:

'आप जानते हैं, महाधर्माध्यक्ष महोदय, धर्मग्रंथ में क्या लिखा है: *"छोटे को बड़े का आशीर्वाद प्राप्त होता है"* (इब्रानियों 7:7)।'

इस पर बेसिल ने उत्तर दिया:

'अपने सभी अन्य अच्छे कर्मों के साथ-साथ, आज्ञाकारिता भी आपका हिस्सा हो।'

जब अनास्तासियस लितुर्गी मना रहे थे, पवित्र दानों के उत्थापन के दौरान, संत बेसिल और अन्य जिन्हें योग्य समझा गया था, उन्होंने परम पवित्र आत्मा को आग के रूप में उतरते और अनास्तासियस तथा पवित्र वेदी को घेरे हुए देखा। ईश्वरीय धर्मविधि के समापन पर, सभी अनास्तासियस के घर में प्रवेश कर गए, और उसने संत बेसिल और उनके पुरोहितों को भोजन परोसा।

भोजन के दौरान, संत ने पुरोहित से पूछा:

'यह खज़ाना तुम्हें कहाँ मिला, और तुम्हारा जीवन कैसा है? मुझे बताओ।'

पुजारी ने उत्तर दिया:

'हे ईश्वर के पवित्र जन! मैं एक पापी मनुष्य हूँ और सामान्य करों के अधीन हूँ; मेरे पास बैलों का एक जोड़ा है, जिनमें से एक से मैं स्वयं काम करता हूँ, और दूसरे से मेरा मजदूर; मैं एक जोड़ी बैलों से जो कमाता हूँ, उसे यात्रियों की सेवा पर खर्च करता हूँ, जबकि दूसरी जोड़ी की आय कर चुकाने में जाती है: मेरी पत्नी भी मेरे साथ मेहनत करती है, जो यात्रियों और मुझ दोनों की सेवा करती है।

तब बेसिल ने उससे कहा:

'उसे अपनी बहन कहो, क्योंकि वह वास्तव में है, और मुझे अपने गुणों के बारे में बताओ।'

अनास्तासियस ने उत्तर दिया:

'मैंने धरती पर कुछ भी अच्छा नहीं किया है।'

तब बेसिल ने कहा:

'आओ, हम उठें और साथ चलें,' और उठकर वे उसके घर के एक कमरे में गए।

'इन दरवाज़ों को मेरे लिए खोलो,' बेसिल ने कहा।

'नहीं, हे ईश्वर के पवित्र जन,' अनास्तासियस ने कहा, 'वहाँ मत जाइए, क्योंकि वहाँ घरेलू सामान के सिवा और कुछ नहीं है।'

लेकिन बेसिल ने कहा:

'लेकिन मैं तो ठीक इन्हीं चीज़ों के लिए ही आया हूँ।'

चूंकि पुरोहित ने फिर भी दरवाज़े खोलने से इनकार कर दिया, संत ने अपने वचन से उन्हें खोल दिया और अंदर जाने पर उन्हें सबसे भयंकर कोढ़ से ग्रस्त एक आदमी मिला[487] , जिसके शरीर के कई अंग पहले ही सड़कर गिर चुके थे। उसके अलावा कोई भी उसके बारे में नहीं जानता था, सिवाय स्वयं पुरोहित और उसकी पत्नी के।

बेसिल ने पुरोहित से कहा:

'आपने अपना यह खजाना मुझसे छिपाना क्यों चाहा?'

'वह एक गुस्सैल और झगड़ालू आदमी है,' पुरोहित ने उत्तर दिया, 'और इसलिए मुझे उसे आपके सामने लाने से डर लग रहा था, कहीं वह आपके पवित्र व्यक्तित्व को किसी कठोर शब्द से आहत न कर दे।'

तब वासिली ने कहा:

'आप एक महान कार्य कर रहे हैं, लेकिन मुझे भी आज रात उसकी सेवा करने दें, ताकि मैं भी उस पुरस्कार में भागीदार बन सकूँ जो आपको मिलेगा।'

---

[487] कोढ़ एक ऐसी बीमारी है जो पूरे मानव शरीर को नष्ट कर देती है और, इसके अलावा, संक्रामक भी है।

और इस प्रकार संत बेसलि कुष्ठरोगी के साथ अकेले रह गए; उन्होंने खुद को एक कमरे में बंद कर लिया और पूरी रात प्रार्थना में बिताई, और अगली सुबह उसे पूरी तरह से सुरक्षित और अच्छे स्वास्थ्य में बाहर ले आए। पादरी, अपनी पत्नी और वहाँ मौजूद सभी लोगों के साथ, ऐसा चमत्कार देखकर परमेश्वर की महिमा करने लगे; और संत बेसलि, पादरी के साथ एक सौहार्दपूर्ण बातचीत और उपस्थित लोगों को एक उपदेश देने के बाद, अपने घर लौट आए।

जब मरुस्थल में रहने वाले पूजनीय एफ्रेम सीरियाई[488] ने संत बेसलि के बारे में सुना, तो उन्होंने ईश्वर से प्रार्थना करना शुरू कर दिया कि वह उन्हें दिखाएँ कि बेसलि कैसे थे। और इस प्रकार, एक दिन, आध्यात्मिक आनंद की अवस्था में, उन्होंने आग का एक स्तंभ देखा, जिसकी चोटी स्वर्ग तक पहुँचती थी, और एक आवाज़ सुनी जो कह रही थी:

'एफ्रेम, एफ्रेम! जैसे तुम इस अग्नि के स्तंभ को देखते हो, वैसे ही बासिल हैं।'

आदरणीय एफ्रेम तुरंत एक दुभाषिए को साथ लेकर कैसरिया के लिए रवाना हो गए – क्योंकि वे ग्रीक बोलना नहीं जानते थे – और प्रभु के प्रकट होने के पर्व पर वहाँ पहुँचे। दूर खड़े होकर, किसी के ध्यान में न आते हुए, उन्होंने संत बेसलि को बड़ी गंभीरता से चमकदार वस्त्र पहने हुए, चर्च की ओर जाते हुए देखा, और उनके पुरोहित भी चमकदार वस्त्र पहने हुए थे। अपने साथ आए अनुवादक की ओर मुड़कर, एफ्रेम ने कहा:

'ऐसा लगता है, भाई, कि हमारी मेहनत व्यर्थ गई, क्योंकि यह इतने ऊँचे पद का आदमी है कि मैंने जैसा दूसरा कभी नहीं देखा।'

चर्च में प्रवेश करने पर, एफ्रेम किसी की नज़र से दूर एक कोने में खड़ा हो गया और अपने आप से इस प्रकार बोला:

'हम, *जिन्होंने "दिन का बोझ और गर्मी उठाई है"* (मत्ती 20:12), हमने कुछ भी हासिल नहीं किया है, जबकि यह आदमी, जो लोगों में इतनी प्रसिद्धि और सम्मान का आनंद लेता है, एक ही समय में आग का एक स्तंभ है। यह मुझे आश्चर्यचकित करता है।'

जब संत एफ्रेम इस प्रकार उनके बारे में विचार कर रहे थे, तब पवित्र आत्मा द्वारा बेसलि महान को सूचित किया गया और उन्होंने अपने महादीकन को उनके पास भेजते हुए कहा:

'चर्च के पश्चिमी द्वार पर जाओ; वहाँ, चर्च के एक कोने में, तुम्हें एक भिक्षु दूसरे आदमी के साथ खड़ा मिलेगा, जो लगभग बिना दाढ़ी का और कद में छोटा है। उससे कहना: जाओ और पवित्र स्थल में प्रवेश करो, क्योंकि महाधर्माध्यक्ष तुम्हें बुला रहे हैं।'

आर्चडीकन ने बड़ी कठिनाई से भीड़ को चीरते हुए उस स्थान पर पहुँचकर कहा जहाँ पूजनीय एफ्रेम खड़े थे:

'पिताजी! कृपया जाइए और पवित्रस्थान में प्रवेश कीजिए: महाधर्माध्यक्ष आपको बुला रहे हैं।'

एफ्रेम ने एक दुभाषिए के माध्यम से यह जानकर कि महाधर्माध्यक्ष ने क्या कहा था, उन्हें उत्तर दिया:

'तुम गलत हो, भाई! हम यहाँ अजनबी हैं और महाधर्माध्यक्ष हमें नहीं जानते।'

आर्चडीकन यह बताने के लिए बेसलि के पास गया, जो उस समय लोगों को पवित्र शास्त्रों की व्याख्या कर रहे थे। और देखो, पूजनीय एफ्रेम ने देखा कि जब बेसलि बोल रहे थे तो उनके मुँह से आग निकल रही थी।

तब बेसलि ने फिर से आर्चडीकन से कहा:

'जाओ और उस अतिथि भिक्षु से कहो: "महाशय एफ्रेम! मैं आपसे विनती करता हूँ—पवित्र वेदी में प्रवेश करें: महाधर्माध्यक्ष आपको बुला रहे हैं।"'

आर्चडीकन गए और जैसा उन्हें निर्देश दिया गया था, वैसा ही कह दिया। एफ्रेम, हालांकि, इस पर चकित हुए और उन्होंने ईश्वर की स्तुति की। फिर, प्रणाम करके, उन्होंने कहा:

'सचमुच, बेसलि महान हैं; सचमुच, वह आग का स्तंभ हैं; सचमुच, पवित्र आत्मा उनके होठों से बोलता है!'

फिर उन्होंने आर्चडीकन से आर्चबिशप को यह बताने के लिए कहा कि दिव्य लिटिर्जी के अंत में, वह उन्हें एक एकांत स्थान पर प्रणाम करना और अभिवादन करना चाहता है।

जब दिव्य लिटिर्जी समाप्त हो गई, तो संत बेसलि सैक्रेस्टी में गए और, पूजनीय एफ्रेम को बुलाकर, प्रभु में उन्हें चूमकर कहा:

---

[488] संत एफ्रेम सीरियाई एक प्रसिद्ध ईसाई तपस्वी और लेखक थे। उनका पर्व दिवस 28 जनवरी है। एफ्रेम को 'सीरियाई' कहा जाता है क्योंकि मेसोपोटामिया, जहाँ उनका जन्म हुआ था, प्राचीन काल में सीरिया का एक हिस्सा माना जाता था।

'मैं आपको नमस्कार करता हूँ, पतिाजी, जन्िहोंने मरुभूमि में मसीह के शष्यिों को बढ़ाया और मसीह की शक्तसि, दुष्टात्माओं को वहाँ से भगाया! पतिाजी, आपने ऐसा श्रम क्यों उठाया कि आकर एक पापी मनुष्य से मलिें? प्रभु आपके इस श्रम का आपको प्रतफिल दें!'

हालाँकि, एफ्रेम ने एक दुभाषएि के माध्यम से बेसलि को जवाब देते हुए, अपने मन की सारी बातें बता दीं, और अपने साथी के साथ, बेसलि के पवत्रि हाथों से परम पवत्रि रहस्य ग्रहण कएि। जब वे बाद में बेसलि के घर भोजन के लएि बैठे, तो आदरणीय एफ्रेम ने संत बेसलि से कहा:

'हे परम पवत्रि पता! मैं आपसे एक वर मांगता हूँ—कृपया मुझे वह प्रदान करें।'

महान बेसलि ने उससे कहा:

'मुझे बताइए आपको क्या चाहएि: मैं आपके श्रम का बहुत ऋणी हूँ, क्योंकि आपने मेरे लएि इतनी लंबी यात्रा की है।'

'मैं जानता हूँ, पतिाजी,' पूजनीय एफ्रेम ने कहा, 'कि ईश्वर आपको वह सब कुछ देता है जो आप उनसे माँगते हैं; और मैं चाहता हूँ कि आप उनकी कृपा का आह्वान करें ताकि वे मुझे ग्रीक बोलने की क्षमता प्रदान करें।'

बेसलि ने उत्तर दयिा:

'आपकी प्रार्थना मेरी शक्तसि परे है, लेकनि चूँकि आप दृढ़ आशा के साथ माँग रहे हैं, आइए हम जाएँ, आदरणीय पता और मरुभूमि के गुरु, प्रभु के मंदरि में और प्रभु से प्रार्थना करें, जो आपकी प्रार्थना स्वीकार कर सकते हैं, क्योंकि लखिा है: *'वह अपने भक्तों की इच्छाएँ पूरी करता है; वह उनकी पुकार सुनता है और उन्हें बचाता है'* (भजन संहति 144:19)।

एक उपयुक्त समय चुनकर, उन्होंने चर्च में प्रार्थना करना शुरू कयिा और लंबे समय तक प्रार्थना की। फरि बेसलि द ग्रेट ने कहा:

'आदरणीय पतिाजी, आप пресбटिर के पद के लएि अभषिेक क्यों नहीं स्वीकार करते, जबकि आप इसके योग्य हैं?'

'क्योंकि मैं एक पापी हूँ, महाधर्माध्यक्ष महोदय!' एफ्रेम ने एक दुभाषएि के माध्यम से उत्तर दयिा।

'काश मेरे पास भी आपके पाप होते!' बेसलि ने कहा, और जोड़ा, 'आओ हम प्रणाम करें।'

जब वे जमीन पर साष्टांग दंडवत कर चुके, तो संत बेसलि ने परम पूज्य एफ्रेम के सरि पर अपना हाथ रखा और एक डकिन के अभषिेक के लएि नर्धिारति प्रार्थना का पाठ कयिा। फरि उन्होंने परम पूज्य से कहा:

'अब हमें जमीन से उठने का आदेश दीजएि।'

जहाँ तक एफ्रेम का सवाल है, ग्रीक भाषा अचानक उसके लएि स्पष्ट हो गई, और उसने स्वयं ग्रीक में कहा: 'हमारे लएि मध्यस्थता करो, हमें बचाओ, हम पर दया करो, हमें संरक्षति करो, हे ईश्वर, अपनी कृपा से'[489] ।

सभी ने उस परमेश्वर की महमिा की, जसिने एफ्रेम को ग्रीक समझने और बोलने की क्षमता प्रदान की थी। आदरणीय एफ्रेम तीन दनिों तक संत बेसलि के साथ आध्यात्मकि आनंद में रहे। बेसलि ने उन्हें एक डकिन और उनके दुभाषएि को एक प्रेस्बटिर नयिुक्त कयिा, और फरि उन्हें शांतसि े वदिा कर दयिा।

एक अवसर पर, एक अधर्मी राजा नकियि शहर में रुका[490] , और एरयिन वधिर्म के प्रतनिधियिों ने उससे यह अनुरोध कयिा कि वह ऑर्थोडॉक्स को शहर के कैथेड्रल से बाहर नकिाल दे और चर्च को उनकी एरयिन मंडली को सौंप दे। राजा, जो स्वयं एक वधिर्मी था, ने ठीक वैसा ही कयिा: उसने जबरदस्ती चर्च छीनकर ऑर्थोडॉक्स से ले लयिा और इसे एरयिनों को सौंप दयिा, जबकि वह स्वयं कॉन्स्टेंटनिोपल के लएि रवाना हो गया। जब ऑर्थोडॉक्स वशि्वासयिों का पूरा बड़ा समुदाय गहरे दुख में डूब गया, तो सभी चर्चों के सामान्य मध्यस्थ और रक्षक, संत बेसलि द ग्रेट, नकियि आए; तब संपूर्ण ऑर्थोडॉक्स मंडली वलिाप और रोदन करती हुई उनके पास आई, और ने उन्हें राजा द्वारा कएि गए अन्याय के बारे में बताया। संत ने उन्हें अपने शब्दों से सांत्वना देने के बाद, तुरंत कॉन्स्टेंटनिोपल में राजा के पास गए और उनके सामने खड़े होकर कहा:

---

[489] पेंटेकोस्ट के दनि वेस्पर्स पर डकिन द्वारा जप की जाने वाली लघु लटिनी से एक उद्घोष।

[490] नकिाया – एशयिा माइनर के बथिनियिा प्रांत में एक शहर। प्रथम सार्वभौमकि परषिद वर्ष 325 में यहाँ आयोजति की गई थी।

'"*क्योंकि राजा का अधिकार न्याय में आनंदित होता है*" (भजन संहिता 98:4)। तो फिर, हे राजा, आपने एक अनुचित निर्णय क्यों सुनाया है, जो ऑर्थोडॉक्स को पवित्र चर्च से निष्कासित करता है और इसके शासन को एक अलग धर्म वालों को सौंपता है?'

राजा ने उत्तर दिया:

'बेसिल, तुम मुझे फिर से अपमानित कर रहे हो! तुम्हारे लिए इस तरह का व्यवहार करना उचित नहीं है।'

वासिली ने उत्तर दिया:

'सत्य के लिए, मैं खुशी-खुशी मर जाऊँगा।'

जब वे एक-दूसरे से बहस और वाद-विवाद कर रहे थे, तो राजा का मुख्य रसोइया, डेमोस्थनीज़ नाम का एक व्यक्ति, जो वहाँ मौजूद था, उन्हें सुन रहा था। एरियनों की मदद करने की इच्छा से, उसने संत का अपमान करते हुए कुछ अभद्र कहा।

लेकिन संत ने कहा:

'यहाँ हम अपने सामने अनपढ़ डेमोस्थनीज़ को देख रहे हैं[491] .'

शेफ, शर्मिंदा होकर, कुछ बड़बड़ाया, लेकिन संत ने कहा:

'तुम्हारा काम भोजन के बारे में सोचना है, न कि चर्च के सिद्धांतों को पकाने में खुद को व्यस्त रखना।'

और डेमोस्थनीज़, लज्जित होकर, चुप हो गया। राजा, जो कभी क्रोध से उबल रहा था तो कभी लज्जित महसूस कर रहा था, ने बेसिल से कहा:

'जाओ और उनका मामला सुलझाओ; हालाँकि, ऐसा न्याय करो कि अंत में अपने साथी विश्वासियों की मदद न कर बैठो।'

'यदि मैं अन्यायपूर्ण निर्णय करता हूँ,' संत ने उत्तर दिया, 'तो मुझे भी निर्वासन में भेज दो, मेरे साथियों को निर्वासित कर दो, और चर्च को एरियनों के हवाले कर दो।'

शाही फरमान लेकर संत निकिया लौटे और एरियनों को बुलाकर उनसे कहा:

'देखो, राजा ने मुझे तुम और ऑर्थोडॉक्स के बीच उस चर्च के विषय में निर्णय करने का अधिकार दिया है जिसे तुमने बलपूर्वक कब्जा किया है।'

उन्होंने उनसे उत्तर दिया:

'निर्णय करो, लेकिन राजा के फरमान के अनुसार[492] ।'

तब संत ने कहा:

'अब जाओ, तुम अरीयनों और तुम ऑर्थोडॉक्स दोनों, और चर्च को बंद करो; उसे ताले लगाकर, मुहरों से सील करो: तुम अपनी मुहरों से, और तुम अपनी मुहरों से, और दोनों ओर एक विश्वसनीय पहरा लगाओ। फिर, पहले तुम अरीयनों तीन दिन और तीन रातों तक प्रार्थना करो, और बाद में चर्च के पास आओ। और यदि, आपकी प्रार्थनाओं के द्वारा, चर्च के दरवाज़े अपने आप खुल जाएँ, तो चर्च हमेशा के लिए आपका हो; लेकिन यदि ऐसा नहीं होता है, तो हम एक रात प्रार्थना करेंगे और पवित्र भजन गाते हुए, लिटिनी[493] के साथ चर्च की ओर बढ़ेंगे; यदि यह हमारे लिए खुलता है, तो हम इसे हमेशा के लिए अपने अधिकार में रखेंगे; लेकिन यदि यह हमारे लिए भी नहीं खुलती है, तो चर्च एक बार फिर से आपकी होगी।

एरियन इस प्रस्ताव से प्रसन्न हुए, जबकि ऑर्थोडॉक्स संत से नाराज़ थे, यह कहते हुए कि उन्होंने न्याय के अनुसार नहीं, बल्कि राजा के डर से निर्णय दिया था। फिर, जब दोनों पक्षों ने पवित्र चर्च को अच्छी तरह से बंद कर दिया, तो उसे सील करने के बाद वहाँ एक चौकस पहरा तैनात किया गया। जब अरिअनों ने तीन दिन और तीन रात प्रार्थना करने के बाद चर्च में प्रवेश किया, तो कोई चमत्कार नहीं हुआ: वे सुबह से छठे घंटे तक वहाँ खड़े होकर प्रार्थना करते रहे और चिल्लाते रहे, 'हे प्रभु, दया करो'। लेकिन चर्च के दरवाज़े उनके सामने नहीं खुले, और वे लज्जित होकर चले गए। फिर बेसिल द ग्रेट ने सभी ऑर्थोडॉक्स विश्वासियों को, उनकी पत्नियों और बच्चों सहित, इकट्ठा किया, और संत

---

[491] डेमोस्थनीज़ प्राचीन ग्रीस के सबसे प्रसिद्ध वक्ता थे; वह 384 से 322 ईसा पूर्व तक जीवित थे।

[492] अर्थात्, उसी तरह जैसे राजा स्वयं निर्णय करते।

[493] लिटिया, ग्रीक शब्द से, का अर्थ है 'उत्कट प्रार्थना'। यह आमतौर पर चर्च के बाहर की जाती थी, लेकिन अब इसे नार्थेक्स में किया जाता है।

डायोमेड्स द मार्टायर के चर्च के लिए शहर छोड़ दिया और वहाँ पूरी रात जागरण करने के बाद, सुबह सभी के साथ सीलबंद कैथेड्रल चर्च में गए, यह गाते हुए:

'हे पवित्र परमेश्वर, हे पवित्र सर्वशक्तिमान, हे पवित्र अमर, हम पर दया करो!'

चर्च के दरवाजों के सामने रुककर, उन्होंने लोगों से कहा:

'अपने हाथ स्वर्ग की ओर उठाओ और पूरे मन से पुकारो: "हे प्रभु, दया करो!"'

तब संत ने सभी को चुप रहने का आदेश दिया और, दरवाजों के पास आकर, उन पर तीन बार क्रॉस का चिन्ह बनाया और कहा:

– मसीही ईश्वर का हमेशा, अब और सदा और युगों-युगों तक धन्यवाद हो।

जब लोगों ने 'आमेन' की पुकार लगाई, तो धरती तुरंत काँप उठी, और बोल्ट टूटने लगे, कुंडियाँ गिर पड़ीं, मुहरें टूट गईं, और द्वार एक प्रचंड हवा और तूफान की तरह खुल गए, जिससे दरवाज़े दीवारों से जा टकराए। फिर संत बेसिल ने गाना शुरू किया:

'*हे द्वारों, अपने सिर उठाओ; हे प्राचीन द्वारों, उन्हें उठाओ, कि महिमा का राजा प्रवेश करे!*' (भजन संहिता 23:7)।

फिर वह ऑर्थोडॉक्स श्रद्धालुओं की भीड़ के साथ चर्च में प्रवेश किया और, दैवीय लिटर्जी का अनुष्ठान करने के बाद, लोगों को आनंद के साथ विदा किया। उस चमत्कार को देखने के बाद, एरियन की अनगिनत भीड़ ने अपनी विधर्म का परित्याग कर दिया और ऑर्थोडॉक्स में शामिल हो गए। जब राजा को बेसिल के न्यायपूर्ण निर्णय और उस गौरवशाली चमत्कार के बारे में पता चला, तो वह बहुत आश्चर्यचकित हुआ और एरियनवाद का तिरस्कार करने लगा; हालाँकि, दुष्टता से अंधा होकर, वह ऑर्थोडॉक्सी में परिवर्तित नहीं हुआ और बाद में एक दयनीय अंत से मिला। वास्तव में, जब वह थ्रेस की भूमि में युद्ध में मारा गया और घायल हो गया, तो वह भाग गया और भूसे के एक खलिहान में शरण ले ली। उसके पीछा करने वालों ने उस खलिहान को घेर लिया और उसमें आग लगा दी, और राजा, वहाँ जल जाने के बाद, बुझ न सकने वाली आग में चला गया[494] । हमारे पवित्र पिता बेसिल के निधन के बाद राजा की मृत्यु हुई, लेकिन ठीक उसी वर्ष में जिसमें संत स्वयं का निधन हुआ था।

एक अवसर पर, संत बेसिल के भाई, सेबास्टे के बिशप पीटर, पर उनके सामने बदनामी की गई। उनके बारे में कहा गया कि वे कथित तौर पर अपनी पत्नी के साथ रहना जारी रखे हुए थे, जिसे उन्होंने बिशप के रूप में अभिषेक होने से पहले छोड़ दिया था – क्योंकि एक बिशप का विवाहित होना उचित नहीं है। यह सुनकर, बेसिल ने कहा:

'यह अच्छा है कि तुमने मुझे यह बताया; मैं तुम्हारे साथ जाऊँगा और उसका पर्दाफाश करूँगा।'

लेकिन जैसे ही संत सेबास्टे शहर के पास पहुँचे, पीटर को अपने भाई के आगमन का आत्मा द्वारा ज्ञान हो गया, क्योंकि पीटर भी परमेश्वर की आत्मा से भरपूर थे और अपनी तथाकथित पत्नी के साथ पत्नी की तरह नहीं, बल्कि बहन की तरह पवित्रता में रहते थे। तो वह संत बेसिल से मिलने के लिए शहर से बाहर आठ स्टेडियम दूर गया[495] , और अपने भाई को बड़ी संख्या में साथियों के साथ देखकर, मुस्कुराया और कहा:

'भाई, तुम मुझे ऐसे क्यों मिलने आए हो जैसे मैं कोई चोर हूँ?'

प्रभु में एक-दूसरे को चूमने के बाद, वे शहर में प्रवेश किए और चालीस पवित्र शहीदों के चर्च में प्रार्थना करने के बाद, बिशप के आवास पर गए। बेसिल ने अपनी बहू को देखकर कहा:

'नमस्ते, मेरी बहन—या यूँ कहूँ कि प्रभु की वधू; मैं तुम्हारे ही लिए यहाँ आया हूँ।'

उसने उत्तर दिया:

'आपको भी नमस्कार, अति सम्माननीय पिताजी; मैं लंबे समय से आपके सम्माननीय चरणों को चूमने की इच्छा रखती थी।'

और बेसिल ने पतरस से कहा:

'भाई, मैं आपसे विनती करता हूँ, आज रात अपनी पत्नी के साथ चर्च में बिताएँ।'

'मैं वही करूँगा जो आप आज्ञा देंगे,' पीटर ने उत्तर दिया।

---

[494] यह आज के बुल्गारिया में एड्रियानोपल शहर में हुआ था।

[495] 'पोप्लसि' दूरी की एक इकाई है; यह 690 साज़ेन के बराबर थी।

जब रात हुई, और पीटर अपनी पत्नी के साथ चर्च में वशि्राम कर रहा था, संत बेसलि भी वहाँ पाँच सदाचारी पुरुषों के साथ मौजूद थे। आधी रात के आसपास, उन्होंने इन पुरुषों को जगाया और उनसे कहा:

'तुम मेरे भाई और मेरी भाभी के ऊपर क्या देख रहे हो?'

उन्होंने उत्तर दयिा:

'हम परमेश्वर के स्वर्गदूतों को देखते हैं, जो उन्हें पंखा झेल रहे हैं और उनके नर्मिल बस्तिर पर सुगंधि छिड़क रहे हैं।'

तब बेसलि ने उनसे कहा:

'तो चुप रहो, और जो तुमने देखा है, उसे कसिी से मत कहना।'

अगली सुबह, बेसलि ने लोगों को चर्च में इकट्ठा होने और जलते हुए कोयलों वाला एक अंगीठी लाने का आदेश दयिा। उसके बाद, उन्होंने कहा:

'अपना वस्त्र फैलाओ, मेरी सम्मानति बहू।'

और जब उसने ऐसा कर लयिा, तो संत ने अंगीठी पकड़े हुए लोगों से कहा:

'उसके वस्त्र के अंदर कुछ जलते हुए कोयले रख दो।'

उन्होंने इस आज्ञा का पालन कयिा। फरि संत ने उससे कहा:

'जब तक मैं कुछ और न कहूँ, तब तक इन कोयलों को अपने वस्त्र में रखो।'

तब उन्होंने और जलते हुए कोयले लाने का आदेश दयिा और अपने भाई से कहा:

'अपना फेलन फैलाओ, भाई[496] ।'

जब उसने यह आज्ञा पूरी कर ली, तो बेसलि ने नौकरों से कहा:

'ब्राज़यिर से कोयले फेलन में डाल दो,' और उन्होंने वैसा ही कयिा।

जब पीटर और उसकी पत्नी ने लंबे समय तक अपने कपड़ों में जलते हुए कोयले रखे और उन्हें कोई नुकसान नहीं हुआ, तो इस दृश्य को देखने वाले लोग चकति हो गए और कहने लगे:

'प्रभु अपने पवत्रि लोगों की रक्षा करते हैं और उन्हें पृथ्वी पर रहते हुए भी आशीर्वाद प्रदान करते हैं।'

जब पतरस और उनकी पत्नी ने अंगारे जमीन पर फेंके, तो उनसे धुएँ की कोई गंध नहीं नकिली, और उनके कपड़े जल नहीं गए। तब बेसलि ने उपरोक्त पाँच सदाचारी पुरुषों को आज्ञा दी कि वे सभी को बताएं कि उन्होंने क्या देखा था, और उन्होंने लोगों को बताया कि कैसे उन्होंने चर्च में परमेश्वर के स्वर्गदूतों को धन्य पतरस और उनकी पत्नी के बस्तिर के ऊपर मंडराते और उनके नर्मिल बस्तिर पर सुगंधति तेलों से अभषिेक करते देखा था। इसके बाद, सभी ने उस परमेश्वर की स्तुति की, जो अपने संतों को मनुष्यों की झूठी बदनामी से मुक्त करता है।

हमारे पूजनीय पति बेसलि के दनिों में, केसरयिा में कुलीन वंश की एक वधिवा थी जो अत्यंत धनी थी; इंद्रयि सुख में लप्ति जीवन जीते हुए और अपने शरीर की इच्छाओं के आगे झुकते हुए, उसने स्वयं को पाप की दासी बना लयिा था और कई वर्षों तक व्यभचिार की अशुद्धता में रही थी। परन्तु परमेश्वर, जो चाहता है कि सब लोग पश्चाताप करें (2 पतरस 3:8), ने अपनी कृपा से उसके हृदय को छू लयिा, और उस स्त्री ने अपने पापपूर्ण जीवन पर पश्चाताप करना शुरू कर दयिा। एक दनि अकेले में, उसने अपने अनगनित पापों पर मनन कयिा और इस प्रकार अपनी दशा पर वलिाप करने लगी:

'हाय मुझ पापी और वेश्या! मैंने जो पाप कएि हैं, उनके लएि मैं धर्मी न्यायी के सामने क्या उत्तर दूँगी? मैंने अपने शरीर के मंदरि को अशुद्ध कयिा है; मैंने अपनी आत्मा को अशुद्ध कयिा है। हाय मुझ पर, जो सभी पापयिों में सबसे बुरी हूँ!' मैं अपने पापों के मामले में अपनी तुलना कसिसे कर सकती हूँ? एक वेश्या से, या एक महसूल अधकिारी से? फरि भी, कसिी ने मेरे जैसे पाप नहीं कएि हैं। और - जो वशिेष रूप से भयानक है - मैंने बपतस्मिा प्राप्त करने के बाद भी बहुत बुराई की है। और कौन मुझे बताएगा कि क्या ईश्वर मेरे पश्चाताप को स्वीकार करेंगे?

इस प्रकार रोते हुए, उसने अपनी जवानी से लेकर अपनी वृद्धावस्था तक जो कुछ भी कयिा था, वह सब याद कयिा, और बैठकर उसे एक पांडुलपिि पर लखि लयिा। बाद में, उसने अपना सबसे भयंकर पाप दर्ज कयिा और पांडुलपिि को सीसे

---

[496] 'फेलोन' प्राचीन काल में एक लंबी, चौड़ी, बनिा आस्तीन वाली बाहरी पोशाक के लएि सामान्य शब्द था जो हर तरफ से शरीर से चपिकी रहती थी। उद्धारकर्ता और उनके प्रेरतिों के प्रति श्रद्धा के कारण, जो यद बिल्कुल यही नहीं तो इसी तरह के बाहरी वस्त्र पहनते थे, ईसाई चर्च ने फेलन को अपने पवत्रि परधिानों में शामलि कर लयिा और, आरंभकि काल से ही, इसे बशिपों और पुरोहतिों दोनों के लएि अपना लयिा।

की मुहर से सील कर दिया। फिर, जब संत बेसिल चर्च जा रहे थे, तब एक मौका चुनकर, वह उनकी ओर दौड़ी और पांडुलिपि के साथ उनके पैरों पर गिर पड़ी, और रोते हुए पुकार उठी:

'हे परमेश्वर के पवित्र पिता, मुझ पर दया करें – मैंने किसी और से ज्यादा पाप किया है!'

संत ने रुककर उससे पूछा कि वह उससे क्या चाहती है; उसने बदले में एक सील किया हुआ पर्चमेंट उसे थमाया और कहा:

'यहाँ, महाशय, मैंने इस पर्चे पर अपने सभी पाप और अपराध लिखकर इसे सील कर दिया है; परन्तु आप, हे ईश्वर के पुरुष, इसे न पढ़ें और न ही सील तोड़ें, बल्कि केवल अपनी प्रार्थना से इन्हें शुद्ध कर दें, क्योंकि मुझे विश्वास है कि जिसने मुझे यह विचार दिया है, वह आपकी प्रार्थना सुनकर मेरी भी सुन लेगा।'

बेसिल ने वह पर्चा लेकर स्वर्ग की ओर अपनी दृष्टि उठाई और कहा:

'हे प्रभु! यह केवल आपके लिए ही संभव है। क्योंकि यदि आपने संपूर्ण जगत के पाप स्वयं पर ले लिए हैं, तो आप इस एक आत्मा के अपराधों को कितना अधिक शुद्ध कर सकते हैं, चूंकि हमारे सभी पाप, यद्यपि आपने उन्हें गिन रखा है, आपकी असीम और अगम्य दया के सामने तुच्छ हैं!'

यह कहने के बाद, संत बेसिल हाथ में पर्चमेंट लेकर चर्च में गए, और वेदी के सामने प्रणाम करके, उस महिला के लिए पूरी रात प्रार्थना में बिताई।

अगली सुबह, दैवीय अनुष्ठान संपन्न करने के बाद, संत ने उस महिला को बुलाया और उसे ठीक उसी तरह सील किया हुआ पवित्र ग्रंथ दे दिया जैसा उसे मिला था, और उससे कहा:

'हे स्त्री, क्या तूने यह नहीं सुना कि *"सिर्फ परमेश्वर ही पापों को क्षमा कर सकता है"* (मरकुस 2:7)?'

उसने उत्तर दिया:

'मैंने सुना है, आदरणीय पिताजी, और इसीलिए मैंने उनकी दया की भीख माँगने के लिए आपसे निवेदन किया।'

यह कहने के बाद, उस महिला ने अपना पार्चमेंट खोला और देखा कि उसके पाप मिट गए थे; केवल वह गंभीर पाप जो उसने बाद में दर्ज किया था, ही अनमिट रह गया था। यह देखकर, वह महिला भयभीत हो गई और, अपना सीना पीटते हुए, संत के पैरों पर गिर पड़ी, और पुकार उठी:

'हे परम-प्रभु के सेवक, मुझ पर दया करो, और जैसे तुमने मेरी सभी गलतियों पर दया दिखाई और उनके लिए परमेश्वर से विनती की, वैसे ही इस एक के लिए भी विनती करो, ताकि यह पूरी तरह से शुद्ध हो जाए।'

आर्चबिशप, उसकी दया पर आँसू बहाते हुए, ने कहा:

'उठो, महिला: मैं भी एक पापी आदमी हूँ, और मुझे स्वयं दया और क्षमा की आवश्यकता है; वही ईश्वर जिसने आपके अन्य पापों को शुद्ध किया है, वह आपके इस पाप को भी शुद्ध कर सकता है जिसका प्रायश्चित अभी तक नहीं हुआ है; और यदि, अब से, आप पाप से बचते हैं और प्रभु के मार्ग पर चलना शुरू करते हैं, तो आपको न केवल क्षमा मिल जाएगी, बल्कि आपको स्वर्गीय महिमा के योग्य भी समझा जाएगा। मेरी तुम्हें यही सलाह है: रेगिस्तान में जाओ; वहाँ तुम्हें एफ्रेम नाम का एक संत मिलेगा; उसे यह पत्र दो और उससे मानवता के प्रेमी, ईश्वर के समक्ष अपनी दया के लिए मध्यस्थता करने का आग्रह करो।

उस महिला ने संत की सलाह पर अमल करते हुए रेगिस्तान में प्रवेश किया और बहुत दूर तक यात्रा करने के बाद, धन्य एफ्रेम की कुटिया ढूंढ ली। दरवाज़ा खटखटाते हुए, उसने कहा:

'हे पूज्य पिता, एक पापी पर दया करें!'

संत एफ्रेम ने अपने आत्मा में यह जान लिया कि वह किस उद्देश्य से उनके पास आई है, और उत्तर दिया:

'मेरे पास से चली जाओ, महिला, क्योंकि मैं एक पापी आदमी हूँ और मुझे स्वयं दूसरों की मदद की ज़रूरत है।'

तब उसने उसके सामने एक दस्तावेज़ फेंका और कहा:

'आर्चबिशप बेसिल ने मुझे आपके पास इसलिए भेजा है ताकि आप ईश्वर से प्रार्थना करके मुझे इस पांडुलिपि में लिखे पाप से मुक्त कर दें; उन्होंने मुझे मेरे अन्य पापों से तो मुक्त कर दिया है, परन्तु इस एक पाप के लिए प्रार्थना करने से इनकार न करें, क्योंकि मुझे आपके पास भेजा गया है।'

आदरणीय एफ्रेम ने उत्तर दिया:

'नहीं, मेरी बेटी, जो तुम्हारे कई पापों के लिए परमेश्वर से मध्यस्थता कर सकता था, वह एक पाप के लिए और भी अधिक मध्यस्थता कर सकता है। इसलिए जाओ, अभी तुरंत जाओ, ताकि तुम उसे प्रभु के पास जाने से पहले जीवित ही पा सको।'

तब वह महिला, पूजनीय पिता को प्रणाम करके, कैसरिया लौट आई।

लेकिन वह संत बेसिल के अंतिम संस्कार के समय पर ही यहाँ पहुँची, क्योंकि वे पहले ही परलोक सिधार चुके थे, और उनका पवित्र शरीर दफ़नाने के स्थान पर ले जाया जा रहा था। अंतिम संस्कार के जुलूस से मिलने पर, उस महिला ने ज़ोर से रोया, ज़मीन पर गिर पड़ी और संत से इस प्रकार बात की मानो वे अभी भी जीवित हों:

'हाय मेरे भाग्य! हे परमेश्वर के पवित्र जन! हाय, मैं दुखिया स्त्री! क्या इसी लिए आपने मुझे मरुभूमि में भेजा था, ताकि मैं आपको परेशान न करूँ और आप अपने शरीर से विदा हो सकें? और अब मैं व्यर्थ ही मरुभूमि की कठिन यात्रा करके खाली हाथ लौट आई हूँ। ईश्वर इसे देखे, और वह मेरे और तुम्हारे बीच न्याय करे, क्योंकि यद्यपि तुम्हारे पास स्वयं मेरी मदद करने का साधन था, फिर भी तुमने मुझे दूसरे के पास भेज दिया।

ऐसा पुकार लगाते हुए, उसने उस पवित्र व्यक्ति के बिस्तर पर पांडुलिपि फेंक दी, और अपने दुःख के बारे में सभी को बताने लगी। पुरोहितों में से एक, यह देखने की इच्छा से कि पांडुलिपि पर क्या लिखा था, उसे उठाकर खोलने लगा, तो उसमें उसे कोई शब्द नहीं मिले: पूरी पांडुलिपि खाली हो चुकी थी।

उसने उस महिला से कहा, 'यहाँ कुछ भी लिखा नहीं है, और तुम व्यर्थ में शोक मना रही हो, उस ईश्वर के अकथनीय प्रेम से अनभिज्ञ हो जो तुम्हें दिखाया गया है।'

यह चमत्कार देखने के बाद, सारी भीड़ ने परमेश्वर की महिमा की, जिन्होंने अपने सेवकों को और उनकी मध्यस्थता के द्वारा ऐसी शक्ति प्रदान की थी।

केसरिया में जोसेफ नाम का एक यहूदी रहता था। वह चिकित्सा की कला में इतना निपुण था कि नसों में रक्त के प्रवाह को देखकर, वह किसी मरीज की मृत्यु का दिन तीन या पाँच दिन पहले ही निर्धारित कर सकता था, और यहाँ तक कि उनके निधन का सटीक समय भी बता सकता था। हमारे धर्मपरायण पिता बेसिल, जो उनके भविष्य में मसीह के प्रति परिवर्तित होने की भविष्यवाणी कर सकते थे, उन्हें बहुत प्यार करते थे और अक्सर उन्हें अपने साथ बातचीत के लिए आमंत्रित करके यहूदी धर्म को त्यागने और पवित्र बपतिस्मा ग्रहण करने के लिए प्रोत्साहित करते थे। लेकिन जोसेफ ने इनकार कर दिया और कहा:

'मैं जिस धर्म में जन्मा हूँ, उसी में मैं मरना चाहता हूँ।'

तब संत ने उससे कहा:

'मेरा विश्वास करो, जब तक तुम *"जल और आत्मा से न जन्मो"* (यूहन्ना 3:5), तब तक न तो मैं मरूँगा और न ही तुम: क्योंकि ऐसे अनुग्रह के बिना परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना असंभव है। क्या तुम्हारे पूर्वजों ने *"मेघों में और समुद्र में"* (1 कुरिन्थियों 10:1) बपतिस्मा नहीं लिया था?' क्या उन्होंने उस चट्टान से नहीं पिया, जो आध्यात्मिक चट्टान—मसीह, , का पूर्वाभास थी, जो हमारे उद्धार के लिए कुँवारी से जन्मे थे? इसी मसीह को तुम्हारे पूर्वजों ने सूली पर चढ़ाया, लेकिन वह, दफनाए जाने के बाद, तीसरे दिन फिर से जी उठे और स्वर्ग में आरोहण करके, पिता के दाहिने हाथ पर बैठ गए, और वहीं से वह जीवितों और मरे हुओं का न्याय करने आएँगे।

संत ने उसके साथ आत्मा के लिए कई अन्य लाभकारी बातों पर विस्तार से बात की, लेकिन यहूदी अपने अविश्वास पर अडिग रहा। जब संत के निधन का समय आया, तो वह बीमार पड़ गया और यहूदी को अपने बिस्तर पर बुलाया, जैसे उसे उसकी चिकित्सा सहायता की आवश्यकता हो, और उससे पूछा:

'जोसेफ, तुम मेरे बारे में क्या कहते हो?'

यहूदी ने संत की जाँच करने के बाद, अपने घर वालों से कहा:

'अंत्येष्टि के लिए सब कुछ तैयार करो, क्योंकि उनकी मृत्यु किसी भी क्षण हो सकती है।'

लेकिन बेसिल ने कहा:

'तुम नहीं जानते कि तुम क्या कह रहे हो!'

यहूदी ने उत्तर दिया:

'मुझ पर विश्वास करें, महाशय, आपका निधन सूर्य अस्त होने से पहले ही हो जाएगा।'

तब बेसिल ने उससे कहा:

'और अगर मैं सुबह तक, छठे घंटे तक जीवित रहा, तो तुम तब क्या करोगे?'

जोसेफ ने उत्तर दिया:

'तो मुझे मरने दो!'

– 'हाँ,' संत ने कहा, 'मर जाओ, लेकिन पाप से मर जाओ, ताकि तुम ईश्वर के लिए जी सको!'

यहूदी ने उत्तर दिया, 'मैं समझता हूँ कि आप क्या कहना चाहते हैं, महाशय! और इसलिए मैं आपसे शपथ लेता हूँ कि यदि आप सुबह तक जीवित रहे, तो मैं आपकी इच्छा पूरी करूँगा।'

तब संत बेसिल ने यहूदी की आत्मा के उद्धार के लिए ईश्वर से प्रार्थना की कि वह उनकी मृत्यु तक उनका जीवन बढ़ा दें - और उनकी प्रार्थना स्वीकार हो गई। अगले सुबह उन्होंने उसे बुलवाया; लेकिन उस आदमी ने उस नौकर पर विश्वास नहीं किया जिसने उसे बताया कि बेसिल जीवित हैं, फिर भी वह उन्हें देखने गया, यह सोचकर कि वे पहले ही मर चुके हैं। जब उसने देखा कि वह वास्तव में जीवित है, तो वह आनंद से सराबोर हो गया; और फिर, संत के चरणों में गिरकर, उसने हृदय से कहा:

'महान है ईसाई ईश्वर, और उसके सिवाय कोई दूसरा ईश्वर नहीं है! मैं अधर्मी यहूदी धर्म का त्याग करता हूँ और सच्चे ईसाई धर्म में परिवर्तित हो गया हूँ। अत; हे पवित्र पिता, आज्ञा दीजिए कि मुझे और मेरे पूरे परिवार को बिना किसी देरी के बपतिस्मा दिया जाए।'

संत बेसिल ने उससे कहा:

'मैं तुम्हें अपने हाथों से ही बपतिस्मा दूँगा!'

यहूदी, उसके पास आकर, संत के दाहिने हाथ को छूकर बोला:

'प्रभु, आपकी शक्ति क्षीण हो गई है, और आपका सारा शरीर पूरी तरह से थक गया है; आप स्वयं मेरा बपतिस्मा नहीं दे पाएंगे।'

बेसिल ने उत्तर दिया, 'हमारे पास सृष्टिकर्ता हैं जो हमें बल देते हैं।'

और उठकर, वह चर्च में गया और सभी लोगों की उपस्थिति में यहूदी और उसके पूरे परिवार का बपतिस्मा दिया; उसने उसका नाम जॉन रखा और उसे दिव्य रहस्य प्रदान किए, क्योंकि उसी दिन उसने स्वयं लिटिर्जी का अनुष्ठान किया था। नव-बपतिस्मा प्राप्त व्यक्ति को अनंत जीवन के विषय में उपदेश देकर और अपनी समस्त आध्यात्मिक मंडली को उत्साहवर्धन का वचन देकर, संत नवें घड़ी तक चर्च में रहे। तब, सभी को अंतिम चुंबन और अपना आशीर्वाद देने के बाद, उन्होंने परमेश्वर की सभी अगणित आशीषों के लिए धन्यवाद देना शुरू किया; और जब धन्यवाद के शब्द अभी भी उनके होंठों पर थे, उन्होंने अपनी आत्मा को परमेश्वर के हाथों में सौंप दिया और, एक बिशप के रूप में, दिवंगत बिशपों में शामिल हो गए, और वचन के एक महान स्वर[497] – प्रचारकों – के रूप में, 379 के जनवरी के पहले दिन, ग्रेटियन के शासनकाल के दौरान[498] , जो अपने पिता, वैलेंटाइनियन के बाद सिंहासन पर चढ़े।

संत बेसिल महान ने आठ वर्ष, छह महीने और सोलह दिन तक परमेश्वर की कलीसिया का मार्गदर्शन किया, और उनके जीवन के कुल वर्ष उनचास थे।

एक नव-बपतिस्मा प्राप्त यहूदी, संत की मृत्यु देखकर, मुंह के बल गिर पड़ा और आँसुओं के साथ कहा:

'वास्तव में, हे ईश्वर के सेवक बेसिल, यदि आपने स्वयं ऐसा करने का विकल्प न चुना होता, तो आप अभी भी जीवित होते।'

संत बेसिल का अंतिम संस्कार एक महत्वपूर्ण घटना थी और इसने यह दर्शाया कि उन्हें कितना सम्मान दिया जाता था। न केवल ईसाई, बल्कि यहूदी और मूर्तिपूजक भी बड़ी संख्या में सड़कों पर उमड़ पड़े और दिवंगत संत की ताबूत की ओर लगातार धक्का देते रहे। नाज़ियांज़ुस के संत ग्रेगरी ने भी बेसिल के अंतिम संस्कार में भाग लिया और संत के लिए फूट-फूट कर रोए। वहाँ इकट्ठा हुए आर्चबिशपों ने अंतिम संस्कार के भजन गाए और परमेश्वर के महान पुरुष, बेसिल के

[497] अर्थात्, वह व्यक्ति जिसके पास वाक्पटुता, प्रभावशीलता और वाक् शक्ति का विशेष वरदान था।

[498] ग्रेटियन ने 375 से 383 तक (प्रारंभ में अपने पिता वैलेंटाइनियन प्रथम के साथ) साम्राज्य पर शासन किया।

सम्माननीय अवशेषों को शहीद संत यूप्साइशियस के चर्च[499] में दफनाया, त्रमिूर्त में एक, परमेश्वर की स्तुति करते हुए, जिसकी महिमा युगों-युगों तक हो। आमीन[500] ।

ट्रोपारियन, स्वर 1:

तेरी शिक्षा सारी पृथ्वी पर फैल गई है, क्योंकि तेरा वचन ग्रहण करके, जिससे तूने उन्हें परमेश्वर के भय में शिक्षित किया, तूने सभी चीजों की प्रकृति को स्पष्ट किया, तूने मानवीय रीति-रिवाजों को सुशोभित किया, हे अति पूजनीय पिता: मसीह परमेश्वर से प्रार्थना कर कि हमारी आत्माएं बच जाएँ[501] .

कॉन्टाकियन, स्वर 4:

आप चर्च के लिए एक अटूट नींव के रूप में प्रकट हुए हैं, एक मनुष्य के रूप में सभी को अमर प्रभुत्व प्रदान करते हुए, और इसे अपनी आज्ञाओं से सील करते हुए, हे पूजनीय बेसिल, जो स्वर्ग में प्रकट नहीं हुए।

अन्क्यरा के शहीद संत बेसिल की स्मृति

1 जनवरी को स्मरण किया जाता है

पवित्र शहीद बेसिल अंकीरा के कुलीनों में से एक थे[502] । सम्राट जूलियन अपोस्टेट[503] के शासनकाल में, उन्हें ईसाई धर्म की शिक्षा और प्रचार करने के आरोप में गरिफ्तार किया गया और राज्यपाल सैटरनिनस के सामने पेश किया गया। जब राज्यपाल ने उनसे पूछा कि क्या वह मसीह में विश्वास करते हैं, तो बेसिल ने ऊँचे स्वर में पुकारा:

'उसके सिवा कोई ईश्वर नहीं है।'

इस प्रकार, बिना किसी भय के, संत ने मसीह में अपने विश्वास की गवाही दी, जिसके लिए उन्हें क्रूर यातनाएँ दी गईं: उन्हें एक पेड़ से लटका दिया गया, और उनके शरीर को लोहे के औजारों से निर्दयतापूर्वक नोचा गया।

इसके बाद, मसीह के इस साहसी स्वीकारकर्ता को कॉन्स्टेंटिनोपल भेजा गया, जहाँ उसे एक बार फिर से उसी कठोर यातना से गुज़रना पड़ा। इसके बाद, यातना देने वालों ने शहीद के शरीर को इतनी ज़ोर से खींचना शुरू कर दिया कि

---

[499] संत बेसिल के अवशेषों का वर्तमान स्थान अज्ञात है: माउंट अथोस पर (संत अथानासियस के मठ में) केवल उनका सिर प्रदर्शित है; पश्चिमी लेखकों के विवरणों के अनुसार, उनके पवित्र शरीर को धर्मयुद्ध के दौरान सेसरेया से ले जाया गया था और धर्मयुद्ध के योद्धाओं द्वारा पश्चिम - फ्लैंडर्स ले जाया गया था।

[500] चर्च के प्रति उनकी सेवाओं और उच्च नैतिक चरित्र तथा तपस्या के असाधारण जीवन के लिए, संत बेसिल को 'महान' कहा जाता है और उन्हें 'चर्च की महिमा और सुंदरता', 'ब्रह्मांड की रोशनी और आँख', 'धर्मशास्त्रों के शिक्षक', 'विद्या के भंडार' और 'जीवन के नेता' के रूप में सम्मानित किया जाता है। संत बेसिल द ग्रेट की स्मृति में पूरी रात चलने वाली प्रार्थना सभा के दौरान, चर्च प्रभु के खतना के सम्मान में दो पैरियामा (परंपरागत उद्धरण) और सार्वभौमिक शिक्षक और पवित्र पिता बेसिल के सम्मान में एक पैरियामा का पाठ करता है – जो धर्मी लोगों की उच्च पूर्णता और उनके द्वारा अपने पड़ोसियों के लिए लाए गए भले के बारे में है (नीतिवचन 10:31–32, 11:1–12)। पवित्र पिता के सम्मान में सुबह का सुसमाचार (यूहन्ना 10:1–9) उस सच्चे चरवाहे की गरिमा की घोषणा करता है जो अपनी भेड़ों के लिए अपना जीवन दे देता है। 1 जनवरी को संत बेसिल द ग्रेट को समर्पित धर्मविधि में, कलीसिया उनके सम्मान में पत्र से की गई पाठ के माध्यम से परम परिपूर्ण महायाजक – परमेश्वर के पुत्र की घोषणा करती है, जिनका संत बेसिल द ग्रेट ने अपने जीवन में अनुकरण किया (इब्रानियों 7:26–8:2)। संस्कार में संत के सम्मान में सुसमाचार के पाठ (एक खतना के पर्व के लिए, दूसरा संत बेसिल के लिए) आत्मा में दीन लोगों, धार्मिकता के लिए भूखे-प्यासे रहने वालों, और मसीह के लिए सताए जाने वालों के धन्य होने पर यीशु मसीह की शिक्षा की घोषणा करते हैं (लूका 6, 17–23), जैसा कि स्वयं संत बेसिल महान थे।

[501] 'जिसने तुझे ईश्वर भक्ति के मार्ग पर चलाया' शब्द संत बेसिल के महान विद्वता की ओर संकेत करते हैं – प्रकृति के नियमों के उनके गहरे ज्ञान की ओर। संत बेसिल अपने पीछे कई लेखन छोड़ गए, जिनमें उन्होंने अन्य बातों के अलावा, ईश्वर द्वारा स्थापित सभी प्राणियों के बुद्धिमानी भरे क्रम की व्याख्या की। – शब्द: 'तुमने मानव रीति-रिवाजों को सुशोभित किया है' – यह इंगित करते हैं कि संत बेसिल ने कई नियम और विधान लिखे, जिनके माध्यम से उन्होंने कई धार्मिक रीति-रिवाजों को व्यवहार में लाया।

[502] एन्सीरा, एशिया माइनर प्रांत गैलाटिया (अब अंगोरा) की राजधानी।

[503] जूलियन ने 361 से 363 तक शासन किया।

उसके जोड़ अपनी जगह से अलग हो गए; साथ ही, उन्होंने मसीह के इस सपिाही की खाल के टुकड़े काटे और उसके शरीर में लाल-गरम लोहे की कीलें ठोक दीं।

[504]संत बेसलि ने दैवीय शक्ति से समर्थति होकर, इन सभी यातनाओं को साहसपूर्वक सहन कयि। अंत में, उनके यातना देने वालों ने उन्हें एक लाल-गरम भट्टी में डाल दयि। आग की शक्ति से अक्षुण्ण बचे रहने के बाद, बेसलि को चेन में बांधकर कॉन्स्टेंटनिोपल से सेसरयि[505] ले जाया गया और वहाँ जंगली जानवरों द्वारा चीर-फाड़ कए जाने की सजा सुनाई गई। पवत्रि बेसलि ने उत्कट प्रार्थना के साथ शहीद के मुकुट की प्रतीक्षा की और एक सहिनिी द्वारा टुकड़े-टुकड़े कए जाने के बाद उसे प्राप्त कयि।

पवत्रि शहीद के कुछ रश्तिेदारों और मत्रिों ने सावधानीपूर्वक उनके पवत्रि अवशेष एकत्र कए, उन्हें धूप से अभषिक्ति कयि और कफ़न में लपेटकर सम्मानपूर्वक दफनाया। बाद में, पवत्रि शहीद बेसलि की कब्र पर एक चर्च का नरि्माण कयि गया।

15 जनवरी

2 जनवरी (पुराने कैलेंडर के अनुसार)

इसी दनि, हम गुफाओं के पूजनीय सलि्वेस्ट्र का स्मरण करते हैं, जन्हिोंने नेस्टर (पहले रूसी इतहिासकार) के बाद वृत्तांत को जारी रखा, 12वीं शताब्दी में जीवति थे और पास की संत एंथनी की गुफा में अक्षुण्ण अवस्था में वश्रिाम कर रहे हैं।

हमारे पूजनीय पति सेराफमि ऑफ़ सारोव का जीवन

2 जनवरी को स्मरण कयि जाता है

सरोव के आदरणीय सेराफमि, जो एक वृद्ध थे, कुर्स्क के मूल नविासी थे और मोशनीन परविार के धार्मकि और धनी माता-पति से थे, जो शहर की प्रतष्ठिति व्यापारी वर्ग से थे; उनका जन्म 19 जुलाई 1759 को हुआ था और उनके पवत्रि बपतस्मि पर उनका नाम प्रोखोर रखा गया था। उनके पति, इसडिोर, ईश्वर के चर्चों के प्रतगिहराई से समर्पति थे, जबकि उनकी माता, अगाफ्या, अपने पति से भी अधकि समर्पति थीं और अपनी भक्ति और परोपकार के लिए उन्हें बहुत सम्मान दयि जाता था। जब वह तीन साल का था, तो प्रोखोर ने अपने पति को खो दयि, और उसकी धार्मकि माँ, अगाफयि, ही उसकी एकमात्र देखभाल करने वाली रहीं; उनके मार्गदर्शन में, वह ईसाई धार्मकिता और प्रार्थना तथा ईश्वर के घर के प्रति प्रेम में पला-बढ़ा। बाल्यकाल से ही, उस धन्य आत्मा पर एक अद्भुत दैवीय सुरक्षा स्पष्ट रूप से दखिाई देती थी, जो स्पष्ट रूप से यह पूर्वसूचना दे रही थी कि वह ईश्वर का अनुग्रह से परपिूर्ण चुना हुआ व्यक्ति था। एक दनि, उसकी माँ, अपने पति द्वारा शुरू कए गए एक चर्च के नरि्माण का नरीक्षण करते समय, सात वर्षीय प्रोखोर को अपने साथ नरि्माणाधीन घंटी मीनार के सबसे ऊपरी हस्सि पर ले गईं। लापरवाही के कारण, वह लड़का घंटी के मीनार से गरिकर जमीन पर आ गया। अगाफ्या यह सोचकर भयभीत होकर घंटी के मीनार से भाग गई कि उसका बेटा कुचलकर मर गया है, लेकनि उसे आश्चर्य और खुशी हुई जब उसने उसे अपने पैरों पर खड़ा, सुरक्षति और सही-सलामत देखा। इस प्रकार इस धन्य लड़के में धर्मग्रंथ के वचन पूरे हुए: **'कोई बुराई तुम्हें न पहुँचेगी, और न कोई वपित्ति तुम्हारे घर के द्वार तक आएगी; क्योंकि वह अपने स्वर्गदूतों को तुम्हारे वषिय में आज्ञा देगा—कि वे तुम्हारे सब मार्गों में तुम्हारी रक्षा करें: वे तुम्हें हाथों में उठा लेंगे, कहीं ऐसा न हो कि तुम्हारा पाँव पत्थर से टकरा जाए'** (भजन संहति 91:10-12)।

जब प्रोखोरस दस साल का था, तो उसे पढ़ना और लखिना सखिाया जाने लगा, और लड़के ने चर्च संबंधी साहत्यि को जल्दी से समझ लयि, एक तेज दमिाग और अच्छी याददाश्त का प्रदर्शन कयि, साथ ही अपनी नम्रता और वनिम्रता

---

[504] पवत्रि शहीद बेसलि का नधिन लगभग 362 ईस्वी में हुआ।

[505] यह, बेशक, कैपाडोसयि में केसरयि को संदर्भति करता है।

के लिए खुद को अलग कयिा। लेकनि अचानक वह गंभीर रूप से बीमार पड़ गया, इतना कि उसके परविार को उसके ठीक होने की कोई उम्मीद नहीं थी। इस कठनि समय के दौरान, प्रोकॉर ने सपने में परमेश्वर की अतपिवत्रि माता को देखा, जन्हिोंने उससे मलिने और उसे उसकी बीमारी से ठीक करने का वादा कयिा। कुछ ही समय में, परमेश्वर की माता के वचन सच हो गए। उस समय, कर्सक में एक धार्मकि जुलूस नकिल रहा था, जसिका नेतृत्व परमेश्वर की अतपिवत्रि माता के संकेत के चमत्कारी आइकन[506] द्वारा कयिा जा रहा था। बारशि और कीचड़ के कारण, जुलूस मोशनी परविार के आँगन से होते हुए एक संक्षप्ति मार्ग से गुज़रा। धर्मपरायण अगाफ्या अपने बीमार बेटे को बाहर ले जाने के लिए दौड़ी, उसे परम पुण्य माता के चमत्कारी प्रतमिा से सटा दयिा, जसिके बाद लड़का पूरी तरह से ठीक हो गया।

उस भक्तमिय लड़के ने प्रेमपूर्वक अपने अध्ययन को समर्पति कर दयिा, पवत्रि धर्मग्रंथ और अन्य दव्यि तथा शक्षिाप्रद पुस्तकें पढ़ीं, और अपना पूरा मन ईश्वर पर केंद्रति कर लयिा, जनिके लिए उसकी पवत्रि आत्मा प्रेम से जलती थी। इस बीच, उसके बड़े भाई, जो एक व्यापारी थे, ने धीरे-धीरे प्रोकhor को व्यापार सखिाना शुरू कर दयिा, लेकनि उस लड़के का मन इस काम में नहीं था: उसकी आत्मा एक ऐसा आध्यात्मकि खजाना प्राप्त करने के लिए तरस रही थी, जो अक्षय और अटूट हो। हालाँकि वह सप्ताह के दनिों में दैवीय पूजा में शामलि नहीं हो पाता था, फरि भी प्रखोर लगभग एक भी दनि ईश्वर के घर जाने के बनिा नहीं रहता था; वह भोर में 'मैटन्सि' में शामलि होने के लिए उठता था; रववािरों और पर्वों के दनिों में, वह वशिेष रूप से अपना खाली समय धर्मोपदेशात्मक आध्यात्मकि पुस्तकें पढ़ने में बतिाना पसंद करता था; वह कभी-कभी अपने साथयिों को ज़ोर से पढ़कर सुनाता था, लेकनि वह एकांत और मौन को अधकि पसंद करता था। प्रखोर की माँ अपने बेटे की प्रवृत्तयिों से अच्छी तरह वाकफि थीं, लेकनि उन्होंने उसकी इच्छाओं के मार्ग में कोई बाधा नहीं डाली। और इस प्रकार, जब वह धर्मपरायण युवक सत्रह वर्ष का हुआ, तो उसने दृढ़ संकल्प लयिा कि वह संसार को त्याग देगा और अपनी माँ की आशीर्वाद से—जन्हिोंने उसे एक तांबे का क्रॉस देकर वदिा कयिा, जसिसे वह उस समय के बाद कभी अलग नहीं हुआ—उसने अपना जीवन संन्यासी जीवन को समर्पति कर दयिा।

[507]दुनयिा को पीछे छोड़कर, वह धन्य व्यक्तपिहले कीव-पेचेरस्क लाव्रा की तीर्थयात्रा पर नकिले, जहाँ डोसीफ़ी नामक एक दूरदर्शी तपस्वी ने उस युवक में मसीह के एक अच्छे तपस्वी को पहचानकर, उन्हें सारोव हर्मटिेज में मोक्ष की तलाश करने का आशीर्वाद दयिा।

दूरदर्शी संन्यासी ने युवा तपस्वी से कहा, 'आओ, हे ईश्वर के बच्चे, और सारोव मठ में रहो; यह स्थान तुम्हारा उद्धार होगा; ईश्वर की मदद से, वहाँ तुम अपनी सांसारकि यात्रा समाप्त करोगे। पवत्रि आत्मा, जो धर्मी लोगों का खजाना है, इस पवत्रि स्थान में तुम्हारे जीवन का मार्गदर्शन करेगा।'

दूरदर्शी वृद्ध की सलाह मानते हुए, प्रखोर सारोव हर्मटिेज आए, जहाँ मठाधीश, वृद्ध पाचोमयिस ने उनका गर्मजोशी से स्वागत कयिा, जो एक वनिम्र और नम्र भक्षिु थे, जन्हिोंने उपवास और प्रार्थना के लिए खुद को समर्पति कर दयिा था और अपने साथी भक्षिुओं के लिए एक आदर्श थे। प्रोखोर की सद्भावना को पहचानकर, पाचोमयिस ने उसे नवोदतिों की संख्या में शामलि कर लयिा और उसे वरषि्ठ, हायरोमोंक जोसेफ के मार्गदर्शन में सौंप दयिा, जन्हिोंने पहले

---

[506] माता ईश्वर की ज़नामेंस्काया प्रतमिा कर्सक ज़नामेंस्की मठ में रखी गई है; इसे 'कोरेन्ना' प्रतमिा के नाम से भी जाना जाता है, क्योंकि यह चमत्कारकि रूप से एक पेड़ की जड़ में मलिी थी, जहाँ बाद में 1597 में कर्सक से 27 वर्स्ट दूर, माता ईश्वर के जन्मस्थल (अब सामुदायकि) की तपस्या-स्थली की स्थापना की गई थी। माता के चहि्न के चमत्कारी 'कोरेन्ना' प्रतमिा के सम्मान में भव्य उत्सव 27 नवंबर और 13 सतिंबर को मनाए जाते हैं, जो कोरेन्ना हर्मटिेज से ज़नामेंस्की मठ में इसकी वापसी का दनि है, जहाँ इसे ईस्टर के बाद के 9वें शुक्रवार को सालाना ले जाया जाता है और यह 12 सतिंबर तक वहीं रहती है।

[507] सारोव पुरुषों का हर्मटिेज, तम्बोव गवर्नरेट, टेम्नकिोव जलि में, टेम्नकिोव शहर से 37 वर्स्ट की दूरी पर स्थति है; इसकी स्थापना 1770 में हएिरोस्केमामोंक जॉन ने सारोवका और सतसि नदयिों के संगम पर, ततार शहर साराक्लचि के स्थल पर की थी। यह स्थल पहले ही सदाचारी तपस्वयिों के कर्मों से पवत्रि हो चुका था: पहले संन्यासी थयिोडोसयिस और फरि गेरसम, जन्हिोंने इस स्थान के भवष्यि के महत्व की स्पष्ट रूप से भवष्यिवाणी करने वाले वभिन्नि दैवीय संकेतों को देखा (उदाहरण के लिए, ऊपर से उतरने वाली आग की करिण, कई घंटयिों का जोरदार बजना, और इसी तरह). मठ की स्थापना के छह साल बाद, सारोव में बन रहे पहले चर्च के ऊपर क्रॉस लगाने के नरि्धारति दनि, मठ स्थति पहाड़ पर रात में घंटयिों की तेज घंटी की आवाज सुनी गई, जबकि वहां कोई घंटयिां नहीं थीं; दोपहर से पहले फरि से ऐसा ही हुआ, जब एक असाधारण प्रकाश काम कर रहे लोगों को रोशन कर रहा था। हएिरोस्केमामोंक जॉन के उत्तराधकिारयिों में, नरि्माता एफ्रेम अपने तपस्वी जीवन और मठ में सुधार के अपने काम के लिए वशिेष रूप से उल्लेखनीय हैं। सारोव हर्मटिेज लंबे समय से मठ के नयिमों के सख्त पालन और अपने संन्यासयिों के तपस्वी जीवन के लिए प्रसद्धि है। वर्तमान में, सारोव हर्मटिेज सबसे अच्छी तरह से संगठति और सबसे समृद्ध रूसी मठ समुदाय में से एक है। इसमें सात तक चर्च हैं; इसकी पवत्रि-कोठरी (sacristy) में रखे गए पूजा के वस्त्रों और उपकरणों के उत्कृष्ट मूल्य, सुंदरता और भव्यता के लिए उल्लेखनीय है। मठ के पास वशिाल भूमि है।

मठ के कोषाध्यक्ष के रूप में कार्य किया था। वरिष्ठ के मार्गदर्शन में सेवा करते हुए, प्रोखोरस ने उत्साहपूर्वक सभी मठवासी नियमों और विधानों का पालन किया और भाईचारे के लिए विभिन्न कर्तव्यों का पालन किया: बेकरी, प्रॉस्फोरा कक्ष और बढ़ईगीरी कार्यशाला में; इसके अलावा, उन्होंने चर्च में एक सेक्सटन के रूप में भी कर्तव्यों का पालन किया। वह कभी भी आलसी नहीं था, बल्कि निरंतर काम करके वह खुद को ऊब से बचाने का प्रयास करता था, जिसे वह एक भिक्षु के लिए सबसे खतरनाक प्रलोभनों में से एक मानता था।

'यह बीमारी ठीक की जा सकती है,' उन्होंने बाद में व्यक्तिगत अनुभव से कहा, 'प्रार्थना, व्यर्थ की बातों से परहेज़, अपनी क्षमता के अनुसार शारीरिक काम करने, ईश्वर के वचन का अध्ययन और धैर्य के द्वारा; क्योंकि यह कायरता, लापरवाही और व्यर्थ की बातों से उत्पन्न होती है।'

प्रोखोर हमेशा चर्च की सेवाओं में सबसे पहले पहुँचते थे, और चाहे वह कितनी भी लंबी क्यों न हो, पूरी सेवा के दौरान अचल खड़े रहते थे। चर्च के बाहर, उन्हें अपनी कोठरी में अकेले रहना पसंद था। शारीरिक श्रम या आज्ञाकारिता के किसी अन्य कार्य में लगे रहने के दौरान, वह लगातार यीशु की प्रार्थना को अपने मन और हृदय में बनाए रखते थे, और इसकी शक्ति से शत्रु के विभिन्न प्रलोभनों पर विजय प्राप्त करते थे। सारोव मठ की शांति और मौन से संतुष्ट न होकर, उस युवा तपस्वी ने कुछ वरिष्ठों का अनुकरण किया, जो मठाध्यक्ष की अनुमति से पूर्ण एकांत के लिए मठ परिसर से निकलकर मठ के जंगल की गहराई में चले गए थे[508] , – अपने के आशीर्वाद से, वृद्ध जोसेफ, वह भी अपने खाली समय में प्रार्थनापूर्ण मौन के लिए जंगल के घने हिस्से में चला जाता था। उसने प्रार्थना को संयम और उपवास के साथ जोड़ा; वह बुधवार और शुक्रवार को बिल्कुल भी भोजन नहीं करता था, और अन्य दिनों में केवल एक बार ही भोजन करता था। सब लोग इस असाधारण तपस्वी का बहुत सम्मान और प्रेम करते थे; उनकी गहरी विनम्रता के बावजूद, उनके निरंतर और उल्लेखनीय कारनामों को छिपाना मुश्किल था। वरिष्ठ पाचोमियस और जोसेफ ने उससे विशेष स्नेह और विश्वास किया, मानो वह उनका अपना पुत्र हो। मसीह के इस युवा तपस्वी के प्रति सारोव के संतों का यह स्नेह और सार्वभौमिक सम्मान निम्नलिखित अवसर पर विशेष रूप से स्पष्ट रूप से व्यक्त हुआ।

1780 में, प्रोकहोर गंभीर रूप से बीमार पड़ गए। उनका पूरा शरीर सूज गया, और असहनीय पीड़ा सहते हुए, वे अपने कठोर बिस्तर पर अचल पड़े रहे। कोई डॉक्टर नहीं था, और बीमारी किसी भी इलाज से ठीक नहीं हो रही थी; ऐसा लगता है कि यह पानी का सूजन (ड्रॉपसी) था। यह बीमारी तीन साल तक चली, जिनमें से आधा समय वह बिस्तर पर ही बिताया। फिर भी, प्रोखोर के होठों से कभी शिकायत का एक शब्द भी नहीं निकला; उन्होंने अपना पूरा अस्तित्व—शरीर और आत्मा—प्रभु के हवाले कर दिया और अखंड प्रार्थना करते रहे, अपने आँसुओं से अपने बिस्तर को भीगते रहे[509] । प्रोखोर के आध्यात्मिक पिता और मार्गदर्शक, एल्डर जोसेफ, ने उनकी बीमारी के दौरान एक साधारण नवसिखुआ के रूप में उनकी सेवा की; मठ के मठाधीश, एल्डर पाचोमियस, लगातार उनके बगल में रहे; एल्डर यशायाह और अन्य एल्डरों और भाइयों ने भी उनकी बहुत देखभाल की। अंतत; पीड़ित की जान की चिंता में, पाचोमियस ने दृढ़ता से उसे डॉक्टर को बुलाने के लिए कहा। लेकिन उस धन्य व्यक्ति ने, और भी अधिक दृढ़ संकल्प के साथ, चिकित्सा सहायता से इनकार कर दिया।

उसने एल्डर से कहा, 'हे पवित्र पिता, मैंने स्वयं को आत्माओं और शरीरों के सच्चे चिकित्सक, हमारे प्रभु यीशु मसीह, और उनकी अति पवित्र माता के हाथ सौंप दिया है; और यदि आपकी कृपा इसे उचित समझे, तो हे प्रभु, मेरे लिए, इस दीन आत्मा के लिए, स्वर्गीय उपचार (अर्थात् पवित्र सहभागिता) प्रदान करें।'

तब, उस बीमार व्यक्ति के अनुरोध पर और अपने उत्साह से, वृद्ध जोसेफ ने प्रोखोर के स्वास्थ्य लाभ के लिए एक रात्रि-व्यापी जागरण और दैवीय धर्मविधि का अनुष्ठान किया; भाई-बंधु उस सेवा के लिए इकट्ठा हुए, जो उस पीड़ित व्यक्ति के लिए प्रार्थना करने के लिए उत्सुक थे। धर्मविधि के बाद, प्रोखोर ने अपने पापों का इकबालिया बयान दिया और अपने बिस्तर पर लेटे हुए ही मसीह के पवित्र रहस्यों को ग्रहण किया।

---

[508] उदाहरण के लिए, ऐसे थे वलाम मठ के प्रसिद्ध मठाधीश और पुनर्स्थापक, नज़ारियस, जिन्होंने सारोव में अपना संन्यासी जीवन शुरू किया और अपने जीवन के अंतिम वर्ष वहीं बिताए; हायरओमोंक डोसिथियस; और, विशेष रूप से, अपने तपस्या के कारनामों के लिए प्रसिद्ध स्कीमोमोंक मार्क, जो लंबे समय तक एक मौन संन्यासी के रूप में रहे।

[509] पवित्र भजनकार के उदाहरण का अनुसरण करते हुए, जिन्होंने दुख और बीमारी के बीच पुकारा: 'मैं अपने आँसुओं से अपना बिस्तर सींचता हूँ' (भजन संहिता 6:7)।

और देखो, कम्यूनियन प्राप्त करने के बाद, सर्वपवत्रि कुँवारी मरयिम अपरमिति प्रकाश में, प्रेरति यूहन्ना द थियोलोजयिन और पतरस के साथ, उसे दखिाई दीं। थियोलोजयिन की ओर अपना दव्यि मुख मोड़कर, उन्होंने प्रोखोरस की ओर अपनी उंगली से इशारा करते हुए कहा:

'यह हमारी ही जाति का है!' [510]

तब उन्होंने अपना दाहिना हाथ उसके सरि पर रखा – और तुरंत ही उस बीमार व्यक्ति के शरीर में भरा हुआ पदार्थ उसके दाहिने ओर बने एक छेद से बाहर बहने लगा। कुछ ही समय में, प्रोखोरस पूरी तरह से ठीक हो गया, और उसके शरीर पर केवल उस घाव के नशिान ही रह गए, जो उसकी बीमारी का स्रोत था, मानो यह उसकी चमत्कारी चकित्सिा की गवाही दे रहे हों। थोड़ी ही देर बाद, ईश्वर की एक वशिेष व्यवस्था से, वर्जनि मैरी के प्रकट होने की जगह पर, प्रोखोर की खंडहर हो चुकी कोठरी की जगह पर, दो वेदयिों वाला एक दो-मंज़लि चर्च और उससे सटा हुआ एक अस्पताल बनाया गया। बाद वाले ने, मठाधीश के नर्दिेश पर, इस नर्माण के लिए दान एकत्र कए और, अपनी ही हाथों से, नचिले अस्पताल चर्च में सरू की लकड़ी से एक वेदी बनाई। एक बार इस वेदी का अभषिेक हो जाने के बाद, पूजनीय सेराफमि ने अपने शेष जीवन में मुख्य रूप से इसी चर्च में पवत्रि Communion ग्रहण कयिा – उस महान आशीर्वाद की नरिंतर स्मृति के रूप में जो उन्हें ठीक इसी स्थान पर प्रकट हुआ था[511] ।

[512]सारोव हर्मटिेज में एक नवसखिया के रूप में आठ साल बतिाने के बाद, 18 अगस्त 1786 को, 27 वर्ष की आयु में, प्रोखोर को मठवासी जीवन में टोनसुर (केश छँटाई) का सम्मान मलिा, जसि समय उन्हें एक नया नाम दयिा गया - सेराफमि। संन्यासी जीवन को स्वीकार करने के साथ ही, उनके नए नाम 'सराफमि' का अर्थ, जो उन्हें स्वर्गदूतों की पवत्रिता और ईश्वर की प्रति उनकी उत्कट सेवा की याद दलिाता था, ने उनके भीतर प्रभु की सेवा करने की एक और भी प्रबल इच्छा और पवत्रि उत्साह जगा दयिा। सराफमि ने अपने श्रम और तपस्या को दोगुना कर दयिा और एक और भी अधकि एकांत जीवन जीने लगे, तथा आंतरकि, ईश्वर-केंद्रति मनन में डूब गए।

एक साल से थोड़ा अधकि समय बाद, रेवरेंड फादर को हायरोडीकन[513] के रूप में अभषिक्ति कयिा गया। उस समय से लगभग छह वर्षों तक, उन्होंने इस पद पर लगभग लगातार सेवा की, अपने मौजूदा कार्यों पर कार्य और नई उपलब्धयिाँ जोड़ते हुए, उत्साह से जलते हुए और दव्यि प्रेम से प्रज्वलति रहे। वे रवविार और पर्व के दनिों से पहले की रातें जागकर और उत्कट प्रार्थना में बतिाते थे, बनिा आराम के, लटिर्जी (धार्मकि अनुष्ठान) तक अपने प्रार्थना नयिम का पालन करते हुए; और दव्यि सेवा के समापन पर, वे लंबे समय तक चर्च में ही रहते थे, पवत्रि पात्रों को व्यवस्थति करते और प्रभु के वेदी की पवत्रिता सुनश्चिति करते थे। और फरि भी, इन सब के बावजूद, धन्य सेराफमि को थकान लगभग महसूस नहीं होती थी, वे थकते नहीं थे, और बाद में उन्हें लंबे आराम की आवश्यकता नहीं होती थी; वे अक्सर भोजन और पानी के बारे में पूरी तरह से भूल जाते थे, और जब वे आराम करने के लिए पीछे हटते थे, तो वे इस बात पर शोक मनाते थे कि मनुष्य स्वर्गदूतों की तरह नरिंतर ईश्वर की सेवा नहीं कर सकता।

सराफमि की आत्मा सद्गुणों और ईश्वर-चेतन मनन की सीढ़ी पर नरिंतर ऊँचाई पर चढ़ती गई - और, मानो उनके तीव्र पवत्रि उत्साह के जवाब में, प्रभु ने अनुग्रह-पूर्ण दव्यि दर्शनों से उनके श्रम में उन्हें सांत्वना दी और उन्हें बल

---

[510] *'हमारे जैसे* अभव्यिक्ति स्पष्ट रूप से इंगति करती है कि आदरणीय सेराफमि ईश्वर की माता के समक्ष एक वशिेष रूप से उत्साही याचनाकर्ता थे और इसलिए वे स्वयं उनकी वशिेष सुरक्षा और मध्यस्थता के अधीन थे, एक तथ्य जसिकी पुष्टि आदरणीय के अपने जीवन के कई उदाहरणों से स्पष्ट रूप से होती है।

[511] बाद में स्वयं वरष्ठि ने इसके बारे में बहुत बार और बहुत से लोगों से बात की। सेंट सेराफमि द्वारा स्थापति वेदी को 17 अगस्त 1786 को सोलोव्की के पूजनीय जोसमिा और साव्वाती के सम्मान में समर्पति कयिा गया था और यह आज भी अपनी जगह पर मौजूद है। ऊपरी वेदी को प्रभु के रूपांतरण के नाम पर समर्पति कयिा गया था। – इस नर्माण के लिए धन जुटाने के कठनि कार्य के दौरान, सेराफमि अपने पैतृक कर्सक में थे, लेकनि उनकी धर्मपरायण माँ अब जीवति नहीं थीं; उनके भाई, जो अपनी माँ की मृत्यु के बाद परविार की संपत्ति के एकमात्र उत्तराधकिारी बन गए थे, ने बदले में मठ के चर्च के नर्माण के लिए प्रोखोर को उदार वत्तिीय सहायता प्रदान की।

[512] हब्रिू शब्द 'सेराफमि' का अर्थ है: लौ, जलना; कुछ व्याख्याओं के अनुसार, इसका एक और अर्थ 'उन्नत', 'कुलीन' है। वास्तव में, यह एक दैवी नाम है, जसिके द्वारा परमेश्वर के सबसे नकिट स्वर्गीय पदक्रम के एक क्रम से संबंधति प्रकाशमान आत्माओं का नामकरण कयिा जाता था और कयिा जाता है; वे परमपति के सहिासन के सामने पहले क्रम में प्रथम स्थान पर हैं। – यह नाम प्रोखोर को उनके ज्ञान या सहमति के बनिा मठवासी जीवन में दीक्षा देने पर दयिा गया था, और इसे मठवासी अधकिारयिों के उनके बारे में दृष्टकिोण की अभव्यिक्ति माना जा सकता है; उन्होंने प्रोखोर के ईश्वर को समर्पति जीवन के प्रति उत्साह को देखा था और दूरदर्शति से उनमें ईश्वर के लिए एक और भी बड़ी ज्वाला की भवष्यिवाणी की थी।

[513] यह दसिंबर 1787 में हुआ था।

प्रदान कयि, जन्हिें वे अपने हृदय की पवत्रिता, अखंड संयम और परमेश्वर की ओर अपनी आत्मा के नरिंतर उत्थान के परणिामस्वरूप देख पाते थे। इस प्रकार, चर्च की सेवाओं के दौरान कभी-कभी, उन्होंने पवत्रि स्वर्गदूतों को भाइयों के साथ सह-आराधना करते और गाते हुए देखा, जो सफेद, सोने की कढ़ाई वाले चोगा पहने, बजिली की तरह तेज युवाओं के रूप में थे; उनका गायन न तो शब्दों में व्यक्त कयि जा सकता था और न ही कसिी सांसारकि धुन से उसकी तुलना की जा सकती थी। बाद में, जब वह इन दव्यि दर्शनों से हुई अनुत्तरनीय आनंद की अनुभूतकिो याद करते, तो भजनकार का हवाला देते हुए कहते, **'मेरा हृदय मोम के समान हो गया है; वह** पघिल गया है' (भजन संहति 21:15)। और अपनी उस आनंद में उन्हें उस समय और कुछ याद नहीं रहा; उन्हें केवल यह याद रहा कवि चर्च में कैसे प्रवेश कयि था और कैसे बाहर नकिला था।

लेकनि एक अवसर पर, पवत्रि सप्ताह के दौरान, दव्यि अनुष्ठान के समय, आदरणीय पति को एक वशिष अनुग्रह-पूर्ण और महत्वपूर्ण दर्शन प्राप्त हुआ। यह माउंडी गुरुवार को था। यह पूजा आदरणीय बुजुर्ग पाचोमयिस और जोसेफ ने धन्य सेराफमि के साथ मलिकर संपन्न की – क्योंकपिाचोमयिस उस युवा लेकनि धर्मनष्ठि भक्षिु से गहराई से जुड़ गए थे और लगभग हमेशा दव्यि सेवा उनके साथ ही संपन्न करते थे। जब सेराफमि ने, छोटे प्रवेश और पठन के बाद, उद्घोषणा की: 'हे प्रभु, धर्मयिों को बचा', और शाही द्वारों से बाहर नकिलकर, 'और युगानुयुग' शब्दों के साथ, वक्ता की छड़ी को मंडली की ओर मोड़ा, तो वह अचानक ऊपर से एक असाधारण प्रकाश में नहा उठा, मानो सूर्य की करिणों से। उस तेज की ओर अपनी दृष्टउिठाकर, धन्य सेराफमि ने हमारे प्रभु यीशु मसीह को महमिा में मनुष्य के पुत्र के रूप में देखा, जो अकथनीय प्रकाश से सूर्य से भी अधकि चमक रहे थे और मानो मधुमक्खयिों के झुंड—स्वर्गीय शक्तयिाँ: स्वर्गदूत, महादूत, खेरूब और सेराफमि—से घरि हुए थे। वे पश्चमिी चर्च के द्वारों से होकर हवा में आए, एम्बो के सामने रुके और अपने हाथ उठाकर, पूजा का संचालन कर रहे लोगों और प्रार्थना कर रहे लोगों को आशीर्वाद दयि। तब वे शाही द्वारों के पास एक स्थानीय रूप में प्रकट हुए[514] । धन्य व्यक्तकिा हृदय प्रभु के प्रतितीव्र प्रेम की मठिास से अकथनीय आनंद से भर गया और स्वर्गीय अनुग्रह के दैवीय प्रकाश से प्रकाशति हो गया। और वह स्वयं, इस रहस्यमय दर्शन से, तुरंत ही रूप में परविर्तति हो गया – और न तो अपनी जगह से हलि सका और न ही एक भी शब्द बोल सका। कई लोगों ने इसे देखा, लेकनि कसिी को भी यह समझ नहीं आया कि ऐसा क्यों हो रहा था। तुरंत, दो हायरोडीकन सेराफमि के पास आए और उसे पवत्रि स्थल में ले गए; लेकनि उसके बाद भी, वह लगभग दो घंटे तक एक ही जगह पर अचल खड़े रहे – केवल उनका चेहरा ही पल-पल में बदल रहा था: कभी वह बर्फ़ीले-सफ़ेद रंग का हो जाता, तो कभी उस पर एक जीवंत लाली छा जाती। लTypजी का अनुष्ठान कर रहे पैखोमयिस और जोसेफ नामक बुजुर्गों ने सोचा कि क्या सेराफमि को अचानक कमजोरी महसूस हुई होगी, जो लंबे उपवास के बाद माउंडी गुरुवार को स्वाभावकि रूप से हो सकती थी, वशिषकर उस सम्मान को देखते हुए जो धन्य सेराफमि ने लंबे समय से उनके प्रतदिखिाया था; लेकनि फरि उन्हें एहसास हुआ कि उन्हें एक दर्शन हुआ था। जब सेराफमि होश में आए, तो बुजुर्गों ने उनसे पूछा कि उनके साथ क्या हुआ था। सेराफमि ने नम्रतापूर्वक, बच्चों जैसे भोले वश्विास के साथ, उन्हें अपने दर्शन के बारे में बताया। आध्यात्मकि जीवन में अनुभवी बुजुर्गों ने उनके इस वृत्तांत को अपने हृदय में संजो लयि; और उन्होंने धन्य सेराफमि को यह हदिायत दी कि वे घमंडी न बनें, और न ही अपने आत्मा में ईश्वर के सामने अपनी योग्यता के बारे में कोई हानकिारक वचिार पालें। लेकनि उपर्युक्त बुजुर्गों के अलावा उस समय कसिी को भी उस ईश्वरीय अद्भुत दर्शन के बारे में पता नहीं था, जसिसे धन्य सेराफमि को सम्मानति कयि गया था।

और संत, इस अनुग्रह-पूर्ण स्वर्गीय दर्शन का अनुसरण करते हुए, अपने या अपनी आध्यात्मकि वरदानों के बारे में घमंडी नहीं हुए, बल्कि वनिम्रता में और भी अधकि दृढ़ हो गए। गहन वनिम्रता से घरि, वे दनि-प्रतदिनि अधकि शक्तशिाली होते गए और आध्यात्मकि आत्म-नम्रता में लगातार प्रयासरत रहते हुए, प्रभु के क्रूस के राजसी पथ पर

---

[514] इस संबंध में यह ध्यान देने योग्य है कि पूजनीय सेराफमि का धन्य दर्शन उस क्षण में हुआ जब लटिर्जी में पुरोहतिों का पवत्रि स्थल में प्रवेश स्वर्ग में उनके प्रवेश का प्रतीक है, और पुरोहति मौन प्रार्थना में प्रभु से वनिती करता है: हे प्रभु, हमारे परमेश्वर, जो स्वर्ग में स्वर्गदूतों और महादूतों के पद और सम्मान को आपकी महमिा के लिए स्थापति करते हैं, कृपा करें कि हमारे प्रवेश के साथ पवत्रि स्वर्गदूतों का प्रवेश भी हो, जो हमारी सेवा करें और आपकी महमिा करें, जब स्वर्गदूतों का त्रसिगयिोन गाया जाता है: हे पवत्रि परमेश्वर, हे पवत्रि सर्वशक्तमिान, हे पवत्रि अमर, हम पर दया करें। इस प्रकार, इस दृष्टने स्पष्ट रूप से यह प्रदर्शति कयि कि हम व्यर्थ में यह वश्विास नहीं करते कि दव्यि लटिर्जी के दौरान, स्वर्गीय शक्तयिाँ अदृश्य रूप से हमारे साथ सेवा करती हैं, और महमिा का राजा स्वयं—मसीह—उस समय हमारे साथ उपस्थति हैं।

नष्ठिापूर्वक और अडगि होकर चले। उस समय से, सेराफमि और भी अधकि लगन से मौन की तलाश करने लगे और पहले से भी अधकि बार प्रार्थना करने के लिए सारोव वन में चले जाते, जहाँ उनके लिए एक संन्यासी की कुटयिा तैयार की गई थी। वे अपना दनि सुबह से शाम तक मठ में बतिाते, सेवाओं का आयोजन करते, मठ के नयिमों का पालन करते और अपने कर्तव्यों का पालन करते थे, शाम को वे रात की प्रार्थना के लिए अपनी तपस्वी की कुटयिा में चले जाते थे, और सुबह-सुबह अपने कर्तव्यों को पूरा करने के लिए मठ में लौट आते थे।

1793 में, पैंतीस वर्ष की आयु में, सेराफमि को एक हाइरोमोंक[515] के रूप में अभषिक्ति कयिा गया। और इस पद पर, उन्होंने पहले की तरह ही, लेकनि और भी अधकि प्रेम के साथ, लंबे समय तक अपनी अखंड पवत्रि सेवा जारी रखी, और प्रतदिनि वशि्वास और श्रद्धा के साथ मसीह के पवत्रि रहस्यों में भाग लयिा।

इसके तुरंत बाद, पूजनीय सेराफमि ने एक और भी बड़ा तपस्वी प्रयास कयिा और स्वेच्छा से रेगस्तिान में चले गए। यह उनके प्रयि वरष्ठि और मार्गदर्शक, धन्य एल्डर पाचोमयिस के नधिन के बाद हुआ, जन्हिोंने अपने नधिन से पहले इस प्रयास के लिए उन्हें आशीर्वाद दयिा था। अपने गुरु के शव को कड़वी वलिाप के साथ अंतमि संस्कार देने के बाद, सेराफमि ने नए मठाधीश, एल्डर यशायाह, जो उनके आध्यात्मकि पतिा थे, का आशीर्वाद प्राप्त कर मठ छोड़ दयिा और रेगस्तिान में मौन तपस्या का जीवन जीने चले गए[516] ।

आदरणीय सेराफमि का कोठरी घने चीड़ के जंगल में, सारोवका नदी के कनिारे, एक ऊँचे पहाड़ी पर, मठ से लगभग 5–6 वर्स्ट दूर स्थति थी, और इसमें एक छोटा लकड़ी का कमरा और एक चूल्हा था। अपने कोठरी के बगल में, आदरणीय सेराफमि ने एक छोटा सा सब्जी का बगीचा और बाद में एक मधुमक्खी पालन का छत्ता लगाया, जन्हिें उन्होंने बाड़ से घेर लयिा। सराफमि के पास ही, अन्य सारोव के एकांतवासी रहते थे, और आसपास का पूरा क्षेत्र—जसिमें वभिन्नि पहाड़यिाँ, जंगल और झाड़यिों से भरी हुई, तथा एकांतवासयिों की कुटयिाँ शामलि थीं—पवत्रि माउंट अथोस जैसा प्रतीत होता था। इसी कारण, रेवरेंड फादर ने अपनी सुनसान पहाड़ी का नाम 'माउंट अथोस' रखा, और जंगल के अन्य सबसे एकांत स्थानों को वभिन्नि पवत्रि स्थानों के नाम दिए: यरूशलेम, बेथलहम, यॉर्डन, देवदारों की धारा, गोलगोथा, जैतून का पहाड़, और माउंट टाबोर – मानो उद्धारकर्ता के सांसारकि जीवन के पवत्रि घटनाओं को जीवंत करने के लिए, जनिके प्रत उन्होंने अपनी इच्छा और अपना संपूर्ण जीवन पूर्ण रूप से समर्पति कर दयिा था। पवत्रि सुसमाचार के पाठ का लगातार अभ्यास करते हुए, उन्हें इन स्थानों पर उनके नामों से संबंधति सुसमाचार की घटनाओं को पढ़ना वशिेष रूप से पसंद था। बेथलहम में अपने बगीचे में, वह सुसमाचार का भजन गाते थे: **'महानतम में परमेश्वर की महमिा, और पृथ्वी पर शांत, और मनुष्यों में प्रीत!'**[517] । सारोवका के कनिारे, जैसे यॉर्डन के कनिारे पर, वह संत यूहन्ना बपतस्मिादाता के उपदेश और उद्धारकर्ता के बपतस्मिा को याद करते थे। उन्होंने सारोवका के पास एक पहाड़ पर नौ धन्यवचन संबंधी प्रभु का पर्वत उपदेश सुना, जबक एक अन्य पहाड़ी पर, जसिे रूपांतरण का पर्वत कहा जाता है, उन्होंने शष्यिों की संगत में होने की भाँत रूपांतरति प्रभु की महमिा पर मनन कयिा। घने जंगल की झाड़यिों में गहराई तक जाते हुए, वह सुसमाचार से, प्रभु की उस प्रार्थना को याद करते थे जो '[518] ' (पीने के लिए दयिा गया प्याला) के बारे में थी, और उनके आंतरकि दुखों से गहराई से प्रभावति

---

[515] 2 सतिंबर 1793 को, तम्बोव के बशिप थयिोफलिस ने मठ के अधीक्षकों की सफिारशि पर—जन्हिोंने स्पष्ट रूप से देखा था क फिादर सेराफमि, अपने तपस्वी श्रमों के कारण, अन्य भाइयों से असीम रूप से श्रेष्ठ थे और इसलिए धार्मकि मंत्रालय के उच्चतम रैंकों में पदोन्नत होने में प्राथमकिता के पात्र थे—

[516] यह 20 नवंबर (सारोव हर्मटिेज में आदरणीय के आगमन का दनि) 1794 को हुआ। आज भी, संस्थापक, एल्डर इसाया द्वारा हस्ताक्षरति, आदरणीय सेराफमि को उनकी हर्मटि की कोठरी में नर्बिाध नविास के लिए जारी की गई अनुमत की एकमात्र प्रत सारोव हर्मटिेज में संरक्षति है। इस अनुमत पित्र का पाठ इस प्रकार है: 'इस दस्तावेज़ के धारक, सारोव हर्मटिेज के हएिरोमोंक सेराफमि को, समुदाय में रहने में असमर्थ होने के कारण, बीमारी (जो अपनी कोठरी में अखंड जागरण के परणिामस्वरूप हुई, चर्च की सेवाओं में नरिंतर उपस्थति और कई वर्षों तक रात में बहुत कम आराम के साथ खड़े रहने के कारण; रेगस्तिान के लिए प्रस्थान से पहले, सेराफमि बीमार पड़ गए; उनके पैरों में सूजन आ गई और उन पर छाले नकिल आए, जसिसे कुछ समय के लिए वे पवत्रि अनुष्ठान करने में असमर्थ हो गए। यह बीमारी उनके तपस्वी जीवन के चुनाव में एक महत्वपूर्ण कारक थी, उनके उत्साह (अर्थात्, उनके वशिेष, असाधारण मठवासी तप, जसिके लिए मौन और एकांत की आवश्यकता थी) और कई वर्षों के प्रलोभन के बाद (प्रलोभन, मठ का परीक्षण) उस मठ और रेगस्तिान में, उसे केवल ईश्वर में मन की शांत के लिए, और पवत्रि पतिाओं के प्रावधानों के अनुसार उसे दिए गए नयिम के अनुसार रहिा कयिा गया, अब से कोई भी उसे एक ही स्थान पर रहने से नहीं रोक सकता, और मैं hereby इसकी पुष्ट करता हूँ – नर्मिाता, हायरओिमोंक इसाया, 20 नवंबर 1797। मैं प्रामाणकिता के प्रतीक के रूप में अपनी मुहर लगाता हूँ।

[517] बेथलहम के चरवाहों के लिए स्वर्गदूतों का क्रसिमस स्तुतगिान। (लूका 2:14)।

[518] क्रूस पर चढ़ाए जाने से पहले गथ्समनी के बगीचे में।

होकर, अपनी मुक्ति के लिए आँसुओं भरी प्रार्थनाएँ करते थे। जिस स्थान को वे जैतून का पर्वत कहते थे, वहाँ उन्होंने स्वर्ग में मसीह के आरोहण और परमेश्वर के दाहिने हाथ पर उनके विराजमान होने की महिमा पर मनन किया।

आदरणीय सेराफिम हमेशा वही सादे, यहाँ तक कि फिटे-पुराने कपड़े पहनते थे: सिर पर एक पुराना कामेलॉक्सियन, कंधों पर एक आधा-काफ्तान जो सफेद लिनेन के चोगे जैसा था, हाथों में चमड़े के दस्ताने, और पैरों में चमड़े के मोज़े और जूते; उनके चोगा से हमेशा वही क्रूस लटका रहता था जिससे उनकी माँ ने एक बार उन्हें आशीर्वाद दिया था जब उन्होंने उन्हें घर से पवित्र मठ भेजा था, जबकि उनके कंधों पर एक थैला लटका रहता था जिसमें तपस्वी हमेशा पवित्र सुसमाचार रखते थे, जो उन्हें लगातार मसीह के धन्य जुए और हल्के बोझ के उद्धारकारी स्वरूप की याद दिलाता था। उनका सारा समय अनवरत प्रार्थना और भजन-पाठ, पवित्र ग्रंथों के अध्ययन और शारीरिक श्रम में बीतता था।

ठंड के मौसम में, पूजनीय संत अपनी छोटी सी कुटिया को गर्म करने के लिए टहनियाँ और झाड़-झंखाड़ इकट्ठा करते और अपनी छोटी कुल्हाड़ी से लकड़ी काटते थे। गर्मियों में, वे अपने छोटे से सब्ज़ी के बगीचे में काम करते थे, जिसे वे स्वयं जोतते और खाद देते थे, और जिसके उपज पर वे अधिकांश रूप से जीवित रहते थे। मिट्टी में खाद डालने के लिए, वे गर्मियों के गर्म दिनों में दलदली इलाकों में जाकर काई इकट्ठा करते थे, – और चूंकि वह इन जगहों में नग्न जाता था, उसके कमर में केवल एक लंगोटी बंधी होती थी, दलदल पर मंडराने वाले मच्छर और अन्य कीड़े बेरहमी से उसके शरीर को काटते थे, जिससे वह अक्सर न केवल सूज जाता था, बल्कि नीला भी पड़ जाता था और उस पर खून के पपड़े जम जाते थे। लेकिन ईश्वर के इस तपस्वी ने स्वेच्छा से इन पीड़ादायक घावों को सहन किया, प्रभु के लिए, और उन पर इस लिए भी प्रसन्न होता था क्योंकि, जैसा कि उसने बाद में कहा, 'वासनाएँ पीड़ा और दुख से समाप्त होती हैं, चाहे वे स्वयं द्वारा दी गई हों या ईश्वर की इच्छा से भेजी गई हों', और इसलिए, आत्मा के सबसे पूर्ण और निश्चित शुद्धिकरण के लिए, उसने स्वयं पर स्वेच्छा से पीड़ाएँ लीं। इस प्रकार काई इकट्ठी करके, परमेश्वर के उस जन ने क्यारियों में खाद डाली, बीज बोए, उन्हें पानी दिया, खरपतवार निकाले और सब्जियों की कटाई की, निरंतर परमेश्वर की महिमा करते हुए और पवित्र भजनों के गायन में अपनी शांत, पवित्र आनंद को उंडेलते हुए, जिनके द्वारा वह अपनी शारीरिक मेहनत की एकरूपता के बीच अपनी आत्मा को ताज़गी और बल प्रदान करता था। तीव्र स्मरणशक्ति के धनी और बचपन से ही चर्च की सेवाओं में श्रद्धापूर्वक ध्यान देने वाले, सराफिम को चर्च के अनेक भजन कंठस्थ थे, जिन्हें वह अपने शांत, एकांत रेगिस्तान में काम करते समय गाना पसंद करते थे; वास्तव में, उनके परम पूजनीय पिता के कुछ सबसे करीबी लोगों ने देखा कि इनमें से कई भजन उस स्थान और उनके एकांतिक मठवासी जीवन के लिए विशेष रूप से उपयुक्त थे। इस प्रकार, संत सेराफिम अक्सर **'सार्वभौमिक महिमा'**[519] गाना विशेष रूप से पसंद करते थे, जो ईश्वर की माता के सम्मान में था, जिन्हें वह अपने रेगिस्तान की संरक्षक मानते थे, – **'मरुभूमिवासियों की अनवरत दैवी इच्छा व्यर्थ की दुनिया से अलग रहना है'**[520] – एक ऐसा भजन जो मरुभूमि के जीवन को दर्शाता है और संन्यासी की आत्मा को दैवीय विषयों की ओर उठाता है, साथ ही ऐसे भजन जो मानव आत्मा को ईश्वर के प्रेम के महान कार्य, दुनिया और मानवता की रचना की ओर उठाते हैं, जैसे: **'सभी सत्य उनमें पाया जाता है जो इसे धारण करते हैं, वचन द्वारा सृजित, आत्मा द्वारा पूर्ण किया** गया'[521] , **'अपनी आज्ञा से इस अपवित्र पृथ्वी पर अवतरित हो'**[522] , और इसी तरह।

और इस प्रकार, इस प्रार्थनापूर्ण परिश्रम के बीच, जब कहीं सब्ज़ी के बगीचे, मधुमक्खी के छत्ते या जंगल में काम में लगे होते, तो रेवरेंड फादर आध्यात्मिक रहस्यों के चिंतन में इतने गहरे डूब जाते कि, बिना एहसास के, वे अपना काम बंद कर देते; उनके हाथों से औजार गिर जाते, उनकी बाहें लटक जातीं, और उनकी आँखें उनके चेहरे पर आत्म-लीनता की एक विशेष, अनुग्रह-पूर्ण अभिव्यक्ति प्रदान करतीं। एल्डर अपनी पूरी आत्मा के साथ तल्लीन हो जाते थे, उनका मन स्वर्ग की ओर उठता और ईश्वर के चिंतन में ' ' में प्रसन्न होता था। और यदि ऐसे क्षणों में कोई पास से गुजरता या आसपास होता, तो कोई भी रेवरेंड की धन्य शांति और शांति को भंग करने की हिम्मत नहीं करता था, और हर कोई चुपचाप उनसे दूर चला जाता था। हर वस्तु में, हर क्रिया में, सेराफिम को आध्यात्मिक जीवन से उनका गहरा संबंध दिखाई देता था; इससे उन्होंने सीख ली और अपनी आध्यात्मिक दृष्टि को ऊँचा उठाया। इस प्रकार, लकड़ी काटते समय, एक या तीन वार करने के बाद, वे त्रिमूर्ति में महिमामय एक ईश्वर के महान रहस्य के चिंतन में डूब जाते थे।

---

[519] संध्या समय पर परमेश्वर की माता के लिए रविवार का भजन (धर्मनिरपेक्ष) – प्रथम स्वर।

[520] मैटिन्स में दूसरा रविवार का एंटिफोन, पहला स्वर

[521] रविवार के कैनन का इरमोस 3, स्वर 3।

[522] रविवार के कैनन का इरमोस 3, 8वां स्वर।

अपने शारीरकि श्रम के अलावा, पूजनीय सेराफमि ने आध्यात्मकि पूर्णता में और भी ऊँचा उठने के लिए, मन और हृदय के उच्चतम प्रयासों को समर्पति कयिा, और कई कतिाबें पढ़ीं, वशिेष रूप से पवत्रि धर्मग्रंथ, साथ ही पवत्रि पतिाओं के कार्य[523] और पूजा-संबंधी ग्रंथ। उनके लिए सबसे पहली कतिाब पवत्रि सुसमाचार थी, जसिे वे कभी अपने से अलग नहीं करते थे, और हर समय अपने साथ रखते थे। उनके तपस्वी जीवन, हृदय की पवत्रिता, ईश्वर के साथ प्रार्थनापूर्ण संवाद, आध्यात्मकि आत्मनरीक्षण और पवत्रि धर्मग्रंथों तथा शकि्षाप्रद पुस्तकों के वशिाल ज्ञान ने उनके मन को ऐसी प्रकाशमानता से भर दयिा कि उन्होंने अपने पूरे प्राणों से ईश्वर के वचन के अर्थ को स्पष्ट रूप से समझा और आत्मसात कयिा। उन्होंने रेगस्तिान में अपने लिए यह एक स्थायी नयिम बनाया कि वे प्रतदिनि पढ़ें, और सुसमाचार तथा पत्रों के कुछ अंशों की स्वयं व्याख्या करें। बाद में उन्होंने कहा, 'आत्मा को परमेश्वर के वचन से पोषण मलिना चाहएि: क्योंकि परमेश्वर का वचन स्वर्गदूतों का भोजन है, और इसी से परमेश्वर के लिए भूखी आत्माओं को पोषण मलिता है। सबसे बढ़कर, नए नयिम और भजन संहति को पढ़ने का अभ्यास करना चाहएि। पवत्रि शास्त्र को पढ़ने से मन को ज्ञान की प्राप्ति होती है, जो इससे एक दव्यि परविर्तन से परविर्तति हो जाता है। व्यक्ति को इस तरह से स्वयं को प्रशकि्षति करना चाहएि कि मन, मानो, प्रभु के वधिान में तैरता रहे, जसिके मार्गदर्शन से उसे अपना जीवन व्यवस्थति करना चाहएि। एकांत में ईश्वर के वचन को पढ़ना और पूरी बाइबलि को सोच-समझकर पढ़ना बहुत फायदेमंद है। केवल इसी एक अभ्यास के लिए, अन्य अच्छे कर्मों के अतरिक्ति, प्रभु कसिी व्यक्ति से अपनी दया नहीं रोकेंगे, बल्कि उन पर समझ का वरदान प्रदान करेंगे।' और पवत्रि वृद्ध ने, ईश्वर के वचन को पढ़ने के अपने अनवरत अभ्यास के माध्यम से, अपने लिए समझ का यह अनुग्रह-पूर्ण वरदान प्राप्त कयिा, और साथ ही – मन की शांति और हार्दकि कोमलता का परम उपहार। पवत्रि शास्त्र में, उन्होंने केवल सत्य ही नहीं, बल्कि आत्मा की ऊष्मा भी खोजी; और अक्सर, पवत्रि पाठ में लगे रहने के दौरान, उनकी आँखों से कोमलता के आँसू बहते थे—ऐसे आँसू जो, स्वयं वरष्ठि के अनुसार, एक व्यक्ति को पूरी तरह से ऊष्मा प्रदान करते हैं और उन्हें ऐसे आध्यात्मकि उपहारों से भर देते हैं जो कसिी भी शब्द से अधकि मन और हृदय को आनंदति करते हैं।

हर दनि, रेवरेंड फादर आदेश के भजन-संग्रह के अनुसार मठवासी प्रार्थना नयिम का पालन करते थे, और शुरुआती ईसाई मरुभूमि के संतों की प्रथा का अनुसरण करते थे; उचति समय पर, वे प्रथम, तृतीय, षष्ठ और नवम घंटे, वेस्पर्स, स्मॉल कम्प्लाइन, और सोने से पहले की प्रार्थनाएँ गाते और पढ़ते थे; इसके अलावा, वे अक्सर शाम की सेवा के स्थान पर, एक साथ एक हजार प्रणाम करते थे, मध्यरात्रि कार्यालय और अन्य चर्च सेवाएँ करते थे। प्रार्थना के सभी रूपों और स्तरों का अनुभव करने के बाद, वे न केवल तथाकथति 'बौद्धकि प्रार्थना' की उपलब्धि पर पहुँचे, बल्कि पृथ्वी पर प्रार्थनात्मक चतिन के सर्वोच्च शखिर पर भी पहुँचे, जब मन और हृदय प्रार्थना में एक हो जाते हैं, वचिार बखिरे नहीं होते हैं, और हृदय आध्यात्मकि गर्माहट से भर जाता है, जसिमें मसीह का प्रकाश प्रकट होता है, जो पूरे अंतर्मन को शांति और आनंद से भर देता है।

इस प्रकार, रेगस्तिान में सप्ताह बतिाने के दौरान, संत सेराफमि रवविार और पर्वों की पूर्व संध्या पर सारोव मठ आते थे, वेस्पर्स, ऑल-नाइट वजिलि या मैटनि्स में भाग लेते थे, और प्रारंभकि लटिर्जी के दौरान पवत्रि कम्युनयिन ग्रहण करते थे, जसिके बाद, वेस्पर्स तक, वे अपने पास अपनी ज़रूरतों के लिए आने वाले भाइयों का स्वागत करते थे, और फरि, सप्ताह के लिए पर्याप्त रोटी लेकर, वे अपनी तपस्वी कुटयिा में लौट जाते थे। उन्होंने महा-तपस्या (Great Lent) का पूरा पहला सप्ताह मठ में बतिाया, और उन दनिों में उन्होंने उपवास कयिा, पाप-स्वीकृति की और पवत्रि कम्युनयिन ग्रहण की।

धन्य वृद्ध ने अपने तपस्वी प्रयासों को प्रार्थना के साथ-साथ महान संयम और उपवास के साथ जोड़ा। मरुभूमि में अपने तपस्वी जीवन की शुरुआत में, वह बासी, सूखी रोटी पर गुज़ारा करते थे, जसिे वह रवविार को मठ से पूरे सप्ताह के लिए अपने साथ लेते थे; फरि भी, इस रोटी की मात्रा में से भी, वह मरुभूमि के जंगली जानवरों और पक्षयिों के लिए एक अच्छा हसि्सा अलग रख देते थे, जो उनसे बहुत प्यार करते थे और अक्सर उस जगह पर आते थे जहाँ वह अपने प्रार्थना के कार्य करते थे। उस वृद्ध ने तो जंगली जानवरों में भी श्रद्धा भर दी थी। उदाहरण के लिए, एक वशिाल भालू अक्सर उसके पास आता था, और वह उसे खाना खलिाता था; उसके कहने पर, भालू जंगल में चला जाता और फरि वापस आ जाता,

[523] वशिेष रूप से ऐसे ही थे पवत्रि पतिाओं के तपस्वी कार्य, जैसे कि संत जॉन क्लाइमैकस और अबा बार्सानुफयिस, एफ्रेम और इसाक द सीरयिन, संत मार्गरेट (मुख्य रूप से संत जॉन क्रसिोस्टोम के कार्यों से मलिकर बनी) और अन्य के कार्य

और वह वृद्ध उसे खाना खिलाता था और कभी-कभी अपने आगंतुकों को भी उसे खाना खिलाने देता था। बाद में, पूजनीय सेराफिम ने अपने उपवास को और भी कड़ा कर दिया, वे रोटी तक भी नहीं खाते थे, और उन्होंने अपने शरीर को इतनी संयम की शिक्षा दी कि, प्रेरित के शब्दों में, **उन्होंने 'अपने हाथों से काम किया'** (1 कुरिन्थियों 4:12) - वे केवल अपने बगीचे की सब्जियों पर ही जीवित रहे। महान उपवास के पहले सप्ताह के दौरान, उन्होंने शनिवार को पवित्र सहभाग प्राप्त करने तक बिल्कुल भी कुछ नहीं खाया। मठ से रोटी लेना पूरी तरह से बंद कर देने के बाद, वह ढाई साल से अधिक समय तक इसके किसी भी सहारे के बिना जीवित रहे, और भाई लोग इस बात से हैरान थे कि बड़े भाई इस पूरे समय, न केवल गर्मियों में बल्कि सर्दियों में भी, क्या खाकर जीवित रहे होंगे; अपनी मृत्यु से ठीक पहले ही वृद्ध ने कुछ करीबी सहयोगियों को बताया कि लगभग तीन वर्षों से वह केवल 'स्नटिी' ([524]) नामक जड़ी-बूटी से बने काढ़े पर ही जीवित थे, जिसे वह गर्मियों में इकट्ठा करते थे और सर्दियों के लिए सुखाते थे।

इस बीच, कई लोगों ने उस धन्य तपस्वी की मौनता भंग करनी शुरू कर दी, वे अक्सर आध्यात्मिक मार्गदर्शन और सांत्वना के लिए उसके पास आते रहे। सारोव मठ समुदाय के कई सदस्य उनसे सलाह और मार्गदर्शन के लिए आते थे, या केवल उन्हें देखने के लिए। लोगों को पहचानने और परखने में सक्षम, वृद्ध कुछ लोगों से मुंह फेर लेते और मौन रहते। लेकिन जिनकी वास्तविक आध्यात्मिक आवश्यकता होती, उन्हें वे सहजता से स्वागत करते और अपनी सलाह, निर्देश और आध्यात्मिक वार्तालापों के साथ प्रेमपूर्वक मार्गदर्शन करते। उदाहरण के लिए, उनके नियमित आगंतुक स्कीमामोंक मार्क और हाइरोडीकन अलेक्जेंडर थे[525] : फिर भी वे भी, जब कभी वे वृद्ध को ईश्वर के ध्यान में पूरी तरह से मग्न पाते, तो उनकी शांति भंग करने की हिम्मत नहीं करते थे; वे या तो उनके प्रार्थनापूर्ण कार्य समाप्त होने तक प्रतीक्षा करते या, कुछ देर प्रतीक्षा करने के बाद, चुपचाप वृद्ध की उपस्थिति से हट जाते थे। रेवरेंड फादर बाहरी आगंतुकों को भी स्वीकार करते थे। हालाँकि, यदि अपने तपस्वी के कोठरी के बाहर, बड़े भाई अचानक जंगल में किसी से मिलते, तो वे आमतौर पर बातचीत किए बिना, नम्रता से उन्हें प्रणाम करके चले जाते; क्योंकि, जैसा कि उन्होंने बाद में अपनी शिक्षाओं में कहा, किसी ने भी कभी चुप्पी पर पछतावा नहीं किया है। लेकिन आम तौर पर, सेराफिम को अपने मौन को भंग करने वाले आगंतुक बोझ लगते थे। यह उनके लिए विशेष रूप से तब मुश्किल होता था जब महिलाएँ उनसे मिलने आती थीं; फिर भी, वह उन्हें उपदेश देने से इनकार नहीं कर सकते थे, क्योंकि वे ऐसा करना ईश्वर को अप्रिय मानते थे। तभी पवित्र वृद्ध ने, इस सामान्य आधार पर कि महिलाओं को एथोस के पवित्र पर्वत में प्रवेश वर्जित था, इस प्रतिबंध को अपनी ही पहाड़ी तक बढ़ाने का निश्चय किया, जिसका उन्होंने उसी पर्वत के नाम पर नामकरण किया था। एक बार जब दिव्य लिटिर्जी (ईश्वर की पूजा) का आयोजन चल रहा था, तब सेराफिम मठ में आए और उन्होंने सारोव के संस्थापक, वृद्ध इसाया से इसके लिए आशीर्वाद माँगा, जिन्होंने कुछ हिचकिचाहट के बाद[526] , उन्हें 'धन्य गर्भ'[527] के नाम से जानी जाने वाली ईश्वर की माता की एक प्रतिमा के साथ आशीर्वाद दिया। साथ ही, वरिष्ठ सेराफिम ने ईश्वर और परमेश्वर की अति पवित्र माता से एक भावुक प्रार्थना की, कि उनकी इच्छा पूरी हो और पहाड़ी पर स्थित उनके आश्रम में महिलाओं के प्रवेश पर प्रतिबंध लगाया जाए, ताकि यह न केवल कुछ भाइयों के लिए, बल्कि और भी अधिक सामान्य लोगों के लिए, एक ठोकर या प्रलोभन का कारण न बने; इस अनुरोध के संबंध में ईश्वर की कृपा के संकेत के रूप में, उन्होंने सरॉव में मसीह के जन्म के उत्सव से अपने आश्रम लौटते समय, एक पेड़ की टहनियों के उनके पास से गुजरते समय झुक जाने के रूप में एक संकेत माँगा। और इसलिए, जब 26 दिसंबर की रात वे दिव्य लिटिर्जी में भाग लेने के लिए सरॉव के लिए रवाना हुए, जिस जगह पर जमीन तीव्र ढलान पर थी, वहां पहुंचने पर, उन्होंने देखा कि रास्ते के दोनों ओर सदियों पुराने

---

[524] रूस में व्यापक रूप से पाया जाने वाला एक जड़ी-बूटी वाला पौधा, जो भूमिगत जड़ों के माध्यम से प्रचुर मात्रा में फैलता है; अधिकांशतःयह एक खरपतवार है और इसके पोषण मूल्य बहुत कम हैं, लेकिन इसका उपयोग कुछ बीमारियों के इलाज के लिए लोक चिकित्सा में किया जाता है, जबकि इसके युवा पत्तों का कभी-कभी सब्जी स्टू में सब्जी के रूप में उपयोग किया जाता है।

[525] पहले वाले महीने में लगभग दो बार उनसे मिलने आते थे, जबकि दूसरे वाले एक बार आते थे। परम पूज्य सेराफिम आत्मा के उद्धार से संबंधित विभिन्न विषयों पर उनसे बातचीत करके प्रसन्न होते थे।

[526] जैसे ही उन्होंने रेवरेंड सेराफिम को आशीर्वाद दिया, यशायाह ने हैरानी से कहा: 'लेकिन मैं पाँच वर्स्ट दूर से कैसे पहरा दूँ ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि महिलाएँ प्रवेश न करें?' लेकिन सेराफिम ने विश्वास और दृढ़ निश्चय के साथ जवाब दिया: 'आपको बस मुझे आशीर्वाद देना है, और उनमें से कोई भी मेरे पहाड़ पर नहीं चढ़ेगा।'

[527] यह आइकन, सुसमाचार के अंश (लूका 11:27) के नाम पर रखा गया है: 'धन्य है वह गर्भ जिसने आपको जन्म दिया, और वे स्तन जिन्होंने आपको पाल पोस कर बड़ा किया', यह वाक्यांश सर्व संतों के रविवार और 26 दिसंबर को गाया जाता है, ठीक उसी दिन जिस दिन वृद्ध सेराफिम ने मठ के निर्माता यशायाह से आशीर्वाद माँगा था, ताकि पहाड़ पर उनके आश्रम में महिलाओं को प्रवेश न करने दिया जाए।

चीड़ के पेड़ों की वशिाल शाखाएं गरिकर रास्ता जाम कर रही थीं, जो उनकी कुटयिा तक जाने का रास्ता रोक रही थीं, जबकि पछिली शाम वहां ऐसा कुछ भी नहीं था। तब पवत्रि एल्डर, ईश्वर के प्रतगिहरी कृतज्ञता से भरकर, घुटनों के बल झुक पड़े, यह समझकर कि जो हुआ वह प्रभु को भाया था। और उन्होंने स्वयं ही अपनी कुटयिा तक जाने वाले रास्ते को लट्ठों से बंद कर दयिा, और तब से, न केवल महलिाओं के लिए बल्कि आम तौर पर बाहरी लोगों के लिए भी उनके पास जाना पूरी तरह से बंद हो गया।

महान वृद्ध द्वारा ऐसे कारनामों को देखकर, मानव जाति का प्राचीन शत्रु हर तरह के प्रलोभनों और चालाकयिों से लैस होकर उनके वरिुद्ध हो गया। इस प्रकार, उसने तपस्वी में वभिन्नि भय उत्पन्न कएि: कभी-कभी दरवाज़ों के पीछे से एक जंगली जानवर की दहाड़ जैसी आवाज़ सुनाई देती; तो कभी ऐसा लगता कि लोगों का एक समूह उसकी कोठरी का दरवाज़ा तोड़ रहा है, दरवाज़े के फ्रेम उखाड़ रहा है, संत पर लकड़ी का एक टुकड़ा फेंक रहा है, और इसी तरह की हरकतें कर रहा है; दनि के समय कभी-कभी, लेकनि वशिेष रूप से रात में, जब आदरणीय एल्डर सेराफमि प्रार्थना में लगे होते थे, तो उन्हें अचानक ऐसा लगता था कि जैसे उनकी कोठरी ढह रही हो और भयानक जानवर चारों ओर से एक प्रचंड गर्जना के साथ घुस रहे हों; अन्य समयों में, उनके सामने अचानक खुले ताबूत प्रकट हो जाते थे, जनिमें से मृतक उठ खड़े होते थे। और जब, बाद में, एक सामान्य व्यक्ति ने, अपने हृदय की सादगी में, उनसे पूछा, 'फादर, क्या आपने दुष्ट आत्माओं को देखा है?', तो उन्होंने मुस्कुराते हुए जवाब दयिा, 'वे घृणति हैं - जैसे एक पापी के लिए एक देवदूत के प्रकाश को देखना असंभव है, वैसे ही राक्षसों को देखना भी भयानक है, क्योंकि वे घृणति हैं।' लेकनि इन सभी भयानक दृश्यों, भयावहता और प्रलोभनों पर, जो कभी-कभी शारीरकि पीड़ा के साथ होते थे, धन्य एल्डर ने प्रार्थना की तीव्रता से वजिय प्राप्त की और प्रभु के सम्मानति और जीवन-दायक क्रूस की शक्ति से उन पर काबू पाया। एक से अधकि अवसरों पर, एल्डर सेराफमि को महत्वाकांक्षा की भावना से परीक्षा हुई, जब उन्हें वभिन्नि मठों के एबॉट और आर्कमैंड्राइट के रूप में नामति कयिा गया था[528] ; लेकनि ऐसे अवसरों पर उन्होंने गहरी वनिम्रता से युक्त अटूट दृढ़ता के साथ इन नयिुक्तयिों को हमेशा अस्वीकार कर दयिा, और वे सच्ची तपस्या के लिए प्रयासरत रहे तथा अपने मठवासी जीवन में केवल अपनी और अपने पड़ोसयिों की आत्मा के उद्धार की ही कामना की।

पवत्रि एल्डर की वनिम्रता और बुद्धि को देखकर, शैतान ने उनके खलिाफ एक भयंकर मानसकि युद्ध छेड़ा[529] , और उसे इतनी ताकत से जारी रखा कि कुछ महान तपस्वी भी उसमें गरि गए थे। फरि एल्डर सेराफमि, गहन संकट की अवस्था में, उन्होंने हमारे उद्धार के कर्ता, प्रभु यीशु मसीह और उनकी परम पवत्रि कुंवारी माता के प्रति हार्दकि प्रार्थना की; और साथ ही, शैतान की युक्तयिों को दूर करने और नष्ट करने के लिए, प्राचीन ईसाई स्टाइलाइट्स के उदाहरण का अनुसरण करते हुए, प्रार्थना के एक नए और सर्वोच्च तपस्वी कार्य को करने का संकल्प लयिा। रात में, कसिी के भी देखने से दूर, घने जंगल के बीचों-बीच, वह अपनी प्रार्थना को और गहन करने के लिए एक ऊँची ग्रेनाइट की चट्टान पर चढ़ जाता था, और वहाँ लंबे समय तक खड़े होकर या घुटने टेककर, अपने प्राणों की गहराई से कर-संग्रहकर्ता की प्रार्थना पुकारकर करता था:

'हे **ईश्वर, मुझ पापी पर दया करो!**'

अपनी कोठरी में, इस नए स्तंभवासी ने एक छोटा सा पत्थर भी रखा, जसि पर वह सुबह से शाम तक प्रार्थना करता था, और उस पत्थर का उपयोग केवल पूरी तरह से थक जाने पर आराम करने या थोड़े से भोजन से स्वयं को संबलति करने के लिए करता था। इस महान पराक्रम में, पूजनीय सेराफमि ने एक हजार दनि और एक हजार रातें बतिाईं। शत्रु अंततःपरास्त हो गया, और आध्यात्मकि संघर्ष समाप्त हो गया। लेकनि प्रार्थना के ऐसे असाधारण पराक्रम और लगभग तीन वर्ष तक खड़े रहने के परणिामस्वरूप, संत अत्यधकि शारीरकि थकान की स्थति में पहुँच गए और उनके पैरों पर

---

[528] इस प्रकार, पूजनीय सेराफमि को अलात्यर शहर (सबिरिस्क गवर्नरेट का एक जलिा शहर) में आर्चमैंड्राइट के पद पर पदोन्नत होकर मठाध्यक्ष नयिुक्त कयिा गया; क्योंकि, एक ओर, सारोव आश्रम ने अपने भाइयों में से बार-बार अन्य मठों को अच्छे मठाध्यक्ष प्रदान कएि थे, और दूसरी ओर, धार्मकि अधकिारी वृद्ध सेराफमि को जानते थे और समझते थे कि कई लोगों के लिए ऐसे वृद्ध का कसिी मठ का मठाध्यक्ष बनना कतिना लाभकारी होगा। एक अन्य अवसर पर, सेराफमि को क्रास्नोस्लोबोडस्की स्पास्की मठ का नरि्माता नयिुक्त कयिा गया था। लेकनि दोनों ही मामलों में, वृद्ध की गंभीर अनुरोध पर और मठवासी समुदाय के पारस्परकि प्रेम और सहमति से, उनकी जगह सारोव के अन्य भकि्षुओं को नयिुक्त कर दयिा गया।

[529] 'संघर्ष' एक मठवासी तपस्वी शब्द है जो उस लगातार और लंबे समय तक चलने वाले प्रलोभन को दर्शाता है, जसिके अधीन शैतान उन भकि्षुओं को करता है जो उसका वरिोध करते हैं। शैतान के खलिाफ इस संघर्ष के कारण, तपस्या की भाषा में भकि्षुओं को अक्सर 'आध्यात्मकि योद्धा' कहा जाता है।

गंभीर, दर्दनाक घाव हो गए, जो उनकी मृत्यु तक नहीं गए। और केवल तब, आखरिकार, उन्होंने स्तंभ पर खड़े रहने का अपना असहनीय रूप से कठनि कार्य बंद कयिा, जसिे प्राचीन काल में भी बहुत कम तपस्वयिों ने ही करने की हम्मिति की थी। फरि भी, बूढ़े की मृत्यु तक, प्रार्थना के इस असाधारण कार्य के बारे में कोई नहीं जानता था, जसिे उन्होंने लोगों की जज्ञिासु नजरों से छपिाने में कामयाबी हासलि की थी। आबाड नफिॉन, जो आदरणीय इसाया के उत्तराधकिारी थे, को टैम्बोव के बशिप महोदय से सेराफमि के बारे में एक गोपनीय पूछताछ मलिी, जसिका सारोव के आबाड ने उत्तर दयिा: 'हमें फादर सेराफमि के कारनामों और जीवन के बारे में पता है; लेकनि जहाँ तक उनके गुप्त कर्मों का सवाल है, जसिमें एक चट्टान पर 1,000 दनि और रात तक खड़े रहना शामलि है, कसिी को भी उनके बारे में पता नहीं था'[530] . और यह केवल उनके परमधाम गमन से कुछ समय पहले की बात थी कि पूज्य सेराफमि ने, कई अन्य तपस्वयिों के उदाहरण का अनुसरण करते हुए, सारोव के कुछ मठवासी समुदाय के सदस्यों को अपने जीवन की अन्य परस्थितियिों के साथ-साथ यह अद्भुत करतब सुनाया। तब उनके एक श्रोता ने टप्पिणी की कि यह करतब मानवीय शक्ति से परे था। इस पर, पवत्रि वृद्ध ने श्रद्धा की वनिम्रता के साथ उत्तर दयिा:

'संत समियिन द स्टाइलाइट अपने स्तंभ पर सैंतालीस वर्षों तक खड़े रहे: क्या मेरी कठोर तपस्या उनकी इस उपलब्धि के बराबर है?'

जब उनके संवाददाता ने टप्पिणी की कि वृद्ध ने उस समय नश्चिति रूप से अनुग्रह की सुदृढ़ सहायता महसूस की होगी, तो पूज्यनीय ने उत्तर दयिा:

'हाँ, अन्यथा मानवीय शक्ति पर्याप्त नहीं होती... मुझे इस स्वर्गीय वरदान से, जो प्रकाश के पति से ऊपर से उतरा था, आंतरकि रूप से बल मलिा और सांत्वना मलिी।'

फरि, एक संक्षप्ति वरिाम के बाद, उन्होंने जोड़ा:

'जब हृदय में कोमलता होती है, तो ईश्वर हमारे साथ होता है[531] ।'

अपमानति शैतान ने उस पवत्रि वृद्ध को रेगस्तिान से बाहर नकिालने के लिए उसके खलिाफ नई साजशिें रचनी शुरू कर दीं। उसने उसके पीछे दुष्ट लोगों को भेजा, जन्हिोंने जंगल में उस आदरणीय से मलिते ही उससे पैसे की मांग करनी शुरू कर दी, यह दावा करते हुए कि वे पैसे उन आम लोगों से मलि थे जो उन्हें देखने आए थे। पुरोहति ने उत्तर दयिा कि उन्हें कसिी से कोई पैसा नहीं मलिा है। लेकनि उन्होंने उनकी बात पर वश्विास नहीं कयिा, और एक दुष्ट ने उन पर झपट लगाई, लेकनि वह खुद ही गरि पड़ा। सराफमि में बहुत शारीरकि शक्ति थी और हाथ में कुल्हाड़ी लिए हुए, वह तीन लुटेरों से अपना बचाव कर सकता था। लेकनि उसे उद्धारकर्ता के वचन याद आए: **'जो कोई तलवार उठाएगा, वह तलवार से ही नाश होगा'** (मत्ती 26:52); और, कुल्हाड़ी नीचे रखकर, उसने अपनी छाती पर क्रॉस के आकार में अपने हाथ जोड़ लिए और नम्रता से कहा:

'जो तुम्हें करना है, करो।'

एक दुष्ट ने अपनी कुल्हाड़ी उठाई और वृद्ध के सरि पर कुल्हाड़ी के कुंद हस्सिे से इतनी ज़ोर से वार कयिा कि उसके मुँह और कानों से खून फूट पड़ा। पूजनीय सेराफमि बेहोश हो गए। दुष्टों ने कुल्हाड़ी के कुंद हस्सिे, लट्ठों, और अपने हाथों-पैरों से उन पर बेरहमी से पटिाई जारी रखी। अंत में, यह महसूस करते हुए कि वह अब सांस नहीं ले रहा था और यह मानकर कि वह मर चुका है, उन्होंने अपने अपराध को छपिाने के लिए उसके शरीर को नदी में फेंकने के इरादे से उसके हाथ-पैरों को रस्सयिों से बांध दयिा; वे स्वयं अपने कथति लूट के माल की तलाश में उस वृद्ध की कोठरी में घुस गए, लेकनि, कोठरी की अच्छी तरह तलाशी लेने, सब कुछ उलट-पुलट करने और तोड़-फोड़ करने के बाद, उन्हें एक पवत्रि प्रतमिा और कुछ आलू के अलावा कुछ नहीं मलिा। तब उन्हें इस बात का डर और पछतावा सताने लगा कि उन्होंने अपने कसिी लाभ के बनिा, ईश्वर के एक पवत्रि, सांसारकि मोह से परे रहने वाले व्यक्ति की हत्या कर दी थी, और वे घबराकर भाग

---

[530] अबॉट नफिोंट द्वारा इस ववरिण का एक मसौदा मठ के अभलिेखागार में संरक्षति है।

[531] जनि पत्थरों पर आदरणीय सेराफमि ने अपना तप कयिा था, वे आज भी संरक्षति हैं और उनकी मृत्यु के बाद कुछ समय तक वहीं पड़े रहे जहाँ वे थे। मठीय समुदाय और तीर्थयात्री इन्हें देखने के लिए इतनी बड़ी संख्या में उमड़ पड़े कि, सेराफमि हर्मटिेज में, पहले के पैदल रास्ते की जगह बाद में एक चौड़ी सड़क—जसि पर गाड़ियाँ चलती थीं—बना दी गई। कई लोगों ने उस चट्टान के टुकड़े तोड़ लिए और ले गए, जसि पर वरष्ठि सेराफमि प्रार्थना की मुद्रा में चट्टानों पर खड़े थे, जसिके कारण जंगल के गहरे हस्सिे में जहाँ रेवरेंड फादर ने प्रार्थना की थी, उस बड़ी चट्टान का अब केवल एक टुकड़ा ही बचा है, जो अब दव्यिेवो मठ में संरक्षति है; वह पत्थर जसि पर एल्डर ने अपनी कोठरी में प्रार्थना की थी, वह भी वहीं रखा है।

गए। इस बीच, सेराफमि को होश आने और कसिी तरह अपने हाथों की गाँठें खोलने के बाद, उन्होंने अपने हत्यारों की क्षमा के लिए ईश्वर से प्रार्थना की और बड़ी कठनिाई से रेंगते हुए अपनी कोठरी में वापस आ गए, जहाँ उन्होंने पूरी रात अत्यधकि पीड़ा में बतिाई। अगले दनि, बहुत अधकि प्रयास करके, वे लटिर्जी (प्रार्थना सभा) के लिए ठीक समय पर मठ पहुँच गए। वह भयानक दखि रहे थे: उनके बाल खून से लथपथ, उलझे हुए और धूल-मट्टिी से सने हुए थे; उनका चेहरा और हाथ बुरी तरह पटि हुए थे; उनके कान और मुँह खून से सने हुए थे; और उनके कई दाँत टूट गए थे। जब भाइयों ने, जो इस दृश्य से भयभीत थे, पूछताछ की, तो वरष्ठि मौन रहे; लेकनि, मठाधीश, वरष्ठि यशायाह, और मठ के पादरी को बुलाकर, उन्होंने उन्हें बताया कि क्या हुआ था। और इस प्रकार, शैतान की खुशी के लिए, सेराफमि को मठ में ही रहने के लिए मजबूर होना पड़ा। वह असहनीय पीड़ा सह रहा था और मुश्कलि से जीवति था, उसने सारा भोजन लेने से इनकार कर दयिा था। इस प्रकार आठ दनि बीत गए। फरि, उसके जीवन के लिए नराश होकर, उन्होंने डॉक्टरों को बुलाया, जन्होंने सेराफमि की जांच करने पर पाया कि उसकी खोपड़ी फट गई थी, उसकी पसलयिाँ टूट गई थीं, उसकी छाती कुचली गई थी, और उसका पूरा शरीर कई जगहों पर घातक घावों से ढका हुआ था; और वे इस बात पर हैरान थे कि एल्डर इतनी बुरी पटिाई के बाद कैसे जीवति रह सके। बड़े भाई की पीड़ा को कम करने के लिए क्या सबसे अच्छा कयिा जा सकता है, इस पर चर्चा करने के लिए, भाईगण उनकी कोठरी में इकट्ठा हुए। उसी समय, उन्होंने मठाधीश को भी बुलाया। और देखो तो – ठीक उसी क्षण जब यह खबर आई कि मठाधीश रास्ते में हैं, पूजनीय सेराफमि की चेतना चली गई और वे एक गहरी, हल्की, शांतपूर्ण नींद में पड़ गए। नींद में उसने एक अद्भुत दर्शन देखा, जो बहुत पहले देखे गए एक दर्शन के समान था, जब वह अभी एक नवसखिुआ था और घातक रूप से बीमार पड़ा था। परमेश्वर की अतपिवत्रि माता शाही बैंगनी वस्त्र पहनकर और स्वर्गीय महमिा से घरिी हुई उसके पास आईं; उनके पीछे प्रेरति पतरस और दार्शनकि यूहन्ना चल रहे थे। बीमार के बस्तिर के पास रुककर, परम पवत्रि कन्या ने अपने दाहनिे हाथ की उंगली से उस बीमार व्यक्ति की ओर इशारा कयिा और, अपने परम पवत्रि मुखमंडल को उस ओर मोड़ते हुए जहाँ डॉक्टर खड़े थे, कहा:

'तुम परश्रिम क्यों कर रहे हो?'

फरि, एक बार फरि वृद्ध सेराफमि की ओर मुड़कर, उन्होंने कहा:

'यह मेरी ही जाति का है!'

इसके बाद, वह दर्शन—जसिकी उपस्थति लोगों को कोई भनक तक नहीं थी—समाप्त हो गया; और जब मठाधीश कोठरी में प्रवेश कयिा, तो बीमार व्यक्ति को होश आ चुका था। फादर यशायाह ने उन्हें डॉक्टरों की सलाह और सहायता स्वीकार करने के लिए गंभीरता से और स्नेहपूर्वक मनाना शुरू कयिा। लेकनि मरीज ने, अपनी गंभीर स्थति और उस पर की गई सभी देखभाल के बावजूद, सभी को आश्चर्यचकति करते हुए, दृढ़ता से उत्तर दयिा कि अब वह लोगों से कोई मानवीय सहायता नहीं चाहता है, और उसने मठाधीश से वनिती की कि उसे अपना जीवन ईश्वर और परमेश्वर की अति पवत्रि माता को सौंपने की अनुमति दे दी जाए। मठाधीश वृद्ध की इच्छा पूरी करने के लिए ववािश हो गए; इस अद्भुत दैवीय दर्शन के बाद कई घंटों तक, वृद्ध अकथनीय, अलौककि आनंद से भर गए। फरि वृद्ध शांत हो गए और उन्हें अपनी बीमारी से राहत और अपनी शक्ति के धीरे-धीरे लौटने का अनुभव हुआ। थोड़ी ही देर बाद, वह बस्तिर से उठ चुका था, अपनी कोठरी में थोड़ा-थोड़ा चलने लगा, और शाम को कुछ भोजन कर लयिा। उसी दनि से, उसने फरि से, धीरे-धीरे, खुद को आध्यात्मकि प्रयासों में समर्पति करना शुरू कर दयिा।

जसि दनि वह बीमार पड़ा, वृद्ध लगभग पाँच महीने तक मठ में ही रहा। उसकी बीमारी ने उसे झुका हुआ कर दयिा था, एक ऐसी स्थति जो पहले भी ध्यान देने योग्य थी, जब एक बार लकड़ी काटते समय एक पेड़ के नीचे दब जाने के बाद वह झुक गया था। हालाँकि, संन्यासी का जीवन जीने की ताकत फरि से पा लेने के बाद, सेराफमि ने मठाधीश से रेगस्तिान लौटने की अनुमति देने का अनुरोध कयिा। वरष्ठि इसाया और अन्य भ्राताओं ने उनसे स्थायी रूप से मठ में ही रहने का आग्रह कयिा। लेकनि आदरणीय व्यक्ति ने दृढ़ता से उत्तर दयिा कि उस पर हुए जैसे हमलों को वह कोई महत्व नहीं देते, और जो भी अपमान उन पर हो, उसे मृत्यु तक सहन करने के लिए तैयार हैं। तब पति इसाइया ने उनकी इच्छा को आशीर्वाद दयिा, और सेराफमि अपनी तपस्वी कुटयिा में लौट आए।

कुछ ही समय बाद, उस साधु को पीटने वाले लुटेरे मलि गए; वे एक स्थानीय ज़मींदार, टाटशिचेव के दास थे। आदरणीय सेराफमि ने उन्हें प्रेमपूर्वक क्षमा कर दयिा और मठाधीश तथा ज़मींदार से उन्हें दंड न देने का आग्रह कयिा, यह घोषणा करते हुए कि अन्यथा वह सारोव मठ छोड़ देंगे और गुप्त रूप से अन्य दूरस्थ पवत्रि स्थानों पर चले जाएँगे। बड़भागी की वनिती पर, दुष्टों को क्षमा कर दयिा गया, लेकनि ईश्वर ने अपने सेवक के साथ उनके व्यवहार के लिए उन्हें

दंडति कयिा: कुछ ही समय बाद, एक भीषण आग ने उनके घरों को पूरी तरह से नष्ट कर दयिा। तब डाकू पश्चाताप करने लगे और, आँसू भरी आँखों से, पूजनीय सेराफमि से क्षमा और उनके पवत्रि प्रार्थनाओं के लिए वनिती करने लगे, और उनके आशीर्वाद से, सदाचारी जीवन के मार्ग पर लौट आए।

उनके महान कार्यों और दैवीय जीवन के लिए, पवत्रि वृद्ध को ईश्वर द्वारा दूरदर्शति का अनुग्रह-पूर्ण वरदान प्रदान कयिा गया था। फरि भी, उन्होंने मानवीय महमिा से और भी अधकि परहेज़ कयिा और मौन की तलाश की।

1806 में, सारोव मठ के मठाध्यक्ष, एल्डर इसाया, ने खराब स्वास्थ्य और वृद्धावस्था के कारण अपने कर्तव्यों से इस्तीफा दे दयिा, और भाइयों ने सर्वसम्मतसि पूजनीय सेराफमि को उनका उत्तराधकिारी चुना। लेकनि सेराफमि ने इस सम्मान को, अपनी गहरी वनिम्रता और मरुभूमि तथा एकांत के प्रतअिपने गहरे प्रेम, दोनों के कारण अस्वीकार कर दयिा। तब फादर नफिॉन को, जनि्हें सेराफमि बचपन से जानते थे, मठाधीश चुना गया। इस बीच, वृद्ध इसाया अपनी बीमारयिों और कमज़ोरी के कारण, आदरणीय सेराफमि से मलिने के लिए रेगस्तिान तक छह वर्स्ट पैदल चलने में असमर्थ थे; फरि भी, उनके साथ बातचीत करने के आराम से वंचति न रहने की इच्छा से, वे इस बात पर गहराई से दुखी थे। इसलिए, दोनों की शारीरकि दुर्बलता के कारण, भाइयों ने भक्तविश वृद्ध यशायाह को पूजनीय सेराफमि से मलिने के लिए आश्रम तक ले जाना शुरू कर दयिा। लेकनि जल्द ही, आध्यात्मकि जीवन में पूजनीय सेराफमि के सबसे प्रयि मत्रिों में से आखरिी व्यक्तभिी प्रभु के पास चले गए। इस क्षतसि सेराफमि को गहरा दुख हुआ, और उस समय से उन्होंने इस वर्तमान जीवन की क्षणभंगुरता, आने वाले जीवन और मसीह के अंतमि न्याय पर और भी अधकि गहराई और बार-बार चतिन करना शुरू कर दयिा। साथ ही, उन्होंने अपने हृदय के प्रयिजनों: धन्य पाचोमयिस, की आत्मा की शांतकि लिए वशिेष उत्साह के साथ प्रार्थना करना शुरू कर दयिा, जोसेफ और यशायाह; और, मठ के कब्रस्तिान से गुजरते हुए, वह हमेशा उनके लिए और सारोव के अन्य वरष्ठिों और तपस्वयिों के लिए उनकी कब्रों पर सर्वोच्च ईश्वर से भक्तपिूर्वक प्रार्थना करते थे, और उनकी प्रार्थनाओं के उत्साह और गरमिा के कारण उन्हें 'पृथ्वी से स्वर्ग तक अग्नमिय' कहते थे। वरष्ठि ने दूसरों से भी उन्हें अपनी प्रार्थनाओं में अधकि बार याद करने का आग्रह कयिा। इस प्रकार, उन्होंने एक परचिति नन को, जो अक्सर सारोव आती थी और सेराफमि को देखती थी, नम्निलखिति नर्दिेश दयिा:

'जब तुम मुझे मलिने आओ, तो कब्रों पर रुकना, तीन बार झुकना, ईश्वर से अपने सेवकों: इसाइयाह, पाचोमयिस, जोसेफ, मार्क और अन्य की आत्माओं को शांतदिेने के लिए कहना, और फरि अपने आप से कहना: "मुझे क्षमा करें, हे पवत्रि पतिाओं, और मेरे लिए प्रार्थना करें।"'

वरष्ठि इसाइया की मृत्यु के बाद, पूजनीय सेराफमि ने एक तपस्वी के रूप में अपने जीवन के तरीके को नहीं बदला, लेकनि उन्होंने मौन के कठनि कार्य को अपनाकर अपने तप को एक नया स्वरूप दयिा। यदरिेगस्तिान में कोई आगंतुक आता, तो वह उनसे मलिने बाहर नहीं नकिलता। यदवि ह स्वयं जंगल में कसिी से मलि जाता, तो वह जमीन पर लोट कर लेट जाता और उस व्यक्तकि गुजर जाने तक अपनी आँखें नहीं उठाता। वह लगभग तीन वर्षों तक ऐसी मौन में रहा। इस समय से ठीक पहले, उन्होंने रवविार और पर्व के दनिों में सारोव मठ जाने भी बंद कर दयिा था। एक भाई उनके आश्रम में भोजन लाता था, खासकर सर्दयिों में जब वृद्ध के पास अपनी कोई सब्जी नहीं होती थी। भोजन सप्ताह में एक बार, रवविार को लाया जाता था। जब वह भाई बरामदे में प्रवेश करता, तो एल्डर 'आमेन' कहकर अपने मन में ही कहते हुए, अपना सरि जमीन की ओर झुकाए हुए दरवाज़ा खोलते थे , और जब भाई चला जाता, तब एल्डर मेज़ पर रखी ट्रे पर एक छोटा सा रोटी का टुकड़ा या थोड़ी सी पत्तागोभी रख देते थे, यह संकेत देने के लिए कअिगले रवविार को उनके लिए क्या लाना है।

लेकनि ये सभी मौन के केवल बाहरी संकेत थे। वास्तव में, उस वरष्ठि के कठनि तपस्या प्रयास का सार सामाजकि जीवन से उनके बाहरी अलगाव में नहीं, बल्कमि न के मौन में, सभी सांसारकि वचिारों का त्याग करके स्वयं को ईश्वर को सबसे शुद्ध और पूर्ण रूप से समर्पति करने में नहिति था।

कई भाइयों को उस धन्य एल्डर के उनसे संगतत्यिागने और मौन का व्रत लेने पर गहरा खेद था, और कुछ तो उन्हें एकांत में चले जाने के लिए दोष देते भी प्रतीत हुए, जबकवि े भाइयों के साथ घनष्ठि संगतबिनाए रखकर, अपनी आत्मा के संस्कार को कसिी भी तरह की हानपिहुँचाए बनिा, वचन और उदाहरण दोनों से उन्हें उपदेश दे सकते थे। लेकनि इन सभी फटकारों का बुज़ुर्ग ने सम्माननीय इसाक द सीरयिन के शब्दों में उत्तर दयिा: 'दुनयिा में भूखों की तृप्तकि बजाय मौन की नष्क्रियिता से प्रेम करो'; और संत ग्रेगरी द थयिोलोजयिन के शब्दों में: 'ईश्वर के लिए धर्मशास्त्र में संलग्न होना अद्भुत है, लेकनि उससे भी बेहतर है यदकिोई व्यक्तईिश्वर के लिए स्वयं को शुद्ध करता है'।

और आदरणीय सेराफिम द्वारा की गई मौन की कठिन तपस्या ने उनके धर्मी आत्मा को सबसे उत्तम तरीके से शुद्ध और प्रबुद्ध किया, जिससे वे ईश्वर के चिंतन के रहस्यों में और भी ऊँचा उठ गए, और इस प्रकार संन्यासी के विरुद्ध अपने संघर्ष में शैतान को पूरी तरह से परास्त कर दिया। इस तपस्या प्रयास से सेराफिम को क्या आध्यात्मिक फल प्राप्त हुए, इसका स्पष्ट निर्णय संत के मौन पर दिए गए उपदेशों से लगाया जा सकता है, जो निस्संदेह उनके अपने अनुभव पर आधारित थे। 'जब हम मौन में रहते हैं,' बाद में आदरणीय सेराफिम ने कहा, 'तो शत्रु, शैतान, किसी व्यक्ति के हृदय की गहरी गहराइयों के विरुद्ध कुछ भी नहीं कर सकता: हालाँकि, इसे मन के मौन के रूप में समझना चाहिए। यह मौन रहने वाले की आत्मा में आत्मा के विभिन्न फल उत्पन्न करता है। एकांत और मौन से कोमलता और नम्रता उत्पन्न होती है। अन्य आध्यात्मिक साधनों के साथ मिलकर, मौन व्यक्ति को धार्मिकता तक पहुँचाता है। मौन व्यक्ति को ईश्वर के करीब लाता है और उसे, मानो, एक सांसारिक देवदूत बना देता है। बस अपने कोठरी में जागरूकता और मौन में बैठें, और प्रभु के समीप आने का अपना सर्वोत्तम प्रयास करें, और प्रभु आपको एक मनुष्य से एक स्वर्गदूत में बदलने के लिए तैयार हैं: **'किन्तु जिस पर मैं अनुग्रह करता हूँ, वह तो दीन और मन से पिटे हुए हैं, और जो मेरी बात से काँपते हैं'** (यशायाह 66:2)। अन्य आध्यात्मिक लाभों के अलावा, मौन का फल आत्मा की शांति है। मौन स्थिरता और निरंतर प्रार्थना सिखाता है, जबकि संयम मन को विचलन से मुक्त रखता है। अंत में, जो लोग इस स्थिति को प्राप्त कर चुके हैं, उनके लिए शांति की अवस्था प्रतीक्षा कर रही है।' इस प्रकार आदरणीय सेराफिम ने मौन के तपस्वी अनुशासन का अभ्यास किया और उच्चतम आध्यात्मिक उपहार प्राप्त कर, नए अनुग्रह-पूर्ण सांत्वनाएं प्राप्त कीं, और अपने हृदय में **एक** अकथनीय **'पवित्र आत्मा में आनंद'** (रोमियों 14:17) महसूस किया।

सद्गुणों और मठवासी तपस्या की सीढ़ी पर और आगे बढ़ते हुए, पूजनीय सेराफिम ने एकांतवास का और भी बड़ा कार्य अपने ऊपर लिया। यह इस प्रकार हुआ। उस समय, यशायाह के बाद, सारोव के मठाध्यक्ष पिता निफॉन थे, जो ईश्वर-भयभीत और सदाचारी व्यक्ति थे, और साथ ही मठ के नियम और चर्च व्यवस्था के दृढ़ रक्षक भी थे। इस बीच, यशायाह की मृत्यु के बाद से, सेराफिम ने मौन का व्रत लेकर, अपनी निर्जन कोठरी में पूर्ण एकांत में रह रहे थे, मानो किसी तपोवन में हों। पहले, वह रविवार को पवित्र सहभागिता प्राप्त करने के लिए सारोव मठ जाता था। लेकिन अब, लंबे समय तक चट्टानों पर खड़े रहने के कारण पैरों की बीमारी के कारण, वह चल नहीं पाता था। कई भिक्षु इस स्थिति से हैरान थे, यह सोचकर कि उसे पवित्र रहस्य कौन प्रदान कर रहा है; और इसलिए मठाधीश ने अंततः वरिष्ठ पवित्र-भिक्षुओं की एक मठ परिषद बुलाई, और वरिष्ठ सेराफिम द्वारा पवित्र रहस्यों को ग्रहण करने के प्रश्न को समाधान के लिए उनके समक्ष प्रस्तुत किया। विचार-विमर्श के बाद, बुजुर्गों ने सेराफिम से यह प्रस्ताव रखने का फैसला किया कि, यदि वह स्वस्थ हों और उनके पैर मजबूत हों, तो उन्हें रविवार और पर्व के दिनों में पवित्र रहस्यों को प्राप्त करने के लिए मठ तक चलकर आना जारी रखना चाहिए; लेकिन यदि उनके पैर उन्हें साथ नहीं देते हैं, तो उन्हें स्थायी रूप से मठ के भीतर एक कोठरी में आ जाना चाहिए। परिषद् ने यह निर्णय लिया कि रविवार को भोजन लाने वाले भाई के माध्यम से यह पूछा जाए कि वह कौन सा विकल्प चुनेंगे। भाई ने ऐसा ही किया, लेकिन पहली बार में वरिष्ठ ने उससे एक भी शब्द नहीं कहा। उस भाई को निर्देश दिया गया कि वह अगले रविवार को दूसरी बार सेराफिम को मठ की परिषद का प्रस्ताव पहुँचाए। तब वृद्ध सेराफिम ने उस भाई को आशीर्वाद दिया और उसके साथ पैदल मठ की ओर चल पड़े, जिससे यह संकेत मिला कि बीमारी के कारण, वह अब पहले की तरह रविवार और पर्व के दिनों में मठ तक पैदल नहीं चल सकते थे। यह 8 मई 1810 की बात है, जब परम पूज्य सेराफिम पचास वर्ष के थे। रेगिस्तान में पंद्रह साल बिताने के बाद मठ लौटकर, सेराफिम अपनी कोठरी में प्रवेश किए बिना सीधे औषधालय चले गए। यह दोपहर का समय था, ठीक आधी रात तक चलने वाली प्रार्थना सभा शुरू होने से ठीक पहले। घंटी की आवाज़ सुनकर, एल्डर डोरमिशन चर्च में सर्व-रात्रि जागरण के लिए उपस्थित हुए। जब पलक झपकते ही, संप्रदायक भ्रातृत्व के बीच यह खबर फैल गई कि एल्डर सेराफिम ने मठ में बसने का निर्णय लिया है, तो संपूर्ण भ्रातृत्व अत्यंत आश्चर्यचकित हो गया। अगले ही दिन सुबह, 9 मई को, संत निकोलस चमत्कारकर्ता के अवशेषों के स्थानांतरण के पर्व के दिन, सेराफिम अपनी प्रथा के अनुसार, सुबह की लीटर्जी के लिए अस्वास्थ्य निवास चर्च गए और पवित्र कम्युनियन ग्रहण किया। चर्च से वह निर्माता निफोंट की कोठरी में गए और उनका आशीर्वाद प्राप्त कर, उन्होंने उनकी पूर्व मठवासी कोठरी में निवास करना शुरू कर दिया। हालाँकि, एल्डर ने किसी को नहीं मिलाया, न ही स्वयं कहीं बाहर गए, और न ही किसी से एक भी शब्द कहा, इस प्रकार उन्होंने एकांतवास का एक नया और अत्यंत कठिन कारनामा किया।

सम्माननीय सेराफमि के एकांतवास के दौरान के कारनामों के बारे में बहुत कम पता है, क्योंकि उन्होंने किसी को भी अपनी उपस्थिति में आने की अनुमति नहीं दी और किसी से एक भी शब्द नहीं कहा। अपनी कोठरी में उनके पास कुछ भी नहीं था, यहाँ तक कि सबसे आवश्यक वस्तुएँ भी नहीं: ईश्वर की माता का एक चित्र, जिसके सामने हमेशा एक दीपक जलता रहता था, और कुर्सी के रूप में एक पेड़ के तने का ठूंठ, बस इतना ही उनके पास था। वह अपने लिए आग का भी उपयोग नहीं करते थे। अपने कंधों पर, अपनी कमीज़ के नीचे, उन्होंने मांस को दंडित करने के लिए रस्सियों से लटकाया हुआ एक बड़ा पाँच-वर्शोक लोहे का क्रॉस पहना था, **'ताकि आत्मा बच सके'** (1 कुरिन्थियों 5:5)। लेकिन उन्होंने कभी भी जंजीरें या रस्सी की कमीज़ नहीं पहनी। वे कहते थे, 'जो कोई भी हमसे वचन या कर्म में अपराध करता है, और यदि हम ऐसे अपराधों को सुसमाचार की भावना से सहते हैं—तो देखो, यही हमारी बेड़ियाँ हैं, देखो, यही हमारी रोंगटेदार कमीज़ है। ये आध्यात्मिक बेड़ियाँ और रोंगटेदार कमीज़ें लोहे की बेड़ियों से श्रेष्ठ हैं।' आदरणीय सेराफमि रेगिस्तान में पहने हुए वही कपड़े पहनते रहे। वे केवल पानी पीते थे, और केवल कुट्टू का दलिया और सफेद सॉकरॉट खाते थे। पावेल नाम का एक भिक्षु, जो उनके पड़ोसी थे, उनके लिए पानी और भोजन लाते थे। वरिष्ठ के सेल के बाहर प्रार्थना करने के बाद, भाई भोजन दरवाज़े के पास रख देता था। और तपस्वी, ताकि कोई उसे न देख सके, खुद को एक बड़े कपड़े से ढक लेता और घुटनों के बल बैठकर बर्तन उठाकर उसे अपनी कोठरी में ले जाता, मानो यह ईश्वर के हाथों से प्राप्त कर रहा हो। फिर, भोजन करने के बाद, वह बर्तन को उनकी मूल जगह पर वापस रख देता, एक बार फिर से अपने चेहरे को कपड़े से छिपा लेता, मरुभूमि के संतों के उदाहरण का अनुसरण करते हुए, जो अपने चेहरे को एक काउल (cowl) के नीचे छिपाते थे[532] ।

संन्यासी के एकांत में किए गए तपस्वी कार्य किसी को नहीं पता थे; यह केवल इतना ज्ञात है कि वे अत्यंत कठिन, महान और विविध थे। और यहाँ, पहले की तरह, उन्होंने अपने मठ के नियम का पालन किया और दिव्य लिटर्जी को छोड़कर सभी दैनिक सेवाएँ कीं। इसके अलावा, वे अक्सर प्रभु या परमेश्वर की माता के प्रति 'मानसिक' प्रार्थना[533] का अभ्यास करते थे। प्रार्थना करते समय, पवित्र एल्डर कभी-कभी प्रतिमा के सामने खड़े होकर, कोई प्रार्थना जपे बिना और प्रणाम किए बिना, केवल अपने मन से अपने हृदय में प्रभु का ध्यान करते हुए एक गहरे, चिंतनशील, प्रार्थनामय estado में लीन हो जाते थे। सप्ताह भर, वह क्रम से पूरा नया नियम पढ़ते थे: सोमवार से गुरुवार तक, चार सुसमाचार – हर दिन एक। प्रवेश कक्ष में, दरवाज़े से, कभी-कभी उन्हें पढ़ते हुए सुना जा सकता था, जब वे अपने लिए नए नियम की पवित्र पुस्तकों की व्याख्या कर रहे होते थे, और कई लोग अपने आनंद, सांत्वना और आत्मिक पोषण के लिए उनके शब्दों को सुनने आते थे। अपने एकांत के सभी वर्षों के दौरान, संत हर रविवार और पर्व के दिन पवित्र Communion ग्रहण करते थे। ताकि वे अपनी मृत्यु के क्षण को कभी न भूलें, और उसे और अधिक स्पष्ट रूप से कल्पना कर सकें और अपने सामने और करीब से देख सकें, संत सेराफमि ने अपने लिए एक ताबूत बनाने और उसे अपने एकांतवास की कोठरी के प्रवेश कक्ष में रखने के लिए कहा। पवित्र वृद्ध की इच्छा पूरी हुई: उनके लिए ओक की एक ही लकड़ी से ढक्कन वाली एक ताबूत तराशी गई, और वह हमेशा प्रवेश कक्ष में बिना रंग की रखी रहती थी। यहाँ वृद्ध अक्सर प्रार्थना करते थे, इस जीवन से अपने प्रस्थान के लिए खुद को तैयार करते हुए। सारोव के भाइयों के साथ बातचीत में, धन्य सेराफमि अक्सर इस ताबूत के बारे में बात करते थे:

'जब मैं मर जाऊँ, तो मैं आपसे विनती करता हूँ, भाइयों, मुझे मेरी ताबूत में लिटा देना।'

अपने आध्यात्मिक प्रयासों के साथ-साथ, तपस्वी वृद्ध ने शारीरिक श्रम करना शुरू कर दिया, कभी-कभी अपनी थकी हुई, वृद्ध छाती को ताजी हवा से तरोताजा करते हुए। सुबह के शुरुआती घंटों में, जब सभी अभी भी सो रहे होते थे, पवित्र वृद्ध अक्सर यीशु की प्रार्थना का जाप करते हुए कब्रिस्तान में, कब्र-पत्थरों के बीच या कहीं और, चुपचाप लकड़ी के एक छोटे से बंडल को एक स्थान से दूसरे स्थान तक ले जाते थे, जो उनकी कोठरी के सबसे करीब होता था। एक अवसर पर, जब जगाने वाला नौसिखिया इस दृश्य से प्रसन्न होकर दौड़कर संत के पास गया, उनके पैर चूमकर आशीर्वाद मांगा, तो सेराफमि ने उसे आशीर्वाद देते हुए कहा:

'मौन में लिपट जाओ और अपने आप का ध्यान रखो!'

---

[532] कुकुल एक मठवासी टोपी है जो एक ढीले-ढाले मुंह-ढकने के रूप में होती है और जिसके कंधों पर एक पट्टी नीचे तक आती है; प्रारंभिक चर्च में, यह मठवासी परिधानों का एक मानक हिस्सा था।

[533] तपस्या की भाषा में, 'बुद्धिमानी से किया गया' प्रार्थना का अर्थ है चिंतनशील, ईश्वर-केंद्रित प्रार्थना, जब तपस्वी मौन में अपनी पूरी आत्मा के साथ इसमें डूब जाता है।

पाँच साल एकांत में बिताने के बाद, पवित्र संन्यासी ने बाद में प्रतिबंधों को कुछ हद तक ढीला कर दिया, शुरुआत में केवल बाहरी रूप से: उनकी कोठरी का दरवाज़ा खुला छोड़ दिया जाता था, और कोई भी उनके पास आ सकता था; फिर भी, ईश्वर के सामने मौन का व्रत लेने के कारण, वह अपने मार्गदर्शन की ज़रूरत रखने वालों के सवालों का जवाब नहीं देते थे, और मौन में अपना आध्यात्मिक कार्य जारी रखते थे। तब टाम्बोव के बिशप, आयोना, जो बार-बार सारोव मठ आते थे, एक बार पिता सेराफिम से व्यक्तिगत रूप से मिलना चाहते थे और इस उद्देश्य के लिए, वे उनकी कोठरी के पास गए; लेकिन पूज्यनीय ने, ईश्वर के सामने अपने व्रतों को दृढ़ता से पूरा करते हुए और मनुष्यों को खुश करने की इच्छा से डरते हुए, इस अवसर पर भी अपनी मौनता या एकांत को नहीं तोड़ा[534] । ऐसा लगता है कि आदरणीय सेराफिम के लिए अपने एकांत को छोड़ने का समय अभी नहीं आया था। उनकी उत्कृष्टता ने यह भी समझा; जब एबॉट निफोंट ने संत की कोठरी के दरवाज़े उनके कब्ज़ों से हटाने का सुझाव दिया, तो उन्होंने मना कर दिया, और कहा: 'कहीं हम पाप न कर बैठें।' और उन्होंने संत को शांति से रहने दिया।

लेकिन कुछ ही समय बाद, आदरणीय सेराफिम के लिए अपने एकांत और मौन के तप को पूरी तरह से त्यागने का समय वास्तव में आ गया। संपूर्ण आत्म-त्याग, धैर्य, विनम्रता और अटूट विश्वास के साथ एक सामुदायिक भिक्षु, एक तपस्वी, एक स्तंभवासी, एक मौन व्यक्ति और एक संन्यासी के मार्ग पर चलने के बाद, उन्होंने आत्मा की महान पवित्रता प्राप्त की और उन्हें ईश्वर द्वारा उच्चतम आध्यात्मिक उपहारों के योग्य माना गया। और फिर, सर्वोच्च की इच्छा से, उन्हें अपनी मौनता त्यागनी पड़ी और, पूरी तरह से ईश्वर में और ईश्वर के लिए जीते हुए—एक जीवन जो संसार का परम त्याग से भरा था—उसी संसार की सेवा में आगे बढ़ना पड़ा: अपने प्रेम के माध्यम से, शिक्षण के अनुग्रह-पूर्ण उपहारों के माध्यम से, दिव्यदृष्टि, चमत्कार और उपचार, उनका आध्यात्मिक मार्गदर्शन, प्रार्थना, सांत्वना और परामर्श। इस प्रकार, पूजनीय सेराफिम ने 'एल्डरशिप'[535] के रूप में जानी जाने वाली सर्वोच्च उपलब्धि को पूरा किया, जिसमें उन्होंने अपने कठिन और धर्मपरायण जीवन का समापन किया।

महान वृद्धजन का यह कार्य तब शुरू हुआ, जब ठीक पाँच साल बाद, उन्होंने उनके पास आने वाले आगंतुकों, और सबसे बढ़कर, भिक्षुओं के साथ बातचीत करना शुरू कर दिया। उनके साथ अपनी बातचीत में, पूजनीय सेराफिम ने मुख्य रूप से उन्हें सभी मठवासी नियमों का दृढ़ता से पालन करने के लिए मार्गदर्शन किया, और उनसे चर्च की प्रार्थनाओं को बिना चूके करने और सुनने, अपने कर्तव्यों को विनम्रता, लगन और अटूट भक्ति के साथ निभाने का आग्रह किया, ईश्वर के भय से भोजन करना, बिना उचित कारण के मठ न छोड़ना, स्वच्छंदता और दंभ से बचना, आपसी शांति बिनाए रखना, आदि। इसके बाद, पवित्र वृद्ध के पास बाहरी और गृहस्थ लोग भी आने लगे। उनकी कोठरी के दरवाज़े सभी के लिए खुले रहते थे - सुबह की प्रारंभिक प्रार्थना से लेकर शाम के आठ बजे तक। और संत सभी का स्वागत करते थे, प्रत्येक व्यक्ति को आशीर्वाद देते और संक्षिप्त, उपयुक्त निर्देश देते थे। धन्य संत आमतौर पर बालाचोन की शैली में एक लंबी सफेद चोगा और एक आधा-मंथल, साथ ही एक एपिटिरैक्लियन और कफ पहनकर आगंतुकों का स्वागत करते थे; हालाँकि, वे बाद वाले (कफ) केवल रविवार और पर्व के दिनों में पहनते थे, जब वे मसीह के पवित्र रहस्यों को ग्रहण करते थे।

विशेष प्रेम के साथ, पवित्र वृद्ध उन लोगों का स्वागत करते थे जो सच्चे मन से और विनम्रतापूर्वक पश्चाताप करते थे, और जो ईसाई आध्यात्मिक जीवन के लिए उत्कट उत्साह दिखाते थे। उनसे बात करने के बाद, आदरणीय सेराफिम अपनी एपिटिरैक्लियन का सिरा और अपना दाहिना हाथ उनके झुके हुए सिर पर रखने की आदत रखते थे। साथ ही, वह उन्हें अपने पीछे एक संक्षिप्त पश्चाताप की प्रार्थना दोहराने के लिए आमंत्रित करते, जिसके बाद वे स्वयं

---

[534] इस मामले में, आदरणीय सेराफिम संभवतःआदरणीय महान आर्सेनियस के उदाहरण से प्रेरित थे, जिनके तपस्या और मौन का उन्होंने अनुकरण किया। अलेक्जेंड्रिया के आर्चबिशप थियोफिलिस, आर्सेनियस से मिलने की इच्छा से, पहले एक संदेशवाहक भेजकर यह पूछने को कहा कि क्या वह उनके लिए अपने द्वार खोलेंगे। अर्सेनियस ने उत्तर दिया: 'यदि मैं आपके लिए दरवाज़ा खोलूँगा, तो मैं इसे सभी के लिए खोलूँगा।' तब थियोफिलिस ने कहा: 'मेरे लिए उसके पास न जाना ही बेहतर है।'

[535] 'वरिष्ठ' का पद मठवासी जीवन की उच्चतम उपलब्धियों में से एक का प्रतिनिधित्व करता है, जिसके लिए केवल कुछ चुनिंदा लोग ही सक्षम होते हैं। इसमें 'वरिष्ठों' द्वारा भिक्षुओं और उन सभी को प्रदान किया जाने वाला आध्यात्मिक मार्गदर्शन और उपचार शामिल है जो आध्यात्मिक सांत्वना और परामर्श की आवश्यकता में उनके पास आते हैं। स्वैच्छिक शिष्य, वृद्ध के पास आकर, अपनी पूरी आत्मा को उसके सामने खोल देते हैं और स्वयं को उसकी पूर्ण आज्ञाकारिता के अधीन कर लेते हैं, जबकि वृद्ध स्वयं पर ईसाई प्रेम का सबसे कठिन कार्य और उनके आत्माओं के लिए ईश्वर के समक्ष महान जिम्मेदारी लेता है।

क्षमा की प्रार्थना का पाठ करते: '[536] ', जिस पर जो लोग आते थे उन्हें अपने अंतरात्मा में हल्कापन और एक विशेष आध्यात्मिक आनंद का अनुभव होता था; तब वृद्ध आगंतुक के ललाट पर अपनी कोठरी में 'दयामयी ईश्वर माता' की प्रतिमा के सामने जलते दीपक के तेल से क्रूस का आकार बनाकर अभिषेक करते थे, जिसे वे 'ईश्वर माता' की प्रतिमा कहते थे – *'सभी आनंदों का आनंद'*; और यदि यह दोपहर से पहले (यानी खाने के उचित समय से पहले) होता था, तो वह उन्हें *महान अगियास्मा* (एपिफेनी जल) ग्रहण करने के लिए देता और उन्हें एंटिडोरॉन या सर्व-रात्रि जागरण के दौरान पवित्र किए गए धन्य रोटी के एक अंश से आशीर्वाद देता था; फिर – वह प्रत्येक व्यक्ति के साथ, समय चाहे जो भी हो, क्रॉस का चिह्न बदलते थे, उन्हें मसीह के पुनरुत्थान की उद्धारकारी शक्ति की याद दिलाते हुए, और वे उन्हें मसीह की माता के प्रतिमा या उनकी छाती पर लटके क्रॉस का आदर करने की अनुमति देते थे। जो लोग उन्हें अपने किसी विशेष रोग या हृदय के दुख के बारे में विश्वासपूर्वक बताते थे, उन्हें वे विशेष, उपयुक्त, दयालु और पितृसुलभ परामर्श तथा आध्यात्मिक उपचार के माध्यम से सांत्वना और राहत देते थे; अन्य मामलों में, साधु विशेष रूप से ईश्वर की निरंतर स्मृति, प्रार्थना और पवित्रता के संबंध में सामान्य ईसाई शिक्षा प्रदान करते थे। ऐसे सभी मामलों में, उन्होंने विशेष रूप से उन्हें हमेशा अपने होठों पर और अपने दिलों में प्रभु की प्रार्थना – 'हमारे पिता', महादूत की प्रार्थना – 'हे परमेश्वर की कुंवारी माता, आनन्दित हो', धर्म-सूत्र और यीशु की प्रार्थना – 'हे प्रभु यीशु मसीह, परमेश्वर के पुत्र, मुझ पापी पर दया करो' – को, जिन्हें वह विशेष रूप से प्रभावी और उद्धारक मानते थे। अन्य आगंतुकों में, प्रतिष्ठित व्यक्ति और राजनेता कभी-कभी संत सेराफिम के पास आते थे, जिन्हें वह उपयुक्त मार्गदर्शन देते थे, उनके साथ उचित सम्मान और ईसाई प्रेम से पेश आते थे, उनका ध्यान उनके पद की महत्वता की ओर आकर्षित करते थे और इस प्रकार उन्हें पवित्र ऑर्थोडॉक्स चर्च और मातृभूमि के प्रति निष्ठा में शिक्षित करते थे। शाही परिवार के सदस्य भी एल्डर के पास आते थे; इस प्रकार, 1825 में, ग्रैंड ड्यूक मिखाइल पावलोविच ने उनका आशीर्वाद प्राप्त किया। लेकिन यह आम लोग थे जो बड़ी संख्या में पवित्र एल्डर के पास आते थे, जो उनसे न केवल मार्गदर्शन बल्कि कभी-कभी व्यावहारिक मदद भी चाहते थे, उनकी पवित्रता और दूरदर्शिता पर भरोसा करते हुए, – और उन्होंने न केवल उन्हें आध्यात्मिक रूप से सांत्वना दी, बल्कि अपनी दिव्यदृष्टि की शक्ति से उनके दुख और जरूरतों में भी उनकी सहायता की, जिसके द्वारा वह, उदाहरण के लिए, गरीब किसानों को यह दिखा देते थे कि उन्होंने जो संपत्ति खोई थी या जो उनसे चोरी हो गई थी, वह कहाँ मिलेगी, और साथ ही उन्हें इसे गुप्त रखने की हिदायत देते थे। वे अक्सर बीमारों को भी ठीक करते थे, और ऐसे अवसरों पर वे अपनी कोठरी में लटके, दयामयी ईश्वर माता के उपर्युक्त प्रतिमा के सामने रखे दीपक के तेल से उनका अभिषेक करते थे। फिर भी, इन सब के बावजूद, पूजनीय सेराफिम ने अभी तक अपना तपस्वी-आश्रम पूरी तरह से नहीं छोड़ दिया था; अपने होठों से मौन की मुहर हटाकर और आगंतुकों का स्वागत करते हुए भी, वे स्वयं अपनी कोठरी से कभी बाहर नहीं निकले।

शीघ्र ही, पूजनीय सेराफिम के लिए अपनी कोठरी पूरी तरह से छोड़ने का समय आ गया। लेकिन ऐसा करने का निश्चय करने से पहले, उन्होंने अपने एकांतवास के खुले समापन के संबंध में ईश्वर की सर्वोच्च इच्छा जानने के लिए प्रार्थना में ईश्वर की ओर रुख किया। और इस प्रकार, 25 नवंबर 1825 की रात को, ईश्वर की माता, रोम के संत क्लेमेंट और अलेक्जेंड्रिया के संत पीटर के साथ, जो उनका पर्व था, एक वृद्ध को सपने में प्रकट हुईं, और उन्हें अपनी कोठरी छोड़कर मरुभूमि में जाने की अनुमति दे दी। अगले दिन, जागने और अपनी नियमित प्रार्थना करने के बाद, उन्होंने अपने इरादे के बारे में अबॉट निफॉन को बताया और उनका आशीर्वाद प्राप्त किया। उस समय से, पूजनीय सेराफिम ने अपने आश्रम का दौरा करना और वहाँ प्रार्थना करना शुरू कर दिया।

वरिष्ठ विशेष रूप से तथाकथित 'धर्मशास्त्रीय' झरने पर अक्सर जाते थे। यह झरना मठ से दो वर्स्ट (लगभग दो मील) दूर स्थित था और सेराफिम के सारोव आने से भी बहुत पहले से मौजूद था; लेकिन यह उपेक्षा की स्थिति में था: उसका तालाब लकड़ी के गट्ठरों के ढेर से ढका हुआ था और मिट्टी से भर गया था; उससे एक ही पाइप के माध्यम से पानी निकलता था। झरने के पास, एक खंभे पर, प्रेरित और सुसमाचार प्रचारक, संत जॉन द थियोलोजियन की एक प्रतिमा लगी हुई थी, जिसके नाम पर इस झरने का नाम पड़ा था। आदरणीय सेराफिम को यह स्थान बहुत प्रिय हो गया। उनकी इच्छानुसार, झरने की सफाई की गई और उसे बहाल किया गया; तालाब को ढकने वाला बाँध हटा दिया गया और उसकी जगह एक पाइप वाली नई लकड़ी की संरचना बनाई गई। यहीं पर साधु ने ईश्वर के चिंतन और शारीरिक श्रम में लगे हुए,

[536] वरिष्ठ यह काम एक ऐसे रिवाज़ के अनुसार करते थे जो आज भी पूर्व में 'समर्पित' लोगों, यानी पुजारी पदवी धारण करने वाले मठाधीशों के बीच प्रचलित है।

लंबा समय बिताना शुरू कर दिया; क्योंकि, बीमारी के कारण, वह अब अपनी पुरानी कोठरी तक चलकर नहीं जा सकते थे। साधु ने सारोवका नदी से कंकड़ इकट्ठा किए और उन से झरने के तालाब की दीवार बनाई; उन्होंने पास में सब्जियों के पौधों की क्यारियाँ लगाईं और सब्जियाँ उगाईं। झरने के पास एक छोटी सी पहाड़ी पर, वृद्ध के लिए एक छोटी लकड़ी की झोपड़ी बनाई गई—बिना खिड़कियों या दरवाजों के, दीवार के सहारे एक तरफ मिट्टी का प्रवेशद्वार था। दीवार के नीचे रेंगकर, परम पूजनीय सेराफिम अपनी मेहनत के बाद दोपहर की गर्मी से बचने के लिए इस साधारण आश्रय में विश्राम करते थे; बाद में, उनके लिए एक नया कोठरी बनाया गया, जिसमें दरवाजे और एक चूल्हा था, लेकिन खिड़कियाँ नहीं थीं। यहाँ, अपने आश्रम में, वह अपने सभी कार्यदिवस बिताते थे, और शाम को मठ लौट आते थे। यह जगह फादर सेराफिम का निचला आश्रम के नाम से जानी जाने लगी, और उस झरने को फादर सेराफिम का कुआँ कहा जाने लगा।

[537]इस निम्र, झुके हुए वृद्ध को आश्रम में कुदाल या कुल्हाड़ी के सहारे झुककर लकड़ी काटते या सब्जियों की क्यारियों की जुताई करते देखना एक मार्मिक दृश्य था, जो ढीले-ढाले अंदाज़ का एक फटा-पुराना कमेलाउक पहने रहता था, कंधों पर एक झोला लटकाए, जो सफेद कैनवास के चोगा में था और जिसमें सुसमाचार तथा अपने शरीर को कष्ट देने के लिए पत्थर और रेत का बोझ था। जब कुछ लोगों ने उनसे पूछा कि वह ऐसा क्यों कर रहे हैं, तो वृद्ध ने उत्तर दिया:

'मैं उसको पीड़ा देता हूँ जो मुझे पीड़ा देता है।'

धन्य संत के दर्शन करने वालों की संख्या काफी बढ़ गई। कुछ लोग मठ में उनका इंतजार करते, जबकि अन्य उन्हें रेगिस्तान में मिलने आते, उन्हें देखने और उनका आशीर्वाद व मार्गदर्शन प्राप्त करने के लिए लालायित रहते। पवित्र रहस्यों का अनुष्ठान करने के बाद – अपने मंटल, एपिट्राचेलियन और कफ पहने – आदरणीय सेराफिम को अपने छोटे से तपस्थल पर लौटते देखना एक मार्मिक दृश्य था। उसके चारों ओर उमड़ी भीड़ के कारण उसकी गति धीमी हो गई थी। फिर भी ऐसे समय में वे किसी से बात नहीं करते थे, किसी को आशीर्वाद नहीं देते थे, और ऐसा लगता था मानो वे किसी को देख ही नहीं रहे हों, क्योंकि वे पवित्र संस्कारों की अनुग्रह-पूर्ण शक्ति के ध्यान में पूरी तरह से मग्न रहते थे। एबॉट निफॉन, जो उस अनुग्रह-पूर्ण वरिष्ठ का गहरा सम्मान और प्रेम करते थे, संत सेराफिम के पास आने वाले लोगों की भीड़ के बारे में कहा करते थे:

'जब फादर सेराफिम रेगिस्तान में (निकट और दूर दोनों) रहते थे, तो वे अपने निवास के सभी प्रवेश द्वार पेड़ों से बंद कर देते थे ताकि लोग न आएं; लेकिन अब वे सभी को स्वीकार करने लगे हैं, इसलिए मैं आधी रात तक मठ के द्वार बंद नहीं कर पाता हूँ।'

उस समय से, आदरणीय सेराफिम के माध्यम से, ईश्वर ने विश्वासियों को एक सच्चा महान और कीमती खजाना प्रकट किया। अनुग्रह-पूर्ण वृद्ध की आत्मा-पोषक बातचीत विशेष रूप से आनंददायक थी, जो एक विशेष प्रकार के प्रेम से परिपूर्ण थी और साथ ही एक शांत, जीवन-दायक शक्ति का प्रवाह करती थी। और आगंतुकों के प्रति उनका संपूर्ण व्यवहार, सबसे बढ़कर, गहरी विनम्रता और सर्व-क्षमाशील, सक्रिय ईसाई प्रेम से परिभाषित होता था। उनके शब्दों ने सबसे कठोर और ठंडे दिलों को भी गर्म किया, आत्माओं को आध्यात्मिक समझ से प्रकाशित किया, उन्हें अश्रुपूर्ण और पश्चातापी प्रायश्चित के लिए प्रेरित किया, सबसे कठोर और निराशावादी पापियों में भी सुधार और उद्धार की संभावना में एक आनंदमय आशा जगाई, और आत्मा को अनुग्रह-पूर्ण शांति से भर दिया। ईश्वर के इस पुरुष ने कभी किसी पर कठोर फटकारें नहीं लगाईं, न ही किसी पर कोई भारी बोझ डाला। वह अक्सर फटकार के शब्द कहते थे, लेकिन अपने शब्दों को विनम्रता और प्रेम से कोमल बना देते थे। सलाह के माध्यम से अंतरात्मा की आवाज़ को जगाने का प्रयास करते हुए, उन्होंने मोक्ष के मार्ग बताए, अक्सर इस तरह से कि सुनने वाले को पहले तो यह भी एहसास नहीं होता था कि बातचीत उसके अपने आत्मा के बारे में है; लेकिन बाद में, अनुग्रह से परिपूर्ण वचन की शक्ति हमेशा अपना प्रभाव दिखाती थी। आदरणीय सेराफिम हमेशा अपने शब्दों, साथ ही अपने पूरे जीवन और सभी कार्यों को, ईश्वर के वचन, पवित्र पिताओं के लेखों, और उन संतों के जीवन के शिक्षाप्रद उदाहरणों पर आधारित करते थे, जिन्होंने ईश्वर को प्रसन्न किया था। ऐसा करते हुए, वरिष्ठ उन संतों का विशेष सम्मान करते थे जो ऑर्थोडॉक्स धर्म के सबसे बहादुर रक्षक और पैगंबर साबित हुए थे, जैसे: बेसिल द ग्रेट, ग्रेगरी द थियोलोजियन और जॉन क्रिसोस्टोम, रोम के पोप क्लेमेंट, अलेक्जेंड्रिया के एथनासियस, यरूशलेम के सिरील, मिलान के एम्ब्रोज़, और इसी तरह के अन्य; और ऐसा करते हुए, वे लोगों को अटूट विश्वास में दृढ़ रहने के लिए लगातार प्रेरित करते थे और यह समझाना पसंद करते थे कि ऑर्थोडॉक्सी

[537] कुदाल एक फावड़ा है; 'ज़ास्ताप' लोहे का बेलचा है।

की पवत्रिता क्या है। वे रूसी चर्च के संतों के बारे में भी बात करना पसंद करते थे, उदाहरण के लिए, मास्को के पवत्रि धर्मगुरु—पीटर, अलेक्सयिस, योना और फलिपि—साथ ही रोस्तोव के डेमेट्रयिस, परम पूजनीय सर्गयिस, पर्म के स्टीफन, और इसी तरह के अन्य लोगों को, और उनके जीवन को मोक्ष के मार्ग पर एक आदर्श के रूप में प्रस्तुत करते थे। कृपा से परपिूर्ण उन वृद्ध के ये सभी प्रवचन, उपरोक्त गुणों के अलावा, एक वशिष शक्ति से युक्त थे, क्योंकि वे सीधे तौर पर अपने श्रोताओं की ज़रूरतों के अनुरूप थे और उनके जीवन तथा उन वशिष ज़रूरतों और परस्थितियिों से घनष्ठि रूप से जुड़े हुए थे, जनिके लिए वे परम पूज्य सेराफमि से मलिने सारोव आए थे।

संत सेराफमि ऑर्थोडॉक्सी की पवत्रिता के प्रति वशिष रूप से सजग और रक्षक थे। इसलिए, जब एक संप्रदायवादी ने पूछा कि कौन सा वश्विास बेहतर है—चर्च द्वारा वर्तमान में अपनाया जा रहा वश्विास, या पुराना—तो वृद्ध ने अधकिारपूर्वक उत्तर दयिा:

'अपनी बकवास बंद करो। हमारा जीवन एक समुद्र है, हमारी पवत्रि ऑर्थोडॉक्स चर्च एक जहाज है, और पतवार स्वयं उद्धारकर्ता के हाथ में है। यदि ऐसे नावकि के साथ भी लोग, अपनी पापी कमजोरी के कारण, जीवन के सागर को पार करने के लिए संघर्ष करते हैं, और सभी डूबने से नहीं बच पाते, तो आप अपनी छोटी नाव लेकर कहाँ जा रहे हैं, और आप अपनी आशा कसि पर आधारति करते हैं – कि आप बनिा नावकि के बच जाएँगे?

एक अन्य अवसर पर, सारोव मठ में एक बीमार महलिा को लाया गया, जो इतनी वकि्त थी कि उसके घुटने उसकी छाती से लगे हुए थे। जब उसे पूजनीय सेराफमि की कोठरी में ले जाया गया, तो उन्होंने उससे पूछना शुरू कयिा कि वह कहाँ की रहने वाली है और उसे ऐसी बीमारी कैसे हुई। उसने खुलकर और शुद्ध हृदय से बात की, कुछ भी छपिाए बनिा, और जैसे प्रायश्चत्ति के लिए एक वृद्ध संन्यासी के सामने अपना मन खोलकर रख दयिा, यह बताते हुए कि वह ऑर्थोडॉक्स चर्च में जन्मी थी लेकनि उसने एक संप्रदायकि से ववािह कर लयिा था जो अपनी झूठी शकि्षाओं में गहराई से जड़ें जमाए हुए था; अपने पति और उसके परविार के लंबे समय के प्रभाव के परणिामस्वरूप, वह ऑर्थोडॉक्सी से दूर हो गई थी, और इसी के लिए ईश्वर ने उसे अचानक दंडति कर दयिा था: ऐसा लगा मानो वह झुलस गई हो, जसिके बाद उसे तेज मरोड़ होने लगी। चार साल तक उस बेचारी महलिा को भयानक दर्द और पीड़ा ने सताया, इस दौरान वह न तो अपने पैर हलिा सकती थी और न ही अपने हाथ। धन्य वृद्ध ने उस बीमार महलिा से पूछा कि क्या वह अब हमारे पवत्रि ऑर्थोडॉक्स चर्च में वश्विास करती है, और, हाँ में जवाब मलिने पर, उन्हें तीन उंगलयिों से क्रॉस बनाने का नर्दिेश दयिा। उसने जवाब दयिा कि उसकी दुर्बलता उसे अपना हाथ उठाने भी नहीं देती थी । लेकनि जब पूजनीय फादर ने प्रार्थना करते हुए, अपने सामने लटके दीपक के तेल से उसके सीने और हाथों पर अभषिेक कयिा, तो उसकी बीमारी तुरंत ही उससे दूर हो गई, और उसने उस वृद्ध को धन्यवाद दयिा जसिने उसे चंगा कयिा था। लोग इस चमत्कार को देखकर चकति रह गए, जसिकी खबर जल्द ही पूरे मठ और उसके आसपास के इलाकों में फैल गई।

अपने आत्मा की पवत्रिता के माध्यम से दव्यि दृष्टि का वरदान प्राप्त करने के बाद, रेवरेंड सेराफमि अक्सर दूसरों को उनके दलि की गहरी भावनाओं और वचिारों से संबंधति मार्गदर्शन देते थे, यहाँ तक कि वे उन्हें वह परस्थितियिाँ बताने से पहले ही बता देते थे जनिके लिए वे उनके पास आए थे - और ऐसे मामलों में, उनके शब्दों का प्रभाव और भी अधकि प्रभावशाली होता था। इसका एक वशिष रूप से प्रभावशाली उदाहरण यहाँ दयिा गया है।

एक अवसर पर, प्रतष्ठिति लेफ्टनिेंट-जनरल एल. जज्ञिासावश सारोव पहुँचे। मठ की इमारतों का दौरा करने और अपनी आत्मा को पोषण देने के लिए कुछ भी न पाकर, वे जाने ही वाले थे, लेकनि प्रोकुडनि नामक एक जमींदार ने उन्हें रोक लयिा, जसिने जनरल से तपस्वी - एल्डर सेराफमि से मलिने का आग्रह कयिा। स्वभाव से ही अहंकारी, जनरल ने शुरू में मना कर दयिा, लेकनि फरि, प्रोकुडनि के लगातार आग्रह के आगे झुकते हुए, वे संत से मलिने के लिए तैयार हो गए। जैसे ही वे कोठरी में दाखलि हुए, पूजनीय संत, उनका स्वागत करने के लिए आगे आए और जनरल के पैरों पर झुक गए। ऐसी वनिम्रता ने अहंकारी जनरल को प्रभावति कयिा। प्रोकुडनि, यह महसूस करते हुए कि उनके लिए उनके साथ कोठरी में रहना उचति नहीं था, बरामदे में चले गए, और पदक-सज्जति जनरल लगभग आधे घंटे तक साधु के साथ बातें करते रहे। कुछ ही मनिटों बाद, सेराफमि की कोठरी से रोने की आवाज़ सुनाई दी: यह जनरल था जो एक छोटे बच्चे की तरह रो रहा था। आधे घंटे बाद, दरवाज़ा खुला, और संत सेराफमि ने जनरल को बाहों से सहारा देकर बाहर नकिाला; जनरल रोते रहे, अपने हाथों से अपना चेहरा ढँकते हुए। उन्होंने अपने पदक और टोपी वृद्ध की कोठरी में ही छोड़ दी थीं। पादरी उन्हें बाहर ले आए और पदकों को उनकी टोपी पर लगा दयिा। बाद में, इस जनरल ने कहा कि वह पूरे यूरोप में घूमा था और सभी प्रकार के कई लोगों को जानता था, लेकनि यह उसके जीवन में पहली बार था जब उसने सारोव के तपस्वी द्वारा दखिाई

गई ऐसी वनिम्रता देखी थी, और उसे पहले कभी यह एहसास नहीं हुआ था कि ऐसी अंतर्दृष्टि संभव है, जिसके द्वारा उस बुजुर्ग ने अपने पूरे जीवन को, सबसे गुप्त ववरिणों तक, उसके सामने उजागर कर दिया था। संयोग से, सेराफिम के साथ बातचीत के दौरान उस जनरल के पदक गिर पड़े, जिस पर वरिष्ठ ने टिप्पणी की:

'यह इसलिए है क्योंकि आपको वे अनुचित रूप से प्राप्त हुए थे।'

उस धन्य वृद्ध का प्रेम सर्व-व्यापी और असीम प्रतीत होता था; ऐसा लगता था कि वह प्रत्येक व्यक्ति से भी अधिक प्रेम करता था, जितना एक माँ अपने इकलौते बेटे, अपनी आँख के तारे से करती है। पड़ोसी के हृदय में कोई पीड़ा, कोई दुख ऐसा नहीं था जिसे वह साझा न करता, अपनी आत्मा में न समा लेता, और जिसके लिए वह उपयुक्त उपचार न ढूंढ लेता। और इस प्रकार, रूढ़िवादी रूसी लोगों की दृष्टि में, वह उन सभी के लिए एक आश्रय, एक आध्यात्मिक स्तंभ और सांत्वना का स्रोत बन गए, जो पीड़ित और बोझिल, दुखी और कड़वे थे, और जो ईश्वर की दया और कृपापूर्ण सहायता की तलाश में थे। हर उम्र, पद और वर्ग के, और दोनों लिंगों के लोगों ने, पूर्ण, लगभग बचकाने भरोसे के साथ, ईमानदारी से और पूरे दिल से अपने मन और दिल उनके सामने खोल दिए, अपनी शंकाओं और उलझनों, अपनी आध्यात्मिक जरूरतों और दुखों, अपने अपराधों और पापी विचारों को प्रकट करते हुए, और जिसके विनम्र स्वीकारोक्ति के लिए, बिना किसी झूठी शर्म या छिपाव के, धन्य वृद्ध स्वयं अक्सर उनकी सहायता के लिए आते थे, आगंतुक की आत्मा को सूक्ष्मता से पढ़ते हुए और उनके पापों और विचारों को उनके सामने ज़ोर से प्रकट करते हुए। और उस प्रेममय पवित्र बूढ़े ने सभी को संतुष्ट और सांत्वना दी; कोई भी उसे बिना राहत और मानसिक शांति, बिना सच्चे मार्गदर्शन और कृपापूर्ण सांत्वना के नहीं छोड़ता था - न तो अमीर, न ही गरीब, न ही साधारण, न ही विद्वान, न ही नीच, न ही कुलीन। लोग प्रतिदिन उनके पास उमड़ पड़ते थे—एक हजार तक, और कभी-कभी दो हजार या उससे भी अधिक—विशेषकर उनके जीवन के अंतिम दस वर्षों के दौरान। फिर भी, पवित्र साधु इस बोझ से दबे नहीं और वे सभी के साथ उनकी आत्मा के कल्याण के लिए बातचीत करने का समय निकाल लेते थे, प्रत्येक व्यक्ति को कुछ ही शब्दों में ठीक वही समझाते थे जिसकी उन्हें आवश्यकता थी। और सभी उनके महान प्रेम और उसकी अनुग्रह-पूर्ण शक्ति को महसूस करते थे, और अक्सर उन लोगों की आँखों में भी आँसुओं की धाराएँ बह निकलती थीं जिनके दिल कठोर और अडिग थे।

आदरणीय सेराफिम अक्सर कई लोगों में ईर्ष्या, आलोचना या हैरानी पैदा कर देते थे क्योंकि वे बिना किसी भेदभाव के सभी का स्वागत करते थे, सभी के साथ समान रूप से अच्छा करते थे, सभी की बात सुनते थे, सभी को सांत्वना देते थे और सभी को समान रूप से निर्देश देते थे, और उनके पास आने वालों के लिंग, पद, सामाजिक स्थिति या नैतिक गुणों के आधार पर कोई भेदभाव नहीं करते थे। इस विषय पर, पूजनीय सेराफिम ने एक से अधिक अवसरों पर कहा:

'मान लीजिए कि मैं अपनी कोठरी के दरवाज़े बंद कर दूँ। जो लोग सांत्वना का एक शब्द पाने की ज़रूरत में वहाँ आएँगे, वे मुझसे दरवाज़े खोलने के लिए ईश्वर के नाम पर विनती करेंगे, और मुझसे कोई जवाब न पाकर, दुख के साथ घर लौट जाएँगे... मैं परमेश्वर के अंतिम न्याय के दिन ईश्वर के सामने क्या बहाना पेश कर सकता हूँ?'

एक अन्य अवसर पर, जब एक भिक्षु ने वरिष्ठ से पूछा, 'आप सभी को क्या सिखाते हैं?', तो उन्होंने उत्तर दिया:

'मैं चर्च की शिक्षा का पालन करता हूँ, जो गाती है: "**ईश्वर के वचनों को मत छिपाओ, बल्कि उसकी महिमा का प्रचार करो**"[538] ।'

इस प्रकार, पवित्र वृद्ध अपने पास आने वाले सभी का स्वागत करना अपने विवेक का कार्य, अपने जीवन का कर्तव्य मानते थे, जिसके लिए ईश्वर अंतिम न्याय में उनसे हिसाब लेंगे। फिर भी, जब वृद्ध ने देखा कि जो लोग उनके पास आते थे वे उनकी सलाह मानते थे, उनके निर्देशों का पालन करते थे, और पाप और विनाश के मार्ग से हटकर सद्गुण और मोक्ष के मार्ग पर चल पड़ते थे, तो उन्होंने इसका श्रेय अपनी मेहनत के फल के रूप में नहीं लिया, न ही स्वयं को इसका कोई श्रेय दिया, बल्कि सभी अच्छाइयों के दाता - ईश्वर - को ही सारी महिमा दी और ऐसे अवसरों पर कहा:

'प्रभु, महिमा हम पर नहीं, हम पर नहीं, बल्कि तेरे नाम पर हो, अपनी दया के कारण, अपनी सच्चाई के कारण' (भजन संहिता 113:9)।

और उन्होंने इसी विषय पर यह भी कहा:

---

[538] पवित्र सप्ताह के मंगलवार को संध्या के समय, 'हे प्रभु, मैंने पुकारा' (चौथा स्वर) पर आधारित स्टिचेरा से।

– 'हमें यीशु मसीह की शिक्षा का पालन करते हुए, सभी सांसारिक आनंद को त्याग देना चाहिए, जिन्होंने कहा: "**इस बात पर आनन्दित न हो कि आत्माएँ तुम्हारे अधीन हैं, परन्तु इस पर आनन्दित हो कि तुम्हारे नाम स्वर्ग में लिखे हैं**" (लूका 10:20)।'

एक अवसर पर, व्लादिमीर गवर्नरेट का एक व्यापारी और वसिोकोगोर्स्क हर्मिटेज के निर्माता, फादर एंथनी ([539]), एक ही समय पर रेवरेंड सेराफिम की कुटिया में आए। रेवरेंड ने प्रेम से, व्यापारी को उसके दुर्गुणों के लिए धीरे से और दयालुतापूर्वक फटकारना शुरू किया और उसे उचित मार्गदर्शन दिया। धन्य संत के शब्द उनके हृदय की उस गहन आत्मीयता से इतने परिपूर्ण थे कि जिन्हें संबोधित किया गया था, वह व्यापारी और वहाँ मौजूद फादर एंथनी, दोनों ही आँसुओं से भर आए। व्यापारी के सेल से जाने के बाद, बाद वाले संत ने पवित्र संत से ये शब्द कहे:

'फादर! मानव आत्मा आपके सामने आईने में चेहरे की तरह नग्न हो जाती है: आपने इस भक्त की बात सुनना भी पूरा नहीं किया था कि आप स्वयं ही उसे सब कुछ कह चुके थे। अब मैं देख रहा हूँ कि आपका मन इतना शुद्ध है कि पिड़ोसी के हृदय में कुछ भी आपसे छिपा नहीं रहता।'

लेकिन पूजनीय सेराफिम, मानो अपने वार्तालापकर्ता को चुप कराते हुए, अपना हाथ अपने मुँह पर रखकर बोले:

'ऐसे मत कहो, मेरे आनंद: मानव हृदय केवल प्रभु के लिए खुला है, और केवल ईश्वर ही हृदयों को जानने वाला है, और "**मानव की गहनतम आत्मा और हृदय की गहराइयों तक भी**" (भजन संहिता 63:7)।

'लेकिन ऐसा कैसे है, फादर,' फादर एंथनी ने फिर पूछा, 'कि आपने व्यापारी से एक भी शब्द नहीं पूछा, फिर भी उसे वह सब कुछ बता दिया जिसकी उसे ज़रूरत थी?'

तब पूजनीय सेराफिम ने विनम्रता से उत्तर दिया:

– वह मुझसे उसी तरह मिला, जैसे दूसरे मिलते हैं, जैसे तुम मिलते हो, ईश्वर के एक सेवक के पास आते हुए: मैं, पापी सेराफिम, खुद को ईश्वर का एक पापी सेवक मानता हूँ; जो कुछ भी प्रभु मुझे अपने सेवक के रूप में आज्ञा देते हैं, वही मैं मार्गदर्शन चाहने वालों तक पहुँचाता हूँ। मैं अपनी आत्मा में उत्पन्न होने वाले पहले विचार को ईश्वर की ओर से एक मार्गदर्शन मानता हूँ, और मैं यह जाने बिना बोलता हूँ कि मेरे संवाददाता के हृदय में क्या है, बल्कि केवल यह विश्वास करते हुए कि ईश्वर की इच्छा मुझे उनके लाभ के लिए ऐसा करने का निर्देश दे रही है। जिस प्रकार लोहा लोहार का होता है, उसी प्रकार मैं स्वयं और अपनी इच्छा को प्रभु ईश्वर के हवाले कर देता हूँ: मैं वही करता हूँ जो उन्हें प्रसन्न लगे; मेरी अपनी कोई इच्छा नहीं है; और जो कुछ भी ईश्वर को प्रसन्न करता है, वही मैं संप्रेषित करता हूँ।

इस बीच, परम पूजनीय सेराफिम की यह धन्य अंतर्दृष्टि वास्तव में असाधारण थी। पत्र प्राप्त होने पर, वह अक्सर उन्हें खोले बिना ही उनका सार जान लेते थे, और जवाब देते थे: 'यह आप अपने विनम्र सेराफिम की ओर से कहें', और इसी तरह। उनके परमधाम जाने के बाद, ऐसे कई अनखोले पत्र पाए गए, जिनका उचित समय पर उत्तर दे दिया गया था। पवित्र आत्मा के द्वारा, वह साधु उन कई तपस्वियों के साथ आध्यात्मिक मेलजोल में थे जिन्हें उन्होंने कभी देखा नहीं था और जो उनसे हजारों वर्स्ट दूर रहते थे। जब जॉर्ज, जो 'मां ऑफ गॉड' के ज़ाडोंस्क मठ में एक तपस्वी था, के मन में यह विचार आया कि क्या उसे अपना निवास स्थान बदलकर किसी अधिक एकांत स्थान पर नहीं चले जाना चाहिए, और इस गुप्त उथल-पुथल के बारे में स्वयं के अलावा कोई नहीं जानता था - अचानक, फादर सेराफिम द्वारा भेजा गया सारोव रेगिस्तान का एक निश्चित तीर्थयात्री उसके पास आया और कहा:

'फादर सेराफिम ने मुझे आपको यह बताने का निर्देश दिया है: इतने वर्षों के एकांतवास के बाद, अपनी कोठरी छोड़ देने जैसे बुरे विचारों से अभिभूत हो जाना शर्म की बात है। कहीं मत जाइए। परमेश्वर की अति पवित्र माता आपको यहाँ रहने की आज्ञा देती हैं।'

यह कहकर, वह अजनबी झुककर चल दिया। जब वे उसे ढूंढने गए, तो वे उसे न तो मठ के अंदर और न ही उसके बाहर ही पा सके।

वरोंजेज़ के प्रथम बिशप, आदरणीय मित्रोफान, या उनके आगामी गौरव-मंडन के बारे में अभी तक कुछ भी सुना नहीं गया था: अभी तक कोई प्रकटवाणी या दर्शन नहीं हुए थे; फिर भी, अपने ही हाथ से लिखे कुछ शब्दों में, आदरणीय सेराफिम ने वोरोंज़ के महाधर्माध्यक्ष एंथनी को ईश्वर के सेवक मित्रोफान की पवित्र अवशेषों की खोज पर बधाई दी।

---

[539] बाद में वे ट्रिनिटी-सर्गीयस लाव्रा के प्रसिद्ध मठाध्यक्ष बने।

एक निश्चित धर्मनिरपेक्ष व्यक्ति, ए.जी. वोरोटिलोव को, वृद्ध ने एक से अधिक अवसरों पर कहा था कि तीन शक्तियाँ रूस के खिलाफ उठेंगी और उसे बहुत कष्ट देंगी; लेकिन ऑर्थोडॉक्सी के लिए, प्रभु उस पर दया करेंगे और उसे संरक्षित रखेंगे। उस समय, ये शब्द अविश्वसनीय थे; लेकिन बाद की घटनाओं ने यह स्पष्ट कर दिया कि वृद्ध क्रीमिया अभियान का संदर्भ दे रहे थे।

1831 के बाद से, सेराफिम ने कई लोगों को बताया कि अकाल आने वाला है, और, उनकी सलाह पर, सारोव मठ ने छह साल तक चलने के लिए पर्याप्त रोटी का भंडार जमा कर लिया; परिणामस्वरूप, मठ में कोई अकाल नहीं पड़ा। जब रूस में हैजा का पहला प्रकोप हुआ, तो रेवरेंड फादर ने खुले तौर पर भविष्यवाणी की कि यह न तो सारोव और न ही दिव्येवो तक पहुँचेगा - और ये भविष्यवाणियाँ अक्षरशः सच हुईं, इसलिए न तो सारोव और न ही दिव्येवो में हैजा के पहले प्रकोप से एक भी व्यक्ति की मृत्यु हुई।

वरिष्ठ संत अतीत और भविष्य दोनों को समान रूप से देख सकते थे; वे कुछ ही शब्दों में किसी व्यक्ति के भविष्य का खाका खींच देते थे, और वे ऐसी बातें कहते और सलाह देते थे जो अजीब लगती थीं, लेकिन बाद में परिस्थितियाँ उनकी पुष्टि कर देती थीं, और वे दूरदर्शिता की भावना से परिपूर्ण साबित होती थीं।

दूरदर्शिता के वरदान के अलावा, प्रभु ने आदरणीय सेराफिम में शारीरिक पीड़ाओं और बीमारियों को ठीक करने की कृपा को प्रकट करना जारी रखा। इससे भी पहले, 1823 में, जब वृद्ध ने अंततः अपना तपोवन छोड़ा, तो ईश्वर द्वारा उन पर प्रदान की गई इस चमत्कारिक कृपा के पहले और सबसे प्रभावशाली प्रदर्शनों में से एक, अर्दातोव्स्की जिले के एक पड़ोसी जमींदार एम.वी. मंतोरोव को एक ऐसी बीमारी से ठीक करना था, जो सभी उपचारों का विरोध कर रही थी। जब बीमारी इतनी गंभीर अवस्था में पहुँच गई थी कि पीड़ित की टाँगों से हड्डियों के टुकड़े भी गिर रहे थे और चिकित्सा सहायता की सारी आशा समाप्त हो चुकी थी, अपने रिश्तेदारों और परिचितों की सलाह पर, मंतोरोव ने फादर सेराफिम से मिलने के लिए सारोव की यात्रा करने का निश्चय किया, जो उनकी निज स्थिति संपत्ति से चालीस वर्स्ट दूर था, और जिनकी पवित्र जीवन की ख्याति तब तक पूरे रूस में फैल चुकी थी। बड़ी कठिनाई से, मंतरोव को उस धन्य तपस्वी की कुटिया के बरामदे में ले जाया गया, जहाँ उन्होंने अपनी भयानक पीड़ा से मुक्ति के लिए आँसू भरी विनती करना शुरू कर दिया। फिर उस संत ने, हार्दिक करुणा और पितृवत् प्रेम के साथ, उनसे पूछा कि क्या वे ईश्वर में विश्वास रखते हैं। पीड़ित से ईश्वर में उसके निश्चित विश्वास की तीन दृढ़ और सच्ची गारंटियाँ प्राप्त करने के बाद, पूजनीय पिता ने उससे स्नेहपूर्वक कहा:

'मेरे आनंद! यदि तुम इस पर विश्वास करते हो, तो यह भी विश्वास करो कि ईश्वर के द्वारा विश्वासी के लिए सब कुछ संभव है; और इसलिए विश्वास करो कि प्रभु तुम्हें भी चंगा कर देंगे, जबकि मैं, बेचारा सेराफिम, प्रार्थना करूँगा।'

इसके बाद, वे अपनी कोठरी में चले गए और थोड़ी ही देर बाद, दयामयी ईश्वर माता की प्रतिमा के सामने लटके दीपक के पवित्र तेल के साथ बाहर आए; उन्होंने मंतोरोव को अपने पैर खोलने का निर्देश दिया और प्रभावित हिस्सों पर तेल का अभिषेक किया। और तुरंत ही उसके शरीर पर पपड़ी जमकर सूख गई, और मंतोरोव ठीक हो गया और बिना किसी सहायता के, सारोव के चमत्कार करने वाले की कोठरी से चला गया। जब मंतरोव को एहसास हुआ कि वह ठीक हो गया है, तो वह खुशी से उस पूजनीय संत के पैरों पर गिर पड़ा, उन्हें चूमने लगा और उपचार के लिए उनका धन्यवाद करने लगा, तब संत ने उसे उठाया और सख्त लहजे में कहा:

'क्या सेराफिम का काम जीवन और मृत्यु लाना, नरक में गिराना और उठाना है? आप क्या कह रहे हैं, फादर? यह एकमात्र प्रभु का कार्य है, जो उनका भय मानने वालों की इच्छा को पूरा करता है और उनकी प्रार्थनाएँ सुनता है। सर्वशक्तिमान प्रभु और उनकी परम पवित्र माता का धन्यवाद करें।'

यह कहकर, ईश्वर के विनम्र और बुद्धिमान सेवक ने मंतरोव को विदा कर दिया।

1827 में पवित्र साधु द्वारा अलेक्जेंड्रा नाम की एक महिला, जो दरबारी लेबेदेव की पत्नी थी, के उपचार का चमत्कार भी कम उल्लेखनीय नहीं था। एक साल से अधिक समय से वह भयानक दौरों से पीड़ित थी जो बिना किसी स्पष्ट कारण के उसके ऊपर आते थे, जिसमें उल्टी, दांत पीसना और पूरे शरीर में मरोड़ शामिल था, जिसके बाद पीड़ित पूरी तरह से बेहोश हो जाती थी; ऐसे दौरे रोज़ाना आते थे। रोगी के रोग को ठीक करने के लिए डॉक्टरों द्वारा निर्धारित उपचार पूरी तरह से अप्रभावी साबित हुए, लेकिन एक अनुभवी, धर्मपरायण और ईमानदार डॉक्टर, जिसने मरीज में विशेष रूप से दिलचस्पी ली और अपना सारा ध्यान, ज्ञान और कौशल उसकी सेवा में लगा दिया, ने अंततः उसे सलाह दी कि वह स्वयं को सर्वशक्तिमान की इच्छा के हवाले कर दे और उनसे मदद और सुरक्षा मांगे, क्योंकि कोई भी इंसान उसे ठीक नहीं कर सकता था। इससे मरीज के सभी करीबी लोग गहरे दुख में डूब गए और वह निराशा में पड़ गई। और फिर, एक रात, एक

अपरचिति, बहुत बूढ़ी महलि उसकी के पास प्रकट हुई और जब पीड़ति ने, अपने डर में, पवत्रि क्रॉस की प्रार्थना का पाठ करना शुरू कयि, तो उसने उससे कहा:

'मुझसे मत डरना: मैं तुम्हारी ही तरह एक इंसान हूँ, बस अब मैं इस दुनयि की नहीं, बल्कि मृतकों के लोक से हूँ। अपने बस्तिर से उठो और तुरंत सारोव मठ में फादर सेराफमि के पास जाओ: वह कल तुम्हारा इंतज़ार कर रहे हैं और तुम्हें ठीक कर देंगे।'

बीमार महलि ने हम्मित करके उससे पूछा:

'तुम कौन हो, और कहाँ से आई हो?'

उस आकृतनि ने उत्तर दयि:

'मैं दव्यिेवो समुदाय से हूँ; हमारी पहली मठाधीश अगाफ्या हैं।'

अगले दनि, उसके रश्तिेदार उस बीमार महलि को सारोव ले गए; रास्ते में, उसे भयानक बेहोशी और दौरे पड़े। वह देर से होने वाली प्रार्थना सभा के बाद सारोव पहुँची, जब भाई लोग भोजन कर रहे थे, और माननीय फादर अपने कक्ष में चले गए थे और कसिी से नहीं मलि रहे थे। लेकनि इससे पहले कि वह बीमार महलि, अपने सेल के पास पहुँचकर, अपनी सामान्य प्रार्थनाएँ कह पाती, एल्डर उसे मलिने के लिए बाहर आए, उन्होंने उसका हाथ पकड़ा और उसे अपने सेल में ले गए। वहाँ उन्होंने उसे अपने एपट्रिाचेलयिन (धर्मोपवस्त्र) से ढक दयि और चुपचाप प्रभु और परमेश्वर की अतपिवत्रि माता के लिए प्रार्थनाएँ पढ़ीं; फरि उन्होंने उसे पीने के लिए कुछ एपफिेनी जल दयि, उसे एंटडिोरोन का एक अंश और रोटी के तीन टुकड़े दिए, और कहा:

'हर दनि, पवत्रि जल के साथ एक वेफर लो, और दविेवो में ईश्वर की दासी, अगाथा के कब्र पर जाओ; वहाँ कुछ मट्टिी लो और जतिनी हो सके उतनी प्रणाम करो: वह (अगाथा) तुम पर दया करती है और तुम्हारे ठीक होने की कामना करती है।'

प्रार्थना पर कुछ और संक्षप्ति नर्दिेश देने के बाद, पूजनीय पति ने उस बीमार महलि को शांतसि वदिा कर दयि; ठीक उसी क्षण, उसकी बीमारी एक तरह की आवाज़ के साथ, स्पष्ट रूप से उससे दूर हो गई। बाद में, वह बीमारी उसे कभी वापस नहीं आई, और उसके कई पुत्र और पुत्रयिाँ हुए।

आदरणीय सेराफमि ने गंभीर रूप से बीमार लोगों पर कई तरह के उपचार कए; इनमें से कई दर्ज हैं, जबकि अन्य केवल उन लोगों के दलिों की पट्टयिों पर अंकति हैं जन्हिें उन्होंने आशीर्वाद दयि; इस ईश्वर के पुरुष के जीवन के इस संक्षप्ति ववरिण में उनके लिए पर्याप्त स्थान नहीं होगा। इन सभी मामलों में, जैसा कि हमने उल्लेख कयि है, बड़े भाई अपनी कोठरी में ईश्वर की माता – *दयालु हृदय वाली* – की प्रतमिा के सामने जलते दीपक के तेल से बीमारों पर अभषिेक करने की आदत रखते थे; और जब उनसे यह पूछा गया कि वे ऐसा क्यों करते हैं, तो उन्होंने उत्तर दयि:

'हम धर्मग्रंथ में पढ़ते हैं कि प्रेरतिों ने तेल से अभषिेक कयि, और कई बीमार लोग इससे चंगे हो गए। तो फरि, हमें कसिका अनुसरण करना चाहिए, यदि प्रेरतिों का नहीं?'

और जन्हिें रेवरेंड फादर ने तेल से अभषिेक कयि था, वे स्वस्थ हो गए।

सेराफमि की कोठरी में कई तेल के दीपक जल रहे थे, और वभिन्नि गोल थालयिों पर बड़ी और छोटी, मोमबत्तयिों की भीड़ जगमगा रही थी। एक आगंतुक के इस गुप्त वचिार पर कि यह कसि लिए था, सूक्ष्मदर्शी साधु ने उत्तर दयि:

'जैसा कि आप जानते हैं, मेरे कई भक्त हैं जो मेरी "मलि अनाथों" (सेराफमि-दविेयेवो कॉन्वेंट की बहनें) के लिए अच्छे काम करते हैं। वे मेरे लिए तेल और मोमबत्तयिाँ लाते हैं और मुझसे उनके लिए प्रार्थना करने को कहते हैं। इसलिए जब मैं अपने नयिम का पाठ करता हूँ, तो मैं शुरुआत में एक बार ही उनका स्मरण करता हूँ। और चूँकि मैं नयिम के हर बदिु पर उनके नाम दोहरा नहीं सकता, मैं उनकी ओर से ईश्वर को ये मोमबत्तयिाँ अर्पति करता हूँ – प्रत्येक व्यक्तकि लिए एक मोमबत्ती; अन्य लोगों के लिए, कई लोगों के लिए एक बड़ी मोमबत्ती – और, जहाँ उपयुक्त हो, नाम लिए बनिा, मैं कहता हूँ: हे प्रभु, उन सभी लोगों को, अपने सेवकों को याद कर; उनके आत्मा के लिए, मैंने, एक दीन व्यक्तनि, तेरे लिए ये मोमबत्तयिाँ और तेल के दीपक जलाए हैं। और कहीं ऐसा न सोचा जाए कि यह केवल मेरा, एक दीन सेराफमि का, मानवीय आवष्किार है, या केवल मेरा अपना जोश है, जो कसिी दैवीय बात पर आधारति नहीं है, तो मैं समर्थन में, दैवीय शास्त्रों के शब्दों का हवाला दूँगा। बाइबलि में लखिा है कि मूसा ने प्रभु की यह वाणी सुनी: **'साक्ष्य की पेटी के पर्दे के बाहर, मलिाप के तम्बू में, हारून [और उसके पुत्र] इसे हर समय संध्या से प्रातःतक प्रभु के सामने जलाए रखें: यह तुम्हारी पीढ़यिों में एक अनंतकालकि वधिान है'** (देखें लेवी 24:3)। इसीलिए परमेश्वर की पवत्रि कलीसयि ने पवत्रि

गरिजाघरों में और वशि्वासयिों के घरों में प्रभु, परमेश्वर की माता, पवत्रि स्वर्गदूतों और परमेश्वर को प्रसन्न करने वाले पवत्रि पुरुषों की पवत्रि प्रतमिाओं के सामने तेल के दीपक या मोमबत्तयिाँ जलाने की प्रथा अपनाई है।

जहाँ तक उस दैवीय झरने का सवाल है, जसिे 'सराफ़ीम का कुआँ' के नाम से जाना जाने लगा, वृद्ध ने बाद में यह वर्णन कयिा:

'मैंने प्रार्थना की कि इस कुएँ का पानी रोगों के लिए उपचारात्मक हो।'

और फरि इस झरने के पानी में वशिेष, असाधारण और उपचारात्मक गुण आ गए, जो आज तक संरक्षति हैं। यह पानी खराब नहीं होता, भले ही यह कई वर्षों तक खुले बर्तन में पड़ा रहे। वर्ष के क॓ किसी भी समय, बीमार और स्वस्थ दोनों ही इसे अपने ऊपर डालते हैं और इससे नहाते हैं, यहाँ तक कि कड़ी ठंड में भी, और इससे लाभान्वति होते हैं। दर्दनाक अल्सर से गंभीर रूप से पीड़ति कई लोगों को पूजनीय सेराफमि ने उनके झरने के पानी से स्नान करने का नर्दिेश दयिा - और परणिामस्वरूप वे सभी ठीक हो गए। कुछ लोगों को इस पानी से धोने के बाद अपनी दृष्टि वापस मलिी; अन्य लोग, इसे पीने पर, आंतरकि बीमारयिों से शीघ्र ही ठीक हो गए और गंभीर बीमारी के बस्तिरों से स्वस्थ और चुस्त-दुरुस्त उठ खड़े हुए। एक महलिा, एम.वी. सप्यिागनिा, गंभीर रूप से बीमार थी; वह अपनी बीमारी से बहुत पीड़ति थी और अपनी पूरी कोशशि के बावजूद, उपवास के दनिों के नयिमों द्वारा नर्धिारति भोजन नहीं खा पा रही थी। पूजनीय सेराफमि ने उसे अपने झरने का पानी पीने का नर्दिेश दयिा। बाद में, उसके कसिी प्रयास के बनिा, उसके गले से बहुत सारा पत्ति बह नकिला, और वह ठीक हो गई। 1830 के दशक में हैजा की महामारी के दौरान, कई श्रद्धालु 'सेराफमि' कुएँ पर उमड़ पड़े, कुछ तो दूर-दराज के देशों से भी आए, और, अपने वशि्वास के माध्यम से, इसके चंगा करने वाले पानी से राहत और उपचार पाया। उदाहरण के लिए, कैप्टन तेप्लोव, जनिकी येकातेरनिोस्लाव गवर्नरेट में एक संपत्ति थी, जहाँ हैजा से उच्च मृत्यु दर होने लगी थी, जब उन्होंने अपने नौकरों को बड़े पैमाने पर बीमार होते देखा, तो उन्हें याद आया कि परम पूज्य सेराफमि ने पहले, जैसे संयोग से, उनसे कहा था:

'जब तुम संकट में हो, तो जाओ और बेचारे सेराफमि से उनकी कोठरी में मलिो: वह तुम्हारे लिए प्रार्थना करेंगे।'

इस स्मृति ने उन्हें और उनकी पत्नी को, उनकी अनुपस्थति में, वृद्ध सेराफमि की ओर मुड़ने के लिए प्रेरति कयिा, और उनसे इस घातक बीमारी से उबारने का आग्रह कयिा। और उसी रात, एक सपने में, वृद्ध टेप्लोव की पत्नी के सामने प्रकट हुए और उन्हें बोगोस्लोव्स्की झरने से पानी लाने, उसे पीने और उससे स्नान करने—टेप्लोव दंपति और उनके नौकरों दोनों को—के लिए नर्दिेश दयिा। ईश्वर के संत सेराफमि की मध्यस्थता की शक्ति में पूर्ण वशि्वास के साथ, टेप्लोव दंपति झरने के लिए रवाना हुए, उन्होंने उसके पानी को पयिा और उससे स्नान कयिा, और एक पूरा बैरल भर लयिा, जसिे वे अपने एस्टेट वापस ले गए। और वास्तव में, तेप्लोव की संपत्ति पर बीमार लोगों—जनिमें से कई पहले ही मौत के कगार पर थे—ने केवल उसी पानी का उपयोग करके एक चमत्कारी उपचार का अनुभव कयिा जो उन्हें भेजा गया था, और तब से तेप्लोव की संपत्ति पर हैजा से कोई नहीं मरा है।

लेकनि परम पूजनीय सेराफमि ने केवल सांसारकि चीज़ें ही नहीं देखीं: स्वर्ग के रहस्य उन्हें एक से अधकि अवसरों पर प्रकट हुए। एक बार, संन्यासी जॉन—जो पवत्रि एल्डर को बच्चों जैसी भक्ति से मानता था—के साथ ईश्वर के संतों के जीवन, उनके वरदानों और स्वर्गीय वादों के बारे में एक लंबी बातचीत के बाद, बाद वाले ने उनसे कई बार दोहराया:

'मेरी प्रसन्नता, मैं तुमसे वनिती करता हूँ, एक शांत आत्मा प्राप्त करो, और फरि तुम्हारे चारों ओर एक हज़ार आत्माएँ बच जाएँगी।'

तब रेवरेंड ने अपने बारे में कहा:

'मैंने अपने प्रभु यीशु मसीह के वचनों में आनंद पाया है: "**मेरे पति के घर में बहुत से मकान हैं**" (यूहन्ना 14:2). और मैं, एक दीन आत्मा, इन शब्दों पर अटका रहा, और उन स्वर्गीय महलों को देखने की लालसा करने लगा, और प्रभु यीशु मसीह से प्रार्थना की कि वे उन्हें मुझे दखिाएँ, और प्रभु ने मुझे, एक दीन आत्मा को, अपनी दया से वंचति नहीं कयिा। और इस प्रकार मैं उन स्वर्गीय महलों में उठा लयिा गया—हालाँकि मैं नहीं जानता कि शरीर में या शरीर से बाहर; केवल परमेश्वर ही जानते हैं, क्योंकि यह समझ से परे है। जहाँ तक उस स्वर्गीय आनंद और मठिास का सवाल है जसिका मैंने वहाँ अनुभव कयिा—उसका वर्णन आपके लिए करना असंभव है।

यह कहकर, पादरी जी चुप हो गए, थोड़ा आगे झुक गए, उनका सरि झुक गया, उनकी आँखें बंद हो गईं, और एल्डर ने धीरे से और चुपचाप अपने दाहनि हाथ की फैली हुई हथेली से उनके हृदय पर एक वृत्त बनाया। उनका चेहरा अद्भुत रूप से बदल गया था और उसमें से ऐसी असाधारण रोशनी नकिल रही थी कि उन्हें देखना भी असंभव था; जबकि उनके होंठों

पर और उनके प्रबुद्ध चेहरे के पूरे भाव में ऐसी आध्यात्मिक आनंद की चमक थी कि वे, मानो, एक सांसारिक देवदूत लग रहे थे, जैसे कि वे गहरी भावना के साथ किसी चीज़ पर ध्यान लगा रहे हों और उसे सुन रहे हों।

इस प्रकार आधा घंटा बीत गया, जिसके बाद रेवरेंड ने कहा:

'आह, काश तुम जान पाते, मेरे प्रिय, कि धर्मात्माओं के लिए स्वर्ग में कितनी आनंद, कितनी मधुरता प्रतीक्षा कर रही है, तो तुम इस सांसारिक जीवन के दुःखों को कृतज्ञतापूर्वक सहने का संकल्प लेते। भले ही यह कोठरी कीड़ा-मकोड़ा से भरी हो, और वे हमारे जीवन भर हमारे शरीर को नोचते रहें, तब भी हमें इसे पूरे दिल से स्वीकार करना चाहिए, जब तक कि हम उस दिव्य आनंद को न खो दें।

कृपा से परिपूर्ण एल्डर का प्रभाव केवल सारोव हर्मिटेज तक ही सीमित नहीं था। उन्होंने स्थानीय महिला मठवाद के विकास में एक असाधारण भूमिका निभाई। विशेष रूप से मार्मिक थे रेवरेंड सेराफिम के दिव्येवो समुदाय के साथ संबंध, जिसकी स्थापना लगभग 1780 में व्लादिमीर गवर्नोरेट की एक ज़मींदार, कर्नल की विधवा, अगाफ्या सेमेनोव्ना मेलगुनोवा ने की थी। कम उम्र में अपने पति को खोने के बाद, उन्होंने अपना जीवन ईश्वर को समर्पित करने का संकल्प लिया और, इस उद्देश्य के लिए, कई पवित्र स्थलों की यात्रा की। और इस प्रकार, सारोव मठ से लगभग बारह वर्स्ट दूर दिव्येवो गाँव में विश्राम करते समय, उन्होंने अर्ध-निद्रा में परमेश्वर की माता को देखा, जिन्होंने उन्हें उसी स्थान पर रहने और उनके चमत्कारी काज़ान आइकन के सम्मान में एक चर्च बनाने का निर्देश दिया। बाद में, मेलगुनोवा—जिन्होंने अलेक्जेंड्रा नाम से संन्यास की शपथ ली थी—के साथ by और अन्य तपस्वियों ने भी जुड़कर दिव्येवो मठ की स्थापना की; यह एक ऐसा मठ है जिसके साथ सारोव के परम पूजनीय सेराफिम का नाम अटूट रूप से जुड़ा हुआ है। यहाँ तक कि दिव्येवो मठ की संस्थापक ने भी, अपनी मृत्युशय्या पर, बहनों की भविष्य की भलाई का जिम्मा पूजनीय सेराफिम को सौंपा, जो उस समय एक हाइरोडीकन थे; और सारोव के मठाधीश, धन्य एल्डर पाचोमियस ने भी, इस संसार से प्रस्थान करते समय, दिव्येवो समुदाय की देखभाल का जिम्मा उन्हें ही सौंपा। आदरणीय सेराफिम ने वास्तव में पितृसुलभ प्रेम और चिंता के साथ समुदाय की देखभाल की। दिव्येवो की बहनें आशीर्वाद लेने और चिंता के विभिन्न मामलों पर मार्गदर्शन के लिए उनके पास जाती थीं, और उन्हें अपनी ज़रूरतों के बारे में बताती थीं। बदले में, वरिष्ठ सामुदायिक जीवन और व्यवस्था में गहरी रुचि लेते हुए, उन्हें विचारपूर्वक सटीक और आत्मा को पोषण देने वाली सलाह देते थे।

आदरणीय संत की प्रार्थनाओं के द्वारा, और उन पर विशेष आस्था रखने वाले तथा उनकी प्रार्थनाओं से आरोग्य प्राप्त करने वाले दाताओं की उदारता के कारण, दिव्येवो समुदाय काफी विस्तार हुआ, जो इसकी बढ़ती आबादी के कारण आवश्यक था। साथ ही, संत सेराफिम ने मठ को एक सामान्य प्राधिकरण और नेतृत्व के तहत दो भागों में विभाजित किया, ताकि एक अलग बाड़े के पीछे कुछ दूरी पर, एक अलग चैपल के साथ नए सेल बनाए गए, जो एक तरह से एक नया छोटा मठ बनाते थे। उन्होंने कहा, 'यह प्रभु और परमेश्वर की माता की इच्छा है।' संत ने ऐसा इसलिए किया क्योंकि वे इसे अनुचित और अस्वास्थ्यकर मानते थे कि अविवाहित कुंवारी लड़कियों का उन विधवाओं के साथ रहना, जिन्होंने कुछ समय वैवाहिक जीवन में बिताया था। ईश्वर की परम पवित्र माता के निर्देश पर, एल्डर ने इसके लिए दिव्येवो में काज़ान चर्च से सौ साज़ेन दूर, इस उद्देश्य के लिए दान की गई एक ज़मीन के टुकड़े पर एक स्थान चुना; इसके अलावा, उन्होंने नव-प्राप्त भूमि पर दिव्येवो की बहनों के लिए एक चक्की भी बनवाई। इस प्रकार, पूजनीय सेराफिम ने एक अलग समुदाय की स्थापना की, जिसे सेराफिम-दिवेयेवो समुदाय के नाम से जाना जाता है, जो कि पूर्व में उल्लेखित अगाफ्या सेमेनोवा मेलगुनोवा[540] द्वारा स्थापित समुदाय से अलग था।

वे दिव्येवो बहनों की, विशेष रूप से 'उसकी मिलि के अनाथों' की देखभाल करते थे, जैसा कि आदरणीय सेराफिम आमतौर पर नव-विभाजित समुदाय की बहनों को कहते थे, उन्होंने उनकी कठिन संन्यासी जीवन की कठिनाइयों में उन्हें अथक रूप से सांत्वना दी; उन्होंने कमजोर दिल वालों को रोका, जिनमें से कुछ तो सांसारिक जीवन में लौटना भी चाहते थे, क्योंकि कई लोग अत्यधिक कठिनाइयों से डर गए थे, क्योंकि उस समय मठ के पास कोई सहारा नहीं था। लेकिन आदरणीय सेराफिम के धन्य प्रभाव के कारण, दिव्येवो मठ में और भी अधिक बहनें आने लगीं, जो पवित्र एल्डर के पितृत्वपूर्ण मार्गदर्शन में, ईश्वर को प्रसन्न करने वाली मठवासी भक्ति का जीवन चाहती थीं। कुछ ने पवित्र एल्डर की प्रार्थनाओं के माध्यम से प्राप्त उपचारों के लिए कृतज्ञता के भाव से दिव्येवो मठ में अपना जीवन ईश्वर को समर्पित कर दिया।

---

[540] 27 जुलाई 1842 को, पवित्र धर्मसभा से एक फरमान प्राप्त हुआ जिसमें दिव्येवो मठ को दोनों अनुभागों वाले एक सामुदायिक मठ के रूप में पुष्टि की गई। 1861 में, दिव्येवो समुदाय को तीसरे दर्जे के महिला मठ का दर्जा दिया गया, और आज यह रूस के सबसे अधिक आबादी वाले और सुव्यवस्थित महिला मठों में से एक है, जिसमें 1,000 या उससे अधिक बहनें रहती हैं।

अन्य लोगों को, उनकी सूझबूझ के अनुसार, उन्होंने मानो बचपन से ही इसके लिए नियत किया था, और इस बुलावे की भावना में, अग्रिम रूप से उन्हें मठ में प्रवेश करने की ओर निर्देशित किया था। और जब समुदाय की बहनें, अपनी वित्तीय असुरक्षा और अनिश्चित स्थिति को देखते हुए, अपने भविष्य को लेकर चिंतित थीं, इस बारे में चिंतित होने लगीं, तो संत उन्हें सांत्वना देते हुए कहते थे कि यह स्थान उनके लिए स्वर्ग की रानी ने स्वयं चुना है, जो हर बात में उनकी मदद करेंगी, ताकि उनके पास अपना भोजन और चर्च हों, और मठ का नियम सारोव जैसा ही हो, और वह, 'गरीब सेराफिम', हमेशा उनके लिए अपने घुटने टेकते थे। दिव्येवो कन्वेंट की बहनें परम पूज्य सेराफिम के प्रति पूर्ण आज्ञाकारिता में थीं। वे बड़ों के आशीर्वाद के बिना कुछ भी नहीं करती थीं। जब भी कोई बहन कुछ समय के लिए मठ छोड़ना चाहती थी, तो वह जाने से पहले और मठ में लौटने पर, दोनों ही समय परम पूज्य सेराफिम से आशीर्वाद लेने जाती थी।

सराफिम ने दिव्येवो कन्वेंट की बहनों के लिए एक विशेष प्रार्थना नियम छोड़ा, ठीक उसी तरह जैसे उन्होंने उन्हें सैक्राइस्टी (पवित्र वस्तुओं का कक्ष) और चर्च की संपत्ति की देखभाल आदि के बारे में निर्देश दिए थे। शुरुआत में, 'मिलि समुदाय' की बहनों के पास एक अलग, समर्पित चर्च नहीं था, जिससे उन्हें काफी असुविधा होती थी। लेकिन जब ईश्वर-प्रसन्न संत ने उपर्युक्त मंत्रोच्चार को चमत्कारिक रूप से ठीक कर दिया, तो मंत्रोच्चार ने, बूढ़े के प्रति कृतज्ञता और अपनी आस्था के अनुसार, अपनी संपत्ति बेच दी और अपनी पूरी दौलत 'चक्की' की बहनों के लिए एक बड़ी पत्थर की चर्च के निर्माण के लिए दान कर दी। चर्च दो वेदियों के साथ बनाया गया था: एक मसीह के जन्म और दूसरी परमेश्वर की माता के जन्म को समर्पित, और इसे 1829 में पवित्र घोषित किया गया था।

जहाँ तक सुई के काम में शामिल श्रम और शिल्प की बात है, पूजनीय सेराफिम ने यह आदेश दिया कि दिव्येवो बहनें विशेष रूप से आम लोगों के लिए विशिष्ट काम करें। हालाँकि, वरिष्ठ चित्रकला, रेशम और सोने से कढ़ाई ( ), या इस तरह के अन्य कार्यों की अनुमति नहीं देते थे, जिनके लिए गहरे विचार की आवश्यकता होती है और जो कला और विलासिता की वस्तुओं से अधिक जुड़े होते हैं।

दिव्येवो समुदाय में वृद्ध की इन सभी आज्ञाओं का सख्ती से पालन किया जाता था। इनसे कोई भी विचलन आमतौर पर मठ के लिए अप्रिय परिणामों को जन्म देता था; लेकिन सेराफिम, अपनी प्रार्थनाओं के माध्यम से, इसे अभाव और विपत्तियों से बचाते थे। इस प्रकार, रेवरेंड फादर ने यह शर्त रखी कि मसीह के जन्म के चर्च में, जिसकी उन्होंने स्थापना की थी—जहाँ भजन संहिता का हमेशा पाठ किया जाना चाहिए—उद्धारकर्ता की प्रतिमा के सामने एक अटूट मोमबत्ती जलनी चाहिए और ईश्वर की माता की प्रतिमा के सामने एक अटूट दीपक जलना चाहिए; और उन्होंने यह भी जोड़ा कि, यदि इस शर्त का अक्षरशः पालन किया जाता है, तो दिव्येवो समुदाय को कभी भी अभाव या दुर्भाग्य का सामना नहीं करना पड़ेगा, और इस उद्देश्य के लिए आवश्यक तेल कभी खत्म नहीं होगा। लेकिन एक दिन, जब सभी लोग चर्च से चले गए थे, तो एक चर्च के सेवक ने देखा कि सारा तेल जल गया था और दीपक बुझ गया था; और यह तेल आखिरी बार के लिए था। तब, एल्डर सेराफिम की वसीयत को याद करते हुए, उसने सोचा कि उनके शब्द सच नहीं हुए थे, और इसलिए, उनकी अन्य भविष्यवाणियों पर भी भरोसा नहीं किया जा सकता। धन्य वृद्ध की दूरदृष्टि में उसका विश्वास डगमगाने लगा। लेकिन अचानक उसने एक खड़खड़ाहट की आवाज़ सुनी और सिर झुकाकर देखा कि दीपक जल उठा था और तेल से भरा हुआ था, जिसमें दो छोटे नोट तैर रहे थे। उलझन की स्थिति में, वह उस वृद्ध महिला एलेना वासिलीयेवना मंत्रोरोवा के पास भागी, जिनकी देखरेख में वह थी, और उन्हें उस अद्भुत दृष्टि के बारे में बताया। रास्ते में, उसकी मुलाकात एक किसान से हुई जिसने उसे 300 रूबल के बैंकनोट दिए कि वह उन्हें आगे दे दे, जो उसके माता-पिता की स्मृति में हमेशा जलने वाली मशाल के लिए तेल के पैसे थे।

दिव्येवो की ननों को की गई वसीयतों तक ही सीमित न रहते हुए, और वर्तमान से बहुत आगे की सोचते हुए, पूजनीय सेराफिम ने, जीवित रहते हुए ही, एक गिरिजाघर के निर्माण के लिए एक स्थल तैयार कर लिया था, जबकि इससे पहले बहनें प्रार्थना के लिए पैरिश चर्च का उपयोग करती थीं।

उन्होंने दिव्येवो की एक वृद्ध नन से कहते हुए उसे सांत्वना दी, 'हमारे पास भी, माँ, अपना खुद का कैथेड्रल होगा। हमारी ज़मीन पर हमारे अपने झुंड, हमारी अपनी भेड़ें और बैल होंगे। हमें, माँ, हतोत्साहित क्यों होना चाहिए? हमारे पास अपना सब कुछ होगा। बहनें हल जोतेंगी और अनाज बोएँगी।'

गिरिजाघर के निर्माण के बारे में सोचते हुए, रेवरेंड फादर ने काज़ान चर्च के पास, पुराने और नए मठों के बीच आधे रास्ते में, इसके लिए एक जगह चुनी और जमीन खरीदने के लिए पैसे जुटाए; लेकिन, परिस्थितियों के कारण, चर्च का निर्माण अनिश्चित काल के लिए रोक दिया गया।

इस प्रकार, सेराफिम ने एक अलग समुदाय की स्थापना की, जिसे सेराफिम-दिव्येवो समुदाय के नाम से जाना जाता है, जो उपर्युक्त अगाफ्या सेमेनोवा मेलगुनोवा द्वारा स्थापित पहले समुदाय से अलग था। फिर भी, भावना में उन्होंने मेलगुनोवो समुदाय को दिव्येवो समुदाय से अलग नहीं किया, और नन अलेक्ज़ेंड्रा (मेलगुनोवा) – जिनकी स्मृति का उन्होंने गहराई से सम्मान किया – को दोनों की संस्थापक माना। एल्डर ने ईश्वर की माता को नव-स्थापित समुदाय की संरक्षक के रूप में पहचाना।

उन्होंने एक वृद्ध नन से कहा, 'माँ, यह जान लो, कि इस स्थान को स्वर्ग की रानी ने स्वयं अपने नाम के महिमामंडन के लिए चुना है: वह तुम्हारी दीवार और तुम्हारी सुरक्षा होंगी।'

उसी देखभाल और प्रेम के साथ, पूजनीय सेराफिम ने मदर ऑफ गॉड के अनुग्रह-पूर्ण वादे को पूरा करते हुए, अर्दातोव्स्काया कॉन्वेंट[541] और ज़ेलोनोगोर्स्क महिला समुदाय[542] की भी देखभाल की, जिन्होंने एक अद्भुत दर्शन में, उन्हें इन तीन महिला मठों के मार्गदर्शन और संगठन का कार्य सौंपा था।

अपने जीवन के अंत के समीप, रेवरेंड को ईश्वर ने असाधारण अद्भुत अनुग्रह-प्रदानों से अलंकृत किया। उन्होंने फिर कभी अपनी कोठरी का दरवाज़ा बंद नहीं किया। अपने साथियों के साथ व्यवहार में, उनमें ईसाई नम्रता और विनम्रता की भावना सदैव स्पष्ट रूप से झलकती थी। उनकी बातचीत, चाहे वह संन्यासियों से हो या सामान्य लोगों से, अपनी अद्भुत सरलता से सभी को प्रभावित करती थी और अविश्वासियों तथा कम आस्था वाले लोगों पर भी गहरा, अप्रतिरोध्य प्रभाव छोड़ती थी, उन्हें उद्धारकारी पश्चाताप के मार्ग की ओर मोड़ती थी। चाहे आम लोग हों, विद्वान हों या संप्रदायिक, सभी को उनके साथ बातचीत से महान आध्यात्मिक शिक्षा और सांत्वना मिलती थी। अनुग्रह-पूर्ण एल्डर में दूरदर्शिता और चमत्कार करने का वरदान दिन-ब-दिन और अधिक प्रबल होता गया। सेवास्तोपोल अभियान में भाग लेने वाले कई जनरलों, अधिकारियों और सैनिकों की गवाही के अनुसार, जिन्होंने विदाई के उपहार के रूप में परम पूजनीय की कृपा और पवित्र जल प्राप्त किया, और जिन्होंने युद्ध के मैदान में विश्वास के साथ दोहराया: 'हे प्रभु, वरिष्ठ सेराफिम की प्रार्थनाओं के द्वारा दया करें!' —अत्यधिक खतरे और निश्चित मृत्यु के सामने भी सुरक्षित और अक्षुण्ण रहे। अक्सर, पूजनीय सेराफिम भविष्य के लिए आत्मा-रक्षक मार्गदर्शन देते थे—एक ऐसा भविष्य ज एक सामान्य मानव किसी भी तरह से पूर्वानुमान नहीं लगा सकता था—और वे अपने परामर्श की तलाश करने वालों के हृदय में उठ रहे प्रश्नों को, उनके द्वारा उन्हें व्यक्त करने से पहले ही, सूक्ष्मदर्शी रूप से पढ़ लेते थे। एक अवसर पर, दो युवतियाँ उनके पास आईं – एक तो पहले से ही परिपक्व आयु की, जो अपनी युवावस्था से ही ईश्वर के प्रति प्रेम से ओत-प्रोत थी और मठ-जीवन की लालसा रखती थी, और दूसरी एक ऐसी युवती थी जिसने मठ-जीवन के बारे में दूसरी बार सोचा भी नहीं था। लेकिन पवित्र संत ने पहली महिला से कहा कि संन्यास का मार्ग उसके लिए नहीं था, और उसे विवाह में खुशी मिलेगी; दूसरी से उन्होंने कहा कि वह एक नन बनेगी, और उस मठ का नाम भी बताया जहाँ वह अपने धार्मिक जीवन को समर्पित करेगी। दोनों कन्याएँ उलझन और असंतोष की भावना के साथ संत के पास से चली गईं, लेकिन परिणाम ने साबित कर दिया कि वह सही थे, और पवित्र संत की भविष्यवाणियाँ अक्षरशः सच हुईं। माननीय संत के सामने मानवीय आत्मा इस तरह उजागर हो जाती थी, जैसे आईने में चेहरा। कुछ लोग जो झूठी लाज के कारण संत की फटकार से डरते थे, वे अपने पापों का इकबालिया बयान देते, और संत स्वयं उनके पापों का वर्णन इस तरह करते मानो वे उनके सामने ही किए गए हों। अक्सर, संत अपनी उपस्थिति और एक साधारण से शब्द से ही पापियों को होश में ला देते थे, और वे अपने रास्ते सुधारने का संकल्प लेते थे। इस प्रकार, एक अवसर पर, एक किसान भीड़ को चीरकर उनके पास जाने का प्रयास कर रहा था, लेकिन हर बार ऐसा लगता था मानो कोई उसे पीछे धकेल रहा हो। अंत में, बड़े भाई स्वयं उसकी ओर मुड़े और कठोरता से पूछा: 'तुम कहाँ जाने की कोशिश कर रहे हो?' उस किसान के चेहरे पर तेज पसीना आ गया, और वहाँ मौजूद सभी लोगों के सामने अत्यंत विनम्रता की भावना के साथ, उसने अपने दुर्गुणों और विशेष रूप से पहले की गई चोरी के लिए ज़ोर से पश्चाताप करना शुरू कर दिया, यह महसूस करते हुए कि वह पवित्रता के ऐसे प्रकाश स्तंभ के सामने उपस्थित होने के अयोग्य था।

उस पवित्र तपस्वी से अनगिनत चमत्कारिक उपचार हुए, लेकिन, जैसा कि कभी-कभी देखा गया, वह विनम्रतापूर्वक आपत्ति जिताते थे कि यह उनके द्वारा, एक 'गरीब आत्मा' द्वारा, नहीं किया गया था, बल्कि ईश्वर की माता और मसीह के प्रेरितों की प्रार्थनापूर्ण मध्यस्थता के माध्यम से हुआ था। सराफिम झरने के पानी से, उनके

---

[541] 1861 में, पोक्रोव्स्काया अर्डत्स्काया समुदाय, जिसकी स्थापना लगभग 1800 में नगर की महिला वासिलिसा दमित्रिएवा पाखोमोवा ने की थी, को तीसरे दर्जे के मठ का दर्जा दिया गया।

[542] अब इसे स्पसो-ज़ेलोनोगोर्स्क तृतीय-श्रेणी सामुदायिक मठ के नाम से जाना जाता है।

आशीर्वाद से, जो भी पिया या नहाया, उन्हें अपनी बीमारियों से अद्भुत उपचार मिला; इस पानी को पूजनीय सराफिम की प्रार्थनाओं के माध्यम से ऐसी उपचार शक्ति प्राप्त हुई थी। बाहों के पूर्णतः लकवाग्रस्त एक भिक्षु को, बड़े भाई ने पवित्र जल का एक पात्र लेकर कहा: 'इसे लो और पी लो'; उस व्यक्ति ने पानी पी लिया और वह ठीक हो गया।

उन्होंने माँ के आइकन के सामने अपनी कोठरी में हमेशा जलने वाले दीपक के तेल से दूसरों को ठीक किया। ईश्वर-प्रसन्न संत ने एक किसान को, जो हैजा से मर रहा था, ठीक किया। उन्होंने उसे ईश्वर की माता की प्रतिमा के सामने बिठाया, उसे पवित्र जल पिलाया, और मठ के चारों ओर घूमने तथा गिरिजाघर में प्रवेश कर वहाँ प्रार्थना करने का निर्देश दिया, जहाँ, वरिष्ठ की भविष्यवाणी के अनुसार, 'ईश्वर की दया' ने उस मरणासन्न व्यक्ति को ठीक कर दिया। अपने जीवनकाल में ही, पूजनीय सेराफिम कई लोगों को स्वप्न में प्रकट हुए और उन्हें घातक बीमारियों से ठीक किया, विशेष रूप से हैजा की महामारियों के दौरान, जब ईश्वर की कृपा से, न केवल व्यक्तियों को बल्कि पूरे गांवों के निवासियों को भी सेराफिम के झरने के पवित्र जल से ठीक किया गया। ईश्वर-प्रसन्नकर्ता कभी-कभी दुष्टात्माओं से ग्रस्त लोगों को केवल अपनी उपस्थिति, क्रॉस के चिह्न और प्रार्थना से ही ठीक कर देते थे। सेराफिम की प्रार्थनाएँ ईश्वर के समक्ष इतनी शक्तिशाली थीं कि कई मामलों में बीमार लोग अपनी मृत्युशय्या से ठीक हो उठे। उदाहरण के लिए, किसी वरोतिलोव की पत्नी मृत्यु के कगार पर थी; उसके पति, जो उस पूजनीय व्यक्ति में गहरी आस्था रखते थे, ने अपनी बीमार पत्नी की मदद के लिए आँसू भरी विनती की; लेकिन एल्डर ने घोषणा की कि उसकी पत्नी का निधन होना तय है। तब वोरोटिलोव, फूट-फूट कर रोते हुए, उनके पैरों में गिर पड़े, और उनसे उसकी जान और सेहत की बहाली के लिए प्रार्थना करने की विनती करने लगे। सम्माननीय फादर लगभग दस मिनट तक 'गहन' प्रार्थना में लीन रहे, फिर उन्होंने अपनी आँखें खोलीं, वोरोतिलोव को खड़ा होने में मदद की और खुशी से उससे कहा: 'तो फिर, मेरे प्रिय, प्रभु तुम्हारी पत्नी को जीवन प्रदान करते हैं। शांतिपूर्वक अपने घर जाओ।' वोरोटिलोव खुशी से घर भागा, जहाँ उसे पता चला कि ठीक उसी क्षण जब रेवरेंड सेराफिम प्रार्थना में लगे थे, उसकी पत्नी को राहत मिली थी। जल्द ही, वह पूरी तरह से ठीक हो गई।

कुछ लोगों को उन्होंने निकट मृत्यु की भविष्यवाणी की, यह कामना करते हुए कि वे ईसाई संस्कार के बिना अनंतकाल में न जाएँ; दूसरों को, उनकी सुधार के लिए, उस दैवीय दंड की भविष्यवाणी की जो उन पर पश्चाताप न करने पर आएगा। ट्रिनिटी-सर्गेयस लाव्रा के दिवंगत मठाधीश, आर्चिमैंड्राइट एंथनी[543] , जो उस समय विसोकोगोर्स्क मठ के निर्माता थे, को उन्होंने 'महान लाव्रा, जिसे दैवीय प्रावधान ने उन्हें सौंपा है' में एक त्वरित और अप्रत्याशित स्थानांतरण की भविष्यवाणी की।

जैसे-जैसे वे अपने कठिन जीवन के अंत के करीब पहुँच रहे थे, आदरणीय संत न केवल अपने दुखों को कम नहीं करते थे, बल्कि अपने पिछले कार्यों में नए श्रम और करतब जोड़ते गए। अपने जीवन के अंतिम वर्षों में, संत फर्श पर बैठकर सोते थे, उनकी पीठ दीवार से टिकी होती थी और उनके पैर फैले होते थे; कभी-कभी वह अपना सिर एक पत्थर या लकड़ी के ठूंठ पर टिकाकर आराम करते, या अपनी की कोठरी में बिछे वाली बोरी, ईंट और लकड़ी के लट्ठों पर लेट जाते; और जब इस दुनिया से उनके प्रस्थान का क्षण नजदीक आता, तो वह घुटनों के बल बैठकर, अपने कोहनियों के बल झुककर, अपने हाथों से सिर को सहारा देकर पेट के बल सो जाते। वह दिन में केवल एक बार, शाम को भोजन करते थे; उनके कपड़े साधारण और फटे-पुराने थे। और जब एक धनी व्यक्ति ने उनसे पूछा कि वह ऐसे फटे-पुराने कपड़े क्यों पहनते हैं, तो साधु ने उत्तर दिया:

राजकुमार जोआसाफ, संन्यासी बरलाम द्वारा दिए गए चोगा को शाही बैंगनी चोगा[544] से भी अधिक श्रेष्ठ और कीमती मानते थे।

आदरणीय सेराफिम पहले ही संसार से मुक्त हो चुके थे, जबकि साथ ही साथ उन लोगों की ओर से ईश्वर के समक्ष असीम प्रेम के साथ अनवरत मध्यस्थता करते थे जो उसमें रहते थे। स्वर्ग ही उसका सच्चा घर बन गया था। जब करीब से आए आगंतुक सेराफिम से पूछते कि क्या उनके पास अपने रिश्तेदारों के लिए कोई संदेश है, तो वह उद्धारकर्ता और परमेश्वर की माता की प्रतिमाओं की ओर इशारा करते और मुस्कुरा कर कहते:

'मेरा परिवार ये हैं; जहाँ तक मेरे जीवित रिश्तेदारों की बात है, मैं तो पहले से ही एक जीवित मृतक हूँ।'

---

[543] एंथनी, जन्म ए. जी. मेदवेदेव, जो मॉस्को के मेट्रोपॉलिटन और 1831 से 1877 तक ट्रिनिटी-सर्गीय लाव्रा के मठाधीश, फिलारेट के एक प्रसिद्ध सहयोगी और सहकर्मी थे, उन्हें संत के व्यक्तिगत अनुरोध पर इस पद के लिए चुना गया था और मठाधीश के रूप में अपने लंबे कार्यकाल के दौरान, उन्होंने लाव्रा को हर तरह से समृद्धि की स्थिति में पहुँचा दिया।

[544] 19 नवंबर के अंतर्गत मेनायोन-चेती देखें।

उस समय, पूरे रूस में आदरणीय सेराफिम को एक महान तपस्वी और चमत्कार करने वाले के रूप में जाना और सम्मानित किया जाता था[545] । एक अवसर पर, यह देखा गया कि प्रार्थना करते समय, साधु हवा में तैर रहे थे; और जब एक भयभीत गवाह ने चिल्लाकर बताया, तो साधु ने उसे अपनी मृत्यु के बाद तक इसके बारे में बात न करने के लिए सख्त मनाही कर दी, यह धमकी देते हुए कि जिसे बीमारी से उन्होंने उसे ठीक किया था, वह वापस आ जाएगी[546] ।

उनके निधन से एक साल और दस महीने पहले, परम पूज्य सेराफिम को ईश्वर की माता का दर्शन प्राप्त हुआ। यह घटना 25 मार्च को, घोषणा के पर्व के दिन हुई। दो दिन बाद, उन्होंने दिव्येवो की एक धर्मपरायण वृद्ध नन को, जिसे यह अद्भुत दर्शन मिला था, इस घटना के बारे में बताया, ताकि वह और दिव्येवो की अन्य बहनें अपने दुख से भरे मठवासी जीवन में सांत्वना पा सकें। ईश्वर के पुरुष ने उस वृद्ध नन से कहा कि वह किसी भी चीज़ से न डरे, और वह स्वयं घुटनों के बल बैठ गए, अपने हाथ आकाश की ओर उठाए। एक आवाज़ हुई, मानो किसी तेज़ हवा की, और फिर चर्च का भजन गूँज उठा।

'देखो, हमारी महिमामय, परम पवित्र माता, ईश्वर की अति पवित्र माता, हमसे मिलने आ रही हैं!' रेवरेंड फादर ने उद्घोष किया।

एक तेज प्रकाश ने कोठरी को रोशन कर दिया, और एक अद्भुत सुगंध चारों ओर फैल गई

उनके आगे दो स्वर्गदूत चल रहे थे, जिनके हाथों में अभी-अभी खिले हुए फूलों वाली टहनियाँ थीं। उनके पीछे चमकदार सफेद वस्त्रों में सजे संत जॉन द फोररनर और इवेंजलिस्ट जॉन द थियोलॉजिस्ट चल रहे थे; उनके बाद ईश्वर की माता चल रही थीं, जिनके साथ बारह पवित्र कुंवारी - शहीद और पूजनीय महिलाएं थीं। स्वर्ग की रानी ने एक ओढ़नी पहन रखी थी, जैसा कि ईश्वर की दुखी माता की प्रतिमा में दर्शाया गया है, और वह असाधारण प्रकाश और अकथनीय सुंदरता से दमक रही थीं; ओढ़नी पर एक एपिटिरैक्लियन जैसा कुछ था, और उनकी बाहों पर बाजूबंद थे; उसके सिर पर एक शानदार, ऊँचा मुकुट था, जो क्रॉस से भव्य रूप से सुसज्जित था और ऐसी रोशनी से चमक रहा था कि उसे देखना असंभव था, ठीक वैसे ही जैसे स्वयं परमेश्वर की माता के दैवीय मुखमंडल को देखना असंभव था। कुंवारी कन्याएं अतुलनीय स्वर्गीय महिमा और सुंदरता में, मुकुट पहनकर, जोड़ों में परमेश्वर की माता के पीछे चल रही थीं। कोठरी अचानक विशाल हो गई और सूर्य की रोशनी से भी अधिक तेज और सफेद प्रकाश से भर गई। सर्व पवित्र कुँवारी ने सम्माननीय बूढ़ी महिला से बड़ी कृपापूर्वक बात की, मानो किसी करीबी रिश्तेदार से बात कर रही हों। हालाँकि, वह बूढ़ी महिला डर के मारे जमीन पर लोट पड़ी; लेकिन परमेश्वर की माता ने उसे आश्वस्त किया और उसे उठने का आदेश दिया। और पवित्र कुंवारीयों ने, कई दुखों से भरी अपनी ज़िंदगी में उस वृद्ध महिला को सांत्वना देते हुए, उसे बताया—अपने चमकते हुए मुकुटों की ओर इशारा करते हुए—कि उन्हें ये उनके सांसारिक दुखों और अपमानों के लिए मिले थे। परम पवित्र मसीह की माता ने आदरणीय सेराफिम से लंबी बात की, लेकिन वह वृद्ध महिला उनकी बातचीत को समझ नहीं सकी; उसने केवल इतना सुना कि परम पवित्र ने उनसे दिव्येवो की अपनी कुंवारी कन्याओं को न छोड़ने के लिए कहा, और उन्हें अपनी सहायता और मध्यस्थता का वादा किया। यह दृश्य ईश्वर की माता के साथ समाप्त हुआ, जो पवित्र कुंवारी कन्याओं के मुकुटों की ओर इशारा करते हुए, अन्य कुंवारी कन्याओं और तपस्वियों को भी वही वादा कर रही थीं। फिर, पवित्र वृद्ध की ओर मुड़कर, उन्होंने कहा:

'जल्द ही, मेरे प्रिय, तुम हमारे साथ होगे।'

फिर उन्होंने उस पर आशीर्वाद दिया, जिसके बाद वहाँ उपस्थित सभी संतों ने उनसे विदा ली।

भिक्षुत्व के गुणों और तपस्या के कार्यों की सीढ़ी पर लगातार ऊँचाई पर चढ़ते हुए, परम पूजनीय सेराफिम अंततः इस दुनिया से प्रस्थान के करीब पहुँच गए। अपनी मृत्यु से एक साल पहले, वे पूरी तरह से थके हुए महसूस कर रहे थे। उस

---

[545] ऑर्थोडॉक्स चर्च के धार्मिक पुरोहितों और बिशपों, जो अपने तपस्वी कार्यों और आध्यात्मिक जीवन के लिए विख्यात थे, ने पूजनीय सेराफिम को सर्वोच्च सम्मान दिया और उन पर गहरी आस्था रखी; उन्होंने उनसे परामर्श मांगने के लिए लिखा। वोरोनज़ के आर्चबिशप एंथनी, जो अपने पवित्र जीवन और मठवासी उपलब्धियों के लिए प्रसिद्ध थे, उन्हें विशेष रूप से उच्च सम्मान देते थे। ईश्वर के इस पुरुष के धन्य निधन के तुरंत बाद, उन्होंने उनके बारे में इस प्रकार कहा: 'हम सिक्के की मोमबत्तियों की तरह हैं, जबकि वह एक बड़े आकार की मोमबत्ती की तरह हैं, जो सदैव प्रभु के सामने जलती रहती है, अपने अतीत के जीवन के द्वारा और परम पवित्र त्रिमूर्ति के समक्ष अपनी वर्तमान निर्भीकता के द्वारा।'

[546] इस घटना की पुष्टि राजकुमारी ई.एस.एस. ने की, जो उनके लकवाग्रस्त बेटे के बयान पर आधारित थी, जिसे रेवरेंड फादर ने ठीक किया था। इस पर, वृद्ध ने, यह देखते हुए कि पीड़ित ने यह सब देखा था, उसे सख्ती से 'चुप रहने' और अपनी मृत्यु तक इसके बारे में न बोलने का निर्देश दिया, जिसे उस युवक ने ठीक वैसे ही किया जैसा कहा गया था।

समय, उनकी आयु 72 वर्ष की हो गई थी। वे अपने आश्रम में कम आने लगे, और सारोव में भी उन्हें कई आगंतुकों का स्वागत करना एक बोझ लगता था। उनके पैरों में होने वाले तीव्र कष्ट—जो अनवरत जागने, एक हजार दिन और रातों तक बहुत सुबह से ही एक पत्थर पर खड़े होकर प्रार्थना करने, और डकैतों द्वारा दी गई क्रूर यातनाओं के कारण अत्यंत पीड़ादायक रूप से दर्द करते थे—ने उनके जीवन के अंत तक उन्हें कोई राहत नहीं दी, और उनके पैरों के घावों से लगातार पस निकलता रहता था, फिर भी आदरणीय पिता आत्मा में प्रसन्न और आनंदित बने रहे, उस स्वर्गीय आनंद और महिमा को महसूस करते हुए जो ईश्वर ने उन लोगों के लिए तैयार की थी जो उनसे प्रेम करते थे।

कई विश्वासियों पर चमत्कारिक रूप से स्वास्थ्य लाभ प्रदान करते और अपनी दिव्यदृष्टि की अद्भुत प्रतिभा के माध्यम से कई लोगों के कल्याण और मोक्ष में योगदान देते हुए, पूजनीय सेराफिम ने अब अपने निकटवर्ती निधन की भविष्यवाणी करनी शुरू कर दी। जब वह दूसरों को अपनी अंतिम शिक्षाएँ दे रहे थे, तो उन्होंने बार-बार जोर देकर कहा: 'हम फिर कभी एक-दूसरे से नहीं मिलेंगे'; उन्होंने अन्य मठाधीशों के साथ-साथ सामान्य लोगों से भी आग्रह किया कि वे अब से अपनी मुक्ति से संबंधित सभी मामलों और चिंताओं की जिम्मेदारी स्वयं लें, यह बताते हुए कि वे फिर कभी नहीं मिलेंगे और हमेशा के लिए अलग हो रहे हैं, और उनसे अपने लिए प्रार्थना करने का अनुरोध किया। इस दौरान, पवित्र एल्डर को अक्सर अपनी कोठरी के पास बरामदे में, उनके अनुरोध पर उनके लिए तैयार किए गए ताबूत पर देखा जाता था, जहाँ वे कब्र के बाद के जीवन पर चिंतन में खो जाते थे, अक्सर कड़वे रोने के साथ। उन्होंने दिव्येवो की कुछ बहनों से इस बारे में परोक्ष रूप से, और कभी-कभी पूरी तरह से खुलकर बात की, यह दोहराते हुए:

'मेरी शक्ति क्षीण हो रही है; अब तुम अपने दम पर जीओ; मैं तुम्हें प्रभु और उनकी परम पवित्र माता के हवाले करता हूँ।'

कुछ लोगों ने ईश्वर-प्रसन्नकर्ता से आने वाले महा-उपवास से पहले सारोव में उनसे मिलने का आशीर्वाद माँगा, लेकिन उन्होंने उत्तर दिया:

'तब मेरे दरवाज़े बंद हो जाएँगे; आप मुझे नहीं देख पाएँगे।'

और उनके शारीरिक रूप से यह बहुत स्पष्ट हो गया था कि पूजनीय सेराफिम का जीवन तेजी से समाप्त हो रहा था, फिर भी आत्मा में वे पहले से भी अधिक सचेत रहे। उन्होंने अपने निकटतम मित्रों और साथियों, जैसे कि धन्य हायरomonk टिमोन, जो नादेवस्काया रेगिस्तान में रहते थे, को अपने निकटवर्ती निधन का संकेत दिया, और उन्हें अपनी अंतिम, आत्मा-रक्षक शिक्षाएँ प्रदान कीं।

'बोओ,' उसने उससे दोहराया, 'बोओ, फादर टिमोन, तुम्हें जो गेहूँ दिया गया है। इसे अच्छी मिट्टी में बोओ, इसे रेत पर बोओ, इसे चट्टान पर बोओ, इसे रास्ते के किनारे बोओ, इसे काँटों के बीच बोओ; जहाँ भी यह गिरेगा, यह जड़ पकड़ेगा, बढ़ेगा और फल देगा, भले ही तुरंत नहीं।' और तुम्हें जो प्रतिभा दी गई है, उसे मिट्टी में मत दबाना, कहीं ऐसा न हो कि तुम्हारे स्वामी द्वारा तुम्हें दंडित किया जाए; बल्कि इसे मुद्रा-परिवर्तकों को दे दो – वे तुम्हें बदला दे देंगे।

आदरणीय सेराफिम के धन्य निधन से चार महीने पहले, अगस्त 1832 में, तम्बोव के बिशप, हिज़ ग्रेस आर्सेनियस (जो बाद में कीव के मेट्रोपॉलिटिन बने), ने उनके आश्रम में उनसे मुलाकात की। सारोव का दौरा करने के बाद, बिशप ने सेराफिम के आश्रम का विस्तार से निरीक्षण किया, उनके विनम्र कोठरी में, और यहाँ तक कि कोठरी की दीवार और चूल्हे के बीच उस छोटी सी जगह में भी गए, जहाँ ईश्वर-प्रसन्न तपस्वी अक्सर प्रार्थनापूर्ण कार्यों में स्वयं को समर्पित करते थे और जिसमें मुश्किल से एक व्यक्ति ही खड़ा या घुटने टेक सकता था, क्योंकि वहाँ बैठना या किसी भी चीज़ से सहारा लेना असंभव था। इस अवसर पर, पवित्र एल्डर ने उनकी Eminence को 'नम्र, पापी सेराफिम की ओर से' एक उपहार भेंट किया: एक जपमाला, कैनवास में लिपटी मोमबत्तियों का एक बंडल, लाल शराब का एक पात्र और पवित्र तेल की एक बोतल। उनकी उत्कृष्टता ने, कृपापूर्वक भेंट स्वीकार कर ली, लेकिन वे इसके महत्व को नहीं समझ सके; लेकिन बाद की घटनाओं ने उन्हें दिखा दिया कि ईश्वर के तपस्वी ने उनके निकटवर्ती निधन की स्पष्ट रूप से भविष्यवाणी की थी और शराब, तेल और मोमबत्तियाँ उनकी स्मृति सेवा के लिए थीं, जिसकी उन्होंने उनकी उत्कृष्टता से शब्दों में भी विनती की थी। इसके बाद, परम पावन आर्सेनियस ने पवित्र वृद्ध की इच्छा का अक्षरशः पालन किया, उन्होंने कैनवास और माला अपने लिए रख ली, जबकि बाकी चीजों का उपयोग उन्होंने पूजनीय सेराफिम के लिए अंतिम संस्कार की प्रार्थना के दौरान स्मरणोत्सव के लिए किया।

आदरणीय पिताजी ने अपने सेल सहायक से बार-बार बात की, अपने निकटवर्ती निधन का संकेत देते हुए:

'मेरा निधन निकट है!'

सारोव के एक वृद्ध को कुछ नरि्देश देने के बाद, उन्होंने उसे एक मोमबत्ती बुझाने के लिए कहा, और जब वह बुझ गई, तो उन्होंने कहा:

'मैं भी इसी तरह चला जाऊँगा।'

अपने नधिन से ठीक पहले, रेवरेंड फादर ने अपने कुछ करीबी लोगों को पत्र भेजने का नरि्देश दयिा, जसिमें उन्हें अपने मठ में आने का नमिंत्रण दयिा गया; और जो समय पर नहीं आ सकते थे, उनसे उन्होंने नविेदन कयिा कि उनके नधिन के बाद, वे उनकी ओर से उनकी आत्मा-रक्षक सलाह पहुँचाएँ, और स्पष्टीकरण स्वरूप उन्होंने जोड़ा:

'वे मुझे खुद नहीं देख पाएंगे!'

1833 की शुरुआत से पहले, रेवरेंड ने डॉर्मशिन कैथेड्रल में वेदी के बगल में अपने लिए एक कब्र नाप ली। अपने नधिन से एक सप्ताह पहले, मसीह के जन्म के पर्व पर, उन्होंने दैवीय प्रार्थना सभा में भाग लयिा, पवत्रि Communion ग्रहण की, और प्रार्थना सभा के बाद मठ के नरि्माता, हेग्यूमेन नफिोंट से बात की, उनसे भाइयों—वशिेषकर छोटे भाइयों—की देखभाल करने को कहा और यह वसीयत की कि उनके नधिन के बाद उन्हें उसी ताबूत में दफनाया जाए जो उन्होंने अपने लिए तैयार कयिा था। रवविार, 1 जनवरी 1833 को, पवत्रि एल्डर अंतमि बार चकित्सिालय में जोसमिा और सवाती चर्च में आए, सभी प्रतमिाओं को प्रणाम कयिा, खुद मोमबत्तयिाँ जलाईं, और फरि मसीह के पवत्रि रहस्यों की प्रथा के अनुसार पवत्रि कम्युनयिन ग्रहण कयिा। ल्ि॥७जी के अंत में, उन्होंने प्रार्थना कर रहे सभी भाइयों को वदिाई दी, उन सभी को आशीर्वाद दयिा, उन्हें चूमा, और सांत्वना के शब्द कहते हुए कहा:

'बचाए जाओ, हतोत्साहति न हो, सतर्क रहो; आज तुम्हारे मुकुट तैयार कएि जा रहे हैं।'

तब पवत्रि वृद्ध ने पवत्रि क्रूस और परमेश्वर की माता के प्रतमिा को प्रणाम कयिा; और फरि, वेदी के चारों ओर घूमकर और उसे प्रथागत श्रद्धांजलि अर्पति करने के बाद, वे उत्तरी द्वारों से पवत्रि स्थल से बाहर चले गए, मानो इस प्रकार यह संकेत देते हुए कि एक द्वार—जन्म का मार्ग—से व्यक्ति जीवन में प्रवेश करता है, और दूसरे—मृत्यु के द्वार—से वह उससे वदिा लेता है।

उसी दनि, भाई पॉल, जो वृद्ध के साथ एक कोठरी साझा करते थे और अक्सर उनके परचिारक के रूप में काम करते हुए उन्हें भोजन लाते थे, ने देखा कि पूज्य पति तीन बार उस दफन स्थल पर गए थे जसिे उन्होंने अपने लिए तैयार कयिा था, जहाँ वे काफी देर तक जमीन को घूरते रहे। उस शाम, उसी भक्षिु ने वृद्ध को अपनी कोठरी में ईस्टर के भजन गाते हुए सुना, जो मसीह के पुनरुत्थान की महमिा कर रहे थे।

अगले दनि, 2 जनवरी को, फादर पावेल सुबह छह बजे भोर की मस्सिा में शामलि होने के लिए अपनी कोठरी से नकिले और प्रवेश कक्ष में उन्हें धुएँ और जले हुए पदार्थ की गंध आई। सेराफमि की कोठरी में मोमबत्तयिाँ हमेशा जलती रहती थीं; वरषि्ठ उन्हें कभी बुझाते नहीं थे, और इस संबंध में दी गई सभी चेतावनयिों का वे आमतौर पर जवाब देते थे:

'जब तक मैं ज़दिा हूँ, आग नहीं लगेगी; लेकनि जब मैं मरूँगा, तो मेरी मृत्यु आग से चह्निति होगी।'

और ऐसा ही हुआ।

अपनी रोज़ की प्रार्थना करने के बाद, भाई पावेल ने बड़े भाई के दरवाज़े पर दस्तक दी, लेकनि वह बंद था। फरि उसने दूसरों को बताया, यह मानते हुए कि बड़े भाई अपने तपस्थल पर चले गए हैं और सेल में आग जल रही है।

जब दरवाज़ा अंदर से तोड़कर खोला गया, तो उन्होंने देखा कि आग नहीं थी, लेकनि बखिरी हुई कतिाबें, साथ ही वभिन्नि कैनवास की चीजें जो कई लोगों ने श्रद्धा से पूजनीय के लिए लाई थीं, धधक रही थीं; स्वयं वरषि्ठ न तो सुनाई दे रहे थे और न ही दखिाई दे रहे थे। उन्होंने धधकती हुई चीज़ों को बुझा दयिा और सुबह की प्रार्थना सभा में उपस्थति अन्य भक्षिुओं को जो कुछ हुआ था, उसकी सूचना दी। कई भाई बंधु बूढ़े की कोठरी की ओर दौड़े। एक मोमबत्ती जलाने पर, उन्होंने सेराफमि को उनकी सफेद चोगे में, उनकी प्रार्थना के आदी स्थान पर, एक छोटे से उपदेश-मंच के सामने घुटने टेके हुए देखा, जसिके गले में तांबे का एक क्रूस था। उनके हाथ, छाती पर क्रॉस के चह्निन में जुड़े हुए, उस लेक्चरन पर रखी उस पुस्तक पर टकि हुए थे, जसिके सामने वे ईश्वर की माता की प्रतमिा के समक्ष अपनी दैनकि प्रार्थना का अनुष्ठान कर रहे थे। यह सोचकर कि वृद्ध सो गए हैं, भक्षिुओं ने उन्हें जगाना शुरू कयिा; लेकनि उनकी आत्मा पहले ही अपने सांसारकि नविास को छोड़कर अपने स्रष्टा के पास लौट चुकी थी। सेराफमि की आँखें बंद थीं, लेकनि उनका चेहरा जीवंत और ईश्वर के चतिन तथा प्रार्थना से भरा हुआ था; इसके अलावा, उनका शरीर अभी भी गर्म था।

मठाध्यक्ष हेगूमन नफिोंट के आशीर्वाद से, भाइयों ने दविंगत तपस्वी के शरीर को धोया, उसे मठवासी वस्त्र पहनाए, और उसकी इच्छानुसार, उसके जीवनकाल में तैयार की गई ओक की ताबूत में, उसके प्रयि शष्यि, ट्रनिटि-

सर्गीय लाव्रा के मठाधीश, आर्चमिंड्राइट एंथनी द्वारा भेजी गई मोती के सीप की सेंट सर्जयिस की प्रतमिा के साथ उसे रख दयिा।

पवत्रि एल्डर के नधिन की खबर दूर-दूर तक तेजी से फैल गई, और सारा सारोव क्षेत्र जल्द ही मठ में उमड़ पड़ा। दवियेवो बहनों का दुख वशिष रूप से गहरा था, क्योंकि उन्होंने उनमें अपने प्रयि आध्यात्मकि पता और संरक्षक को खो दयिा था; और उनका दुख और भी अधकि असहनीय था क्योंकि उनके आध्यात्मकि मार्गदर्शक के रूप में उनकी जगह लेने के लिए कोई सक्षम व्यक्ति नहीं था।

आदरणीय सेराफमि के धन्य नधिन की रात, कर्सक प्रांत के ग्लस्कि हर्मटिज में रहने वाले हरिोमोंक फलिारेट, जब मातन्सि के बाद चर्च से बाहर नकिल रहे थे, तो उन्होंने भाइयों का ध्यान आकाश में एक असाधारण प्रकाश की ओर आकर्षति कयिा और कहा:

'धर्मनष्ठिों की आत्माएँ इसी प्रकार स्वर्ग के लिए प्रस्थान करती हैं! अब पता सेराफमि की आत्मा स्वर्ग की ओर आरोहण कर रही है।'

आठ दनिों तक, पूज्य सेराफमि का शरीर डोर्मशिन कैथेड्रल में अंतमि दर्शन के लिए रखा गया। धन्य एल्डर के लिए ठीक उसी स्थान पर कब्र तैयार की गई थी जसिे उन्होंने स्वयं बहुत समय पहले चुना था। अंतमि संस्कार के दनि से पहले ही, सारोव मठ आसपास के क्षेत्रों और प्रांतों से आए हजारों लोगों से भर गया था। सभी ने सर्वसम्मतसि उस धन्य संन्यासी के नधिन पर शोक मनाया। अंतमि संस्कार के दनि, लटिर्जी में इतने सारे लोग थे कि ताबूत के पास रखी मोमबत्तयिाँ दमघोंटू गर्मी के कारण बुझ गईं। परम पूज्य सेराफमि के शरीर का दफ़न सारोव के एबॉट नफिोंट द्वारा, एक बड़ी संख्या में मठवासी समुदाय के साथ मलिकर कयिा गया; उनके शरीर को कैथेड्रल वेदी के दाईं ओर सुलाया गया। बाद में कब्र के ऊपर एक कब्र के रूप में लोहे का स्मारक बनाया गया, जसि पर यह शलिालेख अंकति था: 'वे 72 वर्ष, 6 महीने और 12 दनिों तक परमेश्वर की महमिा के लिए जीवति रहे'।

और अपने परम वश्राम के बाद भी, पूजनीय सेराफमि ने उन सभी पर वभिन्नि प्रकार के चमत्कार और उपचार करना जारी रखा जो श्रद्धापूर्वक उनके पास आए। और जब उनका सांसारकि सफर समाप्त हो गया, तब भी उन्होंने लोगों को वही प्रेम और सहायता देना जारी रखा, अपने सभी संबंधों में करुणा के अतुलनीय खजाने को समाहति करते हुए, उन्हें अकथनीय दया से 'मेरी प्रसन्नता' कहकर संबोधति करते हुए, ठीक वैसे ही जैसे वे अपने जीवनकाल में सभी को कहते थे। वे वशिष रूप से सारोव के भक्षिुओं और दव्यिेवो की बहनों को उनके उपचार और सांत्वना देने के लिए अक्सर प्रकट हुए।

इस प्रकार, एल्डर सेराफमि के परमधाम गमन के छह महीने से भी कम समय बाद, दव्यिेवो कॉन्वेंट की एक बहन पर भूतहा आक्रमण होने लगे। लेकनि एक रात उसने देखा, मानो वह दव्यिेवो के चर्च में थी, जहाँ आदरणीय सेराफमि भी मौजूद थे। एल्डर ने उस बीमार महलिा का हाथ पकड़ा—वहाँ मौजूद एक अन्य बहन के साथ—और उसे पवत्रि स्थल में ले जाते हुए प्रतीत हुए, उसके साथ वेदी के चारों ओर घूमे, और वह अचानक हल्की और स्वस्थ महसूस करने लगी। जागने पर, उसने क्रॉस का चह्नि बनाया और पूरी तरह होश में आ गई; वह पूरी तरह स्वस्थ होकर जागी, और उस समय से वह अपने पुराने दौरे से मुक्त हो गई और पूर्ण स्वास्थ्य का आनंद लेने लगी।

दव्यिेवो मठ की एक और नन आँखों की बीमारी से गंभीर रूप से बीमार पड़ गई। 1835 के नए साल की पूर्व संध्या पर, उसे एक सपना आया जसिमें उसने खुद को टक्विनि की 'माँ ऑफ गॉड' चर्च में पाया, और उसने पूजनीय सेराफमि को शाही द्वारों से सफेद चोगा पहने हुए बाहर आते देखा; उन्होंने उसे कुछ हवा दी और उसे अपनी आँखें उससे पोंछने का नर्दिेश दयिा।

उसने उनसे पूछा:

'क्या यह आप हैं, फादर?'

सेराफमि ने उत्तर दयिा:

'तुम, मेरी प्रसन्नता, अवश्वासी कैसे हो सकती हो! तुमने खुद मुझसे पूछा, फरि भी तुम वश्वास नहीं करती, जबकि मैं तुम्हारे बीच दव्यि लटिर्जी का अनुष्ठान करता हूँ।'

इसके बाद, वह साधु अदृश्य हो गए। उस समय से, नन की आँखों की बीमारी ठीक हो गई।

माउंट अथोस के रूसी तपस्वी, जन्हिें सभी 'पवत्रि पर्वत के संन्यासी' के रूप में जानते और सम्मानति करते थे, हयरोमोंक सेराफमि (जनिका संन्यासी नाम सेरजयिस था), अपने नजिी नोट्स में नम्निलखिति का वर्णन करते हैं:

'1849 में मैं बीमार पड़ गया। मेरी बीमारी जानलेवा थी; मुझे नहीं लगा कि मैं बच पाऊँगा। कोई भी इलाज मुझे स्वस्थ नहीं कर सका। मैं निराश हो गया। 1850 की एक शाम देर से अचानक किसी ने मुझसे धीरे से कहा: कल सेरोव के वरिष्ठ, फादर सेराफिम की पुण्यतिथि है; उनके लिए एक स्मरणोत्सव लिटिर्जी और एक स्मरणोत्सव सेवा मनाओ, और वह तुम्हें ठीक कर देंगे।' इसने मुझे बहुत सांत्वना दी। यद्यपि मैं फादर सेराफिम को व्यक्तिगत रूप से नहीं जानता था, लेकिन 1838 में सेरोव में रहते हुए मुझे उन पर विश्वास और प्रेम हो गया था। ये भावनाएँ मुझमें और भी प्रबल हो गईं जब, 1839 में, मैंने सपना देखा कि मैं पूरे दिल से फादर सेराफिम के लिए एक प्रार्थना सभा कर रहा था और ज़ोर से गा रहा था: 'आदरणीय फादर सेराफिम, हमारे लिए ईश्वर से प्रार्थना करें!' हालाँकि, जब सुसमाचार पढ़ने की बात आई, तो मुझे नहीं पता था कि कौन सा पढ़ूँ—सम्माननीय व्यक्ति का या कोई और। अचानक, किसी ने मुझसे कहा: 'मत्ती की 36वीं आयत पढ़ो।' उस रहस्यमय आवाज़ के इन शब्दों पर, मैं जाग गया। उस समय से अब तक, मैं ईमानदारी से मानता आया हूँ कि फादर सेराफिम ईश्वर के एक महान संत हैं। लेकिन मैं वहीं वापस आता हूँ जहाँ मैंने बात छोड़ी थी (यानी, 1849 में अपनी बीमारी के वृत्तांत पर)। एक गुप्त प्रेरणा के बाद, जिसने मुझे फादर सेराफिम का स्मरण करने के लिए प्रेरित किया—क्योंकि मैं स्वयं उनके लिए धर्मविधि या स्मरणोत्सव नहीं कर सकता था—और जैसे ही मैंने ऐसा किया, मेरी बीमारी दूर हो गई: मुझे शांति का एक असाधारण अनुभव हुआ और मैं अपनी पीड़ा के कष्ट से मुक्त हो गया। और उस समय से अब तक, ईश्वर की कृपा से, मैं अच्छे स्वास्थ्य में रहा हूँ।"

1858 में, महा-उपवास के पाँचवें सप्ताह में एक बुधवार को, दिव्येवो की नन यूडोक्सिया, अन्य बहनों के साथ, एक विशाल सामुदायिक बर्फघर में बर्फ भर रही थीं, तभी वह गलती से तीन सैज़ेन (लगभग 9 मीटर) की ऊँचाई से फिसलकर नीचे गिर गईं। उसे बाहर निकाला गया, वह लगभग मृतप्राय थी; उसे अपनी पसली और सिर में असहनीय दर्द की शिकायत थी, और हल्का सा स्पर्श भी उसे लंबी बेहोशी में डाल देता था। जब डॉक्टर पहुँचे तो उन्होंने उसकी हालत बहुत नाजुक पाई। दो सप्ताह बाद, जिसके दौरान वह दर्द के कारण मुश्किल से ही सोई थी, महान गुरुवार की आधी रात को वह हल्की नींद में चली गई, जिसमें उसने पूजनीय सेराफिम को अपनी कोठरी में प्रवेश करते और कहते देखा: 'मैं अपने गरीबों से मिलने आया हूँ (क्योंकि जब तक वह जीवित थे, तब तक वह दिव्येवो की बहनों को इसी नाम से संबोधित करते थे); मैं यहाँ बहुत समय से नहीं आया हूँ'. उस बीमार महिला ने कड़वी आँसुओं के साथ कहा: 'फादर, ओह , मेरी पसली में बहुत दर्द हो रहा है!' उस वृद्ध ने अपने दाहिने हाथ की तीन उँगलियाँ जोड़कर, घायल हिस्से पर तीन बार क्रॉस का चिह्न बनाया, और कहा: 'मैं तुम्हें प्लास्टर और पट्टी लगा रहा हूँ' – जिसके बाद वह गायब हो गया। यूडोक्सिया जागी, लेकिन कोठरी पूरी तरह से खाली और शांत थी, और वह फिर से सो गई। सुबह पाँच बजे वह अपने दर्द वाले पक्ष के बल लेटी हुई जागी, और उसे बिल्कुल भी दर्द महसूस नहीं हो रहा था। बड़े सेराफिम के उसके सामने प्रकट होने की बात याद करते हुए, उसने कहा कि 'काफी समय तक उसे ऐसा लगा जैसे उसके चोट वाले हिस्से पर कोई पट्टी लगी हो'। उसी दिन, वह बिना किसी सहारे के बिस्तर से उठ गई और उसने सभी को अपने चमत्कारी ठीक होने के बारे में बताया।

उस पूजनीय साधु ने कई लोगों को स्वास्थ्य लाभ प्रदान किया, उन्हें अपनी कुएँ का पानी पीने और उससे स्नान करने की सलाह दी। इस प्रकार, साधु के निधन के दो साल बाद, दिव्येवो कॉन्वेंट की एक नन बुखार से पीड़ित थी और मृत्यु के कगार पर थी, उसने अपने हाथ का उपयोग पूरी तरह से खो दिया था। और इसलिए, एक सपने में, उन्होंने रेवरेंड फादर को देखा, जिन्होंने उनसे पूछा कि वह झरने पर उनके पास क्यों नहीं आतीं; और, उनका बीमार हाथ पकड़कर, उन्होंने उसे उठा दिया, और उन्हें बिना चूके ऐसा करने का आदेश दिया। जागने पर, नन ने महसूस किया कि उसका हाथ ठीक हो गया था; और जब बहनों ने उसे सारोव में सेराफिम स्प्रिंग पर ले जाकर उस पानी से उस पर पानी डाला, तो वह पूरी तरह से स्वस्थ हो गई।

कैप्टन टेप्लोव, जो पूजनीय सेराफिम को विशेष सम्मान देते थे, 1834 में अपनी तीन साल की बेटी के साथ सारोव पहुँचे, जो अपने पैरों की बीमारी से पीड़ित थी। वृद्ध की कब्र पर एक स्मृति सेवा मनाने के बाद, वे बच्चे को सेराफिम स्प्रिंग तक ले गए, यह दृढ़ विश्वास रखते हुए कि प्रभु वृद्ध की प्रार्थनाओं के माध्यम से बीमार बच्चे पर दया करेंगे। बच्ची को इस झरने का पानी पिलाने और उसके पैर धोने के बाद, उन्होंने कुछ पानी मठ में वापस ले गए, ताकि पानी के आशीर्वाद से प्रार्थना सभा आयोजित की जा सके। हालाँकि, मठ में प्रवेश करते ही, लड़की अपनी दाई की पकड़ से छूट गई और जैसे वह स्वस्थ हो, दौड़कर आगे बढ़ गई, और वह पूरी तरह से ठीक हो गई।

1856 में, कोस्त्रोमा गवर्नरेट के उप-राज्यपाल, ए. ए. बोर्ज़को के आठ वर्षीय एकमात्र पुत्र को पेट में ऐंठन होने लगी, जो भयानक, कमजोर कर देने वाले दौरे के साथ एक गंभीर बीमारी में बदल गई, जिससे उसके माता-पिता उसके

जीवन के लिए निराश होने लगे। उस समय, कोस्त्रोमा कन्वेंट की एक नवोदित नन, एस. डी. दावदोवा ने उस बीमार बच्चे की माँ को सारोव के सेराफिम के जीवन और कार्यों का एक विवरण दिया, जिसे माता-पिता दोनों ने पढ़ना शुरू कर दिया और वे उस आदरणीय संत में प्रकट हुई ईश्वर की कृपा के कार्यों को देखकर चकित हो गए। एक रात, बच्चे ने स्वप्न में उद्धारकर्ता को स्वर्गदूतों से घिरा हुआ देखा, जिन्होंने बीमार लड़के से कहा कि यदि वह उस वृद्ध के आदेशानुसार चलेगा जो उसके पास आएगा, तो वह ठीक हो जाएगा। फिर उस वृद्ध ने उसके सामने प्रकट होकर, अपना परिचय सेराफिम के रूप में देते हुए कहा:

'अगर तुम ठीक होना चाहते हो, तो सारोव के जंगल में सेराफिम के झरने के नाम से जाने जाने वाले झरने से पानी लाओ, और तीन दिनों तक, सुबह और शाम, उससे अपना सिर, छाती, हाथ और पैर धोओ, और इसे पीओ।'

सुबह, बच्चे ने अपने माता-पिता को अपने सपने के बारे में बताया; वे इस बात से परेशान थे कि पानी कैसे प्राप्त करें। अगले सुबह, बच्चे ने एक और सपने के बारे में बताया: ईश्वर की माता, स्वर्गदूतों से घिरी हुई, उसे दिखाई दी थीं और उन्होंने प्यार से उसे बूढ़े की बातों का पालन करने का निर्देश दिया था। उसी दिन, श्रीमती दावदोवा, जो सारोव की यात्रा पर गई थीं, लौट आईं, और माता-पिता ने उनसे सेराफिमोव झरने से पानी लाने में मदद करने के लिए कहा। उन्होंने तुरंत उन्हें इस पानी की एक बोतल भेज दी। और जब उन्होंने बूढ़े की आज्ञा का पालन किया, तो बच्चा धीरे-धीरे ठीक होने लगा और पूरी तरह से स्वस्थ हो गया।

परम पूजनीय सेराफिम चमत्कारिक रूप से खतरनाक रूप धारण करके डाकुओं और चोरों के सामने प्रकट होकर उन्हें डराकर दूसरों को उनसे बचाते थे। उदाहरण के लिए, एक अवसर पर एक तीर्थयात्री मुरोम के जंगलों से गुज़र रही थी। एक दूरस्थ स्थान से भयानक चीखें और कराहें सुनकर, उसने अपने साथ रखे सेराफिम की प्रतिमा को बाहर निकाला और खुद पर तथा उस जगह पर, जहाँ से आवाज़ें आ रही थीं, क्रॉस का चिह्न बनाया। कुछ ही देर बाद, पास में बुरी तरह पीटे हुए दो व्यक्ति मिले; उन्होंने बताया कि लुटेरों ने उन्हें मारने का इरादा किया था लेकिन वे अचानक भाग गए। उन लुटेरों ने, जिन्हें बाद में पकड़ लिया गया और जिन्होंने मुरोम वन में अपने अपराधों को कबूल किया, बताया कि जैसे ही वे अपने शिकारों को अंतिम वार करने की तैयारी कर रहे थे, अचानक सफेद चोगा पहने, एक झुर्रीदार कमेलौक (कंबल) में लिपटे, सफेद बालों वाला एक झुका हुआ भिक्षु जंगल से बाहर दौड़ा, उसने धमकी भरी उंगली दिखाई और चिल्लाया: 'मैं यहाँ हूँ!' और उसके पीछे खंभों से लैस लोगों की भीड़ दौड़ी। उन्हें उस यात्री से ली गई सेराफिम की प्रतिमा दिखाई गई, और उन्होंने उसे पहचान लिया।

शैट्सक के व्यापारी की पत्नी, श्रीमती पेटाकोव्स्काया, जो उनके जीवनकाल में वृद्ध को जानती थीं और उन्हें अत्यंत सम्मान देती थीं, एक बार उन्होंने एक सपना देखा जिसमें पूजनीय सेराफिम उनके सामने प्रकट हुए और कहा:

'कल रात चोर आपके बेटे की दुकान में घुस आए, लेकिन मैंने झाड़ू उठाई और दुकान के चारों ओर झाड़ू मारने लगा, और वे चले गए।'

वास्तव में, सुबह जब देखा गया तो सभी ताले उखाड़े हुए पाए गए, लेकिन दुकान सुरक्षित और अछूती थी।

1865 में, क्रिसमस से ठीक पहले, एक श्रीमती बार के घर पर, जब परंपरा के अनुसार ज़रूरतमंदों को दान दिया जा रहा था, तो रेवरेंड एक झुके हुए, सफेद बालों वाले बूढ़े आदमी के भेष में प्रकट हुए। उन्होंने दान बाँटने वाली महिला को समझाया कि वह दान के लिए नहीं आए हैं, बल्कि उन्हें घर की मालकिन से खुद मिलना था। जब एक नौकर ने दूसरे से फुसफुसाकर कहा कि वह शायद कोई आवारा है, तो वह बूढ़ा आदमी, यह वादा करते हुए कि वह जल्द ही मालकिन की मौजूदगी में लौटेगा, वहाँ से चला गया। दान बाँटने वाली महिला को पछतावा हुआ और वह उसके पीछे बरामदे में दौड़ी। लेकिन वह गायब हो चुका था, और यह पूरी घटना मालकिन से छिपा कर रखी गई।

उस संदेह करने वाले नौकर को किसी ने सपने में कहा:

'तुम्हारा यह कहना गलत था: तुम्हारे यहाँ कोई आवारा नहीं आया था, बल्कि ईश्वर का एक महान संत आया था।'

अगले ही सुबह, श्रीमती बार को डाक से एक पार्सल मिला, जिस पर पूजनीय सेराफिम की एक तस्वीर थी जिसमें वे एक भालू को खाना खिला रहे थे; इस तस्वीर में, जो लोग कल पवित्र एल्डर से बात कर चुके थे, उन्होंने उन्हें पहचान लिया।

अपने परम विश्राम के बाद पूज्य सेराफिम ने कई अन्य चमत्कारिक संकेत और चंगाई के कार्य किए। पूज्य सेराफिम के निधन के दिन के बाद सत्तर वर्षों तक, जो लोग प्रार्थना में और प्रभु के समक्ष उनकी मध्यस्थता में विश्वास के साथ उनकी ओर मुड़े, उनके लिए चंगाई निरंतर होती रही। 1891 में, परम पूज्य सेराफिम की कब्र के ऊपर

एक चैपल बनाया गया था। समय के साथ, पवत्रि एल्डर के अनुकरणीय तपस्वी जीवन और उनकी मध्यस्थता की शक्ति में वशि्वास की स्मृति न केवल कम नहीं हुई, बल्कि और भी मजबूत होती गई और जीवन के सभी क्षेत्रों के ऑर्थोडॉक्स लोगों के बीच और भी दृढ़ता से स्थापति हो गई। महान संन्यासी सेराफमि की पवत्रिता में लोगों के वशि्वास को पूरी तरह से साझा करते हुए, पवत्रि धर्मसभा ने इस परमेश्वर के सेवक के गौरव-मंडन की दशिा में आवश्यक कदम उठाने की आवश्यकता को बार-बार स्वीकार कयि। 1895 में, तम्बोव के महाधर्माध्यक्ष ने पवत्रि सनिड को एक वशिेष आयोग द्वारा की गई जांच के नष्किर्ष प्रस्तुत कएि, जसिमें एल्डर सेराफमि की प्रार्थनाओं के माध्यम से हुए चमत्कारकि संकेतों और चंगाइयों की जांच की गई थी, जनिमें से 94 मामलों की जांच की गई थी। इसके बाद, तम्बोव के महाधर्माध्यक्ष ने 1897 की शुरुआत और अंत में, दो बार पवत्रि सनिड को संत सेराफमि की प्रार्थनाओं के माध्यम से हुए चमत्कारकि संकेतों और चंगाइयों के संबंध में वभिन्नि व्यक्तयिों के लखिति बयानों की प्रतयिों का संग्रह प्रस्तुत कयि। अंत में, 19 जुलाई 1902 को, एल्डर सेराफमि के जन्मदनि पर, उनकी शाही महारानी, उनकी शाही महोदयता सम्राट नकिोलस अलेक्जेंड्रोवचि, दविंगत के भक्तपिूर्ण कार्यों और उनकी स्मृति को सम्मानति करने में राष्ट्र के उत्साह दोनों को याद करने के लएि प्रसन्न हुए, और यह इच्छा व्यक्त की कि पवत्रि धर्मसभा द्वारा पहले ही शुरू की गई सम्मानति एल्डर को महमिामंडति करने की प्रक्रयिा को सफलतापूर्वक समाप्त कयि जाए। अगले वर्ष, 1903 की शुरुआत में, पवत्रि धर्मसभा, एल्डर सेराफमि की प्रार्थनाओं के माध्यम से हुए चमत्कारों की सच्चाई और प्रामाणकिता से पूरी तरह आश्वस्त होकर, उन्हें ईश्वर की कृपा से महमिामंडति संतों की पंक्ति में और उनके सबसे सम्मानति अवशेषों को पवत्रि अवशेषों के रूप में मान्यता देने का संकल्प लयि। उनकी शाही महामहमिों के आदेश पर, उनके लएि एक समृद्ध चाँदी-जड़ाव वाला अवशेष-पात्र बनवाया गया। ईश्वर के नव-प्रकट सेवक का भव्य महमिामंडन 19 जुलाई 1903 को सम्राट और सम्राज्ञी, शाही परविार के अन्य सदस्यों, और लोगों की भारी भीड़ की उपस्थति में हुआ, और इसके साथ ही कई चंगाई भी हुईं, जो सारोव के चमत्कारकारणिी, आदरणीय सेराफमि की प्रार्थनापूर्ण मध्यस्थता से हुए।

प्रभु परमेश्वर उनकी प्रार्थनाओं के द्वारा हम सभी को हर दुख और बीमारी से बचाएँ! परमेश्वर को, जो अपने संतों में अद्भुत हैं, सर्व सम्मान, महमिा और आराधना हो – हमेशा, अब और सदा के लएि और युगों-युगों तक। आमीन।

ट्रोपारयिन, स्वर 4:

हे धन्य, आपने अपने यौवन से ही मसीह से प्रेम कयि, और केवल उसी की सेवा करने की तीव्र इच्छा से, आप ने रेगस्तिान में अनवरत प्रार्थना और परश्रिम के साथ कठोर तपस्या की; एक पश्चात्तापी हृदय के द्वारा मसीह के प्रेम को प्राप्त करके, आप परमेश्वर की माता के चुने हुए और प्रयिजन बन गए। इसी कारण हम आपसे पुकार लगाते हैं: हमें अपनी प्रार्थनाओं से बचाइए, सेराफमि, हमारे पूजनीय पति।

कॉन्टाकयिन, स्वर 2:

हे पूजनीय, संसार की शोभा और उसमें मौजूद सभी क्षणभंगुर चीजों को त्यागकर, आप सारोव के मठ में रहने लगे; और वहाँ, एक दैवीय जीवन जीते हुए, आप कई लोगों के लएि मोक्ष का मार्ग बन गए: इसी कारण, मसीह ने आपको, पति सेराफमि, महमिामय कयि है, और आपको चंगा करने तथा चमत्कार करने के वरदान से समृद्ध कयि है। इसलएि हम आपसे पुकारते हैं: हर्षति हो, सेराफमि, हमारे आदरणीय पति।

हमारे पवत्रि पति सल्विेस्टर, रोम के पोप का जीवन

२ जनवरी को स्मरण कयि जाता है

[547]संत सल्विेस्टर का जन्म रोम में हुआ था। उनका पालन-पोषण पवत्रि वशि्वास में हुआ और उन्होंने पुरोहति क्वरिनिस के अधीन वज्ञिान और अच्छे नैतकिता, दोनों का अध्ययन कयि। वयस्क होने पर, वह अजनबयिों का एक महान प्रेमी बन गया और ईश्वर तथा अपने पड़ोसी के प्रति प्रेम के कारण, वह यात्रयिों का अपने घर में स्वागत करता था; उनके पैर धोने के बाद, वह उन्हें भोजन कराता था, जसिसे उन्हें पूर्ण मानसकि शांति मिलिती थी। जब मसीह के पवत्रि

[547] प्रारंभकि चर्च में 'कन्फैसर' शब्द उन ईसाइयों के लएि प्रयुक्त होता था जो उत्पीड़न के दौरान खुलेआम ईसाई होने की घोषणा करते थे और यातनाएँ सहते हुए भी जीवति बचते थे। ऐसे व्यक्तयिों को ईसाई समुदाय में वशिेष सम्मान प्राप्त था, और उन्हें गरि चुके लोगों के साथ चर्च में पुनर्मलिन का अधकिार दयि जाता था।

पुरुष और कन्फेशर, एंटओक के बशिप टमिोथी, मसीह के राज्य की सुसमाचार का उपदेश देने के लिए अंतीयक से रोम आए, तो सल्विेस्टर ने उनका अपने घर में स्वागत कयि; और, उनके पवत्रि जीवन को देखकर और उनकी शक्षिाओं को सुनकर, वह सद्गुण और वश्विास में और भी बढ़ गए। सल्विेस्टर के घर में एक साल और कई महीने रहने के बाद, टमिोथी ने कई रोमवासयिों को मूर्तपिूजा से हटाकर सच्चे ईश्वर के प्रत पिरविर्तति कयि, जसिके लिए उन्हें शहर के प्रीफेक्ट[548] टार्क्वनियिस द्वारा जेल में डाल दयि गया। कई महीनों तक बेड़यिों में जकड़े और जेल में रहने के बाद, उसे कोड़ों से पीटा गया, लेकनि तब भी उसने मूर्तयिों को बलदिान चढ़ाने से इनकार कर दयि, जसिके लिए उसकी तलवार से सरि कलम कर दयि गया और उसने शहीद की मृत्यु प्राप्त की। धन्य सल्विेस्टर ने, रात के समय उसके पवत्रि अवशेषों को लेकर, उन्हें अपने ही घर में उचति अंतमि संस्कार के भजनों के साथ दफना दयि। बाद में, थयिोनयि नाम की एक धर्मपरायण महलि ने रोमन बशिप मेल्चयिाडेस[549] के आशीर्वाद से, अपने खर्च पर संत तीमथयिुस के सम्मान में एक चर्च का नर्मिाण कयि, जन्होंने इस चर्च में पवत्रि शहीद के अवशेष स्थानांतरति कए। शहर के प्रशासक, टार्क्वनीयस ने सल्विेस्टर को बुलाया और थमिोथी द्वारा छोड़ी गई संपत्त कि मांग की, उसे मूर्तयिों को बलदिान चढ़ाने के लिए मजबूर कयि और यद उसने अवज्ञा की तो उसे भयानक यातनाओं की धमकी दी। हालाँक, सल्विेस्टर ने प्रशासक की अप्रत्याशति और नकिट मृत्यु की भवष्यिवाणी करते हुए, सुसमाचार के शब्दों में उससे कहा:

'इसी रात तेरा प्राण तुझ से ले लयि जाएगा' (लूका 12:20), और जो तू मुझ पर करने की धमकी दे रहा है, वह कभी पूरा नहीं होगा।

इन शब्दों से क्रोधति होकर, प्रान्तपाल ने संत को लोहे की बेड़यिों में जकड़ने और एक कालकोठरी में फेंकने का आदेश दयि; फरि वह स्वयं खाने के लिए बैठ गया। अपने भोजन के दौरान, उसकी गले में एक मछली की हड्डी अटक गई, जसिे कसिी भी तरह से, यहाँ तक क डॉक्टरों की मदद से भी नहीं नकिाला जा सका; रात के खाने के समय से आधी रात तक पीड़ा सहने के बाद, संत की भवष्यिवाणी के अनुसार टार्क्वनीअस की मृत्यु हो गई, और अगली सुबह उसके रश्तिेदारों ने उसके शव को रोते हुए दफनाने के स्थान पर ले गए। जहाँ तक सल्विेस्टर का सवाल है, वश्विासयिों ने उसे खुशी-खुशी जेल से बाहर नकिाल लयि, और उस समय से आगे, उनका सम्मान न केवल वश्विासयिों द्वारा बल्क अवश्विासयिों द्वारा भी कयि गया; क्योंक प्रीफेक्ट के दरबार के कई अधकिारी, यह देखकर क सल्विेस्टर की भवष्यिवाणी कैसे सच हुई थी, भय से ग्रस्त हो गए और उनके पैरों पर गरि पड़े, इस डर से क कहीं उनके साथ भी वही दुर्भाग्य न हो जाए जो उनके स्वामी के साथ हुआ था; जबक अन्य, उस चमत्कार से आश्वस्त होकर, सीधे मसीह की ओर मुड़ गए। कुछ ही समय बाद, संत सल्विेस्टर को रोमन चर्च के पुरोहति वर्ग में शामलि कयि गया और पोप मार्सेलनिस[550] द्वारा एक पादरी के रूप में नयिुक्त कयि गया। पोप मेल्चयिाडेस की मृत्यु के बाद, उन्हें सभी द्वारा सर्वसम्मत सि पोप[551] के रूप में चुना गया और उन्होंने बशिप के सहिासन पर आसीन हुए। उन्हें सभी के सामने एक दीवट पर जलती हुई चमकदार मोमबत्ती की तरह स्थापति कयि गया, और उन्होंने एक नए प्रेरति की तरह मसीह के झुंड का मार्गदर्शन कयि, उसे अपने शब्दों और कार्यों के माध्यम से मोक्ष के चरागाह तक पहुँचाया।

यह देखते हुए क पादरी वर्ग के कुछ सदस्यों ने अपने मंत्रालय के कर्तव्यों को भूलकर सांसारकि मामलों की ओर रुख कर लयि था, उन्होंने उन्हें एक बार फरि से चर्च की सेवा में लौटने के लिए मजबूर कयि और ऐसा करते हुए एक फरमान जारी कयि क कोई भी अभषिक्ति व्यक्त व्यापार में संलग्न न हो। उन्होंने रोम के ईसाइयों के लिए सप्ताह के दनिों के नए नाम भी स्थापति कए। उस समय, रोमनों द्वारा पहले दनि—जसिे हम रवविार कहते हैं—को सूर्य का दनि कहा जाता था, जबक शेष दनिों के नाम चंद्रमा, मंगल, बुध, ज्यूस, शुक्र और शन के नाम पर रखे गए थे[552] । मूर्तपिूजक देवताओं के अधर्मी नामों को तुच्छ समझते हुए, सल्विेस्टर ने आदेश दयि क पहले दनि को प्रभु का दनि कहा जाए[553] , क्योंक उसी दनि हमारे प्रभु का मृतकों में से महमिामय पुनरुत्थान हुआ था, जबक अन्य दनिों को उन्हीं नामों से बुलाया

---

[548] प्रफिेक्ट – कसिी नगर का राज्यपाल।

[549] संत मेल्चयिादेस – 311 से 314 तक पोप।

[550] संत मार्सेलनिस – 296 से 304 तक पोप।

[551] प्राचीन काल में, लोग एक बशिप के चुनाव में भाग लेते थे।

[552] ये सभी देवता थे जनिकी रोमनों द्वारा पूजा की जाती थी और जन्हें कसिी न कसिी दनि का संरक्षक माना जाता था।

[553] इसी प्रकार रवविार का उल्लेख यूहन्ना द थयिोलोजयिन की प्रकाशनवाक्य में भी मलिता है।

जाना था जिनसे रोम के ईसाई आज भी उन्हें बुलाते हैं[554] । उन्होंने यह भी आदेश दिया कि ईसाइयों को केवल उस एक शनिवार को उपवास करना चाहिए जिस दिन मसीह मरे और नरक में उतरकर उसे नष्ट किया तथा हमारे पूर्वज आदम को अन्य कुलपतियों के साथ वहाँ से मुक्त किया; अन्य सभी शनिवारों पर उन्होंने उपवास निषिद्ध कर दिया[555] ।

उस समय, रोम में, टार्पियन रॉक[556] के नीचे एक गहरी गुफा में एक विशाल सर्प रहता था, जिसे मूर्तिपूजक हर महीने एक देवता की तरह बलिदान देते थे; और जब भी यह सर्प गुफा से बाहर निकलता, तो वह अपने विषैले श्वास से हवा को विषाक्त कर देता था, और उस स्थान के पास रहने वालों में से कई की मृत्यु हो जाती थी, अक्सर बच्चे। संत सिल्वेस्टर, लोगों को उस विनाशकारी सांप से मुक्त करने और उन्हें अधर्मीपन से हटाकर सच्चे ईश्वर की ओर मोड़ने की इच्छा रखते हुए[557] , ने शहर में रहने वाले ईसाइयों को बुलाया और उन्हें तीन दिनों तक उपवास और प्रार्थना करने की आज्ञा दी, जबकि उन्होंने स्वयं किसी और से अधिक उपवास और प्रार्थना की। एक रात, संत पतरस प्रेरित उन्हें एक दर्शन में दिखाई दिए और उन्हें आज्ञा दी कि वे अपने साथ कई पुरोहितों और डिकन को लेकर उस गुफा में बिना किसी डर के जाएँ जहाँ साँप रहता था। गुफा में प्रवेश करने पर, सिल्वेस्टर को दिव्य लिटर्जी का अनुष्ठान करना था, फिर गुफा के अंदर जाकर, प्रभु यीशु मसीह के नाम का स्मरण करते हुए, साँप को वहाँ बंद कर देना था ताकि वह फिर कभी बाहर न निकल सके। संत, प्रेरित की आज्ञा पर, गुफा में गए और दिव्य अनुष्ठान संपन्न करने के बाद, उसमें प्रवेश किया; वहाँ कुछ दरवाजे पाकर, उन्होंने उन्हें बंद कर दिया, यह कहते हुए:

'यीशु मसीह के दूसरे आगमन के दिन तक ये दरवाज़े कभी न खुलें!'

इस प्रकार, साँप को गुफा में बंद करके, उसने उसे अनंत काल के लिए भागने के किसी भी साधन से वंचित कर दिया। हालाँकि, विधर्मीयों ने सोचा कि सिल्वेस्टर और उनके पुरोहितों को साँप खा जाएगा। लेकिन जब उन्होंने उन्हें सुरक्षित बाहर आते देखा, तो वे चकित रह गए; यह देखकर कि तब से साँप फिर से बाहर नहीं आया, कई लोगों ने सच्चे ईश्वर की शक्ति को पहचाना और विश्वासी बन गए।

उस समय रोमन साम्राज्य का शासन कॉन्स्टेंटाइन महान के हाथ में था, जो अभी तक बपतिस्मा नहीं ले चुके थे, हालांकि वह पूरे दिल से मसीह में विश्वास रखते थे। उसने एक आदेश जारी किया जिसमें किसी को भी मसीह का अपमान करने या ईसाइयों पर अत्याचार करने से रोका गया; उसने मूर्तिपूजक मंदिरों को बंद करने और मूर्तिपूजक बलिदानों को बंद करने का आदेश दिया; और उसने निर्वासन में रहे ईसाइयों को रिहा कर दिया तथा कालकोठरियों में बंद ईसाइयों को मुक्त कर दिया। साथ ही, सम्राट उन लोगों के प्रति सजग थे जो उनकी सहायता चाहते थे और उन्होंने हर न्यायसंगत अनुरोध को मंजूरी दी; अपनी निजी संपत्ति से उन्होंने गरीबों को उदार दान दिया। रोम और उससे परे, पूरे साम्राज्य में, कॉन्स्टेंटाइन ने ईसाई चर्चों के निर्माण का आदेश दिया। मसीह की कलीसिया दिन-ब-दिन बढ़ी और अपने बच्चों की संख्या में वृद्धि हुई, जबकि मूर्तिपूजा घटती गई। इससे विश्वासियों को बहुत आनंद हुआ, जिनकी रोम में पहले से ही इतनी संख्या थी कि वे शहर से उन सभी को निकालना चाहते थे जो ईसाई नहीं बनना चाहते थे; हालाँकि, सम्राट ने लोगों को ऐसा करने से मना कर दिया, यह कहते हुए:

'हमारे ईश्वर नहीं चाहते कि कोई भी जबरदस्ती के कारण उनकी ओर मुड़े; बल्कि वह उन लोगों को पसंद करते हैं और कृपापूर्वक स्वीकार करते हैं जो अपनी स्वेच्छा और अच्छे इरादों से उनकी ओर आते हैं। अत; हर कोई पूरी स्वतंत्रता के साथ अपनी इच्छानुसार विश्वास करे, और कोई भी दूसरे को सताए नहीं।'

---

[554] रोमन चर्च में, सप्ताह के दिनों को लंबे समय से *'फेरियाई'* कहा जाता है, यानी पूजा के दिन, जो लैटिन से व्युत्पन्न रूप से ईसाइयों के प्रतिदिन ईश्वर की पूजा करने के कर्तव्य को दर्शाता है। सोमवार पहली फेरिया है, मंगलवार दूसरी, और इसी तरह। रोमन ईसाइयों के बीच शनिवार ने अपना यहूदी नाम बनाए रखा है, जबकि रविवार अपने प्राचीन नाम - *प्रभु का दिन* (डोमिनिका) - से जाना जाता है।

[555] पवित्र प्रेरितों के कैनन (कैनन 64) में भी सब्त के संबंध में यही कहा गया है। इस नियम पर अपनी टिप्पणी में, बाल्सामोन का कहना है कि हम शनिवार को उपवास नहीं करते ताकि यहूदियों की नकल करते हुए न दिखें; हालाँकि, यदि शनिवार को उपवास निषिद्ध है, तो इसका केवल यह मतलब है कि शनिवार को शाम तक भोजन से पूरी तरह परहेज़ नहीं करना चाहिए, जैसा कि महा शनिचर को प्रथा है, लेकिन इसका यह अर्थ नहीं है कि महा शनिचर को छोड़कर सभी शनिवारों पर, उसे अ-उपवास भोजन करना चाहिए। चर्च विधान के अनुसार, सब्त के दिन, लिटर्जी के तुरंत बाद, कोई शराब, तेल और ऐसे भोजन का सेवन कर सकता है जो चर्च के नियमों द्वारा अनुमत है, यानी, अ-उपवास की अवधियों के दौरान अ-उपवास भोजन और उपवास की अवधियों के दौरान उपवास भोजन।

[556] टार्पियन चट्टान कैपिटोलिन पहाड़ी की दक्षिणी, खड़ी चट्टान है। इसे टार्पियन चट्टान कहा जाता है क्योंकि जब साबिनिस ने रोम पर कब्जा किया, तो उन्होंने कैपिटोलिन पहाड़ी के कमांडर की बेटी टार्पिया को यहीं से फेंक दिया था। यह समुद्र तल से 150 फीट ऊपर उठती है।

[557] पगनों के कई देवता थे, लेकिन वे सच्चे ईश्वर को नहीं जानते थे, इसीलिए संत पौलुस प्रेरित उन्हें 'ईश्वरहीन' कहते हैं (इफिसियों 2:12)।

सम्राट के इन शब्दों पर, लोगों ने और भी अधिक आनंद मनाया, यह देखकर कि सम्राट ने सभी को अपनी इच्छानुसार, अपने-अपने विश्वास के अनुसार जीने की अनुमति दी थी।

विश्वासी न केवल रोम में बल्कि पूरे साम्राज्य में आनंदित हुए, क्योंकि हर जगह मसीह के लिए पीड़ित किए गए विश्वासी अपने बंधनों और काल-कोठरियों से मुक्त हो गए; मसीह के स्वीकारकर्ता निर्वासन से लौट आए; अपने उत्पीड़क के डर से रेगिस्तान में छिपे हुए ईसाई बिना किसी डर के घर लौट आए; और हर जगह उत्पीड़न समाप्त हो गया।

लेकिन ईसाई धर्म का पुराना दुश्मन—शैतान, जो ऐसी धार्मिक शांति और भक्ति के फैलते प्रकाश को सहन नहीं कर सका—ने यहूदियों के मन में यह विचार डाला कि वे प्रशंसनीय हेलेना, राजा की माँ, के पास जाएँ, जो उस समय अपने पैतृक देश, बिथुनिया में रह रही थीं[558] ।

उन्होंने हेलेना से कहा, 'आपके पुत्र, राजा ने, दुष्टता को त्यागकर और मूर्तिपूजक मंदिरों को ध्वस्त करके अच्छा काम किया है; लेकिन यह सही नहीं है कि उसने यीशु में विश्वास किया और उन्हें परमेश्वर का पुत्र और सच्चे परमेश्वर के रूप में सम्मानित किया, जबकि वह एक यहूदी और जादूगर था जिसने अपनी जादुई शक्ति से उत्पन्न विभिन्न भूत-प्रेत दिखाकर लोगों को धोखा दिया; पिलात ने, उन्हें यातना देने के बाद, उन्हें एक अपराधी के रूप में सूली पर चढ़ा दिया। इसलिए, हे रानी, आपको राजा को इस भ्रम से बाहर निकालना चाहिए, कहीं ऐसा न हो कि ईश्वर उस पर क्रोधित हो जाएँ और उसे कोई विपत्ति आ जाए।

[559]यह सुनकर, हेलेना ने अपने बेटे, कॉन्स्टेंटाइन को इस मामले के बारे में लिखित में सूचित किया। पत्र पढ़ने के बाद, उसने अपनी माँ को लिखित में जवाब दिया, यह निर्देश देते हुए कि जिन यहूदियों ने उसे इस बारे में सूचित किया था, वे उसके साथ रोम आएं और वहां ईसाई बिशपों के साथ विश्वास की प्रतियोगिता में भाग लें; इसलिए, जिस पक्ष की विजय होती, वही पक्ष सच्चा धर्म धारण करता। जब रानी ने यहूदियों को राजा के फरमान की घोषणा की, तो बहुत से विद्वान यहूदी तुरंत इकट्ठा हो गए—वे पुरुष जिन्होंने अपने धर्म-ग्रंथों का अध्ययन किया था, नबियों की शिक्षाओं और यूनानी दर्शन को जानते थे, और बहस के लिए तैयार थे—और वे सभी रानी हेलेना के साथ रोम के लिए रवाना हो गए। उनमें ज़म्ब्री नामक एक अत्यंत बुद्धिमान रब्बी थे, जिन्होंने न केवल हेलेनिक दर्शन और यहूदी धर्मग्रंथों में पूर्ण महारत हासिल की थी, बल्कि वे एक महान जादूगर भी थे। यहूदियों ने अपनी सारी उम्मीदें उसी पर लगा रखी थीं, यह सोचकर कि अगर वह मौखिक बहस में ईसाइयों को हरा नहीं सका, तो वह अपने जादुई चमत्कारों से उन्हें चकित कर देगा।

[560]जब यहूदियों और ईसाइयों के बीच बहस का दिन आया, तो राजा अपने सिंहासन पर बैठ गया, उसकी पूरी परिषद उसके चारों ओर थी, और ज़ाम्व्री और संत सिल्वेस्टर अपने साथ आए हुए एक छोटे दल के साथ उसके सामने उपस्थित हुए, जिनमें कई बिशप भी थे जो उस समय रोम आए थे। तब यहूदी प्रवेश हुए, जिनकी संख्या एक सौ बीस पुरुष थी, और चर्चा तुरंत शुरू हो गई; रानी हेलेना एक पर्दे के पीछे बैठकर सुन रही थीं, जबकि राजा और उनकी परिषद दोनों पक्षों द्वारा कही जा रही बातों पर चर्चा कर रहे थे। पहले तो, यहूदियों ने मांग की कि ईसाई उनके साथ बहस करने के लिए अपने बारह सबसे बुद्धिमान लोगों को भेजें, लेकिन संत सिल्वेस्टर ने आपत्ति जताते हुए कहा:

'हम अपनी आशा लोगों की भीड़ में नहीं, बल्कि परमेश्वर में रखते हैं, जो हम सभी को बल देता है; उसकी सहायता के लिए पुकारते हुए, हम कहते हैं: "हे परमेश्वर, जागो और अपने मामले का न्याय करो!"'[561]

यहूदियों ने आपत्ति जताते हुए कहा, 'ये हमारी पवित्र पुस्तकों के शब्द हैं, क्योंकि इन्हें हमारे पैगंबर ने लिखा है; तुम्हें अपनी ही किताबों के शब्द बोलने चाहिए, हमारी नहीं!'

सिल्वेस्टर ने उत्तर दिया:

'यह सच है कि पुराने नियम के धर्मग्रंथ और नबियों की भविष्यवाणियाँ सबसे पहले तुम्हें प्रकट की गई थीं, लेकिन वे हमारी भी हैं, क्योंकि वे हमारे प्रभु मसीह के बारे में बहुत कुछ बताती हैं।' 'इसलिए, हमारी बहस आपके ग्रंथों पर आधारित होनी चाहिए; क्योंकि जहाँ आपके ग्रंथ हमारे हो गए हैं, वहीं हमारे ग्रंथ आपके लिए अपरिचित हैं, और आप हमारे ग्रंथों की तुलना में अपने ग्रंथों पर अधिक विश्वास करेंगे। अत; आपके ग्रंथों के आधार पर, हम आपको वह सत्य दिखाएंगे

---

[558] एशिया माइनर का एक उत्तर-पश्चिमी प्रांत।

[559] रब्बी – फ़िलिस्तीन में एक मानद उपाधि, जो पुराने नियम के कानून के विशिष्ट शिक्षकों और व्याख्याकारों को प्रदान की जाती थी।

[560] सिक्लाइट – सबसे महत्वपूर्ण शाही सलाहकारों और गणमान्य व्यक्तियों से मिलकर बनी एक सैन्य और नागरिक सरकार।

[561] एक थोड़ा संशोधित अभिव्यक्ति (भजन संहिता 34:23)।

जसिका आप वरिोध करते हैं; ऐसी वजिय और भी गौरवशाली और स्पष्ट होगी जब हम शत्रु के हाथों से उसके ही हथियार छीनकर उसे उन्हीं हथियारों से पराजति करें!'

'महाधर्माध्यक्ष के ये वचन,' राजा ने टप्पिणी की, 'न्यायसंगत हैं, और इस बदि पर कोई उनकी बात का खंडन नहीं कर सकता; क्योंकि यदि ईसाई, हे यहूदियों, तुम्हारी अपनी कतिाबों से ही तुम्हारे सामने अपने मसीह, परमेश्वर, के बारे में गवाही देते हैं, तो, बेशक, उन पर ही हावी होंगे और तुम अपनी ही कतिाबों से पराजति हो जाओगे।'

सम्पूर्ण संक्लाइट ने इस शाही नरि्णय की प्रशंसा की। फरि यहूदियों ने ईसाइयों से नम्निलखिति कहना शुरू कयिा:

'हमारे सर्वशक्तमिान ईश्वर व्यवस्थाववििरण की पुस्तक में कहते हैं: "अब देखो, देखो कि वही मैं हूँ, मैं—और मेरे सवि कोई ईश्वर नहीं" (व्यवस्थाववििरण 32:39)। तो फरि, आप यीशु को ईश्वर कैसे कहते हैं, जो केवल एक मनुष्य था और जसिे हमारे पूर्वजों ने सूली पर चढ़ाया था?' आप तीन देवताओं को कैसे प्रस्तुत करते हैं: पति, जनि पर हम भी वशि्वास करते हैं, और यीशु, जन्हिें आप परमेश्वर का पुत्र कहते हैं, जबकि आप तीसरे देवता को आत्मा कहते हैं? ऐसा वशि्वास करके, क्या आप सभी चीजों के सृष्टकिर्ता, उस परमेश्वर के वरिुद्ध नहीं जा रहे हैं जो सखिाता है कि उसके अलावा कोई अन्य देवता नहीं हैं?

इस पर, ईश्वर-प्रेरति सलि्वेस्टर ने उत्तर दयिा:

'यदि आप बनिा कसिी पूर्वाग्रह या जलन के, अपने मन से धर्मग्रंथों की जाँच करें, तो आप देखेंगे कि जब हम परमेश्वर के पुत्र और पवत्रि आत्मा की गवाही देते हैं तो हम कुछ नया नहीं बता रहे हैं, क्योंकि ये हमारे अपने शब्द नहीं हैं, बल्कि परमेश्वर के भवष्यिद्वक्ताओं की पुस्तकों में नहिति परमेश्वर का प्रकाशन है। सबसे पहले, भवष्यिवक्ता और राजा दाऊद ने, हमारे उद्धारकर्ता के वरिुद्ध आपके पूर्वजों के वद्रिोह की भवष्यिवाणी करते हुए, कहा: 'जाति-जाति क्यों क्रोधति होती है, और लोग क्यों व्यर्थ षड्यंत्र करते हैं? वे प्रभु और उसके अभषिक्ति के वरिुद्ध मलिकर षड्यंत्र करते हैं' (भजन संहति 2:1-2)। इस प्रकार, यहाँ, उसे मसीह और प्रभु कहकर, वह एक व्यक्ति की ओर नहीं, बल्कि दो की ओर संकेत करता है। और यह कि मसीह परमेश्वर का पुत्र है, उसी भवष्यिवक्ता द्वारा इन शब्दों में प्रचारति कयिा गया है: *'प्रभु ने मुझ से कहा: "तू मेरा पुत्र है; आज मैं तुझे उत्पन्न कयिा है"* (भजन संहति 2:7)। एक उत्पन्न करने वाला है और दूसरा उत्पन्न हुआ है!

इस पर यहूदियों ने उत्तर दयिा:

'यह कहकर कि परमेश्वर ने उत्पन्न कयिा, आप अचंचल को चंचल बना रहे हैं। एक वशिष्टि समय पर जन्मा और जसिकी अस्थायी अस्तत्वि थी, वह पुत्र कैसे परमेश्वर हो सकता है? क्योंकि *"आज"* शब्द एक वशिष्टि समय को इंगति करता है और हमें पुत्र को शाश्वत परमेश्वर के रूप में पहचानने की अनुमति नहीं देता।'

सलि्वेस्टर ने उत्तर दयिा:

– हम यह नहीं कहते कि ईश्वर के संबंध में, एक भावुक जन्म हुआ; हम यह स्वीकार करते हैं कि ईश्वरभाव भावहीन है और पुत्र का जन्म एक वचिार से एक शब्द के जन्म के समान था। हम पति से पुत्र के कालकि जन्म के सद्धिांत को प्रस्तुत नहीं करते, बल्कि हम उनके शाश्वत जन्म में वशि्वास करते हैं, जो समय की शर्त के अधीन नहीं है, क्योंकि हम जानते हैं कि समय का स्रष्टा पति और आत्मा के साथ पुत्र ही है, और स्वयं समय का स्रष्टा समय के अधीन नहीं है। 'मैंने तुम्हें अब जन्म दयिा है' यह अभव्यिक्ति उच्च, पूर्व-शाश्वत दव्यि जन्म को नहीं, बल्कि नम्निि वाले को संदर्भति करती है, जो एक वशिष्टि समय पर हुआ और हमारे उद्धार के लिए धारण कए गए शरीर में पूरा हुआ[562] । भवष्यिवक्ता जानता था कि मसीह पूर्व-शाश्वत परमेश्वर हैं, इसीलिए वह कहता है: *'हे परमेश्वर, आपका सहिासन युगानुयुग है'* (भजन संहति 44:7)। हालाँकि, उचति समय पर होने वाले अवतार की भवष्यिवाणी करते हुए, उन्होंने कहा: *'तू मेरा पुत्र है! मैंने तुझे अब जन्म दयिा है'*। इस प्रकार, इन शब्दों के साथ: *'तू मेरा पुत्र है'*, वह उनके लौककि जन्म की ओर नहीं बल्कि उनके शाश्वत जन्म की ओर संकेत करते हैं; जबकि शब्द: *'मैंने तुम्हें अब जन्म दयिा है'*, से वह उनके जन्म को दर्शाता है, जो एक वशिष्टि समय पर हुआ था। यह कहते हुए कि, *'मैंने तुम्हें अब जन्म दयिा है'*, भवष्यिवक्ता ने दखिाया कि पुत्र का जन्म भी, जो एक वशिष्टि, नरि्धारति समय पर होने वाला था, पति स्वयं को ही श्रेय देते हैं, क्योंकि यह उनकी इच्छा के अनुसार होना चाहए। लेकनि यह अभव्यिक्ति, *'मैंने तुम्हें अब जन्म दयिा है'*, स्वयं ईश्वर के जन्म

---

[562] लगभग सभी पवत्रि पतिाओं ने इस अभव्यिक्ति को मानव देह में परमेश्वर के पुत्र के सांसारकि जन्म पर लागू कयिा है।

की शाश्वतता की ओर इशारा करती है, जिसमें कोई अतीत या भविष्य नहीं है, बल्कि हमेशा केवल वर्तमान है। जहाँ तक पवित्र आत्मा का प्रश्न है, दाऊद स्वयं इन शब्दों के साथ गवाही देते हैं: 'यहोवा के वचन से आकाश बने, और उन सब की सेना उसके मुख के साँस से' (भजन संहिता 32:6)। इस प्रकार, यहाँ वह तीन व्यक्तियों का उल्लेख करते हैं: परमेश्वर पिता और पुत्र, जिन्हें वह उनके परम और अकल्पनीय जन्म के कारण वचन कहते हैं, और पवित्र आत्मा। कहीं और वह कहते हैं: *'अपने पवित्र आत्मा को मुझ में से न ले'* (भजन संहिता 50:13)। और फिर: *'मैं तेरी आत्मा से कहाँ जाऊँ?'* (भजन संहिता 138:7)? इन शब्दों के साथ, भविष्यवक्ता स्पष्ट रूप से दिखाता है कि एक पवित्र आत्मा है जो सभी चीजों को स्वयं से भर देता है। और वह यह भी कहता है: *'तू अपनी आत्मा भेजता है, और वे सृजित हो जाते हैं'* (भजन संहिता 103:30)। क्या यह सब दाऊद ने नहीं कहा था? फिर भी मूसा, जो परमेश्वर के द्रष्टा थे, उत्पत्ति की पुस्तक में परमेश्वर के इन वचनों का भी हवाला देते हैं: *'आओ, हम मनुष्य को अपनी प्रतिमा में, अपनी समानता के अनुसार बनाएँ'* (उत्प. 1:26)। तो फिर परमेश्वर किससे बात कर रहे थे, यदि उनके साथ कोई अन्य व्यक्ति नहीं था? कोई यह दावा नहीं करेगा कि परमेश्वर ने ये वचन स्वर्गीय शक्तियों से कहे, क्योंकि *'हमारी समानता में'* शब्द ही ऐसे विचार के लिए कोई गुंजाइश नहीं छोड़ते; परमेश्वर और स्वर्गदूतों की समानता और प्रतिमा एक जैसी नहीं है, ठीक वैसे ही जैसे उनका सार और शक्ति परमेश्वर के समान नहीं है, बल्कि परमेश्वर का सार एक है और स्वर्गदूतों का दूसरे। इसलिए हमें यह मानना चाहिए कि उस वार्तालाप में कोई और मौजूद था, जिससे परमेश्वर *ने* ये शब्द कहे: *'हमारी प्रतिमा* में'। यह अन्य व्यक्ति अवश्य ही वह था जिसकी सत्ता बोलने वाले परमेश्वर के समान थी, और जो प्रतिमा और समानता में परमेश्वर के साथ पूरी तरह से एकरूप था। यह और कौन हो सकता है सिवाय पुत्र के, जो पिता के साथ एक सार का है, महिमा और शक्ति में उनके समान है, और परमेश्वर की अचल प्रतिमा है? तो फिर, जब हम विश्वास करते हैं और यह मानते हैं कि पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा हैं, तो हम क्या नया पेश कर रहे हैं? और यदि यह मूर्तिपूजकों को अविश्वसनीय और निराधार लगता है, तो यह आश्चर्य की बात नहीं है, क्योंकि वे पवित्र धर्मग्रंथों को नहीं जानते। लेकिन आप, जो पवित्र भविष्यवक्ताओं के वचनों का अध्ययन करते हैं, उनमें से एक ने भी हमारे विषय में भविष्यवाणी करने में चूक नहीं की, आप इस पर विश्वास क्यों नहीं करते?

इसके बाद, संत सिल्वेस्टर परम पवित्र त्रिमूर्ति के बारे में और अधिक विस्तार से बोलना चाहते थे, लेकिन राजा ने उनके भाषण को बीच में ही रोककर यहूदियों से कहा:

'यहूदियों, क्या वे शब्द जिन्हें बिशप ने हमें धर्मग्रंथ से उद्धृत किया है, क्या वे आपके ग्रंथों में भी उसी तरह पढ़े जाते हैं?'

उन्होंने उत्तर दिया:

'हाँ, वे हैं।'

तब राजा ने कहा:

'तो फिर, परम पवित्र त्रिमूर्ति के इस विवाद में, मुझे लगता है कि आप हार गए हैं।'

– नहीं, हे अच्छे राजा, – यहूदियों ने आपत्ति जताई, – सिल्वेस्टर हमें किसी भी तरह से हरा नहीं पाएगा यदि हम भी उसके खिलाफ अपनी बात रखें; और हम बहुत कुछ कह सकते हैं, लेकिन हम देखते हैं कि त्रिमूर्ति के बारे में इतनी गंभीरता से बहस करना हमारे लिए व्यर्थ है। हम यहाँ यह बहस करने नहीं आए हैं कि एक ईश्वर है या तीन, बल्कि यह तर्क देने आए हैं कि नासरी ईश्वर नहीं है। क्योंकि भले ही कोई यह मान भी ले कि तीन ईश्वर हैं, तब भी यह निष्कर्ष नहीं निकाला जा सकता कि यीशु ईश्वर हैं। वह ईश्वर नहीं थे, बल्कि एक मनुष्य थे, जो मानव माता-पिता से पैदा हुए और पापी लोगों के बीच रहते थे, कर वसूलने वालों के साथ खाते-पीते थे और, जैसा कि सुसमाचार में उनके बारे में लिखा है, उसे शैतान ने प्रलोभित किया, फिर एक शिष्य ने विश्वासघात किया, उसे गिरफ्तार किया गया, उसका मज़ाक उड़ाया गया, उसे पीटा गया, उसे पित्त और सिरका पिलाया गया, उसके कपड़े उतार लिए गए—जिन्हें सैनिकों ने पर्ची डालकर आपस में बाँट लिया—उसे सूली पर चढ़ाया गया, वह मर गया और उसे दफ़नाया गया। ऐसे व्यक्ति को ईश्वर कैसे कहा जा सकता है? हे राजा, हम ईसाइयों से ठीक इसी बात पर आपत्ति कर रहे हैं: कि वे इस नए ईश्वर को ला रहे हैं। तो, यदि उनके पास उसके बारे में कुछ कहने को है और यदि उनके पास कोई सबूत है, तो वे हमें बताएं!

इसके बाद, संत सिल्वेस्टर बोलने लगे:

'हम यहूदी तीन ईश्वर नहीं मानते, जैसा कि आप सोचते प्रतीत होते हैं, बल्कि हम एक ईश्वर की गवाही देते हैं, जिन्हें हम सम्मान देते हैं और जिसकी हम तीन व्यक्तियों या हाइपोस्टेसीज़ (Hypostases) में विद्यमान होने के रूप में पूजा

करते हैं। आपको उन शब्दों की वैधता पर वचिार करना चाहिए था जिन्हें मैंने आपके ही पुस्तकों से पहले प्रश्न के उत्तर में उद्धृत किया था, और उस विषय पर बहस करनी चाहिए थी; लेकिन चूँकि आप अब इस पर बात करने से इनकार करते हैं, तो आइए हम हमारे प्रभु यीशु मसीह पर चर्चा करें, जो आप स्वयं चाहते हैं। आइए निम्नलिखित से शुरू करें। परमेश्वर, जिसने सभी चीज़ों को अस्तित्व में लाया, जब उसने मनुष्य को बनाया और उसे हर प्रकार के बुरे काम की ओर झुका हुआ देखा, तो उसने अपने हाथों के उस काम को जो नाश हो रहा था, तुच्छ नहीं समझा, बल्कि इस बात से प्रसन्न हुआ कि उसका पुत्र, उससे अविभाज्य रहते हुए (क्योंकि परमेश्वर सर्वत्र है), पृथ्वी पर हम तक आए। इस प्रकार, वह उतर आए और कुँवारी से जन्म लेकर व्यवस्था के अधीन रहे, *'ताकि वे व्यवस्था के अधीन वालों को छुड़ा सकें'* (गलातियों 4:4–5)। और यह कि उन्हें कुँवारी से जन्म लेना था, इसकी भविष्यवाणी दिव्य भविष्यवक्ता यशायाह ने इन शब्दों में की थी: *'देखो, एक कुँवारी गर्भ धारण करेगी और एक पुत्र को जन्म देगी, और उसका नाम रखा जाएगा: इम्मानुएल'* (यशायाह 7:14)। यह नाम, जैसा कि आप जानते हैं, मानवजाति के पास परमेश्वर के आने की ओर संकेत करता है और जब इसका ग्रीक में अनुवाद किया जाता है, तो इसका अर्थ है 'ईश्वर हमारे साथ'। इस प्रकार, भविष्यवक्ता ने बहुत पहले ही भविष्यवाणी की थी कि परमेश्वर एक कुंवारी से जन्म लेंगे।

यहूदियों ने आपत्ति जिताई:

'हमारे हिब्रू पाठ में, यशायाह की पुस्तक में "कुँवारी" शब्द नहीं है, बल्कि "युवती" का उल्लेख है; तुमने "युवती" के बजाय अपनी कितिाबों में "कुँवारी" शब्द लिखकर पवित्रशास्त्र को तोड़-मरोड़ दिया है।'

महाधर्माध्यक्ष सेंट सिल्वेस्टर ने उत्तर दिया:

'यदि आपकी पुस्तकों में "कन्या" के बजाय "युवती" लिखा है, तो क्या "युवती" और "कन्या" एक ही नहीं हैं?' जब भविष्यवक्ता यशायाह ने परमेश्वर की ओर से अहज़ से कहा: 'प्रभु अपने परमेश्वर से एक चिह्न के लिए पूछो, चाहे गहराइयों में हो या ऊँचाइयों में'[563] , तो अहज़ ने उत्तर दिया: 'मैं नहीं पूछूँगा, और न ही मैं प्रभु को परीक्षा में डालूँगा'[564] । तब भविष्यवक्ता ने कहा: *'इसी कारण प्रभु स्वयं तुम्हें एक चिह्न देंगे।'* कौन सा चिह्न? *'देखो, एक कुँवारी गर्भ धारण करेगी।'* यदि, तथापि, आप कहते हैं कि भविष्यवक्ता एक कुंवारी के बारे में नहीं बल्कि एक युवती के बारे में बात कर रहे थे, और यह कि एक युवती कुंवारी नहीं होती[565] , तो भविष्यवक्ता द्वारा वादा किया गया संकेत संकेत नहीं कहा जा सकता; क्योंकि यदि एक युवती, जो विवाहित है, बच्चे को जन्म देती है, तो इसमें कोई चमत्कार नहीं है, बल्कि केवल एक सामान्य घटना है। हालाँकि, अपने पति के साथ यौन संबंध न बनाए बिना जन्म देना वास्तव में एक चमत्कार है; यह 'प्रकृति के नियमों' से परे एक असाधारण घटना है। इस प्रकार, वह युवती जिसके बारे में आपने लिखा है, एक कुँवारी थी, क्योंकि प्रभु ने उसके द्वारा एक संकेत देने का वादा किया था—अर्थात्, कि वह, किसी पुरुष को न जानती हुई, अलौकिक रूप से एक पुत्र को जन्म देगी। और हमने 'युवा कन्या' के बजाय 'कुँवारी' लिखकर धर्मग्रंथ को विकृत नहीं किया है; बल्कि, हमने इसके अर्थ को सटीक रूप से व्यक्त किया है ताकि यह अद्भुत दैवीय संकेत, जो मानवीय स्वभाव से परे है, और भी स्पष्ट रूप से समझा जा सके। क्योंकि आदम, जिसे मिट्टी से बनाया गया था, और हव्वा, जिसे उसकी पसली से बनाया गया था, के अलावा मनुष्यों में से ऐसा कौन है जो पुरुष के बीज के बिना कभी पैदा हुआ हो? और ऐसा कौन सा मामला है जहाँ किसी महिला ने किसी पुरुष के साथ संबंध बनाए बिना बच्चे को जन्म दिया हो? इस प्रकार, वह कोई भी संकेत नहीं होता, जिसे परमेश्वर ने देने का वादा किया था – विशेष रूप से यदि उस कुँवारी ने अपने गर्भ में अलौकिक रूप से नहीं, बल्कि पति के साथ संभोग द्वारा स्वाभाविक रूप से गर्भधारण किया होता – क्योंकि यह मानव स्वभाव के लिए एक सामान्य बात होती। लेकिन चूँकि पवित्र कुँवारी ने पति के बिना पवित्र आत्मा द्वारा गर्भधारण किया, इसलिए इसे ईश्वर के नए और गौरवशाली संकेत के रूप में माना जाना चाहिए, और ईश्वर अब हमारे साथ हैं, जैसा कि वादा किया गया था, पवित्र कुँवारी से अलौकिक रूप से जन्मे हैं।'

---

[563] *गहराइयों में*, अर्थात् पृथ्वी पर या पृथ्वी के नीचे से; *ऊँचाइयों में*, अर्थात् स्वर्ग से।

[564] अहाज ने भविष्यवक्ता पर विश्वास नहीं किया, परन्तु सीधे तौर पर ऐसा कहने की हिम्मत नहीं की; इसलिए, उसने पाखंडपूर्वक अपने बचाव में मूसा की व्यवस्था के वचनों का हवाला दिया, जो यहूदियों को चमत्कारों की मांग करके प्रभु को आजमाने से मना करती थी (निर्गमन 17)।

[565] यहूदियों ने व्याख्या की, "*'एक* युवती'—अर्थात् सामान्यतः एक युवती—'शायद विवाहित हो, या अभी भी एक अविवाहित लड़की हो सकती है'।" यह व्याख्या गलत है। यहाँ हिब्रू बाइबिल में प्रयुक्त शब्द (अल्मा) का व्युत्पत्ति के अनुसार, केवल एक बहुत ही कम उम्र की, अभी भी विकसित हो रही कुंवारी का अर्थ हो सकता है। इसके अलावा, पूरे पुराने नियम में, इस शब्द का कभी भी किसी विवाहित महिला के संदर्भ में उपयोग नहीं किया गया है।

यहूदियों ने आपत्ति जताई, 'लेकिन चूँकि मरियम से जन्मे को इम्मानुएल नहीं बल्कि यीशु कहा जाता है, तो क्या इसका मतलब यह है कि वह उस व्यक्ति के अलावा कोई और है, जिसे परमेश्वर ने भविष्यवक्ता के माध्यम से वादा किया था?'

संत सिल्वेस्टर ने उत्तर दिया:

– पवित्र शास्त्र में, किसी विशेष व्यक्ति की गतिविधियों का उल्लेख कभी-कभी उनके नाम के स्थान पर किया जाता है, जैसे उदाहरण के लिए: *'उसका नाम पुकार: माहेर-शालल-अश-बाज़'* (यशायाह 8:3)। यदि, वास्तव में, कभी कोई ऐसा व्यक्ति नहीं था जिसने वह नाम धारण किया हो, फिर भी, चूँकि मसीह को अपने शत्रुओं को परास्त करना था और उनका लूट का माल लेना था, इसलिए भविष्यवक्ता उनके नाम के बजाय उनके द्वारा किए जाने वाले कर्मों का उल्लेख करते हैं। इसी प्रकार, भविष्यवक्ता यरूशलेम के बारे में कहते हैं: 'तब वे तुम्हें "धर्म का नगर" कहेंगे! (यशायाह 1:26) यद्यपि किसी ने भी उस शहर को कभी 'धर्म का नगर' नहीं कहा, और हर कोई इसे इसके सामान्य नाम - यरूशलेम - से ही बुलाता है, फिर भी क्योंकि उस समय यरूशलेम को परमेश्वर के सामने धर्मी ठहराया गया था, इसलिए भविष्यवाणी में इसे 'धर्म का नगर' नाम दिया गया था, जो घटित होने वाली घटना पर आधारित था there[566] । इसके अलावा, धर्मग्रंथ में ऐसे अंश हैं जहाँ किसी नाम के बजाय एक घटना का उल्लेख किया गया है। जहाँ तक लोगों के साथ रहने के परमेश्वर के इरादे की बात है, बारूक की यह भविष्यवाणी सुनें: *'यह हमारा परमेश्वर है, और उसका कोई समान नहीं है। उसने ज्ञान के सभी मार्ग खोज निकाले हैं और उसे अपने सेवक याकूब और अपने प्रिय इस्राएल पर प्रदान किया है। इसके बाद, वह पृथ्वी पर प्रकट हुआ और मनुष्यों के बीच चला'*[567] । और इस तथ्य के बारे में कि उसे शैतान द्वारा परीक्षा में डाला जाना था, ज़करिया ने भविष्यवाणी की: *'और उसने मुझे यीशु, महापुजारी, को प्रभु के दूत के सामने खड़ा हुआ दिखाया, और शैतान को उसके दाहिने हाथ में खड़ा हुआ दिखाया कि वह उसका विरोध करे। और प्रभु ने शैतान से कहा: "हे शैतान, प्रभु तुझे डांटे; हे शैतान, हे दुष्टात्मा, प्रभु तुझे डांटे"'*[568] । उसकी गिरफ्तारी के संबंध में, यह सोलोमन की पुस्तक में भविष्यवाणी की गई है: *'दुष्टों ने मन में षड्यंत्र रचा: "आओ, हम धर्मी के लिए फंदा लगाएँ, क्योंकि वह हम पर बोझ है और हमारे कामों का विरोध करता है"'* (ज्ञान 2:1, 12)। और यह कि उन्हें उनके ही शिष्य द्वारा धोखा दिया जाएगा, इसकी भविष्यवाणी भजनकार ने की थी: *'जिसने मेरी रोटी खाई, उसी ने मुझ पर पाँव उठाया है'* (भजन संहिता 40:10)। और झूठे गवाहों के विषय में, उन्होंने कहा: *'क्योंकि झूठे गवाह मेरे विरुद्ध उठ खड़े हुए हैं'* (भजन संहिता 26:12)। उनकी सूली पर चढ़ाए जाने के विषय में, उन्होंने कहा: *'उन्होंने मेरे हाथ और मेरे पैर भेदे हैं। मेरी सब हड्डियाँ गिनी जा सकती हैं'*[569] । उसी भविष्यवक्ता ने मसीह के वस्त्रों के बँटने की भी भविष्यवाणी की: *'वे मेरे वस्त्रों को आपस में बाँट लेते हैं, और मेरे कपड़ों के लिए पासा डालते हैं'* (भजन संहिता 21:19)। और पित्त मिला हुआ सिरका दिए जाने के विषय में, उन्होंने कहा: *'उन्होंने मुझे भोजन के लिए पित्त दिया, और मेरी प्यास में उन्होंने मुझे पीने के लिए सिरका दिया'*[570] । और आगे, उनके दफ़न के बारे में, उन्होंने भविष्यवाणी की: *'तुमने मुझे पाताल की खाई में डाल दिया है'* (भजन संहिता 87:7)। और याकूब, आपके पूर्वज, ने आत्मा द्वारा इसे पूर्वदर्शी होकर कहा: *'वह झुक गया है; वह एक सिंह और एक सिंहनी की तरह लेट गया है'*[571] ।

मसीह प्रभु के विषय में पवित्र भविष्यवक्ताओं की इन और कई अन्य गवाहियों का हवाला देकर, संत सिल्वेस्टर यहूदियों पर विजयी हुए; क्योंकि, चूंकि पवित्र आत्मा स्वयं उनके होठों से बोले, उन्होंने स्पष्ट रूप से यह साबित कर दिया कि मसीह कन्या से जन्मे सच्चे ईश्वर हैं।

---

[566] कहने का तात्पर्य यह है कि वहाँ ही संसार के उद्धारकर्ता का जन्म हुआ था, जिन्हें प्रेरित सेंट पॉल धार्मिकता के राजा कहते हैं (इब्रानियों 7:2)।

[567] (बरुख 3:36–38), अर्थात्, वह हमेशा परम बुद्धिमानी से काम करते हैं और लक्ष्य तक पहुँचने के लिए सर्वोत्तम मार्ग जानते हैं।

[568] (ज़ेका. 3:1-2)। यीशु, यहूदी महापुजारी, जिनके विरुद्ध शैतान ने प्रभु के सामने बदनामी की, उन्हें कई चर्च पिताओं द्वारा यीशु मसीह की पूर्वसूचना के रूप में पहचाना जाता है, जिन्होंने शैतान और उसके सेवकों के विभिन्न हमलों को भी सहन किया।

[569] (भजन संहिता 21:17–18), अर्थात्, मसीह के शरीर में, जब वह क्रूस पर लटका था, हड्डियाँ इतनी बाहर निकली हुई थीं कि उन्हें गिना जा सकता था।

[570] (भजन संहिता 68:22)। *पित्त* – कड़वाहट; *सिरका* – एसीटिक एसिड। धन्य थियोडोरेट की व्याख्या के अनुसार, इन पदार्थों को पेय में कड़वा और अप्रिय बनाने के लिए मिलाया गया था।

[571] (उत्पत्ति 49:9)। याकूब वास्तव में यहाँ अपने पुत्र यहूदा के बारे में बात कर रहे थे, लेकिन चर्च के धर्मगुरुओं की व्याख्या के अनुसार, यहूदा के बारे में कही गई हर बात को सर्वोत्तम अर्थ में प्रभु यीशु मसीह पर भी लागू किया जाना चाहिए, जिनका यहूदा एक प्रकार था।

तब यहूदियों ने कहा:

'ईश्वर को मानव देह में जन्म लेने की क्या आवश्यकता थी? क्या वह मानव जाति को किसी अन्य तरीके से नहीं बचा सकता था?'

संत ने उत्तर दिया:

'ईश्वर के लिए कुछ भी असंभव नहीं है, पर शैतान को उसी द्वारा पराजित किया जाना था जिसे पहले शैतान ने पराजित किया था। यह मनुष्य था जिसे शैतान ने पराजित किया था – एक ऐसा मनुष्य जो प्रकृति के सामान्य क्रम में नहीं जन्मा था, किसी पुरुष के बीज से नहीं, बल्कि पृथ्वी से बनाया गया था, और वह भी एक कुंवारी की तरह शुद्ध और निर्दोष पृथ्वी से, – क्योंकि उस पर अभी तक ईश्वर का श्राप नहीं पड़ा था, न ही उसे किसी मारे गए भाई के रक्त या पशुओं की बलि से अपवित्र किया गया था; इस प्रकार वह अभी तक सड़ते हुए शरीरों से कलंकित नहीं हुआ था, न ही किसी अशुद्ध या अनुचित कर्म से अपवित्र हुआ था। ऐसी ही मिट्टी से हमारे प्रथम माता-पिता के लिए शरीर बनाया गया था, जिसे दिव्य श्वास ने जीवंत किया था। लेकिन अगर सर्व-दुष्ट शैतान ने ऐसे मनुष्य पर विजय प्राप्त कर ली होती, तो यह आवश्यक था कि उसी जैसे एक मनुष्य द्वारा उस पर विजय प्राप्त की जाए। और ऐसे ही हमारे प्रभु यीशु मसीह हैं, जिनका जन्म प्रकृति के रीति-रिवाज और नियम के अनुसार नहीं, बल्कि एक शुद्ध और पवित्र कुँवारी के गर्भ से हुआ, ठीक वैसे ही जैसे आदम पाप से अछूते होकर पृथ्वी से निकले थे। और जैसे आदम को दिव्य श्वास से जीवित किया गया था, वैसे ही उन्हें पवित्र आत्मा की क्रिया द्वारा अवतार दिया गया, जो परम पवित्र कुँवारी पर अवतरित हुए, और पूर्ण ईश्वर और पूर्ण मनुष्य बने - पाप को छोड़कर सभी बातों में पूर्ण, दो स्वभावों - दिव्य और मानवीय - के साथ, फिर भी एक ही व्यक्ति में; और इसलिए उनकी मानवीय प्रकृति ने हमारे लिए पीड़ा सहन की, जबकि उनकी दिव्यता अप्रभावित रही।

इस संबंध में, संत ने निम्नलिखित उदाहरण दिया:

'जब किसी पेड़ को, जो सूर्य की किरणों से प्रकाशित हो रहा हो, कुल्हाड़ी से काटा जाता है, तो सूर्य की किरणें पेड़ के साथ नहीं कटतीं। इसी प्रकार, मसीह की मानवता, जो दिव्यता के साथ एकजुट थी, यद्यपि उसने पीड़ा सहन की, यह पीड़ा दिव्यता को प्रभावित नहीं करती।'

राजा और पूरी परिषद ने संत सिल्वेस्टर द्वारा प्रस्तुत इस प्रमाण को स्वीकार किया और उन्हें विवाद में विजेता घोषित किया, क्योंकि यहूदी अब सिल्वेस्टर के खिलाफ कुछ भी नहीं कह सकते थे। फिर जादूगर ज़ाम्व्रियस ने राजा से कहा:

'यद्यपि सिल्वेस्टर वाक्पटु और वाद-विवाद में कुशल होने के कारण अपने शब्दों से हम पर हावी हो जाते हैं, फिर भी हम इस कारण से अपने पूर्वजों के धर्म से नहीं भटकेंगे, और न ही हम ऐसे व्यक्ति का अनुसरण करेंगे जिसे हमारे पूर्वजों ने सर्वसम्मति से मृत्युदंड दिया था। और चूँकि हम केवल एक ही ईश्वर की पूजा करते हैं, और किसी और की नहीं, मैं यह साबित करने के लिए तैयार हूँ कि मैं सिल्वेस्टर की तरह शब्दों से नहीं, बल्कि कर्म से ऐसा करूँगा; हे राजा, बस आज्ञा दीजिए कि एक बड़ा और उग्र सांड यहाँ लाया जाए, और तुरंत ही आपकी महारानी और यहाँ मौजूद सभी लोग इस बात से आश्वस्त हो जाएँगे कि हमारे ईश्वर के सिवा कोई और ईश्वर नहीं है।

उपस्थित लोगों में से एक ने कहा:

'मेरे झुंड में ऐसा ही एक सांड है, जो शहर के दरवाज़ों से ज़्यादा दूर नहीं है। कोई भी उस पर लगाम नहीं लगा सकता; कोई भी उसे हाथ से सहला भी नहीं सकता और न ही उसे छू सकता है।'

राजा ने तुरंत आदेश दिया कि सांड को लाया जाए। इस बीच, बातचीत जारी रखते हुए, संत सिल्वेस्टर ने ज़ाम्व्रियस से पूछा:

'तुम्हें उस सांड की क्या ज़रूरत है, और जब उसे लाया जाएगा, तो तुम उससे क्या करोगे?'

ज़ाम्व्रियस ने उत्तर दिया:

मैं हमारे ईश्वर की शक्ति को सिद्ध करना चाहता हूँ, क्योंकि यदि मैं बैल के कान में फुसफुसाऊँगा, तो वह तुरंत मर जाएगा। क्योंकि कोई भी नश्वर प्राणी ईश्वर का नाम सहन नहीं कर सकता, और जो कोई भी उस नाम को सुनता है, वह जीवित नहीं रह सकता। और हमारे पूर्वज, जब बलिदान के लिए सांड लाए जाते थे, तो वे उस नाम का उच्चारण सांडों

के कान में करते थे, और वे तुरंत एक ज़ोरदार गर्जना के साथ गिर पड़ते और अपनी अंतिम सांस ले लेते थे, इस प्रकार बलिदान के लिए तैयार हो जाते थे।[572]

सिल्वेस्टर ने आपत्ति जताई:

'लेकिन अगर, जैसा आप कहते हैं, यह नाम इसे सुनने वाले किसी भी व्यक्ति को मार डालता है, तो आपको यह कैसे पता चला?'

ज़ाम्व्री ने उत्तर दिया:

'तुम्हें यह रहस्य नहीं जानना चाहिए, क्योंकि तुम हमारे दुश्मन हो।'

जब ज़म्व्रियस ने यह उत्तर दिया, तो राजा ने उससे कहा:

'यदि तुम इस रहस्य को बिशप को नहीं बताना चाहते, तो हमें बता दो, क्योंकि यह वास्तव में एक पहेली भरा मामला है, जब तक कोई यह न माने कि यह नाम कहीं लिखा हुआ पढ़कर सीखा जा सकता है।'

ज़ाम्व्रियस ने उत्तर दिया:

'तो मुझे बताओ,' ज़ार ने कहा, 'तुमने खुद उसे कैसे पहचाना? क्योंकि कोई उसे कैसे पहचान सकता है जब तक कि यह शब्दों में बताया या लिखा न जाए?'

'तो मुझे बताओ,' राजा ने कहा, 'तुम्हें यह स्वयं कैसे पता चला? क्योंकि यह तब तक जाना नहीं जा सकता जब तक कि इसे शब्दों में न बताया जाए या लिखित रूप में न हो?'

– 'मैंने, हे राजा,' ज़म्व्रियस ने उत्तर दिया, 'सात दिनों तक उपवास किया, फिर एक नए चाँदी के तामज़े में शुद्ध बहता हुआ पानी डाला और प्रार्थना करने लगा; फिर, एक अदृश्य उंगली से, पानी पर शब्द लिखे गए, जिन्होंने मुझे ईश्वर का नाम बताया।'

तब बुद्धिमान सिल्वेस्टर ने कहा:

'अगर तुमने सचमुच वह नाम उसी तरह जाना है जैसा तुम कह रहे हो, तो निश्चित रूप से, जब तुम उसे किसी के कान में फुसफुसाते हो, तो क्या तुम स्वयं वह नाम उतनी ही स्पष्ट रूप से नहीं सुनते जितना कि वह जिसे तुम उसे बता रहे हो? और क्या उसे सुनकर तुम स्वयं नहीं मर जाते?'

जादूगर ने उत्तर दिया:

'मैं तुम्हें पहले ही बता चुका हूँ कि यह रहस्य तुम्हें नहीं पता होना चाहिए, क्योंकि तुम हमारे दुश्मन हो। और जब अपने शब्दों को अपने कर्मों से साबित करना बेहतर हो, तो शब्दों की क्या ज़रूरत है? दो में से एक चीज़ चुनो: या तो तुम अपने नासरी का नाम लेकर उस बैल को मार डालो, ताकि हम भी उस नासरी पर विश्वास कर सकें, या मैं हमारे ईश्वर का नाम उस बैल के कान में फुसफुसाकर उसे मार डालूँगा, ताकि तुम तब हमारे ईश्वर पर विश्वास करने के लिए विवश हो जाओ।

यह सुनकर उपस्थित सभी ने ज़ाम्व्री के निर्णय का समर्थन किया; हालाँकि ईसाइयों ने हिचकिचाना शुरू कर दिया, भले ही पवित्र बिशप ने उन्हें आश्वस्त करने की कोशिश की।

तब राजा ने ज़म्व्री से कहा:

'तुम्हें पहले अपना वादा पूरा करना होगा, क्योंकि तुमने एक ही शब्द में उस बैल को मारने का वादा किया था।'

जादूगर ने उत्तर दिया:

'हे राजा, यदि आप मुझे ऐसा करने का आदेश देते हैं, तो देखो मेरे ईश्वर की शक्ति!'

यह कहकर वह उस बैल के पास गया—जिसे मजबूत आदमी भी मुश्किल से ही काबू कर सकते थे—और उसने उसके सींगों के चारों ओर मजबूत रस्सियाँ लपेट दीं। जब वह सांड के पास पहुँचा, ज़ाम्व्रियस ने उसके कान में कुछ फुसफुसाया, और सांड ने तुरंत एक प्रचंड गर्जना की, जोरदार झटके से हिलकर गिर पड़ा और मर गया[573] । जो भी इस दृश्य के साक्षी थे, वे अत्यंत चकित रह गए, जबकि यहूदियों ने तालियाँ बजाते हुए ऊँचे स्वर में पुकारा:

'हम विजयी हुए, हम विजयी हुए!'

---

[572] यह ज़मरीयाह द्वारा एक झूठी रचना थी। जैसे कि व्यवस्था में (लैव. 1 आदि) कहा गया है, बैलों की बलि याजकों द्वारा दी जाती थी।

[573] संत सिल्वेस्टर इस घटना का श्रेय राक्षसों के प्रभाव को देते हैं, जिन्होंने चर्च के प्राचीन पिताओं और शिक्षकों की शिक्षा के अनुसार, उन दिनों में ईसाई धर्म के विकास में बाधा डालने के लिए हर संभव साधन अपनाया था।

तब सिल्वेस्टर ने राजा से सभी को चुप रहने का आदेश देने के लिए कहा, और जब सन्नाटा छा गया, तो बिशप ने यहूदियों से कहा:

'क्या तुम्हारे अपने ग्रंथों में यह नहीं लिखा है कि सर्वशक्तिमान ईश्वर ने कहा: *"मैं मारता हूँ और मैं जीवन देता हूँ; मैं चोट पहुँचाता हूँ और मैं ही चंगा करता हूँ"* (Deut. 32:39)?

उन्होंने उत्तर दिया:

'हाँ, ऐसा ही लिखा है।'

तब सिल्वेस्टर ने कहा:

'यदि ज़िम्व्रियिस ने ईश्वर के नाम पर सांड को मारा है, तो उसे उसी नाम से उसे मृतकों में से भी जीवित कर देना चाहिए। क्योंकि ईश्वर भलाई करने वाले ईश्वर हैं, बुराई करने वाले नहीं; और, अपनी प्रकृति से ही, उनके लिए भलाई करना उचित है, जबकि बुराई करना उनकी प्रकृति के विपरीत है; उनकी इच्छा, जो हमेशा अच्छी होती है, हमेशा भलाई करने की कामना करती है।' कभी-कभी ऐसा होता है कि वह दूसरों के लाभ के लिए किसी को किसी प्रकार की बुराई से दंडित करता है, लेकिन यह इसलिए नहीं है क्योंकि वह ऐसा चाहता है, बल्कि इसलिए है क्योंकि हमारे दुष्ट कर्म उसे ऐसा करने के लिए मजबूर करते हैं। तो, अगर ज़ाम्व्रियिस ने इतनी आसानी से वह कर दिया जिसे ईश्वर अपनी प्रकृति से ही नापसंद करते हैं, तो वह और भी आसानी से वह कर सकता है जो ईश्वर के लिए स्वाभाविक है। वह उसी ईश्वर के नाम से उस सांड को वापस जीवित कर दे जिससे उसने उसे मारा था, और मैं उसके धर्म में आ जाऊँगा।

'हे राजा!' ज़म्व्रियिस ने आपत्ति जताई, 'सिल्वेस्टर एक बार फिर मौखिक बहस में पड़ना चाहते हैं, लेकिन जब एक स्पष्ट कार्य पूरा हो चुका हो तो शब्दों की क्या आवश्यकता है?'

फिर सिल्वेस्टर की ओर मुड़कर, उन्होंने कहना जारी रखा:

'यदि बिशप, आपके पास भी कोई शक्ति है, तो अपने यीशु के नाम पर कोई चमत्कार करें!'

'अगर आप चाहें,' संत सिल्वेस्टर ने उत्तर दिया, 'तो मैं आपके मारे हुए बैल को मृतकों में से जीवित करने के लिए अपने ईसा के पवित्र नाम का जाप करके आपको मेरे मसीह की शक्ति दिखाऊँगा।'

'सिल्वेस्टर, तुम व्यर्थ में घमंड कर रहे हो,' ज़ाम्व्रियिस ने आपत्ति जताई, 'उस सांड के फिर से जीवित हो उठना असंभव है!'

तब राजा ने ज़म्व्रियिस से कहा:

'तो फिर, अगर बिशप वह कर दिखाता है जिसे तुम असंभव कहते हो, तो क्या तुम उसके ईश्वर पर विश्वास करोगे?'

ज़ाम्व्रियिस ने उत्तर दिया:

'राजन, मैं आपको शपथ देता हूँ कि यदि मैंने उस सांड को जीवित होते देखा, तो मैं स्वीकार करूँगा कि मसीह ही ईश्वर हैं और सेंट सिल्वेस्टर के धर्म को अपना लूँगा।'

सभी यहूदियों ने भी यही कहा। फिर बिशप घुटने टेककर, ईश्वर से आँसुओं और भक्तिपूर्वक प्रार्थना करने लगा; और फिर उठकर, अपने हाथ स्वर्ग की ओर उठाकर, वह सबके सुनने के लिए चिल्लाया:

'हे प्रभु यीशु मसीह, परमेश्वर के पुत्र और स्वयं परमेश्वर, हे प्रभु, जो मार भी सकते हैं और जीवन भी दे सकते हैं, गिरा भी सकते हैं और चंगा भी कर सकते हैं, कृपा करके, अपने परम पवित्र और जीवन-दायक नाम के उच्चारण द्वारा, उस बैल को पुनर्जीवित करें जिसे ज़ाम्व्रियिस ने राक्षसों के उच्चारण द्वारा मारा था, क्योंकि अब बहुतों के उद्धार के लिए आपके चमत्कारों के पूर्ण होने का समय आ गया है; इस घड़ी, अपने सेवक की सुनो, ताकि आपके परम पवित्र नाम की महिमा हो!

प्रार्थना के बाद, वह सांड के पास गया और ज़ोर से घोषणा की:

'यदि यीशु मसीह, जिनका मैं प्रचार करता हूँ—जो कुँवारी मरियम से जन्मे—सच्चे ईश्वर हैं, तो उठो और अपने पैरों पर खड़े हो जाओ, और अपनी पूर्व क्रूरता को त्यागकर, नम्र बन जाओ!'

संत के ये शब्द कहते ही सांड तुरंत जीवित हो उठा, अपने पैरों पर खड़ा हो गया, और शांत खड़ा रहा। संत ने उसके सींगों से रस्सियाँ हटाने का आदेश दिया और कहा:

'जहाँ से तू आया है वहीं वापस जा और किसी को कोई हानि न पहुँचा, बल्कि शांति से रह; यही आज्ञा तुझे हमारे प्रभु यीशु मसीह देते हैं!'

और वह सांड चुपचाप चला गया, यद्यपि वह पहले अत्यंत उग्र था। यह देखकर सभी ने एक स्वर में पुकार लगाई:

'महान है वह ईश्वर जिसका प्रचार सिल्वेस्टर करते हैं!'

यहूदी, ज़ाम्ब्रियस के साथ, संत के पास दौड़े, उनके पवित्र चरणों से लिपट गए, और उनसे विनती की कि वे उनके लिए ईश्वर से प्रार्थना करें और उन्हें ईसाई धर्म में स्वीकार कर लें। इसी तरह, धन्य हेलेना, जिस पर्दे के पीछे वह बहस सुनने और हो रही घटनाओं को देखने के लिए बैठी थीं, उसे उठाकर वहाँ से बाहर आईं और संत के चरणों में गिर पड़ीं, तथा मसीह को सच्चा ईश्वर स्वीकार किया। ज़म्ब्रस के नेतृत्व में वहाँ मौजूद सभी यहूदियों और अनगिनत लोगों ने सच्चे ईश्वर की ओर मुड़कर मसीह के चर्च में प्रवेश किया।

पवित्र ईसाई धर्म की इस विजय के बाद, संत सिल्वेस्टर ने अपने शेष दिन मसीह की कलीसिया के लिए अनवरत परिश्रम और देखभाल में बिताए; इसके पश्चात्, अपने सुपुर्द किए गए झुंड की निष्ठापूर्वक देखभाल करते हुए और एक परिपक्व वृद्धावस्था[574] को प्राप्त कर, वे प्रभु के पास चले गए। वे इक्कीस वर्ष और ग्यारह महीने तक बिशप के सिंहासन पर रहे। अब, अनंत जीवन में, स्वर्गदूतों के साथ, वे त्रिमूर्ति में एक परमेश्वर, पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा की महिमा करते हैं; उन्हें भी हमसे सदा-सदा महिमा मिले, आमीन।

कॉन्टाकियन, स्वर 4:

तुम पुरोहितों में एक पुरोहित, राजा और ईश्वर के दैवीय वाहक के रूप में प्रकट हुए, जो उपवास में साथी रहे: इसलिए, हे पिता, तुम अब स्वर्ग में स्वर्गदूतों की सेना के साथ आनंदित हो, हे महिमामय चरवाहे सिल्वेस्टर, जो प्रेम से आपकी स्मृति मनाने वालों को बचाते हो।

पवित्र पुरोहित-शहीद थियोजेनेस, पारोस के बिशप की स्मृति

2 जनवरी को स्मरण किया जाता है

[575]पवित्र पुरोहित-शहीद थियोजेनेस, पेरिया शहर के बिशप थे[576] । फ्रीजिया में लिसिया[577] के पास सैनिकों द्वारा पकड़े जाने के बाद, उन्हें ट्राइब्यून[578] ज़ैलसिटियस ने सैन्य सेवा में शामिल होने के लिए मजबूर किया; लेकिन, उनके विरोध के कारण, उन्हें चार स्तंभों पर लटका दिया गया और डंडों से बेरहमी से पीटा गया। संत ने साहस के साथ अपने यातनाओं को सहन किया और ऐसा करते हुए उन्होंने ऑप्शियो[579] और ट्राइब्यून को भविष्यवाणी की कि उनकी पिंडलियाँ कुचल दी जाएँगी, और लिकिनियस को कि वह पराजित होगा। इसके बाद, थियोगेनेस को कैद कर दिया गया, और जेल में रहते हुए संत ने सभी भोजन से इनकार कर दिया। जब लिकिनियस को इसकी सूचना मिली, तो उसने उसे समुद्र में फेंकने का आदेश दिया। तब संत ने जल्लादों से प्रार्थना करने के लिए समय मांगा, पूर्व की ओर मुख करके खड़े हुए और अपने हाथ उठाकर तीन घंटे तक प्रार्थना की। प्रार्थना करते समय, वे एक असाधारण प्रकाश में नहा उठे, जिससे जल्लाद - नाविक और कुछ सैनिक - ईसाई धर्म में परिवर्तित हो गए। इस प्रकार पवित्र शहीद थियोजेनेस ने अपना पवित्र आत्मा प्रभु को सौंप दिया, और समुद्र की गहराई में डूब गए[580] । बाद में, ईसाइयों ने उनके शरीर को पानी से निकालकर शहर की दीवारों के पास दफना दिया। संत थियोजेनेस के अवशेषों पर कई चमत्कार हुए, और विभिन्न बीमारियों से लोग चंगे हुए।

---

[574] रोम के पोप, संत सिल्वेस्टर का निधन वर्ष 335 में हुआ। उनके अवशेष रोम से एक मील दूर, साल्यूरियन मार्ग पर, संत प्रिसिला के कैटाकॉम्ब में दफनाए गए थे।

[575] फ्रासिया – एशिया माइनर का एक बड़ा क्षेत्र, जो मूल रूप से प्रायद्वीप के पश्चिमी हिस्से के पूरे मध्य भाग को घेरे हुए था, और बाद में इसमें प्रोपोंटिस (मार्मारा सागर) का दक्षिणी तट भी शामिल हो गया जो हेलेस्पोंट तक फैला था, जिसे बाद में मिसिया का हिस्सा माना जाने लगा; इस प्रकार, चौथी शताब्दी में, 304 से 320 तक, पेरियन शहर को भी फ्रासिया का हिस्सा माना गया।

[576] पेरियस – हेलेस्पोंट (डार्डानेल्स) पर एक शहर, जो एशिया माइनर के उत्तर-पश्चिमी प्रांत मिसिया में, लैम्प्सैक्स और साइज़िकस के बीच स्थित था।

[577] लिकिनियस – एक रोमन सम्राट जिसने कॉन्स्टेंटाइन महान के साथ संयुक्त रूप से शासन किया

[578] ट्रिब्यून – प्रांतीय बलों का सर्वोच्च कमांडर।

[579] एक ऑप्शियो सेंचुरियन का सहायक होता था; एक सेंचुरियन एक सेंचुरिया का कमांडर होता था, जो 100 पुरुषों की एक सैन्य इकाई थी।

[580] संत थियोजेनेस, पवित्र शहीद, ने लगभग 320 ईस्वी में शहादत प्राप्त की।

16 जनवरी

3 जनवरी (पुराने कैलेंडर के अनुसार)

शहीद सेंट गॉर्डियस का कष्टकथा

3 जनवरी को स्मरणोत्सव मनाया जाता है

मसीह के लिए शहीद गॉर्डियस, कैपैडोसिया के सेसरिया में ईसाई माता-पिता के घर पैदा हुए थे और ऑर्थोडॉक्स ईसाई धर्म में उनका पालन-पोषण हुआ। वयस्क होने पर, उन्हें सैन्य सेवा में भर्ती किया गया और सेंचुरियन (सौजनाध्यक्ष) नियुक्त किया गया, क्योंकि वे शारीरिक शक्ति और आत्मा की दृढ़ता दोनों में कई लोगों से आगे थे।

उस समय, रोमन सम्राट लिकिनियस[581] ने ईसाइयों पर अपना पूरा क्रोध उतारा और मसीह के चर्च के खिलाफ अपना अधर्मी हाथ उठाया। शाही फरमान और आदेश सभी बाज़ारों और सबसे व्यस्त सार्वजनिक स्थानों में वितरित किए गए, जिसमें यह आदेश दिया गया था कि मसीह की पूजा नहीं की जानी चाहिए और जो कोई भी इस शाही निषेध का उल्लंघन करेगा, उसे मृत्युदंड दिया जाएगा। सभी को पत्थर और लकड़ी की मूर्तियों के सामने मानव हाथों की रचना की पूजा करने के लिए लाया जाता था, और जो मना करते थे उन्हें यातनाओं के माध्यम से ऐसा करने के लिए मजबूर किया जाता था। पूरे शहर में अराजकता फैल गई; ईसाइयों की संपत्ति लूट ली गई, उनके घरों में लूटपाट की गई, और लोगों को पीटा गया; धर्मपरायण महिलाओं को सड़कों पर घसीटा गया; – युवाओं पर कोई दया नहीं दिखाई गई, न ही बुजुर्गों का सम्मान किया गया; जो निर्दोष थे, वे अपराधियों की तरह पीड़ित हुए; कालकोठरियाँ भीड़भाड़ से भरी थीं; और सम्मानित तथा अमीर दोनों तरह के घर खाली छोड़ दिए गए; जंगल उन लोगों से भर गया था जिन्हें केवल इसलिए निर्वासित कर दिया गया था क्योंकि वे मसीह में विश्वास करते थे; एक पिता ने अपने ही बेटे को मौत के घाट उतारा , एक बेटे ने अपने पिता को मुकदमे में घसीटा, एक भाई अपने भाई पर टूट पड़ा, और एक दास अपने मालिक के खिलाफ बगावत कर गया; शैतान ने लोगों की आत्माओं पर जैसे पागलपन की एक भयानक रात छा दी, ताकि कोई एक-दूसरे को पहचान न सके, जैसे अंधेरे में। प्रार्थना के घर दुष्टों के हाथों लूट लिए गए, पवित्र वेदियाँ उलट दी गईं, और न कोई बलिदान था, न कोई धूप, और न ही कोई ऐसी जगह जहाँ दैवीय सेवा संपन्न की जा सकती हो: सब कुछ निराशा में लिपट गया था, मानो किसी काले बादल से; ईश्वर के सेवकों को भगा दिया गया, हर धार्मिक सभा भय में होती थी, जबकि राक्षस बलि के धुएँ और रक्त से ब्रह्मांड को कलंकित करते हुए आनंदित हो रहे थे।

ऐसी विपत्तियाँ देखकर, गॉर्डियस ने स्वेच्छा से शहर छोड़ने का निश्चय किया; अपना सैन्य पट्टा उतारकर[582] और अपनी संपत्ति, रिश्तेदारों, दोस्तों, दासों, जीवन के आरामों और उन सभी चीजों को पीछे छोड़कर जिनकी दुनिया और उसकी खुशियों से प्रेम करने वाले लोग लालसा करते हैं, वह गहरी और अतिकठिन रेगिस्तानों में चला गया, क्योंकि उसके लिए जंगली जानवरों के बीच जीवन मूर्तिपूजकों की संगत से कहीं अधिक सुखद था; उन्होंने पवित्र नबी एलियाह के उदाहरण का अनुसरण किया, जिन्होंने सिदोनी के मूर्तियों की पूजा का साक्षात्कार करने के बाद, परमेश्वर की खोज में माउंट होरेब पर जाकर एक गुफा में प्रवेश किया, और उन्होंने उसी को देखा, जितना कि मानव नेत्र उसे देख सकता था (2 राजा 19)। ऐसे थे ये गॉर्डियस, जो शहर के कोलाहल, बाज़ारों की चहल-पहल, अधिकारियों के अहंकार, और बदनाम करने वालों की अदालतें—जो बेचते, खरीदते, कसम खाते, झूठ बोलते और ईश्वर की निंदा करते हैं—से भागे, और जो खेलों, उपहास और शहर के अश्लील उत्सवों से भागे, क्योंकि उनका कान शुद्ध था, स्पष्ट आँखें और, सबसे बढ़कर, एक शुद्ध हृदय, जो परमेश्वर को निहारने में सक्षम था। उन्हें दिव्य प्रकटवाक्यों के योग्य माना गया और उन्होंने महान रहस्यों को *'न मनुष्यों से, और न किसी मनुष्य द्वारा'* (गलातियों 1:1) जाना, बल्कि एक महान शिक्षक—सत्य का आत्मा (यूहन्ना 15:26)—के माध्यम से जाना। यहाँ से, अपने विचारों को जीवन की ओर मोड़ते हुए—कि वह कितना व्यर्थ और क्षणिक है, एक सपने या छाया की तरह—उसने अपनी आत्मा की पूरी शक्ति से स्वर्ग में शाश्वत निवास की लालसा की और, एक

---

[581] लिसिनियस – एक रोमन सम्राट जिसने 307 से 321 तक साम्राज्य के पूर्वी भाग पर शासन किया।

[582] सेना में सम्मानजनक पदों पर आसीत व्यक्तियों की एक विशिष्ट विशेषता एक विशेष पट्टा था, जिससे एक तलवार लटकाई जाती थी।

महान योद्धा की तरह, उपवास, जागरण, प्रार्थना और परमेश्वर के वचन के अध्ययन के माध्यम से संघर्ष की तैयारी करने लगा। वह उस दिन का विशेष उत्सुकता से इंतजार कर रहा था जिस दिन पूरा शहर दुष्ट देवता मार्स के त्योहार का जश्न मनाने वाला था—या, अधिक सटीक रूप से, उस राक्षस का जो strife[583] से प्यार करता है। जब वह दिन आया, तो पूरा जनसमूह घोड़ों की दौड़ देखने के लिए सर्कस में उमड़ पड़ा, और हर कोई ऊपरी स्टैंड में अपनी-अपनी जगह पर बैठ गया। उस समय शहर में कोई नहीं बचा; घोड़ों की तेज दौड़ और रथ चालकों के कौशल को देखने वाले दर्शकों में कई ईसाई भी थे, जो अपने जीवन की कम परवाह करते थे और इस तुच्छ सभा से पीछे नहीं हटे। उस दिन, दासों को उनके कामों से मुक्त कर दिया गया और वे भी वहाँ इकट्ठा हुए; स्कूलों के बच्चे वहाँ भागे-भागे आए, और अनैतिक तथा निर्लज्ज महिलाएँ भी मौजूद थीं।

इस प्रकार सर्कस अनगिनत लोगों की भीड़ से भर गया था, जो घोड़ों की दौड़ को ध्यान से देख रहे थे। तब पराक्रमी और उदार गॉर्डियस, ऊँचे पहाड़ से उतरकर सर्कस में आ गया, और भीड़ से वह विचलित नहीं हुआ; उसने उन असंख्य हथियारबंद हाथों के बारे में सोचने के लिए एक पल भी नहीं ठहरा, जिनके बीच वह खुद को उजागर कर रहा था, बल्कि अडिग हृदय और निडर आत्मा के साथ, सर्कस में बैठे लोगों को धकेलते हुए, बीच में अपना स्थान ले लिया, और इस प्रकार पवित्रशास्त्र के वचनों को सच्चा साबित किया: *'धर्मी सिंह के समान निर्भीक होते हैं* (नीतिवचन 28:1)[584] । लेकिन इससे संतुष्ट न होकर, सर्कस के खुले मैदान में इतनी निर्भीकता से खड़े होकर, उन्होंने प्रेरितों की तरह, यशायाह नबी के वचन जोर से घोषित किए: *'जिन्होंने मुझको न खोजा,* उन्होंने *मुझे पाया* (यशायाह 65:1), जिससे यह स्पष्ट हो गया कि उसे यहाँ जबरदस्ती नहीं लाया गया था, बल्कि वह प्रभु मसीह के अनुकरण में स्वेच्छा से शहादत के लिए स्वयं को अर्पित कर रहा था, जिन्होंने स्वयं को उन यहूदियों के हाथों में सौंप दिया था जिन्होंने उन्हें रात के अंधकार में खोजा था। जब सर्कस में मौजूद लोगों को यह एहसास हुआ कि उनके सामने कौन खड़ा है, तो तुरंत एक शोर मच गया: विश्वासियों ने खुशी से तालियाँ बजाईं, जबकि अविश्वासियों ने न्यायाधीश से गॉर्डियस को मौत की सजा देने का आदेश देने के लिए चिल्लाया। हर तरफ़ चीख-पुकार और हंगामा मच गया; उन्होंने घोड़ों को देखना बंद कर दिया, रथ चालकों को देखना बंद कर दिया; रथों के पहियों की खनक हवा में व्यर्थ गूँज रही थी: कोई भी गॉर्डियस के अलावा कुछ और देखना नहीं चाहता था, कोई भी गॉर्डियस के शब्दों के अलावा कुछ और सुनना नहीं चाहता था। पूरा सर्कस एक कोलाहल से भर गया, जो हवा की तरह फैलकर घोड़ों की आवाज़ को दबा गया। जब उद्घोषक ने मौन का संकेत दिया, तो तुरही शांत हो गईं, बांसुरी रुक गईं, और संगीत वाद्ययंत्र थम गए: सभी की निगाहें केवल गॉर्डियस पर थीं, सभी केवल उसी को सुन रहे थे। सर्कस में नगरपालक विराजमान थे, जो दौड़ों के आयोजन की देखरेख करते थे और प्रतिस्पर्धियों को पुरस्कार देते थे। संत को तुरंत उनके सामने लाया गया, और उनसे निम्नलिखित प्रश्न पूछा गया:

'वह कौन है, और वह कहाँ से आया है? वह किस कुल और वंश का है?'

तब गॉर्डियस ने उन्हें अपने बारे में सब कुछ बताया – वह किस पद पर था, उसने सेवा छोड़कर रेगिस्तान में क्यों तपस्या की, और वह क्यों लौटा था।

गॉर्डियस ने कहा, 'मैं अपने कर्मों से यह प्रदर्शित करने के लिए लौटा हूँ कि मैं आपकी आज्ञाओं की अवहेलना करता हूँ और यीशु मसीह, जो मेरी आशा और मेरा रक्षक है, की घोषणा करता हूँ। यह जानकर कि आप अपनी क्रूरता में कई लोगों से बढ़कर हैं, मैंने जानबूझकर इस दिन को अपने इरादे और अपने व्रत को पूरा करने के लिए एक उपयुक्त समय के रूप में चुना है।'

ये शब्द सुनते ही राज्यपाल का क्रोध आग की तरह भड़क उठा, और उसने अपना सारा गुस्सा संत गॉर्डियस पर उतार दिया।

'मुझे जल्लादों को बुलाओ!' वह चिल्लाया। 'कोड़े कहाँ हैं? सीसे की गोलियाँ कहाँ हैं? पहिये कहाँ हैं? उन्हें पहियों पर खींचो और उसके शरीर को टुकड़े-टुकड़े कर दो[585] ; उसे एक पेड़ पर लटका दो, मृत्युदंड के उपकरण लाओ; उसे जानवरों के आगे फेंक दो, तलवार से काटो और गहरी खाई में फेंक दो।' हालाँकि, इस दुष्ट आदमी के लिए इतना भी काफी नहीं है, जो एक मौत से नहीं, बल्कि कई मौतों से मरने का हकदार है।

तब संत गॉर्डियस ने कहा:

---

[583] मंगल, रोम का युद्ध का देवता, को रोमन राज्य धर्म के सबसे महत्वपूर्ण देवताओं में से एक के रूप में पूजा जाता था।

[584] दूसरे शब्दों में, धर्मी व्यक्ति शेर की तरह कुछ भी नहीं डरता।

[585] प्रारंभिक ईसाइयों पर प्रयुक्त यातना के उपकरण।

'सचमुच, यदि मैं मसीह के लिए मरने को तैयार न होता, तो मैं स्वयं को बहुत हानि पहुँचाता!'

इन शब्दों ने राज्यपाल को और भी अधिक क्रोधित कर दिया, जिससे उसकी स्वाभाविक क्रूरता और बढ़ गई। लेकिन वह जितना अधिक क्रूर होता गया, संत गॉर्डियस अपने दुखों में उतना ही अधिक बहादुर दिखाई दिया। कोई यातना, कोई घातक उपकरण उसे अपने संकल्प से विचलित नहीं कर सकता था। स्वर्ग की ओर अपनी दृष्टि उठाकर, उन्होंने भजन से छंद गाए: *'प्रभु मेरी ओर हैं; मैं डरूंगा नहीं: मनुष्य मेरे क्या कर सकता है?'* (भजन संहिता 117:6) और फिर: *'मैं बुराई से नहीं डरूंगा, क्योंकि आप मेरे साथ हैं'* (भजन संहिता 22:4); और अन्य इसी प्रकार के वचन, जो उसने पवित्र शास्त्रों से सीखे थे, गॉर्डियस ने गाए, जिससे वह स्वयं में साहस और धैर्य जगा रहा था। वह भय से इतना परे था कि उसने स्वयं ही अपने ऊपर अत्याचार करने के लिए कहा।

वह कहता था, 'तुम देर क्यों कर रहे हो? तुम वहाँ खड़े क्यों हो? मेरे शरीर को टुकड़े-टुकड़े कर दो और उसे फाड़ डालो; मुझे अपनी इच्छा अनुसार यातना दो। मुझे मुझसे वादा किए गए आशीर्वाद प्राप्त करने की आशा से वंचित मत करो: तुम मेरी पीड़ा को जितना अधिक तीव्र करोगे, उतना ही बड़ा इनाम मुझे अपने प्रभु से मिलेगा।' इस जीवन का दुख शाश्वत आनंद लाता है, और हम, आपके द्वारा हमारे शरीरों पर दिए गए घावों के बदले में, सामान्य पुनरुत्थान के दिन सफेद वस्त्र प्राप्त करेंगे; अपमान के बदले में, हमें स्वर्गीय मुकुट दिए जाएँगे। दुष्टों के साथ निंदा के बजाय, हमें स्वर्गदूतों के साथ रहने का वरदान मिलेगा।

अपनी क्रूरता और यातनाओं से संत गॉर्डियस को पवित्र आस्था से हटाने में असमर्थ, दुष्ट राज्यपाल ने उन्हें चापलूसी से लुभाना शुरू कर दिया: क्योंकि यही शैतान की प्रथा है—वह डरपोकों को डराता है, जबकि दृढ़ लोगों को चापलूसी से नरम कर देता है और उन्हें आत्मसंतोष में सुला देता है। इस प्रकार, यातना देने वाले ने संत को विभिन्न उपहार देने शुरू कर दिए और राजा की ओर से और भी बड़े पुरस्कारों का वादा किया।

उसने कहा, 'राजा तुम्हें सेना में उच्च पद, एक विशाल संपत्ति, धन-संपत्ति और महिमा, और जो कुछ भी तुम चाहो, सब कुछ देगा।'

लेकिन संत, उसके वादे सुनकर, उसकी मूर्खता पर हँसे और कहा:

'क्या तुम सचमुच मुझे कुछ ऐसा दे सकते हो जो स्वर्ग के राज्य से बेहतर हो?'

तब दुष्ट राज्यपाल ने क्रोध में अपनी तलवार खींची और जल्लाद को बुलाने का आदेश देते हुए, संत गॉर्डियस को सिर कलम करने की सजा सुनाई। एक बड़ी भीड़ की उपस्थिति में मृत्युदंड होने से पहले, गॉर्डियस को उनके परिचितों ने घेर लिया; उन्होंने उन्हें गले लगाया और अंतिम चूमन दिया। उनकी आँखों में आँसू लिए, उन्होंने उससे विनती की कि वह खुद को मौत के हवाले न करे, अपने जीवन को अपने यौवन में ही न खोए, और इस सूर्य को न त्यागे जो सभी के लिए आनंद का स्रोत था। उन्होंने उसे केवल शब्दों में ही मसीह का त्याग करने की सलाह दी, और कहा:

'एक ही शब्द से तुम अपनी जान बचा सकते हो; अपने होठों से मसीह का त्याग करो; पर अपने दिल में उस पर जैसा चाहो वैसे विश्वास रखो, क्योंकि ईश्वर जीभ को नहीं बल्कि विक्ता के विचारों को सुनता है। अगर तुम ऐसा करोगे, तो तुम न केवल न्यायाधीश के क्रोध को शांत करोगे बल्कि ईश्वर को भी प्रसन्न करोगे।'

लेकिन वह, समुद्र के बीचों-बीच खड़े एक चट्टान की तरह, जो समुद्र की लहरों द्वारा बड़े ज़ोर से टकराने पर भी अडिग रहती है, अपने दृढ़ संकल्प पर अटल रहा। और जैसे चट्टान पर बना घर न तो किसी तेज हवा से, न ही मूसलाधार बारिश या उफनती नदियों से नष्ट होता है, वैसे ही वह दृढ़ व्यक्ति अपने विश्वास में अडिग था।

लेकिन अपनी आध्यात्मिक आँखों से यह देखकर कि शैतान उसके परिचितों के बीच मंडरा रहा था, एक को रुला रहा था और दूसरे को विनती करने और अनुचित सलाह देने के लिए उकसा रहा था, शहीद ने प्रभु के सांत्वना के वचन बोले: *'मेरे लिए मत रोओ'* (लूका 23:28), परन्तु परमेश्वर के उन शत्रुओं के लिए रोओ जो मसीहियों को सताते हैं; मैं उन्हीं के विषय में कहता हूँ, उन्हीं के लिए रोओ, जो *'हमारे लिए आग तैयार करके, अपने लिए गेहेन्ना भड़का रहे हैं और क्रोध के दिन के लिए अपने लिए क्रोध इकट्ठा कर रहे हैं'* (रोमियों 2:5)। मेरा दिल तोड़ना बंद करो; क्योंकि मैं हमारे प्रभु यीशु मसीह के नाम के लिए एक बार नहीं, बल्कि कई बार मरने को तैयार हूँ।

जिन लोगों ने गॉर्डियस को केवल शब्दों में मसीह का त्याग करने की सलाह दी, उन्होंने इस प्रकार उत्तर दिया:

– मैं अपनी जीभ को, जो मुझे मसीह की कृपा से दी गई है, उसके सृष्टिकर्ता का त्याग करने के लिए मजबूर नहीं कर सकता: *'क्योंकि मन से विश्वास किया जाता है और धर्मी ठहराया जाता है, और मुँह से प्रचार किया जाता है और बचाया जाता है'* (रोमियों 10:10)। तो फिर मैं उस प्रभु का त्याग कैसे कर सकता हूँ, जिसकी मैंने बचपन से ही आराधना की

है? मैं पवत्रि वशि्वास में पाला-पोसा गया हूँ। क्या स्वर्ग ईश्वर का त्याग करने पर स्तब्ध नहीं हो जाएगा? क्या स्वर्गीय पडि मुझसे अपनी रोशनी नहीं छपिा लेंगे? क्या पृथ्वी मुझे सहन करेगी, या मुझे जीवति ही नगिल लेगी? *'धोखा न खाओ: परमेश्वर का मज़ाक नहीं उड़ाया जाता'* (गलातयिों 6:7)[586] 'और हमारे वचनों से वह हमारा न्याय करेगा, और हमारे वचनों से वह हमें धर्मी ठहराएगा, और हमारे वचनों से वह हमें दोषी ठहराएगा' (लूका 19:22; मत्ती 12:37)। क्या तुमने प्रभु की भयानक चेतावनी नहीं सुनी: *'जो कोई मनुष्यों के सामने मुझ से इनकार करेगा, मैं भी स्वर्गीय पति के सामने उससे इनकार करूँगा'* (मत्ती 10:33)? तो फरि, तुम मुझे अपने होठों से अपने ईश्वर से इनकार करने की सलाह क्यों देते हो? क्या यह मेरे जीवन को लंबा करने के लिए है? क्या यह कुछ और दनिों के जीवन के लिए थोड़ी देर के लिए मृत्यु से बचने के लिए है? लेकनि ऐसा करने से, मैं अनंत जीवन खो दूँगा। क्या यह शारीरकि पीड़ा से बचने के लिए है? फरि भी ऐसा करने से, मैं उस स्थान में धर्मी लोगों के लिए तैयार की गई आशीषें नहीं देख पाऊँगा जहाँ कोई बीमारी नहीं है। यह सरासर मूर्खता होगी कि मैं एक क्षणकि जीवन के बदले में अपने लिए, अपनी आत्मा सहति, अनंतकालीन यातना और वनिाश खरीद लूँ। नहीं, मैं तुम्हें भी सलाह देता हूँ: यदि तुम इतनी ही बुरी सोच रखते हो, तो समझदारी और सत्य सीखो, और, *'झूठ को त्यागकर सत्य बोलो'* (इफसियिों 4:25), घोषणा करो कि *'प्रभु यीशु मसीह, परमेश्वर पति की महमिा के लिए'* (फलिि. 2:11), क्योंकि हर जीभ ऐसे शब्द बोलेगी जब *'स्वर्ग में, पृथ्वी पर और पृथ्वी के नीचे हर घुटना यीशु के नाम के सामने दण्डवत् करेगा'* (फलिि. 2:10)।

यह कहने और अपने ऊपर क्रॉस का चह्नि बनाने के बाद, संत गॉर्डयिस नडिर होकर अपनी फाँसी की जगह पर गए, उनका मुख शांत रहा, और वे इस मनोभाव से फाँसी की जगह पर खड़े रहे मानो उनके पीछे कोई जल्लाद न हो, और मानो वे अपने सामने उन स्वर्गदूतों को देख रहे हों जनिके हवाले वे अपनी आत्मा करना चाहते थे। तलवार से मारे जाने के बाद, उन्होंने एक धन्य जीवन प्राप्त कयिा: लाजरूस के समान, आनंद के जयकारों के बीच, उन्हें उनके शाश्वत वशि्राम के स्थान पर ले जाया गया, जहाँ, अपना प्रतफिल प्राप्त कर, वे स्वर्गदूतों के साथ, वशि्वास के संस्थापक - मसीह की, जनिके लिए उन्होंने दुख उठाया, अनंतकाल तक महमिा करते हैं।

कॉन्टाकयिन, स्वर 8:

हे अति महमिामय, तेरे पसीने से सारी पृथ्वी सचिति हुई है, और हे गॉर्डयिस, अपने सम्मानति रक्त से, तूने संपूर्ण जगत को प्रसन्न कयिा है; हे ईश्वर-ज्ञानी, अपनी प्रार्थनाओं से उन सभी को बचा, जो वशि्वास के साथ तेरा स्तुतगिान करते हैं, और जो अपनी प्रसन्नता में, हे सर्व-स्तुत्य, एक योग्य स्तुति-गीत तेरे लिए गाते हैं, एक बहु-पीड़ति पुरुष के रूप में।

पवत्रि भवष्यिवक्ता मलाकी का स्मरणोत्सव

3 जनवरी को स्मरणोत्सव

पवत्रि भवष्यिवक्ता मलाकी ज़ेबुलून के कुल से थे[587] । वे नेहेमायाह के समय में रहते और भवष्यिवाणी करते थे[588] , जब यहूदयिों की बेबीलोन की बंधुआई से वापसी[589] के बाद यरूशलेम में मंदरि का पुनर्नरि्माण कयिा गया था, और वहाँ दवि्य सेवाएँ आयोजति की जाती थीं और याजकों द्वारा बलदिान चढ़ाए जाते थे। अपने धर्मपरायण जीवन के द्वारा, उन्होंने

---

[586] दूसरे शब्दों में, ईश्वर को धोखा नहीं दयिा जा सकता।

[587] ज़ेबुलून कुलपति याकूब और उनकी पत्नी लेआ का छठा पुत्र था। – उसकी जाति ने उत्तरी फलिस्तीन में भूमकिी सबसे उत्तम भाग पर कब्ज़ा कयिा था, जो भूमध्य सागर से गलील सागर तक फैला हुआ था, उत्तर में आशीर और नप्ताली की जातयिों से और दक्षणि में इसाखार की जाति से सटा हुआ था, जसिने इज़राइल के महान मैदान पर कब्ज़ा कयिा था।

[588] नेहेमायाह – एक यहूदी, जो फारस के राजा आर्टेक्सर्सेस लॉन्गमिैनस का प्याला उठाने वाला था; उसने बाद में आधे खंडहर हो चुके यरूशलेम शहर के चारों ओर दीवारों का पुनर्नरि्माण कयिा और वदि्वान याजक एज्रा—जन्हिोंने बेबीलोन से कई यहूदयिों को यरूशलेम लाया था—के साथ मलिकर नरि्वासन के बाद यरूशलेम में यहूदयिों के धार्मकि और नागरकि जीवन का आयोजन कयिा। उन्होंने अपने कार्यों को अपने नाम से जानी जाने वाली एक पुस्तक में दर्ज कयिा, जो बाइबलि का एक हसि्सा है।

[589] अर्थात्, मसीह से लगभग 400 वर्ष पहले।

लोगों को चकति कर दयिा, जन्हिोंने यह देखकर कि उनके जीवन की पवत्रिता में वह परमेश्वर के एक स्वर्गदूत के समान थे, उन्हें मलाकी कहा, जसिका अर्थ है 'प्रभु का दूत'। भवष्यिद्वाणी की सेवा के लिए बुलाए गए, मलाकी ने वश्विास, व्यवस्था और धर्मपरायणता के एक उत्साही समर्थक के रूप में खुद को साबति कयिा। बंधुत्व से यहूदयिों की वापसी पर, उनके नैतकि और धार्मकि स्थतिमें बहुत अव्यवस्था थी, जो पुरोहतिों की लापरवाही और असावधानी के कारण और बढ़ गई और और भी खराब हो गई, और इससे नबी को क्रोध और दुख होना स्वाभावकि था। उन्होंने लोगों और पुरोहतिों के खलिाफ एक कठोर और सख्त फटकार लगाई। नबी ने लोगों और याजकों को ईश्वर के प्रतउिचति श्रद्धा की कमी और उसे घटयिा बलदिान चढ़ाने के लिए फटकारा (मला. 1), और पुरोहतिों की नदिा की कि वे अपने अन्याय, सही मार्ग से भटकने, आज्ञाओं का पालन करने में वफिल रहने, और कानून के मामलों में पाखंड करने के द्वारा परमेश्वर का अपमान कर रहे थे, जसिसे लोग ठोकर खा रहे थे (मला. 2:1–9)। लोगों की बेवफ़ाई और उनके पूर्वजों की वाचा को तोड़ने के लिए—अपनी पत्नयिों के साथ अवैध व्यवहार करने, अपनी वैध पत्नयिों को अन्यायपूर्वक अस्वीकार करने, और वदिेशी पत्नयिों को लेने के लिए—कठोर रूप से फटकार लगाते हुए (मला. 2:10–16), पवत्रि भवष्यिवक्ता मलाकी ने उन्हें वभिन्नि अन्य दुष्कर्मों के लिए परमेश्वर के न्याय की चेतावनी दी, उनकी जादू-टोने और व्यभचिार के लिए, उनकी झूठी शपथों के लिए, मजदूरों की मजदूरी रोकने के लिए, वधिवाओं और अनाथों पर अत्याचार करने के लिए, परदेशयिों को ठुकराने के लिए, और परमेश्वर के मन्दरि में दशांश और भेंट के संबंधी व्यवस्था का पालन न करने के लिए (मला. 3:5-12)। अंत में, भवष्यिवक्ता ने यहूदयिों की ईश्वर-नदिा के लिए उनकी नदिा की, उनके अभद्र और नदिनीय शब्दों के लिए, यह दावा करते हुए कि ईश्वर की सेवा करना व्यर्थ था, कि उसके आदेशों का पालन करना और बोरी का वस्त्र पहनकर उसके सामने चलना बेकार था, और यह कि दुष्ट और अधर्म करने वाले अधकि सुखी जीवन जीते हैं, अपने मामलों को बेहतर ढंग से प्रबंधति करते हैं और सुरक्षति रहते हैं (मला. 3:13–15, 2:17)। इन बुराइयों की नदिा करते हुए, पवत्रि भवष्यिवक्ता मलाकी ने दूसरे मंदरि की महमिा की भी भवष्यिवाणी की और सबसे स्पष्ट रूप से मसीहा के आगमन, उनके आगमन से पहले अग्रदूत के प्रकट होने, दुष्टों पर ईश्वर के आने वाले न्याय, धर्मी लोगों के गौरव, और सभी राष्ट्रों में ईश्वर की महमिा के प्रसार की भवष्यिवाणी की (मला. 1:5, 11, 2:1–5, 3:16–18, मला. 4)।

पवत्रि भवष्यिवक्ता मलाकी का कम उम्र में नधिन हो गया और उन्हें उनके पूर्वजों के साथ उनके पैतृक गाँव ज़ुफा में दफनाया गया। वह पुराने नयिम के अंतमि भवष्यिवक्ता थे, इसीलिए पवत्रि पतिाओं ने उन्हें 'भवष्यिवक्ताओं की मुहर' कहा है[590] ।

कॉन्टाकयिन, स्वर 4:

हे नबी, भवष्यिवाणी के वरदान से संपन्न, आपने मसीह के आगमन और संसार के उद्धार की भवष्यिवाणी की, जसिकी करिणों से संसार प्रकाशति होता है।

17 जनवरी

4 जनवरी (पुराने कैलेंडर के अनुसार)

उसी दनि, ससिलिी में कुकुमा के मठाध्यक्ष, परमपूज्य **थयिोक्टस्टिस** की स्मृति (†800)।

---

[590] मलाकी नबी के नाम से युक्त यह पुस्तक 'लघु' भवष्यिवक्ताओं में से अंतमि है। यह चार अध्यायों से मलिकर बनी है और इसमें उनके द्वारा दयिा गया एक ही भवष्यिसूचक संबोधन दर्ज है, जो पूरी संभावना है कि उनके कई मौखकि प्रवचनों का सार समेटे हुए है। इस संबोधन की सामग्री में भवष्यिवक्ता के समय के यहूदी लोगों की नैतकि कमयिों की नदिा, ईश्वर की सजा की चेतावनी, और उद्धारकर्ता के संबंध में एक वादा शामलि है। मलाकी की पुस्तक में मसीही भवष्यिवाणयिाँ प्रचुर मात्रा में हैं; पुस्तक की सामग्री के मसीही स्वभाव के अनुरूप (मला. 3:1–3, 6–7, 12, 17–18, 4:4–6), जनिमें प्रभु के अग्रदूत के आगमन संबंधी भवष्यिवाणयिाँ शामलि हैं, उन्हें प्रभु के अग्रदूत और बपतस्मिादाता सेंट जॉन के सम्मान में सभी पर्वों पर एक पारमियिा के रूप में पढ़ा जाता है।

सत्तर पवित्र प्रेरितों का पर्व

4 जनवरी को स्मरण किया जाता है

बारह प्रेरितों के अलावा, प्रभु यीशु मसीह ने अन्य सत्तर लोगों को भी चुना। पवित्र सुसमाचार प्रचारक लूका इस बारे में निम्नलिखित प्रकार से कहते हैं: 'इसके बाद, प्रभु ने और सत्तर लोगों को नियुक्त किया और उन्हें अपने से पहले दो-दो करके भेज दिया' (लूका 10:1)। बारह प्रेरित उनके जीवन के साक्षी के रूप में उनके साथ रहे, जबकि सत्तर प्रेरितों ने मसीहा उद्धारकर्ता को ग्रहण करने के लिए लोगों को तैयार किया, और उन नगरों में पहले से ही प्रचार किया जहाँ प्रभु मसीह जाना चाहते थे। बाद में, प्रभु के कई शिष्य—और, बेशक, उनमें से सत्तर प्रेरितों में से कई—मसीह से भटक गए और उनकी सेवा करना बंद कर दिया। पवित्र सुसमाचार प्रचारक यूहन्ना लिखते हैं: 'उसके बहुत से शिष्य उससे अलग हो गए और फिर उसके साथ नहीं चले। तब यीशु ने बारहों से कहा, "क्या तुम भी जाना चाहते हो?"' (यूहन्ना 6:66-67) जब मसीह के दुख-संकट के दिन नज़दीक आए, तो मसीह के शिष्यों की संख्या और भी कम हो गई, और सत्तरों में से शायद ही कोई उनके साथ रहा, जबकि बारहों में से एक शिष्य भी उनसे अलग हो गया। मसीह के पुनरुत्थान के बाद, पवित्र बारह प्रेरितों की कतार में मत्ती को शामिल किया गया, जबकि सत्तर की कतारें तुरंत पूरी नहीं हुईं, लेकिन धीरे-धीरे – उन लोगों में से जो बारह प्रेरितों द्वारा और पवित्र प्रेरित पौलुस के प्रचार द्वारा मसीह के पास आए थे, जिन्हें ऊपर से उसी विशिष्ट समूह में बुलाया गया था और जो पतरस के साथ, उनमें से प्रमुख बन गए।

दिव्य शास्त्र, पवित्र पिताओं की परंपरा, प्राचीन इतिहासकारों और विश्वसनीय चर्च के इतिहासकारों के आधार पर, पवित्र सत्तर प्रेरितों के समूह को इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है।

सत्तर प्रेरितों में से पहले संत याकूब थे, जो प्रभु के भाई थे, जिनका उल्लेख पवित्र प्रेरित पौलुस ने गलातियों को लिखे अपने पत्र में करते हुए कहा है: *'मैं पतरस से मिलने के लिए यरूशलेम गया; परन्तु मैंने याकूब, जो प्रभु का भाई था, के सिवा अन्य किसी भी प्रेरित को नहीं देखा।'* (गलातियों 1:18–19)। परंपरा के अनुसार, उन्हें यरूशलेम का पहला बिशप नियुक्त किया गया था, इस पद के लिए चुने जाने और स्वयं मसीह द्वारा उनके पृथ्वी पर जीवन के दौरान अभिषेक किया गया था। यरूशलेम में मसीह का प्रचार करते समय, यहूदियों द्वारा प्रेरित याकूब को मंदिर की छत से फेंककर जमीन पर गिरा दिया गया, फिर उस पर पत्थर फेंके गए, और एक गदे से सिर पर चोट लगने से उसकी मृत्यु हो गई[591] ।

संत मरकुस सुसमाचार लेखक, जिन्होंने संत प्रेरित पतरस के मार्गदर्शन में पवित्र सुसमाचार लिखा, जिन्हें उन्होंने अपनी पहली पत्री में इन शब्दों के साथ उल्लेख किया है: *'बाबेल में कलीसिया, जो तुम्हारे समान चुनी गई है, तुम्हें नमस्कार भेजती है, और मेरा पुत्र मरकुस भी'* (1 पतरस 5:13)। उसी संत पतरस प्रेरित ने मरकुस को अलेक्जेंड्रिया शहर का बिशप नियुक्त किया[592] , जहाँ, मसीह के बारे में उपदेश देने के लिए, मूर्तिपूजकों ने उसे बाँध दिया, उसे पत्थरों पर घसीटा और पीटा। उसी क्षण, प्रभु यीशु मसीह उसे स्वर्गीय महिमा के लिए बुलाते हुए उसके सामने प्रकट हुए, और प्रेरित ने अपनी आत्मा उन्हें सौंप दी[593] ।

सुसमाचार लेखक संत लूक, जिन्होंने संत प्रेरित पौलुस के मार्गदर्शन में पवित्र सुसमाचार लिखा, जिन्हें उन्होंने कोलस्सियों को लिखी अपनी पत्रिका में उल्लेख किया है: *'प्रिय चिकित्सक लूक आपको नमस्कार भेजता है'* (कुलुस्सियों 4:14)। उन्होंने प्रेरितों के काम की पुस्तक भी लिखी और मसीह के विषय में व्यापक रूप से प्रचार किया[594] , मुख्य रूप से बोएटिया में[595] । उन्होंने अकेया में शहीद होकर मृत्यु प्राप्त की[596] ।

संत क्लियोपास, मंगनीशुदा संत जोसेफ के छोटे भाई। एम्माउस के मार्ग पर, संत लूका के साथ, उन्होंने प्रभु को उनके पुनरुत्थान के बाद देखा; फिर उन्होंने उठे हुए मसीह को तब पहचाना जब वह एक घर में इकट्ठे शिष्यों के पास

---

[591] चर्च द्वारा उनकी स्मृति 23 अक्टूबर को मनाई जाती है

[592] अलेक्जेंड्रिया एक प्रसिद्ध शहर है जिसकी स्थापना 331 ईसा पूर्व में महान अलेक्जेंडर ने भूमध्य सागर के तट पर, निचले (उत्तरी) मिस्र में, नील नदी के मुहाने पर की थी। प्राचीन काल में, यह एक अत्यंत समृद्ध वाणिज्यिक और औद्योगिक शहर था। आज, अलेक्जेंड्रिया भूमध्य सागर के सबसे कलिबंद बंदरगाह शहरों और सबसे महत्वपूर्ण व्यापारिक केंद्रों में से एक है, जिसकी आबादी लगभग 2,30,000 है।

[593] उनका पर्व 25 अप्रैल को मनाया जाता है

[594] संत ल्यूक प्रेरित और सुसमाचार लेखक का स्मरणोत्सव ऑर्थोडॉक्स चर्च द्वारा 18 अक्टूबर को मनाया जाता है, जबकि उनके अवशेषों के स्थानांतरण का दिन 22 अप्रैल है।

[595] बोएओटिया मध्य ग्रीस में एक क्षेत्र है।

[596] जैसा कि संत ग्रेगरी द थियोलोजियन ने सम्राट जूलियन के विरुद्ध अपनी पहली प्रवचन में गवाही दी है।

प्रकट हुए , जहाँ उन्होंने रोटी तोड़ी (लूका 24:13–35)। मसीह के वषिय में प्रचार करने के कारण, संत क्लयिोपास को यहूदयिों द्वारा मार डाला गया[597] ।

संत समिोन, जो देह के अनुसार प्रभु के चचेरे भाई थे, यरूशलेम में प्रेरति याकूब के बाद दूसरे बशिप थे, जहाँ उन्होंने सूली पर चढ़ाए गए मसीह के लिए सूली पर चढ़ाए जाने के बाद अपना जीवन समाप्त कयिा।[598]

संत बरनाबास, जन्हिें प्रेरतिों ने यह नाम दयिा था, हालांकि पहले उनका नाम योसाया (प्रेरतिों के काम 4:36) था। उनका उल्लेख प्रेरतिों के काम (प्रेरतिों के काम 11:24) और संत पौलुस प्रेरति के गलातयिों के नाम पत्र में मलिता है: प्रेरति पौलुस कहते हैं, '*मैं बरनाबास के साथ यरूशलेम गया था*' (गलातयिों 2:1)। इस प्रेरति बरनाबास ने, पवत्रि प्रेरति पौलुस के साथ मलिकर, सुसमाचार की सेवा की और रोम में मसीह के बारे में सबसे पहले उपदेश दयिा, और बाद में मलिान में बशिप नयिुक्त कयिा गया[599] । वे अपने पैतृक देश, साइप्रस द्वीप पर, ईसाई धर्म के उत्पीड़कों द्वारा पत्थर मारकर हत्या कए जाने पर मारे गए। ईसाइयों ने उन्हें सम्मान के साथ दफनाया और, उनकी अंतमि इच्छा के अनुसार, उनके ताबूत में मत्ती के अनुसार पवत्रि सुसमाचार रखा, जसि बरनबास ने स्वयं एक बार प्रतलिपि बिनाई थी और जसिसे वे कभी अलग नहीं हुए थे[600] ।

संत योसयिा, या जोसेफ, जन्हिें बार्साबस और जस्टस के नाम से भी जाना जाता है। उनका उल्लेख प्रेरतिों के काम में मलिता है, जहाँ यह वर्णति है कि उन्हें, मत्ती के साथ, धर्मत्यागी प्रेरति यहूदा इस्करयिोती की जगह लेने के लिए चुना गया था (प्रेरतिों के काम 1:23), और कुलुस्सयिों के नाम संत पौलुस प्रेरति के पत्र में, जसिमें प्रेरति, कुलुस्सै की कलीसयिा के वशि्वासयिों को अपनी शुभकामनाएँ देते हुए कहते हैं: '*और यीशु, जसिे यस्टस कहा जाता है*' (कुलुस्सयिों 4:11)। चर्च फादर्स का कहना है कि यह योशयिाह मंगेतर यूसुफ के पुत्र थे, जैसे कि याकूब, शमिोन और यहूदा (इस्करयिोती नहीं), और उन्होंने एलेउथेरोपोलसि[601] में बशिप का पद संभाला, जहाँ उन्होंने शहीद होकर अपनी जान भी दी।[602]

[603]संत थॉमस पहले संत यूहन्ना बपतस्मिा देने वाले के शष्यि थे, और बाद में मसीह के शष्यि बने। उन्हें पवत्रि प्रेरति यहूदा थॉमस, या लेवी, जो बारहों में से एक थे, से अलग कयिा जाना चाहिए। उन्होंने एदेसा के राजकुमार अवगार को बपतस्मिा दयिा, और उसे कुष्ठ रोग से चंगा कयिा। मसीह के सुसमाचार का प्रचार करने के काम में कई वर्षों की मेहनत के बाद, उन्होंने फनिशियिाई शहर बेरूत[604] में प्रभु में नद्रिावस्था प्राप्त की।

संत अनान्याह, जन्हिोंने प्रेरति पौलुस का बपतस्मिा दयिा (प्रेरतिों के काम 9:10-18), शुरू में दमश्क शहर के एक बशिप थे[605] । संत अनान्याह का नधिन एलेउथेरोपोलसि में हुआ, जहाँ उन्हें राज्यपाल लूसयिन के आदेश पर पत्थर मारकर हत्या कर दी गई थी[606] ।

---

[597] परंपरा के अनुसार, उसी घर में, संत लूकस के साथ, उन्होंने रोटी तोड़ने से जी उठे मसीह को पहचाना।

[598] चर्च ने 27 अप्रैल को उनकी स्मृति दिविस के रूप में स्थापति कयिा है

[599] मेडयिोलानम – अब मलिान – उत्तरी इटली का सबसे महत्वपूर्ण शहर है, जो लोम्बार्डी क्षेत्र में स्थति है; इसकी स्थापना सबसे प्राचीन काल में हुई थी और यह हमेशा से बहुत महत्व का रहा है।

[600] प्रेरति सेंट बरनाबास का पर्व 11 जून को मनाया जाता है

[601] एलेउथेरयिोपोलसि दक्षणिी फलिस्तिीन में, यरूशलेम और गाजा के बीच सड़क पर एक नगर है। आज, उस स्थान पर एक गाँव स्थति है जहाँ सेफेल् मैदान यहूदा के पहाड़ी क्षेत्र में बदलता है। इसके पास ही प्राचीन एलेउथेरयिोपोलसि के खंडहर पड़े हैं।

[602] उनका पर्व 30 अक्टूबर को मनाया जाता है

[603] चर्च 21 अगस्त को पवत्रि प्रेरति थदेउस का स्मरणोत्सव मनाता है

[604] बेरटिस – जो अब बेरूत है – भूमध्य सागर के तट पर स्थति एक प्राचीन फ़निशियिाई शहर है; 5वीं शताब्दी में यह फल-फूल रहा था और अपनी प्रतष्ठिति वाक्पटुता, कवति और कानून की पाठशाला के लिए प्रसद्धि था; आज यह एशयिाई-तुर्की सीरयिा का मुख्य प्रशासनकि शहर और सीरयिाई तट पर एक प्रमुख व्यापारकि केंद्र है, जसिकी आबादी लगभग 1,80,000 है।

[605] दमश्क – सीरयिा का प्रमुख और सबसे धनी वाणज्यकि शहर, और दुनयिा के सबसे पुराने शहरों में से एक; यह फलिस्तिीन के उत्तर-पूर्व में, बरादा नदी के तट पर स्थति है, जो इसके बीच से होकर बहती है, एंटी-लेबनान पहाड़ों के पूर्वी तल पर एक सुंदर और उपजाऊ मैदान में। और वर्तमान में, दमश्क शहर, जो उस्मानी साम्राज्य का हस्सिा है, एशयिा के सबसे अमीर शहरों में से एक है और इसकी आबादी लगभग 150,000 है।

[606] पवत्रि चर्च प्रेरति अनानयिास का स्मरण 1 अक्टूबर को करती है

पहले शहीद और महाडीकन संत स्तेफन, मसीह के लिए शहीद होने वाले पहले व्यक्ति थे, जिन्हें पत्थर मारकर हत्या कर दी गई थी, और इसी कारण उन्हें 'पहले शहीद' कहा जाता है[607] । अपने मृत्यु से ठीक पहले, उन्हें स्वर्ग के खुलने और प्रभु यीशु का दर्शन हुआ, जो मनुष्य के पुत्र के रूप में परमेश्वर के दाहिने हाथ पर खड़े थे (प्रेरितों के काम 7:55)।

सात डिकनों में से एक, संत फिलिप, जिन्होंने सामरिया में जादूगर शिमोन का बपतिस्मा दिया[608] और रानी कैंडस के खजांची को (प्रेरितों के काम 8:26–39), ट्रैलेस शहर के बिशप थे[609] और, वहाँ कई लोगों को ईसाई विश्वास से प्रकाशित करने के बाद, अपनी वृद्धावस्था में प्रभु के पास चले गए।[610]

सात दीकनों में से एक, संत प्रोकोरस (प्रेरितों के काम 6:5), संत जॉन द थियोलोजियन के साथी और उनके कार्यों में सहभागी थे। वह बिथुनिया के निकोमेडिया के पहले बिशप थे[611] , और बाद में उन्होंने अंतीयक में मसीह के बारे में प्रचार किया[612] , जहाँ उनकी शहादत हुई।

सात डिकनों में से एक, संत निकानोर को, ठीक उसी दिन मसीह में दो हजार विश्वासियों के साथ मार डाला गया था जिस दिन पहले शहीद, संत स्तेफन को पत्थर मारकर हत्या कर दी गई थी; यह घटना, जैसा कि प्रेरितों के काम की पुस्तक में दर्ज है, यरूशलेम की कलीसिया के विरुद्ध भड़काए गए बड़े उत्पीड़न के दौरान हुई (प्रेरितों के काम 8:1)।

सात डिकनों में से एक, संत टिमोन, अरब के बोस्ट्रा शहर के बिशप थे[613] और, मसीह के नाम का प्रचार करते समय, यहूदियों और यूनानियों के हाथों बहुत कष्ट सहन किया। बाद में, एक जलती हुई भट्टी में फेंके जाने के बाद, वह बिना किसी चोट के बाहर निकले और फिर प्रभु के पास चले गए।

संत पार्मेन, सात डिकनों में से एक, प्रेरितों द्वारा सौंपी गई सुसमाचार प्रचार का कार्य करते हुए, प्रेरितों की उपस्थिति में शहीद हो गए[614] ।

संत तीमुथियुस, जिन्होंने पवित्र प्रेरित पौलुस के साथ मसीह के सुसमाचार का प्रचार करने के काम में परिश्रम किया—जिन्होंने उन्हें दो पत्र लिखे—एफ़िसुस में एक बिशप थे[615] , जहाँ उन्होंने शहीद की मृत्यु भी प्राप्त की[616] ।

संत तितुस ने भी सुसमाचार के कार्य में संत पौलुस प्रेरित के साथ काम किया। संत पौलुस प्रेरित ने अपनी पत्रिकाओं में उनका उल्लेख किया है (2 कुरिन्थियों 2:12–13, 12:18; 2 टिम. 4:10), और उन्होंने उन्हें एक पत्र भी लिखा। संत टाइटस क्रीट द्वीप पर गॉर्टिना के बिशप थे। वे बहुत वृद्ध आयु में शांतिपूर्वक निधन कर गए।[617]

---

[607] चर्च द्वारा संत स्टीफन प्रथम शहीद की स्मृति का वर्ष में तीन बार स्मरण किया जाता है: 27 दिसंबर को, संत की शहादत के दिन; 15 सितंबर को, जब उनके अवशेषों की खोज का जश्न मनाया जाता है; और 2 अगस्त को, संत स्टीफन के अवशेषों को यरूशलेम से कॉन्स्टेंटिनोपल ले जाने के दिन।

[608] फ़िलिस्तीन के एक क्षेत्र या प्रांत के रूप में, सामरिया फ़िलिस्तीन के केंद्र में, जॉर्डन के पश्चिम में स्थित था। इसकी उत्तरी सीमा पर गलील, दक्षिणी सीमा पर यहूदिया, पूर्वी सीमा पर जॉर्डन और पश्चिमी सीमा पर भूमध्य सागर था। शमारेया, शमारेया की भूमि का प्रमुख शहर और एक समय में इस्राएल के राज्य की राजधानी, यरूशलेम से लगभग तीन वर्स्ट उत्तर में स्थित था। आज उस प्राचीन और गौरवशाली शहर का एक भी पत्थर नहीं बचा है; उसकी जगह साबूस्टिया (पहले सेबास्टे शहर) नामक एक छोटा सा विनिम्र गाँव खड़ा है।

[609] ट्रालिया – एशिया माइनर के उत्तर-पश्चिम में एक लिडियन शहर।

[610] चर्च 11 अक्टूबर को प्रेरित फिलिप का स्मरणोत्सव मनाता है।

[611] निकोमेडिया – एशिया माइनर के उत्तर-पश्चिमी भाग में बिथिनिया के क्षेत्र में एक समृद्ध और फलता-फूलता शहर। प्राचीन, फलते-फूलते निकोमेडिया के कई खंडहर आज भी बचे हुए हैं, जो इसके गौरवशाली अतीत की गवाही देते हैं।

[612] अंटाकिया – सीरिया की राजधानी, सबसे पुराना और सबसे अमीर शहर; अंटाकिया ओरोंटेस नदी पर स्थित है, जहाँ से यह भूमध्य सागर में मिलती है, उससे लगभग 10 वर्स्ट (लगभग 10 किलोमीटर) दूर, लेबनान और टॉरस की पर्वत श्रृंखलाओं के बीच। वर्तमान में, अंटाकिया तुर्की के शासन में है और यह 10,000 तक की आबादी वाला एक छोटा, गरीब शहर है।

[613] बोस्ट्रा अरब में एक शहर है। प्राचीन काल में, यह एक समृद्ध व्यापारिक केंद्र था। अब यह खंडहरों में पड़ा है। पत्थर की दुकानों की बची हुई लंबी कतारें इसकी पूर्व शक्ति और धन की गवाही देती हैं।

[614] पवित्र प्रेरित प्रोखोरस, निकानोर, टिमोन और पर्मेनास की स्मृति 28 जुलाई को सामूहिक रूप से मनाई जाती है; संत निकानोर का पर्व 28 दिसंबर को मनाया जाता है; और संत टिमोन की स्मृति 30 दिसंबर को मनाई जाती है।

[615] एफ़िसुस एशिया माइनर में एशिया प्रांत की राजधानी थी; यह केस्टर नदी पर स्थित थी। आज, एफ़िसुस के प्राचीन शहर के स्थल पर *आयशा-सोलुक* नामक एक गरीब तुर्की गाँव बसा हुआ है /

[616] चर्च 22 जनवरी को संत तीमथियुस प्रेरित का स्मरणोत्सव मनाता है।

[617] संत तितुस प्रेरित का पर्व 25 अगस्त को मनाया जाता है

[618]संत फ़लिमोन, जनि्हें संत पौलुस प्रेरति ने फ़लिमोन को लखि अपने पत्र में उल्लेख कयि है (फ़लिमोन 1:10–19), ने स्पेन, ग्रीस और एशयि माइनर में ईसाई धर्म का प्रचार कयि। उनकी मृत्यु नीरो के शासनकाल के दौरान शहीद होने से हुई।[619]

संत ओनेसमिस, जनिके बारे में संत पौलुस प्रेरति फलिमिोन को लखिी अपनी पत्री में लखिते हैं (फलिमिोन 1:10-19), ने स्पेन, ग्रीस और एशयि माइनर में ईसाई धर्म का प्रचार कयि। संत इग्नेशयिस द गॉड-बेयरर की मृत्यु के तुरंत बाद, रोम में पत्थर मारकर उनकी हत्या कर दी गई और उन्होंने शहीद की मृत्यु प्राप्त की।[620]

संत एपाफ्रास, जनिका उल्लेख संत पौलुस प्रेरति फलिमिोन को लखि उसी पत्र में भी करते हैं, यह कहते हुए: *'मसीह यीशु के लिए मेरे साथी बंदी एपाफ्रास तुम्हें प्रणाम भेजते हैं'* (फलिमिोन 1:23), कोलोसाई शहर और लाओदीकयिा तथा हेरापोलसि के चर्चों के बशिप थे[621] । पवत्रि प्रेरति पौलुस के साथ, उन्हें रोम में बेड़यिों में जकड़ा गया था, जहाँ से पौलुस ने कुलुस्सयिों को लखिा: *'आपका अपना एपाफ्रास, जो यीशु मसीह का सेवक है, आपको नमस्कार भेजता है; वह अपनी प्रार्थनाओं में हमेशा आपके लिए परशि्रम करता रहता है, कि आप दृढ़ बने रहें और परमेश्वर को भाने वाली हर बात से परपिूर्ण हों। मैं गवाही दे सकता हूँ कि उसमें आपके और लाओदीकयिा तथा हएिरापोलसि के लोगों के लिए बड़ी उत्सुकता और चति है'* (कुलुस्सयिों 4:12–13)।

फलिमिोन को लखि उसी पत्र में उल्लेखति संत अर्कपि्पस, संत एपफ्रास (जनि्हें रोम में कैद कयि गया था) के बाद कोलोसाई शहर के बशिप बने[622] ; जसिके बारे में पवत्रि प्रेरति पौलुस कोलोसयिों को लखिते हैं: *'अर्कपि्पस से कहो: देखो कि तुम वह सेवा पूरी करो जो तुम्हें प्रभु में मलिी है'* (कुलुस्सयिों 4:17)। वहीं पर संत अर्चपि्पस ने शहीद होकर अपनी मृत्यु प्राप्त की।[623]

संत सलिास, संत प्रेरति पौलुस के एक शष्यि और करीबी सहयोगी थे, जनिके साथ उन्होंने परमेश्वर का वचन प्रचार कयि और कई कष्ट, घाव और कारावास सहन कएि (प्रेरतिों के काम 16:13-24)। उनका उल्लेख प्रेरतिों के काम में मलिता है: *'पौलुस ने सलिास को चुनकर, मंडलीयों को दृढ़ कयि'* (प्रेरतिों के काम 15:40-41)। इसके बाद, उन्होंने कोरथि में बशिप के रूप में सेवा की[624] , और परमेश्वर के वचन का प्रचार करने के काम में बहुत परशि्रम करने तथा चनि्ह और अद्भुत काम करने के बाद, वे प्रभु के पास चले गए।[625]

संत सलिवान ने पवत्रि प्रेरति पतरस और पौलुस के साथ मलिकर परमेश्वर का वचन प्रचार कयि। संत प्रेरति पतरस ने अपनी कलीसयिा को लखिी पत्रकिा में इन शब्दों में उनका उल्लेख कयि है: *'मैंने यह संक्षपि्त पत्र तुम्हें सलिवान के द्वारा लखिा है, जसिे मैं तुम्हारा वशि्वासयोग्य भाई मानता हूँ'* (1 पतरस 5:12)। इसी प्रकार, पवत्रि प्रेरति पौलुस अपनी कुरनि्थयिों को लखिी दूसरी पत्री में लखिते हैं: *'क्योंकि परमेश्वर का पुत्र यीशु मसीह तुम्हारे बीच हम से—मैं और सलिास से—प्रचार कयि गया'* (2 कुरनि्थयिों 1:19)। प्रेरति सलिवानुस थेस्सालोनकिा में एक बशिप थे[626] , जहाँ मसीह

---

[618] गाजा सबसे प्राचीन फ़लिस्तीनी शहरों में से एक था, जो फ़लिस्तीन में कनानी लोगों की दक्षणिी सीमा के रूप में कार्य करता था। बाद में, यह कभी-समृद्ध शहर अपना सारा महत्व खो बैठा, और अब केवल रेतीले टीले और दयनीय खंडहर ही इस बात की गवाही देते हैं कि कभी यहाँ एक महान शहर हुआ करता था। यहाँ से बहुत दूर नहीं, बाद में बसा एक नया शहर है, जसिका नाम भी वही है।

[619] ऑर्थोडॉक्स चर्च 19 फरवरी को संत फलिमिोन प्रेरति का स्मरणोत्सव मनाती है।

[620] रोमन सम्राट ट्राजन के शासनकाल के दौरान, लगभग 109 ईस्वी में। संत ओनेसमिस अपोस्टल का स्मरणोत्सव 15 फरवरी को मनाया जाता है

[621] एशयि माइनर के शहर।

[622] कोलोसाई – फ्रीजयि के दक्षणि-पश्चमिी भाग में, लाओदकियिा और हेरापोलसि के पास, लकिस नदी पर स्थति एक शहर। प्राचीन काल में, यह एक बड़ा, घनी आबादी वाला और समृद्ध शहर था। आज, यह माउंट होकस की एक ढलान पर एक छोटा सा गाँव है, जसिके पास कोलोसाई के प्राचीन शहर के खंडहर आज भी खड़े हैं।

[623] चर्च 19 फरवरी को संत प्रेरति अर्चपि्पस का स्मरण करता है

[624] कोरथि – अकेया का सबसे प्राचीन, प्रसद्धि और धनी व्यापारकि शहर, जो आयोनयिन और एजयिन सागरों के बीच, कोरथि की खाड़ी के दक्षणि-पूर्वी कोने में एक सुंदर और उपजाऊ मैदान पर स्थति था। आज, प्राचीन कोरथि के खंडहर वर्तमान कोरथि शहर के पास स्थति हैं, जसिे कुरोन्टो के नाम से जाना जाता है, जसिकी आबादी लगभग 5,000 है।

[625] इसके पर्व का उत्सव 30 जुलाई को मनाया जाता है।

[626] थेस्सालोनकिी, या थेस्सालोनकिा, मैसेडोनयिा का एक बहुत ही महत्वपूर्ण, प्राचीन शहर है, जो एजयिन सागर (द्वीपसमूह) पर, थेस्सालोनकिी की बड़ी खाड़ी, या फर्मेआ की खाड़ी के अंदर गहराई में स्थति है। वर्तमान में, यह शहर, जसिे थ्रेसलॉनीकी के नाम से जाना जाता है, कॉन्स्टेंटनिोपल के बाद यूरोपीय तुर्की का प्रमुख वाणज्यकि और वनिरि्माण केंद्र है, जसिकी जनसंख्या बहुत बड़ी है।

के पवत्रि वश्विास को बनाए रखने के लिए परश्रिम करते हुए और कई कष्ट सहने के बाद, वे हमारे बल के स्रोत, मसीह के पास चले गए।

संत क्रस्पिास[627] , जनिका उल्लेख पवत्रि प्रेरति पौलुस ने अपनी तीमुथयिुस को लखिी दूसरी पत्री (2 तीमु. 4:10) में कयिा है, गलातयिा[628] में एक बशिप थे, और बाद में उन्होंने गॉल में मसीह का प्रचार कयिा। वहाँ, वयिेन[629] शहर में, क्रस्पिास ने अपने शष्यि ज़कारयिास को बशिप नयिुक्त कयिा, और एक बार फरि गालातयिा लौट आए, जहाँ उन्होंने ट्राजन[630] के शासनकाल में शहीद होकर अपना जीवन समाप्त कयिा।

संत क्रस्पिस, जनिका उल्लेख प्रेरतिों के काम में नम्निलखिति शब्दों में कयिा गया है: *'सभा-घर का अध्यक्ष क्रस्पिस अपने पूरे घर-परविार सहति प्रभु पर वश्विास कर लयिा'* (प्रेरतिों के काम 18:8), और जनिके बारे में पवत्रि प्रेरति पौलुस अपने कोरन्थियिों के नाम पत्र में कहते हैं कि उन्होंने *'क्रस्पिास को बपतस्मिा दयिा'* (1 कुरन्थियिों 1:19), एजयिाना द्वीप पर एक बशिप थे, जो पेलोपोनेस के पास[631] , एजयिन और आयोनयिन सागरों के बीच स्थति है। उनकी मृत्यु शांतमिें हुई।

संत एपेनतिुस, जनिका उल्लेख पवत्रि प्रेरति पौलुस ने अपनी रोमयिों की पत्री में करते हुए कहा है: *'मेरे प्रयि एपेनतिुस को नमस्कार कहना, जो अखाया में मसीह के लिए पहले धर्मीकृत हुए हैं'* (रोमयिों 16:5), कार्थेज में एक बशिप थे[632] ।

संत एंड्रोनकिस, जनिका उल्लेख संत पौलुस प्रेरति ने रोमयिों के नाम उसी पत्र में कयिा है, कहते हुए: *'एंड्रोनकिस को नमस्कार कहिए'*, और जन्हिें वह अपना संबंधी और देशवासी, उन सबसे महत्वपूर्ण प्रेरतिों में से एक कहते हैं, जन्हिोंने उनसे पहले मसीह में वश्विास कयिा था (रोमयिों 16:7), पन्नोनयिा में एक बशिप थे[633] । वे शांतपिूर्वक नधिन कर गए[634] .

संत स्टैक्ससि, जनिका उल्लेख पवत्रि प्रेरति पौलुस ने उसी पत्र में करते हुए कहा है: *'स्टैक्ससि, मेरे प्रयि को नमस्कार कहना'* (रोमयिों 16:9), को पवत्रि प्रेरति एंड्रयू प्रथम-आहूत द्वारा बज़िन्टयिम का पहला बशिप नयिुक्त कयिा गया था। उनके साथ मलिकर, संत स्टैक्ससि ने आर्गोपोलसि में एक चर्च का नर्मिाण कयिा[635] , जहाँ कई वश्विासी इकट्ठा हुए, और उन्होंने उन्हें मसीह की आज्ञाओं की शक्षिा दी।

संत एम्प्लयिास, जनिका उल्लेख पवत्रि प्रेरति पौलुस ने उसी पत्र में करते हुए कहा है: *'एम्प्लयिास को नमस्कार कहो, जो प्रभु में मेरा प्रयि है'* (रोमयिों 16:8), डायोस्पोलसि[636] नगर के बशिप थे, जहाँ उन्होंने मसीह का प्रचार कयिा। उनकी मृत्यु ओडसिा शहर[637] में हुई, जहाँ उन्हें मसीह के प्रचार के कारण यूनानयिों द्वारा मृत्युदंड दयिा गया था[638] ।

---

[627] इसके पर्व का उत्सव 30 जुलाई को मनाया जाता है।

[628] गलातयिा – एशयिा माइनर का एक छोटा, पहाड़ी लेकनि उपजाऊ प्रांत, जो फ्रीजयिा, बथिनियिा, पोंटस और कैपैडोसयिा के बीच स्थति था। इसका नाम गलाटयिनों से पड़ा है – जो गैलकि या सेल्टकि मूल के युद्धप्रयि जनजातयिाँ थीं।

[629] वयिना – अब वएिन – एक प्राचीन रोमन कॉलोनी और बाद में जर्मनकि जनजातयिों द्वारा स्थापति वभिन्नि राज्यों की राजधानी, रोन नदी के बाएं कनिारे पर स्थति है। आज, यह शहर रोमन प्राचीन अवशेषों से समृद्ध है।

[630] ट्रोजन – एक रोमन सम्राट – ने 98 से 117 तक शासन कयिा।

[631] पेलोपोनसि ग्रीस का दक्षणिी भाग है।

[632] कार्थेज – उत्तरी अफ्रीका में सबसे पुरानी और सबसे प्रसद्धि फ़नि‍िशियिाई बस्ती, जो प्राचीन इतहिास में अपनी शक्तकि शखिर पर पहुँची और 146 ईसा पूर्व में नष्ट हो गई। प्राचीन कार्थेज के खंडहरों पर, शुरुआती रोमन सम्राटों के शासनकाल के दौरान, एक नया कार्थेज उभरा, जो बहुत लंबे समय तक बड़ी भव्यता के साथ फलता-फूलता रहा।

[633] पैनोनयिा – रोमन साम्राज्य में डेन्यूब नदी के कनिारे के महत्वपूर्ण क्षेत्रों में से एक; आज, पैनोनयिा हंगरी का एक हस्सिा है।

[634] पवत्रि चर्च संत प्रेरति एंड्रोनकिस का वर्ष में तीन बार स्मरण करती है: 17 मई, 30 जुलाई और 22 फरवरी को।

[635] अर्ग्यरोपोलसि, जो अब फंडुकली है, कॉन्स्टेंटनिोपल का एक उपनगर, पेरा और गलाटा के पास

[636] डायोस्पोलसि फलिस्तीन में, यरूशलेम के उत्तर-पश्चमि में स्थति था।

[637] ओडेसा – माइशयिा में एशयिा माइनर के उत्तर-पश्चमिी भाग में एक शहर; अब वर्ना – बाल्कन की उत्तर-पूर्वी ढलानों पर, काला सागर के तट पर एक बंदरगाह, जसिकी जनसंख्या 25,000 से अधकि है।

[638] चर्च द्वारा उनकी स्मृतदि 31 अक्टूबर को मनाई जाती है।

संत अर्बन, जनिका उल्लेख पवत्रि प्रेरति पौलुस ने उसी पत्र में करते हुए कहा है: *'हमारे सहकर्मी अर्बन को नमस्कार करना'* (रोमयिों 16:9), मैसेडोनयिा में एक बशिप थे[639] और उन्होंने शहीद की मृत्यु पाई[640] ।

संत नार्ससिस (31 अक्टूबर को स्मरण कयिा जाता है), जनिका उल्लेख पवत्रि प्रेरति पौलुस ने उसी पत्र में करते हुए कहा है: *'नार्ससिस के घर में जो प्रभु में हैं, उन्हें नमस्कार करना'* (रोमयिों 16:11), एथेंस में एक बशिप थे[641] ।

संत अपेल्लेस, जनिका उल्लेख पवत्रि प्रेरति पौलुस ने उसी पत्र में करते हुए कहा है: *'मसीह में परखे गए अपेल्लेस को नमस्कार कहो'* (रोमयिों 16:10), स्मर्ना नगर के बशिप थे[642] .

संत अरस्तिोबुलुस, जनिका उल्लेख पवत्रि प्रेरति पौलुस ने उसी पत्र में कयिा है, कहते हुए: *'अरस्तिोबुलुस के घर के वशि्वासयिों को नमस्कार कहो'* (रोमयिों 16:10), ब्रटिेन में एक बशिप थे[643] और वहाँ, लंबे परशि्रम और कष्टों के बाद, उनका नधिन हो गया[644] .

संत हेरोडयिन, या रोडयिन, जनिका उल्लेख पवत्रि प्रेरति पौलुस ने उसी पत्र में कयिा है, कहते हुए: *'हेरोडयिन, मेरे कुलजने, को नमस्कार करना'* (रोमयिों 16:11), पाट्रास में एक बशिप थे[645] । उन्होंने रोम में शहीद होकर मृत्यु प्राप्त की[646] ।

संत अगबस में भवषि्यवाणी का वरदान था। उनका उल्लेख प्रेरतिों के काम में इन शब्दों में कयिा गया है: *'अगबस नामक एक भवषि्यवक्ता यहूदयिा से आया और, पौलुस का कमरबंद लेकर, अपने ही हाथ और पैर बाँधकर कहने लगा, "पवत्रि आत्मा इस प्रकार कहते हैं: 'जसि मनुष्य का यह कमरबंद है, उसे यहूदी यरूशलेम में इसी प्रकार बाँधकर अन्यजातयिों के हवाले कर देंगे'"* (प्रेरतिों के काम 21:10–11; तुलना करें 11:28)। प्रेरति अगबस ने कई देशों में प्रचार कयिा और कई लोगों को मसीह के पास लाया।[647]

संत रूफस (जनिका पर्व 8 अप्रैल को मनाया जाता है), जनिका उल्लेख पवत्रि प्रेरति पौलुस ने अपनी रोमयिों की पत्रकिा में करते हुए कहा है: *'रूफस को नमस्कार करना, जो प्रभु में चुना गया है'* (रोमयिों 16:13), थेब्स, जो ग्रीस का एक शहर है, में एक बशिप थे[648] ।

संत असीनक्रटिस, जनिका उल्लेख उसी पत्र में (रोमयिों 16:14) कयिा गया है, एशयिा माइनर के एक क्षेत्र, हर्कानयिा में एक बशिप थे, जहाँ उन्होंने मसीह के नाम के लिए बहुत कष्ट सहे[649] ।

संत फ्लेगन, जनिका उल्लेख उसी पत्र (रोमयिों 16:14) में कयिा गया है, थ्रेस के एक शहर माराफोन के बशिप थे[650] ।

---

[639] मैसडिोनयिा ग्रीस के उत्तर में, इलरियिा, थ्रेस, एजयिन सागर और हेमस या बाल्कन पर्वत के बीच स्थति था। कुछ समय के लिए, यह एक स्वतंत्र राज्य था, जो राजा सकिंदर महान के अधीन वशिेष महत्व और प्रसदि्धि प्राप्त कर गया। प्रेरतिों के समय में, मैसडिोनयिा रोमन साम्राज्य का हस्सिा था। यह अब तुर्की के शासन के अधीन है।

[640] संत उर्वान प्रेरति की स्मृति, 31 अक्टूबर

[641] एथेंस – प्राचीन यूनानी राज्य की राजधानी; यह अपनी इमारतों, मूर्तयिों, व्यापार और उद्योग के वकिास, और वशिेष रूप से अपने स्कूलों के लिए प्रसदि्ध था। अपेक्षाकृत हाल के समय (ईसा पूर्व 6ठी सदी) तक, यह प्रसदि्ध दार्शनकि स्कूलों का घर था जहाँ प्राचीन भूमि के लोग अपनी शकि्षा प्राप्त करते थे।

[642] स्मर्ना - ईजयिन सागर (या द्वीपसमूह) के पूर्वी तट पर स्थति आयोनयिा का एक प्रसदि्ध व्यापारकि शहर, एशयिा माइनर के सबसे पुराने शहरों में से एक है। पवत्रि प्रेरति जॉन द थयिोलोजयिन ने स्मर्ना में सुसमाचार का प्रचार कयिा था। वर्तमान में, स्मyrna तुर्कों के अधकिार में है, लेकनि आज भी वहाँ ऑर्थोडॉक्स ईसाई धर्म का पालन कयिा जाता है। यह शहर आज भी ऑटोमन साम्राज्य के सबसे समृद्ध और घनी आबादी वाले शहरों में से एक बना हुआ है।

[643] ब्रटिानयिा इंग्लैंड का प्राचीन नाम है।

[644] चर्च द्वारा संत अरस्टिोबुलस प्रेरति की स्मृति वर्ष में दो बार मनाई जाती है: 16 मार्च और 31 अक्टूबर को।

[645] पैट्रास, या पाटारा, एशयिा माइनर (अब अनातोलयिा) के लसियिा प्रांत में एक तटीय व्यापारकि शहर है। इसकी स्थापना फ़निशियिों ने की थी; आज यह खंडहरों में पड़ा है।

[646] चर्च पवत्रि प्रेरति हेरोडयिन का स्मरणोत्सव 8 अप्रैल और 10 नवंबर को मनाता है।

[647] उनका पर्व दविस 8 अप्रैल है।

[648] थेब्स बोएशयिा की राजधानी है, जो ग्रीस का एक क्षेत्र है।

[649] उनका पर्व दविस 8 अप्रैल है

[650] मैराथन – थ्रेस में एक प्राचीन कलिबंदी शहर, जो मैसेडोनयिा के उत्तर-पूर्व में स्थति है।

संत हरमास, जनिका उल्लेख उसी पत्र में (रोमयिों 16:14) कयिा गया है, फलिपिोपोलसि में एक बशिप थे[651] , जहाँ उन्होंने शहीद की मृत्यु प्राप्त की[652] ।

संत पेट्रो, जन्हिें उसी पत्र (रोमयिों 16:14) में उल्लेखति कयिा गया है, नेपल्स[653] और पुटेओली[654] के बशिप थे, जहाँ उन्होंने कई लोगों को मसीह में परविर्तति कयिा[655] ।

संत हरमास (ऑर्थोडॉक्स चर्च पवत्रि प्रेरति हरमास का वर्ष में दो बार स्मरणोत्सव मनाती है: 8 अप्रैल और 31 मई को), जनिका उल्लेख उसी पत्र में कयिा गया है, दल्माटयिा में एक बशिप थे[656] ।

संत पौलुस प्रेरति ने रोमवासयिों के नाम अपनी पत्रकिा में इन पाँच प्रेरतिों का उल्लेख नम्निलखिति शब्दों में कयिा है: *'असंक्रितिस, फ्लेगोन, हेर्मास, पत्रोबस और हेर्मास को नमस्कार कहो'* (रोमयिों 16:14)।

संत लनिस, जनिका उल्लेख संत पौलुस प्रेरति ने अपनी तीमुथयिुस को दूसरी पत्री (2 तीमु. 4:21) में कयिा है, रोम में एक बशिप थे, जो संत पतरस प्रेरति के उत्तराधकिारी थे[657] ।

संत गयिस, जनिका उल्लेख संत पौलुस प्रेरति ने अपनी रोमयिों के नाम पत्र में कयिा है, जहाँ वे कहते हैं: *'गयिस, जो मेरा और सारी कलीसयिा का मेज़बान है, तुम्हें नमस्कार कहता है'* (रोमयिों 16:23), एफ़सिुस के बशिप थे, जन्होंने संत तीमुथयिुस का स्थान लयिा।

पवत्रि प्रेरति पौलुस उसी पत्र में फलिोलोगुस का उल्लेख करते हैं, कहते हुए: *'फलिोलोगुस को नमस्कार कहिए'* (रोमयिों 16:15), और उन्हें पवत्रि प्रेरति एंड्रयू द्वारा सनिोप में बशिप के रूप में अभषिेक कयिा गया था[658] , जहाँ उन्होंने शांतपूर्वक नधिन भी कयिा।[659]

संत लूसयिस, या ल्यूक (जनिका पर्व 10 सतिंबर को मनाया जाता है), जनिका उल्लेख संत पौलुस प्रेरति ने उसी पत्र में कयिा है (रोमयिों 16:21), सीरयिा के लाओदीकयिा के बशिप थे[660] ।

संत जेसन, जनिका उल्लेख उसी पत्र (रोमयिों 16:21) में कयिा गया है, तार्सस के बशिप थे[661] , जहाँ उन्होंने मसीह के नाम के लिए बहुत कष्ट उठाए। वे बहुत वृद्धावस्था में शांतपूर्वक नधिन कर गए[662] ।

संत सोसपिटर, जनिका उल्लेख रोमयिों के नाम पत्र में भी कयिा गया है (रोमयिों 16:21), इकोनयिम में एक बशिप थे[663] । सोसपिटर का नधिन शांतपूर्वक हुआ[664] ।

अंतमि तीन प्रेरतिों के बारे में, संत पौलुस प्रेरति रोमयिों के नाम अपने पत्र में नम्निलखिति लखिते हैं: *'लुसयिस, जैसन और सोसपितर, जो मेरे कुलजने हैं, नमस्कार भेजते हैं'* (रोमयिों 16:21)।

---

651 फलिप्पी – थ्रेस में एक प्राचीन कलिबंद शहर, जो अब पूर्वी रुमेलयिा में मारत्सिा नदी पर स्थति है; यह अपनी उद्योग और जनसंख्या के कारण एक महत्वपूर्ण शहर बना हुआ है।

652 चर्च द्वारा इसका स्मरण 8 मार्च और 5 नवंबर को कयिा जाता है।

653 नेपल्स – इटली के साम्राज्य के उसी नाम के प्रांत की राजधानी, जो नेपल्स की खाड़ी के उत्तरी तट पर स्थति है।

654 पुटेओली – इटली में टायर्रेनीयन सागर के तट पर, नेपल्स के पास, कैंपानयिा क्षेत्र में एक तटीय शहर।

655 5 नवंबर को संत पेत्रोस प्रेरति की स्मृति

656 डल्मेशयिा – इल्यूरयिन प्रांत का दक्षणिी भाग, जसिकी उत्तरी सीमा पन्नोनयिा और पश्चमिी सीमा इटली तथा एड्रयिाटकि सागर से मलिती थी।

657 उनका स्मरणोत्सव 5 नवंबर को

658 सनिाप – काला सागर के दक्षणिी तट पर एक शहर।

659 उनका पर्व दविस 5 नवंबर है

660 सीरयिा में लाओडसियिा – एक समय में फ्राइजयिा की राजधानी, जो एशयिा माइनर में, लकिस नदी के कनिारे, इसके दक्षणि-पश्चमि में स्थति थी; यह अपने व्यापक व्यापार के लिए प्रसद्धि थी। आज, केवल एस्की-गस्सारा नामक सुनसान गाँव के पास, एक छोटी सी पहाड़ी पर बचे खंडहर ही उस प्राचीन शहर की स्मृति में एक स्मारक के रूप में मौजूद हैं।

661 *तार्सस* – एशयिा माइनर के दक्षणि-पूर्वी प्रांत, सलिसियिा में स्थति एक बड़ा और घनी आबादी वाला शहर है, जो सडिनस नदी के कनिारे एक उपजाऊ मैदान में, उस स्थान के पास स्थति है जहाँ यह भूमध्य सागर में मलिती है। आज भी, तार्सस एक काफी महत्वपूर्ण व्यापारकि केंद्र बना हुआ है।

662 प्रेरति जेसन का पर्व 28 अप्रैल को मनाया जाता है।

663 इकोनयिम एशयिा माइनर के भीतरी हस्सि में, माउंट टॉरस के तल पर, एक ऊँचे, उपजाऊ मैदान पर स्थति एक शहर है; यह कभी लाइकोनयिा की राजधानी था; आज यह एशयिा माइनर में तुर्की प्रांत करमन की राजधानी कोन्या है।

664 उनका पर्व दविस 28 अप्रैल को मनाया जाता है

संत ओलम्पान, या ओलंपस, जनिका उल्लेख संत पौलुस ने उसी पत्र में (रोमियों 16:15) कयिा है, रोम में संत पतरस प्रेरति की शहादत के समय उपस्थति थे, और बाद में स्वयं को भी, संत हेरोदयिन प्रेरति के साथ, नीरो के आदेश पर सरि कलम कर दयिा गया, जैसा कि मेटाफ्रैस्टस ने संत पतरस और पॉल प्रेरतिों के पर्व के लिए अपनी धर्मोपदेश में लखिा है[665] ।

संत टर्टयिस ने संत पौलुस प्रेरति का रोमियों को पत्र लखिा, जैसा कि वे स्वयं उस पत्र में कहते हैं: *'मैं, टर्टयिस, जसिने यह पत्र लखिा है, प्रभु में आपको नमस्कार करता हूँ'* (रोमियों 16:22)। वह संत सोसपिटर के बाद इकोनयिम के दूसरे बशिप थे, और वहाँ उन्होंने शहीद का मुकुट प्राप्त कयिा[666] ।

संत एरास्टस, जनिका उल्लेख पवत्रि प्रेरति पौलुस ने उसी पत्र में कयिा है (रोमियों 16:23), यरूशलेम में कलीसयिा के एक डकिन और कोषाध्यक्ष थे, और बाद में पैनीअस के बशिप बने[667] ।

संत क्वार्टस, या क्वार्ट, जनिका उल्लेख उसी पत्र में कयिा गया है, बेरूत में एक बशिप थे।

संत पौलुस इन दो प्रेरतिों के बारे में इस प्रकार लखिते हैं: *'नगर कोषाध्यक्ष एरास्मस और भाई क्वार्टस तुम्हें नमस्कार भेजते हैं'* (रोमियों 16:23)।

संत इवोद, संत पतरस के बाद अंकोइया के बशिप थे। संत इग्नाजयिस द गॉड-बेयरर उन्हें अपने अंकोइयावासयिों के नाम पत्र में इस प्रकार उल्लेख करते हैं: *'धन्य इवोद, आपके पति, जनि्हें याद करें, जो आपके पहले चरवाहे थे*\' उनकी मृत्यु शहीद के रूप में हुई[668] ।

संत ओनेसफिोरस, जनिका उल्लेख संत प्रेरति पौलुस ने तमिोथी को अपनी दूसरी पत्री में करते हुए कहा: *'प्रभु ओनेसफिोरस के घराने पर दया करें, क्योंकि उसने मुझे बार-बार तरोताज़ा कयिा और मेरी बेड़यिों से लज्जति नहीं हुआ'* (2 तीमु. 1:16), कोलोफोन[669] और साइरेन[670] में एक बशिप थे। उन्होंने शहीद की मृत्यु पाई[671] ।

संत क्लेमेंट, जनिका उल्लेख पवत्रि प्रेरति पौलुस ने फलिप्पियों को लखिे अपने पत्र में करते हुए कहा: *'जनि लोगों ने मेरे और क्लेमेंट के साथ परशि्रम कयिा'* (Phil. 4:3), सार्डसि के बशिप थे[672] ।

संत सोस्थेनेस, जो कोरथि में यहूदी सनिेगॉग के प्रमुख के रूप में संत क्रसि्पस के उत्तराधकिारी थे, संत पौलुस प्रेरति द्वारा ईसाई धर्म में परविर्तति हुए। प्रेरतिों के काम में उनके बारे में कहा गया है: *', सभी यूनानयिों ने सोस्थेनेस, यहूदी सभा के शासक को पकड़ लयिा, और उसे न्यायपीठ के सामने पीटा'* (प्रेरतिों के काम 18:17)। उनका नाम स्वयं पवत्रि प्रेरति पौलुस द्वारा कोरन्थियिों को लखिे पत्र में भी उनके अपने नाम के साथ लयिा गया है, जो इस प्रकार शुरू होता है: *'परमेश्वर की इच्छा से यीशु मसीह का प्रेरति पौलुस, और हमारा भाई सोसथेनेस'* (1 कुरन्थियिों 1:1)। इसके बाद, पवत्रि प्रेरति सोसथेनेस ने कोलोफोन के बशिप के रूप में सेवा की[673] ।

प्रेरतिों के काम में संत अपोलोस का उल्लेख मलिता है: *'अलेक्ज़ेंड्रयिा का एक यहूदी, जसिका नाम अपोलोस था, जो वाक्पटु और धर्मग्रंथों में पारंगत था, एफ़सिुस आया। उसे प्रभु के मार्ग की मूल बातें सखिाई गई थीं और, आत्मा में उत्साही होकर, उसने प्रभु के वषिय में ठीक-ठीक बात की और शक्षिा दी'* (प्रेरतिों के काम 18:24–25)। प्रेरति संत पौलुस ने भी अपनी प्रथम पत्र में कुरन्थियिों को लखिते हुए उनका उल्लेख कयिा है: *'मैंने बोया, अपोलुस ने सींचा, परन्तु*

---

[665] संत ओलंपस प्रेरति का पर्व 10 नवंबर को मनाया जाता है

[666] चर्च द्वारा प्रेरति संत टर्टयिस का स्मरणोत्सव 30 अक्टूबर को मनाया जाता है

[667] पनेआडा उत्तरी फलिस्तिीन में एक शहर है; इसे केसरयिा फलिपिी भी कहा जाता है।

[668] संत इवोद की मृत्यु 66 ईस्वी में, रोमन सम्राट नीरो के उत्पीड़न के दौरान हुई। संत इवोद का स्मरणोत्सव 7 सतिंबर को मनाया जाता है।

[669] कोलोफोन – एशयिा माइनर के उत्तर-पश्चमिी भाग में लडियिा का एक प्राचीन शहर। इस शहर के खंडहर हाल ही में खोजे गए हैं।

[670] साइरेन – उसी नाम के प्रांत की राजधानी – लीबयिा में, अफ्रीका के उत्तरी तट पर, मस्रि के पश्चमि में स्थति थी। यह उत्तरी अफ्रीका का सबसे भव्य और सबसे अमीर शहर था। आज, इसके केवल खंडहर ही बचे हैं।

[671] चर्च संत ओनेसफिोरस प्रेरति की स्मृति दो बार मनाती है: 7 सतिंबर और 8 दसिंबर को।

[672] सार्डकिा – प्राचीन सार्डसि, या सार्डी, एशयिा माइनर के उत्तर-पश्चमिी भाग में लडियिा का एक समृद्ध शहर था, जो कभी अपने धन के लिए प्रसद्धि राजा क्रोइसस की राजधानी और नविास स्थान था। प्रेरतिों के समय में भी यह एक महत्वपूर्ण शहर था; प्रारंभकि चरण में ही वहाँ ईसाई चर्च की स्थापना हुई थी। आजकल यह केवल एक छोटा सा गाँव है, और केवल खंडहर ही शहर की पूर्व वैभव का साक्षी हैं।

[673] चर्च संत प्रेरति सोस्थेनेस को साल में दो बार याद करता है: 30 मार्च और 8 दसिंबर को

परमेश्वर ने वृद्धि दी' (1 कुरन्थियों 3:6)। इसके बाद, अपोलुस क्रीट में थे[674] और, बाद में, उन्होंने सेज़रिया के बिशप के रूप में सेवा की[675] ।

संत तिकिकुस का उल्लेख प्रेरितों के काम (प्रेरितों के काम 20:4) और संत पौलुस प्रेरित के कुलुस्सियों (कुलुस्सियों 4:7) और एफसियों को लिखे पत्रों में मिलता है, जहाँ लिखा है: '*ताकि तुम्हें यह पता चल जाए कि मैं कैसा हूँ, तिकिकुस, जो प्रभु में मेरा प्रिय भाई और विश्वासयोग्य सेवक है, तुम्हें सब कुछ बता देगा। मैंने उसे विशेष रूप से इसीलिए तुम्हारे पास भेजा है, ताकि तुम्हें हमारी कुशल-क्षेम का पता चल जाए और वह तुम्हारे हृदय को प्रोत्साहित करे*' (इफसियों 6:21–22)। और फिर, तीमुथियुस को लिखी दूसरी पत्री में, प्रेरित पौलुस कहते हैं: '*मैंने तिकिकुस को एफिसुस भेज दिया है*' (2 तीमु. 4:12; तुलना करें तितुस 3:12)। सन्त सोस्थेनेस के बाद तिकिकुस कोलोफोन के बिशप थे[676] ।

संत एपफ्रोदितुस का उल्लेख संत पौलुस के फिलिप्पियों के नाम पत्र में मिलता है, जहाँ प्रेरित पौलुस कहते हैं: '*मैंने यह आवश्यक समझा कि मैं तुम्हारे पास एपफ्रोदितुस को भेजूँ, जो मेरा भाई, सहकर्मी और सह-सैनिक, और मेरी आवश्यकता में तुम्हारा दूत और सेवक है*' (फिलि. 2:25)। एपाफ्रोदितुस एड्रिया में एक बिशप थे[677] ।

संत कार्पस, जिनका उल्लेख पवित्र प्रेरित पौलुस ने अपनी तीमुथियुस को लिखी दूसरी पत्री में निम्नलिखित शब्दों में किया है: '*जब तुम आओ, तो वह ओढ़नी ले आना जो मैंने त्रोआस में कार्पस के पास छोड़ी थी, और पुस्तकें*' (2 तीमु. 4:13), थेस के बेरिया में एक बिशप थे[678] । उन्होंने शांतिपूर्वक निधन किया[679] ।

संत कोड्रैटस एथेंस और मैग्नेशिया के बिशप थे, जहाँ, प्रभु का वचन प्रचार करते हुए, उन्होंने सम्राट हैड्रियन के शासनकाल में एथेंसवासियों के हाथों शहादत प्राप्त की[680] .[681]

संत मार्क, जिन्हें जॉन के नाम से भी जाना जाता है, जो पौलुस और बरनबास के साथी के रूप में प्रेरितों के काम में कई बार उल्लेखित हैं, उदाहरण के लिए निम्नलिखित अंश में: '*और बर्नबास और सऊल, अपना काम पूरा करके, यरूशलेम से (अंतियोकिया) लौट आए, और अपने साथ यूहन्ना को भी ले आए, जिसे मरकुस भी कहा जाता था*' (प्रेरितों के काम 12 और अन्य), फिनिसिया के बिब्लोस शहर के बिशप थे[682] । संत मार्क ने कई चमत्कार किए और उनमें इतनी कृपा-पूर्ण शक्ति थी कि उनके साये से ही बीमार लोग ठीक हो जाते थे[683] ।

संत ज़ेनस, जिन्हें 'विधि-दाता' अर्थात् मूसा की व्यवस्था के शिक्षक के रूप में जाना जाता है, जिनका उल्लेख पवित्र प्रेरित पौलुस ने अपने तीतुस के नाम पत्र में करते हुए कहा है: '*देखना कि तुम विधि-दाता ज़ेनस को मेरे पास भेजो*' (तीतुस 3:13), डायोस्पोलिस में एक बिशप थे।

संत अरिस्तार्कस, जिनका उल्लेख प्रेरितों के काम (प्रेरितों के काम 19:29) और संत पौलुस प्रेरित के कुलुस्सियों (कुलुस्सियों 4:10) और फिलिमोन (फिलिमोन 1:23) को लिखे पत्रों में मिलता है, अपमेया शहर के एक बिशप थे[684] ।

---

[674] क्रीट द्वीप (जिसे कैंडिया भी कहा जाता है, अपने ही नाम के राजधानी शहर के नाम पर) भूमध्य सागर के पूर्वी भाग में, ईजियन सागर के दक्षिण में स्थित है। अपनी विशालता और उपजाऊपन के कारण, इसे एक समय भूमध्य सागर के 'द्वीपों की रानी' कहा जाता था। यहाँ ईसाई धर्म की शुरुआत प्रेरित युग से ही हो गई थी; इसकी नींव प्रेरितों पर पवित्र आत्मा के अवतरण के प्रत्यक्षदर्शियों द्वारा रखी गई थी, क्योंकि उस घटना में क्रीटवासी मौजूद थे (प्रेरितों के काम 2:11)। वर्तमान में, क्रीट तुर्की के शासन के अधीन है।

[675] चर्च पवित्र प्रेरित अपोलोस का वर्ष में दो बार स्मरणोत्सव मनाती है: 30 मार्च और 8 दिसंबर को

[676] उनका पर्व 8 दिसंबर को मनाया जाता है

[677] एड्री, या एड्रियाका, थ्रेस में काले सागर पर एक शहर है, जो फिलिप्पी से बहुत दूर नहीं है, जो थ्रेस के साथ सीमा पर स्थित एक मैसेडोनियाई शहर है।

[678] बेरीया मैसेडोनिया के पूर्वी भाग में एक शहर है। प्रेरित पौलुस ने वहाँ ईसा की 40 और 65 के बीच ईसाई धर्म का प्रचार किया। अब इसे वेरिया या कारा वेरिया (ब्लैक वेरिया) कहा जाता है; इसकी जनसंख्या लगभग 10,000 है।

[679] प्रेरित कार्पस का पर्व 26 मई को मनाया जाता है

[680] उनका पर्व दिवस 21 सितंबर है

[681] हैड्रियन - एक रोमन सम्राट - ने 117 से 138 ईस्वी तक शासन किया।

[682] बइबलोस – फिनिसिया में एक प्राचीन शहर, जो समुद्र से बहुत दूर नहीं, त्रिपोली और बेरूत के बीच स्थित था – एडोनिस की पूजा के केंद्र के रूप में प्रसिद्ध था, जिसके लिए वहाँ एक भव्य मंदिर बनाया गया था। आज, बाइबलोस का स्थल जेबेल नामक एक छोटा सा गाँव है, जिसकी आबादी केवल 600 है। यह रोमन काल और धर्मयुद्ध के युग के खंडहरों से घिरा हुआ है, साथ ही यहाँ मिस्र और फिनिशियाई प्राचीन वस्तुओं वाले विशाल कब्रिस्तान भी हैं।

[683] चर्च 27 सितंबर को उनकी स्मृति मनाता है।

[684] अपामेया सीरिया के शहरों में से एक है।

संत पुद, जनिका उल्लेख संत पौलुस प्रेरति ने तमिोथी को लखिी अपनी दूसरी पत्री में कयिा है, जसिमें कहा गया है: *'पुद भी तुम्हें प्रणाम कहता है'* (2 तमिो. 4:21), रोमन सीनेट के सदस्य थे। वह एक धार्मकि व्यक्ति थे जन्हिोंने अपने घर में पवत्रि प्रेरति पतरस और पौलुस तथा कई वशि्वासयिों का स्वागत कयिा। बाद में, उनके घर को एक चर्च में बदल दयिा गया, जसिे 'चरवाहे का चर्च' कहा जाता था और जसिमें, परंपरा के अनुसार, संत पतरस प्रेरति ने दैवीय अनुष्ठान कयिा था।

संत ट्रॉफमिस, जनिका उल्लेख प्रेरतिों के काम (प्रेरतिों के काम 20:4, 21:29) में दो बार और संत पौलुस प्रेरति द्वारा उसी पत्र में कयिा गया है, *जहाँ* वे कहते हैं: *'मैंने ट्रॉफमिस को बीमार छोड़ दयिा था मलि्लिटिस में'* (2 टमि. 4:20), ने प्रेरति पतरस और अरस्तिार्खुस के साथ मलिकर, सभी उत्पीड़नों के दौरान प्रेरति पौलुस का साथ दयिा; और अंत में, जब पवत्रि प्रेरति पौलुस को नीरो के अधीन रोम में तलवार से सरि कलम कयिा गया, तो उन्हें भी अपने दो साथयिों के साथ सरि कलम कर दयिा गया[685] ।

संत मरकुस (30 अक्टूबर को स्मरण कयिा जाता है), जो प्रेरति बरनाबास के भतीजे थे, बथिुनयिा के अपोलोनयिा के बशिप थे[686] । उनका उल्लेख पवत्रि प्रेरति पौलुस ने कोलस्सयिों के नाम अपने पत्र में, उपर्युक्त प्रेरति अरस्तिार्खुस के साथ कयिा है: *'मेरे साथी बंदी अरस्तिार्खुस तुम्हें नमस्कार भेजता है, और बरनबास का भतीजा मार्क भी'* (कुलुस्सयिों 4:10)।

संत आर्टेमस (जनिका पर्व का दनि 30 अक्टूबर है), जनिके बारे में संत प्रेरति पौलुस अपनी तीतुस को लखिी पत्र में कहते हैं: *'जब मैं आर्टेमस को तुम्हारे पास भेजूँगा'* (तीतुस 3:12), लस्त्रि में एक बशिप थे[687] ।

संत अक्वलिा, जनिका उल्लेख प्रेरतिों के काम (प्रेरतिों के काम 18:1–3) और प्रेरति पौलुस के पत्रों (रोमयिों 16:3–4, आदि) में कयिा गया है, हेराक्लयिा में एक बशिप थे, और एशयिा तथा अखैया में परमेश्वर का वचन प्रचार कयिा, और अपने प्रचार के लिए शहीद का मुकुट प्राप्त कयिा[688] ।

संत फॉर्तुनाटस, जनिका उल्लेख संत पौलुस प्रेरति ने कोरन्थियिों को लखिी अपनी पहली पत्रकिा में कयिा है (1 कुरन्थियिों 16:17–18), ने मसीह के नाम का प्रचार करते हुए अथक परश्रिम कयिा; और कई परश्रिमों के बाद, उन्होंने धन्य वश्रिाम प्राप्त कयिा।

संत अखाइकस, जनिका उल्लेख संत पौलुस प्रेरति ने कोरन्थियिों को लखिी उसी पत्र में फोरचुनाटस के साथ कयिा है, कहते हुए: *'मुझे स्तेफानुस, फोरतुनातुस और अखाइकुस के आने से आनंद हुआ; उन्होंने मेरी तुम्हारी कमी पूरी कर दी, क्योंकि उन्होंने मेरी और तुम्हारी आत्मा को तरोताज़ा कयिा है'* (1 कुरन्थियिों 16:17–18)।

संत डायोनसियिस द एरोपागटि, जनिका उल्लेख प्रेरतिों के काम (प्रेरतिों के काम 17:34) में कयिा गया है, पहले एथेंस में एक बशिप थे, और बाद में उन्होंने गॉल में मसीह का प्रचार कयिा[689] , जहाँ उनका सरि कलम कर दयिा गया था। फलिस्तीन के केसरयिा के बशिप यूसेबयिस[690] , गवाही देते हैं कि वह भी प्रेरतिों की श्रेणी में से थे; 70 प्रेरतिों की सूची देते हुए, वह कहते हैं: 'उनमें एरिओपागोइट डायोनसियिस को भी जोड़ें, जसिके बारे में लूका प्रेरतिों के काम में लखिते हैं कि वह एथेन्स में पौलुस के उपदेश द्वारा वशि्वास में परविर्तति हो गया था।'

संत समियिन, जन्हिें नाइजर उपनाम मलिा; संत लूकस प्रेरति, प्रेरतिों के काम में उनका उल्लेख करते हुए कहते हैं: *'अंतयिोक में, वहाँ की कलीसयिा में कुछ भवष्यिद्वक्ता और शक्षिक थे: बरनबास, और समियिन, जन्हिें नाइजर कहा*

---

[685] प्रेरति अरस्तिार्कोस, पुडेन्स और त्रोफमिोस की स्मृति का पवत्रि चर्च 15 अप्रैल को स्मरण करता है

[686] अपोल्लोनयिा एशयिा माइनर के उत्तरी क्षेत्र बथिनियिा का एक शहर है, जसिे बाद में लडियिा में शामलि कर दयिा गया था

[687] लस्त्रि, एशयिा माइनर के एक केंद्रीय क्षेत्र लाइकोनयिा के शहरों में से एक है, जो फ्रीजयिा से सटा हुआ है। यहीं पर प्रेरति पौलुस ने एक लंगड़े आदमी को चंगा कयिा था, और इस चमत्कार को देखने पर, अवशि्वासयिों ने उसे और बरनबास को देवता समझ लयिा (प्रेरतिों के काम 14:6–18)।

[688] उनका पर्व 14 जुलाई को मनाया जाता है

[689] गॉल – आज का फ्रांस।

[690] यूसेबयिस – जो लंबे समय तक फलिस्तीन के केसरयिा के बशिप रहे और अपने युग की कई महान घटनाओं में गहराई से शामलि थे, उन्हें चर्च इतहिास के पति और सामान्य रूप से एक धर्मशास्त्री के रूप में जाना जाता है; उनके लेखनों को ईसाई चर्च के भीतर बहुत सम्मान दयिा जाता था, और वे अपनी वशिाल वद्विता के लिए प्रतष्ठिति थे; वह 268 से 340 तक जीवति रहे। यूसेबयिस ने शहीदों के सभी रकिॉर्ड और ववरिणों को *द कलेक्शन ऑफ़ एन्शयिंट मार्टरडम्स* नामक एक संग्रह में संकलति कयिा। इस संग्रह में सभी धर्मप्रांतों के शहीदों, बशिपों, कन्फेशनरों, पवत्रि महलिाओं और कुंवारी महलिाओं के वृत्तांत शामलि थे। कुछ के अनुसार, इसमें 20 पुस्तकें थीं; कुछ के अनुसार, 16।

जाता था" (प्रेरतिों के काम 13:1)। संत एपफिानयिस यह भी गवाही देते हैं कि वह प्रेरतिों की मंडली का सदस्य था, और उसे प्रेरतिों में शामलि करते हैं, क्योंकि वह उनके नाम इस प्रकार सूचीबद्ध करते हैं: 'मार्क, लूका, जस्टस, बर्नबास, अपेल्स, रूफस, नाइजर (अर्थात् समियिन नाइजर) और अन्य प्रेरति seventy-two[691] । इस प्रकार, संत एपफिानयिस हमें आश्वस्त करते हैं कि इन गौण प्रेरतिों की संख्या बहत्तर व्यक्तयिों की है और संत समिोन नाइजर इन्हीं प्रेरतिों में से एक थे। इसके अलावा, दमास्कस के संत जॉन[692] , बुधवार को संध्या के समय पाँचवें स्वर के ऑक्टोइकोस में, बारह प्रेरतिों का उल्लेख करने के बाद, बहत्तर प्रेरतिों की सभा का भी उल्लेख करते हैं, और कहते हैं: 'सर्व-पवत्रि दस, बहत्तर की एकजुट सभा को देखकर, जोड़ों में सद्धि कयि गए।'

इन सभी प्रेरतिों की अनुग्रह-पूर्ण प्रार्थनाओं के द्वारा, हम भी स्वर्गीय आनंद में सहभागी होने और हमारे वश्विास के सर्वोच्च प्रेरति और महायाजक, यीशु मसीह को देखने के योग्य ठहरें, और उन्हें परमपति और पवत्रि आत्मा के साथ युगानुयुग महमिामय करें, आमीन।

फलिस्तीन के केसरयि के बशिप यूसेबयिस, अपनी 'इतहिास' की पहली पुस्तक के बारहवें अध्याय में नम्निलखिति लखिते हैं: 'मसीह के प्रत्येक (बारह) प्रेरतिों का नाम सुसमाचार के वृत्तांतों से सभी को अच्छी तरह से ज्ञात है, लेकनि सत्तर प्रेरतिों की एक पूरी तरह से सटीक सूची कहीं भी नहीं मलिती है। हालाँकि, यदि कोई इस मामले की अधकि बारीकी से जाँच करे, तो पवत्रि प्रेरति पौलुस की गवाही पर ही नरि्भर रहते हुए, उनमें से सत्तर से अधकि पाए जा सकते हैं, जो अपनी प्रथम पत्री 1 कुरन्थियिों में कहते हैं: *'कि वह* (मसीह, अपने पुनरुत्थान के बाद) *केफास को, फरि बारहों को दखिाई दिए; फरि वह एक ही समय में पाँच सौ से अधकि भाइयों को दखिाई दिए, जनिमें से अधकिांश आज भी जीवति हैं, यद्यपि कुछ सो गए हैं*" (1 कुरन्थियिों 15:5–6)। प्रारंभकि कलीसयिा में मसीह के सुसमाचार को प्रचारति करने के कार्य में परश्रिम करने वालों में से, जन्हिोंने पवत्रि प्रेरतिों की भाँति विभिन्नि देशों को वश्विास से प्रकाशति कयिा, और जो इसलिए 'प्रेरति' की उपाधि के योग्य हैं, हम यहाँ वशिेष रूप से कुछ का उल्लेख करेंगे।

संत लाजरस, जो चार दनि से मृत थे और जन्हिें प्रभु ने मरे हुओं में से जलिाया था। यरूशलेम में कलीसयिा के उत्पीड़न के दौरान, संत स्तेफन प्रथम शहीद की शहादत के बाद, उन्हें यहूदयिा की सीमाओं से बाहर नकिाल दयिा गया (प्रेरतिों के काम 8:1) और प्रभु के पवत्रि शष्यि के साथ, एक बनिा पतवार वाली नाव में समुद्र में छोड़ दयिा गया, मैक्समिनिस, और संत केलडिोनयिस, जो जन्म से अंधे थे लेकनि प्रभु द्वारा चंगा कयि गए थे। दैवीय कृपा से, नाव साइप्रस द्वीप पर आ लगी, और संत लाजरस ने कडिोनयिा शहर में मसीह के बारे में प्रचार करना शुरू कर दयिा। बाद में, उन्हें उस शहर में प्रेरति बरनबास द्वारा बशिप नयिुक्त कयिा गया, और वहीं साइप्रस द्वीप पर उन्होंने शांतपिूर्वक देहांत कयिा। कई वर्षों बाद, उस द्वीप पर उनका पवत्रि शरीर संगमरमर के एक ताबूत में मलिा, जसि पर यह शलिालेख अंकति था: 'चार दनि का लाजर, मसीह का मत्रि'[693] ।

संत जोसेफ, अरमिाथेआ के मूल नविासी[694] और यीशु मसीह के एक गुप्त शष्यि, जन्हिोंने बाद में पलिातुस से उनके पवत्रि शरीर का अनुरोध कयिा (लूका 23:50–52; मत्ती 27:67; मरकुस 15:42; यूहन्ना 19:38), को ईर्ष्यालु यहूदयिों द्वारा यहूदयिों की भूमि से भी नष्किासति कर दयिा गया था और उन्होंने इंग्लैंड में मसीह का प्रचार कयिा, जहाँ उनका नधिन हो गया। उन्हें इंग्लैंड के लोगों द्वारा अपने देश के प्रेरति के रूप में पूजति कयिा जाता है[695] ।

संत नकिोदेमस, जो यीशु की शकि्षाएँ सुनने के लिए रात में उनके पास आए थे (यूहन्ना 3:1-2) और जन्हिोंने यहूदयिों को यह समझदार सलाह दी कि उन्होंने यीशु की बातें सुने और उनके कामों की जाँच कयि बनिा उन्हें दोषी न ठहराएँ (यूहन्ना

---

[691] संत एपफिानयिस – संत जॉन क्राइसोस्टोम के समकालीन – 36 वर्षों तक साइप्रस द्वीप के बशिप रहे। चर्च के एक प्रसद्धि फादर के रूप में, उन्होंने अपने समय के वधिर्मों के खलिाफ कई कृतयिाँ छोड़ीं। उनकी मृत्यु 408 में हुई। उनका पर्व दविस 12 मई को मनाया जाता है।

[692] संत जॉन ऑफ डेमास्कस – एक अत्यंत उल्लेखनीय ईसाई भजनकार और धर्मशास्त्री, जनिका नधिन 776 में हुआ। प्रतमिा-भंजकों के खलिाफ पवत्रि प्रतमिाओं की उनकी उत्साही रक्षा के लिए, उनका हाथ काट दयिा गया था, लेकनि ईश्वर की इच्छा से, वह उनके शरीर पर वापस जुड़ गया। चर्च द्वारा उनका पर्व 4 दसिंबर को मनाया जाता है।

[693] चर्च द्वारा चार दनि के संत लाजरस का स्मरणोत्सव 17 अक्टूबर को मनाया जाता है, जब साइप्रस द्वीप से कॉन्स्टेंटनिोपल तक उनकी अवशेषों के स्थानांतरण का स्मरण कयिा जाता है।

[694] यूसेबयिस और जेरोम के अनुसार, अरमिाथेआ रामा, या रामाह के समान ही है—जो यरूशलेम से दो घंटे की दूरी पर उत्तर में, लद्दिा के पास माउंट एफ्राइम पर एक शहर है; इसे रामाथाइम-ज़ोफमि भी कहा जाता है। यह अरमिाथेआ के यूसुफ का जन्मस्थान था, जो मसीह के शष्यिों में से एक (यूहन्ना 19:38) और यहूदी महासभा का सदस्य था, जसिने यीशु मसीह को चट्टान में खोदी गई अपनी कब्र में دفن कयिा था।

[695] संत जोसेफ को समर्पति कोई वशिष्टि पर्व दविस नहीं है, लेकनि उनकी स्मृति मृरह-वाहक स्तरियिों के सप्ताह के दौरान मनाई जाती है।

7:50-51), और जिन्होंने बाद में, यूसुफ के साथ मिलकर, यीशु के शरीर को दफनाने के लिए तैयार किया और उसे सुगंधित द्रव्यों से अभिषिक किया (यूहन्ना 19:39), – मसीह में अपने विश्वास और प्रेरितिक उपदेश के लिए यहूदियों के हाथों दुख उठाया, और यहूदिया से निर्वासित कर दिए गए[696] ।

संत गमलीएल संत पौलुस प्रेरित के शिक्षक थे। उन्होंने पवित्र प्रेरितों के प्रचार के संबंध में महासभा को समझदारी भरी सलाह दी, और कहा: 'यदि यह मनुष्य का काम है, तो यह व्यर्थ हो जाएगा; परन्तु यदि यह परमेश्वर की ओर से है, तो तुम इसे उलट नहीं सकते; सावधान रहो, कहीं ऐसा न हो कि तुम परमेश्वर का विरोध करने वाले बन जाओ' (प्रेरितों के काम 6:34–40)। आर्चडीकन स्टीफन की शहादत के बाद, उन्होंने उनके शरीर को उठाया और उसे यरूशलेम के पास अपने ही गाँव में दफनाया। उन्होंने संत निकोदेमस को भी आश्रय दिया, जिन्हें मसीह के सुसमाचार का प्रचार करने के लिए निर्वासित किया गया था, और उनकी मृत्यु के बाद उन्हें पवित्र प्रथम शहीद स्टीफन की कब्र के पास दफनाया, जहाँ बाद में स्वयं[697] को भी सुलाया गया।

इथियोपिया की रानी कैंडैस का वह नपुंसक, जिसे रास्ते में पवित्र प्रेरित फिलिप ने बपतिस्मा दिया था (प्रेरितों के काम 8:26-39) और जिसने रानी को मसीह के पास लाया, इथियोपिया में मसीह का पहला प्रचारक था[698] , जहाँ उसकी शहीद के रूप में मृत्यु भी हुई।

संत ज़क़ैयस, जिन्होंने प्रसन्नतापूर्वक प्रभु का अपने घर में स्वागत किया और उनसे यह सुनने का सौभाग्य प्राप्त किया: *'आज इस घर में उद्धार आया है'* (लूका 19:1–10)। प्रभु के स्वर्गारोहण के बाद, ज़क़ैयस ने पवित्र प्रेरित पतरस का अनुसरण किया, जिन्होंने उन्हें फिलिस्तीन के केसरिया का बिशप नियुक्त किया[699] , जहाँ उन्होंने मसीह के बारे में प्रचार किया[700] ।

संत कोर्नेलियस शताब्दीपति, जिन्हें पवित्र प्रेरित पतरस ने बपतिस्मा दिया था (प्रेरितों के काम 10), और जिन्होंने बाद में उन्हें बिशप नियुक्त किया, ने सेप्ससि शहर में मसीह का प्रचार किया[701] , जहाँ उन्होंने शांतिपूर्वक निधन भी किया[702] ।

संत शताध्यक्ष लोंगिनस, जिन्होंने प्रभु के क्रूस पर पहरा दिया और यह स्वीकार किया कि यीशु वास्तव में परमेश्वर के पुत्र हैं (मत्ती 27:54)। प्रभु के दफ़नाए जाने के बाद, लोंगिनस ने फिर से प्रभु के मकबरे की रखवाली की और मसीह के पुनरुत्थान का प्रत्यक्षदर्शी था, जिसकी गवाही उसने सभी के सामने दी। बाद में, उसने कापाडोसिया में मसीह के बारे में प्रचार किया, जहाँ उसे शहादत प्राप्त हुई[703] ।

परंपरा के अनुसार, संत इग्नेशियस द गॉड-बेयरर वही बालक थे जिन्हें प्रभु ने अपनी बाहों में उठाया और प्रेरितों को दिखाते हुए कहा: 'यदि तुम बच्चों के समान नहीं बनोगे, तो तुम स्वर्ग के राज्य में प्रवेश नहीं करोगे' (मत्ती 18:2-5; मरकुस 9:37)। उन्हें पवित्र प्रेरित पतरस द्वारा अंताकिया का बिशप नियुक्त किया गया था, जहाँ उन्होंने मसीह के बारे में उपदेश दिया। उन्होंने रोम में एक शहीद के रूप में अपना जीवन समाप्त किया, जब उन्हें शेरों के सामने फेंक दिया गया था[704] .

---

[696] चर्च संत निकोदेमस की स्मृति 2 अगस्त को और मूरह-वाहक स्त्रियों के सप्ताह के दौरान मनाता है।

[697] संत गमलीएल के साथ, उनके धार्मिक पुत्र अबिब, जो मसीह में विश्वास करते थे, का भी निधन हो गया; संत गमलीएल और अबिब की स्मृति चर्च द्वारा 2 अगस्त को मनाई जाती है।

[698] इथियोपिया – अफ्रीका में, वर्तमान सोमालिया के अनुरूप है। यह नील नदी के ऊपरी इलाकों में स्थित था और इसकी सीमाएँ उत्तर में मिस्र के थेबाइड क्षेत्र, पश्चिम में लीबिया, दक्षिण में दक्षिणी इथियोपिया, और पूर्व में अरब की खाड़ी और लाल सागर से मिलती थीं।

[699] पैलेस्टाइन में केसरिया – भूमध्य सागर के पूर्वी तट पर एक शहर, जिसे यहूदियों के राजा हेरोद ने स्ट्रैटन के प्राचीन शहर की जगह पर बनवाया था और इसका नाम सीज़र ऑगस्टस (रोमन सम्राट ऑक्टेवियन ऑगस्टस) के सम्मान में रखा गया था। इस शहर को कई बार नष्ट किया गया और आज इसकी जगह पर केवल खंडहर बचे हैं, जो जंगली वनस्पतियों से ढके हुए हैं।

[700] चर्च, लेंटिन ट्रायोडियन की शुरुआत से पहले, 32वें सप्ताह में संत ज़क़ैयस का स्मरण करता है।

[701] स्केप्सिया पश्चिमी एशिया माइनर के मिसिया प्रांत में एक शहर है।

[702] संत कोर्नेलियस का स्मरणोत्सव 13 सितंबर को मनाया जाता है

[703] चर्च 16 अक्टूबर को संत लोंगिनस शताब्दीपति का स्मरणोत्सव मनाती है

[704] चर्च संत इग्नेशियस द गॉड-बेयरर की स्मृति का वर्ष में दो बार पालन करती है: 29 जनवरी को, जब उनके शिष्यों द्वारा रोम से एंटिओक तक उनके अवशेषों के स्थानांतरण का स्मरण किया जाता है, और 20 दिसंबर को, संत के निधन का दिन।

संत पॉलीकार्प स्मर्ना के बशिप थे। प्रेरतिों की तरह, उन्होंने अथक परशि्रम से परमेश्वर का वचन प्रचार कयिा, नव-धर्म परविर्तन कएि हुए ईसाइयों को एक पत्र लखिा, और अपनी मंडली की भलाई और आध्यात्मकि नरि्माण की अथक देखभाल की। धन्य समियिन मेटाफ्रैस्टेस[705] , अपनी 'जीवन-चरति: संत इग्नेशयिस द गॉड-बेयरर' में, स्पष्ट रूप से पॉलीकार्प को दैवीय प्रेरति के रूप में संदर्भति करते हैं, और कहते हैं: 'वे स्मyrna पहुँचे, और वहाँ संत इग्नेशयिस ने संत पॉलीकार्प, दैवीय प्रेरति, अपने सह-शष्यि को चूमा।' उनकी मृत्यु रोम में शहीद होकर हुई[706] ।

एथेंस में एरयिोपैगस के सदस्यों में से एक, संत हेरोफलिस; उन्हें पवत्रि प्रेरति पौलुस द्वारा ईसाई धर्म की शकि्षा दी गई थी, जनि्होंने उन्हें एथेंस में बशिप के रूप में भी नयिुक्त कयिा था। अन्य पवत्रि प्रेरतिों के साथ, संत हेरोफलिस को यरूशलेम में परम पवत्रि थओिटोकोस के नदि्रोपरांत, ईश्वर की माता के मकबरे तक हवा में ले जाया गया था। उन्होंने शहीद की मृत्यु पाई[707] ।

[708]पर्गाम के बशिप संत एंटपिास ने भी मसीह के प्रेरतिकि उपदेश के लएि कष्ट सहे। उनके बारे में, प्रभु यीशु मसीह ने स्वयं संत यूहन्ना द थयिोलोजयिन की प्रकटन में कहा: *'एंटपिास, मेरा वशि्वासयोग्य गवाह, मार डाला गया है'* (प्रकटन 2:13)।

संत डेमट्रियिस, जनिका उल्लेख संत जॉन द थयिोलोजयिन ने अपनी तीसरी पत्रकिा (3 यूहन्ना 1:12) में कयिा है। संत डेमट्रियिस एशयिा के फलिाडेल्फयिा शहर के बशिप थे[709] ।

कॉन्टाकयिन, स्वर 2:

आओ हम गीतों द्वारा मसीह के दैवीय रूप से वशि्वासयोग्य सत्तर शष्यिों की स्तुतकिरें: क्योंकउिनके द्वारा हम सभी ने अवभिाज्य त्रमिूर्तकिा सम्मान करना सीखा है, और वे दैवीय वशि्वास के दीपक बने हुए हैं

संत यूस्टाथयिस, सर्बयिा के आर्चबशिप का जीवन[710]

4 जनवरी को स्मरण कयिा जाता है

संत यूस्टाथयिस तेरहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में, धर्मपरायण सर्बयिाई राजा स्टीफन उरोश II मलिुटनि के शासनकाल में रहे और कार्य कयिा, जनि्होंने 1262 से 1320 तक सर्बयिा पर शासन कयिा। उनका जन्म बूदमि्ल्या क्षेत्र[711] में धर्मपरायण माता-पति के यहाँ हुआ था। अपने माता-पति के प्रतगिहरी भक्तरिखते हुए, वह बचपन से ही ईश्वर के प्रतअिपने प्रेम में बढ़ गया: उसने तुच्छ मनोरंजन से परहेज कयिा, सदाचारी चरत्रि का नरि्माण करने का

---

[705] समिीओन मेटाफ्रastes – 10वीं सदी (940) के एक प्रसदि्ध चर्च-संबंधी लेखक, संतों के जीवन के संकलक और संग्राहक थे, यह कार्य उन्होंने कॉन्स्टेंटनिोपल के सम्राट, कॉन्स्टेंटनि VII (912–954) के कहने पर कयिा था। पवत्रि तपस्वयिों की महमिा के लएि महान उत्साह से प्रेरति होकर, समियिन ने न केवल उनके वृत्तांत एकत्र कएि, बल्कउिनमें से कई में संशोधन भी कयिा, उन्हें आंशकि रूप से संक्षप्ति कयिा और, सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कउिन्होंने प्राचीन, बोझलि और अक्सर अस्पष्ट भाषा को अपने समय की स्पष्ट और परष्कृत शैली से बदल दयिा। इसके लएि, समियिन को मेटाफ्रास्टेस नाम दयिा गया, जसिका अर्थ है 'कथाकार' या 'पुनर्लेखक'। इस क्षेत्र में उनके कार्यों ने बाद में रोस्तोव के सेंट डेमेट्रयिस द्वारा लखिति चेती-मनिेई के लएि मुख्य स्रोत के रूप में काम कयिा।

[706] संत पॉलीकार्प का पर्व 23 फरवरी को मनाया जाता है

[707] पवत्रि शहीद इरोफेउस की स्मृतकि 4 अक्टूबर को मनाई जाती है

[708] उनकी स्मृतकिा पर्व पवत्रि चर्च द्वारा 11 अप्रैल को मनाया जाता है

[709] फलिाडेल्फयिा – एशयिा माइनर में एक लडियिन शहर, सार्डसि से बहुत दूर नहीं, माउंट टमोल्स के तल पर। इसका नाम इसके संस्थापक, पेरगामोन के राजा अष्टल द्वतिीय फलिाडेल्फस के नाम पर पड़ा। प्राचीन काल में, यह एक समृद्ध, फलता-फूलता शहर था जसिकी बड़ी आबादी थी। आज यह तुर्की के शासन के अधीन एक छोटा सा ईसाई कस्बा है।

[710] संत यूस्टैथयिस का जीवन उनके छोटे समकालीन, सर्बयिा के आर्चबशिप संत डैनयिल द्वतिीय द्वारा लखिा गया था, और यह उनके *वंशवृक्ष* या *राजाओं के वृत्तांत* का हस्सिा है। इसका सर्वश्रेष्ठ संस्करण 1866 में डैनकिचि द्वारा प्रकाशति पुस्तक *लाइव्स ऑफ द कगि एंड द सर्बयिन आर्चबशिप* (पृ. 292–319) में पाया जा सकता है। सेंट डैनयिल के जीवन के लएि, 20 दसिंबर देखें।

[711] बुदमिल क्षेत्र, या 'जुपा', उस स्थान पर स्थति था जहाँ अब सर्बयिाई वासोएवचि कबीला उत्तर-पूर्वी मोंटेनेग्रो में रहता है। आज उसी स्थान पर बुदमिल गाँव स्थति है। प्राचीन काल में, बुदमि्ल के धर्मप्रांत का मुख्यालय सेंट जॉर्ज मठ में था, जो गूसन्जि शहर के उत्तर में, बेराने गाँव में, आंशकि रूप से खंडहर की स्थतिमिें आज भी खड़ा है।

प्रयास कयिा, नयिमति रूप से चर्च जाता था और दव्यि भजन-कीर्तन और पाठ को आनंदपूर्वक सुनता था, जो कुछ भी वह सुनता था उसे याद कर लेता था और उसके अर्थ को समझने का प्रयास करता था। एक बार वह अपने माता-पिता के पास गया और कहा:

'मुझे सीखने की तीव्र इच्छा है; कृपया मुझे लखिति वचन का अध्ययन करने के लिए भेजें।'

ये शब्द सुनकर, उसके माता-पिता प्रसन्न हुए और उन्होंने परमेश्वर का धन्यवाद कयिा, जन्हिोंने अपने पुत्र में ऐसी उत्कृष्ट इच्छा जगाई थी; उन्होंने एक शक्षिक ढूंढा और अपने पुत्र को शास्त्रों की बुद्धि सखिाने के लिए उसके हवाले कर दयिा। पवत्रि आत्मा की कृपा से, उसने जल्द ही इतना कुछ सीख लयिा कि, एक युवा छात्र होते हुए भी, वह कई बुद्धमिान शक्षिकों से अधकि जानकार साबति हुआ। उस युवक ने भोजन, पेय या वस्त्रों की कोई चंति नहीं की; वह मुश्कलि से ही अपने माता-पिता के बारे में भी सोचता था, लेकनि, अपना मन पूरी तरह से दव्यि शक्षिा की ओर लगाकर, उसने अपने हृदय का सारा प्रेम और आशा प्रभु में रख दी। अधकि परपिक्वता प्राप्त करने और अपने ध्येय पर गंभीरता से वचिार करने के बाद, उन्होंने अपने माता-पिता का घर छोड़ने और प्रभु के मार्ग पर चलने का संकल्प लयिा। वे ज़ेट के बशिप के पद पर स्थति, आर्कएन्जेल माइकल के मठ, Zet[712] क्षेत्र में गए। वहाँ, बशिप नेओफटिस ने उन्हें भक्षिु के रूप में दीक्षा दी और उन्होंने अपने मठ के संन्यासी व्रतों का कड़ाई से पालन करते हुए तपस्या का जीवन शुरू कयिा। अपने संयम और पवत्रि जीवन के लिए प्रसद्धि, और उपवास तथा जागरण के माध्यम से स्वयं को थकाते हुए, वह दनि और रात की प्रार्थनाओं के लिए चर्च जाने में कभी चूकते नहीं थे, अपने सेल के प्रार्थना के नयिम का सख्ती से पालन करते थे, और अपना बाकी समय ईश्वर के चंतिन और मानसकि प्रार्थना को समर्पति करते थे। अपने नाम कोई संपत्ति न रखते हुए, उन्होंने अपने मठ के भोजन और वस्त्र भत्ते का एक हस्सिा गरीबों में बांटने के लिए अलग रखने का प्रयास कयिा।

मठ की खामोशी में पूर्ण वनिम्रता के साथ परश्रिम करते हुए, वह जल्द ही, तथापि, प्राचीन संतों का अनुकरण करते हुए, एक महान तपस्वी के रूप में पूरे देश में प्रसद्धि हो गया।

अपने ही मठ के भीतर के संन्यासवाद से संतुष्ट न होकर, यूस्टैथयिस पवत्रि नगर यरूशलेम की यात्रा करने, पवत्रि सेपल्चर और प्रभु के कष्टों के स्थान पर अन्य पवत्रि स्थलों का सम्मान करने की तीव्र इच्छा से भर गए। अपना इरादा कसिी को बताए बनिा, उन्होंने प्रभु यीशु मसीह से भक्तपिूर्वक प्रार्थना की, यह मांग करते हुए कि वे उन्हें पवत्रि नगर की सुरक्षति यात्रा प्रदान करें और उन्हें वह स्थान दखिाने में सक्षम बनाएं जहाँ उन्होंने मानव जाति के उद्धार के लिए अपना रक्त बहाया था और जहाँ उन्होंने महान चमत्कार कए थे। संत की प्रार्थना स्वीकार हो गई। जब वह इस बारे में सोच रहा था कि उसे ईश्वर-भयभीत साथी कहाँ मलि सकते हैं, तभी दो भक्षिु उसके सामने प्रकट हुए, मानो स्वयं प्रभु ने भेजे हों, और उन्होंने उससे कहा कि वे पवत्रि सेपल्चर और मसीह के दुख-क्लेश के पवत्रि स्थलों की पूजा करने के लिए यरूशलेम जा रहे थे। प्रभु ईश्वर का धन्यवाद करने और उनकी तथा महादूत माइकल की सबसे पवत्रि छवयिों की पूजा करने के बाद, वह अपने हृदय में आनंद और प्रसन्नता के साथ अपनी लंबे समय से प्रतीक्षति यात्रा पर नकिल पड़ा।

ईश्वर की सहायता से, उसने यात्रा को आसानी और सुरक्षा से पूरा कयिा और यरूशलेम पहुँचा। वहाँ, उसने पवत्रि सेपल्चर और प्रभु के कष्टों के स्थान पर सभी पवत्रि स्थलों का श्रद्धापूर्वक दर्शन कयिा; आराम से, उसने सभी पवत्रि स्थानों का दौरा कयिा और उनका चंतिन करके आनंदति हुआ। उन्होंने यरूशलेम के आसपास के पूरे ग्रामीण इलाकों का भी दौरा कयिा, जहाँ सम्माननीय और ईश्वर-भयभीत तपस्वी पुरुष रहते थे, और उन्होंने उनके जीवन-शैली और उनके तपस्वी कर्मों का अवलोकन कयिा और उन्हें अपने हृदय में बसा लयिा।

पवत्रि भूमि में काफी समय बताने के बाद, वह अपनी वापसी की यात्रा पर नकिल पड़े, लेकनि सीधे अपने देश के लिए नहीं, बल्कि अथोस के पवत्रि पर्वत के लिए, जहाँ वे मठवासी जीवन का साक्षात्कार करना चाहते थे और तपस्या तथा आत्मा और शरीर की पवत्रिता के बारे में ज्ञानवर्धक बातचीत का आनंद लेना चाहते थे।

पवत्रि पर्वत पर पहुँचने पर, पूजनीय यूस्टैथयिस ने हलिंडर में स्थति 'मोस्ट होली मदर ऑफ गॉड' के सर्बयिाई मठ में नविास कयिा, जसिकी स्थापना संत समियिन—जो दुनयिा में महान सर्बयिाई जुपान स्टीफन नेमन्जा के नाम से जाने

---

[712] ज़ेटा का क्षेत्र, या प्राचीन काल में डायोक्लयिा, अब मोंटेनेग्रो है। सेंट माइकल का मठ कोटर की खाड़ी के पूर्वी तट पर, कोटर शहर के दक्षणि में बहुत दूर नहीं स्थति था।

जाते थे—और उनके पुत्र सावा, जो सर्बिया के पहले आर्चबिशप थे, ने की थी। यहाँ उन्होंने बड़ी लगन से साधु जीवन के तप को अपनाया, उन्हें सौंपी गई हर जिम्मेदारी को विनम्रता और आज्ञाकारिता से पूरा किया, सभी चर्च सेवाओं में कभी कोई कसर न छोड़ते हुए, और एकांत में रात के समय प्रार्थना और ईश्वर के चिंतन में खुद को समर्पित किया। इस प्रकार उन्होंने कई साल बिताए और माउंट अथोस के सभी तपस्वियों के बीच प्रसिद्ध हो गए। कई वरिष्ठ साधु, और केवल युवा भिक्षु ही नहीं, अक्सर यूस्टैथियस के पास आते और उससे प्रेम और आध्यात्मिक सांत्वना से भरी, आत्मा-मोक्ष संबंधी बातें करते थे।

ऐसे तपस्वी जीवन के कई वर्षों के बाद, संपूर्ण पवित्र पर्वत की परिषद की सर्वसम्मत सलाह और निर्णय से, यूस्टैथियस को हिलान्दर मठ के मठाधीश के पद पर पदोन्नत किया गया। मठाधीश बनने के बाद, यूस्टैथियस ने अपने तपस्वी प्रयासों में और भी अधिक लगन से स्वयं को समर्पित कर दिया, सभी प्रकार के श्रम और सद्गुण में एक आदर्श स्थापित करते हुए, और वचन तथा कर्म से शिक्षा देते हुए। इतनी प्रमुख स्थिति प्राप्त करने और एक सदाचारी जीवन जीने के बाद, पूजनीय यूस्टैथियस ने न केवल माउंट अथोस के तपस्वियों के बीच, बल्कि आम जनता के बीच भी, न केवल आम लोगों के बीच बल्कि कुलीनों और राजाओं के बीच भी, महान प्रसिद्धि और सार्वभौमिक स्नेह अर्जित किया। हर कोई यूस्टैथियस का सम्मान करने और उन पर उदार उपहार लुटाने के लिए तत्पर था। फिर भी, उन्होंने ये उपहार अपने लिए नहीं रखे, बल्कि उन्हें गरीबों, विधवाओं, अनाथों और भोजन व आश्रय से वंचित लोगों में उदारतापूर्वक बाँट दिया।

यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि, इतने बड़े पुण्य और गुणों के कारण, पूजनीय यूस्टैथियस को ज़ेट के डायोसीस का बिशप चुना और अभिषिक्त किया गया, जहाँ उन्होंने अपना संन्यासी जीवन शुरू किया था। धर्मगुरु बनने के बाद, आध्यात्मिक जीवन और चर्च के मामलों में अनुभवी, यूस्टैथियस ने अपने पास्टोरल कर्तव्यों को बड़ी सफलता के साथ निभाया और सबसे प्रतिष्ठित सर्बियाई धर्मगुरु बन गए; और जब सर्बियाई आर्चबिशप इओनिकियोस का निधन हो गया, तो धर्मनिष्ठ सर्बियाई राजा स्टीफन उरोश मिलुटिन ने बिशपों, मठाधीशों और बोयारों की एक परिषद बुलाई, और इस परिषद ने सर्वसम्मति से ज़ेता के इस धर्मनिष्ठ बिशप यूस्टैथियस को सेंट सावा के सर्बियाई आर्चबिशप पद के लिए चुना। आदरणीय यूस्टैथियस ने अपनी विनम्रता में, इस तरह के उच्च पद को अस्वीकार करने की कोशिश की, जिसमें बड़ी जिम्मेदारी शामिल थी, लेकिन उनकी बातों पर ध्यान नहीं दिया गया, और उन्हें जल्द ही पूरे परिषद की उपस्थिति में औपचारिक रूप से आर्चबिशप के रूप में पद की शपथ दिलाई गई। संत यूस्टेथियस ने ईश्वर की इच्छा के आगे आत्मसमर्पण कर दिया और प्रभु ईश्वर की महान दया के लिए उत्कट प्रार्थना में धन्यवाद दिया, जिन्हें वह स्वयं के लिए अयोग्य समझते थे।

अपने स्वयं के आत्मा के उद्धार के लिए अथक प्रयास करते हुए, संत यूस्टाथियस ने अपने सुपुर्द की गई सर्बियाई चर्च की भलाई के लिए अपना सम्पूर्ण जीवन समर्पित कर दिया। उस समय सर्बियाई आर्चबिशप की धर्मपीठ के पास पहले से ही बहुत संपत्ति थी, और संत यूस्टाथियस ने यह सुनिश्चित करने के लिए हर संभव प्रयास किया कि उनके धर्मप्रांत की कोई भी चर्च बुनियादी जरूरतों की कमी से न जूझे, और उन्होंने गरीब चर्चों की जरूरतों को पूरा करने के लिए अपनी धर्मपीठ के भंडार से उदारतापूर्वक धन आवंटित किया।

संत यूस्टेथियस ने केवल कुछ वर्षों तक सर्बियाई चर्च का शासन किया: उच्च पद संभालने के सात साल बाद, वह बीमार पड़ गए और उन्होंने अपने अंत को निकट आते देखा। मृत्युशय्या पर रहते हुए, उन्होंने कोई शिकायत नहीं की, बल्कि इस सांसारिक दुनिया से स्वर्गीय निवासों के लिए अपने प्रस्थान का आनंदपूर्वक इंतजार किया। ज़िचे में अपने आर्चबिशपल आवास[713] में रहते हुए, उन्होंने गंभीरता से तैयारी की और प्रभु से शांतिपूर्ण निधन की प्रार्थना की। पूरे सर्बियाई चर्च काउंसिल ने उस बीमार व्यक्ति के बिस्तर के चारों ओर इकट्ठा हो गया: पड़ोसी बिशप, मठों के मठाधीश और भिक्षु, और संपूर्ण पुरोहित वर्ग; जब उन्होंने अपने शिक्षक और महा-परोहित के निकट आते अंत को देखा तो सभी रो पड़े। लेकिन वह बीमार व्यक्ति, अपने बिस्तर से उठकर, रो रहे लोगों को संबोधित करने लगा:

'ऐसे दुःख को त्यागो: *"मेरे साथ प्रभु की स्तुति करो, और हम मिलकर उसके नाम का गौरव करें"* (भजन संहिता 33:4)।'

---

[713] ज़ीचा मठ (ज़ीचा, ज़िदचा), जो आज भी मौजूद है, नदी इब्रा के दाहिने किनारे पर स्थित है, ठीक उस स्थान के पास जहाँ यह सर्बियाई मोराव नदी में मिलती है, जो आज के सर्बियाई राज्य की सीमाओं के भीतर है।

उपस्थिति सभी लोग रोना छोड़कर उसकी आत्मा की विदाई के लिए प्रार्थना और भजन-कीर्तन करने लगे। फिर संत यूस्टाथियस ने पवित्र रहस्य ग्रहण किए और, थोड़ी देर विश्राम करने के बाद, अपने आसपास खड़े लोगों से कहा:

'आओ, मेरे प्रिय, हम अंतिम चुम्बन करें, क्योंकि मैं अब तुमसे विदा हो रहा हूँ।'

इस विदाई से संत यूस्टाथियस के आध्यात्मिक बच्चों के बीच बहुत रोना-धोना मच गया। अंत में, उन्होंने स्वर्ग की ओर अपने हाथ उठाकर कहा:

'हे देवों के देव और प्रभुओं के प्रभु, जो हर जीवन के अंत को जानते हैं, मैं अपनी आत्मा को आपके हाथों में सौंपता हूँ!'

इस प्रकार संत यूस्टाथियस प्रभु में आनंदित होकर, वैभव और महिमा में परलोक सिधार गए।

पुरोहित वर्ग, सामान्य लोगों के साथ, ज़िद में उद्धारकर्ता के चर्च में शव-वाहक के चारों ओर इकट्ठा हुआ और एक गंभीर अंतिम संस्कार सेवा का आयोजन किया, तथा शरीर को एक संगमरमर के सारकोफ़ैगस में रखा, जिसे यूस्टैथियस ने स्वयं पहले तैयार किया था।

दफ़नाने के तुरंत बाद, उपरोक्त उद्धारकर्ता के चर्च के भीतर, विंगत की कफ़न पर चिह्न और चमत्कार होने लगे। कभी-कभी, लोगों को सारकोफ़ैगस के पास जलती हुई मोमबत्तियाँ दिखाई देती थीं; तो कभी, रात में, वे ताबूत के पास स्पष्ट रूप से आवाज़ें और बड़बड़ाहटें सुन सकते थे, मानो वहाँ कई हज़ार लोग इकट्ठा हो गए हों। एक व्यक्ति, जो उद्धारकर्ता के चर्च में सेवा करता था, नाक की बीमारी से पीड़ित था। उसने कई उपचार आज़माए थे और इलाज पर बहुत सारा पैसा खर्च किया था, लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ। पार्थिव उपचारों में आशा खोकर, उस बीमार व्यक्ति ने उद्धारकर्ता चर्च में प्रभु ईश्वर और उनकी परम पवित्र माता की ओर उत्कट प्रार्थना के साथ रुख किया, जो प्रत्येक दिव्य सेवा के दौरान आदरणीय यूस्टैथियस के अवशेष-पात्र के पास अधिक रूप से खड़े रहते थे। एक रात, उस बीमार व्यक्ति ने सपने में देखा कि वह, जैसा कि वास्तविक जीवन में उसकी आदत थी, यूस्टैथियस के अवशेष-कोष्ठक के पास खड़ा था; एक बिशप के वस्त्रों में एक भव्य व्यक्ति उसके सामने प्रकट हुआ और पूछा कि उसे क्या चाहिए। उस बीमार व्यक्ति ने सब कुछ क्रम से बता दिया। तब वह व्यक्ति जो प्रकट हुआ था, बोला:

'प्रभु ने मुझे तुम्हें चंगा करने के लिए भेजा है, परन्तु अब फिर कभी पाप न करना, कहीं ऐसा न हो कि तुम्हें और भी बुरा हो।'

यह कहकर, उसने उस बीमार व्यक्ति पर क्रॉस का चिह्न बनाया और उसके घाव को छुआ। बीमार व्यक्ति ने पूछा:

'आप कौन हैं, हे पवित्र बिशप?'

आगंतुक ने उत्तर दिया:

'मैं मसीह का सेवक, यूस्टैथियस नामक एक भिक्षु हूँ, जो इसी स्थान पर पड़ा हुआ है।'

वह बीमार व्यक्ति जाग उठा और भय से भर गया; कांपते हुए, वह तत्कालीन आर्चबिशप जेम्स के पास दौड़ा और उन्हें तथा पूरी परिषद को इस चमत्कारी दृष्टि के बारे में बताया। वह बीमार व्यक्ति तुरंत और पूरी तरह से ठीक हो गया, और सभी ने प्रभु और उनके संत यूस्टैथियस की स्तुति की। यूस्टैथियस की कब्र पर चमत्कार बढ़ने लगे। एक अवसर पर, उनके संगमरमर के ताबूत पर अद्भुत सुंदरता के तीन फूल उगे हुए पाए गए, जबकि वह केवल सूखी चट्टान थी - उस पर न तो मिट्टी थी और न ही कोई नमी थी। इस चमत्कारिक संकेत से सभी को यह विश्वास हो गया कि ईश्वर अपने संत को महिमामय कर रहे थे और उनके शरीर को क्षय से बचा रहे थे। उसी क्षण, उस मठ के एक भिक्षु, एक्लेसियार्क, को एक स्वप्न में एक भयानक युवक दिखाई दिया, जिसके हाथों में एक ज्वलंत हथियार था, और उसने क्रोध में उससे कहा:

'ऐसे संकेत देखकर तुम उदासीन क्यों बने रहते हो? या क्या तुम यह नहीं समझते कि विंगत की देह क्षय के लिए नहीं बनी है, बल्कि उसे पृथ्वी से हटा दिया जाना चाहिए?'

इन सभी चमत्कारों की सूचना धर्मपरायण राजा उरोश मिलुटिन को दी गई, जिन्होंने आर्चबिशप से परामर्श करने के बाद, अवशेष-पेटिका को विधिवत खोलने का आदेश दिया; इसके भीतर, संत यूस्टैथियस का शरीर अक्षुण्ण पाया गया और उसे एक नई अवशेष-पेटिका में खुले तौर पर रखा गया। कुछ समय बाद, दुश्मन के आक्रमणों से उत्पन्न खतरे को

देखते हुए, आर्चबशिप जेम्स के प्रयासों से, संत यूस्टैथियस के अवशेषों को ज़िचा से इपेक (या पेक)[714] में स्थानांतरित कर दिया गया और संत पतरस और पॉल द एपोस्टल्स के स्थानीय आर्चबशिपल कैथेड्रल में रख दिया गया।

पवित्र पूजनीय शहीद जोसमिा और शहीद अथेनासियस की स्मृति

4 जनवरी को स्मरण किया जाता है

पवित्र शहीद जोसमिा सलिसियिा[715] के मूल निवासी थे और उन्होंने रेगिस्तान में एक तपस्वी के रूप में जीवन व्यतीत किया। अधर्मी डायोक्लेटियिन[716] के आदेश पर, उन्हें गरिफ्तार कर लिया गया और मसीह में उनके विश्वास के लिए यातनाएँ दी गईं। उसके कान लाल-गरम लोहे से जला दिए गए; उसे गंदगी से भरे एक बड़े बर्तन में फेंक दिया गया; उसे पैरों से उल्टा लटका दिया गया; और उसे विभिन्न प्रकार की यातनाएँ दी गईं। लेकिन चमत्कारिक रूप से, संत मृत्यु से बच गए। जब उसे यातनाएँ दी जा रही थीं, तब रेगिस्तान से एक शेर निकिला और उसने मानव आवाज़ में बात की। इस चमत्कार को देखकर, सभी भयभीत हो गए, और ज़ोसमिा को रिहा कर दिया गया। टिप्पणी[717] अथेनासियस, उसे इतनी क्रूर यातनाओं के बाद भी अछूता देखकर, मसीह में विश्वास करने लगा और बपतिस्मा ग्रहण किया। ज़ोसमिा अथेनासियस के साथ रेगिस्तान में चला गया, और वहाँ, अपनी धार्मिक कष्टों के बीच, एक पहाड़ की दरार में, वे दोनों शांतिपूर्वक अपना प्राण प्रभु को सौंप दिए।

18 जनवरी

5 जनवरी (पुराना संस्करण)

संत थियोपेम्प्टस और थियोना की शहादत

5 जनवरी को स्मरणोत्सव

ईसाइयों के उत्पीड़न के पहले वर्ष में, जिसे उन्होंने भड़काया था, सम्राट डायोक्लेटियिन एक बार यात्रा के दौरान निकोमेडिया शहर पहुँचे और वहाँ कई मूर्तिपूजक मूर्तियाँ स्थापित करके उनकी पूजा की।

कुछ दिनों बाद, निकोमेडिया के बिशिप थियोपेम्प्टस (जो डायोक्लेटियिन के ईसाइयों पर अत्याचार के तहत सबसे पहले पीड़ित हुए) को शहर के पास पकड़ लिया गया; जब उन्हें मुकदमे के लिए सम्राट के सामने लाया गया, तो उन्होंने कहा:

'ये देवता—चांदी और सोने, लकड़ी और पत्थर के—जिनकी तुम पूजा करते हो, वे देवता हैं ही नहीं, क्योंकि वे न तो सांस ले सकते हैं, न बोल सकते हैं, और न ही कोई अच्छा या बुरा काम कर सकते हैं; जबकि स्वर्ग का सर्वशक्तिमान ईश्वर ने स्वर्ग, पृथ्वी और समुद्र, और उनमें जो कुछ भी है, उसे बनाया है।'

जब संत ने ईसाई धर्म के बारे में ये और भी कई शब्द कहे, तो राजा ने क्रोध में उनसे कहा:

'मैंने तुम्हें बहस करने के लिए नहीं, बल्कि इसलिए बुलाया है कि तुम बिना किसी देरी के अपोलो देवता को बलिदान चढ़ाओ।'

संत थियोपेम्प्टस ने इन शब्दों में उत्तर दिया:

---

[714] इपेक, पेस्ट, पेć – सर्बियाई आर्चबशिपों का दूसरा आसन; यह शहर और इसका मठ आज भी मौजूद हैं और पुराने सर्बिया (तुर्की का हिस्सा) में बिस्ट्रिका नदी पर स्थित हैं, जो अपने ऊपरी प्रवाह में सफेद ड्रिन नदी में मिलती है।

[715] सिलिसिया – भूमध्य सागर पर एशिया माइनर का एक दक्षिण-पूर्वी क्षेत्र।

[716] डायोक्लेटियिन – एक रोमन सम्राट जिसने 284 से 305 तक शासन किया।

[717] कमेंटारियस – कैदियों का संरक्षक जो उनका रिकॉर्ड रखता था।

'मैं ऐसे देवताओं को कभी बलदिान नहीं चढ़ाऊँगा, और न ही मैं तुम्हारे द्वारा दी जाने वाली यातनाओं से कभी डरूँगा, क्योंकि लिखा है: *"उनसे मत डरो जो शरीर को तो मार सकते हैं पर आत्मा को नहीं मार सकते"* (मत्ती 10:28)। जहाँ तक तुम्हारा सवाल है, मेरे शरीर पर तुम्हारा अधिकार है, जो चाहो कर लो!'

तब राजा ने भट्टी को गर्म करने का आदेश दिया ताकि बाद में पवित्र बिशप को उसमें फेंका जा सके, और सैनिकों ने सुबह से दोपहर तक भट्टी को यथासंभव गर्म किया। उस समय, पवित्र बिशप ने उनसे कहा:

'थोड़ी देर रुको, और मैं तुम्हें मेरे प्रभु परमेश्वर की शक्ति दिखाऊँगा, जिसके पवित्र नाम पर मेरे लिए यह भट्टी गर्म की जा रही है।'

यह कहकर, संत ने स्वयं को जलती हुई भट्टी में फेंक दिया और उसके बीच में बैठ गए, जबकि सैनिकों ने यह मानकर कि वह तुरंत जलकर मर गया है, चले गए। लेकिन आधी रात को, वह पवित्र व्यक्ति भट्टी से बाहर निकला और राजा के शयनकक्ष में प्रवेश किया, जिसके दरवाजे अपने आप उसके सामने खुल गए; और, राजा को जगाकर, उसने उससे कहा:

'मैं थियोपेम्प्टस हूँ, यीशु मसीह का बिशप और सेवक: मैं मरा नहीं हूँ, बल्कि मैं जीवित हूँ, भले ही तुमने मेरी मृत्यु का आदेश दिया था।'

यह कहकर, वह एक बार फिर भट्टी में प्रवेश कर गया। संत को देखकर और उनके शब्द सुनकर, राजा भय से भर गया और मानो घोर भय से लकवाग्रस्त हो गया। अगले सुबह, अपने सैनिकों को बुलाकर, उसने उनसे कहा:

'क्या तुमने उस ईसाई को भस्म करने वाली भट्टी में डाला, जिसे मैंने तुम्हें डालने का आदेश दिया था?'

सैनिकों ने उत्तर दिया:

'हमने वैसा ही किया जैसा आपने आज्ञा दी थी, महाराज – हमने उसे आग में डाल दिया, और वह कल आग में जलकर मर गया।'

तब डियोक्लेटियन उठा, अपने सैनिकों के साथ भट्टी के पास गया, और वहाँ उसने पवित्र बिशप को जलती हुई भट्टी के बीच ईश्वर की स्तुति और भजन करते हुए सुना। यह देखकर सम्राट अत्यंत चकित हो गया, और जब संत भट्टी से बिना किसी चोट के बाहर निकले, तो सम्राट ने अपने आसपास के लोगों से कहा:

'देखो कि ईसाई जादू-टोना कितना शक्तिशाली है; मैंने सुना है कि ईसाई अपने जादुई कर्म किसी यीशु के नाम पर करते हैं।'

इसके बाद, राजा ने तुरंत आदेश दिया कि एक कुत्ता लाया जाए और भट्टी में फेंक दिया जाए, यह देखने के लिए कि क्या कुत्ता भी बिशप की तरह चमत्कारिक रूप से सुरक्षित रहेगा; लेकिन कुत्ता तुरंत ही भस्म हो गया। यह देखकर, राजा ने परमेश्वर के पुरुष से कहा:

'मैं तुम्हें एक दुष्ट व्यक्ति के रूप में सबसे कठोर यातनाओं से गुज़रने पर मजबूर करूँगा, क्योंकि मुझे यकीन है कि तुम एक धोखेबाज़ और जादूगर हो।'

उसने आदेश दिया कि उसे एक तंग कालकोठरी में बंद कर दिया जाए और जब तक राजा उसे मुकदमे के लिए पेश करना चाहे, तब तक उसे न रोटी दी जाए और न ही पानी; और ईश्वर का पुरुष बिना भोजन या पानी के, ईश्वर द्वारा जीवित रखे जाने के कारण, उस कालकोठरी में बाईस दिन तक रहा। जब वह समय समाप्त हो गया, तो राजा ने अपने सैनिकों से कहा:

'आओ चलकर देखें कि क्या वह ईसाई अभी भी ज़िंदा है या मर चुका है।'

जब उन्होंने उसे जीवित और प्रसन्न पाया, मानो उसने अभी-अभी शाही दावत का आनंद लिया हो, तो डायोक्लेटियन क्रोध से भर गया; और, धन्य बिशप को कालकोठरी से बाहर ले आकर, उसने अपने ही कपड़े फाड़े, तालियाँ बजाईं और कहा:

'देखो, ईसाई जादू कितनी शक्तिशाली है!'

लेकिन धन्य बिशप ने उत्तर दिया:

'दुष्ट, तू कब तक अंधा बना रहेगा, और कब तक उस सच्चे ईश्वर को स्वीकार करने से इनकार करेगा जिस पर मैं विश्वास करता हूँ? क्योंकि उसी ने मुझे तुझ पर विजय पाने, मेरे लिए रची गई सभी यातनाओं से ऊपर उठने और उन्हें तुच्छ समझने की शक्ति और धैर्य दिया है।'

ये शब्द सुनते ही राजा ने आदेश दिया कि संत की दाहिनी आँख निकालकर शहीद के दाहिने हाथ में रख दी जाए, और फिर उसे जेल ले जाया जाए। जब संत ने वहाँ प्रार्थना करना शुरू किया, तो कालकोठरी में उनके सामने एक बड़ी रोशनी चमकी, और तुरंत उनकी आँख की पुतली खुल गई और दूसरी की तरह ही पूरी और स्वस्थ हो गई। यह जानकर और संत को देखकर, राजा और भी अधिक क्रोधित हो गया और कहा:

'मैं रोमन अपोलो[718] की कसम खाता हूँ कि मैं तब तक चैन से नहीं बैठूँगा जब तक कि मैं एक और अधिक शक्तिशाली जादूगर नहीं ढूंढ लेता जो तुम्हारी सभी चालाकियों और जादुई करतबों को नाकाम कर सके!'

यह कहकर, राजा ने उसे वापस जेल भेजने का आदेश दिया, जबकि उसने स्वयं अपने शासन के सभी क्षेत्रों में फरमान भेजे, जिसमें कहा गया:

'यदि कोई जादूगर,' राजा ने लिखा, 'ईसाई जादू-टोने को समाप्त कर सकता है, तो उसे जल्द से जल्द आगे आना चाहिए; उसे महान उपहार और उच्च सम्मान प्राप्त होंगे।'

और इस प्रकार थियोन नामक एक जादूगर आया, जिसने डायोक्लेटियन के समक्ष उपस्थित होकर कहा:

'मैं आपकी आज्ञा पर यथाशीघ्र ईसाई जादू को नष्ट करने आया हूँ, और मैं जो वादा करता हूँ उसे निश्चित रूप से पूरा करूँगा।'

यह सुनकर, सम्राट प्रसन्न हुआ और कहा:

'मेरी कालकोठरी में एक ईसाई राजकुमार है। जब तुम उसकी जादुई शक्ति को नष्ट कर दोगे, तो हम तुम्हें बड़े सम्मान से सम्मानित करेंगे।'

इस पर थियोना ने उत्तर दिया:

'इस ईसाई को मेरे सामने कोई चमत्कार करने दो, और मैं तुम्हारी उपस्थिति में उसके सभी कार्यों को नष्ट कर दूँगा।'

राजा इस बात से प्रसन्न हुआ और थियोना से कहा:

'हालाँकि, मैं पहले आपसे कोई चमत्कार देखना चाहूँगा।'

तब थियोना ने सबसे ज़ोरदार सांड को उसके सामने लाने के लिए कहा। जब सांड को लाया गया, तो थियोना ने उसके कान में कुछ शब्द फुसफुसाए, और उसी पल सांड दो हिस्सों में टूट गया, जो अलग-अलग पड़े थे।

तब चकित राजा ने कहा:

'वास्तव में, तुम ईसाई जादू तोड़ सकती हो!'

'महाराज, थोड़ा और इंतज़ार करें,' थियोना ने जवाब दिया, 'और आप इस चमत्कार की पूरी महत्ता को समझ जाएँगे!'

यह कहकर, उसने एक तराजू मंगवाया और उस बैल के दोनों हिस्सों को उस पर रखवा दिया, जो वज़न में बराबर निकले। तुरंत बाद, डायोक्लेटियन ने पवित्र बिशप थियोपेंप्टस को अपने सामने लाने का आदेश दिया और उसे जादूगर के सामने खड़ा करके उससे कहा:

'मैं जानता हूँ कि तुम एक धोखेबाज़ और जादूगर हो! यह जादूगर मिस्र से आया है, और अब मैं यह पता लगाना चाहता हूँ कि तुम दोनों में से जादू-टोने में कौन अधिक शक्तिशाली है।'

तब थियोन ने बिशप से कहा:

'मैं तुम्हारे ऊपर अपनी जादुई शक्ति के दो करतब दिखाऊँगा, और अगर वे तुम्हें कोई नुकसान नहीं पहुँचाते हैं, तो मैं भी तुम्हारे ईश्वर पर विश्वास करूँगा।'

उसने आटे से दो गोल चपटी रोटी बनाकर बिशप को खाने के लिए दीं। बिशप ने उन्हें लिया और खा लिया, और वे उसे शहद की तरह मीठी लगीं और उससे उसे कोई हानि नहीं हुई।

यह देखकर थियोन चकित हो गया और बोला:

'मैं तुम्हारे ऊपर अपनी कला का एक और अद्भुत करतब आज़माऊँगी, और अगर इससे तुम्हें कोई नुकसान नहीं हुआ, तो मैं भी तुम्हारे ईश्वर पर विश्वास कर लूँगी।'

एक कटोरी पानी लेकर, उसने उसमें एक जहरीली जड़ी-बूटी डाली और मदद के लिए सबसे शक्तिशाली राक्षसों को बुलाया, ताकि ज़हर का असर और भी ज़्यादा हो सके; फिर उसने वह पानी संत को पीने के लिए दे दिया।

---

[718] एक ग्रीको-रोमन देवता जिन्हें बौद्धिक प्रबोधन के संरक्षक और सूर्य के देवता के रूप में पूजा जाता था।

जब संत ने बिना किसी हानि के उसे पी लिया, तो थियोन तुरंत पवित्र बिशप के पैरों पर गिर पड़ा और कहा:

'यीशु के सिवा कोई दूसरा ईश्वर नहीं है, जिसमें कोई अपना विश्वास रख सके!'

और फिर उसने राजा से कहा:

'मैं एक ईसाई हूँ और मैं सूली पर चढ़ाए गए मसीह की आराधना करता हूँ!'

यह सुनकर राजा बहुत हैरान हो गया और चिल्लाया:

'ईसाई जादूगरों के चमत्कार महान हैं!'

और उसने उन दोनों को जेल भेजने का आदेश दिया। वहाँ, पवित्र बिशप ने थियोन को विश्वास में शिक्षा देकर उसका नाम सिनेसियस रखा (जिसका अर्थ है 'ज्ञान से परिपूर्ण', क्योंकि उसने शुद्ध हृदय से मसीह को परमेश्वर और प्रभु के रूप में समझा और जाना था) और उसका बपतिस्मा दिया।

अगली सुबह, राजा ने पवित्र बिशप को अपने सामने लाने का आदेश दिया और, उनके सामने सिर झुकाकर, कहा:

'अभिवादन, जादूगरों के गुरु।'

और फिर उसने उसे अधर्मी हेलेनिक धर्म अपनाने के लिए मनाना शुरू कर दिया। लेकिन जब संत ने देवताओं को बलिदान चढ़ाने से इनकार कर दिया, तो राजा ने आदेश दिया कि उसे पेट के बल जमीन पर लिटा दिया जाए और उसके हाथ और पैरों को चार पेड़ों से बाँध दिया जाए; फिर उसने एक पत्थर के स्तंभ का एक काफी बड़ा टुकड़ा—जिसे आठ आदमी मुश्किल से उठा सकते थे—लाने और संत के पेट पर रखने का आदेश दिया। लेकिन पवित्र बिशप ने ईश्वर से प्रार्थना की – और तुरंत ही वह पत्थर जो उनके पेट पर रखा गया था, अपने आप उठ गया और लगभग पंद्रह कोहनी की दूरी पर उनसे दूर जा गिरा। तब डायोक्लेटियन ने संत को पैरों से लटकाने का आदेश दिया , सिर नीचे करके, उसके गले में एक भारी पत्थर बाँधकर, और उसे सुबह से दिन के तीसरे घंटे तक उसी अवस्था में लटका रहने दिया। तब उसने उस रस्सी को, जिससे संत को पैरों से लटकाया गया था, अचानक काट देने का आदेश दिया; उसने सोचा कि गिरते ही वह भारी पत्थर के नीचे दब जाएगा, उसके टुकड़े-टुकड़े हो जाएंगे, और इस प्रकार उसकी एक शर्मनाक मौत होगी। लेकिन जब ऐसा हुआ, तो पवित्र बिशप, ईश्वर की शक्ति से, अपने पैरों पर सीधा खड़ा हो गया। इसके बाद, यातना देने वाले ने उस पर मौत की सज़ा सुनाई।

यह सुनकर संत ने आनंद से ऊँची आवाज़ में पुकारा:

'धन्य है मेरे प्रभु यीशु मसीह के पिता परमेश्वर, क्योंकि उन्होंने मुझे इस दिन तक पहुँचने के योग्य समझा, जिसका मैं हमेशा से इंतजार करता था। इसलिए, हे प्रभु, मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ, मुझे हमेशा और इसी घड़ी याद कीजिए!'

यह कहकर, वे घुटने टेककर बैठ गए और अपना सिर कटवाकर, परम पवित्र त्रिमूर्ति की गवाही देते हुए, शांतिपूर्वक निधन कर गए।

तब राजा ने जादूगर थियोन, जो मसीह में विश्वास करने लगा था, को अपने सामने लाने का आदेश दिया; और जब वह चापलूसी या धमकियों से उसे मूर्तियों की बलि चढ़ाने के लिए मना नहीं सका, तो उसने उसे एक गहरे गड्ढे में फेंककर मिट्टी में दफ़नाने का आदेश दिया। क्रूर घोड़ों को भी लाया गया, जिन्होंने उस संत को कुएँ में फेंक दिया था, उस पर डाली गई मिट्टी को रौंद डाला। इस प्रकार संत थियोन, मिट्टी से ढके और घोड़ों के खुरों तले लंबे समय तक रौंदे जाने के बाद, प्रभु के पास चले गए[719] ।

पवित्र शहीदों, बिशप थियोपेम्प्टस और थियोनास (जिन्हें सिनेसियस के नाम से भी जाना जाता है), ने सम्राट डायोक्लेटियन के शासनकाल में निकोमेडिया में अपना शहादत का कार्य किया, और सर्वोच्च राजा, हमारे प्रभु यीशु मसीह के अधिकार में बने रहे, जिन्हें पिता और पवित्र आत्मा के साथ, सदा और सदा के लिए महिमा हो। आमीन।

आदरणीय सिक्लेटिका की स्मृति

5 जनवरी को स्मरण

[719] उनकी मृत्यु 303 में हुई।

आदरणीय सक्लिेटकिा का जन्म मस्रि के अलेक्जेंड्रयिा शहर में हुआ था, जहाँ उनके माता-पतिा—जो कुलीन वंश के, अपनी धार्मकिता और महान धन के लिए प्रसद्धि थे—मैसेडोनयिा से आए थे[720] । जब वह ववािह योग्य आयु में पहुँचीं, तो कई कुलीन और धनी युवकों ने, उनके चेहरे की असाधारण सुंदरता और उनकी सर्वत्र स्वीकृत सद्गुण से मोहति होकर, उनसे ववािह करने की चाहत जताई। लेकनि वह ववािह नहीं करना चाहती थीं, क्योंकि वह अपने बचपन से ही अपने स्वर्गीय वधू-वर, मसीह ईश्वर के प्रेम में जल रही थीं। इसीलिए वह बाहरी आभूषणों की नहीं, बल्कि आंतरकि सुंदरता की परवाह करती थी, और उपवास, ब्रह्मचर्य तथा मन की पवत्रिता के द्वारा अपनी आत्मा को शुद्ध करती थी, ताकि वह मसीह की दृष्टि में प्रयि हो सके। अपना सम्पूर्ण मन ईश्वर की ओर लगाकर, उसने अदृश्य शत्रु, शैतान पर वजिय प्राप्त की, जो लोगों को पाप करने के लिए उकसाता है। अपने माता-पतिा की मृत्यु के बाद, उन्होंने अपनी सारी संपत्ति गरीबों और बेसहारों में बाँट दी; संसार का त्याग कर, उन्होंने ईश्वर के लिए स्वयं को पूर्ण गरीबी में डाल लयिा, अपनी अंधी बहन को अपने साथ ले लयिा, और एक रश्तिेदार की कब्र में बस गईं। वह साधु जीवन को इतना महान मानती थीं कि वह यह भी नहीं जानती थीं कि ईश्वर की इस दया के लिए धन्यवाद कैसे करें। अपने तपस्या जीवन के शुरुआती वर्षों में, उन्होंने कई लोगों को पीछे छोड़ दयिा, फरि भी उन्होंने अपने कारनामों को छपिाए रखा। न केवल वह बहुत कम रोटी खाती थीं और केवल थोड़ा सा पानी पीती थीं, बल्कि उनकी रोटी चोकर की बनी होती थी। जब भी दुश्मन के हमले उस पर होते, तो वह अपना उपवास और कड़ा कर देती थी। उसके कार्यों की ख्याति से कई महलिाएँ उसकी ओर आकर्षति हुईं, जो उसका मार्गदर्शन चाहती थीं। लंबे समय तक वह केवल मौन से ही उनकी प्रार्थनाओं का जवाब देती रहीं, लेकनि उनकी लगातार वनितयिों ने उसे उन कई तपस्वी महलिाओं को नर्दिेश देने के लिए मजबूर कर दयिा जो उसके चारों ओर इकट्ठी हो गई थीं और एक समुदाय बना चुकी थीं। अपने जीवन के अंत के करीब, उन्हें प्रलोभक के हाथों उसी प्रकार कष्ट सहना पड़ा जैसे कभी धर्मी अय्यूब ने सहा था, क्योंकि वे गंभीर बीमारयिों से पीड़ति थीं, और उनका पूरा शरीर पपड़यिों से ढका हुआ था, जो घावों और कीड़ों से क्षत-वक्षित और दुबला-पतला हो गया था। इस प्रकार उन्होंने तीन साल और छह महीने तक कष्ट सहे, कसिी डॉक्टर को अपना इलाज करने नहीं दयिा और अपनी आशा केवल ईश्वर में रखी। जब इस जीवन से उनके प्रस्थान का समय आया, तो उन्होंने एक दव्यि दर्शन में पवत्रि स्वर्गदूतों और सबसे तेजस्वी कुंवारी कन्याओं के चेहरों को देखा, जो उन्हें अपने पास बुला रहे थे, और उन्होंने स्वर्गीय नविास स्थानों को देखा। इस दर्शन के बाद, उसने ननयिों को संबोधति करते हुए, इस शरीर से अपने प्रस्थान के दनि और समय की भवष्यिवाणी की। यह तीन दनि बाद होने वाला था। जैसा उन्होंने कहा था, वैसा ही हुआ: क्योंकि तीन दनि बाद, उसी घड़ी पर जसिे उन्होंने नर्धिारति कयिा था, वह अपने शरीर से मुक्त हो गईं, जो कई बीमारयिों और गंभीर घावों से पीड़ति था, और एक शहीद के रूप में, वे प्रभु के पास दर्द से मुक्त जीवन में चली गईं, जैसा कि संत स्वर्ग में आनंद लेते हैं[721] । वह पृथ्वी पर लगभग अस्सी वर्ष तक जीवति रहीं, अनेक परीक्षाओं को सहन कयिा और कई वीरतापूर्ण कार्य कए; अब वह शाश्वत स्वर्गीय नविासों में नविास करती हैं।

पूजनीय अपोलोनारयिा का जीवन

5 जनवरी को स्मरण कयिा जाता है

[722]ग्रीक राजा आर्कैडयिस[723] की मृत्यु के बाद, उनका पुत्र थयिोडोसयिस[724] केवल आठ वर्ष का एक छोटा लड़का था और वह राज्य पर शासन नहीं कर सकता था; इसलिए आर्काडयिस के भाई, रोमन सम्राट होनोरयिस ने, युवा राजा की संरक्षकता और पूरे ग्रीक साम्राज्य के प्रशासन का कार्य सबसे महत्वपूर्ण गणमान्य व्यक्तियिों में से एक,

---

[720] मैसडिोनयिा – बाल्कन प्रायद्वीप के दक्षणि में, ग्रीस के उत्तर में स्थति रोमन साम्राज्य का एक प्रांत।

[721] प्रतष्ठिति सक्लिेटकिा का लगभग 350 ईस्वी में नधिन हुआ।

[722] होनोरयिस – थयिोडोसयिस महान का एक और पुत्र – को साम्राज्य के वभिाजन पर पश्चमि का हस्सिा मलिा, और उन्होंने 395 से 423 तक शासन कयिा।

[723] आर्काडयिस, अपने पति थयिोडोसयिस प्रथम महान द्वारा रोमन साम्राज्य के वभिाजन के बाद, 395 से 408 तक पूर्वी रोमन साम्राज्य, या बाइज़ेंटाइयम पर शासन कयिा।

[724] थेओडोसयिस द्वतिीय – आर्कैडयिस का पुत्र, जसिे अपने दादा थेओडोसयिस प्रथम महान से अलग करने के लिए 'युवा' के नाम से जाना जाता था – ने 408 से 450 तक बज़िान्टयिम पर शासन कयिा।

एम्फीपेट[725] , जिसे एंफेमियिस[726] कहा जाता था, एक बुद्धिमान और अत्यंत धार्मिक व्यक्ति को सौंप दिया। जब तक थियोडोसियिस वयस्क नहीं हो गया, तब तक उस समय सभी इस एम्फिपेट को एक राजा के रूप में सम्मानित करते थे; इसीलिए संत सिमियिन मेटाफ्रastes, इस जीवनी को लिखना शुरू करते समय, कहते हैं: 'धार्मिक राजा अंफेमियिस के शासनकाल के दौरान' – और इस विवरण में उन्हें पूरे समय राजा के रूप में संबोधित करते हैं। इस अंफेमियिस की दो बेटियाँ थीं, जिनमें से एक, छोटी बेटी, अपने बचपन से ही एक अशुद्ध आत्मा के वश में थी, जबकि बड़ी बेटी ने अपनी युवावस्था से ही अपना समय पवित्र चर्चों और प्रार्थना में बिताया। बाद वाली का नाम अपोलिनारिया था। जब वह वयस्क हुई, तो उसके माता-पिता ने यह विचार करना शुरू कर दिया कि वे उसका विवाह कैसे कर सकते हैं, लेकिन उसने इनकार कर दिया और उनसे कहा:

'मैं एक मठ में प्रवेश करना चाहती हूँ, वहाँ पवित्र धर्मग्रंथों का अध्ययन करना और मठवासी जीवन जीना चाहती हूँ।'

उसके माता-पिता ने उससे कहा:

'हम तुम्हारी शादी करवाना चाहते हैं।'

लेकिन उसने उत्तर दिया:

'मैं विवाह नहीं करना चाहती, लेकिन मुझे उम्मीद है कि ईश्वर मुझे अपने भय में पवित्र रखेंगे, जैसे वे अपनी पवित्र कुंवारी कन्याओं को उनकी पवित्रता में सुरक्षित रखते हैं!'

उसके माता-पिता को यह बहुत आश्चर्यजनक लगा कि वह इतनी कम उम्र में ऐसा बोल रही थी, और वह दिव्य प्रेम से इतनी गहराई से परिपूर्ण थी। लेकिन अपोलोनारिया ने एक बार फिर अपने माता-पिता से विनती की कि वे उसके लिए एक नन (सन्यासिनी) को लाएँ जो उसे भजन संहिता और पवित्र धर्मग्रंथों का पाठ सिखा सके। हालाँकि, एन्फेमियिस उसके इरादे से बहुत परेशान था, क्योंकि वह उसे शादी कराना चाहता था। जब वह युवती अपने संकल्प पर अडिग रही और उन कुलीन युवकों द्वारा दिए गए सभी उपहारों को ठुकरा दिया जो उसका हाथ माँग रहे थे, तो उसके माता-पिता ने उससे कहा:

'तुम्हें क्या चाहिए, मेरी बेटी?'

उसने उनसे उत्तर दिया:

'मैं आपसे विनती करती हूँ, मुझे ईश्वर को सौंप दें – और आपको मेरी कुँवारीपन का इनाम मिलेगा!'

जब उन्होंने देखा कि उसका संकल्प अटूट, दृढ़ और धार्मिक था, तो उन्होंने कहा:

'प्रभु की इच्छा पूरी हो!'

और उन्होंने उसके लिए एक अनुभवी नन को लाया, जिसने उसे पवित्र शास्त्र पढ़ना सिखाया। इसके बाद, उसने अपने माता-पिता से कहा:

'मैं आपसे विनती करती हूँ, मुझे यात्रा पर जाने दें ताकि मैं यरूशलेम में पवित्र स्थानों को देख सकूँ। वहाँ मैं पवित्र क्रूस और मसीह के पवित्र पुनरुत्थान की प्रार्थना और पूजा करूँगी!'

वे उसे जाने देना नहीं चाहते थे, क्योंकि वह घर में उनका एकमात्र सहारा थी, और वे उससे बहुत प्यार करते थे, क्योंकि उसकी दूसरी बहन पर एक राक्षस का साया था। हालांकि, अपोलोनिया लंबे समय से अपने माता-पिता से विनती कर रही थी, और इसलिए, उनकी इच्छा के विरुद्ध, वे अंततः उसे जाने देने के लिए सहमत हो गए। उन्होंने उसके साथ कई पुरुष और महिला नौकर, बहुत सारा सोना और चांदी दी, और कहा:

'यह लो, मेरी बेटी, और चली जाओ; अपना व्रत पूरा करो, क्योंकि ईश्वर चाहते हैं कि तुम उनकी सेविका बनो!'

उसे जहाज़ पर बिठाकर, उन्होंने उसे विदाई दी और कहा:

---

[725] एम्फिपिटस (ग्रीक: Ανθύπατος), या प्रोकोन्सल, बाइज़ेंटाइन साम्राज्य में एक उच्च-पदस्थ अधिकारी था जो किसी विशिष्ट क्षेत्र या प्रांत के राज्यपाल के सार्वजनिक पद पर रहता था।

[726] एम्फेमियिस – अपोलिनारिस के पिता – 405 से एक प्रोकॉन्सल या एम्फिपिटस थे। उन्हें दरबार में काफी प्रभाव प्राप्त था, इसलिए 408 में सम्राट आर्कैडियिस की मृत्यु के बाद, उनके भाई होनोरियिस, जो पश्चिमी साम्राज्य के सम्राट थे, ने इस अंफेमियिस को आर्कैडियिस के आठ वर्षीय पुत्र थियोडोसियिस का संरक्षक नियुक्त किया और उन्हें पूरे पूर्वी साम्राज्य के अस्थायी शासन का जिम्मा सौंपा। इसी कारण से, एन्फेमियिस को उनकी जीवनी में एक राजा के रूप में संदर्भित किया गया है। उनका उल्लेख धन्य थियोडोरेट द्वारा किया गया है, और सेंट जॉन क्रिसोस्टोम का उनके लिए लिखा एक पत्र सुरक्षित है।

'बेटी, पवत्रि स्थानों में अपनी प्रार्थनाओं में हमें भी याद रखना!'

उसने उनसे उत्तर दयिा:

'जसि प्रकार तुमने मेरे हृदय की इच्छा पूरी की है, उसी प्रकार ईश्वर तुम्हारी प्रार्थनाओं को स्वीकार करे और संकट के दनि तुम्हें बचाए!'

और इस प्रकार, अपने माता-पतिा से वदिा लेकर, वह समुद्र यात्रा पर नकिल पड़ी। अस्कालॉन[727] पहुँचने पर, वह समुद्र में तेज हवाओं के कारण कई दनिों तक वहीं रुकी रही और वहाँ के सभी चर्चों और मठों में गई, प्रार्थना की और ज़रूरतमंदों को दान दयिा। वहाँ उसे यरूशलेम की अपनी यात्रा के लिए साथी मलि और पवत्रि नगर पहुँचने पर, उसने प्रभु के पुनरुत्थान और पवत्रि क्रूस को श्रद्धांजलि अर्पति की, और अपने माता-पतिा के लिए भक्तपिूर्वक प्रार्थना की। अपनी तीर्थयात्रा के इन दनिों के दौरान, अपोलोनारयिा ने महलिाओं के मठों का भी दौरा कयिा, और उनकी आवश्यकताओं के लिए बड़ी रकम दान की। इसी समय, उन्होंने अपने अतरिक्ति पुरुष और महलिा दासों को मुक्त करना शुरू कर दयिा, उनकी सेवा के लिए उदारतापूर्वक पुरस्कृत कयिा और स्वयं को उनकी प्रार्थनाओं के भरोसे छोड़ दयिा। कुछ दनिों बाद, पवत्रि स्थलों पर अपनी प्रार्थनाएँ समाप्त करने के बाद, अपोलोनारयिा, नदी यॉर्डन का दौरा करने के बाद, अपने साथ बचे लोगों से कहा:

'मेरे भाइयो, मैं तुम्हें भी आज़ाद करना चाहती हूँ, लेकनि पहले हम अलेक्जेंड्रयिा चलें और संत मीना को श्रद्धांजलि अर्पति करें।'

उन्होंने उत्तर दयिा:

'जैसा आप आज्ञा करें, मेरी मालकनि!'

जैसे ही वे अलेक्जेंड्रयिा पहुँचे, उप-राज्यपाल[728] को उनके आगमन की सूचना मलिी और उन्होंने सम्मानति लोगों को उनके स्वागत के लिए भेजा, और उन्हें एक राजकुमारी के रूप में सम्मानति कयिा। हालाँकि, उन्होंने अपने लिए तैयार कए गए सम्मानों को अस्वीकार कर दयिा, और रात में शहर में प्रवेश कयिा और उप-राज्यपाल के घर पहुँचकर उन्हें और उनकी पत्नी को नमस्कार कयिा। तब उप-राज्यपाल और उनकी पत्नी उनके पैरों पर गरि पड़े और कहने लगे:

'हे देवी, आपने ऐसा क्यों कयिा? हमने आपका स्वागत करने के लिए आपको बुलाया था, फरि भी आप, हमारी स्वामनिी, अपनी इच्छा से हमारे पास आईं और हमारे सामने झुक गईं।'

धन्य अपोलोनारयिा ने उनसे कहा:

'क्या आप मेरे लिए एक उपकार करेंगी?'

उन्होंने उत्तर दयिा:

'बलि्कुल, महोदया!' फरि संत ने उनसे कहा:

'मुझे तुरंत जाने दो; मुझे सम्मान देकर परेशान मत करो, क्योंकि मैं पवत्रि शहीद मीना से प्रार्थना करने जाना चाहती हूँ।'

और उन्होंने, उसे कीमती उपहारों से सम्मानति करके, उसे जाने दयिा। धन्य ने, अपनी ओर से, उन उपहारों को गरीबों में बाँट दयिा। इसके बाद, वह कई दनिों तक अलेक्जेंड्रयिा में रही, चर्चों और मठों का दौरा करती रही। वहाँ रहते हुए, उसे जसि घर में वह ठहरी हुई थी, वहाँ एक वृद्ध महलिा मलिी, जसिे अपोलनिारयिा ने उदार दान दयिा और उससे गुप्त रूप से अपने लिए एक मंटल, एक paramand[729] , एक काउल और एक चमड़े का बेल्ट, और सभी पुरुषों के मठवासी वस्त्र खरीदने के लिए कहा। वृद्ध महलिा मान गई, ये सभी चीजें खरीद लीं और उन्हें उस धन्य महलिा के पास लाकर कहा:

---

[727] अश्कलॉन – गाजा और अस्दोध के बीच, भूमध्य सागर के तट पर स्थति, फलिस्तीन के पाँच प्रमुख शहरों में से एक। यद्यपि इसे यहूदा के कुल को सौंपा गया था और उन्होंने इसे जीत लयिा था, फरि भी यह बाद में स्वतंत्र हो गया और अन्य फलिस्तीनी शहरों की तरह, इस्राएल से शत्रुता रखता था।

[728] प्रोकॉन्सल कसिी प्रांत का राज्यपाल होता है।

[729] पैरामांड, जसिे अनालाव भी कहा जाता है, मठवासी परधिान का एक आइटम है। प्राचीन काल में, पैरामांड दो पट्टयिों से बना होता था, जन्हिें चथिॉन या ट्यूनकि के ऊपर कंधों पर क्रॉस के आकार में पहना जाता था, जो कसिी के कंधों पर मसीह के क्रूस को उठाने का प्रतीक है। वैकल्पकि रूप से, पैरामांड दो ऊनी पट्टयिों से बना होता था जो गर्दन से नीचे की ओर लटकती थीं, बगल के नीचे से कंधों पर क्रॉस के आकार में पार होती थीं, और फरि नचिले वस्त्रों के चारों ओर बँध जाती थीं। बाद में, इन पट्टयिों और पट्टों पर छाती के पार मसीह के कष्टों को दर्शाता एक छोटा सा लनिन का टुकड़ा संलग्न कयिा जाने लगा, और पट्टयिों या पट्टों के सरिों को इसके चारों ओर क्रूस के आकार में बांध दयिा जाता था, जो एक डकिन के ओरारयिन जैसा दखिता था। कुछ भकिषु पैरामांड को अपनी मठ की पोशाक के ऊपर पहनते थे, जबकि अन्य इसे चटिोन, या ट्यूनकि के ऊपर

– हे ईश्वर, मेरी माँ की सहायता करो!

संन्यास की वेशभूषा प्राप्त करने के बाद, अपोलोनारिया ने उन्हें छिपा दिया ताकि उसके साथी उनके बारे में न जान सकें। फिर उसने अपने साथ बचे दो गुलामों – एक वृद्ध गुलाम और एक ख़ास – को छोड़कर बाकी सभी को जाने का आदेश दिया, और एक जहाज पर सवार होकर लिम्निॉस के लिए रवाना हो गई। वहाँ से, उसने चार जानवर किराए पर लिए और पवित्र शहीद मीना के मक़बरे के लिए निकल पड़ी। संत के अवशेषों को श्रद्धांजलि अर्पित करने और अपनी प्रार्थनाएँ करने के बाद, अपोलोनारिया एक बंद रथ में सवार होकर आश्रम के लिए रवाना हुई ताकि वहाँ रहने वाले पवित्र संतों को अपनी श्रद्धांजलि दे सके। जब वह रवाना हुई तो शाम हो चुकी थी, और उसने एक नपुंसक को रथ के पीछे रहने का निर्देश दिया, जबकि सामने दास जानवरों को हाँक रहा था। आच्छादित रथ में बैठी आदरणीया अपोलोनारिया ने अपने संन्यासी वस्त्र अपने साथ लेकर एक गुप्त प्रार्थना की, जिसमें उन्होंने उस कार्य के लिए प्रभु से सहायता माँगी, जिसे उन्होंने आरंभ किया था। अँधेरा छा गया और आधी रात नज़दीक आ गई; रथ एक झरने के पास स्थित दलदल के पास पहुँचा, जिसे बाद में अपोलोनारिया का झरना कहा जाने लगा। रथ के पर्दे को हटाकर, धन्य अपोलोनारिया ने देखा कि उनके दोनों सहायक, नपुंसक और रथवान, सो गए थे। तब उन्होंने अपने सांसारिक कपड़े उतार दिए और एक पुरुष की मोटी पोशाक धारण की, और ईश्वर से इन शब्दों में प्रार्थना की:

'हे प्रभु, आपने मुझे इस जीवन-पथ की शुरुआत दी है; कृपा करें कि मैं आपकी पवित्र इच्छा के अनुसार अंत तक इसमें दृढ़ रहूँ!'

फिर, क्रॉस का चिह्न बनाकर, जब उसके नौकर सो रहे थे, तो वह चुपचाप रथ से उतर गई, और दलदल में प्रवेश कर, तब तक वहीं छिपी रही जब तक रथ आगे नहीं बढ़ गया। संत दलदल के पास उस रेगिस्तान में बस गईं और एकमात्र ईश्वर के समक्ष अकेले रहने लगीं, जिन्हें वह प्रेम करने आई थीं। ईश्वर ने, उनकी निस्सीम भक्ति को देखकर, उन्हें अपने दाहिने हाथ से संरक्षण दिया, अदृश्य शत्रुओं के विरुद्ध उनके संघर्ष में उनकी सहायता की और खजूर के पेड़ के फलों के रूप में उन्हें भौतिक पोषण प्रदान किया।

जब वह रथ, जिससे संत गुप्त रूप से उतर गई थीं, फिर से चल पड़ा, तो नौकर—हिजड़ा और बुजुर्ग—भोर होते ही जाग गए और, यह महसूस करते हुए कि रथ खाली था, वे बहुत घबरा गए; उन्होंने केवल अपनी मालकिन के कपड़े देखे, लेकिन उन्हें ढूंढ नहीं सके। वे इस बात से हैरान थे कि वह कब उतरी, कहाँ गई और किस उद्देश्य से गई, वह भी अपने सारे कपड़े उतारकर। उन्होंने उसे ज़ोर-ज़ोर से पुकारते हुए देर तक खोजा; लेकिन जब वह नहीं मिली, तो वे यह नहीं जानते थे कि और क्या करें, इसलिए वापस लौटने का फैसला किया। इस प्रकार, अलेक्जेंड्रिया लौटने पर, उन्होंने अलेक्जेंड्रिया के प्रोकोन्सल को सब कुछ बता दिया; और वह, उनकी रिपोर्ट से अत्यंत आश्चर्यचकित होकर, तुरंत एम्फीपेट्स अंफेमियस, अपोलोनारिया के पिता, को पूरी विस्तार से लिखा और एक खसरा तथा एक वृद्ध व्यक्ति के माध्यम से रथ में रह गए उसके कपड़े भेज दिए। अनफेमियस ने प्रोकोन्सल का पत्र पढ़कर, अपनी प्रिय पुत्री के वस्त्रों को देखकर अपनी पत्नी, अपोलोनारिया की माँ, के साथ मिलकर देर तक और बेइंतहा रोया; और सभी कुलीनों ने भी उनके साथ रोया। फिर अनफेमियस ने प्रार्थना में पुकारा:

'हे ईश्वर! आपने उसे चुन लिया है; आप उसे अपने भय में भी स्थापित करें!'

जब सभी फिर से रो पड़े, तो कुछ कुलीनों ने राजा को इन शब्दों से सांत्वना देना शुरू किया:

'देखो, एक पुण्यशील पिता की सच्ची बेटी, एक धर्मपरायण राजा की सच्ची संतान! इसमें, हे शासक, आपके पुण्य की गवाही सभी के सामने दी गई है, जिसके लिए ईश्वर ने आपको ऐसी बेटी से धन्य किया है!'

यह और भी बहुत कुछ कहकर, वे राजा के तीव्र शोक को कुछ हद तक शांत करने में सफल रहे। और सभी ने अपोलोनारिया के लिए ईश्वर से प्रार्थना की, कि वह उसे इस प्रकार के जीवन में मजबूत बनाए, क्योंकि उन्होंने महसूस किया था कि उसने तपस्या के कठिन जीवन की शुरुआत की थी, जैसा कि वास्तव में साबित हुआ।

पवित्र कुँवारी उस स्थान पर कई वर्षों तक रही जहाँ वह रथ से उतरी थी, एक दलदल के पास निर्जन स्थान में निवास करती थी, जहाँ से काटने वाले मच्छरों के पूरे झुंड उठते थे। वहाँ उन्होंने शैतान और अपने शरीर के विरुद्ध संघर्ष किया, जो पहले राजसी विलासिता में पली युवती की तरह नाजुक था, लेकिन बाद में कछुए के खोल की तरह कठोर हो गया

भी पहनते थे, जैसा कि आज भी रिवाज है। हालाँकि, वर्तमान में, केवल स्खिम्निकिस ही अपनी पोशाक के ऊपर एक लंबा पैरामांड या अनालाव पहनते हैं।

था, क्योंकि उन्होंने परिश्रम, उपवास और जागरण के द्वारा इसे घिस डाला था, और मच्छरों द्वारा खाया जाने के लिए छोड़ दिया था; इसके अलावा, वे सूर्य की गर्मी से झुलस गई थीं। जब प्रभु ने चाहा कि वह पवित्र मरुभूमि के संतों के बीच शरण पाए और लोग अपने लाभ के लिए उसके बारे में जानें, तब उन्होंने उसे उस दलदल से बाहर निकाला। एक स्वर्गदूत एक सपने में उसके सामने प्रकट हुआ और उसे आश्रम में जाने और डोरोथियस नाम अपनाने का आदेश दिया। और वह अपने निवास स्थान से निकल पड़ी, उसकी आकृति ऐसी थी कि कोई भी निश्चित रूप से नहीं कह सकता था कि उनके सामने व्यक्ति पुरुष है या महिला। एक बार, जब वह एक सुबह जल्दी रेगिस्तान में चल रही थी, तो वह पवित्र तपस्वी मकारियस से मिली, जिन्होंने उससे कहा:

'मुझे आशीर्वाद दीजिए, पिताजी!'

उसने बदले में उससे आशीर्वाद माँगा, और फिर, एक-दूसरे को आशीर्वाद देने के बाद, वे साथ में आश्रम तक चले गए। जब संत ने पूछा:

'आप कौन हैं, पिताजी?'

उसने उत्तर दिया:

'मैं मकरियस हूँ।'

तब उसने उससे कहा:

'कृपया, पिताजी, मुझे अपने भाइयों के साथ रहने की अनुमति दें!'

वरिष्ठ ने, उसे स्केटा में लाकर, उसे एक कोठरी आवंटित कर दी, यह जाने बिना कि वह एक महिला थी और उसे एक नपुंसक समझकर। ईश्वर ने यह रहस्य उनसे इसलिए नहीं बताया, ताकि बाद में सभी को इससे अधिक लाभ हो सके और उनके पवित्र नाम की महिमा हो। जब मकरियस ने उससे उसका नाम पूछा, तो उसने उत्तर दिया:

'मेरा नाम डोरोथेअस है। यहाँ रहने वाले पवित्र पिता के बारे में सुनकर, मैं उनके साथ रहने आया हूँ, बशर्ते मैं इसके योग्य साबित हो जाऊँ।'

तब वृद्ध ने उससे पूछा:

'भैया, आप क्या कर सकती हैं?'

और डोरोथेया ने उत्तर दिया कि वह जो कुछ भी कहा जाए करने के लिए तैयार है। तब वृद्ध ने उसे सरकंडों से चटाई बुनने का निर्देश दिया। और पवित्र कन्या एक अलग कोठरी में, पुरुषों के बीच, एक पुरुष की तरह रहने लगी, ठीक वैसे ही जैसे मरुभूमि के संत करते हैं: ईश्वर ने किसी को भी उसका रहस्य जानने नहीं दिया। वह अपना दिन-रात निरंतर प्रार्थना और सिलाई में बिताती थी। जैसे-जैसे समय बीतता गया, वह अपने जीवन की कठोर तपस्या के कारण संतों के बीच अलग दिखने लगी; इसके अलावा, उसे ईश्वर से बीमारियों को ठीक करने की कृपा प्राप्त थी, और डोरोथेउस का नाम सभी की जुबान पर था, क्योंकि सभी इस कथित डोरोथेउस से प्यार करते थे और उसे एक महान संत के रूप में सम्मान देते थे।

काफी समय बीत गया, और राजा की सबसे छोटी बेटी, एन्फेमिया—अपोलीनारिया की बहन—में प्रवेश किए हुए दुष्ट आत्मा ने उसे और भी ज़ोर से सताना शुरू कर दिया, और चिल्लाने लगा:

'जब तक तुम मुझे रेगिस्तान नहीं ले जाओगी, मैं उसे नहीं छोड़ूंगा।'

शैतान ने यह चाल इसलिए चली ताकि यह खुलासा हो सके कि अपोलोनारिया मनुष्यों के बीच रह रही थी और उसे आश्रम से बाहर निकाल दिया जाए। और चूँकि ईश्वर ने शैतान को अपोलोनारिया के बारे में कुछ भी कहने की अनुमति नहीं दी थी, इसलिए उसने उसकी बहन को इस तरह सताया कि उसे रेगिस्तान में भेज दिया जाए। कुलीनों ने राजा को सलाह दी कि वह उसे स्केटे में पवित्र संतों के पास भेजें, ताकि वे उसके लिए प्रार्थना कर सकें। राजा ने वैसा ही किया, और अपनी भूतग्रस्त बेटी को नौकरों के एक समूह के साथ रेगिस्तान के संतों के पास भेज दिया।

जब वे सभी आश्रम पहुँचे, तो संत मकारियस उनका स्वागत करने के लिए बाहर आए और उन्होंने पूछा:

'मेरे बच्चों, तुम यहाँ क्यों आए हो?'

उन्होंने उत्तर दिया:

'हमारे धर्मपरायण शासक, एन्फेमियस ने अपनी बेटी को इसलिए भेजा है ताकि आप ईश्वर से प्रार्थना करके उसे उसकी बीमारी से ठीक कर सकें।'

वरिष्ठ ने, उसे शाही अधिकारी के हाथों से ग्रहण कर, उसे बाबा डोरोथियस—या, जैसा कि वे अपोलिनारिस के नाम से भी जाने जाते थे—के पास ले गए और कहा:

'यह रही राजा की बेटी, जिसे यहाँ रहने वाले संतों की प्रार्थना और आपकी प्रार्थना की आवश्यकता है। इसके लिए प्रार्थना करें और इसे ठीक करें, क्योंकि प्रभु ने आपको चंगा करने का यह वरदान दिया है।'

यह सुनकर अपोलोनारिया रो पड़ी और कहा:

'मैं कौन हूँ, एक पापी, कि आप मुझे दुष्टात्माओं को भगाने की शक्ति का श्रेय दें?'

और, घुटनों के बल झुककर, उसने उस वृद्ध से इन शब्दों में विनती की:

'पिताजी, मुझे अपने अनेक पापों पर रोने दीजिए; मैं इस मामले में कुछ भी करने के लिए कमजोर और शक्तिहीन हूँ।'

लेकिन मकरियुस ने उससे कहा:

'क्या अन्य पिता ईश्वर की शक्ति से चमत्कार नहीं करते? और यह कार्य भी आपको सौंपा गया है।'

तब अपोलोनारिया ने कहा:

'प्रभु की इच्छा पूरी हो!'

और, सताई गई महिला पर दया करके, उसने उसे अपनी कोठरी में ले लिया। अपनी बहन को पहचानकर, उस पूजनीय महिला ने उसे आनंद के आँसुओं के साथ गले लगा लिया और कहा:

'कितना अच्छा है कि आप यहाँ आई हैं, बहन!'

हालाँकि, ईश्वर ने दानव को अपोलोनारिया के बारे में सच उजागर करने से मना कर दिया, जो एक पुरुष के भेष और नाम के तहत अपना लिंग छिपाए हुए थी, और संत ने प्रार्थना के माध्यम से शैतान से लड़ाई की। एक दिन, जब शैतान ने उस कन्या को विशेष रूप से बुरी तरह सताना शुरू कर दिया, तो धन्य अपोलोनारिया ने ईश्वर के प्रति अपने हाथ उठाकर अपनी बहन के लिए आँसुओं से प्रार्थना की। तब शैतान, प्रार्थना की शक्ति का विरोध न कर सका, और ज़ोर से चिल्लाया:

'हाय मेरा क्या होगा! मुझे यहाँ से भगाया जा रहा है, और मैं जा रहा हूँ!'

और, कन्या को ज़मीन पर पटक कर, वह उससे चला गया। संत अपोलोनारिया, अपनी बची हुई बहन को साथ लेकर, उसे चर्च ले गईं और, पवित्र पिताओं के चरणों में गिरकर, कहा:

'मुझे, एक पापी को, क्षमा करो! मैं आपके बीच रहते हुए बहुत पाप करता हूँ।'

उन्होंने, बदले में, राजा द्वारा भेजे गए दूतों को बुलाया, उन्हें स्वस्थ राजकुमारी सौंप दी, और उसे प्रार्थनाओं और आशीर्वादों के साथ राजा के पास वापस भेज दिया। जब उनके माता-पिता ने अपनी बेटी को अच्छे स्वास्थ्य में देखा तो वे अत्यंत प्रसन्न हुए, और सभी कुलीनों ने अपने राजा की अच्छी किस्मत पर प्रसन्नता व्यक्त की और ईश्वर की महान दया के लिए उनकी स्तुति की, क्योंकि उन्होंने देखा कि वह कन्या स्वस्थ, सुंदर मुखमंडल वाली और सौम्य हो गई थी। संत अपोलोनारिया ने, अपनी ओर से, पुरातत्वों के बीच स्वयं को और भी अधिक नम्र बनाया, और अधिक से अधिक सद्गुणों के कार्य किए।

तब शैतान ने एक बार फिर से राजा को दुखी करने, उसके घर पर अपमान लाने, और तथाकथित डोरोथियस को बदनाम करने और उसे नुकसान पहुँचाने के लिए चालाकी का सहारा लिया। वह फिर से राजा की बेटी में प्रवेश कर गया, लेकिन उसने उसे पहले की तरह सताया नहीं; इसके बजाय, उसने उसे गर्भवती दिखाया। उसे इस हालत में देखकर, उसके माता-पिता बहुत निराश हुए और उन्होंने उससे पूछना शुरू किया कि उसने किसके साथ पाप किया है; लेकिन कुंवारी, जो शरीर और आत्मा से पवित्र थी, ने जवाब दिया कि वह खुद नहीं जानती कि ऐसा कैसे हुआ। जब उसके माता-पिता ने उससे यह जबरदस्ती करने के लिए उसे पीटना शुरू किया कि वह बताए कि वह किसके साथ पाप कर चुकी है, तो शैतान ने उसके होठों से कहा:

'उस मठ में जिस कोठरी में मैं रहता था, वह भिक्षु मेरे पतन का दोषी है।'

ज़ार क्रोध से आग-बबूला हो गया और उसने आश्रम को नष्ट करने का आदेश दिया। ज़ार के राज्यपाल सैनिकों के साथ आश्रम पहुँचे और क्रोधित होकर उस संन्यासी को सौंपने की माँग की जिसने इतनी क्रूरता से ज़ार की बेटी का अपमान किया था; यदि कोई प्रतिरोध हुआ तो उन्होंने सभी संन्यासियों का कत्लेआम करने की धमकी दी। यह सुनकर सभी पादरी बड़े भ्रम में पड़ गए, लेकिन धन्य डोरोथियस, राजा के सेवकों से मिलने बाहर जाकर, बोले:

'मैं ही वह हूँ जिसकी तुम तलाश कर रहे हो; मुझे ही अकेले दोषी मान लो, और अन्य पादरियों को चैन से रहने दो, क्योंकि वे निर्दोष हैं।'

यह सुनकर, सभी पादरी परेशान हो गए और उन्होंने डोरोथियस से कहा: 'हम भी आपके साथ चलेंगे!' – क्योंकि वे उन्हें उस पाप का दोषी नहीं मानते थे। लेकिन धन्य डोरोथियस ने उनसे कहा:

'हे स्वामिनो! आप केवल मेरे लिए प्रार्थना करें; मैं, अपनी ओर से, अपनी आशा ईश्वर और आपकी प्रार्थनाओं में रखता हूँ, और मुझे विश्वास है कि मैं जल्द ही सुरक्षित होकर आपके पास लौटूँगा।'

तब उन्होंने उसे, सारी मंडली के साथ, गिरिजाघर में ले गए और उसके लिए प्रार्थना करके और उसे ईश्वर के सुपुर्द करके, उसे अंफेमियस द्वारा भेजे गए दूतों के हवाले कर दिया; अबा मकरियस और अन्य पिता, तथापि, इस बात से आश्वस्त थे कि डोरोथेयस किसी भी बात में दोषी नहीं था। जब डोरोथेयस को अंफेमियस के सामने लाया गया, तो वह उसके पैरों पर गिर पड़ा और कहा:

'मैं आपसे विनती करता हूँ, हे धर्मनिरपेक्ष शासक, कि आप मेरी बात को धैर्यपूर्वक और मौन रूप से सुनें जो मैं आपकी पुत्री के बारे में कहना चाहता हूँ; परन्तु मैं आपको सब कुछ केवल निजी तौर पर ही बताऊँगा। वह कन्या पवित्र है और उस पर किसी भी प्रकार का अत्याचार नहीं हुआ है।'

तब राजा और रानी डोरोथियस के साथ अकेले रह गए, और उसने उनसे कहा:

'मैं ईश्वर के नाम पर आपसे विनती करती हूँ – मुझे वचन दें कि, एक बार जब आप सत्य जान लें, तो आप मुझे मेरे घर वापस भेज देंगे।'

जब उन्होंने उसे अपना शाही वचन दे दिया, तो धन्य अपोलोनारिया ने उनसे कहा:

'मैं ही थी, पूर्ण विनम्रता से, जिसने ईश्वर की सहायता और पवित्र पिताओं की प्रार्थनाओं के द्वारा आपकी पुत्री को ठीक किया।'

राजा और रानी, मानो, आश्चर्य से स्तब्ध हो गए और उस धन्य व्यक्ति की ओर ध्यान से सुनने लगे।

उसने अपनी बात जारी रखते हुए कहा, 'मैं आपको एक बड़ा रहस्य बताऊँगी, जिसे मैंने अब तक सावधानी से छिपा कर रखा था, ताकि उस शैतान को शर्मिंदा किया जा सके जो निर्दोषों पर बदनामी करता है।'

यह कहकर, उसने अपने सीने से घूंघट हटा दिया, और राजा-रानी ने देखा कि उनके सामने एक पुरुष नहीं, बल्कि एक महिला खड़ी थी।

धन्य ने कहा, 'पिताजी, मैं आपकी बेटी—अपोलीनारिया हूँ!'

यह सुनकर, उसके माता-पिता पहले तो भय और आश्चर्य से जकड़े हुए से रह गए; लेकिन फिर, अपनी बेटी को पहचानकर, वे अत्यंत प्रसन्न हुए और उस दिन आनंद के आँसू बहने लगे। फिर उन्होंने धन्य अपोलोनारिया के पास उसकी बहन को लाया, जिसे वे गर्भवती समझते थे, और उससे कहा:

'क्या तुम इस भिक्षु को जानते हो?'

उसने उत्तर दिया:

'हाँ, वही व्यक्ति है जिसने मुझे ईश्वर की शक्ति से ठीक किया था।'

और, संत के चरणों में गिरकर, उस युवती ने उनसे अपने गर्भ को ठीक करने की विनती की। हालाँकि, अपोलोनारिया ने अपनी बहन को जमीन से उठाया, उसके गर्भ पर अपना हाथ रखा, और राक्षस तुरंत भाग गया, जबकि वह युवती पहले की तरह स्वस्थ हो गई। यह देखकर, उसके माता-पिता ने ईश्वर की स्तुति की और कहा:

'निश्चय ही, यह हमारी बेटी, अपोलोनारिया है!'

और राजसी महल में हर्षोल्लास के आँसू बहने लगे, एक तो इसलिए कि उनकी बड़ी बेटी, अपोलोनारिया—जिसके बारे में तब तक कोई खबर नहीं थी—अचानक मिल गई थी, और दूसरे इसलिए कि उनकी दूसरी बेटी को अनावश्यक अपमान से मुक्ति मिल गई थी। संत अपोलोनारिया, अपनी ओर से, कई दिनों तक अपने माता-पिता के साथ रहीं और उन्हें अपने बारे में सब कुछ विस्तार से बताया, जबकि उनके माता-पिता, उनकी बात सुनकर, ईश्वर की चमत्कारी व्यवस्था की स्तुति करते रहे।

जब संत अपने निवास स्थान के लिए प्रस्थान करने वाली थीं, तो उनके माता-पिता ने उनसे उनके साथ रहने की विनती की। लेकिन वे उन्हें मना नहीं सके, और इसके अलावा वे अपने दिए गए शाही वादे को तोड़ना भी नहीं चाहते थे—कि वे उनके रहस्य के प्रकट होने से पहले उन्हें घर लौटने देंगे। इस प्रकार, अपनी इच्छा के विरुद्ध, उन्होंने अपनी प्रिय बेटी को रोते-बिलखते विदा किया, फिर भी एक ऐसी सदाचारी बेटी के लिए अपने हृदय में आनंदित थे जिसने स्वयं को ईश्वर

की सेवा के लिए समर्पित कर दिया था। धन्य अपोलोनिया ने अपने माता-पिता से अपने लिए प्रार्थना करने का आग्रह किया, और उन्होंने उससे कहा:

'ईश्वर, जिसके साथ तुमने स्वयं को व्रतबद्ध किया है, तुम्हें अपने भय और प्रेम में परिपूर्ण बनाए और अपनी दया से तुम्हें आच्छादित करे; और तुम, हमारी प्रिय पुत्री, अपनी पवित्र प्रार्थनाओं में हमें याद रखना।'

वे पवित्र संतों की आवश्यकताओं के लिए उसे आश्रम ले जाने हेतु बहुत सारा सोना देना चाहते थे, लेकिन उसने उसे स्वीकार करने से इनकार कर दिया।

उसने कहा, 'मेरे पितृपुरुषों को इस संसार के धन की कोई आवश्यकता नहीं है; हम केवल इस बात की परवाह करते हैं कि हमें स्वर्ग के आशीर्वाद से वंचित न रहना पड़े।'

इस प्रकार, एक प्रार्थना करने और देर तक रोने के बाद, अपने प्रिय बेटी को गले लगाकर और चूमकर, राजा और रानी ने उसे उसके घर वापस भेज दिया। धन्य कन्या, अपनी ओर से, प्रभु में आनंदित और हर्षित हुई।

जब वह संन्यास-आश्रम पहुँची, तो संतों और भाइयों ने यह जानकर प्रसन्नता व्यक्त की कि उनका भाई डोरोथेयस सुरक्षित और कुशलतापूर्वक लौट आया है, और उसी दिन उन्होंने प्रभु की कृपा के लिए धन्यवाद स्वरूप एक भोज का आयोजन किया। यह कभी किसी को पता नहीं चला कि राजदरबार में उसके साथ क्या हुआ था, और यह भी कभी उजागर नहीं हुआ कि डोरोथेअस एक महिला थी। और संत अपोलोनारिया, यह कथित डोरोथेअस, पहले की तरह ही अपने भ्राताओं के बीच रहती रहीं, अपनी कुटिया में निवास करती हुई। कुछ समय बाद, ईश्वर के पास अपने प्रस्थान की पूर्वदृष्टि से, उन्होंने अबा मकारियस से कहा:

'फादर, मुझ पर एक एहसान कीजिए: जब मेरी परलोक गमन का समय आए, तो भ्राताओं को मेरा शरीर न धोना चाहिए और न ही उसे तैयार करना चाहिए।'

वरिष्ठ ने उत्तर दिया:

'यह कैसे संभव है?'

जब वह प्रभु के पास चली गईं[730] , तो भाई लोग उन्हें धोने आए और जब उन्होंने देखा कि उनके सामने एक महिला लेटी है, तो वे ऊँचे स्वर में चिल्ला उठे:

'महिमा तेरी हो, हे हमारे प्रभु मसीह, जिनके पास अपने साथ कई गुप्त संत हैं!'

संत मकरियस, हालांकि, इस बात पर चकित थे कि यह रहस्य उनसे प्रकट नहीं किया गया था। लेकिन एक सपने में उन्होंने एक आदमी को देखा जिसने उनसे कहा:

'इस बात पर शोक मत करो कि यह रहस्य आपसे छिपा रहा; यह उचित है कि आपको भी प्राचीन काल में रहे पवित्र पिताओं के साथ मुकुट पहनाया जाए।'

तब उस प्रकट हुई आकृति ने धन्य अपोलोनारिया की उत्पत्ति और जीवन के बारे में बताया और उसका नाम भी बताया। चौंककर जागने पर, वृद्ध ने भाइयों को बुलाया और उन्हें वह सब बताया जो उन्होंने देखा था, और सभी चकित हो गए और परमेश्वर की महिमा करने लगे, जो अपने संतों में अद्भुत हैं। संन्यासी के शरीर को दफ़नाने के लिए तैयार करने के बाद, भाइयों ने उसे चर्च के पूर्वी हिस्से में, संत मकारियस की कब्र में सम्मान के साथ दफ़नाया। हमारे प्रभु यीशु मसीह की कृपा से, इन पवित्र अवशेषों के द्वारा कई चमत्कारिक उपचार हुए, जिनके लिए महिमा युगानुयुग उन्हीं की हो, आमीन।

पवित्र भविष्यवक्ता मीका की स्मृति

5 जनवरी को स्मरण किया जाता है

[730] लगभग 470 ईस्वी में।

[731]पवत्रि भवष्यिवक्ता मीका, इम्ला के पुत्र[732] , परमेश्वर के भवष्यिवक्ता एलयिा के समकालीन थे और उन्होंने इस्राएल के राजा अहब[733] और यहूदा के राजा यहोशापात[734] के शासनकाल में जीवन यापन कयिा। मीका ने मौखकि रूप से भवष्यिवाणी की और सीरयिा के वरिुद्ध अहब के युद्ध के वनिाशकारी परणिाम की भवष्यिवाणी की। एक अवसर पर, यहोशापात अहाब से मलिने सामरयिा गया था। यह याद करते हुए कि रामोथ, गलिाद का एक शहर[735] , जो सीरयिाईयों के कब्जे में था, पहले इस्राएल के राज्य का हस्सिा था, अहब ने यहोशापात से सीरयिा के खलिाफ युद्ध में उसके साथ हाथ मलिाने के लिए कहा[736] । यहूदा के धार्मकि राजा ने इसके लिए सहमतदि दी, लेकनि अभयिान पर नकिलने से पहले, वह भवष्यिवक्ताओं के मुख से परमेश्वर की इच्छा जानना चाहता था। तब अहब ने बाल के नबयिों को बुलाया[737] । ये झूठे नबी, जब दोनों राजा सामरयिा के फाटकों पर भव्य सहिासनों पर बैठे थे, उनके सामने खड़े होकर अहब की सीरयिाईयों पर वजिय की भवष्यिवाणी करने लगे। लेकनि यहोशापात ने पूछा कि क्या प्रभु का कोई और नबी मौजूद नहीं है, जसिसे वे प्रभु से पूछ सकें।

'एक और आदमी है जसिके द्वारा हम प्रभु से पूछ सकते हैं,' अहब ने उत्तर दयिा, 'परन्तु मुझे वह पसन्द नहीं, क्योंकि वह मेरे वषिय में कभी भलाई की भवष्यिवाणी नहीं करता, बल्कि हमेशा बुराई की करता है; वह इम्ला का पुत्र मकियाह है।'

'ऐसे मत कहो, हे राजा,' यहोशापात ने आपत्तजिताई।

तुरंत अहब ने आज्ञा दी कि मिकियाह को बुलाया जाए।

राजा ने उससे पूछा:

'मकियाह, क्या हम रामोथ-गलिाद पर चढ़ें, या रुकें?'

मकियाह ने उत्तर दयिा:

'मैंने इस्राएल के सभी पुत्रों को पहाड़ों पर बखिरा हुआ देखा, जैसे चरवाहे के बनिा भेड़ें, और यहोवा ने कहा: "उनका कोई अगुआ नहीं है; वे सब अपने-अपने घरों को शांतसिे लौट जाएँ।"'

तब अहब ने आज्ञा दी कि भवष्यिवक्ता मकियाह को जेल में डाल दयिा जाए और वहाँ उसे केवल थोड़ी सी रोटी और पानी ही दयिा जाए, जब तक कि वह (अहब) शांतसिे वापस न आ जाए।

इस पर मीका ने उत्तर दयिा:

'यदि तुम शांतपिूर्वक लौटते हो, तो यह प्रभु नहीं था जसिने मुझसे बात की।'

आहाब ने संत मकियाह के भवष्यिवाणी के शब्दों को अनदेखा कयिा और सीरयिाई लोगों के खलिाफ युद्ध छेड़ा, लेकनि पहले ही युद्ध में उसे घातक घाव लगा[738] , जबकि यहोशापात अपनी सेना के साथ यहूदा लौट आया।

---

[731] समरयिा इज़राइल के राज्य की राजधानी थी। यह शहर इज़राइल के राजा और आहाब के पतिा ओम्री द्वारा 925 ईसा पूर्व में बनाया गया था, और अस्सyria के राजा शलmaneser द्वारा राज्य के वनिाश तक यह इज़राइल के राजाओं की राजधानी और केंद्र बना रहा।

[732] यह भवष्यिवक्ता मीकाह तथाकथति 12 'लघु भवष्यिवक्ताओं' में से एक नहीं थे और वे ईसा पूर्व 9वीं शताब्दी में रहते थे। हालाँकि, पवत्रि भवष्यिवक्ता मीकाह, जो 'लघु भवष्यिवक्ताओं' में से एक थे, लगभग 130 साल बाद रहे और उन्होंने भवष्यिवाणी की।

[733] ओम्री का पुत्र आहाब, इज़राइल का राजा था; उसने सडिोन के राजा की बेटी दुष्ट यजेबेल से ववािह कयिा, और उसके साथ मलिकर इज़राइल के राज्य में मूर्तपिूजा का एक नया रूप पेश कयिा – सडिोन के देवताओं बाल और अस्तारोथ की पूजा। उनके शासनकाल के दौरान, ईश्वर के एक नबी, तशिबी एलयि्याह, रहते थे और उन्होंने उनकी दुष्टता की कड़ी नदिा की।

[734] यहूदा के ईश्वर-भयभीत राजा आसा के पुत्र यहोशापात ने 914 से 889 ईसा पूर्व तक शासन कयिा।

[735] रमथ – गलिआद में एक शहर, जसिे अब साल्ट के नाम से जाना जाता है, जो माउंट गलिआद के तल पर स्थति है। – गलिआद – यॉर्डन के पूर्व में एक क्षेत्र।

[736] सीरयिा – सबसे व्यापक अर्थ में – भूमध्य सागर और फरात नदी के बीच के वशिाल भूभाग को संदर्भति करता है। अपनी स्वतंत्रता की अवधि के दौरान, यह कई राज्यों में वभिाजति था, जनिमें से सबसे शक्तशिाली दमश्कि का राज्य था, जसिका ही यहाँ उल्लेख है। इज़राइल के राजा बाशा और ओम्री के शासनकाल के दौरान, सीरयिा के राजा बेन-हदद ने कई इज़राइली शहरों पर कब्ज़ा कर लयिा। ओम्री के पुत्र आहाब के शासनकाल के दौरान, पूर्ववर्ती के पुत्र बेन-हदद द्वतिीय ने स्वयं सामरयिा की घेराबंदी की, लेकनि उसे बंदी बना लयिा गया और उसे शांतबिनाने के लिए मजबूर कयिा गया, और उसने आहाब को वे शहर लौटा दिए जो उसके पतिा ने जीते थे; हालाँकि, रामोथ-गलिाद सीरयिाई लोगों के हाथों में बना रहा।

[737] बaal फ़निशियिाई लोगों का मुख्य देवता था, जसिके नाम पर वे मुख्य रूप से सूर्य की पूजा करते थे। जेज़बेली के साथ मलिकर इस्राएल के राज्य में बाal और अस्तारोथ की पूजा शुरू करने के बाद, अहाब ने वशिेष रूप से बाal के झूठे नबयिों को बढ़ावा दयिा, और उनमें से लगभग एक हजार को शाही खर्च पर रखता था।

[738] यह लगभग 878 ईसा पूर्व का समय था।

क्रीट के पूजनीय ग्रेगरी की स्मृति

5 जनवरी को स्मरणोत्सव

हमारे पूजनीय पिता ग्रेगरी का जन्म वर्ष 760 में क्रीट द्वीप पर[739] पर भक्तिमय माता-पिता थियोफेन्स और जूलियाना के यहाँ हुआ था। घर पर अच्छे पालन-पोषण के साथ-साथ, उन्होंने औपचारिक शिक्षा भी प्राप्त की। उस समय, ऑर्थोडॉक्स धर्म के कन्फेशर्स (विश्वास के लिए खड़े रहने वाले) प्रतिमा-विरोधी विधर्मियों के हाथों महान उत्पीड़न झेल रहे थे। बचपन से ही ऑर्थोडॉक्सी के प्रति समर्पित और सच्चे धर्म को उसकी पूरी शुद्धता में बनाए रखने की तीव्र इच्छा रखने वाले उस युवक ने एक बार घर से भोजन का भंडार लेकर सेल्यूकिया[740] में संन्यास ले लिया। वह वहाँ काफी समय तक रहा, रोटी और पानी पर जीवित रहा और धार्मिक कृत्यों को समर्पित एक ईश्वरीय जीवन व्यतीत किया।

सम्राट लियो चतुर्थ आइकनोक्लास्ट[741] की मृत्यु के बाद, परम आदरणीय ग्रेगरी ने बीस वर्ष की आयु में पवित्र नगर यरूशलेम की पवित्र स्थलों की पूजा करने के लिए प्रस्थान किया। वे वहाँ बारह साल तक रहे, और अरबों[742] तथा यहूदियों द्वारा किए गए क्रूर उत्पीड़न को धैर्य और आनंद के साथ सहते रहे। वहाँ से, संत ग्रेगरी रोम चले गए, जहाँ उन्होंने स्वर्गदूतों की भाँति संन्यासी की शपथ ली, और इस प्रकार वे संयम के द्वारा अपने शरीर को वश में रखते हुए जीवन यापन करते थे।

[743]811 में, कॉन्स्टेंटिनोपल के पैट्रिआर्क, संत निकिफिोरस ने, सिनाड के बिशप, संत माइकल द कन्फेशर[744] को सम्राट माइकल कुरोपालेट्स[745] के राज्याभिषेक के संबंध में एक सिनोडल पत्र के साथ पोप संत लियो III[746] के पास भेजा। रोम में, संत माइकल ने परम पूजनीय ग्रेगरी के साथ एक घनिष्ठ आध्यात्मिक बंधन बनाया और, कॉन्स्टेंटिनोपल लौटने पर, उन्हें अपने साथ ले आए, बाद में उन्हें केप अक्रिटि के एक मठ में बसा दिया। यहाँ, मसीह के लिए, आदरणीय संत ने स्वयं को महान कष्टों के अधीन कर लिया: वे नंगे पैर चलते थे, उनके पास केवल एक ही वस्त्र था, और वे हर दो या तीन दिनों में केवल थोड़ी सी रोटी और पानी खाते थे; वे चटाई पर सोते थे, अपने निवास के लिए एक गहरी खाई को चुना, और वहाँ उन्होंने उन उथल-पुथल पर गहरा शोक व्यक्त किया जो उस समय ईसाई चर्चों को प्रभावित कर रही थीं[747] । इसके बाद, उस पवित्र तपस्वी ने खुद को एक तंग कोठरी में बंद कर लिया; वहाँ से वे केवल एक चमड़े का वस्त्र पहनकर मठ की दीवार के पास रखे एक बड़े पात्र के लिए पानी लाने निकलते थे। इस कठिन कार्य को पूरा करने के बाद, आदरणीय भिक्षु अपनी कोठरी में चले जाते और वहाँ अपने मठ के नियम का पालन करते। इस प्रकार, इस महान कार्य को करते हुए, उन्होंने अपनी पवित्र आत्मा को ईश्वर के हाथों में सौंप दिया[748] ।

आदरणीय फोस्टरियोस की स्मृति

5 जनवरी को स्मरणोत्सव

---

[739] क्रीट द्वीप, जिसे कैंडिया भी कहा जाता था – अपने उसी नाम के मुख्य शहर के नाम पर – भूमध्य सागर के पूर्वी भाग में, ईजियन सागर के दक्षिण में स्थित था। अपनी विशालता और उर्वरता के कारण, इसे पहले भूमध्य सागर के 'द्वीपों की रानी' के रूप में जाना जाता था।

[740] प्राचीन काल में, सेल्यूकिया नामक कई शहर थे: एशिया माइनर, मेसोपोटामिया, सीरिया और फिलिस्तीन में। क्रीट द्वीप के निकट होने के कारण, यहाँ एशिया माइनर के दक्षिण-पूर्वी भाग में स्थित, सिलिसिया के तटीय शहर सेल्यूकिया का उल्लेख है।

[741] लियो – बीजान्टिन सम्राट, जिसने 776 से 780 तक शासन किया।

[742] अरबों ने 636 में खलीफ़ा उमर के अधीन यरूशलेम पर कब्ज़ा कर लिया।

[743] मार्मारा सागर के एशिया माइनर तट पर।

[744] उनका पर्व दिवस 23 मई है

[745] माइकल क्यूरूपैलेट्स, जिन्हें रंगव के नाम से भी जाना जाता है, ने 811 से 813 तक शासन किया।

[746] 795 से 816 तक।

[747] स्वाभाविक रूप से, पूर्व में मूर्तिभंजकों द्वारा और पश्चिम में पवित्र आत्मा के पिता और पुत्र से निकलने के नए सिद्धांत के कारण अशांति फैली।

[748] संत ग्रेगरी का निधन लगभग 820 में हुआ।

आदरणीय फोस्टरियिोस, पूर्व में सूर्य की भाँति प्रकाशमान होकर, अंधकार में रहने वालों को प्रकाशित किया। एक ऊँचे, सुनसान पहाड़ पर एकांतवास कर, वह निरंतर ईश्वर से प्रार्थना में लीन रहे, उपवास, रात्रि जागरण और पूर्ण त्याग के जीवन द्वारा अपने शरीर को दंडित करते हुए। अपने महान तपस्या द्वारा, वे ब्रह्मांड में एक तारे की तरह चमके, और इस प्रकार अपने नाम[749] पर खरे उतरे। प्रभु की आज्ञा को पूरा करके उन्होंने अपने शरीर को शुद्ध किया और अपनी आत्मा को पवित्र किया: *'यदि कोई मेरे पीछे आना चाहता है, तो वह स्वयं का इनकार करे, और अपना क्रूस उठाए, और मेरे पीछे चले'* (मत्ती 16:24), आदरणीय पिता पवित्र आत्मा का वासस्थान बन गए। ईश्वर द्वारा उन पर प्रदान की गई कृपा से, उन्होंने विश्वास के साथ उनके पास आने वालों की बीमारियों और हर प्रकार के घावों को ठीक किया।

महिमामय भविष्यवक्ता एलिया की तरह, हमारे आदरणीय पिता फोस्टरियिोस को स्वर्ग से भोजन मिला। लेकिन उसे भोजन कौवों ने नहीं लाया था, जैसा कि धर्मग्रंथों में भविष्यवक्ता के बारे में वर्णित है (3 राजा 17:6), बल्कि प्रभु के एक स्वर्गदूत ने लाया था। यह स्वर्गीय दूत प्रतिदिन एक ज्ञात स्थान पर रेवरेंड फादर के लिए रोटी रख देता था; और जब भी आगंतुक उस पवित्र व्यक्ति के पास आते थे, तो रेवरेंड फादर को उनके लिए भी वहाँ रोटी मिलती थी। ईश्वर की कृपा का यह गौरवशाली चमत्कार केवल कुछ दिनों के लिए नहीं हुआ, जैसा कि माउंट कार्मेल पर पवित्र भविष्यवक्ता एलिया के दिनों में हुआ था, बल्कि उन सभी कई वर्षों तक हुआ जब तक कि परमपूज्य फोस्टरियिोस एकांत और मौन में रहे।

बाद में, ईश्वर की सहायता से, जब पूजनीय फोस्टरियिोस ने एक मठ की स्थापना की, जिसमें भिक्षुओं का एक बड़ा समुदाय एकत्रित हुआ, तो उन्हें पहले की तरह स्वर्ग से रोटी नहीं मिलती थी, बल्कि वे अपने हाथों की मेहनत से उन्हें भोजन प्रदान करते थे। ऐसा इसलिए नहीं था कि परमेश्वर अपनी अनुग्रहकारी सहायता में थक गए थे, न ही इसलिए कि वह संत की प्रार्थनाओं से मुंह मोड़ गए थे—विशेषकर क्योंकि पवित्र पिता स्वयं भोजन के लिए कभी प्रार्थना नहीं करते थे, मसीह की आज्ञा को ध्यान में रखते हुए: *'पहले परमेश्वर के राज्य और उसकी धार्मिकता की खोज करो, और ये सब बातें तुम्हें अतिरिक्त रूप से मिल जाएँगी'* (मत्ती 6:33)। लेकिन यह प्रभु की इच्छा थी कि उन्हें उनके श्रम के द्वारा भोजन प्रदान किया जाए, और इसलिए उन्होंने अपने सेवक फोस्टरियिोस को आज्ञा दी कि वह किसी से कुछ भी स्वीकार न करे, बल्कि अपनी ही मेहनत से वह सब कुछ प्राप्त करे जो आवश्यक था। स्वयं कोई भेंट स्वीकार न करते हुए, पूजनीय पिता ने अपने भाइयों को प्रार्थना, ज्ञानवर्धक पठन और शारीरिक श्रम में लगन से संलग्न होने का निर्देश दिया, और इस संबंध में वे स्वयं उनके लिए एक निरंतर उदाहरण बने रहे।

संत फोस्टरियिस के जीवित रहने के दौरान, कलीसिया के भीतर कुछ विधर्मी मत उत्पन्न हुए; इस प्रलोभन को समाप्त करने के लिए, कई पादरियों की एक परिषद बुलाई गई, जिसमें आदरणीय फोस्टरियिस को भी आमंत्रित किया गया था। उस धन्य व्यक्ति ने इस नए प्रयास से पीछे नहीं हटे और, परिषद में पहुँचने पर, साहसपूर्वक और प्रभावपूर्ण ढंग से सच्चे धर्म की घोषणा की, जिससे कई विधर्मी चर्च की एकता में लौट आए। इस बीच, अन्य लोगों ने इस महान तपस्वी के पवित्र जीवन से प्रेरित होकर, संन्यासी की शपथ ली, जिनकी प्रार्थनाओं से उनके सांसारिक जीवन के दौरान और प्रभु के एपिफेनी के पर्व से पूर्व संध्या पर ईश्वर के पास उनके धन्य निधन के बाद भी कई चमत्कार हुए।

माननीय मीना का पर्व दिवस

5 जनवरी को स्मरण किया जाता है

हमारे पूजनीय पिता मीना छठी शताब्दी ईस्वी में माउंट सीनाई[750] पर एक सामुदायिक मठ में एक तपस्वी के रूप में रहते थे। पचास वर्षों तक उन्होंने विभिन्न मठवासी कर्तव्यों का पालन किया। इस तपस्वी के परमधाम गमन के तीसरे दिन, चर्च के नियमों के अनुसार, दिवंगत की अंतिम संस्कार सेवा करने के लिए संपूर्ण ब्रदरहुड चर्च में इकट्ठा हुआ।

---

[749] फोस्टरियिोस एक ग्रीक नाम है (शब्द 'प्रकाश' से), जिसका अर्थ 'प्रकाशक' है।

[750] सिनाई वह पर्वत है जहाँ से प्रभु ने मूसा के माध्यम से यहूदी लोगों को व्यवस्था दी। यह लाल सागर प्रायद्वीप पर होरेब पर्वत श्रृंखला की चोटियों में से एक है। यह पर्वत श्रृंखला, जिसमें संकीर्ण चट्टानी घाटियाँ हैं और जिसमें ईसाई धर्म के शुरुआती दिनों की कई गुफाएँ हैं, तपस्वियों के लिए एक पसंदीदा स्थान बन गई, जिन्होंने वहाँ कई स्केट्स और मठों की स्थापना की। सिनाई के संतों में, निम्नलिखित विशेष रूप से प्रसिद्ध हैं: सेंट जॉन द फास्टर, जो बाद में कॉन्स्टेंटिनोपल के पैट्रिआर्क बने; सेंट जॉन क्लाइमक्स (*द लैडर* के लेखक), जिन्होंने अपने जीवन के अंत में माउंट सिनाई — यानी, वहां स्थित मठों — के मठाधीश के रूप में कार्य किया; और कई अन्य।

इस सेवा के दौरान, चर्च अचानक उस स्थान से निकलने वाली सुगंधित खुशबू से भर गया जहाँ मृतक लेटा था। जब मठाधीश के आदेश पर, दिवंगत आदरणीय मीना के अवशेषों वाली ताबूत खोली गई, तो उपस्थित सभी ने देखा कि सुगंधित मूरा (एक प्रकार का सुगंधित द्रव) उनके दोनों पैरों से दो धाराओं में बह रही थी। तब मठाधीश ने भाइयों से कहा:

'देखो, यह कुछ-कुछ दिवंगत के जीवनकाल में उनके पैरों द्वारा किए गए श्रम का पसीना है; यह सुगंध से भरपूर है, यह इस बात की गवाही है कि इन श्रमों को ईश्वर ने स्वीकार कर लिया है। अतःतुम भी, अपने सुपुर्द किए गए कर्तव्यों को निर्मल अंतकरण और पूर्ण लगन से निभाओ, ताकि तुम अपने श्रम का फल प्रभु ईश्वर और हमारे उद्धारकर्ता से प्राप्त कर सको।'

19 जनवरी

6 जनवरी (पुराना कैलेंडर)

प्रभु का बपतिस्मा

6 जनवरी को स्मरणोत्सव

हमारे प्रभु यीशु मसीह, मिस्र से लौटने पर, गलील में रहे, अपने गृहनगर नासरत में, जहाँ उनका पालन-पोषण हुआ था, और उन्होंने अपनी दिव्यता की शक्ति और अपनी बुद्धि को लोगों से तब तक छिपाए रखा जब तक कि वे तीस वर्ष के नहीं हो गए, क्योंकि यहूदियों के बीच तीस वर्ष से कम आयु के किसी भी व्यक्ति के लिए शिक्षक या पुरोहित का पद ग्रहण करना असंभव था। इसलिए, मसीह ने तब तक अपना उपदेश देना शुरू नहीं किया और न ही स्वयं को परमेश्वर के पुत्र और *'स्वर्ग से होकर गए महा पुरोहित'* (इब्रानियों 4:14) के रूप में प्रकट किया, जब तक कि वे निर्दिष्ट आयु तक नहीं पहुँच गए। नज़रथ में वह अपनी परम पवित्र माता के साथ रहे, पहले अपने पालक पिता, बढ़ई यूसुफ के साथ, जब तक वह जीवित थे, और उनके साथ एक बढ़ई के रूप में काम किया; और फिर, जब यूसुफ की मृत्यु हो गई, वे स्वयं उसी व्यवसाय में लगे रहे, और अपने तथा परमेश्वर की परम पवित्र माता के भरण-पोषण के लिए अपने हाथों की मेहनत से जीविकोपार्जन करते रहे, ताकि हमें भी परिश्रम का गुण सिखा सकें (लूका 3:23)। जब वे अपने सांसारिक जीवन के तीसरे वर्ष में पहुँचे और इस्राएल के लोगों के लिए उनके दिव्य प्रकटीकरण का समय आया, तो, जैसा कि सुसमाचार कहता है, *'मरुभूमि में जकरियाह के पुत्र यूहन्ना के पास परमेश्वर का वचन आया'* (लूका 3:2)—एक वचन जिसने उसे पानी से बपतिस्मा देने के लिए भेजा और उसे वह चिह्न प्रकट किया जिससे यूहन्ना को उस मसीहा को पहचानना था जो संसार में आया था। स्वयं बपतिस्मा देने वाले अपने उपदेश में इन शब्दों के साथ इस बारे में कहते हैं: *'जिसने मुझे पानी से बपतिस्मा देने के लिए भेजा, उसी ने मुझसे कहा, "जिस पर तुम आत्मा को उतरते और ठहरते देखोगे, वही पवित्र आत्मा से बपतिस्मा देने वाला है"'* (यूहन्ना 1:33)।

और इस प्रकार यूहन्ना, परमेश्वर के वचन का पालन करते हुए, यरदन के सारे प्रदेश में प्रचार करता हुआ गया, *'पापों की क्षमा के लिए पश्चाताप का बपतिस्मा'* (लूका 3:3), क्योंकि वही थे जिनके विषय में यशायाह ने भविष्यवाणी की थी: *'मरुभूमि में एक की पुकार: "प्रभु का मार्ग तैयार करो; हमारे परमेश्वर के लिए मरुभूमि में एक राजमार्ग सीधा करो"'* (यशायाह 40:3; तुलना करें लूका 3:4)। और पूरे यहूदिया और यरूशलेम के लोग उसके पास गए, और वे सब उससे यॉर्डन नदी में बपतिस्मा ले रहे थे, और अपने-अपने पापों का अंगीकार कर रहे थे (मरकुस 1:5)। तब यीशु गलील से यॉर्डन पर यूहन्ना के पास बपतिस्मा लेने आए (मत्ती 3:13)। वह उस समय आए जब यूहन्ना लोगों को यह प्रचार कर रहे थे, और कह रहे थे: *'मेरे बाद एक ऐसा आ रहा है जो मुझसे शक्तिशाली है, जिसके जूते खोलने के लिए भी मैं योग्य नहीं हूँ; मैंने तुम्हें पानी से बपतिस्मा दिया है, पर वह तुम्हें पवित्र आत्मा से बपतिस्मा देगा'* (मरकुस 1:7-8)। इस घोषणा के बाद, यीशु बपतिस्मा लेने आए। हालाँकि उसे इसकी कोई आवश्यकता नहीं थी, क्योंकि वह पाप रहित और निर्दोष था, जो परम शुद्ध और परम पवित्र कुँवारी मरियम से जन्मा था और स्वयं सभी शुद्धता और पवित्रता का स्रोत था, फिर भी, चूँकि उसने संपूर्ण जगत के पापों को स्वयं पर ले लिया था, वह बपतिस्मा के माध्यम से उन्हें शुद्ध करने के लिए नदी पर आया। वह जल की प्रकृति को पवित्र करने के लिए भी बपतिस्मा लेने आए; वह बपतिस्मा लेने इसलिए आए ताकि वह हमारे लिए भी

पवित्र बपतिस्मा का कुंड तैयार कर सकें। वह यूहन्ना के पास इसलिए भी आए ताकि यूहन्ना, बपतिस्मा लेने वाले पर पवित्र आत्मा को उतरते हुए देखकर और स्वर्ग से परमेश्वर पिता की वाणी सुनकर, मसीह के एक सच्चे गवाह बन सकें।

'किन्तु यूहन्ना ने उन्हें ऐसा करने से रोकना चाहा, और कहा, "मुझे तो आप से बपतिस्मा लेनी है, और क्या आप मेरे पास आते हैं?"' (मत्ती 3:14) उसने आत्मा द्वारा उसी की पहचान की, जिसके बारे में, तीस साल पहले, *उसने* अपनी माँ के गर्भ में *'खुशी से उछल कूद' की थी* (लूका 1:44); इसीलिए उसने स्वयं उससे बपतिस्मा माँगा, एक ऐसे व्यक्ति के रूप में जो अवज्ञा के पाप के बोझ के नीचे था, जो आदम से पूरी मानव जाति में चला गया था। परन्तु प्रभु ने यूहन्ना से कहा: *'अब ऐसा ही होने दे, क्योंकि हमें इस प्रकार सब धार्मिकता पूरी करना उचित है'* (मत्ती 3:15)।

'धर्मनिष्ठा' से, संत क्रिसोस्टोम यहाँ परमेश्वर की आज्ञाओं को समझते हैं, जैसे कि यीशु कह रहे हों: 'चूँकि मैंने व्यवस्था में दी गई सभी आज्ञाओं को पूरा कर लिया है, और केवल एक ही बची है—बपतिस्मा के बारे में—मेरे लिए यह भी पूरा करना उचित है'। यूहन्ना का बपतिस्मा भी एक दैवी आज्ञा थी, जैसा कि यूहन्ना के शब्दों से स्पष्ट है: *'जिसने मुझे पानी से बपतिस्मा देने के लिए भेजा, उसी ने मुझसे कहा'* (यूहन्ना 1:33)। तो, उसे किसने भेजा? स्पष्ट रूप से, स्वयं परमेश्वर ने: *'परमेश्वर का वचन यूहन्ना के पास आया,'* जैसा कि सुसमाचार में कहा गया है (लूका 3:2)। और तीस वर्ष की आयु में यीशु के बपतिस्मा लेने का एक और कारण यह है कि क्रिसोस्टोम और थियोफिलिक्ट के अनुसार, तीस वर्ष का व्यक्ति हर प्रकार के पाप के प्रति प्रवृत्त होता है। क्योंकि जवानी देहगत वासनाओं की आग के अधीन होती है, जबकि तीस वर्ष की आयु में—जब एक मनुष्य की शक्ति अपने पूरे चरम पर होती है—एक व्यक्ति धन, अहंकार, क्रोध, रोष और हर प्रकार के पापों के प्रेम के आगे झुक जाता है। यही कारण है कि प्रभु मसीह ने इस आयु तक अपने बपतिस्मा में देरी की, ताकि मानव जीवन के प्रत्येक चरण में वे व्यवस्था को पूरा करें, हमारे पूरे स्वभाव को पवित्र करें, और हमें हमारे जुनून पर काबू पाने तथा घातक पापों से बचने की शक्ति प्रदान करें।

बपतिस्मा ग्रहण करने के बाद, प्रभु तुरंत, बिना किसी देरी के, पानी से ऊपर आ गए। कहा जाता है कि संत यूहन्ना बपतिस्मादाता हर उस व्यक्ति को, जिसे वे बपतिस्मा देते थे, गर्दन तक डुबो देते थे और उन्हें तब तक वहीं रखते थे जब तक वे अपने सभी पापों का इकरार नहीं कर लेते; केवल तभी बपतिस्मा ग्रहण करने वाले व्यक्ति को पानी से ऊपर आने की अनुमति दी जाती थी। हालाँकि मसीह, पाप रहित होने के कारण, पानी में नहीं रोके गए; और इसलिए सुसमाचार में यह जोड़ा गया है कि वे तुरंत पानी से ऊपर आए (मत्ती 3:16)।

जब प्रभु पानी से बाहर निकले, तो उनके ऊपर स्वर्ग खुल गया, ऊपर से बिजली की तरह एक प्रकाश चमका, और परमेश्वर का आत्मा कबूतर के रूप में बपतिस्मा लेने वाले प्रभु पर उतर आया। जैसे नूह के दिनों में एक कबूतर ने बाढ़ के पानी के उतरने की सूचना दी थी, वैसे ही यहाँ कबूतर की छवि ने पाप की बाढ़ के अंत का पूर्वाभास दिया। और पवित्र आत्मा कबूतर के रूप में प्रकट हुआ क्योंकि यह पक्षी पवित्र है, लोगों से प्रेम करता है, नम्र है, दुर्भावनापूर्ण नहीं है, और किसी भी अशुद्ध चीज़ को सहन नहीं करता: इसी प्रकार पवित्र आत्मा शुद्धता का स्रोत, मानवता के लिए प्रेम का गहरा सागर, नम्रता का शिक्षक और शांति का दूत है; इसके अलावा, वह हमेशा पाप की कीचड़ में लथपथ व्यक्ति से दूर हो जाता है। जब पवित्र आत्मा कबूतर के रूप में स्वर्ग से मसीह यीशु पर उतरा, तो एक स्वर सुना गया: *'यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिससे मैं प्रसन्न हूँ'* (मत्ती 3:17)। और उसी को युगानुयुग महिमा और सामर्थ्य मिले। आमीन।

प्रभु के प्रकट होने के विषय में संत जॉन क्राइसोस्टोम के वचन

6 जनवरी को मनाया जाता है

प्रिय, मैं उत्सव मनाना और आनंदित होना चाहता हूँ, क्योंकि प्रबोधन का यह पवित्र दिन उत्सव का प्रतीक और आनंद का दिन है। यह बेतलेहेम के तबेखाने का स्मरण कराता है, जहाँ युगों के प्राचीन, एक शिशु के रूप में अपनी माता की गोद में एक खूँटड़े में लेटे थे; यह यॉर्डन के झरनों को भी खोलता है, जहाँ वही युगों के प्राचीन अब पापियों के साथ बपतिस्मा लेते हैं, और अपने परम पवित्र शरीर के द्वारा संसार को पापों की क्षमा प्रदान करते हैं। पहले उदाहरण में, जो परम पवित्र कुँवारी के गर्भ से प्रकट हुए, वे शिशुओं के लिए एक नन्हा शिशु, अपनी माँ के लिए एक पुत्र, मगन के लिए एक उपहार, और चरवाहों के लिए एक भले चरवाहे के रूप में प्रकट हुए, जो दिव्य धर्मग्रंथ के वचन के अनुसार, भेड़ों के लिए अपनी जान देता है (यूहन्ना 10:11)। दूसरे उदाहरण में, अर्थात् अपने स्वयं के बपतिस्मा पर, वह कर वसूलने वालों और पापियों के पापों को धोने के लिए यॉर्डन के जल पर आए। इस घटना के असाधारण चमत्कार के बारे में बात करते हुए,

अतः बुद्धिमान पौलुस उद्घोष करते हैं: *'परमेश्वर की कृपा प्रकट हुई है, जो सभी मनुष्यों के उद्धार के लिए है'* (तीतुस 2:11)। क्योंकि अब संसार अपने सभी भागों में प्रकाशित हो गया है: स्वर्ग सबसे ऊपर आनंदित है, जो लोगों तक स्वर्गीय ऊँचाइयों से उतरते परमेश्वर की आवाज़ पहुँचाता है; हवा पवित्र आत्मा की उड़ान से पवित्र हो गई है; पानी का स्वभाव ही पवित्र हो गया है, मानो वह शरीरों और आत्माओं दोनों को धोना सीख रहा हो; और सारी सांसारिक सृष्टि हर्षित होती है। केवल शैतान ही रोता है, क्योंकि वह अपनी शक्ति को डुबाने के लिए तैयार पवित्र बपतिस्मा के कुंड को देखता है।

सुसमाचार हमें और क्या बताता है? *'यीशु गलील से यूहन्ना से बपतिस्मा लेने के लिए यॉर्डन पर आए। परन्तु यूहन्ना ने उन्हें ऐसा करने से रोकते हुए कहा, "मुझे तो आप से बपतिस्मा लेने की आवश्यकता है, और आप मेरे पास आ रहे हैं?"'* (मत्ती 3:13, 14)। किसने कभी किसी प्रभु को एक सेवक के सामने खड़ा देखा है? किसने कभी किसी राजा को अपने सैनिक के सामने सिर झुकाते देखा है? किसने कभी किसी चरवाहे को एक भेड़ द्वारा रास्ता दिखाए जाते देखा है? किसने कभी किसी दौड़ आयोजक को एक धावक से पुरस्कार लेते देखा है[751] ? *'मुझे* तो *आप से बपतिस्मा लेने की आवश्यकता है'* – अर्थात्, हे प्रभु, मुझे वह बपतिस्मा स्वयं प्रदान करें जो आप संसार पर प्रदान करना चाहते हैं। मुझे आपके द्वारा बपतिस्मा की आवश्यकता है, क्योंकि मैं हमारे प्रथम माता-पिता के पाप के बोझ से दबे हुए हूँ और मुझमें साँप का विष है। मुझे उस प्राचीन अपराध के कलंक से शुद्ध होने की आवश्यकता है, लेकिन आप बपतिस्मा लेने के लिए किन पापों के लिए आए हैं? भविष्यवक्ता ने आपके बारे में गवाही दी, कहते हुए: *'क्योंकि उसने कोई पाप नहीं किया, और न ही उसके मुँह में कोई छल पाया गया'* (यशायाह 53:9)। तो फिर यह कैसे है कि आप, जो स्वयं मोक्ष प्रदान करते हैं, शुद्धिकरण की खोज करते हैं? रस्म के अनुसार, बपतिस्मा लेने वाले अपने पापों की कबूल करते हैं, परन्तु आपको कबूल करने के लिए क्या है, जबकि आप सर्वथा पापरहित हैं? आप मुझसे वह क्यों मांगते हैं जो मुझे सिखाया नहीं गया है? मैं वह करने की हिम्मत नहीं करता जो मेरी शक्ति से परे है; मैं नहीं जानता कि प्रकाश को कैसे धोया जाए, और न ही मैं धार्मिकता के सूर्य को प्रकाशित कर सकता हूँ। रात दिन को प्रकाशित नहीं करती; सोना टिन से अधिक शुद्ध नहीं हो सकता; मिट्टी कुम्भकार को ठीक नहीं कर सकती; समुद्र अपनी धाराएँ किसी झरने से नहीं खींचता; एक नदी को पानी की एक बूंद की आवश्यकता नहीं होती; अशुद्धि से पवित्रता पवित्र नहीं होती; और एक दंडित व्यक्ति न्यायाधीश को मुक्त नहीं करता। *'मुझे तोहरे द्वारा बपतिस्मा की आवश्यकता है'।* मृतक जीवित को नहीं जिला सकते, बीमार डॉक्टर का इलाज नहीं करते, और मैं अपनी प्रकृति की दुर्बलता को जानता हूँ! *'शिष्य अपने गुरु से बड़ा नहीं, और दास अपने स्वामी से बड़ा नहीं'* (मत्ती 10:24)। केरूबी भी मुझे भय से नहीं देखते; सेराफिम मेरी उपासना नहीं करते और न ही 'परम पवित्र' (Trisagion[752]) का उद्घोष करते हैं। स्वर्ग मेरा सिंहासन नहीं है; तारे ने मगों को मेरी ओर नहीं दिखाया; मूसा, आपके प्रिय सेवक को, *'आपकी पीठ'* देखने के लिए भी मुश्किल से ही योग्य समझा गया था (निर्ग. 33:23); तो फिर मैं तेरे परम पवित्र सिर को छूने की हिम्मत कैसे करूँ? तू मुझे वह काम करने का आदेश क्यों देता है जो मेरी शक्ति से परे है? मेरे पास परमेश्वर का बपतिस्मा देने के लिए कोई हाथ नहीं है: *'मुझे तो तेरे द्वारा बपतिस्मा की आवश्यकता है'*। मैं एक वृद्ध महिला से जन्मा था, क्योंकि प्रकृति आपके आदेश का विरोध नहीं कर सकती थी। अपनी माँ के गर्भ में रहते हुए, अपने लिए बोलने में असमर्थ, मैंने उनके होठों का उपयोग किया; और अब, अपने ही होठों से, मैं आपकी, उस अकल्पनीय की, महिमा करूँगा, जिसे कुँवारी नाव में समाहित किया गया था[753] । मैं यहूदियों की तरह अंधा नहीं हूँ, क्योंकि मैं जानता हूँ कि आप प्रभु हैं, जिन्होंने मानवता को चंगा करने के लिए केवल अस्थायी रूप से एक सेवक का रूप लिया; मैं जानता हूँ कि आप हमें बचाने आए थे; मैं जानता हूँ कि आप मानव हाथों की सहायता के बिना पहाड़ से काटा गया पत्थर हैं—एक ऐसा पत्थर जिसमें विश्वास करने वाले धोखा नहीं खाएंगे। मैं तेरी नम्रता के दृश्यमान संकेतों से भटक नहीं जाऊँगा, और मैं आत्मा में तेरी दिव्यता की महानता को समझता हूँ। मैं नश्वर हूँ, परन्तु तू अमर है; मैं एक बाँझ स्त्री से हूँ, परन्तु तू कुँवारी से है। मैं तुझसे पहले जन्मा था, परन्तु मैं तुझसे श्रेष्ठ नहीं हूँ। मैं तो आपके सामने उपदेश देना ही शुरू कर सकता था, पर मैं आपको बपतिस्मा देने का साहस नहीं करता: मैं जानता हूँ कि आप वह कुल्हाड़ी हैं जो वृक्ष की जड़ पर पड़ी है (मत्ती 3:10), वह कुल्हाड़ी जो यहूदी बगीचे

---

[751] रिस्टानिया सार्वजनिक खेलों के हिस्से के रूप में विभिन्न त्योहारों के दौरान ग्रीस में सार्वजनिक रूप से आयोजित प्रतियोगिताओं का संचालन करते थे। ऐसे किसी प्रतियोगिता के विजेता को पुरस्कार प्रदान करने वाले विशेष अधिकारियों द्वारा पुरस्कार प्रदान किया जाता था।

[752] यह भविष्यवक्ता यशायाह के दर्शन का संदर्भ है, जिन्हें सिंहासन पर विराजमान ईश्वर की एक झलक देखने का सौभाग्य मिला, जबकि सिंहासन के चारों ओर खेरूबिम और सेराफिम गा रहे थे: 'पवित्र, पवित्र, पवित्र है सेनाओं का यहोवा; सारी पृथ्वी उसकी महिमा से परिपूर्ण है!' (यशायाह 6:3)।

[753] स्वाभाविक रूप से, परमेश्वर की परम पवित्र माता का कुँआरा गर्भ।

के बाँझ पेड़ों को काट डालती है। मैंने उस दरांती को देखा है, जो वासनाओं को काट डालने के लिए तैयार है, और मैंने यह प्रचार किया है कि शीघ्र ही हर जगह चंगाई के झरने फूटेंगे; क्योंकि आपके यहूदी लोगों के लिए कौन-सी जगह अप्राप्य रहेगी? एक ही वचन से आप कोढ़ियों को शुद्ध कर देंगे; आपके वस्त्र के किनारे को एक बार छूने से रक्तस्राव बंद हो जाएगा; आपके एक ही आज्ञा से लकवाग्रस्त लोग अपनी शक्ति पुनःप्राप्त कर लेंगे। आप कनानी स्त्री की बेटी को अपने चमत्कारों के टुकड़ों से पोषित करते हैं; एक साँस से आप अंधों की आँखें खोलते हैं। तो फिर आप कैसे कहते हैं कि मैं आप पर अपना हाथ रखूँ? *'मुझे तो आप से बपतिस्मा लेने की आवश्यकता है, और आप मेरे पास आते हैं, और पृथ्वी आपकी उपस्थिति से काँप उठती है'* (मत्ती 3:14; भजन संहिता 103:32), जो जल पर भी सूखी भूमि की तरह चलता है—हे प्रभु, जिसके विषय में मैंने अपने उपदेश के दौरान अक्सर कहा है: *'मेरे बाद एक आ रहा है जो मुझसे शक्तिशाली है, जिसके सामने मैं झुककर उसके चप्पल का फंदा खोलने के भी योग्य नहीं हूँ'* (मरकुस 1:7)। मैं केवल आपकी अकथनीय भलाई पर भरोसा करता हूँ और मानवजाति के लिए आपके असीम प्रेम में अपनी आशा रखता हूँ, जिसके द्वारा आप एक वेश्या को भी अपने परम पवित्र पैरों को पोंछने और अपने परम पवित्र सिर को छूने की अनुमति देते हैं।

तब प्रभु उससे क्या कहते हैं? *'अब ऐसा ही होने दे, क्योंकि इस प्रकार हमारे लिए सब धार्मिकता को पूरा करना उचित है'* (मत्ती 3:15)। जिस प्रकार एक मानव स्वर करता है, वैसे ही वचन की सेवा करो; जैसे एक दास अपने स्वामी की, एक योद्धा अपने राजा की, और मिट्टी कुम्भार की सेवा करती है। डरो मत, बल्कि मुझे निडर होकर बपतिस्मा दो, क्योंकि मैं संसार को बचाऊँगा; मैं मृत मानव स्वभाव को पुनर्जीवित करने के लिए स्वयं को मृत्यु के हवाले कर देता हूँ। तुम, मेरी आज्ञा के बावजूद, अपना हाथ बढ़ाने में अभी भी हिचकिचा रहे हो, जबकि यहूदी जल्द ही मुझ पर अपना दुष्ट हाथ उठाने में संकोच नहीं करेंगे ताकि मुझे मृत्यु के हवाले कर सकें। 'अब ऐसा ही हो, क्योंकि ऐसा ही होना चाहिए।' मानव जाति के प्रति अपने प्रेम के कारण, मैंने संसार की रचना से पहले ही मानव जाति को बचाने का निश्चय किया था। मानवता के लिए, मैं मानव बना। इससे अधिक आश्चर्यजनक और क्या हो सकता है कि मैं, एक साधारण मनुष्य के रूप में, बपतिस्मा लेने आऊँ? मैं यह इसलिए करता हूँ क्योंकि मैं अपने ही हाथों की रचना को तुच्छ नहीं समझता, और न ही मुझे अपनी सांसारिक प्रकृति से शर्म आती है। मैं जैसा सनातन काल से था, वैसा ही रहा हूँ, और मैंने एक नई प्रकृति धारण की है; फिर भी मेरा सार अपरिवर्तित रहा है: 'मैं अब तुम्हें छोड़ दूँगा'। क्योंकि मानव जाति का शत्रु, स्वर्ग से गिराए जाने और पृथ्वी से निर्वासित किए जाने के बाद, जलमय क्षेत्र में निवास कर गया है; और मैं उसे बाहर निकालने के लिए वहीं से आया हूँ, जैसा कि भविष्यवक्ता ने मेरे विषय में भविष्यवाणी की थी: *'तूने जल में साँपों के सिर कुचल डाले हैं'* (भजन संहिता 73:13)। *'अब मुझे छोड़ दो'* क्योंकि यह शत्रु मुझे एक मनुष्य के रूप में परीक्षा में डालना चाहता है, और मैं यह उसकी शक्तिहीनता को साबित करने के लिए सहन करता हूँ, क्योंकि मैं उससे कहूँगा: *'तू यहोवा अपने परमेश्वर की परीक्षा न चढ़ाना'* (मत्ती 4:7; व्यवस्थाविवरण 6:16)।

हे नए चमत्कार! हे अनुपम अनुग्रह! मसीह यह करतब करते हैं, फिर भी मुझे सम्मान मिलता है; वे शैतान के विरुद्ध युद्ध करते हैं, फिर भी मैं विजेता घोषित किया जाता हूँ; वह पानी में साँप का सिर कुचलता है, जबकि मैं, मानो, एक सच्चे पहलवान की तरह मुकुटित होता हूँ[754] ; वह बपतिस्मा लेता है, जबकि मेरा कलंक धोया जाता है; पवित्र आत्मा उस पर उतरता है, जबकि मुझे पापों की क्षमा प्रदान की जाती है; पिता उसे अपने प्रिय पुत्र के रूप में गवाही देते हैं, जबकि मैं उसकी खातिर परमेश्वर का पुत्र बन जाता हूँ; आकाश उसके लिए खुल जाता है, और मैं उसमें प्रवेश करता हूँ; उसके सामने, जब वह बपतिस्मा लेता है, तो स्वर्गीय राज्य प्रकट होता है, और मैं इसे अपनी विरासत के रूप में प्राप्त करता हूँ; पिता की आवाज़ उसे पुकारती है, और उसके साथ मुझे भी बुलाया जाता है; पिता उन पर प्रसन्न हैं, और मुझे भी अस्वीकार नहीं करते। अपनी ओर से, मैं पिता की महिमा करता हूँ, जिन्होंने स्वर्ग से अपनी वाणी सुनाई; पुत्र की, जो पृथ्वी पर बपतिस्मा ले रहे हैं; और आत्मा की, जो कबूतर के समान उतर आए हैं—ईश्वर, त्रिमूर्ति में एक, जिसकी मैं हमेशा आराधना करूँगा। आमीन।

---

[754] यह अभिव्यक्ति एक प्राचीन रीति-रिवाज से ली गई है – सार्वजनिक कुश्ती प्रतियोगिताओं में विजेताओं को लौरल की मालाओं से सजाने की प्रथा।

प्रभु के प्रकटोत्सव पर वचन

6 जनवरी को स्मरण किया जाता है

जैसे ही हम यॉर्डन के जल पर प्रभु के प्रकट होने का पर्व मनाते हैं, आइए हम याद करें कि हमारे प्रभु परमेश्वर पहले भी विभिन्न अद्भुत कार्य करने के लिए जल के ऊपर प्रकट हुए थे। इस प्रकार, जब वह लाल सागर के पानी के ऊपर प्रकट हुए, तो उन्होंने 'गहराइयों और तल को प्रकट किया' ([755]) और अपने लोगों को सूखी भूमि पर ले गए; जब वह जहाज़ में यॉर्डन पार गए, तो उन्होंने उस नदी के पानी को पीछे कर दिया: *'यॉर्डन,' कहा जाता है, 'पीछे मुड़ गया'* (भजन संहिता 113:3)। अंत में, आरंभ में, जब परमेश्वर का आत्मा *जल के ऊपर* मंडरा रहा था (उत्पत्ति 1:1), परमेश्वर ने स्वर्ग, पृथ्वी, पक्षियों, पशुओं, मनुष्य और वास्तव में, संपूर्ण दृश्यमान जगत की रचना की।

और अब, यॉर्डन के जल के ऊपर, परमेश्वर प्रकट होते हैं, त्रिमूर्ति में एक: पिता स्वर में, पुत्र देह में, पवित्र आत्मा कबूतर के रूप में। तो, वह अपनी इस प्रकटता में क्या पूरा करते हैं? वह एक नई दुनिया बनाते हैं और सभी चीजों को नया करते हैं, ठीक वैसे ही जैसे उत्सव-पूर्व टोपारयिन एक नई दुनिया बनाने की बात करता है, जो पहली से अलग है। *'पुराना गया,'* धर्मग्रंथ कहता है, *'अब सब कुछ नया है'* (2 कुरिन्थियों 5:17)। पहला संसार, अपनी प्रकृति से ही, भारी था; वह स्वर्ग तक नहीं उठ सकता था और उसे खड़े होने के लिए सूखी भूमि की आवश्यकता थी, मानो वह एक ही जगह जड़ जमाए हुए हो। लेकिन जॉर्डन के जल से उत्पन्न नई दुनिया इतनी हल्की है कि उसे किसी सूखी भूमि की आवश्यकता नहीं है, यह पृथ्वी पर निर्मित नहीं है, इसमें 'कोई बाधा नहीं है, बल्कि यह ऊँचाइयों की खोज करती है', और यह पानी से तेजी से जॉर्डन के ऊपर खुले स्वर्ग के द्वार की ओर बढ़ती है: *'जैसे ही यीशु पानी से ऊपर निकले, स्वर्ग उनके लिए खुल गया'* (मत्ती 3:16)। पहले संसार के लिए, जो जीवन की कठिनाइयों से दबे हुए है, यदि वह स्वर्ग पहुँचना चाहे, तो एक सीढ़ी की आवश्यकता होगी, जो दृढ़ता से पृथ्वी पर टिकी हो, जिसकी चोटी स्वर्ग तक पहुँचती हो – लेकिन उसे भी याकूब ने केवल देखा था; वह स्वयं उस पर नहीं चढ़ा, – जबकि नई दुनिया के लिए, सीढ़ी के बिना भी स्वर्ग में आरोहण संभव है। तो कैसे? देखो, सीढ़ी के बजाय, परमेश्वर का आत्मा, कबूतर के रूप में, जल के ऊपर मंडराता है। और यह निम्नलिखित बात का संकेत देता है। मानव जाति बपतिस्मा के जल से अब पृथ्वी पर रेंगने वाला कोई सरीसृप या रेंगने वाला प्राणी नहीं, बल्कि एक पंखों वाला पक्षी के रूप में उभरती है; इसलिए पवित्र आत्मा बपतिस्मा के जल के ऊपर एक पक्षी के रूप में प्रकट हुआ, ताकि वह अपने बच्चों को—जिन्हें उसने बपतिस्मा के फव्वारे के माध्यम से उत्पन्न किया था—बिना सीढ़ी के स्वर्ग तक उठा सके। और यहाँ मूसा के गीत के शब्द पूरे हुए हैं: *'वह अपने बच्चों के ऊपर मंडराता है'* (व्यवस्थाविवरण 32:11), या, जैसा कि जेरोम के अनुवाद में लिखा है, 'अपने बच्चों को उड़ने के लिए उत्तेजित करता है'। ठीक ऐसी ही एक नई दुनिया है जिसे परमेश्वर यॉर्डन के जल पर अपनी प्रकट होने के माध्यम से बनाता है—एक ऐसी दुनिया जो पृथ्वी से नहीं चिपकती, बल्कि, एक पंखों वाले पक्षी की तरह, पंखों पर उड़कर खुले आकाश की ओर उड़ान भरती है।

आइए यहाँ पवित्रशास्त्र के वचन याद करें: *'और परमेश्वर ने कहा, "जल से ऐसे पक्षी निकलें जो आकाशमण्डल के ऊपर उड़ सकें"'* (उत्पत्ति 1:20), और आइए देखें कि कैसे पवित्र त्रिमूर्ति के एक व्यक्ति ने, संसार के नवीनीकरण के समय यॉर्डन के जल के ऊपर प्रकट होकर, बपतिस्मा के जल से अपने आध्यात्मिक पिल्लों को जन्म दिया और उन्हें उड़ने के लिए बुलाया, ताकि वे सद्गुणों के पंखों पर उड़कर यॉर्डन के ऊपर खुले स्वर्गों तक पहुँच सकें। लेकिन इससे पहले कि हम इस पर विचार करें, आइए चर्च के धर्मपितामहों के अधिकार पर यह स्थापित करें कि जल और आत्मा से जन्मा हर व्यक्ति एक स्वर्गीय चूजा बन जाता है। संत जॉन क्राइसोस्टोम कहते हैं: पहले कहा गया था: *'जल जीवित प्राणी उत्पन्न करे'*; लेकिन जब से मसीह यॉर्डन के जल में उतरे, जल अब *'रेंगने वाली चीज़ें, एक जीवित प्राणी'* को नहीं उत्पन्न करता, बल्कि तर्कशील और आध्यात्मिक प्राणियों को - आत्माओं, को उत्पन्न करता है जो पृथ्वी पर नहीं रेंगते, बल्कि पक्षियों की तरह स्वर्ग की ओर उड़ान भरते हैं। इसीलिए दाऊद ने कहा: *'हमारी आत्मा एक पक्षी के समान है'* (भजन संहिता 123:7)। यह पक्षी पृथ्वी का नहीं, बल्कि स्वर्ग का है; क्योंकि हमारा निवास, जो हमारे लिए बपतिस्मा के क्षण से ही तैयार किया गया है, धर्मग्रंथ के वचन के अनुसार, स्वर्ग में है।' नाइसा के संत ग्रेगरी, उन लोगों को फटकारते हुए जो बपतिस्मा प्राप्त करने के बाद अपने पूर्व दुष्ट कर्मों पर लौट आते हैं, कहते हैं: 'वे लज्जाहीन लोग जो बपतिस्मा ले चुके हैं, जो—कौन जाने किसके द्वारा—एक प्रकार के उन्माद में धकेल दिए गए हैं, बपतिस्मा के जल के माध्यम से प्राप्त अपनी मुक्ति खो देते हैं, भले ही, मसीह के शरीर के साथ दफ़नाए जाने के बाद, उन्हें एक गरुड़ के पंखों

[755] प्रभु के बपतिस्मा के लिए पहला इरमोस।

से सजाया गया है और इस प्रकार उन स्वर्गीय पक्षियों तक उड़ान भरने की क्षमता प्राप्त है, जो नश्वर आत्माएँ हैं'। आइए हम इन शब्दों पर ध्यान दें: 'मसीह के शरीर के साथ (बपतिस्मा के माध्यम से) दफनाए जाने के बाद, उन्हें एक गरुड़ के पंखों से परिधानित किया गया है, ताकि वे ऊँची उड़ान भर सकें'। इसके द्वारा, यह पवित्र शिक्षक विश्वासपूर्वक यह साबित करते हैं कि बपतिस्मा के जल से निकलने वाले लोग स्वर्ग की ओर उड़ान भरने वाले पक्षी बन जाते हैं। लेकिन हम इसे इतिहास से भी देखेंगे।

हेलिओपोलिस के आदरणीय नोनस, जब वे अंतीयक में एक कुख्यात पापी, पेलैजिया को ईश्वर के प्रति परिवर्तित करने वाले थे, तो एक रात सपने में उन्होंने निम्नलिखित दृष्टि देखी[756] : उसे ऐसा प्रतीत हुआ कि वह चर्च में लिटर्जी का अनुष्ठान कर रहे थे, जब कीचड़ से लथपथ एक काली कबूतर उनके चारों ओर उड़ने लगी; उन्होंने उसे पकड़ लिया, बपतिस्मा के कुंड में धोया, और कबूतर तुरंत बर्फ की तरह सफेद और सुंदर हो गई, और वहाँ से सीधे स्वर्ग की ओर उड़ गई। इस दर्शन ने संकेत दिया कि यह धन्य पिता पापी को प्रभु के पास ले जाएगा और पवित्र बपतिस्मा के माध्यम से उसे ज्ञान प्रदान करेगा। इस प्रकार, पवित्र बपतिस्मा के जल इतने शक्तिशाली हैं कि वे एक व्यक्ति को स्वर्गीय पक्षी में बदल सकते हैं। यॉर्डन के जल भी यही कार्य करते हैं, एक व्यक्ति को पंख प्रदान करते हैं जिन पर वे 'उनके सामने खुलते स्वर्गों' में उड़ान भर सकते हैं।

लेकिन इस दृष्टि में केवल यॉर्डन के जल में मानव स्वभाव का नवीनीकरण ही नहीं दर्शाया गया है; प्रकट हुए ईश्वरत्व के तीन पूजनीय व्यक्तियों ने भी विभिन्न पक्षियों के स्वरूप धारण किए। इस प्रकार, हम जानते हैं कि पवित्र धर्मग्रंथ ईश्वर पिता की तुलना एक गरुड़ से करता है: *'जैसे एक गरुड़ अपने घोंसले को उकसाता है'* (व्यवस्थाविवरण 32:11)। हम यह भी पढ़ते हैं कि परमेश्वर पुत्र की तुलना एक मुर्गी से की गई है[757] : *'हे यरूशलेम, हे यरूशलेम,'* वह कहते हैं, *'मैंने कितनी बार तुम्हारे बच्चों को एक मुर्गी की तरह अपनी पंखों के नीचे इकट्ठा करना चाहा'* (मत्ती 23:37)। अंत में, हम जानते हैं कि पवित्र आत्मा परमेश्वर यॉर्डन नदी के ऊपर कबूतर के रूप में प्रकट हुए थे। तो सबसे पवित्र त्रिमूर्ति के व्यक्तियों की उपमा इन तीन प्रकार के पक्षियों से क्यों दी गई है? सचमुच, ऐसा इसलिए है क्योंकि वे आध्यात्मिक रूप से बपतिस्मा के जल से ऐसे 'युवा पक्षियों' के झुंड को जन्म देते हैं; अर्थात्, वे लोगों को आध्यात्मिक युवा पक्षियों में बदल देते हैं—कुछ को चील के सदृश, कुछ को मुर्गी के सदृश, और कुछ को, मानो, कबूतर के सदृश।

स्वर्ग में आनंदित कलीसिया, परमेश्वर के उन विश्वासयोग्य सेवकों को, जो युद्धरत कलीसिया से आते हैं, स्वर्गीय निवास में तीन विशिष्ट समूहों में विभाजित करती है: शिक्षकों का समूह, शहीदों का समूह और कुंवारियों का समूह। यह कहना गलत नहीं होगा कि ये तीन पद, बपतिस्मा के जल से उत्पन्न और बाहर आए हुए, युवा पक्षियों के तीन झुंड हैं। शिक्षकों का क्रम चीलों का एक झुंड है जो स्वर्ग में उड़ान भरते हैं और अपनी आँखें बंद किए बिना सूर्य की किरणों को निहारते हैं; क्योंकि पवित्र शिक्षक, ईश्वर को ध्यान में रखते हुए, पंखों वाले की तरह ऊँचा उड़ान भरते हैं, और अपने तेजस्वी मन से, मानो एक आँख से, त्रिमूर्ति ईश्वरत्व के प्रकाश का चिंतन करते हुए, स्वयं और दूसरों को ज्ञान से प्रकाशित करते हैं। शहीदों की उपमा कई चूजों वाली मुर्गियों के झुंड की है, क्योंकि मसीह के लिए अपना रक्त बहाकर उन्होंने मसीह के लिए कई अन्य बच्चों को जन्म दिया है: शहीदों के रक्त ने वास्तव में आदमि कलीसिया के लिए कई बच्चों को जन्म दिया है, जिनकी संख्या आकाश के तारों और समुद्र तट की रेत से भी अधिक हो गई है। कन्याओं की छवि शुद्ध कबूतरों के झुंड की है, क्योंकि वे स्वयं को पूरी तरह से परमेश्वर के लिए एक जीवित बलिदान के रूप में अर्पित करती हैं और शरीर को नहीं, बल्कि एकमात्र प्रभु को प्रसन्न करने का ध्यान रखती हैं। जैसा कि हमने कहा है, आध्यात्मिक पक्षियों के ये तीन झुंड बपतिस्मा के जल में उत्पन्न हुए थे। आइए विचार करें कि ऐसा कैसे होता है।

प्रेम-गीत में लिखा है: *'अपनी दृष्टि मुझ से हटा ले, क्योंकि वह मुझे व्याकुल कर देती है'* (प्रेम-गीत 6:4)। इसका अर्थ है: हे प्रभु, मुझ पर अपनी दयालु दृष्टि डाल और अपनी दृष्टि मुझ से मत हटा, क्योंकि, तेरी दया से, मैं स्वर्ग की ओर उड़ने वाला एक पक्षी बन जाता हूँ। और यॉर्डन पर अपने प्रकट होने में, परमेश्वर ने मानव स्वभाव को देखा: परमपिता परमेश्वर ने उसे देखा, और अपने पुत्र के ऊपर स्वर्ग खोल दिया; पुत्र परमेश्वर ने उसे देखा, जो गलील के नासरत से यॉर्डन पर यूहन्ना से बपतिस्मा लेने आए थे - उन्होंने उसे देखा, मैं कहता हूँ, आदम के पाप की सारी अशुद्धि के लिए, हमारे स्वभाव की सभी कमजोरियों को—उसने उन्हें इकट्ठा किया और उन्हें धोकर हमारे पापों से शुद्ध करने

---

[756] तुलना करें संत पेलagia का जीवन, 8 अक्टूबर

[757] *कोकोश* – एक सोचती हुई मुर्गी; अपने चूजों की रक्षा करने वाली माँ पक्षी।

के लिए यहाँ लाया—और पवित्र आत्मा परमेश्वर ने भी उस दिव्य मनुष्य पर दृष्टि डाली जब उसे बपतिस्मा दिया जा रहा था। हम पर दृष्टि डालने के बाद, क्या त्रिमूर्ति में एक परमेश्वर ने मानव स्वभाव को महिमामय नहीं किया? वास्तव में उन्होंने किया, क्योंकि इस दिव्य दृष्टि के द्वारा, , गरुड़, मुर्गियों और कबूतरों के झुंड तुरंत प्रकट हुए—अर्थात् शिक्षकों, शहीदों और कुंवारी कन्याओं के रूप। आइए हम इसे पवित्र धर्मग्रंथ के आधार पर समझाएं।

प्राप्त प्रकाशन में, धर्मशास्त्री ने परमेश्वर के सिंहासन के सामने काँच के समान एक शीशे का सागर देखा (प्रकाशितवाक्य 4:6); यह समुद्र पवित्र बपतिस्मा के रहस्य का प्रतीक था, क्योंकि परमेश्वर के सिंहासन और परमेश्वर के सिंहासन के पास आने के इच्छुक व्यक्ति के बीच बपतिस्मा का जल स्थिति है, और कोई भी परमेश्वर के पास, जो स्वर्गीय सिंहासन पर विराजमान है, तब तक नहीं पहुँच सकता जब तक कि वह पहले बपतिस्मा के समुद्र को न पार कर ले, पवित्र शास्त्र के वचनों के अनुसार: *'जब तक कोई जल और आत्मा से न जन्मे, वह परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता'* (यूहन्ना 3:19)। लेकिन यह समुद्र, जो बपतिस्मा के रहस्य का प्रतीक है, काँच और स्फटिक का बना क्यों है? हम जानते हैं कि पवित्र धर्मग्रंथों के व्याख्याकार कहेंगे कि यह काँच का है क्योंकि इसमें एक ऐसी पवित्रता है जो बपतिस्मा ग्रहण करने वाले व्यक्ति की आत्मा को शुद्ध करती है, और यह क्रिस्टल का है क्योंकि यह मानव हृदय को शक्ति प्रदान करता है। यह काँच और स्फटिक का भी है क्योंकि, जैसे सूर्य की किरण काँच और स्फटिक से होकर गुजरती है, वैसे ही ईश्वर की कृपा बपतिस्मा के रहस्य के माध्यम से प्रवेश करती है, मनुष्य तक पहुँचती है और उसकी आत्मा के मंदिर को प्रकाशित करती है। अंत में, परमेश्वर के सिंहासन के सामने का समुद्र, जो बपतिस्मा के रहस्य का प्रतीक है, काँच और स्फटिक का है ताकि सिंहासन पर विराजमान परम पवित्र त्रिमूर्ति, उसमें एक काँच और स्फटिक के दर्पण की तरह प्रतिबिंबित और देखी जा सके; क्योंकि पवित्र बपतिस्मा में त्रिमूर्ति का स्वरूप प्रकट हुआ है। *यीशु मसीह ने कहा, 'इसलिये जाओ, और सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ, और उन्हें पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दिलाओ'* (मत्ती 28:19)। इंसानी शब्दों में कहें तो, यदि ईश्वर पिता अपने सिंहासन पर एक गरुड़ की तरह विराजमान हुए, तो सिंहासन के सामने समुद्र में, मानो एक काँच और क्रिस्टल के आईने में, गरुड़ की छवि प्रतिबिंबित हुई होगी। यदि परमेश्वर पुत्र एक मुर्गे की तरह सिंहासन पर विराजमान थे – क्योंकि सुसमाचार में वे स्वयं को ऐसा कहते हैं – तो सिंहासन के सामने समुद्र में, मानो एक दर्पण में, एक मुर्गे का प्रतिबिंब दिखाई देना चाहिए था। यदि पवित्र आत्मा उस सिंहासन पर एक कबूतर के रूप में विराजमान था, तो उस समुद्र में भी कबूतर की प्रतिमा प्रकट होनी चाहिए थी। लेकिन आइए हम इन छवियों के आध्यात्मिक अर्थ को समझाएं।

हम कह चुके हैं कि परमेश्वर के सिंहासन के सामने देखा गया समुद्र पवित्र बपतिस्मा के रहस्य को दर्शाता है, जिसमें हमारी बपतिस्मा प्राप्त प्रकृति कांच की तरह *'मांस और आत्मा की हर अशुद्धि से'* (2 कुरिन्थियों 7:1) शुद्ध हो जाती है, जबकि हमारी आत्मा, मानो, क्रिस्टल की तरह मजबूत और प्रबुद्ध होती है। और जब त्रिमूर्ति में परमेश्वर हमारे बपतिस्मा के समय इस रहस्यमय काँच और स्फटिक को निहारते हैं, तो वास्तव में त्रिमूर्ति का स्वरूप उसमें प्रकट होता है। चाहे परमेश्वर पिता इसे एक आध्यात्मिक गरुड़ के रूप में देखें, या परमेश्वर पुत्र एक आध्यात्मिक मुर्गी के रूप में, या परमेश्वर पवित्र आत्मा एक आध्यात्मिक कबूतर के रूप में, वह रहस्यमयी काँच और स्फटिक— अर्थात्, हमारे स्वभाव का बपतिस्मा पाना, अपने भीतर उन आध्यात्मिक पक्षियों की प्रतिमा को प्रकट करता है और वह एक गरुड़, या मुर्गी, या कबूतर का चूजा बन जाता है; अर्थात्, त्रिमूर्ति में एक, परमेश्वर का बच्चा—पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा—जैसा कि कहा गया है: *'हम में से जो उसके नाम पर विश्वास करते हैं, उन्हें परमेश्वर की संतान बनने का अधिकार दिया गया है'* (यूहन्ना 1:12)। परम पवित्र त्रिमूर्ति ने जॉर्डन के जल में बपतिस्मा लेते हुए मानव स्वभाव को देखा, और उसमें प्रतिबिंबित हुई, और उसे एक नवोदित पक्षी की तरह, एक चील, एक मुर्गी और एक कबूतर के आध्यात्मिक पंखों से विभूषित किया; अर्थात्, इसने संघर्षरत कलीसिया में शिक्षकों, शहीदों और कुंवारी मसीहियों की संख्या को बढ़ा दिया। इस प्रकार यह स्पष्ट है कि परम पवित्र त्रिमूर्ति के प्रत्येक व्यक्ति ने यॉर्डन के जल से अपने स्वयं के विशेष आध्यात्मिक नवोदितों को उत्पन्न किया। ईश्वर पिता ने, एक गरुड़ की तरह, यॉर्डन से आध्यात्मिक गरुड़ों को, अर्थात्, कलीसिया के शिक्षकों को उत्पन्न किया। यरूशलेम के संत सिरील कहते हैं: 'संसार की शुरुआत पानी है; सुसमाचार की शुरुआत यॉर्डन है। जल से, दिन का प्रकाश प्रकट हुआ, क्योंकि परमेश्वर का आत्मा, जो आरंभ में जल के ऊपर मंडरा रहा था, ने अंधकार से प्रकाश को चमकने की आज्ञा दी। यॉर्डन से, पवित्र सुसमाचार का प्रकाश प्रकट हुआ। मसीह, संपूर्ण जगत के प्रथम शिक्षक—परमेश्वर की शक्ति और परमेश्वर की बुद्धि—उन्होंने अपना उपदेश कहाँ शुरू किया? क्या यह यॉर्डन के जल से नहीं था? जैसा कि सुसमाचार में लिखा है, *'उस समय* से', *'यीशु ने प्रचार करना और यह कहना*

आरंभ कयि, "पश्चाताप करो" (मत्ती 4:17)। और तुरंत ही उनके पीछे कई शिक्षक प्रकट हुए – ये पवित्र प्रेरित थे, जिन्हें उन्होंने प्रचार करने के लिए भेजा। इस प्रकार, जल ने प्राकृतिक पक्षियों (उत्पत्ति 1:21) और आध्यात्मिक पक्षियों दोनों को जीवन दिया। क्योंकि पितरस और अन्द्रियास, याकूब और यूहन्ना (मत्ती 4:18, 21) को प्रेरितीय और शिक्षण सेवकाई के लिए कहाँ से बुलाया गया था? क्या यह पानी से नहीं था? प्रभु ने अपने प्रेरितों को मछुआरों में से चुना। सामरी स्त्री अपने ही नगर में सच्चे मसीहा की प्रचारक के रूप में कहाँ से प्रकट हुई? क्या यह याकूब के कुएँ के पानी से नहीं था (यूहन्ना 4:6-7)? अंधा हुआ वह मनुष्य, जिसे दृष्टि मिली थी, मसीह की चमत्कारिक शक्ति का गवाह बनने के लिए कहाँ से आगे बढ़ा? क्या यह सिलोम के पोखरे के पानी से नहीं था (यूहन्ना 9:7)? यह सब पवित्र बपतिस्मा की पूर्वछाया थी, जिसमें आध्यात्मिक अंधापन चंगा होता है, पाप के दाग धुल जाते हैं, और कलीसिया के शिक्षकों को दिव्य ज्ञान प्राप्त होता है। क्योंकि बपतिस्मा के द्वारा, मनुष्य को वह अनुग्रह प्राप्त होता है जिससे वह महान समझ प्राप्त कर सकता है; और इससे, विश्वास के शिक्षकों में आध्यात्मिक पंख उगते हैं, जैसा कि पवित्रशास्त्र का वचन है: *'वे गरुड़ के पंखों पर उड़ेंगे; वे दौड़ेंगे और थकेंगे नहीं'* (यशायाह 40:31)।

ईश्वर पुत्र, एक माँ मुर्गी की तरह जो अपने बिखरे चूजों को अपने पंखों के नीचे इकट्ठा करती है, अपने छोटे बच्चों—पवित्र शहीदों—को बपतिस्मा के जल से बाहर लाते हैं। वे स्वयं सबसे पहले अपना देह, जो जल में बपतिस्मा लिया था, घावग्रस्त होने के लिए अर्पित करते हैं, और स्वयं सबसे पहले हमारे लिए क्रूस पर अपनी जान देते हैं, ताकि हम भी उनके लिए मरने को तैयार हो सकें। आइए यहाँ प्रेरित के वचन याद करें: *'हम जो मसीह यीशु में बपतिस्मा ले चुके हैं, हम सब ने उसकी मृत्यु में बपतिस्मा लिया है'* (रोमियों 6:3)। इसका अर्थ लगभग वैसा ही है जैसे प्रेरित ने कहा हो: हर कोई जो मसीह में बपतिस्मा ले चुका है, उसे उसके लिए मरना चाहिए, उसे *'उसकी मृत्यु के समानता में उसके साथ एक होना चाहिए'* (रोमियों 6:5)। और पवित्र शहीदों के अलावा और कौन था जो उसकी मृत्यु में बपतिस्मा लिया था, जो कहते हैं: *'तेरे ही निमित्त हम दिन भर मार डाले जाते हैं'* (भजन संहिता 43:23)? और कौन इतना *'उसकी मृत्यु के समानता में उसके साथ एक* हुआ' (रोमियों 6:5), जिसके लिए वह *'बलि के मेमने के समान वध के लिए ले जाया गया'* (यशायाह 53:7), अगर पवित्र शहीदों को नहीं, जो कहते हैं: *'वे हमें वध के लिए नियत मेमनों के समान गिनते हैं'* (भजन संहिता 43:23)? इसीलिए उनके बारे में गाया जाता है: 'परमेश्वर के मेम्ने का प्रचार करके, मेमनों की तरह वध के लिए दण्डित हो जाओ'[758] । उनचास पवित्र शहीदों का उनके मृत्यु में बपतिस्मा हुआ; संत कैलिस्ट्रैटस के साथ तालाब में फेंके जाने के बाद, वे 'उनके मृत्यु के स्वरूप के अनुरूप बने' (*जिनका स्मरण 27 सितंबर को किया जाता है*), साथ ही दस हजार शहीदों को भी, जिन्हें संत रोमाइलोस के साथ, उसी दिन अर्मेनियाई रेगिस्तान में सूली पर चढ़ाया गया था (*जिनका स्मरण 6 सितंबर को किया जाता है*)। वास्तव में, सभी पवित्र शहीदों ने, जिन्होंने मसीह के लिए अपना रक्त बहाया, *'उसकी मृत्यु के समानता के निकट आ गए'*, ठीक वैसे ही जैसे उन्हें उसकी मृत्यु में बपतिस्मा दिया गया था। अपने बपतिस्मा के जल में रहते हुए भी, वे पहले से ही शहीद के मुकुट के लिए पूर्वनिर्धारित थे। एक साधारण मुर्गी को भोजन के लिए सबसे अच्छी अनाज की दाने चुनने की आदत होती है, और उन्हें पाकर वह अपने चूजों को अपनी ओर बुलाती है। यह सत्य मानते हुए कि सभी सद्गुण आध्यात्मिक पोषण हैं, प्रत्येक व्यक्ति को यह स्वीकार करना चाहिए कि प्रेम से बेहतर कोई अनाज, न ही कोई उच्चतर सद्गुण है: *'पर प्रेम इन सब में उत्तम है'* (1 कुरिन्थियों 13:13) – और यह ठीक इसी प्रकार का प्रेम है जो प्रियजन के लिए अपना जीवन दे देता है: *'मित्रों के लिये अपना प्राण देना परम प्रेम है'* (यूहन्ना 15:13)। प्रेम के इस दाने को आध्यात्मिक मुर्गी – प्रभु मसीह – ने पाया और अपने चूजों को दिखाया, जिन्होंने अपने मित्रों के लिये अपना प्राण दे दिया: *'तुम मेरे मित्र हो,'* उन्होंने प्रेरितों से कहा (यूहन्ना 15:14). इस बीज के पास बुलाए गए चूजे—पवित्र शहीदों—ने, प्रेम से प्रेरित होकर, प्रभु के लिए अपना जीवन बलिदान करना शुरू कर दिया, जैसा कि एक शहीद प्रभु से घोषणा करता है: 'मैं तुमसे प्रेम करती हूँ, मेरे वधूवर, और तुम्हारे लिए मैं पीड़ा सहूँगी'[759] । तो फिर, ये आध्यात्मिक चूजे प्रेम के बीज के लिए कहाँ से बुलाए गए थे? क्या यह बपतिस्मा के जल से नहीं था, जिसमें उन्हें उसकी मृत्यु में बपतिस्मा दिया गया था? आइए हम सिनाई के संत अनास्तासियस[760] की बात सुनें, जो उस बुद्धिमान चोर के बारे में कहते हैं, जिसके लिए मसीह की ओर से बहा हुआ जल बपतिस्मा का जल बन गया, कहते हैं: 'इन पक्षियों (अर्थात्, स्वर्गीय आत्माओं) की ओर सभी पक्षियों में अग्रणी,

---

[758] स्मरणोत्सव सेवा से।

[759] शहीदों के लिए ट्रॉपारियन से।

[760] सिनाई के संत अनास्तासियस – 7वीं सदी के ग्रीक ऑर्थोडॉक्स चर्च के उत्कृष्ट धर्मशास्त्रियों में से एक। उनका पर्व दिवस 23 अप्रैल है।

पवित्र चोर, प्रभु के पार्श्व से प्रवाहित जीवन-दायक जल से उड़ा, पक्षियों के झुंड के साथ हवा में उड़ते हुए – पक्षियों के राजा – मसीह – के साथ हवा में स्वर्ग की ओर उड़ते हुए।'

पवित्र आत्मा परमेश्वर, एक कबूतर की तरह, बपतिस्मा के जल से अपने बच्चों—शरीर और आत्मा से शुद्ध कबूतरों, अर्थात् कुँवारियों—को बाहर लाता है। क्योंकि जब तक प्रभु यीशु मसीह के व्यक्तित्व में मानव स्वभाव, पवित्र आत्मा की अनुग्रहपूर्ण कृपा और कार्य द्वारा, परमेश्वरत्व के साथ एक नहीं हो गया और यॉर्डन के जल से स्नान नहीं कर लिया, तब तक विवाह को कुँवारीपन से अधिक सम्मान दिया जाता था; तब तक, परमेश्वर की महिमा के लिए अपनाई गई कुँवारी पवित्रता के बारे में बहुत कम ज्ञात था। *'जो देह से जन्मा है, वह देह है'* ([761])। उस समय, केवल देह ही जन्म देती थी, जबकि आत्मा बाँझ बनी रही; इसीलिए परमेश्वर ने एक बार कहा था: *'मेरा आत्मा मनुष्य से सदा के लिए संघर्ष नहीं करेगा, क्योंकि वह देह है'* (उत्पत्ति 6:3)। लेकिन जब मानव स्वभाव यॉर्डन पर अवतरित हुआ, और पवित्र आत्मा उस पर अवतरित हुआ, तो अचानक, आत्मा से, कुँवारीपन—विवाह का सर्वोच्च रूप—जीवंत हो उठा, जो सांसारिक नहीं बल्कि आध्यात्मिक की आकांक्षा करता है, जॉन द थियोलॉजियन के शब्दों में: *'जो आत्मा से जन्मा है, वह आत्मा है'* (यूहन्ना 3:6)। और चूँकि आत्मा का सम्मान शरीर से अधिक है, कुँवारीपन—जो प्रभु के साथ एक आत्मा में एकजुट है—शारीरिक वैवाहिक मिलन से अधिक सम्माननीय हो गया। हमारी प्रकृति, जो यॉर्डन पर मसीह के साथ एक आध्यात्मिक वैवाहिक मिलन में प्रवेश कर चुकी थी, फलदायी हो गई और उसने स्वयं से संपूर्ण कुँवारी रूपों को जन्म दिया। और ऐसा आध्यात्मिक विवाह कुँवारीपन के अलावा कुछ भी उत्पन्न नहीं कर सकता, जैसा कि भविष्यवक्ता ज़करियाह ने भी इंगित किया, यह कहते हुए: *'युवतियों के लिए दाखमद्य'* (ज़करियाह 9:17)। 'युवतियों' से, भविष्यवक्ता का तात्पर्य कुँवारी आकृतियों से है। नबी के शब्दों के अनुसार, पवित्र आत्मा शराब की तरह बहाया जाता है और कुंवारीयों को जन्म देता है; क्योंकि जहाँ भी पवित्र आत्मा अपना अनुग्रह बहाता है, वहाँ कुंवारीपन का जन्म अवश्य होता है। धन्य जेरोम, पवित्र धर्मग्रंथों के अपने अनुवाद में, इस अंश के अर्थ को 'शराब जो कुंवारीयों को जन्म देती है' शब्दों के साथ यथोचित रूप से व्यक्त करते हैं। वास्तव में, पवित्र आत्मा की कृपा का वह मदिरा एक बार प्रेरितों पर उंडेल दिया गया था और उसने उन्हें इतना मदहोश कर दिया कि कुछ लोगों को लगा कि वे शराब के नशे में हैं; और उसने उन्हें ऐसे कुंवारे बना दिया कि उनमें कोई भी बुराई नहीं बची, और वे कबूतरों की तरह शुद्ध और पूर्ण हो गए। पवित्र आत्मा के अवतरण के पर्व पर, कलीसिया गाती है: 'उद्धार का आत्मा शुद्ध प्रेरितों के हृदय बनाता है'[762] । इस प्रकार, अब यह मदिरा यॉर्डन के जल पर डाली जाती है, और कौन संदेह कर सकता है कि बपतिस्मा का जल, पवित्र आत्मा की मदिरा के साथ मिलकर, कुँवारीपन लाता है, भविष्यवाणी के वचनों के अनुसार: 'ऐसी मदिरा जो कुँवारियों को जन्म देती है' – और वास्तव में ऐसी कुँवारियाँ जिनके बारे में प्रेरित कहते हैं: *'मैंने तुम्हें एक पति के लिए मंगनी कर दिया है, ताकि मैं तुम्हें मसीह के लिए एक पवित्र कुँवारी के रूप में प्रस्तुत करूँ'* (2 कुरिन्थियों 11:2)? हमारे स्वभाव का परमेश्वर के साथ आध्यात्मिक विवाह से, आत्मा से कुँवारीपन उत्पन्न होता है, जिसे पवित्र आत्मा बपतिस्मा के जल से उत्पन्न करके स्वर्गीय निवासों में ले जाता है।

इस प्रकार परम पवित्र त्रिमूर्ति का प्रत्येक व्यक्ति, यॉर्डन पर प्रकट होकर, बपतिस्मा के जल से अपने स्वयं के विशेष आध्यात्मिक नव-पंखों को उत्पन्न करता है और, उन्हें उत्पन्न करने के बाद, उन्हें उन पर दिए गए सद्गुणों के पंखों पर खुले स्वर्गों में उड़ने के लिए बुलाता है।

सबसे पहले, परमेश्वर पिता, एक आध्यात्मिक गरुड़ की तरह, अपने बच्चों—अर्थात् आध्यात्मिक गरुड़, यानी शिक्षकों—को उड़ान भरने के लिए बुलाते हैं, उन विशेष पंखों वाले के रूप में, जिनके बारे में कलीसिया गाती है: 'परमेश्वर ने उन जवानों को बाँटा जो उड़कर आए थे, और वे स्वर्ग तक ऊँची उड़ान भर गए।'[763] तो, इन जवान पक्षियों के पंख क्या हैं? निस्संदेह, सभी में आम अन्य सद्गुणों के अलावा, उनके दो हैं: कर्म और वचन। वह चर्च का एक शिक्षक, एक ऊँची उड़ान भरने वाला बाज है, जो स्वयं उस बात को व्यवहार में लाता है जो वह वचन में दूसरों को सिखाता है। और यह कि आध्यात्मिक गरुड़ के पंख वास्तव में कर्म और वचन ही हैं, यह नबी यहेज़केल की पुस्तक में स्पष्ट रूप से दिखाया गया है, जिन्होंने एक बार चार जीवित प्राणी देखे, प्रत्येक के चार पंख थे, जो ईश्वर की रथ को खींच रहे थे। उन प्राणियों ने अपने पंखों से एक ध्वनि की: *'और जब वे चलने लगे,'* भविष्यवक्ता कहते हैं, 'तो *मैंने उनके पंखों की सरसराहट सुनी, जो*

---

[761] (यूहन्ना 3:6).

[762] पेंटेकोस्ट के लिए कैनन, ओड 5 से।

[763] दिव्य लिटर्जी से।

बहुत से जल की सरसराहट के समान थी, सर्वशक्तिमान के स्वर के समान (या, समिाखुस के अनुवाद के अनुसार, महान परमेश्वर की गरज के समान), *एक प्रचंड शब्द, जैसे किसी सैन्य शिविर में शब्द होता है* (यहे. 1:24)। नश्चिय ही, यह एक महान स्वर, एक असाधारण गीत था! हालाँकि, आश्चर्य की बात स्वयं स्वर नहीं, बल्कि वह स्रोत है जिससे वह उत्पन्न हुआ। यह स्वर कंठ से नहीं आया, शब्द जीभ से नहीं निकले, और न ही गीत होंठों से, बल्कि उन प्राणियों के पंखों से आया। नबी कहते हैं: 'मैंने उनके पंखों की सरसराहट सुनी।' उन्होंने गाया, लेकिन अपनी कंठनालियों से नहीं; उन्होंने परमेश्वर की स्तुति की—लेकिन वाक्पटु और लंबा-चौड़ा बोलने वाले होठों और जीभों से नहीं, बल्कि उन्हीं पंखों से जिन पर वे उड़ रहे थे: 'मैंने उनके पंखों की सरसराहट सुनी।'

तो, यहाँ छिपा हुआ रहस्य क्या है? यह रहस्य इस प्रकार है: ईश्वर के रथ को खींचने वाले प्राणी चर्च के शिक्षकों का प्रतीक हैं, जिन्हें पूरे ब्रह्मांड में ईश्वर के नाम का प्रसार करने के लिए चुना गया है, और जो अपनी शिक्षा के माध्यम से मसीह की कलीसिया का मार्गदर्शन करते हैं—जैसे ईश्वर का रथ, जिसमें विश्वास करने वाली कई दसियों हज़ार आत्माएँ हैं—स्वर्ग की ओर जाने वाले सीधे मार्ग पर। इन जानवरों के पंख, जो एक आवाज़ निकालते और गाते हैं, शिक्षक के कर्मों और शब्दों का प्रतीक हैं। पंख, जो उड़ान को संभव बनाते हैं, यह दर्शाते हैं कि चर्च के शिक्षक को पहले स्वयं सदाचार का उदाहरण स्थापित करना चाहिए; उसे पहले, सभी की आँखों के सामने, अपने ईश्वर-प्रसन्न जीवन के माध्यम से स्वर्ग की ओर उड़ान भरनी चाहिए, जैसे कि वह एक पक्षी हो। इन प्राणियों के पंखों से निकलने वाली आवाज़ शिक्षक के वचन का प्रतीक है; शिक्षक को अपनी उड़ान की शक्ति के अनुरूप आवाज़ उठानी चाहिए—अर्थात्, उसे अपने उपदेश के अनुसार स्वयं जीवन जीते हुए ही अपने अनुयायियों को उपदेश देना चाहिए। क्योंकि जब एक धार्मिक जीवन के पंख उसमें स्पष्ट नहीं होते, तो शिक्षक की आवाज़ का कोई लाभ नहीं होता। केवल वही शिक्षक जॉर्डन के ऊपर खुले स्वर्ग तक सीधे उड़ान भरता है जो केवल वचन के एक पंख पर ही नहीं, बल्कि दूसरे पंख—सदाचारी जीवन—पर भी उड़ता है, जो एक ही समय में वचन और कर्म दोनों से सिखाता है। न तो शिक्षक और न ही शिष्य, कलात्मक रूप से रचे गए शब्द, या मधुर-स्वर वाले मुख, या ऊँचे स्वर से, उतनी आसानी से स्वर्ग तक उठाये जाते हैं, जितनी आसानी से अच्छे कर्मों के पंखों से।

ईश्वर पुत्र, एक आध्यात्मिक मुर्गी की तरह, अपने चूजों—पवित्र शहीदों—को उड़ने के लिए बुलाता है। और सद्गुणों के पंख, जो अन्य सामान्य गुणों से अलग केवल इन्हीं के हैं, ये दो हैं: विश्वास और स्वीकारोक्ति। इन शहीदों के पंखों के विषय में प्रेरित कहते हैं: *'क्योंकि हृदय से विश्वास करके धार्मिक ठहराया जाता है, और मुँह से स्वीकार करके उद्धार पाया जाता है'* (रोमियों 10:10)। हृदय में अटूट विश्वास एक पंख है; राजाओं और यातना देने वालों के सामने मसीह के नाम का साहसपूर्वक इकरार दूसरा पंख है। पहला ' '—वह आध्यात्मिक पक्षी जो स्वर्ग में उड़ गया, वह बुद्धिमान चोर जिसने क्रूस पर मसीह के साथ पीड़ा सहन की—ठीक इन्हीं विश्वास और इकरार के पंखों पर उड़ा। क्योंकि उस समय, जब हमारे प्रभु, जिन्होंने हमारे लिए स्वेच्छा से दुख उठाया, सभी द्वारा परित्यक्त हो गए, और जब पतरस, जिसने उनके साथ मरने का वादा किया था, ने भी उनका इनकार कर दिया, तो चोरों में से एक ने अपने हृदय से उन पर विश्वास किया और अपने होठों से यह स्वीकार किया, उन्हें राजा और प्रभु कहकर: *'प्रभु, मुझे याद रखना,'* उसने कहा, *'जब आप अपने राज्य में आएँ'* इस अपराधी का विश्वास कितना महान था, जब यह मसीह के सभी शिष्यों में विफल हो गया था (मत्ती 26:56)! जब सभी विश्वासियों को मसीह के विषय में भटका दिया गया था, वह अकेला नहीं भटका, बल्कि उसने विश्वास के साथ उनसे प्रार्थना की, और इसीलिए उसने उनसे ये शब्द सुने: *'मैं तुझ से सच कहता हूँ आज ही तू मेरे साथ स्वर्ग में होगा* (लूका 23:42–48)। संत अम्ब्रोज़ इसके बारे में कहते हैं: 'ठीक उसी क्षण जब स्वर्ग ने मसीह को ग्रहण किया, तब उसने चोर को भी ग्रहण किया; परन्तु यह केवल विश्वास ही था जिसने चोर को यह महिमा प्रदान की।' इसलिए यह स्पष्ट है कि यह पक्षी—अर्थात् क्रूस पर मसीह के साथ सूली पर चढ़ाया गया शहीद—स्वर्ग में किसी अन्य पंखों से नहीं बल्कि केवल अपने होठों से स्वीकार किए गए विश्वास द्वारा उड़ा। संत एम्ब्रोस कहते हैं, 'यह महिमा चोर को केवल विश्वास द्वारा ही प्रदान की गई थी।'

अंत में, पवित्र आत्मा परमेश्वर, कबूतर के रूप में प्रकट होकर, अपने बच्चों—कन्याओं—को उड़ने के लिए बुलाते हैं, क्योंकि यह उनकी प्रकृति है कि वे एक मनुष्य को पंखों वाले पक्षी में बदल दें जो उच्चतम क्षेत्रों तक उड़ान भरने में सक्षम हो। संत दमास्कस गाते हैं: पवित्र आत्मा का है हर सर्व-उद्धारक सामर्थ्य; क्योंकि जिसि पर भी वह अपनी दया से श्वास फूँकता है, वह शीघ्र ही सांसारिकता से ऊपर उठता है, ऊँचा उड़ान भरता है, लौटता है, और ऊँचाइयों में बस जाता है। वह आध्यात्मिक कबूतरों, पवित्र कुँवारियों को भी ऊँचाइयों में बसाता है, और उन्हें उड़ने के लिए बुलाता

है।[764] इन कबूतरों के पास मौजूद सद्गुणों के वशिष पंख हैं: शरीर और आत्मा का संयम। और चूंकि शरीर का संयम उन पंखों में से एक है जो व्यक्ति को स्वर्ग तक उठाता है, मिलान के संत एम्ब्रोज़, सुसमाचार के शब्दों की व्याख्या करते हुए कहते हैं: *'तुम कई पक्षियों से बेहतर हो'* (मत्ती 10:31), कहते हैं: 'मांस, जो ईश्वर के विधान को पूरा करने के लिए संकल्पित है और पाप से मुक्त हो चुका है, अपनी संवेदनशीलताओं की पवित्रता के कारण आत्मा की प्रकृति के समान हो जाता है और आध्यात्मिक पंखों पर स्वर्ग तक उठाया जाता है'। यहाँ, कलीसिया के पवित्र शिक्षक आत्मिक स्वभाव के समान होने की बात करते हैं, जो आत्म-संयम (mortification) की ओर संकेत करता है, जिसमें, मानो, देह का वास्तविक स्वभाव आत्मा के स्वभाव में परिवर्तित हो जाता है, जब छोटा बड़े के अधीन हो जाता है और देह आत्मा का दास बन जाता है, जब कोई व्यक्ति पाप से मुक्त हो जाता है और अपनी इंद्रियों को शुद्ध करता है—जो आत्म-संयम के बिना असंभव है। अपने शरीर को संयमित करने के बाद, एक व्यक्ति पक्षी की तरह हल्का और पंखों वाला हो जाता है, और आध्यात्मिक पंखों पर स्वर्ग की ओर उड़ान भरता है। इस प्रकार, पवित्रता के लिए शरीर का संयम, स्वर्ग की ओर उड़ान, पहला पंख है; क्योंकि जो शुद्धता बनाए रखना चाहता है, उसे पहले और सबसे पहले अपने शरीर को वश में करना होगा, जैसा कि पवित्र आत्मा भविष्यवक्ता दाऊद के शब्दों के माध्यम से इंगित करता है जब वह मसीह को इन शब्दों के साथ संबोधित करता है: *'तेरे वस्त्रों से मूर, कालवान और कस्सीया की सुगंध आती है'* (भजन संहिता 44:9)। यहाँ, दैवीय धर्मग्रंथ के व्याख्याकार 'मूर' का अर्थ वासनाओं का संयम, 'कालवान' का अर्थ विनम्रता, और 'कस्सीया' का अर्थ विश्वास समझते हैं[765] । ये सुगंधियाँ मसीह के वस्त्रों से निकलती हैं, अर्थात् उनकी पवित्र कलीसिया से, उन विश्वासियों से जिनमें उन्होंने स्वयं को वस्त्रों के समान ओढ़ लिया है, स्वयं पर देह धारण करके और उन लोगों में निवास करके जो पवित्र और पवित्रतापूर्ण जीवन जीते हैं। इस प्रकार, पवित्र आत्मा, मानो, इस प्रकार बोलता है: वासनाओं का दमन, नम्रता और विश्वास, कीमती सुगंधों की तरह, आपकी कलीसिया से, उन शुद्ध और पवित्र लोगों से, जो इन सद्गुणों को अपने हृदयों में, मानो सुगंध रखने के पात्रों में, संजोए रखते हैं, आपके पिता के समक्ष एक मीठी सुगंध बिखेरते हैं। लेकिन आइए हम पूछें: पवित्र आत्मा, मसीह की कलीसिया की उसकी विभिन्न सद्गुणों के लिए महिमा करते हुए, सबसे पहले और सबसे प्रमुख रूप से विश्वासी के भावों के संयम के लिए उसकी प्रशंसा क्यों करता है, और नम्रता को सर्वप्रथम स्थान क्यों देता है? वास्तव में, यह यह दिखाने के लिए है कि, अनुचित इच्छाओं के दमन, कामुक वासना के विराम, और शरीर के संयम के बाद, अन्य सभी सद्गुण, मानो, अपने नेता का अनुसरण करते हैं। इस प्रकार, पवित्र आत्मा के आध्यात्मिक नवोदित—अर्थात् वे कुंवारी जो स्वर्ग को अपना घोंसला बनाना चाहती हैं—में सर्वप्रथम और सबसे पहले इस पंख का, अर्थात् देह की मृत्यु का, होना आवश्यक है।

उनका दूसरा पंख आत्मा का संयम है, जिसमें न केवल कर्म में पाप करने से परहेज़ करना शामिल है, बल्कि आत्मा में उसकी इच्छा न करना और मन में उसके विचारों को न पालना भी शामिल है। कोई व्यक्ति शरीर से शुद्ध हो सकता है, फिर भी उसी समय विभिन्न अनुचित इच्छाओं को पाल सकता है, और अशुद्ध विचारों में आनंद ले सकता है। यह व्यर्थ नहीं है कि प्रेरित ने उपदेश दिया है: *'आओ हम शरीर और आत्मा की हर अशुद्धि से स्वयं को शुद्ध करें'* (2 कुरिन्थियों 7:1)। ये शब्द स्पष्ट रूप से गवाही देते हैं कि में एक विशेष प्रकार की अशुद्धि मौजूद है – शरीर की अशुद्धि और आत्मा की अशुद्धि। क्योंकि शरीर तो कर्मों में प्रकट होता है, जबकि आत्मा विचारों और हृदय की प्रवृत्तियों में प्रकट होती है। वह कुँवारीपन जो केवल शरीर को अक्षुण्ण रखता है, जबकि आत्मा—जो विचारों और इच्छाओं से कलुषित होती है—को शुद्ध करने का कोई प्रयास नहीं करता, वह व्यर्थ ही अपनी पवित्रता का घमंड करती है और स्वर्गीय महिमा प्राप्त करने की आशा रखती है। जिस प्रकार एक पक्षी एक पंख से नहीं उड़ सकता, उसी प्रकार एक कुंवारी जो केवल शारीरिक पवित्रता रखती है, आध्यात्मिक पवित्रता के बिना, स्वर्गीय महल में प्रवेश नहीं करेगी। लेकिन जो व्यक्ति सावधानी से दोनों प्रकार की पवित्रता को संरक्षित रखता है, वह कबूतर की तरह, 'कबूतर के रूप में' प्रकट होने वाले के पीछे उड़ेगा।

इस प्रकार, हमने सुना है कि त्रिमूर्ति में एक ईश्वर ने, संसार के नवीनीकरण के समय यॉर्डन के जल पर प्रकट होकर, क्या किया – कैसे उन्होंने बपतिस्मा के जल से कलीसिया के आध्यात्मिक नव-उड़न सीख रहे पक्षियों को –

---

[764] छठे स्वर की रविवार की प्रतिगान।

[765] मिश्र एक सुगंधित राल है जो मिश्र के पेड़ से निकलती है, जो अरब और इथियोपिया में उगता है। इस राल का उपयोग पवित्र अभिषेक, सुगंध और धूप के लिए, शरीर पर मलने और अभिषेक करने के लिए, और विशेष रूप से शवों को संरक्षित करने और उनका अभिषेक करने के लिए किया जाता था। स्टैक्टी – एक सुगंधित मरहम भी था जिसका उपयोग बीमारियों के इलाज के लिए किया जाता था। कैसिया – पेड़ों की शाखाओं को ढकने वाली एक पतली, सुगंधित छाल। इसका उपयोग सुगंधित मरहम और इत्र बनाने के साथ-साथ औषधीय प्रयोजनों के लिए भी किया जाता था।

शिक्षकों, शहीदों और कुंवारी कन्याओं को – बाहर निकाला और उन्हें 'खुले स्वर्गों में' बुलाया। शिक्षकों, शहीदों और कुंवारी कन्याओं, और हम पापियों द्वारा—पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा को, उस परमेश्वर को जो यॉर्डन पर प्रकट हुए, अब और हमेशा और युगानुयुग सम्मान, महिमा, आराधना और धन्यवाद अर्पित हो। आमीन।

ट्रोपारियन, स्वर 1:

हे प्रभु, जब तू यॉर्डन में बपतिस्मा ले रहा था, तब त्रित्व की उपासना प्रकट हुई: क्योंकि तेरे पिता की वाणी ने तेरी गवाही दी, और तुझे अपना प्रिय पुत्र कहा; और आत्मा, कबूतर के रूप में, वचन के सत्य की पुष्टि कर रहा था। हे मसीह परमेश्वर, प्रकट हो, और जगत को प्रकाशित कर; महिमा तुझें।

कॉन्टाकियन, स्वर 4:

हे प्रभु, आज तू संपूर्ण जगत में प्रकट हुआ है, और तेरा प्रकाश हम पर चमकता है, जो हृदय में तेरा भजन करते हैं: हे अगम्य प्रकाश, तू आया और प्रकट हुआ है।

20 जनवरी

7 जनवरी (पुराना कैलेंडर)

प्रभु के अग्रदूत और बपतिस्मा देने वाले संत योहन का पर्व।

7 जनवरी को स्मरणोत्सव

प्रकटोत्सव के अगले दिन, कलीसिया ने, आरंभिक काल से ही, प्रभु के आदरणीय और महिमामय भविष्यवक्ता और बपतिस्मादाता, यूहन्ना का पर्व मनाया है। और यह पूरी तरह से उपयुक्त था कि उस व्यक्ति को एक विशेष उत्सव के साथ सम्मानित किया जाए, जिसने प्रभु के सिर पर अपना हाथ रखकर दिव्य बपतिस्मा के संस्कार में सेवा की। इस प्रकार, प्रभु के बपतिस्मा के पर्व के ठीक बाद, अग्रदूत को एक कैथेड्रल सेवा में भजनों के साथ सम्मानित और महिमामंडित किया जाता है। 'कैथेड्रल' शब्द ही यह दर्शाता है कि लोग महान अग्रदूत और बपतिस्मा दाता योहन, जिन्हें अब महिमामंडित किया जा रहा है, के सम्मान और स्तुति में दैवीय अनुष्ठान मनाने के लिए चर्च में इकट्ठा होते हैं। यद्यपि इस प्रकार की परिषद सेवा दुनिया भर के सभी चर्चों में मनाई जाती रही है और जारी है, इसे अग्रदूत को समर्पित चर्चों में विशेष गंभीरता के साथ मनाया जाता है, जैसा कि किसी यॉर्डन नदी के किनारे उनकी चर्च में होता था, जहाँ उन्होंने मसीह को बपतिस्मा दिया था, और सेबास्टे[766] में, जहाँ हेरोद[767] द्वारा मृत्युदंड दिए जाने के बाद उन्हें दफनाया गया था, और एंटिओक में, जहाँ उनका दाहिना हाथ मूल रूप से पवित्र सुसमाचार प्रचारक ल्यूक द्वारा लाया गया था , और कॉन्स्टेंटिनोपल में, जहाँ उसी पवित्र हाथ को बाद में एंटिओक से स्थानांतरित किया गया था, और जहाँ अग्रदूत का पर्व

---

[766] सेबास्टे – सामरिया की राजधानी। इस शहर को यह नाम तब मिला जब इसे ऑगस्टस ने हेरोद महान को भेंट किया था, जिन्होंने इसे पूरी तरह से बहाल और सुशोभित किया और ऑगस्टस के प्रति कृतज्ञता में, इसका नाम सेबास्टे, या सेबास्टिया रखा, जिसका अर्थ है 'ऑगस्टस का शहर'।

[767] बेशक, हेरोद महान के पुत्र हेरोद अंटिपास ने टेट्रार्क की उपाधि से गलील और पेरेया पर शासन किया, यानी वह फिलिस्तीन के एक चौथाई हिस्से का शासक था। उसकी एक वैध पत्नी थी, जो अरब के राजा अरेतास की बेटी थी, लेकिन उसने उसे त्याग दिया और अपने भाई फिलिप की पत्नी हेरोदियास को अपनी पत्नी बना लिया। प्रभु के अग्रदूत सेंट जॉन ने हेरोद को इस अवैध विवाह के लिए फटकारा। इसके लिए, हेरोद ने उसे अरब की सीमा पर मृत सागर के पास स्थित माकेरस किले में कैद कर दिया। वहाँ, दुष्ट हेरोदियास ने एक भोज के दौरान उत्पन्न अनुकूल अवसर का लाभ उठाते हुए, अपनी बेटी सलोमी के माध्यम से हेरोद से यूहन्ना बपतिस्मादाता का सिर माँगा; और उस अधर्मी राजा ने भोज के बीच में ही अग्रदूत का सिर काट डालने का आदेश दिया, जिसे पूरा किया गया। सिर हेरोदियास के पास लाया गया, जिसने अपनी दुष्ट प्रसन्नता में अग्रदूत की जीभ को भेद दिया; जबकि शरीर किले की दीवारों के बाहर फेंक दिया गया और वहाँ अग्रदूत के शिष्यों को मिला, जिन्होंने इसे सम्मान के साथ सेबास्टे ले जाकर वहाँ दफना दिया।

वशिेष भव्यता के साथ मनाया जाता था, क्योंकि उनका हाथ एपफिेनी के पर्व की ठीक पूर्व संध्या पर स्थानांतरति कयिा गया था, जब जल का अभषिेक होता है: ऐसा प्रतीत हुआ मानो अग्रदूत स्वयं जल के अभषिेक के लएि अदृश्य रूप से आ गए हों, और राजाओं तथा सभी लोगों में बहुत आनंद हुआ। इसीलएि अग्रदूत का पर्व प्रभु के प्रकट होने के अगले दनि बड़ी धूमधाम से मनाया गया और आने वाले वर्षों में भी मनाया जाता रहा। और हम भी, आध्यात्मकि आनंद के साथ, इस महान अग्रदूत और यूहन्ना बपतस्मिादाता का पर्व मनाते हैं, और उनसे प्रार्थना करते हैं कि वे हमारे प्रभु मसीह से हमारे लएि यह याचना करें कि हमें स्वर्ग में शाश्वत, अकल्पति मंदरि में आनंदति होने वालों की कलीसयिा में शामलि कर लें, जहाँ हम उन लोगों की आवाज़ें सुन सकें जो परमेश्वर के शाश्वत प्रकट होने के सम्मान में पर्व मनाते और उसमें शामलि होते हैं। वहाँ हम परमेश्वर के मुख के दर्शन से मसीह से परपिूर्ण हो सकते हैं, जो अपने संतों के सामने स्वयं को स्पष्ट रूप से प्रकट करते हैं, और सभी स्वर्गीय सेनाओं के साथ मलिकर, पतिा, पुत्र और पवत्रि आत्मा की युगों-युगांतर तक महमिा कर सकते हैं, आमीन!

स्नातक प्रभु के दाहनिे हाथ की कथा, जसिने प्रभु का बपतस्मिा दयिा

7 जनवरी को स्मरण कयिा जाता है

जब प्रभु के बपतस्मिा देने वाले, पूर्ववर्ती सन्त योहन का सरि अधर्मी राजा हेरोदेस द्वारा कलम कर दयिा गया, तब उनके पवत्रि शरीर को उनके शष्यिों ने प्रसद्धि सामरी नगर सेबास्टे में भवष्यिवक्ता एलशिा की कब्र के पास दफनाया। जब संत लूक सुसमाचार प्रचारक, मसीह के सुसमाचार का प्रचार करते हुए और कई देशों व नगरों में यात्रा करते हुए, सेबास्टे पहुँचे, और वहाँ से अपने गृह नगर अंताकयिा के लएि प्रस्थान करने का इरादा कयिा, तब इस प्रेरति के मन में यह वचिार आया कि वे संत यूहन्ना अग्रदूत, बपतस्मिादाता का शरीर अपने साथ ले जाएँ और उसे अंताकयिा ले जाएँ। यह अपरविर्तति और अखंड था, लेकनि इसे ले जाया नहीं जा सका, क्योंकि सेबास्टे के नविासयिों ने अग्रदूत के अवशेषों को सर्वोच्च सम्मान दयिा था और उनकी सावधानीपूर्वक रक्षा की थी। इसलएि, पवत्रि सुसमाचार प्रचारक लूक केवल अग्रदूत के पवत्रि शरीर से दाहनिा हाथ ही अलग कर सके, जसिने हमारे प्रभु यीशु मसीह को बपतस्मिा दयिा था; यही वह था जसिे वह अपने साथ अपने नगर अंताकयिा में लाए, एक कीमती खजाने के रूप में जसिसे वह उस नगर में मलिी परवरशि के लएि अंताकयिा का धन्यवाद करना चाहते थे। उस समय से, अग्रदूत का पवत्रि हाथ अंकोन के ईसाइयों द्वारा बड़ी श्रद्धा से रखा गया, क्योंकि इसके माध्यम से कई चमत्कार हुए। बहुत समय बीत जाने के बाद, जूलयिन अपोस्टेट[768] ने साम्राज्यीय सहिासन संभाला; उसने खुले तौर पर मसीह का त्याग कर दयिा और मूर्तयिों की पूजा की। उसने ईश्वर की कलीसयिा का उत्पीड़न करना शुरू कर दयिा, ठीक वैसे ही जैसे उससे पहले के मूर्तपिूजक सम्राटों ने ईसाइयों का उत्पीड़न कयिा था, और उसने न केवल जीवति ईसाइयों को भगाया और मार डाला, बल्कि मृतकों पर भी अपना क्रोध उतारा: उसने पवत्रि वशि्वास के लएि पीड़ा सहने वाले संतों के अवशेषों को उनकी कब्रों से नकिालकर जला दयिा, जबकि परमेश्वर के गरिजाघरों और सभी प्रकार के पवत्रि स्थानों को राख में बदल दयिा। एक अवसर पर वह अंᏃᏂओक आया, आंशकि रूप से अपने घृणति देवता अपोलो[769] को वहाँ घृणति बलदिान चढ़ाने के लएि —जसिकी मूर्ति शहर के पास, डाफ्ने नामक स्थान पर थी— और आंशकि रूप से ईसाइयों को सताने और उनके जो भी पवत्रि अवशेष उसे मलिें, उन्हें जलाने के लएि। अंतयिोकयिा के ईसाइयों ने, उसके आगमन की खबर सुनकर, बपतस्मिादाता का पवत्रि हाथ गोनयिा नामक एक नगर के मीनार में छपिा दयिा, ताकि उत्पीड़क उसे अपवत्रि न कर सके या जला न सके। जूलयिन, अंᏃᏂᏁᏕयिा पहुँचकर वहाँ के ईसाइयों को बहुत नुकसान पहुँचाने के बाद, बपतस्मिादाता का हाथ खोजने लगा; और जब उसकी खोज व्यर्थ साबति हुई, तो उसने फलिस्तिीन के सेबास्टे शहर को आदेश भेजा कि बपतस्मिादाता का पूरा शरीर – जसिमें सरि और हाथ को छोड़कर बाकी हस्सिा वहाँ रखा था – – साथ ही जॉन द बैपटस्टि की कब्र और चर्च को भी नष्ट कर आग लगा

---

[768] जूलयिन अपोस्टेट – कॉन्स्टेंटाइन महान के भतीजे – उसका सह-शासक था, जो रोमन साम्राज्य के पश्चमिी प्रांतों पर शासन करता था। 361 में सम्राट बनने के बाद, उसने ईसाई धर्म का त्याग कर दयिा और मूर्तपिूजा को पुनर्स्थापति करना अपना जीवन भर का काम बना लयिा; इसीलएि उसे अपोस्टेट कहा जाता है। वह 363 तक शासन करता रहा, जब वह फ़ारसियिों के खलिाफ़ युद्ध में मारा गया।

[769] अपोलो सबसे सम्मानति ग्रीक-रोमन मूर्तपिूजक देवताओं में से एक थे। उनकी पूजा सूर्य, बौद्धकि प्रबोधन, कवति और संगीत के देवता के रूप में, साथ ही सार्वजनकि कल्याण और व्यवस्था के लएि की जाती थी। इसके अलावा, वह भवष्यिवाणी और उपचार की कला के देवता थे।

दी जाए, जसिे इतहिासकार नकिफिोरस और केड्रनि[770] द्वारा रपिोर्ट कए अनुसार पूरा कयिा गया। हालाँकि, पूजनीय समियिन मेटाफ्रैस्टस[771] की रपिोर्ट है कि जलाया गया बपतस्मिादाता योहन का शरीर नहीं था, बल्कि कसिी और का था, क्योंकि यरूशलेम के पैट्रआर्क ने जूलयिन के आदेश के बारे में पहले से ही जानकर, गुप्त रूप से बपतस्मिादाता योहन के अवशेषों को ताबूत से नकिालकर सुरक्षति रखने के लिए अलेक्जेंड्रयिा भेज दयिा था; इसके बजाय, उन्होंने ताबूत में कसिी अन्य मृत व्यक्ति की हड्डयिाँ रख दीं, और मेटाफ्रास्टस के अनुसार, यही हड्डयिाँ थीं जो अग्रदूत की अवशेषों के स्थान पर—ताबूत और चर्च के साथ—जल गईं।

जब वह अधर्मी राजा नष्ट हो गया और सच्चा धर्म एक बार फरि से संसार में प्रकाशति हुआ, तो पवत्रि अग्रदूत का हाथ उस मीनार से हटा लयिा गया जसिमें उसे छपिाया गया था, जैसे कोई दीपक कसिी आवरण के नीचे से नकिाला गया हो। एक बार फरि से, ईसाइयों ने उसका सम्मान करना शुरू कर दयिा, और एक बार फरि से उसके द्वारा चमत्कार होने लगे, ठीक पहले की तरह। इन चमत्कारों में से, हम नम्निलखिति का वर्णन करेंगे।

अंतयिोकयिा की सीमाओं के भीतर एक बड़ा और भयानक साँप छपिा रहता था, जसिकी मूर्तपिूजक लोग एक देवता के रूप में पूजा करते थे और जसिके लिए वे सालाना बलदिान देते थे। इस बलदिान के लिए, आमतौर पर एक वशिष रूप से चुनी गई, पवत्रि कुंवारी को नयिुक्त कयिा जाता था, जसिे फरि पूरे लोगों की उपस्थतिि में सांप को खाए जाने के लिए अर्पति कयिा जाता था, जो उस गुफा से बहुत दूर नहीं बनी वशिष दर्शक क्षेत्रों से इस तमाशे को देखते थे जहाँ सांप रहता था। साँप गुफा से बाहर नकिलकर अपनी भयानक आकृति, फुफकारती आवाज़ और चौड़े खुले जबड़ों से सर्वत्र आतंक फैला देता था; फरि वह अपने सामने अर्पति कए गए शकिार को पकड़कर, अपने होठों से उसके टुकड़े-टुकड़े कर खा जाता था। ऐसे बलदिान के लिए, अंतेओक के नागरकिों की बेटयिों को लॉटरी द्वारा चुना जाता था। एक वर्ष, पासा अँटओिक के एक ईसाई की बेटी पर पड़ा। इस ईसाई ने अपनी बेटी को इस क्रूर मृत्यु से बचाने के लिए आँसू भरी प्रार्थना करते हुए मसीह ईश्वर और उनके पवत्रि बपतस्मिादाता से वनिती की। जब उस घृणति उत्सव का दनि आ ही गया, तो पति ने चल्लिाहटों और ससिकयिों के साथ ईश्वर से पुकारा और मदद के लिए संत जॉन बपतस्मिादाता को पुकारा। उस समय, वह संत जॉन द बैपटस्टि के चर्च में गया, जहाँ बपतस्मिादाता का हाथ रखा हुआ था, और उसने सेवक से वनिम्रतापूर्वक अनुरोध कयिा कि वह उसके लिए चर्च का ताला खोल दे और उसे उस सम्माननीय और पवत्रि हाथ की पूजा करने दे। उसने यह एक गुप्त उद्देश्य से कयिा था, जसिके लिए उसने अपने वक्ष में कई सोने के सक्कि छपिा रखे थे। जब वह उस पवत्रि अवशेष-पात्र के सामने झुकने लगा जसिमें पवत्रि हाथ रखा था, तो उसने 'आकस्मकि रूप से' अपने वक्ष से सोने के सक्कि गरिने दए। रक्षक, जो पैसे का शौकीन था, सक्कि उठाने के लिए दौड़ा, जबकि उसी क्षण उस ईसाई ने बपतस्मिादाता के पवत्रि हाथ को चूमा, और चुपके से अपनी छोटी उंगली का एक जोड़ दांतों से काट लयिा, उसे छपिा लयिा, और प्रार्थना करने के बाद, उंगली का जोड़ अपने साथ ले जाकर चल दयिा। जब वह दनि आया जसि दनि उस युवती को अन्यायपूर्ण ढंग से मृत्युदंड दयिा जाना था, और जब लोग आधी रात को मृत्युदंड के स्थान पर इकट्ठा हो गए थे, तो उसका पति भी वहाँ अपनी बेटी को साँप द्वारा खाए जाने के लिए ले जाता हुआ दखिाई दयिा, जबकि अपने दलि में वह उसके उद्धार के लिए ईश्वर से प्रार्थना कर रहा था। और इस प्रकार वह भयानक साँप अपनी गुफा से बाहर नकिला, फुफकारता हुआ, अपने जबड़े पूरी तरह से खुले हुए, और वह उस बलदिान - उस युवती - की ओर रेंगने लगा, जसिे वह नगिलने वाला था। लेकनि पति अपनी बेटी के पास से नहीं हटा, और उसने सर्व-द्रष्टा उद्धारकर्ता, मसीह ईश्वर, और उनके अग्रदूत से मदद की पुकार लगाई। जब साँप बहुत करीब आ गया और अपने जबड़े और भी चौड़े कर लिए, तो युवती के पति ने बपतस्मिादाता की उंगली का पवत्रि चह्न सीधे साँप के गले के बीच में फेंका, और साँप तुरंत मर गया। इस प्रकार कन्या एक भयानक मृत्यु से बच गई, जबकि उसके पति ने आनंद के आँसुओं के साथ उद्धारकर्ता ईश्वर और उनके पवत्रि बपतस्मिादाता का जोरदार धन्यवाद कयिा, और सभी लोगों को बताया कि प्रभु ईश्वर ने कतिना बड़ा चमत्कार कयिा था। इस दृश्य में उपस्थति लोग, साँप को मरा और कन्या को जीवति देखकर और उसके पति के साथ मलिकर ईश्वर की स्तुति करते हुए, पहले तो ऐसे शानदार चमत्कार को देखकर अत्यंत आश्चर्यचकति और वस्मिति हो गए; लेकनि फरि, आनंद से भरकर, वे एक स्वर से एकमात्र सच्चे ईश्वर की महमिा करने लगे, जो स्वर्ग में नवािस करता है और वनिम्र लोगों पर अनुग्रह

---

[770] नकिफिोरस कैलस्टिोस – कॉन्स्टेंटनिोपल के हागयिा सोफयिा मठ के एक चर्च इतहिासकार और भकिषु; उनकी मृत्यु लगभग 1350 में हुई। केड्रनि – एक अन्य प्रसद्धि चर्च इतहिासकार, जो 11वीं शताब्दी के अंत या 12वीं शताब्दी की शुरुआत में रहते थे।

[771] समिओन मेटाफ्रastes – संतों के जीवन के एक प्रसद्धि संकलक, जो 10वीं शताब्दी में कॉन्स्टेंटनिोपल में रहते थे (उनकी मृत्यु लगभग 940 में हुई)।

की दृष्टि रखता है। और अंतीयक में एक बड़ा उत्सव और भोज शुरू हुआ, क्योंकि बहुत से मूर्तिपूजक मसीह ईश्वर पर विश्वास करके मसीहियों में शामिल हो गए। जिस स्थान पर वह महान चमत्कार हुआ था, ठीक वहीं पर संत जॉन द बैपटिस्ट के नाम पर एक भव्य और सुंदर चर्च का निर्माण किया गया। कहा जाता है कि इस चर्च में, पवित्र क्रूस की उन्नति के पर्व के दिन, बिशप बपतिस्मादाता का सम्मानित हाथ उठाते थे, और वह कभी-कभी सीधा रहता था, जबकि अन्य समय में वह मुड़ जाता था: पहला अनाज और सभी प्रकार के फलों और सब्जियों की प्रचुर फसल का पूर्वसूचक होता था, जबकि दूसरा फसल की विफलता और अकाल का संकेत माना जाता था।

जब, ईश्वर की अनुमति से, अरबों ने अंतीयक और उसके सभी क्षेत्रों पर कब्ज़ा कर लिया, तो यह महान खजाना—संत जॉन द ग्रेट द बैपटिस्ट का सबसे सम्मानित हाथ—अपने आप में, मानो, कैद में आ गया। धार्मिक ईसाई राजाओं ने अग्रदूत का सबसे सम्मानित हाथ अरबों के नियंत्रण से छीनने और उसे अपनी राजधानी में लाने के लिए भरसक प्रयास किया, लेकिन लंबे समय तक वे इस लक्ष्य को प्राप्त करने में असफल रहे, और वे न तो सोने से और न ही किसी अन्य साधन से कुछ कर सके। लेकिन सम्राटीय भाइयों कॉन्स्टेंटिन और रोमानस के शासनकाल में[772] , यह उपहार—जो पृथ्वी के सभी खजानों से अधिक कीमती था—निम्नलिखित तरीके से प्राप्त किया गया था।

अंतियोकिया का एक डीकन, जिसका नाम योब था, स्वयं ईश्वर से प्रेरित हुआ कि वह बपतिस्मादाता का पवित्र हाथ अरबों के शासन से निकालकर उस भूमि पर ले आए जहाँ मसीह का धर्मपरायण विश्वास चमकता था। चूंकि वह पवित्र हस्तकंकाल अंतीयक के सबसे सुंदर चर्च में रखा था, जो संत पतरस प्रेरित को समर्पित था, जोब ने उस चर्च में सेवा करना शुरू कर दिया और चर्च के संरक्षक से दोस्ती कर ली, ताकि वह अपनी योजना को अंजाम देना आसान कर सके। उसने कई बार सेक्रिस्टन को अपनी योजना में साथ देने के लिए मनाने की कोशिश की, लेकिन वह किसी भी हालत में मानने को तैयार नहीं हुआ। फिर, एक दिन, जोब ने एक बड़ी दावत का आयोजन किया जिसमें उसने सेक्रिस्टन को आमंत्रित किया। उसने रक्षक का भव्य सत्कार किया, और जब वह बहुत शराब पीकर वहीं सो गया, तो जोब चुपके से चर्च में गया और संदूक खोलकर बपतिस्मादाता का हाथ निकाल लिया और उसे छिपा दिया। सुबह जब रक्षक जागा, तो उसे चोरी का पता नहीं चला। इस बीच, योब ने बिना किसी देरी के, पवित्र हाथ अपने कब्जे में लेकर अंफ़िलोकिया छोड़ दिया और ईसाई राज्य की सीमाओं की ओर तेज़ी से बढ़ा, इस डर से कि अंफ़िलोकिया के ईसाइयों और बर्बर सरकार को पवित्र हाथ की चोरी का पता चल सकता है और उसके पीछे पीछा किया जा सकता है। हालाँकि, ईश्वर की सुरक्षा में और संत जॉन द बैपटिस्ट की प्रार्थनाओं से संरक्षित होकर, वह जल्द ही ईसाई क्षेत्र में पहुँच गया। कालसीडोन[773] पहुँचने पर, उसने वह सब कुछ प्रकट किया जो वह छिपाए हुए था और ईसाइयों को यह खजाना दिखाया, जिसे वह अपने साथ अंफ़िलोपोलिस से लाया था। इसकी सूचना तुरंत धर्मपरायण राजाओं तक पहुँचाई गई, और यह खबर सुनकर, जो उनकी सबसे बड़ी आशाओं से भी बढ़कर थी, वे अकथनीय आनंद से भर गए और तुरंत अपनी शाही नाव काल्सेडोन भेज दी। इस जहाज पर परम पवित्र पैट्रिआर्क और कुछ सबसे प्रतिष्ठित सेनेटर सवार थे, जिन्हें लाया गया बपतिस्मादाता का हाथ प्राप्त करना था और उसे सम्मान के साथ राजधानी ले जाना था। जब जहाज़ पवित्र हाथ को लेकर काल्सेडोन से लौटा, जिसे स्वयं पैट्रिआर्क ने थामा हुआ था, तो राजा और सभी लोग तट पर निकल आए, मानो स्वयं पवित्र बपतिस्मादाता का स्वागत करने के लिए, जो अदृश्य रूप से स्वर्ग से उतरे थे, और उन्होंने भजनों और स्तुतियों, मोमबत्तियाँ जलाकर और धूप जलाकर उनका सम्मान किया। पवित्र हाथ को श्रद्धापूर्वक चूमने के बाद, राजाओं ने इसे अपने महल के चर्च में रख दिया[774] । बपतिस्मादाता के पवित्र हाथ का यह स्थानांतरण एपिफेनी के पर्व की पूर्व संध्या पर, जल का आशीर्वाद दिए जाने से पहले हुआ। और यह पर्व मनाया गया, जिसके बाद सबसे बड़े नबियों, सेंट जॉन द बैपटिस्ट के सम्मान में, और त्रिमूर्ति

---

[772] बाइज़ेंटाइन सम्राट कॉन्स्टेंटिन आठवें पोर्फियोगेनिटस ने 912 से 959 तक शासन किया; उनके भाई रोमानस ने 919 से 944 तक शासन किया। इस प्रकार, 919 से 944 तक, भाइयों ने संयुक्त रूप से शासन किया।

[773] कालसेडोन बिथिनिया के उत्तर-पश्चिमी भाग में, बोस्फोरस के किनारे, कॉन्स्टेंटिनोपल के सामने स्थित एक शहर है।

[774] 14वीं और 15वीं शताब्दी की शुरुआत के दौरान रूसी तीर्थयात्रियों ने कॉन्स्टेंटिनोपल में जॉन द बैपटिस्ट के इस पवित्र हाथ को देखा था। यह 1484 तक वहीं रहा, जब इसे रोड्स के शूरवीरों को सौंप दिया गया, जिन्होंने भूमध्यसागरीय द्वीप माल्टा पर खुद को स्थापित करने के बाद, वहाँ प्राप्त खजाने को स्थानांतरित कर दिया। 1799 में, इस अवशेष को माल्टा के शूरवीरों द्वारा सम्राट पॉल प्रथम को उपहार के रूप में गाचीना लाया गया, जहाँ से इसे विंटर पैलेस में 'चर्च ऑफ द सेवियर नॉट मेड बाय हैंड्स' में सेंट पीटर्सबर्ग स्थानांतरित कर दिया गया। इस घटना के उपलक्ष्य में एक पर्व दिवस - 12 अक्टूबर - स्थापित किया गया।

में स्वयं परमेश्वर की महिमा के लिए, अग्रदूत का पर्व बड़ी खुशी के साथ मनाया गया, जिनकी सभी द्वारा युगों-युगों तक महिमा की जाती है और उनकी आराधना की जाती है। आमीन।

ट्रोपारियन, स्वर 2:

धर्मी की स्मृति स्तुति के साथ रहती है; हे अग्रदूत, प्रभु की गवाही आप पर टिकी है: क्योंकि आपने सचमुच स्वयं को भविष्यद्वक्ताओं में सबसे सम्मानित साबित किया है, चूंकि आप उस एक को जल में बपतिस्मा देने के योग्य माने गए, जिसके बारे में आपने प्रचार किया था। इसलिए, सत्य के लिए आनन्दपूर्वक दुख सहकर, आपने परमेश्वर का सुसमाचार प्रचार किया, जो हादस में रहने वालों के पास देह में प्रकट हुए, संसार का पाप दूर करते हुए और हम पर महान दया दिखाते हुए।

कॉन्टाकियन, स्वर 6:

यॉर्डन तेरे देह में आगमन के विचार से काँप उठा, और भय से पीछे हट गया; जबकि यूहन्ना, अपनी भविष्यद्वाणी की सेवा को पूरा करते हुए, भय से स्वयं को छिपा गया; जल में बपतिस्मा लेते हुए आपको देखकर स्वर्गदूतों का समूह विस्मित हो गया; और अंधकार में रहने वाले सभी लोग प्रकाशित हुए, और तेरी स्तुति गाने लगे, क्योंकि तू प्रकट हुआ और सभी को प्रकाशित किया।

21 जनवरी

8 जनवरी (पुराना कैलेंडर)

पवित्र शहीदों जूलियन और वासिलिसा तथा उनके साथियों का जीवन और कष्टकथा

8 जनवरी को स्मरणोत्सव

संत जूलियन का जन्म मिस्र के एंटिनोए नगर[775] में कुलीन और धनी माता-पिता के यहाँ हुआ था। अपने युवा काल से ही उन्होंने कुँवारीपन की पवित्रता को संजोया और इसे अपने जीवन के अंत तक बनाए रखना चाहा। इस पवित्रता को सभी अन्य सद्गुणों का आधार बनाकर, उन्होंने ईश्वर के भय में जीवन व्यतीत किया, और धर्मग्रंथों का लगन से अध्ययन किया। जूलियन ने हेलेनिक ज्ञान और ईसाई सिद्धांत दोनों का अध्ययन किया; वह धर्मनिरपेक्ष दर्शन में भी पारंगत था, और साथ ही उसने पवित्र शास्त्रों में पूरी तरह से महारत हासिल कर ली थी। जब वह अठारह वर्ष का हुआ, तो उसके माता-पिता ने उसे शादी करने के लिए दबाव डालना शुरू कर दिया, क्योंकि वह उनका एकमात्र पुत्र था और वे अपनी वंश परंपरा को जारी रखना चाहते थे। हालांकि, जूलियन ने हर संभव तरीके से विवाह करने से इनकार कर दिया। जब उसके माता-पिता और रिश्तेदारों ने उसे शादी के लिए मजबूर करने हेतु अपनी सलाह और विनतियों से लगातार परेशान करना शुरू कर दिया, तो उस पवित्र युवक ने विचार करने के लिए एक सप्ताह का समय मांगा। उसने पूरा सप्ताह उपवास, प्रार्थना और रोते हुए बिताया, दिन-रात ईश्वर से अपनी कुँवारी अवस्था की पवित्रता की रक्षा करने की विनती करता रहा, जिसका उसने, जूलियन ने, उनसे वादा किया था। सातवें दिन, जब रात हुई, तो उपवास और प्रार्थना से थका-मांदा जूलियन लेट गया और सो गया; और देखो, नींद में प्रभु उसे दिखाई दिए, उन्होंने उसे सांत्वना और प्रोत्साहन दिया, और कहा:

---

[775] एंटीनोए मध्य और ऊपरी मिस्र की सीमा पर एक काफी महत्वपूर्ण शहर था। आज, इस शहर में केवल खंडहर ही बचे हैं। इन खंडहरों के आसपास चट्टानों में तराशी गई कई गुफाएँ हैं। उनकी कई दीवारों पर क्रॉस का चिह्न उकेरा गया है, जो यहाँ चर्चों और मठों के अस्तित्व का प्रमाण है; भूमिगत गैलरी, जहाँ कोठरियाँ बनी थीं, काफी दूरी तक फैली हुई हैं।

'अपने माता-पिता की इच्छा और सलाह को पूरा करने से न डरना, क्योंकि तुम एक ऐसी पत्नी लोगे जो तुम्हारी कुँवारी अवस्था को भंग नहीं करेगी और न ही तुम्हें मुझसे अलग करेगी। इतना ही नहीं, बल्कि तुम्हारे लिए वह भी अपनी कुँवारी अवस्था बनाए रखेगी; और बाद में मैं तुम दोनों को, कुँवारियों के रूप में, अपने स्वर्गीय निवासों में स्वीकार करूँगा, क्योंकि तुम्हारा अनुसरण करते हुए, कई युवक और युवतियाँ कुँवारी और स्वर्ग के राज्य की वारिस बनेंगी। मैं हमेशा तुम्हारे साथ रहूँगा, तुम्हारे भीतर निवास करूँगा और तुम्हारी सभी शारीरिक इच्छाओं और कामवासना पर विजय प्राप्त करूँगा। और जहाँ तक उस कन्या का प्रश्न है, जो तुम्हारी पत्नी बनेगी, मैं उसे अपनी इच्छा के अनुसार बनाऊँगा। मैं यह सुनिश्चित करूँगा कि वह भी आपके अच्छे इरादे का अनुसरण करना चाहे, और आप दोनों मुझे आपके लिए तैयार किए गए महल में देखेंगे, जहाँ स्वर्गदूतों की सेनाएँ और दोनों लिंगों की अनगिनत कुंवारी होंगी, जिन्हें प्रकृति ने विभाजित किया है लेकिन मुझ पर विश्वास ने एकजुट किया है, और जिनके लिए आप एक उदाहरण होंगे।

यह कहकर, प्रभु ने जूलियन को छुआ और कहा:

'हौसला रखो, और तुम्हारा हृदय दृढ़ हो!'

इस दैवीय दर्शन से इस प्रकार बलवान और सांत्वना प्राप्त कर, वह कुलीन युवक अपनी नींद से जाग उठा और बोला:

'मैं धन्यवाद देता हूँ, हे प्रभु परमेश्वर, जो हमारे हृदयों की परीक्षा करते हैं, कि आपने इस संसार के सुखों और आरामों को मुझसे दूर कर दिया, और मेरी पवित्रता के रक्षक और मेरे सहायक होने का वचन दिया। मैं दृढ़ता से आशा करता हूँ कि आप मुझे वह प्रदान करेंगे जो *'न किसी ने देखा है, न किसी ने सुना है, और न ही किसी मानव हृदय में उत्पन्न हुआ है'* (1 कुरिन्थियों 2:9), वह जो आपने अपने प्रेम करने वालों के लिए तैयार किया है। और चूँकि आप मुझे अपने मार्ग पर चलने में सक्षम बनाते हैं, मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ कि आप स्वयं मेरे लिए अच्छा मार्ग बनें, और उन सभी के लिए भी जो पवित्रता से प्रेम करते हैं। हे प्रभु, आप जानते हैं कि मेरे जन्म के दिन से लेकर आज के इस क्षण तक, जब आपने मुझे बुलाया है, मैंने केवल आपको ही प्रेम किया है और चाहा है। इसलिए, मेरे होठों से निकले वादों को पुष्ट करें और उन्हें पूरा करें।

अपने बेडरूम से बाहर निकलकर, उस युवक ने अपने माता-पिता से कहा कि वह उनकी इच्छा पूरी करने के लिए सहमत है और विवाह से इनकार नहीं करेगा। अत्यंत प्रसन्न होकर, वे तुरंत एक ऐसी युवती को चुनने लगे जो कुलीन जन्म और धन के मामले में उनके बेटे के लिए एक उपयुक्त जीवनसाथी हो। आखिरकार, उन्हें वासिलिसा नामक एक लड़की मिली, जो अपने माता-पिता की इकलौती बेटी थी और अपनी सुंदरता और गुणों के लिए प्रसिद्ध थी। और इस प्रकार उसकी शादी जूलियन से हो गई। जब विवाह के भोज के बाद, दुल्हन और दूल्हे को विवाह कक्ष में ले जाया गया और उनके पीछे दरवाज़ा बंद कर दिया गया, तो दुल्हन ने एक असाधारण सुगंध महसूस की, जैसी किसी बगीचे में लिली, गुलाब और अन्य सुगंधित फूलों के बीच आती है। आश्चर्यचकित होकर, उसने अपने पति से कहा:

'हे स्वामी, इसका क्या अर्थ है? अब सर्दी का मौसम है, फिर भी मुझे सुगंधित फूलों की खुशबू आ रही है, मानो वसंत आ गया हो, और मैं इस खुशबू से इतनी प्रसन्न हूँ कि मैं कुछ और सोचना भी नहीं चाहती।'

तब उसके वर, धन्य जूलियन ने कहा:

'जो सुगंध तुम महसूस कर रही हो वह कोई साधारण सुगंध नहीं है, बल्कि मसीह से आती है, जो पवित्रता से प्रेम करते हैं और उन लोगों को अनंत जीवन प्रदान करते हैं जो अपनी कुँवारी अवस्था को निर्दोष बनाए रखते हैं। तो, यदि आप मेरे साथ मसीह की आज्ञाओं का पालन करना चाहते हैं और मसीह को प्रसन्न करना चाहते हैं, तो आइए हम उनसे अपनी पूरी आत्मा से प्रेम करें और उनके लिए अपनी कुँवारी अवस्था को पवित्र रखें। हम इस वर्तमान युग में उनके चुने हुए पात्र बन जाएँगे, ताकि हम आने वाले युग में उनके साथ राज्य कर सकें, और हम कभी भी एक-दूसरे से अलग न होंगे।

इन शब्दों पर, धन्य वधू वासिलिसा ने उत्तर दिया:

'और मोक्ष से अधिक आवश्यक और क्या है, जिसे हम अपनी कुँवारी अवस्था को बनाए रखकर, अनंत जीवन के साथ प्राप्त करेंगे? मैं आपके शब्दों पर विश्वास करती हूँ और, आपके साथ, मैं अपनी मृत्यु तक कुँवारी रहने की इच्छा रखती हूँ, ताकि मैं अपने प्रभु मसीह से अपना पुरस्कार प्राप्त कर सकूँ।'

जब उसने यह कहा, तो धन्य जूलियाना भूमि पर गिर पड़ी, परमेश्वर की आराधना करते हुए, और उनके सामने साष्टांग दण्डवत करते हुए उनसे पुकारने लगी:

'हे प्रभु, उस कार्य को पूरा कर, जो तूने हम में आरंभ किया है!'

कुंवारी वासलिसिा, अपनी मंगेतर को प्रार्थना करते हुए देखकर, स्वयं भी प्रार्थना करने लगी। और अचानक वधू के कक्ष की नींव हलि उठी, और उसमें इतनी असाधारण रोशनी चमक उठी कि कक्ष में जल रही मोमबत्तयिाँ भी स्वर्गीय करिणों के सामने फीकी पड़ गईं। और एक महान दव्यि दर्शन प्रकट हुआ: एक ओर महमिा के राजा, मसीह, अनगनित कुंवारी कन्याओं के साथ दखिाई दिए, और दूसरी ओर परम पवत्रि देवी, परमेश्वर की हमारी माता, कुंवारी कन्याओं के चेहरों के साथ; और दोनों ओर से स्वर्गीय भजन सुनाई दे रहे थे, जो अकथनीय मधुरता से परपिूर्ण थे, जैसा कि किसी भी मानव कान ने पहले कभी नहीं सुना था।

उसी क्षण, सुनहरे पट्टों वाले दो तेजस्वी पुरुष जूलयिन और वासलिसिा के पास आए, उन्हें उठाया, और उनके बस्तिर पर रखी एक बड़ी और सुंदर दखिने वाली कतिाब दखिाई; पलंग के पास चार सम्माननीय और प्रतष्ठिति बुजुर्ग खड़े थे, जनिके हाथों में सुनहरे प्याले थे; इन प्यालों से, जो सुगंधति तेलों से भरे थे, एक अद्भुत सुगंध नकिल रही थी जसिने कमरे को भर दयिा। और बुजुर्गों में से एक ने कहा:

'ये प्याले आपके पूर्णत्व का प्रतीक हैं, क्योंकि आप धन्य हैं कि इस जीवन के क्षणकि सुखों पर वजिय प्राप्त करके, आपने शाश्वत जीवन पर अपनी दृष्टि केंद्रति की है, जसिे मानव मन अभी तक समझ नहीं सकता। तो पढ़ो, जूलयिन, इस जीवन की पुस्तक में जो लखिा है!'

तब जूलयिन ने पुस्तक में देखा और उसमें अपना नाम और अपनी पत्नी का नाम लखिा हुआ देखा। वहाँ सुनहरे अक्षरों में यह अंकति था:

– जूलयिन, जसिने मेरे प्रेम के लिए संसार का त्याग कयिा है, उसे उन *'जनि लोगों ने स्त्रयिों से स्वयं को कलंकति नहीं कयिा है'* में गनिा जाएगा (प्रकाशतिवाक्य 14:4); और वासलिसिा, अपनी पवत्रिता और नर्दिोष कुँवारीपन के लिए, उन कुँवारयिों में गनिी जाएगी जो मेरी परम पवत्रि माता, सच्ची कुँवारी मरयिम के साथ रहती हैं!

जब जूलयिन ने यह पढ़ लयिा, तो पुस्तक बंद हो गई, और दोनों ओर खड़े तेजस्वी पुरुष और कन्याएँ एक स्वर में चल्लिा उठे:

'आमेन!'

तब वृद्ध ने फरि से जूलयिन और वासलिसिा की ओर मुड़कर कहा:

'इस पुस्तक में जसिे आप देखते हैं, उन लोगों की सूची है जो शुद्ध, संयमी, सत्यवादी, दयालु, वनिम्र, कोमल, कपट रहति प्रेम करने वाले हैं, जन्हिोंने हर प्रकार के दुखद परीक्षणों, दुखों और वपित्तयिों को सहन कयिा है, – ऐसे लोग जन्हिोंने मसीह से इतना प्रेम कयिा कि उनके प्रेम के लिए, उन्होंने अपना पति, अपनी माता, अपनी पत्नी, अपने बच्चे, अपनी संपत्ति और अपना धन-दौलत त्याग दयिा; और, इसके अलावा, वे मसीह के लिए अपनी जान तक भी देने से नहीं डरते थे; और अब तुम भी उनके साथ एक हो गए हो।

सम्माननीय वृद्ध के इन शब्दों के बाद, दव्यि दर्शन समाप्त हो गया, और धन्य जोड़ा, असाधारण आनंद से भरकर, शेष रात भजन गाने में बतिाई। जब दनि चढ़ा, तब तक उनके माता-पति और रश्तिेदार, साथ ही शादी में आमंत्रति अन्य मेहमान, अपनी अद्भुत आध्यात्मकि एकता से अनजान, दुल्हन और दूल्हे के शारीरकि मलिन का जश्न मनाते हुए दावत कर रहे थे। और इस प्रकार जूलयिन और वासलिसिा पूर्ण पवत्रिता और ब्रह्मचर्य में एक साथ रहे, और अपनी नर्मिल कुँवारीपन की अछूती शोभा को बनाए रखा। फरि भी, उन्होंने यह रहस्य दूसरों से छपिा कर रखा, ताकि कोई भी, यहाँ तक कि उनके माता-पति या रश्तिेदार भी, उनके पवत्रि जीवन के बारे में न जाने, जब तक कि प्रभु स्वयं ने कई लोगों के लाभ के लिए इसे प्रकट नहीं कर दयिा।

जूलयिन और वासलिसिा के ववािह के कुछ ही समय बाद, उनके माता-पति का नधिन हो गया, और उन्होंने उन्हें एक समृद्ध वरिासत सौंपी; इस प्रकार अपने आध्यात्मकि जीवन के लिए स्वतंत्रता प्राप्त कर, उन्होंने केवल अपनी ही मुक्ति की चति करने के बजाय दूसरों की मुक्ति की सेवा करने का संकल्प लयिा। इस उद्देश्य के लिए, उन्होंने दो मठ बनवाए, एक पुरुषों के लिए और एक महलिाओं के लिए, और, अलग होकर, उन्होंने मठवासी संन्यास की शपथ ली - वह पुरुषों के मठ में और वह महलिाओं के मठ में। अपने चारों ओर भक्षिुओं और भक्षिुणयिों का एक समुदाय इकट्ठा करने के बाद, उन्होंने उनका नेतृत्व संभाल लयिा।

संत जूलयिन के मठ में दस हज़ार तक भाई रहते थे, जो उत्साह के साथ ईश्वर की सेवा करते थे; क्योंकि प्रभु ने उन्हें ऐसी कृपा प्रदान की थी कि अपनी आत्मा को बचाना चाहने वाले लोग चारों ओर से उनके पास आते थे। अपने घर, पत्नयिाँ, माता-पति, रश्तिेदार, संपत्ति और इस दुनयिा के सभी सुखों को पीछे छोड़कर, उन्होंने अपनी आत्मा उसे सौंप

दी, ताकि वह उन्हें स्वर्ग के राज्य में ले जा सके। इसी प्रकार, संत वासलिसा ने अपने मठ में एक हजार तक पवित्र कुंवारी कन्याओं और इसके अलावा, अनेक महिलाओं को एकत्र किया, और उन्हें मसीह की वधू बनाया। और दोनों मठों में, मानो स्वर्ग के दो बगीचों में, दैवीय पवित्रता फलती-फूलती रही और कुंवारीपन ने अशुद्धता के कामुक दानव पर विजय प्राप्त की।

लेकिन अब संतजनों के स्वर्गवास की बात करने का समय आ गया है, कि कैसे वे, अपने ईश्वर के लिए एकत्रित बच्चों सहित, स्वर्गीय निवासों में प्रवेश कर गए, और प्रभु मसीह से पुकार उठे: 'हम यहाँ हैं, और ये वे बच्चे हैं जिन्हें प्रभु ने हमें दिया है।'[776]

उस समय दो दुष्ट राजा शासन कर रहे थे – डायोक्लेटियन और मैक्सिमियन ([777]) – और ईसाइयों के खिलाफ एक कठोर उत्पीड़न ([778]) शुरू किया गया था, जो एक देश से दूसरे देश तक फैलता हुआ और मसीह की कलीसिया में उथल-पुथल मचाता हुआ, उस भूमि की सीमाओं के और करीब आ रहा था जहाँ संत जूलियन और वासलिसा रहते थे। कई विश्वासी भ्रम और भय से ग्रस्त हो गए, लेकिन धन्य जूलियन और वासलिसा, उपवास और प्रार्थना करते हुए, आँसुओं के साथ ईश्वर से विनती कर रहे थे कि वह उन लोगों को मजबूत करें जो उन पर विश्वास करते थे और उन मठाधीशों के समुदाय को, जिन्हें उन्होंने पाप में गिरने और विनाश से बचाया था, बिना किसी अपवाद के सुरक्षित रखें, ताकि वे सभी स्वर्गीय स्वदेश में प्रवेश कर सकें। प्रभु ने यह प्रार्थना सुनी और संत वासलिसा को एक विशेष दर्शन में प्रकट हुए, और उनसे कहा कि वह जल्द ही इस जीवन से अनंत विश्राम में चली जाएँगी, लेकिन यह कि उससे पहले ही, उसकी देखरेख में रहने वाली सभी पवित्र कुंवारी इस जीवन से चल देंगी, ताकि इनमें से कोई भी कुंवारी, उसके बाद रह जाए, यातना के डर से विश्वास से भटक न जाए और पवित्र सभा से बहिष्कृत न हो जाए; इस उद्देश्य के लिए, वासलिसा पृथ्वी पर आधा वर्ष और जीवित रहेगी, जब तक कि उसकी देखरेख में रहने वाली पवित्र कुंवारी परमेश्वर के पास नहीं चली गईं; वासलिसा की मृत्यु के बाद, उसका आध्यात्मिक भाई, जूलियन, कई भाइयों के साथ शहादत का कार्य करेगा और, अपने साहस से शत्रु को परास्त कर, कुँवारीपन और शहादत का दोहरा मुकुट प्राप्त करने के लिए इस जीवन से प्रस्थान करेगा *'अपने प्रभु की प्रसन्नता के लिए'* (मत्ती 25:21)। और ऐसा ही हुआ। आधे वर्ष के भीतर, संत वासलिसा द्वारा इकट्ठी की गई कुंवारी कन्याओं का पूरा समूह प्राकृतिक कारणों से अपने अमर वर के स्वर्गीय महल में प्रवेश कर गया, और उनमें से केवल वासलिसा ही जीवित बची। कुछ ही समय बाद, वे सभी पवित्र कुंवारी कन्याएं उसे एक सपने में शाही, तेजस्वी वस्त्रों में लिपटी हुई दिखाई दीं, और उससे कहा:

'हम तुम्हारा इंतज़ार कर रही हैं, हे हमारी माता, ताकि हम तुम्हारे साथ मिलकर प्रभु और हमारे राजा की आराधना कर सकें। तो जाओ, और हमें मसीह के सामने पेश करो, जिनकी दुल्हनें तुमने हमें बनाया है!'

जागने पर, पूजनीय वासलिसा अत्यंत प्रसन्न हुईं, आंशिक रूप से इसलिए कि उन्होंने जिन कन्याओं का समूह इकट्ठा किया था, वे सभी *'अपने प्रभु के आनंद' में* प्रवेश कर चुकी थीं, और आंशिक रूप से इसलिए कि, जैसा कि पता चला, स्वर्ग का एक निवास उनके लिए वहाँ तैयार किया गया था। उसने यह सब अपने आध्यात्मिक भाई, संत जूलियन को सुनाया, और फिर, कुछ दिनों बाद, प्रार्थना में लीन होने के दौरान, उसने अपनी आत्मा को अपने अमर वर—ईश्वर—के हाथों में सौंप दिया और संत जूलियन ने उसके पवित्र शरीर को उसके योग्य सम्मान के साथ दफनाया।

कुछ ही समय बाद, राज्यपाल मार्शियन अपनी पत्नी और बेटे के साथ उस इलाके में पहुँचे और क्रिसिचियनों पर क्रूरता से अत्याचार करना शुरू कर दिया, उन्हें यातना और मृत्यु की सज़ा देते हुए। यह जानकर कि जूलियन एक कुलीन जन्म के व्यक्ति थे जो मसीह में विश्वास रखते थे, और उनके साथ रहने वाले कई भाइयों के बारे में भी सुनकर जो उनके

---

[776] यह अभिव्यक्ति (यशायाह 8:18) से ली गई है। मसीहा, जिन पर इज़राइल के पुत्रों को अपनी आशा रखनी है, भविष्यवक्ता की इस आश्वासन के अनुसार, उन्हें उनके सांसारिक और शाश्वत शत्रुओं से बचाएंगे और उन्हें परमेश्वर, उनके स्वर्गीय प्रभु, के पास लाकर कहेंगे: *'देख, मैं और ये बच्चे, जिन्हें प्रभु ने मुझे दिया है'*।

[777] रोमन सम्राट डायोक्लेटियन ने 284 से 305 ईस्वी तक शासन किया। यहाँ 'मैक्सिमियन' का अर्थ, बेशक, डायोक्लेटियन के दामाद, मैक्सिमियन गैलेरियस से है, जो पूर्व में उसके सह-शासक थे और, उसके बाद, उसके उत्तराधिकारी (306 से 311 तक) थे।

[778] डायोक्लेटियन के अधीन ईसाइयों पर अत्याचार 303 में शुरू हुआ। इस अत्याचार का कारण मैक्सिमियन गैलेरियस था, जिसने डायोक्लेटियन को ईसाइयों के खिलाफ एक सामान्य फरमान जारी करने के लिए मनाया था। इस फरमान में आदेश दिया गया था कि ईसाई पूजा स्थलों को नष्ट किया जाए, धर्मग्रंथों को जला दिया जाए, और ईसाइयों से सभी नागरिक अधिकार और पद छीन लिए जाएं। डायोक्लेटियन के अधीन उत्पीड़नों की विशेषताएँ थीं, पहली, यातनाओं की क्रूरता, और दूसरी, एक साथ मृत्युदंड दिए गए शहीदों की भारी संख्या – जो एक ही दिन में 10 से 100 या उससे अधिक तक थी।

समान विश्वास रखते थे, उसने प्रमुख नागरिकों को उनके पास भेजा ताकि वे जूलियन को देवताओं की बलि चढ़ाने के लिए मना सकें, जैसा कि सम्राट की मांग थी। उस समय, पड़ोसी शहरों से बहुत सारे पुरोहित, डिकन और अन्य पादरी, बिशपों के साथ, पूजनीय जूलियन के मठ में इकट्ठा हुए थे; और वे सभी, अपने प्रभु के प्रति प्रेम से जलते हुए, उनके लिए स्वेच्छा से शहीद होने को तैयार थे। जब राज्यपाल के दूत उनके सामने उपस्थित हुए, तो इकट्ठा हुए सभी लोगों ने उत्तर दिया कि उनका केवल एक ही राजा है—प्रभु यीशु मसीह, जो स्वर्ग में वास करते हैं—और उन्होंने उन्हें मूर्तियों या उनमें छिपे राक्षसों की पूजा न करने, बल्कि केवल एक सच्चे परमेश्वर की ही पूजा करने की आज्ञा दी है; और इस प्रकार उन्होंने मसीह की आज्ञा मानी और तुरंत उनके लिए मरने को तैयार हो गए। दूत राज्यपाल के पास लौटे और उन्होंने जो सुना था, उसकी रिपोर्ट दी, और राज्यपाल ने अपने क्रोध में, जूलियन को अकेले पकड़ने के लिए सैनिकों का एक दल भेजा - और मठ को, उसमें मौजूद सभी लोगों के साथ, जला देने के लिए। इस प्रकार, धन्य जूलियन को पकड़ लिया गया और, बँधकर, एक कालकोठरी में ले जाया गया, जबकि मठ में उनके 10,000 तक के भाइयों को, वहाँ मौजूद बिशपों और पुरोहितों के साथ, मठ के साथ ही, ईश्वर को एक सुगंधित भेंट के रूप में जला दिया गया। और उसके बाद भी लंबे समय तक, उस स्थान पर एक बड़े गायक मंडली का मधुर गायन ठीक उन घंटों पर सुना जा सकता था जब आमतौर पर दैवीय पूजा-विधि का आयोजन किया जाता था - पहली, तीसरी, छठी और नौवीं घड़ी पर। ठीक उसी स्थान पर, विभिन्न बीमारियों से कई लोगों के ठीक होने की घटनाएँ हुईं - विशेष रूप से उन बीमार लोगों के बीच जिन्हें उपर्युक्त गायन सुनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

अगली सुबह, संत जूलियन को मुकदमे के लिए राज्यपाल के सामने लाया गया। उन्होंने लंबे समय तक चालाक शब्दों और चापलूसी से संत को मनाने की कोशिश की, या दंड के भय से उन्हें डराने की कोशिश की, लेकिन उन्होंने धमकियों या मनाने की किसी भी बात पर ध्यान नहीं दिया। फिर उन्होंने उन्हें गाँठदार लाठियों से बेरहमी से पीटना शुरू कर दिया। इस यातना के दौरान, एक लाठी के प्रहार के ज़ोर से टूट गई, और उसका एक टुकड़ा गवर्नर के एक रिश्तेदार की आँख में जा लगा, जिससे उसे चोट लग गई, और इससे गवर्नर और भी ज़्यादा क्रोधित हो गया। पवित्र शहीद ने गवर्नर से कहा:

'सुनो, मार्शियन! अपने सभी सबसे कुशल पुरोहितों को इकट्ठा करने का आदेश दो, और उन्हें अपने देवताओं और देवियों के नामों का उच्चारण करने दो, और उनसे विनती करने दो कि वे तुम्हारे रिश्तेदार को स्वास्थ्य प्रदान करें। लेकिन, यदि वे ऐसा करने में असमर्थ रहे, तो मैं, अपने प्रभु यीशु मसीह के नाम का स्मरण करके, न केवल उसकी खोई हुई शारीरिक आँख को बहाल करूँगा, बल्कि उसके मन की आँखें भी खोलूँगा ताकि वे सत्य को देख सकें।

राज्यपाल ने यह प्रस्ताव स्वीकार कर लिया और सभी पुरोहितों को इकट्ठा करके, उन्हें निकटतम मूर्तिपूजक मंदिर में जाकर बलिदान चढ़ाने और घायल व्यक्ति की आँख को ठीक करने के लिए देवताओं और देवियों से विनती करने का आदेश दिया। पुरोहित गए और जैसा उन्हें आदेश दिया गया था, वैसा ही किया, लेकिन कई बलिदान चढ़ाने के बाद, उन्होंने अपने देवताओं से ये शब्द सुने:

'हमसे दूर हो जाओ, क्योंकि हमारा भाग शाश्वत अग्नि के लिए निर्धारित है और हम अंधकार में रहते हैं। हम अंधों की दृष्टि कैसे लौटा सकते हैं जब हम स्वयं कुछ भी नहीं देखते? और सर्वोच्च ईश्वर से जूलियन की प्रार्थना इतनी शक्तिशाली है कि, जब से उसे यातना दी जाने लगी है, गेहेना में हमारी यातना सौ गुना अधिक तीव्र हो गई है।'

जब मंदिर में ये दैवीय शब्द सुने गए, तो पचास तक की सभी मूर्तियाँ तुरंत गिर पड़ीं और धूल में मिल गईं।

तब राज्यपाल ने संत जूलियन से पुकारा:

'जादूगर! तेरे जादू इतने शक्तिशाली हैं कि तूने हमारे देवताओं को भी चूर-चूर कर दिया है! लेकिन देखते हैं कि क्या तू उस अंधे की दृष्टि वापस ला सकता है, जैसा तूने वादा किया था।'

और राज्यपाल ने आदेश दिया कि निग्न शहीद को गंदगी से नहलाया जाए, ताकि, जैसा कि राज्यपाल ने कहा, उसकी जादुई, चमत्कारी शक्ति उससे दूर हो जाए। लेकिन उस गंदगी की बदबू अचानक एक अद्भुत सुगंध में बदल गई जिसने पूरी हवा को भर दिया, जिससे हर कोई आश्चर्यचकित रह गया। तब संत जूलियन ने घायल व्यक्ति की आँख पर सूली का चिह्न बनाते हुए प्रभु का नाम लिया; और तुरंत ही उस बीमार मनुष्य का चंगा हो गया, और उसकी आँख पहले की तरह देखने लगी। राज्यपाल, जो द्वेष से अंधा हो गया था, ने इस चंगाई को मसीह की शक्ति के बजाय जादू-टोने का परिणाम माना, जबकि चंगा हुआ व्यक्ति जोर से चिल्लाया:

'सत्य कहता हूँ, यीशु मसीह सच्चे परमेश्वर हैं, और केवल उन्हीं का सम्मान और आराधना की जानी चाहिए!'

तब राज्यपाल ने चंगा हुए मनुष्य का सरि काट देने का आदेश दयि, और इस प्रकार, शारीरकि और आध्यात्मकि दोनों रूप से अपनी दृष्टि पुनः प्राप्त करके, और अपने ही रक्त में बपतस्मि ग्रहण करके, वह अदृश्य ईश्वर के आध्यात्मकि चंतिन के लिए प्रस्थान कर गया।

जहाँ तक संत जूलयिन का सवाल है, अधर्मी मार्शयिन ने उन्हें हाथों और पैरों में भारी बेड़यिों में जकड़ने का आदेश दयि, और इस हालत में यह हुक्म दयि कि उन्हें शहर में लोगों के उपहास के लिए घुमाया जाए; और सड़कों पर रुकने के दौरान, उन्हें वभिन्नि यातनाओं का शकिार बनाया जाना था। इस यातना और अपमान के दौरान, एक नगर-घोषक ने उद्घोष कयि:

'ऐसा ही उन लोगों के साथ होता है जो देवताओं को प्रणाम नहीं करते और राजा की आज्ञाओं का तरिस्कार करते हैं!'

जब यातना देने वाले संत के साथ उस घर पर पहुँचे जहाँ राज्यपाल का एकमात्र पुत्र, जसिका नाम सेलयिस था, पढ़ रहा था, तो उस लड़के ने, जो संत को भी देख रहा था, अपने साथयिों से कहा कि वह कुछ अद्भुत देख सकता है। उन्होंने उससे पूछा कि वह क्या देख सकता है, और सेलयिस ने कहा:

मुझे दखिाई दे रहा है कि वह दंडति ईसाई, जसिे सैनकि बेड़यिों में जकड़कर ले जा रहे हैं, दव्यि तेज वाले अनेक युवकों से घरिा हुआ है; जनिमें से कुछ उसकी सेवा और सहायता कर रहे हैं, जबकि अन्य उसके सरि पर एक ऐसा मुकुट रख रहे हैं जो इतना चमकदार है कि उसकी करिणें सूर्य की रोशनी से भी बढ़कर हैं। मुझे ऐसा लगता है कि ऐसे ईश्वर में वश्विास करना और उसकी सेवा करना अच्छा है, जो अपने सेवकों की इतनी रक्षा करता है और उन्हें ऐसी महमिा से सजाता है; मेरे दोस्तों, मेरा वश्विास करो, मैं भी ऐसा ही सेवक बनना चाहता हूँ, यदि इस ईसाई का ईश्वर मुझे अपना ईश्वर बनने की कृपा करे!

इन शब्दों के साथ, सेल्सस ने अपनी कतिाबें और अच्छे कपड़े एक तरफ रख दिए, इस दुनयिा में अपनी सारी संपत्ति पीछे छोड़ दी, और संत के पीछे दौड़ पड़ा। शहीद के पैरों पर गरिते हुए, उसने पुकारा:

'मैं आपको अपना दूसरा पति मानना चाहता हूँ; मैं अपने शरीर के अधर्मी पति, जो धर्मी का शत्रु और यातना देने वाला है, उससे पूरी तरह से त्याग करता हूँ। मैं आपसे जुड़ता हूँ; मैं भी, ठीक वैसे ही जैसे आप करते हैं, अपने प्रभु और उद्धारकर्ता मसीह के लिए पीड़ा सहना चाहता हूँ, जसिे मैं अब तक नहीं जानता था!'

जूलयिन को यातना देने वाले सैनकि हैरान रह गए, और पूरा शहर इस असामान्य दृश्य को देखने के लिए उमड़ पड़ा, और वे राज्यपाल के बेटे को शहीद को गले लगाते और उसके घावों को चूमते देख हैरान रह गए। और उस युवक ने लोगों से कहा:

'यह जान लो: मैं राज्यपाल का बेटा हूँ; अपने अधर्मी पति के साथ, मैंने अब तक नर्दिोष संतों का उत्पीड़न कयि है। लेकनि मैंने यह अज्ञानता में कयि; अब, ईश्वर को जानकर और उनसे जाना जाकर, मैं झूठे देवताओं का त्याग करता हूँ, अपने पति और माता से अपना नाता तोड़ता हूँ, और अपनी संपत्ति को तुच्छ समझता हूँ; मैं मसीह की गवाही देता हूँ और उस पर वश्विास करता हूँ, और मैं घोषणा करता हूँ कि मैं धन्य जूलयिन का अनुयायी हूँ। सेवकों और सैनकिों, तुम देर क्यों कर रहे हो? जाओ और अपने माता-पति से कहो कि मैं सच्चे परमेश्वर को जान गया हूँ और मैं उनके वफादार सेवक के साथ रहना चाहता हूँ।

जब सेल्सस के पति और माता को यह खबर मलिी, तो वे इस अप्रत्याशति खबर को सुनकर बहुत दुखी हुए और तुरंत लड़के को जूलयिन से छुड़ाकर घर ले आने के लिए भेजा। लेकनि ईश्वर, जो शशिुओं की रक्षा करते हैं, ने यह सुनश्चिति कयि कि कोई भी उस पर हाथ न रख सके, क्योंकि जो कोई भी उसे छूता, उसे तुरंत अपनी बांह और कंधे में तीव्र दर्द महसूस होता; और इसलिए कसिी ने भी उसे शहीद से दूर ले जाने की हम्मित नहीं की। यह जानकर, राज्यपाल ने उन दोनों को अपने सामने लाने का आदेश दयि और धन्य जूलयिन से कहा:

'तुम्हारी चालाकी से तुम मेरी सारी आशा छीनने और दुष्ट शब्दों से इस युवा हृदय को बहकाने की कोशशि कर रहे हो, जो उसके माता-पति के प्रति उसके प्रेम को जड़ से उखाड़ दे!'

जैसे ही राज्यपाल बोल रहे थे, केल्सी की माँ पुरुषों और महलिाओं सहति रश्तिेदारों की भीड़ के साथ दौड़ती हुई आई। उसने अपने बाल नोचे, अपने सीने पर अपने कपड़े फाड़ लिए, और उसकी चीखें इतनी भयानक थीं कि राज्यपाल ने स्वयं अपने कपड़े फाड़ दिए और शहीद से कहा:

'क्रूर जूलियन! उसके माता-पिता के कष्ट और उसके सभी रिश्तेदारों के रोदन को देखो, और इस निर्दोष युवक को अपनी जादू-टोने की शक्ति से मुक्त करो! हमें हमारा एकलौता पुत्र वापस कर दो और हमारे घर के उत्तराधिकारी और स्वामी को बहाल कर दो। तब मैं भी तुम्हारी ओर से राजाओं से विनती करूँगा, कि तुम्हारा अपराध क्षमा हो जाए, और तुम्हें बिना चोट के रिहा कर दिया जाए।

संत जूलियन ने उत्तर दिया:

– मुझे आपकी मदद की कोई ज़रूरत नहीं है, और न ही मैं आपके राजाओं से क्षमा मांगता हूँ; परन्तु मैं केवल अपने प्रभु यीशु मसीह से विनती करता हूँ कि, जब मैं अपना शहादत पूरा कर लूँ, तो वह मुझे उन लोगों की कतार में गिने, जो भेड़िये के गर्भ से जन्मे मेम्ने[779] के साथ, और सभी विश्वासियों के साथ जलाए गए थे। तुम्हारे सामने वह खड़ा है जो देह में तुमसे जन्मा था, परन्तु अब आत्मा में नया जन्म पाकर मेरे साथ मसीह पर विश्वास करता है। वह अब वयस्क हो चुका है – उसे स्वयं तुमसे उत्तर देने दो; उसे अपनी माँ के आँसुओं पर दया दिखाने दो और उस स्तन को बख्शने दो जिसने उसे दूध पिलाया था।

इस पर, उस कुलीन और विवेकी युवक ने उत्तर दिया:

'एक गुलाब का पौधा काँटों के झाड़ी से ही निकलता है, फिर भी न तो वह अपनी सुगंध खोता है क्योंकि वह काँटों के झाड़ी से आया है, और न ही वह काँटों का झाड़ी, जो गुलाब उगाता है, अपनी तीखी काँटें उसके कारण खोता है।' इसलिए, हे माता-पिता, अपनी प्रथा के अनुसार, बेगुनाहों को काँटों की तरह पीड़ित करते रहो, परन्तु मुझे, एक गुलाब की तरह, विश्वासियों के लिए सुगंध बिखेरने दो; जो विनाश के मार्ग पर खड़े हैं, वे तुम्हारी आज्ञा मानें, और जो अंधकार के राज्य से प्रकाश के राज्य में प्रवेश करना चाहते हैं, वे मेरा अनुसरण करें। मेरे प्रभु यीशु मसीह की खातिर, मैं तुमसे, मेरे माता-पिता, त्याग करता हूँ; परन्तु तुम, अपने देवताओं के भय से, अपने पुत्र को पीड़ा पहुँचाओ, क्योंकि मैं क्षणिक मृत्यु के द्वारा अनन्त जीवन प्राप्त करना चाहता हूँ। मैं स्वयं के प्रति दुष्ट होते हुए आपके प्रति दयालु नहीं हो सकता, और न ही मैं आपके प्रति अपने प्रेम को शाश्वत आनंद से ऊपर रखूँगा। पिता जी, देरी क्यों कर रहे हैं? मेरे साथ वैसा ही करें जैसा अब्राहम ने अपने पुत्र के साथ किया था! अपनी तलवार उठाओ और मुझे, अपने पुत्र को, मसीह के बलिदान के रूप में अर्पित करो। यदि तुम्हारा स्वाभाविक पितृत्व प्रेम तुम्हें ऐसा करने से रोकता है, तो मुझे सबसे क्रूर यातना देने वालों के हवाले कर दो, ताकि मैं अपने प्रभु, यीशु मसीह के लिए दुख सह सकूँ। तुम्हारा विलाप और आँसू व्यर्थ हैं, क्योंकि वे मुझे मेरा विश्वास त्यागने पर मजबूर नहीं कर सकते।

यह सुनकर, राज्यपाल ने जूलियन और सेल्सस को एक गंदे और अंधेरे कालकोठरी में ले जाने का आदेश दिया; लेकिन जब वे उसमें दाखिल हुए, तो कालकोठरी का अंधेरा प्रकाश में बदल गया, और बदबू एक मीठी सुगंध में बदल गई। वहाँ मौजूद बीस सैनिक मसीह में विश्वास करने लगे, लेकिन चूंकि धन्य जूलियन एक पादरी नहीं थे और विश्वास करने वालों का बपतिस्मा नहीं दे सकते थे, इससे उन्हें दुख हुआ। हालाँकि, परमेश्वर, जो अपने भय रखने वालों की इच्छाओं को पूरा करते हैं, ने उन्हें एक पादरी भेजा।

उस नगर में एक बहुत ही कुलीन वंश का व्यक्ति था, जिसे सम्राट डायोक्लेटियन और मैक्सिमियन अपने पूर्व सम्राटों में से एक, कैरिनस[780] के संबंधी होने के कारण बहुत सम्मान देते थे। इस व्यक्ति ने अपने पूरे परिवार के साथ मिलकर ईसाई धर्म को अपनाया। वह और उसकी पत्नी विश्वास और धार्मिकता में निधन कर गए, और पीछे सात पुत्र छोड़ गए जो यद्यपि आयु में छोटे थे, पर मन से परिपक्व थे। अपने माता-पिता के सम्मान के लिए, सम्राटों ने उन्हें अपने पिता के धर्म का पालन करने और बिना किसी भय के अपने मसीह की महिमा करने की अनुमति दी। इसलिए उनके पास अपना एक पुरोहित था, जिसका नाम एंथनी था, जिनके हाथों से उन्होंने पवित्र संस्कार प्राप्त किए। ईश्वर ने एक विशेष प्रकटकिरण में उन्हीं को आज्ञा दी कि वे अपने पुरोहित के साथ तहखाने में जाएँ और वहाँ बंद जूलियन और सेल्सस से मिलें। जब वे रात में वहाँ गए, तो एक स्वर्गदूत उनके सामने-प्रमुख चल रहा था; उसके एक स्पर्श से ही, जेल के दरवाज़े खुल गए, और वे, तहखाने में प्रवेश करके, पवित्र कैदियों को चूमा और उनके साथ मिलकर ईश्वर से प्रार्थना करने लगे।

---

[779] यह, बेशक, सेल्सस था, जो गवर्नर मार्शियन का बेटा था, जो ईसाइयों का एक निर्दयी उत्पीड़क था।

[780] कारिनस रोमन सम्राट कारस का पुत्र था। अपने भाई नुमेरियन के साथ, कारस के सिंहासनारोहण पर उसे सीज़र घोषित किया गया था, और पर्थियनों के खिलाफ कारस द्वारा शुरू की गई मुहिम के दौरान, उसने पश्चिमी प्रांतों पर शाही अधिकार के साथ शासन किया (283–284)। जब कारस मारा गया और सैनिकों ने डायोक्लेटियन को सम्राट घोषित किया, तो कारिनस ने उसके खिलाफ विद्रोह कर दिया, लेकिन 285 में वह पराजित हो गया और हत्यारों के हाथों मारा गया।

पादरी ने धन्य युवक सेल्सस, जो राज्यपाल का पुत्र था, और बीस सैनिकों का बपतिस्मा दिया, जबकि उन भाइयों में से सात मसीह के लिए उनके साथ पीड़ा सहने के उत्साह से भर गए और कालकोठरी छोड़ने से इनकार कर दिया। यह जानकर, राज्यपाल यह देखकर चकित रह गया कि जिन लोगों को राजाओं ने स्वतंत्र रूप से ईसाई धर्म का पालन करने की अनुमति दी थी, वे स्वयं बंधन और यातनाएँ चाहते थे; और, भाइयों को अपने पास बुलाकर, उसने उन्हें लंबे समय तक घर लौटने और अपनी इच्छा के अनुसार अपने मसीह की महिमा करने के लिए प्रोत्साहित किया, क्योंकि राजाओं द्वारा उन्हें ऐसी अनुमति दी गई थी। लेकिन वे तो बेड़ियों और कालकोठरी के लिए तरसते थे और आज़ादी की इच्छा नहीं रखते थे।

उन्होंने कहा, 'वह सोना जो पहले कड़ाही में पिघलाया और शुद्ध किया न गया हो, राजसी मुकुट के लिए अनुपयुक्त है। इसी प्रकार हम भी अपने मसीह के योग्य नहीं होंगे, जब तक कि हमारी उन पर आस्था सोने की तरह परखी न जाए।' पत्तों से ही सुसज्जित और फलहीन वृक्ष का मूल्य बहुत कम होता है। इसी प्रकार, जब तक हम अपने विश्वास के उत्तम फल उनके लिए नहीं लाते, तब तक हम अपने मसीह को प्रसन्न नहीं कर सकते।

तब राज्यपाल ने आदेश दिया कि उनकी इच्छा पूरी की जाए, और उसने स्वयं राजा को उनके बारे में रिपोर्ट करने का वादा किया।

इस प्रकार, धन्य युवक राज्यपाल के पास से अपने घरों को नहीं, बल्कि सेंट्स जूलियन और सेल्सस और बीस सैनिकों के पास अंधकूप में लौटे; और पादरी एंथनी भी उनके साथ गए। राज्यपाल ने, अपनी ओर से, जूलियन, उसके पुत्र सेल्सस, सैनिकों और उन सात भाइयों के बारे में राजाओं को एक रिपोर्ट भेजी। थोड़ी ही देर बाद, राजाओं का एक फरमान आया जिसमें आदेश दिया गया था कि जो भी अडिग विरोध दिखाए, उसे जला दिया जाए; लेकिन यदि वे अपनी जादू-टोने से आग से खुद को बचा लेते हैं, तो राज्यपाल उन्हें अपनी मर्जी से मौत की सजा देगा। २७५ाओं से यह आज्ञा पाकर, राज्यपाल ने शहर के केंद्र में एक न्याय स्थल स्थापित करने का आदेश दिया और लोगों के सामने बैठकर आज्ञा दी कि संत जूलियन को उसके पूरे दल-बल के साथ उसके सामने लाया जाए, जिसमें सेल्सियस, सात भाई, पादरी एंथनी और बीस योद्धा शामिल थे। उसने उन्हें मूर्तियों की पूजा करने के लिए समझाना शुरू किया, और उन्हें राजकीय आदेश की ओर इशारा किया जिसमें कहा गया था कि यदि वे पश्चाताप नहीं करते तो उन्हें मृत्युदंड दिया जाएगा। लेकिन वे सच्चे धर्म पर अडिग रहे, यह कहते हुए कि स्वर्ग के राजा ने मूर्तिपूजकों के लिए, यदि वे पश्चाताप नहीं करते, तो शाश्वत नरक की सजा निर्धारित की है; और इस प्रकार आपसी बहस में बहुत समय बीत गया।

उसी क्षण, एक मृतक का शव दफ़नाने के लिए अदालत के पास से ले जाया जा रहा था, और राज्यपाल ने शव को देखकर उसे अपने सामने लाने और उसके सामने लिटा देने का आदेश दिया। लोग हैरान थे, उन्हें यह नहीं पता था कि राज्यपाल मृतक के शव के साथ क्या करने का इरादा रखता था।

और राज्यपाल ने संत जूलियन से कहा:

'वे आपके गुरु, मसीह के बारे में कहते हैं कि उन्हें सूली पर चढ़ाए जाने से पहले, उन्होंने मृतकों को जीवित किया था। इस मृतक को भी जीवित कर दें, जैसा आपके गुरु ने किया था, और फिर यह स्पष्ट हो जाएगा कि क्या वह वास्तव में ईश्वर हैं।'

संत जूलियन ने उत्तर दिया:

'एक अंधे आदमी को यह बताने का क्या फायदा कि सूरज उग रहा है?'

'तुम्हारी कहावतों का काफी हो गया,' राज्यपाल ने कहा, 'और अगर तुम और तुम्हारे ईश्वर में शक्ति है, तो इस मृतक को जीवित कर दो, जैसा मैंने तुमसे कहा है।'

और संत जूलियन ने उत्तर दिया:

'यद्यपि तुम्हारा अविश्वास तुम्हें प्रभु का ऐसा चमत्कार देखने के लिए अयोग्य बनाता है, तथापि तुम इसे तुरंत देखोगे, क्योंकि अब समय आ गया है कि उसकी दिव्य शक्ति प्रकट हो, और तुम जान लो कि ईश्वर ऐसा करने में समर्थ है। मुझे आशा है कि प्रभु मुझे वह सब कुछ प्रदान करेंगे जो मैं विश्वास से उनसे माँगता हूँ, और तुम्हारे सामने मुझे लज्जित नहीं करेंगे।'

यह कहकर, संत जूलियन ने अपनी आँखें और अपना हृदय स्वर्ग की ओर उठाया और ज़ोर से प्रार्थना की, जबकि उसका चेहरा प्रकाश से दमक रहा था।

और उन्होंने यह प्रार्थना कही:

'हे प्रभु यीशु मसीह, परमेश्वर के सच्चे पुत्र, – आप जो सभी युगों से पहले पिता से उत्पन्न हुए, और जब नियत समय पूरा हुआ, तो सबसे पवित्र कुँवारी मरियम से बिना बीज के मानव देह धारण किया! अब स्वर्ग की ऊँचाइयों से नीचे देख, ताकि तेरे शत्रु लज्जित हों और जो तुझ पर विश्वास करते हैं वे दृढ़ हों! अब मुझे अपने स्वर्गीय सिंहासन से सुन और इस मृतक को जीवित कर, ताकि जीवित आत्मा में न मरें, और जो आत्मा में मरे हैं वे तेरी सर्वशक्तिमानता को देखकर जीवित हो उठें।

उन्होंने कुछ समय तक इस प्रकार प्रार्थना की, और फिर, मृतक की ओर मुड़कर कहा:

'मैं तुमसे कहता हूँ, हे सूखी मिट्टी, उस के नाम पर जिसने चार दिन से मरे हुए लाजरुस को जिलाया था: उठो और अपने पैरों पर खड़े हो जाओ।'

संत के ये शब्द कहते ही वह मृतक तुरंत जीवित हो उठा और खड़ा हो गया, और सारी भीड़ विस्मित हो गई। फिर वह मृतकों में से जीवित किया गया व्यक्ति ऊँचे स्वर में घोषणा करने लगा:

'हे, परमेश्वर के सेवक की प्रार्थनाएँ और उसकी निर्मल कुँवारीपन कितने शक्तिशाली हैं! क्योंकि मुझे कहाँ ले जाया जा रहा था, और मुझे कहाँ से वापस लाया गया है?'

राज्यपाल मार्शियन ने बड़ी ध्यान से जो हो रहा था उसे देखा और चकित रह गया, लेकिन चूँकि वह एक राक्षस द्वारा अंधा कर दिया गया था, इसलिए उसने यहाँ मसीह की शक्ति को काम करते हुए नहीं देखा, बल्कि सब कुछ जादू-टोने का परिणाम मान लिया। फिर, उस जी उठे आदमी का मज़ाक उड़ाने की इच्छा से, उसने उससे पूछा:

'तुम कहाँ से लौटे हो?'

लेकिन उस मनुष्य ने विस्तार से उत्तर देते हुए कहा:

मुझे विशालकाय, अज्ञात, भयानक रूप वाले और आग-सी आँखों वाले इथियोपियाई लोगों ने, जिनके दाँत शेर जैसे और पंजे चील जैसे थे, और जिनसे, ऐसा लगता था, किसी दया की उम्मीद नहीं की जा सकती थी, ले जाया गया। उत्सव मनाते हुए, वे मुझे नरक की ओर खींच ले गए, लेकिन जब मैं खुद को खाई के ठीक प्रवेश द्वार पर पाया, तो उन इथियोपियाई लोगों ने मेरे शरीर के दफ़न की प्रतीक्षा क करने लगे, जिसे पृथ्वी से ले जाया गया था। लेकिन अचानक पूरा नरक उथल-पुथल में पड़ गया, और ईश्वर के सिंहासन से एक आवाज़ सुनाई दी:

'मेरे प्रिय जूलियन के वास्ते, इस आत्मा को उसके शरीर में लौटने दो!'

और तुरंत दो पुरुष सफेद वस्त्रों में आए और मुझे अशुद्धों के हाथों से छुड़ाकर इस संसार में वापस ले आए, ताकि उस द्वारा, जिसने मुझे मृतकों में से जिलाया, मैं मृत्यु के बाद उस सच्चे ईश्वर को जान सकूँ, जिसे मैंने जीवित रहते हुए नकार दिया था।

यह सुनकर, राज्यपाल हैरान रह गया और उसे समझ नहीं आया कि क्या करे; लेकिन फिर, भीड़ में अशांति के डर से, उसने आदेश दिया कि पुनर्जीवित व्यक्ति को, संत जूलियन और अन्य संतों के साथ, कालकोठरी में ले जाया जाए और कालकोठरी के दरवाजों को उसकी मुहर की अंगूठी से सील कर दिया जाए। वहाँ, कालकोठरी में, संत जूलियन ने धन्य पुरोहित एंथनी को उस जी उठे व्यक्ति का बपतिस्मा देने का निर्देश दिया, और पवित्र बपतिस्मा में उस व्यक्ति को अनास्तासियस नाम मिला, जिसका ग्रीक से अनुवाद 'जी उठे हुए' है।

अगली सुबह, राज्यपाल मार्शियन ने एकतीस तारकोल वाले बैरल तैयार करने का आदेश दिया, जो पवित्र शहीदों की संख्या के बराबर थे, और उन्हें आधा तारकोल और गंधक से भरने का आदेश दिया, साथ ही संतों को जलाने के लिए लकड़ी और झाड़ियों की एक बड़ी आपूर्ति भी तैयार करने का आदेश दिया। जब सब कुछ तैयार हो गया, तो मसीह के बंधे हुए शहीदों को कालकोठरी से बाहर लाया गया, जिसमें जूलियन और सेल्सस को एक साथ बाँधा गया था। भीड़ में कई लोग अपने आँसू नहीं रोक सके, और इस बात पर विलाप कर रहे थे कि इतने युवा और सुंदर युवक अपनी मौत के घाट उतारे जा रहे थे, जबकि वे किसी भी गलत काम के लिए निर्दोष थे। हालाँकि, संत जूलियन ने उनसे कहा:

'सोने को आग से गुजरने से न रोको, ताकि वह और भी शुद्ध हो जाए!'

राज्यपाल अपने पुत्र को जलते हुए नहीं देखना चाहता था, जिसके लिए वह मन ही मन पीड़ित था; और, राजा के आदेश को पूरा करने के लिए अपने उप-राज्यपाल को छोड़कर, वह दुख के साथ चला गया। फिर प्रत्येक संत को उनके लिए तैयार किए गए पिच (tar) के बैरल में डाल दिया गया, और बाद में, सभी बैरल के चारों ओर लकड़ी, गोबर और झाड़ियाँ ढेर करने के बाद, उन्होंने उनमें आग लगा दी। इन बैरलों से उठती लपटें तीस कोहनों की ऊँचाई तक पहुँच गईं, फिर भी संत आग के बीच खड़े रहे, ईश्वर का भजन गाते और उसकी स्तुति करते रहे। जब बैरल और पूरी चिता बुझ गई, तो पता चला

कि संत जीवति, सुरक्षति और अक्षुण्ण थे, और उनके चेहरे आनंद से दमक रहे थे। यह देखकर सभी लोग चकति रह गए, और जब यह खबर राज्यपाल को मलिी, तो वह खुद देखने के लिए दौड़ा और ऐसा करने पर वह पूरी तरह से हैरान रह गया। हालाँकि, उसने फरि से संतों को जेल में वापस ले जाने का आदेश दयिा, जहाँ उसकी पत्नी, सेल्सस की माँ, यह जानकर कि उसका बेटा जीवति और सुरक्षति है, जल्दी से चली गई। अपने बेटे को देखकर, वह मसीह में वशि्वास करने लगी और जेल में एल्डर एंथनी द्वारा उसका बपतस्मिा हुआ। उसका नाम मैरयिोनलिा था। हालाँकि, राज्यपाल को जल्द ही पता चल गया कि उसकी पत्नी ने ईसाई धर्म में बपतस्मिा ले लयिा था, और उसने उसे भी कैद कर दयिा।

तब, न्यायपीठ पर अपनी सीट संभालते हुए, उसने आदेश दयिा कि बीस पवत्रि योद्धाओं और सात युवा भाइयों को तलवार से मार डाला जाए; जहाँ जूलयिन और सेल्सस के साथ-साथ प्रेस्बटिर एंथनी, अनास्तासयिस और उनकी पत्नी मैरयिोनलि्ला को उसने फरि से मुकदमे के लिए रखा और उन्हें बेड़यिों में जकड़कर छोड़ दयिा।

जब न्याय का दनि आया, तो संतों ने राजा की इच्छा और राज्यपाल की सलाह का पालन करने तथा मूर्तयिों की पूजा करने का दखिावा कयिा। इसी कारण, उन्हें खुशी-खुशी मूर्तपिूजक मंदरि की ओर ले जाया गया; लेकनि जब जुलूस मंदरि के पास पहुँचा, तो संत जूलयिन ने ईश्वर से प्रार्थना की – जसि पर मंदरि तुरंत ढह गया, और उसमें मौजूद सभी पुजारयिों और लगभग एक हजार अन्य लोगों को कुचल डाला। जसि धरती पर मंदरि खड़ा था, वह फट गई, और दरारों से नकिलती आग ने उन मूर्तपिूजकों को भस्म कर दयिा जो उनकी ओर आ रहे थे। इसके बाद, संतों को वापस जेल ले जाया गया, जहाँ, जब वे प्रार्थना कर रहे थे, उनसे पहले पीड़ा सह चुके शहीदों की एक बड़ी भीड़ एक तेजस्वी प्रकाश में उनके सामने प्रकट हुई; वे सफेद वस्त्र पहने हुए थे और स्वर्गीय भजन गा रहे थे। उनमें बीस योद्धा और सात भाई थे जन्हिें हाल ही में तलवार से मार डाला गया था। संत वासलिसिा भी सभी पवत्रि कुंवारीयों के साथ प्रकट हुईं, और उन्होंने संत जूलयिन को घोषणा की कि वह जल्द ही, अपने साथयिों के साथ, एक वीरतापूर्ण कार्य करेंगे, अपना जीवन समाप्त करेंगे, और वजिय के साथ स्वर्गीय नविासों में प्रवेश करेंगे।

उसने कहा, 'स्वर्ग का राज्य तुम्हारे लिए खुला है, और हमारे प्रभु यीशु मसीह तुम्हें अपने पास ले लेंगे, उन लोगों के साथ जो तुम्हारे साथ हैं; पुरखों, भवष्यिद्वक्ताओं, प्रेरतिों और शहीदों के दल तुम्हारा वजियी स्वागत करने आएँगे, और तुम हमेशा उनके साथ रहोगे।'

यह कहकर वह अदृश्य हो गई, और उसके साथ वे सभी संत भी चले गए जो प्रकट हुए थे, जसिसे बंदी अकथनीय आनंद और आध्यात्मकि प्रसन्नता में रह गए।

इसके बाद, यातना देने वाले ने एक बार फरि न्यायपीठ पर अपनी सीट ली और संतों को बाहर लाकर उन्हें वभिन्नि यातनाएँ दीं। सबसे पहले, उसने आदेश दयिा कि उनके हाथों और पैरों की उंगलयिों को तेल में डूबी हुई ऊन से बांधा जाए, और उस ऊन में आग लगा दी जाए; लेकनि संतों के हाथों और पैरों पर बंधी ऊन जलकर राख हो गई, लेकनि उन्हें कोई नुकसान नहीं हुआ। फरि उसने आदेश दयिा कि संतों जूलयिन और सेल्सस की खोपड़ी की खाल उड़ा दी जाए , जबकि धन्य पुरोहति एंथनी और अनास्तासयिस की आँखें नकिाल दी जाएँ। हालाँकि, जब उन्होंने संत मैरयिोनलिा को यातना देने की कोशशि की, तो जल्लादों के हाथ सुन्न हो गए, और उन्होंने उस पर हाथ भी नहीं लगाया। इसके बाद, संतों को जानवरों के सामने फेंक दयिा गया, लेकनि ईश्वर की शक्ति से उन्हें जानवरों से भी बचाया गया, जसिने जानवरों के मुँह बंद कर दिए। अंत में, राज्यपाल ने आदेश दयिा कि सभी जेलों से मृत्युदंड पाए हुए सभी अपराधयिों को इकट्ठा कयिा जाए, ताकि पवत्रि शहीदों को उनके साथ ही फांसी दी जा सके। और जब यह आदेश पूरा हो गया, तो उसने सभी को, शहीदों सहति, उनके मृत्युदंड के लिए ले जाए जाने का आदेश दयिा, जसिमें न तो अपने बेटे को बख्शा और न ही अपनी पत्नी को। इस प्रकार संतों का अंत हुआ, जन्हिें अपराधयिों के साथ तलवार से सरि कलम करके शहीद कर दयिा गया[781] । उनके नष्पिादन के तुरंत बाद, एक भूकंप शुरू हो गया, जसिने शहर की एक तहिाई इमारतों को नष्ट कर दयिा; वास्तव में, जहाँ भी कोई मूर्ति खड़ी थी, एक भी स्थान बख्शा नहीं गया। उसी समय, बजिली चमकने लगी, गरजने लगी और ओले गरि, और तूफान में कई वधिर्मी मारे गए। गवर्नर मार्शयिन पहले तो डर के मारे लगभग मर ही गया, और फरि जल्द ही बीमार पड़ गया और वास्तव में मर भी गया: उसे उसके शरीर में पनपे कीड़ों ने खा लयिा।

[781] यह वर्ष 313 का था, जब मस्रि और अफ्रीका पर मैक्सिमिनिस डाज़ा (311–313) का शासन था, जो पहले मैक्समियिन गेलेरयिस (305 से) के सह-शासक रहे थे। पश्चमि में, उस समय कॉन्स्टेंटाइन महान पहले से ही शासन कर रहे थे

अगली ही रात, संतों की फाँसी के बाद, पुरोहति भक्तपिूर्ण पुरुषों के साथ शहीदों के शवों को इकट्ठा करने आए। लेकनि चूँकि ये पवत्रि शव कई लाशों के बीच पड़े थे, वे उन्हें पहचान नहीं सके और घुटनों के बल गरिकर प्रार्थना करने लगे। और फरि संतों की आत्माएँ उनके सामने कन्याओं के रूप में प्रकट हुईं, प्रत्येक आत्मा अपने ही शरीर के बगल में खड़ी थी। इस प्रकार शहीदों के पवत्रि शरीरों को पहचान लेने के बाद, वहाँ आए हुए लोगों ने उन्हें उठाया और चर्च में, वेदी के नीचे दफना दयिा। ईश्वर, जो अपने संतों को महमिामय बनाता है, ने आज्ञा दी कि उसी स्थान पर जीवन-दायक और चंगा करने वाले जल का एक झरना फूटे जहाँ पवत्रि शहीदों के शरीर दफनाए गए थे, और हमारे प्रभु यीशु मसीह की कृपा से, उस जल और संतों की प्रार्थनाओं द्वारा हर प्रकार की बीमारयिाँ ठीक हो गईं, जनिकी महमिा युगानुयुग होती रहे। आमीन।

गुफाओं के पूजनीय ग्रेगरी की स्मृति

8 जनवरी को स्मरणोत्सव

जसि प्रकार नेओकेसरयिा को संत ग्रेगरी द वंडरवर्कर पर गर्व है, उसी प्रकार गुफाओं का पवत्रि महान लाव्रा भी उस आदरणीय संत पर गर्व करता है, जनिका नाम इस संत के नाम के समान है। जब परमेश्वर ने अपने संतों, एंथनी और थयिोडोसयिस, जो वभिन्नि चमत्कारों के लिए प्रसद्धि हुए, के माध्यम से अपनी महानता प्रकट की, उसी समय उन्होंने आदरणीय ग्रेगरी को चमत्कारों के कार्य के लिए चुना और उन्हें अपनी पवत्रि लव्रा में बुलाया। इस प्रकार, जबकि पूजनीय एंथनी एक गुफा में एकांत जीवन व्यतीत कर रहे थे, यह धन्य व्यक्ति पूजनीय थयिोडोसयिस के पास आए, जो मठ के प्रभारी थे; और, उनसे मठीय वस्त्र प्राप्त करने के बाद, वे नर्लिप्तिता, पवत्रिता, वनिम्रता, आज्ञाकारति और अन्य सद्गुणों में स्थापति हुए, लेकनि सबसे बढ़कर उन्होंने स्वयं को प्रार्थना के लिए समर्पति कर दयिा। कम समय में कई चमत्कार करने के बाद, उन्हें चमत्कार करने का वरदान मलिा और, सबसे बढ़कर, उन्हें परमेश्वर से राक्षसों पर अधकिार प्राप्त हुआ, जो संत को दूर से देखते ही चल्लिा उठे:

'हे ग्रेगरी! तुम अपनी प्रार्थना से हमें भगा दोगे।'

वास्तव में, ग्रेगरी की आदत थी कि वे हर दैवीय सेवा के बाद दुष्टात्मा भगाने की प्रार्थनाएँ कयिा करते थे। हर तरफ से भगाए जाने के बाद भी, पराजति शत्रु ने संत के पुण्य कार्यों में बाधा डालने की इच्छा से, संत के खलिाफ षड्यंत्र रचना शुरू कर दयिा। स्वयं ऐसा करने की शक्ति से वंचति, उसने दुष्ट लोगों को संत को लूटने की अनुमति दे दी, जसिके पास प्रार्थनाओं और भजनों वाली कतिाबों के अलावा कोई संपत्ति नहीं थी। तो, एक रात, चोर ग्रेगरी की कोठरी में आए और खुद को छपिाकर, उस क्षण का इंतजार करने लगे जब साधु चर्च में भोर की प्रार्थना के लिए नकिलेंगे, ताकि वे उनकी सारी संपत्ति लूट सकें। लेकनि, उस धन्य व्यक्ति को उनके आने का पता चल गया, क्योंकि उन्होंने पूरी रात अपनी कोठरी में जागते हुए ईश्वर से प्रार्थना करते हुए बतिाई थी। उन्होंने उनके लिए भी प्रार्थना करना शुरू कर दयिा, यह कहते हुए:

'हे ईश्वर! अपने सेवकों को नद्रिा प्रदान कर, जन्हिोंने शत्रु की सेवा करते हुए व्यर्थ ही स्वयं को थका लयिा है।'

ईश्वर ने महात्मा की प्रार्थना सुनी, और चोर पाँच दनि और पाँच रात तक सोते रहे, जब तक कि धन्य महात्मा ने कई भाइयों की उपस्थति में उन्हें जगाया और इन शब्दों से संबोधति कयिा:

'तुम मुझे लूटने की कोशशि में व्यर्थ ही कब तक पहरा देते रहोगे? तुरंत घर जाओ!'

लेकनि जब वे जागे, तो वे उस जगह से हलि भी नहीं सके, क्योंकि इतने लंबे समय तक कुछ भी न खाने के कारण उनकी सारी ताकत खत्म हो चुकी थी। फरि धन्य व्यक्ति ने उन्हें भोजन दयिा और उन्हें खाना खलिाकर वदिा कर दयिा। यह जानने पर, शहर के राज्यपाल ने इन लोगों को दंडति करने का आदेश दयिा, लेकनि ग्रेगरी, इस बात से दुखी कि उन्हें उसकी वजह से यातना दी गई थी, राज्यपाल के पास गए, उसे अपनी कई कतिाबें भेंट कीं, और चोरों को आज़ाद करा दयिा। जहाँ तक उनकी बाकी कतिाबों की बात है, उन्होंने उन्हें बेच दयिा और उसका पैसा गरीबों में बाँट दयिा, यह कहते हुए:

'कहीं कोई और मेरी चोरी करने की इच्छा के प्रलोभन में आकर मुसीबत में न पड़ जाए!' इस प्रकार, प्रभु की आज्ञा पूरी हो, जन्हिोंने कहा: *'अपना सामान बेच दो और दान करो। अपने लिए ऐसे थैले बनाओ जो घसि न जाएँ, स्वर्ग में ऐसा खज़ाना जो कभी खत्म न हो, जहाँ न कोई चोर पहुँचता है और न कोई कीड़ा नष्ट करता है*' (लूका 12:33)।

जहाँ तक चोरों का सवाल है, उन पर हुए चमत्कार के कारण, वे अपने पुराने रास्ते पर लौट आए, लेकिन उन्होंने पश्चाताप किया और, उसी पेचेर्सक मठ में आकर, मठ के समुदाय के लिए काम करना शुरू कर दिया। लेकिन शत्रु ने अपनी दुष्ट योजनाओं को नहीं छोड़ा। चूंकि पूजनीय ग्रेगरी का अपना एक छोटा सा बगीचा था, जहाँ वे सब्जियाँ उगाते और फलदार पेड़ लगाते थे, शत्रु ने एक बार अन्य चोरों को इस बगीचे में घुसने और अपनी बोरी सब्जियों से भरने के लिए उकसाया। लेकिन जब उन्होंने बोरी अपने कंधों पर लाद लीं और निकलने की कोशिश की, तो वे ऐसा नहीं कर सके; दो पूरे दिन और दो रातें वे भारी बोरियों के बोझ तले एक ही जगह खड़े रहे। फिर वे चिल्लाने लगे:

'हे पवित्र पिता ग्रेगरी! हमें जाने दें; हम अपने पाप का प्रायश्चित करेंगे और ऐसा फिर कभी नहीं करेंगे।'

उनकी पुकार सुनकर भिक्षु आए और उन्हें पकड़ लिया, लेकिन वे उन्हें उस जगह से हिला भी नहीं सके। फिर उन्होंने चोरों से पूछा:

'आप यहाँ कब पहुँचे?'

चोरों ने उत्तर दिया:

'हम दो दिन और दो रातों से यहीं खड़े हैं।'

भिक्षुओं ने उनसे कहा:

'लेकिन हम इस रास्ते से कई बार गुज़रे और फिर भी हमें आप दिखाई नहीं दिए।'

चोरों ने उत्तर दिया:

'और अगर हमने आपको गुज़रते हुए देखा होता, तो हम आँखों में आँसू लिए बड़ों से हमारे लिए कहने की विनती करते; लेकिन जब हम पूरी तरह थक गए, तभी हमने पुकारना शुरू किया। हमारे लिए पवित्र चमत्कार करने वाले से प्रार्थना करें, कि वह हमें मुक्त कर दें।'

उसी क्षण ग्रेगरी वहाँ आ पहुँचे और उन्होंने उनसे कहा:

'चूँकि तुमने अपना पूरा जीवन आलस्य में, दूसरों की संपत्ति चुराने में बिताया है, जबकि खुद काम करने से इनकार करते रहे हो, अब से तुम अपने बाकी दिनों के लिए इसी जगह पर खड़े रहोगे।'

वे, हालांकि, रोए और बूढ़े से जाने देने की विनती करने लगे, यह वादा करते हुए कि वे फिर कभी चोरी नहीं करेंगे।

बड़े भाई को उन पर दया आ गई और उन्होंने कहा:

'मैं तुम्हें जाने दूँगा अगर तुम वादा करो कि तुम काम करोगे और अपनी मेहनत से दूसरों का पेट भरोगे।'

जब चोरों ने यह शपथ ली कि वे उसकी अवज्ञा नहीं करेंगे, तो ग्रेगरी ने उनसे कहा:

'धन्य हो वह ईश्वर, जो तुम्हारा पालन-पोषण करता है! अब से, तुम पवित्र भाईचारे के लिए काम करोगे और अपनी मेहनत से उनकी ज़रूरतें पूरी करोगे।'

यह कहकर, उन्होंने उन्हें आज़ाद कर दिया। उस छोटे बगीचे में किए गए अपने बुरे कर्मों का प्रायश्चित करने के लिए, चोरों ने पेचेर्सक मठ के सब्जी के खेतों में लगन से काम करना शुरू कर दिया और अपने बाकी दिन इसी काम में बिताए।

हालाँकि, चालाक प्रलोभक ने तीसरी बार संत को इतने कपटपूर्ण छल से नुकसान पहुँचाने का प्रयास किया। एक दिन, तीन याचक ग्रेगरी के सामने मदद की ज़रूरत का दिखावा करते हुए, पूजनीय पिता की परीक्षा लेने की इच्छा से प्रकट हुए। उनमें से दो ने, तीसरे की ओर इशारा करते हुए, यह झूठ बोला:

'फादर! हमारे इस मित्र को मृत्युदंड सुनाया गया है। हम आपसे विनती करते हैं कि उसे कुछ दें ताकि वह अपना फिरौती भर सके और मृत्यु से बच सके।'

उस धन्य व्यक्ति ने, हालांकि, यह महसूस करते हुए कि यह मनगढ़ंत बात सच साबित होगी, दुख से रोया और कहा:

'हाय इस मनुष्य के लिए, क्योंकि उसके विनाश का दिन आ गया है!'

उन्होंने उत्तर दिया:

'यदि आप, पिताजी, उसे कुछ भी देंगे, तो वह नहीं मरेगा।'

उन्होंने यह इसलिए कहा, ताकि उससे कुछ ठग सकें और आपस में बाँट सकें। लेकिन चमत्कार करने वाले, जो दूरदर्शी थे, ने कहा:

'भले ही मैं उसे दे दूँ, वह वैसे भी मर जाएगा! लेकिन बताओ: उसे कैसे मरना चाहिए?'

– उसे एक पेड़ से फांसी दी जाएगी, – धोखेबाजों ने जवाब दिया।

'तुम सच कह रहे हो,' साधु ने कहा, 'और कल यही होगा।'

यह कहकर, वह उस गुफा में उतर गया जहाँ वह जिज्ञासु आँखों और दुनिया की हलचल से बचता था, और जहाँ वह आमतौर पर अपनी प्रार्थनाएँ किया करता था। वहाँ छोड़ी हुई अपनी किताबें निकालकर, उसने उन्हें आए हुए लोगों को दे दीं और कहा:

'इन्हें ले लो, और अगर तुम्हें इनकी ज़रूरत न पड़े, तो मुझे वापस कर देना।'

उन्होंने किताबें लेकर वहाँ से चले गए और हँसते हुए कहने लगे:

'हम इन्हें बेचेंगे और आमदनी बाँट लेंगे।'

संन्यासी के फलों के पेड़ देखकर, उन्होंने कहा:

'हम आज रात यहाँ वापस आएँगे और यह फल तोड़ेंगे।'

जब रात हुई, तो तीनों चोर वापस आए; उस समय ग्रेगरी अपनी गुफा में प्रार्थना कर रहे थे, और उन्होंने गुफा के प्रवेश द्वार को बाहर से बंद कर दिया, जहाँ संत प्रार्थना कर रहे थे। उनमें से एक, वह आदमी जिसे फाँसी की सज़ा सुनाई गई थी, एक पेड़ पर चढ़ा और सेब तोड़ने लगा। उसी क्षण, जिस टहनी को वह पकड़े हुए था, वह टूट गई और वह गिर पड़ा, जबकि पहरा दे रहे दूसरे दो चोर डरकर भाग गए। हालाँकि, गिरने वाला आदमी एक दूसरी टहनी से इस तरह लटक गया कि वह जल्द ही दम घुटने से मर गया, क्योंकि उसे छुड़ाने वाला कोई नहीं था।

ग्रेगरी, कैद में होने के कारण, चर्च में भ्रातओं के साथ मैटिन्स (प्रार्थना सभा) में शामिल नहीं हो सका; इसलिए, चर्च से निकलने के बाद, भ्राता यह देखने गए कि संत, अपनी आदत के विपरीत, मैटिन्स के लिए क्यों नहीं आए थे। वहाँ उन्होंने एक मृत व्यक्ति को पेड़ से लटका हुआ देखा और वे भयभीत हो गए। तुरंत ही उन्हें ग्रेगरी मिला, जो एक गुफा में बंद था; और जब वह गुफा से बाहर आया, तो उसने शव को नीचे उतारने का आदेश दिया। फिर, अपने साथियों को देखकर, जो दूसरों के साथ आए थे और मृतक को देख रहे थे, उसने उनसे कहा:

'देखो, तुम्हारे घृणित झूठ कैसे सच हो गए, क्योंकि *"परमेश्वर का मज़ाक नहीं उड़ाया जाता"* (गलातियों 6:7)। अगर तुमने मुझे बंद न किया होता, तो मैं आकर उसकी मदद करता; परन्तु चूँकि शत्रु ने तुम्हें *"निष्फल और मिथ्या" बातों को* बनाए रखना सिखाया है, इसीलिए तुमने *"अपने दयालु को त्याग दिया"*।'[782]

अभद्र उपहास करने वाले, यह देखकर कि धन्य व्यक्ति के वचन सच हो गए थे, क्षमा याचना करते हुए उसके पैरों पर गिर पड़े। ग्रेगरी ने उन्हें पेचेर्स्क मठ में श्रम करने की सज़ा दी, ताकि उस समय से वे अपने माथे के पसीने से अपनी रोटी कमा सकें और अपने हाथों की मेहनत से स्वयं और दूसरों का भरण-पोषण कर सकें। और इस प्रकार उन्होंने अपना जीवन समाप्त किया, पेचेर्स्क मठ में अपने बच्चों के साथ परमेश्वर की परम पवित्र माता और हमारे पूजनीय पिताओं, एंथनी और थियोडोसियस के शिष्यों के रूप में सेवा करते हुए।

लेकिन अब आदरणीय की शहादत के बारे में बताने का समय आ गया है।

एक दिन, एक अशुद्ध जानवर मठ के एक पात्र में गिर गया, और पूजनीय पिता ने उसे अशुद्धि से शुद्ध करने के लिए, पानी भरने के लिए डेन्यपर नदी में उतर गए। उसी क्षण, राजकुमार रोस्टिस्लाव वसेवोदोविच[783] वहाँ मठ में प्रार्थना करने और पोलोव्त्सियों के खिलाफ अभियान[784] के लिए आशीर्वाद लेने आए, जिसके लिए वह अपने भाई व्लादिमीर मोनोमाख[785] के साथ निकल रहे थे। प्राचीन शत्रु द्वारा उकसाए गए रोस्टिस्लाव के सेवकों ने बूढ़े का मज़ाक उड़ाना शुरू

---

[782] महान शनिवार के लिए भजन, ओड 6, तुलना करें। (यूहना 2:9)।

[783] वसेवोल्द यारोस्लाविच के पुत्र और यारोस्लाव द वाइज़ के पोते रोस्तिस्लाव वसेवोल्दोविच ने पेरियास्लाव में शासन किया था – यह शहर कीव के दक्षिण में, आल्टे और तुरुबेज़ नदियों पर स्थित है। आज, पेरियास्लाव पोल्टावा गवर्नोरेट में एक जिला शहर है।

[784] पोलोव्त्सी तुर्की मूल के एक खानाबदोश लोग थे, जो 9वीं शताब्दी के दूसरे भाग से दक्षिणी रूसी मैदानों में रहते थे और तातार आक्रमण तक, उन्होंने रूस पर लगातार और विनाशकारी हमले किए। उनके हमले तेज़ और अचानक होते थे। पोलोव्त्सियों से मुकाबला करने के लिए, रूसी राजकुमारों ने सीमा पर किलेबंदी की और पोलोव्त्सियों के क्षेत्र में गहरी मुहिमें चलाईं। यहाँ उल्लेख की गई ऐसी ही एक मुहिम कीव के महान राजकुमार, स्वयातोपोलक इज़्यास्लाविच (शासनकाल 1093–1113) द्वारा अपने शासन के पहले वर्ष में शुरू की गई थी।

[785] व्लादिमीर मोनोमाख मंगोल-पूर्व काल के सबसे उल्लेखनीय रूसी राजकुमारों में से एक थे। जब उनके पिता, व्लादिमीर मोनोमाख की मृत्यु हुई, तो उन्होंने — कीव के लोगों के प्रति अपने स्नेह के बावजूद — कीव के ग्रैंड प्रिंसि का सिंहासन ग्रहण नहीं किया, बल्कि अपने चचेरे भाई स्वयातोपोलक इज़्यास्लाविच को बुलाया, जिन्हें उन्होंने वंश में सबसे बड़े होने के नाते यह बड़ा सामंती राज्य सौंप दिया। उस समय, वह चेर्निगोव में शासन करता था और इसके अलावा, स्मोलेंस्क के राजसी क्षेत्र का भी स्वामी था। स्वेतोपोलक की मृत्यु के बाद, वह कीव के महा-राजकुमार के सिंहासन पर आसीन हुआ, जहाँ उसने अपनी मृत्यु तक (1113–1125) शासन किया।

कर दिया और उसे अभद्र टिप्पणियों से परेशान करने लगे। हालाँकि, वृद्ध ने अपनी भविष्यवाणी की शक्ति से यह देखकर कि मृत्यु उनका पीछा कर रही है, कहा:

'हे बच्चों! तुम्हें तो अपने हृदय में विनम्रता से सभी से अपने लिए प्रार्थना करने को कहना चाहिए, परन्तु तुम परमेश्वर को घृणायोग्य बुराई कर रहे हो। तो फिर अपने विनाश के लिए रोओ और अपने पापों से पश्चाताप करो, ताकि तुम अंतिम न्याय के भयानक दिन कुछ सांत्वना पा सको। क्योंकि परमेश्वर के न्याय में यह पहले ही ठान लिया गया है कि तुम अपने राजकुमार के साथ डूब जाओगे।'

हालाँकि, राजकुमार रोस्टिस्लाव ने पादरी के ये शब्द सुनकर उन पर विश्वास नहीं किया और यह सोचकर कि वह केवल धमकी दे रहा है, न कि भविष्यवाणी कर रहा है, उससे गुस्से में कहा:

'क्या तुम मेरे पानी में डूबने की भविष्यवाणी कर रहे हो, जबकि मैं एक अच्छा तैराक हूँ? नहीं—तुम खुद ऐसी ही मौत मरोगे!'

और तुरंत, ईश्वर के भय को भूलकर, उसने आदेश दिया कि संत के हाथ-पैर बाँध दिए जाएँ, उसकी गर्दन में एक पत्थर बाँध दिया जाए, और उसे पानी में फेंक दिया जाए।

इस प्रकार वह पवित्र वृद्ध डूब गया!

भाइयों ने दो दिनों तक उसकी तलाश की, लेकिन उसे ढूंढ नहीं सके। फिर, तीसरे दिन, जब वे संत की बची-खुची चीज़ें लेने के लिए उसकी कोठरी में आए, तो उन्होंने उसे अचानक कोठरी में मृत पाया, उसके हाथ-पैर बंधे हुए थे और उसके गले में एक पत्थर पड़ा था। उनके कपड़े अभी भी गीले थे, उनका चेहरा दमक रहा था, और उनका पूरा शरीर लगभग जीवित प्रतीत हो रहा था। भाई यह देखकर चकित थे कि महात्मा को यहाँ किसने और कैसे लाया होगा, क्योंकि कोठरी बंद थी; लेकिन फिर, ईश्वर की स्तुति करने के बाद, उन्होंने संत की चमत्कारी अवशेषों को सम्मान के साथ बाहर निकाला और उन्हें एक गुफा में रख दिया, जहाँ वे आज भी अपरिवर्तित हैं।

जहाँ तक रोस्टिस्लाव की बात है, उसने अपने द्वारा किए गए पाप की परवाह किए बिना और क्रोध से भरकर, आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए मठ में प्रवेश करने से भी इनकार कर दिया, जो उसके वादे के विपरीत था – और ईश्वर का आशीर्वाद उससे दूर हो गया। केवल व्लादिमीर मोनोमाख ही प्रार्थना और आशीर्वाद के लिए मठ आए। जब रूसी राजकुमार त्रिपोली में थे[786] और उन्होंने स्टुग्ना नदी पार कर ली थी[787] , तो उन्होंने अपनी सेनाओं को पोलोवत्सियों के खिलाफ़ कर दिया। उनकी सेना टिक नहीं सकी और भाग गई; राजकुमार व्लादिमीर भी भाग गए और गुफाओं के संतों की प्रार्थनाओं और आशीर्वादों से एक बार फिर सुरक्षित रूप से स्टुग्ना नदी पार कर गए, जबकि रोस्टिस्लाव अपनी पूरी सेना के साथ नदी में डूब गए, और इस प्रकार संत की भविष्यवाणी पूरी हुई: 'जिस नाप से दुष्ट हत्यारे ने नापा, उसी नाप से उसे भी नापा जाएगा'[788] . किन्तु, कोमल ग्रेगरी चमत्कारकर्ता ने जीवन का फल पाया और *'जो स्वर्गों से भी ऊँचे हैं'* (भजन संहिता 148:4) जल के किनारे अनंत मिठास की धारा में भाग लेकर, प्रभु के नाम की स्तुति करते हैं, जिनका महिमा और सम्मान युगानुयुग हो। आमीन।

आदरणीय डोमनीका की स्मृति

स्मरण 8 जनवरी को

संत डोम्निका, चार अन्य कन्याओं के साथ, सम्राट थियोडोसियस महान के शासनकाल में कार्थेज से कॉन्स्टेंटिनोपल पहुँचीं, जब वह अभी भी एक मूर्तिपूजक थीं[789] । वह ईसाई धर्म को अपनाने और शुद्ध स्वर्गीय विश्वास

---

[786] वर्तमान में कीव गवर्नोरेट में एक कस्बा।

[787] स्टुग्ना डेनिपर की दाहिनी सहायक नदी है, जो कीव गवर्नरेट के वासिल्कोविस्की जिले से होकर बहती है। पुराने समय में यह सहायक नदी काफी बड़ी नदी हुआ करती थी।

[788] (मत्ती 7:2) – उस अंश में, पाठ इस प्रकार है: *'क्योंकि जिस न्याय से तुम न्याय करोगे, उसी न्याय से तुम पर भी न्याय किया जाएगा; और जिस माप से तुम मापोगे, उसी माप से तुम पर भी मापा* जाएगा'।

[789] थेओडोसियस महान – 379 से 395 तक रोमन सम्राट। उनके शासनकाल के दौरान, रोमन साम्राज्य में ईसाई धर्म को निर्णायक रूप से स्थापित किया गया था।

के सद्धिांतों के अनुसार जीने की प्रबल इच्छा से भर गई थीं। कॉन्स्टेंटनिोपल के आर्चबशिप सेंट नेक्टारीयस[790] को उनके बारे में एक वशिेष प्रकटकिरण प्राप्त हुआ। इसलिए, उन्हें स्वीकार करते हुए, उन्होंने न केवल उन्हें पवत्रि बपतस्मिा दयिा बल्कि उन्हें एक डीकोनेस[791] के रूप में नयिुक्त भी कयिा। सम्राट लयिो ने उन्हें शहर की दीवारों के बाहर एक भूखंड प्रदान कयिा। इस भूमि पर, संत डोमनीका ने संत ज़कारयिास के सम्मान में एक मठ की स्थापना की, अपने चारों ओर कुंवारी कन्याओं को इकट्ठा कयिा, और उनके साथ रहने लगीं, तथा उपवास में स्वयं को समर्पति कर दयिा। उसने कई चमत्कार कए: उदाहरण के लिए, उसने समुद्र में तूफान में डूब रहे नावकिों को बचाया, आशीर्वाद के साथ समुद्र में तेल डालकर, जसिके बाद लहरें शांत हो गईं। उसमें भवष्यिवाणी का वरदान भी था, क्योंकि उसने राजा की मृत्यु की पूर्व सूचना दी और उसकी भवष्यिवाणी की थी। एक अवसर पर, उन्होंने स्वर्ग से एक देवदूत को उतरते और पानी को पवत्रि करते देखा; उन्हें दव्यि रहस्यों के अन्य प्रकटीकरण भी प्राप्त हुए। संत ने लयिो और ज़ेनो के शासनकाल को देखने के बाद[792], वृद्धावस्था में शांतपिूर्वक देह त्यागा, और उन्होंने प्रभु के पास अपने प्रस्थान के समय की भवष्यिवाणी की थी।

आदरणीय जॉर्ज होज़ेवटि की स्मृति

8 जनवरी को स्मरण कयिा जाता है

आदरणीय जॉर्ज होज़ेवटि[793] का जन्म साइप्रस द्वीप[794] पर एक धर्मपरायण परविार में हुआ था। उनके बड़े भाई, हेराक्लाइड्स, अपने माता-पति के जीवति रहते ही पवत्रि नगर यरूशलेम चले गए थे। प्रभु यीशु के पदचन्हिों और रक्त से पवत्रि हुए वहां के स्थानों की पूजा करने के बाद, वह फरि यॉर्डन घाटी[795] चले गए और कोलोमाना के नाम से जानी जाने वाली लावरा[796] में बसे, तथा मठवासी संकल्प लिए। हालाँकि, संत जॉर्ज अपने माता-पति के साथ ही रहे, और भक्ति तथा ईश्वर के भय में पले-बढ़े।

जब जॉर्ज के माता-पति का नधिन हो गया, तो अनाथ लड़के को, उसके माता-पति द्वारा छोड़ी गई पूरी संपत्ति के साथ, एक रश्तिेदार की देखभाल में दे दयिा गया। वह उससे इतना लगाव करने लगा कि उसने अपनी एकमात्र बेटी का ववािह उसी से करने की इच्छा जताई। लेकनि संत, सांसारकि मोह-माया से थके हुए और पत्नी के साथ रहने के इच्छुक न होने के कारण, अपने एक अन्य रश्तिेदार के साथ छपि गया, जो एक मठ का मठाधीश था। जॉर्ज का पता उस रश्तिेदार को चल गया, जसि वह पीछे छोड़ आया था और जो उस शांत युवक को अपना आध्यात्मकि पुत्र बनाना चाहता था; वह उस मठाधीश के पास गया जसिके पास जॉर्ज छपि रहा था और उसने उस लड़के को उसके हवाले करने की मांग की। यह जानने

---

[790] संत नेक्टारीयस, पैट्रआर्क, ने 381 से 397 तक कॉन्स्टेंटनिोपल के चर्च का नेतृत्व कयिा। उनका पर्व दविस चीज़ सैटरडे पर मनाया जाता है।

[791] डीकोनेस – ग्रीक शब्द से: 'सेवकिा'। यह चर्च में व्यक्तयिों के एक वशिेष वर्ग को दयिा गया नाम था, जसिकी स्थापना प्रेरतिों के समय से हुई थी (रोमयिों 16:1; तुलना करें 1 तीमुथयिुस 5:3-10)। डीकनी के पद के लिए, सामान्यतःवृद्ध (40 वर्ष से कम आयु की नहीं) कुंवारी या वधिवाओं को चुना जाता था। उनके कर्तव्य थे, धर्म परविर्तन करने वाली महलिाओं और कुंवारी लड़कयिों को यह सखिाना कि बपतस्मिा के दौरान उन्हें अपना आचरण कैसे रखना चाहिए, उनके बपतस्मिा के समय बशिप की सहायता करना और उनकी ओर से, ललाट के अलावा शरीर के अन्य अंगों पर अभषिेक करना, ईश्वरीय सेवाओं के दौरान महलिाओं के बीच व्यवस्था और शष्टिाचार सुनश्चिति करना, बीमारों और कालकोठरयिों में बंदयिों से मलिना, हरिासत में रखे गए स्वीकारकर्ताओं और शहीदों की सेवा करना, गरीबों की सहायता करना, आदि। डीकोनेस (स्तरयिों के पादरी) के संबंध में, कई कैननकिल नयिम हैं, अर्थात्: चौथे सार्वभौमकि परषिद का नयिम 15, चौथे सार्वभौमकि परषिद का नयिम 14, और सेंट बेसलि द ग्रेट का नयिम 44।

[792] यह, बेशक, सम्राट लयिो द्वतिीय को संदर्भति करता है, जनिका शासन एक वर्ष से भी कम समय (474 में) तक रहा; सम्राट ज़ेनो ने 474 से 491 तक शासन कयिा। सेंट डोमनीका का नधिन ज़ेनो के शासन के शुरुआती वर्षों में, लगभग 474 में हुआ। चूंकि वह कसिी भी हाल में 385 से पहले कॉन्स्टेंटनिोपल पहुँची थी, और चूंकि उस समय वह नस्सिंदेह कम से कम 20 वर्ष की थी (क्योंकि पैट्रआर्क नेक्टारयिस ने कुछ ही समय बाद उसे एक डीकोनेस के रूप में नयिुक्त करना संभव समझा), सेंट डोमनीका का 100 वर्ष से अधकि की आयु में नधिन हो गया।

[793] 'होज़ेवाइट्स' शब्द होज़ेवति या खुज़वि मठ के भक्षिुओं को संदर्भति करता था।

[794] साइप्रस द्वीप भूमध्य सागर के उत्तर-पूर्वी कोने में, सीरयिाई तट से बहुत दूर नहीं, स्थति है।

[795] जॉर्डन घाटी जॉर्डन नदी के मार्ग के साथ-साथ स्थति है; यह एक कम आबादी वाला क्षेत्र होने के कारण, यह प्राचीन काल से ही संन्यासयिों के लिए एक पसंदीदा वश्राम-स्थल रहा है। इस प्रकार, सेंट जॉन द बैपटस्टि यहाँ आकर रहने लगे और उन्होंने पश्चाताप का संदेश प्रचारति कयिा। ईसाई काल में, इस घाटी में सभी प्रकार के कई मठ थे।

[796] कोलोमानोव लावरा मृत सागर और यॉर्डन नदी के पास स्थति था।

पर, जॉर्ज ने गुप्त रूप से उस मठ को छोड़ दिया और एक रवाना होने वाले जहाज पर चढ़कर साइप्रस से पवित्र शहर यरूशलेम के लिए रवाना हो गया। पवित्र स्थलों पर श्रद्धांजलि अर्पित करने के बाद, वह यॉर्डन घाटी में उतर गया और कोलोमन लाव्रा में अपने भाई के पास गया। उसने यह देखकर कि वह अभी भी जवान और बिना दाढ़ी वाला था, पवित्र संतों के उपदेशों के अनुसार, उसे दाढ़ी उगने तक लावरा में नहीं रखना चाहा, बल्कि उसे 'खुज़ीवा' ([797]) के नाम से जानी जाने वाली हमारी परम पवित्र माता के मठ में ले गया और वहाँ के मठाधीश को सौंप दिया। यहाँ, संत जॉर्ज को संन्यासी वस्त्र पहनाए गए और उन्होंने तपस्या के मार्ग पर चलना शुरू किया। ईश्वर की महिमा और अपनी आत्मा के उद्धार के लिए परिश्रम करते हुए, उन्होंने विशेष रूप से विनम्रता और आज्ञाकारिता के अभ्यास को समर्पित किया। ईश्वर ने अपने सेवक को महिमामय बनाया और उसे चमत्कार करने का वरदान देकर पुरस्कृत किया। और संपूर्ण भ्रातृत्व एक युवा लड़के, और वह भी एक नवसिखुआ में, ईश्वर के प्रति इतनी पूर्णता और इतनी निर्भीकता देखकर अत्यंत चकित रह गया। हालाँकि, संत ने इस दुनिया की खोखली महिमा के प्रलोभन से डरकर, गुप्त रूप से मठ छोड़ दिया और लाव्रा में अपने भाई के पास लौट आए।

वहाँ बस जाने के बाद, वह और उसका भाई 'ओल्ड चर्च' के नाम से प्रसिद्ध स्थान में रहने लगे, और वहाँ उन्होंने प्रार्थना, ईश्वर के चिंतन और मरुभूमि के कार्यों में स्वयं को समर्पित कर दिया। भाई अपने लिए गर्म भोजन नहीं बनाते थे, सिवाय उन अवसरों के जब कोई उनसे मिलने आता था।

एक दिन, बाबा हेराक्लाइडिस ने अपने भाई से कहा:

'कुल्हाड़ी उठाओ, और चलो कुछ लकड़ी काटते हैं!'

और जब उसने कुल्हाड़ी उठाई, तो उसके बड़े भाई ने उसे उनकी कोठरी के पास उगे एक बाँझ खजूर के पेड़ को काटने का आदेश दिया। अपने भाई के सामने झुकते हुए, जॉर्ज ने विनती करनी शुरू कर दी:

'नहीं, पिताजी, हमें इसे मत काटना; शायद यह हमारे लिए खजूर दे।'

लेकिन बड़े भाई ने धमकी भरे लहजे में कहा:

'इसे काट दो; यह कई सालों से फल नहीं दे रही है – यह जगह क्यों घेरती रहे?'

तब जॉर्ज, एक बार फिर नम्रता से सिर झुकाते हुए, बोला:

'मैं गारंटी देता हूँ कि यह जल्द ही फल देगा।'

इन शब्दों के बाद, हेराक्लाइड्स मान गया, और उस समय से खजूर के पेड़ पर भरपूर और सुंदर फल लगने लगे।

उस समय यरीहो में एक ज़मींदार रहता था जिसे पवित्र तपस्वी भाइयों से बहुत स्नेह था। उसका एकमात्र पुत्र, जो अभी भी एक छोटा बच्चा था, मर गया था। मृत लड़के को एक टोकरी में रखकर और उसे अपनी फसल के पहले फलों से ढककर, पिता उसे जल्दी से मठ में ले आया। हेराक्लाइड्स और जॉर्ज की कोठरी में प्रवेश करके, उसने टोकरी को बड़े भाई के सामने रख दिया, और उनसे अपने श्रम के फलों पर आशीर्वाद देने का अनुरोध किया, और फिर तुरंत चला गया। टोकरी से फल निकालते हुए और उसमें मृत शिशु को पाकर, हेराक्लाइड्स ने अपने छोटे भाई से कहा:

'उस आदमी को बुलाओ, क्योंकि वह हमें पापियों को बहकाना चाहता है।'

लेकिन जॉर्ज ने उत्तर दिया:

'पिताजी, दुखी या क्रोधित न हों, बल्कि आइए हम विश्वास के साथ दयालु और दयालु ईश्वर से प्रार्थना करें; और यदि वह हम पापियों की सुनता है और शिशु को मृतकों में से जिला देता है, तो हमारे पिता उसे हमारे पास से जीवित ले लेंगे, जो उनके विश्वास का पुरस्कार होगा; और यदि ईश्वर यह न चाहें कि ऐसा हो, तो हम पिता से कह देंगे कि हम, पापी होने के नाते, ईश्वर के सामने इतनी हिम्मत नहीं जुटा पाए कि उसकी मुसीबत में उसकी मदद कर सकें।

---

[797] खुज़ीव मठ खुज़ीव या होज़ेवा रेगिस्तान में, यरूशलेम और यरीहो के बीच, पवित्र नगर से यॉर्डन की ओर यात्रा करने वाले तीर्थयात्रियों द्वारा आमतौर पर ली जाने वाली मुख्य सड़क के दाईं ओर, और निचली यॉर्डन घाटी में उतरने की जगह से बहुत दूर नहीं स्थित था। यह मठ एक जंगली और खुरदरे इलाके में स्थित था। 50 सैज़ेन (saazhens) की ऊँचाई पर एक खाई के ऊपर लटके हुए चर्च और संतों के कोठरी जैसे कमरे, चट्टानी पहाड़ियों से चिपके हुए प्रतीत होते थे। खूज़िव मठ की स्थापना 5वीं शताब्दी में हुई थी। इसके पहले संस्थापक का नाम अज्ञात है। बाद में, इस मठ को लावरा के नाम से जाना जाने लगा और 6वीं, 7वीं और 8वीं शताब्दी में—जब यह अपने तपस्वियों की कठोर जीवन शैली के लिए विशेष रूप से प्रसिद्ध था—यह अपनी समृद्धि के शिखर पर पहुँच गया। 12वीं शताब्दी में, यह मठ अभी भी मौजूद था, लेकिन इसके बाद के भाग्य के बारे में कुछ भी ज्ञात नहीं है। हाल ही में, इस मठ को फिर से स्थापित किया गया है।

बड़े भाई ने अपने भाई की बात मानी, और दोनों ने आँसुओं और पश्चात्ताप से भरे हृदय से प्रार्थना करना शुरू कर दिया। और सर्व-दयालु प्रभु, जो अपने भयभीतों की इच्छा पूरी करते हैं, ने उनकी प्रार्थना सुनी और उस शिशु को मृतकों में से जिला उठा। फिर, बच्चे के पिता को बुलाकर, भाइयों ने उस शिशु को जीवित उसके हवाले कर दिया, और उसे यह निर्देश दिया कि वह इस चमत्कार के बारे में किसी को न बताए।

इस प्रकार संत हेराक्लाइड्स और जॉर्ज हर नम्रता और शालीनता के साथ, शांति से और ईश्वर को प्रसन्न करने वाले तरीके से एक साथ रहे, और किसी ने भी कभी उनके बीच कोई झगड़ा या असहमति नहीं सुनी, न ही उन्होंने एक-दूसरे के प्रति या किसी और के प्रति तिरिस्कार की कोई छाया भी देखी।

कुछ समय बीत जाने के बाद, हेराक्लाइड्स सत्तर वर्ष की आयु में देहांत को प्राप्त हुए। अबा जॉर्ज, अपनी कोठरी में अकेले रह गए, अपने भाई के निधन पर रोए और शोक मनाया, और साथ ही साथ बहादुरी से उनके जीवन और कार्यों का अनुकरण किया। और कौन उनके तपस्या के कारनामों, ईश्वर के प्रति उनकी अखंड प्रार्थना और चिंतन का वर्णन कर सकता है? कौन उनके संयम और उपवास के बारे में बता सकता है? अपनी तपस्वी जीवन के कारण, वरिष्ठ को डीकन के रूप में अभिषिक्त किया गया था, और इस पद पर उन्होंने अक्सर दिव्य लिटिर्जी के दौरान पवित्र पिताओं की सहायता की। इस बीच, लाव्रा के मठाधीश का निधन हो गया, और एक नए मठाधीश के चुनाव को लेकर एक बड़ा मतभेद और कलह उत्पन्न हो गया। तब संत जॉर्ज, इस उथल-पुथल को सहन न कर सके, कोलोमन से दुखी होकर अलग हो गए और मठ के मठाधीश द्वारा प्रदान की गई एक अलग कोठरी में, एक बार फिर खुज़ेवटि मठ में बस गए।

पहले की तरह ही उसी स्थान पर एक तपस्वी के रूप में रहते हुए, पूजनीय जॉर्ज ने न तो शराब, न तेल, न रोटी और न ही कपड़े जुटाए; इसके बजाय, वह कूड़े के ढेरों पर जाता, फटे-पुराने कपड़े इकट्ठा करता और उन्हें सिलकर अपने लिए कपड़े बनाता; उसका बिस्तर भी इन्हीं फटे-पुराने कपड़ों से बना था। उन्होंने मठ में रहने वाले भिक्षुओं से अनुरोध किया कि वे एक सप्ताह के दौरान, संतों और आगंतुकों की मेज़ से बची हुई चीज़ों को, चाहे वह सब्ज़ियाँ, फल, या यहाँ तक कि हड्डियाँ ही क्यों न हों, उनके लिए बचाकर रखें। फिर वे इन सभी चीज़ों को एक पत्थर की ओखली में पीसते, उन्हें गोलियों का आकार देते और धूप में सुखाते; वे इन गोलियों को दो-तीन दिनों के बाद पानी के साथ खाते थे। इसके अलावा, वृद्ध ने भाइयों से कहा कि वे उनके बिना रोटी न बनाएं, क्योंकि उनका मानना था कि उन पवित्र स्थानों में इस कार्य में लगे लोगों को स्वर्ग में एक बड़ा इनाम मिलेगा, क्योंकि फिलिस्तीन में यह प्रथा थी कि अतिरिक्त रोटी उन यात्रियों को दे दी जाती थी जो वहां के महान पवित्र स्थलों पर पूजा करने आते थे। बेकरी में, अन्य कार्यों पर प्राथमिकता देते हुए, पूजनीय जॉर्ज ओवन में आग फूँकते थे। गर्मियों के दौरान उन इलाकों में यह कार्य विशेष रूप से कठिन होता है, जब चर्च के मोमबत्तीदानों पर रखी मोमबत्तियाँ भी तेज गर्मी में पिघल जाती हैं। फिर भी, आदरणीय जॉर्ज, गर्मी की परवाह किए बिना, दिन में दो या तीन बार बेकरी में अथक परिश्रम करते थे, भट्टी में आग फूँकते और रोटी सेंकते थे। अन्य भाई इतनी मेहनत सहन नहीं कर सकते थे और वे बारी-बारी से काम करते थे। इसलिए, सभी जॉर्ज के अथक प्रयासों से चकित थे और उन्हें 'लोह-इच्छाशक्ति वाला कहते थे।

इस प्रकार इस सांसारिक देवदूत और स्वर्गीय मनुष्य ने परिश्रम किया, और अपने कर्मों के माध्यम से दूसरों का निर्माण किया।

जब फ़ारसियों ने पवित्र भूमि पर आक्रमण क[798] किया, तो उन्होंने अस्थायी रूप से खुज़विटि लाव्रा छोड़ दिया और कोलोमान में शरण ली; खतरा टल जाने के बाद, वरिष्ठ खुज़विा लौट आए। वहाँ उन्होंने एक बार फिर से तपस्या के कार्यों में खुद को समर्पित कर दिया और साथ ही साथ उन सभी को उपदेश दिया जो उनके ईश्वर-प्रेरित वचन सुनने आते थे। उन्होंने किसी को भी शिक्षाप्रद वार्तालाप के बिना नहीं छोड़ा, बल्कि सभी का मार्गदर्शन ईश्वर के वचन और धार्मिकता में किया।

एक धर्मपरायण जीवन जीकर और ईश्वर को प्रसन्न कर, आदरणीय जॉर्ज को दीर्घायु प्राप्त करने के बाद स्वर्गीय निवासों में बुला लिया गया। उनके शिष्य, आदरणीय एंथनी, बड़े की धन्य निधना के बारे में निम्नलिखित का वर्णन करते हैं।

---

[798] फ़ारसी आक्रमण 614 में हुआ, जिसका नेतृत्व फ़ारस के राजा खुसरू (जो 580 से 628 तक शासन किया) ने किया था।

'कई परशि्रमों के बाद, हमारे पवत्रि पति जॉर्ज एक ऐसी बीमारी से ग्रस्त हो गए जसिसे वे अंततःपरलोक सधिार गए। उनके नधिन की उसी शाम, ईश्वर की व्यवस्था से, बहुत से आगंतुक उपस्थति थे, और मैं उनकी देखभाल में बहुत व्यस्त था। और जो कुछ भाई बंधु वृद्ध के साथ बैठे थे, वे बार-बार मेरे पास आकर कहते थे:

'महात्मा आपको बुला रहे हैं, कह रहे हैं: "एंथनी कहाँ है? उसे बुलाओ, क्योंकि मैं तो मर ही रहा हूँ।"'

मैं पहले से ही अपने कर्तव्य को नभिाने और एल्डर के पास जाने की इच्छा के बीच फंसा हुआ था। और एल्डर ने, अपने आत्मा में यह महसूस करते हुए, संदेशवाहकों के माध्यम से मुझे संदेश भेजा:

'दुखी या परेशान मत हो, मेरे बच्चे, बल्कि अपना कर्तव्य पूरा करो, और मैं तुम्हारे आने तक प्रतीक्षा करूँगा।'

और जब मेहमान भोजन से उठे और अन्य लोग आए, तो समय लगभग आधी रात तक खचि गया, और वृद्ध जीवति थे। अपना कर्तव्य पूरा करके और मेहमानों को वदिा करके, मैं उनके पास गया। जब उन्होंने मुझे देखा, तो उन्होंने मुझे गले लगा लयिा और चूम लयिा; और मुझे आशीर्वाद देकर, वे पूर्व की ओर मुड़े और कहा:

'वदिा हो, मेरी आत्मा, अब प्रभु के पास; वदिा हो।'

और यह तीन बार कहने के बाद, उन्होंने अपनी आत्मा प्रभु को सौंप दी; इस प्रकार वे शांति और सुकून से परलोक सधिार गए, स्पष्ट रूप से अपनी आत्मा को ईश्वर के हाथों में सौंपते हुए, जैसा लखिा है: *'धर्मियों की आत्माएँ ईश्वर के हाथ में हैं, और कोई यातना उन्हें छू नहीं सकती'* (ज्ञान 3:1), और फरि: *'प्रभु की दृष्टि में उनके संतों की मृत्यु अनमोल है'*[799] जहाँ तक मेरी बात है, जब मुझे पता चला कि उन्होंने अपना आत्मा प्रभु को सौंप दयिा है, तो मैं उनके सीने पर गरि पड़ा और उस पूजनीय पति की वयिोग पर रोया और वलिाप कयिा। और, भजनों, स्तोत्रों और आध्यात्मकि गीतों से उनका शरीर तैयार कर, हमने उन्हें पूज्य पतिरों की कब्र में सुला दयिा; और अब वे संतों के दल में हमारे और संपूर्ण जगत के लिए मध्यस्थता कर रहे हैं।' आमीन।

कॉन्टाकयिन, स्वर 4:

हे अति तेजस्वी प्रकाश, हे जॉर्ज, तुम प्रकट हुए, और जो भक्तपिूर्वक तुम्हें पुकारते हैं, उन्हें दव्यि करिणों से प्रकाशति करते हो: प्रभु मसीह के पास हमारे लिए प्रार्थना करो, जो जल में प्रकट हुए और पृथ्वी पर जन्मे लोगों को प्रकाशति कयिा।

पवत्रि शहीद संत कार्टेरयिस की स्मृति

8 जनवरी को स्मरण कयिा जाता है

संत कार्टेरयिस सम्राट डायोक्लेटयिन[800] के शासनकाल में रहते थे और वे कैपैडोसयिा के सेज़ारयिा में, प्रोक्यूरेटर[801] उरवान के अधीन, ईसाई धर्म के एक पुरोहति और शकि्षक थे। उन्होंने ईश्वर का एक चर्च बनाया और अपने चारों ओर एक बड़ी मंडली इकट्ठी की, जन्हिें उन्होंने पति और पवत्रि आत्मा के साथ मसीह की एक सच्चे ईश्वर के रूप में आराधना करना सखिाया। इस उत्साही मसीह के सेवक पर प्रोकुरेटर के समक्ष एक झूठा आरोप लगाया गया; जसिके परणिामस्वरूप धन्य पुरोहति उत्पीड़न से बचने के लिए छपि गया। लेकनि प्रभु उसे दखिाई दिए और कहा:

'जा, कार्टेरयिस, और प्रशासक के सामने हाज़रि हो। मैं तेरे संग रहूँगा; तुझे मेरे नाम के कारण बहुत कष्ट सहना होगा, और तेरे द्वारा बहुत से लोग वशि्वास में आएँगे और उद्धार पाएँगे।'

महान आनंद से भरकर, संत ने प्रभु का धन्यवाद कयिा और प्रोक्युरेटर को अपने ठकिाने के बारे में बताया, जसिके बाद उन्हें कैद कर दयिा गया। जब संत कार्टेरयिस को प्रोक्युरेटर के सामने लाया गया, तो उसने उन्हें सेरापसि[802] को

---

[799] भजन संहति 115:6।

[800] डायोक्लेटयिन ने 284 से 305 तक शासन कयिा।

[801] प्रोक्युरेटर रोमन साम्राज्य के प्रांतों में न्याय प्रशासन के लिए जम्मिेदार था। बाद में, शाही खजाने के लिए राजस्व एकत्र करने हेतु शाही प्रांतों में प्रोक्युरेटर भेजे गए। छोटे प्रांतों का प्रशासन प्रोक्युरेटरों द्वारा कयिा जाता था।

[802] सेरापसि – एक मस्रि का देवता जसिे मूर्तपिूजा के अंतमि वर्षों के दौरान रोमन साम्राज्य में भी पूजा जाता था। उसे दविंगत आत्माओं के देवता के रूप में पूजति कयिा जाता था और बीमारी तथा मृत्यु से उद्धारकर्ता के रूप में पुकारा जाता था।

बलदिान चढ़ाने का आदेश दयिा। संत की प्रार्थना के बाद, इस झूठे देवता की मूर्त जिमीन पर गरि पड़ी; तब, प्रोकोरएिटर के आदेश पर, सोलह सैनकिों ने मसीह के स्वीकारकर्ता को डंडों से पीटना शुरू कर दयिा, जबकि चार नौकर उसे जमीन पर दबाए हुए थे। इसके बाद, यातना देने वालों ने संत कार्टेरयिस को एक पेड़ से लटका दयिा, रेजर से उसके नाखून काट दएि, और लोहे के हुकों से उसके शरीर को नोचा।

तब प्रभु का स्वर्गदूत पवत्रि शहीद के पास प्रकट हुआ और उसके दुख को कम कर दयिा, और मसीह का सैनकि इतनी कठोर यातनाओं के बावजूद भी सुरक्षति रहा।

यातना देने वाले के आदेश पर, उसे पेड़ से उतार लयिा गया, उसके पैरों में लोहे की सलाखें घुसा दी गईं, उसकी छाती पर एक लाल-गरम हल का फासला रखा गया, उसे एक लाल-गरम लोहे की कुर्सी पर बठिाया गया, और उसके पैरों को लाल-गरम लोहे की सलाखों से खींचा गया। इसके बाद, उस धन्य पीड़ति को वापस कालकोठरी में डाल दयिा गया।

शाम को, हमारे प्रभु यीशु मसीह अपने पराक्रमी कष्ट-सहने वाले के पास प्रकट हुए, उसे उसकी बेड़यिों से मुक्त कयिा और उसे कालकोठरी से बाहर ले आए। तब कई लोगों ने, जब देखा कि पवत्रि शहीद अपने उत्पीड़क द्वारा दएि गए घावों से चंगा हो गया है, तो उन्होंने पवत्रि बपतस्मिा ग्रहण करना शुरू कर दयिा, और साथ ही साथ उन बीमारयिों से भी चंगा हो गए जनिसे वे पीड़ति थे।

अपने अत्याचारयिों द्वारा एक बार फरि से पकड़े जाने पर, संत कार्टेरयिस को नए यातनाओं का सामना करना पड़ा: उसके हाथों और पैरों से भारी पत्थर लटका दएि गए, जबकि जल्लादों ने उसे पेट पर डंडों से पीटा, आग से जलाया, उसके खुले घावों पर गंधक और तारकोल डाला, उसके मुँह में पघिला हुआ टनि डाला, उसके सरि पर आग से लाल-गरम हेलमेट रखा, और अंत में पवत्रि शहीद को आग में फेंक दयिा। प्रभु का धन्यवाद करते हुए भजन गाते हुए, संत कार्टेरयिस आग की लपटों से बनिा कसिी चोट के बाहर नकिले।

तब यातनाओं में उपस्थति एक यहूदी ने क्रोध के आवेश में एक भाला उठाया और पवत्रि शहीद की पसलयिों पर घातक प्रहार कयिा; घाव से इतनी मात्रा में पानी बहा कि उसने चति में बाढ़ ला दी; फरि खून बहने लगा, और मसीह के शहीद ने अपनी पवत्रि आत्मा ईश्वर को सौंप दी[803] ।

आदरणीय एलयिाह तपस्वी की स्मृति

8 जनवरी को स्मरणोत्सव

आदरणीय एलयिा ने अपने प्रारंभकि युवा जीवन से ही संन्यासी जीवन अपना लयिा और थयिोबाइड में एंटनिो के पास एक दूरस्थ, कठोर रेगस्तिान में पूर्ण एकांत में पचहत्तर वर्ष बतिाए[804] । एक जंगली, रेगस्तिानी पहाड़ की चोटी पर, जहाँ से वह एक बार भी बसे हुए स्थानों में नहीं गया, और जहाँ तक एक संकरा रास्ता जाता था जो तीव्र चट्टानों के बीच बना था और मुश्कलि से एक पैर रखने के लिए पर्याप्त चौड़ा था, उन महान कारनामों को शब्दों में बयां करना असंभव है, जन्हिें उसने समर्पति कयिा।

उत्सुक आगंतुक उस बूढ़े आदमी को एक गुफा की पत्थर की छतरी के नीचे बैठे हुए पाते थे, जसिकी अँधेरी में वे मुनि को मुश्कलि से ही पहचान पाते थे; वे वृद्धावस्था के कारण पूरी तरह काँपते थे, क्योंकि वे एक सौ दस वर्ष से अधकि जीवति रहे थे। अन्य मुनगिण आदरणीय एलयिा के बारे में कहते थे कि उन्हें याद नहीं कि वे पहली बार इस पहाड़ पर कब बसे थे।

अपने वृद्धावस्था में, वह सुबह और शाम केवल तीन छोटे-छोटे टुकड़े रोटी और तीन नमकीन जैतून खाता था; हालाँकि, अपनी जवानी में, वह सप्ताह में केवल एक बार ही खाता था। उन्होंने शक्षिा के लिए उनके पास आने वालों को इस प्रकार उपदेश दयिा: 'शैतान की शक्ति के आगे आत्मसमर्पण मत करो। शैतान की शक्ति के तीन प्रकट रूप हैं, , जो भक्षिुओं के पापों के कारण उत्पन्न होते हैं। पहला है वस्मिृति, दूसरा है आलस्य, और तीसरा है कामवासना। जब वस्मिृति किसी भक्षिु पर हावी हो जाती है, तो आलस्य उत्पन्न होता है; आलस्य से कामवासना जन्म लेती है; और कामवासना से, एक व्यक्ति गरि जाता है। हालाँकि, यदि कोई भक्षिु सतर्क रहता है और उसे ईश्वर का भय होता है, तो

---

[803] वर्ष 304 में।

[804] थेबाइड क्षेत्र का नाम थेब्स से पड़ा था - जो ऊपरी मस्रि का प्रमुख शहर था। एंटनिोई शहर के पास कई तपस्थल और मठ थे।

वह न तो आलस्य का अनुभव करता है और न ही बुरी इच्छाओं का – और इसी कारण से शैतान ऐसे व्यक्ति के खिलाफ शक्तिहीन हो जाता है; वह ऐसे व्यक्ति को पाप की ओर ले जाने में असमर्थ होता है, और ऐसा व्यक्ति ईश्वर की कृपा से बच जाएगा।"

एक सच्चे संन्यासी जीवन का उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करते हुए, परम पूजनीय एलियाह अपने वृद्धावस्था में प्रभु के पास चले गए।

पवित्र शहीदों थियोफलिस और हेलाडियस का स्मरणोत्सव

8 जनवरी को स्मरणोत्सव

पवित्र शहीदों, डकिन थियोफलिस और सामान्य व्यक्ति हेलाडियस ने लीबिया में[805] में यातनाएँ सहन कीं। हमारे प्रभु यीशु मसीह को सच्चे ईश्वर के रूप में नडिरता से स्वीकार करते हुए, उन्होंने झूठे मूर्तिपूजक देवताओं का अपमान किया और मूर्तिपूजकों को फटकारा, जिसके लिए उन्हें प्रशासक द्वारा पकड़ लिया गया और यातनाएँ दी गईं। मसीह के पवित्र स्वीकारकर्ताओं को पहले क्रूरता से कोड़ों से पीटा गया, फिर उनके शरीरों को मिट्टी के बर्तनों के तेज टुकड़ों से खुरोचा गया; उनके हाथ-पैर बांधने के बाद, जल्लादों ने उनकी कमर को आग से झुलसाया। प्रत्येक ऐसे अत्याचार के बाद, यातना देने वालों ने शहीदों को मसीह का त्याग करने और मूर्तियों को बलिदान चढ़ाने के लिए मजबूर किया; लेकिन संत थियोफलिस और हेलाडियस मसीह के प्रति अपने प्रेम में अडिग रहे। चूंकि वे अवज्ञाकारी थे, यातना देने वालों ने उन्हें तिरस्कारपूर्वक जमीन पर घसीटा और पत्थरों से उनकी हड्डियाँ तोड़ डालीं; इसके बाद, वीर शहीदों ने मसीह से अपना मुकुट प्राप्त किया, जिनके लिए उन्होंने कष्ट उठाए थे[806] ।

आदरणीय इमिलियिन, स्वीकारकर्ता की स्मृति

8 जनवरी को स्मरण किया जाता है

साइज़िकस के बिशप एमिलियिन[807] ने 815 में, सम्राट लियो द आर्मेनियन के शासनकाल के दौरान, प्रतिमाओं के प्रति अपनी श्रद्धा के लिए कष्ट सहे[808] । उनकी दूसरी स्मृति 8 अगस्त को है।

22 जनवरी

9 जनवरी (पुराने कैलेंडर के अनुसार)

संत पोल्येक्टस की शहादत

9 जनवरी को स्मरण किया जाता है

रोमन सम्राटों, डेसियस और वैलेरियन[809] के समय में, आर्मेनिया[810] की भूमि में, मेलिटिनि शहर में, दो सम्मानित योद्धा, नीरकस और पॉलिएक्टस रहते थे, जिनके बीच एक-दूसरे के लिए इतना पारस्परिक प्रेम था, जितना कि एक ही

---

[805] लिबिया – उत्तरी अफ्रीका में, मिस्र के पश्चिम में एक क्षेत्र।

[806] यह चौथी शताब्दी की शुरुआत में था।

[807] साइज़िकस – एशिया माइनर के उत्तर-पश्चिमी भाग में, मार्मारा सागर के दक्षिणी तट पर स्थित एक शहर।

[808] लेओ पंचम अर्मेनियाई – एक बीजान्टिन सम्राट – ने 813 से 820 तक शासन किया।

[809] रोमन सम्राट डेसियस ने 249 से 251 तक शासन किया, जबकि वैलेरियन ने 253 से 259 तक शासन किया।

[810] मेलिटिनि नगर की स्थापना रोमन सम्राट ट्राजन (98–117) ने की थी। यह उसी नाम के प्रांत की राजधानी है, जो एशिया माइनर के कैपाडोसिया क्षेत्र में स्थित है, जो कभी लघु आर्मेनिया का उत्तरी भाग हुआ करता था।

गर्भ के भाइयों के बीच भी शायद ही मलिता है: उनमें से प्रत्येक अपने दोस्त से अपनी जान और सांसों की तरह प्यार करता था। नयिर्केस एक ईसाई था, जो अपने वशि्वास में दृढ़ और प्रभु के नयिम का एक वफादार पालनकर्ता था, जबकि पोल्येक्टस एक मूर्तपिूजक था, जो अभी तक सच्चे वशि्वास के प्रकाश से प्रबुद्ध नहीं हुआ था। हालाँकि, बाद वाला ईसाई रीतिरिवाजों के अनुसार रहता था और वभिन्नि सद्गुणों में नपिुण था, इसलिए उसे एक फलदायी जैतून का पेड़ कहा जा सकता था; बस एक ही चीज़ की कमी थी - उसे परमेश्वर की कलीसिया में प्रवेश नहीं मलिा था। नकिर्कस ने उसे ईसाई धर्म में धर्मांतरति करने का प्रयास कयिा, अक्सर उसे पवत्रि धर्मग्रंथ पढ़कर सुनाते और एक सच्चे ईश्वर के बारे में बात करते, साथ ही मूर्तपिूजा की व्यर्थता और घृणतिता को उजागर करते। लेकनि ईश्वर द्वारा उसके लिए नरि्धारति, पोलयिक्टस के धर्मांतरण और उद्धार का समय अभी तक नहीं आया था। कुछ ही समय बाद, दुष्ट राजाओं का अधर्मी फरमान बाज़ारों और सड़कों पर पढ़ा जाने लगा; इसमें सभी को अपने घृणति देवताओं की पूजा करने का आदेश दयिा गया था और इस फरमान की अवज्ञा करने वालों को वभिन्नि प्रकार की यातनाओं और मृत्युदंड की धमकी दी गई थी। नकिार्कस ने, मसीह के एक वफादार सेवक के रूप में, मृत्यु के लिए तैयारी करनी शुरू कर दी; लेकनि साथ ही वह अपने मत्रि, पॉलएिक्टस के लिए शोक करने लगा, यह मानते हुए कि जसिि व्यक्ति को उसने राजा की धमकयिों के डर से एक ईसाई के रूप में देखने की उम्मीद की थी, वह एक अवशि्वासी बना रहेगा और, इस वजह से, उसे अनंत उद्धार से वंचति कर दयिा जाएगा। इस पर लगातार शोक करते और अपने मत्रि के लिए आने वाली वनिाश की घड़ी पर रोते हुए, नीरकस का चेहरा ही बदल गया, और उसका पूरा आचरण उसके भीतरी संघर्ष को प्रकट कर रहा था। अपने मत्रि को इतना व्यथति देखकर पॉलएिक्टस ने उससे उसके दुख का कारण पूछा; और, जब उसने कुछ नहीं कहा, तो पॉलएिक्टस भी अपने मत्रि के गहरे दुख में सहानुभूति रिखते हुए उदास हो गया। अंत में, पॉलएिक्टस ने नीरकस से वशिेष रूप से पूछना शुरू कयिा:

'क्या मैंने तुम्हें कसिी तरह से ठेस पहुँचाई है? मेरी क्या गलती है? मैंने ऐसा क्या भयानक कयिा है कि तुम अपने दोस्त को माफ नहीं करोगे?'

तब नीरकस, अपने हृदय की गहराई से रोते और आहें भरते हुए, बोला:

'जब मैं, मेरे मत्रि, सोचता हूँ कि हमारा प्रेम और मत्रिता समाप्त हो जाएगी, तो मैं नराशिा से भर जाता हूँ और मेरी आत्मा दुखी हो उठती है।'

यह सुनकर, पॉलएिक्टस बहुत दुखी हो गया और कहा:

'ऐसा कैसे हो सकता है, मेरे मत्रि? तुम ऐसी असंभव बातें क्यों कर रहे हो? हमारा प्यार क्यों खत्म होगा, जब तो मृत्यु भी इसे अलग करने में असमर्थ है?'

'मेरे प्रयि मत्रि,' नेरकस ने उत्तर दयिा, 'यही बात मुझे मेरे प्राणों की गहराई तक दुखति कर रही है: कि हमारा वयिोग प्राकृतकि मृत्यु से भी बदतर होगा।'

पोल्येक्टस, यह समझ नहीं पा रहा था कि नेयरकस क्या कह रहा था, उसने अपने दोस्त को कसकर गले लगा लयिा और उससे और भी अधकि वनिती करने लगा:

'मुझे बताओ, नेयरकस, और समझाओ कि हमारे इस वयिोग का क्या परणिाम होगा? मैं अब तुम्हारी खामोशी और सहन नहीं कर सकता, और अगर तुम चुप ही रहोगे और मुझसे कुछ नहीं कहोगे, तो तुम तुरंत मुझे अपनी आँखों के सामने मृत पड़ा हुआ देखोगे।'

तब नेरकस ने उससे कहा:

'मेरे प्रयि पॉलएिक्टस! हम उस शाही फरमान से अलग हो जाएँगे जो हर जगह पढ़ा जा रहा है; क्योंकि मैं ईसाई धर्म का अनुयायी हूँ, जबकि तुम मूर्तपिूजक धर्म के। और इसलिए, जब वे मुझे मृत्युदंड के लिए ले जाएँगे, तो तुम मुझे त्याग दोगे और परत्यिाग कर दोगे।'

यह सुनकर, बुद्धमिान पॉलएिक्टस तुरंत समझ गया कि नेर्केस का इरादा क्या था, और ईश्वर की कृपा से प्रबुद्ध होकर, उसने दव्यि पर चतिन करना शुरू कर दयिा। उसने कुछ दनि पहले देखे गए दर्शन को याद कयिा और कहा:

– डरो मत, मेरे प्रयि मत्रि नेर्केसस! हम तुमसे अलग नहीं होंगे, क्योंकि मैंने एक सपने में मसीह को देखा—जसिकी तुम सेवा करते हो—और वह मेरे पास आकर मैंने जो कपड़े पहने थे उन्हें उतार दयिा और मुझे एक नए, सुंदर और कीमती, सुनहरे बटन वाले वस्त्र पहनाए; और इसके अलावा, उसने मुझे एक पंखों वाला घोड़ा भी दयिा।

यह सुनकर, नीरकस आनंदति हुआ और उसने इस दर्शन की व्याख्या इस प्रकार की कि पुराने वस्त्रों को उतारना और नए वस्त्र धारण करना कसिी के जीवन में बेहतर बदलाव का संकेत है:

उसने कहा, 'यह तुम्हारे लिए नयित है कि तुम मूर्तपिूजक दुष्टता का त्याग करो और सच्चे वशि्वास के द्वारा स्वयं को मसीह में परधिानति करो; जबकि पंखों वाला घोड़ा स्वर्ग तक एक तीव्र यात्रा का प्रतीक है।'

तब उसने कहा:

'देखो, अब तुमने मसीह, सच्चे परमेश्वर को जान लयिा है!'

पॉलीयूक्टस ने उत्तर दयिा:

'तो फरि, मैंने उन्हें कब नहीं जाना? क्या मेरा हृदय मुझमें नहीं जल उठा जब आप मुझे उनके बारे में बता रहे थे? क्या मैं उनके वचनों से चकति नहीं हुआ जब आप मुझे पवत्रि सुसमाचार पढ़कर सुना रहे थे? बस एक ईसाई नाम की कमी थी; अपने दलि में, मैं पहले से ही एक ईसाई था, क्योंकि मैंने हमेशा यही सोचा था कि व्यर्थ की मूर्तयिों को त्यागकर, मैं प्रभु मसीह का सेवक कैसे बनूँ। तो देरी क्यों, नेर्खस? आओ हम अपने कर्मों से मसीह के प्रति अपनी भक्ति साबति करें!

नीरकस उसकी बातों से प्रसन्न हुआ और आनंदति हो गया; लेकनि, यह डरते हुए कि उसका मत्रि अपनी संपत्ति, अपनी पत्नी और बच्चों, और यहाँ तक कि अपने जीवन पर भी पछता सकता है, उसने उससे इस संसार की व्यर्थता के बारे में बात करना शुरू कर दयिा और अदृश्य आशीर्वादों तथा स्वर्ग की महमिा का वर्णन करने लगा।

उसने कहा, 'मेरे लिए, पॉलएिक्टस, न तो धन-संपत्ति, न ही महमिा, न ही सैन्य सम्मान—कोई भी सांसारकि चीज़ मसीह यीशु में जीवन जतिनी प्रयि या वांछनीय नहीं है: मैं केवल उसी की कामना करता हूँ, जबकि बाकी सब कुछ मेरे लिए तुच्छ लगता है।'

हालाँकि, पॉलएिक्टस ने, मानो उसकी परीक्षा लेने के लिए, कहा:

'लेकनि क्या आप अपने सैन्य पद की मान-सम्मान को महत्व नहीं देते?'

नीरकस ने उत्तर दयिा:

'पॉलएिक्टस, मुझे ऐसा लगता है कि तुमने अभी तक उस सच्चे सम्मान और महमिा और अनंत आनंद को नहीं समझा है, जो प्रभु मसीह ने अपने सेवकों के लिए तैयार कयिा है।'

इस पर पॉलएिक्टस ने कहा:

'क्या तुम्हें लगता है कि मुझे उस महमिा, सम्मान और आनंद का कोई अंदाज़ा नहीं है जो स्वर्ग में मसीह के साथ हमारे लिए तैयार कयिा गया है? लेकनि मेरा मानना है कि मैं इस मामले में तुमसे आगे नकिल गया हूँ, क्योंकि, जैसा कि मैंने तुमसे कहा था, मैंने पहले ही एक दर्शन में शाही खलामी (chlamys) प्राप्त कर ली है।' लेकनि मैं आपसे यह पूछना चाहता हूँ: क्या ईसाई संस्कार प्राप्त कएि बनिा, मसीह के पास आना और उसका योद्धा बनना संभव है?

'मेरे वशि्वासयोग्य मत्रि, इस बारे में कोई संदेह न रखो,' नीरकस ने उत्तर दयिा, '*"परमेश्वर इन पत्थरों से भी अब्राहम के लिए संतान उत्पन्न कर सकता है"* (मत्ती 3:9), क्योंकि वह अपनी दया का द्वार उन पर बंद नहीं करता जो उसकी ओर मुड़ते हैं, और जो बाद में उसकी दाख की बारी में आते हैं, उन्हें भी उतना ही भुगतान करता है जतिना कि उन लोगों को जो पूरे दनि काम करते रहे हैं[811] । इस प्रकार, उन्होंने सूली पर चढ़ाए गए चोर के लिए स्वर्ग के द्वार खोल दएि, और वशि्वास की एक संक्षप्ति स्वीकारोक्ति के लिए उसे वह पुरस्कार प्रदान कयिा जसिके लिए अन्य लोग इतनी कड़ी मेहनत कर रहे थे।

यह सुनकर, पॉलएिक्टस ने कहा:

'महमिा हो मसीह की, जो सच्चे ईश्वर हैं! इस क्षण से, मैं इस संसार की सारी व्यर्थता का त्याग करता हूँ और स्वयं को मसीह का सेवक घोषति करता हूँ, जसिकी मैं आज्ञा के अनुसार सेवा करूँगा। और अब मैं जाऊँगा और मसीहयिों तथा मेरे प्रभु और ईश्वर, यीशु मसीह के वरिुद्ध जारी शाही फरमान पढ़ूँगा।'

ये शब्द कहकर, पॉलएिक्टस चौक पर गया और, शाही फरमान पढ़ने के बाद, उसने लोगों के सामने उस पर थूक दयिा और उसे फाड़ दयिा। इसके बाद, जब उसने देखा कि वे मूर्तयिाँ जनिके सामने लोग नमन कर रहे थे, उन्हें मंदरि में ले जाया जा रहा है, तो वह पहले इस मूर्तपिूजक मूर्खता पर हँसा; फरि, यह दखिावा करते हुए कि वह उनकी पूजा करना चाहता है, उसने एक-एक करके इन मूर्तयिों को पकड़ना शुरू कर दयिा और उन्हें मट्टिी के बर्तनों की तरह जमीन पर पटक कर तोड़ने लगा; इस तरह उसने कुल बारह मूर्तपिूजक देवताओं को चकनाचूर कर दयिा। उसी क्षण, पॉलएिक्टस

[811] तुलना करें मसीह की दाख की बारी में मजदूरों की दृष्टांत कथा से (मत्ती 20:1–16)।

के ससुर, फेलक्स, वहाँ पहुँचे; उन्हें राजाओं द्वारा ईसाइयों पर अत्याचार करने के लिए भेजा गया था। पॉलएिक्टस द्वारा अपने देवताओं के वनिाश को देखकर, वह बहुत दुखी हुए और कराहते हुए कहा:

'हाय रे मुझ पर! अब मैंने अचानक अपने बच्चों को खो दयिा है, क्योंकि न तो देवता और न ही मनुष्य उस पॉलएिक्टस को बख्शेंगे, जसिने ऐसा कृत्य कयिा है।'

हालाँकि, पॉलएिक्टस, आत्मा रहति मूर्तयिों के वनिाश पर प्रसन्न होकर, अपने ससुर से बोला:

'पतिाजी, आप क्यों परेशान हैं? मैंने अब स्पष्ट रूप से दखिा दयिा है कि आपके देवता कतिने शक्तहिीन हैं; यदि आपके पास उनसे और भी हैं, तो उन्हें यहाँ लाने दीजए, और आप देखेंगे कि मसीह के सेवक उनका मज़ाक कैसे उड़ाएंगे।'

'हमारे सर्वशक्तमिान राजाओं ने,' फेलक्स ने उत्तर दयिा, 'आदेश दयिा है कि ऐसे लोगों को तुरंत मौत की सज़ा दी जाए, और तुम पहले से ही मौत के करीब हो; तुम्हारा सरि कलम कयिा जाना तय है—ऐसा और हो ही नहीं सकता, क्योंकि राजा का आदेश वापस नहीं लयिा जा सकता। 'लेकनि मैं तुम्हें थोड़ी रयिायत दूँगा: तुम घर जा सकते हो और अपनी पत्नी और बच्चों को वदिा कह सकते हो।'

'क्या मैं अपनी पत्नी और बच्चों के लिए शोक कर सकता हूँ,' संत ने आपत्ति जताई, 'जब मैंने सांसारकि चीजों को त्याग दयिा है और स्वर्गीय की खोज कर रहा हूँ, और अनंतकाल के बारे में सोचता हूँ? यदि आपकी बेटी मेरा अनुसरण करना चाहती है, तो वह धन्य होगी; यदि नहीं, तो वह आपके देवताओं के साथ नष्ट हो जाएगी।'

यह सुनकर, फेलक्स अपने दामाद के लिए रोने लगा और उससे कहा:

'हाय मेरे प्यारे बेटे पॉलएिक्टस! तू भी मसीह की जादुई शक्ति के प्रभाव में आ गया है।'

संत पॉलएिक्टस ने उत्तर दयिा:

'मैं इस बात को नहीं छपिाता कि मसीह ने मुझे सत्य के ज्ञान के लिए बुलाया है। अपने दव्यि और सर्वशक्तमिान दहनि हाथ से, उन्होंने मुझे अंधकार से प्रकाश में, मृत्यु से जीवन में नकिाला है; उन्होंने मुझे भूल से सही मार्ग पर नरि्देशति कयिा है और मुझे अपने अनुयायियिों में गनि जाने के योग्य समझा है।'

जब संत ने यह कहा, तो उनके यातना देने वालों ने उन्हें पकड़ लयिा और उनके मुँह पर मारना शुरू कर दयिा, लेकनि उन्होंने इसकी कोई परवाह नहीं की। तब उनकी पत्नी आई और अपने पति, फेलक्स के साथ मलिकर उनके लिए रोने लगी। हालांकि, संत ने अपने ससुर से इस प्रकार कहा:

'हे घृणति मूर्तयिों के अत्यंत अधर्मी दास! तुम अपने आँसुओं और अपनी बेटी के आँसुओं से मुझे मसीह के धर्म से भटकाने का प्रयास क्यों कर रहे हो? तुम पोलीएवक्टोस के लिए क्यों रो रहे हो, जबकि तुम्हें अपने लिए कहीं अधकि रोना चाहिए—अर्थात्, कि सांसारकि राजाओं की सेवा करके, तुम स्वयं को अनंत आग में दंडति कर रहे हो?"

संत की पत्नी, जसिका नाम पावलनिा था, ने अपनी ससिकयिों के बीच उससे कहा:

'तुम्हारे ऊपर क्या सवार हो गया है, मेरे प्रयि पति पॉलएिक्टस? कसि बात ने तुम्हें हमारे बारह देवताओं को नष्ट करने पर उकसाया है?'

लेकनि संत ने मुस्कुराते हुए उनसे उत्तर दयिा:

'यदि मैंने अकेले ही तुम्हारे बारह देवताओं को पराजति और नष्ट कर दयिा है, तो अब तुम्हारे पास मदद के लिए कोई नहीं बचा: तुम्हारे पास अब कोई देवता नहीं बचे हैं। मेरी बात सुनो, पावलनिा, और उस एक सच्चे ईश्वर को जानो जो स्वर्ग में वास करता है; उसकी आराधना करो और इस जीवन को अनंत जीवन के लिए बदल दो।'

जब उन्होंने संत और उनकी पत्नी के बीच यह बातचीत सुनी, तो पास खड़े कई मूर्तपिूजक उनके शब्दों से प्रभावति हुए; सत्य को पहचानकर, उनका हृदय स्पर्शति हुआ और वे मसीह की ओर मुड़ गए। हालाँकि, शहर के न्यायाधीश और सभी पार्षद एकत्रति हुए और उन्होंने संत पॉलएिक्टोस को उनके सामने पेश होने के लिए बुलाया; बारी-बारी से चापलूसी और धमकयिों का उपयोग करते हुए, उन्होंने एक बार फरि उसे मूर्तयिों की पूजा पर लौटने के लिए मनाने की कोशशि की। जब उनके प्रयास व्यर्थ साबति हुए, तो उन्होंने संत पर मृत्युदंड की घोषणा की, और उसे तलवार से सरि कलम कएि जाने की सज़ा सुनाई।

संत अतुलनीय आनंद के साथ अपनी मृत्यु की ओर बढ़े और अपने साथ चल रहे लोगों से कहा कि वह एक तेजस्वी युवक से बात कर रहे थे जो उन्हें मजबूत कर रहा था और सभी सांसारकि चीजों को भूलने का आदेश दे रहा था; लेकनि स्वयं शहीद के अलावा कोई भी इस युवक को नहीं देख सकता था। भीड़ में सच्चे ईश्वर में अपने वश्विास के साथी और आध्यात्मकि पति, धन्य नेर्केउस को देखते ही, वह उन्हें पुकार उठा:

'वदिा, मेरे प्रयि मत्रि, और उस प्रेम के बंधन को याद रखना जो हमें जोड़ता है!'

ये शब्द कहने के बाद, उन्होंने अपना पवत्रि सरि तलवार के नीचे झुका दयिा और मसीह यीशु के लिए फांसी दिए जाने पर, अपने ही रक्त से बपतस्मिा ग्रहण कयि[812] ।

संत पोलीयूक्टस आर्मेनयिाई शहर मेलटिनि में पहले शहीद थे, और उनकी मृत्यु ने संघर्षरत कलीसयिा के वकिास और वजियी कलीसयिा के सुदृढ़ीकरण में योगदान दयिा, मसीह परमेश्वर के सम्मान और महमिा के लिए, जो दोनों के प्रमुख हैं, जन्हिें पतिा और पवत्रि आत्मा के साथ, युगानुयुग सर्वोच्च सम्मान और महमिा प्राप्त है। आमीन।

मॉस्को के मेट्रोपॉलटिन संत फलिपि की स्मृति

9 जनवरी को स्मरण

मेट्रोपॉलटिन संत फलिपि का जन्म मस्कोवी साम्राज्य के शाही शहर में, कोल्यचेव्स के प्रतष्ठिति बोयार परविार के धर्मपरायण और कुलीन माता-पतिा के यहाँ[813] को हुआ था। उनके पतिा, जनिका नाम स्टीफन था, ग्रैंड प्रंसि वासलिी इओआनोवचि के करीबी बोयारों में से एक थे; उनकी धर्मपरायण माँ, जनिका नाम वरवारा था, ने अपना अंतमि समय एक नन के रूप में वरसोनोफयिा नाम से बतिाया। उनके धर्मपरायण जीवन और उनके गुणों के प्रमाणस्वरूप, ईश्वर ने उन्हें एक धन्य संतान से आशीर्वादति कयि: उनसे धन्य फलिपि का जन्म हुआ, जन्हिें उनके पवत्रि बपतस्मिा में थयिोडोर नाम दयिा गया था। उनके माता-पतिा ने उन्हें हर तरह से धार्मकिता में पाला। जब वह थोड़ा बड़ा हो गया, तो उसे शास्त्रीय शकि्षा के लिए भेजा गया, जसिमें उसने वशिष लगन से उत्कृष्टता हासलि की, और साथ ही बचपन के सामान्य खेलों और मनोरंजन से दूर रहा। इस प्रकार, थयिोडोर ने जल्द ही सभी वद्वितापूर्ण ज्ञान में महारत हासलि कर ली और आत्मा के लिए लाभकारी ग्रंथों को पढ़ने में नपिुणता प्राप्त कर ली। उनके माता-पतिा, उनके अनुकरणीय व्यवहार को देखकर, इस पर आनंदति हुए। कुछ समय बाद, 'युवा पुरुष'[814] को थयिोडोर को घुड़सवारी सखिाने के लिए नयिुक्त कयिा गया; लेकनि उसने इसमें बलि्कुल भी रुचि नहीं दखिाई, बल्कि वह ऐसी कतिाबें पढ़ना पसंद करता था जनिमें उसे संतों और सदाचारी पुरुषों के जीवन के बारे में पता चलता था, और उनके माध्यम से उसने स्वयं को सद्गुणों में परपिूर्ण करना सीखा। बाद में, उसे युद्ध कला भी सखिाई गई; फरि भी इससे भी उसकी आत्मा के धार्मकि स्वभाव में कोई बदलाव नहीं आया; वह अपने साथयिों और उनके तुच्छ जीवन शैली से दूर रहता था, इसलिए कई लोग उसकी धार्मकिता पर चकति थे।

ग्रैंड प्रंसि वासलिी इओनोवचि[815] की मृत्यु के बाद, राज्य का राजदंड उनके पुत्र, सर्व रूस के ग्रैंड प्रंसि इयान वासलिीयेवचि[816] ने ग्रहण कयि। इस समय, फीओडोर के वयस्क होने पर, उसे ज़ार की सेवा करने के लिए दरबार में ले जाया गया और वह युवा राजकुमार इयान वासलिीयेवचि का स्नेह और कृपा जीतने में सफल रहा। लेकनि थयिोडोर ने लंबे समय तक दरबार में सेवा नहीं की। जब वह तीस वर्ष के हुए, तो ऐसा हुआ कि ईश्वर की वशिष कृपा से, जब वह चर्च में प्रवेश कर रहे थे, तब दव्यि लटिर्जी का अनुष्ठान हो रहा था। वहाँ उन्होंने सुसमाचार के ये शब्द सुने: *'कोई भी दो स्वामयिों की सेवा नहीं कर सकता'* (मत्ती 6:24)। इन शब्दों से प्रभावति होकर, उसने मन ही मन सोचा कि वे उस पर भी लागू होते हैं, और उसने सांसारकि जीवन को त्यागने का संकल्प लयि। सोलोवेत्स्की मठ[817] को याद करते हुए, जहाँ भकि्षु धार्मकि भक्ति का जीवन जीते थे, उसने वहाँ जाने का संकल्प लयि। पवत्रि अवशेषों के सामने प्रार्थना करने, संतों के चमत्कारी अवशेष-पात्रों पर आँसुओं से गरिने और पवत्रि अवशेषों को चूमने के बाद, थयिोडोर ने प्रार्थना में अपना सफर शुरू कयि, और गुप्त रूप से शाही दरबार, अपने देश और अपने परविार को पीछे छोड़ दयिा, और अपने साथ केवल कपड़ों की बुनयिादी

---

[812] यह वर्ष 295 में हुआ था।

[813] 11 फरवरी 1507।

[814] प्राचीन रूस में, 'ओट्रोकी' शब्द राजकुमार के अनुचर दल के कनष्ठि सदस्यों को संदर्भति करता था; बाद में, इसका अर्थ राजकुमार की सेवा में वशि्वासपात्र नौकरों से हो गया, जो अधकिांशतःयुद्ध की कला में अनुभवी होते थे और अपने स्वामी के लिए वभिन्नि कार्य करते थे। बोयारों के भी अपने 'ओट्रोकी' होते थे।

[815] वासलिी चतुर्थ इवानोवचि – 1505 से 1533 तक मॉस्को के महा राजकुमार।

[816] इवान चतुर्थ वासलिीवचि द टेरबिल – 1533 से मास्को के ग्रैंड प्रंसि; 1547 में उन्होंने ज़ार की उपाधि धारण की और 1584 तक शासन कयि।

[817] सोलोवेत्स्की प्रथम-श्रेणी का स्टाव्रोपैगयिल मठ दूर उत्तर में, श्वेत सागर में सोलोवेत्स्की द्वीप पर, अर्कांगेल्स्क से 306 वेर्स्ट दूर स्थति है; यह 15वीं शताब्दी से अस्तत्वि में है और अपने अस्तत्वि के आरंभ से ही अपने संतों के कठोर तपस्वी जीवन के लिए प्रसद्धि हो गया।

ज़रूरतें ही ले लीं[818] । पहले वह वेलकिी नोवगोरोड के बाहरी इलाके में, ओनेगा झील[819] के पास आया, और वहाँ खज़िाख गाँव में एक कसिान के यहाँ रहने लगा। मेज़बान ने, उसकी अच्छाई और वनिम्रता को देखकर, उसे अपने भेड़ों की देखभाल करने का काम सौंप दयिा: इस प्रकार ईश्वर ने उसके लिए यह नरि्धारति कयिा था कि, वचन की भेड़ों की देखभाल करने से पहले, वह पहले उन भेड़ों की देखभाल करे जो बोल नहीं सकतीं। इस बीच, उसके माता-पतिा उसे नगरों में हर जगह खोजते रहे, और जब वह कहीं नहीं मलिा तो वे उसके लिए बहुत रोए। उस धर्मपरायण युवक ने, उपर्युक्त गाँव में कई दनि रहने के बाद, वहाँ से सोलोवेत्स्की द्वीप के लिए प्रस्थान कयिा और सोलोवेत्स्की मठ के मठाधीश द्वारा उसका स्वागत कयिा गया, जनि्होंने उसे मठ की सेवा में परशि्रम करने का नरि्देश दयिा। अपनी ओर से, ईश्वर के भय से प्रेरति होकर, उसने जो कुछ भी करने का उसे आदेश दयिा गया था, वह सब उत्साह और वनिम्रता के साथ, हृदय की सरलता से कयिा। वह लकड़ी काटता, सब्जी के बगीचे में मट्टिी खोदता, पत्थर उठाता, कभी-कभी कूड़ा अपने कंधों पर ढोता, और अन्य, और भी भारी काम करता था। कई मौकों पर उन्हें कुछ भकि्षुओं से अपमान और पटिाई भी सहनी पड़ी, लेकनि वे कभी गुस्सा नहीं हुए और सब कुछ खुशी और वनिम्रता से सहन कयिा, और कोई नहीं जानता था कि वे कौन थे या कहाँ से आए थे।

इस प्रकार धैर्य की परीक्षा देने के बाद, थयिोडोर ने मठाधीश से एक भकि्षु के रूप में दीक्षा देने के लिए कहा। उन्हें एक भकि्षु के रूप में दीक्षा दी गई और फलिपि नाम दयिा गया। उन्हें आयोन नाम के एक अनुभवी भकि्षु के मार्गदर्शन में रखा गया, जनि्होंने उन्हें हर सद्गुण की शकि्षा दी।

बाद में, मठाधीश ने उन्हें रसोई में भेज दयिा, जहाँ उन्होंने वनिम्रता से मठवासयिों की सेवा की, आग में ईंधन डालकर और लकड़ियाँ काटने का काम कयिा। उस सेवा में काफी समय बतिाने के बाद, फलिपि वहाँ से मठ की लोहारखाने में चले गए, जहाँ उन्होंने लकड़ी और पानी ढोकर अथक परशि्रम कयिा।

[820][821]भट्टी में काम करने वालों ने सभी ने उनकी मेहनत की प्रशंसा की। फरि, प्रसद्धिि से दूर भागते हुए, वे मठ से जंगल में चले गए और वहाँ, ईश्वर पर अपना मन केंद्रति करके, उन्होंने स्वयं को केवल प्रार्थना में नरिंतर समर्पति कर दयिा। संत फलिपि ने इस प्रकार रेगस्तिान में, सोलोवेत्स्की के जंगलों में, लंबे समय तक परशि्रम कयिा, और फरि एक बार फरि से अपने परशि्रम के लिए मठ लौट आए। आबा एलेक्सयिस ने, उन्हें अपने मठ के कार्यों में इतने उत्साही और गहरी वनिम्रता से सुसज्जति देखकर, उनसे बहुत सांत्वना पाई और उन्हें अपने सहायक के रूप में अपने पास रखा, तथा नवोदति भकि्षुओं की देखरेख का कार्य सौंप दयिा। फलिपि ने यह सब उत्साह के साथ कयिा और अपने मठाधीश की प्रार्थनाओं और आशीर्वाद से इन कार्यों में नौ साल बतिाए। बाद में, मठाधीश एलेक्सयिस ने वृद्धावस्था के कारण मठ के प्रशासन को त्याग दयिा और भाइयों की सलाह पर संत फलिपि को मठाधीश नयिुक्त कयिा। फरि भी, यद्यपि संत ने यह अधकिार का पद स्वीकार कर लयिा, उन्होंने अपने पूर्व जीवन-यापन में बल्कि्कुल भी परविर्तन नहीं कयिा। इसके वपिरीत, उन्होंने अपने तपस्या के प्रयासों को दोगुना कर दयिा और स्वयं को और भी अधकि शारीरकि परशि्रम में समर्पति कर दयिा; और जब उन्होंने देखा कि इस हेतु उनकी प्रशंसा और सम्मान कयिा जा रहा है, तो उन्होंने इसे व्यर्थ माना, क्योंकि अपने युवा काल से ही उन्हें वनिम्रता की कृपा प्राप्त थी। इसलिए उन्होंने मठाध्यक्ष का पद त्याग दयिा और एक बार फरि से मरुस्थल में चले गए, तथा केवल हमारे ईश्वर मसीह के पवत्रि देह और रक्त को ग्रहण करने के लिए मठ में आते थे। पूर्व मठाध्यक्ष, एलेक्सयिस ने मठ का प्रशासन संभाल लयिा, लेकनि डेढ़ साल बाद उनका नधिन हो गया। फरि, भाइयों के अनुरोध पर, संत फलिपि ने एक बार फरि से मठाध्यक्ष का पद संभाल लयिा। उन्होंने स्वयं को और भी कठोर तपस्या में समर्पति कर दयिा और सद्गुणों में और भी उच्च स्तर की पूर्णता प्राप्त की। उनके कार्यकाल के दौरान, सोलोवेत्स्की मठ ने प्रगति की और सुशोभति कयिा गया[822] । इस बीच, संत फलिपि की खबर धर्मपरायण ज़ार

---

[818] यह 1537 के मध्य में था।

[819] ओनेगा झील रूस के उत्तर में, ओलोनेत्स गवर्नरेट में स्थति है; यह लादोगा झील के बाद यूरोप की दूसरी सबसे बड़ी झील है।

[820] यह 1548 में हुआ था।

[821] ओप्रचिनीकी ने ज़ार के मन में सेंट फलिपि के प्रति विशिष उत्साह के साथ शत्रुता पैदा की, संत की बदनामी की और ज़ार की इस धारणा को मज़बूत कयिा कि मेट्रोपॉलटिन उन बोयारों का पक्ष ले रहे थे जनिसे वह नफरत करता था और उनके उपकरण के रूप में काम कर रहे थे। हालाँकि, जब ओप्रचिनकिी के अत्याचार बढ़ने लगे, और ज़ार ने सुधार का कोई संकेत नहीं दखिाया, बल्कि अत्याचार करते रहे और क्रूर फांसी देते रहे, तो संत ने, ज़ार को दए गए गुप्त उपदेशों को अपर्याप्त समझते हुए, उनके और ओप्रचिनकिी के खलिाफ खुलेआम, सार्वजनकि नदिा की।

[822] सोलोवेत्स्की मठ के मठाध्यक्ष के रूप में अपने अठारह वर्षों के कार्यकाल के दौरान, मठाध्यक्ष फलिपि ने इसका पूरी तरह से नवीनीकरण कयिा; उन्होंने वहाँ दो पत्थर के चर्च बनाए – चर्च ऑफ़ द डॉर्मशिन ऑफ़ द मोस्ट होली मदर ऑफ़ गॉड और चर्च ऑफ़ द ट्रांसफगिरेशन

और प्रसि जॉन वासलीवकि तक पहुँची। उस समय, सर्व रूस के मेट्रोपॉलटिन अथानासयिस ने अपने पद से इस्तीफा दे दयिा था[823] । ज़ार चाहते थे कि संत फलिपि को रूसी मेट्रोपोलसि के सहिासन पर पदोन्नत कयिा जाए - और इसलिए उन्होंने संत को 'आध्यात्मकि परामर्श' के लिए मॉस्को बुलाया[824] । ऑर्थोडॉक्स लोग शुरू में शांति और प्रेम में रहते थे; लेकनि दुश्मन (शैतान), यह देखकर और हमेशा से सत्य से नफरत करते हुए, ने संघर्ष का तूफान खड़ा कर दयिा, और प्रेम के बजाय ऑर्थोडॉक्स ईसाइयों के बीच घृणा को भड़काया। दरबार में, बोयारों के बीच, एक-दूसरे के प्रति झगड़े, कड़वी शत्रुता और हर तरह की द्वेषपूर्ण भावनाएँ शुरू हो गईं। उनकी वशि्वासघात और आंतरकि कलह के कारण, उन्होंने स्वयं ज़ार के भीतर गहरा क्रोध और आक्रोश भड़काया। बोयारों के उन दुर्भावनापूर्ण अपमानजनक आरोपों के कारण, वह अपने ही वफादार सेवकों, करीबी रशि्तेदारों और दोस्तों से भी डरने लगा, और बोयारों के प्रति बेहसिाब क्रोध में था, उन्हें अपना दुश्मन और वदि्रोही मानता था। और इस प्रकार उन्होंने राज्य को दो भागों में बाँट दयिा, और अपने लिए ओप्रचिनीकी नामक अंगरक्षकों का एक वशिेष दल स्थापति कयिा, जो ज़ार के साथ रहते थे और एक अलग प्रशासन[825] बनाते थे। ओप्रचिनीकी ने उन्हें दी गई शक्ति का दुरुपयोग कयिा, लोगों पर अत्याचार कयिा, उनकी संपत्ति जब्त कर ली, और अपनी लूटपाट की कार्रवाइयों के साथ हत्या और यातना भी की। हालांकि, ज़ार को उनकी वफादारी और नषि्ठा पर भरोसा था, और इसलिए उनके खलिाफ कोई कार्रवाई नहीं की जा सकी। इसी समय ज़ार ने फलिपि को सोलोवेत्स्की मठ से बुलाया। सम्मानपूर्वक उनका स्वागत करने के बाद, ज़ार ने उन्हें मेट्रोपॉलटिन के सहिासन पर देखना चाहने की अपनी इच्छा से अवगत कराया। फलिपि ने अपनी वनिम्रता के कारण इस उच्च पद को अस्वीकार कर दयिा; लेकनि अंततः उन्हें ज़ार की अडगि इच्छा के आगे झुकने के लिए मजबूर होना पड़ा और उन्हें मेट्रोपॉलटिन के पद पर पदोन्नत कयिा गया[826] । शुरुआत में, सब कुछ शांतपिूर्ण था; ज़ार ने संत का सम्मान कयिा और उन्हें पक्ष में रखा। लेकनि बाद में, जब ओप्रचिनीकी द्वारा कएि गए अत्याचार चरम पर पहुँच गए, तो धन्य फलिपि ने ज़ार से ओप्रचिनीकी के उत्पात को समाप्त करने और उनके द्वारा की गई फांसी के लिए ज़ार को स्वयं फटकार लगाने का आग्रह करना शुरू कर दयिा। तब ज़ार संत पर बहुत क्रोधति हो गया और उसे यातना और नर्विासन की धमकी दी। हालाँकि, वह अटल की तरह अडगि रहे, उन्होंने ज़ार की धमकयिों को नज़रअंदाज़ कयिा और सत्य बोलना बंद नहीं क । दुर्भाग्य से, पादरी वर्ग में कुछ गद्दार भी थे, जो

ऑफ़ द लॉर्ड; उन्होंने 'बलि' और 'क्लेपा' (भ्राताओं को दैवीय सेवाओं के लिए बुलाने हेतु उपयोग की जाने वाली धातु की प्लेटें) की जगह घंटयिाँ लाईं; उन्होंने भ्राताओं के लिए दो- और तीन-मंज़लि कोठरयिाँ और एक अस्पताल बनवाया; उन्होंने नमक कारखानों का वस्तिार और सुधार कयिा – जो मठ की आय का मुख्य स्रोत थे – जलचक्कयिाँ स्थापति कीं, एक पशु-शाला और एक हरिन-आहार स्थापति कयिा, झीलों को नहरों से जोड़ा और दलदलों का पानी नकिाला, जंगलों के बीच रास्ते साफ कएि और सड़कों का नर्िमाण कयिा। मठाध्यक्ष के रूप में, फलिपि एक बार फरि ग्रैंड प्रसि जॉन वासलीवचि के ध्यान में आए और उनकी कृपा प्राप्त की। ज़ार ने उन्हें वभिन्नि जलिों, गांवों और अन्य संपत्तयिों के लिए चार्टर प्रदान कएि; उन्हें मोतयिों से कढ़ाई कएि गए भव्य वेस्टमेंट और सोलोवेत्स्की संतों ज़ोसमिा और साव्वती के अवशेषों के लिए दो कफ़न भेंट कएि; और बाद में रूपांतरण चर्च के नर्िमाण के लिए एक हजार रूबल, दो घंटयिाँ, कीमती पत्थरों और मोतयिों से जड़े दो सोने के क्रॉस, और मठ के लिए वभिन्नि वशिेषाधकिारों की पुष्टि करने वाले नए अनुदान पत्र।

[823] अथेनासयिस – मास्को और समस्त रूस के मेट्रोपॉलटिन – ने 1564 से 1566 तक मेट्रोपॉलटिन का पद संभाला।

[824] इसका मतलब यह था कि फलिपि को प्राइमेट का पद दयिा जाएगा, क्योंकि यह ज़ार की इच्छा और आज्ञा थी।

[825] ओप्रचिनीकयिों का चयन राजकुमारों, कुलीनों और बोयारों के बेटों में से कयिा जाता था। ओप्रचिननिा के लिए अलग रखी गई वशिेष वोल्स्ट्स में उनकी अपनी जमींदारयिाँ थीं; उनके रखरखाव के लिए वशिषि्ट शहर भी नर्िधारति कएि गए थे; ओप्रचिनीकयिों को अपने स्वयं के अधकिार और वशिेषाधकिार प्राप्त थे। बाकी रूस को 'ज़ेम्शचनिा' नाम दयिा गया था और राज्य तथा जनता के सामान्य मामलों के प्रबंधन के लिए ज़ेम्स्की बोयारों के प्रशासन के अधीन रखा गया था।

[826] उच्च बशिप का पद स्वीकार करने से इनकार करते हुए, फलिपि ने कहा: 'मैं अपने ऊपर ऐसा कार्य नहीं ले सकता जो मेरी शक्ति से परे हो; मुझे जाने दो, प्रभु के लिए; एक छोटी नाव को इतना बड़ा बोझ क्यों सौंपा जाए?' जब ज़ार ने ज़िद की, तो फलिपि ने घोषणा की कि वह ज़ार की इच्छा का पालन करेंगे, लेकनि इस शर्त पर कि ओप्रचिननिा, जिससे रूसी भूमि पीड़ति थी, को समाप्त कयिा जाए। जॉन ने जवाब दयिा कि ओप्रचिननिा ज़ार और राज्य के लिए आवश्यक था, क्योंकि कुछ लोग उनके खलिाफ साज़शि कर रहे थे। संत फलिपि को यह मनाया गया कि वे दरबार और ओप्रचिननिा के मामलों में हस्तक्षेप न करें, न ही मेट्रोपॉलटिन के पद से इस्तीफा दें क्योंकि ज़ार ने ओप्रचिननिा को समाप्त नहीं कयिा था, बल्कि ज़ार से परामर्श करें, जैसा कि पछिले मेट्रोपॉलटिन करते आए थे। इस प्रकार, संत फलिपि ने अपने ववेिक की स्वतंत्रता और नर्िदोष पीड़तिों के लिए शोक करने तथा सुसमाचार की सच्चाई बोलने के अपने कर्तव्य को बनाए रखा—एक ऐसी वशिषि्टता जो लंबे समय से रूसी संतों की पहचान रही थी।

केवल ज़ार को खुश करने में ही लगे हुए थे। नोवगोरोड के आर्चबशिप पमिन और उनके साथ कुछ अन्य लोग[827] , साथ ही ज़ार के सलाहकार मालयुटा स्कुरातोव[828] और वासलिी ग्र्याज्नी[829] तथा उनके समान वचिारधारा वाले सहयोगयिों ने संत के खलिाफ वभिन्नि षड्यंत्र रचे, उन्हें उनके पद से हटाने का प्रयास कयिा और ज़ार से अपने इरादों को न छोड़ने का आग्रह कयिा। तथापि, ज़ार केवल फलिपि को मेट्रोपॉलटिन के पद से हटाना नहीं चाहता था। कुछ ही समय बाद, झूठे गवाहों के आरोपों के बाद, उसने सुज़दाल के बशिप पाफ़नुटयिस और राजकुमार वासलिी टेम्कनि को फलिपि के अतीत जीवन की जांच के लिए सोलोव्की भेज दयिा। सोलोवेत्स्की मठ पहुँचने पर, दूतों ने ज़ार को खुश करने के लिए काम करना शुरू कर दयिा। उन्होंने चापलूसी और रश्वितखोरी के ज़रिए कुछ भक्षिुओं को संत के बारे में बुरा बोलने के लिए मनाया, कुछ को उच्चतम धार्मकि सम्मान का वादा करके, और कुछ को धमकयिों से। जहाँ तक फलिपि के बारे में सच बोलने वाले ईमानदार बुज़ुर्गों का सवाल है, उन्हें बुरी तरह पीटा गया और संत के बारे में बुरा बोलने का आदेश दयिा गया। फरि भी, भक्ति से परपिूर्ण, उन्होंने इन सभी अपमानों को खुशी से स्वीकार कयिा और एक स्वर में, फलिपि के बारे में सच बोलते रहे, कमिठ में उनका जीवन नरि्दोष और ईश्वर के अनुसार था। लेकनि ज़ार के दूतों ने यह सुनना भी गवारा नहीं कयिा; अपना काम पूरा करने के बाद वे मॉस्को लौट गए। रास्ते में, वे सोलोव्की के मठाधीश पैसयिस को अपने साथ ले गए—जन्हिें उन्होंने बशिप का पद देने का वादा कयिा था—और उन अन्य बदनाम करने वालों को भी जो संत फलिपि के खलिाफ झूठी गवाही दे चुके थे। संत पर मुकदमा चलाने के लिए तुरंत एक परषिद बुलाई गई। सोलोव्की से आए बदनाम करने वालों ने ज़ार को अपनी झूठी गवाहयिों वाले पन्नों से भरे लपेटे भेंट कए। फलिपि के खलिाफ लखिति गवाहयिों को सुनने के बाद—जो उसे पसंद आईं—ज़ार ने उन्हें सबके सुनने के लिए ज़ोर से पढ़ने का आदेश दयिा, जसिके बाद झूठे गवाहों ने संत पर मौखकि रूप से बदनामी करना शुरू कर दयिा। संत ने कोई बचाव नहीं कयिा और अपने पद के सभी प्रतीक चन्हि उतारने लगे[830] , लेकनि ज़ार ने उन्हें अदालत के फैसले का इंतज़ार करने का आदेश दयिा। अगले दनि, जब महाधर्माध्यक्ष संत फलिपि डोर्मशिन कैथेड्रल[831] में दैवीय लटिर्जी का अनुष्ठान कर रहे थे, तब ज़ार ने अपने बोयार, अलेक्सी बास्मानोव को वहाँ बड़ी संख्या में ओप्रचिनीकी के साथ भेजा। कैथेड्रल में प्रवेश करने पर, बास्मानोव ने महाधर्माध्यक्ष के पदच्युत पिर न्यायालय के फैसले को सभी लोगों के सुनने के लिए पढ़ने का आदेश दयिा। तब ओप्रचिनीकी जंगली जानवरों की तरह संत पर टूट पड़े, उन्होंने उनके धार्मकि वस्त्र छीन लिए, उन्हें साधारण, फटे-पुराने मठीय वस्त्र पहना दिए, अपमानति कर चर्च से बाहर नकिाल दयिा, और एक गाड़ी पर बठिाकर एपफिेनी मठ ले गए, रास्ते भर उन पर गाली-गलौज और पटिाई करते रहे[832] । बाद में, ज़ार के आदेश से, फलिपि को ट्वेर के ओट्रोच मठ में नरि्वासति कर दयिा गया[833] , जहाँ संत को अपने रक्षकों के

---

[827] उनमें सुज़दल के बशिप पाफनुटयिस, फलिोथेउस, रयिाज़ान के बशिप, और वशिेष रूप से, घोषणा कैथेड्रल के महापुजारी यूस्टेथयिस, जो ज़ार के धर्म-परामर्शदाता थे, जन्हिें फलिपि ने कुछ अपराधों के लिए प्रतबिंधति कर दयिा था और जो ज़ार को मेट्रोपॉलटिन के बारे में बदनाम करने वाली टप्पिणयिाँ, गुप्त रूप से और खुले तौर पर, लगातार बताते रहते थे।

[828] मलयुता स्कुरातोव-बेल्स्की – ड्यूमा का एक कुलीन और ज़ार इवान चतुर्थ द टेरबिल का प्रयि ओप्रचिनीक, जो अपनी क्रूरता के लिए कुख्यात था और उसने द टेरबिल ज़ार के लगभग सभी अत्याचारों में भाग लयिा था। मलयुता स्कुरातोव और उसके अत्याचारों की याद लोक गीतों में संरक्षति है, और उसका नाम ही एक खलनायक का पर्याय बन गया है।

[829] वासलिी ग्र्याज्नी, ज़ार इवान चौथे द टेरबिल का एक प्रयि और वश्विस्त ओप्रचिनिक था।

[830] पैसयिस की इस नरि्लज्ज बदनामी के जवाब में, प्रायमेट ने बस सौम्य स्वर में उससे कहा: 'मेरे बच्चे, जैसा बोओगे, वैसा ही काटोगे।' फरि, ज़ार और पूरे सनिड की ओर मुड़कर, उन्होंने घोषणा की कवि ह मृत्यु से बलि्कुल भी नहीं डरते और मेट्रोपॉलटिन का पद धारण करते हुए मौजूदा युग के अत्याचारों और अराजकता को चुपचाप सहने के बजाय एक नरि्दोष शहीद के रूप में मरना पसंद करेंगे; जसिके बाद उन्होंने अपना सफेद मुकुट और चोगा उतारना शुरू कर दयिा।

[831] यह 8 नवंबर 1568 को हुआ था।

[832] यहाँ, महानगरपति संत फलिपि ने एक बदबूदार कालकोठरी में भारी बेड़यिों से जकड़े हुए और भूख से पीड़ति होकर पूरे एक सप्ताह बतिाए। फरि उन्हें चमत्कार करने वाले संत नकिोलस के मठ में स्थानांतरति कर दयिा गया, जसिे 'पुराना' मठ के नाम से जाना जाता है। संत फलिपि ने जो कुछ सहा था, उससे संतुष्ट न होकर, ज़ार ने उन बोयारों के बेटों को यातनाएं दीं और उन्हें मृत्युदंड दयिा जन्होंने उनकी सेवा की थी; उनके कोल्यचेव परविार के दस सदस्यों को एक के बाद एक मौत की सज़ा दी गई। ज़ार ने उनमें से एक, इवान कोल्यचेव, जसिका संत से वशिेष लगाव था, का सरि उसके कालकोठरी में भेज दयिा। संत ने उसके सामने ज़मीन पर सरि झुकाया, उसे आशीर्वाद दयिा, प्यार से चूमा, और उसे लाने वाले को वापस कर दयिा।

[833] वर्जनि के डॉर्मशिन का द्वतिीय-श्रेणी का मठ ट्वेर में स्थति है और इसकी स्थापना 13वीं शताब्दी से पहले हुई थी। संत की कैद और शहादत का स्थान एक नम, उदास तहखाना है, जहाँ नमी, अंधेरा और सड़ी हुई गंध हमेशा बनी रहती है। जब 17वीं सदी में, उन्होंने इस कष्ट-सहष्णिु संत की स्मृति में एक वेदी बनाने की इच्छा व्यक्त की, तो उन्होंने इसे दूसरी मंजलि पर बनाया; 1833-34 में ही वे नीचे एक पार्श्व चैपल का नरि्माण कर सके, जसिे महान शहीद सेंट बारबरा को समर्पति कयिा गया था; इस पार्श्व चैपल का वेदी ठीक उसी स्थान पर फर्श के नीचे स्थति है जहाँ

हाथों बहुत हानि सहनी पड़ी। संत को बंदी बनाए हुए लगभग एक वर्ष हो चुका था, और वे अपने रक्षकों द्वारा दी गई विभिन्न दुखों के बोझ तले दबे हुए थे। इस समय, ज़ार नोवगोरोड[834] की यात्रा करते हुए और टवर के पास पहुँचते हुए, संत फिलिप को याद किया और उपर्युक्त मालीउता स्कुरातोव को उनके पास भेजा। वह अचानक संत की कोठरी में प्रवेश कर गया। इस बीच, तीन दिन पहले, संत ने अपने साथियों से कहा था:

'अब मेरे श्रम का अंत समीप है,' और उन्होंने हमारे ईश्वर मसीह के सम्मानित और जीवन-प्रदायक रहस्यों का पवित्र भोज ग्रहण किया। संत फिलिप की कोठरी में प्रवेश करते ही, मालीउटा स्कुरातोव ने श्रद्धा का नाटक करते हुए, संत के चरणों में गिर पड़ा और कहा:

'हे पवित्र पिता, ज़ार को ग्रेट नोवगोरोड की यात्रा का अपना आशीर्वाद प्रदान करें।'

लेकिन संत ने मलूता से उत्तर दिया:

'तुम जो चाहो करो, पर ईश्वर का वरदान छल से नहीं मिल सकता।' फिर उस निर्दयी दुष्ट ने उस धर्मात्मा को तकिये से घुटन देकर मार डाला[835] ।

इस बीच, संत फिलिप के दुश्मन, जिन्होंने उनके खिलाफ विद्रोह किया था, जल्द ही ईश्वर की सजा के शिकार हो गए। ज़ार ने, उस पवित्र पुरुष के प्रति अपने अन्याय और अपने दुश्मनों की धूर्तता को महसूस करते हुए, आदेश दिया कि उन्हें विभिन्न मठों में कैद किया जाए, जबकि अन्य को मृत्युदंड दिया गया[836] ।

ज़ार जॉन वासिलीविच की मृत्यु के बाद, रूसी साम्राज्य का सिंहासन उनके पुत्र, धर्मपरायण ज़ार और ग्रैंड प्रिंस थियोडोर इओआनोविच ने ग्रहण किया[837] । उनके शासन के सातवें वर्ष में, संत फिलिप के निधन के इक्कीस साल बाद, सोलोवेत्स्की मठ के मठाधीश जैकब और भाइयों ने धर्मनिष्ठ ज़ार से संत के शरीर को ओत्रोच मठ से सोलोवेत्स्की मठ में स्थानांतरित करने का आदेश देने का निवेदन किया। तस्कर ने उन्हें ऐसा करने की अनुमति दे दी, और उन्होंने संत का शरीर पूर्णतः अखंड और क्षतरिहित पाया, यहाँ तक कि क्षय ने उनके वस्त्रों को भी नहीं छुआ था, जबकि संत की अवशेषों से मिर्रा बह रहा था और उसकी सुगंध से वातावरण भर गया था। भिक्षुओं ने संत फिलिप के शरीर को सम्मानपूर्वक अपने मठ में ले गए और उसे ठीक उसी स्थान पर दफनाया जिसे उन्होंने स्वयं इस उद्देश्य के लिए तैयार किया था[838] । सबसे धर्मनिरपेक्ष ज़ार अलेक्सी मिखाइलोविच[839] के शासनकाल के दौरान, मेट्रोपॉलिटिन फिलिप के अक्षुण्ण अवशेषों को नोवगोरोड के मेट्रोपॉलिटिन निकोन[840] द्वारा सोलोवेत्स्की मठ से राजधानी मास्को तक सम्मानपूर्वक लाया गया था, और उन्हें डॉर्मिशन कैथेड्रल में एक नए अवशेष-पात्र में रखा गया था, जहाँ वे आज भी सार्वजनिक प्रदर्शन के लिए रखे हुए हैं[841] ।

संत को एक बार कैद किया गया था। कैथेड्रल के पास, उत्तर-पश्चिमी कोने में, सेंट फिलिप की कब्र के स्थान पर एक चैपल बनाया गया है। कैथेड्रल में सेंट फिलिप का अवशेष-पात्र रखा है, जिस पर उनकी छवि और उनके पवित्र अवशेषों का एक टुकड़ा है।

[834] वास्तव में, यह नोवगोरोड पर इवान द टेरिबिल का एक विनाशकारी हमला था, जिसके निवासियों के बारे में ज़ार को बताया गया था कि वे पोलिश राजा के सामने आत्मसमर्पण करने के लिए तैयार हैं। छह सप्ताह तक, ज़ार ने नोवगोरोड में भयानक फांसी दी, जिसमें कई हज़ार नोवगोरोडवासी और आसपास के इलाके के ग्रामीण मारे गए; न केवल नागरिकों—विशेषकर अमीरों—के घर लूट लिए गए, बल्कि सभी मठों और चर्चों को भी लूट लिया गया।

[835] यह 23 दिसंबर 1569 को हुआ था।

[836] सेंट फिलिप की मृत्यु के ठीक दो सप्ताह बाद नोवगोरोड के आर्चबिशप पिमेन को उनके पद से हटा दिया गया और उनके साथ अत्यंत अपमानजनक व्यवहार किया गया, जिसके बाद उन्हें वेनेव्स्की मठ में कैद कर दिया गया, जहाँ उनकी जल्द ही मृत्यु हो गई। ज़ार का प्रिय, मालीउता स्कुरातोव, को तोरज़ोक शहर के पास क्रीमिया के कैदियों द्वारा अपनी गद्दारी के तुरंत बाद मार दिया गया, जबकि ज़ार स्वयं बाल-बाल मौत से बच गए। मठाधीश पैसियस को वालाम द्वीप पर निर्वासित कर दिया गया, जहाँ उनकी मृत्यु हो गई; भिक्षु ज़ोसिमा और दस अन्य भिक्षु, जिन्होंने संत फिलिप पर भी बदनामी की थी, उन्हें विभिन्न मठों में भेज दिया गया। संत के कुछ अन्य दुश्मनों पर भी यही दैवीय दंड पड़ा।

[837] फ्योडोर इओनोविच ने 1584 से 1598 तक शासन किया।

[838] यह वर्ष 1591 की बात है। संत फिलिप के शरीर को शुरू में उनके द्वारा स्थापित चर्च के बरामदे के नीचे दफनाया गया था, जहाँ, सोलोवेत्स्की के मठाधीश के रूप में सेवा करते हुए, उन्होंने स्वयं अपने गुरु, एल्डर योना के बगल में एक कब्र खोदी थी; और 1646 में इसे चर्च के अंदर स्थानांतरित कर दिया गया।

[839] ज़ार अलेक्सी मिखाइलोविच ने 1645 से 1676 तक शासन किया।

[840] बाद में वे पूरे रूस के प्रसिद्ध पैट्रिआर्क और पूजा-संबंधी पुस्तकों तथा अनुष्ठानों के संशोधक बने।

[841] मेट्रोपॉलिटिन सेंट फिलिप के अवशेषों का स्थानांतरण 1652 में हुआ था। इस स्थानांतरण की स्मृति 3 जुलाई को मनाई जाती है। इसके अलावा, सेंट फिलिप का पर्व 5 अक्टूबर को मॉस्को के पवित्र धर्मगुरुओं: पीटर, अलेक्सियस और जोनाह के पर्व के साथ मनाया जाता है।

हमारे परमेश्वर की महमिा हो, अब और सदा, और युगों-युगों तक। आमीन।

परम पूज्य यूस्ट्राटयिस की स्मृति

9 जनवरी को स्मरणोत्सव

परम पूजनीय यूस्ट्राटयिस का जन्म तारसस क्षेत्र में[842] में, अपने धनी और धर्मपरायण माता-पिता, जॉर्ज और मेघेफा के यहाँ हुआ था। उनके द्वारा अच्छे संस्कारों में पाले जाने के बाद, जब वह बीस वर्ष के हुए, तो वह ईश्वर की सेवा करने की इच्छा से भर गए और अपने माता-पिता को छोड़कर ओलंपस पर्वत[843] पर स्थति अवगारोव मठ में भाग गए, जहाँ उनकी माँ के दो चाचा, ग्रेगरी और बेसलि, जनिमें से पहले वाले उस मठ के प्रमुख थे। उनके द्वारा स्वीकार कए जाने और उसके बाल मुंडवाने के बाद, यूस्ट्राटयिस ने कठनि संन्यासी जीवन जीना शुरू कर दयिा और अपनी वनिम्रता और नम्रता के लिए सभी का प्रयि हो गया। उन्हें सांसारकि चीजों की कोई परवाह नहीं थी - उनके पास एक बाल वाली कमीज़ और एक भेड़ की खाल के अलावा कुछ भी नहीं था, जसि पर वे सोते थे। उनके पास अपना कोई कोठरी या कोई नश्चिति स्थान भी नहीं था जसिे वे अपना कह सकें, यही कारण है कि वे आमतौर पर जहाँ भी होते थे, वहीं सो जाते थे, और तब भी केवल थोड़ी देर के लिए। पतिाजी उनके बारे में कहते थे कि, उनके मुंडन के दनि से ही, उन्होंने सोते समय कभी अपना पूरा शरीर फैलाया नहीं; और, अपने तपस्वी जीवन के पूरे पचहत्तर वर्षों में, वे कभी अपनी बाईं ओर नहीं लेटे। जबकि वह मठ में इस प्रकार रह रहे थे, उपर्युक्त पूजनीय पतिा – ग्रेगरी और बेसलि – का नधिन हो गया, और, भाइयों के वशिेष और जोरदार अनुरोध पर, धन्य यूस्ट्राटयिस को मठ का प्रशासन संभालने के लिए बाध्य होना पड़ा। लेकनि फरि राजशाही राजदंड पर एक ऐसे व्यक्ति ने अवैध रूप से कब्जा कर लयिा, जसिका नाम जानवर के नाम पर था, लयिो द आर्मनियिन[844] , जसिने ज़ार माइकल के खलिाफ वद्रिोह कर दयिा और उन्हें राज्य से बाहर खदेड़ दयिा। जब उसने पहले समाप्त हो चुके प्रतमिा-भंग को पुनर्जीवति करने का प्रयास कयिा, तो सभी ऑर्थोडॉक्स ईसाइयों ने ज़ार के उत्पीड़न से बचने के लिए अपने घर और मठ छोड़ दिए; आदरणीय इओनकियिोस महान की सलाह पर, धन्य यूस्ट्राटयिस ने भी अपना मठ छोड़ दयिा और दुष्ट ज़ार के मारे जाने तक पहाड़ों और रेगस्तिानों में भटकते रहे। जब राजा की मृत्यु के बाद, पवत्रि चर्च एक बार फरि से प्रतमिाओं से सुसज्जति हो गई और उनकी पूजा फरि से शुरू हो गई, तो धन्य यूस्ट्राटयिस, अन्य संतों के साथ जो अपने मठों में लौट आए थे, अवेगारोव मठ लौट आए और भाइयों के साथ मठ के कार्यों में अपने अथक तपस्वी प्रयासों और श्रम को फरि से शुरू कर दयिा। प्रार्थना उनके होठों से कभी नहीं छूटती थी, और दव्यि लटिर्जी के दौरान, पवत्रि वेदी में खड़े होकर भी, वह लगातार अपने आप से दोहराते रहते थे: 'हे प्रभु, दया करें!'

उन्होंने कई चमत्कार भी कए, जो नस्सिंदेह उनके जीवन की दैवीय प्रकृति की गवाही देते थे। और जब इस संसार से प्रस्थान करने का समय आया, तो उन्होंने भाइयों को बुलाया और उनसे कहा:

'मेरे प्रस्थान का समय आ गया है; अतः मैं तुमसे वनिती करता हूँ, मेरे प्रयि बच्चों, कि तुम उन परंपराओं को बनाए रखो जो तुमने प्राप्त की हैं, यह जानते हुए कि इस जीवन के सभी आशीर्वाद क्षणकि हैं; वे अस्थायी हैं, जबकि आने वाले जीवन के आशीर्वाद शाश्वत हैं। उन लोगों में गनि जाने के लिए भी प्रयास करो जो उद्धार पाए हैं।'

यह कहने के बाद, उन्होंने प्रार्थना की और उन पर क्रॉस का चहि्न बनाते हुए तथा स्वर्ग की ओर अपनी आँखें उठाकर कहा:

'हे प्रभु, मैं अपनी आत्मा तेरे हाथों में सौंपता हूँ!'

ये शब्द कहकर, वह प्रभु में सुला गया। कुल पचानबे वर्ष की आयु जीतने के बाद, वह अनंत जीवन में प्रवेश कर गया और पवत्रि लोगों में गनिती कयिा गया।

---

[842] यहाँ 'टारसस का क्षेत्र' से तात्पर्य सलिसिियि से है - जो एशयि माइनर का दक्षणि-पूर्वी प्रांत था। इसे इस क्षेत्र की राजधानी, टारसस के नाम पर 'टारसस' नाम दयिा गया था, जो इसके दक्षणिी भाग में, सडिनस नदी के कनिारे एक उपजाऊ मैदान पर स्थति थी, उस स्थान के पास जहाँ यह नदी भूमध्य सागर में मलिती है। यह एक बड़ा और घनी आबादी वाला व्यापारकि शहर था, जसिने आज भी अपनी वाणज्यिकि महत्वता बनाए रखी है।

[843] माउंट ओलंपस एशयि माइनर के एक उत्तर-पश्चमिी प्रांत बथिनियि में स्थति था। इस पहाड़ पर कई अलग-अलग मठ थे।

[844] बाइज़ेंटाइन सम्राट लयिो पंचम अर्मेनयिाई, जो एक मूर्तभिंजनवादी थे, ने 813 से 820 तक शासन कयिा।

पवत्रि नबी समाया की स्मृति

9 जनवरी को स्मरण कयिा जाता है

ईश्वर के पवत्रि नबी, शमई, का जन्म शलिो में हुआ था[845] , सुलैमान के शासनकाल के दौरान[846] । सुलैमान के पुत्र और उत्तराधकिारी, रेहोबोआम[847] के अधीन, इस्राएल का राज्य वभिाजति हो गया, जसिमें यहूदा और बन्यिामीन के गोत्र रेहोबोआम के प्रतवि फादार रहे, जबकि अन्य दस गोत्रों ने नबात के पुत्र येरोबोआम को अपना राजा मान लयिा। तब रेहोबोआम ने एक बड़ी सेना इकट्ठी की, ताकि वह बलपूर्वक उन इज़राइल के गोत्रों को, जो येरोबोआम ने अलग कर लिए थे, फरि से अपने अधीन कर सके। और यहोवा का एक प्रगटन परमेश्वर के मनुष्य शमायाह के पास हुआ:

'शलोमोन के पुत्र यहूदा के राजा रेहोबोअम और यहूदा और बन्यिामीन के सारे घराने और बाकी सब लोगों से कह दो: यहोवा का यह वचन है: अपने भाइयों, इस्राएल के पुत्रों के वरिुद्ध न नकिलना और न लड़ना; हर एक अपने-अपने घर लौट जाए, क्योंकि यह बात मेरी ओर से हुई है।'

राजा और लोगों ने प्रभु की आज्ञा का पालन कयिा, और भाई-भ्रातयिों का युद्ध टल गया (3 राजा 12:21–24; 2 इतहिास 11:1–4)।

रेहबोआम के राज्य के पाँचवें वर्ष में, क्योंकि वह प्रभु से मुँह फेर गया था, मस्रि के राजा शुशकमि[848] ने यहूदा के राज्य पर आक्रमण कयिा; फरिौन की वशिाल सेना ने यहूदा के सभी कलिों पर कब्जा कर लयिा और यरूशलेम पर चढ़ाई कर दी। तब नबी शमायाह रहिबोअम और यहूदा के राजकुमारों के पास आए, जो राजधानी की दीवारों के भीतर शत्रु से शरण ले रहे थे, और उन्होंने उनसे कहा:

'यहोवा यों कहता है: तुमने मुझे त्याग दयिा है; इसलयि मैं भी तुम्हें सुसाकमि के हाथ में त्याग दूँगा।'

यह सुनकर राजा और यहूदा के लोगों के सरदारों ने स्वयं को नम्र कयिा और कहा:

'प्रभु धर्मी है!'

इसके बाद, परमेश्वर के पुरुष शमायाह को एक और दर्शन मलिा, क्योंकि यहोवा ने उनसे कहा:

'वे अपने आपको नम्र कर चुके हैं; मैं उन्हें नष्ट न करूँगा, परन्तु मैं उन्हें शीघ्र ही छुड़ा लूँगा, और मेरा प्रचंड क्रोध शशिक के हाथ से यरूशलेम पर न उड़ेगा; तौभी वे उसके दास होंगे, ताकि वे मेरी सेवा करने और पृथ्वी के राज्यों की सेवा करने में अन्तर जान लें।'

भवषि्यवाणी का वचन पूरा हुआ। सुसाकमि ने यरूशलेम को उजाड़ दयिा और मस्रि लौट गया, जबकि रेहोबोआम ने और बारह वर्ष राज्य कयिा, और यहोवा का प्रकोप उससे टल गया (2 इतहिास 12)। रेहोबोआम के राज्य के अभलिेखों का मार्गदर्शन भी पवत्रि भवषि्यवक्ता शेमायाह ने कयिा था।

सेबास्टे के बशिप संत पतरस की स्मृति

9 जनवरी को स्मरण कयिा जाता है

संत पतरस, बेसलि द ग्रेट के भाई थे, जो अपने माता-पति के दसवें और अंतमि पुत्र थे। उनकी बड़ी बहन, मक्रनिा ने, संत पतरस के पालन-पोषण में एक प्रमुख भूमकिा नभिाई। उन्होंने उन्हें सबसे उत्तम शकि्षा दी, और बचपन से ही उनके मन को परमेश्वर के वचन के अध्ययन में प्रशकि्षति कयिा। मक्रनिा की देखभाल के कारण, वह युवक सद्गुणों की ऐसी ऊँचाइयों पर पहुँचा कि, उसके भाई, नस्सिा के ग्रेगरी के शब्दों में, 'अपने बाद के जीवन में वह, ऐसा प्रतीत होता है, अपने सद्गुणों की उत्कृष्टता में बेसलि द ग्रेट से कम नहीं था'। जब पीटर वयस्क हुए, तो बेसलि, जो कैपाडोसयिा के सेज़रयिा के बशिप बन चुके थे, ने उन्हें एक प्रेस्बटिर (पादरी) के रूप में नयिुक्त कयिा। बाद में, संत पीटर को आर्मेनयिा

---

[845] शलिोह – फलिस्तीन में एफ्राइम गोत्र के क्षेत्र का एक नगर; यहाँ मूसा द्वारा स्थापति गवाही का तम्बू स्थति था।

[846] ईसा पूर्व 1020 से 980 तक।

[847] ईसा पूर्व 980 से 963 तक।

[848] सुसाकमि, जसि मस्रि के वृत्तांतों में शेशोंक के नाम से जाना जाता है, बुबास्टड्सि के 22वें वंश का पहला फरिौन था।

में सेबास्टे का बशिप नयिुक्त कयिा गया[849] । एक बशिप के रूप में, उन्होंने 381 में कॉन्स्टेंटनिोपल में आयोजति मैकेडोनयिस के खलिाफ दूसरे सार्वभौमकि परषिद[850] में भाग लयिा। उनकी मृत्यु चौथी शताब्दी के अंत में हुई।

23 जनवरी

10 जनवरी (पुराने कैलेंडर के अनुसार)

हमारे पवत्रि पति नसि्सा के बशिप ग्रेगरी का जीवन

10 जनवरी को स्मरणोत्सव

[851]संत ग्रेगरी ऑफ़ नसि्सा, संत बेसलि द ग्रेट के छोटे भाई थे। यह इस तथ्य से स्पष्ट है कि संत ग्रेगरी ऑफ़ नसि्सा, बेसलि द ग्रेट को अपना शकि्षक और पति कहते हैं। जहाँ तक संत ग्रेगरी के जन्म के वर्ष की बात है, वह अज्ञात है। उनके पालन-पोषण की जमि्मेदारी उनकी धर्मपरायण दादी मैक्रनिा को सौंपी गई थी, जनि्होंने सेंट बेसलि को भी पढ़ाया था, जबकि उन्होंने व्याकरण और वाक्पटुता की प्रारंभकि शकि्षा अपने पति से प्राप्त की। बारह वर्ष की आयु से, अपने पति की मृत्यु के बाद, उन्होंने केसरयिा के वाक्पटुता-वशिेषज्ञों के अधीन अध्ययन कयिा। कैसरयिा के मूर्तपिूजक स्कूल में ग्रेगरी द्वारा प्राप्त ज्ञान को बाद में स्वतंत्र वद्विवतापूर्ण अध्ययन और संत बेसलि द ग्रेट के पाठों से पूरक बनाया गया, जनिके प्रति ग्रिेगरी, उनके अपने शब्दों में, बहुत ऋणी थे। अपने प्राकृतकि उपहारों और शकि्षा की खोज में लगन के कारण, संत ग्रेगरी ने सफलतापूर्वक वाक्पटुता[852] और दर्शनशास्त्र[853] का अध्ययन कयिा और खुद को एक धर्मनरिपेक्ष वक्ता के रूप में करयिर के लिए तैयार कर रहे थे। लेकनि ईश्वर की कुछ और ही योजना थी, और जल्द ही ग्रेगरी की आत्मा में एक बदलाव आया, जो उस समय धर्मनरिपेक्ष गतविधियिों और धर्मनरिपेक्ष वज्ञिानों के अध्ययन की ओर अधकि झुकाव रखते थे। एक अवसर पर, चालीस शहीदों की अवशेषों के स्थानांतरण के सम्मान में उनकी माँ की संपत्ति पर एक उत्सव आयोजति कयिा जाना था। ग्रेगरी, जो उस समय केसरयिा में अध्ययन कर रहे थे, को इस पारविारकि उत्सव में आमंत्रति कयिा गया था। अपनी पढ़ाई से दूर कएि जाने और उत्सव को कसिी और, अधकि अनुकूल समय के लिए स्थगति न कएि जाने से असंतुष्ट, ग्रेगरी ने बगीचे में हो रहे दैवीय सेवा के भजनों को उदासीनता और लापरवाही से सुना, जो पूरी रात चली; और अंत में, अपने एक बगीचे के मंडप में जाकर, वह सोने के लिए लेट गया। और इस प्रकार, नींद में, उसने देखा कि वह बगीचे में प्रवेश करना चाहता था, लेकनि कुछ तेजस्वी योद्धा उसे जाने नहीं दे रहे थे; और उनमें से एक के हस्तक्षेप से ही वह सज़ा से बच पाया। इस भयानक सपने ने ग्रेगरी पर गहरा प्रभाव डाला, और सांसारकि कार्यों और पढ़ाई को त्यागकर, वह पवत्रि और आत्मा-उद्धारक पुस्तकों को पढ़ने लगा; कुछ ही समय बाद, उसने एक एनाग्नोस्ट (anagnost) का पद संभाला, जसिमें धार्मकि सभाओं में पवत्रि धर्मग्रंथों को पढ़ना शामलि था। हालाँकि, शुरुआत में यह मानसकिता ग्रेगरी की आत्मा में लंबे समय तक जड़ नहीं जमा सकी। रेटोरकि

---

[849] आर्मेनयिा में सेबास्टे एशयिा माइनर के उत्तर-पूर्व में स्थति था।

[850] मेसेडोनयिस 341 से 360 तक, अंतराल के साथ, कॉन्स्टेंटनिोपल के पैट्रआर्क थे। वह एक वधिर्म के संस्थापक थे जो पवत्रि आत्मा के बारे में गलत शकि्षा देता था। वह पवत्रि आत्मा को परमेश्वर के रूप में स्वीकार नहीं करते थे, बल्कि उन्हें एक सृजति प्राणी मानते थे, जसिे पति और पुत्र की दव्यिता और महमिा में कोई हस्सिा नहीं था। 381 में दूसरे सार्वभौमकि परषिद ने इस वधिर्म की नदिा की और पवत्रि आत्मा को सच्चा ईश्वर के रूप में सही सद्धिांत की पुष्टि की। इसके अलावा, इस परषिद में नाइस का प्रतीक-वश्विास संशोधति कयिा गया था। पाँच नए अनुच्छेदों (8–12) को जोड़कर, जो पवत्रि आत्मा, चर्च और संस्कारों, तथा मृतकों के पुनरुत्थान और आने वाली दुनयिा के जीवन में वश्विास से संबंधति सद्धिांत नर्धिारति करते हैं, परषिद ने इसे वह रूप दयिा जसिमें इसे आज तक संरक्षति रखा गया है।

[851] इस वषिय पर, साथ ही सेंट ग्रेगरी ऑफ नस्सिा के माता-पति पर, 1 जनवरी के अंतर्गत सेंट बेसलि द ग्रेट के जीवन में देखें।

[852] वाक्पटुता वह वज्ञिान है जसिमें वाक्पटुता के नयिम शामलि हैं।

[853] दर्शन (ग्रीक शब्द से जसिका अर्थ है 'ज्ञान का प्रेम') – ज्ञान का वज्ञिान – मानव मन की जांच के आधार पर, अस्तत्वि के उच्चतम, अमूर्त प्रश्नों से संबंधति है: अस्तत्वि का स्वरूप, ईश्वर, दुनयिा और मनुष्य की उत्पत्ति और नयिम, मनुष्य का उद्देश्य और दुनयिा के अस्तत्वि के अंतमि लक्ष्य, आदि।

और व्याकरण के शिक्षक के रूप में सेवा करने पर ईसाइयों पर प्रतिबंध लगाने वाले जूलियन द एपोस्टेट[854] की मृत्यु के बाद, ग्रेगरी ने एक बार फिर अपनी पसंदीदा गतिविधि की ओर रुख किया, और अपने लिए रेटोरिक के शिक्षक का पेशा चुना, जिसने उनके दोस्तों के बीच असंतोष और सेंट ग्रेगरी द थियोलोजियन[855] से कठोर फटकार को जन्म दिया। हालाँकि, ग्रेगरी ने लंबे समय तक एक वाक्पटु व्यक्ति की प्रसिद्धि नहीं कमाई। जल्द ही, अपने तपस्वी-मन वाले परिवार के सदस्यों और दोस्तों के प्रभाव में, उन्होंने अपना पूरा जीवन पवित्र ग्रंथों के अध्ययन को समर्पित कर दिया, संसार को त्याग दिया और रेगिस्तान में चले गए, तथा नदी आइरिस के किनारे बेसिल द ग्रेट द्वारा स्थापित एक मठ में बस गए। थोड़ी ही देर बाद, एरियन संप्रदायवाद से लड़ने के लिए ग्रेगरी को एक वफादार सहायक के रूप में चाहने वाले संत बेसिल ने उन्हें निस्सा का बिशप नियुक्त किया[856] । संत ग्रेगरी ने मसीह के एक सच्चे चरवाहे के रूप में कार्य किया, चर्च का बहादुरी से शासन किया और अपने दुश्मनों की साजिशों से उसकी शांति की रक्षा की। उनकी धर्मपरायण बहन, थियोज्वा, उनके बगल में एक डीकोनेस के रूप में सेवा करती थीं और धार्मिक मामलों में अपने भाई की बहुत सहायता करती थीं, इसलिए उनकी बाद की मृत्यु उनके लिए एक बड़ा नुकसान थी।

[857]वैलेंस[858] के शासनकाल में, नाइसा के संत ग्रेगरी को एरियन शासकों[859] के हाथों अन्यायपूर्ण उत्पीड़न का सामना करना पड़ा। पोंटस के राज्यपाल डेमोस्थनीज[860] ने एन्क्रा[861] में सरकार के प्रति वफादार बिशपों की एक परिषद बुलाई, जिसमें ग्रेगरी पर चर्च की संपत्ति का दुरुपयोग करने का झूठा आरोप लगाया गया और उन्हें उनके पद से हटा दिया गया। डेमोस्थनीज़ के आदेश पर, संत को गिरफ्तार कर रखा गया और पहरेदारों के साथ अंकीरा भेजा गया, जहाँ रास्ते में सैनिकों की क्रूरता से उन्हें बहुत कष्ट उठाना पड़ा। उन्होंने तब भागने का निश्चय किया और पहरेदारों से बचकर एक सुरक्षित स्थान पर शरण ली। अगले वर्ष, पोंटस और गलाटिया के बिशपों की एक नई परिषद स्वयं निकिया में बुलाई गई; संत ग्रेगरी मुकदमे में उपस्थित नहीं हुए और उनकी गैर-मौजूदगी में उन्हें एक बार फिर पदच्युत कर दिया गया। फिर भी, अपने पद से हटाए जाने के बाद, ग्रेगरी निष्क्रिय नहीं रहे: उन्होंने ऑर्थोडॉक्सी को बनाए रखने और ऑर्थोडॉक्स श्रद्धालुओं को सांत्वना देने के लिए एक स्थान से दूसरे स्थान की यात्रा की। वैलेन्स की मृत्यु के बाद, संत ग्रेगरी को उनके पद पर बहाल कर दिया गया और उनके अनुयायियों ने बड़ी खुशी के साथ उनका स्वागत किया। कुछ ही समय बाद, उन्हें संत बेसिल द ग्रेट[862] की मृत्यु का दुख हुआ, जिन्हें वह अपने गुरु के रूप में बहुत प्यार करते थे और सम्मान देते थे। उनकी मृत्यु की पहली बरसी पर, उन्होंने उनकी स्तुति की और अपने गुरु के रूप में उनके प्रति कृतज्ञ सम्मान के भाव से, सृष्टि के छह दिनों के अपने वृत्तांत को पूरा किया, जिसमें मनुष्य का वर्णन अधूरा था और जहाँ अन्य लोग कुछ अनसुलझे प्रश्नों को सुलझाया हुआ देखना चाहते थे। उसी वर्ष, निस्सा के संत ग्रेगरी ने अंताकिया की परिषद[863] में भाग लिया। इस परिषद में, अरब और फिलिस्तीन में चर्चों का निरीक्षण करने के लिए धर्म के मामलों में पारंगत एक व्यक्ति को भेजने का निर्णय लिया गया, जहाँ एंटीकोमारियानी (जो ईश्वर की माता की निर्मल कुँवारीपन का सम्मान नहीं करते थे) और कोलरिडियानी (जो ईश्वर की माता की एक देवी के रूप में पूजा करते थे) की विधर्मों द्वारा धर्म को कमजोर किया

---

[854] जूलियन द एपोस्टेट – एक रोमन सम्राट जिसने 361 से 363 तक शासन किया। यद्यपि उसने ईसाइयों पर खुले तौर पर अत्याचार नहीं किया, फिर भी उसने ईसाई धर्म को समाप्त करने और मूर्तिपूजा को बहाल करने का प्रयास किया, जिसके लिए उसने हर संभव उपाय अपनाया।

[855] संत ग्रेगरी द थियोलोजियन (नज़ियनज़स के) – संत बेसिल द ग्रेट के एक महान सार्वभौमिक शिक्षक, मित्र और साथी थे। उनका पर्व दिवस 25 जनवरी को मनाया जाता है।

[856] यह 372 की शुरुआत में था। निस्सा कैपाडोसिया (एशिया माइनर का एक विशाल पूर्वी क्षेत्र) के उत्तर-पश्चिमी भाग में एक शहर है।

[857] इवोरा और सेबास्टे – कापाडोसिया में स्थित शहर।

[858] वैलेन्स रोमन साम्राज्य के पूर्वी भाग का सम्राट था, जिसने 364 से 378 तक शासन किया।

[859] एरियन विधर्म का नाम अलेक्जेंड्रिया के एक पादरी एरियस के नाम पर पड़ा, जिसने यह सिखाया कि परमेश्वर का पुत्र परमेश्वर पिता से शाश्वत रूप से नहीं जन्मा, बल्कि समय में शून्य से उनकी रचना की गई थी, और वह न तो उसी सार का था और न ही उनके समान सम्मान का था। यह विधर्म समग्र रूप से ईसाई धर्म को उखाड़ फेंकने की ओर उन्मुख था।

[860] पोंटस – एशिया माइनर का एक उत्तर-पूर्वी क्षेत्र, जो ब्लैक सी (काला सागर) के तट पर स्थित है, जिससे इसका नाम पड़ा है (पोंटस – ग्रीक से अनुवादित – का शाब्दिक अर्थ 'समुद्र' है, और प्राचीन काल में ब्लैक सी को यूक्सिन सी के नाम से जाना जाता था)।

[861] एन्सीरा – गालाटिया (एशिया माइनर का एक छोटा प्रांत, जो एशिया माइनर के मध्य भाग में फ्रीजिया, बिथिनिया, पोंटस और कैपाडोसिया के बीच स्थित है) का एक बहुत ही प्राचीन और समृद्ध शहर – जिसे अब अंगोरा के नाम से जाना जाता है, आज भी एशिया माइनर के सबसे महत्वपूर्ण व्यापारिक केंद्रों में से एक बना हुआ है। संत ग्रेगरी और उनके पदच्युत होने के विरुद्ध अंकीरा परिषद 375 में हुई।

[862] 379 में,

[863] अंतियोकिया की परिषद 379 में आयोजित की गई थी।

जा रहा था। शांति और आस्था को बनाए रखने के लिए संत ग्रेगरी को चुना गया था। इस यात्रा पर निकलने से पहले, उन्होंने अपनी बड़ी बहन, धन्य मक्रिना[864] से मुलाकात की। उनके निधन के बाद, उन्होंने अंकोइरा की परिषद में सौंजे गए कार्य को अरब में सफलतापूर्वक पूरा किया; लेकिन यरूशलेम में, जहाँ उन्होंने श्रद्धा और आनंद के साथ पवित्र स्थलों का दौरा किया, वे उन सभी कार्यों को पूरा नहीं कर सके जो उन्हें सौंपे गए थे, और उन्होंने दुख के साथ लिखा कि वहाँ भी लोगों के दिलों में पापों और गलतियों को मजबूत समर्थन मिला। इस बीच, संत ग्रेगरी की अनुपस्थिति में, उनके धर्मप्रांत में एरियनवाद ने एक बार फिर से पैर पसार लिए थे, जिसे वे घर लौटने पर बड़ी कठिनाई से काबू करने में सफल रहे। इसी समय, उन्होंने निवासियों के अनुरोध पर इवोरा और सेबास्टे के बिशपों के चुनाव में भाग लिया, जिन्हें डर था कि मृतक बिशपों के उत्तराधिकारी विधर्मी होंगे। जब थियोडोसियस महान[865] के शासनकाल में, मसीही धर्मद्रोही मेसेडोनियस[866] के खिलाफ कॉन्स्टेंटिनोपल में दूसरा सार्वभौमिक परिषद बुलाया गया, तो निस्सा के संत ग्रेगरी वहाँ अन्य पवित्र पिताओं के साथ, धर्मपरायणता के एक रक्षक के रूप में उपस्थित थे, और उन्होंने दिव्य धर्मग्रंथ के आधार पर सत्य की शक्ति से अपने विरोधियों का खंडन और उन्हें निरस्त किया। इस परिषद में, संत ग्रेगरी के प्रयासों से, निकेन धर्मविश्वास में पवित्र आत्मा के संबंध में एक खंड जोड़ा गया, और धर्मविश्वास में नौवां, दसवां, ग्यारहवां और बारहवां खंड भी जोड़े गए। वास्तव में, निस्सा के ग्रेगरी परिषद के प्रमुख व्यक्तियों में से एक थे।

अन्य बिशपों के साथ, उन्होंने संत ग्रेगरी द थियोलोजियन की पुष्टि में भी भाग लिया और उन्हें तथा धन्य जेरोम को यूनोमियस के खिलाफ अपना प्रबंध पढ़कर सुनाया[867] । जब पादरी वर्ग के एक निश्चित हिस्से की ओर से संत ग्रेगरी द थियोलोजियन के खिलाफ एक तीव्र संघर्ष उत्पन्न हुआ, जो विधर्मी झूठी शिक्षाओं से प्रभावित थे या विधर्मियों के प्रति सहानुभूति रखते थे, जिसके परिणामस्वरूप उन्हें कॉन्स्टेंटिनोपल का सिंहासन छोड़ने के लिए मजबूर होना पड़ा, – संत ग्रेगरी ऑफ़ निस्सा ने, कई अन्य लोगों के साथ, इस शत्रुता को समाप्त करने के लिए अपनी पूरी कोशिश की; लेकिन, ऐसा करने में असमर्थ होने पर, उन्होंने विश्वास और उनके नए आह्वान पर संत ग्रेगरी द थियोलोजियन के उत्तराधिकारी, नेक्टैरियस[868] , जिन्हें कैटेकुमेन (baptism-preparation-candidates) में से चुना गया था, को सलाह दी। कॉन्स्टेंटिनोपल में अपने प्रवास के दौरान, नाइसा के संत ग्रेगरी ने दो उपदेश दिए – एक राजधानी के बिशप के रूप में संत ग्रेगरी द थियोलोजियन के चुनाव के अवसर पर, और दूसरा मेलेटियस के अंतिम संस्कार पर एक शोक-उपदेश।

दूसरे सार्वभौमिक परिषद के तुरंत बाद, धार्मिक कलह के बीच व्यवस्था बहाल करने और ऑर्थोडॉक्सी (सही विश्वास) को बनाए रखने के लिए ग्रेगरी को एक चर्च से दूसरे चर्च में जाना पड़ा, क्योंकि दूसरे सार्वभौमिक परिषद में उन्हें दो अन्य प्रमुख पादरियों के साथ, पोंटस के लिए ऑर्थोडॉक्सी के संरक्षक घोषित किया गया था। 383 में, निस्सा के संत ग्रेगरी ने कॉन्स्टेंटिनोपल की परिषद में भाग लिया, जहाँ उन्होंने पुत्र और पवित्र आत्मा की दिव्यता पर एक उपदेश दिया। 386 में, वह एक बार फिर कॉन्स्टेंटिनोपल में थे, जहाँ एक प्रसिद्ध वक्ता के रूप में, उन्हें सर्वव्यापी प्रिय सम्राज्ञी प्लासिडिा[869] की शवपेटिका पर एक प्रशंसा-भाषण देने का कार्य सौंपा गया था। 394 में, उन्होंने अरब में चर्च से संबंधित मामलों को सुलझाने के लिए कॉन्स्टेंटिनोपल में बुलाई गई एक परिषद में फिर से भाग लिया[870] ।

एक वफादार और सच्चे चरवाहे के रूप में, संत ग्रेगरी ने अपने झुंड को आस्था और धार्मिकता में उत्साहपूर्वक मजबूत किया; कभी-कभी ऐसा होता था कि वह लगातार कई दिनों तक उनके लिए उपदेश देते थे। साथ ही, वह अदालतों में दुर्भाग्यग्रस्त लोगों के वकील और रक्षक थे, और वे गरीबों के प्रति अपनी करुणा, अपने धैर्य, अपने शांतिपूर्ण स्वभाव

---

[864] उनकी मरणासन्न, धर्मी बहन के साथ संवाद का फल था संत ग्रेगरी का 'आत्मा' और 'पुनरुत्थान' पर बाद का प्रबंध।

[865] थियोडोसियस महान – रोमन सम्राट – ने 379 से 395 तक शासन किया; वह ईसाई धर्म का उत्साही संरक्षक और विधर्मियों के खिलाफ रूढ़िवाद का प्रबल समर्थक था।

[866] कॉन्स्टेंटिनोपल का दूसरा सार्वभौमिक परिषद 381 में आयोजित किया गया था।

[867] यूनोमियस – चौथी शताब्दी के उत्तरार्ध का एक संप्रदाय-प्रवर्तक, एरियनवाद का एक चरम समर्थक।

[868] संत नेक्टारीयस ने 428 से 431 तक कॉन्स्टेंटिनोपल के पैट्रिआर्केट की अध्यक्षता की। उनका पर्व दिवस चीज़ सैटरडे पर मनाया जाता है।

[869] प्लासिडिा – सम्राट थियोडोसियस महान की पत्नी, जो एक धर्मनिष्ठ ईसाई के रूप में जानी जाती थीं और अपनी ईसाई परोपकारिता के लिए प्रसिद्ध थीं। उनका पर्व दिवस ग्रीक चर्च में 14 सितंबर को मनाया जाता है।

[870] 394 का कॉन्स्टेंटिनोपल का स्थानीय परिषद, पैट्रिआर्क नेक्टैरियस के अधीन, दो बिशपों (अगापियस और बगाडियस) के बीच विवाद को सुलझाने के लिए बुलाई गई थी, जो दोनों एक ही धर्मप्रांत (बोझरा, अरब में) पर दावा कर रहे थे।

और अपनी ईमानदारी के लिए विख्यात थे। दीर्घायु प्राप्त करने के बाद, संत ग्रेगरी प्रभु में निवृत्त हुए[871] , और अपने पीछे कई ऐसे लेख छोड़ गए जो पवित्र चर्च के लिए उपयोगी और अनमोल हैं[872] ।

कॉन्टाकियन, स्वर 2:

नयसा के ग्रेगरी, कलीसिया के दैवीय शासक और ज्ञान के सम्माननीय व्यवस्थापक, अपने जाग्रत मन से स्वर्गदूतों के साथ आनन्दित होकर और दैवीय प्रकाश में प्रसन्न होकर, हम सभी के लिए अनवरत प्रार्थना करते हैं।

एक अन्य कोंटाकियन, स्वर 1:

हे पवित्र एक, अपनी आत्मा की दृष्टि से पहरा देते हुए, आप संसार में एक चौकस चरवाहे के रूप में प्रकट हुए; और अपनी बुद्धि की लाठी और अपनी गर्मजोशी भरी मध्यस्थता से, आपने भेड़ियों जैसे सभी दुष्टों को भगा दिया, और हे सर्व-ज्ञानी ग्रेगरी, झुंड को हानि से सुरक्षित रखा।

मेलटिनि के बिशप, संत डोमेटियन का स्मरणोत्सव।

10 जनवरी को स्मरण किया जाता है

[873]संत डोमेटियन का जन्म जस्टिन द यंगर के शासनकाल में[874] धार्मिक और धनी माता-पिता थियोडोर और यूडोक्सिया के यहाँ हुआ था। अपनी शिक्षा पूरी करने के बाद उन्होंने विवाह किया, लेकिन जब उनकी पत्नी शीघ्र ही निधन हो गईं, तो वे तुरंत—आध्यात्मिक ज्ञान की ओर झुकाव और ईश्वर के प्रति प्रेम के कारण—दुनिया को त्यागकर अपना जीवन तपस्या को समर्पित कर दिए। बाद में, ईश्वर की इच्छा से, तीस वर्ष की आयु में, उन्हें मेलटिनि[875] के चर्च का बिशप नियुक्त किया गया। और वे न केवल अपने झुंड के लिए एक अच्छे चरवाहे थे, बल्कि अन्य लोगों के लिए एक प्रकाशस्तंभ और सहायक भी थे, और उन्होंने सामान्य भलाई के एक पैरूकार के रूप में पूरे ग्रीक साम्राज्य को बहुत

---

[871] निसा के संत ग्रेगरी का 4वीं शताब्दी के अंत में, 394 में कॉन्स्टेंटिनोपल परिषद के तुरंत बाद निधन हो गया।

[872] निसा के संत ग्रेगरी ने लेखन की एक विशाल संपदा छोड़ी है, जिसमें वे कभी-कभी एक आध्यात्मिक वक्ता, कभी-कभी एक मतवादवादी और विधर्मों के खंडनकर्ता, कभी-कभी पवित्र धर्मग्रंथ के व्याख्याकार, और कभी-कभी नैतिकता के शिक्षक के रूप में प्रकट होते हैं। उनकी वाक्पटुता उनकी एंटिओक के मेलेटियस, बेसिल द ग्रेट, संत मक्रिना, शहीद थियोडोर टायरन के लिए अंतिम संस्कार भाषणों में, और बपतिस्मा, ईस्टर (पाँच भाषण), मसीह के स्वर्गारोहण, पेंटेकोस्ट, और प्रभु की प्रस्तुति पर उनके भाषणों में स्पष्ट रूप से झलकती है। संत ग्रेगरी के धर्मशास्त्रीय कार्यों में, सबसे उत्कृष्ट हैं: यूनोमियस के विरुद्ध बारह भाषण और धर्मोपदेश, जो इस बात का मार्गदर्शन करता है कि मूर्तिपूजकों और यहूदियों के धर्म परिवर्तन में कैसे आगे बढ़ना है और विधर्मियों का खंडन कैसे करना है। यूनामियस के विरुद्ध अपने प्रबंध में, उसकी शिक्षाओं का खंडन करते हुए, ग्रेगरी परमेश्वर के पुत्र की दिव्यता को प्रमाणित करते हैं और, आंशिक रूप से, पवित्र त्रिमूर्ति के पूरे ईसाई सिद्धांत की व्याख्या करते हैं। संत ग्रेगरी ने पवित्र त्रिमूर्ति के इस सिद्धांत का—और विशेष रूप से पवित्र आत्मा की दिव्यता का—रक्षा कई अन्य कृतियों में अपने समकालीनों की त्रुटियों के विरुद्ध की, जैसे: मेसेडोनियनों के विरुद्ध पवित्र आत्मा पर उनका प्रबंध; पुत्र और आत्मा की दिव्यता पर उनका प्रबंध; विश्वास पर सिम्प्लिसियस को उनका पत्र; इस तथ्य पर अवलालियस को उनका पत्र कि तीन देवता नहीं हैं; यूनानियों को संबोधित उनका प्रबंध; और अरिउस और सबेलियस के विरुद्ध उनका प्रबंध। इसके अलावा, संत ग्रेगरी के धर्मशास्त्रीय कार्यों में *द सिक्स डेज़* शामिल है, जिसमें उन्होंने दुनिया के बारे में उन गहन प्रश्नों को सुलझाया है, जिन्हें संत बेसिल द ग्रेट ने अपने *हेक्साएमरोन* में अनुत्तरित छोड़ दिया था; *अगेंस्ट द मनिशियंस*; 'मनुष्य की सृष्टि पर', 'अनबपतिस्मात बच्चों पर' एक ग्रंथ और 'आत्मा और पुनरुत्थान पर' एक कृति। पवित्र धर्मग्रंथ की व्याख्या करने के लिए, संत ग्रेगरी ने ध्यान के रूप में कई कृतियाँ लिखीं: उपदेशक की पुस्तक के पहले 3 अध्यायों पर 8 प्रवचन, उपदेशों का गीत पर 15 प्रवचन, भजनों के शीर्षकों पर 2 मनन और छठे भजन पर एक प्रवचन, प्रभु की प्रार्थना पर 5 प्रवचन, और आठ परमसुखों पर 8 प्रवचन। उनके नैतिक और तपस्या संबंधी कार्यों में शामिल हैं: ईसाई पूर्णता पर तीन निबंध, ईश्वर के अनुसार जीवन के उद्देश्य पर, सच्ची तपस्या पर, कुँवारीपन पर, गरीबों के प्रति प्रेम पर, और अन्य। इसके अलावा, संत ग्रेगरी के 28 तक पत्र बचे हुए हैं।

[873] यह फारस के राजा खुसरू द्वितीय को संदर्भित करता है, जिन्होंने 590 से 628 तक शासन किया।

[874] जस्टिन द्वितीय, या युवा, एक बीजान्टिन सम्राट थे जिन्होंने 565 से 578 तक शासन किया।

[875] मेलटिनि, जिसे मेलटिने या मेलटिा के नाम से भी जाना जाता था, लघु आर्मेनिया की राजधानी थी।

लाभ पहुँचाया। संत को राजा मॉरसियिस[876] द्वारा कई मौकों पर सार्वजनकि प्रशासन के मामलों पर फारस[877] भेजा गया; उन्होंने फारस के राजा खुसरू के समक्ष एक मध्यस्थ के रूप में कार्य कयिा और यूनानयिों और फारसयिों के बीच एक शांतसिंधकि समापन में सुवधिा प्रदान की। उन्होंने एक नश्चिति राजकुमार बराम, जसिने खुसरू के खलिाफ वद्रिोह कर दयिा था और ईरान में शाही सहिासन पर कब्जा करने का दुस्साहस कयिा था, को उसकी शक्तसि वंचति कर दयिा और उसे ग्रीकों का एक सामंत बना दयिा। इसके माध्यम से, डोमेटयिन राजा मॉरसि के एक प्रयि मत्रि बन गए। राजा ने उन्हें बड़ी मात्रा में सोना और संपत्तयिाँ प्रदान कीं, लेकनि उन्होंने यह सब गरीबों की देखभाल के लिए पवत्रि चर्चों और अनाथालयों में बाँट दयिा। साम्राज्यीय शहर कॉन्स्टेंटनिोपल में अपने आगमन पर, वे जल्द ही स्वर्गीय राजा[878] के पास शांतपिूर्वक चल बसे। उनके पवत्रि शरीर को सम्राट और उनकी परषिद की उपस्थतिमिें, पुरोहतिों की एक बड़ी सभा के साथ, बड़े सम्मान के साथ दफनाया गया, और फरि उसे उनके गृह नगर मेलटिनि ले जाया गया। संत डोमेटयिन ने अपने जीवनकाल में और अपने नधिन के बाद भी हमारे ईश्वर मसीह की महमिा के लिए कई चमत्कार कए।

आदरणीय मार्शयिन का जीवन

10 जनवरी को स्मरण कयिा जाता है

मार्शयिन और पुलकेरयिा के शासनकाल में, एक अत्यंत प्रशंसनीय व्यक्तधिन्य मार्शयिन, जो प्राचीन रोम[879] के मूल नविासी थे, अपने गुणों के लिए प्रसद्धि हुए; उनके माता-पतिा धार्मकि, कुलीन और धनी थे। जब वे प्राचीन रोम से नए शहर में चले गए, तो वे अपने पुत्र मार्शयिन को अपने साथ ले गए; उसने अपने अध्ययन में लगन से मन लगाया और उसे अच्छे आचरण में पाला गया। चूंकवि ह *'प्रभु के आंगनों में नविास करना'*[880] (भजन संहति 83:11) पसंद करता था, और वह चर्च की सेवाओं में कभी भी शामलि होने से चूकता नहीं था, इसलिए उस समय के पैट्रआर्क को वह बहुत पसंद आया और उन्होंने उसे अपना क्लेरकि[881] बना लयिा। थोड़े ही समय बाद, यह देखकर कयिद्यपवि ह आयु में जवान था, परन्तु ज्ञान और जीवन की पवत्रिता में परपिक्व था, क्योंकि *'ज्ञान मनुष्यों का सफेद सरि है, और नरि्दोष जीवन वृद्धावस्था की आयु है'* (ज्ञान 4:9)[882] , उन्होंने उसे पुरोहति के पद के लिए योग्य समझा, और बाद में उसे महान चर्च[883] का व्यवस्थापक[884] नयिुक्त कयिा। जब उनके माता-पतिा इस संसार से चल बसे, तो उन्होंने धन्य मार्सयिन को कई संपत्तयिाँ छोड़ दीं, क्योंकवि ह उनका एकमात्र पुत्र था; और इस प्रकार उनके माता-पतिा की सारी संपत्तवि रिासत में केवल उसके ही हाथों में आ गई। उन्होंने इस धन को सांसारकि जरूरतों पर खर्च नहीं कयिा, बल्कइि से पूरी तरह से ईश्वर को समर्पति

---

[876] मौरसियिस – एक बीजान्टनि सम्राट जसिने 582 से 602 तक शासन कयिा।

[877] यह देश एशयिा में, फारस की खाड़ी के पास स्थति है। मूल रूप से, यह देश लगातार वभिन्नि पड़ोसी लोगों के अधीन था, लेकनि ससानदि वंश (226 ईस्वी से 7वीं शताब्दी तक) के उत्थान के साथ, फारसी लोग राजनीतकि रूप से स्वतंत्र हो गए और उन्होंने अक्सर ग्रीको-रोमन साम्राज्य के खलिाफ युद्ध छेड़ा। सेंट डोमेटयिन की गतविधियिाँ भी इसी अवधकिी हैं।

[878] संत डोमेटयिन का 601 में नधिन हो गया।

[879] यह ग्रीको-रोमन साम्राज्य की राजधानी और आज के इटली राज्य को संदर्भति करता है। इस रोम को 'प्राचीन' कहा जाता है - कॉन्स्टेंटनिोपल के वपिरीत, जसिे सेंट कॉन्स्टेंटनि द ग्रेट ने अपनी राजधानी बनाया था, और इसी कारण से वह शहर बाद में 'नए' रोम के नाम से जाना जाने लगा।

[880] अर्थात्, वह ईश्वर के घर जाने और वहाँ समय बतिाने का शौकीन था।

[881] 'क्लेरकि' शब्द 'क्लेरोस' शब्द से लयिा गया है, जसिका ग्रीक में अर्थ 'वारसि (ईश्वर का)' है। यही कारण है कि, अनादकिाल से, चर्च पदानुक्रम को, चर्च सेवा में वभिन्नि नम्नि पदों (भजन-गायक, पाठक, आदि) पर रहने वालों के साथ, इसी प्रकार संदर्भति कयिा जाता था, क्योंकि ये सभी वे लोग हैं जन्होंने स्वयं को ईश्वर की वशिष और प्रत्यक्ष सेवा के लिए समर्पति कयिा है।

[882] इस अभव्यिक्तकि ा अर्थ यह है कि किसी व्यक्तकि ी वास्तवकि (आध्यात्मकि) आयु जीए गए वर्षों की संख्या से नहीं, बल्कि जीवन में प्राप्त की गई बुद्धऔिर नैतकि पवत्रिता की डग्रिी से नर्धिारति होती है। इन दोनों ही मामलों में पूर्णता की उच्चतम डग्रिी युवावस्था में भी प्राप्त की जा सकती है; इसके वपिरीत, वृद्धावस्था के सफेद बाल कसिी व्यक्तमिें बचकानेपन और अत्यधकि नैतकि अपरपिक्वता के साथ भी मौजूद हो सकते हैं।

[883] अर्थात्, कॉन्स्टेंटनिोपल में सेंट सोफयिा का कैथेड्रल।

[884] चर्च की संपत्तमिें वृद्धकि े साथ चौथी शताब्दी में चर्च में व्यवस्थापक का पद उत्पन्न हुआ। चौथा सार्वभौमकि परषिद, अपनी 26वीं कैनन में, इसे लंबे समय से अस्तत्वि में होने का उल्लेख करता है। परचिारक के कर्तव्यों में बशिप की देखरेख में चर्च की संपत्ति, वशिष रूप से अचल संपत्ति, और चर्च के मामलों का प्रबंधन शामलि था। पुजारी, डकिन, और यहां तक कि बनिा पदानुक्रम वाले पुरोहतिों को भी इस पद के लिए चुना जाता था, बशर्ते वे अपनी ईमानदारी और क्षमता के लिए जाने जाते हों।

कर दिया – गरीबों के लिए पुण्य कार्य करते हुए, प्रभु के जीर्ण-शीर्ण गिरजाघरों का जीर्णोद्धार करते हुए, और नए गिरजाघर बनाते व सजाते हुए। उन्होंने भारी खर्च पर एक नया और सुंदर गिरजाघर बनाया, जो पवित्र शहीद अनास्तासिया को समर्पित था। जब उनके एक मित्र ने इस चर्च के निर्माण और सजावट पर सोने के इतने भव्य खर्च पर आश्चर्य व्यक्त किया, तो संत ने उससे कहा:

'यदि तुम्हारी एक बेटी होती और तुम उसे सबसे ऊँचे पद के किसी पुरुष से सगाई करना चाहते, तो क्या तुम उसे कीमती वस्त्रों से सजाने के लिए बहुत सारा सोना खर्च नहीं करते?' 'अब, मसीह की सबसे सुंदर वधू के लिए एक चर्च बनाने का संकल्प लेकर, जो उस से सगाईशुदा है जो *"मानव पुत्रों से अधिक सुंदर" है* (भजन संहिता 44:3)[885] और जिसने उनके लिए अपना रक्त बहाया, क्या मैं अपनी संपत्ति खर्च करने में कंजूसी करूंगा, या क्या मैं ऐसी सजावट प्रदान करने के लिए और भी अधिक सावधानी नहीं बरतूंगा?'

धन्य व्यक्ति पवित्र गिरजाघरों की भव्यता के लिए इतने उदार और इच्छुक परोपकारी थे; फिर भी अपने लिए वे मितव्ययी और कंजूस थे – उन्होंने न केवल अपने वस्त्रों की सजावट को पूरी तरह से अस्वीकार कर दिया और खुद को मोटे कपड़ों से ढक लिया, बल्कि वे कभी-कभी इस मोटे और आवश्यक कपड़े को भी उतारकर मांगने वालों को दे देते थे, जैसा कि निम्नलिखित से देखा जा सकता है। जब संत अनास्तासिया का चर्च बनकर हर वैभव से सुसज्जित हो गया, तो इसका अभिषेक ठीक इसी शहीद की स्मृति के दिन, 22 दिसंबर को हुआ, जिस दिन उन्होंने एक बार मसीह के लिए शहीद की मृत्यु भोगी थी। परम पावन पैट्रिआर्क जेनाडियस ने, संपूर्ण पुरोहित वर्ग के साथ, और ज़ार ने, संपूर्ण सर्किलाइट और लोगों के साथ, इस चर्च तक एक भव्य जुलूस निकाला, जिसमें उन्होंने पवित्र शहीद अनास्तासिया के अवशेषों को छोटे, जर्जर चर्च से मार्शियन द्वारा निर्मित नए, बड़े चर्च में स्थानांतरित किया। जब पूजनीय मार्शियन इस जुलूस के दौरान अन्य पुरोहितों के साथ, संत के अवशेषों को ले जाने वाले रथ के सामने, एक फेलोन[886] पहनकर चल रहे थे, तो एक गरीब व्यक्ति उनके पास आया और भीख माँगी। वह स्वयं, जिसके पास एक वस्त्र के सिवा कुछ नहीं था (अपने पूरे जीवन में उसके पास कभी दो जोड़ी कपड़े भी नहीं थे), और भिखारी को खाली हाथ वापस नहीं भेजना चाहकर, चुपचाप भीड़ से हटकर एक सुनसान जगह पर चला गया; अपना वस्त्र उतारकर, उन्होंने वह भिखारी को दे दिया, और अपनी नग्न त्वचा पर केवल एक कमीज़ पहनकर रह गए, इस प्रकार प्रभु की आज्ञा का पालन किया: *'जो तुमसे माँगता है, उसे दो'* (मत्ती 5:42)। जुलूस में अपनी जगह लौटने पर, वह पहले की तरह ही बुजुर्ग पादरियों के बीच चल रहे थे, जबकि किसी को भी इस बात का पता नहीं था कि उन्होंने क्या किया था। जब सभी चर्च में प्रवेश कर चुके थे, अभिषेक कर चुके थे और पवित्र शहीद अनास्तासिया के अवशेषों को सम्मानपूर्वक रख चुके थे, तो परम पावन पैट्रिआर्क ने आज्ञा दी कि धन्य मार्शियन उनके साथ मिलकर दैवीय अनुष्ठान का आयोजन करें। जब हाथ धोने का समय आया, तो मार्शियन ने अपने फेलोनियन से अपना शरीर ढक लिया, और यह सुनिश्चित करने के लिए चारों ओर देखा कि कोई यह न देखे कि वह नग्न है। उपस्थित पुरोहितों और डिकिनों ने, उसे देखते हुए, उसके फेलोनियन के नीचे एक अद्भुत वस्त्र देखा, जो सोने से जगमगा रहा था, और एक राजा के कीमती बैंगनी चोगे की तरह था। यह देखकर कुछ लोग चकित हुए, जबकि अन्य लोग इस बात से नाराज़ थे, और मन ही मन सोच रहे थे कि एक पुरोहित के लिए इस तरह के परिधान में घूमना और लिटिर्जी का अनुष्ठान करना उचित नहीं है। विशेष रूप से, सभी ने उस अद्भुत परिधान को देखा, जिससे परमेश्वर ने अपने सेवक के नग्न शरीर को ढक दिया था, जब वह परम पवित्र और जीवन-दायक रहस्यों को ग्रहण करने के लिए आगे आया। कुछ पुरोहितों ने यह बात परम पावन पैट्रिआर्क जेनाडियस को बताई।

पैट्रिआर्क ने कहा:

'मैंने भी वही देखा जो आप बता रहे हैं।'

सेवा के अंत में, उन्होंने पूजनीय मार्शियन को धर्मशाला में बुलाया[887] और उन्हें डाँटना शुरू किया, कहते हुए:

---

[885] अर्थात्, मनुष्यों के सभी पुत्रों में सबसे उत्कृष्ट मसीह को।

[886] प्राचीन काल में, 'फेलोनिया' एक लंबा, बिना आस्तीन वाला वस्त्र था जो शरीर को चारों ओर से ढकता था, जो मसीह और प्रेरितों (2 तीमुथियुस 4:13) द्वारा पहने जाने वाले वस्त्र के समान था, और इसीलिए चर्च ने इसे पवित्र वेषभूषाओं में शामिल किया। हालाँकि, यहाँ रूस में, धार्मिक अनुष्ठानों के दौरान सुविधा के लिए, इसके सामने वाले हिस्से को काट दिया जाता है, जबकि ग्रीस में यह आज भी अपने प्राचीन रूप में बना हुआ है, और इस प्रकार संत मार्कियन इसे पूरी तरह से अपने शरीर के नग्न भाग पर तब तक ओढ़े रह सकते थे जब तक कि उन्हें सेवा के दौरान अपने हाथों का उपयोग न करना पड़ता।

[887] उस कमरे में जहाँ अतिरिक्त पवित्र पात्र और पूजा के वस्त्र रखे जाते थे।

'भाई, आप क्या कर रहे हैं – सामान्य से परे के वस्त्रों से स्वयं को सजा रहे हैं? क्या आपके लिए ऐसी पोशाक में लिटर्जी का अनुष्ठान करना उचित है, जो एक पुरोहित की तुलना में एक राजा के लिए अधिक उपयुक्त है?'

रेवरेंड नम्रतापूर्वक उनके चरणों में गिर पड़े, कहते हुए:

'मुझे क्षमा करें, महामहिम – मैंने वह नहीं किया है जैसा आप कह रहे हैं। मैं अपने युवा दिनों से ही सुंदर और कीमती वस्त्र पहनने का आदी नहीं रहा; क्या मैं अब ऐसा करना शुरू करूँ?'

'हमने आप सभी को शाही वस्त्रों में देखा है—आप इसे क्यों नकार रहे हैं?' पैट्रिआर्क ने कहा, और आदेश दिया कि उसे खड़ा होने में मदद की जाए।

जब उन्होंने उसका चोगा खोला, तो उन्होंने उसका नग्न शरीर देखा और हैरान रह गए। पैट्रिआर्क के सवालों के जवाब में, उस धन्य व्यक्ति को अपनी इच्छा के विरुद्ध, पूरा सच बताने के लिए मजबूर होना पड़ा: कि कैसे, मसीह के लिए, उसने अपना आखिरी वस्त्र भी एक भिखारी को दे दिया था। जो भी यह सुनकर और उसके फटेहाल वस्त्रों के नीचे राजसी पोशाक देखकर उसे देखने आए, उन्होंने उस ईश्वर की स्तुति की, जो अपने प्रेम करने वालों पर ऐसी गूढ़ कृपा प्रदान करते हैं। उस समय से, दया से परिपूर्ण उसका जीवन, कई लोगों के बीच प्रसिद्ध हो गया।

उस धर्मनिष्ठ पिता ने स्वेच्छा से गरीबी अपनाई और सांसारिक संपत्ति को इस हद तक नज़रअंदाज़ किया कि एक बार, बारिश में कहीं चलने के कारण उनके कपड़े गीले हो गए, तो वे अपने कमरे में लौटे, अपने पीछे दरवाज़ा बंद किया, कुछ कोयले जलाए और उन गीले कपड़ों को सुखाने लगे, क्योंकि उनके पास रोज़मर्रा के इस्तेमाल के लिए और कोई कपड़े नहीं थे। उस समय, पैट्रिआर्क ने कुछ मामलों के लिए अपने व्यवस्थापक को बुलाया। जब दूत मार्शियन को बुलाने गए, तो उन्होंने उसका कमरा बंद पाया और बाहर खड़े होकर उसे तुरंत पैट्रिआर्क के पास आने के लिए पुकारा। उसने आने का वादा किया लेकिन नहीं आया, क्योंकि उसके कपड़े अभी तक सूखे नहीं थे। उनमें से एक ने, एक दरार से झाँककर देखा कि वह अपनी चादर को अंगारों पर सुखा रहा था, और उसने अपने साथियों को बताया। लौटने पर, उन्होंने यह बात पादरी को बताई।

'इस पर आश्चर्य न करें,' महाधर्माध्यक्ष ने कहा, 'क्योंकि मार्शियन ने अपने युवा दिनों से ही स्वेच्छा से गरीबी और नम्रता का अभ्यास किया है, और स्वयं को पूरी तरह से एकमात्र ईश्वर को समर्पित कर दिया है; वह वास्तव में प्रेरित के वचनों को पूरा कर रहा है: "भोजन और वस्त्र होने पर, हम इन्हीं से संतुष्ट रहें" (1 तीमुथियुस 6:8)।

जिन्होंने यह सुना, उन्होंने ऐसे परमेश्वर की स्तुति की, जिनके ऐसे सेवक हैं। ऐसे सदाचारी जीवन के लिए, परमेश्वर ने उसे चमत्कार करने का वरदान दिया – दुष्ट आत्माओं को भगाने और बीमारों को चंगा करने का। एक बार, जब संत अनास्तासिया के चर्च में एक पर्व मनाया जा रहा था और एक बड़ी भीड़ जमा हो गई थी, एक गर्भवती महिला चर्च के अंदर भीड़ के कारण छत पर चढ़ गई, लेकिन गलती से वहां से जमीन पर गिरकर उसकी मृत्यु हो गई। संत मार्शियन, इस उत्सव को रोने-धोने से मुरझाते हुए नहीं देख सके, उन्होंने अपने हाथ उठाकर परमेश्वर से भक्तिपूर्वक प्रार्थना की। और वह महिला अचानक जीवित हो उठी और पूरी तरह से स्वस्थ होकर अपने पैरों पर खड़ी हो गई; उसके गर्भ में पल रहा बच्चा भी जीवित पाया गया; और लोगों ने इस अति महिमामय चमत्कार को देखकर आश्चर्यचकित हो गए।

एक बार कॉन्स्टेंटिनोपल में एक बड़ी आग लग गई, और जब लपटें पहले ही संत अनास्तासिया के चर्च को घेर चुकी थीं, तो पूजनीय मार्शियन चर्च की छत पर चढ़े और स्वर्ग की ओर अपने हाथ उठाकर प्रार्थना की। तुरंत आग पीछे हट गई और अपनी बेकाबू लपटों को रोक लिया; और संत की प्रार्थनाओं से, मानो प्रचंड जल से, यह पूरी तरह से बुझ गई, और चर्च की इमारत को थोड़ा भी नुकसान नहीं हुआ।

आदरणीय मार्शियन ने समुद्र के किनारे उस स्थान पर, जहाँ कभी उनकी सम्मान में एक जीर्ण-शीर्ण गिरिजाघर हुआ करता था, एक अन्य शहीद, संत आइरीन को समर्पित एक गिरिजाघर का निर्माण किया, और उन्होंने पास ही स्थित संत थियोडोर और संत इसिडोर के अन्य गिरिजाघरों का भी नवीनीकरण किया, उन्हें उनकी सभी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए आवश्यक सभी चीजें प्रदान कीं। परिपक्व वृद्धावस्था प्राप्त करने के बाद, अपने धन्य निधन से पहले, वह रात में सड़कों पर घूमता था – और जहाँ भी उसे कोई मृत पड़ा मिलता, वह उसे धोता और कपड़े पहनाता था। ऐसा करते हुए, वह मृतक से कहता था:

'उठो, भाई, आओ चूमें!'

मृत व्यक्ति, संत के वचन पर उठकर, उन्हें होठों पर चूमता और फिर से सो जाता। संत ने कई वेश्याओं को बचाया, उन्हें—कभी उपदेश देकर, तो कभी उदार सहायता से—एक पति चुनने और कानून के अनुसार जीने के लिए मनाया; और

जो गरीबी के कारण इस तरह के जीवन में आ गई थीं, उन्हें उन्होंने पवित्र जीवन की ओर मोड़ा, तथा उपर्युक्त पारिवारिक संपत्तियों से गुप्त रूप से उनका भरण-पोषण किया। ईश्वर ने इस धन्य पुरुष को अपने लिए चुन लिया; स्वर्गदूतों ने उसकी स्तुति की, पवित्र पिताओं ने उसका सम्मान किया, राजाओं ने उसका आदर किया, लोगों ने उस पर आश्चर्य किया और उसके द्वारा ईश्वर की महिमा की; जबकि राक्षसों ने उससे भयभीत होकर उससे दूर रहना पसंद किया। संत मार्शियन, संत आइरीन को समर्पित चर्च के निर्माण और अभिषेक से पहले ही देहांत को प्राप्त हो गए। अपनी मृत्यु के समय, उन्होंने कहा:

'हे प्रभु! मैं इन दोनों को तेरे हाथों में सौंपता हूँ: वह आत्मा जिसे तूने स्वयं बनाया है, और वह गिरिजाघर जिसे मैंने तेरी इच्छा के अनुसार बनाया है।'

संत मार्शियन के शरीर को सम्मान के साथ संत जॉन द फॉरेरनर के मठ में, जिसे दानियल का मठ भी कहा जाता है, पवित्र शहीद मोकियस के चर्च के पास दफनाया गया था। जहाँ तक सेंट आइरीन चर्च के निर्माण का सवाल है, इसके निर्माण की देखरेख परम पूजनीय के निधन के बाद धर्मपरायण सम्राज्ञी वेरिना, सम्राट लियो द ग्रेट[888] की पत्नी ने की, जो मार्सियन और पुलकेरिया के बाद सिंहासन पर बैठीं; उसने इसे पूरा किया, छत को सोने से सजाया और चर्च के अंदरूनी हिस्से को हर संभव भव्यता से सुशोभित किया, परम पूजनीय मार्शियन की स्मृति में और स्वयं ईश्वर मसीह के सम्मान में, जिनका महिमा हो पिता और पवित्र आत्मा के साथ युगानुयुग, आमीन।

कोमेल के पूजनीय पॉल की स्मृति

10 जनवरी को स्मरण किया जाता है

आदरणीय पॉल का जन्म और पालन-पोषण मास्को की गौरवशाली राजधानी में हुआ था[889] । उनके माता-पिता उन्हें शादी कराना चाहते थे, लेकिन संत पॉल की यह इच्छा नहीं थी और, बिना कुछ लिए चुपके से अपने माता-पिता का घर छोड़कर, वे प्रिलुक नामक स्थान पर चले गए, जो आदरणीय सेरजियस, रडोन्येज के चमत्कार करने वाले संत द्वारा स्थापित जीवन-दायक त्रिमूर्ति मठ[890] के क्षेत्र में स्थित था। यहाँ, प्रभु परमेश्वर और हमारे उद्धारकर्ता यीशु मसीह के जन्म को समर्पित मठ में[891] , इस धन्य युवक ने अपना संन्यासी मुंडन प्राप्त किया। वहाँ थोड़ी देर रहने के बाद, संत पॉल आदरणीय सर्गियस के मठ में चले गए, जहाँ वे पंद्रह वर्षों तक महान एल्डर के आध्यात्मिक मार्गदर्शन में रहे, एक तपस्वी की कुटिया में रहते हुए[892] । इसके बाद, संत पॉल ने परम पूज्य सेरगियस से रेगिस्तान में जाकर पूर्ण एकांत में रहने और एक स्थान से दूसरे स्थान पर भटकने का आशीर्वाद माँगा।

तब उस धन्य तपस्वी ने व्हाइट लेक के लिए प्रस्थान किया, ताकि वह परम पवित्र माता ऑफ गॉड के डॉर्मिशन मठ में आदरणीय सिरिल से मिल सकें, जिसकी स्थापना उन्होंने की थी[893] ; संत पॉल कुछ समय के लिए आदरणीय सिरिल के साथ एक एकांत कुटिया में रहे और फिर एक बार फिर से रेगिस्तान में, ओड्रोल नदी के पास, चले गए। वहाँ कुछ समय

---

888 लियो प्रथम महान का 474 में निधन हुआ। चूंकि उनकी जीवनी के अनुसार, वेरिना ने अपने पति के जीवित रहते हुए चर्च का निर्माण पूरा किया था, और चूंकि सेंट मार्कियन की प्रार्थनाओं से आग बुझने की उपरोक्त घटना 471 की है, इसलिए संत की मृत्यु को 471 और 474 के बीच माना जाना चाहिए।

889 लगभग 1367

890 अब ट्रिनिटी-सर्गीयस लाव्रा।

891 उग्लिच जिले के प्रिलुका में स्थित मसीह के जन्म का मठ, बाद के समय में भी पवित्र ट्रिनिटी-सर्गेयस लाव्रा के अधीन सूचीबद्ध था।

892 आदरणीय पॉल ने ट्रिनिटी-सर्गेयस लाव्रा में रसोई और भोजनशाला में अपना नवोदित जीवन व्यतीत किया। जब आदरणीय सर्गेयस ने संत पॉल को एक तपस्वी के रूप में जीवन के लिए आशीर्वाद दिया, तो उन्होंने उन्हें एक जीवन-दायक क्रॉस भेंट किया, जिसे आज भी संत पॉल के ओब्नोरस्क मठ में रखा गया है।

893 आदरणीय सिरिल (जिनका पर्व 9 जून को मनाया जाता है) द्वारा स्थापित किरिलोव-बेलोज़ेर्स्की मठ, नोवगोरोड गवर्नरेट के किरिलोव ज़िला शहर में, नोवगोरोड से 602 वर्स्ट की दूरी पर स्थित है; संत सिरिल और पॉल के समय में, उस क्षेत्र में निकटतम शहर – बेलोज़ेर्स्क – मठ से 37 वर्स्ट दूर था।

तक एकांतवास करने के बाद, परम पूज्य पॉल गालीच क्षेत्र में, परम पवित्र ईश्वर माता के महान मरुभूमि[894] आए और एक संन्यासी की कुटिया में बस गए; हालाँकि, मरुभूमि के मठाधीश द्वारा उन्हें वहाँ से निकाल दिया गया और वे वोलगा नदी के पर स्थित गोरॉडेट्स चले गए, जहाँ वे फ्योदोरोव्स्की मठ[895] में रहे; फिर उन्होंने विभिन्न सुनसान स्थानों में एकांत में मठवासी तपस्या में स्वयं को समर्पित किया, जब तक कि वे कोमेल वन[896] नहीं पहुँचे।

यहाँ, ग्र्याज़ोवेट्सा धारा के किनारे, आदरणीय एक बड़े चूने के पेड़ की खोह में बस गए; पवित्र तपस्वी इस खोह में तीन साल तक रहे, दिन-रात प्रार्थना और उपवास में बिताते हुए, आँसुओं से ईश्वर की सेवा करते हुए। बाद में, संत पॉल उस स्थान पर चले गए जहाँ अब उनका पूजनीय आवास स्थित है[897] ; वहाँ आदरणीय संत अपने जीवन के अंत तक रहे, और उन्होंने कठोर उपवास का पालन किया। उनका आहार रोटी और पानी था, और वह भी बहुत ही कम मात्रा में; वे यह भोजन शनिवार और रविवार को ग्रहण करते थे। बाकी के दिनों में, संत पॉल कुछ भी नहीं खाते थे, और अपना सारा समय अपनी एकांत कुटिया में प्रार्थनापूर्ण स्तुति में बिताते थे। धन्य तपस्वी ने मसीह के लिए बड़ी कठिनाइयों और राक्षसों के हाथों कई यातनाओं को सहन किया, और उन्होंने यह सब ईश्वर की कृपा की मदद से सहा।

एक अवसर पर, दुष्टात्माओं ने पूज्य की कुटिया पर आक्रमण किया और उसे नष्ट करने का इरादा किया, लेकिन धन्य पॉल उनकी चालाकियों से विचलित नहीं हुए और मसीह के क्रूस की शक्ति से शैतान को शर्मिंदा कर दिया। एक अन्य अवसर पर, चोरों ने संत पर हमला किया, उन्हें बेरहमी से पीटा और उनकी कुटिया लूटने के बाद, तपस्वी को हाथ-पैरों में बंधा हुआ छोड़ दिया। पूजनीय कई दिनों तक अपनी कुटिया में पड़े रहे, जब तक कि दैवीय प्रेरणा से, कुछ दयालु लोग रेगिस्तान में नहीं आए और धन्य तपस्वी को खोल दिया। परम पूज्य ने मसीह के नाम के लिए यह सब बिना किसी शिकायत के सहन किया। जंगल के पक्षी बड़ी संख्या में तपस्वी की कुटिया में झुंड में आने लगे; जंगली, रक्तपिपासु जानवर भी वहाँ आते थे, और वे संत की प्रार्थनाओं से वश में हो गए और धन्य पिता के हर आदेश का पालन करते थे।

कई मौकों पर, संत पॉल ने ठीक उसी जगह पर गिरिजाघर की घंटियाँ बजती सुनी जहाँ उन्होंने अपना निवास बनाया था, और उन्होंने ठीक उसी स्थान पर एक प्रकाश देखा जहाँ बाद में परम पवित्र त्रिमूर्ति को समर्पित एक चर्च का निर्माण किया गया था। अपने शिष्य एलेक्सियस के साथ, पूजनीय संत मास्को के लिए रवाना हुए और इस दिव्य प्रकट होने के बारे में मेट्रोपॉलिटन सेंट फोटियस को बताया। संत ने पूजनीय संत को उनके आश्रम में एक चर्च बनाने का आशीर्वाद दिया, एलेक्सियस को एक प्रेस्बिटर के रूप में नियुक्त किया और चर्च के निर्माण के लिए उदार दान देने के बाद, संत को शांति से विदा कर दिया। कोमेल रेगिस्तान लौटने पर, रेवरेंड फादर ने जीवन-दायक त्रिमूर्ति को समर्पित एक चर्च[898] का निर्माण किया, भिक्षुओं का एक समुदाय इकट्ठा किया और एक मठ स्थापित किया, तथा उपरोक्त हायरोमोंक अलेक्सियस को इसका मठाधीश नियुक्त किया। जहाँ तक हमारे धन्य पिता पॉल की बात है, वे अपनी एकांत

---

[894] चुख्लोम्स्की अब्राहम मठ (ग्रेट डेजर्ट्स), जो परमेश्वर की परम पवित्र माता के कमरबंद को समर्पित था, कोस्त्रोमा गवर्नरेट के गालिच जिले में स्थित था। इसकी स्थापना गालिच के संत अब्राहम ने की थी। इसके स्थापना के तुरंत बाद, संत अब्राहम इस मठ को छोड़कर 13 वर्स्ट दूर वोच मठ की स्थापना करने चले गए, जहाँ उनका 1375 में निधन हो गया। उनका पर्व 20 जुलाई को मनाया जाता है।

[895] अब बालाखना जिले, निज़नी नोवगोरोड गवर्नरेट में, वोल्गा नदी के बाएँ किनारे पर स्थित गोरोडेट्स गाँव (पूर्व में नगर) के पास एक अव्यवहार्य मठ है; इसकी स्थापना 1164 में ग्रैंड प्रिंस जॉर्जी व्सेवोल्दोविच ने की थी। मठ में वह कोठरी है जिसमें अलेक्ज़ेंडर नेवस्की का 4 नवंबर 1263 को होर्ड से लौटते समय निधन हुआ था।

[896] ओब्नोरा वोल्स्ट में कोमेल वन वोल्गोडा क्षेत्र की पूरी दक्षिणी पट्टी में फैला हुआ था, जिसे ओब्नोरा, नूरमा और कोमेला नदियाँ और उनकी कई सहायक नदियाँ पार करती थीं।

[897] वोलोग्दा प्रांत के जिला शहर ग्र्याज़ोवेट्स से पंद्रह वर्स्ट दूर, नूरमा नदी के किनारे, जो ओब्नोरा की एक सहायक नदी है, और जो वोलोग्दा और यारोस्लाव प्रांतों से होकर कोस्त्रोमा नदी में मिल जाती है।

[898] चर्च का निर्माण करने के बाद, परम पूज्य पॉल ने संत मेट्रोपॉलिटन फोतिउस को एक पत्र लिखा, जिसमें उन्होंने चर्च के अभिषेक के लिए एक एंटीमेंशियन तथा मठ स्थापित करने और मठवासी समुदाय को इकट्ठा करने के लिए आशीर्वाद का अनुरोध किया। संत ने उन्हें एंटीमेंशियन के साथ एक पत्र भेजा जिसमें उन्होंने मठ की स्थापना का आशीर्वाद दिया और परम पूज्य तथा मठवासी समुदाय को निर्देश दिए। संत लिखते हैं, 'जब तुम मेरे साथ थे, क्या तुम्हें याद है, मेरे बेटे, कि तुमने स्वयं विस्तार से बताया था कि एक आध्यात्मिक मठाधीश को कैसा होना चाहिए? उसे सभी के लिए एक आदर्श होना चाहिए: प्रलय के दिन, उसे अपने सुपुर्द की गई आत्माओं का हिसाब देना होगा। मैं इसी विषय पर लिख रहा हूँ।' भाइयों को अपने निर्देशों में, संत उनसे अपने मठ के संकल्पों का दृढ़ता और अटूटता से पालन करने का आग्रह करते हैं।

कुटयिा में रहना जारी रखे रहे, और केवल शनविार और रवविार को अपने शष्यिों को उपदेश देने के लएि मठ आते थे; वे प्रभु की आज्ञाओं और पवत्रि पतिाओं के नयिमों के अनुसार जीवन यापन करते थे[899] ।

उस समय, टाटारों ने कोस्त्रोमा शहर पर हमला कयिा, उसे जला दयिा और आसपास के बस्तयिों को तबाह कर दयिा; तब कई ऑर्थोडॉक्स ईसाइयों का अवशि्वासयिों द्वारा वध कर दयिा गया, जबकि अन्य को उनकी पत्नयिों और बच्चों के साथ कैद करके दासत्व में ले जाया गया[900] । थोड़ी ही देर बाद, पूजनीय पॉल ने इस क्षणकि जीवन के श्रमों से प्रभु के पास होकर शाश्वत, अकथनीय वशि्राम प्राप्त कयिा, और अपने शष्यिों के बीच अपनी एक उज्ज्वल स्मृति छोड़ गए। पूजनीय संत का नधिन 10 जनवरी 1429 को हुआ; वे 112 वर्ष तक जीवति रहे[901] ।

ट्रोपारयिन, स्वर 1:

अपने युवा काल से ही दवि्य प्रेम से प्रज्वलति, आदरणीय पॉल, आपने संसार की सभी सुंदरताओं से घृणा की, आप केवल मसीह से प्रेम करते थे और इसी कारण से आपने भीतरी मरुभूमि में नविास कयिा, जंगली जानवरों के बीच पूरी तरह से मसीह के लएि जीवन यापन कयिा। इसलएि, सर्वदर्शी नेतुरी ने आपके कार्यों को देखकर, आपके नधिन के बाद भी आपको चमत्कारों के वरदान से समृद्ध कयिा है। अतःहम आपसे पुकार लगाते हैं: हम सभी के लएि अनवरत प्रार्थना करें, जो अपने भजनों में आपकी पवत्रि स्मृति का सम्मान करते हैं।

कॉन्टाकयिन, स्वर 8:

अपने मन की सारी इच्छा ईश्वर पर केंद्रति करके, और अपनी आत्मा की गहराई से अटूट रूप से उनका अनुसरण करके, आप ने मरुस्थल में नविास कयिा; और वहाँ दवि्य रूप से जीवन यापन करते हुए, आप कई लोगों के लएि मोक्ष का मार्ग बन गए: इसी कारण, मसीह ने आपको महमिामय कयिा है और चमत्कारों के वरदान से आपको समृद्ध कयिा है। इसलएि हम सभी आपसे पुकारते हैं: आनंदति हो, पूजनीय पॉल, मरुभूमि के वासी।

24 जनवरी

11 जनवरी (पुराना कैलेंडर)

हमारे पूज्य पति थयिोडोसयिस महान् का जीवन

11 जनवरी को स्मरणोत्सव

---

[899] आदरणीय पॉल ने भाइयों को पैकोमयिस द ग्रेट और थयिोडोसयिस द काइनोवार्च के मठवासी नयिमों का पालन करने का आदेश दयिा; उन्होंने भक्षिुओं को कसिी भी चीज़ को अपना मानने की अनुमति नहीं दी, बल्कि सब कुछ साझा होना था; कोशकिाओं में प्रतमिाओं और कतिाबों के अलावा कुछ भी नहीं होना था, यहाँ तक कि क्वास भी नहीं; भक्षिुओं को भोजनशाला में अपनी प्यास बुझानी थी; चर्च में, भोजनशाला में और काम करते समय, आदरणीय पति ने उन्हें मौन का पालन करने, अपने हाथों की मेहनत से अपनी आजीवकिा कमाने और गरीबों को न भूलने का आदेश दयिा।

[900] 6 जनवरी 1429 को तातारों ने कोस्त्रोमा को तबाह कर दयिा। उसी दनि, जब शष्यि आदरणीय पति के पास आए, तो उन्होंने आह भरकर आँसू बहाए; जब वहाँ मौजूद लोगों ने इसका कारण पूछा, तो संत पॉल ने कहा: 'इसी दनि और इसी घड़ी, अधर्मी टाटर्स ने कोस्त्रोमा नगर पर कब्ज़ा कर लयिा है, उसे आग और तलवार से तबाह कर दयिा है, और कई लोगों को बंदी बना लयिा है – और यह सब हमारे पापों के कारण, क्योंकि हम अपने दलि की इच्छाओं का पालन करते हैं।'

[901] आदरणीय पॉल को 26 फरवरी 1547 को मॉस्को परषिद में संत घोषति कयिा गया था; उनके पवत्रि अवशेष ओब्नोर्स्क मठ के कैथेड्रल चर्च के नीचे एक कब्रगृह में वरिाजमान हैं।

आदरणीय थियोडोसियस का जन्म काप्पाडोसिया के मोगरियन गाँव में[902] में, धर्मपरायण माता-पिता – उनके पिता प्रोएरेसियस और उनकी माता यूलोजिया – के यहाँ हुआ था, और उन्हें सद्गुण और विद्वतापूर्ण शिक्षा में पाला गया था। जब वह युवक वयस्क हुआ और उसने पवित्र धर्मग्रंथों का गहन अध्ययन कर लिया, तो उसे चर्च में पूजा-संबंधी पुस्तकों से निर्धारित अंश पढ़ने का निर्देश दिया गया, और वह एक मधुर आवाज़ और महान कौशल वाला पाठक था, जैसा कोई और नहीं था। अपने श्रोताओं के लाभ के लिए इन शिक्षाप्रद शब्दों को पढ़ते समय, वह स्वयं को उनसे और भी अधिक लाभान्वित करता था। जब वह प्रभु की बात सुनता था—जिन्होंने अब्राहम को अपनी भूमि और अपने लोगों को छोड़ने की आज्ञा दी (उत्पत्ति 12:1), और जिन्होंने सुसमाचार में, लोगों को अनंत जीवन के लिए पिता, माता और भाइयों को छोड़ने के लिए प्रोत्साहित किया (मत्ती 19:29)— उसका हृदय जल उठा और उसकी आत्मा आग से भर गई, वह सब कुछ पीछे छोड़कर मसीह के पीछे संकीर्ण और दुखद मार्ग पर चलने के लिए लालायित था। इस पर मनन करते हुए, उसने परमेश्वर से प्रार्थना की: *'हे प्रभु, मुझे अपना मार्ग सिखा, और मैं तेरी सच्चाई में चलूँगा'* (भजन संहिता 85:11)।

तब, ईश्वर में अपना विश्वास रखकर, वह यरूशलेम के लिए रवाना हुआ। यह मार्सियन के शासनकाल[903] के जीवन के अंत के करीब की बात थी, जब चौथा सार्वभौमिक परिषद[904] काल्सेडन[905] में डियोस्कोरस और यूटिचिस[906] से निपटने के लिए बुलाया जा रहा था। अंतियोकिया[907] से गुजरते हुए, धन्य थियोडोसियस ने सम्माननीय सिमोन को देखने और उनका आशीर्वाद व प्रार्थनाएँ प्राप्त करने की इच्छा की। वह उनके पास गया और जब वह स्तंभ के पास पहुँचा, तो उसने सम्माननीय सिमोन की आवाज़ सुनी:

'स्वागत है, हे ईश्वर के मनुष्य, थियोडोसियस!'

यह सुनकर कि उसे एक ऐसे व्यक्ति ने नाम से बुलाया था जिसने न तो उसे कभी देखा था और न ही जाना था, थियोडोसियस चकित हो गया और घुटनों के बल गिरकर उस दूरदर्शी पिता के सामने झुक गया। फिर, उनके निमंत्रण पर, वह स्तंभ पर चढ़कर संत के पास गया और उनके पवित्र चरणों में लोट गया। उस संत ने, बदले में, उस ईश्वर-प्रेरित युवक को गले लगाया और चूमा और भविष्यवाणी की कि वह वचन के झुंड का चरवाहा होगा और कई लोगों को मन के भेड़िये से बचाएगा[908] ; उन्होंने उसे कई अन्य बातें भी बताईं और, उसे आशीर्वाद देने के बाद, उसे विदा कर दिया। धन्यजन के आशीर्वाद से बलवान होकर और एक यात्रा करने वाले गुरु और संरक्षक के स्थान पर उनकी पवित्र प्रार्थनाओं को साथ लेकर, थियोडोसियस अपने सामने पथ पर चल पड़ा और यरूशलेम पहुँचा; यह जुवेनाल के महाधर्माध्यक्ष के पद पर रहते हुए का समय था। वहाँ के पवित्र स्थानों का भ्रमण करने और पुनरुत्थान के गिरिजाघर में प्रभु के समाधिस्थल पर प्रार्थना करने के बाद, वह इस बात पर विचार करने लगा कि किसी जीवन-पथ को अपनाया जाए: एक तपस्वी का, या मोक्ष की तलाश में दूसरों के साथ समुदाय में रहने का? और वह इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि जब तक उन्होंने दुष्ट आत्माओं से निपटने का तरीका नहीं सीख लिया था, तब तक मौन और एकांत में रहना असुरक्षित था। 'अगर कोई सांसारिक सैनिक इतना मूर्ख नहीं होगा कि वह अपनी सैन्य सेवा की शुरुआत में ही, जब वह युद्ध की कला में अभी अनुभवहीन और अनप्रशिक्षित हो, सीधे युद्ध के मोर्चे पर कूद पड़े, तो मैं, ' संत ने अपने आप से कहा, 'जबकि मैंने अभी तक अपने हाथों को हथियारों और अपनी उंगलियों को युद्ध का आदी नहीं बनाया है, और ऊपर से मिली शक्ति से सुसज्जित हुए बिना, क्या मैं, अपने आश्रम में अकेले, इस युग के अंधकार के प्रधानों, शक्तियों और अधिपतियों, स्वर्गीय क्षेत्रों में बुराई की

---

[902] कैपाडोसिया एशिया माइनर के पूर्व में एक क्षेत्र है। 11 ईस्वी वर्ष में, इसे सम्राट टिबेरियस के अधीन एक रोमन प्रांत बना दिया गया था।

[903] मार्सियन – एक बीजान्टिन सम्राट जिसने 450 से 457 तक शासन किया।

[904] 451 में,

[905] रोमन प्रांत बिथिनिया की राजधानी; यह बोस्फोरस के एशियाई तट पर, बिज़िन्टियम के सामने स्थित थी।

[906] यूतिखिस, जिसे चौथे सार्वभौमिक परिषद द्वारा निंदित किया गया था, ने यह सिखाया कि यीशु मसीह में एक ही स्वभाव था - दैवीय - जबकि पवित्र चर्च ने हमेशा से यीशु मसीह में दो स्वभावों को स्वीकार किया है, और करती रहेगी, जो एकसार और अविभाज्य हैं - दैवीय और मानवीय। डायोस्कोरस – अलेक्जेंड्रिया (मिस्र में) के पैट्रिआर्क, यूटिकिस के सिद्धांत के अनुयायी, जिन्होंने 449 की परिषद में इसे स्थापित करने का प्रयास किया।

[907] यह, बेशक, सीरियाई अंफ़ियाकी की बात कर रहा है, जिसे 'महान' के नाम से जाना जाता है, यह ओरोंटेस नदी पर एक शहर था, जिसकी स्थापना सेल्यूकस निकिटर ने की थी और उन्होंने इसका नाम अपने पिता, अंटिओकस के नाम पर रखा था। सेल्यूसीड वंश के राजा स्थायी रूप से वहीं रहते थे, और रोमन सम्राटों के समय में यह पूर्व की राजधानी भी थी। इसी अंफ़ियाकी में यीशु मसीह के चेलों को पहली बार 'ईसाई' कहा गया था।

[908] यहाँ 'काल्पनिक भेड़िया' से तात्पर्य शैतान और उसके प्रत्येक सेवक से है जो लोगों को अंधविश्वास और दुष्टता की ओर भटकाते हैं। इस पूरे वाक्यांश में प्रयुक्त अलंकार यूहन्ना 10:12 से लिया गया है।

आध्यात्मिक सेनाओं (इफिसियों 6:12) के खिलाफ उठ खड़ा होने की हिम्मत करूँ। 'मुझे पहले पवित्र तपस्वियों में शामिल होकर अनुभवी पितरों से यह सीखना चाहिए कि अदृश्य शत्रुओं से कैसे लड़ना है; फिर, समय आने पर, एकांत और मौन से उत्पन्न होने वाले फल एकत्र किए जाएँगे।' इस मामले पर विवेकपूर्वक विचार करने के बाद – क्योंकि उसमें अन्य गुणों के साथ-साथ पूर्ण विवेक भी था, जिससे वह सभी बातों का ठीक से निर्णय ले सकता था – उसने तुरंत एक गुरु की तलाश शुरू कर दी।

उस समय, यरूशलेम और उसके आसपास रहने वाले सभी धर्मपिता में सबसे प्रसिद्ध लोंगिनस नामक एक वृद्ध थे[909] , जिनकी कुटिया उस स्तंभ के पास थी जिसे प्राचीन काल से दाऊद का कहा जाता था[910] ; वहाँ एकांत में रहकर, उन्होंने बड़ी लगन से सद्गुणों का मीठा अमृत तैयार किया। उसके पास आकर, धन्य थियोडोसियस ने अपना संन्यासी जीवन शुरू किया और, पूरी आत्मा से वृद्ध के प्रति समर्पित होकर, उनसे हर सद्गुण सीखा, क्योंकि वह आदरणीय पुरुष वचन और कर्म दोनों में महान थे। काफी समय बीत जाने के बाद, वृद्ध के द्वारा—हालाँकि उनकी इच्छा के विरुद्ध—उन्हें 'पुराना आसन'[911] नामक स्थान पर भेज दिया गया। ऐसा निम्नलिखित कारण से हुआ: एक धर्मनिष्ठ महिला, ग्लिसैरिया नाम की एक सम्मानित विधवा और मसीह की सेविका ने उस स्थान पर परमेश्वर की अति पवित्र माता को समर्पित एक चर्च बनवाया था और उसने परम आदरणीय लोंगिनस से कई गंभीर विनतियों के साथ आग्रह किया कि वह थियोडोसियस को उस नव-स्थापित चर्च में रहने की अनुमति दें। हालाँकि शिष्य अपने पिता से अलग नहीं होना चाहता था, फिर भी वह अपने पिता की आज्ञा से वहाँ चला गया। जब वह वहाँ ठहरा, तो उसकी सदाचार की ख्याति दूर-दूर तक फैल गई। सद्गुण अपने धारक को उसी प्रकार प्रकट करता है जैसे जलती हुई मोमबत्ती रात में उसे उठाए हुए व्यक्ति को प्रकट करती है। और जो लोग आध्यात्मिक लाभ की तलाश में थे, वे संत के पास आने लगे, जबकि जो लोग उनके जीवन के तरीके का अनुकरण करना चाहते थे, वे उनके चारों ओर इकट्ठा होने लगे।

वहाँ कुछ समय तक रहने के बाद, वह धन्य पुरुष शांति की कमी से थक गया, क्योंकि वह मानवीय सम्मान और भीड़ के कोलाहल को सहन नहीं कर सकता था। वे वहाँ से चले गए और एक पहाड़ पर गए जहाँ एक गुफा थी; प्राचीन परंपरा के अनुसार, इसी गुफा में तीन ज्योतिषी, जो उपहार लेकर मसीह के पास बेथलहम आए थे और एक अन्य मार्ग से अपने देश लौट रहे थे, ने अपनी यात्रा से विश्राम किया और रात बिताई (मत्ती 2:1–12)। आदरणीय थियोडोसियस अपनी 'पूर्व निवास' से गुफा में चले गए। यह कदम ईश्वर की विशेष व्यवस्था से था - ताकि उस स्थान पर एक भव्य मठ[912] का निर्माण हो सके और आध्यात्मिक योद्धाओं की सेना मसीह ईश्वर के पास इकट्ठा हो सके।

अपने निवास स्थान को बदलकर, उस धन्य व्यक्ति ने अपने जीवन के तरीके को भी बदल दिया, और सबसे संकीर्ण मार्ग पर चल पड़े। उनकी इच्छा थी कि वे हर समय प्रभु की सभी आज्ञाओं का पालन करें; वे दिव्य प्रेम से इतने परिपूर्ण थे कि उन्होंने अपनी सभी आध्यात्मिक ऊर्जा को इस दुनिया की किसी भी चीज़ की ओर नहीं, बल्कि पूरी तरह से केवल सृष्टिकर्ता परमेश्वर की ओर निर्देशित किया, ताकि वे उनसे अपनी पूरी आत्मा, पूरे हृदय और पूरे मन से प्रेम कर सकें, और ताकि वे इस प्रेम को अपने कर्मों, शारीरिक श्रम और करतबों के माध्यम से प्रकट कर सकें, जिनका विस्तार से वर्णन नहीं किया जा सकता। उनकी प्रार्थना अखंड थी, उनकी निगरानी पूरी रात चलती थी, और उनकी आँखों से हमेशा झरनों की तरह आँसू बहते थे। उनका उपवास असीम था: तीस साल तक उन्होंने बिल्कुल भी रोटी का स्वाद नहीं चखा, केवल खजूर, सोचवि[913] या रेगिस्तान के जड़ी-बूटियों और जड़ों पर जीवित रहे, और उनमें से भी उन्होंने इतनी ही थोड़ी मात्रा में सेवन किया कि केवल भूख मिट सके। जब रेगिस्तान की कमी के कारण ऐसा भोजन भी उपलब्ध नहीं होता था, तो वह पानी में भिगोए हुए खजूर के गूदे खाता था; फिर भी वह परमेश्वर के वचन से अपने आत्मा को अविराम पोषित करता था, और उसे परमेश्वर की आंतरिक दृष्टि से परिपूर्ण करता था। इस प्रकार जीवन यापन करते हुए, वह एक उज्ज्वल तारे की तरह चमके और फिलिस्तीन के सभी निवासियों के बीच प्रसिद्ध हो गए, क्योंकि पहाड़ पर बसा एक शहर छिपा

---

[909] सेंट लोंगिनस का पर्व (ग्रीक चर्च में) 17 नवंबर और चीज़ सैटरडे को मनाया जाता है।

[910] जेरुसलेम के किले में, जाफ़ा द्वार के पास एक प्राचीन मीनार।

[911] ग्रीक में: काफ़स्मा, या काफ़स्मा का चर्च; यह यरूशलेम और बेथलहम के बीच आधे रास्ते पर स्थित था।

[912] लाव्रा – (ग्रीक शब्द से, जिसका अर्थ है 'शहर का एक हिस्सा' या 'गली') मठाध्यक्ष के निवास के चारों ओर बने घेरे के भीतर स्थित कोठरियों की एक पंक्ति, जो शहर की गलियों की तरह व्यवस्थित होती है। प्राचीन काल से, 'लाव्रा' नाम का उपयोग बड़े और महत्वपूर्ण मठों के लिए किया जाता रहा है। यह सबसे पहले मिस्र में और बाद में फिलिस्तीन में दिखाई दिया।

[913] अनाज, मटर, सेम या सब्जियों से बना एक स्टू।

नहीं रह सकता (मत्ती 5:14)। कुछ सदाचारी लोग उनके पास आए, जिन्होंने शहर के आनंदमय जीवन की तुलना में गुफा में उनके साथ रेगिस्तान का जीवन पसंद किया।

शुरुआत में, रेवरेंड फादर के सात शिष्य थे। यह जानते हुए कि परमेश्वर की इच्छा के अनुसार जीना शुरू करने वालों के लिए मृत्यु के स्मरण से अधिक लाभदायक कुछ भी नहीं है - जिसे सच्ची बुद्धि कहा जाता है और माना जाता है - संत ने अपने शिष्यों को एक कब्र खोदने की आज्ञा दी, ताकि उस पर निहारकर वे मृत्यु को याद करना सीख सकें, जैसे कि यह उनकी आँखों के सामने हो। जब कब्र तैयार हो गई, तो पूज्य पिताजी उसे देखने आए और कब्र के ऊपर खड़े होकर, अपनी आत्मा की आँखों से आने वाले समय को देख लेते हुए, मुस्कुराते हुए अपने शिष्यों से कहा:

'देखो, मेरे बच्चों, कब्र तैयार है; क्या तुम में से कोई ऐसा नहीं है जो मृत्यु के लिए तैयार हो, ताकि वह अपने शरीर से इस कब्र को नया कर दे?'

जब संत ने यह कहा, तो वहाँ खड़े उनके एक शिष्य, बेसिल, जो अभिषेक द्वारा पुरोहित थे, तुरंत, इससे पहले कि दूसरे कुछ प्रतिक्रिया दे पाते, बूढ़े के सामने घुटनों पर गिर पड़े और जमीन पर मुंह के बल लेटकर, उस कब्र में मरने और दफ़नाए जाने का आशीर्वाद माँगा।

उसने कहा, 'पिताजी, मुझे आशीर्वाद दीजिए, ताकि मैं इस कब्र को नया कर सकूँ, और मृत्यु के बारे में सीख रहे भाइयों में से पहला मृत व्यक्ति बनूँ।'

वरिष्ठ ने उसकी प्रार्थना मान ली और आदेश दिया कि जीवित बेसिल के लिए, दिवंगत लोगों के स्मरण के नियम के अनुसार, तीसरे, नौवें और चालीसवें दिन एक स्मरणोत्सव सेवा आयोजित की जाए, मानो वह पहले ही मर चुका हो। जब सभी स्मरणोत्सव समाप्त हो गए, तो धन्य बेसिल भी बिना किसी बीमारी के परलोक सिधार गए; जैसे कोई मीठी नींद में सोकर विश्राम कर ले और फिर प्रभु के पास चला जाए। उनके दफ़नाए जाने के चालीस दिन बाद, वृद्ध ने बेसिल को देखा, जो नियमों के दौरान भाइयों के बीच प्रकट हुए और उनके साथ गाए। उन्होंने ईश्वर से प्रार्थना की कि दूसरों की आँखें भी खुल जाएँ, ताकि वे भी उस प्रकट हुए व्यक्ति को देख सकें। उसे देखकर, एटियस नामक एक भाई, खुशी से उसे गले लगाने के लिए दौड़ पड़ा, लेकिन वह आकृति तुरंत ही गायब हो गई और अदृश्य हो गई। जाते समय, उसने सभी के सुनने के लिए ज़ोर से कहा:

'भागो, पिताओं और भाइयों, भागो, क्योंकि तुम मुझे यहाँ फिर कभी नहीं देखोगे!'

यह पूजनीय थियोडोसियस के पुण्य की पहली गवाही थी – कि उनके पास ऐसा शिष्य था, जो उनके निर्देश पर मृत्यु का सामना करने के लिए तैयार था, और जो, उनके देहिक मृत्यु के बाद, आत्मा में जीवित सिद्ध हुआ, सुसमाचार में प्रभु के वचनों के अनुसार: 'जो मुझ में विश्वास करता है, वह मर भी जाए तो भी जीवित रहेगा' (यूहन्ना 11:25)। इस वृद्ध को ईश्वर द्वारा प्रदान की गई अद्भुत कृपा के अन्य प्रकटीकरण निम्नलिखित वृत्तांत से स्पष्ट होंगे।

मसीह के पुनरुत्थान का पर्व निकट आ रहा था। संत के शिष्य, जिनकी संख्या तब तक बारह हो चुकी थी, इस बात से दुखी थे कि उनके पास पर्व के लिए खाने के लिए कुछ भी नहीं था - न रोटी और न ही तेल, न ही कुछ भी खाने योग्य था, और सबसे बढ़कर वे इस बात से दुखी थे कि इतने गौरवशाली पर्व पर कोई दैवीय अनुष्ठान नहीं हो सकता था, क्योंकि सेवा के लिए न तो प्रॉस्फोरा था और न ही शराब, जिसका अर्थ था कि उन्हें पवित्र Communion प्राप्त करने से वंचित रहना होगा। गुप्त रूप से, उन्होंने उस सम्माननीय के विरुद्ध आपस में कुछ बड़बड़ाया। हालाँकि, ईश्वर में अटूट विश्वास रखने वाले उन्होंने भाइयों को दिव्य वेदी को सजाने और दुखी न होने का आदेश दिया।

उन्होंने कहा, 'वह जिसने प्राचीन काल में जंगल में इस्राएल का पालन-पोषण किया[914] और बाद में कुछ रोटी के टुकड़ों से हजारों लोगों को खिलाया[915] वह हमारे लिए भी प्रदान करेगा: क्योंकि वह पहले से अपनी शक्ति में कमजोर नहीं हुआ है, न ही संसार के लिए प्रदान करने में उसका उत्साह कम हुआ है, बल्कि वह सदा-सदा के लिए एक ही परमेश्वर है।'

'तो,' पादरी पिता ने कहा, 'आशा के साथ'—और उनके शब्द तुरंत ही सच हो गए। जैसे प्राचीन काल में झाड़ी में एक मेमना बलिदान के लिए तैयार होकर अब्राहम के सामने प्रकट हुआ था (उत्पत्ति 22:13), वैसे ही ईश्वर की कृपा से इस

---

[914] यहाँ, बेशक, इसका मुख्य रूप से मन्ना से तात्पर्य है, वह चमत्कारिक भोजन जिससे प्रभु ने वादा किए गए देश (निर्गमन 16) की ओर जाते समय, मरुभूमि में यहूदी लोगों के भटकने के दौरान उनका भरण-पोषण किया।

[915] बेशक, यह यीशु मसीह द्वारा पाँच रोटियों से पाँच हज़ार से अधिक लोगों (मत्ती 14:15–21) और सात रोटियों से चार हज़ार से अधिक लोगों (मत्ती 15:32–38) को चमत्कारिक रूप से खिलाने का भी संदर्भ देता है।

धन्य वृद्ध को भी वह सब कुछ मिल गया जिसकी उसे आवश्यकता थी। जैसे ही सूर्य अस्त हो रहा था, ईश्वर का एक पुरुष उनकी गुफा में आया, जो अपने घर से दो गधों पर मरुस्थल के तपस्वियों के लिए विभिन्न प्रकार के खाद्य पदार्थ, साथ ही दिव्य रहस्यों के उत्सव के लिए प्रॉस्फोरा और शराब लाया था। यह देखकर, धन्य व्यक्ति के शिष्य प्रसन्न हुए और उन्हें एहसास हुआ कि उनके गुरु को ईश्वर की ओर से कितनी कृपा प्रदान की गई थी। उन्होंने आनंद के साथ ईस्टर मनाया, और उनके पास लाया गया भोजन पेंटेकोस्ट की पूरी अवधि के लिए पर्याप्त था। फिर से भोजन समाप्त हो गया, और भूख से पीड़ित भाइयों ने फिर से दुख मनाया। उस समय, एक धनी व्यक्ति सिभी फिलिस्तीनी मठों को बहुत दान दे रहा था – हालाँकि, उसने थियोडोसियस के मठ को, जो एक गुफा में स्थित था, कोई सहायता नहीं दी, क्योंकि वह इसके बारे में कुछ नहीं जानता था। और भाइयों ने अपने मठाध्यक्ष से आग्रह किया कि वे इस दाता को अपने और मठ के बारे में बता दें, ताकि अन्य मठों की तरह, वे भी अपना निर्वाह करने के लिए उससे दान प्राप्त कर सकें। आदरणीय थियोडोसियस, जिन्हें संसार में किसी के द्वारा जाना जाने की कोई इच्छा नहीं थी और जिन्होंने अपनी आशा लोगों में नहीं बल्कि परमेश्वर में रखी, जो अपना हाथ खोलते हैं और अपनी इच्छा के अनुसार सभी जीवित प्राणियों को तृप्त करते हैं (भजन संहिता 144:16), अपने शिष्यों को सांत्वना दी और उन्हें ईश्वर की दया के लिए धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा करने तथा उस पर भरोसा रखने का निर्देश दिया, जो हर भूखी आत्मा को तृप्त करता है: यदि वह मूक पशुओं और उन जवान कौवों को भोजन देता है जो उससे पुकारते हैं (भजन संहिता 146:9), तो वह कितनी अधिक बात है कि वह तर्कशील और बोलने वाले प्राणियों को उनकी आवश्यकता के भोजन से वंचित नहीं रखेगा। जब संत अपने निराश भाइयों को इस प्रकार सांत्वना दे रहे थे, तो एक आदमी उनके पास बहुत सारा भोजन लादकर एक गधे के साथ आया। वह थियोडोसियस की गुफा की ओर नहीं जा रहा था, बल्कि वह भोजन किसी अन्य स्थान पर पहुँचाने के लिए ले जा रहा था। लेकिन जब वह गुफा के पास पहुँचा और उसे पार करने ही वाला था, तो गधा रुक गया और उस जगह से हिला ही नहीं; अपने मालिक द्वारा बार-बार पीटे जाने के बाद भी, वह पत्थर की तरह अचल रहा। यह समझते हुए कि उसके गधे को ईश्वर की इच्छा और एक अदृश्य शक्ति द्वारा रोका जा रहा था और वह स्थिर था, उस आदमी ने उसकी लगाम ढीली कर दी और उसे जहाँ वह चाहता था वहाँ जाने दिया। गधा, मानो किसी अदृश्य हाथ द्वारा निर्देशित हो, सीधे पूज्य थियोडोसियस के आश्रम में गया, जो एक गुफा में स्थित था; और उस व्यक्ति ने, प्रभु के आशीर्वाद और अपने सेवकों के प्रति उनकी दिव्य व्यवस्था को पहचानकर, अपना सारा राशन पूज्य एल्डर और उनके शिष्यों को दे दिया। और उस समय से, संत के शिष्य हतोत्साहित नहीं रहे और उन्होंने अपने पूजनीय पिता के ईश्वर में दृढ़ विश्वास और आशा के उत्साही समर्थक बनने का प्रयास किया।

भाइयों की संख्या दिन-प्रतिदिन बढ़ती गई, क्योंकि जिस अनुग्रह के स्रोतों से पवित्र पिता परिपूर्ण थे, वे उन कई आत्माओं को अपनी ओर आकर्षित करते थे जो सद्गुण से प्रेम करती थीं—ऐसी आत्माएँ जिन्हें 'आध्यात्मिक जल की खोज में मृगनयनी हरिणियाँ' (भजन संहिता 41:2) कहा जा सकता है—और वास्तव में, उच्च पदवी और धन-संपत्ति वाले कई लोग उस आदरणीय के साथ रहने आए। इतनी बड़ी संख्या में लोगों को समाने के लिए गुफा बहुत छोटी पड़ गई। भाइयों ने पूजनीय पिता के पास आकर उनसे विनती करनी शुरू कर दी कि वे गुफा के पास एक मठ की स्थापना करें और वचन के झुंड के लिए एक विशाल आवास बनाएं।

उन्होंने कहा, 'पिताजी, मठ बनाने के साधनों की चिंता न करें; बस आज्ञा दें, और इस कार्य को पूरा करने के लिए हमारे हाथ ही काफी होंगे।'

संत, यह देखकर कि उन्हें बहुत बड़ी भेड़ का चरवाहा बनने के लिए बुलाया जा रहा था, और उनकी मौन साधना भंग हो रही थी, वे विभिन्न विचारों से परेशान हो गए – कभी एक निस्वार्थ माँ की तरह अपनी मौन साधना को त्यागना नहीं चाहते, और कभी भाइयों की देखभाल को एक बहुत महत्व की बात मानते हुए, क्योंकि एक मनुष्य को अकेले अपने लिए नहीं जीना चाहिए, बल्कि अपने पड़ोसी के लिए और भी अधिक, जैसा कि प्रभु मसीह स्वयं ने उदाहरण प्रस्तुत किया, जिन्होंने अपने शिष्यों को इकट्ठा किया, वचन के भेड़ों के चरवाहे बने, और उनके लिए अपनी आत्मा का बलिदान कर दिया। इस पर मनन करते हुए, पूजनीय थियोडोसियस इस दुविधा में थे कि क्या चुनें: मौन या अपने भाइयों के उद्धार के लिए चिंता, और उनके विचार दोनों के बीच झूल रहे थे। तो, वह धन्य व्यक्ति क्या करता है? वह सब कुछ ईश्वर को सौंप देता है, जो दोनों को एक ही उद्देश्य के लिए एकजुट करने में सक्षम है, ताकि न तो मौन का फल खो जाए और न ही वह अपने भाइयों की अध्यक्षता करने और उनकी देखभाल करने के पुरस्कार से वंचित रहे; क्योंकि एक भिक्षु का जीवन शरीर के एकांत से नहीं, बल्कि अच्छाई में दृढ़ता और हृदय की शांति के माध्यम से मजबूत होता है। आदरणीय ने संत साइमन द स्टाइलाइट की भविष्यवाणी को भी ध्यान में रखा, जिन्होंने भविष्यवाणी की थी कि वह वचन के झुंड का चरवाहा होगा।

हालाँकि, उन्होंने जो कार्य हाथ में लिया था, उसे ईश्वर की इच्छा पर छोड़ दिया और उनसे प्रार्थना की कि यदि उनकी इच्छा हो तो वे एक मठ की स्थापना को प्रकट करें, और एक चमत्कारिक संकेत द्वारा उस स्थान को इंगित करें जहाँ मठ की नींव रखी जानी चाहिए। एक धूपदानी लेकर उसमें ठंडे कोयले भरकर, उसने उसमें बिना जलाए ही धूप डाल दी और इस प्रकार प्रार्थना करते हुए रेगिस्तान में निकल पड़ा:

'हे ईश्वर, जिन्होंने अनेक और महान चमत्कारों के द्वारा इस्राएल को आश्वस्त किया और अपने सेवक मूसा को विभिन्न चिह्नों के द्वारा अपने लोगों का नेतृत्व करने का भार स्वीकार करने के लिए मना लिया; जिन्होंने लाठी को साँप में और स्वस्थ हाथ को कोढ़ी और सफेद कर दिया, और फिर उसे स्वस्थ कर दिया (निर्ग. 3:3, 6:7); जिसने पानी को रक्त में बदल दिया और आसानी से रक्त को फिर से पानी में बदल दिया (निर्गमन 7:20); जिसने गिदोन को ऊन पर विजय का चिन्ह दिया (न्यायियों 6:37–38), सभी चीजों का सृष्टा और सर्वशक्तिमान; जिसने हेजेकियाह के लिए सीढ़ियों पर पीछे की ओर दौड़ती छाया द्वारा उसके जीवन की अवधि को चिह्नित किया (2 राजा 20:1–11; यशायाह 38:7–8); जिन्होंने एलिया की प्रार्थनाएँ सुनीं और दुष्टों को परिवर्तित करने के लिए स्वर्ग से आग भेजी, जिसने लकड़ी, बलिदान, पत्थरों और पानी को भस्म कर दिया (3 राजा 18:38) हे प्रभु, आप आज भी वही परमेश्वर हैं; अपने दास की सुनिए, और मुझे वह स्थान दिखाइए जहाँ यह आपको भाए, कि मैं आपके प्रभुत्व के लिए एक पवित्र मंदिर बना सकूँ और आपके सेवकों, अर्थात् अपने शिष्यों के लिए एक निवास-स्थान स्थापित कर सकूँ। कृपया मुझे ऐसा स्थान दिखाएँ जहाँ आप इन कोयलों को अपनी महिमा के लिए अपने आप आग में बदलने का आज्ञा दें, ताकि सत्य जाना जाए और बहुतों तक प्रचारित हो।

प्रार्थना में ये और इसी तरह के शब्द कहकर, वह एक मठ बनाने के लिए सबसे उपयुक्त लगने वाली जगहों के चारों ओर घूमा। वह रेगिस्तान में बहुत दूर तक गया और धूपदान में उन्हीं बुझी हुई और ठंडी कोयलों के साथ, कुटिला नामक स्थान और स्मोल्यानोये झील के किनारे पहुँचा[916] । और जब उसने देखा कि कोयले नहीं जल रहे थे और उसकी इच्छा पूरी नहीं हो रही थी, तो उसने गुफा में लौटने का निश्चय किया। जैसे ही वह लौट रहा था, और गुफा अब बहुत दूर नहीं थी (हे अमर राजा, कौन तेरी शक्ति की यथोचित प्रशंसा कर सकता है!), धूपदान से अचानक सुगंधित धुआँ उठने लगा, क्योंकि कोयले भयंकर ज्वाला में फट पड़े थे। संत को एहसास हुआ कि यह वही जगह थी जहाँ, ईश्वर की कृपा से, एक मठ स्थापित होना था, जिसे चमत्कारिक रूप से शब्दों से नहीं बल्कि आग से चिह्नित किया गया था। संत के शिष्यों ने तुरंत काम शुरू कर दिया: नींव रखने के बाद, उन्होंने एक चर्च, कोठरियाँ और एक दीवार बनाई, और जल्द ही, सर्वोच्च की मदद से, एक विशाल मठ स्थापित किया।

आदरणीय थियोडोसियस की लावरा प्रसिद्धि और ख्याति प्राप्त हो गई, और वहाँ एक सामुदायिक जीवन स्थापित हुआ। प्रभु ने इस मठ को हर प्रकार की भरपूरता से نواز, ताकि वहाँ रहने वाले न केवल अच्छे कर्मों के आध्यात्मिक धन से समृद्ध हों, बल्कि शरीर के लिए आवश्यक चीजों से भी वंचित न रहें। और वहाँ न केवल भिक्षुओं को ही सांत्वना मिली, बल्कि सामान्य लोगों, यात्रियों और अजनबियों, गरीबों और बेसहारा लोगों, बीमारों और दुर्बल लोगों को भी मिली। क्योंकि पूजनीय थियोडोसियस दयालु, करुणामय और दयालु-हृदय थे, वे सभी के लिए एक करुणामय पिता, एक प्रेमपूर्ण मित्र, और सभी के लिए एक परिश्रमी सेवक और मंत्री थे; उन्होंने बीमारों के घावों और पपड़ियों को साफ़ किया, उनके रक्त को धोया, उन्हें अपने हाथों से भोजन कराया और उनकी हर सेवा की। उन्होंने चारों ओर से आने वालों के प्रति भी बहुत प्रेम दिखाया, उन्हें खिलाया, सांत्वना दी और उनकी हर ज़रूरत पूरी की। पूजनीय पिता बीमारों, भूखों, नंगों और राहगीरों के लिए एक सामान्य आश्रय, एक सामान्य औषधालय, एक सामान्य घर, एक सामान्य भोज, एक सामान्य खज़ाना थे; सभी को उनके प्रेम, दया और उदारता में सांत्वना मिली, और उन्होंने किसी को तुच्छ नहीं समझा। मठ में भोजन के समय सेवा करने वालों ने देखा कि कभी-कभी एक ही दिन में आगंतुकों, यात्रियों और भिखारियों को सौ तक भोजन परोसा जाता था: मानव जाति के प्रति रेवरेंड फादर का प्रेम और अजनबियों के प्रति आतिथ्य ऐसा था। ईश्वर, जो स्वयं प्रेम हैं (1 यूहन्ना 4:8), ने अपने सेवक में अपने पड़ोसियों के प्रति ऐसा प्रेम देखकर, उनके मठ को आशीष दी, कि उसमें भोजन की थोड़ी सी मात्रा भी अदृश्य रूप से बढ़ जाती थी और अनगिनत लोगों को खिलाया जाता था।

एक बार, फिलिस्तीन में अकाल के दौरान, पाम संडे के अवसर पर भिखारियों और बेसहारा लोगों की एक बड़ी भीड़ अपने सामान्य दान को प्राप्त करने के लिए दूर-दूर से मठ के द्वार पर इकट्ठा हुई। शिष्य इस बात से दुखी थे कि उनके

[916] यह नाम मृत सागर के पश्चिमी तट पर मरुभूमि के एक हिस्से को दिया गया था, जिसे यहाँ बिटुमिनिस या तारकोल सागर के रूप में जाना जाता है।

पास इतने बड़े समूह के याचकों को देने के लिए पर्याप्त भोजन नहीं था, और उन्होंने इस बारे में धन्य व्यक्ति से बताया। लेकिन उन्होंने, उन पर क्रोधित दृष्टि डालते हुए, उनके अविश्वास के लिए उन्हें डांटा और कहा:

'दरवाज़े तुरंत खोल दो, ताकि वे सब अंदर आ सकें!'

भिखारी और बेसहारा लोग अंदर आए और कतारों में बैठ गए।

रेवरेंड फादर ने अपने शिष्यों को उन्हें रोटी देने का आदेश दिया; शिष्य दुख के साथ बेकरी गए, यह उम्मीद किए बिना कि उन्हें कुछ मिलेगा, लेकिन जब उन्होंने बेकरी खोली, तो उन्होंने देखा कि वह रोटियों से भरी हुई थी, क्योंकि सभी के प्रदाता – ईश्वर – का हाथ, अपने सेवक के विश्वास के लिए, उसे भर चुका था। भाइयों ने ऐसे चमत्कार के लिए ईश्वर की स्तुति की और अपने मठाधीश के ईश्वर में गहरे विश्वास पर आश्चर्यचकित हुए।

एक अन्य अवसर पर, परमेश्वर की अति पवित्र माता के निद्रोत्सव के पर्व पर, मठ में एक बड़ी भीड़ आई, इतने बड़े जनसमूह को खिलाने के लिए पर्याप्त भोजन नहीं था; पूजनीय थियोडोसियस ने स्वर्ग की ओर देखकर कुछ छोटे-छोटे रोटियों पर आशीर्वाद दिया और उन्हें परोसने का आदेश दिया, और लोग तृप्त हो गए, क्योंकि परमेश्वर ने इन रोटियों को भी वैसे ही बढ़ा दिया जैसे उन्होंने एक बार पाँच रोटियों को बढ़ाया था (मत्ती 14:21; लूका 9:14); ताकि हर किसी ने यात्रा के लिए अपनी ज़रूरत भर भी ले लिया। भाइयों ने बचे हुए टुकड़ों को इकट्ठा किया, उनसे कई टोकरियाँ भर लीं, और उन्हें धूप में सुखाकर, काफी समय तक उनका भरण-पोषण हुआ। और कई अवसरों पर, अनगिनत भीड़ मठ में इकट्ठी हुई, इतना कि ऐसा लगा कि इतने बड़े समूह की प्यास बुझाने के लिए कुएँ भी पर्याप्त नहीं थे; फिर भी, सभी का प्रावधान करने वाले—ईश्वर—के अक्षय हाथों ने उन सभी को पूरी तरह से तृप्त कर दिया।

रेवरेंड ने कई आश्रय-गृह और विभिन्न अस्पताल स्थापित किए, जिसमें विशेष रूप से पदस्थ लोगों और अपने श्रम से बूढ़े हो गए लोगों के लिए एक था। वह पहाड़ों और गुफाओं में रहने वालों से भी मिलने जाते थे, उनकी देखभाल करते थे और उनके लिए अपने पूरे दिल से चिंता करते थे, ठीक वैसे ही जैसे एक पिता अपने बच्चों की करता है। उन्होंने उन्हें शरीर और आत्मा दोनों के लिए आवश्यक सभी चीजें प्रदान कीं, उन्हें सिखाया और निर्देशित किया, और कई लोगों को शैतान की धोखाधड़ी से बचाया।

चूंकि आदरणीय के मठ में मठवासी समुदाय में एक ही राष्ट्र या भाषा के नहीं, बल्कि विभिन्न राष्ट्रों और भाषाओं के लोग शामिल थे, इसलिए उन्होंने अन्य चर्चों की स्थापना की, जहाँ प्रत्येक लोग अपनी भाषा में ईश्वर की महिमा कर सकते थे। इस प्रकार, परमेश्वर की अति पवित्र माता के महान गिरिजाघर में - यूनानी[917] , एक अन्य में - इबेरीय[918] , और एक तीसरे में - अर्मेनियाई[919] - ने डेविड के नियम के अनुसार, दिन में सात बार अपनी-अपनी भाषाओं में धार्मिक सेवा का गायन किया: 'मैं दिन में सात बार तेरी स्तुति करता हूँ' (भजन संहिता 118:164); बीमारों के लिए एक विशेष चर्च था। परम पवित्र रहस्यों को ग्रहण करने के समय, संपूर्ण भाईचारा सभी चर्चों से एक बड़े चर्च में इकट्ठा होता था, जहाँ यूनानी लोग भजन गाते थे, और सभी एक साथ संप्रभु भोजन ग्रहण करते थे। सम्माननीय पिता के बच्चों, जिन्हें उन्होंने आध्यात्मिक रूप से पुनर्जीवित किया, अपने पितृत्वपूर्ण मार्गदर्शन में पाला और सद्गुण की ओर ले जाया, उनकी कुल संख्या छह सौ तेरान्वे थी। उनमें से कई अन्य मठों में पादरी थे, जिन्होंने संत थियोडोसियस से अच्छा शासन करना सीखा था, जो आध्यात्मिक ज्ञान और समझ से परिपूर्ण थे; वह अपनी भेड़ों का पालन-पोषण लाठी से दंड देकर नहीं, बल्कि वचन से शिक्षा देकर करते थे—एक ऐसा वचन जो नमक से रसभरा[920] था, जो आत्मा को छूता और मन की गहराइयों तक पैठ जाता था; वचन के साथ-साथ, उन्होंने उदाहरण द्वारा भी सिखाया, और अपने आपको अपनी भेड़ों के लिए एक आदर्श बना दिया। इसलिए, भले ही वह किसी को कोमलता से फटकारते थे, फिर भी कई लोग उनसे डरते थे, और जब वह किसी को डाँटते थे, तो वे दयालु और विनिम्र होते थे। उनके बारे में जो बात उल्लेखनीय थी, वह यह थी कि, यद्यपि उन्हें सांसारिक ज्ञान की शिक्षा नहीं दी गई थी और वे ग्रीक साहित्य में पारंगत नहीं थे, फिर भी उन्होंने अपनी शिक्षाओं की व्याख्या इतनी गहनता से की कि किताबों पर जीवन भर अध्ययन करने वाले और वाक्पटुता की कला में महारत हासिल करने वाले

---

[917] ग्रीक एक ऐसा लोग है, जो आदिकाल से ही उस क्षेत्र के अधिकांश हिस्से पर बसा हुआ है जिसे अब बाल्कन प्रायद्वीप और पड़ोसी द्वीप कहा जाता है; ईसाई युग में, वे हमेशा पवित्र भूमि में बड़ी संख्या में रहे हैं।

[918] आइबेरियन, अर्थात् वे मूलनिवासी जो आइबेरिया (वर्तमान जॉर्जिया) के थे।

[919] अर्मेनियाई लोग पवित्र भूमि के आसपास रहते थे। अर्मेनिया की सीमा उत्तर में कोल्चिस, इबेरिया और अल्बानिया से, पश्चिम में एशिया माइनर से, दक्षिण में मेसोपोटामिया से, और दक्षिण-पूर्व तथा पूर्व में मीडिया और सीरिया से मिलती थी।

[920] अर्थात्, ऐसे शब्दों के साथ जो समझदारी भरे और शिक्षाप्रद हों (कुलु. 4:6)।

भी उनसे तुलना नहीं कर सकते थे। क्योंकि वह मानवीय ज्ञान से नहीं, बल्कि परमेश्वर के आत्मा की कृपा से सिखाता था, जिसने उससे गुप्त रूप से बात की, जैसे किसी अन्य यिर्मयाह से: 'मैंने अपने वचन तेरे मुँह में डाल दिए हैं' (यिर्म. 1:9)। और उस धन्य व्यक्ति ने आत्मा के लिए लाभकारी और भी बहुत से वचन बोले, जिनमें से कुछ उनके अपने थे, और अन्य प्रेरितों की कहावतों, धर्मपतिमहों की शिक्षाओं, और बेसलि द ग्रेट की तपस्या संबंधी लेखनी से लिए गए थे, जिनका उन्होंने अनुकरण किया और जिनकी ईश्वर-प्रेरित लेखनी को वे विशेष रूप से संजोते थे। उनके कई महान उपदेशों में से, निम्नलिखित संक्षिप्त उपदेश को याद करना उचित है:

भाइयो, मैं तुम से विनती करता हूँ, हमारे प्रभु यीशु मसीह के प्रेम के वास्ते, जिन्होंने हमारे पापों के लिए अपना बलिदान दे दिया, कि हम अंततः अपनी आत्माओं का ध्यान रखें, अपने अतीत के जीवन की व्यर्थता पर शोक मनाएँ, और भविष्य के लिए प्रयत्न करें, परमेश्वर और उनके पुत्र की महिमा के लिए; आओ हम आलस्य और वर्तमान शिथिलता में न रहें, इस बहुमूल्य दिन को निराशा में न बिताएँ और अच्छे कर्मों की शुरुआत को कल तक टालते न रहें, कहीं ऐसा न हो कि हम अपने आत्मा के न्यायी के सामने अच्छे कर्मों के बिना खड़े हो जाएँ, कहीं ऐसा न हो कि हमें आनंद के सभागार से निकाल दिया जाए, कहीं ऐसा न हो कि हम अपने बर्बाद किए हुए जीवन के समय पर व्यर्थ और निराशा में रोएँ, तब रोना पड़ेगा जब पश्चाताप का कोई लाभ नहीं होगा: अब अनुकूल समय है, अब उद्धार का दिन है। यह वर्तमान युग पश्चाताप का है, और आने वाला युग प्रतिफल का है; यह करने का है, और वह पुरस्कार पाने का; यह धैर्य का है, और वह सांत्वना का। अब परमेश्वर उन लोगों के सहायक हैं जो बुराई के मार्ग से मुँह फेर लेते हैं, लेकिन तब वह मानव कर्मों, वचनों और विचारों के भयानक न्यायी होंगे, जिनसे कुछ भी छिपा नहीं सकता। अब हम उसकी दीर्घ सहिष्णुता का आनंद लेते हैं, लेकिन तब हम उसकी न्यायप्रियता को जानेंगे, जब हम में से कुछ अनंतकालिक यातना में और अन्य अनंत जीवन में उठेंगे, और हम में से प्रत्येक को अपने कर्मों के अनुसार प्राप्त होगा। हम मसीह की आज्ञा मानने में और कितनी देरी करेंगे, जो हमें अपने स्वर्गीय राज्य में बुलाते हैं? क्या यह समय नहीं है कि हम होश में आएं? क्या यह समय नहीं है कि हम व्यर्थता के जीवन से मुड़कर सुसमाचार की पूर्णता की ओर बढ़ें? हम प्रभु के उस भयानक और भीषण दिन का सामना कैसे करेंगे, जब परमेश्वर के दाहिने हाथ की ओर[921] खड़े लोग—और अपने अच्छे कर्मों के द्वारा उसके निकट आने वाले—स्वर्ग के राज्य में स्वीकार किए जाएँगे, जबकि बाईं ओर[922] खड़े लोग—अपने अच्छे कर्मों की कमी के कारण अस्वीकार किए गए—आग की गेहन्ना, अनंत अंधकार और दाँत पीसने को सौंप दिए जाएँगे? हम कहते हैं कि हम स्वर्ग के राज्य की कामना करते हैं, फिर भी हम इस बात की परवाह नहीं करते कि उसे कैसे प्राप्त करें। प्रभु की आज्ञा को पूरा करने के लिए किसी भी प्रकार का प्रयास न करते हुए, हम अपने मन की व्यर्थता में, उन लोगों के समान महिमा की आशा करते हैं जिन्होंने मृत्यु तक पाप से संघर्ष किया।

अपने शिष्यों को इस प्रकार उपदेश देते हुए, रेवरेंड फादर ने उन्हें मोक्ष के लिए परम उत्साह के लिए प्रेरित किया। यद्यपि वह सभी बातों में स्वभाव से नम्र थे, फिर भी जहाँ भक्ति का उल्लंघन होता था, वह एक भस्म कर देने वाली आग, या एक चीर डालने वाली कुल्हाड़ी, या युद्ध के एक अजेय हथियार के समान थे।

923924उस समय, अनास्तासियस[925] का शासन था, जिसे सिंहासन लिया द ग्रेट[926] और ज़ेनो[927] से विरासत में मिला था। शुरुआत में, उसका शासन एक मीठे स्वर्ग जैसा लगा, लेकिन बाद में यह, मानो, विनाश का मैदान साबित हुआ। वह उन चरवाहों जैसा हो गया जो अपने झुंड को बिखेर देते हैं और नष्ट कर देते हैं और अपनी भेड़ों को मैले पानी से सींचते हैं; क्योंकि वह यूटिकस और सिरिंथियन सेवेरस के विधर्म में भटक गया था और इस प्रकार उसने पवित्र पिताओं की चतुर्थ सार्वभौमिक परिषद को अस्वीकार कर ईश्वर की कलीसिया को भ्रमित कर दिया, ऑर्थोडॉक्स बिशपों को उनके सिंहासनों से निकाल दिया और उनकी जगह विधर्मी बिशपों को स्थापित कर दिया, और कई ऑर्थोडॉक्सों को उससे

---

[921] अर्थात्, दाहिनी ओर (मत्ती 25:34)।

[922] अर्थात् बाईं ओर (मत्ती 25:41)।

[923] एसेफालसिट (ग्रीक: akephaloi) – 6वीं सदी के विधर्मी, अलेक्ज़ेंड्रिया के सेवेरस के अनुयायी। उन्होंने बिशपों, पुरोहितों और संस्कारों को अस्वीकार किया, और मोनोफिज़िट्स के सबसे चरमपंथी गुट का प्रतिनिधित्व किया।

[924] एक लिट्रा एक पाउंड है, वजन की एक इकाई जो 72 ज़ोलोटनिक के बराबर है; चांदी में इसका मूल्य 42 रूबल तक और सोने में 506 रूबल तक था।

[925] अनास्तासियस प्रथम, डिकोर, या थ्रेसियन, ने 491 से 518 तक शासन किया।

[926] उन्होंने 457 से 474 तक शासन किया।

[927] 474 से 491 तक शासन किया।

सहमत होने के लिए मनाना – कुछ को धमकियों से, दूसरों को सम्मान और उपहारों से। उसने अपनी चापलूसी भरी चालाकी से, हमारे पूजनीय पिता थियोडोसियस जैसे अटूट विश्वास के इस स्तंभ को भी निशाना बनाने की हिम्मत की। धोखाधड़ी के उनके प्रयास में माननीय पिता को तीस लीटर सोने के सिक्के भेजना शामिल था – दिखावे के लिए गरीबों के भोजन और कपड़ों तथा बीमारों की जरूरतों के लिए, लेकिन वास्तव में माननीय पिता की कृपा प्राप्त करने के प्रयास में, जिनकी बात पूरा फिलिस्तीन सुनता था और जिनकी बुद्धिमत्ता और सलाह का पालन करता था। महान पिता, राजा की धूर्तता को भांपकर, बादलों में उड़ने वाले एक गरुड़ की तरह थे, जो दुर्गम और अछूते थे, और जो अपने ही शिकारी को पकड़ने की अधिक संभावना रखता था। उन्होंने भेजा गया सोना यह दिखाने के लिए स्वीकार कर लिया कि वह राजा के विश्वास का लापरवाही से तिरस्कार नहीं कर रहे थे और न ही उसे क्रोधित करने का कोई कारण देना चाहते थे; इसके अलावा, ताकि इस सोने से दिए गए दान के माध्यम से, वह उनके लिए दया की याचना कर सकें, और उन्हें सही मार्ग पर ले आ सकें। लेकिन दान सफल नहीं हुआ, क्योंकि सोना सद्भावना से नहीं, बल्कि छल से भेजा गया था। राजा ने सोचा था कि थियोडोसियस में उसे एक समान विचारधारा वाला व्यक्ति मिलेगा, क्योंकि उसने सोना स्वीकार कर लिया था; लेकिन उसकी यह आशा व्यर्थ गई।

समय आया जब राजा ने अपने दूतों के माध्यम से यह मांग करना शुरू कर दिया कि रेवरेंड फादर उस आस्था की घोषणा करें जिसकी उसने उनसे उम्मीद की थी—अर्थात् यूटिकीस और सेवरस की शिक्षाओं के अनुसार। रेवरेंड ने सभी संन्यासियों को इकट्ठा करके, एक मजबूत व्यक्ति और आध्यात्मिक सेना के नेता की तरह, इस विधर्मी अंधविश्वास के खिलाफ दृढ़ता से खड़े हो गए; और राजा को उन्होंने निम्नलिखित संदेश के साथ उत्तर दिया:

हे राजा! जब हम दो चीजों के बीच चुनाव का सामना करते हैं: या तो बिना किसी ठोस नेतृत्व वाले लोगों का अनुसरण करके अपनी स्वतंत्रता और मार्गदर्शन दोनों खोकर दुष्टता से जीना, या पवित्र पिताओं के सच्चे सिद्धांतों पर अडिग रहकर सम्मानपूर्वक मरना—तो यह जान लो: हम , मृत्यु को ترجيح देते हैं, क्योंकि हम नए सिद्धांतों को स्वीकार नहीं करते, बल्कि अपने से पहले रहे पिताओं के नियमों का पालन करते हैं। जहाँ तक उन लोगों का सवाल है जो इससे हटकर कुछ भी कहते हैं, हम उन्हें धार्मिक रूप से अस्वीकार करते हैं और शाप देते हैं, और हम दबाव में शिस्मैटिक (विभाजनकारी) लोगों द्वारा नियुक्त किसी को भी स्वीकार नहीं करेंगे। हे हमारे राजा मसीह, ऐसा हम पर न आए! हालाँकि, यदि ऐसा कुछ होता है, तो हम सत्य के साक्षी के रूप में परमेश्वर—जिनका वे अब अपमान करते हैं—को पुकारकर, मृत्यु तक विरोध करेंगे। हम खुशी-खुशी न केवल अपने देश के लिए, बल्कि ऑर्थोडॉक्सी के लिए भी अपनी जान दे देंगे—भले ही हम इन पवित्र स्थानों को आग की लपटों में जलते हुए देखें। क्योंकि केवल पवित्र स्थानों के नाम से पुकारे जाने का क्या फायदा, यदि वास्तव में ये पवित्र स्थल विधर्मियों द्वारा अपमानित किए जाते हैं? हम न तो कहने, और न ही सोचने की हिम्मत करेंगे, जो कुछ भी पवित्र सार्वभौमिक परिषदों के विपरीत हो। इनमें से पहला तीन सौ अठारह पितृगणों द्वारा आयोजित किया गया था, जो एरियस के विरुद्ध एकत्रित हुए थे[928] और उस शापित को अनाथेमा (शाप) की सजा देकर, उसे चर्च की देह से अलग कर दिया; क्योंकि उसने स्वभाव से ही पुत्र को पिता के सार से अलग कर दिया था और झूठे विश्वास के सिद्धांतों को पेश किया। दूसरी परिषद, दैवी प्रेरणा से, मैसेडोनियस के खिलाफ कॉन्स्टेंटिनोपल में बुलाई गई थी, जिसने पवित्र आत्मा का अपमान किया था। तीसरी परिषद एफ़िसुस में[929] दुष्ट और अधर्मी नेस्टोरियस के विरुद्ध भव्यता से बुलाई गई थी, जिसने मसीह के उस देह की निंदा की[930] जो परम पवित्र कुँवारी से प्राप्त हुआ था। इसके बाद, कालसेडोन में छह सौ तीस ईश्वर-वाहक पिताओं की एक परिषद हुई, जिन्होंने पिछली परिषदों के अनुसार एक फरमान सुनाया और जो उन्होंने कहा था उसे स्पष्ट किया। उन्होंने शापित और दुष्ट यूटिकिस को, डियोस्कोरस के साथ, कलीसिया के पवित्र शरीर से बहिष्कृत कर दिया, और प्रेरितिक विश्वास की पुष्टि की; और जो कोई भी इसके विपरीत सोचता था, उसे मसीह

---

928 पहला (निकाया परिषद) सार्वभौमिक परिषद 325 में आयोजित किया गया था।

929 एफ़िसुस – लydia का प्रसिद्ध शहर (एशिया माइनर के पश्चिमी भाग में), जिसे पूरे एशिया माइनर की राजधानी माना जाता था। लंबे समय तक, यह संत जॉन द थियोलोजियन, द एपोस्टल का निवास स्थान था। तीसरी सार्वभौमिक परिषद 431 में वहीं आयोजित की गई थी।

930 नेस्टोरियस, जिसने (428 से 431 तक) कॉन्स्टेंटिनोपल के आर्चबिशप के रूप में कार्य किया, तारस के बिशप डायोडोरस और मोप्सुएस्टिया के बिशप थियोडोरस के पदचिन्हों पर चलते हुए, यीशु मसीह में दो स्वभावों के मिलन के तरीके के बारे में ऑर्थोडॉक्स सिद्धांत को विकृत कर दिया। उन्होंने यह सिखाया कि पवित्रतम कुँवारी मरियम से जो जन्म हुआ, वह ईश्वर-मनुष्य नहीं बल्कि एक साधारण मनुष्य था। कथित तौर पर उसका जन्म प्राकृतिक तरीके से हुआ था और, इसके अलावा, वह वासनाओं और कमियों से मुक्त नहीं था। इस शिक्षा के अनुसार, दिव्यता केवल बाद में ही मनुष्य यीशु में एक हुई, जब उसने स्वयं को भलाई में निर्णायक रूप से स्थापित कर लिया था।

की कलीसिया से बहिष्कृत कर दिया। इन बिशपों का विरोध करने के लिए, हम पर आग भड़क उठे, हमारे विरुद्ध तलवार तेज हो, हमें सबसे भयानक मृत्यु प्राप्त हो, और वास्तव में, यदि संभव हो, तो मृत्यु हमें केवल एक बार ही नहीं, बल्कि अनगिनत बार प्राप्त हो। हम, हालाँकि, किसी भी परिस्थिति में सच्ची भक्ति से विमुख नहीं होंगे, और न ही हम उस बात का अपमान करके उसे अस्वीकार करेंगे जिसे धर्मपिताओं ने वीरतापूर्वक अपनाया था। उनकी कठिनाइयों और विश्वास के लिए उनके द्वारा किए गए अनेक पराक्रमी कार्य इस बात की गवाही देते हैं; परन्तु इसे हम और वे लोग जो परमेश्वर और हमारे अनुसरण करना अच्छा समझते हैं, दृढ़ता से और अपरिवर्तित रूप से थामे रहेंगे। परमेश्वर की शान्ति, जो सब समझ से परे है (देखें फिलिप्पियों 4:7), आपके राज्य की रक्षक और मार्गदर्शक बने।'

इस पत्र के साथ, रेवरेंड ने धर्मपरायणता के प्रति अपने महान उत्साह को स्पष्ट रूप से प्रदर्शित किया। इसे पढ़ने के बाद, ज़ार को शर्म आई और वह कुछ हद तक विनिम्र हो गया, और कुछ समय के लिए अपने राज्य के भीतर ऑर्थोडॉक्स लोगों पर अत्याचार बंद कर दिया। उसने विनिम्रता से रेवरेंड को जवाब लिखा, साथ ही अन्य लोगों पर धार्मिक कलह पैदा करने का आरोप लगाया।

उन्होंने लिखा, 'हे परमेश्वर के मनुष्य, इस नवाचार के लिए हम दोषी नहीं हैं। हम निडर होकर परमेश्वर की सर्व-द्रष्टा आँख को अपना साक्षी मानते हैं—यह उथल-पुथल उन लोगों से उत्पन्न हुई है, जिन्हें दूसरों की तुलना में बहुत अधिक, विश्वास के सिद्धांतों और परिषदों का मौन रूप से सम्मान करना चाहिए था। वे, हालांकि, प्रत्येक वाणी और गरिमा में दूसरों से श्रेष्ठ दिखना चाहते हैं; वे एक-दूसरे पर हमला करते हैं और हमें अपनी-अपनी पंक्ति में खींचते हैं। यह आपकी Reverence के लिए कोई रहस्य नहीं है कि कुछ भिक्षुओं और पुरोहितों, जो खुद को रूढ़िवादी मानते हैं, ने इन प्रलोभनों को भड़काया है, जैसा कि हमने कहा है, अपनी श्रेष्ठता का प्रदर्शन करने का प्रयास करते हुए।"

हालाँकि, सम्राट की विनिम्रता अल्पकालिक थी, और कुछ समय बाद वह फिर से ऑर्थोडॉक्सी के विरुद्ध उठ खड़ा हुआ। और एक बार फिर, हर जगह—यहाँ तक कि पवित्र शहर यरूशलेम में भी—राजा के फरमान घोषित किए गए, जिसमें पवित्र परिषदों, और विशेष रूप से काल्सेडन परिषद को अस्वीकार किया गया। एक बार फिर, आध्यात्मिक योद्धा, रेवरेंड थियोडोसियस ने, यद्यपि वे पहले से ही वृद्ध थे, एक युवक के साहस का प्रदर्शन किया। जबकि हर कोई डर के मारे चुप रहा और बहुतों ने अपनी सहमति व्यक्त की, आदरणीय संत अपने मठ से यरूशलेम आए और यरूशलेम के महान चर्च में उस मंच पर खड़े हो गए जहाँ से पुरोहित आमतौर पर लोगों को धर्मग्रंथ पढ़कर सुनाते थे, और चुप्पी के लिए हाथ का इशारा करके, जोर से घोषणा की:

'जो कोई भी चार सार्वभौमिक परिषदों का उतना सम्मान नहीं करता जितना वह चार सुसमाचारों का करता है, वह धिक्कारित हो!'

यह कहने के बाद, वह एक देवदूत की तरह लोगों को विस्मित कर गया, और उसके किसी भी विरोधी ने आपत्ति करने की हिम्मत नहीं की। फिर, अपने सबसे उत्साही शिष्यों को बुलाकर, वह उनके साथ पड़ोसी कस्बों और गांवों में घूमते हुए अंधविश्वास का अंत करते और धार्मिकता स्थापित करते हुए चले गए। यह सुनकर राजा ने उन्हें निर्वासन की सजा दी - उस दुर्भाग्यशाली को यह नहीं पता था कि मृत्यु पहले ही उसके द्वार पर आ चुकी थी। रेवरेंड फादर को निर्वासित कर दिया गया, और राजा अनास्तासियस जल्द ही इस सांसारिक जीवन से चल बसे, जिसके बाद मसीह के स्वीकारकर्ता थियोडोसियस, ऑर्थोडॉक्सी के लिए निर्वासन सहने वाले अन्य लोगों के साथ, तुरंत अपने मठ लौट आए। प्राचीन रोम के बिशप फेलिक्स[931] और अंकोना के बिशप एफ्रेम[932] ने उन्हें लिखा, और सच्चे धर्म के लिए निर्वासन सहने और मृत्यु को स्वीकार करने के लिए तैयार रहने जैसे उत्साह दिखाने हेतु उस धन्य व्यक्ति की प्रशंसा में अनेक प्रशंसात्मक शब्द कहे। लेकिन अब समय आ गया है कि हम संत के चमत्कारों के वृत्तांत की ओर मुड़ें।

जिस समय पवित्र नगर यरूशलेम में राजा अनास्तासियस के दुष्ट फरमान की घोषणा की जा रही थी, उस समय इस उद्देश्य के लिए फिलिस्तीन के सभी मठाधीश एकत्रित हुए थे, और आदरणीय थियोडोसियस, जैसा कि हमने कहा है, अपने शिष्यों के साथ वहाँ आए थे। और यह पूरी परिषद इराफियोन नामक स्थान पर आयोजित की गई थी[933] । यह स्थान महान कॉन्स्टेंटाइन द्वारा स्थापित एक केंद्र है, जहाँ प्रभु के पवित्र क्रूस का उत्थान वार्षिक रूप से मनाया जाता था।

---

[931] रोम के बिशप फेलिक्स ने 526 से 530 तक रोम के चर्च का शासन किया।

[932] संत एफ्रेम ने 528 से 545 तक अंकोई की धर्मपीठ संभाली।

[933] यह नाम महान कॉन्स्टेंटिन द्वारा निर्मित तथाकथित मार्टायरीऑन में एक विशेष चैपल को दिया गया था। जीवन-दायक क्रूस चौथी शताब्दी के अंत से ही वहाँ रखी जाती थी, और इसे वार्षिक रूप से, विशेष रूप से पवित्र सप्ताह के दौरान, आमतौर पर गुड फ्राइडे को खड़ा किया जाता था।

उस समय, स्तनों की एक बीमारी से पीड़ित एक महिला, जिसे डॉक्टर 'कैंक्रम' कहते हैं[934] , जो लंबे समय तक अपनी पीड़ा सहती रही और डॉक्टरों से उसे कोई राहत नहीं मिली थी, वहाँ आई और पूरी तरह से थकी हुई, पवित्र संतों की प्रतिमा के पास खड़ी हो गई। उनमें से एक के पास जाकर (वे परम पूज्य इसिडोर थे, जो बाद में सुकिया मठ के मठाधीश बने[935]), उसने उन्हें रोते हुए अपनी बीमारी के बारे में बताया और पूछा: क्या परम पूज्य थियोडोसियस उस गिरजाघर में मौजूद थे, और वे कैसे दिखते थे? इसिडोर ने उसे संत की ओर इशारा किया। वह उनके पास आई और उनके पीछे खड़ी हो गई; उस रक्तस्राव वाली स्त्री की तरह जिसने प्रभु के वस्त्र के किनारे को छुआ था (मत्ती 9:20-22), उसने चुपके से उस पूजनीय संन्यासी के वस्त्र को छुआ, और तुरंत चंगी हो गई। यह बात उस पूजनीय संन्यासी की नज़र से छुपी न रह सकी, जो उस महिला की ओर मुड़े और कहा:

'हौसला रखो, बेटी, क्योंकि मेरे प्रभु ने कहा है, *"तेरा विश्वास तुझे चंगा कर गया है"* (मत्ती 9:22)।

धन्य इसिडोर उस महिला के पास दौड़े, घटित चमत्कार को देखने के लिए उत्सुक, और पाया कि जहाँ अचकित्सीय अल्सर था, वहाँ एक भी निशान नहीं बचा था।

राजा अनास्तासियस की मृत्यु और पूजनीय पिता के बंदीगृह से लौटने के बाद, थियोडोसियस की प्रथा थी कि वह प्रार्थना करने के लिए बेथलहम जाता था। एक अवसर पर, अपने श्रम से विश्राम करने की इच्छा से, वह सड़क से हटकर रेवरेंड मार्किन के मठ में गया। मार्किन ने अपने प्रिय अतिथि का गर्मजोशी से स्वागत किया, परन्तु उसके पास उसे देने के लिए कुछ भी नहीं था, क्योंकि उस समय उसके पास न तो रोटी थी और न ही गेहूँ। जब उन्होंने एक-दूसरे के साथ काफी समय आध्यात्मिक बातचीत में बिताया और भोजन का समय आ गया, तो मार्सियन ने अपने शिष्यों को कुछ सोचियो पकाने और उन्हें परोसने का निर्देश दिया। हालाँकि, थियोडोसियस ने उनकी गरीबी को देखकर अपने शिष्यों को आदेश दिया कि वे अपने थैले से यात्रा के लिए घर से लाया हुआ कुछ रोटी निकालें और उन्हें भेंट करें। जब वे खा रहे थे, तो पूजनीय मार्शियन ने पूजनीय थियोडोसियस से कहा:

'पिताजी, इस बात को हम पर न लगाइए कि हमने इतना मामूली भोजन बनाया है, और हमें रोटी न चढ़ाने के लिए फटकारिए भी नहीं, क्योंकि हम बहुत गरीब हो गए हैं और हमारे पास बिल्कुल भी गेहूँ नहीं है।'

जब उन्होंने यह कहा, तो अद्भुत थियोडोसियस ने मार्शियन की दाढ़ी को देखा और उसमें गेहूँ का एक दाना पाया जो किसी तरह वहाँ पहुँच गया था। उसे अपने दाहिने हाथ से सावधानीपूर्वक और चुपचाप निकालते हुए, उन्होंने अपने चेहरे पर एक प्रसन्न मुस्कान के साथ कहा:

'गेहूँ तो यह रहा—तुम यह कैसे कह सकते हो कि तुम्हारे पास गेहूँ नहीं है?'

धन्य मार्शियन ने, आनंदपूर्वक उस दाने को—जो उनकी दाढ़ी से तोड़ा गया था—थेओडोसियस के हाथों से लेते हुए, मानो वह एक उपजाऊ बीज हो, उसे अनाज भंडार में ले जाने का आदेश दिया, यह विश्वास करते हुए कि संत थेओडोसियस के आशीर्वाद से, यह बिना किसी प्रयास के एक खेती किए हुए खेत से भी अधिक फल देगा—और ठीक ऐसा ही हुआ। थियोडोसियस के प्रस्थान के बाद, जब सुबह शिष्यों ने अनाजघर के दरवाज़े खोलने चाहे, तो उन्होंने देखा कि वह गेहूँ से इतना भरा हुआ था— —कि दरवाज़े खुल ही नहीं रहे थे। मार्शियन ने परम पूजनीय थियोडोसियस को यह खबर भेजकर इस चमत्कार की सूचना दी और गेहूँ के गुणन के लिए अपनी कृतज्ञता व्यक्त की।

रेवरेंड ने उत्तर दिया:

'यह मैं नहीं, बल्कि आप, पिताजी, थे जिन्होंने गेहूँ को बढ़ाया, क्योंकि अनाज आपकी दाढ़ी से लिया गया था।'

अलेक्जेंड्रिया की एक प्रसिद्ध महिला[936] अपने छोटे बेटे के साथ आदरणीय थियोडोसियस के मठ में आईं, जिसने दूर से पवित्र पिता को देखकर और उनकी ओर इशारा करते हुए अपनी माँ से कहा:

'वही हैं जिन्होंने मुझे कुएँ में डूबने से बचाया था, मेरा हाथ पकड़कर ताकि मैं पानी में न डूब जाऊँ।'

इस चैपल को हर समय बंद रखा जाता था, और इसकी चाबी एक विशेष पुरोहित के पास रहती थी जिसे स्टाउरोफिलाक्स (क्रूस का रक्षक) कहा जाता था।

[934] यह संभवतःएक لاعلاج बीमारी को संदर्भित करता है जिसे अब 'कैंसर' के नाम से जाना जाता है।

[935] सबसे प्रसिद्ध फिलिस्तीनी मठों में से एक, जिसकी स्थापना सेंट चारिटॉन (जिनका स्मरण 28 सितंबर को किया जाता है) ने की थी, बेथलहम के दक्षिण में स्थित है।

[936] प्राचीन काल में इस नाम के कई नगर प्रसिद्ध थे। यहाँ इसे भूमध्य सागर के तट पर स्थित मिस्र की राजधानी अलेक्ज़ेंड्रिया के अर्थ में समझना चाहिए। यह नगर अपनी विद्वता और संपदा के लिए प्रसिद्ध था; इसकी स्थापना 332 ईसा पूर्व में महान अलेक्ज़ेंडर ने की थी।

माँ, आदरणीय के चरणों में गरिकर, नम्निलखिति बातें बताईं:

उसने कहा, 'यह लड़का, अपने साथियों के साथ खेलते समय, गलती से एक बहुत गहरे कुएँ में गरि गया, और हमें लगा कि उसे चोट लग गई है और वह डूब गया है। उसके लिए रोते हुए जैसे कि वह पहले ही मर चुका हो, हमने एक आदमी को कुएँ में नीचे भेजा ताकि लड़के का शव पानी से निकाल सके, लेकिन हमने बच्चे को पानी की सतह पर जीवति पाया। जब हम यह देखकर चकति हो रहे थे और पूछ रहे थे कि वह कैसे डूबने से बच गया, तो उसने हमें बताया: 'एक वृद्ध भक्षिु प्रकट हुए, उन्होंने मेरा हाथ पकड़ा और मुझे तैरते हुए बनाए रखा।'

तब से, उस लड़के को अपने साथ लेकर, मैं शहरों और गांवों, पहाड़ों और रेगस्तिानों से होकर यात्रा कर रहा हूँ - जब तक कि मैं उस पति को न ढूंढ लूं। और अब मुझे आपकी पावन उपस्थति मिलि गई है, और मेरा बच्चा, जसिे आपने डूबने से बचाया था, ने आपको पहचान लयिा है।

एक अन्य महलि को प्रसव के दौरान बहुत कष्ट झेलना पड़ा; वह मृत शशिुओं को जन्म देती थी, और हर बार अत्यधकि पीड़ा के साथ। वह एक ओर तो बार-बार बच्चे देती थी, और दूसरी ओर नश्चिंतान थी: बार-बार बच्चे इसलिए देती थी क्योंकि उसके बच्चे मृत पैदा होते थे। आँखों में आँसू लिए, उसने रेवरेंड थयिोडोसयिस से अपने लिए प्रार्थना करने की वनिती की, ताकि वह अब मृत शशिु को जन्म न दे और उसका भयानक दुख कम हो जाए। उसने यह भी अनुरोध कयिा कि, यदि वह एक लड़के को जन्म दे, तो उसे उनके नाम - थयिोडोसयिस - पर नाम रखने की अनुमति दी जाए।

उसने कहा, 'यदि आप अनुमति देंगे कि मेरे होने वाले बच्चे का नाम आपके नाम पर रखा जाए, तो मुझे उम्मीद है कि बच्चा जीवति होगा।'

रेवरेंड ने उसकी वनिती मान ली, उसके लिए ईश्वर से भक्तपिूर्वक प्रार्थना की, और जब उस महलि को प्रसव का समय आया, तो उसे पहले जैसी पीड़ा नहीं हुई; उसने अधकि आसानी से बच्चे को जन्म दयिा, और बच्चा जीवति था, एक लड़का था, और उसका नाम रेवरेंड के नाम पर रखा गया। जब उसने उसे स्तनपान कराना बंद कर दयिा और वह थोड़ा बड़ा हो गया, तो उसे रेवरेंड फादर के पास मठ में लाया गया और ईश्वर की सेवा में मठवासी जीवन के लिए समर्पति कर दयिा गया। इसी तरह, बेथलहम की एक अन्य महलि, जो अपने मर रहे बच्चों के शोक में थी, ने अपने नवजात शशिु का नाम रेवरेंड फादर के नाम पर रखकर उसकी जान बचाई; वह स्वस्थ होकर बड़ा हुआ और एक कुशल व्यक्ति बना, क्योंकि वह एक उत्कृष्ट वास्तुकार नकिला।

एक अवसर पर, कैटरपलिर और टड्डियाँ फ़लिस्तीन में तबाही मचा रहे थे। तब तक रेवरेंड फादर बहुत बूढ़े हो चुके थे और चल नहीं पाते थे। फरि भी, उन्होंने अपने शष्यिों को आदेश दयिा कि उन्हें उन खेतों में ले जाएँ जहाँ फसलें नष्ट होने की कगार पर थीं, और वहाँ उन्होंने टड्डियों और कैटरपलिरों को रोकते हुए कहा:

'हमारे प्रभु, जो हम सभी के साझा हैं, आपको आज्ञा देते हैं कि आप मानव श्रम के फलों को नष्ट न करें और न ही गरीबों के भोजन को खा जाएँ।'

और तुरंत टड्डियाँ बादल की तरह बखिर गईं, और कीड़े नष्ट हो गए।

एक अवसर पर, भाइयों को कपड़ों की बहुत ज़रूरत थी और उनके पास अपनी नग्नता ढकने के लिए कुछ भी नहीं था। वे रेवरेंड फादर के पास आए और उनसे वनिती करने लगे। उनके पास कपड़े खरीदने का कोई साधन नहीं था, इसलिए वे केवल उनके प्रति सहानुभूति व्यक्त कर सकते थे; फरि भी, प्रभु के वचनों का हवाला देते हुए, उन्होंने उनसे कहा:

'कल की चति मत करो: पहले परमेश्वर के राज्य और उसकी धार्मकिता की खोज करो, और ये सब बातें तुम्हें मलि जाएँगी; क्योंकि तुम्हारा पति जानता है कि तुम्हें क्या चाहिए, इससे पहले कि तुम उससे माँगो' (मत्ती 6:34, 33, 8)।

जब संत इस प्रकार भाइयों को सांत्वना दे रहे थे, तो एक व्यक्ति आया जसिे कोई नहीं पहचानता था; उसने यह नहीं बताया कि वह कौन था या कहाँ से आया था। उसने मठ की ज़रूरतों के लिए रेवरेंड फादर को सौ सोने के सक्के दिए और चला गया। सम्माननीय पति ने इस प्रावधान के लिए ईश्वर का धन्यवाद कयिा, और सोने का उपयोग भाइयों के लिए कपड़े उपलब्ध कराने में कयिा, और वे सभी लंबे समय तक सुसज्जति रहे।

Bostr[937] में चर्च के पादरी जूलयिन, जन्होंने अपनी युवावस्था में रेवरेंड फादर से पढ़ना सीखा था, ने उनके बारे में नम्निलखिति बातें बताईं:

---

[937] वोस्ट्रा या बोस्ट्रा – पवत्रि भूमि में एक शहर, जो प्राचीन काल में जॉर्डन के पार मनस्सेह के अर्ध-कबीले के लेवयिाई शहरों में से एक था।

'एक बार,' उन्होंने कहा, 'हम रेवरेंड फादर के साथ बोस्ट्रम आए थे, और वहाँ एक महिला थी, जो अपनी विशेष द्वेष के लिए जानी जाती थी, जिसने हमें देखकर रेवरेंड फादर को गुस्से से घूरा और उन्हें चापलूस और झूठा कहा; और तुरंत ही वह ईश्वर की सजा की चपेट में आ गई: वह अचानक गिर पड़ी और मर गई।

उन्होंने अपनी बात जारी रखते हुए कहा, 'ऐसा हुआ कि हम एक मठ के पास से गुज़र रहे थे, जिसमें उत्तर के विधर्म को मानने वाले भिक्षु रहते थे। हमें देखते ही, उन्होंने गाने के सामान्य समय से पहले भाइयों को बुलाने के लिए चर्च की घंटी[938] बजाना शुरू कर दिया।' रेवरेंड फादर, यह समझते हुए कि वे हमारे खिलाफ कोई साजिश रच रहे थे, धार्मिक क्रोध से भर गए और भविष्यवाणी करते हुए प्रभु के वचन बोले:

'यहाँ एक पत्थर पर दूसरा न रहेगा; सब कुछ नाश हो जाएगा' (मत्ती 24:2)।

ये शब्द जल्द ही सच हो गए: कुछ ही समय बाद, अगारियों[939] ने उस मठ पर रात में हमला किया; उसमें मौजूद सब कुछ लूटने और सभी भिक्षुओं को बंदी बनाने के बाद, उन्होंने मठ में आग लगा दी और उस स्थान को तबाह कर दिया, ठीक वैसे ही जैसे संत ने भविष्यवाणी की थी।

ग्रीक सेना के कमांडर, जिन्हें पूर्वी कोमिति के नाम से जाना जाता था, जिसका नाम करिकि था, जो युद्ध में पराक्रमी लेकिन ईश्वर के प्रति भक्तिमय था, ने फारसियों के खिलाफ एक अभियान शुरू किया[940] ; पहले, वह पवित्र स्थानों की पूजा करने और अपने दुश्मनों के खिलाफ ईश्वर की मदद मांगने के लिए यरूशलेम आया। वह थियोडोसियस के मठ में भी आया, क्योंकि पूज्य पिता की पवित्रता की कीर्ति दूर-दूर तक फैल चुकी थी, जो सभी को उनकी ओर आकर्षित कर रही थी। संत से बातचीत करते हुए, उसे उनसे बहुत लाभ हुआ: उसने उनसे सुना कि मनुष्य को अपने धनुष पर भरोसा नहीं करना चाहिए, न ही अपनी आशा सैनिकों की भीड़ में रखनी चाहिए, बल्कि एकमात्र सहायक—ईश्वर—को जानना चाहिए और उनकी अजेय शक्ति पर भरोसा रखना चाहिए, क्योंकि उनके लिए यह करना आसान है कि एक आदमी हजारों को भगा दे, और दो लोग कई हज़ार दुश्मनों को भगा दें। इस शिक्षा और बातचीत के माध्यम से, काउंट को संत के प्रति बहुत प्रेम हो गया और उसने उनसे वह बाल वाली कमीज़ माँगी जो संत पहनते थे, ताकि वह युद्ध में उसकी ढाल के रूप में काम आ सके। जब यूनानी सेना का सामना फ़ारसियों से हुआ और एक भयंकर युद्ध छिड़ गया, तो काउंट, पूजनीय थियोडोसियस की रोंगटेदार कमीज़ को कवच की तरह पहनकर, तीरों, भालों और तलवारों से अछूता रहा और उसने बड़ी बहादुरी दिखाई। युद्ध समाप्त होने के बाद लौटकर, वह एक बार फिर पूजनीय संत के पास गया और घोषणा की:

उसने कहा, 'पिताजी, मैंने आपको स्वयं युद्ध में देखा, जो मेरी मदद कर रहे थे और मुझे अपने दुश्मनों के लिए एक भय का कारण बना रहे थे, जब तक कि हमने फारसी सेना को हरा नहीं दिया।'

आदरणीय थियोडोसियस महान न केवल इस काउंट को तब प्रकट हुए जब वह दूर था, बल्कि वे कई स्थानों पर कई अन्य लोगों को भी प्रकट हुए, और उन्हें शीघ्र सहायता प्रदान की: वे प्रकट हुए, और लहरों तथा तूफानों के बीच जहाजों पर मरते हुए लोगों, मरुभूमि में भटक रहे लोगों, और जंगली जानवरों के जबड़े में फंस चुके लोगों को विपत्ति से बचाया: कुछ को सपने में, तो कुछ को जागते हुए।

वह न केवल लोगों के लिए, बल्कि मूक पशुओं के लिए भी एक शीघ्र सहायक थे। एक यात्री एक गधे को ले जाते हुए चल रहा था। रास्ते में उसे एक शेर मिला, जिसने उस आदमी की ओर ध्यान दिए बिना, गधे पर झपटकर उसे चीर-फाड़ कर खा गया। डर से कांपते हुए, उस आदमी ने आदरणीय संत का नाम पुकारा, और कहा:

'थेओडोसियस, हे ईश्वर के पुरुष, मेरी मदद करो!'

और तुरंत, संत का नाम सुनते ही, शेर मुड़ गया और रेगिस्तान में भाग गया।

आइए हम एक घटना को याद करें जो पूजनीय की दूरदर्शिता को भी दर्शाती है। एक बार, अपनी मृत्यु से ठीक पहले, उन्होंने भाइयों को बुलाने के लिए घंटी बजाने का आदेश दिया। जब सभी इकट्ठा हो गए, तो उन्होंने आह भरते हुए, आँखों में आँसू भरकर कहा:

---

[938] 'बिलो', 'पीटना' शब्द से, एक लकड़ी या धातु का तख्ता है जिसे धार्मिक अनुयायियों को सामूहिक पूजा के लिए बुलाने के लिए बजाया जाता था। हमारे देश में, 'बिलो' की जगह घंटियों ने ले ली है, लेकिन ग्रीस में वे आज भी उपयोग में हैं।

[939] यानी अरब। इब्राहीम और हागर के पुत्र इसमाइल के वंशज।

[940] उनका देश पश्चिम में सुसियाना, उत्तर में मीडिया और पार्थिया, पूर्व में कार्मेल से सटा हुआ था, और दक्षिण में फारस की खाड़ी से जुड़ा था। पहले, फारसी मीडियनों, ग्रीकों और पार्थियनों के अधीन थे, लेकिन 226 ईस्वी से वे स्वतंत्र हो गए और उन्होंने अक्सर रोमन साम्राज्य के खिलाफ युद्ध छेड़ा।

'हमें प्रार्थना करनी चाहिए, हे पतिवर और भाइयो, हमें प्रार्थना करनी चाहिए, क्योंकि मैं देखता हूँ कि ईश्वर का क्रोध पहले से ही पूर्वी भूमि पर मंडरा रहा है।'

इसके छह या सात दिन बाद, यह खबर मिली कि एक बड़े भूकंप ने अंतीयक को तबाह कर दिया था – ठीक उसी क्षण जब रेवरेंड फादर ने प्रभु के क्रोध को देखकर भाइयों को प्रार्थना करने का आदेश दिया था।

इसके बाद, हमारे पूज्य पिता थियोडोसियस, जब वे अपने धन्य निधन के समीप पहुँचे, तो पूरे एक वर्ष तक वे अपनी शय्या पर पड़े रहे। उनके होठों पर सदैव प्रार्थना रहती थी, यहाँ तक कि जब वे सो जाते थे, तब भी उनके होठ हिलते थे और वे वेदों तथा प्रार्थनाओं का उच्चारण करते थे जिनके वे आदी थे। और जब संत जागे, तो उनके होठों पर एक भजन था, इस प्रकार दाऊद का वचन उनमें पूरा हुआ: *'रात्रि में मेरा गीत तेरे ही लिए है'* (भजन संहिता 41:9)। वे अक्सर सद्गुण सिखाते थे और भाइयों को उपदेश देते थे। और अपने निधन से तीन दिन पहले, उन्होंने तीन बिशपों को, जिन्हें वे प्रिय मानते थे, बुलाया और उन्हें ईश्वर के पास अपने प्रस्थान की सूचना देकर, उनसे बिछड़ने पर विलाप और रो रहे लोगों को अंतिम चूमन दिया। उसके बाद तीसरे दिन, ईश्वर से प्रार्थना करते हुए, उन्होंने अपनी आत्मा ईश्वर को सौंप दी, और इस प्रकार उन्होंने कुल एक सौ पाँच वर्ष की आयु जी। ईश्वर ने उनके निधन को निम्नलिखित चमत्कार से सम्मानित किया: अलेक्जेंड्रिया का एक निवासी, स्टीफन नामक एक व्यक्ति, लंबे समय से एक राक्षस के वश में था। उस पूजनीय की मृत्यु पर, उनके शव-पेटिका को छूने पर, वह अपने यातनाकर्ता से मुक्त हो गया और स्वस्थ हो गया। तुरंत ही, संत की मृत्यु की खबर दूर-दूर तक फैल गई, और सभी शहरों से लोगों और मठों के भिक्षुओं की भीड़ इकट्ठा हो गई; और यरूशलेम के पैट्रिआर्क पीटर, बिशपों के साथ आए, और उन्होंने हमारे प्रभु यीशु मसीह की महिमा के लिए, जो पिता और पवित्र आत्मा के साथ सदा-सदा महिमा प्राप्त करते हैं, हमारे पिता थियोडोसियस के पवित्र शरीर को सम्मानपूर्वक उसी गुफा में दफनाया जहाँ वे मूल रूप से रहते थे। आमीन।

कॉन्टाकियन, स्वर 8:

हे प्रभु के प्रांगणों में रोपित, आप अपने पूजनीय सद्गुणों द्वारा सुन्दरता से फल-फूल उठे, और हे परमेश्वर के दिव्य प्रांगणों के चरवाहे, आपने अपने आँसुओं के बादलों से सिंचित होकर मरुस्थल में अपने बच्चों को बढ़ाया। अतः हम पुकारते हैं: हे पिता थियोडोरस, आनन्दित हो।

एंटीओक के पूजनीय थियोडोसियस का स्मरणोत्सव

11 जनवरी को स्मरण किया जाता है

परम पूजनीय थियोडोसियस तपस्वी एंटिओक के मूल निवासी थे[941] ; उनके माता-पिता धर्मपरायण लोग थे, और उनसे उन्होंने प्रभु के विधान में सुदृढ़ शिक्षा प्राप्त की। हमारे उद्धारकर्ता की सर्वोच्च आज्ञा (लूका 14:26, 27) का पालन करते हुए, धन्य थियोडोसियस ने अपना पारिवारिक घर, अपने रिश्तेदारों, अपनी संपत्ति और अन्य सांसारिक वस्तुओं को छोड़ दिया, और समुद्र के किनारे एक जंगली इलाके में चले गए, जहाँ उन्होंने अपने लिए एक छोटा सा कोठरी बनाया और वहीं रहने लगे। यहाँ इस पूजनीय संत ने एक बाल-कपड़ा पहनकर और भारी जंजीरों को धारण करके अपना उत्कृष्ट संन्यासी जीवन व्यतीत किया – कुछ जंजीरें उनकी गर्दन के चारों ओर, कुछ उनकी कमर के चारों ओर, और कुछ उनके दोनों हाथों पर थीं। संत थियोडोसियस ने अपना सारा समय प्रार्थना और श्रम में समर्पित कर दिया, और इस प्रकार उन्होंने सांसारिक इच्छाओं, अहंकार और अन्य मानवीय जुनूनों को वश में कर लिया। उनके सिर के बाल इतने लंबे हो गए कि वे उनके पैरों तक पहुँच गए। आदरणीय संत कभी रस्सियाँ बुनने में, तो कभी सब्जी के बगीचे में काम करते थे, खुद खाद के गड्ढे खोदते, बीज बोते और सब्जियाँ काटते, जिनका उपयोग फिर खुद तपस्वी और उनके पास आने वाले आगंतुकों के भोजन के लिए किया जाता था।

आदरणीय थियोडोसियस के कारनामों की ख्याति और भी व्यापक रूप से फैल गई, और कई आगंतुकों ने उस धन्य तपस्वी के पास बसने की इच्छा व्यक्त करना शुरू कर दिया ताकि वे उनके जीवन के तरीके का अनुकरण कर सकें। उनका

[941] एशिया माइनर और सीरिया में इस नाम से कई शहर प्रसिद्ध हैं। यहाँ, बेशक, यह सीरिया के एंटिओक को संदर्भित करता है।

स्वागत करते हुए, संत थियोडोसियस ने अपने रेगिस्तान को एक स्वर्गीय निवास में बदल दिया। एक अवसर पर, एगारियन[942] ने उस क्षेत्र पर आक्रमण किया जहाँ आदरणीय की मठ थी; आसपास के क्षेत्र को तबाह करने के बाद, दुश्मनों ने मठ को नुकसान पहुँचाया, लेकिन ऐसा करते समय उन्होंने उसमें दिव्य शक्ति की उपस्थिति को महसूस किया और जल्द ही पीछे हट गए। इस आक्रमण के परिणामस्वरूप, आदरणीय संत ने रेगिस्तान छोड़ दिया और अपने स्वदेश लौट आए; वहाँ उन्होंने एक छोटा सा आश्रम बनाया और अपने कुछ शिष्यों के साथ घिरे रहकर अपनी मुक्ति के लिए परिश्रम करना जारी रखा। अपने तपस्वी जीवन के इस नए स्थान में थोड़ी देर तक रहने के बाद, संत थियोडोसियस प्रभु में शांतिपूर्वक निद्रित हो गए[943] ।

क्लोप्स्क के पूजनीय माइकल की स्मृति

11 जनवरी को स्मरण किया जाता है

वेलिकी नोवगोरोड से पंद्रह वर्स्ट दूर, वेरयाज़ी नदी के किनारे, क्लोप्सकी नामक एक मठ था, जिसमें जीवन-दायक त्रिमूर्ति को समर्पित एक चर्च था[944] । शुरुआती वर्षों में, यह मठ कुछ ही लोगों को पता था, लेकिन बाद में संत माइकल के चमत्कारों के कारण इसे व्यापक प्रसिद्धि मिली। इस मठ के मठाधीश थियोडोसियस थे, जो एक महान पुण्यशील व्यक्ति थे; उनके कार्यकाल के दौरान ही धन्य माइकल क्लॉप्सकी मठ में आए थे[945] ।

आज तक यह अज्ञात है कि संत माइकल कहाँ से आए थे और उनके माता-पिता कौन थे। यह घटना गर्मियों में हुई, जब संपूर्ण मठवासी समुदाय मैटिन्स (Matins) में उपस्थित था; कैनन के नौवें ओड (ode) के दौरान, दैवीय लिटिर्जी (Divine Liturgy) का संचालन कर रहे हयेरोमोंक (hieromonk) ने चर्च में धूप दी और अपनी कोठरी में धूप देने गए, जो चर्च के पास स्थित थी; सेल को खुला पाया—हालांकि उसने चर्च में जाते समय इसे बंद कर दिया था—हायरोमोंक अंदर गया और एक भिक्षु वेश में एक आदमी को वहां बैठे हुए देखा; उसके सामने एक मोमबत्ती जल रही थी, और वह पवित्र प्रेरितों के कामों की पुस्तक की नकल कर रहा था। चर्च में लौटकर, हयरोमोंक ने भिक्षु-प्रमुख और भाइयों को वह सब बताया जो उसने देखा था। दिव्य लिटिर्जी समाप्त होने के बाद, वे कोठरी में गए और पाया कि वह अंदर से बंद थी। भिक्षु-प्रमुख ने प्रार्थना की, लेकिन कोठरी के अंदर से कोई उत्तर नहीं मिला। उन्होंने दरवाज़े पर खटखटाना शुरू किया; लेकिन वह बंद ही रहा। तब मठाधीश ने बरामदे के ऊपर की छत को हटाने का आदेश दिया; अंदर जाने पर, उन्होंने पाया कि भीतरी दरवाज़ा भी बंद था। जब मठाधीश के आदेश पर उसे तोड़कर खोला गया और सभी कोठरी में दाखिल हुए, तो उन्होंने उस वृद्ध को वहाँ बैठे-बैठे लिखते हुए पाया। मठाधीश ने उससे पूछा, 'मुझे बताओ, क्या तुम इंसान हो या कोई आत्मा?' उस वृद्ध ने मठाधीश के शब्दों को दोहराया। मठाधीश ने एक प्रार्थना की, और वृद्ध ने मठाधीश की वही प्रार्थना के शब्द दोहराए। फिर मठाधीश ने आगंतुक पर क्रॉस का चिह्न बनाया और उसे लोबान की धूप दी; लेकिन वृद्ध ने धूप से मुंह मोड़ लिया और एक पवित्र मूर्ख की तरह व्यवहार किया।

भाइयों के साथ, संत माइकल लिटिर्जी (प्रार्थना सभा) के लिए चर्च में गए, जिसके दौरान उन्होंने मठ के गायक-गायिकाओं के साथ कोरस में गाया। मठाध्यक्ष ने उन्हें एपिस्टल (प्रेरित पत्र) पढ़ने का निर्देश दिया, और उनकी वाचन की सुंदरता और प्रेरणा से सभी को गहरा सांत्वना मिली। भोजन के बाद, जिसमें संत ने निर्धारित वाचन किया था, मठाधीश ने पूजनीय माइकल को उनके लिए निर्धारित कोठरी में ले गए, और तब से वह धन्य व्यक्ति जीवन-प्रद त्रिमूर्ति के मठ में रहे, चर्च और भोजनशाला में एक पाठक के रूप में अपना कर्तव्य निभाते रहे, और जो भी उनका पाठ सुनते थे वे गहराई से प्रभावित होते थे।

---

[942] अर्थात् अरब (बाद में यह नाम मुस्लिम अरबों द्वारा अपनाया गया। – *संपादकीय टिप्पणी, एवी*)

[943] एंटीओक के आदरणीय थियोडोसियस की मृत्यु लगभग 412 में हुई।

[944] इस मठ की स्थापना की सटीक तारीख अज्ञात है; यह नोवगोरोड के दक्षिण में, इल्मेन झील से तीन वर्स्ट की दूरी पर स्थित है।

[945] यह 23 जून 1408 को, महान राजकुमार वासिली दिमित्रीविच (1389–1425) के शासनकाल के दौरान और संत मेट्रोपॉलिटन फोटियस के अधीन हुआ था।

हालाँकि तो मठाधीश और न ही अन्य भिक्षु, नए आए भ्राता का नाम, वह कहाँ से आया था, या उसकी पृष्ठभूमि क्या थी, यह पता लगा सके। एक अवसर पर, राजकुमार कॉन्स्टेंटिन दिमित्रीविच[946] ने क्लोप्सक मठ का दौरा किया; भोजन के दौरान संत माइकल का पाठ सुनने के बाद, राजकुमार उनके पास आए, उन्हें पहचान लिया और कहा:

'यह माइकल है, मैक्सिम का पुत्र।'

रेवरेंड ने उत्तर दिया:

'केवल वही जानता है जिसने मुझे बनाया है कि मैं कौन हूँ।'

तब मठाध्यक्ष ने टिप्पणी की:

'मेरे बेटे, तुम मुझे अपना नाम क्यों नहीं बताओगे?'

और संत ने पुष्टि की कि उनका नाम माइकल था[947] ।

क्लोप्सक मठ में अपने समय के दौरान, रेवरेंड माइकल केवल रोटी और पानी खाते थे, और वह भी सप्ताह में केवल एक बार और बहुत कम मात्रा में। जब, प्रार्थना के महान कार्यों के बाद, संत को थकान महसूस होती थी, तो वे सीधे जमीन पर लेटकर आराम करते थे; अपनी कोठरी में उनके पास न तो कोई संपत्ति थी, और न ही उनके शरीर को ढकने के अलावा कोई कपड़ा था। उन महान तपस्याओं को गिनाना असंभव है जो पूज्य ने मसीह के लिए कीं; अपनी तपस्या और आत्म-त्याग के कारण, उनका शरीर, मानो, एक छाया जैसा हो गया था।

उस समय, वेलीकी नोवगोरोड और उसके आसपास तीन साल तक सूखा पड़ा: न केवल नदियाँ बल्कि धाराएँ भी सूख गई थीं। फिर, आदरणीय माइकल की प्रार्थनाओं से, मठ के पास एक भूकंप आया और प्रचुर पानी से उफनता हुआ एक झरना बहने लगा, जो आज भी मठ समुदाय और आगंतुकों दोनों की जरूरतों को पूरा करता है[948] । सूखे के बाद, क्षेत्र में अकाल पड़ा, जिसके दौरान गरीबों की भीड़ एक रोटी के लिए मठ आने लगी। मठाधीश, यह डरकर कि आपूर्ति खत्म हो जाएगी, यह नहीं जानते थे कि क्या करें; लेकिन आदरणीय माइकल ने, यह इंगित करते हुए कि प्रभु ने सात रोटी से चार हजार लोगों को खिलाया था, मठाधीश को सभी भूखे लोगों को खिलाने के लिए मना लिया। जब भाइयों ने इसका विरोध किया, तो परम पूज्य ने उन्हें और मठाधीश को अनाज के भंडार में ले गए, जहाँ वे यह देखकर चकित रह गए कि संत की प्रार्थनाओं के कारण, अनाज की आपूर्ति कम नहीं हुई थी। आदरणीय माइकल ने वेलिकी नोवगोरोड के कब्जे[949] के बारे में विस्तार से भविष्यवाणी की और मसीह के नाम पर कई चमत्कार करने के बाद, प्रभु में शांतिपूर्वक निधन कर गए[950] । उनके सम्मानित और दीर्घ-सहिष्णु शरीर को जीवन-दायक त्रिमूर्ति मठ[951] में मठाधीश और भ्राताओं द्वारा दफनाया गया, जहाँ परमपूज्य माइकल ने सेवा की थी, और कैथेड्रल चर्च के दाहिनी ओर सुलाया गया; वहाँ यह आज भी विराजमान है, और हमारे ईश्वर मसीह की महिमा के लिए, विश्वास के साथ आने वालों पर अनेक चमत्कारिक उपचार करता है।

---

[946] महान राजकुमार दिमित्री इवानोविच डॉन्स्कोय का सबसे छोटा बेटा 1389 में, अपने पिता की मृत्यु से चार दिन पहले पैदा हुआ था। उनके भाई, ग्रैंड प्रिंस वासिली दिमित्रीविच ने उन्हें टोशिया और उस्तीउज्ना का अपानज (appanage) प्रदान किया, लेकिन 1419 में, जब कॉन्स्टेंटिन दिमित्रीविच ने अपने भाई की अवज्ञा की, तो बाद वाले ने इस अपानज को रद्द कर दिया, और कॉन्स्टेंटिन नोवगोरोड भाग गए, जहाँ उन्होंने पहले, 1408 में, ग्रैंड प्रिंस के गवर्नर के रूप में कार्य किया था। वह दो साल तक निर्वासन में रहा; इस दौरान, उसने क्लॉप्स्की मठ में जीवन-प्रद त्रिमूर्ति को समर्पित एक पत्थर के चर्च का निर्माण करवाया।

[947] क्लोप्सक के संत माइकल एक बोयार परिवार से थे।

[948] आज भी, क्लोप्स्की मठ में एक कुआँ है, जिसे परंपरा के अनुसार, उसी झरने से बनाया गया था जो सूखे के दौरान धन्य माइकल की प्रार्थनाओं से निकला था। 23 जून को, मठ में संत माइकल के आगमन के दिन, आसपास के गांवों से यहाँ एक जुलूस निकाला जाता है।

[949] एक अवसर पर, धन्य माइकल व्याझत्स्की मठ में थे। अचानक, वह घंटीघर पर पहुँच गए और सभी घंटियाँ बजाने लगे। जब लोगों ने पूछा कि इसका क्या मतलब है, तो धन्य व्यक्ति ने पागलपन का नाटक करते हुए उत्तर दिया: 'आज मास्को में खुशी है,' और यह भी जोड़ा कि महा राजकुमार को एक पुत्र, इवान, का आशीर्वाद मिला है, जो अपने पड़ोसियों के लिए आतंक का कारण बनेगा, नोवगोरोड पर कब्जा कर लेगा, उसकी प्रथाओं को बदल देगा, उनसे उनका सोना छीन लेगा और उन्हें पूरी तरह से अपने शासन के अधीन कर लेगा। वास्तव में, 22 जनवरी 1440 को राजकुमार इवान वासिलीविच का जन्म हुआ, जिसने 1471 में नोवगोरोड पर विजय प्राप्त की। नोवगोरोड को अंततः1480 में मस्कोवाइट राज्य में मिला लिया गया।

[950] संत माइकल 44 वर्षों तक क्लोप्स्की मठ में रहे और 1452 में उनका निधन हो गया।

[951] संत माइकल की स्मृति का 1547 की परिषद के आदेशानुसार हर जगह जश्न मनाया जाना चाहिए।

ट्रोपारयिन, स्वर 8:

हे परम पूजनीय और ईश्वर-वाहक माइकल, जिन्होंने मसीह के लिए स्वेच्छा से पृथ्वी पर कठिनाइयों को सहन किया, आपने इस संसार के सौंदर्य से पूर्णतःघृणा की; और उपवास तथा प्यास के द्वारा, तथा जमीन पर सोकर, शरीर के सुखों को मुरझा दिया, और न तो कभी गर्मी से, न ठंड से, न वर्षा से, न बर्फ से, और न ही किसी अन्य प्राकृतिक कठिनाई से पीछे हटे, किन्तु हे पूजनीय और ईश्वर-वाहक पिता माइकल, आपने सद्गुणों द्वारा अपनी आत्मा को शुद्ध किया, जैसे कि सूबिल में सोना शुद्ध होता है, और अब आप स्वर्ग में परम पवित्र त्रिमूर्ति के सिंहासन के समक्ष खड़े हैं। किन्तु चूँकि आपके पास बड़ी निर्भीकता है, हमारे ईश्वर मसीह से प्रार्थना करें कि हमारी आत्माएँ उद्धार पाएँ।

कॉन्टाकियन, स्वर 8:

क्योंकि पवित्र आत्मा की शक्ति से आप प्राचीनकाल के ईश्वर-वक्ता भविष्यवक्ताओं के समान थे, जो अज्ञात और छिपी हुई बातों की भविष्यवाणी करते थे, और ईश्वर की व्यवस्था के विधानों को पूरा करते थे, और मसीह के विषय में कई अन्य चमत्कार करके, और लोगों को चकित करके, आपने उन्हें यह पुकारते हुए उत्सव मनाने का प्रबंध किया: उस परमेश्वर की महिमा हो, जो अपने संतों को महिमामय करता है।

25 जनवरी

12 जनवरी (पुराना कैलेंडर)

संत तातियाना की शहादत

संत तातियाना की शहादत

12 जनवरी को स्मरण किया जाता है

शहीद संत तातियाना का जन्म प्राचीन रोम में कुलीन माता-पिता के यहाँ हुआ था। उनके पिता, जो तीन बार कौंसल रह चुके थे, एक गुप्त ईसाई थे और अपनी धर्मपरायणता के लिए प्रसिद्ध थे। उन्होंने अपनी बेटी, संत तातियाना, का पालन-पोषण धर्मपरायणता और ईश्वर के भय में किया, और उन्हें पवित्र शास्त्र सिखाए। जब संत तातियाना वयस्क हुईं, तो उन्होंने कुँवारीपन और पवित्रता का जीवन जीने का संकल्प लिया; उनकी सगाई मसीह से हुई थी; उनके लिए प्रेम से जलते हुए, उन्होंने दिन-रात केवल उनकी सेवा की, प्रार्थना और उपवास के माध्यम से अपने शरीर को वश में किया और उसे आत्मा के अधीन कर दिया। अपने सदाचारी जीवन के कारण, उन्हें चर्च की सेवा करने के योग्य माना गया: उन्हें एक डीकोनेस (deaconess) के रूप में नियुक्त किया गया और, अमूर्त स्वर्गदूतों की तरह, उन्होंने देह में ईश्वर की सेवा की। और मसीह ईश्वर ने अपनी दुल्हन को शहीद के मुकुट से विभूषित किया। उन्होंने इस प्रकार कष्ट सहे। जब अधर्मी सम्राट एंटोनिस हेलीओगाबलस[952] को उसके ही रोमनों ने मार डाला, और उसके शरीर को अपमानपूर्वक शहर में घसीटकर टिबर नदी में फेंक दिया गया[953] , तो सोलह वर्षीय एक युवा लड़का, अलेक्जेंडर[954] का राज्याभिषेक किया गया। उसकी माँ एक ईसाई थी जिसका नाम मामिया था; जिनसे उसने मसीह का सम्मान करना सीखा, हालांकि यह ईसाई धर्म के अनुसार नहीं था, क्योंकि उसी समय उसने मूर्तियों की सेवा करना और उन्हें प्राचीन रोमन देवताओं के रूप में पूजा

---

[952] रोमन सम्राट, एंटोनिस हेलीओगाबलस, 218 से 222 तक शासन किया; वह एक अत्यंत भ्रष्ट व्यक्ति था, जिसके कारण वह जल्द ही अपने सैनिकों की घृणा का पात्र बन गया। उसने अपने चचेरे भाई, कुलीन अलेक्जेंडर सेवेरस को गोद लिया, लेकिन जब उसे इस बात का पछतावा हुआ और उसने बाद वाले की जान लेने की साजिश रचनी शुरू कर दी, तो सैनिकों ने उसे मार डाला।

[953] टायबर एक नदी है जो एपेनाइन पर्वतमाला में उत्पन्न होती है, जिसके किनारों पर रोम शहर स्थित है।

[954] अलेक्जेंडर सेवरिस ने 222 से 235 तक शासन किया।

करना जारी रखा। उसके महल में मसीह और अपोलो की मूर्तियाँ थीं, जिन्हें मूर्तिपूजकों द्वारा पूजित किया जाता था[955] , पुराने नियम के पात्र अब्राहम और मूर्तिपूजक ऑर्फ़ियस[956] , और कई अन्य। अलेक्ज़ेंडर स्वयं, एक ईसाई महिला के पुत्र के रूप में, ने ईसाइयों पर अत्याचार नहीं किया, लेकिन उनके राज्यपालों, प्रांतीय शासकों और कौंसलों ने उन पर बुरी तरह अत्याचार किया। चूंकि अलेक्ज़ेंडर बहुत कम उम्र के थे, इसलिए राज्य का प्रशासन परिषद के कुछ सदस्यों को सौंपा गया था; उनमें सबसे प्रमुख शहर के एपार्क[957] उल्पियन थे, जो कठोर स्वभाव के व्यक्ति और ईसाइयों के बड़े शत्रु थे। इन सलाहकारों ने राजा की ओर से सब कुछ शासित किया। उन्होंने ही दूर-दूर तक एक फरमान जारी किया, जिसमें आदेश दिया गया कि गिलीलियों (जैसा कि वे ईसाइयों को कहते थे) को हर जगह रोमन देवताओं की पूजा करने के लिए मजबूर किया जाए, और अवज्ञा करने पर उन्हें भयंकर यातनाओं और यहां तक कि मृत्यु की धमकी दी गई। यह सुनिश्चित करने के लिए कि ईसाई इस फरमान का पालन करें, ईसाइयों के निम्नलिखित सबसे कट्टर दुश्मन और शैतान के वफादार सेवक नियुक्त किए गए: कोमटिस[958] विटालियस, क्यूवकिुलारिसि[959] वास, और डोमेस्टिकस[960] कैउस। तब, रोम में और पूरे रोमन साम्राज्य में, ईसाइयों का खून पानी की तरह बहा। उनके साथ कोई दया नहीं दिखाई गई, बल्कि उन्हें यातनाएँ दी गईं और मौत के घाट उतार दिया गया।

उस समय, पवित्र कुंवारी तातियाना को मूर्तिपूजकों ने पकड़ लिया और अपोलो के मंदिर में ले आए। उन्होंने उसे इस मूर्ति की पूजा करने के लिए मजबूर करने की कोशिश की। लेकिन उसने सच्चे ईश्वर से प्रार्थना की, और अचानक एक भूकंप आ गया: अपोलो की मूर्ति गिरिकर टुकड़े-टुकड़े हो गई, और मंदिर का एक हिस्सा भी ढह गया, जिसमें कई मूर्तिपूजक और पुजारी दब गए। मूर्ति के भीतर रहने वाला शैतान, एक ज़ोर की चीख और विलाप के साथ उस स्थान से भाग गया; सभी ने उसकी चीख सुनी और हवा में एक छाया को तेज़ी से गुज़रते हुए देखा।

तब दुष्ट लोगों ने उस पवित्र कन्या को मुकदमे और यातना के लिए घसीट कर ले गए। पहले तो उन्होंने उसके चेहरे पर वार करना शुरू कर दिया और लोहे के हुकों से उसकी आँखें नोचने लगे। लंबी यातनाओं के बाद, यातना देने वाले स्वयं ही थक गए, क्योंकि मसीह की पीड़िता का शरीर घाव पहुँचाने वालों के लिए एक हथौड़े की अड़िया की तरह कठोर था, और यातना देने वालों ने स्वयं पवित्र शहीद से भी अधिक कष्ट झेला। और स्वर्गदूत अदृश्य रूप से संत के बगल में खड़े थे और संत तातियाना को यातना देने वालों पर प्रहार कर रहे थे, जिससे यातना देने वालों ने अन्यायपूर्ण न्यायाधीश से पुकार लगाई और उससे यातना बंद करने का आदेश देने का अनुरोध किया; उन्होंने कहा कि वे स्वयं इस पवित्र और मासूम कन्या से भी अधिक पीड़ित थे। हालाँकि, तातियाना ने साहस के साथ अपने दुखों को सहते हुए, अपने अत्याचारियों के लिए प्रार्थना की और प्रभु से उनकी आँखें सत्य के प्रकाश के लिए खोलने का आग्रह किया। और उसकी प्रार्थना सुनी गई। यातना देने वालों पर स्वर्गीय प्रकाश चमका, और उनकी आध्यात्मिक आँखें खुल गईं। उन्होंने संत को घेरे हुए चार स्वर्गदूतों को देखा, स्वर्ग से उस पवित्र कन्या से बात करती एक आवाज़ सुनी, और उसके सामने ज़मीन पर गिर पड़े, उससे विनती करते हुए:

'हमें क्षमा करो, सच्चे परमेश्वर की दासी; हमें क्षमा करो, क्योंकि हमने यह यातनाएँ तुम्हें अपनी इच्छा से नहीं दीं।'

वे सभी (संख्या में आठ) मसीह में विश्वास करने लगे और अपने ही खून से बपतिस्मा ग्रहण किया, क्योंकि मसीह की स्वीकारोक्ति के लिए उन्हें क्रूरतापूर्वक यातना दी गई और अंत में, उनके सिर काट दिए गए।

अगले दिन, अन्यायपूर्ण न्यायाधीश, पीठ पर बैठे, ने फिर से संत तातियाना को यातना के लिए लाने का आदेश दिया। हालाँकि, वह अपने यातना देने वाले के सामने पूरी तरह से स्वस्थ होकर प्रकट हुई। उसका चेहरा शांत और प्रसन्न

---

[955] एपोलो – सबसे अधिक पूजे जाने वाले ग्रीक-रोमन मूर्तिपूजक देवताओं में से एक; उनकी पूजा सूर्य और बौद्धिक प्रबोधन के देवता के रूप में, साथ ही सार्वजनिक कल्याण और व्यवस्था, कानून के संरक्षक और भविष्यवाणी के देवता के रूप में की जाती थी।

[956] ओर्फियस – यूनानी पौराणिक कथाओं का एक वीर गायक, जिसकी गायकी, यूनानी विश्वास के अनुसार, इतनी शक्तिशाली थी कि वह पेड़ों और चट्टानों को गतिमान कर सकता था और जंगली जानवरों को वश में कर सकता था।

[957] एपार्क – एक प्रांतीय गवर्नर; हालाँकि, कभी-कभी यह शब्द एक किले के कमांडर, एक कमांडेंट को भी संदर्भित करता था। – उल्पियन राजा के सबसे करीबी कुलीनों में से एक था।

[958] 'कोमाइट्स' शब्द मूल रूप से किसी प्रांत के सर्वोच्च अधिकारी के परिचारकों के लिए प्रयुक्त होता था, और बाद में सम्राटों के परिचारकों के लिए, जो उनकी सबसे निकटवर्ती संगति बनाते थे।

[959] कुवकिुलारियस – सम्राट का चेंबरलेन, या शयनकक्ष का परिचारक।

[960] डोमेस्टिकी – रोमन सम्राटों के अंगरक्षक।

था। न्यायाधीश ने पवित्र कन्या से मूर्तियों को बलिदान चढ़ाने के लिए कहना शुरू किया, लेकिन उसकी कोशिशें व्यर्थ साबित हुईं। तब उसने आदेश दिया कि संत को नग्न कर दिया जाए और ब्लेड से काटा जाए। उनका कुंवारा शरीर बर्फ की तरह सफेद था, और जब उन्होंने उसे काटना शुरू किया, तो घावों से खून के बजाय दूध बहने लगा, और एक अद्भुत सुगंध फैल गई, मानो इत्र के पात्र से निकली हो। तथापि, संत ने इन यातनाओं के बीच स्वर्ग की ओर देखा और प्रार्थना की। फिर उसे ज़मीन पर क्रूस के आकार में लिटाया गया और लंबे समय तक लाठियों से पीटा गया, जिससे उसके यातना देने वाले थक गए और उन्हें बार-बार आराम लेना पड़ा। क्योंकि, पहले की तरह, ईश्वर के स्वर्गदूत संत के बगल में अदृश्य रूप से खड़े थे और उन लोगों को घाव पहुँचा रहे थे जो पवित्र शहीद को मार रहे थे। यातना देने वाले के नौकर थक गए, यह दावा करते हुए कि कोई उन्हें लोहे की छड़ों से मार रहा था। अंत में, उनमें से नौ एक देवदूत के दहिने हाथ से मारे गए, जबकि बाकी मुश्किल से जीवित जमीन पर गिर पड़े। हालाँकि, संत ने न्यायाधीश और उसके सेवकों की निंदा की, यह घोषणा करते हुए कि उनके देवता आत्मा रहित मूर्तियाँ थे। जैसे ही शाम होने लगी, संत को एक कालकोठरी में डाल दिया गया। वहाँ उन्होंने पूरी रात प्रभु से प्रार्थना करते और उनकी स्तुति करते हुए बिताई। उस पर एक स्वर्गीय प्रकाश चमका, और परमेश्वर के स्वर्गदूतों ने उसके साथ मिलकर उसकी स्तुति की। सुबह, उसे एक बार फिर अदालत के सामने लाया गया। पवित्र शहीद को पूर्ण स्वास्थ्य में देखकर, उसका चेहरा पहले से भी अधिक सुंदर था, तो सभी चकित और हैरान रह गए। पहले तो उन्होंने उसे धीरे से और चापलूसी करके मनाना शुरू किया, और उनसे अपनी महान देवी डायना[961] को बलिदान चढ़ाने का आग्रह किया। पवित्र कन्या ने उनके कहने पर चलने का नाटक किया। उसे डायना के मंदिर में ले जाया गया। डायना की मूर्ति में रहने वाले राक्षस ने पवित्र कन्या के आने का आभास पा लिया और जोर-जोर से चिल्लाने लगा:

'हाय, हाय! हे स्वर्गीय, मैं तेरी आत्मा से कहाँ भागूँ, क्योंकि इस मंदिर के हर कोने से भड़कती आग मुझे बाहर खदेड़ रही है?'

संता, मंदिर के पास पहुँचकर, उसने क्रॉस का चिह्न बनाया और स्वर्ग की ओर अपनी आँखें उठाकर प्रार्थना करना शुरू कर दिया। अचानक गरज के साथ एक भयंकर बिजली चमकने लगी: आकाश से गिरती आग ने मंदिर को उसकी मूर्ति, बलिदानों और पुरोहितों सहित भस्म कर दिया; और बिजली से झुलसकर अविश्वासियों की भीड़ जमीन पर गिरकर मर गई। फिर संत तातियाना को प्राटोरियम[962] ले जाया गया, जहाँ उन्हें लटकाया गया और लोहे के हुकों से यातना दी गई; उन्होंने उनके स्तन भी फाड़ दिए। इसके बाद संत को कैद कर दिया गया, और एक बार फिर दिव्य स्वर्गीय देवदूत पवित्र शहीद के पास प्रकट हुए, जिन्होंने उसके घावों को पूरी तरह से ठीक कर दिया और उसकी साहसी पीड़ा की प्रशंसा की। अगले दिन सुबह, संत तातियाना को सर्कस[963] में लाया गया और उसे टुकड़े-टुकड़े करने के लिए एक भयानक शेर पर छोड़ दिया गया। लेकिन उस क्रूर जानवर ने संत को एक उंगली भी नहीं लगाई। शेर उसके प्रति स्नेह दिखाने लगा और विनम्रता से उसके पैरों को चाटने लगा। जब वे शेर को अखाड़े से उसके पिंजरे में वापस ले जाने वाले थे, तो वह अचानक यूमेनियस नामक एक कुलीन व्यक्ति पर झपट पड़ा और उसे चीर-फाड़ डाला। संत तातियाना को एक बार फिर से फांसी दी गई, और उन्होंने फिर से उनके शरीर पर कोड़े बरसाने शुरू कर दिए, लेकिन एक बार फिर स्वर्गदूतों ने अदृश्य रूप से उनके अत्याचारियों पर प्रहार किया, और वे मृत पड़े हुए पाए गए। फिर संत को आग में फेंक दिया गया, लेकिन आग ने भी उन्हें कोई नुकसान नहीं पहुँचाया: ज्वाला की ताकत कम हो गई, मानो मसीह की सेविका का सम्मान कर रही हो। हालाँकि, दुष्टों ने इन सभी अद्भुत चिह्नों को मसीह की शक्ति का नहीं, बल्कि जादू-टोने का परिणाम माना; उन्होंने संत के बाल काट दिए, इस उम्मीद में कि अब उनका जादू असर नहीं करेगा। वे सोचते थे कि संत के बालों में कोई जादुई शक्ति है, जिससे उसे कोई नुकसान नहीं पहुँचा सकता। इसलिए, उन्होंने उसके बाल काट दिए और उसे ज्यूस के मंदिर में कैद कर दिया[964]। अधर्मीयों ने विश्वास किया कि संन्यासिनी अब किसी भी तरह से उनके देवता को नुकसान नहीं पहुँचा सकती, क्योंकि

---

[961] डायना, जिन्हें आर्टेमिस के नाम से भी जाना जाता है, चंद्रमा और शिकार की ग्रीक देवी थीं।

[962] प्रेटोरियम एक अदालत थी जहाँ एक रोमन मजिस्ट्रेट, या न्यायाधीश, अध्यक्षता करता था।

[963] सर्कस एक चौकोर मैदान को दिया गया नाम था जिसे बेंचों की एक पंक्ति या दीवार से घेर लिया जाता था। वहीं ग्लैडिएटर एक-दूसरे से और जंगली जानवरों से लड़ते थे। ईसाइयों को भी इस चौकोर मैदान या अखाड़े में फेंका जाता था, और फिर सर्कस में विशेष पिंजरों में रखे गए जंगली जानवरों को उन पर छोड़ दिया जाता था।

[964] ज़ीउस, या जुपिटर, ग्रीको-रोमन देवता थे जिन्हें मूर्तिपूजकों द्वारा स्वर्ग और पृथ्वी के शासक, सभी देवताओं और मनुष्यों के पिता के रूप में पूजित किया जाता था।

अपने बाल खोने के साथ ही उसने अपनी जादू-टोने की शक्ति भी खो दी थी। संन्यासिनी ने उस मंदिर में कैद होकर दो दिन बिताए। उस पर हमेशा चमकने वाली दिव्य ज्योति पूरे मंदिर में फैल गई, और स्वर्गदूतों ने उनका उत्साह बढ़ाया और उन्हें सांत्वना दी। तीसरे दिन, पुरोहित लोगों के साथ अपने देवता ज्यूस को बलिदान चढ़ाने आए। मंदिर खोलने पर, उन्होंने देखा कि उनकी मूर्ति गिरकर टूट गई थी, जबकि संत तातियाना प्रभु परमेश्वर के नाम में आनंदित हो रही थीं। तब उसे अदालत में पेश किया गया। न्यायाधीश, यह न जानकर कि उसके साथ और क्या किया जाए, ने उस पर मृत्युदंड की घोषणा की, और संत तातियाना को तलवार से सिर कलम कर दिया गया।[965] उसके पिता को भी उसके साथ ही मृत्युदंड दिया गया, क्योंकि यह पता चला कि वह भी एक ईसाई था। सबसे पहले, उसके अत्याचारियों ने उससे उसका माननीय पद छीन लिया और उसकी सारी संपत्ति जब्त कर ली। मृत्युदंड पाए जाने पर, वह मसीह के नाम के लिए अपनी बेटी के साथ तलवार से मार डाला गया। दोनों को प्रभु द्वारा मसीह ईश्वर से शहीदी के मुकुट प्राप्त करने के योग्य समझा गया, जिनका महिमा युगानुयुग हो। आमीन।

कॉन्टाकियन, स्वर 4:

हे कष्ट-भोगिनी, तू अपने कष्टों में चमक उठी, अपने ही रक्त से रँगी हुई, और, एक सुन्दर कबूतर की तरह, तू स्वर्ग में उड़ चली गई, तातियाना: इसलिए उन लोगों के लिए सदा प्रार्थना करना जो तेरा सम्मान करते हैं।

सर्बिया के आर्चबिशप संत सावा का जीवन[966]

12 जनवरी को स्मरणोत्सव

संत सावा स्वतंत्र सर्बियाई राज्य के प्रसिद्ध संस्थापक, महान सर्बियाई जुपान स्टीफन नेमान्जा के पुत्र थे, जो मठवासी जीवन में सिमियोन के नाम से जाने जाते थे, और जिन्हें चर्च द्वारा सर्बिया के संरक्षक संत के रूप में पूजित किया जाता है। स्टेफान नेमान्या बारहवीं शताब्दी में रहते थे। उन्होंने अधिकांश सर्बियाई भूमि को एकीकृत किया और उनकी राजनीतिक स्वतंत्रता सुनिश्चित की। उनके पुत्र सावा स्वतंत्र सर्बियाई चर्च के संस्थापक थे।

सावा, स्टीफन नेमान्या और उनकी पत्नी अन्ना के बच्चों में सबसे छोटे थे। उनके माता-पिता, जिनके पहले से ही कई बच्चे थे, ने प्रार्थना में प्रभु से एक और पुत्र की याचना की, जो उनके देश में धर्मपरायणता का अग्रदूत बने और उसे गौरवान्वित करे। उन्होंने इसके बाद मृत्यु तक ब्रह्मचर्य का पालन करने का संकल्प लिया। उनकी प्रार्थना स्वीकार हुई: उन्हें एक पुत्र का आशीर्वाद मिला, जिसे उन्होंने उसके पवित्र बपतिस्मा पर रास्तको—या रोस्टिस्लाव—नाम दिया, मानो वे न केवल अपने पुत्र बल्कि उसके साथ-साथ अपने प्रिय देश की आध्यात्मिक महिमा में वृद्धि की भी भविष्यवाणी कर रहे हों।

ईश्वर की कृपा से अतिप्रसन्न माता-पिता ने अपने पुत्र को अच्छी परवरिश देने में कोई कसर नहीं छोड़ी। जैसे ही वह शिशु अवस्था से ऊपर उठा, उन्होंने उसे विशेष कक्षों में रखा, शिक्षकों की नियुक्ति की और यह सुनिश्चित किया कि उसे उचित समय पर पढ़ना-लिखना सिखाया जाए। ईश्वर की कृपा उस युवक पर कभी नहीं छूटी, जो उनके माता-पिता को उनकी विशेष प्रार्थनाओं के उत्तर में प्रदान की गई थी: वह शारीरिक रूप से बढ़ा और आध्यात्मिक रूप से फल-फूल उठा, तथा भक्ति और पवित्रता का जीवन जीकर अपने माता-पिता को अकथनीय सांत्वना दी।

उसकी परवरिश पूरी होने पर, उसके माता-पिता ने उसे एक अलग संपत्ति दी जहाँ वह अपने नौकरों के साथ स्वतंत्र रूप से रह सकता था और कुलीन जन्म के युवक के अनुरूप शिकार और अन्य मनोरंजन का आनंद ले सकता था।

उस युवक ने अपने माता-पिता का घर छोड़ दिया। फिर भी सांसारिक सुखों का उस पर कोई आकर्षण नहीं था। उसके विचार और हृदय तो बिलकुल अलग बातों में लगे हुए थे। अक्सर उसे भजन के वचन याद आते थे: *'धन्य है वह मनुष्य*

---

[965] संत ततियाना शहीद ने 226 ईस्वी में, अलेक्ज़ेंडर सेवेरस के शासन के चौथे वर्ष में, ईसाइयों पर हुए उत्पीड़न के दौरान यातनाएँ भोगीं।

[966] संत सव्वा का जीवन उनके शिष्य, हिलेंडर के भिक्षु डोमेशियन द्वारा लिखा गया था। यह वर्तमान विवरण का आधार है। इसे डैनिचिच द्वारा 1865 में बेलग्रेड में प्रकाशित पुस्तक *द लाइफ ऑफ़ सेंट सिमियन एंड सेंट सव्वा* में प्रकाशित किया गया था। एक अज्ञात लेखक द्वारा लिखी गई एक और जीवन-कथा है, जो हालांकि डोमेशियन की जीवन-कथा के कुछ ही समय बाद लिखी गई थी और इसमें कुछ अतिरिक्त जानकारी शामिल है। इसे 1860 में उसी डैनसिक द्वारा प्रकाशित किया गया था, और इसे भी ध्यान में रखा गया है, जैसे कि सेंट सिमियन पर डोमेशियन की जीवन-कथा को रखा गया है।

जो यहोवा का भय मानता है – और उद्धारकर्ता के वचन: *'जो कोई पिता या माता से मुझसे अधिक प्रेम करता है, वह मुझसे योग्य नहीं है; और जो कोई अपना क्रूस उठाकर मेरे पीछे नहीं चलता, वह मुझसे योग्य नहीं है'* (भजन संहिता 111:1; मत्ती 10:37-38)। वह *'प्रभु के मार्ग' की ओर* आकर्षित हुआ – संसार का परित्याग करते हुए, सर्वप्रथम स्वर्ग के राज्य और धार्मिकता की खोज करते हुए । व्यर्थ के मनोरंजन में लिप्त होने के बजाय, रास्ट्को ने तपस्वी जीवन पर मनन करने के लिए खुद को समर्पित कर दिया और प्रभु से प्रार्थना की कि वह उसे अपना सही मार्ग दिखाएँ। रास्ट्को ने पवित्र माउंट अथोस पर तपस्वी जीवन के बारे में सुना था और वह बेसब्री से किसी ऐसे व्यक्ति से मिलने के लिए तरसता था जो उसे वह सब कुछ बता सके जो वह जानना चाहता था। और इसलिए ईश्वर ने उन्हें एक ऐसे संन्यासी को भेजा जो पवित्र पर्वत को अच्छी तरह जानता था। वह माउंट अथोस पर स्थित सेंट पैंटेलिमोन के रूसी मठ का एक रूसी संन्यासी था। उसने उस कुलीन युवक की सभी इच्छाओं को पूरा किया, उसे अथोस के सभी पवित्र मठों और पवित्र पर्वत पर अपनाए जाने वाले तपस्या के सभी रूपों के बारे में बताया।

आए हुए संन्यासी के बयानों से उस धर्मनिष्ठ युवक के इरादे और आकांक्षाएं पूरी तरह से मेल खा रही थीं: उसने उसी क्षण, अटूट रूप से, संसार को त्यागने और पवित्र माउंट अथोस पर तपस्या को समर्पित होने का संकल्प लिया और ईश्वर से प्रतिज्ञा की। जब उसने सांसारिक जीवन को त्यागने का फैसला किया तब वह युवक केवल सत्रह वर्ष का था।

प्रभु ईश्वर से भक्तिपूर्वक प्रार्थना करने के बाद, उसने कई ईश्वर-भयभीत पुरुषों को अपने इरादे को पूरा करने में सहायता करने और अपने साथी बनने के लिए मना लिया, और बिना किसी देरी के, सबसे पहले अपने माता-पिता के घर के लिए निकल पड़ा। उनके पिता और माता अपने प्रिय पुत्र के आगमन से अत्यंत प्रसन्न थे; उन्होंने इस अवसर पर एक भोज का आयोजन किया और उसे अपना स्नेह दिखाने के लिए भरसक प्रयास किया।

अपने माता-पिता के यहाँ कुछ दिन अतिथि के रूप में बिताने के बाद, रास्तको ने उनसे एक दूर-दराज, जंगली इलाके में शिकार पर जाने की अनुमति माँगी, जो हर तरह के शिकार से भरपूर था। उसके माता-पिता ने खुशी-खुशी अपनी सहमति दे दी। अपने माता-पिता का आशीर्वाद प्राप्त कर, रास्तको अपने वफादार लोगों के साथ अपनी यात्रा पर निकल पड़ा— जंगली इलाके में शिकार करने के लिए नहीं, बल्कि अपने आध्यात्मिक मोक्ष के लिए तपस्या करने हेतु पवित्र माउंट अथोस की ओर।

पवित्र माउंट अथोस पर सुरक्षित पहुँचने के बाद, रास्तको रूसी पैंटेलीमोन मठ में बस गया, जहाँ एक भिक्षु ने पहले उसे पवित्र पहाड़ पर तपस्वी जीवन के बारे में विस्तार से बताया था।

उनके माता-पिता को जल्द ही अपने बेटे के लापता होने का एहसास हुआ। यह संदेह करते हुए कि उनके बेटे को किसी और ने नहीं बल्कि एक रूसी भिक्षु ने और किसी और जगह नहीं बल्कि माउंट अथोस ने बहकाया है, स्टीफन नेमान्जा ने तुरंत अपने एक वरिष्ठ वोइवोड को एक बड़ी टुकड़ी के साथ रवाना किया। ग्रीक सम्राट इसाक एंजेलोस[967] द्वारा माउंट अथोस के प्रोटोस (मठाधीश) और पवित्र पर्वत के सभी भिक्षुओं के नाम दिए गए एक सख्त आदेश, और साथ ही स्टेफन नेमान्या द्वारा अधिकृत थ्रेसैलॉनीकी के गवर्नर से एक सैन्य टुकड़ी प्राप्त करने के बाद, दूत माउंट अथोस पहुंचा और उसे सेंट पैंटेलिमोन के मठ में वांछित कुलीन भगोड़ा मिला। नेमान्या का वफादार सेवक उस व्यक्ति को इतनी जल्दी खोज लेने से अत्यंत प्रसन्न था, जिसे वह ढूंढ रहा था, और उसे उम्मीद थी कि वह जल्द ही उस युवक को उसके माता-पिता के पास लौटा देगा, जो उसके लिए बहुत गहरे शोक में थे, और इसके लिए एक उचित इनाम प्राप्त करेगा। यह उम्मीद किए बिना कि भगोड़ा स्वेच्छा से अपने देश लौटेगा, दूतों ने उस युवक पर कड़ी नजर रखी, यह सुनिश्चित करते हुए कि वह फिर से उनसे भाग न जाए। लेकिन रास्तको ने बहुत पहले ही, किसी भी बाधा की परवाह किए बिना, माउंट अथोस पर मठवासी संन्यास ग्रहण करने और वहीं रहने का संकल्प ले लिया था। यह इरादा पैंटेलिमोन मठ के मठाध्यक्ष को ज्ञात था, जिन्होंने उस साहसी युवक की सहायता करने का निश्चय किया।

एक शनिवार, रास्तको ने आदेश दिया कि उसके पिता द्वारा उसे लेने भेजे गए सैनिकों के लिए स्थानीय निवासियों के साथ एक भव्य दावत तैयार की जाए। जब दावत के बाद सभी सोने चले गए, तो मठाधीश के आदेश पर घंटी बजाई गई, जो सभी को, रिवाज के अनुसार, 'ईश्वर के घर' में रात की प्रार्थना सभा के लिए बुला रही थी। केवल भिक्षुओं को ही नहीं, बल्कि सैनिकों को भी चर्च जाना अनिवार्य था। भव्य दावत और लंबी प्रार्थना सभा से थके हुए, पहरेदार अपने स्थान पर ही सो गए जबकि कैथिस्मा पढ़े जा रहे थे। इस स्थिति का लाभ उठाते हुए, रास्तको ने अपने एक नौकर को अपने वस्त्र

[967] इज़ाक एंजेल ने 1185 से 1195 तक शासन किया।

पहनने और सेवा के अंत तक उसकी जगह पर खड़े रहने का आदेश दिया, जबकि वह स्वयं पवित्र वेदी में चला गया, वहाँ अपने संन्यासी के व्रत लिए और कपड़े बदलकर, पहचाने बिना चर्च से निकल गया। एक वृद्ध भिक्षु के साथ, वह परिग, यानि मीनार पर चढ़ गया और वहाँ खुद को बंद कर लिया। बिना कोई समय बर्बाद किए, उसने वहाँ अपना भिक्षु जीवन ग्रहण किया, सव्वा नाम लिया, और भिक्षु का वेश धारण कर लिया।

रात की प्रार्थना समाप्त होने को थी; जैसे ही भोर हुआ, पहरेदार जाग गए और उन्हें यह देखकर भयभीत हो गए कि जिस युवक की वे तलाश कर रहे थे, वह फिर से गायब हो गया था। वे बहुत क्रोधित होकर मठ के भिक्षुओं के पास गए और हिंसा की धमकी देते हुए, उन्होंने उस युवक को सौंपने या यह बताने की मांग की कि वह कहाँ गया है। मीनार की चोटी से उठ रही इस भारी हलचल को सुनकर और उन भिक्षुओं की दुर्दशा पर तरस खाकर, जो उसके कारण बहुत कष्ट झेल सकते थे, वह तपस्वी मीनार की खिड़की से बाहर झुका और अपना मुंडाया हुआ सिर तथा संन्यासी वस्त्र दिखाते हुए, चिल्लाया:

'मैं यहाँ हूँ, लेकिन अब रास्तको के रूप में नहीं, बल्कि साधु सव्वा के रूप में: यह मेरे सिर के बाल और मेरे राजसी वस्त्र हैं; मुझे जो हुआ है, उसका प्रमाण मेरे माता-पिता के पास ले जाओ।'

पुराने वोइवोड और उसके साथियों पर एक भयंकर शोक छा गया: उनकी सारी कोशिशें व्यर्थ गई थीं; अब उस युवक को उसके माता-पिता के पास वैसे ही वापस लौटाना असंभव था जैसे उसने उन्हें छोड़ा था, और न ही इसमें कोई फायदा था: उसने इस दुनिया का त्याग कर दिया था।

भारी मन से, स्टीफन नेमान्या के दूत अपने देश की वापसी यात्रा पर निकल पड़े।

संत पैंटेलिमोन के मठ में ठहरकर, नव-शिरच्छेदित भिक्षु सव्वा ने अपना संन्यासी जीवन शुरू किया और उस रूसी पैंटेलिमोन मठ के निर्माण के लिए बहुत सारा सोना दान किया जिसने उसे आश्रय दिया था।

कुछ ही समय बाद परमेश्वर की परम पवित्र माता के सुसमाचार का पर्व आया, जिसे माउंट एथोस के वाटोपेडी मठ में भव्यता से मनाया गया। इस पर्व पर एथोस के सभी तपस्वियों को आमंत्रित किया गया था। राजसी भिक्षु सव्वा को भी निमंत्रण मिला। बड़े आनंद और उत्सुकता के साथ, वह उस भव्य समारोह के लिए रवाना हुआ, जिसमें माउंट अथोस के सभी तपस्वी, माउंट अथोस समुदाय के प्रोटोस के नेतृत्व में, एकत्रित हुए थे। माउंट अथोस के सभी अधिकारियों द्वारा बड़े सम्मान से स्वागत किए जाने पर, सव्वा को माउंट अथोस पर, जो परम पवित्र माता परमेश्वर की बहुत प्रिय पवित्र जगह है, एक सच्चे धार्मिक समारोह का साक्षी बनने का अवसर मिला। वह जो कुछ भी देख और सुन रहा था, उससे वह इतना प्रभावित हुआ कि उसने तुरंत ही परम पवित्र ईश्वर की माता के मठ में ही रहने का संकल्प ले लिया, और वाटोपेदी मठ के मठाधीश थियोस्टरिक्टिस से विनम्रतापूर्वक मठ की बिरादरी में उसे स्वीकार करने के लिए कहने लगा। साव्वा की ईमानदार विनती स्वीकार कर ली गई: वह साधारण मठ समुदाय में शामिल हो गया और बड़े उत्साह के साथ अपने सभी मठवासी कर्तव्यों और दायित्वों को पूरा करने लगा। वाटोपेडी मठ में प्रवेश करते ही, साव्वा ने उस मठ को उदार दान देने की जल्दी की, जिसने उसे इतना प्रभावित किया था और उसकी लंबे समय से चली आ रही धार्मिक इच्छाओं को पूरा किया था।

इस बीच, स्टेफन नेमान्या द्वारा अपने बेटे की तलाश में भेजे गए दूतों द्वारा सर्बिया में दी गई खबर ने न केवल उसके माता-पिता को बल्कि पूरे देश को भी स्तब्ध कर दिया: राजकुमार युवक ने अपने परिवार और सभी सांसारिक चीजों का त्याग कर दिया था और एक भिक्षु बन गया था! शुरुआत में, उसके माता-पिता अपने बेटे से बिछड़ने पर दुखी हुए, लेकिन उन्हें जल्द ही एहसास हो गया कि सभी चीजें ईश्वर की इच्छा के अनुसार होती हैं; और, धर्मनिष्ठ ईसाई होने के नाते, उन्होंने अपने दुख को खुशी में बदल दिया, क्योंकि वे अपने बेटे में ईश्वर के सेवक को देख रहे थे और उम्मीद कर रहे थे कि वह स्वयं और अपने देश दोनों के लिए आशीर्वाद लाएगा।

अपने विचारों और भावनाओं को संभालने के बाद, उसके माता-पिता ने साव्हा को एक आँसुओं से भरा पत्र भेजा जिसमें, अलगाव पर अपनी पीड़ा व्यक्त करते हुए, उन्होंने प्रभु ईश्वर की भी महिमा की, जो अपनी बुद्धिमत्ता में, सभी चीजों को भलाई के लिए निर्धारित करते हैं, उन्होंने अपने बेटे से मिलने, अपनी मातृभूमि सिर्बिया आने और सभी को सांत्वना देने का आग्रह और विनती की, यह वादा करते हुए कि पुनर्मिलन के बाद वे उसे पवित्र पर्वत पर बिना किसी बाधा के लौटने देंगे।

पत्र के साथ, उसके माता-पिता ने अपने बेटे को सोने की एक बड़ी राशि भेजी, जो उसके व्यक्तिगत उपयोग और माउंट अथोस के चर्चों तथा गरीबों में वितरित करने के लिए थी।

संत सव्वा इस माता-पिता के संदेश से तसल्ली तो पा गए, लेकिन वे अपने देश लौटना नहीं चाहते थे: वे माउंट अथोस पर तपस्या में खुद को समर्पित करने की तीव्र इच्छा से भर गए थे, जिसकी उन्होंने इतनी लालसा की थी और जहाँ वे खुशी से बस गए थे।

वाटोपेडी मठ में रहते हुए, सव्वास अक्सर पवित्र माउंट अथोस की यात्राएं करते थे, उनका इच्छा थी कि वे पवित्र मठों का दौरा करें, उनमें प्रार्थना करें, महान तपस्वियों से मिलें, उनसे बातचीत करें और आध्यात्मिक शिक्षा प्राप्त करें। नंगे पैर और साधारण कपड़े पहनकर, वह पूरे माउंट अथोस पर घूमा, सबसे खड़ी और ऊंची चट्टानों पर चढ़ा, दर्रों और खाइयों से गुज़रा, और उन एकांतवासियों को खोजा जो पक्षियों की तरह, मनुष्य के लिए मुश्किल से पहुँचने योग्य पहाड़ी चट्टानों पर आश्रय लेते थे। इस तरह की यात्राओं पर निकलने का सावा का उद्देश्य केवल एथोस के तपस्वी जीवन को देखने और उसका अध्ययन करने की अपनी इच्छा को पूरा करना नहीं था: वह उन गरीब आत्माओं, जो आमतौर पर एथोस के एकांतवासी तपस्वी थे, को भौतिक सहायता प्रदान करना भी चाहता था। उनकी मदद करने के लिए, उसने अपने पास मौजूद संसाधनों पर कोई खर्च नहीं किया।

अथोस की ऐसी यात्राओं पर, वह बार-बार बड़े खतरों का सामना करता था, लेकिन प्रभु उसकी मदद करते थे। उन दिनों, माउंट अथोस समुद्री डाकुओं से बहुत त्रस्त था, जो तट पर उतरकर पूरे मठों को लूट लेते थे और तट के पास समुद्र में और जमीन पर आने-जाने वालों की प्रतीक्षा में रहते थे। साव्वा की आदत थी कि वह समय-समय पर ताज़ा रोटी बनाता और व्यक्तिगत रूप से उसे रेगिस्तान में उन एकांत तपस्वियों को बाँटता, जिनके पास गर्म या पका हुआ भोजन नहीं था, बल्कि वे विभिन्न पौधों पर ही जीवन यापन करते थे। साव्वा को यह काम लेंट के पवित्र उपवास के दौरान शनिवार को करना बहुत पसंद था। ऐसे ही एक शनिवार की सुबह, खच्चरों पर गर्म रोटी लादकर, वह तपस्वियों तक मसीह की सांत्वना पहुँचाने की तीव्र इच्छा से जलते हुए, जुलूस के आगे नंगे पैर तेजी से चल पड़ा। सड़क समुद्र के पास से गुज़रती थी, और सावा मिलोपोतम नामक स्थान के पास से गुज़रा, जहँ । वहाँ डाकुओं ने उन पर हमला किया, जिन्होंने उन्हें और उनके साथ यात्रा कर रहे लोगों को पकड़ लिया। सावा इस बात से बहुत दुखी थे कि उनकी यात्रा इतनी अचानक बाधित हो गई थी। उन्होंने अपनी आत्मा की गहराई से, प्रभु ईश्वर से अपनी मुक्ति के लिए प्रार्थना की, और प्रभु ने उन्हें बचाया। डाकुओं ने उनसे पूछना शुरू कर दिया:

'तुम कौन हो, और कहाँ से आ रहे हो?'

साव्वा ने उत्तर दिया:

मैं फादर मकारियस का शिष्य हूँ; उन्होंने मुझे कल एक आध्यात्मिक कार्य के लिए एस्फिग्मेन भेजा था, लेकिन भाइयों ने मुझे आज सुबह तक रोक लिया ताकि वे बुजुर्गों के आशीर्वाद के लिए मेरे साथ रोटी की रोटियाँ भेज सकें, क्योंकि महान मठों की यह प्रथा है कि वे संन्यासियों को सांत्वना देने के लिए रोटी भेजते हैं, जो मसीह के लिए कष्ट सहते हैं और उन्हें प्रभु परमेश्वर द्वारा भेजी गई भीख के सिवा कोई और सांत्वना नहीं मिलती।"

संत सव्वा के शब्दों ने डाकुओं के कठोर हृदयों को नरम कर दिया; उनके विश्वास से प्रेरित होकर, उन्होंने सव्वा को जाने दिया, ताकि वह समय पर वृद्ध के पास पहुँच सके। जैसे ही उन्होंने अपनी प्रार्थनाएँ शुरू कीं, डाकू मठ में आ पहुँचे: अपने कर्मों पर पश्चाताप कर, वे सव्वा के पीछे-पीछे चले और बूढ़े को देखकर उन्होंने उनका आशीर्वाद माँगा तथा अपनी यात्रा में जो कुछ भी उनके साथ हुआ था, वह सब बताया। वरिष्ठ ने उन्हें ईश्वर के वचनों से उपदेश दिया, और वे भावुक हो गए और उन पर अपना विश्वास जताया। ये समुद्री डाकू, या समुद्री लुटेरे, प्रसिद्ध कुलीनों में से थे। उन्होंने वरिष्ठ से पूछा:

'हमसे कहिए, ईश्वर के लिए, क्या यह भिक्षु (अर्थात् सव्वा) सचमुच आपका शिष्य है? हम उस पर एक अत्यंत शानदार चिह्न देख रहे हैं।'

वरिष्ठ ने उत्तर दिया:

'ईश्वर के लिए, मैं तुमसे कहूँगा, मेरे बच्चों: यह भिक्षु ईश्वर का शिष्य है, और हमारे लिए वह भाइयों में से एक है; वह सर्बिया के धर्मपरायण राजा का पुत्र है; सर्व-दयालु ईश्वर ने उसे हम तक अपने सेवकों से मिलने के लिए भेजा है: जैसा कि आप देख सकते हैं, उसने अपना राज्य त्याग दिया है और इस रेगिस्तान में घूमता है, मसीह के लिए पीड़ित लोगों का दौरा करता है और उन्हें सांत्वना देता है, उन्हें भोजन और वस्त्र प्रदान करता है, सभी पर सूर्य की तरह प्रकाश और दया दिखाता है, और शाश्वत जीवन में दया और सांत्वना की आशा रखता है। यह सुनकर, डाकू सव्वा के पैरों पर गिरि

पड़े और उनका आशीर्वाद माँगा। उनसे और वृद्ध से आशीर्वाद प्राप्त करने के बाद, उन्होंने फिर कभी डकैती न करने का वादा किया और अपने घरों के लिए रवाना हो गए।

संत साव्वा के माउंट अथोस के संत अथानासियस के मठ के दौरे के दौरान एक और इसी तरह की घटना घटी। साव्वा मठ समुद्र पार नाव से जा रहे थे, उनके साथ मठ के समुदाय के कई सदस्य थे। जैसे ही वे मठ के पास पहुँचे, उन पर डाकुओं ने हमला कर दिया और उन्हें पकड़ लिया। सवा के साथियों में से एक किसी तरह डाकुओं की पकड़ से बच निकिला, और वह सेंट अथानासियस के मठ में जाकर मठाध्यक्ष को उनकी आपदा के बारे में सूचित करने के लिए दौड़ा। यह सुनकर मठाध्यक्ष और मठवासी समुदाय बहुत चिंतित हो गए और तुरंत अपने ही एक सदस्य, जो अपनी बुद्धिमत्ता के लिए प्रसिद्ध था, को भेज दिया। इस बीच, सेंट सव्वा, लुटेरों के हाथों में होते हुए, मुक्ति के लिए मौन प्रार्थना में प्रभु से पुकार लगा रहे थे। जल्द ही मठ से भेजा गया भाई पहुँचा और उसने लुटेरों को अभिवादन किया:

'शुभ आगमन! मठ में आपका स्वागत है; वहाँ आप आराम कर सकते हैं और अपनी ज़रूरत की हर चीज़ प्राप्त कर सकते हैं!'

युवा संन्यासी सावा पर नज़र डालते हुए, चालाक संन्यासी ने उससे मानो बहुत गुस्से में कहा:

'और तुम यहाँ कहाँ आए हो? क्या मठाधीश ने तुम्हें इसी जगह नहीं भेजा था, फिर भी तुम मनमानी कर रहे हो?'

और उसने ऐसा दिखावा किया मानो वह सव्वा को मारने वाला हो। सव्वा, हालांकि, मानो डर के मारे, उससे पीछे हट गया, नाव से कूद पड़ा और भाग गया। चकित डाकू हुए घटनाक्रम से स्तब्ध रह गए और कुछ नहीं बोले। बाद में, उस मठ में जहाँ सावा ने शरण ली थी, उन्होंने उसे देखा, पहचाना कि वह कौन था, और आपस में इस बात पर गहरा पछतावा किया कि उन्होंने कितनी बड़ी संपत्ति को अपने हाथों से जाने दिया था।

लाव्रा में कुछ समय बिताने, जहाँ उन्होंने मठाधीश और अन्य संतों से आध्यात्मिक और शारीरिक सांत्वना प्राप्त की, के बाद संत सावा सुरक्षित रूप से वाटोपेडी मठ लौट आए।

अपने धर्मपरायण माता-पिता से प्राप्त धन का उपयोग करके, संत साव्वा ने वाटोपेदी मठ में चर्चों के निर्माण और सजावट का काम शुरू किया। सबसे पहले, उन्होंने मठ के किले के भीतर, महान चर्च के पूर्व में, परमेश्वर की अति पवित्र माता के जन्म को समर्पित एक चर्च का निर्माण किया। फिर, उसी किले में, उपरोक्त चर्च के बगल में, उन्होंने संत जॉन क्रिसोस्टोम को समर्पित एक चर्च का निर्माण शुरू किया, अपने दिल में यह आशा रखते हुए कि समय आने पर, उनके वृद्ध और शक्तिशाली पिता, स्टीफन नेमान्या, भी वहाँ रहने आ जाएँगे।

इन दो नए चर्चों का निर्माण और सजावट पूरी करने के बाद, सावा ने परम पवित्र माता परमेश्वर की घोषणा को समर्पित वाटोपेडी के मुख्य चर्च की भी उपेक्षा नहीं की: इस चर्च की छत टाइल की थी; ऐसी छत को अस्थिर पाकर, सावा ने इसे टिन की छत से बदल दिया, जिसके लिए काफी धन की आवश्यकता थी।

फिर सावा ने मठ के टावर, या रिंग में, उद्धारकर्ता के रूपांतरण को समर्पित एक और चर्च का निर्माण किया।

इन मुख्य भवनों के अलावा, संत साव्वा ने मुख्य वाटोपेदी चर्च ऑफ़ द एनन्यून्सीएशन की आंतरिक सजावट और फर्नीचर पर कोई खर्च नहीं बख्शा; ये सभी खजाने यहाँ पवित्र पर्वत के महान परोपकारी, जो सर्बिया की भूमि से आए थे, की आने वाली पीढ़ियों के लिए एक स्मारक के रूप में बने रहे।

अपने धर्मनिष्ठ पिता, स्टीफन नेमान्या को माउंट अथोस लाने का विचार संत सावा के मन से कभी नहीं गया। अंततः उन्होंने अपने माता-पिता को एक प्रभावशाली पत्र लिखने का निश्चय किया, जिसमें उन्होंने अपने पिता से अपने सांसारिक साम्राज्य का त्याग करने और स्वर्ग के राज्य का मार्ग खोजने के लिए दिव्य जीवन जीने तथा पवित्र पर्वत पर उनके पास आने का आग्रह किया।

स्टेफान नेमान्जा लंबे समय से इस पर विचार कर रहे थे; वे लंबे समय से सांसारिक शक्ति और सभी सांसारिक चीजों को त्यागकर संन्यास की शपथ लेना चाहते थे। अब, अपने बेटे के प्रभावशाली आग्रह के बाद, उन्होंने अपने इरादे को पूरा करने का संकल्प लिया। अपनी समान विचारधारा वाली और धार्मिक पत्नी, अन्ना, से परामर्श करने के बाद, स्टीफन नेमान्या ने अपने पुत्र स्टीफन को बुलाया और राज्य भर के कुलीनों और अधिकारियों की उपस्थिति में, उसे सर्बिया का अधिकार सौंप दिया, उसे ग्रैंड ज़ुपान नियुक्त किया, और स्वयं ने संन्यास लेने का अपना इरादा घोषित किया। अपने कुलीनों और नौकरों को विदा कहते हुए, उन्होंने सभी को उदार पुरस्कार और उपहार दिए; उन्होंने दासों को आजादी दी और बेसहारों का भरण-पोषण किया। इस प्रकार सभी सांसारिक बंधनों को तोड़ने के बाद, उन्होंने अपना संन्यासी जीवन

शुरू कयिा और, समियिोन नाम अपनाकर, अपने बशिप, कैलनिकिस द्वारा, अपने ही बनाए हुए, अपने एकांतवास, स्टुडेनकिा मठ में, दीक्षा ग्रहण की।

उनकी पत्नी अन्ना ने उनके उदाहरण का अनुसरण कयिा और उसी बशिप द्वारा उनका भी मुंडन कयिा गया, और वे महलिाओं के एक मठ में रहने लगीं।

नए शाही संन्यासी समिीओन ने अपने मुंडन के बाद के शुरुआती दनि स्टुडेनट्सिा मठ में बतिाए, जहाँ उन्होंने मठ के नयिमों से खुद को परचिति कराया और अपने पहले मठवासी कर्तव्यों का पालन कयिा। कई कुलीनों ने, अपने शासक की धार्मकिता का अनुकरण करने की इच्छा से, सांसारकि दुनयिा में नहीं रहना चाहा; उन्होंने संन्यास की शपथ ली और अपने पूर्व शासक के साथ उनके नए रास्ते पर चलने का संकल्प लयिा; जब समियिोन ने माउंट अथोस के लिए नकिलने का फैसला कयिा, तो वे उनके पीछे चल दिए।

पवत्रि पर्वत के लिए प्रस्थान करते समय, समिोन अपने साथ बहुत सारा सोना, कपड़े, घोड़े और हर तरह का लगाम-सामान, और अन्य संपत्तलि गए; और जब वे वाटोपेदी मठ पहुँचे, तो उन्होंने यह सब मठ को उपहार के रूप में अर्पति कर दयिा, जहाँ वे नविास करने वाले थे और जहाँ उनका बेटा सव्वा उनका इंतजार कर रहा था।

इन दो शाही संतों - अभी भी युवा सव्वा और उनके वृद्ध पतिा, जो अब समियिन के नाम से जाने जाते थे - की मुलाकात को देखना एक मार्मकि और अद्भुत दृश्य था। ऐसा असाधारण घटनाक्रम पूरे माउंट अथोस को हलिा गया। पवत्रि पर्वत के प्रोटोस से लेकर सबसे सामान्य तपस्वयिों तक, हर कोई इन अद्भुत संतों को देखना चाहता था: सबसे दूरस्थ और दुर्गम घाटयिों और गुफाओं से भी, तपस्वी और मौन संन्यासी जो कभी अपनी तपस्थली से बाहर नहीं नकिले थे, वाटोपेडी में उमड़ पड़े, ताकि वे इन दो महान संतों को अपने पहाड़ पर आते हुए और उनके साथ तपस्या करने का अद्भुत और असाधारण दृश्य देख सकें।

और केवल माउंट अथोस के तपस्वी ही नहीं थे जन्हिोंने इन ईश्वर के सेवकों को सुनकर और उन्हें देखकर आश्चर्य व्यक्त कयिा: बेशक, उनकी खबर साम्राज्यीय शहर तक भी पहुँच चुकी थी, और न केवल हर कोई इस घटना पर चकति हुआ, बल्कि कई कुलीनों और प्रतष्ठिति लोगों ने भी उनका अनुकरण कयिा।

आथोस में आए नए व्यक्ति, राजसी संन्यासी समियिन, उन सभी तपस्वयिों को तुरंत पहचान सके, जनिके बारे में वह लंबे समय से जानकार थे। और उन्होंने सभी के प्रति अपनी दया और उदारता दखिाई। गरीबों को बहुत सारा दान देने के बाद, उन्होंने आथोस के सभी मठों को अपने स्मृति-चन्हि के रूप में सोने और धार्मकि वस्तुओं के उपहार भेजे। उन्होंने वशिेष रूप से उदार उपहार वाटोपेडी मठ को दिए, जसिने उन्हें अपनी भाईचारे की पंक्ति में स्वागत कयिा था, और मठाधीश को सोने की एक बड़ी राशि, चर्च के लिए बहुत सारे वेस्टमेंट और अन्य धार्मकि वस्तुएं, साथ ही मठ की जरूरतों के लिए घोड़े, खच्चर और लगाम भेंट की।

वरष्ठि समियिन, बीमारी से कमजोर होने के बावजूद, फरि भी चर्च सेवा सुनना चाहते थे; इसलिए उन्होंने घोषणा के मुख्य चर्च के वेदी की ओर एक कोठरी बनवाई, जसिमें वेदी की ओर देखने वाली एक खड़िकी थी, और इस खड़िकी के माध्यम से वे दैनकि चर्च सेवा को देखते और सुनते थे।

इस बीच, संत साव्वा, अपने पतिा की देखभाल करते हुए और अपने सामान्य दैनकि मठवासी कर्तव्यों को नज़रअंदाज़ कएि बनिा, ने पवत्रि पर्वत पर अपनी धर्मार्थ और नर्मिाण गतविधियिों का बहुत वस्तिार कयिा। संत स्टीफन के चर्च को देखकर, जसिे डाकुओं ने नष्ट कर दयिा था और जो सुनसान पड़ा था, उन्होंने उसका जीर्णोद्धार कयिा, संतों के रहने के लिए आवश्यक सभी चीजों से सुसज्जति कयिा, और इस मठवासी आश्रय को वाटोपेडी मठ के प्रशासन के अधीन कर दयिा। इस छोटे से मठ को व्यवस्थति करते समय, उन्होंने डाकुओं के हमलों से इसकी रक्षा के लिए एक कलिा और एक प्रहरी मीनार (पर्गिा) बनवाया।

दूर-दूर से कई तीर्थयात्री वाटोपेदी मठ में आते थे; ऐसे कई लोग भी थे जो भक्ति के कारण मठ के लिए काम करते थे। इन सभी लोगों के पास अक्सर कुछ भी नहीं होता था और वे केवल मठ के भक्षिा-दान पर ही अपना जीवन यापन कर सकते थे। दयालु साव्हा ने इन लोगों की जरूरतों को दलि पर लयिा: उन्होंने वातोपेदी कोष में एक बड़ा योगदान दयिा ताकि ये सभी लोग अभाव में न रहें, बल्कि मठ पर बोझ बने बनिा, हमेशा भोजन और पानी पा सकें।

ऐसे भी कई लोग थे जो केवल इसलिए मठ आए थे क्योंकि उन्होंने असाधारण, प्रसद्धि तपस्वयिों के बारे में सुना था और उन्हें देखना चाहते थे। और साव्हा ने अपने नजिी साधनों से ऐसे सभी लोगों का भरण-पोषण कयिा; कई याचक थे, और एक भी असंतुष्ट नहीं रहा।

संत सावस ने वाटोपेडी मठ में दो कक्ष स्थापति कए, एक का नाम उनके पता समयन के नाम पर रखा गया, और दूसरे का नाम उनके अपने नाम पर रखा गया; ये कक्ष आज भी उनके स्थायी स्मारक के रूप में मौजूद हैं।

उन्होंने मठ में जो कुछ भी जर्जर और उपेक्षति था, उसका नवीनीकरण और जीर्णोद्धार कया।

संत सावस ने माउंट अथोस पर और उसकी सीमाओं के भीतर कई मेतोचया—अर्थात्, मठ की भूम—का सर्वेक्षण करने के बाद, जो सुनसान और अनुपजाऊ पड़ी थीं, उन्हें वाटोपेदी मठ के लए अधग्रिहति करने का नर्णिय लयि: बाइज़ेंटाइन सम्राट से अनुमत लेने के बाद, उन्होंने उनका वकिास कया, उन्हें बसाया और उन्हें उस मठ के लए सुरक्षति कया जसिने उन्हें और उनके पता को आश्रय दया था।

इस बीच, एल्डर समयन, वाटोपेडी में कुछ समय रहने के बाद, एक लंबे समय से चली आ रही इच्छा को पूरा करने का नर्णिय लयि – पूरे पवत्रि पर्वत का भ्रमण करना, पवत्रि चर्चों को श्रद्धांजल देना, तपस्वयिों से मलिना और उनसे बातचीत करना।

संत सावस के साथ, वे सबसे पहले कैरसि के मठ के लए रवाना हुए, जहाँ माउंट अथोस के प्रोटोस रहते थे। उनका आशीर्वाद प्राप्त करने और पवत्रि अवशेषों की पूजा करने के बाद, समिोन और सावस ने उदारतापूर्वक मठ को धन और वशिष रूप से कीमती वस्तुओं से सुसज्जति कया: चर्च के बर्तन और अन्य बर्तन, पादरयिों के वस्त्र और वेदी के कपड़े। इन भेंटों के लए, दोनों को सन्निाडकिॉन में मठ के दूसरे संस्थापकों के रूप में हमेशा के लए दर्ज कया गया, क्योंकपिहले संस्थापक ग्रीक राजा माइकल थे, जन्होंने अपनी बीमारी से ठीक होने की कृतज्ञता में परम पवत्रि माता परमेश्वर को समर्पति एक चर्च का नर्माण कया था।

इसी तरह, समयिोन और सवा ने इवेरॉन की परम पवत्रि माता के लावरा, जसिे पोर्टाटसिा के नाम से जाना जाता है, और माउंट अथोस के संत अथानासयिस के महान लावरा का दौरा कया। ये मठ उनके दान से समृद्ध हुए, और इनमें से प्रत्येक में दोनों सर्बयिाई परोपकारी को दूसरे संस्थापक के रूप में दर्ज कया गया।

मठों और आश्रमों का दौरा करते और उदार दान देते हुए, समयिोन और सव्वा ने हर जगह भक्षिुओं को उपहार दए और ज़रूरतमंद सभी को उदारतापूर्वक दान दया।

इस यात्रा के दौरान, सर्बयिाई भक्षिु एक ऐसी जगह की तलाश में थे जहाँ वे अपना मठ स्थापति कर सकें। लेकनि ऐसा करने के लए, उन्हें ग्रीक राजा की अनुमत की आवश्यकता थी। ऐसी अनुमत मांगने का एक अवसर जल्द ही सामने आया।

वाटोपेदी के मठाध्यक्ष को मठ से संबंधति मामलों पर सम्राट से मलिने के लए त्वरति रूप से त्सारग्राद जाने की आवश्यकता महसूस हुई। संतों के साथ एक बैठक में, मठाध्यक्ष ने सव्वा से अपनी जगह कॉन्स्टेंटनिोपल जाने का अनुरोध कया। सव्वा ने तुरंत सहमत दे दी।

कॉन्स्टेंटनिोपल में, उन्हें ज़ार अलेक्सी ([968]) द्वारा गर्मजोशी से स्वागत कया गया, जनिके ससुर स्टेफन नेमान्या थे। ज़ार, बेशक, लंबे समय से नेमान्या के संन्यास ग्रहण और माउंट अथोस पर उनके प्रवास से अवगत थे, और इसलए उन्होंने साव्हा से उनके जीवन के बारे में वस्तिार से पूछा।

साव्वा को बहुत सम्मान देने के बाद, ज़ार ने समयिोन को भी शानदार उपहार भेजे।

ज़ार ने उदारतापूर्वक वाटोपेडी मठ के सभी अनुरोधों को मंजूरी दे दी। इस अवसर पर, सावा ने ज़ार से एक व्यक्तगित अनुरोध कया: उसे और उसके पता को माउंट अथोस पर स्थति हलिंडर नामक एक छोटा, खंडहर पड़ा मठ प्रदान कया जाए। राजा ने खुशी-खुशी उनकी यह वनिती मान ली, उन्हें उस मठ और उसकी सभी सहायक संपत्तयिों को दे दया, और एक शासनादेश द्वारा इसकी पुष्ट कर दी।

माउंट अथोस लौटने पर, सावा ने खुशी-खुशी अपने पता को अपनी सफलता के बारे में बताया। हलिंडर पर कब्ज़ा करने के बाद, उन्होंने इसे वाटोपेडी मठ से जोड़ दया, जहाँ वे रहते थे, और इसके संगठन का काम शुरू कर दया।

इस अधग्रिहण से समयिन और सावा व्यक्तगित रूप से तो प्रसन्न हुए, लेकनि उनके सर्बयिाई देशवासी संतुष्ट नहीं हुए, जो पवत्रि स्थल की पूजा करने के लए बड़ी संख्या में माउंट अथोस पर उमड़ पड़े। ऐसे ही एक भक्तपिूर्ण तीर्थयात्री ने संत सावा के पास यह सुझाव लेकर आए कमिाउंट अथोस पर एक मठ स्थापति कया जाए जो उनके देश के लए एक स्थायी और स्वतंत्र आश्रय के रूप में काम करे, और जहाँ सर्बया से आए इच्छुक लोग मठवासी संन्यास की

[968] एलेक्सयिस एंजेलोस ने 1195 से 1203 तक शासन कया।

शपथ ले सकें और खुद को तपस्वी जीवन के लिए समर्पित कर सकें। यह सलाह संत सावा को बहुत पसंद आई, जो अपने देश से बहुत प्यार करते थे और उसकी भलाई के लिए गहराई से चिंतित थे। उन्होंने यह अपने आध्यात्मिक पिता, एल्डर सिमोन के साथ साझा किया, जिन्होंने इस इरादे को भी मंजूरी दे दी।

सावा ने वाटोपेडी मठ के मठाधीश से संपर्क किया और उनसे सर्बों के लिए कोठरियों के निर्माण और उनके लिए एक अलग मठ की स्थापना के लिए एक उपेक्षित भूखंड देने का अनुरोध किया। हालाँकि, मठाधीश को इस डर से कि ऐसे दाता वाटोपेडी को छोड़ सकते हैं, इस अनुरोध पर सहमति नहीं मिली। तब सावा और सिमोन अपनी यह विनती माउंट अथोस के प्रोटोस और अथोनाइट मठों के सामान्य परिषद के पास ले गए। प्रोटोस के नेतृत्व में परिषद ने इस विनती को तुरंत मान लिया और सुझाव दिया कि वे सर्बों के लिए एक मठ स्थापित करने हेतु कोई भी खाली जगह चुन लें।

और इस प्रकार वृद्ध सिमियन, सव्वा के साथ, माउंट अथोस की परिक्रमा करने के लिए एक बार फिर निकल पड़े। अपनी उन्नत आयु के कारण घोड़े पर सवार न हो पाने के कारण, सिमियन दो घोड़ों के बीच बँधे पालकी में यात्रा कर रहे थे। उन्होंने कई खूबसूरत जगहें देखीं, लेकिन अंत में उन्हें अपने प्रिय हिलैंडर से बेहतर कुछ भी नहीं मिला। जब वे अपनी यात्रा से लौटे और अपना विचार वाटोपेदी के मठाधीश के साथ साझा किया, तो वह इस डर से सहमत हो गए कि शाही भिक्षु नाराज़ हो सकते हैं और वाटोपेदी मठ को पूरी तरह से छोड़ सकते हैं।

तब संत सावस ने मठ के अंतिम संगठन का काम शुरू किया। सबसे पहले, उन्होंने हिलैंडर के प्राचीन मुख्य चर्च का जीर्णोद्धार किया और उसका विस्तार किया, जो परम पवित्र थिओटोकोस की घोषणा को समर्पित था। मठ के चारों ओर, उन्होंने एक ऊँचे टावर के साथ एक किलेबंदी दीवार बनाई। दीवारों के भीतर, उन्होंने भिक्षुओं के रहने के लिए विशाल आवास बनवाए। मठ की संपत्ति का विस्तार करने की इच्छा से, उन्होंने प्रोटोस और माउंट अथोस के सभी निवासियों से मालेआ गाँव को हिलैंडर में मिलाने की अनुमति मांगी।

सभी इमारतों को भव्य रूप से सजाने के बाद, संत सावा, अपने पिता सिमोन के साथ, वाटोपेडी से हिलैंडर में स्थायी रूप से रहने के लिए चले गए, और वहाँ उन्होंने दोनों ने अपने आध्यात्मिक कार्यों को समर्पित करना शुरू कर दिया।

अपने और सर्बिया के लिए बहाल किए गए मठ को और अधिक दृढ़ता से सुरक्षित करने की इच्छा से, सावा ने अपने पिता से परामर्श करने के बाद, ज़ार एलेक्सियस से मिलने के लिए एक बार फिर कॉन्स्टेंटिनोपल के लिए प्रस्थान किया। सम्राट द्वारा अनुकूल प्रतिक्रिया मिलने पर, उन्होंने उन्हें माउंट अथोस पर उन्होंने जो कुछ भी हासिल किया था, उसके बारे में बताया, और एक बार फिर उनसे अपने और अपने देश, सर्बिया के लिए अपनी इस रचना को सुरक्षित करने का अनुरोध किया; साथ ही, उन्होंने इस कार्य में सम्राट की व्यक्तिगत भागीदारी का भी अनुरोध किया। ज़ार ने सहानुभूतिपूर्वक उत्तर दिया, उनकी सभी अधिग्रहणों की पुष्टि की और अपनी इच्छा से, उन्हें माउंट अथोस पर स्थित अपने शाही मठ, जिसका नाम ज़िग था, का कब्ज़ा प्रदान किया और इसे एक चार्टर द्वारा पुष्ट किया। हिलांडर को, उससे जुड़े सभी अधिग्रहणों और अनुदानों के साथ, शाही स्टाउरोपेजियल मठों में शामिल कर दिया गया और इस प्रकार माउंट अथोस पर एक विशेष, विशेषाधिकार प्राप्त स्थिति में रखा गया।

संत सावा और उनके पिता, एल्डर सिमियन, की बहुत प्रसन्नता हुई, जब सावा ज़ार के पास से इतनी सफलतापूर्वक लौटे और उन्होंने शाही चार्टर पवित्र पर्वत के प्रोटोस और परिषद को प्रस्तुत किए, जिन्होंने अब, ज़ार की इच्छानुसार, ज़िग मठ को हिलैंडर के कब्जे में स्थानांतरित कर दिया। इसके तुरंत बाद, और अधिग्रहण किए गए; वरिष्ठों की परिषद से पवित्र कन्फेसर्स का मठ खरीदा गया। संस्थापकों ने हिलैंडर को अपनी मातृभूमि सर्बिया में कई मेटोचिया, या आय उत्पन्न करने वाली संपत्तियां, प्रदान कीं।

इस प्रकार, हिलैंडर नाम के अंतर्गत माउंट अथोस पर चौदह अलग-अलग मठ और संपत्तियाँ एकजुट हुईं, जिन्होंने मौद्रिक योगदानों के साथ मिलकर, सर्बियाई मूल के दो सौ भिक्षुओं के लिए एक पूरी तरह से आरामदायक जीवन सुनिश्चित किया। यह सुनिश्चित करने के लिए कि हिलैंडर मठ भविष्य में सर्बियाई नियंत्रण में रहे, संस्थापकों ने इसे सर्बियाई शासकों की एक आनुवंशिक संपत्ति के रूप में, महान सर्बियाई जुपान स्टीफन, जो सिमियोन के सबसे बड़े बेटे और संत सावा के भाई थे, की देखभाल में सौंप दिया।

इस प्रकार माउंट अथोस पर सर्बों के लिए एक मठ की स्थापना के संबंध में संत सिमोन और संत सावा की प्रिय इच्छाएं सफलतापूर्वक पूरी हुईं। अपनी भौतिक संसाधनों में सुरक्षित और सिमोन और सावा के कार्यों से गौरवान्वित, हिलैंडर लंबे समय तक न केवल सर्बों के लिए बल्कि अन्य ऑर्थोडॉक्स स्लाव लोगों के लिए भी ईसाई ज्ञान का केंद्र बन गया।

संत सावा ने हर्लिंडर में सामुदायिक मठों के नियमों के अनुसार मठवासी जीवन का आयोजन किया और अपनी खुद की संविधान-पत्र लिखी, जिसे उन्होंने तपस्वियों की आने वाली पीढ़ियों के लिए मार्गदर्शक के रूप में छोड़ा।

पवित्र पर्वत पर न केवल सामुदायिक मठ थे, बल्कि तपस्या के विभिन्न अन्य रूप भी मौजूद थे। कई भिक्षुओं ने संन्यासी का जीवन चुना: वे दो या तीन के समूह में इकट्ठा होते, और मौन तथा मनन के अभ्यास में खुद को समर्पित कर देते थे।

संत साव्वा ने मठवासी तपस्या के विभिन्न रूपों का ध्यानपूर्वक अध्ययन करने और उन सभी में स्वयं को परखने का प्रयास करने के बाद, एक संन्यासी के रूप में तपस्या करने की इच्छा व्यक्त की। संन्यासी तपस्या विशेष रूप से कैरिया नामक मठ के पास व्यापक रूप से प्रचलित थी। यहाँ, संत सावस ने एक छोटी सी ज़मीन खरीदी और उस पर एक स्केट, या 'तपस्थली' की स्थापना की; उन्होंने वहाँ एक चर्च का निर्माण किया जो यरूशलेम के पवित्र संत सावस को समर्पित था, और जिसे दो या तीन तपस्वियों के रहने के लिए बनाया गया था। वे स्वयं कुछ समय के लिए इस तपस्थल में रहे, मौन और ध्यान का अभ्यास करते हुए, और वहाँ उन्होंने तपस्या जीवन के लिए एक नियम बनाया; यह नियम बाद के समय में भी तपस्वियों के लिए एक मार्गदर्शक के रूप में काम आया।

इस बीच, उनके वृद्ध पिता, सिमियन, अपने जीवन के अंत के करीब पहुँच रहे थे। पूजनीय सावा, जिन्होंने हमेशा अपने पिता की अटूट देखभाल की थी, मृत्यु के करीब पहुँचने पर भी उनके साथ ही रहे। एक अवसर पर, सावा ने बूढ़े की मृत्यु की पूर्व सूचना पाकर पूरी रात प्रार्थना में जागकर पहरा दिया। अपने पिता के बिस्तर के पास एक भिक्षु को छोड़कर, वे स्वयं प्रातःकी प्रार्थना के लिए चले गए। जल्द ही उन्हें अपने पिता के पास बुलाया गया और उन्होंने देखा कि वरिष्ठ संन्यासी प्राण त्यागने की तैयारी कर रहे थे। साव्हा ने अपने पिता को उनके बिस्तर से उठाया और, महान विनम्रता के प्रतीक के रूप में, उन्हें एक चटाई पर फर्श पर लिटा दिया, और उन्हें उसी पर चर्च के बरामदे तक ले गए। वहाँ, एल्डर सिमियन, जैसे नींद से जागे हों, अपने पुत्र और हर्लिंडर मठ के भाइयों को आशीर्वाद देने लगे जो उनके चारों ओर इकट्ठा हो गए थे। उसी क्षण, एक शोर सुना गया, और एल्डर सिमियन ने भजन: 'हर साँस प्रभु की स्तुति करे' की शुरुआत से अंत तक गाना शुरू कर दिया। सभी ने स्वर्गदूतों को गाते हुए सुना, और वृद्ध ने स्वर्गदूतों के साथ गाया – और फिर उन्होंने अपनी अंतिम साँस ली। सदैव धन्य व्यक्ति के निधन पर विलाप हुआ, और सव्वा ने आनंद और दुख दोनों के आँसू बहाए: आनंद इसलिए कि उसे वृद्ध के धन्य निधन का साक्षी बनने के लिए योग्य माना गया था, और दुख इसलिए कि उसने अपने पिता और साथी को खो दिया था।

गंभीर अंतिम संस्कार के बाद, दिवंगत की देह को हर्लिंडर के 'द मोस्ट होली मदर ऑफ गॉड' चर्च में संगमरमर के एक ताबूत में सुलाया गया।

अपने निधन से पहले, बड़े भाई ने अपने पुत्र सव्वा को वसीयत दी थी कि उनके अवशेषों को अंततःउनके गृह देश, सर्बिया में स्थानांतरित किया जाए, जिसे बाद में पूरा किया गया।

अब पूजनीय सावा माउंट अथोस पर फिर से अकेले रह गए और उन्होंने खुद को आध्यात्मिक तपस्या में समर्पित कर दिया, तथा अपनी प्रार्थनाओं में अपने दिवंगत पिता को लगातार याद करते रहे। एक से अधिक मौकों पर, दिवंगत व्यक्ति सव्वा को रात्रि के दर्शनों में दिखाई दिए, उन्होंने उन्हें सांत्वना दी, स्वर्गीय महलों में अपने निवास का खुलासा किया, और यह पूर्वानुमान लगाया कि सव्वा स्वयं को उनके स्वदेश में आस्था और धार्मिकता के उद्देश्य को आगे बढ़ाने के लिए बुलाया जाएगा।

पहले की तरह, और भी अधिक उत्साह के साथ, सावा ने स्वयं को परोपकार के कार्यों में समर्पित कर दिया। वे निरंतर गरीबों और बेसहारा लोगों को दान देते थे, ज़रूरतमंदों की मदद करते थे, ज़रूरतमंद संतों को खोजकर उनका समर्थन करते थे; वे न केवल माउंट अथोस पर बल्कि अन्य, अक्सर दूर-दराज़ स्थानों पर भी चर्चों और मठों के निर्माण, पुनर्स्थापना या रखरखाव के लिए सहायता के किसी भी अनुरोध को अस्वीकार नहीं कर सकते थे। कभी-कभी, उसके सामान्य संसाधन—जो उसे अपने देश से विभिन्न तरीकों से प्राप्त होते थे—कम पड़ जाते थे। लेकिन फिर उसे ऊपर से मदद मिलती थी। यहाँ एक चमत्कार है जो सर्वपवित्र परमेश्वर की माता की मध्यस्थता से संत सावस के माध्यम से हुआ था।

एक से अधिक अवसरों पर, संत सावस ने कॉन्स्टेंटिनोपल का दौरा किया और, अपनी आदत के अनुसार, मठों और चर्चों को दान दिया। उन्हें परमेश्वर की परम पवित्र माता, एवरगेटिस, यानि कि ल्याणकर्त्री के चर्च के प्रति विशेष भक्ति थी। यहाँ तक कि जब उनके पिता जीवित थे, तब भी उन्होंने अपने परिवार की स्मृति में एक बड़ी राशि दान की; बाद

में, अपने पिता के साथ मिलकर, उन्होंने इस चर्च में वार्षिक योगदान देना शुरू कर दिया; अंत में, संत साव्वा ने अपने खर्च पर मठ में एक संलग्न भवन बनवाया ताकि कॉन्स्टेंटिनोपल की अपनी यात्राओं के दौरान उनके पास रहने के लिए एक जगह हो। ऐसे ही एक दौरे पर, एक धार्मिक और सुंदर महिला उसके पास आई और कहा कि दैवी इच्छा से, उसे सावा को यह बताने का आदेश मिला है कि पवित्र पहाड़ पर, हर्मिंडर मठ की सीमाओं के भीतर, दो स्थानों पर— —भूमि में खजाने छिपे हुए थे, जिन्हें वह अपनी ज़रूरतों के लिए उपयोग कर सकता था। संत सावा के जीवनीकार इस विचार को व्यक्त करते हैं कि यह रहस्योद्घाटन सावा को स्वयं परम पवित्र ईश्वर की माता से प्राप्त हुआ था, लेकिन विनम्रता के कारण, उन्होंने इसका खुलासा नहीं किया। पवित्र पर्वत पर लौटने पर, पूजनीय सावा ने प्राप्त मार्गदर्शन के अनुसार कार्य किया और वास्तव में दो स्थानों पर खजाने खोज निकाले; फिर भी उन्होंने उन्हें अपने लाभ के लिए नहीं लिया, बल्कि गरीबों और बेसहारों को दान देने और पवित्र पर्वत के चर्चों तथा तपस्वियों का समर्थन करने के लिए रखा।

माउंट एथोस के मठों, विशेष रूप से तट पर स्थित मठों, को समुद्री डाकुओं, या कोर्सेयरों द्वारा अक्सर परेशान और लूटा जाता था। एक अवसर पर, उन्होंने काराकाला मठ पर कब्जा कर लिया, उसके खजाने को लूट लिया और मठाधीश के साथ भिक्षुओं को बंदी बना लिया, ताकि उन्हें गुलामी में बेच सकें, अगर कुछ और न हो तो। समुद्री डाकुओं ने फिरौती की उम्मीद में बंदियों को माउंट एथोस के संत अथानासियस की लावरा में ले आए। लाव्रा के भिक्षुओं ने वास्तव में उन्हें समुद्री डाकुओं से छुड़ाया, लेकिन इस शर्त पर कि काराकाला मठ को उसकी स्वायत्तता से वंचित कर दिया जाए और लाव्रा के अधीन एक मेतोचियन के रूप में बना दिया जाए। इसके बाद, मठाध्यक्ष और मठीय समुदाय को छुड़ाए जाने के बाद, निर्दयता से काराकल से निकाल दिया गया। तब वे अपने दृढ़ संरक्षक, साव्हा के पास गए, जिन्होंने भिक्षुओं की दुर्दशा को दिल पर लगाकर, एक बार फिर से लाव्रा से काराकाला मठ को उसके सभी अधिकारों के साथ छुड़ाया, निर्वासितों को वहाँ वापस लाया और डाकुओं द्वारा की गई तबाही के बाद मठ को बहाल कर, उसे दिव्य सेवाओं और शांतिपूर्ण मठवासी जीवन को फिर से शुरू करने के लिए आवश्यक सभी चीजों से सुसज्जित किया।

इसी तरह, उन्होंने चालीस पवित्र शहीदों के मठ, जिसे ज़िरीपोतम के नाम से जाना जाता है, को भी बहाल किया, जिसे डाकुओं ने उजाड़ दिया था; उन्होंने इसे भित्ति-चित्रों से भव्य रूप से सजाया और इसे आवश्यक सभी चीजें प्रदान कीं। इस प्रकार संत सव्वा मठ के नए संरक्षक बने और यह सुनिश्चित किया कि उनकी शाही वंशावली का वहां हमेशा स्मरण किया जाएगा।

वर्ष दर वर्ष, संत सावस अपने पिता की मृत्यु की बरसी पर हर्मिंडर में एक गंभीर स्मरणोत्सव आयोजित करते थे। ऐसे अवसरों पर, माउंट अथोस के सभी मठों के भिक्षु, अपने प्रोटोस के नेतृत्व में, उनके निमंत्रण पर एकत्रित होते थे। दिव्य प्रकाशन से, धर्मनिष्ठ सव्वा को ज्ञात था कि उनके पिता को मृत्यु के पश्चात् संतों में गिन लिया गया था और वे पृथ्वी पर लोगों के समक्ष उनकी महिमा के लिए प्रभु से प्रार्थना कर रहे थे, यह आशा और विश्वास करते हुए कि उनकी धर्मपरायण इच्छा व्यर्थ नहीं होगी।

वरिष्ठ समियिन के लिए वार्षिक स्मृति सभाओं में से एक की पूर्व संध्या पर, संत सावा ने शाम की प्रार्थना के बाद, प्रोटोस से अनुरोध किया कि वे अगले सुबह समियिन की कफ़न के पास उनके महिमामंडन के लिए प्रभु से प्रार्थना करें, और उन्हें चर्च की चाबियाँ सौंप दीं, जबकि वे स्वयं, अपने सर्बियाई साथियों के साथ, सुबह की प्रार्थना के लिए परिग, या मीनार, में एक अन्य चर्च में चले गए। मैटिन्स के दौरान ग्रेट डॉक्सोलॉजी के समय, अचानक चर्च में एक असाधारण सुगंध फैल गई, जिसने उपस्थित सभी लोगों को मीठी आध्यात्मिक खुशी से भर दिया; और तब उन्हें एहसास हुआ कि संगमरमर के ताबूत में पड़े वृद्ध समिोन की सूखी हड्डियाँ सुगंधित मूर्रा उत्सर्जित कर रही थीं। इसकी सूचना मैटिन्स का संचालन कर रहे प्रोटोस को दी गई, जिन्होंने तुरंत संत सव्वा को सूचित किया। बड़ी खुशी के साथ, सव्वा अपने भाइयों के साथ बूढ़े समिोन की कब्र पर दौड़ पड़े और उन्होंने अपनी आँखों से ईश्वर की महान दया को देखा, जिसने उनके उत्कट विश्वास को महिमामय ढंग से सच्चा साबित किया था। भावुकता के आँसुओं के साथ, उन्होंने उस अवशेष-पात्र को चूमा जिससे धन्य मूर्र चमत्कारिक रूप से बही थी। कई बीमार लोग या अशुद्ध आत्माओं से ग्रस्त लोग, स्वयं पर सुगंधित मूर्र का लेप लगाकर और संत के अवशेषों वाले अवशेष-पात्र को छूकर चंगे हो गए। इन चमत्कारों के परिणामस्वरूप, अथोस के भिक्षुओं की परिषद ने नए चमत्कार करने वाले को पूर्व संतों की पंक्ति में शामिल कर लिया और यह आदेश दिया कि उनकी स्मृति संत समियिन द गॉड-रिसीवर के साथ मनाई जानी चाहिए। परिषद ने संत सावा को स्टिचैरा और एक कैनन रचने, और चमत्कारों को दर्ज करने का कार्य सौंपा, जिसे उन्होंने जल्द ही पूरा कर दिया।

तीन दनिों तक हलिैंडर में संत समिोन के गौरव-समर्पण के उपलक्ष्य में उत्सव मनाए गए। संत सावस ने उत्सव में एकत्रति सभी लोगों के लिए एक भव्य दावत का आयोजन कयिा और उन सभी पर उदारतापूर्वक उपहार प्रदान कर उन्हें वदिा कयिा।

संत सावस कई वर्षों से संन्यासी जीवन जी रहे थे, फरि भी वे एक साधारण भक्षिु बने रहे। पवत्रि पर्वत के प्रोटोस, डोमेटीयस, जो सावस को वशिेष सम्मान और स्नेह देते थे, लंबे समय से उन्हें पवत्रि पद स्वीकार करने के लिए प्रेरति कर रहे थे, लेकनि सावस, खुद को अयोग्य समझते हुए, लंबे समय तक मना करते रहे। अंतत; डोमेटीयस की बातों से प्रभावति होकर, उन्होंने पहले एक डकिन और फरि एक पादरी के रूप में दीक्षा लेने का संकल्प लयिा, जसिे पड़ोसी शहर इएरसिोस के बशिप नकिोलस द्वारा पूरा कयिा गया, जन्हिें हलिैंडर में आमंत्रति कयिा गया था और माउंट अथोस पर पादरयिों को दीक्षा देने का अधकिार प्राप्त था।

कुछ समय बाद, संत सावास मठ के काम से थेस्सालोनकिी शहर गए, जहाँ वे फलिोकालयिा मठ में रुके, जसिके वे संरक्षक थे और जन्हिें इसके संस्थापक के रूप में माना जाता था। थेस्सालोनकिी के मेट्रोपॉलटिन कॉन्स्टेंटनि ने, इरसिोस के बशिप नकिोलस से सवास के बारे में बहुत कुछ सुनने के बाद, कई बार बातचीत करने के बाद सवास को अपने और इरसिोस के बशिप नकिोलस '', कैसांड्रा के माइकल और एड्रामटियिम के डेमेट्रयिस के साथ कैथेड्रल चर्च में सेवा करने के लिए आमंत्रति कयिा। इन परषिद के पदानुक्रमों ने उन्हें लंबगो पहनने का आशीर्वाद दयिा और उन्हें आर्चमैंड्राइट के पद पर पदोन्नत कयिा। इस नए सम्मान के साथ, वह हलिैंडर लौट आए।

संत ने अपने शासक भाई, सर्बयिा के ग्रैंड जुपान स्टीफन को, माउंट अथोस पर हुई सभी घटनाओं की वस्तिार से जानकारी दी; उन्होंने चमत्कार करने वाले, जो उनके पूर्वज थे, की नव-प्रकट कब्र से पवत्रि तेल भी भेजा, साथ ही चमत्कारों और पूजा-वधिि का ववरिण भी भेजा।

कुलीन स्टीफन ने इन संदेशों को बड़ी प्रसन्नता से स्वीकार कयिा; और सारा सर्बयिा उनके साथ आनंदति हुआ। स्टीफन ने दविंगत संत की अपनी इच्छा के अनुसार, समियिोन के अवशेषों को सर्बयिा में स्थानांतरति करने की तीव्र इच्छा व्यक्त की।

उनके भाई वोलकान द्वारा उनके वरिुद्ध लड़ी गई गृहयुद्ध के कारण हुई वपित्तयिों के दौरान, स्टीफन ने संत सावा को एक लंबा पत्र लखिा, जसिमें उन्होंने उन्हें गहराई से आग्रह कयिा कि वे सर्बयिा आएं और समिोन के पवत्रि, मुर्रा-प्रवाह करने वाले अवशेषों को स्थानांतरति करें, इस दृढ़ वश्विास के साथ कि उनकी कृपा-पूर्ण शक्ति उनकी प्रार्थनाओं के माध्यम से मातृभूमि में शांति लाने में मदद करेगी।

संत सावा ने अपने भाई के अनुरोध और साथ ही अपने पति की अंतमि इच्छा को पूरा करने में देरी नहीं की। पवत्रि अवशेषों को लेकर, वह माउंट अथोस के कई तपस्वयिों के साथ सर्बयिा गए। सर्बयिा की सीमाओं तक पहुँचने से पहले, उन्होंने अपने भाई को पवत्रि अवशेषों के आगमन की सूचना दी। स्टीफन, पुरोहतिों, गणमान्य व्यक्तयिों और लोगों के साथ, उनका स्वागत करने के लिए बाहर गए। इस भेंट पर बहुत खुशी हुई, क्योंकि उन्होंने अपने पूर्व महान जुपान - पति - और उनके पुत्र, आर्चमिंड्राइट सावा, जो सद्गुणों के आदर्श थे, की पूजनीय अवशेषों को अपने स्वदेश लौटते हुए देखा। स्टीफन ने भक्तपिूर्वक अवशेषों को चूमा और इतने लंबे अलगाव के बाद अपने भाई को गले लगाया।

समिओन के पवत्रि अवशेषों को स्टुडेनट्सिा मठ में स्थापति कयिा गया, जसिे उन्होंने स्वयं स्थापति कयिा था और जहाँ उन्होंने अपना संन्यासी जीवन शुरू कयिा था; उनमें से प्रचुर मात्रा में मर्रिा (एक सुगंधति द्रव) नकिलता था, जो चमत्कारकि रूप से बीमारयिों को ठीक करता था और आस्था के साथ आने वाले सभी लोगों में आध्यात्मकि आनंद भर देता था।

संत सावा ने, उनके साथ आए माउंट अथोस के संतों के साथ, स्टुडेनट्सिा मठ में भी नविास कयिा, जसिसे उनके देशवासयिों को बहुत प्रसन्नता हुई।

वहाँ ठहरने के दौरान, और मठों, कस्बों और गांवों का दौरा करते हुए, सावा ने सभी को नरिंतर आस्था और धार्मकिता का उपदेश दयिा। सभी ने इस बात को देखकर राहत की अनुभूति की कि मातृभूमि में शांति और सुकून स्थापति हो रहा था, और आस्था तथा अच्छे आचरण को सुदृढ़ कयिा जा रहा था। भाइयों के बीच की दुश्मनी शांत हो गई, और वोल्कान अपने भाई के अधीन हो गया।

अपने रविाज़ के अनुसार, संत सावा ने दान-पुण्य कयिा, चर्चों को धर्मार्थ दान दिए, जर्जर चर्चों का जीर्णोद्धार कयिा और नए चर्च बनाए, ठीक वैसे ही जैसे उन्होंने माउंट अथोस पर कयिा था, जहाँ वे अब लौटने के लिए उत्सुक थे,

बावजूद इसके कि उन्होंने अपने देश के लिए जो लाभ लाए थे, वे सभी के सामने स्पष्ट थे। एक से अधिक अवसरों पर उन्होंने अपने शक्तिशाली भाई स्टीफन से पवित्र पर्वत पर लौटने की अनुमति मांगी थी; लेकिन स्टीफन ने अपने भाई से विनम्रतापूर्वक आग्रह किया कि वह उनके साथ रहें और चर्च तथा धर्म के हित में सेवा करें। उन्होंने संत सावा को स्टुडेनेट्स मठ का मठाध्यक्ष पद प्रस्तावित किया, जिसके वे पूरी तरह से हकदार थे, क्योंकि उन्हें पहले ही एक आर्चमिांड्राइट के रूप में अभिषिक्त किया जा चुका था। कुछ हिचकिचाहट के बाद, सावा ने मठ का नेतृत्व करने के लिए सहमति दे दी, जो दोनों भाइयों और सभी सर्बों के लिए प्रिय था, और उन्होंने स्वयं को चर्चों के निर्माण और हर जगह आस्था और भक्ति को बढ़ावा देने के लिए अथक रूप से समर्पित कर दिया।

अपने भाई स्टीफन के साथ, संत सावा ने जीचा में आरोहण का नया मठ (प्रभु के स्वर्गारोहण के सम्मान में) स्थापित करने का निर्णय लिया, जो बाद में सर्बियाई आर्चडायोसीस का कैथेड्रल मठ बन गया। इस और अन्य मठों की स्थापना में, संत सावा ने उनमें माउंट अथोस पर देखी गई तपस्या की प्रथाएँ: कीनोबिया, लावरास और सिकास्टारिया को लागू किया। चाहते हुए कि उनके पूरे देश में ईश्वर का नाम महिमामय हो, संत सावा ने यथासंभव अधिक से अधिक चर्च बनाने का प्रयास किया; और जहाँ यह असंभव होता, वहाँ वे कम से कम एक पवित्र क्रॉस तो लगा ही देते थे, ताकि जो कोई भी उसे देखे, वह सूली पर चढ़ाए गए को याद करे।

अपने जीवनकाल में ही, संत सावा को चमत्कार करने का वरदान प्राप्त हुआ था। इस प्रकार, एक अवसर पर स्टुडेनिट्सा मठ में, उन्होंने एक लकवाग्रस्त व्यक्ति को देखा जो असहाय अवस्था में, दाऊद के भजन जपते हुए सड़क के किनारे भीख मांग रहा था। सावा मानव दुर्बलता को देखकर आँसुओं से भर आए; उन्होंने लकवाग्रस्त व्यक्ति को चर्च में उद्धारकर्ता की प्रतिमा के सामने ले जाकर उसके लिए एक भावुक प्रार्थना की, उसे संत समियिन के अवशेष-पात्र से मूर्रा से अभिषिक्त किया, और उसके पापों से मुक्ति प्रदान की।

लकवाग्रस्त व्यक्ति पूरी तरह से ठीक होकर उठ खड़ा हुआ। इस चमत्कारी उपचार की खबर दूर-दूर तक फैल गई; दूर-दूर से बीमार लोग स्टुडेनिका मठ में इलाज के लिए आने लगे और उपचार के लिए संत सावा की मध्यस्थता की मांग करने लगे। सावा ने प्रार्थना की, अपने पिता की अवशेष-पेटिका से प्राप्त मिर्रा से बीमारों का अभिषेक किया, और बीमार ठीक हो गए।

संत सावा की गतिविधियों और नए मिर्रा-प्रवाह करने वाले चमत्कारी संत, समियिोन की प्रसिद्धि ने सर्बिया और पड़ोसी भूमि का ध्यान आकर्षित किया। उन कठिन समयों में, कई लोगों ने सर्बियाई ग्रैंड ज़ुपान स्टीफन के पास शरण ली और उन्हें सुरक्षा मिली। संत सावा का चमत्कारी हस्तक्षेप ऐसे लोगों तक भी फैला।

बुल्गारियाई बोयार स्ट्रेज़, जो बुल्गारियाई ज़ार कलायान का रिश्तेदार था—जो कॉन्स्टेंटिनोपल पर लैटिन कब्ज़े के दौरान थेसालोनिकी के खिलाफ अभियान में मारा गया था—सुरक्षा की तलाश में सर्बिया के महान ज़ुपान, स्टीफन के पास भागा। नए बुल्गारियाई ज़ार बोरिसि (या बोरिल) ने पूर्व ज़ार के रिश्तेदार होने के नाते स्ट्रेज़ की प्रत्यर्पण की मांग की। स्टेफन ने न केवल शरण मांगने वाले भगोड़े को सौंपने से इनकार कर दिया, बल्कि उसे हर तरह का संरक्षण दिया और यहां तक कि विर्दार नदी पर स्थित प्रोसेक शहर और उसके आसपास के क्षेत्र का स्वामित्व भी दे दिया। हालाँकि, स्ट्रेज़ कृतघ्न और क्रूर साबित हुआ। उसने अपने प्रजाजनों को सताया और अंततःस्टेफन के खिलाफ विद्रोह कर दिया। एक खूनी लड़ाई होने वाली थी। संत सावा बहुत दुखी हुए और उन्होंने खून-खराबे को रोकने के लिए कदम उठाए। वह साहसपूर्वक स्ट्रेज़ के शिविर में गए और, आश्चर्यजनक रूप से, इस क्रूर शासक द्वारा उनका स्वागत किया गया, जो उनसे पहले स्टीफन के दरबार में मिल चुका था और उसे जानता था। सावा ने उसे व्यर्थ में खून बहाने से रोकने, अपनी योजना छोड़ने, स्टीफन की दया को याद करने और चर्च में पवित्र सुसमाचार के सामने की गई भाईचारे की प्रतिज्ञा को याद करने के लिए हर संभव प्रयास किया। स्ट्रेज़ अपनी बात पर अड़ा रहा। तब सावा ने कहा कि ईश्वर ही उनके और स्टीफन के बीच फैसला करेंगे, और वे वहाँ से चले गए। उस रात, सावा ने प्रभु से एक भक्तिपूर्ण प्रार्थना की, उनसे अनुरोध करते हुए कि वे कृतघ्न स्ट्रेज़ के हथियार को उसी स्ट्रेज़ के विरुद्ध मोड़ दें। और उसी रात, एक रहस्यमयी और भयानक युवक स्ट्रेज़ के सामने प्रकट हुआ, उसने स्ट्रेज़ का हथियार छीन लिया, उसे मार गिराया, और गायब हो गया। स्ट्रेज़ चिल्लाने लगा और विनती करने लगा कि सावा को उसके पास बुलाया जाए, यह मानकर कि जिसिने उसे मारा था वह सावा का दूत था। लेकिन सावा शिविर छोड़ चुके थे, और उन्हें ढूंढ नहीं पाया गया। स्ट्रेज़ की मृत्यु हो गई, और उसके अनुचर जल्दी ही बिखर गए; खून-खराबा टल गया।

संत सव्वा ने अपने देश में बहुत सारा अच्छा और लाभकारी काम कयिा था, जसिे वह बहुत प्यार करते थे। फरि भी, पवत्रि पहाड़ के लिए उनका प्यार गहरा था; वह उसकी लालसा करते थे और लगातार वहां लौटने के लिए तरसते थे। कई बार उन्होंने यह इच्छा अपने भाई स्टीफन से व्यक्त की, जसिने इन बातों को दुख के साथ सुना और हर संभव तरीके से सव्वा को अपने पास रखने की कोशशि की। साव्वा वहीं रहे, लेकनि फरि बार-बार छुट्टी मांगने लगे; अंत में, उन्होंने एक बार और हमेशा के लिए मन बना लयिा। सम्मानति स्टीफन ने उन्हें दुख के साथ ग्रीक सीमा तक वदिा कयिा, हालांकि उन्हें इस बात की उम्मीद थी कि यह प्रस्थान भी केवल अस्थायी होगा; उनके सभी देशवासी भी साव्वा को वदिा करते समय दुखी थे।

जसि प्रकार सर्बयिा से सव्वा का प्रस्थान एक दुखद अवसर था, उसी प्रकार माउंट अथोस पर उनका आगमन एक आनंद का अवसर था, न केवल हलिैंडर मठ के संतों के लिए, बल्कि पवत्रि पर्वत के सभी नविासयिों के लिए भी।

नए उत्साह के साथ, सावा ने एक बार फरि खुद को पवत्रि पर्वत पर तपस्वी जीवन के लिए समर्पति कर दयिा, और एकांत, मौन और ईश्वर के चतिन में डूब गया। फरि भी, उसी समय, उसने अपने परोपकारी कार्यों को जारी रखा, जसिके बनिा वह कहीं भी नहीं रह सकता था: एक बार फरि उसने बेसहारों की देखभाल की, गरीबों को दान दयिा, चर्चों को दान दयिा और तपस्वयिों की सहायता की।

इस तरह कई साल बीत गए। सर्बयिा में, लोग सावा की अनुपस्थति पिर शोक मनाते थे और उनकी वापसी के लिए तरसते थे। भाई स्टीफन ने इस बारे में उन्हें एक से अधकि बार लखिा। हालाँकि, सावा अडगि रहे। लेकनि फरि एक ऐसी घटना हुई जसिने सभी को सावा की मातृभूमि में वापसी के लिए और भी अधकि लालायति कर दयिा: अचानक, संत समियिन के अवशेष-पात्र से चमत्कारी जल का प्रवाह रुक गया। सभी ने इसे ईश्वर के क्रोध के रूप में देखा और समिीओन की कब्र पर सव्वा की प्रार्थनाओं की तीव्र इच्छा की। भयभीत होकर, स्टीफन ने सव्वा को एक मार्मकि पत्र लखिा, जसिमें उनसे वनिती की गई कि वे सर्बयिा आएं और उसके तथा पूरे राष्ट्र के साथ मलिकर, मर्रिा-प्रवाह करने वाले वृद्ध समिीओन की कब्र पर मर्रिा-प्रवाह की कृपा की बहाली के लिए प्रार्थना करें। संत सावा ने इस वनिती पर ध्यान दयिा, लेकनि इस अवसर पर भी वे स्वयं सर्बयिा नहीं गए; इसके बजाय, उन्होंने हलिारयिन नामक एक भक्षिु को भेजा, उन्होंने हलिारयिन को अपने धन्य दविंगत पति समियिन के लिए एक भक्तपिूर्ण प्रार्थना संदेश सौंपा, जसिे दव्यि सेवा और प्रार्थना सेवा के बाद राजकुमार स्टीफन और लोगों की उपस्थति में संत की कब्र पर पढ़ा जाना था। अपने संदेश में, पुत्र ने स्वाभावकि रूप से सीमोन को संबोधति कयिा – जैसे एक पति एक आध्यात्मकि पुत्र को संबोधति करता है, क्योंकि अपने जीवनकाल में वरषि्ठ सीमोन ने सावा को ऐसा ही माना था, क्योंकि सावा ने उन्हें संसार त्यागने और मोक्ष के लिए संन्यासी जीवन चुनने के लिए मना लयिा था। भक्षिु हलिारयिन ने सब कुछ ठीक वैसा ही कयिा जैसा साव्हा ने नर्दिेश दयिा था। साव्हा का पत्र समिीओन के अवशेष-पात्र पर पढ़े जाने के बाद, अचानक चर्च में एक सुगंधति खुशबू फैल गई, और धन्य मर्रिा फरि से अवशेष-पात्र से बहने लगी, जसिसे बीमारों को तुरंत स्वास्थ्य लाभ मलिा। सभी ने प्रभु ईश्वर की महान दया के लिए भक्तपिूर्वक धन्यवाद दयिा और उनके तपस्वी, सव्वा, की आध्यात्मकि शक्ति पर आश्चर्यचकति हुए। इस चमत्कार ने पूरे सर्बयिा को सांत्वना और प्रोत्साहन दयिा।

उन दनिों ऑर्थोडॉक्स पूर्व में महत्वपूर्ण घटनाएँ घटीं, जो लैटनिों के हाथों बुरी तरह पीड़ति हुआ था। 1204 में लैटनिों ने साम्राज्यकि शहर कॉन्स्टेंटनिोपल पर कब्जा कर लयिा। ग्रीक सम्राट और पैट्रआर्क को तबाह हुए साम्राज्य को पुनर्स्थापति करने और अत्यधकि पीड़ति ऑर्थोडॉक्स धर्म को पुनःस्थापति करने के लिए एक अन्य स्थान की तलाश करने के लिए मजबूर होना पड़ा। पड़ोसी ऑर्थोडॉक्स राज्यों बुल्गारयिा और सर्बयिा को अपनी परेशानयिाँ और कठनिाइयाँ थीं, और सर्बयिाई तथा बुल्गारयिाई शासकों ने उन कठनि समयों में अपनी स्वतंत्रता और शुद्ध ऑर्थोडॉक्सी दोनों की रक्षा के लिए पूरी लगन से प्रयास कयिा। संत सावा ने अपने कसिी भी स्लाव समकालीन से बेहतर ढंग से ऑर्थोडॉक्स पूर्व की स्थति, परेशानयिों और जरूरतों को समझा। जसि प्रकार यूनानी साम्राज्य के समृद्ध दनिों में वह अक्सर कॉन्स्टेंटनिोपल गया करता था और सम्राटों के साथ संबंध बनाए रखता था, उसी प्रकार अब, वपित्त के समय में, उसने यूनानी सम्राट और पादरी के साथ अपने संबंध नहीं तोड़े। सम्राट थयिोडोर लास्करसि और पैट्रआर्क उस समय एशयिा माइनर के नकियिा शहर में रहते थे, जो प्रथम और सप्तम सार्वभौमकि परषिदों की मेजबानी के लिए प्रसद्धि था। संत सावा के पास सम्राट और पादरी के समक्ष उपस्थति होने के कई कारण थे, जो माउंट अथोस पर हलिैंडर मठ के मामलों और उनकी मातृभूमि, सर्बयिा की आवश्यकताओं, दोनों से संबंधति थे। उन्होंने नकियिा के लिए नकिलने का नश्चिय कयिा।

राजा थियोडोर लास्करिस का संबंध सर्बियाई ग्रैंड ज़ुपान से निकट था: स्टीफन के बेटे—और इस प्रकार संत सावा के भतीजे—की शादी राजा थियोडोर लास्करिस की बेटी से हुई थी। स्टेफन नेमान्या से शुरू होकर—जो इस समय तक पहले से ही पूज्य संत समियिोन बन चुके थे—सर्बियाई शाही परविार का पछिले शासकों से संबंध था और उन्हें बहुत सम्मान दयिा जाता था। हालाँकि, अब सर्बियाई और ग्रीक शासकों के बीच संबंध पारविारकि संबंधों और लैटनिों के खलिाफ स्वतंत्रता और ऑर्थोडॉक्सी की रक्षा की उनकी साझा आवश्यकता, दोनों के कारण वशिेष रूप से घनष्ठि हो गए थे। इसलिए यह आश्चर्य की बात नहीं है कि निकिया में संत सावा का राजा और पादरी न केवल अनुकूल रूप से, बल्कि बहुत गर्मजोशी से स्वागत कयिा गया। हलिंडर मठ के मामलों से संबंधति सावा के सभी अनुरोधों को पूरी तरह से पूरा कयिा गया।

लेकनि संत सावा के वचिार और चतिाएँ केवल हलिंडर मठ तक ही सीमति नहीं थीं: वे उतने ही अपने देश की ज़रूरतों और कल्याण, और उसकी नागरकि तथा धार्मकि दोनों तरह की स्वतंत्रता और स्वायत्तता की ओर भी नर्दिेशति थीं।

बुद्धमिान सावा ने महसूस कयिा कि अब सर्बयिा के लिए धार्मकि स्वायत्तता प्राप्त करने का समय आ गया था।

हलिंडर मठ के संबंध में अपना कार्य समाप्त करने के बाद, संत सावा ने सर्बियाई चर्च के संबंध में एक महत्वपूर्ण अनुरोध के साथ ज़ार थियोडोर से संपर्क कयिा। उन्होंने वाक्पटुता से और वसि्तार से अपने मातृभूमि में आस्था की स्थति का वर्णन कयिा; उन्होंने उन कठनि समयों के दौरान ऑर्थोडॉक्सी की शुद्धता को संरक्षति करने और बनाए रखने में आने वाली चुनौतयिों और सफलताओं पर प्रकाश डाला, जब ऑर्थोडॉक्स पूर्व में दक्षणिी स्लावों और ग्रीकों के बीच अधर्मी बोगोमलि संप्रदाय फैल रहा था, और जब लैटनि पश्चमि से ग्रीकों और ऑर्थोडॉक्स स्लावों दोनों के खलिाफ आगे बढ़ रहे थे। लेकनि इन प्रयासों और धार्मकि मामलों में इन उपलब्धयिों को स्थायी बनाने के लिए, जैसा कि सावा ने तर्क दयिा, यह आवश्यक था कि सर्बयिा में केवल एक बशिप ही नहीं होना चाहिए जसिे अब तक की तरह कॉन्स्टेंटनिोपल के पैट्रआर्क द्वारा नयिुक्त कयिा जाता रहा है, लेकनि एक आर्चबशिप, जो स्वतंत्र या स्वायत्त हो, जो स्वयं ही धर्मप्रांतों की स्थापना करे और सर्बियाई धर्मसभा के साथ मलिकर उनमें बशिपों की नयिुक्ति करे। ऐसी महत्वपूर्ण मांग ने शुरू में ज़ार और पैट्रआर्क के बीच हलचल मचा दी। लेकनि सावधानीपूर्वक वचिार-वमिर्श के बाद, राजा और पादरी दोनों ने यह स्वीकार कयिा कि इस अनुरोध को स्वीकार करने से, वे सर्बयिा और खुद के लिए भी बहुत लाभ लाएंगे: सर्बयिा, एक स्वतंत्र आर्चबशिप प्राप्त करने और नए धर्मप्रांत स्थापति करने के बाद, ऑर्थोडॉक्स धर्म की रक्षा और उसे बनाए रखना आसान पाएगी और लैटनिवाद के प्रलोभनों के आगे नहीं झुकेगी, जबकि साथ ही पड़ोसी राज्यों के बीच उसकी प्रतष्ठिा भी बढ़ेगी; इस उपकार के एहसान के बदले में, ग्रीस को साम्राज्य के शत्रुओं के खलिाफ संघर्ष में सर्बियाई शासक के रूप में एक मत्रि और सहयोगी मलिेगा।

जब इस महत्वपूर्ण मामले को इस प्रकार सर्बयिा के पक्ष में हल कर लयिा गया, तो संत सावा ने अनुरोध कयिा कि उनके साथ आए वृद्ध हएिरोमोंक्स में से एक को सर्बियाई आर्चबशिप के पद पर पदोन्नत कयिा जाए। लेकनि न तो ज़ार और न ही पादरी सावा के प्रस्ताव के अनुसार कार्य करना संभव समझते थे: उन्होंने कहा कि वे याचकिाकर्ता और मध्यस्थ स्वयं को छोड़कर कसिी और को इस उच्च पद पर नहीं लाना चाहते थे। घटनाओं का यह मोड़ वनिम्र सावा के लिए पूरी तरह से अप्रत्याशति था: उसने इस संभावना पर वचिार भी नहीं कयिा था। लेकनि ज़ार और पैट्रआर्क की इच्छा अटल थी। प्रथा के अनुसार प्रभु ईश्वर से प्रार्थना करने और ज़ार तथा पैट्रआर्क दोनों के साथ-साथ अपने साथयिों के आग्रहों को सुनने के बाद, सावा ने इसमें ईश्वर की इच्छा मान ली और सहमति दे दी। राजा ने आदेश दयिा कि ऑटोसेफलस आर्चबशिप के उच्च पद पर पदोन्नति के लिए आवश्यक सभी चीजें उनके कोषागार से प्रदान की जाएँ। और इस प्रकार, 1222 में परम पवत्रि ईश्वर की माता के स्वर्गारोहण के पर्व पर, सार्वभौमकि पैट्रआर्क जर्मनस ने राजा और कुलीनों की उपस्थति में सव्वा को सर्बयिा का आर्चबशिप नयिुक्त कयिा।

खुशी से भरकर, अपने उच्च पद से सम्मानति और राजा तथा धर्मगुरु द्वारा उदारतापूर्वक पुरस्कृत होकर, सव्वा अपनी वापसी की यात्रा पर रवाना हुए। समुद्र मार्ग से वे अथोस के पवत्रि पर्वत पर पहुँचे। सव्वा के आर्चबशिप के पद पर पदोन्नति की खबर उनकी वापसी से पहले ही पहुँच चुकी थी। माउंट अथोस के सभी तपस्वी, प्रोटोस से लेकर सबसे नचिले संन्यासी तक, नए नयिुक्त आर्चबशिप से आशीर्वाद प्राप्त करने और उनका स्वागत करने के लिए लालायति थे और जल्दी कर रहे थे। हलिंडर मठ में यह खुशी वशिेष रूप से अधकि थी, लेकनि दुख भी था: वे मठ के महान संस्थापक और संतों के अद्वतिीय नेता से अलग होने वाले थे, शायद हमेशा के लिए। माउंट अथोस के सभी सबसे महत्वपूर्ण मठों के प्रोटोस और मठाधीशों ने, एक के बाद एक, सावास से अपने मठों का दौरा करने, दैवीय पूजा का आयोजन करने और कुछ को डीकन और पादरी के पद पर नयिुक्त करने का अनुरोध कयिा। संत सावा ने इन अनुरोधों को लगन से पूरा कयिा: जनि

मठों का उन्होंने बहुत सम्मान और प्रेम कयिा था, उन्हें एक बार फरि से देखना और उनके भीतर प्रार्थना करना उनकी आत्मा के लिए आनंद की बात थी।

अपने हलिंडर मठ के भाइयों को इसके नयिमों और उपदेशों के अनुसार जीने के लिए अंतमि बार नरि्देश देने के बाद, संत सवा अपने वतन के लिए रवाना हो गए, अपने शष्यिों और साथयिों में से काफी संख्या में भक्षिुओं के साथ, जन्हिें वे बाद में सर्बयिा में महत्वपूर्ण धार्मकि पदों पर नयिुक्त करने वाले थे। सावा उस पवत्रि पर्वत से वदिा लेते समय दुखी थे जसिे वे बहुत प्यार करते थे, लेकनि उन्हें इस बात से सांत्वना मलिी कि उन्हें अपने देश में एक उच्च मंत्रालय के लिए बुलाया जा रहा था।

माउंट अथोस से, सावा प्रसदि्ध शहर थेस्सालोनकिी की ओर रवाना हुए। वहाँ, उन्होंने सबसे पहले महान शहीद डेमेट्रयिस द मर्रिा-गविर के अवशेषों को श्रद्धांजलि अर्पति की, और फरि थेस्सालोनकिी के बशिप, मेट्रोपॉलटिन कॉन्स्टेंटयिस से मलिने गए, जनिके साथ उनके लंबे समय से मैत्रीपूर्ण संबंध थे और जनिके साथ उनकी गहरी दोस्ती थी। साव्वा ने इस मेट्रोपॉलटिन के साथ चर्च प्रशासन के कठनि मामलों पर वस्तिार से बातचीत की और उनसे सलाह-मशवरि कयिा। संत साव्वा काफी समय तक थ्रेसलॉनीकी में रहे, और अपने मठ फलिोकालयिा में रहे, जसिमें उन्होंने अब नए और उदार उपहार लाए थे।

वदि्वान सावा ने वहाँ अपना समय वदि्वतापूर्ण कार्यों को समर्पति कयिा: एक स्वतंत्र चर्च का प्रशासन करने के लिए, उन्हें धार्मकि और नागरकि कानूनों की आवश्यकता थी। उन्होंने ग्रीक—एक ऐसी भाषा जसिे वे पूरी तरह से जानते थे—में ऐसी पुस्तकें प्राप्त करने और उन्हें स्लावोनकि भाषा में अनुवादति करने का काम शुरू कयिा। उनके श्रम का फल स्लावोनकि भाषा में 'कोर्मचाया नगिा' (दसि्टीयरगि बुक) का प्रकाशन था, जसिका बाद में न केवल सर्बों, बल्कि बुल्गारयिाई और रूसी लोगों द्वारा भी धार्मकि प्रशासन के लिए उपयोग कयिा गया।

इस प्रकार अपने उच्च पद के लिए खुद को तैयार करने के बाद, सावा ने अपनी मातृभूमि के लिए प्रस्थान कयिा, और पहले अपने भाई, सर्बयिा के ग्रैंड जुपान, स्टीफन को एक संदेश भेजा, जसिमें उन्होंने उसे अपनी सभी वपिरीत परस्थितियिों और अपनी वापसी के बारे में सूचति कयिा।

स्टेफान और पूरी सर्बयिा आर्चबशिप के पद पर सव्वा की वापसी पर प्रसन्न हुए। सर्बयिाई सीमा पर उनके लिए एक भव्य स्वागत समारोह का आयोजन कयिा गया; हालाँकि, स्टेफान व्यक्तगित रूप से शामलि नहीं हो सके, क्योंकि वे बीमार थे और बस्तिर पर पड़े थे। कुलीनों और लोगों द्वारा बड़ी खुशी से स्वागत कएि जाने के बाद, सावा अपने भाई के पास गए और अपनी प्रार्थना से उन्हें बस्तिर से उठा दयिा; उन्होंने उन्हें आशीर्वाद दयिा और भाईचारे से गले लगाया।

तुरंत, दोनों भाइयों ने चर्च का संगठन करना शुरू कर दयिा। उन्होंने जल्द से जल्द जीचे में पहले से स्थापति मठ को पूरा करने और वहाँ आर्चबशिप का मुख्यालय स्थापति करने का संकल्प लयिा।

अपने भाई से मलिने और धार्मकि मामलों के संबंध में आवश्यक प्रारंभकि कदम उठाने के बाद, संत सव्वा अपने पति की कब्र और मठवासी समुदाय से मलिने के लिए स्टुडेनकिा मठ के लिए रवाना हुए, जसिका उन्होंने पूर्व में पूर्व की यात्रा से पहले आर्चमैंड्राइट के रूप में नेतृत्व कयिा था।

संत समियिन की कब्र को चूमने के बाद, जसिसे उपचार करने वाली बहुत सारी मर्रिा बह रही थी, सावा ने भक्षिुओं को नरि्देश देने और चर्च के मामलों को व्यवस्थति करने का काम शुरू कर दयिा।

अब, महाधर्माध्यक्षीय अधकिार प्राप्त करने के बाद, उन्होंने माउंट अथोस की तपस्या की परंपरा पर आधारति सर्बयिा में मठवासी तपस्या की स्थापना के कार्य को और अधकि दृढ़ता से जारी करना शुरू कर दयिा। उन्होंने सामान्य चर्च पूजा और मठवासी नयिम, साथ ही मठवासी आचरण के सभी पहलुओं से संबंधति व्यवस्था और वधिान पेश कएि।

इससे पहले, संत सावा ने अपने भाई स्टीफन के साथ मलिकर, ज़चि में प्रभु के स्वर्गारोहण के महान चर्च के साथ एक नए मठ की नींव रखी थी। यह नरि्णय लयिा गया कि सर्बयिाई आर्चबशिप की धर्मपीठ वहीं स्थापति की जाएगी। सावा वहाँ गए और मठ के नरि्माण और सजावट को तेजी से पूरा करने में जुट गए।

अब महाधर्माध्यक्ष बन चुके संत सावा की सबसे पहली और प्रमुख चंति सर्बयिाई चर्च का संगठन था। सावा ने सर्बयिाई क्षेत्रों के पूरे क्षेत्र को बारह धर्मप्रांतों में वभिाजति कयिा और उनके लिए बशिप नयिुक्त कएि, जन्हिें मुख्य रूप से अपने ही शष्यिों और साथयिों में से योग्य व्यक्तयिों के रूप में चुना गया था। उन्होंने नव-नयिुक्त बशिपों को अपने अनुयाययिों पर शासन करने के तरीके सखिाए और उन्हें चर्च के प्रशासन के लिए कैनन की पुस्तकें सौंपीं।

कुछ समय बाद, सावा ने सच्चे ऑर्थोडॉक्स धर्म को मजबूत करने के उद्देश्य से बिशपों, काले और सफेद दोनों वर्गों के पुरोहितों, और सामान्य लोगों सहित एक सामान्य सर्बियाई धार्मिक परिषद बुलाई। उस समय, सर्बिया में आस्था के मामलों में बहुत अव्यवस्था थी: अधर्मी बोगोमिल संप्रदाय मौजूद था, साथ ही मूर्तिपूजा के अवशेष भी थे, और आम तौर पर ईसाइयों के बीच अव्यवस्था और दुराचार के कई अन्य रूप थे। परिषद में, संत सावा ने ऑर्थोडॉक्सी की पुष्टि पर एक विस्तृत और प्रभावशाली उपदेश दिया। ऑर्थोडॉक्स धर्म-सत्य को पुनःस्थापित किया गया, विधर्मों पर चर्चा की गई, और विभिन्न अंधविश्वासों, अनियमितताओं और दुर्गुणों को समाप्त करने के लिए उपाय किए गए।

अन्य बातों के अलावा, यह सामने आया कि कई लोग चर्च में विवाह किए बिना ही वैवाहिक सहवास में रह रहे थे; कई लंबे समय से इस तरह रह रहे थे और उनके बच्चे भी थे, जिनमें से कुछ तो वयस्क भी थे। संत सावा ने अपने शिष्यों में से योग्य पुरुषों को चुना, उन्हें महापुजारी नियुक्त किया और उन पतियों और पत्नियों का विवाह कराने के लिए पूरे देश में भेज दिया, जिनका अभी तक विवाह नहीं हुआ था; यह भी आदेश दिया गया कि उनके वयस्क बच्चों का विवाह उनके माता-पिता के साथ किया जाए। उन्हीं महापुरोहितों को देश के आध्यात्मिक जीवन की अन्य कमियों को दूर करने का कार्य भी सौंपा गया।

सर्बियाई शासक अब तक 'ग्रैंड झुपान' की उपाधि धारण करता था, जबकि पड़ोसी शासक 'ज़ार' या 'राजा' की उपाधि धारण करते थे। सावा के भाई, स्टीफन, ने अपने राज्य की शक्ति और महत्व के अनुरूप, राजसी मुकुट धारण करने की इच्छा व्यक्त की। यह अब पूरी तरह से संभव था, क्योंकि सर्बिया का अपना स्वतंत्र धर्मगुरु था जो राज्याभिषेक की रस्म निभा सकता था। संत सावा ने यह रस्म जीचे मठ के कैथेड्रल चर्च में संपन्न की। चूंकि पड़ोसी राज्यों के राजाओं को अपने ताज पोप से प्राप्त होते थे, इसलिए यह आवश्यक समझा गया कि सर्बियाई शासक को उसके पड़ोसियों द्वारा राजा के रूप में मान्यता दिलाने के लिए पोप की सहमति ली जाए; यह सहमति एक ताज भेजकर प्रदान की गई और प्रकट की गई; फिर भी इस परिस्थिति ने न तो पोप के प्रति समर्पण को जन्म दिया और न ही इसने ऑर्थोडॉक्स धर्म को कोई हानि पहुंचाई।

सर्बिया का उदय पड़ोसी हंगरी के राजा व्लादिस्लाव को रास नहीं आया, जो सर्बिया के नव-मुकुटधारी राजा स्टीफन के खिलाफ़ युद्ध छेड़ने के लिए तैयार था। खून-खराबे से बचने के लिए, स्टीफन ने अपने भाई, आर्चबिशप सावा से, इस मामले को शांतिपूर्वक सुलझाने के लिए हंगरी के राजा के पास जाने के लिए कहा। सावा रवाना हुए और उनका स्वागत अनुकूल रूप से किया गया; लेकिन राजा किसी भी तरह की रियायत देने को तैयार नहीं था। हालाँकि, सावा की चमत्कारी प्रार्थना ने एक अनुकूल परिणाम लाया। निम्नलिखित चमत्कार हुआ। राजा के साथ बातचीत एक भीषण गर्मी वाले दिन हो रही थी। गर्मी और प्यास से थके हुए सावा ने अपने लिए कुछ बर्फ लाने को कहा। लेकिन तहखानों में बर्फ पिघल चुकी थी। तब संत सावा ने प्रभु से प्रार्थना की, और अचानक एक बादल प्रकट हुआ, बिजली चमकी, गरज हुई, और ओलावृष्टि हुई, जिसने जमीन को ढक दिया। सावा ने आदेश दिया कि ओलों को एक पात्र में इकट्ठा किया जाए; उसे आशीर्वाद देने के बाद, उन्होंने स्वयं उसका स्वाद चखा और राजा को यह कहते हुए भेंट किया:

'चूँकि आपकी बर्फ पिघल गई थी, मैंने प्रभु परमेश्वर से प्रार्थना की, और उन्होंने हमें यह ताज़गी भरी देन भेजी है!'

यह चमत्कार देखकर सभी चकित रह गए और संत सावा को श्रद्धापूर्वक देखने लगे। राजा ने सर्बिया के प्रति अपना रवैया बदल दिया; युद्ध का विचार त्याग दिया गया। इसके अलावा, राजा ने सावा के प्रति इतना आदर और सम्मान महसूस किया कि वह अपने पापों का इक़रार उनसे करना चाहता था और उनसे पाप-क्षमा प्राप्त करना चाहता था। सावा ने यह कार्य बड़ी सावधानी से किया और राजा को लैटिनिवाद त्यागकर ऑर्थोडॉक्सी में लौटने के लिए मना लिया, जिसमें उन्हें सफलता भी मिली।

सर्बिया लौटने पर, संत सावा ने अपने भाई को सब कुछ बताया, और दोनों ने इन आशीर्वादों के लिए ईश्वर का धन्यवाद किया।

प्रथम-मुकुटधारी राजा स्टीफन वृद्धावस्था को प्राप्त हुए और अक्सर बीमारियों से पीड़ित रहते थे। अपनी मृत्यु से पहले, उनकी तीव्र इच्छा थी कि वे संन्यास का व्रत लें और अपने भाई सावा से मुंडन कराएँ। लेकिन आर्चबिशप ने यह अनुरोध यह कहते हुए अस्वीकार कर दिया कि अभी समय नहीं आया है। एक दिन, जब संत सावा एक लंबी यात्रा पर गए हुए थे, तब स्टीफन गंभीर रूप से बीमार पड़ गए। उन्हें बुलाने के लिए तुरंत संदेशवाहक भेजे गए। सावा तुरंत अपने बीमार भाई के पास दौड़ पड़े; लेकिन रास्ते में उनकी मुलाकात एक नए संदेशवाहक से हुई, जिसने उन्हें बताया कि राजा का निधन

हो चुका था और इतनी जल्दी करने की कोई जरूरत नहीं थी - वह अब जीवित नहीं थे। लेकिन इसके विपरीत, संत साव्वा ने अपनी यात्रा और भी तेज़ कर दी, इस बात से दुखी थे कि वह समय पर अपने भाई को दिव्य रूप नहीं दे पाए थे, और प्रभु से प्रार्थना कर रहे थे कि वह अपने भाई को जीवित रखें। और क्या हुआ? जब सावा प्रार्थना करते हुए अपने भाई के बिस्तर के पास पहुँचे, तो उन्होंने उसमें जीवन के संकेत देखे, और स्टीफन तुरंत होश में आ गया। संत सावा ने प्रसन्न होकर, स्टीफन को सिमियन के नाम '' से विभूषित किया और उसे शांति का चुंबन दिया। मठवासी जीवन में सिमीओन के नाम से जाने जाने वाले राजा स्टीफन का, अपने भाई, संत सावा की बाहों में शांतिपूर्वक निधन हो गया। उनके अवशेषों को उनके पिता, संत सिमीओन नेमान्जा के अवशेषों के बगल में स्टुडेनिका मठ में दफनाया गया।

सर्बियाई सिंहासन पर प्रथम-मुकुटधारी स्टीफन के सबसे बड़े बेटे, रादोस्लाव का कब्ज़ा हो गया, जिसे संत सावा ने शाही मुकुट पहनाकर विधिवत राज्याभिषेक किया।

बहुत लंबे समय से संत सावा पवित्र भूमि की यात्रा करने, पवित्र सेपल्चर की पूजा करने और हमारे उद्धारकर्ता के जीवन और मृत्यु से प्रसिद्ध स्थानों पर चलने के लिए तरस रहे थे। वह प्रसिद्ध फिलिस्तीनी मठों का भी दौरा करना चाहते थे और फिलिस्तीनी तपस्वियों के जीवन को देखना चाहते थे। अब सावा ने अपने विचार और निर्णय अपने भतीजे, राजा रादोस्लाव के साथ साझा किए। राजा के लिए अपने चाचा से बिछड़ना मुश्किल था, जो उनके बुद्धिमान सलाहकार और मार्गदर्शक हो सकते थे, लेकिन उन्होंने उनकी विनती को ठुकराने और उन्हें जाने देने की हिम्मत नहीं की, और यात्रा के लिए उन्हें सोने की एक बड़ी राशि दी।

संत सवा एड्रियाटिक तट, जो सर्बिया का था, होते हुए रवाना हुए, अपनी ही नाव पर चढ़े और पवित्र भूमि के लिए प्रस्थान किया। अपनी यात्रा को सुरक्षित रूप से पूरा करने के बाद, वह जल्द ही पवित्र शहर यरूशलेम पहुँचे, जहाँ यरूशलेम के पैट्रिआर्क, अथानासियस द्वारा उनका गर्मजोशी से स्वागत किया गया, और उन्होंने यरूशलेम और आसपास के क्षेत्र में पवित्र स्थलों का दौरा करना और पूजा करना शुरू कर दिया। उन्होंने पैट्रिआर्क के साथ मिलकर पुनरुत्थान के महान चर्च में सेवा की, और पैट्रिआर्क के आशीर्वाद से, माउंट सियोन, बेथलहम, गेथ्सेमनी, जैतून की पहाड़ी और बेथनी के अन्य प्रसिद्ध चर्चों में भी सेवा की। इन सभी चर्चों के साथ-साथ, जिन अन्य पवित्र स्थानों का उन्होंने दौरा किया, सव्वास ने उदारतापूर्वक दान दिया और पवित्र चर्चों के रखरखाव, सुधार और सजावट के लिए भेंटें अर्पित कीं।

संत सावस एपफिनी के स्थल और जॉन द बैपटिस्ट के गुफा चर्च को देखने के लिए यॉर्डन गए, और वहां से संत गेरासिमिस के मठ होते हुए यरूशलेम लौट आए। थोड़ी देर आराम करने के बाद, वह अपने नाम के संत, संत सव्वास द सैंक्चुडाइड के प्रसिद्ध मठ के लिए रवाना हुए, जहाँ मठवासी समुदाय ने उनका सम्मानपूर्वक स्वागत किया। वहाँ से वह मृत सागर गए, मौन भिक्षुओं की गुफाओं का दौरा किया और उनसे बातचीत की। उन्होंने महान यूथिमियस और थियोडोसियस द कनोवार्च के मठ का भी दौरा किया। यरूशलेम लौटने पर, वह वहां से एक बार फिर विभिन्न स्थानों: नासरत और तabor पर्वत की यात्रा पर गए।

यरूशलेम में रहते हुए, मठों और अन्य उल्लेखनीय स्थानों का दौरा करते हुए, संत सावस ने ऐसा ज्ञान प्राप्त करने का प्रयास किया जो स्वयं उनके और उनके देश दोनों के लिए फायदेमंद हो। उन्होंने चर्च के विधानों और नियमों का अध्ययन किया, पुस्तकें प्राप्त कीं, और चर्च प्रशासन तथा आत्माओं के उद्धार के मामलों पर विद्वान धर्मगुरुओं और तपस्वियों से बातचीत की। इसके अलावा, उन्होंने अपने देश के लिए कई पवित्र अवशेष और चर्च के वस्त्र प्राप्त किए।

पवित्र भूमि का भ्रमण करने और पवित्र स्थलों पर श्रद्धांजलि अर्पित करने के बाद, सव्वास यूनानी राजा जॉन वटात्सेस के पास रवाना हुए, जो तब भी निकिया में रह रहे थे, जहाँ सव्वास पहले पूर्व राजा थियोडोर लास्करिस, वटात्सेस के ससुर, से मिले थे। संत सवा का राजा और विशेष रूप से रानी द्वारा गर्मजोशी से स्वागत किया गया, जो पहले अपने पिता के जीवित रहते हुए संत सवा से मिल चुकी थीं और उनके प्रति बहुत स्नेह और सम्मान रखती थीं। राजा और रानी ने उदारतापूर्वक सर्बियाई आर्चबिशप को कोषागार से धन और पवित्र चर्चों के लिए कीमती वेषभूषा प्रदान की। सावा को सैन्य सम्मान के साथ एक शाही जहाज पर सम्मानपूर्वक विदा किया गया। वह पवित्र माउंट अथोस के लिए रवाना हो गए, जहाँ उन्होंने वाटोपेदी—जहाँ उन्होंने अपना संन्यासी जीवन शुरू किया था—और आइवर, साथ ही अन्य मठों का दौरा किया; हालाँकि, उन्होंने अपना अधिकांश समय अपने ही सर्बियाई मठ, हिलेंडर में बिताया। माउंट अथोस के सभी भिक्षु अपने पूर्व साथी और भाई को देखकर बहुत प्रसन्न हुए। रीति के अनुसार, संत सावा ने चर्चों, भिक्षुओं और गरीबों को

उदारतापूर्वक दान दिया, जो उनके अपने संसाधनों और यूनानी राजा और रानी द्वारा उन्हें दिए गए उपहारों, दोनों में से था।

पवित्र माउंट अथोस से, सावा थेस्सालोनिकी शहर के लिए रवाना हुए, जहाँ निकिया के राजा से स्वतंत्र, एंजेलोस परिवार के थियोडोरस—जो खुद को राजा भी कहते थे—का शासन था। उन परेशान करने वाले समयों में इस शासक और सर्बिया दोनों के लिए शांति बनाए रखना महत्वपूर्ण था, और इसलिए थियोडोर द्वारा सेंट सावा का गर्मजोशी से स्वागत किया गया; वास्तव में, सावा की थ्रेसैलॉनीकी की यात्रा से सर्बिया को काफी लाभ हुआ।

वहाँ से, सावा अपने स्वदेश के लिए रवाना हो गए। इस खबर से प्रेरित होकर सर्बियाई राजा रादोस्लाव पुरोहितों, कुलीनों और लोगों के साथ सावा से मिलने के लिए बाहर आए। यह बैठक संत सावा और उनके शासक के नेतृत्व वाले सर्बियाई लोगों, दोनों के लिए एक आनंदमय अवसर था।

स्टुडेनिका मठ में अपने पिता, संत सिमियन द मिर्रा-गविर के मकबरे पर अपनी लंबी यात्रा से विश्राम करने के बाद, आर्चबिशप सावा ने बड़ी लगन के साथ धर्म और चर्च के मामलों को संभालना शुरू कर दिया।

सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण, उन्होंने अपने भाई, स्टीफन प्रथम-मुकुटधारी, जिन्होंने साधु जीवन में सिमियन नाम ग्रहण किया था, की मृत्यु की स्मृति में स्टुडेनिका लवरा में एक आध्यात्मिक परिषद बुलाई। दैवीय सेवा और एक विशेष प्रार्थना सेवा के बाद, संत ावा ने दिवंगत की अवशेष-पेटिका खोलने का आदेश दिया, जिसके भीतर उनके अक्षत अवशेष पाए गए, जिन्होंने चर्च को एक मधुर सुगंध से भर दिया। ईश्वर की इस नई दया पर सभी के बीच बहुत आनंद हुआ। उसी क्षण, यह निर्णय लिया गया कि पवित्र अवशेषों को विधिवत जिची के कैथेड्रल मठ में, जो उन्होंने हाल ही में स्थापित किया था, स्टीफन प्रथम-मुकुटधारी और संत सावा के साझा समाधि स्थल पर स्थानांतरित किया जाए।

इसके बाद, संत सावा ने अपनी सर्बियाई महाधर्मप्रांत के सभी धर्मप्रांतों का निरीक्षण करने के लिए प्रस्थान किया, जहाँ उन्होंने धार्मिक न्याय का प्रशासन किया, कमियों को दूर किया, लोगों को आस्था और धार्मिकता में शिक्षित किया, और बेसहारा और गरीबों को उदारतापूर्वक दान दिया, साथ ही चर्चों और मठों पर भी कृपा दिखाई। सावा ने इस यात्रा पर किसी को भी शिक्षा और मार्गदर्शन के बिना नहीं छोड़ा: कुलीनों, सैनिकों और आम लोगों, सभी ने उनसे ईसाई जीवन पर बुद्धिमानी भरे उपदेश सुने।

लेकिन संत सावा को बड़ी दुखों को भी सहना पड़ा। राजा रादोस्लाव और उनके छोटे भाई व्लादिस्लाव, जिन्होंने अपने बड़े भाई के खिलाफ अवैध रूप से विद्रोह कर दिया था, के बीच एक गृहयुद्ध छिड़ गया। राजा रादोस्लाव शुरू में लोगों के प्रिय थे, लेकिन बाद में, कुछ अविवेकी कार्यों के कारण—विशेष रूप से अपने पारिवारिक जीवन में—उन्होंने लोगों का विश्वास खो दिया: कई कुलीनों ने उनसे मुंह मोड़ लिया और उनके विद्रोही छोटे भाई का साथ दिया। रादोस्लाव को पदच्युत कर निर्वासित कर दिया गया और वह एड्रियाटिक सागर पर ड्राच भाग गया, जहाँ एक फ्रेंकिश लैटिन शासक के हाथों अत्याचार सहने के बाद, उसे एक बार फिर भागने के लिए मजबूर होना पड़ा। उसे अपने चाचा, आर्चबिशप सावा के पास शरण और सुरक्षा मिली, जिन्होंने एक उथल-पुथल भरे सांसारिक जीवन के बाद, उसे संन्यासी जीवन में सांत्वना खोजने के लिए मनाया: सावा ने रादोस्लाव को जॉन के नाम से साधु बनाया और, संन्यासी जीवन के एक छोटे से समय के बाद, उनका निधन हो गया।

रादोस्लाव की मृत्यु के बाद, संत सावा ने व्लादिस्लाव के छोटे भतीजे को—जिसे अब सभी सर्ब मान्यता देते हैं—सर्बियाई राजसी मुकुट पहनाया। व्लादिस्लाव अपने चाचा का बहुत सम्मान करते थे, उनकी सलाह मानते थे, और धार्मिकता के मामलों में अपने पिता और दादा की नकल करने का प्रयास करते थे। संत सावा के आशीर्वाद से, उन्होंने अपने लिए एक स्मारक चर्च, मिलिसेवो में स्थित भव्य चर्च ऑफ द एसेन्शन का निर्माण किया।

संत सावा ने सर्बियाई चर्च के भले के लिए लंबे समय तक प्रेमपूर्वक परिश्रम किया; उन्होंने एक प्रीलेट - एक आर्चबिशप के रूप में बहुत भलाई की और लाभ पहुँचाया; फिर भी उनकी आत्मा पवित्र, दूरस्थ स्थानों और एकांत में तपस्या के प्रयासों के लिए तरसती रही। और इस प्रकार, अपने अंतर्मन की पुकार के आगे झुकते हुए, उन्होंने आर्चबिशप्रिक का भार त्यागने और एक बार फिर पूर्व की ओर यात्रा पर निकलने का संकल्प लिया। उन्होंने अपना इरादा सीधे व्लादिस्लाव, बिशपों और कुलीनों को बता दिया। सभी ने उससे विनती की कि वह अपने अनुयायियों को न छोड़ें, लेकिन संत सावा अडिग रहे; उन्होंने कहा कि उन्हें उन पवित्र स्थानों की यात्रा करनी है जहाँ वे अभी तक नहीं गए थे, और फिर, अपनी वापसी पर, वे अपने शेष जीवन के लिए मौन तपस्या में उनके साथ रहेंगे।

एक चर्च परिषद बुलाने के बाद, उन्होंने अपने शिष्यों में सबसे योग्य, हिएरोमोंक आर्सेनियस को चुना और उन्हें अपना उत्तराधिकारी बनाकर सर्बिया का आर्चबिशप नियुक्त किया; जबकि स्वयं, अपनी मंडली को अंतिम निर्देश देने के बाद, वे एक बार फिर एक लंबी यात्रा पर निकल पड़े।

इस बार भी, वह डाल्मेशिया से समुद्र मार्ग से रवाना हुआ। उस समय, हर जगह समुद्रों में बहुत सारे समुद्री डाकू थे। एक अफवाह फैल गई कि सावा अपने साथ बहुत सारा धन लेकर जा रहे थे। समुद्री डाकू सावा के जहाज की घात में लगे थे और हमला करने के लिए तैयार थे, लेकिन सावा की प्रार्थनाओं की शक्ति से, उनके नाविकों ने घात लगाए समुद्री डाकुओं से सफलतापूर्वक बच निकले और इटली के ब्रिन्डिसी के सुरक्षित बंदरगाह में प्रवेश कर गए। डकैतों ने पश्चाताप किया और उसी बंदरगाह पर पहुँचने पर संत सावा से क्षमा याचना की। जब वह अपनी यात्रा के अगले चरण पर रवाना हुए, तो पवित्र तीर्थयात्री को एक नए खतरे का सामना करना पड़ा। एक भयंकर तूफ़ान आ गया। नाविकों ने जहाज़ चलाने से इनकार कर दिया और केवल ऊपर वाले की मदद का इंतज़ार करने लगे। एक स्वर में, वे सव्वा की ओर मुड़े, उनसे अपनी प्रार्थना और मध्यस्थता के लिए कहा। सव्वा ने नाविकों के सहारे, हवा के विपरीत स्वर्ग की ओर अपने हाथ उठाकर, प्रभु ईश्वर से भक्तिपूर्वक प्रार्थना की। और प्रभु ने उनकी प्रार्थना सुनी: अचानक तूफ़ान थमने लगा, और सभी ने प्रभु परमेश्वर और संत साव्वा का धन्यवाद किया। जब वे फिलिस्तीन के तटीय शहर अकर पहुँचे, तो संत साव्वा वहाँ 'साव्वा द सैंक्चुडाइड' के मठ में रुके, जिसे उन्होंने पहले फ्रैंक्स से खरीदा था। समुद्र पर तूफ़ान को शांत करने वाली संत सावस की प्रार्थना के चमत्कार की खबर नाविकों से लोगों तक फैल गई, और कई लोग उस अद्भुत संत को देखने और उनका आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए आए।

अक्रे से, संत सावस एक अन्य जहाज से समुद्र मार्ग द्वारा यरूशलेम के लिए रवाना हुए, और वे केसरिया मारिटिमा और जोपा होते हुए यात्रा कर रहे थे।

यरूशलेम में, वह सेंट जॉन द थियोलोजियन के मठ में रुके, जिसे उन्होंने पहले खरीदा था और सेंट सावस द सैंक्चुडाइड के मठ के भिक्षुओं की देखभाल में सौंप दिया था। इस मठ के भिक्षुओं— —के साथ, जिन्होंने उनका हर्षोल्लास से स्वागत किया—वे पवित्र अवशेषों की पूजा करने के लिए होली सेपल्चर चर्च गए। वहाँ उनकी मुलाकात यरूशलेम के पैट्रिआर्क, अथानासियस से हुई, जिन्होंने उनसे उनकी यात्रा, संत सावा के मूल देश, और उन देशों में युद्ध और शांति की स्थिति के बारे में विस्तार से पूछताछ की जहाँ से वे गुज़रे थे। संत सावा ने पैट्रिआर्क के साथ मिलकर दैवीय सेवा में भाग लिया, जिन्होंने इस अवसर पर उपस्थित लोगों से सावा की योग्यता, अच्छे कर्मों और चमत्कारों के बारे में भविष्यवाणी की।

सावस पहले से ही यरूशलेम में अच्छी तरह से जाने जाते थे, और वहाँ उनका दोबारा प्रकट होना लोगों की बड़ी भीड़ को अपनी ओर खींच लाया, जो उनकी प्रार्थना और आशीर्वाद की कामना कर रहे थे।

संत जॉन द थियोलॉजिस्ट के मठ में अपना निवास स्थापित करने के बाद, संत सावस ने पवित्र स्थलों का दौरा किया और तपस्वियों से बातचीत की, जिनमें से कई को वह लंबे समय से जानते थे, विशेष रूप से संत सावस की लावरा में। लेकिन सावस ने खुद को केवल यरूशलेम के पवित्र स्थलों की पूजा तक ही सीमित नहीं रखा। यरूशलेम से, उन्होंने कई लंबी यात्राएँ कीं। उदाहरण के लिए, वह मिस्र के अलेक्जेंड्रिया की यात्रा करना चाहते थे।

वहाँ उन्हें अलेक्जेंड्रिया के पैट्रिआर्क द्वारा दया और सम्मान के साथ स्वागत किया गया, जो पहले से ही प्रसिद्ध सर्बियाई आर्चबिशप के बारे में कुछ जानते थे और अब, व्यक्तिगत रूप से उनसे मिलने पर, उन्होंने उनके मूल देश के बारे में विस्तार से पूछा। अलेक्जेंड्रिया में, संत सावा ने पवित्र चर्चों का दौरा किया, अवशेषों की पूजा की और हर जगह भेंटें अर्पित कीं; और पैट्रिआर्कल कैथेड्रल में, एक उदार दान देने के बाद उन्होंने अपना नाम चर्च रजिस्टर में दर्ज करवाया। उन्होंने और पैट्रिआर्क ने एक-दूसरे को शानदार उपहार दिए।

पितृप्रधान द्वारा विश्वसनीय और विद्वान मठवासी नेताओं को सौंपे जाने के बाद, संत सावस ने मरुस्थलों के बीच यात्रा करके तपस्वी जीवन का अवलोकन करने और संन्यासियों से संवाद करने के लिए अलेक्जेंड्रिया के आसपास के रेगिस्तानों की यात्रा की; उन्होंने मारेओटे और लीबिया के मरुस्थलों का दौरा किया। प्रेम और विनम्रता के साथ, उन्होंने मौन साधकों की खोज की और उनसे शिक्षा ग्रहण की, जिनके तप को मोक्ष का सबसे उत्तम मार्ग मानकर सर्वत्र प्रशंसा की जाती थी। वहाँ से वह थेबाइड और ब्लैक माउंटेन की यात्रा पर गए, जो अपने मठवासी तपस्या के लिए प्रसिद्ध थे; उन्होंने सीरिया के विभिन्न हिस्सों और यहाँ तक कि फारस का भी दौरा किया, और अंत में यरूशलेम लौट आए।

थोड़ी देर आराम करने के बाद, वह एक नए सफर पर - माउंट सिनाई के लिए निकल पड़े। जॉर्डन घाटी से होते हुए, वह बाबेल पहुँचे, जहाँ उन्होंने तीन युवकों: अनानियास, अजारीयास और मिसैल के मकबरों को श्रद्धांजलि अर्पित की। स्थानीय सुल्तान ने उनके साथ अनुकूल व्यवहार किया और उन्हें मिस्र के सुल्तान के पास सुरक्षा गार्ड प्रदान किए, जिन्होंने संत साव्वा के साथ भी दयालुता दिखाई और उन्हें माउंट सिनाई तक पहुँचाया।

सिनाई पर्वत पर, संत साव्वा का सिनाई के बिशप ने गर्मजोशी से स्वागत किया और उन्होंने 'मॉस्ट होली मदर ऑफ गॉड' के मठ में निवास किया। सिनई पर्वत पर, संत साव्वा ने पूरे पवित्र लेंट (उपवास) का समय तपस्या में, पवित्र स्थलों का सम्मान करते हुए, वहाँ के तपस्वी जीवन का अध्ययन करते हुए, और अपने देश के लिए उस पवित्र स्थान में प्रार्थना करते हुए बिताया।

सिनई पर्वत से, संत सावस एक बार फिर यरूशलेम लौट आए। थोड़ी देर आराम करने के बाद, उन्होंने सभी पवित्र स्थलों का पुनःभ्रमण किया और उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की, और फिर एक नई यात्रा की तैयारी करने लगे। यरूशलेम के पैट्रिआर्क अथानासियस और संत सावस द सैंक्चुराइज्ड के मठ के मठाधीश निकोलस, साथ ही पूरे पैट्रिआर्कल पुरोहित वर्ग और मठवासी भाइयों को हार्दिक विदाई देने के बाद, संत सावस अंत्योकिया शहर के लिए रवाना हुए, जहाँ अंत्योकिया के पैट्रिआर्क ने उनका गर्मजोशी से स्वागत किया। खुद अंꣳओक में पवित्र चर्चों का दौरा करने के बाद, संत सव्वा ने माउंट ऑफ द बीटिट्यूड्स पर संत समियिन के मकबरे का सम्मान करने के लिए तीर्थयात्रा की।

अंतियोक से, सव्वा आर्मेनिया और अनातोलिया होते हुए कॉन्स्टेंटिनोपल के लिए रवाना हुए। उन्होंने ज़मीनी यात्रा सुरक्षित रूप से पूरी की, लेकिन समुद्र में रहते हुए उन्हें एक गंभीर बीमारी ने घेर लिया। उनके साथियों को उनकी जान की चिंता थी और उन्होंने उन्हें कुछ खाने के लिए कहा, क्योंकि उन्होंने कई दिनों से कुछ नहीं खाया था; लेकिन सव्वा कुछ ताज़ा चीज़ों के अलावा कुछ भी नहीं खा सकते थे। फिर भी, तट बहुत दूर था, और जहाज के नाविक ने उस उद्देश्य के लिए रुकने से बदतमीज़ी से इनकार कर दिया। साव्वा के साथियों ने उसे यह बताया, लेकिन उन्होंने उन्हें आश्वस्त करते हुए कहा कि सब कुछ ईश्वर की इच्छा के अनुसार होता है, और किसी को शिकायत नहीं करनी चाहिए। अचानक, उसी क्षण, एक लहर एक बड़ी जीवित मछली को जहाज पर ला पटकती है, ठीक उस जगह जहाँ बीमार साव्वा लेटा हुआ था। साव्वा ने उसकी ओर इशारा करते हुए कहा:

'देखो, प्रभु ईश्वर ने हमें वह भेज दिया है जिसकी हमें आवश्यकता थी!'

उस मछली को पकाया गया, और जहाज पर सवार सभी लोगों ने उसी को खाया। ताज़े भोजन से बल प्राप्त कर, संत साव्वा पूरी तरह से स्वस्थ होकर उठ खड़े हुए, जबकि नाविक, हुई घटना से शर्मिंदा होकर, बिशप से क्षमा याचना करने लगा।

कॉन्स्टेंटिनोपल पहुँचने पर, संत साव्वा सबसे पहले एवरगेटिसा की परम पवित्र माँ ऑफ गॉड के मठ (Monastery of the Most Holy Mother of God Evergetissa) पहुँचे, जहाँ उनका अपना आवास था। वहाँ से, वे शहर के केंद्र में, संत एंड्रयू द अपोस्टल के चर्च ( ) गए, जहाँ उन्होंने उस समय कॉन्स्टेंटिनोपल पर शासन कर रहे लैटिन मजिस्ट्रेटों के साथ विभिन्न विषयों पर चर्चा की।

कॉन्स्टेंटिनोपल से, ऐसा लगता है कि संत सावस का सामान्य मार्ग माउंट अथोस होता, जहाँ से वे अपने देश लौटते। लेकिन ईश्वर ने उनके मार्ग को दूसरी ओर मोड़ दिया। कॉन्स्टेंटिनोपल से, संत सावा समुद्र मार्ग से ब्लैक सी पर स्थित मेसेम्ब्रिया शहर गए, और वहां से अपनी रिश्तेदारी तय करने वाले, बुल्गारियाई ज़ार जॉन एसेन से मिलने के लिए बुल्गारियाई राजधानी, टर्नोवो शहर की ओर बढ़े, जिनकी बेटी का विवाह सर्बियाई राजा व्लादिस्लाव, जो संत सावा के भतीजे थे, से हुआ था। बुल्गारिया के सम्राट ने सवा के लिए एक भव्य स्वागत समारोह का आयोजन किया और राजधानी टर्नोवो में उनका बड़े सम्मान से स्वागत किया, तथा अपने निजी कक्ष और नौकरों को उनकी सेवा में लगा दिया। एपिफेनी के पर्व की पूर्व संध्या पर, संत सवा ने चालीस शहीदों के कैथेड्रल में बपतिस्मा का जल अभिषिक्त किया, और अगली सुबह उन्होंने बुल्गारियाई पैट्रिआर्क के साथ मिलकर दैवीय धर्मविधि का अनुष्ठान किया।

इसके तुरंत बाद, संत सावा का आशीर्वाद प्राप्त करने के बाद, बुल्गारियाई ज़ार शिकार के लिए शहर से निकल गया; इस बीच, संत सावा गंभीर रूप से बीमार पड़ गए और उन्होंने महसूस किया कि उनका अंत निकट है।

उन्होंने अपने शिष्यों और साथियों को अपने पास इकट्ठा किया और अपनी अंतिम व्यवस्थाएँ कीं। पूर्व में अपनी यात्राओं के दौरान, उन्होंने अपने देश के लिए बहुत सारे पवित्र अवशेष और कीमती वस्तुएँ एकत्र की थीं: पवित्र अवशेष, पात्र, पुस्तकें, वेषभूषा और चर्च का अन्य सामान; इनमें से कई वस्तुएँ उन्हें उपहार में मिली थीं, जबकि कई उन्होंने

खरीदी थीं। उन्होंने इन सभी खजानों को सटीकता से बाँटा, यह नर्दिष्टि करते हुए कि प्रत्येक को कहाँ भेजा जाना है, और उन्हें अपने वतन के लिए अपने से पहले रवाना कर दिया।

इस बीच, उनकी बीमारी बिगड़ती जा रही थी। एक शनिवार की शाम, साबा ने अपने शिष्यों को बुलाया और उनसे कुछ देर आराम करने के लिए कहा, क्योंकि उन्हें जल्द ही अधिक समय तक जागना होगा। आधी रात को, संत सव्वा एक विशेष आध्यात्मिक आनंद से भर गए और, प्रभु से भक्तिपूर्वक प्रार्थना करते हुए, अपने प्राण त्यागने की प्रतीक्षा करने लगे, जो जल्द ही उनके शिष्यों की उपस्थिति में हो गया।

स्वर्गीय की देह को श्रद्धापूर्वक तैयार करने के बाद, शिष्यों ने दफ़नाने की व्यवस्था करने लगे। तुरंत ही बुल्गारिया के ज़ार को संदेश भेजा गया, जिन्होंने बुल्गारियाई पैट्रिआर्क जोआकिम को सेंट साबा को टर्नोवो में चालीस शहीदों के चर्च में एक भव्य अंतिम संस्कार देने का आदेश दिया, जिसे महिमा और सम्मान के साथ पूरा किया गया। सर्बियाई आर्चबिशप के अंतिम संस्कार के अवसर पर, राजा ने आदेश दिया कि उनके कोष से गरीबों और ज़रूरतमंदों में सोने की एक बड़ी राशि वितरित की जाए। संत साबा ने स्वयं, अपनी मृत्यु से पहले, चालीस शहीदों के चर्च में अपने अंतिम संस्कार और स्मरणोत्सव के लिए धन, सामान और कोष के संसाधन विरासत में छोड़े थे।

संत साबा के निधन के कुछ वर्षों बाद, उनके उत्तराधिकारी, सर्बियाई आर्चबिशप आर्सेनियस, और सर्बियाई राजा व्लादिस्लाव ने दिवंगत पहले सर्बियाई आर्चबिशप के अवशेषों को टर्नोवो से उनके पैतृभूमि में स्थानांतरित करने का फैसला किया। राजा ने अपने ससुर के पास एक दूत भेजकर दिवंगत आध्यात्मिक नेता के अवशेषों को स्थानांतरित करने की अनुमति मांगी। लेकिन बुल्गारियाई ज़ार जॉन, पैट्रिआर्क और लोग किसी भी तरह से उस कब्र को छोड़ने के लिए तैयार नहीं थे, जो उनके लिए बहुत कीमती थी। उन्होंने जवाब दिया कि अगर कब्र की उपेक्षा की गई, तो सर्ब अवशेषों को स्थानांतरित करने की मांग कर सकते हैं; फिर भी कब्र मुख्य कैथेड्रल में स्थित थी, जो भव्य रूप से सुसज्जित और हर तरह की देखभाल से घिरी हुई थी।

व्लादिस्लाव ने दूसरी राजदूत भेजी, लेकिन वह भी असफल रही। तब उन्होंने कुलीनों और बिशपों के साथ व्यक्तिगत रूप से अपने ससुर के पास जाने का फैसला किया। फिर भी, शुरू में व्लादिस्लाव की व्यक्तिगत विनती भी बुल्गारियाई ज़ार को संत साबा का शरीर सौंपने के लिए मना नहीं सकी। चाहे तसर जॉन ने अपने दामाद का कितना भी स्नेहपूर्वक और सम्मानपूर्वक स्वागत किया हो, वह फिर भी ताबूत को छोड़ना नहीं चाहता था, जो बुल्गारियाई लोगों के लिए बहुत प्रिय था। केवल स्वर्ग से तसर जॉन को भेजा गया एक रात्रिकालीन दर्शन ही था जिसने उसे सर्बियाई राजा और उसके लोगों के अनुरोध का विरोध न करने के लिए मजबूर किया। दिव्य दर्शन के बाद, ज़ार जॉन को एहसास हुआ कि यह ईश्वर की इच्छा थी, न कि मनुष्य की।

संत साबा के अवशेषों का हस्तांतरण बड़ी गंभीरता से किया गया। जब ताबूत को उठाने और ले जाने की तैयारी में उसे खोला गया, तो उन्होंने पाया कि शरीर अपरिवर्तित था। लंबी यात्रा के लिए सभी आवश्यक तैयारियाँ करने और एक प्रार्थना सभा के बाद, उन्होंने पवित्र अवशेषों को उठाया और प्रस्थान किया। राजा व्लादिस्लाव इस बात पर चकित थे कि सब कुछ कितनी जल्दी और अनुकूल रूप से व्यवस्थित हो गया था, क्योंकि बुल्गारियाई ज़ार, एक दृष्टि से प्रोत्साहित होने और संत साबा के शरीर को रिहा करने का संकल्प लेने के बावजूद, अभी तक अपनी नाराज़गी पूरी तरह से नहीं छोड़ पाए थे।

लेकिन अवशेषों को ले जाए जाने के कुछ ही समय बाद, नेओफाइटस नामक एक लकवाग्रस्त भिक्षु संत साबा की कब्र के बगल में रखे गए लकड़ी के तख्तों पर लेट गया; इन तख्तों को छूने से उसे अचानक ही ठीक हो गया। इस चमत्कार से बुल्गारियाई लोगों को बहुत खुशी हुई: संत साबा की पवित्र अवशेषों को ले जाए जाने के बाद भी, संत साबा की दिव्य शक्ति उनके दफन स्थल पर बनी रही। और उसके बाद, चालीस शहीदों के चर्च में उस स्थान पर जहाँ संत साबा का ताबूत रखा गया था, कई चमत्कार हुए।

जब पवित्र अवशेषों को लेकर जा रही शोभायात्रा सर्बिया की सीमाओं पर पहुँची, तो आर्चबिशप आर्सेनियस, बिशपों और अन्य पुरोहितों के साथ-साथ बोयार और लोगों की एक बड़ी भीड़, आध्यात्मिक आनंद और हर्षोल्लास के साथ आध्यात्मिक भजन गाते हुए, उनका स्वागत करने के लिए बाहर आए।

गहरी खुशी और सांत्वना की भावना के साथ, सभी ने संत साबा के अक्षय अवशेषों को चूमा और उन्हें भक्तिपूर्वक मिलिशेवो मठ तक ले गए, जिसे सर्बियाई राजा व्लादिस्लाव ने उनकी स्मृति में अभी-अभी बनवाया था। वहाँ, व्लादिस्लाव

ने पहले ही संत सावा की अवशेषों के वशि्राम के लिए एक सम्मानति ताबूत तैयार कर रखा था, जहाँ सर्बयिाई भूमि के सभी कोनों से लोगों की भीड़ उमड़ने लगी।

कुछ ही समय बाद, संत सावा अपने एक शषि्य को दखिाई दिए; संत सावा ने घोषणा की कि, जसि क्षण प्रभु ने उन्हें इस सांसारकि दुनयिा से उठाया था, तब से उनके लिए ताबूत में रहना उचति नहीं था, बल्कि चर्च में, सभी के देखने के लिए, पड़े रहना अधकि उपयुक्त था।

इस प्रकार उनकी अवशेषों को एक बार फरि से जमीन से नकिाला गया, एक लकड़ी के अवशेष-पात्र में रखा गया, और महान चर्च के केंद्र में स्थापति कयिा गया।

अपने लंबे और पवत्रि जीवन के दौरान, संत सावा ने व्यक्तयिों के लिए और सबसे बढ़कर अपनी मातृभूमि सर्बयिा के लिए कई पुण्य कार्य कए, वहाँ आस्था और धर्मपरायणता को मजबूत कयिा, धार्मकि पदानुक्रम और उचति चर्च प्रशासन की स्थापना की, और तपस्या का एक उदाहरण और आदर्श प्रस्तुत कयिा। उन्होंने अपनी सभी शक्षिाओं को अपने अनगनित लखिति कार्यों में संकलति कयिा।

और उनके समय में तथा बाद के सभी युगों में रहने वाले लोगों ने—केवल सर्ब ही नहीं, बल्कि सभी ऑर्थोडॉक्स ईसाइयों ने—इस संत, सर्बयिाई भूमि और सभी ऑर्थोडॉक्सी के महान दाता और संरक्षक का सम्मान कयिा है और करना जारी रखा है।

द्रोपारयिन, स्वर 3:

आप जीवन के मार्ग के मार्गदर्शक, एक गुरु, एक प्रमुख और एक शक्षिक थे; क्योंकि, संत सावा के सामने आकर, आपने अपनी मातृभूमि को प्रबुद्ध कयिा और, पवत्रि आत्मा के माध्यम से उसे जन्म देकर, आपने अपने सबसे पवत्रि बच्चों को आध्यात्मकि स्वर्ग में जैतून के पेड़ों की तरह रोपा। इसलिए, चूँकि हम आपको एक सह-स्वर्गीय प्रेरति और संत के रूप में सम्मानति करते हैं, हम प्रार्थना करते हैं: मसीह परमेश्वर से हमारे लिए उनकी महान दया प्रदान करने के लिए प्रार्थना करें।

कॉन्टाकयिन, स्वर 8:

महान प्रथम पतिृप्रधान और प्रेरतिों के साथी के रूप में, कलीसयिा आपको महमिामय करती है, हे पूजनीय; परन्तु चूंकि आपके पास हमारे परमेश्वर मसीह के सामने नश्निंकोच साहस है, अपनी प्रार्थनाओं द्वारा हमें हमारी सभी परेशानयिों से बचाएं, ताकि हम आपसे पुकार सकें: हर्षति हो, पतिा सवास, ईश्वर-ज्ञानी।

पवत्रि शहीद पीटर अवेसालोमति का कष्टकथा

12 जनवरी को स्मरण कयिा जाता है

[969]पीटर, जन्हिें एवेसालोमति के नाम से जाना जाता है, एलेउथेरोपोलसि क्षेत्र के मूल नविासी[970] , को अव्लोन शहर में ईसाइयों के उत्पीड़न के दौरान[971] गरिफ्तार कयिा गया था। जब उन्हें पूछताछ के लिए गवर्नर सेवेरस के सामने लाया गया, तो उन्होंने पूछा:

'तुम्हारा नाम क्या है?'

पतरस ने उत्तर दयिा:

---

[969] मैसडिोनयिा में एक शहर, जसिके खाड़ी पर एक व्यस्त बंदरगाह था।

[970] एलेउथेरोपोलसि – भूमध्य सागर और मृत सागर के बीच, अस्कालोन के पूर्व में स्थति एक फलिस्तिीनी शहर। चौथी शताब्दी में यह एक महत्वपूर्ण शहर था; आज इसके कोई अवशेष नहीं बचे हैं।

[971] यह, बेशक, उस उत्पीड़न को संदर्भति करता है जो लगभग 303 में, पूर्व में डायोक्लेटयिन और पश्चमि में मैक्समियिन (284–305) के शासन के अंत के करीब शुरू हुआ था।

'तुम्हारे पिता का नाम क्या है?' शासक ने पूछा। 'मेरे पिता का नाम अवेसालोमति है, लेकिन बपतिस्मा में मुझे जो आध्यात्मिक नाम मिला है, वह पतरस है।'

'आपकी वंशावली क्या है?' राज्यपाल ने पूछा।

पतरस ने उत्तर दिया:

'मैं एक ईसाई हूँ।'

'आपकी पदवी क्या है?' गवर्नर ने पूछा।

'मैं एक ईसाई होने से ऊँचा या बेहतर कोई पद नहीं रख सकता,' पीटर ने उत्तर दिया।

'क्या आपके माता-पिता हैं?' गवर्नर ने पूछा।

'नहीं,' पीटर ने उत्तर दिया।

'तुम झूठ बोल रहे हो,' राज्यपाल ने कहा, 'क्योंकि मैंने सुना है कि तुम्हारे माता-पिता हैं।'

'सुसमाचार में मुझे आज्ञा दी गई है,' पीटर ने उत्तर दिया, 'कि जब मैं प्रभु के नाम की गवाही देने के लिए निकलता हूँ तो मुझे सब कुछ त्याग देना है (लूका 14:26; मत्ती 10:37, 19:29; मरकुस 10:29–30; लूका 18:29–30)।'

'क्या तुम्हें राजा के फरमान का पता है?' राज्यपाल ने पूछा।

'मैं जानता हूँ,' पतरस ने उत्तर दिया, 'वह जो मेरे ईश्वर, सच्चे और शाश्वत राजा ने आज्ञा दी है।'

गवर्नर ने कहा:

'अत्यंत कृपालु राजाओं ने[972] ने यह आदेश दिया है कि सभी ईसाइयों को या तो देवताओं को बलिदान चढ़ाना होगा या उन्हें विभिन्न प्रकार की मृत्युदंड की सजा दी जाएगी।'

पतरस ने उत्तर दिया:

'लेकिन सच्चे और शाश्वत राजा ने आज्ञा दी है कि जो कोई जीवित परमेश्वर के बजाय मूर्तियों को बलिदान चढ़ाएगा, वह अनंतकाल के लिए नाश हो जाएगा। निष्पक्ष रूप से निर्णय करें: क्या स्वर्गीय राजा की इस आज्ञा को तोड़ना उचित है?'

शासक ने कहा, "मेरी बात सुनो, देवताओं को बलिदान चढ़ाओ और हमारे राजाओं की आज्ञा का पालन करो।"

पतरस ने उत्तर दिया:

'मैं मनुष्यों के हाथों की रचना – लकड़ी और पत्थर के देवताओं – को बलिदान नहीं चढ़ाऊँगा, जिनके समान तुम स्वयं हो।'

'तुम हमारा अपमान कर रहे हो,' शासक ने आपत्ति जताई। 'क्या तुम्हें नहीं पता कि मुझमें तुम्हें मौत की सजा देने की शक्ति है?'

पतरस ने उत्तर दिया, 'मैं तुम्हारा अपमान नहीं कर रहा हूँ, परन्तु मैं वही कहता हूँ जो यहोवा की व्यवस्था में लिखा है: *"उनकी मूरतियाँ चाँदी और सोने की हैं, मनुष्य के हाथों का काम: उनका मुँह है, पर वे नहीं बोलते; उनकी आँखें हैं, पर वे नहीं देखते; उनकी नाकें हैं, पर वे नहीं सूँघते; उनके कान हैं, पर वे नहीं सुनते; उनके हाथ और पैर हैं, पर वे नहीं चलते"* प्रभु धर्मग्रंथ में कहते हैं: *'जो उन्हें बनाते हैं, और जो उन पर भरोसा करते हैं, वे भी उनके समान हों'* (भजन संहिता 113:12–16)।[973] यदि, तब, प्रभु की ओर से पवित्र आत्मा ने ये वचन भविष्यद्वक्ताओं के मुख से बोले, तो आप कैसे कह सकते हैं कि मैंने आपको बधिर और मूक, पत्थर और लकड़ी की मूरतियों के समान कहकर अपमानित किया है – और यहाँ तक कि मुझे आपके समान बनने की सलाह दी?

शासक ने कहा:

'मेरी बात सुनो, अपनी दया करो और देवताओं को बलिदान चढ़ाओ।'

पतरस ने उत्तर दिया:

'यही वह समय है जब मैं स्वयं को बचाऊँगा, यदि मैं तुम्हारे देवताओं को बलिदान नहीं चढ़ाता और सत्य से नहीं मुँह मोड़ता। परन्तु चूँकि तुम अविश्वासी हो, इसीलिए तुम न तो मुझ पर विश्वास करते हो और न ही परमेश्वर के विधान

---

[972] सिंहासन पर बैठने के तुरंत बाद, डायोक्लेटियन ने मैक्सिमियन हरक्यूलस को अपना सह-शासक चुना, उसे साम्राज्य के पश्चिमी हिस्से का प्रभारी बनाया और पूर्वी हिस्सा अपने पास रखा। 292 में, उन्होंने साम्राज्य पर शासन करने के लिए दो और सहायकों की नियुक्ति की, जिन्हें सीज़र की उपाधि दी गई: कॉन्स्टेंटियस क्लोरस और गैलेरियस।

[973] यहाँ प्रश्न में आए अंश को कुछ शब्दों की छूट और परिवर्तन के साथ उद्धृत किया गया है।

पर—कि जो कोई भी देवताओं को बलदिान चढ़ाता है, वह नाश हो जाएगा। परन्तु तुम देरी क्यों कर रहे हो? जैसा तुम्हें आज्ञा दी गई है, वैसा ही करो।'

'मैं अभी भी इंतजार कर रहा हूँ,' राज्यपाल ने उत्तर दयिा, 'कि तुम अपना मन बदल लो, देवताओं को बलदिान चढ़ाओ, और इस प्रकार अपनी यातनाओं से मुक्त हो जाओ।'

पतरस ने उत्तर दयिा, 'तुम व्यर्थ ही प्रतीक्षा करते हो; जो तुमने करने का नश्चिय कयिा है, वही करो, अपने पिता—शैतान—की इच्छा पूरी करो, क्योंकि मैं तुम्हारी इच्छा पूरी नहीं करूंगा, और न ही मेरा प्रभु यीशु मसीह, जिसकी मैं निष्ठापूर्वक सेवा करता हूं, मुझे ऐसा करने देगा।'

गवर्नर ने उसे फाँसी देने का आदेश दयिा और फिर उससे कहा:

'तुम क्या कहते हो, पतरस? क्या तुम देवताओं को बलदिान दोगे या नहीं?'

'मुझे लोहे के पंजे दो,' संत ने उत्तर दयिा, 'मुझे यातना दो, क्योंकि मैंने तुम्हें एक से अधिक बार बताया है कि मैं अपने एकमात्र ईश्वर के अलावा किसी को भी बलदिान नहीं चढ़ाऊँगा, जिसके नाम के लिए मैं कष्ट सह रहा हूँ।'

गवर्नर सेवरस ने उसे क्रूरतापूर्वक यातना देने का आदेश दयिा। ईश्वर के पराक्रमी शहीद ने एक भी कराह नहीं निकाली, बल्कि केवल गाया:

– *'एक बात मैंने प्रभु से माँगी है, केवल वही मैं खोजता हूँ: कि मैं अपने जीवन के सभी दिनों प्रभु के घर में वास करूँ* (भजन संहिता 26:4)[974] .

और उन्होंने यह भी गाया:

– *'मैं उद्धार का प्याला उठाऊँगा और प्रभु का नाम पुकारूँगा'* (भजन संहिता 115:4)[975] ।

जैसे ही उसने ऐसा कहा, राज्यपाल और भी क्रोधित हो गया और उसने अन्य जल्लादों को बुलाया। आसपास खड़ी भीड़ ने, जमीन पर बड़ी मात्रा में बहते हुए खून को देखकर, संत के प्रति सहानुभूति जिताई और कहा:

'अपने ऊपर दया करो और देवताओं को बलदिान चढ़ाओ, ताकि तुम इन भयानक यातनाओं से मुक्त हो सको।'

'ये यातनाएँ,' संत पतरस ने उत्तर दयिा, 'कुछ भी नहीं हैं, और मुझे इनसे बिल्कुल भी पीड़ा नहीं होती। लेकिन अगर मैं अपने ईश्वर का त्याग कर दूँ, तो मैं सचमुच सबसे भयानक और अनंत यातनाओं में पड़ जाऊँगा।'

शासक ने कहा:

'तुम क्या कह रहे हो, पतरस? देवताओं को बलदिान चढ़ाओ, कहीं ऐसा न हो कि बाद में पछताना पड़े, जब बहुत देर हो चुकी होगी।'

'मुझे पछतावा नहीं होगा, और न ही मैं कोई बलदिान दूँगा,' पीटर ने उत्तर दयिा।

'मैं तुम्हें मौत की सजा दूँगा,' शासक ने कहा।

पीटर ने उत्तर दयिा, 'यही तो मैं चाहता हूँ - अपने ईश्वर के लिए मरना।'

तब राज्यपाल ने उस पर निम्नलिखित मृत्युदंड की घोषणा की:

'पीटर, जिसने अपने परमेश्वर के विधान के लिए अजेय राजाओं की आज्ञा को ठुकरा दयिा है, उसे सूली पर चढ़ाया जाए।'

इस प्रकार, मसीह का यह पराक्रमी योद्धा, अपने पराक्रम को पूरा करते हुए, सूली पर चढ़ाए जाने के द्वारा, प्रभु के दुखों में सहभागी होने के योग्य समझा गया[976] । मसीह के शहीद पीटर एवेसलामाइट ने अव्लोन नगर में कष्ट सहे, जब रोम में मैक्सिमियिन का शासन था, और सर्वोपरि हमारे प्रभु यीशु मसीह, जिन्हें युगानुयुग महिमा हो, आमीन।

पवित्र शहीद मर्टयिस की स्मृति

12 जनवरी को स्मरण कयिा जाता है

---

[974] अर्थात्, पवित्र शहीद ने हमेशा प्रभु से बहुत विनम्रता से प्रार्थना की कि वह उसे पवित्र चर्च से दूर न होने दें।

[975] पवित्र शहीद भजन के शब्दों को अपने ऊपर इस अर्थ में लागू करते हैं कि वह अपने दुखों को स्वीकार करते हैं, उनमें अपने उद्धार का साधन देखते हैं और उनके लिए परमेश्वर की महिमा करते हैं।

[976] अर्थात्, उसे वही दंड (क्रूस पर चढ़ाया जाना) सहने के योग्य माना गया, जिसका सामना यीशु मसीह को करना पड़ा था।

पवत्रि शहीद मर्थयिस डायोक्लेटयिन के अधीन एक सैनकि थे। मूरों के खलिाफ एक अभयिान के दौरान[977] , उनके कमांडर ने उन्हें मूर्तयिों को बलदिान चढ़ाने के लिए मजबूर करना शुरू कर दयिा। संत मर्थयिस ने आज्ञा मानने से इनकार कर दयिा, जसिके लिए उन्हें सबसे क्रूर यातनाओं का शकिार बनाया गया, जन्हिें उन्होंने इतनी बहादुरी से सहन कयिा कि उनका यातनाकर्ता, भय और आश्चर्य से ग्रस्त होकर, उन्मत्त हो गया: यातनाएं तब तक जारी रहीं जब तक संत के शरीर पर एक भी बनिा नशिान वाला स्थान नहीं बचा; यह पूरी तरह से प्रहारों और घावों के नशिानों से ढका हुआ था। इसके बाद उसे एक कालकोठरी में डाल दयिा गया, जहाँ मसीह का यह शहीद आठ दनिों तक भूख और अपने कारावासयिों की क्रूरता से पीड़ति रहा। बाद में, प्रभु से प्रार्थना करने के बाद, पवत्रि पीड़ति ने पुकारा: 'हे परमेश्वर के पुत्र, मैं अपनी आत्मा तेरे हाथों में सौंपता हूँ' - और मसीह के पास चला गया, जसिके लिए उसने इतनी वीरता से पीड़ा सहन की थी।

26 जनवरी

13 जनवरी (पुराने कैलेंडर के अनुसार)

संत हर्मलिस और स्ट्रैटोनकिस की शहादत

13 जनवरी को स्मरणोत्सव

एक अधर्मी और अत्यधकि उत्साही मूर्तपिूजक, लसिनियिस[978] के शासनकाल के दौरान, सभी ईसाइयों को यातनादायक मृत्यु का सामना करना पड़ा। उन्हें सभी प्रांतों, शहरों और गांवों में ढूंढ-ढूंढ कर पकड़ा गया। और जो कोई भी कसिी ईसाई को ढूंढकर सम्राट को उसकी सूचना देता, उसे सम्राट की कृपा प्राप्त होती और उसे बड़े सम्मान दिए जाते थे। इसलिए, सम्राट को खुश करने के लिए, हर कसिी ने ईसाइयों की तलाश करना और उनका उत्पीड़न करना शुरू कर दयिा।

एक दनि, जब लकिनियिस अपने सहिासन पर दरबार लगाकर बैठा था, एक सैनकि उसके पास आया और कहा:

यहाँ एक ईसाई है जसिका नाम हर्मलिस है, जो ईसाइयों में डकिन का पद धारण करता है; लंबे समय तक मसीह की सेवा करने के बाद, वह हमारे देवताओं और आप, हे राजा, का उपहास करता है और आपको स्वीकार करने से इनकार करता है।

यह सुनकर राजा ने आदेश दयिा कि हर्मलि को ढूंढकर गरिफ्तार कयिा जाए। संत अपने हाथ प्रभु परमेश्वर की ओर उठाकर प्रार्थना कर रहे थे, तभी राजा के दूत उनके पास आए। यह समझते हुए कि उसे मसीह के लिए मुकदमे और यातनाओं का सामना करने के लिए ले जाया जा रहा है, वह प्रसन्न हुआ और आनंद से भर गया, और सैनकिों के पीछे इस तरह नहीं गया जैसे जबरदस्ती ले जाया जा रहा हो, बल्कि प्रसन्नचत्ति उत्साह के साथ, मानो वह सम्मान प्राप्त करने जा रहा हो। उत्तम साहस से भरकर, वह राजा के सामने उपस्थति हुआ। उसे देखकर, लसिनियिस ने पूछा:

'बताओ, क्या तुम सचमुच एक ईसाई हो, जैसा हमने सुना है?'

'मैं,' हरमलि्स ने उत्तर दयिा, 'न केवल खुले तौर पर खुद को ईसाई स्वीकार करता हूँ, बल्कि मैं यह भी घोषति करता हूँ कि मुझे अदृश्य परमेश्वर के सामने नयिुक्त कयिा गया है और मैं उनके सामने डकिन के पद पर खड़ा हूँ।'

'तो हमारे देवताओं का भी डकिन—अर्थात् सेवक[979] —बन जा,' राजा ने कहा।

राजा के प्रस्ताव पर, शहीद ने तरिस्कारपूर्वक उत्तर दयिा:

---

[977] मूर अफ्रीका में रहने वाले एक लोग थे जो एक नीग्रो वंश से संबंधति थे।

[978] लकिनियिस शुरू में पूर्वी सम्राट मैक्समियिन गैलेरयिस के सह-शासक थे, और उन्होंने ऑगस्टस की उपाधि धारण की थी। गैलेरयिस की मृत्यु के बाद, अपने प्रतदि्वंद्वयिों को समाप्त करने के बाद, वह 312 में पूर्वी सम्राट बने, जबकि कॉन्स्टेंटाइन महान पश्चमिी सम्राट बने। जहाँ एक ओर कॉन्स्टेंटाइन महान ईसाइयों की रक्षा करते थे, वहीं लकिनियिस ने अपने ईसाई प्रजा पर अत्याचार कयिा, शायद उन्हें कॉन्स्टेंटाइन के प्रति सहानुभूति रखने का संदेह था। इसके बाद, लकिनियिस और कॉन्स्टेंटाइन के बीच युद्ध छड़ि गया; लकिनियिस पराजति हो गए, सत्ता से वंचति कर दिए गए और अंततः324 में उन्हें मृत्युदंड दे दयिा गया।

[979] डीकन – ग्रीक भाषा से अनुवादति, इसका शाब्दकि अर्थ 'सेवक' है, यानी एक नम्नि-श्रेणी का पुरोहति।

'हे राजा, मुझे ऐसा लगता है कि आप या तो बहरे हैं या पागल। मैंने आपको बताया है कि मैं अदृश्य ईश्वर की सेवा करता हूँ, न कि आपकी उन मूर्तियों की जो, दिखाई तो देती हैं, पर खुद कुछ भी नहीं देखतीं और यह भी नहीं समझतीं कि एक डकिन होना क्या होता है।' अपने भ्रम में, आप उन्हें देवताओं के रूप में पूजते हैं, जबकि वे आत्मा रहित और बहरे पत्थर और पेड़ हैं, जो मानव हाथों की रचना हैं, और पूजा के बजाय उपहास के पात्र हैं।

राजा शहीद के साहसी शब्दों को और सहन नहीं कर सका और तुरंत आदेश दिया कि उसे यातना के लिए पहले से तैयार किए गए विशेष कांसे के औजारों से गालों पर मारा जाए, जबकि निम्नलिखित शब्द बोले गए:

'हेर्मलि, अपनी जीभ से अभद्र मत बोलो; राजा का सम्मान करो, देवताओं को बलिदान चढ़ाओ, और खुद को इस यातना से बचाओ।'

हालाँकि, संत न केवल सबसे कठोर पिटाई के दौरान बिल्कुल भी दर्द महसूस नहीं कर रहे थे, बल्कि वे यातना देने वाले की असहायता पर हँस भी रहे थे। फिर, अपनी आवाज़ उठाकर, उन्होंने राजा से ज़ोर से कहा:

– तुम स्वयं कई घाव पाओगे और अपने सृष्टिकर्ता को त्यागकर बहरे और गूंगे देवताओं की ओर मुड़ने के लिए ईश्वर के भयानक हाथ का अनुभव करोगे; और विशेष रूप से दूसरों को भी जबरदस्ती उसी विनाश की ओर ले जाने की इच्छा रखने के लिए, मानो उनकी मुक्ति से ईर्ष्या हो।

इसके बाद, राजा ने संत हर्मलिस को तीन दिनों के लिए जेल में डालने का आदेश दिया, इस उम्मीद में कि वह होश में आ जाएगा और अपनी हिम्मत पर पछताएगा। हालाँकि, शहीद ने रास्ते में गाया:

– *'प्रभु मेरी ओर है; मैं डरूँगा नहीं: मनुष्य मेरे क्या कर सकता है?'* (भजन संहिता 117:6)। *'मैं परमेश्वर में भरोसा रखता हूँ; मैं नहीं डरता; देह मेरे क्या कर सकती है?'* (भजन संहिता 55:5)।

कारागार में प्रवेश करते समय, उन्होंने गाया:

– *'हे इस्राएल के चरवाहे! कान लगा; हे जो यूसुफ के झुंड को भेड़ों की नाईं चराता है, हे खरूबीम पर सिंहासनस्थ, प्रगट हो और आकर हमारा उद्धार कर'* (भजन संहिता 79:2–3)।

और प्रभु ने अपने दास को नहीं भूला, बल्कि उसे सांत्वना देने और बल देने के लिए एक स्वर्गदूत भेजा; और जब स्वर्गदूत प्रकट हुआ, तो उसने उससे कहा:

'हर्मलि! साहसी बन, बोल, चुप न रह, और न डर, क्योंकि शीघ्र ही तू उत्पीड़क की युक्तियों पर विजय प्राप्त करेगा और अपने दुख के लिए स्वर्ग से परम पवित्र मुकुट प्राप्त करेगा।'

इस प्रकार ईश्वर ने, अपने योद्धा को इस पराक्रम के लिए सशस्त्र कर, उसे शक्ति से परिपूर्ण किया, संघर्ष के लिए उसके हाथों को मजबूत किया, और उसकी मांसपेशियों को, मानो, एक कांसे का धनुष और उद्धार का ढाल प्रदान किया।

तीन दिन बीत जाने के बाद, राजा ने हर्मलिस को एक बार फिर मुकदमे के लिए बुलाया और उससे कहा:

'क्या तुमने पश्चाताप किया है, और क्या तुम उन यातनाओं से बचने के लिए देवताओं को बलिदान चढ़ाने को तैयार हो जो तुम्हारा इंतज़ार कर रही हैं? या क्या तुम अभी भी पागलपन में डूबे हुए हो और अपने ऊपर विनाश ला रहे हो?'

मसीह के योद्धा ने, उसे बल देने वाले प्रभु की महिमा के लिए, साहसपूर्वक उत्तर दिया:

'हे राजा! मैं तुम्हें पहले ही एक बार बता चुका हूँ, और तुम्हें मेरी पहली बातों से ही संतुष्ट हो जाना चाहिए था और मुझसे और कुछ नहीं पूछना चाहिए था। मेरा स्वर्ग का ईश्वर है; मैं केवल उसी के द्वारा जीता हूँ, उसी को मैं स्वयं बलिदान करने के लिए तैयार हूँ, और उसी से मुझे अपने लिए बड़ी सहायता की उम्मीद है।'

'मैं देखूँगा कि जो स्वर्ग में वास करता है वह तुम्हारी मदद करेगा या नहीं,' राजा ने कहा, और तुरंत छह बलशाली और क्रूर सैनिकों को आदेश दिया कि वे उसे जमीन पर पटक दें और बेरहमी से पीटें।

संत ने उस यातना को धैर्यपूर्वक सहन किया – मानो उसे ही पीटा नहीं जा रहा हो – और ईश्वर से इस प्रकार प्रार्थना की:

'हे प्रभु मेरे ईश्वर! मेरी खातिर आपने पोंतियस पिलातुस के अधीन घाव और पिटाई सहन की[980] ; तो फिर, अपनी खातिर मेरी पीड़ाओं में मुझे मजबूत करें, और मुझे इन यातनाओं को सहन करने की शक्ति दें, ताकि, आपके दुखों में सहभागी होकर, मैं आपकी अनंत महिमा में सहभागी होने के योग्य बन सकूँ।'

---

[980] पोंतियस पिलातुस यहूदिया का रोमन राज्यपाल था, जिसके अधीन हमारे प्रभु यीशु मसीह ने दुख उठाया और मृत्युदंड प्राप्त किया।

जब संत इस प्रकार प्रार्थना कर रहे थे, तभी अचानक स्वर्ग से एक आवाज़ सुनाई दी, जिसमें कहा गया:

'आमेन, आमेन, हर्मलि! तीन दिनों में तुम इन यातनाओं से मुक्त हो जाओगे और अपने दुखों का महान पुरस्कार पाओगे।'

यह आवाज़ शहीद को महान साहस और शक्ति से भर गई, जबकि इसने उसके यातनादाताओं को बड़े भय और आतंक से भर दिया; वे ज़मीन पर गिर पड़े और हिल नहीं सके। राजा भी आतंकित हो गया, फिर भी उसने ईश्वर की शक्ति को स्वीकार करने से इनकार कर दिया। उसके आदेश पर, पवित्र शहीद को एक बार फिर से जेल ले जाया गया।

शहीद की निगरानी का जिम्मा जेलर स्ट्रैटोनिकि को सौंपा गया था। वह एक गुप्त ईसाई और संत हर्मलिस का मित्र था। शहीद के कष्टों को देखकर उसका हृदय टूट गया, फिर भी वह उसी समय उसके साहस और दृढ़ता से मन ही मन प्रसन्न हुआ; बस वह खुद ऐसी पीड़ा सहने की हिम्मत नहीं कर सका।

जैसे ही वह कालकोठरी में प्रवेश किया, संत हर्मलिस ने गाया:

– *'प्रभु मेरा प्रकाश और मेरा उद्धार है; मैं किस से डरूँगा? प्रभु मेरे जीवन का दृढ़ किला है; मैं किस से भयभीत होऊँगा?'* (भजन संहिता 26:1)

उस पर ऊपर से एक स्वर्गीय प्रकाश चमका, और एक बार फिर एक आवाज़ सुनाई दी, जो उसे साहस के साथ अपने दुखों को सहने के लिए प्रोत्साहित कर रही थी और तीन दिनों के बाद उनके अंत का वादा कर रही थी।

अगली सुबह, राजा ने संत को एक बार फिर दरबार में बुलाया। वह एक दमकते चेहरे, एक प्रसन्न दृष्टि और हृदय में आनंद के साथ उनके सामने उपस्थित हुए। यातना देने वाले ने, सिर हिलाते हुए और शहीद का मज़ाक उड़ाते हुए, कहा:

'हमें उत्तर दो: उस अँधेरी कोठरी से तुम्हें क्या लाभ हुआ? क्या तुम्हारे द्वारा सहन किए गए दुखों ने तुम्हें राजा के कानून के आगे झुकने और देवताओं को उनका उचित सम्मान देने के लिए राज़ी कर लिया है? या क्या हमें तुम्हारे हृदय की हठधर्मी को तोड़ने के लिए और यातनाएँ सोचनी होंगी?'

'उस अंधेरी कोठरी ने,' शहीद ने उत्तर दिया, 'मुझे ज्ञान दिया है; मेरी आत्मा शांत, प्रसन्न और प्रबुद्ध है, जो मुझे अपने भविष्य के पुरस्कार की अच्छी आशा देती है; और मैं इस बात से बहुत हैरान हूँ कि वह अंधकार जिसमें तुम डूबे हुए हो—और जो तुम्हारी आत्मा की आँखों से सत्य को छिपाता है—वह थोड़ा भी दूर क्यों नहीं होता।'

जब संत ने इस प्रकार राजा की भूल को उजागर किया, तो लिसिनियिस ने कहा:

'ऐसा लगता है कि तुम अपनी जीभ की बेबाकी, अपनी अभद्रता और पागलपन के सिवा कुछ करने में सक्षम नहीं हो, जो मुझ पर खुलेआम उपहास उड़ाने के लिए है। तो जवाब दो, और साफ-साफ बोलो: क्या तुम देवताओं को बलिदान दोगे और हमारे आदेश के आगे झुक जाओगे, या फिर अपने किए की सज़ा भुगतोगे?'

मसीह के शहीद हरमलि्स ने कहा, 'हे राजा, तुमने पहले ही सुन लिया है कि मैंने क्या उत्तर दिया, और तुम मुझसे और कुछ नहीं सुनोगे; जो चाहो करो, जो कुछ तुमने योजना बनाई है, उसे पूरा करो।'

क्रोधित होकर, लिसिनियिस ने संत को नग्न ज़मीन पर लिटाने और पेट पर डंडों से पीटने का आदेश दिया। अपने कष्ट के बीच, संत को एक ही आनंद था—मसीह में—और उन्होंने अपनी आध्यात्मिक आँखें उन पर उठाकर प्रार्थना की:

– *'हे परमेश्वर, मेरी सहायता के लिए शीघ्र करो; हे प्रभु, मेरी मदद के लिए फुर्ती करो'* (भजन संहिता 69:2)।

संत के धैर्य ने उनके यातनाकर्ता को और भी अधिक क्रोधित कर दिया, और उसने आदेश दिया कि उनके पेट को चील के पंजे से नोचा जाए:

उसने कहा, 'उसे अपनी आँखों से अपनी ही आंतें देखने दो।'

लेकिन शहीद ने कहा:

– *'मेरा हृदय और मेरा शरीर जीवते परमेश्वर के लिए पुकारते हैं'* (भजन संहिता 83:3)। *'मेरी आत्मा मोटी और रसीली वस्तु से तृप्त हुई है; मेरा मुँह आनन्दित स्वर से तेरी स्तुति करता है'* (भजन संहिता 62:6)।

स्ट्रेटोनिकिोस ने अपने मित्र संत हर्मलिस पर किए गए ऐसे अमानवीय अत्याचारों और उसके आंतों को फाड़े जाने को देखकर रोने लगा।

यह देखकर, वहाँ मौजूद कुछ लोगों ने तुरंत राजा को इसकी सूचना दी, कहते हुए:

'कारागार का रक्षक स्ट्रैटोनिकि ईसाई विधिर्म में अपनी संलिप्तता और हर्मलिस के साथ अपनी मित्रता को नहीं छिपा रहा है, क्योंकि वह उस पर दया करता है और उसके लिए रोता है।'

राजा ने स्ट्रैटोनकिस को बुलाया और पूछा: 'क्या तुम हर्मलिस के मित्र हो?' सत्य के शिष्य के रूप में झूठ बोलना न चाहने और यह देखकर कि वीरतापूर्ण कर्म करने का समय आ गया है, स्ट्रैटोनकिस ने स्वयं को हर्मलिस का मित्र और एक ईसाई घोषित किया; उसने मूर्तियों की निर्जीवता और उनकी पूजा करने वालों की मूर्खता की निंदा की, और स्वर्ग व पृथ्वी के स्रष्टा एकमात्र ईश्वर की महिमा की। क्रोधित राजा ने आदेश दिया कि स्ट्रैटोनकिोस को नग्न कर दिया जाए और उसकी पूरी देह पर डंडों से पीटा जाए। अपनी यातनाओं के बीच, शहीद ने अपनी आँखें अपने मित्र, संत हर्मलिस की ओर उठाईं, और कहा:

'हे हर्मलिस, मेरे लिए मसीह से प्रार्थना करो, कि वह मुझे दृढ़ता और अटूट विश्वास बनाए रखने और अपने यातनाकारों से ऊपर उठने में मदद करें।'

साथ ही, उन्होंने लसिनियिस से अंधी और निर्जीम मूर्तियों की पूजा बंद करने और सच्चे ईश्वर के दंड से डरने का आग्रह किया, जिनके हाथों में पड़ना भयानक है (इब्रानियों 10:31)।

संत को तब तक पीटा गया जब तक कि वह अपने घावों से थककर चुप नहीं हो गया। इसके बाद, राजा ने स्ट्रैटोनकिस और हर्मलिस दोनों को जेल में डालने का आदेश दिया। संत स्ट्रैटोनकिस ने प्रार्थना की और कहा:

'मेरे पूर्वजों के पापों को याद न करो' (भजन संहिता 78:8)।

और दोनों ने परमेश्वर से पुकारा:

– *'हे परमेश्वर, हमारे उद्धारकर्ता, अपने नाम की महिमा के लिए हमारी सहायता करो'* (भजन संहिता 78:9)।

इसके उत्तर में, एक दिव्य स्वर सुना गया, जो कह रहा था:

– 'तुमने अच्छा संघर्ष किया, विश्वास बनाए रखा, और धार्मिकता का मुकुट तुम्हारे लिए सुरक्षित है (देखें 2 तीमुथियुस 4:7-8), जिसे तुम प्रातःकाल प्राप्त करोगे।'

जब सुबह हुई, तो हर्मलिस को एक बार फिर अदालत के सामने लाया गया, और लसिनियिस ने उससे पूछा:

'क्या तुम देवताओं को बलिदान चढ़ाओगे?'

संत ने उत्तर दिया, 'जो मैंने पहले तुमसे कहा था, वही मैं अब दोहराता हूँ। मुझे जला दो, काट दो, और जो चाहो मुझे यातना दो, क्योंकि मैं उन लोगों से डरने का आदी नहीं हूँ जो शरीर को तो मार सकते हैं पर आत्मा को नहीं मार सकते (मत्ती 10:28)।'

यातना देने वाले ने संत को एक पेड़ से लटकाने और उसके शरीर को छुरी से काटने का आदेश दिया। क्रूर यातनाओं के बीच, संत ने अखंड रूप से प्रार्थना की और कहा:

'हे प्रभु, हे मेरे उद्धारकर्ता, मेरी सहायता करो!'

– 'डरो मत: मैं तुम्हारे साथ हूँ, तुम्हारा परमेश्वर!' – उसने ऊपर से एक आवाज़ सुनी।

इसके बाद, राजा ने संत हर्मलिस को इस्ट्रा नदी में डुबोने की सज़ा सुनाई[981] । फिर उसने संत स्ट्रैटोनकिस को देवताओं को बलिदान चढ़ाने के लिए कहा।

– 'अन्यथा, हे नीच,' उसने कहा, 'तुम भी अपने मित्र के समान ही भाग्य भुगतोगे।'

धन्य स्ट्रैटोनकिस ने उत्तर दिया:

'वास्तव में, मैं तो नीच बन जाऊँगा यदि मैं आपके पागल आदेश का पालन करूँ। मैं जीवन की इच्छा कैसे कर सकता हूँ जबकि मेरा मित्र मसीह के लिए मरने जा रहा है?'

'तो फिर? क्या तुम हरमाइलस के साथ मरना चाहते हो?' लसिनियिस ने पूछा।

संत स्ट्रैटोनकिस ने उत्तर दिया:

'मैं निश्चित रूप से चाहता हूँ! सच्चे दोस्तों को साथ में दुख सहना चाहिए और साथ में आशीर्वादों का आनंद लेना चाहिए। मसीह के लिए पीड़ा और मृत्यु से अधिक हमें और क्या प्रसन्न कर सकता है?'

सफलता की हर उम्मीद खोने के बाद, लसिनियिस ने संत स्ट्रैटोनकिस को भी उसी मृत्युदंड - संत हर्मलिस के साथ पानी में डुबोने की सजा सुनाई। दोनों पवित्र शहीदों को नदी तक ले जाया गया। रास्ते में, उन्होंने खुशी से गाया:

'महानतम में परमेश्वर का महिमा हो, और पृथ्वी पर शांति, और मनुष्यों में प्रीति!'[982]

---

[981] यह डैन्यूब नदी का नाम था।

[982] मसीह के जन्म के समय स्वर्गदूतों की घोषणा के शब्द। (लूका 2:14)।

जब सैनकि उन्हें इस्त्रा नदी पर ले गए, तो उन्होंने उन्हें जालों में बाँधा और गहरे पानी में फेंक दयिा; और इस प्रकार नदी ने पवत्रि शहीदों के शरीरों को ग्रहण कयिा, जबकि स्वर्ग ने उनके आत्माओं को अपने धामों में स्वीकार कयिा[983] । तीसरे दनि, वशि्वासयिों ने उनके पवत्रि शरीरों को कनिारे पर पाया और सगिडिोन शहर से अठारह स्टेडयिम की दूरी पर सम्मान के साथ दफनाया[984] । उन्हें एक ही ताबूत में रखा गया, ताकि वे सब कुछ साझा कर सकें: मसीह की एक समान स्वीकारोक्ति, एक समान जेल, एक समान यातनाएँ, एक समान डूबना, उनके शरीरों का एक सामान्य दफन, और हमारे प्रभु यीशु मसीह की कृपा और प्रेम के द्वारा स्वर्ग में एक सामान्य महमिा, जनिके लिए, पति और पवत्रि आत्मा के साथ, सभी महमिा, सम्मान और आराधना उचति है, अब और हमेशा और युगानुयुग, आमीन।

नसिीबसि के बशिप संत जेम्स का जीवन

13 जनवरी को स्मरण कयिा जाता है

संत जेम्स का जन्म नसिीबसि[985] शहर में हुआ था, जो एक ऐसे क्षेत्र में स्थति था जो बारी-बारी से रोमनों और फारसयिों के हाथों में जाता था, और जो इस पवत्रि व्यक्ति के जन्म के समय रोमनों के अधीन था। जब वे वयस्क हुए, तो संत जेम्स रेगस्तिान में चले गए और ऊँचे पहाड़ों में रहने लगे। वह वसंत, ग्रीष्म और शरद ऋतु खुले आसमान के नीचे जंगल में बतिाते थे, जबकि सर्दयिों में वह एक गुफा में रहने चले जाते थे, जहाँ वह पाले से बचने के लिए आश्रय लेते थे। उनका भोजन वही था जो धरती बनिा कसिी खेती के अपने आप उगाती थी: वह जंगल के पेड़ों से फल और सब्जी के बगीचों में पाए जाने वाले खाद्य जड़ें इकट्ठा करता था, और अपने नाजुक शरीर को जीवति रखने के लिए बस इतना ही खाता था। इस प्रकार अपने शरीर को कष्ट देते हुए, परमेश्वर के संत एक ही समय में अपने आत्मा को आध्यात्मकि भोजन से नरिंतर पोषति करते थे; शुद्धकिरण के माध्यम से, उन्होंने अपने मन को परमेश्वर के दर्शन के लिए तैयार कयिा, और उसे पवत्रि आत्मा का दर्पण बना दयिा; और, जैसा कि पवत्रि प्रेरति कहते हैं, प्रभु की महमिा को बनिा आवरण के मुख से नहिारते हुए, वह प्रभु के आत्मा के द्वारा महमिा से महमिा तक उसी प्रतमिा में परविर्तति हो गए (2 कुरन्थियिों 3:18)। इसके द्वारा, ईश्वर से प्रार्थना में उनकी नडिरता लगातार बढ़ती गई - और जब भी उन्होंने ईश्वर से कुछ माँगा, तो उन्हें वह तुरंत मलि गया: उन्होंने भवष्यिवाणी के रूप में भवष्यि का पूर्वानुमान लगाया, और उन्हें पवत्रि आत्मा द्वारा चमत्कार करने की कृपा प्राप्त हुई। उनके इन चमत्कारों में से, हम कुछ का वर्णन करेंगे और उन लोगों के लिए उस दैवीय कृपा को प्रकट करेंगे जो उनके भीतर चमक रही थी।

उस समय, मूर्ख लोग मूर्तयिों की पूजा करते थे और नर्जिीव पत्थरों पर दव्यि सम्मान प्रदान करते थे। कई लोगों ने न केवल ईश्वर की सच्ची उपासना की उपेक्षा की, बल्कि उन लोगों से घृणा भी की, जो सद्गुणों में पूर्ण होकर सत्य को जान चुके थे और मूर्तपिूजा से मुंह मोड़कर मूर्तयिों की व्यर्थता का उपहास करते थे तथा सभी वस्तुओं के स्रष्टा की उपासना करते थे। तब संत जेम्स, मरुभूमि छोड़कर, पवत्रि वशि्वास के नवोदति बगीचे को देखने और जहाँ तक संभव हो, स्वयं सत्य वशि्वास के प्रसार में परशि्रम करने के लिए फारस[986] के लिए रवाना हुए।

एक दनि, जब वह रास्ते में एक छोटी-सी नदी पार कर रहा था, तो उसे कई युवतयिाँ मलिीं जो घुटनों से ऊपर नंगे पैरों से कपड़े धो रही थीं, उन्होंने उस संन्यासी को बेधड़क घूरना शुरू कर दयिा, जो असामान्य वस्त्र पहने हुए था। संन्यासी अपने पवत्रि स्वरूप और उन युवतयिों की नग्नता, दोनों को लेकर बेपरवाह था और बनिा सरि ढके नर्लिज्जता से उनके सामने खड़ा रहा। ऐसी नर्लिज्जता को देखकर संत क्रोधति हो गए, और उन्होंने उनकी सज़ा के माध्यम से ईश्वर की शक्ति का प्रदर्शन करने तथा एक चमत्कार करके दुष्टों की मूर्तपिूजा को लज्जति करने की इच्छा की; उन्होंने उस झरने को शाप दयिा जसिसे वह धारा नकिलती थी; झरना और धारा तुरंत सूख गए, यहाँ तक कि उनमें एक भी पवत्रि जल की बूँद नहीं बची। उन्होंने इन कन्याओं को भी शाप दयिा और उनके नर्लिज्ज यौवन को अचानक वृद्धावस्था का दंड दयिा। संत के चमत्कारी वचन पर, उनके सरि के काले बाल तुरंत सफेद हो गए, और वे स्वयं भी अचानक बूढ़ी हो गईं, जैसे

---

[983] संत हर्मलिस और स्ट्रैटोनकिस की शहादत लगभग 315 ईस्वी में हुई थी।

[984] सजिडिुनम – अब बेलग्रेड, डेन्यूब नदी के नचिले हस्सि में इसके दाहनि कनिारे पर स्थति एक शहर, सर्बयिा की राजधानी।

[985] नसिीबसि, या नसिीबडिा, मेसोपोटामयिा के मग्डिोनयिा प्रांत में एक बड़ा और घनी आबादी वाला शहर था।

[986] नाज़बियिा फ़ारसी सीमा से बहुत दूर नहीं स्थति था, इसीलिए फ़ारस की यात्रा में कोई बड़ी कठनिाई नहीं थी।

किसी युवा पेड़ के पत्तों पर अचानक ओले पड़ने पर वे बदल जाते हैं। पानी के अचानक गायब हो जाने और उनमें से प्रत्येक के सिर पर सफेद बालों को देखकर, युवतियाँ भय से भर गईं और, शहर लौटने पर, उन्होंने सभी को इसके बारे में बताया।

यह चमत्कार देखने के बाद, नगरवासी महान चमत्कार करने वाले संत जेम्स के पास गए और उनसे विनती करने लगे कि वे उन पर दया करें और उनका पानी वापस कर दें। उनकी विनतियों से संत का हृदय पिघल गया; उन्होंने ईश्वर से प्रार्थना की, और झरना फिर से पानी से भर गया, और धारा पहले की तरह बहने लगी। लोगों ने संत से उन कन्याओं पर भी दया करने और समय से पहले बूढ़ी होने के बजाय, उनकी जवानी लौटाने का अनुरोध किया। संत यह भी करने के लिए तैयार थे; लेकिन जब उन्होंने पूछा कि युवतियाँ कहाँ हैं, तो वे कहीं नहीं मिलीं, क्योंकि वे पश्चाताप करके संत के पास नहीं आई थीं। उनके पश्चाताप की कमी के कारण, उन्होंने उन्हें उनकी सज़ा में छोड़ दिया, ताकि वे ईश्वर की चमत्कारी शक्ति को याद रखें, और ताकि दूसरे इस से पवित्रता और मर्यादा का पाठ सीखें।

यह इस नए मूसा का चमत्कार था, जिसे उसने अपनी लाठी के एक वार से नहीं, बल्कि पवित्र क्रॉस के चिह्न से किया। और स्वयं चमत्कार से भी अधिक, हमें उसकी नम्रता पर आश्चर्य करना चाहिए—अर्थात्, कि उसने महान भविष्यवक्ता एलिशा (2 राजा 2:24) की तरह, निर्दिनीय कुंवारी लड़कियों को चीर-फाड़ करने के लिए मादा भालू न भेजीं, बल्कि उन्हें अच्छा आचरण और ईश्वर का भय सिखाते हुए, केवल एक हल्की सज़ा—उनकी बाहरी सुंदरता में कमी—तक ही सीमित रहे। हम यह किसी भी तरह से नबी के क्रोध का अपमान करने के लिए नहीं कह रहे हैं, बल्कि केवल यह दिखाने के लिए कि संत जेम्स के पास भी नबी के समान चमत्कारी शक्ति थी, फिर भी उन्होंने इसे मसीह की भलाई की भावना में और नए नियम के अनुसार प्रकट किया।

एक अवसर पर, संत जेम्स ने देखा कि एक फ़ारसी न्यायाधीश ने एक निर्दोष व्यक्ति को अन्यायपूर्ण ढंग से दोषी ठहराया था। वह दुखी हो गए और न्यायाधीश के अत्याचार की निंदा करते हुए, पास में खड़े एक बड़े पत्थर को चकनाचूर होकर धूल में बदल जाने का आदेश दिया। यह देखने वाले सभी लोग भयभीत हो गए। स्वयं अन्यायपूर्ण न्यायाधीश भी भय से ग्रस्त हो गया; उसने अपने पाप से पश्चाताप किया और अपने फैसले को पलट दिया, और इसके बजाय एक न्यायसंगत निर्णय सुनाया। यहाँ भी, चमत्कार करने वाले ने अपने प्रभु की नकल करते हुए कार्य किया। मसीह, यह दिखाना चाहते हुए कि उन्होंने स्वेच्छा से दुख सहन किया, और यह कि, यदि वे चाहते, तो वे आसानी से अपने हत्यारों को नष्ट कर सकते थे, उन्होंने उन्हें नष्ट नहीं किया, बल्कि अपने एक ही शब्द से अंजीर के पेड़ को मुरझाने का कारण बनकर अपनी शक्ति प्रकट की (मत्ती 21:19)। और संत जेम्स ने प्रभु की दया का अनुकरण करते हुए, अन्यायपूर्ण न्यायाधीश को मृत्युदंड नहीं दिया, बल्कि पत्थर को चकनाचूर कर दिया और इस प्रकार न्यायाधीश को न्याय का मार्ग सिखाया। ऐसे चमत्कारिक कार्यों से संत को प्रसिद्धि और सार्वभौमिक सम्मान मिला, और, उनकी इच्छा के विरुद्ध, उन्हें उनके पैतृक शहर निसीबिस के निवासियों द्वारा बिशप चुना गया; उन्होंने स्वयं ऐसा उच्च पद नहीं चाहा, बल्कि इससे दूर भी रहे, और केवल विश्वासियों की लगातार विनतियों पर ही झुके।

अपना एकांत, मरुभूमि का जीवन त्यागकर और अपने देशवासियों के बीच बस जाने के बाद, संत जेम्स ने न तो अपनी आहार-विधि बिदली और न ही अपने वस्त्र; अपने नए परिवेश में, उन्होंने अपने पूर्व जीवन-शैली को ही जारी रखा और पहले से भी अधिक परिश्रम किया। उनके उपवास, प्रणाम और फटे-पुराने कपड़े पहनने में अब दूसरों की देखभाल भी जुड़ गई थी – विधवाओं और अनाथों का भरण-पोषण करना, उत्पीड़ितों की रक्षा करना, सभी की मदद करना और सभी गुणों का उपदेश देना। लेकिन ऐसे धार्मिक कार्यों में निहित दूसरों की सेवा और देखभाल के श्रमों का विस्तार से वर्णन क्यों करें? यह उन लोगों को पता है जो इस बोझ को अपने ऊपर लेते हैं, विशेष रूप से उन लोगों को जो स्वर्गीय प्रभु से प्रेम करते हैं और उनका भय मानते हैं, जो उन्हें अपनी आध्यात्मिक भेड़-बकरियों की देखभाल सौंपते हैं। संत जेम्स अपने बिशप के पद में जितनी अधिक मेहनत करते गए, उतने ही अधिक पुण्य कर्म उन्होंने किए, और उतने ही अधिक उन्होंने अपने लिए पवित्र आत्मा के वरदान एकत्र किए।

एक बार, जब संत एक गाँव जा रहे थे, तो रास्ते में कुछ भिखारी उनके पास आए और एक मृतक के अंतिम संस्कार के लिए भीख माँगने लगे। जब वे बात कर रहे थे, तो उन्होंने सड़क के किनारे पड़े एक मृत व्यक्ति की ओर इशारा किया, जो वास्तव में जीवित था और केवल मृत होने का नाटक कर रहा था। इन भिखारियों ने, दूर से बिशप को आते हुए देख लिया था, और अपने में से एक को मृत्यु का नाटक करने का निर्देश दिया, ताकि इस धोखे के द्वारा वे बिशप से और अधिक दान माँग सकें। संत ने उन्हें मांगा हुआ दान दे दिया और मृतक के लिए प्रार्थना की कि ईश्वर उसके पापों को क्षमा करे और उसकी आत्मा को धर्मी लोगों के साथ विश्राम प्रदान करे, और फिर वे अपने रास्ते पर आगे बढ़ गए। संत के चले जाने के

बाद, कथित मृतक के दोस्तों ने उसे उठने के लिए कहा; लेकिन वह अचल पड़ा रहा, क्योंकि वह वास्तव में मर चुका था और उसकी सांसें रुक चुकी थीं। भिखारियों ने, यह देखकर कि उनका झूठ सच हो गया है, संत के पीछे भागे और, उसके पैरों पर गिरकर, अपने पाप पर पश्चाताप किया। अपनी गरीबी को बहाना बनाकर, उन्होंने उससे क्षमा मांगी और मृतक को जीवित करने का आग्रह किया। चमत्कार करने वाले संत ने, दयालु प्रभु के उदाहरण का पालन करते हुए, उन्हें क्षमा कर दिया, और अपनी प्रार्थना के माध्यम से, मृतक जीवित हो उठा। यह, जैसा कि हम देख सकते हैं, प्रेरित पतरस के चमत्कार के समान है, जिन्होंने पवित्र आत्मा से झूठ बोलने और अपनी संपत्ति की बिक्री से प्राप्त आय का एक हिस्सा छिपाने के लिए सहमत होने पर अनानियस और सप्फिरा को उसी समय मार डाला था (प्रेरितों के काम 5:1)। और संत याकूब ने एक ऐसे व्यक्ति का जीवन ले लिया जिसने अपनी संपत्ति छिपाई थी और झूठी तरह से मृत होने का नाटक किया था। लेकिन संत पतरस ने उन लोगों को मार डाला जिन्होंने धन रोक लिया था, जो पवित्र आत्मा द्वारा निर्देशित थे और चोरी के बारे में जानते थे; जबकि याकूब ने इस भिखारी की जान उसकी प्रार्थना के द्वारा ली, वह धोखे से अनजान था, क्योंकि उस आदमी ने मृत्यु का नाटक किया था। पतरस ने अपने वचन से हनानियाह और सप्फिरा को मृतकों में से नहीं जिलाया, क्योंकि उद्धार के प्रचार की शुरुआत के लिए दुष्टों को डराने की आवश्यकता थी—ताकि दूसरे भी डर जाएँ; परन्तु याकूब, जो प्रेरितिक अनुग्रह से युक्त था, ने उन्हें केवल अस्थायी रूप से मृत्युदंड दिया और फिर उनके जीवन को वापस देकर उन्हें सांत्वना दी।

थोड़ी ही देर बाद, एरियस, जो परमेश्वर के पुत्र और पवित्र आत्मा की परमपिता के साथ एक-तत्त्वता का सबसे पहला निन्दक था, ने सृष्टिकर्ता के विरुद्ध अपनी जीभ को तीखा किया और पूरे मिस्र में भ्रम फैला दिया। तब ईसाई शासकों में सबसे महान, कॉन्स्टेंटाइन, जो, मानो, एक दूसरे ज़रूब्बाबेल थे (ज़रूब्बाबेल—दाऊद का वंशज—यहूदी लोगों के नेता थे; उसके नेतृत्व में यहूदी बेबीलोन की बंधनमुक्ति से बाहर आए और अपनी मातृभूमि लौट आए), ने ब्रह्मांड को मूर्तिपूजक बंधन से मुक्त किया, उन ईश्वर के मंदिरों का पुनर्निर्माण किया जिन्हें धूल में मिला दिया गया था और उन्हें पुनर्स्थापित किया, और निकिया में पवित्र पिताओं की प्रथम सार्वभौमिक परिषद का आयोजन किया[987] । परिषद के पवित्र पिताओं में निसिबिस के बिशप, सेंट जेम्स ऑफ गॉड थे, जिन्होंने ऑर्थोडॉक्सी की रक्षा में और चर्च से एरियस को बहिष्कृत करने में भाग लिया था।

निसिबिस, जैसा कि हमने कहा है, उस समय रोमन सम्राटों के शासन में था। कॉन्स्टेंटिन द ग्रेट[988] की मृत्यु के बाद, फारसी राजा शापूर[989] अपनी पूरी सेना के साथ आया और निसिबिस शहर की घेराबंदी कर उसे लंबे समय तक घेर कर रखा। हालाँकि, बिशप सेंट जेम्स की प्रार्थनाओं के कारण, उनके प्रयास व्यर्थ साबित हुए, और वह शहर पर कब्जा करने में असमर्थ रहे। फिर शापूर ने शहर से होकर बहने वाली नदी पर ऊपर की ओर पत्थरों और मिट्टी से बाँध बना दिया, जिससे उसका बहाव रुक गया। जब बहुत सारा पानी जमा हो गया, तो उसने अचानक उसे एक साथ शहर पर छोड़ दिया। पानी के ज़ोर से, शहर की दीवारें ढह गईं, और शहर का एक हिस्सा बाढ़ में डूब गया। नागरिकों में भय छा गया; हालाँकि, फ़ारसी इस सोच में आनंदित हुए कि अब शहर उनके हाथों में आ गया है।

हालाँकि, उन्होंने उस दिन शहर पर हमला नहीं किया, क्योंकि बाढ़ ने उन्हें ऐसा करने से रोक दिया था, और उन्होंने अगली सुबह एक व्यापक हमला करने का संकल्प लिया। जब रात हुई, तो शहर की पूरी आबादी, अपने बिशप द्वारा उत्साहित और प्रेरित होकर, शहर की दीवारों की मरम्मत में जुट गई; और, उनकी प्रार्थनाओं के कारण, दीवारें इतनी अच्छी तरह से बहाल हो गईं कि सीढ़ी के बिना, घोड़े पर या पैदल, शहर में प्रवेश करना असंभव हो गया। फिर भी, यदि शहर के निवासियों ने ऊपर से मदद नहीं माँगी होती, तो शहर को आसानी से ले लिया जा सकता था। सभी ने बिशप सेंट जेम्स से विनती करना शुरू कर दिया कि वे शहर की दीवारों पर चढ़ें और दुश्मन की सेना पर श्राप दें। सेंट जेम्स ऊपर चढ़े और

---

[987] निकाया – एशिया माइनर के एक उत्तर-पश्चिमी प्रांत बिथिनिया में एक शहर। सम्राट कॉन्स्टेंटाइन द्वारा बुलाई गई, प्रथम सार्वभौमिक परिषद 325 में हुई और इसने धर्मविश्वास (Creed) को चर्च के उपयोग में पेश किया, जिसे बाद में 381 में कॉन्स्टेंटिनोपल में आयोजित दूसरी सार्वभौमिक परिषद में पूरक और अंतिम रूप दिया गया।

[988] महान कॉन्स्टेंटिन, राजा और प्रेरितों के समान, का 337 में निधन हो गया।

[989] Sapor II, जिन्हें महान के नाम से जाना जाता है, फारस के राजा; 310 से 381 ईस्वी तक शासन किया; रोमनों के खिलाफ अपनी सफल युद्धों के लिए जाने जाते थे, वह ईसाई धर्म के एक क्रूर उत्पीड़क थे।

फारसी रेजिमेंटों की अनगनित भीड़ को देखकर, ईश्वर से प्रार्थना करने लगे कि वे उन पर मच्छर और मक्खियाँ[990] भेजें, ताकि वे ईश्वर की शक्ति को पहचान सकें और शहर की घेराबंदी हटा लें। ईश्वर ने अपने सेवक की प्रार्थना सुनी और तुरंत ही मच्छरों और मक्खियों का एक पूरा झुंड फ़ारसी शिविर पर भेज दिया। उनके काटने का दर्द इतना भयंकर था कि घोड़े और हाथी, इसे सहन न कर सके, उन्होंने अपनी लगाम और लगामबंद तोड़ दिए और अनियंत्रित शक्ति से इधर-उधर दौड़ने लगे। ये मच्छर और मक्खियाँ न केवल जानवरों के लिए, बल्कि स्वयं फ़ारसियों के लिए भी असहनीय थीं - सशस्त्र योद्धाओं की सेनाओं से भी बदतर। दुष्ट राजा स्वयं, यह देखकर कि उसके प्रयास व्यर्थ हो गए थे और उसकी सेना मच्छरों और मक्खियों से पराजित हो रही थी, हैरानी और बड़े संकट में भर गया। इसके अलावा, उसने इस दिव्य पुरुष, बिशप जेम्स को, शहर की दीवारों पर देखा, और उसे राजा समझ लिया, क्योंकि उसे ऐसा प्रतीत हुआ कि वह शाही बैंगनी रंग का वस्त्र पहने हुए थे और उनके सिर पर एक शाही मुकुट चमकीले प्रकाश से दमक रहा था। वह अपने जासूसों पर आग-बबूला हो गया, जिन्होंने उसे बताया था कि शहर में कोई राजा नहीं है, और उसने उन्हें मौत की सज़ा दे दी। शहर की घेराबंदी हटाकर, वह मक्खियों और मच्छरों के पीछा करने पर अपनी भूमि को भाग गया। प्रभु ने यह चमत्कार अपने सेवक की प्रार्थनाओं के उत्तर में किया, जिसने शत्रुओं पर स्वर्ग से आग गिरने और उन्हें भस्म करने की प्रार्थना नहीं की थी, जैसा कि भविष्यवक्ता एलियाह ने एक बार पेंटेकोस्टलों पर ऐसी आग के लिए प्रार्थना की थी। (2 राजा 1:10–12), न ही यह कि पृथ्वी अपना मुँह खोलकर उन्हें निगल ले (गिनती 16:31–33), बल्कि— —केवल यह कि उन पर मच्छर और मक्खियाँ भेजी जाएँ, ताकि वे परमेश्वर की शक्ति को पहचान सकें। और वास्तव में, तब एक महान चमत्कार प्रकट हुआ, क्योंकि विशाल फारसी सेना तुच्छ कीड़ों का सामना नहीं कर सकी और उनसे पराजित होकर शर्म के मारे भाग गई। ईश्वर से सेंट जेम्स को प्राप्त अनुग्रह इतना महान था, और उनके विश्वास का साहस भी उतना ही महान था!

परमेश्वर के इस पवित्र पुरुष ने दीर्घायु प्राप्त कर, प्रभु में विश्राम लिया[991] । उनकी मृत्यु के कुछ समय बाद, निसीबिस नगर फारसी शासन के अधीन आ गया। जब विश्वासियों ने शहर छोड़कर भागे, तो वे अपने मध्यस्थ और नेता, संत जेम्स की अवशेष अपने साथ ले गए, जिनके जीवनकाल में यह शहर कभी भी बर्बरों के शासन में नहीं आता, क्योंकि उन्होंने इसे हमारे ईश्वर मसीह की अजेय शक्ति से उनकी रक्षा की थी, जिनके लिए, पिता और पवित्र आत्मा के साथ, युगों-युगों तक महिमा हो, आमीन।

हमारे पूजनीय पिता इरिनार्ख का जीवन, रोस्तोव में बोरिसोग्लेब्स्की मठ के तपस्वी, जो नदी के मुहाने पर स्थित है[992]

स्मरणोत्सव: १३ जनवरी

---

[990] 'डॉग फ्लाई' शब्द का अर्थ काटने वाले मक्खी या कीट की एक ऐसी प्रजाति से है जो विशेष रूप से कुत्तों के लिए हानिकारक मानी जाती है, या, अधिक सामान्य रूप से, विशेष रूप से हानिकारक कीटों से है। डॉग फ्लाई मूसा के समय में मिस्रवासियों पर भेजी गई चौथी महामारी थी।

[991] यह लगभग 350 ईस्वी के आसपास, 11 जुलाई को हुआ था। निसिा के संत जेम्स को उनके द्वारा किए गए कई चमत्कारों के कारण चमत्कार करने वाले कहा जाता है, और उनकी आध्यात्मिक बुद्धि की ऊँचाई के कारण उन्हें 'ज्ञानी' कहा जाता था। आज अर्मेनियाई भाषा में संत जेम्स की अठारह रचनाएँ ज्ञात हैं, जो उन्होंने अर्मेनिया के प्रबोधक, संत ग्रेगरी के अनुरोध पर लिखी थीं। उनके धर्मशास्त्रीय और नैतिक महत्व के अलावा, संत जेम्स की शिक्षाएं पवित्र धर्मग्रंथ की निष्ठावान व्याख्या के एक मॉडल के रूप में महत्वपूर्ण हैं; स्वाभाविक रूप से, बिना किसी बनावटीपन या प्रयास के, प्राचीन शिक्षक पवित्र धर्मग्रंथ से दोनों, उच्च सिद्धांतों और आध्यात्मिक निर्माण, को ग्रहण करते हैं।

[992] यह, बेशक, यारोस्लाव्ल डायोसीस, रोस्तोव जिले में स्थित बोरिसोग्लेब्स्की मठ को संदर्भित करता है, जो उस्टे नदी पर, उग्लिच शहर के रास्ते पर रोस्तोव से 18 वर्स्ट दूर है। – इरिनारह का जीवन उनके शिष्य अलेक्जेंडर द्वारा लिखा गया था, जो उनके साथ तीस साल तक रहे। मूल संजीवनी केवल पांडुलिपियों से ही जानी जाती है और प्रकाशित नहीं हुई है। उनकी उत्कृष्टता एम्फिलोचियस, जो बोरिसोग्लेब्स्की मठ के पूर्व आर्चिमांड्राइट थे, ने 1863 में मास्को में संजीवनी का एक विवरण प्रकाशित किया, जो पांडुलिपि ग्रंथों का ही लगभग अनुसरण करता था और इसमें चित्र भी शामिल थे। 1872 में, यारोस्लावली डायोसीशियन गज़ेट ने इरिनारह के जीवन (एन. कोर्सुनस्की द्वारा) को प्रकाशित किया, जिसे पांडुलिपियों से संकलित किया गया था; इसे 1873 में यारोस्लावल में अलग से प्रकाशित किया गया था। यह विवरण मूल संजीवनी पर आधारित है, जो हमें कई पांडुलिपियों से ज्ञात है।

आदरणीय इरनिार्ख का जन्म रोस्तोव क्षेत्र के कोंडाकोवो गाँव में हुआ था[993] । उनके माता-पिता कसिान थे; उनके पिता का नाम अकदिनि और उनकी माँ का नाम इरीना था। उनके पवत्रि बपतस्मि पर, शशिु को एलयिाह नाम दयिा गया था। अपने बच्चे को इतनी जल्दी बढ़ते हुए देखकर उनके माता-पिता बहुत खुश हुए: बीस सप्ताह की आयु तक, वह पहले ही अपने पैरों पर खड़ा हो गया था और चलना शुरू कर दयिा था। उनके माता-पिता ने अपने पुत्र का पालन-पोषण धार्मकिता और ईसाई आस्था की पवत्रिता में कयिा। बच्चा खेल नहीं खेलता था, बल्कि विनिम्रता और नम्रता से प्रेम करता था; वह शांत था और सभी के साथ दयालुता से पेश आता था।

जब वह केवल छह साल का था, तो उसने एक बार अपनी माँ से कहा:

'जब मैं बड़ा हो जाऊँगा, तो मैं सरि मुंडवा लूँगा और एक भक्षिु बन जाऊँगा; मैं रोंगटेदार कपड़ा पहनूँगा और ईश्वर के लिए परश्रिम करूँगा, और मैं सभी लोगों का शक्षिक बनूँगा।'

उनके छोटे बेटे के मुँह से ऐसे शब्द सुनकर उनकी माँ हैरान तो हुईं, लेकनि साथ ही बहुत प्रसन्न भी हुईं। छह साल के बच्चे के ये भवष्यिसूचक शब्द बाद में एक-एक करके सच साबति हुए।

लगभग उसी समय, इल्या अकंडिनि के पिता ने गाँव के पादरी, जनिका नाम वासलिी था, को अपने घर पर रात के खाने के लिए आमंत्रति कयिा। भोजन के दौरान, पादरी ने काल्याज़नि के आदरणीय मैकारयिस, चमत्कार करने वाले संत, के जीवन का वर्णन कयिा[994] । पादरी की बातें सुनकर, इल्या ने अचानक कहा:

'और मैं भी वैसा ही एक भक्षिु बनूँगा।'

फादर वासलिी एक बच्चे को वयस्कों जैसी बात करते सुनकर हैरान रह गए, और उन्होंने सख्त लहजे में कहा:

'मेरे बच्चे, तुम्हारी हम्मित कैसे हुई ऐसे शब्द बोलने की?'

इल्या ने उत्तर दयिा:

'ऐसी बात तो वही कह सकता है जो तुमसे नहीं डरता।'

इलयिा अपने माता-पिता के साथ बड़ा हुआ। लेकनि फरि पूरे क्षेत्र में अकाल पड़ा। इलयिा, जो अब अठारह साल का था, अपने माता-पिता से अलग हो गया और नज़िनी नोवगोरोद में काम की तलाश में नकिल पड़ा।

दो साल तक, बेटा घर नहीं लौटा और जीवन का कोई संकेत नहीं दयिा। उसके माता-पिता ने उसे खोजने का फैसला कयिा और अपने दो बड़े बेटों - आंद्रेई और डेवडि को भेज दयिा। भाइयों ने नज़िनी नोवगोरोड के पास एक गाँव में इल्या को एक कसिान के यहाँ काम करते हुए पाया; अपने भाई को देखकर वे बहुत खुश हुए, और कसिान के घर पर ही पूरे एक साल और रुके रहे।

कसिान के यहाँ रहने के दौरान, एक बार इल्या, जब दूसरे लोगों के साथ एक कमरे में बैठा था, तो वह बेकाबू होकर रोने लगा। उसे देखकर हर कोई हैरान रह गया और उसे सांत्वना न दे पाने के कारण, उन्होंने दुख के साथ उससे पूछा कि वह इतना क्यों रो रहा था और ससिक रहा था। उसने जवाब दयिा:

'मैं अपने पिता की मृत्यु देख सकता हूँ; सुनहरे बालों वाले युवक मेरे पिता को उनके अंतमि संस्कार के लिए ले जा रहे हैं।'

उसके आस-पास के सभी लोग यह देखकर हैरान रह गए कि वह तीन सौ वर्स्ट दूर से अपने पिता के नधिन को कैसे देख सका। जब वह उसी साल घर लौटा और अपनी माँ से अपने पिता के बारे में पूछा, तो उसे पता चला कि उसके पिता का नधिन उसी साल के डोर्मशिन उपवास के दौरान हो गया था। तब उसने वह दृश्य याद कयिा और अपनी माँ से कहा:

'उस समय मैंने अपने पिता को देखा: सुनहरे बालों वाले युवक उन्हें दफ़नाने के लिए ले जा रहे थे।'

और अपनी माँ ने अपने बेटे को देखकर और उसकी असाधारण बातें सुनकर सांत्वना पाई।

अब, अपने पिता की मृत्यु के बाद, इल्या, अपनी माँ और अपने बड़े भाई आंद्रेई के साथ, रोस्तोव शहर में चले गए, एक घर खरीदा और एक व्यवसाय शुरू कयिा, जसिके माध्यम से उन्होंने जल्द ही अपनी संपत्ति बढ़ा ली।

इलयिा के छोटे भाई, जसिके हृदय में हमेशा ईश्वर का भय रहा था, ने वशिेष रूप से चर्च को समर्पति होने और गरीबों को दान देने के लिए खुद को समर्पति कर दयिा। पूर्ण ब्रह्मचर्य का पालन करते हुए, वह सांसारकि जीवन को पूरी तरह से त्यागना और एक दैवीय रूप धारण करना चाहता था, और बनिा चूके ईश्वर के चर्च में जाता था।

---

[993] कोंडाकोवो गाँव अब उग्लचि जलि में, बोरसिोग्लेब्स्की मठ के ऊपर की ओर उस्टे नदी पर स्थति है, जो उग्लचि से 43 वर्स्ट और रोस्तोव से भी उतनी ही दूरी पर है।

[994] कल्याज़नि मठ कोंडाकोवो से चालीस वर्स्ट दूर स्थति है। कल्याज़नि के मकरयिस के पर्व के दनि 17 मार्च और 26 मई को मनाए जाते हैं।

उसने अगाफोनकि नामक एक व्यापारी दर्जे के व्यक्ति से मुलाकात की, जिसे किताबें पढ़ना पसंद था; वह उससे दोस्ती कर बैठा और अपनी आत्मा की मुक्ति के लिए निरंतर पवित्र शास्त्रों पर बात करने लगा।

इस प्रकार स्वयं को तैयार करके, इल्या ने पवित्र क्रॉस उठाया, उससे स्वयं को आशीर्वाद दिया, और अपनी यात्रा पर निकल पड़ा। जब उसकी माँ ने उससे पूछा कि वह क्या कर रहा है और कहाँ जा रहा है, तो इल्या ने उत्तर दिया:

'मैं उस्त्ये में पवित्र कष्ट-सहने वालों बोरिसि और ग्लेब के मठ में प्रार्थना करने जा रहा हूँ।'

उसकी माँ रोने लगीं, लेकिन फिर उन्हें याद आया कि कैसे उनके बेटे ने, जब वह केवल छह साल का था, पहले ही कह दिया था कि वह एक भिक्षु बनेगा। उनके बेटे ने अपनी माँ को प्रणाम किया, उन्हें चूमा, और अपनी यात्रा पर निकल पड़ा।

जब वह बोरिसि और ग्लेब के मठ के पास पहुँचा और उसे देखा, तो इल्या अपने पूरे दिल से प्रसन्न हुआ और मठाध्यक्ष के पास गया, उन्हें प्रणाम किया और उनका आशीर्वाद माँगा। मठाध्यक्ष ने उसे आशीर्वाद दिया और पूछा:

'बेटा, तुम यहाँ क्यों आए हो?'

इल्या ने उत्तर दिया:

'पिताजी, मैं दिव्य संकल्प लेना चाहता हूँ; कृपा करके मुझे—एक अज्ञानी किसान को—शिरच्छेदन कर दें और मुझे मसीह के चुने हुए झुंड तथा आपकी पवित्र संगति में शामिल कर लें!'

मठाधीश ने अपने हृदय की आँखों से देखा कि वह युवक ईश्वर की ओर से आया था, और उन्होंने उसे खुशी से स्वीकार किया; उन्होंने उसे दैवीय संप्रदाय में दीक्षा दी और उसे संन्यासी नाम इरिनार्ख दिया।

मठ की प्रथा के अनुसार, मठाधीश ने इरिनारह को एक वरिष्ठ के मार्गदर्शन में रख दिया, जिसके साथ उस युवा भिक्षु ने आज्ञाकारिता और समर्पण में, उपवास और प्रार्थना में निवास करना शुरू कर दिया।

जब इरिनारह ने आज्ञाकारिता की अपनी पहली अवधि सफलतापूर्वक पूरी कर ली, तो मठाधीश ने, एक परीक्षा के रूप में और विनम्रता के लिए, उसे बेकरी में भेज दिया, जहाँ उसने आज्ञाकारिता और विनम्रता में भाईचारे के लिए दिन-रात परिश्रम किया, सांसारिक प्रकृति की किसी भी चीज़ की परवाह किए बिना और कभी भी ईश्वर के चर्च में उपस्थिति होने में विफल नहीं हुआ, जहाँ वह सभी अन्य भाइयों से पहले पहुँचता था; चर्च में खड़े रहते हुए, वह किसी से बात नहीं करता था; पाठ के दौरान वह नहीं बैठता था, बल्कि हमेशा चट्टान की तरह अडिग खड़ा रहता था, और विदाई तक कभी चर्च नहीं छोड़ता था। इलिया के मुंडन के बारे में पता चलने पर, उसका दोस्त अगाफोनकि इरिनार्ख से मिलने मठ आया और कुछ दिनों तक उसके साथ वहीं रहा। इरिनार्ख अपने दोस्त के साथ मठ से दो वर्स्ट आगे तक गया और उसे विदाई का चूमने के बाद, अपनी वापसी की यात्रा पर निकल पड़ा। रास्ते में, उसने मन ही मन सोचा कि वह कैसे बच सकता है, और करिलिव-बेलोज़ेर्स्की मठ या सोलोवेत्स्की मठ जाने का संकल्प लिया। और फिर उसने ऊपर से एक आवाज़ सुनी:

'करीलोव या सलोव्की मत जाओ; तुम्हारा उद्धार यहीं होगा!'

उसे उस आवाज़ पर संदेह हुआ, लेकिन उसने वही आवाज़ दूसरी बार सुनी:

'यहाँ तुम्हारा उद्धार होगा!'

इरिनारह भय से भर गया; वह रोने लगा और इस बात पर विचार करने लगा कि इसका क्या मतलब हो सकता है। और तीसरी बार उसने वही आवाज़ सुनी:

'तुम यहाँ बच जाओगे!'

चारों ओर देखकर, इरिनारह को कोई नहीं दिखा और वह इस बात से आश्वस्त हो गया कि यह आवाज़ ऊपर से एक दिव्य संकेत थी।

मठ लौटने पर, उन्होंने अपने पूर्व कर्तव्यों को फिर से शुरू किया, रात में प्रार्थना और जागरण में खुद को समर्पित कर दिया और केवल थोड़ी देर के लिए सोते थे, और वह भी बिस्तर पर नहीं बल्कि सीधे जमीन पर।

सेवा के इस काल के बाद, मठाधीश ने इरिनार्ख को सेक्सटन (मठ का परिचर) का पद सौंपा, जिसे उन्होंने खुशी-खुशी स्वीकार किया।

एक बार, इरिनार्ख ने एक नंगे पैर यात्री को देखा; उस पर दया करके, उन्होंने प्रभु से यह प्रार्थना की:

हे प्रभु यीशु मसीह, परमेश्वर के पुत्र, जिन्होंने स्वर्ग और पृथ्वी और पहले मनुष्य, हमारे पूर्वज आदम को अपनी ही प्रतिमा में बनाया, और जिन्होंने उसे एदन के पवित्र बगीचे में गर्माहट से सम्मानित किया, आपकी पवित्र

इच्छा मुझमें, आपके सेवक में, पूरी हो: हे प्रभु, मेरे पैरों को गर्मी प्रदान करें, ताकि मैं इस यात्री पर दया कर सकूँ और उसे पहनने के लिए अपने जूते दे सकूँ!

और, अपने जूते उतारकर, इरनिर्ख ने वे भखिारी को दे दिए। और उसी घड़ी से ईश्वर ने उसे धैर्य और गर्माहट प्रदान की: वह कड़ाके की ठंड में नंगे पैर ऐसे चलने लगा मानो किसी गर्म कोठरी में हो। उस समय से, वह केवल फटे-पुराने कपड़े ही पहनने लगा।

शैतान द्वारा प्रेरित इरनिारह के इस व्यवहार से मठाधीश अप्रसन्न हो गए, जिन्होंने उस तपस्वी को वभिन्नि तरीकों से अपमानित करना शुरू कर दिया। इस प्रकार, वे उसे अपनी कोठरी की छोटी सी खड़िकी के पास दो घंटे तक ठंड में खड़ा करवाते, और फिर उसे घंटों तक घंटीघर में घंटियाँ बजाने के लिए मजबूर करते। इरनिार्ख ने यह सब नम्रता से सहन किया, प्रभु के वचन को याद करते हुए: *'हमें परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने के लिए बहुत कष्टों से होकर गुजरना होगा'* (प्रेरितों के काम 14:22)। इसके बाद, मठाधीश ने इरनिार को तीन दिनों तक बंद कर दिया, उसे न तो भोजन दिया और न ही पानी – यह सब इसलिए ताकि वह नए कपड़े और जूते पहनने के लिए मजबूर हो जाए। लेकिन इससे भी कोई फायदा नहीं हुआ। तब मठाधीश ने उसे उसके पुराने कर्तव्यों पर वापस भेज दिया। इरनिार्ख ने गुफाओं के इसाक के धैर्य का अनुकरण करते हुए, ठंड में नंगे पैर चलना जारी रखा, जिनके पैर चट्टान से जम गए थे, लेकिन उन्हें कोई ठंड महसूस नहीं हुई।

इरनिारह ने सुना कि रोस्तोव में एक ईश्वर-भयभीत व्यक्ति था जिसे साहूकारों ने दासता में बेच दिया था, और वह इस व्यक्ति को उसकी दासता से छुड़ाना चाहता था। इस उद्देश्य के लिए, वह तीव्र ठंड के बीच नंगे पैर रोस्तोव के लिए रवाना हो गया। मठ से सात वर्स्ट की यात्रा करने के बाद, इरनिारह के पैर की उंगलियों में ठंड लग गई और ठंड से बेसुध होकर वह मठ लौट आया। तीन साल तक वह अपने पैरों के दर्द से पीड़ित रहा, जिन पर घाव हो गए थे और जिनसे खून बहता था; फिर भी अपनी बीमारी में भी उसने अपने नियम को नहीं छोड़ा और ईश्वर के लिए काम करना जारी रखा। जब प्रभु ने इरनिार्ख को उसकी बीमारी से ठीक कर दिया, तो वह सर्दियों और गर्मियों दोनों में जूते-चप्पल के बिना चलता रहा, और मठाधीश इस बात के लिए उसे फटकारते रहे। अब मठाधीश ने इरनिार्ख को मठ के बाहर काम पर भेजने का फैसला किया। ईश्वर के घर से यह निर्वासन या निष्कासन उस तपस्वी को बहुत दुखी कर गया: वह इस तरह के उत्पीड़न को सहन नहीं कर सका और उसने बोरसिोग्लेब्स्की मठ छोड़ने का निश्चय किया। उन दिनों जब वह मठ के चारों ओर के जंगलों से गुज़र रहा था, तो जंगली जानवरों, भेड़ियों और भालुओं ने उस पर हमला किया; लेकिन, उसने क्रॉस का चिह्न बनाया और मन ही मन चुपचाप प्रार्थना करके उन्हें भगा दिया। इरनिार्ख रोस्तोव गए और एपफिेनी के अव्रामएिव मठ पहुँचे। मठ के आर्चमिंड्राइट ने उन्हें खुशी से स्वागत किया, वे भाइयों के बीच वहाँ रहे और जल्द ही उन्हें मठ का कोषाध्यक्ष नियुक्त किया गया। इरनिार्ख ने खुशी से भाइयों की सेवा करना शुरू कर दिया, साथ ही अपने सभी चर्च के कर्तव्यों का पालन करना जारी रखा। सेलर के रूप में सेवा करते हुए, उन्होंने देखा कि मठ के भाई और अन्य मठ अधिकारी बिना किसी माप-तौल या रोक-टोक के हर तरह के मठ के सामान ले जाते थे, जिससे मठ की संपत्ति खत्म हो रही थी। यह सब देखकर, उन्होंने मन ही मन आह भरी और प्रार्थना की:

'आदरणीय अब्राहम, मैं वह नहीं हूँ जो आपके मठ को बर्बाद कर देगा!'

एक बार, सपने में, इरनिार्ख ने परम पूज्य अब्राहम को अपनी कोठरी में प्रवेश करते और कहते देखा:

'हे चुने हुए और धर्मी वंशज और पवित्र स्वर्ग के निवासी, तुम क्यों दुखी हो? तुम मठ के खर्च को लेकर क्यों चिंतित हो? उन्हें बिना हिचकिचाहट दो, क्योंकि उन्होंने यहाँ ऐश्वर्य में रहने का चुनाव किया है, जबकि तुम भूखे रहते हो और फटेहाल हो; और तुम स्वर्गीय राज्य में प्रचुरता में जियोगे और स्वर्ग के भोजन का आनंद लोगे, जबकि वे हमेशा के लिए भूखे रहेंगे। जहाँ तक इस स्थान का सवाल है, मैंने सर्वोच्च सृष्टिकर्ता से विनती और प्रार्थना की है कि मेरे घर में उन लोगों के लिए मठ की आवश्यक वस्तुओं की कभी कमी न हो जो यहाँ भूखे और निवास करते हैं।

जब वह अपनी नींद से जागा, तो इरनिार्ख ने वहाँ किसी को नहीं देखा। उस समय से, उसे सांत्वना मिली और उसने बिना किसी संकोच के दान देना शुरू कर दिया।

एक दिन, चर्च में लिटर्जी के दौरान, चेरूबिक भजन के समय, इरनिार्ख इतनी ज़ोर से रोने और सिसकने लगे कि पूरे चर्च में उनकी आवाज़ सुनाई दी। हैरान आर्चमिांड्राइट उनके पास आए और कहा:

'आदरणीय वृद्ध, आप इस तरह क्यों रो रहे हैं और विलाप कर रहे हैं?'

'मेरी माँ का निधन हो गया है!' इरनिार्ख ने उत्तर दिया।

आर्चमिांड्राइट उनके शब्दों से स्तब्ध रह गए और उनकी आँखों में आँसू आ गए। लटिर्जी अभी खत्म भी नहीं हुई थी कि उनका भाई आंद्रेई उनके पास आया और उन्हें सूचति कयिा कि उनकी माँ, इरनिा, का नधिन हो गया है। आर्चमिांड्राइट का आशीर्वाद प्राप्त करने के बाद, वह बूढ़े अपने भाई आंद्रेई के साथ अपनी माँ के घर चले गए और एक उचति अंतमि संस्कार कयिा।

अपनी माँ के अंतमि संस्कार के बाद अव्रामएिव मठ लौटने पर, इरनिार्ख ने मोक्ष के एक अलग मार्ग पर वचिार करना शुरू कर दयिा: सेल-मास्टर का पद उन्हें एक ऊँचा और सम्मानजनक पद प्रतीत हुआ, फरि भी वे वनिम्रता और आत्म-नम्रता में काम करना चाहते थे।

एपफिेनी के अव्रामयिेव मठ को छोड़कर, इरनिार्ख रोस्तोव के सेंट लाजरस मठ में चले गए[995] , जहाँ उन्होंने एक एकांत कोठरी में नविास कयिा और वहाँ तीन साल और छह महीने तक रहे, अपने दनि आँसुओं और प्रार्थना, दुख और कठनिाई में बतिाए, भूख सहन की और कई दनिों तक बनिा भोजन के रहे। यहाँ अक्सर उनकी मुलाकात परम पूज्य जॉन द फुल फॉर क्राइस्ट से होती थी, और दोनों तपस्वयिों को आध्यात्मकि बातचीत में सांत्वना मलिती थी।

वरषि्ठ इरनिार्ख कभी भी परमेश्वर के चर्च में जाने से चूकते नहीं थे और अक्सर परमेश्वर की परम पवत्रि माता के कैथेड्रल में जाते थे, जहाँ वे आँसुओं के साथ प्रार्थना करते थे।

एक बार, चर्च की प्रार्थना सभा से लौटने के बाद, वह अपनी कोठरी में बैठकर आँसुओं और आहों के साथ मसीह के कष्ट-भोगी, बोरसि और ग्लेब से प्रार्थना करने लगा, और पुकार उठा:

'हे पवत्रि कष्ट-सहने वाले बोरसि और ग्लेब, और सभी मठवासी भाइयो! मठ में आपके लएि तो बहुत जगह है, परन्तु मेरे जैसे पापी के लएि कोई जगह नहीं है।'

वहाँ बैठे-बैठे वह झपकी ले गया और एक हल्के स्वप्न में उसने पवत्रि यातना-सहने वालों को लाजरस के मठ की ओर आते देखा; उसने उनसे पूछा:

'हे पवत्रि शहीदों बोरसि और ग्लेब, आप कतिनी दूर जा रहे हैं?'

'हम आपके पीछे आने आए हैं, हे पति,' उन्होंने उत्तर दयिा, 'हमारे मठ में आइए!'

वह अपनी नींद से जागा और उसने खड़िकी के पास कसिी को प्रार्थना करते हुए सुना। अपनी छोटी सी खड़िकी खोलकर, उसने बोरसि और ग्लेब मठ के एक वृद्ध को देखा, जसिका नाम एफ्रेम था, जसिने कहा:

'फादर, नर्मिाता वरलाम ने मुझे आपके पास भेजा है: अपना व्रत पूरा करने के लएि हमारे मठ में आइए; नर्मिाता पूछते हैं: क्या आपको एक गाड़ी चाहएि, या आप स्वयं मठ आएँगे?'

वरषि्ठ इरनिारह ने उत्तर दयिा:

'मुख्य नर्मिाता वार्लाम को शांति और आशीर्वाद मलि; जहाँ तक मेरी बात है, मैं समय आने पर मठ आ जाऊँगा।'

और उस समय वह पहले से ही भारी बेड़यिाँ पहने हुए था और उसके पैरों में जंजीरों के ताले लगे हुए थे।

जल्दी ही उसने खुद को संभाला और बड़ी प्रसन्नता के साथ अपना व्रत पूरा करने के लएि बोरसिोग्लेब्स्की मठ की ओर चल पड़ा। रास्ते में, अपनी बेड़यिों के भारी बोझ से थका हुआ, वह वशि्राम करने के लएि बैठ गया और थोड़ी देर के लएि झपकी ले गया। अपने सपने में, उसने एक साँप को अपनी ओर सरसराते हुए देखा, जो हमला करने ही वाला था; लेकनि उसने अपनी लाठी से उसके गले पर वार कयिा, और साँप सरसरा कर दूर चला गया। एल्डर अपनी नींद से जागे, उठे, खुद पर क्रॉस का चनि्ह बनाया, और बनिा कसिी नुकसान के अपने रास्ते पर आगे बढ़ गए।

मठ को देखकर, वह पूरे दलि से प्रसन्न हुआ, द्वारों के पास गया और भक्तपिूर्वक प्रार्थना की। मठ में प्रवेश करते हुए, जहाँ उस समय धर्मोपदेश हो रहा था, वह चर्च में गया, अपनी जगह ले लयिा, प्रार्थना की और नर्मिाता को प्रणाम कयिा। नर्मिाता, वरलाम, इरनिार्ख के आगमन से अत्यंत प्रसन्न हुआ; उसने स्नेहपूर्वक उसे चूमा और अपने बगल में बठिा लयिा।

शैतानी ईर्ष्या से, नकिफिोर नामक एक वरषि्ठ पास आया और नर्मिाता से कहा:

'तुमने इस वृद्ध को क्यों आश्रय दयिा है? आखरिकार, वह मठाधीश की आज्ञा नहीं मानता; वह फटे-पुराने वस्त्रों में, नंगे पाँव घूमता है, और अपने शरीर पर लोहे के कई टुकड़े पहनता है।'

---

[995] यह मठ बहुत पहले ही समाप्त हो चुका है; उसकी जगह पर सेंट लाजरस का पैरशि चर्च खड़ा है।

लेकिन निर्माता वरलाम ने इस वृद्ध—जो शैतान के उकसावे पर काम कर रहा था—को अपनी लाठी से एक तरफ धकेल दिया, और इनिरख का खुशी से मठ में वापस स्वागत किया, और उसे एक अलग कोठरी दी।

आदरणीय इनिर्ख चर्च में उपस्थिति होने से कभी चूकते नहीं थे और, भय और कांपते हुए खड़े होकर, पवित्र प्रतिमाओं के सामने भक्तिपूर्वक प्रार्थना करते थे। वे विशेष रूप से हमारे प्रभु यीशु मसीह के सूली पर चढ़ाए जाने और उनके दुखों की प्रतिमा पर अक्सर निहारते थे। एक बार, इस प्रतिमा के सामने खड़े होकर, उन्होंने आँसुओं के साथ निम्नलिखित प्रार्थना की:

– हे धर्मी सूर्य, हमारी सबसे तेजस्वी रोशनी, मानव जाति के प्रभु और प्रेमी, यीशु मसीह! हे प्रभु, आपने इतनी महान पीड़ा सहन की: सूली पर चढ़ाया जाना, उपहास, थूक, गाल पर प्रहार, सिरका और पित्त पीना, और हमारे उद्धार के लिए आपने यह सब अपनी ही सृष्टि के हाथों, उस मूर्ख और कानून तोड़ने वाले यहूदी भीड़ के हाथों, और इन लोगों की ईर्ष्या के कारण सहन किया! अब, हे प्रभु, मुझे, एक पापी और मूर्ख किसान को, प्रकट करें कि मैं कैसे उद्धार पा सकता हूँ और केवल आपको, यीशु मसीह, परमेश्वर के पुत्र को, जो क्रूस पर चढ़ाया गया और त्रित्व में महिमामय है, पिता और पवित्र आत्मा के साथ एक है, प्रसन्न कर सकता हूँ! हे प्रभु, आपकी इच्छा मुझ पर पूरी हो!

और उसी क्षण, प्रभु की प्रतिमा से इनिरख के पास एक संदेश आया:

'अपनी कोठरी में जाओ, एकान्तवासी की तरह रहो और उसे न छोड़ना: इस प्रकार तुम बच जाओगे!'

इनिर्ख निर्माता वरलाम के पास गया और एक तपस्वी के रूप में रहने का आशीर्वाद माँगा, अर्थात् सुसमाचार में प्रभु के वचनों के अनुसार अपनी कोठरी में निरंतर प्रार्थना करना: *'हमें परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने के लिए बहुत कष्टों से होकर गुजरना होगा'* (प्रेरितों के काम 14:22)। *'क्योंकि जो कोई अपना प्राण बचाना चाहता है, वह उसे खोएगा, परन्तु जो कोई मेरा और सुसमाचार का निमित्त अपना प्राण खोएगा, वह उसे बचाएगा'* (मरकुस 8:35)।*"धन्य हैं जो अब भूखे हैं, क्योंकि उन्हें तृप्त किया जाएगा'* (लूका 6:21)। निर्माता वरलाम ने उन्हें उनकी एकांतवास के लिए आशीर्वाद दिया, ताकि वे अपनी कोठरी से निरंतर प्रार्थना करें।

'और ईश्वर ने इस वर्तमान युग में रूसी भूमि और मसीह के महान यातना-भोगियों, बोरिस और ग्लेब, और हमारे पूजनीय पिताओं थियोडोर और पॉल के घर को महिमामंडित किया है!' संकीर्तक, इनिर्क के शिष्य, भिक्षु अलेक्जेंडर, hagiography की घोषणा करते हैं, 'योग्य पुरुषों, शहीदों, शिक्षकों और मार्गदर्शकों द्वारा महिमामंडित!'

उस समय से, इनिरह ने साहसपूर्वक एक नया कारनामा शुरू किया: उन्होंने अपनी कोठरी में अखंड प्रार्थना करना शुरू कर दिया, प्राचीन और आरंभिक काल के संतों को याद करते हुए, कि वे कैसे जंगलों, द्वीपों और गुफाओं में रहते थे, क्षणभंगुर दुनिया को तुच्छ समझते थे और उसकी व्यर्थता को देखने से भी इनकार करते थे।

अपना प्रयास शुरू करने के बाद, इनिर्ख ने तीन साज़ेन लंबी एक लोहे की ज़ंजीर बनाई और उससे खुद को एक लकड़ी की चौकी से बाँध लिया। उसकी सारी गतिविधि केवल इसी ज़ंजीर की लंबाई तक ही सीमित थी। इस ज़ंजीर के अलावा, उसने अपने ऊपर अन्य लोहे के भार भी रख लिए और अपने माथे के पसीने से काम करते हुए कड़ी मेहनत की। उन्होंने अपने साथी संतों से बहुत अपमान और उपहास सहन किया, लेकिन सब कुछ नम्रता से सहन किया और उनके लिए ईश्वर से प्रार्थना की:

'हे प्रभु यीशु मसीह! इसे उनके पाप के रूप में न गिनिए; हे प्रभु, वे यह नहीं जानते कि आपके सेवक क्या कर रहे हैं!'

उस समय, अलेक्ज़ेई नाम का एक व्यक्ति इनिरह के पास आया और वह उनके जीवन-यापन से—उनके अनेक कष्टों, उनके उपवास और प्रार्थना, उनके धैर्य और विनम्रता, और उन भारी बेड़ियों से जो वे लगातार अपने शरीर पर धारण किए रहते थे—प्रभावित हुआ। उसने इनिरह से विनती करना शुरू कर दिया कि वह उसे अपने पास रख लें और प्रभु की आज्ञाओं की शिक्षा दें। वरिष्ठ ने, यह देखकर कि उसकी इच्छा एक शुद्ध हृदय से उत्पन्न हुई थी, नए आगंतुक का आनंद और प्रेम के साथ स्वागत किया; और, एक पुरोहित और एक डिकन को बुलाकर, उन्होंने आदेश दिया कि उसका मुंडन किया जाए और उसे अलेक्जेंडर नाम दिया। यह अलेक्जेंडर इनिरह का पहला शिष्य बना और हमेशा उनके साथ उनकी कोठरी में उनके मार्गदर्शन में रहा, दिन-रात उपवास और प्रार्थना में बड़ी आज्ञाकारिता और उत्साह दिखाता रहा।

इनिरह के एक पुराने मित्र, धन्य जॉन, रोस्तोव और मास्को के पवित्र मूर्ख, जिन्हें 'बिग कैप' उपनाम से जाना जाता था, उनके तपस्थल पर उनसे मिलने आए। तपस्वी के साथ बातचीत में, जॉन ने कहा:

'वरिष्ठ इरनिारह, अपने लिए सौ तांबे के क्रॉस बना लो, जनिमें से प्रत्येक का वजन आधा ग्रविना (यानी, एक चौथाई पाउंड) हो।'

'मेरे लिए, एक गरीब आदमी के लिए, इतने सारे बनाना असंभव है,' इरनिारह ने जवाब दयिा, 'क्योंकि मैं नरि्धन हूँ।'

जॉन ने आपत्ति जताई:

'ये मेरे शब्द नहीं, बल्कि प्रभु परमेश्वर के शब्द हैं: *"आकाश और पृथ्वी मिट जाएँगे, परन्तु प्रभु के वचन कभी नहीं मिटेंगे"* (मत्ती 24:35); जो कुछ कहा गया है वह सब पूरा होगा, और परमेश्वर तुम्हारी मदद करेंगे।'

और यूहन्ना ने उस वृद्ध से और भी बहुत बातें कहीं।

'इस पर आश्चर्यचकति न हो कि यिह तुम्हारे साथ होगा; मानव शब्दों में सब कुछ व्यक्त करना या लखिना असंभव है। ईश्वर तुम्हें एक घोड़ा देगा, और ईश्वर द्वारा दिए गए उस घोड़े पर तुम्हारे सिवा कोई और सवार नहीं हो पाएगा, और न ही कोई तुम्हारे बाद तुम्हारी जगह ले पाएगा।'

इरनिार्ख के महान और कठनि कारनामों के बारे में यूहन्ना के ये रूपक, भविष्यिसूचक शब्द सच हुए। जब वह इरनिार्ख से विदा हो रहा था, तो यूहन्ना ने भविष्यिवाणी करते हुए यह भी घोषति कयिा:

'प्रभु परमेश्वर ने पूर्व से पश्चमि तक अपने विश्वासयोग्य शष्यिों को आज्ञा दी है कि वे लोगों को शक्षिा दें और सखिाएँ, और संसार को अधर्मी मद्यपान से दूर करें। इस मद्यपान के कारण, प्रभु हमारी भूमि पर विदेशी जातयिों को लाएगा। और ये विदेशी जातयिाँ तुम्हारे महान कष्ट देखकर चकति होंगी; उनकी तलवारें तुम्हें हानि नहीं पहुँचाएंगी, और वे विश्वासयोग्यों से भी अधकि तुम्हारा गौरव करेंगे।' – और मैं ज़मीन माँगने के लिए मॉस्को के ज़ार के पास जा रहा हूँ: वहाँ, मॉस्को में, मेरे पास इतने सारे दृश्य और अदृश्य राक्षस होंगे कि हॉप उगाने के लिए खंभे गाड़ना लगभग असंभव हो जाएगा। लेकनि पवत्रि त्रमिूर्ति अपनी शक्ति से उन सभी को भगा देगी।

इस प्रकार धन्य योहन ने अपनी नकिट मृत्यु और मॉस्को पर लथिुआनयिाई आक्रमण के बारे में कहा।

इसके बाद, वृद्ध इरनिार्ख ने धन्य जॉन के शब्दों के अनुसार, और भी अधकि लगन से परश्रिम करना और प्रार्थना करना शुरू कर दयिा, और लगातार तांबे के क्रॉस के बारे में सोचते रहे। एक बार उन्होंने सपना देखा कि एक दोस्त उनके पास आया और उन्हें एक तांबे का क्रॉस दयिा, और एक अन्य अवसर पर उन्होंने सपना देखा कि एक अन्य दोस्त ने उन्हें एक लोहे का डंडा दयिा। और क्या हुआ? कुछ दनिों बाद, एक मत्रि—शहर का एक व्यक्ति इवान—वास्तव में उसके पास आया और, धन्य जॉन की भविष्यिवाणी के अनुसार, एक पवत्रि क्रॉस लाया, जसिसे इरनिार्ख ने सौ क्रॉस बनाए, और ईश्वर तथा धन्य जॉन का धन्यवाद कयिा। – एक और दोस्त, जसिका नाम वासलिी था, आया और उसे एक लोहे का डंडा दयिा, जसिे इरनिार्ख ने ले लयिा और अपने अन्य 'परश्रिमों' या बोझों में जोड़ लयिा।

बोरीसोглебस्की मठ में लयिोन्टयिस नाम के एक वृद्ध थे; वे वृद्ध इरनिार्ख के सद्गुणों और परश्रिमों से प्रेरति थे; उनके जैसे ही, उन्होंने खुद को बेड़यिों में जकड़ लयिा और अपने ऊपर तेईस तांबे के क्रॉस धारण कए। उन्होंने ये क्रॉस इरनिार्ख के शष्यि अलेक्जेंडर को दे दए, जबकि वे स्वयं रेगस्तिान में जाने का आशीर्वाद मांगने के लिए बड़े भाई के पास गए। बड़े भाई इरनिार्ख ने उन्हें रेगस्तिान में न जाने के लिए मनाने की कोशशि की, ताकि उन्हें डाकुओं द्वारा मार न डाला जाए। लेकनि लयिोन्टयिस अपने आशीर्वाद की मांग पर अड़े रहे।

उसे मना न सकीं, तो इरनिारह ने उसे आशीर्वाद दे दयिा, लेकनि विदा करते हुए उन्होंने आँखों में आँसू लिए उससे कहा:

'मेरे प्रयि पुत्र, लयिोन्टयिस! तुम पवत्रि क्रॉस के लिए कभी यहाँ वापस नहीं आओगे।'

'अगर ऐसा है,' लयिोन्टयिस ने जवाब दयिा, 'तो मेरी क्रॉसें तुम्हारे पास ही रहें!'

इरनिारह को विदा कहने के बाद, लयिोन्टयिस पेरयिास्लाव जलि के लिए रवाना हो गए, कुरबुई में स्थति 'भगवान की सर्वपवत्रि माता' के मठ की ओर, जहाँ डाकुओं ने उनकी हत्या कर दी।

इरनिारह ने लयिोन्टयिस के क्रॉस को अपनी खुद की 'मेहनत' के क्रॉस के साथ जोड़ दयिा, और कुल मलिाकर उसके पास एक सौ बयालीस क्रॉस हो गए। उस बूढ़े ने छह साल तक तीन साज़ेन लंबी ज़ंजीरों में मेहनत की; उग्लचि शहर का एक धर्मनष्ठि ईसाई भी बूढ़े को तीन साज़ेन लंबी एक ज़ंजीर भेज दी, और इन दोनों ज़ंजीरों में इरनिारह ने 12 साल तक मेहनत की। बोरीसोглебस्की मठ के थयिोडोरेट नामक एक वृद्ध ने अपने लिए तीन साज़ेन लंबी एक लोहे की ज़ंजीर बनाई और उसमें बीस साल और पाँच सप्ताह तक श्रम कयिा; लेकनि मठाध्यक्ष, हर्मोजेनेस ने उन्हें मठ की सेवाओं में शामलि

होने और भाईचारे के लिए काम करने का आदेश दिया। थियोडोरेट ने अपनी ज़ंजीर इरनिरह को दे दी, जिससे उसकी ज़ंजीर नौ साज़ेन लंबी हो गई, और वह इस ज़ंजीर में मेहनत करता रहा। कुल मिलाकर, उसने पच्चीस साल ज़ंजीरों में बिताए।

इरनिर्ख का कठोर जीवन और उनके कठोर उपदेश उन भिक्षुओं के लिए एक फटकार के रूप में थे जो अपने मठ के संकल्पों का पालन करने का कोई प्रयास नहीं करते थे, बल्कि किई तरह से उनका उल्लंघन करते थे। बोरिसोग्लेब्स्क समुदाय के ऐसे ही भिक्षु, शत्रु के भड़काने पर, मठाधीश हर्मोजेनेस के पास गए, इरनिर्ख के जीवन-पद्धति की निंदा करते हुए और उनकी शिकायत करते हुए।

उन्होंने कहा, 'वरिष्ठ इरनिरह एकांत में रहते हैं और उपवास करते हैं, कई भारी जंजीरों को पहनते हैं, कोई नशीला पेय नहीं पीते और बहुत कम खाते हैं, और भाईचारे को भी यही करने की शिक्षा देते हैं: "कष्ट में" रहने और उपवास करने की, और अपने मुँह में कोई नशीला पेय न लेने की, यह कहते हुए कि यह सबसे बड़ी बुराई है; वे कहते हैं कि भिक्षुओं को स्वर्गदूतों जैसा होना चाहिए, किसी भी बात पर शोक नहीं करना चाहिए और अपने शरीर को बिल्कुल भी नहीं बख्शना *चाहिए: 'हमें बहुत कष्टों के द्वारा परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना है'* (प्रेरितों के काम 14:22); वे भाइयों को उनके कर्तव्यों—अर्थात् भिक्षु जीवन के श्रम—को पूरा करने की अनुमति नहीं देते, बल्कि उन पर बड़े 'श्रम' थोपते हैं।

शत्रु और अपनी ही निर्दयता के प्रलोभन में आकर, आबट हर्मोजेनेस ने इन बदनामियों पर ध्यान दिया और वृद्ध इरनिर्ख को मठ से निर्वासित कर दिया, ईश्वर का भय न मानते हुए और वृद्ध की तपस्या तथा परिश्रम का कोई सम्मान न करते हुए। वरिष्ठ इरनिर्ख ने प्रभु के वचन को याद करते हुए नम्रतापूर्वक आज्ञा मानी: *'यदि वे तुम्हें एक घर से निकाल दें, तो दूसरे में चले जाओ; और मैं युग के अंत तक तुम्हारे साथ हूँ'* (मत्ती 10:23, 28:20)।

बोरीसोглебस्की मठ से निष्कासित होने के बाद, इरनिर्ख एक बार फिर रोस्तोव के लिए रवाना हुए और सेंट लाजरस के मठ में फिर से बस गए, जहाँ उन्होंने एक साल और दो सप्ताह बिताए, स्वयं को निरंतर उपवास और प्रार्थना के लिए समर्पित करते हुए और अपने मृत्यु के क्षण पर ध्यान केंद्रित करते हुए।

इस बीच, मठाध्यक्ष हर्मोजेनेस को एहसास हुआ कि उन्होंने इरनिर्ख के प्रति अन्याय किया था, उन्होंने भ्रातृसंघ के समक्ष पश्चाताप किया, और इरनिर्ख को वापस बुलाने के लिए एक भिक्षु भेजा। संदेशवाहक ने कहा:

'पिताजी, हमारे अपराध को हमारे विरुद्ध न रखें; अपना वचन निभाएँ और हमारे मठ में पवित्र कष्ट-भोगी बोरिस और ग्लेब के पास आएँ।'

वरिष्ठ इरनिर्ख प्रार्थना करते हुए मठ लौट आए:

'हे प्रभु यीशु मसीह, परमेश्वर के पुत्र, मुझे अपनी अनंत आशीर्वादों से वंचित न करें; मुझे, एक पापी वृद्ध को, अपना व्रत पूरा करने की अनुमति दें।'

मठ से अपने निष्कासन का सारा दोष स्वयं पर लेते हुए, उन्होंने कहा:

'हे प्रभु, मैं भाइयों के विरोध में इस कालकोठरी में रहता हूँ; वे धर्मी हैं और आपको धर्मी परिश्रम अर्पित करते हैं, जबकि मैं, एक दीन प्राणी, सद्गुण से रहित हूँ।'

वे अपनी कोठरी में लौट आए, एक बार फिर अपने 'लोहे के श्रम' को अपनाया और तपस्या के अपने प्रयासों में जुट गए, ज़ार और सभी ऑर्थोडॉक्स ईसाइयों के लिए प्रार्थना करते हुए, और उनसे प्रेम करते हुए जो उनसे घृणा करते थे, जैसे वे अपनी आत्मा से प्रेम करते थे।

प्रभु ने इरनिरह को विवेक का वरदान और मानव आत्मा के रहस्यों की समझ प्रदान की। कई शहरों से लोग उनके पास आते, उनका आशीर्वाद मांगते और प्राप्त करते थे। कई ईश्वर-भयभीत लोगों ने उन्हें दान दिया; उन्होंने उसे स्वीकार किया और खुशी-खुशी गरीबों और यात्रियों में बांट दिया, उन्हें भोजन और कपड़े प्रदान किए।

वे उनके पास आने वालों को आज्ञाएँ सिखाते थे, उन्हें पाप से दूर करते थे और उनके छिपे हुए अपराधों को उजागर करते थे; उनका आशीर्वाद प्राप्त करने के बाद, वे प्रभु की आज्ञाओं के मार्ग पर लौट आए।

बोरीसोглебस्की मठ में टिकोन नामक एक वरिष्ठ थे। ईश्वर को प्रसन्न करने के बारे में सोचते हुए, उन्होंने अपने ऊपर 'तपस्याएँ' थोपीं, एक लोहे की ज़ंजीर बनाई, और सात साल तक इन 'तपस्याओं' में बैठे रहे। उस समय, पोलिश और लिथुआनियाई स्वामी पहले से ही रस में तबाही और विनाश मचा रहे थे, और उनके आक्रमण की भविष्यवाणी धन्य पवित्र मूर्ख जॉन ने इरनिर्ख से कर दी थी। साधु टिकोन, कुलीनों के हमले के डर से, मठ से चले गए और अपनी लोहे की ज़ंजीर इरनिरह को दे दी; तब तक, उस ज़ंजीर की लंबाई बीस साज़ेन तक बढ़ चुकी थी। इस लंबी ज़ंजीर के साथ, इरनिरह पहले की तरह ही मेहनत करता रहा, उसने कभी अपने हाथों को आराम नहीं दिया: कभी-कभी वह बाल-गुँथनी बुनता, तो

कभी वह कफ़न बनाता, और कभी-कभी वह गरीबों के लिए कपड़े तैयार करता। वह लगातार गरीबों को दान देता था, ज़रूरतमंदों की मदद करता था, ताक़तवरों के अत्याचार से कमज़ोरों की रक्षा करता था, और सभी के लिए ईश्वर से प्रार्थना करता था। लंबी अवधि तक वह कभी-कभी किसी भी व्यक्ति को नहीं देखता था, और अपनी कठिन मेहनत के कारण वह कभी-कभी बीमार पड़ जाता था, एक ऐसी स्थिति का वह हमेशा स्वागत करता था और जिसके लिए वह ईश्वर का धन्यवाद करता था। वह केवल रात में सोता था, और वह भी एक, दो या तीन घंटे से अधिक नहीं, जबकि प्रार्थना करते समय वह अपने लोहे के दंड से अपने शरीर पर प्रहार करता था।

लिथुआनियाई आक्रमण से भी पहले, हल्की नींद में इरिनारह को एक दर्शन हुआ: मॉस्को शहर को लिथुआनियाई लोगों ने तबाह कर दिया था, और पूरे रूसी साम्राज्य को कैद कर लिया गया और कई जगहों पर जला दिया गया। जागने पर, वह आने वाली कैद और ईश्वर के पवित्र चर्चों के उजाड़ होने के विचार से बेसुध होकर रोने लगा। जब वह अपने रोने से कुछ शांत हुआ, तो अचानक ऊपर से एक प्रकाश उसकी ओर चमका, और उस प्रकाश से एक आवाज सुनाई दी:

'मास्को जाओ और उन्हें बता दो कि यह सब होने वाला है।'

उन्होंने खुद पर क्रॉस का निशान बनाया और प्रार्थना की। वही आवाज़ दूसरी बार सुनाई दी:

'ऐसा ही होगा!'

एल्डर ने एक बार फिर से क्रॉस का चिन्ह बनाया और प्रार्थना करने लगे:

'हे प्रभु यीशु मसीह, परमेश्वर के पुत्र! मुझ पापी पर दया करो, और मुझे परीक्षा से बचाओ: मैं पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा का सेवक हूँ, और मैं इस संसार में कुछ भी देखना नहीं चाहता।'

लेकिन वही आवाज़ तीसरी बार सुनाई दी:

'अवज्ञा मत करो, बल्कि जैसा यह आवाज़ आज्ञा देती है वैसा करो: इस अवज्ञाकारी वंश के लिए सब कुछ घटित होगा।'

वरिष्ठ उस दर्शन और स्वर्ग से आई आवाज़ से भयभीत हो गए; उन्होंने मठाधीश को बुलाया और उन्हें सब कुछ बता दिया। मठाधीश ने उन्हें मास्को जाने और ज़ार वासिली इओआनोविच[996] को सूचित करने का आदेश दिया कि मास्को का साम्राज्य और पूरी रूसी भूमि लिथुआनियाई लोगों के हाथों कैद का सामना करने वाली है।

वरिष्ठ इरिनारह मॉस्को के लिए रवाना हो गए। रास्ते में, पेरियास्लाव में, वे निकित्स्की मठ के पास अस्तबल में एक चौराहे पर रुके और अपने दोस्त, निकित्स्की के डीकन ओनुफ्रियस को बुलवाया, जबकि वे स्वयं पेरियास्लाव के चमत्कारी संत निकिता से प्रार्थना करने और उनके अवशेषों का पूजन करने चले गए। उस समय डिकन ओनुफ्री बुखार से गंभीर रूप से बीमार था, इतना कि कंपकंपी से पीड़ित होकर वह खुद को गर्म करने के लिए भट्टी पर चढ़ जाता था। ऐसा माना जाता था कि यह बीमारी शैतान की साजिशों का परिणाम थी। दीकन ओनुफ्रीयस ने, एल्डर इरिनार्ख के आशीर्वाद से, पेरियास्लाव में बोरिस और ग्लेब मठ के पीछे स्थित एक बड़े पत्थर की अंधविश्वासी पूजा को समाप्त कर दिया। हर साल, संत पीटर और पॉल के पर्व के दिन, पुरुषों, महिलाओं और बच्चों की एक बड़ी भीड़ इस पत्थर पर इकट्ठा होती थी और उसे श्रद्धांजलि अर्पित करती थी। डीकन ने उस पत्थर को एक गड्ढे में फेंकने का आदेश दिया, ताकि भविष्य में लोग उसके चारों ओर इकट्ठा न हों। ओनुपhrius के इस कार्य से कई लोगों को अच्छा नहीं लगा; उस धर्मनिष्ठ डीकन ने कई लोगों से, यहाँ तक कि अपने ही रिश्तेदारों और पुरोहित वर्ग के सदस्यों से भी, निंदा, अपमान और उपहास को सहा - और यहाँ तक कि बदनामी और कानूनी कार्यवाहियों से होने वाले वित्तीय नुकसान को भी; इसके अलावा, वह बीमारी से ग्रस्त हो गया – फिर भी डीकन ओनुपhrius ने दृढ़ता से यह सब सहन किया; उसने शिकायत नहीं की, ईश्वर की दया पर भरोसा रखते हुए और अपनी मृत्यु के समय का ध्यान रखते हुए, न ही उसने उपचार के लिए ईश्वर के शत्रुओं, विभिन्न ठगों का सहारा लिया। जैसे ही ओनुफ्रीयस इरिनारह की उपस्थिति में पहुँचा, बुजुर्ग ने उसकी गंभीर बीमारी को देख लिया; उसे गाल पर चूमने के बाद, उन्होंने उसे रोटी का एक चौथाई टुकड़ा दिया, उस पर आशीर्वाद दिया और कहा:

'यह भोजन तुम्हारे स्वास्थ्य को पुनर्स्थापित करे!'

और डिकन को तुरंत राहत महसूस हुई और वह स्वस्थ हो गया। इरिनार्ख अपने शिष्य, वृद्ध अलेक्जेंडर के साथ मास्को पहुँचे। वे रात में, भोर से एक घंटा पहले पहुँचे। सुबह, वे परम पवित्र ईश्वर की माता के सुलापन के कैथेड्रल गए और ईश्वर की माता तथा चमत्कारी, मेट्रोपॉलिटिन पीटर और योना से प्रार्थना की। सिमिओन नामक एक बोयार का बेटा,

[996] बेशक, यहीं पर ज़ार वासिली इवानोविच शुइस्की, जिन्होंने 1606 से 1610 तक शासन किया,

ज़ार के पास गया और उसे वृद्ध के आगमन की सूचना दी। ज़ार बहुत प्रसन्न हुआ और उसने आदेश दिया कि इरिनार्ख घोषणा के कैथेड्रल आएं। संन्यासी चर्च में प्रवेश किया, परम पवित्र ईश्वर की माता से प्रार्थना की, पवित्र क्रॉस से ज़ार को आशीर्वाद दिया और उसे चूमा। ज़ार ने भी संन्यासी को स्नेहपूर्वक चूमा और उनके द्वारा सहन किए गए महान 'कष्टों' पर आश्चर्य व्यक्त किया। संन्यासी ने ज़ार वासिली इओआनोविच से कहा:

'प्रभु ईश्वर ने मुझे, एक पापी एल्डर को, यह प्रकट किया है: मैंने पोलिश लोगों द्वारा कब्जा किए गए मॉस्को शहर और संपूर्ण रूसी राज्य को देखा है। और इसलिए, कालकोठरी में अपने लंबे कारावास से निकलकर, मैं स्वयं यह घोषणा करने के लिए आपके पास आया हूँ। और आप, साहस और बहादुरी के साथ मसीह के धर्म के लिए दृढ़ रहें।'

यह कहकर, इरिनारह चर्च से बाहर निकल गए। ज़ार वासिली इओआनोविच ने संत को एक बांह से पकड़ा, जबकि उनके शिष्य अलेक्जेंडर ने उन्हें दूसरी बांह से पकड़ा।

ज़ार ने एल्डर से ज़ारिना को भी आशीर्वाद देने के लिए कहा। एल्डर ने मना नहीं किया; वह ज़ार के साथ कक्ष में गए और ज़ारिना मारिया पेट्रोव्ना को आशीर्वाद दिया और फिर कक्ष से चले गए। ज़ारिना ने एल्डर के पीछे दो तौलिये भेजे, लेकिन उन्होंने उन्हें स्वीकार नहीं किया। ज़ार वासिली ने उन पर ज़ोर दिया:

'इन्हें ले लो, भगवान के लिए!'

लेकिन इरिनारह ने ज़ार से कहा:

'मैं उपहारों के लिए नहीं आया हूँ; मैं तो आपके लिए सत्य का उद्घोष करने आया हूँ!'

ज़ार ने इरिनारख को ज़ारिना के कक्ष से बाहर तक विदा किया और महल के एक बोयार को बुजुर्ग को भोजन देने का आदेश दिया। फिर ज़ार ने आदेश दिया कि बुजुर्ग को उसकी अपनी गाड़ी और एक सारथी दिया जाए, और उसे बोरिसि और ग्लेब मठ तक विदा किया जाए। बोयार द्वारा दिए गए कुछ रोटी खाकर, इरिनारख अपनी वापसी यात्रा पर निकल पड़े, मॉस्को में केवल बारह घंटे बिताने के बाद।

बोरीस और ग्लेब मठ लौटने पर, इरिनार्ख अपनी कोठरी में गए और एक बार फिर उपवास और प्रार्थना में अपने श्रम और तपस्या में खुद को समर्पित कर दिया, जबकि उन्होंने शासक के सारथी और रथ को मास्को वापस भेज दिया, यह प्रार्थना करते हुए कि प्रिभु अपना क्रोध शांत करें और मास्को पर दया करें, जैसा कि उन्होंने एक बार निनिवे पर दया की थी।

आदरणीय इरिनार्ख की मॉस्को की यात्रा और विपत्तियों की भविष्यवाणी के तुरंत बाद, लिथुआनियाई रूसी भूमि पर प्रकट हुए—जो दुष्ट और क्रूर लोग और निर्दयी अपमान करने वाले थे। उस समय, हमारे क्षेत्रों में 'लिथुआनियाई' शब्द का उपयोग पोलिश-लिथुआनियाई साम्राज्य के सभी प्रजाजनों को संदर्भित करने के लिए किया जाता था: पोलिश, या 'लाच', स्वयं लिथुआनियाई, और सफेद और लिटिल रूस के रूसी; इनमें से लिटिल रूसी में कई कोसैक्स थे। धर्म के मामले में, हमारे लगभग सभी दुश्मन कैथोलिक या यूनिएट थे, जिन्होंने ऑर्थोडॉक्स चर्चों और अन्य पवित्र स्थानों के प्रति कोई दया नहीं दिखाई। उन्होंने रूसी भूमि पर आक्रमण करना और निवासियों का नरसंहार करना शुरू कर दिया; उन्होंने कई शहरों पर कब्ज़ा कर लिया—उदाहरण के लिए, उन्होंने दिमित्रोव शहर को जलाकर राख कर दिया—ईश्वर के चर्चों का अपमान किया, पवित्र वेदियों को गिरा दिया, उन्हें उनके वस्त्रों से वंचित कर दिया, आइकनों (चित्रों) के फ्रेम उतार दिए, और आइकनों को ही एक तरफ फेंक दिया; उन्होंने किताबों को लूट लिया और अक्सर चर्चों को खुद जला दिया। कई रूसी, सज़ा के डर से, उनके अधिकार को स्वीकार कर लिया, कर अदा किया और राशन प्रदान किया। कई शहर उनके सामने आत्मसमर्पण कर गए। 1609 में, रोस्तोव द ग्रेट शहर पर कब्जा कर लिया गया और उसे जलाकर राख कर दिया गया; सर्वपवित्र परमेश्वर की माता के डोर्मशिन के कैथेड्रल चर्च का अपमान किया गया, महान चमत्कार करने वालों लियोन्टियस और यशायाह के अवशेष-पात्रों को, साथ ही चर्च के सभी सामान और कोषागार को लूट लिया गया। दोनों लिंगों और सभी उम्र के बहुत से लोगों को तलवार का शिकार कर दिया गया। उस समय ऑर्थोडॉक्स लोगों को भारी करों के बोझ तले बहुत कष्ट झेलने पड़े, और कोई राहत न दिखने पर, कई शहरों ने दुश्मनों के खिलाफ खुद को घेरना शुरू कर दिया। यह वह समय था जब, ज़ार वासिली इओआनोविच शुइस्की के शासनकाल के दौरान, हमारे दुश्मनों ने दूसरे झूठे दिमित्री को आगे बढ़ाया और उसके या उसके संरक्षक, पोलैंड के राजा, के सामने आत्मसमर्पण करने की मांग की।

मास्को और ज़ार के सिंहासन पर कब्ज़ा करने के उद्देश्य से, दुश्मन मास्को के पास इकट्ठा हुए और वहां से छापे मारे और आसपास के क्षेत्रों को लूट लिया। दूसरे धोखेबाज़ ने तुशिनो गांव के पास अपना डेरा डाल लिया।

दुश्मनों ने बोरसि और ग्लेब मठ को भी चैन से नहीं रहने दयिा, जहाँ इरनिार्ख एक भकि्षु के रूप में रह रहे थे। एक दुश्मन वोइवोड, मकिुलस्कि़ी, रोस्तोव शहर को लूटने, यारोस्लाव के पास के बस्तयिों को जलाने और उग्लचि शहर को तबाह करने के बाद, उस्टे में बोरसि और ग्लेब के मठ में आया। वहाँ, कई कुलीनों के साथ, वह बूढ़े की कोठरी में गया और उनके वशि्वास की परीक्षा लेने लगा:

'तुम कसि पर वशि्वास करते हो?'

'मैं पवत्रि त्रमिूर्त,ि पतिा, पुत्र और पवत्रि आत्मा में वशि्वास करता हूँ,' वृद्ध ने उत्तर दयिा।

'और आपका सांसारकि शासक कौन है?'

और वरषि्ठ ने ऊँचे स्वर में घोषणा की:

'मैं रूसी ज़ार वासलिी इओआनोवचि को मानता हूँ; मैं रूस में रहता हूँ, और मैं रूसी ज़ार को मानता हूँ; मैं कहीं और कसिी को नहीं मानता।'

एक सज्जन ने बुजुर्ग से कहा:

'तुम, बूढ़े, एक गद्दार हो: तुम न तो हमारे राजा में वशि्वास करते हो और न ही दमित्रिी में।'

बुजुर्ग ने उत्तर दयिा:

'मैं तुम्हारी प्राणघातक तलवार से जरा भी नहीं डरता, और मैं न तो अपनी आस्था का और न ही रूस के ज़ार का वशि्वासघात करूँगा; अगर तुम मुझे इसके लिए मार भी डालोगे, तो मैं इसे खुशी-खुशी सह लूँगा: मुझमें तुम्हारे लिए बहुत कम खून है, लेकनि मेरे जीवति ईश्वर के पास एक ऐसी तलवार है जो तुम्हें बनिा मांस या रक्त के, अदृश्य रूप से मार गरिाएगी, और तुम्हारी आत्माओं को अनंत यातनाओं में भेज देगी।'

पान मकिुलस्कि़ी चकति रह गए: ऐसी थी उस बूढ़े की आस्था।

कुछ समय बाद, रूसी सेनाओं ने दुश्मन के खलिाफ इकट्ठा होना शुरू कर दयिा। राजकुमार मखिाइल स्कोपनि-शुइस्की नोवगोरोड से रूसी और स्वीडशि सैनकिों के साथ आए और लथिुआनयिाई लोगों का सामना करने के लिए कालयिाज़नि में मोर्चा संभाल लयिा। पान सापएिहा ट्रनिटिी-सर्गीय लावरा के आसपास से अपनी सेना के साथ उनके खलिाफ आगे बढ़े। लेकनि, ईश्वर की कृपा से, महान चमत्कार करने वालों के हस्तक्षेप से और वृद्ध की बातों के अनुसार, मस्कोवाइट सेनाओं ने लथिुआनयिाई लोगों को हरा दयिा, और पैन सापएिहा अपनी सेना के साथ पीछे हट गया और उस्ट्ये में बोरसिोग्लेब्स्की मठ से दो रातों की दूरी पर रुक गया, मठ को जलाने और मठवासी समुदाय का कत्लेआम करने का इरादा रखता था। मठ में महान संकट और दुख उत्पन्न हो गया, और भाइयों ने एक-दूसरे से वदिा ली। हालाँकि, वृद्ध इरनिार्ख ने अपने शषि्यों अलेक्जेंडर और कॉर्नेलयिस को सांत्वना देना शुरू कर दयिा:

'हम एक अलग धर्म वालों से जलने या सरि कटवाने से न डरें: अगर वे हमें जलाते या सरि काटते हैं, तो हम नए शहीद बन जाएँगे और हमारे प्रभु ईश्वर, मसीह, से स्वर्ग में अपने मुकुट प्राप्त करेंगे।'

तब इरनिार्ख ने आने वाली वपित्तसि मुक्तकि लिए और पवत्रि मठ के प्रतशित्रुओं के हृदय में दया और करुणा उत्पन्न करने के लिए प्रभु परमेश्वर से एक भक्तपिूर्ण प्रार्थना की। उसी क्षण, कप्तान करिबटि्स्की मठ में पहुँचे और बूढ़े संत के कक्ष में प्रवेश कयिा: उन्होंने उनका आशीर्वाद लयिा और बूढ़े संत के कार्यों को देखकर चकति रह गए। सापएिहा के पास लौटकर, उन्होंने कहा:

'बोरीस और ग्लेब के मठ में, मुझे तीन साधु जंजीरों में जकड़े हुए मलि।'

सापएिहा स्वयं संत को देखना चाहते थे और अपने आगमन की सूचना देने के लिए एक सज्जन को पहले भेज दयिा। संत ने दूत से कहा:

'यदि वह सज्जन मलिने आना चाहते हैं, तो वे अपनी मर्जी से हमारे पास आएँगे।'

यह उत्तर सुनकर, सापएिहा मठ पहुँचे, वृद्ध की कोठरी में प्रवेश कयिा और उससे कहा:

'मुझे आशीर्वाद दीजए, पतिाजी! आप इतनी बड़ी पीड़ा कैसे सहन करते हैं?'

बड़े ने उत्तर दयिा:

'ईश्वर के लिए, मैं इस कोठरी में इस जेल और इस पीड़ा को सहता हूँ।'

कई सरदारों ने सापएिहा से कहना शुरू कर दयिा:

'यह वृद्ध हमारे राजा या दमित्रिी के लिए नहीं, बल्कि शुइस्की के ज़ार के लिए ईश्वर से प्रार्थना करता है।'

वरषि्ठ ने आपत्तजिताई:

'मैं रूस में जन्मा और बपतस्मिा लयिा; मैं रूसी ज़ार के लिए ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ।'

सापएिहा ने कहा:

'इस कहावत में बहुत सच्चाई है: जसि देश में कोई रहता है, उसे उसी ज़ार की सेवा करनी चाहिए।'

'क्या तुम्हें लूटा गया है, बूढ़े?' स्वामयिों ने पूछा।

वृद्ध ने उत्तर दयिा:

'क्रूर कुलीन सुशनिस्की आया और उसने पूरे मठ को लूट लयिा, सर्फि मुझे नहीं, एक पापी बूढ़े आदमी को।'

सापएिहा ने कहा:

'इसीलएि, स्वामी सुशस्कि की को फांसी दी गई।'

उसके बाद, बूढ़े भक्षिु ने लॉर्ड सापएिहा को यह सलाह दी:

'श्रीमान, अपने देश लौट जाइए: आपने रूस में युद्ध लड़ने का काफी अनुभव कर लयिा है! यदि, तथापि, आप रूस नहीं छोड़ते या रूस लौटकर ईश्वर के वचन पर ध्यान नहीं देते, तो आप रूस में मारे जाएँगे।'

पैन सापएिहा इन शब्दों से गहराई से प्रभावति हुए और कहा:

– मैं आपको कैसे पुरस्कृत करूँ? न तो यहाँ और न ही कसिी अन्य देश में मैंने कभी इतना दृढ़ और नडिर भक्षिु देखा है।

वरष्ठि ने कहा:

'मैं पवत्रि आत्मा का शत्रु नहीं हूँ; मैं पवत्रि आत्मा से ही जीवति रहता हूँ। और पवत्रि आत्मा आपको जो कुछ करने के लिए प्रेरति करे, वही आप करेंगे।'

सापएिहा ने कहा:

'मुझे क्षमा करें, पतिाजी!' – और, झुककर, वह वदिा हो गया।

तब सापेगा ने उस वृद्ध को दान में पाँच रूबल भेजे और अपनी सेना को मठ को कोई हानि पहुँचाने का आदेश दयिा। जल्द ही सापएिहा अपनी सेना के साथ पेरयिास्लाव के लिए रवाना हो गया, जबकि मठ में इस बात की बड़ी खुशी थी कि ईश्वर ने उन्हें वनिाश से बचा लयिा था; बूढ़े ने, अपनी ओर से, पूरी रूसी भूमि को कैद से मुक्ति दिलाने के लिए आँसुओं के साथ ईश्वर से अखंड प्रार्थना की।

कल्याज़नि में वजिय के बाद, राजकुमार मखिाइल शुइस्की ने लथिुआनयिाई लोगों का पीछा करना शुरू कर दयिा और पेरयिास्लाव्ल से इरनिार्ख नामक वृद्ध से आशीर्वाद मांगने के लिए एक संदेश भेजा। इरनिार्ख ने उन्हें एक आशीर्वाद, एक प्रॉस्फोरा और एक क्रॉस भेजा, और उन्हें यह कहने का नर्दिेश दयिा:

'हौसला रखो, और ईश्वर तुम्हारी मदद करेगा!'

राजकुमार ने अलेक्ज़ान्ड्रोव्स्काया बस्ती के लिए एक टुकड़ी भेजी, और ईश्वर की मदद से, रूसी योद्धाओं ने लथिुआनयिाई लोगों को हरा दयिा। इसके तुरंत बाद, राजकुमार स्वयं वहाँ गए और बस्ती में रहने लगे। दुश्मन घेराबंदी में पड़े ट्रनिटिी मठ और मास्को के उपनगरों से उसके खलिाफ इकट्ठा होने लगा। राजकुमार को इस बात की खबर मलिी और वह बहुत परेशान हो गया। उसने फरि से आदरणीय इरनिार्ख के पास एक दूत भेजा। संत ने एक बार फरि उसे अपना आशीर्वाद और एक प्रोस्फोरा भेजा और उसे यह कहने का नर्दिेश दयिा:

'प्रसि मखिाइल, हौसला रखो और डरो मत: ईश्वर तुम्हारी मदद करेगा।'

और राजकुमार ने लथिुआनयिाई लोगों को हरा दयिा। फरि राजकुमार ने अपनी एक वॉयवोड को एक सेना के साथ ट्रनिटिी मठ भेज दयिा, और वॉयवोड सुरक्षति रूप से मठ में पहुँच गया। राजकुमार ने फरि से इरनिारह के पास उपहारों के साथ एक दूत भेजा, और वृद्ध ने अपना आशीर्वाद और एक प्रोस्फोरा भेजते हुए, उसे ट्रनिटिी मठ जाने का नर्दिेश दयिा, जो राजकुमार ने कयिा। यह सुनकर, सापएिहा दमित्रिोव के लिए रवाना हो गया। राजकुमार सुरक्षति रूप से ट्रनिटिी मठ पहुँचे, मठ में प्रवेश कयिा और परम पवत्रि त्रमिूर्ति और पूजनीय सर्गयिस से प्रार्थना की, तथा परमेश्वर, परमेश्वर की परम पवत्रि माता और रूसी चमत्कार-कारकों की महमिा की। सापएिहा के खलिाफ भेजी गई सेना ने उसे दमित्रिोव के पास परास्त कर दयिा, और सापएिहा वोल्कोलामस्क में जोसेफ मठ में भाग गया। इसी समय, एक दूसरा धोखेबाज़ तुशनिो से कलुगा भाग गया, जहाँ बाद में उसकी हत्या कर दी गई। इन सफलताओं के बाद, राजकुमार मखिाइल त्रनिटिी मठ से मास्को गए, उन्होंने सर्वपवत्रि परमेश्वर की माता के सोमोवेशन के कैथेड्रल में प्रार्थना की, व्लादमिीर की सर्वपवत्रि परमेश्वर की माता की प्रतमिा और चमत्कारी संतों के अवशेषों का पूजन कयिा, और प्रसन्न होकर अपने घर लौट आए।

वरष्ठि इरनिार्ख, जो इन सभी घटनाओं से अवगत थे, ने अपने शष्यि अलेक्जेंडर को मॉस्को में प्रसि माइकल के पास पवत्रि क्रॉस वापस लेने के लिए भेजा, जो उन्हें सुरक्षा के लिए और वरिोधी को भगाने के लिए दयिा गया था। प्रसि ने क्रॉस सौंप दयिा और वरष्ठि को धन्यवाद का संदेश और उपहार भेजे। अलेक्जेंडर ने यह सब अपने गुरु तक पहुँचाया।

पवत्रि क्रॉस को प्रसन्नतापूर्वक प्राप्त करने के बाद, पूजनीय इरनिार्ख ने नम्निलखिति प्रार्थना कही:

– महमिा तेरी हो, हे प्रभु, मानवता के प्रेमी, यीशु मसीह, हे परमेश्वर के पुत्र, जन्हिोंने हमारे उद्धार के लिए इस पवत्रि और जीवन-दायक क्रूस पर सूली पर चढ़ाए जाने और मृत्यु को सहन कयिा, और जन्हिोंने इस पवत्रि क्रूस के माध्यम से हमारे लोगों पर दया और चमत्कार दखिाए, प्रसि माइकल को लथिुआनयिाई लोगों के खलिाफ सहायता प्रदान की, वजिय और उनके नष्किासन के लिए, ठीक वैसे ही जैसे प्राचीन काल में ज़ार कॉन्स्टेंटनि के अधीन वरिोधयिों के खलिाफ।

क्रॉस को भेजे जाने के तुरंत बाद, राजकुमार माइकल प्रभु के पास चले गए। हालाँकि, मानव जाति के शत्रु, वृद्ध इरनिार्ख द्वारा लज्जति कए जाने के बाद, ने उनके खलिाफ नई साजशिें रचीं।

पतिृप्रधान हरमोजेनेस द्वारा बोरसि और ग्लेब मठ में समिोन नामक एक नया मठाधीश भेजा गया; वह क्रूर, नर्दियी, असंयमी और शराबी नकिला। उसने वृद्ध इरनिार्ख को प्रार्थना करने के लिए चर्च जाने का आदेश दयिा; फरि भी वृद्ध, जो भारी लोहे के 'तप' (प्रायश्चति) का भार उठाए हुए थे, उपवास और प्रार्थना के द्वारा दनि-रात अपने शरीर को कष्ट देते हुए, अपनी कोठरी में भी स्वतंत्र रूप से नहीं चल सकते थे। नर्मिम मठाधीश समिोन, जसिकी क्रूरता अवश्विासयिों से भी बढ़ गई थी, भाइयों के साथ वृद्ध की कुटयिा में आया और बनिा कसिी दया के, वृद्ध द्वारा संचति की गई हर चीज़ को ले गया। केवल चार पूड शहद बच गए थे, जैसा कि उनके शष्यि अलेक्जेंडर ने वृद्ध को बताया। इस अवसर पर, वृद्ध को एक ऐसे तपस्वी की याद आई जन्हिें डाकुओं ने लूट लयिा था, जन्हिोंने एक वस्तु पीछे छोड़ दी थी; तपस्वी ने डाकुओं का पीछा कयिा और उनसे कहा कि उन्होंने सब कुछ नहीं लयिा था; डाकू दयालु हो गए और सब कुछ तपस्वी को वापस कर दयिा। अब, हालाँकि, जब इरनिार्ख के आदेश पर, उनके शष्यि अलेक्जेंडर ने मठाधीश को सूचति कयिा कि सब कुछ नहीं लयिा गया था, तो मठाधीश उन प्राचीन डाकुओं से भी अधकि दयालु नहीं नकिला और जो कुछ बचा था, वह भी ले गया।

उसी शाम, वृद्ध इरनिार्ख ने अपने पास सफेद वस्त्र पहने एक युवक को खड़ा देखा; उसे देखते हुए, उस युवक ने मठाधीश के नर्दियी कर्म के बारे में कहा, और फरि अचानक गायब हो गया। वरष्ठि ने पूरी रात प्रार्थना में बतिाई। अगली सुबह, मठाधीश फरि से वरष्ठि के कक्ष में आए और वरष्ठि को उनके कक्ष से बाहर नकिालने का आदेश दयिा: चार लोगों ने उन्हें बाहों से पकड़कर खींच लयिा, जबकि मठाधीश, पाँच अन्य लोगों के साथ, उनकी लोहे की ज़ंजीर ले गए। जब वे वृद्ध को घसीट रहे थे, तो उन्होंने उनकी बाईं बांह तोड़ दी और उन्हें चर्च से तीन सैज़ेन नीचे फेंक दयिा। वृद्ध नौ घंटे तक उसी अवस्था में रहे, प्रभु ईश्वर से प्रार्थना करते हुए कि वे उनके उत्पीड़कों से यह पाप न लें, क्योंकि वे व्यर्थ में कार्य कर रहे थे, यह न जानते हुए कि वे क्या कर रहे हैं।

वृद्ध के शष्यि, अलेक्जेंडर और कॉर्नेलयिस को इरनिार्ख की उपस्थति से हटा दयिा गया और अन्य कोठरयिों में भेज दयिा गया।

जब इरनिार्ख अकेले, सभी द्वारा परत्यिक्त पड़े थे, तो चमकीले वस्त्रों में एक युवक उनके सामने प्रकट हुआ और कहा:

'ईश्वर ने तुम्हारी प्रार्थना और तुम्हारे धैर्य को सुन लयिा है: यदि तुम कुछ भी माँगोगे, तो वह तुम्हें दयिा जाएगा।'

इन शब्दों के बाद, वह युवक गायब हो गया।

इस बीच, इरनिारह का शष्यि अलेक्जेंडर उस रात अपनी पुरानी कोठरी में आया और प्रार्थना करने लगा:

'हे प्रभु यीशु मसीह, परमेश्वर के पुत्र! हे प्रभु, हमें अपने शक्षिक के साथ इस दुख में और कतिनी देर तक रहना होगा और इन जानवरों जैसे लोगों और शराबीयों के हाथों पीड़ति होना होगा? परन्तु आपकी पवत्रि इच्छा पूरी हो!'

और पवत्रि क्रॉस से एक आवाज़ आई:

'मठाधीश के पास जाओ और उनसे कहो: तुम ईश्वर के वधिान का वरिोध क्यों करते हो?'

वरष्ठि अलेक्जेंडर मठाध्यक्ष से मलिने चर्च गए और उनसे कहा:

'वरष्ठि इरनिार्ख को अपने शष्यिों सहति, उनके वचन पर, अपनी कोठरी में लौट जाने दें, कहीं ऐसा न हो कि आप ईश्वर की आज्ञाओं के वरिुद्ध लड़कर अपनी आत्मा को नष्ट कर दें।'

मठाधीश ने वरष्ठि और उनके दोनों शष्यिों को आशीर्वाद दयिा। वरष्ठि अपनी कोठरी में लौट आए, उन्हें उत्पीड़न से बचाने के लिए उन्होंने ईश्वर का धन्यवाद कयिा, और उन्होंने प्रार्थना की कि उन्हें धैर्य प्रदान कयिा जाए। और स्वर्ग से एक आवाज़ उन्हें सुनाई दी:

'हौसला रखो, मेरे दुखयिा, मैं सदा तुम्हारे साथ हूँ: मैं तुम्हारे पराक्रम का इंतजार कर रहा था, और स्वर्गदूत तुम्हारे धैर्य पर चकति हैं। अब तुम्हारे लिए और कोई उत्पीड़न नहीं होगा, परन्तु स्वर्ग के राज्य में तुम्हारे लिए तैयार की गई जगह तुम्हारा इंतजार कर रही है।'

वरष्ठि इरनिार्ख ने वह आवाज़ सुनी, लेकनि कसिी को नहीं देखा; कांपते हुए, उन्होंने बस आँसुओं के साथ एक प्रार्थना की:

'हे प्रभु यीशु मसीह, परमेश्वर के पुत्र, मुझ पापी पर दया करें और मुझे परीक्षा से बचाएँ,' और उसने अपनी रक्षा के लिए क्रॉस का चह्नि बनाया।

थोड़ी ही देर बाद, एबॉट समियिन को मठ से नकिाल दयिा गया।

इस बीच, राजकुमार मखिाइल स्कोपनि-शुइस्की की मृत्यु के बाद, लथिुआनयिाई लोगों ने अपना साहस वापस पा लयिा, और दुश्मन एक बार फरि मास्को के सामने इकट्ठा हो गए। मस्कोवी स्वयं, अपने दुश्मनों की चापलूसी से प्रभावति होकर, ज़ार वासलिी को पदच्युत कर दयिा और पोलशि लोगों को मास्को शहर में प्रवेश करने दयिा, जन्हिोंने तत्पश्चात पूर्व ज़ार वासलिी शुइस्की को पोलैंड में नर्विासति कर दयिा। मास्को पर कब्ज़ा कर लयिा गया और उसे बर्बाद कर दयिा गया।

लथिुआनयिा ने एक बार फरि से बड़े पैमाने पर मास्को के आसपास के क्षेत्रों में तबाही मचाना शुरू कर दयिा। 1612 में, लथिुआनयिाई रोस्तोव पहुँच गए। उनके डर से, बोरसिोग्लेब्स्की मठ के मठाधीश सभी भक्षिुओं के साथ व्हाइट लेक भाग गए, जबकि वृद्ध इरनिार्ख अपने शष्यिों के साथ अपनी कोठरी में ही रहे और ईश्वर से अखंड प्रार्थना करते रहे। लथिुआनयिाई लोगों ने मठ पर कब्ज़ा कर लयिा और वहाँ दस सप्ताह तक रहे। एक दनि, एक कुलीन व्यक्ति इरनिार्ख की कोठरी में आया और कहा:

'मुझे आशीर्वाद दीजए, फादर! और सापएिहा मॉस्को के पास मारा गया है, ठीक वैसे ही जैसे आपने कहा था!'

वरष्ठि ने उत्तर दयिा:

'अपने देश वापस चले जाओ, और तुम जीवति रहोगे; लेकनि अगर तुम हमारी भूमि नहीं छोड़ोगे, तो तुम भी मारे जाओगे!'

उस कुलीन व्यक्ति ने वहाँ से नकिलकर इरनिारह की बातें सभी अन्य कुलीनों को सुना दीं। और कुलीन लोग उस संत के पास आने लगे, और संत ने उनसे कहा:

'अपने देश लौट जाओ; अगर तुम नहीं गए, तो तुम्हें मार दयिा जाएगा।'

वॉयवोड का बेटा, जसिका नाम वोइन था, बूढ़े के पास आया और अपनी भूमि पर जाने का आशीर्वाद प्राप्त कयिा। बूढ़े ने आशीर्वाद दयिा; वोयवोद के बेटे ने जमीन पर सरि झुकाया, अपने पति के पास गया और उन्हें आशीर्वाद के बारे में बताया। फरि वोयवोद इयान कमेंस्की स्वयं बूढ़े की कुटयिा पर आए, बूढ़े के सामने जमीन पर सरि झुकाया और कहा:

'मुझे भी आशीर्वाद दीजए, पतिाजी, ताकि मैं भी अपनी भूमि पर लौट सकूँ, जैसे आपने मेरे पुत्र को आशीर्वाद दयिा।'

और वृद्ध ने उस पर आशीर्वाद दयिा और कहा:

'बस मठ, भाइयों, या रोस्तोव शहर को हाथ न लगाना।'

और लॉर्ड कामेंस्की ने न तो मठ और न ही रोस्तोव शहर को छुए बनिा अपनी भूमि के लिए प्रस्थान कयिा। खतरे से मुक्त होने पर मठ में एक बार फरि से आनंद छा गया।

इस बीच, स्वयं मास्को में और पूरे देश में, इस तथ्य को लेकर बहुत उथल-पुथल और दुख था कि लथिुआनयिाई लोगों ने मास्को में मोर्चा संभाल लयिा था। हर जगह, और वशिेष रूप से नज़िनी नोवगोरोड में, लोगों ने प्रार्थना की कि प्रभु ईश्वर अपनी दया दखिाएं और मास्को शहर को उसके दुश्मनों से मुक्त करें, और देश को बड़े दुख से बचाएं।

नज़िनी नोवगोरोड के लोग राजकुमार दमित्रिी मखिाइलोवचि पोझार्स्की से परचिति थे, जो नज़िनी के पास रहते थे। उन्होंने उनसे मॉस्को जाकर उसे उसके दुश्मनों से मुक्त करने की वनिती करनी शुरू कर दी। उन्होंने उनके लिए युद्ध हेतु सैनकि, धन और सामग्री इकट्ठा करके उपलब्ध कराना शुरू कर दयिा। उन्होंने नज़िनी नोवगोरोड के एक नगरवासी,

कोस्मा मनिनि को उनकी सहायता और समर्थन के लिए चुना। सैन्य कमांडर और स्थानीय परिषद के निर्वाचित प्रतिनिधि दोनों एकमत थे, और उन्होंने सब कुछ पारस्परिक परामर्श और समझौते से किया। और ईश्वर ने उनकी सहायता की। वे अपनी पूरी जमा की हुई सेना के साथ यारोस्लावल शहर की ओर बढ़े और वहाँ रुके। सभी शहरों से रूसी पुरुष उनके साथ शामिल होने के लिए इकट्ठा होने लगे, वे अपने धर्म और अपनी मातृभूमि की रक्षा करने और ईश्वर के पवित्र चर्चों के लिए मरने की इच्छा रखते थे।

प्रिंस दिमित्री मिखाइलोविच पोझार्स्की के अपने सेना के साथ यारोस्लाव्ल पहुँचने की खबर सुनकर, मास्को के पास तैनात रूसी मिलिशिया के एक कमांडर, प्रिंस दिमित्री तिमोफीविच ट्रुबेट्स्कोय ने एक संदेशवाहक भेजा और उन्हें बिना किसी देरी के मास्को पर चढ़ाई करने के लिए कहा। लेकिन राजकुमार पोझार्स्की और कोस्मा मिनिन मास्को पर चढ़ाई करने से डर रहे थे: रूसी मिलिशिया में कोई एकता नहीं थी, और रूसी सेना के एक कमांडर, इवान ज़ारुत्स्की, ने मास्को के पास एक अन्य वोइवोद, प्रोकॉफी पेट्रोविच लयापुनोव, की हत्या कर दी थी।

वरिष्ठ इरिनार्ख, जो सब कुछ देख रहे थे और स्थिति को पूरी तरह से समझ गए थे, ने प्रिंस दिमित्री मिखाइलोविच पोझार्स्की को अपना आशीर्वाद और प्रोस्फोरा का एक टुकड़ा भेजा, और उन्हें इवान ज़ारुत्स्की से न डरते हुए अपनी पूरी सेना के साथ मास्को पर चढ़ाई करने का आदेश दिया।

'तुम ईश्वर की महिमा के साक्षी बनोगे,' बूढ़े ने उसे राजकुमार से कहने का निर्देश दिया।

राजकुमार साधु के शब्दों से प्रसन्न हुआ; बिना किसी डर के, वह अपने पूरे दल के साथ मास्को के लिए रवाना हो गया और रोस्तोव में रुका। वहाँ से, राजकुमार पोझार्स्की और कोस्मा मिनिन साधु इरिनार्ख का आशीर्वाद व्यक्तिगत रूप से प्राप्त करने के लिए बोरिसोग्लेब्स्की मठ की एक विशेष यात्रा पर गए। महात्मा ने मॉस्को के खिलाफ उनके अभियान के लिए उनका आशीर्वाद किया और समर्थन के प्रतीक के रूप में उन्हें अपना क्रॉस दिया। महात्मा से आशीर्वाद और क्रॉस प्राप्त करने के बाद, राजकुमार खुशी-खुशी अपनी सेना के साथ रोस्तोव से पेरियास्लावल के लिए रवाना हुआ, और पेरियास्लावल से त्रयित्सा के लिए, जहाँ वह रुका और सर्वपवित्र त्रिमूर्ति और पूजनीय सर्गियस को श्रद्धांजलि अर्पित की।

ट्रॉयित्सा से, पोझार्स्की ने वोइवोड, राजकुमार दिमित्री लोपाटिन को राजकुमार ट्रुबेट्स्कोय से मिलने के लिए मॉस्को की ओर भेजा। ट्रुबेट्स्कोय बहुत प्रसन्न हुए, जबकि ज़ारुट्स्की मॉस्को के उपनगरों से भाग गए।

इस बीच, आपूर्ति के साथ ताज़ा मदद पहुँचने वाली सेना मास्को में गढ़े हुए लिथुआनियाई लोगों के साथ शामिल होने आई। यह सुनकर, प्रिंस ट्रुबेट्सकोय ने प्रिंस पोझार्स्की को एक संदेशवाहक भेजा, जिसमें उन्होंने उन्हें अपनी पूरी सेना के साथ मास्को की मदद के लिए जल्द आने का आग्रह किया। निज़्नी नोवगोरोड के वोइवोड तुरंत ट्रॉयित्सा से मास्को के लिए रवाना हो गए। ईश्वर की कृपा और मास्को के चमत्कारी संतों के हस्तक्षेप से, रूसी लिथुआनियाई लोगों को हराने में सफल रहे। इसके बाद, प्रिंस पोझार्स्की ने किताय-गोरोद पर नियंत्रण कर लिया, जिससे लिथुआनियाई लोग केवल मास्को क्रेमलिन में ही घिरे रह गए। कुछ ही समय बाद, किलेबंदी ने भी आत्मसमर्पण कर दिया, और प्रिंस दिमित्री मिखाइलोविच पोझार्स्की किलेबंदी में प्रवेश कर गए, जहाँ उन्होंने परमेश्वर की परम पवित्र माता और मास्को के चमत्कार-कारकों से प्रार्थना की।

और मास्को में यह देखकर बहुत खुशी हुई कि प्रभु ने मास्को को लिथुआनियाई लोगों से मुक्त कर दिया था।

हालाँकि, उस समय उस्ट्या नदी पर स्थित बोरिसि और ग्लेब मठ में बहुत दुख था: मठ को लिथुआनियाई लोगों द्वारा कई बार लूटा और तबाह किया गया था; मठ में कुछ भी नहीं बचा था, फिर भी उन से सैनिकों को खिलाने के लिए भारी कर चुकाने की मांग की जा रही थी। मठाध्यक्ष, मठ के साधु-संन्यासियों और किसानों के साथ, अपने शिष्य अलेक्जेंडर को मास्को भेजने के लिए आशीर्वाद देने हेतु इरिनार्ख वृद्ध के पास गए। वरिष्ठ ने उनकी प्रार्थना मान ली, मामला पूरी तरह से उनके विवेक पर छोड़ दिया, और अपने शिष्य को एक याचिका के साथ मास्को भेज दिया। उन्होंने उसे राजकुमार पोझार्स्की से शत्रुओं के खिलाफ लड़ाई में सहायता के लिए प्रदान किया गया पवित्र क्रॉस प्राप्त करने का निर्देश दिया।

जब अलेक्जेंडर मास्को पहुँचे, तो पोलैंड के राजा के व्याज़्मा शहर से अपने देश लौटने के अवसर पर बड़ी खुशी मनाई गई।

वरिष्ठ अलेक्जेंडर, प्रिंस दिमित्री मिखाइलोविच पोझार्स्की के पास गए और उन्हें वरिष्ठ इरिनार्ख का आशीर्वाद और एक प्रोस्फोरा (प्रार्थना-भेंट) दिया। राजकुमार इरिनार्ख के संदेशवाहक के आगमन से बहुत प्रसन्न

हुआ और उसने उसे एक पत्र दिया जिसमें यह निर्देश था कि लिथुआनियाई लोगों द्वारा की गई तबाही के कारण बोरिसोग्लेब्स्की मठ को सैनिकों के लिए कोई राशन न दिया जाए। अलेक्ज़ेंडर ने राजकुमार से पत्र और पवित्र क्रॉस लिया और मठ लौट आया।

मठ के लिए यह रियायत हासिल करने पर मठाधीश बहुत प्रसन्न हुए, और जब अलेक्ज़ेंडर उनकी कुटिया में आए, पवित्र क्रॉस वापस किया और राजकुमार का प्रणाम संदेश दिया, तो परम पूजनीय इरिनिर्ख भी बहुत प्रसन्न हुए।

ईश्वर की कृपा और देश के सभी राजकुमारों के आदेश से, बोयार, वोइवोड, अति-सम्माननीय मेट्रोपॉलिटिन, आर्किमैंड्राइट, मठाध्यक्ष और अन्य लोगों ने, 1613 में युवा राजकुमार मिखाइल फेदोरोविच रोमानोव को ज़ार के सिंहासन के लिए चुना और मास्को में रूस के सभी क्षेत्रों के शासक के रूप में उनका राज्याभिषेक किया, और उन्हें ज़ार का ताज पहनाया गया। पूरे रूस ने नए, लंबे समय से प्रतीक्षित ज़ार के आगमन पर हर्ष मनाया।

फिर भी कई स्थानों और कस्बों—उग्लिच, वोल्गोडा और अन्य पड़ोसी क्षेत्रों—में चल रही तबाही के कारण बहुत दुख था: मुख्य रूप से, कोसैक दस्ते बहुत सारे ईसाई रक्त का संहार कर रहे थे और कस्बों और गांवों को उजाड़ रहे थे। इन लूटने वालों और विध्वंसकों से देश को मुक्त कराने के लिए, ज़ार मिखाइल फ्योदोरोविच ने अपने बोयार और वोइवोड, राजकुमार बोरिस मिखाइलोविच लिकोव को एक बड़ी सेना के साथ भेजा। राजकुमार लिकोव यारोस्लाव्ल के लिए रवाना हुए।

उस समय, लिथुआनियाई और कोसैक दानिलोव्स्कोये गाँव (अब यारोस्लाव गवर्नरेट में दानिलोव शहर) में पहुँचे। प्रिंस लिकोव ने इरिनारह संत से उनका आशीर्वाद लेने के लिए संत योआकिम को भेजा, जैसा कि पिछले रूसी कमांडरों ने किया था। मठाधीश ने राजकुमार को कुछ प्रोस्फोरा और अपना आशीर्वाद भेजा, और उसे लिथुआनियाई लोगों का पीछा करने का निर्देश दिया। राजकुमार मठाधीश के आशीर्वाद से प्रसन्न हुआ और अपनी मुहिम पर निकल पड़ा। दो सप्ताह तक उन्होंने दुश्मन का पीछा किया, कोस्त्रोमा के आगे, निज़्नी के ठीक पास उन तक पहुँच गए, और ईश्वर की मदद से उन्हें बुरी तरह परास्त कर दिया, कई लोगों को बंदी बना लिया और उन्हें मास्को में ज़ार के पास भेज दिया। वहाँ से, लिकोव वोल्गोडा लौट आए ताकि वे कोसैकों का सामना कर सकें, जो वोल्गोडा और बेलोजेर्स्क जिलों में लूटपाट कर रहे थे। राजकुमार ने कोसैकों के पीछे एक दल भेजा, जो बेलोजेर्स्क से उग्लिच के लिए निकले थे, जहाँ वे दो सप्ताह तक रुके रहे। लिकोव ने अपनी रेजिमेंटों को वहाँ भेजा, और उन्होंने कोसैकों को मॉस्को की ओर वापस खदेड़ दिया। खुद राजकुमार, दुश्मन का पीछा करते हुए मास्को की ओर जाते समय, बोरिस और ग्लेब मठ गए, पैशन-बेयरर्स बोरिस और ग्लेब से प्रार्थना की, और व्यक्तिगत रूप से वृद्ध इरिनिर्ख से आशीर्वाद प्राप्त किया। मास्को की ओर बढ़ते हुए, राजकुमार लिकोव का सामना कोसैक्स से हुआ, उन्हें बंदी बना लिया और उन्हें ज़ार के सामने पेश किया।

ईश्वर की कृपा, परमेश्वर की परम पवित्र माता और मास्को के चमत्कारी संतों के मध्यस्थता से, और तपस्वी इरिनिर्ख की प्रार्थनाओं और आँसुओं के द्वारा उस लूटपाट करने वाले कोसैक गिरोह के विनाश पर बहुत आनंद हुआ।

उस समय से, रूस में शांति बनी रही। जहाँ तक बूढ़े इरिनिर्ख का सवाल है, उन्होंने पहले की तरह ही बिना रुके प्रार्थना करना और आँसू बहाना, उपवास करना, राहगीरों की मेजबानी करना, और शक्तिशाली लोगों के अत्याचार से पीड़ितों की रक्षा करना जारी रखा।

जबकि वह जीवित थे, तब भी ईश्वर ने अपने सेवक इरिनिर्ख को चमत्कारों के माध्यम से महिमामय किया: उनकी प्रार्थनाओं से, ईश्वर ने बीमारों और भूत-ग्रस्त लोगों को ठीक किया, और जो लोग श्रद्धा के साथ उनके पास आए, उनके लिए उनका आशीर्वाद चमत्कारी शक्ति रिखता था। इरिनिरह की जीवनी के संकलनकर्ता, उनके शिष्य अलेक्ज़ेंडर ने, उनके जीवनकाल के दौरान बोरिसोग्लेब्सक के तपस्वी और शहीद की प्रार्थनाओं के माध्यम से ईश्वर द्वारा किए गए नौ चमत्कारों को दर्ज किया।

विभिन्न रोगों से पीड़ित लोग, और विशेष रूप से वे जो अशुद्ध आत्मा के वश में होते थे, आदरणीय इरिनिरह के पास आते या उन्हें उनके पास लाया जाता था। वृद्ध प्रार्थना करते, और बीमारों से भी प्रार्थना और उपवास करने का आग्रह करते; वे उन पर अपना पवित्र क्रॉस रखते, और अक्सर अपनी जंजीर का एक टुकड़ा उन पर रखते या उन्हें इन जंजीरों पर लेटने का निर्देश देते। कभी-कभी दूर-दराज के लोग बीमारों को आशीर्वाद के लिए इरिनिरह के पास भेजते थे, जो वह प्रदान करते थे, और उनके साथ एक प्रॉस्फोरा या एक क्रॉस भेजकर उन्हें वापस भेजते थे, जिससे वे पानी को पवित्र

करके बीमारों को पीने के लिए देते थे। इस प्रकार, आदरणीय संत ने दावदीवो गाँव के एक दानव-ग्रस्त व्यक्ति को[997] अपने क्रॉस को उस पर रखकर चंगा किया; वोश्चादनिकिोव[998] के एक अन्य दानव-ग्रस्त व्यक्ति, को तब चंगा किया गया जब उनके उग्र शिष्य अलेक्जेंडर ने संत की जंजीर को उस पर रखकर उस बीमार व्यक्ति को संत और परमेश्वर की पवित्रतम माता की प्रतिमा के पास लाया। बोरीसोглебस्की मठ में एक वोइवोड, जो बोयार मटफेय टिक्मेनोव का बेटा था और जो मानसिक विक्षोभ की स्थिति में चला गया था, पर पूजनीय इरिनार्ख ने अपना क्रॉस रखा और उसे अपनी ही ज़ंजीर से बाँध दिया, तथा उसकी रखवाली के लिए दो सैनिक नियुक्त किए; और इस प्रकार रोगी ने पूरी रात वहीं बिताई; सुबह, वृद्ध ने वोइवोड को प्रार्थना करने के लिए चर्च भेजा; रोगी लिटर्जी से अच्छे स्वास्थ्य के साथ लौटा, लेकिन रेवरेंड एल्डर ने उसे पूरे सप्ताह उपवास करने, कोई मांस न खाने और न ही शराब और न ही बीयर पीने का आदेश दिया। इसी तरह, निकिफोर नामक एक किसान, जो मठ में पागल हो गया था, को ठीक किया गया: वृद्ध ने आदेश दिया कि उसका क्रूस उस पर रखा जाए और उसे एक सब्जी के खेत से एक ज़ंजीर से बाँध दिया जाए; एक घंटे बाद, वृद्ध ने क्रॉस और जंजीर हटा दीं और बीमार व्यक्ति को अपनी जंजीरों पर लेटने का आदेश दिया, जहाँ वह पूरी रात सोया – और पूरी तरह से स्वस्थ होकर जागा।

इरिनार्ख द्वारा भेजे गए क्रॉस से पवित्र किए गए पानी को पीने या उस पानी से छिड़काव किए जाने पर, निम्नलिखित लोग ठीक हो गए: रोमन नाम का एक बोयार का बेटा, जिसे सिरदर्द था; एक किसान की पत्नी, जिसे आँखों की बीमारी थी; उग्लिच में एक राक्षसों के वश में आई महिला; और मॉस्को में एक क्लर्क की पत्नी, जो किसी गंभीर बीमारी से पीड़ित थी।

मान्यवर इरिनारह के निधन का समय आ गया। इस धर्मी और दीर्घ-सहिष्णु व्यक्ति ने अपने शिष्यों को बुलाया और उनसे कहा:

'मेरे भाइयों और साथी तपस्वियों! मैं आपसे विनती करता हूँ: अब मैं इस जीवन से अपने प्रभु परमेश्वर, यीशु मसीह के पास जा रहा हूँ: मेरे लिए परमेश्वर और परमेश्वर की अति पवित्र माता से प्रार्थना करें, कि मेरे निधन के बाद मेरी आत्मा को दयालु स्वर्गदूत उठा ले जाएँ और मैं आपके पवित्र प्रार्थनाओं के द्वारा शत्रु के जालों और वायुमंडलीय यातनाओं से बच जाऊँ, क्योंकि मैं एक पापी हूँ। आप लोगों से मेरी विनती है कि मेरी मृत्यु के बाद, उपवास और प्रार्थना, परिश्रम, जागरण और आँसुओं में, और एक-दूसरे से बिना शिकायत किए, आज्ञाकारिता और समर्पण के साथ प्रेम में लगे रहना, क्योंकि आप धन्यवचन के विषय में मसीह की आज्ञा को जानते हैं।

रेवरेंड ने ये सभी आज्ञाएँ कहीं और अपने शिष्यों को कई अन्य निर्देश दिए।

अपने गुरु को उनके अंतिम क्षणों में देखकर, उनके शिष्य, अलेक्जेंडर और कॉर्नेलियस, गहरे भावुक हो गए और, कड़वी आँसुओं के साथ, पुकार उठे:

'हे हमारे अच्छे चरवाहे और शिक्षक! अब हम आपको अपना अंतिम श्वास लेते हुए देख रहे हैं: हम किसकी ओर मुड़ें, हम किससे शिक्षा प्राप्त करें, कौन हमारी पापी आत्माओं की देखभाल करेगा? परन्तु हम आपसे विनती करते हैं, यदि इस जीवन से आपके प्रस्थान के बाद आपको परमेश्वर की कृपा प्राप्त हो, तो कृपया हमारे लिए परमेश्वर और परमेश्वर की अति पवित्र माता से अविरम प्रार्थना करें, जैसा आपकी पवित्रता उचित समझे, क्योंकि आप हमारे सभी गूढ़ दुखों को जानते हैं।

वरिष्ठ इरिनारह ने अपने शिष्यों से कहा:

'मैं शरीर से आपसे विदा हो रहा हूँ, परन्तु आत्मा में मैं आपसे अविभाज्य रहूँगा।'

और इस पर उन्होंने जोड़ा:

'यदि कोई मेरे इस मठ पर अत्याचार करना शुरू करे, जिसे परमेश्वर द्वारा स्वर्ग से प्रदान किया गया था और जिसे मठाध्यक्ष और भाइयों ने मोचन और मध्यस्थता के लिए प्रार्थना की थी, तो परमेश्वर और परमेश्वर की माता उनका न्याय करें।'

---

[997] दावदीवो गाँव, उग्लिच जाने वाले रास्ते पर, बोरिसोग्लेब्स्की मठ से 20 वर्स्ट की दूरी पर स्थित है।

[998] वोश्चादनीकोवो गाँव बोरिसोग्लेब्स्की मठ से 10 वर्स्ट की दूरी पर, उग्लिच जाने वाली सड़क के दाईं ओर स्थित है।

मठवासी समुदाय प्रस्थान करने वाले एल्डर के साथ खड़ा रहा। मसीह के नाम पर भाइयों और शिष्यों को क्षमा देने और उन्हें अंतिम चुंबन देने के बाद, पूजनीय एल्डर प्रार्थना में खड़े हुए, उन्होंने लंबी प्रार्थना की, और चुपचाप प्रभु के पास शाश्वत विश्राम के लिए प्रस्थान कर गए।

पूज्य इरिनार्ख का 13 जनवरी 1616 को, पवित्र शहीदों हर्मिलस और स्ट्रैटनिकस के पर्व के दिन, शुक्रवार से शनिवार को रात के नौवें घंटे पर निधन हो गया। रॉस्टोव और यारोस्लाव के मेट्रोपॉलिटन, उनकी उत्कृष्टता करिलि[999] के आशीर्वाद और आदेश से, स्कीममोंक इरिनार्ख का अंतिम संस्कार बोरिसोग्लेब्स्क के मठाधीश, पीटर, और उनके आध्यात्मिक पिता, हायरोमोंक टिकॉन, साथ ही डीकन टाइटस और उनके शिष्यों, एल्डर्स अलेक्जेंडर और कॉर्नेलियस द्वारा किया गया। आदरणीय इरिनार्ख की इच्छानुसार, उनके ताबूत को एक गुफा में रखा गया, जिसे उन्होंने स्वयं तैयार किया था।

वरिष्ठ इरिनारह के निधन के बाद, उनके धार्मिक 'कार्य' बने रहे: एक सौ बयालीस तांबे के क्रॉस, सात कंधे के क्रॉस, गर्दन में पहनने के लिए बीस साज़ेन लंबी एक लोहे की ज़ंजीर, लोहे की बेड़ियाँ, अठारह तांबे और लोहे की बेड़ियाँ, जिन्हें वह अपने हाथों और छाती पर पहनते थे; गठरियाँ, जिन्हें वह अपने कमरबंद पर पहनते थे, जिनका वज़न एक पूड था; और एक लोहे का डंडा, जिससे उन्होंने अपने शरीर को वश में रखा और अदृश्य राक्षसों को भगाया[1000] । इन 'परिश्रमों' के द्वारा, धर्मी एल्डर इरिनार्ख अड़तीस वर्ष और चार महीने तक जीवित रहे; वे संसार में तीस वर्ष तक रहे, जिससे कुल अड़सठ वर्ष और चार महीने हुए।

आदरणीय इरिनारह के निधन के बाद, उनके ताबूत पर कई चमत्कार हुए। उनकी जीवनी के संकलक, उनके शिष्य अलेक्जेंडर ने, विभिन्न बीमारियों, विशेष रूप से दैवीय आधि से, तेरह चमत्कारी उपचारों को दर्ज किया। इरिनार्ख के जीवन-दायक श्रमों को बीमारों पर रखने की प्रथा थी; कभी-कभी उनकी जंजीर या अन्य बोझ जिन्हें उन्होंने उठाया था, का उपयोग किया जाता था। लोग उनकी कब्र से मिट्टी भी लेते थे और उसे पीते थे। इसके बाद भी कई चमत्कार होते रहे।

आज भी, कई पीड़ितों के लिए यह असामान्य नहीं है कि वे पूज्य इरिनार्ख की प्रार्थना सभा के दौरान, उनकी उपचार शक्ति में विश्वास करते हुए, उनके द्वारा छोड़े गए एक या अन्य भार को धारण करें।

27 जनवरी

14 जनवरी (पुराने तरीके से)

सिनाई और राइफा में पवित्र पिताओं का पहला उत्पीड़न

14 जनवरी को स्मरणोत्सव

जनवरी के 14वें दिन, हम माउंट सिनाई के मठों और गुफाओं[1001] और सिनाई के समीप स्थित राइफा के तटीय रेगिस्तान में रहने वाले भिक्षुओं के दो नरसंहारों का स्मरण करते हैं। पहला नरसंहार चौथी शताब्दी में हुआ था। इसका

---

[999] ज़ार बोरिस गोडुनोव की मृत्यु के समय करिलि चौथे का उल्लेख रोस्तोव के मेट्रोपॉलिटन के रूप में मिलता है; उन्हें झूठे दिमित्री ने पदच्युत कर दिया था; जब उनके उत्तराधिकारी, फिलारेट—जो बाद में पैट्रिआर्क बने—को बंदी बना लिया गया, तो रोस्तोव के लोगों ने एक बार फिर करिलि को बुलाया, जिन्होंने 1616 में अपनी मृत्यु तक मेट्रोपॉलिटन के रूप में सेवा की।

[1000] तपस्वी इरिनार्ख द्वारा पहनी गई अधिकांश लोहे की ज़ंजीरों और अन्य वज़नों को अभी भी बोरिस और ग्लेब मठ में संरक्षित किया गया है – आंशिक रूप से चर्च प्रांगण के भीतर, जहाँ पूजनीय की अवशेष-पेटी रखी गई है, और आंशिक रूप से उनकी पूर्व कोठरी की जगह पर एक विशेष लकड़ी के ढांचे में। इन वस्तुओं का एक विस्तृत विवरण और चित्रण महामहिम एम्फिलोचियस द्वारा उपरोक्त प्रकाशन में पाया जा सकता है। 1878 में, यारोस्लावल और रोस्तोव के महाधर्माध्यक्ष नील के आशीर्वाद से, इरिनारख की 'कृत्यों' से कुछ बेड़ियाँ और अन्य वस्तुएँ ग्रामीणों के अनुरोध पर इरिनारख कोन्डाकोव के पैतृक गाँव के चर्च में स्थानांतरित कर दी गईं। अधिक जानकारी के लिए उपरोक्त एन. एन. कोर्सुन्स्की की पुस्तक देखें।

[1001] सिनाई पर्वत सिनाई प्रायद्वीप के केंद्र में स्थित है; यह वास्तव में ग्रेनाइट चट्टानों से बना पहाड़ों का एक समूह है, जो ऊँची और खुरदरी घाटियों से घिरा हुआ है; अरब अब इसे माउंट 'तुर' या 'जेबेल तुर-सिना' कहते हैं। पुरानी वाचा में, सिनाई पर्वत पर, इस्राएलियों ने परमेश्वर के साथ

वर्णन एक मिस्र के भिक्षु अम्मोनियस ने किया है, जिसने इस घटना को देखा था। अम्मोनियस इसे इस प्रकार वर्णित करते हैं:

'एक दिन, जब मैं अलेक्जेंड्रिया के क्षेत्र में, कानोवो नामक स्थान पर, अपनी विनम्र कोठरी में बैठा था, तो मेरे मन में फिलिस्तीन जाने का विचार आया। मैं ईसाइयों को निर्दयी अत्याचारियों के हाथों अनंत पीड़ा सहते हुए नहीं देख सकता था, और हमारे पवित्र पिता, पैट्रिआर्क पीटर, को एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाने और छिपने के लिए मजबूर होना पड़ा, जिससे उन्हें अपने अनुयायियों का दृढ़ता से नेतृत्व करने का अवसर नहीं मिला। साथ ही, मैं यरूशलेम में उन पवित्र स्थानों का सम्मान करने के लिए लालायित था जहाँ हमारे प्रभु यीशु मसीह ने हम पर अपनी दिव्य व्यवस्था के रहस्य को पूरा करते हुए पदार्पण किया था। वहाँ पहुँचने पर, मैं ईश्वर के सभी अद्भुत कार्यों पर गहरी प्रसन्नता हुई और मैंने दयालु प्रभु का हार्दिक धन्यवाद किया कि उन्होंने मुझे पवित्र स्थानों की पूजा करने के योग्य समझा। फिर मैं कुछ भिक्षुओं के साथ रेगिस्तान में निकल पड़ा और, ईश्वर की मदद से, अठारह दिनों के बाद सिनाई पर्वत पहुँचा और वहाँ के पवित्र स्थानों की पूजा की। वहाँ ठहरने के दौरान, मैं सिनाई के दैवीय पिताओं की संगति और उनकी बातचीतों में आनंदित हुआ, और हर दिन, अपनी आत्मा के लाभ के लिए, मैं उनमें से प्रत्येक की कोठरियों में जाता था। वे निम्नलिखित नियम का पालन करते थे: वे पूरे दिन अपनी कोठरियों में मौन में रहते थे; लेकिन शनिवार की शाम, जैसे ही रविवार की भोर होती, वे सभी चर्च में इकट्ठा होते और एक साथ पूरी रात की प्रार्थना सभा मनाते थे; सुबह के समय मसीह के पवित्र और अमर रहस्यों की दिव्य लिटर्जी के दौरान पवित्र सहभागिता प्राप्त करने के बाद, उनमें से प्रत्येक अपनी कोठरी में लौट जाता था। उनका रूप-रंग स्वर्गदूतों जैसा था: कठोर संयम और सतर्कता के कारण, उनके शरीर दुबले-पतले थे, और वे इस प्रकार रहते थे मानो अदेह हों – वे ऐसा कुछ भी नहीं खाते थे जो वासनाओं को जगा सके या पोषित कर सके। वे न तो शराब का स्वाद चखते थे, न ही जैतून का तेल, न ही और न ही रोटी, बल्कि केवल थोड़ी मात्रा में खजूर या ओक के फल से ही संतुष्ट रहते थे, और इन्हीं से अपना जीवन यापन करते थे। हालाँकि, मठाधीश कभी-कभी यात्रियों के लिए रोटी रखते थे।

कुछ दिनों बाद, इस क्षेत्र पर अचानक ब्लेमियिन ([1002]) नामक बर्बरों के एक समूह ने हमला कर दिया। उन्होंने आसपास पाए जाने वाले सभी संतों को निर्दयता से पीट-पीट कर मार डाला। हम जो टावर के पास रहते थे[1003], हम भ्रम और आतंक में पड़ गए; हम जल्दबाजी में अपने पवित्र पिता, मठाधीश दुला के साथ एक किलेबंदी स्थान पर इकट्ठा हो गए - क्योंकि वह वास्तव में मसीह का सेवक था, जो अपने असाधारण धैर्य और नम्रता के कारण सभी से अलग था, यही कारण है कि कुछ लोग उसे मूसा भी कहते थे। उपरोक्त बर्बर लोगों ने होरेब[1004] और टेफ्रोविल में रहने वाले सभी पादरियों को पीटा; उन्होंने केदार में कई संतों को मार डाला और माउंट सिनाई के अन्य आसपास के इलाकों को तबाह कर दिया। वे हम पर भी आ पहुँचे और, किसी भी ओर से कोई प्रतिरोध न पाकर, हमें लगभग मार ही डालते। लेकिन दयालु ईश्वर, जो उन लोगों की सहायता करते हैं जो पूरे हृदय से उनकी प्रार्थना करते हैं, ने पहाड़ की चोटी पर एक बड़ी ज्वाला भेजी, और हमने देखा कि पूरा पहाड़ धुएँ से ढक गया था, और उसमें से आग निकल रही थी, जो स्वर्ग तक पहुँच रही थी। यह देखकर, हम भय से ग्रस्त हो गए और लगभग डर से मर ही गए। हम भूमि पर साष्टांग दंडवत हो गए, और हमने प्रभु से प्रार्थना की कि हम पर मंडरा रही यह विपत्ति हमसे टल जाए। जब बर्बरों ने आग देखी तो वे आतंकित हो गए, और वे तुरंत ही भाग खड़े हुए; वास्तव में, कुछ ने तो अपने हथियार भी फेंक दिए और अपनी ऊँटों को भी छोड़ दिया, क्योंकि इस भयानक आग का दृश्य उनके लिए बिल्कुल असहनीय था। हमने, अपनी ओर से, उस ईश्वर का धन्यवाद किया और उसकी महिमा की, जो अंत तक उन लोगों को नहीं छोड़ता जो उसकी ओर मुड़ते हैं। इसके बाद, हम मंच से उतरे और विभिन्न स्थानों पर हमें अड़तीस पादरी तलवार से मारे हुए मिले, जिनमें से प्रत्येक को उसी स्थान पर मार दिया गया था जहाँ उसे पकड़ा गया था। उनके शरीरों पर तरह-तरह के अनगिनत घाव थे - और उनकी शहादत के तरीके का वर्णन कौन कर सकता है? उनमें से

एक वाचा की और उनसे व्यवस्था की आज्ञाएँ प्राप्त कीं (निर्गमन 20)। ईस्वी की चौथी और पाँचवीं शताब्दियों में, सिनाई पर्वत अपनी घाटियों और गुफाओं में रहने वाले ईसाई तपस्वियों की प्रचुरता के लिए प्रसिद्ध था।

[1002] ब्लेमियिन – आज के बेदुइन – मिस्र के दक्षिण और पश्चिम में रहने वाले एक लिबियाई डाकू लोग थे; रोमन सम्राट भी इन बर्बर लोगों से डरते थे, इतना कि डायोक्लेटियन ने उन्हें पैसे देकर और जमीन देकर खुद को उनसे बचाने की कोशिश की।

[1003] प्यर्ग – ग्रीक शब्द से जिसका अर्थ है 'किला' या 'मीनार'; यह मठों में किलेबंद पहरेदार मीनारों को दिया गया नाम था।

[1004] होरेब – अरब मरुभूमि में एक पहाड़, एक ही पर्वत शृंखला की पश्चिमी चोटी, जिसका पूर्वी भाग सिनाई पर्वत है। यहीं पर ईश्वर मूसा को एक झाड़ी में प्रकट हुए जो आग में जल रही थी पर नष्ट नहीं हुई (निर्गमन 3)। इस पहाड़ के पास केदार और तेफ्रोविल स्थित थे, जिनका यहाँ उल्लेख है।

दो, यशायाह और सव्वा, अभी भी जीवति थे, लेकनि वे बुरी तरह घायल थे और मुश्कलि से सांस ले रहे थे। हमने तुरंत, बड़े वलिाप के साथ, मारे गए पतिाओं को दफनाया और जीवतिों की देखभाल की। वास्तव में, कौन इतना क्रूर और नर्दियी हो सकता है कि वह इतने सारे ऐसे पतिाओं - धर्मी और पवत्रि पुरुषों, जो दयनीय रूप से जमीन पर पड़े थे - के लिए कड़ुवी शोक न करे? एक का सरि पूरी तरह से काट दयिा गया था; दूसरे का सरि केवल एक तरफ़ से त्वचा से जुड़ा हुआ था; एक को बीच से दो टुकड़ों में काटा गया था, दूसरे की बाहें और पैर काट दिए गए थे, एक की आँखें नकिाल दी गई थीं, और एक को सरि से पैर तक चीर दयिा गया था। और संतों के शवों को इकट्ठा करते और दफनाते समय हमने जो कुछ भी देखा, उसका वस्तिार से वर्णन कौन कर सकता है? वहाँ दो भाई, जो अभी भी जीवति थे, भयानक पीड़ा में पड़े हुए थे। उनमें से एक, जसिका नाम यशायाह था, रात के दूसरे घंटे में मर गया, जबकि दूसरा—शब्बाथ—जीवति रहा, और उसके ठीक होने की उम्मीद थी, क्योंकि उसके घाव बहुत गंभीर नहीं थे। उसने अपनी पीड़ाओं के लिए परमेश्वर का धन्यवाद कयिा, लेकनि इस बात पर दुखी हुआ कि उसे पवत्रि पति के साथ मरने के योग्य नहीं समझा गया था, और रोते हुए कहा:

– हाय मुझ पापी की! हाय मुझ पर, जो मसीह के लिए दुख सहने और मरने वाले पवत्रि पतिाओं में गनिा नहीं गया! हाय मुझ व्यर्थ दास पर, जसि ग्यारहवें घंटे पर नकिाल दयिा गया (मत्ती 20:6), जो मसीह के उद्धारक राज्य की दहलीज़ पर तो खड़ा था, परन्तु उसमें प्रवेश नहीं कयिा!

आँखों में आँसू लिए, उसने ईश्वर से प्रार्थना की और कहा:

'हे सर्वशक्तमिान ईश्वर, जन्हिोंने मानव जाति के उद्धार के लिए अपना एकलौता पुत्र भेजा, जो मानवता के एकमात्र दयालु प्रेमी हैं, मुझे उन पवत्रि पूर्वजों से अलग न करें जो पहले चले गए हैं, बल्कि मेरे द्वारा उनकी संख्या चालीस पूरी हो जाए!' हे प्रभु यीशु मसीह, यह अनुग्रह करें, क्योंकि मैं अपने जन्म के क्षण से ही आपका अनुयायी रहा हूँ और केवल आपसे ही प्रेम कयिा है!

यह प्रार्थना करते समय, पवत्रि संतों के पीटे जाने के चौथे दनि, उन्होंने अपनी आत्मा प्रभु के हाथों में सौंप दी।

जब हम अभी भी शोक मना रहे थे और रो रहे थे, तब इस्माइल का एक आदमी[1005] हमारे पास आया और उसने बताया कि बिर्बर लोगों ने राइफा[1006] नामक भीतरी रेगस्तिान में रहने वाले सभी तपस्वयिों का कत्ल कर दयिा था। यह रेगस्तिान, जो हमसे दो दनि की यात्रा से भी अधकि दूरी पर स्थति था, तटीय क्षेत्रों में, काले सागर के कनिारे पर था। वहाँ बारह जल के झरने थे और, जैसा कि संख्या पुस्तक (Num. 33:9) में लखिा है, सत्तर खजूर के पेड़ थे, जनिकी संख्या बाद में काफी बढ़ गई। हमने उस आदमी से पूछा कि कनि परस्थितियिों में और कतिने पादरयिों को पीटा गया था, लेकनि वह हमें इसके बारे में कुछ नहीं बता सका, क्योंकि उसने स्वयं दूसरों से केवल यह सुना था कि राइफ़ में रहने वाले सभी पादरयिों को, बनिा कसिी अपवाद के – सबसे बड़े से लेकर सबसे छोटे तक – पीटा गया था। कुछ घंटों बाद, एक और आदमी ने हमें यह खबर पुष्टि कर दी। कुछ दनिों बाद, एक स्थानीय भक्षिु माउंट सनिाई पर बसने के लिए आया। उसके आगमन के बारे में जानकर, माउंट सनिाई के मठाधीश, फादर दुला, ने उससे पूरी तरह से पूछताछ करना शुरू कर दयिा, ताकि वह वस्तिार से जान सकें कि पवत्रि पतिाओं के साथ क्या-क्या हुआ था, और साथ ही यह भी कि वह खुद कैसे बच नकिला था। फरि भक्षिु ने नम्निलखिति बातें बताईं:

'मैं, फादर्स, उनके साथ थोड़ी देर के लिए रहा - केवल लगभग बीस साल - लेकनि वहाँ ऐसे भी थे जो वहाँ लंबे समय से रहे थे: कुछ चालीस साल, कुछ साठ, और कुछ तो सत्तर साल तक भी।' यह क्षेत्र बहुत समतल और बहुत चौड़ा है; यह सत्तर पोप्लट्सि की लंबाई तक फैला है, और पूर्व में एक पहाड़ से घरिा है - जैसे कि एक दीवार से - जो काले सागर[1007] तक जाता है। वहाँ कई संन्यासी रहते थे जो प्रेरति के वचन (इब्रानयिों 11:38) के अनुसार, रेगस्तिानों और पहाड़ों, पृथ्वी की गुफाओं और घाटयिों में भटकते थे। पहाड़ की तलहटी में एक चर्च था, जसिमें ये वास्तव में स्वर्गवासी पुरुष हर हफ्ते इकट्ठा होते थे। पृथ्वी पर रहते हुए, वे आत्मा और जीवन शैली में स्वर्गदूतों के समान थे। उन्होंने अपने शरीरों को इस प्रकार थकाया मानो वे उनके अपने नहीं बल्कि दूसरों के हों; जबकि अपनी आत्माओं को उन्होंने केवल एक ही सद्गुण से नहीं बल्कि कई सद्गुणों से सुसज्जति कयिा। उनके दुखों और मृत्यु—वास्तव में, राक्षसों द्वारा उन पर डाले गए सभी प्रलोभनों—को चत्रिति करने की इच्छा रखते हुए, मैं, मेरे प्रयि, उनके सभी गुणों को क्रम से नहीं बता सकता। लेकनि मैं

[1005] इश्माएलयिों – कुलपति अब्राहम के पुत्र इश्माएल के वंशज।

[1006] रैफा – लाल सागर के पूर्वी तट पर पारान के पास एक स्थान, जो सनिाई से दो दनि की यात्रा पर था।

[1007] लाल सागर, या तथाकथति 'चेरमोने', हदि महासागर का एक लंबा, संकरा जलडमरूमध्य है, जो अरब प्रायद्वीप को मस्रि से और एशयिा को अफ्रीका से अलग करता है।

आपको इन में से एक या दो संतों के बारे में बताऊंगा, और यह आपको बाकी सभी के जीवन को समझने के लिए पर्याप्त होगा।

उनमें मूसा नामक एक वृद्ध थे। पड़ोसी देश पारान[1008] के मूल निवासी, वे अपनी युवावस्था से ही संन्यासी जीवन से प्रेम करते थे। उन्होंने संन्यासी जीवन में तरिसठ वर्ष बिताए थे और उनसे पहले वहाँ रहने वाले संतों के लिए मठाध्यक्ष के रूप में सेवा की। मठ के पास एक गुफा में रहते हुए, वह वास्तव में तिशबी इलियाह[1009] के समान दूसरे इलियाह थे, क्योंकि प्रभु उन्हें वह सब कुछ प्रदान करते थे जो वे उनसे मांगते थे। चमत्कारिक संकेतों और हर तरह की बीमारियों के इलाज के द्वारा, उन्होंने फारानियों की सीमाओं के भीतर के सभी निवासियों को, साथ ही उस भूमि में रहने वाले इसमाइलियों को भी ईसाई धर्म में परिवर्तित कर दिया। मूसा द्वारा किए गए चमत्कारों और उपचारों को देखकर, सभी मसीह में विश्वास से भर गए और बपतिस्मा प्राप्त करने पर, मसीह की पवित्र कलीसिया में प्रवेश किया। पवित्र पिता ने कई भूत-ग्रस्त लोगों को भी चंगा किया, क्योंकि मसीह की कृपा से, उनके पास दुष्टात्माओं पर अधिकार था। अपने तपस्वी जीवन की शुरुआत से ही, उन्होंने एक बार भी रोटी का स्वाद नहीं चखा, हालांकि वे यात्रियों के लिए थोड़ी मात्रा में रोटी रखते थे; यह रोटी उन्हें मिलने आने वाले मिस्रवासियों द्वारा दी जाती थी। वे स्वयं कुछ खजूर और सादे पानी से ही संतुष्ट रहते थे; उसी खजूर के पेड़ से वे अपने कपड़े भी बनाते थे; उन्होंने अपना समय पूर्ण मौन में बिताया – जैसा कोई और नहीं – और यह मौन केवल उन लोगों के लिए तोड़ते थे जो अपने विचारों का इक़रार करने उनके पास आते थे; वे ऐसे लोगों का ध्यान और कोमलता से स्वागत करते थे। वे बहुत कम सोते थे, और वह भी सुबह की प्रार्थना के बाद ही, जबकि वे पूरी रात जागते रहते थे। महान लेंट की पूरी अवधि के दौरान, माउंडी गुरुवार तक, उन्होंने किसी से बात नहीं की। इस पूरे समय में, उनका भोजन लगभग बीस खजूर का था, और उनका पेय एक मग पानी का; और, उनके शिष्य की गवाही के अनुसार, यह अक्सर उनके लिए मसीह के कष्टारंभ[1010] तक पर्याप्त होता था। एक बार लेंट के दौरान, एक इथियोपियाई जनजाति का मुखिया वेडयिन, जो एक अशुद्ध आत्मा से ग्रस्त था, उसे उपचार के लिए उनके पास लाया गया। जब वे संत की कोठरी से एक स्टेडियम की लंबाई के भीतर पहुँचे, तो अशुद्ध आत्मा ने वेडयिन को जमीन पर फेंक दिया और चिल्लाने लगा:

'हाय मेरा! मुझे किसके पास ले जाया जा रहा है! मैं एक पल के लिए भी इस आदमी को बहका या प्रलोभित नहीं कर सका!'

ये शब्द कहने के बाद, वह आत्मा वेदयिन को छोड़ गई, जो तुरंत चंगा हो गया; वह कई अन्य लोगों के साथ मसीह में विश्वास करने लगा, और बाद में उसे पवित्र बपतिस्मा का वरदान मिला। इस धर्मी व्यक्ति के बारे में मुझे आपको और भी बहुत कुछ बताना चाहिए, लेकिन समय की कमी के कारण मुझे चुप रहना होगा। हम पर हमला करने वाले बर्बर लोगों के हाथों उसकी मृत्यु हो गई।

इस अद्भुत और धन्य पिता का एक शिष्य भी था, जिसका नाम भी मूसा था। थबिाइड क्षेत्र[1011] का मूल निवासी, वह छियालीस वर्षों तक उनके साथ मौन में रहा, अपने पिता के नियमों से किसी भी तरह भटकता नहीं था, और अन्य युवा भिक्षुओं के लिए एक आदर्श था। मैं भी शुरू में उनके साथ रहा, लेकिन बाद में, उनके अत्यधिक तपस्या के कारण, मैं उनसे अलग हो गया। उन्हें भी, पवित्र संतों के साथ, मार डाला गया। इनमें से प्रत्येक संत के जीवन और गुणों को याद करना और बयां करना अत्यंत लाभकारी होगा। हालाँकि, समय की कमी के कारण, दूसरों को छोड़ते हुए, मैं केवल एक और धर्मी व्यक्ति के बारे में ही बताऊँगा।

उनमें से एक जोसेफ नामक पिता थे, जो अनालटि के मूल निवासी थे। समुद्र से दो पोपरीश्चे दूर रहते हुए, उन्होंने अपना आवास अपने हाथों से बनाया; वह पवित्र जीवन जीने वाले और वास्तव में एक बुद्धिमान और सदाचारी व्यक्ति थे।

[1008] फारान फिलिस्तीन, मिस्र, एदोम और सिनाई प्रायद्वीप के बीच एक मरुस्थलीय और पहाड़ी क्षेत्र है। माउंट फारान पर, पवित्र आत्मा में परमेश्वर प्रकट हुए, जो इस्राएल के सत्तर बुजुर्गों पर उतरे (गिनती 9:10–30); यहीं पर दाऊद ने शरण ली थी।

[1009] तिशबी ईलियाह – पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं में सबसे प्रसिद्ध, नप्ताली गोत्र के गलीलियाई नगर तिशबे के मूल निवासी, सच्चे परमेश्वर के एक अत्यंत उत्साही उपासक और अहब और यजेबेल के दिनों में अधर्म और मूर्तिपूजा के एक प्रबल उद्घाटक, जो अपने कई चमत्कारों के लिए प्रसिद्ध हुए। उन्हें होरेब पर्वत पर ईश्वर से संवाद करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ (3 राजा 19); जॉर्डन को चमत्कारिक रूप से पार करने के बाद, उन्हें आग की रथ में जीवित स्वर्ग में ले जाया गया, और उन्होंने अपनी कृपा के साथ चमत्कार करने का वरदान अपने उत्तराधिकारी, एलीशा को सौंप दिया।

[1010] यानी, महा शुक्रवार को मैटिन्स (प्रार्थना सभा) तक, जब पैशन—अर्थात् मसीह के दुख—की स्मृति मनाई जाती है।

[1011] थेबाइड प्राचीन मिस्र के शहर थेब्स का क्षेत्र है, जो प्राचीन काल में प्रसिद्ध था; इस नाम को इसके प्रमुख शहर के नाम पर पूरे ऊपरी (दक्षिणी) मिस्र के लिए भी लागू किया गया था।

वह उस स्थान पर लगभग तीस वर्षों तक रहे; उनके शिष्य उनके साथ नहीं रहते थे, बल्कि उनसे कुछ दूर दूसरी कोठरी में रहते थे। एक दिन, भाइयों में से एक मार्गदर्शन की तलाश में इन पूजनीय जोसेफ के पास आया। उसने दरवाजा खटखटाया, लेकिन कोई जवाब न सुनकर, छोटी खिड़की से झाँका और देखा कि साधु कोठरी के बीच में खड़े थे, मानो सिर से पैर तक आग की लपटों में घिरे हों। वह डर के मारे ज़मीन पर गिर पड़ा और दो घंटे तक अचेत पड़ा रहा, जैसे मृत हो गया हो। जब उसे होश आया, तो वह कोठरी के दरवाजे़ पर बैठ गया। बड़े भाई, ईश्वर के ध्यान में मग्न, इस बात से अनजान थे कि क्या हुआ था। पाँच बजे, उस भाई ने फिर से दरवाज़ा खटखटाया। बड़े भाई ने उसे अंदर आने दिया और पूछा:

'तुम कब आए, मेरे बेटे?'

'लगभग चार बजे या उससे अधिक,' उसने जवाब दिया, 'मेरे आने को समय हो गया था, लेकिन आपको परेशान न करने के लिए मैंने अब तक दस्तक नहीं दी, पिताजी।'

पवित्र वृद्ध को एहसास हो गया कि भाई जानता था कि उसके साथ क्या हुआ था; उन्होंने उसे इस बारे में कुछ नहीं बताया और कुछ उपदेशात्मक सलाह देकर उसे शांति से विदा कर दिया। लेकिन भाई के जाने के बाद, चमत्कारी वृद्ध, मानवीय महिमा से डरकर, अपनी कोठरी छोड़कर छिप गए। कुछ दिनों बाद, जब उनका शिष्य गेलासियस संत के सेल में आया, तो वह उन्हें वहाँ नहीं पाया। बाद में उसने उस रेगिस्तान में उनकी कितनी भी तलाश की, लेकिन उसकी सारी कोशिशें व्यर्थ गईं। कड़वी आँसुओं के साथ, वह संत के सेल में लौट आया और वहाँ रहने लगा, इस उम्मीद में कि उसे अपनी आत्मा के लिए कम से कम कुछ सांत्वना मिल सके।

छह साल बीत गए, और फिर एक दिन, दिन के नौवें घंटे पर, किसी ने कोठरी के दरवाजे़ पर दस्तक दी। बाहर जाकर, गेलासियस ने अचानक अपने मठाधीश को कोठरी के पास खड़ा हुआ देखा। उनकी अप्रत्याशित उपस्थिति से चकित होकर, वह सोचने लगा कि शायद यह कोई आत्मा हो, लेकिन फिर भी उसने खुशी से उन्हें कहा:

'मेरे लिए एक प्रार्थना करें, मेरे पिता।'

वरिष्ठ ने एक प्रार्थना कही, अपने शिष्य को चूमा, और फिर उससे कहा:

'तुमने अच्छा किया, मेरे बेटे, कि पहले प्रार्थना माँगी, क्योंकि शैतान के छल अनेक हैं।'

उस भाई ने उससे कहा:

'आप संत-बंधुओं को छोड़कर और अपने पुत्र मुझे क्यों त्यागना चाहते थे—और इसीलिए मैं अब तक दुख और आँसुओं में रहा हूँ?'

'मेरे पुत्र!' बड़े भाई ने उत्तर दिया, 'मैंने क्यों छोड़ा, यह केवल ईश्वर ही जानते हैं। हालाँकि, यह जान लो कि सच तो यह है कि, इस क्षण तक, मैंने न तो इस स्थान को छोड़ा है और न ही तुम्हें, और ऐसा एक भी सप्ताह नहीं गया है जब मैंने चर्च में, हमारे ईश्वर मसीह के पवित्र और अमर रहस्यों के साथ, पादरियों के संग पवित्र संस्कार न प्राप्त किया हो।'

भाई यह देखकर बहुत हैरान था कि विरष्ठि उनके बीच रह रहे थे, और फिर भी किसी ने उन्हें देखा नहीं था।

उसने पूछा, 'तो फिर, पिताजी, आप अब अपने बेटे के पास क्यों आए हैं?'

बड़े भाई ने उत्तर दिया:

'मेरे पुत्र, अब मेरी मृत्यु का समय आ गया है, और मैं इसलिए आया हूँ कि तुम मुझे दफ़ना दो।'

भाई द्वारा हमें यह बताने के तुरंत बाद, हम हथेलियों की टहनियाँ हाथ में लेकर इकट्ठा हुए, और भजन गाते हुए उसे चर्च में ले गए; उसके चेहरे पर तुरंत बाद, जब भाई ने हमें यह बताया, तो हम अपने हाथों में खजूर की टहनियाँ लेकर इकट्ठा हुए और भजन गाते हुए उसे चर्च में ले गए, जबकि दिवंगत का चेहरा प्राचीन काल की तरह चमक रहा था—जैसे नबी मूसा का (निर्गमन 34:29-30, 35)। हमने उन्हें उन पवित्र और दिव्य पिताओं के बगल में दफनाया जो उनसे पहले स्वर्ग सिधार चुके थे। मैं आपको और भी बहुत कुछ बता सकता हूँ, लेकिन मैं नहीं बताऊँगा, क्योंकि अब बर्बरों के वृत्तांत की ओर मुड़ने का समय आ गया है: मैं देखता हूँ कि आप यह जानना चाहते हैं कि उन्होंने पवित्र पिताओं का कैसे वध किया।

इन धन्य पिताओं का यही पुण्य था, जो पूर्ण गरीबी में रहते हुए, प्रभु के लिए दृढ़ता से हर प्रकार के दुख को सहते रहे और निरंतर प्रार्थना और ईश्वर के चिंतन में लगे रहे। हम कुल मिलाकर बत्तीस लोग वहाँ रहते थे। और इस प्रकार एक दिन, दो तरह के आदमी हमारे पास आए और उन्होंने बताया कि इथियोपिया की भूमि से एक जहाज पर बर्बरों का एक बड़ा समूह समुद्र पार करके आया था।

आगंतुकों ने कहा, 'जब हम नाव में सवारी कर रहे थे, तो उन्होंने हमें पकड़ लिया, बंदी बना लिया और कहा: "हमें शहर का रास्ता दिखाओ, और हम बदले में तुम्हारी जान बख्श देंगे।" हमारी इच्छा के विरुद्ध, हमें अपना वचन देना पड़ा, लेकिन हम खुद यह देखने का इंतजार करते रहे कि क्या कोई दक्षिणी हवा चलेगी ताकि हम उनसे दूर नौका से निकल सकें। ईश्वर की कृपा से, हम रात के समय नाव से उनकी चंगुल से भागने में सफल रहे। और इसलिए हम आपको चेतावनी दे रहे हैं कि कुछ समय के लिए सतर्क रहें – कहीं ये बर्बर लोग आपका ठिकाना न ढूंढ लें और आपको मार डालें; वे तीन सौ हैं।"

यह जानकर, हमने समुद्र के किनारे पहरेदार तैनात किए ताकि अगर वे कोई जहाज देखें तो हमें सूचित कर सकें। जहाँ तक हमारी बात है, हम पूरी रात की प्रार्थना सभा के लिए इकट्ठा हुए और प्रार्थना की कि प्रभु हमारी आत्माओं के भले के लिए हमें वह भेजें जो उचित हो।

रात के पहले पहर में, एक जहाज अपनी पालें फहराए हुए हमारे पास आता हुआ दिखाई दिया। फारान में रहने वाले आम लोगों ने अपनी पत्नियों और बच्चों की रक्षा के लिए युद्ध की तैयारी की। महिलाओं और बच्चों को छोड़कर, दो सौ पुरुष थे। जहाँ तक हमारी बात है, हम अपनी चर्च में इकट्ठा हुए, जो एक दीवार से घिरी हुई थी। बर्बरों को ले जाने वाला जहाज, नाविकों के मार्गदर्शन में घाट पर पहुँचकर, पूरी रात पहाड़ की आड़ में, झरनों के पास, पश्चिमी तट से कुछ दूर रुका रहा। पहले ही दिन की रोशनी होते ही, बर्बरों ने नाविकों को बाँधकर किनारे पर फेंक दिया, और जहाज़ पर केवल एक को ही छोड़ दिया; और यह सुनिश्चित करने के लिए कि वह जहाज़ लेकर न भाग जाए, उन्होंने उस पर नज़र रखने के लिए अपने में से एक को छोड़ दिया। झरनों के पास उतरने के बाद, उन्होंने स्थानीय निवासियों के साथ युद्ध किया, और दोनों ओर से बहुत सारे तीर छोड़े गए। बर्बर, धनुर्विद्या में अधिक निपुण होने के कारण, विजयी रहे और उन्होंने स्थानीय निवासियों को भगा दिया, जिनमें से एक सौ सैंतालीस को मार गिराया; बाकी जहाँ-तहाँ भाग गए, जबकि उनकी पत्नियाँ और बच्चे दुष्ट बर्बरों द्वारा पकड़ लिए गए। इसके बाद, वे जंगली जानवरों की तरह, ऊपर बताए गए हमारे घेरे की ओर बढ़े, इस उम्मीद में कि उन्हें वहाँ बहुत सारा सोना मिलेगा। घेरे की दीवारों को घेर लेने के बाद, उन्होंने हमें ज़ोर-ज़ोर से गाली-गलौज करना शुरू कर दिया, ताकि अपनी भयानक चीखों से हमें डरा सकें। ऐसी विपत्ति और दुख के बीच, हम नहीं जानते थे कि क्या करें – हम केवल रो सकते थे और ईश्वर से पुकार सकते थे। हम में से कुछ ने इस दुख को धैर्यपूर्वक सहन किया, कुछ रोए, जबकि अन्य प्रार्थना कर रहे थे और ईश्वर का धन्यवाद दे रहे थे; फिर भी हम सभी एक साथ, एक दूसरे को सांत्वना देते हुए, पुकार उठे:

'हे प्रभु, दया करें!'

हमारे मठाधीश, संत पॉल, चर्च के बीच में खड़े हुए और हमसे कहा:

'हे पितृबंधु और भाइयो! मुझसे सुनों, जो सबसे पापी और अयोग्य हूँ। आप सभी अच्छी तरह जानते हैं कि, हमारे प्रभु यीशु मसीह के प्रेम के लिए, हम इस व्यर्थ संसार से अलग हो गए हैं और, इस कठोर मरुभूमि में निवास करते हुए, हमें भूख, प्यास और अत्यंत गरीबी में उनका धन्य जुआ उठाने के लिए योग्य ठहराया गया है। हमने स्वर्गीय राज्य में हिस्सेदारी के योग्य माने जाने के लिए सभी सांसारिक व्यर्थताओं को ठुकरा दिया है, और हम अब मृत्यु के आने से अधिक कुछ भी नहीं चाहते। तो फिर, हमें दुख और शोक में क्यों डूब जाना चाहिए, यदि हमारे प्रभु हमें इस व्यर्थ जीवन से और अधिक शीघ्रता से मुक्त करना चाहते हैं और अपने पास ले जाना चाहते हैं? क्या हमें इसके विपरीत, आनंदित नहीं होना चाहिए? हमें आनन्दित होना चाहिए और प्रभु का धन्यवाद करना चाहिए, परन्तु किसी भी तरह से हतोत्साहित नहीं होना चाहिए! प्रभु की महिमा पर मनन करने और उनके पवित्र दिव्य मुखमंडल को निहारने से अधिक आनंददायक और मधुर हमारे लिए और क्या हो सकता है? हे पितरों और भाइयों! याद करो कि हमने हमेशा अपने से पहले रहे पवित्र शहीदों का सम्मान और महिमा की है, और कैसे, जब हमने मसीह के नाम के लिए उनकी पीड़ाओं के बारे में एक-दूसरे को बताया, तो हम उनके पदचिह्नों पर चलने की इच्छा से जल उठे। अब, आखिरकार, वह समय आ गया है, और हमारी इच्छा - आने वाले जीवन में उनके साथ होने की - पूरी हो रही है। इसलिए, हतोत्साहित न हों, दुखी न हों, और न डरें, बल्कि अपनी सारी शक्ति जुटाएँ और साहस करें; दृढ़ता से मृत्यु को स्वीकार करें, और ईश्वर आपको प्रेम से अपने राज्य में स्वागत करेंगे।

भिक्षुओं ने एक स्वर में उत्तर दिया:

'जैसा आपने कहा, आदरणीय पिताजी, हम वैसा ही करेंगे; क्योंकि "*हम प्रभु के सभी उपकारों के बदले में उसे क्या चुकाएँगे? हम उद्धार का प्याला उठाकर प्रभु के नाम का आह्वान करेंगे*" (देखें भजन संहिता 115:3–4)।

पूर्व की ओर मुख करके और अपने हाथ स्वर्ग की ओर उठाकर, हमारे पवित्र पिता ने उद्घोषणा की:

'हे प्रभु यीशु मसीह, सर्वशक्तिमान परमेश्वर, हमारी आशा और हमारी सहायता! हमें, अपने अयोग्य सेवकों को, न भूलें, बल्कि हमारी पीड़ा और हमारे दुख को याद करें, क्योंकि हमारी आत्माएँ गहराई से व्यथित हैं। इस विपत्ति के समय में हमें बल दें; हमारी आत्माओं को अनुग्रहपूर्वक एक सुखद बलिदान के रूप में स्वीकार करें, क्योंकि महिमा और सम्मान आपके ही हैं, अब और हमेशा और युगों-युगों तक।

और जैसे ही सभी ने 'आमीन' कहा, वैसे ही पवित्र वेदी से एक आवाज़ गूँजी जो सभी सुन सकते थे:

'मेरे पास आओ, हे सब मेहनत करने वालों और बोझ से दबे हुए लोगों, और मैं तुम्हें विश्राम दूँगा' (मत्ती 11:28)।

इस आवाज़ की गूँज से हम भय और आतंक से भर गए; हमारे घुटने और दिल कमज़ोर पड़ गए, क्योंकि यद्यपि आत्मा इच्छुक है, जैसा प्रभु ने कहा (मत्ती 26:41), पर शरीर दुर्बल है; इस प्रकार हम पहले ही अपने जीवन से निराश हो चुके थे और केवल स्वर्ग की ओर मुड़ गए थे। इस बीच, बर्बरों ने जब कोई भी प्रतिरोध नहीं देखा, तो उन्होंने लंबी लकड़ियों की मदद से हमारे घेरे की दीवारों पर चढ़ गए। दरवाज़े खोलकर, वे हाथों में खींची हुई तलवारें लिए, जंगली भेड़ियों और शिकारी जानवरों की तरह घुस पड़े। चर्च के दरवाज़े पर एक पवित्र व्यक्ति, यिर्मियाह नाम का एक सम्माननीय दिखने वाला बुज़ुर्ग, बैठा था। उसे पकड़कर, उन्होंने मांगा:

'हमें अपना नेता दिखाओ!'

वरिष्ठ, उनके क्रूर चेहरों और हाथों में खिंची तलवारों को देखकर बिल्कुल भी विचलित हुए बिना, उन्हें देखकर बोले:

'हे मसीह के शत्रुओ, तुम मुझे डराने की कोशिश क्यों कर रहे हो? मैं तुम्हें अपने बारे में कुछ भी नहीं बताऊँगा।'

मठाधीश पास ही खड़े थे। बर्बर लोग इस आदमी के साहस से चकित थे – कि वह न केवल उनसे नहीं डर रहा था, बल्कि वह वास्तव में उन्हें और अधिक उकसा रहा था। फिर उनका आश्चर्य क्रोध में बदल गया। उन्होंने उसके हाथ-पैर बांध दिए, उसे नग्न करके अपने बीच में खड़ा कर दिया, और उस पर तीर चलाने लगे। उस धर्मी पुरुष का पूरा शरीर तीरों से छलनी हो गया था। इस प्रकार शैतान का साहसपूर्वक सामना करने और सर्प के सिर को कुचलने के बाद, उन्हें शहीद का ताज पहनाया गया और उन्होंने युवा और वृद्ध सभी के लिए पीड़ा का एक उदाहरण स्थापित किया।

इसके बाद, हमारे पवित्र पिता पॉल बर्बर लोगों के सामने आए और अपनी ओर इशारा करते हुए, उद्घोषणा की:

'मैं ही हूँ, जिसे तुम खोज रहे हो!'

और मसीह का यह पराक्रमी सेवक निडर होकर अपने दुश्मनों के हवाले हो गया। उसने उन घावों और यातनाओं के बारे में सोचना भी नहीं चाहा जो दुष्ट लोग उसे मौत के घाट उतारने से पहले देंगे।

उन्होंने पूछा, 'बताओ, तुमने सोना कहाँ छिपाया है?'

उन्होंने अपनी आदत के अनुसार, शांत और नम्रता से उत्तर दिया:

'मेरा विश्वास करो, मैंने अपने पूरे जीवन में इस दुनिया में कुछ भी नहीं कमाया है, सिवाय इन फटे हुए कपड़ों के जो तुम मेरे शरीर पर देख रहे हो।'

जैसे ही वह बोला, उसने अपने हाथ में कपड़े उठाए और उन्हें दिखाए।

तब बर्बरों ने उसके पूरे शरीर को तीरों से भेद दिया और एक पत्थर से उसके सिर पर वार किया, और चिल्लाए: 'अपना धन सौंप दो।' कुछ भी हासिल न होने पर, लंबी यातनाओं के बाद उन्होंने उसका सिर दो हिस्सों में काट दिया, ताकि उसके कंधों से दोनों हिस्से लटक जाएँ, एक एक तरफ, और दूसरा दूसरी तरफ। अन्य कई घाव भी लगने के कारण, वह अपने पिता के पैरों तले मृत पड़ा रहा, जिन्हें पहले ही मार दिया गया था—जो उसके बाद शैतान के दूसरे विजेता थे। जहाँ तक मेरी बात है, मैं तो अयोग्य हूँ, संत लोगों की पीड़ादायक मृत्यु, उनका खून और उनके शरीर जमीन पर बिखरे हुए देखकर, मैं डर गया और छिपने तथा फिर भाग निकलने के लिए जगह खोजने लगा। चर्च के बाईं ओर खजूर के पेड़ की टहनियाँ पड़ी देख, मैं वहाँ भागा और जब वे लोग हमारे पवित्र पिता पॉल को यातना देने में व्यस्त थे, तब मैं उन टहनियों के नीचे छिपने में सफल हो गया। उस समय, मैंने सोचा कि मेरे साथ दो में से एक बात निश्चित रूप से होगी: या तो मैं यहाँ छिपकर मौत से बच जाऊँगा, या वे मुझे यहाँ पाकर पादरियों के साथ मुझे भी मार डालेंगे। निर्मम बर्बर, जब दो उपर्युक्त पादरियों की मृत्यु हो गई तो उन्हें वहीं छोड़कर, चर्च में घुस पड़े; पागलों की तरह चिल्लाते हुए और अपनी तलवारें लहराते हुए, वे पादरियों पर टूट पड़े और सबसे बड़े से लेकर सबसे छोटे तक, एक भी को न छोड़ते हुए, सभी का निर्दयता से कत्ल कर दिया।

जब उन्होंने हमें यह बताया, तो भिक्षु जोर-जोर से रोने और सिसकने लगा; उसका वृत्तांत, – जैसा कि अम्मोनियस बताता है, – ने हम सभी को भी जोर-जोर से रोने और सिसकने पर मजबूर कर दिया। सभी जोर-जोर से रो रहे थे। हमारी आँखों से नदी की तरह आँसू बह रहे थे और हमारे कपड़े भीग गए थे।

'हे भाइयो,' भिक्षु ने अपने आँसुओं के बीच अपनी कथा जारी रखी, 'मैं उस सारे दुख का वर्णन या बयान कैसे कर सकता हूँ, जिसे मेरी आँखों ने देखा है! वहाँ आदम नाम के एक महान पिता थे। उनके एक युवा शिष्य थे, सेरजियस, जिनकी आयु लगभग पंद्रह वर्ष थी। उन्होंने उसे बचपन से ही पाला था, उसे मठवासी जीवन और राक्षसों के विरुद्ध संघर्ष ( ) की शिक्षा दी थी। जंगली लोगों को सर्गियस की सुंदरता और जवानी पर दया आ गई और उन्होंने उसे मार नहीं डाला। वे उसे हाथ पकड़कर बाहर ले गए और उसे अपने साथ ले जाने का इरादा था। उस युवक को, यह समझते हुए कि वे उसे उसके पितरों और भाइयों के साथ मारना नहीं चाहते, बल्कि वह उन अधर्मी जंगली लोगों के साथ जाना था, बहुत रोया और सिसकियाँ भरने लगा। तब, उसका साहस बढ़ गया और उसने सभी भय को त्याग दिया, वह निडर होकर एक बर्बर के पास भागा और उससे तलवार छीनकर बर्बरों में से एक के कंधे पर वार किया; वह ऐसा करके बर्बरों का क्रोध अपने ऊपर उकसाना चाहता था, ताकि वे उसे मार डालें। उसकी इच्छा पूरी हुई। क्रोध से पागलाए हुए बर्बरों ने उसे टुकड़े-टुकड़े कर दिया। जैसे ही तलवारें उस पर पड़ीं, वह मुस्कुराया और कहा:

'धन्य है प्रभु, जिसने हमें पापियों के हाथों जीवित नहीं सौंपा,' और फिर वह प्रभु में सो गया।

मैंने यह सब देखा और सर्व-दयालु और प्रेममय ईश्वर से प्रार्थना की कि दुष्ट बर्बर मुझे न देखें, ताकि संतों के शवों को दफनाने वाला कोई रह जाए।

मारे गए पवित्र पिताओं के शवों ने पूरे पवित्र चर्च को खून से भर दिया। उन्होंने बिना किसी भय या दुख के मृत्यु को स्वीकार किया, और अपनी नियति के लिए परमेश्वर की स्तुति और धन्यवाद करते हुए प्रसन्न रहे। उनके विचार अपने प्रभु की ओर मुड़ गए थे। अपने धर्मी जीवन के द्वारा, उन्होंने स्वयं को पवित्र आत्मा के मंदिर बना लिया था। संसार के मोह और व्यर्थता को ठुकराकर, उन्होंने केवल परमेश्वर का अनुसरण किया और अंत में, हर प्रकार के यातनाओं के बीच उनके नाम के लिए मारे गए।

इस बीच, बर्बरों ने संतों का कत्ल करने के बाद, हर तरह की दौलत खोजने की उम्मीद में पूरे मठ की तलाशी लेना शुरू कर दिया। दुष्टों को यह नहीं पता था कि पवित्र संत किसी भी सांसारिक चीज़ को प्राप्त करने की परवाह नहीं करते थे, बल्कि, शरीर में रहते हुए भी, वे स्वर्गदूतों की तरह थे। जब यह सब हो रहा था, मैं, यद्यपि मुझ पर खून की एक बूँद भी नहीं थी, मृतक की तरह पड़ा था। मुझे डर था कि खजाने की तलाश करते समय बर्बर लोग शाखाओं को हटा देंगे। मैं अक्सर उनके नीचे से झाँकता था, उस पल का इंतजार करते हुए जब वे अंततः मेरे पास आएँगे और मुझे ढूँढ़कर, दूसरों की तरह, मुझे भी मार डालेंगे। मौत मेरी आँखों के सामने खड़ी थी, और मैंने ईश्वर से प्रार्थना की कि यदि उन्हें उचित लगे तो मुझे बचा लें। वास्तव में, बर्बर लोग शाखाओं के पास आए, लेकिन ईश्वर ने उनके हृदय और आँखों पर अँधेरा छा दिया: यह मामला उन्हें ध्यान देने योग्य नहीं लगा, और वे चले गए। फिर, मृत पवित्र पादरियों को पीछे छोड़कर और कोई लूट न पाकर, वे एक बार फिर से बंदरगाह पर अपने सफर के लिए रवाना होने लौटे। लेकिन जब वे उस जगह पहुँचे, तो उन्होंने अपनी नाव टूटी हुई पाई, क्योंकि नाविक, जिसे जहाज की रखवाली के लिए छोड़ा गया था, ने उसके साथ मौजूद बर्बर के बिना पता चलाए ही चोरी-छिपे जहाज की रस्सी काट दी थी। हवा जहाज को किनारे पर ले आई थी, जहाँ वह टुकड़े-टुकड़े हो गया; नाविक, उस बर्बर को मारकर, भाग गया और पहाड़ों में छिप गया। अपना जहाज खोने के बाद, बर्बरियों को समझ नहीं आया कि क्या करें या अपनी भूमि पर कैसे लौटें। निराशा और प्रचंड क्रोध में, वे अपनी तलवारों से अपने कैदियों पर टूट पड़े और उन सभी का कत्ल कर दिया, उन्होंने न तो महिलाओं को बख्शा और न ही बच्चों को; फिर उन्होंने आग लगाई और सभी खजूर के पेड़ों को जला दिया।

इस बीच, छह सौ तक की संख्या वाले बड़ी संख्या में विशिष्ट योद्धा फारान शहर से आए, क्योंकि रैफ़ में पवित्र पुरोहितों की पिटाई की खबर पहले ही उन तक पहुँच चुकी थी। यह जानकर, बर्बरियों ने युद्ध की तैयारी की और, सूर्योदय पर, समुद्र तट पर नए आए लोगों के साथ मुकाबला किया। दोनों पक्षों से बड़ी संख्या में तीर चलाए गए; फारान के लोग अधिक संख्या में होने के कारण हावी होने लगे और उन्होंने पहले ही कई बर्बरों को मार गिराया था। चूँकि बर्बरों को भागने की कोई उम्मीद नहीं थी, उन्होंने नौवें घंटे तक अपना बचाव किया और अपनी जगह डटे रहे। उन्होंने फारान के अस्सी-चार लोगों को मार गिराया, उन कई लोगों को छोड़कर जो घायल हुए थे। जहाँ तक बर्बरों का सवाल है, वे आखिरी व्यक्ति तक लड़ते-लड़ते मर गए, उन्होंने अपने दुश्मनों के सामने आत्मसमर्पण करने या अपनी जगह छोड़ने से इनकार कर

दयिा। जब यह सब हो रहा था, तब मैं, धीरे-धीरे अपने होश में आकर, उस जगह से रेंगकर बाहर नकिला जहाँ मैं छपि रहा था। जब मैंने मारे गए संतों के शरीरों को छुआ, तो पता चला कि तीन को छोड़कर बाकी सभी पहले ही मर चुके थे: डोमनस, एंड्रयू और ओरयिन। इनमें से, डोमनस अपनी बगल में लगे एक गंभीर घाव से बहुत बुरी तरह पीड़ति था। एंड्रयू, यद्यपि उसे कई घाव लगे थे, वे बहुत गंभीर नहीं थे, इसीलिए वह जीवति रहा। हालाँकि, ऑरयिन को बलि्कुल भी चोट नहीं लगी थी। एक बर्बर ने उसे अपनी तलवार से दाहनिी ओर मारा, और तलवार उसके शरीर को छुए बनिा ही उसकी बाईं ओर से उसके कपड़ों को चीरती हुई नकिल गई। उस बर्बर ने यह सोचकर कि ओरयिन मर गया है, उसे छोड़ दयिा और दूसरों की ओर मुड़ गया; हालाँकि, ओरयिन मारे गए लोगों के बीच पड़ा रहा, ऐसा दखि रहा था मानो वह मर गया हो। अब उठकर, वह मेरे साथ संतों के शवों के चारों ओर घूमा, उन पर आई इस वपित्ति पर रोते और वलिाप करते हुए।

इसके बाद, फारान के लोगों ने, जंगली जानवरों और शकिारी पक्षयिों द्वारा चीर-फाड़ कएि जाने के लिए समुद्र तट पर बर्बरों के शवों को छोड़ दयिा और अपने दोस्तों के शवों को इकट्ठा करके, रोते हुए, उन्हें पहाड़ की छाया में, जहाँ झरने थे, दफना दयिा। फरि वे हमारे पास लौट आए; और उनके साथ उनका राजकुमार वेदयिन भी आया, जसिे जैसा कि पहले बताया गया है, आदरणीय मूसा ने पशिाच के प्रभाव से ठीक कयिा था। उनके साथ चर्च में प्रवेश करके, हम रोए, अपनी छाती पीटी और बहुत रोए, क्योंकि मसीह के झुंड को पृथ्वी पर गरिता हुआ देखा—जैसे जंगली जानवरों द्वारा नोचे गए भेड़ों का झुंड। सम्माननीय बुजुर्ग, जनिके सरि पर उम्र की पावन धूसरता का मुकुट था, अपने जीवन की पुण्य-प्रभा से उनके मुख पर भोर की करिणों की तरह चमक बखिर रही थी, और वे स्वर्गदूतों की भाँति युवा प्रतीत हो रहे थे। मसीह के सेवक और शहीद वहाँ भयानक और गंभीर घावों से ढके पड़े थे: एक के कंधे से पेट तक एक घाव था; दूसरा आधा कटा पड़ा था ( ); एक का सरि धड़ से अलग कर दयिा गया था; एक की आँखें नकिाल ली गई थीं; तीसरे की बाहें और पैर काट दएि गए थे; चौथे के हृदय में एक भाला घोंपा गया था। इस प्रकार वे सभी अपने शरीर पर वभिन्नि घावों के साथ परलोक सधिार गए। जब वे जीवति थे, तो वे हमेशा अपने शरीर में प्रभु यीशु की मृत्यु को लिए रहते थे, ताकि यीशु का जीवन भी उनके शरीर में प्रकट हो सके (2 कुरन्थियिों 4:10)। परमेश्वर को भाता जीवन जीने के बाद, वे अपनी मृत्यु पर अपने रक्त द्वारा महमिामय हुए और इस प्रकार संतों के समूह में गनि गए।

हमने संतों के शवों को एक ही स्थान पर इकट्ठा कयिा। धर्मनष्ठि राजकुमार वेडयिन ने, अन्य लोगों के साथ, फारान से सफेद वस्त्र लाए, और हमने उन उनतीस पवत्रि पतिाओं को दफनाया। उस समय उपस्थति सभी लोगों ने वलिो और खजूर की टहनयिाँ लीं और कड़वे आँसुओं के साथ भजन गाते हुए, संतों के पूजनीय अवशेषों को ले गए। डोमनस के अलावा, सभी को एक साथ दफनाया गया। उपर्युक्त डोमनस, जो जन्म से एक रोमन था, अभी भी जीवति था; लेकनि शाम तक वह भी प्रभु में सो गए। उन्हें पवत्रि पतिाओं के साथ दफनाया गया। मसीह के पवत्रि शहीदों का नधिन जनवरी की चौदह तारीख को, दनि के नौवें घंटे पर हुआ। फादर एंड्रयू और फादर ओरयिन इस बात को लेकर दुवधिा में थे कि क्या करें – वहीं रहें या चले जाएँ। जहाँ तक मेरी बात है, मैं उस स्थान के दुख और सुनसान दृश्य को सहन नहीं कर सका, और न ही मैं मारे गए पादरयिों के लिए अपने आँसू रोक सका; और इसलिए मैं आपके पास आया हूँ, भले ही धर्मपरायण वेडयिन ने मुझे वहाँ रहने के लिए मनाने की कोशशि की, यह वादा करते हुए कि वह मुझसे अक्सर मलिने आएगा और हमें हमारी ज़रूरत की हर चीज़ लाकर देगा। मैं आपसे, पतिाओं, वनिम्र नविेदन करता हूँ कि आप मुझे वह सब कुछ बताइए जो यहाँ हुआ है, ठीक वैसे ही जैसे आपने स्वयं मुझसे सब कुछ वस्तिार से जाना है।

अम्मोनयिस ने कहा, 'हमने उसे वह सब कुछ बताया जो यहाँ हुआ था, और ईश्वर के अद्भुत मार्गों पर आश्चर्यचकति हुए—कि कैसे ठीक उसी दनि और उसी तारीख को पवत्रि पतिाओं को वहाँ और यहाँ दोनों जगह मारा गया था—और एक बार फरि हम सब एक साथ रोने और वलिाप करने लगे। हमारे पूजनीय पति डुला उठे और कहा:

'मेरे प्रयिजनों! पवत्रि शहीदों को, मसीह के चुने हुए सेवकों के रूप में, अब वास्तव में योग्य ठहराया गया है—उन्होंने शहीद के मुकुट से अपने कर्मों को सील कर दयिा है—स्वर्ग के राज्य में आनंद, महान महमिा और सम्मान का। जहाँ तक हमारी बात है, जो इस हालयिा वपित्ति से बच गए हैं, हमें अपना ख्याल रखना चाहिए और उनसे प्रभु से हमारे लिए प्रार्थना करने का आग्रह करना चाहिए, ताकि हम भी उनके साथ स्वर्ग के राज्य के वारसि बन सकें; और अब हम परमेश्वर के लिए धन्यवाद का गीत गाएँ, जसिने हमें बर्बर लोगों के हाथों से बचाया है।

इन शब्दों से उन्होंने हम सभी को प्रोत्साहति कयिा, हमारे हृदय के दुख को आनंद में बदल दयिा, और हमारी आत्माओं को सांत्वना दी।

मैं, पापी अम्मोनियस, ईश्वर की सहायता से मिस्र लौट आया और मैंने इन सबका एक वृत्तांत लिखा। मैं कैनोवो नामक पूर्व स्थान पर वापस नहीं गया, बल्कि मेम्फिस के पास एक छोटी सी कोठरी में बस गया[1012] । वहाँ रहते हुए, मैं अक्सर श्रद्धा के साथ मसीह के पवित्र शहीदों के दुख-क्लेश और पराक्रमी कारनामों को याद करता हूँ। उनके साथ, प्रभु यह अनुग्रह करें कि हम भी उनके स्वर्गीय राज्य में सहभागी होने और उन सभी के साथ अकथनीय और अविनाशी आशीर्वादों का आनंद लेने के योग्य ठहरें जो उनसे प्रेम करते हैं, क्योंकि सारी महिमा उन्हीं की हो, सम्मान और आराधना, उनके अनुग्रहकारी पिता और उनके सर्व-पवित्र, शुभ और जीवन-दायक आत्मा के साथ, अब और सदा और युगानुयुग, आमीन।

ट्रोपारियन, स्वर 4:

हे ईश्वर, हमारे पिता, जो अपनी नम्रता में सदैव हमारे साथ कार्य करते हैं, हमसे अपनी दया न रोकें, बल्कि उनकी प्रार्थनाओं के द्वारा, हमारे जीवन को शांति में निर्देशित करें।

कॉन्टाकियन, स्वर 2:

आप संसार के कोलाहल से भागकर एक शांत आश्रय में शरण ली, शहादत के रक्त और उपवास के श्रम से सुशोभित। इस प्रकार आप शहीदों और पवित्र पितरों के साथी के रूप में प्रकट हुए।

सिनाई और राइफा में पूजनीय पितरों का दूसरा उत्पीड़न

14 जनवरी को स्मरणोत्सव

सिनाई के पवित्र पिताओं के पहले उत्पीड़न को हुए कई साल बीत चुके थे, और एक बार फिर, पवित्र उपवास करने वाले नील के दिनों में, बर्बर लोगों ने सिनाई पर्वत पर हमला किया। वे अरब और मिस्र के बीच लाल सागर से लेकर जॉर्डन तक फैले रेगिस्तान में घूमते थे, और शहरों या घरों में नहीं, बल्कि तंबुओं में रहते थे। एक स्थान से दूसरे स्थान को जाते हुए, वे तब तक लंबे समय के लिए डेरा डालते थे जब तक उन्हें अपने पशुओं के लिए अच्छा पानी और चरागाह मिल जाता था। वे अपना जीविकोपार्जन किसी शिल्प, व्यापार या कृषि से नहीं, बल्कि जंगली जानवरों का शिकार करके और मुख्य रूप से डकैती से करते थे। तलवारों, धनुषों और भालों से लैस, वे पूरी तरह से दूसरे लोगों की बस्तियों पर छापा मारने और सड़कों पर डकैती करने में लगे रहते थे।

पवित्र पिता, जिन्होंने ईश्वर के लिए सिनाई रेगिस्तान में एकांत जीवन चुना था, रहते थे—कुछ गुफाओं और चट्टानी दर्रों में, कुछ झरनों के पास बनी छोटी-छोटी कोठरियों में, और कुछ चर्च के पास। वे कच्ची जड़ों और खजूर के साथ-साथ उस क्षेत्र में मिलने वाली सब्जियों पर जीवित रहते थे। उनमें से शायद ही कोई रोटी खाता था, क्योंकि वे महान संयम और कठोर उपवास का जीवन जीते थे: कुछ केवल हर दूसरे दिन, या हर दो या तीन दिनों में एक बार खाते थे, जबकि कुछ ऐसे भी थे जो अपने नाजुक शरीर को सप्ताह में केवल एक बार ही भोजन से पोषण देते थे। उनका जीवन सभी देवदूतों जैसा था। मानो वे अपने शरीर को भूल गए हों, वे अपनी आत्मा की परवाह करते थे और केवल प्रभु को प्रसन्न करने के बारे में सोचते थे। उन्होंने उसे ईमानदारी और उत्साह से सेवा की, दिन-रात उसकी महिमा करते हुए। वे निरंतर प्रार्थना करते और भजन गाते हुए, रविवार को सभी चर्च में इकट्ठा होते और पूरी रात प्रार्थना में बिताने के बाद, सुबह दैवीय रहस्यों को ग्रहण करते; बाद में, अपनी कोठरियों में लौटकर, वे मौन में रहते।

उनमें आदरणीय नीलस द फास्टर भी थे। उन्होंने पहले कॉन्स्टेंटिनोपल में एपार्क ([1013]) का पद संभाला था और एक सदाचारी विवाह में रहते हुए उनके दो बच्चे हुए थे। बाद में, अपनी पत्नी के साथ पारस्परिक सहमति से, उन्होंने संसार

[1012] मेम्फिस – मिस्र की प्राचीन और शक्तिशाली राजधानी – मध्य मिस्र में नील नदी पर स्थित थी, मुख्य नदी और उसकी सहायक नदी के बीच, जो शहर के पश्चिमी किनारे से बहती थी।

[1013] एपार्क – किसी शहर या प्रांत का प्रमुख।

का त्याग कर दिया: नीलस की पत्नी और बेटी मस्रि चली गईं और वहाँ, महलिाओं के एक मठ में, उन्होंने मठवासी संन्यास की शपथ ली। जहाँ तक धन्य नीलस का प्रश्न है, वह अपने पुत्र थियोडुलस के साथ सनिाई पर्वत पर चले गए; वहाँ उन्होंने बर्बर लोगों द्वारा की गई तबाही देखी और बाद में इन पवत्रि पतिाओं के नरसंहार का वर्णन किया। पहाड़ पर रहते हुए, आदरणीय नीलस की आदत थी कि वे आसपास के क्षेत्र में रहने वाले संतों से मलिने जाया करते थे। एक अवसर पर, वे अपने पुत्र के साथ पहाड़ से उतरकर संतों के पास आए, जहाँ वे अपने सामूहकि भोजन के लिए एकत्रति थे। वहाँ के पुरोहति, धन्य थियोडुलस ने, भोजन के दौरान अन्य बातों के अलावा कहा:

'कौन जाने कि मिरने से पहले हम इस भोजन पर फरि कभी एक साथ इकट्ठा हो पाएँगे या नहीं?'

उन्होंने ऐसा इसलिए कहा क्योंकि उन्होंने अपने आत्मा में आने वाली वपित्तकिा पूर्वाभास कर लिया था। अगले दनि, मैटनि्स के बाद, बर्बरों ने अचानक उस पवत्रि स्थान पर हमला कर दिया। पागलों की तरह, उन्होंने मठ को घेर लिया और अपनी दानवी चीखों से हवा गूँजते हुए, अंदर मौजूद लोगों को डराने की कोशशि की। फरि वे भंडारगृहों की ओर बढ़े, जहाँ उपवास कर रहे भक्षिुओं के लिए थोड़ा भोजन इकट्ठा किया गया था और जहाँ सर्दियों में भक्षिुओं को उनके महान श्रम के बीच जीवति रखने के लिए सूखी सब्जियाँ रखी जाती थीं। सबसे पहले, बर्बरों ने इस भोजन को लूट लिया; फरि वे चर्च की ओर दौड़े जहाँ संत इकट्ठा हुए थे, सभी को वहाँ से बाहर नकिाल दिया, उनके फटे-पुराने कपड़े फाड़ दिए, और उम्र के कारण झुके हुए बुजुर्ग पुरुषों को नग्न करके कतार में खड़ा कर दिया, ताकि उन्हें मारना आसान हो सके। धन्य थियोडुलस, जो उस पवत्रि स्थान के पुरोहति थे और जनि्होंने एक दनि पहले ही अपनी मृत्यु की भवषि्यवाणी की थी, उन्हें आदेश दिया गया कि वे सबसे पहले तलवार के आगे अपना सरि झुकाएँ; दो क्रूर दखिने वाले बर्बर अपनी खींची हुई तलवारों के साथ उनके दोनों ओर खड़े हो गए। जब उन्होंने तलवार के आगे अपना सरि झुकाया, तो उन्होंने कोई डर नहीं दखिाया, बल्कि बिस धीरे से कहा:

'प्रभु धन्य हों!'

दोनों बर्बरयिों ने, एक के बाद एक, उस पर वार किया; एक घाव उसकी रीढ़ की हड्डी से जबड़े तक गया, दूसरा उसके कंधे से छाती तक; वह धर्मी व्यक्ति जिमीन पर गरि पड़ा। इसके बाद, उन्होंने उस दूसरे बुजुर्ग को भी पकड़ लिया और मार डाला जो पादरी के साथ रह रहा था। स्थानीय पादरी की सेवा में एक युवा नौकर था; बारबेरयिन ने उसे बखिरे हुए फल इकट्ठा करने का आदेश दिया, और ऐसा दखिावा किया मानो वे उसे बख्शना चाहते हों, क्योंकि वह सेवा के काबलि था। लेकनि जब वह फल इकट्ठा करने के लिए झुका, तो पीछे खड़े एक बारबेरयिन ने, अपनी तलवार चुपके से खींचकर, लड़के पर एक क्रूर वार किया और उसे मार डाला।

जब दूसरे संतों को पीटा जा रहा था, तो कुछ बर्बर—जाहरि तौर पर ईश्वर की वशिेष प्रेरणा से प्रेरति होकर—ने अपने हाथों से दूसरे भक्षिुओं को भागने का इशारा किया। जो शारीरकि रूप से मजबूत और दौड़ने में सक्षम थे, वे वास्तव में भाग गए, और घाटी के पार एक ऐसे पहाड़ की ओर चले गए जसिे बर्बरों के लिए पहुँचना मुश्कलि था। अपनी ताकत जुटाकर, धन्य नीलस भी उनके साथ दौड़ पड़े और इस प्रकार मृत्यु से बच नकिले। हालाँकि, उनका बेटा थियोडुलस बर्बरों के हाथों में रह गया। चूँकि वह बहुत सुंदर था, उन्होंने उसे नहीं मारा, बल्कि उसे बाँधकर अपने साथ ले गए ताकि उसे सुबह की पहली करिण के लिए बलदिान कर सकें, जसिकी वे ईश्वर के स्थान पर पूजा करते थे। सच्चे ईश्वर को न जानते हुए, वे मूर्तयिों की पूजा नहीं करते थे, और न ही उन्होंने कसिी भी वधिर्मी देवता का सम्मान किया; वे केवल भोर की करिण की ही सेवा करते थे; और वे हमेशा उसे बलदिान के रूप में अपना सर्वोत्तम लूट अर्पति करते थे, अक्सर उसके सम्मान में सबसे सुंदर बंदी युवकों को काट डालते थे, जसिके लिए उन्होंने आदरणीय नीलस के पुत्र को बचाया था।

अन्य पड़ोसी मठों को लूटने और वभिन्नि स्थानों पर कई पवत्रि पादरयिों का वध करने के बाद, वे बर्बर लोग चले गए।

नलिस द फास्टर, पहाड़ की चोटी से अपने बेटे को बंदी बनाकर ले जाते और पवत्रि फादरों की क्रूर मृत्यु को देखकर, अत्यंत दुःख के साथ रो पड़े और पुकार उठे:

[1014]– हे धन्य, त्रि-धन्य पतिाओं! अब कहाँ है आपकी आत्म-त्याग का फल? कहाँ है आपकी दुःखों की अनवरत सहनशक्ति? क्या आपको अपने अनेक पराक्रमी कारनामों का मुकुट मलिा है? क्या यही है आपके दीर्घकालीन संन्यासी जीवन का पुरस्कार? क्या आपने सचमुच अपने सामने रखे मार्ग पर व्यर्थ ही चलना सीखा है? क्या सद्गुण के लिए

[1014] काँटेदार झाड़ी – एक काँटेदार झाड़ी, जसिके कारण ऐसे झाड़यिों से ढके माउंट सनिाई को अपना नाम मलिा।

दुर्भाग्य सहना न्यायसंगत है? क्योंकि जब तुम मार डाले जा रहे थे तो ईश्वर की व्यवस्था ने तुम्हें सहायता के बिना छोड़ दिया; न्याय ने तुम्हारे हत्यारों के विरुद्ध तुम्हारी निर्दोषता की रक्षा नहीं की, बल्कि एक अशुद्ध हाथ तुम्हारे पवित्र शरीरों पर हाथ रखने में सक्षम था, और दुष्टता इस बात पर घमंड कर सकती है कि वह विजयी हुई है। झाड़ी ने अपनी प्राचीन ज्वाला क्यों नहीं भड़काई और अधर्मी लोगों को भस्म क्यों नहीं कर दिया (निर्गमन 3:2)? पृथ्वी ने अपना मुँह खोलकर उन्हें क्यों नहीं निगल लिया, जैसा उसने एक बार कोराह और उसके सभी अनुयायियों के साथ किया था (गिनती 16:32)? वह भयानक ध्वनियाँ, जो एक बार सिनाई पर्वत से गूँजी थीं (निर्गमन 19:16), दुष्टों के हृदय में भय उत्पन्न करने के लिए फिर क्यों नहीं गूँजीं? – लेकिन सर्वशक्तिमान का दंड विलंबित हो गया: उन्होंने न तो आकाश से हत्यारों को मार गिराया, और न ही अपने सर्वशक्तिमान हाथ से मारे गए लोगों को बचाया – ताकि अत्याचारी चमत्कारों को देखकर ईश्वर की अजेय शक्ति को पहचान सकें। इस प्रकार, निस्सहाय और निशब्द पीड़ितों की तरह, पवित्र पिता उस पहाड़ पर, जहाँ से व्यवस्था दी गई थी, झाड़ियों के झुरमुट में गिर पड़े। तो फिर वह शक्ति कहाँ थी जिसने मिस्रवासियों को समुद्र में डुबो दिया और उनके लिए समुद्र के तल में एक कब्र तैयार की (निर्गमन 14:28)? वह शक्ति जिसने इस्राएलियों के शत्रुओं को पत्थरों की बौछार से मार गिराया और बिना रक्तपात या परिश्रम के अपने लोगों को विजय प्रदान की (यहोशू 10:11)? सर्वोच्च ने अपनी सहायता कहाँ छिपाई, जिसने सिंहों के मुँह बंद कर दिए ताकि वे दानिय्येल को नुकसान न पहुँचा सकें (दानिय्येल 6:16), और जिसने बेबीलोन के युवकों के लिए आग की शक्ति को बुझा दिया, जिससे उनकी धार्मिकता प्रकट हुई (दानिय्येल 3:24)? तो फिर, वह अपने इन सेवकों के सद्गुण को कैसे छिपा सकता था, उन्हें असहाय छोड़कर, जैसे कि वे उसकी मदद के बिल्कुल भी हकदार न हों?

धन्यवर ने हृदय की पीड़ा और महान शोक के कारण ऐसा कहा। तीव्र पीड़ा से पीड़ित आत्मा कभी-कभी बिना सोचे-समझे बहुत कुछ कह देती है; क्योंकि ईश्वर की सहायता अक्सर धर्मी लोगों से दूर हो जाती है, उन्हें उनके यातनादाताओं के हाथों में सौंप देती है ताकि वे हर प्रकार की यातनाएँ और एक अन्यायपूर्ण मृत्यु सहें, और यह इस उद्देश्य से होता है कि उनकी सद्गुण सोने की तरह शुद्ध हो जाए, उनका विश्वास दीपक की तरह चमके, और वे स्वर्ग में एक बड़े पुरस्कार के योग्य माने जाएँ। निस्संदेह, ये पूजनीय संत, उनसे पहले चुने गए संत-पुरुषों के साथ, पवित्र शहीदों में गिने गए हैं और अब मसीह के राज्य में महिमामय हैं।

जैसे ही शाम हुई, परम पूज्य नीलस और उनके साथ भाग निकले अन्य लोग, मारे गए संतों के शवों को दफनाने के लिए पहाड़ से उतरने का साहस करने लगे। उन्हें परम पूज्य थियोडुलस, जो एक पुरोहित थे, जीवित और मुश्किल से बोल पाने की स्थिति में मिले। वे पूरी रात उनके पास बैठे रहे और रोते रहे। लेकिन, उस वृद्ध ने उनसे कहा:

'हम पर आई इस विपत्ति को देखकर निराश न हो, क्योंकि शैतान ईश्वर से यह प्रार्थना करने की आदत रखता है कि वह उसे उन लोगों को परीक्षा में डालने दे जो उसे प्रसन्न करने का प्रयास करते हैं; इसी प्रकार, उसने यॉब को विपत्तियों से पीड़ित करने की अनुमति मांगी, और यहाँ तक कि उसके बच्चों को भी नष्ट कर दिया।' परन्तु प्रभु, जो भलाई करने वाले हैं, जानते हैं कि वे अपने साधुओं को शत्रु के वश में क्यों कर देते हैं: वे ऐसा उन लोगों को जो दुख सहते हैं, परम पुरस्कार प्रदान करने के लिए करते हैं। यदि प्रभु ने अय्यूब को उसकी खोई हुई संपत्ति से दोगुना लौटा दिया (अय्यूब 42:10), तो उन लोगों के लिए एक अतुलनीय बड़ा इनाम इंतजार कर रहा है जो उनसे प्रेम करते हैं और उनके लिए दुख सहते हैं – *'जो नेत्रों ने नहीं देखा, और न कानों ने सुना, और न मनुष्य के मन में प्रवेश किया'* (1 कुरिन्थियों 2:9)।

इस प्रकार कहकर और अपने आसपास के लोगों से विदा लेकर, वह ज्येष्ठ सूर्योदय से पहले, अन्य मारे गए पिताओं के साथ दफनाए जाने से पहले चल बसे। इस बीच, एक युवक मठ में पहुँचा, जो बर्बरों से भागकर आया था । वह बोयार मागेडॉन का नौकर था, जो उस समय राज्य के कामों से उस इलाके में आया हुआ था। जंगली लोगों ने इस बोयार को उसके बेटे के साथ रास्ते में कहीं पकड़ लिया था। उन्हें लूटने के बाद, उन्होंने पहले उसके पिता की आँखों के सामने बेटे को मार डाला, और फिर पिता को खुद मार डाला। वह युवक, जो उनके गुलामों में से एक था, भागने में सफल हो गया और भयानक रूप से तबाह मठ में पहुँचा, डर से काँपता हुआ, मानो कोई उसका पीछा कर रहा हो और वह पकड़ा जाने ही वाला हो। संत नीलस ने उस युवक से पूछना शुरू किया कि वह कैसे भागने में सफल हुआ। युवक ने जवाब दिया:

'मुझे आपके बेटे के साथ बाँधा गया था; कल बर्बर लोग आपस में बात करने और सलाह-मशविरा करने लगे – जैसा कि एक बंदी, जो उनकी भाषा जानता था, ने मुझे गुप्त रूप से बताया – कि वे भोर होते ही हम दोनों का – मेरा और आपके बेटे का – भोर की किरणों के लिए बलिदान कर देंगे, जिसके लिए उन्होंने पहले ही पत्थरों का एक वेदी बना लिया था और उस

पर लकड़ी रख दी थी। मैंने तुम्हारे बेटे को इस बारे में बताया और उससे कहा कि जब तक हम भाग नहीं निकलते, हम फिर कभी सूर्योदय नहीं देख पाएंगे। लेकिन वह डरकर वहीं रह गया कि कहीं वह पकड़ा न जाए, यह कहते हुए:

'अगर ईश्वर की यही इच्छा है, तो मौत से भागना या शरण पाना असंभव है—भले ही कोई सबसे दुर्गम और गुप्त स्थानों में छिप जाए।'

जहाँ तक मेरी बात है, आधी रात को, इस बात का फायदा उठाते हुए कि शाम से ही बहुत शराब पीने के कारण बर्बर लोग गहरी नींद में सो रहे थे, मैंने खुद को बाँधने वाली रस्सियों से आजाद किया और एक साँप की तरह रेंगते हुए उनके शिविर की सीमाओं से बहुत दूर निकल गया; फिर, अपने पैरों पर खड़ा होकर, मैं तेजी से भागा और डर के मारे, पंखों की तरह उड़ता हुआ आगे बढ़ गया। मुझे डर था कि अगर उन्हें मेरी भागने का पता चल गया, तो वे मेरा पीछा करके मुझे पकड़ लेंगे; आज भी मैं उस डर और भय से खुद को आज़ाद नहीं कर पाता: उन क्रूर यातनाओं को, जो बर्बरों ने मेरी मौजूदगी में दूसरों को दी थीं, मैं आज भी अपने मन में साफ़-साफ़ देखता हूँ, और ऐसा लगता है मानो मैं उन्हें अभी भी अपनी आँखों से देख सकता हूँ।

और उस युवक ने कई पवित्र पादरियों की हत्या के बारे में बताया।

'एक सुनसान जगह पर,' उसने कहा, 'जहाँ पानी था, बर्बर लोग आराम करने के लिए रुके। और वहाँ उन्होंने पहाड़ में एक छोटी गुफा देखी। उसकी ओर दौड़ते हुए, वे एक सम्माननीय रूप वाले वृद्ध व्यक्ति को बाहर खींच लाए, जिसे उन्होंने पहाड़ से नीचे घसीटकर पत्थर मार-मार कर हत्या कर दी। फिर, थोड़ा और आगे चलने पर, उन्होंने एक दुबले-पतले और पीले चेहरे वाले युवा भिक्षु को पकड़कर पत्थर मार-मार कर हत्या कर दी। इसके बाद, वे एक घने जंगल वाले स्थान पर पहुँचे, जहाँ एक छोटी गुफा थी जिसमें एक तपस्वी शरण ले चुका था; वह उम्र में जवान था, लेकिन अपने आत्मा की महानता में बूढ़ा था। जब बर्बरों ने उससे बाहर निकलने और अपने कपड़े उन्हें सौंपने की मांग की, तो तपस्वी ने उत्तर दिया:

'यह आवास, जिसमें मैंने अपना जीवन बिताया है, ही मेरी कफ़न बने; मुझे यहीं मार डालो। जहाँ तक मेरे कपड़ों की बात है, मैं उन्हें उतारूँगा नहीं, कहीं मैं अपना नंगा शरीर न देख लूँ, जिसे मैंने अब तक नहीं देखा है। जब मुझे मार डालना हो तो तुम खुद ही उन्हें उतार लेना – तब मैं मर चुका होऊँगा और अपने बारे में कुछ भी न जानूँगा।'

बारबेरियन एक बार फिर उसके पास आए और उस रेगिस्तान में गुप्त मठों का पता बताने की मांग की, बदले में उसके जीवन की रक्षा का वादा करते हुए। लेकिन उसने जवाब दिया:

'यद्यपि मैं उन स्थानों को जानता हूँ जहाँ पवित्र पुरुष निवास करते हैं, मैं तुम्हें नहीं बताऊँगा, क्योंकि मैं ईश्वर के सेवकों का विश्वासघाती नहीं बनना चाहता।'

तपस्वी के साहस और बहादुरी ने दुष्ट लोगों को क्रोधित कर दिया, और उन्होंने, गुफा में जबरदस्ती घुसकर, उसे अपनी तलवारों से काट-काट कर टुकड़े-टुकड़े कर दिया। रेगिस्तान में और आगे बढ़ने पर, वे तीन संतों पर पहुँचे और उन पर टूट पड़े, उन्हें अपनी तलवारों से मार डाला। तब उन्होंने दूर से दो मठ देखे जो थोड़ी दूरी पर स्थित थे। वे दो समूहों में बँटकर उनकी ओर चल पड़े; लेकिन उन्होंने वहाँ क्या किया, या उन्होंने किसे पिता को मारा, मुझे नहीं पता (यह बात उस युवक ने कही जो बच निकला था); मैंने तो बस दूर से ही देखा कि एक भिक्षु भाग रहा था, जबकि बर्बर लोग उसका पीछा करते हुए उस पर तीर चला रहे थे; फिर, जब वह थककर गिर पड़ा, तो उन्होंने उसे तलवारों और भालों से मार डाला। अगली रात मैं भाग गया, जैसा कि मैंने आपको पहले बताया था। आपके बेटे का क्या हुआ - यह केवल भगवान ही जानता है। मैंने उसे जीवित छोड़ दिया, लेकिन उसके बचने की कोई उम्मीद नहीं थी, क्योंकि भोर होते ही उसे बलिदान के रूप में अर्पित कर दिया जाना था।

यह सुनकर, पूजनीय नीलस अपने पुत्र की मृत्यु पर जोर-जोर से रोए और विलाप करने लगे। उन्हें सबसे अधिक इस बात का दुख था कि उनके पुत्र को अधर्मी लोग बलिदान के रूप में मारने वाले थे। उन्होंने ईश्वर से इन शब्दों में पुकारा:

'हे मेरे प्रभु, हे मेरे पितरों के परमेश्वर! परमेश्वर की अति पवित्र माता, जिन्होंने आपको जन्म दिया, उनके वास्ते; आपकी भलाई के वास्ते – मेरे पुत्र को बर्बरों के हाथों नष्ट न होने दें!'

और ईश्वर ने, अपनी विशेष कृपा से, युवक थियोडुलस को सुरक्षित रखा। बर्बर लोग सूर्योदय तक गहरी नींद में सोए रहे। जागने पर और यह देखकर कि भोर का तारा पहले ही अस्त हो चुका था और बलिदान के लिए चुने गए युवकों में से एक भाग गया था, उन्होंने अपना प्रथागत बलिदान नहीं किया, बल्कि शेष युवक को अपने साथ ले गए। इस बीच, फारान के निवासियों ने अपने संदेशवाहकों को अगारियन राजकुमार अमान के पास उनके डाकुओं के खिलाफ शिकायत लेकर भेजा

– कि उन्होंने शांति संधि का उल्लंघन करते हुए भिक्षुओं पर हमला किया और उन्हें बहुत नुकसान पहुँचाया। उस समय, धन्य नीलस बचे हुए संतों के साथ मारे गए संतों के शवों को खोजने और उन्हें उचित अंतिम संस्कार देने के लिए रेगिस्तान में निकल पड़े। यह पता चला कि प्रोक्लस की हत्या बेथ-राम में, हाइपैटियस की गेफा में, इसाक की हत्या सलाइल नामक एक मठ में, मैकारियस और मार्क की हत्या एक पड़ोसी रेगिस्तान में, एलमि के पार बेंजामिन की, यूसेबियस की फोल् में, और एलियाह की अज़ा में हुई थी[1015] ; उन्हें वह अभी भी सांस लेता हुआ मिला – इसलिए वे उसे उठाकर एक कोठरी में ले गए, जबकि वे खुद दूसरों को दफनाने के लिए लौट गए। हालाँकि, जब वे लौटे, तो उन्होंने उसे भी पानी के एक पात्र के पास मृत पाया: अपने कई घावों के कारण प्यास से त्रस्त, जैसे ही उसने पानी का स्वाद चखा, वह तुरंत गिर पड़ा और मर गया। जिन सभी को वे ढूंढ सके, उन्हें दफ़नाने के बाद, वे यह पता लगाने के लिए फारान के लिए रवाना हो गए कि अगारिया के राजकुमार द्वारा भेजे गए दूत क्या खबर लाएंगे। जैसे ही वे शहर में प्रवेश कर रहे थे, दूत राजकुमार का एक शांतिपूर्ण संदेश लेकर उसी समय लौट आए। उसमें, उसने ऐसे अत्याचार करने की हिम्मत करने वाले डाकुओं को दंडित करने और बिना किसी देरी के मौत की सज़ा देने का वादा किया; उसने फारान के निवासियों को यह भी आदेश दिया कि वे बिना किसी डर के उसके पास आएं और अपने बंदियों को, जिन्हें वे जीवित पाएं, बिना किसी फिरौती के वापस ले जाएं। फारान के लोग इकट्ठा हुए और अगारिया के राजकुमार के दरबार के लिए रवाना हो गए; धन्य नील अपने बेटे के बारे में पता लगाने के लिए उनके साथ गए—कि क्या वह अभी भी कैद में जीवित था या बर्बरों के हाथों पहले ही मारा जा चुका था। और उन्हें पता चला कि उनका बेटा जीवित है। उसे एमेसा शहर[1016] में बेच दिया गया था, और उस शहर के बिशप ने उसे छुड़ाकर अपने पुरोहित वर्ग का सदस्य बना लिया था। आदरणीय नीलस द फास्टर स्वयं अपने प्रवचन में यह सब विस्तार से बताते हैं। वहां पहुंचने पर, आदरणीय व्यक्ति ने अपने बेटे को सुरक्षित और अच्छे स्वास्थ्य में पाया। इससे गहराई से सांत्वना पाकर, उन्होंने ईश्वर का धन्यवाद किया। बिशप ने उन्हें प्रेम से स्वागत किया, उन्हें प्रेस्बिटर का पद स्वीकार करने के लिए मनाया, और फिर उन दोनों – आदरणीय नीलस और उनके पुत्र थियोडुलस – को सम्मान के साथ घर भेज दिया। वे माउंट सिनाई, अपने पूर्व निवास स्थान पर गए, और वहाँ कई वर्षों तक रहे[1017] , अपने प्रभु, हमारे प्रभु यीशु मसीह की सेवा उत्साह के साथ करते रहे, जिनके सामने उन्हें बाद में पवित्र पिताओं के समूह के साथ स्वर्ग में प्रकट होने का सौभाग्य मिला, हमेशा और हमेशा के लिए परमेश्वर की महिमा करते हुए, आमीन।

संत नीना, प्रेरितों के समान, इबेरिया की प्रकाशक का जीवन

14 जनवरी को स्मरणोत्सव

इबेरिया के चर्च में, साथ ही संपूर्ण पूर्वी ऑर्थोडॉक्स चर्च में, आज भी संरक्षित धर्मपरायण परंपरा के अनुसार, इबेरिया, जिसे जॉर्जिया[1018] के नाम से भी जाना जाता है, परमेश्वर की निर्दोष माता का क्षेत्र है: ईश्वर की विशेष इच्छा से, मानव जाति के उद्धार के लिए वहाँ अपने पुत्र और प्रभु यीशु मसीह के सुसमाचार का प्रचार करना उनका ही भाग था।

स्वियातोगोर्स्क के संत स्टीफन बताते हैं कि, हमारे प्रभु यीशु मसीह के स्वर्ग में आरोहण के बाद, उनके शिष्य, यीशु की माता मरियम के साथ, सियोन के ऊपरी कक्ष में रहे और परमप्रभु के आश्वासन की प्रतीक्षा करते रहे, मसीह की आज्ञा के अनुसार कि यरूशलेम न छोड़ें बल्कि प्रभु से वाचा की प्रतीक्षा करें (लूका 24:49; प्रेरितों के काम 1:4)। प्रेरितों ने यह पता लगाने के लिए पासा फेंकना शुरू किया कि उनमें से किसको किस देश में सुसमाचार प्रचार करने के लिए ईश्वर ने नियुक्त किया है। परम पवित्र ने कहा:

[1015] यह लाल सागर के पूर्वी तट पर, पारान मरुभूमि और सिनाई प्रायद्वीप के पास के क्षेत्रों को संदर्भित करता है।

[1016] एमेसा सीरिया में ओरोंटेस नदी के पूर्व में स्थित एक शहर है, जो भूमध्य सागर में बहती है।

[1017] प्रतिष्ठित नीलस और थियोडुलस की मृत्यु पाँचवीं शताब्दी में शांतिपूर्वक हुई। उनके शरीर सम्राट जस्टिन द यंगर द्वारा कॉन्स्टेंटिनोपल ले जाए गए और ऑर्फ़ानोट्रोफियन (अस्पताल) में स्थित पवित्र प्रेरितों के चर्च में दफनाए गए।

[1018] आइबेरिया, या जॉर्जिया, ट्रांसकॉकेसस में एक देश है, जो रूस द्वारा इसके विलय (18 जनवरी 1801) से पहले एक स्वतंत्र राज्य था और जिसके विभिन्न समयों पर अलग-अलग सीमाएँ थीं। सख्त मायनों में, 'जॉर्जिया' नाम अब सबसे अधिक टफ्लिस गवर्नरेट पर लागू होता है, जहाँ जॉर्जियाई लोग आबादी का बहुमत हैं।

'मैं भी तुम्हारे साथ अपना भाग डालना चाहता हूँ, ताकि मैं भाग के बिना न रह जाऊँ, बल्कि वह भूमि मुझे मिले जिसे परमेश्वर मुझे देना उचित समझे।'

ईश्वर की माता की आज्ञा से उन्होंने श्रद्धा और भय के साथ पासा फेंका, और इस पासे द्वारा इबेरिया की भूमि उनकी हुई।

यह भाग आनंदपूर्वक प्राप्त कर, परमेश्वर की अति पवित्र माता ने तत्क्षण, जब पवित्र आत्मा आग की जीभों के रूप में अवतरित हुआ, इबेरिया भूमि के लिए प्रस्थान करने की इच्छा व्यक्त की। परन्तु परमेश्वर के दूत ने उनसे कहा:

'अभी यरूशलेम न छोड़ो, बल्कि फिलिहाल यहीं ठहरो; तुम्हें लॉट में जो हिस्सा मिला है, वह बाद में मसीह के प्रकाश से प्रबुद्ध होगा, और तुम्हारा प्रभुत्व वहीं बना रहेगा।'

इसी प्रकार स्वेतोगोर्स्क के स्टीफन बताते हैं। इबेरिया के प्रबोधन संबंधी यह दैवीय आदेश मसीह के स्वर्गारोहण के तीन सदियों बाद पूरा हुआ, और सर्वधन्य कुँवारी मरियम स्पष्टता और निश्चितता के साथ इसकी कार्यपालक सिद्ध हुईं। जब निर्धारित समय पूरा हो गया, तो उन्होंने अपनी कृपा और सहायता के साथ पवित्र कन्या नीना को इबेरिया में उपदेश देने के लिए भेजा।

संत नीना का जन्म कैपैडोसिया में हुआ था और वह कुलीन और धार्मिक माता-पिता की एकमात्र बेटी थीं: रोमन गवर्नर ज़ेबुलून, जो महान शहीद संत जॉर्ज के रिश्तेदार थे, और सुसानना, जो यरूशलेम के पैट्रआर्क की बहन थीं। बारह वर्ष की आयु में, संत नीना अपने माता-पिता के साथ पवित्र नगर यरूशलेम आईं। वहाँ, उनके पिता, ज़ेबूलोन, जो ईश्वर के प्रति प्रेम से जल रहे थे और मठवासी तपस्या के माध्यम से उनकी सेवा करने की इच्छा रखते थे, ने अपनी पत्नी के साथ समझौते से, यरूशलेम के धन्य पैट्रआर्क का आशीर्वाद प्राप्त किया; फिर, अपनी छोटी बेटी नीना को आँसू भरी विदाई देकर और उसे अनाथों के पिता और विधवाओं के रक्षक, ईश्वर के हवाले कर, वे चले गए और जॉर्डन के रेगिस्तान में तपस्या करने लगे। इस ईश्वर-प्रसन्न व्यक्ति की तपस्या की जगह, और साथ ही उनकी मृत्यु का स्थान, सभी के लिए अज्ञात रहा। संत नीना की माँ, सुसानना, को उनके भाई, पैट्रआर्क, द्वारा पवित्र मंदिर में गरीब और बीमार महिलाओं की सेवा के लिए एक डीकोनेस के रूप में नियुक्त किया गया था; जबकि नीना को स्वयं नियाम्फोरा नाम की एक धार्मिक वृद्ध महिला की देखभाल में सौंपा गया था। उस पवित्र कन्या में इतनी असाधारण क्षमताएँ थीं कि, केवल दो वर्षों के बाद, ईश्वर की कृपा से, वह विश्वास और धार्मिकता के सिद्धांतों को समझने और दृढ़ता से ग्रहण करने लगी। हर दिन, उत्साह और प्रार्थना के साथ, वह पवित्र शास्त्र पढ़ती थी, और उसका हृदय ईश्वर के पुत्र, मसीह के प्रति प्रेम से जलता था, जिन्होंने मानव जाति के उद्धार के लिए क्रूस और मृत्यु की पीड़ा सहन की। जब वह आँसुओं से भरी आँखों से, उद्धारकर्ता मसीह के सूली पर चढ़ाए जाने और उनके क्रूस पर घटित हुई सभी घटनाओं के सुसमाचार विवरणों को पढ़ती थी, तो उसके विचार प्रभु की चोगा की नियति की ओर मुड़ गए।

'तो फिर, ईश्वर के पुत्र का यह सांसारिक बैंगनी वस्त्र अब कहाँ है?' उसने अपने गुरु से पूछा। 'ऐसा नहीं हो सकता कि इतना बड़ा अवशेष पृथ्वी पर खो गया हो।'

तब नियान्फोरा ने संत नीना से कहा – जैसा कि वह स्वयं परंपरा से जानती थीं – अर्थात्: कि यरूशलेम के उत्तर-पूर्व में इबेरिया का देश है, और उसमें मत्स्खेता का शहर है[1019] , और यह कि ठीक वहीं पर मसीह की चोगा एक सैनिक द्वारा ले ली गई थी जिसने उसे मसीह के सूली पर चढ़ाए जाने पर पासे से जीता था (यूहन्ना 19:24)। नियिनफोरा ने यह भी जोड़ा कि इस भूमि के निवासी, जिन्हें कार्टवेलियिन[1020] कहा जाता है, साथ ही उनके पड़ोसी अर्मेनियाई और कई पहाड़ी जनजातियाँ, आज भी मूर्तिपूजक भ्रम और अधर्म के अंधकार में डूबे हुए हैं।

उस वृद्ध महिला के ये शब्द संत नीना के हृदय में गहराई तक उतर गए। उन्होंने परम पवित्र कुँवारी मरियम से भक्तिपूर्वक प्रार्थना करते हुए दिन-रात बिताए, कि वह उन्हें इबेरिया की भूमि दिखने, अपने प्रिय पुत्र, प्रभु यीशु मसीह

[1019] मत्स्खेता – जॉर्जिया की प्राचीन राजधानी, जो अब टिफ्लिस गवर्नोरेट के दुशेती जिले में एक छोटा सा गाँव है, अरग्वी और कूरा नदियों के संगम पर, टिफ्लिस से 20 वर्स्ट उत्तर-पश्चिम में स्थित है – ट्रांसकॉकेसियन रेलवे और जॉर्जियाई सैन्य मार्ग पर एक स्टेशन है। 4वीं शताब्दी की शुरुआत में ही मत्स्खेता अस्तित्व में थी और 5वीं शताब्दी के अंत तक जॉर्जिया के शासकों का केंद्र बनी रही, जब राजा वाखतांग गुरग-अस्लान ने राजधानी को टिफ्लिस स्थानांतरित कर दिया। उसी शताब्दी में, मत्स्खेता पैट्रआर्क का केंद्र बन गई, जिन्हें मत्स्खेता के कैथोलिकॉस की उपाधि प्राप्त थी। मत्स्खेता पर दुश्मनों द्वारा कई आक्रमण हुए जिन्होंने इसे धूल-चटा दिया, और परिणामस्वरूप यह पूरी तरह से सुनसान हो गया। बारह प्रेरितों का प्राचीन कैथेड्रल और समतावरी चर्च मत्स्खेता की पूर्व वैभव के स्मारक के रूप में खड़े हैं।

[1020] कार्ट्वेलियिन असल जॉर्जियाई और काकेशियन जाति के संबंधित लोग हैं।

की चोगा, जो उनके अपने हाथों से बुनी गई थी, को खोजने और चूमने की कृपा प्रदान करें। ईश्वर की माता, और वहाँ के उन लोगों को मसीह के पवित्र नाम का प्रचार करने के लिए जो उन्हें नहीं जानते थे। और सर्वधन्य कुँवारी मरियम ने अपनी दासी की प्रार्थना सुनी। वह उसे एक सपने में प्रकट हुईं और कहा:

'इबेरिया की भूमि पर जाओ, वहाँ प्रभु यीशु मसीह का सुसमाचार प्रचार करो, और तुम उनकी दृष्टि में अनुग्रह पाएँगी; और मैं तुम्हारी संरक्षक रहूँगी।'

'लेकिन कैसे,' विनम्र कन्या ने पूछा, 'मैं, एक कमजोर महिला, इतनी बड़ी सेवा कर पाऊँगी?'

जवाब में, परम पवित्र कन्या ने, नीना को बेल की टहनियों से बुना हुआ एक क्रॉस देते हुए, कहा:

'यह क्रॉस ले लो। यह सभी दृश्य और अदृश्य शत्रुओं के विरुद्ध तुम्हारे लिए एक ढाल और रक्षा होगी। इस क्रॉस की शक्ति से, तुम उस देश में मेरे प्रिय पुत्र और प्रभु में विश्वास का उद्धार करने वाला ध्वज फहराओगी, *"जो चाहता है कि सभी लोग बचें और सत्य के ज्ञान तक पहुँचें"* (1 तीमुथियुस 2:4)।

जागने पर और अपने हाथों में अद्भुत क्रॉस को देखकर, संत नीना ने उसे आनंद और उल्लास के आँसुओं से चूमना शुरू कर दिया; फिर उसने इसे अपने ही बालों से बाँधा और अपने चाचा, पैट्रिआर्क के पास चली गई। जब धन्य पैट्रिआर्क ने उससे ईश्वर की माता के प्रकट होने और इबेरिया की भूमि में जाकर शाश्वत मोक्ष के बारे में सुसमाचार का प्रचार करने के आदेश के बारे में सुना, तो ईश्वर की इच्छा की इस स्पष्ट अभिव्यक्ति को देखकर, उन्होंने उस युवा कन्या को धर्मप्रचार का कार्य करने के लिए अपना आशीर्वाद देने में संकोच नहीं किया। और जब उसके लंबे सफर पर निकलने का समय सही आया, तो पैट्रिआर्क ने नीना को प्रभु के चर्च में पवित्र वेदी तक ले गए और, उसके सिर पर अपना पैट्रिआर्कल हाथ रखकर, इन शब्दों से प्रार्थना की:

'हे प्रभु परमेश्वर, हमारे उद्धारकर्ता! जैसे ही मैं इस अनाथ कन्या को आपकी दिव्यता का प्रचार करने के लिए भेजता हूँ, मैं उसे आपके हाथों में सौंपता हूँ। हे मसीह हमारे ईश्वर, कृपा करके उसकी संगति और मार्गदर्शक बनो, जहाँ भी वह आपका प्रचार करे, और उसके शब्दों को ऐसी शक्ति और बुद्धि प्रदान करो कि कोई भी उनका विरोध या खंडन न कर सके। और हे परमेश्वर की परम पवित्र कुँवारी माता, सभी ईसाइयों की सहायिका और मध्यस्थ, इस युवा कन्या को स्वर्ग से अपनी शक्ति से, दृश्य और अदृश्य दोनों शत्रुओं के विरुद्ध, आच्छादित करो; क्योंकि आपने स्वयं उसे विधर्मी राष्ट्रों के बीच अपने पुत्र, हमारे परमेश्वर मसीह, के सुसमाचार का प्रचार करने के लिए चुना है। सदैव उसकी ढाल और अजेय रक्षा बनो, और अपनी दया से उसे तब तक न छोड़ो जब तक उसने आपकी पवित्र इच्छा पूरी न कर ली हो!

उस समय, पचास-तीन कुंवारी—सहेलियाँ—एक राजकुमारी, रिप्सिमिया, और अपनी मार्गदर्शक, गायाना के साथ, पवित्र शहर से आर्मेनिया के लिए रवाना हुईं। वे दुष्ट सम्राट डायोक्लेटियन के उत्पीड़न से बचने के लिए प्राचीन रोम से भाग आई थीं, जो राजकुमारी रिप्सिमिया से विवाह करना चाहता था, इस तथ्य के बावजूद कि उसने पवित्रता का व्रत लिया था और स्वयं को स्वर्गीय वर, मसीह के लिए सगाई कर दी थी। संत नीना, इन पवित्र कुंवारीयों के साथ, आर्मेनिया की सीमाओं[1021] और राजधानी वाघरशapat[1022] तक पहुँचीं। पवित्र कुंवारीयों ने शहर के बाहर, एक शराब प्रेस के ऊपर बने आश्रय के नीचे बस गईं, और अपने हाथों की मेहनत से अपनी आजीविका कमाई।

जल्द ही, क्रूर डायोक्लेटियन को पता चला कि रिप्सिमिया आर्मेनिया में छिपकर रह रही थी। उसने आर्मेनिया के राजा टिरिडेट्स को एक पत्र भेजा - जो उस समय तक एक मूर्तिपूजक था[1023] - जिसमें उसे निर्देश दिया गया था कि वह रिप्सिमिया को ढूंढकर रोम भेजे, या, यदि वह चाहे, तो उसे अपनी पत्नी बना ले, क्योंकि, जैसा कि उसने लिखा था, वह अत्यंत सुंदर थी। तिरिदातेस के सेवकों ने जल्द ही रिप्सिमिया को ढूंढ लिया, और जब राजा ने उसे देखा, तो उसने उसे घोषणा की कि वह उसे अपनी पत्नी बनाना चाहता है। लेकिन संत ने साहसपूर्वक उत्तर दिया:

[1021] आर्मेनिया कूरा नदी और टिग्रिस तथा यूफ्रेटिस नदियों के उद्गम के बीच स्थित एक पर्वतीय देश है; इसमें आर्मेनियाई लोग रहते थे, जिनका नाम राजा आराम के नाम पर पड़ा; वर्तमान में, आर्मेनिया रूस, फारस और तुर्की के बीच विभाजित है।

[1022] वाघारशapat – कभी अर्मेनियाई साम्राज्य की राजधानी (राजा वाघारशक द्वारा स्थापित), अब एरिवान गवर्नरेट के एचमीयाद्ज़िन जिले में एक गाँव है, जो एरिवान शहर से 18 वर्स्ट दूर है।

[1023] तिरिदात ने 286 ईस्वी में सिंहासन संभाला और शुरू में वह ईसाइयों का एक क्रूर उत्पीड़क था; बाद में वह आर्मेनिया के पवित्र शहीद ग्रेगरी (जिनका स्मरणोत्सव 30 सितंबर को मनाया जाता है) द्वारा ईसाई धर्म में परिवर्तित हो गया और तब से वह एक धर्मनिष्ठ ईसाई बन गया। 302 ईस्वी में, उसके शासन के दौरान, पूरे आर्मेनिया को ईसाई धर्म में परिवर्तित कर दिया गया।

'मैं मसीह, जो स्वर्गीय वरा है, से सगाईशुदा हूँ; तुम दुष्ट मनुष्य, मसीह की वधू पर हाथ उठाने की हिम्मत कैसे करते हो?'

दुष्ट तरिडिट्स, पशुवत वासना, क्रोध और शर्म से प्रेरति होकर, संत को यातना देने का आदेश दे दयिा। कई क्रूर यातनाओं के बाद, रपि्सिमियिा की जीभ काट दी गई, उसकी आँखें निकाल दी गईं, और उसके पूरे शरीर को टुकड़ों में काट दयिा गया। सेंट रपि्सिमियिा के सभी पवत्रि साथयिों और उनकी मार्गदर्शक, गाइयानयिा[1024] के साथ भी बलि्कुल यही हश्र हुआ।

केवल संत नीना को चमत्कारकि रूप से मृत्यु से बचाया गया: एक अदृश्य हाथ के मार्गदर्शन में, उन्होंने एक जंगली गुलाब की झाड़यिों में शरण ली जो अभी तक खलिी नहीं थी। अपने साथयिों की नयितकिो देखकर भय से कांपते हुए, संत ने उनके लिए प्रार्थना करते हुए स्वर्ग की ओर अपनी आँखें उठाईं और अपने ऊपर एक तेजस्वी देवदूत को देखा, जो एक उज्ज्वल प्रभामंडल से घरिा हुआ था। उसने अपने हाथों में एक सुगंधति धूपदान पकड़ रखा था और स्वर्ग के असंख्य प्राणयिों के साथ, वह स्वर्गीय ऊँचाइयों से उतर आया; जबकि पृथ्वी से – जैसे कि उसका स्वागत करने के लिए – पवत्रि शहीदों की आत्माएँ ऊपर चढ़ीं, स्वर्ग के तेजस्वी प्राणयिों के समूह में शामलि हुईं और, उनके साथ, स्वर्गीय ऊँचाइयों की ओर उड़ चलीं।

यह देखकर, संत नीना ने आँसुओं में पुकारा:

'हे प्रभु, हे प्रभु! तो फरि आप मुझे इन साँपों और सर्पों के बीच अकेला क्यों छोड़ देते हैं?'

जवाब में, देवदूत ने उससे कहा:

'शोक मत करो, बल्कि थोड़ी देर प्रतीक्षा करो, क्योंकि तुम भी महमिा के प्रभु के राज्य में ले जाए जाओगी; यह तब होगा जब तुम्हारे चारों ओर की काँटेदार और जंगली गुलाब की झाड़ी सुगंधति फूलों से ढक जाएगी, जैसे कसिी बगीचे में लगाई और संवारी गई गुलाब की झाड़ी। अब, तथापि, उठो और उत्तर की ओर जाओ, जहाँ एक बड़ी फसल पक रही है, परन्तु जहाँ काटने वाले नहीं हैं (लूका 10:2)।

इस आज्ञा के अनुसार, संत नीना अकेले ही अपनी यात्रा पर नकिल पड़ीं और, एक लंबी यात्रा के बाद, खेरत्वसिी गाँव के पास, अपने लिए एक अज्ञात नदी के कनिारे पहुँचीं। यह नदी कूरा थी, जो पश्चमि से दक्षणि-पूर्व की ओर कैस्पयिन सागर की ओर बहते हुए, पूरे मध्य इबेरयिा को सचिति करती है[1025] । नदी के कनिारे, उनकी मुलाकात कुछ चरवाहों से हुई जनि्होंने लंबी यात्रा से थकी हुई यात्री को थोड़ा भोजन दयिा। ये लोग एक अर्मेनयिाई बोली बोलते थे; नीना अर्मेनयिाई भाषा समझती थीं, क्योंकि उन्होंने इसे नयिानफोरा नामक वृद्ध महलिा से सीखा था। उन्होंने एक चरवाहे से पूछा:

'मत्स्खेता का शहर कहाँ है, और यह यहाँ से कतिनी दूर है?'

उसने उत्तर दयिा:

'क्या तुम यह नदी देखती हो? इसके कनिारे, बहते पानी की दशिा में दूर, मत्स्खेता का महान शहर बसा है, जहाँ हमारे देवता राज करते हैं और हमारे राजा शासन करते हैं।'

वहाँ से अपनी राह जारी रखते हुए, वह पवत्रि तीर्थयात्री एक बार एक चट्टान पर थकी हुई बैठ गई और वचिार करने लगी: प्रभु उसे कहाँ ले जा रहे थे? उसके प्रयासों का फल क्या होगा? और क्या उसकी यात्रा—इतनी लंबी और इतनी कठनि—व्यर्थ जाएगी? ऐसे वचिारों के बीच, वह वहीं सो गई और एक स्वप्न देखा: एक राजसी रूप वाला पुरुष उसके सामने प्रकट हुआ; उसके बाल कंधों तक लटके थे, और उसके हाथों में ग्रीक में लखिा एक पवत्रि ग्रंथ था। उस ग्रंथ को खोलकर, उसने वह नीना को दे दयिा और उसे पढ़ने का आदेश दयिा, जबकि वह स्वयं अचानक अदृश्य हो गया। अपनी नींद से जागकर और अपने हाथ में वह अद्भुत पांडुलपि देखकर, संत नीना ने सुसमाचार से नम्निलखिति शब्द पढ़े: *'मैं तुम से सच कहता हूँ, जहाँ-जहाँ यह सुसमाचार संसार में प्रचारति होगा, वहाँ-वहाँ जो कुछ उसने कयिा है, वह भी उसकी स्मृति में कहा जाएगा'* (उस स्त्री) (मत्ती 26:13)। *'न कोई पुरुष है, न कोई स्त्री; क्योंकि तुम सब मसीह यीशु में एक हो'* (गलातयिों 3:28)। *'यीशु ने उनसे (स्त्रयिों से) कहा, "मत डरना; जाओ और मेरे भाइयों से कह दो"* (मत्ती 28:10)। *'जो तुम्हें ग्रहण करता है, वह मुझे ग्रहण करता है, और जो मुझे ग्रहण करता है, वह मुझे भेजने वाले को ग्रहण करता है'* (मत्ती 10:40)।

[1024] ऑर्थोडॉक्स चर्च इन पवत्रि शहीदों का स्मरण 30 सतिंबर को करता है, जनिकी मृत्यु राजा तरिीदातेस और पूरे आर्मेनयिा के मसीही धर्म अपनाने के लिए उत्प्रेरक बनी।

[1025] कौरा काकेशस क्षेत्र की सबसे बड़ी नदी है; अपने स्रोत से लेकर कैस्पयिन सागर में अराक्स नदी के संगम तक, यह 1,244 वर्स्ट लंबी है।

'मैं तुम्हें ऐसा मुख और बुद्धि दूँगा, कि तुम्हारे सब विरोधी विरोध न कर सकेंगे और न प्रतिवाद कर सकेंगे' (लूका 21:15)। *'परन्तु जब वे तुम्हें यहूदी सभाओं और हाकिमों और अधिकारियों के सामने लायें, तो इस बात की चिन्ता न करना कि हम कैसे, या क्या उत्तर देंगे, या क्या कहेंगे; क्योंकि उसी घड़ी पवित्र आत्मा तुम्हें सिखाएगा कि क्या कहना है'* (लूका 12:11–12)। *'और जो शरीर को तो मार सकते हैं, पर आत्मा को नहीं मार सकते, उनसे मत डरो'* (मत्ती 10:28)। *'इसलिये जाओ और सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ, और उन्हें पिता, और पुत्र, और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दिलाओ; और देखो, मैं युग के अन्त तक सदा तुम्हारे संग हूँ। आमीन'* (मत्ती 28:19–20)।

इस दैवीय दर्शन और सांत्वना से बल प्राप्त कर, संत नीना नए उत्साह और जोश के साथ अपने मार्ग पर आगे बढ़ीं। रास्ते में भूख, प्यास और जंगली जानवरों के डर जैसी बड़ी कठिनाइयों को पार करने के बाद, वह प्राचीन कार्टली शहर उर्बनिसि[1026] पहुँची, जहाँ वह लगभग एक महीने तक रही, यहूदी घरों में ठहरी और इस लोगों की प्रथाओं, परंपराओं और भाषा का अध्ययन किया, जो उसके लिए नए थे।

एक दिन यह जानकर कि इस शहर के सभी पुरुष, साथ ही आसपास के क्षेत्रों से आए लोग, अपनी झूठी देवताओं की पूजा करने के लिए राजधानी मत्स्खेता जा रहे थे, संत नीना भी उनके साथ वहाँ के लिए रवाना हो गईं। जैसे ही वे शहर के पास पहुँचे, उन्हें पोम्पे के पुल के पास राजा मिरियन और रानी नाना का जुलूस मिला; लोगों की एक विशाल भीड़ के साथ, वे शहर के विपरीत स्थित एक पहाड़ी की चोटी की ओर जा रहे थे, वहाँ आर्माज़ नामक एक निर्जीव मूर्ति की पूजा करने के लिए।

दोपहर तक मौसम साफ़ रहा। लेकिन वह दिन, जो संत नीना के मिशन के गंतव्य पर आगमन का पहला दिन था—जो आइबेरियाई लोगों की भूमि को मोक्ष दिलाने वाला था—उक्त मूर्तिपूजक देवता के शासन का अंतिम दिन था। भीड़ के साथ बहती हुई, संत नीना पहाड़ पर उस स्थान की ओर बढ़ीं जहाँ मूर्ति का वेदी स्थित था। अपने लिए एक उपयुक्त स्थान पाकर, उन्होंने वहाँ से मुख्य मूर्ति, अर्माज़ को देखा। वह असाधारण कद के एक मनुष्य जैसा दिखता था; सुनहरे तांबे से बना, वह सुनहरे कवच में लिपटा हुआ था, और उसके सिर पर एक सुनहरा हेलमेट था; एक आँख माणिक की और दूसरी पन्ने की थी, दोनों असाधारण आकार और चमक वाली थीं। अर्मज़ के दाईं ओर कात्सी नाम का एक और छोटा सुनहरा मूर्ति था, जबकि बाईं ओर गेम नाम की एक चांदी की मूर्ति खड़ी थी।

उनके राजा सहित संपूर्ण भीड़ अपने देवताओं के सामने उन्मत्त श्रद्धा और भय में खड़ी थी, जबकि पुरोहित रक्त बलिदान की तैयारी कर रहे थे[1027] । और जब वे पूरी हो गईं, तब धूप जलाई गई, बलि का रक्त बहाया गया, और तुरहियों तथा ढोलों का शोर गूँज उठा, तब राजा और लोग निर्जीव मूर्तियों के सामने जमीन पर मुँह के बल गिर पड़े। तब उस पवित्र कन्या का हृदय भविष्यवक्ता एलियाह के उत्साह से प्रज्वलित हो उठा। अपनी आत्मा की गहराई से आह भरते हुए और आँसुओं से अपनी आँखें आकाश की ओर उठाकर, उसने इन शब्दों के साथ प्रार्थना करना शुरू किया:

'हे सर्वशक्तिमान ईश्वर! अपनी दया की प्रचुरता से, इस लोगों को आप, एकमात्र सच्चे ईश्वर के ज्ञान की ओर ले चलें। इन मूर्तियों को बिखेर दें, जैसे हवा पृथ्वी की सतह से धूल और राख को उड़ा ले जाती है। इस लोगों पर दया की दृष्टि डालें, जिन्हें आपने अपने सर्वशक्तिमान दहिने हाथ से बनाया और अपनी दिव्य छवि से सम्मानित किया! हे प्रभु और स्वामी, आपने अपनी सृष्टि से इतना प्रेम किया कि आपने पतित मानवता के उद्धार के लिए अपने एकलौते पुत्र को भी बलिदान कर दिया—इन अपने लोगों की आत्माओं को अंधकार के राजकुमार की सर्व-विनाशकारी शक्ति से बचाएँ, जिसने उनकी समझ की आँखों पर पर्दा डाल दिया है, ताकि वे उद्धार का सच्चा मार्ग न देख सकें। हे प्रभु, यह अनुग्रह करें कि मेरी आँखें यहाँ गर्व से खड़ी मूर्तियों के अंतिम विनाश को देख सकें। यह अनुग्रह करें कि यह लोग और पृथ्वी के छोर-छोर तक सब लोग उस उद्धार को समझ सकें जो आप प्रदान करते हैं, कि उत्तर और दक्षिण दोनों आप में एक साथ आनन्दित हों, और कि सभी राष्ट्र आपकी आराधना करें, एकमात्र सनातन ईश्वर, आपके एकलौते पुत्र, हमारे प्रभु यीशु मसीह में, जिन्हें युगानुयुग महिमा हो।

संत ने यह प्रार्थना समाप्त करते ही, अचानक, पश्चिम से तूफ़ानी बादल उठे और कूरा नदी के मार्ग के साथ तेज़ी से आगे बढ़े। खतरे को भांपते हुए, राजा और उसके लोग भाग खड़े हुए; हालाँकि, नीना ने एक चट्टानी घाटी में शरण ली। तूफ़ान, गरज और बिजली के साथ, ठीक उसी जगह पर टूट पड़ा जहाँ मूर्तिपूजक वेदी खड़ी थी। वे मूर्तियाँ, जो पहले गर्व

[1026] परंपरा के अनुसार, ईसा मसीह से 2,340 साल पहले, मुखेतोस के पुत्र और याफेथ के पर-परपोते उप्लेस ने उर्बनिसि शहर की स्थापना की थी।
[1027] एक किंवदंती है कि यहाँ तक कि शिशुओं और युवकों को भी मूर्तियों के लिए बलिदान किया जाता था।

से खड़ी थीं, धूल में चूर हो गईं; मंदरि की दीवारें मलबे में तब्दील हो गईं, और बारशि की तेज धार ने उन्हें खाई में बहा दयिा, जबकि नदी का पानी उन्हें बहकर ले गया; इस प्रकार, मूर्तयिों या उनके लिए समर्पति मंदरि का कोई भी नशिान नहीं बचा। हालाँकि, ईश्वर द्वारा संरक्षति संत नीना चट्टानी घाटी में सुरक्षति खड़ी रहीं और उन्होंने शांति से देखा कि कैसे प्रकृति के तत्व अचानक उनके चारों ओर उग्र हो उठे, और फरि स्वर्ग से एक बार फरि तेजस्वी सूर्य चमक उठा। और यह सब प्रभु के महमिामय रूपांतरण के दनि हुआ – जब माउंट टाबर पर चमकी सच्ची रोशनी ने पहली बार इबेरयिा के पहाड़ों पर मूर्तपिूजा के अंधकार को मसीह के प्रकाश में बदल दयिा।

अगले दनि राजा और लोगों ने अपने देवताओं को खोजा, पर उन्हें कोई नहीं मलिा। उन्हें न पाकर, वे आतंकति हो गए और कहने लगे:

'अर्माज़ देव महान है; फरि भी कोई अन्य देवता है, जो उससे भी महान है, जसिने उसे पराजति कर दयिा है।' क्या यह वही ईसाई ईश्वर हो सकते हैं, जन्हिोंने प्राचीन अर्मेनयिाई देवताओं को शर्मदिा कयिा और राजा तरिीदातस को ईसाई बना दयिा? – फरि भी इबेरयिा में कसिी ने मसीह के बारे में कुछ नहीं सुना था, और कसिी ने यह उपदेश नहीं दयिा था कि वह सभी देवताओं से ऊपर का ईश्वर है। तो फरि, क्या हुआ, और आगे क्या होगा?

बहुत बाद में, संत नीना एक यात्री का भेष धारण करके मत्स्केता शहर में एक कैदी होने का दावा करते हुए प्रवेश कीं। जब वह शाही बगीचे की ओर जा रही थीं, तो माली की पत्नी, अनास्तासयिा, उनसे मलिने के लिए दौड़कर आईं, मानो वह कोई लंबे समय से प्रतीक्षति परचिति हों। संत के सामने सरि झुकाने के बाद, वह उन्हें अपने घर ले गई और फरि, उनके पैर धोकर और सरि पर तेल लगाकर, उन्हें रोटी और शराब परोसी। अनास्तासयिा और उसके पति ने नीना से वनिती की कि वह एक बहन के रूप में उनके साथ रहने के लिए ठहरें, क्योंकि वे नस्संितान थे और अपनी अकेलेपन के कारण दुखी थे । बाद में, संत नीना के अनुरोध पर, अनास्तासयिा के पति ने बगीचे के एक कोने में उनके लिए एक छोटा सा तंबू लगाया; ठीक उसी स्थान पर आज भी संत नीना को समर्पति एक छोटा सा चर्च है, जो सम्टावरी कॉन्वेंट[1028] की दीवारों के भीतर स्थति है। संत नीना ने, इस तंबू में ईश्वर की माता द्वारा उन्हें दयिा गया क्रॉस रखकर, अपने दनि-रात वहाँ प्रार्थना और भजन-कीर्तन में बतिाए।

यही से संत नीना के चमत्कारों और करतबों की एक शानदार शृंखला शुरू हुई, जो उन्होंने मसीह के नाम की महमिा के लिए कयि थे। इबेरयिा में मसीह की कलीसयिा के लिए पहली प्राप्ति एक धर्मनष्ठि ववािहति जोड़ा था जसिने अपने घर में मसीह के एक सेवक को आश्रय दयिा। संत नीना की प्रार्थनाओं के द्वारा, अनास्तासयिा को उसकी बांझपन से मुक्ति मलिी और बाद में वह एक बड़े और खुशहाल परविार की माँ बनी, साथ ही इबेरयिा में पुरुषों से पहले मसीह में वश्विास करने वाली पहली महलिा भी बनी।

एक महलिा, जोर-जोर से रोते हुए, अपने मरणासन्न बच्चे को शहर की सड़कों पर ले जा रही थी, और हर कसिी से मदद की पुकार कर रही थी। उस बीमार बच्चे को लेकर, संत नीना ने उसे पत्तों से बने बस्तिर पर लटिा दयिा; प्रार्थना करने के बाद, उन्होंने बेल की टहनयिों से बने अपने क्रॉस को उस छोटे बच्चे पर रखा और फरि उसे जीवति और स्वस्थ होकर अपनी रोती हुई माँ के पास वापस कर दयिा।

उस समय से, संत नीना ने खुले तौर पर और पूरे राष्ट्र को सुसमाचार का उपदेश देना शुरू कर दयिा, और उन्होंने आइबेरयिा के मूर्तपिूजकों और यहूदयिों से पश्चाताप करने और मसीह में वश्विास करने का आह्वान कयिा। उनका धार्मकि, धर्मी और पवत्रि जीवन सभी को ज्ञात था और इसने लोगों की आँखें, कान और हृदय संत की ओर आकर्षति कर दयिा। कई लोग—और वशिेष रूप से यहूदी महलिाएँ—ननियिा के पास अक्सर आने लगीं ताकि वे उनके मधुर वचनों से परमेश्वर के राज्य और अनंत मोक्ष के बारे में नई शक्षिा सुन सकें, और उन्होंने गुप्त रूप से मसीह के धर्म को अपनाना शुरू कर दयिा। उनमें शामलि थीं: कार्तली के यहूदयिों के महापुजारी अवआिफर की बेटी सडिोनयिा, और छह अन्य यहूदी महलिाएँ। जल्द ही अवीयाफ़ार स्वयं मसीह में वश्विास करने लगा – संत नीना की यीशु मसीह के बारे में प्राचीन भवष्यिवाणयिों की व्याख्याएँ सुनने के बाद और यह जानने के बाद कि कैसे वे मसीहा के रूप में उनमें पूरी हुईं। बाद में, अवीयाफ़ार ने स्वयं इसका वर्णन इस प्रकार कयि:

संत नीना ने मुझसे कहा, 'मोशे की व्यवस्था और भवष्यिद्वक्ताओं ने मसीह की ओर मार्गदर्शन कयिा, जसिका मैं प्रचार करती हूँ।' 'वह व्यवस्था का अंत और पूर्ति है। हमारी पुस्तकों में जैसा लखिा है, वैसे ही इस अद्भुत महलिा ने

[1028] सम्टावरी कॉन्वेंट, टफि्लसि गवर्नरेट में एक सामुदायकि ननरी, दुशेता शहर से 31 वर्स्ट दूर, अरागवा नदी और कुरा के संगम पर स्थति है।

मुझे उस सब के बारे में बताया जो परमेश्वर ने प्रतिज्ञात मसीह के माध्यम से मानव जाति के उद्धार के लिए निर्धारित किया था। यीशु ही भविष्यवक्ताओं द्वारा बताई गई सच्चे मसीहा, कुँवारी के पुत्र हैं। हमारे पूर्वजों ने ईर्ष्या के कारण उन्हें सूली पर चढ़ा दिया और मार डाला, लेकिन वे फिर से जी उठे, स्वर्ग में आरोहण कर गए, और महिमा में पृथ्वी पर फिर आएँगे। वे ही हैं जिनका राष्ट्रों को इंतजार है और जो इस्राएल की महिमा हैं। उनके नाम पर, संत नीना ने मेरी आँखों के सामने कई चमत्कार और अद्भुत कार्य किए, जो केवल ईश्वर की शक्ति से ही संभव हैं।

अभीयाथार से अक्सर बातचीत करते हुए, संत नीना ने प्रभु की चोगा के बारे में निम्नलिखित वृत्तांत उनके मुँह से सुना:

1029"मैंने अपने माता-पिता से सुना, और उन्होंने अपने पिता और दादा से सुना था, कि जब हेरोद यरूशलेम पर शासन कर रहा था, मत्स्खेता और कार्तली देश भर में रहने वाले यहूदियों को यह खबर मिली कि फारस के राजा यरूशलेम आ रहे थे, कि वे दाऊद की वंशावली के एक नवजात शिशु की तलाश में थे, जो बिना पिता के किसी माँ से जन्मा था, और उन्होंने उसे यहूदियों का राजा कहा। उन्होंने उसे दाऊद के नगर, बेतलहम में, एक साधारण अस्तबल में पाया, और उसे शाही सोना, चंगा करने वाली लोहबान और सुगंधित धूप के उपहार अर्पित किए; उसकी आराधना करने के बाद, वे अपने देश लौट गए (मत्ती 2:11–12)।

इसके तीस साल बाद, मेरे परदादा एलओस को यरूशलेम से महापुजारी अन्ना का एक पत्र मिला, जिसमें यह लिखा था:

'जिसकी उपासना करने के लिए फारस के राजा अपने उपहारों के साथ आए थे, वह वयस्क हो गया है और यह प्रचार करना शुरू कर दिया है कि वह मसीहा, मसीहा और परमेश्वर का पुत्र है।

यरूशलेम आओ ताकि तुम उसकी मृत्यु के साक्षी बनो, जिसे मूसा की व्यवस्था के अनुसार उसे दिया जाएगा।"

जब एलओज़ कई अन्य लोगों के साथ यरूशलेम के लिए निकलने की तैयारी कर रहा था, तब उसकी माँ—जो महायाजक इलियाह की वंशज एक धर्मनिष्ठ वृद्ध महिला थीं—ने उससे कहा:

'जा, मेरे पुत्र, राजा के बुलावे का उत्तर देने; पर मैं तुझ से विनती करती हूँ—उन दुष्टों के साथ उनकी साजिश में शामिल मत होना, जिन्होंने उस एक को मार डालने का निश्चय किया है; वही हैं जिनकी भविष्यद्वक्ताओं ने भविष्यवाणी की थी, जो बुद्धिमानों के लिए एक पहेली हैं, युगों के आरंभ से छिपा हुआ एक रहस्य हैं, राष्ट्रों के लिए एक प्रकाश और अनंत जीवन हैं।

एलियॉस, कारेन के लोंगिनस के साथ, यरूशलेम आए और मसीह के सूली पर चढ़ाए जाने के साक्षी बने। हालाँकि, उनकी माँ मत्स्खेता में ही रहीं। ईस्टर की पूर्व संध्या पर, उन्हें अचानक अपने हृदय में ऐसा महसूस हुआ मानो कील ठोकने वाली हथौड़ी से उन्हें वार किया जा रहा हो, और वह ज़ोर से चिल्लाईं:

'अब इस्राएल का राज्य नष्ट हो गया है, क्योंकि उन्होंने उसके उद्धारकर्ता और मुक्तिदाता को मार डाला है; आज से, यह लोग अपने सृष्टिकर्ता और प्रभु के लहू के दोषी होंगे। हाय, काश मैं इससे पहले मर गया होता: तो मैं ये भयानक प्रहार नहीं सुनता! मैं फिर कभी पृथ्वी पर इस्राएल की महिमा नहीं देखूंगा!'

1030इतना कहकर, वह मर गई। एलओज़, जो मसीह के सूली पर चढ़ाए जाने के समय वहाँ मौजूद था, ने एक रोमन सैनिक से उनकी चोगा प्राप्त की, जिसे उसने लॉटरी में जीता था, और उसे मत्स्खेता ले आया। एलओस की बहन, सिडोनीया ने, अपने भाई को सुरक्षित और सलामत वापस आते देख, उसे अपनी माँ की चमत्कारिक और अचानक मृत्यु और उनकी अंतिम बातों के बारे में बताया। जब एलओज़ ने मसीह के सूली पर चढ़ाए जाने के संबंध में अपनी माँ की पूर्वज्ञान की पुष्टि कर ली और अपनी बहन को प्रभु की चोगा दिखाई, तो सिडोनिया ने उसे लिया, आँसुओं से चूम लिया, फिर उसे अपने सीने से लगा लिया और तुरंत ही मृत हो गई। और किसी भी मानवीय शक्ति से इस पवित्र वस्त्र को मृतक के हाथों से छीन नहीं सकी – यहाँ तक कि स्वयं राजा अदेरकी भी नहीं, जो अपनी कुलीन वर्ग के लोगों के साथ उस युवती की असाधारण मृत्यु का साक्षी बनने आए थे और जो मसीह के वस्त्र को उसके हाथों से लेना भी चाहते थे। कुछ समय बाद, एलियोस ने अपनी बहन के शरीर को दफ़नाया, और उसके साथ मसीह की कमीज़ को भी दफ़ना दिया; उसने यह इतना गुप्त रूप से किया कि

1029 कुरा नदी घाटी के साथ-साथ के क्षेत्र को कार्तालिनिया नाम दिया गया है। कार्तालिनिया, काखेती के साथ मिलकर, कभी इबेरिया के साम्राज्य का हिस्सा था। – यहूदी प्राचीन काल से ही इबेरिया में रहते थे, जो बेबीलोन के बंधन के बाद वहाँ बसे थे; अपनी परंपराओं के प्रति वफादार, वे पासोवर के उत्सव के दौरान यरूशलेम जाते थे। वहीं उन्होंने मसीह के जीवन, उनकी शिक्षाओं और उनके चमत्कारों के बारे में सुना।

1030 प्रभु के वस्त्र, यानी चिटोन, को रखने के लिए जॉर्जियाई भाषा में की जाने वाली सेवा।

आज भी कोई सिडोनिया के दफ़न स्थल को नहीं जानता। कुछ लोगों ने केवल यह अनुमान लगाया है कि यह स्थान शाही बगीचे के बीच में स्थित है, जहाँ, उस समय से, अपने आप एक देवदार का पेड़ उग गया है और अब वह वहाँ ठंडी छाया बिखेरता हुआ खड़ा है; श्रद्धालु सभी दिशाओं से इसकी ओर आते हैं, इसे महान शक्ति के स्रोत के रूप में पूजते हैं; वहाँ, देवदार की जड़ों के नीचे, कहा जाता है कि सिडोनिया का मकबरा है।

इस परंपरा के बारे में सुनने के बाद, संत नीना इस देवदार के नीचे प्रार्थना करने के लिए रात में आने लगीं; हालाँकि, उन्हें संदेह था कि प्रभु की चोगा वास्तव में इसकी जड़ों के नीचे छिपी हुई थी। लेकिन इस स्थान पर उनके द्वारा अनुभव किए गए रहस्यमय दर्शनों ने उन्हें विश्वास दिला दिया कि यह स्थान पवित्र था और भविष्य में इसका गौरव होगा। इस प्रकार, एक रात, अपनी आधी रात की प्रार्थना करने के बाद, संत नीना ने आसपास के सभी क्षेत्रों से शाही बगीचे में काले पक्षियों के झुंड को इकट्ठा होते देखा; वहां से वे अरागवे नदी[1031] की ओर उड़ गए और उसके पानी में स्नान किया। कुछ ही समय बाद, वे ऊपर की ओर उड़ गए, लेकिन अब बर्फ की तरह सफेद होकर; और फिर, देवदार के टहनियों पर उतरकर, उन्होंने बगीचे को दिव्य गीतों से भर दिया। यह एक स्पष्ट संकेत था कि पड़ोसी लोग पवित्र बपतिस्मा के जल से प्रबुद्ध होंगे, और देवदार के स्थान पर सच्चे ईश्वर के सम्मान में एक मंदिर होगा, और इस मंदिर में प्रभु का नाम हमेशा के लिए महिमामय होगा। संत नीना ने यह भी देखा कि आर्माज़ और ज़ाडेना नामक पहाड़, जो एक-दूसरे के सामने खड़े थे, कांपते और गिरते हुए प्रतीत हुए। उन्होंने युद्ध की आवाज़ें और दैवीय झुंडों के चीखने की आवाज़ें भी सुनीं, मानो उन्होंने फ़ारसी योद्धाओं के भेष में राजधानी पर आक्रमण कर दिया हो, और एक भयानक आवाज़, जो राजा खुसरो जैसी थी, यह आदेश दे रही थी कि सब कुछ नष्ट कर दिया जाए। लेकिन यह भयानक दृश्य उसी क्षण गायब हो गया जब संत नीना ने अपना क्रॉस उठाया, हवा में क्रॉस का चिह्न बनाया, और कहा:

'चुप हो जाओ, राक्षसों! तुम्हारी शक्ति का अंत आ गया है: क्योंकि देखो, विजेता आ गया है!'

इन संकेतों से आश्वस्त होकर कि परमेश्वर का राज्य और जॉर्जियाई लोगों का उद्धार निकट है, संत नीना ने लोगों को निरंतर परमेश्वर का वचन प्रचार किया। उनके शिष्य—विशेष रूप से सिडोनिया और उनके पिता, अवीयाफर—ने सुसमाचार के कार्य में उनके साथ मिलकर परिश्रम किया। बाद वाले ने अपने पूर्व साथी यहूदियों के साथ यीशु मसीह के बारे में इतनी लगन और लगातार बहस की कि उसे उनके हाथों उत्पीड़न का सामना करना पड़ा और उसे पत्थर मारने की सज़ा दी गई; केवल राजा मिरियन ने ही उसे मौत से बचाया। और राजा स्वयं भी अपने हृदय में ईसाई धर्म के बारे में विचार करने लगा, क्योंकि वह जानता था कि यह धर्म न केवल पड़ोसी अर्मिनियाई राज्य में फैल गया था, बल्कि रोमन साम्राज्य में भी, सम्राट कॉन्स्टेंटिन ने मसीह के नाम पर और उनके क्रूस की शक्ति से, अपने सभी शत्रुओं को पराजित कर दिया था, एक ईसाई बन गया था और ईसाइयों का रक्षक बन गया था[1032] । उस समय इबेरिया रोमन शासन के अधीन था, और मिरियन का बेटा, बकर, उस समय रोम में एक बंधक के रूप में रखा गया था; इसलिए, मिरियन ने संत नीना को अपने ही शहर में मसीह का उपदेश देने से नहीं रोका। केवल मिरियन की पत्नी, रानी नाना—एक क्रूर महिला और निर्जीव मूर्तियों की उत्साही उपासक, जिसने इबेरिया में देवी वीनस की एक मूर्ति स्थापित की थी[1033] —ने ईसाइयों के प्रति द्वेष रखा। हालाँकि, परमेश्वर का अनुग्रह, 'जो कमज़ोरों को चंगा करता है और जिनकी कमी है उन्हें बहाल करता है'[1034] , ने जल्द ही इस महिला को चंगा कर दिया, जिसकी आत्मा पीड़ित थी। रानी बीमार पड़ गई; और जितना अधिक चिकित्सक प्रयास करते, उसकी स्थिति उतनी ही खराब होती गई; रानी मृत्यु के कगार पर थी। तब उसके निकट की महिलाएँ, इस बड़े खतरे को देखकर, उससे विनती करने लगीं कि वह तीर्थयात्री नीना को बुलाए, जो अपने उपदेशित ईश्वर से केवल अपनी प्रार्थनाओं द्वारा सभी बीमारियों और रोगों को ठीक कर देती है। रानी ने आदेश दिया कि इस तीर्थयात्री को उनके पास लाया जाए: संत नीना ने रानी के विश्वास और विनम्रता की परीक्षा लेते हुए, दूतों से कहा:

'यदि रानी ठीक होना चाहती हैं, तो उन्हें इस तंबू में मेरे पास आना चाहिए, और मुझे विश्वास है कि मेरे ईश्वर मसीह की शक्ति से वे यहीं ठीक हो जाएँगी।'

[1031] अरागवा, कूरा नदी की बाएं किनारे की एक सहायक नदी है, जो मत्स्खेता के पास इसमें मिलती है; यह 100 वर्स्ट लंबी है।

[1032] सम्राट कॉन्स्टेंटाइन महान ने 306 से 337 तक शासन किया।

[1033] वीनस – सुंदरता और प्रेम की ग्रीक-रोमन देवी। उनके सम्मान में मनाए जाने वाले त्योहारों में अत्यधिक कामुकता और व्यभिचार का प्रदर्शन होता था।

[1034] पवित्र आदेश संस्कार की समापन प्रार्थना से।

रानी ने आज्ञा मानी और आदेश दिया कि उसे एक स्ट्रेचर पर संत के तंबू में ले जाया जाए; उसका बेटा रेव और लोगों की एक बड़ी भीड़ उसका अनुसरण कर रही थी। संत नीना ने, बीमार रानी को अपने पत्तों के बिस्तर पर लिटाने की व्यवस्था करने के बाद, घुटने टेककर आत्माओं और शरीरों के चिकित्सक, प्रभु से भक्तिपूर्वक प्रार्थना की। फिर, अपना क्रॉस लेकर, उन्होंने उसे मरीज के सिर पर, उसके पैरों पर और दोनों कंधों पर रखा, और इस प्रकार उसके ऊपर क्रॉस का चिह्न बनाया। जैसे ही उसने ऐसा किया, रानी तुरंत अपने बिस्तर से उठ खड़ी हुईं और स्वस्थ हो गईं। प्रभु यीशु मसीह का धन्यवाद करने के बाद, रानी ने, ठीक वहीं संत नीना और लोगों की उपस्थिति में—और बाद में घर पर, अपने पति राजा मिरियन की उपस्थिति में—उच्च स्वर में घोषणा की कि मसीह ही सच्चे ईश्वर हैं। उसने संत नीना को अपनी घनिष्ठ मित्र और स्थायी साथी बनाया, और अपनी पवित्र शिक्षाओं से अपनी आत्मा को पोषित किया। फिर रानी ने बुद्धिमान बुजुर्ग अवआिफर और उनकी बेटी सिडोनिया को अपने विश्वास में लिया, और उनसे आस्था और धार्मिकता के बारे में बहुत कुछ सीखा। राजा मिरियन स्वयं (जो फारस के राजा खोसरो के पुत्र और जॉर्जिया में ससानिद वंश के संस्थापक थे) अभी भी खुले तौर पर मसीह को परमेश्वर के रूप में स्वीकार करने से हिचकिचा रहे थे; इसके विपरीत, उन्होंने एक उत्साही मूर्तिपूजक बनने का प्रयास किया। एक अवसर पर, उसने संत नीना के साथ-साथ मसीह के अनुयायियों का संहार करने का भी संकल्प लिया, और यह निम्नलिखित घटना के कारण हुआ। फ़ारसी राजा का एक करीबी रिश्तेदार, जो एक विद्वान व्यक्ति और ज़रथुष्टीय शिक्षाओं का एक उत्साही अनुयायी था, मिरियन से मिलने आया और कुछ समय बाद, उस पर एक गंभीर भूत-प्रेत का साया पड़ गया। फ़ारसी राजा के क्रोध से डरकर, मिरियन ने दूतों के माध्यम से संत नीना से प्रसि को आने और ठीक करने का अनुरोध किया। उन्होंने बीमार व्यक्ति को शाही बगीचे के बीच में खड़े देवदार के पेड़ के पास लाने का आदेश दिया, उसे हाथ ऊपर उठाकर पूर्व की ओर मुख करके बिठाया, और उससे तीन बार दोहराने का आदेश दिया:

'मैं तुझे त्यागता हूँ, शैतान, और स्वयं को ईश्वर के पुत्र, मसीह के हवाले करता हूँ!'

जैसे ही उस पितृग्रस्त व्यक्ति ने यह कहा, आत्मा ने उसे जोर से हिलाया और उसे मृतक की भाँति जमीन पर फेंक दिया; हालाँकि, पवित्र कन्या की प्रार्थनाओं का सामना न कर पाने के कारण, वह उस बीमार व्यक्ति को छोड़कर चली गई। स्वस्थ होने पर, राजकुमार ने मसीह में विश्वास करना शुरू कर दिया और एक ईसाई के रूप में अपने देश लौट आया। मिरियन इससे इस बात से ज़्यादा डर गया कि मानो राजकुमार मर गया हो, क्योंकि उसे फ़ारसी राजा—जो अग्नि-पूजक था—के क्रोध का डर था, क्योंकि उसके रिश्तेदार ने मिरियन के घर में रहते हुए ईसाई धर्म अपना लिया था। राजा ने इसके लिए संत नीना को मौत की सज़ा देने और शहर के सभी ईसाइयों का संहार करने की धमकी दी।

ईसाइयों के प्रति इस तरह के शत्रुतापूर्ण विचारों से ग्रस्त होकर, राजा मिरियन शिकार करके अपना मन भटकाने के लिए मुखरान के जंगलों की ओर रवाना हुआ[1035] । वहाँ अपने साथियों से बातचीत करते हुए, उसने कहा:

'हमने उन ईसाई जादूगरों को हमारी भूमि में अपना धर्म प्रचार करने की अनुमति देकर अपने देवताओं का भयंकर क्रोध अपने ऊपर ला लिया है। हालाँकि, मैं जल्द ही अपनी तलवार से उन सभी का सफाया कर दूँगा जो क्रूस और उस पर सूली पर चढ़ाए गए की पूजा करते हैं। मैं रानी को मसीह का त्याग करने का आदेश दूँगा; और अगर वह आज्ञा मानने से इनकार करती है, तो मैं उसे बाकी मसीहियों के साथ नष्ट कर दूँगा।"

ये शब्द कहकर, राजा खड़ी चट्टान वाले माउंट थोटी की चोटी पर चढ़ गया। और अचानक उज्ज्वल दिन अंधेरे में डूब गया, और एक तूफ़ान उठ खड़ा हुआ, वैसा ही जैसा अरमाज़ की मूर्ति को गिरा दिया था; बिजली की चमक से राजा की आँखें चकाचौंध हो गईं, और गरज से उसके सभी साथी बिखर गए। निराशा में, राजा ने अपने देवताओं से मदद की पुकार लगाई , लेकिन उन्होंने कोई जवाब नहीं दिया और न ही उसकी सुनी। अपने ऊपर जीवित परमेश्वर के दंडकारी हाथ को महसूस करते हुए, राजा ने पुकारा:

'हे नीना के ईश्वर! मेरी आँखों के सामने का अंधकार दूर कर दो, और मैं तेरे नाम का अंगीकार करूँगा और तेरा गौरव बढ़ाऊँगा!'

और तुरंत ही चारों ओर प्रकाश छा गया, और तूफ़ान थम गया। मसीह के नाम में ऐसी शक्ति देखकर चकित होकर, राजा ने अपना मुख पूर्व की ओर किया, अपने हाथ आकाश की ओर उठाए और आँसुओं के साथ पुकार लगाई:

[1035] मत्स्खेता शहर से 20 वर्स्ट उत्तर-पश्चिम में।

हे ईश्वर, जसिकी घोषणा तुम्हारी दासी नीना करती है! तुम ही सभी देवताओं से ऊपर सच्चे ईश्वर हो। और अब मैं अपनी ओर तुम्हारी महान दया देखता हूँ, और मेरा हृदय आनंद, सांत्वना और तुम्हारी नकिटता से भर गया है, हे धन्य ईश्वर! यहीं पर मैं क्रूस खड़ा करूँगा[1036] , ताकि वह चह्नि जो आपने अब मुझे प्रकट कयि है, हमेशा के लिए याद रखा जाए!

जब राजा राजधानी लौटा और शहर की सड़कों से गुज़रा, तो वह ज़ोर से चल्लिाया:

'हे सभी लोगों, नीना के ईश्वर, मसीह की महमिा करो, क्योंकि वह शाश्वत ईश्वर हैं, और केवल उन्हीं की सदा-सदा महमिा हो!'

राजा ने संत नीना को खोजा और पूछा:

'वह यात्री कहाँ है जसिका ईश्वर मेरा उद्धारकर्ता है?'

उस क्षण, संत अपने तंबू में संध्या की प्रार्थना कर रही थीं। राजा और रानी, जो उन्हें मलिने के लिए बड़ी संख्या में लोगों के साथ बाहर आए थे, इस तंबू में आए और संत को देखकर उनके पैरों पर गरि पड़े, जबकि राजा ने कहा:

'हे मेरी माता! मुझे सखिाइए और मुझे अपने महान ईश्वर, मेरे उद्धारकर्ता, का नाम पुकारने के योग्य बनाइए!'

जवाब में, संत नीना की आँखों से आनंद के आँसू बेरोकटोक बहने लगे। उनकी आँखों के आँसू देखकर, राजा और रानी रो पड़े, और उनके पीछे वहाँ जमा हुई पूरी भीड़ जोर-जोर से ससिकने लगी। सडिोनयि, जसिने इस घटना को देखा और बाद में इसे दर्ज कयि, कहती हैं:

– हर बार जब मैं उन पवत्रि क्षणों को याद करती हूँ, तो मेरी आँखों से आध्यात्मकि आनंद के आँसू अपने आप बह नकिलते हैं।

राजा मरियिन का मसीह में धर्मांतरण[1037] दृढ़ और अडगि था; मरियिन जॉर्जयिा के लिए वही थे जो उस समय सम्राट कॉन्स्टेंटनि द ग्रेट ग्रीस और रोम के लिए थे। प्रभु ने सभी आइबेरयिाई लोगों के उद्धार का नेतृत्व करने के लिए मरियिन को चुना। मरियिन ने तुरंत ही राजा कॉन्स्टेंटनि के पास ग्रीस में दूत भेजे, यह अनुरोध करते हुए कि एक बशिप और पादरयिों को भेजा जाए ताकि वे लोगों का बपतस्मिा करें, उन्हें ईसाई धर्म में शक्षिति करें, और आइबेरयिा में परमेश्वर की पवत्रि चर्च की स्थापना और मजबूती करें। इस बीच, जब दूत पुरोहतिों के साथ गए हुए थे, संत नीना लोगों को नरिंतर मसीह का सुसमाचार सखिाती रहीं, जसिसे उन्हें अपनी आत्माओं के उद्धार और स्वर्ग के राज्य को वरिासत में पाने का सच्चा मार्ग दखिाया जा सके; उन्होंने उन्हें मसीह ईश्वर से प्रार्थनाएँ भी सखिाईं, इस प्रकार उन्हें पवत्रि बपतस्मिा के लिए तैयार कयि।

याजकों के आने से पहले ही, राजा ईश्वर का एक चर्च बनाना चाहता था और, संत नीना के नर्दिेशों का पालन करते हुए, उसने अपने ही बगीचे में इसके लिए एक स्थान चुना—ठीक उसी जगह जहाँ देवदार का बड़ा पेड़ खड़ा था—और कहा:

'यह नश्वर और क्षणकि बगीचा एक अमर और आध्यात्मकि बगीचे में बदल जाए, जो अनंत जीवन के लिए फल दे!'

देवदार को काटा गया, और उसकी छह शाखाओं से छह स्तंभ तराशे गए, जन्हिें फरि बनिा कसिी कठनिाई के भवन के भीतर उनके नर्धिारति स्थानों पर स्थापति कर दयि गया। लेकनि जब बढ़ैयों ने देवदार के तने से काटे गए सातवें स्तंभ को मंदरि की नींव में रखने के लिए उठाने का प्रयास कयि, तो सभी हैरान रह गए, क्योंकि किसी भी तरह से उसे उसकी जगह से हलिाना असंभव था। शाम होते ही, दुखी राजा यह सोचते हुए घर चला गया कि इसका क्या मतलब हो सकता है। लोग भी ततिर-बतिर हो गए। केवल संत नीना अपने शष्यिों के साथ रात भर नर्माण स्थल पर ही रहीं, कटे हुए पेड़ के तने पर प्रार्थना करती रहीं और आँसू बहाती रहीं। सुबह-सुबह, आग की कमरबंद से बँधा एक अद्भुत युवक संत नीना के सामने प्रकट हुआ और उसके कान में तीन रहस्यमय शब्द फुसफुसाया; उन्हें सुनते ही वह जमीन पर गरि पड़ी और उसके सामने झुक गई। फरि वह युवक स्तंभ के पास गया और उसे गले लगाकर, उसे हवा में बहुत ऊँचा उठा लयि। स्तंभ बजिली की कड़क के समान चमका, जसिसे पूरा शहर प्रकाशमान हो गया। राजा और लोग उस स्थान पर इकट्ठा हुए; वे सभी इस अद्भुत दृश्य को भय और आनंद दोनों के साथ नहिार रहे थे, और वे इस बात पर चकति थे कि कैसे यह भारी स्तंभ, बनिा

[1036] माउंट त्खोट की चोटी पर, मरियिन द्वारा नर्मति एक चर्च आज भी खड़ा है।

[1037] यह 323 ईस्वी से पहले का नहीं था। कई वृत्तांत वभिन्नि तथियिाँ देते हैं, जो 276 से 338 तक हैं। मरियिन ने 263 से 342 तक शासन कयि। सम्राट कॉन्स्टेंटनि महान, जनिके पास मरियिन ने बशिप के संबंध में एक दूत भेजने का काम सौंपा था, 323 में रोमन साम्राज्य के पश्चमिी और पूर्वी दोनों हस्सिों के एकमात्र शासक बने, जब उन्होंने पूर्वी प्रांतों के शासक और ईसाइयों के उत्पीड़क लसिनियिस को पदच्युत कर दयि।

किसी सहारे के, जमीन से बीस[1038] कोहनों ऊपर उठ गया, फिर वापस नीचे आकर उस तने को छू गया जिससे यह निकला था; अंत में, यह रुक गया और अपनी जगह पर स्थिर खड़ा हो गया। स्तंभ की जड़ से एक सुगंधित और औषधीय तेल बहने लगा, और विभिन्न बीमारियों और घावों से पीड़ित सभी लोग, जिन्होंने विश्वासपूर्वक इस तेल का अभिषेक किया, वे चंगे हो गए। इस प्रकार, जन्म से अंधा एक यहूदी, जैसे ही इस प्रकाशमान स्तंभ को छूआ, उसने तुरंत अपनी दृष्टि वापस पा ली और मसीह में विश्वास करके, परमेश्वर की महिमा की। सात साल से गंभीर बीमारी से बिस्तर पर पड़े एक लड़के की माँ उसे जीवन-दायक स्तंभ के पास ले आई और संत नीना से उसके ठीक होने की विनती की, यह स्वीकार करते हुए कि यीशु मसीह, जिनका वह प्रचार करती थी, वास्तव में परमेश्वर के पुत्र थे। जैसे ही संत नीना ने अपने हाथ से स्तंभ को छुआ और फिर उसे बीमार लड़के पर रखा, वह तुरंत स्वस्थ हो गया। जीवन-दायक स्तंभ पर लोगों की असाधारण भीड़ को देखकर राजा ने निर्माणकर्ताओं को इसके चारों ओर एक बाड़ लगाने का आदेश दिया। उस समय से, उस स्थान को न केवल ईसाइयों बल्कि मूर्तिपूजकों द्वारा भी पूजित किया जाने लगा। इसके तुरंत बाद, इबेरिया की भूमि में पहली लकड़ी की चर्च का निर्माण पूरा हो गया।

[1039]मिरियन द्वारा राजा कॉन्स्टेंटिन के पास भेजे गए दूतों का उन्होंने बड़े सम्मान और खुशी से स्वागत किया, और वे उनके द्वारा दिए गए कई उपहार लेकर इबेरिया लौट आए। उनके साथ राजा द्वारा भेजा गया एंटिओक का आर्चबिशप यूस्टैथियस, दो पुरोहित, तीन डिकिन और दैवीय सेवा के लिए सभी आवश्यक सामान भी थे। तब राजा मिरियन ने सभी प्रांतीय गवर्नरों, सैन्य कमांडरों और दरबारियों को एक आदेश जारी किया, जिसमें उन्हें राजधानी में बिना चूके उसके सामने आने का निर्देश दिया गया। और जब वे इकट्ठा हो गए, तो राजा मिरियन, रानी और उनके सभी बच्चों का सभी के सामने तुरंत बपतिस्मा हुआ। बपतिस्मा गृह कुरा नदी पर बने पुल के पास स्थापित किया गया था, जहाँ कभी यहूदी एलिओस का घर हुआ करता था, और जो बाद में मूर्तिपूजक पुरोहितों के लिए एक मंदिर के रूप में काम करता था; वहीं बिशप ने सैन्य कमांडरों और शाही कुलीनों का बपतिस्मा दिया था, और इसी कारण उस स्थान का नाम 'म्टावार्ता सानटलावी' रखा गया, जिसका अर्थ है, 'कुलीनों का फव्वारा'। इस स्थान से थोड़ा आगे नदी के नीचे की ओर, दो पुरोहितों ने लोगों का बपतिस्मा दिया। वे संत नीना के शब्दों को ध्यान में रखते हुए, बड़ी लगन और आनंद के साथ बपतिस्मा लेने के लिए आगे आए: कि जो कोई जल और पवित्र आत्मा के माध्यम से पुनर्जन्म प्राप्त नहीं करता है, वह शाश्वत जीवन और प्रकाश को नहीं देखेगा, बल्कि उसकी आत्मा नरक के अंधकार में नष्ट हो जाएगी। पुरोहितों ने सभी पड़ोसी कस्बों और गांवों में घूम-घूम कर लोगों का बपतिस्मा दिया। इस प्रकार, कुछ ही समय में, पूरे कार्तली का शांतिपूर्वक बपतिस्मा हो गया, केवल काकेशियन पहाड़ी जनजातियों को छोड़कर, जो आने वाले लंबे समय तक मूर्तिपूजा के अंधकार में ही रहीं। मत्स्खेता के यहूदियों ने भी बपतिस्मा लेने से इनकार कर दिया, केवल उनके प्रधान पुरोहित, अवियाफ़ार को छोड़कर, जिन्हें उनके पूरे परिवार के साथ बपतिस्मा दिया गया; उनके साथ पचास यहूदी परिवारों को भी बपतिस्मा दिया गया, जो, कहानी के अनुसार, डाकू बरबन्नो के वंशज थे (मत्ती 27:17)। राजा मिरियन ने, पवित्र बपतिस्मा को स्वीकार करने के लिए अपनी कृपा के प्रतीक के रूप में, उन्हें मत्स्खेता के ऊपर 'त्सीहे-दिदी' नामक एक छोटी बस्ती प्रदान की।

इस प्रकार, ईश्वर की सहायता और सुसमाचार के संदेश की प्रभु की पुष्टि के साथ, एंटिओक के आर्चबिशप यूस्टैथियस ने, संत नीना के साथ मिलकर, कुछ ही वर्षों में इबेरिया की भूमि को ज्ञान का प्रकाश दिया। ग्रीक भाषा में दैवीय सेवा की व्यवस्था स्थापित करने, मत्स्खेता में बारह प्रेरितों को समर्पित पहली चर्च का अभिषेक करने—जो कॉन्स्टेंटिनोपल की चर्च के मॉडल पर बनाई गई थी—और मसीह की युवा चर्च को शांति की विरासत सौंपने के बाद, आर्चबिशप यूस्टेथियस एंटिओक लौट आए[1040] ; उन्होंने पादरी जॉन को इबेरिया का बिशप नियुक्त किया, जो एंटिओक की धर्मप्राची के अधीन थे।

[1038] लोकोट, या लाकोट, लंबाई की एक इकाई है जो 10½ वर्शक के बराबर होती है।

[1039] जॉर्जिया के इतिहास से यह स्पष्ट है कि जॉर्जियाई लोगों ने, विशेष रूप से उच्च वर्गों ने, ईसाई धर्म अपनाने पर अपने पारंपरिक नाम नहीं बदले।

[1040] यह, बेशक, सीरिया के एंटिओक (Antioch) को संदर्भित करता है – जो सीरिया के सबसे पुराने और सबसे अमीर शहरों में से एक, और इसकी राजधानी थी। वर्तमान में, एंटिओक एक छोटा तुर्की शहर है।

[1041]कुछ वर्षों बाद, धर्मपरायण राजा मरियिन ने सम्राट कॉन्स्टेंटनि को एक नया राजदूत दल भेजा, और उनसे वनिती की कि वे इबेरयिा में यथासंभव अधकि से अधकि पुरोहति भेजें, ताकि उनके राज्य में कोई भी उद्धार के वचन को सुनने के अवसर से वंचति न रहे और मसीह के धन्य और शाश्वत राज्य में प्रवेश सभी के लिए खुला हो[1042] । उन्होंने यह भी अनुरोध कयिा कि जॉर्जयिा में पत्थर के चर्च बनाने के लिए कुशल वास्तुकार भेजे जाएँ। महान कॉन्स्टेंटनि ने पवत्रि प्रेम और आनंद के साथ मरियिन के अनुरोध को पूरा कयिा। उन्होंने मरियिन के दूतों को सोने और चांदी की बड़ी मात्रा के अलावा, प्रभु के क्रूस के जीवन-दायक वृक्ष का एक टुकड़ा (पैर) भी भेंट कयिा, जसिे उस समय तक (326 ईस्वी में) महान कॉन्स्टेंटनि की माँ, संत हेलेना द्वारा पहले ही खोज लयिा गया था; उन्होंने उन्हें उन कीलों में से एक भी दी, जनिसे प्रभु के सबसे पवत्रि हाथों को क्रूस पर ठोक दयिा गया था। उन्हें क्रूस, उद्धारकर्ता मसीह और सर्वपवत्रि वर्जनि मैरी के आइकन, साथ ही - चर्चों की नींव के रूप में - पवत्रि शहीदों के अवशेष भी दिए गए। साथ ही, मरियिन के बेटे और उत्तराधकिारी, बकुरी, जो एक बंधक के रूप में रोम में रह रहे थे, को अपने पति के पास लौटने के लिए रहिा कर दयिा गया।

[1043]मरियिन के दूत, कई पुरोहतिों और वास्तुकारों के साथ इबेरयिा लौटकर, कार्तली क्षेत्र की सीमा पर स्थति एरुशेटी गाँव में पहली चर्च की नींव रखी[1044] , और इस चर्च के लिए प्रभु के क्रूस से एक कील[1045] छोड़ी। उन्होंने टफि्लसि से चालीस वर्स्ट दक्षणि में मंग्लसिी गाँव में दूसरी चर्च की स्थापना की, और वहाँ उन्होंने जीवन-दायक वृक्ष के उपर्युक्त भाग को छोड़ा[1046] । मत्स्खेता में भी, उन्होंने प्रभु के रूपांतरण को समर्पति एक पत्थर का चर्च स्थापति कयिा; राजा के अनुरोध पर और संत नीना के नर्दिेशों पर, इसे शाही बगीचे में, संत नीना के तंबू के पास बनाया गया। वह इस भव्य चर्च के पूरा होने तक जीवति नहीं रहीं। राजा और लोगों दोनों द्वारा प्रदान की गई महमिा और सम्मान को ठुकराते हुए, और मसीह के नाम की और भी अधकि महमिा के लिए सेवा करने की इच्छा से जलते हुए, वह भीड़-भाड़ वाले शहर को छोड़कर पहाड़ों, अराग्वा की सूखी ऊँचाइयों के लिए चली गई, और वहाँ, प्रार्थना और उपवास के माध्यम से, उसने कार्तली के पड़ोसी क्षेत्रों में नए मशिनरी कार्यों के लिए खुद को तैयार करना शुरू कर दयिा। पेड़ों की टहनयिों के पीछे छपिी एक छोटी गुफा पाकर, वह वहीं रहने लगी। यहीं पर, अपनी अशरुपूरति प्रार्थनाओं से, उसने चट्टान से पानी का बहाव करा दयिा। आज भी, इस झरने से आँसुओं की तरह पानी की बूँदें टपकती हैं, और यही कारण है कि यह लोगों के बीच 'आँसुओं का झरना' के नाम से जाना जाता है; इसे 'दूध का झरना' भी कहा जाता है, क्योंकि यह माताओं के सूखे स्तनों को दूध प्रदान करता है।

उस समय, मत्स्खेता के नविासयिों ने एक अद्भुत दृश्य देखा: लगातार कई रातों तक, नव-नर्मिति चर्च के ऊपर आकाश में एक दव्यि क्रॉस से सुशोभति कयिा गया था, जो तारों के हार से अलंकृत था। जैसे ही भोर हुई, इस क्रॉस से चार सबसे चमकीले तारे अलग हो गए और चल पड़े – एक पूर्व की ओर, दूसरा पश्चमि की ओर, तीसरा चर्च, बशिप के घर और पूरे शहर को रोशन करते हुए, जबकि चौथा, संत नीना के मंदरि को रोशन करने के बाद, उस चट्टान की चोटी पर चढ़ गया जसि पर एक भव्य पेड़ खड़ा था। न तो बशिप जॉन और न ही राजा इस दृष्टि का अर्थ समझ सके। लेकनि संत नीना ने आदेश दयिा कि उस पेड़ को काटा जाए, उससे चार क्रॉस बनाए जाएँ, और उनमें से एक उपरोक्त चट्टान पर[1047] स्थापति कयिा जाए, एक मत्स्खेता के पश्चमि में, खोटोटी पहाड़ पर – वह स्थान जहाँ राजा मरियिन की आँखें पहले फोड़ दी गई थीं

[1041] इन अनमोल उपहारों की प्राप्ति जॉर्जयिाई वृत्तांतों में नर्दिष्ट नहीं की गई अवधि की ओर इशारा करती है - अर्थात्, कि मरियिन के दूत 326 और 330 के बीच कॉन्स्टेंटनिोपल में थे, पहला वह वर्ष था जसिमें सच्चा क्रूस मलिा था, और दूसरा वह वर्ष था जसिमें कॉन्स्टेंटनिोपल का अभषिेक हुआ था और राजधानी को प्राचीन रोम से वहाँ स्थानांतरति कर दयिा गया था।

[1042] हालांकि, अन्य लोग दावा करते हैं कि मरियिन की कांस्टेंटनि महान से नजिी मुलाकात हुई थी, कि वह स्वयं यरूशलेम गया और वहाँ पवत्रि क्रूस के सम्मान में एक मठ के नर्मिाण के लिए उस स्थान को सुरक्षति कयिा—जहाँ लोट का चहिन प्रकट हुआ था।

[1043] यह लंबे समय से खंडहर में पड़ा है।

[1044] अब – अखाल्त्सखे जलि में।

[1045] 13वीं शताब्दी के मध्य में, इस कील को रुसुदानी के पुत्र राजा डेवडि IX ने एक बशिप की माइट्र (शीर्ष-आवरण) के मुकुट में जड़वाया था। बाद में, 1681 में, इस माइट्र को राजा अर्चलि द्वारा मॉस्को ले जाया गया, जहाँ यह आज भी डॉर्मशिन कैथेड्रल में रखी गई है।

[1046] यह अवशेष खो गया माना जाता है; अधकि संभावना है कि जॉर्जयिा के अशांत समय के दौरान, लकड़ी को कई टुकड़ों में वभिाजति कर दयिा गया था और इस रूप में यह नजिी व्यक्तयिों के घरों में पहुँच गया। यहाँ तक कि अब भी, जीवन-दायक वृक्ष के महत्वपूर्ण टुकड़े जॉर्जयिाई राजकुमारों के पारविारकि आइकन में देखे जा सकते हैं।

[1047] बाद में, इस स्थल पर पवत्रि क्रॉस को समर्पति एक चर्च और एक मठ का नर्मिाण कयिा गया। चर्च आज भी खड़ा है; मठ को 14वीं शताब्दी में तैमूर ने नष्ट कर दयिा था। इस क्रॉस को मत्स्खेता कैथेड्रल में स्थानांतरति कर दयिा गया; 1725 में, राजा तैमूराज़ द्वतिीय ने इसे चांदी में जड़वाया, और यह आज भी वेदी के पीछे खड़ा है।

और फरि उन्होंने अपनी दृष्टि वापस पाई और सच्चे ईश्वर की ओर मुड़ गए; उन्होंने तीसरा क्रॉस राजा की बहू, रेवा की पत्नी सलोमी को देने का आदेश दिया, ताकि वह इसे अपने शहर उजार्मा में स्थापित कर सके; चौथा, हालांकि, उन्होंने बोद्बी (बुदी) गाँव के लिए रखा था — काखेती की रानी सोजी (सोफिया) का क्षेत्र — जहाँ वे स्वयं जल्द ही उन्हें ईसाई धर्म में परिवर्तित करने के लिए रवाना हुईं।

प्रेस्बिटिर जेम्स और एक डीकन को साथ लेकर, संत नीना मत्स्खेता के उत्तर में स्थित पहाड़ी क्षेत्रों, अरागवा और इओरा नदियों के उद्गम की ओर रवाना हुईं[1048] , और उन्होंने कॉकेसस के पहाड़ी गांवों में सुसमाचार का प्रचार किया। चालेटी, एर्ज़ो, टियोनेटी और कई अन्य स्थानों में रहने वाले जंगली पहाड़ी जनजातियों ने, सुसमाचार के संदेश की दिव्य शक्ति से प्रेरित होकर और मसीह की पवित्र प्रचारक की प्रार्थनाओं के द्वारा हुए चमत्कारिक संकेतों से प्रभावित होकर, मसीह के राज्य के सुसमाचार को स्वीकार कर लिया, अपनी मूर्तियों को नष्ट कर दिया और पादरी जेम्स द्वारा बपतिस्मा लिया। बाद में कोकाबेटी से होते हुए और वहाँ के सभी निवासियों को ईसाई धर्म में परिवर्तित करने के बाद, पवित्र प्रचारक काखेती के दक्षिण की ओर रवाना हुईं और बोद्बी (बुदी) गाँव पहुँचने पर — जो उनके पवित्र श्रम और सांसारिक यात्रा की सीमा थी — वहाँ बस गईं। पहाड़ी पर एक तंबू लगाकर और पवित्र क्रूस के सामने प्रार्थना में अपने दिन और रात्रि व्यतीत करके, संत नीना ने जल्द ही स्थानीय निवासियों का ध्यान आकर्षित किया। वे ईसाई धर्म और शाश्वत जीवन के मार्ग पर उनकी मार्मिक शिक्षाओं को सुनने के लिए लगातार उनके चारों ओर इकट्ठा होने लगे। उस समय, काखेती की रानी सोजा (सोफिया) बोडबी में रहती थीं; वह भी दूसरों के साथ उस अद्भुत प्रचारक को सुनने आईं। एक अवसर पर आकर जब उन्होंने बड़ी प्रसन्नता से उन्हें सुना, तो फिर उन्हें छोड़ना नहीं चाहती थीं: वह संत नीना के उद्धारकारी उपदेश में सच्ची आस्था से भर गई थीं। कुछ ही समय बाद, सोफिया ने अपने दरबारियों और लोगों की एक बड़ी भीड़ के साथ मिलकर पादरी जेम्स से पवित्र बपतिस्मा ग्रहण किया।

इस प्रकार इबेरिया की भूमि में काखेती में अपनी प्रेरितिक सेवा का अंतिम कार्य पूरा करने के बाद, संत नीना को अपने निधन के निकट आने के बारे में ईश्वर से एक प्रकटवाणी प्राप्त हुई। राजा मिरियन को इस बारे में सूचित करते हुए एक पत्र में, संत ने उन पर और उनके राज्य पर परमेश्वर और परमेश्वर की अति पवित्र कुंवारी माता का अनंत आशीर्वाद, और प्रभु के क्रूस की अजेय शक्ति द्वारा सुरक्षा की कामना की; और उन्होंने आगे लिखा:

'जहाँ तक मेरी बात है, एक परदेशी और यात्री के रूप में, मैं अब इस संसार से जा रही हूँ और अपने पूर्वजों के पदचिन्हों पर चलूँगी। हे राजा, मैं आपसे विनती करती हूँ कि आप बिशप जॉन को मेरे पास भेजें, ताकि वह मुझे अनंत यात्रा के लिए तैयार कर सकें, क्योंकि मेरे मृत्यु का दिन अब समीप आ गया है।'

पत्र रानी सोफिया ने स्वयं भेजा था। इसे पढ़ते ही राजा मिरियन, उनके सभी दरबारी और बिशप के नेतृत्व में समस्त नियुक्त पुरोहित मरणासन्न महिला के पास दौड़े और पाया कि वह अभी भी जीवित थी। संत की मृत्युशय्या के चारों ओर खड़ी विशाल भीड़ ने उसे अपने आँसुओं से नहला दिया; कई बीमार केवल उसे छूने भर से ही ठीक हो गए। अपने जीवन के अंत के करीब, संत नीना ने, उनके बिस्तर के पास रो रहे अपने शिष्यों की लगातार विनती पर, उन्हें अपनी उत्पत्ति और अपने जीवन के बारे में बताया। इस बीच, उजार की सालोमे ने उनका वृत्तांत दर्ज किया, जिसका एक सारांश यहाँ दिया गया है (संत नीना के सभी बाद के वृत्तांत सालोमे के नोट्स के आधार पर संकलित किए गए थे)। संत नीना ने कहा:

'मेरे इस विनम्र और साधारण जीवन को दर्ज किया जाए, ताकि यह आपके बच्चों तक पहुँच सके, ठीक वैसे ही जैसे आपका विश्वास और जिस प्रेम से आपने मुझसे प्रेम किया है, वह भी जाना जा सके। काश आपके दूर के वंशज भी उन ईश्वरीय संकेतों के बारे में जान सकें जिन्हें देखने का सौभाग्य आपको अपनी आँखों से मिला और जिनके आप साक्षी हैं।'

फिर उन्होंने शाश्वत जीवन पर कई उपदेश दिए, बिशप के हाथों से मसीह के शरीर और रक्त के उद्धारक संस्कारों को श्रद्धापूर्वक ग्रहण किया, यह वसीयत की कि उनके शरीर को उसी साधारण तंबू में दफनाया जाए जिसमें वे अब लेटी थीं, ताकि काखेती की नव-स्थापित चर्च अनाथ न रह जाए, और उन्होंने शांतिपूर्वक अपनी आत्मा प्रभु के हाथों में सौंप दी[1049] ।

राजा और बिशप, सभी लोगों के साथ, इस महान आस्था और धार्मिकता की योद्धा की मृत्यु से गहराई से दुखी हुए; उन्होंने संत की पवित्र अवशेषों को मत्स्खेता के कैथेड्रल चर्च में ले जाकर जीवन-दायक स्तंभ के पास रखने का निश्चय

[1048] इओरा, अलाज़ानी नदी की एक दाहिनी सहायक नदी है (जो कूरा नदी की बाईं सहायक नदी है)। इओरा नदी का अधिकांश भाग टफ्लिस गवर्नोरेट के भीतर स्थित है; इओरा नदी पर सेंट नीना के जीवन में उल्लेखित, तियोन्स्टी नामक जिला शहर स्थित है।

[1049] संत नीना का निधन 335 ईस्वी में हुआ।

कयिा; लेकनि, अपनी पूरी कोशशिों के बावजूद, वे संत नीना की कब्र को उस वशि्राम स्थल से नहीं हटा सके जसिे उन्होंने स्वयं चुना था। मसीह की प्रचारक के शरीर को बूदी (बोद्बी) गाँव में उनके साधारण तंबू की जगह पर दफनाया गया था। राजा मरियिन ने जल्द ही उनकी कब्र पर एक चर्च का नरि्माण शुरू कयिा, और उनके बेटे, राजा बाकुर ने इस नरि्माण को पूरा कयिा[1050] और चर्च को संत नीना के रशि्तेदार, महान शहीद संत जॉर्ज के नाम पर समर्पति कयिा। इस चर्च का कई बार नवीनीकरण कयिा गया है, लेकनि इसे कभी नष्ट नहीं कयिा गया है; यह आज भी बरकरार है। पूरे काखेती में वरषि्ठ, बोद्बी मेट्रोपोलसि की स्थापना इसी चर्च में हुई थी, जहाँ से सुसमाचार पूर्वी काकेशस के पहाड़ों में गहराई तक फैलना शुरू हुआ।

सर्वशक्तमिान ईश्वर ने संत नीना के शरीर को क्षय से बचाया; यह उनके आदेश पर जमीन के नीचे छपिा दयिा गया था (और उनके नधिन के बाद, जॉर्जयिा में संतों के अवशेषों को प्रदर्शति करने की प्रथा नहीं थी)। उनकी कब्र पर अनगनित और अखंड संकेत और चमत्कार हुए। इन अनुग्रह-पूर्ण चहि्नों, संत नीना के पवति्र और दैवीय जीवन, और उनके प्रेरतिकि कार्यों—जनि्हें उन्होंने आरंभ कयिा और एक गौरवपूर्ण समापन तक पहुँचाया—ने इबेरयिा की युवा चर्च को, अंताकयिा की चर्च के आशीर्वाद से, संत नीना को इबेरयिा की प्रेरतिों के समकक्ष प्रबोधक के रूप में मान्यता देने के लिए प्रेरति कयिा, उनका संतजनों में स्थान देने और 14 जनवरी, उनके परम वशि्राम के दनि, उनके सम्मान में एक वार्षकि पर्व स्थापति करने के लिए प्रेरति कयिा। हालांकि यह त्योहार कसि वर्ष में स्थापति कयिा गया था, यह ज्ञात नहीं है, लेकनि यह स्पष्ट है कि इसे संत नीना की मृत्यु के तुरंत बाद स्थापति कयिा गया था, क्योंकि इसके कुछ ही समय बाद, संत नीना, प्रेरतिों के समान, को समर्पति चर्च इबेरयिा में बनना शुरू हो गए थे। आज भी मत्स्खेता के सामने संत नीना को समर्पति एक छोटी सी पत्थर की चर्च खड़ी है; इसे राजा वखतांग गुर-अस्लान[1051] ने उसी पहाड़ पर बनवाया था जहाँ संत नीना ने अपनी प्रार्थना के द्वारा पहली बार अर्माज़ की मूर्ति को नष्ट कयिा था।

और रूसी ऑर्थोडॉक्स चर्च, जसिने वभिन्नि धर्मों के अपने पड़ोसयिों के अनगनित हमलों के बीच आइबेरयिाई चर्च को—जैसे कसिी उद्धार करने वाले जहाज़ में—शामलि कयिा, ने संत नीना को 'अपोस्टलों के समान' के रूप में पूजने में कभी संकोच नहीं कयिा। इसी कारण, जॉर्जयिा के एक्ज़ार्क[1052] के पदवी से इबेरयिा की चर्च के प्रशासन का नेतृत्व करने के लिए नयिुक्त इसके धर्मगुरुओं ने, पहले ही सम-प्रचारकों में से एक नीना के नाम पर कई चर्चों का अभषिेक कर दयिा है, वशिेष रूप से लड़कयिों के स्कूलों की इमारतों में। जॉर्जयिा के पूर्व एक्ज़ार्कों में से एक, जो बाद में सर्व-रूसी चर्च के प्रायमेट बने, मेट्रोपॉलटिन इसडिोर ने तो संत नीना द एक्वल-टू-द-अपोस्टल्स की दैवीय लटिर्जी का जॉर्जयिाई से स्लावोनकि में अनुवाद भी कयिा और 1860 में, परम पवति्र सनिड के आशीर्वाद से, धार्मकि उपयोग के लिए इसे प्रकाशति कयिा।

रूसी चर्च की बड़ी बहन, इवेरयिा की ऑर्थोडॉक्स चर्च, अपने संस्थापक, संत नीना, जो प्रेरतिों के समान हैं, का सही मायने में महमिामंडन करती है, जनि्होंने पवति्र बपतस्मिा के माध्यम से इवेरयिा की पूरी भूमि को प्रबुद्ध कयिा और कई हज़ार आत्माओं को मसीह के प्रति परविर्तति कयिा। क्योंकि जो एक पापी को उसके मथि्या मार्ग से फेरता है (याकूब 5:20) और व्यर्थ से कीमती वस्तु नकिालता है (यरि्मयाह 15:19), वह परमेश्वर के मुख के समान है; तो वह कतिनी अधकि वास्तव में परमेश्वर का मुख थी, जसिने इतने सारे लोगों को—जो पहले सच्चे परमेश्वर को नहीं जानते थे—पैगनवाद के वनिाशकारी भ्रमों से हटाकर परमेश्वर की ओर मोड़ा! वह हमारे परमेश्वर मसीह के राज्य में संतों के समूह में शामलि हो गई हैं, जनि्हें पति और पवति्र आत्मा के साथ, महमिा, स्तुति, धन्यवाद और आराधना, अब और हमेशा और युगों-युगों तक अर्पति होती है, आमीन।

यहाँ यह भी उल्लेख करना उचति है। आज के जॉर्जयिा की सीमाओं के भीतर (जसिमें शामलि हैं: काखेती, कार्टली, इमेरेती, गुरयिा, मग्रिेलयिा, अब्खज़यिा, स्वानेती, ओसेटयिा का एक हस्सिा, और दागेस्तान भी), वशिेष रूप से कैस्पयिन सागर के पश्चमिी तट पर, संत नीना से भी पहले—यद्यपि कम संख्या में—ईसाई थे; और यह वही प्रथम-आहूत प्रेरति एंड्रयू थे जनि्होंने सबसे पहले कॉकेसस पर्वतों में मसीहा यीशु का सुसमाचार प्रचार कयिा, जनिका सुसमाचार प्रचार का वचन, परंपरा के अनुसार, कीव के पहाड़ों तक भी पहुँचा। एक प्राचीन परंपरा, जो जॉर्जयिाई वृत्तांतों में दर्ज है और चेती-

---

[1050] वर्ष 342 ईस्वी में

[1051] उन्होंने 446 से 459 ईस्वी तक जॉर्जयिा पर शासन कयिा।

[1052] एक एक्ज़ार्क एक आर्चबशिप होता है जो कसिी वशिेष क्षेत्र के चर्चों का प्रशासन करता है। आज रूस में, एक्ज़ार्क का खतिाब जॉर्जयिा के आर्चबशिप के पास है।

मनिई (30 नवंबर के अंतर्गत[1053]) के ववरण के अनुरूप है, बताती है कि प्रेरति एंड्रयू ने निम्नलखिति स्थानों में मसीह के बारे में प्रचार कयि: क्लार्ज़ेटी में, जो अखाल्त्सखे से बहुत दूर नहीं, दक्षणि-पश्चमि में स्थति है[1054] ; अधख्वेरा में, जो अब बोर्जोमी घाटी के प्रवेश द्वार के पास अत्सखुरी गाँव है; त्सखुम में, जो अब अब्खाज़िया में सुखुम-काले शहर है; मग्रिेलयि में; और उत्तरी ओसेटयि में। अत्सखुरी में, प्रेरति ने एक चर्च की स्थापना की और वहाँ परमेश्वर की माता की एक चमत्कारी प्रतमिा छोड़ी, जसिे तब से न केवल ईसाइयों बल्कि गैर-ईसाई पहाड़ी लोगों द्वारा भी बहुत श्रद्धा से पूजा जाता है; यह आज भी गाएनात मठ[1055] में है, जो कुताइसी शहर के पास स्थति है और जसिे अत्सखुरी मठ के नाम से जाना जाता है। प्रेरति एंड्रयू के साथी, कनानी साइमन ने जंगली सुआन लोगों (स्वानेट्स[1056]) को पवत्रि सुसमाचार का प्रचार कयि, जन्हिोंने उन्हें पत्थर मारकर हत्या कर दी। स्थानीय परंपरा के अनुसार, उनकी कब्र प्राचीन शहर नकिोप्सीया या अनाकोपयि में स्थति है।

अंगूर की बेल की कलयिों से बने पवत्रि क्रॉस के बारे में यह ज्ञात है, जसिे परमेश्वर की माता ने संत नीना को भेंट कयि था: 458 ईस्वी तक, नीना का क्रॉस मत्स्खेता के कैथेड्रल में रखा गया था; हालाँकि, बाद में, जब अग्नि-पूजकों ने ईसाइयों के खलिाफ उत्पीड़न शुरू कयि, तो पवत्रि क्रॉस को एंड्रयू नामक एक भक्षिु द्वारा मत्स्खेता से ले जाया गया, जसिने इसे आर्मेनयि के तारोन क्षेत्र में ले जाया—जो उस समय सह-धर्मी जॉर्जयि का हस्सिा था—और इसे शुरू में पवत्रि प्रेरतिों के चर्च में रखा गया, जसिे अर्मेनयिाई गज़ार-वांक के नाम से जानते हैं (लज़ारस का कैथेड्रल)। जब यहाँ भी फारसी मगयिों के हाथों उत्पीड़न शुरू हो गया, जो ईसाइयों द्वारा पवत्रि माने जाने वाले हर चीज़ को व्यवस्थति रूप से नष्ट कर रहे थे, तो संत नीना के पवत्रि क्रॉस को स्थानांतरति कर दयि गया और कापोफ्टी, वनाके के अर्मेनयिाई कलिों में छपि दयि गया, कार्स और अनी शहर; यह 1239 ईस्वी तक जारी रहा। उस समय, जॉर्जयिाई रानी रुसुदान ने अपने बशिपों के साथ मलिकर मंगोल कमांडर चरमागन से, जसिने तब तक अनी शहर पर नयिंत्रण कर लयि था, संत नीना के पवत्रि क्रॉस को जॉर्जयि वापस करने का अनुरोध कयि, क्योंकि यह शुरू से ही वहीं का था। और यह पवत्रि क्रॉस एक बार फरि से मत्स्खेता के कैथेड्रल में स्थापति कयि गया। लेकनि यहाँ भी इसे कोई स्थायी शांति नहीं मलि: कई मौकों पर, दुश्मनों द्वारा अपवत्रि कए जाने से बचने के लए, नीना के क्रॉस को पहाड़ों में छपि दयि गया—कभी-कभी पवत्रि त्रमिूर्ति के चर्च में, जो आज भी काज़बेक के छोटे से पहाड़ पर स्थति है, और कभी-कभी अनानूरी के कलि में, ईश्वर की माता के प्राचीन चर्च के भीतर। 1749 में जॉर्जयि से रूस के लए रवाना होते समय जॉर्जयि के मेट्रोपॉलटिन रोमन ने गुप्त रूप से नीना का क्रॉस अपने साथ ले लयि और इसे तब मास्को में रह रहे राजकुमार बकर वाखतांगोवचि को भेंट कर दयि। इसके बाद, लगभग पचास वर्षों तक, यह क्रॉस नज़िनी नोवगोरोड गवर्नरेट के लसिकोव गाँव में, जॉर्जयिाई राजकुमारों की संपत्ति पर रहा, जो ज़ार वाखतांग के वंशज थे और 1724 में रूस प्रवासति हो गए थे। 1801 में, उपर्युक्त बकर के पोते, प्रंसि जॉर्जी अलेक्जेंड्रोवचि ने संत नीना का क्रॉस सम्राट अलेक्जेंडर पावलोवचि को भेंट कयि, जन्हिोंने उदारतापूर्वक इस महान अवशेष को, जो न्यायसंगत रूप से जॉर्जयि का था, देश को वापस कर दयि। उस समय से लेकर आज तक, संत नीना के प्रेरतिकि कार्यों के इस प्रतीक को टफि्लसि के सयिोन कैथेड्रल में, वेदी के उत्तरी द्वार के पास, एक चांदी की आवरण वाली अवशेष-पेटकिा में संरक्षति कयि गया है। इस तीर्थस्थल के ऊपरी पैनल पर संत नीना और माननीय तथा जीवन-दायक क्रॉस की शक्ति से उनके द्वारा कए गए चमत्कारों का उभरा हुआ चत्रिण है।

जहाँ तक प्रभु की चोगा की बात है, जसिे संत नीना खोजने के लए यरूशलेम शहर से इबेरयि आई थीं, जॉर्जयिाई वृत्तांतों में इसका उल्लेख केवल संक्षेप में है। उनके ववरिणों से यह स्पष्ट है कि नीना ने नस्सिंदेह केवल उस स्थान को ही पाया जहाँ प्रभु की चोगा छपिाया गया था, अर्थात् वह कब्र जसिमें दविंगत युवती सडिोनयि के साथ, प्रभु की सम्मानति चोगा दफनाया गया था। यद्यपि इस कब्र पर उगा हुआ देवदार का पेड़ संत नीना के आदेश पर काटा गया था, उसका तना,

---

[1053] संत एंड्रयू द फर्स्ट-कॉल्ड का पर्व 30 नवंबर को मनाया जाता है।

[1054] अखाल्त्सखि – तफि्लसि गवर्नरेट, अखाल्त्सखि जलि में एक जलि शहर।

[1055] गेनात्स्की – इमेरेतयिन धर्मप्रांत में, कुताइसी से 8 वर्स्ट दूर, परमेश्वर की माता के जन्म का मठ; 12वीं शताब्दी की शुरुआत में स्थापति। इसे स्थानीय नाम गेलाती, या गेलात्स्की से भी जाना जाता है।

[1056] स्वानेती एक छोटा काकेशयिन पहाड़ी जनजाति है, जो आदकिाल से स्वान या सुआन के नाम से जानी जाती है, और इंगुरा नदी के ऊपरी इलाकों, माउंट एल्ब्रस के दक्षणिी तलहटे और कोना नदी की दाहनिी सहायक नदी त्स्खेनस्ि-त्स्काली के कनिारे बसी है। प्राचीन काल में, स्वान लोग मुख्य रूप से छापामारी में लगे रहते थे और मग्रिेलयि, इमेरेती और जॉर्जयि के कसिी भी पड़ोसी शासक के अधीन नहीं हुए। 15वीं शताब्दी के अंत तक ही जॉर्जयिाई राजकुमार नचिले स्वानेती में अपना अधकिार स्थापति करने में सफल हुए, जो ट्रांसक्यूकेशयि में कसिानों की मुक्ति तक रहा। स्वतंत्र स्वान लोग पहली बार 1853 में ही रूसी शासन के अधीन आए।

जसिके नीचे सडिोनयिा का ताबूत—और उसमें प्रभु की पवत्रि पोशाक—छपिा हुआ था, अछूता छोड़ दयिा गया था, जैसा कि माना जाता है, एक तेजस्वी पुरुष के आदेश से जो नीना को प्रकट हुआ और एक रात जब वह उस तने के पास आँसू भरी प्रार्थना कर रही थी, तो उसके कान में तीन रहस्यमय शब्द फुसफुसाया था। वे ऐसा इसलिए मानते हैं क्योंकि, उस समय के बाद से, नीना ने फरि कभी देवदार के मूल को हटाने और सडिोनयिा की कब्र को उजागर करने का वचिार नहीं कयिा, न ही उसने प्रभु की चोगा—जो उसके लिए बहुत प्रयि था—को कसिी अन्य स्थान पर खोजा।

एक अवसर पर, उन्होंने राजा मरियिन को तब सांत्वना दी जब वह इस बात पर दुखी थे कि उनके दूत, जन्हिें राजा कॉन्स्टेंटनि से प्रभु के क्रूस के जीवन-दायक वृक्ष का एक टुकड़ा और एक कील मलिी थी, वे उन्हें मत्स्खेता नहीं लाए थे, बल्कि पहले वाले को मैग्लसिी और बाद वाले को एरूशेटि में छोड़ आए थे। संत ने उनसे कहा:

'हे राजा, शोक न करें! ऐसा ही होना था—ताकि आपके राज्य की सीमाएँ मसीह के क्रूस की दव्यि शक्ति की सुरक्षा में रहें, और मसीह का धर्म फैले। आपके और आपके राजधानी नगर के लिए, यह पर्याप्त है कि प्रभु का सबसे सम्मानति चोगा यहाँ वरिाजमान है।'

संत नीना के जीवनकाल में और उसके बाद भी, देवदार के मूल के नीचे प्रभु की चोगा की उपस्थति, स्तंभ और उसकी जड़ से एक उपचारात्मक और सुगंधति मूर्रा के प्रवाह से प्रकट हुई; यह मूर्रा केवल 13वीं शताब्दी में बहना बंद हुआ, जब चोगा को खोदकर बाहर नकिाला गया; पवत्रि चोगा की उपस्थति उन अवशि्वासयिों को दंड देने के माध्यम से भी प्रकट हुई, जन्हिोंने जज्ञिासा के कारण इस स्थान को छूने की हम्मित की। कथोलकिोस[1057] नकिोलस प्रथम, जन्हिोंने बारहवीं शताब्दी के मध्य (1150 और 1160 के बीच) जॉर्जयिाई चर्च का नेतृत्व कयिा और जो अपने पवत्रि जीवन और ज्ञान के लिए प्रसद्धि थे, ने यह देखते हुए कि उनके समय में कई लोगों को इस बात पर संदेह था कि क्या प्रभु की चोगा वास्तव में जीवन-दायक स्तंभ के नीचे स्थति थी, कहा कि यद्यपि ऐसे लोगों के संदेह स्वाभावकि थे, क्योंकि प्रभु की चोगा कभी प्रकट नहीं हुई थी और कसिी ने भी उसे कभी नहीं देखा था, फरि भी संकेत और चमत्कार—चाहे वे अतीत के हों या जो अब सभी की आँखों के सामने हो रहे हैं—प्रभु की चोगा से ही उत्पन्न होते हैं, जो केवल मुर्रा-प्रवाह करने वाले स्तंभ के माध्यम से होते हैं। प्रभु की चोगा के माध्यम से घटति चमत्कारों को सूचीबद्ध करते हुए, कैथोलकिोस नकिोलस याद करते हैं कि कैसे एक नशि्चति तुर्की सुल्तान की पत्नी , जमीन से फूटने वाली आग से भस्म हो गई थी; जज्ञिासा के कारण, वह सडिोनयिा की कफ़न खोलकर प्रभु की चोगा को देखना चाहती थी; जबकि तातार कब्र खोदने वाले जन्हिें उसने भेजा था, एक अदृश्य शक्ति से गरि पड़े।

वे कहते हैं, 'इस चमत्कार को कई लोगों ने देखा, और यह सभी को ज्ञात है।'

कथोलकिोस नकिोलस की मृत्यु से लगभग 40 वर्ष पहले, टफि्लसि और मत्स्खेता वास्तव में सेल्जुक तुर्कों द्वारा कब्जा कर लिए गए थे, जन्हिें बाद में राजा डेवडि द रस्टिोरर ने जॉर्जयिा से बाहर खदेड़ दयिा, जो 1089 से 1125 तक शासन करते थे। कैथोलकिोस नकिोलस ने रसिती हुई मूर्रा की ओर एक नरिंतर चमत्कार के रूप में इशारा कयिा, जो हर समय सभी के लिए दखिाई देता था।

उन्होंने कहा, 'हर कोई स्तंभ के पूर्वी हस्सि पर नमी देख सकता है; अज्ञानता में, कुछ लोगों ने इस जगह को चूने से ढकने की कोशशि की, लेकनि वे चमत्कार के प्रवाह को रोकने में असमर्थ रहे। और इससे कतिनी ही शाखाएँ मलिी हैं - हम सभी इसके गवाह हैं।'

इन कैथोलकिोस नकिोलस ने जीवन-दायक स्तंभ के नीचे प्रभु की चोगा की खोज के सम्मान में एक सेवा रची (इस सेवा को बाद में कैथोलकिोस वसिारयिन और एंथनी द्वारा संशोधति और पूरक कयिा गया), और उन्होंने कहा:

'हमें स्वयं ईश्वर द्वारा स्थापति स्तंभ और उसके नीचे पड़ी हमारे उद्धारकर्ता यीशु मसीह की चोगा का एक भव्य भोज के साथ सम्मान करना चाहिए।'

(यहाँ कैथोलकिोस नकिोलस से लयिा गया वृत्तांत समाप्त होता है)।

उपरोक्त जीवन-दायक स्तंभ से चंगा करने वाले जल का प्रवाह तब बंद हो गया, जब ईश्वर की इच्छा से, प्रभु की चोगा जमीन से हटा दी गई।

[1057] कैथोलकिॉस (ग्रीक: 'सार्वभौमकि') जॉर्जयिा की स्वायत्त चर्च के सर्वोच्च धर्मगुरुओं का उपाधनिाम है, जसिे उन्होंने राजा वख्तंग गुरग-अस्लान (446–459) के अधीन अंतीयक के पैट्रआर्केट से चर्च को स्वतंत्रता प्राप्त करने के बाद अपनाया था। जब जॉर्जयिाई चर्च रूसी चर्च का हस्सिा बन गई, तो इसके सर्वोच्च पदानुक्रम को 1811 से एक एक्ज़ार्क के रूप में जाना जाने लगा। छठी शताब्दी के मध्य से, कैथोलकिॉस की उपाधि आर्मेनयिाई चर्च के सर्वोच्च पदानुक्रम द्वारा भी अपनाई गई।

एक अनाम जॉर्जियाई लेखक कहते हैं, 'यह पूरे जॉर्जिया के लिए कठिन वर्षों के दौरान हुआ जब तैमूर की बर्बर सेनाओं ने— या यूँ कहें कि चंगेज खान के पोते मंगोलों (1058) ने, जब उन्होंने टफ्लिस पर कब्जा किया, इसके निवासियों का—जिनकी संख्या लगभग एक लाख थी—नरसंहार किया, टफ्लिस के सभी चर्चों और सियोन चर्च को नष्ट कर दिया, और सभी ईसाई पवित्र स्थलों का अपमान किया, जिसमें सियोन में स्थित परमेश्वर की माता की चमत्कारी प्रतिमा भी शामिल थी, जिसे उन्होंने ईसाइयों को ही पैरों तले कुचलने के लिए मजबूर किया। इसके बाद, वे मत्स्खेता शहर पर टूट पड़े, जिसके निवासी अपने बिशपों के साथ जंगलों और दुर्गम पहाड़ी घाटियों में भाग गए। तब एक धर्मनिष्ठ व्यक्ति, जिसने मत्स्खेता के विनाश की पूर्व सूचना पाकर और अपनी चर्च के पवित्र स्थल को बर्बरों द्वारा अपवित्र होते नहीं देखना चाहकर, पहले ईश्वर से प्रार्थना करने के बाद, सिडोनिया का मकबरा खोला, उसमें से प्रभु की सबसे पवित्र चोगा निकाली, और फिर उसे मुख्य महा-धर्मोपदेशक को सौंप दिया। तब वाखतांग गुरग-अस्लान के भव्य भवन, मत्स्खेता कैथेड्रल को ध्वस्त कर दिया गया। उस समय से, प्रभु की चोगा कैथोलिकोसों की संस्कारशाला में तब तक रखी गई जब तक कि राजा अलेक्जेंडर प्रथम, जिन्होंने 1414 से 1442 तक जॉर्जिया पर शासन किया, द्वारा मत्स्खेता कैथेड्रल को उसकी पूर्व भव्यता में पुनर्स्थापित नहीं कर दिया गया (जहाँ यह आज भी रखी है)। तब प्रभु की पोशाक को इस कैथेड्रल में लाया गया और अधिक सुरक्षा के लिए, चर्च के क्रॉस के भीतर छिपा दिया गया, जहाँ यह 17वीं शताब्दी तक रही। 1625 में, फ़ारसी शाह अब्बास ने, इबेरिया के साम्राज्य पर विजय प्राप्त करने और कब्ज़ा करने के बाद, रूसी शाही दरबार की कृपा प्राप्त करने के लिए—जो उस समय पहले से ही जॉर्जिया का संरक्षक था—मत्स्केता कैथेड्रल से प्रभु की चोगा ले ली, इसे कीमती पत्थरों से सुसज्जित एक सुनहरे अवशेष-पात्र में रखा और एक विशेष पत्र के साथ, तत्कालीन शासक ज़ार मिखाइल फेडोरोविच के पिता, सर्व-रूस के परम पावन पैट्रिआर्क फिलारेट को एक अनमोल उपहार के रूप में भेजा। धार्मिक ज़ार मिखाइल और परम पावन पैट्रिआर्क फिलारेट ने, इस महान उपहार को खुशी-खुशी स्वीकार करने के बाद, जो पृथ्वी पर के सबसे कीमती उपहारों से भी कहीं बढ़कर है, ने मास्को में उस समय मौजूद यूनानी बिशपों और बुद्धिमान बुजुर्गों से, प्रभु के वस्त्र – प्रभु परमेश्वर और हमारे उद्धारकर्ता यीशु मसीह की चोगा (यूहन्ना 19:23-24) – के बारे में उन्हें ज्ञात परंपराओं को एकत्र किया; ये परंपराएँ यहाँ वर्णित बातों के अनुरूप हैं। प्रार्थना और उपवास के बाद, इस बात की पुष्टि प्राप्त करने पर—कि यह वास्तव में मसीह का वस्त्र ही था, क्योंकि इस वस्त्र को बीमारों पर रखने के बाद अनेक चमत्कारी उपचार हुए— ज़ार और पैट्रिआर्क ने मॉस्को कैथेड्रल ऑफ़ द डॉर्मिशन के पश्चिमी हिस्से के दाहिने कोने में कीमती आभूषणों से सुसज्जित एक विशेष कक्ष तैयार करने का आदेश दिया, और वहाँ मसीह के वस्त्र को रखवा दिया। यह आज भी वहीं है; जो भी इसे देखते हैं, वे उचित श्रद्धा के साथ इसकी पूजा करते हैं; आज भी, यह बीमारों को स्वास्थ्य प्रदान करता है और विश्वास के साथ आने वाले सभी की सहायता करता है। रूसी चर्च में, परम पावन पैट्रिआर्क फिलारेट के समय से, वस्त्र की प्रतिष्ठा का पर्व, अर्थात् प्रभु की चोगा, 10 जुलाई को स्थापित किया गया था[1059] । हालाँकि आइबेरिया के चर्च में 1 अक्टूबर को प्रभु की चोगा का पर्व बारहवीं शताब्दी तक स्थापित नहीं किया गया था, फिर भी यह मानना तर्कसंगत है कि इबेरिया में, विशेष रूप से मत्स्खेता में, इस दिन का उत्सव खुशी से मनाया जाता था - जैसा कि आज मनाया जाता है - यदि पहले ईसाई राजा, मिरियन के समय से नहीं, तो कम से कम पांचवीं शताब्दी से, यानी वाखतांग गुरग-अस्लान के गौरवशाली शासन के समय से; इसे नए, भव्य मत्स्खेता कैथेड्रल के अभिषेक के महत्वपूर्ण दिन के रूप में मनाया जाता था, जिसे उन्होंने प्राचीन मिरियन मंदिर की जगह पर बनवाया था।

संत नीना का ट्रॉपारियन:

ईश्वर के वचन की सेविका, जिन्होंने प्रथम बुलाए गए एंड्रयू और अन्य प्रेरितों के प्रेरितिक उपदेश के उदाहरण का अनुसरण किया, इबेरिया की प्रकाशक और पवित्र आत्मा का पात्र, संत निनो, प्रेरितों के समान, मसीह हमारे ईश्वर से प्रार्थना करो कि हमारी आत्माओं का उद्धार हो।

1058 लगभग 1228 में, जब मत्स्खेता कैथेड्रल को नष्ट कर दिया गया था। हालाँकि, तैमूर ने 1387 में जॉर्जिया पर आक्रमण किया, उस समय तक मत्स्खेता कैथेड्रल मौजूद नहीं था। इस कैथेड्रल को 15वीं शताब्दी में राजा अलेक्जेंडर प्रथम द्वारा फिर से बनाया गया था।

1059 चूंकि महा-उपवास के दौरान प्रभु की पोशाक को रूस लाया गया था, इसलिए इस उत्सव को 10 जुलाई (ज़ार मिखाइल फेडोरोविच के राज्याभिषेक की पूर्व संध्या) पर स्थानांतरित कर दिया गया।

परम पूजनीय स्टीफन की स्मृति

14 जनवरी को स्मरण किया जाता है

हिनोलाक के परमपूजनीय स्टीफन पलेस्टाइन में अपने पवित्र जीवन के द्वारा प्रकाशमान हुए। अपनी युवावस्था से ही, तपस्या के जीवन की आकांक्षा रखते हुए, वे अक्सर यॉर्डन नदी के किनारे स्थित धर्मनिष्ठ पुरुषों के आश्रमों तथा यरूशलेम के पास रेगिस्तान में स्थित संतों के मठों का दौरा करते थे: यूथिमियस महान, सवास पवित्र और थियोडोसियस महान; प्रत्येक मठ में संत ने तपस्या का अभ्यास किया, और व्यक्तिगत अनुभव के माध्यम से उसके नियमों से स्वयं को परिचित कराया। इसके बाद, परम आदरणीय संत सम्राट लियो इसाउरियन के शासनकाल में कॉन्स्टेंटिनोपल आए और पवित्र पैट्रिआर्क जर्मनस द्वारा उनका स्वागत किया गया; जिनके साथ वे कुछ समय तक रहे, आध्यात्मिक जीवन का अध्ययन करते हुए, जबकि अपनी ओर से, उन्होंने पवित्र पैट्रिआर्क के लिए एक लाभकारी सलाहकार के रूप में सेवा की। बाद में, आदरणीय स्टीफन ने हिनोलाका मठ[1060] की स्थापना की, जहाँ बहुत सारे भिक्षु इकट्ठा हुए; संत ने उन्हें प्रभु की शिक्षाओं और अच्छे परामर्श में निर्देशित किया, और उन्हें, उनकी आयु के अनुसार, मसीह की इच्छा की पूर्ति की ओर ले गए। पृथ्वी पर एक पुण्यमय जीवन जीने और अनवरत प्रार्थना के माध्यम से स्वर्गीय सेनाओं के समीप पहुँचने के बाद, पूज्य स्टीफन को एक दिव्यदृष्टि प्राप्त हुई कि स्वर्गीय निवासों के लिए उनके प्रस्थान का समय समीप आ गया था। शरीर से प्राण त्यागते समय, प्रभु ने स्वर्गदूतों के माध्यम से उनकी पवित्र आत्मा को महिमा के साथ ग्रहण किया, क्योंकि वह पवित्रता से परिपूर्ण थी; कुछ भाइयों को इस पूजनीय व्यक्ति के स्वर्गवास के इस गौरवपूर्ण प्रस्थान का साक्षी बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ और उन्होंने इस बारे में कई लोगों को बताया।

28 जनवरी

15 जनवरी (पुराना कैलेंडर)

हमारे पूजनीय पिता थबिस के पॉल का जीवन

15 जनवरी को स्मरणोत्सव

जब आदरणीय एंथनी मिस्र के रेगिस्तान में अपने शिष्यों के साथ रह रहे थे[1061] , तो उन्हें एक बार यह विचार आया कि उनसे अधिक पूर्ण कोई अन्य संन्यासी नहीं था, न ही कोई ऐसा था जो उनसे पहले रेगिस्तान में बसकर इतनी एकांत जीवन शैली अपना चुका हो। उन्होंने बाद में स्वयं बताया कि जब उनके मन में ऐसे विचार आए, तो उन्होंने एक दर्शन में एक आवाज सुनी जो कह रही थी:

'एंथनी! परमेश्वर का एक सेवक है जो तुमसे पहले यहाँ आया था और जो तुमसे अधिक सिद्ध है। यदि तुम चाहो, तो तुम उसे दूर के रेगिस्तान में पा सकते हो; केवल उसके पास जल्दी जाओ, इससे पहले कि वह प्रभु के पास चला जाए।'

यह सुनकर और होश में आकर, वह वृद्ध तुरंत अपनी लाठी उठाकर रेगिस्तान में दौड़ पड़ा, वह जिस व्यक्ति के बारे में बताया गया था, उसे जल्द से जल्द खोजने की तीव्र इच्छा रखता था। दोपहर का समय था, और इतनी गर्मी हो गई थी कि सूर्य की तपिश से पत्थर भी झुलस रहे थे; बूढ़े का शरीर थक गया था, लेकिन उसकी आत्मा सतर्क थी, और जिस रास्ते पर वह निकला था, उससे पीछे मुड़ने का उसका कोई विचार नहीं था। हालाँकि वह नहीं जानता था कि आगे कहाँ जाना है, वह दृढ़ रहा और कहा:

'मुझे विश्वास है कि ईश्वर मुझे अपना सेवक दिखाएंगे, जैसा उन्होंने वादा किया था।'

[1060] अर्थात्, हंस के तालाब के पास। 'हंस' और 'तालाब' के लिए ग्रीक शब्दों से। यह मठ एशिया माइनर के बिथिनिया प्रांत में (एशिया माइनर के उत्तर-पश्चिमी क्षेत्र में), कांस्टेंटिनोपल के सामने, चल्सेडॉन से बहुत दूर नहीं स्थित है।

[1061] आदरणीय महान एंथनी ने मठवासी जीवन शैली की स्थापना सबसे पहले की थी। उनका पर्व दिवस 17 जनवरी को मनाया जाता है। जिस गुफा में वे रहते थे, वह दक्षिणी मिस्र में, नील नदी के पूर्वी तट पर, थेबाइड के जंगली और निर्जन क्षेत्र में स्थित थी।

जब वह इस कठोर और दुर्गम जंगल से गुज़र रहा था, तो बुज़ुर्ग को जानवरों के पदचिन्हों के अलावा कुछ भी नहीं दिखा; दूसरे दिन से रास्ते पर होने और दूसरी रात प्रार्थना में बिताने के बाद, वह नहीं जानता था कि आगे किस तरफ़ जाए। तीसरे दिन की भोर में, उसने अचानक एक मादा भेड़िये को पहाड़ के किनारे चलते और दहाड़ते हुए देखा। दूर से उसका पीछा करते हुए, वह एक गुफा तक पहुँचा जहाँ ईश्वर के पवित्र पुरुष, पॉल, रहते थे[1062] । बूढ़े संत गुफा को देखकर बहुत प्रसन्न हुए; लेकिन उसके निवासी ने, एंथनी के आने को देखकर, दरवाज़ा बंद कर दिया। आगे बढ़कर, बुज़ुर्ग ने दरवाज़ा खटखटाया, लेकिन कोई जवाब नहीं आया, और वह बाहर ही खड़ा रहा, व्यर्थ में खटखटाता रहा। जब उसने देखा कि उसके लिए दरवाज़ा नहीं खोला जाएगा, तो वह गुफा के प्रवेश द्वार के सामने ज़मीन पर गिर पड़ा और छठे घंटे तक प्रार्थना करता रहा, कि उसे प्रवेश करने और उस व्यक्ति को देखने की अनुमति मिल जाए जिसे वह इतनी कठिनाई से खोज रहा था।

संत ने कहा:

'मुझ पर खोलो, मसीह के सेवक, खोलो! क्योंकि तुम जानते हो कि मैं कौन हूँ, कहाँ से आया हूँ और क्यों आया हूँ, क्योंकि ईश्वर ने यह तुम्हें प्रकट कर दिया है। मैं स्वयं जानता हूँ कि मैं तुम्हारा पवित्र मुख देखने के योग्य नहीं हूँ; फिर भी, मैं तब तक इस जगह से नहीं जाऊँगा जब तक कि मैं तुम्हें न देख लूँ। तो खुद को छिपाओ मत, अगर ईश्वर ने तुम्हें मुझे प्रकट किया है: तुम जंगली जानवरों का स्वागत करते हो – तो फिर एक मनुष्य को क्यों ठुकराते हो? मैंने तुम्हें बहुत खोज के बाद पाया है, और मैं यहाँ दरवाज़ा खटखटा रहा हूँ, ताकि तुम मेरे लिए दरवाज़ा खोलो। अगर तुम इसे नहीं खोलोगे, तो मैं तुम्हारे द्वार पर मर जाऊँगा, और तुम मेरी लाश को यहीं दफ़नाओगे।

उसने रोते-रोते उससे और भी बहुत-सी बातें कहीं और उसकी कठोरता के लिए उसे फटकारा। तब परमेश्वर के पुरुष ने गुफा के अंदर से उसे उत्तर दिया और कहा:

'क्या धमकियों से निवेदन करना, या आँसुओं से फटकार लगाना सही है? तुम हैरान हो कि मैं तुम्हारे लिए दरवाज़ा नहीं खोलता; ऐसा इसलिए है क्योंकि तुम घमंड करते हो कि तुम यहाँ मरने आए हो।'

ये शब्द सुनते ही, संत ने दरवाज़ा खोल दिया, और वे एक-दूसरे से लिपट गए और चूमने लगे, एक-दूसरे को नाम से पुकारते हुए, क्योंकि ईश्वर ने एक को दूसरे के नाम की जानकारी दे दी थी। जब वे बैठ गए, तो पूजनीय एंथनी ने कहा:

'खुश हो जाओ, पॉल, चुने हुए पात्र और अग्नि के स्तंभ, इस मरुभूमि के वासी!'

संत पौलुस ने उत्तर दिया:

'यह अच्छा है कि तुम आए हो, हे उस सूर्य जो पूरे ब्रह्मांड को प्रकाशित करता है, हे उद्धार पाने वालों के मार्गदर्शक, हे ईश्वर के मुख, जिसने इस मरुस्थल में वास किया और इसमें से शैतान को भगाया! लेकिन तुमने एक पापी और तुच्छ मनुष्य, मुझ जैसे व्यक्ति के पास आकर, इतना बड़ा श्रम क्यों किया है?' यहाँ आपके सामने एक कमज़ोर बूढ़ा आदमी खड़ा है, जिसके सिर पर असमान रूप से सफेद बाल हैं; आप एक ऐसे आदमी को देख रहे हैं जो धूल और क्षय में बदलने को तैयार है। फिर भी प्रेम को कोई बाधा नहीं रोकती – और आप आए हैं; मुझे बताइए, मैं आपसे विनती करता हूँ – अब लोग कैसे जी रहे हैं, और संसार की क्या दशा है? क्या अब भी मूर्तिपूजक हैं, और, साथ ही, विश्वासियों पर अत्याचार जारी है?

'आपकी प्रार्थनाओं से,' एंथनी ने उत्तर दिया, 'दुनिया में शांति है, उत्पीड़न समाप्त हो गए हैं, और चर्च सच्चे ईश्वर की महिमा कर रही है; लेकिन चूंकि आपने उत्पीड़न का उल्लेख किया है, मैं आपसे विनती करता हूँ—ईश्वर के लिए, मुझे अपने बारे में बताएं और बताएं कि आपने इस दूरस्थ रेगिस्तान के लिए दुनिया क्यों छोड़ी?'

[1062] माउंट एंथनी से सीधी रेखा में चार वर्स्ट से अधिक दूर नहीं, माउंट होल्ज़मि पर सेंट पॉल की गुफा स्थित है, लेकिन यह इतनी ऊँची और खड़ी चट्टान से अलग है कि इसके चारों ओर घूमने में बहुत समय लगता है, यही कारण है कि सेंट एंथनी को पूरा सफर पूरा करने में लगभग दो दिन लग गए।

'मैं[1063] में, थबिाइड[1064] के एक ईसाई परविार में पैदा हुआ था,' संत पॉल ने कहना शुरू कयिा, 'और मेरी एक बहन थी जसिे मेरे माता-पतिा ने उनके जीवति रहते ही शादी कर दी थी। स्वयं ऑर्थोडॉक्स होने के नाते, उन्होंने मुझे धर्मनरिपेक्ष शक्षिा दी और ऑर्थोडॉक्स धर्म के सत्य के बारे में भी सखिाया। अपनी मृत्युशय्या पर, उन्होंने अपनी काफी संपत्ति हमारे बीच बाँट दी। उनकी मृत्यु के बाद, मेरी बहन के पति ने लालच के कारण, मुझ पर मलिने वाली संपत्ति का हस्सिा हड़पने का नश्चिय कयिा और मुझे, एक ईसाई होने के नाते, उस अधर्मी राजकुमार के हवाले करने का इरादा कयिा ताकि मुझे यातनाएँ दी जा सकें, और इस तरह मुझे नष्ट करके वह मेरी वरिासत पर कब्ज़ा कर सके। उस समय सम्राट डसियिस[1065] था। उसने सभी ईसाइयों का उत्पीड़न कयिा, और पूरे थेबाइड को उसके द्वारा रची गई क्रूर यातनाओं के भय से कांपता था। उस समय, दुष्ट उत्पीड़क एक युवा ईसाई युवक को पकड़ ले गए। उन्होंने उसे ईसाई धर्म त्यागने के लिए मनाने हेतु लंबी-चौड़ी यातनाएँ दीं, लेकनि कोई फायदा नहीं हुआ। अंत में, उसे एक खलि हुए और सुगंधति बगीचे में ले जाया गया और एक शानदार बस्तिर पर पीठ के बल लटिाकर, उन्होंने उसके हाथ और पैर नरम रस्सयिों से बाँध दिए। जब सभी बगीचे से चले गए, तो एक युवती को पाप के लिए प्रलोभति करने हेतु उस युवक के पास भेजा गया। उस नरि्लज्ज युवती ने उस युवक को गले लगा लयिा और चूम लयिा, और हर संभव तरीके से उसे बहकाने की कोशशि करने लगी। तो, पहले ही इतना यातना सह चुके उस वीर शहीद ने क्या कयिा? – कामुक प्रलोभन के खतरे को भांपते हुए, उसने अपने दांतों से अपनी जीभ काट ली और उसे वेश्या के चेहरे पर थूक दयिा; भयंकर दर्द के बीच उसने अपने वासना पर काबू पा लयिा, और वेश्या के चेहरे और कपड़ों पर खून थूक दयिा, जबकि वह स्वयं, मसीह की कृपा से, पवत्रि बना रहा। एक अन्य युवक, जो ईसाई धर्म में दृढ़ रहा, उसे बहुत यातनाओं के बाद नग्न कर दयिा गया; उन्होंने उसके पूरे शरीर पर शहद मल दयिा और उसे, कंधों पर बाँहें बँधी हुई, तपती धूप में रख दयिा; उन्होंने सोचा कि मधुमक्खयिों, ततैयों और डंक मारने वाले कीड़ों के डंक से वह इसे सहन नहीं कर पाएगा और मूर्तयिों को बलदिान चढ़ाने के लिए राजी हो जाएगा। लेकनि उस साहसी पीड़ति ने, यद्यपि उसके पूरे शरीर पर मधुमक्खयिों, ततैयों और डंक मारने वाले कीड़ों ने इतना डंक मारा था कि वह अपना मानवीय रूप भी खो चुका था, फरि भी मसीह का त्याग नहीं कयिा। यह सब देखकर, और साथ ही अपनी बहन के पति की लगातार बढ़ती दुष्टता को भी—जसिे न तो मेरी बहन के आँसू और न ही हमारा नाता मना पा रहा था—मैंने सब कुछ पीछे छोड़ दयिा और इस रेगस्तिान में भाग आया। ईश्वर की मदद से, मैं धीरे-धीरे इस जगह तक पहुँचा। जब मुझे यह गुफा मलिी, जसिके अंदर पानी का एक स्रोत था, तो मुझे एहसास हुआ कि प्रभु स्वयं ने ही इसे मेरा नविास स्थान नयिुक्त कयिा है। मैं यहाँ बस गया और खजूर खाकर तथा पत्तों से अपने लिए कपड़े बनाकर रहता हूँ।

जब संत यह बता रहे थे, तभी एक कावा अचानक अपने चोंच में रोटी लेकर उड़ता हुआ आया; उसने धीरे से रोटी उनके सामने रख दी, और उड़कर हवा में गायब हो गया। धन्य एंथनी के आश्चर्य को देखकर, संत पॉल ने कहा:

'यह प्रभु हैं, जो मानव जाति के प्रति अत्यंत दयालु और प्रेममय हैं, जन्हिोंने यह भोजन हम, उनके सेवकों के पास भेजा है। अब साठ वर्षों से मुझे आधी रोटी मलि रही है। लेकनि आपके आगमन के अवसर पर, प्रभु मसीह ने इस उपहार को दोगुना कर दयिा है और अपने सैनकिों के लिए एक पूरी रोटी भेज दी है।'

यह रोटी लेकर, ईश्वर के इन महान सेवकों ने एक-दूसरे से इसे आशीर्वाद देने और तोड़ने के लिए कहना शुरू कर दयिा, और हर कोई सम्मान में दूसरे को स्वयं से ऊपर रखना चाहता था। संत पौलुस पूजनीय एंथनी को एक मेहमान के रूप में सम्मानति करना चाहते थे, जबकि पूजनीय एंथनी संत पौलुस को मेज़बान और बड़े के रूप में सम्मानति करना चाहते थे; और वे लंबे समय तक आपस में स्नेहपूर्वक बहस करते रहे। अंत में, धन्य पौलुस ने एक सरि से रोटी का टुकड़ा लयिा, जबकि दूसरे सरि को परम पूज्य एंथनी के हाथों में रख दयिा: रोटी अपने आप ही दो भागों में टूट गई, और प्रत्येक को अपना-अपना आधा हस्सिा मलि गया।

[1063] थेब्स के पॉल के जन्म का वर्ष उनकी जीवनी से इस प्रकार नरि्धारति होता है। जब एंथनी पॉल के पास आए, तो उन्होंने पहले ही 22 वर्ष की आयु में वहां जाने के बाद से 91 वर्ष रेगस्तिान में बति दिए थे। परणिामस्वरूप, उनकी उम्र 113 वर्ष थी। एंथनी, जनिका जन्म वर्ष 251 में हुआ था, 90 वर्ष की आयु में उनके पास आए; परणिामस्वरूप, सेंट पॉल का जन्म लगभग वर्ष 228 में हुआ था।

[1064] थेबाइड प्राचीन काल में प्रसद्धि मस्रि के प्राचीन शहर थेब्स के आसपास का क्षेत्र है; इस नाम का उपयोग इसके प्रमुख शहर के नाम पर पूरे ऊपरी (दक्षणिी) मस्रि को संदर्भति करने के लिए भी कयिा जाता था।

[1065] डेसयिस – एक रोमन सम्राट और ईसाई धर्म का एक नरि्दयी उत्पीड़क, जसिने 249 से 251 तक शासन कयिा।

झरने के पास बैठकर, मसीह के सेवकों ने खाया और तृप्त हो गए; फरि उन्होंने इस झरने से पयिा, जसिमें शुद्ध और बहुत ही स्वादष्टि पानी था। एक धन्यवाद-प्रार्थना करने के बाद, वे फरि से बैठ गए और सुबह तक पूरी रात बातें करते रहे। जैसे ही दनि का उजाला हुआ, संत पॉल ने अबा एंथनी से कहा:

'मेरे भाइ, मैं बहुत समय से जानता हूँ कि तुम इस मरुस्थल में रहते हो, और मैं चाहूँगा कि तुम्हारे साथ रहते हुए हम दोनों मलिकर अपने प्रभु की सेवा करें।' लेकनि चूँकि मेरे मरने का समय आ गया है—जसिका मैं हमेशा से आनंद के साथ इंतजार करता रहा हूँ, यह इच्छा करते हुए कि *'मैं शरीर छोड़कर मसीह के साथ रहूँ'* (फलिि. 1:23)—प्रभु ने तुम्हें मेरे पास भेजा है, ताकि तुम मेरे इस दीन शरीर को दफनाओ और इसे मट्टिी सौंप दो।

यह सुनकर, एंथनी ने आँसुओं में पुकारा:

'मुझे अकेला न छोड़इि, हे मेरे पति, बल्कि मुझे भी अपने साथ ले चलइि!'

'तुम्हें अपनी भलाई की चति नहीं करनी चाहइि,' संत पौलुस ने उत्तर दयिा, 'बल्कि अपने पड़ोसी की भलाई की चति करनी चाहइि। यदि तुम्हारे लइि शरीर के बोझ से मुक्त होकर मेमने का अनुसरण स्वर्ग में करना ही भला होता, तो बाकी भाइयों की भलाई के लइि यह आवश्यक है कि तुम अभी के लइि उन्हें सखिाते और मजबूत करते रहो।' मैं आपसे वनिती करता हूँ, तुरंत अपने मठ जाएँ और बशिप अथेनासयिस द्वारा आपको दयिा गया चोगा ले आएँ, ताकि आप मेरे शरीर को उससे ढक सकें।

संत पौलुस ने यह इसलइि नहीं माँगा क्योंकि उन्हें उस चोगा की ज़रूरत थी। उन्हें इस बात की चति नहीं थी कि उनका नश्वर शरीर—जसिे उन्होंने इतने लंबे समय तक खजूर के पत्तों से ढका रखा था—नग्न दफनाया जाएगा या ढका जाएगा; वे केवल यही चाहते थे कि उनकी आत्मा एकांत की शांति में उनके शरीर से अलग हो जाए, और यही कारण है कि उन्होंने पूजनीय एंथनी को मठ वापस भेज दयिा।

एंटनी अथेनासयिस और उस चोगा के बारे में जो कुछ उसने सुना था, उससे वह बहुत आश्चर्यचकति था। पौलुस में, मानो, स्वयं मसीह को देखकर, और उसमें नविास करने वाले ईश्वर का सम्मान करते हुए, वह अब उससे वरिोध करने की हम्मित नहीं कर सका; काफी देर तक, मौन और आँसुओं के साथ, उन्होंने उसकी आँखों और हाथों को चूमा, और फरि आज्ञा का पालन करने के लइि जल्दी से नकिल पड़े: अपनी इच्छा के वरिुद्ध, वे मठ के लइि रवाना हो गए, उनका शरीर थका हुआ था, लेकनि उनका आत्मा अपने वृद्धावस्था की कमजोरयिों पर वजिय प्राप्त कर रहा था। जैसे ही वे अपनी कोठरी के पास पहुँचे, दो शष्यि उनसे मलिे और पूछा:

'आप इस सारे समय कहाँ थे, हमारे पति?'

'हाय मेरे बच्चों,' एंथनी ने उत्तर दयिा, 'हाय मुझ पर, एक पापी, संन्यास जीवन का केवल दखिावा करने वाले। मैं तो नाम मात्र का एक भकि्षु हूँ, फरि भी मैंने उसे देखा है जो वास्तव में इलयिाह हैं, जंगल में रहने वाले यूहन्ना; मैंने वास्तव में स्वर्ग में पॉल को देखा है।'

शष्यिों ने इस बारे में और सुनना चाहा और उससे बताने के लइि कहने लगे। लेकनि एंथनी ने अपने हाथ से अपना मुँह ढकते हुए कहा:

'हर बात का एक समय होता है: बोलने का समय, और चुप रहने का समय (उपदेशक 3:1–7)।'

और अपने चोगा को पकड़कर, एक पल के लइि भी आराम कइि बनिा, और यात्रा के लइि भोजन भी लइि बनिा, वह नकिल पड़ा और एक बार फरि रेगस्तिान में दौड़ पड़ा ताकि संत पौलुस को जीवति पा सके, क्योंकि उसे डर था कि यदि वह देरी कर दे, तो संत उसके बनिा ही मर सकते हैं।

अगले दनि, तीसरे पहर में, जब वे रास्ते पर जा रहे थे, तब अबा एंथनी ने हवा में स्वर्गदूतों की कतारें और नबयिों तथा प्रेरतिों की सभाएँ देखीं, और उनके बीच संत पॉल की आत्मा को देखा, जो सूर्य से भी अधकि चमकते हुए स्वर्ग की ओर बढ़ रही थी। संत एंथनी ज़मीन पर गरि पड़े, अपने सरि पर रेत छड़िक ली, और ससिकयिों के बीच चल्लिाए:

'हे पौलुस, तुमने मुझे क्यों छोड़ दयिा? तुम अंतमि चुंबन दइि बनिा क्यों जा रहे हो? मैं तुम्हें इतने लंबे समय तक नहीं जान पाया, और अब जब मैं तुम्हें जान ही पाया हूँ, तुम मुझे इतनी जल्दी छोड़कर जा रहे हो!'

बाद में, धन्य एंथनी ने बताया कि उन्होंने बाकी की यात्रा इतनी तेज़ी से पूरी की कि ऐसा लगा जैसे वे पंखों से हवा में उड़ रहे हों, इसलइि, इतनी तेज़ी से चलने के कारण, उन्हें अपने पैरों के नीचे ज़मीन का एहसास भी नहीं हुआ। जल्द ही वह गुफा में पहुँचा और अंदर जाते ही उसने संत को घुटने के बल झुके हुए, अपनी बाहें ऊपर की ओर फैलाए और चेहरा भी ऊपर की ओर कइि हुए देखा। यह सोचकर कि वह जीवति हैं और प्रार्थना कर रहे हैं, एंथनी भी उनकी प्रार्थना में शामलि

हो गया। एक घंटा बीत गया, और चूंकि संत पॉल से प्रार्थना के कोई शब्द या आहें नहीं सुनाई दे रही थीं, धन्य एंथनी उनके और करीब गए और यह देखकर कि वे पहले ही मर चुके थे, उन्हें एहसास हुआ कि उस पवित्र व्यक्ति का शरीर मृत्यु के बाद भी ईश्वर की आराधना करता रहा, जिनके साक्षात रूप के सामने सभी चीजें जीवित रहती हैं। बहुत देर तक वह रोता और विलाप करता रहा, पूजनीय संत के पवित्र शरीर को चूमता रहा; फिर उसने उसे उस लबादे में लपेटा जो वह अपने साथ लाया था और, ईसाई रीति-रिवाज के अनुसार, अंतिम संस्कार में गाए जाने वाले भजन गाने लगा। लेकिन वह यह सोच नहीं पा रहा था कि संत का अंतिम संस्कार कैसे करे, क्योंकि वह कब्र खोदने के लिए अपने साथ फावड़ा नहीं लाया था।

'क्या मुझे फावड़े के लिए मठ लौटना चाहिए?' उसने सोचा। 'लेकिन वहां का सफर तीन दिन का है। क्या मुझे यहीं रुकना चाहिए? फिर भी, बिना फावड़े के मैं कुछ नहीं कर सकता।' 'मेरे लिए यहीं रुकना और जैसा कि मुझे करना चाहिए, वैसा ही मरना बेहतर है, हे मसीह, आपके योद्धा के पास अपनी अंतिम सांस लेते हुए!'

जब वह यह सोच ही रहा था, तभी अचानक रेगिस्तान की गहराइयों से दो शेर निकले, जो दहाड़ रहे थे और संत के नुकसान पर रोते हुए प्रतीत हो रहे थे। पहले तो एंथनी कुछ डरा हुआ था, लेकिन फिर, जब उसने देखा कि वे जानवर, मेमनों की तरह शांत, संत के शरीर के पास लेटे हुए थे और दयालुता से दहाड़ रहे थे, मानो रो रहे हों, तो वह उनकी कोमलता पर चकित हो गया। तब उन्होंने अपने पंजों से मिट्टी खोदनी शुरू कर दी और काफी गहरी खाई खोद लेने के बाद, एक बार फिर से संत के शरीर के सामने एक ज़ोरदार दहाड़ के साथ प्रणाम किया, मानो उन्हें विदाई दे रहे हों; फिर, पूजनीय एंथनी के पास आकर, वे उनके हाथ और पैर चाटने लगे, मानो उनका आशीर्वाद और प्रार्थनाएँ मांग रहे हों। रेवरेंड ने, यह देखकर कि यहाँ तक कि जानवर भी ईश्वर के सामने सिर झुका रहे थे, मसीह की महिमा की और कहा:

'हे प्रभु,' उन्होंने कहा, 'आपकी इच्छा के बिना, न तो पेड़ से एक पत्ता गिरता है और न ही एक भी पक्षी जमीन पर गिरता है; आप इन जानवरों को अपनी कृपा प्रदान करें, जैसा कि आप सर्वोत्तम जानते हैं।'

तब, उन्होंने अपने हाथ से रेगिस्तान की ओर इशारा करके, जानवरों को वहाँ जाने की आज्ञा दी। जब वे गायब हो गए, तो बाबा एंथनी ने पहले तपस्वी, पवित्र और पूजनीय पिता पॉल, जो 113 वर्ष की आयु में निधन कर गए थे, के पवित्र शरीर को दफनाया[1066] । आदरणीय एंथनी ने दफन के बाद पूरी रात संत की कब्र पर आँसुओं और प्रार्थना में बिताई; और भोर होते ही वह खजूर के पत्तों से बुने हुए संत के वस्त्र को अपने साथ लेकर अपने मठ वापस चले गए। अपने मठ लौटने पर, उन्होंने अपने शिष्यों के उपकार के लिए सब कुछ विस्तार से सुनाया; उन्होंने संत पॉल के वस्त्र को इतना संजोया और सम्मानित किया कि वह इसे साल में केवल दो बार ही पहनते थे: पवित्र ईस्टर के पर्व पर और पेंटेकोस्ट पर।

आदरणीय पादरियों पॉल और एंथनी की पवित्र प्रार्थनाओं के द्वारा, ईश्वर हमारे प्रभु हमें अपने संतों का भाग प्रदान करें, जिनके लिए, पिता और पवित्र आत्मा के साथ, युगों-युगों तक सम्मान और महिमा हो, आमीन।

आदरणीय जॉन, झाड़ी-निवासी का जीवन[1067]

15 जनवरी को स्मरणोत्सव

कॉन्स्टेंटिनोपल में, लियो महान के शासनकाल के दौरान[1068] , यूट्रोपियस नामक एक धनी और प्रतिष्ठित सैन्य अधिकारी अपनी पत्नी थियोडोरा के साथ रहते थे। उनके तीन पुत्र थे, जिनमें से दो को साम्राज्यिक सेवा में नियुक्त किया गया था और उन्होंने वहाँ पहले ही उच्च पद प्राप्त कर लिए थे, जबकि तीसरे, सबसे छोटे पुत्र, जिसका नाम जॉन था, को शिक्षा के विभिन्न शाखाओं में शिक्षित होने के लिए भेजा गया था। बारह वर्ष की आयु में ही, जॉन अपने साथियों से इतनी स्पष्ट रूप से अलग दिखता था कि उसके शिक्षक भी उसकी क्षमताओं और इतनी कम उम्र में उसके असाधारण विकास को देखकर चकित थे। लेकिन वह न केवल सांसारिक ज्ञान में, बल्कि आध्यात्मिक बुद्धि में भी उत्कृष्ट था। पवित्र

[1066] थेब्स के संत पॉल का निधन वर्ष 341 में हुआ। बाइजेंटाइन सम्राट मैनुएल कोम्नेनोस (1146–1180) की इच्छानुसार, उनके शरीर को कॉन्स्टेंटिनोपल ले जाया गया और वर्जिन मैरी पेरिब्लेप्टा के मठ में दफनाया गया; फिर, 1240 में, इसे वेनिस और अंत में हंगरी के ओफेन में स्थानांतरित कर दिया गया; उनकी खोपड़ी का एक हिस्सा रोम में है।

[1067] आदरणीय जॉन को 'कुश्निक' के नाम से जाना जाता है क्योंकि उन्होंने अपने तपस्वी जीवन के अंतिम वर्ष एक 'कुश्च' (झोपड़ी) में बिताए थे, अर्थात्, एक तंबू, अत्यंत गरीबी और दरिद्रता में, अपने अमीर और कुलीन माता-पिता के घर के पास, जिन्हें उन्होंने पहचाना नहीं था - और उन्हें उसी तंबू में दफनाया गया था; बाद में, उनके माता-पिता ने 'झाड़ी' की जगह पर उनके नाम एक चर्च बनवाया।

[1068] लियो प्रथम महान – बीजान्टिन सम्राट; 457 से 476 तक शासन किया।

आत्मा के धन्य प्रभाव में, वह एक सौम्य, अच्छे स्वभाव और विनम्र लड़के के रूप में विकसित हुआ; और, अपने पाठों के समाप्त होने के बाद, उसने अपना समय बचपन के सामान्य खेलों में नहीं, बल्कि पवित्र, दैवीय प्रेरित पुस्तकों को पढ़ने और चर्च की सेवाओं में लगन से भाग लेने में बिताया। उसका हृदय ईश्वर के प्रति प्रेम से भर गया था, और उसकी आत्मा में इस प्रेम की अग्नि एक प्रचंड ज्वाला के रूप में प्रज्वलित होने लगी।

जब जॉन भक्ति में इतनी प्रगति कर रहा था, तो एक दिन ऐसा हुआ कि एक भिक्षु उस घर में आया जहाँ वह धन्य व्यक्ति अध्ययन कर रहा था। उसे देखकर, उस लड़के ने पूछा:

'आप कहाँ से हैं, फादर, और कहाँ जा रहे हैं?'

'मैं "निद्रारहितों"[1069] के मठ से हूँ,' भिक्षु ने उत्तर दिया, 'और मैं पवित्र स्थानों की पूजा करने के लिए यरूशलेम जा रहा हूँ।'

अपने हृदय में उत्साह लिए, जॉन ने उससे मठ-जीवन, प्रार्थना और उपवास, अखंड भजन-कीर्तन, और भिक्षुओं के अन्य पराक्रमों और श्रमों के बारे में पूछना शुरू कर दिया। भिक्षु ने, लड़के की भक्ति और विवेक को देखकर, उसे अपने मठ की सभी रीति-रिवाजों और नियमों के बारे में विस्तार से बताया।

जॉन ने भिक्षु की बात ध्यान से सुनने के बाद उससे पूछा:

'क्या आप, पिताजी, अपने मठ में वापस जाएँगे, या यरूशलेम में ही रहेंगे?'

'मुझे,' भिक्षु ने उत्तर दिया, 'अपने मठाधीश का आदेश है कि मुझे लौटना चाहिए, और, अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करने के बाद, यदि ईश्वर की इच्छा हुई, तो मैं पवित्र स्थानों पर आकर तुरंत वापस आ जाऊँगा।'

तब जॉन ने भिक्षु का दाहिना हाथ पकड़कर कहा:

'फादर, मेरे पास आपके लिए एक रहस्यमयी बात है।'

फिर उसने उसे एक ओर ले जाकर कहना शुरू किया:

'मेरी बात सुनो, मेरे पिता,' मैं आपसे विनती करता हूँ, 'और मुझ पर दया करो। मेरी इस व्यर्थ संसार को छोड़कर मसीह की सेवा करने की प्रबल इच्छा है। लेकिन मेरे माता-पिता की मेरे लिए बिल्कुल अलग योजनाएँ हैं। वे मुझे अपने बड़े भाइयों से अधिक प्यार करते हैं, वे मेरे लिए कोई उच्च पद हासिल करना चाहते हैं और मेरी शादी करवाना चाहते हैं। जहाँ तक मेरी बात है, पवित्र चर्च में अक्सर परमेश्वर का वचन सुनने और स्वयं पवित्र पुस्तकें पढ़ने के कारण, मुझे यह एहसास हो गया है कि सभी सांसारिक चीजें व्यर्थ हैं, और केवल एक ही चीज़ का कोई मूल्य है - संसार का त्याग करना और अपने संन्यासी जीवन शैली में मसीह की सेवा करना। मैं आपसे उस परमेश्वर के नाम पर विनती करता हूँ, जो हमारी मुक्ति का इच्छुक है, कि जब आप अपने मठ में लौटें तो मुझे भी अपने साथ ले जाएँ।

इन शब्दों में, भिक्षु ने महसूस किया कि स्वयं ईश्वर उस युवक को अपनी ओर बुला रहे थे। उन्होंने गंभीरता से वादा किया कि वे उसे अपनी वापसी पर अपने साथ ले जाएँगे, और इस प्रकार वे अलग हो गए।

जब भिक्षु यरूशलेम के लिए रवाना हो गए, तो धन्य जॉन, सुसमाचार के अनुसार जीने की इच्छा से, अपने माता-पिता से उसके लिए सुसमाचार की एक प्रति खरीदने के लिए कहने लगे, ताकि उसमें मसीह के वचनों का अध्ययन करके, वह मसीह को भाने वाले कर्म करना सीख सके। अपने पुत्र में दिव्य धर्मग्रंथों के प्रति ऐसा उत्साह देखकर उसके माता-पिता बहुत प्रसन्न हुए। उन्होंने तुरंत एक कुशल लेखक को सुसमाचार की एक सुंदर प्रतिलिपि बनाने के लिए नियुक्त किया; फिर उन्होंने उसे सोने से जड़ा और कीमती पत्थरों से सजाया, ताकि उनका बेटा न केवल उसमें लिखे मसीह के शब्दों की मिठास से, बल्कि पुस्तक की बाहरी सुंदरता से भी, लगन से पढ़ने के लिए आकर्षित हो। ऐसी सुसमाचार तैयार करने के बाद, उन्होंने उसे अपने बेटे को भेंट कर दिया। पवित्र पुस्तक को खुशी-खुशी प्राप्त करने के बाद, जॉन ने उसे लगन से पढ़ना शुरू कर दिया; उसका हृदय मसीह के वचनों से मधुर हो गया, और ईश्वर के प्रति अपने प्रेम में दिन-ब-दिन बढ़ते हुए, वह उस भिक्षु की यरूशलेम से वापसी का बेसब्री से इंतजार करने लगा, जिसे उसने अपने हृदय का रहस्य सौंपा था।

[1069] यहाँ संदर्भित 'सारी रात जागने वालों' का मठ बिथिनिया (एशिया माइनर का एक उत्तर-पश्चिमी क्षेत्र) में स्थित था और इसका मॉडल कॉन्स्टेंटिनोपल के एक समान मठ पर बनाया गया था, जिसे मेसोपोटामिया से वहाँ स्थानांतरित किया गया था और चौथी शताब्दी के अंत में सेंट अलेक्जेंडर द्वारा स्थापित किया गया था। इस मठ के निवासियों के मठवासी नियम और जीवन शैली विशेष कठोरता से विशेषतापूर्ण थे। मठ का नाम इस तथ्य से पड़ा कि इसके भ्रातृगण, दिन और रात के 24 घंटों के अनुरूप 24 समूहों में विभाजित थे, जो दो पालियों में निरंतर प्रभु की महिमा करते थे, और दाऊद के भजन बहुत धीमी गति से गाते थे, ताकि इस मठ में दैवीय सेवा बिना किसी रुकावट के हो और कभी न रुके। सेंट अलेक्जेंडर के शिष्यों, जॉन और मार्सेलस द्वारा बिथिनिया में, सोस्फेनियुला शहर के पास एक समान मठ की भी स्थापना की गई थी।

बहुत समय बाद, भिक्षु लौटा और जॉन ने बड़ी खुशी से उसका स्वागत किया।

'मैं आ गया हूँ, मेरे बेटे, जैसा मैंने वादा किया था, मैं लौट आया हूँ,' भिक्षु ने कहा, 'और अगर तुम चाहो, तो मैं तुम्हें अपने साथ मठ ले जाऊँगा।'

धन्य योहन ने उत्तर दिया:

'मैं ईश्वर का धन्यवाद करता हूँ कि आप अच्छे स्वास्थ्य के साथ वापस आए और मुझे एक बार फिर आपको देखने का सौभाग्य मिला। मैं निकलने के लिए तैयार हूँ। लेकिन अगर मेरे माता-पिता मुझे जाने की अनुमति नहीं देते तो हम क्या करेंगे? मेरी माँ बहुत संवेदनशील हैं, और जब उन्हें पता चलेगा कि मैं उन्हें छोड़ना चाहता हूँ, तो वे अपने आँसुओं से धरती को भीगा देंगी और मुझे रोक लेंगी, इस प्रकार मेरी इच्छा को विफल कर देंगी।' मैं आपसे विनती करता हूँ, मेरे पिताजी, कि हम यहाँ से गुप्त रूप से चलें, ताकि मेरे किसी भी रिश्तेदार या परिचित को न तो मेरे जाने का पता चले और न ही उस मार्ग का, जो मैंने अपनाया है।

'हम तुम्हारी इच्छा के अनुसार ही करेंगे, मेरे बेटे,' भिक्षु ने कहा, 'और ईश्वर तुम्हारे हृदय की इच्छा पूरी करे।'

तो वे बंदरगाह पर समुद्र तट पर आए और एक जहाज पाकर, उसके मालिक से उन्हें नदिरालुहण के निवास स्थान तक ले जाने के लिए कहने लगे। लेकिन उस आदमी ने यात्रा के किराए के रूप में उनसे बहुत सारा सोना मांगा, क्योंकि उसने कहा कि वह जहाज के लिए एक बड़ा माल और वापसी यात्रा के किराए का भुगतान भी उम्मीद कर रहा था।

जॉन ने उससे पूछा:

'और आपके जहाज़ पर पूरा माल ढोने में कितना खर्च आता है?'

'एक सौ ज़्लाटनसि,' नाविक ने उत्तर दिया।

जॉन ने कहा, 'मेरे भाई, तीन दिन रुक जाओ, और मैं तुम्हारा जहाज़ किराए पर ले लूँगा।'

उससे बात करने के बाद, जॉन और भिक्षु विदा हो गए। अकेले होने पर, जॉन ने भिक्षु से कहा:

'नाविक मालिक यात्रा के लिए बहुत ज़्यादा कीमत माँग रहा है; लेकिन अपने माता-पिता से चोरी-छिपे निकलने में तो मुझे और भी ज़्यादा खर्च आएगा; इसलिए मैं अपने माता-पिता के पास जाऊँगा और उनसे अपनी ज़रूरतों के लिए कुछ सोना माँगूँगा।'

'जाओ, मेरे बेटे,' भिक्षु ने उत्तर दिया, 'और प्रभु तुम्हारा इरादा पूरा करें, जैसा उनकी इच्छा हो।'

घर पहुँचने पर, जॉन ने अपनी माँ से कहा:

'माँ, मैं आपसे एक मदद मांगना चाहता हूँ, लेकिन हिम्मत नहीं हो पा रही है।'

'जो कुछ भी तुम चाहते हो, माँ, माँगो,' उसकी माँ ने उत्तर दिया।

जॉन ने कहा, 'मेरे सभी सहपाठी, मुझे एक-दो बार नहीं, बल्कि कई बार अपने यहाँ आने के लिए आमंत्रित कर चुके हैं; फिर भी मैंने उन्हें कभी एक बार भी अपने घर नहीं बुलाया और न ही उनकी मेहमाननवाज़ी का बदला चुकाया है; मुझे उनसे शर्म आती है, और अब मैं शर्म के मारे स्कूल नहीं जा पा रहा हूँ।' कृपया, मुझे अपने सहपाठियों की मेज़बानी करने के लिए पर्याप्त पैसे दे दो।

'सुबह तक इंतज़ार करो,' उसकी माँ ने जवाब दिया, 'मैं तुम्हारे पिता से कहूँगी, और वह तुम्हें जो चाहिए वह देंगे।'

जब उसने अपने पति को जॉन की विनती बताई, तो उन्होंने अपने बेटे से प्रेम के कारण उसे सौ सोने के सिक्के दे दिए, और यह सब ईश्वर की विशेष कृपा से हुआ, ताकि लड़के का नेक इरादा पूरा हो सके।

अपने बेटे को सोना देने के बाद, पिता ने उसे एक भरोसेमंद नौकर के हवाले कर दिया, और यह हिदायत दी कि वह यह सुनिश्चित करे कि लड़का पैसा बेवजह खर्च न करे। जॉन खुशी-खुशी उसके साथ समुद्र तट पर गया, यह कहते हुए:

'चलो कुछ अच्छी मछलियाँ खरीदने चलते हैं।'

जब वे जहाज़ पर पहुँचे, तो उसने नौकर को स्कूल भेज दिया, यह कहते हुए:

'जाकर देखो कि क्या मेरे साथी इकट्ठा हो रहे हैं, और फिर मेरे पास वापस आओ।'

जैसे ही नौकर चला गया, जॉन संन्यासी के साथ जहाज पर चढ़ गया; नाविक को भुगतान करने के बाद, वे किनारे से रवाना हुए और अपनी यात्रा पर निकल पड़े। जॉन अपने साथ वह सुसमाचार ले गया जो उसके माता-पिता ने उसे दिया था, और रास्ते में उसे पढ़कर उसे सांत्वना मिली।

नौकर, स्कूल से लौटकर, काफी देर तक तट पर जॉन को ढूंढता रहा, लेकिन जब वह नहीं मिला, तो उसने सोचा कि लड़का घर चला गया होगा; फिर वह अपने मालिकों के पास गया और जॉन के बारे में पूछा। वे तुरंत बड़ी जल्दी में हर जगह

उसकी तलाश करने लगे। लेकिन कॉन्स्टेंटिनोपल और उसके आसपास उनकी लंबी खोज व्यर्थ गई, और यूट्रोपियस के घर में वे अपने प्रिय पुत्र जॉन के लिए जोर-जोर से रोए और विलाप करने लगे। इस बीच, जब जॉन अपनी यात्रा पर था, तो ईश्वर ने स्पष्ट रूप से उसकी मदद की: उसने जहाज के लिए एक अनुकूल हवा भेजी, और यात्री जल्द ही 'ऑल-नाइट विजिल' के मठ में पहुँच गए। वहाँ, भिक्षु ने अब्बॉट मार्केल और भाइयों को उस युवक जॉन के बारे में वह सब कुछ बताया जो वह जानता था, साथ ही उस विश्वास और उत्साही भक्ति के बारे में भी बताया, जिसके साथ उसने भिक्षु संस्कार ग्रहण करने और प्रभु की सेवा करने का प्रयास किया था।

लड़के को इतना छोटा देखकर, एबॉट ने उससे कहा:

'मेरे पुत्र! तुम संन्यासी तपश्चर्या नहीं कर पाओगे और कठोर उपवास नहीं कर पाओगे, क्योंकि तुम अभी बहुत छोटे हो। इसके अलावा, यह हमारी परंपरा है कि हम संन्यास जीवन के हर खोजी का तुरंत मुंडन नहीं करते, बल्कि केवल उसके इरादों की ईमानदारी और धार्मिक कार्यों में उसके उत्साह की पूरी परीक्षा के बाद ही ऐसा करते हैं। इसलिए, यदि आप हमारे साथ एक भिक्षु के रूप में सेवा करना चाहते हैं, तो आपको पहले बिना संन्यास के व्रत लिए इस प्रकार हमारे साथ रहना होगा, हमारे जीवन-पद्धति का पालन करना होगा, और स्वयं को परखना होगा कि क्या ऐसी कठिनाइयाँ आपकी शक्ति के भीतर हैं।

तब धन्य योहन मठाध्यक्ष के चरणों में गिर पड़े और कड़वी रुलाई रोते हुए विनती करने लगे:

'मैं आपसे विनती करता हूँ, मेरे पिता, मुझे तुरंत मुंडन कर दें। मेरी युवावस्था पर नहीं, बल्कि मेरी लगन पर दृष्टि डालिए, क्योंकि मैं पूरे हृदय से आपकी दैवी वेशभूषा प्राप्त करने के योग्य समझा जाने की लालसा रखता हूँ। मेरी विनती को अस्वीकार न करें, बल्कि परम पवित्र, एकसार और जीवन-प्रदात्री त्रिमूर्ति के लिए, मुझे अपने मठ में एक भिक्षु के रूप में स्वीकार करें।"

मठाध्यक्ष, उस युवक के उत्साह और आँसुओं से प्रभावित होकर, और उसके भीतर वास करने वाले पवित्र आत्मा की कृपा को तीव्रता से महसूस करते हुए, तुरंत उसे स्वीकार करने और उसके सिर के बाल मुंडवाने के लिए सहमत हो गए; फिर उन्होंने उसे मठ की आज्ञाकारिता के सभी चरणों से दृढ़ता से आगे बढ़ने और अनुभवी बुजुर्गों से सीखने का निर्देश दिया।

जब जॉन की इच्छा आखिरकार पूरी हुई, तो उसने जो कुछ भी आज्ञा दी गई थी, उसे उत्साह और विनम्रता के साथ पूरा किया; और, धीरे-धीरे मठवासी तपस्या में उत्कृष्टता प्राप्त करते हुए, वह जल्द ही सद्गुण में इतनी पूर्णता को प्राप्त कर गया कि वह उनसे भी आगे निकल गया जो उससे पहले मठवासी व्रत ले चुके थे और सभी के लिए अखंड प्रार्थना का एक उदाहरण बन गया, विनम्र आज्ञाकारिता और सबसे कठोर उपवासों को धैर्यपूर्वक सहन करने का उदाहरण बने। अक्सर, कई दिनों तक, वह कुछ भी नहीं खाते थे – सिवाय मसीह के पवित्र और जीवन-दायक रहस्यों के – और केवल इसी से अपना जीवन यापन करते थे। स्वयं मठाधीश भी जॉन को देखकर चकित रह गए और उनसे कहा:

'मेरे पुत्र! जब तुम अभी इतने युवा हो, तो ऐसे कारनामे क्यों करते हो? सावधान रहो कि अत्यधिक उपवास से तुम्हारी शारीरिक शक्ति क्षीण न हो जाए और स्वास्थ्य बिगाड़कर तुम भविष्य में न तो नए कारनामे कर सको और न ही मसीह की महिमा के लिए सेवा कर सको।'

जॉन ने, जैसा कि उसकी आदत थी, विनम्रता से मठाधीश को सिर झुकाकर उत्तर दिया:

– मुझे क्षमा करें, हे पवित्र पिता, एक अयोग्य सेवक को, और मेरे लिए प्रार्थना करें, जो आलसी और हतोत्साहित हूँ, कि प्रभु मुझे ऐसे कार्यों के योग्य समझें और मेरी कमजोरी में मेरी मदद करें।

ऐसे ही कारनामों के बीच, धन्य योहन छह वर्षों तक मठ में रहे। और फिर सभी भलाई का शत्रु और घृणित—शैतान—उनके विरुद्ध उठ खड़ा हुआ। आगे और महान कार्य करने के लिए जॉन की शक्ति को कमजोर करने, और प्रभु की आज्ञाओं को पूरा करने में उसकी ऐसी वीर प्रगति में बाधा डालने के लिए, उसने उसके मन में उसके माता-पिता के विचारों को जगाया और उसके हृदय को उनके प्रति दया से पीड़ित कर दिया, जब उसने अपने पिता और माता द्वारा दिखाए गए महान प्रेम को याद किया। उसने जॉन के मन में ऐसे विचार डालना शुरू कर दिया: 'तुम्हारे माता-पिता तुम्हारे बिना अब क्या कर रहे होंगे? वे तुम्हारे लिए कितनी चिंता, शोक और रो रहे होंगे, क्योंकि तुम उनके बिना घर से चले गए!' 'तुम्हारे पिता रो रहे हैं, तुम्हारी माता विलाप कर रही है, तुम्हारे भाई शोक मना रहे हैं; तुम्हारे रिश्तेदार और परिचित तुम पर तरस खाते हैं; तुम्हारे पिता का सारा घर तुम्हारे कारण शोक में है।' इसके अलावा, दुष्ट ने उसे उसके माता-पिता की संपत्ति और महिमा, उसके भाइयों द्वारा प्राप्त सम्मान, और अन्य विभिन्न व्यर्थ सांसारिक आशीर्वादों की याद दिलाई। उसने उसे

दनि-रात ऐसे वचिारों से लगातार सताया, जसिसे जॉन अंततःशरीर से अत्यधकि कमजोर हो गया और मुश्कलि से जीवति था: उसकी महान संयम और संन्यासी तपस्या, और इन वचिारों के आंतरकि कष्ट के कारण – उसकी शक्ति एक टूटे हुए बर्तन की तरह सूख गई थी,[1070] , और उसका शरीर हवा में लहराती एक सरकंड की तरह हो गया था[1071] ।

मठाधीश ने, यह देखकर कि जॉन दनि-ब-दनि कमजोर होता जा रहा था, उससे कहा:

'क्या मैंने तुम्हें नहीं बताया, मेरे बेटे, कि ईश्वर अपने सेवकों से अत्यधकि परश्रिम की मांग नहीं करते, बल्कि वे चाहते हैं कि प्रत्येक व्यक्ति अपनी शक्ति के अनुसार उनके पवत्रि नाम की महमिा के लिए उनकी सेवा करे? तुमने, मेरे बेटे, समय रहते मेरी बात नहीं मानी, और अब तुम अत्यधकि उपवास और असहनीय परश्रिम से पहले ही थक चुके हो।'

जॉन ने उत्तर दयिा, 'पतिाजी, मुझे उपवास ने थकाया नहीं है, और न ही परश्रिम ने मुझे थामा है, बल्कि दुष्ट द्वारा बोए गए वचिारों ने मुझे थका दयिा है, जो लंबे समय से दनि-रात मुझे सता रहे हैं।'

यह सुनकर, जॉन ने मठाधीश के सामने अपने माता-पतिा और अपने घर के बारे में अपने वचिारों का इकरार कयिा। मठाधीश ने उससे कहा:

'क्या मैंने तुम्हें पहले नहीं बताया था, मेरे बेटे, कि संन्यासी जीवन कठनि है, कि संन्यासी कई बोझ उठाते हैं—मेहनत, दुश्मन के हमले, और अकथनीय प्रलोभन?'

ये शब्द सुनते ही मठाधीश की आँखों में आँसू भर आए और वह जॉन के लिए काफी देर तक रोया। लेकनि ईश्वर, जो सभी चीजों को भलाई में बदल देते हैं, ने मठाधीश के हृदय पर एक वशिेष, गुप्त प्रभाव डालकर उन्हें जॉन को अपने माता-पतिा के पास जाने से रोकने के लिए प्रेरति नहीं कयिा: प्रभु चाहते थे कि समय आने पर उसमें अपनी अद्भुत योजनाओं को पूरा करें[1072] । मठाधीश ने जॉन को जहाँ वह चाहे वहाँ जाने का आशीर्वाद दयिा, लेकनि उन्होंने उसे दुश्मन के जालों से सावधानीपूर्वक बचने और यात्रा के दौरान अपनी पवत्रिता बनाए रखने के लिए कहा।

जॉन ने उत्तर दयिा, 'हालाँकि मैं अपने माता-पतिा के पास जा रहा हूँ, वहाँ भी, ईश्वर की मदद और आपकी प्रार्थनाओं से, मैं अपने शत्रु का सरि कुचल दूँगा और उसकी शक्तहिीनता को उजागर करूँगा।'

तब जॉन यात्रा की तैयारी करने के लिए अपनी कोठरी में चला गया। इन तैयारयिों में केवल प्रार्थनाएँ, आँसू और दलि की गहराई से नकिली आहें थीं, साथ ही घुटनों के बल झुकना—ताकि प्रभु शत्रु को वजिय प्राप्त न करने दें, बल्कि स्वयं, जैसा वे जानते हैं और इच्छा रखते हैं, अपनी शुभ और सर्व-परपिूर्ण इच्छा के अनुसार उसका मार्गदर्शन करें। अगली सुबह जब वह मठाध्यक्ष के पास आया, तो जॉन उनके पैरों पर गरि पड़ा और उनसे वनिती करने लगा कि वे मठ से उसके जाने पर क्रोधति न हों, बल्कि उसे अपनी पतिृ-स्नेहपूर्ण आशीर्वाद और पवत्रि प्रार्थनाओं के साथ वदिा करें।

तब मठाध्यक्ष ने सभी भाइयों को बुलाया और यह घोषणा करते हुए कि जॉन उन्हें छोड़ना चाहता है, उन्हें उसके लिए प्रार्थना करने का आदेश दयिा। जॉन ने स्वयं, वदिा लेते समय, भाइयों से कहा:

'मैं जानता हूँ कि शैतान मेरे माता-पतिा से मलिने के बहाने मुझे इस पवत्रि स्थान से पूरी तरह से हटाना चाहता है। लेकनि मैं अपनी आशा ईश्वर और आपकी पवत्रि प्रार्थनाओं में रखता हूँ, कि मैं अपने माता-पतिा से मलि सकूँ और शैतान की चाल पर वजिय प्राप्त कर उस पर काबू पा सकूँ।'

इसके बाद, वे सभी चर्च गए और वहाँ, आँसुओं से भरी आँखों के साथ, जॉन के लिए प्रार्थना की। मठाधीश ने उनकी यात्रा के लिए आशीर्वाद देते हुए कहा:

'जाओ, मेरे पुत्र, पतिा, पुत्र और पवत्रि आत्मा के नाम पर, और हमारे प्रभु यीशु मसीह तुम्हारे साथ रहें और अपनी इच्छा के अनुसार तुम्हारे मार्ग का मार्गदर्शन करें।'

बाकी सभी पादरयिों ने भी अपने हाथ उठाकर उसे आशीर्वाद दयिा। जॉन ने उन सभी को चूमा और कहा:

'प्रभु आपको बचाएँ, हे पतिरों और भाइयों; वह आपको बचाएँ—इस धन्य समुदाय को, इन अच्छे तपस्वयिों को जन्हिोंने मुझे प्रेम से अपनी संगतमिें स्वीकार कयिा है, जसिे मुझे अब छोड़ने के लिए ववश होना पड़ रहा है, क्योंकि मैं परमेश्वर को प्रसन्न करने वाले ऐसे लोगों के साथ रहने के योग्य नहीं हूँ।'

ये शब्द कहकर, वह मठ से नकिल गया और अपनी यात्रा पर चल पड़ा।

[1070] यह अभव्यिक्ति (भजन संहति 21:16) से ली गई है।

[1071] यह अभव्यिक्ति (मत्ती 11:7) से ली गई है।

[1072] यह अभव्यिक्ति (भजन संहति 15:3) (स्लावोनकि अनुवाद में) से ली गई है।

मठ से एक पड़ाव की दूरी[1073] चलने के बाद, उसने पीछे मुड़कर देखा और मठ को देखकर जोर-जोर से रोने लगा। वह घुटनों के बल गिर पड़ा और सिसकते हुए, अपने आँसुओं से जमीन को भीगते हुए, ईश्वर से प्रार्थना करने लगा। फिर वह उठा और एक बार फिर चल पड़ा, खुद को ईश्वर के हवाले कर के और अपनी आशाएँ उनकी व्यवस्था और सुरक्षा में रखकर। रास्ते में, उसकी मुलाकात फटे-पुराने कपड़े पहने एक भिखारी से हुई। जॉन उसकी ओर मुड़ा और कहा:

'मैं देखता हूँ, मेरे भाई, कि तुम्हारे कपड़े बहुत पुराने और पूरी तरह से फटे हुए हैं; मैं तुमसे विनती करता हूँ, वे मुझे दे दो, और इसके बदले में मेरे सबसे अच्छे कपड़े ले लो।'

भिखारी बहुत खुश हुआ और तुरंत अपने फटे-पुराने कपड़े उतारकर जॉन को दे दिए, जिसने बदले में उसे अपने अच्छे कपड़े दे दिए।

जब जॉन कॉन्स्टेंटिनोपल पहुँचा, और दूर से अपने माता-पिता का घर देखा, तो वह मुँह के बल जमीन पर गिर पड़ा और इन शब्दों से प्रार्थना करने लगा:

'हे प्रभु यीशु मसीह, मुझे न छोड़िए!'

शाम हो चुकी थी, और धन्य जॉन रात होने का इंतज़ार करने के लिए वहीं ठहर गए। आधी रात को, अपने माता-पिता के घर के दरवाजों के पास पहुँचकर, वह एक बार फिर ज़मीन पर गिर पड़े और प्रार्थना करने लगे:

'हे प्रभु यीशु मसीह!' यह मेरे पिता का घर है, जिसे देखने की मुझे कितनी लालसा थी। परन्तु इसके कारण मुझे अपनी कृपा से वंचित न होने दें। हे प्रभु, मैं आपसे विनती करता हूँ, मुझे स्वर्ग से सहायता और शैतान के प्रलोभन पर विजय पाने की शक्ति दें; उसे मुझ पर विजय प्राप्त करने या मेरा पतन करने न दें, बल्कि यह अनुग्रह करें कि मैं इसी स्थान पर बहादुरी से अपना जीवन समाप्त कर सकूँ।

इस प्रकार वह भोर तक प्रार्थना करता रहा। जब दिन चढ़ा, तो जब दरवाज़े खोले गए और घर का व्यवस्थापक, जो दूसरे दासों का प्रभारी था, बाहर आया, तो उसने फटेहाल कपड़े पहने भिखारी को देखा और उससे पूछा:

'तुम कौन हो, कहाँ से आए हो, और यहाँ आने की हिम्मत कैसे की? तुरंत यहाँ से चले जाओ, क्योंकि मेरे मालिक अब बाहर आने वाले हैं।'

'जैसा कि आप देख सकते हैं,' जॉन ने नम्रता से जवाब दिया, 'मैं एक भिखारी हूँ जिसके पास सिर रखने के लिए कोई जगह नहीं है। मैं आपसे विनती करता हूँ, मेरे स्वामी, मुझ पर दया करें; मुझे भगाएँ नहीं, बल्कि मुझे इस कोने में रहने दें।' मैं किसी को कोई नुकसान नहीं पहुँचाऊँगा; सचमुच, यदि आप मुझ पर दया करें और मुझे यहाँ रहने दें तो आपको स्वयं भी ईश्वर की दया प्राप्त होगी।"

भिखारी पर दया करके, व्यवस्थापक ने उसे वहीं रहने दिया। कुछ ही देर बाद, जॉन के माता-पिता घर से बाहर निकले, और शाही महल की ओर चले गए। उन्हें देखते ही, वह धन्य व्यक्ति रो पड़ा और मन ही मन कहने लगा:

'मेरी इच्छा आखिरकार पूरी हो गई—मैं अपने माता-पिता को देख रहा हूँ। लेकिन हे शैतान, तू आनंदित न हो, क्योंकि मेरे प्रभु की कृपा से, मैं मुझ पर निशाना साधे तेरे अग्नि बाणों को कुछ भी नहीं समझता।'

और फिर से उसने पूरे मन से परमेश्वर को पुकारा:

'हे प्रभु यीशु मसीह, अंत तक मेरा साथ न छोड़ना!'

धन्य योहन द्वार के पास कोने में अचल पड़े रहे, वहाँ लाजरूस (लूका 16:20) की तरह, या राख के ढेर पर इयोब (इयोब 2:8) की तरह लेटे हुए। उनके पिता ने, द्वार पर पड़े उस गरीब भिखारी को देखकर, अपनी मेज़ से उसे भोजन भेजना शुरू कर दिया, यह कहते हुए:

'इस भिखारी का धैर्य महान है—उसके सिर पर छत न होते हुए भी, वह सर्दी और गर्मी, पाला और बारिश को सहन करता है; सचमुच, ऐसे ही लोग स्वर्ग के राज्य के वारिस होंगे। शायद ईश्वर हमें उसकी खातिर बचाएंगे, और इसीलिए उन्होंने उसे हमारे पास भेजा है – ताकि, उस पर दया करके, हम भी बदले में उनकी दया के पात्र बन सकें। कौन जाने – शायद हमारा प्यारा बेटा जॉन भी इस समय ऐसी ही दरिद्रता सह रहा है, हालाँकि हम यह भी नहीं जानते कि वह कहाँ है; हम इस भिखारी के लिए वही कर रहे हैं जो हम ऐसी स्थिति में अपने बेटे के लिए दूसरों से करवाना चाहेंगे।

एक दिन, जॉन की माँ, घर से निकलते समय, इस भिखारी को उसके फटेहाल कपड़ों में गोबर के ढेर पर लेटे हुए देखती हैं। यह उसे इतना घिनौना लगता है कि वह नौकरों से कहती है:

[1073] एक 'स्टेडिया' 87½ सैज़ेन के बराबर होता है।

'उस घृणति आदमी को यहाँ से हटा दो, क्योंकि जब तक मैं उसे वहाँ पड़ा हुआ देखूँगी, मैं यहाँ नहीं आ सकती।'

नौकरों ने तुरंत उसे घसीटकर एक दूसरे स्थान पर ले गए। अब वह धन्य व्यक्ति केवल दूर से ही अपने पति के घर के द्वार को निहार सकता था। एक दिन, घर के प्रबंधक को द्वार से बाहर आते हुए देखकर, उसने उसे बुलाया और कहा:

'मैं आपसे विनती करता हूँ, मेरे स्वामी, जैसे आप शुरू से ही मेरे प्रति दयालु रहे हैं, वैसे ही अब मुझ पर दया करें और मेरे लिए एक छोटा सा तंबू बनवा दें, ताकि आपकी स्वामिनी मुझे न देख सकें और मुझे ठंड से बचने के लिए कम से कम कोई आश्रय मिल सके।'

प्रबंधक ने जॉन की बात मान ली और जल्द ही एक छोटा सा तंबू बना दिया, जिसमें संत रहे और अपना सारा समय ईश्वर की प्रार्थना में बिताते रहे। हर दिन उसके पति अपनी मेज़ से उसके लिए भोजन भेजते थे; जॉन उसे कृतज्ञतापूर्वक स्वीकार करता था, लेकिन उसे अपने पास आने वाले अन्य भिखारियों में बाँट देता था, जबकि वह स्वयं हमेशा भूखा और प्यासा रहता था; और इस तरह के अत्यधिक संयम और उपवास से वह इतना दुबला-पतला हो गया कि उसकी हड्डियों का हर जोड़ गिना जा सकता था।

पूरे तीन साल तक, जॉन ने धैर्यपूर्वक ऐसा जीवन सहन किया, और अपने माता-पिता से यह छिपाए रखा कि वह उनका बेटा था। लेकिन तीन साल बीत जाने के बाद, हमारे अत्यंत कृपालु और दयालु प्रभु यीशु मसीह ने, अपने सेवक के धैर्य और विनम्रता को देखकर, उसकी कठिनाइयों और परिश्रम को समाप्त करने का निश्चय किया। वह उसे एक दर्शन में प्रकट हुए और कहा:

– हे जॉन, आनन्दित हो, जो मेरी प्रिय कुंवारी शिष्य जॉन[1074] के समान बन गया है, क्योंकि तुमने शुद्ध कुंवारी अवस्था में मेरा अनुसरण करने के लिए सब कुछ त्याग दिया है। अब तुम्हारे जीवन का अंत निकट आ रहा है, और तुम्हारे महान दुःख समाप्त होने वाले हैं: तीन दिनों में तुम मेरे पास आओगे और धार्मिकों के विश्राम का वारिस बनोगे।

दृष्टि के बाद होश में आकर, यूहन्ना ने आँसुओं के साथ प्रभु से प्रार्थना करना शुरू किया, और कहा:

'मैं तुझ धन्यवाद करता हूँ, हे प्रभु, मेरे परमेश्वर, कि तू मुझ जैसे अयोग्य को भी धर्मी लोगों का विश्राम देना चाहता है। परन्तु मैं तुझ से विनती करता हूँ, हे मेरे प्रभु, कि अपने माता-पिता को भी याद कर, उन पर अपनी महान दया के अनुसार दया कर, और उन्हें उनके पापों से शुद्ध कर, क्योंकि केवल तू ही भला और परम दयालु है।'

इस प्रार्थना के बाद, उसने अपने माता-पिता के उपर्युक्त सेवक, घर के व्यवस्थापक को बुलाया, और उससे कहा:

'शुरुआत से लेकर अब तक, आप मुझ पर दयालु रहे हैं। मैं आपसे विनती करता हूँ, मेरे स्वामी, अंत तक भी दयालु बने रहें। मैं आपसे एक बात का आग्रह करती हूँ: जाइए और अपनी स्वामिनी से यह कह दीजिए: कि वह भिखारी जिसे आपने द्वार से भगा देने का आदेश दिया था, मुझसे कहकर आपसे विनती कर रहा है: हमारे प्रभु मसीह के वास्ते, मुझे, एक गरीब आदमी को, तुच्छ न समझिए, बल्कि कृपा करके मेरे पास आइए, क्योंकि मुझे आपसे बात करनी है।

नौकर ने भिखारी की बातें अपनी मालकिन तक पहुँचाईं। उसने उत्तर दिया:

'एक भिखारी को मुझसे और क्या कहना हो सकता है? मैं तो उसे देखना भी बर्दाश्त नहीं कर सकती, और फिर भी वह मुझसे बात करना चाहता है।'

उसने अपने पति को इस बारे में बताया, लेकिन उसने उसे मनाना शुरू कर दिया:

'जाओ, मेरी पत्नी, उस भिखारी से मुंह मत मोड़ो, क्योंकि स्वयं ईश्वर ने ही गरीबों को चुना है।'

फिर भी, उसने अपने पति की नहीं सुनी और जाने से इनकार कर दिया। पूजनीय जॉन ने उसे फिर से इन शब्दों के साथ बुलाया:

'तीन दिन बाद मैं मर जाऊँगा; और अगर तुम मुझे देखना या मुझसे बात नहीं करना चाहती, तो बाद में तुम्हें बहुत पछतावा होगा।'

वह अपने मन में दुविधा में पड़ गई – जाए कि न जाए – यह इसलिए नहीं कि वह भिखारी की बात सुनना चाहती थी, बल्कि इसलिए उत्सुक थी कि वह उससे वास्तव में क्या कहना चाहता है; वह बड़ी मुश्किल से अपनी हिचकिचाहट पर काबू पाकर जाने का निश्चय कर चुकी थी, और केवल उसकी आसन्न मृत्यु के बारे में सुनकर उससे कुछ नया जानने की आशा कर रही थी। वह घर से निकल आई और अपने नौकरों को आज्ञा दी कि वे भिखारी को लाकर उसके सामने पेश करें,

---

[1074] अर्थात्, संत योहन द थियोलोजियन।

क्योंकि रेवरेंड जॉन अपनी गंभीर बीमारी के कारण स्वयं उसके पास नहीं आ सकते थे। पहचाने न जाने के लिए, उसने अपना चेहरा ढक लिया और उससे इस प्रकार बोलने लगा:

'जल्द ही, मेरी स्वामिनी, मुझे उस आश्रय और सहायता की आवश्यकता नहीं रहेगी जो आपने मुझे प्रदान की है, और आपके दान के लिए एक पुरस्कार पहले से ही आपके लिए तैयार किया गया है, सुसमाचार में प्रभु के वचनों के अनुसार: *"क्योंकि जो कुछ तुमने ईसा मसीह के इन सबसे छोटे भाइयों में से किसी एक के लिए किया, वह तुमने मेरे लिए किया"* (मत्ती 25:40)। जहाँ तक मेरी बात है, अपनी गरीबी के कारण मेरे पास कोई संपत्ति नहीं है, मैं आपको एक आशीर्वाद देना चाहता हूँ, लेकिन पहले मैं आपसे विनती करता हूँ: मुझसे वादा करें कि आप वही करेंगे जो मैं आपसे कहूँगा – और तब आपको यह आशीर्वाद मिलेगा।

उसने वैसा ही करने की कसम खाई। फिर पूजनीय जॉन ने पूछना शुरू किया:

'मैं आपसे विनती करता हूँ, महोदया, कि मेरी मृत्यु के बाद, मेरी कब्र ठीक उसी जगह पर बनाई जाए जहाँ अब मेरा तम्बू लगा है। मुझे इन फटे-पुराने कपड़ों के अलावा किसी और कपड़े से ढकने की अनुमति दें, क्योंकि मैं अब और अधिक सम्मानजनक विश्राम स्थल या बेहतर वस्त्रों का पात्र नहीं हूँ।'

इसके बाद, उन्होंने अपनी छाती से सुसमाचार निकालकर, उसे उसके हाथ में देते हुए कहा:

'यह इस जीवन में आपके लिए सांत्वना बने और आपके तथा मेरे स्वामी के लिए अनंतकाल का मार्ग।'

सुसमाचार लेकर, उसने उसे इधर-उधर घुमाकर परखना शुरू कर दिया, और मन ही मन सोचने लगी:

'यह सुसमाचार कितनी अधिक उस सुसमाचार से मिलता-जुलता है जिसे मेरे स्वामी ने हमारे पुत्र के लिए बाँधा था!'

और फिर वह जाकर इसे अपने पति को दिखाने लगी। उन्होंने इसे पहचान लिया और कहा:

'यह वाकई वही सुसमाचार है जो हमने अपने प्रिय पुत्र को दिया था, और कोई और नहीं; चलो हम उससे पूछते हैं कि उसे यह कहाँ से मिला, और क्या वह हमारे पुत्र जॉन के बारे में कुछ जानता है।'

माता-पिता दोनों उसके पास आए और उससे कहने लगे:

'हम पवित्र और जीवन-दायक त्रिमूर्ति के नाम पर आपसे विनती करते हैं – हमें बताइए, यह सुसमाचार आपको कहाँ से मिला, और हमारा पुत्र जॉन कहाँ है?'

अपने हृदय के कष्ट को और अधिक छिपाने या अपने आँसुओं को रोकने में असमर्थ, उसने उत्तर दिया:

'मैं आपका पुत्र जॉन हूँ, और यह वही सुसमाचार है जो आपने मुझे दिया था; यह सच है कि मैंने आपको जो दुख पहुँचाया है, उसके लिए मैं दोषी हूँ, लेकिन जिस सुसमाचार ने मुझे दिया है, उसने मुझे मसीह से प्रेम करना और उनके धन्य जुआ को धैर्य से सहना सिखाया है।'

यह सुनकर, वे उसके बिस्तर के पास दौड़ पड़े, उसे गले लगा लिया, और लंबे समय तक उसे अपने भर-भर आँसुओं से नहलाते रहे। साथ ही, उनके दिलों में खुशी और दुख दोनों भर गए: वे इस बात पर प्रसन्न हुए कि उनका प्रिय पुत्र आखिरकार मिल गया था, फिर भी उनका दिल टूट गया था कि उन्होंने उसे इतनी गरीबी और दरिद्रता में पाया था, और जब वह द्वार पर पड़ा था तो उन्होंने उसे नहीं पहचाना था। उनके सभी पड़ोसी, दोस्त और परिचित उनके चारों ओर इकट्ठा हो गए; जॉन की वापसी की खबर पूरे शहर में फैल गई, और हर कोई, परमेश्वर की महिमा करते हुए, इस पर चकित हुआ। इस बीच, पूजनीय जॉन ने अपनी आत्मा परमेश्वर के हाथों में सौंप दी[1075] । ईश्वर को यह उचित लगा कि जॉन का जीवन, मृत्यु के क्षण में भी, सांसारिक सम्मानों से अछूता और उसके माता-पिता के प्रेम से अलग रहे; इसलिए प्रभु ने उसे तुरंत अपने पास बुला लिया, ताकि वह दुनिया और सांसारिक संगति से एक परदेशी के रूप में स्वर्गीय निवास में प्रवेश कर सके।

अपना व्रत भूलकर, उसकी माँ ने उसके फटे-पुराने वस्त्र उतार दिए और उसे कीमती, सोने की कढ़ाई वाले वस्त्र पहना दिए; लेकिन अप्रत्याशित रूप से, वह तुरंत लकवाग्रस्त हो गई और गंभीर रूप से बीमार पड़ गई। यूट्रोपियस, जॉन के पिता, ने कहा:

'हमें अपने पुत्र की इच्छा पूरी करनी चाहिए, क्योंकि वह इतने महँगे वस्त्रों में दफ़नाए जाने की इच्छा नहीं रखता।'

[1075] संत जॉन द बुश-ड्वेलर का 5वीं शताब्दी के उत्तरार्ध की शुरुआत में निधन हो गया। पोप फॉर्मोसस (896) के पोन्टीफिकेट के दौरान, संत के सम्मान में रोम में एक चर्च बनाया गया था, जहाँ उनके अवशेषों का एक हिस्सा रखा गया था। 1200 में, तीर्थयात्री एंथनी ने कॉन्स्टेंटिनोपल में उनके आंगन के द्वार पर उनके अवशेष देखे। क्रूसेडरों (1204–1261) ने उनके सिर को कॉन्स्टेंटिनोपल से बेसाँसॉन ले जाया, जबकि उनके अवशेष रोम में उनके नाम पर बने चर्च में रखे गए हैं; हालाँकि, यह ज्ञात नहीं है कि उन्हें कॉन्स्टेंटिनोपल से वहाँ कब स्थानांतरित किया गया था।

उन्होंने उस पूजनीय की देह से सांसारकि वस्त्र उतार दिए, उन्हें फरि से भखिारी के फटे-पुराने कपड़ों में लपेट दयिा, और थयिोडोरा, जोहन की माँ, तुरंत ठीक हो गईं और अपने पूर्व स्वास्थ्य को पुनःप्राप्त कर लयिा। उनके माता-पतिा ने पूजनीय जोहन के सम्मानति और पवत्रि अवशेषों को उसी तंबू में दफनाया जसिमें वह रहते थे। उनके ताबूत के ऊपर, उन्होंने बाद में एक चर्च और एक बड़ा धर्मशाला बनवाया, और यात्रयिों की सहायता तथा गरीबों के भरण-पोषण के लिए अपनी सारी संपत्तदिान कर दी। कुछ ही समय बाद, वे स्वयं शांतपिूर्वक नधिन कर गए और उसी चर्च में दफनाए गए जसिे उन्होंने अपने बेटे के ताबूत के ऊपर बनवाया था।

ऐसा था पवत्रि और आदरणीय जॉन, झाड़ी-नविासी का जीवन; मसीह के लिए उन्होंने ऐसे ही पराक्रम और परश्रिम सहे; ऐसा था शैतान के वरिुद्ध उनका संघर्ष, जसिे उन्होंने हराया, और ऐसा करने के बाद, अब वे हमारे प्रभु यीशु मसीह की कृपा से, वजियी कलीसयिा में एक स्वर्गीय मुकुट से वभिूषति हैं, जसिकी महमिा युगों-युगों तक हो, आमीन।

पवत्रि शहीद पैनसोफयिा की स्मृति

15 जनवरी को स्मरण कयिा जाता है

संत पैनसोफयिस, अलेक्जेंड्रयिा के उप-राज्यपाल नीलस के पुत्र थे[1076] । महान संपत्तकि मालकि, नीलस ने अपने बेटे की परवरशि पर कोई कसर नहीं छोड़ी, और संत पैनसोफयिस ने अपनी असाधारण क्षमताओं से, व्यापक धर्मनरिपेक्ष शक्षिा के साथ-साथ ईसाई सच्चाइयों का गहन ज्ञान प्राप्त कयिा। अपने पतिा की मृत्यु के बाद, संत ने अपनी संपत्तकिा उपयोग ज़रूरतमंदों की मदद के लिए कयिा, जसिके बाद वे प्रभु की खोज के लिए सांसारकि चतिाओं को त्यागकर रेगस्तिान में चले गए। वे सत्ताइस वर्षों तक एकांत में रहे, उन्होंने अपने मन को सांसारकि चीजों से हटाकर स्वर्ग के राज्य के चतिन में लगाया और ईश्वर से अखंड प्रार्थना में लगे रहे। इस संत तपस्वी के पुण्य जीवन की खबर 'Alexandria[1077] ' के प्रफिेक्ट तक पहुँची, जो सम्राट डसियिस के अधीन सेवा करता था – जो ईसाइयों का उत्पीड़क था। प्रीफेक्ट की अदालत में लाए जाने पर, संत पैनसोफयिस ने मूर्तपिूजकों की अपनी ही देवताओं के बारे में कही बातों का हवाला देकर उनके मथिकों का पर्दाफाश कयिा; सत्य से परपिूर्ण प्रमाणों के साथ, उन्होंने उपदेश दयिा कमि मसीह ही ईश्वर हैं, और इस प्रकार यातना देने वाले के अहंकार को शर्मदिा कर दयिा। इसके लिए मसीह के इस स्वीकारकर्ता को कठोर कोड़ों की सज़ा दी गई और इस प्रकार उन्हें शहीद का मुकुट प्राप्त हुआ[1078] ।

29 जनवरी

16 जनवरी (पुराना कैलेंडर)

संत पतरस प्रेरति की पवत्रि बेड़यिों का सम्मान।

16 जनवरी को स्मरणोत्सव

पवत्रि प्रेरति पतरस को राजा हेरोद के आदेश पर[1079] जेल में डाल दयिा गया और दो लोहे की जंजीरों से बाँध दयिा गया।

[1076] प्रोकंसल वे अधकिारी थे जो रोमन साम्राज्य के प्रांतों पर शासन करते थे।

[1077] एक प्रीफेक्ट कसिी शहर का प्रमुख होता था।

[1078] तीसरी शताब्दी के मध्य में।

[1079] यह, बेशक, हेरोद अग्रप्पिा प्रथम को संदर्भति करता है, जो यहूदयिों के राजा हेरोद महान के पोते थे, जन्होंने ज़ेबेदी के पुत्र संत जेम्स प्रेरति को तलवार से मार डाला और प्रेरति पतरस को भी मारने का प्रयास कयिा; उन्होंने रोमन सम्राटों कैलगिुला (37–41 ईस्वी) और क्लॉडयिस (41–54 ईस्वी) के शासनकाल के दौरान यहूदयिा पर शासन कयिा; उन्होंने जेल से प्रेरति पतरस के चमत्कारकि उद्धार के तुरंत बाद, एक स्वर्गदूत द्वारा प्रहारति होकर एक गंभीर बीमारी से मृत्यु हो गई।

[1080]लेकनि उस रात, जब वह दो सपिाहयिों के बीच सो रहा था, प्रभु का स्वर्गदूत उसकी बगल में धक्का देकर उसे जगाया और उसे जेल से बाहर ले गया; प्रेरतिों के काम की पुस्तक (प्रेरतिों के काम 12:7) में वर्णति अनुसार, लोहे की बेड़यिाँ उसके हाथों से गरि पड़ीं। पतरस के अपनी बेड़यिों और जेल से चमत्कारकि रूप से छूटने की खबर यरूशलेम में चारों ओर फैल गई, – और कुछ वशि्वासयिों ने, इन बेड़यिों को चुपके से उठाकर, उन्हें अपने पास रखना शुरू कर दयिा ताकि उन्हें देखकर, उनके नेत्रों के सामने, मानो, स्वयं प्रमुख प्रेरति पतरस हों, जो जेल से रहिा होते ही अन्य देशों में परमेश्वर का वचन प्रचार करने नकिल पड़े और यरूशलेम वापस नहीं आए। इन बेड़यिों ने उस प्रेरति के शरीर से चंगा करने की शक्ति प्राप्त कर ली थी, जसिे उन बेड़यिों से दृढ़ता से बाँधा गया था। यह ज्ञात है कि पवत्रि प्रेरति पौलुस की पट्टयिाँ और रूमाल बीमारयिों को ठीक करते थे और अशुद्ध आत्माओं को भगाते थे, क्योंकि वे उनके पसीने से सने हुए थे (प्रेरतिों के काम 19:12); संत पतरस की जंजीरों का भी यही प्रभाव था, क्योंकि उन्होंने एक बार प्रेरति के शरीर को कसकर घेर रखा था। वशि्वासयिों ने इन पवत्रि बेड़यिों को गहरी श्रद्धा से सम्मानति कयिा, उन्हें श्रद्धांजलि अर्पति की और उन्हें पीढ़ी दर पीढ़ी एक कीमती वरिासत के रूप में सावधानी से संरक्षति रखा, जसिमें माता-पतिा अपने बच्चों को और बच्चे अपने वारसिों को यह बताते थे कि इन बेड़यिों ने कसि महान बंदी को छुआ था और वे कसिके शरीर से पवत्रि हुई थीं। इस प्रकार ये पवत्रि शृंखलाएँ यरूशलेम के पैट्रआिर्क, परम पावन जुवेनाल तक पहुँचीं। और जब धर्मपरायण रानी यूडोक्सयिा, सम्राट थयिोडोसयिस द्वतिीय के पति[1081] की धर्मपरायण रानी यूडोक्सयिा, यरूशलेम से कॉन्स्टेंटनिोपल लौट रही थीं – जहाँ, अपने प्रवास के दौरान, उन्होंने अपने शाही कोष से कई चर्च बनवाए थे और पवत्रि स्थलों को सुशोभति कयिा था – तब पैट्रआिर्क जुवेनल ने पवत्रि स्थानों के प्रति उनकी भक्ति और प्रेम के सम्मान में उन्हें कई अलग-अलग आध्यात्मकि खजाने भेंट कए। इनमें से, उन्होंने उन्हें संत पतरस प्रेरति की ये पूजनीय और चमत्कारी जंजीरें भेंट कीं। कॉन्स्टेंटनिोपल लौटने पर, यूडोक्सयिा ने इन शृंखलाओं में से एक को सेंट सोफयिा के महान चर्च[1082] के भीतर स्थति संत पीटर द अपोस्टल के चर्च को उपहार के रूप में भेंट कयिा, जबकि दूसरी शृंखला वह रोम में अपनी बेटी यूडोक्सयिा को भेज दीं, जनिका ववािह रोमन सम्राट वैलेंटाइनयिन तृतीय से हुआ था।[1083] यूडोक्सयिा, जो अपनी माँ जतिनी ही धार्मकि थी, ने इस कीमती उपहार को कृतज्ञतापूर्वक स्वीकार कयिा और एस्क्वाइलनि पहाड़ी पर संत पतरस प्रेरति को समर्पति एक चर्च का नरि्माण करने के बाद, इस शृंखला को रोम में मलिी संत पतरस प्रेरति की एक अन्य शृंखला के साथ वहाँ स्थापति कयिा, जसिसे नीरो ने उन्हें उनके यातनाओं के दौरान बाँधा था[1084] । बाद में यह नरि्धारति कयिा गया कि इन सम्माननीय जंजीरों की पूजा के लिए 16 जनवरी को एक पर्व दविस मनाया जाए[1085] , संत पतरस प्रेरति की स्मृति और सम्मान में तथा हमारे ईश्वर मसीह की महमिा के लिए।

ट्रोपारयिन, स्वर 4:

हे प्रेरतिों के मुखयिा, तू रोम को नहीं छोड़कर, उन पवत्रि बेड़यिों के साथ हमारे पास आया, जन्हिें तूने धारण कयिा था। हम उन्हें वशि्वास के साथ पूजते हुए प्रार्थना करते हैं: हे प्रभु, अपनी प्रार्थनाओं के द्वारा हमें महान दया प्रदान कर।

[1080] संत पतरस प्रेरति की पवत्रि बेड़यिाँ 439 तक यरूशलेम में रखी गईं, जब सम्राज्ञी यूडोक्सयिा ने उन्हें पैट्रआिर्क जुवेनाल से प्राप्त कयिा।
[1081] थेओडोसयिस द्वतिीय युवा – बीजान्टनि सम्राट, 408 से 450 तक शासन कयिा।
[1082] यह, बेशक, कॉन्स्टेंटनिोपल में स्थति मुख्य कैथेड्रल को संदर्भति करता है जो संत सोफयिा - ईश्वर की बुद्धि - को समर्पति है और जसिे कॉन्स्टेंटनि महान ने स्थापति कयिा था। बाद में, 537 में सम्राट जस्टनियिन महान द्वारा इस कैथेड्रल का भव्य रूप से नवीनीकरण और वस्तिार कयिा गया; 1453 में, तुर्कों द्वारा कॉन्स्टेंटनिोपल पर कब्जा करने के बाद, इसे एक मस्जदि में बदल दयिा गया था। जस्टनियिन की हागयिा सोफयिा आज भी अपने वकिास के स्वर्ण युग की बाइज़ेंटाइन-शैली की ईसाई वास्तुकला की सबसे उल्लेखनीय और भव्य स्मारक बनी हुई है।
[1083] वैलेन्टनियिन तृतीय – रोमन सम्राट; 423 से 455 तक शासन कयिा।
[1084] नीरो – रोमन सम्राट; 54 से 68 तक शासन कयिा; उनके आदेश पर, प्रेरति पतरस को शहीद कर दयिा गया (लगभग 67)। – वे बेड़यिाँ जनिसे प्रेरति पतरस को नीरो के आदेश पर बाँधा गया था, दूसरी शताब्दी में रोम में मलिीं।
[1085] दूसरी शताब्दी की शुरुआत में, पोप अलेक्ज़ेंडर (109–119) के पोन्टीफकिेट के दौरान, रोमन कैदखाने में प्रेरति पतरस की बेड़यिों की स्मृति में रोमन बेड़यिों का पर्व मनाया जाता था, जन्हिें श्रद्धापूर्वक चूमा जाता था; बाद में, यरूशलेम से भेजी गई एक बेड़ी के आगमन के साथ इस पर्व को पुनर्जीवति कयिा गया। यह पर्व रोमन चर्च में 1 अगस्त को मनाया जाता है।

कॉन्टाकयिन, स्वर 2:

मसीह, चट्टान, वशि्वास की चट्टान, प्रथम-आसीन के शषि्यों का गौरव करते हैं: क्योंकि वह सभी को मनाने के लिए बुलाते हैं, हे पतरस, तुम्हारी सम्मानति बेड़यिाँ, और पापों की क्षमा प्रदान करते हैं।

कॉन्टाकयिन, स्वर 2:

आओ हम महान पतरस की स्तुति करें, जो प्रेरतिों में अग्रणी और प्रथम हैं, दविय सत्य के शषि्य; और वशि्वास के साथ हम उनकी बेड़यिाँ चूमते हैं, तथा अपने पापों की क्षमा प्राप्त करते हैं।

पवत्रि शहीदों स्पीयूसपि्पस, एलयिूसपि्पस और मेलुसपि्पस, उनकी दादी लयिोनलिा, और उनके साथ अन्य लोगों का कष्टकाल।

16 जनवरी को स्मरणोत्सव

संत पॉलकिार्प, जो संत यूहन्ना प्रेरति और सुसमाचार प्रचारक के शषि्य थे, ने पवत्रि आत्मा के कार्य द्वारा मसीह में वशि्वासयिों के झुंड को बढ़ाने की इच्छा से, अपने शषि्यों को वभिन्नि देशों में भेजा ताकि वे नडिर होकर हर जगह परमेश्वर के वचन का प्रचार कर सकें। यह जानकर कि गॉल में सम्राटीय आदेश के तहत ईसा मसीह के अनुयायियों ([1086]) का हर जगह उत्पीड़न कयिा जा रहा था, जसिके तहत उन सभी को मृत्युदंड दयिा गया था, संत पॉलीकार्प ने वहाँ परमेश्वर के दो याजकों – एंडोक्कयिस और वेनग्निस – और तीसरे, डकिन फर्स को भेजा। ये वास्तव में सदाचारी पुरुष थे, जो ईश्वर के प्रति समर्पति, अपने कार्यों में उत्साही थे, और प्रेम से प्रचार के मशिन पर नकिलने के लिए हमेशा तैयार रहते थे, चाहे जमीन से हो या समुद्र से, और मसीह के लिए कष्ट और मृत्यु से डरने के बजाय उसकी लालसा करते थे। अपने बशिप से नर्दिेश प्राप्त करने के बाद, वे तुरंत एक जहाज पर सवार हो गए। जैसे ही उन्होंने उन्हें वदिा कयिा, बशिप संत पॉलीकार्प ने उन्हें इन शब्दों के साथ वदिा कयिा:

'जाओ, वीर पुरुषों, और मसीह की कृपापूर्ण सहायता से, उनके लिए दृढ़ खड़े रहो। परम पवत्रि मसीह के नाम की पवत्रि घोषणा के द्वारा, तुम अपने लिए कई सह-वशि्वासयिों को जीतो और, उनके साथ वजिय में आनंदति होकर, तुम महमिा और शाश्वत सम्मान प्राप्त करोगे। आपके श्रम के प्रचुर फल बढ़ें, और आपकी पवत्रि उपलब्धयिों को देखकर धर्मात्माओं के स्वर्गीय नविासों में आनंद की महमिा बढ़े!

संत पॉलीकार्प के इन और कई अन्य आशीर्वादों से प्रोत्साहति होकर, वे जहाज़ पर चढ़ गए और जल्द ही, ईश्वर की वशिेष व्यवस्था से, मासलिया[1087] के तट पर पहुँचे; ज़मीन पर पैर रखते ही, वे तुरंत अपनी यात्रा पर नकिल पड़े, और ईश्वर का स्वर्गदूत उनके आगे-आगे चल रहा था। एडुआ नामक नगर[1088] में पहुँचने पर, उन्हें ईश्वर की व्यवस्था से, फास्टस नामक एक सेनेटर से भेंट हुई, जो एक उत्तम चरत्रि वाले व्यक्ति थे, जनि्होंने उनका सम्मान और प्रेम से स्वागत कयिा। जब उन्हें पता चला कि उनके मेहमान प्रेस्बटिर थे, तो उन्होंने उनसे वनिम्रतापूर्वक अनुरोध करना शुरू कर दयिा कि वे उसके परविार, रश्तिेदारों और परचितिों को पवत्रि बपतस्मिा के माध्यम से मसीह के पास लाएँ; वह स्वयं पहले से ही एक मसीही था, यद्यपि मसीही धर्म पर हो रहे अत्याचार के कारण वह गुप्त रूप से था। वह अपने पुत्र, युवक सम्फिोरेनस को भी उनके पास ले आया; बाद में, इस युवक ने संतों की शक्षिा द्वारा, लेकनि मुख्य रूप से ईश्वर की व्यवस्था से, जब परस्थितियिों ने मांग की तो मसीह के लिए कष्ट सहे। उस युवक को पुरोहतिों के सामने प्रस्तुत करते

[1086] गॉल – आज का फ्रांस।

[1087] मसलिया – दक्षणि गॉल का एक तटीय शहर, जसिमें एक उत्कृष्ट कलिबंदी बंदरगाह था – दक्षणि गॉल में रोमन शक्षिा के सबसे महत्वपूर्ण केंद्रों में से एक था; जो अब मार्सलि के नाम से जाना जाता है, फ्रांस के 'रॉन-मेट्रोपोल' वभिाग की राजधानी, 300,000 से अधकि की आबादी वाला फ्रांस का प्रमुख समुद्री व्यापारकि शहर है; यह रॉन नदी के मुहाने और टूलॉन के बीच, लयिोन की खाड़ी की पूर्वी खाड़ी में, प्रोवेंस के आल्प्स की चट्टानी चोटयिों के तल पर स्थति है। प्राचीन काल में यहीं से दक्षणि गॉल में ईसाई धर्म का प्रसार हुआ था।

[1088] एडुआ – पेरसि के दक्षणि-पूर्व में, लोयर और सोना नदयिों के बीच, गॉल का एक प्राचीन शहर।

हुए, फावस्टस ने संत वेनगि्नस से उसे बपतस्मिा देने का और संत एंडोकीयस से उसके धर्मपति बनने का आग्रह कयि, और ईश्वर के सेवकों ने पति की धर्मपरायण इच्छा को पूरा कयि।

तब, अपनी बहन और उसके पोते-पोतयिों को याद करते हुए, फावस्टस ने कहा:

'मेरी एक बहन है, जसिका नाम लयिोनलि है, जो लगिोनयि के एक शहर में रहती है[1089] । उसके तीन पोते हैं – उसके बेटे के बच्चे, जन्म से जुड़वाँ। यद्यपि उन्होंने उत्कृष्ट शक्षिा प्राप्त की है, वे अपने पति के पदचन्हिों पर चलते हैं और मूर्तपिूजक बने हुए हैं। उनकी दादी, मेरी बहन, अपने पोते-पोतयिों को मसीह के सैनकि बनाना चाहती हैं और उन्हें उसकी सेवा के लिए समर्पति करना चाहती हैं। मैं आपसे, हे ईश्वर के पुरोहतिों, वनिती करता हूँ कि उनकी मदद करें और इस कार्य को सफल समापन तक पहुँचाएँ: पूरे कुलीन परविार को ज्ञान प्रदान करें।

यह सुनकर, संतों ने प्रचार करने के लिए अलग-अलग जाने का फैसला कयि: एंडोकीयस, फर्स के साथ 'Augustodoni[1090] ' गाँव के लिए रवाना हुए, जहाँ उन्होंने कई लोगों को ईसाई धर्म में परविर्तति करने के बाद, बाद में शहीद होकर अपनी जान दे दी। इस बीच, फावस्टस ने संत वेनगि्नस को अपनी बहन के पास लगिोन शहर भेज दयि।

लेओनलि, फावस्टस की बहन ने, सेंट वेनगि्नस का बड़ी खुशी से स्वागत कयि, मानो वह स्वर्ग से अवतरति मानना हो। उस दनि, उसके पोते-पोतयिाँ पास्मासयि नामक गाँव में देवी नेमेससि की मूर्ति को अशुद्ध बलदिान चढ़ाने गए थे[1091] ; घर लौटने पर, वे अपनी दादी के लिए बलि के मांस के अवशेष ले आए। लेकनि उन्होंने, इन अपवत्रि मूर्तपिूजक बलदिानों से घृणा करते हुए, मांस कुत्तों को खाने के लिए फेंक दयि, और, पवत्रि पुरोहति वेनगि्नस की उपस्थतिि में, अपने पोते-पोतयिों से ये शब्द कहे:

'मेरे प्यारे पोते-पोतयिों! हमारे प्रभु यीशु मसीह, सच्चे और जीवति परमेश्वर को जानो, जन्हिें स्वर्गदूत और सभी प्राणी उचति आराधना अर्पति करते हैं, जन्होंने अपने वचन से संपूर्ण संसार की सृष्टि की, अपनी आज्ञा से स्वर्ग की ऊँचाइयों को फैलाया, पृथ्वी की चौड़ाई को फैलाया, समुद्र की गहराइयों को इकट्ठा कयि और ने उन्हें रेत से घेर दयि, आकाश को तारों से सजाया, उसमें दो महान प्रकाशमान वस्तुएँ स्थापति कीं ताकि वे अपनी करिणों से उन सभी चीज़ों को प्रकाशति करें जो उसने बनाई थीं, जल को मछलयिों से आबाद कयि, पृथ्वी को पेड़ों और घास से सुसज्जति कयि, और अपनी इच्छा के अनुसार उस पर हर प्रकार के जानवर बनाए। फरि उसे अपनी सूरत और समानता में मनुष्य को बनाने में प्रसन्नता हुई, और उसे ज्ञान, बुद्धि और ववि्क का वशिष वरदान दयि, ताकि वह प्रभु—जो सभी प्राणयिों का शासक है—की गंभीरता से खोज करे, और उसे जानने की उपेक्षा करके उसकी अवहेलना न करे, ताकि वह यह पहचान सके कि क्या अच्छा है और बुराई से उसे अलग करना सीख सके, ताकि वह न केवल लोगों को धोखा देने के लिए शैतान द्वारा रची गई बेतुकी मूर्तयिों को कोई सम्मान देने से परहेज़ करे, बल्कि उन्हें अशुद्ध मानकर अस्वीकार करे और उनसे हर तरह का संबंध तोड़ ले, क्योंकि ये मूर्तयिाँ शैतान की चालाकी से इस दुनयि में आईं, जसिने पहले ही स्वर्ग में पहले मनुष्य को धोखा दे दयि था। मेरे प्रयि पोते-पोतयिों! सभी अशुद्ध मूर्तयिों को त्याग दो और सभी चीजों के सृष्टकिर्ता – हमारे प्रभु यीशु मसीह में दृढ़ वश्विास रखो। देखो, परमेश्वर की कृपा से, यह पवत्रि पुरुष जसि तुम अपने सामने देखते हो, तुम्हारे पास एक दूर के देश से भेजा गया है। उसकी सुनो, क्योंकि उसके होठों के माध्यम से स्वयं ईश्वर तुम्हें अपनी आज्ञाएँ सुनाते हैं, और उससे सीखो कि क्या तुम्हारे उद्धार में सहायक हो सकता है।

जब धन्य लयिोनलि ने, संत वेनगि्नस के साथ, अपने पोते-पोतयिों को इस प्रकार समझाया, तो ईश्वर की कृपा अदृश्य रूप से उनके हृदयों में प्रवेश कर गई। वे युवक आश्चर्य से अपनी दादी की बातें सुनते रहे, एक-दूसरे की ओर देखते हुए वचिार कर रहे थे, और फरि सभी ने एक स्वर में उत्तर दयि:

'तो फरि तुम इतनी बड़ी महत्त्व की बात पर अब तक हमारे सामने चुप क्यों रहे? तुमने इतने लंबे समय तक हमसे सत्य का मार्ग और दव्यि प्रकाश क्यों छपिाया?'

[1089] लगिोन्स बेल्जै की भूमि में, ऊपरी सोने और मार्न तथा सीन नदयिों के स्रोतों के क्षेत्र के बीच एक प्राचीन केल्टकि लोग थे; उनकी राजधानी एंडेमटम शहर था, जो अब नश्चिति रूप से, फ्रेंच वभिाग ओट-मार्न में एक शहर और एक प्रथम श्रेणी का कलि लैंग्रेस है।

[1090] ऑगस्टोडोन एडुई (गाल के एक सेल्टकि लोगों) का प्रमुख नगर था: अब लोइर और सोन वभिाग में ऑटन के नाम से जाना जाता है।

[1091] प्राचीन यूनानयिों की मान्यताओं के अनुसार, नेमेससि वह देवी थी जो लोगों को उनके कर्मों के अनुसार उनकी नयिति, सुख और दुर्भाग्य प्रदान करती थी; वह कए गए कर्मों के लिए नैतकि नर्णिय के अनुसार पुरस्कार या दंड देती थी; वशिष रूप से, वह अहंकारी लोगों से बदला लेती और उन्हें दंडति करती थी, उनके घमंड को कुचल देती थी, और उन्हें सज़ा देती थी हानि और दुर्भाग्य, ताकि एक न्यायसंगत संतुलन बहाल हो सके और लोग अपनी मानवीय नयिति को न भूलें।

अपनी दृष्टि उठाकर और श्रद्धापूर्वक अपने हाथ स्वर्ग की ओर उठाकर, लियोनिला ने ईश्वर का धन्यवाद किया कि उसके पोते सत्य को जानने लगे थे, और उनसे स्नेहपूर्वक कहा:

'मेरे पुत्र, और जहाँ तक तुम्हारे पिता की बात है—जो अब पाताल लोक में उतर गए हैं—उनमें बुद्धि और ज्ञान दोनों की कमी थी; उनका हृदय इतना कठोर हो गया था और वे दुष्टता के अंधकार में इतने डूबे हुए थे कि उन्होंने न केवल प्रभु मसीह पर विश्वास करने से इनकार कर दिया, बल्कि उनका पवित्र नाम लेने से भी मना कर दिया। उस व्यक्ति को ईश्वर का वचन क्या भला कर सकता था, जिसका हृदय अविश्वास की दुर्भावना से पूरी तरह जलकर राख हो गया था, और जो मूर्तिपूजा से अंधा होकर, सत्य के प्रकाश को भी नहीं देख सकता था? केवल उसी के कारण मैं चुप रहा और तुम्हारे लाभ की बात तुमसे नहीं कही: मुझे डर था कि, उसके दुष्ट प्रभाव से, वह तुम्हें हमेशा के लिए सही रास्ते से भटका देगा। लेकिन चूँकि वह अब, ईश्वर की इच्छा से, इस दुनिया में नहीं है, तो तुम्हारे लिए सभी बाधाएँ दूर हो गई हैं। अब समय अनुकूल है – अपनी शारीरिक आँखें और अपने हृदयों की आँखें स्वर्ग की ओर खोलो, और हमारे प्रभु यीशु मसीह की कृपा की सहायता से, मूर्तिपूजा की हर प्रवृत्ति को अपनी आत्माओं से जड़ से उखाड़ फेंको, ताकि तुम उससे अटूट आनंद से भर जाओ।

धन्य लियोनिल्ला ने पवित्र पुरोहित के साथ मिलकर युवकों से अनेक विषयों पर विस्तार से बात की; और उनके वचनों से प्रेरित होकर, युवकों ने पिछली रात देखे गए अपने सपनों को याद किया—जिन्होंने उनके ईसाई धर्म में परिवर्तन की भविष्यवाणी की थी—और उन्हें एक-दूसरे को सुनाना शुरू कर दिया।

'मैंने देखा,' सबसे बड़े स्प्यूसिपिस ने कहा, 'मानो मैं अपनी दादी की छाती से चिपका हुआ था और उनके दूध से भरे स्तनों का दूध पी रहा था, जबकि वह मुझसे स्नेहपूर्वक कह रही थी: "पीओ, स्प्यूसिपिस, यह जीवन-दायक दूध, ताकि इससे बलवान होकर, तुम अपने शत्रुओं के विरुद्ध दृढ़ खड़े रह सको और एक गौरवपूर्ण विजय प्राप्त कर सको।"'

'और मैंने देखा,' एलेउप्सिपिस ने कहा, 'एक पुरुष को स्वर्गीय सिंहासन पर विराजमान, जिसकी अकथनीय महिमा से वह प्रकाशमान था, जिसकी चमक से मेरी दृष्टि धुंधली पड़ गई, और मैं भय और आतंक से भर गया। उसने, अपना तेजस्वी मुख मेरी ओर मोड़कर, कहा: 'डरो मत, क्योंकि तुम्हें विजेता का मुकुट पहनाया जाएगा!'

तीसरे भाई, मेलेप्सिपिस ने, जो सपना देखा था, उसे इस प्रकार सुनाया:

'मैंने देखा—हालाँकि मुझे नहीं पता कि कौन था—एक महान राजा, जिसके हाथों में राजदंड था। उसने हम तीनों को एक साथ अपनी सेना में स्वीकार कर लिया, हमें सैन्य पट्टियाँ पहनाईं और बड़ी कीमत चुकाकर हमें कैद की बेड़ियों से मुक्त कराया; उसने हमें स्वर्णिम शब्दों से शाश्वत स्वतंत्रता प्रदान की, और मुझसे कहा: "मेलेउसिपिस! मैंने तुम्हें नियुक्त किया है, तीन भाइयों, मेरे घनिष्ठ साथी बनने और तुम्हें शाश्वत पुरस्कारों से विभूषित करने के लिए, क्योंकि तुम्हारी दादी तुम्हारे उद्धार के लिए दिन-रात निरंतर मेरी प्रार्थना करती रहती है, ताकि तुम जीवन के सच्चे मार्ग पर चल सको और दुष्ट आत्मा के छल से स्वयं को मुक्त करके, सत्य के प्रकाश को देखने के योग्य ठहरो और मृत्यु के बजाय जीवन का वारिस बनो।'

तीन भाइयों के ये दृश्य कितने अद्भुत थे, प्रत्येक उनके ईश्वर की ओर रूपांतरण का संकेत दे रहा था! इन दृश्यों से प्रेरित होकर और लियोनिला तथा पुरोहित के उपदेशों से प्रभावित होकर, भाइयों ने अंततःअपनी धन्य दादी से इन शब्दों के साथ मुखातिब हुए:

'हमें बताइए कि हमें क्या करना चाहिए ताकि आपकी शिक्षा हमें उद्धार की ओर ले जाए और हमें हमारी पुरानी गलतियों से मुक्त करे?'

संत लियोनीला और परमेश्वर के पुरोहित ने आनंद मनाया और अपने हृदय में प्रभु के प्रति कृतज्ञता के साथ, उत्तर दिया:

'ईश्वर की सभी आज्ञाओं का पालन करो, राजाओं के राजा – प्रभु मसीह – में दृढ़ विश्वास रखो, और अशुद्ध मूर्तियों को त्यागकर, अपने सृष्टिकर्ता – ईश्वर – की सेवा के लिए स्वयं को पूरी तरह से समर्पित कर दो।'

इसके बाद, पवित्र पुरोहित वेनिग्न ने युवकों को ईसाई धर्म की सच्चाइयों में पूरी तरह से शिक्षित किया, उन्हें बपतिस्मा दिया और मसीह की स्वीकारोक्ति में दृढ़ता से स्थापित किया; फिर वे स्वयं दिवियोनिया के एक शहर[1092] में चले

[1092] डिवियोनी क्षेत्र पूर्वी गॉल में स्थित था।

गए, जहाँ उन्होंने थोड़े ही समय में कई लोगों को मसीह के प्रति परिवर्तित किया और शहीद होकर अपनी मृत्यु को प्राप्त हुए।

ईसाई धर्म में पुष्टि होते ही, तीनों पवित्र जुड़वां भाइयों ने अपने सेवकों को देवी नेमेसिस की उपर्युक्त मूर्ति को तोड़ने का आदेश देकर भेजा, जबकि उन्होंने स्वयं अपने घर में रखी बारह मूर्तियों को नष्ट कर दिया। तुरंत ही पूरे लिगोनिया में यह अफवाह फैल गई कि लियोनिला के पोते, इतने कुलीन वंश के युवक, मसीह में विश्वास करने लगे थे और मूर्तियों को नष्ट कर दिया था। लोग उन पर आग-बबूला हो गए; अधिकारी विद्रोह पर उठ खड़े हुए, और न्यायाधीश तथा मूर्तिपूजक पुरोहित क्रोध से भर गए। मजिस्ट्रेट, जो हर ओर से इकट्ठा हुए थे, ने उन पवित्र युवकों से पूछताछ करना शुरू कर दिया:

'तुम्हें यह पागलपन अचानक कहाँ से आ गया? किसने तुम्हें उन देवताओं की पूजा त्यागने के लिए राज़ी किया है, जिनकी तुम्हारे पूर्वज आदिकाल से पूजा करते आ रहे हैं? क्या यह हो सकता है कि तुम इतनी आसानी से राजा की आज्ञा की अवहेलना करने और यहूदियों द्वारा सूली पर चढ़ाए गए मसीह को ईश्वर मानने के लिए तैयार हो?'

पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होकर, युवकों ने उत्तर दिया:

'हे तुम जो हृदय से अंधे हो, अनंत अंधकार में लिपटे हो, पाप में कठोर हो गए हो और अनंत यातना और मृत्यु के लिए अभिशप्त हो! तुम स्वयं, शैतान के बहकावे में आकर, हमें एक पत्थर या किसी अन्य वस्तु की पूजा करने के लिए मनाने का प्रयास क्यों करते हो जो मनुष्य की समानता में बनाई गई हो? क्योंकि ये मानव हाथों के काम हैं: वे निर्जीव, असंवेदनशील और तुच्छ हैं - और फिर भी, अपनी मूर्खता में, तुम उन्हें देवता मानते हो। परन्तु हमारे प्रभु यीशु मसीह जीवित परमेश्वर हैं, जो हमारे विश्वास की शिक्षा के अनुसार, परम पवित्र त्रिमूर्ति के अन्य व्यक्तियों - पिता और पवित्र आत्मा के साथ एकसार हैं; परमेश्वर से परमेश्वर, ज्योति से ज्योति, प्रकाश से प्रकाश; जो सदा थे, हैं, और सदा रहेंगे, संसार की सभी चीजों के सृष्टिकर्ता।

पवित्र भाइयों के ऐसे शब्दों ने मूर्तिपूजकों को, विशेषकर उनके पुरोहितों और नेताओं को, अत्यधिक क्रोध से भर दिया। उनमें से एक, जिसका नाम क्वाड्रैटस था, और अधिक सहन नहीं कर सका और उसने स्पीयूसिप्पस और एलियूसिप्पस के गालों पर मारा, क्योंकि केवल ये दो युवक ही मूर्तिपूजकों के खिलाफ बोल रहे थे। हालाँकि, मेलूसिप्पस ने, अपने भाइयों पर हो रहे प्रहार को देखकर, पुकार लगाई:

'तुम मुझे भी क्यों नहीं मारते, जैसे तुमने मेरे भाइयों को मारा है? तुम मुझे ऐसा आशीर्वाद क्यों नहीं देते? देखो, उन्होंने तो पहले ही उन कष्टों को सहना शुरू कर दिया है जिनकी हम सभी इतनी इच्छा करते हैं, फिर भी तुम मुझे पवित्र कष्ट सहने नहीं देते, मानो तुम मुझे मसीह में अविश्वासी और अपनी ही जाति का समझते हो।' हम सभी मसीह में समान दृढ़ता से विश्वास रखते हैं, हम सभी आपकी मूर्तिपूजक दुष्टता को समान रूप से तुच्छ समझते हैं, और हम सभी मसीह से समान पुरस्कार प्राप्त करने की आशा करते हैं।

क्वाड्रैटस ने कहा, 'हमारे देवताओं का अपमान करने के लिए, हम अब तुम्हें विभिन्न यातनाओं से गुज़ारेंगे।'

एलेउसिप्पस ने उत्तर दिया:

'जितनी अधिक यातनाएँ तुम हमारे लिए तैयार करोगे, उतना ही अधिक तुम हमें परमेश्वर की कृपा में मजबूत करोगे।'

एक अन्य अधर्मी नेता, पालमैट ने कहा, 'जब तक तुम उनकी जीभ को जड़ सहित नहीं निकाल दोगे, वे हमें और हमारे देवताओं का अपमान करना बंद नहीं करेंगे।'

स्प्यूसिप्पस ने उत्तर दिया:

'यदि तुम अपनी क्रूरता में हमारी शारीरिक जीभें काट भी दो, तो हम अपनी आत्मा की भीतरी जीभों से ईश्वर की महानता का गुणगान करेंगे, और तुम्हारी दुर्भावना हमें मसीह में अपने पवित्र विश्वास को कभी त्यागने के लिए मजबूर नहीं कर पाएगी।'

'धिक्कार है तुम पर!' पलमैट और तीसरे कमांडर, हर्मोजेनेस, ने कहा, 'तुम सब मिलकर खुद को मृत्युदंड के लिए तैयार कर रहे हो।'

'मसीह के लिए मरना,' स्प्यूसिप्पस ने उत्तर दिया, 'हम अपने लिए एक आशीर्वाद मानते हैं, क्योंकि इस तरह हम जल्द ही उस अनंत जीवन में प्रवेश कर जाएँगे, जहाँ कोई दुख नहीं है, बल्कि केवल अनंत आनंद है।'

तब लिगोनियम के न्यायाधीशों—पालमाटस, क्वाड्रैटस और हर्मोजेनेस—ने उन पवित्र युवकों की मसीही विश्वास में अटूट दृढ़ता को देखकर, आपस में परामर्श करना शुरू कर दिया कि दूसरों को चेतावनी देने के लिए, उन्हें किस सबसे क्रूर यातना से गुज़ारना चाहिए, और किस सबसे कठोर दंड से उन्हें मार डाला जाए। हालाँकि, शुरुआत में उन्होंने

लियोनलि को बुलाने का फैसला कयि, जन्हिें सभी बहुत सम्मान की दृष्टि से देखते थे, ताकि उनकी मध्यस्थता के माध्यम से युवकों को ईसाई धर्म से हटाकर पुनःमूर्तपिूजा की ओर लाया जा सके।

उन्होंने उससे कहा:

'यदि आप अपने पोते-पोतयिों को यातना से बचाना चाहते हैं और उन्हें मृत्यु से बचाना चाहते हैं, तो जाओ और उन्हें उन मूर्तयिों का पुनर्नरि्माण करने, उनकी पूजा करने और उन्हें उचति बलदिान चढ़ाने के लिए मनाओ।'

न्यायाधीशों की इन और अन्य समान वनितयिों पर, लयिोनलि ने उत्तर दयिा:

'मैं जाऊँगी और उन्हें अपना मोक्ष खोजने के लिए मनाने की कोशशि करूँगी।'

जब वह अपने पवत्रि पोते-पोतयिों के पास आईं और पवत्रि वशि्वास में उनकी दृढ़ता के बारे में जाना, तो वह अतशिय प्रसन्न हुईं। उन्होंने आनंद के आँसुओं के साथ स्नेहपूर्वक उन सभी को चूमा और हमारे ईश्वर मसीह का धन्यवाद कयि, और उनसे एक लंबी प्रार्थना करने के बाद, उन्होंने अपने पोते-पोतयिों से कहा:

'तुम्हारी वंशावली में तुमसे अधकि कुलीन, धनी, बेहतर या परमेश्वर को अधकि प्रसन्न करने वाला एक भी व्यक्ति नहीं रहा है; मसीह के वशि्वास को स्वीकार करके, तुम अपनी पूरी वंशावली को प्रकाशति करते हो, और यद्यपि तुम जवान हो, फरि भी तुमने ज्ञान में अपनी वंशावली के सभी बुज़ुर्गों को पीछे छोड़ दयिा है। मसीह के सपिाही बनकर, तुमने अपने लिए एक वशिाल और अनमोल खजाना अर्जति कयि है। मसीह के पवत्रि वधिान में दृढ़ और अटल रहो, और मसीह में वशि्वास से सुसज्जति होकर, धमकयिों या यातनाओं से न डरो। इस संसार के दृश्यमान राज्य, इस वर्तमान जीवन के साथ, तुच्छ हैं, और उनका शीघ्र अंत होने वाला है। परन्तु परमेश्वर का अदृश्य राज्य शाश्वत है, और उसकी इच्छा करना तथा उसके लिए प्रयत्न करना ही सच्ची बुद्धि का चह्नि है; आप अपने संक्षप्ति पराक्रम के कार्यों द्वारा उसे प्राप्त कर सकते हैं, और क्षणकि कष्टों के द्वारा शाश्वत आनन्द के अधकिारी हो सकते हैं।

जब उसने उन युवकों को परमेश्वर की कृपा से परपिूर्ण और अपने वशि्वास में दृढ़ देखा, तो उसने इन शब्दों के साथ उन्हें मसीह के हवाले कर दयिा और नशि्चति होकर चली गई।

थोड़ी ही देर बाद, न्यायाधीशों ने संतों को बुलाया और उनसे पूछा कि क्या वे देवताओं की पूजा करने और पूरी जमा भीड़ के सामने इसे ज़ोर से घोषति करने के लिए सहमत होंगे। लेकनि उन युवकों ने सभी के सामने एक सच्चे ईश्वर में अपने वशि्वास और उससे प्रेम के कारण कसिी भी यातना और मृत्यु को सहने के लिए अपनी पूर्ण तत्परता का खुलकर इकरार कयि; साथ ही, उन्होंने झूठे और नरिर्थक मूर्तपिूजक देवताओं का परत्यिाग कर दयिा। तब पवत्रि भाइयों को हाथ-पैरों से बाँधकर एक ही पेड़ से लटका दयिा गया और वीणा की तारों की तरह खींचा गया, इतनी कसकर कि उनके शरीर की हड्डयिाँ जोड़ों से बाहर नकिलने लगीं। लेकनि, मसीह की अनुग्रह-पूर्ण शक्ति से बल प्राप्त कर, उन्होंने धैर्यपूर्वक भयानक यातनाओं को सहन कयि और अपने यातना देने वालों - न्यायाधीशों - पर हँसे।

संत मेलेसयिस ने उनसे कहा:

'हमारे प्रभु और उद्धारकर्ता यीशु मसीह को हमारे पापों के प्रायश्चति के लिए सूली पर चढ़ाया गया था; उस पवत्रि वृक्ष से हमें सहायता और सुरक्षा के रूप में क्रूस का चह्नि प्राप्त हुआ है। हम, उनके तीन सेवक, इसी वृक्ष से लटके हुए, उनके नाम के लिए शहीद हो रहे हैं।' धन्य है उस वृक्ष का फल जो तीन शहीदों को जन्म देता है, जो परम पवत्रि त्रमिूर्ति को बलदिान के रूप में अर्पति कए गए हैं।

न्यायाधीशों ने, यह देखकर कि पवत्रि युवक न केवल अपने कष्टों के बीच हतोत्साहति नहीं हुए, बल्कि, मानो, और भी अधकि दृढ़ हो गए थे, उनसे कहा:

'तुम इस वृक्ष पर नहीं मरोगे, जैसा तुम चाहते हो, बल्कि आग में भस्म हो जाओगे।'

मेलप्सपिस ने एक बार फरि उत्तर दयिा, 'हमारी आनंदमयता और भी अधकि होगी, यदि हम आग से शुद्ध होकर परमेश्वर के सामने प्रकट हों और, ज्वालाओं के माध्यम से, अंधकार से शाश्वत प्रकाश में प्रवेश करें।'

तब न्यायाधीशों ने आदेश दयिा कि लिकड़ी, झाड़-झंखाड़ और अन्य आसानी से जलने वाली सामग्री इकट्ठी की जाए, और उन्होंने एक वशिाल अलाव जलाया, जसिमें उन्होंने तीन पवत्रि भाइयों को, जो अभी भी बंधे हुए थे, फेंक दयिा। लेकनि संत, अपने उद्धारकर्ता—मसीह—की मदद से आग के बीच भी अक्षुण्ण रहे; वे रस्सयिाँ जनिसे उन्हें बाँधा गया था, जलकर अलग हो गईं, और वे, बेबीलोन के तीन प्राचीन युवकों की तरह, आग के बीच से गुज़रे और परमेश्वर की महमिा की। दुष्ट लोगों ने मसीह के सेवकों को जलाने की इच्छा से आग में और भी जोर से फूंकें मारनी शुरू कर दीं; लेकनि आग जतिनी भड़कती गई, संतों का तेज उतना ही अधकि प्रकट हुआ, और जब अंतत; बहुत समय बाद, आग बुझी, तो पता चला

कि संत जीवित थे, उन्हें कोई हानि नहीं हुई थी और न ही वे थोड़े से भी झुलसे थे। वे केवल अपने यातना देने वालों पर हँसे और कहा:

'हमें हमारे ईश्वर मसीह के पास जाने की शक्ति केवल तभी प्राप्त होती है जब हम स्वयं ऐसा चाहें; परन्तु हमने इस जीवन में तुम्हारी मूर्खता पर हँसने का निर्णय लिया है, यद्यपि हम स्वर्गीय भोज में उपस्थिति होने में देरी नहीं करेंगे।'

अंतत; तीनों पवित्र जुड़वाँ भाइयों ने अपने सामने स्वर्ग के राज्य तक अपनी आत्माओं को साथ ले जाने के लिए तैयार पवित्र स्वर्गदूतों की एक सेना को देखकर, जमीन पर घुटने टेक दिए और, एक साथ प्रार्थना करने के बाद, अपनी पवित्र आत्माओं को ईश्वर को सौंप दिया। उनके पूजनीय शरीर शहर से दो पोपरीश्चा[1093] की दूरी पर, उरवत नामक एक गाँव में दफनाए गए, जहाँ बाद में उनके सम्मान में एक चर्च का निर्माण किया गया; वहाँ चमत्कार हुए और बीमारों को स्वास्थ्य लाभ मिला।

पवित्र शहीदों की मृत्यु के बाद, इओविला नाम की एक महिला, दैवीय उत्साह से भरकर और अपने पति तिथा अपने एकमात्र छोटे बेटे की परवाह किए बिना, अविश्वासी मूर्तिपूजकों के बीच चिल्लाई:

'मैं भी मसीह की दासी हूँ, और मैं दृढ़ता से मसीह, जीवित और सच्चे परमेश्वर का बपतिस्मा लेती हूँ; परन्तु मैं तुम्हारी अशुद्ध और व्यर्थ मूर्तियों को अस्वीकार करती हूँ।'

उसे तुरंत पकड़ लिया गया, उसके बालों से लटका दिया गया, और हर तरह की यातनाएँ दी गईं। जब, इसके बावजूद, उसने मसीह का त्याग करने से इनकार कर दिया, तो उसे, पवित्र युवकों की दादी, संत लियोनिला के साथ, उपर्युक्त उरवत गाँव ले जाया गया, जहाँ दोनों का सिर कलम कर दिया गया। एक नेओन नामक व्यक्ति, जिसने संतों के पराक्रम को देखा था और उनके दुखों का वर्णन किया था, ने अपनी पांडुलिपि टिर्वोन को सौंप दी, जबकि उसने स्वयं खुले तौर पर मसीह में अपने विश्वास की घोषणा की और उसे तब तक पीटा गया जब तक कि उसने शहीद की मृत्यु नहीं प्राप्त की, और अपना प्राण प्रभु के हवाले कर दिया। और टुर्वोन स्वयं, पवित्र शहीदों के उदाहरण का अनुसरण करते हुए, शहीद की मृत्यु से होकर अनंत जीवन में प्रवेश कर गया।

यह सब ऑरेलियस वेरस के शासनकाल के दौरान, जो एंटोनिनिस के नाम से भी जाने जाते थे,[1094] , या, अधिक सटीक रूप से, जब हमारे प्रभु यीशु मसीह संसार पर राज्य कर रहे थे, के 16वें दिन हुआ; उन्हें, पिता और पवित्र आत्मा के साथ, अब और हमेशा और युगों-युगों तक सम्मान और महिमा हो। आमीन।

पवित्र शहीद दनाक्त द रीडर की स्मृति

16 जनवरी को स्मरणोत्सव

पवित्र शहीद दनाक्त इल्लिरिया के मूल निवासी थे, अवलोन शहर के[1095] , और वे चर्च में पाठक के रूप में सेवा करते थे। pagans के आक्रमण के दौरान, उन्होंने चर्च के बर्तन अविश्वासियों से छिपाने के लिए ले गए, लेकिन एक जगह पर वे उनके द्वारा पकड़ लिए गए। मूर्तिवादियों ने उन्हें अपने देवता डायोनिसिस[1096] को बलिदान करने के लिए मजबूर किया। लेकिन संत डनाक्त ने उनकी आज्ञा मानने से इनकार कर दिया और तलवार से भेदकर शहीद हो गए[1097] ।

[1093] 'पोप्लशि' दूरी की एक इकाई थी: यह हमारे 690 फाथम्स के बराबर था। इस प्रकार दो 'पोप्लशि' 1,380 फाथम्स (2.5 वर्स्ट से थोड़ा अधिक) के बराबर होते थे।

[1094] मार्कस ऑरेलियस (जिन्हें एंटोनिनिस के नाम से भी जाना जाता है) एक रोमन सम्राट थे जिन्होंने 161 से 180 तक शासन किया।

[1095] इलिरिया – रोमन साम्राज्य का एक प्रांत, जिसमें एड्रियाटिक सागर का संपूर्ण पूर्वी तट और उससे परे के क्षेत्र (आज का डाल्मेशिया, बोस्निया और अल्बानिया) शामिल थे। – अव्लोन – इलिरिया में एड्रियाटिक सागर पर स्थित एक नगर।

[1096] डायोनिसिस, जिन्हें बैकस के नाम से भी जाना जाता है, – अंगूर की बेल और मदिरा निर्माण के ग्रीक-रोमन देवता, जो शराब के उपहार से लोगों के दिलों को प्रसन्न करते हैं और दुख तथा चिंताओं को दूर करते हैं। उनके सम्मान में जो मामूली उत्सव शुरू हुए थे, वे बाद में एक अनियंत्रित स्वरूप धारण कर गए और उनमें उन्मत्त कामुकता, बेतहाशा शराब पीना और व्यभिचार शामिल हो गए, और डायोनिसिस स्वयं, या बाकस, मद्यपान के देवता का प्रतीक बन गए।

[1097] संत डानक्ट की शहादत दूसरी शताब्दी में हुई थी।

30 जनवरी

17 जनवरी (पुराना कैलेंडर)

हमारे पूजनीय पिता एंथनी महान का जीवन

17 जनवरी को स्मरण किया जाता है

आदरणीय एंथनी मिस्र के मूल निवासी थे[1098] । उनके माता-पिता कुलीन व्यक्ति थे, जो अपनी ईसाई भक्ति के लिए प्रसिद्ध थे; उन्होंने अपने बेटे का पालन-पोषण इस तरह से किया कि वह उन्हें और अपने घर के अलावा किसी और को नहीं जानता था। जब वह किशोरावस्था में पहुँचा, तो वह न तो अपनी पढ़ाई शुरू करने में और न ही दूसरे युवकों से दोस्ती करने में कोई जल्दबाजी में था, बल्कि घर पर ही रहकर उसने अपने हृदय की पवित्रता बनाए रखी और धार्मिकता में उत्कृष्टता प्राप्त करने का प्रयास किया। अपने समय के सामान्य मनोरंजन में लिप्त हुए बिना, एंथनी को अपने माता-पिता के साथ चर्च जाना पसंद था और वहाँ पवित्र धर्मग्रंथों के पाठ को सुनते हुए, वह अपने लिए अधिक से अधिक लाभ प्राप्त करने और ठीक वैसे ही जीने का प्रयास करता था जैसे वे सिखाते थे। वह अपने बड़ों से मिठाई नहीं माँगता था, जैसा कि बच्चे आमतौर पर करते हैं, और आम तौर पर भोजन पर बहुत कम ध्यान देता था, जो कुछ भी उसे दिया जाता था, उससे हमेशा संतुष्ट रहता था।

जब रेवरेंड एंथनी लगभग बीस वर्ष के थे, तब उनके माता-पिता का निधन हो गया। अपनी छोटी बहन के साथ अकेले रह गए, उन्होंने शुरू में घर का ध्यान रखा और यह सुनिश्चित किया कि उनकी बहन का पालन-पोषण ठीक से हो। अक्सर, जैसा कि उनका रिवाज था, चर्च जाते समय, वहाँ पढ़ी जाने वाली पवित्र शास्त्रों से वह सुनता था कि कैसे प्रेरितों ने सब कुछ छोड़कर उद्धारकर्ता का अनुसरण किया, और कैसे प्रेरितों के काम की पुस्तक के अनुसार, कई ईसाइयों ने अपनी संपत्ति बेच दी और उससे प्राप्त धन को ज़रूरतमंदों में बांटने के लिए प्रेरितों के पैरों तले रख दिया (प्रेरितों के काम 4:34)। एंथनी ने इस बात पर मनन किया कि इन लोगों का विश्वास कितना दृढ़ था और स्वर्ग में उनके लिए कितना बड़ा इनाम इंतजार कर रहा था। इन विचारों को मन में रखकर, वह एक दिन चर्च गया और वहाँ उसने अचानक एक बार फिर उस धनी जवान के प्रति कहे गए मसीह के वचन सुने: *'यदि तुम सिद्ध होना चाहते हो, तो जाओ, अपनी संपत्ति बेच दो और गरीबों को दे दो, और तुम्हारे लिए स्वर्ग में खजाना होगा; और आओ, मेरे पीछे चलो'* (मत्ती 19:21)। एंथनी ने इसे ऊपर से एक संकेत के रूप में लिया - मानो मसीह ने ये शब्द व्यक्तिगत रूप से उससे ही कहे हों - और जैसे ही वह चर्च से बाहर निकला, उसने अपनी संपत्ति बेच दी और बिक्री से प्राप्त बड़ी रकम गरीबों में बाँट दी, और अपनी कमजोर और छोटी बहन के लिए केवल एक छोटा सा हिस्सा रखा। उसके पास तीन सौ बहुत अच्छी और फलदार खजूर के पेड़ थे, और उसने वे अपने पड़ोसियों को दे दिए ताकि वह और उसकी बहन उन पेड़ों को लेकर किसी भी चिंता से मुक्त हो सकें।

थोड़ी ही देर बाद जब वह चर्च लौटा और सुसमाचार में प्रभु के वचन सुने: *'कल की चिंता मत करो'* (मत्ती 6:34), तो वह तुरंत बाहर गया और अपनी बाकी संपत्ति जरूरतमंदों में बाँट दी। अपने घर में अब और नहीं रहना चाहकर, उसने अपनी बहन को विश्वासपात्र और प्रसिद्ध कुंवारी महिलाओं[1099] के हवाले कर दिया, जिन्होंने स्वयं को वर-दूल्हे - मसीह - की सेवा के लिए समर्पित कर रखा था, ताकि वह उनके जीवन के उदाहरण से उनके बीच पली-बढ़ी, जबकि उसने स्वयं एक कठोर और तपस्वी जीवन जीना शुरू कर दिया।

उस समय, मिस्र में अभी भी कुछ ही मठ थे और मठवासी जीवन अभी तक व्यापक नहीं हुआ था; लेकिन जो कोई भी मसीह की सेवा करना चाहता था और मोक्ष प्राप्त करना चाहता था, वह अपने गाँव के पास किसी एकांत स्थान पर

[1098] आदरणीय एंथनी का मूल गाँव कोमा था, जो हेराक्लिओपोलिटिन जिले में, थेबाइड (मिस्र के दक्षिणी क्षेत्र) की उत्तरी सीमा पर स्थित था। – एंथनी का जन्म वर्ष 251 में हुआ था। उनके माता-पिता कॉप्टिक ईसाई थे।

[1099] प्रारंभिक चर्च में, महिलाओं के मठवासी समुदायों के उदय से पहले और उनकी स्थापना के बाद के शुरुआती दिनों में, कुंवारी महिलाओं का एक विशेष वर्ग मौजूद था जो पूरी तरह से ईश्वर की सेवा के लिए समर्पित थीं और ब्रह्मचर्य का व्रत लेती थीं। ऐसी महिलाओं को कुंवारी कहा जाता था, और उन्हें चर्च के भीतर बहुत सम्मान दिया जाता था और चर्च की शोभा माना जाता था। वे आध्यात्मिक जीवन में अनुभवी वृद्ध महिला मार्गदर्शकों के मार्गदर्शन में निजी घरों में मौन, ईश्वर के चिंतन और प्रार्थना के अभ्यास के लिए इकट्ठा होती थीं। अक्सर, चर्च उनके मार्गदर्शन और पर्यवेक्षण का काम सबसे सम्मानित डीकोनेस (स्त्रैण उपयाजिकाओं) को सौंप देता था।

जाकर सदाचार का अभ्यास करता था। उस समय, एंथनी के गाँव से बहुत दूर नहीं, एक वृद्ध रहते थे, जिन्होंने कम उम्र से ही एकांत में मठवासी तपस्या को समर्पित कर दिया था। उनसे मिलने और इस भेंट से आध्यात्मिक लाभ प्राप्त करने के बाद, एंथनी ने उनका अनुकरण करना शुरू कर दिया और इसी तरह अपने गाँव के पास विभिन्न स्थानों पर एकांत की तलाश की। यदि, उसके बाद भी, उसे किसी तपस्वी के बारे में पता चलता, तो वह, एक समझदार मधुमक्खी की तरह, उसे खोजने निकल पड़ता और तब तक वापस नहीं आता जब तक कि वह जिसे खोज रहा था उसे न मिल जाए और उससे मिलकर और बातचीत करके, ठीक वैसे ही जैसे मधुमक्खी शहद निकालती है, अपने लिए कुछ लाभ न प्राप्त कर ले।

ऐसे थे उस धन्य व्यक्ति के प्रारंभिक प्रयास; उनमें सफल होकर, उसने अपने विचारों को सदाचारी दिशा में और अधिक दृढ़ किया। साथ ही, उसने अपने हाथों की मेहनत से अपनी आजीविका कमाई, धर्मग्रंथ के इन शब्दों को ध्यान में रखते हुए: 'यदि कोई काम करने को तैयार नहीं है, तो उसे खाने भी न दिया जाए' (2 थिस्सलुनीकियों 3:10)। अपने हस्तशिल्प ( ) बेचकर कमाए गए पैसों से, वह रोटी खरीदकर भूखे लोगों को खिलाता था; उसकी आत्मा ईश्वर के साथ निरंतर प्रार्थनामय संवाद में रहती थी, क्योंकि वह शास्त्रों से जानता था कि मनुष्य को बिना रुके प्रार्थना करनी चाहिए (1 थिस्सलुनीकियों 5:17)। वह पवित्र शास्त्र के पाठ को इतनी गहरी एकाग्रता से सुनते थे कि जो कुछ भी पढ़ा जाता था, वह उसे बिल्कुल नहीं भूलते थे; और, प्रभु की सभी आज्ञाओं का कड़ाई से पालन करते हुए, उनकी स्मृति उनके लिए सबसे पवित्र पुस्तकों का स्थान लेने लगी। इस प्रकार एंथनी ने जीवन यापन किया, और वह उन सभी भाइयों से प्रेम करता था जिनके पास वह आध्यात्मिक लाभ प्राप्त करने और उनके अधीन रहकर उन गुणों को सीखने के लिए जाता था, जिनमें से प्रत्येक विशेष रूप से निपुण था: वह एक का अनुकरण करने का प्रयास करता था, दूसरे का आत्म-संयम में, तीसरे का प्रसन्नचित्तता में, चौथे का विनम्रता में, पाँचवें का सतर्कता में, और छठे का पढ़ी गई बातों पर ध्यान देने में; एक से उसने उपवास के कारनामे सीखे, दूसरे को नंगे फर्श पर लेटे रहने पर आश्चर्यचकित हुआ, और उसने एक की नम्रता और दूसरे के धैर्य की प्रशंसा की। उन सभी का प्रेम जीतकर और प्रत्येक से लाभ उठाकर, वह अपनी कुटिया में लौट आता और वहाँ, जो कुछ भी उसने देखा था, उस पर मनन करके, उन सभी के गुणों को अपने भीतर आत्मसात करने और सामंजस्य स्थापित करने का प्रयास करता, और यह सुनिश्चित करता कि वह उल्लेख किए गए किसी भी गुण में पीछे न रह जाए। ऐसा करते हुए, यद्यपि वह महिमा में उन सभी से आगे निकलने लगा, फिर भी वह उनका सार्वभौमिक प्रेम प्राप्त करता रहा: उसके पड़ोसी और भिक्षु, जिनसे वह अक्सर मिलता था, एंथनी के जीवन के तरीके को देखकर, उसे ईश्वर-प्रेमी कहते और उससे प्रेम करते थे—कुछ एक बेटे के रूप में, तो कुछ एक भाई के रूप में।

जब एंथनी इस प्रकार सद्गुणों में फल-फूल रहा था और दृढ़ हो रहा था, तब ईसाई नाम का शत्रु—शैतान, जो एक युवा व्यक्ति में इतने सद्गुण देखकर सहन नहीं कर सका—अपनी पुरातन चालाकी के साथ उसके विरुद्ध उठ खड़ा हुआ और धोखे के माध्यम से उसके अच्छे इरादों से भटकाने और उसे सही रास्ते से बहकाने की कोशिश करने लगा। उसने उसे बेची गई और दान कर दी गई संपत्ति, अपनी बहन की असुरक्षा, अपनी वंश की महानता, व्यर्थ सांसारिक महिमा, और विभिन्न प्रकार के भोजन तथा सांसारिक जीवन के अन्य सुखों से मिलने वाले आनंद की याद दिलाई। साथ ही, उसने एंथनी के मन में सद्गुण के कठिन मार्ग और कड़वे अंत के साथ-साथ शरीर की दुर्बलता और ऐसे कार्य के लिए आवश्यक लंबी अवधि को भी प्रस्तुत किया; इन और कई अन्य विचारों से, प्रलोभी ने उसके मन को भ्रमित करने और उसके हृदय को भ्रष्ट करने का प्रयास किया। जब शैतान ने देखा कि वह एंथनी से उसकी ईश्वर में प्रार्थना, धैर्य और विश्वास के कारण हार गया है, तो वह युवाओं के लिए विशिष्ट प्रलोभनों की ओर मुड़ गया: उसने उसे रात के भयानक दृश्यों, भयों और प्रेतों, आधी रात को होने वाली आवाज़ों, स्वरों और चीखों से बेचैन करना शुरू कर दिया, और दिन के समय - खुले हमलों से। एंथनी शैतान के सामने अडिग रहे: शैतान उनके मन में अशुद्ध विचार डालता, लेकिन एंथनी उन्हें अखंड प्रार्थना से दूर भगा देते; शैतान स्वाभाविक जलन और वासना की उत्तेजना के माध्यम से उनके इंद्रियों को सुख की ओर भड़काने की कोशिश करता, लेकिन एंथनी ने अपने शरीर को विश्वास, सतर्कता और उपवास से ढक रखा था; रात में, शैतान ने एक सुंदर महिला का रूप धारण किया और हर तरह से एंथनी में वासना जगाने की कोशिश की, लेकिन उसने गेहेना की अदम्य आग और अमर कीड़े के विचार से इसे शांत कर दिया; शैतान ने युवा एंथनी को विनाश की ओर ले जाने वाले एक फिसलन भरे रास्ते पर लुभाने की कोशिश की, फिर भी उसने, अंतिम न्याय के बाद होने वाले शाश्वत यातनाओं को याद करते हुए, प्रलोभनों के बीच दृढ़ता से अपनी आत्मा की पवित्रता को बनाए रखा। यह सब केवल शैतान को शर्मिंदा करने के लिए था: वह शापित, जिसने खुद को ईश्वर के समान समझा था, अब एक युवा पुरुष द्वारा शर्मिंदा किया गया; जो मांस और रक्त के विरुद्ध विद्रोह करता था, वह मांस के एक मनुष्य द्वारा परास्त हुआ, क्योंकि प्रभु, जिन्होंने हमारे लिए मांस

धारण कयि और इस प्रकार मांस को शत्रु पर वजिय पाने की शक्ति प्रदान की, ने अपने सेवक की सहायता की, ताकि इस प्रकार परीक्षा में पड़ने वाले सभी, एक के बाद एक, प्रत्येक प्रेरति के वचनों को दोहरा सकें: *'मैं नहीं, बल्कि परमेश्वर का अनुग्रह जो मुझ में है'* (1 कुरिन्थियों 15:10)।

दुष्ट साँप को अंततःएहसास हुआ कि वह अपनी चालाक प्रलोभनों से एंथनी को हराने में असमर्थ था, और खुद को लगातार भगाया हुआ देखकर, उसने निराशा में अपने दाँत पीसे। फिर वह उसके सामने एक दृश्य रूप में प्रकट हुआ—एक काले और भयानक युवक के रूप में, जो रोते हुए, एक मानवीय स्वर में बोला:

'मैंने कई लोगों को परीक्षा में डाला है, मैंने कई लोगों को बहकाया है, लेकिन अब मैं अन्य संतों और तुम्हारे द्वारा अपने पराक्रमी कार्यों से पराजित हुआ हूँ।'

वास्तव में, धूर्त प्रलोभी ने ये शब्द इस उम्मीद में बोले कि वह उस विनम्र युवक को अपने बारे में बड़ा सोचने के लिए प्रेरित कर सके।

"तुम कौन हो, जो अपने बारे में इस तरह बोलते हो?" धन्य एंथनी ने पूछा।

'मैं व्यभिचार का प्रलोभी हूँ,' शैतान ने उत्तर दिया, 'और हर तरह की चालाकी से मैं सभी युवा पुरुषों को इस पाप में ले जाने का प्रयास करता हूँ; इसीलिए मुझे व्यभिचार की आत्मा कहा जाता है। कितने लोगों ने, जिन्होंने ब्रह्मचर्य का व्रत लिया था, मैं पहले ही इस पाप में ले जा चुका हूँ!' कितने ऐसे हैं जिन्होंने पहले ही पवित्र जीवन जीना शुरू कर दिया था, जिन्हें मैंने फिर से उनके पुराने अशुद्ध तरीकों पर वापस ले जाने में कामयाबी हासिल की है! मैं वही हूँ जिसके लिए भविष्यवक्ता होशे ने पतित लोगों को फटकारते हुए कहा है: 'क्योंकि व्यभिचार की आत्मा ने उन्हें भटका दिया है' (होशे 4:12), और वास्तव में, वे मुझसे धोखा खा गए; मैंने स्वयं तुम्हें भी कई बार प्रलोभित किया है, लेकिन हर बार तुमने मुझे भगा दिया।

जब एंथनी ने यह सुना, तो उसने प्रभु का धन्यवाद किया और पहले से भी अधिक निडरता के साथ, शत्रु से कहा:

'कई तरह से तुम्हें लज्जित किया गया है, कई तरह से तुम्हें अपमानित किया गया है; इसीलिए तुम्हारा कालापन और जिस युवक का रूप तुमने धारण किया है, वह तुम्हारी शक्तिहीनता के संकेत के अलावा और कुछ नहीं है। अब मैं तुम्हारा और भय नहीं मानता: *"यहोवा मेरा सहायक है; मैं अपने शत्रुओं को देखूँगा"* (भजन संहिता 117:7)।

एंथनी के ये शब्द सुनते ही, वह आकृति बिना कोई निशान छोड़े तुरंत ही गायब हो गई। शैतान पर एंथनी की यह पहली विजय थी, जो मसीह की अनुग्रह-पूर्ण शक्ति से प्राप्त हुई थी। हालाँकि, न तो एंथनी इस एकलौती जीत के बाद आत्मसंतुष्ट हुआ, और न ही शैतान की शक्तियाँ एक ही हार से कमजोर हुई थीं, क्योंकि वह *'एक दहाड़ते हुए सिंह की तरह इस-उस ओर मँडराता रहता है, यह खोजते हुए कि वह किसे फाड़ डाले'* (1 पतरस 5:8)। एंथनी, शास्त्रों से यह जानते हुए कि शैतान की युक्तियाँ अनेक हैं, बिना रुके कठिन तपस्या के अनुशासन का अभ्यास करते रहे, यह तर्क देते हुए कि भले ही शैतान को तब हरा दिया गया हो जब उसने उन्हें कामुक वासना से प्रलोभित किया था, वह फिर भी उन्हें और भी अधिक गंभीर और खतरनाक प्रलोभनों के अधीन कर सकता था। इसलिए, एंथनी ने अपने शरीर को लगातार थकाया और वश में किया, ताकि एक क्षेत्र में विजय प्राप्त करने के बाद, वह दूसरे में प्रलोभन के आगे न झुक जाए। धीरे-धीरे खुद को और भी कठोर जीवन शैली का आदी बनाते हुए, उन्होंने ईश्वर की सेवा के कई असाधारण कार्यों को अपनी आदत बना लिया, और इन आदतों को, मानो, अपनी दूसरी प्रकृति बना लिया: वे हर दिन सूर्यास्त तक उपवास करते थे और पूरी रात प्रार्थना में बिताते थे; कभी-कभी वे हर दो दिनों में केवल एक बार खाते थे और केवल चौथी रात को ही वे खुद को थोड़ी नींद की अनुमति देते थे। उनके भोजन में रोटी और नमक के साथ थोड़ी मात्रा में पानी होता था; उनका बिस्तर एक चटाई या रोंगटेदार कमीज़ था, और कभी-कभी खुली ज़मीन। वे बिल्कुल भी तेल का सेवन नहीं करते थे, जबकि मांस और शराब का तो उल्लेख करना भी आवश्यक नहीं है, क्योंकि कम भक्ति वाले संन्यासी भी उनका सेवन नहीं करते हैं। धन्य ने कहा कि यदि एक युवा शरीर को तेल की मिठास से नरम किया जाए तो उसके लिए शत्रु पर विजय प्राप्त करना असंभव है, और यह कि मनुष्य को शरीर पर यथासंभव कठिन तपस्या का भार डालना चाहिए, ताकि जैसे-जैसे शरीर कमजोर होता है, आत्मा मजबूत हो सके, प्रेरित के वचनों के अनुसार: *'जब मैं कमजोर होता हूँ तब मैं मजबूत होता हूँ'* (2 कुरिन्थियों 12:10)। हर दिन तपस्या के नए-नए कारनामे करते हुए, उन्होंने भविष्यवक्ता एलियाह को याद किया, जिन्होंने कहा था: *'जिस प्रभु के*

जीवन की शपथ (आज) मैं खाता हूँ जिसके सामने मैं खड़ा हूँ (1 राजा 18:15)।[1100] और उन्होंने अपने मन में इस प्रकार तर्क किया:

– यह व्यर्थ नहीं है कि यहाँ धर्मग्रंथ में 'आज' शब्द जोड़ा गया है, क्योंकि एलिया अतीत की उपलब्धियों पर नहीं ठहरे, बल्कि, मानो, हर दिन नई उपलब्धियाँ हासिल करते थे, और पूरी ताकत से प्रयास करते थे कि परमेश्वर की दृष्टि में वैसे ही प्रकट हों जैसे वे मानते थे कि परमेश्वर को देखने के योग्य मनुष्य को होना चाहिए—अर्थात्, एक शुद्ध हृदय के साथ और परमेश्वर की इच्छा को पूरा करने के लिए तैयार।

उन्होंने यह भी मनन किया कि प्रत्येक तपस्वी को महान एलिया का अनुकरण करना चाहिए और उनके उदाहरण को अपने सामने रखकर अपने जीवन की परीक्षा उसी से लेनी चाहिए—जैसे कि आईने के सामने। इसलिए, उन्होंने गाँव से कुछ दूर स्थित कब्रों की ओर प्रस्थान किया, और पहले एक परिचित से कुछ निश्चित दिनों पर उनके लिए भोजन लाने का आग्रह किया। उस आदमी ने उसे इन कब्रों में से एक में बंद कर दिया, और वहाँ, एकांत में, उस धन्य व्यक्ति ने मौन में स्वयं को समर्पित कर दिया। यह देखकर, शैतान को डर लगने लगा कि समय के साथ, एंथनी अपने तपस्या के बल पर मरुभूमि में उससे लड़ने के लिए खुद को तैयार कर लेगा: उसने राक्षसों को इकट्ठा किया और ईश्वर की अनुमति से, उस पर इतनी भयंकर पिटाई की कि बाद में वह धन्य व्यक्ति अचल और निश्चब्द पड़ा रहा, इस तथ्य को उसने बाद में कई बार स्वयं बताया; उस पर किए गए अत्याचार सभी मानवीय पीड़ाओं से परे थे। लेकिन, प्रभु ईश्वर की दया से, जो उन पर कभी निराश नहीं होते जो उन पर आशा रखते हैं, एंथनी की मृत्यु नहीं हुई। कुछ दिनों बाद, पहले उल्लेख किया गया परिचित एंथनी के पास उसके सामान्य भोजन के साथ आया। दरवाज़ा खोलकर जब उसने उसे ज़मीन पर बेसुध पड़ा देखा, तो वह उसे उठाकर अपने गाँव ले गया।

जब यह खबर फैली, तो पड़ोसी और रिश्तेदार एंथनी के इर्द-गिर्द इकट्ठा हो गए और, बहुत दुख के साथ, उसके लिए अंतिम संस्कार की रस्म अदा करने लगे, मानो वह पहले ही मर चुका हो। लेकिन आधी रात को, जब थकान के मारे हर कोई गहरी नींद में था, तो एंथनी धीरे-धीरे होश में आने लगा; आहें भरते और सिर उठाते हुए, उसने देखा कि अब भी जागा हुआ एकमात्र वही आदमी था जिसने उसे यहाँ लाया था। उसे पास बुलाकर, उसने किसी को जगाए बिना उससे विनती की कि उसे वापस उसकी पुरानी जगह पर ले जाए, जो कर दिया गया, और एंथनी फिर से एकांत में रहने लगा। अपने घावों के कारण खड़ा न हो पाने के कारण, वह प्रणाम करके लेटे-लेटे प्रार्थना करने लगा, और अपनी प्रार्थना के बाद वह ज़ोर से चिल्लाया:

'दैत्यों! मैं यहाँ हूँ, एंथनी। मैं तुमसे लड़ने से पीछे नहीं हटता; यह जान लो: अगर तुम पहले से भी बुरा कुछ करोगे, तो कुछ भी मुझे मसीह के प्रेम से अलग नहीं कर सकता।'

जैसे ही उन्होंने कहा, धन्य ने गाया:

– *'यद्यपि सेना मेरी ओर डेरा डाले, तौभी मेरा हृदय न डरेगा'* (भजन संहिता 26:3)।

तब सब भलाई का शत्रु – शैतान, यह देखकर चकित कि एंथनी ने इतनी पिटाई के बाद भी यहाँ लौटने की हिम्मत की, ने अपने राक्षसों को बुलाया और उनसे क्रोधित होकर कहा:

'देखो,' उसने कहा, 'हम उसे न तो व्यभिचार की आत्मा से और न ही शारीरिक घावों से हरा पाए हैं; दोनों के बाद, वह और भी अधिक निर्भीकता से हमारा मज़ाक उड़ाता है; इसलिए तुम में से प्रत्येक अपने आप को उसके विरुद्ध एक और भी मजबूत और अधिक लगातार संघर्ष के लिए तैयार करो, ताकि वह समझ जाए कि उसने किसको चुनौती दी है।'

और तुरंत बाद, राक्षसों का पूरा दल उन्मत्त हो गया, क्योंकि शैतान के पास लोगों से लड़ने के कई तरीके हैं। अचानक गरज की ऐसी गड़गड़ाहट हुई कि उस जगह की नींव तक हिल गई, और दीवारें ढह गईं; और तुरंत ही राक्षसों की एक भीड़ घुस आई और एंथनी के आवास को भर दिया, वे सिंह, भेड़ियों, विषैले साँपों[1101] , साँपों, बिच्छुओं[1102] , तेंदुओं और भालुओं के भूतों के रूप में प्रकट हुए; और इन सभी भूतों में से प्रत्येक ने अपने रूप के अनुरूप अपना क्रोध प्रदर्शित किया: सिंह गरजया, एंथनी को निगलने की तैयारी करते हुए, भैंस ने अपनी गरजना और सींगों से आतंक फैलाया, साँप बलखाया और फुफकारा, भेड़िये जोरदार झपट लगाए, और तेंदुआ अपनी चालाकी से हमले की तैयारी करने लगा; ये सभी

[1100] उपरोक्त धर्मग्रंथ के शब्द ईश्वर के पवित्र नबी, तिशबी ईलियाह से संबंधित हैं।

[1101] एस्प विषैले साँप की एक प्रजाति है।

[1102] मकड़ी के परिवार का एक विषैला जीव जिसके पूंछ के सिरे पर एक डंक होता है; यह गर्म देशों में पाया जाता है और नम स्थानों, पत्थरों के बीच, दीवारों की दरारों में, तहखानों में, आदि में रहता है।

प्रेत रूप दखिाने में अत्यंत भयानक थे, और उनकी दहाड़ से उत्पन्न कोलाहल वास्तव में भयानक था। एंथनी, जो उनसे प्रहारति और पीड़ति था, ने अत्यंत कष्ट सहन कयिा, फरि भी वह भय के आगे नहीं झुका और उसने अपने उत्साह और मानसकि स्पष्टता को बनाए रखा। यद्यपि उसके शारीरकि घावों ने उसे दर्द पहुँचाया, वह आत्मा में अडगि रहा, मानो वह अपने शत्रुओं का उपहास कर रहा हो, और कहा:

'अगर तुममें थोड़ी भी ताकत होती, तो तुम में से एक भी मुझसे लड़ने के लिए काफी होता - लेकनि चूँकि प्रभु ने तुम्हारी ताकत छीन ली है, इसलिए तुम अपनी संख्या के बल पर मुझे डराने की कोशशि करते हो; यह तथ्य कि तुमने बेजान जानवरों का रूप ले लयिा है, तुम्हारी कमजोरी का स्पष्ट संकेत है।'

और एक बार फरि उन्होंने उनसे नडिरता से कहा:

'यदि ईश्वर की अनुमति से, तुममें मुझ पर हमला करने और मुझे नगिलने की शक्ति है, तो मैं यहाँ हूँ—तुम देरी क्यों कर रहे हो? लेकनि यदि मुझ पर ऐसी शक्ति तुम्हें नहीं दी गई है, तो व्यर्थ में खुद को क्यों परेशान करते हो? क्रूस का चह्नि और ईश्वर में वशि्वास हमारे लिए एक अभेद्य रक्षा दीवार के रूप में काम करते हैं।'

इस प्रकार, धन्य एंथनी को डराने के कई प्रयासों और व्यर्थ कोशशिों के बाद, राक्षस अपने दाँत पीसने के अलावा और कुछ नहीं कर सके, क्योंकि न केवल उनमें से एक भी सफल नहीं हुआ, बल्कि, इसके वपिरीत, वे स्वयं ही उसके द्वारा पराजति और लज्जति हुए।

दयालु प्रभु यीशु ने, अपने सेवक की रक्षा करते हुए, राक्षसों के साथ इतनी कठनि लड़ाई के दौरान उसे नहीं छोड़ा। ऊपर देखते हुए, एंथनी ने देखा कि कब्र की गुंबद उसके ऊपर खुल गई थी और प्रकाश की एक तेज करिण उस पर उतर रही थी, जो अंधकार को दूर कर रही थी। प्रकाश के प्रकट होते ही एक भी दानव नहीं बचा; उसका शारीरकि दर्द तुरंत समाप्त हो गया, और कब्र, जो दानवों के प्रकट होने पर ढह गई थी, फरि से अखंड पाई गई। यह समझते हुए कि यह प्रभु का आगमन था, और दलि से एक गहरी आह भरते हुए, उस धन्य व्यक्ति ने प्रकाश की ओर अपना चेहरा मोड़ते हुए कहा, जो उसे रोशन कर रहा था:

'हे दयालु यीशु, आप कहाँ थे? आप कहाँ थे, और मेरी घावों को चंगा करने के लिए आप शुरू से ही क्यों नहीं प्रकट हुए?'

और एक आवाज़ ने उससे कहा:

'एंथनी! मैं यहाँ था, लेकनि मैं इंतज़ार कर रहा था, क्योंकि मैं तुम्हारे साहस को देखना चाहता था; अब, चूँकि तुमने दृढ़ता से संघर्ष का सामना कयिा है, मैं हमेशा तुम्हारी मदद करूँगा और पूरी दुनयिा में तुम्हारा गौरव बढ़ाऊँगा।'

यह सुनकर, एंथनी अपने पैरों पर खड़ा हो गया और उसे इतना शक्तशिाली महसूस हुआ कि, जैसा उसे लगा, उसने संघर्ष में खर्च की गई ताकत से कहीं ज्यादा ताकत वापस पा ली थी। उस समय धन्य एंथनी की उम्र पैंतीस वर्ष थी।

इसके बाद, एंथनी उस उपर्युक्त वृद्ध के पास गए, जनिसे उन्होंने बलि्कुल शुरुआत में मार्गदर्शन मांगा था, और उनसे कसिी दूरस्थ स्थान पर रेगस्तिान में उनके साथ बसने के लिए वनिती करने लगे। जब वृद्ध ने मना कर दयिा – उनकी वृद्धावस्था और तपस्या के ऐसे नए तरीके[1103] के कारण, एंथनी नडिर होकर अकेले ही भकि्षुओं के लिए अज्ञात रेगस्तिान के एक पहाड़ की ओर लंबी यात्रा पर नकिल पड़ा। लेकनि दुश्मन, जो उसे लगातार बहका रहा था और उसके उद्देश्य को वफिल करना चाहता था, ने उसके रास्ते में एक चांदी की थाल फेंक दी – ताकि उसे चांदी के प्रति प्रेम के मोह में डाल सके। थाली को देखकर, एंथनी को दुश्मन की धूर्तता का एहसास हुआ और वह एक पल के लिए वचिार में ठहर गया। थाली पर नज़र डालते हुए, उसने चांदी के भेष में छपि प्रलोभक की नदिा करना शुरू कर दयिा और खुद से कहा:

'यह थाल रेगस्तिान में कैसे आ सकती है? यह तो केवल जानवरों और पक्षयिों का रास्ता है; यहाँ एक भी इंसान का पैर नहीं पड़ा है; इसके अलावा, अगर यह कसिी थैले से गरिती, तो इसके बड़े आकार को देखते हुए, इसे गरिाने वाला व्यक्ति इसे अनदेखा नहीं कर सकता था, और वह, कसिी भी हाल में, वापस मुड़ता और, अपने आए रास्ते की तलाशी लेकर, खोई हुई चीज़ को ढूंढ लेता, क्योंकि यह एक सुनसान जगह है। यह तुम्हारी चालबाज़ी है, शैतान, परन्तु इससे तुम मेरे उद्देश्य को वफिल नहीं कर पाओगे: *'तुम्हारा चाँदी तुम्हारे साथ नाश हो जाए'* (प्रेरतिों के काम 8:20)।

और उसने ये शब्द कहते ही वह बर्तन आग से उठते धुएँ की तरह, तुरंत ही गायब हो गया।

[1103] संत एंथोनी महान और उनके समकालीन, थेब्स के संत पॉल से पहले, तपस्या का यह रूप – एक संन्यासी का जीवन – अज्ञात था।

उसके बाद एक अन्य अवसर पर, उसने अपने रास्ते में बहुत सारा सोना पड़ा हुआ देखा। वह तुरंत उस पर कूद पड़ा, जैसे कि वह आग हो, और रेगिस्तान में भाग गया। वहाँ नदी पार करने के बाद, उसे पहाड़ों में एक तरह की खाली, घिरी हुई जगह मिली जो लंबे समय से सुनसान होने के कारण हर तरह के जहरीले सरपटों और साँपों से भरी थी। एंथनी वहाँ बस गया[1104] , और बिच्छुओं का पूरा झुंड, जैसे किसी ने भगा दिया हो, तुरंत बिखर गया। उसने प्रवेश द्वार को पत्थरों से बंद कर दिया; अपने साथ छह महीने तक चलने वाली पर्याप्त रोटी लाए थे – क्योंकि फिलिस्तीनियों की यही रीति थी कि वे इस तरह भोजन का भंडारण करते थे, और यह अक्सर पूरे एक साल तक खराब नहीं होती थी – और, चूंकि घेरे के अंदर थोड़ा पानी था, उन्होंने वहाँ एक संन्यासी की तरह पूर्ण एकांत में रहने लगे, न कभी खुद बाहर जाते और न ही किसी से मिलते थे। वर्ष में केवल दो बार ही वह छत के माध्यम से रोटी प्राप्त करता था, जो उसे एक मित्र द्वारा लाई जाती थी, जिसे उसने पहले ऐसा करने के लिए कहा था; लेकिन वह उसे लाने वाले से एक भी शब्द नहीं बोलता था।

जब बहुत से लोग, एंथनी से आध्यात्मिक लाभ प्राप्त करने की इच्छा से, उसके निवास के दरवाजों पर आए, तो उन्होंने एंथनी के विरुद्ध अशुद्ध आत्माओं की विभिन्न आवाज़ें सुनीं, जो चिल्ला रही थीं:

'तुम हमारे क्षेत्र में क्यों आए हो? इस मरुभूमि में तुम्हारा क्या काम है? इस विदेशी भूमि से चले जाओ; तुम यहाँ रहने और हमारे हमलों को सहने के लिए पर्याप्त मजबूत नहीं हो!'

दैत्यों के साथ ऐसे अनवरत संघर्ष और लोगों से इतनी दूर एकांत में, पूजनीय एंथनी पूरे बीस वर्ष तक रहे।

जब न केवल अपने मोक्ष के लिए बल्कि दूसरों के लाभ के लिए भी परिश्रम करने का समय आया, तो बहुत से लोग एंथनी के निवास पर इकट्ठा हुए, जो उनके तपस्वी जीवन का अनुकरण करना चाहते थे, और उन्होंने जबरदस्ती उनके निवास का द्वार तोड़ दिया। जब उन्होंने देखा कि उनका मुख प्रकाशमान और शरीर स्वस्थ था, तो वे इस बात पर चकित हुए कि इतने व्रत और तपस्या के बाद, और राक्षसों के साथ इतनी लड़ाई के बाद भी, उनका रूप और शरीर दोनों में कोई बदलाव नहीं आया था। उस समय से, पूज्य पिता अन्य लोगों के लिए एक मार्गदर्शक, एक रखवाला, तपस्या के जीवन के शिक्षक, और स्वर्ग के मार्ग पर एक मार्गदर्शक बन गए। ईश्वर ने उनकी इतनी मदद की कि बाद में उन्हें अनगिनत शिष्य मिल गए, जिन्हें उन्होंने संसार और अपने अहंकार को त्यागने के लिए प्रेरित किया। थोड़े ही समय में, कई मठ स्थापित हुए, जिनमें उन्होंने नए और स्थापित दोनों तरह के भिक्षुओं का—चाहे वे उम्र में या इस जीवन को जीए हुए समय के लिहाज से—उनके तपस्वी अभ्यास में स्नेहपूर्वक मार्गदर्शन किया। एक अवसर पर, भाई-बंधु एक साथ इकट्ठा हुए और उनसे मठ जीवन के लिए एक नियम प्रदान करने का अनुरोध किया। अपनी आवाज़ उठाकर, उन्होंने उत्तर दिया:

'ईश्वर के आज्ञाओं के पालन की शिक्षा के लिए दिव्य शास्त्र पूरी तरह से पर्याप्त हैं; फिर भी, जब भ्रातुओं के बीच एक-दूसरे को शब्दों से सांत्वना देने का प्रयास होता है, तो उसे एक अति उत्तम और योग्य प्रयास माना जाना चाहिए। अत; जैसे बच्चे पिता को बताते हैं, वैसे ही आप जो जानते हैं, वह मुझे बताइए, और मैं, जैसे एक पिता अपने बच्चों को सिखाता है, आपको वह सिखाऊंगा जो मैंने लंबे अनुभव से सीखा है। सबसे बढ़कर, आप सभी के बीच यह एक सामान्य नियम हो – कि कोई भी अपने द्वारा शुरू किए गए प्रयास में सुस्ती न बरते, बल्कि प्रत्येक व्यक्ति हमेशा, एक ऐसे व्यक्ति की तरह जो अभी-अभी शुरू कर रहा हो, उस कार्य को बढ़ाने और बढ़ाने का प्रयास करे जो शुरू किया गया है।

अपने प्रवचन को जारी रखते हुए, एंथनी ने उन्हें कई उपयोगी निर्देश दिए, जैसा कि एथनासियस द ग्रेट द्वारा संकलित 'लाइफ ऑफ एंथनी' में विस्तार से वर्णित उनकी बातचीत से स्पष्ट है। इस बातचीत में से, केवल सबसे महत्वपूर्ण बिंदुओं का ही यहां उल्लेख किया जाएगा। संत एंथनी ने शाश्वत जीवन के बारे में इस प्रकार कहा:

'इस वर्तमान जीवन में, खरीदी गई वस्तु की कीमत उसकी कीमत के बराबर होती है, और विक्रेता को उससे अधिक कुछ नहीं मिलता। लेकिन शाश्वत जीवन का वादा बहुत ही मामूली कीमत पर प्राप्त होता है: यह हमें एक क्षणिक जीवन के बदले में दिया जाता है, जिसके बारे में लिखा है: *'हमारे दिनों की संख्या सत्तर वर्ष है, या यदि हम बलवान हों तो अस्सी; परन्तु उन वर्षों के उत्तम दिन परिश्रम और दुख के होते हैं'* (भजन संहिता 89:10)। भले ही हम परमेश्वर की सेवा में परिश्रम करते हुए जिएँ, चाहे हम अस्सी या सौ साल तक जीएँ, आने वाले जीवन में हम किसी सीमित समय के लिए नहीं, बल्कि उपरोक्त वर्षों के लिए अनंत काल तक राज्य करेंगे; इसके अलावा, हमें अपना विरासत में पृथ्वी नहीं, बल्कि स्वर्ग मिलेगा; अपनी नश्वर देह को त्यागकर, हम उसे अक्षयत्व में फिर से प्राप्त करेंगे। इसलिए, मेरे बच्चों, दुख में न डूबो, क्योंकि *'वर्तमान कष्ट उस महिमा के बराबर नहीं हैं जो हम पर प्रकट होने वाली है'* (रोमियों 8:18)।

[1104] यह वर्ष 285 का था।

जनि लोगों ने संसार का त्याग कयिा है और अपने इस कार्य के महत्व को बढ़ा-चढ़ाकर पेश करने के लिए प्रवृत्त हैं, उनके बारे में उन्होंने कहा:

– संसार को त्यागने वालों में से कोई भी यह न सोचे कि उसने कसिी महान चीज़ को त्याग दयिा है, क्योंकि स्वर्गीय आशीर्वादों की तुलना में, सारी पृथ्वी तुच्छ और छोटी है। तो, यदि संपूर्ण संसार मलिकर भी स्वर्गीय नविासों के योग्य नहीं है, तो हर कसिी को चतिन करना चाहिए और यह महसूस करना चाहिए कि, कुछ अंगूर के बागों, या खेतों और घरों, या सोने की तुच्छ मात्रा को त्यागकर, वह न तो यह दावा कर सकता है कि उसने कुछ महान त्याग दयिा है, और न ही इस बात पर शोक कर सकता है कि उसे एक तुच्छ पुरस्कार मलिेगा। जसि प्रकार कोई व्यक्ति सौ सोने के सक्कि प्राप्त करने के लिए एक तांबे का सक्का त्यागता है— उसी प्रकार जो कोई संपूर्ण संसार का त्याग करता है, भले ही वह पूरी तरह से उसकी शक्ति में हो, उसे स्वर्ग के राज्य में सौ गुना अधकि पुरस्कार प्राप्त होगा।

पार्थवि वस्तुओं की क्षणभंगुरता और सद्गुणों के महान लाभ पर, आदरणीय ने नम्निलखिति कहा:

'हमें सबसे बढ़कर यह ध्यान रखना चाहिए कि भले ही कोई अपनी संपत्ति से अलग होने के लिए तैयार न हो, मृत्यु फरि भी जबरदस्ती उन्हें उससे अलग कर देगी। यदि ऐसा है, तो हमें सद्गुण के लिए ऐसा ही क्यों नहीं करना चाहिए? स्वर्ग के राज्य के लिए अपनी संपत्ति को स्वेच्छा से क्यों न त्याग दें, जबकि हम इस जीवन के अंत में उन्हें वैसे भी खो देंगे? ईसाइयों को उन चीजों की चंता नहीं करनी चाहिए जिन्हें वे मरते समय अपने साथ नहीं ले जा सकते। बल्कि, हमें अपनी आत्मा की सारी शक्ति से उस चीज़ को प्राप्त करने का प्रयास करना चाहिए जो मृत्यु के बाद हमें स्वर्ग में ले जाएगी, अर्थात्: ज्ञान, ब्रह्मचर्य, न्याय, एक सदाचारी जीवन, वविेक, गरीबों से प्रेम, मसीह में दृढ़ वश्विास, कोमलता और आतथि्य। इन चीज़ों के लिए प्रयास करके, हम यहाँ पृथ्वी पर भी एक नश्चिति जीवन जएिँगे[1105] ।

संत एंथनी ने हमारे ईश्वर मसीह के प्रति उत्साही और अखंड सेवा के बारे में इस प्रकार कहा:

'हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि हम मसीह के सेवक हैं और हमें उनके, हमारे सृष्टकिर्ता की, सेवा करनी चाहिए। एक सेवक यह बहाना बनाकर वर्तमान या भवषि्य से संबंधति आज्ञाओं को पूरा करने से इनकार नहीं कर सकता कि उसने अतीत में पहले ही काम कर लयिा है, और न ही वह यह कहने की हम्मित कर सकता है कि, अपनी पछिली मेहनत से थक जाने के कारण, उसे अब मुक्त कर दयिा जाना चाहिए; – इसके वपिरीत, वह हर दनि उसी लगन के साथ वही काम करता है, ताकि वह अपने मालकि को प्रसन्न कर सके और आलस्य के लिए डाँट या दंड से बच सके। इसी तरह, हमें भी हमेशा उत्साहपूर्वक परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करना चाहिए, यह दृढ़ता से ध्यान में रखते हुए कि प्रभु एक न्यायी प्रतफिलदाता हैं और जसि पाप में कोई व्यक्ति मृत्यु के समय पकड़ा जाता है, उसी पाप के लिए वह दोषी ठहराया जाएगा। वह भवषि्यवक्ता यहेजकेल के वचनों के माध्यम से इस बात की स्पष्ट गवाही देते हैं: *'जसि अधर्म उसने कयिा है, उसी के कारण उसकी मृत्यु होगी'* (यहेजकेल 33:13)। इसीलिए दुष्ट यहूदा ने, एक ही रात में, अपने द्वारा कए गए दुष्ट कर्म के कारण अपने पछिले सभी श्रम के फल खो दए। इसलिए हमें हमेशा समान उत्साह के साथ प्रभु की आज्ञाओं को पूरा करने का प्रयास करना चाहिए, और स्वयं परमेश्वर इस में हमारी सहायता करेंगे, जैसा लखिा है: *'जो परमेश्वर से प्रेम करते हैं, उनके लयि सब बातें मलिकर भलाई उत्पन्न करती हैं'* (रोमयिों 8:28)।

और आलस्य में न पड़ने के लिए, एंथनी ने हमें हमेशा मृत्यु को याद रखने के लिए प्रेरति कयिा और प्रेरति के शब्दों का हवाला दयिा, जन्होंने अपने दैनकि मरने के बारे में इस प्रकार कहा: *'हम हर घड़ी संकट में हैं। मैं हर दनि मरता हूँ'* (1 कुरन्थियिों 15:30)।

एंटोनी ने कहा, 'इसलिए, हम भी, मनुष्यों के रूप में, धार्मकिता से जीने का प्रयास करेंगे और, अपनी मृत्यु के घड़ी पर चतिन करके, पाप नहीं करेंगे। जागने पर, हमें शाम तक जीवति रहने की आशा नहीं करनी चाहिए, और जब हम सोने जाएँ, तो हमें याद रखना चाहिए कि हो सकता है कि हम सुबह तक जीवति न रहें; हम यह न भूलें कि हमारे जीवन की अवधि हमारे लिए अज्ञात है, और हम पूरी तरह से ईश्वर के हाथों में हैं। और इस प्रकार प्रत्येक दनि जीने से, हम न तो पाप करेंगे, न ही कसिी हानकिारक इच्छाओं से भ्रमति होंगे, न ही एक-दूसरे से क्रोधति होंगे, न ही अपने लिए सांसारकि धन-संपत्ति इकट्ठा करेंगे; बल्कि, हर पल मृत्यु की प्रतीक्षा करने वालों के रूप में, हम सभी क्षणकि चीजों को तुच्छ समझेंगे: एक स्त्री का प्रेम हमारे लिए अपना कोई महत्व खो देगा, वासना की आग बुझ जाएगी, और तब हम एक-दूसरे के पापों

[1105] अलेक्जेंड्रयिा के संत अथानासयिस द्वारा संकलति, एंथनी महान की संपूर्ण जीवनी में, इस अंतमि कथन को वचिार के सामान्य प्रवाह के साथ अधकि सुसंगत तरीके से इस प्रकार प्रस्तुत कयिा गया है: 'ये उपलब्धयिाँ हमारे लिए वहाँ पहुँचने से पहले, पृथ्वी पर नम्र लोगों के लिए एक नविास स्थान (अर्थात् स्वर्ग में) तैयार करेंगी।'

को क्षमा करेंगे, हमेशा न्याय के दिन को अपने मन की आँखों के सामने रखेंगे; उस न्याय का भय और नरक में अनंत यातनाओं के विचार से उत्पन्न भय, पूर्व में ही सांसारिक सुख के मोह को दूर कर देगा और आत्मा को पाप की खाई में गिरने से बचाएगा।

एंथनी ने परमेश्वर के राज्य के बारे में भी बात की:

'ग्रीक, ज्ञान की अपनी खोज में, समुद्र पार यात्रा करते हैं और विदेशी शिक्षकों से व्यर्थ के सिद्धांतों के बारे में पूछते हैं; लेकिन हमें स्वर्ग के राज्य की खोज में एक विदेशी भूमि से दूसरी में यात्रा करने या समुद्र पार करने की बिल्कुल भी आवश्यकता नहीं है, क्योंकि हमारे प्रभु यीशु मसीह ने स्वयं सुसमाचार में कहा है: *'परमेश्वर का राज्य तुम्हारे भीतर है'* (लूका 17:21), और इसे प्राप्त करने के लिए, केवल हमारी सद्भावना ही पर्याप्त है।

दैत्यों के विरुद्ध संघर्ष के संबंध में, एंथनी ने निम्नलिखित निर्देश दिए:

– स्वयं परमेश्वर ने हमें यह निर्देश दिया है कि हम अपनी आत्माओं में जो कुछ हो रहा है उस पर निरंतर निगरानी रखें, क्योंकि हमारे शत्रु युद्ध में बहुत चालाक हैं – जिनसे मेरा तात्पर्य राक्षसों से है – और, जैसा कि प्रेरित कहते हैं (इफिसियों 6:11–12), हम उनसे एक अनवरत संघर्ष का सामना करते हैं। उनमें से अनगिनत संख्या में हवा में मंडराते हैं; दुश्मनों की पूरी फौज हमें चारों ओर से घेरे हुए है। मैं आपको उनके बीच के सभी अंतर समझा नहीं सकता; मैं केवल संक्षेप में उन तरीकों के बारे में बताऊंगा जो मुझे पता हैं, जिनके द्वारा वे हमें धोखा देने का प्रयास करते हैं। सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण, हमें यह दृढ़ता से याद रखना चाहिए कि ईश्वर बुराई का स्रोत नहीं है, और यह कि राक्षस उसकी इच्छा के विरुद्ध बुरे नहीं हुए: उनमें ऐसा परिवर्तन स्वभाव से नहीं हुआ, बल्कि यह उनकी अपनी मुक्त इच्छा पर निर्भर था। सदैव के परमेश्वर द्वारा बनाए जाने के कारण, वे मूल रूप से अच्छे आत्मा थे, लेकिन अपने अहंकार के कारण उन्हें स्वर्ग से पृथ्वी पर गिरा दिया गया, जहाँ, बुराई में जड़ जमाकर, उन्होंने झूठे सपनों से राष्ट्रों को बहकाया और उन्हें मूर्तिपूजा सिखाई; जहाँ तक हम ईसाइयों की बात है, वे हमसे अत्यधिक ईर्ष्या करते हैं और हमारे विरुद्ध हर तरह की बुराई को लगातार भड़काते रहते हैं, इस डर से कि कहीं हम स्वर्ग में उनकी पूर्व महिमा के वारिस न बन जाएँ। जिस हद तक वे बुराई में डूबे हुए हैं, वह विभिन्न और विविध है: उनमें से कुछ दुष्टता की सबसे निचली गहराइयों तक पहुँच चुके हैं, जबकि अन्य कम दुर्भावनापूर्ण प्रतीत होते हैं; फिर भी वे सभी, अपनी पूरी क्षमता से, विभिन्न तरीकों से हर सद्गुण के विरुद्ध लड़ते हैं। इसलिए हमें परमेश्वर से विवेक का वर प्राप्त करने के लिए प्रार्थनाओं और आत्म-त्याग के कार्यों को तीव्र करने की आवश्यकता है - ताकि हम दुष्ट आत्माओं के बीच के अंतर को समझ सकें, प्रत्येक व्यक्तिगत मामले में उनकी विभिन्न प्रकार की चालाकी और धोखे को पहचान सकें, और उन सभी को एक ही ईसाई चिह्न - प्रभु के क्रूस - से दूर भगा सकें। यह वरदान प्राप्त करने के पश्चात्, पवित्र प्रेरित पौलुस ने प्रोत्साहित किया: *'ताकि शैतान हम पर चतुराई न करे, क्योंकि हम उसकी युक्तियों से अनभिज्ञ नहीं हैं'* (2 कुरिन्थियों 2:11)। हमें भी प्रेरित के उदाहरण का पालन करना चाहिए और दूसरों को उन बातों से आगाह करना चाहिए जिनका हमने स्वयं सामना किया है, और सामान्य रूप से, एक-दूसरे को उपदेश देना चाहिए। जहाँ तक मेरी बात है, मैंने राक्षसों द्वारा कई चालाक धोखे देखे हैं, और मैं आपसे इसके बारे में बच्चों की तरह बात कर रहा हूँ, ताकि, चेतावनी मिलने के बाद, आप ऐसे प्रलोभनों के बीच खुद को बचा सकें। सभी मसीहियों के प्रति दुष्टात्माओं की दुष्टता महान है, और विशेष रूप से मसीह के भिक्षुओं और कुंवारी स्त्रियों के प्रति: वे जीवन में हर जगह उनके लिए जाल बिछाते हैं, और उनके हृदयों को अधर्मी और अशुद्ध विचारों से भ्रष्ट करने का प्रयास करते हैं। लेकिन आप में से कोई भी इससे न डरे, क्योंकि ईश्वर से प्रार्थना और उपवास के द्वारा, राक्षस तुरंत भाग जाते हैं। हालाँकि, यदि वे कुछ समय के लिए अपने हमले बंद कर दें, तो यह न सोचें कि आप पहले ही पूरी तरह से विजयी हो गए हैं, क्योंकि पराजित होने के बाद, राक्षस आमतौर पर और भी अधिक शक्ति के साथ फिर से हमला करते हैं। चालाकी से अपने हमले के तरीकों को बदलते हुए, यदि वे विचारों से किसी व्यक्ति को बहका नहीं सकते, तो वे प्रेत-भूतों के रूप में उसे धोखा देने या डराने की कोशिश करते हैं, महिला, बिच्छू का रूप धारण करते हैं, या खुद को किसी मंदिर जितने विशालकाय व्यक्ति, सैनिकों की पूरी टुकड़ी, या किसी अन्य प्रेत-भूत में बदल लेते हैं, जो क्रॉस का चिह्न बनाते ही गायब हो जाते हैं। यदि उनके धोखे को इस तरह से पहचान लिया जाता है, तो वे भविष्यवक्ताओं के रूप में प्रस्तुत होते हैं और '' के भविष्यवक्ताओं की तरह, भविष्य की घटनाओं की भविष्यवाणी करने का प्रयास करते हैं। यदि इस मामले में भी उन्हें अपमान सहना पड़े, तो वे संघर्ष में अपनी सहायता के लिए अपने स्वयं के राजकुमार—जो सभी बुराइयों की जड़ और केंद्र है—को पुकारते हैं।

कई बार हमारे पूजनीय पिता महान एंथनी ने एक शैतानी आकृति के अपने सामने प्रकट होने की बात कही, जो बिल्कुल वैसी ही थी जैसी यॉब की ईश्वर-प्रकाशित दृष्टि के सामने प्रकट हुई थी: 'उसकी आँखें भोर की पलकों जैसी हैं; उसके मुँह से लपटें निकलती हैं, आग की चिंगारियाँ उछलती हैं; उसकी नाक के छिद्रों से भाप निकलती है, जैसे उबलते बर्तन या कड़ाही से। उसकी साँस कोयलों को प्रज्वलित करती है, और उसके मुँह से आग की लपटें निकलती हैं' (अय्यूब 41:9-10)। इसी भयानक रूप में दुष्टात्माओं का राजकुमार प्रकट हुआ। वह एक क्षण में पूरी दुनिया को नष्ट करना चाहेगा, लेकिन वास्तव में उसकी कोई शक्ति नहीं है: ईश्वर की सर्वशक्तिमानता उसे वश में कर लेती है, जैसे एक लगाम जानवर को नियंत्रित करती है, या जैसे एक कैदी की स्वतंत्रता उसकी बेड़ियों द्वारा नष्ट कर दी जाती है। वह क्रॉस के चिह्न और धर्मात्माओं के पुण्य जीवन दोनों से डरता है, और संत एंथनी इस बारे में निम्नलिखित कहते हैं:

'प्रिय भाइयों, एक पवित्र जीवन और ईश्वर में एक निर्दोष विश्वास शैतान के विरुद्ध महान शक्ति रखता है। मेरे अनुभव पर विश्वास करो: शैतान उन लोगों की सतर्कता से भयभीत है जो ईश्वर की इच्छा के अनुसार जीते हैं, उनकी प्रार्थनाओं और उपवासों, उनकी नम्रता, स्वैच्छिक गरीबी, विनम्रता, विनय, प्रेम, आत्म-संयम, और सबसे बढ़कर – मसीह के प्रति उनके सच्चे प्रेम से। घमंडी साँप यह अच्छी तरह जानता है कि उसे धार्मिक लोगों के पैरों तले कुचला जाना है, परमेश्वर के वचन के अनुसार: *'देखो, मैं तुम्हें साँपों और बिच्छुओं पर, और शत्रु की सारी शक्ति पर पैर रखने का अधिकार देता हूँ'* (लूका 10:19)।

आदरणीय एंथनी ने अपने श्रोताओं के आध्यात्मिक लाभ के लिए निम्नलिखित बातें सुनाईं:

– राक्षसों ने कितनी बार सशस्त्र योद्धाओं के भेष में मुझ पर हमला किया है, और बिच्छुओं, घोड़ों, जानवरों और विभिन्न साँपों का रूप धारण करके, मुझ पर घेरा डाल दिया है और उस कमरे को भर दिया है जिसमें मैं था। लेकिन जब मैंने उनके विरुद्ध यह भजन गाना शुरू किया: *'कुछ रथों पर भरोसा करते हैं, और कुछ घोड़ों पर, परन्तु हम अपने प्रभु परमेश्वर के नाम पर घमण्ड करते हैं'* (भजन संहिता 19:8), तो वे परमेश्वर की कृपापूर्ण सहायता से भगा दिए गए और भाग गए। एक बार तो वे एक बहुत ही तेज रूप में भी प्रकट हुए और कहने लगे: 'हम तुझे प्रकाश देने आए हैं, एंथनी।' लेकिन मैंने उस शैतानी प्रकाश को न देखने के लिए अपनी आँखें बंद कर लीं, और मन ही मन ईश्वर से प्रार्थना करने लगा – और उनका अधर्मी प्रकाश बुझ गया। कुछ ही देर बाद, वे फिर से प्रकट हुए और मेरे सामने गाने लगे तथा धर्मग्रंथों के बारे में आपस में बहस करने लगे – लेकिन मैं मानो बहरा था और मैंने उनकी ओर कोई ध्यान नहीं दिया। ऐसा हुआ कि उन्होंने मेरे संपूर्ण मठ को हिला दिया, लेकिन मैंने निडर हृदय से प्रभु से प्रार्थना की। अक्सर मेरे चारों ओर चिल्लाहट, नृत्य और हंगामा सुनाई देता था; लेकिन जब मैंने गाना शुरू किया, तो उनकी चिल्लाहटें विलाप में बदल गईं, और मैंने प्रभु की महिमा की, जिन्होंने उनकी शक्ति को नष्ट कर दिया था और उनके उन्मत्तपन को समाप्त कर दिया था।

'मेरी बात मानो, मेरे बच्चों,' एंथनी ने अपनी बात जारी रखते हुए कहा, 'जब मैं आपसे यह कहता हूँ: एक बार मैंने शैतान को एक असाधारण विशालकाय के रूप में देखा, जिसने अपने बारे में यह कहने की हिम्मत की:

'मैं ईश्वर की शक्ति और बुद्धि हूँ,' और मुझसे ये शब्द कहे:

'एन्थनी, मुझसे जो कुछ भी तुम चाहो, माँगो, और मैं उसे तुम्हें दे दूँगा।'

लेकिन जवाब में मैंने उसके मुँह में थूक दिया और, मसीह के नाम से खुद को लैस करके, पूरी ताकत से उस पर झपट पड़ा, और यह विशालकाय, मानो, तुरंत ही पिघल गया और मेरे हाथों में गायब हो गया। जब मैं उपवास कर रहा था, तो वह फिर से एक भिक्षु के भेष में मेरे सामने प्रकट हुआ, जिसने मेरे लिए कुछ रोटी लाई और मुझे खाने के लिए आग्रह किया।

उसने कहा, 'तुम एक इंसान हो और मानवीय कमजोरी से मुक्त नहीं हो; इसलिए अपने शरीर को कुछ आराम दो, नहीं तो तुम बीमार पड़ सकते हो।'

लेकिन मुझे एहसास हुआ कि यह धूर्त सांप की चालाक धोखाधड़ी थी, और जब मैंने अपने सामान्य हथियार—मसीह के क्रूस के चिह्न—की ओर रुख किया, तो वह तुरंत धुएं की एक लकीर में बदल गया, जो खिड़की की ओर बहते हुए, उसमें से गायब हो गया। दैत्य अक्सर रेगिस्तान में मुझे सोने के एक भूतिया रूप में अचानक प्रकट होकर बहकाने की कोशिश करते थे, इस उम्मीद में कि वे मुझे या तो उसे देखकर या उसे छूने की अनुमति देकर प्रलोभित कर सकें। मैं इस तथ्य को नहीं छिपाऊँगा कि दैत्यों ने कई मौकों पर मुझे पीटना शुरू कर दिया। लेकिन मैंने उन पिटाइयों को धैर्यपूर्वक सहन किया और केवल यही कहा:

'मुझे मसीह के प्रेम से कोई अलग नहीं कर सकता!'

ये शब्द सुनते ही, वे एक-दूसरे पर क्रोधित हो उठते और अंत में, मेरे आदेश से नहीं, बल्कि ईश्वर के आदेश से, मसीह के वचनों के अनुसार भगा दिए जाते थे: *'मैंने शैतान को स्वर्ग से बिजली की तरह गिरते देखा'* (लूका 10:18)।

एक दिन, एक दानव ने मठ के द्वार पर दस्तक दी। बाहर जाकर, मैंने अपने सामने एक विशालकाय दानव को देखा, जिसका सिर आकाश तक पहुँचता हुआ प्रतीत हो रहा था। और जब मैंने पूछा:

'तुम कौन हो?'

उसने उत्तर दिया:

'मैं शैतान हूँ।'

मैंने पूछा:

'तुम यहाँ क्या कर रहे हो?'

– यह सब व्यर्थ है,' उसने जवाब दिया, 'सभी संन्यासी मुझ पर दोष लगाते हैं – और सभी ईसाई मुझे क्यों शाप देते हैं?

'और ऐसा होना ही चाहिए,' मैंने उत्तर दिया, 'क्योंकि वे अक्सर तुम्हारे द्वारा भटकाए जाते हैं।'

उसने जवाब दिया, 'मैं उन्हें कोई नुकसान नहीं पहुँचाता, लेकिन वे स्वयं एक-दूसरे के बीच भ्रम पैदा करते हैं। आखिरकार, मैं शापित और नीचे फेंका गया हूँ - क्या तुमने धर्मग्रंथ में यह नहीं सुना कि *"दुश्मन के पास कोई हथियार नहीं बचा, और तुमने शहरों को उजाड़ दिया है"* (भजन संहिता 9:7)?' और वास्तव में, मैं यहाँ हूँ, पहले ही दुनिया में किसी भी स्थान से वंचित; मेरे अधिकार में एक भी शहर नहीं बचा है, और मेरे पास कोई हथियार नहीं हैं; हर देश में सभी राष्ट्र मसीह के नाम का प्रचार करते हैं, और रेगिस्तान संन्यासियों से भरे हुए हैं। इसलिए उन्हें अपना ध्यान रखना चाहिए, और व्यर्थ में मुझे शाप न दें।

तब परमेश्वर की कृपा पर विस्मित होकर, मैंने उससे उत्तर दिया:

'मैं इस स्वीकारोक्ति को—जो आपसे आकर इतनी नई और अभूतपूर्व है—आपकी सत्यनिष्ठा को नहीं, जिसके आपके पास एक भी कण नहीं है, बल्कि केवल ईश्वर की शक्ति को श्रेय देता हूँ; तुम, जो झूठ के पिता हो, के लिए यह स्वीकार करना अनिवार्य था कि जो वास्तव में सच है, और इस बार, अपनी इच्छा के विरुद्ध, तुमने सच बोला, क्योंकि मसीह ने, अपने आगमन से, तुम्हारी शक्ति को निर्णायक रूप से उखाड़ फेंका है, और अपनी दैवीय महिमा से वंचित होकर, तुम अब हर तरह की अशुद्धता में एक दयनीय और शर्मनाक जीवन जी रहे हो।

– और मेरे ये शब्द कहते ही वह दानव तुरंत ही गायब हो गया।

इस प्रकार रेवरेंड फादर ने भाइयों से आग्रह किया कि वे राक्षसों की शक्ति से न डरें, जिसे मसीह ने वश में कर दिया है और उलट दिया है, बल्कि ईश्वर की मदद से, मसीह में विश्वास के द्वारा अपने हृदय को मजबूत करके, उनका साहसपूर्वक सामना करें। यह सुनकर, भाइयों ने आनंदित होकर अपने लाभ के लिए अपने पिता की आज्ञाओं को हृदय से ग्रहण किया। कुछ में, सद्गुण के लिए प्रयास प्रबल हुआ; दूसरों में, उनका पहले से कमजोर विश्वास दृढ़ हुआ; कुछ लोग मन के झूठे भ्रमों से मुक्त हो गए, जबकि दूसरों के दिल भयानक भूत-प्रेतों के प्रभाव से मुक्त हो गए; फिर भी सभी दैवीय छल-कपट को तुच्छ समझने के लिए एक जीवंत तत्परता से भर गए और वे विवेक की महान कृपा और आत्माओं के बीच अंतर करने की क्षमता से चकित थे, जो ईश्वर ने एंथनी को प्रदान की थी।

उस पहाड़ पर जहाँ आदरणीय एंथनी निवास करते थे, मठों की एक भीड़ उभर आई; ये, तंबुओं की तरह पहाड़ को ढँकते हुए, भजन-गायकों, धर्मग्रंथ-पाठकों, प्रार्थना करने वालों, उपवास करने वालों, और भविष्य के आशीर्वादों की प्रसन्नता से प्रतीक्षा करने और केवल दान देने के लिए परिश्रम करने वाले लोगों की दैवीय भीड़ से लबालब भरे हुए थे। उनके बीच पारस्परिक प्रेम और सद्भाव का राज था, और उनके निवास इस संसार के कोलाहल से परे एक शहर के समान थे, जो केवल धार्मिकता और धार्मिकता से परिपूर्ण थे। उनके बीच न तो कोई कामुक था, न कोई अपमान करने वाला, न कोई द्वेषी, न कोई बदनाम करने वाला, और न ही कोई बड़बड़ाने वाला था; वहाँ केवल संन्यासियों की भीड़ थी, जो एकमत होकर ईश्वर की सेवा कर रहे थे, ताकि जो कोई भी इन मठों और उनके जीवन-यापन के तरीके को देखता, वह शास्त्रों के वचनों को दोहराते हुए विस्मित हुए बिना न रह सके: *'हे याकूब, तेरे डेरे कितने सुन्दर हैं! हे इस्राएल, तेरे रहने के स्थान!' नदी के किनारे के बगीचों के समान, प्रभु द्वारा लगाए गए लोहबान के समान'* (गिनती 24:5–6)।

समय बीतता गया, और एंथनी ने दनि-प्रतदिनि बढ़ती लगन के साथ परश्रिम करना जारी रखा। इस बीच, अधर्मी सम्राट मैक्समियिन ([1106]) के हाथों मसीह की कलीसयिा पर एक भयंकर उत्पीड़न आरंभ हो गया।

और जब पवत्रि शहीदों को अलेक्ज़ेंड्रयिा ले जाया गया, तो पूजनीय एंथनी ने इस उद्देश्य के लिए अपना मठ छोड़कर मसीह के शहीदों के पदचन्हिों का अनुसरण कयिा।

उन्होंने कहा, 'चलो, हम अपने भाइयों के गौरवमय उत्सव में जाएँ, ताकि हम या तो स्वयं उसी के योग्य समझे जाएँ, या दूसरों को वश्विास में संघर्ष करते देखें।'

अपने प्रेम और सद्भावना के कारण, आदरणीय वास्तव में एक शहीद थे। लेकनि यद्यपि वह मसीह के नाम के लिए पीड़ा सहने की इच्छा रखते थे, फरि भी शहादत उनका भाग्य नहीं थी, क्योंकि प्रभु ने अपने झुंड के लाभ के लिए एंथनी को एक शक्षिक और मार्गदर्शक के रूप में संरक्षति रखा। उन्होंने पवत्रि शहीदों के प्रति अपनी भक्ति का खुले तौर पर प्रदर्शन कयिा: अटूट प्रेम के बंधनों से उनसे बँधे हुए, उन्होंने जब वे बेड़यिों में जकड़े हुए थे तो उनकी सेवा की, उनके मुकदमे में उनके साथ गए, उनके अत्याचारयिों के सामने उपस्थति हुए और यह तथ्य छपिाए बनिा कि वह एक ईसाई थे, ऐसा प्रतीत होता था कि वह इस तरह से मसीह के लिए पीड़ा सहने की सक्रयि रूप से तलाश कर रहे थे। हालाँकि, कसिी ने उस पर हाथ उठाने की हम्मित नहीं की, क्योंकि ईश्वर की यही इच्छा थी, जन्होंने एंथनी का जीवन बचाया, जो लोगों के लिए उसकी शहीद मृत्यु से कहीं अधकि लाभदायक था। अलेक्ज़ेंड्रयिा के महाधर्माध्यक्ष, परम पवत्रि पतरस के शहीद होने और उत्पीड़न के समाप्त हो जाने के बाद, धन्य एंथनी अपने पूर्व मठ में लौट आए और अपने शेष जीवन में वश्विास और आशा में पवत्रि शहीदों का अनुकरण करते हुए, वशिेष रूप से कठोर तपस्या और नरिंतर सतर्कता से अपने शरीर को थका दयिा। उनका अंतर्वस्त्र बाल-कपड़ा था, और उनका बाहरी वस्त्र चमड़े का लबादा था। वे अपने शरीर को कभी धोते नहीं थे, सविाय शायद तब जब उन्हें पानी पार करना होता था, और अपनी मृत्यु तक कसिी ने उन्हें नग्न नहीं देखा।

एक बार, जब वह एकांत में रह रहे थे और अपनी कोठरी में खुद को बंद करके कसिी आगंतुक को नहीं मलि रहे थे, तो सैन्य कमांडर मार्टनियिन अपनी बेटी के साथ उनके पास आए, जो एक राक्षस के वश में थी। उन्होंने रेवरेंड फादर से प्रार्थना करने और अपनी पीड़ति बेटी की मदद करने के लिए बाहर आने का आग्रह करते हुए दरवाजा खटखटाना शुरू कर दयिा। एंथनी ने दरवाजा खोले बनिा, ऊपर से झाँका और कहा:

'आप मेरी मदद क्यों चाहते हैं? मैं भी एक नश्वर प्राणी हूँ, ठीक आपकी तरह; हम दोनों स्वभाव से समान रूप से दुर्बल हैं। यदि आप उस मसीह में वश्विास रखते हैं, जसिकी मैं सेवा करता हूँ, तो जाइए, अपनी आस्था के अनुसार परमेश्वर से प्रार्थना कीजिए, और आपकी बेटी चंगी हो जाएगी।'

मार्टनियिन ने वश्विास कयिा, मसीह के नाम का आह्वान कयिा, और अपनी बेटी के साथ घर चला गया, जो तुरंत चंगी हो गई। प्रभु ने अपने सेवक एंथनी के द्वारा और भी कई चमत्कार कए। सुसमाचार में उन्होंने वादा कयिा: *'माँगो, तो तुम्हें दयिा जाएगा'* (मत्ती 7:7), और इसके अनुसार, अपनी कृपा के योग्य एक मनुष्य को पाकर, उन्होंने उसे अपनी चमत्कारकि शक्ति से वंचति नहीं कयिा: कई पशिाचग्रस्त लोग उसकी कोठरी के द्वार पर लेट जाते थे – क्योंकि उसके दरवाज़े बंद रहते थे – और वे सभी उसकी दैवीय प्रार्थनाओं के द्वारा चंगे हो गए। एंथनी ने देखा कि आगंतुकों की यह भीड़ उसे उस मौन को बनाए रखने से रोक रही थी जसिे वह बहुत पसंद करता था; दूसरी ओर, उसे डर था कि उसके माध्यम से कए गए चमत्कारों की प्रचुरता से उसका अपना मन घमंडी हो सकता है - और इसलिए उसने अपर थेबाइड जाने का संकल्प लयिा, जहाँ वह कसिी के लिए अज्ञात रहेगा। कुछ रोटी लेकर, वह नदी के कनिारे बैठ गया और दूसरी तरफ ले जाने के लिए एक नाव का इंतज़ार करने लगा। अचानक उसने ऊपर से एक आवाज़ सुनी जो पूछ रही थी:

'एंथनी! तुम कहाँ जा रहे हो, और क्यों?'

अवचिलति, क्योंकि यह पहली बार नहीं था जब उसने ऐसी आवाज़ सुनी थी, एंथनी ने बनिा कसिी हचिकचिाहट के जवाब दयिा:

'चूंकि यहाँ के लोग मुझे चैन से नहीं रहने देते, इसलिए मैंने ऊपरी थेबाइड के लिए नकिलने का नर्णिय लयिा है, ताकि वे मुझे मेरी क्षमता से परे का काम करने के लिए मजबूर न करें, और ताकि वे मेरी मौनता में खलल न डालें।'

[1106] मैक्समिनिस डाज़ा एक पूर्वी रोमन सम्राट था; उसने 306 से 313 तक सीरयिा और मस्रि पर शासन कयिा। ईसाइयों के खलिाफ उसने भड़काया था वह क्रूर उत्पीड़न 311 में हुआ था।

'अगर तुम थेबाइड जाओगे,' आवाज़ ने जारी रखा, 'तो तुम्हें उन्हीं कठनिाइयों को और भी अधकि मात्रा में सहना होगा। लेकनि अगर तुम सचमुच खुद को कठोर एकांत में समर्पति करना चाहते हो, तो अभी भीतरी मरुभूमकि लिए नकिल पड़ो।'

एंटनी ने पूछा, 'लेकनि वहाँ का रास्ता मुझे कौन दखिाएगा, क्योंकि मैं उस जगह से अनजान हूँ?'

जवाब में, उस आवाज़ ने उसे सरासेंस की ओर नरि्देशति कयि, जो आमतौर पर व्यापार के लिए इस मार्ग से मसि्र की यात्रा करते थे। वे अब वापस आ रहे थे, और एंथनी ने उनके पास जाकर उनसे उसे अपने साथ ले जाने और उसे रेगसि्तान तक पहुँचाने के लिए कहा। उन्होंने खुशी-खुशी सहमति दे दी, क्योंकि उन्होंने एंथनी में स्वयं ईश्वर द्वारा भेजा गया एक साथी देखा। सारासेंस के साथ तीन दनि और तीन रातों की यात्रा करने के बाद, धन्य एंथनी एक बहुत ऊँचे पहाड़ पर पहुँचे, जसिके नीचे से मीठे पानी का एक झरना बह रहा था; पहाड़ एक छोटी सी मैदान से घरिा हुआ था जसि पर कई जंगली खजूर के पेड़ उगे हुए थे। एंथनी को यह जगह इतनी पसंद आई - मानो इसे स्वयं ईश्वर ने उनके लिए ही नरि्धारति कयि हो - और जसिने नदी के कनिारे अदृश्य रूप से उनसे बात की थी, उसी ने वास्तव में उन्हें इस पहाड़ को अपना नविास स्थान चुनने के लिए प्रेरति कयि। अपने साथयिों से कुछ रोटी लेकर, वह इस पहाड़ पर अकेले रहने लगा, और उसके साथ कोई और नहीं रहता था। सारासेनों ने, उसका तपस्वी जीवन देखकर, उसके लिए रोटी लाना शुरू कर दयि; कभी-कभी उसे जंगली खजूर के पेड़ों के खजूरों में भी कुछ मामूली सांत्वना मलिती थी। बाद में, जब भाइयों को उसके ठकिाने के बारे में पता चला, तो वे उसे प्यार से भोजन भेजने लगे, जैसे बच्चे पति को भेजते हैं। लेकनि एंथनी ने, यह देखकर कि इससे भाइयों को परेशानी हो रही थी और उन्हें ऐसी परेशानी से बचाने की इच्छा रखते हुए, उनसे एक से कुदाल और थोड़ी मात्रा में बीज लाने के लिए कहा। जब उस व्यक्ति ने ऐसा कर दयि, तो एंथनी पहाड़ के चारों ओर घूमे और खुदाई तथा बोआई के लिए एक उपयुक्त छोटी सी जगह चुनी, क्योंकि उस पर सचिाई के लिए ऊपर से पानी लाया जा सकता था। वहाँ मट्टिी पलटने के बाद, उन्होंने बीज बोए, और उस समय से उन्हें हर साल अपनी रोटी मलिती रही; काम करते हुए, उन्हें इस बात की खुशी होती थी कि वे कसिी पर बोझ बने बनि, अपने हाथों की मेहनत से रेगसि्तान में अपना पेट भर पा रहे थे। लेकनि जब वहाँ बहुत से लोग उनसे मलिने आने लगे, तो उन्होंने अपने आगंतुकों के मनोरंजन के लिए कुछ और सब्जयिाँ—फलयिाँ, मटर और इसी तरह की अन्य चीजें—बोईं। शुरू में, जंगली जानवर यहाँ पर पानी पीने आने लगे, और सब्जयिों को रौंदते और खा जाते थे। एक दनि, जब वे यहाँ हमेशा की तरह इकट्ठा हुए, तो पूजनीय ने उनमें से एक को पकड़ा और उसे छड़ी से हल्का सा मारकर, उन सभी से कहा:

'तुम मुझे नुकसान क्यों पहुँचाते हो, जबकि तुम पर स्वयं मेरा कोई अत्याचार नहीं हुआ है? मैं प्रभु के नाम पर तुमसे आज्ञा करता हूँ: मुझसे दूर हो जाओ और इस स्थान के पास मत आना।'

और उस समय के बाद से, आज्ञा का पालन करते हुए, वे जानवर फरि कभी नहीं आए। इस प्रकार रेवरेंड फादर एकांत में रहे, प्रार्थना और अनवरत तपस्या में स्वयं को समर्पति कर दयि। हालाँकि, बड़े भाई के प्रति प्रेम से प्रेरति होकर, भाई लोग उनके पास आते थे और कसिी न कसिी तरह उनकी सेवा करने का प्रयास करते थे। उनमें से प्रत्येक अपने साथ जैतून और जैतून का तेल, या मसूर की दाल और अन्य सब्जयिां लाता था, और उनसे अपने शरीर को मजबूत करने का आग्रह करता था, जो उम्र के साथ कमजोर हो गए थे। हमें उनके पास आने वालों से पता चलता है कि वहाँ रहते हुए उस धन्य व्यक्ति को कतिनी परीक्षाओं को सहन करना पड़ा होगा!

सचमुच, प्रेरति के वचन उनमें पूरे हुए: *'क्योंकि हमारा संग्राम लोहू और □□□ के साथ नहीं, परन्तु स्वर्ग में दुष्टात्माओं के साथ है* (इफसियिों 6:12)। वहाँ कतिनी भयानक चीखें सुनी गईं—जैसे भीड़ के जयकारे और हथयिारों की खनखनाहट—पूरा पहाड़ दानवों से भरा हुआ प्रतीत होता था! लेकनि पूजनीय एंथनी एक कलि के समान थे और, अकेले ही, उन्होंने उन सभी पर वजिय प्राप्त की, घुटनों के बल प्रार्थना करके राक्षसों के पूरे झुंड को खदेड़ दयि। और यह वास्तव में आश्चर्य की बात है कि कैसे एक अकेला व्यक्ति एक नरि्जन रेगसि्तान में रह सकता था, न तो राक्षसों के लगातार हमलों से डरते हुए और न ही चार पैरों वाले जानवरों और जहरीले सरीसृपों की इतनी बड़ी संख्या से। दाऊद ने सही ही गाया: *'जो प्रभु पर भरोसा रखते हैं, वे सयिोन पर्वत के समान हैं, जो हलिता नहीं; वह सदा के लिए स्थरि रहता है'* (भजन संहति 124:1)।

एक रात, जब एंथनी प्रभु की सेवा में प्रार्थना और जागरण कर रहे थे, तो उन्होंने अचानक देखा कि उनका पूरा तपस्थल और आसपास का रेगसि्तान भी जानवरों से भर गया था, जो अपने मुँह चौड़े करके खोल रहे थे और अपने दाँत पीस रहे थे। लेकनि पूजनीय पति ने, तुरंत इसे शत्रु—शैतान—की एक चाल के रूप में पहचान लयि और कहा:

'यदि प्रभु ने मुझे तुम पर अधिकार दिया है, तो मैं तुम्हारे द्वारा निगल लिए जाने के लिए तैयार हूँ; परन्तु यदि तुम शैतान के प्रलोभन से प्रकट हुए हो, तो भाग जाओ, क्योंकि मैं मसीह का सेवक हूँ।'

और, पूज्य के शब्दों पर, सभी जानवर ईश्वर की शक्ति से भागकर भाग गए।

कुछ दिनों बाद, उसी दुश्मन के साथ एक नया संघर्ष हुआ। संत की आदत थी कि जो भी भेंट लेकर उनके पास आता था, उसे वे एक स्मृति-चिन्ह के रूप में एक छोटा सा उपहार देते थे, और इस उद्देश्य के लिए वे एक टोकरी बुन रहे थे। जब वे उस पट्टी को खींच रहे थे जिससे वे टोकरी बुन रहे थे, तो उन्हें अचानक लगा कि कोई उसे पकड़े हुए है। रेवरेंड उठे और उन्होंने एक ऐसे जानवर को देखा जिसकी कमर से ऊपर का हिस्सा मनुष्य जैसा था, जबकि शरीर का निचला आधा हिस्सा गधे जैसा था। एंथनी ने खुद पर क्रॉस का चिह्न बनाते हुए कहा:

'मैं मसीह का सेवक हूँ; अगर तुम्हें मुझ पर भेजा गया है, तो मैं यहाँ हूँ—मैं भागूँगा नहीं।'

और तुरंत ही वह आकृति, अन्य कई राक्षसों के साथ, भाग खड़ी हुई और गायब हो गई।

कुछ समय बाद, भाइयों ने रेवरेंड फादर से मिलने का आग्रह किया। उनके प्रति अपने पितृत्वपूर्ण प्रेम से प्रेरित होकर, एंथनी ने उनके साथ एक ऊँट पर रोटी और पानी लाद दिया – क्योंकि उन्हें एक निर्जन क्षेत्र से यात्रा करनी थी – और अपनी यात्रा पर निकल पड़े। रास्ते में, उनके पास लाया गया सारा पानी खत्म हो गया, और तीव्र गर्मी के कारण, यात्रियों का प्यास से मरना तय था। उन्होंने आस-पास के इलाके में व्यर्थ ही खोज की, गड्ढों में बारिश के पानी के किसी भी अवशेष की तलाश में; ऊँट भी प्यास और तपती धूप से पहले ही मरने की कगार पर था। ऐसी भयानक स्थिति में, बड़े भाई ने, जैसा कि उनका रिवाज था, मदद के लिए प्रार्थना की। वे अपने साथियों से थोड़ी दूरी पर गए, घुटने टेककर उन्होंने अपने हाथ आसमान की ओर उठाए और प्रार्थना करने लगे। और तुरंत ही, उसी जगह पर पानी का एक झरना फूट पड़ा। अपनी प्यास बुझाने और पानी का भंडार साथ में लेकर, यात्री सुरक्षित रूप से अपने भाइयों के पास पहुँचे जो उनका इंतजार कर रहे थे। वे सब इकट्ठा होकर बूढ़े से मिलने बाहर गए और सम्मानपूर्वक उन्हें चूमकर उनका आशीर्वाद लिया; जबकि उन्होंने, मानो पहाड़ से उनके लिए व्यवस्था या कोई अनमोल उपहार उतार लाए हों, उन्हें आध्यात्मिक पोषण प्रदान किया – बड़ों के कर्मों की प्रशंसा की और छोटे लोगों को उपदेश दिया।

वहाँ कुछ समय रहने के बाद, वह जल्द ही अपने पहाड़ पर लौट आए। अशुद्ध आत्माओं पर अधिकार रखने वाले, उस पूजनीय पिता ने कई ग्रसित लोगों को ठीक किया, और उन पर से राक्षसों को भगा दिया। अथेनागोरस महान ने यह सब एंथनी की जीवनी में विस्तार से वर्णित किया है। अपनी प्रार्थनाओं के द्वारा, आदरणीय पिता ने कई अन्य बीमारियों का भी इलाज किया; और उनमें भविष्यवाणी का वरदान भी था – वे भविष्य की भविष्यवाणी कर सकते थे और दूर की चीजों को भी ऐसे देख सकते थे जैसे वे उनकी आँखों के सामने हों। एक बार, दो भाई दूर से परमपावन से मिलने जा रहे थे; रास्ते में, उनके पास पानी पूरी तरह से खत्म हो गया, और उनमें से एक, ईश्वर की इच्छा से, पहले ही मर चुका था, जबकि दूसरा जमीन पर थका-हार कर पड़ा था, मृत्यु की प्रतीक्षा कर रहा था। एंथनी, जो उस समय पहाड़ पर थे, ने जल्दी से दो भिक्षुओं को बुलाया और उन्हें एक पात्र पानी साथ लेकर मिस्र की ओर जाने वाले रास्ते पर तुरंत निकल पड़ने का आदेश दिया, यह कहते हुए:

'एक भाई जो इसी मार्ग से आ रहा था, वह पहले ही प्रभु के पास चला गया है; दूसरा भी मर जाएगा यदि तुम उसकी सहायता के लिए जल्दी नहीं करते।'

भिक्षुओं ने, जैसा कि उन्होंने निर्देश दिया था, जल्दी से प्रस्थान किया और सब कुछ ठीक वैसा ही पाया जैसा कि वरिष्ठ ने कहा था। उन्होंने उस व्यक्ति को, जो प्यास से बेहोश हो रहा था, कुछ पानी पिलाया और उसे अपने साथ वापस ले आए, जबकि उन्होंने मरने वाले को दफना दिया। एक अन्य अवसर पर, वे एक पहाड़ पर बैठे थे और स्वर्ग की ओर दृष्टि उठाकर उन्होंने एक आत्मा को स्वर्ग की ओर बढ़ते हुए देखा, जिसके साथ देवदूत उस पर प्रसन्न हो रहे थे। इस पर आश्चर्यचकित होकर, पूजनीय पिता ने प्रार्थना की कि इस दृष्टि का अर्थ उन्हें प्रकट हो जाए। और एक आवाज़ ने उनसे कहा:

'यह नित्रिया में रहने वाले भिक्षु अम्मोनियस की आत्मा है।'

अम्मोनियस एक वृद्ध थे, जिन्होंने अपनी प्रारंभिक युवावस्था से लेकर मृत्यु तक कठोर तपस्या का जीवन व्यतीत किया, जैसा कि उनकी जीवनी (दिनांक 4 अक्टूबर) से स्पष्ट है; और जिस पहाड़ पर एंथनी रहते थे, उससे नित्रिया तक की दूरी तेरह दिन की यात्रा थी। एंथनी के शिष्यों ने, अपने वृद्ध को आनंदित और विस्मित देखकर, उनसे उनके आनंद और आश्चर्य का कारण बताने का आग्रह किया।

'आज अम्मोनियिस का नधिन हो गया है,' वृद्ध ने उत्तर दयिा।

वे अम्मोनियिस को अच्छी तरह जानते थे, क्योंकि वह अक्सर यहाँ आता था। तारीख नोट करने के बाद, एंथनी के शष्यिों ने तीस दनि बाद आए भाइयों से सवाल करना शुरू कयिा और उनसे जाना कि अम्मोनियिस वास्तव में उसी दनि और उसी घड़ी में नधिन कर गया था जब वृद्ध ने उसकी आत्मा को स्वर्ग में जाते हुए देखा था[1107] । दोनों समूह एंथनी की आत्मा की पवत्रिता पर बहुत चकति हुए, जसिने उसे इतनी दूर हुई घटना के बारे में इतनी जल्दी जानने में सक्षम बनाया था।

एक दनि, लगभग नौ बजे, आदरणीय संत भोजन से पहले प्रार्थना करने उठे, तो वे समाधि में लीन हो गए और उन्होंने खुद को हवा में उड़ते हुए देखा। उसी क्षण, वायु के राक्षसों ने उनका मार्ग रोकने और उनकी उड़ान में बाधा डालने का प्रयास कयिा। लेकनि स्वर्गदूतों ने उनका वरिोध कयिा और देरी के कारण जानने की मांग की। राक्षसों ने एंथनी के जन्म के क्षण से ही उसके पापों का वर्णन करना शुरू कर दयिा। लेकनि स्वर्गदूतों ने उन्हें रोक दयिा और कहा:

'जो जन्म से था, उसे प्रभु ने मटिा दयिा है; लेकनि यदि आप जानते हैं कि उसने एक भक्षिु बनने और ईश्वर के प्रति अपने संकल्प लेने के समय से कोई पाप कयिा है, तो आप उन पर बात कर सकते हैं।'

तब राक्षसों ने, अपनी दुष्टता में, एंथनी पर झूठे पापों का आरोप लगाकर उसकी बदनामी करनी शुरू कर दी; और जब यह सब बेकार गया, तो एंथनी के लिए रास्ता साफ हो गया। होश में आते ही, एंथनी ने देखा कि वह उसी जगह पर खड़ा था। उस दर्शन से स्तब्ध होकर, वह भोजन भूल गया और पूरी रात उत्कट प्रार्थना, आहों और इस बात पर मनन करते हुए बताई कि एक व्यक्ति के कतिने दुश्मन होते हैं और स्वर्ग तक वायुमंडल के माध्यम से आत्मा की यात्रा कतिनी कठनि होती है।

एक रात उन्होंने ऊपर से एक आवाज़ सुनी, जसिने उनसे कहा:

'उठो, एंथनी, बाहर जाओ और देखो!'

एंथनी बाहर गया और ऊपर की ओर अपनी आँखें उठाकर उसने एक भयानक आकृति देखी जो इतनी लंबी थी कि उसका सरि बादलों को छू रहा था; उसने अन्य जीव भी देखे, जो पंखों वाले प्रतीत होते थे, और वे स्वर्ग की ओर उठने का प्रयास कर रहे थे, लेकनि उस भयानक वशिालकाय ने अपनी बाहें फैला दीं और उनका रास्ता रोकने की कोशशि की; वास्तव में, उसने उनमें से कुछ को पकड़ लयिा और उन्हें नीचे फेंक दयिा, जबकि अन्य, उसके पास से उड़ते हुए, नडिर होकर ऊपर की ओर बढ़ रहे थे, और ऐसे प्राणयिों पर वह केवल असहाय क्रोध से दांत पीस सकता था। और एक बार फरि एंथनी ने एक आवाज़ सुनी:

'जो तुम देख रहे हो उसे समझने की कोशशि करो!'

तब उसका मन खुला, और वह समझने लगा कि ये स्वर्ग की ओर बढ़ती मानव आत्माएँ थीं, जबकि शैतान उन्हें रोक रहा था; वास्तव में, वह पापयिों को रोकने और उन्हें अपनी शक्ति में रखने में सफल रहा, लेकनि उसकी शक्ति संतों तक नहीं फैली, और वह उन्हें रोक नहीं सका। रेवरेंड ने अपने भाइयों को ये प्रकटीकरण अहंकार के कारण नहीं, बल्कि उनके लाभ के लिए बताए। इसके अलावा, जब भी वे उन्हें कसिी बात से हैरान देखते, तो वे उनसे उस दर्शन के बारे में बताने का आग्रह करते जो उन्हें हुआ था। उनका चेहरा हमेशा एक वशिेष अनुग्रह से प्रकाशति रहता था और इतनी चमक से दमकता था कि, भले ही कसिी ने उन्हें पहले कभी न देखा हो, वे उन्हें कई अन्य लोगों के बीच तुरंत पहचान लेते थे: संत की हृदय की पवत्रिता उनके मुख के आनंद में झलकती थी, और, ईश्वर के दर्शन से भीतर से प्रकाशति होकर, वे हमेशा आनंदति रहते थे, जैसा लखिा है: *'प्रसन्न हृदय मुख को प्रसन्न बनाता है'* (नीतविचन 15:13)।

जैसे वह दखिावे में मलिनसार थे, वैसे ही वे शुद्ध और वशि्वास में अद्भुत रूप से दृढ़ थे; उन्होंने कभी धर्मत्यागयिों का पक्ष नहीं लयिा, क्योंकि वे उनके वशि्वास के जानबूझकर कए गए वकिृतकिरण को देखते थे, और कभी भी मनीकयिनों[1108] या अन्य वधिर्मयिों के साथ मैत्रीपूर्ण बातचीत नहीं की, सवाय उन मामलों के जब उन्होंने अपनी पछिली

[1107] आदरणीय अम्मोनियिस, जनि्हें अम्मोन के नाम से भी जाना जाता है, 22 वर्षों तक नत्रियिाई रेगस्तिान में एक तपस्वी के रूप में रहे; उनकी मृत्यु लगभग 350 ईस्वी में हुई। उनका पर्व दविस 4 अक्टूबर को मनाया जाता है।

[1108] मनीकवाद एक वधिर्म है जो ईसाई धर्म को ज़रातुष्ट्र के फ़ारसी धर्म के सद्धिांतों के साथ मलिाने के प्रयास के प्रभाव में उत्पन्न हुआ, जो द्वैतवाद का प्रचार करता था, अर्थात् दो स्वतंत्र सद्धिांतों या क्षेत्रों के शाश्वत अस्तत्वि का। मनीकयि शक्षिा के अनुसार, मसीह केवल प्रकाश युग (आत्मा) हैं, जो प्रकाश के पति से एक प्रवाह के माध्यम से उत्पन्न हुए। उसका आधा हस्सिा, मानो, पदार्थ में समा गया और दृश्यमान दुनयिा की आत्मा बना, जसि तथाकथति पीड़ति यीशु कहा जाता है; दूसरा आधा हस्सिा, एक अन्य युग, जीवन-दायक आत्मा की सहायता से, पदार्थ से मुक्त हो गया और सूर्य में नविास करने लगा; यही तथाकथति अकथनीय यीशु है। मनीकयि शक्षिा के अनुसार, मसीह का अवतार,

गलती से इनकार करने की इच्छा दिखाई; रेवरेंड ने स्पष्ट रूप से कहा कि विधर्मी लोगों के साथ मित्रता और बातचीत आत्मा के लिए हानिकारक है। सबसे बढ़कर, उन्होंने एरियनों से दूरी बनाई, और सभी ऑर्थोडॉक्स ईसाइयों को उनके साथ किसी भी प्रकार का संबंध रखने से मना किया। जब कुछ एरियन उनके पास आए और उनसे बातचीत करके उन्होंने उनके विधर्म को पहचान लिया, तो वे तुरंत पहाड़ से नीचे भाग गए, कहते हुए:

'उनके शब्द स्वयं साँपों से भी अधिक विषैले हैं।'

जब एक बार एरियनों ने यह झूठी अफवाह फैलाई कि एंथनी उनके विचारों से सहमत हैं, तो आदरणीय संत उनकी इस हिम्मत पर चकित हो गए और धार्मिक क्रोध से आग-बबूला होकर अलेक्जेंड्रिया चले गए; वहाँ, आर्चबिशप और सभी लोगों के सामने, उन्होंने एरियनों की निंदा की, उन्हें मसीह-विरोधी के अग्रदूत कहा, और परमेश्वर के पुत्र को एक प्राणी के रूप में नहीं, बल्कि पिता, जो संसार के सृष्टिकर्ता हैं, के समतुल्य स्वीकार किया।[1109] ; और सभी ऑर्थोडॉक्स ईसाई इस बात से अत्यंत प्रसन्न हुए कि मसीह के विरोधी इस विधर्म को चर्च के ऐसे स्तंभ द्वारा निंदा किया गया था। तब सभी लोग, लिंग या आयु की परवाह किए बिना—न केवल ईसाई, बल्कि विधर्मी, और यहाँ तक कि स्वयं मूर्तिपूजक भी—सम्माननीय के चारों ओर इकट्ठा हो गए, यह कहते हुए:

'हम ईश्वर के पुरुष को देखना चाहते हैं।'

इस प्रकार सभी एंथोनी को संबोधित करते थे, और उनके नाम की इतनी असाधारण प्रसिद्धि थी कि लोग अपने लिए महान लाभ प्राप्त करने की आशा में उनके वस्त्रों के किनारे को भी छूने का प्रयास करते थे। यह बताना असंभव है कि उस समय कितने पवित्रात्मा ग्रस्त लोग और विभिन्न बीमारियों से पीड़ित लोग चंगे हुए, कितने मूर्तिपूजक पूजा स्थल बंद हुए, और कितने मूर्तिपूजक मसीह के झुंड में शामिल हुए – यह सब शहर में एंथनी की उपस्थिति, उनके शब्दों और उनके चमत्कारों के कारण हुआ[1110] । कुछ लोगों ने, यह सोचकर कि लोगों की भीड़ संत के लिए एक बाधा थी, भीड़ को उनसे दूर भगाना शुरू कर दिया; लेकिन उन्होंने नम्रता से उनसे कहा:

'मेरे पास आने वालों की संख्या उन राक्षसों के झुंड से अधिक नहीं है, जिनके साथ हम पहाड़ पर अनवरत युद्ध करते हैं।'

इस जीवनी के लेखक, संत अथेनासियस महान, कहते हैं: जब एंथनी अपने निवास पर लौट रहे थे, और हम उन्हें विदा करने गए, तो पीछे से एक महिला ने पुकारा:

'रुकिए, हे ईश्वर के पुरुष, मैं आपसे विनती करती हूँ—रुकिए! मेरी बेटी एक राक्षस द्वारा क्रूरतापूर्वक पीड़ित की जा रही है। मैं आपसे विनती करती हूँ—रुकिए, कहीं मैं भी आपके पीछे दौड़कर दुर्भाग्य का शिकार न हो जाऊँ!'

इन शब्दों और हमारी विनतियों से प्रभावित होकर, उस अद्भुत वृद्ध ने रुककर और आगे नहीं बढ़े। जब वह महिला पास आई, और उसकी बेटी को अशुद्ध आत्मा ने ज़मीन पर फेंक दिया था, तो एंथनी ने प्रभु यीशु मसीह से चुपचाप प्रार्थना की – और तुरंत ही अशुद्ध आत्मा उस बीमार लड़की से निकल गया। उसकी माँ और सभी लोगों ने परमेश्वर का धन्यवाद किया; एंथनी स्वयं इस बात पर प्रसन्न हुआ कि वह अपने प्रिय मरुभूमि में लौट रहा था।

पीड़ित यीशु को मुक्त करने के लिए अचंचल यीशु का सूर्य से अवतरण है, जिनके प्रकाशमान कणों को शैतान ने, मानो, एकत्र करके, उन पर आसान नियंत्रण के लिए, एक मानव के रूप में बंद कर दिया था। इस शिक्षा के अनुसार, मसीह का अवतार केवल मायाजाल था (डॉकेटिज़्म)। नैतिक दृष्टिकोण से, मनीकोईवाद ने पदार्थ से मुक्त होने के लिए, स्वयं के भीतर शरीर को धीरे-धीरे वश में करने के माध्यम से, पदार्थ के खिलाफ संघर्ष का उपदेश दिया। मनीकोईवाद का पाखंड विशेष रूप से चौथी और पांचवीं शताब्दी में व्यापक था।

[1109] एंथनी ने कहा, 'ईश्वर का पुत्र न तो कोई प्राणी है और न ही सृजित प्राणियों में से एक, बल्कि वह पिता के अस्तित्व का सह-शाश्वत वचन और ज्ञान है।' अरिअनों के साथ किसी भी प्रकार का संगत-संपर्क न रखो, क्योंकि प्रकाश का अंधकार के साथ क्या मेल है? (2 कुरिन्थियों 6:14)। यदि आप धार्मिकता का पालन करते हैं, तो आप मसीही हैं; परन्तु जो परमेश्वर के पुत्र और पिता से उत्पन्न वचन को एक प्राणी कहते हैं, वे मूर्तिपूजकों से भिन्न नहीं हैं, क्योंकि वे उस प्राणी की सेवा करते हैं, न कि उस परमेश्वर की जिसने उसे बनाया। 'मेरा विश्वास करो,' एंथनी ने अपनी बात जारी रखी, 'दुनिया के तत्व भी इस बात से क्रोधित हैं, और सारी सृष्टि अरिअनों की मूर्खता पर कराहती है, क्योंकि वे अपने प्रभु—जिनके द्वारा सभी चीजें बनाई गईं—को अपने बराबर का मानते हैं।' उस समय, परम पूजनीय एंथनी की उम्र 104 वर्ष थी। इससे पहले भी, जब अरिअस का संप्रदाय पहली बार उभरा था, एंथनी सत्य के रक्षक के रूप में उभरे: 335 में उन्होंने एरियन बिशप ग्रेगरी और अलेक्जेंड्रिया के नागरिक गवर्नर – जो स्वयं एक विधर्मी था – को फटकार के पत्र लिखे; उसी समय, उन्होंने सम्राट कॉन्स्टेंटिन को अलेक्जेंड्रिया के एथनासियस की ओर से मध्यस्थता करते हुए लिखा, जिन्हें तब उनके पद से हटा दिया गया था।

[1110] अलेक्जेंड्रिया के संत अथानासियस की गवाही के अनुसार, उन कुछ दिनों के दौरान जब परम आदरणीय अंथोनी अलेक्जेंड्रिया में रहे, तो मूर्तिपूजकों के ईसाई बनने वालों की संख्या पूरे एक वर्ष में धर्मांतरित हुए लोगों की संख्या से भी अधिक हो गई।

रेवरेंड फादर के बारे में एक और उल्लेखनीय बात यह थी कि, यद्यपि उन्होंने कभी पढ़ना या लिखना नहीं सीखा था, फिर भी वे बुद्धिमान और अत्यधिक विवेकी थे। एक बार, यूनानी मूल के दो मूर्तिपूजक दार्शनिक, एंथनी की परीक्षा लेने और, यदि संभव हो तो, ज्ञान में उससे आगे निकलने के लिए आए। वह एक पहाड़ की चोटी पर था और, जब उसने उन्हें देखा, तो एक ही नजर में यह समझते हुए कि वे कौन थे, वह खुद उनसे मिलने के लिए बाहर गया और एक दुभाषिए के माध्यम से पूछा:

'हे बुद्धिमान पुरुषो, तुमने एक मूर्ख से मिलने के लिए इतनी दूर से यात्रा करने का कष्ट क्यों उठाया, और तुम समझ की कमी वाले व्यक्ति से बहस क्यों करना चाहते हो?'

'हम आपको मूर्ख नहीं मानते, बल्कि इसके विपरीत, बहुत बुद्धिमान मानते हैं,' उन्होंने उत्तर दिया।

'यदि आप एक मूर्ख के पास आए हैं,' संत ने एक बार फिर निडर होकर उनसे कहा, 'तो आपकी मेहनत व्यर्थ है। लेकिन यदि, जैसा आप कहते हैं, मैं एक ज्ञानी व्यक्ति हूँ, तो आपको उसी का अनुसरण करना चाहिए जिसे आप ऋषि कहते हैं, क्योंकि मनुष्य को बुद्धिमानों और धर्मात्माओं का अनुकरण करना चाहिए। यदि मैं आप लोगों के पास आता, तो मुझे आप लोगों का अनुकरण करना पड़ता; लेकिन चूँकि आप एक ऋषि के रूप में मेरे पास आए हैं, तो मेरी तरह ईसाई बनें।"

और दार्शनिक चले गए, वे उसके तीव्र बुद्धि और दुष्टात्माओं को भगाने की शक्ति, जिसे उन्होंने अपनी आँखों से देखा था, दोनों पर चकित थे।

इन दार्शनिकों के समान अन्य विद्वान भी उसके पास आए, जो उसे एक अनपढ़ और निरक्षर व्यक्ति के रूप में उपहास करना चाहते थे। लेकिन उसने निम्नलिखित तर्क से उन्हें शर्मिंदा किया और चुप करा दिया:

उसने कहा, "मुझसे बताओ, कौन पहले आया—मन या लेखन, और किसने दूसरे को जन्म दिया: क्या लेखन ने मन को बनाया, या मन ने लेखन को उत्पन्न किया?"

'मन ने लेखन का आविष्कार किया और उसे आगे बढ़ाया,' उन्होंने उत्तर दिया।

तब एंथनी ने कहा:

'इसलिए, एक स्वस्थ मस्तिष्क वाले किसी भी व्यक्ति को लेखन की कोई आवश्यकता नहीं हो सकती।'

इसी तरह, तीसरी बार, उसके पास ऐसे पुरुष आए जिन्होंने हर तरह के सांसारिक ज्ञान का अध्ययन किया था और शिक्षा में अपने समकालीनों से आगे थे। कौशलपूर्वक बनाए गए प्रश्नों के साथ, उन्होंने मसीह में हमारे विश्वास के आधार के बारे में उनसे पूछताछ करना शुरू किया - मसीह के क्रूस का उपहास करने के स्पष्ट उद्देश्य के साथ। थोड़ी देर की चुप्पी के बाद, और उनकी भूल पर शोक व्यक्त करने के बाद, बुजुर्ग ने एक ऐसे दुभाषिए के माध्यम से उनसे बात करना शुरू किया जो ग्रीक भाषा में निपुण था:

– कौन सा बेहतर और अधिक उचित है: मसीह के क्रूस की पूजा करना, या अपने देवताओं के व्यभिचार, शिशु-हत्या और अनाचार की प्रशंसा करना? मृत्यु के प्रति तिरिस्कार और मसीह के क्रूस में प्रकट हुई परम सद्गुण की महिमा करना, या अपने भ्रष्ट विश्वास द्वारा सिखाई गई कुकर्मों की प्रशंसा करना? ईश्वर के वचन के मानव देह धारण करने की बात कहने और उस पर विश्वास करने से बेहतर और क्या हो सकता है, ताकि हमारे नश्वर स्वभाव के साथ एकता के द्वारा वह हमें स्वर्ग तक उठाए और हमें स्वर्गीय तथा दिव्य का भागीदार बनाए? तो फिर, आप ईसाई धर्म का मज़ाक उड़ाने की हिम्मत कैसे करते हैं—कि मसीह, परमेश्वर के पुत्र ने, अपनी प्रकृति को किसी भी तरह की हानि पहुँचाए बिना, वह बनना शुरू किया जो वे नहीं थे[1111] , और बने रहते हैं जो वे बन गए हैं[1112] , – जबकि आप स्वयं, आत्मा को स्वर्ग से नीचे लाकर, उसे न केवल मानव शरीरों में, बल्कि साँपों और जानवरों में भी रखते हैं, और उसे इधर-उधर घुमाते हैं, और यह दावा करते हैं कि यह कभी एक मानव में, कभी एक जानवर में, कभी एक पक्षी या किसी अन्य जीवित प्राणी में स्थानांतरित हो जाती है? ईसाई धर्म, जो ईश्वर की सर्वशक्तिमत्ता और दया का प्रचार करता है, इसलिए यह संभव मानता है कि ईश्वर अवतार ले सकता है; फिर भी, ऐसा करते हुए, एक सम्मान दूसरे को निष्कासित नहीं करता[1113] । तुम, हालाँकि, आत्मा के बारे में बकबक करते हो, जो दिव्यता के सबसे शुद्ध स्रोत से निकलकर बाद में नीच हो जाती है, और

[1111] अर्थात् - ईश्वर-पुरुष, जो परमेश्वर का पुत्र अवतार से पहले नहीं था।

[1112] अर्थात् – परमेश्वर का पुत्र जो मानव बना, क्योंकि मसीह स्वर्ग में आरोहण कर गए और अपनी महिमान्वित मानवता के साथ पिता के दाहिने बैठ गए।

[1113] अर्थात् – इससे दिव्यता सीमित नहीं होती, न ही उसकी महिमा में कोई कमी आती है, और न ही मानव स्वभाव अपनी आवश्यक गुणों को खोता है या दिव्यताकरण के अर्थ में कोई परिवर्तन से गुजरता है।

तुम यह कहने की हिम्मत करते हो कि, जैसे-जैसे यह क्षीण होती है, यह परिवर्तनों और रूपांतरणों से गुजरती है। किसी भी मामले में, हमें यहाँ हमारे ईश्वर मसीह के क्रूस के बारे में बात करनी है। क्या यह बेहतर नहीं है कि आप क्रूस या किसी अन्य मृत्यु को सहन करें, बजाय इसके कि आप अपनी हास्यास्पद रचनाओं पर भरोसा करके मिस्र की देवी आइससि की पूजा करें, जो अपने भाई और साथ ही अपने पति ओसिरिस के लिए शोक मनाती है? मैं आपसे विनती करता हूँ, अपने इस विश्वास पर शर्म महसूस करें कि, आपके देवता ओसिरिस का भाई, दुष्ट टाइफोन[1114] । तुम सैटर्न की उड़ान[1115] और उसके बच्चों को अस्वाभाविक रूप से खाने पर शर्म करो। ज़ीउस की रक्तपिपासा और व्यभिचार, उसकी वासना पर शर्म करो, जैसा कि तुम्हारी अपनी प्राचीन कथाओं में वर्णित है। यही तुम मानते हो; यही तुम्हारे देवता हैं; यही तुम्हारे मंदिरों की शोभा है! तुम क्रूस और प्रभु के दुखों का मज़ाक उड़ाते हो। लेकिन आप उनके पुनरुत्थान के बारे में चुप क्यों रहते हैं? आप उनके चमत्कारों पर ध्यान क्यों नहीं देते: अंधों को दृष्टि देना, बधिरों को सुनना, लंगड़ों को चंगा करना, कोढ़ियों को स्वच्छ करना, समुद्र पर चलना, दुष्टात्माओं को निकालना, मृतकों को जीवित करना, और कई अन्य, जिनके माध्यम से उनकी दिव्य शक्ति और महिमा स्पष्ट रूप से प्रकट हुई थी? और यदि आप उस पूर्वाग्रह को एक तरफ रख दें जिससे आप भरे हुए हैं, तो आप तुरंत इस बात से आश्वस्त हो जाएँगे कि यीशु मसीह ही सच्चे परमेश्वर हैं, जो हमारे उद्धार के लिए मनुष्य बने।

इन और कई अन्य तर्कों के साथ, रेवरेंड ने अपने संवाददाताओं—दार्शनिकों—को इतनी शर्मिंदगी में डाल दिया कि वे जवाब में एक शब्द भी नहीं कह सके। जो कोई भी इन सब के बारे में और अधिक जानना चाहता है, वह अथानासियस द ग्रेट द्वारा संकलित 'लाइफ ऑफ़ एंथनी' से विस्तार से जान सकता है, जिसमें यह बातचीत पूरी तरह से दी गई है। जहाँ तक हमारी बात है, विवरण की लंबाई को देखते हुए, ग्रीकों को रेवरेंड के संबोधन को छोड़कर, अब हम संक्षेप में रेवरेंड के अपने कार्यों के बारे में बात करेंगे, जो उनके जीवन में अत्यंत महत्वपूर्ण थे और हमारे लिए सबसे अधिक लाभकारी हैं।

आदरणीय एंथनी के बारे में यह भी उल्लेखनीय था कि, यद्यपि वह उस समय ज्ञात दुनिया के बिलकुल किनारे पर रहते थे, फिर भी सम्राट कॉन्स्टेंटाइन और उनके पुत्र कॉन्स्टेंस और कॉन्स्टेंटीयस[1116] उन्हें दूर से ही बहुत गहराई से प्रेम करने लगे और अपने पत्रों में उनसे विनम्रतापूर्वक आकर उन्हें देखने के लिए कहा।

'क्या मुझे सम्राटों के पास जाना चाहिए या नहीं?' उन्होंने अपने शिष्यों से पूछा।

'यदि आप जाएँगे,' उन्होंने उत्तर दिया, 'तो आप एंथनी होंगे; यदि आप नहीं जाएँगे, तो आप बाबा एंथनी[1117] होंगे।'

'तो फिर,' पूजनीय पिता ने कहा, 'चूंकि अगर मैं गया, तो मैं अब्बा नहीं रहूँगा, इसलिए मेरे लिए न जाना ही बेहतर है'—और वे नहीं गए।

[1114] ओसिरिस, मिस्र का देवता जिसे आइससि के साथ, पूरे देश में पूजित किया जाता था, प्राचीन मिस्रवासियों की मान्यताओं के अनुसार, आइससि का पति और भाई दोनों था। लेकिन उसके भाई टाइफोन ने विश्वासघात से उसे एक संदूक में बंद कर दिया, उसे कीलों से ठोक दिया, उसे सीसे से भर दिया और उसे नील नदी में फेंक दिया; आईससि को ताबूत मिल गया और उसने उसे छिपा दिया, लेकिन रात में टाइफोन ने उसे खोला और शव को 14 टुकड़ों में फाड़ दिया, जिन्हें उसने चारों दिशाओं में बिखेर दिया; हालाँकि, आईससि ने उन्हें इकट्ठा किया और दफना दिया, जबकि टाइफोन, एक लंबे संघर्ष के बाद, पूरी तरह से पराजित हो गया। जहाँ आइससि नील नदी की भूमिका प्रतिनिधित्व करती हैं, वहीं ओसिरिस नील नदी के उपजाऊ देवता हैं; एक अधिक सामान्य अर्थ में, आइससि की आकृति ने पृथ्वी को सर्व-प्रदान करने वाली माँ के रूप में दिव्य माना, जबकि दूसरी ओर, ओसिरिस ने पृथ्वी में मूर्त रूप धारण की हुई सूर्य की उत्पादक शक्ति का प्रतिनिधित्व किया; उन्हें एक साथ नील नदी और सूर्य दोनों के देवता के रूप में पूजित किया जाता था। टाइफोन के खिलाफ संघर्ष, पृथ्वी में निहित सूर्य की उत्पादक शक्ति के खिलाफ संघर्ष का प्रतीक था। टाइफोन के रूप में, विधर्मी लोगों ने एक भयानक राक्षस को देवता का दर्जा दिया, जिसकी व्याख्या एक विनाशकारी बवंडर और झुलसाने वाली हवा, या आग उगलने वाले पहाड़ों से पृथ्वी से विनाशकारी शक्ति के साथ निकलने वाली वाष्प के रूप में की गई।

[1115] शनि, या क्रोनस, एक ग्रीक-रोमन देवता थे, जिन्हें यूरेनस (आकाश) और गैया (पृथ्वी) के पुत्र के रूप में पूजा जाता था; अपने पिता को सिंहासन से उखाड़ फेंकने के बाद, प्राचीन pagans की मान्यताओं के अनुसार, उन्होंने दुनिया पर अधिकार कर लिया; उसने अपनी बहन रेया से विवाह किया, लेकिन चूँकि भविष्यवाणी की गई थी कि उसे उसके अपने बच्चों द्वारा उखाड़ फेंका जाएगा, इसलिए उसने उनके जन्म के तुरंत बाद उन्हें निगल लिया; बाद में उसे उसके बेटे ज़्यूस ने उखाड़ फेंका।

[1116] कॉन्स्टैंटियस और कॉन्स्टेंस, कॉन्स्टेंटाइन महान के पुत्र और उत्तराधिकारी थे। कॉन्स्टेंस ने 337 से 350 तक रोमन साम्राज्य के पश्चिमी हिस्से पर शासन किया; कॉन्स्टैंटियस ने 337 से 361 तक पूर्व में, और 363 से पश्चिमी हिस्से में भी शासन किया।

[1117] अब्बा – एक पिता, एक मठवासी समुदाय का प्रमुख, जिसे भाइयों द्वारा एक पिता के रूप में श्रद्धापूर्वक सम्मानित किया जाता है। शिष्यों का उत्तर उनकी यह इच्छा व्यक्त करता है कि एंथनी न जाएँ, बल्कि पहले की तरह, उनके अत्यंत पूजनीय आध्यात्मिक पिता और मार्गदर्शक बने रहें।

इसके बाद, राजाओं ने उनसे विनती करनी शुरू कर दी कि वे कम से कम अपने पत्रों के माध्यम से उन्हें अपना आशीर्वाद और सांत्वना भेजें। जवाब में, रेवरेंड ने वास्तव में उन्हें एक पत्र भेजा जिसमें, मसीह के धर्म की शिक्षा का प्रचार करने के लिए उनकी प्रशंसा करने के बाद, उन्होंने उनसे आग्रह किया कि वे इस जीवन में अपनी शक्ति पर गर्व न करें, बल्कि—भले ही वे शाही सिंहासन पर विराजमान हों—यह न भूलें कि वे, आखिरकार, केवल इंसान ही थे; और सबसे बढ़कर, आने वाले अंतिम न्याय को याद रखें, जिसमें उन्हें यह हिसाब देना होगा कि उन्होंने अपने अधिकार का प्रयोग कैसे किया। रेवरेंड ने उन्हें लोगों के प्रति दयालु होने, न्याय बनाए रखने, और गरीबों तथा दुर्भाग्यपूर्ण अनाथों के पिता बनने का आग्रह किया।

एक बार, भाइयों के बीच उनके काम पर बैठे हुए, वह समाधिस्थ की अवस्था में प्रतीत हुए; आकाश की ओर ध्यान से देखते हुए, उन्होंने एक आह भरी, फिर, प्रार्थना में घुटने टेककर, लंबे समय तक फूट-फूट कर रोए। वहाँ मौजूद लोग डर गए और उनसे लगातार विनती करने लगे कि वह उन्हें बताएं कि वह क्या देख रहे थे।

'मेरे बच्चों, आने वाली विपत्ति के आने से पहले मर जाना बेहतर होगा,' बुजुर्ग ने बड़े दुःख के साथ उत्तर दिया।

जब उन्होंने उसी विषय पर फिर से उनसे विनती करनी शुरू की, तो पूज्य एंथनी ने फूट-फूट कर रोते हुए कहा:

'मसीह की कलीसिया पर एक अकथनीय विपत्ति मंडरा रही है, और उसे मूक पशुओं जैसे लोगों के हाथों में सौंप दिया जाएगा।' मैंने प्रभु के मंदिर का वेदी देखा, और उस पर गधों की एक भीड़ थी जो पवित्र सिंहासन को घेरकर, उस पर रखी हर चीज़ को क्रूरता से पलट रही थी और उसे फर्श पर बिखेरकर पैरों तले रौंद रही थी; और मैंने एक आवाज़ सुनी जो कह रही थी: 'मेरे वेदी को अपवित्र किया जाएगा!' यही मेरे हाँफने और रोने का कारण है।

रेवरेंड की यह दृष्टि दो साल बाद सच हुई, जब क्रूर एरियन उत्पीड़न शुरू हुआ: परमेश्वर के गिरिजाघरों को लूट लिया गया, पवित्र पात्रों को अपवित्र किया गया, और पवित्र रहस्यों को मूर्तिवादियों के अशुद्ध हाथों ने छुआ। तब अधर्मी लोगों के पूरे झुंड मसीह के विरुद्ध उठ खड़े हुए और उन्होंने ऑर्थोडॉक्स लोगों को जबरदस्ती अपने हाथों में पेड़ों की टहनियाँ लेकर चर्चों में प्रवेश करने के लिए मजबूर किया। इसका कारण यह था कि अलेक्जेंड्रिया में मूर्तिपूजकों की यह प्रथा थी कि वे अपने मंदिरों में हथेलियों की टहनियाँ हाथ में लेकर प्रवेश करते थे, और एरियनों ने, ऑर्थोडॉक्स के खिलाफ उनकी मदद लेना चाहकर, उनकी नकल करते हुए अपनी चर्चों में भी टहनियाँ लेकर प्रवेश करना शुरू कर दिया; ऑर्थोडॉक्स ईसाई धर्म के खिलाफ एकजुट होकर काम करने के लिए सहमत होकर, उन्होंने एक-दूसरे की प्रथाओं की नकल करना शुरू कर दिया - एरियनों ने pagans की नकल की और pagans ने एरियनों की नकल की। ऑर्थोडॉक्स को भी इस अधार्मिक प्रथा को अपनाने के लिए मजबूर किया गया, ताकि वे एरियनों के साथ मिलकर काम कर सकें। ओह, यह भयावहता! ओह, यह अराजकता! महिलाओं और कुंवारी कन्याओं का अपमान किया गया; चर्चों में ऑर्थोडॉक्स का रक्त बहाया गया और वेदियों पर छींट दिया गया; बपतिस्मा के कुंडों को मूर्तिवादियों की कामुकता द्वारा अपवित्र किया गया। तब सभी ने इसमें एंथनी की दृष्टि की पूर्ति देखी – कि गिधे परमेश्वर के वेदी पर पैर पटक रहे थे। और कई कमजोर दिमाग वाले लोग, एरियन के डर से, उनके विधर्म में शामिल हो गए।

आने वाली विपत्ति के बारे में बात करते हुए, संत एंथनी ने उसी समय भाइयों को सांत्वना दी और कहा:

'हतोत्साहित न हो, मेरे बच्चों: जैसे प्रभु क्रोधित हुए हैं, वैसे ही वे बाद में दया भी दिखाएंगे, और कलीसिया फिर से अपनी तेजस्वी सुंदरता और शक्ति में बहाल हो जाएगी, और जो लोग उत्पीड़नों के बीच मसीह के विश्वास में दृढ़ रहे हैं, वे अनुग्रह के प्रकाश से चमकेंगे। तब साँप अपने बिलों में लौट जाएँगे, और धार्मिकता और भी बढ़ेगी। हालाँकि, सावधान रहो कि अरिअनों से कोई संबंध न रखो जो तुम्हारे लिए विनाशकारी हो सकता है, क्योंकि उनकी शिक्षा प्रेरितों की नहीं, बल्कि शैतानी और उनके पिता, शैतान की है; इसी कारण से उन्हें दर्शन में मूर्ख जानवरों के रूप में दर्शाया गया था।

उस समय मिस्र में बालाकी नाम का एक सैन्य कमांडर रहता था, जो दुर्भावनापूर्ण एरियनों द्वारा उकसाया गया, क्रूरतापूर्वक ईसाइयों का उत्पीड़न करता था। वह इतना क्रूर था कि वह सार्वजनिक रूप से शहर के चौक में युवा महिलाओं और भिक्षुओं को भी नग्न कर के कोड़े मारता था। पूजनीय एंथनी ने उसे इस संबंध में एक पत्र भेजा:

'मैं देखता हूँ कि ईश्वर का प्रकोप तुम पर आ रहा है। ईसाइयों का उत्पीड़न बंद करो, और तब तुम पर आने वाली विनाश की घड़ी टल जाएगी।'

उस दुष्ट व्यक्ति ने पत्र पढ़कर केवल उस पर हँस दिया; पत्र पर थूककर, उसे ज़मीन पर फेंक दिया, एंथनी द्वारा भेजे गए लोगों को अपमानजनक सज़ा दी, और, रेवरेंड की निंदा करते हुए, उनके खिलाफ विभिन्न बुरे धमकियाँ दीं। लेकिन जल्द ही बाद में, रेवरेंड की भविष्यवाणी के अनुसार, उस दुष्ट व्यक्ति पर ईश्वर की निम्नलिखित सज़ा आई।

इसके पाँचवें दिन बाद, वह मिस्र के राज्यपाल नेस्टोरियस के साथ मिलकर अलेक्ज़ेंड्रिया के पास खेरियम नामक स्थान के लिए रवाना हुआ; वे सबसे शांत और सौम्य घोड़ों पर सवार थे। अचानक उनके घोड़ों ने उनके नीचे उछलकूद करनी शुरू कर दी, वे एक-दूसरे से धक्का-मुक्की करने लगे, और जिस घोड़े पर नेस्टोरियस सवार था, उसने अचानक वलाकियस को अपने दाँतों में पकड़ लिया, उसे ज़मीन पर फेंक दिया और उसके शरीर के नरम हिस्सों को नोचना शुरू कर दिया। तब उसे, पहले ही मृत, शहर में ले जाया गया, जहाँ तीसरे दिन उसने अपना अधर्मी प्राण त्यागा। और सभी ने इसमें एंथनी की भविष्यवाणी की पूर्ति देखी, जो उत्पीड़क पर न्यायसंगत रूप से पूरी हुई थी।

लेकिन अब आदरणीय की मृत्यु के बारे में बताने का समय आ गया है। वह पहाड़ की चोटी से उतरकर, जहाँ वह अकेले रहते थे, पहाड़ की तलहटी में रहने वाले भाइयों से मिलने जाया करते थे। ऐसी ही एक नियमित मुलाकात के दौरान, उन्होंने उन्हें अपनी मृत्यु के निकट आने के बारे में बताया, जो ईश्वर द्वारा उन्हें प्रकट किया गया था।

उन्होंने कहा, 'मेरे बच्चों, मैं तुमसे अंतिम बार मिलने आया हूँ, मुझे इस जीवन में तुमसे दोबारा मिलने की उम्मीद नहीं है, और अब मेरे लिए इस जीवन से जाने और विश्राम करने का समय आ गया है, क्योंकि मैं पहले ही एक सौ पाँच वर्ष जी चुका हूँ।'

ये शब्द सुनते ही भाइयों पर गहरा शोक छा गया; वे रो पड़े और उन्होंने बड़े भाई को चूमा, मानो वह पहले ही इस दुनिया से जा रहे हों। लेकिन उन्होंने उनसे अटूट उत्साह के साथ परिश्रम करने, संयम के अपने प्रयासों में हतोत्साहित न होने, बल्कि इस प्रकार जीने का आग्रह किया—जैसे कि वे मृत्यु के लिए प्रतिदिन तैयारी कर रहे हों—अपने आत्मा को अशुद्ध विचारों से सफलतापूर्वक बचाते हुए, संतों के उदाहरण का पालन करते हुए, संप्रदायवादियों—मेलेटियनों—से अपना फासला बनाए रखते हुए, और अधर्मी एरियनों के साथ मेलजोल न रखते हुए; इसके विपरीत, उन्होंने उन्हें प्रेरित किया कि वे धर्मपितामहों की परंपराओं को दृढ़ता से थामे रहें और हमारे प्रभु यीशु मसीह में पवित्र विश्वास को पूर्ण पवित्रता के साथ बनाए रखें, जैसा कि उन्होंने धर्मग्रंथों और उनकी बार-बार दी गई शिक्षाओं से सीखा था।

इसके बाद, भाइयों ने उनसे विनती करनी शुरू कर दी कि वे उनके साथ ही रहें, क्योंकि वे सभी उनके निधन के समय उपस्थित रहने का सम्मान प्राप्त करना चाहते थे। लेकिन वे इसके लिए राजी नहीं हुए, क्योंकि वे जानते थे कि वे उनके निधन के बाद उनके शरीर को एक भव्य अंतिम संस्कार के साथ सम्मानित करना चाहते हैं। लोगों द्वारा उन्हें प्रदान की जाने वाली मृत्युोपरांत सम्मान और महिमा से भी बचते हुए, वह आदरणीय व्यक्ति उनसे दूर अकेलेपन में जाने के लिए जल्दी से निकल पड़े: भाइयों को अलविदा कहने के बाद, वे अपने प्रिय निवास, अपने तपस्या कार्यों के स्थान, के लिए पहाड़ की चोटी की ओर चल पड़े। कुछ महीनों बाद, वह गंभीर रूप से बीमार पड़ गए। तब उन्होंने पिछले पंद्रह वर्षों से उनके साथ काम कर चुके और उनकी वृद्धावस्था के कारण उनकी देखभाल कर रहे दो भिक्षुओं को बुलाया, और उनसे कहा:

– हे मेरे बच्चों! जैसा लिखा है (3 राजा 2:2. तुलना करें यश. 23:14), *'मैं पृथ्वी के सभी लोगों के मार्ग पर जा रहा हूँ'*; प्रभु मुझे अपने पास बुला रहे हैं, और मुझे आशा है कि मैं स्वर्ग के आशीर्वादों में सहभागी होऊँगा। लेकिन मैं आपसे विनती करता हूँ, मेरे प्रिय बच्चों, अपने कई वर्षों के आत्म-संयम के फलों को व्यर्थ न जाने दें, बल्कि उन प्रयासों को जारी रखें जिन्हें आपने उत्साह और सफलता के साथ शुरू किया है। आप जानते हैं कि राक्षस हमारे मार्ग में कितनी विभिन्न बाधाएँ डालते हैं, लेकिन उनकी तुच्छ शक्ति से न डरें। अपना विश्वास यीशु मसीह में रखें, पूरे हृदय से दृढ़ता से उन पर विश्वास करें, और सभी राक्षस आपसे भाग जाएँगे। मैं जो कुछ भी आपको सिखाया है, उसे याद रखें, ईश्वर भरा जीवन जीने का प्रयास करें – और आपको निस्संदेह स्वर्ग में अपना इनाम मिलेगा। विभाजनवादियों, विधर्मी और एरियनों के साथ सभी संबंधों से बचो; तुम जानते हो कि मैंने उनके दुष्ट इरादों और मसीह-विरोधी विधर्म के कारण, एक बार भी उनसे मैत्रीपूर्ण ढंग से बात नहीं की है। सबसे बढ़कर, प्रभु की आज्ञाओं का पालन करने का प्रयास करो, ताकि संत तुम्हें मृत्यु के बाद, रिश्तेदारों और मित्रों के रूप में, शाश्वत निवासों में स्वागत कर सकें। इसे याद रखो, इस पर मनन करो, और हमेशा इस पर विचार करो। और यदि तुम सच में मेरी परवाह करते हो, मुझे एक पिता के रूप में प्रेम करते हो, और मेरी इच्छा को पूरा करने के लिए तैयार हो, तो किसी को भी मेरे अवशेष मिस्र ले जाने की अनुमति मत देना, कहीं ऐसा न हो कि मेरे शरीर को वहाँ भव्य रूप से दफनाया जाए, क्योंकि मुख्य रूप से इसी कारण से मैं इस पहाड़ पर आ गया था। मेरे बच्चों, मुझे स्वयं मिट्टी में दफ़नाना, और अपने बड़ों की इस आज्ञा का पालन करना: तुम्हारे सिवा कोई भी उस कब्र को न जाने जहाँ मेरा शरीर दफ़नाया जाएगा, जो प्रभु में मेरे विश्वास के द्वारा, मृतकों के सामान्य पुनरुत्थान के समय

अक्षुण्ण होकर पुनर्जीवित होगा। मेरे वस्त्र इस प्रकार बाँट लो: ट्यूनिक[1118] और वह घिसा हुआ अंडरगारमेंट जिस पर मैं लेटा हूँ, बिशप अथानासियस[1119] को दे दो; दूसरी ट्यूनिक बिशप सेरापियन[1120] को दे दो; और बाल-वस्त्र अपने लिए ले लो। विदा, मेरे प्यारे बच्चों! एंथनी जा रहा है, और वह इस जीवन में अब आपके साथ नहीं रहेगा।

जब, इन शब्दों के बाद, उनके शिष्यों ने उन्हें विदाई में चूमा, तो एंथनी ने अपने पैर फैलाए और, अपने चेहरे पर शांत आनंद के साथ, अपनी आत्मा के लिए आए स्वर्गदूतों को ऐसे निहारते हुए मानो वे उसके मित्र हों, वह मर गया और पवित्र पिताओं में शामिल हो गया[1121] । संत के शिष्यों ने, उनकी इच्छानुसार, उनके शरीर को कपड़े पहनाकर सुला दिया; और, उनके अलावा, आज तक कोई भी पूजनीय एंथनी के दफन स्थल को नहीं जानता है।

अथानासियस ने, शिष्यों से संत के घिसे-पिटे वस्त्र और उनका आशीर्वाद प्राप्त करके, इन उपहारों को मानो स्वयं संत एंथनी ही मान लिया। मानो किसी धनी विरासत से धन्य हो गया हो, वह हमेशा इन वस्त्रों को श्रद्धापूर्ण आनंद के साथ निहारता था, और अपने मन में संत की पवित्र छवि को याद करता था।

ऐसा था पूजनीय एंथनी का जीवन और निधन, जिनका प्रेम और कीर्ति सभी देशों में फैल गई है। वे कुशलता से रचित लेखन[1122] , सांसारिक ज्ञान, न तो अपनी वंशावली की कुलीनता , और न ही अपार धन-संपत्ति से प्रसिद्ध हुए, बल्कि अपने धर्मपरायण जीवन से प्रसिद्ध हुए। और उद्धारकर्ता का वचन उनमें पूरा हुआ: *'मैं उन लोगों का आदर करूँगा जो मेरा आदर करते हैं'* (1 शमूएल 2:30)। वे किसी प्रसिद्ध स्थान पर नहीं रहे जो सभी को ज्ञात हो; इसके विपरीत, वे लगभग पृथ्वी के छोर तक, एक दुर्गम रेगिस्तान में, एकांतवास कर गए। फिर भी, वहीं से भी वह स्पेन, अफ्रीका, इटली, इल्यूरिया और स्वयं प्राचीन रोम में भी प्रसिद्ध हो गया। एंथनी, जिसने जानबूझकर खुद को पहाड़ों में सभी से छिपा रखा था, न तो ऐसी प्रसिद्धि की इच्छा रखता था और न ही उसकी खोज करता था। परन्तु प्रभु ने स्वयं इस विश्वास और धार्मिकता के दीपक को सबके सामने प्रकट किया और दिखाया, ताकि लोग उसे देखकर सद्गुण सीखें और उस पूजनीय के जीवन-मार्ग पर आश्चर्य करके स्वर्गीय पिता की महिमा करें, जिनके लिए, उनके एकमात्र पुत्र और सर्व-पवित्र आत्मा के साथ, युगानुयुग सम्मान, महिमा, धन्यवाद और आराधना हो, आमीन।

ट्रोपारियन, स्वर 4:

एलियाह के उत्साह का अनुकरण करते हुए और अग्रदूत के धर्मी मार्गों का अनुसरण करते हुए, पिता एंथनी, आप मरुस्थल में वास करते थे, और आपने अपनी प्रार्थनाओं के द्वारा संसार को बल दिया। अत; हमारे प्रभु परमेश्वर मसीह से प्रार्थना करें कि हमारी आत्माओं का उद्धार हो।

कॉन्टाकियन, स्वर 2:

इस संसार के कोलाहल को त्यागकर, आपने मौन का जीवन जिया; हर तरह से अग्रदूत का अनुकरण करते हुए, हे अति पूजनीय, हम आपको उनके साथ सम्मानित करते हैं, हे पिता एंथनी, पितृगण के नेता।

[1118] मिलोट – एक बाहरी वस्त्र, एक चोगा या लबादा।

[1119] अर्थात्, संत अथेनासियस महान, अलेक्जेंड्रिया के पैट्रिआर्क।

[1120] यह, बेशक, मिस्र के टमुंट के बिशप, संत सेरापियन को संदर्भित करता है। उनका पर्व दिवस 24 मई है।

[1121] आदरणीय एंथनी महान का 17 जनवरी 356 को, 105 वर्ष की आयु में निधन हो गया। – वर्ष 561 में बीजान्टिन सम्राट जस्टिनियन (527–565) के शासनकाल के दौरान पूजनीय एंथनी के अवशेषों को खोजा गया और उन्हें अलेक्जेंड्रिया ले जाया गया, फिर, मिस्र पर सारसेन्स की विजय के बाद, लगभग वर्ष 635 में कॉन्स्टेंटिनोपल ले जाया गया, वहाँ से, लगभग 980 ईस्वी में, वियेन के धर्मप्रांत (गॉल, वर्तमान फ्रांस में) में, और 1491 में अर्ल्स (दक्षिण-पूर्वी फ्रांस में प्रोवेंस की राजधानी) में, सेंट जूलियन के चर्च में ले जाया गया, जहाँ वे आज भी मौजूद हैं।

[1122] यद्यपि परमपूज्य एंथनी महान ने कोई औपचारिक शिक्षा प्राप्त नहीं की, फिर भी पवित्र धर्मग्रंथ और प्रकृति उनके विद्यालय के रूप में, तथा मसीह की कृपा उनके शिक्षक के रूप में काम आई, जिसने उनके तपस्वीय श्रमों के माध्यम से आत्म-संयम करने पर उन्हें दिन-प्रतिदिन अधिक प्रबुद्ध किया। आदरणीय एंथनी के निम्नलिखित कार्य हमें प्राप्त हुए हैं: 1) उनके 20 प्रवचन; ये मठवासी सद्गुणों, मसीह में विश्वास, सादगी और मासूमियत, विनम्रता, पवित्रता, धैर्य, धर्मपरायणता, ब्रह्मचर्य आदि से संबंधित हैं; सभी प्रवचन संक्षिप्त लेकिन दैवीय शिक्षा से परिपूर्ण हैं। 2) पत्र – सात पत्र विभिन्न मठों और उनके मठाधीशों को नैतिक पूर्णता और आध्यात्मिक संघर्ष की खोज पर संबोधित, जो तब लिखे गए थे जब परम पूज्यनीय की आयु बहुत उन्नत थी और वे प्रेरितिक निर्माण से परिपूर्ण थे; इसी विषय-वस्तु और चरित्र के 13 अन्य पत्र। 3) जीवन के नियम और भिक्षुओं को संबोधित अन्य उपदेश और कथन।

31 जनवरी

18 जनवरी (पुराना कैलेंडर)

हमारे पवत्रि पति अथेनासयिस, अलेक्जेंड्रयिा के आर्चबशिप का जीवन

१८ जनवरी को स्मरणोत्सव

संत अथेनासयिस महान – सद्गुण और दैवीय जीवन के इस जीवति और अमर मूर्त रूप – का जन्म मस्रि की प्रसद्धि राजधानी अलेक्जेंड्रयिा में हुआ था[1123] । उनके माता-पति ईसाई थे – धार्मकि और सदाचारी लोग। अपने युवा दनिों में ही, एक घटना ने एक संत के रूप में अथेनासयिस के भवष्यि के महान कार्य का पूर्वाभास दयिा था।

एक दनि, अथेनासयिस अपने साथयिों के साथ समुद्र तट पर खेल रहे थे। बच्चे चर्च में जो कुछ उन्होंने देखा था, उसकी नकल कर रहे थे, और अपने खेल में ईश्वर के सेवकों और चर्च की रस्मों की भूमकिा नभिा रहे थे। उन्होंने अथेनासयिस को अपना बशिप चुना; उन्होंने बदले में कुछ को प्रेस्बटिर और कुछ को डीकन नयिुक्त कयिा। वे अन्य बच्चों को उसके पास लाते थे – ऐसे गैर-ईसाई जन्हिें अभी तक बपतस्मिा नहीं मलिा था। अथानासयिस उन्हें समुद्र के पानी से बपतस्मिा देता था, पवत्रि बपतस्मिा संस्कार के लिए नर्धिारति शब्द बोलकर, ठीक वैसे ही जैसे उसने चर्च में पुरोहति को कहते सुना था; इसके साथ ही वह अपने बचपन की उम्र के अनुरूप एक उपदेश भी देता था। उस समय, संत अलेक्जेंडर[1124] अलेक्जेंड्रयिा के पैट्रआर्क थे। संयोग से, समुद्र के पास ऊँची जगह पर स्थति अपने घर की खड़िकयिों से समुद्र तट की ओर देखते हुए, उन्होंने खेल रहे बच्चों को देखा और हैरानी से देखा कि अथेनासयिस बपतस्मिा संस्कार कर रहे थे। उन्होंने तुरंत आदेश दयिा कि सभी बच्चों को उनके पास लाया जाए। बच्चों से वस्तिार से पूछताछ करके, पैट्रआर्क ने यह पता लगाने की कोशशि की कि उन्होंने वास्तव में कसिका बपतस्मिा दयिा था, बपतस्मिा से पहले उनसे क्या प्रश्न पूछे गए थे और उन्होंने क्या उत्तर दयिा था; और उन्होंने जाना कि, अपनी खेल में, उन्होंने चर्च के कानून के अनुसार सब कुछ कयिा था। इसके बाद, अपने पुरोहतिों से परामर्श करने के बाद, उन्होंने अथेनासयिस द्वारा कए गए मूर्तपिूजक बच्चों के बपतस्मिा को वैध माना और इसे क्रस्टिम (पवत्रि तेल) से अभषिेक करके पूरा कयिा; फरि उन्होंने बच्चों के माता-पति को, जन्होंने प्रेस्बटिर (पुरोहति) के रूप में कार्य कयिा था, बुलाया और उन्हें अपने बच्चों को पुरोहति बनने के लिए तैयार करने की सलाह दी। जहाँ तक अथेनासयिस के माता-पति का सवाल है, उन्हें बुलाने के बाद, संत अलेक्जेंडर ने उन पर उसे धर्मपरायणता और वद्विता में पाला-पोसा करने का दायत्वि डाला, और फरि, जब वह वयस्क हो जाए, तो उसे उनके पास लाने और उसे ईश्वर तथा पवत्रि चर्च को समर्पति करने का।

जब अथेनासयिस ने वज्ञिान का पर्याप्त अध्ययन कर लयिा और व्यापक बौद्धकि शक्षिा प्राप्त कर ली[1125] , तो उनके माता-पति उन्हें पैट्रआर्क सेंट अलेक्जेंडर के पास ले गए और, ठीक वैसे ही जैसे हन्ना ने एक बार शमूएल के

[1123] अलेक्जेंड्रयिा के संत अथेनासयिस का जन्म लगभग 297 ईस्वी में हुआ था, जो डायोक्लेटयिन द्वारा ईसाइयों पर कए गए क्रूर अत्याचार से कुछ समय पहले था, हालाँकि, उन्होंने इसके बारे में कोई व्यक्तगित स्मृतयिाँ नहीं छोड़ीं।

[1124] संत अलेक्जेंड्रयिा के बशिप, एरयिनों के खलिाफ ऑर्थोडॉक्सी के एक उत्साही रक्षक, ने 312 से 326 तक अलेक्जेंड्रयिा के चर्च का नेतृत्व कयिा।

[1125] अलेक्जेंड्रयिा, जो अथानासयिस का जन्मस्थान था, ने उन्हें बौद्धकि वकिास के लिए पर्याप्त अवसर प्रदान कए, और उन्होंने ज्ञान की एक वस्तिृत श्रृंखला प्राप्त की: उन्होंने कानून का अध्ययन कयिा, ग्रीस के मूर्तपिूजक ऋषयिों और कवयिों की कृतयिों से खुद को परचिति कराया; संक्षेप में, सेंट अथानासयिस के जीवनीकार के शब्दों में, उन्होंने 'वज्ञिानों के दायरे' का अध्ययन कयिा, यानी उस अर्थ में जसि अलेक्जेंड्रयिाई वद्विानों द्वारा समझा जाता था; लेकनि उन्होंने इसमें बहुत कम समय लगाया, जैसा कि संत ग्रेगरी द थयिोलोजयिन गवाही देते हैं। हालाँकि, उनका मुख्य ध्यान अनुभवी शक्षिकों के मार्गदर्शन में पवत्रि शास्त्र के अध्ययन पर था; और संत अथेनासयिस ने पुराने और नए नयिम की सभी पुस्तकों का इतना गहराई से अध्ययन कयिा जतिना कि किसी और ने एक भी पुस्तक का नहीं कयिा था। जैसा कि संत अथानासयिस के शुरुआती लेखों में से एक से अनुमान लगाया जा सकता है, ये अलेक्जेंड्रयिा के कैटेकेटकिल स्कूल में ट्यूटर थे। अथेनासयिस की बौद्धकि शक्षिा तपस्वयिों की संगत में परपिूर्ण हुई, जन्हिें वह प्यार करता था और जनिके साथ वह जुड़ने के अवसर खोजता था; वह कई मौकों पर परम पूजनीय एंथनी द ग्रेट से मलिा, और अथेनासयिस स्वयं अपने कठोर जीवन शैली के लिए तपस्वयिों में गनिा जाता था।

साथ कयिा था (1 शमूएल 1), उन्हें ईश्वर के रूप में एक उपहार के रूप में समर्पति कर दयिा। कुछ ही समय बाद, पैट्रआर्क ने उन्हें एक क्लेरकि नयिुक्त कयिा और अलेक्जेंड्रयिा के चर्च का एक डकिन नयिुक्त कयिा[1126] । इस पद पर अपने युवा काल से ही उन्होंने वधिर्मयिों के वरिुद्ध कतिनी वीरता से लड़ाई लड़ी और उनके हाथों उन्होंने क्या-क्या सहा, इसे पूरी तरह गनिना असंभव है; फरि भी, उनके कुछ सबसे उल्लेखनीय कारनामों और कार्यों के बारे में चुप नहीं रहा जा सकता। उस समय, अधर्मी एरयिस अपनी पागल वधिर्म फैला रहा था और अपनी हानकिारक शक्षिाओं के माध्यम से पूरे चर्च को हलिा रहा था। यद्यपि उसे पहले ही नकिीया में पवत्रि पतिाओं के प्रथम सार्वभौमकि परषिद[1127] में दोषी ठहराया जा चुका था, मसीह की कलीसयिा की सहभागतिा से बहष्कृत कर दयिा गया था और कैद की सजा सुनाई गई थी, फरि भी, पदच्युत और मुश्कलि से जीवति होने के बावजूद, उसने धर्मपरायणता के वरिुद्ध अपने संघर्ष को नहीं छोड़ा। उसने अपने शष्यिों और समान वचिारधारा वाले अनुयायियों के माध्यम से काम करना शुरू कर दयिा, और अपनी वधिर्म का वषि दूर-दूर तक फैलाया। सम्राट के समक्ष अपने पक्ष में कई मध्यस्थों, वशिेष रूप से नकिोमेडयिा के बशिप यूसेबयिस[1128] और अन्य बशिपों के होने, जो उसी वधिर्म को मानते थे, के माध्यम से एरयिस ने कॉन्स्टेंटाइन महान की कृपा प्राप्त करने का प्रयास कयिा, ताकि उसे कैद से रहिा कयिा जाए और अलेक्जेंड्रयिा लौटने की अनुमति दी जाए। यूसेबयिस ने चालाकी से सम्राट को यह वश्विास दलिाया कि एरयिस ने धर्मपरायणता के वपिरीत कुछ भी नहीं सखिाया और न ही चर्च के सद्धिांत के वरिुद्ध कुछ प्रचार कयिा, बल्कि वह ईर्ष्या के कारण बशिपों की धूर्तता का शकिार हुआ था, और उनके बीच का ववािद आस्था पर नहीं, बल्कि केवल खाली, अमूर्त शब्दों पर था[1129] । राजा, अपनी सादगी और भोलेपन के कारण, वधिर्मी की चालाकी और धोखे के बारे में कुछ भी संदेह नहीं करते हुए, इन झूठी बातों पर वश्विास कर गए और ववािद को समाप्त करने तथा शब्दों पर झगड़ा न करने का आदेश दयिा, ताकि चर्चों के बीच कोई कलह न रहे। मामले की बल्कुि भी जांच

[1126] यह ज्ञात है कि अथानासयिस, जब वह अभी एक लड़के से अधकि कुछ नहीं था, ने संत अलेक्जेंडर के घर में एक प्रयि सदस्य के रूप में अपनी जगह बनाई, और उनके साथ 'एक बेटे की तरह अपने पति के साथ' रहा, और इस प्रकार उन्होंने प्राइमेट के संरक्षण में, जो मस्रि, लीबयिा और पेंटापोलसि के सौ से अधकि बशिपों द्वारा मान्यता प्राप्त था, धार्मकि गतविधियिों के केंद्र में कई फलदायी वर्ष बतिाए। अथानासयिस, धार्मकि मामलों से संबंधति लखिति पत्राचार में, एक प्रकार से सहायक और नजिी सचवि बन गए। संत अथेनासयिस को 319 में डीकन के रूप में नयिुक्त कयिा गया था। उस समय भी, अथेनासयिस ने पहले ही अपने लिए एक नाम बना लयिा था, वशिेष रूप से अपने प्रबंधों 'पैगनों के वरिुद्ध' और 'ईश्वर के वचन के अवतार पर' के माध्यम से; ये उनके शुरुआती कार्य थे, जो कम उम्र में लखिे गए थे, फरि भी उन्होंने उनसे महान कार्यों की उम्मीद करने का हर कारण दयिा।

[1127] नकिाया (एशयिा माइनर के उत्तर-पश्चमिी भाग में बथिनियिा का एक शहर) में पहला सार्वभौमकि परषिद 325 में हुआ था। इस परषिद में, अलेक्जेंड्रयिा के एक पादरी एरयिस के धर्मद्रोह का पर्दाफाश कयिा गया और उसे नदिा कयिा गया; वह यह सखिाता था कि परमेश्वर का पुत्र परमेश्वर पति के सार से शाश्वत रूप से नहीं जन्मा था, बल्कि समय में शून्य से उसकी रचना की गई थी, और वह न तो उसी सार का था और न ही समान सम्मान का था; इस वधिर्म में गुप्त रूप से यीशु मसीह की दव्यिता और उनके द्वारा हमारे उद्धार के नर्णिायक इनकार का समावेश था; संक्षेप में, यह पूरे ईसाई धर्म का वधिवंस था। जब एरयिस की अधर्मीता उजागर हुई, तो अथेनासयिस ने अलेक्जेंड्रयिा के आर्चबशिप सेंट अलेक्जेंडर के एरयिस के खलिाफ संघर्ष में सक्रयि भाग लयिा, जसिसे एरयिनों ने खुद उसके खलिाफ मोर्चा खोल दयिा। यह इक्यूमेनकिल परषिद से भी पहले हुआ था; और नीकयिा की परषिद में, संत अथेनासयिस ने—जो उस समय अलेक्जेंड्रयिा के चर्च के आर्चडीकन के पद पर थे और परषिद में संत अलेक्जेंडर के साथ आए थे—परषिद के पतिरों की संतुष्टि के लिए, अरयिस का सफलतापूर्वक खंडन कयिा।

[1128] नकिोमेडयिा के बशिप यूसेबयिस, एरयिस के मत्रि और समर्थक थे, और उन्होंने उसकी रक्षा की। पहले सार्वभौमकि परषिद में, उन्होंने एरयिस का बचाव कयिा, और यद्यपि उन्होंने परषिद में तैयार कए गए धर्म-वश्विास-सूत्र पर हस्ताक्षर करने के लिए सहमति दे दी, फरि भी उन्होंने एरयिस को चर्च से बहष्कृत करने की सहमति देने से इनकार कर दयिा; इसके लिए, और बहष्कृत वधिर्मी-नेता के साथ अपने संबंध के कारण, उन्हें स्वयं नर्वािसन का सामना करना पड़ा। हालाँकि, सम्राट की बहन कॉन्स्टेंस के संरक्षण के कारण, यूसेबयिस को नर्वािसन से वापस बुला लयिा गया और, अपना पद फरि से संभालने के बाद, उन्होंने ऑर्थोडॉक्स के खलिाफ काम करना शुरू कर दयिा।

[1129] पहले सार्वभौमकि धर्मसभा में, वधिर्म के समर्थकों ने, अपने पक्ष में सच्चाई का कोई आधार न होने के कारण, छल के द्वारा अपना काम चलाने की कोशशि की और सभा के अन्य सदस्यों को एक ऐसा धर्मसूत्र प्रस्तावति कयिा जसिमें परमेश्वर के पुत्र के बारे में प्रयुक्त अभव्यिक्तयिों की अस्पष्टता ने एरयिन पुनर्व्याख्याओं के लिए जगह छोड़ दी थी। लेकनि पवत्रि पतिाओं ने, यह स्वीकार करते हुए कि परमेश्वर का पुत्र 'पति के समान सार का जन्मा हुआ' और 'पति के एक ही सार का' है, इन अभव्यिक्तयिों को अपने धर्म-सूत्र में शामलि कयिा, और इस प्रकार 'सच्चे परमेश्वर से सच्चे परमेश्वर' में प्राचीन वश्विास की पुष्टि की। इस धर्म-सूत्र पर परषिद के सभी सदस्यों ने हस्ताक्षर कए, यहाँ तक कि एरयिन पक्ष के समर्थकों ने भी, यद्यपि वे ईमानदार नहीं थे; साथ ही, उन्होंने परमेश्वर के पुत्र की एकसारता को व्यक्त करने वाले ग्रीक शब्द, 'होमौसयिोस' (homousios) को 'ओमौसयिोस' (omousios) - यानी समान पदार्थ का - के रूप में पढ़ा, या कम से कम इसे इसी दूसरे अर्थ में समझा। यूसेबयिस इस मामले को सम्राट के सामने इस तरह प्रस्तुत करना चाहता था कि यह सुझाव मलि कि ऑर्थोडॉक्स और एरयिनों के बीच के मतभेद केवल धर्म-वश्विास की शर्तों और अभव्यिक्तयिों की वभिन्नि व्याख्याओं से उत्पन्न एक गलतफहमी और ववािद का मामला था, न कि स्वयं वश्विास के सार से संबंधति था, और यह कि एरयिस नकिया परषिद के धर्म-वश्विास से पूरी तरह सहमत था।

कए बना, उन्होंने अपनी दया में एरयिस को अलेक्जेंड्रयिा लौटने की अनुमतदि दी। और इस प्रकार यह धर्मद्रोही, चर्च के लए एक बड़ी दुर्भाग्य की बात यह थी कि वह अलेक्जेंड्रयिा लौट आया। यह घटनाक्रम ऑर्थोडॉक्स के लए, और वशिेष रूप से मसीह के एक सैनकि और ऑर्थोडॉक्सी की सच्ची परंपराओं के एक दृढ़ रक्षक, संत अथेनासयिस के लए, अत्यंत दुखद और खेदजनक था। उस समय, उन्हें पहले ही आर्चडीकन के पद पर पदोन्नत कयिा जा चुका था। मसीह के इस सपिाही ने उस वधिर्मी का पीछा कयिा जसिने भेड़यि की तरह मसीह की कलीसयिा पर आक्रमण कयिा था, और अपने लेखन तथा अपने उपदेश के माध्यम से उसके दुर्भावनापूर्ण इरादों को उजागर कयिा। साथ ही, अथेनासयिस ने परम पावन आर्चबशिप अलेक्जेंडर से ज़ार को एक पत्र लखिने का आग्रह कयिा, और उन्होंने स्वयं उनके साथ मलिकर लखिा, जसिमें उस भोलेपन पर प्रकाश डाला कि कैसे ज़ार, धोखे और वधिर्मी कथाओं पर वशि्वास करके, अब एरयिस को स्वीकार कर रहा था, जन्होंने ईश्वर स्वयं और सभी पवत्रि पताओं द्वारा अस्वीकार कए गए ऑर्थोडॉक्स चर्च से मुंह मोड़ लयिा था, और उन्हें पैट्रस्टिकि कैनन को कमजोर करने की अनुमतदि रहे थे। लेकनि राजा ने यूसेबयिस के उकसावे पर, एक और भी कठोर पत्र से जवाब दयिा, जसिमें उन्होंने उन्हें मौन न रहने पर पदच्युत करने की धमकी दी। फरि भी इस धर्मपरायण और दयालु राजा ने ऐसा अपने क्रोध को शांत करने के लए नहीं कयिा, और न ही इसलए कि वह एरयिनवाद की ओर झुका हुआ था, बल्कि चर्चों के बीच कोई कलह न हो, यह सुनश्चिति करने के लए एक उत्साह—भले ही वह भ्रामक था—के कारण ऐसा कयिा। अपने कोमल हृदय से शांतसि प्रेम करने वाले राजा ने वहाँ शांतकिी तलाश की जहाँ उसका अस्तत्वि असंभव था: क्योंकि वधिर्म ईसाई धर्म के साथ शांतसि कैसे रह सकता है?

थोड़ी ही देर बाद, परम पावन अलेक्जेंडर का नधिन हो गया; सभी ऑर्थोडॉक्स ईसाइयों ने सर्वसम्मतसि अथेनासयिस को अलेक्जेंड्रयिा के सहिासन का उनका उत्तराधकिारी चुना, एक ऐसे वशि्व के योग्य पात्र के रूप में[1130] । उस समय, कलह के गुप्त बीजारोपणकर्ता—एरयिनों—कुछ समय के लए चुप रहे, अथेनासयिस के साथ खुले संघर्ष से परहेज़ करते हुए; लेकनि बाद में, शैतानी उकसावे पर, उन्होंने अपनी धूर्तता का खुलासा कयिा और अपनी दुर्भावना में छपिी वषि को खुलेआम उगल दयिा, क्योंकि संत अथेनासयिस ने धर्मद्रोही एरयिस को चर्च की संगतमिें शामलि करने से इनकार कर दयिा था, भले ही उसके पास इस संबंध में एक शाही फरमान था। हर जगह, एरयिनों ने उस नर्दिोष व्यक्तकिे वरिुद्ध शत्रुता भड़काना और दुर्भावनापूर्ण नदिा फैलाना शुरू कर दयिा, यह सुनश्चिति करने का प्रयास करते हुए कि जो स्वर्गीय नवािसों का योग्य था, उसे न केवल उसके सांसारकि बशिप के सहिासन से हटा दयिा जाए, बल्कि शहर से भी नर्वासति कर दयिा जाए। लेकनि अथानासयिस अडगि रहे, और दाऊद के साथ गा रहे थे: *'यदय सेना मेरी ओर चढ़ाई करे, तौभी मेरा हृदय न डरेगा'* (भजन संहति 26:3)।

इस वशि्वासघाती साज़शि का सरगना यूसेबयिस था, जो केवल धार्मकिता का नाम मात्र धारण करता था[1131] , लेकनि वास्तव में दुष्टता का पात्र था। उसने अपने समान वचिारधारा वाले सहयोगयिों के साथ मलिकर, राजा की सौम्यता का फायदा उठाते हुए और यह मानते हुए कि अब समय आ गया है, सभी को अथानासयिस को सहिासन से हटाने के लए उकसाया। यूसेबयिस ने सोचा कि अगर वह अथानासयिस को पदच्युत कर देगा, तो वह आसानी से अन्य ऑर्थोडॉक्स वशि्वासयिों पर काबू पा लेगा और एरयिन सद्धिांत को स्थापति कर देगा। उसने उस धर्मी पुरुष के वरिुद्ध अन्यायपूर्ण और झूठी बदनामी फैलाना शुरू कर दयिा, जो वधिर्मयिों को वशि्वसनीय प्रतीत हुई। इस उद्देश्य के लए, उसने पैसे के लए मेलेटयिस के एक अनुयायी इसऑन[1132] को काम पर रखा, जो यूडोमन जतिना चालाक और कैलनिकिस जतिना दुष्ट था। अथेनासयिस के खलिाफ आरोप इस प्रकार थे:

[1130] पहले सार्वभौमकि परषिद से लौटने के पाँच महीने बाद अलेक्जेंड्रयिा के संत अलेक्जेंडर की मृत्यु हो गई। उस समय अथेनासयिस अलेक्जेंड्रयिा में नहीं थे। मरते समय, उस वृद्ध पुरोहति ने अपनी मंडली को पीछे छोड़ते हुए, भटकती हुई नगिाहों से चारों ओर देखा, कसिी ऐसे व्यक्तकिी तलाश में जो उन पर भरोसा करके उन्हें सौंप सके। अलेक्जेंडर चल्लिाए, 'अथानासयिस, अथानासयिस! तुम सोचते हो कि तुम बच सकते हो। नहीं! तुम बचकर नहीं जाओगे।' वास्तव में, अथानासयिस उस भाग्य से नहीं बच सके जो उनके लए ऊपर से नर्धिारति था। चूंकि उन्हें दविंगत चरवाहे और झुंड की इच्छा से चुना गया था, अलेक्जेंड्रयिा पहुँचते ही लोगों ने इस बात पर लगातार जोर देना शुरू कर दयिा कि एकत्रति बशिप अथेनासयिस को बशिप के रूप में अभषिति करें, और वे तब तक नहीं रुके जब तक कि उन्हें अपनी इच्छा प्राप्त नहीं हो गई, भले ही यह अथेनासयिस की अपनी इच्छा के वरिुद्ध ही क्यों न हो।

[1131] यूसेबयिस, ग्रीक शब्द से, का अर्थ है 'धार्मकि'।

[1132] लकिोपोलीस (थेबाइड में) के बशिप मेलेटयिस ने उन लोगों को चर्च में फरि से शामलि करने का वरिोध कयिा, जन्होंने डयिोक्लेशयिन के उत्पीड़न के दौरान चर्च को त्याग दयिा था। अलेक्जेंड्रयिा के आर्चबशिप सेंट पीटर, जो सभी मस्रि के सर्वोच्च आर्चपास्टर थे, ने वशि्वास से भटक चुके लोगों के प्रतअिधकि उदार होने के कारण, इस बात के लए उन्हें चर्च से बहष्किृत कर दयिा। हालाँकि, मेलेटयिस ने अपने वचिारों से

1) कि वह मस्रिवासयिों को पुरोहतिों के परधिानों, लनिन के कपड़ों, वेदी के पर्दों और कपड़ों, और अन्य चर्च के सामानों के लिए कर चुकाने के लिए मजबूर कर रहा था;

2) कि वह राजा के प्रति शत्रुतापूर्ण था और राजा के आदेशों की अवहेलना करता था;

[1133]3) कि वह लालची था और उसने अपने एक दोस्त के पास रखवाने के लिए सोने से भरी एक संदूक भेजी थी। इसके अतरिक्ति झूठे पुरोहति इशरिा ([1134]) के संबंध में एक और आरोप लगाया गया, जो अपनी दुष्टता में कपटी, वशि्वासघाती और चालाक था; उसने बनिा पारंपरकि दीक्षा के प्रेसीबायटर का पद धारण कर लयिा था, और उसने इतने सारे बुरे, गैर-कानूनी और आपराधकि कृत्य कए कि वह न केवल नष्किासति और अपमानति कए जाने का, बल्कि कठोर दंड पाने का भी पात्र था। इस्खरि के बारे में सब कुछ जानने के बाद, धन्य अथेनासयिस—जो ऐसे मामलों में हमेशा पूरी तरह से सावधान और सतर्क रहते थे—ने मरेओटा के लिए पुरोहति मकरयिस को इस्खरि के सभी गैर-कानूनी कृत्यों की जांच करने के लिए भेजा। हालाँकि, इशरि पूछताछ और बेनकाब होने के डर से वहाँ से भाग गया और नकिोमेडयिा पहुँचकर यूसेबयिस के सामने अथेनासयिस पर बदनामी फैलाने लगा। यूसेबयिस और उसके साथयिों ने इसहिर, जो ईश्वर से भटका और पवत्रि नयिमों का उल्लंघनकर्ता था, को एक सच्चे पुरोहति के रूप में स्वीकार कयिा और उसका सम्मानपूर्वक व्यवहार कयिा: क्योंकि अपने जैसे लोगों से प्रेम करना स्वाभावकि है, चाहे वह दुष्टता में हों या सद्गुण में। अत्यधकि घृणा से अथानासयिस के प्रति क्रोधति होकर, उन्होंने इशरिा का बड़े आनंद से स्वागत कयिा। उन्होंने उसकी धृष्टता और अभद्रता को प्रोत्साहति कयिा और उसे बशिप का पद देकर सम्मानति करने का वादा कयिा, बशर्ते वह उस धर्मी व्यक्ति के खलिाफ कोई बदनामी या झूठा आरोप लगा सके। इश्खरि, जो इन मामलों में चालाक और कुशल था, ने नर्दिोष अथेनासयिस पर आरोप लगाने का प्रयास कयिा। उसने दावा कयिा कि अथानासयिस के आदेश पर, पुरोहति मकारयिस ने चर्च में जबरदस्ती घुसकर, उसे बहुत गुस्से में वेदी से खींच लयिा, वेदी को पलट दयिा, दव्यि रहस्यों से भरे प्याले को तोड़ दयिा, और पवत्रि पुस्तकों को जला दयिा। इश्खरि द्वारा की गई इस बदनामी को सत्य मानकर और इसे अन्य झूठे आरोपों में जोड़कर, अथेनासयिस के दुश्मनों ने राजा कॉन्स्टेंटाइन के पास जाकर संत अथेनासयिस पर बदनामी की। वशिेष रूप से, उन्होंने अरीयस को चर्च की संगति में प्रवेश देने से इनकार करके, अथानासयिस पर राजा के लखिति आदेशों को अनदेखा करने और राजा की आज्ञाओं की अवज्ञा करने का आरोप लगाकर राजा के क्रोध को भड़काने की कोशशि की। इसके अलावा, परम धन्य पर एक मृत हाथ के संबंध में भी आरोप लगाया गया, जसिका कथति तौर पर अथानासयिस चमत्कार और जादू-टोने के माध्यम से इस्तेमाल करते थे (जबकि वे स्वयं, सचमुच, शापति और स्पष्ट जादूगर थे); दावा कयिा गया कि यह हाथ आर्सेनयिस नामक एक पादरी का था, और यह अथेनासयिस की साजशिों के कारण काट दयिा गया था।

मामले की जाँच करने पर, राजा हैरान रह गया: वह अथेनासयिस के पुण्य से अच्छी तरह वाकफि था, फरि भी एक ही समय में उस पर लगाए गए आरोप उसे कुछ हद तक वशि्वसनीय लगे। इसलिए उसने एक बीच का रास्ता चुना: उसने न तो अथेनासयिस को दोषी ठहराया, और न ही उसके मामले की जाँच करने से इनकार कयिा। और चूँकि उस समय यरूशलेम में पवत्रि सेपुलक्र की कलीसयिा के समर्पण का पर्व मनाया जा रहा था, और सभी देशों से बशिप वहाँ इकट्ठा हो रहे थे[1135] , राजा ने इस अवसर का लाभ उठाते हुए बशिपों को महान अथानासयिस के खलिाफ आरोपों की गहन जाँच के लिए,

---

सहमत बशिपों के साथ मलिकर, प्रमुख क्षेत्रीय बशिप के अधकिारों का बहष्किार कयिा और संत पीटर के उत्तराधकिारयिों के अधकिार को मान्यता नहीं दी। प्रथम सार्वभौमकि परषिद में, मेलेटयिस के संप्रदाय को नदिा कयिा गया, लेकनि मेलेटयिन बशिप 5वीं शताब्दी के मध्य तक मौजूद रहे। 326 में, मेलेटयिस और उनके समान वचिारधारा वाले अनुयायियिों ने अलेक्जेंड्रयिा के सहिासन के लिए सेंट अथेनासयिस के चुनाव का वरिोध कयिा; और जब यह चुनाव उनकी इच्छा के वरिुद्ध हुआ, तो उन्होंने यह बदनाम करने वाली अफवाहें फैलानी शुरू कर दीं कि अथेनासयिस को छह या सात बशिपों द्वारा, दूसरों से गुप्त रूप से, गैरकानूनी रूप से चुना गया था। इस प्रकार मेलेटयिन, एरयिन के समकक्ष, अथेनासयिस के वरिोधी थे, जनिका उन्होंने पक्ष लयिा।

[1133] मारेओट का क्षेत्र उत्तरी-पश्चमिी मस्रि में, अलेक्जेंड्रयिा के दक्षणि में, खाड़ी के तट पर स्थति था, और धार्मकि मामलों में यह अलेक्जेंड्रयिा के बशिप के अधकिार के अधीन था।

[1134] इस्खरिी एक पुरोहति नहीं था। यह सच है कि उसे इस पद पर सेंट अलेक्जेंडर के जीवति रहते हुए, कोलुफ द्वारा अभषिक्ति कयिा गया था, जसिने अपने लिए बशिप के अधकिारों का अतक्रिमण कर लयिा था; लेकनि 324 में अलेक्जेंड्रयिा की परषिद में, इस कोलुफ को एक धोखेबाज़ के रूप में पदच्युत कर दयिा गया था, और उसके द्वारा अभषिक्ति सभी लोगों को वैध रूप से अभषिक्ति नहीं माना गया।

[1135] धर्मगुरु यरूशलेम में सम्राट कॉन्स्टेंटनि महान द्वारा उद्धारकर्ता के दफन और पुनरुत्थान के स्थल पर नर्मिति भव्य 'चर्च ऑफ द रेसरेक्शन' के अभषिक के उपलक्ष्य में आयोजति उत्सव के लिए एकत्रति हुए थे। इस चर्च का अभषिक 13 सतिंबर 335 को कयिा गया था।

साथ ही एरियस के मामले की भी जाँच करने के लिए, टायर में इकट्ठा होने का आदेश दिया[1136] । क्या वह वास्तव में, जैसा कि वह स्वयं दावा करता है, पवित्र धर्म के सिद्धांत के अनुसार उपदेश देता है और सच्ची ऑर्थोडॉक्स परंपराओं का पालन करता है: यदि उसे ईर्ष्या के कारण पदच्युत किया गया है, तो उसे पुरोहितों और परिषद द्वारा पुनःस्वीकार किया जाए और चर्च के शरीर के साथ, इसके सदस्यों में से एक के रूप में, पुनर्मिलित किया जाए; लेकिन यदि वह इसके सिद्धांतों के विपरीत विश्वास करता है और अधर्मी ढंग से उपदेश देता है, तो उसे पवित्र कानूनों के अनुसार न्याय दिया जाए और उसके कर्मों के अनुसार उचित दंड दिया जाए। जहाँ तक आर्सेनियस के मामले की बात है, राजा ने पहले एक जांच कराने का आदेश दिया, ताकि, यदि अथेनासियस को दोषी पाया जाए, तो उसे कानूनों के अनुसार दोषी ठहराया जा सके। इस मामले की गहन जांच सुनिश्चित करने के लिए, कॉन्स्टेंटाइन ने अपने एक प्रबंधक, जिसका नाम आर्केलाउस था, को फोनीशियन राजकुमार नोन्स के साथ भेजा। जब बाद वाला टायर पहुँचा (उस समय अथेनासियस वहाँ मौजूद थे, और वे 'मृत हाथ' और 'जादू-टोने' के बारे में उनके खिलाफ रची जा रही बदनामी के बेनकाब होने का इंतजार कर रहे थे), उन्होंने जांच तब तक के लिए टाल दी जब तक कि अलेक्जेंड्रिया से अपेक्षित बदनामी करने वाले नहीं आ गए, जो यह दावा कर रहे थे कि उन्होंने अथेनासियस के दुराचार (आर्सेनियस का हाथ काटने और जादू-टोना) को अपनी आँखों से देखा था। जांच में यह स्थगन ईश्वर की व्यवस्था से हुआ, जैसा कि मामले के परिणाम ने स्पष्ट रूप से प्रदर्शित किया। क्योंकि ईश्वर, जो सर्वोच्च से सभी पर दृष्टि रखते हैं और अन्याय करने वालों से अन्याय सहने वालों को बचाते हैं, ने समय बढ़ा दिया ताकि आर्सेनियस स्वयं टायर पहुँचने का समय पा सके। अर्सेनियस अलेक्जेंड्रिया के चर्च के पुरोहितों में से एक था, जो रीडर (पाठक) का पद धारण करता था; एक गंभीर अपराध करने के कारण, उसे एक कठोर निर्णय और क्रूर सज़ा का सामना करना था; इस डर से, वह भाग गया और लंबे समय तक छिपकर रहा – उसका पता अज्ञात था। हालाँकि, अथानासियस के विश्वासघाती विरोधियों ने, चालाक योजनाएँ रचकर और यह बिल्कुल भी उम्मीद न करते हुए कि आर्सेनियस अपने किए पाप के डर और शर्म से कभी सामने आएगा, निर्लज्जता से लिखा कि आर्सेनियस का कटा हुआ हाथ मौजूद है, और यह अफवाह दूर-दूर तक फैला दी कि अथानासियस ने यह घिनौना अपराध किया था। जब यह अफवाह कि अथेनासियस पर आर्सेनियस का हाथ कटवाने का मुकदमा चल रहा था, पूरे देश में फैल गई, तो यह आर्सेनियस तक भी पहुँची, जो एक अज्ञात स्थान पर छिपकर रह रहे थे। अपने पिता और संरक्षक के शोक में, और इस बात से हृदय में दुखी कि सत्य पर झूठ का अन्यायपूर्ण विजय हो रही थी, वह गुप्त रूप से टायर आया और स्वयं अथेनासियस के सामने उपस्थित हुआ, उनके पवित्र चरणों में गिर पड़ा। धन्य अथेनासियस, आर्सेनियस के आगमन पर प्रसन्न होकर, ने उसे आज्ञा दी कि वह मुकदमे तक किसी के सामने न आए।

यह कॉन्स्टेंटाइन के शासन का तीसवें वर्ष था[1137] जब विभिन्न शहरों के बिशप टायर में एकत्रित हुए[1138] । पुरोहित मकारियस को सैनिकों द्वारा लाया गया; उनके बीच राज्यपाल भी था, जो बिशपों के साथ मिलकर मुकदमे की अध्यक्षता करना चाहता था, साथ ही कुछ अन्य धर्मनिरपेक्ष अधिकारी भी थे; निदिक भी उपस्थित हुए, और मुकदमा शुरू हुआ। तब अथेनासियस को अदालत में बुलाया गया। पहले तो उस पर चर्च के सूती वस्त्रों और घूंघट के संबंध में तथा लालच का झूठा आरोप लगाया गया; लेकिन तुरंत ही इस बदनामी की झूठता उजागर हो गई, और बदनाम करने वालों की दुर्भावना सभी के सामने आ गई।

इस बीच, अथानासियस के विरोधियों की दुर्भावनापूर्ण घृणा कम होने का कोई संकेत नहीं दिखा; वे अथानासियस के खिलाफ अपनी झूठी बदनामियों से अभी भी तृप्त नहीं थे, बल्कि एक साज़िश के बाद दूसरी और एक झूठ के बाद दूसरा झूठ जोड़ते रहे। धर्मद्रोही विधर्मियों ने एक निर्लज्ज महिला को रिश्वत दी कि वह अथेनासियस के खिलाफ एक झूठी

[1136] टायर शहर भूमध्य सागर के पूर्वी तट पर स्थित था। यह फिनिसिया के सबसे पुराने, सबसे अच्छी तरह से किलेबंदी किए गए और सबसे खूबसूरत तटीय व्यापारिक शहरों में से एक था, और इसकी राजधानी के रूप में भी कार्य करता था।

[1137] यहाँ, कॉन्स्टेंटाइन महान के शासनकाल की गिनती उनके एकल शासन की शुरुआत से नहीं, बल्कि उनके शासन की शुरुआत से ही की जाती है (उन्होंने 306 से 324 तक साम्राज्य के पश्चिमी आधे हिस्से पर, और 324 से 337 तक पूरे साम्राज्य पर शासन किया)।

[1138] टायर की परिषद 335 में, शाही अधिकारी डायोनिसियस की देखरेख में हुई। इस परिषद में साठ तक बिशप शामिल हुए। संत अथेनासियस मिस्र के 48 बिशपों के साथ पहुंचे। सबसे प्रतिष्ठित धर्मप्रांतों के बिशप उपस्थित थे: एंटीओक के फ्लासलिस, यरूशलेम के मैक्सिमस, और थिसलुनीका के अलेक्जेंडर। उनके आगमन पर, संत अथेनासियस ने अपने पद के नाते अपना हक़ वाला आसन लेना चाहा, लेकिन परिषद के अध्यक्ष, सेसरिया के बिशप यूसेबियस (एक प्रसिद्ध चर्च इतिहासकार और एरियनों के समर्थक) ने उन्हें एक मुकदमे के अभियुक्त की तरह खड़े होने का आदेश दिया। परिषद की कार्यवाही पक्षपाती तरीके से की गई, जिसमें एरियस और उसके समान विचारधारा वाले अनुयायियों का पक्ष लिया गया और संत अथेनासियस को नुकसान पहुँचाया गया।

बदनामी रचे, जिसमें यह आरोप लगाया गया कि उसकी इच्छा के विरुद्ध उसके साथ ठहरते हुए, उसने उसके साथ अनैतिक कृत्य किया था।

जब मुकदमा शुरू हुआ, तो न्यायाधीश अपनी सीटों पर बैठ गए और बदनाम करने वाले उपस्थित हुए; इस महिला को भी लाया गया। रोते हुए, उसने अथानासियस के खिलाफ शिकायत की, जिसे उसने कभी देखा भी नहीं था और यह भी नहीं जानती थी कि वह कैसा दिखता है।

उसने अथेनासियस के बारे में कहा, 'भगवान के लिए, मैंने उसे अपने घर में एक सम्माननीय और पवित्र व्यक्ति के रूप में लिया था, जो मेरे और मेरे परिवार के लिए आशीर्वाद चाहता था। और फिर भी, इसके विपरीत, मुझे उसके हाथों कष्ट झेलना पड़ा है।' आधी रात को, जब मैं अपने बिस्तर पर सो रही थी, वह मेरे पास आया और जबरदस्ती मुझ पर हमला किया, क्योंकि उसके चंगुल से मुझे बचाने के लिए कोई नहीं आया, क्योंकि घर में हर कोई गहरी नींद में था।

जबकि वह निर्लज्ज महिला ऐसे अपमानजनक शब्द बोल रही थी और अपने आँसुओं के बीच ये झूठे आरोप लगा रही थी, अथानासियस का मित्र, प्रेस्बिटिर थमोथी, जो दरवाजों के बाहर उनके साथ खड़े थे और उपरोक्त बदनामी सुन रहे थे, आत्मा में क्रोधित हो गए; और, अचानक अदालत में प्रवेश करके, वे जल्दबाजी में बदनामी करने वाली के सामने खड़े हो गए, मानो वे स्वयं अथानासियस हों; उन्होंने साहसपूर्वक उससे निम्नलिखित शब्द कहे:

'क्या मैंने, औरत, तुम्हें रात में हमला किया, जैसा तुम दावा कर रही हो? क्या मैंने किया?'

लेकिन उस महिला ने, और भी अधिक निर्लज्जता से, न्यायाधीशों से चिल्लाकर कहा:

'यह आदमी मेरा अपमान करने वाला है और वही है जिसने मेरी पवित्रता भंग करने की कोशिश की है; उसने, और किसी ने नहीं, मेरे साथ रहते हुए मेरी दया का बदला गाली-गलौज से चुकाया।'

यह सुनकर न्यायाधीश हँस पड़े, जबकि अथेनासियस के विरोधी अत्यंत लज्जित हुए, क्योंकि उनका झूठ स्पष्ट रूप से उजागर हो गया था। सभी लोग ऐसी निर्लज्ज बदनामी से स्तब्ध रह गए और उन्होंने अथेनासियस को उस पाप से पूरी तरह से निर्दोष घोषित कर दिया, जिसका उन पर आरोप लगाया गया था। लेकिन अथेनासियस के विरोधियों ने उस संत पर जादू-टोने और आर्सेनियस की हत्या का आरोप लगाना शुरू कर दिया; उन्होंने सभी के सामने एक भयानक दिखने वाला मृत हाथ लाया और उसे शर्मिंदगी के साथ संत की ओर लहराते हुए, चिल्लाए:

'यह हाथ चुपचाप तुम्हारे विरुद्ध पुकार लगा रहा है, अथानासियस; यह हाथ तुम्हें दोषी ठहराता है; यह तुम्हें पकड़ लेता है और कसकर थामे रखता है, ताकि तुम नदिा से न बच सको; तुम शब्दों, चालाकी या किसी भी तरह की धूर्तता से इसकी गवाही से नहीं बच पाओगे।' हर कोई आर्सेनियस को जानता है, जिसका यह हाथ आपने अन्यायपूर्वक और बिना किसी दया के काट दिया। तो हमें आखिरकार बताइए, आपको ऐसा करने की क्या आवश्यकता महसूस हुई और आपने इसे किस उद्देश्य से काटा?

हालाँकि, अथानासियस ने धैर्यपूर्वक उनकी बात सुनी, अपने प्रभु मसीह का अनुकरण करते हुए, जिन्हें एक बार यहूदियों ने दोषी ठहराया था, फिर भी उन्होंने न तो बहस की और न ही पुकारा, बल्कि *'वध के लिए ले जाए गए मेमने की तरह'* (यशायाह 53:7) रहे; पहले तो वह चुप रहे, फिर, आरोप का जवाब देते हुए, उन्होंने नम्रता से कहा:

'क्या आप में से कोई ऐसा है जो आर्सेनियस को अच्छी तरह जानता हो? क्या कोई ऐसा भी नहीं है जो निश्चित रूप से पहचान सके कि यह वास्तव में उसका हाथ है?'

जब कई लोग यह दावा करते हुए अपनी सीटों से उठे कि वे स्वयं आर्सेनियस और उसके हाथ को अच्छी तरह जानते थे, तो अथानासियस ने तुरंत उस पर्दे को हटा दिया जिसके पीछे आर्सेनियस खड़ा था और उसे सभा के बीच में खड़े होने का आदेश दिया। और इस प्रकार अर्सेनियस अदालत के बीचों-बीच, जीवित और स्वस्थ, दोनों हाथों के साथ खड़ा था। धन्य व्यक्ति ने, बदनाम करने वालों को क्रोध से घूरते हुए, कहा:

क्या वह आर्सेनियस नहीं है? क्या वह वही नहीं है जिसका हाथ, जैसा तुम कहते हो, काट दिया गया था? क्या वह वही नहीं है जिसे अलेक्जेंड्रिया के सभी लोग जानते हैं?

और, आर्सेनियस को पहले अपना दाहिना हाथ और फिर बायाँ हाथ उठाने का आदेश देते हुए, वह ज़ोर से चिल्लाया, मानो सत्य से दूर वालों को पुकार रहा हो:

'देखो, हे पुरुषो: यह है आर्सेनियस! ये हैं उसके हाथ, जिन्हें बिल्कुल भी नहीं काटा गया है! तो फिर हमें अपना आर्सेनियस दिखाओ, अगर तुम्हारे पास कोई है, और हमें बताओ कि वह कटा हुआ हाथ किसका है, जो तुम्हें ही इस अपराध के अपराधी के रूप में दोषी ठहराता है।'

जब मुकदमा इस प्रकार चल रहा था, तब राजा का एक संदेश परिषद में पहुँचा, जिसमें बदनाम करने वालों की कड़ी निंदा की गई थी, यह आदेश दिया गया था कि अथानासियस को इस अन्यायपूर्ण आरोप से बरी कर दिया जाए, और उसे कृपापूर्वक राजा के पास बुलाया गया। यह इस प्रकार हुआ। अलेक्जेंड्रिया की कलीसिया के दो वरिष्ठ पादरी, एपिस और मकारियस (वे नहीं जिन्हें सुनवाई के लिए बेड़ियों में लाया गया था, बल्कि उसी नाम का कोई और), निकोमेडिया आकर राजा को अथानासियस के बारे में सब कुछ बताया—कि कैसे उनके दुश्मनों ने उस पवित्र व्यक्ति पर झूठे आरोप लगाए थे और एक अनुचित परिषद बुलाई थी। राजा ने, सत्य को पहचानकर और ईर्ष्या से उत्पन्न बदनामी को भांपकर, टायर में परिषद के बिशपों को इसी प्रकृति का एक पत्र लिखा; और जब इसे अदालत में पढ़ा गया, तो यूसेबियस के अनुयायी भय से ग्रस्त हो गए और उन्हें समझ नहीं आया कि क्या करें; फिर भी, बड़ी ईर्ष्या से प्रेरित होकर, वे अपनी उन्मत्तता से नहीं रुके; वे एक बार पहले ही पराजित और लज्जित हो चुके थे, इससे संतुष्ट नहीं थे, और आगे के झूठे आरोपों का सहारा लेकर, उन्होंने मैकारियस पर बदनामी की, जिसे अदालत में लाया गया था। झूठा अभियोजक इसिरि था, और झूठे गवाह यूसेबियस के अनुयायी थे, जिन्हें अथेनासियस ने पहले झूठा और अविश्वसनीय कहकर खारिज कर दिया था। अथेनासियस यह पूरी तरह से जांच करवाना चाहता था कि क्या इसिरि वास्तव में एक सच्चा पुरोहित था, और तभी उसने अपने खिलाफ लगाए गए आरोपों का जवाब देने का वादा किया। न्यायाधीश इससे सहमत नहीं हुए और उन्होंने मैकारियस के खिलाफ मुकदमा चलाना जारी रखा। जब बदनाम करने वालों ने अपनी सारी बदनामी कर ली, तो सुनवाई स्थगित कर दी गई, क्योंकि उस स्थान पर जांच करना आवश्यक था जहाँ मैकारियस पर वेदी गिराने का आरोप लगाया गया था, यानी मारेओट्स में। यह देखकर कि वही अभियोजक—जिन्हें उसने शुरू से ही झूठा करार दिया था—इसी उद्देश्य के लिए मारेओटा भेजे जा रहे थे, अथेनासियस, हो रहे अन्याय को सहन न कर सके, और लगातार पुकारने लगा:

'सत्य का विनाश हो गया है, धार्मिकता को पैरों तले रौंदा गया है, न्याय का नाश हो गया है, और न्यायाधीशों से वैध जाँच और मामलों पर सावधानीपूर्वक विचार करना गायब हो गया है! क्या यह वैध है कि अपना नाम साफ़ करना चाहने वाले को ज़ंजीरों में बाँधा जाए, जबकि पूरे मामले का निर्णय बदनाम करने वालों और दुश्मनों को सौंप दिया जाए, और वही बदनाम करने वाले उस व्यक्ति का न्याय करें जिसे वे बदनाम करते हैं?'

इस प्रकार संत अथेनासियस महान ने सभी के सामने इस बारे में पुकार लगाई और पूरे परिषद के समक्ष गवाही दी। हालाँकि, यह देखकर कि बढ़ते हुए दुश्मनों और ईर्ष्यालु लोगों की संख्या के कारण उसे कोई सफलता नहीं मिलेगी, वह गुप्त रूप से राजा के पास गया। और तुरंत ही उस परिषद ने—या यूँ कहें कि उस दुष्ट सभा ने—अथेनासियस को उनकी अनुपस्थिति में दोषी ठहरा दिया। मरेओथ में, संत अथेनासियस के दुश्मनों की इच्छा और चाह के अनुसार आयोजित, उपरोक्त मामले की अन्यायपूर्ण जांच के समापन पर, न्यायाधीशों ने—जो स्वयं पदच्युति के योग्य थे—निर्णय सुनाया कि अथेनासियस को निश्चित रूप से पदच्युत कर दिया जाए। फिर वे यरूशलेम के लिए रवाना हुए, जहाँ उन्हीं लोगों ने—जिन्होंने केवल दिखावे के लिए धर्मपरायणता की बात की थी और पिछले निकिया परिषद में परमेश्वर पिता के साथ परमेश्वर पुत्र की एकसारता के सिद्धांत पर पाखंडपूर्वक हस्ताक्षर किए थे—परमेश्वर को अस्वीकार करने वाले एरियस को चर्च की संगति में स्वीकार कर लिया। लेकिन जिन्होंने हृदय और मुख से ऑर्थोडॉक्स (सही) धर्म का पालन किया, उन्होंने एरियस के शब्दों और भाषणों पर सावधानीपूर्वक विचार करने और उनकी बारीकी से जाँच करने के बाद, शब्दों और भाषणों के भ्रम के पीछे छिपे धोखे को पहचान लिया; और, उसे एक लोमड़ी को पकड़ने की तरह पकड़कर, उन्होंने उसे सत्य के शत्रु के रूप में निंदा किया। उस समय, राजा का एक और संदेश आया (अथानासियस अभी तक राजा तक नहीं पहुँच पाए थे), जिसमें अथानासियस और उनके सभी आरोपियों और न्यायाधीशों को तुरंत उसके सामने उपस्थित होने का आदेश दिया गया था। इससे परिषद के सदस्यों में बहुत डर फैल गया, क्योंकि अथानासियस के दुश्मन, जिन्होंने एक गैरकानूनी मुकदमा चलाया था, इस बात से डरते थे कि उनका अन्याय उजागर हो सकता है; इसलिए, उनमें से कई अपने-अपने क्षेत्रों में बिखर गए। हालाँकि, यूसेबियस और निकिया के बिशप थियोगनिस[1139] , और कुछ अन्य लोग, टायर से अपनी विदाई में देरी करने के लिए कुछ विश्वसनीय बहाने बनाने में कामयाब रहे, और वहाँ काफी समय तक रुके रहे, जबकि वे राजा को पत्र द्वारा जवाब दे रहे थे। इस बीच, अथेनासियस निकोमेडिया में राजा के समक्ष उपस्थित हुए और

[1139] निकाया के बिशप थियोग्निस, निकोमेडिया के यूसेबियस के साथ, सबसे पहले एरियस के सिद्धांत को अपनाने वाले थे; उन्होंने प्रथम सार्वभौमिक परिषद में उनका समर्थन किया, जिसके बाद, यद्यपि उन्होंने रूढ़िवादी धर्मविश्वास पर हस्ताक्षर किए, उन्हें एरियस के साथ अपने संबंध के कारण निर्वासित कर दिया गया; एरियस की वापसी पर, थियोगनिस्ट को निर्वासन से वापस बुला लिया गया। उन्होंने जाहिरा तौर पर विधर्म का त्याग कर दिया, लेकिन गुप्त रूप से एरियनों की रक्षा की।

उन पर लगाए गए लालच के आरोप से अपना बचाव कयिा। और जब यूसेबयिस के समर्थक देरी कर रहे थे और राजा के सामने पेश होने की कोई जल्दी में नहीं थे, तो बादशाह ने अथेनासयिस को अपनी एक चट्ठिी के साथ अलेक्जेंड्रयिा के धर्मप्रांत में भेज दयिा, जसिमें संत के खलिाफ सभी बदनामयिों को नरिाधार और अन्यायपूर्ण बताया गया था।

जब संत अथेनासयिस इस प्रकार अपने धर्मप्रांत का शासन कर रहे थे, और एरयिस अलेक्जेंड्रयिा में था, तब एरयिन लोग लोगों के बीच बड़ी भ्रम और अशांति पैदा कर रहे थे। धन्य अथेनासयिस, यह देखकर सहन न कर सके कि एरयिस न केवल अलेक्जेंड्रयिा बल्कि पूरे मस्रि में ही अशांति और उथल-पुथल मचा रहा था, उन्होंने यह सब लखिति में राजा को सूचति कयिा और उससे उस ईश्वर-वरिोधी और जन-अशांतयिों के उत्प्रेरक को दंडति करने का आग्रह कयिा। इसके जवाब में, राजा की ओर से अलेक्जेंड्रयिा में तुरंत एक आदेश आया कि एरयिस को बंधकर शाही दरबार के सामने पेश कयिा जाए। अलेक्जेंड्रयिा से राजा के पास जाते समय, सीज़रयिा पहुँचने पर, एरयिस अपने समान वचिारधारा वाले सहयोगयिों से मलिा: नकिोमेडयिा के बशिप यूसेबयिस; नकिियिा के थयिोगनज़ि; और कालसीडोन के बशिप मारयिस[1140] ; ने मलिकर सलाह-मशवरिा करने के बाद, अथेनासयिस के खलिाफ नए-नए झूठे आरोप गढ़े, न तो उन्होंने ईश्वर का भय माना और न ही उस नर्दिोष व्यक्ति के प्रति दिया दखिाई, बल्कि उनकी एक ही इच्छा थी – सत्य को झूठ से ढक देना, जैसा कि दविय यशायाह कहते हैं: 'वे बुराई की योजना बनाते हैं और दुष्टता को जन्म देते हैं'—वे जनि्होंने कहा: *'क्योंकि हमने झूठ को अपना शरणस्थान बनाया है, और छल से हम स्वयं को ढाँप लेंगे'* (यशायाह 59:4, 28, 15)।[1141] धर्म-वपिथकों का धन्य अथानासयिुस को उनके पैट्रआर्कल सहिासन से हटाने और ऑर्थोडॉक्स पर अधकिार करने का उत्साह इतना अधकि था। और इस प्रकार वे राजा के सामने आए – एरयिस, जो स्वयं को सही ठहराना चाहता था, और यूसेबयिस और उसके सहयोगी – अपने अन्यायपूर्ण उद्देश्य को आगे बढ़ाने के लिए, और सत्य और अथानासयिस के वरिुद्ध खुले तौर पर झूठी गवाही देने के लिए। जब वे राजा के सामने उपस्थति हुए, तो उनसे तुरंत टायर में आयोजति परषिद के बारे में, वहाँ उन्होंने क्या नर्णिय लयिा और उन्होंने अथानासयिस पर क्या नर्णिय सुनाया, इस बारे में पूछा गया। उन्होंने राजा को उत्तर दयिा:

'हे राजा! हम वशिेष रूप से अथेनासयिस की गलतयिों पर शोक नहीं करते, परन्तु हम उस वेदी के वषिय में शोक और उत्साह से परपिूर्ण हैं जसिे उसने अपवत्रि कयिा, और पवत्रि रहस्यों से भरे उस प्याले के वषिय में जसिे उसने चकनाचूर कर टुकड़े-टुकड़े कर दयिा, तथा इस तथ्य के वषिय में कि उसने उस गेहूँ को भेजने पर रोक लगा दी जो परम्परागत रूप से अलेक्जेंड्रयिा से कॉन्स्टेंटनिोपल को भेजा जाता है[1142] : यह हमें वशिेष रूप से दुख पहुँचाता है; यह हमारी आत्मा को आहत करता है। इन दुष्कृत्यों के गवाह मस्रि के बशिप थे: एडमांटयिस, अनुवयिन, अर्वेस्टयिन और पीटर[1143] ; इन सबके लिए उनके द्वारा बेनकाब कएि जाने के बाद, अथेनासयिस उस मुकदमे से बच नकिले जसिके वह अपने कर्मों के लिए वाजबि तौर पर हकदार थे; फरि भी, वह पदच्युति से नहीं बच सके, बल्कि ऐसे गैर-कानूनी कृत्य करने की हम्मित करने के लिए पूरी परषिद द्वारा सर्वसम्मति से पदच्युत कर दएि गए।

[1140] काल्सेडोन के बशिप मारयिस ने, नकिीया के थयिोगनीस और कई अन्य लोगों की तरह, एरयिस की शक्षिाओं को अपनाया, टायर की परषिद में अथेनासयिस पर आरोप लगाया, और थयिोगनीस और एरयिस के अन्य समान वचिारधारा वाले अनुयायियों के साथ, मारेओट मामले में जांचकर्ताओं में से एक थे।

[1141] यहाँ भवष्यिवक्ता उन लोगों के बारे में बात कर रहे हैं जनिके पाप उन्हें परमेश्वर से अलग करते हैं। अथेनासयिस के आरोपयिों ने भी ऐसे ही पापयिों की तरह काम कयिा, और झूठ से सच्चाई को छपिाया।

[1142] अनादि काल से, अपनी उर्वरता के लिए प्रसद्धि मस्रि, ज़रूरतमंदों में वतिरण के लिए अलेक्जेंड्रयिा के रास्ते रोम को रोटी से लदा एक बेड़ा भेजता था। जब 330 में कॉन्स्टेंटाइन महान ने बज़िेन्टयिम में एक नई राजधानी की स्थापना की, और उसका नाम अपने नाम पर कॉन्स्टेंटनिोपल रखा—जसिे तारग्राद के नाम से भी जाना जाता है—तो उसने, इसकी आबादी बढ़ाने और उसके रखरखाव के साधनों को सुरक्षति करने के लिए, इस बेड़े का उद्देश्य बदल दयिा: रोटी बांटने का वशिेषाधकिार कॉन्स्टेंटनिोपल को प्रदान कयिा गया। कुल मलिाकर 80,000 तक रोटी के माप वतिरति कएि जाते थे। इस प्रकार अथानासयिस के दुश्मनों को उम्मीद थी कि नई बदनामी फैलाकर और सम्राट के क्रोध को भड़काकर, वे एक साथ राजधानी के लोगों के बीच अशांति पैदा कर सकते हैं। अथानासयिस से असंतुष्ट भीड़ दंगा कर सकती थी और, जैसा कि अथानासयिस के वरिोधी बशिपों को उम्मीद थी, इस प्रक्रयिा में उस पवत्रि व्यक्ति को मार सकती थी। नए अपमान के जवाब में अथानासयिस ने आपत्ति जताई, 'मैं यह कैसे कर सकता हूँ (गेहूं की ढुलाई रोक सकता हूँ), मैं एक नजिी व्यक्ति और एक गरीब आदमी हूँ?' नकिोमेडयिा के यूसेबयिस ने जवाब दयिा: 'नहीं, अथानासयिस एक शक्तशिाली और अमीर आदमी है; उसके पास कुछ भी करने का साधन है!'

[1143] ये सभी एरयिन बशिप थे, नकिोमेडयिा के यूसेबयिस के समर्थक।

ये शब्द सुनकर, राजा पहले तो चुप रहा, और मन में व्याकुल हो गया; फिर, बदनाम करने वालों को रोक न पाकर, उन्होंने आज्ञा दी कि उस धर्मी व्यक्ति को कुछ समय के लिए गॉल भेजा जाए[1144] – न तो इसलिए कि वे उन बदनाम करने वालों की बातों पर विश्वास करते थे या क्रोध से वशीभूत हो गए थे, बल्कि चर्च को शांत करने के लिए (जैसा कि उन लोगों ने गवाही दी है जो राजा के इरादे को निश्चित रूप से जानते थे)। सम्राट ने देखा कि अथेनासियस के खिलाफ कितने बिशप उठ खड़े हुए थे, और इसने अलेक्ज़ेंड्रिया और मिस्र के लोगों के बीच कितना बड़ा उथल-पुथल मचा दिया था। और इसलिए, इस तूफान को शांत करने, अफवाहों को खत्म करने और इतने सारे बिशपों के दुख को दूर करने की इच्छा से, उन्होंने उस पवित्र व्यक्ति को कुछ समय के लिए शहर से दूर रहने का आदेश दिया[1145] ।

इसके बाद, सम्राट कॉन्स्टेंटाइन स्वयं, अपने शासन के 31वें वर्ष में, पैंसठ वर्ष की आयु में निधन कर गए। अपने मृत्युशय्या पर, उन्होंने अपने साम्राज्य के उत्तराधिकारी के रूप में तीन बेटों के नाम बताए: कांस्टेंटिन, कॉन्स्टेंटियस और कॉन्स्टेंस, जिनके बीच उन्होंने अपनी वसीयत के अनुसार साम्राज्य को विभाजित किया, और उसका बड़ा हिस्सा अपने सबसे बड़े बेटे, कांस्टेंटिन को दिया। लेकिन चूँकि कांस्टेंटिन महान के मरने के समय उनके किसी भी बेटे की उपस्थिति नहीं थी, इसलिए उन्होंने अपनी वसीयत एक निश्चित पादरी[1146] को सौंपी, जो एरियस का एक गुप्त अनुयायी था। अपने भीतर गुप्त रूप से विधर्म को आश्रय देते हुए, इस पादरी ने शाही वसीयत को भी छिपाया; जब कई लोगों ने उससे पूछा कि क्या सम्राट ने मृत्युशय्या पर वसीयत बनाई थी, तो उसने इस बारे में कुछ नहीं कहा। उसने इस मामले में राजा के कुछ नपुंसकों को गुप्त सहयोगी बनाया था। जहाँ बड़े बेटे, कॉन्स्टेंटाइन, ने अपने मरणासन्न पिता के पास आने में देरी की, वहीं कॉन्स्टैंटियस ने यथाशीघ्र अंफ़ियोकिया छोड़ने की जल्दी की और सभी से पहले पहुँच गया। उपरोक्त पुरोहित ने गुप्त रूप से उसकी पिता की वसीयत उसे सौंप दी; बदले में, उसने कोई इनाम नहीं माँगा सिवाय इसके कि कॉन्स्टेंटियस एरियनों का पक्ष ले और उनकी सहायता करे; वह चाहता था कि कॉन्स्टेंटीयस, अपने सांसारिक साम्राज्य के लिए अमर राजा मसीह का धन्यवाद करने के बजाय, मूर्खतापूर्ण ढंग से इस बात से इनकार करे कि मसीह सभी का ईश्वर और प्रभु, तथा सृष्टिकर्ता है, बल्कि उसे एक प्राणी ही माने! उपरोक्त यूसेबियस और उसके सभी सहयोगियों ने इसमें सहायता की, और इस बात का आनंद मनाया कि जिसका वे लंबे समय से इंतजार कर रहे थे, वह समय आ गया था; उन्हें उम्मीद थी कि वे एरियन विधर्मी सिद्धांत को तभी फैला और सुदृढ़ कर पाएंगे जब नया सम्राट अथेनासियस को कैद करने के फैसले को न्यायसंगत और पूरी तरह से कानूनी मानकर पुष्टि कर दे। उस समय, उन्होंने शाही कक्षों में रहने वाले और अपनी ही विचारधारा के समर्थक प्रीपोसिटिस[1147] को अपनी विधर्म को अपनाने के लिए मना लिया; और उसके माध्यम से, एरियन विधर्म की बीमारी अन्य खसासों[1148] तक फैल गई, जो स्वभाव से ही दूसरों के बीच हर तरह की बुराई को स्वीकार करने और फैलाने के लिए अत्यधिक प्रवृत्त होते हैं। तब राजा की पत्नी, अपमानजनक भाषण से धीरे-धीरे भ्रष्ट होकर, उसी विधर्मी विष से संक्रमित हो गई।

[1144] गॉल आज का फ्रांस है।

[1145] संत अथेनासियस को ट्रेव्स शहर – अब ट्रायर – भेजा गया था, जो प्राचीन गॉल के उत्तर-पूर्वी क्षेत्र (जिसे बेलजिका कहा जाता था) की एक घनी आबादी वाली, फलती-फूलती राजधानी थी। कॉन्स्टेंटाइन महान स्वयं भी अक्सर वहीं ठहरते थे जब वे केवल साम्राज्य के पश्चिमी हिस्से पर शासन करते थे; अब कॉन्स्टेंटाइन, सम्राट का सबसे बड़ा बेटा, जो 335 में गॉल, स्पेन और ब्रिटेन का शासक बना था, वहीं रहता था। उस समय ट्रायर के बिशप मैक्सिमिनिस थे, जो धर्मपरायणता के रक्षक थे। उन्होंने अथेनासियस का प्रेम और सम्मान से स्वागत किया, और अथेनासियस बदले में उनके प्रति समर्पित रहे। और कन्स्टेंटाइन द यंगर, संत का बहुत सम्मान करते हुए, उनके निर्वासन के दुख को कम करने का प्रयास किया। संत अथेनासियस दो साल और चार महीने तक ट्रायर में रहे।

[1146] एरियन पुरोहित यूडॉक्सियस, वही जिसने सम्राट कॉन्स्टेंटाइन द ग्रेट की बहन कॉन्स्टेंस को एरियस और उसके समान विचारधारा वाले अनुयायियों की निर्वासन से वापसी के मामले में बहुत प्रभावित किया था।

[1147] प्रेपोसिटिस शाही गृह और खसासों का प्रमुख था। कॉन्स्टैंटियस ने खसास यूसेबियस, जो एक एरियन था, पर विशेष भरोसा किया।

[1148] प्राचीन काल में 'नपुंसक' शब्द उन व्यक्तियों के लिए प्रयुक्त होता था जो शाही दरबारों में रानियों और राजकुमारियों के शयनकक्षों में रक्षक के रूप में सेवा करते थे। अधिकांशतः नपुंसक वे पुरुष होते थे जिन्हें बंध्याकरण किया गया था। बाइज़ेंटाइन दरबार में, यूनाखों का पद अत्यंत सम्मानित था; उन्हें आम तौर पर कुलीन दरबारी माना जाता था और वे शासकों तथा राज्य के प्रशासन पर गहरा प्रभाव रखते थे। कॉन्स्टेंटाइन महान ने उन्हें निम्न-स्तरीय पदों पर नियुक्त करना शुरू किया, जिससे उनका प्रभाव सीमित हो गया; लेकिन कॉन्स्टैंटियस के शासनकाल में यूनाखों ने दरबार में फिर से काफी महत्व प्राप्त कर लिया।

अंत में, राजा स्वयं, एरियिन की कपटी दलीलों से बहककर, अपने प्रभु और स्वामी मसीह के विरुद्ध विद्रोह कर गया, ताकि दिव्य यिर्मयाह के वचन उसके विषय में पूरे हुए: *'चरवाहों ने मुझ से मुँह फेर लिया है'* (यिर्म. 2:8)।[1149] और कॉन्स्टैंटियस ने सार्वजनिक रूप से आदेश दिया कि एरियिन विधर्म को स्थापित किया जाए, और सभी बिशपों को उसी प्रकार सिखाना चाहिए जैसे वह सिखाता था; और उसने आज्ञा दी कि जो आज्ञा न मानें उन्हें धमकियों से मनाया जाए।

इस महान तूफ़ान और उथल-पुथल के बीच, निम्नलिखित प्रमुख पादरियों ने चर्चों के लिए सच्चे नाविक के रूप में सेवा की: यरूशलेम के मैक्सिमिस[1150] , कॉन्स्टेंटिनोपल के अलेक्जेंडर, और अलेक्जेंड्रिया के अथेनासियस (जिनके बारे में हम यहाँ बात कर रहे हैं), जिन्होंने, यद्यपि बंधन में थे, चर्च की बागडोर नहीं छोड़ी, और अपने शब्दों और पत्रों के माध्यम से ऑर्थोडॉक्सी को बनाए रखा। हालाँकि, निकोमेडिया के यूसेबियस ने अपने समान विचारधारा वाले अनुयायियों के साथ मिलकर, अपने विधर्मी झूठे सिद्धांत को फैलाने के लिए अपनी पूरी शक्ति लगा दी, और ऑर्थोडॉक्स (सही आस्था) के खिलाफ युद्ध छेड़ते हुए मसीह की कलीसिया पर अत्याचार किया। विशेष रूप से, अरिउस की भयानक मृत्यु के बाद वे इसके खिलाफ हो गए। चतुर और विश्वासघाती यूसेबियस ने अरीयस का कॉन्स्टेंटिनोपल में बड़े सम्मान के साथ स्वागत किया, जिससे विश्वासियों को बहुत धोखा और प्रलोभन हुआ; क्योंकि उस समय अरीयस का विरोध करने वाला वहाँ कोई नहीं था, क्योंकि कई अधिकारी उससे जुड़ गए थे, जबकि अथेनासियस निर्वासन में थे। लेकिन परमेश्वर, जो अपनी बुद्धि में सर्वोच्च से सभी चीजों को व्यवस्थित करते हैं, ने उनकी योजनाओं को विफल कर दिया, और एरियस की दुष्टता और जीवन को समाप्त कर दिया। और उसी शक्ति से जिससे उसकी जीभ ने अपने जीवनकाल में ऑर्थोडॉक्सी (सही आस्था) के विरुद्ध अपमानजनक शब्द उगले थे, उसी और उससे भी अधिक शक्ति से उसका पेट फट गया, उसकी आंतें बाहर निकल आईं, और वह, वह दुर्भाग्यपूर्ण व्यक्ति, अशुद्ध स्थानों में अपने ही खून में लथपथ पड़ा रहा[1151] । इस प्रकार उस बेकाबू जीभ और उस दुष्ट पात्र, जो संप्रदायवाद के घिनौने पीप से भरा था, अर्थात् एरियस पर न्यायपूर्ण निर्णय हुआ!

इस विधर्मी ने जब अपने आत्मा और शरीर को इतने भयानक तरीके से नष्ट कर लिया, तो यूसेबियस और उसके सहयोगियों ने उस विधर्म का बचाव करने और उसे फैलाने का पूरा कार्य अपने ऊपर ले लिया, और उन्होंने यूनानियों को अपने उत्साही सहायक के रूप में लेकर हर जगह भ्रम फैलाया – मानो वे उनके अपने हाथ हों। उन्होंने निर्वासन में रहे अथानासियस को चुप कराने के लिए विशेष प्रयास किए, ताकि वह ऑर्थोडॉक्सी (सही आस्था) के बचाव में अपने पत्र न

[1149] यह श्लोक पूरा इस प्रकार है: 'पुरोहितों ने नहीं पूछा, "प्रभु कहाँ है?", और व्यवस्था के शिक्षकों ने मुझे नहीं जाना, और चरवाहे मुझसे भटक गए हैं, और भविष्यवक्ताओं ने बaal के नाम पर भविष्यवाणी की और उन लोगों का अनुसरण किया जो कोई सहायता नहीं देते।' यहाँ, प्रभु के नाम पर बोलते हुए, भविष्यवक्ता यिर्मयाह इस्राएल के याजकों, हाकिमों और भविष्यवक्ताओं की निंदा करते हैं, जिन्होंने परमेश्वर की दया को भूलकर उससे मुंह मोड़ लिया था। अलेक्जेंड्रिया के संत अथेनासियस के जीवनीकार ने इन शब्दों को, एक रूपक अर्थ में, कॉन्स्टेंटियस और एरियन बिशपों पर लागू किया है, जो परमेश्वर मसीह में सच्चे विश्वास से मुंह मोड़ गए थे।

[1150] यरूशलेम के पैट्रिआर्क, संत मैक्सिमिस तृतीय, ने 333 से 350 तक पद संभाला। उन्होंने मसीह के नाम के लिए कष्ट सहे और एक कन्फैसर थे। जब तिरई की परिषद में, एरियनों ने ऑर्थोडॉक्स बिशपों से अथेनासियस के खिलाफ गैर-कानूनी फरमान पर हस्ताक्षर करने की मांग की, तो ऊपरी थेबाइड में ताइस के बिशप पाफनुटियस—जो मक्सिमियन II के शासनकाल में पीड़ित हुए थे—ने मैक्सिमिस का हाथ पकड़कर उसे सभा से बाहर ले जाया और कहा: 'हमारे लिए, कन्फैसरों के रूप में, ऐसी परिषद में भाग लेना अनुचित है।' – सेंट मैक्सिमिस की स्मृति ग्रीक चर्च में 17 नवंबर को मनाई जाती है।

[1151] 5वीं सदी के ग्रीक चर्च के इतिहासकार सोक्रेटिस और सोजोमेन एरियस की मृत्यु का वर्णन इस प्रकार करते हैं। उस दुर्भाग्यपूर्ण सुबह, जब सम्राट कॉन्स्टेंटिन द ग्रेट के आदेश पर एरियस को चर्च में फिर से शामिल किया जाना था, वह—सामान्य से भी अधिक अहंकारी और विभिन्न तुच्छ टिप्पणियाँ करते हुए—अपने समान विचारधारा वाले यूसेबियनों और एक जिज्ञासु, उत्साहित भीड़ से घिरा चर्च जा रहा था। लेकिन अचानक उसे पेट दर्द का एक तीव्र दौरा पड़ा और वह कॉन्स्टेंटाइन चौक के पीछे सार्वजनिक शौचालयों की ओर चला गया। कुछ ही देर बाद, वह वहाँ बेहोश हो गया, और उसके मल के साथ ही उसके आंतरिक अंग बाहर निकल आए, उसकी आंतें, जिगर और तिल्ली बाहर निकले और खून का बहुत अधिक बहाव हुआ, जिससे उसकी लगभग तुरंत ही मृत्यु हो गई। इस बीच, उसके साथ आए लोग काफी समय से उसका इंतज़ार कर रहे थे। अंत में, जब वे उसे बुलाने के लिए उसके पास गए, तो वे एक भयानक दृश्य देखकर स्तब्ध रह गए। एरियस (जो तब 80 वर्ष से अधिक उम्र के थे) का पेट फट गया था, और वह अपने ही खून में लथपथ पड़ा था, जो एक भयावह दृश्य प्रस्तुत कर रहा था। एरियस की यह भयानक मृत्यु अनिवार्य रूप से विश्वासघाती यहूदा की मृत्यु से तुलना का विषय बन गई। इसने उसके समर्थकों के बीच गहरी निराशा पैदा कर दी और, स्वाभाविक रूप से, ऑर्थोडॉक्स द्वारा इसे उसके पूरे अभियान की अंतिम निंदा के रूप में देखा गया। और वास्तव में, भले ही एरियस की मृत्यु प्राकृतिक थी, यह किसी भी हाल में एक भयानक और अचानक मृत्यु थी, और कोई भी इसमें ईश्वर के सर्वोच्च न्याय को देखने से खुद को रोक नहीं सकता।

फैला सके। लेकिन दैवीय कृपा ने महान कॉन्स्टेंटाइन के सबसे बड़े बेटे—जिनका नाम भी कॉन्स्टेंटाइन था[1152] —के हृदय को दया दिखाने के लिए प्रेरित किया; वह अपने भाइयों में आयु और जन्मसिद्ध अधिकार दोनों से पहला था। इसीने संत अथेनासियस को कैद से मुक्त किया और उन्हें अपना संदेश लेकर अलेक्जेंड्रिया, यानी धर्मपीठ पर भेजा। इस संदेश में लिखा था: 'विजेता कॉन्स्टेंटिन चाहते हैं कि अलेक्जेंड्रिया की कलीसिया और लोग आनंद मनाएँ। मुझे विश्वास है कि आप में से कोई भी ऐसा व्यक्ति नहीं है जो इस बात से अनभिज्ञ हो कि हाल ही में ऑर्थोडॉक्सी के महान उपदेशक और ईश्वर के विधान के शिक्षक - अथानासियस - के साथ क्या हुआ है - अर्थात्, कैसे सत्य के शत्रुओं द्वारा उनके विरुद्ध एक व्यापक अभियान चलाया गया, और उसे निर्देश दिया गया था कि वह गॉल में मेरे साथ रहे, ताकि वह कुछ समय के लिए उन आपदाओं से बच सके जो उस पर मंडरा रही थीं; फिर भी उसे स्थायी निर्वासन की सजा नहीं दी गई थी। हमने उनके साथ अत्यधिक विचार-समझ से व्यवहार किया, इस बात का ध्यान रखते हुए कि कोई अप्रत्याशित दुर्भाग्य उन पर न आए, यद्यपि वे वास्तव में अद्वितीय धैर्यवान हैं; ईश्वर के प्रति उत्साह से भरपूर, वे किसी भी कठिनाई को आसानी से सहन कर सकते हैं। हमारे पिता कॉन्स्टेंटाइन उसे जल्द से जल्द पैट्रिआर्कल सिंहासन पर पुनर्स्थापित करना चाहते थे, लेकिन, उससे संबंधित अपनी मंशा को पूरा करने से पहले ही निधन हो जाने के कारण, उन्होंने यह मामला मुझे, उनके उत्तराधिकारी को, सौंप दिया, और इस व्यक्ति के संबंध में एक अंतिम आज्ञा विरासत में छोड़ी। अतः हम आपको आज्ञा देते हैं कि आप उसे अब सर्वोच्च सम्मान और भव्य स्वागत के साथ स्वीकार करें।'

इस शाही संदेश के साथ, संत अथेनासियस अलेक्जेंड्रिया पहुँचे, और सभी ऑर्थोडॉक्स ने उनका खुशी-खुशी स्वागत किया[1153] । लेकिन जो लोग एरियन विधर्म के अनुयायी थे, उन्होंने अपने बीच दुष्ट सभाएँ करना शुरू कर दिया, संत पर एक बार फिर से उत्पीड़न भड़काने के लिए, और लोगों के बीच भ्रम पैदा करने के लिए; उन्होंने संत की बदनामी करने के लिए तरह-तरह के बहाने गढ़े: यह दावा करते हुए कि वह परिषद के निर्णय के बिना पैट्रिआर्कल सिंहासन पर लौट आए थे और अपनी मर्जी से चर्च में प्रवेश कर गए थे[1154] ; उन्होंने उन पर विभिन्न अशांति, हत्याओं और निर्वासन का कारण होने का भी आरोप लगाया, और उन पर पुराने और नए कई अन्य आरोप भी लगाए। इसी बीच, एरियन विधर्म से गहराई तक प्रभावित लोग संत अथेनासियस के खिलाफ उठ खड़े हुए; एक अवसर पर, एक भीड़ ने संत को घेर लिया, उस पर अपमानजनक टिप्पणियाँ कीं और उसे चीर-फाड़ कर मार डालने के लिए हाथ उठा लिए। अथेनासियस किसी तरह बचकर गुप्त मार्गों से शहर छोड़कर निकल गए। इस बीच, एरियन बिशपों ने दूर-दूर तक संदेश भेजकर घोषणा की कि अथेनासियस—जिन्हें एक परिषद के आदेश द्वारा वैध रूप से पदच्युत किया गया था—ने एक बार फिर से बिना किसी परिषद के आदेश के अलेक्जेंड्रिया का पदभार संभाल लिया है; साथ ही, उन्होंने अलेक्जेंड्रिया में उनके कथित आगमन के दौरान हुई हिंसा की घटनाओं का भी प्रचार किया। इस प्रकार, उन्होंने पूरे साम्राज्य में शहरों और चर्चों तक उसकी पहुँच को रोक दिया। इस बीच, अथानासियस के संरक्षक कांस्टेंटाइन का निधन हो गया था: उनकी हत्या अक्विलिया में सैनिकों द्वारा कर दी गई थी[1155] । अथानासियस के दुश्मनों ने इसका फायदा उठाया और राजा कॉन्स्टैंटियस के दिल में उस संत के खिलाफ इतना गुस्सा भड़काया, जिसने पहले उनकी रक्षा की थी, कि उन्होंने किसी को भी धन-संपत्ति और सम्मान देने का वादा किया जो यह बताए कि अथानासियस कहाँ है, यदि वह अभी भी जीवित है, या जो मारे गए महाधर्माध्यक्ष का सिर लाए। हालाँकि, अथानासियस काफी समय तक एक परित्यक्त कुएँ की गहरी, सूखी, पानी रहित शाफ्ट में छिपे रहे, और एक ईश्वर-प्रेमी व्यक्ति के अलावा कोई भी उनके बारे में नहीं जानता था, जो उन्हें उस जगह खाना खिलाता और उनकी रखवाली करता था[1156] । बाद में, जब कुछ लोगों को संदेह होने लगा कि अथेनासियस वहीं हैं—

[1152] कांस्टेंटिन द्वितीय – कांस्टेंटिन महान का सबसे बड़ा बेटा; साम्राज्य के विभाजन के समय, सम्राट के रूप में, उसे गॉल और उत्तरी अफ्रीका के पश्चिमी भाग का नियंत्रण मिला।

[1153] यह वर्ष 338 के अंत में था।

[1154] अथेनासियस के शत्रुओं ने इस बात पर जोर दिया कि टायर की परिषद के आदेश द्वारा उन्हें पदच्युत कर दिया गया था और अब वे धार्मिक नियमों के विपरीत, धर्मनिरपेक्ष अधिकारियों के आदेश से पद पर काबिज थे।

[1155] अक्विलिया – प्राचीन काल में एड्रियाटिक सागर के उत्तर में, ऊपरी या उत्तरी इटली में एक बड़ा और महत्वपूर्ण शहर था। – यहीं, मार्च 340 में, कॉन्स्टेंटाइन और कॉन्स्टेंस के बीच एक भाइयों के बीच लड़ाई हुई, जिसमें पहला मारा गया, जबकि कॉन्स्टेंस पूरे पश्चिम का शासक बन गया।

[1156] अपने गुप्त ठिकाने से, संत अथेनासियस ने सभी चर्चों के बिशपों को एक शक्तिशाली अपील लिखी, जिसमें उन्होंने अपने सामने खुले तौर पर प्रकट हुई अधर्मीपन की सभी भयावहताओं का वर्णन किया, और उनसे अलेक्जेंड्रिया के गौरवशाली चर्च की सहायता के लिए आने की विनती की, जिसे विधर्मी अपने पैरों तले रौंद रहे थे। लेकिन धर्मपरायण पादरी कुछ नहीं कर सकते थे, सिवाय रोने और ऊपर से मदद मांगने के:

क्योंकि वे हर जगह उनकी पूरी तरह से तलाश कर रहे थे और उनके बारे में पूछताछ कर रहे थे, और एक सुबह उन्हें पकड़ने की तैयारी कर रहे थे—तो वे, दैवीय कृपा से निर्देशित होकर, रात में खंदक से निकल गए और दूसरी जगह चले गए; यह डरते हुए कि वहाँ भी उसे ढूंढ लिया जाएगा और पकड़ लिया जाएगा, वह पूर्वी भूमि से हटकर पश्चिमी साम्राज्य की सीमाओं पर चला गया।

उस समय, कॉन्स्टेन्टाइन महान के सबसे छोटे बेटे कॉन्स्टेन्स की मृत्यु के बाद, पश्चिम में कॉन्स्टेन्स का शासन था। यूरोप पहुँचने पर, धन्य अथेनासियस रोम के लिए रवाना हुए और पोप जूलियस[1157] तथा स्वयं सम्राट कॉन्स्टेन्स के समक्ष उपस्थित होकर, उन्हें अपनी पूरी कहानी विस्तार से सुनाई। इस बीच, अंफ़िपोलिस में एक पूर्वी बिशपों की परिषद चल रही थी, जो चर्च[1158] का अभिषेक करने के लिए एकत्रित हुई थी, जिसे कॉन्स्टेंटाइन द ग्रेट ने बनाना शुरू किया था और जिसे उनके बेटे कॉन्स्टैंटियस ने पूरा किया था। इस उद्देश्य के लिए, सभी पूर्वी बिशप वहाँ एकत्रित हुए थे, जिनमें काफी संख्या में एरियन भी थे। बाद वाले ने राजा की सुरक्षा का लाभ उठाते हुए एक अवैध परिषद बुलाई और एक बार फिर संत अथेनासियस को—जो उस समय पश्चिम में थे—पदच्युत घोषित कर दिया, अथेनासियस के खिलाफ मानहानिपूर्ण बातें युक्त एक पत्र पोप को लिखा और पोप से उन्हें पदच्युत मानने का आग्रह किया। हालाँकि, अलेक्जेंड्रिया में उन्होंने शुरू में एमेसा के यूसेबियस[1159] को पैट्रिआर्कल सिंहासन के लिए चुना; वह अपनी वाक्पटुता के लिए प्रसिद्ध थे, लेकिन उन्होंने यह जानते हुए इनकार कर दिया कि अलेक्जेंड्रियावासी अपने आर्चपास्टर अथेनासियस का कितना गहरा सम्मान करते थे। फिर उन्होंने कैपाडोसिया के मूल निवासी ग्रेगरी[1160] को अलेक्जेंड्रिया के पैट्रिआर्क के पद पर स्थापित किया; लेकिन इससे पहले कि वह अलेक्जेंड्रिया पहुँच पाता, अथानासियस पहले ही रोम से वहाँ आ चुके थे। यह इस प्रकार हुआ।

पोप जूलियस ने, अथानासियस पर लगाए गए अपमानजनक आरोपों की सावधानीपूर्वक जांच करने के बाद, उन्हें झूठा पाया, और इसलिए उन्हें एलेक्जेंड्रिया के धर्मप्राची की सीट पर वापस भेज दिया, साथ ही एक पत्र भी भेजा जिसमें उन्होंने धमकी के साथ उन लोगों की कड़ी निंदा की जिन्होंने उन्हें पदच्युत करने की हिम्मत की थी। संत को ऑर्थोडॉक्स एलेक्जेंड्रियावासियों ने बड़ी खुशी से स्वीकार किया। हालांकि, उनके विरोधियों को जब यह पता चला (उनके नेता, निकोमेडिया के यूसेबियस, इस समय तक पहले ही मर चुके थे[1161]), तो वे बहुत निराश हुए और उन्होंने तुरंत सम्राट को अलेक्जेंड्रिया में ग्रेगरी के साथ एक सेना भेजने के लिए मना लिया, ताकि उसे पैट्रिआर्कात्मक सिंहासन पर स्थापित किया जा सके। और इस प्रकार सम्राट ने, विधर्मी ग्रेगरी—जिसे विधर्मियों द्वारा पादरी के पद पर चुना गया था—के साथ, सिरियाना नामक एक राज्यपाल को सशस्त्र सैनिकों की एक सेना के साथ भेजा, और उसे आदेश दिया कि वह अथेनासियस को मार डाले और ग्रेगरी को आर्चबिशप के रूप में स्थापित करे। एक दिन, एक पर्व के पूर्वसंध्या पर, जब अलेक्जेंड्रिया के कैथेड्रल में सर्व-रात्रि जागरण मनाया जा रहा था और सभी ऑर्थोडॉक्स विश्वासी अपने चरवाहे अथानासियस के साथ चर्च में प्रार्थना कर रहे थे और चर्च के भजन गा रहे थे, तो सिरियन अचानक अपने सशस्त्र सैनिकों के साथ घुस आया। चर्च की तलाशी लेते हुए, वह केवल अथेनासियस को ही ढूंढ रहा था, उसे मारने के इरादे से। लेकिन संत, ईश्वर की कृपा से सुरक्षित, लोगों से घिरे हुए चर्च से गुप्त रूप से चले गए; और, चूँकि तब तक रात हो चुकी थी, वे सामान्य भ्रम और लोगों की भीड़ के बीच अनदेखे रहकर निकल गए, इस प्रकार मौत से ऐसे बच निकले जैसे कोई मछली जाल के

अलेक्जेंड्रिया में एरियन की भीड़ द्वारा ऐसा उथल-पुथल मचा दिया गया था, और मदद के लिए कोई नहीं था, क्योंकि विधर्मी अत्याचारियों को सम्राट कॉन्स्टैंटियस का पूरा संरक्षण प्राप्त था।

[1157] संत जूलियस – रोम के पोप, एरियनों के खिलाफ धर्मपरायणता के एक उत्साही रक्षक और अथेनासियस के संरक्षक – ने 337 से 352 तक पोप का पद संभाला।

[1158] तथाकथित स्वर्ण चर्च, जिसे कॉन्स्टेंटाइन द ग्रेट ने भव्यता से स्थापित किया था और कॉन्स्टैंटियस ने पुनर्निर्मित किया था। यहीं पर जनवरी 341 में अंतीयोकिया की परिषद हुई थी। परिषद में लगभग नब्बे बिशप उपस्थित थे। परिषद के पितरों ने सार्वभौमिक परिषद के धर्म-सूत्र को खारिज कर दिया और, आपस में असहमत होते हुए, एक के बाद एक अपने तीन (अर्ध-एरियन) धर्म-सूत्र जारी किए, और फिर एक चौथा; उनमें से किसी में भी वे उस वाक्यांश को शामिल नहीं करना चाहते थे जो स्पष्ट रूप से ऑर्थोडॉक्सी को परिभाषित करता था: 'एक ही सार का'। अपने तरीके से आस्था के मामले को सुलझाने के बाद, उन्होंने अपना ध्यान अलेक्जेंड्रिया के चर्च के मामलों की ओर मोड़ दिया।

[1159] एमेसा के यूसेबियस अपनी विद्वता के लिए प्रसिद्ध थे; उन्होंने अलेक्जेंड्रिया में शिक्षा प्राप्त की और बाद में सेसरेआ के यूसेबियस के अधीन अध्ययन किया। उन्हें उस शहर (एमेसा - सीरिया में, एंटिओक के दक्षिण में एक शहर) के नाम पर 'एमेसा का' कहा जाता है जहाँ उन्होंने बिशप के रूप में कार्य किया। वह कॉन्स्टेंटियस के प्रिय थे, जिनके साथ वह सैन्य अभियानों पर जाते थे।

[1160] कपाडोसिया के ग्रेगरी (कपाडोसिया एशिया माइनर का एक पूर्वी क्षेत्र है) की शिक्षा अलेक्जेंड्रिया में हुई थी और एक समय में उन्हें संत अथानासियस का संरक्षण प्राप्त था। ग्रेगरी एक कठोर और हिंसक स्वभाव के व्यक्ति थे।

[1161] निकोमेडिया के यूसेबियस की मृत्यु 342 में हुई।

बलिकुल केंद्र से बच नकिलती है, जसिके बाद वे एक बार फरि रोम लौट आए। इसके बाद, दुष्ट ग्रेगरी ने एक शकिारी की तरह अलेक्जेंड्रयिा के धर्मपीठ पर कब्ज़ा कर लयिा। लोगों में भारी हंगामा मच गया, यहाँ तक कि विद्रोहयिों ने डायोनीसयिस के चर्च के नाम से प्रसद्धि एक चर्च में आग भी लगा दी।

[1162]संत अथेनासयिस तीन साल तक रोम में रहे, जहाँ उन्हें सम्राट कॉन्स्टेंटयिस और पोप जूलयिस का गहरा सम्मान प्राप्त था। वहाँ उनका मत्रि कॉन्स्टेंटनिोपल के आर्चबशिप संत पॉल थे, जन्हिें भी दुष्ट वधिर्मीयों द्वारा उनके पद से हटा दयिा गया था। अंतत; दोनों सम्राटों—कोन्स्टेन्टयिस और कोन्स्टेन्स—की पारस्परकि सहमतसि, धर्म की स्वीकारोक्तकि साथ-साथ अथेनासयिस और पॉल के मामलों पर चर्चा करने के लिए सार्डकिा[1163] में पूर्वी और पश्चमिी बशिपों की एक परषिद बुलाई गई। उनमें तीन सौ से अधकि पश्चमिी बशिप और सत्तर से कुछ अधकि पूर्वी बशिप शामलि थे, जनिमें उपर्युक्त इसरि भी थे, जो उस समय तक पहले से ही मारेओटसि के बशिप थे[1164] । एशयिा की चर्चों से एकत्रति हुए बशिपों ने[1165] तब तक पश्चमिी बशिपों से मलिने से भी इनकार कर दयिा जब तक कि उन्होंने पॉल और अथेनासयिस को परषिद से हटा नहीं दयिा। हालांकि, पश्चमिी बशिपों ने तो इसकी सुनवाई तक नहीं की। तब पूर्वी बशिप अपने वापसी के सफर पर नकिल पड़े और, थ्रेस के शहर फलिपिोपोलसि[1166] पहुँचकर, वहाँ अपना ही परषिद आयोजति कयिा—या, यूँ कहें, एक अवैध सभा—और उन्होंने खुले तौर पर सह-तत्त्ववादयिों को चर्च से बहष्कृत कर दयिा; उन्होंने यह अधर्मी फरमान लखिति रूप में अपने अधकिार क्षेत्र के सभी चर्चों को भेज दयिा। यह जानने पर, सार्डकिा में एकत्रति पवत्रि पतिाओं ने सबसे पहले इस अपमानजनक सभा और उनके वधिर्मी और अधर्मी बपतस्मि[1167] को नष्कासति कर दयिा; इसके बाद उन्होंने अथेनासयिस के बदनाम करने वालों को उनके पदानुक्रमकि पदों से हटा दयिा और, नकिेन धर्मवश्विास की पुष्टकिरते हुए, स्पष्ट और सटीक रूप से ईश्वरपुत्र को परमपतिा ईश्वर के समतत्त्व का स्वीकार कयिा।

इन सब के बाद, पश्चमिी सम्राट कॉन्स्टेंट ने पॉल और अथानासयिस के संबंध में अपने भाई कॉन्स्टैंटयिस को लखिे एक पत्र में उनसे वनिती की कि वे उन्हें उनके सहिासन पर लौटने दें। जब कॉन्स्टैंटयिस ने उनके लौटने में बार-बार देरी की, तो कॉन्स्टेंट ने उन्हें फरि से लखिा, इस बार कठोर शब्दों में। 'यदि तुम,' उन्होंने लखिा, 'स्वयं स्वेच्छा से मेरी बात नहीं मानोगे, तो तुम्हारी सहमतकि बनिा ही मैं उनमें से प्रत्येक को उसके सहिासन पर पुनर्स्थापति कर दूँगा, क्योंकि तब मैं सशस्त्र बल के साथ तुम्हारे वरिुद्ध मार्च करूँगा।' अपने भाई की धमकी से भयभीत होकर, कॉन्स्टैंटयिस ने पहले आए पॉल को स्वीकार कयिा और उसे सम्मान के साथ उसके सहिासन पर वापस भेज दयिा। फरि उसने नम्रता की भावना से लखिा एक पत्र के माध्यम से, संत अथेनासयिस को रोम से अपनी उपस्थतिमिें बुलाया और, उनसे बातचीत करने के बाद, देखा कि वह महान ज्ञान और दैवीय प्रेरणा वाले व्यक्त थे। अथेनासयिस के महान ज्ञान से चकति होकर, कॉन्स्टैंटयिस ने उन्हें बहुत सम्मान दयिा और उन्हें महमिा के साथ पैट्रआर्कल सहिासन पर बहाल कयिा; इसी समय, उन्होंने अलेक्जेंड्रयिा के लोगों और मस्रि के सभी बशिपों और राजकुमारों, ऑगस्टालीन[1168] नेस्टोरयिस, और थेबाइड और लीबयिा के गवर्नरों[1169] को पत्र लखिा, जसिमें उन्हें अथानासयिस को बहुत सम्मान और आदर के साथ स्वीकार करने का

[1162] कॉन्स्टेंटयिस ने अपने रूढ़विादी भाई की मांगों के आगे झुककर एक परषिद बुलाने के लिए सहमत दि दी, जसिे पूर्वी बशिपों ने ऐसा करने के लिए प्रेरति कयिा था और जो सेंट एथानैसयिस के लिए गहरा सम्मान रखते थे, और चाहते थे कि उन्हें बेदाग साबति कयिा जाए। यह परषिद 344 में हुई। इसने 1) नाइसीन धर्माचार का समर्थन कयिा, 2) मामले की जांच करने के बाद, अथेनासयिस को बरी कर दयिा, और 3) एरयिनवाद के नेताओं को पदच्युत घोषति कर दयिा, ऑर्थोडॉक्स को उनके साथ कसिी भी प्रकार का संप्रभु संबंध रखने से मना कयिा, और दोषयिों को शाप (अनाथेमा) की सजा दी।

[1163] सार्डकिा इल्लरियिा में, दो भाइयों, कॉन्स्टेंटयिस और कॉन्स्टेंस के क्षेत्रों की सीमा पर स्थति थी – जो अब बुल्गारयिा की राजधानी सोफयिा है।

[1164] इश्खरि को एरयिन लोगों ने बशिप नयिुक्त कयिा था।

[1165] एशयिा से आए लोग, यानी पूर्वी बशिप; उनमें प्रमुख थे हेराक्लयिा के थयिोडोर, नेरोपोलसि के नार्ससिस, एफेसस के मेनोफैंटस, एंटओिक के स्टीफन, सेज़रयिा के अकाकयिस और लाओदकियिा के जॉर्ज।

[1166] फलिपि्पोपोलसि – सरडकिा के दक्षणि-पूर्व में थ्रेस का एक शहर। – फलिपि्पोपोलसि परषिद की अध्यक्षता एंटओिक के स्टीफन ने की थी। इस परषिद ने एक बार फरि अथेनासयिस, कॉन्स्टेंटनिोपल के पॉल, रोम के जूलयिस, सरडकिा के प्रोटोजेनेस और अन्य ऑर्थोडॉक्स बशिपों को दोषी ठहराया। कांस्टेंटयिस ने फलिपि्पोपोलसि परषिद के फैसले का समर्थन कयिा, और अथेनासयिस को, अन्य उत्पीड़ति बशिपों के साथ, नर्विासन में ही रहना था। – वह डाकयिा के नाइसस में चले गए।

[1167] फलिपि्पोपोलसि परषिद ने एक नया धर्मसूत्र तैयार कयिा, जो प्रकृतमिें अंकोना परषिद के धर्मसूत्रों की तुलना में अधकि एरयिन था।

[1168] ऑगस्टलयिन – एक रोमन प्रांत का शाही राज्यपाल।

[1169] थेबाइड मस्रि का एक दक्षणिी क्षेत्र है; लीबयिा मस्रि के पश्चमि में, उत्तरी अफ्रीका में स्थति है।

नरि्देश दयिा गया। उपरोक्त शाही पत्र से लैस, उस धन्य व्यक्ति ने सीरयिा और फलिस्तीन की यात्रा की और पवत्रि नगर यरूशलेम का दौरा कयिा, जहाँ उन्हें परम पवत्रि मैक्समिस द कन्फेशर द्वारा गर्मजोशी से स्वागत कयिा गया; उन्होंने एक-दूसरे को उन कष्टों और कठनिाइयों के बारे में बताया जो उन्होंने मसीह के लिए झेली थीं। पूर्वी बशिपों को—जनि्होंने पहले एरयिन के डर से उनके पदच्युति के लिए सहमति दे दी थी—बुलाने के बाद, अथेनासयिस ने उन्हें अपने साथ एकमत और एकता में लाया, और उन्होंने उन्हें उचति सम्मान दयिा; अपनी ओर से, उन्होंने खुशी-खुशी उन्हें उनके खलिाफ कए गए अपराध के लिए क्षमा कर दयिा। यह उनके तीन नरि्वासनो[1170] के बाद संत अथेनासयिस की पैट्रआर्कल सहिासन पर तीसरी वापसी थी। और इस प्रकार, अनगनित परशि्रम, दुख और बीमारयिों के बाद, उन्हें अंततः कुछ राहत मली और उन्होंने अपने शेष दनि उनसे मुक्ति पाकर और शांति में बताने का इरादा कयिा। इस बीच, नए उथल-पुथल और क्रूर कष्ट नकिट आ रहे थे। इस समय, रोमन सेनाओं के कमांडर दुष्ट मैग्नेंटयिस ने अपने समान वचिारधारा वाले सहयोगयिों के साथ मलिकर साजशि रचकर अपने शासक कॉन्स्टेंटस की हत्या कर दी[1171] । फरि एरयिनों ने सरि उठाया और मसीह के चर्च के खलिाफ एक भयंकर संघर्ष छेड़ दयिा। अथानासयिस के खलिाफ बदनामी और उत्पीड़न फरि से शुरू हो गया, और सभी पूर्व बुराइयाँ फरि से शुरू हो गईं। एक बार फरि, अथेनासयिस के खलिाफ शाही फरमान और धमकयिाँ जारी की गईं; एक बार फरि, अथेनासयिस को नरि्वासन और भय सहने के लिए मजबूर होना पड़ा; एक बार फरि, पूरे देश और समुद्रों के पार उनकी तलाश शुरू कर दी गई। सम्राट ने कापाडोसयिा के जॉर्ज[1172] को पैट्रआर्कल सहिासन पर कब्जा करने के लिए अलेक्जेंड्रयिा भेजा; अलेक्जेंड्रयिा में उनके आगमन पर, उन्होंने मस्रि को हलिा दयिा, फलिस्तीन को अस्थरि कर दयिा और पूरे पूर्व को उथल-पुथल में डाल दयिा। एक बार फरि, उन्हें उनके पदों से हटा दयिा गया: सेंट मैक्समिस को यरूशलेम के पद से, और सेंट पॉल को कॉन्स्टेंटनिोपल के पद से। जहाँ तक उस समय अलेक्जेंड्रयिा में क्या हो रहा था[1173] , सेंट अथेनासयिस स्वयं नम्निलखिति का वर्णन करते हैं: संत अथेनासयिस बताते हैं, 'एक बार फरि, कुछ लोग, हमें मारने की कोशशि में, अलेक्जेंड्रयिा आए, और पहले से कहीं अधकि गंभीर वपित्तयिाँ आईं। सैनकिों ने अचानक चर्च को घेर लयिा, और प्रार्थनाओं के बजाय वहाँ चीख-पुकार और अफरा-तफरी मच गई; यह सब लेंट (महापर्व) के पवत्रि मौसम के दौरान हुआ। पतिृसत्तात्मक पद पर कब्ज़ा करने के बाद, मैसेडोनयिनों और एरयिनों द्वारा चुने गए कैपाडोसयिा के जॉर्ज ने इस बुराई को और भी बढ़ा दयिा। पवत्रि सप्ताह के बाद, युवतयिों को ज़ंजीरों में जकड़ा गया, बशिपों को सैनकिों द्वारा ज़ंजीरों में बांधकर ले जाया गया, अनाथों और वधिवाओं के घर लूट लिए गए, और शहर में पूर्ण अराजकता फैल गई । रात में, ईसाई शहर से भाग गए, और उनके घरों पर मुहर लगा दी गई; इस बीच, पादरी अपने भाइयों के लिए कष्ट सह रहे थे; यह सब वास्तव में बहुत वनिाशकारी था, लेकनि इसके तुरंत बाद एक अतुलनीय रूप से बड़ा बुराई आ गया। पेंटेकोस्ट के पर्व के बाद, लोगों ने उपवास कयिा और पवत्रि शहीद पीटर की कब्र पर प्रार्थना करने के लिए इकट्ठा हुए, क्योंकि हर कोई जॉर्ज से घृणा करता था और उससे हर तरह का संबंध रखने से बचता था। यह जानकर, वशि्वासघाती जॉर्ज ने स्ट्रैटलिट्स[1174] सेबेस्टयिन—जो मनखिीय वधिर्म का पालन करते थे—को उनके खलिाफ भड़काया। सेबास्टयिन, खींची हुई तलवारों, धनुष और तीरों से लैस सैनकिों के एक दल के साथ, स्वयं चर्च में घुस आया और वहाँ के लोगों पर हमला कर दयिा, लेकनि उसे बहुत कम उपासक मलि, क्योंकि अधकिांश लोग देर हो जाने के कारण जा चुके थे। चर्च में बचे हुए लोगों पर सेबस्टयिन ने सबसे भयानक यातनाएँ दीं। उसने एक वशिाल अलाव जलाने का आदेश दयिा और, युवतयिों को आग के पास खड़ा करके, उन्हें एरयिन वधिर्म स्वीकार करने के लिए मजबूर कयिा। लेकनि जब सेबेस्टयिन उन्हें ऐसा करने के लिए मजबूर करने में असमर्थ रहा—यह देखकर कि वे आग या उसकी धमकयिों में से कसिी पर भी ध्यान नहीं दे रहे थे—तो उसने उन्हें नग्न कर दयिा और नरि्दयता से पीटने का आदेश दयिा; उसने उनके चेहरों को इतनी बुरी तरह से नोच डाला कि, बहुत समय बीत जाने के बाद भी, उनके रशि्तेदार उन्हें मुश्कलि से ही पहचान सके। जहाँ

[1170] यह वर्ष 348 में हुआ।

[1171] मैग्नेंटयिस ने अपनी सेना को कॉन्स्टेंटयिस के खलिाफ भड़काया, और उन्होंने उसे पदच्युत कर दयिा; कॉन्स्टेंटयिस भाग गए, लेकनि रास्ते में मैग्नेंटयिस द्वारा मार दए गए। यह 350 की शुरुआत में हुआ।

[1172] यह जॉर्ज एक अनपढ़ और खुरदरे स्वभाव का व्यक्ति था जो शुरू में सेना का मांस आपूर्तकिर्ता था। जॉर्ज ने लगभग चार वर्षों (357–361) तक एक झूठे बशिप के रूप में कार्य कयिा और इस दौरान उसने न केवल अलेक्जेंड्रयिा के चर्च और ऑर्थोडॉक्स आबादी को, बल्कि मूर्तपिूजकों को भी बहुत दुख और अत्याचार पहुँचाया।

[1173] यह घटना तब हुई जब अथेनासयिस अनुपस्थति थे।

[1174] स्ट्राटलिट्स – एक सैन्य कमांडर, एक गवर्नर।

तक चालीस पुरुषों की बात है, उन्हें एक नए प्रकार की यातना दी गई: यातना देने वालों ने उन्हें ताज़ा काटे गए खजूर के पेड़ की कठोर, काँटेदार टहनियों से बुरी तरह पटिवाया और उनके कंधों की खाल उधेड़ दी, इतना कि कुछ मामलों में काँटे गहराई तक घुस गए थे, इसलिए मांस को कई बार काटना पड़ा; जबकि अन्य, दर्द सहन न कर पाने के कारण, अपने घावों से मर गए। जहाँ तक उन सभी कन्याओं का सवाल है जिन्हें उसने विशेष क्रूरता से यातना दी थी, उसने उन्हें '[1175] ' के महान मरुद्यान में निर्वासित कर दिया, और उसने न तो ऑर्थोडॉक्स को और न ही अपने लोगों को मारे गए लोगों के शवों को ले जाने दिया; इसके बजाय, सैनिकों ने उन्हें एक ही जगह पर बिना दफनाए छिपा दिया, यह सोचकर कि इस तरह ऐसी क्रूरता किसी के भी पता नहीं चलेगी; वे इस प्रकार पागल और विक्षिप्त मन से काम कर रहे थे। हालाँकि, ऑर्थोडॉक्स ने अपने शहीदों के ऑर्थोडॉक्स धर्म के प्रति अटूट विश्वास के लिए उनकी खुशी मनाई, लेकिन साथ ही उन शवों के लिए भी रोए, जिनका ठिकाना अज्ञात था। और इसके माध्यम से, उत्पीड़कों की दुष्टता और क्रूरता और भी अधिक उजागर हुई। कुछ ही समय बाद, निम्नलिखित बिशपों को मिस्र और लीबिया से निर्वासित कर दिया गया: अम्मोनियस, मोइन, गियस, फिलो, हर्मियास, पावलिन, स्किनोसिरि, लिनिमोन, अगाथोन, अगम्फास, मार्क, एक अन्य अम्मोनियस और एक अन्य मार्क, ड्रेकोन्टियस, एडेलफियस, अथिनाडोरस, और पुरोहित हिएरैक्स और डायोस्कोरस; उत्पीड़क ने उन पर इतनी क्रूरता से अत्याचार किया कि कुछ की यात्रा के दौरान मृत्यु हो गई, जबकि अन्य अपने कारावास के स्थानों में मर गए। इसके अलावा, एरियनों ने तीस से अधिक बिशपों को आजीवन कारावास की सज़ा दी; क्योंकि उनकी दुष्टता, आहाब की दुष्टता की तरह[1176] , इतनी महान थी कि, यदि संभव होता, तो वे पूरी पृथ्वी की सतह से सत्य को निर्वासित करने और नष्ट करने के लिए तैयार रहते'।

इस बीच, अपने भाई, राजा कॉन्स्टेंस की मृत्यु के बाद और मैग्नेन्टियस को हराने के बाद, राजा कॉन्स्टेंटियस पूर्व और पश्चिम दोनों पर शासन करने आए[1177] । पूर्व और पश्चिम दोनों में, उन्होंने एरियन विधर्म को फैलाना शुरू कर दिया, पश्चिमी बिशपों को हर संभव तरीके से—डर, चापलूसी, उपहार और विभिन्न प्रलोभनों के माध्यम से—एरियन धर्मशास्त्र को स्वीकार करने और उनके विधर्म को अपनाने के लिए मनाया। इस उद्देश्य के लिए, उन्होंने इतालवी शहर मेडिओलानम में एक परिषद बुलाने का आदेश दिया[1178] – अथानासियस को पदच्युत करने के लिए: उनका मानना था कि अरिअनिवाद तब ही स्थापित होगा जब अथानासियस को पूरी तरह से पदच्युत कर जीवितों के बीच से मिटा दिया जाएगा। उस समय राजा के कई समान विचारधारा वाले अनुयायी सामने आए; कुछ ने डर के मारे एरियनवाद अपना लिया, अन्य राजा के सम्मान से आकर्षित हुए; जबकि जो ऑर्थोडॉक्सी में दृढ़ रहे, उन्होंने इस अवैध परिषद से परहेज किया[1179] । वे थे: वर्सेली के बिशप यूसेबियस, ; मिलान के डायोनिसियस; टूलूज़ के रोडन; ट्रिविरी के पॉलिनिस; और कैलारी के लुसिफिर[1180] ; उन्होंने अथेनासियस को पदच्युत करने के फरमान पर हस्ताक्षर नहीं किए, क्योंकि वे उनकी पदच्युति को सच्चे धर्म

[1175] ओएसिस, या महान लीबियाई ओएसिस, थेबाइड मरुभूमि के पश्चिम में, वर्तमान सहारा के पूर्वी भाग में स्थित है – यह एक प्राचीन यूनानी बस्ती थी जो अक्सर निर्वासन का स्थान हुआ करती थी।

[1176] आहाब – इस्राएल का आठवां राजा, जिसने अपनी पत्नी यिज़ेबेल, जो एक दुष्ट, सत्ता-लोलुप और भ्रष्ट महिला थी, के आग्रह पर इस्राएलियों के बीच मूर्तिपूजा का प्रसार किया और सच्चे परमेश्वर के सेवकों का क्रूरता से उत्पीड़न किया।

[1177] कॉन्स्टैंटियस की मृत्यु के बाद साढ़े तीन वर्षों तक, मैग्नेन्टियस ने पश्चिम में सीज़र का पद बनाए रखा। कॉन्स्टैंटियस ने अपने अनुयायियों को बखेर दिया, और मैग्नेन्टियस ने आत्महत्या कर अपनी जान ले ली। इसके बाद संपूर्ण साम्राज्य 361 में उनकी मृत्यु तक कॉन्स्टैंटियस के नेतृत्व में एकजुट रहा।

[1178] मेडियोलानम – जो सिसाल्पिन गॉल, या आज के उत्तरी इटली के रूप में जाना जाने वाला एक प्राचीन शहर था – विज्ञान और कलाओं के लिए समृद्धि का केंद्र था; आज, मिलान इतालवी क्षेत्र लोम्बार्डी का प्रमुख और फलता-फूलता शहर है, जिसकी आबादी बड़ी है।

[1179] 355 में, रोम के पोप, सेंट लिबेरियस, जो जूलियस के उत्तराधिकारी थे, के अनुरोध पर परिषद का आयोजन किया गया था। परिषद में 300 तक पश्चिमी बिशप शामिल हुए। एरियनों ने मांग की कि अथानासियस को दोषी ठहराया जाए, लेकिन पश्चिमी बिशपों ने मूल निकेन क्रीड का पालन करने पर जोर दिया। कॉन्स्टैंटियस, जो एक संलग्न कमरे से परिषद के पितृगणों की सभी चर्चाओं को सुन रहा था, तब हाथ में तलवार लेकर परिषद कक्ष में प्रवेश किया और घोषणा की कि वह स्वयं अथेनासियस पर आरोप लगा रहा है। जिन्होंने अथेनासियस की निंदा पर हस्ताक्षर करने से इनकार कर दिया, उन्हें निर्वासन का सामना करना पड़ा; परिणामस्वरूप, कुछ ने हस्ताक्षर कर दिए, जबकि असहमत लोगों को निर्वासित कर दिया गया।

[1180] वेर्सेली – उत्तरी-पश्चिमी इटली का एक शहर; टूलूज़ – दक्षिणी फ्रांस में गारोन नदी पर; ट्रायर (ट्रेवी या ट्रविरियम के नाम से भी जाना जाता है) – पूर्वी फ्रांस में मॉसेल नदी पर; कैलारिया – सार्डिनिया द्वीप पर (भूमध्य सागर में)।

और सत्य के अस्वीकार के रूप में मानते थे। परिणामस्वरूप, उन्हें अरिमीनम[1181] में निर्वासित कर दिया गया; हालाँकि, अन्य बिशपों ने मेडिओलानम में इकट्ठा होकर अथेनासियस को पदच्युत कर दिया। यहाँ यह ध्यान देने योग्य है कि कैसे यूसेबियस और डायोनिसियस ने इस अवैध परिषद के फरमान पर हस्ताक्षर करने से इनकार कर दिया। जब एरियन बिशप मेडिओलानम में एकत्रित हुए और अन्य ऑर्थोडॉक्स बिशपों की प्रतीक्षा किए बिना, एक परिषद बुलाई और अथेनासियस को पदच्युत करने वाले फरमान पर अपने नाम लिख दिए, मिलान के डियोनिसियस, जो हाल ही में बिशप बने थे और अभी भी कम उम्र के थे, को एरियन बिशपों ने परिषद के फरमान पर हस्ताक्षर करने के लिए मना लिया: क्योंकि वे इतने सारे सम्मानित और लंबे समय से सेवा कर रहे बिशपों से लज्जित हो गए और अपनी इच्छा के विरुद्ध, उन्होंने अपना नाम उनके नामों के साथ जोड़ दिया। बाद में, वेर्सेली के ऑर्थोडॉक्स बिशप यूसेबियस, जो काफी उम्र के व्यक्ति थे, मिलान पहुँचे (उस समय तक वह अवैध परिषद नामों पर हस्ताक्षर के साथ पहले ही समाप्त हो चुकी थी) और उन्होंने डियोनिसियस से परिषद में क्या हुआ था, इस बारे में पूछताछ की। संत अथेनासियस के अवैध मुकदमे का वर्णन करते हुए, डायोनिसियस ने बड़े खेद और पश्चाताप के साथ अपने अपराध को स्वीकार किया, और बताया कि कैसे उसे अथेनासियस को पदच्युत करने के लिए अपनी सहमति पर हस्ताक्षर करने के लिए गुमराह किया गया था। और धन्य यूसेबियस ने उसे इसके लिए डांटा, जैसे कोई पिता अपने बेटे को डांटेगा: क्योंकि डायोनिसियस यूसेबियस को एक प्रकार के आध्यात्मिक पिता के रूप में मानता था, आंशिक रूप से उसकी अधिक आयु के कारण, और आंशिक रूप से इसलिए कि वह पहले ही कई वर्षों तक एक बिशप के रूप में सेवा कर चुका था; इसके अलावा, अपने पद के कारण, वर्सेली के बिशप का दर्जा मिलान के बिशप से ऊँचा था[1182] । हालाँकि, डियोनिसियस का हार्दिक पश्चाताप देखकर, यूसेबियस ने उन्हें दुखी न होने के लिए कहा: उन्होंने कहा, 'मैं जानता हूँ कि मुझे क्या करना है ताकि आपका नाम उनके बीच से मिटा दिया जाए।' और फिर यह हुआ।

एरियन बिशपों ने, यूसेबियस के आगमन के बारे में जानकर, उसे अपनी सभा में बुलाया और उसे वह दस्तावेज़ दिखाया जिसे उन्होंने अथानासियस को पदच्युत करने के लिए तैयार किया था और जिस पर उनके हस्ताक्षर थे, और उन्होंने चाहा कि वह भी उस प्रस्ताव पर अपना नाम जोड़ दे। हालाँकि, यूसेबियस ने उनकी परिषद से सहमत होने का नाटक करते हुए और जैसे कि हस्ताक्षर करने का इरादा हो, वह दस्तावेज़ लेकर उन बिशपों के नाम पढ़ने लगा जिन्होंने हस्ताक्षर किए थे। जब वह डायोनिसियस के नाम पर आया, तो वह जैसे अपमानित होकर चिल्लाया:

'मैं अपना नाम कहाँ लगाऊँ? डायोनिसियस के नीचे? किसी भी हालत में नहीं! डायोनिसियस को मुझसे ऊपर मत रखो! तुम कहते हो कि परमेश्वर का पुत्र परमेश्वर पिता के बराबर नहीं हो सकता: तो फिर तुमने मेरे बेटे को मुझसे ऊपर क्यों रखा है?'

और बड़े बिशप ने तब तक हस्ताक्षर करने से इनकार कर दिया जब तक कि सूची के शीर्ष से डायोनिसियस का नाम मिटा नहीं दिया गया। हालाँकि, एरियन बिशप, यूसेबियस के हस्ताक्षर हासिल करने के लिए बहुत उत्सुक और उसे खुश करने की इच्छा रखने वाले, ने आदेश दिया कि डायोनिसियस का नाम मिटा दिया जाए। डायोनिसियस ने स्वयं अपने हाथ से दस्तावेज़ से अपना हस्ताक्षर मिटा दिया, मानो सबसे वरिष्ठ बिशप, वर्सेली के यूसेबियस को सर्वोच्च स्थान सौंपते हुए, जबकि ऐसा दिखावा कर रहे थे कि वह उनके नीचे हस्ताक्षर करना चाहते थे। जब डायोनिसियस का नाम मिटा दिया गया, और लिखावट का कोई निशान भी नहीं बचा, तो धन्य यूसेबियस ने एरियन परिषद के साथ सहमति का दिखावा करना बंद कर दिया और एरियनों का मज़ाक उड़ाते हुए, खुले तौर पर सत्य का प्रचार किया।

उन्होंने कहा, 'न तो मैं तुम्हारी अत्याचारिता से स्वयं को कलंकित करूँगा, और न ही मैं अपने पुत्र डायोनिसियस को तुम्हारी दुष्टता का भागीदार बनने दूँगा; क्योंकि एक निर्दोष बिशप को पदच्युत करने के लिए एक अवैध निंदा पर हस्ताक्षर करना गैर-कानूनी है—यह ईश्वर के कानून और चर्च के नियमों द्वारा निषिद्ध है। सबको यह ज्ञात हो कि यूसेबियस और डायोनिसियस अब आपके उस निंदापत्र पर हस्ताक्षर नहीं करेंगे, जो द्वेष और अधर्म से भरा है। परमेश्वर का धन्यवाद हो, जिसने डायोनिसियस को आपसे मिलीभगत से बचाया है और हमें यह सिखाया है कि आपके नामों के बीच से उसके नाम को—जो अवैध रूप से हस्ताक्षरित किया गया था—कैसे मिटाया जाए।

[1181] अरिमिनम, जिसे अब रिमिनी के नाम से जाना जाता है, इटली के उत्तर-पूर्वी भाग में स्थित उम्ब्रिया का सबसे पुराना और सबसे समृद्ध शहर है, जो एड्रियाटिक सागर के तट पर स्थित है।

[1182] अर्थात्, वेर्सेली के बिशप की सीट को मिलान की सीट से पदानुक्रम में श्रेष्ठ माना जाता था।

अरअिनों ने, यह देखकर कि यूसेबियस और डायोनसियिस ने उनका मज़ाक उड़ाया था, उन पर हंसिा करने के इरादे से उन पर हाथ उठाया; और, उन्हें अनेक अपमानों से गाली देने के बाद, उन्होंने दोनों को अलग-अलग नर्विासन में भेज दयिा, और धन्य यूसेबियस को नर्विासन में इतनी बुरी तरह सताया कि उन्होंने वहाँ बहुत कष्ट सहे और उनकी मृत्यु हो गई। यह सुनकर और यह जानकर कि राजा की आज्ञा से राज्यपाल के सैनकि उसे पकड़ने आ रहे थे, संत अथेनासयिस, एक दैवीय प्रकटोक्ति से नर्दिेशति होकर, आधी रात को बशिप के आवास से नकिल गेल , और ईश्वर को समर्पति एक सदाचारी कुंवारी के पास शरण ली, जो मसीह की सच्ची सेवकिा के रूप में रहती थी। वे राजा कॉन्स्टैंटयिस के शासन के अंत तक उनके साथ छपि रहे, और ईश्वर और उस एक कुंवारी के अलावा कोई भी उनके बारे में कुछ भी नहीं जानता था, जो स्वयं उनकी ज़रूरतों का ध्यान रखती थी और दूसरों से मांगे गए कतिाबें उन्हें लाती थी; वहाँ रहते हुए, अथेनासयिस ने वधिर्मयिों के खलिाफ कई ग्रंथ लखि[1183] ।

इस बीच, अलेक्जेंड्रयिा के लोग अपने चरवाहे, संत अथेनासयिस की तलाश में थे, और उन्हें खोजने के लिए हर जगह जा रहे थे; सभी उनके लिए गहराई से दुखी थे और उन्हें इतनी लगन से खोज रहे थे कि प्रत्येक उन्हें खोजने के लिए खुशी-खुशी अपना जीवन देने को तैयार था - और पवत्रि चर्च गहरे दुख से दब गया था। हालांकि, एरयिन वधिर्म ने न केवल पूर्व में बल्कि पश्चमि में भी काफी शक्ति प्राप्त कर ली। इटली और पूरे पश्चमि में शाही फरमान द्वारा, उन बशिपों को उनके पदों से हटा दयिा गया जन्हिोंने इस 'वधिर्मी' सद्धिांत पर हस्ताक्षर करने से इनकार कर दयिा था कि परमेश्वर का पुत्र पति से भन्नि तत्व का है। उस समय, रोम के पोप संत लबिेरयिस—जो धन्य जूलयिस के उत्तराधकिारी थे, जो स्वयं संत सल्वि्स्टर के उत्तराधकिारी थे—को उनकी ऑर्थोडॉक्सी (सही आस्था) के कारण रोमन सहिासन से हटा दयिा गया; उनकी जगह, एक नश्चिति फेलक्सि, जो एक वधिर्मी था, को पोप चुना गया[1184] । लंबा समय तक सभी ओर से पवत्रि चर्च पर अत्याचार और उत्पीड़न होने के बाद, राजा कॉन्स्टैंटयिस का अंत नकिट आ गया। कैपाडोसयिा और सलिसिियिा के बीच 'मोप्शयिन स्प्रगि्स' नामक स्थान पर रहते हुए, वह वहाँ अपना राज्य और अपना जीवन दोनों खो बैठा[1185] । इसी तरह, एलेक्जेंड्रयिा के झूठे बशिप, जसिे वधिर्मयिों ने स्थापति कयिा था, का ईश्वर के न्याय से सामना हुआ: 'और दुष्ट शोर मचाते हुए नष्ट हो जाएगा', उसे यूनानी लोगों द्वारा मार दयिा गया था, जो एलेक्जेंड्रयिा में उसकी एक संपत्ति को लेकर वद्रिोह कर उठे थे, जसिे जॉर्ज उससे छीनना चाहता था[1186] .

[1183] संत अथेनासयिस द ग्रेट प्रारंभकि चर्च के सबसे प्रसद्धि लेखकों में से एक थे। वे पवत्रि धर्मग्रंथ के अपने गहरे ज्ञान और अपनी धर्मशास्त्रीय प्रतभिा के लिए वशिष्टि थे। चूँकि उन्होंने अपना पूरा जीवन एरयिनवादयिों से लड़ने में बताया, इसलिए उनके लेखों में इस संघर्ष का नशिान है और वे मुख्य रूप से एरयिनवादयिों के खलिाफ नर्दिेशति हैं। संत अथेनासयिस के सबसे महत्वपूर्ण कार्य इस प्रकार हैं: 1) एरयिनों के वरिुद्ध चार प्रवचन, जनिमें अथेनासयिस उनके सभी आपत्तयिों का पूरी तरह से खंडन करते हैं; 2) कोरथि के बशिप एपक्टिेटस को एक पत्र – यीशु मसीह में दैवी और मानवीय स्वभावों पर; 3) थमुइटसि के बशिप, संत सेरापयिन को चार पत्र, जनिमें वे पवत्रि आत्मा की दव्यिता और पति तथा पुत्र के साथ उसकी समानता की रक्षा मैसेडोनयिनों के खलिाफ करते हैं, जन्हिोंने यह सखिाया था कि पवत्रि आत्मा एक सेवक प्राणी है जसिे पति और पुत्र की दव्यिता और महमिा में कोई हस्सिा नहीं है, 4) त्रत्वि की एकसारता की रक्षा में नकियिा परषिद के फरमानों पर एक ग्रंथ, 5) पवत्रि आत्मा पर एक पुस्तक। अपने कई लेखों में, संत अथेनासयिस ने एरयिनों के उपद्रवों और गतविधियिों का वर्णन कयिा, और अपने ववरिणों के साथ मसीह की सच्चाई के पक्ष में टप्पिणयिाँ जोड़ीं; उदाहरण के लिए, ऐसा ही उनका 'एरयिनों का इतहिास' है, जो भक्षिुओं के लिए लखिा गया था। धर्मोपदेशात्मक प्रतरिक्षावाद का एक उत्कृष्ट उदाहरण संत अथेनासयिस का सम्राट कॉन्स्टैंटयिस को लखिा पत्र है। इसके अतरिक्ति, संत अथेनासयिस की पवत्रि धर्मग्रंथों की व्याख्या से संबंधति ज्ञात कृतयिाँ हैं; इनमें सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण, संत अथेनासयिस का पास्काल पत्र है, जो बहुत महत्व रखता है क्योंकि इसमें पुराने और नए नयिम की पुस्तकों की सूची दी गई है, साथ ही भजनों पर मार्सेलनिस को लखिा उनका पत्र भी है; उनकी जोब की पुस्तक और गीतों के गीत पर, साथ ही मत्ती और लूका के सुसमाचारों पर की गई टीकाओं से संक्षप्ति अंश भी प्राप्त होते हैं। उनके नैतकि नबिंधों में अम्मुन को लखिा उनका पत्र शामलि है, जो ववािह की नदिा करने वालों के वरिुद्ध है, और रूफनियिानुस को लखिा उनका पत्र, जसिमें चर्च में वधिर्मीयों को स्वीकार करने के तरीके के बारे में बताया गया है। संत अथेनासयिस की सबसे शक्षिाप्रद कृतयिों में से एक 'महान एंथनी का जीवन' है; संत क्रसिोस्टोम सभी को, चाहे उनका जीवन का कोई भी दर्जा हो, 'एंथनी का जीवन' पढ़ने की सलाह देते हैं।

[1184] संत सल्वि्स्टर ने 314 से 335 तक चर्च का नेतृत्व कयिा। (उनका पर्व दविस 2 जनवरी है।) उनके तत्काल उत्तराधकिारी संत मार्क (336) थे, जसिके बाद संत जूलयिस (337–362) आए, जो अथानासयिस के रक्षक और ऑर्थोडॉक्सी के एक दृढ़ संरक्षक थे, और अंत में संत लबिेरयिस (352–366) थे। सम्राट लबिेरयिस (355–356) द्वारा पदच्युक्त कए जाने के बाद और उनके साथ-साथ फेलक्सि द्वतिीय ने सहिासन पर कब्ज़ा कयिा – इसीलिए उन्हें अन्यथा एंटीपोप के रूप में भी जाना जाता है।

[1185] एशयिा माइनर के दक्षणि-पूर्वी भाग में। कॉन्स्टैंटयिस की मृत्यु 3 नवंबर 361 को, फारसी राजा शापूर के खलिाफ अभयिान के बाद, पूर्व से लौटते समय हुई।

[1186] यह दसिंबर 361 में हुआ था।

कॉन्स्टैंटियस की मृत्यु पर, जूलियन ने शाही सिंहासन संभाला[1187] , और कॉन्स्टैंटियस के फरमानों और कानूनों को समाप्त करने का काम शुरू किया, साथ ही निर्वासन में रहे सभी लोगों को वापस बुलाया। अथानासियस को इस बात की जानकारी मिली, लेकिन उन्हें डर था कि एरियन जूलियन को अपनी विधर्म में खींच लेंगे (उस समय, जूलियन का धर्मत्याग और मसीह का पूर्ण परित्याग अभी स्पष्ट नहीं हुआ था)। फिर भी, आधी रात को, संत अथेनासियस ने उस युवती के घर को छोड़ दिया, जहाँ वह छिपे हुए थे, और अलेक्जेंड्रिया के चर्च के बीच में प्रकट हुए। कौन उस आनंद का वर्णन कर सकता है जो सभी ऑर्थोडॉक्स विश्वासियों पर छा गया था - कि कैसे वे उसे देखने के लिए हर तरफ से उमड़ पड़े, और पुरोहितों, नागरिकों और सभी लोगों ने कितनी बड़ी प्रसन्नता से उसे निहारा और प्रेम से उसे गले लगाया?! उनके आगमन ने ऑर्थोडॉक्स में साहस जगाया, और उन्होंने तुरंत एरियनों को अलेक्जेंड्रिया से बाहर निकाल दिया, तथा शहर और स्वयं को अपने चरवाहे और शिक्षक, अथानासियस के हवाले कर दिया।

इस बीच, अधर्मी जूलियन, जो पहले एक गुप्त मूर्तिपूजक था, अब उसने खुले तौर पर अपनी आस्था से इनकार कर दिया। सिंहासन पर अपनी पकड़ मजबूत करने के बाद, उसने सार्वजनिक रूप से मसीह का परित्याग किया और उनके परम पवित्र नाम का अपमान किया; उसने मूर्तियों की पूजा की, हर जगह मंदिर बनवाए, और अधर्मी देवताओं को घृणित बलिदान चढ़ाने का आदेश दिया: और हर जगह वेदी स्थापित की गईं, बदबू और धुएं से हवा भर गई, जानवरों की बलि दी गई, और उनका खून बहाया गया। चर्च के महान स्तंभों और शिक्षकों द्वारा निंदित, जूलियन ने चर्च पर एक क्रूर उत्पीड़न शुरू किया, और उत्पीड़न की शुरुआत में ही उसने अपने हथियार संत अथेनासियस के खिलाफ मोड़ दिए। जब सम्राट ने अपने समान विचारधारा वाले सहयोगियों और अपने बुद्धिमान जादूगरों से परामर्श किया, और जादू-टोना करने वालों और जादूगरों से भी इस बारे में सलाह मांगी कि ब्रह्मांड के मुख से ईसाई धर्म को कैसे मिटाया जाए, तो उन सभी को यह विचार आया कि अथेनासियस को भी पृथ्वी के मुख से मिटा दिया जाना चाहिए और नष्ट कर दिया जाना चाहिए। वे इस प्रकार तर्क करने लगे: 'यदि नींव को उखाड़ दिया जाए, तो ईसाई धर्म के अन्य हिस्सों को एक-एक करके नष्ट करना आसान होगा।' एक बार फिर, अथेनासियस पर एक गैरकानूनी मुकदमा चलाया गया; एक बार फिर, अलेक्जेंड्रिया में एक सेना भेजी गई; एक बार फिर, शहर में उथल-पुथल मच गई। चर्च को सशस्त्र सैनिकों ने घेर लिया और हिला दिया, लेकिन वे केवल अथेनासियस को मारने के लिए ढूंढ रहे थे। हालाँकि, वह, पहले की तरह, ईश्वर की कृपा से सुरक्षित, भीड़ के बीच से निकल गया, उसे खोजने वालों की पहुँच से बच निकला, और रात में नील नदी तक पहुँच गया। जब संत थेबाइड की ओर जाने के इरादे से नाव पर चढ़े, तो उनके प्रेमी उन तक पहुँचे और आँसुओं के साथ कहा:

'पिताजी, आप फिर कहाँ जा रहे हैं? आप हमें किसके भरोसे छोड़ रहे हैं, जैसे चरवाहे के बिना भेड़ें?'

संत ने उत्तर दिया:

'रोओ मत, मेरे बच्चों, क्योंकि यह उथल-पुथल जो हम अब देख रहे हैं, जल्द ही समाप्त हो जाएगी।'

यह कहकर, वह अपनी यात्रा पर रवाना हो गया। इस बीच, एक सैन्य कमांडर उसके पीछे तेज़ी से आ रहा था, जिसे यातना देने वाले[1188] ने आदेश दिया था कि अथानासियस को पकड़ते ही तुरंत मार डाला जाए। जब अथानासियस के साथ यात्रा कर रहे एक व्यक्ति ने दूर से उस सैन्य कमांडर को देखा—जो जहाज का पीछा करते हुए आ रहा था और उनसे काफी करीब आ चुका था—और उसे साफ पहचान लिया, तो उसने अपने नाविकों से तेजी से नौका चलाने का आग्रह किया ताकि वे अपने पीछा करने वालों से बच सकें। लेकिन संत अथेनासियस ने, एक पल के लिए रुककर और यह पूर्वानुमान लगाते हुए कि उनके साथ क्या होने वाला है, नाविकों को जहाज को वापस अलेक्जेंड्रिया की ओर मोड़ने का आदेश दिया। जब वे इस पर हिचकिचाए और अथेनासियस के आदेश का पालन करने से डर गए, तो उन्होंने उनसे साहस रखने के लिए कहा। तब, जहाज़ को दाईं ओर मोड़कर, वे सीधे अपने उत्पीड़कों की ओर अलेक्जेंड्रिया की ओर चल पड़े; जब वे उनके पास पहुँचे, तो बर्बर लोगों की आँखें मानो कोहरे से ढँक गईं, इसलिए वे देखते हुए भी नहीं देख पाए, और वे निकल गए। फिर अथेनासियस ने उनसे पूछा:

'तुम किसे ढूंढ रहे हो?'

उन्होंने उत्तर दिया:

'हम अथेनासियस को ढूंढ रहे हैं: क्या आपने उसे कहीं देखा है?'

[1187] जुलीयन द अपोस्टेट, कॉन्स्टेंटाइन द ग्रेट का भतीजा।

[1188] अर्थात् सम्राट जूलियन।

'वह नाव से जा रहा है,' अथानासियस ने उत्तर दिया, 'आपसे थोड़ा आगे, जैसे किसी पीछा करने वाले से भाग रहा हो: जल्दी करो, और आप जल्द ही उसे पकड़ लेंगे।'

इस प्रकार संत अपने हत्यारों के हाथों से बच निकले। अलेक्जेंड्रिया पहुँचने पर, वे शहर में प्रवेश किए, और सभी विश्वासियों ने उनकी वापसी पर प्रसन्नता व्यक्त की; हालाँकि, वे जूलियन[1189] की मृत्यु तक छिपकर रहे। जब, कुछ ही समय बाद, वह अधर्मी सम्राट मर गया, तो जोविनियन, एक धर्मनिष्ठ ईसाई, शाही सिंहासन पर चढ़ा। एक बार फिर, अथेनासियस ने निडर होकर अपना पद फिर से संभाला और चर्च का ध्यानपूर्वक शासन किया। लेकिन जोविनियनस का शासन अल्पकालिक था - महज सात महीने तक चला[1190] - और उसकी मृत्यु गलाटिया में हुई। वैलेन्टिनिस[1191] , जो एरियन विधर्म से प्रभावित था, सिंहासन पर चढ़ा। एक बार फिर, चर्च पर आपदाएँ आईं। सत्ता संभालने के बाद, उस अधर्मी सम्राट ने न तो सार्वभौमिक शांति की परवाह की और न ही दुश्मनों पर विजय की, बल्कि एक बार फिर एरियनवाद को फैलाने और स्थापित करने की कोशिश में लग गया। उसने उन ऑर्थोडॉक्स बिशपों को उनके सिंहासनों से हटा दिया जिन्होंने उसकी विधर्म को स्वीकार करने से इनकार कर दिया था। इस प्रकार, उसने सबसे पहले सेंट मेलेटियस, एंटिओक के आर्चबिशप[1192] को निष्कासित कर दिया। जब यह आंतरिक कलह, जो मसीह की कलीसिया को हर जगह पीड़ित कर रहा था, अलेक्जेंड्रिया पहुँचा और एपार्क के आदेश से सैनिकों को संत अथेनासियस को हिरासत में लेना था, तो धन्य संत ने गुप्त रूप से शहर छोड़ दिया और , पारिवारिक समाधि में शरण लेकर, चार महीने तक वहीं रहे - और किसी को नहीं पता था कि वह कहाँ थे। तब संपूर्ण अलेक्जेंड्रिया, संत अथेनासियस के लिए शोक और विलाप करते हुए, राजाओं द्वारा दी गई इतनी बड़ी और अनगिनत पीड़ाओं से परेशान होकर, एक बड़े विद्रोह में उठ खड़ा हुआ। अलेक्जेंड्रियावासी पहले ही वैलेंस से अलग होने के लिए तैयार थे और एक विद्रोह के लिए हथियार तैयार कर चुके थे।

यह जानकर, सम्राट, उनके पक्ष-त्याग के साथ-साथ विद्रोह और गृहयुद्ध के डर से, अथेनासियस को—हालांकि अपनी इच्छा के विरुद्ध—बिना किसी डर के अलेक्जेंड्रिया के चर्च का शासन करने की अनुमति दे दी। इस प्रकार, मसीह के एक वृद्ध योद्धा, अथेनासियस ने, ऑर्थोडॉक्सी (सही आस्था) की रक्षा में लंबे संघर्षों और कई कारनामों के बाद, अपनी मृत्यु से ठीक पहले अपने धर्मप्रांत में थोड़े समय के लिए शांति और सुकून से जीवन जीने के बाद, प्रभु में निद्रावस्था प्राप्त की[1193] और अपने पूर्वजों, पैगंबरों, भविष्यद्वक्ताओं के साथ शामिल हो गए, प्रेरितों, शहीदों और धर्म-रक्षकों के साथ, जिनके सदृश उन्होंने पृथ्वी पर संघर्ष किया था। उन्होंने सैंतालीस वर्षों तक बिशप के रूप में सेवा की[1194] और अलेक्जेंड्रिया के सिंहासन पर अपने उत्तराधिकारी के रूप में पीटर[1195] को छोड़ा, जो उनके सभी कष्टों में उनका धन्य मित्र और साथी थे। वे स्वयं प्रभु मसीह से दीप्तिमान मुकुट और अनुपम आशीर्वादों का पुरस्कार प्राप्त करने के लिए इस जीवन से परलोक सिधार गए; उसी को, पिता और पवित्र आत्मा के साथ, महिमा और सामर्थ्य, सम्मान और आराधना मिले, अब और सदा और युगानुयुग। आमीन।

ट्रोपारियन, स्वर 3:

हे पवित्र धर्मगुरु अथेनासियस, आप धर्मपरायणता के एक स्तंभ थे, जिन्होंने दिव्य सिद्धांतों से कलीसिया को सुदृढ़ किया: क्योंकि, पुत्र को पिता के समानतत्त्व का घोषित करके, आपने एरियस को लज्जित किया। हे पूजनीय पिता, हमारे प्रभु मसीह से प्रार्थना करें कि वे हम पर अपनी महान दया करें।

[1189] जूलियन की 26 जून 363 को फारसियों के साथ एक युद्ध के दौरान मृत्यु हो गई।

[1190] जोविनियन की मृत्यु 17 फरवरी 364 को हुई।

[1191] जोविनियन की मृत्यु के बाद, 26 फरवरी को सेना ने वैलेंटाइनियन को उसका उत्तराधिकारी चुना, जिसने एक महीने बाद, साम्राज्य के पूर्वी आधे हिस्से को अपने भाई वैलेंस को सौंप दिया, जो एक कट्टर एरियन था। वैलेंस ने 364 से 378 तक शासन किया।

[1192] मेलिटियस, एंटिओक के पैट्रिआर्क, ने 358 से 381 तक पद संभाला। वह ऑर्थोडॉक्सी (सही आस्था) के रक्षक थे, जिसके कारण एरियनों की साज़िशों के चलते उन्हें कई बार अपने पद से हटा दिया गया।

[1193] संत अथेनासियस महान का 2 मई 373 को निधन हो गया।

[1194] इनमें से, उन्होंने 20 से अधिक वर्ष निर्वासन में बिताए।

[1195] पतरस द्वितीय, अलेक्जेंड्रिया के पैट्रिआर्क, ने 373 से 380 तक चर्च का नेतृत्व किया।

कॉन्टाकयिन, स्वर 2:

आपने ऑर्थोडॉक्सी की शकि्षाओं को स्थापति कयिा, और झूठे सद्धिांतों की काँटों को काट डाला, हे पूजनीय, आत्मा की सचिai से वशि्वास के बीज को बढ़ाया। इसलएि हम आपके लएि गाते हैं, अथेनासयिस।

फरवरी

1 फरवरी

19 जनवरी (पुराने कैलेंडर के अनुसार)

उसी दनि, गुफाओं के डकिन, पूज्य मकरयिुस की स्मृत।[1196]

हमारे पूज्य पति मकरयिुस मस्रिवासी का जीवन

19 जनवरी को स्मरण कयिा जाता है

मस्रि के पूजनीय मकारयिस[1197] का जन्म मस्रि में, प्टनैपोर् नामक एक गाँव में हुआ था[1198] । उनके माता-पति का नाम प्राचीन पवत्रि पुरखों—अब्राहम और सारा—के नाम पर रखा गया था, क्योंकि पूजनीय मकारयिस के पति का नाम अब्राहम (वे एक पुरोहति थे) था, जबकि उनकी माता का नाम सारा था। चूंकि मकरयिुस के माता-पति का ववािह संतानहीन था, उन्होंने एक-दूसरे से अलग हुए बनिा, बल्कि एक साथ रहते हुए, एक पवत्रि जीवन जीने का संकल्प लयिा। और इस प्रकार, कई वर्षों तक, मकरयिुस के माता-पति शारीरकि मलिन के बजाय आध्यात्मकि सहभागति में एकजुट रहे। उन्होंने अपने जीवन को संयम और उपवास, बार-बार प्रार्थना, अखंड जागरण, उदार दान, आतथि्य और कई अन्य सद्गुणों से सुशोभति कयिा। उस समय, दैवीय व्यवस्था से, बर्बर लोगों ने मस्रि पर आक्रमण कयिा और मस्रिवासयिों की सारी संपत्ति लूट ली। अन्य लोगों के साथ, मकरयिस के माता-पति ने भी अपनी सारी संपत्ति खो दी, इसीलएि वे अपने देश को छोड़कर कसिी अन्य देश में जाने की भी इच्छा करने लगे। लेकनि एक रात, जब मकरयिस के पति, अब्राहम, सो रहे थे, तो पवत्रि पैट्रआिर्क अब्राहम एक सपने में उनके सामने एक प्रतषि्ठति, सफेद बालों वाले बूढ़े व्यक्ति के रूप में प्रकट हुए, जो शानदार वस्त्रों में लपिटे हुए थे। प्रकट हुए पवत्रि कुलपति ने अब्राहम को उसकी वपित्ति में सांत्वना दी, और उसे प्रभु में अपना वशि्वास रखने तथा मस्रि की सीमाएँ न छोड़ने, बल्कि उसी देश में स्थति प्टनिापोर् नामक गाँव में जाने का आदेश दयिा। उसी समय, महाधर्माध्यक्ष अब्राहम ने मकरयिुस के पति से भवषि्यवाणी की कि ईश्वर जल्द ही उन्हें एक पुत्र के जन्म का आशीर्वाद देंगे, ठीक वैसे ही जैसे उन्होंने एक बार स्वयं महाधर्माध्यक्ष अब्राहम को कनान की भूमि में एक अजनबी होने पर वृद्धावस्था में एक पुत्र का आशीर्वाद दयिा था (उत्पत्ति 21:2)। जागने के बाद, पुरोहति अब्राहम ने अपनी पत्नी सारा को वह दर्शन सुनाया जो उन्होंने देखा था, और उन्होंने दोनों ने परमेश्वर की स्तुति की। इसके तुरंत बाद, अब्राहम और सारा उपर्युक्त गाँव प्टनिापोर चले गए, जो नाइट्रयिन रेगस्तिान से थोड़ी दूरी पर स्थति था। यह सब दैवीय व्यवस्था से हुआ, ताकि उनका जो पुत्र होने वाला था – आदरणीय मकरयिस – वह मठवासी जीवन से और भी गहराई से प्रेम कर सके; एक ऐसा जीवन, जसिके लएि, जैसा कि हम बाद में देखेंगे, उन्होंने अपनी पूरी

[1196] उन्होंने 12वीं शताब्दी में तपस्या की। उनके अवशेष सेंट एंथनी की गुफा में हैं।

[1197] आदरणीय मकरयिस को 'मस्रिवासी' कहा जाता है ताकि उन्हें उसी नाम के एक अन्य तपस्वी और उनके समकालीन से अलग कयिा जा सके, जसिका जन्म और जीवन का अधकिांश समय अलेक्जेंड्रयिा शहर में बीता था, और इसलएि उन्हें 'अलेक्जेंड्रयिाई' या 'शहर-नविासी' कहा जाता है। उनकी पवत्रिता और बुद्धमित्ता के लएि, मस्रिवासी मकरयिस को 'महान' कहा जाता है। उनका जन्म लगभग 301 ईस्वी में हुआ था।

[1198] प्टीनापोर या पेज़ज़्विरि नील नदी के पश्चमिी तट पर, आज के मस्रि के मेनूफ़ या मेनुफयिा प्रांत में, नील घाटी के दक्षणिी भाग में बसा एक बस्ती था, जसिे नम्नि मस्रि के नाम से जाना जाता है। आज, इसके केवल खंडहर ही बचे हैं।

आत्मा से खुद को समर्पित कर दिया। जब मकरियस के माता-पिता प्टनिापोर गाँव में रह रहे थे, तो ऐसा हुआ कि मकरियस के पिता, अब्राहम, इतने गंभीर रूप से बीमार पड़ गए कि वे मृत्यु के कगार पर थे। एक रात, जब वह अपनी बीमारी के बिस्तर पर लेटा था, तो उसने एक सपने में देखा कि जैसे प्रभु का स्वर्गदूत उस चर्च के वेदी से बाहर आया था जहाँ अब्राहम सेवा करता था, और उसके पास आकर कहा:

'अब्राहम, अब्राहम! अपनी बिस्तर से उठो।'

अब्राहम ने स्वर्गदूत से उत्तर दिया:

'मैं बीमार हूँ, महोदय, और इसलिए उठ नहीं सकता।'

तब स्वर्गदूत ने उस बीमार व्यक्ति का हाथ पकड़कर उससे कोमल स्वर में कहा:

'हे अब्राहम, ईश्वर ने तुम पर दया की है: वह तुम्हें तुम्हारी बीमारी से ठीक कर रहे हैं और अपनी कृपा प्रदान कर रहे हैं, क्योंकि तुम्हारी पत्नी सारा एक पुत्र को जन्म देगी, जिसका नाम ברכה (बर्खा) होगा। वह पवित्र आत्मा का वासस्थान होगा, क्योंकि वह एक स्वर्गदूत के रूप में पृथ्वी पर रहेगा और कई लोगों को ईश्वर की ओर ले जाएगा।'

इस दर्शन से जागने पर, अब्राहम को पूरी तरह से ठीक महसूस हुआ; भय और आनंद से भरकर, उन्होंने तुरंत अपनी पत्नी सारा को वह सब कुछ बताया जो उन्होंने दर्शन में देखा था और जो स्वर्गदूत ने उनसे कहा था। इस दर्शन की सच्चाई एक गंभीर बीमारी से उनके अचानक ठीक होने से पुष्ट हुई। और उन दोनों, अब्राहम और सारा ने, परम दयालु प्रभु ईश्वर का धन्यवाद किया। कुछ ही समय बाद, सारा ने अपनी वृद्धावस्था में गर्भधारण किया, और कुछ समय बाद उन्होंने एक पुत्र को जन्म दिया, जिसका नाम उन्होंने मकारियस रखा, जिसका अर्थ है 'धन्य', और उन्होंने उसे पवित्र बपतिस्मा के माध्यम से प्रबुद्ध किया।

जब युवा मकरियुस वयस्क हो गया और पवित्र धर्मग्रंथों को समझना सीख गया, तो उसके माता-पिता, मानो उस स्वर्गदूत द्वारा की गई भविष्यवाणी को भूल गए हों, जिसने अब्राहम को एक दर्शन में प्रकट होकर मकरियुस के बारे में बताया था, वे चाहते थे कि मकरियुस शादी कर ले, हालांकि मकरियुस स्वयं ऐसा करने की कोई इच्छा नहीं रखता था। इसके विपरीत, उसने अपनी पूरी ताकत से अपने माता-पिता के मनाने का विरोध किया, क्योंकि वह स्वयं को एक अकेली, अविनाशी वधू - एक शुद्ध और निर्मल कुंवारी जीवन - के लिए समर्पित करना चाहता था। हालाँकि, अपने माता-पिता की इच्छा के आगे झुकते हुए, मकरियस ने उनका कहना माना, और स्वयं को पूरी तरह से प्रभु के हाथों में सौंप दिया और इस आशा में रहा कि वह उसे जीवन में अपनाने योग्य मार्ग दिखाएंगे। विवाह भोज संपन्न होने के बाद, जब नवविवाहितों को वधू कक्ष में ले जाया गया, तो मकरियुस ने बीमारी का बहाना किया और अपनी दुल्हन को छुआ भी नहीं, और अपने हृदय की गहराई से एकमात्र सच्चे परमेश्वर से प्रार्थना करने लगा और उन पर अपनी आशा रखता रहा, कि प्रभु उसे जल्द ही सांसारिक जीवन त्यागकर एक भिक्षु बनने की अनुमति दे दें। कुछ दिनों बाद, मैकारियस के एक रिश्तेदार बहुत बड़ी मात्रा में मिलने वाले नाइट्रे को लाने के लिए माउंट नाइट्रिया[1199] के लिए रवाना हुआ, जिसके कारण ही उस पहाड़ का नाम 'नाइट्रिया' पड़ा था। अपने माता-पिता के कहने पर, मकरियस भी उसके साथ चल पड़ा। रास्ते में, जब वे नट्रिया झील के पास पहुँचे, तो मकरियस यात्रा से थोड़ा आराम करने की इच्छा से अपने साथियों से अलग हो गया और सो गया। और देखो, एक स्वप्न-दृश्य में, प्रकाश से दमकता हुआ एक अद्भुत पुरुष उसके सामने प्रकट हुआ और मकरियस से कहा:

'मकारा! इन सुनसान स्थानों को देखो और इन्हें ध्यान से परखो, क्योंकि यहीं बसाना तुम्हारा भाग्य है।'

जागने पर, मकरियस ने उस दर्शन में कही गई बातों पर विचार करना शुरू कर दिया और इस बात से हैरान था कि उसका क्या होगा। उस समय, महान एंथनी और अज्ञात तपस्वी थियोबस के पॉल के अलावा कोई और रेगिस्तान में नहीं बसा था, जो भीतरी रेगिस्तान में कहीं रहते थे और जिन्हें केवल एंथनी ने ही देखा था। जब माउंट नाइट्रिया की तीन दिन की यात्रा के बाद मैकारियस और उसके साथी घर लौटे, तो उसने अपनी पत्नी को इतनी तेज बुखार से पीड़ित पाया कि वह पहले ही मौत के कगार पर थी। वह जल्द ही मैकारियस की आँखों के सामने ही चल बसी, और एक निष्कलंक कुँवारी के रूप में अनंत जीवन में प्रवेश कर गई। मैकारियस ने ईश्वर का धन्यवाद किया कि उन्होंने उसे अपनी पत्नी के प्राण जाते हुए देखने की कृपा दी थी, और अपने लिए एक सबक के रूप में, उसने अपनी मृत्यु पर इस प्रकार मनन किया:

[1199] नाइट्रियन मरुभूमि - जिसे धन्य जेरोम ने वहाँ रहने वाले तपस्वियों की पवित्रता के कारण 'ईश्वर का नगर' कहा है - लीबिया और इथियोपिया से सटी एक विशाल मरुभूमि थी। इसका नाम एक पड़ोसी पहाड़ के नाम पर पड़ा, जहाँ की झीलों में प्रचुर मात्रा में नाइट्रेट था।

उन्होंने कहा, 'ध्यान रखो, मकरयिस, और अपनी आत्मा का ध्यान रखो, क्योंकि तुम्हें भी जल्द ही इस सांसारिक जीवन को छोड़ना होगा।'

उस समय से, मकरयिस ने सांसारिक किसी भी चीज़ की परवाह करना छोड़ दिया, और अपना समय लगातार प्रभु के मंदिर में और पवित्र शास्त्रों को पढ़ने में बिताया। मकरयिस के माता-पिता, उसके जीवन को देखकर, उसकी उपस्थिति में किसी महिला का नाम लेने की हिम्मत भी नहीं करते थे, बल्कि उसके पवित्र जीवन पर बहुत प्रसन्न हुए। इस बीच, मकरयिस के पिता अब्राहम काफी वृद्ध हो गए थे और बहुत बीमार पड़ गए थे, जिसके कारण वे वृद्धावस्था और बीमारी के कारण अपनी दृष्टि खो बैठे। धन्य मकरयिस ने अपने वृद्ध और बीमार पिता की देखभाल प्रेम और भक्ति के साथ की। शीघ्र ही वह वृद्ध व्यक्ति प्रभु में निधन कर गए, और उनकी मृत्यु के छह महीने बाद, सारा, मकरयिस की माँ, भी प्रभु में निधन कर गईं। पूजनीय मकरयिस ने अपने माता-पिता का पारंपरिक ईसाई अंतिम संस्कार के साथ अंतिम संस्कार किया और दिवंगत आत्मा की स्मृति में दफनाने के बाद अपनी सारी संपत्ति गरीबों में बाँटकर, देह के बंधनों से पूरी तरह मुक्त हो गए। मकरयिस का हृदय महान दुःख से भर गया, क्योंकि अब उसके पास कोई नहीं था जिससे वह अपना रहस्य साझा कर सके या जिससे वह ईश्वर-प्रसन्न जीवन के लिए सटीक सलाह प्राप्त कर सके। इसलिए, उसने ईश्वर से विनम्रतापूर्वक प्रार्थना करना शुरू कर दिया कि वह उसे एक अच्छे गुरु भेजें जो उसे मोक्ष के मार्ग पर मार्गदर्शन करें।

कुछ समय बाद, किसी संत का पर्व का दिन आया, जिसके सम्मान में, अपने माता-पिता की परंपरा का पालन करते हुए, मकरयिस एक उत्सव आयोजित करना चाहता था। इस उद्देश्य के लिए, उसने भोजन तैयार किया, जो उसके पड़ोसियों के लिए कम और भिखारियों तथा बेसहारा लोगों के लिए अधिक था। उस दिन चर्च की प्रार्थना सभा में भाग लेते समय, मकरयिस ने एक सम्मानित वृद्ध व्यक्ति - एक भिक्षु - को चर्च में प्रवेश करते देखा। उस संन्यासी के लंबे सफेद बाल और लगभग कमर तक पहुँचती दाढ़ी थी; लंबे समय तक उपवास करने से उसका चेहरा पीला पड़ गया था; फिर भी उसकी पूरी आकृति भव्य थी, क्योंकि उसका आंतरिक आध्यात्मिक चरित्र सद्गुणों की सुंदरता से सुशोभित था। यह संन्यासी पटनिपोर गाँव से बहुत दूर नहीं, एक सुनसान जगह पर रहता था, जहाँ उसकी एक तपस्वी की कुटिया थी। वह कभी किसी के सामने नहीं आते थे, और केवल इसी दिन, दैवीय कृपा से, वे गाँव की चर्च में मसीह के परम पवित्र रहस्यों को ग्रहण करने आए थे। दैवीय अनुष्ठान के समापन पर, मकरयिस ने इस भिक्षु से अपने घर पर सामूहिक भोजन के लिए आने का आग्रह किया। भोजन के बाद, जब मकरयिस द्वारा आमंत्रित सभी लोग घर चले गए, तो मकरयिस ने उस भिक्षु को रोक लिया और उसे एक एकांत स्थान पर ले जाकर, उस वरिष्ठ के पैरों पर गिर पड़े और उससे कहा:

'पिताजी! मुझे कल सुबह आपके पास आने की अनुमति दें, क्योंकि मैं अपने भविष्य के जीवन के बारे में आपकी बुद्धिमानी भरी सलाह लेना चाहता हूँ!'

'आओ, मेरे बच्चे,' वृद्ध ने उत्तर दिया, 'जब भी तुम चाहो,' और यह कहकर उन्होंने मकरयिस से विदा ली।

अगली सुबह जल्दी, मकरयिस बूढ़े के पास गया और उसे अपने दिल का राज़ बताया: कि वह अपनी पूरी ताकत से प्रभु के लिए काम करना चाहता था; और साथ ही उसने बूढ़े से विनम्रतापूर्वक प्रार्थना की कि वह उसे सिखाए कि अपनी आत्मा को बचाने के लिए उसे क्या करना चाहिए। आत्मा को पोषण देने वाली बातचीतों के माध्यम से, वृद्ध ने पूरे दिन मकारियोस को अपने पास रखा, और जब सूर्य अस्त हो गया, तो उन्होंने थोड़ी ब्रेड नमक के साथ खाई, और वृद्ध ने मकारियोस से सोने के लिए कहा। बुजुर्ग स्वयं प्रार्थना करने लगे, अपना मन ऊपर की ओर केंद्रित करते हुए; जैसे ही आधी रात हुई, वे समाधि की अवस्था में पहुँच गए और उन्होंने सफेद वस्त्रों में लिपटे और पंखों वाले भिक्षुओं की एक मंडली देखी। वे सो रहे मकरयिस के चारों ओर घूमे और कहा:

'उठो, मकरयिस, और वह सेवा शुरू करो जो ईश्वर ने तुम्हारे लिए नियुक्त की है; इसे किसी और समय के लिए टालो मत, क्योंकि आलसी व्यक्ति मूर्खता से काम करता है, जबकि परिश्रमी को अपना इनाम मिलता है।'

अगली सुबह, पवित्र वृद्ध ने यह दर्शन मकरयिस को सुनाया और, जब उन्होंने उसे विदा किया, तो उसे यह निर्देश दिया:

'मेरे बच्चे! जो कुछ भी तुम करने का इरादा रखते हो, उसे जल्दी करो, क्योंकि ईश्वर तुम्हें बहुतों के उद्धार के लिए बुला रहे हैं। इसलिए, इस क्षण से, ईश्वर को प्रसन्न करने वाले कार्यों में सुस्त न रहना!'

प्रार्थना, जागरण और उपवास के बारे में मैकारियस को और अधिक निर्देश देने के बाद, संत ने उसे शांति से विदा किया। वरिष्ठ के निवास से घर लौटकर, धन्य मकारियस ने अपने सारे धन-संपत्ति को गरीबों में बाँट दिया, और अपने लिए

कुछ भी नहीं छोड़ा, यहाँ तक कि अपनी दैनिक आवश्यकताओं के लिए भी नहीं। इस प्रकार सभी सांसारिक चिंताओं से मुक्त होकर और स्वयं एक भिखारी बनकर, मकारियस प्रभु की सेवा के लिए पूरी तरह से समर्पित होने हेतु वरिष्ठ के पास लौट आए, जिसकी वह लंबे समय से इच्छा रखते थे। बड़े भाई ने उस विनम्र युवक का स्नेहपूर्वक स्वागत किया, उसे मौन संन्यासी जीवन की मूल बातें सिखाईं, और उसे टोकरी बुनाई की पारंपरिक संन्यासी कला सिखाई। साथ ही, बड़े भाई ने मकरियुस के लिए अपनी कोठरी के पास ही एक अलग कोठरी की व्यवस्था की, क्योंकि उन्हें स्वयं एकांत में प्रभु की सेवा करना पसंद था। उन्होंने अपने नए शिष्य को नव-निर्मित कोठरी तक ले जाकर, प्रार्थना, भोजन और हस्तशिल्प के संबंध में फिर से आवश्यक निर्देश दिए। इस प्रकार, ईश्वर की सहायता से, धन्य मकरियुस ने कठिन संन्यासी जीवन अपनाना शुरू कर दिया और दिन-प्रतिदिन अपने संन्यासी प्रयासों में प्रगति की। कुछ समय बाद, उस क्षेत्र के बिशप का पट्टिनिपोर गाँव में आना हुआ; ग्रामीणों से धन्य मकरियस के कार्यों के बारे में जानने के बाद, उन्होंने उसे बुलाया और उसकी इच्छा के विरुद्ध, उसे स्थानीय चर्च का एक क्लेरिक नियुक्त किया, भले ही मकरियस अभी भी जवान था। लेकिन संत मकरियुस, क्लेरिक के पद को एक बोझ मानकर, क्योंकि यह उनके मौन जीवन में बाधा डाल रहा था, कुछ दिनों बाद वहाँ से भाग गए और एक दूसरे गाँव के पास एक सुनसान जगह पर बस गए। वहाँ एक विनम्र पद का धर्मपरायण व्यक्ति उसके पास आया और मकarius की सेवा करने लगा, वह अपनी हस्तकला बेचकर उससे प्राप्त आय से उसके लिए भोजन खरीदता था। सभी भलों का शत्रु, शैतान, यह देखकर कि वह उस युवा भिक्षु से पराजित हो रहा है, उसने उसके खिलाफ एक योजना बनाई और उससे एक भयंकर लड़ाई शुरू कर दी, उसके खिलाफ हर तरह की साजिशें रचने लगा—कभी उसमें पापपूर्ण विचार डालकर, और कभी विभिन्न भयानक भूत-प्रेतों के रूप में उस पर हमला करके। जब मकरियस रात में प्रार्थना में खड़े होकर जागते थे, तो शैतान उनकी कोठरी को उसकी नींव तक हिला देता था; और कभी-कभी, खुद को एक साँप में बदलकर, वह ज़मीन पर रेंगता और संत पर क्रूरता से झपट पड़ता था। लेकिन धन्य मकरियस, प्रार्थना और क्रॉस के चिह्न से स्वयं की रक्षा करते हुए, शैतान की चालाकियों पर कोई ध्यान नहीं देते थे, और जैसा कि एक बार दाऊद ने किया था, वे भी उद्घोषित करते थे:

'*तुम रात के भयानक समय से न डरोगे, न दिन में उड़ने वाले तीर से, न अँधेरे में घात लगाकर चलने वाली महामारी से*' (भजन संहिता 90:5)।

तब शैतान, अजेय को परास्त न कर पाने के कारण, उसके खिलाफ एक नया छल रचने लगा। मैकारियस जिस गाँव के पास तपस्या कर रहे थे, उसके एक निवासी की एक बेटी थी—एक युवती—जिसे उसी गाँव का एक युवक विवाह के लिए प्रस्ताव दे चुका था। लेकिन चूंकि वह युवक बहुत गरीब था और, इसके अलावा, नीचले कुल का था, युवती के माता-पिता ने अपनी बेटी का विवाह उससे करने से इनकार कर दिया, भले ही युवती स्वयं उससे प्रेम करती थी। कुछ समय बाद, वह युवती गर्भवती हो गई। जब उसने उस युवक से पूछा कि वह अपने माता-पिता को क्या जवाब दे, तो उसने—बुराई के गुरु, शैतान के निर्देशन में—उससे कहा:

'उन्हें बता देना कि यह काम हमारे पास रहने वाले तपस्वी ने तुम्हारे साथ किया है।'

युवती ने इस विश्वासघाती सलाह पर अमल किया और अपनी जीभ—एक साँप की तरह—उस निर्दोष संन्यासी के खिलाफ कर दी। और इसलिए, जब उसके माता-पिता को पता चला कि युवती माँ बनने वाली है, तो उन्होंने उससे पूछताछ करनी शुरू कर दी, उसे पीटते हुए यह जानना चाहा कि उसकी गिरावट के लिए कौन दोषी है। तब युवती ने उत्तर दिया:

'इसका दोषी आपका तपस्वी है, जिसे आप संत मानते हैं। एक दिन, जब मैं गाँव के बाहर थी और उस जगह के पास पहुँची जहाँ वह रहता है, तो वह तपस्वी मुझसे रास्ते में मिला और मुझ पर अत्याचार किया, लेकिन डर और शर्म के मारे मैंने अब तक इस बारे में किसी को कुछ नहीं बताया था।'

युवती के शब्दों से तीर की तरह घायल होकर, उसके माता-पिता और रिश्तेदार सभी चिल्लाते और गालियाँ बकते हुए संत के आवास की ओर दौड़ पड़े। उन्होंने मकरियस को उसकी कुटिया से बाहर खींचकर काफी देर तक पीटा, और फिर उसे अपने साथ गाँव वापस ले आए। वहाँ, उन्होंने टूटे हुए बर्तनों और टुकड़ों की भीड़ इकट्ठी की और उन्हें रस्सी से बाँधकर संत के गले में लटका दिया और इस हालत में, उन्होंने उसे पूरे गाँव में घुमाया, उस पर निर्दयता से उपहास उड़ाया, उसे मारा, धक्का दिया, उसके बाल खींचे और लात मारी। ऐसा करते हुए वे चिल्ला रहे थे:

'इस संन्यासी ने हमारी कुंवारी को कलंकित किया है; सब मिलकर इसे पीटो!'

तभी, एक समझदार आदमी वहाँ से गुज़र रहा था। जो हो रहा था, वह देखकर उसने संत को पीटने वालों से कहा:

'तुम एक निर्दोष घुमक्कड़ भिक्षु को तब तक पीटना बंद क्यों नहीं करते, जब तक यह पता न लगा लो कि उस पर लगा आरोप सही है या नहीं? मुझे लगता है कि शैतान तुम्हें बहका रहा है।'

लेकिन उन्होंने इस आदमी की बातों पर कोई ध्यान नहीं दिया और संत को प्रताड़ित करते रहे। इस बीच, वह आदमी जो ईश्वर के लिए मकरियस की अपनी हस्तकला बेचकर सेवा कर रहा था, संत से कुछ दूरी पर चला गया और जोर-जोर से रोने लगा, क्योंकि वह संत की पिटाई को रोक नहीं पा रहा था और न ही मकरियस को उन लोगों के हाथों से बचा पा रहा था जिन्होंने *'कुत्तों की तरह उसे घेर लिया था'* (भजन संहिता 21:17)। और संत को पीटने वालों ने मुड़कर इस आदमी पर भी गाली-गलौज और धमकियाँ बरसाईं।

वे चिल्लाए, 'देखो इसने क्या किया है, वह तपस्वी जिसकी तुम सेवा करते हो!' और उन्होंने मकरियुस को तब तक डंडों से पीटना जारी रखा जब तक कि उनका क्रोध और गुस्सा शांत नहीं हो गया; और मकरियुस सड़क पर अधमरा पड़ा रह गया। जहाँ तक उस लड़की के माता-पिता का सवाल है, वे अभी भी उसे जाने देने के लिए तैयार नहीं थे, लेकिन उन्होंने कहा:

'जब तक वह हमें गारंटी नहीं देता कि वह हमारी बेटी का भरण-पोषण करेगा, जिसे उसने अपमानित किया है, तब तक हम उसे जाने नहीं देंगे।'

हाँफते हुए, मैकारियस ने उस आदमी से पूछा जो उसकी सेवा कर रहा था:

'मेरे दोस्त! मेरी जमानत दे दो।'

दूसरे ने, जो संत के लिए मरने को भी तैयार था, उसकी ज़मानत दी, और मैकारियस को—जो अपने घावों से पूरी तरह थका हुआ था—बड़ी मुश्किल से उठाकर अपनी कोठरी में ले गया। अपनी चोटों से कुछ ठीक होने के बाद, मैकारियस ने अपने शिल्प पर और भी कड़ी मेहनत करनी शुरू कर दी, और मन ही मन कहा:

'अब तुम, मकरियस, एक पत्नी और बच्चे रखते हो, और इसलिए तुम्हें जीवन की आवश्यकताओं को प्रदान करने के लिए दिन-रात काम करना चाहिए।'

वह टोकरियाँ बनाता था, उन्हें उस व्यक्ति के माध्यम से बेचता था, और उससे प्राप्त आय उस युवती का भरण-पोषण करने के लिए भेज देता था। हालाँकि, जब उसके बच्चे को जन्म देने का समय आया, तो एक निर्दोष संत पर बदनामी करने के कारण वह ईश्वर के न्यायपूर्ण निर्णय की चपेट में आ गई। लंबे समय तक वह संतान नहीं जन सकती थी और कई दिन-रातों तक पीड़ित रही, तीव्र दर्द से बुरी तरह रोती रही। उसे ऐसी पीड़ा में देखकर उसके माता-पिता भी उसके साथ दुखी हुए और, अपनी हैरानी में, उससे पूछा:

'तुम्हें क्या हो गया है?'

तब वह युवती, यद्यपि वह ऐसा नहीं करना चाहती थी, फिर भी सच्चाई बताने के लिए विवश हो गई। ऊँचे स्वर में वह बोली:

'हाय रे मेरी दुर्भाग्य! एक धर्मात्मा पर कलंक लगाकर मैंने जो कहा कि मेरे पतन के लिए वही जिम्मेदार है, उसके लिए मैं एक भयानक दंड की पात्र हूँ। इसके लिए वह दोषी नहीं है, बल्कि वह युवक दोषी है जो मुझसे विवाह करना चाहता था।'

युवती की चीखें सुनकर, उसके माता-पिता और रिश्तेदार जो उसके पास खड़े थे, उसके शब्दों से बहुत प्रभावित हुए; और उन पर एक गहरा भय छा गया, और उन्हें इस बात पर बहुत शर्म आई कि उन्होंने प्रभु के सेवक, एक निर्दोष भिक्षु का इस तरह अपमान करने की हिम्मत की। अपने डर में वे चिल्लाए: 'हाय हमारा दुर्भाग्य!' इस बीच, जो कुछ हुआ था उसकी खबर पूरे गाँव में फैल गई, और उसके सभी निवासी, छोटे और बड़े, उस घर पर उमड़ पड़े जहाँ वह युवती रहती थी। वहाँ युवती की चीखें सुनकर, जिसमें वह घोषणा कर रही थी कि तपस्वी उसके अपमान के लिए निर्दोष है, गाँव वालों ने खुद को बहुत कोसा और इस बात पर गहरा दुख व्यक्त किया कि उन्होंने सभी ने मिलकर उस संत को बेरहमी से मारा था। कन्या के माता-पिता से सलाह-मशविरा करने के बाद, उन्होंने सभी ने मिलकर यह संकल्प लिया कि वे पूजनीय मकारियस के पास जाएँगे और रोते हुए उनके चरणों में गिरकर क्षमा याचना करेंगे, ताकि एक निर्दोष व्यक्ति का अपमान करने के कारण उन पर ईश्वर का प्रकोप न पड़े। उनके निर्णय के बारे में जानकर, मैकारियस की सेवा करने वाला व्यक्ति—जो उसकी जमानत पर खड़ा हुआ था—तेजी से उसके पास दौड़ा और खुशी से कहा:

'खुश हो जाइए, फादर मकरियस! आज का दिन हमारे लिए एक सुखद और आनंद का दिन है, क्योंकि आज ईश्वर ने आपके पूर्व अपमान और कलंक को महिमा में बदल दिया है। और अब मुझे आपके लिए ज़मानत देने की ज़रूरत नहीं है,

क्योंकि आपने खुद को एक निष्पक्ष, धर्मी और सबसे गौरवशाली निर्दोष पीड़ित साबित कर दिया है।' आज, उस स्त्री पर ईश्वर का न्याय हुआ है जिसने अन्यायपूर्वक आप पर आरोप लगाया और आपकी बदनामी की, जबकि आप निर्दोष थे। वह इस बोझ से खुद को मुक्त नहीं कर सकती और उसने स्वीकार कर लिया है कि उसके पतन का कारण आप नहीं, बल्कि एक युवक था। अब गाँव के सभी निवासी, छोटे और बड़े, पश्चाताप करते हुए आपके पास आना चाहते हैं, आपकी पवित्रता और धैर्य के लिए ईश्वर की स्तुति करना चाहते हैं, और आपसे क्षमा याचना करना चाहते हैं, ताकि उन्होंने आपको अन्याय से अपमानित करने के लिए प्रभु की ओर से कोई दंड न भुगतना पड़े।

विनम्र मकरियुस ने इस व्यक्ति के शब्दों को दुख के साथ सुना: वह लोगों से सम्मान या महिमा नहीं चाहता था, क्योंकि उनके लिए सम्मान पाने की तुलना में उनसे अपमानित होना कहीं अधिक प्रसन्नतादायक था; इसलिए, जैसे ही रात हुई, वह उठा और उन स्थानों से प्रस्थान कर गया, और सबसे पहले माउंट नाइट्रियन की ओर चला गया, जहाँ उसे एक बार सपने में एक दर्शन हुआ था। वहाँ एक ही गुफा में तीन साल तक रहने के बाद, वह महान एंथनी के पास गया, जो फारान रेगिस्तान में तपस्या कर रहे थे[1200] , क्योंकि मैकारियस ने उनके बारे में बहुत पहले से ही सुना था, जब वह अभी भी संसार में रहता था, और वह उन्हें देखने की बहुत इच्छा रखता था। आदरणीय एंथनी द्वारा प्रेमपूर्वक स्वागत किए जाने पर, मकारियस उनके सबसे समर्पित शिष्य बन गए और लंबे समय तक उनके साथ रहे, उन्होंने पूर्ण सदाचारी जीवन में शिक्षा प्राप्त की और हर चीज़ में अपने आध्यात्मिक पिता का अनुकरण करने का प्रयास किया। फिर, आदरणीय एंथनी की सलाह पर, मकरियुस एकांत जीवन जीने के लिए स्केटे रेगिस्तान[1201] में चले गए, जहाँ उन्होंने अपने तपस्वी कारनामों से खुद को इतना विशिष्ट बनाया और मठवासी जीवन में इतनी अधिक उत्कृष्टता हासिल की कि वे अपने कई भाइयों से आगे निकल गए और उन्हें उनके द्वारा 'युवा वरिष्ठ' की उपाधि दी गई, क्योंकि, अपनी युवावस्था के बावजूद, उन्होंने एक वरिष्ठ के लिए पूरी तरह से उपयुक्त जीवन का प्रदर्शन किया। यहाँ, मकरियुस को दिन-रात राक्षसों से संघर्ष करना पड़ा। कभी-कभी दुष्टात्माएँ खुलेआम विभिन्न भयानक प्रेतात्माओं का रूप धारण कर लेतीं और उस पूजनीय पिता पर क्रूरता से टूट पड़तीं; तो कभी वे घोड़े पर सवार हथियारबंद योद्धाओं के रूप में युद्ध के लिए दौड़तीं; बड़ी चीख-पुकार, भयानक चीखें और भारी शोर-शराबे के साथ वे संत पर ऐसे टूट पड़तीं, मानो उन्हें मार डालना ही उनका उद्देश्य हो। अन्य समयों में, राक्षसों ने संत के विरुद्ध एक अदृश्य लड़ाई लड़ी, उनमें विभिन्न कामुक और अशुद्ध विचार भरकर, और मसीह द्वारा खड़ी की गई इस दृढ़ दीवार को हिलाने और गिराने की कोशिश करने के लिए हर तरह के चालाक तरीकों का इस्तेमाल किया। हालाँकि, वे सत्य के इस पराक्रमी योद्धा पर विजय प्राप्त करने में पूरी तरह से असमर्थ थे, जिसके सहायक परमेश्वर थे और जिसने दाऊद की तरह, उद्घोष किया:

'कुछ रथों (और हथियारों) पर भरोसा करते हैं, दूसरे घोड़ों पर, परन्तु मैं हमारे प्रभु परमेश्वर के नाम पर घमण्ड करता हूँ: वे लड़खड़ाए और गिर पड़े, परन्तु मैं परमेश्वर के द्वारा अपनी शक्ति दिखाऊँगा' (भजन संहिता 19:8–9, 59:14), और वह मेरे सभी शत्रुओं को—उन राक्षसों को जो मुझ पर इतनी निर्दयता से हमला करते हैं—नाश कर देगा।

एक रात, जब मकरियुस सो रहे थे, तो उन्हें राक्षसों की एक भीड़ ने घेर लिया, जिन्होंने उन्हें जगाया और कहा:

'उठो, मकarius, और हमारे साथ गाओ; सोओ मत।'

लेकिन रेवरेंड फादर, यह समझते हुए कि यह एक शैतानी प्रलोभन था, उठे नहीं; इसके बजाय, लेटे-लेटे उन्होंने राक्षसों से कहा:

'"*मेरे पास से चले जाओ, हे श्रापित, उस अनंत आग में जो तुम्हारे पिता शैतान के लिए तैयार की गई है*" (मत्ती 25:41) और तुम्हारे लिए भी।'

लेकिन उन्होंने कहा:

'मकाराईयस, तुम हमें ऐसे शब्दों से अपमानित करके हम पर क्यों तिरस्कार करते हो?'

'क्या यह सच हो सकता है,' पादरी पिता ने उत्तर दिया, 'कि कोई भी दानव किसी को प्रार्थना और परमेश्वर की महिमा के लिए प्रेरित करे, या उन्हें सदाचारी जीवन में शिक्षित करे?'

[1200] पराण फिलिस्तीन, मिस्र, ईदोम और सिनाई प्रायद्वीप के बीच एक बंजर और पहाड़ी क्षेत्र है।

[1201] स्केटिक मरुभूमि मिस्र के उत्तर-पश्चिमी भाग में, माउंट नाइट्रिया से एक दिन की यात्रा (25–30 वर्स्ट) की दूरी पर स्थित थी। यह एक शुष्क, चट्टानी मरुभूमि थी, जो मिस्र के मरुभूमि-पितरों का पसंदीदा ठिकाना था, और यह उन संतों के तपस्या के कारनामों के लिए प्रसिद्ध हुई जिन्होंने वहां शरण ली थी।

लेकिन राक्षस उसे प्रार्थना करने के लिए आग्रह करते रहे, और वे लंबे समय तक ऐसा करने में असमर्थ रहे। फिर, क्रोध से भरकर और मकरियुस की तिरस्कारपूर्ण भावना को सहन न कर पाकर, वे बड़ी संख्या में उस पर टूट पड़े और उसे पीटने लगे। हालाँकि, संत ने प्रभु से पुकारा:

'हे मसीह मेरे परमेश्वर, मेरी सहायता करो, और *"मुझे उद्धार के आनन्द से घेर लो, क्योंकि कुत्ते मुझ पर घिर आए हैं; उन्होंने मुझ पर अपना मुँह खोला है"* (भजन संहिता 31:7, 21:14, 17–18)।'

और अचानक राक्षसों का सारा झुंड एक बड़े शोर के साथ गायब हो गया।

एक अन्य अवसर पर, मकरियस ने टोकरी बुनने के लिए रेगिस्तान में खजूर की कई टहनियाँ इकट्ठी कीं और उन्हें अपनी कुटिया तक ले जा रहा था। रास्ते में, उसकी मुलाकात एक दरांती लिए हुए शैतान से हुई, जो संत को मारना चाहता था लेकिन मार नहीं सका। फिर उसने मकरियस से कहा:

'मकारियस! तेरे कारण मैं बड़ी पीड़ा सहता हूँ, क्योंकि मैं तुझ पर विजय नहीं पा सकता। देख, जो कुछ भी तू करता है, मैं भी वैसा ही करता हूँ। तू उपवास करता है, और मैं कुछ भी नहीं खाता; तू पहरा देता है, और मैं कभी नहीं सोता। परन्तु एक बात है जिसमें तू मुझसे श्रेष्ठ है।'

'वह क्या है?' पूज्य ने पूछा।

'यह तुम्हारी विनम्रता है,' शैतान ने उत्तर दिया, 'इसीलिए मैं तुमसे लड़ नहीं सकता।'

जब आदरणीय मकारियस चालीस वर्ष के हुए, तब उन्हें ईश्वर से चमत्कार करने, भविष्यवाणी करने और अशुद्ध आत्माओं पर अधिकार करने का वरदान प्राप्त हुआ। उसी समय, उन्हें पुरोहित के रूप में अभिषिक्त किया गया और स्केटे में रहने वाले भिक्षुओं का मठाधीश (अब्बा) नियुक्त किया गया। उनके भोजन और पेय के बारे में विस्तार से बताने की कोई खास आवश्यकता नहीं है—यानी, कि वह कैसे उपवास करते थे—क्योंकि स्केट में उनके सबसे कमजोर भाई भी अधिक खाने या किसी भी स्वादिष्ट व्यंजन का सेवन करने के लिए फटकारे नहीं जा सकते थे। हालांकि यह आंशिक रूप से उन इलाकों में किसी भी तरह की स्वादिष्ट चीजों की कमी के कारण था, यह मुख्य रूप से वहाँ रहने वाले संतों के बीच की नकल के कारण था, जो न केवल अपने उपवास में एक-दूसरे की नकल करने का प्रयास करते थे, बल्कि एक-दूसरे से आगे निकलने का भी प्रयास करते थे। जहाँ तक इस दिव्य पुरुष, मकरियस के अन्य कारनामों का सवाल है, चर्च के पितरों के बीच विभिन्न विवरण प्रचलित हैं। कहा जाता है कि पूजनीय संत का मन निरंतर स्वर्गीय लोकों की ओर लगा रहता था, और वे अपने अधिकांश समय में इस संसार की चीजों की बजाय ईश्वर की ओर अपना मन केंद्रित करते थे। मकरियुस अक्सर अपने गुरु, महान एंथनी से मिलने जाते थे, और आध्यात्मिक वार्तालापों में संलग्न रहते हुए उनसे बहुत शिक्षा प्राप्त करते थे। आदरणीय एंथनी के दो अन्य शिष्यों के साथ, मकरियस को उनके धन्य निधन के समय उपस्थित रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ और, एक सबसे कीमती विरासत के रूप में, उन्होंने एंथनी का लाठी प्राप्त किया, जिस पर बाद वाले ने अपनी यात्राओं पर अपने कमजोर शरीर को सहारा दिया था, एक शरीर जो वृद्धावस्था और तपस्या के श्रम से थक गया था। एंथनी के इस दंड के साथ-साथ, पूजनीय मैकारियस को एंथनी महान की आत्मा भी प्राप्त हुई, ठीक वैसे ही जैसे भविष्यवक्ता एलिशा को एक बार भविष्यवक्ता एलिया के बाद यह प्राप्त हुई थी (2 राजा 2:9)।[1202] इस आत्मा की शक्ति से, मैकारियस ने कई अद्भुत चमत्कार किए, जिनका विवरण हम अब आगे देंगे।

एक दुष्ट मिस्रवासी एक सुंदर विवाहित महिला के प्रति अशुद्ध कामुकता से ग्रस्त था, लेकिन वह किसी भी तरह से उसे अपने पति के प्रति बेवफ़ाई करने के लिए राज़ी नहीं कर सका, क्योंकि वह पवित्र, सदाचारी थी और अपने पति से प्रेम करती थी। उसे अपना बनाने की लालसा में, यह मिस्री एक जादूगर के पास गया और उससे अपने जादू-टोने का प्रयोग करके उस महिला को उससे प्रेम करने के लिए मनाने, या उसके पति को उससे नफरत करने और उसे घर से निकाल देने के लिए कहा। जादूगर ने, उस मिस्रवासी से शानदार उपहार प्राप्त करने के बाद, अपने सामान्य जादू-टोने का इस्तेमाल किया, और उस पवित्र स्त्री को एक दुष्ट कृत्य करने के लिए बहकाने हेतु जादू की शक्ति का उपयोग करने का प्रयास किया। उस महिला की अटूट आत्मा को पाप में फँसाने में असमर्थ, जादूगर ने उन सभी की आँखों पर एक जादू डाल दिया जो उसे देखते थे, जिससे वह सभी को मानव रूप में एक महिला के रूप में नहीं, बल्कि घोड़े के रूप में एक जानवर के रूप में दिखाई देने लगी। जब उस महिला का पति घर आया, तो वह अपनी पत्नी के स्थान पर एक घोड़े को देखकर दंग रह गया और अपने बिस्तर पर एक जानवर को पाकर बहुत हैरान हुआ। उसने उससे बात की, लेकिन कोई जवाब नहीं मिला; उसने

[1202] जैसा कि आदरणीय मकारियस की सेवा में व्यक्त किया गया है (देखें मासिक मेनोलोजियन – कैनन के 6वें ओड का इकोस)।

बस यह देखा कि वह क्रोध से भर रही थी। हालांकि, यह जानते हुए कि यह उसकी पत्नी ही होगी, उसे एहसास हुआ कि यह किसी की दुर्भावना से किया गया था; इसलिए, वह बहुत दुखी हुआ और जोर-जोर से रोया। फिर उसने अपने घर पर बुजुर्गों को बुलाया और उन्हें अपनी पत्नी दिखाई। लेकिन वे यह नहीं समझ सके कि उनके सामने एक जानवर के बजाय एक इंसान खड़ा था, क्योंकि उनकी आँखों पर भी जादू चढ़ा हुआ था, और वे एक जानवर ही देख रहे थे। इस महिला के सभी के सामने घोड़ी के रूप में दिखाई देने लगे तीन दिन बीत चुके थे। इस दौरान उसने कुछ भी नहीं खाया था, क्योंकि वह न तो एक जानवर की तरह घास खा सकती थी, और न ही एक इंसान की तरह रोटी। तब उसके पति को परम पूजनीय मकारियस की याद आई और उन्होंने उसे संत से मिलने के लिए रेगिस्तान ले जाने का निश्चय किया। उसके मुँह पर लगाम डालकर, मानो वह कोई जानवर हो, वह अपनी पत्नी—जो घोड़े जैसी दिखती थी—को अपने पीछे से ले चल पड़ा और मकारियस के निवास की ओर रवाना हो गया। जैसे ही वह पूजनीय की कुटिया के पास पहुँचा, वहाँ खड़े भिक्षुओं को उस पर आपत्ति हुई और उन्होंने पूछा कि वह एक घोड़े के साथ मठ में क्यों प्रवेश करना चाहता है। लेकिन उसने उनसे कहा:

'मैं यहाँ इसलिए आया हूँ ताकि यह प्राणी, संत मकारियस की प्रार्थनाओं के द्वारा, प्रभु की दया प्राप्त कर सके।'

'उस पर क्या विपत्ति आई है?' भिक्षुओं ने पूछा।

उस आदमी ने जवाब दिया, 'यह जानवर जिसे आप देख रहे हैं, वह मेरी पत्नी है। वह कैसे घोड़े में बदल गई, मुझे नहीं पता। लेकिन यह घटना घटी हुए अब तीन दिन हो गए हैं, और इस दौरान उसने बिल्कुल भी कुछ नहीं खाया है।'

उसकी बात सुनकर, भ्राते तुरंत सम्माननीय मकारियुस के पास यह बताने के लिए दौड़े, लेकिन उन्हें पहले ही ईश्वर से प्रकटवाणी मिल चुकी थी और वे उस महिला के लिए प्रार्थना कर रहे थे। जब भिक्षुओं ने संत को वह सब बताया जो हुआ था और उनके पास लाए गए पशु की ओर इशारा किया, तो सम्माननीय संत ने उनसे कहा:

'तुम स्वयं जानवरों जैसे हो, क्योंकि तुम्हारी आँखें उसे एक जानवर के रूप में देखती हैं। वह, जो एक महिला के रूप में बनाई गई थी, वैसी ही बनी हुई है; उसने अपनी मानवीय प्रकृति नहीं बदली है, बल्कि केवल तुम्हारी आँखों को एक जानवर के रूप में दिखाई देती है, जो जादुई मंत्रों से मोहित हो गई हैं।'

तब पूज्यनीय ने जल को आशीर्वाद दिया और एक प्रार्थना के साथ उसे उस महिला पर छिड़क दिया जिसे उनके पास लाया गया था, और तुरंत ही उसने अपना सामान्य मानवीय रूप वापस पा लिया, ताकि जो भी उसे देखता, वह एक मानवीय चेहरे वाली महिला को देखता। उसके लिए भोजन देने का आदेश देकर, संत ने उसे पूरी तरह से स्वस्थ कर दिया। फिर पति, पत्नी और इस अद्भुत चमत्कार के सभी साक्षी लोगों ने ईश्वर का धन्यवाद किया। मकारियस ने स्वस्थ हुई महिला को निर्देश दिया कि वह यथासंभव ईश्वर के चर्च जाए और मसीह के पवित्र रहस्यों को ग्रहण करे।

'यह तुम्हारे साथ इसलिए हुआ,' पूजनीय ने कहा, 'क्योंकि तुम्हें दिव्य रहस्य प्राप्त किए हुए पाँच सप्ताह हो गए थे।'

पति और पत्नी को अपनी सलाह देने के बाद, संत ने उन्हें शांतिपूर्वक विदा किया।

इसी तरह, मकारियस ने एक युवती को ठीक किया जिसे एक जादूगर ने गधे में बदल दिया था और जिसे उसके माता-पिता ने उसी रूप में संत के पास लाया था। उन्होंने एक और युवती को भी, जिसका शरीर घावों और पपड़ियों से पूरी तरह बर्बाद हो गया था और कीड़ों से भरा हुआ था, पवित्र तेल लगाकर पूर्ण स्वास्थ्य प्रदान किया।

आदरणीय मकारियुस के पास बहुत से विभिन्न प्रकार के लोग आए – कुछ उनकी प्रार्थना, आशीर्वाद और पितृत्वपूर्ण मार्गदर्शन चाहते थे, जबकि अन्य अपनी बीमारियों से ठीक होने आए थे। उसके पास आने वाले लोगों की भारी संख्या के कारण, मकारियस के पास एकांत में ईश्वर के चिंतन के लिए बहुत कम समय था। इसलिए, पूज्यनीय ने अपनी कोठरी के नीचे लगभग आधा स्टेडियम लंबी एक गहरी गुफा खोदी[1203] , जहाँ वह उन लोगों से छिप जाते थे जो लगातार उनके पास आते थे और उनके ध्यान और प्रार्थना में बाधा डालते थे।

आदरणीय मकारियुस को ईश्वर से इतना अनुग्रह-पूर्ण सामर्थ्य प्राप्त हुआ कि वे मृतकों को भी जीवित कर सकते थे। और इस प्रकार, हायराकटिस नामक एक विधर्मी, जो यह सिखाता था कि मृतकों का पुनरुत्थान नहीं होगा, मिस्र से रेगिस्तान में आया और वहाँ रहने वाले भाइयों के मन को भ्रमित कर गया। तब वह आदरणीय मकारियुस के पास गया और कई भाइयों की उपस्थिति में, विश्वास के मामलों पर उनके साथ बहस करने लगा। वाक्पटु होने के कारण, उसने

[1203] एक 'स्टेडियो' हमारे 'साज़ेन' के 87½ के बराबर है।

आदरणीय संत के शब्दों की सादगी का मज़ाक उड़ाया। आदरणीय मकरयिुस ने, यह देखते हुए कि इस वधिर्मी के शब्दों के कारण भाई अपने वशि्वास में डगमगाने लगे थे, उससे कहा:

'शब्दों पर झगड़ने का क्या फायदा, जो हमारे ववािद को सुनने वालों के वशि्वास को मज़बूत करने के बजाय उन्हें अशांत करने का काम करते हैं? आइए हम अपने उन भाइयों की कब्रों पर चलें जो प्रभु में सो गए हैं, और हम में से जसिे भी प्रभु मृतकों को जीवति करने की शक्ति देंगे, तब सभी को वशि्वास हो जाएगा कि उसका वशि्वास सत्य है और स्वयं परमेश्वर द्वारा प्रमाणति है।'

भाइयों ने पादरी के शब्दों को मंजूरी दे दी, और वे सभी कब्रस्तिान के लिए नकिल पड़े। वहाँ, पादरी मकारयिस ने हएिराकटिस से कहा कि वह भाइयों में से कसिी मृत सदस्य को उसकी कब्र से बुलाए। लेकनि हएिराकटिस ने मकारयिस से कहा:

'पहले आप स्वयं ऐसा करें, क्योंकि यह परीक्षा आपने स्वयं रखी है।'

तब पूजनीय मकरयिस ने प्रभु से प्रार्थना करते हुए दण्डवत प्रणाम कयिा, और एक लंबी प्रार्थना के बाद उन्होंने अपनी आँखें आकाश की ओर उठाईं और प्रभु से पुकार कर कहा:

'हे प्रभु! अब प्रकट कर कि हम दोनों में से कौन तुझ पर अधकि सही वशि्वास करता है; इसे यहाँ लेटे हुए मृतकों में से कसिी एक को कब्र से उठाकर प्रकट कर।'

इस प्रकार प्रार्थना करने के बाद, रेवरेंड ने हाल ही में दफनाए गए एक भक्षिु का नाम लयिा, और मृतक ने कब्र से तुरंत ही उनकी आवाज़ का जवाब दयिा। फरि भक्षिुओं ने जल्दी से कब्र खोदकर अपने भाई को मृतकों में से जी उठे हुए पाया। उसके शरीर से पट्टयिाँ खोलकर, वे उसे जीवति कब्र से बाहर ले आए। ऐसा अद्भुत चमत्कार देखकर, हएिराकतिस इतना डर गया कि वह भाग खड़ा हुआ। सभी भक्षिुओं ने उसका पीछा कयिा, जैसे कोई दुश्मनों को भगाता है, और उसे उस भूमि की सीमाओं से बहुत दूर तक भगा दयिा।

एक अन्य अवसर पर, आदरणीय मकारयिस ने अब्बा ससिो द्वारा वर्णति अनुसार, एक और मृत व्यक्ति को भी जीवति कर दयिा।

वे बताते हैं, 'मैं पवत्रि मकारयिस के साथ स्केटा में था। यह फसल काटने का समय था। फसल काटने के लिए सात भाइयों को काम पर रखा गया था। जब हम काम कर रहे थे, एक वधिवा हमारे पीछे अनाज के बालों को इकट्ठा कर रही थी, और लगातार रो रही थी। पवत्रि मकारयिस ने खेत के मालकि को बुलाकर उससे पूछा:

'इस महलिा को क्या हुआ है, और वह लगातार क्यों रो रही है?'

खेत के मालकि ने रेवरेंड को बताया कि उस महलिा के पति ने एक आदमी को कुछ पैसे सुरक्षति रखने के लिए सौंपे थे, और वह अचानक मर गया, यह बताए बनिा कि उसने पैसे कहाँ छपिाए थे। इस वजह से, साहूकार अब उस महलिा और उसके बच्चों को दास बनाने का इरादा रखता था। तब मकरयिस ने उससे कहा:

'उस महलिा से कहो कि वह दोपहर को हमारे वशि्राम-स्थान पर आ जाए।'

जब उसने पादरी के नरि्देशानुसार कयिा और उनके पास आई, तो पादरी मकरयिस ने उससे पूछा:

'तुम लगातार क्यों रो रही हो, औरत?'

वधिवा ने उत्तर दयिा, 'क्योंकि मेरे पति की अचानक मृत्यु हो गई, और अपनी मृत्यु से ठीक पहले उन्होंने कसिी आदमी से कुछ सोना सुरक्षति रखने के लिए लयिा था, लेकनि उन्होंने मुझे यह नहीं बताया कि उन्होंने उसे कहाँ रखा था।'

मकाrius ने कहा, 'हमें दखिाओ कि तुम्हारे पति कहाँ दफ़न हैं।'

अपने भाइयों को साथ लेकर, पादरी उस स्थान पर गए जहाँ उसने इशारा कयिा था। वधिवा के पति की कब्र के पास पहुँचकर, पादरी ने उससे कहा:

'घर जाओ, औरत!'

तब, प्रार्थना करने के बाद, मकरयिस ने मृतक व्यक्ति को पुकारा और उससे पूछा कि उसने जो सोना लयिा था, वह कहाँ छपिाया था। तब मृतक व्यक्ति ने अपनी कब्र से उत्तर दयिा:

'मैंने इसे अपने घर में, अपने बस्तिर के पैर की ओर छपिाया था।'

अब्बा मकरयिस ने उससे कहा, 'एक बार फरि वशि्राम कर, महा-पुनरुत्थान के दनि तक!'

ऐसा चमत्कार देखकर भाइयों ने बड़े भय से पूजनीय पति के चरणों में गरि पड़े। बूढ़े ने भाइयों के उत्थान के लिए कहा:

'यह सब मेरे लिए नहीं हुआ, क्योंकि मैं कुछ भी नहीं हूँ, बल्कि ईश्वर ने यह चमत्कार इस विधवा और उसके बच्चों के लिए किया है। तो जान लो, कि ईश्वर निर्दोष आत्मा को वह सब कुछ देता है जो वह उनसे माँगती है।'

तब पूज्यनीय व्यक्ति विधवा के पास गए और उसे दिखाया कि उसके पति द्वारा लिया गया सोना कहाँ छिपा था। उसने छिपा हुआ खजाना लिया और उसे उसके असली मालिक को लौटा दिया, और इस प्रकार उसने स्वयं को और अपने बच्चों को दासत्व से मुक्त कर लिया। ऐसा अद्भुत चमत्कार सुनकर, सभी ने परमेश्वर की महिमा की।

प्रेस्बिटिर रुफिनस ([1204]) भी पूज्य मकारियस द्वारा एक तीसरे मृतक के पुनरुत्थान का वर्णन करते हैं। एक बार, जैसा कि वे बताते हैं, एक निर्दोष व्यक्ति पर उस हत्या का आरोप लगाया गया था जो पूज्य व्यक्ति की कोठरी के आसपास हुई थी। आरोपी मकरियुस के निवास में भाग गया, जहाँ हत्यारा मानकर उसे गिरफ्तार करने और न्याय के समक्ष लाने के इच्छुक लोग उसका पीछा कर रहे थे। उसने ईश्वर की कसम खाई कि वह मारे गए व्यक्ति के रक्त से निर्दोष है, लेकिन उसके आरोपियों ने उसे दोषी साबित करने का प्रयास किया। जब अभियोजक और अभियुक्त दोनों लंबे समय तक आपस में बहस कर रहे थे, तो पूजनीय मकारियस ने पूछा:

'हत्या किए गए व्यक्ति को कहाँ दफनाया गया है?'

कब्र का स्थान जानने के बाद, रेवरेंड उठे और उनके पास आए लोगों के साथ वहाँ चले गए। कब्र के पास घुटनों के बल काफी देर तक प्रार्थना करने के बाद, रेवरेंड ने अपने सामने खड़े आरोपियों से कहा:

'अब प्रभु स्वयं प्रकट करेंगे कि यह व्यक्ति, जिस पर आप हत्या का आरोप लगा रहे हैं, वास्तव में दोषी है या नहीं।'

तब, ऊँचे स्वर में पुकार कर, मकरियस ने मारे गए आदमी का नाम लिया। और उसकी पुकार पर वह कब्र से उत्तर दिया, और पादरी ने उससे पूछा:

'ईश्वर के पुत्र, यीशु मसीह के विश्वास के नाम पर, मैं तुम्हें आज्ञा देता हूँ कि हमें उत्तर दो: क्या तुम्हारा वध उस व्यक्ति ने किया है जिसे यहाँ लाया गया है?'

तुरन्त ही कब्र से मृतक ने स्पष्ट स्वर में उत्तर दिया कि उसे इस व्यक्ति ने नहीं मारा था, और उस पर झूठा हत्या का आरोप लगाया जा रहा था। कब्र पर आए सभी लोग, इस अद्भुत चमत्कार से चकित होकर, जमीन पर गिर पड़े। फिर, उन्होंने आदरणीय के पैरों पर प्रणाम किया और उनसे विनती करने लगे कि वे मृतक से एक बार फिर पूछें कि उसे किसने मारा था। लेकिन आदरणीय मकरियस ने उनसे उत्तर दिया:

'मैं इसके बारे में नहीं पूछूँगा, क्योंकि मेरे लिए इतना ही काफी है कि मैंने एक निर्दोष आदमी को मौत से बचाया है; जहाँ तक अपराधी की बात है, मैं उसे अदालतों के हवाले नहीं करूँगा।'

लौसाइका के पल्लैडियस[1205] ने रेवरेंड मकारियस के संबंध में निम्नलिखित अतिरिक्त वृत्तांत सुनाया है।

एक अवसर पर, एक राक्षस-ग्रस्त युवक को उसकी माँ ने आदरणीय पादरी के पास लाया। उसे बाँध रखा था, और दो मजबूत आदमी उसे पकड़े हुए थे। लालच के एक दानव ने उस पर कब्जा कर लिया था: इस प्रकार, वह रोटी के तीन विशाल गोले खाता और पानी का एक बड़ा पात्र पीता, और फिर सब कुछ उल्टी कर देता, और जो कुछ भी उसने खाया और पिया था, उसे एक प्रकार की भाप या धुएँ में बदल देता। भोजन और पानी उसके भीतर आग की तरह जल जाते थे। यदि युवक की माँ उसे इतना खाने और पीने न देती, तो वह अपना मल भी खा जाता। रोते हुए, उसने आदरणीय मकरियुस से अपने बेटे पर दया करने और उसे इस भयानक भूत-प्रेत से मुक्त करने की विनती की। माननीय ने उस युवक के लिए प्रभु से भक्तिपूर्वक प्रार्थना करना शुरू कर दिया, और दो दिनों के बाद युवक पहले से ही बेहतर महसूस कर रहा था, और उसने कम भोजन और पेय की मांग करना शुरू कर दिया। फिर माननीय ने युवक की माँ से पूछा:

[1204] रूफिनस – एक्विलिया के एक पादरी – का जन्म लगभग 345 में हुआ था और 410 में उनकी मृत्यु हो गई; वह चर्च के एक लेखक थे। उनकी ज्ञात कृतियों में शामिल हैं: *इतिहास ऑफ़ मॉनास्टिसिज़्म*, *इतिहास ऑफ़ द चर्च*, और *अपोलाजीज़ ऑफ़ सेंट जेरोम* (2 पुस्तकें)।

[1205] हेलेनोपोलिस के पल्लैडियस (368–430), जो परम पूज्य डोरोथियस के शिष्य और गॉल के मूल निवासी थे, 388 में अलेक्जेंड्रिया पहुँचे, जहाँ से वे बाद में पास के एक रेगिस्तान में चले गए, जहाँ परम पूज्य डोरोथियस भी एक तपस्वी के रूप में रहे थे, और बाद में बेथलहम चले गए। 390 में, उन्हें एशिया माइनर के बिथिनिया में हेलेनोपोलिस का बिशप चुना गया। बाद में, सम्राट आर्कैडियस ने उन्हें सेंट जॉन क्रिसोस्टोम के समर्थक होने के कारण ऊपरी मिस्र में निर्वासित कर दिया, जहाँ से उन्हें 408 में एंटिनोए स्थानांतरित किया गया, और 412 में उन्हें हेलेनोपोलिस में अपने पद पर बहाल कर दिया गया। कैपाडोसिया के प्रिफेक्ट, लाव्स के अनुरोध पर, 420 में उन्होंने संतों के जीवन और उनके बारे में विवरणों का एक संग्रह संकलित किया, जिसे उन्होंने उनके सम्मान में 'लावसाइक' नाम दिया। इस संग्रह की शिक्षाप्रद और सूचनात्मक प्रकृति को देखते हुए, चर्च कैलेंडर पवित्र चालीस दिनों के दौरान मैटिन्स के दौरान इससे पाठ निर्धारित करता है।

'आप चाहती हैं कि आपका बेटा कितना खाए?'

'दस लीटर[1206] ब्रेड,' महिला ने उत्तर दिया।

लेकिन पादरी ने उन्हें डाँटते हुए कहा:

'तुम इतना सारा क्यों चाहती हो, औरत?'

सात दिनों के उपवास और ईश्वर से प्रार्थना करने के बाद, पादरी ने उस युवक से राक्षस को बाहर निकाल दिया – और, पादरी की प्रार्थनाओं के माध्यम से, वह युवक दिन में तीन लीटर रोटी खाकर संतुष्ट होने लगा। युवा को यह शिक्षा देकर कि वह अपना जीवन आलस्य से नहीं बल्कि अपने हाथों की मेहनत से जिए, पादरी जी ने ईश्वर की कृपा से, उसे पूरी तरह से ठीक कर दिया, उसे उसकी माँ के हवाले कर दिया और उन दोनों को शांति से विदा कर दिया।

आदरणीय मकरियस के बारे में प्रस्तावना में यह भी वर्णन है। एक बार, जब आदरणीय मकरियस यात्रा कर रहे थे, तो रात हो गई और वे रात बिताने के लिए एक मूर्तिपूजक कब्रिस्तान में चले गए। वहाँ एक मृत मूर्तिपूजक की पुरानी हड्डी पाकर, आदरणीय मकरियस ने उसे अपने सिर के पास रख लिया। दैत्यों ने मैकारियस की ऐसी हिम्मत देखकर, उसके खिलाफ हो गए और उसे डराने के लिए चिल्लाने लगे, हड्डी को एक महिला के नाम से पुकारते हुए:

'जाकर स्नानागार में नहा आ।'

उस मृत हड्डी में रहने वाले एक राक्षस, जिसे माननीय मकारियस ने अपने सिर के नीचे रखा था, ने इस पुकार का जवाब दिया।

उसने कहा, 'मेरे ऊपर एक तीर्थयात्री है, और इसलिए मैं नहीं आ सकता।'

माननीय पादरी इन शैतानी करतबों से विचलित नहीं हुए, बल्कि उन्होंने हिम्मत से उस हड्डी पर प्रहार करना शुरू कर दिया जो उन्होंने उठा रखी थी, और कहा:

'उठो और चलो, अगर तुम कर सकते हो।'

जैसे ही उसने ये शब्द बोले, राक्षसों ने ऊँचे स्वर में चिल्लाकर उस पर हंगामा कर दिया:

'मैकैरियस, तुम हर चीज़ में हमें हरा देते हो,' और वे लज्जित होकर उस आदरणीय से पीछे हट गए।

एक अन्य अवसर पर, रेवरेंड मकारियस रेगिस्तान में चल रहे थे और उन्हें जमीन पर एक सूखी मानव खोपड़ी पड़ी मिली। अपनी लाठी से उसे पलटते हुए, रेवरेंड ने उससे एक मद्धिम आवाज़ सुनाई दी। फिर मकारियस ने खोपड़ी से पूछा:

'तुम कौन हो?'

'मैं,' उसने जवाब दिया, 'इस जगह रहने वाले मूर्तिपूजक पुरोहितों का मुखिया था। जब आप, बाबा मकरियस, जो ईश्वर की आत्मा से परिपूर्ण हैं, नरक में पीड़ित लोगों पर दया करते हैं और हमारे लिए प्रार्थना करते हैं, तब हमें कुछ राहत मिलती है।'

मकरियुस ने पूछा, 'तुम्हें किस प्रकार की राहत मिलती है, और तुम्हारे कष्ट क्या हैं? मुझे बताओ।'

'जिस प्रकार आकाश पृथ्वी से दूर है,' खोपड़ी ने कराहते हुए उत्तर दिया, 'उतनी ही बड़ी आग में हम हैं, जो हमें सिर से पैर तक चारों ओर से झुलसा रही है। फिर भी हम एक-दूसरे का चेहरा नहीं देख सकते। लेकिन जब आप हमारे लिए प्रार्थना करते हैं, तो हम एक-दूसरे को थोड़ा देख पाते हैं, और इससे हमें कुछ सांत्वना मिलती है।'

यह उत्तर सुनकर, पादरी रो पड़े और कहा:

'धिक्कार है उस दिन पर जब मनुष्य ने ईश्वर की आज्ञाओं का उल्लंघन किया।'

और एक बार फिर उन्होंने खोपड़ी से पूछा:

'क्या तुम्हारे से भी अधिक कठोर यातनाएँ और हैं?'

'हमसे बहुत नीचे, और भी गहराई में, और भी बहुत से हैं,' खोपड़ी ने उत्तर दिया।

'तो फिर, सबसे अधिक कष्टदायी यातनाओं को झेलने वालों में कौन-कौन हैं?' मैकारियस ने पूछा।

– 'हम, जो ईश्वर को नहीं जानते थे,' खोपड़ी ने उत्तर दिया, 'हालांकि हम अभी भी ईश्वर की थोड़ी दया महसूस करते हैं। लेकिन जो ईश्वर के नाम को जानते थे फिर भी उन्होंने उसे अस्वीकार कर दिया और उसकी आज्ञाओं का पालन नहीं किया, वे हमसे भी नीचे कहीं अधिक भयानक और भयंकर यातनाओं को सहते हैं।'

इसके बाद, आदरणीय मकारियस ने खोपड़ी को उठाया, उसे जमीन में गाड़ दिया, और वहाँ से चले गए।

[1206] लिट्रा एक पाउंड है, जो वजन की एक बीजान्टिन इकाई है और 72 ज़ोलोटनिक के बराबर होती है।

रुफनिस आगे बताते हैं, 'आदरणीय मकारियस महान मरुभूमि में रहते थे, जहाँ उनकी एक कोठरी थी, जबकि उनका मठ एक अन्य मरुभूमि में और नीचे स्थित था; वहाँ कई भाई थे। एक दिन, मकारियस मठ जाने वाले रास्ते पर बैठे थे। अचानक उन्होंने शैतान को मानव रूप में चलते हुए देखा, जो घने-घुटे कपड़े पहने और कद्दू से लदा हुआ था। मैकारियस ने उससे पूछा:

'तुम कहाँ जा रहे हो, हे दुष्टात्मा?'

'मैं भाइयों को बहकाने जा रहा हूँ,' उसने उत्तर दिया।

मकरियस ने पूछा, 'तुम ये कद्दू क्यों लटकाए हुए हो?'

'मैं भाइयों के लिए भोजन ले जा रहा हूँ,' शैतान ने उत्तर दिया।

'क्या सभी कद्दू में भोजन है?' पादरी ने पूछा।

'सभी में,' शैतान ने जवाब दिया, 'अगर किसी को एक पसंद नहीं आता है, तो मैं दूसरा, और तीसरा, और इसी तरह पेश करूँगा, ताकि हर कोई कम से कम एक तो आज़मा ही सके।'

यह कहकर, शैतान चल दिया।

हालाँकि, पादरी सड़क पर ही रुके रहे, वे शैतान के लौटकर आने को देखना चाहते थे। जब उन्होंने उसे लौटते हुए देखा, तो मकरियस ने पूछा:

'क्या तुम्हारी मठ की यात्रा अच्छी रही?'

'यह बुरी तरह से गया,' शैतान ने जवाब दिया, 'और मैं कैसे सफल हो सकता था?'

'ऐसा क्यों?' रेवरेंड फादर ने पूछा।

'क्योंकि सभी संन्यासी मेरे खिलाफ हो गए,' शैतान ने जवाब दिया, 'और कोई मुझे स्वीकार नहीं कर रहा था।'

'निश्चित रूप से तुम्हारे पास कम से कम एक ऐसा भिक्षु तो होगा जो तुम्हारी आज्ञा मानता हो?' मैकारियस ने फिर पूछा।

'मेरे पास केवल एक ही है,' शैतान ने उत्तर दिया, 'जो मेरी आज्ञा मानता है। जब मैं उसके पास आता हूँ, तो वह मेरे चारों ओर भोंके की तरह घूमता है।'

'उसका नाम क्या है?' रेवरेंड फादर ने पूछा।

'थियोपेम्प्टस!' शैतान ने जवाब दिया; और, यह कहकर, वह विदा हो गया।

तब बाबा मकारियस उठे और दूर के रेगिस्तान में मठ के लिए चल पड़े। भाइयों ने जब सुना कि पूजनीय पिताजी उनके पास आ रहे हैं, तो वे खजूर की डालियों के साथ उनका स्वागत करने बाहर निकले, और उनमें से प्रत्येक ने अपनी-अपनी कोठरी तैयार कर ली, यह सोचकर कि पूजनीय पिताजी शायद उनके यहाँ ठहरना चाहेंगे। लेकिन मकारियस ने भिक्षुओं से पूछा:

'तुम में से थिओपेम्प्टस कौन है?'

जब उन्होंने थियोपेम्प्टस की ओर इशारा किया, तो वह उसकी कोठरी में प्रवेश कर गया। थियोपेम्प्टस ने परमपावन का बड़े आनंद के साथ स्वागत किया। थियोपेम्प्टस के साथ अकेले होते ही, परमपावन मकारियस ने उससे पूछा:

– आप कैसे हैं, भाई?

– 'ठीक हूँ,' उसने जवाब दिया, 'आपकी प्रार्थनाओं की बदौलत, फादर!'

'क्या तुम्हें किसी पापी विचार ने प्रलोभित नहीं किया?' पूज्य ने पूछा।

अपने पापी विचारों का खुलासा करने में शर्मिंदा, भिक्षु ने उत्तर दिया:

– नहीं! अब मुझे कुछ भी लुभा नहीं सकता।

तब रेवरेंड मकारियस ने एक आह भरते हुए कहा:

'इतने वर्षों से मैं उपवास और प्रार्थना में लगा हुआ हूँ, जिससे हर कोई मेरा सम्मान करता है; फिर भी, अपनी वृद्धावस्था के बावजूद, मैं अभी भी कामवासना के दानव से बहुत प्रलोभित होता हूँ।'

इस पर थियोपेम्प्टस ने कहा:

'वास्तव में, पिताजी, मैं भी कामवासना की भावना से बहुत अधिक ग्रस्त हूँ।'

इसी तरह, रेवरेंड फादर ने भिक्षु से उसकी आत्मा को परेशान करने वाले अन्य पापों के बारे में पूछा, जब तक कि भिक्षु ने अपने सभी अपराधों का उनसे इकबाल नहीं कर लिया। इसके बाद, रेवरेंड फादर ने भिक्षु से पूछा:

'आप कतिने समय तक उपवास करते हैं?'

'नवें घंटे तक,' उसने उत्तर दयिा।

'शाम तक उपवास करो,' पूजनीय पतिा ने कहा, 'और पवत्रि सुसमाचार और अन्य पवत्रि पुस्तकों का अध्ययन करो, ताकि तुम हमेशा ईश्वर पर मनन कर सको। और अगर कोई पापी वचिार तुम पर हावी हों, तो उनका वरिोध करो और कभी भी अपने मन को नीच वचिारों में डूबने न दो, बल्कि हमेशा अपने मन को ऊपर की ओर नरि्देशति करो, और प्रभु तुम्हारी मदद करेंगे।'

इस प्रकार थयिोपेम्प्टस को प्रोत्साहति करने के बाद, रेवरेंड अपने रेगस्तिान में लौट आए। वहाँ, सड़क के कनिारे बैठे, उन्होंने एक बार फरि शैतान को मठ की ओर आते हुए देखा। रेवरेंड ने उससे पूछा:

'मैं भाइयों को प्रलोभति करने जा रहा हूँ,' शैतान ने उत्तर दयिा।

'मैं भाइयों को बहकाने जा रहा हूँ,' शैतान ने उत्तर दयिा।

और यह कहकर वह अपने रास्ते चला गया। जब वह लौट रहा था, तो रेवरेंड ने उससे पूछा:

'तुम्हें भाइयों का हाल कैसा मलिा?'

'अब वे सब मेरे खलिाफ हो गए हैं,' शैतान ने जवाब दयिा, 'यहाँ तक कि वह भी जो मेरा दोस्त हुआ करता था और हमेशा मेरी आज्ञा मानता था; उसे भी अब, मुझे नहीं पता कि किसिने, बहका दयिा है और वह अब मेरी बलि्कुल भी आज्ञा नहीं मानता। इसके वपिरीत, वह अब सभी अन्य भकि्षुओं से भी ज्यादा मेरा वरिोध करता है।' और मैंने अब संकल्प लयिा है कि मैं उस मठ में कभी वापस नहीं जाऊँगा, सविाय इसके कि बहुत लंबे समय के बाद जाऊँ।

यह कहकर, शैतान वदिा हो गया। और आदरणीय मकारयिस अपनी कुटयिा में लौट आए।

एक दनि, दो यात्री आदरणीय मकरयिस से मलिने के लिए तपोवन आए – एक के दाढ़ी थी, दूसरे, जो छोटा था, उसके केवल मूँछें थीं। आगंतुकों ने आदरणीय से पूछा:

'अब्बा मकारयिस की कोठरी कहाँ है?'

'आप उससे क्या चाहते हैं?' रेवरेन्ड ने पूछा।

उन्होंने उत्तर दयिा:

'हमने स्केटा के संतों से उनके और उनके जीवन के बारे में बहुत कुछ सुना है, और हम उन्हें देखने आए हैं।'

तब पूज्य पतिा ने उनसे कहा:

'वही मैं हूँ।'

वे उसके सामने ज़मीन पर झुक गए और कहा:

'हम यहाँ बसना चाहेंगे।'

रेवरेंड ने, यह देखकर कि वे अभी भी युवा और संपन्न हैं, उत्तर दयिा:

'तुम यहाँ नहीं रह पाओगे।'

यह सुनकर, छोटे वाले ने आपत्ति जताई:

'यदि आप हमें यहाँ रहने की अनुमति नहीं देंगे, तो हम कहीं और चले जाएँगे।'

तब पादरी मकारयिस ने सोचा: 'मैं उन्हें भगा ही क्यों दूँ, जब कि वे प्रलोभन में पड़ जाएँगे? इससे तो बेहतर है कि मैं उन्हें स्वीकार कर लूँ, और वे रेगस्तिान के कठनि श्रमों से थककर अपने आप यहाँ से भाग जाएँगे।' उनकी ओर मुड़कर, उन्होंने कहा:

– यहाँ बस जाओ और, अगर तुम कर सको, तो अपना एक कोठरी बना लो।

और उन्होंने उन्हें एक कुल्हाड़ी, रोटी और नमक की एक टोकरी दी, और उन्हें रेगस्तिान में और गहराई में ले जाकर, एक चट्टानी जगह दखिाई और कहा:

'यहाँ मैदान के पेड़ों का उपयोग करके अपना एक कुटयिा बना लो, और यहीं रहो।'

साथ ही, आदरणीय ने सोचा कि वे तपस्वी जीवन की कठनिाइयों को सहन नहीं कर पाएंगे और वहां से भाग जाएंगे। युवाओं ने मकरयिस से पूछा:

'संन्यासी कसि प्रकार के शलि्प का अभ्यास करते हैं?'

'वे टोकरयिाँ बुनते हैं,' पुरोहति ने उत्तर दयिा।

और, खजूर की कुछ टहनयिाँ लेकर, उन्होंने एक रस्सी बुनना शुरू कर दयिा, और कहा:

'टोकरी इसी से बुनी जाती है। तुम भी ऐसा ही करो, और तैयार हो जाने पर उन्हें चर्च के व्यवस्थापकों को दे दो। वे बदले में तुम्हारे लिए रोटी और नमक लाएँगे।'

और आदरणीय मकारियस ने उन्हें अकेला छोड़ दिया।

उन युवकों ने धैर्यपूर्वक वह सब कुछ करना शुरू कर दिया जो रेवरेंड मकारियोस ने उन्हें आदेश दिया था, और वे तीन साल तक उनके पास नहीं आए। उन्हें याद करते हुए, रेवरेंड ने सोचा: 'ये दो युवक क्या कर रहे हैं, और वे अपने विचार साझा करने के लिए मेरे पास क्यों नहीं आते? कई लोग दूर-दूर से आते हैं, फिर भी ये पास में रहते हुए भी मेरे पास नहीं आते।' ऐसा इसलिए था क्योंकि वे युवक चर्च के अलावा कहीं नहीं जाते थे (जहाँ वे मौन में खड़े रहते थे) ताकि वे मसीह के परम पवित्र रहस्यों को ग्रहण कर सकें। पूरे एक सप्ताह तक, आदरणीय मकरियस ने कुछ भी खाए बिना ईश्वर से प्रार्थना की; उन्होंने प्रार्थना की कि प्रभु उन्हें उन दो भाइयों के कर्मों का पता बता दें। एक सप्ताह बीत जाने के बाद, रेवरेंड मकारियोस यह देखने की इच्छा से कि वे कैसे रहते थे, उनसे मिलने के लिए निकल पड़े। जब वह पहुँचे और उनकी कोठरी के दरवाज़े पर दस्तक दी, तो उन्होंने उसके लिए दरवाज़ा खोल दिया और रेवरेंड को देखकर ज़मीन पर सिर झुकाया। रेवरेंड ने एक प्रार्थना पढ़कर बैठ गए। बड़े भाई ने छोटे भाई को इशारा किया, जो तब कोठरी से बाहर चला गया, जबकि बड़े भाई बैठ गए और बिना एक शब्द बोले एक टोकरी बुनने लगे। दिन के नौवें घंटे पर, छोटे भाई ने दरवाजा खटखटाया और अंदर आया; थोड़ा उबला हुआ भोजन तैयार करके, उसने भोजन परोसा, मेज पर रोटी के तीन टुकड़े रखे, और फिर चुप हो गया।

'आओ,' रेवरेंड फादर ने कहा, 'और हम कुछ रोटी खाएं।'

और उन्होंने प्रभु का धन्यवाद करते हुए भोजन किया। फिर छोटे भिक्षु ने पानी लाया, और उन्होंने मन भर पीया। जब शाम हुई, तो भिक्षुओं ने पूजनीय से पूछा:

'फादर! क्या आप इस जगह को छोड़ देंगे?'

लेकिन उन्होंने उनसे कहा:

'नहीं! मैं यहीं रात बिताऊँगा।'

इसलिए उन्होंने सेल के एक कोने में पूजनीय पिताजी के लिए एक चटाई बिछा दी, जबकि वे स्वयं दूसरे कोने में चटाइयों पर लेट गए। रात हो गई। पूजनीय पिता मैकारियस उठे और ईश्वर से प्रार्थना करने लगे कि वह उन युवकों के सद्गुण उन्हें प्रकट कर दें। आधी रात को, सेल की छत अचानक खुल गई, और एक तेज रोशनी फैल गई। लेकिन दोनों भाइयों ने वह रोशनी नहीं देखी; यह सोचकर कि रेवरेंड फादर सो रहे हैं, बड़े भाई ने छोटे भाई को कोहनी मारी, और उठकर, दोनों ने कमर कसी और, अपने हाथ स्वर्ग की ओर उठाकर, चुपचाप प्रार्थना की। रेवरेंड फादर ने शैतानों की एक भीड़ देखी जो मक्खियों की तरह छोटे भाई को घेरे हुए थीं; कुछ शैतानों ने उसके होठों पर बैठने की कोशिश की, तो कुछ उसकी आँखों पर। लेकिन प्रभु का स्वर्गदूत प्रकट हुआ, जिसके हाथों में एक जलती हुई तलवार थी, जिससे उसने उसकी रक्षा की और शैतानों को उससे दूर भगा दिया। जहाँ तक बड़े भाई का सवाल है, शैतानों ने उसकी ओर आने की हिम्मत भी नहीं की। सुबह तक, दोनों भाई फिर से लेट गए थे और सो गए थे। अगले सुबह, रेवरेंड मकारियस ने ऐसा दिखावा किया कि वह अभी-अभी जागा है। और वे सभी उठ गए। बड़े भाई ने रेवरेंड से पूछा:

'पिताजी! क्या आप चाहेंगे कि हम बारह भजन पढ़ना शुरू करें?'

'मैं चाहूँगा,' रेवरेंड फादर ने उत्तर दिया।

पहले, छोटे भाई ने गाना शुरू किया, और हर छंद के बाद, उसके होठों से एक तरह का अग्निमय दीपक निकलता हुआ प्रतीत हुआ और स्वर्ग तक उठ गया। फिर बड़े भाई ने गाना शुरू किया; उसके होठों से आग एक लंबी रस्सी की तरह निकली और स्वर्ग तक पहुँच गई। सुबह की प्रार्थना सभा समाप्त होने के बाद, रेवरेंड अपने कक्ष में जाना चाहते थे। जैसे ही वे जा रहे थे, उन्होंने भाइयों से कहा:

'मेरे लिए प्रार्थना करना, भाइयो।'

उनके शब्दों के जवाब में, वे चुपचाप ज़मीन पर झुक गए; और रेवरेंड फादर उनसे चले गए। इस प्रकार रेवरेंड फादर मकरियस को यह एहसास हुआ कि बड़े भाई ने पहले ही सद्गुणों में पूर्ण परिपूर्णता प्राप्त कर ली थी, जबकि छोटे भाई से दुश्मन, शैतान, अभी भी लड़ रहा था। आदरणीय मकरियस के भाइयों से मिलने के कुछ समय बाद, बड़े भाई प्रभु के पास चले गए, और उनकी मृत्यु के तीन दिन बाद, छोटे भाई भी चल बसे। बाद में, जब भी कोई सम्मानित पिता आदरणीय मकरियस से मिलने आते, तो वह उन्हें उन दो भाइयों की कुटिया पर ले जाते और कहते:

'आओ, हम उस स्थान को देखें जहाँ मसीह के इन महान सेवकों ने परिश्रम किया।'

एक बार, जब पूजनीय मकरयिस प्रार्थना कर रहे थे, तो एक आवाज़ ने उनसे कहा:

'मकारयिस! तुमने अभी तक एक पुण्य जीवन में उतनी पूर्णता प्राप्त नहीं की है, जतिनी कपिास के शहर में एक साथ रहने वाली दो महलिाओं ने प्राप्त की है।'

यह रहस्योद्घाटन प्राप्त करने के बाद, रेवरेंड ने अपनी छड़ी उठाई और उस नगर के लिए रवाना हो गए। जसि घर में वे महलिाएँ रहती थीं, उसे ढूंढकर मकरयिस ने दरवाज़ा खटखटाया। तुरंत, उन महलिाओं में से एक दरवाज़े पर आई और रेवरेंड को देखकर बड़ी खुशी से उन्हें अपने घर में स्वागत कयिा। दोनों महलिाओं को अपने पास बुलाकर, रेवरेंड ने उनसे कहा:

'मैंने आपके ही लिए इतना बड़ा प्रयास कयिा है, दूर के रेगस्तिान से यहाँ आया हूँ, क्योंकमिैं आपके पुण्य कार्यों के बारे में जानना चाहता हूँ, जन्हिें मैं आपसे बनिा कुछ छपिाए मुझे सुनाने का अनुरोध करता हूँ।'

"हम पर वश्विास करें, आदरणीय पतिाजी," महलिाओं ने उत्तर दयिा, "हमने कल ही रात अपने पतयिों के साथ ही बस्तिर साझा कयिा था: आप हममें कौन सी सद्गुणों की आशा करते हैं?"

लेकनि पूज्य ने ज़िद की कि वे उसे अपने जीवन-यापन के तरीके के बारे में बताएं। फरि, उसकी बातों से राज़ी होकर, महलिाओं ने कहा:

'पहले हम एक-दूसरे से संबंधति नहीं थीं, लेकनि बाद में हमने दो भाइयों से ववािह कर लयिा, और अब पंद्रह साल से हम सब एक ही छत के नीचे एक साथ रह रही हैं; अपने साथ बतिाए पूरे जीवन में हमने कभी भी एक भी कटु या अभद्र शब्द का आदान-प्रदान नहीं कयिा, और न ही हमने कभी आपस में झगड़ा कयिा है। लेकनि आज तक हम एक-दूसरे के साथ शांतिऔर सद्भाव से रही हैं, और हाल ही में हमने सर्वसम्मतिसे यह संकल्प लयिा है किहम अपने सांसारकि पतयिों को छोड़ दें और उन पवत्रि कुंवारी कन्याओं के समूह में शामलि हो जाएं जो ईश्वर की सेवा करती हैं। फरि भी हम अपने पतयिों को हमें जाने देने के लिए मना नहीं पा रही हैं, भले ही हमने उनसे बहुत आग्रह और आंसुओं के साथ वनिती की है। वांछति अनुमतिप्राप्त करने में वफिल रहने पर, हमने ईश्वर के साथ और आपस में एक संधकिी – किहम अपनी मृत्यु के दनि तक एक भी सांसारकि शब्द न बोलें।

उनकी बात सुनकर, पूजनीय मकरयिस ने कहा:

'सचमुच, ईश्वर न तो कुंवारी को चाहता है और न ही ववािहति स्त्री को, न तो संन्यासी को और न ही गृहस्थ को, बल्किएक स्वतंत्र इच्छा को चाहता है, जसिे वह इस मामले के सार के रूप में स्वीकार करता है; और प्रत्येक व्यक्तकिी स्वैच्छकि इच्छा को वह पवत्रि आत्मा की कृपा प्रदान करता है, जो व्यक्तकि के भीतर कार्य करता है और मोक्ष की इच्छा रखने वाले प्रत्येक व्यक्तकि के जीवन का मार्गदर्शन करता है।'

मस्रि के इन आदरणीय मकरयिुस के जीवनकाल के दौरान, एक अन्य आदरणीय मकरयिुस—अलेक्जेंड्रयिा के मकरयिुस—अपनी पुण्यमय जीवन शैली से ठीक उन्हीं रेगस्तिानी क्षेत्रों में चमक उठे जहाँ मस्रि के मकरयिुस रहे थे। वह '[1207] की कोठरयिाँ' नामक एक मठ में एक पुरोहति थे। यह क्षेत्र नट्रियिा और स्केटा के बीच रेगस्तिान में स्थति था। ये धन्य अलेक्जेंड्रयिा के मकरयिुस अक्सर मस्रि के पूजनीय मकरयिुस से मलिने आते थे, और कई मौकों पर वे रेगस्तिान में एक साथ चलते थे, क्योंकवि एक-दूसरे से बहुत प्रेम करते थे। जब अधर्मी एरयिन सम्राट वैलेंस[1208] सहिासन पर बैठा, तो उसने ऑर्थोडॉक्स लोगों के खलिाफ एक बहुत ही क्रूर उत्पीड़न शुरू कयिा। शाही फरमान द्वारा, एक एरयिन बशिप लूसयिस[1209] एक बड़ी सेना के साथ अलेक्जेंड्रयिा पहुँचा, और उसने ऑर्थोडॉक्स बशिप, धन्य पीटर, जो सेंट एथानसयिस महान के उत्तराधकिारी थे, को उनके बशिप पद से हटा दयिा। इसके अलावा, बशिप लूसयिस ने सभी पवत्रि मरुभूमकि संतों को पकड़ने और नर्विासति करने के लिए सैनकिों को रेगस्तिान में भेजा। सबसे पहले पकड़े जाने वालों में दो आदरणीय

[1207] यह, बेशक, सेल की मरुभूमकि संदर्भति करता है, जो माउंट नाइट्रयिा से लगभग 7 वर्स्ट दक्षणि-पूर्व में स्थति थी। यह एक वशिाल मरुभूमि थी, जो संन्यासयिों की कुटयिाओं से भरी हुई थी, जो इतनी दूरी पर स्थति थीं कि वे एक-दूसरे को न तो देख सकते थे और न ही सुन सकते थे। माउंट नाइट्रयिन के जो लोग एकांत चाहते थे, वे आमतौर पर एक बार मठवासी जीवन में स्थापति हो जाने के बाद सेल की मरुभूमिमें चले जाते थे। यहाँ वे एक अधकि शांत जीवन जीते थे, और उनकी कोठरयिाँ इतनी दूर-दूर थीं कअिन्य भाइयों की नकिटता से न तो उनकी दृष्टिऔर न ही उनका श्रवण वचिलति होता था। संन्यासयिों के बीच यह नयिम था कि वे अकेले कसिी दूसरे की कोठरी में न जाएँ, ताकमिौन में खलल न पड़े। वे केवल शनविार और रवविार को सामूहकि पूजा के लिए चर्च में इकट्ठा होते थे। 'कोठरयिों का मरुभूमि का शासन 'प्रेस्बाइटर्स' (पादरी) के पास था, जनिमें अलेक्जेंड्रयिा के परम पूजनीय मैकारयिस वशिेष रूप से प्रसदि्ध थे।

[1208] सम्राट वैलेंस ने 364 से 378 तक शासन कयिा।

[1209] लूसयिस, जो एक एरयिन था, ने संत अथेनासयिस महान के बाद अलेक्जेंड्रयिा के पैट्रआर्क के रूप में पदभार संभाला।

मकारास थे। सैनकिों ने उन्हें रात में पकड़ लयिा और एक जहाज पर चढ़ाकर एक दूरस्थ द्वीप पर ले गए, जहाँ के नविासी सच्चे ईश्वर को नहीं जानते थे, बल्कि मूर्तयिों की पूजा करते थे। उस द्वीप के मूर्तपिूजक पुरोहतिों में से एक की एक बेटी थी, जसि पर एक राक्षस का साया था। द्वीप पर सम्मानति पतिाओं और अन्य पतिाओं के आगमन का आभास होते ही, यह युवती जोर से चल्लिाते हुए उनसे मलिने के लिए दौड़कर बाहर आई:

'तुम यहाँ क्यों आए हो? आखरिकार, यह द्वीप लंबे समय से हमारा घर रहा है।'

पवत्रि संतों ने प्रार्थना करके उस लड़की से राक्षस को भगा दयिा, और वह पूरी तरह से ठीक हो गई। यह देखकर, उसके पति, जो एक मूर्तपिूजक पुजारी था, तुरंत मसीह में वश्विास करने लगा और पवत्रि बपतस्मिा ग्रहण कयिा। इसी प्रकार, उस द्वीप के सभी नविासी मसीह की ओर मुड़ गए और अपने मूर्तपिूजक मंदरि को एक ईसाई चर्च में बदल दयिा। यह जानकर कि क्या हुआ था, दुष्ट बशिप ल्यूक को इस बात पर बहुत शर्म आई कि उसने इतने महान संतों को उनके मठों से भगा दयिा था। इसलिए, उसने गुप्त रूप से यह संदेश भेजा कि धन्य मकरयिस और उनके साथ रहे सभी पवत्रि संतों को उनके पूर्व नविास स्थानों पर वापस भेज दयिा जाए। इस प्रकार, मस्रि के आदरणीय मकरयिस एक बार फरि से स्केटे रेगस्तिान लौट आए, और अलेक्जेंड्रयिा के आदरणीय मकरयिस उपर्युक्त केली स्थान पर लौट आए; इसी प्रकार, अन्य सम्मानति पतिा अपने मठों में लौट आए।

इस बीच, मस्रि के आदरणीय मकरयिुस के पास चारों ओर से लोगों की भीड़ आने लगी: कुछ आध्यात्मकि लाभ के लिए, उनकी शकि्षा प्राप्त करने के लिए; अन्य अपनी बीमारयिों से उपचार के लिए, और ऐसे बीमार लोगों की एक बड़ी भीड़ उनके पास उमड़ पड़ी। परणिामस्वरूप, एक अतथिि गृह बनाने की आवश्यकता हुई जहाँ यात्रयिों और बीमारों को आश्रय मलि सके। यह वही था जसिकी व्यवस्था पूजनीय मकरयिस ने की। वह हर दनि एक बीमार व्यक्ति को ठीक करने की आदत रखते थे, उस पर पवत्रि तेल लगाते और उसे पूरी तरह से स्वस्थ होकर घर भेज देते थे। रेवरेंड ने यह इस बुद्धमिानी भरे इरादे से कयिा कि अन्य बीमार लोग, जन्हिें तुरंत ठीक नहीं कयिा गया, कुछ समय के लिए उनके साथ रह सकें और इस प्रकार उनकी दव्यि प्रेरति शकि्षाओं को सुनते हुए न केवल शरीर बल्कि आत्मा का भी उपचार प्राप्त कर सकें। आदरणीय पतिाजी ने अतथिि गृह में सेवा करने के लिए एक भकि्षु को नयिुक्त कयिा। यह भकि्षु, जो एक दानव से परेशान था, लालच के जुनून के आगे झुक गया; इसे संतुष्ट करने के लिए, उसने गरीबों के लिए रखे गए कोष से चुपके से छोटी-छोटी रकम रोकनी शुरू कर दी। आदरणीय मकरयिस को इस बात की जानकारी मलि और उन्होंने भकि्षु को अपने पास बुलाकर उसे फटकारते हुए कहा:

'भाई जॉन! मेरी बात सुनो और मेरी सलाह मानो, जो तुम्हारे लिए लाभदायक हो सकती है। देखो, लालच की आत्मा तुम्हें बहका रही है – क्योंकि यह बात मुझे प्रकट हुई है – और मैं जानता हूँ कि यदि तुम मेरी सलाह मानकर पाप करना छोड़ दोगे, तो तुम अपना जीवन परमेश्वर के भय में समाप्त करोगे, और तुम अच्छे कर्मों में फलोगे-फूलोगे, और इस स्थान पर तुम्हारा गौरव होगा, *'और कोई महामारी तुम्हारे घर के पास भी नहीं आएगी'* (भजन संहति 90:10)। परन्तु यदि तुम मेरी न सुनोगे और पाप करना न छोड़ोगे, तो हीज़यिस का वही भाग्य तुम पर भी पड़ेगा, जसिके जुनून से तुम पीड़ति हो (2 राजा 6:15–16, 20–27)।

परन्तु यूहन्ना ने आदरणीय की बात नहीं मानी और अपने दुष्ट कर्मों से नहीं रुका। रेवरेंड मकारius के धन्य नधिन के पंद्रह या बीस साल बाद, इस दौरान उपर्युक्त भकि्षु यहूदा की लालच के बोझ तले काम करता रहा, और गरीबों के लिए नर्धिारति दान का एक हस्सिा गबन करता रहा, उसका पूरा शरीर अचानक कोढ़ से ग्रस्त हो गया, और वह न केवल उस धन को बर्बाद कर गया जो उसने पाप करके इकट्ठा कयिा था, बल्कि अपनी आत्मा को भी नष्ट कर गया।

एक दनि, आदरणीय मकारयिस अपने एक शष्यि के साथ स्केटे से माउंट नाइट्रयिा के लिए रवाना हुए। जैसे ही वे पहाड़ के पास पहुँचे, आदरणीय ने अपने शष्यि से कहा:

'मेरे से थोड़ा आगे चलो।'

शष्यि महात्मा पति के आगे बढ़ गया और उसे एक पैगन पुजारी मलि जो एक बड़ा लट्ठा उठाए उसकी ओर तेज़ी से आ रहा था। उसे देखते ही, भकि्षु ने पुकारा:

'क्या तुम मुझे सुन सकते हो, क्या तुम मुझे सुन सकते हो, हे दानव! तुम कहाँ जा रहे हो?'

पुजारी रुक गया और भकि्षु को इतनी बुरी तरह पीटा कि वह मुश्कलि से बच पाया। फरि, एक तरफ फेंके गए लट्ठे को उठाकर पुजारी भाग गया। थोड़ी देर बाद, वह आदरणीय मकारयिस से मलि, जन्होंने उससे कहा:

'भाग जा अपनी जान के लिए, मेहनती आदमी, भाग जा अपनी जान के लिए।'

महात्मा के शब्दों से चकति होकर, पुजारी रुक गया और उनसे पूछा:

'तुमने मुझमें ऐसा क्या अच्छा देखा है कि तुम मुझे ऐसे शब्द कह रहे हो?'

'मैं देखता हूँ कि तुम कड़ी मेहनत कर रहे हो,' पादरी ने उत्तर दिया।

तब पुजारी ने कहा:

– फादर, आपके शब्दों से मैं गहराई से प्रभावित हुआ हूँ, क्योंकि इससे मैं देख सकता हूँ कि आप ईश्वर के पुरुष हैं। अभी-अभी, एक और भिक्षु यहाँ मुझसे मिला और उसने मेरा अपमान किया, और मैंने उसे पीट-पीट कर मार डाला।

और यह कहकर, पादरी रेवरेंड के पैरों में गिर पड़ा, उन्हें गले लगाते हुए और कहने लगा:

'पिताजी, जब तक आप मुझे ईसाई नहीं बना देते और भिक्षु नहीं बना देते, तब तक मैं आपको नहीं छोड़ूँगा।'

और वह संत मकरियस के साथ चल पड़ा। थोड़ी दूरी तय करने के बाद, वे उस जगह पहुँचे जहाँ पुजारी द्वारा पीटा गया भिक्षु पड़ा था, और उन्होंने उसे मुश्किल से जीवित पाया। उसे उठाकर, वे उसे माउंट नाइट्रिया पर स्थित चर्च में ले गए। वहाँ रहने वाले संतों ने पूजनीय मकारियस की संगत में उस विधर्मी पुरोहित को देखकर बहुत आश्चर्यचकित हुए। फिर, उसे बपतिस्मा देने के बाद, उन्होंने उसे एक भिक्षु बना दिया, और उसके कारण कई विधर्मी ईसाई धर्म में परिवर्तित हो गए। इस अवसर पर, बाबा मकारियस ने निम्नलिखित शिक्षा दी:

उन्होंने कहा, 'एक बुरा शब्द तो अच्छे को भी दुष्ट बना देता है, जबकि एक अच्छा शब्द दुष्ट को भी अच्छा बना देता है।'

एक अवसर पर, आदरणीय मकारियस अबा पाम्वा के मठ में आए। वहाँ, बुजुर्गों ने आदरणीय से पूछा:

'पिताजी, भाइयों के निर्माण के लिए एक वचन कहिए।'

उनकी प्रार्थना स्वीकार करते हुए, मकारियस ने इस प्रकार कहना शुरू किया:

'मुझे क्षमा करें, क्योंकि मैं एक गरीब भिक्षु हूँ; लेकिन मैंने भिक्षुओं को देखा है। एक बार, जब मैं स्केटा में अपनी कोठरी में बैठा था, तो मेरे मन में यह विचार आया कि मैं भीतरी रेगिस्तान में जाकर देखूँ कि वहाँ क्या है। पाँच साल तक मैं इस विचार से जूझता रहा, यह सोचकर कि राक्षस मुझे प्रलोभित कर रहे थे। लेकिन जब पाँच साल बीत जाने के बाद भी वही विचार मुझे सताता रहा, तो मैंने भीतरी रेगिस्तान के लिए निकलने का निश्चय किया। वहाँ पहुँचने पर, मैंने एक विशाल दलदल पाया, जिसके बीच में मैंने एक द्वीप देखा। उसी क्षण, रेगिस्तान के जानवर पानी पीने आए। जानवरों के बीच मैंने दो नग्न पुरुषों को देखा, और मेरा पूरा शरीर कांप उठा, क्योंकि मुझे लगा कि मैं निर्जीव आत्माओं को देख रहा हूँ। यह देखकर कि मैं बहुत डरा हुआ था, उन पुरुषों ने मुझसे कहा:

'डरो मत, क्योंकि हम भी तुम्हारी ही तरह इंसान हैं।'

तब मैंने उनसे पूछा:

'तुम इस रेगिस्तान में कहाँ से आए हो?'

'हम मठ से हैं,' उन्होंने जवाब दिया, 'एक-दूसरे से सलाह-मशविरा करने के बाद, हमने यहाँ आने का फैसला किया। और अब मठ छोड़े हुए हमें तीस साल हो गए हैं। हम में से एक मिस्र का है, और दूसरा लीबिया का।'

फिर उन्होंने मुझसे पूछा:

'अब दुनिया की क्या हालत है? क्या नदियाँ अभी भी अपनी सहायक नदियों से पोषित होती हैं? क्या पृथ्वी अभी भी अपने सामान्य फलों से भरपूर है?'

मैंने उत्तर दिया, 'हाँ।' फिर मैंने उनसे फिर पूछा:

'मैं भिक्षु कैसे बन सकता हूँ?'

उन्होंने मुझसे उत्तर दिया:

'जब तक कोई व्यक्ति संसार की सभी चीज़ों का त्याग नहीं कर देता, वह भिक्षु नहीं बन सकता।'

इस पर मैंने कहा:

'मैं कमजोर हूँ, और इसलिए मैं आप जैसा नहीं बन सकता।'

– 'अगर तुम हम जैसे नहीं बन सकते,' उन्होंने कहा, 'तो अपनी कोठरी में रहो और अपने पापों का प्रायश्चित करो।'

और फिर मैंने उनसे पूछा:

– जब सर्दी आती है, तो क्या तुम तीव्र ठंड से नहीं पीड़ित होते? इसी तरह, जब बहुत गर्मियाँ आती हैं, तो क्या तुम्हारे शरीर गर्मी से नहीं झुलस जाते?

इस पर उन्होंने उत्तर दिया:

'प्रभु परमेश्वर ने हमें ऐसे शरीर दिए हैं कि हम न तो सर्दियों में ठंड से और न ही गर्मियों में गर्मी से पीड़ित होते हैं।'

"इसीलिए मैंने आप लोगों से कहा था, भाइयों," पूजनीय मकरियस ने निष्कर्ष निकाला, "कि मैं अभी तक भिक्षु नहीं बना हूँ, परन्तु मैंने भिक्षुओं को देखा है।"

एक बार, स्केटे के फादरों ने परम पूज्य मकारियस से पूछा कि वह हर समय अपने शरीर को इतना दुबला-पतला कैसे बनाए रखते हैं। क्योंकि न केवल जब वह उपवास करते हैं, बल्कि जब वह खाते भी हैं, तो उनका शरीर हमेशा दुबला ही रहता है।

आदरणीय मकरियस ने उनसे पूछने वालों को निम्नलिखित उत्तर दिया:

'जिस प्रकार एक कांटा, जिसका उपयोग चूल्हे में जलती हुई लकड़ी और झाड़ियों को पलटने के लिए किया जाता है, वह हमेशा आग से झुलस जाता है, उसी प्रकार एक मनुष्य जो लगातार अपने मन को प्रभु की ओर निर्देशित करता है और हमेशा गेहेना की आग के भयानक यातनाओं को मन में रखता है—यह भय न केवल शरीर को भस्म कर देता है, बल्कि हड्डियों को भी सुखा देता है।'

तब भाइयों ने फिर से पूज्य पिता से पूछा:

'हमें बताइए, पिताजी, प्रार्थना कैसे करनी चाहिए?'

रेवरेंड ने उन्हें यह निर्देश दिया:

'प्रार्थना के लिए बहुत शब्दों की आवश्यकता नहीं है, बल्कि मनुष्य को अपने हाथ ऊपर उठाकर कहना चाहिए: "हे प्रभु! जैसा आप चाहें और जैसा आप स्वयं जानते हैं, मुझ पर दया करें।' यदि, हालाँकि, शत्रु आत्मा के भीतर पापी कलह को भड़काता है, तो केवल इतना कहना चाहिए: 'हे प्रभु, दया करें।' प्रभु जानते हैं कि हमारे लिए क्या अच्छा है और वे हम पर दया करेंगे।

एक अन्य अवसर पर, अब्बा इसैया ने रेवरेंड से पूछा:

'मुझे बताइए, पिताजी, आत्मा के लाभ के लिए कोई शिक्षा।'

'लोगों से दूर भागो,' प्रतिष्ठित मकारियस ने उत्तर दिया।

'लोगों से भागने का क्या अर्थ है?' अब्बा इसाया ने पूछा।

रेवरेंड ने उत्तर दिया:

'अपनी कोठरी में बैठो और अपने पापों का प्रायश्चित करो।'

अपने शिष्य पाफनुटियस[1210] से रेवरेन्ड ने कहा:

'किसी का अहित मत करो, किसी की निंदा मत करो; ऐसा करने से तुम बच जाओगे।'

इसके अलावा, रेवरेंड फादर ने यह अतिरिक्त निर्देश दिया:

'बुरी प्रतिष्ठा वाले भाई की कोठरी में रात न बिताओ।'

एक अन्य भिक्षु रेवरेंड फादर के पास आया और उनसे पूछा:

'अब्बा, मुझे उद्धार पाने के लिए क्या करना चाहिए?'

'कब्रिस्तान जाओ और मृतकों का अपमान करो,' धर्मगुरु ने उत्तर दिया।

भिक्षु कब्रिस्तान गया और, जैसा कि रेवरेन्ड फादर ने उससे कहा था, वहाँ मृतकों को गाली दी, उनके मक़बरों को पत्थरों से तोड़ दिया, और लौटकर रेवरेन्ड फादर को सब कुछ बता दिया। रेवरेन्ड फादर ने उससे पूछा:

'क्या मृतकों ने तुमसे कुछ कहा?'

'नहीं, उन्होंने कुछ नहीं कहा,' भिक्षु ने उत्तर दिया।

तब पादरी ने कहा:

'वहाँ वापस जाओ, और इस बार उनकी प्रशंसा करो।'

भिक्षु गया और उसने विभिन्न प्रशंसात्मक शब्दों से मृतकों का सम्मान करना शुरू कर दिया:

– 'प्रेरितों, संतों और धर्मात्माओं,' उन्होंने कहा।

[1210] पाफनुटियस, एक पुरोहित; उन्होंने सम्माननीय मकारियस के साथ स्केटा के भिक्षुओं की देखरेख की जिम्मेदारी साझा की।

फरि, एक बार फरि रेवरेंड फादर के पास लौटकर, उसने उन्हें बताया कि उसने मृतकों की प्रशंसा की थी।

'और इस बार मृतकों ने आपसे कुछ नहीं कहा?' रेवरेन्ड ने पूछा।

'नहीं, उन्होंने कुछ नहीं कहा,' उसने जवाब दिया।

तब आदरणीय ने उसे यह निर्देश दिया:

'देखो,' उसने कहा, 'कि जब तुमने मृतकों का अपमान किया तो उन्होंने तुम्हें उत्तर नहीं दिया, और जब तुमने उनकी प्रशंसा करके चापलूसी की तो उन्होंने तुम्हें उत्तर नहीं दिया। इसलिए तुम भी, यदि तुम मोक्ष पाना चाहते हो, तो एक मृत व्यक्ति की तरह बनो: जब तुम्हारा अपमान हो तो क्रोधित न हो, और जब तुम्हारी प्रशंसा हो तो अहंकार न करो। इन मृत लोगों की तरह व्यवहार करके, तुम मोक्ष पाओगे।

भाइयों ने आदरणीय मकरियुस के बारे में यह भी बताया। यदि कोई भाई उनसे एक पवित्र और महान व्यक्ति की तरह मिलने आता, तो आदरणीय व्यक्ति उससे कुछ नहीं कहते। लेकिन यदि कोई भिक्षु, आदरणीय व्यक्ति के प्रति कोई सम्मान दिखाए बिना, उनसे कहता:

'अब्बा! जब आप ऊँट चालक थे और बिना अनुमति के नमक का खनिज उठाकर बेच देते थे, तब क्या आपके वरिष्ठ आपको नहीं पीटते थे?'

और जब भी कोई पादरी से इस तरह बात करता, तो वे खुशी-खुशी उनसे बातचीत करते और उनके सभी प्रश्नों का तत्परता से उत्तर देते।

एक बार, माउंट निट्रिया पर रहने वाले बुजुर्गों ने पूज्य मकरियस के तपस्थल पर निम्नलिखित अनुरोध के साथ एक संदेश भेजा:

'पिताजी! पूरे समुदाय को आपके पास आने के लिए परेशान करने के बजाय, कृपया प्रभु के पास जाने से पहले स्वयं हमारे पास आएँ।'

सम्माननीय पिता ने उनकी विनती मान ली और माउंट नाइट्रिया आ गए। उनके आगमन की खबर मिलते ही, वहाँ रहने वाले सभी भिक्षु उनके चारों ओर इकट्ठा हो गए, और बुजुर्गों ने उनसे भाइयों के निर्माण के लिए कुछ कहने का आग्रह किया। सम्माननीय पिता ने आँखों में आँसू लिए हुए इस प्रकार कहना शुरू किया:

'हे भाइयो! आओ हम रोएँ, और हमारी आँखों से आँसू बहने दें, ताकि हम उस स्थान पर जाने से पहले शुद्ध हो जाएँ, जहाँ आँसू हमारे शरीर को यातना में जला देंगे।'

आदरणीय पिताजी की आज्ञा का पालन करते हुए, वे सभी रो पड़े और, साष्टांग दण्डवत कर, उनसे विनती करने लगे:

'पिताजी! प्रभु से हमारे लिए प्रार्थना करें।'

एक बार, जब रेवरेंड मकरियस मिस्र में रहते थे, तो उन्होंने अपनी कोठरी में एक चोर को अंदर का सामान चुराते हुए पकड़ लिया। कोठरी के बाहर, पास में एक गधा बँधा हुआ था, जिस पर चोर चोरी का माल लाद रहा था। यह देखकर, रेवरेंड फादर ने चोर को यह नहीं बताया कि वह उस सेल का मालिक है, बल्कि एक अजनबी होने का नाटक किया। उन्होंने न केवल चोर को रोका नहीं, बल्कि उसे सामान इकट्ठा करने और उसे गधे पर लादने में मदद भी करने लगे। फिर उन्होंने उसे शांति से जाने दिया, और मन ही मन सोचा:

'हम इस दुनिया में कुछ भी साथ नहीं लाए; इसलिए यह स्पष्ट है कि हम इससे कुछ भी लेकर नहीं जा सकते। प्रभु ने हमें सब कुछ दिया है, और सब कुछ उसी की इच्छा से होता है। हर काम में परमेश्वर का धन्यवाद हो!'

पुरखों ने इस पवित्र मकarius के बारे में यह भी बताया कि वह, मानो, एक सांसारिक देवता बन गए थे; क्योंकि जैसे ईश्वर, संपूर्ण संसार को देखने के बावजूद, पापियों को दंड नहीं देते, वैसे ही पवित्र मकarius ने भी उन मानवीय कमजोरियों को ढक लिया जो उन्होंने देखी थीं। और वह ऐसे थे जो देखते हुए भी नहीं देखते थे, और सुनते हुए भी नहीं सुनते थे।

ऐसा हुआ कि पूज्य मकरियुस के शिष्यों में से एक कुछ हस्तशिल्प: टोकरियाँ और चटाईयाँ बेचने के लिए शहर गया। शहर में, उसकी मुलाकात एक वेश्या से हुई, जिसने उस सुंदर युवक को देखकर प्रलोभन में आकर उसे अपनी ओर इशारा करके बुलाया, मानो वह उसके द्वारा बेची जा रही टोकरी खरीदना चाहती हो। भिक्षु, उसकी धूर्त योजना को न समझते हुए, उसके घर में प्रवेश कर गया। एक टोकरी उठाकर, उस महिला ने भिक्षु से पूछना शुरू किया कि वह उसे कितने में बेचना चाहता है। लेकिन जल्द ही उसने उससे अश्लील बातें कहना शुरू कर दिया, और उसे पाप में फँसाने की कोशिश करने लगी, ठीक वैसे ही जैसे प्राचीन काल में मिस्र की महिला ने पवित्र यूसुफ को बहकाने की कोशिश की थी।

भक्षिु ने महसूस कयिा कि वह बहुत बड़े खतरे में था, क्योंकि वह पहले से ही पाप के करीब था, उसने अपना मन स्वर्ग की ओर कयिा और प्रार्थना करना शुरू कर दयिा:

'हे राजा मसीह! आपने अपने नबी को व्हेल की उदर से जसि प्रकार बचाया, उसी प्रकार अपने संत, मेरे पति मकरयिस की प्रार्थनाओं के द्वारा मुझे भी इस पाप और आध्यात्मकि मृत्यु से बचाएँ।'

तुरंत ही उसे एक अदृश्य हाथ ने उठा लयिा, ठीक वैसे ही जैसे एक बार भवष्यिवक्ता हबक्कूक को एक देवदूत ने उठाया था, और उसे उसकी कोठरी के बीच में रख दयिा। वहाँ उसने पूजनीय मकरयिुस को देखा, जो उसकी ओर से ईश्वर से वनिती कर रहे थे कि वह अपने शष्यि को उस वपित्तसि बचा लें जो उस पर आई थी, क्योंकि पूजनीय संत को पता चल गया था कि भक्षिु के साथ क्या हुआ था। अपने मन की आँख से, उन्होंने दूर की चीज़ों को उतनी ही स्पष्टता से देखा जैसे कि वे हाथ में हों। अपने शष्यि को देखकर, आदरणीय पति ने कहा:

'मेरे बच्चे! आओ हम मानवता के प्रेमी परमेश्वर का धन्यवाद करें, जन्हिोंने आपको साँप के मुँह और नरक के द्वारों से बचाया, अपनी दव्यि शक्तसि पाप में गरिने से छीनकर आपको आपके कोठरी में पहुँचाया, ठीक वैसे ही जैसे उन्होंने एक बार अपने प्रेरति फलिपि को अजोतस में पहुँचाया था (प्रेरतिों के काम 8:39)।

ईश्वर के समक्ष पूजनीय मकरयिस की प्रार्थना की शक्तऐिसी थी। एक अन्य अवसर पर, पूजनीय स्वयं हवा में उठाये गए और उन्हें उस स्थान तक ले जाया गया जहाँ उन्हें जाना था। वे स्केटा से टोकरयिाँ ले जा रहे थे और लंबी यात्रा से थके हुए, वश्राम करने के लिए बैठ गए। ऐसा करते समय, उन्होंने प्रभु से प्रार्थना की:

'हे ईश्वर! आप जानते हैं कि मैं थका हुआ हूँ।'

तुरंत ही, वह आदरणीय स्वयं उस नदी के कनिारे पाया कि जहाँ उसे जाना था।

अब इस पूजनीय पति के धन्य नधिन का वर्णन करना उचति है, जैसा कि उनके जीवनचरत्रि के लेखक, सेरापयिन, इसे नम्निलखिति प्रकार से बताते हैं।

अंतत; आदरणीय मकारयिस को, एक नश्वर मनुष्य के रूप में, मृत्यु के आगे झुकना पड़ा, क्योंकि वे पहले ही सत्तर वर्ष की आयु प्राप्त कर चुके थे। उनके नधिन का समय आदरणीय को अज्ञात नहीं था। अपने नधिन से कुछ समय पहले, दो भव्य पुरुष उन्हें एक दर्शन में दखिाई दिए और कहा:

'मकारयिस, आनंदति हो!'

प्रकट होने वालों में से एक परमपूज्य एंथनी थे, जो मरुभूमवािसयिों के गुरु और नेता थे, और दूसरे परमपूज्य पाचोमयिस थे, जो सामुदायकि मठवासी जीवन के संस्थापक थे। फरि प्रकट होने वालों ने मकारयिस से कहा:

'प्रभु यीशु मसीह ने हमें तुम्हें तुम्हारे आनंदमय नधिन की सूचना देने के लिए भेजा है। आज से नौवें दनि, तुम शाश्वत जीवन में प्रवेश करोगे। उस दनि, हम फरि से तुम्हारे पास आएँगे और आनंदपूर्वक तुम्हें अपने साथ ले जाएँगे, ताकि हमारे साथ मलिकर तुम प्रभु के सहिासन के सामने खड़े हो सको और अमर जीवन का आनंद ले सको।'

तब 'तुम्हें शान्तमिलि' कहकर, वे पवत्रिजन मकरयिुस के लिए अदृश्य हो गए। फरि दव्यि मकरयिुस ने अपने शष्यिों को बुलाया और उनसे कहा:

'मेरे बच्चों! अब मेरे यहाँ से प्रस्थान करने का समय आ गया है, और मैं तुम्हें ईश्वर की कृपा के हवाले करता हूँ। अत; पति-नयिमों और तपस्वयिों की परंपराओं का पालन करो।

इसके अलावा, कुछ लोगों को जन्हिें आदरणीय पति धर्मात्मा जीवन में दूसरों से अधकि परपिूर्ण जानते थे, उन्होंने नव-प्रवेशति मठवासी जीवन के लोगों की देखभाल का कार्य सौंपा, जो अपनी आध्यात्मकि आयु में शशिुओं के समान थे। तब उन्होंने अपने शष्यिों पर अपना हाथ रखकर, उन्हें पर्याप्त रूप से उपदेश देकर और उनके लिए प्रार्थना करके, आदरणीय पति ने अपनी मृत्यु की तैयारी शुरू कर दी। जब आदरणीय पति एंथनी और पाचोमयिस के प्रकट होने के बाद नौवां दनि आ गया, तो एक खेरूबमि आदरणीय पति मकरयिुस के पास स्वर्गदूतों की भीड़ के साथ प्रकट हुआ और उससे कहा:

'हे प्रभु के अनुयायी, उठो और हमारे साथ अनंत जीवन में प्रवेश करो। अपनी आँखें उठाओ और देखो कि सर्वशक्तमिान ने तुम्हें उनके पास ले जाने के लिए कतिने देहहीन रूपों वाले संत भेजे हैं। देखो: यहाँ प्रेरतिों की सभा है, यहाँ भवष्यिद्वक्ताओं का दल है, यहाँ शहीदों की भीड़ है, पवत्रि धर्मगुरुओं की कतारें हैं, तपस्वी, आदरणीय और धर्मी लोग हैं। अब अपनी आत्मा मुझे सौंप दो, जसिकी रक्षा करने का ईश्वर ने मुझे उसके सांसारकि जीवन के दौरान आदेश दयिा था; और अब, देह के बंधनों से मुक्त होकर, मैं इसे सम्मान के साथ ग्रहण करूँगा, मानो यह कोई महान खजाना हो, और,

वरिोधी शक्तियों से होकर गुजरकर, मैं इसे दव्यि शासक के सहिासन के सामने प्रस्तुत करूँगा, ताकि यह उन सभी संतों के साथ सदा के लिए आनंदति हो सके जो संसार की शुरुआत से परमेश्वर के सहिासन के सामने खड़े रहे हैं।

ये वचन कहने के बाद, करूब, धन्य मकरयिुस ने उपस्थति सभी लोगों से वदिा ली और उनके लिए ईश्वर से प्रार्थना की; फरि, अपनी आँखें उठाकर और अपने हाथ ऊपर की ओर फैलाकर, उन्होंने कहा:

'हे प्रभु, मैं अपनी आत्मा तेरे हाथों में सौंपता हूँ!'

और इन शब्दों के साथ उन्होंने अपना धन्य आत्मा प्रभु को सौंप दयिा, जसिसे उनके शष्यि उनके लिए गहरे शोक में डूब गए।

आदरणीय सेरापयिन के जीवन के वंशावलीकार,[1211] , नम्निलखिति जोड़ते हैं, जो उन्होंने आदरणीय मकारयिस के शष्यिों में से एक, आदरणीय पाफनुटयिस से सुना था। जब मकारयिस की पवत्रि आत्मा को करूबों द्वारा स्वर्ग तक ले जाया गया, तो कुछ संतों ने अपने मन की आँखों से देखा कि वायु के राक्षस दूर खड़े थे और चल्लिा उठे:

'हे मकारयिुस, तुम्हें क्या महमिा प्रदान की गई है!'

संत ने राक्षसों को उत्तर दयिा:

'मुझे डर लगता है, क्योंकि मुझे ऐसा कोई भी पुण्य कर्म याद नहीं आता जो मैंने कयिा हो।'

तब वे राक्षस जो मकarius की प्रस्थान करती आत्मा के मार्ग पर और भी ऊँचाई पर थे, चल्लिा उठे:

'मैकारयिस, तुम सचमुच हमारी पकड़ से बच नकिले हो!'

लेकनि उसने कहा:

'नहीं, लेकनि मुझे फरि भी बच नकिलना ही होगा।'

और जब वह आदरणीय व्यक्ति पहले ही स्वर्ग के द्वार पर था, तो राक्षसों ने एक ज़ोरदार चीख के साथ पुकारा:

'वह हमसे बच नकिला है, वह बच नकिला है।'

तब मकरयिस ने राक्षसों से ऊँचे स्वर में उत्तर दयिा:

'हाँ! मेरे मसीह की शक्ति से संरक्षति, मैं तुम्हारी चालाकयिों से बच नकिला हूँ।'

हमारे पूजनीय पति मकारयिुस[1212] का जीवन, मृत्यु और अनंत जीवन में प्रवेश ऐसा था।

आदरणीय संत के जीवन का वृत्तांत समाप्त कर, हम पति और पुत्र और पवत्रि आत्मा, एकमात्र परमेश्वर की महमिा करें, जो अपने संतों में सदा-सदा महमिा पाते हैं। आमीन।

कॉन्टाकयिन, स्वर 4:

प्रभु के भवन में, उन्होंने वास्तव में आपको संयम की एक मशाल के रूप में स्थापति कयिा है, एक ऐसे तारे की तरह जो कभी मुरझाता नहीं, जो पृथ्वी के छोर को प्रकाशति करता है, हे पतिृ-कुल के पति, पूजनीय मकरयिुस।

[1211] सेरापयिन – लोअर इजप्टि के टमुइट के बशिप, चौथी शताब्दी की शुरुआत के प्रमुख चर्च हस्तयिों में से एक। उन्होंने 'मठवासी नयिम' संकलति कए। उनके 'भक्षिुओं को पत्र', 'मस्रि के आदरणीय मकरयिस का जीवन' (कोप्टकि में) और कई अन्य कृतयिाँ भी जानी जाती हैं। सेरापयिन ऑर्थोडॉक्सी के एक उत्साही रक्षक थे, जसिके लिए उन्हें नर्वासति भी कयिा गया था।

[1212] आदरणीय मकारयिस की मृत्यु लगभग 391 ईस्वी में हुई। वह स्थान जहाँ आदरणीय मकारयिस ने अपने तपस्वी कार्य कए, उसे आज भी मकारयिस का मरुभूमि के नाम से जाना जाता है, और वहाँ उनके नाम पर एक मठ है। आदरणीय मकारयिस के अवशेष इटली के अमाल्फी शहर में रखे गए हैं। – पचास कथन, सात नर्देश और दो पत्र रेवरेंड मकरयिस की परपिक्व बुद्धमित्ता की अनमोल वरिासत हैं। रेवरेंड मकरयिस के प्रवचनों और नर्देशों का वषिय आंतरकि आध्यात्मकि जीवन है, और मुख्य रूप से उस रूप में जसिमें इसे चतिनशील एकांत के मार्ग पर अभ्यास कयिा जाता है। गहन और अक्सर अस्पष्ट वषिय-वस्तु के बावजूद, इस अनुभवी शक्षिक के प्रवचन और नर्देश स्पष्ट और सुलभ हैं: आध्यात्मकि क्षेत्र, जो हम में से कई लोगों के लिए बहुत कम जाना-पहचाना है, संत मकरयिस के शब्दों में, हृदय और मन के करीब है। जो बात अपनी आध्यात्मकि ऊँचाई के कारण अन्यथा अस्पष्ट हो सकती है, उसे परम पूजनीय मकरयिस तुलनाओं और कल्पनाओं के माध्यम से सुलभ बनाते हैं, जो हमेशा सरल होती हैं और इसलिए और भी अधकि प्रभावशाली होती हैं।

एक और कोंटाकयिन, स्वर 1:

शहीदों की पंक्ति में एक धन्य जीवन समाप्त करके, हे ईश्वर-धारी मकरयिुस, आप पृथ्वी पर नम्र लोगों के बीच योग्य रूप से नविास करते हैं; और मरुभूमि में एक नगर की भाँति बसकर, आपने ईश्वर से चमत्कारों का अनुग्रह प्राप्त कयिा: अतःहम आपका सम्मान करते हैं।

अलेक्जेंड्रयिा के हमारे पूजनीय पति मकारयिस का जीवन

19 जनवरी को स्मरणोत्सव

महान मकरयिुस ऑफ़ अलेक्ज़ेंड्रयिा अलेक्ज़ेंड्रयिा शहर के मूल नविासी थे[1213] । अपने जीवन के पहले भाग में वे एक सब्जी वक्रिेता थे, और जब उनकी आयु चालीस वर्ष की हो चुकी थी, तब उन्होंने पवत्रि बपतस्मिा ग्रहण कयिा। इसके बाद, संसार का त्याग कर, वे एक भक्षिु बने और मठवासी तपस्या तथा परश्रिम में पर्याप्त परश्रिम करने के पश्चात्, उन्हें पवत्रि अभषिेक प्राप्त करने के योग्य माना गया, जसिके साथ ही उन्होंने 'द सेल्स' नामक मठ का नेतृत्व संभाला, जो नाइट्रयिा और स्केट के बीच मस्रि के रेगस्तिान में स्थति था। वे मस्रि के पूजनीय मकरयिस के सबसे सच्चे मत्रि थे, जनिके साथ - वैलेंस के शासनकाल के दौरान - अलेक्जेंड्रयिा के झूठे बशिप, एरयिन लूसयिस की साजशिों के कारण उन्हें अपनी मातृभूमि से नर्विासति कयिा गया था। एक से अधकि अवसरों पर, वे इन पूजनीय मकरयिस के साथ रहे। दोनों मकरयिस चरत्रि और जीवन शैली में बहुत समान थे, और उनका एक ही शक्षिक और मार्गदर्शक था - एंथनी द ग्रेट - जनिसे, उनके शष्यिों के रूप में, उन्होंने बार-बार अपने सदाचारी जीवन को परपिूर्ण बनाने के नर्दिेश प्राप्त कए। मस्रि के मकरयिस बड़े थे और प्रभु के पास जाने वाले पहले थे। एलेक्ज़ेंड्रयिा के यही पूजनीय मकरयिुस मस्रि के मकरयिुस की मृत्यु के बाद कई और वर्षों तक जीवति रहे। लाउसाइका के बशिप पैलाडयिस एलेक्ज़ेंड्रयिा के पूजनीय मकरयिुस के बारे में नम्निलखिति लखिते हैं:

'मैंने उस व्यक्ति को देखा है जो मस्रि के संत मकारयिस का धर्म का मत्रि और प्रतद्विंद्वी था – जसिका नाम भी वही था। मैं अलेक्जेंड्रयिा के संत मकरयिस की बात कर रहा हूँ, जो केली नामक क्षेत्र में एक पुरोहति के रूप में सेवा करते थे, जहाँ मैं स्वयं नौ साल तक रहा। इनमें से, मैंने तीन साल संत मकरयिस के साथ रहते हुए बतिाए; मैंने अपनी आँखों से उनके दैवी जीवन के कुछ कार्यों और चमत्कारों को देखा, जबकि अन्य के बारे में मैंने उनसे पहले रहने वालों से सुना। एक बार जब उन्होंने महान पति एंथनी को खजूर की टहनयिाँ इकट्ठा करते देखा, जनिसे वे रस्सयिाँ बना रहे थे और टोकरयिाँ बुन रहे थे, तो संत मकारयिस ने उनसे उन टहनयिों का एक गुच्छा माँगा; संत एंथनी ने उन्हें उत्तर दयिा:

'लखिा है: *"तुम अपने पड़ोसी की संपत्ति पर लालच न करना"* (व्यवस्थाविरण 5:21)।'

लेकनि जैसे ही उसने ये शब्द कहे, वैसे ही सभी टहनयिाँ अचानक आग से जल जाने के कारण सूख गईं। यह देखकर, एंथनी ने मकरयिस से कहा:

'देखो, पवत्रि आत्मा तुम पर उतर आया है, और तुम मेरे बाद मेरा काम जारी रखोगे।'

कुछ समय बाद, पूजनीय मकरयिुस रेगस्तिान से यात्रा कर रहे थे और यात्रा की लंबी दूरी से अत्यधकि थक चुके थे। अचानक, शैतान उनके सामने प्रकट हुआ और कहा:

'तुम्हें एंथनी का अनुग्रह प्राप्त हुआ है; तो फरि तुम इसका उपयोग क्यों नहीं करते और अपनी यात्रा के लिए भोजन और शक्ति के लिए परमेश्वर से क्यों नहीं मांगते?'

रेवरेंड ने उत्तर दयिा:

'प्रभु मेरी शक्ति और मेरी महमिा हैं; परमेश्वर के सेवक को परीक्षा में न डाल।'

तब शैतान ने संत को प्रकटयिों से लुभाना शुरू कर दयिा – उसे एक ऊँट दखिाई दयिा, जो हर तरह के खाने-पीने की चीजों से लदा हुआ था और रेगस्तिान में भटक रहा था। जब संत ने ऊंट को अपनी ओर आते हुए देखा और उन्हें एहसास हुआ कि यह एक भूत है, तो उन्होंने प्रार्थना करना शुरू कर दयिा – और अचानक वह भूत धरती में समा गया।

एक दनि, अलेक्जेंड्रयिा के पूजनीय मकारयिस मस्रि के मकारयिस के पास आए, जो एक तपोवन में ठहरे हुए थे। और इस प्रकार, जब वे दोनों अपनी यात्रा पर नकिले और नील नदी पार करना चाहते थे, तो उन्हें एक बड़ी नाव लेनी पड़ी,

---

[1213] इसीलिए इसे 'एलेक्जेंड्रयिन' या 'शहरी' कहा जाता है। माना जाता है कि उनका जन्म 295 ईस्वी में हुआ था।

जसि पर दो ट्रायब्यून (हजार के कमांडर) भी बड़े तामझाम और बाहरी वैभव के साथ सवार हुए, जनिके पास एक कांस्य का रथ था, सोने की लगाम वाले घोड़े, और सैनकिों, नौकरों और अंगरक्षकों का एक दल, जो जंजीरों और सुनहरी पट्टयिों से सुसज्जति था। जब इन ट्रबि्यूनों ने फटे-पुराने वस्त्र पहने और एक कोने में खड़े दो सम्माननीय वृद्धों को देखा, तो उन्होंने उनके वनिम्र और साधारण जीवन की प्रशंसा की, और एक ट्रबि्यून ने वृद्धों से कहा:

'धन्य हैं आप जनि्होंने संसार का त्याग कयिा है।'

अलेक्जेंड्रयिा के मकरयिस ने उत्तर दयिा:

'हम सचमुच संसार से घृणा करते हैं, लेकनि संसार तुम पर हँसता है। तो जान लो कि जो तुमने कहा वह तुम्हारे अपने मन से नहीं कहा गया था, बल्कि भवषि्यवाणी की भाँति कहा गया था, क्योंकि हम दोनों का नाम मकरयिुस है, अर्थात् "धन्य"।'

अलेक्जेंड्रयिा के मकरयिस के इन शब्दों से प्रभावति होकर, ट्रबि्यून ने घर लौटने पर अपने कपड़े उतार दिए और अपनी संपत्ति गरीबों में बाँटकर, एक तपस्वी का जीवन अपना लयिा।

ऐसा हुआ कि अलेक्जेंड्रयिा के पूजनीय मकरयिस को कुछ बहुत ही बढ़यिा, ताज़े बेर भेजे गए, और वह उन्हें खाना चाहता था। लेकनि फरि, संयम के द्वारा अपनी इच्छा पर काबू पाने का संकल्प लेकर, उसने वे बेर एक कमज़ोर भाई को भेज दिए जो ऐसे भोजन के लिए तरस रहा था। लेकनि उस भाई ने भी, उपहार पाकर, वही कयिा, भले ही वह स्वयं बहुत भूखा था। जैसे-जैसे वे बेर एक के बाद एक भाई को दिए जाते गए और कई भाइयों तक पहुँचते गए, वे अंततः सबसे आखरिी भाई से सम्माननीय मकरयिुस के पास वापस लौटे और एक कीमती उपहार के रूप में, बनिा चखे ही लौटा दिए गए, क्योंकि किसी ने भी उन्हें चखने की इच्छा नहीं की थी। जब पूजनीय मकारयिस को पता चला कि वे बेर पूरे समुदाय में बाँटे गए थे, तो वह बहुत आश्चर्यचकति हुए और पूरे समुदाय द्वारा आत्म-संयम के ऐसे गुण के लिए ईश्वर का धन्यवाद करने के बाद, उन्होंने स्वयं भी उनमें से कोई नहीं चखा।

जब भी माननीय को पता चलता कि किसी ने कोई पुण्य कार्य कयिा है, तो वह उसका अनुकरण करने का भरसक प्रयास करते और स्वयं भी वही कार्य सावधानीपूर्वक करते थे। उदाहरण के लिए, जब उन्हें टावेनक मठ[1214] में रहने वाले भक्षिुओं के बारे में पता चला, जो पूरे बड़े उपवास के दौरान आग पर पकाया गया कुछ भी नहीं खाते थे, तो उन्होंने स्वयं के लिए सात वर्षों तक आग पर पकाया गया कुछ भी न खाने का नयिम बना लयिा - न तो भुना हुआ और न ही उबला हुआ भोजन। इसके अलावा, पूजनीय मकरयिस ने अपने तप को इतना बढ़ा दयिा कि वह कठोर बाजरा या पानी में भगिोए हुए कुछ बीजों को छोड़कर न तो रोटी और न ही पकाया हुआ भोजन खाते थे। पूजनीय ने पूरे सात साल तक ऐसे ही संयम का पालन कयिा। एक बार जब उन्होंने एक अन्य भक्षिु के बारे में सुना जो दनि में केवल एक पाउंड रोटी खाता था, और उसकी नकल करने की इच्छा से, मकारयिस ने रोटी को छोटे-छोटे टुकड़ों में तोड़कर उन्हें एक बहुत ही संकरे मुँह वाले पात्र में डाल दयिा, जसिमें कोई मुश्कलि से ही अपना हाथ डाल सकता था। साथ ही, आदरणीय मकरयिस ने यह नयिम बना लयिा कि दनि में वह केवल उतनी ही रोटी खाएगा जतिनी उसके हाथ में समा सके, जब उसे उस पात्र में डाला जाए।

यह आदरणीय मकारयिस के लिए शरीर को कष्ट देने का एक बहुत ही कठोर साधन था, जैसा कि उपर्युक्त पैलाडयिस वर्णन करते हैं। क्योंकि आदरणीय मकारयिस ने बाद में मुस्कुराते हुए बताया:

'मैं पात्र में कई टुकड़ों के लिए हाथ डालता, लेकनि उसकी गर्दन की संकीर्णता के कारण, मैं उन्हें बाहर नहीं नकिाल पाता था। इस प्रकार, मेरा पात्र मुझे उतना खाने नहीं देता था जतिना मैं चाहता था!'

[1215]इस भूख की अवस्था में रहते हुए, मकारयिस ने तीन साल तक यह सहन कयिा, वह हर दनि केवल रोटी का एक छोटा सा टुकड़ा खाता था और उतनी ही मात्रा में पानी पीता था। अपने भोजन के लिए तेल के रूप में, वह पूरे वर्ष में केवल एक सेक्स्टेरयिस (एक प्रकार का माप) का उपयोग करता था। एक बार, हमेशा के लिए नींद पर काबू पाने की इच्छा से,

---

[1214] ताबेन का मठ पहला सामुदायकि मठ था; यह ऊपरी (दक्षणिी) मस्रि के ताबेन में, इसकी प्राचीन राजधानी बायबस के उत्तर में, नील नदी के तट पर स्थति था। लगभग 340 में परम पूज्य पाकोमयिस महान (जनिका स्मरणोत्सव 15 मई को मनाया जाता है) द्वारा स्थापति, इसने एक सख्त सामुदायकि संन्यासी नयिम पेश कयिा जो जल्दी ही पूरे ईसाई जगत में फैल गया। प्रारंभकि ईसाई संन्यासवाद के इतहिास में तबेन्ना का मठ इतना महत्वपूर्ण था, और पाकोमयिस के शासन की सफलता इतनी बड़ी थी, कि उनकी मृत्यु से पहले ही लगभग 7,000 भक्षिु तबेन्ना और उसके आसपास इकट्ठा हो गए थे। बाद में, टावेना – एक नाम जो मूल रूप से नील नदी पर एक ही द्वीप को संदर्भति करता था, लेकनि बाद में इसमें नदी के कनिारे के आसपास के क्षेत्र भी शामलि हो गए जहाँ पाकोमयिस और उनके शष्यि बसे थे – अपने मठों के लिए प्रसदि्ध हो गया।

[1215] सेक्स्टेरयिस तरल पदार्थ का एक प्राचीन रोमन माप है, जो दो पूरी बोतलों की क्षमता के बराबर होता है।

वह बीस दिन और रातों तक अपनी कोठरी के आश्रय में नहीं गया, बल्कि दिन में तपती धूप में और रात में ठंड से कांपते हुए इसके बाहर ही रहा, और इस दौरान वह सोने न पाए के लिए हर संभव प्रयास करता रहा। और, जैसा कि उन्होंने स्वयं बाद में दूसरों की शिक्षा के लिए वर्णन किया, इस करतब से उनका मस्तिष्क सूख गया; और यदि वह सोए बिना अपनी कोठरी के बाहर और अधिक समय तक रहते, तो वे पागल हो जाते। रेवरेंड ने आगे कहा:

'जहाँ तक मेरी शक्ति थी, मैंने नींद पर विजय प्राप्त की, लेकिन मैं मानव स्वभाव पर काबू पाने में असहाय था, जो नींद की मांग करता है; और इसलिए मुझे इसके आगे झुकना पड़ा।'

एक अवसर पर, कामवासना के दैत्य ने रेवरेंड मकारियस को बहुत बुरी तरह से लुभाना शुरू कर दिया। इस दुश्मन पर काबू पाने के लिए, मकारियस ने एक दूर के रेगिस्तान में स्थित एक तपस्या स्थल के दलदल में छह महीने तक नग्न बैठने का संकल्प लिया। वहाँ अनगिनत मच्छर थे, जो ततैया के आकार के थे, और जो जंगली सूअरों की खाल को भी भेद सकते थे। इन मच्छरों ने आदरणीय मकरियस को इतना बुरी तरह काटा कि कुछ लोगों को यह संदेह होने लगा कि उन्हें कोढ़ हो गया है। छह महीने बाद जब वह अपनी कुटिया में लौटे, तो उनके शिष्य उनकी आवाज़ से ही मुश्किल से उन्हें अपने आबा मकरियस के रूप में पहचान पाए। लेकिन संत मकरियस ने एक बार फिर से खुद को मच्छरों के उसी कष्ट में डाल लिया। यह घटना तब हुई जब एक बार उन्होंने अपनी टांग पर एक मच्छर मार दिया था जो उन्हें बहुत परेशान कर रहा था, जिससे बहुत सारा खून बह गया। इसके बाद, उन्होंने पश्चाताप किया और खुद को एक हत्यारे और प्रतिशोधी व्यक्ति के रूप में कोसना शुरू कर दिया, जब तक कि उन्होंने मच्छरों के काटने के लिए खुद को नग्न करके खुद पर ही प्रतिशोध नहीं ले लिया।

एक अन्य अवसर पर, पूजनीय संत 'कपिोटाफियन' नामक बगीचे और कब्र का दौरा करना चाहते थे, जिसमें फिरौन के समय में रहने वाले मिस्र के जादूगर इयानीउस और याम्ब्रिउस (निर्गमन 7:11, 22, 8:7) को दफनाया गया था, ताकि वे वहां राक्षसों से लड़ सकें; क्योंकि इस स्थान के बारे में कहा जाता था कि इसमें सबसे क्रूर राक्षसों की एक बड़ी संख्या रहती थी, जिन्हें उपर्युक्त जादूगरों ने अपनी जादू-टोने के माध्यम से वहाँ इकट्ठा किया था। ये जादूगर भाई थे, और अपनी चालाकी और जादू-टोने में महान कौशल के कारण, उन्हें फ़िरौन द्वारा बहुत सम्मान दिया जाता था और उन्होंने पूरे मिस्र में अपार शक्ति का प्रयोग किया। मरुभूमि के एक दूरस्थ हिस्से में, उन्होंने चौकोर पत्थरों से एक बगीचा बनाया, और उसके भीतर उन्होंने कुशलता से अपने लिए एक मकबरा बनाया, जिसमें उन्होंने बहुत सारा सोना रखा; उसके चारों ओर उन्होंने विभिन्न प्रकार के कई पेड़ लगाए और एक बड़ा कुआँ खोदा, क्योंकि वहाँ की जमीन नीची थी और वहाँ बहुत नमी थी। मगों ने यह सब इसलिए व्यवस्थित किया था क्योंकि उन्हें दृढ़ विश्वास था कि अपनी मृत्यु के बाद, वे वहाँ हमेशा के लिए रहेंगे, और उस स्थान में पाई जाने वाली सभी आशीर्वादों का आनंद, मानो स्वर्ग में हो, लेंगे। चूंकि परम पूजनीय मकरियस को उस स्थान का रास्ता नहीं पता था, इसलिए उन्होंने तारों को देखकर यात्रा की, ठीक वैसे ही जैसे नाविक समुद्र पार करते हैं, और इस तरह पैदल ही पूरे रेगिस्तान को पार कर लिया। ऐसा करते हुए, मकारियस अपने साथ कई परागदंड (stamen) ले गए और हर तय की गई दूरी के बाद[1216] , उन्होंने एक परागदंड जमीन में गाड़ दिया ताकि वे इन निशानों से अपना रास्ता वापस ढूंढ सकें। जब, पूरे रेगिस्तान को नौ दिनों में पार करने के बाद, वह उपर्युक्त बगीचे के पास पहुँचा और, जैसे ही रात हुई, उसने अपनी यात्रा से थोड़ा आराम करने की इच्छा की और सो गया, तो शैतान, – जो मसीह के तपस्वियों का शाश्वत विरोधी है – ने मैकारियस द्वारा अपने मार्ग को चिह्नित करने के लिए इस्तेमाल किए गए सभी परागदंडों को इकट्ठा किया और, जब वह आदरणीय संत सो रहे थे, तो उन्हें संत के सिर के पास रख दिया। जब मैकारियस जागे, तो उन्होंने उन सभी परागदंडों को अपने बगल में एक गुच्छे में बँधा हुआ पाया। यह दिव्य प्रावधान से हुआ, ताकि पूजनीय संत के पराक्रम को मजबूत किया जा सके, और वे परागकणों पर नहीं बल्कि ईश्वर की सहायता पर निर्भर रहें, जिसने एक बार इस विशाल मरुभूमि में चालीस वर्षों तक आग के स्तंभ से इस्राएलियों का मार्गदर्शन किया था (निर्गमन 14:19-20)। बाद में, संत मकारियस ने अपनी यात्रा के बारे में निम्नलिखित बातें बताईं:

उन्होंने कहा, 'जैसे ही मैं बगीचे के पास पहुँचा, जिसे कब्रिस्तान कहा जाता है, विभिन्न रूपों में लगभग सत्तर राक्षस मुझसे मिलने के लिए दौड़ पड़े; उनमें से कुछ जोर से चिल्लाए, दूसरों ने भयानक द्वेष से मुझ पर अपने दाँत पीसे, जबकि अन्य कौवों की तरह उड़ते हुए मेरे चेहरे पर झपटने लगे और चिल्लाने लगे:

[1216] एक 'पोप्रस्टि' 690 साज़ेन के बराबर था।

'मैकैरयिस, तुम यहाँ क्या ढूँढ़ रहे हो? तुम हमारे पास क्यों आए हो? क्या हमने कभी तुम्हारे किसी संन्यासी को प्रलोभित किया है? जहाँ तुम रहते हो, वहाँ अपने जैसे लोगों पर शासन करो, जो कभी हमारे थे। क्योंकि तुम उस रेगिस्तान पर शासन करते हो, जहाँ से तुमने हम जैसे राक्षसों को भगा दिया है। हालाँकि, हमारा तुमसे कोई लेना-देना नहीं है। तुम हमारी भूमि पर क्यों आए हो? एक तपस्वी के रूप में, रेगिस्तान से ही संतुष्ट रहो; यह जगह हमें उन्हीं लोगों ने दी थी जिन्होंने इसे बसाया था। तुम यहाँ नहीं रह सकते। तुम हमारे क्षेत्र में क्यों प्रवेश करना चाहते हो, जहाँ इस जगह को बसाने वाले भाइयों को दफनाने के समय से किसी जीवित व्यक्ति ने पैर नहीं रखा है?

और जब राक्षसों ने एक भयानक दहाड़ और चीख निकाली, तो संत मकारियस ने उनसे कहा:

'मैं बस अंदर जाऊँगा, एक नज़र डालूँगा, और फिर निकल जाऊँगा!'

दैत्यों ने उससे कहा:

'अपने सम्मान की कसम देकर हमें यह वादा करो।'

मसीह के सेवक ने उत्तर दिया:

– मैं ऐसा ही करूँगा।

और राक्षस गायब हो गए। जैसे ही मकरियुस बगीचे में प्रवेश किया, उसका सामना एक खींची हुई तलवार लिए एक भयानक दिखने वाले राक्षस से हुआ, जिसने उसका रास्ता रोक लिया। संत मकरियुस ने राक्षस से कहा:

'तू तलवार लेकर मेरे विरुद्ध आया है, परन्तु मैं सेनाओं के प्रभु के नाम पर, इस्राएल के परमेश्वर की सामर्थ्य में तेरे विरुद्ध आया हूँ (1 शमूएल 17:45)।'

और शैतान उससे भाग गया। फलदार बगीचे में प्रवेश करते ही, पूजनीय ने वहाँ सब कुछ देखा, अर्थात्: एक कुआँ जिसमें लोहे की ज़ंजीर से बँधी एक पुरानी तांबे की बाल्टी लटक रही थी; ऐसे अनार जो अंदर से सूखकर खाली हो गए थे; और सोने से भव्यता से सजी एक सुंदर कब्र। सब कुछ विस्तार से जांचने के बाद, संत बिना किसी बाधा या कठिनाई के उस जगह से चले गए और, बीस दिन बाद, अपनी कोठरी में वापस लौट चले। रास्ते में, उनके साथ यात्रा के लिए लाई गई सारी रोटी और पानी खत्म हो गया। मकरियस भूख और प्यास से इतने कमजोर हो गए कि वे लगभग गिर ही गए। तब – जैसा कि उन्होंने बाद में स्वयं बताया – एक युवती का साया उनके सामने प्रकट हुआ, जो सफेद पोशाक पहने हुए थी और उनसे कुछ दूरी पर – लगभग एक वर्स्ट (लगभग एक मील) दूर – ताज़े पानी से भरी एक बाल्टी लिए हुए थी। बार-बार रुकते हुए, वह युवती पानी की ओर इशारा कर रही थी और उसे अपनी ओर बुला रही थी, यह वादा करते हुए कि वह उसे एक घूंट पिलाएगी। हालाँकि, संत उसके पास नहीं पहुँच सके। फिर भी, अपनी प्यास बुझाने की उम्मीद से, वह तीन दिनों तक उसका पीछा करते रहे, जिसमें उन्होंने बहुत ज़्यादा मेहनत की, जबकि वह युवती पूरे समय उनसे आगे ही रही। तब भैंसों का एक झुंड प्रकट हुआ (उस क्षेत्र में वे बहुत हैं); उनमें से एक, एक छोटे बछड़े के साथ, उस थके-हारे और थकित बूढ़े आदमी के सामने खड़ी हो गई, और उसके थनों से दूध बह रहा था। उसी क्षण, पूजनीय ने ऊपर से एक आवाज़ सुनी:

'आओ, मकारियस, और उसका दूध पीओ।'

आगे बढ़कर, उन्होंने काफी देर तक दूध पिया और अपनी ताकत वापस पा ली।

संत मकरियस ने आगे कहा: 'मेरे प्रभु ने, मुझ पर और भी अधिक दया दिखाने और मेरी कमजोरी को यह सिखाने के लिए कि उसे अपनी आशा केवल उनकी शुभ व्यवस्था में रखनी चाहिए, यह चमत्कार किया। उनके आदेश पर, मैंने उस भैंस-गाय को मेरे साथ अपनी कुटिया तक आने और मेरी पूरी यात्रा के दौरान मुझे दूध पिलाने का आदेश दिया। आज्ञाकारी भैंस-गाय ने, अपने स्रष्टा के आदेश पर, वास्तव में मेरा अनुसरण किया और बछड़े को अपने थनों से दूध चूसने नहीं दिया, ताकि वह केवल मेरा ही पोषण कर सके।"

एक बार, यह पवित्र और अद्भुत व्यक्ति भिक्षुओं के लिए पीने का पानी उपलब्ध कराने के लिए एक कुआँ खोद रहे थे। जहाँ आदरणीय व्यक्ति खोद रहे थे, वहाँ बहुत सारी झाड़ियाँ और कांटे थे, जिनमें से एक विषैला साँप फिसलकर बाहर निकला और उसने संत को डस लिया।

तब संत ने अपने हाथों से साँप के दोनों जबड़ों को पकड़कर उसे फाड़ डाला और कहा:

'चूंकि मेरे स्वामी ने तुम्हें मेरे विरुद्ध नहीं भेजा था, तो तुम मुझसे पास आकर मुझे काटने की हिम्मत कैसे करते हो?'

और, अरे चमत्कार! सांप के काटने से आदरणीय को बिल्कुल भी कोई हानि नहीं हुई।

तावेनियोट्स के बारे में एक बार फिर यह सुनकर कि वे जीवन के बहुत सख्त नियम का पालन करते थे, पूजनीय मकरियस ने अपने संन्यासी के वस्त्र उतारकर सामान्य व्यक्ति के कपड़े पहन लिए और उनके पास जाने के लिए निकल

पड़े। रेगिस्तान के पंद्रह दिन के सफर के बाद, पूजनीय मकरियस एक सामान्य व्यक्ति के रूप में तावेनियोट मठ पहुँचे। वहाँ वह आर्चमिंड्राइट पाचोमियस[1217] से मिलना चाहता था, जो महान अनुभव और अंतर्दृष्टि वाले व्यक्ति थे, जिनमें भविष्यवाणी का वरदान था, लेकिन ईश्वर ने उन्हें अभी तक यह नहीं बताया था कि मकारियस कौन था। पाचोमियस की उपस्थिति में प्रवेश करते ही, मकारियस ने कहा:

'पिताजी, मैं आपसे विनती करता हूँ, मुझे अपने मठ में स्वीकार करें, क्योंकि मैं वहाँ एक भिक्षु बनना चाहता हूँ।'

पचोमियस ने उत्तर दिया:

'तुम भिक्षु नहीं बन सकते, क्योंकि तुम बूढ़े हो और श्रम करने में असमर्थ हो। यहाँ के भाइयों को उनके युवा दिनों से ही भिक्षु जीवन के श्रम की आदत है, लेकिन तुम, जो पहले से ही वृद्ध हो, भिक्षु जीवन की कठोरताओं को सहन नहीं कर पाओगे; और कमजोर हो जाने पर, तुम इस स्थान को छोड़ दोगे और हमारे बारे में बुरा बोलोगे।'

और पाचोमियस ने उसे न तो पहले दिन और न ही दूसरे दिन स्वीकार किया – और यह सिलसिला सातवें दिन तक चलता रहा। हालाँकि, मकरियस ने वह सारा समय कड़े उपवास में बिताया और सातवें दिन आर्चमिंड्राइट से कहा:

'अब्बा, मुझे स्वीकार कर लें! लेकिन अगर मैं उपवास नहीं करता और दूसरे भाइयों की तरह नहीं करता, तो आप आदेश दे सकते हैं कि मुझे मठ से निकाल दिया जाए।'

तब संत पाचोमियस ने भाइयों से उसे स्वीकार करने को कहा। वहाँ एक हज़ार चार सौ भाई थे, और मकारियस को उन्होंने मठ में स्वीकार कर लिया। कुछ समय बीत जाने के बाद, पवित्र चालीस दिनों का उपवास शुरू हुआ, और मकारियस ने देखा कि प्रत्येक भाई अपनी-अपनी क्षमता से उपवास कर रहा था। एक भ ा शाम को अपना भोजन करता था, दूसरा दो दिन बाद, कोई और पाँच दिन बाद, जबकि एक और पूरी रात प्रार्थना में और दिन में काम में बिताता था। उनके उदाहरण का पालन करते हुए, मकरियस ने स्वयं खजूर की कुछ टहनियों को भीगाकर एक कोने में खड़ा हो गया और पूरे लेंट के मौसम के दौरान ईस्टर तक न तो रोटी खाई और न ही पानी पिया, सिवाय रविवार को खाई जाने वाली सूखी पत्तागोभी की थोड़ी मात्रा के। और वह यह केवल इसलिए करता था ताकि दूसरे भिक्षुओं को यह दिखाई दे कि वह खा रहा है, और अहंकार के पाप में न पड़ जाए। कोने में खड़े होकर, पूजनीय मकरियस ने अथक परिश्रम किया और अपने काम से कोई विश्राम नहीं लिया; उस पूरे समय के दौरान वह एक बार भी नहीं बैठा और न ही लेटा। यदि आवश्यकता पड़ने पर, उन्हें अपनी जगह छोड़नी पड़ती, तो लौटने पर वे फिर से खड़े हो जाते, बिना अपने होंठ खोले या किसी से बात किए, बल्कि चुपचाप पूरे दिल से ईश्वर से प्रार्थना करते। रेवरेंड की ऐसी उपलब्धि को देखकर, उस मठ के तपस्वी अपने मठाधीश से नाराज़ हो गए और उनसे कहने लगे:

'तुम हमारे लिए, हमारी लाज मिटाने के लिए, ऐसा कौन-सा देहहीन आदमी ले आए हो? या तो उसे भगा दो, या हम मठ छोड़ देंगे।'

भाइयों से यह सुनकर और मकरियस के कठोर उपवास के बारे में जानकर, आदरणीय पाचोमियस ने ईश्वर से प्रार्थना करना शुरू कर दिया कि वह उन्हें बताएँ कि यह अजनबी कौन था। और उसे यह प्रकट हुआ कि यह मकारियस ही थे। तब आदरणीय पाचोमियस ने आदरणीय मकारियस का हाथ पकड़कर उन्हें चर्च में ले गए और स्नेहपूर्वक गले लगाकर कहा:

'स्वागत है, आदरणीय पिता! मैं जानता हूँ कि आप मकरियस हैं, लेकिन आपने मुझे अपना नाम नहीं बताया। मैंने कई वर्षों से आपके बारे में सुना है और आपको देखने की बहुत इच्छा थी। मैं आपको मेरे बच्चों को विनम्रता सिखाने के लिए धन्यवाद देता हूँ, ताकि वे अपने कर्मों और उपवास पर गर्व करके अहंकारी न हो जाएँ; आप हमारे लिए बहुत लाभदायक रहे हैं।'

अन्य भाइयों ने भी मकरियुस के बारे में सुना और चारों ओर से बड़ी संख्या में आकर, उन्होंने स्नेहपूर्वक उन्हें चूमा और उनसे उनके लिए प्रार्थना करने का अनुरोध किया। आदरणीय मकरियुस ने सभी को उपदेश देने के बाद, अपने स्थान पर लौट आए।

इन निर्लिप्त व्यक्ति, आदरणीय मकरियस ने, अपने बारे में निम्नलिखित भी बताया:

'एक बार मैंने अपने मन को इस तरह निर्देशित करने की इच्छा की कि, सांसारिक किसी भी चीज़ के बारे में न सोचते हुए, वह एक ईश्वर के अखंड ध्यान में बना रहे, और एक पल के लिए भी उससे न भटके। ईश्वर के इस ध्यान के लिए, मैंने

[1217] अर्थात्, संत पचोमियस महान।

स्वयं के लिए पाँच दिनों की अवधि निर्धारित की। और इस प्रकार, मैंने अपनी कोठरी और अपने आँगन को बंद कर दिया ताकि कोई भी अंदर न आ सके, और ताकि मैं किसी से बात न करूँ, और मैंने सोमवार को ऐसा करना शुरू किया और अपने मन को आज्ञा दी, इस प्रकार कहकर: 'देख! स्वर्ग से दूर मत जा!' वहाँ, आपके साथ स्वर्गदूत, महादूत, खेरूब, सेराफ, सभी स्वर्गिक सेनाएँ और उनके सृष्टिकर्ता, ईश्वर हैं। अत; स्वर्ग में ही रहो और स्वर्ग के नीचे के क्षेत्र में न उतरना, कहीं तुम सांसारिक विचारों में न पड़ जाओ। जब मैं इस प्रकार दो दिन और दो रातों तक खड़ा रहा, स्वर्ग पर अपना मन केंद्रित करते हुए, तो मैंने शैतान को इतना उकसाया कि वह एक ज्वाला बनकर मेरी कोठरी में सब कुछ जला गया, यहाँ तक कि जिस चटाई पर मैं खड़ा था उसमें भी आग लग गई, और मुझे लगा कि मैं भी जल जाऊँगा। इससे डरकर, तीसरे दिन मैंने अपना संकल्प त्याग दिया; अब मैं स्वर्गीय बातों पर अपना मन स्थिर नहीं रख सकता था, इसलिए ईश्वर की इच्छा से, मैं घमंड के पाप में न पड़ने के लिए सांसारिक विचारों में उतर आया।

बिशप पैलाडियस भी इसी पूजनीय मकारियस के बारे में निम्नलिखित का वर्णन करते हैं:

वे कहते हैं, 'एक बार, जब मैं उन्हें देखने गया,' तो मैंने एक ग्रामीण पुरोहित को उनकी कोठरी के बाहर खड़ा पाया, जिसका सिर गैंग्रीन नामक बीमारी से इतना क्षत-विक्षत हो गया था कि उसके सिर के पिछले हिस्से से उसका मुँह देखा जा सकता था। वह उपचार की आशा में परम पूज्य मकरियुस के पास आया था; लेकिन संत उसे स्वीकार नहीं करना चाहते थे, क्योंकि वे उससे बात नहीं करना चाहते थे। तब मैंने भी संत से विनती करनी शुरू की, कहते हुए:

'इस दीन प्राणी पर दया करो और उसे उत्तर दो।'

लेकिन उस धन्य व्यक्ति ने मुझसे कहा:

'वह चंगा होने का अधिकारी नहीं है, क्योंकि यह प्रभु द्वारा भेजा गया दंड है। यदि, तथापि, आप चाहते हैं कि वह चंगा हो जाए, तो उसे सलाह दें कि वह अब से दिव्य लिटिर्जी का अनुष्ठान करना बंद कर दे।'

मैंने संत से पूछा:

'क्यों?'

उसने उत्तर दिया:

'उसने व्यभिचार करने के बाद लिटिर्जी का अनुष्ठान किया, और उसे इसके लिए दंडित किया गया है। लेकिन अगर वह ईश्वर से डरता है और उस पाप से मुँह मोड़ लेता है जिसे वह बिना किसी डर के करता रहा है, तो ईश्वर उसे चंगा कर देगा।'

पैलाडियस ने अपनी बात जारी रखते हुए कहा, 'जब मैंने यह बात उस पुरोहित से कही, तो उसने गंभीरता से संकल्प लिया कि वह फिर कभी दैवीय धर्मविधि का अनुष्ठान नहीं करेगा। इसके बाद, पूजनीय मकरियस ने उस पुरोहित को एक तरफ ले जाकर उससे कहा:

'क्या तुम विश्वास करते हो कि एक ईश्वर है जिसके सामने कुछ भी छिपा नहीं रहता?'

पुजारी ने उत्तर दिया:

'हाँ, पिताजी, मैं विश्वास करता हूँ, और मैं आपसे विनती करता हूँ – एक पापी के लिए उसकी प्रार्थना करें।'

तब मकारियस ने पूछा:

'तो क्या तुम ईश्वर से कुछ भी छिपा नहीं सकते?'

– 'नहीं, मैं नहीं कर सका,' उसने जवाब दिया।

'यदि तुम अपना पाप स्वीकार करते हो और उसके लिए ईश्वर की सजा को स्वीकार करते हो,' मैकारियस ने जारी रखा, 'तो इस क्षण से अपने मार्ग सुधारो।'

और उस पुरोहित ने अपना पाप स्वीकार किया और प्रतिज्ञा की कि वह फिर कभी पाप नहीं करेगा और न ही पवित्र अनुष्ठान करेगा, बल्कि एक सामान्य व्यक्ति की तरह जीवन यापन करेगा। इसके बाद, संत मकरियस ने उस पर अपना हाथ रखा और उसके लिए ईश्वर से प्रार्थना की, और कुछ ही दिनों बाद उस पुरोहित को गैंग्रीन से मुक्ति मिली; उसके बाल फिर से उग आए, और वह अच्छे स्वास्थ्य के साथ ईश्वर की महिमा करते हुए और महान मकरियस का धन्यवाद करते हुए अपने घर लौट आया।

आदरणीय मकरियुस के विभिन्न स्थानों पर कई कोठरियाँ थीं: एक भीतरी रेगिस्तान में स्थित एक स्केट में, दूसरी लीबिया में, तीसरी केलिया नामक स्थान पर, और चौथी माउंट निट्रिया पर। उनकी किसी भी कोठरी में न तो दरवाज़े थे और न ही खिड़कियाँ। और आदरणीय मकरियुस पवित्र उपवास के दिनों में इन कोठरियों में अंधकार में ही रहते थे। उनकी एक

कोठरी इतनी तंग थी कि उसमें कोई अपने पैर भी नहीं फैला सकता था; दूसरी अधिक विशाल थी, और उसमें आदरणीय संत उनसे मिलने आने वालों से बातें करते थे; साथ ही, उन्होंने अशुद्ध आत्माओं से पीड़ित अनगिनत लोगों को चंगा किया।

पैलाडियस एक कुलीन युवती का उल्लेख करते हैं जो कई वर्षों से लकवाग्रस्त थी और जिसे थिस्सलोनिका से आदरणीय मकरियुस के पास लाया गया था[1218] । आदरणीय ने उसे बीस दिनों तक पवित्र तेल लगाकर और ईश्वर से प्रार्थना करके चंगा किया, और उस युवती को पूर्ण स्वास्थ्य के साथ उसके गृहनगर वापस भेज दिया। उसके ठीक होने के बाद, उसने मठों में उदार दान बांटा।

एक अन्य अवसर पर, एक राक्षस-ग्रस्त लड़के को माननीय के पास लाया गया; वह व्रणरोग (पानी की बीमारी) से पूरी तरह सूजा हुआ था। माननीय ने अपना दाहिना हाथ लड़के के सिर पर और बायां हाथ उसके हृदय पर रखकर ईश्वर से प्रार्थना करना शुरू कर दिया। अचानक, लड़के ने ऊँचे स्वर में चिल्लाया, और तुरंत ही उसके शरीर से बहुत बड़ी मात्रा में पानी बह निकला। इसके बाद, लड़के का शरीर अपनी पूर्व की स्वाभाविक अवस्था में लौट आया। लड़के को पवित्र तेल का अभिषेक करने और उस पर पवित्र जल छिड़कने के बाद, पूजनीय फादर ने उसे उसके पिता को सौंप दिया। साथ ही, उन्होंने लड़के को चौदह दिनों तक मांस न खाने और शराब न पीने की हिदायत दी। इस प्रकार, पूजनीय फादर ने लड़के को स्वस्थ कर दिया।

शैतान, जो मानव जाति का पुराना दुश्मन है, पूजनीय मकरियस के कठोर तपस्वी जीवन और उनके पास आने वाले बीमारों को दी गई अनेक आरोग्य-लाभों के कारण उनसे बहुत क्रोधित हो गया। फिर उसने उनके मन को अहंकार से बहकाना शुरू कर दिया। रेवरेंड के मन में विचार उठने लगे कि उन्हें अपनी कोठरी छोड़कर रोम के लिए निकल जाना चाहिए। साथ ही, उनके मन में ऐसा करने के लिए तरह-तरह के तर्कपूर्ण कारण भी आने लगे, जो यह बता रहे थे कि रेवरेंड, जिनके पास प्रचुर अनुग्रह और अशुद्ध आत्माओं को भगाने का वरदान था, रोम में पीड़ित लोगों के लिए बहुत लाभदायक हो सकते हैं। रेवरेंड ने उन प्रलोभनकारी विचारों के खिलाफ लंबे समय तक संघर्ष किया, भले ही वे उस पर प्रचंड रूप से आक्रमण कर रहे थे। अंत में, अपनी कोठरी के दहलीज पर गिरते हुए, उन्होंने अपने पैर दहलीज के बाहर फैलाए और कहा:

'मुझे खींचकर ले जाओ, राक्षसों, अगर तुम कर सकते हो, लेकिन मैं अपनी मर्ज़ी से नहीं जाऊँगा!'

और इस प्रकार, रेवरेंड शाम देर तक दहलीज पर पड़े रहे।

उस रात, उन्हीं विचारों ने एक बार फिर से बड़ी प्रबलता से उन पर आक्रमण किया। तब उस धन्य व्यक्ति ने, दो चेत्वेरिक्स की क्षमता वाली एक टोकरी लेकर, उसे रेत से भर दिया और उसे अपने कंधों पर लादकर रेगिस्तान में चलने के लिए निकल पड़े। वहाँ उनकी मुलाकात एंटिओक के एक मूल निवासी, मठाधीश थियोसेबियस से हुई, जिन्होंने उनसे पूछा:

'पिताजी! आप क्या ले जा रहे हैं? अपना बोझ मुझे दे दीजिए, और खुद को परेशान मत कीजिए।'

'मैं उसको सता रहा हूँ जो मुझे सताता है,' मकरियस ने उत्तर दिया, 'क्योंकि जब वह आलस्य और सुस्ती में होता है, तो वह मुझे भटकने के लिए बुलाता है।'

इस प्रकार, लंबे समय तक परिश्रम करने के बाद, आदरणीय संत अपनी कुटिया में लौट आए, शरीर से थके हुए, फिर भी दुष्ट विचारों पर विजय प्राप्त कर चुके थे।

परम पूज्य मकरियस के शिष्य, धन्य पाफनुतियस, संत के बारे में निम्नलिखित का वर्णन करते हैं।

एक बार, पूज्य पिता आँगन में बैठे थे; अचानक एक लकड़बग्घा दौड़ता हुआ आया और अपने जबड़े में अपनी अंधी पिल्ला को लेकर आया; लकड़बग्घे ने मैकारियस के पास आकर, पिल्ला को उसके पैरों तले गिरा दिया। संत ने उस शावक को उठाया, उसकी आँखों में थूक दिया, ईश्वर से प्रार्थना की – और शावक की दृष्टि वापस आ गई। भेड़िया, अपने शावक को लेकर, भाग गई। अगले सुबह वह फिर से रेवरेंड फादर के पास दौड़ी, एक विशाल भेड़ की खाल लेकर; उसे देखकर, संत ने भेड़िये से कहा:

'यह खाल तुम्हें कहाँ से मिली? क्या तुमने किसी का भेड़ खाया है? अगर तुमने इसे जबरदस्ती लिया है, तो मैं इसे नहीं लूंगा।'

[1218] थेस्सालोनिकी – मेसडिोनिया का एक बहुत ही महत्वपूर्ण, प्राचीन शहर – एजियन सागर (द्वीपसमूह) पर थेस्सालोनिकी या फरमेआ की बड़ी खाड़ी के अंदर गहराई में स्थित था। वर्तमान में, यह शहर, जिसे थेस्सालोनिकी के नाम से जाना जाता है, कॉन्स्टेंटिनोपल के बाद, यूरोपीय तुर्की में एक बहुत बड़ी आबादी के साथ, प्रमुख वाणिज्यिक और विनिर्माण केंद्र है।

हायना ने अपना सिर जमीन पर झुकाकर और घुटने टेककर, संत के पैरों तले वह खाल रख दी जो वह लाई थी। लेकिन संत ने उस जानवर से कहा:

'मैंने कहा था कि मैं यह तब तक नहीं लूंगा जब तक तुम मुझसे वादा नहीं कर देतीं कि तुम अब गरीबों को उनके भेड़ें खाकर नुकसान नहीं पहुँचाओगी।'

तब सियार ने अपना सिर झुकाया, मानो संत की बातों से सहमत हो और उनका पालन करने का वादा कर रहा हो। इसके बाद, परम पूज्य मकरियस ने सियार से खाल लेकर उसे संत मेलानिया रोमन (जो 31 दिसंबर को निधन हो गईं) को दे दिया, जो अक्सर रेगिस्तान में पवित्र संतों से मिलने आती थीं। उस समय से, इस खाल को 'हायना का उपहार' के नाम से जाना जाने लगा। और संसार को त्याग देने वाले पुरुषों के बारे में जो बात उल्लेखनीय है, वह यह है कि एक जानवर ने भी, ईश्वर की महिमा और उनके संतों के सम्मान में एक कृपा प्राप्त करके, यह बात समझी और उस धन्य व्यक्ति के लिए एक उपहार लाया। जिसने भविष्यवक्ता दानियेल (दानियेल 14:31) के लिए सिंहों को वश में किया था, उसने ही भेड़िये को भी यह समझ दी कि उसे जो अनुग्रह मिला है, और उसे कृतज्ञता सिखाई।

उपरोक्त पल्लैडियस, एक बार विचारों और निराशा से परेशान होकर इस सम्माननीय पुरुष के पास आए (जैसा कि उन्होंने बाद में स्वयं बताया), और पूछा:

'अब्बा मकारियस, मैं क्या करूँ, क्योंकि मैं ऐसे विचारों से घिरा हुआ हूँ जो कहते हैं: "तुम यहाँ कुछ भी नहीं कर रहे हो – इस जगह को छोड़ दो!"'

पवित्र पिता मकरियस ने उन्हें उत्तर दिया:

'अपने विचारों से यह कहो: मैं मसीह के लिए इन दीवारों की रखवाली करता हूँ।'

पैलाडियस को शिक्षा देने के लिए, परम पूज्य मकारियस ने उन्हें परम पूज्य मार्क (जिनका स्मरण 5 मार्च को किया जाता है) के बारे में बताया, और यह भी बताया कि कैसे उन्होंने स्वयं स्वर्गदूतों से दिव्य रहस्य प्राप्त किए थे। संत मकारियस ने यह अपने स्वयं के नेत्रों से तब देखा था जब वे दिव्य लिटर्जी के दौरान भाइयों को पवित्र Communion वितरित कर रहे थे।

उन्होंने कहा, 'मैंने कभी तपस्वी मार्क को दिव्य रहस्य प्रदान नहीं किए; बल्कि, वेदी से एक स्वर्गदूत ने उन्हें अदृश्य रूप से प्रदान किया, जबकि मैंने केवल उन्हें अर्पित करने वाले हाथ की उंगलियों को देखा।'

ये आदरणीय मार्क, जब वे एक युवा व्यक्ति थे, तब वे पुराना और नया नियम पूरा का पूरा कंठस्थ जानते थे; वे बहुत नम्र और पवित्र भी थे।

संत मकरियस ने सुनाया, 'एक दिन, जब मेरी कोठरी में करने के लिए कुछ भी नहीं था, मैं उनके पास गया—जो तब तक एक बूढ़े आदमी हो चुके थे—और उनकी कोठरी के दरवाजे के पास बैठ गया। मैं उन्हें अन्य पुरुषों से श्रेष्ठ मानता था, जो कि वे वास्तव में थे, और यह जानना चाहता था (मैं उस समय, जैसा कि मकारियस उल्लेख करते हैं, सरल स्वभाव का और सांसारिक ज्ञान से रहित था) कि वह वृद्ध क्या कर रहे थे या किस बारे में बात कर रहे थे। वह, हालांकि, अपनी कोठरी के अंदर, अपने आप और शैतान से जूझ रहे थे, क्योंकि वे पहले ही सौ साल के हो चुके थे, इतने बूढ़े कि उनके दांत भी गिर चुके थे। उन्होंने अपने आप से कहा:

'आखिरकार, तू चाहता क्या है, हे दुष्ट बूढ़े? तू तो पहले ही शराब पी चुका है और तेल का स्वाद चख चुका है। अपनी इस बुढ़ापे में, हे पेट के अतृप्त दास, तुझे और क्या चाहिए?'

शैतान से मार्क ने कहा:

'मुझसे दूर हो जा, शैतान! तू मेरे खिलाफ अपनी लड़ाई में बूढ़ा हो गया है। तुमने मुझ पर शारीरिक दुर्बलता लाद दी है, जिससे मैं शराब पीने और तेल चखने लगा हूँ; तुमने मुझे सुखों का प्रेमी बना दिया है। क्या मैं सचमुच अब भी तुम्हारा कुछ ऋणी हूँ? तुम्हें मुझमें ऐसा कुछ भी नहीं मिलेगा जो तुम चुरा सको। मानवता के शत्रु! अंततः मुझसे दूर हो जा।

संत मकारियस ने यह बात पल्लाडियस को सुनाई, जिन्होंने उनके शब्दों को दर्ज किया। हालाँकि, पुरोहित रुफिनस, अलेक्जेंड्रिया के इन पूजनीय मकारियस के जीवन में निम्नलिखित जोड़ते हैं।

एक रात, शैतान ने मकरियस की कोठरी के दरवाजे पर दस्तक दी और कहा:

'उठो, अबा मकरियस, और चलो हम सेवा के लिए गिरिजाघर चलते हैं।'

लेकिन वह, दिव्य अनुग्रह से परिपूर्ण होकर, शत्रु की चालाकी को पहचान गया और उत्तर दिया:

'हे झूठे और भलाई से घृणा करने वाले! पवित्र लोगों की सभा के साथ तेरा क्या मेल-जोल या दोस्ती है?'

'क्या तुम्हें नहीं पता, मकारियस,' शैतान ने जवाब में कहा, 'कि हमारे बिना न तो कोई चर्च का भजन होता है और न ही कोई मठवासी सभा होती है? तो चलो, और तुम देखोगे कि हम क्या करते हैं।'

वरिष्ठ ने उत्तर दिया:

'ईश्वर न करे, हे चालाक दानव!'

और, तब प्रभु से प्रार्थना करते हुए, उन्होंने यह पूछना शुरू किया कि क्या शैतान ने जो घमंड किया था वह सच था, यह उन्हें प्रकट कर दें। और इस प्रकार, जब आधी रात की प्रार्थना का समय आया, तो मकरियस गिरिजाघर गए और फिर से चुपचाप ईश्वर से प्रार्थना की कि वह उन्हें प्रकट कर दें कि शैतान ने जो कहा था वह सच था या नहीं। कुछ समय बाद, पूजनीय पिता ने चर्च में कुछ छोटे लड़कों के रूप में काले इथियोपियाई लोगों को तेजी से इधर-उधर दौड़ते हुए देखा, मानो वे उड़ रहे हों। मठ में यह रिवाज था कि एक भिक्षु भजन-संग्रह पढ़ता था, जबकि बाकी सभी भाई बैठकर सुनते थे। और इस प्रकार ये छोटे इथियोपियाई हर भाई के बगल में बैठकर हँसते थे; और अगर वे दो उंगलियों से किसी की आँखों को छूते, तो वह भाई तुरंत झपकी लेने लगता, जबकि अगर वे किसी के होंठों पर उंगली रख देते, तो वह व्यक्ति जिल्द ही होश में आ जाता। कुछ के सामने वे महिलाओं के भेष में प्रकट होतीं, जबकि दूसरों के सामने वे इस तरह प्रस्तुत होतीं मानो वे विभिन्न मामलों को बनाना, लाना या व्यवस्थित करना चाहती हों। और जब भी राक्षस किसी का मज़ाक उड़ाते हुए कुछ भी दिखाते, तो भिक्षु भी अपने मन में वही बात सोचते। जहाँ तक कुछ संतों का सवाल है, जब भी राक्षस उनके सामने ऊपर वर्णित जैसी कोई भी हरकत करने लगते, तो उन्हें अचानक किसी शक्ति द्वारा भगा दिया जाता, जोर से बाहर धकेल दिया जाता, और वे फिर कभी ऐसे संतों के सामने रुकने या उनके पास से गुजरने की हिम्मत नहीं करते थे। जहाँ तक बाकी लोगों का सवाल है—भाइयों में सबसे कमजोर, जो प्रार्थना पर बिल्कुल भी ध्यान नहीं देते थे—राक्षसों ने उनका फायदा उठाया, वे उनके गले और कंधों पर बैठ गए। यह देखकर, परम पूजनीय मकारियस ने गहरी आह भरी और, रोते हुए, ईश्वर से प्रार्थना करने लगे:

'हे प्रभु! हम पर दृष्टि डालिए और मौन न रहिए! हे परमेश्वर, उठिए, और आपके शत्रु तितर-बितर हो जाएँ और आपकी उपस्थिति से भाग जाएँ, क्योंकि हमारी आत्मा अपमान से भर गई है।'

प्रार्थना सभा समाप्त होने के बाद, बाबा मकरियुस ने एक-एक करके प्रत्येक भिक्षु को अपने पास बुलाना और यह परखना शुरू किया कि वे चर्च में भजन गाने के दौरान किस बारे में सोच रहे थे। प्रत्येक ने अपने विचारों का उनसे इक़रार किया, और इस प्रकार यह स्पष्ट हो गया कि प्रत्येक के विचार ठीक वही थे जो राक्षसों ने उपहासपूर्वक उनके सामने प्रस्तुत किए थे।

उसी पूजनीय मकरियुस ने एक और, उससे भी अधिक अद्भुत और विस्मयकारी वृत्तांत सुनाया, अर्थात् कि जब भाइयों ने दिव्य रहस्यों के पास पहुँचकर मसीह के शरीर को ग्रहण करने के लिए अपने हाथ फैलाए (उस समय, कम्यूनियन चम्मच से नहीं लिया जाता था, बल्कि मसीह का शरीर हाथों में ग्रहण किया जाता था, जैसा कि आज एंटिडोर दिया जाता है, जबकि पवित्र रक्त को एक प्याले से पिया जाता था; यह प्रथा संत क्रिसोस्टोम के समय तक चली आ रही थी, जैसा कि संत थियोक्टिस्टा के जीवन में प्रमाणित है), पूजनीय ने देखा कि कुछ इथियोपियाई भाई अपने हाथों में जलते हुए अंगारे रख रहे थे, जबकि पुरोहित के हाथ से अर्पित किया गया मसीह का शरीर वापस वेदी पर लौट रहा था। जो लोग पवित्र सहभागिता के योग्य थे, उनसे दुष्टात्माएँ दूर भाग गईं। इस बीच, प्रभु का एक स्वर्गदूत याजक के साथ वेदी के पास खड़ा था और याजक के साथ मिलकर दिव्य रहस्यों का वितरण करने के लिए अपना हाथ बढ़ाया।

इस प्रकार, परम पूज्य मकरियुस, दूरदर्शी होने के कारण, योग्य को अयोग्य से अलग पहचान लेते थे और मनुष्यों के उन विचारों को पूर्वानुमानित कर लेते थे, जो राक्षसों द्वारा उत्पन्न किए गए थे।

आदरणीय मकरियुस ने भाइयों के लाभ और निर्माण के लिए कई अन्य बातें भी बताईं; उन्होंने आलसी लोगों को सुधार किया और विभिन्न चमत्कार किए। ईश्वर-प्रसन्न जीवन जीने के बाद, आदरणीय मकरियुस सौ वर्ष की आयु प्राप्त कर, शांतिपूर्वक प्रभु के पास चले गए[1219] ।

अब, अन्य पवित्र संतों के साथ, वह त्रिमूर्ति में एक परमेश्वर—पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा—की अनंत जीवन में महिमा करते हैं; हम पापियों की ओर से, उसकी महिमा, सम्मान और आराधना युगों-युगों तक हो। आमीन।

[1219] प्रतिष्ठित मकरियस ऑफ़ अलेक्ज़ेंड्रिया का लगभग 395 ईस्वी में निधन हो गया – मिस्र के प्रतिष्ठित मकरियस की तरह, अलेक्ज़ेंड्रिया के प्रतिष्ठित मकरियस भी एक चर्च लेखक थे। उनके नाम से निम्नलिखित कृतियाँ आज भी जानी जाती हैं: 1) 30 अध्यायों में एक मठवासी नियम; 2) भिक्षुओं के लिए एक पत्र; 3) आत्मा के प्रस्थान और मृत्यु के बाद की स्थिति पर एक प्रवचन।

पवित्र शहीद यूफ्रेशिया की स्मृति

19 जनवरी को स्मरण किया जाता है

पवित्र कुंवारी यूफ्रेशिया निकोमेडिया शहर की रहने वाली थीं[1220] और सम्राट मैक्सिमियिन[1221] के शासनकाल में रहती थीं। वह कुलीन जन्म की, सुंदर रूप वाली, धार्मिक थीं, और उन्होंने मसीह की एक वफादार सेविका के रूप में सेवा की। ईसाइयों के उत्पीड़न के दौरान, संत यूफ्रेशिया को मूर्तिपूजकों ने पकड़ लिया और राक्षसों को बलिदान चढ़ाने के लिए मजबूर किया। जब उसने आज्ञा मानने से इनकार कर दिया, तो उन्होंने उसे क्रूरता से पीटना शुरू कर दिया; लेकिन उसने बहादुरी से प्रहारों को सहन किया। अपनी यातनाओं के बाद, संत यूफ्रेशिया को अपवित्र करने के लिए एक बर्बर के हवाले कर दिया गया, जिसने उसे अपने घर ले जाकर रख लिया। संत ने अपने परम पवित्र वधूवर, प्रभु मसीह से, अखंड रहने के लिए अथक प्रार्थना की। और इसलिए, जब दुष्ट बर्बर ने संत को शयनकक्ष में ले गया, तो यूफ्रेसिया ने उससे थोड़ी देर प्रतीक्षा करने के लिए कहा, और उसे एक चमत्कारी पौधा देने का वादा किया।

उसने कहा, 'यदि तुम इस पौधे को हमेशा अपने साथ रखोगे, तो कोई भी शत्रु का हथियार तुम्हें नुकसान नहीं पहुँचाएगा।'

संत ने ऐसा कहा, मानो वह खुद को एक जादूगरनी के रूप में पेश कर रही हो।

लेकिन उस बर्बर ने उससे कहा:

'तुम मुझे वह पौधा बाद में दे देना।'

बुद्धिमान कन्या ने उत्तर दिया:

'इस पौधे को किसी महिला के हाथ नहीं छू सकते; इसे केवल एक कुंवारी ही ले सकती है। यदि इसे किसी कुंवारी के अलावा कोई और ले लेता है, तो इसमें कोई शक्ति नहीं रहेगी।'

तब उस बर्बर ने सहमति दे दी कि जब तक वह उसके लिए वह पौधा नहीं तोड़ लेती, वह यूफ्रेशिया को नहीं छूएगा। बगीचे में पहुँचकर और वहाँ एक विशेष पौधा पाकर, संत ने उसे तोड़ लिया और बर्बर को दिखाया। उसने उससे पूछा:

'मुझे कैसे पता चलेगा कि जो तुम मुझे बता रहे हो वह सच है?'

– जवाब में, संत यूफ्रेशिया ने तोड़े हुए पौधे को अपनी गर्दन पर रख लिया और उससे कहा:

'एक तेज तलवार लो, उसे दोनों हाथों से उठाओ और मेरी गर्दन पर अपनी पूरी ताकत से वार करो, और फिर तुम देखोगे कि तुम्हारी तलवार मुझे जरा भी नुकसान नहीं पहुँचाएगी।'

उस बर्बर ने संत के शब्दों पर विश्वास किया, तलवार उठाई और उसे जोरदार वार से घुमाकर संत यूफ्रेशिया का पवित्र सिर धड़ से अलग कर दिया, और वह मृतक होकर गिर पड़ी[1222] । यह देखकर कि संत ने उसका मज़ाक उड़ाया था, वह बर्बर अपने दाँत पीसने लगा। परंतु वह बुद्धिमान कन्या निर्दोष होकर अपने वधूवर—मसीह—के पास चली गई, और हमें पवित्रता की रक्षा का एक उदाहरण छोड़ गई, क्योंकि उसने अपनी कुँवारीपन खोने के बजाय मरना पसंद किया।

केर्कीरा के आर्चबिशप, संत आर्सेनियस की स्मृति।

19 जनवरी को स्मरणोत्सव

[1220] निकोमेडिया – एशिया माइनर के उत्तर-पश्चिमी भाग में, मार्मारा सागर के तट पर, बिथिनिया क्षेत्र का एक समृद्ध शहर।

[1221] मैक्सिमियिन गैलेरियस, सम्राट डायोक्लेटियिन (284–305) के दामाद और सह-शासक, और बाद में रोमन साम्राज्य के पूर्वी भाग का सम्राट (305–311)।

[1222] शहीद यूफ्रेसिया की मृत्यु वर्ष 303 में हुई।

[1223][1224][1225]कर्कुरा के आर्चबशिप संत आर्सेनयिस[1226] का जन्म फलिस्तीन में धर्मपरायण माता-पिता के यहाँ हुआ था। अपने युवा काल से ही, उन्होंने स्वयं को ईश्वर की सेवा के लिए समर्पित कर दिया और संन्यास का व्रत लिया। एक कठोर तपस्वी जीवन जीते हुए, संत अपनी उच्च शिक्षा के स्तर के लिए भी प्रतिष्ठित थे। परिपक्वता प्राप्त करने पर, उन्हें पुरोहित के रूप में नियुक्त किया गया और, कुछ समय बाद, केर्कीरा के आर्चबशिप के रूप में अभिषिक्त किया गया। आर्चपास्टर के रूप में अपनी भूमिका में, वह अपनी बुद्धि, अपनी शिक्षण क्षमताओं[1227] और अधिकारियों के समक्ष निर्दोषों की ओर से अपनी बार-बार मध्यस्थता के लिए प्रसिद्ध हुए। इस प्रकार, अपनी वृद्धावस्था में ही, वह अपने झुंड की ओर से मध्यस्थता करने के लिए कॉन्स्टेंटिनोपल के लिए रवाना हुए, जो सम्राट कॉन्स्टेंटाइन पोर्फिरोजेनिटस के अन्यायपूर्ण क्रोध से खतरे में था। कॉन्स्टेंटिनोपल से लौटने पर, आर्सेनयिस को कोरिंथ में बीमारी हो गई और उन्होंने शांतिपूर्वक अपनी आत्मा ईश्वर को अर्पित कर दी।

2 फरवरी

20 जनवरी (पुराने कैलेंडर के अनुसार)

हमारे पूजनीय पिता यूथमियस महान् का जीवन

20 जनवरी को स्मरणोत्सव

आदरणीय यूथमियस आर्मेनिया के यूफ्रेटिस नदी के पास स्थित मेलिटिनि शहर के मूल निवासी थे[1228] । उनके माता-पिता, पॉल और डायोनिसिया, दोनों ईसाई, कुलीन वंश के थे और अपने गुणों के लिए प्रसिद्ध थे। कई वर्षों तक वे बांझ और संतानहीन रहे, जिस बात पर वे गहराई से दुखी थे। जब भी वे शहर के पास स्थित संत पॉलीएक्टस शहीद के चर्च में जाते, तो वे हमेशा ईश्वर से अपने वंशावलीहीनता दूर करने की प्रार्थना करते। और इस प्रकार, एक रात जब वे उत्कट प्रार्थना में लगे हुए थे, तो उन्हें एक दैवीय दर्शन हुआ, और उन्होंने सुना:

'हौसला रखो, क्योंकि ईश्वर तुम्हें एक पुत्र देंगे, जिसका नाम क्लेश-शमनकर्ता ([1229]) के नाम पर रखा जाएगा, क्योंकि उसके जन्म के समय ईश्वर अपनी कलीसियाओं को सांत्वना देंगे।'

[1230]इस दर्शन के बाद, डायोनिसिया के गर्भ में एक पुत्र हुआ, जिसे उसके माता-पिता ने जन्म से पहले ही ईश्वर को समर्पित करने का व्रत लिया था। और इस प्रकार उन्हें एक पुत्र हुआ, और उन्होंने उसका नाम यूथमियस रखा। उस समय, पूर्व में वैलेंस और पश्चिम में उनके भतीजे ग्राटियन[1231] का शासन था। मसीह के चर्चों के लिए, जो एरियनों से

[1223] बजांतियम के सम्राट, कॉन्स्टेंटाइन पोर्फियोगेनिटस, ने 780 से 797 तक शासन किया।

[1224] कोरिंथ – अकेया का सबसे प्राचीन, प्रसिद्ध और समृद्ध शहर; यह आयोनियन और एजियन सागरों के बीच, कोरिंथ की खाड़ी के दक्षिण-पूर्वी कोने पर एक सुंदर और उपजाऊ मैदान में स्थित था। आज, प्राचीन कोरिंथ के खंडहर कोरोंटो के नाम से जाने जाने वाले वर्तमान कोरिंथ शहर के पास स्थित हैं।

[1225] संत आर्सेनयिस की मृत्यु 8वीं शताब्दी के अंत में हुई।

[1226] केर्कीरा द्वीप – अब कोर्फू – उत्तरी ग्रीस के पश्चिमी तट के पास आयोनियन सागर में स्थित है। – संत आर्सेनयिस कोर्फू द्वीप के पहले आर्चबशिप थे।

[1227] कॉन्स्टेंटिनोपल के पैट्रिआर्क, फोटियस, जो अपने ज्ञान के लिए प्रसिद्ध थे और जिन्होंने संत अर्सेनियस के साथ पत्राचार किया था, अपने पत्रों में उनके प्रति गहरी प्रशंसा व्यक्त करते हैं, एक ऐसे व्यक्ति के रूप में जिनका आध्यात्मिक जीवन उच्च था और जो ग्रीक साहित्य में भी पारंगत थे। – संत आर्सेनयिस एक लेखक के रूप में भी जाने जाते हैं: उन्होंने रोगियों के अभिषेक के लिए एक कैनन, प्रेरित एंड्रयू के लिए एक प्रशंसा-गीत, और महान शहीद बारबरा की शहादत का एक वृत्तांत रचा।

[1228] आर्मेनिया एक पहाड़ी देश है, जो कॉकेसस के दक्षिण और एशिया माइनर के पूर्व में स्थित है; यह दो भागों में विभाजित था: ग्रेटर या पूर्वी आर्मेनिया, और लेसर या पश्चिमी आर्मेनिया। मेलिटिनि शहर, जिसे अब मलातया के नाम से जाना जाता है, लेसर आर्मेनिया के दक्षिणी भाग में, यूफ्रेटिस की एक सहायक नदी पर स्थित था।

[1229] यूफमियिस – ग्रीक क्रिया से जिसका अर्थ है 'खुशी मनाना' या 'सांत्वना लेना' – का अनुवाद 'सज्जन' या 'प्रसन्नचित्त' होता है।

[1230] सम्राट थियोडोसियस महान ने 379 से 395 तक शासन किया।

[1231] वेलेन्स ने 364 से 378 तक और ग्राटियन ने 375 से 383 तक शासन किया।

परेशान थे, अभी भी कोई शांति या सुकून नहीं था। कांस्टेनटाइन के पुत्र कांस्टैंटियस के शासनकाल से लेकर वैलेंस की मृत्यु तक, ऑर्थोडॉक्सों ने लगभग चालीस वर्षों तक उत्पीड़न और हिंसा सहन की। लेकिन जब संत यूथिमियस का जन्म हुआ, तो पवित्र चर्चों के सभी दुख आराम और आनंद में बदल गए: यूथिमियस के जन्म को पाँच महीने भी नहीं हुए थे कि थ्रेस को तबाह कर रहे बर्बर लोगों के हाथों अधर्मी सम्राट वैलेंस पराजित हो गया; भागते समय, उसने एड्रियानोपल के पास एक गाँव[1232] के एक खलिहान में शरण ली, जहाँ वह जलकर मर गया। इस प्रकार, इस दुष्ट व्यक्ति का एक क्षणिक आग से भयानक अंत हुआ, जो उसके लिए, मानो, अनंतकाल की आग का एक पूर्वाभास था। इस दुष्ट राजा के पतन के साथ ही, संपूर्ण एरियन शक्ति भी नष्ट हो गई, और जल्द ही, थियोडोसियस महान के सिंहासनारोहण के साथ, पवित्र चर्चों में शांति और सुकून लौट आया।

कुछ ही समय बाद, यूथिमियस के पिता का निधन हो गया। डायोनिसिया ने, अपनी प्रतिज्ञा का पालन करते हुए, युवा यूथिमियस को अपने भाई, प्रीसेबटर यूडोक्सियस के पास लाई, जो मेलिटिनि की चर्च के बिशप ओट्रियास के आध्यात्मिक पिता थे[1233] , और अपने पुत्र को ईश्वर को समर्पित कर दिया, ठीक वैसे ही जैसे हन्ना ने एक बार सैमुअल को समर्पित किया था (1 शमूएल 1)। यूडॉक्सियस ने, बदले में, उस लड़के को बिशप के पास लाया और उसे उसके बारे में सब कुछ बताया: कि कैसे, एक दैवीय दर्शन और एक आवाज के बाद, उनकी बाँझ माता-पिता को उनकी इस हेतु की गई प्रार्थनाओं के कारण वह मिला था, और यह कि को उसके जन्म से पहले ही प्रभु की सेवा के लिए समर्पित कर दिया गया था। बिशप ओट्रिओस ने यह सुनकर और जो कुछ उन्हें बताया गया था उससे चकित होकर, कहा:

'निश्चय ही, ईश्वर की आत्मा इस बालक पर विराजमान है।'

लड़के को अपने बेटे के रूप में अपनी देखभाल में लेने के बाद, ओट्रियोस ने उसकी शिक्षा सुनिश्चित करने के लिए बहुत सावधानी बरती, और यह कार्य पादरी वर्ग के दो शिक्षकों, अक्काकियोस और सिनोडियोस को सौंप दिया, जो विवेक और सद्गुण वाले पुरुष थे, जिनमें से प्रत्येक बाद में, उचित समय पर, मेलिटिनि की उसी चर्च का बिशप बना। जब धन्य यूथिमियस ने पवित्र धर्मग्रंथों का गहन अध्ययन कर लिया, तो बिशप ने उन्हें रीडर के रूप में नियुक्त किया, जबकि उनकी माता, धन्य डायोनिसिया, जिन्होंने अटूट उत्साह के साथ ईश्वर की सेवा की थी, को उनके चर्च की एक डीकोनेस के रूप में अभिषिक्त किया गया। इसके बाद, संत यूथिमियस—जो अपने युवा काल से ही अपने सदाचारी जीवन और निर्मल कुँवारीपन के लिए जाने जाते थे, सभी निम्न चर्च पदों से होकर गुज़र चुके थे और पहले से ही एक भिक्षु थे—को एक पुरोहित (presbyter) के रूप में अभिषिक्त किया गया। साथ ही, यद्यपि वह कोई पदवी नहीं रखना चाहता था, उसे उस शहर में स्थित मठों की देखभाल का कार्य सौंपा गया, क्योंकि बिचपन से ही वह मठवास और मौन जीवन से बहुत प्रेम करता था। इसी कारण, पूजनीय यूथिमियस अक्सर शहर से कुछ दूरी पर स्थित पवित्र शहीद पॉलिएक्टस के मठ में ठहरते थे। पवित्र लेंट के दिनों में, वे एक एकांत पहाड़ पर चले जाते थे और वहाँ तपस्या और परिश्रम के बीच मौन में डूब जाते थे, जो केवल ईश्वर को ही ज्ञात थे। हालांकि यह महसूस करते हुए कि मठाध्यक्ष के कर्तव्य और मठों के प्रशासन ने उनकी मौन साधना में बाधा डाली, और साथ ही मानवीय महिमा से भी दूर रहते हुए, परम पूज्य ने बीस वर्ष की आयु में गुप्त रूप से यरूशलेम के लिए प्रस्थान किया[1234] । पवित्र क्रूस, पवित्र सेपुल्चर और अन्य पवित्र स्थानों को नमन करने के बाद, उन्होंने आसपास के रेगिस्तान में रहने वाले पवित्र पिताओं से भेंट की और, प्रत्येक के जीवन और सद्गुणों की परीक्षा करने के बाद, उनका अनुकरण करने का प्रयास किया। फिर वह पवित्र नगर से छह पोप्रीश्च की दूरी पर स्थित फारान मठ[1235] आए, और, मठ के बाहर एक सुनसान जगह पर एक खाली कोठरी पाकर, उन्होंने वहाँ निवास कर लिया, उनके पास बिल्कुल कुछ भी नहीं था; टोकरी बुनाई का कौशल सीखने के बाद, उन्होंने अपने हाथों की मेहनत से अपनी आजीविका चलाई। और इस प्रकार, सभी सांसारिक चिंताओं से मुक्त होकर, उनकी एक ही चिंता थी - ईश्वर को कैसे प्रसन्न किया जाए।

[1232] थ्रेस बाल्कन प्रायद्वीप के उत्तर-पूर्वी भाग में स्थित, बीजान्टिन साम्राज्य का एक प्रांत था। एड्रियिनोपल गेब्रे (मारित्सा) नदी पर एक शहर था; आज यह एक प्रमुख और घनी आबादी वाला शहर है, जो उसी नाम के तुर्की विलियत (प्रांत) की राजधानी है।

[1233] ओट्रिओस, मेलिटिनि के बिशप, ने 381 में कॉन्स्टेंटिनोपल के दूसरे सार्वभौमिक परिषद में खुद को प्रतिष्ठित किया; बाद में उन्हें संत घोषित किया गया। पूर्व में उनका पर्व 17 अप्रैल को मनाया जाता है।

[1234] उस समय सेंट यूथिमियस की आयु लगभग 29 वर्ष थी। यह 406 में हुआ था।

[1235] फारान मठ, या फारा, की स्थापना चौथी शताब्दी के पहले भाग में आदरणीय चारिटोन (जिनका स्मरणोत्सव 28 सितंबर को मनाया जाता है) द्वारा यरूशलेम से छह मिलियारिया (8 वर्स्ट से थोड़ा अधिक) पूर्व, यरीहो के रास्ते पर की गई थी।

संत यूथमियिस के एक पड़ोसी और मत्रि थे, परम पूजनीय थयिोक्टस्टिस, जनिके साथ वे इतने आध्यात्मकि प्रेम से जुड़े थे कि दोनों की एक ही इच्छा, ईश्वर के प्रति एक ही आकांक्षा, और एक ही साझा प्रयास था। वे अपने वचिार एक-दूसरे के साथ साझा करते थे, और उनमें से प्रत्येक, मानो, दूसरे की आत्मा के भीतर समाया हुआ था: एक जो चाहता था, दूसरा उसके लिए प्रयास करता था, जैसे कि दो शरीरों में एक ही आत्मा हो। प्रत्येक वर्ष, एपफिनी के पर्व के आठवें दनि के बाद, यूथमियिस और थयिोक्टस्टिस कुटलियिन रेगस्तिान[1236] में चले जाते थे और पाम संडे[1237] तक वहाँ रहते थे, उपवास और परश्रिम से अपने शरीर को थकाते हुए, जबकि अपने आत्मा को आध्यात्मकि भोजन से पोषति करते थे। फरि वे, सद्गुणों की प्रचुरता के साथ, प्रत्येक अपनी-अपनी कोठरी में लौट आते थे, जन्हिें वे जी उठे मसीह को अर्पति करते थे। फारान मठ में इस प्रकार रहते हुए, आदरणीय यूथमियिस ने एक बार, धन्य थयिोक्टस्टि के साथ, कुटलियिा रेगस्तिान[1238] के लिए सामान्य समय पर प्रस्थान कयिा। जब वे रेगस्तिान से गुजर रहे थे, तो वे एक चट्टान पर पहुँचे, जसिके पास एक गहरी खाई थी, जसिके तल पर एक धारा बह रही थी; धारा के उत्तर में, चट्टान पर, एक गुफा थी जसिमें जंगली जानवर रहते थे, जसिमें चट्टान पर चढ़कर बड़ी मुश्कलि से ही प्रवेश कयिा जा सकता था। प्रसन्न होकर, मानो यह स्थान स्वयं ईश्वर द्वारा उनके लिए तैयार कयिा गया हो, वे वहाँ बस गए, चारों ओर उगने वाली घासों पर जीवन यापन करने लगे, और कभी मठ वापस नहीं लौटे।

कुछ समय बीत जाने के बाद, जब ईश्वर ने वश्विासयिों के लाभ के लिए पूजनीय पादरयिों को प्रकट करने की कृपा की, तो उनकी दव्यि व्यवस्था से ऐसा हुआ कि लाजरस के कुछ चरवाहों ने[1239] अपनी भेड़ों के झुंड को इस धारा तक लाया। और जब उन्होंने पहाड़ और गुफा की ओर देखा, तो उन्होंने अचानक दो पुरुषों को चट्टान पर चलते हुए देखा, और डरकर वे मुड़कर भाग गए। हालाँकि, संतों ने उन्हें एक कोमल स्वर में पुकारा:

'भैया, डरो मत, डरो मत: क्योंकि हम भी मनुष्य ही हैं, परन्तु हम अपने पापों के कारण इस स्थान में रहते हैं।'

तब चरवाहों ने हम्मित करके उनके पास आए और गुफा में प्रवेश कयिा; वहाँ सांसारकि जीवन के लिए आवश्यक कुछ भी न पाकर, वे चकति हो गए और फरि अपने घर लौट आए, और अपने परविारों को पूजनीय पतिाओं के बारे में बताया। इसके बाद, लाजरस के नविासयिों ने पूजनीय पतिाओं यूथमियिस और थयिोक्टस्टिस से मलिने आना शुरू कर दयिा, और उनके लिए उनकी दैनकि आवश्यकताओं की चीजें लाने लगे। इस बीच, फारान के संतों ने, यह देखकर कि पूज्य लौट नहीं रहे थे, उन्हें पूरे रेगस्तिान में लंबे समय तक खोजा जब तक उन्हें पता नहीं चल गया कि वे कहाँ हैं; और, उन्हें खोज लेने के बाद, वे उनसे अक्सर मलिने आने लगे। बाद में, कुछ लोग उनके साथ बसना चाहते थे; सम्माननीय यूथमियिस और थयिोकटस्टिस के पास आने वाले और मठ में वापस न लौटने वाले पहले व्यक्ति मारनिस और ल्यूक थे[1240] । फरि अन्य लोग उनके पास आने लगे, क्योंकि थोड़े ही समय में सम्माननीय यूथमियिस की ख्याति दूर-दूर तक फैल गई, और कई लोग उन्हें देखने तथा उनके मार्गदर्शन में तपस्या करने के लिए आए। हालाँकि, आने वालों का स्वागत करने पर, उन्होंने उन्हें अपने मत्रि, धन्य थयिोक्टस्टिस की देखभाल में सौंप दयिा, क्योंकि वह स्वयं सभी से बढ़कर एकांत को पसंद करते थे। जल्द ही, मरुभूमि में एक मठ समुदाय की स्थापना हुई[1241] , और गुफा को एक चर्च में बदल दयिा गया। आदरणीय यूथमियिस सभी के लिए एक आध्यात्मकि चकित्सिक थे: प्रत्येक भाई अपने अंतर्मन को उनके सामने खोलकर अपने वचिारों का इकरार करता था; और वे, महान आध्यात्मकि अनुभव के धनी, प्रत्येक को लाभान्वति करते हुए मार्गदर्शन देते थे, उन्हें नर्दिेशति और अनुशासति करते थे, तथा एक पतिृसुलभ तरीके से उन्हें तरिस्कार और सांत्वना देते थे। सभी भाइयों से आदरणीय यूथमियिस कहते थे:

[1236] कुटलिी मरुभूमि यरूशलेम के उत्तर-पूर्व में, यरीहो से बहुत दूर नहीं, मृत सागर की ओर स्थति, यरूशलेम से 12 वर्स्ट पूर्व में पड़े संत सव्वास द सैंक्चुअड के मठ के नीचे स्थति थी।

[1237] यानी, परम पूज्य यूथमियिस और थयिोक्टस्टिस प्रभु के एपफिनी के पर्व के बाद रेगस्तिान में चले गए और वहाँ प्रभु के यरूशलेम में प्रवेश के पर्व, या पाम संडे (पाम वीक, जसिे वै भी कहा जाता है) तक रहे।

[1238] यह वर्ष 411 में हुआ था।

[1239] आज यह कुटल्िी रेगस्तिान से दूर नहीं, एल-अज़ारयिा नामक गाँव है।

[1240] मारनि और ल्यूक परम पूज्य यूथमियिस के प्रसद्धि शष्यि थे। उससे मठवासी प्रशक्षिण प्राप्त करने के बाद, उन्होंने खुद को तपस्वी के रूप में साबति कयिा जो एकान्तवासी का जीवन जीते थे; कुछ वर्षों बाद, उन्होंने मेटोपा गाँव (अब खरिबेत जुब्ब अल-रूम, यरूशलेम से संत सावस द सैंक्चुअड की लव्रा के रास्ते पर) के पास के क्षेत्र में अपना नाम बनाया और मठों की स्थापना की; उन्होंने आदरणीय थयिोडोसयिस महान को मठवासी पूर्णता की राह दखिाई; वह इस मरुभूमि के कनिोवयिार्ख और कनिोवयिम के आर्चमिांड्राइट थे।

[1241] 'कनिोवयिा' एक सामुदायकि आवास या सामुदायकि मठ है।

'हे भाइयो! उसी उद्देश्य के लिए प्रयत्न करो जिसके लिए तुमने संसार को त्यागा है, और अपने उद्धार की उपेक्षा न करो, बल्कि प्रभु के वचन के अनुसार हर समय जागते रहो और *प्रार्थना करो: "जागते रहो और प्रार्थना करो, कहीं ऐसा न हो कि तुम परीक्षा में पड़ो"* (मत्ती 26:41); सबसे बढ़कर, यह जानो कि जो संसार का त्याग करते हैं और मठवासी जीवन जीना चाहते हैं, उनकी अपनी कोई इच्छा नहीं होनी चाहिए, बल्कि उन्हें हमेशा आज्ञाकारिता और नम्रता का पालन करना चाहिए, और मृत्यु तथा न्याय के घंटे की याद को मन में रखना चाहिए, शाश्वत अग्नि से डरते हुए और स्वर्ग के राज्य की महिमा की कामना करते हुए।

उन्होंने यह भी कहा कि संन्यासियों को, ईश्वर के आंतरिक चिंतन में लगे हुए, शारीरिक रूप से परिश्रम करना चाहिए, विशेष रूप से युवाओं को, शरीर को वश में रखने के उद्देश्य से, ताकि शरीर आत्मा के अधीन हो जाए; उन्हें प्रेरित पौलुस का अनुकरण करना चाहिए, जो दिन-रात परिश्रम करते थे, न केवल आलस्य से बचते थे बल्कि स्वयं और दूसरों दोनों की सेवा करते थे, जैसा कि वे स्वयं कहते हैं: *'इन हाथों ने मेरी और मेरे साथियों की ज़रूरतों को पूरा किया है* (प्रेरितों के काम 20:34)। क्योंकि यदि गृहस्थ अपनी पत्नियों और बच्चों की ज़रूरतों को पूरा करने के लिए इतनी मेहनत करते और कष्ट सहते हैं, और उसी मेहनत से परमेश्वर को बलिदान चढ़ाते हैं, दान-पुण्य करते हैं और कर देते हैं: तो क्या हमें, और भी अधिक परिश्रम नहीं करना चाहिए, अपनी आवश्यक शारीरिक जरूरतों को पूरा करने के लिए, ताकि हम आलस्य से बच सकें और दूसरों की मेहनत पर न जिएँ, प्रेरित की आज्ञा के अनुसार (2 थिस्स. 3:10)।

इस प्रकार हमारे पूजनीय पिता यूथिमियस ने भाइयों को उपदेश देते हुए, उन्हें परिश्रमी होने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने उन्हें आज्ञा दी कि वे न तो चर्च में – दिव्य अनुष्ठान के दौरान – और न ही भोजनशाला में – जब भाइयों का भोजन चल रहा हो – बोलें, बल्कि हर जगह मौन का पालन करें और परमेश्वर के वचन को सुनें। जब वे समुदाय के अन्य सदस्यों की तुलना में अधिक कठोरता से उपवास करने की इच्छा रखने वाले किसी भाई, विशेषकर युवाओं को देखते थे, तो वे इसकी अनुमोदन नहीं करते थे और उस भाई को अपनी इच्छा के अनुसार चलने की अनुमति नहीं देते थे, बल्कि वे उससे सभी के लिए सामान्य उपवास और भोजन के समय का पालन करने की अपेक्षा करते थे; आदरणीय भ्राता ने भाइयों को मेज पर संयम से खाने का निर्देश दिया, अपने पेट को अधिक न भरकर, अपनी आवश्यकता से कम लेना, ताकि इस प्रकार वे अपने उपवास को छिपा सकें, इसे खुले तौर पर घोषित न करें, बल्कि गुप्त रूप से अपने बढ़ते हुए जुनून के खिलाफ खुद को तैयार कर सकें। आदरणीय यूथिमियस से प्राप्त इस प्रकार के निर्देशों और शिक्षाओं से प्रबुद्ध होकर, भाइयों ने अपने तपस्या के प्रयासों में जी-तोड़ मेहनत की और अपने बुलावे के योग्य फल दिया।

अब हमें अस्पेवेट और टेरेवोन, सारसेन सरदारों, और इस बात के बारे में बात करनी चाहिए कि कैसे यूथिमियस द्वारा उनका धर्मांतरण हुआ।

फ़ारस में अस्पेवेट नाम का एक ग्रीक रहता था, जिसके एक छोटे बेटे, टेरेवोन, पर एक राक्षस सवार था, जिसके कारण उसका पूरा दाहिना हिस्सा, सिर से पैर तक, सूख गया था; और कोई भी उसे ठीक नहीं कर सका, भले ही कई सबसे अनुभवी चिकित्सकों को उसके पास लाया गया। बाद में, एस्पेवेट अपने बीमार बेटे के साथ अरब चले गए। यह इस प्रकार हुआ। उस समय फारस में मगियों द्वारा ईसाइयों के उत्पीड़न की शुरुआत में[1242] , इज़देगर्द के शासन के अंत के करीब[1243] , सभी सैन्य कमांडरों को—जिनमें एस्पेवेट भी शामिल थे—सभी सड़कों की सावधानीपूर्वक रखवाली करने का आदेश दिया गया था, ताकि कोई भी ईसाई फारस से यूनानियों के पास भाग न सके। उस समय, अस्पीवेट ने निर्दोष ईसाइयों के प्रति इतनी बड़ी द्वेषपूर्णता देखकर उन पर दया की और न केवल उन्हें फारसी क्षेत्र से भागने से नहीं रोका, बल्कि स्वयं, जहाँ तक संभव था, उनकी मदद की, उन्हें खतरे और मृत्यु से बचाया। परिणामस्वरूप, उसे अविश्वासियों ने राजा इज़्देगर्द के समक्ष बदनाम किया। यातनाओं के डर से, अस्पेवेट ने अपने बेटे, अपनी संपत्ति और अपने पूरे परिवार को लेकर, फारस से भागकर जल्दी से जल्दी यूनानी साम्राज्य में शरण ले ली। ग्रीक राजा ने, उसे स्वीकार कर, अरब में ग्रीक शासन के अधीन रहने वाले सारासेंसियों के नेतृत्व का जिम्मा सौंप दिया। जब अस्पीवेट वहाँ बस गया, तो उसके बेटे टेरेवॉन ने सपने में पूजनीय यूथिमियस को देखा, जिन्होंने उसे ठीक होने का वादा किया यदि वह मसीह की ओर मुड़ जाए। जागने पर, तेरेवोन

[1242] फ़ारस में मगी पुरोहित वर्ग के सदस्य थे, जो मीदियों की एक विशेष वंश परंपरा से संबंधित थे। सभी विद्वतापूर्ण शिक्षा उनके हाथों में केंद्रित थी; वे धार्मिक अनुष्ठानों की अध्यक्षता करते थे और राज्य के जीवन में एक प्रभावशाली भूमिका निभाते थे। उन्हें ज्योतिष (आकाशगंगीय पिंडों की गति से किसी व्यक्ति के भाग्य का अनुमान लगाना), भविष्यवाणी और जादू-टोने की कला का श्रेय भी दिया जाता है, और यह और भी अधिक सच था क्योंकि फारसियों का मूर्तिपूजक धर्म विभिन्न प्रकार की अंधकारमय अंधविश्वासों के साथ गुंथा हुआ था।

[1243] फ़ारसी राजा इज़्देगर्द प्रथम ने 399 से 420 तक शासन किया। ईसाइयों के खिलाफ फ़ारसी मगियों द्वारा भड़काया गया विद्रोह 419 में हुआ।

ने अपने पिता को अपने सपने के बारे में बताया; उसके पिता ने तुरंत उस लड़के को लेकर, सेवकों की भीड़ के साथ, आदरणीय यूथमियिस और थियोक्टस्टिस के मठ में गए। मठ के समुदाय ने सरैसेनों की भीड़ को देखकर डर गए। लेकिन धन्य थियोक्टस्टिस, सरैसेनों से मिलने के लिए बाहर आकर, उनसे पूछा:

'तुम यहाँ क्या ढूंढ रहे हो?'

उन्होंने उत्तर दिया:

'हम ईश्वर के सेवक, यूथमियस को ढूंढ रहे हैं।'

थियोक्टस्टिस ने उनसे कहा:

'जिसकी तुम तलाश कर रहे हो वह यहीं रहता है, लेकिन वह शनिवार तक किसी से नहीं मिलता, क्योंकि वह मौन व्रत का पालन कर रहा है।'

हालाँकि, अस्पेवेट ने थियोक्टस्टि का हाथ पकड़ा, अपने बीमार बेटे की ओर इशारा किया और उससे अपनी कहानी बताने को कहा।

लड़का बोलने लगा:

एक साल पहले मुझे फ़ारस में यह अल्सर हुआ था और चिकित्सकों के इलाज तथा जादूगरों के जादू-टोने से मुझे कोई फ़ायदा नहीं हुआ, बल्कि मैं और भी बीमार हो गया। अरब की इस भूमि पर आकर और मुझे बिल्कुल भी राहत न मिलते देख, एक रात, अपने बिस्तर पर लेटे हुए, मैंने सोचा कि क्या मैं कभी ठीक हो पाऊँगा, और अपने आप से कहा: 'हे तेरेवोन! तो फिर, हेलेनों और फारसियों की चिकित्सा-कला कहाँ है? भविष्यवाणियाँ और जादू-टोने कहाँ हैं? हमारी मूर्तियों की शक्ति कहाँ है, और वे क्या भला करते हैं? ज्योतिषियों के अनुमान, हमारी शिक्षाओं की कथाएँ, और हमारे देवताओं के व्यर्थ आह्वान कहाँ हैं? सचमुच, यह सब कुछ उपहास के योग्य भ्रम के सिवा और कुछ नहीं है, क्योंकि एक सच्चे ईश्वर की इच्छा के बिना यह किसी की भी मदद नहीं करता।' इस प्रकार सोचकर, मैं प्रार्थना करने लगा और आँसुओं के साथ प्रार्थना करते हुए कहा: 'हे महान और भयानक ईश्वर, जिसने स्वर्ग और पृथ्वी की रचना की, यदि आप मुझ पर दया करें और मुझे इस भयानक बीमारी से मुक्ति दें, तो मैं एक ईसाई बन जाऊँगा, और हेलेनिक धर्म के सभी अधर्म और त्रुटियों को त्याग दूँगा।' इस प्रकार प्रार्थना करने के बाद, मैं सो गया और एक सपने में मैंने सफेद होते बालों और लंबी दाढ़ी वाले एक साधु को देखा; उसने मुझसे कहा, 'तुम्हें क्या हुआ है?' जब मैंने उसे अपनी बीमारी दिखाई, तो उसने मुझसे कहा, 'क्या तुम वह पूरा करोगे जो तुमने ईश्वर से वादा किया है?' मैंने उत्तर दिया: 'मैं करूँगा, यदि मैं इस बीमारी से मुक्त हो जाऊँ।' तब वृद्ध ने मुझसे कहा: 'मैं यूथमियस हूँ, जो यरूशलेम से दस पोपरीशा दूर, जेरिको जाने वाले रास्ते के पास, पूर्वी रेगिस्तान में रहता हूँ। तो, यदि तुम चंगा होना चाहते हो, तो मेरे पास आओ, और ईश्वर तुम्हें मेरे द्वारा चंगा कर देगा।' मैंने अपने पिता को वह सब कुछ बताया जो मैंने अपने सपने में देखा और सुना था - और इस प्रकार हम यहाँ उस व्यक्ति के आदेश पर आए हैं जो मुझे दर्शन में दिखाई दिया था। हम आपसे विनती करते हैं, हमें वह चिकित्सक दिखाएँ, जिसे ईश्वर ने भेजा है।

धन्य थियोक्टस्टि गए और उन्होंने महान यूथमियस को वह सब कुछ बताया जो उन्होंने सुना था। उन्होंने यह अनुचित समझा कि ईश्वर की आज्ञा का विरोध किया जाए, अतः मौन तोड़ा और रोगी के पास जाकर उसके लिए ईश्वर से प्रार्थना की तथा उस पर क्रॉस का चिह्न बनाया – और तुरंत तेरेवोन ठीक हो गया, मानो वह कभी बीमार ही न रहा हो। तेरेवोन के अचानक ठीक हो जाने से चकित होकर, बर्बर लोग मसीह में विश्वास करने लगे, और उन सब ने जमीन पर लोटकर बपतिस्मा देने की विनती की। चमत्कार करने वाले यूथमियस ने, यह देखकर कि उन्होंने पूरे दिल से ईश्वर में विश्वास कर लिया था, उन्हें धर्मोपदेश दिया और सबसे पहले अस्पेवेट का बपतिस्मा दिया, जिसका नाम उन्होंने पतरस रखा[1244] , उसके बाद अस्पेवेट की पत्नी के भाई मरीना का, फिर टेरेवोन का, और साथ आए सभी सारासेनों का भी बपतिस्मा दिया। चालीस दिन तक उन्हें अपने पास रखने के बाद, पूजनीय पिता ने उन्हें परमेश्वर के वचन का उपदेश दिया और, विश्वास में उन्हें दृढ़ करने के बाद, ने उन्हें उनके स्वदेश वापस भेज दिया। हालाँकि, मरीना, जो तेरेवोन का चाचा था, मठ नहीं छोड़ गया, बल्कि वहाँ मठवासी संन्यास की शपथ ले ली और अपनी मृत्यु तक वहाँ ही रहा; उन्होंने ईश्वर को अत्यधिक प्रसन्न किया और बाद में पूजनीय थियोक्टस्टि के बाद वे उसी मठ के मठाधीश बने, जैसा कि आगे स्पष्ट

[1244] इसके बाद, पीटर, जो अस्पेवेटा नाम से जाने जाते थे, सारासिनिया के पहले बिशप बने और 431 में एफ़िसुस की परिषद (तीसरी सार्वभौमिक परिषद) में भाग लिया।

होगा। जहाँ तक उनकी वशिाल संपत्ति का सवाल है, जसिे उन्होंने मठ को दान कर दयिा था, उसका एक हस्सिा गरीबों में बाँट दयिा गया और एक हस्सिा मठ के नरि्माण और वस्तिार पर खर्च कयिा गया।

इस बीच, जैसे ही तेरेवोन के चमत्कारी उपचार की खबर दूर-दूर तक फैल गई, बीमारों की भीड़ हर तरफ से धन्य यूथमिीयस के पास आने लगी, जो बनिा कसिी शुल्क के इलाज करते थे, और सभी शीघ्र ही ठीक होकर स्वस्थ होकर लौट गए।

परणिामस्वरूप, संत का नाम न केवल फलिस्तिीन में बल्कि आसपास के क्षेत्रों में भी प्रसद्धि हो गया। हालाँकि, पूज्य पति ने जब देखा कि उनकी मौन साधना भंग हो रही है, तो वे इस बात से दुखी और वलिाप करने लगे कि इतने सारे लोग उनकी प्रशंसा करने आ रहे थे; अपनी पूर्व मौन साधना को याद करते हुए, उन्होंने गुप्त रूप से 'Ruwa[1245] ' नामक मरुभूमि में जाने का संकल्प लयिा। यह बात जानकर, धन्य थयिोक्टस्टि ने भाइयों को सूचति कयिा। और इस प्रकार, एकत्रति होकर, वे सभी आए और पूजनीय यूथमिीयस के चरणों में गरि पड़े, आँसुओं के साथ उनसे वनिती करने लगे कि उन्हें नराश्रति न छोड़ें। वे, उन्हें सांत्वना देना चाहकर, पहले तो न जाने का वादा कयिा, लेकनि कुछ दनि बीत जाने के बाद, नरिंतर मौन में रहने की इच्छा से प्रेरति होकर और अब और अधकि सांसारकि गपशप को सहन न कर पाने के कारण, वह रात में चुपके से मठ से नकिल गया, अपने साथ एकमात्र शष्यि डोमेटयिन को ले गया, जो एक सदाचारी व्यक्ति था और जो रेवरेंड फादर की तरह मेलटिनि का मूल नविासी था, और रुबा के लिए रवाना हो गया। मृत सागर के पास दक्षणिी रेगस्तिान से यात्रा करते हुए, वह मर्दा[1246] नामक एक ऊँचे पहाड़ पर चढ़ा, जो अन्य पहाड़ों से अलग था, और वहाँ पानी वाला एक कुआँ और एक जर्जर झोपड़ी पाकर, उसने उसे फरि से बनाया, वहाँ बस गया और कुछ समय तक रेगस्तिानी जड़ी-बूटयिों पर जीवति रहा। उसके बाद रेवरेंड ज़ीफ़ रेगस्तिान गए, जो अरस्टिोवुल्गाडी गाँव के पास स्थति है[1247] , वहाँ की उस गुफा को देखने की इच्छा से जहाँ दाऊद ने एक बार सौल से भागते समय शरण ली थी। उस स्थान को देखने पर, रेवरेंड यूथमिीयस ने वहाँ एक मठ की स्थापना की।

मठ बनाने का कारण इस प्रकार था। अरस्तिोवुलटाडी गाँव के मुखयिा के बेटे पर एक अशुद्ध आत्मा सवार थी और उसने एक चीख के साथ, ज़ोर से यूथमिीयस का नाम पुकारा, क्योंकि ईश्वर ने उसे अदृश्य रूप से ऐसा करने की आज्ञा दी थी। लड़के के पति और रश्तिेदारों ने दूर-दूर तक खोज की, और रास्ते में मलि हर कसिी से यूथमिीयस के बारे में पूछा—कि वह कौन था और उसे कहाँ मलि सकता है। जब उन्हें पता चला कि वह कापरवरीख[1248] और अरस्टिोवुल्टाडा के बीच स्थति दाऊद की गुफा में ठहरा हुआ है, तो पीड़ति लड़के के पति अपने बेटे को उसके पास ले आए। जैसे ही लड़के ने संत को देखा, राक्षस ने तुरंत उसे जमीन पर फेंक दयिा और उसे छोड़ दयिा। जब चमत्कार की खबर फैली, तो आसपास के कई गाँवों के लोग संत के पास आए और उनके लिए एक मठ बनाया। संतों का एक समुदाय उनके चारों ओर इकट्ठा हो गया, और ईश्वर ने उन्हें भोजन प्रदान कयिा। वहाँ, संत ने मनीकयि संप्रदाय से संबंधति कई लोगों को ऑर्थोडॉक्सी में परविर्तति कयिा, और उन्हें संप्रदाय-प्रवर्तक मनीस की नदिा करने के लिए मनाया। बाद में, आने वाले आगंतुकों की बड़ी संख्या से परेशान होकर, उन्होंने अपने शष्यि डोमेटयिन से कहा:

'चलो, मेरे पुत्र, हम सम्माननीय थयिोक्टस्टि और भाइयों से मलिने चलते हैं।'

और इस प्रकार वे चल पड़े। जैसे ही वे मठ के पास पहुँचे, आदरणीय यूथमिीयस को पहाड़ पर एक ऐसी जगह पसंद आई, और उसी पर बाद में उनका मठ बनाया गया: वह जगह समतल, एकांत और हवा स्वास्थ्यवर्धक थी। और वह वहाँ एक छोटी सी गुफा में बस गए, जहाँ, उनके नधिन के बाद, उनके शरीर को बाद में दफनाया गया[1249] । धन्य थयिोक्टस्टि ने, venerable यूथमियिस के आगमन के बारे में जानकर, उनका स्वागत करने के लिए दौड़कर बाहर आए और उनसे वनिती की कि वे भाइयों के साथ मठ में उनके क्वार्टर में आकर रहें। लेकनि यूथमिीयस ने मना कर दयिा और केवल इतना वादा

[1245] रुवा मृत सागर के उत्तर-पश्चमिी तट पर एक मरुभूमि है, जो स्वयं सागर, यरूशलेम जाने वाली वर्तमान सड़क और परम पूजनीय सव्वास द सैंक्चफाइड के मठ के बीच स्थति है।

[1246] मर्दा – जसिे मोरेस के नाम से भी जाना जाता है – मृत सागर के पास एक पहाड़ है।

[1247] ज़ीफ़ मरुभूमि यिरूशलेम के दक्षणि और हेब्रोन के दक्षणि-पूर्व में यहूदी मरुभूमि का एक हस्सिा है। इसके पश्चमि और पूर्व में गुफाएँ हैं, जनिमें से एक ने दाऊद के लिए शौल के पीछा करने से भागते समय छपिने की जगह के रूप में काम कयिा था (1 शमूएल, अध्याय 18 और उसके बाद)। – अरस्तिोवुलयिा – हेब्रोन के पास एक गाँव।

[1248] कपारज़ारचि – अब बेनी-नाइम – हेब्रोन के दक्षणि-पूर्व में, जॉर्डन नदी के कनिारे रेगस्तिान में स्थति एक मठ, जो उससे बहुत दूर नहीं है।

[1249] अब इसे डेर-मुकेलकि के नाम से जाना जाता है। आदरणीय यूथमियिस की लावरा नचिले मठ के दक्षणि में 3,000 कदम (लगभग 4 वर्स्ट) की दूरी पर, यरीहो जाने वाली सड़क के दाईं ओर स्थति थी।

कयिा कि वह हर रविवार चर्च की सेवा में शामलि होगा। एस्पेवेट, जसिे पीटर के नाम से भी जाना जाता है, ने जब यह सुना कि आदरणीय यूथमिीयस अपने नविास पर लौट आए हैं, तो वह बहुत प्रसन्न हुआ और अपनी पत्नयिों और बच्चों सहति बड़ी संख्या में सारासेनों के साथ उनके पास आया, और उनसे अपने लिए उद्धार का वचन सुनाने का अनुरोध कयिा। वरष्ठि ने उन्हें उपदेश देकर अस्पेवेट के साथ आए सभी लोगों को ईसाई धर्म में परविर्तति कर दयिा; उन्हें नचिले मठ में ले जाकर, उन्होंने उन्हें पवत्रि बपतस्मिा द्वारा ज्ञान का प्रकाश दयिा और सात दनिों तक उनके साथ रहे, उन्हें वश्विास में शक्षिति और मजबूत करते हुए। इसके बाद, एकांत की तलाश में, वे अपनी गुफा में लौट आए।

एस्पेवेट पीटर ने, यह देखकर कि साधु के पास कोई कोठरी नहीं थी और वह एक छोटी गुफा में रहते थे, राजमस्त्रियिों को बुलाया और संत के लिए तीन कोठरयिाँ, एक छोटा चर्च और एक बेकरी बनवाई; फरि उन्होंने एक दो-कक्षीय टंकी का नरि्माण कयिा और आदरणीय को आवश्यक सभी चीजें प्रदान कीं, ताकि उन्हें कसिी भी चीज़ की कमी न हो। नव-बपतस्मिा प्राप्त सरासनि अब उस पूजनीय से अलग नहीं होना चाहते थे; उनकी शक्षिाओं से हमेशा पोषति होने की इच्छा रखते हुए, उन्होंने संत से अपने पास रहने की अनुमति देने का अनुरोध कयिा। लेकनि यूथमिीयस इस बात से सहमत नहीं हुए, उन्हें डर था कि उनकी एकांतवास की शांति पूरी तरह से भंग हो जाएगी; इसके बजाय, उन्होंने उन्हें एक अन्य उपयुक्त स्थान पर ले जाकर, अपने लिए एक कोठरी और एक चर्च बनाने का नरि्देश दयिा, और उनके लिए पुरोहतिों और डकिन नयिुक्त कएि। दनि-प्रतदिनि उनकी मंडली बढ़ती गई, क्योंकि कई सारासेन आए और पवत्रि बपतस्मिा ग्रहण कयिा। रेवरेंड फादर अक्सर उनसे मलिने आते थे, और उन्हें परमेश्वर के वचन का उपदेश देते थे। जब उनका बस्ती एक बड़े शहर जैसा हो गया, तो रेवरेंड ने यरूशलेम के पैट्रआिर्क ज्यूवेनाल[1250] से एक अनुरोध कयिा कि वे टेरेवोन के पति पीटर को नव-प्रबुद्ध सरासनों के लिए एक बशिप के रूप में अभषिक्ति करें। और पीटर को बशिप के रूप में अभषिक्ति कयिा गया, जो पवत्रि वश्विास को अपनाने वाले सरासनों की भीड़ की आध्यात्मकि जरूरतों की पूर्ति करते थे।

आदरणीय यूथमिीयस उस स्थान पर साथी भक्षिुओं को नहीं रखना चाहते थे जहाँ वे मौन का अभ्यास करते थे, और इसलिए उन्होंने न तो कोई सामुदायकि मठ (cenobium) और न ही कोई मठ स्थापति कयिा, बल्कि जो लोग उनके पास मुंडन के लिए आते थे, उन्हें आदरणीय थयिोक्टस्टिस के नचिले मठ में भेज देते थे; इसी तरह, यदि कोई उसे उसकी शारीरकि आवश्यकताओं के लिए कुछ भी लाता, तो वह सब कुछ थयिोक्टस्टि्स के मठ में भेज देता। जब ईश्वर ने उस स्थान को कई भक्षिुओं से भरने की ठानी, तो उन्होंने महान यूथमियिस को एक दर्शन में आज्ञा दी कि जो भी मुक्ति की तलाश में उसके पास आए, उन्हें न लौटाए। एक बार, जन्म से तीन भाई, जो कैपाडोसयिा के मूल नविासी थे लेकनि सीरयिा में पले-बढ़े थे—कोस्मास, क्रसिपि्पस और गैब्रयिल—उनके पास आए; वे आध्यात्मकि पूर्णता की अपनी इच्छा में उत्साही थे। लेकनि बड़े भाई उन्हें स्वीकार नहीं करना चाहते थे, आंशकि रूप से इसलिए क्योंकि वे अपने मौन को संजोते थे, आंशकि रूप से इसलिए क्योंकि वे युवा थे, और वशिेष रूप से इसलिए क्योंकि भाइयों में सबसे छोटे, गैब्रयिल, अपनी माँ के गर्भ से ही एक नपुंसक था और बहुत छोटा था, और उसका चेहरा एक महलिा जैसा था। तब, उस रात, आदरणीय संत ने एक दैवीय दर्शन देखा, जसिमें एक आवाज़ ने उनसे कहा:

'इन भाइयों को आश्रय दो, क्योंकि ईश्वर ने उन्हें भेजा है, और अब से मोक्ष की खोज करने वाले कसिी को भी न ठुकराओ।'

तो संत ने उन्हें आश्रय दयिा और उनमें से सबसे बड़े, कोस्मास से कहा:

'देखो, मैं तुम्हें वैसे ही स्वीकार करता हूँ जैसे ईश्वर ने मुझे आज्ञा दी है; अतः मेरी आज्ञा का पालन करो: छोटे भाई को कोठरी से बाहर नकिलने न दो, ताकि अन्य भाई उसे देख न सकें; क्योंकि एक स्त्री का चेहरा मठ में रहना उचति नहीं है, कहीं ऐसा न हो कि शत्रु कसिी के वरिुद्ध कलह उत्पन्न करे।'

तब संत ने उसे आगे होने वाली घटनाओं की भवषि्यवाणी की।

उन्होंने कहा, 'जैसा मुझे लगता है, आप यहाँ लंबे समय तक नहीं रहेंगे: क्योंकि ईश्वर आपको स्कफिोपोलसि की कलीसयिा के बशिपपद की जमि्मेदारी सौंपना चाहते हैं[1251] ।'

यह भवषि्यवाणी बाद में सच साबति हुई।

[1250] यरूशलेम के पैट्रआिर्क, संतों ज्यूवेनाल, जो वधिर्मीयों के वरिुद्ध ऑर्थोडॉक्सी के रक्षक थे, ने 420 से 458 तक पद संभाला।

[1251] सफि़ोपोलसि – यरूशलेम के उत्तर में एक शहर। उस समय, यह एक समृद्ध, घनी आबादी वाला शहर था। अब यह एक बंजर रेगस्तिान के बीचों-बीच एक गरीब गाँव (बेसान) है।

[1252]इसके बाद, पूज्यनीय ने उनके पास आने वाले सभी लोगों का स्वागत करना शुरू कर दिया। इस प्रकार उन्होंने अंफ़ियोकिया के मूल निवासी डोमननिस का स्वागत किया, जो अंफ़ियोकिया के आर्चबिशप जॉन के भतीजे थे[1253] ; उन्होंने मेलट्टिा के तीन अन्य भाइयों को भी स्वीकार किया, जो उस सिनोडियोस के भतीजे थे, जो अकाकियोस के साथ मिलकर यूथमियिस के शिक्षक थे—यानी, स्टीफन, एंड्रयू और गयिस—फिर राइफ के पुरोहित जॉन[1254] , अनातोलियिस और फलासियिस, साथ ही स्किफोपोलिस में सेंट बेसिल द ग्रेट चर्च के पुरोहित, टिबेरियाडा के किरियोन[1255] ; उन सभी को स्वीकार करने के बाद, उन्होंने बिशप पीटर को उनके लिए छोटी-छोटी कोठरियाँ बनाने और चर्च को हर संभव वैभव से सजाने का आदेश दिया। इस प्रकार, उन्होंने फारान के मठ के मॉडल पर एक मठ स्थापित किया। और यरूशलेम के पैट्रिआर्क, जुवेनाल , संत पासारियन[1256] , जो उस समय एक कोरेपिस्कोपस[1257] थे, और इसकियिस[1258] , जो चर्च के एक पुरोहित और शिक्षक थे, के साथ मठ में आए, और मठ की चर्च को समर्पित किया[1259] । उस समय यूथमियिस की आयु पचास-दो वर्ष थी। पैट्रिआर्क ने लावरा के लिए दो डिकन भी नियुक्त किए: डोमेटियिन और डोमनिन; पुरोहित जॉन और किरियिन थे। महान यूथमियिस अपने मठ के अभिषेक पर आत्मा में आनंदित हुए, और विशेष रूप से पैट्रिआर्क, उनकी उत्कृष्टता पासारियिन, और धर्मशास्त्री इसचियिस से मिलने पर, जो दोनों ही प्रतिष्ठित विद्वान थे। लेकिन संत पासारियिन सात महीने से भी कम समय बाद, बहुत वृद्ध आयु प्राप्त करने के बाद, का निधन हो गया।

मठ के अभिषेक के बाद के पहले वर्ष में, जब भ्रातृगण, आदरणीय यूथमियस के साथ, अपनी शारीरिक आवश्यकताओं के संबंध में बहुत अभाव में थे, तो डोमेटियिन[1260] को प्रारंभ में कोषाध्यक्ष नियुक्त किया गया था। एक दिन ऐसा हुआ कि पवित्र नगर से यॉर्डन की ओर यात्रा कर रहे अर्मेनियाई लोगों का एक समूह, दाईं ओर सड़क से उतरकर मठ में आ गया, क्योंकि ईश्वर ने ऐसा ही प्रबंध किया था, ताकि महान पिता का पुण्य और विश्वास और भी अधिक चमक उठे। वे चार सौ से कम नहीं थे। उन्हें देखकर और यह समझकर कि वे भूखे हैं, रेवरेंड फादर ने व्यवस्थापक डोमेटियिन को बुलाया और कहा:

'इन लोगों को कुछ खाने के लिए दो।'

डोमेशियिन ने उत्तर दिया:

'पिताजी! सेलरर[1261] के पास दस लोगों को खिलाने के लिए कुछ भी नहीं है: तो फिर मैं इतनी बड़ी भीड़ के लिए रोटी कहाँ से लाऊँ?'

पवित्र आत्मा से परिपूर्ण संत ने कहा:

– जाओ और जैसा मैं तुम्हें आज्ञा देता हूँ, वैसा ही करो, क्योंकि पवित्र आत्मा कहते हैं कि ये लोग तृप्त होकर खाएँगे, और हमारे पास अतिरिक्त भोजन भी बचेगा।

डोमेटियिन, जब उस कोठरी में गया जहाँ कुछ रोटी रखी थीं, तो वह दरवाज़ा नहीं खोल सका, क्योंकि ईश्वर के आशीर्वाद से कोठरी किनारे तक भर गई थी। उन्होंने कुछ भाइयों को बुलाया, उनकी मदद से दरवाज़ा तोड़ दिया, और रोटी के लोई कोठरी से बाहर निकलने लगे। शराब और तेल के साथ भी यही चमत्कार हुआ, क्योंकि सभी पात्र अचानक किनारे तक भर गए। और वे सभी खाए और तृप्त हुए। तीन पूरे महीने तक वे रोटी की प्रचुरता के कारण दरवाज़ा बाहर अपनी

[1252] अंतियोक – सीरिया की प्राचीन राजधानी, फिलिस्तीन के उत्तर में, ओरोन्टिस नदी के तट पर स्थित है, जो भूमध्य सागर में मिलती है।

[1253] अंतियोक के आर्चबिशप (पितृश्रेष्ठ) जॉन ने 423 से 440 तक यह पद संभाला।

[1254] रैफा – जिसे अब अल-टोर के नाम से जाना जाता है – लाल सागर पर, सिनाई प्रायद्वीप के पूर्वी तट पर एक गाँव है।

[1255] टिबेरियाडा – अब टिबेरियास – फिलिस्तीन के उत्तर में, जेनेसरेथ झील या टिबेरियास झील (जिसे गलील की झील के नाम से भी जाना जाता है) के पश्चिमी तट पर एक शहर है।

[1256] माननीय पासारियिन की स्मृति चीज़ शनिवार को मनाई जाती है।

[1257] प्रारंभिक चर्च में, शहरों और धर्मप्रांतों के बिशपों के अलावा, गांवों के बिशप भी थे, जिन्हें (ग्रीक शब्द 'कोर' जिसका अर्थ 'गांव' है) से कोरेपिस्कोपी कहा जाता था। वे शहर के बिशप की देखरेख में काम करते थे, ग्रामीण चर्चों के एक विशिष्ट जिले के लिए जिम्मेदार थे, अपने अधिकार क्षेत्र के चर्चों के लिए निम्न-श्रेणी के पुरोहितों की नियुक्ति करते थे, दिव्य उपहारों का प्रशासन करते थे और चर्च की संपत्ति से दान का वितरण करते थे, लेकिन उनके पास प्रेस्बिटिर या डीकन को नियुक्त करने का अधिकार नहीं था। अपने कार्य में, वे शहर के मुख्य बिशप को रिपोर्ट करते थे और उनके तत्काल सहायकों के रूप में कार्य करते थे। बाद में उन्हें समाप्त कर दिया गया।

[1258] हेसकियिस को बाद में एक पूजनीय के रूप में संत घोषित किया गया। उनका पर्व दिवस चीज़ सैटरडे को मनाया जाता है।

[1259] वर्ष 429 में।

[1260] ओइकोनोमोस मठ के वित्त का प्रभारी व्यक्ति होता है।

[1261] सेलर मठ के भंडार का संरक्षक और वितरक होता है।

जगह पर नहीं लगा सके: रोटी कम नहीं हुई, ठीक वैसे ही जैसे सदिोन के ज़रेफ़ाथ में मेहमाननवाज़ वधिवा के लिए आटे का घड़ा और तेल का मटका कभी खत्म नहीं हुआ था (1 राजा 17:14)[1262] । डोमेटयिन, इस चमत्कार से चकति होकर, क्षमा याचना करते हुए शक्षिक के पैरों पर गरि पड़ा। बूढ़े ने उसे समझा-बुझाकर, आतथि्य और ईश्वर में आशा पर एक उपदेश दयिा।

उस समय से मठ फलने-फूलने लगा, हर प्रकार की प्रचुरता से धन्य हुआ, और नए कोठों के नरि्माण के साथ उसका वसि्तार हुआ; और चर्च में प्रतदिनि दैवीय अनुष्ठान का आयोजन कयिा जाता था। परसिर की ज़रूरतों के लिए, व्यवस्थापक को भाइयों की सेवा के लिए पशुधन प्राप्त करने के लिए मजबूर होना पड़ा। मठ में एक भाई था, जो एशयि[1263] का मूल नविासी था, जसिका नाम ऑक्सेंटयिस था, जो इस मठ सेवा के लिए बहुत उपयुक्त था। प्रबंधक ने उससे मठ के गधों और खच्चरों की देखभाल करने और उनकी देखभाल करने के लिए कहा, लेकनि उसने आज्ञा मानने से इनकार कर दयिा। तब प्रबंधक ने पुरोहति जॉन और करियिन के पास जाकर, उनके साथ मलिकर ऑक्सेंटयिस से इस कर्तव्य को नभिाने का आग्रह कयिा; लेकनि उसने उनकी भी बात नहीं मानी। जब शनविार आया, और मठ के मामलों के बारे में महान यूथमिीयस से बात करने का अवसर मलिा, तो व्यवस्थापक ने आदरणीय को अक्सेंटयिस की अवज्ञा के बारे में बताया। आदरणीय ने अक्सेंटयिस को बुलाकर उससे कहा:

'मेरे बेटे, हमारी बात सुनो और तुम्हें सौंपी गई इस जमि्मेदारी को स्वीकार करो।'

जसि पर उन्होंने उत्तर दयिा:

उसने कहा, 'मैं नहीं कर सकता, सम्माननीय पतिाजी, तीन कारण हैं जो मुझे इसे पूरा करने से रोकते हैं: पहला, कि मैं एक वदिेशी हूँ और स्थानीय भाषा नहीं बोल सकता; दूसरा, पाप में गरिने का डर; और तीसरा, कि, पशुओं की देखभाल करनी पड़ने के कारण, मैं अब अपने कोठरी में ईश्वर के चतिन में बैठकर मौन नहीं रह पाऊँगा।'

महान यूथमिीयस ने उत्तर दयिा:

'आओ हम ईश्वर से प्रार्थना करें कि इस सब से तुम्हें कोई हानि न हो, क्योंकि ईश्वर जानते हैं कि तुम उनके सेवकों की सेवा उनके भय से ही करते हो।' प्रभु की सुनो, जो कहते हैं: *'मनुष्य का पुत्र सेवा करवाने नहीं, बल्कि सेवा करने आया'* (मत्ती 20:28) और फरि: *'मैं अपनी इच्छा नहीं, बल्कि उस पति की इच्छा करता हूँ जसिने मुझे भेजा'* (यूहन्ना 6:30)।

लेकनि इस तरह की नसीहतों के बाद भी, पूजनीय ऑक्सेन्टयिस कटु हो गए और सुनने से इनकार कर दयिा। तब पूजनीय व्यक्ति, क्रोधति होकर, बोले:

'मेरे बच्चे, हम तुम्हारे लिए जो अच्छा है उसकी सलाह देते हैं, फरि भी तुम नहीं सुनते; तुम देखोगे कि अवज्ञा का क्या फल मलिता है।'

और तुरंत ऑक्सेनटयिस एक भूतहा दौरे में ज़मीन पर गरि पड़ा, काँपता और हलिता हुआ; वहाँ मौजूद संतों ने उसकी ओर से संत से वनिती की, और वह, बड़ी मुश्कलि से राज़ी होकर, उसे उठाया और, क्रॉस का चहि्न बनाकर, उसे चंगा कर दयिा। जब वह होश में आया, तो ऑक्सेनटयिस, संत के पैरों पर गरि पड़ा, और क्षमा माँगने लगा। संत ने उससे कहा:

'आज्ञाकारति एक महान गुण है, क्योंकि ईश्वर बलदिान से अधकि आज्ञाकारति की मांग करते हैं; अवज्ञा, हालांकि, मृत्यु को जन्म देती है।'

तब, ऑक्सेंटयिस के लिए प्रार्थना करने के बाद, पूजनीय यूथमियिस ने उसे आशीर्वाद दयिा और कहा:

– *'तुम्हें चंगा कर दयिा गया है; अब फरि कभी पाप न करना, कहीं ऐसा न हो कि तुम्हें इससे भी बुरा कुछ हो जाए'* (यूहन्ना 6:14)।

इसके बाद, ऑक्सेन्टयिस ने उसे सौंपा गया कार्य स्वीकार कर लयिा और उसे उत्साह के साथ पूरा करने लगा।

दो भाइयों, मारोन और क्लमिाटयिस, मठ के कठोर जीवन को बहुत बोझलि समझकर, रात में भागने की साजशि रची; और जैसे ही उन्होंने अपनी तैयारी पूरी की, उनकी मंशा पूजनीय यूथमियिस को पता चल गई: उन्होंने एक दर्शन में शैतान को उन पर लगाम डालते और उन्हें घातक जालों में घसीटते हुए देखा। उन्हें तुरंत बुलाकर, पूजनीय ने उन्हें वसि्तार से समझाया, उन्हें धैर्य के बारे में सखिाया, और उन्हें अपनी वनिाशकारी योजना छोड़ने के लिए मनाया और फटकारा।

[1262] 'चवानेट्स' एक छोटा पात्र, एक छोटी मटकी है।

[1263] एशयि – एशयि माइनर का पश्चमिी भाग; यह सामान्य युग से पहले ही रोमनों द्वारा जीते जाने के बाद इसका नाम था। बाद में, 'एशयि' नाम पूरे महाद्वीप पर लागू होने लगा; इस मामले में, बेशक, यह एशयि माइनर के पश्चमिी भाग को संदर्भति करता है।

उन्होंने स्वयं को सावधानी से रखने की आवश्यकता के बारे में कहा: आदम ने, स्वर्ग में रहते हुए, ईश्वर की आज्ञा का उल्लंघन किया; जबकि अय्यूब ने, अपने खाद के ढेर पर बैठे हुए, इसका पालन किया। इस उपदेश में उन्होंने निम्नलिखित जोड़ा:

'हमें उन बुरे विचारों को मन में नहीं पालना चाहिए जो हममें उस स्थान के लिए दुख या घृणा भरते हैं जहाँ हम रहते हैं, या हमारे साथ रहने वालों के लिए; हमें उन विचारों पर ध्यान नहीं देना चाहिए जो हमें कहीं और जाने के लिए प्रेरित करते हैं; बल्कि हमें हर समय सतर्क रहना चाहिए और अपनी बुद्धि को शैतान की चालाकियों से हटाए रखना चाहिए, कहीं ऐसा न हो कि हमारे स्थानांतरित होने से हमारा नियम नष्ट हो जाए, क्योंकि बार-बार रोपा गया पेड़ फल नहीं देता। यदि कोई जहाँ रहता है वहाँ कुछ अच्छा करना चाहता है लेकिन ऐसा करने में असमर्थ है, तो उसे यह न सोचे कि वह कहीं और ऐसा कर पाएगा: क्योंकि एक अच्छा काम स्थान से नहीं, बल्कि किसी की इच्छा और विश्वास से सिद्ध होता है। एक कहानी सुनो जो मैंने कुछ मिस्र के भिक्षुओं से सुनी है। मिस्र में एक भाई एक सामुदायिक मठ में रहता था और अक्सर क्रोधित और बेचैन रहता था, उसके होठों पर हमेशा अपशब्द रहते थे; निराश होकर, वह मठ छोड़कर एकांत में बस गया, यह मानकर कि अगर उसके पास बात करने के लिए कोई नहीं होगा, तो वह अपने क्रोध की आदत से मुक्त हो जाएगा। एक दिन, जब उसने किसी काम के लिए एक पात्र में पानी डाला, तो वह पलट गया; उसने दूसरी बार भरा, लेकिन पात्र फिर से पलट गया; तीसरी बार भी यही हुआ। शैतान के बहकावे में आकर वह भाई पात्र से गुस्से में आ गया और उसे पकड़कर तोड़ डाला।

जब संत यूथिमियस ने यह कहा, तो क्लिमाटियस हँस पड़ा। लेकिन, बड़े भाई ने उसकी ओर देखा और कहा:

'भाई, क्या तुम भी शैतान के बहकावे में आ गए हो, कि तुम इतनी मूर्खता से हँस रहे हो? क्या तुमने यह नहीं सुना है कि प्रभु हँसने वालों को बहिष्कृत मानते हैं, लेकिन रोने वालों को आशीष देते हैं?'

यह कहने के बाद, पूजनीय क्लामयिाटियस से मुड़ गए और अपनी भीतरी कोठरी में चले गए। क्लामयिाटियस, हालांकि, तुरंत कांपते हुए, भय और आतंक से ग्रस्त होकर, साष्टांग दंडवत हो गया। उस समय डोमेटियन मौजूद थे; उन्होंने कुछ संतों को इकट्ठा किया और पूजनीय की कोठरी में प्रवेश करके, उनसे क्लामयिाटियस को क्षमा करने का अनुरोध किया।

उनकी विनती मानते हुए, संत बाहर आए, वहाँ लेटे हुए व्यक्ति को उठाया, और उसे क्रॉस के चिह्न से चंगा किया, यह कहते हुए:

'अब से, अपना ध्यान रखना और संतों की आज्ञाओं को नज़रअंदाज़ न करना, उन्हें ईश्वर के वचन के रूप में ग्रहण करना, और अपने पूरे अस्तित्व को एक आँख की तरह बना लो, जैसा कि हमने करूबों के बारे में सुना है। हर तरफ से अपना सावधानी से ध्यान रखना, क्योंकि तुम फंदों के बीच चलते हो।'

इस प्रकार भाई को फटकार लगाने और भागने की साजिश रचने वाले दोनों को उपदेश देने के बाद, पूजनीय पिता ने उनके विश्वास को मजबूत कर उन्हें उनकी कोठरियों में वापस भेज दिया।

उस समय, धर्मद्रोही नेस्टोरियस[1264] के संबंध में एफ़िसुस में तीसरी सार्वभौमिक परिषद बुलाई गई थी। तब उपर्युक्त सिनोडियस अपने सम्मान प्रकट करने के लिए मेलटिनि से फ़िलिस्तीन पहुँचा; वह अपने युवा दिनों में आकाकियोस के साथ उस आदरणीय व्यक्ति का शिष्य था। चूँकि आदरणीय यूथिमियस के मठ में उपर्युक्त तीनों भतीजे थे: स्टीफन, एंड्रयू और गियस, सिनाइडियस वहाँ गया और, पूजनीय यूथिमियस को चूमने के बाद, उसे नेस्टोरियस की अधर्मी विधर्म के बारे में बताया, जो ईश्वर की अनुमति से, कुछ समय से कॉन्स्टेंटिनोपल का पैट्रिआर्क रहा था और अपनी झूठी शिक्षाओं से पूरी दुनिया को उत्तेजित कर चुका था; उन्होंने उन्हें अलेक्ज़ेंड्रिया के आर्चबिशप, धन्य सिरिल[1265] और मेलटिनि के बिशप अकाकियस, जो कभी उनके शिक्षक थे, द्वारा दिखाई गई ऑर्थोडॉक्सी के प्रति उत्साह के बारे में बताया। और आदरणीय संत उनके लिए प्रसन्न हुए। पतरस, जिन्हें पहले अस्पेवेट के नाम से जाना जाता था, जो उस समय तक पहले से ही सारासिनि के बिशप थे और जो अन्य फिलिस्तीनी बिशपों के साथ एफ़िसुस की परिषद के लिए रवाना हो रहे थे, उन्हें आदरणीय संत ने आज्ञा दी कि वे किरिल और अकाकियस की शिक्षाओं का पालन करें और हर तरह से उनका बचाव करें। परिषद के समापन और नेस्टोरियस के पदच्युत होने पर, पीटर लौटा और बुजुर्ग को विस्तार

[1264] वर्ष 431 में।

[1265] चर्च 9 जून और 18 जनवरी को अलेक्ज़ेंड्रिया के संत सिरिल (मृत्यु 444) का स्मरणोत्सव मनाती है, अलेक्ज़ेंड्रिया के संत अथेनासियस के साथ

से वह सब कुछ बताया जो परिषद में हुआ था; बुजुर्ग ने ऑर्थोडॉक्सी की पुष्टि पर प्रसन्नता व्यक्त की, लेकिन एंटिओक के आर्चबिशप जॉन के लिए दुखी हुए, जिन्होंने, एक ऑर्थोडॉक्स विश्वासी होने के बावजूद, नेस्टोरियस का बचाव किया था।

अपने चाचा के लिए दुखी होकर, डीकन डोमनिन ने महान संत से अपने चाचा को सही राह पर लाने के लिए अंतीयक जाने की अनुमति देने का अनुरोध किया। लेकिन संत ने उससे कहा:

'मत जाओ, मेरे बच्चे: यदि तुम उस स्थान पर बने रहोगे जहाँ तुम्हें बुलाया गया है, और उस विचार पर ध्यान मत देना जो तुम्हें मरुभूमि से दूर खींचने की कोशिश करता है, तो तुम सद्गुण में फलोगे और परमेश्वर में महिमामय होओगे; लेकिन यदि तुम मेरी अवज्ञा करके चले गए, तो तुम अपने चाचा का सिंहासन तो प्राप्त कर लोगे, पर यह तुम्हारे भले के लिए नहीं होगा, और तुम पर बहुत दिन तक इसका सम्मान नहीं रहेगा, क्योंकि दुष्ट लोग इसे शीघ्र ही तुमसे छीन लेंगे।

लेकिन डोमनिन, अपने पिता की आज्ञा की अवज्ञा करके, उनके आशीर्वाद के बिना अंतीयक चला गया – और जो कुछ भी पवित्र व्यक्ति[1266] द्वारा भविष्यवाणी की गई थी, वह उस पर पूरा हुआ; बाद में, वह रोते और पश्चाताप करते हुए, और संत की दूरदर्शिता पर आश्चर्यचकित होकर, बूढ़े के पास लौट आया।

उनके शिष्य, आदरणीय किरियाकस तपस्वी, हमारे इन आदरणीय पिता, यूथिमियस के बारे में निम्नलिखित गवाही देते हैं: 'हमने उन्हें कभी शनिवार और रविवार के अलावा कुछ खाते हुए नहीं देखा, न ही किसी बड़ी आवश्यकता के मामलों को छोड़कर किसी से बात करते हुए, न ही अपनी बगल के बल सोते हुए, बल्कि केवल कभी-कभी बैठे-बैठे झपकी लेते हुए देखा; अन्य समयों में वे अपनी कोठरी के एक कोने में खींची गई रस्सी को दोनों हाथों से पकड़ लेते थे और, शारीरिक आवश्यकता के कारण, थोड़ी देर सो जाते थे, नींद पर महान आर्सेनियस के इस कथन का पालन करते हुए: 'आओ, दुष्ट दास!' क्योंकि अपने जीवन-यापन के तरीके में उन्होंने पवित्र और सम्माननीय आर्सेनियस की नकल की और मिस्र से आए भाइयों द्वारा उनके बारे में बताए गए वृत्तांतों को आनंदपूर्वक सुना'।

पवित्र पुनरुत्थान चर्च[1267] के बर्तनपाल, एक अनास्तासियस नामक व्यक्ति, महान यूथिमियस को देखना चाहता था और यरूशलेम के पुरोहितों, अपने मित्रों के साथ, उनके मठ में गया। पूजनीय यूथिमियस ने आत्मा द्वारा उनके आगमन की पूर्व सूचना पाकर, मठ के व्यवस्थापक, क्रिसिप्पस को बुलाया और उससे कहा:

'हमारे मेहमानों का स्वागत करने की तैयारी करो, क्योंकि यरूशलेम के पैट्रिआर्क आ रहे हैं।'

जब मेहमान पहुँचे, तो आदरणीय ने अनास्तासियस को एक पैट्रिआर्क के रूप में स्वागत किया और उससे एक पैट्रिआर्क की तरह ही बातचीत की। वहाँ मौजूद सभी लोग चकित रह गए; लेकिन व्यवस्थापक क्रिसिप्पस पास आकर बूढ़े के कान में फुसफुसाया:

'माननीय पिता, यहाँ कोई पैट्रिआर्क नहीं है; यह अनास्तासियस है, पात्रों का उद्धारकर्ता।'

संत ने आश्चर्यचकित होकर कहा:

– मुझ पर विश्वास करो, मेरे बच्चे, कि अब तक मैंने उसे पैट्रिआर्क के वस्त्रों में ही देखा है। और सचमुच मैं गलत नहीं था: क्योंकि जिसे ईश्वर ने पूर्वनिर्धारित किया है, वह उसे अवश्य पूरा करेगा।

महाधर्माध्यक्ष के ये शब्द सभी के सुनने के लिए कहे गए थे और समय आने पर वे सच साबित हुए, जब अनास्तासियस को पैट्रिआर्क नियुक्त किया गया[1268] .

उपरोक्त टेरेबोन, बिशप पीटर का पुत्र, जो अस्पेबेट के नाम से जाना जाता था, ने अपने ही परिवार में से एक पत्नी ली और उसके साथ लंबे समय तक रहा, लेकिन उसे कोई संतान नहीं हुई, क्योंकि वह बाँझ थी। उसे चमत्कार करने वाले यूथिमियस के पास ले जाकर, उसने उससे विनती की, कहते हुए:

'मैं जानता हूँ, पिताजी, कि ईश्वर आपकी प्रार्थनाएँ सुनेगा, क्योंकि वह अपने भक्तों की इच्छा पूरी करता है। अत; मैं आपकी पवित्रता से विनती करता हूँ: मानवजाति के प्रेमी ईश्वर से हमारे लिए प्रार्थना करें, कि वह हमें एक संतान प्रदान करें।'

[1266] डॉमनुस ने 441 से 448 तक अंकोई में पैट्रिआर्क का पद संभाला।

[1267] यरूशलेम में पवित्र पुनरुत्थान का चर्च महान कॉन्स्टेंटिन द्वारा बनाया गया था और 13 सितंबर 335 को इसे समर्पित किया गया था। इसे पवित्र सेपल्चर की गुफा के ऊपर बनाया गया था और यह अपनी शानदार और असंख्य सजावट के लिए प्रसिद्ध था। चर्च में बहुमूल्य पत्थरों से जड़े हुए बहुत सारे पात्र थे, और अनास्तासियस उनके संरक्षक (ग्रीक में: स्केउओफिलाक्स) के रूप में कार्य करते थे।

[1268] अनास्तासियस ने 458 से 478 तक यरूशलेम में पैट्रिआर्क का पद संभाला।

संत ने उस पर और उसकी पत्नी पर तीन बार पवित्र क्रॉस का चह्न बनाया और उनसे कहा:

'भगवान तुम्हें संतान का आशीर्वाद दें, और तुम्हारे तीन पुत्र होंगे।'

मठ में इमलियिन नाम का एक भाई था, जो एक रविवार की सुबह, भोर के समय, एक दैवीय आत्मा के वशीभूत होने के कारण कामुक वासना से ग्रस्त हो गया और अशुद्ध विचारों से परेशान था, अपने हृदय में पाप की वासना को महसूस कर रहा था। संयोग से, पूजनीय यूथमियिस, चर्च में प्रातःप्रार्थना के लिए जाते समय, उस स्थान से गुज़रे जहाँ वह भाई वासना से परेशान खड़ा था; वासनापूर्ण राक्षस की दुर्गंध को सूंघकर और यह समझकर कि क्या हो रहा है, संत ने कहा:

'ईश्वर न करे, हे शापित अशुद्ध आत्मा।'

और तुरंत वह भाई ज़मीन पर गिर पड़ा, उसके मुँह से झाग निकलने लगा और वह पिटने लगा। भाई-बंधु इकट्ठा हो गए, एक मोमबत्ती लाई गई, और पूजनीय पिता ने भाई-बंधुओं से कहा:

'क्या तुम इस भाई को देखते हो? अपनी जवानी से लेकर अब तक उसने सदाचारी जीवन जिया है, शारीरिक शुद्धता में रहा है; लेकिन अब, जब वह थोड़ी देर के लिए कामुक वासना में बहक गया और उसने वासनापूर्ण विचारों को पनपाया, उन अशुद्ध विचारों में मग्न रहा, तो एक राक्षस ने उस पर अधिकार कर लिया। आइए, हम भी उसके दुःख से एक सबक सीखें, और सभी को यह बता दो कि यदि कोई, भले ही वह किसी के शरीर को न छुए या कोई अशुद्ध पाप न करे, फिर भी मन में व्यभिचार करता है—अशुद्ध विचारों से बहककर, उन्हें पालकर, उन पर सहमति देकर और उनमें आनंद लेकर—तो वह व्यक्ति व्यभिचारी है, और उस पर एक राक्षस का अधिकार है।

इस पर, वृद्ध ने निम्नलिखित वृत्तांत जोड़ा:

उसने कहा, 'भाइयो, सुनो, एक कहानी जो कुछ मिस्र के बुजुर्गों ने मुझे एक ऐसे भाई के बारे में बताई जिसे सभी संत मानते थे, लेकिन जिसने अपने मन में अनास्थापूर्ण विचारों में लिप्त होकर और व्यभिचार करके अपने हृदय में परमेश्वर को क्रोधित किया। जब वह मृत्यु के समीप पहुँचा, तो एक समझदार वृद्ध वहाँ आया और उसने सुना कि वह घातक रूप से बीमार है; उसने सभी निवासियों को रोते हुए और कहते हुए पाया: 'यदि यह संत चल बसे, तो हमें मोक्ष की कोई आशा नहीं है, क्योंकि हम सभी उसकी प्रार्थनाओं से ही बचाए गए हैं।' यह सुनकर, वह दूरदर्शी वृद्ध उस बीमार व्यक्ति के पास दौड़ पड़े, इस कथित संत से आशीर्वाद प्राप्त करने की इच्छा से; और जैसे ही वह उसके निवास के पास पहुँचे, उन्होंने मोमबत्तियों, पुरोहितों और डिकन्स के साथ एक बड़ी भीड़ देखी, जो उस संत के भव्य अंतिम संस्कार के लिए बिशप का इंतजार कर रही थी। ऊपरी कमरे में प्रवेश करने पर, बुजुर्ग ने देखा कि वह अभी भी सांस ले रहा था; और, अपनी आत्मा की आँखों से देखते हुए, उसने एक त्रिशूल पकड़े हुए एक राक्षस को देखा; उस राक्षस ने मरणासन्न व्यक्ति के हृदय को उससे भेद दिया था और बड़ी यातना के बीच उसकी आत्मा को उससे निचोड़ रहा था। उसी क्षण, संत ने स्वर्ग से एक आवाज़ सुनी जो कह रही थी: 'जिस प्रकार उसकी आत्मा ने मुझे एक पल का भी विश्राम नहीं दिया, उसी प्रकार तुम्हें भी उसे अनवरत रूप से पीड़ित करना चाहिए और उसकी आत्मा को उससे अलग कर देना चाहिए।' और इस प्रकार, वह भाई यातना में मर गया, क्योंकि यद्यपि वह बाहरी रूप से एक संत प्रतीत होता था, उसने अपने हृदय में परमेश्वर के क्रोध को भड़काया था।" "भाइयों, यह सुनकर," पूजनीय यूथमियस ने अपनी बात जारी रखी, 'आत्मा को कलंकित करने वाले विचारों से सावधानीपूर्वक अपना बचाव करो: क्योंकि शरीर से आत्मा के अलग होने के क्षण में, जो व्यभिचार का सपना देखते हैं, उन्हें भी वही यातना सहनी पड़ेगी जो वास्तव में उस पाप को करने वालों को सहनी पड़ती है। लेकिन हम इस भाई एमलियिन के लिए ईश्वर से प्रार्थना करें, जो उसे दंडित कर रहे हैं पर मृत्युदंड नहीं दे रहे, कि वे उसे शैतान और दैहिक वासनाओं से मुक्त करें।

जब संत ने प्रार्थना की, तो दानव निकलकर आया, और चिल्लाने लगा: 'मैं व्यभिचार की आत्मा हूँ,' और उसने उस पूरे स्थान को जलते हुए गंधक जैसी बदबू से भर दिया। उस समय से, एमलियन अशुद्ध इच्छाओं से मुक्त हो गया और परमेश्वर का एक चुना हुआ पात्र बन गया।

उस समय सूखा पड़ गया, और एक बड़ी अकाल पड़ी, और पवित्रशास्त्र का वचन पूरा हुआ: *'और तुम्हारे सिर के ऊपर का आकाश पीतल के समान, और तुम्हारे नीचे की भूमि लोहे के समान हो जाएगा'* (व्यवस्थाविवरण 28:23)। और सूखे के कारण सभी बहुत संकट में थे। भाइयों ने, पूज्य थियोक्टीस्ट के साथ मिलकर, पूज्य यूथमियिस से ईश्वर से प्रार्थना करने और वर्षा के लिए विनती करने को कहा, क्योंकि वे जानते थे कि ईश्वर के समक्ष उनकी प्रार्थना कितनी प्रभावशाली थी; लेकिन उन्होंने सहमति नहीं दी। प्रभु के प्रकट होने के पर्व का आगमन हुआ, और वह दिन नजदीक आ गया जिस दिन संत आमतौर पर पाम संडे तक मरुभूमि में चले जाते थे। पवित्र नगर और आसपास के गांवों से एक बड़ी भीड़

मठ में इकट्ठी हुई, जो एक क्रॉस उठाए हुए और 'हे प्रभु, दया करो!' पुकारते हुए आ रही थी। और वे महान यूथमिीयस के पास आए, और जब तक उन्होंने ईश्वर से वर्षा भेजने की प्रार्थना नहीं की, तब तक उन्हें रेगस्तिान में जाने से रोक लयिा। उनकी पुकार सुनकर, आदरणीय पति उनके पास बाहर आए और कहा:

'तुम एक पापी से क्या चाहते हो? मेरे बच्चों, मुझमें ईश्वर से इसके लिए प्रार्थना करने का साहस नहीं है, क्योंकि मैं एक पापी हूँ और दूसरों से भी अधकि, मुझे उनकी दया की आवश्यकता है, वशिष रूप से उनके क्रोध के इस वर्तमान समय में। हमारे पाप हमें उससे अलग करते हैं; हमने अपनी वासनाओं और वभिन्नि जुनूनों के आगे झुककर उसकी छवि को कलंकति कयिा है, उसकी कलीसयिा को अपवत्रि कयिा है; हम लालच और ईर्ष्या में जीते हैं और घृणा के पात्र हैं, क्योंकि हम एक-दूसरे से नफरत करते हैं; इसी कारण उन्होंने यह दण्ड हम पर लाया है, ताकि इससे होश में आकर हम पश्चाताप करें; और जब हम पश्चाताप द्वारा स्वयं को सुधार लें, तब वह हमारी सुनेंगे, क्योंकि लिखा है: *'प्रभु उन सब के नकिट है जो सच्चाई से उसकी पुकार करते हैं'* (भजन संहति 144:18)।

जब संत ने लोगों से इस प्रकार कहा, तो वे सभी एक स्वर में चल्लिा उठे:

'हे पति, आप स्वयं हमारे लिए प्रार्थना करें; हम वश्विास करते हैं कि परमेश्वर आपकी प्रार्थना सुनेगा, क्योंकि वह अपने भयकर्ताओं की इच्छा पूरी करता है।'

इन शब्दों से प्रेरति होकर, पूजनीय पति, अपने साथ के पुरोहतिों को लेकर, चर्च में चले गए, और लोगों को भी प्रार्थना करने का आदेश दयिा। चर्च में साष्टांग दंडवत होकर, उन्होंने आँसुओं के साथ ईश्वर से प्रार्थना की कि वे अपनी सृष्टि पर दया करें, पृथ्वी पर अपनी दया और उदारता से आशीर्वाद दें, और इसे वर्षा से सींचें। जब वह प्रार्थना कर रहे थे, तो अचानक दक्षणिी हवा चली, आकाश बादलों से घरि गया, गरज के साथ गड़गड़ाहट हुई, और मूसलाधार बारशि होने लगी। फरि संत उठे और अपनी प्रार्थना समाप्त कर बाहर आए और लोगों से कहा:

'देखो, ईश्वर ने तुम्हारी प्रार्थनाएँ सुन ली हैं; वह इस गर्मी को अन्य वर्षों की तुलना में अधकि धन्य बनाएगा। अत; उन शुभ कार्यों से ईश्वर को प्रसन्न करने का भी प्रयास करो, जन्हिोंने तुम पर दया दखिाई है।'

यह कहकर, पूज्य ने लोगों को वदिा कर दयिा। और कई दनिों तक मूसलाधार बारशि होती रही, इसलिए संत अपनी प्रथा के अनुसार महान मरुभूमि के लिए नकिल नहीं सके। और संत के शब्दों के अनुसार, उस गर्मी में पृथ्वी के फलों की प्रचुरता के साथ उस गर्मी को आशीर्वाद मलिा, जो अन्य वर्षों से बढ़कर थी।

आदरणीय यूथमिीयस के जीवन के पचहत्तरवें वर्ष में, अलेक्जेंड्रयिा के अधर्मी पैट्रआर्क डयिोस्कोरस के खलिाफ चल्सेडॉन में चौथा सार्वभौमकि परषिद आयोजति कयिा गया था[1269] । परषिद में आदरणीय संत के कुछ शष्यि भी उपस्थति थे जन्हिें बशिप के रूप में नयिुक्त कयिा गया था: जामनयिा के बशिप स्टीफन[1270] , और सारासनिा के बशिप जॉन, जो पीटर एस्पेवेट के उत्तराधकिारी थे; काल्सेडोन परषिद के फरमानों को दर्ज करने के बाद, उन्होंने उन्हें अपने मठाधीश, संत यूथमिीयस के पास भेज दयिा। उन्होंने कैलसीडोन परषिद में नर्धिारति वश्विास की स्वीकारोक्ति को स्वीकार कयिा और इसे ऑर्थोडॉक्स (सही आस्था वाला) माना – और यह अफवाह जल्द ही पूरे फलिस्तिीनी रेगस्तिान और सभी संतों के बीच फैल गई, जनिमें से कई की आस्थाएं गैर-पारंपरकि थीं, कि महान यूथमिीयस कैलसीडोन परषिद का अनुसरण करेंगे। उस समय, थयिोडोसयिस नाम का एक नश्चिति वधिर्मी फलिस्तिीन आया; दखिावे में एक भक्षिु, लेकनि वास्तव में यूटकिीस की झूठी शक्षिाओं से भरा एक अधर्मी व्यक्ति था; उसने पवत्रि काल्सेडोन परषिद के खलिाफ अपमानजनक बातें कहीं, यह दावा करते हुए कि कथति तौर पर वहां ऑर्थोडॉक्स वश्विास के सद्धिांत को खारजि कर दयिा गया था और नेस्टोरयिस की वधिर्म को बहाल कर दयिा गया था, और उसने कई अन्य अश्लील और झूठे बयान फैलाए। उस समय, धर्मपरायण सम्राट थयिोडोसयिस द यंगर[1271] की पत्नी रानी यूडोक्सयिा, फलिस्तिीन में थीं; अपने

[1269] चतुर्थ सार्वभौमकि परषिद का आयोजन 451 में कालसीडोन में हुआ था। अलेक्जेंड्रयिा के आर्चबशिप डयिोस्कोरस ने 441 से 451 तक यह पद संभाला। कॉन्स्टेंटनिोपल के एक मठ के आर्चमिांड्राइट यूटकिीस के साथ मलिकर, उन्होंने झूठी शक्षिा दी कि यीशु मसीह में केवल एक ही स्वभाव है - दव्यि (इसलिए यह वधिर्म 'मोनोफजिटिज्मि' के नाम से जाना जाने लगा, जो ग्रीक शब्दों 'एक' और 'स्वभाव' से लयिा गया है, जसिमें अवतार के समय मानवीय स्वभाव समाहति हो गया था)। उस परषिद में, इस झूठी शक्षिा की नंदिा की गई, और यह आदेश दयिा गया कि प्रभु यीशु मसीह को 'दो स्वभावों में, भन्नि, अपरविर्तनीय, अवभाज्य और अवच्छिेद्य... दो व्यक्तयिों में वभिाजति या पृथक नहीं, बल्कि एक ही और वही पुत्र और परमेश्वर का एकमात्र जनमा हुआ वचन' के रूप में स्वीकार कयिा जाना चाहए।

[1270] यमनयिा फलिस्तिीन का एक नगर है, जसिकी स्थापना प्राचीन काल में फलिीस्तीनयिों ने की थी, जो जफ़ा (प्राचीन जोपा) के पास, भूमध्य सागर पर स्थति है, और यरूशलेम से उत्तर-पश्चमि में 12 घंटे की यात्रा पर है।

[1271] थयिोडोसयिस द्वतिीय, या युवा, ने 408 से 450 तक शासन कयिा।

पतकिी मृत्यु के बाद, वह पवत्रि स्थानों में रहने लगीं। और इस प्रकार उपर्युक्त संप्रदायकि थयोडोसयिस ने पहले रानी यूडोक्सयिा को काल्सेडोन परषिद को अस्वीकार करने के लएि मनाया; फरि उसने कई मरुभूमकिे संतों को अपने संप्रदाय से प्रभावति कयिा और उन्हें अपना अनुयायी बना लयिा। फरि उसने, भ्रमति संतों की भीड़ के साथ मलिकर, पैट्रआिर्क जुवेनाल के खलिाफ वदि्रोह भड़काया: उसने लगातार उन पर काल्सेडन परषिद के फरमानों को खारजि करने का दबाव डाला; जब ने इनकार कर दयिा, तो उन्हें पैट्रआिर्क के सहिासन से हटा दयिा गया – और जुवेनाल सम्राट मार्सयिन से मलिने के लएि कॉन्स्टेंटनिोपल चले गए।

हालांकि, थयोडोसयिस, सम्राज्ञी यूडोक्सयिा के समर्थन और उसके साथ शामलि होने वाले वधिर्म से अंधे भक्षिुओं की ताकत पर भरोसा करके, पाट्रआिर्कात्मक सहिासन पर आसीन हुआ[1272] और उसने ऑर्थोडॉक्स को बहुत नुकसान पहुँचाया; उसने कुछ बशिपों और पुरोहतिों को, जन्हिोंने उसके साथ संप्रदाय स्थापति करने से इनकार कर दयिा था, पदच्युत कर दयिा, दूसरों को यातनाएँ दीं और मार डाला, और यूथमियिस के मठों में रहने वालों को छोड़कर, उसने पहले ही सभी फलिस्तिीनी संतों को अपने पीछे कर लयिा था: अपने पति—महान यूथमियिस—के उदाहरण को अपनी आँखों के सामने रखकर, वे ऑर्थोडॉक्स धर्म में दृढ़ रहे। झूठे पैट्रआिर्क थयोडोसयिस ने आदरणीय यूथमिीयस को अपने साथ संप्रदाय में लाने के लएि बहुत प्रयास कयिा, वह लगातार उनके पास संदेशवाहक भेजता रहा, वनिती और धमकी देता रहा, और हर संभव तरीके से उन्हें अपनी वधिर्म में फँसाने की कोशशि करता रहा। लेकनि आदरणीय संत शत्रु के जालों में नहीं फँसे और उसकी चालाकी के सामने अडगि रहे, जैसे एक मजबूत स्तंभ और एक अचल दीवार। दैनकि रूप से भेजी जाने वाली थयोडोसयिस की कपटपूर्ण मांगों के बोझ तले दबे, उन्होंने भाइयों को बुलाया और उन्हें वधिर्म से सावधानीपूर्वक बचने तथा ऑर्थोडॉक्सी (सही आस्था) पर दृढ़ रहने का नर्दिेश देकर, महान मरुभूमि में चले गए। कई भाइयों ने भी ऐसा ही कयिा, वे वधिर्मयिों के उत्पीड़न से भागकर, अपने पति के उदाहरण का अनुसरण करते हुए, रेगस्तिान में चले गए।

उस समय, जॉर्डन के रेगस्तिान में[1273] , एक नश्चिति तपस्वी थे, जनिका नाम गेरासमिस था, जो कुछ समय पहले ही लसियि[1274] से वहाँ आए थे; उन्होंने मठवासी जीवन के सभी नयिमों का पालन कयिा था और अशुद्ध आत्माओं के खलिाफ सफलतापूर्वक लड़ाई लड़ी थी। हालाँकि, अदृश्य राक्षसों को हराने और भगाने के दौरान, वह दृश्यमान राक्षसों - अर्थात् वधिर्मयिों - के जाल में फँस गया और उनके द्वारा धोखा खा गया, क्योंकि वह यूटचिस के वधिर्म में पड़ गया था। पुण्यशील जीवन के लएि व्यापक ख्याति प्राप्त आदरणीय यूथमिीयस के बारे में सुनकर, गेरासमिस उनके पास रुबा के रेगस्तिान में गया, जहाँ वे उस समय ठहरे हुए थे। उसे देखकर, उसे उससे महान आध्यात्मकि लाभ हुआ; लंबे समय तक पूज्य यूथमिीयस के साथ रहने के बाद, गेरासमिस, उनकी वाक्पटु जीभ से नकिलने वाली शकि्षाप्रद बातों और ऑर्थोडॉक्सवाद पर उनके उपदेशों से पोषति होकर, वधिर्मी झूठी शकि्षा को अस्वीकार कर दयिा, ऑर्थोडॉक्स धर्म की ओर मुड़ गया, और अपनी पूर्व की गलती पर गहराई से पश्चाताप कयिा।

फलिस्तिीन में दयिोदोसयिस के माध्यम से वधिर्मयिों द्वारा उत्पन्न उथल-पुथल पूरे एक वर्ष तक चली। फरि धर्मपरायण सम्राट मार्सयिन का एक फरमान आया जसिमें झूठे पादरी दयिोदोसयिस को गरिफ्तार करने का आदेश था, ताकि वह अपने कर्मों के लएि मुकदमे और सजा का सामना कर सके; लेकनि जब उसे इसकी जानकारी हुई, तो वह सनिाई पर्वत[1275] भाग गया और छपि गया – कोई नहीं जानता कहाँ। तब पूजनीय यूथमिीयस मरुभूमि से अपने मठ लौट आए।

एक बार, जब आदरणीय पति दव्यि लटिर्जी का अनुष्ठान कर रहे थे, तो सारसेन का टेरेवोन और क्रसिपि्पस के भाई, ख़ास्रत गब्रयिल ने, 'पवत्रि, पवत्रि, पवत्रि' भजन के दौरान, स्वर्ग से उतरते हुए और संत को घेरे हुए एक आग देखी; और आदरणीय पति सेवा के अंत तक दव्यि मेज़ के सामने आग के एक स्तंभ में खड़े रहे। आदरणीय पति स्वयं कभी-कभी कुछ भाइयों से कहते थे कि वे अक्सर एक देवदूत को उनके साथ धर्मवधिि का अनुष्ठान करते हुए देखते थे। उनमें बाहरी आवरणों से आत्मा की भीतरी हलचलों को पहचानने और मनुष्यों के बुरे और अच्छे, दोनों प्रकार के वचिारों

[1272] 452 के वसंत में।

[1273] जॉर्डन का मरुभूमि जॉर्डन नदी के पश्चमि में, यरीहो से यरूशलेम तक फैला था, और मृत सागर के पश्चमिी तट के साथ दक्षणि की ओर और आगे तक फैला था – एक जंगली, चट्टानी, शुष्क और बंजर क्षेत्र।

[1274] लकियिा एशयिा माइनर का एक दक्षणिी क्षेत्र है।

[1275] सनिई पर्वत अरब के उत्तर-पश्चमि में, काले या लाल सागर के पूर्व में स्थति है। यह पहाड़, जो ग्रेनाइट चट्टानों की एक शृंखला बनाता है, ऊँची और खुरदरी घाटियों से घरिा और उनके बीच से होकर गुजरता है, अरबों के लएि माउंट टूर या जेबेल टूर सनिा के नाम से जाना जाता है; यह लाल सागर की भुजाओं के बीच स्थति है, जो मलिकर सनिाई प्रायद्वीप का नर्माण करती हैं।

को पहचानने का वरदान भी था। जब भ्रातुओं ने दव्यि रहस्यों को ग्रहण कयिा, तो वह देख सकते थे कि प्रत्येक व्यक्ति किसि मानसकि स्थतिि में भाग ले रहा है: उन्होंने देखा कि कुछ लोग, जो योग्य रूप से समीप आए, संस्कार से पवत्रि हो रहे थे; जबकि अन्य फीके पड़ गए, उनके चेहरे जैसे नरि्जीव हो गए, क्योंकि उन्होंने अयोग्य रूप से समीप आने की हम्मित की थी। इसलिए, आदरणीय पतिा नरिंतर सभी को प्रेरतिों के वचनों से उपदेश देते थे:

'भाइयो, बड़ी सावधानी से पवत्रि सहभागति ग्रहण करो: *"प्रत्येक व्यक्ति पहले अपना परीक्षण करे, और तब वह इस रोटी में से खाए और इस प्याले में से पिए। क्योंकि जो कोई अयोग्य होकर खाता और पीता है, वह अपने ऊपर न्याय खाता और पीता है"* (1 कुरनि्थियों 11:28–29), क्योंकि यह पवत्रि संस्कार संतों के लिए तैयार कयिा गया है, न कि अशुद्ध लोगों के लिए – और यदि आपका वविेक शुद्ध है, तो *'जो उस पर दृष्टि रखते हैं, वे प्रकाशमान होते हैं, और उनके मुख लज्जति नहीं होंगे'* (भजन संहति 33:6)।

जब परम पावन जुवेनाल ने अपना पदभार फरि से संभाला और चर्च में उत्पन्न हुई गड़बड़ियों को सुधारने का काम शुरू कयिा, तो रानी यूडोक्सयिा, उपरोक्त थयिोडोसयिस द्वारा यूटकियिन वधिर्म में भटकाई गई, अपने वचिारों में चंचल हो गई, यह न जानती हुई कि किसि स्वीकारोक्ति का पालन करें, और उसने अंóoओक में स्थति परम पूज्य समियिोन द स्टाइलाइट को एक संदेश भेजकर उनसे उचति सलाह और मार्गदर्शन माँगा। उन्होंने उसे नम्निलखिति लखिा:

– जान लो कि शैतान ने, तुम्हारे गुणों की प्रचुरता को देखकर, 'तुम्हें *गेहूँ की तरह छानने' की* मांग की (लूका 22:31), और उस वनिाशक थयिोडोसयिस के माध्यम से उसने तुम्हारी ईश्वर-प्रेमी आत्मा को भ्रष्ट कर दयिा; लेकनि हौसला रखो: क्योंकि तुम्हारा वशि्वास डगमगाया नहीं है। मैं, अपनी ओर से, इस बात पर बहुत आश्चर्यचकति हूँ कि, इतने पास में एक झरना होते हुए भी, आप उसे अनदेखा कर रही हैं और दूर से वही पानी खींचने का प्रयास कर रही हैं: आपके पास ईश्वर-धारी यूथमिियस हैं; उनके उपदेश का पालन करें, और आप उद्धार पाएँगी।

सम्माननीय समिीअन से ऐसा संदेश प्राप्त करने पर, रानी ने तुरंत सम्माननीय यूथमिियस के बारे में पूछताछ करना शुरू कर दयिा। हालाँकि, यह जानकर कि वह शहर में जाने के लिए कभी भी रेगस्तिान नहीं छोड़ते थे, उन्होंने पूर्वी रेगस्तिान में, यूथमिियस के मठ से तीस स्टेडयिम दूर, एक ऊँची पहाड़ी पर एक स्तंभ खड़ा करने का नश्चिय कयिा[1276] , ताकि वह वहाँ अक्सर आदरणीय से मलि सकें और उनकी शकि्षाओं से आनंदति हो सकें; उस स्तंभ का नरि्माण करने के बाद, वह वहाँ एकांत में रहने लगी। उसने उपर्युक्त अनास्तासयिस—जो तब पासारयिन के बाद कोरेपस्कि़ोपस था—और क्रॉस-बेयरर कोस्मास को पूजनीय यूथमियिस के पास भेजा, और उनसे वनिती की कि उन्हें मलिने की अनुमति दें; लेकनि जब वे वहाँ पहुँचे, तो उन्हें मठ में नहीं मलिा, क्योंकि वह बहुत पहले ही रुव के लिए रवाना हो चुके थे। वे पूज्य थयिोक्टस्टि को अपने साथ लेकर उस मरुभूमि में गए और उन्हें ढूंढकर, उन्होंने वनिम्रतापूर्वक उनसे नविेदन कयिा कि वे रानी के पास जाएँ और उसकी भटकती आत्मा को बचाएँ – और बड़ी कठनिाई से ही उन्होंने उस वरष्ठि को उसके पास जाने के लिए मनाया। महान यूथमिियस को देखकर रानी अत्यंत प्रसन्न हुई और उनके पवत्रि चरणों में गरिकर बोली:

'अब मुझे एहसास हुआ है कि ईश्वर ने मेरी अयोग्यता पर दृष्टि डाली है।'

वरष्ठि ने उसे ऑर्थोडॉक्सी (सही आस्था) के बारे में पर्याप्त रूप से समझाने के बाद, उसे चार पवत्रि सार्वभौमकि परषिदों का पालन करने के लिए प्रोत्साहति कयिा: नकियिा की परषिद, जो एरयिस के खलिाफ बुलाई गई थी, कांस्टेंटनिोपल का परषिद—मेसेडोनयिस के वरिुद्ध, एफ़सिुस का परषिद—नेस्टोरयिस के वरिुद्ध, और कैलसीडोन का परषिद—डायोस्कोरस और यूटकिस के वरिुद्ध—और उसे पैट्रआर्क जुवेनाल के साथ सुलह करने की आज्ञा दी, जनिके साथ उसका पहले ववािद था; उसके लाभ के लिए और भी बहुत कुछ कहने के बाद, उन्होंने उसे आशीर्वाद दयिा और, उसके लिए प्रार्थना करने के बाद, प्रस्थान कयिा। सम्राज्ञी ने, अपनी ओर से, उनके शब्दों को ऐसे स्वीकार कयिा मानो वे ईश्वर के मुख से बोले गए हों, और उन्हें व्यवहार में लाने का प्रयास कयिा; तुरंत ही पवत्रि शहर के लिए रवाना होकर परम पावन जुवेनाल के साथ मेल-मलिाप कयिा और खुले तौर पर वधिर्म को अस्वीकार कर, उन्होंने ऑर्थोडॉक्स चर्च के साथ संप्रदायकि एकता स्थापति की। यह देखकर, थयिोडोसयिस द्वारा भटकाए गए बहुत से सामान्य लोग और भकि्षु रानी का अनुसरण करने लगे और ऑर्थोडॉक्सी में लौट आए।

[1276] यह मीनार, या अधकि सटीक रूप से, कलिा, रानी यूडोक्सयिा द्वारा पूरे पूर्वी रेगस्तिान के सबसे ऊँचे पहाड़ पर बनाया गया था, जसिे अब मुंतार के नाम से जाना जाता है। (30 स्टेडयिम 5 वर्स्ट के बराबर हैं।)

[1277]अपने जीवन के अस्सी-दूसरे वर्ष में, यूफेमिया के मठ में, धन्य सावा, जो उस समय एक युवक था, आया; वरिष्ठ ने उन्हें स्वीकार कर, उन्हें निचले मठ में आदरणीय थियोकटिस्टस के पास भेजा और उनके बारे में भविष्यवाणी की कि वह जल्द ही मठवासी जीवन में दूसरों से अधिक चमकेंगे, जो आदरणीय सवास के जीवन से स्पष्ट है। उस समय, कैपैडोसिया के मूल निवासी मार्टिरियस, और जन्म से अरब, एलियाह भी पूज्य यूथिमियस के पास आए। राजा मार्सियन की हत्या के बाद, टिमोथी एलूर[1278] ने मिस्र में अशांति और विद्रोह भड़काया, जिसमें अलेक्जेंड्रिया के पैट्रिआर्क, परम पावन प्रोटेरियस[1279] की भी हत्या कर दी गई; इस विद्रोह को सहन न कर पाने के कारण, मार्टिरियस और एलियाह मिस्र छोड़कर महान यूथिमियस के पास एक सुरक्षित आश्रय की तरह भाग गए। आदरणीय संत ने उन्हें प्रेम और सम्मान दिखाया: उन्होंने पूर्वानुमान लगाया था कि दोनों समय आने पर यरूशलेम में प्रभु के भाई, प्रेरित याकूब के सिंहासन पर विराजमान होंगे। वे उन्हें संत गेरासिमिस के साथ कुटिलियन रेगिस्तान और रुबियन रेगिस्तान ले गए, और वहाँ वे अपनी प्रथा के अनुसार पाम संडे तक उनके साथ रहे; हर रविवार को आदरणीय पिता दिव्य लिटिर्जी का अनुष्ठान करते थे, और उन महान पिताओं ने उनके हाथों से परम पवित्र रहस्यों को ग्रहण किया।

इसके तुरंत बाद, मर्शियन के बाद सिंहासन पर बैठे मसीह-प्रेमी लियो[1280] के शासनकाल के दौरान, परम पावन पैट्रिआर्क जूवेनल का निधन हो गया। उनके निधन के बाद, सामान्य परिषद के सर्वसम्मत निर्णय द्वारा, अनास्तासियस[1281] , जो पहले पवित्र पात्रों के संरक्षक और कोरेपिस्कोपस के रूप में सेवारत थे, को चुना गया। और पूजनीय यूथिमियस की भविष्यवाणी पूरी हुई, जो उन्होंने तब कही थी जब अनास्तासियस उनसे मिलने आए थे, और संत ने अपनी दूरदर्शी आँखों से उन्हें पैट्रिआर्क के परिधानों में देखा था। इसे याद करते हुए, अनास्तासियस ने संत के पास सम्मानित पुरोहितों को निम्नलिखित शब्दों के साथ भेजा: 'देखिए, पिताजी, आपकी भविष्यवाणी अब पूरी हो गई है: मैं आपसे विनती करता हूँ, मुझे आपके पास आने की अनुमति दें – ताकि मैं आपकी पवित्रता को प्रणाम कर सकूँ।'

आदरणीय यूथिमियस ने इस प्रकार उत्तर दिया:

'मैं हमेशा परमपावन को देखने और आपके संवाद से लाभान्वित होने के लिए तरसता हूँ; लेकिन चूँकि मेरे इस विनम्र आवास पर आपका पहला दौरा सादा था और कुछ ही लोगों के साथ था, जबकि आपके वर्तमान पद की यह मांग है कि आपके साथ अनेक परिचारकों का समूह हो, अतः परमपावन, आपका यह दौरा मेरी कमजोर शक्ति से परे है। इसलिए, मैं आपकी पावन श्रीमान से विनती करता हूँ कि कृपया मेरे इस साधारण आवास तक की यात्रा का कष्ट न उठाएँ। यदि, तथापि, आप कृपा करके पधारें, तो मैं हर्ष के साथ आपका स्वागत करूँगा; किन्तु तब मुझे अन्य आगंतुकों का भी स्वागत करना पड़ेगा, और इस प्रकार, इतने सारे आगंतुकों के कारण होने वाले व्यवधान के कारण, मेरे लिए इस स्थान पर बने रहना असंभव हो जाएगा।

यह सुनकर और अपने मन में इस पर विचार करके, पैट्रिआर्क ने अपने आप से कहा: 'यदि मैं गया, तो मैं बड़े भैया को नाराज़ कर दूँगा। अतः मैं नहीं जाऊँगा।' हालाँकि, कुछ समय बाद, आवश्यकता के वश में होकर, वह आदरणीय व्यक्ति के पास गए और उनसे मिले, जैसा कि बाद में बताया जाएगा।

जहाँ तक धन्य सम्राज्ञी यूडोक्सिया का प्रश्न है, उन्होंने इतने सारे चर्च और इतने सारे मठ, अनाथाश्रम और अतिथिगृह स्थापित किए कि उन सभी को सूचीबद्ध करना भी कठिन है। सेंट पीटर के चर्च में, जिसे उन्होंने स्थापित किया था और जो सेंट यूथिमियस की लावरा से लगभग बीस स्टेडियम दूर स्थित था, उन्होंने आगंतुकों के लिए एक बड़ा और गहरा जलाशय बनवाने का आदेश दिया। पेंटेकोस्ट के दिनों में, वह स्वयं वहाँ काम का निरीक्षण करने गईं और उन्होंने रेवरेंड फादर के पास संदेशवाहक भेजे, उनसे आकर मिलने का आग्रह करते हुए, ताकि वह उनकी प्रार्थनाओं और आशीर्वादों की पात्र मानी जाएँ और उनके उपदेशों का लाभ उठा सकें; साथ ही, वह मठ की सामान्य ज़रूरतों के लिए संत को एक दान भी देना चाहती थीं। महान यूथिमियस ने संदेशवाहकों के माध्यम से उन्हें उत्तर दिया:

[1277] वर्ष 458 में।

[1278] टिमोथीउस, जिन्हें एलूर के नाम से जाना जाता है, अलेक्जेंड्रिया के एक पादरी, एक विधर्मी (मोनोफिसाइट) और डियोस्कोरस के अनुयायी

[1279] प्रोटेरियस, 451 से 457 तक अलेक्जेंड्रिया के पैट्रिआर्क थे; मार्शियन की मृत्यु के बाद, उन्हें काल्सेडन परिषद के रक्षक के रूप में मोनोफिसाइट्स द्वारा मार दिया गया था (उनका पर्व दिवस 28 फरवरी है)। उनके बाद, तिमोथी एलूर को पैट्रिआर्क बनाया गया और उन्होंने 460 तक यह पद संभाला, उन्होंने काल्सेडन परिषद के फरमानों को स्वीकार करने वाले सभी बिशपों को पदच्युत किया और उनका उत्पीड़न किया।

[1280] संत लियो प्रथम ने 457 से 474 तक शासन किया।

[1281] अनास्तासियस प्रथम ने 458 से 478 तक पैट्रिआर्क का पद संभाला।

'अभी मुझे देह में देखने की आशा मत रखना। हे मेरी संतान, तुम इतनी सारी बातों की चिंता क्यों करते हो? मुझे लगता है कि सर्दी आने से पहले, तुम ईश्वर के पास चले जाओगे। इसलिए, इस गर्मी में अपने प्रस्थान की तैयारी का ध्यान रखना; और जब तक तुम देह में हो, मुझे याद करने की—न लिखित रूप में न ही मौखिक रूप से—या हमें कुछ देने या कुछ माँगने की जहमत न उठाओ। लेकिन जब तुम सर्व के प्रभु के पास प्रस्थान करोगी, तो वहाँ मेरा स्मरण करना, ताकि जब उनकी मानवता के प्रति प्रेम ऐसा चाहे, तो वह मुझे शांति से ग्रहण करें।

यह सुनकर, धन्य यूडोक्सिया को गहरा दुःख हुआ, विशेषकर इन शब्दों पर: 'मुझे लिखित रूप में या अन्यथा याद करने का प्रयास न करें', क्योंकि वह उसे एक अच्छी-खासी आय विरासत में देना चाहती थी। पवित्र नगर यरूशलेम की ओर शीघ्रता से जाकर, उसने यूथिमियस के शब्द पैट्रिआर्क अनास्तासियस को बता दिए। उस समय, रानी संत स्टीफन प्रथम शहीद के सम्मान में एक चर्च का निर्माण करवा रही थीं, और, जब चर्च का निर्माण अभी भी चल रहा था, उन्होंने इसे 15 जुलाई को समर्पित करने का आदेश दिया, और इसके लिए अपनी आय का एक बड़ा हिस्सा अलग रख दिया। फिर उन्होंने अपनी स्थापना की सभी चर्चों का दौरा किया, उनके समर्पण समारोहों में शामिल हुईं और प्रत्येक के लिए अपनी आय की एक पर्याप्त राशि अलग रखी। चर्चों के अभिषेक के चार महीने बाद, धर्मपरायण रानी यूडोक्सिया ने अपना आत्मा ईश्वर के हाथों में सौंप दिया[1282] ।

महान यूथिमियस के जीवन के नब्बेवें वर्ष में, पूजनीय थियोक्टिस्टस गंभीर रूप से बीमार पड़ गए। पूजनीय यूथिमियस, बीमार थियोक्टिस्टस से मिलने और उन्हें अंतिम चुम्बन देने आए, और अपने मित्र और साथी तपस्वी के निधन की प्रतीक्षा में कई दिनों तक उसी मठ में रुके रहे ताकि वे उनके शरीर को अंतिम विदाई दे सकें; उस बीमारी के दौरान, धन्य थियोक्टिस्ट का 3 सितंबर[1283] को निधन हो गया। थियोक्टिस्ट की मृत्यु और इस बात की खबर पाकर कि संत यूथिमियस वहाँ थे, पैट्रिआर्क अनास्तासियस अपने पुरोहितों के साथ धन्य थियोक्टिस्ट को दफनाने के बहाने वहाँ जल्दी पहुँचे, लेकिन असल में वे संत यूथिमियस से मिलने और उन्हें चूमने के लिए आए थे। उसे देखते ही, पैट्रिआर्क ने उसके हाथ पकड़कर उन्हें चूमा, और कहा:

'मैं लंबे समय से इन पवित्र हाथों को चूमना चाहता था, और अब ईश्वर ने मुझे यह कृपा प्रदान की है।' और अब मैं आपसे निवेदन करता हूँ, आदरणीय पिताजी, कि आप मेरे लिए प्रभु से प्रार्थना करें, कि मुझ पर आपकी भविष्यवाणी अंत तक पूरी हो; और मुझे अक्सर लिखते रहें, मुझे मसीह की कलीसिया के शासन में शिक्षित करते हुए, क्योंकि मैं आप में परमेश्वर के वरदानों का कार्य देखता हूँ, और उनकी शक्ति का अनुभव स्वयं कर चुका हूँ।

तथापि संत ने विनम्रता से कहा:

'मुझे क्षमा करें, हे पवित्र प्रभु; मैं आपकी पवित्रता से विनती करता हूँ कि कृपया मुझे अपनी प्रार्थनाओं में याद रखें।'

रेवरेंड थियोक्टिस्ट के पवित्र शरीर को एक साथ अंतिम संस्कार करने और एक-दूसरे से बातचीत करने के बाद, वे अपने-अपने रास्ते चले गए।

मारिन, टेरेंटियोनोव्स के चाचा और ईश्वर के प्रति समर्पित एक व्यक्ति, को थियोक्टिस्टोव कलिविया का मठाध्यक्ष नियुक्त किया गया; लेकिन दो साल बाद उनका निधन हो गया, और आदरणीय यूथिमियस के आगमन पर, उन्होंने उन्हें आदरणीय थियोक्टिस्ट के पास दफनाया; और मारिन की जगह उन्होंने लोंगिनस, एक सदाचारी व्यक्ति, को मठाध्यक्ष नियुक्त किया। जनवरी में एक दिन, धन्य सव्वा, लोंगिनस के साथ, लावरा में आदरणीय यूथिमियस को विदा करने आए, जो महान मरुभूमि के लिए प्रस्थान कर रहे थे। सव्वा की तत्परता देखकर, यूथिमियस उन्हें अपने तपस्या के प्रयासों में साथ ले गए। जब वे रूह के सूखे इलाकों से गुजर रहे थे, तो सावा को थकान के कारण भयंकर प्यास लगी और वह और आगे नहीं चल सके, क्योंकि वे प्यास से बेहाल हो गए थे। तब पूज्य यूथिमियस ने उन पर दया करके प्रार्थना के द्वारा सूखी भूमि से पानी निकाला, जैसा कि पूज्य सावा के जीवनचरित में वर्णित है।

कई और अनगिनत कठिनाइयों के बाद, आदरणीय यूथिमियस अपने धन्य निधन के करीब पहुँचे, जिसकी उन्होंने दिव्य प्रकटोक्ति के माध्यम से पूर्व सूचना पा ली थी। एक वर्ष, जब प्रभु के एपिफेनी (प्रकट होने के पर्व) के आठवें दिन, अर्थात् 14 जनवरी को, उनके मरुभूमि में अपने प्रथागत एकांतवास का समय आया, तो भ्राता इकट्ठा हुए और

[1282] सम्राज्ञी यूडोक्सिया की 460 में मृत्यु हो गई; उन्हें सेंट स्टीफन के चर्च में दफनाया गया।

[1283] सम्माननीय थियोक्टिस्टस की मृत्यु 467 में हुई।

आदरणीय के पास आए; कुछ उन्हें वदिा करना चाहते थे, अन्य उनके साथ जाने की उम्मीद कर रहे थे; उनमें मार्टरियिस और एलयिा भी थे, जो नत्रियिा से आए थे। जब उन्होंने देखा कि पूज्य पतिा यात्रा की तैयारी नहीं कर रहे थे और यह व्यवस्था नहीं कर रहे थे कि भाइयों में से कौन उनके साथ जाएगा और कौन मठ में रहेगा, तो उन्होंने उनसे पूछा:

'माननीय पतिाजी, क्या आप कल रेगस्तिान के लिए नहीं जा रहे हैं?'

संत ने उत्तर दयिा:

'मैं इस सप्ताह मठ में आपके साथ रहूँगा, लेकनि शनविार आधी रात को मैं आपसे वदिा हो जाऊँगा।'

संत ने यह कहकर भाइयों को अपने ईश्वर के पास प्रस्थान के समय की भवष्यिवाणी की, लेकनि उन्होंने उनकी बात नहीं समझी। तीसरे दनि, 17 जनवरी को, हमारे पूजनीय पतिा एंथनी द ग्रेट का पर्व दविस आया, और संत यूथमियिस ने चर्च में एक रात्रि-जागरण आयोजति करने का आदेश दयिा। जागरण पूरा होने के बाद, लावरा के पुरोहतिों को वेदी पर बुलाकर, पूजनीय ने उनसे कहा:

'अब से, भाइयों, मैं आपके साथ एक भी जागरण नहीं करूँगा, क्योंकि ईश्वर मुझे इस क्षणकि जीवन से पहले ही बुला रहे हैं। अत; डोमेटयिन को मेरे पास भेजो, और सुबह सभी भाइयों को यहाँ इकट्ठा होने दो।'

यह सुनकर, पुरोहति रो पड़े, और महान यूथमियिस के कहे शब्द तुरंत भाइयों तक पहुँच गए। सुबह, सभी आदरणीय पतिा के सामने इकट्ठा हुए, और उन्होंने उनसे इस प्रकार कहना शुरू कयिा:

'हे मेरे पतिृवर, हे मेरे भाइयो और हे मेरे प्रयि पुत्रो, प्रभु में प्रयि, मैं अपने पतिरों के मार्ग पर चल पड़ा हूँ; परन्तु तुम, यदि मुझे प्रेम करते हो, तो मेरी आज्ञाओं का पालन करना: सबसे बढ़कर, शुद्ध प्रेम प्राप्त करो, जो पूर्णता का बंधन है। जसि प्रकार नमक के बनिा रोटी खाना असंभव है, उसी प्रकार प्रेम के बनिा सदाचार का अभ्यास करना असंभव है; क्योंकि हर सद्गुण प्रेम और वनिम्रता से मजबूत और दृढ़ होता है: वनिम्रता उसे पाने के लिए प्रयास करने वाले को सद्गुणों की ऊँचाइयों पर उठाती है, जबकि प्रेम उसे दृढ़ता से थामे रखता है और उसे उन ऊँचाइयों से गरिने से रोकता है; क्योंकि *'प्रेम कभी असफल नहीं होता'* (1 कुरन्थियिों 13:8), और यह कि प्रेम वनिम्रता से श्रेष्ठ है, यह हमारे प्रभु स्वयं के उदाहरण से स्पष्ट है, क्योंकि हमारे प्रति अपने प्रेम के कारण उन्होंने स्वेच्छा से स्वयं को नम्र कयिा और हमारे जैसे मनुष्य बन गए। इसलिए, हमें उन पर अपने वश्विास का अवरिाम रूप से अंगीकार करना चाहिए और उनकी स्तुति करनी चाहिए, वशिेष रूप से हमें जन्हिोंने इस वद्रिोही संसार का परत्यिाग कयिा है। हे भाइयों, तुम में से प्रत्येक अपने-अपने वषिय में सावधान रहे और शरीर तथा आत्मा दोनों को पवत्रिता में रखे। नयिमति चर्च सभाओं की कभी उपेक्षा न करो; सभी मठों की परंपराओं और वधिानों का सावधानीपूर्वक पालन करो; और वपित्तृ में पीड़तिों की अपनी सामर्थ्य के अनुसार सहायता करो। यदि कोई भाई अशुद्ध वचिारों से जूझ रहा है, तो उसे अथक रूप से सखिाओ, समझाओ और मजबूत करो, ताकि वह शैतान द्वारा ठोकर न खाकर गरि न जाए। अब मैं आप लोगों को यह अंतमि आज्ञा देता हूँ: मठ के द्वार आने वालों के लिए कभी बंद न हों, बल्कि यात्रयिों के लिए हमेशा खुले रहें; अपनी छत भी यात्रयिों के साथ बाँटें, और जो कुछ भी आपके पास है, वह ज़रूरतमंदों को दें। तब, ऊपर से, ईश्वर आप पर प्रचुर आशीर्वाद देंगे।

भाइयों को यह सब आज्ञा देने के बाद, पूजनीय यूथमियिस ने उनसे पूछा कि वे उनके बाद अपना चरवाहा कसिे बनाना चाहते हैं। उन्होंने सर्वसम्मति से डोमेटयिन का नाम लयिा। लेकनि संत ने कहा:

'यह असंभव है, क्योंकि डोमेटयिन मेरी मृत्यु के बाद इस जीवन में अधकि समय तक नहीं रहेगा, बल्कि सातवें दनि वह मेरे पीछे आ जाएगा।'

[1284]संत की इस साहसी और स्पष्ट भवष्यिवाणी से प्रभावति होकर, भाइयों ने यरीहो के मूल नविासी और नचिले मठ के कोषाध्यक्ष एलयिाह को चुना। यूथमियिस ने उसकी ओर मुड़कर कहा:

'देखो, सभी पतिाओं ने तुम्हें अपना चरवाहा और मार्गदर्शक चुना है: इसलिए, अपना और अपने पूरे झुंड का ध्यान रखना।'

उन्हें बहुत सी शक्षिा देने और भाइयों का नेतृत्व करना सखिाने के बाद, आदरणीय संत ने उनकी मृत्यु के बाद उनके मठों में होने वाली कुछ घटनाओं की भवष्यिवाणी की; फरि उन्होंने ये अंतमि शब्द कहे:

'यदि मुझे ईश्वर की दृष्टि में अनुग्रह प्राप्त हुआ, तो मैं सबसे पहले उनसे यह अनुग्रह माँगूँगा कि मैं हमेशा आत्मा में आपके साथ रहूँ, उन लोगों के साथ जो आपके बाद यहाँ परश्रिम करना चाहेंगे, सदा के लिए।'

[1284] अर्थात्, आदरणीय थयिोक्टस्टि का मठ।

यह कहने के बाद, रेवरेंड फादर ने डोमेटियिन को छोड़कर सभी को जाने का इशारा कयिा। वे तीन दनिों तक पवत्रि स्थल के भीतर रहे और शनविार की रात, पृथ्वी पर सत्तानबे वर्ष जीने के बाद, अपने पूर्वजों के पास शांतपूर्वक परलोक सधिार गए। यह 20 जनवरी[1285] को हुआ। पूजनीय यूथमियिस के नधिन की खबर तुरंत पूरे फलिस्तिीन में फैल गई, और सभी मठों और आश्रमों से संन्यासी—जनिमें महान गेरासमिस भी शामलि थे—झुंड के झुंड में आए और लोगों की एक बड़ी भीड़ जमा हो गई। परम पावन पैट्रआिर्क अनास्तासयिस भी अपने सभी पुरोहतिों के साथ आए। भारी भीड़ के कारण, पूज्य व्यक्तिके शरीर को नौवें घंटे तक दफनाना असंभव था, जब, अंतत; पैट्रआिर्क के आदेश पर सैनकिों ने भीड़ को ततिर-बतिर कर दयिा - और संत के शरीर को वधिवित दफनाया गया। उससे बछिड़ने पर सभी रो पड़े; नट्रियिा से आए मार्टरियिस और एलयिास ने उनके लएि वशिेष दुख के साथ वलिाप कयिा; उन्होंने बाद में संत की भवष्यिवाणी के अनुसार यरूशलेम में पैट्रआिर्क का पद संभाला: क्योंकि अनास्तासयिस के बाद, मार्टरियिस सहिासन पर आसीन हुए; मार्टरियिस के बाद सैलस्टयिस आए; और उनके बाद, एलयिास आए[1286] , जैसा कि पूजनीय सावस के जीवन में दर्ज है। जहाँ तक धन्य डोमेटियिन का प्रश्न है, जो महान यूथमियिस के एक शष्यि थे, उन्होंने अपने मठाधीश की शवपेटकिा को छह दनि और रात तक नहीं छोड़ा; लेकनि जब सातवाँ दनि आया, तो संत यूथमियिस रात में एक दर्शन में उनके पास प्रकट हुए, प्रसन्न और दीप्तमिान मुख वाले, और उनसे कहा:

'तुम्हारे लएि तैयार कएि गए वशि्राम में आओ, क्योंकि प्रभु मसीह ने मध्यस्थता की है कि तुम मेरे साथ रहो।'

अनकही आनंद से भरकर, डोमेटियिन ने यह बात भाइयों को बताई और, आनंदपूर्वक चर्च में आकर, उसने अपना प्राण प्रभु को सौंप दयिा, और उसे उसके पतिा की कब्र के बगल में दफनाया गया। हमारे पूजनीय पतिा यूथमियिस के नधिन के बाद, उनके मकबरे पर कई चमत्कार हुए और चंगाईयाँ प्रदान की गईं[1287] , परमेश्वर की महमिा के लएि, जो अपने संतों, पतिा, पुत्र और पवत्रि आत्मा में महमिामय हैं। आमीन।

ट्रोपारयिन, स्वर 4:

हे बाँझ मरुभूमि, आनन्दति हो; हे पीड़ा-रहति, हर्षति हो, क्योंकि एक आध्यात्मकि इच्छाओं वाले पुरुष ने तुम्हारे बच्चों को बढ़ा दयिा है, उन्हें भक्तिसे रोपति कयिा और संयम के माध्यम से उन्हें सद्गुणों में पूर्णता तक पोषति कयिा। उनकी प्रार्थनाओं के द्वारा, हे हमारे ईश्वर मसीह, हमारे जीवन को शांति प्रदान करें।

कॉन्टाकयिन, स्वर 8:

हे पूजनीय, सम्पूर्ण सृष्टि को आपके सम्मानति जन्म में और आपके दव्यि स्मरणोत्सव में आनंद मलिा, और आपके अनेक चमत्कारों की मठिास मनभावन है: इन्हें हमारे आत्माओं को प्रचुर मात्रा में प्रदान करें, और हमें पाप की अशुद्धसे शुद्ध करें, ताकि हम गा सकें: आल्लeluia।

पवत्रि शहीदों वास, यूसेबयिस, यूटकियिस और बेसलिडिस का स्मरणोत्सव

20 जनवरी को स्मरणोत्सव

[1285] परम पूज्य यूथमियिस महान का 473 में नधिन हो गया। – मीना (536–552) के पैट्रआिर्केट के दौरान कॉन्स्टेंटनिोपल में परम पूज्य यूथमियिस को समर्पति एक मठ मौजूद था। रूसी मठाधीश डैनयिल ने 12वीं शताब्दी की शुरुआत में फलिस्तिीन में अपने मठ में यूथमियिस के अवशेष देखे, मानो वह अभी भी देह में जीवति हों।

[1286] शहीद ने 478 से 486 तक, सैलस्टयिस ने 486 से 494 तक, और एलयिाह द्वतिीय ने 494 से 517 तक यरूशलेम के पैट्रआिर्क के रूप में कार्य कयिा।

[1287] स्कथिोपोलसि के सरिलि, जो परम पूजनीय यूथमियिस के जीवन-चरतिकार थे – जो लाव्रा के एक भक्षिु और यूथमियिस तथा उनके शष्यिों, संत सावस द कन्सेक्रेटेड और जॉन द साइलेंट के समकालीन थे – उनके बारे में वस्तिार से लखिते हैं

पवत्रि शहीदों वास, यूसेबयिस, यूटकियिस और बासलिडिस ने डायोक्लेटयिन के शासनकाल में यातनाएँ झेलीं। शुरुआत में वे शाही दरबार में सेवा करते थे; वे धनी थे और शाही सकि्लाइट[1288] के सदस्य थे। नकिोमेडयिा के पवत्रि पुरोहति-शहीद थयिोपेम्प्टस के दुख को देखने के बाद, वे मसीह में वशि्वास करने लगे और पवत्रि बपतस्मिा ग्रहण कयिा। परणिामस्वरूप, उन्हें यातना देने के लिए अधर्मी सम्राट के सामने लाया गया और अपने पाँच दासों के साथ उन्होंने शहीद की मृत्यु प्राप्त की। संत वास को कमर तक एक खाई में दफनाया गया और उनके पूरे शरीर पर वार करके उन्होंने अपनी आत्मा ईश्वर को अर्पति कर दी। संत यूसेबयिस को उल्टा लटकाकर टुकड़े-टुकड़े कर दयिा गया। संत यूटकियिस को हाथ-पैरों से बाँधकर, चार खंभों के बीच कसकर खींचकर फाड़ दयिा गया। संत बैसलिडिस को चाकू से मार डाला गया। और इस प्रकार उन्होंने सभी ने शहादत के मुकुट प्राप्त कए[1289] ।

पवत्रि शहीदों इना, पन्निा और रम्मिा की स्मृति

20 जनवरी को स्मरण कयिा जाता है

पवत्रि शहीद इना, पन्निा और रम्मिा[1290] उत्तरी भूमि स्कैथयिा[1291] की मूल नविासी थीं, और संत एंड्रयू द फर्स्ट-कॉल्ड अपोस्टल की शष्यि थीं। उन्होंने मसीह के नाम का प्रचार कयिा और कई बर्बर लोगों को सच्चे धर्म में परविर्तति करके उनका बपतस्मिा दयिा। इसी कारण, उन्हें बर्बरों के राजकुमार ने पकड़ लयिा, लेकनि उन्हें मसीह का त्याग करने या मूर्तयिों को बलदिान चढ़ाने के लिए मनाया नहीं जा सका। उस समय, एक कठोर सर्दी पड़ी थी; नदयिाँ इतनी ठोस रूप से जमी हुई थीं कि न केवल लोग, बल्कि घोड़े और गाड़यिाँ भी बर्फ पर चल सकती थीं। राजकुमार ने आदेश दयिा कि बड़े-बड़े लट्ठे, जो पूरे पेड़ जतिने मोटे थे, बर्फ में गाड़ दए जाएँ, और संतों को उनसे बाँध दयिा जाए। इस प्रकार, जब पानी उथला हो गया और बर्फ धीरे-धीरे मोटी होती गई, यहाँ तक कि वह संतों के गलों तक पहुँच गई, तो वे भयानक ठंड से पीड़ति होकर, अपना धन्य आत्मा प्रभु[1292] को सौंप दए।

3 फरवरी

21 जनवरी (पुराना कैलेंडर)

हमारे पूजनीय पति मैक्सिमिस द कन्फेशर का जीवन।

21 जनवरी को स्मरणोत्सव

केवल नाम से ही नहीं—[1293] —बल्कि जीवन से भी महान, आदरणीय मैक्सिमिस का जन्म महान शाही नगर कॉन्स्टेंटनिोपल में हुआ था। उच्च पदस्थ और धार्मकि माता-पति के पुत्र होने के नाते, उन्हें व्यापक शैक्षणकि शक्षिा प्राप्त हुई। उन्होंने दर्शनशास्त्र और धर्मशास्त्र का गहन अध्ययन कयिा, अपनी बुद्धमित्ता के लिए सर्वोच्च ख्याति

[1288] सकि्लाइट एक सैन्य और नागरकि शासकीय नकिाय था, जसिमें सबसे महत्वपूर्ण शाही सलाहकार और गणमान्य व्यक्ति शामलि थे।

[1289] पवत्रि शहीदों वास, यूसेबयिा, यूटकियिस और वासलिडि ने 303 ईस्वी में नकिोमेडयिा में पाँच दासों के साथ शहादत प्राप्त की।

[1290] 13वीं सदी के एक सर्बयिाई प्रस्तावना के अनुसार, इन शहीदों के नाम हैं: एनेन, नयिरेन और पेन।

[1291] यह, बेशक, तथाकथति लटिलि स्कथियिा को संदर्भति करता है, जो डेन्यूब नदी के मुहाने से थ्रेस तक फैली हुई थी। संत इना, पन्निा और रम्मिा दक्षणिी स्लावों के एक कृषि जनजाति से संबंधति थीं, जो डेन्यूब नदी के दाहनि तट और काला सागर के पश्चमिी तट पर रहती थीं।

[1292] वे दूसरी शताब्दी में शहीद हुए थे।

[1293] मैक्सिमिस – लैटनि 'मैक्सिमिस' से – ग्रीक शब्द के अनुरूप है जसिका अर्थ है 'सबसे महान'। संत मैक्सिमिस के नाम और उनके व्यक्तगित गुणों और जीवन के बीच संबंध को उनके शष्यि, परम पूजनीय अनास्तासयिस ने, गैंग्रा के पुरोहति थयिोडोर को लखि अपने पत्र में बताया है। – संत मैक्सिमिस का जन्म लगभग 580 ईस्वी में हुआ था। वर्ष 655 में कॉन्स्टेंटनिोपल में अपनी दूसरी पूछताछ के दौरान, उन्होंने कहा कि वह 75 वर्ष के थे।

प्राप्त की, और शाही दरबार में भी उन्हें उच्च सम्मान प्राप्त था। सम्राट हेराक्लियस[1294] ने उनकी बुद्धि और धार्मिक जीवन को पहचानते हुए, अपनी इच्छा के विरुद्ध उन्हें अपने मुख्य सचिव का पद देकर सम्मानित किया और उन्हें अपने सलाहकारों ( ) में शामिल किया। परम पूज्य मैक्सिमिस को दरबारी लोगों के बीच बहुत सम्मान और स्नेह प्राप्त था और उन्होंने पूरे शाही शहर के लिए महान सेवा की।

इस समय, मोनोथेलाइट विधर्म उभरा, जिसने हमारे प्रभु मसीह में केवल एक इच्छा और एक चाह को स्वीकार किया[1295] । यह विधर्म पहले के यूटिकियस विधर्म से विकसित हुआ था, जिसने लापरवाही से मसीह में केवल एक स्वभाव को स्वीकार किया था, जो ऑर्थोडॉक्स स्वीकारोक्ति के विपरीत था, जो हमसे यह स्वीकार करने की मांग करती है कि हमारे प्रभु, देहधारी ईश्वर, में दो स्वभाव और दो इच्छाएँ, दो आकांक्षाएँ और क्रियाएँ, प्रत्येक स्वभाव के लिए अलग, फिर भी मसीह के एक ही व्यक्तित्व में एकजुट; क्योंकि मसीह ईश्वर हैं, दो व्यक्तियों में विभाजित नहीं, बल्कि दो स्वभावों में बिना किसी भ्रम के जाने जाते हैं। मोनोथेलीट सिद्धांत के प्रारंभिक रक्षक और प्रचारक थे: अलेक्जेंड्रिया के पैट्रिआर्क सिरिल, कॉन्स्टेंटिनोपल के सर्जियस[1296] और यहाँ तक कि सम्राट हेराक्लियस स्वयं, जिन्हें इन्होंने इस विधर्म में भटका दिया था। स्थानीय परिषदों—सिरिल ने अलेक्जेंड्रिया में और सर्जियस ने कॉन्स्टेंटिनोपल में—का आयोजन करने के बाद, उन्होंने इस विधर्म को मान्यता दी, अपना फरमान दूर-दूर तक भेजा, और पूरे पूर्व को भटका दिया। केवल यरूशलेम के पैट्रिआर्क संत सोफ्रोनीयस ने ही इस विधर्म का विरोध किया और झूठी शिक्षाओं को स्वीकार करने से इनकार कर दिया। धन्य मैक्सिमिस ने, यह देखकर कि यह विधर्म शाही कक्षों तक भी पहुँच गया था और इसने स्वयं सम्राट को भी गुमराह कर दिया था, इस बात से डरने लगे कि वे भी कई लोगों के उदाहरण का अनुसरण करते हुए विधर्म में पड़ सकते हैं। इसलिए, उन्होंने अपना पद और सारी सांसारिक महिमा त्याग दी और क्रिसोपोलिस[1297] नामक शहर से दूर स्थित एक मठ में चले गए, जहाँ वे एक भिक्षु बन गए, और उन्होंने *'दुष्टता के तंबुओं में रहने के बजाय परमेश्वर के भवन के द्वार पर खड़े रहने'* (भजन संहिता 83:11) *को* प्राथमिकता दी।[1298] वहाँ, कुछ वर्षों बाद, उन्हें उनके सदाचारी जीवन के कारण मठाधीश (अव्वा) चुना गया।

इस बीच, पैट्रिआर्क सेरजियस ने सम्राट हेराक्लियस को अपने झूठे धर्म की एक स्वीकारोक्ति तैयार करने के लिए मना लिया। सम्राट ने इस दस्तावेज़ को, जो मोनोथेलिटिक विधर्म से ओत-प्रोत था, 'एक्फेसिस' कहा, अर्थात् एक घोषणा[1299] , और अपने राज्य के सभी लोगों को इसमें विश्वास करने का आदेश दिया, जिसके परिणामस्वरूप मसीह की कलीसिया कलह से विभाजित हो गई। अब्बा मैक्सिमिस, कॉन्स्टेंटिनोपल और पूरे पूर्व में चर्चों को झेल रहे उथल-पुथल को देखकर, और यह देखकर कि विधर्मी कैसे बढ़ रहे थे और शक्ति प्राप्त कर रहे थे, जबकि ऑर्थोडॉक्सी (सही आस्था) उत्पीड़न के तूफान से कमजोर और हिल रही थी, आत्मा में दुखी हुए, उन्होंने आह भरी और बहुत रोए। हालाँकि, यह जानने पर कि पश्चिम में इस विधर्म को कोई अनुयायी नहीं मिला था और इसे पूरी तरह से खारिज कर दिया गया था—क्योंकि पोप सेवेरिनस[1300] ने शाही 'व्याख्या' को स्वीकार नहीं किया था, और रोमन सिंहासन पर उनके उत्तराधिकारी, पोप जॉन[1301] ने एक परिषद में इस 'व्याख्या' को चर्च से बहिष्कृत कर दिया था, तब धन्य मैक्सिमिस ने अपना मठ छोड़ दिया और

[1294] सम्राट हेरैकलियस ने 600 ईस्वी में सिंहासन संभाला और 641 तक शासन किया।

[1295] मोनोथेलिटिक विधर्म 7वीं शताब्दी की शुरुआत में उत्पन्न हुआ और यह मोनोफिजिस्ट विधर्म का ही एक सिलसिला था। मोनोथेलिट्स ने मसीह में एक ही इच्छा और एक ही दैवीय क्रिया को स्वीकार किया, जिससे उन्होंने परमेश्वर के वचन के अवतार के धर्मसिद्धान्त को विकृत कर दिया। हालांकि, ऑर्थोडॉक्स शिक्षण के अनुसार, इच्छा स्वभाव से संबंधित है, व्यक्ति से नहीं; और इसलिए प्रभु यीशु मसीह, जो स्वभाव से ईश्वर और स्वभाव से मनुष्य थे, में एक दिव्य और एक मानवीय इच्छा दोनों थीं। बाद वाली के बिना, वह स्वभाव से एक पूर्ण मनुष्य नहीं होते।

[1296] सिरिल ने 630 से 640 तक अलेक्जेंड्रिया के पैट्रिआर्क का पद संभाला। सेरजियस प्रथम 610 से 638 तक कॉन्स्टेंटिनोपल के पैट्रिआर्क थे।

[1297] क्रिसोपोलिस का मठ बोस्फोरस के दूसरी तरफ, काल्सेडोन के पास स्थित था, जिसे अब स्कुटारी के नाम से जाना जाता है। यह अपने संतों के धार्मिक जीवन के लिए प्रसिद्ध था। यहीं पर संत मैक्सिमिस ने अपना संन्यासी जीवन शुरू किया और बाद में उन्हें मठाधीश चुना गया। 'अब्बा' एक सीरियाई शब्द है जिसका अर्थ है 'पिता'; यह उपाधि मठ के प्रमुख को दी जाती थी।

[1298] भजनकार पापियों के महलों में ऐश्वर्य में रहने के बजाय ईश्वर के घर के 'द्वार पर लेटना' पसंद करता है।

[1299] विश्वास का यह घोषणापत्र, एक फरमान—या आदेश—के रूप में जारी किया गया था, जो सभी पर बाध्यकारी था, जिसमें मसीह में एक या दो इच्छाओं से संबंधित किसी भी विवाद को प्रतिबंधित किया गया था, और साथ ही एकल इच्छा के सिद्धांत को सही शिक्षा के रूप में घोषित किया गया था। फिर भी, इसके बाद भी, विवादों ने पूर्वी चर्च को परेशान करना जारी रखा।

[1300] सेवेरिनस – 638 से 640 तक रोम के पोप।

[1301] पोप जॉन चौथे ने 640 से 642 तक रोम की धर्मपीठ संभाली।

पश्चिम की ओर प्रस्थान किया। वह प्राचीन रोम में शरण लेना चाहते थे, क्योंकि फिलिस्तीन पर सारसेन के आक्रमण[1302] के कारण यरूशलेम में रहना असंभव था। वह रोम के लिए रवाना हो गए, क्योंकि वे उन ऑर्थोडॉक्स लोगों के बीच रहना चाहते थे जो दृढ़ता से आस्था का पालन करते थे। रास्ते में, उन्होंने अपने मार्ग पर पड़ने वाले शहरों में अफ्रीकी बिशपों से मुलाकात की और उनसे बातचीत करते हुए, उन्हें आस्था में मजबूत किया, उन्हें यह सिखाया कि अपने विरोधियों की चालाकियों से कैसे बचना है और उनकी जटिल जालों[1303] से कैसे बचना है; जो लोग दूर थे, उन्हें उसने पत्र भेजे, जिसमें उन्हें ऑर्थोडॉक्सी (सही आस्था) की शिक्षा दी और हर तरह से विधर्म से सावधान रहने के लिए प्रेरित किया।

[1304]उस समय, कॉन्स्टेंटिनोपल के पैट्रिआर्क सेरजियस की मृत्यु हो गई, और उनकी जगह उसी विधर्म के एक अनुयायी पिरिस ने ले ली[1305] ; इसी प्रकार, अलेक्जेंड्रिया के पैट्रिआर्क साइरस की मृत्यु हो गई, और बाद में स्वयं जार का निधन हो गया। हालाँकि, अपनी मृत्यु से पहले, यह देखकर कि कई महान और पवित्र बिशपों और ईश्वर-ज्ञानी पिताओं ने न केवल उनके विश्वास के कथन को अस्वीकार कर दिया बल्कि उन्हें बहिष्कृत भी कर दिया, सम्राट को बहुत शर्म आई और उन्होंने दूर-दूर तक यह घोषणा की कि यह उनका अपना स्वीकारोक्ति नहीं था, बल्कि यह पूर्व पैट्रिआर्क सेरजियस का था, जिन्होंने स्वयं 'व्याख्या' लिखी थी और केवल राजा को उस पर हस्ताक्षर करने के लिए मनाया था। जब राजा हेराक्लियस की मृत्यु हुई, तो उनके उत्तराधिकारी उनके पुत्र कॉन्स्टेंटिन[1306] बने, लेकिन उनका भी केवल चार महीने का शासन रहा और उनकी सौतेली माँ मार्टिना ने उन्हें गुप्त रूप से जहर देकर मार डाला, जिसने पैट्रिआर्क[1307] की सहायता से अपने बेटे हेराक्लियन को सिंहासन पर बिठा दिया। लेकिन छह महीने बाद, सभी पदाधिकारियों ने हेराक्लियन के खिलाफ विद्रोह कर दिया; उन्हें पकड़कर उन्होंने उनकी और उनकी माता मार्टिना की नाक काट दी, और फिर उन्हें अपमानपूर्वक निर्वासित कर दिया। इसके बाद उन्होंने सिंहासन पर कॉन्स्टेनटाइन के पुत्र और हेराक्लियस के पोते कॉन्स्टेंस को बिठाया, जिनसे बाद में पॉगोनैटस के नाम से प्रसिद्ध कॉन्स्टेनटाइन का जन्म हुआ। कॉन्स्टेंस के सिंहासनारोहण पर, उस समय के कॉन्स्टेंटिनोपल के पैट्रिआर्क, पिरिस—जो मार्टिना का एक समान विचारधारा वाला सहयोगी था और जो, एक आम धारणा के अनुसार, उसके साथ मिलकर हेराक्लियस के बेटे कॉन्स्टेंटिन को जहर देकर मार चुका था, जो नए सिंहासनारूढ़ राजा कॉन्स्टेंस का पिता था—बहुत डर गया और स्वेच्छा से अपना पैट्रिआर्क का पद छोड़कर अफ्रीका में निर्वासन में भाग गया। उनके बाद कॉन्स्टेंटिनोपल के पैट्रिआर्क के पद पर पॉल[1308] ने पदभार संभाला, जो स्वयं एक मोनोथेलीट संप्रदाय का विधर्मी था। सम्राट भी उसी विधर्म का कायल हो गया और उसका महान समर्थक व प्रचारक बन गया।

जब रेवरेंड अफ्रीका में थे, तब कॉन्स्टेंटिनोपल के पैट्रिआर्क पिरिस वहाँ पहुँचे; वे अपने पद से भाग गए थे और एक शहर से दूसरे शहर घूमते हुए ऑर्थोडॉक्स को अपनी विधर्म की ओर भटका रहे थे। यदि सम्माननीय मैक्सिमिस के रूप में उनका कोई विरोधी न होता तो वह वहाँ मसीह की कलीसिया को बहुत नुकसान पहुँचाता; जब भी वे मिलते, तो वे घंटों तक विश्वास के मामलों पर बहस करते थे। अफ्रीकी बिशपों को कारथेज में इकट्ठा होने के लिए मजबूर होना पड़ा ताकि

[1302] 7वीं शताब्दी की शुरुआत में, पूर्वी साम्राज्य पर अवारों और विशेष रूप से फारसियों द्वारा लगातार हमले हुए, जबकि उसे अरबों, या सारासेनों से भी एक निरंतर खतरे का सामना करना पड़ा। 637 और 640 के बीच, सीरिया, फिलिस्तीन और मिस्र सरासेन के शासन में आ गए। इसमें मोनोफिसाइट्स ने बहुत मदद की, जो ऑर्थोडॉक्स चर्च के प्रति शत्रुता के कारण, हमेशा दुश्मन के हाथों में आत्मसमर्पण करने के लिए तैयार रहते थे। केवल मिस्र में ही मोनोफिसाइट्स की संख्या 60 लाख तक पहुँच गई, जबकि वहाँ लगभग 300,000 ऑर्थोडॉक्स ईसाई थे। सम्राट हेराक्लियस ने मोनोफिसाइट्स को ऑर्थोडॉक्स चर्च के साथ सुलह कराने का हर संभव प्रयास किया। इस उद्देश्य के लिए, उन्होंने इक्थेसिस जारी किया।

[1303] संत मैक्सिमिस लगभग 640 ईस्वी में अफ्रीका पहुँचे। इससे पहले, 633 से 640 तक, वह अलेक्जेंड्रिया, कॉन्स्टेंटिनोपल, साइप्रस, एशिया माइनर और अन्य देशों में ऑर्थोडॉक्स धर्म की रक्षा कर रहे थे। वह 640 से 645 तक, पाँच वर्षों तक उत्तरी अफ्रीका में रहे।

[1304] कॉन्स्टेंस ने 641 से 668 तक और कॉन्स्टेंटिन चौथे पोगोनाटस ने 668 से 685 तक शासन किया।

[1305] 639 में सर्जियस के उत्तराधिकारी पिरिस बने। उन्होंने एक परिषद बुलाई, जिसमें उन्होंने सर्जियस के 'स्पष्टीकरण' (एकथेसिस) का समर्थन किया और इस विधर्म का बचाव करने के काम को उत्साहपूर्वक जारी रखा।

[1306] 641 में कॉन्स्टेंटिन तृतीय बीजान्टिन सम्राट था।

[1307] अफवाह थी कि पैट्रिआर्क पिरिस, सम्राट कॉन्स्टेंटिन की सौतेली माँ मार्टिना के साथ मिलकर उनकी हत्या की साजिश में शामिल थे। लोगों के क्रोध से डरकर, वह 641 में उत्तरी अफ्रीका भाग गया और पैट्रिआर्क के पद से त्यागपत्र दे दिया। 650 तक, वह पहले अफ्रीका और फिर रोम में रहा।

[1308] पॉल द्वितीय ने 641 से 654 तक कॉन्स्टेंटिनोपल में पैट्रिआर्क का पद संभाला।

वे दोनों पुरुषों की विश्वास पर बहस सुनें, क्योंकि यह उस देश के राज्यपाल, कुलीन[1309] ग्रेगरी की इच्छा थी। जब परिषद बुलाई गई और बहस शुरू हुई, तो ईश्वर-ज्ञानी मैक्सिमिस ने दिव्य धर्मग्रंथों और पवित्र पिताओं के सिद्धांतों के आधार पर निस्तर्क का खंडन करते हुए उसे हरा दिया[1310] । उन्होंने यह साबित किया कि जैसे मसीह ईश्वर में दो स्वभाव हैं, वैसे ही उनमें दो इच्छाएँ, दो आकांक्षाएँ और दो क्रियाएँ भी होनी चाहिए - हालाँकि, एक ही व्यक्ति में अविभाज्य। बहस में पराजित होने के बाद, निस्तर्क ऑर्थोडॉक्स में शामिल हो गए और चर्च द्वारा प्रेम और सम्मान के साथ उनका स्वागत किया गया, तथा उन्हें पैट्रिआर्क की उपाधि दी गई। उस समय, उन्होंने ऑर्थोडॉक्स धर्म-स्वीकृति को प्रस्तुत करते हुए एक पुस्तक भी संकलित की। इसके बाद वह पोप थियोडोर से मिलने के लिए रोम गए, जो जॉन के उत्तराधिकारी थे। पोप ने उन्हें कॉन्स्टेंटिनोपल के ऑर्थोडॉक्स पैट्रिआर्क के रूप में सम्मान के साथ स्वीकार किया। जब कॉन्स्टेंटिनोपल में यह अफवाहें फैलीं कि निस्तर्क ऑर्थोडॉक्स में शामिल हो गए हैं, तो विधर्मी सभा ईर्ष्या से भर गई। एक झूठी कहानी गढ़कर, उन्होंने लोगों में यह अफवाह फैलाई कि अफ्रीकी बिशपों और पोप ने निस्तर्क को उनकी मर्जी के खिलाफ, अपने धर्म में शामिल होने के लिए मजबूर किया था। यह अफवाह राजा तक भी पहुँची। राजा ने तुरंत अपने एक प्रतिष्ठित व्यक्ति, ओलंपियस नामक एक विधर्मी को, इटली भेजा, ताकि वह निस्तर्क को मोनोफिसाइट संप्रदाय में वापस ला सके। ओलंपियस, इटली पहुँचने के बाद , रावेना शहर में ठहरा[1311] और, निस्तर्क को रोम से बुलाकर, उसे अपने पूर्व विधर्म में लौटने के लिए मना लिया। हालाँकि, निस्तर्क, अपने ही उल्टे हुए खाने पर लौटने वाले कुत्ते की तरह व्यवहार करते हुए, शाप का पात्र बन गया, और बाद में उसे तथा उसके समान विचारधारा वाले अनुयायियों को पवित्र पिताओं द्वारा शापित कर दिया गया।

इसी समय, कॉन्स्टेंटिनोपल के पैट्रिआर्क, विधर्मी पॉल के उकसावे पर, राजा कॉन्स्टेंस ने लिखा—ठीक वैसे ही जैसे उनके दादा हेराक्लियस ने अपनी 'एक्सपोजिशिन' की रचना करते समय किया था— – अपना स्वयं का विश्वास-स्वीकारोक्ति, जो विधर्म से परिपूर्ण था, और उसे 'टायपॉस' (मॉडल) कहकर, उसे दूर-दूर तक भेज दिया, और सभी को उस पर विश्वास करने का आदेश दिया[1312] । विश्वास का यह मॉडल रोम तब पहुँचा जब पोप थियोडोर पहले से ही मृत्युशय्या पर थे। उनके निधन के बाद, उनके उत्तराधिकारी धन्य मार्टिन बने। ज़ार चाहता था कि नव-नियुक्त पोप भी उस आस्था के 'टायपस' (मॉडल) को स्वीकार कर लें जो उसने लिखा था, लेकिन पोप ने इसे यह कहते हुए अस्वीकार कर दिया:

'भले ही सारी दुनिया इस नए सिद्धांत को स्वीकार करना चाहे, जो ऑर्थोडॉक्सी के विपरीत है, मैं इसे स्वीकार नहीं करूँगा, न ही मैं सुसमाचार और प्रेरितों की शिक्षाओं से, न ही पवित्र पिताओं की परंपराओं से विचलित होऊँगा, भले ही इसके लिए मुझे मृत्यु का सामना करना पड़े।'

क्रिसोपोलिस मठ के मठाधीश, संत मैक्सिमिस, जो उस समय रोम में थे[1313] , ने धन्य पोप मार्टिन को एक स्थानीय परिषद बुलाने और 'टाइपोस' के नाम से जाने जाने वाले शाही स्वीकारोक्ति को विधर्मी और मसीह की कलीसिया की शिक्षा के विपरीत घोषित करने की सलाह दी। और ऐसा ही किया गया[1314] । पोप ने अपने एक सौ पाँच बिशपों को इकट्ठा किया,

---

[1309] ग्रीको-रोमन साम्राज्य में, प्रांतीय गवर्नरों को अक्सर 'पैट्रिशियिंस' कहा जाता था; यह शब्द सामान्य रूप से कुलीन जन्म के लोगों पर भी लागू होता था। पैट्रिसियिस ग्रेगरी कार्थेज का गवर्नर था। कार्थेज ट्यूनिसि के उत्तर-पूर्व में स्थित था। इसकी स्थापना लगभग 860 ईसा पूर्व में टायर की रानी डिडो ने की थी। 148 ईसा पूर्व में, यह रोमन साम्राज्य के शासन में आ गया। 439 ईस्वी में वैंडल द्वारा जीते जाने के बाद, 533 में बेलीस□□□अस द्वारा इसे रोमन साम्राज्य में पुनर्स्थापित किया गया। 697 में, अरबों ने इसे हमेशा के लिए नष्ट कर दिया।

[1310] सेंट मैक्सिमिस और पायरस के बीच सार्वजनिक बहस 645 ईस्वी के जुलाई में हुई थी।

[1311] एड्रियाटिक सागर पर एक बंदरगाह वाली रावेना का निर्माण थेस्सली के यूनानियों ने किया था। कई रोमन सम्राटों का मुख्य आवास यहाँ था, और इसी कारण से इस प्रांत को कभी-कभी रोमानिया भी कहा जाता है। सम्राट ऑगस्टस ने यहाँ एक बेड़ा बनाए रखा था।

[1312] पात्रiarक पॉल, निस्तर्क के उत्तराधिकारी ने, सेरजियस के उदाहरण का अनुसरण करते हुए, 648 में कॉन्स्टैंस को एक नया धर्मनिर्णायक फरमान जारी करने के लिए मनाया, जिसे 'विश्वास का नमूना' (typos) कहा जाता है। इस फरमान में यह निर्धारित किया गया था कि विवादित मुद्दों - जो मसीह की इच्छाओं से संबंधित थे - के बारे में पूर्ण मौन बनाए रखना चाहिए और पहले पाँच सार्वभौमिक परिषदों में जो पुष्टि की गई थी, उससे संतुष्ट रहना चाहिए।

[1313] संत मैक्सिमिस 645 के अंत में रोम पहुँचे और वहाँ 645 से 655 तक दस साल रहे।

[1314] संत पोप मार्टिन पहले अपने पूर्ववर्ती, पोप थियोडोर के, बाइज़ेंटाइन दरबार में अपोक्रीसारियस (यानी प्रतिनिधि) के रूप में सेवारत थे और लंबे समय तक कॉन्स्टेंटिनोपल में रहे थे। मई 649 में पोप पद पर आसीन होने पर, कॉन्स्टेंटिनोपल से उनके पास एक शाही फरमान (टाइपोस) भेजा गया, जिसमें उन्हें इसका पालन करने का आदेश दिया गया था। संत मार्टिन ने इनकार कर दिया और, संत मैक्सिमिस के साथ मिलकर, इस विधर्म को खत्म करने के तरीके खोजने लगे। 649 के अंत के करीब, उन्होंने रोम में तथाकथित लैटरन परिषद का आयोजन किया, जिसमें 150 बिशप शामिल

जनिमें बाबा मैक्समिस भी थे, और उन्होंने साइरस, सेरजयिस, की त्रुटयिों पर चर्चा के लिए रखा, परिस और पॉल ने, साथ ही शाही वधिर्मी स्वीकारोक्तकिो भी, वधिर्मयिों के रूप में बहष्कृत कर दयिा – और झूठी शकि्षाओं को चर्च से बहष्कृत कर दयिा, हर जगह सभी वशि्वासयिों को पत्र लखिकर उन्हें धर्मपरायणता में दृढ़ कयिा, वधिर्मी त्रुटयिों की व्याख्या की और उन्हें हर तरह से इनसे सावधान रहने की चेतावनी दी। यह सुनकर सम्राट क्रोध और असाधारण उग्रता से भर गया और उसने अपने राज्यपाल, थयिोडोर कैलओिपास को इटली भेजा, यह नर्दिेश देते हुए कि वह पोप मार्टनि पर आरोप लगाकर उन्हें गरिफ्तार कर ले: कि उसने सारासेनों के साथ एक समझौता कयिा था, उन्हें ग्रीको-रोमन साम्राज्य पर आक्रमण करने और ज़ार के खलिाफ़ युद्ध छेड़ने का नर्दिेश दयिा था; और यह कि वह पवत्रि पतिाओं द्वारा सौंपी गई आस्था का पालन नहीं कर रहा था, और इसी तरह परमेश्वर की परम पवत्रि माता का अपमान भी कर रहा था। रोम पहुँचने पर, ज़ार के गवर्नर ने सार्वजनकि रूप से पोप पर ये आरोप लगाए। धन्य मार्टनि, उन पर लगाए गए हर अपराध से नर्दिोष होने के कारण, इस दुर्भावनापूर्ण बदनामी के खलिाफ अपना बचाव कयिा।

उन्होंने कहा, 'मैंने कभी सरासेंस के साथ कोई समझौता नहीं कयिा है, बल्कि मैंने केवल हमारे ऑर्थोडॉक्स भाइयों को दान भेजा है जो सरासेंस के बीच अत्यंत गरीबी और दरदि्रता में रहते हैं। लेकनि जो कोई भी परमेश्वर की परम पवत्रि माता का सम्मान नहीं करता, उनका स्वीकार नहीं करता, और उनकी उपासना नहीं करता, वह इस युग में और आने वाले युग में शापति हो। जहाँ तक पवत्रि प्रेरतिों और पवत्रि पतिाओं द्वारा वरिासत में मलिी पवत्रि आस्था का प्रश्न है, उसका गलत तरीके से संरक्षण हम नहीं, बल्कि वे लोग करते हैं जो अपनी बुद्धि पर घमंड करते हैं।

ज़ार के गवर्नर ने पोप की दलीलों की कोई परवाह नहीं की, उसे हर बात में दोषी ठहराया, और इस आरोप को भी जोड़ दयिा कि उसने गैरकानूनी तरीके से सहिासन पर चढ़ाई थी। इसके बाद, उसने रात के समय सैन्य बल का उपयोग करके पोप को गुप्त रूप से गरिफ्तार कर लयिा और उसे ज़ार के पास भेज दयिा। पोप को चेरसोनेसोस में कैद कर दयिा गया, जहाँ उनकी मृत्यु हो गई[1315] ।

पोप की गरिफ्तारी से कुछ दनि पहले, वद्विान मैक्समिस को रोम में उनके शष्यि अनास्तासयिस के साथ गरिफ्तार कर जंजीरों में बाँधकर कॉन्स्टेंटनिोपल भेज दयिा गया था। यह शाही फरमान द्वारा कयिा गया था, क्योंकि सम्राट जानता था कि एकल-इच्छावादयिों और उनके पत्र की नदिा के लिए परषिद कसिकी सलाह और उकसावे पर बुलाई गई थी। जब आदरणीय बज़िान्टयिम पहुँचे, तो सम्राट द्वारा भेजे गए लोग उनके सामने आ गए, जनिकी नज़रों से ही तीव्र शत्रुता झलक रही थी। उन्होंने नर्लिज्जतापूर्वक आदरणीय को, जो नंगे पैर और नग्न थे, जंजीरों में जकड़ लयिा और उन्हें उनके व्याकुल शष्यि के साथ सड़कों पर घसीटते हुए ले गए। उसे एक अंधेरे कमरे में ले जाकर, उन्होंने उसे अकेले बंद कर दयिा, और उसके शष्यि को उसके साथ रहने की अनुमति देने से इनकार कर दयिा; शष्यि को अलग से कैद कर दयिा गया। कुछ दनिों बाद, रेवरेंड को सनिेट की पूरी सभा के सामने पूछताछ के लिए शाही महल में लाया गया, हालांकि राजा उपस्थति नहीं थे। जब वह अंदर आया, तो उपस्थति सभी लोगों की नज़रें, जो द्वेष और शत्रुता से भरी थीं, उस पर टकिी थीं। पूछताछ करने का कार्य एक प्रतषि्ठति व्यक्ति, कोषाध्यक्ष[1316] को सौंपा गया था। वह एक वाचाल बहस करने में सक्षम, प्रभावशाली भाषण देने वाला व्यक्ति था, जो झूठे आरोप लगाने और सत्य को झूठ में बदलने में नपिुण था; वास्तव में, वह सत्य को तोड़ने-मरोड़ने में सबसे कुशल था। उसने कतिनी द्वेषपूर्णता और नर्लिज्जता दखिाई, कतिनी फटकारें और अपमान उछाले! उसने संत की पवत्रि वृद्धावस्था का कोई सम्मान नहीं कयिा—तब उनकी आयु सत्तर वर्ष से अधकि थी—और न ही वह उनकी आँखों में झलकती कृपा से भयभीत हुआ; उसने न तो संत के सौम्य और गरमिामय, खुले और प्रेमपूर्ण स्वभाव को बख्शा, और न ही उनके 'आदरणीय' उपाधकिो। जबकि अन्यायपूर्ण आरोप लगाने वाला नर्दिोष व्यक्ति के

थे, और इसमें संत मैक्समिस ने भी भाग लयिा। इस परषिद में, यीशु मसीह में दो इच्छाओं और कार्यों के रूढ़िवादी सद्धिांत की पुष्टकिी गई, जबकि इस वधिर्म के समर्थकों - फारन के थयिोडोर, कॉन्स्टेंटनिोपल के सेरजयिस, पतिृसत्ता परि्रस और पॉल, और अंत में, अलेक्जेंड्रयिा के सरिलि—साथ ही हेराक्लयिस की एकफ्राससि और कॉन्स्टेंस के टाइपस—पर पाबंदी लगा दी गई, और परषिद के 'कार्यवृत्त' सम्राट कॉन्स्टेंस को भेजे गए।

[1315] संत पोप मार्टनि को 653 में हरिासत में ले लयिा गया और सम्राट कॉन्स्टेंस के आदेश पर कॉन्स्टेंटनिोपल भेज दयिा गया। संत मैक्समिस के साथ, वह सतिंबर 654 में कॉन्स्टेंटनिोपल पहुँचे। साल भर के सफ़र के दौरान उनके साथ क्या हुआ, यह अज्ञात है। संत मार्टनि पर अपने देश के प्रति राजद्रोह और शाही गरमिा का अपमान करने का आरोप लगाया गया था, और उन्हें चेरसोनेसस में नर्वासति कर दयिा गया, जहाँ 16 सतिंबर 655 को भूख से तड़पते हुए उनकी मृत्यु हो गई।

[1316] कोषाध्यक्ष – ग्रीक शब्द 'गाज़ोफलिाक्स' से। यह शब्द फ़ारसी 'गाज़ा' – 'संपत्ति', 'धन' – और ग्रीक 'क्रानू' – 'रखना' – से लयिा गया है। गाज़ोफलिाकयिा – सार्वजनकि कोष – से तात्पर्य शाही या धार्मकि कोष से है (मरकुस 12:41; यूहन्ना 8:20)।

विरुद्ध लंबी-लंबी बातें कर रहा था, ऐसी बातें जो न तो सत्य से और न ही सामान्य ज्ञान से मेल खाती थीं, और अपनी वाक्पटुता में उसने दुर्भावनापूर्ण चालाकी, धृष्टता और कपटी स्वभाव का प्रदर्शन किया, उसने अपने सभी भाषणों में परम निर्लज्जता और मूर्खता दिखाई। स्वाभाविक रूप से, वह रेवरेंड की नम्रता और विवेक से भरी ठोस आपत्तियों का जवाब देने में असमर्थ था; इसके बजाय, उसने अपनी बातों में केवल लापरवाही और असंगति दिखाई, और इसलिए वह पराजित हो गया। विशेष रूप से, उस समय क्या कहा और किया गया, निर्दोष व्यक्ति पर क्या आरोप लगाए गए, और कैसे कपटी लोगों ने अपनी झूठी बातों को सच के रूप में प्रस्तुत करने की कोशिश की - इसका वर्णन रेवरेंड मैक्सिमिस के शिष्य, एक अन्य अनास्तासियस ने विस्तार से किया था, जो रोमन चर्च के अपोक्रीसैरियस[1317] के रूप में सेवारत थे। हम यहाँ, रिकॉर्ड के लिए, उनके विस्तृत विवरण से कुछ अंश उद्धृत करेंगे।

जैसे ही कोषाध्यक्ष पद पर आसीन वह अन्यायी अभियोजक संत के सामने आया, उसने तुरंत ही उस निष्पाप व्यक्ति पर अपमानजनक भाषा में गाली-गलौज करना और धमकियों से उसे डराना-धमकाना शुरू कर दिया, उसे बेईमान, देशद्रोही, ज़ार का दुश्मन कहने लगा और हर शर्मनाक व आपराधिक कृत्य का दोष उसी पर मढ़ने लगा। जब संत ने अभियोजक से पूछा कि वह उन पर ऐसे आरोप क्यों लगा रहा है और किस देशद्रोह का आरोप लगा रहा है, तो उस पदाधिकारी ने उन पर घोर अपमानजनक निंदा की और ऐसे गवाह पेश किए जिन्हें वह जानता था कि वे झूठे हैं। उसने उस पादरी पर कई महान शहरों को बर्बरों के हवाले करने का आरोप लगाया: इस प्रकार, अलेक्ज़ेंड्रिया, पूरे मिस्र और पेंटापोलिस[1318] को उनकी मूल भूमि से अलग करके, उसने उन्हें सारासेनों के क्षेत्रों में मिला दिया था, जिनके प्रति वह मैत्रीपूर्ण और अनुकूल था। संत ने समझाया कि उन पर लगाया गया आरोप झूठा और हास्यास्पद था।

उसने कहा, 'भिक्षु, यह मेरी क्या चिंता है कि कौन शहरों पर विजय प्राप्त करता है, और क्या एक ईसाई के रूप में मेरा सरोकारों के साथ कोई लेन-देन हो सकता है? इसके विपरीत, मैंने हमेशा केवल एक ही चीज़ की कामना की है: वह जो ईसाई शहरों के लिए लाभकारी हो।'

लेकिन उस निर्लज्ज बदनाम करने वाले ने अन्य प्रकार के झूठों का सहारा लिया, उन्हें इस तरह गूंथ दिया मानो वे केवल कल्पनाएँ हों, और अपनी आवाज़ को एक अभद्र स्वर में ऊँचा उठाकर चिल्लाया कि धन्य मैक्सिमिस ने पूर्वी सम्राट का अपमान किया था, और पश्चिमी सम्राटों को सम्मान के अधिक योग्य बताया था। ऐसा करते हुए, उसने झूठे गवाहों का सहारा लिया। रेवरेंड ने गहरी आह भरते हुए उत्तर दिया:

'मैं अपने ईश्वर का धन्यवाद करता हूँ कि मुझे आपके हाथों सौंपा गया है और मैं अन्यायपूर्ण आरोपों के लिए इन यातनाओं को सह रहा हूँ, ताकि इनके माध्यम से मैं अपने स्वेच्छा से किए गए पापों और अपने जीवन के दुराचारों का प्रायश्चित कर सकूँ।' लेकिन आपके झूठे आरोपों का संक्षेप में उत्तर देने के लिए, मैं सबसे पहले आपसे पूछूँगा: क्या आपने राजा के बारे में वह बदनामी, जिसके बारे में आप बात कर रहे हैं, मुझसे व्यक्तिगत रूप से सुनी थी, या किसी और ने आपको इसके बारे में बताया था?

उन्होंने उत्तर दिया:

'हमने यह उन लोगों से सुना था जिन्होंने इसे आपके ही होठों से सुना था।'

जब संत ने उन्हें व्यक्तिगत रूप से गवाही देने के लिए बुलाने को कहा, तो आरोपियों ने कहा कि वे अब जीवित नहीं हैं।

इस पर संत ने उत्तर दिया:

'यदि आप कहते हैं कि जिन्होंने मेरे मुँह से यह बदनामी सुनी थी, वे पहले ही मर चुके हैं, तो आपने मुझे पहले मुकदमे में क्यों नहीं बुलाया, जब वे जीवित थे? तब आप अनावश्यक परेशानी से बच जाते, और मैं अपने स्पष्ट अपराध की सज़ा भुगतता। लेकिन एक बात निश्चित है: जैसे मेरे खिलाफ आपके द्वारा लगाए गए आरोप झूठे हैं, वैसे ही जिन्होंने मुझे मुकदमे में लाया, उन्होंने भी अपनी आँखों के सामने उस ईश्वर को नहीं रखा जो मनुष्यों के हृदयों की परीक्षा करता है। मैं प्रभु

[1317] 'अपोक्रीसियारियिन' एक ग्रीक शब्द है जिसका अर्थ है शाही दरबार में 'मध्यस्थ' या 'धार्मिक मामलों में वकील'।

[1318] इस आरोप का कारण यह था कि अफ्रीका के प्रीफेक्ट ग्रेगरी, जो एक समय में संत मैक्सिमिस के प्रति अनुकूल थे, लगभग 650 ईस्वी में साम्राज्य से अलग हो गए थे। – पेंटापोलिस – मिस्र से सटे लिबिया का पश्चिमी भाग।

के आगमन को देखने का योग्य भी न रहूँ, और मैं खुद को ईसाई कहना भी छोड़ दूँ, अगर मैंने कभी उस झूठे सपने[1319] को भी मन में सोचा हो, जिसे तुमने गढ़ा है, या उसे किसी को सुनाया हो, या किसी से सुना हो!

तब उन्होंने ग्रेगरी नामक एक झूठे गवाह को बुलाया, जिसने दावा किया कि उसने रोम में सुना था कि मैक्सिमिस के शिष्य अनास्तासियस ने राजा को 'पुजारी' कहा था, और यह कि उसने यह अपने गुरु मैक्सिमिस से सीखा था। संत मैक्सिमिस ने, ग्रेगरी के विरोध में, साहसपूर्वक उसकी झूठी बदनामी का खंडन किया। उन्होंने कहा:

'जब ग्रेगरी रोम में था, तो उसने हमसे केवल इच्छा की एकता के बारे में बात की, यह प्रस्ताव रखते हुए कि हम "टाइपोस" नामक एक मतवादी ग्रंथ को स्वीकार करें। लेकिन हमने इससे इनकार कर दिया, क्योंकि हम अपनी आत्माओं के लिए लाभदायक को प्राथमिकता देते थे। जहाँ तक आप अब जो कह रहे हैं, मैं न तो इसके बारे में जानता हूँ, और न ही मेरे शिष्य ने कभी ऐसा कहा है – ईश्वर मेरा साक्षी है! हालाँकि, मुझे याद है कि उस समय मैंने निम्नलिखित कहा था, अपने शिष्य से नहीं, बल्कि स्वयं ग्रेगरी से: धर्म के सिद्धांतों की जांच और परिभाषित करना सम्राटों का नहीं, बल्कि पुरोहितों का काम है, क्योंकि उन्हीं को राजा पर अभिषेक करने, उस पर हाथ रखने, यूखरिस्त के संस्कार का अनुष्ठान करने, वेदी के सामने खड़े होने और अन्य सभी दिव्य और परम उत्तम संस्कारों को करने का कार्य सौंपा गया है। मैंने तब यही कहा था और आज भी यही कहता हूँ। ग्रेगरी स्वयं मेरे इन शब्दों को याद करने से इनकार नहीं करेंगे; और यदि वे इनकार करते हैं, तो वे स्वयं का ही खंडन करेंगे। इन सब के लिए, कोई भी अदालत में मेरा दोषी ठहराए या मुझे बरी करे।

क्या करें यह न जानते हुए, अभियोजकों ने, जो झूठी गवाही की शक्ति पर भरोसा कर रहे थे, रेवरेंड को सभा से बाहर ले गए। तब उनके शिष्य अनास्तासियस को लाया गया। उन्होंने कठोर शब्दों और भयानक धमकियों से उसे डराने की कोशिश की, और अपने गुरु के खिलाफ की गई बदनामी की पुष्टि करने के लिए उस पर दबाव डाला। उन्होंने उसे यह गवाही देने के लिए मजबूर किया कि उसके गुरु ने रोम में पायरस के साथ, जब उन्होंने विश्वास के बारे में बहस की थी, क्रूरता से व्यवहार किया था। अनास्तासियस ने साहसपूर्वक दावा किया कि उसके गुरु ने न केवल पायरस को कोई नुकसान नहीं पहुँचाया था, बल्कि उसके साथ विशेष सम्मान से भी व्यवहार किया था। इस स्पष्टवादिता के लिए, उन्होंने अनास्तासियस को गर्दन, चेहरे और सिर पर मुक्कों से मारना शुरू कर दिया, इस तरह वे जबरदस्ती सच्चाई को दबाना चाहते थे - और फिर उसे उसके पुराने कालकोठरी में वापस भेज दिया। इसके बाद, अपने पिछले झूठे आरोप और पक्षपाती पूछताछ से संतुष्ट न होकर, उन्होंने संत मैक्सिमिस को एक बार फिर बुलाया और नए अपमानजनक आरोपों से उनके दृढ़ संकल्प को तोड़ने का प्रयास किया। यह आरोप था कि संत मैक्सिमिस ओरिजिन की शिक्षाओं के अनुयायी थे[1320] और हर बात में उनसे सहमत थे। संत ने आसानी से और बेबाकी से उनके झूठे आरोपों को पूरी तरह से निराधार बताकर खंडन कर दिया। उन्होंने ओरिजिन को मसीह और ईसाइयों के साथ संप्रभुता से बहिष्कृत व्यक्ति बताया, और उनके अनुयायियों को ईश्वर के न्याय के योग्य माना। फिर उन्होंने एक बार फिर से संत मैक्सिमिस से पिरिस के बारे में और इस बात के कारणों के बारे में सवाल करना शुरू किया कि वह कॉन्स्टेंटिनोपल के पैट्रिआर्क से कैसे अलग हो गए थे और उनके साथ संप्रभुता में शामिल होने से कैसे इनकार कर दिया था। उन्होंने संत को अन्य प्रश्नों से भी परखा, और उन पर शाही 'टाइपो' को स्वीकार करने और उसे विश्वास की सबसे पूर्ण और बाध्यकारी धर्मशास्त्रीय व्याख्या के रूप में विशेष श्रद्धा से मानने का आग्रह किया। संत ने उनका विरोध किया, और उन्होंने उन्हें कई तीखी फटकारों से परेशान किया। हालाँकि, यह देखकर कि वे अपने सभी विवादों में परम पूजनीय मैक्सिमिस से पराजित हो रहे थे और अपने ही जालों में उलझ रहे थे, उन्होंने सभा स्थगित कर दी और क्रिसोपोलीस के बाबा के अजेय साहस की गवाही देने के लिए सम्राट के पास दौड़ पड़े।

उन्होंने कहा, 'मैक्सिमिस वाद-विवाद में अजेय हैं, और कोई भी उन्हें हमारा सहयोगी बनने के लिए मना नहीं सकता—भले ही कोई उन्हें यातना दे!'

[1319] यह सपना, जो (कथित तौर पर) अफ्रीका के प्रिफेक्ट ग्रेगरी के विद्रोह के समय के साथ मेल खाता था, नीचे दी गई संतों की जीवनी में विस्तार से वर्णित है। बाद की पूछताछों में से एक के दौरान, सेंट मैक्सिमिस पर फिर से उस सपने के माध्यम से ग्रेगरी को विद्रोह करने के लिए उकसाने का आरोप लगाया गया, जिसे उनके नाम जोड़ा गया था।

[1320] ओरिजिन तीसरी शताब्दी के सबसे प्रसिद्ध ईसाई शिक्षक थे। अपने असंख्य लेखों में, जिन्हें चर्च के सबसे प्रतिष्ठित पुरोहितों ने भी गहरी सम्मान की दृष्टि से देखा, ओरिजिन ने फिर भी कुछ गैर-पारंपरिक और विधर्मी प्रकृति के विचार प्रस्तुत किए; इस कारण से, उन्हें विधर्मी घोषित कर दिया गया, हालांकि ओरिजिन ने अपने गैर-पारंपरिक विचारों को अपरिवर्तनीय सच्चाइयों के रूप में प्रस्तुत नहीं किया था। आत्माओं की पूर्व-अस्तित्विता के संबंध में उनका यही सिद्धांत था, जिसे 553 में पाँचवें सार्वभौमिक परिषद में निंदा किया गया था।

इसके बाद, पूजनीय पतिाजी को एक बार फरि से जेल में डाल दयिा गया। कुछ ही समय बाद, अन्य वाद-ववािदकर्ता उनके पास आए, यह मानते हुए कि यदि वे उनसे बार-बार वाद-ववािद करें और उन्हें धमकी भरे शब्दों से डराएँ, तो वे उन्हें अपना धर्म अपनाने के लिए मनाने में कहीं अधकि सफल होंगे। जो लोग आए थे उन्होंने घोषणा की कि उन्हें पैट्रआर्क ने भेजा था, और फरि उन्होंने संत से पूछना शुरू कर दयिा:

'आप कसि चर्च से संबंधति हैं: बाइज़ेंटाइन, रोमन, एंटओकयिन, अलेक्जेंड्रयिन या यरूशलेम के?' क्योंकि ये सभी चर्च, अपने अधकिार क्षेत्र के क्षेत्रों के साथ, एक-दूसरे के साथ संप्रदाय में हैं। इसलिए, यदि आप भी कैथोलकि चर्च से हैं, तो तुरंत हमारे साथ संप्रदाय में शामलि हो जाएँ – जब तक कि आप कठोर नर्विासन का सामना नहीं करना चाहते और उस पीड़ा को नहीं झेलना चाहते जसिकी आपको उम्मीद नहीं है।

इस पर, उस धर्मात्मा ने बहुत बुद्धमिानी से उत्तर दयिा:

प्रभु मसीह ने उस चर्च को 'कैथोलकि' कहा जो वशि्वास की सच्ची और उद्धारकारी स्वीकारोक्ति रखती है। इसी स्वीकारोक्ति के लिए उन्होंने पतरस को धन्य कहा, और उस पर सार्वभौमकि चर्च का नर्िमाण करने का वादा कयिा[1321] । हालाँकि, मैं आपकी स्वीकारोक्ति की सामग्री जानना चाहता हूँ, जसिके आधार पर, जैसा आप कहते हैं, सभी चर्चों ने संप्रदाय स्थापति कयिा है। यदि यह सत्य के वरिुद्ध नहीं है, तो मैं भी इससे वमिुख नहीं होऊँगा।

दूतों ने उनसे उत्तर दयिा:

'यद्यपि हमें इस बारे में आपसे बात करने का नर्िदेश नहीं दयिा गया है, फरि भी हम ऐसा ही करेंगे। हम मसीह में स्वभावों के बीच के अंतर के कारण दो क्रयिाओं का, और दोनों स्वभावों के एक ही व्यक्तित्व में मलिन के परणिामस्वरूप एक क्रयिा का स्वीकार करते हैं।'

संत ने उत्तर दयिा:

'यदि आप दो क्रयिाओं की बात करते हैं, जो एक व्यक्ति में स्वभावों के मलिन के परणिामस्वरूप एक ही क्रयिा बन गई हैं, तो इसका अर्थ है कि, उन दो क्रयिाओं के अलावा, आप एक और, तीसरी क्रयिा को स्वीकार करते हैं—एक संयुक्त क्रयिा, या एक दव्यि-मानवीय क्रयिा।'

दूतों ने उत्तर दयिा, 'नहीं, हम दो क्रयिाओं को स्वीकार करते हैं, लेकनि उनके मलिन के कारण एक की बात करते हैं।'

संत ने इसका वरिोध कयिा:

– आप स्वयं के लिए एक अस्थरि आस्था बनाते हैं और यह दावा करते हैं कि ईश्वर अस्तत्वि में होने के बनिा भी मौजूद हो सकता है। क्योंकि यदि आप एक ही व्यक्ति में स्वभावों के मलिन के कारण दो क्रयिाओं को एक में मलिा देते हैं, और फरि स्वभावों के अंतर के कारण एक ही क्रयिा को दो में वभिाजति कर देते हैं, तो क्रयिाओं में न तो एकता होगी और न ही द्वैत, क्योंकि द्वैत और एकता परस्पर वरिोधी हैं; केवल इतना ही नहीं, बल्कि ये कपटपूर्ण तर्क उन तर्कों को पूरी तरह से अमान्य कर देते हैं जनिमें कर्म नहिति हैं (यानी ईश्वर-मानव) - वास्तव में, वे इसे पूरी तरह से समाप्त कर देते हैं, क्योंकि इसमें अपनी प्रकृति के अनुरूप वह प्रकटकिरण नहीं है, जसि न तो प्रकृति से अलग कयिा जा सकता है और न ही बदला जा सकता है। अन्यथा, प्रकृति, अपने उपयुक्त कार्यों में स्वयं को प्रकट न करते हुए, पवत्रि पतिाओं की समझ के अनुसार, सभी अस्तत्वि से वंचति हो जाएगी[1322] । लेकनि मैं इसे स्वीकार नहीं कर सकता, और न ही मैंने पवत्रि पतिाओं से इसे मानना सीखा है। जहाँ तक आपका सवाल है, आपके पास अधकिार है, मेरे साथ आपकी इच्छा के अनुसार करें।

इसका उत्तर कैसे दें, यह न जानते हुए, उन्होंने कहा कि जो कोई भी उनकी अवज्ञा करता है, उसे शाप का पात्र होना चाहिए और उसके लिए नर्िधारति मृत्यु को स्वीकार करना चाहिए। संत ने नम्रता और वनिम्रता से उत्तर दयिा:

'भगवान की इच्छा मुझ पर पूरी हो, उनके पवत्रि नाम की महमिा के लिए।'

[1321] देखें मत्ती 16:17–18

[1322] पवत्रि पतिाओं की समझ के अनुसार, कोई भी स्वभाव अपने लिए उचति कार्यों में प्रकट हुए बनिा न तो अस्तत्वि में रह सकता है और न ही जाना जा सकता है। इसलिए, यदि प्रभु यीशु मसीह में एक ही इच्छा को स्वीकार कर लयिा जाता, तो एक स्वभाव अपने अस्तत्वि से वंचति हो जाता और उसका अस्तत्वि समाप्त हो जाता। साथ ही, ईश्वर-मानव का अस्तत्वि भी समाप्त हो जाएगा। इस प्रकार, मोनोफज़िट्सि ने अवतार के सद्धिांत को वकिृत कर दयिा।

तब दूत पैट्रआिर्क के पास गए और संत की कही सारी बातें बताईं। राजा ने पैट्रआिर्क से सलाह-मशवरिा करने के बाद—जैसे एक बार पलितुस ने यहूदयिों से सलाह ली थी—संत को थ्रेस में स्थति वसियिा नामक एक छोटे से शहर, , में नर्िवासन की सजा सुनाई।[1323] इसी तरह, उन्होंने उनके शष्यि अनास्तासयिस को यूनानी साम्राज्य की एक दूरस्थ सीमा पर, पेरवेरा नामक एक अत्यंत दुर्गम स्थान पर नर्िवासन के लिए भेजा, जो बर्बर भाषा में[1324] कहलाता था। इसी प्रकार की कार्रवाई आदरणीय व्यक्ति के एक अन्य शष्यि, जनिका नाम भी अनास्तासयिस था, के साथ भी की गई, जन्िहोंने एक बार रोम में एक अपोक्रीसारयिस के रूप में कार्य कयिा था और जन्िहोंने बाद में आदरणीय मैक्समिस के जीवन पर लखिा। उन्हें थ्रेस के एक शहर मेसेम्ब्रयिा[1325] में नर्िवासति कर दयिा गया।

इसी समय, रोम के पोप धन्य मार्टनि को कॉन्स्टेंटनिोपल लाया गया और बहुत कष्ट सहने के बाद, उन्हें चेरसोनेसस[1326] नर्िवासति कर दयिा गया। उनके नर्िवासन से पहले ही, जब वे अभी भी कॉन्स्टेंटनिोपल में थे, कॉन्स्टेंटनिोपल के पैट्रआिर्क पॉल की मृत्यु हो गई थी। उनके बाद, उपर्युक्त पर्िरस[1327] को पैट्रआिर्क नयिुक्त कयिा गया, लेकनि वे भी चार महीने बाद नधिन हो गए। फरि पीटर[1328] , जो उसी मोनोथेलीट संप्रदाय के कट्टर अनुयायी थे, पैट्रआिर्क के सहिासन पर आसीन हुए।

बहुत समय बीत गया, और एक बार फरि, सम्राट और पैट्रआिर्क पीटर की ओर से, प्रतष्ठिति पुरुष संत मैक्समिस के पास भेजे गए: बथिनियिा के केसरयिा के बशिप थयिोडोसयिस[1329] , और दो कंसल – पॉल और थयिोडोसयिस – ताकि वे उन्हें अपने वचिारों को अपनाने के लिए मना सकें। उन्होंने संत को मनाने के लिए कई अलग-अलग तरीके अपनाए, कभी उन्हें खुशामद करते हुए, कभी उन्हें धमकी देते हुए, कभी उनके वश्विास की परीक्षा लेते हुए, और कभी उनसे सवाल करते हुए। जब वे वसियिो के बशिप के साथ दखिाई दिए और संत को बैठने का आदेश दयिा, तो बशिप थयिोडोसयिस ने उनसे इन शब्दों में संबोधति कयिा:

'आप कैसे हैं, महोदय, अबा मैक्समिस?'

उन्होंने उत्तर दयिा:

'जैसे प्रभु ने पुराने समय से मेरे जीवन की परस्थितियिों को पूर्वज्ञान से जाना और पूर्वनर्िधारति कयिा है, जसिे उनकी दव्यि व्यवस्था द्वारा संरक्षति कयिा जाता है।'

थेओडोसयिस ने इसका वरिोध कयिा:

'कैसे?' उन्होंने पूछा, 'क्या ईश्वर ने सनातन काल से हम में से प्रत्येक के कर्मों का पूर्वज्ञान प्राप्त कयिा है और उन्हें पूर्वनर्िधारति कयिा है?'

संत ने उत्तर दयिा:

'ईश्वर ने हमारे वचिारों, शब्दों और कर्मों को पूर्व में जान लयिा है, जो हमारी स्वतंत्र इच्छा पर नर्िभर करते हैं; लेकनि उन्होंने यह भी पूर्वानुमान लगाया है और पूर्वनर्िधारति कयिा है कि हमारे साथ क्या होने वाला है, जो अब हमारी शक्ति में नहीं है, बल्कि उनकी दव्यि इच्छा में नहिति है।'

बशिप थयिोडोसयिस ने पूछा:

– तो फरि, हमारी शक्ति में क्या है, और क्या नहीं?

संत मैक्समिस ने उत्तर दयिा:

'हे स्वामी, आप यह सब जानते हैं, और केवल मुझे, अपने सेवक को, परखने के लिए पूछ रहे हैं।'

[1323] थ्रेस की उत्तरी सीमा कार्पेथयिन पर्वत से मलिती थी; दक्षणि में, इसकी सीमाएँ थीं: मैसेडोनयिा, एजयिन सागर (द्वीपसमूह) और प्रोपोंटसि (मार्मारा सागर); और पूर्व में, काला सागर। इस प्रकार, प्राचीन थ्रेस में शामलि थे: हंगरी का पूर्वी भाग, ट्रांसल्विेनयिा, मोल्डोवा, वलाचयिा, बुल्गारयिा, सर्बयिा और रुमेली का पूर्वी भाग। वज़ियिा – पूर्वी थ्रेस में, ब्लैक सी के कनिारे एक छोटा सा शहर। यह अस्टकिोस नामक एक छोटे से जलि की राजधानी थी। इसके नविासी अपने शहर के पास जहाज दुर्घटनाग्रस्त होने पर कसिी को भी लूट लेते थे।

[1324] पेरवेरा – मैसेडोनयिा और थेस्साली के बीच, ओलंपस पर्वत की घाटयिों में एक नगर।

[1325] मेसेम्ब्रयिा – पूर्वी थ्रेस में, काले सागर के तट पर स्थति एक शहर।

[1326] यह वर्ष 655 का था। – टॉरकि प्रायद्वीप के पूर्वी भाग में चेरसोनेसोस।

[1327] पॉल की मृत्यु 655 में हुई।

[1328] पीटर ने 655 से 666 तक कॉन्स्टेंटनिोपल के पैट्रआिर्केट का शासन कयिा।

[1329] बथिनियिा के उत्तर में ब्लैक सी, पश्चमि में मसियिा, दक्षणि में फ्रीजयिा और गैलैटयिा, और पूर्व में पाफलैगोनयिा से लगी हुई थी। आज यह अनातोलयिा के उत्तरी भाग में स्थति है।

बशिप ने उत्तर दयिा:

'सचमुच, मैं यह नहीं जानता, और मैं यह समझना चाहता हूँ कि हमारे अधकिार में आने वाली और न आने वाली चीज़ों के बीच क्या अंतर है, और कैसे एक दव्यि व्यवस्था से संबंधति है जबकि दूसरी पूर्व-नर्धिारण से?'

आदरणीय मैक्समिस ने उत्तर दयिा:

'हमारे सभी अच्छे और बुरे कर्म हमारी स्वतंत्र इच्छा पर नर्भिर करते हैं; लेकनि हमें जो दंड और दुर्भाग्य मलिते हैं—और उनके वपिरीत—वे हमारी शक्ति में नहीं हैं। वास्तव में, हमें उस बीमारी पर कोई शक्ति नहीं है जो हमें कमजोर कर देती है या अच्छे स्वास्थ्य पर, बल्कि केवल उन परस्थितियिों पर है जो बीमारी का कारण बनती हैं या अच्छे स्वास्थ्य को बनाए रखती हैं। जसि प्रकार अनुशासनहीनता बीमारी का कारण है, जबकि संयम , अच्छे स्वास्थ्य की शर्त है, उसी प्रकार ईश्वर की आज्ञाओं का पालन स्वर्ग के राज्य को प्राप्त करने की शर्त है, जबकि उनका पालन न करना ज्वलंत गेहेना में फेंके जाने का कारण है।

बशिप ने उससे कहा:

'तुम इस नर्वासन से खुद को क्यों सता रहे हो, जबकि तुमने ऐसी वपित्ति के योग्य कुछ कयिा है?'

'मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ,' संत ने उत्तर दयिा, 'कि इस दुर्भाग्य से मुझे दंडति करते हुए, वह मेरे उन पापों को क्षमा कर दे जो मैंने उनके पवत्रि आज्ञाओं का उल्लंघन करके कएि हैं।'

बशिप ने उत्तर दयिा:

'क्या कई लोगों पर परीक्षा के रूप में वपित्तयिाँ नहीं आतीं?'

'संतों को परीक्षा में डाला जाता है,' पूजनीय ने उत्तर दयिा, 'ताकि उनकी छपिी हुई सद्गुणों को सभी के सामने प्रकट कयिा जा सके, जैसा कि आयोब और यूसुफ के साथ हुआ था।' और वास्तव में, अय्यूब को इस लएि आज़माया गया ताकि उनका साहस, जो कसिी को पता नहीं था, प्रकट हो सके, जबकि यूसुफ को वपित्ति में डाला गया ताकि उनकी पवत्रिता और संयम—जो एक मनुष्य को पवत्रि बनाते हैं—स्पष्ट हो सकें। इसके अतरिक्ति, प्रत्येक संत, यदि इस संसार में अनचि्छा से कष्ट सहता था, तो वह ठीक उसी के लएि था ताकि वह गर्वीले धर्मत्यागी, शैतान—साँप—पर ईश्वर द्वारा अनुमत कष्टों के माध्यम से वजिय प्राप्त कर सके; प्रत्येक संत का धैर्य स्वयं परीक्षा का परणिाम था।

इस पर, बशिप थयिोडोसयिस ने उत्तर दयिा:

'वास्तव में, आप बहुत अच्छी और शकि्षाप्रद बात करते हैं, और मैं हमेशा ऐसे मामलों पर आपसे बातचीत करना चाहूँगा—लेकनि चूँकि मैं और मेरे साथी, सबसे सम्मानति कुलीन, इतनी लंबी दूरी तय करके आपके पास एक अन्य उद्देश्य से आए हैं, हम आपसे नवेिदन करते हैं: जो हम आपसे प्रस्तावति कर रहे हैं उसे स्वीकार करें, और पूरे ब्रह्मांड को आनंद दें।'

'क्या ठीक-ठीक, मेरे स्वामी?' संत ने पूछा। 'और मैं कौन हूँ, और कहाँ से आया हूँ, कि मेरी ओर से आपके प्रस्ताव को स्वीकार करने से सारी दुनयिा में खुशी आ सकती है?'

बशिप ने कहा:

'जसि प्रकार मेरे प्रभु यीशु मसीह के सत्य अटूट हैं, उसी प्रकार वह है जो मैं आपको बताने जा रहा हूँ, और इसी प्रकार मेरे सहयोगी, सम्मानति पैट्रसियिन – हमने यह सीधे अपने पैट्रआर्क और धर्मपरायण राजा से सुना है।'

'तो फरि बताइए, महाशयगण,' संत मैक्समिस ने उत्तर दयिा, 'आप क्या चाहते हैं, और आपने क्या सुना है?'

तब थयिोडोसयिस बोलने लगा:

'सम्राट और पैट्रआर्क, सबसे पहले, आपसे यह जानना चाहते हैं: आप कॉन्स्टेंटनिोपल की सी से संप्रदायकि संबंध क्यों तोड़ रहे हैं?'

संत मैक्समिस ने उत्तर दयिा:

आप पछिले चक्र के छठे इंडकि्शन[1330] में अपनाई गई नवप्रवर्तन से अवगत हैं। इसकी शुरुआत अलेक्जेंड्रयिा में उस समय के पैट्रआर्क साइरस द्वारा नौ अध्यायों की घोषणा के साथ हुई, जनि्हें कॉन्स्टेंटनिोपल की सी ने अनुमोदति

[1330] इंडकि्शन – रोमन कैलेंडर के अनुसार – 15 वर्षों की एक अवधि, या चक्र, को दर्शाता है। इस चक्र में पहले वर्ष को पहला इंडकि्शन, दूसरे वर्ष को दूसरा इंडकि्शन, और इसी तरह कहा जाता था। ग्रीक और स्लावोनकि कैलेंडर में, 1 सतिंबर के लिए प्रवष्टि इस प्रकार थी: 'इंडकि्शन की शुरुआत, यानी, नई गर्मयिाँ'। संत मैक्समिस के जीवन से उद्धृत अंश में, 'पछिले चक्र की छठी इंडकि्शन' शब्दों का अर्थ 'नौ साल पहले', यानी वर्ष 648 में, समझा जाना चाहए।

और पुष्टि की थी। अन्य परिवर्तन और जोड़ (एक्फेसिस और टाइपस) भी थे जो परिषदों के निर्णयों को विकृत करते हैं। ये नवाचार बीजान्टिन चर्च के पहले प्रतिनिधियों—सर्गीयस, पिरिस और पॉल—द्वारा पेश किए गए थे और सभी चर्चों को इनके बारे में पता है। यही कारण है कि मैं, आपका सेवक, कॉन्स्टेंटिनोपल के चर्च के साथ संप्रदाय में प्रवेश नहीं करता। उपरोक्त पुरुषों द्वारा कलीसिया में डाली गई ये ठोकरें नष्ट हों—जो इन्हें लाए वे हटा दिए जाएँ—और मोक्ष का मार्ग बाधाओं से मुक्त हो जाए, ताकि आप तब सुसमाचार के चिकने मार्ग पर चल सकें, जो सभी विधिर्मों से शुद्ध हो! जब मैं कॉन्स्टेंटिनोपल की कलीसिया को पहले जैसी देखूँगा, तो मैं भी उसकी ओर मुड़ूँगा, क्योंकि मैं कभी उसका पुत्र था, और बिना किसी मानवीय मनाने के उसके साथ संप्रदायिक एकता में प्रवेश करूँगा। लेकिन जब तक उसमें विधिर्मी प्रलोभन और विधिर्मी बिशप मौजूद हैं, तब तक कोई भी शब्द या कर्म मुझे उनके साथ संप्रदायिकता में प्रवेश करने के लिए कभी राज़ी नहीं कर सकता।

'लेकिन हमारे धर्म-स्वीकार में ऐसा क्या गलत है,' बिशप थियोडोसियस ने पूछा, 'कि आप हमारे साथ संप्रदायिक संबंध नहीं रखना चाहते?'

संत मैक्सिमिस ने उत्तर दिया:

– आप यह स्वीकार करते हैं कि उद्धारकर्ता की दिव्यता और मानवता का एक ही कार्य था; फिर भी, यदि हम पवित्र पिताओं पर विश्वास करें, जो यह दावा करते हैं कि जिसके पास एक ही कार्य है तो वह एक ही स्वभाव का भी धनी है, फिर आप पवित्र त्रिमूर्ति को त्रिमूर्ति के रूप में नहीं बल्कि चतुष्टय के रूप में स्वीकार कर रहे हैं, मानो मसीह का देहधारण वचन के साथ एकसार हो गया हो और उसने उस मानवीय स्वभाव की एकता को त्याग दिया हो, जो हममें है और जो परमेश्वर की अति पवित्र कुँवारी माता में थी; और मनुष्य के लिए स्वाभाविक एकसारता से इस विचलन पर, ऐसा लगता है जैसे एक नया सार बना हो, जो वचन के साथ उतना ही एकसार हो जितना वचन पिता और आत्मा के साथ एकसार है; इस प्रकार, यह अब त्रिमूर्ति नहीं, बल्कि चतुर्मूर्ति है। इसी प्रकार, जब आप कार्यों का खंडन करते हैं और यह दावा करते हैं कि मिसीह की दिव्यता और मानवता में एक ही इच्छा थी, तो आप भलाई करने में उनकी स्वतंत्र पहल को कम करते हैं। क्योंकि यदि किसी भी स्वभाव के पास अपना, अंतर्निहित कार्य नहीं है, तो भले ही वह किसी के प्रति भलाई करना चाहे, वह ऐसा करने में असमर्थ होगा, क्योंकि भलाई करने की क्षमता उससे छीन ली गई है। क्योंकि कार्य करने की क्षमता के बिना और स्वभाव के अनुरूप कार्य के बिना, कोई भी वस्तु कुछ भी उत्पन्न या पूरा नहीं कर सकती। दूसरी ओर, मसीह के अवतार को स्वीकार करके, आप दो स्वभावों में एक ही इच्छा की बात करते हैं; लेकिन ऐसा करने में, आप यह स्वीकार करते हैं कि उसका शरीर, अपनी इच्छा से, पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के साथ, सभी युगों और सभी सृष्टि का स्रष्टा था; जबकि, अपने स्वभाव से ही, वह स्वयं सृजित है। या यूँ कहें: मांस अपनी इच्छा से आरंभ-रहित है – क्योंकि ईश्वर की इच्छा आरंभ-रहित है, ठीक वैसे ही जैसे ईश्वरत्व का कोई आरंभ नहीं है – जबकि अपनी प्रकृति से ही मांस समय में सृजित है। लेकिन इसका प्रचार करना केवल पागलपन ही नहीं, बल्कि अधर्म भी है, क्योंकि आप मसीह में केवल एक इच्छा की बात ही नहीं करते, बल्कि उसे दिव्य कहते हैं; और दिव्य इच्छा को न तो कोई आरंभ माना जा सकता है और न ही कोई अंत, ठीक वैसे ही जैसे स्वयं दिव्यता का कोई आरंभ नहीं है। आप प्रभु मसीह को उन सभी अभिव्यक्तियों और गुणों से भी वंचित कर देते हैं, जिनसे उनकी दिव्यता और मानवता की पहचान होती है, जब, ekphesis और typus के द्वारा, आप यह मांग करते हैं कि हम उनमें न तो एक इच्छा की, न ही दो इच्छाओं की, और न ही उनके कार्यों की बात करें। यह इच्छा एक नहीं है, क्योंकि आप मानव इच्छा को दैवीय इच्छा के अधीन करके इसे दो में विभाजित करते हैं; और न ही ये दो हैं, क्योंकि आप उन्हें एक में विलीन कर देते हैं।

जब संत मैक्सिमिस ने ये और कई अन्य शब्द कहे, जैसा कि उनके शिष्य अनास्तासियस विस्तार से वर्णन करते हैं, तो थियोडोसियस और पैट्रिसियनों को अपनी गलती का एहसास होने लगा। हालाँकि, बिशप ने कहा:

'राजा द्वारा लिखित टाइपस को विश्वास के सकारात्मक धर्मनियम के रूप में नहीं, बल्कि संदिग्ध प्रश्नों को सुलझाने के साधन के रूप में स्वीकार करें। उन्होंने इसे कानून बनाने के अर्थ में नहीं, बल्कि विश्वास की व्याख्या के अर्थ में लिखा था।'

संत मैक्सिमिस ने उत्तर दिया:

'यदि टाइपस हमारे प्रभु की इच्छा और कर्म की एकता की पुष्टि करने वाला एक सकारात्मक कानून नहीं है, तो आपने मुझे उन बर्बरों और विधिर्मी लोगों की भूमि में निर्वासित क्यों किया जो परमेश्वर को नहीं जानते? किस कारण से

मुझे यहाँ वसियिा में रहने के लिए दंडति कयिा गया है? कसि कारण से मेरे सहयोगयिों को नरि्वासति कयिा गया है: एक को पेरवेरा और दूसरे को मेसेम्ब्रयिा को?'

तब उन्होंने उस स्थानीय परषिद को याद कयिा जसिे धन्य पोप मार्टनि ने मोनोथेलट्सि की नदिा करने के लिए रोम में बुलाया था, बशिप थयिोडोसयिस ने कहा:

'उस परषिद का कोई महत्व नहीं है, क्योंकि इसे शाही फरमान से नहीं बुलाया गया था।'

रेवरेंड ने उत्तर दयिा:

'यदि केवल शाही फरमान द्वारा बुलाई गई परषिदों के आदेशों को ही मान्य माना जाए, तो कोई ऑर्थोडॉक्स (सही) आस्था नहीं रह सकती। उन परषिदों को याद करो जो पुत्र की एकसारता (consubstantiality) के वरिुद्ध शाही फरमान द्वारा बुलाई गई थीं, जनिमें यह अपमानजनक सद्धिांत स्थापति कयिा गया था कि परमेश्वर का पुत्र, परमपति परमेश्वर के साथ एकसार नहीं है। ऐसे ही परषिदें थीं: पहली टायर में, दूसरी एंटओिक में, तीसरी सेल्यूकयिा में, चौथी अरीय यूडॉक्सयिस के अधीन कॉन्स्टेंटनिोपल में, पांचवीं नकियिा में, छठी सरिमयिम में, और, बहुत बाद में, सातवीं एफसिस में डयिोस्कोरस की अध्यक्षता में। ये सभी परषिदें शाही फरमान द्वारा बुलाई गई थीं; फरि भी, उन सभी को खारजि और शापति कर दयिा गया है, क्योंकि उनमें धर्मनरिपेक्ष और ईश्वर-नन्दिा करने वाले धर्म-सूत्र तैयार कए गए थे। इसके अलावा, आप उस परषिद को क्यों नहीं खारजि करते जसिने सामोसता के पॉल को दोषी ठहराया और उसे शापति कयिा? आखरिकार, उस परषिद की अध्यक्षता इन लोगों ने की थी: रोम के पोप डायोनसियिस, अलेक्जेंड्रयिा के डायोनसियिस, और ग्रेगरी द वंडरवर्कर, जन्होंने इस परषिद की अध्यक्षता की। यह परषिद शाही फरमान के बनिा हुई; फरि भी यह दृढ़ और अवविादनीय बनी हुई है। ऑर्थोडॉक्स चर्च केवल उन परषिदों को सत्य और पवत्रि के रूप में मान्यता देती है जनिमें सच्चे और अपरविर्तनीय धर्मसद्धिान्त स्थापति कए गए हैं। और वास्तव में, जैसा कि परम पावन को अच्छी तरह से पता है और वे दूसरों को भी वैसे ही सखिाते हैं, कैनन यह नरि्धारति करते हैं कि हर ईसाई देश में स्थानीय परषिदों को साल में दो बार बुलाया जाना चाहए—हमारे उद्धारकारी वशि्वास की रक्षा करने के लिए और जो कुछ भी सुधार की आवश्यकता है, उसे सुधारने के लिए; फरि भी, चर्च के नयिमों में शाही फरमानों का कोई उल्लेख नहीं है।

दोनों पक्षों पर एक लंबी चर्चा और एक तीखी बहस के बाद, आदरणीय मैक्समिस के होंठ दवि्य ज्ञान और वाक्पटुता से भर गए, और उनकी जीभ, पवत्रि आत्मा से प्रेरति होकर, अपने वरिोधयिों पर हावी हो गई। बाद वाले लंबे समय तक चुपचाप बैठे रहे, उनके सरि झुके हुए थे और उनकी आँखें झुकी हुई थीं। तब वे करुणा से भर गए और रोने लगे; जसि पर वे उठे और संत के सामने झुक गए, ठीक वैसे ही जैसे वह उनके सामने झुका था। साथ में प्रार्थना करने के बाद, उन्होंने संत मैक्समिस की सच्ची शक्षिा से प्रसन्नतापूर्वक सहमति व्यक्त की और उसे स्नेहपूर्वक स्वीकार कर लयिा, और उसी के अनुसार वशि्वास करने का संकल्प लयिा तथा राजा को भी ऐसा ही करने के लिए मनाने की आशा की। अपने वादे की पुष्टि करने के लिए, उन्होंने दवि्य सुसमाचार, पवत्रि क्रूस, और उद्धारकर्ता तथा परमेश्वर की परम पवत्रि माता की पवत्रि प्रतमिाओं को चूमा। तब, आत्मा के लिए लाभकारी वषियों पर लंबी बातचीत करने के बाद, उन्होंने प्रभु में एक-दूसरे को चूमकर वदिाई ली और, एक-दूसरे को शांति की शुभकामनाएँ देते हुए, बशिप थयिोडोसयिस और पैट्रसियिन—बाइज़ेन्टयिम लौट आए। जब उन्होंने सम्राट को वह सब कुछ बताया जो कहा और कयिा गया था, तो वह बहुत क्रोधति हो गए। तब थयिोडोसयिस और दो पैट्रसियिन, सम्राट के क्रोध से डरकर, एक बार फरि से वधिर्म पर लौट आए। इसके बाद, पॉल नामक पैट्रसियिन को एक बार फरि से वशियिा भेजा गया, ताकि वे आदरणीय मैक्समिस को सम्मानपूर्वक कॉन्स्टेंटनिोपल लाएँ। जब संत मैक्समिस को वहाँ लाया गया, तो उन्हें संत थयिोडोर के मठ में रहने का आदेश दयिा गया[1331] ।

अगली सुबह, सम्राट ने दो पैट्रसियिनों—एपफिानयिस और ट्रॉइलस—को पूजनीय के पास भेजा। वे कई कुलीनों, सैनकिों और नौकरों के एक दल के साथ, दखिावट और व्यर्थ वैभव के साथ पहुंचे। उनके साथ उपरोक्त बशिप थयिोडोसयिस भी थे; आदरणीय मैक्समिस उनका इंतजार कर रहे थे और अपने वादे के पूरा होने की आशा कर रहे थे, जसिके अनुसार न केवल उन्हें स्वयं सच्चा वशि्वास करना था, बल्कि उन्हें राजा और लोगों के सभी अन्य प्रतनिधियिों को भी ऑर्थोडॉक्सी में वापस लाना था। लेकनि थयिोडोसयिस ने झूठ बोला, उसने स्वर्गीय राजा और उनकी पवत्रि चर्च

[1331] यह वर्ष 655 का था। – महान शहीद थयिोडोर का मठ कॉन्स्टेंटनिोपल के उपनगर में स्थति था।

का अनुसरण करने के बजाय सांसारकि राजा और व्यर्थ की दुनिया को खुश करना पसंद कयिा। जब सभी अपनी-अपनी जगह पर बैठ गए और पादरी को बैठने के लिए मना लयिा, तो कुलीन ट्रॉइलस बोलने लगा।

उसने कहना शुरू कयिा, 'ब्रह्मांड के स्वामी, सम्राट ने हमें आपके पास इस बात की घोषणा करने के लिए भेजा है जो ईश्वर द्वारा स्थापति उनके शाही अधकिार को प्रसन्न करती है; लेकनि पहले हमें बताएं: क्या आप शासक की इच्छा पूरी करेंगे या नहीं?'

संत मैक्सिमस ने उत्तर दयिा:

'सबसे पहले, मेरे स्वामी, मैं यह सुनूँगा कि शासक मुझसे क्या आज्ञा करते हैं, और मैं उसी के अनुसार आपको उत्तर दूँगा। क्योंकि मैं उस बात का उत्तर कैसे दे सकता हूँ जसिे मैं अभी तक नहीं जानता?'

हालाँकि, ट्रॉइलस ने आगे कहा, और कहा:

'जब तक आप हमें यह नहीं बता देते कि आप राजा की आज्ञा का पालन करेंगे या नहीं, तब तक हम आपको अपनी यात्रा का कारण नहीं बताएंगे।'

उस धर्मनष्ठि व्यक्तनि, जब देखा कि दूत उस पर लगातार दबाव डाल रहे थे, दुष्टता से घूर रहे थे और कठोरता से पूछ रहे थे कि क्या वह राजा की इच्छा का पालन करेगा, तो उत्तर दयिा:

'चूँकि आप मुझे, अपने सेवक को, यह नहीं बताना चाहते कि हमारे स्वामी, राजा को क्या प्रसन्न होता है, तो मैं ईश्वर स्वयं और उनके पवत्रि स्वर्गदूतों की उपस्थतिि में, आपको नम्निलखिति घोषति करता हूँ: यदि राजा मुझे कोई अस्थायी और क्षणकि प्रकृतकिा कार्य करने का आदेश देते हैं, जो ईश्वर के वरिुद्ध नहीं है और आत्मा के शाश्वत मोक्ष को कोई हानि नहीं पहुँचाता है, तो मैं खुशी-खुशी पालन करूँगा।'

जब संत ने यह कहा, तो कुलीन ट्रॉइलस तुरंत उठ खड़ा हुआ और जाने को हुआ, यह कहते हुए:

'मैं जा रहा हूँ, क्योंकि मैं देखता हूँ कि यह आदमी राजा की इच्छा का पालन नहीं करेगा।'

लेकनि तुरंत ही वहाँ इकट्ठा हुए लोगों की भीड़ में हलचल मच गई और बड़ा हंगामा खड़ा हो गया। तब बशिप थयिोडोसयिस ने कहा:

'उसके सामने शासक की आज्ञा की घोषणा करो और उसका उत्तर सुनो, क्योंकि उसके पास कुछ कहे बनिा या उसका उत्तर सुने बनिा चले जाना उचति नहीं है।'

इसके बाद, कुलीन एपफिानयिस ने आदरणीय से कहना शुरू कयिा:

'ज़ार की आज्ञा यह है कि यह तुम पर घोषति कयिा जाए: चूंकि पूरा पूर्व, और पश्चमि में जो भटक गए हैं, आपकी ओर देखकर, धर्मद्रोही बनकर और षड्यंत्र रचकर अशांति और हलचल मचा रहे हैं, जबकि विश्वास के मामलों में हमारे साथ कसिी भी प्रकार का संचार करने से इनकार करते हैं, प्रभु आपका हृदय नम्रता से कोमल कर दे, ताकि आप हमारे द्वारा जारी कएि गए आदेश को स्वीकार करके हमारे साथ संचार में प्रवेश करें। जहाँ तक हमारी बात है, हमने आपको प्रेम से ग्रहण कयिा है, और हम बड़े सम्मान और महमिा के साथ आपको चर्च में लाएँगे और आपको हमारे बगल में स्थापति करेंगे, जहाँ आम तौर पर राजा खड़े होते हैं, और हम आपके साथ मसीह के पवत्रितम और जीवन-दायक रहस्यों में सहभागति करेंगे। तब हम आपको अपना पति घोषति करेंगे, और न केवल हमारे मसीह-प्रेमी शहर में, बल्कि पूरे ईसाई जगत में आनंद होगा। क्योंकि हमें दृढ़ वश्विास है कि जिब आप कॉन्स्टेंटनिोपल की पवत्रि कलीसयिा के साथ संप्रदाय में प्रवेश करेंगे, तो वे सभी जो आपके लिए और आपके नेतृत्व में हमसे संप्रदाय से अलग हो गए हैं, वे भी हमसे जुड़ जाएँगे।

संत अबा मैक्सिमस ने बशिप थयिोडोसयिस की ओर मुड़कर आँसुओं के साथ कहा:

'हम सभी, महाधर्माध्यक्ष महोदय, महा-न्याय के महान दनि की प्रतीक्षा कर रहे हैं। आप को याद होगा कि हाल ही में पवत्रि सुसमाचार, जीवन-दायक क्रूस और हमारे उद्धारकर्ता यीशु मसीह तथा उनकी नरि्मल माता, परम पवत्रि थओिटोकोस और सदा-कन्या मरयिम की पवत्रि प्रतमिाओं के समक्ष क्या कहा और क्या वादा कयिा गया था।'

बशिप ने अपनी दृष्टि झुकाकर नम्रता से कहा:

'मैं क्या कर सकता हूँ, जब धर्मपरायण ज़ार कुछ और चाहते हैं?'

अब्बा मैक्सिमस ने उनसे उत्तर दयिा:

'तो फरि, आपने और आपके साथयिों ने पवत्रि सुसमाचार पर हाथ क्यों रखा, जबकि आपके पास अपना वादा पूरा करने का कोई दृढ़ इरादा नहीं था? सचमुच, स्वर्ग की सभी शक्तयिाँ भी मुझे वह करने के लिए मना नहीं सकतीं जो आप

प्रस्तावित कर रहे हैं। क्योंकि मैं किसे उत्तर दूँगा—ईश्वर को नहीं, बल्कि अपने ही विवेक को—यदि मैं व्यर्थ की महिमा और मनुष्यों की तुच्छ राय के लिए, उस सच्चे धर्म को अस्वीकार कर दूँ जो उससे प्रेम करने वालों को बचाता है?

जब संत ने यह कहा, तो वे सब एक साथ क्रोध और उग्रता से भरकर उठ खड़े हुए; और उस पर टूट पड़े, उन्होंने न केवल अपमानजनक शब्दों से उसकी निंदा की, बल्कि उस पर हाथ भी उठाया। उसे पकड़कर, उन्होंने उसे मुट्ठी से मारा, नोचा-खसोटा, फर्श पर इधर-उधर घसीटा, धक्का दिया और पैरों तले रौंदा, और हर कोई उस पर वार करने के लिए झपटने की कोशिश कर रहा था। यदि बिशप थियोडोसियस ने उनके क्रोध को शांत न किया होता और इस हंगामे को न थमवाया होता, तो वे निश्चित रूप से उस संत को मार डालते। जब उन्होंने संत को पीटना और यातना देना बंद कर दिया, तो उन्होंने उस पर थूकना शुरू कर दिया, और उन्होंने उस ईश्वर-पुरुष को सिर से पैर तक थूक से लथपथ कर दिया। उनके घृणित थूक से एक भयानक बदबू आ रही थी, जिसने उसके सारे कपड़े गंदे कर दिए थे।

तब बिशप ने उनसे कहा:

'तुम्हें ऐसा नहीं करना चाहिए था; तुम्हें बस उसके जवाब को सुनकर राजा को बता देना चाहिए था, क्योंकि धार्मिक नियमों के अधीन मामलों का निर्णय अलग तरह से किया जाता है।'

बड़ी कठिनाई से, बिशप ने उन्हें हंगामा बंद करने और फिर से बैठने के लिए मनाया। वे बैठ गए, लेकिन साथ ही वे संत को अभद्र गालियों और अपमानजनक तानों से अपमानित करते रहे।

तब कुलीन एपफिनियस, क्रोध से उबलता हुआ, संत से गुस्से में बोला:

'बताओ हमें, हे दुष्ट बूढ़े, जो एक दानव के वश में है! तुम ऐसे शब्द क्यों बोलते हो? क्या तुम हम सभी, हमारे नगर और हमारे राजा को विधर्मी नहीं मानते? जान लो: हम तुमसे अधिक ईसाई हैं, और तुमसे अधिक ऑर्थोडॉक्स हैं।' हम अपने प्रभु यीशु मसीह में एक दिव्य और एक मानवीय इच्छा, और एक तर्कशील आत्मा को स्वीकार करते हैं; क्योंकि प्रत्येक तर्कशील प्राणी में, उसकी स्वभाविक प्रकृति के अनुसार, स्वतंत्र इच्छा की शक्ति और क्रिया की क्षमता, दोनों हमेशा मौजूद होती हैं। वास्तव में, गति एक जीवित प्राणी में अंतर्निहित है, जबकि इच्छाशक्ति मन में अंतर्निहित है। हम स्वीकार करते हैं कि प्रभु में इच्छाशक्ति की शक्ति न केवल उनकी दिव्यता में बल्कि उनके मानवत्व में भी है; और, विशेष रूप से, हम उनकी दो इच्छाओं और दो क्रिया-विधि से इनकार नहीं करते हैं।

अब्बा मैक्सिमिस ने उत्तर दिया:

'यदि आप परमेश्वर की कलीसिया की शिक्षा के अनुसार, और एक तर्कशील प्राणी के लिए उचित रूप से विश्वास करते हैं, तो आप मुझे एक "टायपस" को स्वीकार करने के लिए क्यों मजबूर कर रहे हैं जो आपके वर्तमान कथन का पूरी तरह से खंडन करता है?'

एपफिनियस ने आपत्ति जताई:

'टायपस उन सच्चाइयों को स्पष्ट करने के लिए लिखा गया था जो पूरी तरह से स्पष्ट नहीं हैं, ताकि लोग उनके अभिव्यक्ति की विशेष सूक्ष्मता से भटक न जाएँ।'

इस पर, अबा मैक्सिमिस ने उत्तर दिया:

'यह विश्वास के विरुद्ध है; फिर भी हर व्यक्ति विश्वास की सही स्वीकारोक्ति के द्वारा पवित्र होता है।'

तब कुलीन ट्रॉइलस ने आपत्ति जताई:

'टाइपस मसीह में दो इच्छाओं का खंडन नहीं करता, बल्कि चर्च में शांति के लिए केवल उनके बारे में मौन रहता है।'

अब्बा मैक्सिमिस ने उत्तर में कहा:

'किसी शब्द के बारे में चुप रहना उसे नकारना है, जैसा कि पवित्र आत्मा ने भविष्यवक्ता के माध्यम से कहा है: "*ऐसी कोई भाषा या वाणी नहीं है जहाँ उनकी आवाज़ नहीं सुनी गई है*" (भजन संहिता 18:4)। अत; यदि कोई शब्द बोला नहीं जाता, तो वह शब्द ही नहीं है।'

तब ट्रॉइलस ने कहा:

'अपने हृदय में जो भी विश्वास रखना चाहो, रखो; कोई तुम्हें मना नहीं करता।'

संत मैक्सिमिस ने उत्तर दिया:

'लेकिन पूर्ण उद्धार केवल हार्दिक विश्वास पर ही नहीं, बल्कि उसके अंगीकार पर भी निर्भर करता है, क्योंकि प्रभु कहते हैं: "*जो कोई मनुष्यों के सामने मुझ से इनकार करेगा, मैं भी स्वर्गीय अपने पिता के सामने उससे इनकार करूँगा*"

(मत्ती 10:33)। इसी प्रकार, दिव्य प्रेरित सिखाते हैं: *'हृदय से विश्वास किया जाता है और मुँह से घोषणा की जाती है'* (रोमियों 10:10)। तो, यदि ईश्वर और दैवीय नबी और प्रेरित हमें उस विश्वास के रहस्य को शब्द और जीभ से स्वीकार करने की आज्ञा देते हैं जो संपूर्ण जगत को उद्धार प्रदान करता है, तो किसी को भी इस स्वीकारोक्ति के संबंध में चुप रहने के लिए मजबूर नहीं किया जाना चाहिए, कहीं ऐसा न हो कि मानव जाति का उद्धार कम हो जाए।

इस पर एपिफेनियस ने कड़वे स्वर में कहा:

'क्या आपने रोम में आयोजित परिषद के फरमानों पर हस्ताक्षर किए?'

'मैंने किया है,' संत ने उत्तर दिया।

तब एपिफेनियस ने जारी रखा:

'तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई उन लोगों को बहिष्कृत करने की जो तर्कशील प्राणियों के अनुरूप और जैसा कि कैथोलिक चर्च सिखाती है, वैसे ही आस्था का प्रचार करते हैं?' 'सचमुच, हम अपने ही निर्णय से तुम्हें शहर में लाकर बाँधकर चौक में खड़ा कर देंगे; हम सभी अभिनेताओं, वेश्याओं और भीड़ को इकट्ठा करेंगे, और उन्हें तुम्हारे गालों पर थप्पड़ मारने और तुम्हारे चेहरे पर थूकने के लिए मजबूर करेंगे।'

इस पर संत ने उत्तर दिया:

'जैसा तुमने कहा है, वैसा ही हो।' लेकिन यदि आप यह दावा करते हैं कि हमने उन लोगों को निष्कासित किया है जो हमारे प्रभु में एकजुट दो स्वभावों, साथ ही प्रभु मसीह में प्रत्येक स्वभाव के अनुरूप दो इच्छाओं और दो क्रियाओं को स्वीकार करते हैं—जो अपने दिव्य स्वभाव से सच्चे ईश्वर हैं, और अपने मानवीय स्वभाव से सच्चे मनुष्य हैं—तो पढ़ें, मेरे प्रभु, इस परिषद के कार्यों वाली पुस्तक पढ़ें, और यदि आपको वही मिले जो आपने कहा है, तो आपकी इच्छा। क्योंकि मैंने, अपने सहयोगियों और परिषद की कार्यवाहियों पर हस्ताक्षर करने वाले सभी लोगों के साथ मिलकर, उन लोगों पर निन्दा की है जो, एरियस और अपोलिनारिस[1332] के समान, प्रभु में एक ही इच्छा और एक ही क्रिया को स्वीकार करते हैं, और हमारे प्रभु और परमेश्वर को दो स्वभावों वाला स्वीकार नहीं करते, जिनमें वे निवास करते हैं, और इसी प्रकार इच्छा और क्रिया की शक्ति के स्वामी हैं, जिससे वे हमारा उद्धार करते हैं।

तब एपिफेनियस के मित्र, पैट्रिसियिन्स, और उनके साथ आए सभी लोग आपस में कहने लगे:

'अगर हम उसकी बात सुनते रहे, तो हमें न तो भोजन मिलेगा और न ही पानी। इसलिए, चलकर अपना भोजन कर लें, और फिर राजा और पादरी को जो हमने सुना है, उसकी सूचना दें। आप देख सकते हैं कि यह दुष्ट व्यक्ति खुद को शैतान के हवाले कर चुका है।'

तब वे उठकर दोपहर का भोजन करने चले गए। वास्तव में, यह पवित्र क्रूस के उत्थान के पर्व की पूर्व संध्या थी, और पूरी रात की प्रार्थना का समय पहले ही नजदीक आ रहा था। अपना भोजन समाप्त करने के बाद, वे गहरी असंतोष की भावना के साथ शहर की ओर चल पड़े।

अगले दिन (14 सितंबर), सुबह-सुबह, कुलीन थिओडोसियस आदरणीय मैक्सिमिस के सामने उपस्थित हुआ, संत के पास मौजूद सभी किताबें छीन लीं, और राजा की ओर से कहा:

'चूंकि आपने यह सम्मान ठुकरा दिया है, तो निर्वासन में चले जाइए, जिसके आप हकदार हैं।'

पवित्र वरिष्ठ को तुरंत सैनिकों ने पकड़ लिया और पहले सेलेम्ब्रिया ले गए, जहाँ वे दो दिन तक रहे। इस दौरान, सेलेम्ब्रिया का एक सैनिक, जो सेना में शामिल हो गया था, ने पूरे शिविर में यह अफवाह फैला दी, जिससे लोगों को वरिष्ठ के खिलाफ भड़काया गया: 'हमारे पास एक ऐसा भिक्षु आया है जो परमेश्वर की परम पवित्र माता का अपमान करता है।' सेनापति ने सेलेम्ब्रिया शहर के सबसे प्रमुख पुरोहितों, साथ ही पादरियों, डिकन्स और सबसे सम्मानित भिक्षुओं को बुलाकर, उन्हें धन्य मैक्सिमिस के पास यह पता लगाने के लिए भेजा कि उनके बारे में जो कहा जा रहा था, वह सच था या नहीं, अर्थात् कि वह परमेश्वर की माता का अपमान कर रहे थे। जब वे पहुँचे, तो आदरणीय पितामी उठे और उनके पद की सम्मान में जमीन पर झुक गए। उन्होंने भी संत के प्रति नमन किया, और फिर वे सभी अपनी-अपनी जगह पर बैठ गए। फिर वहाँ उपस्थित लोगों में से एक, जो एक अति सम्माननीय वृद्ध थे, ने आदरणीय पितामी मैक्सिमिस से बहुत कोमलता और सम्मानपूर्वक पूछा:

[1332] लाओडिकिया के बिशप अपोलिनारिस ने यह सिखाया कि परमेश्वर के पुत्र ने, अवतार लेने के बाद, एक अपूर्ण मानवीय स्वभाव को अपनाया, जिसमें केवल एक मानवीय आत्मा और शरीर था, जबकि उनके मानवीय मन की जगह दिव्यता ने ले ली थी। इस विधर्म की दूसरी सार्वभौमिक परिषद द्वारा निंदा की गई थी।

'पिताजी, चूँकि कुछ लोग आपकी पवित्रता के बारे में भटक गए हैं, यह दावा करते हुए कि आप हमारी माता, परम पवित्र कुँवारी मरियम को परमेश्वर की माता के रूप में स्वीकार नहीं करते हैं, मैं आपसे परम पवित्र एकसार त्रिमूर्ति के नाम पर विनती करता हूँ कि हमें सच बताएं और हमारे हृदयों से इस धोखे को दूर करें, कहीं ऐसा न हो कि हम भी आपके बारे में गलत सोचकर पाप कर बैठें।'

आदरणीय मैक्सिमिस ने स्वस्तिक का चिह्न बनाते हुए स्वयं को भूमि पर प्रणाम किया; फिर, उठकर, उन्होंने अपने हाथ स्वर्ग की ओर उठाए और आँसुओं से भरी आँखों के साथ गंभीरता से घोषणा की:

'जो कोई भी हमारी माता, सर्व-स्तुत्य, परम पवित्र और निर्दोष कुंवारी, सभी तर्कशील प्राणियों में सबसे सम्मानित, को परमेश्वर की सच्ची माता के रूप में स्वीकार नहीं करता, जिसने स्वर्ग और पृथ्वी, समुद्र और उनमें जो कुछ भी है, उसे बनाया, वह पिता और पुत्र, और पवित्र आत्मा, एकसार और सनातन त्रिमूर्ति, और सभी स्वर्गीय शक्तियों द्वारा, पवित्र प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं की सेना, और शहीदों की अनगिनत भीड़, और हर धर्मी आत्मा जो विश्वास में परलोक सिधार गई है, द्वारा, अब और हमेशा और युगों-युगों तक!

यह सुनकर, सभी की आँखों में आँसू आ गए और उन्होंने उसे अपनी शुभकामनाएँ दीं, यह कहते हुए:

'ईश्वर आपको बल दें, पिताजी, और आपको अपनी पुकार को यथोचित और बिना किसी बाधा के पूरा करने की कृपा दें!'

इसके बाद, वहाँ बहुत सारे सैनिक संतों के पवित्र वचनों को सुनने के लिए इकट्ठा हुए, जब वे आपस में बातचीत कर रहे थे। तब सेनापति के एक सहायक ने, संतों के शब्दों को ध्यान से सुन रहे सैनिकों की बड़ी भीड़ को देखकर और उनके निर्वासन के लिए सरकार की आलोचना करते हुए, आदेश दिया कि संत को तुरंत ले जाया जाए और दो स्टेडियम और आगे ले जाया जाए[1333] , जबकि वे लोग जो उसे कैद के लिए पेरवेरा ले जाने वाले थे, अपनी तैयारी कर रहे थे। धर्मगुरु, दैवी प्रेम से प्रेरित होकर, संत के साथ पैदल ही उन दो स्टेडियमों की दूरी तय करके गए। जब सैनिक उन्हें निर्वासन के लिए ले जाने पहुँचे, तो धर्मगुरुओं ने संत को अपनी बाहों में उठाकर एक घोड़े पर बिठा दिया। फिर उन्होंने उन्हें आँसुओं से गले लगाया और विदा कहकर अपने शहर लौट आए। हालाँकि संत को पेरवेरा ले जाया गया और वहाँ कैद कर दिया गया।

बहुत समय बीत गया[1334] , और राजा ने एक बार फिर से पूजनीय मैक्सिमिस और उनके दो शिष्यों को कैद से कॉन्स्टेंटिनोपल लाने के लिए भेजा। जब वे जहाज से शहर पहुँचे, तो सूर्यास्त हो रहा था, गार्ड के दो कमांडर दस सैनिकों के साथ आए; उन्होंने उन्हें जहाज से आधा नग्न और नंगे पैर बाहर निकाला, उन्हें अलग कर दिया और प्रत्येक को अलग-अलग कैद कर दिया। कुछ दिनों बाद, उन्हें शाही कक्ष में ले जाया गया। दोनों शिष्यों को प्रांगण में पहरे के नीचे छोड़ दिया गया, जबकि विरिष्ठ को अंदर ले जाया गया, जहाँ गणमान्य और कई प्रतिष्ठित व्यक्ति इकट्ठा थे। संत को बैठे हुए शासकों के बीच बिठाया गया। फिर शाही कोषाध्यक्ष ने, अपनी आवाज़ में चिड़चिड़ाहट के साथ, उनसे कहा:

'क्या तुम ईसाई हो?'

बड़े ने उत्तर दिया:

'सभी के ईश्वर, मसीह की कृपा से, मैं एक ईसाई हूँ।'

कोषाध्यक्ष क्रोध से भर गया और बोला:

'तुम झूठ बोल रहे हो।'

संत ने उत्तर दिया:

'तुम कहते हो कि मैं ईसाई नहीं हूँ, लेकिन ईश्वर कहते हैं कि मैं निश्चिंदेह एक ईसाई ही हूँ।'

– लेकिन अगर आप ईसाई हैं, – कोषाध्यक्ष ने आपत्ति जताई, – तो आप राजा से नफ़रत क्यों करते हैं?

'यह कैसे देखा जा सकता है?' संत ने पूछा। 'आखिरकार, घृणा आत्मा की एक गुप्त भावना है, ठीक वैसे ही जैसे प्रेम है।'

'आपके कर्मों से,' कोषाध्यक्ष ने उत्तर दिया, 'यह सभी को ज्ञात हो गया है कि आप राजा और उसके राज्य के शत्रु हैं। क्योंकि आपने अकेले ही मिस्र, अलेक्जेंड्रिया, पेंटापोलिस, त्रिपोली और अफ्रीका को सारासेनों के हवाले कर दिया है।'

[1333] 'पोपरिश्चे' दूरी की एक इकाई है जो 690 साज़ेन्ज़ के बराबर होती है। इस प्रकार दो 'पोपरिश्चे' लगभग 2 *2/3 वर्स्ट के* बराबर होते हैं /

[1334] अर्थात् - पाँच वर्ष।

'तो फरि, इसके लिए वशि्वसनीय प्रमाण कहाँ है?' संत ने पूछा।

तब एक जॉन को लाया गया, जो कभी पीटर का सैकेलारयिस[1335] था – उस समय जब पीटर अफ्रीका के नुमडियिा का राज्यपाल था[1336] । इस जॉन ने कहा:

'बाईस साल पहले, हमारे राजा के दादा ने धन्य पीटर को सेनाओं का नेतृत्व कर मस्रि में सरासेंस के खलिाफ लड़ने का आदेश दयिा था। पीटर ने, आपको ईश्वर का सेवक मानकर, आपसे उचति सलाह मांगने के लिए लखिा था। लेकनि आपने उन्हें उत्तर दयिा कि राजा हेराक्लयिस और उनके वारसिों की मदद करना ईश्वर को प्रसन्न नहीं करता।'

तब संत ने उससे कहा:

'यदि तुम सत्य बोलते हो और मेरे पास पीटर का पत्र तथा पीटर के लिए मेरा पत्र है, तो उन्हें प्रस्तुत करो; उन्हें पढ़ाया जाए, और मैं कानून के अनुसार मुझे मलिने वाली सज़ा स्वीकार कर लूँगा।'

जॉन ने उत्तर दयिा:

'मेरे पास आपके पत्र नहीं हैं, और न ही मुझे यह पता है कि आपने एक-दूसरे को लखिा भी था या नहीं, लेकनि उस समय शविरि में हर कोई इसी बारे में बात कर रहा था।'

संत ने पलटकर कहा:

'अगर पूरी सेना इसके बारे में बात कर रही थी, तो तुम अकेले मेरी बदनामी क्यों कर रहे हो? क्या तुमने मुझे कभी देखा भी है, या मैंने तुम्हें कभी देखा है?'

'नहीं,' जॉन ने जवाब दयिा। 'मैंने आपको कभी नहीं देखा है।'

तब संत ने सभा की ओर मुड़कर कहा:

'आप खुद ही फैसला करें: क्या ऐसे लोगों को गवाह के तौर पर बुलाना सही है? क्योंकि लखिा है: *"जसि न्याय से तुम न्याय करोगे, उसी से तुम पर भी न्याय कयिा जाएगा; और जसि नाप से तुम नापोगे, उसी से तुम्हारे लिए भी नापा जाएगा"* (मत्ती 7:2)। ईश्वर के द्वारा, जो सभी का धर्मी न्यायाधीश है।

तब सर्जयिस मगुदा को लाया गया। उसने कहा:

'नौ साल पहले, धन्य बाबा थॉमस, जो रोम से आए थे, ने मुझे नम्निलखिति बात बताई थी: 'पोप थयिोडोर ने,' उन्होंने कहा, 'मुझे अफ्रीका के प्रीफेक्ट, ग्रेगरी के पास भेजा था—जो उस समय ग्रीक साम्राज्य से अलग हो गया था—उन्हें यह बताने के लिए कि वे ग्रीक सेनाओं से न डरें, क्योंकि परमेश्वर के सेवक, अबा मैक्समिस ने एक सपना देखा था जसिमें स्वर्ग में, पूर्व और पश्चमि दोनों में, स्वर्गदूतों की सेनाएँ खड़ी थीं। इनमें से, पूर्व वालों ने पुकारा: 'कांस्टेंटाइन अगस्टस, आपकी वजिय होगी!' जबकि पश्चमि वालों ने पुकारा: 'ग्रेगरी अगस्टस, आपकी वजिय होगी!' इसके अलावा, पश्चमिी सेना की आवाज़ पूर्वी सेना की आवाज़ से अधकि स्पष्ट और तेज़ थी।

जब मगुदा ने यह सुना, तो कोषाध्यक्ष ने संत से कहा:

'ईश्वर ने ही तुम्हें इस नगर में जदिा जलाए जाने के लिए लाया है।'

संत ने उत्तर दयिा:

मैं उस ईश्वर का धन्यवाद करता हूँ, जो मेरी स्वेच्छा से की गई गलतयिों को अनैच्छकि दंडों के माध्यम से शुद्ध करता है। लेकनि *"उफ़्! संसार पर ठोकरों के कारण! क्योंकि ठोकरें आना अनविार्य है; पर उस मनुष्य पर हाय, जसिसे ठोकर आती है"* (मत्ती 18:7)। सचमुच, ईसाइयों के सामने ये शब्द नहीं कहने चाहिए थे, और तो और उन लोगों को बनिा सज़ा छोड़ देना तो दूर की बात है जो केवल उन्हीं बातों को कहते और सोचते हैं जो उन लोगों को भाती हैं जो आज जीवति हैं पर कल मौजूद नहीं रहेंगे। यह सब ग्रेगरी के जीवति रहते हुए ही घोषति कर दयिा जाना चाहिए था। तब यहाँ कुलीन पीटर, बाबा थॉमस और धन्य पोप थयिोडोर को बुलाना उचति होता; उन सभी की उपस्थति में, मैं कुलीन पीटर से कहता: 'मुझे बताइए, मेरे प्रभु, क्या आपने कभी मुझे उस बारे में लखिा है जसिकी गवाही आपका सैकेलारयिस देता है, या शायद मैंने आपको लखिा है?' इसी तरह, मैं परम पावन पोप से कहता कि: 'मुझे बताइए, परम पावन, क्या मैंने कभी आपको कसिी सपने के बारे में बताया है?' लेकनि अगर पोप मुझ पर उस सपने के संबंध में आरोप लगाते, तो दोष उनका होता, मेरा नहीं, क्योंकि

[1335] साकेलारयिोस – *सैक्कलिस* (थैला) से – कोषाध्यक्ष के लिए एक और शब्द है। दो साकेलारयिोस होते थे: शाही और पैट्रआर्कल।

[1336] न्यूमडियिा उत्तरी अफ्रीका में स्थति थी। आज यह अल्जीरयिा के पूर्वी भाग को बनाती है।

सपना एक अनैच्छिक घटना है, जबकि कानून केवल उन कार्यों को दंडित करता है जो किसी व्यक्ति की स्वतंत्र इच्छा पर निर्भर करते हैं।

साथ ही, इस निर्दोष और पवित्र व्यक्ति पर अन्य बदनामी और अन्यायपूर्ण आरोप भी लगाए गए, विशेष रूप से सम्राट के प्रति ईश्वरनिंदा के संबंध में – मानो उसने और उसके शिष्यों ने रोम में सम्राट की निंदा की हो। हालाँकि, संत ने अपनी निर्दोषता साबित करते हुए, विनम्र, बुद्धिमानी भरे और प्रेरित शब्दों के माध्यम से इन सभी बदनामियों का खंडन किया।

फिर उनके शिष्य अनास्तासियस को अलग से लाया गया। उसे अपने गुरु के बारे में कुछ बुरा कहने के लिए मजबूर किया गया, और जब उसने उस धर्मी पुरुष के खिलाफ झूठ बोलने से इनकार कर दिया, तो उसे मुक्कों से पीटा गया और फिर उसे अपने गुरु के साथ ले जाया गया, और दोनों को कालकोठरी में अपनी-अपनी कोठरी में डाल दिया गया।

अगली शाम, कुलीन ट्रोइलस और शाही भोजनशाला के प्रमुख सेर्जिअस यूफ्रेटस, आदरणीय संत के कोठरी में आए। वे बैठ गए और आदरणीय संत को भी बिठाकर, उन्होंने पूछा:

'हमें बताइए, अबा, अफ्रीका और रोम में पायरस के साथ आपकी क्या चर्चाएँ हुईं, और आपने किन तर्कों से उसे अपना सिद्धांत त्यागकर आपका सिद्धांत स्वीकार करने के लिए राज़ी किया?'

संत ने उत्तर दिया:

'अगर मेरे पास मेरी किताबें होतीं—जिनमें मैंने पायरस के साथ हुई हमारी वार्तालाप और बहसों को दर्ज किया था—तो मैं आपको सब कुछ विस्तार से बता देता; लेकिन चूँकि मेरी किताबें मुझसे ले ली गई हैं, मैं आपको केवल वही बताऊँगा जो मुझे याद है।'

तब संत ने, जो कुछ भी उन्हें याद था, उसे क्रम से सुनाया, और अंत में निम्नलिखित जोड़ा:

'मेरा अपना कोई सिद्धांत नहीं है, बल्कि केवल वही है जो पूरी कैथोलिक चर्च में सामान्य है; मैंने अपने धर्म-स्वीकार में एक भी नया शब्द नहीं जोड़ा है जिससे उसे मेरा अपना कहा जा सके।'

तब दूतों ने उनसे पूछा:

'तो फिर, आप कॉन्स्टेंटिनोपल के सिंहासन के साथ संप्रदायिक एकता में क्यों नहीं आते?'

'नहीं,' संत ने उत्तर दिया।

– क्यों नहीं? – उन्होंने पूछा।

संत ने उत्तर दिया, 'क्योंकि उस चर्च के प्रमुखों ने चार पवित्र परिषदों के निर्णयों को अस्वीकार कर दिया है, और अपना नियम अलेक्जेंड्रिया में जारी "नौ अध्यायों" को बना लिया है; उन्होंने बाद में कॉन्स्टेंटिनोपल के पैट्रिआर्क सेर्जिउस द्वारा तैयार की गई इक्थेसिस को स्वीकार किया; और अंत में, टाइपस, जिसे हाल ही में लागू किया गया था। दूसरी ओर, उन्होंने टाइपस में इक्थेसिस में पुष्टि की गई हर बात को खारिज कर दिया है, और कई बार खुद को चर्च से बहिष्कृत कर लिया है और खुद को विधर्मी साबित किया है। इतना ही नहीं, बल्कि चर्च से खुद को बहिष्कृत करने के बाद, उन्हें हाल ही में रोम में आयोजित स्थानीय परिषद में पदच्युत कर दिया गया और उनका पुरोहित पद छीन लिया गया। तो फिर, वे किस तरह का संस्कार कर सकते हैं? या उनके द्वारा अभिषिक्त किए गए लोगों पर कौन सा आत्मा अवतरित होगा?

'तो क्या केवल तुम ही बचोगे,' उन्होंने पलटकर कहा, 'जबकि बाकी सब नष्ट हो जाएँगे?'

संत ने उत्तर दिया:

'जब बेबीलोन के सभी लोग सोने की मूर्ति की पूजा कर रहे थे, तब तीन पवित्र युवकों ने किसी को भी विनाश के लिए दोषी नहीं ठहराया। वे इस बात से चिंतित नहीं थे कि दूसरे क्या कर रहे थे, बल्कि केवल अपने बारे में चिंतित थे, ताकि वे सच्ची भक्ति से भटक न जाएँ (दानियेल 3)। इसी तरह, दानियेल, जिसे सिंहों के गड्ढे में फेंका गया था, ने उन लोगों में से किसी को भी निंदा नहीं की, जिन्होंने दारायस के आदेश का पालन करते हुए परमेश्वर से प्रार्थना करने से इनकार कर दिया था; बल्कि, उसने अपने कर्तव्य को ध्यान में रखा और पाप करने तथा परमेश्वर के कानून का उल्लंघन करने के लिए अपने ही विवेक में दोषी ठहराए जाने के बजाय मरना पसंद किया (दानियेल 14:31)। और ईश्वर न करे कि मैं किसी को दोषी ठहराऊँ, या यह कहूँ कि केवल मैं ही बचाया जाऊँगा। तथापि, मैं किसी भी प्रकार से सच्चे विश्वास से भटक कर अंतरात्मा की पीड़ा सहने की अपेक्षा मरना ही पसंद करूँगा।

दूतों ने उससे पूछा, 'लेकिन तुम क्या करोगे, जब रोमवासी बज़िान्टिनों के साथ मिल जाएँगे? आखिरकार, कल रोम से दो अपोक्रिसियारी आए हैं, और कल, रविवार को, वे पैट्रिआर्क के साथ पवित्र कम्युनियन ग्रहण करेंगे।'

रेवरेंड ने उत्तर दिया:

'भले ही पूरा ब्रह्मांड ही पैट्रिआर्क के साथ पवित्र सहभागिता ग्रहण कर ले, मैं उनके साथ पवित्र सहभागिता ग्रहण नहीं करूँगा। क्योंकि मैं पवित्र प्रेरित पौलुस की रचनाओं से जानता हूँ कि पवित्र आत्मा तो स्वर्गदूतों को भी निन्दा करता है यदि वे सुसमाचार को अलग तरह से प्रचार करें, और कुछ भी नया पेश करें (गलातियों 1:8)।'

तब दूतों ने पूछा:

'क्या मसीह में दो इच्छाओं और दो प्रकार की गतिविधियों की स्वीकारोक्ति वास्तव में बिल्कुल आवश्यक है?'

'यह बिल्कुल आवश्यक है,' संत ने उत्तर दिया, 'यदि हमें धर्मपरायणता से सोचना है, क्योंकि कोई भी सत्ता स्वाभाविक क्रिया से रहित नहीं है। पवित्र पिताओं ने स्पष्ट रूप से कहा है कि कोई भी सत्ता अपनी उचित गतिविधि के बिना न तो अस्तित्व में रह सकती है और न ही जानी जा सकती है। यदि ऐसा नहीं है, और यदि प्रकृति क्रम में प्रकट नहीं होती है, तो हम मसीह को स्वभाव से सच्चा ईश्वर और सच्चा मनुष्य कैसे स्वीकार कर सकते हैं?

इस पर उन्होंने उत्तर दिया:

'हम देखते हैं कि यह सच्चा सत्य है; हालाँकि, राजा को कष्ट न दें, जिन्होंने चर्च की शांति के लिए, टाइपस तैयार किया था ताकि मिसीह में पहचानी गई किसी भी विशेषता का खंडन न किया जाए, बल्कि चर्च की शांति के लिए, उन मामलों के बारे में चुप्पी का आदेश दिया जो असहमति को जन्म देते हैं।'

तब परमेश्वर के पुरुष ने, जमीन पर लोट कर, आँसुओं के साथ उत्तर दिया:

'एक अच्छे और ईश्वर-प्रेमी राजा को मेरी अयोग्यता के कारण दुखी नहीं होना चाहिए, क्योंकि मैं उस बात के बारे में चुप रहकर ईश्वर का अपमान नहीं करना चाहता, जिसे उन्होंने हमें स्वीकार करने और स्वीकारोक्ति करने की आज्ञा दी है। क्योंकि यदि, दिव्य प्रेरित के वचनों के अनुसार, उन्होंने स्वयं *'मण्डली में, सबसे पहले प्रेरितों; दूसरे, भविष्यद्वक्ताओं; तीसरे, शिक्षकों'* (1 कुरिन्थियों 12:28) *को* नियुक्त किया है, तो यह स्पष्ट है कि वे स्वयं उनके द्वारा बोलते हैं। पवित्र शास्त्र, पवित्र शिक्षकों के लेखों, और परिषदों के निर्णयों से हम यह सीखते हैं कि मिसीहा यीशु, जो देहधारी हुए, हमारे प्रभु और परमेश्वर, में अपनी दिव्यता और मानवता दोनों में इच्छा करने और कार्य करने की शक्ति है। क्योंकि उनमें उन गुणों में से किसी का भी अभाव नहीं है जिनसे उन्हें परमेश्वर या मनुष्य के रूप में पहचाना जाता है, सिवाय पाप के। तो, यदि वह दोनों स्वभावों में परिपूर्ण है और उनमें से किसी भी स्वभाव की कोई भी उचित विशेषता उसमें नहीं छूटती है, तो, वास्तव में, जो कोई भी उसमें दोनों स्वभावों के उनके संबंधित गुणों के साथ-साथ उनके सार को स्वीकार नहीं करता है—वे स्वभाव जिनके द्वारा और जिनमें वह वास करता है—वह उसकी देहधारण के रहस्य को पूरी तरह से विकृत कर देता है।

जब संत ने यह और भी बहुत कुछ समझा दिया, तो उपस्थित लोगों ने उनकी बुद्धिमत्ता की प्रशंसा की और उन्हें खंडन करने का कोई आधार नहीं मिला। हालांकि, सेरजियस ने कहा:

'तुम ही अकेले सभी को कष्ट दे रहे हो' – ठीक इसलिए कि तुम्हारी वजह से कई लोग यहाँ चर्च के साथ कोई संबंध नहीं रखना चाहते।

आदरणीय मैक्सिमिस ने उत्तर दिया:

'लेकिन कौन यह दावा कर सकता है कि मैंने किसी को भी ब्रिटिश चर्च के साथ संप्रदाय बनाए रखने से मना किया है?' इस पर, सेरजियस ने उत्तर दिया:

'यह तथ्य कि आप उस चर्च के साथ संप्रभुता नहीं रखते, ही सबसे अधिक लोगों को उससे संप्रभुता रखने से रोकता है।' ईश्वर के पुरुष ने उत्तर में कहा:

'उस अवस्था से अधिक भारग्रस्त या दुखद कुछ भी नहीं है जिसमें हमारा अंतःकरण हमें किसी बात का दोषी ठहराता हो, और अपने अंतःकरण की शांति और अनुमोदन से अधिक कीमती कुछ भी नहीं है।' फिर ट्रॉइलस ने इस तथ्य की ओर ध्यान आकर्षित करते हुए कि सम्राट कॉन्स्टेंस के 'टायपस' को पूरे पश्चिम में शापित कर दिया गया था, संत से कहा:

'क्या यह उचित है कि हमारे धर्मपरायण शासक की व्याख्या को इतना कलंकित किया जाए?' संत ने उत्तर दिया:

'भगवान उन लोगों को माफ करें जिन्होंने सम्राट को उकसाया और उसे यह फरमान जारी करने दिया!'

ट्रॉइलस ने पूछा:

'तो फिर, इसे किसने उकसाया, और किसने इसकी अनुमति दी?'

संत ने उत्तर दिया:

– चर्च के prelates ने इसे सिखाया, और पदाधिकारियों ने इसकी अनुमति दी; और इस प्रकार इस प्रलोभन का कलंक राजा पर पड़ता है, जो निर्दोष है और सभी विधर्म से परे है। हालाँकि, शासक को सलाह दें कि वह वही करे जो उनके दिवंगत दादा हेराक्लियस ने एक बार किया था। जब उन्हें पता चला कि पश्चिम के कई पादरियों ने विश्वास की 'व्याख्या' को स्वीकार नहीं किया, बल्कि वहाँ प्रचलित विधर्म की निंदा और निन्दा की, तो उन्होंने इस मामले में खुद को किसी भी दोष से मुक्त करने के लिए अपने पत्र दूर-दूर तक भेजे, जिसमें उन्होंने यह दावा किया कि 'व्याख्या' उनकी नहीं, बल्कि पूर्व पैट्रिआर्क सेरजियस की थी। शासक को भी ऐसा ही करना चाहिए, और फिर वह सभी दोषारोपों से मुक्त हो जाएगा।

वे लंबे समय तक सिर हिलाते रहे, और फिर बोले:

'आप जो सलाह दे रहे हैं, वह करना असुविधाजनक और यहाँ तक कि असंभव है, बाबा।'

विभिन्न विषयों पर लंबी बातचीत करने के बाद, वे विदा लेकर सौहार्दपूर्ण ढंग से अलग हो गए।

इस बातचीत के एक सप्ताह बाद, अगले शनिवार को, संत और उनके दोनों शिष्यों को पूछताछ के लिए फिर से शाही कक्ष में बुलाया गया। पहले, उनके पूर्व शिष्य अनास्तासियस को अंदर बुलाया गया, जबकि दूसरे अनास्तासियस, जो रोम के चर्च के पूर्व अपोक्रीसारियस थे, को कक्ष के बाहर रखा गया। जब पहले अनास्तासियस को हॉल में लाया गया, जहाँ दो धर्मगुरु—कॉन्स्टेंटिनोपल के धर्मगुरु थॉमस, और एक अन्य—सेनेट के सदस्यों के बीच बैठे थे, तो वे बदनाम करने वाले जो पूजनीय मैक्सिमिस पर झूठे आरोप लगा रहे थे, तुरंत भी अंदर आ गए। वहाँ मौजूद लोगों ने अनास्तासियस को अपने गुरु पर लगाए गए बदनामी के आरोप की पुष्टि करने के लिए मजबूर किया। लेकिन उसने साहसपूर्वक झूठों का पर्दाफाश किया, और पैट्रिआर्क तथा सीनेट के सामने बहादुरी से आपत्ति जताई। जब उससे पूछा गया कि क्या उसने 'टाइपोस' को धिक्कार दिया था, तो उसने जवाब दिया कि उसने न केवल उसे धिक्कार दिया था, बल्कि उसके खिलाफ एक किताब भी लिखी थी। फिर गणमान्य व्यक्तियों ने पूछा:

'तो फिर? क्या आप यह स्वीकार नहीं करते कि आपने गलत काम किया है?'

'ईश्वर न करे,' अनास्तासियस ने उत्तर दिया, 'कि मैं उस काम को गलत मानूँ जो मैंने चर्च के कानून के अनुसार सही किया है।' जब बाद में उससे कई अन्य मामलों पर पूछताछ की गई, तो उसने वैसा ही उत्तर दिया जैसा ईश्वर ने उसे सक्षम बनाया। इसके बाद, उसे बाहर ले जाया गया, और सम्मानित बुजुर्ग मैक्सिमिस को अंदर लाया गया। पैट्रिसियन ट्रॉइलस ने उससे संबोधित होकर कहा:

'सुनो, बाबा, सच बताओ, और ईश्वर तुम पर दया करेंगे। क्योंकि अगर हम तुम्हारी उचित प्रक्रिया के अनुसार पूछताछ करें और तुम पर लगाए गए आरोपों में से एक भी सच साबित हो जाए, तो तुम्हें कानून के अनुसार मौत की सजा दी जाएगी।' बुजुर्ग ने उत्तर दिया:

'मैं तुम्हें पहले ही बता चुका हूँ, और मैं फिर कहूँगा: इन आरोपों में से किसी एक के भी सच होने की संभावना उतनी ही है जितनी शैतान के ईश्वर बन जाने की; लेकिन चूँकि शैतान ईश्वर नहीं है और न ही बन सकता है, एक विधर्मी होने के नाते, वैसे ही वे आरोप, जो पूरी तरह से झूठे हैं, सच नहीं हो सकते। इसलिए, जो चाहो करो; जहाँ तक मेरी बात है, मैं भक्तिपूर्वक ईश्वर की आराधना करता हूँ, मुझे किसी गलत काम का डर नहीं है।

इस पर ट्रॉइलस ने उत्तर दिया:

'लेकिन क्या आपने टाइपस पर श्राप नहीं लगाया था?'

एल्डर ने उत्तर दिया:

'मैं पहले ही कई बार कह चुका हूँ कि मैंने उस पर श्राप लगाया था।'

'लेकिन अगर आपने,' ट्रॉइलस ने कहा, 'उस "टायपस" को बहिष्कृत किया है, तो क्या आप उसी विस्तार से ज़ार को भी बहिष्कृत कर चुके हैं?'

'मैंने ज़ार को बहिष्कृत नहीं किया,' पादरी ने उत्तर दिया, 'बल्कि केवल उस चार्टर को बहिष्कृत किया जो ऑर्थोडॉक्स और चर्च के धर्म को पलट देता है।'

"तो फिर, आपने उसे कहाँ से निष्कासित किया?" ट्रॉइलस ने पूछा।

'रोम में स्थानीय परषिद में,' संत मैक्समिस ने उत्तर दयिा, 'उद्धारकर्ता और परमेश्वर की अतपिवत्रि माता के चर्च में।'

तब अध्यक्ष ने उनसे कहा:

'क्या आप हमारी चर्च के साथ संप्रदायकि संबंध बनाएँगे या नहीं?'

'नहीं, मैं नहीं करूंगा,' संत ने उत्तर दयिा।

'क्यों नहीं?' अध्यक्ष ने पूछा।

'क्योंकि,' संत ने उत्तर दयिा, 'इसने ऑर्थोडॉक्स परषिदों के फरमानों को खारजि कर दयिा है।'

'लेकनि अगर हमारी चर्च ने परषिदों को अस्वीकार कर दयिा है,' अध्यक्ष ने आपत्तजिताई, 'तो वे मासकि डप्टिकि (1337) में कैसे दर्ज हैं?'

'उनके नामों और उनकी स्मृतकिा,' संत ने उत्तर दयिा, 'क्या फायदा, यदउिन परषिदों के धर्मसद्धिान्तों को अस्वीकार कर दयिा गया है?'

अध्यक्ष ने पूछा, 'क्या आप स्पष्ट रूप से यह प्रदर्शति कर सकते हैं कवि र्तमान चर्च ने पछिले पवत्रि परषिदों के धर्मसद्धिान्तों को अस्वीकार कर दयिा है?'

'यदआिप बुरा न मानें और ऐसा आदेश दें,' बुजुर्ग ने उत्तर दयिा, 'तो मैं यह आसानी से साबति कर सकता हूँ।'

जब सभी चुप हो गए, तो कोषाध्यक्ष ने उससे कहा:

'आप रोमनों से इतना प्रेम और यूनानयिों से इतना द्वेष क्यों करते हैं?'

संत ने उत्तर दयिा:

'हमारे पास ईश्वर की आज्ञा है कि किसी से घृणा न करें। मैं रोमनों से सह-वशि्वासयिों के रूप में प्रेम करता हूँ, और यूनानयिों से इसलएि प्रेम करता हूँ क्योंकवि मेरी ही भाषा बोलते हैं।'

'और आपकी उम्र क्या है?' खज़ांची ने पूछा।

'पैंसठ,' संत ने उत्तर दयिा।

'और कतिने समय से,' कोषाध्यक्ष ने जारी रखते हुए पूछा, 'आपका शष्यि आपके साथ है?'

'सत्ताइस,' संत ने उत्तर दयिा।

उसी क्षण, पुरोहतिों में से एक ने कहा:

'ईश्वर आपको धन्य परि्रस के लएि आपके सभी कार्यों का पुरस्कार दे।'

संत ने उस पुरोहति के जवाब में कुछ नहीं कहा।

इन काफी लंबी पूछताछों के दौरान, उपस्थति कसिी भी पैट्रआिर्क ने एक शब्द भी नहीं कहा। जब रोम में हुई परषिद के बारे में चर्चा शुरू हुई, तो एक डेमोस्थनीज ने घोषणा की:

'यह परषिद वैध नहीं है, क्योंकि इसे बहषि्कृत पोप मार्टनि ने बुलाया था।'

आदरणीय मैक्समिस ने उत्तर दयिा:

'पोप मार्टनि को बहषि्कृत नहीं कयिा गया है, बल्कि उनका उत्पीड़न कयिा गया है।'

1338इसके बाद, संत को बाहर नकिालने के बाद, उन्होंने इस पर वचिार कयिा कि उसके साथ क्या कयिा जाए। अमानवीय यातना देने वालों को यह बहुत दयालु लगा कि उसे पहले की तरह बंदी में रहने दयिा जाए, और यह कि मृत्यु से भी अधकि गंभीर यातनाओं का सामना कराना बेहतर होगा। इसलएि, उन्होंने उसे शहर के प्रान्तपाल के हवाले कर दयिा। प्रान्तपाल ने संत मैक्समिस और उनके शष्यिों को प्राटोरयिम ले जाने का आदेश दयिा। वहाँ, नर्दियी यातना देने वाले ने सबसे पहले पवत्रि वृद्ध को नग्न कर दयिा और उन्हें ज़मीन पर फेंक दयिा, और उन्हें तेज बैल की अस्थ-मांसपेशयिों से कोड़े मारने का आदेश दयिा, न तो उनके वृद्ध होने या उनके पवत्रि रूप का कोई ध्यान रखा - और न ही वे उनके तपस्या से दुबले शरीर को देखकर द्रवति हुए। संत को इतनी नर्दियता से पीटा गया कि जमीन उनके खून से लथपथ हो गई, और उनका शरीर इतना क्षत-वक्षित हो गया कि उस पर एक भी स्थान अछूता नहीं रहा। फरि वह क्रूर दानव, क्रोध के साथ,

---

1337 डप्टिचि का अर्थ स्मारक या सनिोडकि होता है। ये दो पट्टयिाँ थीं, जो वाचा की पट्टयिों की तरह मोड़ी जाती थीं, जनि पर जीवति और मृतकों के नाम अंकति होते थे। चर्च जीवन की सबसे महत्वपूर्ण घटनाओं को भी मासकि डप्टिचि में दर्ज कयिा जाता था।

1338 प्रेटोरीयम वह स्थान था जहाँ मुकदमे चलाए जाते थे। कोड़ों की सज़ा अक्सर प्रेटोरीयम के सामने दी जाती थी।

पूजनीय संत के शष्यिों पर टूट पड़ा और उन्हें भी उतनी ही बेरहमी से पीटा। जब उन्हें पीटा जा रहा था, तो उद्घोषक ने पुकारा:

'जो राजा की आज्ञाओं की अवहेलना करते हैं और अवज्ञाकारी बने रहते हैं, वे ऐसे कष्टों को झेलने के योग्य हैं।'

फरि, मुश्कलि से जीवति, उन्हें कालकोठरी में डाल दयि गया।

अगली सुबह, उस पवत्रि और आदरणीय पुरुष को फरि से उसके कालकोठरी से अदालत में लाया गया, उसके प्रथम शष्यि अनास्तासयिस के साथ। संत अभी भी जीवति थे और घावों से ढके हुए थे, इसलएि कोई भी उस पूजनीय वृद्ध, पवत्रि तपस्वी, ईश्वर-ज्ञानी शक्षिक और धर्म-स्वीकारक-धर्मशास्त्री को बनि करुणा के नहीं देख सकता था; वह पूरी तरह से रक्तरंजति और गहरे घावों से चीर-फाड़ दएि गए थे, और उसके शरीर पर सरि से पैर तक एक भी स्थान अछूता नहीं बचा था। हालाँक, उसके नर्दियी अत्याचारयिों ने उस पर कोई दया नहीं दखिाई, बल्कि और भी अधकि क्रोधति हो गए। उन्होंने बनि कसिी दया के, उसके गले की जड़ तक उसकी वाक्पटु जीभ को काट डाला—जो ज्ञान की शक्षिाओं की नदयिाँ बहा चुकी थी और वधिर्मी कल्पनाओं को डुबा चुकी थी—और इस प्रकार उन्होंने संत के धर्मशास्त्रीय रूप से सूक्ष्मदर्शी होठों को चुप कराने का प्रयास कयि। उन्होंने उनके पूर्व शष्यि अनास्तासयिस के साथ भी यही कयि, और फरि उन दोनों को एक बार फरि कैद कर दयि। लेकनि प्रभु परमेश्वर, जन्हिोंने एक बार शशिुओं को अपने पवत्रि नाम की स्तुति करने में सक्षम बनाया, और जन्हिोंने इसी तरह मूक लोगों को वाणी का वरदान दयि, इन सच्चे और वफादार सेवकों—सम्माननीय मैक्सिमिस, कन्फैसर और शहीद, और इसी तरह उनके शष्यि, सम्माननीय अनास्तासयिस—को जीभ के बनि भी बोलने की क्षमता प्रदान की, पहले से भी बेहतर और अधकि स्पष्ट रूप से, इससे पहले कि उनकी जीभें काट दी गई थीं। जब इन दुष्ट वधिर्मीयों को यह पता चला तो वे कतिने शर्मसार हुए! और भी अधकि क्रोध से भरकर, उन्होंने उसका दाहनि हाथ काट डाला और उसे जमीन पर फेंक दयि। इसी तरह, उन्होंने उसके शष्यि, संत अनास्तासयिस का हाथ भी काट दयि। जहाँ तक उसके दूसरे शष्यि, जसिका नाम भी अनास्तासयिस था और जो रोम के चर्च का अपोक्रीसारयिस (प्रतनिधि) रहा था, की बात है, उसे उन्होंने क्षमा कर दयि, क्योंकि वह कभी-कभी शासकों का सचवि बनता था।

इसके बाद, पूजनीय मैक्सिमिस और उनके शष्यि को प्राटोरयिम से बाहर ले जाया गया और अपमानपूर्वक पूरे शहर में घसीटा गया – उनकी कटी हुई जीभ और हाथ पूरे लोगों को दखिाए गए, जबकि भीड़ भद्दी आवाज़ों में अपमानजनक टप्पिणयिाँ और ताने उछाल रही थी। इस तरह की अमानवीय उपहास और अपमानजनक दुर्व्यवहार के बाद, तीनों को अलग-अलग, कसिी भी सुवधि के बनि, भोजन या कपड़ों के बनि, नग्न और नंगे पैर, एक दूर की जगह पर नर्वासति कर दयि गया। उन्होंने रास्ते में कई कठनिाइयों और कष्टों को सहन कयि। आदरणीय मैक्सिमिस, अपने गंभीर घावों के कारण, न तो घोड़े पर और न ही गाड़ी में ले जाए जा सके। सैनकिों ने बस्तिर के रूप में काम चलाने के लिए एक टोकरी बुनी और उस अत्यंत पीड़ति एल्डर को उसमें लटिाकर, वे उसे बड़ी मुश्कलि से उसके कारावास के स्थान तक ले जा सके। उसे एक दूर के स्कैथयिन देश में ले जाकर, जसिे यूरोप में अलानयि[1339] के नाम से जाना जाता है, उन्होंने उसे शेमारी शहर के एक कालकोठरी में कैद कर दयि। जहाँ तक उनके पूजनीय शष्यि अनास्तासयिस का सवाल है, जसिकी जीभ और हाथ काट दएि गए थे, वह यात्रा के दौरान ही चल बसा, उसका शरीर बहुत परश्रिम और पीड़ा सह चुका था, जबकि उसकी आत्मा परमात्मा में अनंत जीवन के लिए चली गई।

आदरणीय मैक्सिमिस ने अपने अंतमि नर्वासन के दौरान और तीन वर्ष की कठोर पीड़ा सहते हुए जीवन यापन कयि। कालकोठरी में बंद, उन्हें न तो उनके वृद्धावस्था के लिए आवश्यक सहायता मलिी और न ही कसिी से कोई दयालु देखभाल मलिी। जब प्रभु को उसकी बीमारयिों और दुःखों को समाप्त करने और उसे कालकोठरी से नकिालकर स्वर्ग के राज्य के शाश्वत वस्तिार और आनंद में ले जाने में प्रसन्नता हुई, तो उन्होंने पहले पृथ्वी पर एक दैवीय प्रकटकिरण से उसे सांत्वना दी, और फरि उसे उसके नधिन का समय बताया। धन्य पीड़ति महान आनंद से भर गया, और यद्यपि वह हमेशा मृत्यु के लिए तैयार रहा था, फरि भी उसने उसके लिए गंभीरता से तैयारी करना शुरू कर दयि। जब अंततः उसकी मृत्यु का समय आया, जो उसके लिए आनंद का समय था, तो उसने आनंदपूर्वक अपनी आत्मा मसीह परमेश्वर के हाथों में सौंप दी, जन्हिें वह अपने यौवन से प्रेम करता था और जनिके लिए उसने इतना कष्ट उठाया था।

[1339] अलानयि एशयिाई सारमाटयिा में, कॉकेसस पर्वतमाला के पश्चमिी भाग में, काला सागर से बहुत दूर नहीं स्थति थी।

इस प्रकार मसीह के इस स्वीकारकर्ता और शहीद ने अपने जीवन की यात्रा पूरी की[1340] और अपने प्रभु के आनंद में प्रवेश किया। उन्हें उसी शहर में दफनाया गया था। संत के दफन के बाद, उनकी कब्र पर तीन चमत्कारी दीपक देखे गए, जो अकथनीय तेज की लौ से चमक रहे थे और उस स्थान को प्रकाशित कर रहे थे। वे संत, जो अपने जीवनकाल में संसार के लिए एक प्रकाश थे, अपनी मृत्यु के बाद भी चमकना बंद नहीं हुए, और आज भी सभी लोगों पर अपने सदाचारी और दीर्घ-सहिष्णु जीवन तथा ईश्वर के प्रति अपने महान उत्साह के उदाहरण के रूप में चमकते रहते हैं। संत की कफ़न पर देखे गए वे तीन दीपक इस बात का स्पष्ट संकेत थे कि ईश्वर के उस पवित्र पुरुष ने परम पवित्र त्रिमूर्ति के प्रकाशमान धामों में निवास कर लिया था, जो ईश्वर के राज्य में कभी नहीं डगमगाते, जहाँ वह धर्मी लोगों के साथ सूर्य की तरह प्रकाशमान हैं और त्रिमूर्ति प्रकाश के चिंतन में आनंदित होते हैं। आदरणीय मैक्सिमिस की मृत्यु के बाद, उनके एक अन्य शिष्य, अपोक्रीसारियस अनास्तासियस, एकांत कारावास में जीवित रहे; उन्होंने बाद में अपने पिता और गुरु के जीवन, कार्यों और कष्टों का विस्तार से वर्णन किया। इस वृत्तांत से, हमने यहाँ संक्षिप्त रूप में, वह लिया है जो हमारे निर्माण के लिए पर्याप्त है, परमेश्वर—जो संतों में महिमामय हैं—पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा की महिमा के लिए, जिन्हें हम पापियों से भी, सम्मान, महिमा और आराधना अर्पित कर सकें, अब और हमेशा और युगों-युगों तक। आमीन।

कॉन्टाकियन, स्वर 8:

त्रिमूर्ति के रक्षक और महान मैक्सिमिस को, जो स्पष्ट रूप से दिव्य विश्वास को सिखाते हैं—कि मसीह को दो स्वभावों में महिमामय माना जाना चाहिए, जो दो इच्छाओं और दो कर्मों में विद्यमान हैं—आओ हम उन्हें योग्य और विश्वासयोग्य भजनों से सम्मानित करें, यह पुकारते हुए: हे विश्वास के प्रचारक, आनन्दित हो।

एक और कोंटाकियन, स्वर 6:

हे सर्व-धन्य, त्रिमूर्ति प्रकाश, जो आपकी आत्मा में निवास करता है, ने आपको एक चुने हुए पात्र के रूप में प्रकट किया है, जो दिव्यता को उसकी पूर्णता में प्रकट करता है; हे धन्य, आप अवर्णनीय रहस्यों का प्रचार करते हैं, और हे मैक्सिमिस, आप सभी को स्पष्ट रूप से त्रिमूर्ति, पूर्व-अस्तित्वमान, और आरंभहीन का उपदेश देते हैं।

पवित्र शहीद नेओफिटिस का कष्टकथा

21 जनवरी को स्मरणोत्सव

[1340] संत मैक्सिमिस की कृतियाँ खो नहीं गई हैं। छठी सार्वभौमिक परिषद (680) ने इस कन्फेसर को उचित श्रद्धा के साथ सम्मानित किया और विधर्मियों तथा उनके शिक्षण को चर्च से बहिष्कृत कर दिया। – रेवरेंड मैक्सिमिस की उत्कृष्ट कृतियाँ वे हैं जो आध्यात्मिक जीवन को दर्शाती हैं, और विशेष रूप से निम्नलिखित हैं: 1) प्रेम पर, जो पादरी एल्पिडियस को संबोधित है, जिसमें 400 अध्याय शामिल हैं; 2) 'तपस्वी जीवन पर', उसी एल्पिडियस को संबोधित प्रश्नों और उत्तरों के रूप में; 3) 'सद्गुण और दुर्गुण पर', जिसमें 500 अध्याय शामिल हैं; 4) एपार्क जॉर्ज को गर्व पर एक पत्र; 5) क्यूबिकुलैरियस जॉन को – ईश्वर के प्रति प्रेम और दुख पर। अपने सभी धर्मशास्त्रीय कार्यों में, आदरणीय मैक्सिमिस लगभग विशेष रूप से मोनोथेलिट्स और मोनोफिज़िट्स पर ध्यान केंद्रित करते हैं, जिनके खिलाफ उन्होंने अपने जीवनकाल के दौरान इतनी लगन से संघर्ष किया। उन्होंने मोनोथेलाइट्स के खिलाफ निम्नलिखित लिखा: 1) साइप्रस में मारिनस को संबोधित दो खंडों के धर्मशास्त्रीय प्रबंध; 2) मसीह में दो इच्छाओं पर, और मसीह में कार्यों और इच्छाओं पर, उसी मारिनस को संबोधित, साथ ही कई अन्य, कम विस्तृत प्रबंध। मोनोफिसाइट्स के विरुद्ध उन्होंने लिखा: 1) विश्वास के सही सिद्धांतों पर और सेवरस के विरुद्ध; 2) मसीह में दो स्वभावों पर। वे पवित्र त्रिमूर्ति पर पाँच प्रवचनों और पादरी मारिनस को लिखे एक पत्र 'पवित्र आत्मा की उत्पत्ति पर' के लेखक भी हैं। आदरणीय मैक्सिमिस पवित्र धर्मग्रंथ की व्याख्या में भी काफी सक्रिय थे। उन्होंने धर्मग्रंथ की व्याख्या के कई कार्य छोड़े: 1) धर्मग्रंथ के अस्पष्ट अंशों के उत्तर; 2) कठिन विषयों पर संक्षिप्त उत्तर; 3) भजन संहिता 59 की व्याख्या; 4) 'प्रभु की प्रार्थना' की व्याख्या; 5) गीतों के गीत की व्याख्या। इसके अलावा, पूज्य मॅक्सिमिस ने एक संस्कार संबंधी ग्रंथ - संस्कार या पवित्र संस्कारों के क्रम की व्याख्या - और कई अन्य कृतियाँ छोड़ीं: आत्मा पर, सद्गुण पर, आदि। - पूज्य मॅक्सिमिस की कृतियाँ उच्च सैद्धांतिक और नैतिक अंतर्दृष्टि से भरपूर हैं।

बथिुनयिा के नकिेया शहर में[1341] एक थयिोडुलस नामक व्यक्तरिहता था, जसिकी पत्नी फ्लोरेंस थी। दोनों ईश्वर-भयभीत ईसाई थे और उन्होंने ईश्वर की आज्ञाओं का भक्तपिूर्वक पालन कयिा। उनके एक पुत्र हुआ, जसिका उन्होंने नेओफायटस नाम रखा। पवत्रि बपतस्मिा के माध्यम से उसे प्रबुद्ध करने के बाद, उन्होंने उसे ईसाई धर्म में पाला। जैसे-जैसे लड़का उम्र और समझ में बढ़ता गया, और दस वर्ष की आयु के करीब पहुँचकर स्कूल जाने लगा, उस पर ईश्वर की कृपा छा गई, जसिसे शशिुओं के मुँह से मसीह की स्तुतहिोने लगी (देखें भजन संहति 8:3; मत्ती 21:16), क्योंकपिवत्रि *आत्मा 'जहाँ चाहे वहाँ फूँकता है'* (यूहन्ना 3:8): वह लड़का चमत्कार करने वाला बन गया। उसकी एक आदत थी: जब स्कूल से छुट्टी होने पर बच्चे अपने-अपने घर चले जाते, तब धन्य लड़का नेओफटिस अपने सबसे गरीब साथयिों को अपने घर ले जाता और दोपहर के भोजन के लिए माता-पति से जो भोजन मलिता था, उसे उनमें बाँट देता - जबकविह स्वयं भूखा रहता। फरि वह शहर के पूर्वी द्वार पर जाता, अपनी उंगली से वहाँ एक क्रॉस का नशिान बनाता और उसके सामने झुककर मसीह ईश्वर से प्रार्थना करता, जन्हिें हमारे लिए क्रूस पर चढ़ाया गया था। उसके साथी, जो उसके दोपहर के भोजन से तृप्त हो चुके होते थे, जब वह पूर्वी द्वार पर प्रार्थना कर रहा होता, तो उसके पास आ जाते थे। वहाँ दीवार में एक पत्थर था। धन्य नयिोफाइटस ने अपने हाथ से इस पत्थर पर प्रहार करके अपने साथयिों के लिए जैसे कसिी झरने से पानी नकिाला – और उन्होंने पयिा। यह पवत्रि युवक ऐसा हर दनि करता था, अपने साथयिों को अपने भोजन से खलिाता और पत्थर से नकिाले पानी से चमत्कारकि रूप से उनकी प्यास बुझाता था। साथ ही, उसने उन्हें इसके बारे में कसिी को न बताने का आदेश दयिा, और उन्होंने इसके बारे में कुछ नहीं कहा। इस प्रकार, उस वर्ष कसिी को भी उनके चमत्कारों के बारे में पता नहीं चला, यहाँ तक कउिनके माता-पति को भी नहीं, बल्कि केवल उन बहुत ही गरीब युवकों को पता चला।

अगले वर्ष, नेओफटिस की माँ, फ्लोरेंस—जो ईश्वर के प्रतविशिष प्रेम से परपिूर्ण थीं—को ईश्वर ने एक सपने में यह प्रकट कयिा कउिनका पुत्र मूसा की तरह चट्टान से पानी नकिाल रहा था और युवा लड़कों की प्यास बुझा रहा था। तब वह अपनी नींद से जागीं और ईश्वर से प्रार्थना की कविह उनके पुत्र नेओफटिस के बारे में सब कुछ वस्तिार से उन्हें प्रकट करें। और देखो, एक सफेद कबूतर, जो अकथनीय प्रकाश से दमक रहा था, स्वर्ग की ऊँचाइयों से उड़कर नीचे आया। नेओफटिस के बस्तिर पर उतरकर, उस कबूतर ने मानव भाषा में उससे कहा:

उसने कहा, 'मुझे उद्धारकर्ता ने भेजा है ताकमिैं तुम्हारे बस्तिर को नर्दिोष रखूँ।'

यह सुनकर, उसकी माँ भय से मरकर गरि पड़ी। तुरंत ही नकिेया शहर में यह खबर फैल गई कथियिोडोर की पत्नी फ्लोरेंस की अचानक मृत्यु हो गई है। तुरंत ही मृतक के घर पर एक बड़ी भीड़ इकट्ठा हो गई—पुरुष और महलिाएँ, पड़ोसी और परचिति—और हर कोई इस बात से हैरान था कउिसके साथ क्या हुआ था, कविह इतनी अप्रत्याशति रूप से कैसे मर गई। थयिोडोर, उसका पति, उस समय खेतों में था। उसे तुरंत अपनी पत्नी की अचानक मृत्यु की सूचना दी गई। दुख के मारे अपने कपड़े फाड़ते हुए, वह रोते हुए घर की ओर भागा। द्वार पर उससे मलिने पर नेओफायट ने कहा:

'पतिाजी, आप क्यों शोक मना रहे हैं? मेरी माँ मरी नहीं हैं, बल्कि गहरी नींद में सो गई हैं।'

फरि, अपने पति के साथ घर में प्रवेश करके, उसने अपनी माँ का हाथ पकड़ा और कहा:

'उठो, मेरी माँ; तुम गहरी नींद में पड़ गई हो।'

वह जैसे नींद से जागी हो, उठकर अपने पुत्र को गले लगाकर स्नेह से चूमने लगी। यह देखकर घर में इकट्ठा हुए सभी लोगों ने परमेश्वर की महमिा की। फ्लोरेंस ने अपने पतकिो वस्तिार से वह सब कुछ बताया जो उसके साथ हुआ था, चाहे वह उसके सपने में हो या वास्तवकिता में। ठीक उसी क्षण, नेओफटिस द्वारा चट्टान से पानी नकिालने के चमत्कार के बारे में भी पता चला। यह देखकर सभी बहुत चकति हुए, और वहाँ मौजूद कई वधिर्मी, यह सब सुनकर और नर्दिोष युवक नेओफटिस में नविास करने वाले ईश्वर की कृपा को देखकर, हमारे प्रभु यीशु मसीह पर वश्विास करने लगे।

इस बीच, एक कबूतर हमेशा संत के बस्तिर पर प्रकट होता था और उस पर बैठकर मानव आवाज़ में बोलता था। एक बार उसने संत से कहा:

'नेओफटिस, अपने पति के घर से नकिल आओ, और मेरा अनुसरण करो।'

[1341] बत्थिनियिा – एशयिा माइनर का एक उत्तर-पश्चमिी क्षेत्र। नकिेया – अब इज्नकि – प्राचीन काल में एक समृद्ध और फलता-फूलता शहर था, लेकनि अब यह गरीब और कम आबादी वाला है। प्रथम और सप्तम सार्वभौमकि परषिदें नकिेया में आयोजति की गई थीं।

पवत्रि युवक उठा, अपने माता-पिता से वदिा ली, और कबूतर के पीछे चल पड़ा। कबूतर उसे ओलंपस पर्वत[1342] पर, चट्टान की एक दरार तक ले गया, और वहाँ गुफा में उड़ गया। नेओफटिस, उसके पीछे अंदर जाकर, वहाँ एक वशिाल सहि पाया और उससे कहा:

'यहाँ से नकिल जाओ और अपने लिए कोई दूसरी गुफा ढूंढ लो, क्योंकि प्रभु ने मुझे यहाँ रहने की आज्ञा दी है।'

यह सुनकर, सहि ने अपनी जीभ से उसके पैरों की धूल चाटी और चला गया। संत सहि की गुफा में रहने के लिए ठहर गए और एक देवदूत द्वारा उनका पोषण कयिा गया। एक साल बीत जाने के बाद, संत ईश्वर की आज्ञा से एक बार फरि नकिया शहर में अपने माता-पिता के पास गए, जो अब अपने जीवन के अंत के करीब थे; और, उन्हें अंतमि चूमन देकर, उन्होंने उन्हें ईश्वर के पास भेज दयिा, जबकि उन्होंने स्वयं, उनके बचे हुए सामान को गरीबों में बाँट दयिा, और एक बार फरि ओलंपस पर्वत पर, अपने पूर्व नविास स्थान पर लौट आए। वहाँ वे पंद्रह वर्ष की आयु तक रहे, ठीक स्वर्गदूत की तरह, ईश्वर की महमिा करते हुए और स्वर्गदूत के हाथ से भोजन ग्रहण करते हुए।

उस समय, पूर्व और पश्चमि में उत्पीड़क डायोक्लेटयिन और मैक्समियिन[1343] का शासन था, जबकि बथिनियिा प्रांत में डेसयिस और उनके उप-शासक उआर शासक थे। संसार भर में मसीह की कलीसयिा का अल्हदावादयिों द्वारा उत्पीड़न कयिा जा रहा था। उसी समय, डेसयिस नकियिा पहुँचा, और उसके दूत ने घोषणा की कि शहर के सभी नागरकि और आसपास के नविासी देवताओं को बलदिान चढ़ाने के लिए इकट्ठा हों। इस घृणति उत्सव के लिए एक दनि भी नरि्धारति कयिा गया था। उसी समय, राजा बथिुनयिा के क्षेत्र में थे; वे भी नकियिा पहुँचे। जब यह दानवी उत्सव आया और सार्वजनकि रूप से मूर्तयिों को बलदिान चढ़ाया जा रहा था, तब परमेश्वर के स्वर्गदूतों ने संत नेओफटिस को ओलंपस पर्वत से उठा लयिा और उन्हें नकियिा के चौक के केंद्र में रख दयिा, उनका मुख मूसा के समान तेजस्वी था। संत ने ऊँचे स्वर में पुकारा:

'मैंने उन लोगों पर स्वयं को प्रकट कयिा है जनि्होंने मुझे नहीं खोजा, और मैं उन लोगों के सामने प्रकट हुआ हूँ जनि्होंने मुझसे नहीं पूछा, ताकि अधर्मी वशि्वास की त्रुटयिों और धोखाधड़यिों को उजागर कयिा जा सके।'

त्योहार मना रहे लोग, राज्यपाल डेसयिस के साथ, चकति रह गए जब उन्होंने अचानक अपने बीच एक तेजस्वी युवक को प्रकट होते देखा, जो जोर से बोल रहा था, और उन्होंने पूछा कि वह कौन था और कहाँ से आया था। और तुरंत ही नागरकिों ने उसे थयिोडोर और फ्लोरेंस के पुत्र नेओफायटस के रूप में पहचान लयिा। तब राज्यपाल डेसयिस ने आदेश दयिा कि वह भी उनके साथ मलिकर उनके देवताओं को बलदिान अर्पति करे। संत ने अपने साहसी होंठ खोले और बोलना शुरू कयिा:

'हे अधर्मी और रक्तपपिासु तानाशाह, तू यह क्या कर रहा है, इतने सारे मानव आत्माओं को वनिाश की ओर ले जा रहा है? क्या तू नहीं जानता कि जनि सभी को तू इस दैवीय बलदिान के लिए ले जाता है, उनके लिए तू एक भयानक जमि्मेदारी उठाएगा और आग की गेहेना में हमेशा के लिए यातना भोगेगा?'

इस फटकार से राज्यपाल डेसयिस को बहुत क्रोध आया और उसने आदेश दयिा कि पवत्रि युवक के कपड़े उतार दिए जाएँ; फरि, उसकी बाँह में काँटा लगाकर, उसे एक पेड़ से लटका दयिा जाए और बैल की नसों से नरि्दयतापूर्वक कोड़ा मारा जाए, जसिके बाद उसे नमक मलिा हुआ सरिके में डाल दयिा जाए। संत ने अपने कष्टों को साहसपूर्वक सहन कयिा और अपने चारों ओर खड़े लोगों से ऊँचे स्वर में पुकार कर कहा:

'अधर्मी आत्माओं से ग्रस्त और अंधकार से पीड़ति हे मनुष्यों, पश्चाताप करो और इस अंधकार को दूर करो; सच्चे प्रकाश, हमारे ईश्वर मसीह के पास आओ, और पवत्रि बपतस्मिा द्वारा पवत्रि बनो, ताकि तुम अनंत जीवन के योग्य ठहर सको!'

पवत्रि युवक से ये शब्द सुनकर, राज्यपाल और भी अधकि क्रोधति हो गया और उसने आदेश दयिा कि उसे फरि से पेड़ पर लटका दयिा जाए और उसकी पसलयिों को चाकू से खुरच दयिा जाए। इस प्रकार यातना सहते हुए, संत नेओफटिस ने केवल यही शब्द कहे:

'हे परमेश्वर के पुत्र, मुझ पर दया करो!'

तब शासक के एक दरबारी ने आगे बढ़कर कहा:

[1342] ओलंपस – एशयिा माइनर में, फ्राइजयिा और बथिनियिा की सीमा पर एक पहाड़।

[1343] डायोक्लेटयिन – एक रोमन सम्राट था जसिने साम्राज्य के पूर्वी भाग पर शासन कयिा, जबकि मैक्समियिन ने 284 से 305 तक पश्चमिी भाग पर शासन कयिा।

'नेओफटिस, तुम एक पागल की तरह व्यवहार क्यों कर रहे हो, राजा की आज्ञा की अवहेलना क्यों कर रहे हो? देवताओं को बलिदान चढ़ाने का वादा करो, और तुम्हें इस क्रूर सज़ा से तुरंत मुक्त कर दिया जाएगा।'

लेकिन संत ने उत्तर दिया:

'मैं स्वर्ग में परमेश्वर की स्तुति का बलिदान चढ़ाता हूँ, लेकिन मैं कभी भी निर्जीव मूर्तियों या उनमें रहने वाले राक्षसों की पूजा नहीं करूँगा।'

तब राज्यपाल ने अपने नौकरों को आदेश दिया कि वे बारी-बारी से संत की पूरी देह को और भी क्रूरता से नोचें। नौकरों ने बारी-बारी से निर्दयता से उसे नोचा, यहाँ तक कि उसकी हड्डियाँ नंगी हो गईं। हालाँकि, संत परमेश्वर से बल प्राप्त करके, इन यातनाओं के दौरान गाए: *'यद्यि मैं मृत्यु के साये की घाटी में भी चलूँ, तौभी मैं किसी विपत्ति से न डरूँगा, क्योंकि तू मेरे संग रहेगा'* (भजन संहिता 22:4), हे प्रभु।

जब राज्यपाल ने देखा कि उसके प्रयास व्यर्थ हो रहे हैं, तो उसने संत के यातना बंद करने और उसे पेड़ से उतारने का आदेश दिया; उसे सांत्वना देते हुए उसने कहा:

'तेरी जवानी को देखकर और तेरी सेहत को बचाते हुए, मैं तुझ पर और यातनाएँ नहीं ढाऊँगा, लेकिन मैं तुझे हमारे देवताओं की पूजा करने की सलाह देता हूँ। फिर राजाओं द्वारा भेजे गए सबसे कुशल चिकित्सक तुझ तक लाए जाएँगे, और वे जल्द ही इन घावों से तेरा इलाज कर देंगे।'

शहीद ने उत्तर दिया:

'मेरा एक और चिकित्सक है, हे स्वामी, प्रभु यीशु मसीह, जिनके लिए मैं पीड़ा सह रहा हूँ; उसी में मैं अपनी आशा रखता हूँ।'

तब राज्यपाल ने उसे बाँधकर जेल में डालने का आदेश दिया। अगले सुबह, राज्यपाल शाही कक्षों में गया और राजाओं को नेओफायटस के बारे में बताया।

उसने कहा, 'कल मैंने एक युवा ईसाई को बाँधकर यातना दी, क्योंकि उसने देवताओं की पूजा करने से इनकार कर दिया था। फिर भी वह यातनाओं की परवाह नहीं करता और लगातार अपने मसीह को पुकारता रहता है।'

राजाओं ने आदेश दिया कि इस युवक और मसीह की गवाही देने वाले सभी लोगों को जिंदा जला दिया जाए। राज्यपाल डेसियस और वृद्ध उआर शाही कक्षों से निकलकर 'द स्कूल ऑफ हरक्यूलिस' नामक स्थान पर गए[1344] । यहाँ, राजाओं की मूर्तियाँ स्थापित की गई थीं, और डेसियस ने युवा नेओफायटस को कालकोठरी से लाने का आदेश दिया। जब संत को उनके सामने लाया गया, तो राज्यपाल ने उनसे निम्नलिखित शब्दों में कहा:

'नेओफायटस, आगे आओ और देवता हरक्यूलिस को बलिदान चढ़ाओ; तब तुम देवताओं को प्रिय लगोगे, और राजाओं तथा हमें भी स्वीकार्य होगे।'

संत ने उत्तर दिया:

'मैं अपने ईश्वर, यीशु मसीह से प्रार्थना करता हूँ, कि मैं उन्हें प्रसन्न और स्वीकार्य होऊँ।'

तब, यातना देने वाले के आदेश पर, संत नेओफटिस को जलाने के लिए एक भट्टी को प्रचंड ताप से गर्म किया गया। उन्हें भट्टी में डाल दिया गया, और उसके मुंह को तीन दिन और तीन रातों के लिए सील कर दिया गया, ताकि शहीद की हड्डियाँ भी न बचें। लेकिन पवित्र शहीद नेओफटिस, जो ज्वालाओं के बीच दिव्य ओस से ठंडे हो गए थे, एक शांति के स्थान में होने की तरह आनंदित हुए, और गा रहे थे: *'यहोवा मेरा रखवाला है; मुझे कुछ भी कमी नहीं होगी: वह मुझे हरे चरागाहों में लिटाता है'* (भजन संहिता 22:1–2)। वह पूरी तरह से सुरक्षित रहा, ठीक वैसे ही जैसे बेबीलोन के तीन जवान जो भट्टी में डाले गए थे (दानियेल 3)।

[1344] हेराक्लेस या हरक्यूलिस – प्राचीन यूनानी किंवदंती का एक नायक था, जिसके बारे में प्राचीन यूनानियों की मान्यताओं के अनुसार, उसके पास अलौकिक शक्ति थी, वह मानवीय शारीरिक शक्ति का प्रतीक था, और बाद में उसे उनके सबसे प्रिय देवताओं में से एक के रूप में पूजा गया। शारीरिक शक्ति के अवतार के रूप में, हरक्यूलिस को सभी जिम्नेज़ियम (प्राचीन यूनानी सार्वजनिक स्कूल जहाँ व्यायाम संबंधी अभ्यासों पर विशेष जोर दिया जाता था) और पैलेस्ट्रा (निजी व्यक्तियों द्वारा संचालित शारीरिक व्यायाम के स्कूल, जहाँ लड़कों को शारीरिक प्रशिक्षण मिलता था) का प्रमुख और संरक्षक माना जाता था। ये स्कूल आमतौर पर हरक्यूलिस को समर्पित होते थे और उसकी मूर्तियों से सुसज्जित होते थे। अक्सर, ये अभ्यास और जिम्नास्टिक तथा एथलेटिक प्रतियोगिताएं खुले में, इस उद्देश्य के लिए विशेष रूप से निर्धारित और हरक्यूलिस को समर्पित क्षेत्रों में होती थीं।

तीन दनि बाद, यातना देने वाले के सेवक भट्टी खोलने और राख नकिालने आए; उन्होंने सोचा कि भट्टी बुझ गई है और शहीद का शरीर जलकर राख हो गया है। लेकनि जैसे ही उन्होंने भट्ठी का मुँह खोला, अचानक और अनपेक्षति रूप से, उसमें से एक बड़ी आग की लपट फूट नकिली और वहाँ इकट्ठा हुए कई दुष्टों को झुलसा दयिा, ताकि शायद ही कोई अछूता बचा हो। संत ने, तथापि, ऊँचे स्वर में पुकारा:

'धन्य हैं आप, हे मेरे प्रभु परमेश्वर, जो मुझे इन यातनाओं के बीच सुरक्षति और अक्षुण्ण रखते हैं, जो मुझे मेरे यातना देने वालों की चालाकयिों से बचाते हैं, जो मेरे लिए आग को ओस में बदल देते हैं, और जनि्होंने अपनी ज्वाला से उन लोगों को भस्म कर दयिा जो अनंत और अवनिाशी आग के योग्य हैं!' हे प्रभु, मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ, जब तक मैं आपकी सहायता से अपना पराक्रम पूरा करूँ, तब तक मुझे, अपने सेवक को, अंत तक लज्जति न करें।

इसके बाद, संत आग की भट्टी से बनिा कसिी नुकसान के बाहर नकिले, आग से उन्हें कोई चोट नहीं लगी थी। दुष्ट सेवकों ने, जो आग की लपटों से बच गए थे, उन्हें पकड़ लयिा और राज्यपाल के सामने ले गए। सभी वधिर्मी इस चमत्कार पर चकति हो गए और, अपनी दुष्टता में, इसे जादू-टोने का परणिाम मान लयिा, क्योंकि वे स्वयं शैतानी जादू-टोने से भरे हुए थे: द्वेष ने उन्हें अंधा कर दयिा था, और वे मसीह की शक्ति को समझ नहीं सके।

तब संत को जंगली जानवरों द्वारा खाए जाने की सज़ा दी गई। एक मंच तैयार कयिा गया; नग्न संत को उस पर लगे एक खंभे से बांध दयिा गया, और एक भालू को उस पर छोड़ दयिा गया। जानवर गुर्राता हुआ संत की ओर बढ़ा, लेकनि पास आते ही वह रुक गया, उसे देखने लगा, और फरि अपनी जगह पर लौट गया। इस पर राज्यपाल और इस तमाशे को देखने के लिए इकट्ठा हुए सभी लोग चकति रह गए। फरि उन्होंने सबसे भीषण मादा भालू को छोड़ा, जसिे साल में केवल दो बार अखाड़े में छोड़ा जाता था, क्योंकि वह बहुत खूंखार थी और उसने कई लोगों को मार डाला था। वह दौड़कर आई, खुद को संत के पैरों पर फेंक दयिा, उसे ईश्वर का आदमी पहचानकर, और फरि अपनी जगह पर लौट गई। जब यह सब हो रहा था, तब चरवाहों ने शासक के सामने एक वशिाल और अत्यंत क्रूर शेर लाया, जसिे उन्होंने उनके अनुसार पाँच दनि पहले रेगस्तिान में पकड़ा था और उसे बलि्कुल भी खाना नहीं दयिा था। प्रसन्न होकर, शासक ने शेर को अखाड़े में लाने का आदेश दयिा, जहाँ पवत्रि शहीद नग्न अवस्था में एक स्तंभ से बंधे पड़े थे। इस सहि को देखकर सभी भयभीत हो गए, क्योंकि वह बहुत बड़ा और भयंकर था। सहि संत के पास आया, उन्हें देखता रहा, ठहर गया, और अपना सरि झुकाकर, झरनों से नकिलने वाली नदयिों की तरह अपनी आँखों से आँसू बहाने लगा; फरि उसने संत के पैरों को चाटना शुरू कर दयिा। यह वही शेर था जसिे संत नेओफटिस ने माउंट ओलंपस पर, एक चट्टानी गुफा में पाया था, और खुद उस गुफा में बस जाने के बाद, उसे कसिी दूसरे स्थान पर भेज दयिा था। उसे पहचानकर, संत ने उसे माउंट ओलंपस पर अपने पूर्व आवास में लौटने का आदेश दयिा, जसिे उसने संत को दे दयिा था; साथ ही, संत ने उसे लोगों को कभी भी नुकसान न पहुँचाने की मनाही की। शेर ने शहीद को प्रणाम करके एक भयंकर दहाड़ के साथ उनके पास से प्रस्थान कयिा, अखाड़े के दरवाज़े तोड़ डाले और भीड़ के बीच से तेज़ी से नकिल गया। हर कोई उस जानवर की क्रूरता से डरकर भयभीत होकर भाग गया, लेकनि उसने कसिी को छुआ नहीं और संत के आदेशानुसार, अपने पुराने आवास में जाने के लिए रेगस्तिान में भाग गया। यातना देने वाला, भय और आतंक से भरकर, और कुछ समझ नहीं पा रहा था, उसने शहीद को मार डालने का आदेश दयिा। वहाँ एक वदिेशी खड़ा था, जो जानवर जैसा और क्रूर स्वभाव का था, जसिके हाथों में एक भाला था। वह संत पर झपट पड़ा और अपने भाले से उनकी छाती में वार कर उन्हें भेद दयिा। इस प्रकार पवत्रि शहीद नेओफटिस, एक मेमने की तरह वध कए गए, ने[1345] को, अपनी जन्मतथि से पंद्रह वर्ष और चार महीने जीवति रहने के बाद, अपना प्राण अपने प्रभु के हाथों में सौंप दयिा। अब, अनंत जीवन का वारसि बनकर, वह जीवन के स्रोत, मसीह परमेश्वर की महमिा करते हैं, जो पति और पवत्रि आत्मा के साथ युगानुयुग महमिा प्राप्त करते हैं।

पवत्रि कन्या शहीद अगनयि का जीवन और कष्टकथा

21 जनवरी को स्मरणोत्सव

पवत्रि शहीद अग्नयि का जन्म प्राचीन रोम में हुआ था और उनके माता-पति ने उन्हें ईसाई धर्म में पाला-पोसा। तेरह वर्ष की आयु में, वे सांसारकि मृत्यु के माध्यम से अनंत मृत्यु से मुक्त हुईं और अनंत जीवन प्राप्त कयिा, क्योंकि

[1345] संत नेओफाइटस ने 303–305 में हुए डायोक्लेटयिन के उत्पीड़न के दौरान यातनाएँ सहते हुए शहीद की मृत्यु प्राप्त की।

उन्होंने जीवन के एकमात्र दाता से प्रेम किया था और अपनी जवानी से ही उन पर अटूट विश्वास रखा था। वह आयु में छोटी थी लेकिन मन से परिपक्व थी – शरीर से युवा, फिर भी उसका आत्मा ज्ञान से धूसर हो चुका था (ज्ञान 4:9); मुखमंडल से सुंदर, फिर भी अपने विश्वास की गहराई में उससे भी अधिक सुंदर थी। परम पवित्र कुँवारी से जन्मे, अति मधुर यीशु के प्रेम से अग्निमय होकर, उसने अपनी कुँवारीपन के द्वारा स्वयं को वर के रूप में अर्पित कर दिया और उनसे अलग, उसने अपने वरों के रूप में किसी और की कामना नहीं की। उच्च कुल में जन्मी और सुंदर रूप वाली, उसने अपनी सुंदरता से प्रांतीय राज्यपाल सिम्फ्रोनियस के पुत्र के नेत्रों और हृदय को इतना मोहित कर लिया कि, जब उसने उसे लड़कियों के स्कूल से लौटते हुए देखा, वह तुरंत ही उससे प्रेम करने लगा; और फिर, उसके बारे में पूछताछ करके और उसके माता-पिता के घर का पता लगाकर, उसने उसे शानदार उपहार भेजना शुरू कर दिया, और उससे और भी अधिक का वादा करते हुए उसे अपनी मंगेतर बनने और उससे विवाह करने के लिए मनाने लगा। संत अग्निया ने इन सभी उपहारों को कूड़े की तरह ठुकरा दिया, और उन्हें तनिक भी महत्व नहीं दिया; जहाँ तक उसकी बात है, उसने कहा कि उसकी सगाई सबसे अच्छे वर से हुई है और उसने उनसे सबसे अच्छे और सबसे कीमती उपहार प्राप्त किए हैं: उनकी दुल्हन के रूप में, वह उनका परित्याग नहीं कर सकती या उनके प्रति अपनी भक्ति और प्रेम में विश्वासघात नहीं कर सकती। लेकिन दिन-प्रतिदिन उस युवक का उसके प्रति प्रेम और भी प्रबल होता गया, और वह खुद को सभी अन्य कुलीन युवकों में सबसे सम्मानित और योग्य मानने लगा। यह मानकर कि वह युवती उससे उत्तम उपहार चाहती थी, उसने और भी अधिक मूल्यवान रत्न और मोती, कीमती बर्तन और वस्त्र तैयार किए, और उन्हें स्वयं उसके पास ले आया, और उससे विनती करने लगा—कभी स्वयं, कभी परिचितों, दोस्तों और पड़ोसियों के माध्यम से—कि वह किसी और को उससे अधिक पसंद न करे। उसने अपने कुलीन जन्म, अपनी संपत्ति, अपने घर और उन पुश्तैनी ज़मीनों की ओर इशारा किया जो उसकी हो जाएँगी यदि वह उससे सगाई करने के लिए राज़ी हो जाए। फिर संत ने और स्पष्ट रूप से कहना शुरू किया:

– मुझसे दूर हो जा, हे पाप की ज्वाला प्रज्वलित करने वाले, हे अशुद्धि के कामुक प्रेमी, हे अनंत मृत्यु के लिए तैयार भोजन! मेरे पास से दूर हो जा, क्योंकि एक अन्य वधूवर तुझे पहले ही चेतावनी दे चुका है, जिसने मुझे कहीं अधिक अलंकृत किया है और अपनी आस्था की अंगूठी से मेरा सगाई-बंधन कर दिया है। न वंश में, न ही पद-प्रतिष्ठा में तू उसकी बराबरी कर सकता है। उसने मुझे आध्यात्मिक सौंदर्य की अन्य विशिष्टताएँ भी प्रदान की हैं। उसने मेरे दाहिने हाथ और गर्दन को कीमती रत्नों से सजाया है, मेरे कानों में अनमोल पन्नों की बालियाँ पहनाई हैं, मुझे चमकीले मोतियों के हार से सजाया है, मेरे चेहरे पर एक निशान लगाया है ताकि मैं उससे बेहतर किसी अन्य वर को न चुनूँ, मुझे सोने की कढ़ाई वाले वस्त्र पहनाए और अनगिनत हारों से सजाया है; इसके अलावा, उन्होंने मुझे वह अनमोल खजाना दिखाया जो उन्होंने मुझे देने का वादा किया था यदि मैं उन पर अपना विश्वास बनाए रखूँ। इसीलिए मैं किसी और की ओर नहीं देख सकती, कहीं ऐसा न हो कि मैं अपने पहले वरा को अपमानित करूँ, और न ही मैं उन्हें त्याग सकती हूँ, जिसके साथ मैं प्रेम के बंधन से दृढ़ता से बंधी हूँ। उसकी कुलीनता सर्वोच्च है, उसकी शक्ति सबसे मजबूत है, उसकी सुंदरता सबसे भव्य है, उसका प्रेम सबसे मीठा है, जो सभी अनुग्रह से परे है; उसने मेरे लिए पहले ही एक महल तैयार कर लिया है। उनकी आवाज़ मेरे लिए मधुर है; उनके होठों ने पहले ही मेरे लिए शहद और दूध बहाया है; उनके पवित्र आलिंगन से मैं पहले ही उनसे सच्चे मन से जुड़ गई हूँ; उनका शरीर पहले ही मेरे शरीर के साथ एक हो गया है, और उनके रक्त ने मेरे चेहरे को रंग दिया है। उनकी माता कुँवारी हैं, और उनके पिता ने अपनी पत्नी को नहीं जाना। स्वर्गदूत उनकी सेवा करते हैं; सूर्य और चंद्रमा उनकी सुंदरता पर चकित हैं; उनके आदेश से मृतकों को जीवित किया जाता है; उनके स्पर्श से बीमार ठीक हो जाते हैं; उनकी संपदा कभी कम नहीं होती, न ही उनके खजाने कभी सूखते हैं। मेरा विश्वास केवल उसी में है, और मैं स्वयं को पूरी तरह से उसी के हवाले करती हूँ। उसे अपना पति मानकर, मैं कुँवारी रहूँगी; उससे प्रेम करके, मैं निर्दोष रहूँगी; उसे स्पर्श करके, मैं पवित्र रहूँगी; इस विवाह से कोई संतान नहीं है; इसमें संतान को जन्म देना पीड़ा रहित है, और हमारे मिलन के फल प्रत्येक बीतते दिन के साथ बढ़ते जाते हैं।

इन शब्दों के बाद, वह पागल युवक उसके प्रति तीव्र प्रेम से और भी अधिक प्रज्वलित हो गया, और प्रेम की पीड़ा से उसके हृदय में घाव हो गया, जिससे वह दुख और शोक से एक गंभीर बीमारी में पड़ गया। जब वह अपने बिस्तर पर पड़ा था और अपने हृदय की गहराई से भारी आहें भर रहा था, तो डॉक्टरों को उसके हृदय के घाव की प्रकृति स्पष्ट हो गई। यह सब सुनकर और पूछताछ कर अपने बेटे की बीमारी का कारण जानकर, उसके पिता ने तुरंत युवती और उसके माता-पिता के पास संदेशवाहक भेजे, ताकि वह उसे अपने बेटे के लिए सगाई कर सकें। लेकिन उसने, पहली बार की तरह ही, यह कहते हुए इनकार कर दिया:

'मैं अपने पहले मंगेतर के प्रति कभी बेवफ़ा नहीं होऊँगी।'

क्रोधित प्रांतीय राज्यपाल ने यह पता लगाने के लिए पूरी जांच-पड़ताल की कि कौन उसके बेटे की बराबरी कर सकता है और उसकी कुलीन वंशावली को बदनाम कर सकता है। फिर वहाँ मौजूद लोगों में से एक ने समझाया कि अग्निया बचपन से ही ईसाई थी और वह ईसाई जादू से इतनी मोहित थी कि वह मसीह—जिसे ईसाई परमेश्वर के रूप में स्वीकार करते हैं—को अपना वर मानती थी। यह जानकर प्रांतीय राज्यपाल प्रसन्न हुआ, क्योंकि एक न्यायाधीश के रूप में वह उसे अपने देवताओं का अपमान करने के लिए मृत्युदंड की पात्र घोषित कर सकता था; इसके अलावा, वह अपनी शक्ति का उपयोग करके उसे अपने बेटे के साथ विवाह करने के लिए मजबूर करने की उम्मीद कर रहा था। उसने तुरंत अपने नौकरों को उसे उसके सामने लाने के लिए भेजा और उसके खिलाफ अपना दुष्ट मुकदमा शुरू किया। पहले तो उसने चापलूसी से और फिर धमकियों से उसे मसीह और उस कुँवारीपन से, जिसका उसने मसीह से वचन दिया था, हटाने की कोशिश की। हालाँकि, मसीह की वह कन्या न तो चापलूसी से बहकी और न ही धमकियों से डरी; बल्कि, आत्मा में धैर्यवान होकर, उसने चापलूसी और धमकियों दोनों का समान रूप से मज़ाक उड़ाया। प्रांतीय राज्यपाल, सिम्फ्रोनियस, ने कन्या में ऐसी वीरता देखकर, उसके माता-पिता की ओर मुड़कर सगाई के बारे में उनसे विस्तार से बात की; और चूँकि वे कुलीन वंशज थे, इसलिए उन्हें कठोर व्यवहार करने की हिम्मत नहीं हुई, और उन्होंने केवल उन्हें अपनी बेटी को शादी के लिए मनाने की पूरी कोशिश करने की सलाह दी। लेकिन उन्होंने इनकार कर दिया, और कहा:

'राज्यपाल, हम उसे मना नहीं पा रहे हैं, क्योंकि बचपन से ही हम उसकी इच्छा को जानते हैं, वह ऐसा कभी नहीं करेगी और अपने संकल्प को कभी नहीं त्यागेगी।'

तब शासक ने फिर से युवती को निर्णय के लिए अपने सामने लाने का आदेश दिया, और उससे कामुक प्रेम और विवाह के बारे में लंबी बातें कीं; जब उसके सभी कोमल और चापलूसी भरे शब्द निष्फल साबित हुए, तो अंत में उसने कहा:

'दो में से एक चुनो: या तो मेरे बेटे से विवाह करो, या, यदि तुम अपनी कुँवारी अवस्था बनाए रखना चाहती हो, तो देवी वेस्टा की शाश्वत सेवा के लिए स्वयं को समर्पित कर दो[1346] , क्योंकि वह ऐसी कुंवारी कन्याओं की मांग करती है।'

इन शब्दों पर, धन्य अग्निया ने उत्तर दिया:

'यदि मैंने तुम्हारे पुत्र को ठुकराया है, यद्यपि वह एक उन्मत्त जुनून से भ्रष्ट था, वह फिर भी एक जीवित इंसान है, जिसे विवेक की शक्ति प्राप्त है, जो सुनने, देखने, चलने और इस दुनिया की नेमतों का आनंद लेने में सक्षम है – अगर मैं अपने मसीह के प्रति अपने व्रत के कारण उसकी ओर देख भी नहीं सकती, तो मैं एक बहरे और गूंगे, निर्जीव और विवेकहीन मूर्ति की पूजा तो और भी नहीं कर सकती। कहीं ऐसा न हो कि मैं सर्वशक्तिमान परमेश्वर को अप्रसन्न करूँ, मैं एक निर्जीव पत्थर के सामने अपना सिर नहीं झुकाऊँगी, क्योंकि मैं निस्संदेह जानती हूँ कि उस के सिवा कोई और ईश्वर नहीं है जिसने अपने पुत्र के माध्यम से स्वर्ग और पृथ्वी की रचना की, हमारे प्रभु यीशु मसीह, जो हमारे लिए देहधारी बने, जिन्होंने दुख उठाया और दफनाए गए, तीसरे दिन फिर से जी उठे, और अब स्वर्ग में एक शाश्वत राज्य के साथ राज्य करते हैं। मैं केवल उन्हीं की आराधना और सेवा सच्चे और जीवित परमेश्वर के रूप में करता हूँ, जबकि मैं तुम्हारी झूठी देवी और तुम्हारे सभी घृणित देवताओं को शाप देता हूँ।

यह सुनकर, राज्यपाल सिम्फ्रोनियस ने कहा:

'तुम्हारी कम उम्र को देखते हुए, मैं हमारे देवताओं के खिलाफ तुमसे निकली गई ईश्वर-निंदा को क्षमा करता हूँ, क्योंकि मैं देखता हूँ कि तुम्हारी समझ अभी पकी नहीं है; इसलिए अपना भला करो और देवताओं को क्रोधित न करो।'

संत अग्निया ने उत्तर दिया:

'तुम मेरी जवानी को मूर्खता समझकर क्यों तुच्छ जानते हो, और तुम्हें ऐसा क्यों लगता है कि मैं तुमसे कोई दया चाहती हूँ? तब जान लो कि विश्वास का मूल्य न तो जीवन के वर्षों पर निर्भर करता है और न ही शारीरिक आयु पर, बल्कि मन पर निर्भर करता है; और सर्वशक्तिमान ईश्वर किसी व्यक्ति को उनके वर्षों की तुलना में उनकी बुद्धि से अधिक गौरवान्वित करता है, और लंबी आयु की तुलना में मन के माध्यम से अधिक आशीर्वाद प्रदान करता है। जहाँ तक तुम्हारे

[1346] वेस्टा (जिसे यूनानियों हेस्टिया के नाम से जानते थे) का प्राचीन रोमनों द्वारा चूल्हे, घरेलू सामंजस्य, शांति और खुशी की देवी के रूप में सम्मान किया जाता था; उनके विश्वास के अनुसार, वह स्वयं एक कुंवारी थी। उनके सम्मान में एक विशेष अभयारण्य बनाया गया था, जिसमें उनकी एक मूर्ति और एक हवन कुंड था जिसमें एक अनंत जलने वाली अग्नि को बनाए रखा जाता था; इस अग्नि की देखभाल उनकी परिचारिकाएं, तथाकथित वेस्टल वर्जिन (कन्याएं), करती थीं, जिन्हें आजीवन कुंवारी रहने का व्रत लेने वाली शुद्ध कन्याओं में से चुना जाता था और जिन्हें रोमनों के बीच बहुत सम्मान और आदर प्राप्त था।

देवताओं का सवाल है, जनिके क्रोध से तुम मुझे आगाह करते हो, उन्हें रहने दो; उन्हें खुद मुझसे नाराज़ होने दो, उन्हें खुद बोलने दो, उन्हें खुद मुझे उनका सम्मान करने और उनकी पूजा करने का आदेश देने दो।

प्रांत के राज्यपाल ने उत्तर दयिा:

'अपने लएि दो चीज़ों में से एक चुन लो: या तो, दूसरी कुँवारयिों के साथ मलिकर, अपने कुल के सम्मान को बचाने के लएि वेस्टा देवी को बलदिान चढ़ाओ; या, अपने वंश की शाश्वत कलंक के लएि, तुम लज्जास्पद महलिाओं के साथ कुख्यात घर में चली जाओगी।'

संत अग्नयिा ने साहसपूर्वक उत्तर दयिा:

'अगर तुम जानते कि मेरा ईश्वर कौन है, तो तुम ऐसी बातें नहीं कहते। परन्तु मैं, अपने प्रभु यीशु मसीह की शक्ति को जानती हूँ, तुम्हारी धमकयिों को कोई महत्त्व नहीं देती, क्योंकि मुझे पूरा वशि्वास है कि मैं तुम्हारे देवताओं की पूजा नहीं करूँगी, और मेरी कुँवारी अवस्था शुद्ध और नरि्दोष रहेगी।' मेरे शरीर का एक रक्षक है, परमेश्वर का एक स्वर्गदूत। और मेरा प्रभु, यीशु मसीह, परमेश्वर का एकलौता पुत्र, जसिे तुम नहीं जानते। वह मेरे लएि एक अटूट कलि, एक अथक रक्षक, एक स्थरि रक्षक है – आपके देवताओं के वपिरीत, जो या तो तांबे के टुकड़े हैं, जो घरेलू जीवन में उपयोगी बर्तन बनाने के काम आते हैं, या वे पत्थर हैं जनिका उपयोग सड़कों को पक्का करने के लएि कयिा जाता है। क्योंकि ईश्वर पत्थर में नहीं बसता, बल्कि स्वर्ग को अपना सहिासन बनाता है; न ही वह कांस्य में, या कसिी और कीमती पदार्थ में बसता है, बल्कि स्वर्गीय राज्य में रहता है, जहाँ हर प्राणी द्वारा उसकी महमिा और सम्मान कयिा जाता है। तुम, और तुम्हारे जैसे लोग, यदि मूर्तपिूजा से मुंह मोड़कर सच्चे ईश्वर की ओर नहीं लौटते, तो तुम अपने देवताओं के साथ—जन्हिें मूर्तकिार आग में गढ़ते हैं और जो आग में ही पघिल जाते हैं—शाश्वत अग्नि में पीड़ति होओगे।

प्रांतीय राज्यपाल बहुत क्रोधति हुआ; उसने संत को नग्न कर वेश्यालय ले जाने का आदेश दयिा, जबकि एक उद्घोषक को यह उद्घोष करना था:

'अग्नि, वह अधर्मी कन्या जसिने देवताओं के वरिुद्ध अपमानजनक शब्द कहे हैं, उसे एक वेश्या के घर की तरह वेश्यालय ले जाया जा रहा है।'

लेकनि जब उस पवत्रि कन्या को उपहास के लएि नग्न कयिा जा रहा था, तो ईश्वर ने उसकी आशा में उसका साथ नहीं छोड़ा, और न ही उन्होंने अपनी वधू का उपहास या अपमान होने दयिा। ईश्वर की इच्छा से, उसके सरि पर उसके बाल एक ही क्षण में इतने लंबे हो गए कि वे एक मोटे वस्त्र की तरह उसके पूरे शरीर को ढक गए, और कोई भी उसकी नग्नता को नहीं देख सका। जब वह वेश्याओं के घर में प्रवेश की, तो उसने परमेश्वर के स्वर्गदूत को देखा, जो उसकी कन्या-शुद्धता की रक्षा के लएि तैयार था, जसिने उसे एक ऐसी अकथनीय, तेजस्वी दव्यि ज्योति से आच्छादति कर दयिा कि उस तीव्र चमक के कारण, नरि्लज्ज और दुष्ट युवकों की आँखें उसे नहिार नहीं सकीं। पूरा कमरा प्रकाश से चमक उठा, मानो सूर्य अपनी पूरी शोभा के साथ चमक रहा हो, और जब भी कसिी ने उसे जज्ञिासु दृष्टि से देखने की कोशशि की, तो उनकी आँखें उस अदृश्य, पवत्रि प्रकाश से तुरंत ही बहुत धुंधली हो गईं। जब कन्या प्रार्थना करने लगी, तो उसने अपने सामने एक सफेद वस्त्र देखा, जो मानव हाथों से नहीं बल्कि स्वर्गदूतों के हाथों से बुना गया था। उसे पहनकर और अपनी आयु के अनुरूप सजी हुई देखकर, संत ने कहा:

'मैं आपकी धन्यवाद करती हूँ, हे मेरे प्रभु, यीशु मसीह, कि आपने मुझे अपनी दासयिों में गनिकर, यह वस्त्र मुझ पर प्रदान कयिा है!'

तब पाप का घर प्रार्थना का घर बन गया; दानवी हर्षोल्लास का स्थान ईश्वर की महमिा का नविास बन गया; वेश्याओं का अशुद्ध घर एक भव्य महल बन गया, जहाँ मसीह की वधू, उसके सामने प्रकट हुए स्वर्गदूत के साथ, ईश्वर की महमिा करती और उसकी स्तुति गाती थी। कई लोग यहाँ आए, जनिके मन भ्रष्ट और वासना से भरे थे; लेकनि, उस कन्या के चारों ओर की महमिा से चकति होकर और उसकी कुँवारीपन की रक्षा करने वाली दैवीय शक्ति को देखकर, वे पवत्रि हो गए और, श्रद्धापूर्वक सरि झुकाकर, चले गए। वह युवक स्वयं—इस बुराई का उत्प्रेरक, अशुद्ध वासना से भरा हुआ—अपने साथयिों के साथ आया। वह पवत्रि कन्या के वरिुद्ध हसिा का कृत्य करना चाहता था और, उससे पहले आए अन्य लोगों को बनिा कसिी सफलता के जाते हुए देखकर, उसने उनका मज़ाक उड़ाया, उन्हें बेकार और कमजोर कहा। वह धृष्टतापूर्ण इरादे से उस कमरे में प्रवेश कयिा जहाँ संत प्रार्थना कर रही थीं, और दव्यि तेज को देखकर, प्रभु की महमिा का सम्मान करने में वफिल रहा और नरि्लज्जतापूर्वक मसीह की वधू की ओर बढ़ गया। लेकनि इससे पहले कि वह उस पर हाथ उठा पाता, एक राक्षस ने तुरंत उसे पकड़ लयिा, उसे ज़ोर से ज़मीन पर फेंक दयिा और गला घोंटकर

उसे नरि्जीव कर दयिा। जो जवान उसके साथ आए थे, उन्होंने जब देखा कि वह कमरे में बहुत देर तक रुका हुआ है, तो उन्होंने सोचा कि वह कोई पापपूर्ण कृत्य कर रहा है। फरि उसके सबसे करीबी दोस्तों में से एक, उसकी इच्छा की पूर्ति और प्राप्ति पर उसकी प्रशंसा और बधाई देने के लिए, कमरे में गया और उसे नरि्जीव पाया, तो वह ज़ोर-ज़ोर से चलि्लाने लगा:

'रोम के पुरुषों, मदद करो! इस जादूगरनी ने अपने जादू से राज्यपाल के बेटे की हत्या कर दी है।'

तुरंत ही एक बड़ी भीड़ जमा हो गई। यह देखकर कि क्या हुआ था, कुछ लोगों ने उसे जादूगरनी कहा, जबकि अन्य का कहना था कि युवक की मौत के लिए वह दोषी नहीं थी। यह जानकर, मृतक के पिता भीड़ के पास दौड़े और अपने बेटे को मृत पड़ा हुआ देखकर, आँसुओं से भरे स्वर में संत से बोले:

'हे सभी स्त्रियों में सबसे अमानवीय और क्रूर! तुमने मेरे बेटे की हत्या क्यों की? क्या तुम अपनी जादूगरी का प्रदर्शन किसी और पर नहीं कर सकती थीं? हाय रे मेरी किस्मत! तुमने यह क्या किया? बताओ, तुमने उसे कैसे मारा?'

संत ने कोमल स्वर में उत्तर दयिा:

'जिसकी इच्छा उसने पूरी करने की कोशशि की—मानव जाति का प्राचीन शत्रु, जिसके पास व्यभिचारियों और जो ईश्वर से नहीं डरते, और विशेष रूप से उन लोगों पर शक्ति है जो कुँवारीपन को कलंकित करते हैं—उसी ने उसे मारा। क्योंकि उससे पहले यहाँ आए हुए सभी लोग जीवित और कुशल रहे, क्योंकि उन्होंने परमेश्वर का सम्मान किया, जिन्होंने मुझे इस दया के वस्त्र से परिधानित करने और मेरी कुँवारीपन को, जो पालने से ही मसीह को समर्पित है, अक्षुण्ण रखने के लिए अपना स्वर्गदूत भेजा। स्वर्गदूत के प्रकाश की किरणें देखकर, वे सभी पूजा करके चले गए un , जबकि तुम्हारा बेटा, जो नरि्लज्ज और अधर्मी था, जैसे ही वह अंदर आया, उसने गुस्सा करना और उत्पात मचाना शुरू कर दिया; और जब उसने नरि्लज्जतापूर्वक मुझे छूने के लिए अपना हाथ बढ़ाया, ईश्वर के स्वर्गदूत ने उसे तुरंत शैतान के हाथों सौंप दिया, ताकि वह इस कड़वे और शर्मनाक अंत को भुगत सके जो आप देख रहे हैं। इस प्रकार, उसकी मृत्यु मेरी जादू-टोने से नहीं, जैसा आप सोचते हैं, बल्कि ईश्वर के स्वर्गदूत के अधिकार और आज्ञा से हुई।

इस पर राज्यपाल ने उत्तर दयिा:

'यह तभी स्पष्ट होगा कि आपने यह जादू-टोने से नहीं किया, जब आप अपने स्वर्गदूत से मेरे बेटे को मृतकों में से जीवित करने का आग्रह करेंगे।'

संत ने उत्तर दयिा:

'यद्यपि तुम अपने अविश्वास के कारण ऐसे चमत्कार के योग्य नहीं हो, परन्तु चूंकि मेरे प्रभु यीशु मसीह की शक्ति प्रकट और महिमामय होने का समय आ गया है, तुम सब इस स्थान को छोड़ दो, और मैं अपने परमेश्वर को अपनी प्रथागत प्रार्थनाएँ अर्पित करूँगा।'

और जब वह ज़मीन पर लोट-लोट कर प्रार्थना कर रही थी, तो जो परमेश्वर का स्वर्गदूत उसके पास प्रकट हुआ था, उसने उसे उठा लिया, और वह रो पड़ी और मृत युवक को जीवित कर दिया। वह युवक, घर से बाहर आकर, ऊँचे स्वर में पुकार कर कहने लगा:

'स्वर्ग में और पृथ्वी पर और समुद्र में केवल एक ही ईश्वर है, ईसाई ईश्वर; जहाँ तक अन्य देवताओं का प्रश्न है, वे केवल धोखा और भ्रम हैं, जो उन पर विश्वास करने वालों पर अनंत विनाश लाते हैं!'

यह देखकर और सुनकर, उसी दिन बहुत से लोग—कुल एक सौ साठ लोग—विश्वासी हो गए और बपतिस्मा लिया। कुछ समय बाद, मूर्तिपूजकों ने उनका और पुनर्जीवित युवक का सिर कलम कर दिया।

इस चमत्कार से मूर्तिपूजक पुरोहित और जादूगर बहुत परेशान हो गए। चमत्कार की अफवाहें फैलाकर और लोगों में भारी अशांति पैदा करके, वे न्यायाधीश को संबोधित करते हुए जोर से चलि्लाए:

'इस जादूगरनी को हमारे बीच से भगा दो; इस जादूगरनी को मार डालो जो न केवल शरीरों को मारती है बल्कि आत्माओं और हृदयों में भी क्रांति लाती है!'

इस चमत्कार को देखकर सिम्फ्रोनियस हैरान रह गया: वह संत को रिहा करना चाहता था, लेकिन पुरोहितों के उसके खिलाफ विद्रोह और यहाँ तक कि अपने देश से नरि्वासन के डर से, उसने सार्वजनिक अशांति को शांत करने के लिए अपनी राज्यपाल, जिसका नाम अस्पासिया था, को पीछे छोड़ दिया, जबकि वह स्वयं इस दुख के साथ चला गया कि वह अपने बेटे के पुनरुत्थान के बाद पवित्र कन्या को मुक्त नहीं कर सका। अस्पासिया ने सत्ता संभालने के बाद, शहर के केंद्र में एक चिता जलाने और संत अग्निया को उसमें फेंककर जलाने का आदेश दिया। जब संत को आग में फेंका गया,

तो लपटें तुरंत दो भागों में बंट गईं, और उनके बीच उनके लिए एक विशाल और ठंडी जगह बन गई; इसके विपरीत, वे आसपास खड़े लोगों की ओर बढ़ीं और उन्हें झुलसा दिया। लोगों ने जब कन्या को अछूता देखा, तो उन्होंने इसे ईश्वर की सर्वशक्तिमत्ता का नहीं, बल्कि जादू-टोने की शक्ति का परिणाम माना; और, इस पर चर्चा करते हुए, वे उत्तेजित हो गए और उन्होंने आकाश की ओर ईश्वर निंदा करते हुए पुकारा। इस बीच, पवित्र शहीद, आग के बीच खड़ी होकर अपने हाथ ऊपर उठाए, प्रार्थना करने लगी:

'महिमा तेरी हो, हे हमारे प्रभु यीशु मसीह के सर्वशक्तिमान पिता, जिनके द्वारा तूने मुझे दुष्ट मनुष्यों के हाथों से छुड़ाया, मेरी आत्मा को अशुद्धता से बचाया, और मेरे शरीर को शुद्ध रखा! और अब, पवित्र आत्मा की स्वर्गीय ओस से आग मेरे लिए ठंडी हो गई है; लपटें अलग हो रही हैं, और आग की सारी शक्ति उन सेवकों के विरुद्ध निर्देशित है जो मुझे जलाने की कोशिश कर रहे हैं। मैं तुझे धन्यवाद देती हूँ, हे परमेश्वर, जो हर स्तुति के योग्य है, क्योंकि लिपटों के बीच भी तू मुझे अपनी ओर एक निडर मार्ग प्रदान करता है। मैं पहले ही वह पूरा हुआ देख रहा हूँ जिस पर मैंने विश्वास किया था; जिसकी मुझे आशा थी, वह मुझे मिला है, और जो मैंने चाहा था, वह मुझे प्राप्त हुआ है। मैं अपने होठों से और अपने हृदय में तेरा इकरार करता हूँ; मैं अपनी सभी इंद्रियों से तेरी ओर मुड़ गया हूँ, और मैं यहाँ तेरे पास आता हूँ, हे जीवते और सच्चे परमेश्वर, हमारे प्रभु यीशु मसीह और पवित्र आत्मा के साथ, जो युगानुयुग जीवता और राज्य करता है, आमीन।

जब संत ने यह प्रार्थना कही और चिता की आग अंततः बुझ गई, तो एस्पैसियस ने, और अधिक जन आक्रोश के डर से, संत के गले में तलवार घोंपने का आदेश दिया। इस प्रकार, मसीह की शहीद अगनिया, अपने ही रक्त में स्नान करके, अमर वर के विवाह में चली गईं[1347] । संत अग्निया के माता-पिता ने आनंदपूर्वक अपनी बेटी के सम्मानित शरीर को उठाया और इसे शहर से बहुत दूर नहीं, नुमान्टियन मार्ग के नाम से प्रसिद्ध सड़क के किनारे अपने खेत में रख दिया। यहाँ, कई विश्वासी प्रार्थना करने के लिए इकट्ठा हुए, विशेष रूप से रात में, मूर्तिपूजकों के डर से, जो वहाँ और सड़क के किनारे घात लगाए रहते थे और विश्वासियों पर बहुत अत्याचार करते थे। एक अवसर पर, अचानक हमला करते हुए, उन्होंने फेंके गए पत्थरों से कई लोगों को घायल कर दिया और सभी को भगा दिया; केवल एक युवती बची, जो संत अगनिया की समकालीन थी, जिसका नाम एमरेन्टियाना था। धैर्य से भरकर, उसने डाकुओं को फटकारते हुए कहा:

'तुम निर्दयी लोग, निर्दोष लोगों पर पत्थर क्यों बरसा रहे हो? तुमने उन लोगों में क्या दोष पाया है जो एक ईश्वर की महिमा करते हैं और अपनी प्रार्थनाओं के द्वारा तुम्हारे लिए बहुत सारी आशीर्वाद मांगते हैं?'

पगनों ने, क्रोधित होकर, उसे पत्थर मारकर हत्या कर दी। इस प्रकार, संत अग्निया की कब्र पर प्रार्थना करते समय, उसने अपनी आत्मा प्रभु को सौंप दी। और तुरंत एक भयंकर भूकंप, बिजली की चमक और भयानक गर्जना हुई; अधिकांश हत्यारे ऊपर से गिरकर मर गए। उस समय से, मूर्तिपूजकों ने अब मसीह के शहीद के मकबरे पर जाने वाले विश्वासियों पर अत्याचार करने की हिम्मत नहीं की। जहाँ तक संत अग्निया के माता-पिता का सवाल है, वे बड़ों के साथ रात में आए, उन्होंने संत एमेरेंतियाना के खून से सने, सम्मानित शरीर को धोया और उसे संत अग्निया के पास दफनाया, जबकि वे स्वयं अपनी प्रिय बेटी की कब्र के पास लगातार जागते और रातों में रोते रहे। एक रात उन्होंने कन्याओं का एक जुलूस अपने पास से गुजरते देखा - जो चमकीले, सोने की कढ़ाई वाले वस्त्रों से सुसज्जित और दिव्य महिमा से प्रकाशमान थीं; और उनके बीच उन्होंने अपनी बेटी, संत अग्निया को देखा, जो उनके जैसे ही चमक रही थी और उसके दाहिने हाथ में मेमने के साथ थी - जो बर्फ से भी अधिक सफेद था। अपने साथियों की ओर मुड़कर और उनसे थोड़ी देर रुकने और इंतजार करने के लिए कहकर, उसने अपने माता-पिता से कहा:

'मेरे लिए ऐसा विलाप मत करो जैसे मैं मर गई हूँ, बल्कि मेरी खुशी मनाओ और मेरे साथ उत्सव करो, क्योंकि मैं इन कन्याओं के साथ दिव्य निवासों में प्रवेश कर गई हूँ, और अब मैं स्वर्ग में उस से एक हो गई हूँ जिसे मैंने पृथ्वी पर रहते हुए पूरे हृदय से प्रेम किया था।'

यह कहकर वह अदृश्य हो गई।

कई वर्षों बाद, महान कॉन्स्टेंटाइन सिंहासन पर बैठे। उनकी बेटी, कॉन्स्टेंस, गंभीर रूप से बीमार पड़ गई। उसका पूरा शरीर सड़ते हुए घावों से ढक गया था, और उसके शरीर पर सिर से पैर तक एक भी स्वस्थ स्थान नहीं था। डॉक्टर उसकी मदद करने के लिए कुछ नहीं कर सके। कुछ अच्छी सलाह पर अमल करते हुए, वह रात में पवित्र शहीद अग्निया

[1347] संत अग्निया शहीद का 304 ईस्वी में बलिदान हुआ।

के मकबरे पर गई और वहाँ, दृढ़ वशि्वास और आँसुओं के साथ प्रार्थना करने के बाद, वह सो गई और उसने सपने में संत अग्नयिा को देखा, जनि्होंने उससे कहा:

'हौसला रखो, कॉन्स्टेंस, और प्रभु यीशु मसीह, परमेश्वर के पुत्र पर वशि्वास करो, जनिके प्रति वशि्वास से तुम्हारे घाव अब ठीक हो रहे हैं।'

जागने पर, कॉन्स्टेंस को इतना स्वस्थ महसूस हुआ मानो वह कभी बीमार ही न हुई हो। घर लौटकर, उसने अपने पति और भाइयों को बताया कि कैसे संत अगनयिा ने उसे ठीक कर दयिा था। राजसी परविार में बहुत खुशी हुई; पूरा शहर इस महान चमत्कार के लिए ईश्वर की स्तुति करते हुए आनंदति हुआ। कई लोग पवत्रि शहीद की कब्र पर आने लगे और उन्हें वभिन्नि प्रकार के चंगाई प्राप्त हुई। इसके बाद, राजकुमारी कॉन्स्टेंस ने अपने पति से पवत्रि शहीद अगनयिा के नाम पर उनके दफन स्थल पर एक चर्च बनाने का आग्रह कयिा। वहाँ अपना घर बसाने के बाद, वह अपनी मृत्यु तक कई अन्य कुलीन और प्रतष्ठिति कन्याओं के साथ कुँवारी ही रहीं। इस प्रकार, हमारे ईश्वर मसीह की महमिा के लिए, जो पति और पवत्रि आत्मा के साथ सदा-सदा महमिामय हैं, उनके सम्मान और स्तुति में, संत अग्नयिा की कलीसयिा में कुंवारी मसीह की वधू की एक कन्वेंट की स्थापना हुई। आमीन।

पवत्रि शहीदों वेलेरयिन, कैंडडिस, यूजीन और अक्वलि की स्मृति

21 जनवरी को स्मरण

इन पवत्रि और महमिामय शहीदों ने डायोक्लेटयिन और मैक्समियिन के शासनकाल में राज्यपाल लाइसयिस के हाथों यातनाएँ भोगीं। सबसे पहले, वैलेरयिन, कैंडडिस और अक्वलि को ट्रेबज़िॉन्ड के पहाड़ों में पकड़ लयिा गया, क्योंकि कट्टर उत्पीड़न की शुरुआत के साथ ही वे अपने घर, अपनी सारी संपत्ति और पूरी व्यर्थ दुनयिा को पीछे छोड़कर पहाड़ों में चले गए थे, और उन्होंने ईश्वरहीन मूर्तपिूजकों के साथ रहने के बजाय जंगली जानवरों के साथ रहने को प्राथमकिता दी थी। दुष्टों ने पहले तीनों पकड़े गए शहीदों को लासयिस के क्षेत्र में, पनिा नामक एक छोटे से शहर में भेजा, जहाँ उन्हें स्थानीय कालकोठरी में कठोर कारावास में रखा गया; और फरि, कुछ समय बाद, उन्हें ट्रेबज़िॉन्ड[1348] लाया गया और राज्यपाल लाइसयिस के सामने पेश कयिा गया। जब संतों से ईसाई धर्म के बारे में पूछा गया और मूर्तयिों को बलदिान चढ़ाने के लिए कहा गया, तो उन्होंने मना कर दयिा, तो पहले उन्हें रस्सयिों से नग्न पीटा गया, और फरि लटकाकर लोहे की पंजाओं से खुरच दयिा गया, जबकि उन्हें जलती हुई मोमबत्तयिों से जलाया गया। पवत्रि शहीदों को उनके कष्टों के बीच उनमें अदृश्य रूप से वद्यिमान दैवी शक्ति से बल मलिा। अचानक, इस शक्ति ने उनके उत्पीड़क को इतना भयभीत कर दयिा कि वे मृतकों की तरह लोट-पोट कर गरि पड़े। यह देखकर, लाइसयिस भयभीत हो गया और शहीदों को जेल ले जाने का आदेश दयिा। कुछ दनिों बाद, संत यूजीन को भी पकड़ लयिा गया और यीशु मसीह के नाम का प्रचार करने के लिए क्रूरतापूर्वक पीटा गया। जब बाद में राज्यपाल मूर्तपिूजक मंदरि में गया, तो शहीद यूजीन को उसके पीछे-पीछे वहाँ ले जाया गया। मंदरि में प्रवेश करने पर, संत ने ईश्वर से प्रार्थना की, और तुरंत मूर्तयिाँ गरि पड़ीं और धूल में मलि गईं। फरि, यातना देने वाले के आदेश पर, उसके नौकरों ने संत के हाथ-पैरों को रस्सयिों से बांध दयिा और उसे जमीन पर लटका कर मोटी लाठयिों से लंबे समय तक पीटा। फरि उन्होंने उसे नग्न लटका दयिा, लोहे के पंजे से उसका शरीर खुरच दयिा, मोमबत्तयिों से उसे जलाया, और उसके घावों पर नमक मलिा हुआ तेज सरिका डाल दयिा। इसके बाद, सभी चार पवत्रि शहीदों को एक साथ एक अग्नि भट्टी में फेंक दयिा गया, और जब वे इससे बनिा कसिी चोट के बाहर नकिले, तो उन्हें तलवार से सरि कलम कर दयिा गया[1349] । इस प्रकार इन संतों का दुख समाप्त हुआ।

4 फरवरी

22 जनवरी (पुराना कैलेंडर)

[1348] ट्रेबसिॉन्ड – एशयिा माइनर के एक सामरकि क्षेत्र, पोंटस के पूर्वी भाग में स्थति एक तटीय शहर।

[1349] चौथी शताब्दी की शुरुआत में।

इसी दनि, गुफाओं के डकिन, पवत्रि शहीद अनास्तासयिस की स्मृति है, जनिका 12वीं शताब्दी के अंत में नधिन हुआ और जन्हिें सेंट एंथनी की गुफा में दफनाया गया है।

संत तीमथयिुस प्रेरति का जीवन

22 जनवरी को स्मरण कयिा जाता है

पवत्रि प्रेरति तमिोथी लकिाओनयिा के क्षेत्र से थे[1350] , और उनका पालन-पोषण और शकि्षा प्रसद्धि शहर लसित्रा में हुई[1351] , जो सांसारकि फलों की प्रचुरता के लिए नहीं बल्कि इस ईश्वर-रोपति, फलदायी शाखा के लिए प्रसद्धि था। हालाँकि, यह युवा अंकुर एक ऐसी जड़ से नकिला था जो पूरी तरह से स्वस्थ नहीं थी: जैसे एक सुगंधति गुलाब काँटों से बढ़ता है, वैसे ही संत थमिोथी एक अवशि्वासी ग्रीक के वंशज थे जो अपनी मूर्तपिूजक दुष्टता के लिए जाने जाते थे और पापों में इतने डूबे हुए थे कि उनके बेटे ने बाद में सभी मनुष्यों को सद्गुण और उच्च चरत्रि में पीछे छोड़ दयिा। जहाँ तक संत तीमथयिुस की माँ और दादी का सवाल है, वे यहूदी वंश की थीं, दोनों पवत्रि और धर्मी थीं, अपने अच्छे कर्मों के लिए वशिषि्ट थीं, जैसा कि पवत्रि प्रेरति पौलुस इन शब्दों में गवाही देते हैं: *'मैं तुम्हें देखने के लिए तरसता हूँ, तुम्हारे आँसुओं को याद करके मैं आनंदति होऊँगा, जब मैं तुम्हारे सच्चे वशि्वास को याद करूँगा, जो सबसे पहले तुम्हारी दादी लोइस और तुम्हारी माँ यूनीस में था; मुझे वशि्वास है कि यह तुममें भी है'* (2 तीमु. 1:4–5)।

एक छोटे लड़के के रूप में ही, धन्य तमिोथी, जसिे उसकी माँ ने शारीरकि भोजन से कम, बल्कि प्रभु के वचन से अधकि पोषति कयिा था, ने हर तरह से मूर्तपिूजक और यहूदी भ्रांतयिों से परहेज कयिा और बाद में पवत्रि प्रेरति पौलुस की ओर मुड़ गया, जो चर्च की दव्यि तुरही थे। यह इस प्रकार हुआ। पवत्रि प्रेरति पौलुस, मसीह के शष्यि और प्रेरति बरनबास के साथ, लूकावनी नगर लसित्र में आए, जैसा कि दव्यि लूका प्रेरतिों के काम में वर्णन करते हैं: *'वे गए,' 'वे कहते हैं, 'लकिावनी नगर लसित्र और डर्बे और आसपास के प्रदेश में'* (प्रेरतिों के काम 14:6)। वहाँ पहुँचने पर, संत पौलुस प्रेरति ने एक बड़ा चमत्कार कयिा: उन्होंने जन्म से लंगड़ा एक आदमी को एक ही शब्द से चंगा कर दयिा। यह देखकर, शहर के नविासी बहुत चकति हुए, और कहने लगे, *'मानव रूप में देवता हमारे पास उतर आए हैं'* लेकनि जब उन्हें पता चला कि ये देवता नहीं बल्कि मनुष्य हैं, और ये जीवते परमेश्वर के प्रेरति और प्रचारक कहलाते थे—और इसके अलावा, ये झूठे देवताओं के वरिोधी थे, जन्हिें वशिेष रूप से लोगों को दैवीय भ्रम से हटाकर सच्चे परमेश्वर की ओर मोड़ने के लिए भेजा गया था, जो न केवल लंगड़ों को चंगा कर सकता है बल्कि मृतकों को भी जलिा सकता है— तब बहुत से लोग अपने भ्रम से मुड़कर धर्मपरायणता की ओर लौट आए (प्रेरतिों के काम 14:8–18)। उनमें इस धन्य प्रेरति तमिोथी की माता भी थीं, जो अपने पति की मृत्यु के बाद वधिवा हो गई थीं। उसने पवत्रि प्रेरति पौलुस का अपने घर में आनन्दपूर्वक स्वागत कयिा, उनके भरण-पोषण और आराम का प्रबंध कयिा, और अंत में, अपने नगर में कए गए चमत्कार के लिए और उनसे प्राप्त सच्चे वशि्वास के प्रकाश के लिए कृतज्ञता के उपहार के रूप में अपने पुत्र— , संत तीमुथयिुस—को उनकी देखरेख में सौंप दयिा। संत तीमथयिुस उम्र में तो बहुत छोटे थे, लेकनि वे अत्यधकि प्रतभिाशाली थे और ईश्वर के वचन के बीज को ग्रहण करने के लिए अच्छी तरह से तैयार थे। संत पौलुस, उस युवक को अपने पास रखकर, न केवल उसमें नम्रता और अच्छाई की प्रवृत्ति पाए, बल्कि उन्होंने उसमें ईश्वर की कृपा भी पहचानी, जसिके परणिामस्वरूप वे उससे अपने माता-पति से भी अधकि प्रेम करने लगे[1352] । हालाँकि, चूँकि संत तीमुथयिुस अभी बहुत युवा थे और यात्रा की कठनिाइयों को सहन नहीं कर सकते थे, इसलिए पवत्रि प्रेरति पौलुस उन्हें उनकी माँ के घर छोड़ गए, और उनके लिए कुशल शकि्षकों को नयिुक्त कयिा जो उन्हें दव्यि धर्मग्रंथों में शकि्षति करते, जैसा कि वे स्वयं तीमुथयिुस को लखिे अपने पत्र में याद करते हैं: *'तुम बचपन से पवत्रि शास्त्रों को जानते हो'* (2 तीमु. 3:15)। प्रेरति पौलुस स्वयं, यहूदयिों की उकसावे पर भीड़ द्वारा पत्थर मारे जाने के बाद, शहर से बाहर घसीट दए गए, जसिके बाद वे अन्य शहरों में चले गए।

[1350] लकिोनयिा – एशयिा माइनर का एक दक्षणि-पूर्वी क्षेत्र। यहाँ धर्म प्रचारक संत पौलुस द्वारा ईसाई धर्म की स्थापना की गई थी।

[1351] लस्ट्रि लाइसोनयिा में एक शहर है, जो इसौरयिा के साथ इसकी सीमा पर स्थति है। आज, लस्ट्रि के स्थान पर लातकि या लादकि नामक गाँव स्थति है।

[1352] यह इस तथ्य से स्पष्ट है कि प्रेरति पौलुस लगातार उन्हें अपना पुत्र कहते हैं (1 कुरन्थियिों 4:17; 1 तीमुथयिुस 1:2, 18; 2 तीमुथयिुस 1:2, 2:1)। इससे यह भी स्पष्ट होता है कि प्रेरति तीमुथयिुस का ईसाई धर्म में धर्मांतरण प्रेरति पौलुस के कारण हुआ।

कुछ वर्षों बाद, जब प्रेरित संत पौलुस, अंतीयक छोड़कर, उन सभी शहरों में भाइयों से मिलने गए जहाँ उन्होंने पहले परमेश्वर का वचन प्रचार किया था, तो वे सिलास को साथ लेकर लिस्त्रियाि आए[1353] , जहाँ संत तीमुथियुस रहते थे। जब उन्होंने देखा कि वह परिपक्व हो गया है और हर सद्गुण में उत्कृष्ट था, और इसके अलावा सभी स्थानीय ईसाइयों के बीच बहुत सम्मान का आनंद लेता था, तो प्रेरित पौलुस ने उसे अपनी प्रेरितीय सेवा में शामिल कर लिया और उसे अपने सभी कार्यों में अपना स्थायी साथी और प्रभु के लिए एक सहकर्मी बना लिया। हालाँकि, जब वह वहाँ और आसपास के क्षेत्रों में बड़ी संख्या में रहने वाले कुछ यहूदियों के कारण शहर छोड़ना चाहता था, तो उसने मूसा की व्यवस्था के अनुसार तीमुथियुस का खतना किया (प्रेरितों के काम 16:3), – यह इसलिए नहीं था कि यह उद्धार के लिए आवश्यक था, क्योंकि खतना के स्थान पर नया अनुग्रह पवित्र बपतिस्मा में प्रदान किया जाता है, बल्कि इसलिए कि यहूदी उसके विषय में भटक न जाएँ, क्योंकि वे सभी उसकी गैर-यहूदी उत्पत्ति को जानते थे। लिस्त्रियाि से चलकर, पवित्र प्रेरित पौलुस नगरों और गांवों में घूमते हुए परमेश्वर के राज्य की शिक्षा और प्रचार करते हुए तथा सभी को धार्मिकता के प्रकाश से प्रकाशित करते हुए गए। उनके पीछे, तीसरे स्वर्ग से चमकते सूर्य का अनुसरण करने वाले तारे की तरह, दिव्य तिमोथी[1354] थे, जिन्होंने धर्म की अक्षय ज्योति और मसीह के सुसमाचार की शिक्षा ग्रहण की, और पुण्य कर्म तथा सदाचारी जीवन सीखा, जैसा कि पवित्र प्रेरित पौलुस स्वयं गवाही देते हैं: *'तुमने मेरे अनुकरण, मेरे चाल- चलन, मेरे काम, मेरे विश्वास, मेरे ज्ञान, मेरी प्रेम- भक्ति, मेरी धीरज, मेरे क्लेशों और मेरी पीड़ाओं में अनुकरण किया है'* (2 तीमु. 3:10, 11)।

इस प्रकार संत तीमथियुस ने अपनी सभी सद्गुणों को चुने हुए पात्र, प्रेरित पौलुस से ग्रहण किया, और मसीह के लिए, उनसे प्रेरितों जैसी गरीबी को अपनाया। उन्होंने अपने लिए कोई धन-संपत्ति नहीं अर्जित की—न सोना, न चाँदी, न ही कोई अन्य भौतिक संपत्ति—और वे ईश्वर के राज्य की सुसमाचार का प्रचार करते हुए एक स्थान से दूसरे स्थान तक यात्रा करते रहे। उन्होंने बुराई का बदला भलाई से चुकाने का आचरण अपनाया; जब डाँटा गया, तो उन्होंने आशीर्वाद दिया; जब सताया गया, तो उन्होंने सहन किया; जब अपमानित किया गया, तो वे आत्मा में आनंदित हुए; और हर बात में उन्होंने स्वयं को परमेश्वर का सेवक दिखाया, अपने शिक्षक का एक सच्चा अनुकरणकर्ता बनकर। पवित्र प्रेरित पौलुस ने, अपने शिष्य को सद्गुणों में इतना उत्कृष्ट होते देख, उसे पहले एक डिकन, फिर एक प्रेस्बिटर, और अंत में एक बिशप[1355] नियुक्त किया, भले ही वह उम्र में अभी भी युवा था। प्रेरितों के हाथ रखने से मसीह के संस्कारों का मंत्री बनकर, संत तीमथियुस प्रेरितों की कठिनाइयों और परिश्रमों का सबसे उत्साही अनुकरणकर्ता बन गए, और मसीह की शिक्षाओं का प्रचार करते हुए अपने दुखों और परिश्रमों में अन्य प्रेरितों से पीछे नहीं रहे। न तो उसकी युवावस्था और न ही उसकी शारीरिक दुर्बलता उसे उस कार्य को पूरा करने से कभी रोक सकी, जिसे उसने स्वयं अपने ऊपर लिया था। अपने सभी कार्यों में, उन्होंने महान आत्मा का प्रदर्शन किया, जैसा कि उनके गुरु, पवित्र प्रेरित पौलुस, ने कोरिन्थियों को लिखी अपनी पहली पत्रिका में गवाही दी है: *'यदि तीमुथियुस तुम्हारे पास आए, तो उसे सुरक्षित रखना, क्योंकि वह प्रभु का काम कर रहा है, जैसा कि मैं कर रहा हूँ। इसलिए, कोई भी उसे तुच्छ न जाने'* (1 कुरिन्थियों 16:10-11)। उससे थोड़ा पहले, उनकी प्रशंसा करते हुए, संत पौलुस प्रेरित ने लिखा: *'मैंने तुम्हारे पास तिमोथी को भेजा है, जो प्रभु में मेरा प्रिय और विश्वासयोग्य पुत्र है, जो मसीह में मेरे मार्गों की तुम्हें याद दिलाएगा'* (1 कुरिन्थियों 4:17)। इसी तरह, अपनी अन्य पत्रियों में, वे संत तीमुथियुस को अपना भाई कहकर संबोधित करते हैं: *'पौलुस, जो यीशु मसीह का कैदी है, और तीमुथियुस, मेरा भाई'* (फिलिमोन 1:1), *'परमेश्वर की इच्छा से यीशु मसीह का प्रेरित पौलुस, और हमारा भाई तीमुथियुस'*

[1353] यह संत पौलुस की दूसरी प्रेरितिक यात्रा के दौरान हुआ था।

[1354] लिस्ट्रा से, संत तीमुथियुस ने प्रेरित पौलुस के साथ उनकी सभी बाद की यात्राओं में साथ दिया और उत्साहपूर्वक उनके सभी निर्देशों का पालन किया। वह लिस्ट्रा से ट्रॉय तक उनकी दूसरी यात्रा में उनके साथ गए, और वहां से मैसेडोनिया के शहरों से होते हुए ग्रीस - एथेन्स और कोरिन्थ तक गए। संत पौलुस की तीसरी यात्रा के दौरान, तिमोथी उनके साथ एफिसुस गए, जहाँ प्रेरित लंबे समय तक रहे, और जहाँ से प्रेरित ने उन्हें मकिदोनिया में दान इकट्ठा करने के लिए भेजा और फिर कोरिन्थ में, जहाँ प्रेरित तीन साल तक रहे, और वह मैसेडोनिया और ग्रीस दोनों में, और ट्राओस और एशिया की वापसी यात्रा पर भी उनके साथ था। बाद में, प्रेरित संत तिमोथी रोम में प्रेरित पौलुस के साथ थे और उनके साथ कैद किए गए थे, लेकिन बाद में रिहा कर दिए गए। उसके बाद, उन्होंने एशिया माइनर और मैसेडोनिया की कलीसियाओं का दौरा करने के लिए प्रेरित पौलुस के साथ फिर से यात्रा की; इसी समय उन्हें एफ़िसुस की कलीसिया का बिशप नियुक्त किया गया, और इस प्रकार वह उस कलीसिया के पहले बिशप बने। संत तिमोथी से अलग रहते हुए, संत पौलुस ने उन्हें पादरीय प्रकृति के दो पत्र लिखे।

[1355] प्रेरित के अनुसार, प्रेरित थिमोथी के पास्टोरल मंत्रालय के लिए अभिषेक से पहले उनके बारे में भविष्यवाणियाँ हुई थीं (1 तीमु. 1:18), और अभिषेक स्वयं विश्वास की पूर्व स्वीकृति के बाद (1 तीमु. 6:12) हुआ, हाथ रखने के साथ, जिससे उसे ईश्वर की कृपा का एक विशेष वरदान मिला ताकि वह अपने कर्तव्यों को यथोचित रूप से पूरा कर सके (1 तीमु. 4:12–16), जिसके लिए उसे बुलाया गया था।

(2 कुरन्थियों 1:1), *'परमेश्वर की इच्छा से यीशु मसीह का दूत पौलुस, और हमारा भाई तीमुथियुस'* (कुलुस्सियों 1:1)। और वे यह भी लखिते हैं: *'हमने हमारे भाई और परमेश्वर के सेवक, और मसीह के सुसमाचार में हमारे सहकर्मी, तीमुथियुस को तुम्हें दृढ़ करने और तुम्हारे वशि्वास के वषिय में तुम्हें प्रोत्साहति करने के लिए भेजा है'* (1 थस्सि. 3:2)। संत तीमुथियुस की प्रशंसा में ये और कई अन्य गवाहयिाँ प्रेरति पौलुस की पत्रीयों में पाई जाती हैं। हालाँकि, संत थमिोथी को इस पर गर्व नहीं था; बल्कि, वनिम्रता और पाप के वरिुद्ध कठोर आत्म-अनुशासन में जीते हुए, उन्होंने नरिंतर परशि्रम और उपवास से स्वयं को इतना थका दयिा कि उनके अपने शकि्षक भी, उनकी मेहनत और उपवास को देखकर, उन पर बहुत तरस खाते थे। उन्होंने संत तीमथियुस से आग्रह कयिा कि वह केवल पानी न पएिं, बल्कि अपने पेट और अपनी बार-बार होने वाली बीमारयिों के लिए थोड़ी सी दाखरस लें (1 तीमु. 5:23), जसिसे यद्यपि उनका शरीर लगातार बोझलि रहता था, उनकी आत्मा की पवत्रिता अछूती और कसिी भी भ्रष्टता से मुक्त रही। संत तीमथियुस अपने शकि्षक के साथ दुनयिा के दूर-दराज के कोनों में यात्रा करते थे: कभी एफेस में, कभी कोरंथि में, कभी मैसेडोनयिा में, कभी इटली में, कभी स्पेन में; उन्होंने परमेश्वर का वचन प्रचार कयिा, ताकि उनके बारे में यह सही कहा जा सके: *'उनकी आवाज़ सारी पृथ्वी पर फैल जाती है, और उनके शब्द संसार के छोर तक पहुँचते हैं'* (भजन संहति 18:5)। इसके अलावा, संत तीमथियुस अपने तर्क में सूक्ष्मदर्शी और अपने उत्तरों में तेज थे; परमेश्वर के वचन का प्रचार करने में, वे एक कुशल वक्ता थे; दवि्य धर्मग्रंथों की व्याख्या करने में, वे एक आकर्षक व्याख्याकार थे; और चर्च के प्रशासन तथा वशि्वास की सच्चाइयों की रक्षा में, वे एक अत्यंत योग्य चरवाहा थे। वशिेष रूप से यह तथ्य उल्लेखनीय है कि उन्हें भरपूर अनुग्रह प्राप्त हुआ, क्योंकि उन्होंने अपना उपदेश दो स्रोतों से प्राप्त कयिा: न केवल संत पौलुस उनके शकि्षक थे, बल्कि उन्होंने मसीह के प्रयि शष्यि, संत योहन[1356] के अधीन भी अध्ययन कयिा। जब संत जॉन को रोमन सम्राट डोमशियिन[1357] द्वारा पतमोस द्वीप[1358] पर नर्विासति कयिा गया, तो तमिोथी ने उनकी जगह एफेस शहर के बशिप के रूप में सेवा की, जहाँ, कुछ ही समय बाद, उन्होंने इस प्रकार यीशु मसीह के लिए अपनी गवाही के कारण कष्ट सहे।

एक दनि एफ़सिुस में, 'काटागोजयिम' नामक एक वशिेष गंभीर उत्सव आयोजति कयिा जा रहा था, जसिके दौरान मूर्तपिूजक, पुरुष और महलिाएं, वभिन्नि अजीब जीवों का वेश धारण करते थे, मूर्तयिाँ और लाठयिाँ उठाकर शहर की सड़कों में शर्मनाक नृत्य के साथ जुलूस नकिालते थे। ऐसा करते समय, वे सुरहीन आवाज़ों में गीत गाते और लुटेरों की तरह राहगीरों पर झपटते, यहाँ तक कि कई लोगों को मार डालते। उन्होंने कई अन्य घृणति और गैर-कानूनी कृत्य भी कएि, जनिके माध्यम से वे अपने घृणति देवताओं की पूजा व्यक्त करना चाहते थे। यह देखकर, धन्य तमिोथी दैवीय उत्साह की अग्नि से प्रज्वलति हो उठे; और, इस अधर्मी तमाशे में प्रकट होकर, उन्होंने खुले तौर पर और नडिर होकर एक सच्चे परमेश्वर, हमारे प्रभु यीशु मसीह का प्रचार कयिा – स्पष्ट रूप से उनके देवताओं के बारे में उनकी गलतयिों और आत्म-वञ्चना को उजागर करते हुए, और उनके धर्म-परविर्तन के लिए उपयोगी कई बातें नस्सिंकोच होकर कहीं। वे, हालाँकि, मूर्तपिूजक भ्रमों के अंधकार में भटक रहे थे, न तो उन्होंने प्रेरति के शब्दों को समझा और न ही ग्रहण कयिा; बल्कि, एकजुट होकर उसके खलिाफ हो गए, उन्होंने उसे अपने हाथों में पकड़े हुए डंडों से क्रूरतापूर्वक पीटा, उसे नर्दियता और अमानवीयता से जमीन पर घसीटा, उसके पैरों तले कुचला, और, अंत में, उसे यातनाएँ देकर मार डाला गया[1359] । बाद में आए ईसाइयों ने उसे मुश्कलि से सांस लेते हुए पाया। वे उसे शहर के बाहर ले गए, और जब उसकी मृत्यु हो गई, तो उन्होंने उसे ग्रीक में 'पयिोन' नामक स्थान पर दफनाया, जसिका अर्थ है 'उपजाऊ'। बहुत बाद में, महान शहीद आर्टेमयिस[1360] द्वारा, राजा कॉन्स्टेंटाइन महान के पुत्र, राजा कॉन्स्टेंटयिस के आदेश पर, पवत्रि प्रेरति तमिोथी के पवत्रि अवशेष एफेसस से कॉन्स्टेंटनिोपल ले जाए गए और पवत्रि प्रेरतिों ल्यूक और एंड्रयू प्रथम-आहूत के अवशेषों के साथ पवत्रि प्रेरतिों के चर्च में रख दएि गए। इस प्रकार ईश्वर को यही प्रयि लगा, क्योंकि उनके जीवन में सब कुछ साझा था: उनका चरत्रि,

---

[1356] ईस्वी सन् 60 के दशक में, संत यूहन्ना प्रेरति ने यरूशलेम छोड़ दयिा, जहाँ वे परमेश्वर की माता के स्वर्गारोहण तक रहे थे, और एशयिा माइनर में, वशिेष रूप से एफ़सिुस में, परमेश्वर का वचन प्रचार कयिा, और इस प्रकार वे प्रेरति तमिोथी को उनकी पादरति में सीधे मार्गदर्शन करने में सक्षम हुए।

[1357] रोमन सम्राट डोमशियिन, जो ईसाई धर्म का एक क्रूर उत्पीड़क था, ने 81 से 96 तक शासन कयिा।

[1358] यह वर्ष 96 में था। पत्तमोस – एजयिन सागर (द्वीपसमूह) में एफ़सिुस के दक्षणि-पश्चमि में स्थति एक बंजर, चट्टानी द्वीप, जसिे तथाकथति स्पोरेड्स में गनिा जाता है।

[1359] पवत्रि प्रेरति तमिोथी का लगभग 97 ईस्वी में शहीद होकर नधिन हुआ।

[1360] चर्च 20 अक्टूबर को महान शहीद संत आर्टेमयिस का स्मरणोत्सव मनाती है। प्रेरतिों—लूक सुसमाचारकार, एंड्रयू प्रथम-आहूत, और टमिोथी—की पवत्रि अवशेषों का स्थानांतरण 24 जून 356 को हुआ।

उनका उपदेश और सुसमाचार का प्रचार। अतःमृत्यु के पश्चात् एक साझा कब्र उनके लिए उपयुक्त थी, और यह और भी अधिक उपयुक्त था क्योंकि हमारे प्रभु यीशु मसीह के राज्य में स्वर्ग में उनका विश्राम भी साझा है, जो पिता और पवित्र आत्मा के साथ सदा राज्य करते हैं। आमीन।

ट्रोपारियन, स्वर 4:

सभी बातों में भले और गंभीर बनना सीखकर, और एक शुद्ध अंतरात्मा के पवित्र वस्त्र से स्वयं को आच्छादित कर, आपने चुने हुए पात्र से अकथनीय को ग्रहण किया, और विश्वास को बनाए रखा, अपना मार्ग सम्मान के साथ पूरा किया, प्रेरित तिमोथी; हमारे परमेश्वर मसीह से प्रार्थना करें कि हमारी आत्माएँ उद्धार पाएँ।

कॉन्टाकियन, स्वर 1:

आओ हम सब विश्वास के साथ पौलुस के दैवी शिष्य और साथी तीमुथियुस का स्मरण करें, और उसके साथ ही बुद्धिमान अनास्तासियुस का भी सम्मान करें, जो फारस से एक तारे के समान प्रकाशित हुए, और हमारे आत्मिक जुनूनों तथा देहिक दुर्बलताओं को दूर भगा गए।

फ़ारस के पवित्र पूजनीय शहीद अनास्तासियिस का जीवन और शहादत।

22 जनवरी को स्मरणोत्सव

जब पवित्र नगर यरूशलेम फारस के राजा खुसरो[1361] के द्वारा जीत लिया गया और हमारे प्रभु मसीह से संबंधित पवित्र स्थल—जो उनके स्वैच्छिक दुख, सूली पर चढ़ाए जाने, मृत्यु, दफनाए जाने और पुनरुत्थान के प्रतीक हैं—निष्ठाहीन बर्बर लोगों द्वारा विजय प्राप्त कर लिए गए, – जब प्रभु के क्रूस के जीवन-दायक वृक्ष को युद्ध के भारी लूट के सामान के साथ बंदी बनाकर फारस ले जाया गया[1362] , तब उस देश में मसीह के नाम की महिमा, सूर्य की भाँति, जीवन-दायक क्रूस से निकलने वाले चमत्कारों में चमकने लगी। जब यह स्वयं बंधन में था, तब इसने ईश्वर के लिए मानवीय आत्माओं को मोहा, और एक जाल की तरह लोगों को पकड़कर उन्हें मसीह की ओर खींचा, उन्हें सत्य के ज्ञान से प्रकाशित किया और उनके हृदयों में दिव्य प्रेम को प्रज्वलित किया। तभी पवित्र शहीद अनास्तासियिस, जिनके बारे में हम बताने जा रहे हैं, मसीह के ज्ञान की ओर मुड़े।

वह जन्म से एक फ़ारसी था, राज़ी नामक क्षेत्र में स्थित रासनुनी गाँव का रहने वाला। मूर्तिपूजक काल में उसका मूल फ़ारसी नाम मगुंडत था। वह वावा नामक एक मगस (जादू-टोने का शिक्षक) का पुत्र था, जो अपने देश में बहुत प्रसिद्ध था, और जिसने अपने बेटे को उसके शुरुआती युवा काल से ही इस कला में पूर्णता तक प्रशिक्षित किया था। जब मगुंडत एक परिपक्व युवक की आयु में पहुँचा, तो वह कई अन्य युवकों के साथ सैन्य सेवा में शामिल हो गया और राजधानी में रहकर फारस के राजा खुसरव की सेवा करने लगा। जब उसने क्रूस की महिमा और शक्ति के बारे में सुना, जिसने सभी फारसी प्रांतों को चकित कर दिया था और अपने असाधारण चमत्कारों से लोगों के दिलों में डर पैदा कर दिया था, यहाँ तक कि हर कोई कह रहा था, 'ईसाई देवता फारस आ गए हैं', तो मगुंडत ने इसके बारे में गंभीरता से पूछताछ करना शुरू कर दिया। अचानक, उसकी आत्मा उस आग से गुप्त रूप से प्रज्वलित हो उठी जिसे मसीह *'पृथ्वी पर लाने'* आए थे (लूका 12:49)। यह उत्तम युवक अथक रूप से कई लोगों से प्रश्न करता रहा, यह निश्चित रूप से जानने की इच्छा से कि यह किस प्रकार का वृक्ष था, जिसमें चमत्कार करने की इतनी महान शक्ति थी। जब विश्वासियों ने उसे समझाया कि यह वही क्रूस है जिस पर मानव जाति के उद्धार के लिए मसीह को सूली पर चढ़ाया गया था—मसीह, परमेश्वर का पुत्र, जिसे मसीही लोग स्वीकार करते और सम्मान देते हैं—तो परमेश्वर के पुत्र के बारे में सबसे पूर्ण ज्ञान प्राप्त करने की

[1361] फ़ारसी राजा खुसरो द्वितीय ने 590 से 628 तक शासन किया।

[1362] यह वर्ष 614 का था। क्रूस की पवित्र अवशेष 14 वर्षों तक 628 तक फारसियों के हाथ में रही, जब बाइजेंटाइन सम्राट हेराक्लियस ने फारस के खिलाफ एक सफल अभियान के बाद इसे यरूशलेम वापस कर दिया।

उसकी आंतरकि इच्छा उसके भीतर और भी प्रबल रूप से जलने लगी। उसने एक के बाद एक सवाल पूछे, और जवाबों में उसे और पूछताछ करने के कारण मलि, वह यह जानने के लिए उत्सुक था कि ईश्वर स्वर्ग से कैसे उतरे, वे कैसे मनुष्य बने, उन्हें क्रूस पर क्यों और किसने मृत्युदंड दिया, और वे फिर से स्वर्ग में कब आरोहण कर गए, जहाँ से वे आए थे। वह सुनता रहा जब ईसाइयों ने उसे मसीह के अवतार के दैवी रहस्य के बारे में समझाया, और उसके कानों ने प्रेमपूर्वक भक्ति के बीज को ग्रहण किया, जबकि उसकी आत्मा ने धीरे-धीरे विश्वास के बीज को पोषित किया और मसीह का अनुकरण करने के लिए प्रेरित हुई। मगुंडत का एक रक्त संबंधी था, और दोनों सैन नामक एक प्रसिद्ध कमांडर की रेजिमेंट में सेवा करते थे। जब बाद वाले को फारसी राजा द्वारा ग्रीस के क्षेत्र में युद्ध करने के लिए एक सेना के साथ भेजा गया और वह शानदार ईसाई शहर काल्सेडॉन[1363] पहुँचा, तो मगुंडत, जो अपने रिश्तेदार के साथ उसी रेजिमेंट में सेवा करता था, भी वहाँ पहुँचा। धार्मिक यूनानी राजा हेराक्लियस[1364] ने फ़ारसियों के खिलाफ़ हथियार उठा लिए। तब फ़ारसी कमांडर सैन अपनी रेजिमेंट के साथ जल्दबाजी में पीछे हट गया। हालाँकि, मगुंडत ने अपनी रेजिमेंट और अपने रिश्तेदार को पीछे छोड़ दिया और उन लोगों के बीच अपने देश में धन और सम्मान में रहने के बजाय, जो ईश्वर को नहीं जानते थे, ईसाइयों के साथ गरीबी और गुमनामी में रहने का विकल्प चुना। सबसे पहले वह हिएरापोलिस[1365] आया। वहाँ उसे एक व्यक्ति मिला, जो जन्म से फ़ारसी, आस्था से ईसाई और पेशे से सुनार था। उसके साथ रहने के बाद, मगुंडत ने सुनार का काम सीखा। जबकि उसके हाथ अपने काम में व्यस्त थे, उसका मन लगातार मसीह ईश्वर की ओर लगा रहता था, जिसके लिए वह प्रेम से जलता था। उसने अपने शिक्षक से पवित्र बपतिस्मा के लिए उसे तैयार करने का आग्रह किया; लेकिन उसकी इच्छा पूरी नहीं हो सकी, क्योंकि फारसियों द्वारा युद्ध के डर से पवित्र बपतिस्मा को अनिश्चित काल के लिए स्थगित कर दिया गया था। इस बीच, जब वह अक्सर अपने मालिक के साथ प्रार्थना करने के लिए चर्च जाता था, तो वह चर्च की दीवारों पर पवित्र शहीदों के दुखों और चमत्कारों को दर्शाती पेंटिंग्स देखता था। वह अपने मालिक से उनका मतलब पूछता था। उनके शिक्षक ने उन्हें संतों के कर्मों और जीवन के बारे में बताया: कि कैसे उन्होंने मसीह के लिए बहादुरी से मृत्यु को स्वीकार किया और उत्साहपूर्वक अपनी जान दे दी; मसीह के लिए अपने अत्याचारियों के हाथों उन्होंने क्या-क्या सहा; और स्वर्ग में उन्हें उससे क्या-क्या पुरस्कार मिले। यह सब बड़ी एकाग्रता से सुनकर, मगुंडत आश्चर्यचकित और विस्मित दोनों हो गया; उसका हृदय दिव्य उत्साह से और भी अधिक प्रज्वलित हो उठा। कुछ समय हिएरापोलिस में रहने के बाद, वह वहाँ पवित्र बपतिस्मा ग्रहण करने के लिए यरूशलेम के लिए रवाना हो गया।

पवित्र नगर यरूशलेम पहुँचने पर, मगुंडत—जिन्हें बाद में अनास्तासियस नाम मिला—एक धर्मपरायण व्यक्ति के यहाँ ठहरे, जो पेशे से एक सुनार भी थे। उन्होंने उस व्यक्ति के सामने अपने हृदय की इच्छा प्रकट की: पवित्र बपतिस्मा के माध्यम से मसीह के साथ एक हो जाना। उस व्यक्ति ने उसे मसीह के पुनरुत्थान के महान चर्च के पुरोहित, संत एलियाह के पास ले गया। धन्य एलियाह ने, उन्हें प्रेम से स्वीकार करते हुए, परम पावन पैट्रिआर्क मोडेस्टस को उनके आगमन की सूचना दी और, उनके आशीर्वाद से, फारसी मगुंडट का बपतिस्मा दिया, और बपतिस्मा के समय उनका नाम अनास्तासियस रखा, जिसके बाद उन्होंने उन्हें आठ दिनों तक अपने पास रखा। संत एलिया ने उनसे पूछा: वह अपने लिए किस जीवन पथ को चुनना चाहते थे – सांसारिक जीवन या संन्यासी जीवन? धन्य अनास्तासियस ने न केवल अपने शब्दों से इसकी पुष्टि की, बल्कि अपने सौम्य स्वभाव के माध्यम से यह भी प्रदर्शित किया कि वह संन्यासी जीवन और मार्ग को ही चाहते थे। आठ दिन बाद, जब उसने बपतिस्मा के समय पहने गए सफेद वस्त्र उतार दिए, तो पुरोहित ने उसे हेराक्लियस के शासन के दसवें वर्ष में यरूशलेम के एक मठ में भेज दिया। वहाँ उसे एक बुद्धिमान और सदाचारी वरिष्ठ के हवाले कर दिया गया, जो जल्द ही उस मठ का मठाधीश बन गया। उनके मार्गदर्शन में, संत अनास्तासियस ने न केवल ग्रीक भाषा सीखी, बल्कि भजन संहिता और अन्य पवित्र पुस्तकों की समझ भी प्राप्त की; उन्होंने मठवासी जीवन के अनुकूल कई तपस्या संबंधी प्रथाओं के बारे में भी निर्देश प्राप्त किया। इसी कारण, सभी उसे प्यार करते थे, और विशेष रूप से उनके गुरु, जिन्होंने तपस्या के जीवन के अपने शुरुआती अनुभवों और उसमें उसकी भविष्य की प्रगति का पूर्वानुमान लगाते हुए, उसे एक भिक्षु के रूप में दीक्षा दी और उसे अपना आध्यात्मिक पुत्र बना लिया।

[1363] कालसेडोन एशिया माइनर में, बोस्फोरस के एशियाई तट पर, कॉन्स्टेंटिनोपल के सामने एक शहर है। यह 451 में चौथे सार्वभौमिक परिषद का स्थल था।

[1364] बाइज़ेंटाइन सम्राट हेराक्लियस ने 610 से 641 तक शासन किया।

[1365] हिएरापोलिस एशिया माइनर के एक पश्चिमी क्षेत्र, फ्राइजिया, का एक समृद्ध शहर था।

धन्य अनास्तासियिस एक सदाचारी, विनम्र, नम्र और मेहनती भिक्षु थे। उन्होंने स्वेच्छा से सभी प्रकार के मठ के कार्य किए – रसोई में, बेकरी में, सब्जी के बगीचे में, साथ ही अन्य कर्तव्यों का भी पालन किया; फिर भी उन्होंने चर्च की सेवाओं या मठ के नियमों के पाठ को कभी नज़रअंदाज़ नहीं किया। उनके हाथ हमेशा काम में व्यस्त रहते थे, और उनके होंठ ईश्वर की महिमा करने में। इसके अलावा, वे पवित्र धर्मग्रंथ, पवित्र पिताओं के जीवन, और विशेष रूप से पवित्र शहीदों के दुखों को पढ़ते थे। जब वे उन्हें पढ़ते थे, तो वे पन्नों को आँसुओं से भीग जाते थे और, अपने हृदय में आग लगकर, उनकी सहनशीलता के प्रति अपनी आंतरिक सहानुभूति को प्रकट करते थे। वह स्वयं, मानो, उनके साथ ही कष्ट सहता था और मन ही मन उनकी लगन का अनुकरण करता था; वह उनके बलिदान की महिमा करता था और उनके साहस पर विस्मित होता था, तथा प्रभु मसीह से विनम्रतापूर्वक प्रार्थना करता था कि वे कृपा करके उसे भी उनके लिए समान कष्ट सहने, उसी प्रकार मरने और शहीदों की पंक्ति में शामिल होने का वरदान दें। इस बीच, मानव आत्मा का शत्रु, इस बात से क्रोधित कि वह सद्गुणों में दृढ़ होता जा रहा था, उसे फारस में उसके पूर्व जीवन—उसने जो धन-दौलत पीछे छोड़ दी थी, उसकी महिमा, उसके पिता की जादू-टोने की—याद दिलाने लगा, उसके सैन्य सम्मान और अन्य सांसारिक व्यर्थताओं की याद दिलाकर, इस प्रकार उसके मन की शांति भंग करने और उसे मठ तथा पवित्र संतों के बीच रहने से हटाने का प्रयास कर रहा था। लेकिन ईश्वर की मदद से, जिनमें संत अनास्तासियिस को शत्रु के विरुद्ध दृढ़ सहारा मिला, और इसी तरह अपने गुरु और आध्यात्मिक पिता की प्रार्थनाओं और मार्गदर्शन से, जिनके प्रति उन्होंने अपने सभी विचार व्यक्त किए थे, वह शत्रु के सभी प्रलोभनों का सामना करते हुए अजेय और अडिग रहे।

आदरणीय अनास्तासियिस के मठ में सात वर्ष व्यतीत करने और सद्गुणों का एक समृद्ध आध्यात्मिक खजाना संचित करने के बाद, उन्हें निम्नलिखित दृष्टि के माध्यम से प्रभु ने शहीद के मुकुट के लिए बुलाया। मसीह के पुनरुत्थान के गौरवशाली पर्व के आगमन से ठीक पहले, पवित्र शनिवार की शाम को, दिन भर की मेहनत के बाद वह थोड़ी देर आराम करने के लिए लेट गए और, सो जाने पर, उन्होंने खुद को एक ऊँचे पहाड़ पर खड़ा हुआ देखा। एक तेजस्वी पुरुष उनके पास आया, जिसके हाथ में कीमती पत्थरों से सुसज्जित और शराब से भरा एक सुनहरा प्याला था। कप उसे देते हुए उस व्यक्ति ने कहा, 'इसे लो और पियो।' उसने उसे लेकर पी लिया। उसकी आत्मा तुरंत अकथनीय आनंद से भर गई, और सोते हुए भी उसने महसूस किया कि यह उस शहीद होने के संकेत थे जिसकी वह बहुत इच्छा करता था, और जिसके लिए प्रभु उसे बुला रहे थे[1366] । जागने पर, आनंद और प्रसन्नता से भरकर, वह मसीह के पुनरुत्थान का उत्सव मनाने वाली प्रार्थना सभा की शुरुआत के लिए चर्च की ओर दौड़ा। वहाँ, अपने आध्यात्मिक पिता और मार्गदर्शक—जो अब रेक्टर थे—को एक ओर सैक्रिस्टी में ले जाकर, वह उनके पैरों पर गिर पड़ा और उन्हें आँसुओं से भीगते हुए, उनसे विनती करने लगा कि वे उसकी ओर से सर्व के प्रभु मसीह से प्रार्थना करें, क्योंकि इस जीवन से उसके प्रस्थान का दिन अब निकट आ गया था। उसने कहा:

'हे पवित्र पिता, मैं जानता हूँ कि आपने मेरे लिए कितनी कठिन तपस्या की है और मैंने कितनी बार आपकी पितृत्वपूर्ण देखभाल का दुरुपयोग किया है। आपकी बदौलत, मेरी आँखों ने सच्ची रोशनी देखी है, और आपके माध्यम से मैं घोर अंधकार से मुक्त हुआ हूँ; अत; अपने इस सेवक के लिए परम धन्य प्रभु से प्रार्थना करना बंद न करें।'

उनके आध्यात्मिक पिता ने उनसे कहा:

– मेरे बच्चे, क्या बात है? तुम्हें कैसे पता कि आने वाले दिनों में तुम इस जीवन से अगले जीवन में चले जाओगे?

अनास्तासियिस ने उन्हें अपने सपने के बारे में बड़ी भावना के साथ बताया और जोर देकर कहा कि आने वाले दिनों में वह निश्चित रूप से मर जाएगा, या तो सभी द्वारा भुगती जाने वाली सामान्य मृत्यु से, या किसी अन्य साधन से; फिर भी वह मसीह के लिए शहीद होने की अपनी इच्छा के बारे में बताने से डरता था, कहीं ऐसा न हो कि विरिष्ठ उसे इससे रोक दें और इस तरह मसीह के प्रति उसके उत्साह की ज्वाला बुझ जाए, और वह शहीद के मुकुट से वंचित रह जाए। उनके आध्यात्मिक पिता ने उन्हें बहुत देर तक दयालु शब्दों से सांत्वना दी। जब वह दिन आया, तो पूजनीय अनास्तासियिस ने दैवीय पूजा के दौरान पवित्र रहस्य ग्रहण किए और अपने भाइयों के साथ सामूहिक भोजन किया। अगली रात, शाम से ही थोड़ी नींद लेने के बाद, वे जल्दी से उठ खड़े हुए, क्योंकि शहादत की एक अकथनीय आंतरिक लालसा उन्हें जागते हुए रख

[1366] बाइबिल की भाषा में और प्रारंभिक ईसाइयों की समझ में 'पात्र' शब्द का उपयोग किसी के लिए ईश्वर द्वारा निर्धारित कष्टों या परीक्षणों के एक जीवंत अभिव्यक्ति के रूप में किया जाता है। इसलिए, संत अनास्तासियिस ने सपने में देखा हुआ पात्र, पीड़ा और कष्टदायक मृत्यु के पात्र के संकेत के रूप में व्याख्या किया, जिसे उन्हें जल्द ही पीना था।

रही थी। बिना किसी के जाने वह उठ खड़ा हुआ, और मठ से निकल पड़ा, अपने साथ पहने हुए मठीय वस्त्रों के सिवा कुछ भी नहीं लिया।

मठ छोड़ने पर, संत अनास्तासियस पहले फलिस्तीन के डायोस्पोलिस[1367] गए, और वहाँ से प्रार्थना करने के लिए हरज़िमि नामक एक पहाड़ पर गए। कई अन्य उल्लेखनीय स्थानों से होते हुए, वह फलिस्तीन के केसरिया[1368] पहुँचे और वहाँ परमेश्वर की परम पवित्र माता के चर्च में दो दिन तक रुके। फिर वह महान शहीद, संत यूफेमिया के चर्च में अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करने गए, जो उसी केसरिया शहर में स्थित था। उस समय, फलिस्तीन फारसी शासन के अधीन था, और वहाँ कई फारसी रहते थे। ऐसा हुआ कि एक विशेष फारसी के घर के पास से गुजरते समय, धन्य व्यक्ति ने फारसियों द्वारा किए जा रहे जादुई करतब देखे। दिव्य उत्साह से भरकर, वह उनके पास गया और गुस्से में कहा:

'तुम स्वयं भटकते क्यों हो और दूसरों को धोखा देकर उनकी आत्माओं को उसी भूल में क्यों ले जाते हो?' वे उनकी निर्भीकता से चकित हो गए और उनसे पूछा:

'तुम कौन होते हो हमें इस तरह से बात करने वाले?'

उन्होंने उन्हें उत्तर दिया:

'मैं भी कभी उसी भ्रम में फँसा था जिसमें तुम फँसे हो। मैं इसी अधर्मी विज्ञान में पारंगत था और धोखे में बहुत निपुण था।'

यह कहकर, संत ने उनकी अधर्मीता की निंदा करते हुए बहुत समय बिताया, यह समझाते हुए कि उनकी जादू-टोने की चालाकी और धोखा ईश्वर के लिए कितना घृणित और लोगों के लिए हानिकारक था। उन्होंने उन्हें समझाया कि उन्हें सत्य कैसे ज्ञात हुआ और वे ईश्वर की ओर कैसे मुड़े, साथ ही उन्हें अपना आदर्श मानने के लिए भी कहा, ताकि वे भी सत्य को जान सकें और जादू-टोने को त्यागकर, पश्चाताप के साथ ईश्वर मसीह की ओर मुड़ सकें। हालाँकि, उन्होंने न केवल संत की बातें सुनने से इनकार कर दिया, बल्कि उन्होंने संत से ज़ोर देकर कहा कि वह उस जादुई ज्ञान की निंदा न करें जिसे फ़ारसी लोग बहुत मानते थे, और न ही उन्हें लोगों के सामने उजागर करें। फिर संत, उन्हें छोड़कर, अपने रास्ते चल दिए, और सर्व-स्तुत्य शहीद के पवित्र चर्च की ओर तेज़ी से बढ़े। संत उनके पास से थोड़ी ही दूरी पर गए थे कि उन्हें न्यायालय के द्वार पर बैठे फारसी सैनिकों ने देख लिया। जब संत उनके पास से गुज़रे, तो वे फारसी भाषा में आपस में बात करने लगे और उनके बारे में कहने लगे:

'वह एक जासूस है।'

संत, जो उनके शब्दों को पूरी तरह समझ गया था, क्योंकि वह स्वयं एक फारसी था, क्रोधित होकर उन्हें घूरकर बोला:

'तुम क्या कह रहे हो? मैं कोई जासूस नहीं, बल्कि अपने प्रभु यीशु मसीह का सेवक हूँ; मैं तुमसे कहीं बेहतर हूँ, क्योंकि मुझे उस की सेवा करने के योग्य समझा गया है, जिसने पापियों के लिए स्वर्ग से उतरने की कृपा की। मैं तुम्हारी भाषा समझता हूँ, क्योंकि मैं खुद कभी उसी सैन्य सेवा में था जिसमें तुम अब सेवा कर रहे हो।'

तब सैनिकों ने उसे पकड़ लिया और अदालत में मौजूद अपने सेनापति को उसकी सूचना दी। यह पूछने पर कि वह कौन है और कहाँ से आया है, सेनापति ने उसे जेल में कड़ी निगरानी में रखने का आदेश दिया। जेल में रहते हुए, संत ने तीन दिनों तक न तो भोजन लिया और न ही पानी पिया। उन्होंने अधर्मी लोगों के हाथों से कुछ भी स्वीकार करने से इनकार कर दिया, बल्कि उन्होंने स्वयं को केवल मसीह के लिए लंबे समय से प्रतीक्षित कष्टों की आशा से जीवित रखा। उस समय, मार्ज़ावन नामक एक फ़ारसी राजकुमार फलिस्तीन के केसरिया में आया। जब उसे उस सम्माननीय बंदी के बारे में पता चला, तो उसने उसे पूछताछ के लिए बंधा हुआ प्राटोरियम में अपने सामने लाने का आदेश दिया। जब संत को लाया गया, तो मार्ज़ावन अन्य कई मामलों में व्यस्त था, जबकि पूजनीय अनास्तासियस बंधा हुआ दूर खड़ा था। वहाँ एक ईसाई भी मौजूद था। संत को पहचानकर, क्योंकि उसने उन्हें परम पवित्र वर्जिन मैरी के चर्च में देखा था, वह उनके पास आया और चुपचाप पूछा कि उन्हें क्यों गिरफ्तार किया गया, बाँधा गया और मुकदमे के लिए क्यों लाया गया।

[1367] डियोस्पोलिस यरूशलेम के उत्तर-पश्चिम में स्थित फ़िलिस्तीन का एक शहर है।

[1368] केसरिया – भूमध्य सागर के पूर्वी तट पर स्थित एक फिलिस्तीनी शहर, जिसे यहूदियों के राजा हेरोद ने स्ट्रैटन के प्राचीन शहर के स्थान पर बनवाया था और सीज़र ऑगस्टस (रोमन सम्राट ऑक्टेवियन ऑगस्टस) के सम्मान में इसका नाम रखा था। इस शहर को कई बार नष्ट किया गया है, और आज केवल खंडहर ही बचे हैं, जो जंगली वनस्पतियों से ढके हुए हैं।

संत ने उन्हें अपने हृदय की इच्छा के बारे में बताया – अर्थात्, कि वह मसीह के लिए कष्ट सहने और मरने की कामना करते थे। यह सुनकर, उस ईसाई ने संत की अच्छी मंशा की प्रशंसा की और उसे पवित्र धर्मग्रंथों के वचनों से सांत्वना दी, और उससे आग्रह किया कि वह हमारे प्रभु यीशु मसीह के नाम के लिए यातना से न डरे और न ही मृत्यु से भयभीत हो, बल्कि सुसमाचार में प्रभु द्वारा कहे गए वचनों को ध्यान में रखते हुए मार्ज़वान के प्रश्नों का दृढ़ता और साहस से उत्तर दे: *'परन्तु जो अन्त तक सहिष्णु रहेगा, वह उद्धार* पाएगा' (मत्ती 10:22)। जब परम पूज्य अनास्तासियस को बाद में निर्णय के लिए मार्ज़वान के सामने लाया गया, तो उन्होंने न तो उसके सामने झुका और न ही उसे उचित सम्मान दिया। इस बीच, फ़ारसियों में अपने रैंक के सम्मान में अपने राजकुमारों के सामने घुटने टेकने की प्रथा थी। हालाँकि, संत ने ऐसा नहीं किया, और झुकने से इनकार करने तथा अपनी निडर दृष्टि के माध्यम से अपनी आंतरिक हिम्मत और आत्मा की महानता को प्रकट किया। मार्ज़ावन ने उन्हें ध्यान से देखते हुए पूछा:

'तुम कौन हो, कहाँ से आए हो, और तुम्हारा नाम क्या है?'

संत ने साहसपूर्वक उत्तर दिया:

'मैं एक ईसाई हूँ; और यदि आप मेरी उत्पत्ति जानना चाहते हैं, तो मैं रज़ा प्रांत के रसनुनी गाँव का एक फारसी हूँ। मैं एक मगस और एक योद्धा था, लेकिन मैंने अंधकार को त्याग दिया है और सच्ची रोशनी में आ गया हूँ; मेरा नाम पहले मगुंडाट था, लेकिन अब, ईसाई धर्म में, मुझे अनास्तासियस कहा जाता है।'

मार्ज़वान ने उससे कहा:

'इस भ्रम को त्यागो और अपने पूर्व धर्म पर लौट आओ। मैं तुम्हें घोड़े और पैसा और कई अन्य संपत्तियाँ दूँगा।'

संत ने उसे देखते हुए कहा:

'हे राजा मसीह, ऐसा कभी न हो कि मैं आपका त्याग करूँ!'

तब मार्ज़वान ने पूछा:

'क्या तुम्हें ये कपड़े पसंद हैं जो तुम अभी पहने हो?'

उस धन्य ने उत्तर दिया:

'ये वस्त्र मुझे विशेष रूप से प्रिय हैं, क्योंकि ये दैवीय हैं; इसके अलावा, ये मेरे लिए तुम्हारे पद से भी अधिक सम्मानजनक हैं।'

मार्ज़ावन क्रोधित होकर बोला:

'तुम्हारे भीतर एक राक्षस वास करता है, और तुम वही बोलते हो जो वह राक्षस तुम्हें सिखाता है।'

संत ने उत्तर दिया:

'जब मैं फ़ारसी भ्रम और दुष्टता में फँसा था, तो मेरे भीतर एक उग्र राक्षस था; लेकिन अब मसीह, मेरा उद्धारकर्ता, मेरे भीतर वास करते हैं, जो तुम्हारे राक्षसों को बाहर निकाल रहे हैं।'

तब मार्ज़वान ने उससे पूछा:

'तो फिर? क्या तुम राजा से नहीं डरते, जो तुम्हारे बारे में जानकर तुम्हें सूली पर चढ़ाने का आदेश दे देगा?'

संत ने उत्तर दिया, 'मैं एक ऐसे मनुष्य से क्यों डरूँ, जो तुम्हारे ही समान नश्वर है? भले ही वह मेरे शरीर को मार डाले, वह अपनी किसी भी चाल से मेरी आत्मा को नहीं पकड़ पाएगा।'

ऐसे शब्दों को सहन न कर सका मार्ज़वान ने आदेश दिया कि संत पर लोहे की ज़ंजीरों डाल दी जाएँ—एक उनकी गर्दन के चारों ओर और दूसरी उनके पैरों के चारों ओर—और उन्हें पत्थर काटने वालों के पास ले जाया जाए और अन्य कैदियों के साथ, उन्हें लगातार पत्थर ढोने के लिए मजबूर किया जाए। वहाँ उस धन्य पीड़ित ने अनगनित और गंभीर कठिनाइयों को सहन किया। उसके स्वदेश के कुछ फ़ारसी, उसी रसनुनी गाँव के, जो सेज़रिया में थे—वे लोग जिन्हें वह कभी जानता था, दोस्त और पड़ोसी—उसकी यह हालत देखकर शर्मिंदा हुए और उसकी पीड़ा को अपनी ही बेइज़्ज़ती समझने लगे। उन्होंने संत का अपमान करते हुए कहा:

'तुम्हें क्या हो गया है? एक ईसाई बनकर तुमने अपनी वंश की पूर्व प्रतिष्ठा का अपमान क्यों किया, और हम पर यह कलंक क्यों लगाया? तुम्हें बेड़ियों में जकड़ा गया है और एक दुष्ट की तरह मृत्युदंड की सजा दी गई है—एक ऐसा दृश्य जिसे हमारी आँखें सहन नहीं कर सकतीं। हमारे देश का कोई भी व्यक्ति कभी ईसाई नहीं हुआ, और फिर भी तुमने हम पर इतना अपमान लाया है।'

वे जब ये अपमानजनक शब्द कहते, तो वे दुष्ट लोग अक्सर उस निर्दोष संत पर हाथ उठाते, उसे बेरहमी से पीटते, उसकी दाढ़ी खींचते, उसके कपड़े फाड़ते, और न केवल उस पर अपमान करते, बल्कि उसके कंधों और गर्दन पर अकेले ही इतने भारी पत्थर रख देते कि चार आदमी भी मुश्किल से उठा सकते थे। इस प्रकार, गर्दन और पैरों में बेड़ियाँ डालकर और भारी-भरकम पत्थरों का बोझ लादकर, ईश्वर के सेवक ने कष्ट सहते हुए काम करना जारी रखा। संत ने इस पूरे समय में अपने परिचित फ़ारसियों के हाथों हर तरह का अत्याचार सहन किया, लेकिन उन्होंने यीशु मसीह के नाम के लिए यह सब आनंदपूर्वक सहा।

कुछ समय बाद, राजकुमार मार्ज़ावन ने संत को फिर से अपने सामने लाने का आदेश दिया और उनसे पूछा:

'यदि तुम सचमुच किसी जादूगर के पुत्र हो और जादू की कला जानते हो, तो हमें इस क्षेत्र में कुछ बताओ, ताकि हम भी तुम्हारी क्षमताओं के बारे में जान सकें।'

संत ने उत्तर दिया:

'ईश्वर मुझे इसकी रक्षा करे कि मेरे मुख से ऐसी कोई बात निकले! मैं न तो अपने मन को जादू-टोने की यादों से कलंकित करना चाहता हूँ, और न ही अपनी जीभ को उनकी बातों से।'

तब राजकुमार ने उससे कहा:

'तुम ईसाई ही क्यों बने रहते हो? अपने पुराने धर्म में लौट आओ; अन्यथा, जान लो कि मैं तुम्हारी शिकायत राजा खुसरव से कर दूँगा।'

संत ने उत्तर दिया:

'तुम जो चाहो करो। मुझे लगता है कि तुमने पहले ही उन्हें पत्र लिखा है और उत्तर भी प्राप्त कर लिया है?'

राजकुमार ने उत्तर दिया:

'मैंने अभी तक नहीं लिखा है, लेकिन अब मैं ऐसा करने का इरादा रखता हूँ, और वह आपसे संबंधित जो कुछ भी करने का आदेश देगा, मैं करूँगा।' संत अनास्तासियस ने उत्तर दिया:

'मेरे बारे में जो बुराई लिखना चाहो लिखो। मैं एक ईसाई हूँ, और मैं एक बार फिर कहता हूँ कि मैं एक ईसाई हूँ।'

तब मार्ज़वान ने संत को ज़मीन पर पेट के बल लिटाकर तब तक पीटने का आदेश दिया जब तक कि वह उसकी आज्ञा मानने के लिए राज़ी न हो जाए। लेकिन जब नौकरों ने शहीद के हाथ-पैर बांधकर उसे पीटने की कोशिश की, तो संत ने उनसे कहा:

– मुझे जैसा हूँ वैसा ही रहने दो: मुझे बांधने या रोकने की कोई आवश्यकता नहीं है, क्योंकि मैं अपनी मर्ज़ी के खिलाफ अपने मसीह के लिए कष्ट नहीं सह रहा हूँ, बल्कि अपनी स्वेच्छा से सह रहा हूँ। मैं उनके लिए कष्ट सहने की उतनी ही लालसा रखता हूँ, जितनी एक व्यक्ति तपती दोपहर में ठंडे पानी की लालसा करता है।

यह कहकर, उन्होंने क्रॉस का चिह्न बनाया और स्वयं को घावों के लिए अर्पित करते हुए जमीन पर लोट गए। फिर उन्होंने डंडों से उन पर बेरहमी से वार करना शुरू कर दिया; लेकिन संत ने अपने अत्याचारियों की ओर मुड़कर कहा: 'एक पल रुकें और मुझसे मेरा मठवासी चोगा उतार दें; मठवासी जीवन अपमानित न हो!' मेरे नग्न शरीर पर ही प्रहार करो, पर जान लो कि मैं तुम्हारे द्वारा दिए गए घावों को एक हास्य-परिहास ही मानता हूँ। क्योंकि भले ही तुम मुझे टुकड़े-टुकड़े कर डालो, मैं कभी भी अपने प्रभु यीशु मसीह का त्याग नहीं करूँगा।

फिर भी, कोड़े खाकर और नग्न कर दिए जाने के बावजूद, संत ने अपने कष्टों को साहसपूर्वक सहन किया, अचल पड़े रहे और ईश्वर के लिए पीड़ा को स्वेच्छा से स्वीकार करने के अलावा किसी ने उन्हें थामा नहीं था, जिसके द्वारा उन्होंने अपनी ही प्रकृति पर भी विजय प्राप्त की। राजकुमार और वहाँ मौजूद सभी लोग उसके धैर्य को देखकर चकित रह गए, क्योंकि लंबे और दर्दनाक पिटाई के दौरान वह न तो मुड़ा, न चिल्लाया, न ही कराहा। उसका मन पूरी तरह से ईश्वर की ओर लगा हुआ था, जिनके लिए वह पीड़ा सह रहा था। फिर राजकुमार ने संत की पिटाई बंद करने का आदेश दिया और राजा के नाम पर उसे फिर से धमकी दी।

उसने कहा, 'मैं ज़ार को लिखूँगा, और वह तुम्हें मौत की सज़ा देगा।'

संत ने उत्तर दिया:

'जो चाहो लिख दो।'

राजकुमार ने पलटकर कहा:

'क्या तुम ज़ार से नहीं डरते?'

संत ने उत्तर दिया:

'मुझे आपके राजा से क्यों डरना चाहिए? क्या वह भी आप जैसे एक नश्वर मनुष्य नहीं है? क्या वह भी आपके जैसे ही क्षय का सामना नहीं करेगा? आप मुझे उस से डराने की कोशिश क्यों करते हैं, जो आपके ही जैसे धरती की धूल मात्र है? क्या मुझे अपने प्रभु यीशु मसीह से नहीं डरना चाहिए, जिसने स्वर्ग और पृथ्वी, समुद्र और उनमें जो कुछ भी है, उसे बनाया - वह जो हमेशा के लिए अमर है?

गर्वित मार्ज़वान, शहीद के उत्तर से चकित होकर, ने उसे वापस जेल ले जाने का आदेश दिया। कुछ ही समय बाद, उसने उसे फिर से बुलाया और दयालु शब्दों से लुभाने की उम्मीद में, उससे कोमल स्वर में बात करना शुरू किया। उसने संत से कहा:

'अपनी जादू-टोना याद करो और देवताओं को बलिदान चढ़ाओ, ताकि तुम यातना में न मरो और इस दृश्य प्रकाश से वंचित न रह जाओ।'

आदरणीय ने उत्तर दिया:

– मैं किस देवता को बलिदान चढ़ाऊँ: सूर्य, चंद्रमा, अग्नि, समुद्र, पहाड़ों और पहाड़ियों को, या अन्य सभी तत्वों को? ईश्वर न करे कि मैं कभी तुम्हारी मूर्तियों की पूजा करूँ! क्योंकि मैंने जो कुछ भी गिनाया है, वह सब ईश्वर के पुत्र, मसीह द्वारा, हम मनुष्यों, यानी तर्कशील प्राणियों की सेवा करने और उनकी ज़रूरतों को पूरा करने के लिए बनाया गया था। तुम, हालाँकि, राक्षसों और चार पैरों वाले जानवरों, और हर दूसरे दिखाई देने वाले प्राणी की सेवा करने में भूल कर रहे हो, मानो उन्हें हमारी ज़रूरतों के लिए नहीं बनाया गया था, बल्कि हमें उनकी ज़रूरतों के लिए बनाया गया था। यह कितना अजीब और बेतुका है कि तुम उन्हें देवता कहते हो! तुम्हें ईश्वर की छवि में बनाया गया था - फिर भी तुम ईश्वर, अपने सृष्टिकर्ता को नहीं जानते। यदि तुम मसीह को जान लेते, जिसने तुम्हें बनाया है, तो तुम सच्चे प्रकाश की ओर मुड़ जाते और दुष्टात्माओं की शक्ति से मुक्त हो जाते।

यह और भी बहुत कुछ कहकर, संत ने मार्ज़वान और उसके सभी श्रोताओं को चकित कर दिया। मार्ज़वान ने जब देखा कि न तो चापलूसी और न ही धमकियाँ संत पर असर कर रही हैं, तो उसे तब तक के लिए वापस जेल भेज दिया जब तक कि राजा से यह आदेश न मिल जाए कि उसके साथ क्या किया जाए। इस प्रकार, रात में शहीद को जेल में रखा जाता था, जबकि दिन में उसे अन्य कैदियों के साथ पत्थर ढोने के लिए बेड़ियों में जकड़कर काम पर ले जाया जाता था।

इस बीच, संत अनास्तासियस की खबर उस मठ तक पहुँच गई जहाँ उन्होंने अपनी शपथ ली थी। सभी संतों और भाइयों ने, यह सुनकर कि वह मसीह के लिए भयंकर कष्ट सह रहे थे, अकथनीय आनंद से भर गए - विशेष रूप से मठाधीश, जो उनके आध्यात्मिक पिता और शिक्षक थे, जिन्होंने अपने प्रिय शिष्य के साथ स्वयं को बंधा हुआ कल्पना करते हुए, महसूस किया कि वह भी अपने शरीर में कष्ट सह रहे थे। लेकिन चूँकि मठ के मठाधीश होने के कारण वह स्वयं अपने शिष्य के पास नहीं जा सकते थे, इसलिए उन्होंने सांत्वना के शब्दों से भरा एक पत्र लेकर दो भिक्षुओं को भेजा, और उन्हें निर्देश दिया कि वे गुप्त रूप से शहीद से मिलें और उसे अपने कष्टों को साहस के साथ सहने के लिए प्रोत्साहित करें। वह स्वयं, अन्य पादरियों के साथ, दिन-रात उसके लिए ईश्वर से प्रार्थना करते रहे, कि ईश्वर शहीद की सहायता करें ताकि वह अंत तक उनके नाम के लिए बहादुरी से कष्ट सह सके और पवित्र शहीदों में एक विजेता और मुकुटधारी बन सके। इसी समय, जेल में रहते हुए, पवित्र शहीद अनास्तासियस दिन-रात सर्वशक्तिमान ईश्वर की स्तुति करना कभी बंद नहीं करते थे। उनके साथ एक और कैदी था, मार्ज़ावन के नौकरों में से एक युवा, जिसे किसी अपराध के लिए दोषी ठहराया गया था। उसे संत के साथ एक ही बेड़ी में जकड़ा गया था—एक बेड़ी गर्दन के चारों ओर और दूसरी पैरों के चारों ओर। यह संत के लिए एक बड़ा बोझ था, क्योंकि जब वह आधी रात को प्रार्थना करने के लिए उठते, तो उन्हें अपनी मर्जी के खिलाफ अपने साथी कैदी को जगाने के लिए मजबूर होना पड़ता था। वे उसे परेशान करने को अपने पड़ोसी के खिलाफ एक पाप मानते थे, क्योंकि वह पहले से ही दिन भर पत्थर उठाने की मेहनत से थका हुआ था और तब से गहरी नींद में सो गया था। इसलिए, बहुत बार, जब वह अपनी आधी रात की प्रार्थना करना चाहता, तो वह अपने दोस्त को जगाने और उसकी नींद में खलल डालने के डर से उठने की हिम्मत नहीं करता था। अपने पैर को अपने दोस्त के पैर के बगल में रखकर और अपनी गर्दन को उसकी ओर झुकाकर, वह ईश्वर से अपनी नियमित प्रार्थना करता था। वहाँ अन्य कैदी भी थे जो बेड़ी में नहीं जकड़े हुए थे। उनमें से एक सम्मानित वंश का और सौम्य स्वभाव वाला यहूदी था। संत अनास्तासियस को दिन में पत्थर उठाने का श्रम करते और रात में ईश्वर की स्तुति करते हुए देखकर, वह चकित हो गया और मन ही मन कहने लगा: 'यह किस तरह का आदमी है, और इसका अंत क्या होगा?'

एक रात, जब संत अपनी आदत के अनुसार ईश्वर से प्रार्थना कर रहे थे, तो फर्श पर लेटे हुए यह यहूदी सो नहीं सका। अचानक, कालकोठरी में एक रोशनी देखकर, उसने अपनी आँखें संत की ओर मोड़ीं और देखा कि सफेद, चमकदार वस्त्रों में लिपटे पुरुष कालकोठरी के दरवाजों से प्रवेश कर रहे थे, जिन्होंने पवित्र शहीद को घेर लिया। उनसे निकलने वाली महान किरणों ने पूरे कालकोठरी को एक अकथनीय प्रकाश से प्रकाशित कर दिया, जो किसी भी कैदी ने नहीं देखा था, क्योंकि वे सभी सो रहे थे। केवल वह एक यहूदी व्यक्ति जो जाग रहा था, इस पर ध्यान से नज़र गड़ाकर देखता रहा और बड़ी हैरानी से अपने आप से कहने लगा: 'हे पवित्र ईश्वर, ये तो स्वर्गदूत हैं!'

जैसे ही उसने उन लोगों को और करीब से देखा, उसने देखा कि उन्होंने ओमोफोरीया पहने हुए थे और उनके हाथों में क्रॉस थे। फिर उसने सोचा: 'ये बिशप हैं।' फिर, पवित्र शहीद को देखते हुए, उसने अनास्तासियस के सामने एक तेजस्वी युवक को जलते हुए कोयलों से भरा सुनहरा धूपदान लेकर खड़ा देखा। धूपदान में धूप रखकर, उसने शहीद के चारों ओर धूप दी। यह देखकर, जाग रहा कैदी अपने हाथ से पास में सो रहे दूसरे कैदी को जगाया—जो एक ईसाई था और कभी स्कथिोपोलिस में न्यायाधीश रह चुका था। वह चाहता था कि दूसरा आदमी भी ऐसा अद्भुत और स्पष्ट चमत्कार देखे, लेकिन वह उसे तुरंत जगा नहीं सका, क्योंकि वह गहरी नींद में था। जब वह आदमी आखिरकार जागा और उठ गया, और पूछने लगा कि क्या बात है और उसे क्यों जगाया गया, तो यहूदी ने, जो हो रहा था उसे दिखाते हुए, कहा:

'देखो, देखो!'

लेकिन जैसे ही उसने ये शब्द बोले, वह दृश्य गायब हो गया। फिर यहूदी ने बहुत उत्साह और हार्दिक भावना के साथ ईसाई को वह सब कुछ बताया जो उसने देखा था, और उन्होंने दोनों ने मिलकर प्रभु मसीह की महिमा की।

थोड़ी ही देर बाद, राजकुमार मार्ज़वान ने अपने राजा खसरू से उत्तर प्राप्त करने के बाद, अपने कारावास में सम्मानित शहीद अनास्तासियस को एक संदेश भेजा, जिसमें कहा गया:

'राजा तुम्हें एक ही शब्द में यह कहने का आदेश देता है: "मैं ईसाई नहीं हूँ"—और तुम्हें तुरंत रिहा कर दिया जाएगा, जिसके बाद तुम जहाँ चाहो जा सकते हो: या तो ईसाइयों और भिक्षुओं के पास, या अपनी मातृभूमि—सैन्य सेवा में लौटने के लिए।' मसीह के शहीद ने उत्तर दिया:

'ऐसा कभी न हो कि मैं विचार या वाणी से अपने मसीह का त्याग करूँ!'

तब राजकुमार ने फिर से अपने राज्यपाल को संत के पास भेजा, यह कहते हुए:

'मैं जानता हूँ कि तुम कई लोगों, विशेषकर अपने परिचितों के सामने शर्मिंदा महसूस करते हो, और इसीलिए तुम उनके सामने अपने मसीह का त्याग नहीं करना चाहते; लेकिन चूँकि ज़ार के आदेश का पालन करना अनिवार्य है—क्योंकि कोई भी उसकी अवज्ञा नहीं कर सकता—तो, यदि आप चाहें, तो निजी तौर पर, केवल मेरे और मेरे दो अन्य सलाहकारों के सामने कहें कि आप मसीह का त्याग करते हैं, और मैं आपको तुरंत रिहा कर दूँगा। वास्तव में, यदि आप केवल अपने होठों से त्याग के शब्द बोलते हैं, जबकि आपका हृदय, आपके होठों से सहमत न होकर, आपके ईश्वर में विश्वास करना जारी रखता है, तो आपको क्या हानि होगी?

शहीद ने उत्तर दिया:

'ईश्वर न करे! न तो आपके सामने और न ही किसी और के सामने मैं अपने प्रभु का त्याग करूँगा – न तो खुलेआम और न ही गुप्त रूप से, यहाँ तक कि अपनी नींद में भी नहीं; और कोई भी मुझे ऐसा करने के लिए किसी भी तरह से मजबूर नहीं कर पाएगा।'

जब राज्यपाल राजकुमार के पास लौटा और शहीद से जो कुछ उसने सुना था, उसकी रिपोर्ट दी, तो राजकुमार ने उसे अपने सामने लाने का आदेश दिया और उससे कहा:

'राजा ने आदेश दिया है कि तुम्हें बेड़ियों में जकड़कर फारस में उसके पास भेजा जाए।'

पवित्र शहीद अनास्तासियस ने उत्तर दिया:

'यदि आप मुझे रिहा करने की कृपा करें, तो मैं स्वयं, बिना बेड़ियों के, आपके राजा के पास जाऊँगा। मुझे बेड़ियाँ पहनाने की क्या आवश्यकता है, जो अपनी इच्छा से कष्ट सह रहा हूँ और अपने प्रिय प्रभु मसीह के लिए इसे सहन करने की इच्छा रखता हूँ?'

राजकुमार ने देखा कि किसी भी तरह से— न तो चापलूसी से और न ही धमकियों से वह शहीद को ईसाई धर्म से हटाकर अपनी फारसी मूर्तिपूजा की ओर ला सकता था, इसलिए उसने आदेश दिया कि उसे, दो अन्य कैदियों के साथ—जो भी ईसाई थे और किसी अन्यायपूर्ण आरोप में दोषी ठहराए गए थे—पाँच दिनों में फारस भेजा जाए ताकि वे राजा के

सामने मुकदमे का सामना करें, जिसके बाद संत को फिर से जेल वापस ले जाया गया। उस समय, प्रभु के पवित्र और जीवन-दायक क्रूस के उत्थान का पर्व निकट आ रहा था। उसी नगर में एक सम्मानित और प्रतिष्ठित व्यक्ति रहता था, जो श्रद्धा और आचरण दोनों में एक ईसाई था। उसने राजकुमार मार्ज़वान से प्रार्थना की कि वह भिक्षु अनास्तासियस को त्योहार के लिए उसके साथ रहने हेतु जेल से रिहा कर दे, ताकि वह ईसाइयों के साथ यह महान त्योहार मना सके। मार्ज़ावन ने, इस सम्मानित नागरिक के सम्मान में, आदेश दिया कि उसकी विनती मान ली जाए, और संत अनास्तासियस को उस दिन के लिए ईसाइयों के साथ शामिल होने के लिए रिहा कर दिया गया, भले ही वह लोहे की बेड़ियों में जकड़ा हुआ था। उसे पाकर, इस धर्मपरायण व्यक्ति ने उसे दैवीय अनुष्ठान के लिए चर्च ले जाया। यह सभी विश्वासियों के लिए एक बड़ी खुशी और एक दोहरी उत्सव की बात थी कि उन्होंने प्रभु मसीह के लिए भारी जंजीरों में बँधे उस शहीद को देखा, जिन्होंने क्रूस पर दुख उठाया था। उसके चारों ओर इकट्ठा होकर, पुरुषों और महिलाओं ने खुशी के आँसू बहाए और, गहरी भावना के साथ, उसकी जंजीरों को चूमा, मसीह के लिए उसके दुखों की महिमा की। ईश्वरीय अनुष्ठान के संपन्न होने के बाद, जिस व्यक्ति ने उसकी ओर से मध्यस्थता की थी, वह उसे अपने घर ले गया, साथ में वे दो भिक्षु भी थे जिन्हें मठ से गुप्त रूप से शहीद को सांत्वना देने और उसके लिए भोजन प्राप्त करने के लिए भेजा गया था। उन्हें गर्मजोशी से आतिथ्य देने के बाद, जब समय आया, तो उन्होंने संत अनास्तासियस को वापस कालकोठरी में ले गए। पाँच दिन बाद, संत को, जंजीरों में जकड़े अन्य दो कैदियों के साथ, फारस भेज दिया गया। कई ईसाइयों ने उन्हें खुशी के आँसुओं के साथ विदा किया। दो भिक्षु भी उनके साथ गए। उनमें से एक मठ में लौट गया, जबकि दूसरे को मठाधीश ने धन्य अनास्तासियस के साथ रहने, उनकी सेवा करने, उनके निधन का साक्षी बनने और लौटने पर, उनके द्वारा सहन किए गए कष्टों और शहादत के कारनामों को बताने का आदेश दिया।

फारस में पहुँचने पर, पवित्र शहीद अनास्तासियस को 'एज़ेड-ए-दीन' (Bethsalia[1369]) नामक शहर में एक कालकोठरी में कई अन्य कैदियों के साथ कैद कर दिया गया, जिनमें से कुछ को किसी अपराध के लिए दोषी ठहराया गया था, जबकि अन्य मुख्य रूप से ईसाई बंदी थे। उसके साथ आए भिक्षु ने एस्दीन के पुत्र किसी कोर्टाक्ट के यहाँ ठहरने की व्यवस्था की; और एस्दीन मुख्य शाही व्यवस्थापक था, जो एक गुप्त ईसाई था। कुछ दिनों बाद, राजा खुसरू ने संत अनास्तासियस से पूछताछ करने के लिए अपने एक न्यायाधीश को एक ट्रिब्यून के साथ भेजा। न्यायाधीश, संत के पास आकर, ने पूछा: वह कौन था, कहाँ से आया था, और किस कारण से, फारसी धर्म को त्यागकर, ईसाई बन गया था? मसीह के शहीद अनास्तासियस ने एक दुभाषिए के माध्यम से उसे उत्तर दिया, क्योंकि वह अब फारसी बोलना नहीं चाहता था, और वह फारसियों के अधर्मी धर्म और स्वयं भाषा, दोनों का तिरस्कार करता था। संत ने कहा:

'तुम ईश्वर के बजाय राक्षसों की पूजा करके भूल कर रहे हो। मैं भी कभी तुम्हारे इस भ्रम में फँसा था, लेकिन अब मैं सर्वशक्तिमान प्रभु यीशु मसीह में विश्वास करता हूँ और उनकी आराधना करता हूँ, जिन्होंने स्वर्ग और पृथ्वी, समुद्र और उनमें जो कुछ भी है, उसे बनाया है। मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि तुम्हारा विश्वास एक शैतानी भ्रम है जो तुम्हें विनाश की ओर ले जा रहा है।

न्यायाधीश ने उससे उत्तर दिया:

'हे दुष्ट मनुष्य! क्या यहूदियों ने उसी मसीह को सूली पर नहीं चढ़ाया जिसे तुम सम्मान देते हो? तो फिर तुम अपनी आस्था को त्यागकर और ईसाई बनकर भ्रम में कैसे पड़ गए?'

संत ने उत्तर दिया:

'तुम सच कहते हो कि मेरे यीशु को यहूदियों ने सूली पर चढ़ाया था, लेकिन तुम यह क्यों नहीं कहते कि उन्होंने अपनी दिव्य इच्छा से, हमारे उद्धार के लिए स्वयं को सूली पर चढ़ाए जाने के लिए प्रस्तुत किया? वही सभी चीजों का सृष्टिकर्ता है, जो स्वर्ग से पृथ्वी पर आए और पवित्र आत्मा की शक्ति से परम शुद्ध और परम धन्य कुँवारी मरियम के गर्भ में अवतार लिया। उन्होंने मानव जाति को शैतान की धोखाधड़ी से बचाने के लिए अपनी स्वेच्छा से सूली पर चढ़ने की इच्छा की। फिर भी आप शैतान का सम्मान करते हैं और अपने सृष्टिकर्ता के बजाय सूर्य, चंद्रमा, अग्नि और हर दूसरे प्राणी की पूजा करते हैं।

न्यायाधीश ने उससे कहा:

[1369] वैकल्पिक रूप से इसे बार्सेलो – अस्सिरिया में सेर्जिओपोलिस के नाम से भी जाना जाता है, जो दास्तागर से लगभग 8 वर्स्ट (लगभग 8 किलोमीटर) दूर स्थित था, जहाँ तब खुसरौ ठहरा हुआ था।

'तुम इतनी बकवास क्यों कर रहे हो? देखो, राजा तुरंत तुम्हें बड़े सम्मान से सम्मानति करेगा, तुम्हें सोने की कमरबंद, अच्छे घोड़े और हर तरह की बहुत सारी दौलत देगा; तुम उसके वशिष्टि व्यक्तयिों में से एक बन जाओगे, बशर्ते तुम अपने पुराने धर्म पर वापस आ जाओ।'

संत अनास्तासयिस ने उत्तर दयिा:

मैंने तो बहुत पहले ही आपके राजा के उपहारों—धन-दौलत, सम्मान और महमिा, और वह सब कुछ जो आपको भाता और वांछनीय है—की तरिस्कार करना और उनसे घृणा करना शुरू कर दयिा है। यह सब मेरे लिए भूसी और गोबर के समान घृणति है। मठवासी जीवन को चुनकर और उससे प्रेम करके, मैं शाश्वत आशीर्वादों की आशा से जीवति रहता हूँ, जन्हिें मैं अपने ईश्वर मसीह की कृपा से प्राप्त करने की आशा करता हूँ। यह सम्मानजनक संन्यासी वेश और यह फटी-पुरानी चोगा मेरे लिए इसकी एक पक्की गारंटी हैं। तो फरि, मैं अब उस चीज़ से कैसे घृणा और त्याग कर सकता हूँ जसिकी मुझे आशा है, और जसिके लिए मैंने यह सारी मेहनत की है और अपना सारा उत्साह लगाया है? क्या मैं एक ऐसे राजा के उपहारों से बहक सकता हूँ जो क्षणकि है और जल्द ही नष्ट हो जाएगा?"

यह सुनकर न्यायाधीश ने सारी बात राजा को बता दी। राजा क्रोध से भर गया और आदेश दयिा कि संत को अगले सुबह यातना दी जाए। जब सुबह हुई, तो वही न्यायाधीश राजा के आदेश पर आया और संत को कालकोठरी से बाहर नकिालकर पहले उसे बेरहमी से डंडों से पीटा; फरि, उसकी पंडिलयिाँ दो भारी लट्ठों के बीच रखकर और मजबूत आदमयिों को ऊपरी लट्ठे के दोनों सरिों पर कूदने का आदेश देकर, उसने उन्हें कुचलने की कोशशि की। इस प्रकार लंबे समय तक संत को यातना देने और उनकी दृढ़ता को देखकर, न्यायाधीश ने उन्हें वापस कालकोठरी में फेंकने का आदेश दयिा, जबकि वह स्वयं राजा के पास यह रपिोर्ट करने गया कि क्या हुआ था। ट्रब्यिून, यानी जेलर, एक गुप्त ईसाई था। वह मसीह के लिए पीड़ति कैदयिों की सेवा करता था, और उनके प्रति हिर संभव दया दखिाता था। उसने और संत के साथ आए भक्षिु ने, उसकी कोठरी में प्रवेश करके, पीड़ति को सांत्वना दी और प्रोत्साहति कयिा। मसीह में अन्य वश्विासी भी उनके साथ अंदर आए, जनिमें उपरोक्त एस्डनि के पुत्र, जो राजा के व्यवस्थापक और एक गुप्त ईसाई थे, भी शामलि थे। वे शहीद के पैरों पर गरि पड़े, उन्होंने उसकी बेड़यिों को चूमा और उससे उनके लिए प्रभु से प्रार्थना करने को कहा। लेकनि संत, वनिम्र होने के कारण, उन्हें यह कहते हुए भेज दयिा कि वह स्वयं एक पापी और अयोग्य है, जसिे दूसरों की प्रार्थनाओं और मदद की आवश्यकता है। फरि उन्होंने कुछ मोम लयिा और उसे उसकी बेड़यिों से चपिका दयिा ताकि उनके नशिान मोम पर छप जाएँ। उन्होंने इसे वभिन्नि बीमारयिों से ठीक होने के लिए एक आशीर्वाद के रूप में अपने पास रखा, और एक-दूसरे को मोम एक कीमती उपहार के रूप में भी भेजा। कुछ ही समय बाद, राजा द्वारा एक बार फरि भेजा गया वही न्यायाधीश, मसीह के शहीद को देखने के लिए कालकोठरी में आया और उससे पूछताछ करने के बाद, उसे राजा की इच्छा का एक अडगि वरिोधी के रूप में पहचान लयिा; जसि पर उसने संत को बेरहमी से लाठयिों से पीटा। कुछ दनिों बाद तीसरी बार भी ऐसा ही हुआ। वही न्यायाधीश, तहखाने में आकर, संत को पीटा और फरि यातना का एक नया, क्रूर तरीका जोड़ा: उसके एक हाथ में हुक लगाकर और उसके पैर में एक वशिाल पत्थर बांधकर, उसने संत को लटका दयिा। इस प्रकार पवत्रि शहीद दो घंटे तक लटके रहे। फरि, संत को नीचे उतारने के बाद, उसने उन्हें वापस कालकोठरी में डाल दयिा, जबकि वह स्वयं राजा के पास शहीद के अजेय साहस की रपिोर्ट करने गया। साथ ही, उसने राजा को सलाह दी कि संत को जल्द से जल्द फांसी दे दी जाए, ताकि महान फारसी साम्राज्य को एक अकेले ईसाई द्वारा अपमानति और नदिा कए जाने से बचाया जा सके। पंद्रह दनि बाद, राजा ने शहीद अनास्तासयिस को, उसके साथ जेल में मौजूद कई अन्य कैदयिों के साथ, मृत्युदंड की सजा सुनाई।

अपने मृत्यु के पूर्वसंध्या पर, पवत्रि शहीद अनास्तासयिस अपनी कोठरी में बैठे और अपने नकिट अंत की पूर्वानुमान लगाते हुए, अपने कुछ साथी कैदयिों से कहा:

'भाइयो, कल मैं यहाँ मौजूद कई लोगों के साथ मर जाऊँगा, और इस जीवन से अनंतकाल में प्रवेश करूँगा। तुम, हालाँकि, जीवति रहोगे और कुछ ही दनिों में आज़ाद कर दए जाओगे, क्योंकि यह दुष्ट राजा जल्द ही मारा जाएगा।'

जब सुबह हुई, तो न्यायाधीश सैनकिों के साथ आया और संत अनास्तासयिस के साथ लगभग सत्तर कैदयिों को, जनिमें से अधकिांश धर्मनष्ठि ईसाई थे, कालकोठरी से बाहर नकिालकर मृत्युदंड के लिए ले गया। उनमें वे दो कैदी भी थे जन्हिें संत अनास्तासयिस के साथ सीज़रयिा से फारस लाया गया था; वे भी ईसाई थे। हालाँकि, कुछ कैदयिों को कालकोठरी में छोड़ दयिा गया था - उनमें वे लोग थे जनिके बारे में संत ने शीघ्र मुक्ति और राजा की मृत्यु की भवष्यिवाणी की थी। जन्हिें कालकोठरी से बाहर मृत्युदंड के लिए ले जाया गया, उन्हें शहर के बाहर, नदी के कनिारे ले जाया गया, और वहाँ, एक-एक

करके, उनके गलों में रस्सी बाँधकर, उन्हें दर्दनाक तरीके से घोंट-घोंट कर मारा गया। प्रत्येक को घुटन से मार डालने के बाद, यातना देने वालों ने संत अनास्तासियस की ओर मुड़कर कहा:

'क्या तुम सच में अब उसी तरह मरना चाहते हो जैसे वे मरे हैं? क्या तुम्हारे लिए राजा की इच्छा के आगे झुक जाना और जीवित रहकर राजा से उपहार, सम्मान और महिमा प्राप्त करना बेहतर नहीं होगा?'

संत ने स्वर्ग की ओर अपनी दृष्टि उठाकर ईश्वर का धन्यवाद किया, और उनसे उत्तर दिया:

'मैं अपने मसीह के लिए तुम्हारे द्वारा टुकड़े-टुकड़े किए जाने की कामना करता हूँ। यह मृत्यु मेरे लिए कोई मायने नहीं रखती, और मैं अपने प्रभु का धन्यवाद करता हूँ कि इस छोटे से कष्ट के माध्यम से वह मुझे पवित्र शहीदों की महान, अकथनीय महिमा में प्रवेश करने का अवसर प्रदान करते हैं।'

इस प्रकार, अन्य सभी कैदियों के बाद, पवित्र शहीद अनास्तासियस ने[1370] के 22वें दिन घुटन से मरकर, आनंदपूर्वक मृत्यु को स्वीकार किया। राजा को अनास्तासियस की मृत्यु का प्रमाण देने के लिए, सैनिकों ने उसका पवित्र सिर काटकर राजा के पास ले गए, जबकि उसका शरीर, घुटन से मरे हुए अन्य लोगों के शवों के साथ, कुत्तों को खाने के लिए फेंक दिया गया। लेकिन कुत्तों ने, दूसरों के शवों को लालच से खाते हुए, न केवल संत के शरीर को छुआ भी नहीं, बल्कि उसे खुले तौर पर पहरे पर भी लगा दिया, ताकि कोई और उसे छू न सके। जब ट्राइब्यून, जेलर, ने पवित्र शहीद के सम्मानित शरीर को लेने का प्रयास किया, तो दूर से पहरा दे रहे सैनिकों ने उसे ऐसा करने की अनुमति नहीं दी, क्योंकि उनमें से कई यहूदी धर्म के अनुयायी थे। जब रात हुई, तो मठ से संत अनास्तासियस के निधन का साक्षी बनने के लिए भेजे गए अविस्मरणीय भिक्षु ने एस्डिन के बेटों के कुछ दासों, बहुत सारा सोना और साफ़ कफ़न लिए, और उस स्थान पर गए जहाँ संत का शरीर कुत्तों द्वारा खाए जा रहे अन्य शवों के बीच सुरक्षित पड़ा था। रखवालों के हाथ सोने से भरकर, वह मसीह के शहीद के पवित्र शरीर के पास गया, जिसके ऊपर स्वर्ग से चमकता हुआ एक अत्यंत तेजस्वी तारा दिखाई दे रहा था; और, उसे उठाकर, वह उसे वहाँ से कुछ दूर स्थित संत सेरजियस शहीद के छोटे से मठ में ले गया। वहाँ उन्होंने मसीह के कष्ट-भोगी, अनास्तासियस के दीर्घ-पीड़ित शरीर को सम्मानपूर्वक दफनाया, जबकि वे स्वयं राजा खुसरो की हत्या तक उसी मठ में रहे। जब राजा मारा गया, तो वे कैदी जिन्हें संत ने अपनी मृत्यु से पहले जेल में ही मुक्त होने की भविष्यवाणी की थी, वास्तव में रिहा कर दिए गए। इस प्रकार संत की दोहरी भविष्यवाणी पूरी हुई: राजा खुसरौ की निकटवर्ती हत्या और कैदियों की रिहाई के बारे में। जब ग्रीक सेना फारसी क्षेत्रों में प्रवेश कर गई, तो संत के साथ आए भिक्षु के लिए अपने मठ में लौटने का रास्ता साफ हो गया। वह लौट आया और उसने पवित्र शहीद अनास्तासियस के बारे में सब कुछ विस्तार से मठाधीश और पूरे मठवासी समुदाय को सुनाया। सभी ने परमेश्वर की स्तुति की, जिन्होंने अपने सेवक को उसके दुख सहने के कार्य के लिए बल दिया था। मठ के मठाधीश ने तुरंत उसी भिक्षु को कई अन्य लोगों के साथ भेजा, और उन्होंने उनके प्रिय शिष्य, मसीह के शहीद की अवशेषों को सम्मान के साथ उस मठ में वापस लाया[1371] । पवित्र शहीद की अवशेषों के माध्यम से कई चमत्कार हुए, और विभिन्न बीमारियों से स्वास्थ्य लाभ मिला – हमारे ईश्वर मसीह की महिमा के लिए, जो पिता और पवित्र आत्मा के साथ युगानुयुग महिमामय हैं। आमीन।

पवित्र शहीदों मैनुएल, जॉर्ज, पीटर, लियोन्टियस, सियोन, गेब्रियल, जॉन, लियोन्टियस, पेरॉड और अन्य, जिनकी संख्या 377 थी, जिन्होंने उनके साथ पीड़ा सहन की, की स्मृति

22 जनवरी को स्मरण किया जाता है

ये पवित्र शहीद रोमन साम्राज्य के विभिन्न क्षेत्रों से आए थे और सम्राट लियो द आर्मेनियन[1372] के शासनकाल के दौरान एड्रियानोपल[1373] में रहते थे। उस समय, बुल्गारियाई ज़ार क्रूम ने थ्रेस और मैसडोनिया में तबाही मचाई और

[1370] संत अनास्तासियस शहीद ने 528 ईस्वी में शहादत प्राप्त की।

[1371] बाद में, पवित्र शहीद अनास्तासियस द परशियन के अवशेष पलेस्टाइन ले जाए गए, वहाँ से कॉन्स्टेंटिनोपल, और कॉन्स्टेंटिनोपल से रोम ले जाए गए, जहाँ वे आज भी संरक्षित हैं (एक हिस्सा शहर के बाहरी इलाके में एक मठ में, और दूसरा होली क्रॉस चर्च में)।

[1372] लियो द आर्मेनियन – एक बीजान्टिन सम्राट जिसने 813 से 820 तक शासन किया।

[1373] एड्रियिनोपल – थ्रेस (यूरोपीय तुर्की) में टुंड्ज़ा और मारित्सा नदियों के संगम पर स्थित एक शहर।

स्वयं कॉन्स्टेंटनोपल तक आगे बढ़ गया; फरि, तीन महीने की घेराबंदी के बाद, उसने एड्रयिनोपल[1374] पर कब्ज़ा कर लयिा और नरसंहार में बच गए इसके सभी नविासयिों को, जनिकी संख्या चालीस हज़ार तक थी, बंदी बना लयिा; उनमें स्थानीय बशिप भी थे, जन्हिें मूर्तपिूजक ज़ार ने ज़मीन पर सरि के बल फेंककर पैरों तले कुचलने का आदेश दयिा। क्रुम की हसिक मृत्यु हुई; उनके उत्तराधकिारी, डुकुम, की कुछ ही समय बाद मृत्यु हो गई, और डट्सिेनग, एक भयानक और अमानवीय शासक, बुल्गारयिा के सहिासन पर आसीन हुआ। उसने एड्रयिानोपल के बशिप मैनुअल को आरी से दो टुकड़ों में काटने और संत की बाहों को कंधों से अलग करने का आदेश दयिा, जसिके बाद उनके पवत्रि अवशेषों को कुत्तों को खाने के लएि फेंक दयिा गया। ईश्वर के क्रोध ने उस राक्षस को अंधा कर दयिा, और जल्द ही डत्सिेंग को उसके ही प्रजाजनों ने मार डाला। उनके उत्तराधकिारी मुरतागन थे, जन्हिोंने मसीह का त्याग करने के अपने आदेश का पालन करने से इनकार करने वाले ईसाइयों पर अत्याचार करना शुरू कर दयिा; उन्होंने मसीह के वफादार सेवकों को कालकोठरयिों में रखा, उन्हें यातनाएं दीं, और उन्हें अमानवीय पीड़ा के बीच मृत्युदंड दयिा। पवत्रि बशिप जॉर्ज ऑफ़ डेवलेट[1375] और पीटर, जन्हिोंने अपने मंडली को ईसाई धर्म में मजबूत कयिा, को अमानवीय यातना देने वाले ने डंडों से बेरहमी से पीटा और फरि उनकी सम्मानति कलाई तलवार से काट दी; पवत्रि बशिपों के साथ सात ईसाइयों को भी उसी मौत दी गई; ईसाई कमांडर जॉन और लयिोन्टयिस की भी तलवार से सरि कलम कर दी गई; संत लयिोन्टयिस, जो एक नपुंसक और नकिेया के बशिप थे, का पेट मूर्तविादयिों ने तलवार से चीर दयिा; गैब्रयिल और सयिोनयिस की भी तलवार से शहादत हुई; पैरोड, जो एक अत्यंत धर्मनष्ठि पुरोहति थे, को पत्थर मारकर हत्या कर दी गई। उस समय मसीह के कई अन्य वफादार सेवकों को पीटा गया और कैद कर लयिा गया। और केवल क्रूर मुरटागन ही नहीं, बल्कि बुल्गारयिाई सहिासन पर उसके उत्तराधकिारयिों ने भी क्रश्चियिनों का क्रूरतापूर्वक उत्पीड़न कयिा, जन्हिोंने वभिन्नि यातनाओं और पीड़ादायक मौतों के माध्यम से अपने लएि शाश्वत राज्य अर्जति कयिा।

5 फरवरी

23 जनवरी (पुराने कैलेंडर के अनुसार)

एंसीरा के बशिप, पवत्रि शहीद अगाथाएंजेलस, और उनके साथयिों का जीवन और कष्ट

23 जनवरी को स्मरणोत्सव

हमारे प्रभु यीशु मसीह के जन्म के दो सौ पचास वर्ष बाद, वैलेरयिन के शासनकाल में[1376] , गलातयिा की राजधानी एंकीरा[1377] ने पवत्रि शहीद क्लेमेंट के सम्मानति वंश से एक हरी-भरी युवा बेल की लता की तरह जन्म लयिा, जो अनेक आध्यात्मकि वरदानों के गुच्छों से भरपूर थी। लेकनि उसके माता-पतिा एक ही धर्म के नहीं थे: उसके पतिा एक मूर्तपिूजक थे जो मूर्तपिूजा की दुष्टता की सेवा करते थे, जबकि उसकी माँ एक ईसाई थी, जो ईसाई माता-पतिा की संतान थी और ईसाई भक्ति तथा सदाचारी आदतों में पाली-पोसी गई थी। उनका नाम यूफ्रोसीन था। उन्हें जबरदस्ती शादी के लएि मजबूर कयिा गया और, अपनी इच्छा के वरिुद्ध, एक अवशि्वासी पतसिे ववािह करना पड़ा, क्योंकि उनके माता-पतिा को पवत्रि प्रेरति के वचनों के पूर्ण होने की आशा थी: *'अवशि्वासी पतिको वशि्वासी पत्नी द्वारा पवत्रि कयिा जाता है'* (1 कुरन्थियिों 7:14)। लेकनि जैसा उन्होंने सोचा था, वैसा नहीं हुआ, क्योंकि उसका पति दुष्टता की गहराई में और मूर्तपिूजा के अंधकार में डूबा रहा। उसने न केवल मसीह के प्रकाश की ओर मुड़ने से इनकार कर दयिा, बल्कि उसने हर तरह से अपनी पत्नी, यूफ्रोसीन को, अपनी दुष्टता में खींचने की कोशशि की। उसने भी, उसे सत्य के मार्ग पर मार्गदर्शन करने का प्रयास

[1374] ८१४ में।

[1375] देवलेट – अब ज़गारा, ब्लैक सी तट पर।

[1376] वैलेरयिन – एक रोमन सम्राट, जसिने 253 से 259 तक शासन कयिा।

[1377] गेलाटयिा – एशयिा माइनर के मध्य भाग में एक छोटा क्षेत्र। एन्सकिरा – अब अंगोरा – गेलाटयिा में एक समृद्ध, घनी आबादी वाला शहर, जो आज भी एशयिा माइनर के लएि एक व्यापारकि केंद्र के रूप में अपनी महत्वता बनाए हुए है।

कयिा, दनि-रात उसे समझाती रही और अपने उदाहरण से जीवन के उद्धारक मार्ग को दखिाती रही; फरि भी वह इसमें कुछ भी हासलि नहीं कर सकी, क्योंकि उसका हृदय कठोर हो गया था। उसने मसीह से प्रार्थना की कि वह उन पर अपनी दया करें – ताकि विवाह के बंधन में एक होकर, वे पवत्रि वश्विास के द्वारा आत्मा में भी एक हों; और यदि यह असंभव था, तो वे शरीर से भी अलग हो जाएँ, क्योंकि उनमें वश्विास की एकता का अभाव था। हमारे प्रभु यीशु मसीह ने, अपनी दासी की प्रार्थनाएँ सुनकर और उस पर दया करके, जल्द ही उसे उसके अवश्विासी पति के जुए से मुक्त कर दयिा: उन्होंने उसे एक दुष्ट, कठोर हृदय वाले व्यक्ति के रूप में पूरी तरह से अस्वीकार कर दयिा और उसे अनंतकाल में चले जाने की आज्ञा दी। पैगन की मृत्यु हो गई, और वह अपनी पत्नी तथा पालने में पड़े अपने एक छोटे प्रथम-जन्मे पुत्र को छोड़ गया। उसकी धन्य माता, यूफ्रोसीन, ने उसे दूध के बजाय धार्मकिता से पोषति कयिा, और फरि उसे पवत्रि बपतस्मिा के माध्यम से प्रबुद्ध करते हुए मसीह के पास ले आई। उन्होंने उसका नाम क्लेमेंट रखा, जसिका ग्रीक से अनुवाद 'एक युवा अंगूर की बेल का अंकुर' है[1378] । उन्होंने यह नाम एक भवष्यिवक्ता की तरह यह पूर्वानुमान लगाते हुए बहुत ही उपयुक्त रूप से चुना कि वह सच्ची बेल, यानी मसीह, का एक अंकुर होगा, जसिका भाग्य कई पके गुच्छे - मसीह की ओर मुड़ने वाली मानव आत्माएं - लाना था। केवल नाम के माध्यम से ही, उन्होंने भवष्यिवाणी की कि वह यीशु मसीह के परम पवत्रि नाम का एक प्रसद्धि स्वीकारकर्ता बनेगा, कि वह उसके लिए अपना रक्त बहाएगा और अपनी आत्मा अर्पति करेगा, और वह मसीह के लिए एक पीड़ति और शहीद बनेगा। उन्होंने अपने बेटे को पवत्रि पुस्तकें पढ़ना और अच्छा व्यवहार करना सखिाया, साथ ही उसे हर सद्गुण में भी शक्षिति कयिा। इस बीच, जैसे-जैसे लड़का उम्र और समझ में बढ़ रहा था और बारह वर्ष की आयु तक पहुँच चुका था, उसकी माँ, संत यूफ्रोसीन, अपने धन्य नधिन के करीब पहुँच रही थीं। अपनी मृत्यु का पूर्वाभास हो जाने पर और अब बस्तिर पर लेटी हुई, वह चाहती थीं कि उनका बेटा उनकी मामूली भौतकि संपत्ति का वारसि उतना न बने, जतिना कि उनके सद्गुणों की अमूर्त, आध्यात्मकि संपत्ति का। मातृत्वपूर्ण स्नेह से, उन्होंने उसे गले लगाते और चूमते हुए समझाया:

'मेरे बच्चे, मेरे प्रयि बच्चे, एक बच्चा जो पालने से ही अनाथ हो गया, जसिने अपने पति को जानने से पहले ही अपनी अनाथता को जान लयिा! फरि भी तुम अनाथ नहीं हो, मेरे बेटे, क्योंकि मसीह ईश्वर तुम्हारे पति हैं, जो तुम्हें अपनी देनों से समृद्ध करते हैं। मेरे पुत्र, मैंने तुम्हें देह में जन्म दयिा, लेकनि मसीह ईश्वर ने तुम्हें आत्मा में पुनर्जन्म दयिा है। इसलिए, जानो कि वही तुम्हारे पति हैं; स्वयं को उनका पुत्र मानो और यह सुनश्चिति करने का प्रयास करो कि ईश्वर के परविार में तुम्हारा दत्तक ग्रहण व्यर्थ न जाए। एकमात्र प्रभु मसीह की सेवा करो और अपनी आशा मसीह में रखो, क्योंकि वही सचमुच हमारा उद्धार और अमरत्व का स्रोत है। वह हमें स्वर्ग में अपने साथ उठाने के लिए स्वर्ग से हमारे पास आए; उन्होंने हमें अपना प्रयि संतान बनाया और परमेश्वर के साथ हमारा मलिन स्थापति कयिा। जो कोई भी इस प्रभु की सेवा करता है, वह शैतान की सभी चालाकयिों से मुक्त हो जाएगा, साँपों और बच्छिुओं को नष्ट कर देगा, और हर शत्रु शक्ति पर वजिय प्राप्त करेगा। वह न केवल मूर्तयिों और राक्षसों की पूजा करने वाले अधर्मी राजाओं, राजकुमारों और यातना देने वालों को लज्जति करेगा, बल्कि उन राक्षसों के सरि भी कुचल देगा, जनिकी वे पूजा करते हैं।

इस बातचीत के दौरान प्रचुर आँसू बहाते हुए, संत की माँ दव्यि अनुग्रह से भर गईं और उन्होंने इस बात की भवष्यिवाणी करनी शुरू कर दी कि उनके साथ क्या होने वाला था।

उसने कहा, 'मेरे प्रयि पुत्र, मैं तुझसे वनिती करती हूँ, मेरी सभी पीड़ाओं और तेरी देखभाल के बदले में मुझे एक ही अनुग्रह प्रदान कर, क्योंकि महान क्लेश का समय नकिट आ रहा है। उत्पीड़न पहले से ही आ चुका है, जो भयानक क्रोध और धमकयिाँ उगल रहा है। इसलिए, तैयार रहो, जैसा कि हमारे प्रभु कहते हैं, कि वे तुम्हें उनके कारण शासकों और राजाओं के सामने ले जाएँगे (मत्ती 10:18)। पुत्र, मुझे यह सम्मान दे: मसीह के लिए नडिर और साहसपूर्वक खड़ा हो, और दृढ़ता और अटूट संकल्प के साथ उनके नाम की गवाही पर कायम रह। जहाँ तक मेरी बात है, हे मेरे बच्चे, मैं अपनी आशा अपने मसीह में रखता हूँ! शीघ्र ही शहादत का मुकुट तेरे सरि पर चमकेगा, मेरे सम्मान में और अनेक आत्माओं के उद्धार के लिए। अत; अपने हृदय को दुख-कष्ट की परीक्षा के लिए तैयार कर, कहीं ऐसा न हो कि परीक्षा का समय तुझे अनतैयार पाए। जान रख कि क्लेशों से परखा जाना लाभदायक है, जैसे सोना भट्टी में परखा जाता है। लेकनि डरो मत: पीड़ा अस्थायी होगी, जबकि इसका पुरस्कार शाश्वत होगा; दुख जल्द ही बीत जाएगा, और आनंद हमेशा रहेगा; यहाँ की अपमानतिा क्षणकि होगी, लेकनि ईश्वर के साथ शाश्वत महमिा तुम्हारा इंतज़ार कर रही है। यातना देने वालों की

[1378] ग्रीक शब्द κλημα – एक टूटी हुई युवा टहनी, एक युवा अंकुर, एक बेल की टहनी।

चालाकियाँ और उनकी पीड़ाएँ केवल एक दिन तक ही रहती हैं; वास्तव में, शहीदों द्वारा सांसारिक राजाओं के क्रोध का मज़ाक उड़ाया जाता है, उनकी महिमा फीकी पड़ जाती है, और जो आग उन्होंने मसीह के शहीदों के लिए तैयार की है, वह बुझ जाती है। उनकी तलवार जंग से खा जाती है; उनकी शक्ति निष्ट हो जाती है। इसलिए, ऐसा कुछ भी नहीं है जो आपको प्रभु मसीह से अलग कर सके; परन्तु स्वर्ग की ओर देखो और वहाँ से परमेश्वर से अपना महान, प्रचुर और शाश्वत पुरस्कार पाने की प्रतीक्षा करो। उसकी महिमा से डरो, उसके न्याय से काँपो, और उसकी सर्व-दृष्टा आँख के सामने थर्राओ; क्योंकि जिन्होंने उसे अस्वीकार किया है, वे उनके लिए तैयार की गई न बुझने वाली आग और कभी न सोने वाले कीड़े के कष्ट का वारिस होंगे। परन्तु जो लोग, उसकी दिव्यता की महिमा को जानकर, उससे कभी दूर नहीं होते, उनके लिए पवित्र स्वीकारकर्ताओं के साथ अकथनीय आनंद, हर्ष और सांत्वना प्रतीक्षा कर रही है। मेरे सबसे प्रिय पुत्र, तुम्हारे जन्म के समय झेली गई बीमारियों और तुम्हें पालने के श्रम के लिए, मुझे जो पुरस्कार मिले, वह यह हो कि तुम मेरी कोख से निकलकर प्रभु के एक स्वीकारकर्ता बनो, और मुझे एक शहीद की माँ कहा जाए और मेरे उस पुत्र के द्वारा महिमा मिले जिसने मसीह के लिए पीड़ा सहन की है। इसलिए, हमारे लिए पीड़ित हुए उद्धारकर्ता के लिए धीरज धारण करने का प्रयास करो, और तुम्हें उनसे बहुत आशीषें प्राप्त होंगी, जबकि मुझे, तुम्हारे कारण, संतों के साथ सहभागिता प्राप्त होगी। मैं यहाँ हूँ, मेरे पुत्र, अपने मृत्यु के द्वार पर खड़ी; मेरे लिए, यह दृश्यमान प्रकाश कल नहीं चमकेगा - परन्तु तुम मसीह में मेरी रोशनी और प्रभु में मेरा जीवन हो! इसलिए मैं तुझ से विनती करती हूँ, हे मेरे पुत्र, कि तू मेरी आशाओं में मुझे लज्जित न करना, परन्तु मैं उद्धार पाऊँ, जैसा प्रेरित कहते हैं, संतानोत्पत्ति के कारण (1 तीमुथियुस 2:15)। मेरे पुत्र, मैंने तुम्हें जन्म दिया, ताकि मैं तुम्हारे में वैसे ही दुख सहूँ जैसे अपने शरीर में। जो रक्त तुमने मुझसे प्राप्त किया है, उसे बिना संकोच बहा दो, ताकि उसके बदले मुझे भी सम्मान मिले। अपना शरीर घावों के लिए अर्पित कर दो, ताकि मैं भी हमारे प्रभु के सामने उन पर आनन्दित हो सकूँ, मानो मैंने स्वयं उनके लिए दुख सहा हो।

एक बार एक यहूदी स्त्री ने अपनी धार्मिकता के लिए सात बेटों को शहीद के रूप में परमेश्वर को अर्पित किया; और अपने बेटों के सात शरीरों में एक ही आत्मा से पीड़ा सहते हुए, वह अजेय बनी रही[1379] । यदि तुम धार्मिकता के लिए उत्साहपूर्वक प्रयास करो, तो मेरे प्रभु के सामने महिमा प्राप्त करने के लिए तुम ही मेरे लिए काफी हो। अब मैं तुमसे विदा हो रहा हूँ और तुमसे पहले परमेश्वर के सामने उपस्थित होऊँगा। मैं शरीर से विदा हो रही हूँ, परन्तु आत्मा में तुम्हारे साथ रहूँगी, ताकि मैं तुम्हारे साथ मसीह के सिंहासन के सामने साष्टांग दण्डवत करने, तुम्हारे दुखों का उसके सामने बखान करने और तुम्हारे कर्मों के कारण मुकुट पाने के योग्य ठहरूँ; क्योंकि जिस प्रकार पृथ्वी के नीचे छिपी एक वृक्ष की जड़ को वही ओस सींचती है जो ऊपर स्पष्ट रूप से दिखाई देने वाली उसकी डालियों को सींचती है, उसी प्रकार मैं भी तुम्हारे साथ रहूँगी।

इस प्रकार, दिन भर, धन्य माता ने अपने पवित्र निधन से पहले, अपने प्रिय पुत्र को गले लगाते और उसके सिर, चेहरे, आँखों, होंठों, छाती और हाथों को चूमते हुए उपदेश दिया।

उसने कहा, 'हे, मैं अब कितनी धन्य हूँ, क्योंकि मैं शहीद के अंगों को चूम रही हूँ!'

इन शिक्षाओं से परिपूर्ण शब्दों के बाद, उन्होंने अपना सिर झुकाया, अपनी आत्मा अपने प्रभु के हाथों में सौंप दी, और शांतिपूर्वक देहांत हो गया।

जब क्लेमेंट की जन्मजात माँ का धन्य निधन हो गया और उन्हें दफ़ना दिया गया, तो युवा क्लेमेंट पूरी तरह से अनाथ हो गया, जिसका पिता केवल ईश्वर ही रह गया। ईश्वर, जो सभी का सार्वभौमिक पालनहार है और अनाथों तथा गरीबों की देखभाल करता है, ने धन्य क्लेमेंट—जो उस समय भी एक बच्चा था—को एक और माँ दी। उसी नगर में सोफिया नाम की एक कुलीन, सम्मानित और धनी महिला रहती थी, जो क्लेमेंट की माता, धन्य यूफ्रोसीन की मित्र थी। सोफिया एक ईश्वर-भक्त जीवन जीती थीं, और दिन-रात प्रार्थना में बिताती थीं। संतानहीन होने के कारण, उन्होंने इस धन्य युवक, संत क्लेमेंट को, अपने ही पुत्र के रूप में गोद ले लिया, और उससे अपने बच्चे की तरह ही प्रेम किया, हर तरह से उसकी देखभाल की। उस समय, गालाटिया में एक बड़ा अकाल पड़ा था। धर्महीन मूर्तिपूजकों ने अपने बच्चों को सड़क के किनारे छोड़ दिया, क्योंकि उनके पास उन्हें खिलाने के लिए कुछ भी नहीं था और वे खुद भी भूख से मर रहे थे। तब संत क्लेमेंट ने इन बच्चों को सोफिया के घर में इकट्ठा किया, जो उनकी दूसरी माँ थीं, और उन्हें उनके संसाधनों से पोषित किया - उन्हें

[1379] यह, बेशक, सोलोमोनिया को संदर्भित करता है, जो मैकाबीस के पवित्र शहीदों: एनिमा, एंटोनिना, गुरिया, एलेज़र, यूसेबोन, अलिना और मार्सेलस की माता थीं। उनका पर्व दिवस 1 अगस्त को मनाया जाता है।

कपड़े पहनाए, सखिाया और पवत्रि बपतस्मिा तक पहुँचाया। इस प्रकार, उन्होंने सोफयिा के घर को बच्चों का घर और एक स्कूल बना दयिा, और वह स्वयं कई बच्चों की आध्यात्मकि माँ बन गईं, जो उनकी प्राकृतकि माताओं से कहीं बेहतर थीं, क्योंकि उन्होंने उन्हें आध्यात्मकि जन्म दयिा, और उन्हें ईसाई धर्म में पाला-पोसा।

संत क्लेमेंट, यद्यपि उम्र में बहुत छोटे थे, लेकनि एक परपिक्व व्यक्ति की बुद्धि पहले ही प्राप्त कर चुके थे, उन्होंने अपने युवा काल से ही उपवास और संयम के माध्यम से अपने शरीर को वश में करना शुरू कर दयिा, और एक भक्षिु की तरह जीवन यापन कयिा। वे मांस से परहेज़ करते थे और केवल रोटी और अनाज खाते थे; उनका पेय पानी था। इसमें वह उन तीन पवत्रि युवकों के समान थे, जनिके शरीर, उनके उपवास के कारण, दोहरी आग से अप्रभावति रहे - स्वाभावकि वासना की आंतरकि आग और जलती हुई भट्टी की बाहरी आग[1380] । उस समय उस देश में रहने वाले कुछ ईसाइयों के लिए, धन्य क्लेमेंट, मानो एक दव्यि प्रकाश पुंज थे, जो सभी को परमेश्वर के ज्ञान के प्रकाश से प्रबुद्ध कर रहे थे। लेकनि इस दीप्तमिान दीपक को दीवान पर रखने का समय पहले ही नज़दीक आ रहा था – क्योंकि पुण्यों से दमकते संत क्लेमेंट के लिए पवत्रिता की सीढ़ियाँ चढ़ने का समय आ गया था, ताकि वह अधकि से अधकि लोगों को प्रकाशति करके उन्हें मोक्ष के मार्ग पर ले जा सकें। ईश्वर की व्यवस्था और इच्छा से, और गलातयिा के सभी ईसाइयों के सर्वसम्मत चुनाव द्वारा, उन्हें पहले एक पाठक, फरि एक डकिन और एक प्रेस्बटिर नयिुक्त कयिा गया। दो साल बाद, जब वह अभी भी जवान था—उस समय उसकी उम्र बीस साल से अधकि नहीं थी—उसे बशिप के पद पर पदोन्नत कयिा गया। वह एक दूसरे दानयिेल बन गया, जसिने, एक युवक होते हुए भी, बुद्धि और सद्गुण में बुजुर्गों को पीछे छोड़ दयिा, और यह प्रदर्शति कयिा कि वृद्धावस्था का नर्धिारण वर्षों की संख्या से नहीं, बल्कि एक सदाचारी जीवन और बुद्धि से होता है। धर्मप्राचीन का पद प्राप्त करने पर, संत क्लेमेंट न केवल बच्चों के लिए—जन्हिें वे धर्मग्रंथों का उपदेश देने के लिए बड़ी संख्या में इकट्ठा करते थे—बल्कि बुज़ुर्गों के लिए भी शक्षिक बन गए: उन्होंने मूर्तपिूजकों को ईसाई धर्म की ओर ले जाकर और उन्हें बपतस्मिा देकर, मसीह की कलीसयिा को सदैव बढ़ाया।

तब उनकी धन्य माता, यूफ्रोसीन की भवष्यिवाणी पूरी होने लगी, और उनके लिए शहीद का मुकुट बुना जाने लगा। ईसाइयों के उत्पीड़क डायोक्लेटयिन ने, रोमन सहिासन पर बैठने के बाद, अपने शासन के पहले वर्ष में ही रोमन साम्राज्य के सभी प्रांतों, राजकुमारों और गवर्नरों, अपने ही उप-राज्यों, हेगेमोनार्क्स, सैन्य कमांडरों और शहर के मजस्ट्रिेटों को अपने फरमान भेजे, जसिमें यह आदेश दयिा गया था कि जो भी मसीह के नाम का प्रचार करते हैं, उन्हें वभिन्नि तरीकों से मार डाला जाए और नष्ट कर दयिा जाए। अपने फरमानों में, उसने उन सभी शासकों और राजकुमारों को मृत्युदंड की धमकी दी जो ईसाइयों के संहार के उसके फरमान को पूरी लगन से लागू करने की हम्मित नहीं करते थे, और उनके लिए भी वही यातनाएँ और सज़ाएँ नर्धिारति कीं जो ईसाइयों के लिए थीं; जबकि उसने उन लोगों को धन-संपत्ति और सम्मान का वादा कयिा जो उनके उत्पीड़न में अधकि उत्साही थे। इसके पश्चात्, सभी प्रांतों और शहरों में, राजा के राज्यपालों और शासकों ने—कुछ राजा के क्रोध के भय से, और कुछ उसे प्रसन्न करके उससे सम्मान प्राप्त करने की इच्छा से—राज्य से ईसाइयों का नाम तक मटिा देने के लिए हर संभव प्रयास करना शुरू कर दयिा। उसी समय, शाही राज्यपाल डोमशियिन, जो गलाटयिा में तैनात था, गलाटयिा पहुँचा और सम्राट के आदेशों पर अमल करते हुए, उन्हें नष्ट करने के उद्देश्य से उसने उत्साहपूर्वक ईसाइयों की तलाश की। वधिर्मीयों ने एन्करि के बशिप, संत क्लेमेंट पर यह आरोप लगाते हुए बदनामी की कि वह कई लोगों को महान देवताओं की पूजा करने से रोक रहे थे और उन्हें मसीह की ओर ले जा रहे थे। डोमशियिन ने तुरंत उसे पकड़कर अपने सामने पेश करने का आदेश दयिा। पहले तो उसने दयालु और चापलूसी भरे शब्दों से संत को अपनी दुष्टता में फँसाने की कोशशि की। उसने कहा:

'मैं तुम्हारे खलिाफ लगाई गई बदनामी को बलि्कुल भी सच नहीं मानता, क्योंकि तुम्हारा चेहरा, तुम्हारी सत्यवादी दृष्टि और तुम्हारा सौम्य स्वभाव तुममें एक योग्य, कुलीन, बुद्धमिान और समझदार व्यक्ति को दर्शाता है, जबकि तुम्हारे बारे में कही गई हर बात तुम्हारे बदनाम करने वालों की बचकाना मूर्खता को उजागर करती है। तो हमें अपने बारे में बताइए: यदि आप हमसे अपनी बुद्धमित्ता साझा करेंगे, भले ही थोड़ी सी ही, तो हम आपसे सच अधकि आसानी से जान पाएँगे।

पवत्रि बशिप ने उनसे उत्तर दयिा:

[1380] यह तीन यहूदी युवकों: अनानयिास, अजारीयास और मसिैल का संदर्भ है, जो जलती हुई बेबीलोन की भट्टी में नष्ट नहीं हुए थे। देखें दानयिेल 1:3।

'हमारी बुद्धि और समझ मसीह हैं, जो परमपिता के पुत्र हैं, जिनके वचन से सभी वस्तुएँ सृजित हुईं। हमसे वाणी और समझ का वरदान उन्हीं से प्राप्त हुआ है।'

– 'लो सुनो,' उसके यातना देने वाले ने बीच में टोकते हुए कहा, 'तुमने बिना सोचे-समझे ही हम सबका सर्वथा अपमान कर डाला है, क्योंकि शुरू से ही बकवास बकने लगे; पर मैं तुम्हें सलाह देता हूँ: यह सारी बेकार की बातें छोड़ दो और हमारे देवताओं को बलिदान चढ़ाओ। जान लो कि जो भी देवताओं का अपमान करता है, उसके लिए यातनाएँ हैं, जबकि जो उनका सम्मान और पूजा करते हैं, उनके लिए सम्मान है। तुम हममें इसका एक उदाहरण देखते हो: इन देवताओं के प्रति हमारी श्रद्धा के कारण ही हमने इतना ऊँचा पद प्राप्त किया है, और हम देवताओं की कृपा के लिए उनका धन्यवाद करते हैं, हम उन लोगों को सम्मान देते हैं जो उनका सम्मान करते हैं और जो उनकी पूजा करने से इनकार करते हैं, उन्हें मृत्युदंड देते हैं।

गवर्नर के ये शब्द सुनकर, संत हँसे और कहा:

'हम, हे राज्यपाल, आप जो कहते हैं, उसके बिल्कुल विपरीत सोचते हैं। हम आपके उपहारों को निरर्थक, आपके सम्मान को अपमान, और आपके उच्च पद को एक कैदी की मेहनत मानते हैं। इसके विपरीत, अपमान, धमकियाँ और यातनाएँ हमें आनंद और सांत्वना देती हैं, और सबसे बढ़कर, वे हमें ईश्वर के साथ एक कर देती हैं। यह जानते हुए, न तो सम्मान और उपहारों के वादे से, और न ही यातना की धमकियों से हमें धर्मपरायणता से भटकाने की आशा करो।"

संत के इन शब्दों ने डोमिशियन के क्रोध को भड़का दिया। संत को घूरते हुए, उसने कहा:

'ऐसा लगता है कि मैंने आपसे नरमी से बात करके आपके अहंकार को जगा दिया है, और यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है, क्योंकि, जैसा कि मैंने सुना है, आप, बच्चों की संगत में लगातार रहने के कारण, उनके जैसा ही बाल-सुलभ मन रखते हैं।' हालाँकि, यह जान लो: अगर तुम बलिदानों से देवताओं को प्रसन्न नहीं करोगे, तो तुम्हें मृत्युदंड दिया जाएगा—और उस तरीके से नहीं जिस तरह तुम जल्द ही मरने की उम्मीद कर रहे हो, बल्कि पहले तुम कई और तरह-तरह की यातनाएँ सहोगे, और फिर, अपने दुःख में, तुम सबसे भयानक सज़ा से मरोगे। इस प्रकार, एक अधर्मी व्यक्ति होने के नाते, तुम भयंकर पीड़ा सहोगे और दूसरों के लिए एक उदाहरण बनोगे, ताकि वे भी तुम्हारी भयानक मृत्यु से एक सबक सीख सकें।

संत क्लेमेंट ने इसका उत्तर दिया:

चूँकि आपने मुझे बच्चों की याद दिलाई है, तो यह जान लो: मैंने बच्चों को वह बुद्धिमानी सिखाने का प्रयास किया है जिसे आप में से सबसे बूढ़े और बुद्धिमान पुरुष भी नहीं जानते; क्योंकि परमेश्वर की सच्ची बुद्धिमानी इस संसार के बुद्धिमानों और समझदारों से छिपी हुई है, और छोटे बच्चों पर प्रकट की गई है। मैं, अपनी ओर से, गर्व के साथ घोषणा करता हूँ कि मैं अपने ईश्वर को मन और वचन की बलिदान अर्पित करता हूँ, न कि उस तरीके से जैसे आपके पुरोहित रक्त की नदियाँ, धुआँ और हर प्रकार की घृणित चीज़ें अर्पित करते हैं, जिनसे आप अपने पूजे जाने वाले देवताओं को प्रसन्न करते हैं। जब मैं अपने ईश्वर के लिए अपना रक्त बहाऊँगा और उसे बलिदान के रूप में उनकी भेंट करूँगा, तो, यदि पूरी तरह से नहीं, तो कम से कम आंशिक रूप से मैं अपने प्रभु का उस रक्त का बदला चुका दूँगा जो उन्होंने मेरे लिए बहाया है; क्योंकि मसीह, मेरे राजा, ने मुझे अपने बहुमूल्य रक्त से मुक्त किया है।

जब शहीद ने यह भाषण बड़ी बहादुरी से दे दिया, तो राज्यपाल ने अपनी दिखावटी नम्रता को त्याग दिया और अपने असली स्वभाव—क्रूरता और पागलपन—को स्पष्ट रूप से प्रकट कर दिया। उसने संत को एक पेड़ पर नग्न लटकाने का आदेश दिया, और फिर उसके शरीर को तेज लोहे के औजारों से खुरचने और काटने का आदेश दिया। उनके आदेशों का पालन करते हुए, नौकरों ने शहीद से चिल्लाकर कहा कि वह राजा के आदेश को नज़रअंदाज़ न करे। उन्होंने संत के शरीर में गहरी खाइयाँ खोद डालीं, जैसे कोई खेत जोत रहा हो, ताकि उसका मांस टुकड़ों में गिर जाए: उसकी आंतें पहले ही स्पष्ट रूप से दिखाई दे रही थीं; यहाँ तक कि यातना देने वालों में से कोई भी उदासीनता से यह दृश्य देख नहीं सका। हालाँकि, वह मन में जरा भी नहीं डगमगाया, उसके चेहरे के भाव नहीं बदले, असहनीय दर्द से एक भी आवाज़ नहीं निकाली, शिकायत का एक भी शब्द नहीं कहा, और इतनी भयानक यातनाओं के बीच कराह भी नहीं भरी। वह उन लोगों से अधिक मजबूत और साहसी था जो उसके कष्टों को देख रहे थे। ऐसा लग रहा था कि वह अपने यातना देने वालों की तुलना में कम पीड़ा सह रहा था। उसने शहीदी देने वाले – मसीह ईश्वर – का शांतिपूर्वक धन्यवाद किया, स्वर्ग की ओर आनंदपूर्वक देखते हुए कहा: 'महिमा तेरी हो, हे मसीह, मेरी रोशनी और जीवन, मेरी साँस और मेरी खुशी! मैं तुझे धन्यवाद देता हूँ, हे जीवन दाता, कि तू मुझे ऐसे उद्धार का योग्य समझा। मेरी आत्मा तेरी आज्ञाओं को पूरा करने के मार्ग में आनंदित हुई है। मैं आपके प्रेम

के लिए कष्ट सहने वाले हर एक शहीद का स्वागत करता हूँ। महिमा आपको हो, क्योंकि आप मुझे धैर्य से बलवान करते हैं! आपने एक पापी, मेरे लिए अपना सर्वशक्तिमान हाथ बढ़ाया है, मुझे शासक के क्रोध और मेरे यातना देने वालों के हाथों से बचाया है, क्योंकि आप स्वयं उन सभी का शरणस्थान हैं जो शोक करते हैं।"

जब संत इस प्रकार प्रार्थना कर रहे थे, तो उनके यातना देने वाले थक गए और यातना देना बंद कर दिया। अपने सेवकों की निष्क्रियता को देखकर, राज्यपाल ने शहीद से कहा:

'क्या तुम्हें नहीं लगता कि मैं तुम्हारे धैर्य से पहले ही पराजित हो चुका हूँ, क्योंकि मेरे सेवक एक ही घण्टे में थक गए हैं?'

संत ने उत्तर दिया:

'मैं ऐसा नहीं सोचता, बल्कि मैं मसीह में विश्वास करता हूँ और उसी पर अपनी आशा रखता हूँ, जो मुझ में वास करते हैं, क्योंकि उन्होंने हर शत्रु पर विजय प्राप्त की है, प्राप्त कर रहे हैं, और प्राप्त करेंगे।'

तब राज्यपाल ने अन्य सेवकों को आज्ञा दी कि वे संत के पास जाएँ और पहले समूह से भी अधिक क्रूरता से उनके शरीर को यातना दें। उन्होंने भी उस अजेय पीड़ित को लंबे समय तक यातना दी, जब तक कि वे स्वयं थक नहीं गए और मृतक की भाँति लोट गए। यह सब देखकर राज्यपाल, जो अपने सेवकों की लाचारी पर कभी चकित और कभी लज्जित हो रहा था, ने शहीद को पेड़ से उतारने का आदेश दिया। संत इतने भयानक दिख रहे थे कि उन्हें देखना ही भयावह था, और उन्हें हाथों से छूना असंभव था। उनका सारा मांस इस तरह उधड़ गया था जैसे कोई कपड़ा न हो; खून में केवल उनकी हड्डियाँ ही दिखाई दे रही थीं, और उन्हें पहचानना भी मुश्किल था कि वे एक इंसान हैं। राज्यपाल ने जब देखा कि यातना से कुछ हासिल नहीं होगा, तो उसने एक बार फिर शहीद से कोमल शब्दों में बात करनी शुरू कर दी। लेकिन शहीद ने, मसीह के एक बहादुर योद्धा के अनुरूप, अपने अत्याचारी को साहसपूर्वक जवाब देते हुए—एक बार फिर उसे क्रोधित कर दिया। तब डोमिशियन ने ज़ोर से चिल्लाकर कहा:

'सचमुच, यह आदमी अभद्र है! इसके चेहरे और होठों पर मारो, क्योंकि उसके शरीर के ये अंग अभी भी सुरक्षित हैं; इसीलिए वे इतनी अभद्रता से प्रतिक्रिया दे रहे हैं। तो, इन्हें भी उसके बाकी शरीर के जैसा कर दो। इन्हें बेरहमी से मारो।'

तब नौकरों ने संत को अपने हाथों की हथेली से उनके चेहरे और होठों पर जोर-जोर से मारना शुरू कर दिया, जिससे वे प्रहारों की ताकत से जमीन पर गिर पड़े; लेकिन जब वे जमीन पर पड़े थे, तब भी उन्होंने निर्दयता से उनके मुँह में पत्थर मारे और उनके दाँत तोड़ दिए। शहीद ने, हालाँकि, प्रसन्न होकर कहा:

'हे राज्यपाल, आप मुझे यातना देने के बजाय सम्मानित कर रहे हैं, क्योंकि मेरे प्रभु यीशु मसीह के मुख पर प्रहार किया गया था और गालों पर थप्पड़ मारा गया था, और मैं, जो कि अयोग्य हूँ, अब उसी के योग्य समझा गया हूँ। स्तेफन, पहले शहीद, को पत्थरों से मार डाला गया था, और मुझे भी उसी भाग्य का सौभाग्य मिला है। मेरी यातनाओं में मुझे जो राहत मिलती है, वह यह है कि मैं स्वयं को अपने मसीह की पीड़ाओं का अनुकरण करने वाला पाता हूँ। मेरी सभी पीड़ाएँ इस तथ्य से आसान हो जाती हैं कि मुझे भी उन्हीं महान लोगों के समान सम्मान का पात्र माना गया है जो मुझसे महान और बेहतर हैं, उन्हीं पीड़ाओं में भाग लेकर।

यातना देने वाले ने, शहीद में ऐसी महान आत्मा को देखकर, उसे जेल ले जाने का आदेश दिया। यह मानते हुए कि वह बिना सहारे के नहीं चल पाएगा, क्योंकि उसका पूरा शरीर एक बड़ा घाव था, उसने अपने नौकरों को आदेश दिया कि वे उसे उसकी बाहों और पैरों से पकड़कर ले जाएँ। लेकिन संत ने उन्हें एक तरफ धकेल दिया जो उसे उठाना चाहते थे, खड़ा हो गया और मसीह की शक्ति से मजबूत होकर, भजन के शब्द गाते हुए अपने दम पर चल पड़ा: *'यह सबसे उत्तम तेल है, जो मेरे सिर को हानि नहीं पहुँचाएगा'* (भजन संहिता 140:5)। यह देखकर, राज्यपाल ने अपने आसपास के लोगों से कहा:

'अहो, इस मनुष्य में कितना धैर्य और कितना साहस है! राजा के सैनिकों ऐसे ही होने चाहिए, ताकि वे सभी विपत्तियों से ऊपर उठ सकें। मेरे लिए उसे फिर से जज करने का काम नहीं है; मैं उसे सम्राट डायोक्लेटियन के पास भेज दूँगा, क्योंकि निश्चित रूप से केवल वही उसे हरा पाएगा, क्योंकि वह यातना की कला में बहुत कुशल है। वह हमेशा ऐसी यातनाएँ और फाँसियाँ रचता रहता है कि पूरा रोम शहर उसके फैसले से काँप उठता है।

कुछ दिनों बाद, जेल में रहते हुए, संत अपने घावों से मसीह की कृपा से ठीक हो गए और उनका स्वास्थ्य वापस आ गया। फिर राज्यपाल ने उन्हें रोम, सम्राट डायोक्लेटियन के पास भेजा, और उनके बारे में एक विस्तृत विवरण लिखा। जब संत सैनिकों की सुरक्षा में शहर से बाहर जा रहे थे, तो उन्होंने ईश्वर से इस प्रकार प्रार्थना की: 'हे स्वर्ग और पृथ्वी

तथा संपूर्ण ब्रह्मांड के राजा, हे ईश्वर, जो सर्वत्र व्याप्त हैं और अपनी व्यवस्था के बिना कोई स्थान रिक्त नहीं छोड़ते! मैं इस शहर को आपके हाथों में सौंपता हूँ; इसकी और आप में विश्वास करने वाले सभी की आत्माओं की रक्षा करें। अपनी कलीसिया को भी सुरक्षित रख, ताकि इस नगर में कुत्ते और भेड़िये तेरी छोटी से झुंड को बिखेर न दें। तेरे वचन की भेड़ों की संख्या नष्ट या कम न हो, बल्कि तेरे पवित्र नाम की महिमा के लिए उन्हें और भी बढ़ा। मुझे इस नगर से पूरी तरह से न हटाइए, बल्कि मेरी यात्रा और मेरे दुखों के समय में मेरे साथ रहकर, मुझे फिर से यहाँ वापस लाइए, जैसे आपने एक बार याकूब को उसके पिता के घर वापस लाया था और उसे एसाव के हाथ से छुड़ाया था, जैसे आपने एक बार अपने लोगों को यूसुफ की हड्डियों को मिस्र से बाहर निकालने और उन्हें उसके पिता की कब्र में रखने की आज्ञा दी थी (उत्पत्ति 36; निर्ग. 13:19), ताकि युगानुयुग तेरा नाम महिमामय हो।'

इस प्रार्थना के बाद, संत को रास्ते पर भेज दिया गया। जब उसे रोम लाया गया और दुष्ट राजा के सामने पेश किया गया, तो राजा शहीद के चेहरे पर चमक और उसकी शारीरिक शक्ति को देखकर बहुत हैरान हुआ। वह डोमिशियन के पत्र, जिसमें इस ईसाई द्वारा सहन की गई यातनाओं का वर्णन था, पर विश्वास नहीं कर सका। उसने देखा कि संत अच्छे स्वास्थ्य में थे और उनका चेहरा प्रसन्न था, मानो उन्होंने कभी कोई कठिनाई झेली ही न हो। उसने पूछा:

'क्या तुम वही प्रसिद्ध क्लेमेंट हो जिसने इतने बड़े यातनाएँ झेली हैं?'

तब उसने आदेश दिया कि संत को दोनों ओर कई और विविध, एक-दूसरे के विपरीत चीजें प्रस्तुत की जाएँ: एक ओर, बहुत सारा सोना और चाँदी, महान शहीद को उच्च सम्मान प्रदान करने वाले शाही फरमान, कीमती वस्त्र, हर तरह की दौलत और प्रतिष्ठा; और दूसरी ओर, यातना के उपकरण: लोहे की चिमटियाँ और पंजे, कीलों से जड़ी लोहे की खाटें, तेज ब्लेड, लाल-लाल अंगारे, कड़ाहियाँ और हेलमेट जिन्हें तब तक गर्म किया गया जब तक वे लाल नहीं हो गए, तेज कीलें, पहिये, भारी जंजीरें और यातना के अनगिनत अन्य उपकरण। जब यह प्रस्ताव शहीद के सामने रखा गया, तो राजा ने उसे देखते हुए और अपने हाथ से सोने और कीमती उपहारों की ओर इशारा करते हुए कहा:

'ये हमारे देवताओं के उपहार हैं, यदि तुम इनकी ओर मुड़ जाओ और पूजा-पाठ तथा बलिदानों से इनका सम्मान करना शुरू कर दो।'

संत ने इन उपहारों से अपनी नज़रें हटा लीं, उन्हें बेकार, नीच और घृणित मानते हुए, जो एक नज़र के भी लायक नहीं थे, और एक आह भरकर कहा:

'तुम्हारे देवताओं के ये उपहार तुम्हारे लिए विनाशकारी हों!'

तब राजा ने एक धमकी भरी नज़र डालते हुए, अपने हाथ से यातना के उपकरणों की ओर इशारा किया और संत से कहा:

'यह उन लोगों के लिए है जो हमारे देवताओं में विश्वास नहीं रखते।'

इस पर मसीह के पराक्रमी शहीद ने उत्तर दिया:

'यदि तुम्हें लगता है कि तुमने जो यातनाएँ रची हैं वे भयानक हैं, तो फिर तुम उन यातनाओं को क्यों अनदेखा करते हो जो ईश्वर ने उन लोगों के लिए तैयार की हैं जो उस पर विश्वास नहीं करते?' इसी तरह, यदि आपके उपहार पृथ्वी पर आशीर्वाद चाहने वालों को आकर्षक, अद्भुत और सम्मानजनक लगते हैं, तो स्वर्ग में प्रदान किए गए उपहार कितने अधिक योग्य हैं, जिन्हें परमेश्वर ने उनसे प्रेम करने वालों के लिए तैयार किया *है—'वे बातें जो न किसी ने देखीं, न किसी ने सुनीं, और न मनुष्य के हृदय में कभी उत्पन्न हुईं'* (1 कुरिन्थियों 2:9)। सोना और चाँदी बाँझ भूमि हैं और इन्हें पुरुष बाहरी आभूषण के लिए निकालते हैं। इन्हें आग और लोहे से बदला जाता है, जंग से नष्ट हो जाते हैं, और घर्षण से नष्ट हो जाते हैं; इन्हें डाकू छीन लेते हैं और चोर चुरा लेते हैं। सुंदर वस्त्र रेशम के कीड़े का काम हैं और पतंगों का भोजन हैं; वे ऊन से बने होते हैं, जो अनिवार्य रूप से मूक जानवरों से ली जाती है। जो लोग ये वस्त्र बनाते हैं, वे इनसे स्वयं को सजाने वालों से कहीं अधिक प्रशंसा के पात्र हैं, क्योंकि वे एक विशेष कला के माध्यम से, सबसे बुरे को सबसे अच्छे में बदलकर कुछ रचते हैं; फिर भी ऐसे कारीगरों को साधारण और तुच्छ लोग समझकर तुच्छ समझा जाता है। इसके विपरीत, जो लोग अपनी रचनाओं से स्वयं को सजाते हैं, वे गर्व करते हैं और डींगें हाँकते हैं, भले ही वे अपना वैभव तुच्छ, निश्चित जानवरों से प्राप्त करते हों। हालाँकि, हमारे परम दयालु ईश्वर की देन किसी से उधार नहीं ली गई है, बल्कि वे उसकी अपनी और अपरिवर्तनीय संपत्तियाँ हैं, जो उसकी इच्छा से उसी में निहित हैं, न कि मानव कला के परिणामस्वरूप। उनमें असीम महिमा और शाश्वत गरिमा है; वे समय के साथ होने वाले किसी भी परिवर्तन के अधीन नहीं हैं; उन्हें कीड़े नहीं खाते और न ही वे सड़कर खराब होते हैं, और अनंत युगों तक भी वे नष्ट नहीं हो सकते। डायोक्लेटियन ने उनसे उत्तर दिया:

– तुम अच्छी बात करते हो, पर तुम समझते नहीं। इसीलिए मैं तुम्हें देवताओं के ज्ञान की ओर ले जाने का प्रयास कर रहा हूँ, और इस कारण मैं तुम्हारे साथ कोमलता से बोलता हूँ, तुम्हें यह समझाते हुए कि अपनी आशा किसी नश्वर मनुष्य में न रखो—कि जिसिको तुम मसीह के रूप में पूजते हो, यहूदियों के हाथों अनेक यातनाएँ सहने के बाद अंततः मार डाला गया और मर गया, जबकि हमारे देवता सदा अमर हैं और कभी कष्ट नहीं झेलते।

संत ने उत्तर दिया:

'हे राजा, तुम सही कहते हो कि तुम्हारे देवता अमर और अचंचल हैं; क्योंकि वे कैसे मर सकते थे यदि वे कभी जीवित ही नहीं हुए? वे कैसे दुख सह सकते थे यदि वे असंवेदनशील हैं? क्या तुम नहीं जानते कि वे मानव हाथों द्वारा पीटे, ढाले, काटे और पॉलिश किए जाने के बाद ही बने हैं?' वास्तव में, आपके पत्थर के देवताओं को कुल्हाड़ी और छेनी से तराशा जाता है, आपके लकड़ी के देवताओं को चाकू और आरी से नक्काशी की जाती है, और आपके कांस्य और लोहे के देवताओं को हथौड़े से ढाला जाता है; उन्होंने किसी अन्य अपमान, पिटाई या गाली-गलौज को नहीं सहा है - फिर भी वे निर्विकार बने रहते हैं। वास्तव में, वे अमर हैं, क्योंकि वे कभी जीवित नहीं थे; फिर भी वे इस तरह टुकड़े-टुकड़े हो जाते हैं मानो वे कभी मौजूद ही नहीं थे। लेकिन मेरे प्रभु और परमेश्वर, यीशु मसीह ने, अपने मानवीय स्वभाव में, संसार को बचाने और अपनी दिव्य शक्ति से स्वयं मृत्यु को नष्ट करने के लिए देह में मरना चुना। ऐसा करने के बाद, वे तीसरे दिन पुनर्जीवित हुए और हमें अनंत जीवन के लिए स्वयं को प्रदान किया।

संत का निश्शंकोच और साहसी भाषण सुनकर डायोक्लेटियन बहुत क्रोधित हो गया और उसने आदेश दिया कि संत को नग्न करके पहिये से बाँधा जाए, पहिया घुमाया जाए, और संत को लोहे की छड़ों से पीटा जाए। जैसे ही पहिया घूमा, जब संत ऊपर थे, तो उन्हें लाठियों से पीटा गया, और जब वे नीचे पहुँचे—जहाँ जानबूझकर जगह बहुत तंग कर दी गई थी—तो उन्हें एक तीखे खंभे से बुरी तरह प्रताड़ित किया गया, जिससे उनकी हड्डियाँ टूट गईं और उनका मांस, जो शुरुआती यातनाओं के बाद फिर से उग आया था, गिर गया। कई घंटों तक प्रताड़ित रहने के बाद, मसीह के शहीद ने इस प्रकार प्रार्थना की: 'हे प्रभु यीशु मसीह! मेरी सहायता करो और मेरे कष्टों को कम करो; इस भीषण पीड़ा को दूर करो, क्योंकि, आप पर भरोसा करके, मैंने स्वयं को इन घावों के हवाले कर दिया है। मेरी सहायता करो, जैसे आपने एक बार अपने पवित्र प्रेरित पौलुस की सहायता की थी, और मेरे शरीर को देखो, जो बुरी तरह से छेद-छाद हो गया है! क्योंकि मैं आपके पवित्र नाम की महिमा और घोषणा के लिए, और आपके लिए महान यातनाएँ सहने के लिए अक्षुण्ण और अच्छे स्वास्थ्य में रहना चाहता हूँ – यह अधर्मी लोगों के लिए लज्जा और अपमान का कारण बने। हे जीवन दाता, मैंने आप में अपनी आशा लगाई है, इसलिए आपके नाम के लिए मुझे बलवान करें!"

जब संत इस प्रकार प्रार्थना कर रहे थे, तो पहिया रुक गया, और उसे घुमाने वाले थक कर चूर हो गए। संत, हालांकि, एक अदृश्य हाथ द्वारा मुक्त हो गए थे, और एक बार फिर से उनके पूरे शरीर को कोई चोट नहीं लगी और वे अच्छे स्वास्थ्य में थे। वहाँ इकट्ठा हुए कई लोगों ने यह देखकर आश्चर्य से कहा:

'महान है ईसाई ईश्वर!'

और संत क्लेमेंट, जो मसीह की दाख की बारी की सच्ची बेल थे, ने अपने आत्मा में यह महसूस किया कि उनके दुख सहने के कार्यों से अंगूरों की कई गुच्छियाँ फूट सकती हैं, और उन्होंने ऊँचे स्वर में ईश्वर की स्तुति करते हुए कहा: 'मैं तुझे धन्यवाद देता हूँ, हे ईश्वर, स्वर्गीय पिता, कि तू मुझे अपने एकलौते पुत्र के लिए इस महानगर में दुख सहने के योग्य समझा, जिसने हमारे लिए दुख सहे और हमारे उद्धार के लिए अपना बहुमूल्य रक्त बहाया – वही, जिसके बारे में संत पतरस ने यहाँ प्रचार किया था, पौलुस ने घोषणा की, क्लेमेंट—मेरे नाम वाले—को महिमामय बनाया, और ओनेसिमिस ने भी स्वीकार किया। (यह पवित्र प्रेरित पतरस और पौलुस, और सत्तर प्रेरितों में से: रोम के पोप क्लेमेंट (25 नवंबर को स्मरण किया जाता है) और ओनेसिमिस (15 फरवरी को स्मरण किया जाता है) को संदर्भित करता है)। उन्होंने उनके लिए दुख सहन किया और मर गए, और अब वे स्वर्ग में महिमामय हैं, पृथ्वी पर कई लोगों द्वारा सम्मानित हैं, और जल्द ही पृथ्वी के राजाओं से भी अधिक लोगों द्वारा महिमामय किए जाएँगे। विश्वासयोग्य राजा स्वयं उनकी पूजा करेंगे।'

संत ने ये शब्द कहे, उस आने वाले समय की भविष्यवाणी करते हुए जब मूर्तियों की पूजा अंधकार की तरह मिट जाएगी, जबकि मसीह का विश्वास सूर्य की तरह चमकेगा और पूरे ब्रह्मांड को प्रकाशित करेगा। संत के इन शब्दों ने उत्पीड़क डायोक्लेटियन के हृदय को एक लौ की तरह जला दिया और उसमें और भी अधिक क्रोध भर दिया। ईश्वर की शक्ति से हुए चमत्कार पर बिल्कुल भी ध्यान न देते हुए, और द्वेष से अंधा होकर, वह अपने अत्याचार में और भी अधिक क्रूर हो गया। उसने आदेश दिया कि संत के होंठ मोटे लोहे की छड़ों से पीटे जाएँ और उसके दाँत तोड़ दिए जाएँ। फिर भी

इस यातना के दौरान भी, संत बोलना बंद नहीं हुए, जिससे उनके यातनाकर्ता को और अधिक क्रोध आया, भले ही उनके सेवकों ने उन्हें ऐसा करने से मना किया और चुप रहने का आदेश दिया। लेकिन जैसे तांबे को जितना ज़ोर से पीटा जाता है, उसकी आवाज़ उतनी ही साफ़ होती है, वैसे ही मसीह के शहीद ने भी, जितना ज़्यादा उन्हें बोलने से रोका गया—उनके होंठ और दाँत लोहे से कुचले जा रहे थे—उतना ही ज़ोर से वे चिल्लाए, ऐसे शब्द बोलते हुए जो ईश्वर की महिमा करते थे और उनके अहंकारी अत्याचारी को शर्मिंदा करते थे। जब, अंततः डायोक्लेटियन स्वयं अपने क्रोध से थक और थक गया, तो उसने शहीद को लोहे की जंजीरों में बाँधकर सार्वजनिक कालकोठरी में फेंकने का आदेश दिया।

जब संत कालकोठरी में बैठे थे, तो शाम को उनके पास एक बड़ी भीड़ आई—पुरुष और समझदार महिलाएँ अपने बच्चों के साथ, जो फाँसी के समय चौक पर मौजूद थे और उन्होंने संत के साहस को देखा था। वे सभी उनके पवित्र चरणों में गिर पड़े और संत से उन्हें बपतिस्मा देने के लिए कहा। संत ने ईश्वर का धन्यवाद किया कि इतने कठोर उत्पीड़न के बीच भी, उनके स्वीकारकर्ताओं की संख्या बढ़ रही थी। उन्होंने तुरंत उन्हें मसीह में पवित्र विश्वास की शिक्षा देना शुरू कर दिया और सबसे छोटे से लेकर सबसे बड़ों तक, उन सभी का बपतिस्मा दिया, क्योंकि उस कालकोठरी में पर्याप्त पानी था। ऐसा करते हुए, उन्होंने आनंदपूर्वक गाया: *'धन्य है वह, जिसके अपराध क्षमा किए गए हैं, और जिसके पापों को ढक दिया गया है'* (भजन संहिता 31:1)। जब मध्यरात्रि हुई, तो स्वर्ग से एक महान प्रकाश ने कालकोठरी को प्रकाशित कर दिया, और जिन्होंने भी ऊपर देखा, उन्होंने एक सुंदर युवक को देखा, जो बिजली की तरह चमकदार वस्त्रों में सुसज्जित था, और फैले पंखों के साथ पवित्र शहीद की ओर उतर रहा था। उसके पास आकर, उस युवक ने उसके हाथों में कुछ साफ़ ब्रेड और शराब का एक प्याला रखा दिया, और तुरंत ही अदृश्य हो गया। संत क्लेमेंट ने, यह समझते हुए कि ये मसीह का शरीर और रक्त थे, प्रथागत प्रार्थनाएँ कीं और जैसे ही भोर हो रहा था, सभी नव-बपतिस्मा प्राप्त लोगों को दिव्य रहस्य प्रदान किए। अगले दिनों में विश्वासी उसके पास आते रहे, और वे अपने साथ पवित्र बपतिस्मा की लालसा रखने वालों को भी लाते रहे। इस प्रकार मसीह की भेड़-बकरियों का झुंड बढ़ गया, और जेल की कोठरी एक प्रकार से एक गिरिजाघर बन गई, जिसमें परमेश्वर की स्तुति की जाती थी। यह देखकर, पहरेदारों ने इस बात की सूचना राजा को दी। और इस प्रकार, जब रात में संतों की पूजा के लिए विश्वासियों की एक बड़ी भीड़ इकट्ठा हुई, तो राजा के आदेश पर सैनिक आ गए; उन्होंने सभी को पकड़ लिया, और उन्हें बलि के लिए भेड़ों की तरह शहर से बाहर ले गए। प्रत्येक का सिर काटने से पहले, उन्होंने पूछा:

'क्या तुम जीवित रहने के लिए मसीह का त्याग करते हो?'

और एक भी ऐसा नहीं मिला जिसे मृत्यु का भय था; इसके विपरीत, सभी ने अपने प्रभु के लिए मरना पसंद किया। फिर मसीह के लिए पुरुषों, महिलाओं और बच्चों की एक बड़ी भीड़ का सिर कलम कर दिया गया। केवल एक युवक जल्लादों के हाथों से बच निकला, मृत्यु के भय से नहीं, बल्कि सच्चे ईश्वर के लिए महान पीड़ा सहने की अपनी इच्छा के कारण। इस युवक का नाम, जिसके बारे में हम नीचे बात करेंगे, अगथांजेलस था।

इसके बाद, डायोक्लेटियन ने संत को एक बार फिर मुकदमे के लिए बुलाया और उसे लंबे और क्रूर यातनाओं का शिकार बनाया: पहले, उसे नग्न करके जमीन पर लिटाया और बैल की खाल के फट्टों से लंबी और जोरदार पिटाई की; फिर, उसे लटका कर लोहे की पंजाओं से तब तक खुरचवाया जब तक उसकी हड्डियाँ नंगी नहीं हो गईं और उसका पूरा शरीर खुरच-खुरच कर कच्चा नहीं हो गया। हालाँकि, संत ने अपने यातनाकर्ता से कहा:

'यह शरीर जिसे तुम खुरच रहे हो, वह वह नहीं है जो मेरी माँ के गर्भ से निकला था; वह तो बहुत समय पहले की बात है और गवर्नर डोमिशियन द्वारा मेरी हड्डियों से पूरी तरह से उड़ा दिया गया था। यह वही नया शरीर है जिसमें मेरे सृष्टिकर्ता, मसीह ने मुझे वस्त्र पहनाया है। और चूँकि तुम इसे मेरी हड्डियों से खुरचने का प्रयास कर रहे हो, मैं अपने मसीह पर भरोसा करता हूँ कि वह अपनी सर्वशक्तिमान शक्ति से मुझे एक बार फिर से ऐसे ही मांस में लपेटेगा: लेकिन सच तो यह है, क्या कुम्हार के लिए मिट्टी की कमी होगी? इसके विपरीत, क्या उसे सामग्री की प्रचुरता नहीं मिलेगी?

तब यातना देने वाले ने आदेश दिया कि उसके पार्श्वों को मोमबत्तियों से झुलसाया जाए, लेकिन संत ने सबसे मधुर यीशु के लिए यह सब आनंदपूर्वक सहन किया। शहीद की सहनशक्ति और साहस को देखकर डायोक्लेशियन ने अपने आसपास के लोगों से कहा:

'मैंने कई दुर्भाग्यशाली ईसाइयों को यातनाएँ दी हैं, फिर भी मैंने कभी किसी को इतना अजेय नहीं देखा। अब मैं उसे निकोमेडिया में मैक्सिमियन के पास भेजूँगा, एक नई चीज़ के रूप में, जिसे पहले कभी देखा या सुना नहीं गया। उसे भी इस

शरीर की यातना में अजेयता पर आश्चर्य होना चाहिए! मुझे लगता है कि उसने भी कभी किसी को मन से इतना दृढ़ और शरीर से इतना मजबूत नहीं देखा होगा।'

उसने संत को बाँधने का आदेश दिया और उन्हें एक जहाज पर बिठाकर दूसरे सम्राट, मैक्सिमियिन[1381] के पास निकोमेडिया ले जाने का हुक्म दिया। साथ ही, उसने उन्हें उस सब के बारे में लिखा जो संत क्लेमेंट ने रोम में उसके हाथों और उससे पहले एन्सीरा में डोमशियिन के हाथों सहा था। जब संत जहाज पर चढ़ने वाले थे, तो उपर्युक्त अगथान्जेलस—जो शहर के बाहर तलवारों से मसीह के अनुयायियों का कत्लेआम करने वाले सैनिकों से रात में भाग गया था—पहले ही चुपके से जहाज पर आ चुका था और संत क्लेमेंट का इंतजार कर रहा था। जब संत को जहाज पर चढ़ा दिया गया, तो वह उनके पैरों पर गिर पड़ा और यह खुलासा करते हुए कि उसे संत ने ही बपतिस्मा दिया था, उसने उन्हें विश्वासियों की शहादत और अपनी खुद की फरारी के बारे में सब कुछ बताया, यह समझाते हुए कि वह संत के पास ठीक इसी उद्देश्य से आया था कि वह प्रभु मसीह की खातिर उनके साथ हर तरह की यातना सहन करे और उनके साथ ही मरे। धन्य अगथान्जेल को देखकर, मसीह ईश्वर के प्रति उनके उत्साह और प्रेम को देखकर संत क्लेमेंट आनंदित हुए, और उन्होंने उनके आगमन को ईश्वर के एक स्वर्गदूत के आगमन के रूप में माना। उन्होंने सभी के प्रभु का धन्यवाद किया और उनसे शक्ति और सहायता की याचना की, कि वह उस युवक को अंत तक सहन करने का साहस और शक्ति प्रदान करें और उसे शहीद के मुकुट का योग्य समझा जाए।

यात्रा के दौरान, संत दिन-रात प्रार्थना में लगे रहे और उन्होंने बिल्कुल भी भोजन नहीं लिया। संत क्लेमेंट ने इस पर बिल्कुल भी ध्यान नहीं दिया और कहा:

'मेरे हृदय में रोटी है, स्वयं यीशु मसीह, और इसलिए मैं भूखा नहीं हूँ; मेरे पास जीवित जल है, मसीह का अनुग्रह, और इसलिए मुझे कभी प्यास नहीं लगेगी।'

सैनिकों ने जब देखा कि क्लेमेंट और अगाथांजेलस कई दिनों से कुछ नहीं खाए-पिए थे, तो उन पर तरस आया और उन्होंने उन्हें रोटी और पानी दिया। उन्होंने इस दयालु कार्य के लिए सैनिकों की प्रशंसा की, लेकिन उनसे कोई भोजन या पेय स्वीकार नहीं किया, यह कहते हुए कि उनका पालन-पोषण सभी का प्रदाता, ईश्वर द्वारा होता है: प्रभु के स्वर्गदूत ने रात में उनके लिए स्वर्ग से भोजन लाया और उन्हें बल दिया। एक लंबी यात्रा के बाद, वे रोड्स द्वीप पर उतरे[1382] । जब कई लोग भोजन खरीदने के लिए शहर में उतर गए, तो संतों ने जहाज पर बचे सैनिकों से विनती की कि उन्हें एक ईसाई चर्च में जाने दें ताकि वे दिव्य रहस्य, मसीह के जीवन-दायक शरीर और रक्त को ग्रहण कर सकें, क्योंकि वह रविवार का दिन था। द्वीप के बिशप, ईश्वर-प्रेमी फोटिनिस, ने संत क्लेमेंट के बारे में सुनकर, अपने पुरोहितों और अन्य ईसाइयों के साथ आए और सैनिकों के कमांडर से क्लेमेंट को उसकी बेड़ियों से मुक्त करने और उसे अपने शिष्य अगथान्गेलस के साथ थोड़ी देर के लिए उनके साथ शामिल होने की अनुमति देने का अनुरोध किया। उन्होंने उन्हें बिना किसी देरी के वापस जहाज पर लाने का वादा किया। महाधर्माध्यक्ष के अनुरोध पर संत क्लेमेंट को रिहा कर दिया गया। संतों को एक छोटे से चर्च में ले जाया गया, क्योंकि उस समय द्वीप पर कुछ ही ईसाई थे। जब महाधर्माध्यक्ष ने पवित्र सुसमाचार पढ़ने के लिए क्लेमेंट को निर्देश दिया, तो उस पुरोहित ने पुस्तक खोली और निम्नलिखित शब्द पढ़ना शुरू किया जो उसमें प्रकट हुए: *'उनसे मत डरो जो शरीर को मारते हैं पर आत्मा को नहीं मार सकते'* (मत्ती 10:28)। यह सुनकर, संतों ने एक आह भरकर स्वर्ग की ओर अपनी आँखें उठाईं, जबकि चर्च में खड़े ईसाइयों ने, उन्हें देखते हुए, रोना शुरू कर दिया, जिससे पूरा चर्च विलाप और चीखों से भर गया। तब बिशप ने संत क्लेमेंट से दिव्य लिटर्जी (पवित्र बलिदान) का अनुष्ठान करने के लिए कहा। जब संत अनुष्ठान कर रहे थे, तो कुछ पुरोहितों और कुछ योग्य सामान्य लोगों ने भी डिस्कस (पवित्र थाल) पर एक बड़ा कोयला देखा, जो लाल-गरम और जलता हुआ था। उससे एक अकथनीय तेज निकल रहा था, जो संत और उपस्थित लोगों को प्रकाशित कर रहा था, जबकि वेदी के ऊपर पवित्र स्वर्गदूतों को हवा में उड़ते हुए देखा जा सकता था। जिन्होंने इस चमत्कार को देखा, वे जमीन पर लोट-लोट कर गिर पड़े और उन्होंने संत को देखने की हिम्मत नहीं की। सेवा के बाद, बिशप फोटिनिस ने संत और अन्य ईसाइयों को अपने घर ले जाकर उन्हें भोजन परोसा। कई बीमार लोगों को संत क्लेमेंट के पास लाया गया, न केवल विश्वासियों द्वारा बल्कि मूर्तिपूजकों द्वारा भी। मसीह के शहीद ने प्रार्थना और क्रॉस के

[1381] मैक्सिमियिन II गैलेरियस, सम्राट डायोक्लेटियिन के दामाद और सह-शासक, जो 305 तक उनके साथ रहे, और फिर 311 तक स्वतंत्र रूप से शासन किया।

[1382] रोड्स एजियिन सागर (द्वीपसमूह) के दक्षिण-पश्चिमी भाग में एक बड़ा द्वीप है, जो एशिया माइनर के कैरिया क्षेत्र के दक्षिणी तट से केवल एक काफी संकरी जलडमरूमध्य द्वारा अलग है।

चहि्न द्वारा उन सभी को ठीक कर दयिा। परणिामस्वरूप, बहुत से मूर्तपिूजकों ने खुले तौर पर यह स्वीकार करना शुरू कर दयिा कि मसीह सच्चे ईश्वर हैं और बपतस्मिा लेने का अनुरोध कयिा। सैनकिों ने जब देखा कि संत क्लेमेंट के पास एक बड़ी भीड़ इकट्ठा हो रही है, तो उन्हें डर लगा कि लोग कैदी को उनसे छीन लेंगे और उन पर हमला कर देंगे। इसलिए, संत को पकड़कर, वे उन्हें जहाज पर ले गए और एक बार फरि उन्हें बेड़यिों में जकड़ दयिा। वशि्वासयिों ने उन्हें आँसुओं और ससिकयिों के साथ वदिा कयिा, वे उनसे अलग होना नहीं चाहते थे। अंत में, संत को वदिा कहने और क्लेमेंट की बेड़यिों को चूमने के बाद, वे लौट आए, क्योंकि सैनकिों ने उन्हें वहाँ से जल्द से जल्द नकिल जाने के लिए कहा। एक अनुकूल हवा की मदद से, वे एजयिन सागर को पार करके नकिोमेडयिा पहुँचे।

नकिोमेडयिा में रहने वाले अधर्मी राजा मैक्समियिन ने जब डायोक्लेटयिन का पत्र प्राप्त कयिा और शहीद को देखा, तो वह उसकी महान सहनशीलता और साहस से चकति रह गया, जसिे कोई यातना भी तोड़ नहीं सकती थी।

लेकनि वह स्वयं उसे यातना देने से डरता था, कहीं वह लज्जति न हो जाए, और इसलिए उसे यातना के लिए राज्यपाल एग्रप्पिीनस के हवाले कर दयिा; जबकि वह स्वयं राज्य के अन्य मामलों में बहुत व्यस्त होने का दखिावा कर रहा था। एग्रप्पिीनस ने संतों को अपने दरबार में बुलाया और क्लेमेंट से कहा:

'क्या तुम क्लेमेंट हो?'

'मैं मसीह का सेवक हूँ,' शहीद ने उत्तर दयिा।

राज्यपाल ने आदेश दयिा कि उसे मुँह पर मुक्कों से मारा जाए, और कहा:

'तुम खुद को राजा का सेवक क्यों नहीं कहते, बल्कि मसीह का?'

संत ने पटिाई के बीच उत्तर दयिा:

'आपके राजा भी मसीह के सेवक होने चाहिए; तब उनका शासन शांतपिूर्ण होगा, और मेरा मसीह सभी राष्ट्रों को उनके अधीन कर देगा।'

तब राज्यपाल ने संत अगाथांगेलस की ओर देखते हुए पूछा:

'और तुम कौन हो? डायोक्लेटयिन के पत्र में तुम्हारे बारे में कुछ भी नहीं लखिा है।'

अगाथेंजेल ने आकाश की ओर देखते हुए कहा:

'मैं एक ईसाई हूँ, और मुझे ईश्वर के इस सेवक, क्लेमेंट के माध्यम से ईसाई का नाम प्राप्त हुआ है।'

गवर्नर ने उत्तर दयिा:

'तो तुम्हारी भूल और तुम्हारे लिए इंतज़ार कर रही क्रूर मौत के लिए वही दोषी है।'

फरि उसने आदेश दयिा कि संत क्लेमेंट को नग्न फांसी दी जाए और उसके शरीर को रेजर से काटा जाए, जबकि संत अगथेंजेलस को, जो भी नग्न था, चाबुक से बुरी तरह पीटा जाए। अपने यातनाओं के दौरान, संत क्लेमेंट ने ईश्वर से प्रार्थना की कि वह अगथानगेलस को उसकी पीड़ा में मजबूत बनाए रखें। इन यातनाओं के बाद, राज्यपाल ने दोनों शहीदों को जेल में डालने का आदेश दयिा। तहखाने में कई अन्य कैदी थे, जनि्हें वभिनि्न अपराधों के लिए दंडति कयिा गया था। संतों को ईश्वर से प्रार्थना करते हुए और यह देखकर कि ईश्वर के स्वर्गदूत मसीह के सेवकों से मलिने और उन्हें सांत्वना देने आ रहे थे, उनके हृदय दया से भर गए; और, उनके पैरों पर गरिकर, उन्होंने उनसे अपने ईश्वर तक ले जाने का आग्रह कयिा। ईश्वर की व्यवस्था से वहाँ बपतस्मिा के लिए पर्याप्त पानी था। उन्हें ईसाई धर्म की शक्षिा देने के बाद, संत क्लेमेंट ने उन सभी का बपतस्मिा दयिा; फरि, प्रार्थना के द्वारा, उन्होंने कालकोठरी का द्वार खोल दयिा और उन्हें मुक्त कर दयिा, यह कहते हुए:

'जाओ, मेरे बच्चों, और दुष्टों के हाथों से बच जाओ। प्रभु यीशु मसीह तुम्हारी रक्षा करें!'

अगली सुबह, जब गवर्नर एग्रप्पिीनस को कैदयिों की रहिाई का पता चला, तो वह संत पर बहुत क्रोधति हुआ और एक ऊँचा मंच बनाकर उन्हें जंगली जानवरों के खाने के लिए सौंप दयिा। लेकनि जानवरों ने संतों को कोई नुकसान नहीं पहुँचाया; इसके वपिरीत, वे उन पर इस तरह प्यार लुटाने लगे, जैसे पालतू कुत्ते अपने मालकिों पर करते हैं। तब यातना देने वाले ने आदेश दयिा कि शहीदों के हाथों की प्रत्येक उंगली को कोहनी तक लाल-गरम लोहे की सीखों से घुमाया जाए। यह देखकर, लोग ऐसी यातना सहन नहीं कर सके और उन्होंने धमकयिों के साथ मांग की कि राज्यपाल नर्दिोष पुरुषों को रहिा कर दे। लेकनि ईसा मसीह के नाम पर, राज्यपाल और भी अधकि क्रोधति हो गया और उसने आदेश दयिा कि उनके हाथों को अन्य नुकीले, तपे-भुने औजारों से कंधों तक घुमाया जाए। फरि क्रोधति भीड़ ने पत्थर उठाकर राज्यपाल पर फेंके और जोर से चलि्लाई:

'महान है ईसाई ईश्वर!'

हंगामा और लोगों के आक्रोश से डरकर, राज्यपाल भाग गया और अपने घर में शरण ले ली, जबकि पवित्र शहीदों ने बिना किसी बाधा के पाइरामिस नामक पहाड़ की ओर बढ़ना जारी रखा, जहाँ मूर्तिपूजक आमतौर पर अपने देवताओं को बलिदान देते थे। वहाँ, मूर्तिपूजकों के मंदिर में प्रवेश करने पर, उन्होंने अपनी प्रार्थनाओं से मूर्तियों को चूर-चूर कर दिया और उस स्थान से राक्षसों को भगा दिया। कुछ दिनों बाद, राज्यपाल को संतों का पता चल गया और वह पुरोहितों और अपनी सेना के साथ वहाँ गया। वहाँ उसने पवित्र शहीदों को मोटी लाठियों से बुरी तरह पीटा और उनकी हड्डियाँ तोड़ने के बाद, उनमें से प्रत्येक को एक बोरी में अलग-अलग सिलने का आदेश दिया, जिसमें पत्थर भी रखे गए थे, और उन्हें पहाड़ से समुद्र में फेंक दिया। संत् अपने बोरो में पहाड़ी से लुढ़ककर समुद्र में गिर गए और गहरे पानी में डूब गए। हर कोई उन्हें पहले ही खोया हुआ मान चुका था। कुछ विश्वासियों को संतों के डूबने की खबर मिलते ही, इस उम्मीद में वे किनारे-किनारे चले कि समुद्र, जो आमतौर पर लाशें किनारे लाता है, वह पवित्र शहीदों के शरीरों को भी किनारे लाएगा। जल्द ही उन्होंने समुद्र पर दो बोरी तैरती हुई देखीं, और अपनी नावों में बैठकर उनकी ओर बढ़े। बोरियाँ खोलने पर, उन्होंने संतों को पूरी तरह से सुरक्षित पाया और ईश्वर की स्तुति की। उस रात, संतों ने तट पर विश्राम किया। परमेश्वर के स्वर्गदूतों ने उनसे भेंट की और भोजन से उन्हें बल दिया। जब सुबह हुई, तो संत क्लेमेंट और अगथेंजेल शहर में गए और चौक के बीच में खड़े होकर, परमेश्वर की महानता के बारे में लोगों से बात की; फिर, स्वर्ग की ओर अपने हाथ फैलाकर, उन्होंने प्रार्थना करना शुरू किया: 'हे प्रभु यीशु मसीह, हम तेरा धन्यवाद करते हैं कि तूने हम पर जो तुझ पर आशा रखते हैं, निराश नहीं किया, बल्कि हमें भयानक यातनाओं से छुड़ाया है और हमारे शत्रुओं को हम पर आनन्द करने का कारण नहीं दिया, बल्कि हम में अपने पवित्र नाम का गौरव किया है।'

वहाँ दो अंधे आदमी थे; उनके अलावा, एक मुरझाए हुए हाथ वाला आदमी और एक लकवाग्रस्त आदमी था। संतों ने अपने हाथ उन पर रखकर उन्हें तुरंत चंगा कर दिया। यह देखकर, लोग अपने बीमारों और अशुद्ध आत्माओं से ग्रस्त लोगों को उनके पास लाने लगे। वे सभी शहीदों की प्रार्थनाओं और हाथों के स्पर्श से चंगे हो गए। लोगों ने प्रभु यीशु मसीह के नाम की जोर-जोर से महिमा की। यह सुनकर, राज्यपाल एग्रिप्पीनस भय से ग्रस्त हो गया और, हैरानी से भरकर, राजा को वह सब कुछ बताने के लिए निकल पड़ा जो हुआ था। राजा भी यह देखकर बहुत हैरान हुआ कि संत, जिन्हें समुद्र में खोया हुआ समझा गया था, वास्तव में जीवित थे। यह जानकर कि संत क्लेमेंट एन्सीरा के मूल निवासी थे, उसने आदेश दिया कि उसे और उसके शिष्य को एन्सीरा भेजा जाए, यह कहते हुए:

'उसे वह नगर वापस ले जाए जिसने उसे जन्म दिया और पाला-पोसा, और जैसा उचित समझे, उसे मृत्युदंड दे।'

तब उसने सेंट क्लेमेंट के बारे में एन्सीरा के राजकुमार क्यूरसियिस को लिखा; जबकि सैनिक दोनों संतों को बँधी अवस्था में एन्सीरा ले गए।

जब शहीद संत क्लेमेंट अपने पैतृक शहर में प्रवेश किए, तो उन्होंने आनंदपूर्वक कहा:

'महिमा तेरी हो, हे ईश्वर, क्योंकि तूने मेरी विनिम्रता सुनी! महिमा तेरी हो, हे मसीह, क्योंकि तूने मुझे अपना जन्मस्थान देखने की कृपा दी!'

दोनों संतों को राजकुमार कुरकियिोस के सामने पेश किया गया। उनसे पूछताछ करने के बाद, उसने उन्हें यातना देना शुरू कर दिया। सबसे पहले, उसने आदेश दिया कि संत क्लेमेंट के बगल की ओर लाल-गरम लोहे की पट्टियों से झुलसाया जाए; फिर, उसे एक स्तंभ से बांधकर, उसने बेरहमी से पीटा, जिससे उसका मांस टुकड़ों में गिर गया। जहाँ तक संत अगाथांगेल का सवाल है, उसने उसे फाँसी पर लटकाने और लोहे के पंजे से खुरचने का आदेश दिया। ऐसा करते हुए, उसने उपहास करते हुए उनसे पूछा:

'क्या तुम्हें अपने शरीर में कोई दर्द महसूस नहीं होता?'

संत क्लेमेंट ने प्रेरित के शब्दों में उत्तर दिया: *'क्योंकि यद्यपि हमारा बाहरी शरीर क्षीण हो रहा है, परन्तु हमारा भीतरी मन दिन-प्रतिदिन नया होता जाता है'* (2 कुरिन्थियों 4:16)।

तब यातना देने वाले ने एक लोहे का हेलमेट लाल-गरम होने तक गर्म करने और उसे संत क्लेमेंट के सिर पर रखने का आदेश दिया। जब ऐसा किया गया, तो संत की नाक, कान और मुँह से मोटी धुआँ निकलने लगी। उन्होंने स्वयं, अकथनीय यातना सहते हुए, अपने प्रभु से पुकारा: 'अक्षय झरना, जीवित जल, उद्धार करने वाली वर्षा! अपनी कृपा के ओस से मुझे चंगा कर। हे प्रभु, आपने हमें जल से बचाया; अपने सेवकों को आग से भी बचाइए।'

जब संत इस प्रकार प्रार्थना कर रहे थे, तो उनके सिर पर लगा लोहे का हेलमेट तुरंत ठंडा हो गया। यह देखकर, राजकुमार कुरकियोस भय से भर गया और यह समझ नहीं पा रहा था कि उनके साथ और क्या किया जाए, तो उसने उन्हें जेल भेज दिया, और साथ ही राजा मैक्सिमियन को विस्तार से लिखकर भेजा कि क्या हुआ था। उस रात, धन्य सोफिया, क्लेमेंट की दूसरी माँ, कालकोठरी में आईं। उन्होंने उसे बड़ी खुशी और आँसुओं के साथ चूमा, अपने धर्म-पुत्र पर प्रसन्न होकर, जिसने स्वयं को मसीह के लिए एक योग्य पीड़ित और यातना पर एक गौरवशाली विजेता साबित किया था। उसने संतों के घावों और बंधनों को चूमा; फिर उसने उनका खून धोया और पोंछा और उनके घावों पर साफ कपड़े बांध दिए। ऐसा करते समय, उसने संत क्लेमेंट से विस्तार से पूछा कि उसने कैसे, कहाँ और किसके हाथों कष्ट सहे। उसने उनके लिए भोजन भी लाया और उन्हें बल दिया। उसके बाद के सभी दिनों में, वह आई और मसीह के कैदियों की सेवा करती रही।

कुछ समय बाद, राजा की ओर से राजकुमार कुरकियोस को एक फरमान आया कि पवित्र शहीदों को अमीशिया (1383) नामक दूसरे शहर में, राजा के गवर्नर डोमेटियस नामक एक और, उससे भी अधिक क्रूर यातनाकर्ता के पास भेजा जाए। धन्य सोफिया ने पवित्र शहीदों के साथ लंबा सफर तय किया, उन बच्चों के साथ भी जिन्हें संत क्लेमेंट ने अकाल के दौरान उनके घर में इकट्ठा किया था और जिन्हें उन्होंने पाला था, जिसके बाद वे, मानो, उनके अपने बच्चे बन गए थे। उनमें से कुछ पवित्र शहीदों से अलग नहीं होना चाहते थे और वे हार्दिक प्रेम से बँधे हुए, उनका पीछा करते रहे। रास्ते में, राजा की आज्ञा से, सैनिकों द्वारा उन्हें मार डाला गया, जिसकी सूचना तुरंत राजा को दी गई। अमीशिया में, शुक्रवार को दिन के दूसरे घंटे पर पवित्र शहीदों को डोमेटियस ने उबलते चूने में फेंक दिया, और शनिवार को तीसरे घंटे पर वे जीवित और कुशल पाए गए। यह देखकर, दो सैनिक मसीह में विश्वास करने लगे और उन्होंने सार्वजनिक रूप से खुद को ईसाई घोषित कर दिया, जिसके लिए, उसी शनिवार, सितंबर के सातवें दिन, उन्हें दुष्टों द्वारा सूली पर चढ़ा दिया गया। उनके नाम फेंगोन और यूकार्पियोस थे। जहाँ तक संतों क्लेमेंट और अगाथांगेलस का सवाल है, यातना देने वाले ने आदेश दिया कि उनके कंधों से त्वचा उधेड़ दी जाए और उन्हें लंबे समय तक लाठी से पीटा जाए। फिर उसने आदेश दिया कि उन्हें लाल-गरम लोहे के बिस्तरों पर रखा जाए और गंधक और तारकोल से भिगोते हुए बुरी तरह जलाया जाए। हालाँकि संत, जैसे किसी नरम शाही बिस्तर पर आराम कर रहे हों, बिना किसी चोट के एक मीठी नींद में सो गए और एक सपने में उन्होंने प्रभु मसीह को उनके पवित्र स्वर्गदूतों की भीड़ के साथ देखा। प्रभु ऊँचे से उनके पास उतरे और कहा:

'डरो मत। मैं तुम्हारे साथ हूँ।'

जागने पर, उन्होंने इस दृष्टि को एक-दूसरे को खुशी से सुनाया। संतों को लंबे समय तक लाल-गरम लोहे की जालियों पर यातना दी गई। जब डोमिशियन ने देखा कि आग ने उन्हें बिल्कुल भी नुकसान नहीं पहुँचाया, तो वह यह सोचने पर मजबूर हो गया कि उनके साथ क्या किया जाए: उसने उन्हें नीचे उतारने और एक कालकोठरी में ले जाने का आदेश दिया। संत इस कालकोठरी में लंबे समय तक रहे, और फिर उन्हें सम्राट डोमिशियन के पास वापस भेज दिया गया, जो उस समय तारसस में रह रहे थे। जब वे वहाँ यात्रा कर रहे थे, तो वे प्यास से त्रस्त थे, और उनकी सुरक्षा में तैनात सैनिक विशेष रूप से थके हुए थे, क्योंकि वह भूमि बंजर और पानी से रहित थी। उनकी प्रार्थनाओं के द्वारा, संतों ने सूखी हुई भूमि से जीवनदायी जल का एक झरना फुहार दिया। सभी ने पिया और तरोताज़ा हो गए; सैनिकों ने, अपनी ओर से, अपनी यात्रा के लिए जितना पानी चाहिए था, उतना अपने साथ ले लिया। इस यात्रा के दौरान, संत क्लेमेंट ने मसीह ईश्वर से भक्तिपूर्वक प्रार्थना की कि ईश्वर उन्हें अपने पवित्र नाम के लिए अपने पूरे जीवन में पीड़ा सहने की कृपा प्रदान करें। तब उन्हें ईश्वर से एक प्रकट वाणी मिली कि, पहले से सहन की गई पीड़ा के वर्षों को गिनकर, उन्हें अपनी शहादत के पूरा होने तक अटूट पीड़ा के बीच अठ्ठाइस वर्ष और जीवित रहना है। संत इस पर अत्यंत प्रसन्न हुए, क्योंकि वे अपने ईश्वर मसीह के प्रति अकथनीय प्रेम में पूरी तरह से डूबे हुए थे। वे मसीह के लिए लंबे समय तक भयंकर यातनाएँ सहने और अपने जीवन भर में कई बार मरने की इच्छा रखते थे।

जब संतों को राजा मैक्सिमियन के सामने लाया गया, तो वह यह देखकर बहुत हैरान हुआ कि इतनी यातनाओं के बाद भी वे जीवित और अडिग थे। उनसे फिर पूछताछ करने और उन्हें अडिग पाए जाने पर, उसने एक अग्नि भट्टी प्रज्वलित करने का आदेश दिया, जैसा कि नबूकदनेसर ने एक बार बेबीलोन में किया था, और मसीह के योद्धाओं को उसमें डाल दिया। संत एक दिन और एक रात इस भट्टी में रहे और जीवित तथा सुरक्षित बाहर निकले। इस चमत्कार को देखकर, बहुत से लोग मसीह में विश्वास करने लगे। फिर संतों को एक कालकोठरी में डाल दिया गया, जहाँ वे चार साल तक रहे।

1383 एशिया माइनर के उत्तर में पोंटस में एक शहर।

दुष्ट राजा को उम्मीद थी कि लंबी कैद और कालकोठरी में कई कठनिाइयों को सहने से थककर, संत जल्द ही मूर्तपिूजक धर्म अपना लेंगे।

चार साल की कैद के बाद, राजा ने, यद्यपि उन्हें अपनी शाही दरबार के अयोग्य समझा, फरि भी उनके कर्मों से प्रदर्शति अदम्य महान आत्मा की दृढ़ता से लज्जति होकर, उन्हें सर्वाधकि क्रूर राज्यपाल सेसरडॉन के हवाले कर दयिा, जसिने अनगनित ईसाइयों को क्रूर यातनाओं और भयानक मृत्यु द्वारा मार डाला था। उसे पवत्रि कैदयिों को मूर्तपिूजक देवताओं की पूजा करने के लिए मजबूर करने का काम सौंपा गया था। पवत्रि शहीदों क्लेमेंट और अगथानगेलस को चापलूसी या धमकयिों से मनाने में वफिल रहने पर, उसने आदेश दयिा कि उन्हें नग्न होकर एक पेड़ से बांध दयिा जाए, क्रूरता से पीटा जाए और उनके शरीर को इतनी बुरी तरह से खुरचा जाए कि संतों के कंधे और पीठ पूरी तरह से हड्डी तक खुरच गए। उनकी हड्डयिाँ और जोड़ पहले ही दखिाई दे रहे थे, जबकि सारा मांस झड़ चुका था। यातना देने वाले ने यह मानकर कि वे तुरंत मर जाएँगे, उन्हें खोलकर कालकोठरी में ले जाने का आदेश दयिा। लेकनि जब उसने देखा कि संत अपने दो पैरों पर खड़े हैं और ठीक महसूस कर रहे हैं, और अपनी इच्छा से कालकोठरी की ओर जा रहे हैं, तो वह बहुत शर्मदिा हुआ, और उसके शरीर पर क्रोध और शर्मदिगी हावी हो गई। वह मुश्कलि से जदिा था, इसलिए उसे उसके नौकरों द्वारा दरबार से घर ले जाया गया। जैसे ही संत कालकोठरी की ओर बढ़े, उनके शरीर से मांस टुकड़ों में गरिने लगा, साथ ही उनका रक्त भी बहने लगा। वशि्वासयिों ने रास्ते में रेत के साथ इसे इकट्ठा कयिा और इसे सबसे बड़े और सबसे कीमती खजाने के रूप में रखा। जब राजा को सकरडोन की शारीरकि दुर्बलता के बारे में पता चला, तो वह हँसा और कहा:

'देखो, गौरवशाली सकरडोन, जसिने कई ईसाइयों को पराजति कयिा है, स्वयं दो के हाथों पराजति हो गया है!'

उस क्षण, मैक्समि नामक एक राजकुमार राजा के सामने खड़ा हुआ। उसने राजा से पवत्रि शहीदों को अपने हवाले करने की वनिती की, और यह घमंड कयिा कि वह या तो उन्हें बलदिान करने के लिए मजबूर कर देगा या उन्हें यातनाओं से मार डालेगा। जब राजा ने उसकी मांग मान ली, तो उसने संतों को अपनी हरिासत में ले लयिा, और तुरंत उन्हें यातना देना शुरू नहीं कयिा, बल्कि पहले, कई दनिों तक, उनके साथ सौहार्दपूर्ण ढंग से बातचीत की, उन्हें देवताओं की पूजा करने के लिए प्रोत्साहति कयिा – और फरि, एक दनि, उसने उन्हें अपने पास बुलाया और कहा:

'हे पुरुषो, आनंद मनाओ—अमर देवता तुमसे अपने सच्चे पुत्रों की तरह प्रेम करते हैं और तुम्हारी परवाह करते हैं। उन्होंने मेरे सपनों में कई बार तुमसे मेरे बारे में बात की है और मेरे प्रश्नों के उत्तर में मुझे स्पष्ट रूप से बताया है कि तुम उनके पास लौटोगे। इसीलिए उन्होंने तुम्हारे यातना देने वालों को रोका है, कहीं वे तुम्हें नष्ट न कर दें, क्योंकि देवता तुम्हारे धर्म परविर्तन की प्रतीक्षा कर रहे हैं, जो अब नकिट है।' कल ही रात, देवताओं में महानतम, Bacchus[1384] , मेरे पास प्रकट हुए और कहा: 'उन दोनों आदमयिों को मेरे पास लाओ।' तो अब, हे पुरुषों, बकस का मंदरि खुला है, वेदी सजी हुई है, और बलदिान तैयार हैं; आओ और उसकी वेदी पर बलदिान चढ़ाओ।

संतों ने उनसे उत्तर दयिा:

'तुम नर्लिज्ज होकर झूठ बोल रहे हो, न्यायाधीश! क्योंकि तुम्हारे देवता, जैसा कि सर्ववदिति है, मौन हैं; और वे सपने में भी नहीं बोल सकते। इसके अलावा, कसि बकस ने तुमसे बात की? आखरिकार, तुम्हारे पास यहाँ बकस की दो मूर्तयिाँ हैं: एक पत्थर की, और दूसरी काँसे की। यदि पत्थर वाला बोल रहा था, तो हम उसी के लिए भवष्यिवाणी करते हैं कि वह समय शीघ्र आएगा जब वह टुकड़े-टुकड़े कर दयिा जाएगा, या पत्थर से बनी दीवार में अन्य पत्थरों के साथ रख दयिा जाएगा, या अंततःआग में फेंक दयिा जाएगा और रेत में बदल जाएगा। यदि, तथापि, कांसे का बकस तुमसे बोलता है, तो वह शीघ्र ही घड़ों और अन्य बेकार के बर्तनो में ढाल दयिा जाएगा।

ये शब्द सुनने को सहन न कर पाकर, मैक्समिस ने उन्हें क्रूरतापूर्वक यातनाएँ देना शुरू कर दयिा। यातना इस प्रकार थी: उसने आदेश दयिा कि विभिन्नि तेज लोहे के औजार—सीखें, चाकू, कीलें, त्रशिूल और अन्य अत्यंत तेज वस्तुएँ, जो भी वह सोच सकता था—उनकी नोकें ऊपर की ओर करके एक-दूसरे के पास-पास जमीन में ठोक दिए जाएँ। ये नुकीले सरि एक पैर की लंबाई तक ऊँचे खड़े थे। उसने सेंट क्लेमेंट को उन नुकीले सरिों पर पीठ के बल, मुँह ऊपर की ओर, नग्न लेटने का आदेश दयिा, और मोटी छड़यिों से पीटने का आदेश दयिा, जबकि उसने सेंट अगथेंजेल के सरि पर पघिला हुआ टनि डालने का आदेश दयिा। जब संत क्लेमेंट की छाती और पूरे शरीर पर, सरि से पैर तक, डंडों से पटिाई हो रही थी, तब

[1384] बैक्सस (जसिे यूनानयिों द्वारा डायोनसिस के नाम से जाना जाता था) का प्राचीन यूनानयिों और रोमनों द्वारा अंगूर की बेल और मदरि नरि्माण के देवता, मदरि के दाता के रूप में सम्मान कयिा जाता था, जो मनुष्यों के हृदय को प्रसन्न करती है और दुख तथा चतिाओं को दूर करती है।

उन तेज औजारों से उनका पूरा शरीर नीचे से भेद दिया गया और चीर-फाड़ की गई; कुछ लोहे के नुकीले सरि उसके हृदय तक, कुछ उसकी छाती तक, कुछ उसके पेट की गहराई में, और कुछ, अंत में, उसके आर-पार हो गए और दूसरी तरफ से स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहे थे। जब, लंबी पिटाई के बाद, यातना देने वाले ने शहीद को उस जगह से हटाने का आदेश दिया, तो उसे वहां से मुक्त करने में कई लोगों को बहुत प्रयास करना पड़ा। मैक्सिमिस इतनी महान सहनशीलता से चकित और विस्मित था, और वह इस बात से और भी अधिक चकित था कि कोई भी यातना शहीदों को देवताओं की ओर मोड़ नहीं सकी या उन्हें मार नहीं सकी। सर्वशक्तिमान परमेश्वर ने स्वयं उनकी आत्माओं को उनके भीतर सुरक्षित रखा, ताकि वे अपने शरीरों से अलग न हों, यह सब उनके पवित्र नाम की महान महिमा के लिए और अधर्मीयों को लज्जित करने के लिए हुआ। संतों को एक बार फिर जेल में डाल दिया गया।

यह जानने पर, राजा मैक्सिमियिन ने संतों को आजीवन कारावास की सजा सुनाई, जिसमें उन्हें प्राकृतिक मृत्यु का सामना करना था। तब अफ्रोडिसियिस नामक एक और कुलीन व्यक्ति, जो जन्म से फारस का रहने वाला था और ईसाइयों के लिए हर तरह के सबसे क्रूर यातनाओं का एक कुशल आविष्कारक था, ने राजा से इन शहीदों को अपने हवाले करने की अनुमति मांगी, इस उम्मीद में कि वह उन्हें नष्ट कर देगा। उसकी सहमति मिलने पर, वह उन्हें अपने घर ले गया और एक शानदार दावत देकर उन्हें मनाने की उम्मीद करने लगा। उसने उन्हें उसके साथ खाने, पीने और आनंद मनाने के लिए कहा। लेकिन उन्होंने जवाब दिया:

'हम तो स्वर्गीय भोजन और पेय से पोषित होते हैं। जो कोई भी इन्हें खाता-पीता है, वह कभी भूखा या प्यासा नहीं होगा, और सदैव आनंदित रहेगा।'

एफ्रोडिसियिस, उनके इनकार को अपने लिए अपमान समझकर, बोला:

'कल मैं तुम्हारे लिए वह दावत तैयार करूँगा जिसकी तुम तलाश कर रहे हो – सबसे क्रूर मृत्यु।'

जब सुबह हुई, तो एफ्रोडिसियिस ने दो चक्की के पाट लाने का आदेश दिया और उन्हें संतों के गले में डालकर, उनका मज़ाक उड़ाने के लिए पूरे शहर में घसीटा। जब संतों को शहर में घसीटा जा रहा था, तो उन्मत्त भीड़ के कई ' ' ने पत्थर उठाकर घसीटे जा रहे लोगों पर फेंके, जबकि अन्य, उनकी लंबी और दुखद पीड़ा को देखकर, उन्हें अमर समझकर ईसा मसीह की ओर मुड़ गए। इसके बाद, राजा के आदेश से, संतों को आजीवन कारावास की सज़ा दी गई, इस धारणा पर कि वे अपनी लंबी कैद से थककर मर जाएँगे। संत कई वर्षों तक जेल में रहे, जब तक कि उनके अट्ठाइस वर्ष के कष्टकाल का अंत निकट नहीं आ गया; यह बात ईश्वर द्वारा संत क्लेमेंट को तब प्रकट की गई थी जब वह अभी भी तारसस में थे और उन्हें राजा के सामने पेश किया जा रहा था। मसीह के कई पवित्र स्वीकारकर्ताओं ने अपने परीक्षण शुरू करने के बाद ही अपना मार्ग पूरा कर लिया था, जबकि इन दोनों शहीदों ने अपनी शहादत जारी रखी और अपने कार्य पूरे किए।

राजा मैक्सिमियिन के बाद, मैक्सिमिनिस सिंहासन पर बैठा[1385] । उस समय, बहुत क्रूरता से ईसाइयों का रक्त बहाया गया। जेल के रक्षक, क्लेमेंट और अगाथांजेलस की रखवाली करते-करते थक गए थे, जिन्हें बहुत लंबे समय से जेल में रखा गया था, वे राजा मैक्सिमिनिस के पास गए और कहा:

'इन दो कैदियों के बारे में आपका क्या आदेश है, जिन्हें कई वर्षों से कई राजाओं और शासकों ने, और वास्तव में सबसे क्रूर यातनाओं के सबसे सूक्ष्म उपकरणों से यातनाएँ दी हैं, और फिर भी वे नहीं मरे हैं?' वे अभी भी जीवित हैं और बेड़ियों में जकड़े हुए हैं। यद्यपि उन्हें जीवन के लिए आवश्यक कोई देखभाल और ध्यान नहीं मिलता, फिर भी वे स्वस्थ हैं और उनका रंग साफ है। हमें विश्वास है कि वे अमर हैं।"

इसके जवाब में, राजा मैक्सिमिनिस ने पहले अपने ही देवताओं को कई शर्मनाक शब्दों से गाली दी, और उन पर यह आरोप लगाया कि वे कैदियों का सांसारिक जीवन छीनने में शक्तिहीन थे। फिर उसने उनके बारे में पूछा: वे कौन थे और कहाँ से आए थे। यह जानकर कि वे गालाटिया के, अंकीरा नगर के थे, उन्होंने उन्हें तुरंत वहीं राजकुमार लूसियस के पास भेजने का आदेश दिया, जो उस समय अंकीरा में सेनापति था। संत यह सुनकर बहुत प्रसन्न हुए, क्योंकि संत क्लेमेंट अपने गृह नगर में अपने तपस्यापूर्ण जीवन का समापन करना बहुत चाहते थे। उन्होंने इसके लिए प्रभु मसीह से प्रार्थना की और जो उन्होंने माँगा था, वह उन्हें मिल गया। जब संतों को एन्सीरा शहर लाया गया और पूछताछ के लिए प्रिंसि लूसियस के सामने पेश किया गया, तो उन्होंने तुरंत उनकी पूछताछ शुरू नहीं की, बल्कि पहले उन्हें कठोर कैद में डाल दिया; साथ

[1385] सम्राट मैक्सिमिनिस डाज़ा ने 305 से 313 तक रोमन साम्राज्य के पूर्वी हिस्से पर शासन किया, शुरुआत में मैक्सिमियिन II गैलेरियस के साथ, जिनकी मृत्यु 311 में हुई।

ही, उसने आदेश दिया कि उनके पैरों को बेड़ियों में जकड़ा जाए, उनके गलों, बाहों और पूरे शरीर पर लोहे की बेड़ियाँ डाल दी जाएँ, और उन पर भारी पत्थर लटका दिए जाएँ, ताकि वे न तो अपने शरीर को हिला सकें और न ही अपने पैरों को फैला सकें। अगले दिन, उसने आदेश दिया कि पवित्र शहीदों में से एक, अगथानगेल, को अदालत के सामने लाया जाए। पहले, उसने लंबे समय तक संत की चापलूसी करने की कोशिश की, उसे अपनी मूर्तिपूजा में शामिल करने का प्रयास किया; लेकिन जब उसने उनकी दृढ़ आस्था को देखा, तो उसने उन्हें यातना देना शुरू कर दिया: उसने आग में तपे हुए लोहे के छल्लों से उनके कान छेद दिए, जलती हुई मोमबत्तियों से उनकी पसलियों को जलाया और अंत में, तलवार से उनका पवित्र सिर काट दिया। शहीद के पवित्र शरीर को उपरोक्त धन्य सोफिया, जो क्लेमेंट की माँ के नाम से जानी जाती थीं, ने ले लिया; उन्होंने इसे शुद्ध लंगोटों में लपेटा, सुगंधित तेलों से अभिषेक किया, और इसे एक गुफा में रख दिया जहाँ एक छोटा सा ईसाई चर्च था। धर्मद्रोहियों के हाथों हुए कड़े उत्पीड़न के कारण, विश्वासियों के पास एक उचित चर्च नहीं हो सका, लेकिन उन्होंने गुफा में एक छोटा सा चर्च बनाया और वहाँ दिव्य सेवाओं का आयोजन किया। इस प्रकार, पवित्र शहीद अगथेंजेल ने विभिन्न उत्पीड़क - दो सम्राट, डायोक्लेटियन और मैक्सिमियन, तथा राज्यपाल एग्रिप्पीनस, क्यूरिसियस, डोमिटियस, सेरडॉन, मैक्सिमिस, एफ्रॉडिसियस और लूसियस - के हाथों यातनाएँ सहन कीं। उन्होंने 5 नवंबर को अपनी शहादत पूर्ण की।

अपने शिष्य और साथी पीड़ित, पवित्र शहीद अगाथांजेलस की मृत्यु का समाचार पाकर संत क्लेमेंट परम आनंद से भर गए, क्योंकि उन्होंने उसे स्वयं से पहले एक मध्यस्थ के रूप में ईश्वर के पास भेजा था। ज़मीन पर लोट कर और अपने बंधनों के बोझ तले दबे हुए, उन्होंने संत अगाथांगेलस के लिए ईश्वर का गहराई से धन्यवाद किया, कि ईश्वर उन्हें अपना सांसारिक जीवन पूरा करने, अपने विश्वास को बनाए रखने, सभी यातनाओं को साहस के साथ सहने, और स्वर्ग में आनंदित होने वाले पवित्र शहीदों में गिने जाने के योग्य समझा। उन्होंने अपने लिए भी प्रार्थना की, कि ईश्वर उन्हें अंत तक सहन करने, शत्रु के धूर्त सिर को कुचलने, और विजयपूर्वक प्रतीक्षित स्वर्गीय निवासों में प्रवेश करने की शक्ति प्रदान करें।

संत अगथेंजेल की फांसी के बाद, यातना देने वाले ल्यूक ने आदेश दिया कि संत क्लेमेंट को उसकी कोठरी में प्रतिदिन यातना दी जाए। यातना इस प्रकार थी: शहीद को तेज टहनियों से जड़ी छड़ों से चेहरे और सिर पर मारा जाता था, जिससे संत के शरीर पर प्रतिदिन एक सौ पचास घाव हो जाते थे। इस प्रकार संत को 5 नवंबर से 5 जनवरी तक यातनाएँ दी गईं। दिन के दौरान संत के घाव इतने गहरे हो जाते थे कि उसकी पूरी कोठरी उसके खून से लथपथ हो जाती थी, जबकि रात में पवित्र दूतों के माध्यम से उस पर ईश्वर की कृपा होती थी, जो उसके घावों को भर देती थी। मूर्तिपूजक बहुत हैरान थे: वे रोज़ाना आते और उसे अछूता पाते, तो वे चकित हो जाते और उस पर और भी क्रूरता से प्रहार करते; वे उसके सिर और चेहरे पर एक सौ पचास तक ज़ोरदार और गहरे प्रहार करते थे। जैसे-जैसे प्रभु के प्रकटोत्सव का पर्व नज़दीक आ रहा था, राजा की ओर से अलेक्जेंडर नाम का एक और राज्यपाल अंकीरा शहर में आया, जो लूसियस की जगह ले रहा था, जिसे राजा के दरबार में वापस बुला लिया गया था। जैसे ही रात हुई, जब एपिफेनी के पर्व के लिए पूरी रात जागरण होना था, धन्य सोफिया ने ईसाइयों को, साथ ही अपने सेवकों और उन युवकों और युवतियों को, जिन्हें उसने पाला था, इकट्ठा किया और संत क्लेमेंट से मिलने के लिए उनके साथ कालकोठरी में गई। ईश्वर, जो उन लोगों के इरादों का समर्थन करते हैं जो उन पर विश्वास करते हैं, ने पहरेदारों को गहरी नींद में सुला दिया। केवल एक पहरेदार जागा हुआ था, लेकिन वह एक गुप्त ईसाई था; उसने ही आए हुए लोगों के लिए जेल की कोठरी का दरवाज़ा खोला। बुद्धिमान सोफिया के साथ प्रवेश करने के बाद, विश्वासियों ने संत को उनकी बेड़ियों से मुक्त किया और उन्हें गुफा में स्थित चर्च में ले गए। वहाँ उन्होंने परमेश्वर का धन्यवाद करते हुए, आनंदपूर्वक उत्सव मनाया। जैसे ही दिन चढ़ा, संत क्लेमेंट ने दैवीय अनुष्ठान किया, और सभी ने अपने चरवाहे के पवित्र हाथों से पवित्र रहस्यों को प्राप्त किया। ईश्वर के बिशप ने इकट्ठे हुए लोगों को एक लंबा उपदेश दिया, जिसमें उन्होंने अपनी मृत्यु की भविष्यवाणी की। उन्होंने भविष्यवाणी की कि उन्हें जल्द ही मार दिया जाएगा, और उन्हें इन शब्दों से सांत्वना दी:

'भइयों, डरो मत; तुम में से कोई भी नष्ट नहीं होगा या हानि नहीं पहुँचेगा। तुम में से कोई भी भेड़ियों द्वारा नहीं खाया जाएगा; केवल मैं, दो पुरोहितों के साथ, महान महापुजारी मसीह के लिए अपनी आत्मा अर्पण करूँगा, जिन्होंने हमारे लिए अपनी आत्मा अर्पण की।'

उन्होंने यह भी भविष्यवाणी की कि उत्पीड़न जल्द ही समाप्त हो जाएगा, मूर्तिपूजा मिट जाएगी और पवित्र विश्वास फल-फूल उठेगा, क्योंकि स्वर्ग का राजा पृथ्वी पर एक ऐसे राजा को उठाएगा, जो स्वयं पवित्र बपतिस्मा से

प्रकाशति होकर रोम साम्राज्य के सभी प्रांतों को प्रकाशति करेगा और एक नया रोम स्थापति करेगा, जसिके बाद धर्मपरायणता सर्वत्र चमक उठेगी। अपनी भेड़-बकरयिों को यह भवष्यिवाणी करके, पवत्रि शहीद क्लेमेंट ने अपने श्रोताओं के हृदय को प्रसन्न कयि। फरि वह अपनी माता सोफयि के घर गए, जन्हिोंने चर्च में उपस्थति सभी लोगों को अपने घर आमंत्रति कयि था और उन्हें एक शानदार दावत दी। संत क्लेमेंट 23 जनवरी तक उनके घर में रहे। इस पूरे समय, राज्यपाल अलेक्जेंडर लोगों और प्रशासन से संबंधति वभिन्नि मामलों को देख रहे थे। अंत में, उसे यह सूचना मलिी कि ईसाई बशिप क्लेमेंट रात के दौरान जेल से भाग गए थे। तब उनकी तलाश शुरू की गई। जब रवविार की सुबह हुई, तो ईश्वर के बशिप, संत क्लेमेंट, दैवीय पूजा का अनुष्ठान करने के लिए गुफा चर्च गए। दुष्टों को यह पता चल गया और उन्होंने गवर्नर को सूचति कयि। गवर्नर तुरंत स्वयं सैनकिों के साथ नकिल पड़ा और चर्च में प्रवेश करते ही उसने संत क्लेमेंट को ईश्वर के वेदी के सामने खड़ा हुआ और रक्तहीन बलदिान अर्पति करते हुए पाया। गवर्नर ने एक सैनकि को अपनी तलवार खींचने और बशिप की गर्दन पर पीछे से वार करने का आदेश दयि। जब सैनकि ने अपनी तलवार मारी, तो पवत्रि शहीद क्लेमेंट का सरि दव्यि वेदी और तैयार उपहारों पर गरि पड़ा[1386] । इस प्रकार, रक्तहीन बलदिान और पूरी पवत्रि वेदी उनके रक्त से रंजति हो गई। सभी वश्विासी बड़े भय और आतंक से भर गए: वे भी मृत्यु की आशंका कर रहे थे; फरि भी वे अपने लिए नहीं, बल्कि अपने चरवाहे के लिए दुखी हुए, और इस प्रकार वे जोर-जोर से रोने लगे। राज्यपाल तुरंत बाहर चला गया, उसने इकट्ठा हुए लोगों को कोई नुकसान नहीं पहुँचाया, और सेंट क्लेमेंट के साथ केवल दो पुरोहतिों का सरि कलम कयि गया। उनके नाम क्रस्टिोफर और चैरटिन थे; दोनों डीकन थे। धन्य सोफयि ने, आँसुओं और आनंद के साथ, अपने प्रयि दत्तक पुत्र के सम्मानति शरीर को दफनाने के लिए तैयार कयि, जो वास्तव में उनके आध्यात्मकि पति और चरवाहे थे। वह इस लिए रोई क्योंकि उन्होंने उन्हें पृथ्वी पर खो दयि था, और इस बात पर प्रसन्न हुई कि कष्टों का मार्ग उत्साहपूर्वक पूरा करने के बाद, वह प्रभु मसीह के पास चले गए थे। संत को 23 जनवरी को, सोफयि और वहाँ मौजूद संपूर्ण ईसाई समुदाय के उत्साह के कारण, पवत्रि शहीद अगथानगेलस की कब्र के पास, गुफा चर्च में, दोनों डकिन के साथ सम्मानपूर्वक दफनाया गया।

इस प्रकार पवत्रि पुरोहति-शहीद क्लेमेंट ने अपनी अठाईस वर्षों की दीर्घकालीन पीड़ा की परीक्षा समाप्त की, जसिमें उन्होंने मसीह के लिए अनगनित और अकथनीय यातनाएँ सहन कीं। ग्रीक इतहिासकार नकिफिोरस[1387] उनके बारे में इस प्रकार कहते हैं: 'संसार की रचना के समय से ही, उन सभी में से जन्हिोंने कसिी भी प्रकार की यातना द्वारा ईश्वर के लिए पीड़ा सहन की, अर्थात्: आग, लोहे, पत्थरों द्वारा, पेड़ से लटकाए जाने द्वारा, साथ ही उन लोगों में से जन्हिोंने सर्कस में जंगली जानवरों से लड़ाई लड़ी या लंबे समय तक बेड़यिों में बंदी बनाकर यातना सहनी, या पानी में वभिन्नि प्रकार की मृत्यु के साधनों से मारे गए, पृथ्वी पर और हवा में, या कड़ी ठंड से मारे गए, या झुलसा देने वाली गर्मी से , या कसिी अन्य प्रकार के यातना और नष्पिादन के माध्यम से अपनी जान गंवा बैठे – संत क्लेमेंट और अगाथांगेलस ने अपने दुखों में ऐसे सभी शहीदों से कहीं अधकि उत्कृष्टता प्राप्त की। उन्होंने ग्यारह उत्पीड़क के हाथों वभिन्नि शहरों में यातनाएँ झेलीं: एन्कयि में गलाटयि के राज्यपाल डोमटियिन के हाथों, रोम में सम्राट डायोक्लेटयिन के हाथों, नकिोमेडयि में कमांडर एग्रप्पिीनस के हाथों, और फरि एन्कयि में राजकुमार क्यूरसियिस के हाथों; अमसिुस में शाही राज्यपाल डोमटियिस के हाथों; तारसस में सम्राट मैक्समियिन के हाथों, और वहाँ राज्यपाल सेकर्डोन के हाथों, और बाद में राजकुमार मैक्समिस और कुलीन अफ्रोडसियिस के हाथों; फरि एन्कयि में राजकुमार लूसयिस के हाथों; और अंत में, राज्यपाल अलेक्जेंडर के हाथों। उस समय के सभी यातना देने वालों ने उसे एक से दूसरे के पास भेजा, मानो वह पहले कभी न देखा गया कोई चमत्कार हो, क्योंकि इतने वर्षों तक और इतनी वभिन्नि प्रकार की क्रूर यातनाओं के बावजूद, न तो वह और न ही उसका शष्यि अगथान्गेलस पराजति या डरा-धमकाया जा सका।' उनके पवत्रि नाम की महमिा के लिए, परमेश्वर, हमारे प्रभु यीशु मसीह ने उन्हें बल दयि; उन्हें, पति और पवत्रि आत्मा के साथ, सारी सृष्टि से महमिा, सम्मान और आराधना मलि। आमीन।

[1386] संत क्लेमेंट का 23 जनवरी 312 को नधिन हो गया। उनके अवशेष लंबे समय तक कॉन्स्टेंटनिोपल में रहे, जहाँ उनके नाम पर दो चर्च समर्पति कए गए थे। नोवगोरोड के स्टीफन (1342 में) और हएिरोडीकन ज़ोसमिा (1420 में) ने कॉन्स्टेंटनिोपल में कॉन्स्टेंटनि के मठ में उनके अवशेष देखे।
[1387] नकिफिोरस कैलस्टिोस – 14वीं सदी के एक ग्रीक चर्च-इतहिासकार।

ट्रोपारयिन, स्वर 4:

हे पवत्रिता की बेल और कष्टों के तने, परम पवत्रि और सदा खलिने वाले फूल और ईश्वर-प्रदत्त फल, आप वशि्वासयिों को प्रदान कएि गए: परन्तु शहीदों के सह-पीड़क और अपने सह-याजकों के आध्यात्मकि नेता के रूप में, मसीह ईश्वर से प्रार्थना करें कि हमारी आत्माएं बच सकें।

कॉन्टाकयिन, स्वर 4:

हे परम दयालु संत पौलनिस, आप मसीह की बेल की सम्माननि टहनी, बहु-पीड़ति और सर्व-स्तुत्य क्लेमेंट थे; प्रकट होकर, आपने पीड़तिों के साथ पुकारा: 'हे मसीह, आप शहीदों का उज्ज्वल आनंद हैं।'

नोला के बशिप, दयालु संत पॉलनिस का जीवन

23 जनवरी को स्मरणोत्सव

ईश्वर-प्रसन्न पौलनिस अक्वटिेन के मूल नविासी थे[1388] । अपने सांसारकि जीवन के दौरान, वे रोमन सम्राट के अधीन वरषि्ठ सेनटर्स में से एक थे। उन्होंने एक धार्मकि जीवन जयिा और ईश्वर का भय माना[1389] । उनकी पत्नी, तारासयिा नाम की, वशि्वास और सद्गुण में अपने पतकि े समान थीं और धार्मकि भी थीं। उनके अपने कोई संतान नहीं थी, इसलएि उन्होंने बेसहारा अनाथों को आश्रय दयिा और उनकी देखभाल अपने बच्चों की तरह की, उन्हें भोजन खलिाया और ईश्वर का भय सखिाया। दनि-प्रतदिनि वे हर सद्गुण में आगे बढ़ते गए और गरीबों को उदारतापूर्वक दान देते थे। अंत में, ईश्वर को प्रसन्न करने की इच्छा से, उन्होंने स्वयं भखिारी बनने का वकिल्प चुना। उन्होंने अपनी वशिाल संपत्तकि ो बेच दी और, सब कुछ जरूरतमंदों में बाँटने के बाद, नर्धिनों की तरह स्वैच्छकि गरीबी में रहने लगे, और अपनी आशा ईश्वर की व्यवस्था पर रखी। एक बार, जब वे बहुत नर्धिन हो गए थे, तो एक भखिारी उनसे भीख माँगने आया; लेकनि उनके पास एक रोटी का टुकड़ा छोड़कर कुछ भी नहीं बचा था। धन्य पावलनि ने अपनी पत्नी को सलाह दी कि वह यह आखरिी रोटी भी भखिारी को दे दे।

उन्होंने कहा, 'भगवान हमारी मदद करेंगे, और हम ईश्वर के लएि माँगने वाले को देने में कंजूसी नहीं करेंगे।'

हालाँकि, तारासयिा ने वह ब्रेड नहीं दयिा, बल्कि उसे अपनी ज़रूरतों के लएि रख लयिा, क्योंकि उस दनि उनके पास दोपहर के भोजन के लएि कुछ भी नहीं था। उसी क्षण, धन्य पावलनि के एक धनी मत्रि द्वारा भेजा गया एक संदेशवाहक यह सूचति करने के लएि अंदर आया कि उस मत्रि ने समुद्र मार्ग से उनके लएि बहुत सारा भोजन भेजा था, लेकनि ठीक वही भोजन ले जाने वाली आखरिी नाव लहरों में डूबकर खो गई थी। यह सुनकर, पावलनि ने अपनी पत्नी से कहा:

'देखो, अगर तुमने अपना आखरिी रोटी का टुकड़ा कसिी भखिारी को दे दयिा होता, तो भोजन से लदा वह आखरिी जहाज समुद्र में डूबा नहीं होता। ईश्वर कई लोगों की संपत्तकि ो केवल उनकी कंजूसी के कारण ही नष्ट कर देता है।'

इसके बाद, न केवल अपनी संपत्तऔि र सांसारकि वैभव बल्कि इस दुनयिा की सभी चतिाओं को भी पीछे छोड़कर, वे रोम से कैंपैनयिा क्षेत्र[1390] के लएि चले गए, क्योंकि उन्होंने अपनी आजीवकिा के लएि वहाँ एक छोटी सी संपत्तरि खी हुई थी। वे पवत्रि शहीद फेलसिति ा के मकबरे के पास, नोला नामक एक शहर में बस गए[1391] , और वहाँ उन्होंने संसार से अलग-थलग रहकर प्रभु की सेवा की। लेकनि पॉलनिा का सद्गुण लंबे समय तक छपिा नहीं रह सका। उसके लएि, उसे नोला के चर्च का पद ग्रहण करने के लएि बाध्य होना पड़ा, और अपनी इच्छा के वरिुद्ध उसने बशिप का पद स्वीकार कयिा[1392] । उसने अपने झुंड का शासन धार्मकिता और अथक परशि्रम से कयिा, एक वफादार और बुद्धमिान प्रबंधक

[1388] एक्वटिेन – प्राचीन गॉल (आधुनकि फ्रांस) का पश्चमिी भाग।

[1389] संत पॉलनिस का 389 में, 26 वर्ष की आयु में बपतस्मिा हुआ था।

[1390] कैम्पेनयिा – मध्य इटली का एक प्राचीन क्षेत्र, रोम के दक्षणि में, टायर्रेनीयन सागर के पास।

[1391] नोला कैम्पेनयिा के सबसे पुराने शहरों में से एक है और आज भी मौजूद है।

[1392] यह वर्ष 409 का था। इससे पहले, वह स्पेन के बार्सलिोना में (393 से) एक पुरोहति (प्रेस्बटिर) थे।

की तरह, *'जसिे मालकि ने अपने सेवकों पर नयिुक्त कयिा है'* (लूका 12:42)[1393] । उन्होंने अपनी मंडली का पोषण न केवल आध्यात्मकि आहार से कयिा, उन्हें सखिाया और नरि्देशति कयिा, पापयिों को पश्चाताप की ओर ले गए और प्रत्येक को सत्य के मार्ग पर लाए, बल्कि उन्होंने उनके भौतकि पोषण और सभी आवश्यकताओं का भी ध्यान रखा – गरीबों और बेसहारा लोगों, अनाथों और वधिवाओं को भोजन और वस्त्र प्रदान कएि, और बंदयिों को रहिा करवाकर स्वतंत्रता दलिाई।

उन वर्षों में, ईश्वर की अनुमति से, वैंडल्स[1394] ने इटली पर आक्रमण कयिा और पूरे देश पर वजिय प्राप्त की। वे कैम्पेनयिा क्षेत्र में भी आए, जहाँ नोला शहर स्थति था। कई गाँवों और शहरों को तबाह करने के बाद, वे पॉलनिस के धर्मप्रांत में घुस गए, जहाँ उन्होंने वही करतब कएि: उन्होंने बहुत से लोगों को बंदी बना लयिा और उन्हें समुद्र पार करके अपने अफ्रीकी मूलभूमि ले गए। उस समय, धन्य बशिप पॉलनिस ने बंदयिों को छुड़ाने और उस बर्बर आक्रमण से गरीबी में धकेल दएि गए लोगों की सहायता करने के लएि अपने धर्मप्रांत में अपनी सारी संपत्ति दान करना शुरू कर दयिा, यहाँ तक कि उनके पास एक भी वस्तु नहीं बची। जब वंडल योद्धा, जो क्रूर और अमानवीय थे, ने ईसाइयों को यातना दी, यह मांग करते हुए कि वे जमीन में छपिे खजाने का खुलासा करें, तो संत पॉलनिस ने अपने वश्विास से भरे हृदय की गहराई से उनके प्रति सहानुभूति व्यक्त की और ईश्वर से पुकार लगाई: 'हे प्रभु, सोना-चांदी के लएि मुझे यातनाएँ दी जाएँ, यह स्वीकार है। क्योंकि आप जानते हैं कि मैंने अपना धन कहाँ छपिाया है – अर्थात् भखिारयिों और आपके दीन सेवकों के हाथों में।'

एक दनि, एक गरीब वधिवा उसके पास आई, और रोते हुए बोली:

'मेरे बेटे को वांडल्स ने बंदी बना लयिा है, और मुझे पता चला है कि उसे अफ्रीका में वांडाल राजा रगिा के दामाद ने बंदी बनाया है। मैं आपकी पवत्रिता से वनिती करती हूँ: मुझे अपने बेटे को छुड़ाने का साधन दें, जो मेरी जीवकिा और मेरे बुढ़ापे का सहारा है।'

ईश्वर के उस पुरुष ने उस याचकिा को देने के लएि कुछ खोजने की आशा में चारों ओर ध्यान से देखा, लेकनि जब उसे स्वयं के सवि कुछ भी नहीं मलिा, तो उसने उस दरद्रि वधिवा से कहा:

'स्त्री, मेरे पास सचमुच तुम्हें देने के लएि सवािय अपने आप के कुछ भी नहीं है। मुझे ले लो; मैं स्वयं को तुम्हारी सेवा में एक दास के रूप में समर्पति करता हूँ। मुझे बेच दो और अपने बेटे को छुड़ा लो; जाओ, और अपने बेटे के बदले मुझे दासत्व में दे दो।'

उस महलिा ने, ऐसे व्यक्ति के मुँह से ये शब्द सुनकर, सोचा कि यह दया के कार्य से अधकि एक उपहास था। लेकनि वह, वाक्पटु और बुद्धमिान होने के कारण, उस संदेह करने वाली महलिा को अपनी तर्कसंगति से यह वश्विास दलिाने में सफल रहा कि वह उसका मज़ाक उड़ाने के लएि नहीं, बल्कि उसके साथ पूरी तरह से ईमानदारी से बात कर रहा था। उसने उसे अपने शब्दों पर भरोसा करने और अपने बेटे को आज़ाद कराने के लएि बशिप को गुलामी में बेचने से न डरने के लएि मना लयिा। फरि वे दोनों अफ्रीका के लएि रवाना हुए और वान्डल्स तक पहुँचकर, उस राजकुमार—जो राजा का दामाद था—के द्वार पर रुके, जसिके यहाँ उस गरीब वधिवा का बेटा रह रहा था। जब राजकुमार घर से बाहर चला गया, तो वधिवा उसके पैरों पर गरि पड़ी और आँसू भरी आँखों से उससे अपने बेटे को रहिा करने की वनिती करने लगी। लेकनि वह बर्बर, अहंकारी होने के कारण, न केवल उसके बेटे को रहिा करने से इनकार कर दयिा, बल्कि उसकी वनिती सुनने तक के लएि भी तैयार नहीं हुआ। तब वधिवा ने ईश्वर के सेवक, पालीनस की ओर इशारा करते हुए कहा:

'मैं अपने पुत्र के बदले इस आदमी को अर्पति करती हूँ; केवल दया दखिाओ और मेरे पुत्र को जाने दो, क्योंकि वह मेरा एकमात्र पुत्र है।'

राजकुमार ने परमेश्वर के मनुष्य को ध्यान से देखकर उससे पूछा:

'तुम क्या काम करते हो?'

संत पावलनि ने उत्तर दयिा:

'मैं कोई धंधा नहीं जानता, पर मैं बगी़चे की देखभाल में नपिुण हूँ।'

[1393] यह तुलना उद्धारकर्ता की उस वफादार और समझदार प्रबंधक की दृष्टांत से ली गई है जो अपने दासों की देखभाल करता है और हमेशा अपने स्वामी को हसिाब देने के लएि तैयार रहता है।

[1394] वैंडल एक जर्मनकि जनजाति थी जो शुरू में मध्य जर्मनी में, बाद में दक्षणिी स्पेन में, और फरि उत्तरी अफ्रीका में रहती थी, जहाँ से उन्होंने पड़ोसी तटीय देशों पर वनिाशकारी छापे मारे

यह सुनकर राजकुमार बहुत प्रसन्न हुआ, क्योंकि उसे ठीक ऐसे ही एक व्यक्ति की आवश्यकता थी, और उसने अपने पुत्र को वधिवा के हवाले कर दिया। वह अपने पुत्र के साथ घर लौट आई, जबकि संत पावलनि, काम पर बने रहने के बाद, बगीचों का प्रभार संभाल लिया और बड़ी लगन से अपने कर्तव्यों का पालन करने लगा। उसका स्वामी अक्सर बगीचे में आने लगा और अपने माली से वभिन्नि वषियों पर बातचीत करने लगा। उसके बुद्धमिानी भरे और व्यापक ज्ञान को देखकर, वह उससे हर तरह के वषियों पर बातचीत करता था, और अक्सर अपने घर-बार और दोस्तों को छोड़कर अपने नौकर की बातों का आनंद लेने नकिल आता था। धन्य पावलनि हर दनि उसके दोपहर के भोजन के लिए सब्जी के खेत से वभिन्नि प्रकार की सब्जयिाँ लाता था और उसके हाथों से रोटी पाकर अपने काम पर लौट जाता था।

एक दनि, जब उनके स्वामी उनसे बात कर रहे थे, तो संत पावलनि ने उनसे कहा:

'देखो, तुम कहीं दूर जाने वाले हो। इस बीच, तुम्हें वान्डाल साम्राज्य को संभालने की तैयारी करनी चाहिए, क्योंकि यह राजा, तुम्हारे ससुर, की अचानक और अप्रत्याशति मृत्यु हो जाएगी। अगर तुम दूर रहोगे, तो तुम्हारी अनुपस्थतिि में कोई और राजसी सत्ता पर कब्जा कर लेगा।'

राजकुमार ने अपने माली से ये बातें सुनकर उन्हें अपने तक नहीं रखा, बल्कि जाकर राजा को बता दिया, क्योंकि वह उससे पूरी तरह वफादार था और इसी कारण राजा उसे सबसे अधकि प्यार करता था। राजा संदेह में था और बोला:

'मैं उस आदमी को देखना चाहता हूँ जसिके बारे में आप बात कर रहे हैं।'

राजा के दामाद ने उत्तर दिया:

'मैं उसे तुरंत आदेश दूँगा कि वह आपके दोपहर के भोजन के लिए बगीचे से सब्जयिाँ लाए, और आप उसे देखेंगे।'

जब राजा भोजन करने के लिए बैठे, तो पावलनि अपने स्वामी की आज्ञा पर शाही भोजन के लिए सब्जयिाँ लेकर आ गया। जब राजा ने उसे देखा, तो वह तुरंत काँप उठा और अपने स्वामी—अपने दामाद—को बुलाकर, वह राज़ उससे बता दिया जसिे वह उससे छपिाना चाहता था।

उसने कहा, 'जो कुछ तुमने इस आदमी से सुना है, वह सचमुच सच है, क्योंकि कल रात सपने में मैंने कई राजकुमारों को सहिासन पर बैठे और मेरा न्याय करते देखा। वह भी उन न्यायाधीशों में से एक था। उनके नर्णिय से, मेरा राजदंड और जो अधकिार मुझे कभी मलिा था, वह मुझसे छीन लिया गया। उससे पूछो कि वह कौन है।' मुझे नहीं लगता कि यह आदमी कोई साधारण व्यक्ति है, क्योंकि मैंने उसे बहुत सम्मान की स्थतिि में देखा था।

तब राजा के दामाद ने धन्य पावलनि को एक तरफ ले जाकर उससे पूछा:

'तुम कौन हो?'

परमेश्वर के पुरुष ने उससे उत्तर दिया:

'मैं आपका सेवक हूँ, जसिे आपने वधिवा के बेटे के बदले में अपना लिया था।'

हालाँकि राजकुमार ने उससे सवाल करना जारी रखा, यह जानना चाहता था कि वह अब क्या बन गया था, बल्कि यह कि वह अपनी देश में क्या था। उसने संत से वनिती की और गंभीरता से मांग की कि वह अपना रहस्य उससे न छपिाए, बल्कि पूरा सच बताए। ईश्वर के पुरुष, प्रश्नों से घबराकर और अपनी कसम तोड़ने में असमर्थ, ने कहा कि वह एक बशिप था। यह सुनकर उसका स्वामी बहुत डरा और वनिम्रता से उससे कहा:

'तुम मुझसे जो चाहो मांगो, और फरि धनी उपहारों के साथ अपने देश लौट जाओ।'

ईश्वर के संत, पावलनि, ने उससे कहा:

'मैं आपसे एक ही कृपा चाहूँगा जो आप दे सकते हैं: मेरे शहर और मेरे देश के उन सभी बंदयिों को, जन्हिें यहाँ लाया गया है, मुक्त कर दें और उन्हें उनकी मातृभूमि वापस भेज दें।'

तत्काल, राजकुमार के उत्साह से, कैम्पेनयि क्षेत्र से बंदी बनाए गए ईसाइयों को पूरे अफ्रीका में ढूंढकर संत पॉल के पास लाया गया। पवत्रि चरवाहे को सम्मान के साथ वदिा किया गया, अपने झुंड के सभी आध्यात्मकि भेड़ों के साथ, साथ ही कई समृद्ध उपहारों और प्रचुर मात्रा में भोजन-सामान के साथ। वे जहाज़ से अपने स्वदेश लौटे, आनंद और प्रसन्नता से भरकर। कुछ दनिों बाद, संत की भवष्यिवाणी के अनुसार, वैंडल राजा रगिा की मृत्यु हो गई, और उसके दामाद ने उसकी जगह सहिासन संभाला।

इस प्रकार, संत पॉलनिस ने स्वयं को दासता में समर्पति करके, प्रभु मसीह का अनुसरण करते हुए, जो दास के रूप में प्रकट हुए और मानव जाति को शैतान की दासता से मुक्त किया, कई लोगों को दासता से स्वतंत्रता की ओर ले गए। वैंडल्स द्वारा दासता से मुक्त होने के बाद, संत पॉलनिस कई वर्षों तक जीवति रहे; और एक अच्छे चरवाहे की तरह,

अपनी भेड़ों के लिए अपना जीवन त्यागते हुए, उन्होंने बहादुरी से अपने सुपुर्द किए गए झुंड की देखभाल की और, कोई कसर न छोड़ते हुए, गरीबों पर कई दान के कार्य किए। फिर वे मसीह, प्रधान चरवाहे और अपने प्रभु[1395] के पास चले गए, जिसे वे अब सौ गुना फल प्राप्त करते हैं और अनंत जीवन का वारिस बने हैं, और युगानुयुग उनकी महिमा करते हैं। आमीन।

कोस्ट्रॉमा के हमारे पूजनीय पिता गेनाडियस का जीवन[1396]

स्मरणोत्सव 23 जनवरी को

आदरणीय जेनाडियस, जिनका पवित्र बपतिस्मा में ग्रेगरी नाम रखा गया था, जॉन नामक एक बोयार और उनकी पत्नी हेलेना के एकमात्र पुत्र थे, जो लिथुआनिया की भूमि[1397] में रहते थे। बचपन से ही, ग्रेगरी को परमेश्वर के चर्च में जाने का शौक था और वह लगातार पुरोहित वर्ग के बीच रहता था, सभी सेवाओं में शामिल होता था। उनके माता-पिता अपने बेटे के व्यवहार से नाखुश थे और उन्होंने उससे कहा:

'तुम ऐसा व्यवहार क्यों करते हो? क्या तुम आख़िरकार कोई गिरिजाघर के चौकीदार हो? तुम लोगों के सामने हम सबकी बेइज्ज़ती करवा रहे हो। हमारे साथ चर्च जाना तुम्हारे लिए काफी है; बाकी समय तुम्हें घर पर रहकर अपने साथियों के साथ बिताना चाहिए; और सबसे बढ़कर, तुम्हें अपनी अच्छी नींद से खुद को वंचित नहीं करना चाहिए।'

लेकिन ग्रेगरी ने उत्तर दिया:

'मेरे प्यारे माता-पिता, मुझसे ऐसी बातें करके मुझे परेशान न करें: मैं बचकाने खेलों में नहीं पड़ना चाहता। ईश्वर वही करता है जो वह चाहता है, और मनुष्य वही करता है जो वह कर सकता है; हालाँकि, पवित्र आत्मा हर व्यक्ति को सच्चे मार्ग पर ले जाता है।'

तब से, ग्रेगरी इस बात पर विचार करने लगा कि वह रूसी भूमि पर कैसे जाए और वहाँ किसी पवित्र मठ में बसकर स्वयं को पुण्य कार्यों के लिए समर्पित कर दे।

और इस प्रकार, एक अनुकूल क्षण का लाभ उठाकर, वह अपने माता-पिता से चल पड़ा, उसने अपने सुंदर कपड़े उतारकर गरीबों को दे दिए, और बदले में उनसे कुछ फटे-पुराने कपड़े ले लिए और उन्हें पहन लिया।

लिथुआनिया की भूमि से होकर, रेगिस्तानों, गांवों और कस्बों से एक यात्री और अजनबी के रूप में यात्रा करते हुए, उन्होंने दुष्ट लोगों के हाथों कई कठिनाइयों और दुर्भाग्यों को सहा। हालाँकि, ईश्वर की सुरक्षा में, वह रूसी भूमि पर पहुँचा, मास्को के महान और गौरवशाली शाही शहर में आया, और उसने उसके चारों ओर घूमकर पवित्र चमत्कारी संतों

[1395] संत पॉलिनिस का 22 जून 431 को निधन हो गया। उनके अवशेष रोम में सेंट बार्थोलोम्यू के चर्च में संजोए गए हैं। उन्हें चर्च के एक लेखक और शिक्षक, और सबसे बढ़कर एक ईसाई कवि के रूप में याद किया जाता है। उन्होंने 35 भजन और 50 तक पत्र छोड़े, जो अपनी गहरी भक्ति के लिए विशेष रूप से महत्वपूर्ण हैं। इन कृतियों में, ईसाई पूर्णता की ऊँचाइयों को जीवंत रूप से चित्रित किया गया है, और अपने हृदय की रक्षा करने के तरीके पर मार्गदर्शन दिया गया है; सुसमाचारिक विनम्रता और ईश्वर तथा अपने पड़ोसी के प्रति प्रेम जैसे सद्गुणों का वर्णन किया गया है; पति-पत्नी के कर्तव्यों को बताया गया है, साथ ही पीड़ितों के लिए सुखद सांत्वनाएँ भी दी गई हैं। तीन भजन ईश्वर के लिए सुंदर प्रार्थनाएँ हैं, जबकि अन्य तीन तीन भजनों: भजन संहिता 1, भजन संहिता 2 और भजन संहिता 136 के रूपांतरण हैं। इसके अलावा, संत पॉलिनिस के पत्र और भजन ईश्वर की दिव्य व्यवस्था, मूल पाप, पवित्र यूखरिस्त, शांति के लिए संतों की मध्यस्थता, मृतकों के लिए प्रार्थना और प्रतिमाओं की पूजा के बारे में बताते हैं। संत पॉलिनिस अपने द्वारा स्थापित चर्चों को पवित्र प्रतिमाओं से सजाने के अपने प्रेम के लिए भी प्रसिद्ध हैं; परंपरा यह भी मानती है कि उन्होंने लगभग 400 ईस्वी के आसपास चर्च की घंटियों का आविष्कार किया था।

[1396] आदरणीय जेनाडियस का जीवन और उनके सम्मान में सेवा, भिक्षु एलेक्सियस द्वारा लिखी गई थी, जो आदरणीय के शिष्य और जेनाडियस द्वारा स्थापित मठ के मठाधीश थे। यह जीवन कई पांडुलिपियों में संरक्षित है; उनमें से कुछ में लेखक द्वारा अपना काम ज़ार थियोडोर और मेट्रोपॉलिटन डायोनीसियस को समीक्षा के लिए प्रस्तुत करने का अनुरोध शामिल है, जिससे यह पता चलता है कि यह जीवन 1584 और 1587 के बीच लिखा गया था। दिव्य लिटिर्जी, अकाथिस्ट और जीवन, साथ ही मृत्युशय्या पर दिए गए उपदेश, स्लावोनिक लिपि में सेंट पीटर्सबर्ग और मॉस्को सिनोडल प्रेस द्वारा कई अवसरों पर प्रकाशित हुए हैं; उदाहरण के लिए, मॉस्को, 1888। जीवनचरित्र, चमत्कारों का वृत्तांत, उपदेश और अवशेषों की खोज का वृत्तांत, पांडुलिपियों के आधार पर, 1873 के *यारोस्लावली डायोसीन गज़ेट* में और उसी वर्ष यारोस्लावल में एक अलग पैम्फलेट के रूप में पूर्ण रूप से प्रकाशित किए गए थे।

[1397] 1644 में पूज्य जेनाडियस की अवशेषों की खोज के विवरण में कहा गया है कि वह मोगिलेव शहर के मूल निवासी थे।

के अवशेषों का दर्शन कयिा, पवत्रि मठों में प्रवेश कयिा और इस बात पर वचिार कयिा कि वह कहाँ भकि्षु-दीक्षा ले सकता है और प्रार्थना में अपना जीवन समर्पति कर सकता है।

मास्को में, उसे थयिोडोरा नाम का एक दोस्त मलिा, जो एक युवा व्यक्ति था और ईश्वर-भयभीत होने के साथ-साथ संन्यास ग्रहण करना चाहता था। मास्को से, वे दोनों एक साथ वेलकिी नोवगोरोड के लिए रवाना हुए, जहाँ उन्होंने पवत्रि स्थलों, चर्चों और मठों का दौरा कयिा।

नोवगोरोड से वे स्वरि नदी की ओर, रेगस्तिान में तपस्वी, पूजनीय अलेक्जेंडर के पास रवाना हुए, और उनसे वनिम्रतापूर्वक नविेदन करने लगे:

'हे पवत्रि पति, हम प्रभु परमेश्वर से प्रार्थना करना चाहते हैं: कृपया हमें मठवासयिों का वस्त्र धारण कराएँ।'

आदरणीय अलेक्जेंडर ने पहले ग्रगिोरी के मत्रि, थयिोडोर की ओर मुड़कर कहा:

'तुम, मेरे पुत्र थयिोडोर, सफेद-सरि वाले जानवर का नेतृत्व करोगे।'

उन्होंने ग्रेगरी से कहा:

और तुम, मेरे पुत्र ग्रेगरी, स्वयं वचन के झुंड के चरवाहे और भकि्षुओं की भीड़ के मार्गदर्शक बनोगे। जाओ, मेरे पुत्र, कोमेल वन में आदरणीय कॉर्नेलयिस के पास, और वह तुम्हें सखिाएगा कि ईश्वर से कैसे प्रार्थना करनी है और संतों के आध्यात्मकि झुंड का चरवाहा कैसे बनना है; क्योंकि हमारे इस मरुस्थल में छोटे लड़कों का रहना असंभव है। हालांकि, मेरे पुत्रों, तुम जतिने दनि चाहो, यहाँ वशि्राम करो।

वे आदरणीय अलेक्जेंडर के साथ रेगस्तिान में चौदह दनि रहे और, उनका आशीर्वाद प्राप्त करने के बाद, वोल्गोडा शहर के बाहरी इलाके में स्थति कोमेल वन के लिए रवाना हो गए। वे रेगस्तिान में गहरे तक आकर कोमेल के आदरणीय कॉर्नेलयिस[1398] के पास पहुँचे और यीशु की प्रार्थना का जाप करते हुए द्वार पर दस्तक दी।

आदरणीय कॉर्नेलयिस ने अपने दरवाज़े खोलते हुए उनसे कहा:

'मेरे बच्चों, तुम इतनी दुर्गम जगहों से कैसे गुज़रे, और इस साधारण रेगस्तिान में क्यों आए हो? तुम क्या खोज रहे हो?'

उन्होंने उनसे उत्तर दयिा:

'हे हमारे प्रभु, आदरणीय पति कोर्नेलयिस, हम पर साधु वेश धारण करने की महान इच्छा हावी हो गई है। मसीह के वास्ते, हमें अपनी ईश्वर-चुनी हुई भेड़-बकरयिों में गनि लीजिए।'

आदरणीय कॉर्नेलयिस ने ग्रेगरी से कहा:

'तुम, मेरे पुत्र ग्रेगरी, मेरे इस वनिम्र मठ में प्रवेश करो; और तुम, मेरे पुत्र थयिोडोर, सांसारकि जीवन में रहो, ववािह करो और संतान उत्पन्न करो।'

आदरणीय कॉर्नेलयिस ने ग्रेगरी को पवत्रि पतिाओं की परंपरा के अनुसार संन्यासी परीक्षण से गुज़ारा। ग्रेगरी ने काफी समय तक इस परीक्षण को सहन कयिा, जसिके बाद आदरणीय कॉर्नेलयिस चर्च में प्रवेश करके, ग्रेगरी का संन्यासी शष्टिाचार के अनुसार मुंडन कयिा और उससे पवत्रि सुसमाचार का एक अंश कहा: *'जो कोई भी मेरे नमित्ति घर, या भाइयों, या बहनों, या पति, या माता, या पत्नी, या बच्चों, या भूमि को छोड़ता है, वह सौ गुना पाएगा और अनंत जीवन का वारसि होगा। परन्तु जो पहले हैं, वे बहुत पीछे हो जाएँगे, और जो पीछे हैं, वे बहुत आगे हो जाएँगे'* (मत्ती 19:29-30)। इसके बाद बड़े भाई ने नव-संन्यस्त भकि्षु से आध्यात्मकि मार्गदर्शन के वषिय में बात की और ग्रेगरी के स्थान पर उसे जेनाडयिस नाम दयिा। अंत में, उन्होंने कहा:

'मेरे बच्चे, प्राचीन पवत्रि पतिाओं की बुद्धि को हृदय में धारण कर: धैर्य, प्रेम और नम्रता, और वशिेष रूप से सामुदायकि या परषिद प्रार्थना, साथ ही नजिी प्रार्थना; और कपट से रहति कर्मों में प्रयासरत रह।'

थेओडोर, जो गेनाडयिस का मत्रि था, ने आदरणीय पति अलेक्जेंडर और कॉर्नेलयिस की भवषि्यवाणी के अनुसार, संसार में अपना जीवन जयिा और मॉस्को में बहुत वृद्धावस्था में नधिन कर गया।

आदरणीय जेनाडयिस ने, कॉर्नेलयिस के आशीर्वाद से, स्वयं को प्रार्थना और श्रम के प्रति गंभीरता से समर्पति कर दयिा, वशिेष रूप से मठ के रसोई, बेकरी और अन्य जगहों पर घरेलू कर्तव्यों में। कई भाइयों ने जेनाडयिस के ऐसे श्रम के लिए उनसे नाराज़गी जताई और बड़बड़ाए।

[1398] कोमेल के पूजनीय कॉर्नेलयिस का 1537 में नधिन हो गया; उनकी पर्व तथि 19 मई को मनाई जाती है।

यह फुसफुसाहट सुनकर, पूज्य कोर्नेलियस ने संत को प्रोत्साहित करते हुए कहा:

'मेरे पुत्र जेनाडियस, भाइयों की ओर से इस पर दुख मत करो, क्योंकि वे राक्षसों के प्रभाव में ऐसा बोलते हैं।'

तब शैतान, जो सभी भलाई का शत्रु है, ने भाइयों के बीच और स्वयं कॉर्नेलियस के विरुद्ध अशांति भड़काई। यह देखकर, पूज्यनीय गुरु क्रोधित हो गए और अपने शिष्य गेनाडियस को साथ लेकर, अपनी नव-स्थापित मठ छोड़कर कोस्त्रोमा क्षेत्र में, अपने पहले मठ से साठ वर्स्ट दूर, सुर्स्कोए झील के किनारे एक जंगली जंगल में चले गए। वहाँ से एक वर्स्ट से थोड़ी अधिक दूरी पर ज़ार के किसान रहते थे, जो एक निश्चित कर चुकाने वाले मधुमक्खी पालक थे। ये किसान कॉर्नेलियस और जेनाडियस के आगमन पर बहुत प्रसन्न हुए; उन्होंने उनके लिए एक कोठरी बनाई और उनके लिए रोटी, शहद और अन्य आवश्यक चीजें लाए, क्योंकि पास में ही एक मधुमक्खी पालन का खेत था।

आदरणीय कॉर्नेलियस और जेनाडियस ने प्रार्थना और उपवास में स्वयं को समर्पित कर दिया, और अथक परिश्रम किया: उन्होंने पेड़ काटे, ज़मीन जोती और चार तालाब खोदे।

एक अवसर पर, ऑर्थोडॉक्स ग्रैंड प्रिंस वासिली इओनोविच ने लोगों की भलाई के लिए की गई एक प्रतिज्ञा को पूरा करने के लिए, प्रार्थना करने हेतु झील बेलो की कठिन यात्रा करने का उपयुक्त समझा। जब ग्रैंड प्रिंस सम्माननीय कॉर्नेलियस के आश्रम में पहुँचे और देखा कि वह वहाँ से किसी अन्य स्थान पर चले गए हैं, तो वह भाइयों से बहुत अप्रसन्न हुए और उनसे कहा:

'आपकी शिकायतों और अवज्ञा के कारण ही फादर कॉर्नेलियस अब अपने आश्रम में नहीं रहते।'

और तुरंत उन्होंने अपने सेवकों को आदरणीय पितिजी से उनके पूर्व निवास पर लौटने के लिए कहने भेजा। आदरणीय पितिजी कॉर्नेलियस महाप्रतापी वसीली के पास आए[1399] , उनके पैरों पर गिर पड़े और आश्रम छोड़ देने के लिए क्षमा याचना की। धर्मनिष्ठ राजकुमार ने उन्हें उठाया और कहा:

'मेरे प्रिय, पिता कॉर्नेलियस, हमारे लिए दयालु ईश्वर से प्रार्थना करें, कि प्रिभु ईश्वर हमें हमारी वंशावली के लिए धार्मिकता का फल, सम्मानित मठों की स्थापना के लिए, रूसी राज्य की शक्ति के लिए, और ईसाई धर्म की पुष्टि के लिए विरासत के रूप में प्रदान करें।'

तब महा राजकुमार ने पूजनीय कॉर्नेलियस से कहा:

'पितिजी, यहीं रुकें, अपने पहले कार्य और परिश्रम में; और हमारे आदेश पर, एकांत रेगिस्तान में, अपनी इच्छा के अनुसार किसी भी शिष्य को आशीर्वाद दें।'

जब महा राजकुमार विदा हो गए, तो पूजनीय कॉर्नेलियस ने अपने शिष्य गेनाडियस को नए आश्रम के साथ आशीर्वाद दिया और उसे वहाँ प्रभु के दिव्य रूपांतरण के नाम पर एक चर्च बनाने का आदेश दिया।

आदरणीय जेनाडियस ने, पिता कॉर्नेलियस के आशीर्वाद और महा राजकुमार के आदेश से, मरुस्थल में सब कुछ व्यवस्थित किया: उन्होंने ईश्वर का चर्च बनाया और उसे प्रतिमाओं, पुस्तकों और सभी प्रकार के धार्मिक वैभव से सुशोभित किया।

जब रेगिस्तान में भिक्षुओं की संख्या बढ़ने लगी, तो उन्होंने रेडोनज़ के चमत्कार करने वाले आदरणीय सेरजियस को समर्पित एक दूसरा, गर्म चर्च बनाया और उसे ठीक वैसे ही सजाया जैसे उन्होंने पहले वाले को सजाया था।

आदरणीय संत स्वयं, अथक परिश्रम करते हुए, भाइयों के लिए विनम्रता और धैर्य का उदाहरण स्थापित करते थे; उन्होंने उनके लिए आरामदायक आवास की व्यवस्था की; दिन में वह लकड़ी काटता था और रात में उसे अपने कंधों पर उठाकर भाइयों की कोठरियों तक ले जाता था; वह रसोई और बेकरी में काम करता था, भाइयों की केश-पोशाकें धोता था, मोमबत्तियाँ बनाता था, कुत्या पकाता था, और प्रॉस्फोरा बनाता था – लेकिन वह सबसे बढ़कर चर्च की सेवाओं, उपवास और प्रार्थना में निपुण था। इसके अलावा, वह अपने शरीर पर जंजीरों और लोहे के क्रॉस के साथ-साथ भारी बेड़ियाँ भी पहनते थे। रेवरेंड ने शरीर को वश में करने के लिए यह भारी बोझ उठाया।

परिणामस्वरूप, परम पवित्र त्रिमूर्ति का अनुग्रह उन पर बना रहा; इसके योग्य समझे जाने के बाद, रेवरेंड ने और भी महान कार्यों के लिए प्रयास किया, और अपने शिष्यों के लिए सभी रीति-रिवाजों और आचरण में एक उदाहरण स्थापित किया, क्योंकि उन्होंने उन्हें शब्दों से नहीं बल्कि कर्मों से सिखाया, जैसा कि ऊपर बताया गया है।

[1399] महान राजकुमार वासिली चौथे इवानोविच ने 1505 से 1533 तक शासन किया।

'उसके जीवन के सभी ववरिणों और उसके सभी कारनामों और कष्टों का वर्णन कौन कर सकता है, या उसकी बीमारियों और परश्रिमों और भाइयों के प्रतउिसकी देखभाल को कौन गनिा सकता है!' उनके जीवनीकार, उनके शष्यि अलेक्सयिस, ने ऐसा ही उद्घोष कयिा है, जो पूजनीय जेनाडयिस की प्रशंसा में, परन्तु उससे भी अधकि ईश्वर की महमिा के लएि, उनके द्वारा ईश्वर की कृपा से, उनके जीवनकाल में और मृत्यु के बाद कएि गए चमत्कारों का वर्णन करते हैं।

इनमें से कुछ चमत्कार इस प्रकार हैं। एक अवसर पर, पूजनीय जेनाडयिस अपने शष्यिों सेरापयिन और उआर के साथ मास्को के शाही शहर में आए। उनका स्वागत रोमन यूरीवचि की पत्नी, बोयारनिा यूलयिानयिा फेडोरोवना ने सम्मानपूर्वक कयिा। युलयिानयिा ने गेनाडयिस से अपने बेटों, डैनयिल और नकितिा, और अपनी बेटी, अनास्तासयिा को आशीर्वाद देने का अनुरोध कयिा। जब संत ने अनास्तासयिा को आशीर्वाद दयिा, तो उन्होंने कहा:

'तुम एक सुंदर बेल और एक फलदार टहनी हो; तुम हमारी वफादार शासक, हमारी त्सारनिा बनोगी।'

ये शब्द सुनकर, बोयारनिा यूलयिानयिा, अपने बच्चों और वहाँ मौजूद सभी लोगों के साथ, गेनाडी द्वारा बोले गए अकल्पनीय शब्दों पर चकति रह गईं और सोचने लगीं कयि उन्हें कहाँ से प्रकट हुए थे।

बोयारनिा यूलयिानयिा ने आने वाले कई वर्षों तक गेनाडी की उदारतापूर्वक देखभाल की।

जो कुछ भी वरष्ठि ने भवष्यिवाणी की थी, वह सब सच हो गया: अनास्तासयिा रोमनोवा सम्राज्ञी बनीं, इवान वासलीवचि द टेरबिल[1400] की पहली पत्नी। वह सर्व-दयालु उद्धारकर्ता के घर और आदरणीय गेनाडी के प्रतगिहरी आस्था और श्रद्धा रखती थीं, और उन्हें पवत्रि प्रतमिाएं, वेषभूषाएं और चर्च सेवाओं के लएि आवश्यक अन्य वस्तुएं भेजती थीं।

एक दनि, बोयार बोरसि पलेत्स्की, जो बीमारी से पीड़ति थे, प्रार्थना करने के लएि प्रभु के रूपांतरण के मठ में आए। परमपूज्य जेनाडयिस राजकुमार के आगमन से बहुत प्रसन्न हुए; उन्होंने मठवासी समुदाय को बुलाया और अपने दंड को राजकुमार के हाथों में देते हुए, एक उपयुक्त प्रार्थना के साथ पवत्रि द्वार पर आगंतुक का स्वागत कयिा। उस क्षण से, राजकुमार का स्वास्थ्य वापस आ गया और उसने ईश्वर की महमिा की, और राजकुमार के ठीक होने पर सभी ने प्रसन्नता व्यक्त की। आदरणीय पति और भाइयों को उदार दान देने के बाद, राजकुमार अपने पूरे अनुचर दल के साथ अपने घर लौट आया। राजकुमार ने लाठी—वरष्ठि की आशीर्वाद—को फादर बेसलि, उस पुरोहति को सौंप दयिा था जो उसके साथ आया था। कसिी कारण से, यह पुरोहति राजकुमार से नाराज़ हो गया और, संत की आशीर्वाद का अपमान करते हुए, लाठी को कोस्त्रोमा नदी में फेंक दयिा। राजकुमार वृद्ध की आशीर्वाद खोने से बहुत दुखी था। जब वह पुजारी घर पहुँचा, तो उसने अपनी पत्नी को मृत पाया, और कुछ ही समय बाद वह स्वयं भी गंभीर रूप से बीमार पड़ गया। तब उसने अपने पाप—कि उसने डंडे को लेकर राजकुमार और पूजनीय संन्यासी का मज़ाक उड़ाया था—पर पश्चाताप करना शुरू कर दयिा और संन्यासी गेनाडयिस के मार्गदर्शन में स्पासो मठ में मठवासी की शपथ लेने का संकल्प लयिा।

कुछ ही समय बाद, यह पादरी स्पासोव मठ में आया, आदरणीय संत के चरणों में गरि पड़ा और जो कुछ हुआ था, उसे बताकर उसने अपनी अभद्रता के लएि क्षमा मांगी तथा संत से वनिती की कि वे उसे अपने ईश्वर-चुने हुए झुंड के सदस्य के रूप में गनिें। सम्माननीय पति ने उन्हें आशीर्वाद देते हुए कहा: 'भाई, मसीह ने कहा: *"जो कोई मेरे पास आता है, मैं उसे कभी न लौटाऊँगा"* (यूहन्ना 6:37)।

फरि उन्होंने आदेश दयिा कि उसकी भक्षिु दीक्षा कराई जाए और उसे बरलाम नाम दयिा। बरलाम ने कुछ समय तक प्रभु के रूपांतरण मठ में सेवा की, और बाद में, पवत्रि वृद्ध गेनाडीयस के आशीर्वाद से, कोस्त्रोमा शहर में एपफिेनी मठ के मठाध्यक्ष के रूप में कार्य कयिा।

उपरोक्त राजकुमार बोरसि पालेत्स्की ने संत गेनादयिस के मठ में स्थति उद्धारकर्ता के घर को एक कीमती घंटी दान की।

ऐसा हुआ कि वोलोग्दा और ग्रेट परम के बशिप साइप्रयिन एक बार गंभीर रूप से बीमार पड़ गए। प्रभु के रूपांतरण मठ के प्रतसिमर्पति होने और आदरणीय एल्डर गेनाडीयस के लएि आध्यात्मकि स्नेह रखने के कारण, उन्होंने अपनी एक सेवक को एल्डर गेनाडीयस को बुलाने के लएि भेजा, और उनसे अपनी बीमारी के कारण मलिने का अनुरोध कयिा। सम्मानति एल्डर अपने शष्यिों, हएिरोमोंक मसिाइल और अलेक्सयिस के साथ वोल्गोडा शहर आए और बशिप साइप्रयिन से आशीर्वाद लयिा। उनकी प्रसादीयता पवत्रि एल्डर के आगमन से प्रसन्न हुए और, यद्यपतिब तक वे अपने बस्तिर

[1400] रूस के पहले ज़ार; उन्होंने 1533 से 1584 तक राज्य पर शासन कयिा (1547 में उन्होंने ज़ार की उपाधधिारण की)।

से उठ नहीं पाए थे, संत का स्वागत करने के लिए उठ खड़े हुए, और उन्हें तथा उनके शिष्यों को क्रॉस के चिह्न से आशीर्वाद दिया; फिर, पूजनीय एल्डर का हाथ पकड़कर, उन्हें अपनी भीतरी कोठरी में ले गए। बिशप ने पूजनीय एल्डर के साथ लंबी बातचीत की। लोगों ने, आदरणीय संत की यात्रा के बाद बिशप को उनकी बीमारी से राहत पाते हुए देखकर, बहुत आश्चर्यचकित हुए और उस ईश्वर की महिमा की, जो अपने संतों के माध्यम से महिमामय चमत्कार करते हैं। उनकी बातचीत के बाद, दोनों ने पवित्र रोटी ग्रहण की। अगले दिन, बिशप ने सभी लोगों की उपस्थिति में आदरणीय संत से पूछा:

'मरुभूमि के गुरु, आदरणीय पिता गेनाडियस, हमारी ओर से दयालु ईश्वर से प्रार्थना करें, कि वह मेरी शारीरिक बीमारी को कम करें और मेरे पैर के रोग को ठीक करें।'

महाधर्माध्यक्ष ने संत से कहा:

'ईश्वर, जो मानवता का प्रेमी है, दुख को दूर करता है और आध्यात्मिक कष्टों तथा शारीरिक बीमारियों, दोनों को ठीक करता है, और पीड़ितों की दुर्बलता को कम करता है – और यह महान कार्य हमारे करने का नहीं है।' हे प्रभु, पवित्र पिता, ईश्वर के लिए सब कुछ संभव है, पर मनुष्यों के लिए—कुछ भी नहीं। देखिए, हे प्रभु, आप अब अपने सामान्य शारीरिक कष्ट से मुक्त हो गए हैं, परन्तु आपकी टांग आपके प्रस्थान के समय की याद दिलाने के लिए बनी रहे, और आपकी अंतिम साँस तक यह ठीक न हो। हे प्रभु, पवित्र पिता, आपको शांति मिले!

उसके बाद बिशप पाँच वर्ष और जीवित रहे और प्रभु के पास चले गए।

आदरणीय जेनाडियस के जीवन-लेखक और उनके शिष्य तथा मठाध्यक्ष के उत्तराधिकारी, एलेक्सियस, अपने बारे में निम्नलिखित वर्णन करते हैं। जेनाडियस के सर्व-दयालु उद्धारक मठ के भाइयों से नाराज़ होकर, एलेक्सियस वहाँ से कोस्त्रोमा शहर में चले गए और प्रभु के प्रकट होने के मठ में बस गए। लेकिन जल्द ही वह गंभीर रूप से बीमार पड़ गया और चर्च में खड़ा होने में असमर्थ था। इस कारण से, वह कोस्त्रोमा से पोशेखोनी के पास एड्रियिनोव हर्मिटेज चला गया। फिर भी उसकी बीमारी बनी रही। दिव्य प्रकट होने पर, वह गेनाडियस द्वारा स्थापित सर्व-दयालु उद्धारकर्ता मठ में लौट आया और, विनती करते हुए गेनाडियस की कब्र पर दौड़ पड़ा, उसने अपने आध्यात्मिक दुर्बलता के लिए क्षमा मांगी और चंगा हो गया।

आदरणीय गेनादियस को आत्मीय निधनोपरांत अनेक चमत्कारों का श्रेय दिया जाता है, जिनमें से हम निम्नलिखित का उल्लेख करेंगे।

एक बोयार के बेटे, इवान लिकारेव ने, जेनादियेव में सर्व-दयालु उद्धारकर्ता के मठ को अपने एक गाँव का दान दिया, लेकिन बाद में उसने अपना मन बदल लिया और गाँव को ट्रिनिटी-सर्गीय लव्रा को हस्तांतरित कर दिया। कुछ ही समय बाद, उसका बेटा अलेक्सी अप्रत्याशित रूप से मर गया, और उसकी पत्नी गंभीर रूप से बीमार पड़ गई। पड़ोसियों और परिचितों ने कहना शुरू कर दिया कि उसके पति ने स्पासोव मठ को छोड़कर गाँव दूसरे मठ को देकर गलत काम किया था, और उन्होंने उसे पेरियास्लाव-ज़ालेस्की में अपने पति को एक पत्र लिखने की सलाह दी। उसकी पत्नी ने पत्र लिखा और तुरंत उसे राहत का अनुभव हुआ। इस बीच, पेरियास्लाव में जॉन भी बीमार पड़ गया था: उसे एक तरह का डर सताने लगा, और उसका चेहरा विकृत हो गया। उसके आस-पास के लोगों ने भी उसे स्पासोव मठ छोड़ देने के लिए फटकारा। तब जॉन ने अपनी पत्नी के संदेश और अपने करीबी लोगों की सलाह मानी, गाँव को आदरणीय गेनाडियस के मठ को वापस कर दिया, और उसे कभी न छोड़ने का व्रत लिया। जल्द ही, वह अपनी बीमारी से ठीक हो गया। जो लोग श्रद्धा और भक्ति के साथ गेनादियस की कब्र पर प्रार्थना करते थे, वे विभिन्न बीमारियों से ठीक हो गए: दांत का दर्द, आंखों की बीमारियां, लकवा, और विशेष रूप से मानसिक विक्षिप्तता और भूत-प्रेत का साया।

ऐसा भी एक चमत्कार हुआ था। संत जेनाडियस के मठ का एक हेयेरोडीकॉन चर्च की कुछ पुस्तकें और वेदी के कपड़े चुरा ले गया; अंडोमा नदी तक केवल कुछ वर्स्ट ही यात्रा करने पर, उसे अचानक कमजोरी महसूस हुई और वह न तो अपनी बाहें और न ही अपने पैर हिला सका। मठाध्यक्ष को इसकी सूचना दी गई, और उन्होंने उस डीकन को बुलाया, जिसे पुस्तकों के साथ मठ वापस लाया गया। उसने अपना पाप स्वीकार किया, आदरणीय गेनादियस की कफ़न के सामने प्रणाम किया, क्षमा और अपनी बाहों तथा पैरों के ठीक होने की प्रार्थना की। और आदरणीय गेनादियस की प्रार्थनाओं के माध्यम से, ईश्वर ने उस पर दया की और उसका स्वास्थ्य पुनःलौटा दिया।

कोस्त्रोमा के नगर अधिकारी लूका गुस्टशिव ने पूज्य जेनाडियस के चमत्कारों पर विश्वास नहीं किया और उसने स्पस्स्काया मठ या संत की कब्र का दर्शन न करने का संकल्प लिया।

कस्टम संग्रहकर्ताओं में से एक के रूप में चुने जाने के बाद (यानी, सीमा शुल्क का शपथ-बद्ध संग्रहकर्ता), वह अपने साथियों के साथ ज़ार के पैसे इकट्ठा करने के लिए निकल पड़ा। लेकिन अचानक वह एक गंभीर बीमारी से ग्रस्त हो गया: उसके गाल सूज गए, उसे असहनीय सिरदर्द हुआ, और वह भ्रम की स्थिति में चला गया। उनके रिश्तेदार उन्हें घर ले आए, जहाँ वे मृत्युशय्या पर पड़े थे। होश में आने पर, उन्हें अपने पाप का स्मरण आया और उन्होंने स्पासोव मठ और आदरणीय गेनाडीयस के मकबरे पर जाने का संकल्प लिया। वहाँ एक प्रार्थना सभा में भाग लेने के बाद, आदरणीय गेनाडीयस के मध्यस्थता से वे ठीक हो गए।

लाप्टेव परिवार की, कोर्ज़्स्की वोलोस्ट के गालित्स्की जिले की एक कुलीन महिला के चार बेटे थे, जिनमें से एक, किरिल नाम का, सेंट जेनाडियस मठ में मठीय संन्यास ग्रहण करना चाहता था और मठ को अपने पिता की संपत्ति में से अपना हिस्सा दान करने का इरादा रखता था। जब उसकी माँ को इस बात का पता चला, तो उसने अपने बेटे को कोसना शुरू कर दिया और उसे अपना हिस्सा मठ को देने नहीं दिया। अचानक, उसे एक तेज और असहनीय सिरदर्द हो गया। इस बीमारी से पीड़ित होकर, उसे अपने पाप का स्मरण आया, उसने स्पासो-प्रियोब्राज़ेंस्की मठ जाकर आदरणीय जेनाडीयस की कब्र पर प्रार्थना करने और अपने बेटे का हिस्सा दान करने का संकल्प लिया। उसी क्षण, उसे अपनी बीमारी से राहत मिली और जल्द ही उसने अपना वादा पूरा किया। उसके बेटे ने कॉर्नेलियस नाम से संन्यास की शपथ ली, जबकि उसने उसे प्रदान किए गए चंगाई के लिए ईश्वर की महिमा की।

अपने निधन से पहले, पूजनीय जेनाडियस ने एक उपदेश दिया जिसमें उन्होंने अपने शिष्यों और सभी ऑर्थोडॉक्स ईसाइयों के लिए मठवासी जीवन पर अपने विचार और सिद्धांत प्रस्तुत किए। प्रस्तुत है यह सरल और शिक्षाप्रद उपदेश।

'मसीह में भ्राता और वचन के झुंड के सदा-वफादार चरवाहे, इपतीय मठ में जीवन-दायक त्रिमूर्ति और परमेश्वर की अति-पवित्र माता की महान लावरा के एबट वासियन; हमारे झुंड के निवास, स्पासो मठ के निर्माता जोसेफ; और हमारी संपूर्ण भ्रातृ-मंडली को। मैं तुमसे कहता हूँ, मेरे आध्यात्मिक भाइयों और सहकर्मियों: मेरे लिए तो दिन बीत चुका है और कुल्हाड़ी जड़ तक आ चुकी है, क्योंकि मैं मसीह के न्याय-सिंहासन के पास जा चुका हूँ। प्रभु की पवित्र आज्ञा के लिए, जब तुम प्रार्थना करो तो मुझे भूलना मत, बल्कि मेरी कफ़न-तबूत को देखकर, मेरे प्रेम को याद रखना और मसीह से प्रार्थना करना कि वह मेरी आत्मा को धर्मी लोगों के साथ स्थान दे। जहाँ तक आप लोगों की बात है, मेरे बच्चों, परमेश्वर का भय मानो और अपने आध्यात्मिक पितरों की हर बात में आज्ञा मानो, जैसा कि प्रेरित सिखाते हैं। ऑर्थोडॉक्स सम्राट का सम्मान करो और पवित्र धर्मगुरुओं का आदर करो; सभी मठाधीश आध्यात्मिक विवेक के मामलों में उनकी आज्ञा मानें। और तुम, मेरे बच्चों, जो स्पासोवा मठ में रहते हो, उस मठाध्यक्ष की आज्ञा का पालन करो जिसे हमारी भेड़-बकरियों का झुंड सौंपा जाएगा, और हर बात में आज्ञाकारिता से उसके अधीन रहो। विशेष रूप से, मैं तुमसे विनती करता हूँ और यह आज्ञा देता हूँ कि तुम मठाध्यक्ष की आज्ञा के बिना इस स्थान को न छोड़ो। आपस में झगड़ा न करें; प्रकाश के लिए प्रयासरत रहें और अंधकार को पीछे छोड़ दें। आपका जीवन पवित्र पिताओं की परंपरा के अनुरूप और हमारे मठ में स्थापित मठवासी जीवन शैली के अनुरूप हो, जैसा कि आदरणीय कॉर्नेलियस ने हमें लिखा था[1401] । और आप, धर्मनिष्ठ मठाध्यक्ष वासियन, मैं आपसे विनती करता हूँ: अपने विश्वास के कारण इस मठ को न छोड़ें। और आप, मेरे भाइयो और बच्चों, हमारी साझा परंपरा को नष्ट न करें और चर्च की परिषद से न भटकें; क्योंकि संन्यासियों के लिए सबसे बड़ी घृणास्पद बात चर्च में न जाना है; परन्तु जब तुम गिरिजाघर आओ, तो उपहास किए बिना खड़े रहो, व्यर्थ की बातों में मत उलझो, और सबसे बढ़कर, अपनी निजी प्रार्थना में सुस्ती न करो, कहीं ऐसा न हो कि तुम्हारा शरीर और आत्मा थक जाएँ और तुम्हारी मेहनत व्यर्थ हो जाए; क्योंकि सुस्ती को भड़काकर, धूर्त शैतान एक भिक्षु को जीवित ही नरक में खींच ले जाना चाहता है। मैं आपसे विनती करता हूँ, मेरे भाइयों और साथी तपस्वियों, किसी भी संन्यासी कर्तव्य में सुस्त न हों; अपने श्रम में दुखी न हों या हतोत्साहित न हों, क्योंकि आपका श्रम इसलिए है ताकि आपके पास खाने-पीने का साधन हो। किसी भी हाल में, चरवाहे के विरुद्ध शिकायत न करें, क्योंकि जो संन्यासी शिकायत करता है वह अपने लिए विनाश लाता है। इसी तरह, शिक्षा के वचन को ध्यान से सुनें और अच्छे तथा पुण्यकारी कार्य करें; आलसी लोगों को सेवा करने और प्रार्थना करने के लिए प्रोत्साहित करें; परमेश्वर की पवित्र चीजों से दूर न हटें: यदि कोई भिक्षु छह सप्ताह तक

[1401] कोमेल के पूजनीय कॉर्नेलियस ने अपने मठ के लिए एक मठवासी नियम लिखा, जिससे पूजनीय जेनाडियस का उदय हुआ। यह नियम 'रूसी पदानुक्रम का इतिहास' में और 1812 में अलग से प्रकाशित हुआ था।

पवत्रि सहभागतिा प्राप्त नहीं करता है, तो वह भक्षिु नहीं है। मेरे भाइयों, मैं आपसे यह भी वनिती करता हूँ कि आप मठ की संपत्तनि चुराएँ, न रोटी और न ही सब्जयिाँ, और न ही अपनी नजिी जरूरतों के लिए मठ से कुछ भी बाहर ले जाएँ। आप सभी एक जैसे कपड़े पहनें; अपनी कोठरयिों में कोई भोजन न रखें; भोजनशाला से रोटी न लें, सविाय अत्यधकि आवश्यकता या बीमारी के मामलों में। आपका भोजन भोजनशाला में ही हो और सभी के लिए एक समान हो; भोजन और पेय उचति समय पर लिए जाएँ ; लेकनि भोजनशाला में, न तो अधकि खाने का आदी बनें और न ही अधकि पीने का, क्योंकि यह परमेश्वर के सामने घृणति है, और शरीर के लिए एक बोझ और बीमारी का कारण है। आपके लिए आपस में झगड़ना भी अनुचति है, क्योंकि जो लोग कलह भड़काते हैं और बदनामी करते हैं, वे स्वर्ग के राज्य के वारसि नहीं बनेंगे; ऐसे ही वे धूर्त पाखंडी भी हैं जो अपने भाइयों को इधर-उधर भेजते हैं, जबकि वे स्वयं मदद के लिए एक उंगली भी नहीं उठाते। हाय! कड़वी नरक की खाई लापरवाह संतों से भरी है, जबकि धर्मी, थोड़ा सहन करके और परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करके, हमेशा के लिए आनंदति होंगे। मसीह अपने घर में एक मन वालों का स्वागत करते हैं। इसी प्रकार, मेरे बच्चों, संकीर्ण द्वार से और दुखद मार्ग पर चलने का प्रयास करो, ताकि तुम अनंत जीवन प्राप्त कर सको। जहाँ तक सेवकों और अन्य मजदूरों का प्रश्न है, मैं उन्हें आज्ञा देता हूँ कि वे एक-दूसरे से न क्रोध करें और न झगड़ें; उन्हें हर बात में मठाधीश की आज्ञा माननी चाहिए और उनके वचनों पर ध्यान देना चाहिए, और न तो भाइयों को वचन या कर्म से ठेस पहुँचाना चाहिए, और न ही कोई अनुचति अभद्रता करनी चाहिए, बल्कि सभी लोगों को प्रसन्न करने का प्रयास करना चाहिए। संघ के उपकरणों और घरेलू सामानों की देखभाल करनी चाहिए ताकि उनमें से कोई भी खो न जाए। दूसरे की संपत्तकि हाथ न लगाओ और कसिी भी तरह चोरी मत करो, क्योंकि व्यक्तगित धन-संपत्तकि संचय एक भक्षिु को बहुत नुकसान पहुँचाता है और आत्मा को बुझने वाली आग और शाश्वत यातना में डाल देता है। और तुम, मेरे बच्चों, स्वयं को इस तरह के बुरे कर्मों और मूर्खता से बचाओ, और दूसरों को हमारे इन शब्दों की याद दलिाओ। संन्यासी के कर्तव्यों को बनिा शकिायत, बनिा आलस्य और बनिा वद्रिोह के पूरा कयिा जाना चाहिए, ताकि पाखंडी या लोगों को खुश करने वाले न बनें, जो केवल दखिावे के लिए काम करते हैं; बल्कि ईश्वर को प्रसन्न करने का प्रयास करो, वश्विास और सत्य के साथ पर्दे के पीछे काम करो। बलपूर्वक कसिानों पर अत्याचार न करो, और मेहमानों में स्वयं को दूसरों से ऊपर न समझो; सबसे नीचली जगह लो; और सबसे बढ़कर, कसिी से बैर न रखो, और भ्राताओं के बारे में महाधर्माध्यक्ष से झूठ न बोलो। हे मेरे भाइयों, भलाई करने में तत्पर रहो, और पवत्रि सुसमाचार में और प्रेरतिों की रचनाओं में परमेश्वर के वचन का अध्ययन करो। उद्धारकर्ता के घर में हमें जो पुस्तकें प्राप्त हुई हैं, उन्हें रखो; हे मेरे बच्चों, यह तुम्हारे लिए उचति है कि तुम उनमें गहराई से अध्ययन करो और उन्हें समझने के लिए अपना मन लगाओ: यहाँ पवत्रि पतिाओं की कृतयिाँ हैं। जो कोई परमेश्वर की आज्ञाओं और मसीह के वश्विास का पालन करता है, वह सदा के लिए आनन्दति होगा।"

आदरणीय जेनाडयिस का 23 जनवरी 1565 को नधिन हो गया; उनकी शांत और शांतपूर्ण मृत्यु एक संक्षप्ति बीमारी के बाद हुई।

आदरणीय जेनाडयिस के शष्यि और उत्तराधकिारी, हेग्यूमेन अलेक्सयिस ने, संत को समर्पति अपनी प्रशंसा-भाषण में, उनके गुणों को गनिाया और उल्लेख कयिा कि उन्हें शाही परविार के भीतर भी इन गुणों के लिए सम्मानति कयिा गया था: वे ज़ार इवान वासलीवचि द टेरबिल की पहली पत्नी, अनास्तासयिा रोमानोव्ना की बेटी के गॉडफादर थे, जनिके बारे में उन्होंने पहले ज़ार से ववािह करने और संतान होने की भवष्यिवाणी की थी। जोसेफ-वोल्कोलांस्क मठ के एक भक्षिु, एल्डर एंथनी के शब्दों का हवाला देते हुए, अलेक्सयिस ने आदरणीय जेनाडयिस के बारे में एक और घटना का वर्णन कयिा है। एक बार, जब गेनाडीयस मास्को में एक चर्च में प्रार्थना सभा में शामलि थे, जहाँ ज़ार के नौकर और बोयारों की पत्नयिाँ मौजूद थीं, तो एक गरीब और बेसहारा महलिा अपने बच्चों के साथ अंदर आई; कुछ उसके आँचल में रो रहे थे, जबकि अन्य उसके बगल में थे। उसे देखकर, कुलीन बोयारों की पत्नयिों ने प्रभु और परमेश्वर की परम पवत्रि माता की ओर आह भरते हुए अपने मन में सोचा: 'प्रभु ने तो ऐसे दरद्रिों को भी संतान दी है, जनिके पास उन्हें पालने के लिए कुछ भी नहीं है, जबकि हमसे, जनिके पास ज़ार की तनख्वाह की बदौलत संतान पालने के साधन हैं, प्रभु ने संतान प्राप्तकि वरदान छीन लयिा है—नश्चिति रूप से हमारे पापों के कारण।' आदरणीय जेनाडयिस ने उनके वचिारों को भाँप लयिा और उनसे कहा:

'हे महलिाओं, दुखी न हों: यदि आप अपने पद पर धर्मपरायणता से जीवन यापन करेंगी, तो ईश्वर की आज्ञा से, इस समय से आप संतान को जन्म देंगी।'

माननीय की भवष्यिवाणी के अनुसार, यह न केवल एक के साथ, बल्कि कई कुलीन महलिाओं के साथ हुआ। और अन्य शहरों में, माननीय जेनाडयिस ने कई धर्मपरायण महलिाओं को बच्चों के जन्म की भवष्यिवाणी की।

पूज्य जेनाडियस के अवशेषों की खोज 1644 में धर्मपरायण ज़ार मखिाइल फेडोरोवचि के शासनकाल में और पैट्रआर्क जोसेफ के अधीन हुई, जब प्रभु के रूपांतरण की जीर्ण-शीर्ण लकड़ी की चर्च को ध्वस्त कयिा गया और एक पत्थर की चर्च के नरि्माण का काम शुरू हुआ; नींव खोदते समय, एक ताबूत मलिा जसिमें पूज्य व्यक्तकिा अक्षत शरीर और वस्त्र थे।

सरिीन की पूज्य मौसमिा की स्मृतकि

23 जनवरी को स्मरणोत्सव

आदरणीय मौसमिा सीरयिा के साइरस शहर के आसपास के रहने वाले थे[1402] ; गाँव में साधारण पालन-पोषण प्राप्त करने के बाद, संत सभी गुणों में नपिुण थे। अपने नजिी जीवन में खुद को प्रतषि्ठति करने के बाद, उन्हें शहर के पास एक गाँव में आध्यात्मकि नेता नयिुक्त कयिा गया। वे संस्कारों का अनुष्ठान करते और परमेश्वर के झुंड की देखभाल करते हुए, परमेश्वर के वधिान की आज्ञाओं के अनुसार बोलते और कार्य करते थे। उनके पास केवल एक ही वस्त्र था; जब वह घसि जाता, तो आदरणीय उसे कपड़े के नए टुकड़ों से जोड़कर अपनी नग्नता को ढक लेते थे। संत मौसीमा यात्रयिों और गरीबों की देखभाल के लिए इतनी लगन से कार्य करते थे कि उनके नविास का द्वार आने वाले सभी लोगों के लिए हमेशा खुला रहता था। कहा जाता है कि पूजनीय संत के पास दो पात्र थे: एक में अनाज और दूसरे में तेल, जसिसे संत सभी जरूरतमंदों को बाँटते थे। दयालु प्रभु, जन्हिोंने ज़ारेफ़थ की वधिवा को आशीर्वाद दयिा था, उन्होंने आदरणीय मौसमिा के पात्रों पर भी वही आशीर्वाद प्रदान कयिा: *'वह भला और दयालु है, और उन सभी के प्रतस्थिरि प्रेम से परपूिर्ण है जो उससे प्रार्थना करते हैं'* (भजन संहति 85:5); आज्ञा दी कि टब में आटा और घड़े में तेल कभी खत्म न हों—जसिसे वधिवा ने महान भवषि्यवक्ता[1403] को खलिाया था—प्रभु ने अद्भुत मौसमिा को भी गरीबों के प्रति उसकी देखभाल के बराबर प्रचुरता प्रदान की। एक परपिक्व उम्र तक एक धार्मकि और ईश्वर-प्रसन्न जीवन जीने के बाद, संत शांतपिूर्वक प्रभु के पास चले गए[1404] ।

आदरणीय सलामैन मौन की स्मृतकि

23 जनवरी को स्मरण

हमारे इन पूजनीय पति, सलामान, यूफ्रेटसि नदी के पश्चमिी तट पर स्थति कैपर्सना गाँव से आए थे[1405] । एकांत पसंद करने के कारण, उन्होंने नदी के दूसरे कनिारे एक छोटी झोपड़ी पाई और उसमें खुद को बंद कर लयिा, दरवाज़ा और खड़िकी को अच्छी तरह से सील कर दयिा; साल में एक बार वे दीवार के नीचे खोदी गई सुरंग से बाहर नकिलते थे ताकि भोजन का भंडारण कर सकें। स्थानीय बशिप को, आदरणीय के पुण्य जीवन के बारे में जानकर, उन्हें पुरोहति पद की दीक्षा देना चाहा। इस उद्देश्य से संत के नविास पर पहुँचकर, महा-पालक ने दीवार का एक हसि्सा तुड़वाने का आदेश दयिा, जसिके बाद वह कोठरी में प्रवेश कयिा। आदरणीय सलामान को पादरी के रूप में नयिुक्त करने के बाद, बशिप ने

[1402] सीरयिा फ़लिस्तिीन के उत्तर में एक देश है; इसके उत्तरी भाग में, एशयिा माइनर से सटे, करिइस्टकिा प्रांत स्थति था, जसिकी राजधानी करि थी।

[1403] ईश्वर की आज्ञा से जब वह सदिोन के ज़रेफ़थ के द्वार पर पहुँची, तो पवत्रि नबी एलयिा ने लकड़ी इकट्ठा कर रही एक वधिवा से एक टुकड़ा रोटी लाने को कहा। उसने उत्तर दयिा कि उसके पास मट्टिी के पात्र में केवल एक मुट्ठी आटा और एक घड़े में थोड़ा सा तेल बचा है। उसने कहा, 'मैं जाकर इसके लिए अपने और अपने बेटे के लिए भोजन बनाऊँगी; हम इसे खाकर मर जाएँगे।' उस समय, सूखे के कारण, इस्राएल के देश में अकाल पड़ा हुआ था। पवत्रि नबी ने वधिवा से कहा: 'इस्राएल का यहोवा परमेश्वर यों कहता है: जार में आटा न खत्म होगा, और घड़े में तेल समाप्त नहीं होगा, जब तक कि यहोवा पृथ्वी पर वर्षा न भेजे।' उस स्त्री ने परमेश्वर के पुरुष को भोजन दयिा, और अकाल के पूरे समय में उसका आटे और तेल का भंडार समाप्त नहीं हुआ (1 राजा 17:8–16)।

[1404] चौथी शताब्दी के अंत में।

[1405] फरात नदी आर्मेनयिा के पहाड़ों में नकिलती है; अपने नचिले मार्ग में यह टग्रिसि से मलिती है, जसिके बाद, शत अल-अरब नाम से, यह फारस की खाड़ी में बहती है। कैपेरसाना (पर्स या पर्साना) सामोसाटा (अब साम्सट), जो कोमाजेन के सीरयिाई प्रांत की राजधानी थी, से बहुत दूर नहीं स्थति थी।

उन्हें पुरोहति के पद की कृपा के बारे में नरि्देश दयिा; सेल में अपने पूरे प्रवास के दौरान, बशिप ने उस मौन तपस्वी से एक भी शब्द नहीं सुना और वे वदिा हो गए, साथ ही दीवार के ध्वस्त हसि्से को फरि से बनाने का आदेश दयिा। जसि गाँव के रहने वाले थे, वहाँ के लोगों ने, अपने बीच ईश्वर का एक पुरुष होने की इच्छा से, एक रात एक घाट से नदी पार की, संत को अपने साथ ले आए—जनि्होंने न तो कोई बहस की और न ही कोई वरिोध कयिा, फरि भी अपनी सहमत भी नहीं दी—और उन्हें अपने यहाँ ले आए; वहाँ ग्रामीणों ने पूज्यनीय के लिए उनकी पुरानी झोपड़ी जैसी एक झोपड़ी बनाई और उन्हें वहाँ बंद कर दयिा; संत सलामन मौन ही रहे; कसिी ने भी उनसे एक शब्द नहीं सुना। इसके तुरंत बाद, उस गाँव के नविासी जो दूसरी कनिारे पर स्थति था, जहाँ परम पावन पति ने पहले शरण ली थी, रात में उनके नए नविास पर आए और उन्होंने उन्हें यह प्रार्थना करते हुए सुना: 'हे प्रभु यीशु मसीह, मुझ पर और उन सभी पर दया करें जो आपके नाम की सेवा करते हैं और आपकी, हमारे सच्चे ईश्वर की, पूजा करते हैं।'

गाँववालों ने उसकी कोठरी को तोड़ दयिा और संत को अपने साथ ले गए; इस अवसर पर भी धन्य तपस्वी ने कोई प्रतरिोध नहीं कयिा, न ही उसने शांत सि रहने की मांग की। इस प्रकार इस जीवन के लिए स्वयं को मृत मानकर, वह सच्चे अर्थ में प्रेरति के शब्दों को दोहरा सकता था: *'अब मैं नहीं जीता, बल्कि मसीह मुझ में जीवति है।' और जो जीवन मैं अब शरीर में जीता हूँ वह मैं परमेश्वर के पुत्र पर वशि्वास करके जीता हूँ, जसिने मुझ से प्रेम कयिा और अपने आप को मेरे लिए दे दयिा*। (गलातयिों 2:20)। अपने भीतर के देहधारी मनुष्य को कसिी और से भी अधकि हद तक मार डालने के बाद, धन्य सलामान ने अपना पराक्रम अंत तक पूरा कयिा और आनंदति होकर स्वर्गीय नविासों के लिए प्रस्थान कर गए[1406] ।

छठे सार्वभौमकि परषिद की स्मृति

23 जनवरी को स्मरण कयिा जाता है

छठा सार्वभौमकि परषिद 680 में, सम्राट कॉन्स्टेंटनि पोगानातस[1407] के शासनकाल में कॉन्स्टेंटनिोपल में मोनोथेलट्सि के खलिाफ आयोजति की गई थी, जनि्होंने मोनोफसिाइट सद्धिांत को ऑर्थोडॉक्सी के साथ सुलझाने के प्रयास में, यीशु मसीह में दो स्वभावों को स्वीकार कयिा, ठीक वैसे ही जैसे ऑर्थोडॉक्स करते हैं, लेकनि, मोनोफसिाइट्स की तरह, केवल एक इच्छा को स्वीकार कयिा – दैवी[1408] । इस सद्धिांत के प्रसार ने चर्च के भीतर बड़े ववािद को जन्म दयिा और ऑर्थोडॉक्सी के उत्साही रक्षकों को उकसाया, जनि्होंने मोनोथेलटिज्मि का खुले तौर पर वरिोध कयिा, और इसे छद्म रूप में मोनोफज़िटिज्मि के अलावा और कुछ नहीं समझा[1409] । शासकों द्वारा जारी फरमानों ने, यद्यपि मसीह में एक ही इच्छा को स्पष्ट रूप से स्वीकार करते हुए, फरि भी—इस उथल-पुथल को समाप्त करने के लिए—नरि्देश दयिा कि 'एकल' और मसीह में 'एक इच्छा'[1410] , और यहां तक कि इस ववािदास्पद मुद्दे पर सभी बहसों को बनिा शर्त समाप्त करने का सख्त आदेश, अवज्ञा करने वालों के लिए नागरकि अभयिोजन की धमकी के तहत[1411] , ने केवल और अधकि नाराज़गी पैदा की और यहां तक कि ईसाई धर्म के बहादुर रक्षकों के बीच शहीदों को भी जन्म दयिा[1412] । साथ ही, चर्चों के पूर्वी और पश्चमिी धर्मगुरु और प्रतनिधि वभिाजति थे, क्योंकि पहले में कई मोनोफसिाइट थे, जबकि पश्चमिी चर्च

[1406] लगभग 400 ईस्वी में।

[1407] बाइज़ेंटाइन सम्राट कॉन्स्टेंटनि चौथे पोगोनाटस ने 688 से 695 तक शासन कयिा।

[1408] अलेक्जेंड्रयिा में, जहाँ मोनोफजिटिाइज्म वशिेष रूप से मजबूत था, इस गैर-ऑर्थोडॉक्स सद्धिांत का प्रतनिधि अलेक्जेंड्रयिा के पैट्रआर्क साइरस थे (जनि्होंने 630 से 640 तक पैट्रआर्केट संभाला)। कॉन्स्टेंटनिोपल के पैट्रआर्क सेरजयिस (610–638) और रोम के पोप होनोरयिस (625–638) ने भी मोनोथेलटिकि सद्धिांत में कुछ भी गैर-पारंपरकि नहीं पाया और इसके अनुयायी बन गए, हालांकि, चर्च के भीतर आगे की गड़बड़यिों को रोकने के लिए, उन्होंने इस मामले पर कसिी भी नरि्णायक बयान से बचने का संकल्प लयिा, जसि चर्च द्वारा अभी तक सुलझाया नहीं गया था।

[1409] इनके शीर्ष पर यरूशलेम के पैट्रआर्क (634–644) संत सोफ्रोनीयस और परम पूजनीय मैक्समिस द कन्फेशर थे; बाद वाले के बारे में और ववरिण के लिए, 20 जनवरी को उनकी जीवनी देखें।

[1410] यही था सम्राट हेराक्लयिस का 'एक्टसिसि', अर्थात् वशि्वास का घोषणापत्र, जसिमें यह एक साथ एक नरि्ववािद सत्य के रूप में स्वीकार कयिा गया था कि मसीह में एक ही इच्छा है।

[1411] बेशक, तथाकथति 'वशि्वास का टायपस' भी है, जसि हेराक्लयिस के उत्तराधकिारी, सम्राट कॉन्स्टेंस ने जारी कयिा था।

[1412] उनमें, परम पूजनीय मैक्समिस द कन्फैसर और पोप मार्टनि प्रथम (जनि्होंने 649 से 653 तक पद संभाला) वशिेष रूप से उल्लेखनीय हैं। अधकि ववरिण के लिए 20 जनवरी को परम पूजनीय मैक्समिस का जीवन देखें।

ने खुले तौर पर इस विधर्म के खिलाफ घोषणा की और ऑर्थोडॉक्स सिद्धांत के बचाव में आया। इससे अंततः सम्राट कॉन्स्टेंटिन पोगोनाटस को एक सार्वभौमिक परिषद बुलाने के लिए प्रेरित किया, जो रोम के साथ पूर्व परामर्श के बाद 680 में शुरू हुई। इस परिषद में 170 पादरियों ने भाग लिया, जिसमें दो पूर्वी पैट्रिआर्क स्वयं उपस्थित थे: कॉन्स्टेंटिनोपल के जॉर्ज[1413] और एंटिओक के मकरियस[1414] , दोनों मोनोफिसाइट थे; जबकि रोम के पोप अगथो ने अपनी ओर से प्रतिनिधि भेजे। सम्राट स्वयं परिषद के सत्रों में उपस्थित थे, जो लगभग एक साल तक चले। मोनोफिसाइट्स का कट्टरपंथ इस हद तक पहुँच गया था कि थ्रेस के एक भिक्षु, जिसका नाम पोलिख्रोनीउस था, ने परिषद के सामने मोनोफिसाइट्स की ईश्वरवादिता के प्रमाण के रूप में एक मृतक को जीवित करने के लिए स्वयंसेवा की; लेकिन जब उसे सार्वजनिक प्रयोग करने की अनुमति दी गई, तो उसे क्रूरतापूर्वक अपमानित किया गया। कई गरमागरम बहसों के बाद, परिषद ने यीशु मसीह में दो इच्छाओं—दैवीय और मानवीय—को स्वीकार करने का निर्णय लिया, जो दो स्वभावों के अनुरूप थीं। कॉन्स्टेंटिनोपल के पैट्रिआर्क जॉर्ज ने अपनी गलती स्वीकार की और उन्हें चर्च के साथ फिर से शामिल कर लिया गया। हालाँकि, अंतीयक के पैट्रिआर्क मकरियस, मोनोथेलिटिक विधर्म में अडिग रहे, जिसके परिणामस्वरूप उन्हें सभी पिछले मोनोथेलिट्स के साथ चर्च से बहिष्कृत कर दिया गया। यह परिषद, जो 7 नवंबर 680 को शुरू हुई थी, 16 सितंबर 681 को समाप्त हुई।

6 फरवरी

24 जनवरी (पुराना संस्करण)

हमारी पूजनीय माता जेनिया का जीवन, संसार में यूसेबिया

24 जनवरी को स्मरणोत्सव

रोम में एक कुलीन और सम्मानित व्यक्ति रहता था, जो वरिष्ठ सेनेटोरियल वर्ग का सदस्य, विश्वास से ईसाई और अत्यधिक धार्मिक था, जिसके एकमात्र संतान, उसकी आँखों का तारा - यूसेबिया नाम की एक बेटी थी। जब वह युवती बनी, तो सीनेट वर्ग के ही एक अन्य कुलीन व्यक्ति ने यूसेबिया के माता-पिता से अपनी संतान का विवाह उनके पुत्र से करने के लिए कहा। यूसेबिया के माता-पिता ने आपस में सलाह-मशविरा करने के बाद, उसका विवाह सम्मान और धन-दौलत में उनसे समान एक कुलीन युवक के साथ तय कर दिया, और वैध विवाह के लिए एक तारीख भी पहले से ही तय कर दी गई थी। हालाँकि, वह कन्या, जो ईश्वर के प्रेम से परिपूर्ण थी, अनश्वर वर, जो अपने पूर्ण गुणों में मनुष्यों के सभी पुत्रों में सबसे सुंदर हैं, स्वयं प्रभु मसीह की शाश्वत वधू बनी रहना चाहती थी, और अपनी कुँवारी अवस्था को हमेशा के लिए बनाए रखना चाहती थी। हालाँकि, उसने अपनी इच्छा अपने माता-पिता से छिपा रखी थी, क्योंकि वह जानती थी कि अगर उन्होंने उसकी मंशा का अनुमान लगा लिया होता, तो वे इसके बारे में सुनना भी नहीं चाहते थे। वे उसे रोकने के लिए हर संभव प्रयास करते, कभी चापलूसी और स्नेह, तो कभी आज्ञाओं का प्रयोग करके, उसे विवाह के लिए मजबूर करने के लिए, और भी इसलिए क्योंकि वह उनकी सारी संपत्ति की एकमात्र उत्तराधिकारी थी; वे उसकी शादी और उसके बच्चों में सांत्वना पाना चाहते थे।

धन्य यूसेबिया की दो नौकरानी थीं जो उससे वफ़ादार थीं; वे बचपन से ही उसके साथ पली-बढ़ी थीं और उन्होंने अपनी पूरी लगन और भक्ति से उसकी सेवा की। उनके साथ अकेले में अलग होकर, उसने कहा:

'मैं तुम्हें एक रहस्य बताना चाहती हूँ, लेकिन पहले मैं प्रभु परमेश्वर की शपथ दिलाती हूँ कि जो कुछ तुम मुझसे सुनने वाले हो, उसे किसी को मत बताना: मैं तुम्हें अपने हृदय के गुप्त विचार और इच्छा का भरोसा करना चाहती हूँ। तब ध्यान रखना कि कोई भी नश्वर मेरे इस रहस्य को न जाने; और भी अच्छा होगा, यदि तुम स्वयं मुझसे सहमत हो जाओ। तब तुम भी अपनी आत्माओं को बचाओगे, और मेरी इस अयोग्यता की सहायता करोगे।

[1413] कॉन्स्टेंटिनोपल के पैट्रिआर्क जॉर्ज प्रथम ने 678 से 683 तक यह पद संभाला।

[1414] अंतियोकिया के मकरियस ने 653 से 680 तक पैट्रिआर्क के रूप में कार्य किया।

दासीयों ने उससे उत्तर दिया:

'हे स्वामिनि, आप जो आज्ञा देंगी, हम वह सब करेंगी, और भी इसलिए कि आपकी यह योजना हमारी आत्माओं के लिए भी लाभदायक होगी। हम आपके लिए मरने को तैयार हैं, बजाय इसके कि हम किसी को वह बताएं जो आप हमें बताने वाली हैं।'

तब युवती ने उनसे कहा:

'तुम जानती हो कि मेरे माता-पिता मेरी शादी करना चाहते हैं; लेकिन मेरे मन में तो कभी शादी का विचार भी नहीं आया। जिस काम को करने के लिए मेरे माता-पिता मुझे कहते हैं, वह मेरे लिए बहुत बोझिल है। ऐसी ज़िंदगी मेरे लिए क्या है? बस एक भूत, एक धुंध और एक सपना। तो मेरी बात सुनो: हम सब मिलकर एक पवित्र जीवन जीने का संकल्प लें, और यदि प्रभु की इच्छा मेरी इस मंशा को आशीर्वाद दे, और तुम मेरी सलाह मानो और जो मैंने तुमसे कहा है उसे गुप्त रखो – तो फिर हम उस सब पर विचार करेंगे जो हमें करना चाहिए। मेरी बात मानो, भले ही मेरे माता-पिता को इस बात का पता चल जाए और वे मुझे जबरदस्ती शादी करने पर मजबूर करें, ईश्वर की मदद से वे कभी भी मेरा मन नहीं बदल पाएंगे, भले ही वे मुझे आग में डाल दें, तलवार के घाट उतार दें, या मुझे जंगली जानवरों के सामने फेंक दें।

यह सुनकर, दोनों दासी कहने लगीं:

'प्रभु की इच्छा पूरी हो! हम आपकी दृढ़ संकल्प से सहमत हैं और आपकी ही तरह उसी के लिए प्रयासरत हैं, हमारी स्वामिनी। हम आपके बिना राज करने की बजाय आपके साथ मरना पसंद करेंगे।'

अपनी दासियों से ऐसे शब्द सुनकर, धन्य यूसेबिया ने ईश्वर की स्तुति की। इसके बाद, तीनों कन्याएं, जो मसीह से समान प्रेम रखती थीं, लगातार इस बात पर विचार करती रहीं कि वे क्या कर सकती हैं ताकि उनकी इच्छा पूरी हो सके। और उन्होंने ईश्वर से बुद्धिमानी का उपदेश देने के लिए प्रार्थना की।

जिस दिन से उन्होंने ब्रह्मचर्य का जीवन जीने का संकल्प लेकर प्रेमपूर्वक स्वयं को प्रभु को समर्पित कर दिया था, उस दिन से यूसेबिया ने, अपने माता-पिता को बताए बिना, अपने पास जो कुछ भी था—सोना, चांदी और अपनी सभी कीमती संपत्तियाँ—वह सब अपनी दासियों के हाथों से ज़रूरतमंदों में बाँट दिया। दासियों ने भी अपनी जो भी संपत्ति थी, उसे दान कर दिया, और मसीह के प्रति अपने प्रेम के लिए स्वयं को गरीबी के लिए तैयार कर लिया। जब विवाह का दिन नज़दीक आ रहा था और हर कोई उसकी तैयारी कर रहा था, तो धन्य यूसेबिया ने अपनी दासियों से सलाह करने के बाद, अपने और उनके लिए पुरुषों के वस्त्र पहन लिए और अपने सामान से कुछ आवश्यक वस्तुएँ लेते हुए, घर से उनके साथ चोरी-छिपे निकल पड़ीं, क्योंकि दरवाज़े अनलॉक छोड़ दिए गए थे। क्रॉस का चिह्न बनाने के बाद, उन्होंने प्रार्थना में मसीह ईश्वर की ओर मुखातिब होकर कहा:

'हे परमेश्वर के पुत्र, हमारे साथ रहो, और हमें वह मार्ग दिखाओ जिसका हमें अनुसरण करना है, क्योंकि हम आपके प्रेम के लिए अपना घर और उसमें जो कुछ भी है, सब कुछ छोड़ रहे हैं, और हम संकल्प लेते हैं कि हम भटकते हुए और दुख में जीते हुए, आपकी ओर प्रयासरत रहेंगे और आपको खोजने की लालसा रखेंगे।'

इस प्रकार वे घर से निकलते समय आँसुओं के साथ प्रार्थना करने लगीं, और फिर एक ही समय में रोते और आनंदित होते हुए चल पड़ीं।

अपनी यात्रा के दौरान, संत यूसेबिया अपनी दासियों की ओर मुड़ीं:

'इस क्षण से, मेरी बहनें और स्वामिनियाँ बनो; मैं अपने जीवन के बाकी दिनों तक तुम्हारी सेवा करूँगी। बस, मेरी देवियों, आओ हम ईश्वर के लिए सब कुछ त्याग दें और पृथ्वी पर अपनी आत्मा के उद्धार के सिवा और कुछ न माँगें। आओ हम उन सभी व्यर्थ सांसारिक चिंताओं से बचें जो आत्मा के लिए हानिकारक हैं; आओ हम प्रभु पर विश्वास करें, जिन्होंने आज्ञा दी है: *'जो कोई भी मेरे नाम के कारण घर, या पिता, या माता, या भूमि छोड़ देता है, उसे सौ गुना प्राप्त होगा और वह अनंत जीवन का वारिस होगा'* (मत्ती 19:29)। हाँ, मेरी बहनों, आओ हम अपनी आत्माओं के उद्धार के लिए प्रयत्न करें।

जब संत उनसे इस प्रकार बात कर ही रहे थे, कि वे समुद्र के पास पहुँचे और अलेक्जेंड्रिया के लिए रवाना होने को तैयार एक जहाज पाकर, उन्होंने किराया चुकाया और उसमें सवार हो गए। चूंकि अनुकूल हवा चल रही थी, वे कुछ ही दिनों में अलेक्जेंड्रिया पहुँच गए। जहाज से उतरकर, वे कैरिया के शहर हेलिकिर्नस से पंद्रह हज़ार क़दम दूर स्थित

कोया नामक एक द्वीप पर पहुँचे[1415] । वे किसी को भी पता न चलने वाले किसी क्षेत्र की तलाश में एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाते रहे, ताकि उनके माता-पिता उन्हें ढूंढ न सकें। इस द्वीप पर, खोजे जाने के डर से मुक्त, उन्होंने एक बार फिर से अपना लिंग बदलकर स्त्री बना लिया और एक छोटा, सुनसान कुटिया किराए पर लेकर वहाँ रहने लगे। वे ईश्वर का धन्यवाद करते थे, और उनसे निरंतर प्रार्थना करते थे कि वह उनके लिए संन्यास का वस्त्र पहनाने और उनकी आत्मा की देखभाल करने के लिए किसी पुरोहित को भेजें। संत यूसेबिया ने अपनी सहेलियों से कहा:

– मैं तुमसे विनती करती हूँ, मेरी बहनों, प्रभु के वास्ते: हम अपना राज़ रखें और किसी को अपने वतन या उस कारण के बारे में कुछ न बताएं कि हम घर से क्यों निकलीं, और न ही मेरे नाम के बारे में, ताकि मेरे माता-पिता मुझे उस नाम से न ढूंढ सकें जिससे मैं जानी जाती हूँ, या उस वतन से जहाँ से हम निकली हैं। मैं आपसे ईश्वर की कसम खाकर निवेदन करती हूँ कि आप यह सब मेरे जीवन के अंत तक गुप्त रखें और किसी को भी हमारे साथ जो हुआ है या जो होने वाला है, उसके बारे में कुछ भी न बताएं। यदि कोई आपसे मेरा नाम पूछे, तो कहिए कि मेरा नाम ज़ेनिया है, जिसका अर्थ है 'अजनबी'[1416] ; क्योंकि, जैसा कि आप देख सकती हैं, मैं एक भटकती हुई हूँ, जो ईश्वर के लिए अपना घर और माता-पिता छोड़ आई हूँ। अब से, तुम्हें भी मुझे यूसेबिया नहीं, बल्कि ज़ेनिया कहना चाहिए, क्योंकि मेरा यहाँ कोई स्थायी घर नहीं है, बल्कि इस जीवन में तुम्हारे साथ यात्रा करते हुए, मैं आने वाले जीवन की खोज करती हूँ।

संत यूसेबिया द्वारा अपने मित्रों से कहे गए इन शब्दों के उत्तर में, उन्होंने जो कुछ भी उन्होंने उनसे कहा था, उसे गुप्त रखने का वादा किया, और उस समय से मसीह की पवित्र वधू को यूसेबिया के बजाय क्ज़ेनिया कहा जाने लगा।

एक दिन, अपने मित्रों के साथ घुटने टेककर, वह रोने लगी और कहने लगी:

'हे ईश्वर, हम पर, जो भटकते और गरीब हैं, अपनी महान दया दिखाओ, जैसे आपने अपने सभी संतों पर दिखाई है। हे प्रभु, हमें एक ऐसा पुरुष भेजो जो आपको प्रिय हो, जिसके द्वारा हम भी, जो दीन हैं, उद्धार पा सकें।'

इस प्रकार प्रार्थना करने के बाद, संत ज़ेनिया अपनी बहनों के साथ उस घर से बाहर निकलीं जहाँ वे रहती थीं - और वहाँ उन्होंने एक सम्मानित, सफेद बालों वाले साधु को बंदरगाह से आते देखा, जो एक भिक्षु के वेश में था, जिसका चेहरा एक स्वर्गदूत जैसा था। उसके पास पहुँचकर, वह पवित्र कन्या उसके पैरों पर गिर पड़ी और, रोते हुए, कहने लगी:

हे ईश्वर के पुरुष, परदेस में भटकती हुई इस दीन को तुच्छ न समझो; इस दीन भिखारी को न ठुकराओ; एक पापी की विनती से मुख न मोड़ो; बल्कि पवित्र प्रेरित पौलुस के समान बनो और हमारे लिए एक मार्गदर्शक और शिक्षक बनो, जैसे वह संत थिक्ला के लिए थे। परमेश्वर द्वारा धर्मी लोगों के लिए तैयार किए गए पुरस्कार को याद करो, और इन दो बहनों के साथ मुझे भी बचा लो।

यह सुनकर, ईश्वर के सेवक दया से भर गए और, उनकी आँसू देखकर, पूछा:

'तुम क्या चाहती हो, और मैं तुम्हारे लिए क्या करूँ?'

उसने उत्तर दिया:

'प्रभु में हमारे लिए एक पिता और एक शिक्षक बनें। हमें ऐसी जगह ले जाएँ जहाँ हम उद्धार पा सकें; हम अजनबी हैं और नहीं जानते कि कहाँ जाएँ; हम लोगों के सामने आने में लज्जित हैं।'

तब उसने पूछा:

'तुम कहाँ से आए हो, और तुम इतने अकेले क्यों हो?'

संत ने उत्तर दिया:

'हम मसीह के सेवक, एक बहुत दूर के देश से आए हैं। हमने एक साथ अपना वतन छोड़ने का निश्चय किया और इस प्रदेश में आ गए। हमने दिन-रात ईश्वर से प्रार्थना की कि वह हमें एक ऐसा पुरुष भेजे जो हमें मोक्ष पाने में सहायता करे। और अब ईश्वर ने हमें आपको दिखाया है, जो हमारे दुर्बलताओं को सहन करने में सक्षम एक आध्यात्मिक पिता हैं।'

पवित्र वृद्ध ने उत्तर दिया:

'मुझ पर विश्वास करो, बहनों, मैं भी यहाँ एक यात्री हूँ, जैसा कि आप देख सकती हैं। मैं पवित्र स्थानों से आई हूँ; वहाँ अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करने के बाद, मैं अपने देश लौट रही हूँ।'

[1415] करिया – एशिया माइनर प्रायद्वीप का दक्षिण-पश्चिमी भाग। हेलिकार्नेसस – करिया के सबसे महत्वपूर्ण शहरों में से एक।

[1416] ग्रीक शब्द से जिसका अर्थ 'विदेशी' या 'अजनबी' है।

मसीह के सेवक ने पूछा

'आप कसि देश से हैं, आध्यात्मकि पति, मेरे स्वामी?'

उसने उत्तर दयि:

'मैं कैरयि की भूमसि हूँ, मलिास नगर से।'

तब मसीह के सेवक ने उससे फरि कहा:

'मैं आपकी पवत्रिता से नविेदन करता हूँ: हमें बताइए कआिपका पद क्या है, क्योंकमिुझे लगता है कआिप एक बशिप हैं।'

वरषि्ठ ने उससे उत्तर दयि:

'मुझे क्षमा करें, बहन! मैं एक पापी मनुष्य हूँ, जो मठ के पद के अयोग्य हूँ। ईश्वर की कृपा से, मैं पवत्रि और महमिामय प्रेरति एंड्रयू के मठ में भाइयों के एक छोटे से समुदाय का पुरोहति और मठाधीश हूँ; मेरा नाम पॉल है।'

यह सुनकर, मसीह की दासी ने ईश्वर की स्तुतकिरते हुए कहा:

'महमिा तेरी हो, हे ईश्वर, कतिूने मेरी, एक दीन आत्मा की, प्रार्थना सुनी और मुझे, जैसे तूने एक बार संत थेक्ला को भेजा था, इन दो बहनों के साथ संत पौलुस को भेजा।'

तब वह वृद्ध की ओर मुड़ी:

'मैं आपसे वनिती करती हूँ, हे ईश्वर के सेवक, हम यात्रयिों को उपेक्षति न करें, बल्कप्रिभु में हमारे लिए एक पति बनें।'

धन्य पौलुस ने उनसे उत्तर दयि:

'मैंने आपसे कहा है कमिैं भी एक अजनबी हूँ, और मुझे नहीं पता कमिैं आपके लिए यहाँ क्या भलाई कर सकती हूँ। हालाँकि, यदआिप मेरे शहर जाना चाहते हैं, तो मुझे उम्मीद है कप्रिभु आपको अपनी दया दखिाएंगे, और मैं, अपनी पूरी क्षमता से, आपकी देखभाल करूँगी।'

कन्याएँ, आँसुओं से भरी आँखों से वृद्ध के सामने झुककर, कहने लगीं:

'हाँ, हे परमेश्वर के सेवक! हमें अपने साथ ले चलो। हम वहाँ जाएँगे जहाँ भी आप हमें ले जाओगे, पर केवल इन यात्रयिों पर दया दखिाओ और अनंत जीवन के लिए हमारा मार्गदर्शक बनो।'

ईश्वर के पुरुष ने पवत्रि कन्याओं को अपने साथ ले लयि और उनके साथ मलिास नगर में गया। वहाँ उसने उनके लिए चर्च के पास एक एकांत स्थान पर रहने की व्यवस्था की। पवत्रि कन्या ने उन्हें अपने घर से लाए हुए पैसों से मुक्त कराया; फरि उसने संत स्टीफन प्रथम शहीद को समर्पति एक छोटा सा चर्च बनवाया और जल्द ही कई कन्याओं को इकट्ठा करके एक मठ की स्थापना की और उन्हें मसीह को समर्पति कर दयि। मठाध्यक्ष, संत पॉल, उनकी देखभाल करते थे। उन्होंने ही संत ज़ेनयि और उनकी दो दासयिों का संन्यास दीक्षा संस्कार कयि। उसकी मृत्यु तक कसिी को भी यह पता नहीं चला कयिह पवत्रि कन्या कहाँ से आई थी, वह अपने देश से क्यों चली गई थी, या उसका असली नाम क्या था, जबकविह खुद को ज़ेनयि, यानी 'अजनबी' कहती थी। जहाँ तक पूजनीय पॉल का सवाल है, जब उनसे इन कन्याओं के बारे में पूछा जाता था, तो वे कहते थे:

'मैंने उन्हें कोई द्वीप से लयि और यहाँ लाया।'

इसलिए सभी ने यही मान लयि कवि वहीं से आई थीं। यही कारण है कमिठ का नाम कोइ द्वीप के नाम पर रखा गया।

कुछ ही समय बाद, उस शहर के बशिप सरिलि का प्रभु में नधिन हो गया, और सेंट एंड्रयू मठ के मठाधीश, आदरणीय पॉल, को उनके उत्तराधकिारी के रूप में चुना गया। बशिप का पद प्राप्त करने पर, वह कन्वेंट आए और ज़ेनयि को, उनकी इच्छा के वरिुद्ध, एक डीकोनेस के रूप में नयिुक्त कयि, क्योंकविह इस पद के लिए पूरी तरह से योग्य थीं। क्योंकि, देह में रहते हुए भी, उन्होंने एक दैवी जीवन जयि। यद्यपि, एक सेनेटर की बेटी होने के नाते, उनका पालन-पोषण वलिासति में और हर सुख-सुवधिा से घरि हुआ था, फरि भी उन्होंने स्वयं को इतने कठनि और तपस्वी जीवन के लिए समर्पति कर दयि और तपस्या के पूर्णत्व के लिए अपने लिए पूरी तरह से नए, असामान्य और कठनि मार्ग स्पष्ट रूप से प्रदर्शति कए। भूत-प्रेत भी उसकी तपस्या से डरते थे; उसके उपवास और कठोर तपस्या की करतबों से पराजति होकर, वे भाग जाते थे, और उसके पास आने की हम्मित भी नहीं करते थे। वह केवल दूसरे या तीसरे दनि ही भोजन करती थी, और कई मौकों पर पूरे सप्ताह बनिा भोजन के रह जाती थी। जब खाने का समय आता, तो वह न तो हरी सब्जयिाँ, न ही

दालें, न ही शराब, न ही तेल, न ही बगीचे की सब्जियाँ, और न ही कोई अन्य पौष्टिक भोजन खाती थीं, बल्कि केवल अपने ही आँसुओं से भीगी हुई थोड़ी सी रोटी खाती थीं। वह धूपदान से राख निकालकर उस पर छिड़क देती थीं। वह अपने पूरे जीवन में ऐसा करती रही, जिससे इस भविष्यवाणी की पूर्ति हुई: *'मैं राख को अपनी रोटी की तरह खाती हूँ और अपने पेय में आँसू मिलाती हूँ'* (भजन संहिता 101:10)। साथ ही, उन्होंने इस आत्म-त्याग को अन्य बहनों से छिपाने की भरसक कोशिश की, और केवल उनकी दो दासियाँ, जो उनके साथ रहती थीं, ही गुप्त रूप से उनका काम देखती थीं और स्वयं भी उनके सदाचारी जीवन की नकल करती थीं। फिर भी, वह हमेशा इतनी अधिक ऊर्जा बनाए रखती थीं कि शाम से लेकर मैटिन्स तक, वह पूरी रात अपने हाथ ऊपर उठाकर प्रार्थना में खड़ी रहती थीं। बहनों ने उसके जीवन भर उसे इस तरह गुप्त रूप से देखा। कभी-कभी, वह शाम को घुटने टेकती और सुबह तक प्रार्थना करती, और भरपूर आँसू बहाती। इस प्रकार वह हमेशा प्रभु की सेवा करती थी, और इतनी विनम्रता से करती थी जैसे वह खुद को सभी लोगों में सबसे बुरा मानती हो।

लेकिन उसकी अन्य सभी सद्गुणों को कौन गिन सकता है? उसके सभी कर्मों का वर्णन करने के लिए कौन सा शब्द पर्याप्त होगा! सबसे बढ़कर, उसकी नम्रता के बारे में क्या कहा जा सकता है? किसी ने भी उसे कभी क्रोधित नहीं देखा था; किसी भी घमंड या अहंकार ने कभी उसके जीवन को कलंकित नहीं किया। उनका मुख हमेशा विनम्र रहता था, उनका मन हर तरह के घमंड से मुक्त था, उनका रूप सादा था, उपवास के कठोर श्रम से उनका शरीर दुबला-पतला था, और उनका हृदय शांत था, जो किसी भी संदेह से अछूता था। ऐसी कौन सी सद्गुण था जो उनमें नहीं था! उनमें सतर्कता, असाधारण आत्म-संयम, अकथनीय विनम्रता और असीम प्रेम जैसी विशेषताएँ थीं। वह गरीबों की मदद करती थीं, दुखी लोगों पर दया दिखाती थीं, पापियों पर दयालु थीं, और जो लोग पश्चाताप के मार्ग से भटक गए थे, उन्हें मार्गदर्शन करती थीं। जहाँ तक उसके कपड़ों की बात है, कहने को बहुत कुछ नहीं है: वह बहुत फटे-पुराने कपड़े पहनती थी—एक पोशाक और एक कमीज़—लेकिन वह इनके भी खुद को लायक नहीं समझती थी। उसका पूरा जीवन हार्दिक भक्ति और लगातार आँसुओं के प्रवाह में बीता। गर्मियों की गर्मी में झरनों के सूख जाना आसान था, बजाय इसके कि उसकी आँखें आँसू बहाना बंद करें। हमेशा अपने प्रिय वर, मसीह, को निहारते हुए, उनकी आँखों से आँसुओं की धाराएँ बहती थीं। वह उन्हें आमने-सामने देखने और दाऊद के साथ यह कहने के लिए तरसती थीं: *'मैं कब आकर परमेश्वर के सामने उपस्थित होऊँगा?'*— अपने सबसे प्रिय वर के सामने? *'मेरे आँसू दिन-रात मेरा भोजन बन गए हैं'* (भजन संहिता 41:3–4)।

जब इस सदैव स्मरणीय कन्या, मसीह की निर्दोष वधू, के लिए इस वर्तमान सांसारिक जीवन से प्रस्थान करने का समय निकट आया, तो संत एफ्रेम, जो कभी उस शहर के बिशप रहे थे, के सम्मान में पर्व का दिन आ गया। धन्य बिशप पॉल अपने संपूर्ण पुरोहित वर्ग के साथ लेवकिन नामक गाँव के लिए रवाना हुए। वहाँ बिशप सेंट एफ्रेम का चर्च था, और उसमें उनके पवित्र अवशेष विराजमान थे। उस दिन, पूजनीय ज़ेनिया ने अपनी सभी बहनों को मठ के चर्च में बुलाया और उनसे बात करना शुरू किया:

'मेरी बहनों और सखियों! मैं जानती हूँ कि आपने मेरे प्रति कितना प्रेम दिखाया है – आपने मेरी कमज़ोरियों को कैसे सहन किया और एक अजनबी होने के नाते मेरी मदद कैसे की। अब मैं आपसे विनती करती हूँ: अपने इस सेवक के प्रति अपना प्रेम अंत तक बनाए रखें; मुझे—एक गरीब, पापी और परदेशी—अपनी प्रार्थनाओं में याद रखें, और मेरे लिए ईश्वर से निवेदन करें, ताकि मेरे पाप मेरे लिए बाधा न बनें, बल्कि आपकी प्रार्थनाओं के द्वारा, मैं बिना किसी बाधा के अपने मसीह के पास पहुँच सकूँ। अब मेरी मृत्यु निकट आ रही है; मेरी आत्मा बहुत कष्ट और शोक में है, क्योंकि मैं बिना उचित तैयारी के अपने शरीर को छोड़ रही हूँ। हमारे पिता और प्रभु, बिशप पॉल, अभी यहाँ नहीं हैं। इसलिए, मेरी ओर से, जब वह आएँ तो उनसे कह दीजिए: दीन ज़ेनिया ने इस प्रकार कहा: 'हे आदरणीय पिता, कृपा करके मुझे, एक यात्री को याद कीजिए: आपने मुझे इस मार्ग पर लगाया और इस जीवन में लाए – तो फिर मेरे लिए प्रार्थना कीजिए, कि प्रभु मेरी आशा में मुझे लज्जित न करें।'

यह सुनकर सभी बहनें रोने लगीं और कहने लगीं:

'हमारी माता और हमारी आत्माओं की मार्गदर्शक! आप हमें अनाथ बनाकर दुर्भाग्य का सामना करने के लिए छोड़ रही हैं। तो फिर जीवन के सच्चे मार्ग पर हमारा मार्गदर्शन कौन करेगा? हमें कौन सिखाएगा? हमारी निराशा में हमारे लिए प्रार्थना कौन करेगा? नहीं, हमारी माता। इस समय हमें न छोड़ें। याद करो कि कैसे आपने स्वयं हमें इस घेरे में इकट्ठा किया था। मालकिन, हमारी आत्माओं का ध्यान रखना और ईश्वर से प्रार्थना करना कि वह हम दीन-दुखियों के लिए, हमारे वास्ते आपको थोड़ा और समय दे, ताकि आप हमें मोक्ष के मार्ग पर ले जा सकें।

उसकी दो दासियाँ भी उसके चरणों में गिरकर कड़वाहट से रोने लगीं, और कहने लगीं:

'हे स्वामनिी, आप हमें पहले ही छोड़कर, हमारे बनिा यहाँ से जा रही हैं। हम दुर्भाग्यशाली आपके बनिा क्या करेंगे? हम भटकते हुए, एक परदेस में क्या करेंगे? हम दुखी, दरदि्र और भटकते हुए लोगों पर हाय! हमने अपना ध्यान नहीं रखा, और इसीलएि हे स्वामनिी, आप हमें अकेला छोड़ना चाहती हैं।' हमारे दुखों को याद करो, जनि्हें हमने आपके साथ साझा कयिा। हमारी साथ की यात्रा को याद करो, जसिमें हम आपके साथी थे। याद करो कि हमने हमेशा आपकी नष्ठिापूर्वक सेवा की। हमें याद रखना और हमारे लएि ईश्वर से प्रार्थना करना; हमें अपने साथ ले चलो, ताकि हम आपसे अलग न हो जाएँ, हमारी मालकिनो।

जब जोरदार वलिाप और हड़कंप मच गई, तो ज़ेनयिा स्वयं अपने आँसुओं के बीच बोलने लगीं:

'तुम जानती हो, मेरी बहनों, कि बहुत समय पहले पवत्रि प्रेरति पतरस ने घोषणा की थी: *"प्रभु अपने वचन को पूरा करने में सुस्त नहीं है, जैसा कि कुछ लोग सुस्ती समझते हैं, बल्कि हमारे प्रति धीरज रखता है, और नहीं चाहता कि कोई नाश हो, बल्कि चाहता है कि सब का मन फरिए। 'प्रभु का दनि रात में चोर के समान आएगा'* (2 पतरस 3:9-10)। यह जानकर, मेरी बहनों, इस थोड़े समय में हम सुस्त न रहें, बल्कि हम जागते रहें। आओ हम अपने दीपक जलाएँ, अपने पात्रों को तेल से भरें, और वर के स्वागत के लएि तैयार रहें, क्योंकि हम नहीं जानते कि प्रभु हमें कसि घड़ी बुलाएँगे: क्योंकि देखो, फसल पक चुकी है और मजदूर तैयार हैं, परन्तु वे केवल स्वामी की आज्ञा की प्रतीक्षा कर रहे हैं।

जब संत ने यह कहा, और सभी रो रहे थे और उनके पैरों पर गरि पड़े थे, तब उन्होंने स्वर्ग की ओर अपने हाथ उठाए और, भरपूर आँसू बहाते हुए, इस प्रकार प्रार्थना करना शुरू कयिा:

'हे ईश्वर, जनि्होंने आज तक मेरे इस सांसारकि सफर का प्रबंध कयिा है! मुझ पर, अपनी दीन और पापी दासी पर, ध्यान लगाओ: अपनी इन दासयिों, मेरी बहनों पर दया करो। उन्हें संरक्षति करो और शैतान की सभी युक्तयिों से बचाओ, अपने पवत्रि नाम की महमिा और वैभव के लएि। मैं आपसे प्रार्थना करती हूँ, हे मेरे ईश्वर: मेरी इन दो बहनों को भी याद कीजएि, जो आपके प्रेम के लएि मेरे साथ यात्रा कर चुकी हैं। जैसे इस क्षणकि जीवन में वे मुझसे कभी अलग नहीं हुईं, वैसे ही हमें अपने राज्य में अलग न करें, बल्कि हम सभी को एक साथ अपने स्वर्गीय नविास में स्थान प्रदान करें।

इस प्रकार प्रार्थना करने के बाद, उसने सभी बहनों से कुछ समय के लएि जाने और प्रार्थनात्मक मनन के लएि उसे अकेला छोड़ देने के लएि कहा। जब सभी चर्च से चले गए, तो वह अकेले ही अंदर बंद हो गई, जबकि उसकी दो दासयिाँ दरवाज़े पर ही रहीं और छेद से अंदर देखती रहीं। उन्होंने उन्हें प्रार्थना करते हुए देखा, उनके घुटने जमीन पर झुके हुए थे; फरि, अपनी प्रार्थना के बीच में, उन्होंने खुद को क्रूस के आकार में जमीन पर मुंह के बल लटा दयिा। जब वह वहाँ काफी देर तक पड़ी रहीं, तो अचानक चर्च में एक रोशनी चमकी, जो बजिली की चमक जैसी थी; उसी समय, चर्च से एक तेज सुगंध नकिलने लगी। बहनें जल्दी से अंदर आईं और उन्हें जमीन से उठाने की कोशशि की, लेकनि पाया कि वह पहले ही प्रभु में नधिन कर चुकी थीं। यह 24 जनवरी[1417] को, शनविार के दनि, दनि के छठे घंटे की बात है। ये दो बहनें रोते हुए चर्च से बाहर नकिलीं और दूसरों को पुकारकर कहने लगीं:

'हमारी माताओं और बहनों! चलो हम अपनी साझा अनाथता पर रोएँ। चलो हम उस स्तंभ के नधिन पर शोक मनाएँ जो हम सब थीं। हमने अपनी सम्मानति माँ को खो दयिा है। हमारी मार्गदर्शक हमसे चली गई हैं, और हम अकेले रह गए हैं। संत ज़ेनयिा, हमारी माँ, का नधिन हो गया है।'

चर्च में प्रवेश करते ही, सभी ने देखा कि वह इस जीवन से परलोक में चली गई थीं। फरि रोना और बड़ा वलिाप शुरू हो गया। लेकनि ईश्वर, जो मानवता के प्रेमी हैं, सभी को यह दखिाने की इच्छा रखते हुए कि पृथ्वी पर सभी से क्या खजाना छपिाया गया था, ने स्वर्ग में एक बड़ा और सबसे पवत्रि संकेत प्रकट कयिा। ठीक उसी क्षण जब पूजनीय ज़ेनयिा ने दोपहर के समय, एकदम साफ़ और उज्ज्वल मौसम के बीच, अपना पवत्रि आत्मा प्रभु के हाथों में सौंपा, मठ के ऊपर आकाश में तारों का एक बहुत ही प्रकाशमान मुकुट दखिाई दयिा, जसिके केंद्र में एक क्रॉस था जो सूर्य से भी अधकि चमक रहा था। यह चहि्न सभी को दखिाई दयिा। मलिास के नागरकि, जो अपने बशिप, परम आदरणीय पॉल के साथ लेवकी गाँव में थे, आकाश में यह संकेत देखकर चकति हो गए और हैरानी से एक-दूसरे से पूछने लगे: इसका क्या मतलब हो सकता है? धन्य बशिप पॉल ने, आत्मा द्वारा इस संकेत का अर्थ समझकर, लोगों की पूरी सभा से कहा:

'हमारी माता ज़ेनयिा का नधिन हो गया है, और इस अवसर पर मुकुट का चहि्न प्रकट हुआ है।'

[1417] पूज्य ज़ेनयिा का 5वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में नधिन हो गया।

लि्टजी समाप्त होते ही, वे भोज में शामलि सभी लोगों के साथ शहर लौट आए, और वहाँ नागरकिों ने, ठीक वैसे ही जैसा बशिप ने उन्हें बताया था, संत जे़नयिा को वशि्राम करते हुए पाया।

तुरंत ही, स्वर्ग में दखिाई दएि गए चह्नि से आकर्षति होकर, बहुत सारे पुरुष और महलिाएँ अपने बच्चों के साथ मठ में इकट्ठा हो गए। उन्होंने ज़ोर से पुकारा:

'महमिा हो तुझमें, हे मसीह हमारे परमेश्वर, क्योंकि तेरे पास संतों की एक भीड़ है जो गुप्त रूप से तुझे प्रसन्न करती है!' महमिा तेरी हो, हे ईश्वर के अवतार पुत्र, जो स्वेच्छा से हम पापयिों के लिए सूली पर चढ़ाए गए – क्योंकि आपने सभी को अपना वह महान खजाना प्रकट कयिा, जो अब तक यहाँ छपिा हुआ था! महमिा तेरी हो, हे प्रभु, कि आपने Milas के इस वनिम्र नगर को अपने इस खजाने का नविास-स्थान और भंडार बनाने की कृपा की। आपने इसमें अब तक एक कीमती मोती, एक अनमोल रत्न, अपनी पवत्रि वधू को संरक्षति रखा है! उसे अपने स्वर्गीय महल में स्वीकार करने के बाद, आपने उसके शुद्ध और पवत्रि शरीर को अपने नगर की देखभाल में छोड़ दयिा है।

तो सभी, रोते हुए, चल्लिा उठे और स्वर्ग में दखिाई दे रहे मुकुट और क्रूस को नहिारने लगे। उसी क्षण, मसीह-प्रेमी सभी लोग, और वशिेष रूप से महलिाएँ, उत्साह से प्रेरति होकर, पवत्रि बशिप पॉल से ऊँचे स्वर में चल्लिा उठे:

'हे पूजनीय बशिप, हमारे नगर की महमिा को न छपिाइए! हमारी महमिा के वषिय में मौन न रहएि; परमेश्वर द्वारा हमें प्रकट कयिा गया मोती न छपिाइए। सभी को वह तेजस्वी दीपक दखिाइए जो अब तक छपिा हुआ और गुप्त रूप से चमकता रहा है। इसे सभी को दखिाइए, ताकि हमारे शत्रु भी देख सकें और पहचान सकें कि हम कसि प्रभु की सेवा करते हैं। pagans इसे देखकर लज्जति हों; यहूदी भी क्रूस के रहस्य को देखें और यह जान जाएँ कि जिसे उन्होंने सूली पर चढ़ाया वह ईश्वर है। मसीह के क्रूस के सभी शत्रु इसे देखकर रोएँ। वे देखें कि कैसे, मृत्यु के बाद भी, स्वर्गदूतों के प्रभु अपने सेवकों को महमिामय बनाते हैं। वे देखें कि मसीह ईश्वर अपनी वधू, जे़नयिा को कसि महमिा से वभिूषति करते हैं, जसिे लोग एक पूरी तरह से अज्ञात भटकती और कैद महलिा समझते थे। हर कोई देखे कि हमारे इस वनिम्र शहर को क्या वरदान और अनुग्रह प्रदान कयिा गया है!

जब लोगों ने बशिप से इतनी प्रार्थनापूर्वक नविेदन कयिा, तो वह और वरषि्ठ पुरोहति संत जे़नयिा के पवत्रि शरीर के पास गए। इसे एक ताबूत पर ठीक से रखकर, और कई मोमबत्तयिाँ जलाकर तथा धूप जलाकर, बशिप ने अपना सरि झुकाया और, वरषि्ठों के साथ मलिकर, ताबूत को अपने कंधों पर उठा लयिा, जसिके बाद वे गाते हुए इसे शहर के केंद्र में ले गए। हो रहे उस गौरवशाली चमत्कार को देखकर सभी चकति थे, क्योंकि जैसे ही संत के शरीर को वहन करने वाली ताबूत आगे बढ़ रही थी, स्वर्ग में प्रकट हुआ एक क्रॉस वाला मुकुट ताबूत के ऊपर-ऊपर चल रहा था। जब ताबूत को शहर के केंद्र में रखा गया, तो मुकुट उसके ऊपर आकर ठहर गया। फरि आसमान में यह अद्भुत संकेत देखकर आसपास के गांवों से अनगनित लोगों की भीड़ जमा हो गई। पूरा शहर लोगों की भीड़ से भर गया, और उसमें भारी भीड़भाड़ हो गई। धन्य बशिप पॉल, लोगों के साथ, उस संपूर्ण रवविार की रात संत के साथ रहे, सुबह तक जागते रहे और भजन गाते रहे। उनके अवशेषों के माध्यम से कई चमत्कारकि उपचार हुए: कोई भी व्यक्ति किसी भी बीमारी से पीड़ति हो, जैसे ही वह संत की शव-पालकी को छूता, वह तुरंत ठीक हो जाता था।

जब रवविार की सुबह हुई, तो संत जे़नयिा के पवत्रि शरीर को शुद्ध कफ़न से ढक दयिा गया और अंतमि संस्कार के भजनों के गायन के साथ, इसे शहर के दक्षणिी प्रवेश द्वार पर स्थति एक स्थान, जसिे 'सकिनिी' (अंजीर का बगीचा) के नाम से जाना जाता है, तक ले जाया गया: यह वही जगह थी जहाँ संत ने, अपने नधिन से पहले, वसीयत में लखिा था कि उनके शरीर को दफनाया जाए। एक बार फरि, सभी लोगों ने देखा कि जब उनके शरीर को ताबूत पर ले जाया जा रहा था, तो तारों से बना एक ताज, जो आकाश में दखिाई दे रहा था, ताबूत के पीछे-पीछे आ रहा था। और एक बार फरि, जब ताबूत को नीचे रखा गया, तो मुकुट उसके ऊपर लटका हुआ रहा। जब दफ़न कयिा गया, तो सबसे करीब खड़े लोगों ने पवत्रि अवशेषों को ढकने वाले कफ़न को छोटे-छोटे टुकड़ों में बाँट लयिा और उन्हें वभिन्नि बीमारयिों से ठीक होने के लिए श्रद्धापूर्वक रख लयिा। बशिप ने, परम पूज्य जे़नयिा के पवत्रि शरीर पर रीति के अनुसार मूरा का लेप लगाकर, उसे एक नए ताबूत में रख दयिा। जैसे ही सम्मानपूर्वक अंतमि संस्कार पूरा हुआ, आकाश में चमक रहा क्रॉस वाला तारों का मुकुट तुरंत अदृश्य हो गया। उसी समय, पवत्रि ताबूत के पास आस्था के साथ आने वाले सभी लोगों पर पवत्रि ताबूत से कई चमत्कारकि उपचार हुए।

कुछ ही समय बाद, पूज्य जे़नयिा की एक दासी की मृत्यु हो गई; फरि, उसके तुरंत बाद, दूसरी भी परलोक सधिार गई। दोनों को उनकी पवत्रि स्वामनिी के चरणों में दफनाया गया। जब दूसरी दासी मृत्युशय्या पर थी, तो सभी ननयिां उसके

पास आईं और उससे वनिती करते हुए, अपनी स्वामनिी, ज़ेनयिा के सभी कर्मों के बारे में बताने के लिए कहा। उसने, यह महसूस करते हुए कि वह पहले से ही मृत्युशय्या पर थी, उन्हें संत के बारे में सब कुछ वस्तिार से बताया: वह कहाँ से आई थीं, उनके माता-पतिा कौन थे, उन्होंने अपनी दो दासयिों के साथ अपने घर और अपने देश से क्यों भाग लयिा था, और उन्होंने अपना नाम कैसे छपिाया था; क्योंकि उसका असली नाम यूसेबयिा था, लेकनि वह खुद को जेनयिा कहती थी क्योंकि वह ईश्वर के प्रति अपने प्रेम के लिए भटकती थी। इस प्रकार, सभी ने मसीह की वधू, जेनयिा के पहले से अज्ञात जीवन के बारे में जाना।

इस प्रकार उस पूजनीय ने ईश्वर को प्रसन्न कयिा: संसार के लिए वह एक भटकती हुई थी, परन्तु स्वर्ग के लिए एक नागरकि; वह देह में दृश्यमान थी, फरि भी अदेह स्वर्गदूतों के समान थी; उसने अपने शरीर को वैसे ही त्याग दयिा जैसे कोई वस्त्र उतारता है, और शैतान को वैसे ही पैरों तले कुचल दयिा जैसे कोई साँप को कुचलता है; उसने सभी सांसारकि चीजों को कूड़े के समान माना, फरि भी अपनी नरि्मल कुँवारी अवस्था को एक अथाह खजाने के रूप में संरक्षति रखा; अपने प्रेम के द्वारा वह मसीह की वधू बनी, उसे वशि्वास का मुकुट पहनाया गया, और उसने वह प्राप्त कयिा जसिकी उसने आशा की थी, और अब अपने अमर वरा के महल में आनंदति है। उनकी प्रार्थनाओं के द्वारा वह वशि्वासयिों के लिए बहुत सहायक हैं, क्योंकि मृत्यु ने उनकी शक्ति को नष्ट नहीं कयिा है और न ही उनकी परोपकारति के क्षेत्र को कसिी सीमा के भीतर कैद कयिा है। चूंकि उन्होंने मसीह के लिए कई पुण्य कार्य कए, बदले में मसीह भी उनके लिए हम पर कई अनुग्रह करते हैं, और अपनी प्रयि वधू की पवत्रि प्रार्थनाओं को स्वीकार करते हैं।

संत ज़ेनयिा के नधिन के कुछ वर्षों बाद, उनके आध्यात्मकि पतिा, पूजनीय बशिप पॉल का भी नधिन हो गया। उन्होंने भी अंत तक ईश्वर को प्रसन्न कयिा, क्योंकि उनकी प्रार्थनाओं से दुष्टात्माएँ भगाई जाती थीं और हर प्रकार के रोगों का उपचार होता था। उन्हें संत एंड्रयू द अपोस्टल के चर्च में दफनाया गया, जहाँ उन्होंने पहले मठाधीश के रूप में सेवा की थी, और उनकी पवत्रि आत्मा संतों की महमिा में परमेश्वर के सामने प्रकट हुई। ईश्वर के समक्ष हमारे लिए उनकी हार्दकि मध्यस्थता के द्वारा, जेनयिा नाम ग्रहण करने वाली आदरणीय यूसेबयिा की प्रार्थनाओं के द्वारा, और इन दोनों पवत्रि दासयिों की मध्यस्थता के द्वारा, प्रभु हमें अपनी दया प्रदान करें, अब और हमेशा और युगों-युगों तक, आमीन।

कॉन्टाकयिन, स्वर 2:

जब हम आपकी असाधारण स्मृति का उत्सव मनाते हैं, ज़ेनयिा, और आपको प्रेम से सम्मानति करते हैं, हम मसीह का गुणगान करते हैं, जो आपको सभी चीजों में चंगा करने की शक्ति प्रदान करते हैं; हम सभी के लिए हमेशा उनसे प्रार्थना करें।

ससिलि के पवत्रि शहीद बबीला और उनके शष्यिों तमिोथी और अगपयिस का स्मरणोत्सव

24 जनवरी को स्मरणोत्सव

संत बाबलिस पूर्व से, अंतीयक के गौरवशाली नगर से आए थे[1418] ; उनके माता-पतिा कुलीन और धार्मकि लोग थे।

अपने गृहनगर में, उन्होंने प्रभु की आज्ञाओं में शकि्षा और मार्गदर्शन प्राप्त कयिा, क्योंकि उन्होंने पवत्रि शास्त्रों का शीघ्र और गहन अध्ययन कयिा था, जो हमेशा ईश्वर की ओर ले जाते हैं। बचपन से ही संत मसीह से प्रेम करते थे और उन्होंने संसार का त्याग कर दयिा; उन्होंने कम उम्र में ही अपने माता-पतिा का घर छोड़ दयिा, अपनी संपत्ति गरीबों, अनाथों और वधिवाओं में बाँट दी, और सभी सांसारकि व्यर्थताओं का त्याग कर एक पहाड़ की चोटी पर बस गए, जहाँ वे मौन में रहते थे; उनके साथ दो शष्यि, अगपयिस और तमिोथी थे; उस धन्य तपस्वी को एक पादरी के रूप में नयिुक्त कयिा गया और उन्होंने अपने ऊपर प्रदान कए गए पुरोहति के पद की कृपा का सम्मानपूर्वक पालन कयिा। हालाँकि, जब हठी और रक्तपपिासु異教徒ों ने उन्हें प्रांतीय राज्यपाल के हवाले करने का नश्चिय कयिा, तो संत ने अपने शष्यिों के

[1418] अंतयिोक ओरोन्टसि नदी पर स्थति है और पहले सीरयिा की राजधानी थी।

साथ मलिकर रोम छोड़ दयिा और ससिलिी चले गए[1419] , जहाँ वे एक वर्ष तक रहे। वहाँ, ईश्वर की कृपा से, उन्होंने कई लोगों को ज्ञान प्रदान कयिा और उन्हें मसीह की सच्चाई की समझ तक पहुँचाया।

'पहाड़ पर बसा हुआ नगर छपि नहीं सकता' (मत्ती 4:14), और धन्य बावेल की खबर ससिलिी के राज्यपाल तक पहुँच गई; उसने संत और उनके दो शष्यिों को गरिफ्तार करने का आदेश दयिा। यह सुनकर कि उसके बहादुर सेवक ने कतिनी धृष्टता से मसीह की गवाही दी, राज्यपाल ने उसे और उसके शष्यिों को कोड़ों और अन्य यातनाओं का शकिार बनाया; रक्त-सनाके पवत्रि शहीदों को ससिलिी के नगरों में घुमाया गया, और साथ ही उन्हें हर प्रकार के अमानवीय उपहास का शकिार बनाया गया; इससे यातना देने वाले ने नागरकिों को डराने और अपनी क्रूरता को शांत करने, दोनों का प्रयास कयिा। हालाँकि, पवत्रि शहीदों ने आने वाले शाश्वत आशीर्वादों पर मनन करके शक्ति प्राप्त की। अंत में, जल्लादों ने धन्य शहीदों को अपनी तलवारों से मार डाला और उनके शरीरों को आग में फेंक दयिा; लेकनि लपटों ने पवत्रि अवशेषों को नहीं छुआ, और कुछ वश्विासयिों ने उन्हें ले लयिा और स्वयं ससिलिी द्वीप पर एक सम्मानजनक दफन दयिा[1420] ।

आदरणीय मैसेडोनयिा तपस्वी की स्मृति

24 जनवरी को स्मरण

आदरणीय मेसेडोनयिस ने अपने तपस्या कार्यों के लिए स्थान और रंगमंच के रूप में पहाड़ों की चोटयिों को चुना, वे लंबे समय तक एक जगह पर नहीं ठहरते थे, बल्कि आगंतुकों से बातचीत से बचने के लिए फनिसियिा , सीरयिा और सलिसियिा[1421] की सीमाओं के भीतर एक स्थान से दूसरे स्थान पर लगातार चलते रहते थे। परम पुण्यशाली पैंतालीस वर्षों तक इसी प्रकार रहे, न तो उनकी कोई झोपड़ी थी और न ही कोई तंबू, बल्कि वे एक गहरी गुफा में नविास करते थे। जब आदरणीय मैसेडोनयिस बूढ़े हो गए, तो उन्होंने उनसे मलिने आने वाले तीर्थयात्रयिों से उनके लिए एक छोटी सी कोठरी बनाने के लिए कहा, जसिमें वे पच्चीस वर्षों तक रहे, और न तो अपने पास बसे भाइयों से मलिने बाहर नकिले और न ही बाहरी लोगों से। कुल मलिाकर, संत मेसेडोनयिस ने सत्तर वर्षों तक तपस्या का जीवन जयिा; चालीस वर्षों से अधकि समय तक उन्होंने केवल अनाज पर जीवन यापन कयिा, जसि पीसकर पानी में भगिोया जाता था; बाद में, अपनी कमजोरी के कारण, उन्होंने पानी के साथ थोड़ी ब्रेड खाना शुरू कर दयिा। प्रभु ने उन्हें चमत्कारों के वरदान से सम्मानति कयिा: पूजनीय पति ने दुष्ट आत्माओं को भगाया, वभिन्नि बीमारयिों को ठीक कयिा और अन्य चमत्कार कए। एक अवसर पर, एक महलि को पूजनीय मैसेडोनयिस के पास लाया गया जो अत्यधकि खाने की बीमारी से पीड़ति थी: वह एक दनि में तीस मुर्गयिाँ तक खा जाती थी। उसके रश्तिेदारों ने आँसू भरी आँखों से पूजनीय से उस बीमार महलि की मदद करने का आग्रह कयिा। संत की प्रार्थनाओं के द्वारा, यह महलि चंगी हो गई और उसके बाद वह दनि में एक मुर्गी का चौथाई हस्सिा भी नहीं खा सकती थी। पृथ्वी पर एक संत जीवन जीने, भवष्यिवाणी का वरदान प्राप्त करने और पुरोहतित्व की कृपा के योग्य समझे जाने के बाद, आदरणीय मैसेडोनयिस प्रभु में शांतपिूर्वक नधिन कर गए[1422] ।

7 फरवरी

25 जनवरी (पुराने कैलेंडर के अनुसार)

[1419] ससिलिी एपनिेन प्रायद्वीप के दक्षणि में भूमध्य सागर में एक द्वीप है।

[1420] तीसरी शताब्दी के अंत में।

[1421] ये देश भूमध्य सागर के उत्तर-पूर्वी तट पर स्थति हैं; इन्हें तटरेखा के साथ दक्षणि में लेबनान की पर्वत श्रृंखलाओं और उत्तर में अमान (अल्मा-दाग) द्वारा वभिाजति कयिा गया है।

[1422] लगभग 420 ईस्वी में।

हमारे पवत्रि पति ग्रेगरी द थियोलोजयिन, कांस्टेंटनिोपल के पैट्रआिर्क का जीवन

25 जनवरी को स्मरणोत्सव

संत ग्रेगरी द थियोलोजयिन का मूल नविास दूसरा, या दक्षणिी, कैपाडोसयिा, नाज़ियानज़स का शहर[1423] था, जसिके नाम पर उनका नाम नाज़ियनज़ेन पड़ा। उनके माता-पति कुलीन और सम्मानति लोग थे: उनके पति का नाम भी ग्रेगरी था, और उनकी माँ का नाम नॉन्ना था। हालाँकि, उनके पति पहले एक अवशि्वासी थे, क्योंकि वे अवशि्वासी माता-पति से उत्पन्न हुए थे: एक मूर्तपिूजक पति और एक यहूदी माँ। अपने वशि्वास में, वे दोनों का अनुसरण करते थे, और मूर्तपिूजक की भ्रांति और यहूदी अवशि्वास दोनों को मानते थे। यह तथाकथति इप्सस्टिेरयिन वधिर्म का सार है[1424] । संत ग्रेगरी की माँ, धन्य नॉन्ना, ईसाई माता-पति से जन्मी थीं और स्वयं एक धर्मनष्ठि ईसाई थीं। बचपन से ही उनका पालन-पोषण धर्मपरायणता में हुआ और उन्हें परमेश्वर के भय का पूरी तरह से शक्षिण दयिा गया, जो सभी ज्ञान की शुरुआत है। ईश्वर की व्यवस्था से, उनका ववािह एक अवशि्वासी पति से हुआ, ताकि वह उसे भी पवत्रि वशि्वास की ओर ले जा सकें: जैसा कि प्रेरति कहते हैं, *'क्योंकि अवशि्वासी पति, वशि्वास करने वाली पत्नी के द्वारा पवत्रि कयिा जाता है'* (1 कुरन्थियिों 7:14)। और ऐसा ही हुआ। नॉना, ईश्वर-प्रेरति शब्दों से लगातार अपने पति को मनाती रहीं और उनके लिए पूरे दलि से ईश्वर से प्रार्थना करती रहीं, और ईश्वर की मदद से उन्हें ईसाई धर्म की राह पर ले आईं। उसके पति को एक सपने में ईश्वर का एक दर्शन हुआ: उसे ऐसा लगा कि वह दाऊद की एक भजन के शब्द गा रहा था जन्हिें उसने स्वयं कभी नहीं कहा था, बल्कि शायद केवल अपनी पत्नी से सुना था, जो अक्सर प्रार्थना करती थी। उसने स्वयं कभी प्रार्थना नहीं की थी: वह प्रार्थना करना नहीं जानता था, और न ही वह ऐसा चाहता था। उसने अपने सपने में जो शब्द गाए वे इस प्रकार थे: *'जब उन्होंने मुझसे कहा, "आओ हम यहोवा के भवन में चलें", तो मैं प्रसन्न हुआ'* (भजन संहति 121:1)। यह भजन गाते समय, उन्होंने अपने हृदय में एक वशिेष मठिास महसूस की; और जागने पर, वे आनंदति हुए और फरि इस बारे में अपनी पत्नी को बताया। उसे एहसास हुआ कि स्वयं ईश्वर अपने पति को अपनी पवत्रि कलीसयिा में बुला रहे थे – इसलिए उसने उन्हें ईसाई वशि्वास में और भी अधकि लगन से शक्षिति करना शुरू कर दयिा और उन्हें मोक्ष के मार्ग पर स्थापति कयिा। उस समय, कैपाडोसयिा के सेसरेया के बशिप, संत लयिोन्टयिस, जो नकिेया में आयोजति प्रथम सार्वभौमकि परषिद[1425] के लिए जा रहे थे, संयोग से नाज़ियान्ज़स शहर में रुके। धन्य नॉन्ना अपने पति को उनके पास ले आईं, और ग्रेगरी का बपतस्मिा स्वयं संत के हाथों हुआ। पवत्रि बपतस्मिा प्राप्त करने के बाद, उन्होंने एक सच्चे और पूर्ण ईसाई के अनुरूप एक धर्मी और ईश्वरवादी जीवन जीना शुरू कर दयिा। वास्तव में, वे सुसमाचार का प्रचार करने और अच्छे कार्यों में इतने अधकि उत्कृष्ट हुए कि बाद में उन्हें उसी नाज़ियान्ज़ुस शहर में बशिप के पद के लिए चुना गया (जैसा कि नीचे चर्चा की जाएगी)।

ऐसे पति के साथ एक पवत्रि ववािह में रहते हुए, धन्य नोना एक पुत्र की माँ बनने की लालसा रखती थीं। उन्होंने सभी अच्छी चीजों के दाता से प्रार्थना की कि वह उन्हें एक पुत्र दें, और उसके गर्भधारण से पहले ही उन्होंने, जैसा कि अन्ना ने एक बार शमूएल के संबंध में व्रत लयिा था[1426] , उसे ईश्वर की सेवा के लिए समर्पति करने का संकल्प लयिा। प्रभु, जो अपने भयकर्ताओं की इच्छा को पूरा करते हैं और उनकी प्रार्थनाओं पर ध्यान देते हैं, ने उस धर्मपरायण पत्नी की हार्दकि प्रार्थना को स्वीकार कयिा और, जब वह सो रही थी, तो एक रात्रकिालीन दर्शन में अपने प्रकाशन के

[1423] द्वतिीय या महान काप्पाडोसयिा – एशयिा माइनर के पूर्वी भाग के केंद्र में एक बहुत बड़ा क्षेत्र, जो यूफ्रेटसि नदी के ऊपरी प्रवाह के पश्चमि में स्थति है; कैपाडोसयिा कभी एशयिा के प्रमुख राज्यों में से एक था, लेकनि बाद में उसने अपनी स्वतंत्रता खो दी और (ईस्वी वर्ष 17 या 18 में) रोमन साम्राज्य का एक प्रांत बन गया। – नाज़ियान्ज़स – कैपाडोसयिा के दक्षणि-पश्चमिी भाग में एक छोटा सा शहर; आज, नाज़ियान्ज़स में खदानों से भरे बंजर परदृिश्य में केवल खंडहर ही बचे हैं।

[1424] इप्ससि्टारयिों ने अपना नाम इस तथ्य से लयिा कि वे ईश्वर की 'सर्वोच्च' (ग्रीक शब्द से जसिका अर्थ 'सर्वोच्च', 'परम' है) के रूप में पूजा करते थे। वे स्वयं को स्वर्ग से प्रबुद्ध मानते थे, और उन्होंने ईसाई वशि्वासों में मूर्तपिूजक (फ़ारसी) और यहूदी वधिर्मों का मशि्रण कर दयिा। मूर्तयिों और बलदिानों को अस्वीकार करते हुए, इप्ससि्टारयिन प्रकाश और अग्नि के प्रतीकों के तहत ईश्वर की पूजा करते थे। उन्होंने पहले दनि के बजाय सातवें दनि को पवत्रि माना और उसका पालन कयिा, और स्वच्छ और अशुद्ध भोजन के संबंध में यहूदी नयिमों को अपनाया। हालांकि, सामान्य तौर पर, इस संप्रदाय के बारे में बहुत कम जानकारी बची है।

[1425] वर्ष 325 में।

[1426] 1 राजा, अध्याय 1

माध्यम से उसे उस लड़के के बारे में बताया जो उससे पैदा होने वाला था। और धन्य नॉन्ना ने अपने बेटे के जन्म से पहले ही देख लिया था कि वह कैसा दिखेगा, और उसका नाम पहले से ही जानती थीं। जब बाद में उसने एक पुत्र को जन्म दिया[1427], तो उसने उसका नाम उसके पिता के नाम पर ग्रेगरी रखा, जैसा कि उसे सपने में बताया गया था। उसने ईश्वर का बहुत धन्यवाद किया और नवजात शिशु को उनकी दिव्य व्यवस्था के हवाले कर दिया; उसने पूरे दिल से ईश्वर को वह उपहार अर्पित किया जो उसे प्रार्थना के माध्यम से उनसे मिला था। हालाँकि, शिशु का तुरंत बपतिस्मा नहीं हुआ। उन दिनों, कई ईसाइयों के बीच यह एक स्वैच्छिक प्रथा थी कि वे बपतिस्मा को वयस्कता तक और उस वर्ष तक स्थगित कर दें जिसमें हमारे प्रभु मसीह का जॉर्डन में यूहन्ना द्वारा बपतिस्मा दिया गया था - अक्सर तेईस साल और आधे की उम्र तक[1428]। बाद में, इस रिवाज़ को स्वयं संत ग्रेगरी द थियोलोजियन, बेसिल द ग्रेट, ग्रेगरी ऑफ़ निस्सा और चर्च के अन्य महान फादर्स द्वारा उचित कारणों से समाप्त कर दिया गया। इस प्रकार, संत ग्रेगरी का जन्म के तुरंत बाद बपतिस्मा नहीं हुआ था, बल्कि ईसाइयों द्वारा पालन किए जाने वाले प्राचीन रिवाज़ के अनुसार, उनका बपतिस्मा तब तक के लिए स्थगित कर दिया गया था जब तक कि वे मसीह की आयु के नहीं हो गए।

लड़के का पालन-पोषण ईसाई रीति-रिवाजों के अनुसार हुआ। जब वह स्कूल जाने योग्य उम्र में पहुँचा, तो उसे तुरंत पढ़ना और लिखना सिखाया गया। जैसे-जैसे साल बीतते गए, ग्रेगरी ज्ञान में बढ़ता गया। अपने नाम, 'ग्रेगरी'[1429] (ज्ञान के भंडार) के अनुरूप, वह विवेकी, आत्मा में सतर्क, अपनी पढ़ाई में मेहनती था, और बुद्धि में अपने समकालीनों से आगे था। अपने बाल्यकाल में भी, उसे यह समझने में कोई कठिनाई नहीं होती थी कि परिपक्व आयु और समझ वाले लोगों को क्या सिखाया जाता था। बचपन में ही, वह बड़ों जैसा आचरण करता था। उसे बच्चों के खेल, तुच्छ मनोरंजन और हर तरह के तमाशे नापसंद थे; इसके बजाय, वह खुद को कहीं बेहतर कार्यों में समर्पित कर देता था और अपना समय आलस्य में बिताने के बजाय पढ़ाई में लगाता था। जब वह किशोरावस्था में पहुँचा, तो उसकी धर्मपरायण माँ ने अपनी अनेक मातृ-वचनोपदेशों के माध्यम से उसे धर्मपरायणता का उपदेश दिया। उन्होंने उसे बताया कि वह उनकी प्रार्थनाओं का फल था, कि उन्होंने प्रार्थनाओं के माध्यम से ईश्वर से उसे माँगा था, और यह कि उसके गर्भधारण से पहले ही उन्होंने उसे ईश्वर की सेवा के लिए समर्पित कर दिया था। उस अच्छे युवक ने अपनी माँ की बातों को अपने दिल में संजो लिया और सच्चे ईश्वर, मसीह के प्रति आस्था, आशा और प्रेम से उसकी आत्मा प्रबुद्ध हो गई। सबसे बढ़कर, उसने आत्मा की पवित्रता और शरीर की शुद्धता को संजोया, और इसी तरह यह नियम बनाया कि वह अपने जीवन के अंत तक अपनी कुँवारी अवस्था को सावधानी से बनाए रखेगा। इसमें उसका मार्गदर्शन आंशिक रूप से उसकी माँ की बार-बार और हार्दिक चेतावनियों से, और आंशिक रूप से उसके युवा दिनों में देखे गए एक सपने से हुआ। बहुत बाद में, उसने स्वयं बाद वाले का वर्णन इस प्रकार किया: एक बार, सोते समय, उसे ऐसा लगा कि सफेद वस्त्र पहने दो कन्याएँ उसके पास खड़ी थीं। दोनों का मुख सुंदर था; वे एक ही उम्र की थीं। उन्होंने कोई बाहरी आभूषण नहीं पहने थे: न सोना, न चांदी, न मोती, न रत्न, न ही कीमती हार; वे मुलायम रेशमी परिधानों या सुनहरी पट्टियों से नहीं सजी थीं; वे अपने चेहरे की सुंदरता, अपनी घनी भौंहों, अपने लहराते बालों या किसी अन्य ऐसी विशेषता पर गर्व नहीं करती थीं, जिनसे सांसारिक युवतियां युवकों को प्रसन्न करने और उनका दिल जीतने की कोशिश करती हैं। सादे सफेद वस्त्रों में और विनम्रता से कमरबंद बाँधे हुए, उन्होंने न केवल अपने सिर बल्कि अपने चेहरे भी महीन घूंघटों से ढक रखे थे। उनकी निगाहें झुकी हुई थीं; उनके गाल कन्याओं जैसी शर्मीलता से लाल हो उठे थे और उनकी पवित्रता के साक्षी थे; उनके होंठ चमकीले लाल गुलाब के रंग जैसे थे; अपनी मौनता के माध्यम से उन्होंने परम विनम्रता प्रकट की। संत ग्रेगरी, उन्हें निहारते हुए, अपने हृदय में महान आनंद महसूस करने लगे और सोचा कि ये पृथ्वी की प्राणी नहीं, बल्कि मानव स्वभाव से परे, उच्चतर प्राणी थीं। यह देखकर कि उन्हें उन्हें निहारने में बहुत आनंद आ रहा था, वे उससे स्नेह करने लगे और उसे ऐसे गले लगा लिया जैसे वह उनका अपना बच्चा हो। तब उसने उनसे पूछा: वे कौन थीं और कहाँ से आई थीं। पहली ने कहा कि वह पवित्रता है, जबकि दूसरी ने अपना नाम संयम बताया। साथ ही, उन्होंने बताया कि वे महिमा के राजा, मसीह के सिंहासन के सामने खड़ी थीं, और स्वर्गीय कुंवारी कन्याओं की सुंदरता में आनंदित थीं। उन्होंने कहा:

[1427] संत ग्रेगरी द थियोलोजियन का जन्म लगभग 329 में, नज़ियान्ज़स के दक्षिण में बहुत दूर नहीं स्थित अपने माता-पिता की संपत्ति, अरियान्ज़े में हुआ था।

[1428] चौथी शताब्दी में, आम तौर पर बपतिस्मा को वयस्कता तक के लिए टालने की प्रथा थी; कभी-कभी, जैसा कि कॉन्स्टेंटाइन महान के मामले में हुआ था, बुढ़ापे तक भी, क्योंकि बिना बपतिस्मा के मरने का डर, बपतिस्मा के बाद घातक पाप में गिरने के डर से कम लगता था।

[1429] ग्रेगरी – ग्रीक शब्द 'मैं देखता हूँ' से – का अर्थ है 'सतर्क' या 'जागरूक'।

'मेरे बच्चे, हमसे एकचित्त हो जाओ; अपना मन हमारा मन बना लो, और अपना मुख हमारा मुख बना लो। तब हम तुम्हें स्वर्ग में उठा लेंगे, परम वैभव से दीप्तमान, और त्रमिूर्त की अमर ज्योत के समीप स्थापित करेंगे।'

यह कहकर, वे स्वर्ग की ओर चढ़ने लगे और पक्षियों की तरह ऊँचाई की ओर उड़ चले। युवक ग्रेगरी उन्हें आनंदित दृष्टि से तब तक देखता रहा जब तक वे स्वर्ग में विलीन नहीं हो गए। जागने पर, उन्हें एक अकथनीय आनंद हुआ, और उनका हृदय प्रसन्नता से भर गया। उस समय से, वह अपनी कुँवारी अवस्था की अत्यंत सावधानी से रक्षा करने के लिए उत्साह से भर गए। उन्होंने पूर्ण संयम के माध्यम से इसे बनाए रखने का प्रयास किया, सभी विलासी भोजन, मद्यपान और अतिशय आसक्ति से बचते हुए।

संत ग्रेगरी के जन्म के बाद, धन्य नॉना ने एक और बेटे, जिसका नाम कैसरिया था, और एक बेटी, गॉर्गोनिया को जन्म दिया। उन्होंने उन्हें धर्मपरायणता और विद्वितापूर्ण शिक्षा में पाला। इस बीच, धन्य ग्रेगरी, वाक्पटुता, शैक्षणिक ज्ञान और सभी प्रकार के सांसारिक हेलेनिक ज्ञान में खुद को निपुण बनाना चाहते हुए, पहले फिलिस्तीन के सेसरिया[1430] के लिए रवाना हुए, जो उस समय अपने स्कूलों और विद्वता के लिए प्रसिद्ध था। वहाँ उन्होंने वाक्पटुता के विद्वान फेस्पेसियस को अपना शिक्षक बनाया। फिर वह अलेक्जेंड्रिया[1431] गए, जहाँ उन्होंने कई लोगों से ज्ञान का खजाना इकट्ठा किया और अपने मन को समृद्ध किया। इसके बाद, वह एथेंस[1432] की यात्रा करना चाहते थे और कुछ मूर्तिपूजकों के साथ एक एजिनियन[1433] जहाज पर सवार हो गए। जब वे सामोस द्वीप[1434] के पास से गुज़र रहे थे, तो समुद्र में एक भयंकर तूफ़ान उठ खड़ा हुआ। हर कोई अपने जीवन बचने की उम्मीद छोड़कर शारीरिक मृत्यु की आशंका से रो पड़ा। हालाँकि, ग्रेगरी आध्यात्मिक मृत्यु के भय से रोया, क्योंकि वह अभी तक बपतिस्मा नहीं ले चुका था, बल्कि केवल एक कैटेकुमेन (बपतिस्मा की तैयारी कर रहा व्यक्ति) था। उन्होंने पानी में पहले हुए ईश्वर के चमत्कारों को याद किया: लाल सागर के पार इस्राएलियों का गुज़रना और व्हेल की पेट से योनह की मुक्ति। उन्होंने ईश्वर से पुकार कर प्रार्थना की, लहरों में डूबने से बचने की विनती की। समुद्र यात्रा के दौरान उनकी ये कठिनाइयाँ उनके माता-पिता को एक सपने में प्रकट हुईं। वे तुरंत प्रार्थना करने लगे और परमेश्वर के सामने उत्कट आँसू बहाने लगे , उनसे अपने समुद्र में संकट में पड़े पुत्र की सहायता करने का आग्रह करते हुए। परमेश्वर, जिन्होंने अपने सेवक ग्रेगरी को कई लोगों के लाभ के लिए सुरक्षित रखा था और उन्हें चर्च का एक स्तंभ बनाने के लिए तैयार कर रहे थे, ने उग्र तूफान को शांत कर दिया और हवाओं को थम दिया; समुद्र पर पूर्ण शांति छा गई। नाव पर सवार सभी लोगों ने, खुद को हर उम्मीद से परे विनाश से बचा हुआ और मानो मौत की चपेट से छीन लिया गया देखकर, मसीह ईश्वर की महिमा की। वे जानते थे कि ग्रेगरी की प्रार्थना में उनके सर्वशक्तिमान नाम के उच्चारण से ही समुद्र शांत हुआ था। इसके अलावा, संत के एक युवा यात्रा साथी ने उसी रात

[1430] केसरिया (भूमध्य सागर के पूर्वी तट पर) उस समय फिलिस्तीन के सबसे महत्वपूर्ण शहरों में से एक था और बिशप का आसन था। यह प्रसिद्ध तीसरी सदी के चर्च के लेखक और विद्वान द्वारा स्थापित प्रसिद्ध ईसाई स्कूल का घर था ओरिजिन, और जिसे, उनके बाद, प्रसिद्ध चर्च इतिहासकार यूसेबियस, सेसारिया के बिशप, और प्रेस्बिटर पम्फिलस जैसे उत्कृष्ट ईसाई धर्मशास्त्रियों ने नेतृत्व किया, जो अपने ज्ञान और पवित्र जीवन के लिए प्रसिद्ध थे, और जिन्होंने शहीद होकर मृत्यु प्राप्त की (उनका पर्व दिवस 16 फरवरी है); स्कूल के अलावा, उनके प्रयासों के परिणामस्वरूप तीस हजार खंडों वाली एक विस्तृत पुस्तकालय का संकलन हुआ, जिसके कारण चर्च के कई फादर और शिक्षक अपनी शिक्षा प्राप्त कर सके। – लेकिन फिलिस्तीन के सेसरिया में अपनी शिक्षा से पहले, नाजियांज़स के संत ग्रेगरी ने कैपाडोसिया के सेसरिया में विज्ञान का अध्ययन किया था।

[1431] मूर्तिपूजक शिक्षा के केंद्र, अलेक्जेंड्रिया में, लंबे समय से उदार कला, गणित और दर्शन का एक प्रसिद्ध संग्रहालय था। हालांकि, उसी समय, मूर्तिपूजा के संतुलन के लिए, प्रेरित युग में ही एक ईसाई स्कूल - जिसे 'कैटेकेटिकल स्कूल' के नाम से जाना जाता था - उभर आया था, और ईसाई धर्म के भविष्य पर इसका प्रभाव बहुआयामी और अपार था। परंपरा ने श्रद्धापूर्वक इस स्कूल की स्थापना का श्रेय स्वयं प्रेरित और सुसमाचार प्रचारक मरकुस को दिया है। प्रारंभ में, यह केवल बपतिस्मा लेना चाहने वालों के लिए बुनियादी शिक्षा प्रदान करता था—जैसा कि अलेक्जेंड्रियाई स्कूल के नाम, 'कैटेकुमेनल' से ही स्पष्ट है—जबकि साथ ही यह स्वयं धर्मोपदेशकों को भी प्रशिक्षित करता था। लेकिन बाद में, वैश्विक शिक्षा और विद्वता के केंद्र में अपनी स्थिति के कारण, अलेक्जेंड्रिया के धर्मोपदेशात्मक विद्यालय ने एक धर्मशास्त्रीय और विद्वान शैक्षणिक संस्थान का स्वरूप ले लिया, जिसने एक शानदार दर्जा प्राप्त किया, मुख्य रूप से प्रसिद्ध पैंटेनस, उनके उतने ही उल्लेखनीय शिष्य और उत्तराधिकारी अलेक्जेंड्रिया के क्लेमेंट, और उससे भी अधिक - ओरिजिन के कार्यों की बदौलत।

[1432] हालांकि एथेंस - ग्रीस की प्राचीन और प्रसिद्ध राजधानी - उस समय अपनी पूर्व महानता की केवल एक छाया मात्र रह गया था, फिर भी वहां मूर्तिपूजक सोफिस्टों और वाक्पटुता-शास्त्रियों के स्कूल अभी भी फल-फूल रहे थे, जो शहर को उसकी पूर्व महिमा का कुछ अंश प्रदान करते थे।

[1433] एजियाना ग्रीस के पूर्व में, मध्य और दक्षिणी ग्रीस के बीच, सारोनिक की खाड़ी में एक द्वीप है।

[1434] सामोस एजियन सागर (द्वीपसमूह) के मुख्य द्वीपों में से एक है, जो एशिया माइनर के पश्चिमी तट के पास, केप मिकाला के सामने स्थित है, जिससे यह एक संकीर्ण जलडमरूमध्य द्वारा अलग होता है।

तूफान के कहर के बीच सपने में देखा कि ग्रेगरी की माँ, धन्य नॉना, समुद्र पार करके दौड़ी आईं, डूबते जहाज को पकड़ लिया और उसे किनारे पर ले आईं। जब तूफान थम गया, तो उसने सभी को उस दर्शन के बारे में बताया, और उन्होंने सभी ने ग्रेगरी के ईश्वर को एक महान सहायक के रूप में स्वीकार किया - उन्होंने उसी का धन्यवाद किया और उसी पर अपना विश्वास रखा। इसके अलावा, ग्रेगरी के पिता, जो अपने बेटे के लिए नाज़ियान्ज़स में आँसुओं के साथ प्रार्थना कर रहे थे और अपनी प्रार्थना के बाद सो गए थे, ने एक और दर्शन देखा। उन्होंने एक भयंकर राक्षस, एरिनिस, को देखा, जो समुद्र में ग्रेगरी को नष्ट करने की कोशिश कर रहा था; लेकिन ग्रेगरी ने उसे अपने हाथों से पकड़ लिया और उसे हरा दिया। इस दृष्टि से, ग्रेगरी के पिता को अपने बेटे की विनाश से मुक्ति का पता चला और, अपनी पत्नी के साथ, उन्होंने ईश्वर का धन्यवाद किया।

इसके बाद संत ग्रेगरी ने अपनी समुद्री यात्रा सुरक्षित रूप से पूरी की और एथेंस पहुँचे। वहाँ, सांसारिक विज्ञानों का अध्ययन करते हुए, वे अपने असाधारण तीव्र बुद्धि और पवित्र जीवन के कारण सभी के लिए आश्चर्य का विषय थे। कुछ ही समय बाद, संत बेसिल भी सांसारिक ज्ञान में अपने अध्ययन को आगे बढ़ाने के लिए एथेंस पहुँचे। वे दोनों - ग्रेगरी और बेसिल - सच्चे दोस्त और रूममेट बन गए। उन्होंने एक ही घर, एक ही भोजन, एक ही आत्मा, एक ही बुद्धि, एक ही चरित्र साझा किया - जैसे एक ही गर्भ से पैदा हुए भाई। दोनों एथेन्स में प्रसिद्ध और सम्मानित हो गए, क्योंकि थोड़े ही समय में वे अपने शिक्षकों से आगे निकल गए; जबकि वे स्वयं छात्र थे, वे अपने ही शिक्षकों के शिक्षक बन गए। उसी समय, जब कॉन्स्टेंटाइन महान का पुत्र कॉन्स्टेंटियस ग्रीकों और रोमनों पर शासन कर रहा था, जूलियन—जो बाद में सम्राट और ईश्वर से भटक गया—एथेन्स में दर्शनशास्त्र का अध्ययन कर रहा था। ग्रेगरी अक्सर उसके बारे में बात करता था, कहते हुए:

'ग्रीक और रोमन भूमि क्या बड़ी बुराई उत्पन्न करती है!'

उसने पहले ही देख लिया था कि क्या होने वाला था।

ग्रेगरी और बेसिल कई वर्षों तक एथेन्स में रहे, सभी विज्ञानों का अध्ययन क[1435] र किया और उनमें इतनी महारत हासिल की कि वे स्वयं सभी एथेनी ज्ञान से ऊपर उठ गए। फिर बेसिल ईश्वर से प्रेरित पुरुषों के अधीन आध्यात्मिक ज्ञान का अध्ययन करने के लिए मिस्र के लिए रवाना हो गया, जैसा कि उनकी जीवनी में वर्णित है, जबकि एथेनियनों ने अपनी विनतियों के माध्यम से ग्रेगरी को शिक्षक का पद स्वीकार करने के लिए मना लिया। बेसिल के प्रस्थान के बाद वहाँ थोड़ी देर रहने के बाद, ग्रेगरी ने सुना कि उनके पिता को नाज़ियान्ज़स का बिशप नियुक्त किया गया था। वह तुरंत अपने तीस वर्ष के आयु में अपने पिता के पास अपने देश लौट आया, और अपने पिता से पवित्र बपतिस्मा ग्रहण किया। वह तुरंत संसार को त्यागकर रेगिस्तान में जाना चाहता था, लेकिन अपने पिता द्वारा रोके जाने के कारण, वह उनके साथ घर पर ही रहा। उन्होंने यह नियम बनाया कि वे कभी भी शपथ नहीं लेंगे या व्यर्थ में ईश्वर का नाम नहीं लेंगे, और उन्होंने अपने जीवन के अंत तक इस नियम का पालन किया। वे लगातार पवित्र धर्मग्रंथों के अध्ययन में लगे रहे और अपने दिन-रात ईश्वर के चिंतन में बिताए; एक से अधिक अवसरों पर उन्होंने दर्शनों में मसीह को देखा। उनके पिता ने उनकी इच्छा के विरुद्ध उन्हें एक पादरी नियुक्त किया, और बाद में उन्हें बिशप के रूप में अभिषेक करना चाहा; लेकिन संत ग्रेगरी, ऐसे पद और सम्मान से दूर भागते हुए, और मठ जीवन की एकांतता की इच्छा रखते हुए, गुप्त रूप से घर से भाग गए और अपने दोस्त, संत बेसिल के पास पोंटस चले गए। वे पहले से ही एक पादरी थे और उन्होंने पोंटस में एक मठ स्थापित किया था, जहाँ बहुत सारे भिक्षु इकट्ठा हो गए थे। उन्होंने पोंटस से ग्रेगरी को लिखा, और उसे अपने पास आने के लिए पुरज़ोर निमंत्रण दिया। इस प्रकार, जैसा कि उन्होंने पहले एथेंस में किया था, उन्होंने एक बार फिर से साथ रहने लगे, और प्रत्येक ने दूसरे में सद्गुण का एक आदर्श पाया और एक-दूसरे की नकल करने लगे। उन्होंने मिलकर संतों के लिए उपवास के मठवासी जीवन के नियम लिखे। इस प्रकार संत ग्रेगरी, संत बेसिल के साथ काफी लंबे समय तक रहे।

इस बीच, ग्रेगरी के भाई कैसरियस की मृत्यु हो गई। उसके माता-पिता उसके लिए बहुत रोए। उसी समय, उसके पिता ने ग्रेगरी को लिखा, आँसू भरी आँखों से उसे घर लौटने और अपनी वृद्धावस्था में उनकी मदद करने का आग्रह

[1435] उन्होंने व्याकरण, इतिहास, ज्यामिति, खगोल विज्ञान, अंकगणित और गणित, चिकित्सा, दर्शन और तर्क की मूल बातें का अध्ययन किया। शास्त्रीय (रोमन और ग्रीक) साहित्य के अध्ययन के लिए बहुत समय समर्पित किया जाता था। कई ईसाई महान मूर्तिपूजक लेखकों की रचनाओं को पढ़ने को नीची नजर से देखते थे, लेकिन नाजियांज़स के संत ग्रेगरी और संत बेसिल द ग्रेट ने ऐसे संकीर्ण पूर्वाग्रह से ऊपर उठकर काम किया।

कयिा। धन्य ग्रेगरी, आंशकि रूप से अपने पतिा की अवज्ञा करने के डर से, और आंशकि रूप से चर्च की जरूरतों को देखते हुए, जो उस समय एरयिन वधिर्म— to—से बहुत परेशान था, जसिसे ग्रेगरी के पतिा, जनि्हें कोई धर्मशास्त्रीय शकि्षा प्राप्त नहीं थी, आंशकि रूप से भटक गए थे, पोंटस से नाज़ियान्ज़ुस लौट आए। वहाँ उन्होंने अपने वृद्ध पतिा की चर्च के प्रशासन और घरेलू मामलों में सहायता की, उन्हें एरयिन वधिर्म से होने वाले नुकसान को समझाया, और ईसाई धर्म की सही शकि्षा पर उनकी पकड़ को मजबूत कयिा।

[1436]सम्राट कॉन्स्टेंटनि के पुत्र कॉन्स्टैंटयिस की मृत्यु के बाद, जूलयिन सहिासन पर बैठा, और तभी ग्रेगरी की उसके बारे में की गई भवषि्यवाणी पूरी हुई: इस अधर्मी व्यक्ति ने बहुत बुराई लाई; उसने खुले तौर पर मसीह का परत्यिाग कयिा और मसीह की कलीसयिा पर उत्पीड़न शुरू कर दयिा। संत ग्रेगरी ने अपनी कई ईश्वर-प्रेरति रचनाओं के माध्यम से उनसे संघर्ष कयिा, जसिमें उन्होंने उनकी गलतयिों, उनके हानकिारक मूर्तपिूजक मोह और उनकी झूठी हेलेनकि कथाओं का पर्दाफाश कयिा। यह कानून तोड़ने वाला थोड़े समय तक राज कयिा और अपमान में मर गया[1437] । उसके बाद, धर्मपरायण सम्राट जोवयिन[1438] सहिासन पर बैठे, और ईसाई धर्म एक बार फरि से फलने-फूलने लगा। जोवयिन के बाद, एरयिन वेलेंस[1439] सहिासन पर बैठा, और एक बार फरि एरयिन वधिर्म फैलने लगा; ऑर्थोडॉक्स (सही आस्था वाले) हर जगह सताए गए। उस समय, कैपाडोसयिा के सेज़रयिा में भी, एरयिनवाद ने कई लोगों को भ्रम में डाल दयिा और मसीह की कलीसयिा में अशांति ला दी। यहाँ तक कि बशिप यूसेबयिस[1440] , जनि्हें पवत्रि धर्मग्रंथों का पर्याप्त ज्ञान नहीं था, भी डगमगाने लगे और सच्चे वशि्वास से वचिलन की अनुमति देने लगे। यह जानकर, संत ग्रेगरी ने उन्हें लखिा और सलाह दी कि वे इन त्रुटयिों से लड़ने के लिए अब्बा बेसलि से कैसरयिा लौटने का आग्रह करें। उन्होंने स्वयं संत बेसलि को भी लखिा, जसिमें उन्होंने मैत्रीपूर्ण सलाह दी और उनसे यूसेबयिस के प्रति अपनी पूर्व क्रोध को त्यागने तथा ऑर्थोडॉक्स की सहायता करने और एक बार फरि चर्च को मजबूत करने के लिए सेसरयिा की यात्रा करने का आग्रह कयिा, जो एरयिनों द्वारा हलिाया जा रहा था। इस प्रकार, संत ग्रेगरी ने अपने पत्रों के माध्यम से बशिप यूसेबयिस और संत बेसलि के बीच शांति स्थापति की, जसिसे संत बेसलि कैपैडोसयिा के सेसरयिा लौट सके। उनके लौटने पर ही, एरयिनों को शर्मदिगी का सामना करना पड़ा; उनमें से कुछ चुप हो गए, जबकि अन्य भाग गए। बशिप यूसेबयिस संत बेसलि को देखकर अत्यंत प्रसन्न हुए। उनके साथ कुछ समय तक मैत्रीपूर्ण जीवन जीने के बाद, उनका नधिन हो गया, और संत बेसलि द ग्रेट को ऑर्थोडॉक्सों द्वारा उनकी इच्छा के वरिुद्ध उनके स्थान पर स्थापति कयिा गया। इस बात से क्रोधति और कटुता से भरे हुए ईसाई-वरिोधी संप्रदाययिों ने तयिाना नगर को सेसरयिा से अलग करवा दयिा। उस समय, बशिप एम्फमिस तयिाना में थे[1441] ; उन्होंने ऑर्थोडॉक्स होने का दखिावा कयिा लेकनि वास्तव में वे एक वधिर्मी थे। अपने वचिारों से सहमत बशिपों के साथ मलिकर, उन्होंने बेसलि से अलग हो गए और तयिाना के मेट्रोपॉलटिन बन गए। इस प्रकार, उन्होंने कापाडोसयिा क्षेत्र को दो भागों में वभिाजति कर दयिा, जसिसे धर्मप्रांत की सीमाओं को लेकर लंबे समय तक ववािद चलता रहा। संत बेसलि ने, यह देखते हुए कि कुछ कस्से और गाँव उनके धर्मप्रांत से अलग हो रहे थे, मामलों को इस प्रकार ठीक करने का नशि्चय कयिा: सेसरयिा और टयिाना के बीच सासमिा नामक एक छोटा और अल्पज्ञात कस्बा था[1442] । यहीं पर संत बेसलि ने एक नया धर्माध्यक्षीय मुख्यालय स्थापति करने और एक धर्मनष्ठि व्यक्ति को धर्माध्यक्ष नयिुक्त करने का नशि्चय कयिा; उन्हें उम्मीद थी कि इससे ववािद को समाप्त कयिा जा सकेगा और कई लोगों को धर्म के लिए संरक्षति कयिा जा सकेगा। इस उद्देश्य के लिए कसिी अनुभवी व्यक्ति के बारे में न सोचते हुए, उन्होंने अपने मत्रि, संत ग्रेगरी को लखिा, उनसे सासमिा के सीन के लिए बशिप के रूप में अभषिेक स्वीकार करने के लिए कहा, क्योंकि वहाँ धर्म की स्थापना करने में कोई और उनसे उतना सक्षम नहीं था। संत ग्रेगरी ने अपने पत्रों में लगातार इनकार कर दयिा। बेसलि

[1436] यह वर्ष 361 का था।

[1437] 363 में।

[1438] उन्होंने 363–364 तक शासन कयिा।

[1439] वेलेन्स ने 364 से 378 तक शासन कयिा।

[1440] कैसरयिा के बशिप यूसेबयिस पैम्फलिस अपनी वद्विता के लिए प्रसद्धि थे; उन्होंने चर्च का इतहिास, फलिस्तिीनी शहीदों पर एक पुस्तक, और कॉन्स्टेंटाइन महान के जीवन का एक वृत्तांत लखिा; लेकनि, अपनी वद्विता के बावजूद, वह दुर्भाग्यवश ऑर्थोडॉक्सी से भटक गए और एरयिनवाद के अनुयायी थे, हालांकि उन्होंने खुले तौर पर ऑर्थोडॉक्स चर्च से अलग होकर नहीं थे।

[1441] तयिाना कैपाडोसयिा में, माउंट टॉरस के तल पर, सलिशियिन गॉर्ज के पास एक प्राचीन शहर है।

[1442] सासमिा दो धर्मप्रांतों की सीमा पर स्थति था, जनि्हें क्षेत्रों के वभिाजन के बाद हाल ही में स्थापति कयिा गया था, यह तयिाना से लगभग पचास वर्स्ट और नाज़ियान्ज़स से छत्तीस वर्स्ट दूर था।

ने उन्हें कई बार लखिा, लेकनि अपना उद्देश्य पूरा करने में वफिल रहने पर, वह स्वयं नाज़यिानज़ुस शहर के लिए रवाना हो गए और वहाँ, नाज़यिानज़ुस के बशिप, वृद्ध ग्रेगरी—जो ग्रेगरी के पतिा थे—से परामर्श करने के बाद, उन्होंने उनके साथ मलिकर अपने मत्रि ग्रेगरी को बशिप पद का अभषिेक स्वीकार करने के लिए मनाना शुरू कर दयिा। इस प्रकार, ग्रेगरी को सासमिा नगर में बशिप का पद ग्रहण करने के लिए मजबूर होना पड़ा। जब टयिाना के मेट्रोपॉलटिन, एम्फमिस—जो सासमिा को अपनी धर्मप्रांत की सीमाओं के भीतर मानते थे—को यह पता चला, तो उन्होंने ग्रेगरी को पद ग्रहण करने से रोकने के उद्देश्य से एक सेना का नेतृत्व कयिा; उन्होंने ग्रेगरी के रास्ते में उसकी प्रतीक्षा की। संत ग्रेगरी, अपनी यात्रा के दौरान एम्फमिस की साजशिों और उसके द्वारा लाई गई सेना के बारे में जानकर, एक मठ में चले गए और वहाँ बीमारों की देखभाल करने लगे; फरि वे उस एकांत की तलाश में रेगस्तिान में बस गए जसिकी वे इच्छा रखते थे। कुछ ही समय बाद, अपने माता-पतिा के अनुरोध पर, वे नाज़यिान्ज़स लौट आए। उनके माता-पतिा अब बहुत वृद्ध हो गए थे और अपनी उन्नत आयु के कारण उन्हें उसकी मदद की आवश्यकता थी, और भी अधकि क्योंकि उसके अलावा उनका कोई और संतान नहीं था। सीज़रयिस, उनका दूसरा बेटा, जैसा कि पहले ही उल्लेख कयिा जा चुका है, पहले ही मर चुका था - और इसी तरह उनकी बेटी गॉर्गोनयिा भी पहले ही नधिन कर चुकी थी[1443] । उनके भाई, यानी इस संत ग्रेगरी ने, दोनों के अंतमि संस्कारों को प्रशंसा-गीतों से सम्मानति कयिा। फरि वह अपने माता-पतिा के साथ अकेला रह गया, जो उसकी आँखों का तारा थे, और वह अपने माता-पतिा के अनुरोधों को ठुकरा नहीं सका। वह उनके वृद्धावस्था में उनकी देखभाल करने और उनके नधिन के बाद, उनके लिए एक उचति अंतमि संस्कार का प्रबंध करने के लिए बाध्य था।

जब संत ग्रेगरी रेगस्तिान से नाज़यिान्ज़स लौटे, तो उनके पतिा ग्रेगरी, जो पहले से ही वृद्धावस्था से थके हुए थे, चाहते थे कि उनके जीवति रहते ही उनके बेटे के लिए नाज़यिान्ज़स का बशिप पद सुरक्षति कर दयिा जाए। उन्होंने अपने बेटे को यह करने के लिए न केवल मनाने और वनिती करने, बल्कि एक शपथ के माध्यम से भी आग्रह कयिा। यद्यपि उन्होंने चर्च की भलाई का ध्यान रखने के अपने कर्तव्य से कोई चूक नहीं की, और न ही वे अपने पतिा की आज्ञा की अवहेलना करना चाहते थे, फरि भी उनमें बशिप का पद स्वीकार करने की कोई इच्छा नहीं थी।

उसने कहा, 'पतिाजी, जब तक आप जीवति हैं और परलोक में नहीं गए हैं, तब तक आपके पद को स्वीकार करना मेरे लिए असंभव है।'

उसके पतिा, अब यह ज़दि नहीं कर रहे थे कि उनका बेटा सहिासन का उत्तराधकिारी बने, बल्कि उन्होंने उसे केवल चर्च की देखभाल सौंपते हुए कहा:

'जब तक मैं जीवति हूँ, मेरे पुत्र, वृद्धावस्था में मेरा सहारा बनो; और मेरी मृत्यु के बाद, जैसा तुम्हें उचति लगे, वैसा करो।'

कुछ ही समय बाद, संत ग्रेगरी के पतिा, नाज़यिान्ज़ुस के वृद्ध बशिप,[1444] का नधिन हो गया, जन्होंने पैंतालीस वर्षों तक बशिप का पद संभाला था। वे सौ वर्ष की आयु तक जीवति रहे। उन्हें बहुत धूमधाम से दफनाया गया, सेंट बेसलि द ग्रेट की उपस्थतिि में, जो अंतमि संस्कार के लिए आए थे। नोना, सेंट ग्रेगरी की माँ और बेसलि की एक मत्रि, अभी भी जीवति थीं, लेकनि वह भी जल्द ही प्रभु के पास चली गईं, और उन्होंने भी सौ वर्ष की आयु प्राप्त की थी[1445] । अपने धर्मपरायण माता-पतिा को दफनाने के बाद, संत ग्रेगरी उन्हें पालने की जम्मिेदारी से मुक्त हो गए; लेकनि वह खुद को प्रसद्धिि से भी मुक्त करना चाहते थे, और यह इच्छा तब और भी बढ़ गई जब उनके मूल शहर के नविासयिों ने उन्हें अपने पतिा के बाद बशिप के सहिासन पर बैठने के लिए प्रेरति कयिा। वह चुपके से सेल्यूकयिा[1446] के लिए रवाना हो गए और वहाँ संत थक्ला प्रथम शहीद के चर्च में रहे। वहाँ से उन्हें बेसलि द ग्रेट की मत्रिवत वनितयिों पर बुलाया गया और, अपनी वापसी पर, उन्होंने दानगृहों और अस्पतालों का प्रभार संभाला। संत बेसलि, जनिके पास सरि छपिाने की जगह नहीं थी,

---

[1443] यह वर्ष 368 का था।

[1444] नाज़यिान्ज़ुस के बशिप ग्रेगरी, जो संत ग्रेगरी द थयिोलोजयिन के पतिा थे, का 374 में नधिन हो गया। अपनी स्मृति-भाषण से उनकी स्मृति को सम्मानति करने के बाद, संत ग्रेगरी द थयिोलोजयिन ने अपने पतिा से कए गए वादे के अनुसार कुछ समय के लिए नाज़यिान्ज़ुस के झुंड का प्रभार संभाला।

[1445] ग्रेगरी द थयिोलोजयिन की धर्मपरायण माता का भी अपने पति के समान, उसी वर्ष, 374 में नधिन हो गया। उन्हें संतों में गनिा जाता है; उनका पर्व 5 अगस्त को मनाया जाता है।

[1446] सेल्यूकयिा कई शहरों का नाम है, जनिमें से अधकिांश की स्थापना सेल्यूकस प्रथम ने की थी। यहाँ, हम दक्षणि-पूर्वी एशयिा माइनर के पहाड़ी क्षेत्र में स्थति, एसाउ में स्थति सेल्यूकयिा की बात कर रहे हैं।

उन्हें आश्रय देने के लिए विशाल इमारतें बनवाईं और वहाँ गरीबों, बीमारों, विधवाओं, अनाथों और राहगीरों को इकट्ठा करके, यह सुनिश्चित किया कि उन्हें दैनिक भोजन मिले, साथ ही उनकी देखभाल की जिम्मेदारी अपने प्रिय मित्र को सौंप दी। इस प्रकार, संत ग्रेगरी गरीबों के लिए एक पालनहार, बीमारों के लिए एक देखभाल करने वाले, और यात्रियों के लिए एक सांत्वना देने वाले थे।

उस समय, एरियन विधर्म से—जो कई वर्षों से परमेश्वर की कलीसिया को परेशान कर रहा था—एक नया विधर्म उभरकर आया, जैसे किसी हाइड्रा[1447] के नए सिर की तरह, और उसने कई लोगों को गुमराह कर दिया। यह मैसेडोनियन विधर्म था, जिसने पवित्र आत्मा का अपमान किया। एरियन यह मानते थे कि पिता अकल्पित, शाश्वत ईश्वर हैं, जबकि पुत्र सृजित है, और इसके अलावा वह न तो पिता के समतत्त्व का और न ही उनके सह-शाश्वत है; दूसरी ओर, मैसेडोनियनों ने पुत्र को पिता के समान माना, लेकिन पवित्र आत्मा का अपमान किया; कुछ ने दावा किया कि वह एक प्राणी था न कि ईश्वर, जबकि अन्य ने उसे न तो ईश्वर और न ही एक प्राणी माना। संत ग्रेगरी ने उन्हें अर्ध-एरियन कहा, क्योंकि वे पुत्र का सम्मान करते थे लेकिन पवित्र आत्मा का अपमान करते थे। यह विधर्म विशेष रूप से बिज़ान्टियम में बड़े पैमाने पर फैल गया। संत बेसिल महान के आग्रह पर और परिषद में एकत्रित कई अन्य ऑर्थोडॉक्स बिशपों की सर्वसम्मति से, संत ग्रेगरी, जो गहरी बुद्धि और महान वाक्पटुता के व्यक्ति थे, को ईसाई धर्म के विधर्मी अनुमानों का खंडन करने और पवित्र विश्वास के सच्चे सिद्धांतों की रक्षा करने के लिए बिज़ान्टियम की यात्रा करनी थी। लेकिन ईसाइयों के लिए एक सार्वभौमिक दीपक के रूप में, उन्होंने बीजान्टियम के लिए प्रस्थान किया, संत बेसिल, एक संक्षिप्त बीमारी के बाद, का निधन हो गया[1448] । इस प्रकार विश्वास का सार्वभौमिक दीपक बुझ गया। संत ग्रेगरी उनके लिए बहुत रोए और, उन्हें एक अंतिम श्रद्धांजलि अर्पित करने के बाद, अपने सामने आने वाली यात्रा पर निकल पड़े। जब वह बाइजेंटाइयम के शाही शहर में पहुँचे, तो धर्मपरायण ईसाइयों ने खुशी से उनका स्वागत किया। उन्होंने पाया कि मिसीह की कलीसिया बहुत कमजोर पड़ गई थी। विश्वासियों की संख्या गिनना आसान था, क्योंकि शहर का अधिकांश भाग विधर्म में पड़ गया था। ईश्वर के सभी भव्य और भव्यता से सुसज्जित चर्च विधर्मीयों के हाथों में थे। केवल एक छोटा और जर्जर चर्च, संत अनास्तासिया का चर्च, जिसे विधर्मीयों ने अस्वीकार कर दिया था, ऑर्थोडॉक्स के हाथों में बचा था। संत ग्रेगरी ने, उस दाऊद की तरह जिन्होंने एक बार फिलिस्तीनियों के खिलाफ एक sling से खुद को लैस किया था, तुरंत ही विधर्मियों के खिलाफ परमेश्वर के वचन को अपना हथियार बना लिया; उन्होंने बहस में उन्हें हराया और उनकी सिद्धांतगत त्रुटियों को इस तरह नष्ट कर दिया जैसे वे मकड़ी का एक महीन जाल हों। दिन-प्रतिदिन उन्होंने अपने ईश्वर-ज्ञानी और दिव्य प्रेरित शब्दों के माध्यम से कई लोगों को भ्रांति से ऑर्थोडॉक्सी की ओर मोड़ा, और थोड़े ही समय में उन्होंने मसीह की कलीसिया के विश्वासयोग्य सदस्यों की संख्या इतनी बढ़ा दी कि उन्हें गिनना असंभव हो गया; जबकि विधर्मियों की संख्या दिन-ब-दिन घटती गई, और इस प्रकार पवित्र धर्मग्रंथ में दाऊद के घराने और शाऊल के घराने के विषय में कहा गया वचन पूरा हुआ: *'दाऊद का घराना बलवान होता गया, और शाऊल का घराना दुर्बल होता गया'* (2 शमूएल 3:1)। अरीयनों और मैसेडोनियनों द्वारा कलीसिया को पहुँचाई गई क्षति जैसे ही दूर हुई, सीरिया से एक नया विधर्मी, अपोलिनारिस, प्रकट हुआ, जो प्रभु के अवतार के विषय में गलत विचार रखता था। उसने अवतार की सच्चाई से इनकार किया: उसने दावा किया कि मिसीह के पास आत्मा नहीं थी, बल्कि उसके पास दिव्य स्वभाव था। वाक्पटु और हेलेनिस्टिक ज्ञान में पारंगत होने के कारण, उसने कई लोगों को अपनी विधर्म में खींच लिया, और उसके शिष्य दूर-दूर तक फैल गए, जो धर्मशास्त्रीय सिद्धांतों से अनभिज्ञ लोगों को फँसाते और उन्हें जैसे कोई चारा देकर, उनके विनाश की ओर ले जाते थे। तब एक बार फिर धर्म के अच्छे योद्धा, संत ग्रेगरी ने एक महान प्रयास किया; उन्होंने विधर्मियों के खिलाफ संघर्ष में प्रवेश किया, जो सच्चे धर्म से भटक गए थे, उनकी निंदा की, उनसे विनती की, और उन्हें मना किया, साथ ही कुछ को विश्वास में मजबूत किया और दूसरों को उनके पतन से उबारा। इसी समय, अपोलिनारिस के शिष्यों ने लोगों के बीच घुल-मिलकर संत ग्रेगरी पर यह आरोप लगाकर बदनामी की कि उन्होंने मसीह को दो व्यक्तियों में विभाजित किया। इस तरह के झूठ को उत्साहपूर्वक दूर-दूर तक फैलाकर, उन्होंने संत के प्रति लोगों का क्रोध और द्वेष भड़काया: क्योंकि बार-बार गिरने वाली पानी की एक बूंद भी पत्थर को घिस देती है। लोग, जटिल विधर्मी तर्कों को समझने या मसीह के अवतार के रहस्य की गहराई को समझने में असमर्थ, विधर्मियों को सच्चे चरवाहों के रूप में पूजते थे और उन्हें ऑर्थोडॉक्स

[1447] प्राचीन यूनानी पौराणिक कथाओं में, हाइड्रा एक नौ सिरों वाला साँप-नुमा राक्षस था, जिनके कटने पर वे फिर से उग आते थे।
[1448] संत बेसिल की मृत्यु 379 में हुई।

शिक्षकों के रूप में मानते थे; जबकि सच्चा चरवाहा, जो सुसमाचार का प्रचार करता था, उसे विधर्मी का ठप्पा लगा दिया गया। भीड़ को भड़काने के बाद, उन्होंने संत पर पत्थर चलाए, ठीक वैसे ही जैसे यहूदियों ने एक बार पवित्र प्रथम शहीद स्तेफन पर किए थे; फिर भी वे उसे मार नहीं सके, क्योंकि ईश्वर ने अपने सेवक की रक्षा की। अपनी द्वेष को शांत न कर पाने के कारण, उन्होंने उस पर क्रूरता से हमला किया और उसे मुकदमे के लिए शहर के राज्यपाल के सामने ले आए, मानो वह कोई विद्रोही, अशांति और उथल-पुथल का सूत्रधार हो। संत, जो किसी भी अपराध से निर्दोष थे और इसके अलावा, नम्रता और विनम्रता से विशिष्ट थे, इस विपत्ति और लोगों के उन पर बिना उकसाए हमले के बीच, केवल अपने मसीह, ईश्वर से प्रार्थना की: 'हे मसीह, आपके नाम में, *"यद्यपि मैं मृत्यु की छाया की घाटी से गुजरूँ, मैं किसी बुराई से नहीं डरूँगा, क्योंकि आप मेरे साथ हैं"* (भजन संहिता 22:4)। कमांडर, उसकी निर्दोषता को जानते हुए और मानव की अन्यायपूर्ण दुर्भावना को देखकर, उसे रिहा कर दिया। इस प्रकार वह एक शहीद बन गया, फिर भी बिना घावों या यातना के; एक मुकुटधारी, फिर भी बिना घावों के; और उसकी केवल एक ही इच्छा थी—मसीह के लिए दुख सहना।

ऐसे कारनामों और विधर्मियों के खिलाफ अपने दृढ़ संघर्ष के माध्यम से खुद को प्रतिष्ठित करने के बाद, संत ग्रेगरी सभी के बीच प्रसिद्ध हो गए; उनकी बुद्धिमत्ता की सर्वत्र प्रशंसा की गई, और इसके लिए उन्हें संपूर्ण पवित्र ऑर्थोडॉक्स चर्च से एक नया नाम मिला—'द थियोलोजियन' का नाम—पहले थियोलोजियन, संत जॉन द वर्जिन, मसीह के प्रिय शिष्य के समान। यद्यपि 'दैवीयशास्त्री' की यह उपाधि सभी महान शिक्षकों और पवित्र पिताओं के लिए उपयुक्त है—क्योंकि वे सभी दैवीयशास्त्रीय विमर्श में लगे रहे, और उन्होंने पवित्र त्रिमूर्ति की यथोचित महिमा की—यह उपाधि संत ग्रेगरी को एक विशेष तरीके से प्रदान की गई और यह उनकी अतिरिक्त उपाधि बन गई। यह उन्हें चर्च द्वारा कई महान विधर्मी लोगों पर उनकी विजय और सफलता के प्रतीक के रूप में दी गई थी। उस समय से, हर कोई उन्हें 'द थियोलोजियन' कहने लगा। ऑर्थोडॉक्स श्रद्धालु उन्हें बहुत प्यार करते थे। धर्मपरायण लोगों की भीड़ उन्हें पैट्रिआर्कल सिंहासन पर देखना चाहती थी। इसके अलावा, अलेक्जेंड्रिया के पैट्रिआर्क पीटर[1449] , जो सिंहासन पर महान अथेनासियस के उत्तराधिकारी बने, ने संत ग्रेगरी द थियोलोजियन को लिखा, और उन्हें कॉन्स्टेंटिनोपल के पैट्रिआर्कल सिंहासन का प्रभार सौंपा, क्योंकि वे सबसे योग्य थे और उन्होंने मसीह की कलीसिया के लाभ के लिए बहुत परिश्रम किया था। लेकिन तुरंत ही दुर्भावनापूर्ण लोगों से इस में एक बाधा उत्पन्न हो गई।

[1450]कॉन्स्टेंटिनोपल में सिनीक स्कूल के एक यूनानी दार्शनिक, मैक्सिमिस थे, जो मिस्र के मूल के थे। वे चालाकी, धोखे, पाखंड और दुर्भावनापूर्ण इरादों के लिए जाने जाते थे। सबसे पवित्र चरवाहे, ग्रेगरी द थियोलोजियन के समक्ष प्रस्तुत होकर, उसने हेलेनिक अधर्मीता का त्याग कर दिया और, बपतिस्मा के बाद, पवित्र चर्च में प्रवेश किया। हालाँकि, वह दुनिया की व्यर्थता के बीच रहता था और पाखंडपूर्वक खुद को धार्मिकता का आवरण पहनाए हुए था, ठीक वैसे ही जैसे एक भेड़िया भेड़ का वेश धारण कर सकता है, जबकि दिल से एक भेड़िया ही रहता है—एक तथ्य जो जल्द ही उजागर हो गया। संत ग्रेगरी, जो उनके छल से अनजान थे और उनके मूर्तिपूजक धर्म से ईसाई धर्म में परिवर्तित होने को एक महान कार्य मानते थे, ने उन्हें एक सहवासी और मित्र के रूप में स्वीकार किया, उन्हें अपना सह-भोजी बनाया और बाद में चर्च के पुरोहित वर्ग का सदस्य बना दिया। हालाँकि, उसने यहूदा का अनुसरण किया - उसने अपने शिक्षक और आध्यात्मिक पिता के खिलाफ हो जाने की साजिश रची और उनसे युद्ध छेड़ दिया। अपनी योजना को अंजाम देने के लिए, उसे एक ऐसे पादरी के रूप में एक साथी मिल गया जो ईश्वर का भय नहीं रखता था और कपटपूर्ण योजनाओं में निपुण था। उसके साथ गठबंधन करके, मैक्सिमिस ने कॉन्स्टेंटिनोपल में पैट्रिआर्कल सिंहासन पर कब्जा करने के उद्देश्य से चालाकी और गुप्त रूप से काम करना शुरू कर दिया। लेकिन चूँकि ऐसे उपक्रम की सफलता के लिए बहुत सारे पैसे की आवश्यकता थी—रिश्वत और उपहारों के माध्यम से बहुमत को अपने पक्ष में करने के लिए—वे सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण रूप से धन जुटाने में लग गए। शैतानी सहायता से, उन्हें जल्द ही वह मिल गया जिसकी वे तलाश कर रहे थे, वह

[1449] पेत्रुस द्वितीय, अलेक्जेंड्रिया के पैट्रिआर्क, ने 373 से 380 तक चर्च का नेतृत्व किया।

[1450] अलेक्जेंड्रिया में अज्ञात यह व्यक्ति, वास्तव में, पुरोहित वर्ग के सबसे बुरे तरह के साहसी लोगों में से था। वह एक घमंडी सामान्य व्यक्ति, एक पाखंडी ईसाई और एक दिखावटी दार्शनिक का एक दयनीय मिश्रण था। बाहरी तौर पर, वह खुद को एक तपस्वी के रूप में प्रस्तुत करता था और सिनीक दार्शनिकों का चोला पहनता था (ये दार्शनिक जो सांसारिक वस्तुओं के प्रति पूर्ण तिरिस्कार दिखाते थे और अपना लक्ष्य शारीरिक आवश्यकताओं को यथासंभव कम करना रखते थे; इसी कारण, चीजों को अति तक ले जाकर, वे फटे-पुराने कपड़े पहनते थे और सभी सांसारिक सुख-सुविधाओं का त्याग कर देते थे, हालांकि अक्सर पाखंडपूर्वक)।

भी नम्निलखिति तरीके से। फासोस द्वीप[1451] से एक पुरोहति वज़िान्टयिम में एक बड़ी रकम लेकर आया, जो एक चर्च के नर्िमाण के लिए प्रोकॉनस्सिॉस[1452] से आयात कए गए संगमरमर के पत्थरों की खरीद के लिए थी। उसे वभिन्नि खोखले वादों से बहकाने के बाद, साजशिकर्ताओं ने उस धनराशि पर कब्ज़ा कर लयि—जो उनकी दुष्ट योजना को अंजाम देने के लिए पर्याप्त थी—और गुप्त रूप से अलेक्ज़ेंड्रयिा में पैट्रआर्क पीटर को, साथ ही उनके बशिपों और पुरोहतिों को कई कीमती उपहार भेजे, और उन्होंने वनिम्रतापूर्वक अनुरोध कयि कि बशिपों को बाइज़ेन्टयिम भेजा जाए ताकि मैक्समिस को पैट्रआर्क के सहिासन पर बठिाया जा सके। उपहारों के प्रलोभन में आकर और जैसे कि उन्होंने संत ग्रेगरी को लखिा अपना पूर्व पत्र भूल ही गए हों, पीटर ने तुरंत उनकी मांगों को मान लयि। उन्होंने मस्रि के बशिपों को कॉन्स्टेंटनिोपल भेजा, जो बनिा कसिी देरी के वहां पहुंच गए। बनिा कसिी को अपनी पहचान बताए—न तो बशिप ग्रेगरी को, न ही पुरोहति वर्ग को, और न ही कसिी मजस्ट्रिेट को—वे मैटन्सि के दौरान मक्समिस के साथ चर्च में प्रकट हुए और उन्होंने पहले ही अभषिेक शुरू कर दयि था, जसिका उद्देश्य मक्समिस को आर्चबशिप के रूप में अभषिति करना था। संत ग्रेगरी द थयिोलोजयिन बीमार थे। इसकी खबर तुरंत फैल गई। पादरी, पुरोहति वर्ग के सदस्य और लोगों की एक बड़ी भीड़—सही आस्था वाले और वधिर्मी दोनों—बनिा कसिी देरी के चर्च में जमा हो गए। हर कोई, ऐसी चालाकी भरी धूर्तता और अवैध अभषिेक से चकति, क्रोध से भर गया और आने वाले बशिपों पर चल्लिाने लगा, और उन्हें यह पूरी तरह से अवैध कृत्य करने से रोकने के लिए अपनी पूरी ताकत लगा दी। अवमानना के साथ चर्च से बाहर नकिाले जाने पर, वे एक बांसुरीवादक के घर गए और वहाँ उन्होंने अवैध अभषिेक पूरा कयि; फरि उन्होंने पुरोहति और सामान्य, दोनों प्रकार के सहायकों की सहायता से मैक्समिस को कॉन्स्टेंटनिोपल का पैट्रआर्क घोषति कर दयि। उनमें से कुछ को उनके पापों के कारण चर्च से बहष्किृत कर दयि गया था, अन्य को शुल्क के लिए काम पर रखा गया था, और कुछ अन्य को उपहार और सम्मान के वादों से लुभाया गया था; इस तरह के सभी लोग मैक्समिस के समर्थक थे और उसका समर्थन करते थे। हालाँकि, बहुमत — और वे सबसे सम्मानति नागरकि थे — क्रोध से भर गए और उन्होंने मैक्समिस को तीखी फटकारों और आरोपों से डांटा; उन्होंने तो संत ग्रेगरी द थयिोलोजयिन से भी अपनी नाराज़गी व्यक्त की कि उन्होंने ऐसे व्यक्ति को साथी बनाया और उसे अपनी दोस्ती का सम्मान दयि।

संत ने उन्हें उत्तर दयि:

'हे पुरुषो, इस मनुष्य पर दया करने के लिए मुझसे क्रोधति न हो, क्योंकि मैंने उसकी दुष्टता का पूर्वानुमान नहीं लगाया था; क्या कसिी की दुष्टता का पूर्वानुमान न लगा पाने के लिए हम दोषी हैं? कसिी व्यक्ति के आंतरकि जीवन के रहस्य को जानना केवल ईश्वर का वशिेषाधकिार है। इसके अलावा, क्या यही कानून हमें यह आज्ञा नहीं देता कि हम अपनी ओर आने वाले हर व्यक्ति के प्रति पितृसुलभ प्रेम से अपना हृदय खोलें: *'जो कोई मेरे पास आता है,'* उद्धारकर्ता कहते हैं, *'मैं उसे कभी बाहर नहीं नकिालूंगा'* (यूहन्ना 6:37)। मेरे लिए यह पहले से ही महत्वपूर्ण था कि मैक्समि हेलेनकि भ्रम से पवत्रि बपतस्मिा तक आ गया था और हरक्यूलसि[1453] की सेवा करने के बजाय, पवत्रि त्रमिूर्ति की सेवा करने आया था। इसके अलावा, वह सदाचारी प्रतीत होता था, भले ही पाखंड से – लेकनि उसका पाखंड और दुर्भावना अब ही स्पष्ट रूप से सामने आए हैं। ऐसे मामलों की जांच करना हमारा काम नहीं है; हम मानवीय वचिारों को नहीं समझते, और न ही हम भवष्यि को जानते हैं, जब तक कि ईश्वर हमें इसका खुलासा न कर दे। हम केवल चेहरे को देखते हैं, लेकनि ईश्वर हृदय को देखता है।

इन शब्दों से लोगों को आश्वासन मलिा और इसके बाद उन्होंने संत ग्रेगरी द थयिोलोजयिन के प्रति और भी अधकि स्नेह वकिसति कयि। इस बीच मैक्समिस, जन्होंने उसे बशिप के रूप में अभषिक्ति कयि था, मस्रि के बशिपों के सनिड के साथ धर्मपरायण सम्राट थयिोडोसयिस महान ([1454]) के पास रवाना हुआ, जो उस समय अपनी सेनाओं के साथ थेस्सालोनकिी ([1455]) में तैनात थे, और उसने कॉन्स्टेंटनिोपल के सहिासन पर अपने दावे की पुष्टि की मांग की। वह, एक

[1451] फासोस, जसिे अब थासोस कहा जाता है, एजयिन सागर (द्वीपसमूह) में थ्रेसयिाई तट से अधकि दूर नहीं एक द्वीप है।

[1452] प्रोकोन्नसि प्रॉपोंटसि (मार्मारा सागर) में एक महत्वपूर्ण द्वीप है; यह अपनी संगमरमर की खदानों के लिए जाना जाता है।

[1453] हरक्यूलसि – प्राचीन यूनानी कविदंती का एक नायक, जसिके बारे में प्राचीन यूनानयिों की मान्यता थी कि उसमें अलौककि शक्ति थी, जो मानवीय शारीरकि शक्ति का प्रतीक था, और बाद में उसे उनके सबसे प्रयि देवताओं में से एक के रूप में पूजा गया।

[1454] उन्होंने 379 से 395 तक शासन कयि।

[1455] थेस्सालोनकिी, जसिे सोलुन के नाम से भी जाना जाता है, मैसेडोनयिा का एक बहुत ही महत्वपूर्ण प्राचीन शहर था, जो एजयिन सागर (द्वीपसमूह) पर थेस्सालोनकिी की बड़ी खाड़ी या थ्रेसयिन खाड़ी के अंदर स्थति था।

ऐसा व्यक्ति जिसे चर्च से बहिष्कृत कर दिया गया था, धार्मिक विधानों के आधार पर पुष्टि प्राप्त नहीं कर सका; इसलिए, उसने सेवा करने के बजाय यातना देने का इरादा रखते हुए, शाही फरमान से चर्च पर अधिकार प्राप्त करने की कोशिश की। धर्मपरायण सम्राट बहुत क्रोधित हो गए और धमकियों से, मैक्सिमिस और उसके साथ आए बिशपों को भगा दिया। फिर वे सभी अलेक्जेंड्रिया के लिए रवाना हो गए, जहाँ मैक्सिमिस ने इसी तरह की साजिशें रचनी शुरू कर दीं। अलेक्जेंड्रिया के चर्च के पुरोहितों को एक बड़ी रकम देकर रिश्वत देने के बाद, मैक्सिमिस ने पादरी पीटर से बेधड़क और निर्लज्जतापूर्वक कहा: 'या तो मेरे लिए कॉन्स्टेंटिनोपल का सिंहासन पाने के लिए मध्यस्थता करो, या मैं तुम्हारा सिंहासन नहीं छोड़ूँगा।' धूर्त साधनों का उपयोग करते हुए, वह पैट्रिआर्क के लिए एक जाल बिछा रहा था, और यदि शहर के राज्यपाल को इसके बारे में जल्द ही पता न चल जाता तो वह निश्चित रूप से अपनी दुर्भावनापूर्ण योजना को अंजाम दे देता। लोगों के बीच अशांति फैलने के डर से, उन्होंने मैक्सिमिस को अलेक्जेंड्रिया से अपमानित होकर निर्वासित कर दिया।

इस बीच, कॉन्स्टेंटिनोपल में संत ग्रेगरी द थियोलॉजिस्ट शारीरिक बीमारियों से इतने पीड़ित थे कि उन्हें कॉन्स्टेंटिनोपल के चर्च के प्रशासन में अपने कर्तव्यों को त्यागने के लिए मजबूर होना पड़ा और वे अपने पैतृक गांव, नाज़ियान्ज़स लौटना चाहते थे। उन्होंने लोगों को आखिरी बार संबोधित करने का संकल्प लिया, और उनसे धर्म की उत्साहपूर्वक रक्षा करने और अच्छे कर्म करने का आग्रह किया। लोगों को एहसास हो गया कि उनका इरादा कॉन्स्टेंटिनोपल छोड़ने का है। चर्च में उद्गार और जोर-जोर से रोने की आवाज़ें सुनाई देने लगीं। हर कोई एक स्वर में कहने लगा:

'पिताजी! हमें छोड़कर आप अपने साथ पवित्र त्रिमूर्ति के सिद्धांत को ले जा रहे हैं। आपके बिना, इस शहर में पवित्र त्रिमूर्ति का कोई सच्चा स्वीकारोक्ति नहीं होगी। ऑर्थोडॉक्सी और धार्मिकता आपके साथ ही इस शहर से चली जाएँगी।'

इन उद्घोषों और लोगों के विलाप को सुनकर, संत ग्रेगरी ने अपना इरादा त्याग दिया और अगली परिषद के बुलाए जाने तक उनके साथ रहने का वादा किया। उस समय, यह अपेक्षा की जा रही थी कि बिशप जल्द ही इकट्ठा होंगे और पैट्रिआर्केट के लिए एक योग्य व्यक्ति का चुनाव करेंगे। यह ठीक वही था जिसकी स्वयं संत ग्रेगरी को उम्मीद थी: केवल पितृसत्तात्मक सिंहासन पर एक योग्य चरवाहे को देखकर ही वह अपने देश लौटने का इरादा रखता था। इस बीच, धर्मपरायण सम्राट थियोडोसियस बर्बरों के खिलाफ युद्ध लड़ रहे थे और उन्हें हराने के बाद, विजय प्राप्त कर कॉन्स्टेंटिनोपल लौट आए। एरियन लोग अभी भी पैट्रिआर्कल कैथेड्रल चर्च पर काबिज थे और उनके पैट्रिआर्क एरियन डेमोफिलिस थे; हालाँकि, ऑर्थोडॉक्स के पास केवल सेंट अनास्तासिया का छोटा और जर्जर चर्च ही बचा था। सम्राट ने डेमोफिलिस को बुलाया और उस पर या तो ऑर्थोडॉक्स धर्म अपनाने या अपनी सीट किसी और को सौंपने का दबाव डाला। डेमोफिलिस, जिसका हृदय कठोर हो चुका था, ने अपनी कुर्सियों को त्यागना पसंद किया बजाय इसके कि वह अपने भ्रमवाद का त्याग करे। तब राजा ने संत ग्रेगरी द थियोलोजियन और ऑर्थोडॉक्स ईसाइयों की पूरी सभा को कैथेड्रल चर्च प्रदान कर दिया, जिसे एरियनों ने चालीस वर्षों तक अपने पास रखा था, साथ ही सभी अन्य चर्च भी दे दिए। लेकिन जब ईश्वर के बिशप, ग्रेगरी, पुरोहितों और लोगों के साथ चर्च में प्रवेश करना चाहते थे, तो एरियन का एक समूह, जो युद्ध के लिए सजे-धजे थे, चर्च के चारों ओर इकट्ठा हो गया, उन्होंने ऑर्थोडॉक्स के लिए प्रवेश द्वार बंद कर दिया और संत को मौत की धमकी देने लगे। अरियनों ने एक बहादुर और निडर युवक को पैसे देकर रखा था, जो चुपके से ग्रेगरी के पास जाकर उसकी पेट में तलवार घोंप दे; लेकिन ईश्वर ने अपने भक्त को बचा लिया। तब अरिअनों में एक चीख, हंगामा और बड़बड़ाहट मच गई। यदि स्वयं ज़ार प्रकट होकर पवित्र बिशप को चर्च में नहीं ले गए होते, तो वे निश्चित रूप से ऑर्थोडॉक्स पर हिंसा और हानि करते। ऑर्थोडॉक्सों ने, अपनी ओर से, बड़ी खुशी और आनंद के साथ जयकार किया, ईश्वर की स्तुति की, आनंद के आँसू बहाए और अपने हाथ ऊपर उठाए। वास्तव में, इतने वर्षों के बाद, उन्होंने अपना पवित्र तीर्थस्थल वापस पा लिया था! साथ ही, उन्होंने सर्वसम्मति से ज़ार से पैट्रिआर्कल सिंहासन पर ग्रेगरी द थियोलॉजिस्ट को स्थापित करने का आग्रह किया। संत ग्रेगरी, जो अपनी लगातार शारीरिक बीमारियों से बहुत कमजोर हो गए थे और लोगों को भाषण देने की ताकत उनमें नहीं बची थी, उन्होंने आम जन के आक्रोश को देखते हुए, अपने एक पुरोहित के माध्यम से घोषणा की:

'मेरे बच्चों! अब धन्यवाद और एकमात्र ईश्वर की महिमा करने का समय है, जो त्रिमूर्ति में हैं, जिन्होंने हमें एक बार फिर अपनी पवित्र कलीसिया प्राप्त करने की कृपा प्रदान की है। अत; आइए अब हम उनकी महान दया की महिमा करें, और हम पितृपद के विषय पर बाद में, किसी अन्य समय पर विचार करेंगे।'

संत के उत्तर को सुनकर, लोगों ने अपना शोर-शराबा बंद कर दिया। फिर, लिटिर्जी (प्रार्थना सभा) के समापन के बाद, सभी लोग ईश्वर की महिमा करते हुए अपने-अपने घर चले गए; हालाँकि, एरियिन (ईसाई संप्रदाय) शांत हो गए और लज्जित हुए।

धर्मनिष्ठ राजा थियोडोसियिस संत ग्रेगरी द थियोलोजियिन का अपने पिता के समान अत्यधिक सम्मान करते थे, लेकिन वे राजा से अक्सर नहीं मिलते थे, सोलोमन के वचनों को ध्यान में रखते हुए: *'अपने मित्र के घर बार-बार न जा, कहीं ऐसा न हो कि वह तुझ से ऊब जाए और तुझ से घृणा करने लगे'* (नीतिवचन 25:17)। संत लोगों को उपदेश देने, बीमारों से मिलने और उन्हें ठीक करने, अन्यायग्रस्तों की मदद करने, कमजोरों की रक्षा करने और अपने अनुयायियों को विधर्मी त्रुटियों से शुद्ध करने के लिए सदैव उत्सुक रहते थे। वे कभी-कभी गाँवों में एकांतवास के लिए चले जाते थे, उन्हें मौन प्रिय था और वे आराम के द्वारा अपनी बार-बार होने वाली बीमारियों को ठीक करने का प्रयास करते थे, और इस प्रकार अपने शरीर को आगे के कार्यों के लिए सक्षम बनाते थे। हालाँकि उसके पास चर्च की काफी संपत्ति थी, उसने अपने लिए एक भी चाँदी का सिक्का नहीं रखा, और न ही उसने चर्च बनाने वालों से यह पूछा कि उन्होंने कितना एकत्र किया था और कितना खर्च किया गया था। वह बाद वाले काम को एक बिशप का नहीं, बल्कि एक सांसारिक शासक का काम मानता था। उसने सभी को स्पष्ट अंतरात्मा बनाए रखने के लिए प्रोत्साहित किया। अपनी अनवरत मेहनत और बढ़ती उम्र से थके हुए, वह एक बार बीमार पड़ गए और बिस्तर पर ही सीमित हो गए। जब लोगों को यह पता चला, तो वे उनसे मिलने आए। वह बिस्तर पर बैठ गए और पूछा:

'मेरे बच्चों, तुम क्या चाहते हो? तुम मेरे पास क्यों आए हो?'

जो लोग आए थे, वे उनके सामने झुके और उनके सभी कार्यों के लिए उनका धन्यवाद किया: धर्मद्रोह से शहर को शुद्ध करने के लिए; कई वर्षों से एरियिनों के हाथ में रहे पवित्र चर्चों को ऑर्थोडॉक्स को वापस दिलाने के लिए; और अपने उपदेश तथा अपने पादरियाना देखभाल, दोनों के माध्यम से सभी के लिए इतना कुछ भला करने के लिए।

'तो अब, पिताजी,' उन्होंने कहा, 'यदि आप ईश्वर के पास जा रहे हैं, तो अपने झुंड, विश्वासयोग्य ज़ार, और पूरी कलीसिया के लिए प्रार्थना करें।'

संत ने घोषणा की कि उनकी बीमारी जानलेवा नहीं है, और फिर, अपनी आदत के अनुसार उन्हें उपदेश देकर, उन्होंने उन्हें जाने की आज्ञा दे दी। जैसे ही वे तितर-बितर होने लगे, एक युवक पीछे रह गया; संत के पैरों से लिपटकर, वह रोते और सिसकते हुए उनसे अपने पाप को क्षमा करने की विनती करने लगा। संत ने पूछा कि उसका पाप क्या था, लेकिन उस युवक ने कोई जवाब नहीं दिया; वह बस रोता रहा और क्षमा याचना करता रहा। वहाँ मौजूद लोगों में से एक ने संत से कहा:

'फादर, यह आपका हत्यारा है! विधर्मियों के उकसावे पर, वह आपकी पेट में तलवार घोंप देना चाहता था, लेकिन मसीह ने आपकी रक्षा की। अब वह पश्चाताप कर रहा है और क्षमा मांग रहा है।'

संत ने उस युवक से कहा:

'प्रिय पुत्र, हमारे प्रभु यीशु मसीह तुम पर दया करें और तुम्हारे पापों को क्षमा करें। बस अब से हम में से एक बन जाओ; विधर्म का त्याग करो, हमारे परमेश्वर मसीह की ओर लौट आओ, और उनकी निष्ठापूर्वक सेवा करो।'

और इस प्रकार उन्होंने उस युवक को क्षमा करके रिहा कर दिया। यह सुनकर पूरा शहर उनके द्वेष-रहित स्वभाव पर चकित रह गया और उनके प्रति और भी अधिक प्रेम से भर उठा। कुछ ही समय बाद, बिशप साम्राज्यिक शहर में एक पैट्रिआर्क की नियुक्ति करने और आंशिक रूप से दूसरे सार्वभौमिक परिषद[1456] में विधर्मों को शाप देने के लिए इकट्ठा होने लगे। जब एक सौ पचास ऑर्थोडॉक्स बिशप इकट्ठा हो गए, तो अंकोयिा के संत मेलेटियस को परिषद का अध्यक्ष चुना गया। उस समय, संत ग्रेगरी द थियोलॉजिस्ट ने, अपनी इच्छा के विरुद्ध और बड़े दुख के साथ, बीमार होते हुए भी, सम्राट और पूरे लोगों की प्रार्थनाओं के आगे झुककर, पैट्रिआर्क का पद स्वीकार कर लिया। कुछ ही दिनों बाद, अंकोई के पैट्रिआर्क सेंट मेलेटियस बीमार पड़ गए और उनका निधन हो गया। इसके तुरंत बाद, मिस्र और

[1456] दूसरा सार्वभौमिक परिषद 381 में शुरू हुई और तीन साल तक चली।

मैसेडोनिया के बिशप पहुंचे और उन्होंने ग्रेगरी की पैट्रिआर्क के रूप में नियुक्ति पर अपनी असंतोष व्यक्त करना शुरू कर दिया, विशेष रूप से क्योंकि उन्हें उनकी अनुपस्थिति में चुना गया था। वे इस बात पर अड़े थे कि यह नियुक्ति अवैध थी, क्योंकि ग्रेगरी को अलेक्जेंड्रिया के पैट्रिआर्क द्वारा नहीं बल्कि एंटिओक के पैट्रिआर्क द्वारा स्थापित किया गया था; फिर भी, अलेक्जेंड्रिया का पैट्रिआर्केट रोम के बाद दूसरा सबसे बड़ा है, और कांस्टेंटिनोपल के पैट्रिआर्क की नियुक्ति वहीं से होनी चाहिए। बिशपों के बीच बड़े मतभेद, उथल-पुथल और कलह उत्पन्न हो गए: कुछ का कहना था कि ग्रेगरी की नियुक्ति सही थी, जबकि अन्य ने आपत्ति जताई; इस प्रक्रिया में, बिशप आपस में ही लड़ पड़े। संत ग्रेगरी द थियोलॉजिस्ट ने, उनके कारण बिशपों के बीच उत्पन्न हुए कलह और झगड़ों को देखकर, परिषद में उन सभी को इन शब्दों में संबोधित किया:

उन्होंने कहा, 'हे पवित्र और सम्मानित चरवाहों, मैंने कॉन्स्टेंटिनोपल के चर्च पर अधिकार प्राप्त करने का प्रयास नहीं किया; लेकिन यदि यह मेरे प्रयासों और परिश्रमों से बढ़ा और दृढ़ता से स्थापित हुआ है, तो मेरे लिए ईश्वर को प्रसन्न करना और उनसे अपना पुरस्कार की आशा करना ही पर्याप्त है। मुझे सिंहासन स्वीकार करने के लिए केवल अपने झुंड के प्रति प्रेम और पवित्र पिताओं के सर्वसम्मत निर्णय ने ही बाध्य किया था; फिर भी अब मैं अपनी ओर कई लोगों की शत्रुता देख रहा हूँ। तब जान लो, कि मैं न तो धन-संपत्ति चाहता हूँ, न उच्च पद और न ही सम्मान; मैं कॉन्स्टेंटिनोपल के पैट्रिआर्क का पद धारण नहीं करना चाहता और मैं बिना किसी पछतावे के बिशप का पद त्यागता हूँ; जहाँ तक आपकी बात है, आपस में सलाह-मशविरा करें और अपनी इच्छा से करें। मुझे लंबे समय से मरुभूमि एक सुखद स्थान लगी है, और जो हमें सिंहासन से वंचित कर सकते हैं, वे हमें ईश्वर से वंचित नहीं कर सकते।

यह कहकर, वह बाहर गया और पैट्रिआर्क के आवास को छोड़ दिया। उन्होंने चर्च से दूर स्थित एक छोटे से झोपड़ी में निवास किया, और उनसे मिलने आने वालों से बातचीत और विवाद से बचते रहे। हालाँकि, बहुत से लोग उसके पास आकर विनती करने लगे कि वह अपनी भेड़-बकरियों पर दया दिखाए और उन्हें न छोड़ें, जिन्हें उन्होंने इतनी मेहनत और पसीने से पाला-पोसा और बढ़ाया था।

उन्होंने कहा, 'पिताजी, अपने बच्चों के प्रति अपना स्नेह दिखाइए, जिनके लिए आपने इतनी कड़ी मेहनत की है; अपने शेष जीवन को उन्हीं के लिए समर्पित कर दीजिए, ताकि हम, आपके उपदेश से प्रबुद्ध होकर, आपके देहांत के बाद आपका शरीर प्राप्त कर सकें।'

संत ग्रेगरी, एक प्यार करने वाले पिता की तरह, करुणा से भर गए और, यह न जानते हुए कि क्या करें, उन्होंने ईश्वर से आगे का रास्ता दिखाने के लिए प्रार्थना की।

जब इकट्ठा हुए बिशपों की संख्या बढ़ गई, फिर भी उनके बीच कलह और असहमति बिनी हुई थी, तो धन्य ग्रेगरी, परिषद के बीच में खड़े होकर, उनसे इन शब्दों में बोले:

'हे मेरे भाइयों और मसीह के पवित्र झुंड की देखभाल में साथी चरवाहों! तुम पर लज्जा हो, जो दूसरों को शांति बिनाए रखने की शिक्षा देते हो, फिर भी स्वयं आपस में कलह में पड़ जाते हो! आप एक-दूसरे से सहमत नहीं हो सकते तो आप दूसरों को विचारों की एकता और सामंजस्य के लिए कैसे मना सकते हैं? लेकिन मैं आपसे एकसार स्वभाव वाली और परम पवित्र त्रिमूर्ति के सामने विनती करता हूँ कि आप शांति स्थापित करें और एक-दूसरे के प्रति परस्पर प्रेम दिखाएँ, ताकि आप चर्च के मामलों को पूर्ण सामंजस्य से चला सकें। यदि, तथापि, मैं आपके बीच कलह और विभाजन का कारण हूँ, तो मैं नबी योना से अधिक योग्य नहीं हूँ। मुझे जहाज से फेंक दो – और फिर आपके लिए यह उथल-पुथल समाप्त हो जाएगी। यद्यपि इस तूफान के लिए मैं दोषी नहीं हूँ, यदि आप यही चाहते हैं तो मैं पीड़ा सहने को तैयार हूँ। बस एक-दूसरे से मेल-मिलाप कर लो और एक मन के हो जाओ; मुझे सिंहासन से हटा दो, मुझे शहर से निर्वासित कर दो—लेकिन, जैसा कि भविष्यवक्ता ज़करिया कहते हैं (ज़करिया 8:19), सत्य और शांति से प्रेम करो। मैं आपको सुस्वास्थ्य की कामना करता हूँ, हे पवित्र चरवाहो! मेरी मेहनत को भी मत भूलना!

जब उन्होंने यह भाषण दिया, तो उनके सभी विरोधी लज्जित हो गए और उनके शब्दों से प्रभावित हुए। संत ने परिषद छोड़ने के बाद अपने देश लौटने का निश्चय किया और राजा से घर लौटने की अनुमति मांगने गए।

उसने राजा से कहा:

'हे राजा! मसीह आपको न्याय के दिन चर्च पर किए गए आपके सभी अच्छे कार्यों का प्रतिफल दें। लेकिन हे शक्तिशाली शासक, मैं जो अनुग्रह अब आपसे मांग रहा हूँ, उसे मुझसे न छीनिए: मैं आपसे न तो संपत्ति मांग रहा हूँ और न ही रिश्तेदार; मैं वेदियों के लिए कोई कीमती आवरण नहीं चाहता, बल्कि केवल अपने श्रम से राहत चाहता हूँ। यह कई

लोगों की ईर्ष्या का अंत करे; बिशप आपके प्रयासों से सामंजस्य स्थापित करें! आपने जो बर्बरों के अत्याचार को समाप्त किया है, उसी प्रकार पवित्र पिताओं के बीच के विवाद को भी समाप्त करें। अपने विजयी राज्य को इस एक चीज़ से सजाएँ: कि बिशप आपस में शांति और सौहार्द प्राप्त करें। यह तब संभव होगा जब आप मुझे मेरे देश लौटने की अनुमति देंगे। मैं आपसे यही कृपा चाहता हूँ; मुझे दया का यह अंतिम कार्य प्रदान करें।

ज़ार संत के शब्दों से गहराई से प्रभावित हुआ और उसकी आँखों में आँसू आ गए। उपस्थित गणमान्य व्यक्ति भी आँसुओं से भर आए। सभी ने संत के प्रति गहरा प्रेम महसूस किया और उसे जाने देना नहीं चाहते थे। हालाँकि, उन्होंने बारी-बारी से अपनी वृद्धावस्था और पुरानी बीमारियों का हवाला देते हुए, और अपनी उपस्थिति के कारण बिशपों के बीच उत्पन्न असहमति की ओर इशारा करते हुए, राजा से विनती करना जारी रखा और अंततः उसे मना लिया कि वह उन्हें बंदी न बनाए बल्कि उन्हें जहाँ चाहें जाने दे, ताकि वे अपने शेष दिन शांति से बिता सकें और अपने अनेक कार्यों से विश्राम पा सकें। राजा से अनुमति मिलने पर, उन्होंने सभी से विदा ली और अपने आध्यात्मिक अनुयायियों को शांति का आशीर्वाद दिया। जब वे शहर से विदा हो रहे थे, तो सभी लोग उन्हें विदा करने आए और कड़वे आँसू बहाए। इसके तुरंत बाद, कुछ बिशप जिन्होंने संत ग्रेगरी से प्रेम किया था और उनके लिए शोक मना रहे थे, वे शहर छोड़ गए; धर्मसभा से प्रस्थान करने के बाद, वे प्रत्येक अपनी-अपनी सेवकाई के स्थानों पर लौट गए। इनमें शामिल थे: बेसिल द ग्रेट के भाई, निस्सा के ग्रेगरी; आयकॉनियम के एम्फिलोचियस; एडसा के यूलोगियस; सेसरिया के हेलाडियस ; मेलिटिन के ओट्रिओस; और कई अन्य। परिषद में बचे बिशपों ने सेनेटर नेक्टारीयस[1457] को पैट्रिआर्क चुना।

संत ग्रेगरी द थियोलोजियन कैपाडोसिया के क्षेत्र में चले गए और अपने पैतृक गांव अरियान्ज़े में बस गए। वहाँ उन्होंने विश्राम किया, क्योंकि उनकी तबीयत बहुत नाजुक थी। हालाँकि, उन्होंने परमेश्वर की महिमा के लिए अपने कार्य नहीं छोड़े: उन्होंने पाया कि उनका मूल नगर नाज़ियान्ज़स अपोलिनारियन संप्रदाय से प्रभावित था और उन्होंने व्यक्तिगत उपदेशों और अपने पत्रों के माध्यम से इसे शुद्ध करने का प्रयास किया। जब नागरिकों ने उनसे बिशप का पद संभालने के लिए कहा, तो उन्होंने मना कर दिया, और इसके बजाय यूलालियस नामक एक पादरी को उनका बिशप नियुक्त किया, जो आस्था में उत्साही और धर्मपरायण व्यक्ति था। वे स्वयं अरियान्ज़े गाँव में पूर्ण एकांतवास में रहे।

[1457] संत नेक्टारीयस ने 381 से 397 तक पैट्रिआर्क के रूप में कार्य किया।

वहाँ, कुछ समय तक रहने और कई प्रेरणादायक कृतियाँ[1458] छोड़ने के बाद, उन्होंने अपनी वृद्धावस्था में 25 जनवरी[1459] को शाश्वत जीवन में प्रवेश किया। उन्हें नाज़ियान्ज़ुस शहर में सम्मान के साथ दफनाया गया। कई वर्षों बाद, धर्मपरायण सम्राट कॉन्स्टेंटिन पोर्फ्योजेनिटिस ने उनके पवित्र अवशेषों को नाज़ियान्ज़स से कॉन्स्टेंटिनोपल ले जाकर पवित्र प्रेरितों के चर्च में रख दिया – शहर की सहायता और सुरक्षा के लिए और मसीह परमेश्वर की महिमा के लिए, जो हमेशा के लिए पिता और पवित्र आत्मा के साथ महिमामय हैं। आमीन।

ट्रोपारियन, स्वर 1:

आपकी धर्मशास्त्र की चरवाहे की बांसुरी वक्ताओं के तुरहियों पर विजय प्राप्त करे: क्योंकि आपने पवित्र आत्मा की गहराइयों को नाप लिया है, आपको वाक्पटु उपदेश देने का वरदान प्राप्त हुआ है। परन्तु हे पिता ग्रेगरी, मसीह परमेश्वर से प्रार्थना करें, कि हमारी आत्माएं उद्धार पाएँ।

कॉन्टाकियन, स्वर 3:

आपने अपनी धर्मशास्त्रीय वाक्पटुता से, वाक्चातुर्य की उलझनों को महिमामय रूप से सुलझाकर, और स्वर्गलोक से बुने गए ऑर्थोडॉक्सी के वस्त्र से कलीसिया को सुसज्जित कर, कलीसिया को शोभित किया है; और अब, उसे धारण करके, आप हम अपने बच्चों से पुकारते हैं: आनंदित हो, पिता, धर्मशास्त्र के सर्वोत्कृष्ट आचार्य।

[1458] संत ग्रेगरी द थियोलोजियन की रचनाओं को मसीह के चर्च में सर्वोच्च सम्मान प्राप्त था। वे सबसे सावधानीपूर्वक अध्ययन और कई व्याख्याओं का विषय थीं। संत ग्रेगरी की रचनाओं में प्रवचन, पत्र और कविताएँ शामिल हैं। धर्मशास्त्र पर उनकी पाँच व्याख्यानमालाएँ इस बात का सबसे अच्छा उदाहरण हैं कि ग्रेगरी किस प्रकार के धर्मशास्त्री थे। पेंटेकोस्ट के लिए अपनी व्याख्यानमाला में, संत ग्रेगरी पवित्र आत्मा के कार्यों का वर्णन करते हैं और, इन कार्यों के माध्यम से, सच्चे ईश्वर को प्रकट करते हैं। अपनी अन्य रचनाओं में, ग्रेगरी पवित्र त्रिमूर्ति के सिद्धांत की व्याख्या करते हैं, साथ ही विश्वास के अन्य मामलों पर भी प्रकाश डालते हैं। आम तौर पर, ग्रेगरी के प्रवचन कई मायनों में अद्वितीय हैं। रूप और लहजे दोनों ही तरह से, ग्रेगरी के प्रवचन आकस्मिक बातचीत नहीं हैं; वे, पूर्ण अर्थ में, भाषण कला से युक्त संबोधन हैं। उनके 45 प्रवचनों में से, 5 प्रशंसा-भाषण हैं, 9 पर्वों के लिए हैं, और बाकी रक्षात्मक या व्याख्यात्मक हैं। संत ग्रेगरी के उत्सव के उपदेशों में, निम्नलिखित अब ज्ञात हैं: मसीह के जन्म के लिए, एपिफेनी या प्रकाश के दिन के लिए, ईस्टर के लिए, पेंटेकोस्ट के लिए, एंटी-ईस्टर के लिए, संत मामंत के लिए, मैकाबीज़ पर, और सर्व संतों के सप्ताह के दौरान पवित्र शहीदों पर। उनके प्रवचनों के कुछ अंश संत जॉन ऑफ़ डेमास्कस के पास्काल कैनन में शामिल किए गए थे, और इन्हीं से चर्च में अब गाए जाने वाले पास्काल स्टिचेरा में से एक, साथ ही कैनन के कई ट्रॉपारिया रचे गए; उनके प्रवचनों के कुछ अंश मसीह के जन्म, पवित्र पचास और एंटी-ईस्टर के लिए आयोजित धार्मिक अनुष्ठानों में भी शामिल किए गए हैं। सेंट ग्रेगरी द थियोलोजियन के रक्षात्मक और आरोप लगाने वाले लेखों में, जूलियन को लिखा गया उनका तथाकथित 'मेमोरेंडम' काफी प्रसिद्ध है - यह दो प्रवचन हैं जिनमें जूलियन की अधर्मीता को आने वाली पीढ़ियों के लिए अमिट रूप से चित्रित किया गया है। ग्रेगरी के पत्र साहित्य की उत्कृष्ट कृतियों में गिने जाते हैं। वे अधिकांशतः संक्षिप्त हैं, लेकिन ग्रेगरी इसे पत्र के स्वरूप का एक गुण मानते थे। संत ग्रेगरी के भजन तीन श्रेणियों में विभाजित हैं: धर्मशास्त्रीय, नैतिक और ऐतिहासिक; बाद वाली श्रेणी में, वे अधिकांशतः अपने बारे में, अपनी कमजोरियों और अपने दुखों के बारे में गाते हैं। उनके भक्तिपूर्ण भजन भी उल्लेखनीय हैं—उदाहरण के लिए, सुबह और शाम की प्रार्थना के लिए, और जीवन, सद्गुण और जीवन की व्यर्थता पर छंद; इनमें से सभी साहित्य की उत्कृष्ट कृतियों में अपना उचित स्थान लेने के हकदार हैं। – चर्च ने संत ग्रेगरी को उसी नाम से सम्मानित किया जिससे उसने प्रेरितों और सुसमाचार लेखकों में से सबसे प्रमुख, जॉन को सम्मानित किया था। यह उपाधि उन्हें इसलिए प्रदान की गई क्योंकि प्रथम धर्मशास्त्री के अनुयायी के रूप में, संत ग्रेगरी ने दिव्य स्वभाव की गहराइयों को ऐसे ऊँचे और फिर भी इतने सटीक विचारों से समझा, जितना कि एक मानव प्रकटीकरण के प्रकाश में समझ सकता है; विशेष रूप से, उनका संपूर्ण चिंतन, प्रथम धर्मशास्त्री की तरह, शाश्वत वचन की ओर निर्देशित था। उनके विचारों की ऊँचाई, जो दैवीय स्वभाव के भीतरी गर्भ (जितना तक यह पहुँच योग्य है) में उतरती है, संत ग्रेगरी की एक विशिष्ट विशेषता है, जो किसी और में उतनी मात्रा में नहीं थी।

[1459] संत ग्रेगरी द थियोलोजियन की मृत्यु 389 में हुई। 5वीं शताब्दी के पहले भाग में थियोडोसियस द यंगर के शासनकाल के दौरान एक निश्चित पैट्रिसियस द्वारा कॉन्स्टेंटिनोपल में उनके लिए एक चर्च का निर्माण किया गया था। संत ग्रेगरी के अवशेष, जिन्हें सम्राट कॉन्स्टेंटिन VI पोर्फिरोजेनिटिस के शासनकाल में 960 में कॉन्स्टेंटिनोपल ले जाया गया था, को विभाजित किया गया था: एक हिस्सा प्रेरितों के चर्च में रखा गया, और दूसरा संत अनास्तासिया के चर्च में। उनके कुछ अवशेष अब रोम में भी हैं, संत पीटर द अपोस्टल के बेसिलिका में।

पवत्रि शहीद फेलसिटिा और उनके सात पुत्रों का स्मरणोत्सव।

25 जनवरी को स्मरणोत्सव

रोम के पोप संत ग्रेगरी[1460] , अपनी सुसमाचार की व्याख्या में हमें इस पवत्रि शहीद फेलसिटिा के बारे में नम्निलखिति शब्दों में नरि्देश देते हैं[1461] । 'जब यहूदयिों ने प्रभु से कहा: *"देखो, तुम्हारी माँ और तुम्हारे भाई बाहर खड़े हैं, जो तुमसे बात करना चाहते हैं"* (मत्ती 12:47), प्रभु ने उन लोगों को जो उनके नाम पर वशि्वास करते हैं और उनके स्वर्गीय पति की इच्छा करते हैं, अपने भाई, बहनें और माता कहा, न कि देह के संबंध से, बल्कि आत्मा की एकता से। यह पवत्रि फेलसिटिा एक धनी परविार की रोमन महलिा थीं; उनके सात पुत्र थे। मसीह से प्रेम करने के बाद, उन्होंने अपना सारा धन-संपत्ति गरीबों में बाँट दयिा और मूर्तपिूजक राजा तथा न्यायाधीशों के सामने यह स्वीकार कयिा कि वह एक ईसाई थीं[1462] । उत्पीड़न की कठनिाइयों को सहते हुए, उन्होंने अपने बच्चों के हृदयों को उनके स्वर्गीय स्वदेश के प्रति प्रेम में मजबूत कयिा। अपने वशि्वास के द्वारा वह मसीह की दासी थी, जबकि उसके पुत्रों को उनके वशि्वास की एकता और साहसी सहनशीलता के माध्यम से मसीह के भाई कहा गया।' 'हमने देखा,' पवत्रि पति आगे कहते हैं, 'एक महलिा की छाती में पुरुषों जैसी वीरता: उसने नडिर होकर मृत्यु का सामना कयिा, और इस प्रकार दूसरों को परमेश्वर का सच्चा ज्ञान सखिाया। इस प्रकार मैंने भी इस महलिा को न केवल एक शहीद, बल्कि शहीद से भी बढ़कर कहा है, क्योंकि उसने अपने सात बेटों के दुखों को देखा और, स्वयं यातना सहते हुए, केवल यही इच्छा की कि उसके बच्चे उससे पहले स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करें और उस मार्ग से न भटकें जो वहाँ ले जाता है; पवत्रि माँ-शहीद को अपने जीवति बच्चों की चंति थी, मरते हुए बच्चों पर उन्हें हर्ष था, और इस बात से उन्हें गौरव मलिा कि उनके सात पुत्र उनसे पहले स्वर्ग के राज्य में प्रवेश कर गए, जहाँ वे स्वयं, आठवीं होकर, उनके पीछे-पीछे चली गईं, हमारे प्रभु यीशु मसीह के नाम के लिए अपने बच्चों के साथ शहीद की मृत्यु में सहभागी होकर[1463] ।

पूजनीय पोपलियिस की स्मृति।

25 जनवरी को स्मरण कयिा जाता है

[1464]आदरणीय पॉपलयिस सीनेटोरयिल वर्ग[1465] के थे और यूफ्रेट्स पर स्थति ज्यूग्मा[1466] नगर से थे। नगर से तीस वर्स्ट दूर एक ऊँचे पहाड़ पर एक स्थान चुनकर, संत पॉपलयिस ने एक छोटी झोपड़ी बनाई और फरि अपने माता-पति से मलिी सारी संपत्ति गरीबों में बाँट दी; जबकि उन्होंने स्वयं सदाचार और तपस्या का जीवन जयिा, जसिकी ख्याति दूर-दूर तक फैल गई। बड़ी संख्या में लोग उनके तपस्या के प्रयासों में शामलि होने की इच्छा से उस आदरणीय संत के पास आने लगे; उन्होंने उन्हें संकीर्ण कोठरयिाँ बनाने का नरि्देश दयिा, जनिका वह बहुत बार दौरा करते थे, यह सुनश्चिति करते हुए कि उनमें केवल बुनयिादी आवश्यकताएँ ही हों; संन्यस्तों के पास पाई जाने वाली रोटी को पूज्य पॉपलयिस द्वारा तराजू पर तौला जाता था, और यदि किसी के पास नरि्धारति मात्रा से अधकि पाई जाती, तो वह उन्हें भूखा-पेट, जो अपने शरीर की अत्यधकि परवाह करते हैं, कहता था; जनिकी कोठरयिों में तैयार भोजन मलिता था, उन्हें वह अपवत्रिता में लप्ति कहता था। रात में, पवत्रि पति अपने लिए कोई आराम नहीं चाहते थे, बल्कि अपने शष्यिों की कोठरयिों का चक्कर लगाते थे, और प्रत्येक के दरवाज़े के बाहर रुकते थे। यदि वे कोठरी में रहने वाले को प्रार्थना करते हुए पाते, तो रेवरेंड चुपचाप आगे

[1460] संत ग्रेगरी द डायलॉगस्टि; उनका पर्व दविस 12 मार्च है।

[1461] यह, बेशक, तीसरे उपदेश को संदर्भति करता है, जो उनकी शहादत के दनि सेंट फेलसिटिास के चर्च में लोगों को दयिा गया था।

[1462] पुरोहतिों ने संत फेलसिटिस पर सम्राट के सामने ईसाई धर्म का प्रचार करके देवताओं का अपमान करने का आरोप लगाया। सम्राट ने पवत्रि माता और उसके बच्चों को प्रफिेक्ट पब्लयिस के हवाले कर दयिा।

[1463] संत फेलसिटिा के बेटों के नाम थे: जैनारयिस, फेलक्स, फलिपि, सल्विानस, अलेक्जेंडर, वटिालसि और मार्शल। इन पवत्रि शहीदों का दुख-संकट सम्राट एंटोननिस के समय का है, जन्होंने 138 से 161 तक शासन कयिा। संत फेलसिटिस के सबसे बड़े बेटे को बेरहमी से कोड़ा मारा गया और जेल में डाल दयिा गया; दूसरे को सीसे की छड़ों से पीटा गया; तीसरे और चौथे को लाठयिों से मारा गया; पांचवें को बहुत ऊंचाई से फेंक दयिा गया; छठे और सातवें का सरि तलवार से काट दयिा गया, जसिके बाद उनकी मां का भी सरि कलम कर दयिा गया।

[1464] लगभग 380 ईस्वी में।

[1465] सेनेटर्स – रोमन साम्राज्य में सर्वोच्च राज्य नकिाय के सदस्य।

[1466] सीरयिा में, यूफ्रेटसि के रोमन प्रांत में।

बढ़ जाते; लेकिन यदि रहने वाला सो रहा होता, तो संत पॉपलियस अपने हाथ से दरवाज़े पर खटखटाते और आलसी भिक्षु को सख्त लहजे में फटकार लगाते। अपने शिष्यों के साथ पूज्य पिताजी के निरंतर संपर्क के कारण, उनमें से कई ने अपने तपस्या में संत का अनुकरण किया; उनमें से दो, थियोटेक्न और अवफोनियस, ने पूज्य पॉपलियस के निधन के बाद, भाइयों की देखभाल और उस मठ के नेतृत्व की जिम्मेदारी अपने ऊपर ले ली ज , जो उस पवित्र तपस्वी द्वारा स्थापित किया गया था। इस बीच धन्य पोप्लियस ने शांतिपूर्वक अपना महान कार्य पूरा किया और प्रभु के पास प्रस्थान क र दिया।

आदरणीय गायक मारा की स्मृति।

25 जनवरी को स्मरणोत्सव

अपने युवा दिनों में, आदरणीय मार अपनी सुंदर आकृति के लिए विशिष्ट थे और उनकी आवाज़ भी बहुत अच्छी थी; पवित्र शहीदों के सम्मान में आयोजित उत्सवों के दौरान, उन्होंने एक गायक के रूप में अपने कर्तव्यों का निर्वहन पूर्णता से किया। सबसे बढ़कर, वह ईश्वर से प्रेम करता था और पवित्रता के साथ उसकी आज्ञाओं का पालन करता था। कई प्रलोभनों से घिरे हुए, संत मार ने अपने शरीर को कुंवारी की निर्दोषता में, और अपनी आत्मा को पवित्रता और ब्रह्मचर्य में सुरक्षित रखा। दुनियावी प्रलोभनों से अपना मन हटाकर, वह युवक ओमिरु गाँव[1467] में चला गया और वहाँ अपने लिए एक छोटी सी झोपड़ी बना ली, जिसमें उसने सैंतालीस साल बिताए; इस झोपड़ी में, आदरणीय संत को नमी से बहुत कष्ट हुआ, जिसका उनके स्वास्थ्य पर हानिकारक प्रभाव पड़ा, लेकिन उन्होंने अपनी झोपड़ी छोड़ने से इनकार कर दिया और अपने जीवन के अंत तक वहीं रहे। आदरणीय मार अपनी सादगी के लिए प्रसिद्ध थे और वे कपट को बर्दाश्त नहीं कर सकते थे, जबकि वे गरीबी को सबसे बड़ी نعمت मानते थे। नब्बे वर्ष की आयु तक जीवित रहने के बाद, वे बकरी के ऊन से बने कपड़ों से ही संतुष्ट थे, और अपनी शारीरिक शक्ति बिनाए रखने के लिए वे थोड़ी सी रोटी नमक के साथ खाते थे। बहुत लंबे समय से, संत के हृदय में दिव्य लिटिर्जी के समारोह में उपस्थित होने की तीव्र इच्छा थी। जब पुरोहित ने अंततः उनके लिए इस महान और उद्धारकारी रहस्य का अनुष्ठान किया, तो आदरणीय मार ने कहा कि उनकी आत्मा अकथनीय मिठास से भर गई थी, और वे बहुत लंबे समय तक ध्यान में लीन रहे, वे इतने गहरे भाव में थे कि स्वर्ग की ओर देखने की हिम्मत भी नहीं कर सके। अपना दीर्घ और उद्धारकारी संघर्ष पूरा करने के बाद, संत ने शांतिपूर्वक अपना प्राण ईश्वर को सौंप दिया और अब वे शाश्वत निवासों में आनंदित हैं।

8 फरवरी

26 जनवरी (पुराना संस्करण)

पूज्य ज़ेनोफ़ोन और मैरी तथा उनके पुत्र जॉन और आर्काडियस का जीवन।

26 जनवरी को स्मरणोत्सव

संत ज़ेनोफ़ोन कॉन्स्टेंटिनोपल के सबसे प्रतिष्ठित गणमान्य व्यक्तियों में से एक थे। वे सांसारिक संपत्ति में धनी थे, लेकिन आंतरिक खजाने: विश्वास, धर्मपरायणता और ईश्वर की सभी आज्ञाओं के उत्साही पालन में और भी अधिक धनी थे। यद्यपि वे अपने पद और कुलीन जन्म के कारण प्रतिष्ठित थे, फिर भी वे अपनी धर्मपरायणता और सदाचारी जीवन के कारण और भी अधिक प्रतिष्ठित थे। जितना ऊँचा उनका सम्मान था, उतना ही विनिम्र उनका मन था; उन्होंने अपने दिल में दूसरों से खुद को बड़ा नहीं समझा, न ही अपनी अस्थायी सांसारिक महिमा पर गर्व किया। उन्होंने अपने लिए स्वर्ग में खजाने संजोए, और अपनी संपत्ति को गरीबों के हाथों से वहाँ भेजा। उनकी मारिया नाम की एक पत्नी थी, जो सभी अच्छे कार्यों में उनका अनुकरण करती थी और हर मामले में उनसे सहमत थी। ज़ेनोफ़ोन उनके साथ सदाचार से रहते थे, दोषरहित रूप से सभी आज्ञाओं का पालन करके और ईश्वर की सच्चाई को बनाए रखकर ईश्वर को प्रसन्न करते थे।

[1467] साइरस शहर के पास, सीरियाई प्रांत साइरेस्टिका में।

जब उन्हें दो बेटों, जॉन और आर्केडियस का आशीर्वाद मिला, तो उन्होंने उनका पालन-पोषण अच्छी शिक्षा के साथ किया, उन्हें न केवल विद्वतापूर्ण ज्ञान बल्कि ईश्वर का भय भी सिखाया, जो सभी ज्ञान की शुरुआत है, साथ ही उन्हें हर सद्गुण में भी शिक्षित किया। वे अपने बच्चों में न केवल अपनी संपत्ति के उत्तराधिकारी, बल्कि उससे भी बढ़कर ऐसे लोग देखना चाहते थे जो उनके ईश्वर-भय वाले, धार्मिक जीवन का अनुकरण करें। उन्होंने उन्हें फिनिशियाई शहर बेरिटस ([1468]) में हेलेनिक ज्ञान का अध्ययन करने के लिए भेजा, जो उस समय अपने स्कूलों के लिए प्रसिद्ध था। जब वे अपने अध्ययन के लिए कुछ समय तक वहाँ रह रहे थे, तब ज़ेनोफ़ोन गंभीर रूप से बीमार पड़ गए और मृत्यु की प्रतीक्षा कर रहे थे। मारिया को अपने पति के ठीक होने की कोई उम्मीद नहीं थी, इसलिए उसने बेरूत में अपने बेटों को उनके पिता की गंभीर बीमारी के बारे में लिखा और उनसे अनुरोध किया कि वे अपने पिता के निधन से पहले जल्द से जल्द घर लौट आएं। वह चाहती थी कि बच्चे अपने पिता का अंतिम आशीर्वाद प्राप्त करें और उनके अंतिम संस्कार में भाग लें। वे तुरंत घर लौटने के लिए निकल पड़े। जब उनके पिता ने उन्हें देखा, तो वे अत्यंत प्रसन्न हुए, और अपनी प्रसन्नता के कारण उनकी बीमारी कम हो गई। उन्होंने उनसे अपने बिस्तर के पास बैठने को कहा और निम्नलिखित प्रकार से उन्हें उपदेश देना शुरू किया:

– मुझे ऐसा लगता है, मेरे बच्चों, कि मैं अपने जीवन के अंत के करीब पहुँच रहा हूँ; और तुम, यदि तुम मुझे, अपने पिता को, प्रेम करते हो, तो वही करना जो मैं तुम्हें विरासत में देता हूँ। सबसे पहले, ईश्वर से भय करो और अपने जीवन को उनके पवित्र आज्ञाओं के अनुसार जियो। इसके बाद, जो मैं आपको बताने जा रहा हूँ, वह मैं घमंड से नहीं बल्कि आपको सद्गुण के मार्ग पर मार्गदर्शन करने के उद्देश्य से कह रहा हूँ: यदि आप मेरे जीवन को अपना आदर्श बनाएँ, तो मुझे विश्वास है कि आपको किसी अन्य शिक्षक की आवश्यकता नहीं होगी, क्योंकि घर पर प्राप्त शिक्षा, जो शब्द और कर्म में व्यक्त होती है, किसी भी अन्य शिक्षा से कहीं अधिक लाभदायक होती है। तो जान लो कि मैं आज तक हृदय की स्थिर श्रद्धा और सादगी बनाए रखते हुए जिया हूँ। मुझे सभी ने सम्मानित और प्यार किया, मेरे उच्च पद के लिए नहीं, बल्कि मेरी नम्रता और अच्छे चरित्र के लिए: मैंने किसी के साथ किसी भी तरह से अन्याय नहीं किया; मैंने कभी किसी को डांटा नहीं, न ही बदनाम किया, न ही ईर्ष्या की, न ही बिना कारण के गुस्सा हुआ, न ही किसी से झगड़ा किया। मैं सभी से प्रेम करता था और सभी के साथ शांति से रहता था; मैं कभी भी ईश्वर के चर्च में जाने से चूकता नहीं था, चाहे वह शाम को हो या सुबह को; मैंने भिखारी, यात्री या शोकाकुल व्यक्ति का तिरिस्कार नहीं किया, बल्कि सभी को वचन और कर्म से सांत्वना दी; मैं अक्सर जेल में बंद लोगों से मिलता था, और कई बंदियों को छुड़ाकर आजाद कराया। जैसे मैंने अपने होठों पर पहरा लगाया कि कोई भी बुरा या कपटी वचन न बोले, वैसे ही मैंने अपनी आँखों के लिए भी एक वाचा बनाई – कि किसी और की सुंदरता को न देखूँ और न ही उसके लिए वासना रखूँ। ईश्वर ने मेरी रक्षा की है, और मैंने अपनी माता के सिवाय किसी और पत्नी को नहीं जाना; फिर भी, उसके साथ मेरा वैवाहिक संबंध केवल तब तक रहा जब तक आप पैदा नहीं हो गए, और उसके बाद हमने शरीर में एक-दूसरे के लिए अजनबी बने रहने पर सहमति व्यक्त की और अब तक प्रभु के लिए अपनी देह की पवित्रता को बनाए रखा है। तब, हे मेरे बच्चों, अपने माता-पिता के उदाहरण का अनुसरण करो; हमारे विश्वास, धैर्य और नम्रता का अनुकरण करो, और इस प्रकार जियो कि परमेश्वर को प्रसन्न करो; तब परमेश्वर तुम्हें दीर्घायु देगा। गरीबों को दान दें, विधवाओं और अनाथों की रक्षा करें, बीमारों और कैदियों से मिलें, अन्याय से पीड़ित और गलत तरीके से दोषी ठहराए गए लोगों को विपत्ति से बचाएँ, और सभी के साथ शांति बनाए रखें। अपने मित्रों के प्रति वफादार रहो; अपने दुश्मनों को अच्छा करो, और उन्हें बुराई का बदला बुराई से न चुकाओ; सभी के प्रति दयालु, सौम्य, मिलनसार और विनम्र रहो। पवित्रता में आत्मा और शरीर की शुद्धता बनाए रखो; और यदि ईश्वर तुम्हें विवाह का आशीर्वाद देते हैं, तो तुम्हारा वैवाहिक जीवन पवित्र रहे। ईश्वर के गिरिजाघरों और मठों को दान दें; पुरोहितों और संतों का सम्मान करें, क्योंकि उनके माध्यम से ईश्वर पूरी दुनिया पर दया करता है। सबसे बढ़कर, उन लोगों को न भूलें जो ईश्वर के लिए रेगिस्तानों, पहाड़ों, गुफाओं और धरती की घाटियों में भटकते हैं, बल्कि उन्हें जीवन के लिए आवश्यक चीजें प्रदान करें। गरीबों को पर्याप्त भोजन कराओ, और तुम गरीब नहीं होगे। तुम जानते हो कि मेरे घर में कभी कमी नहीं हुई, भले ही गरीबों को बार-बार भोजन दिया गया हो। अक्सर प्रार्थना करो और संतों की शिक्षाओं पर ध्यान दो। अपनी माता का उचित सम्मान करो और प्रभु के भय से उनकी आज्ञा का पालन करो, हमेशा उनकी इच्छा को पूरा करो और उनकी

[1468] बेरिटस – अब बेरूत – भूमध्य सागर के तट पर एक प्राचीन फिनिशियाई शहर था; 5वीं शताब्दी में यह फल-फूल रहा था और अपनी प्रतिष्ठित वाक्पटुता, कविता और कानून की पाठशाला के लिए प्रसिद्ध था; आज यह एशियाई-तुर्की सीरिया का मुख्य प्रशासनिक केंद्र और सीरियाई तट पर एक प्रमुख व्यापारिक केंद्र है।

आज्ञाओं से कभी विचलित न होओ। अपने सेवकों पर दया करो, उन्हें अपने परिवार के सदस्य और अपने बच्चों के रूप में प्रेम करो; वृद्धों को मुक्त करो और उन्हें भोजन तथा जीवन के अंत तक उनकी सभी आवश्यकताओं की पूर्ति करो। संक्षेप में, मैं आपसे दोहराता हूँ: जैसा आपने मुझसे करते देखा है, वैसा ही करें, और आपको भी संतों का सम्मान और महिमा प्राप्त होगी। यह भी हमेशा याद रखें कि यह संसार जल्द ही बीत जाएगा और इसकी महिमा फीकी पड़ जाएगी। मेरे बच्चों, प्रभु की आज्ञाओं और मेरी शिक्षाओं का पालन करो, और शान्ति का परमेश्वर आप सब के साथ रहे!

ये वचन सुनकर, यूहन्ना और आर्काडियस रो पड़े और उन्होंने कहा:

'हमें छोड़कर न जाएँ, पिताजी, बल्कि ईश्वर से प्रार्थना करें कि वे आपको हमारे साथ रहने के लिए थोड़ा और समय दे दें। हमें विश्वास है कि यदि आप चाहें, तो आप ईश्वर से प्रार्थना कर सकेंगे: ईश्वर आपकी सुनेंगे। हमारे जैसे जवानों के लिए, आपका यहाँ होना अत्यंत आवश्यक है, ताकि आप हमें अच्छे कर्मों की ओर सर्वोत्तम तरीके से मार्गदर्शन कर सकें और हमारे जीवन को वैसे ही व्यवस्थित कर सकें जैसे उन्हें होना चाहिए।'

पिता ने गहरी आह भरते हुए और आँखों में आँसू लिए हुए कहा:

'जब से ईश्वर ने मुझे इस बीमारी से ग्रस्त किया और मैं बिस्तर पर पड़ा हूँ, मैंने बहुत प्रार्थना की है और ईश्वर से प्रार्थना करना जारी रखा है कि, आपकी जवानी के खातिर, वह मुझे पृथ्वी पर थोड़ा और जीने का समय दे, जब तक कि मैं आपको हर तरह से परिपूर्ण न देख लूँ।'

अगले ही रात, संत ज़ेनोफ़ोन को सपने में एक दिव्य-दर्शन हुआ कि ईश्वर उन्हें इस जीवन में थोड़ी और देर तक रहने का आदेश दे रहे थे। उन्होंने अपनी पत्नी और बच्चों को यह बात बताई, और वे सभी प्रसन्न हुए और ईश्वर की स्तुति करने लगे। वह बीमार व्यक्ति धीरे-धीरे अपनी बीमारी से ठीक होने लगा। उन्होंने अपने बेटों से कहा:

'मेरे बच्चों, जाओ और अपनी पढ़ाई पूरी करो, और पढ़ाई खत्म होते ही तुरंत वापस आ जाना: मैं तुम्हारी वैध शादियों का प्रबंध करूँगा।'

फिर उन्होंने उन्हें एक जहाज पर बिठाया और उन्हें आवश्यक सभी चीजें प्रदान कर, उन्हें बेरिति वापस भेज दिया।

जब वे समुद्र मार्ग से रवाना हुए, तो शुरुआत में यात्रा अनुकूल थी, क्योंकि उन्हें अनुकूल हवा मिली। लेकिन फिर अचानक विपरीत हवा चलने लगी, और समुद्र में एक अप्रत्याशित तूफान और ऊँडी लहरें उठने लगीं। नाविकों ने जल्द ही पतवार छोड़ दी, और तूफान से जहाज एक अज्ञात गंतव्य की ओर बह गया, जो लहरों में और गहरा डूबता चला गया। नाव में सवार सभी ने अपनी जान बचने की उम्मीद छोड़ दी और, इस विपत्ति और मृत्यु के भय से घबराकर, जोर-जोर से रोने लगे। दोनों भाई, जॉन और आर्केडियस, भी ईश्वर से प्रार्थना करते हुए रोए।

वे प्रार्थना करने लगे, 'हे सर्वशक्तिमान प्रभु और सभी प्राणियों के पालनहार! अपने प्राणियों को तिरिस्कृत न करें; हमारे माता-पिता के पुण्य कार्यों को याद करें और उनके लिए, हमें न छोड़ें: हमें समय से पहले, हमारे यौवन के शिखर पर मरने न दें। तुफानी पानी हमें बख्श दे और समुद्र की गहराई हमें निगल न ले। अपनी दया और उदारता को याद करो; अपनी पवित्र महिमा की ऊँचाइयों से नीचे देखो और हमारी पीड़ा को देखो। हमारी कराह और हमारी पुकार सुनो! एक पश्चात्तापी हृदय और एक नम्र आत्मा के साथ हम आपसे प्रार्थना करते हैं: अपनी सर्वशक्तिमान दाहिनी भुजा हमारी ओर बढ़ाएँ और हमें घातक विनाश से बचाएँ; अपने नाम के लिए हमें मृत्यु के हवाले न करें, बल्कि हमारे साथ अपनी दया और अपने अनुग्रह की प्रचुरता के अनुसार व्यवहार करें। अपनी महिमा के लिए हमें डूबने से बचाओ, क्योंकि मृतक आपकी स्तुति नहीं करेंगे, न ही वे जो कब्र में उतर जाते हैं (देखें भजन संहिता 113:25), बल्कि हम, जीवित, आपके भव्य नाम की महिमा करेंगे।'

नाविकों ने देखा कि भीषण तूफान थम नहीं रहा था, बल्कि और भी भयंकर होता जा रहा था, जिससे अब जहाज का डूबने से बचना असंभव हो गया था, – जैसे कि वे संकटग्रस्त जहाज की मदद करना चाहते हों – एक छोटे जहाज में चढ़ गए, जो विशेष रूप से बनाया गया था, ऊपर से ढका हुआ था और डूबने से सुरक्षित था, और फिर जहाज से दूर चले गए, और लहरों के सहारे बहते चले गए। उन्हें उम्मीद थी कि लहरें उन्हें कहीं किनारे पर ले आएँगी। युवा पुरुष, जॉन और आर्केडियस, अपने दासों के साथ जहाज पर ही रहे, और उन्होंने नाविकों की भगदड़ और जहाज के निश्चित विनाश, दोनों को देखा, क्योंकि जहाज पहले ही टूट-फूट रहा था और पानी से भरकर लहरों के नीचे डूब रहा था। अपना जीवन बचाने की सारी उम्मीद खोकर, उन्होंने तैरना आसान बनाने के लिए अपने कपड़े उतार दिए, ताकि वे तुरंत डूबकर गहराई में न मर जाएँ।

जैसे ही वे अपने अंतमि वदिाई और मृत्यु की प्रतीक्षा कर रहे थे, उन्होंने अपने माता-पिता को, जो घर पर बहुत दूर थे, रोते हुए और कोमल आवाज़ों में पुकारा, यह कल्पना करते हुए कि वे उनके साथ वहाँ हैं।

उन्होंने कहा, 'हम आपको, प्रयि पिता, सुस्वास्थ्य की कामना करते हैं! आप भी स्वस्थ रहें, प्रयि माता! आप हमें फरि कभी नहीं देखेंगे, जैसे हम आपको कभी नहीं देखेंगे; हम अब आपके साथ घर के सांसारकि सुखों का आनंद नहीं लेंगे।'

तब वे एक-दूसरे से बात करने लगे:

'हाय हम बेचारों! प्रयि भाइयो! हाय, मेरी आँखों के प्रकाश! ओह, यह बछिोड़ा कतिना दर्दनाक है! अब कहाँ हैं हमारे माता-पिता की प्रार्थनाएँ? कहाँ हैं गरीबों के प्रति उनके दान-पुण्य के कार्य? कहाँ हैं वे दान जो उन्होंने संतों को दिए थे और जो सम्मान उन्होंने उन्हें दखिाया था?' नश्चिय ही हमारे लिए उनकी एक भी प्रार्थना ईश्वर तक नहीं पहुँची, या, यदि पहुँची भी, तो वह हमारी पापों की भीड़ के भार से कमज़ोर पड़ गई, जनिके कारण हम अब जीवति रहने के योग्य भी नहीं रहे? हम पर वनिाश हो, जो हाल ही में अपने पिता की आने वाली मृत्यु पर रोए थे, और जो अब अपने माता-पिता के अवरिल रोने और अनंत शोक का कारण बनेंगे! हे पिता! आपने हमें पालने-पोसने और हमारा जीवन समृद्ध बनाने में इतनी मेहनत की, पर आप हमें हमारी मृत्यु के बाद भी नहीं देख पाएँगे। हे माता, जन्हिोंने अपने बेटों के ववािह की आशा की और उनके लिए समय से पहले ही शानदार कक्ष तैयार कर रखे थे! आप अपने बच्चों की ताबूत भी नहीं देख पाएँगे। सचमुच, अपने बच्चों को मरते देखना और उन्हें दफ़नाना माता-पिता के लिए एक भारी बोझ होता है – लेकनि आपके लिए, हमारे प्रयि माता-पिता, अपने बच्चों के खोने का दुख कतिना और भी भारी होगा, जब आपने न तो उनकी मृत्यु देखी है और न ही आप उनके अप्रत्याशति और दुखद नधिन की खबर ही पा सकते हैं! आपको उम्मीद थी कि हम वृद्धावस्था में आपको दफ़नाएँगे, फरि भी अब हमें भी आपके हाथों से दफ़नाए जाने का सम्मान नहीं मलिा।

फरि वे गले मलि और एक-दूसरे को वदिा कहकर बोले:

'वदिा, भाई, और मुझे माफ करना!'

तब, उन्होंने एक बार फरि ईश्वर से पुकारा:

'हे सर्व के राजा और प्रभु! आपने हमें कैसी मृत्यु भोगने दी है! यदि आपके अज्ञेय वधिानों से, हमारे लिए इससे बच पाना असंभव है, तो कम से कम मरते समय हमें अलग न करें। एक ही लहर हमें ढक ले, और कसिी समुद्री दानव का पेट ही हमारा ताबूत बने!'

वे अपने सेवकों की ओर भी मुड़े:

'अपने आप को बचाओ, प्रयि भाइयो और मत्रिो, और हमें क्षमा करो।'

जब जहाज अंततः टूट गया, तो उनमें से प्रत्येक ने जो पहला तख्ता मलिा, उससे चपिक लयिा, और इस प्रकार वे लहरों द्वारा एक-दूसरे से अलग-अलग दशिाओं में बहा लिए गए। लेकनि, ईश्वर की कृपा से, सभी डूबने और मृत्यु से बच गए, और केवल अलग-अलग दशिाओं में बह गए: गुलामों को तर की लहरों ने तट पर उतारा[1469] , जॉन को माल्मेफेटन नामक स्थान पर उतारा गया[1470] , और आर्काडयिस को टेट्रापाइर्जयिा में[1471] । उनमें से प्रत्येक, अपने भाई की मृत्यु से मुक्ति के बारे में कुछ भी न जानते हुए, अपनी जान बचने की खुशी से अधकि अपने भाई की मृत्यु पर शोक मना रहे थे।

कनिारे पर पहुँचने के बाद, जॉन ने अपने मन में इस प्रकार वचिार कयिा: 'अब मैं कहाँ जाऊँ? मुझे लोगों के सामने नग्न होकर दखिने में शर्म आती है। मेरे लिए तो कसिी मठ में चले जाना ही बेहतर है, जहाँ धर्मनष्ठि भक्षिु रहते हैं, और वहाँ मैं इस संसार के ऐश्वर्य में नहीं, बल्कि गिरीबी और वनिम्रता में उस ईश्वर की सेवा करूँगा, जसिने मुझे मृत्यु से बचाया। मुझे लगता है कि जब हम जहाज़ पर उनसे प्रार्थना कर रहे थे, तब ईश्वर ने हमारी नहीं सुनी, क्योंकि हमारे माता-पिता हमें शादी करके संपत्ति और बड़ी-बड़ी दौलत छोड़कर जाना चाहते थे। हम समुद्र में मरने से पहले ही इस दुनिया की व्यर्थता में ही मर जाते। सर्व-द्रष्टा ईश्वर ने, हमारे लिए एक बेहतर जीवन की व्यवस्था करते हुए, हमें इस वपित्ति में पड़ने दयिा, और जैसा उन्हें उचति लगा, वैसा ही हुआ। वह, जो भला है, वह सब कुछ जानता है जो हमारे लाभ के लिए है, जबकि हम यह नहीं जानते कि हमारे साथ क्या होने वाला है। वह सभी चीजों को जानता है और अपनी इच्छा के अनुसार कार्य करता है, और हर आत्मा के लिए मोक्ष की तैयारी करता है।'

[1469] टायर – फनिसियिा की प्राचीन राजधानी – भूमध्य सागर के पूर्वी तट पर, फलिस्तीन के उत्तर में स्थति थी।

[1470] मालमेफ़ेटन – मेसोपोटामयिा में एक इलाका।

[1471] टेट्रापाइर्जयिा – मेसोपोटामयिा में एक शहर, यूफ़्रेटसि नदी के पास।

तब, उसने ईश्वर की ओर हाथ उठाकर इस प्रकार प्रार्थना की: 'हे मेरे प्रभु, हे मेरे प्रभु, जिन्होंने मुझे समुद्र की लहरों और निश्चित मृत्यु से बचाया!' अपने सेवक, मेरे भाई आर्केडियस को भी बचा। उसे एक कड़वी मृत्यु से बचा, जैसे तूने अपनी दया से मुझे बचाया; और यदि तूने उसे जीवित रखा है और किनारे पर लाया है, तो उसका मन खोल दे, ताकि वह चिंतन करे और मठवासी जीवन की इच्छा करे, और यह अनुग्रह कर कि वह तुझे प्रसन्न कर सके। उन सेवकों को भी बचाओ जो हमारे साथ थे, ताकि उनमें से कोई भी समुद्र में नष्ट न हो, बल्कि उनके उद्धार के द्वारा आपका परम पवित्र नाम महिमामय हो!'

जैसे ही वह तट पर चल रहा था, वह प्रार्थना करता रहा: 'हे प्रभु यीशु मसीह, परमेश्वर के एकलौते पुत्र! अपने दास की प्रार्थना सुनें और मेरे कदमों को अपने आज्ञाओं के पालन की ओर निर्देशित करें; मुझे अपनी पवित्र इच्छा के अनुसार मार्गदर्शन दें, क्योंकि हे प्रभु, आप जानते हैं कि इस घड़ी में मुझे आप के सिवाय कोई अन्य सहायक नहीं है।"

काफी दूरी तय करने के बाद, उसे एक मठ मिला और उसने द्वार पर दस्तक दी। द्वारपाल ने उसे खोला और देखा कि वह नग्न था। उसने अपना बाहरी वस्त्र उतारकर उसे पहनने के लिए दे दिया, और उसे अपनी कोठरी में ले जाकर रोटी और अंगूर का रस दिया। जब उन्होंने अपना भोजन समाप्त कर लिया, तो द्वारपाल, जो एक भिक्षु था, ने पूछा:

'तुम कहाँ से हो, भाई?'

उसने उत्तर दिया:

'मैं एक यात्री हूँ, महाराज, और एक गरीब आदमी जो समुद्र में मौत से बच निकला है। जब जहाज टूटकर डूब गया, तो मैं कुछ तख्तों से चिपक गया और लहरों के सहारे बहता चला गया। ईश्वर ने, आपकी प्रार्थनाओं के कारण, मुझे जीवित रखा, और मुझे आपके देश के किनारे पर लाकर उतार दिया।'

यह सुनकर, द्वारपाल, जो एक भिक्षु था, गहराई से प्रभावित हुआ और उस ईश्वर की स्तुति करने लगा, जो उन लोगों को बचाता है जो उस पर अपनी आशा रखते हैं। फिर उसने जॉन से पूछा:

'भाई, आप कहाँ जाना चाहते हैं?'

जॉन ने उत्तर दिया:

'जहाँ भी ईश्वर मुझे ले जाएँ। मैं एक भिक्षु बनना चाहूँगा, यदि दयालु प्रभु, मेरे पापों को अनदेखा करते हुए, मुझे अपना धन्य जुआ उठाने की अनुमति दें।'

भिक्षु ने उससे कहा:

'सचमुच, मेरे बच्चे, तुम एक अच्छा काम चाहते हो, और अगर तुम पूरे दिल से ईश्वर की सेवा करोगे तो तुम धन्य होओगे।'

तब जॉन ने उससे निम्नलिखित अनुरोध किया:

'मैं आपसे विनती करता हूँ, पिताजी, मुझे बताइए: क्या मैं आपके साथ यहीं रह सकता हूँ?'

भिक्षु ने उत्तर दिया:

'थोड़ी देर रुको; मैं हमारे मठाधीश से तुम्हारे बारे में बात करूँगा। शायद उन्हें तुम्हारे बारे में ईश्वर से कोई प्रकटवाणी मिले? फिर, जो कुछ भी वे तुमसे करने के लिए कहें, उसे करना, और तुम उद्धार पाओगे।'

दरबान मठाधीश के पास गया और उसे उस युवक के बारे में सब कुछ विस्तार से बताया। मठाधीश ने उसे अपने सामने लाने का आदेश दिया और उसे देखकर, उसने उसके भाग्य में ईश्वर की पुकार को पहचान लिया। उसका सदाचारी जीवन देखकर, उन्होंने कहा:

'धन्य है तुम्हारे माता-पिता का ईश्वर, जिसने तुम्हें समुद्र में डूबने से बचाया और यहाँ लाया!'

तब, उसे उद्धारकारी मठवासी जीवन पर विस्तृत निर्देश देने के बाद, उन्होंने उसे क्रॉस के चिह्न से आशीर्वाद दिया और मठ में रहने का आदेश दिया। कुछ ही समय बाद, उन्होंने जॉन का एंजल्स के मठवासी आदेश में मुंडन संस्कार किया। इस प्रकार, धन्य जॉन ने प्रार्थना और उपवास तथा सभी मठवासी श्रमों में खुद को समर्पित कर दिया, और अपने कर्तव्यों का पालन किया। लेकिन वह अपने भाई आर्काडियस के लिए लगातार दुखी था, यह सोचकर कि वह समुद्र की लहरों में डूब गया था।

आर्केडियस भी, ईश्वर की इच्छा से, बच गया था और, टेट्रापाइर्जिया में समुद्र से किनारे पर आने के बाद, वह प्रणाम करके ईश्वर से इस प्रकार प्रार्थना करने लगा: 'हे प्रभु, अब्राहम के परमेश्वर, इसहाक के परमेश्वर, याकूब के परमेश्वर, मेरे पिता के परमेश्वर! मैं तुझे इस उथल-पुथल और तूफ़ान से बचाने, मुझे मृत्यु से जीवन में लाने—एक ऐसा

जीवन जिसकी मुझे अब कोई आशा नहीं थी—और मेरे पैरों को सूखी भूमि पर स्थापित करने के लिए धन्यवाद देता हूँ। पर जैसे तूने, अपनी महान दया में, मुझे डूबने से बचाया है, वैसे ही अपने सेवक, मेरे भाई जॉन को भी बचा। मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ, हे मेरे प्रभु, हे प्रभु—उसे अपनी दया से बचा लीजिए, कहीं लहरें और तूफ़ान उसे डुबा न दें, और कहीं गहरी खाई उसे निगल न ले। हे प्रभु, मेरी सुनिए, क्योंकि आपकी दया महान है, और यह अनुग्रह कीजिए कि मैं अपने भाई को देख सकूँ। हमारे पिता के कर्मों को याद करो, और योहन को समुद्र की गहराई में न डालो। इस जवान को समय से पहले और अकस्मात मृत्यु के हवाले न करो। पहले मुझे उसे देखने दो, और फिर मुझे मरने दो।'

जब वह इस प्रकार प्रार्थना कर रहा था, तो वह जोर-जोर से रोया और रो-रोकर कमजोर हो गया; फिर, उठकर वह पास के एक गाँव में गया, जहाँ मिले एक साथी ईसाई ने उसे कुछ फटे-पुराने कपड़े दिए। उसने वे पहन लिए और थोड़ी सी रोटी माँगकर अपने थके हुए शरीर को बल दिया। इसके बाद, वह वहाँ के चर्च में गया और अपने भाई के लिए एक बार फिर आँसुओं के साथ प्रार्थना करने के बाद, चर्च के पास खड़े एक स्तंभ से सहारा लेकर सो गया। तुरंत, एक सपने में, उसने अपने भाई जॉन को देखा, जिसने उससे कहा:

'भाई आर्काडियस! तुम मेरे लिए इतनी कड़वी रोना क्यों रो रहे हो और अपना दिल क्यों तोड़ रहे हो? मसीह की कृपा से, मैं अभी भी जीवित हूँ; इसलिए, मेरे लिए शोक मत करो।'

जब अर्काडियस जागा, तो वह इस बात से आश्वस्त था कि यह सपना सच था; वह परम आनंद से भर गया और उसने ईश्वर का धन्यवाद किया। उसी समय, उसने मन ही मन सोचा: उसे क्या करना चाहिए?

'क्या मैं जाऊँ,' उसने सोचा, 'अपने माता-पिता के पास? वे, मेरे साथ मेरा भाई न देखकर, मेरी वापसी पर दुखी होंगे। अगर मैं स्कूल वापस जाऊँ और दर्शनशास्त्र की पढ़ाई पूरी करके अपने माता-पिता के पास लौटूँ, तो भी मैं उन्हें खुशी नहीं दे पाऊँगा। केवल मुझे देखकर, वे जोर-जोर से रोने लगेंगे। मुझे नहीं पता कि क्या करूँ। मुझे याद है कि मेरे पिता हमेशा संन्यासी जीवन की प्रशंसा करते थे, जो मौन से जुड़ा होता है और मनुष्य को ईश्वर के करीब लाता है। तो, मैं एक मठ में जाऊँगा और एक संन्यासी बन जाऊँगा।'

अपने मन में इस प्रकार विचार करने के बाद, अर्काडी ने एक प्रार्थना की और यरूशलेम के लिए निकल पड़ा। वहाँ उन पवित्र स्थानों पर श्रद्धांजलि अर्पित करने के बाद जहाँ प्रभु ने संसार को उद्धार दिया था, वह शहर छोड़कर निकल पड़ा और रास्ते में मिलने वाले किसी भी मठ में जाने का इरादा किया। जैसे ही वह अपने रास्ते पर आगे बढ़ा, उसे एक सम्माननीय संन्यासी मिला, जिसके बाल उम्र के कारण सफेद हो गए थे, जो पवित्र जीवन और अंतर्दृष्टि वाला व्यक्ति था। उसके पास पहुँचकर, वह युवक उसके पैरों पर गिर पड़ा, उन्हें चूमा और कहा:

'हे पवित्र पिता, मेरे लिए प्रभु से प्रार्थना कीजिए, क्योंकि मैं बड़ी निराशा और पीड़ा में हूँ।'

वरिष्ठ ने उससे कहा:

'दुखी मत हो, मेरे बच्चे! तुम्हारा भाई, जिसके लिए तुम शोक कर रहे हो, उतना ही जीवित है जितना तुम हो। जहाज पर तुम्हारे साथ जो अन्य सभी थे, उन्हें ईश्वर ने बचाया, वे डूबने से बच गए और मठों में जाकर संन्यासी जीवन जी रहे हैं। तुम्हारे भाई जॉन ने तो पहले ही अपना पहला संन्यासी दीक्षा-संस्कार ग्रहण कर लिया है। वह समय आएगा जब तुम अपने भाई को अपनी आँखों से देखोगे, क्योंकि तुम्हारी प्रार्थना सुनी गई है।

महान वृद्ध के ये वचन सुनकर, आर्चेडियस आश्चर्य से स्तब्ध खड़ा रहा, संत की अंतर्दृष्टि पर हैरान; फिर, एक बार फिर उनके चरणों में गिरकर, वह बोलने लगा:

'चूंकि ईश्वर ने मुझ पर जो बीता है, उसमें से कुछ भी आपसे नहीं छिपाया है, अतः कृपया मुझे भी न ठुकराएँ। आप जो भी उपाय जानते हों, उससे मेरी दीन आत्मा को बचाएँ और मुझे संन्यास जीवन की राह दिखाएँ।'

महात्मा ने उससे कहा:

'ईश्वर धन्य हो! मेरे पीछे चलो, मेरे बच्चे।'

महात्मा उसे संत चैरटिन के मठ ले गए, जिसे स्यरियाक में सुकियिस्का[1472] कहा जाता था। वहाँ उन्होंने उस युवक का भिक्षु के रूप में उपनयन संस्कार किया और उसे एक कोठरी दी, जिसमें पहले महान संतों में से एक पचास साल तक भिक्षु के रूप में रहे थे। इस विधि की वृद्ध ने स्वयं आर्काडियस के साथ एक वर्ष बिताया, उसे मठवासी जीवन के नियमों में

[1472] संत चैरटिन का स्मरणोत्सव 28 सितंबर को मनाया जाता है। सूकी मठ, जिसकी उन्होंने स्थापना की थी, बेथलहम के दक्षिण में, फिलिस्तीन में स्थित था।

शिक्षित किया और अदृश्य शत्रुओं से कैसे लड़ना और उनका विरोध करना है, यह सिखाया। वर्ष के अंत में, वह वृद्ध व्यक्ति अरकाडियस को सेल में अकेला छोड़कर और तीन साल बाद उससे फिर मिलने का वादा करके रेगिस्तान में चला गया। अरकाडियस ने, वृद्ध की आज्ञाएँ पाकर, उत्साहपूर्वक उनका पालन किया और दिन-रात ईश्वर की सेवा की।

नाव दुर्घटना के दो साल बाद, ज़ेनोफ़ोन, इस बात से अनजान कि उसके बेटों के साथ समुद्र में क्या हुआ था, ने अपने एक दास को बेरूत भेजा, उसे जॉन और आर्काडियस को खोजने और उनके बारे में सब कुछ विस्तार से पता लगाने का निर्देश दिया: कि वे अच्छे स्वास्थ्य में थे और वे अपनी प्रशिक्षण कब पूरा करेंगे। उनके पिता और माता यह देखकर बहुत हैरान थे कि इतने लंबे समय से उनके बच्चों ने न तो कभी अपनी कोई खबर दी थी और न ही अपने माता-पिता को एक भी पत्र भेजा था। दास, बेरूत पहुँचने और यह जानने के बाद कि उसके मालिक ज़ेनोफ़ोन के बच्चे उस शहर में नहीं आए थे, सोचने लगा: क्या उन्होंने अपना मन बदल लिया था और इसके बजाय एथेंस चले गए थे? और इस प्रकार वह उन्हें खोजने के लिए एथेंस गया। जब उन्हें वहाँ भी नहीं मिला, और उनके बारे में कहीं से भी कोई जानकारी नहीं मिल सकी, तो वह निराश होकर बिज़ान्टियम लौट आया। रास्ते में एक सराय में आराम करते समय, एक घुमक्कड़ भिक्षु भी वहाँ आराम करने के लिए रुका। उनकी बातचीत के दौरान, भिक्षु ने बताया कि वह पवित्र स्थलों पर श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए यरूशलेम जा रहा था। ज़ेनोफ़ोन के दास ने, भिक्षु को ध्यान से देखते हुए, धीरे-धीरे उसे अपने पूर्व मित्र के रूप में पहचान लिया, जो उसके मालिक ने बच्चों के साथ बेरूत भेजे गए दासों में से एक था। दास ने भिक्षु से पूछा:

'क्या यह आपका नाम नहीं है?' – और, उसका नाम लेने के बाद, कहा:

'तुम हमारे स्वामी ज़ेनोफ़ोन के दास हो, जो जॉन और आर्काडियस के साथ बेरटिस के लिए रवाना हुए थे।'

भिक्षु ने उत्तर दिया:

'हाँ, मैं वही हूँ, और तुम मेरे साथी हो, क्योंकि हम एक ही स्वामी के दास हैं।'

तब नौकर ने पूछा:

'तुम्हें क्या हो गया है कि तुमने संन्यासी का वेश धारण कर लिया है? और हमारे स्वामी जॉन और आर्काडियस कहाँ हैं? मुझे बताओ, मैं विनती करता हूँ – क्योंकि मैंने उन्हें खोजने के लिए बहुत प्रयास किया है, और वे मुझे कहीं नहीं मिले।'

भिक्षु ने गहरी आह भरकर, आँसुओं से भरी आँखों से, उसे विस्तार से कहानी सुनानी शुरू की।

'तुम्हें पता होना चाहिए, मेरे मित्र, कि हमारे स्वामी समुद्र में मर गए, और उनके साथ जो भी थे वे भी मर गए। जहाँ तक मुझे पता है, मैं ही मौत से बच पाया हूँ। मैंने सोचा कि घर लौटकर हमारे स्वामी और स्वामिनी और पूरे घर को यह भयानक खबर सुनाने की बजाय एक भिक्षु का भेष धारण करना बेहतर होगा। इस प्रकार, मैं एक भिक्षु बन गया और अब पूजा करने के लिए यरूशलेम जा रहा हूँ।

यह सुनकर, नौकर ज़ोर से चिल्लाने और फूट-फूट कर रोने लगा। वह दुख से छाती पीटते हुए विलाप करने लगा और कहने लगा:

'हाय मेरे स्वामियो! तुम पर क्या बीती है? मैं तुम्हारे बारे में क्या सुन रहा हूँ! तुमने कितना कष्ट सहे हैं! तुम्हारा अंत कितना दुखद हुआ है! आपकी भयानक मृत्यु का समाचार आपके माता-पिता को कौन देगा? किसकी आँखें एक पिता के आँसू और एक माँ के दुख को देख पाएँगी! कोई उनकी विलाप-पुकार, सिसकियाँ और कराहट को बिना काँपे कैसे सुन सकता है! हाय मेरे अच्छे स्वामियों! हमारी आशा तुम खो गए! हमें उम्मीद थी कि अपने माता-पिता के बाद, तुम हमें, अपने सेवकों को, खुशी दोगे; ज़रूरतमंदों पर अपनी उदारता की वर्षा करोगे; अजनबियों को सांत्वना दोगे; गरीबों को लाभ पहुँचाओगे; ईश्वर के चर्चों को सुशोभित करोगे; और मठों की ज़रूरतों को पूरा करोगे – लेकिन अब, हाय हमारी किस्मत! हमारी सारी उम्मीदें चकनाचूर हो गई हैं। मुझे नहीं पता कि क्या करूँ। अगर मैं अपने स्वामी के पास घर लौटूँगा, तो मैं उसे ऐसी दुखद खबर बताने की हिम्मत नहीं करूँगा। सचमुच, मैं एक पिता और माता से कैसे कहूँ कि उनके बेटे समुद्र में मर गए हैं? यह सुनकर, क्या वे अपने हृदय के भारी दुख से मारे-मारे न गिर पड़ेंगे? इसलिए, मैं घर नहीं जाऊँगा, कहीं ऐसा न हो कि मैं जो भयानक समाचार लाऊँगा, उसके कारण मेरे मालिक समय से पहले ही मर जाएँ, और मैं उनके मृत्यु का कारण बन जाऊँ।

जब यह सेवक अपने स्वामी ज़ेनोफ़ोन्स के पास लौटने के लिए अनिच्छुक होकर इस प्रकार रो रहा था, तो वहाँ मौजूद यात्रियों और ग्रामीणों ने उसे रोने से रोकने के लिए कहा और उसे घर जाकर अपने मालिकों को सब कुछ बता देने की सलाह दी, कहीं वे उस पर शाप न लगा दें।

उन्होंने कहा, 'अगर तुम अपने मालकिों को उनकी बदकस्मिती के बारे में नहीं बताओगे, और तुम खुद अचानक गायब हो जाओगे, तो तुम्हारा कोई उद्धार नहीं होगा।'

उस दास ने उनकी सलाह मानी और कॉन्स्टेंटनिोपल लौट आया। अपने मालकि के घर में प्रवेश करते ही, वह सरि झुकाए, चेहरे पर उदासी लिए बैठ गया और उलझन में चुप रहा।

उनकी मालकनि मारयिा ने, यह सुनकर कि बिच्चों के पास भेजा गया उनका नौकर वापस आ गया है, तुरंत उसे अपने पास बुलाया और पूछना शुरू कयिा:

'हमारे बच्चे कैसे हैं?'

'कुछ नहीं, हम ठीक हैं,' दास ने उत्तर दयिा।

महलिा ने पूछना जारी रखा:

'तो उनके पत्र कहाँ हैं?'

'रास्ते में खो गए,' नौकर ने उत्तर दयिा।

तब उसका हृदय बेचैन हो गया, और वह दास की ओर मुड़ी:

'मैं तुझसे ईश्वर की कसम खाकर कहती हूँ, मुझे सच बता। मेरी आत्मा बहुत बेचैन है, और मेरी ताकत मुझसे छूट गई है।'

तब वह ज़ोर से चलि्लाया, फूट-फूट कर रोया, और सच बताने लगा।

'हाय मेरी मालकनि!' उसने कहा। 'आपकी दोनों रौशनयिाँ समुद्र में बुझ गई हैं: जहाज टूट गया, और सभी डूब गए।'

इस समाचार को सुनने वाली महलिा कतिनी साहसी थी, यह उम्मीद से परे था! ईश्वर में अपने वशि्वास में दृढ़, वह थकान और दुख से जमीन पर गरिकर नरिाशा में रोने के बजाय, एक पल के लिए आश्चर्य से रुकी, और फरि कहा:

'धन्य है वह ईश्वर, जसिने यह सब व्यवस्थति कयिा है! जैसा प्रभु को उचति लगा, वैसा ही उन्होंने कयिा है। प्रभु का नाम अब से अनंत काल तक धन्य हो!'

जसि दास ने उसे यह समाचार दयिा था, उससे उसने कहा:

'चुप रहो और इस बात का कसिी से ज़क्रि मत करना: यहोवा ने दयिा है, और यहोवा ने ले लयिा है; केवल वही जानता है कि हमारे लिए क्या भला है।'

जब लगभग तीन घंटे बीत गए और दनि समाप्त होने को था, ज़ेनोफ़ोन शाही कक्षों से घर लौटे। वे एक गंभीर जुलूस में लौटे, जसिके आगे और साथ में बहुत से लोग चल रहे थे। घर में प्रवेश करके और उसके साथ आए लोगों को वदिा कर, वह भोजन करने के लिए बैठ गया। वह दनि में केवल एक बार, और वह भी शाम को ही भोजन करता था। जब वह मेज़ पर लेट गया, तो उसकी पत्नी मैरी ने उससे कहा:

'क्या आप जानते हैं, मेरे स्वामी, कि हमारा नौकर बेरूत से लौट आया है?'

ज़ेनोफ़ोन ने उत्तर दयिा:

'ईश्वर की कृपा हो! तो फरि, लौटकर आया हुआ सेवक कहाँ है?'

उसकी पत्नी ने उससे कहा:

'वह बीमार है और आराम कर रहा है।'

तब ज़ेनोफ़ोन ने पूछा:

'क्या उसने हमें बच्चों के कोई पत्र लाए हैं?'

इस पर उसने जवाब दयिा:

'आज के लिए इसे रहने दें, सर! हम अभी भोजन करेंगे, और कल आप पत्र देखेंगे। दास को व्यक्तगित रूप से उनके बारे में हमें बहुत कुछ बताना है।'

लेकनि ज़ेनोफ़ोन ने ज़दि की:

'वे आज ही, अभी तुरंत पत्र ले आएं। मैं उन्हें पढ़कर पता लगा लूंगा कि हमारे बच्चे कुशल हैं या नहीं। जो कुछ भी उसे मुंह से कहना है, वह कल कह देगा।'

तब मारयिा, अपने दलि के दर्द को रोक न सकी, फूट-फूट कर रो पड़ी और ससिकयिों के कारण कुछ कह नहीं सकी। ज़ेनोफ़ोन, यह देखकर कि वह इतनी ज़ोर से रो रही थी, हैरान हो गया और पूछा:

'क्या बात है, मेरी मालकनि मारयिा? तुम इतनी ज़ोर से क्यों रो रही हो? क्या हमारे बच्चे बीमार हैं?'

वह मुश्कलि से कह सकी:

'वे बीमार होते तो बेहतर था, लेकनि वे समुद्र में मर गए, हमारे प्यारे बच्चे।'

ज़ेनोफ़ोन ज़ोर से कराह उठा और, आँखों में आँसू लिए, कहा:

'पति का, पुत्र का, और पवत्रि आत्मा का नाम युगों-युगों तक धन्य हो, आमीन! दुखी न होइए, मेरी मालकनि। मुझे वशि्वास है कि ईश्वर हमारे बच्चों को पूरी तरह से नष्ट नहीं होने देंगे, और मुझे उम्मीद है कि उनकी दयालु व्यवस्था मेरे सफेद बालों को दुख नहीं देगी, ठीक वैसे ही जैसे मैंने कभी उनकी भलाई का अपमान करने की हम्मित नहीं की। तो आइए हम इस पूरी रात उनकी महान दया के लिए प्रार्थना करें, और आशा करें कि ईश्वर हमें हमारे बच्चों की नयिति बताएँगे: कि वे जीवति हैं या नहीं।

तब वे तुरंत उठे, प्रार्थना कक्ष में चले गए और पूरी रात प्रार्थना में बतिाई, बहुतायत से आँसू बहाते और दृढ़ वशि्वास के साथ ईश्वर की ओर मुड़े। जब भोर होने लगी, तो वे अलग-अलग, खुरदरे रस्सी के कपड़ों पर वशि्राम करने लेट गए। और दोनों ने एक ही सपना देखा। उन्हें ऐसा लगा कि उन्होंने अपने दोनों बेटों को प्रभु मसीह के सामने महान महमिा में खड़े देखा: यूहन्ना के लिए एक सहिासन, एक राजदंड और कीमती मोतयिों और कीमती पत्थरों से सुसज्जति एक शाही मुकुट तैयार था; जबकि आर्काडयिस के सरि पर तारों का मुकुट था, दाहनिे हाथ में एक क्रॉस था और उसके आराम के लिए एक चमकदार बस्तिर तैयार था। जब वे अपनी नींद से जागे और एक-दूसरे को अपने-अपने दर्शन के बारे में बताया, तो उन्हें एहसास हुआ कि उनके बेटे जीवति थे और प्रभु की दया से सुरक्षति थे। वे बहुत प्रसन्न हुए, और ज़ेनोफ़ोन ने अपनी पत्नी से कहा:

'मैरी, मुझे लगता है कि हमारे बच्चे यरूशलेम में हैं। चलो वहाँ चलें और पवत्रि स्थानों में पूजा करें। शायद हमें वहाँ कसिी तरह अपने बच्चे मलि जाएँ।'

इस प्रकार एक-दूसरे से सलाह-मशवरिा करने के बाद, ज़ेनोफ़ोन और मैरी ने अपनी यात्रा की तैयारी की; उन्होंने अपने घर और संपत्ति से संबंधति सभी बातों के बारे में अपने प्रबंधकों को नर्दिेश दिए, बहुत सारा दान दयिा, और अपने साथ बहुत सारा सोना लयिा—जतिना दान देने और पवत्रि स्थानों पर चढ़ावा चढ़ाने के लिए आवश्यक था—और वे यरूशलेम के लिए रवाना हो गए। वहाँ पहुँचने पर, उन्होंने सभी पवत्रि स्थानों का दौरा कयिा, प्रार्थना की और दान दयिा। फरि उन्होंने यरूशलेम के आसपास के सभी मठों का दौरा करना शुरू कर दयिा, अपने बच्चों की तलाश में, लेकनि वे उन्हें कहीं नहीं मलि सके। ऐसा हुआ कि, रास्ते में एक जगह, उनकी मुलाकात अपने एक नौकर से हुई जो उनके बच्चों के साथ जहाज पर था और तब से एक भक्षिु बन गया था। उन्होंने उसे गले लगाया, चूमा और जमीन पर सरि झुकाया। भक्षिु ने भी, बदले में, उनके सामने जमीन पर सरि झुकाया और कहा:

'मैं आपसे वनिती करता हूँ, प्रभु के वास्ते, मेरे सामने मत झुको: यह आपके लिए, मेरे स्वामयिों, उचति नहीं है कि आप अपने सेवक, मेरे सामने इस तरह झुकें।'

ज़ेनोफ़ोन ने उससे कहा:

'हम पवत्रि संन्यासी जीवन शैली का सम्मान करते हैं, और इसलिए हम झुकते हैं। इससे दुखी न हों, बल्कि हमें बताएं, हम आपसे वनिती करते हैं—हमारे बेटे कहाँ हैं? हमें बताएं, भगवान के लिए, हमें बताएं!'

संन्यासी की आँखों में आँसू भर आए और उसने कहा:

'जब समुद्र में जहाज टूट गया, तो हम में से हर कसिी ने जो भी तख्ता मलि, उसे पकड़ लयिा और तूफान हमें बहाकर अलग-अलग ले गया। मुझे इससे ज्यादा कुछ नहीं पता। मुझे नहीं पता कि कोई जीवति बचा या नहीं। केवल मैं ही टायर के तट के पास कनिारे पर आ गया था।'

यह सुनकर, ज़ेनोफ़ोन और मारयिा ने भक्षिु को वदिा कयिा, और उदारतापूर्वक उसे दान-दक्षणिा दी, ताकि वह उनके और उनके बच्चों के लिए प्रार्थना कर सके। वे भी जॉर्डन की भूमि पर प्रार्थना करने और बचे हुए सोने का वतिरण करने के लिए रवाना हो गए। जैसे ही वे अपने नर्धिारति मार्ग पर आगे बढ़े, ईश्वर की कृपा से उनकी मुलाकात उस पवत्रि वृद्ध—जो दूर की बातें जानने वाले थे—से हुई, जन्होंने उनके बेटे आर्केडयिस को संन्यासी का वस्त्र पहनाया था। वे पवत्रि संत के पैरों पर गरि पड़े और उनसे अपने लिए ईश्वर से प्रार्थना करने का आग्रह कयिा। ईश्वर ने उनके बारे में सब कुछ उस पवत्रि वृद्ध को प्रकट कर दयिा था। प्रार्थना करने के बाद, उन्होंने उनसे कहा:

'ज़ेनोफ़ोन और मैरी को यरूशलेम कौन लाया?'

'कसिी ने नहीं,' उन्होंने उत्तर दयिा, 'सवािय आपके बच्चों के प्रति प्रेम के।

लेकिन दुखी न हों: आपके बच्चे जीवित हैं, और ईश्वर ने आपको एक सपने में स्वर्ग में उनके लिए तैयार की गई महिमा दिखाई है। तो जाइए, हे प्रभु के दाख की बारी के मजदूरों, जहाँ भी आप अब जा रहे हैं, और जब आप वहाँ अपनी प्रार्थनाएँ समाप्त कर लें, तो पवित्र नगर में लौटने पर आप अपने बच्चों को देखेंगे।

इस प्रकार कहने के बाद, वे अलग हो गए: ज़ेनोफ़ोन और मारिया यॉर्डन नदी की ओर चले गए, जबकि दूरदर्शी संत पवित्र नगर गए और पवित्र सेपल्चर चर्च में जाने के बाद, पवित्र गोलगोथा के पास जमीन पर बैठकर विश्राम करने लगे। जब पवित्र वृद्ध वहाँ बैठे थे, तब ज़ेनोफ़ोन के पुत्र, युवा भिक्षु जॉन, जो पूजा करने के लिए माल्मेफ़ेटन मठ से यरूशलेम आया था, ने पवित्र वृद्ध को देखा और उनके सामने ज़मीन पर सिर झुकाया। वृद्ध ने उसका गर्मजोशी से अभिवादन किया और उसे आशीर्वाद देने के बाद पूछा:

'हे प्रभु जॉन, आप अब तक कहाँ थे? देखिए, आपके पिता और आपकी माता आपको ढूंढ रहे हैं, फिर भी आप अपने भाई को खोजने यहाँ आए हैं।'

जॉन यह देखकर चकित रह गया कि इस महान संन्यासी को सब कुछ पता था। यह समझते हुए कि वे दिव्य अंतर्दृष्टि वाले व्यक्ति हैं, वह संत के पैरों पर गिर पड़ा और कहा:

'मैं आपसे विनती करता हूँ, पिताजी, प्रभु के वास्ते मुझे बताइए कि मेरा भाई कहाँ है। उसे देखने की लालसा से मेरी आत्मा पूरी तरह थक गई है। मैंने बहुत परिश्रम किया है, ईश्वर से प्रार्थना की है कि वह मुझे बताए कि मेरा भाई जीवित है या नहीं। लेकिन प्रभु ने अब तक मुझे यह बताना उचित नहीं समझा - सिवाय शायद अब, आपके माध्यम से, हे पवित्र पिता!'

बड़े भाई ने उससे कहा:

'मेरे पास बैठ जाओ; तुम जल्द ही अपने भाई को देखोगे।'

कुछ देर बैठने के बाद, एक और भिक्षु—युवा अर्काडी—एक दुबले-पतले शरीर और पतले चेहरे के साथ आया। अत्यधिक उपवास और संयम के कारण उसकी आँखें गहरी धँसी हुई थीं। पवित्र स्थानों के सामने झुकते हुए, उसने जल्द ही वहाँ बैठे वरिष्ठ को देख लिया और दौड़कर उनके पास आकर उनके पैरों पर गिर पड़ा, और कहा:

'पिताजी, आपने अपना खेत छोड़ दिया है और तीन साल से उसकी देखभाल नहीं की है; आपकी अनुपस्थिति में उसमें बहुत सारी काँटेदार झाड़ियाँ और खरपतवार उग आए हैं, और आपको उसे साफ करने के लिए कड़ी मेहनत करनी पड़ेगी।'

वरिष्ठ ने उससे कहा:

'जान लो, मेरे बच्चे, कि मैंने अपनी खेत की रोजाना देखभाल की है, और मुझे प्रभु पर भरोसा है कि वहाँ काँटे या खरपतवार नहीं उगे हैं, बल्कि पिका हुआ गेहूँ उगा है, जो राजाओं के राजा की मेज के योग्य है। मेरे पास बैठ जाओ।'

आर्केडियास बैठ गया। बूढ़ा कुछ देर चुप रहा और फिर जॉन की ओर मुड़ा:

'आप कहाँ से हैं, भाई जॉन?'

जॉन ने उत्तर दिया:

'मैं, मेरे पिता, एक गरीब और मुसाफिर हूँ। मैं प्रभु की दया और अपनी एक ही हृदय की इच्छा की पूर्ति के लिए आपकी पवित्र प्रार्थनाएँ माँगता हूँ।'

वरिष्ठ ने उससे कहा:

'हाँ, यह सच है। लेकिन मुझे बताइए, आप किस वंश से हैं, और आप किस शहर में पैदा हुए थे, और आपका जीवन कैसा रहा है – ताकि प्रभु का नाम महिमामय हो।'

जॉन ने सब कुछ क्रम से बताना शुरू किया – कि वह कॉन्स्टेंटिनोपल का रहने वाला था, एक प्रतिष्ठित व्यक्ति का बेटा था, और उसका एक भाई, आर्काडियस था, जिसके साथ उसे पढ़ने के लिए बेरिटस भेजा गया था – कि समुद्र में, एक भयंकर तूफान के दौरान, जहाज टूट गया और उसके अलावा सभी डूब गए।

यह सुनकर, अर्काडियस ने भिक्षु की ओर ध्यान से देखा और अंततः उसे अपने भाई के रूप में पहचान लिया। भाईचारे की भावना से अभिभूत होकर, वह भिक्षु की बात सुनना सहन नहीं कर सका और चिल्लाया:

'सचमुच, पिताजी, यह मेरे भाई जॉन हैं!'

बड़े भिक्षु ने उत्तर दिया:

'मुझे पता है, लेकिन मैं इसलिए चुप रहा ताकि आप खुद एक-दूसरे को पहचान सकें।'

वे तुरंत एक-दूसरे की गर्दन में बाहें डालने के लिए दौड़े, और खुशी और आँसुओं के साथ एक-दूसरे को गले लगाया और चूमा; और फिर, अपने पैरों पर खड़े होकर, उन्होंने ईश्वर की स्तुति की, जिन्होंने उन्हें जीवन में, पवित्र संन्यासी के मार्ग पर और ईश्वर को समर्पित इतने पुण्य जीवन में, फिर से मिलने की कृपा प्रदान की थी।

दो दिन बाद, ज़ेनोफ़ोन और मारिया यॉर्डन से आए। गोलगोथा में प्रार्थना करने और हमारे प्रभु के जीवन-दायक समाधि की पूजा करने के बाद, उन्होंने ईश्वर की महिमा के लिए उस पवित्र स्थान पर बहुत सारा सोना वितरित किया। वहाँ पवित्र, दूरदर्शी वृद्ध को देखकर, उन्होंने उन्हें पहचान लिया और उनके पैरों पर गिर पड़े, उनकी प्रार्थनाएँ माँगीं। प्रार्थना के बाद, उन्होंने वृद्ध से कहा:

'हे पिता, प्रभु के वास्ते अपना वचन पूरा कीजिए और हमें हमारे बच्चे दिखाइए।'

उनके दोनों पुत्र, जॉन और आर्केडियस, संत के पास खड़े थे, लेकिन उन्होंने उन्हें एक शब्द भी न बोलने और अपनी आँखें तक न उठाने, बल्कि यह पहचानने से बचने के लिए नीचे देखने का आदेश दिया। बच्चों ने अपने माता-पिता को पहचान लिया और मन ही मन प्रसन्न हुए, जबकि माता-पिता अपने बच्चों को पहचान नहीं सके, आंशिक रूप से इसलिए क्योंकि वे मठ की वेशभूषा में थे, और आंशिक रूप से इसलिए क्योंकि लंबे समय तक ब्रह्मचर्य के कारण उनके चेहरे की सुंदरता फीकी पड़ गई थी। तब पवित्र वृद्ध ने संत ज़ेनोफ़ोन और मैरी से कहा:

'अपने सराय पर जाओ और हमारे लिए भोजन तैयार करो। मैं अपने शिष्यों के साथ आऊँगा और तुमसे भोजन करने के बाद, मैं तुम्हें बताऊँगा कि तुम्हारे बच्चे कहाँ हैं।'

माता-पिता अति प्रसन्न हुए, क्योंकि पवित्र पिता ने उन्हें उनके बच्चे दिखाने का वादा किया था, और वे चल पड़े और जल्दी से एक भरपूर भोजन तैयार कर लिया। पवित्र वृद्ध ने अपने शिष्यों से कहा:

'चलो हम वहाँ चलते हैं जहाँ तुम्हारे माता-पिता ठहरे हैं, लेकिन तब तक कुछ भी न कहना जब तक मैं तुम्हें न कहूँ।'

दोनों भाइयों ने उत्तर दिया:

'जैसा आप आज्ञा दें, पिताजी, वैसा ही होगा।'

तब वरिष्ठ ने जारी रखा:

'आओ हम उनके साथ भोजन करें और बातचीत करें। इससे आपके मोक्ष में कोई बाधा नहीं आएगी। मेरा विश्वास करो, आप सदाचार के लिए चाहे कितनी भी कोशिश कर लें, आप अपने माता-पिता के पूर्णता के स्तर तक नहीं पहुँच पाएंगे।'

फिर वे उस सराय में गए जहाँ ज़ेनोफ़ोन ठहरे थे और उनके लिए परोसे गए भोजन पर बैठ गए। उन्होंने साथ में भोजन किया और धर्मोपयोगी विषयों पर बातचीत की। बाद में, धन्य ज़ेनोफ़ोन और मैरी बूढ़े की ओर मुड़े:

'हे पवित्र पिता, हमारे बच्चे कैसे हैं?'

संत ने उत्तर दिया:

'वे अपने उद्धार के लिए बहादुरी से परिश्रम कर रहे हैं।'

माता-पिता ने उत्तर दिया:

'ईश्वर, जो सभी लोगों के उद्धार का प्रबंध करता है, कृपा करे कि वे मसीह की दाख की बारी में सच्चे मजदूर हों!'

तब ज़ेनोफ़ोन ने फिर से वृद्ध की ओर मुड़कर कहा:

'ओह, कितने अद्भुत हैं, पिताजी, आपके ये शिष्य! काश हमारे अपने बच्चे भी ऐसे होते! हमारे दिल इन युवा भिक्षुओं से बहुत जुड़ गए हैं। जैसे ही हमने उन्हें देखा, हमारा दिल प्रसन्न हो गया, मानो हमने अपने ही बच्चों को देख लिया हो।'

तब वृद्ध ने आर्काडी से कहा:

'बताना, मेरे बच्चे, तुम कहाँ पैदा हुए, तुम्हारा पालन-पोषण कैसे हुआ, और तुम यहाँ कैसे आए?'

आर्काडियस ने अपनी कहानी इस प्रकार सुनानी शुरू की:

'पिताजी, मैं और मेरा यह भाई बाइज़ेन्टियम के रहने वाले हैं, साम्राज्यिक दरबार के एक प्रमुख व्यक्ति के पुत्र। हमारा पालन-पोषण धर्मपरायणता से हुआ। हमारे माता-पिता ने हमें हेलेनिक ज्ञान का अध्ययन करने के लिए बेरिटिस भेजा। जब हम नाव से यात्रा कर रहे थे, तो उग्र समुद्र और तूफान से हमारा जहाज टूट गया, और हम में से प्रत्येक, जहाज के टूटे हुए तख्ते से चिपककर, wherever लहरें हमें ले गईं, बहते चले गए। ईश्वर की कृपा से, हम बच गए और समुद्र के किनारे आ गए।

जब वह अभी भी बोल ही रहा था, हमारे माता-पिता ने पहचान लिया कि ये उनके बच्चे हैं, और तुरंत चिल्ला उठे:

'वह देखो, हमारे बच्चे! हमारी कोख का फल! हमारी आँखों की रोशनी!'

उन्होंने अपनी बाहें उनके गले में डाल दीं, उन्हें प्यार से चूमा और खुशी के मारे रो पड़े। बड़े संत भी आँसू बहाने लगे। फिर वे सभी खड़े हो गए, उन्होंने ईश्वर की महिमा की और धन्यवाद दिया, और ईश्वर की महान और अद्भुत व्यवस्था की प्रशंसा करते हुए आनंदित हुए।

इसके बाद, ज़ेनोफ़ोन और उसके साथी ने पवित्र साधु से उनका मुंडन करके मठवासी जीवन में शामिल करने का अनुरोध किया। दूरदर्शी पिता के हाथों ज़ेनोफ़ोन और मारिया का मुंडन किया गया, और उन्होंने स्वयं उन्हें मठवासी नियम सिखाए। साधु ने उन्हें एक साथ नहीं रहने, बल्कि अलग-अलग रहने का निर्देश दिया। कुछ ही समय बाद, वे सभी अपने-अपने रास्ते चले गए। मारिया एक मठ में चली गईं, जबकि जॉन और आर्केडियस, अपने माता-पिता को अलविदा कहकर, संत के साथ रेगिस्तान में चले गए। जहाँ तक ज़ेनोफ़ोन का सवाल है, उसने बिज़ान्टियम में खबर भेजकर अपने घर और अपनी सारी संपत्ति को बेचने का आदेश दिया; उसने सब कुछ ज़रूरतमंदों में बाँट दिया, अपने गुलामों को आज़ाद कर दिया, और रेगिस्तान में एक कोठरी पाकर, मौन में लीन हो गया।

उन सभी ने अंत तक ईश्वर की सेवा की और उन्हें ईश्वर से महान वरदान प्राप्त हुए: जॉन और आर्काडियस रेगिस्तान के निवासियों के बीच तारों की तरह चमके, और कई वर्षों तक जीवन यापन करने के बाद, उन्होंने अपने निधन का पूर्वज्ञान प्राप्त किया और प्रभु के पास चले गए। पूजनीय मरियम ने कई चमत्कार किए, अंधों को दृष्टि दी और दुष्टात्माओं को भगाया; और अपने धन्य निधन के बाद, वह पृथ्वी से स्वर्ग में चली गईं। आदरणीय ज़ेनोफ़ोन को भी ईश्वर से चमत्कार करने और दूरदर्शिता का वरदान मिला: उन्होंने भविष्य की भविष्यवाणी की और महान रहस्यों पर मनन करने वाले थे; और फिर वे उस पर मनन करने के लिए प्रस्थान कर गए जिसे मानव नेत्र ने नहीं देखा था, और ईश्वर के मुख के दर्शन में आनंद लेने के लिए। इस प्रकार आदरणीय ज़ेनोफ़ोन, धन्य मरियम और उनके पवित्र बच्चे, योहन और आर्केडियस ने, परमेश्वर से अपने पूरे हृदय से प्रेम करके, एक धर्मी और परमेश्वर-प्रसन्न जीवन[1473] के द्वारा प्रभु की उत्साहपूर्वक सेवा की, और परम पवित्र प्रभु, हमारे उद्धारकर्ता मसीह द्वारा संतों में गिने गए, जिनके लिए, पिता और पवित्र आत्मा के साथ, युगानुयुग महिमा, सम्मान और आराधना हो। आमीन।

कॉन्टाकियन, स्वर 4:

इस जीवन के समुद्र से बचकर, धर्मी ज़ेनोफ़ोन, अपनी सदाचारी पत्नी के साथ, स्वर्ग में अपने बच्चों के साथ मसीह की महिमा करते हुए आनंदित होते हैं।

आदरणीय सिमोन वरिष्ठ की स्मृति

26 जनवरी को स्मरणोत्सव

[1474]आदरणीय सिमोन, जिन्हें 'वरिष्ठ' के नाम से जाना जाता है[1475] , ने कम उम्र से ही एक संन्यासी जीवन जिया, और पूर्ण एकांत में सीरिया की एक छोटी गुफा में बस गए। उनका जीवन कठोर उपवास, अखंड प्रार्थना और ईश्वर के चिंतन में बीता। उनका एकमात्र आहार गुफा के आसपास उगने वाली जड़ी-बूटियाँ थीं। इस प्रकार वे कई वर्षों तक जीवित रहे। हालाँकि, जब लोग उन्हें देखने की इच्छा से उनके पास आने लगे और इस प्रकार उनकी मौन साधना में बाधा डालने लगे, तो वे गुफा छोड़कर माउंट अमान चले गए; लेकिन वहाँ भी उन्हें उनके पास आने वाले कई लोगों से शांति नहीं मिली। फिर वे सिनाई पर्वत[1476] पर चले गए। लेकिन ईश्वर की इच्छा नहीं थी कि वह आदरणीय व्यक्ति सिनाई पर ही रहे, क्योंकि

[1473] आदरणीय ज़ेनोफ़ोन और मारिया, और उनके पुत्र, जॉन और आर्केडियस, 5वीं शताब्दी में अपने तपस्या जीवन का पालन करते हुए रहे।

[1474] अमान, भूमध्य सागर के पूर्व में, उत्तरी फिलिस्तीन में स्थित माउंट एंटी-लेबनान की चोटी है।

[1475] उन्हें श्रद्धेय सिमियन द स्टाइलाइट की तुलना में 'वरिष्ठ' या 'प्राचीन' कहा जाता है, जिन्होंने उनके बाद सीरिया में भी तपस्या की थी।

[1476] माउंट सिनाई वास्तव में ग्रेनाइट चट्टानों से बने पहाड़ों का एक समूह है, जो तीव्र घाटियों से घिरा और चीरकर निकला हुआ है; अरब अब इसे माउंट टूर या जेबेल टूर-सिना कहते हैं; यह लाल सागर की प्रसिद्ध शाखाओं के लगभग केंद्र में स्थित है, जो मिलकर सिनाई प्रायद्वीप का निर्माण करती हैं। यह तीन पर्वत श्रृंखलाओं से मिलकर बना है। माउंट सिनाई स्वयं, जहाँ इस्राएलियों ने ईश्वर के साथ एक संधि की, केंद्रीय कगार की सबसे ऊँची चोटी है।

उनका दायत्वि था कि वे अपने तपस्या के पूर्व स्थल पर दूसरों के मोक्ष की सेवा करें। इसलिए, समिोन अमान लौट आए। उनके मार्गदर्शन में, थोड़े ही समय में वहाँ दो मठवासी समुदाय स्थापति हो गए: एक पहाड़ की चोटी पर, और दूसरा नीचे, पहाड़ की तलहटी में। समुदायों का प्रबंधन करते हुए, परम पूज्य समिोन ने अपनी देखरेख में रहने वाले तपस्वयिों पर नगिरानी रखी, वे साधुओं को उनके धार्मकि कार्यों में प्रोत्साहति और मजबूत करते थे, हमारे मोक्ष के शत्रु के हमलों और चालाकयिों से आगाह करते थे और उसके वरिुद्ध संघर्ष में उनका मार्गदर्शन करते थे, उन्हें आंतरकि सतर्कता के लिए प्रेरति करते थे, और उन्हें नम्रता, अपने पड़ोसयिों के प्रति सहष्णिुता, और अपने शत्रुओं के प्रति उदारता की ओर प्रेरति करते थे। उनके अनवरत परश्रिमों के लिए, परम पूज्य को ईश्वर से यहाँ तक की शक्ति प्राप्त हुई कि वे क्रूर जानवरों को भी आज्ञा दे सकते थे। ईश्वर को प्रयि जीवन जीने के बाद, परम पूज्य ने अपनी वृद्धावस्था में प्रभु में वश्राम पाया[1477] ।

पवत्रि शहीदों अनानयिास द प्रेस्बटिर, पीटर द जेलर, और उनके साथ सात सैनकिों का स्मरणोत्सव

26 जनवरी को स्मरण कयिा जाता है

संत अनानयिास अपने शशिुकाल से ही अपनी धार्मकिता के लिए वशिष्टि थे। अपने अध्ययन के प्रति समर्पति, उन्होंने अपनी कशिोरावस्था के दौरान पवत्रि धर्मग्रंथों को पढ़ने में स्वयं को लगाया। परणिामस्वरूप, जब वे वयस्क हुए, तो लोगों ने उन्हें—उनकी इच्छा के वरिुद्ध—एक डकिन के रूप में नयिुक्त कयिा, और बाद में, उनकी कम उम्र के बावजूद, एक प्रेस्बटिर के रूप में। डायोक्लेटयिन के अधीन उत्पीड़न के दौरान, अनानयिस को एक ईसाई के रूप में अदालत में पेश कयिा गया। मनाने और धमकयिों के बावजूद, वह अडगि रहा और सार्वजनकि रूप से मसीह की गवाही दी; उसने मंदरि में मूर्तपिूजक देवताओं का मज़ाक उड़ाया, एक ही साँस में मूर्तयिों को गरिा दयिा और स्वयं मंदरि को नष्ट कर दयिा। इसके बाद अनानयिास को जेल में डाल दयिा गया, जहाँ सातवें दनि उन्हें मसीह का दर्शन और बारहवें दनि कबूतर के रूप में पवत्रि आत्मा का दर्शन हुआ। इन दर्शनों के बाद, पीटर नामक जेलर ने मसीह में वश्विास कर लयिा, और दोनों को नए ईसाई राज्यपाल के सामने लाया गया, जसिने आदेश दयिा कि अननयिस को एक लाल-गरम तवे पर रखा जाए, जसिके बाद उसके शरीर को खुरचकर उस पर नमक छड़िका जाए, जबकि पीटर को गर्म कोयलों पर रखा जाए; फरि उन्हें एक बहुत गर्म स्नानागार में बंद कर दयिा गया, लेकनि तीन दनि बाद वे सुरक्षति पाए गए। इस चमत्कार को देखकर, सात सैनकि मसीह के धर्म में परविर्तति हो गए और उन्हें इसके लिए बुरी तरह कोड़ों से पीटा गया। बाद में, सभी नौ लोगों को आग में फेंक दयिा गया, लेकनि पवत्रि आत्मा के कबूतर के रूप में प्रकट होने के बाद वे सुरक्षति रहे। अनानयिस को जंगली जानवरों के सामने फेंक दयिा गया, लेकनि वह बाल-बाल बच गया। अंत में, वे सभी समुद्र में डूब गए। रास्ते में, अनानयिस ने उन सात सैनकिों का बपतस्मिा दयिा जो धर्म परविर्तन कर चुके थे। पवत्रि शहीदों के शरीर लहरों द्वारा कनिारे पर आ गए और ईसाइयों द्वारा सम्मानपूर्वक दफनाए गए, और साथ ही उन्होंने कई तरह के चमत्कारकि उपचार भी कए[1478] .

थेस्सलोनकिी के संत जोसेफ का पर्व दविस

26 जनवरी को स्मरणोत्सव

[1479]थेस्सलोनकिी के आर्चबशिप सेंट जोसेफ, जो पूजनीय थयिोडोर द स्टुडाइट के भाई थे, ने अपने चाचा, पूजनीय प्लेटो, जो सकोडयिन में एक मठ की स्थापना कर चुके थे, के मार्गदर्शन में कम उम्र से ही उनके साथ मलिकर काम

[1477] आदरणीय समिोन द एल्डर का लगभग 390 ईस्वी में नधिन हो गया।

[1478] पवत्रि शहीदों अनानयिास, पतरस और उनके साथ के सात सैनकिों का दुखद अनुभव फनिसियिा में हुआ। उनकी मृत्यु चौथी शताब्दी की शुरुआत में हुई।

[1479] सम्राट कॉन्स्टेंटनि VI पोर्फ्योजेनटिस ने 780 से 797 तक शासन कयिा। अत्यधकि कामुकता और वलिासति में डूबे हुए, उन्होंने अपनी पत्नी मारयिा का जबरदस्ती नन के रूप में मुंडन करवा दयिा और उसकी जगह अपनी पति की रश्तिेदार एक और पत्नी, थयिोडोटा को ले लयिा।

कयिा[1480] । अपने भाई के साथ मलिकर, संत जोसेफ ने सम्राट कॉन्स्टेंटनि के अवैध ववािह की नदिा की। कॉन्स्टेंटनिोपल लाए जाने पर, उन्हें भूखा रखा गया और अंततः एक नर्जिन द्वीप पर नर्विासन के लिए भेज दयिा गया, जहाँ उन्हें एक कालकोठरी में डाल दयिा गया। सम्राट माइकल कुरोपालैट्स[1481] ने जोसेफ को नर्विासन से लौटने की अनुमतदिी। लयिो द आर्मेनयिन[1482] के अधीन, संत जोसेफ को प्रतमिाओं की पूजा के लिए उत्पीड़न सहना पड़ा। लयिो ने उसे, उसके भाई थयिोडोर द स्टुडाइट के साथ, यातना दी और फरि उसे कैद कर दयिा; कुछ समय बाद, सम्राट ने उनसे आइकॉन-वरिोधी धर्म-स्वीकृतपिर हस्ताक्षर करने की मांग की। जोसेफ ने मना कर दयिा, और उसे एक और बदबूदार कालकोठरी में डाल दयिा गया। बाद में, माइकल द स्टैमरर[1483] ने जोसेफ को, अन्य भक्षिुओं के साथ, जन्हिें प्रतमिाओं की पूजा के लिए सताया गया था, रहिा कर दयिा। संत जोसेफ की मृत्यु स्टुडयिन मठ में शांतपिूर्वक हुई, जहाँ उन्होंने अपने जीवन के अंतमि वर्ष बतिाए थे[1484] ।

9 फरवरी

27 जनवरी (पुराने कैलेंडर के अनुसार)

हमारे पवत्रि पतिा जॉन क्रसिोस्टोम की अवशेषों का स्थानांतरण

27 जनवरी को स्मरणोत्सव

महान सार्वभौमकि शक्षिक, संत जॉन क्राइसोस्टोम की कोमाना शहर[1485] में मृत्यु को तीस या उससे अधकि वर्ष बीत चुके थे,[1486] – परम पावन प्रोकलस, जो कभी उनके शष्यि थे और बाद में[1487] के सहिासन पर उनके उत्तराधकिारी बने, ने गर्मयिों में कॉन्स्टेंटनिोपल के महान चर्च में उनकी स्मृतमिें एक दव्यि सेवा का आयोजन करते हुए लोगों को संबोधति कयिा और इस ईश्वर-पुरुष की अनेक प्रशंसाओं से उनकी स्तुतकिी।

उन्होंने कहा, 'कोई भी संत जॉन की उतनी प्रशंसा नहीं कर सकता जतिनी वे इसके हकदार हैं – जब तक आज एक और जॉन प्रकट न हो। पानी से लबालब भरी नदी की तरह, उनकी स्मृत,ि जो उनके अनगनित परश्रिमों, कारनामों और शक्षिाओं की यादों से बनी है, वश्विासयिों की आत्माओं को पोषति करती है। उनमें ईश्वर की कृपा की करिणें दमकती हैं, जनिमें एक को ईश्वरत्व का सूर्य स्पष्ट रूप से दखिाई देता है; दूसरे को वधिर्मों से ऑर्थोडॉक्सी (सही आस्था) की शुद्धपि्रकट होती है; तीसरे को मूर्तयिों का वनिाश दखिाया जाता है; एक को भ्रम की मथि्याता उजागर होती है; एक को आस्था की पुष्टऔिर नैतकिता का सुधार दखिाई देता है; और एक को स्वर्गीय मुकुट दमकते हुए दखिाई देते हैं। हे बशिप,

---

[1480] साकुडयिन – बाद में एशयिा माइनर के एक उत्तर-पश्चमिी क्षेत्र, बथिनियिा में एक प्रसद्धि मठ।

[1481] माइकल प्रथम कुरोपालैट्स, या रंगव, ने 811 से 813 तक शासन कयिा।

[1482] लयिो पंचम अर्मेनयिाई, एक प्रतमिा-वरिोधी, ने 813 से 820 तक शासन कयिा।

[1483] माइकल द्वतिीय हकला 820 से 829 तक राज कयिा।

[1484] थेस्सालोनकिी के आर्चबशिप, संत जोसेफ, की मृत्यु 830 में हुई। उन्होंने कई धर्मोपदेश छोड़े, जनिमें से पवत्रि क्रूस की बुलंदी पर दयिा गया धर्मोपदेश वशिेष रूप से उल्लेखनीय है। हालाँकि, जोसेफ को एक भजनकार के रूप में अधकि जाना जाता है। 11वीं सदी के ट्रायोडयिन पांडुलपियिों के अनुसार, जोसेफ का नाम लेंट ट्रायोडयिन के उन दो दैनकि ट्राइप्स के शीर्ष पर आता है जो पवत्रि सप्ताह के ट्राइप्स को छोड़कर, प्रथम स्थान पर हैं; वह इन दनिों के लिए कुछ स्टचिैरा के लेखक भी हैं। संत जोसेफ के त्रपिे और स्टचिैरा आंशकि रूप से स्वर्गदूतों, अग्रदूत, परमेश्वर की माता, प्रेरतिों और संत नकिोलस को एक हार्दकि प्रार्थना से मलिकर बने हैं, और आंशकि रूप से उपवास की भावना और उस न्यायाधीश से एक प्रायश्चत्तिपूर्ण प्रार्थना व्यक्त करते हैं जो हृदय को जानता है। जोसेफ के भजन, और वशिेष रूप से 'व्यर्थपुत्र' के रवविार के लिए कैनन, पूरी तरह से उपवास के दनिों के अनुकूल हैं, जो पापों के लिए गहरे पश्चाताप की भावना से ओत-प्रोत हैं।

[1485] कोमाना – एशयिा माइनर के उत्तर-पूर्व में, पोंटस प्रांत का एक शहर; आज, इस शहर के केवल खंडहर ही बचे हैं।

[1486] संत जॉन क्रसिोम 407 में, लगभग 60 वर्ष की आयु में नधिन हो गए। उन्होंने साढ़े छह साल तक कॉन्स्टेंटनिोपल के आर्चबशिप के रूप में कार्य कयिा और तीन साल और तीन महीने नर्विासन में बतिाए। (पवत्रि क्रूस की बुलंदी के पर्व के सम्मान में, कलीसयिा संत जॉन क्राइसोस्टोम का स्मरण 14 सतिंबर, उनके नधिन के दनि के अलावा, 13 नवंबर को भी करती है। इसके अतरिक्ति, क्रसिोस्टोम की स्मृत 30 जनवरी को, बेसलि द ग्रेट और ग्रेगरी द थयिोलोजयिन के साथ सम्मानति की जाती है (इस महीने की 30 तारीख का प्रवष्टिदिेखें)।

[1487] 437 से 445 तक – चर्च द्वारा उनका पर्व दविस 20 नवंबर को मनाया जाता है।

जनिकी स्मृति सुगंधति सुवासों से परपिूर्ण वायु के समान है! हे यूहन्ना नाम, जो उनके कर्मों के अनुकूल है! हे 'क्रसिोस्टोम' उपाधि, जो स्पष्ट रूप से प्रकट करती है कि वे परमेश्वर के वचन का प्रचार करते समय कैसे थे! हे स्वर्गों में सर्वोच्च जीभ! हे शिक्षक, जो सुसमाचार की गर्जना का उद्घोष करता है! यह यूहन्ना है, प्रभु के अग्रदूत यूहन्ना की तरह, जिसने पश्चाताप का उपदेश दिया। पहला एक उपदेशक था; दूसरा, परमेश्वर का तुरही। पहला अडिग था; दूसरा अजेय। पहले वाले एक कुंवारे थे; दूसरे वाले पवित्रता के रक्षक हैं। पहले वाले ने जंगल में बपतिस्मा दिया; दूसरे वाले ने शहर में आध्यात्मिक फंदों को दूर किया। पहले वाले ने व्यभिचारी की निंदा की; दूसरे वाले ने शिकारियों की कड़ाई से निंदा की। पहले वाले को जेल में डाल दिया गया; दूसरे वाले को निर्वासन में कैद किया गया है। पहले वाले का सिर तलवार से काट दिया गया; दूसरे वाले ने सत्य के लिए उसी मृत्यु को सहने की लालसा की। उन्होंने पृथ्वी पर कई पराक्रमी कार्य किए; स्वर्ग में उनके लिए कई मुकुट प्रतीक्षा कर रहे हैं। अब यूहन्ना पवित्र प्रेरित पौलुस के साथ मिलकर पुकारते हैं: 'मैं मसीह की सुगंध हूँ' (2 कुरिन्थियों 2:15), क्योंकि मैंने सभी स्थानों को त्रुटि से, जैसे किसी दुर्गंध से, शुद्ध कर दिया है: एफ़िसुस में मैंने मिडास की छल-कपट को दूर किया; फ्रीजिया में मैंने झूठे देवताओं की माता को बाँझ कर दिया; केसरिया में मैंने लोगों के व्यभिचार के स्थानों को नष्ट किया; सीरिया में मैंने अधर्मी सभाओं को समाप्त किया; फ़ारस में मैंने भक्ति का बीज बोया। मैंने हर जगह ऑर्थोडॉक्स धर्म की जड़ें स्थापित की हैं; अपने उपदेश द्वारा मैंने सारी दुनिया को ईश्वर के ज्ञान से प्रकाशित किया है। पुस्तकें लिखकर, मैंने मोक्ष के जाल दूर-दूर तक फैलाए हैं। मैं ने पिता के वचन पर यूहन्ना दैवज्ञ के साथ चर्चा की। मछुआरों के साथ मिलकर, मैंने ऑर्थोडॉक्सी के जाल संसार में फेंके। – हे यूहन्ना! तुम्हारा जीवन वास्तव में दुखों से भरा था, लेकिन तुम्हारी मृत्यु सम्मानजनक है, तुम्हारा मकबरा गौरवशाली है, और तुम्हारा पुरस्कार महान है!'

जब संत प्रोकलस चर्च में ऐसा बोल रहे थे, तब संत जॉन क्राइसोस्टोम के लिए प्रेम से जलते हुए लोग उनके उपदेश के अंत का इंतजार नहीं कर सके; बल्कि एक स्वर में, जैसे एक ही व्यक्ति की तरह बोलते हुए, उन्होंने परम पावन प्रोकलस से विनती करते हुए पुकारा कि वे कोमाना से कॉन्स्टेंटिनोपल में संत जॉन के पवित्र अवशेषों की वापसी में तेजी लाएं। चर्च में इतनी देर तक जोर-जोर से जयकारे गूँजते रहे कि पैट्रिआर्क अपना प्रवचन समाप्त नहीं कर सके। समापन के तुरंत बाद, परम पावन प्रोक्लस सम्राट थियोडोसियु[1488] , जो आर्कैडियस के पुत्र और थियोडोसियस महान के पोते थे, के पास गए और उनसे जॉन क्रसिोस्टोम के पूजनीय अवशेषों को स्थानांतरित करने के लिए कहा, यह कहते हुए:

'हे सम्राट, उसे बहाल करो जिसने आपको पवित्र बपतिस्मा के द्वारा सुसमाचार में जन्म दिया और जिसने, एक पवित्र पिता के हाथों से, आपको चर्च में लाया, ठीक वैसे ही जैसे वृद्ध सिमीओन ने एक बार प्रभु के लिए किया था। चर्च आपसे पुकार कर कहती है: मेरी शोभा फीकी पड़ गई है, मेरे होंठ सिल दिए गए हैं, मेरी भव्यता मद्धिम पड़ गई है। एक जंगली सूअर ने क्रसिोस्टोम के झुंड के चरवाहों को चीर-फाड़ डाला है, और रक्तपिपासु जानवरों ने मेरे होठों के फलों को नष्ट कर दिया है।

ईर्ष्या ने मेरे सेवक की पवित्रता को कलंकित कर दिया है; जैसे जंगल के एक कुंज में कुल्हाड़ियों से, उन्होंने उसे मुझसे अलग कर दिया है और उसे मौन के ताबूत में बंद कर दिया है। विधिर्मियों के मित्रों ने आपस में कहा: 'आओ, उस मुँह को चुप करा दें जिसने हमारे विरुद्ध इतना कुछ कहा। आओ, उसके शब्दों को लज्जित करें, क्योंकि अब कोई भी इस प्रकार सिखा नहीं पाएगा, और अब कोई हमारा विरोध नहीं करेगा।' हे राजा, दुश्मन क्रसिोस्टोम के कारण मुझ पर कब तक अपमान करेगा? मुझे वह लौटा दो जो मेरे वधू-वर, मसीह, का स्वरूप था। मुझे, अपनी माता को, यह अनुग्रह प्रदान करें, हे आपके आध्यात्मिक पिता। यद्यपि आपकी देहधारी माता ने उसे मुझसे छीन लिया है, परन्तु उसके निर्दयी हृदय और दुष्ट इरादे का अनुसरण न करें, बल्कि आत्मा की पवित्रता के लिए उत्साही बनें, , जिसके बिना कोई भी प्रभु को नहीं देखेगा। यूडोक्सिया की महिमा[1489] समाप्त हो गई है, परन्तु कलीसिया हमेशा के लिए बनी रहेगी। मैं सर्वकाल के लिए तुम्हारी माँ हूँ। मुझे क्रसिोस्टोम की वापसी की खुशी को दूर-दूर तक फैलाने का अवसर प्रदान करो, और तुम पाओगे कि मैं परमेश्वर के सामने तुम्हारे लिए एक मध्यस्थ हूँ। क्रसिोस्टोम की आत्मा को अपने लिए एक प्रार्थनामय वकील के रूप में सुनिश्चित करो। अपने पिता की प्रार्थना से समर्थित, धार्मिकता का पुत्र बनो!

[1488] सम्राट थियोडोसियस द्वितीय युवा 408 से 450 तक शासन किया।

[1489] यूडोक्सिया – सम्राट आर्कैडियस की पत्नी; वह विशेष रूप से जॉन क्राइसोस्टोम की विरोधी थीं, और उनके तीखे उपदेशों से नफरत करती थीं। उनकी कोशिशों और षड्यंत्रों के कारण, संत जॉन को उनके आर्चबिशप पद से हटा दिया गया और कोमाना में निर्वासित कर दिया गया।

चर्च की ओर से इतनी लंबी बात करने के बाद, उन्होंने राजा को राज़ी कर लिया। सबसे सम्मानित लोगों को चाँदी के एक रलिक्विरी (पवित्र अवशेष पात्र) के साथ कोमाना भेजा गया, ताकि जॉन क्रिसोस्टोम के पवित्र अवशेषों को बड़े सम्मान के साथ लाया जा सके। जब वे वहाँ पहुँचे और कोमाना के बिशप और सभी लोगों को राजा का संदेश सुनाया, तो इतने बड़े खजाने के खो जाने पर लोगों में महान शोक, दुख और विलाप छा गया। लोग पवित्र अवशेषों को छोड़ना नहीं चाहते थे। उन्होंने इस मामले पर लंबी बहस की; फिर भी वे ज़ार के आदेश की अवहेलना नहीं कर सके। जब ज़ार द्वारा भेजे गए लोग ताबूत से पवित्र अवशेषों को हटाने की कोशिश करने लगे, तो वे तुरंत पत्थर और किसी भी अन्य भार से भी भारी हो गए, इसलिए, उनकी सभी कोशिशों के बावजूद, उन्हें उनकी जगह से हिलाना असंभव हो गया। दूतों ने बहुत प्रयास किया, लेकिन उन्हें कुछ भी हासिल नहीं हुआ। इससे यह समझते हुए कि संत अपने अवशेषों को वहां से ले जाने की सहमति नहीं दे रहे थे, उन्होंने तुरंत राजा को लिखित में इसकी सूचना दी। राजा ने परम पवित्र पैट्रिआर्क और अन्य पवित्र पुरुषों से परामर्श करने के बाद अपनी गलती को समझा - अर्थात्, कि उसने कोमाना से संत जॉन के अवशेषों को प्रार्थना के साथ नहीं बल्कि आदेश के साथ मंगवाया था। उसने यह निश्चय किया कि वह संत को जीवित मानकर उन्हें एक पत्र लिखेगा, जिसमें वह अपनी धृष्टता के लिए क्षमा याचना करेगा और उनसे विनती करेगा कि वे कृपया अपने धर्मप्रांत में लौट आकर अपने अनुयायियों को सांत्वना दें। उन्होंने अपने हाथ से निम्नलिखित लिखा:

'सार्वभौमिक शिक्षक और मेरे आध्यात्मिक पिता, संत जॉन क्रिसोस्टोम को, राजा थियोडोसियस की ओर से: हे अति पूज्य पिता, मैंने आपके पवित्र शरीर को अन्य दिवंगत आत्माओं के शरीरों की तरह निर्जीव समझकर, इसे तुरंत हमारे पास लाने का आदेश दिया, परन्तु अपनी अयोग्यता के कारण मुझे वह नहीं मिला जिसकी मैं इच्छा करता था। अब, अत; मैं यह अनुरोध, अपने हाथ से लिखा हुआ, आपको भेजता हूँ मानो आप जीवित हों, और विश्वास के साथ मैं अपने और आपके लोगों के लिए क्षमा याचना करता हूँ। इस साहसी कार्य के लिए मुझे क्षमा करें, और इसे अपनी बुद्धिमत्ता की गहराई से ढक दें। आप जिन्होंने सभी को पश्चाताप सिखाया, पश्चाताप करने वालों को क्षमा करें। जहाँ तक अपने पिता से प्रेम करने वाले बच्चों का प्रश्न है, हमारे पिता को हमें लौटा दें और अपने आगमन से आपको प्रेम करने वालों को प्रसन्न करें। हमारी महान आवश्यकता के अलावा, मैं आपको आज्ञा देने के बजाय, विनम्रतापूर्वक आपसे निवेदन करता हूँ कि हमारे पास आएँ। हे अति सम्माननीय पिता! मुझे दूसरी बार लज्जित न करें! जो आपको देखने के लिए लालायित हैं, उन्हें स्वयं को प्रदान करें: अपने लोगों के पास शांति से लौटें, और आपके अपने आपको प्रेम से स्वीकार करेंगे।"

यह संदेश लिखने के बाद, ज़ार ने उसे दूतों को सौंप दिया और उन्हें आदेश दिया कि वे संत की ताबूत खोलें, उसे उसकी छाती पर रखें, और फिर पूरी रात जागरण करें। जब राजा द्वारा कोमाना को भेजा गया शाही पत्र संत जॉन की छाती पर रखा गया, और जब पूरी रात की जागरण के बाद राजा के लोगों ने पवित्र अवशेषों को छुआ, तो संत तुरंत उनके सामने झुक गए: वह पहले की तरह स्वाभाविक रूप से हल्के हो गए। दूतों ने प्रसन्न होकर, ताबूत से पवित्र अवशेष निकालकर उन्हें शाही अवशेष-पात्र में रख दिया। वहाँ एक गरीब आदमी था जिसे साँप ने काट लिया था, जिसके कारण उसकी एक टांग लंगड़ी हो गई थी और वह चर्चों के पास भीख माँगकर रहता था। उसने संत के ताबूत से एक छोटा सा कपड़ा लिया और उससे अपनी टांग पोंछ ली। तुरंत उसकी टांग दूसरी टांग जितनी ही मजबूत हो गई, और वह ईश्वर की स्तुति करते हुए चलने लगा। सभी लोग मोमबत्तियाँ लेकर संत के पवित्र अवशेषों की पूजा करने के लिए इकट्ठा हुए और जब उन्हें ले जाया जा रहा था, तो वे उन्हें भरपूर आँसुओं और सिसकियों के साथ विदाई देने लगे। शाही दल अपनी यात्रा पर रवाना हुआ और बिना किसी बाधा के बहुत दूर की यात्रा करने के बाद, चल्सेडॉन के बंदरगाह[1490] पहुँचा। सम्राट, संपूर्ण सिक्लाइट, पादरी वर्ग के साथ पैट्रिआर्क, और जहाजों पर सवार अनगिनत लोगों के साथ, पवित्र अवशेषों का स्वागत करने के लिए बाहर गए। जॉन के पूजनीय अवशेषों को प्राप्त करने के लिए एक विशेष शाही जहाज तैयार किया गया था, जिसमें अवशेषों वाला रलीक्वेरियम रखा गया। जब वे कॉन्स्टेंटिनोपल लौट रहे थे, तो ईश्वर की अनुमति से, समुद्र में अचानक एक तूफान आ गया। सभी जहाज इधर-उधर उछाले जा रहे थे; लेकिन संत की अवशेषों वाली संदूकची ले जाने वाला जहाज, अपना पतवार खोकर, अपने आप बह गया, मानव हाथों द्वारा नहीं बल्कि ईश्वर की शक्ति द्वारा निर्देशित। यह ठीक उसी स्थान पर किनारे आकर रुकी जहाँ विधवा का दाख का बगीचा था, जिसके लिए संत जॉन क्राइसोस्टोम ने इतनी सारी यातनाएँ और यहाँ तक कि निर्वासन भी सहा था। इस प्रकार, अपनी मृत्यु के बाद भी, उन्होंने सत्य के प्रति उत्साह दिखाया और हुए

[1490] चल्सेडोन बोस्फोरस के एशियाई तट पर, कॉन्स्टेंटिनोपल के सामने स्थित था।

अन्याय का पर्दाफाश कयिा। तुरंत ही समुद्र शांत हो गया; जहाज़ एक ही जगह पर बनिा कसिी नुकसान के इकट्ठा हो गए, और तूफ़ान से कसिी को भी कोई हानि नहीं हुई।

जब अवशेषों से भरा संदूक जहाज से कनिारे पर लाया गया, तो पूरा शहर मोमबत्तयिाँ, धूपदान और भजन-कीर्तन लेकर उठ खड़ा हुआ। पुरोहतिों ने संदूक को लेकर पहले संत थॉमस द एपोस्टल के चर्च में और फरि संत आइरीन के चर्च में रखा, जसिे अन्यथा 'चर्च ऑफ द पीस ऑफ क्राइस्ट' के नाम से भी जाना जाता है। वहाँ, ज़ार और पैट्रआर्क ने अवशेष-पेटकिा खोली और पाया कि संत जॉन का शरीर एक बेल की तरह था, जो सुंदरता और अक्षुण्णता से खलि रहा था और अत्यंत सुगंधति खुशबू बखिेर रहा था। ज़ार ने अपना बैंगनी चोगा उतारकर उसे अवशेषों पर बछिा दयिा; फरि, संत की छाती पर सरि झुकाकर, उन्होंने आँसुओं के साथ कहा:

'पतिाजी, मुझे क्षमा करें, क्योंकि मैंने ईर्ष्या से आपको दुख पहुँचाया है। मुझे अपनी माँ के पाप का साथी न समझें, और मुझे अपने माता-पति की अनुशासनहीनता के कड़वे परणिामों को भुगतने न दें। यद्यपि मैं आपके उत्पीड़क का पुत्र हूँ, परन्तु आप पर आई इस वपित्ति के लिए मैं दोषी नहीं हूँ। उसके अपराध को क्षमा करें, ताकि मैं भी उस कलंक से मुक्त हो सकूँ जो उस पर लगा हुआ है। मैं आपके चरणों में सरि झुकाता हूँ और अपना सारा अधकिार आपकी मध्यस्थता को सौंपता हूँ। उसका अपराध क्षमा करें जसिने आपसे लापरवाह हसिा से अपराध कयिा है, क्योंकि वह अपने कए पर पछता चुकी है और क्षमा मांगती है, और मेरे होठों से वनिम्रतापूर्वक आपसे इस प्रकार नविेदन करती है: 'पतिाजी, द्वेष न रखने की अपनी शक्षिा को याद करें, और मेरी दुर्भावना को स्वयं भूल जाएँ।' मैं अपनी गरिावट से उठना चाहता हूँ, परन्तु हे प्रभु, मेरी सहायता करो, आपने कहा था: 'यदि कोई एक बार गरि गया है, तो उसे उठने दो, और वह उद्धार पाएगा।' मैं आपकी नाराज़गी सहन नहीं कर सकती; यहाँ तक कि मेरा ताबूत भी काँपता है, जो मेरी हड्डयिों को कुचल रहा है। मुझे शाश्वत दंड और मसीह के अंतमि न्याय में आपके दाहनिे हाथ पर खड़े होने से वंचति होने, दोनों का भय है। आपने अपनी शक्षिाओं के माध्यम से कई लोगों को बचाया है; काश मैं भी उसी उद्धार से वंचति न रहूँ। जब मैं आपको पुकारता हूँ तो मुझे न छोड़एि; बल्कि मेरे शत्रु—शैतान—से मेरा बदला लीजएि—क्योंकि उसी ने मुझे आपको दुख पहुँचाना सखिाया, जैसे उसने एक बार हव्वा को परमेश्वर के वरिुद्ध पाप करना सखिाया था। हे नर्दिोष, मुझ पर क्रोध न करें; आप जन्हिोंने इस नश्वर जीवन में कोई द्वेष नहीं रखा, अमर जीवन में भी कोई द्वेष न रखें। यदि, इस क्षणकि जीवन को जीते हुए, मैंने आपको कोई हानि पहुँचाई है, तो आप, जो शाश्वत जीवन जीते हैं, मेरी आत्मा की सहायता करें। मेरी महमिा समाप्त हो गई है, और कसिी भी चीज़ ने मेरी मदद नहीं की है; तो हे पति, अपनी उस महमिा में मेरी सहायता करें, जो आपको परमेश्वर से प्राप्त हुई है, और इससे पहले कि मुझे मसीह के भयानक न्याय में दोषी ठहराया जाए, मुझे क्षमा करें, जो इसके अयोग्य हूँ।

जब उसने अपनी माँ की ओर से ये शब्द कहे, तो राजा रोने से खुद को रोक नहीं सका; उसने संत के शरीर को अपने आँसुओं से नहलाया और श्रद्धापूर्वक उसे चूमा। इसी प्रकार, परम पवत्रि प्रोकलस ने, संत के शरीर को प्रेम से चूमते हुए, पुकार कर कहा:

'हे मसीह-प्रेमी पति, हे मधुरतम शक्षिक, आनन्दति हो! मैं आपका पुत्र हूँ, जो आपके आध्यात्मकि दूध से पोषति हुआ है। जैसे आप पहले मेरे चरवाहे थे, वैसे ही अब आप मेरे चरवाहे हैं: मेरी भेड़ें आपकी हैं; आपका झुंड अभी भी आपके चरागाह पर चरता है और, आपकी लालसा में, अन्य चरवाहों का अनुसरण नहीं करना चाहता। तो हमें अपना मुख दखिाइए, और हमें एक बार फरि आपकी आवाज़ सुनने दीजएि।

सभी लोग संत के पवत्रि अवशेषों को छूने के लिए भी तरस रहे थे और दनि-रात उनसे अलग नहीं होते थे। अगले ही दनि सुबह, संत के अवशेषों को शाही रथ पर रखा गया और उन्हें बड़े सम्मान और वैभव के साथ पवत्रि प्रेरतिों के महान कैथेड्रल चर्च तक ले जाया गया। जब अवशेष-पेटकिा को अंदर ले जाया गया और उसे पादरी-सम्राट के सहिासन पर रखा गया, तो सारा जनसमूह एक स्वर में चल्लिा उठा:

'अपना स्थान ग्रहण करें, पतिाजी!'

तब पैट्रआर्क प्रोकॉल्स ने, कई अतियोग्य पुरुषों के साथ, देखा कि संत जॉन ने, जैसे जीवति हों, अपने नर्जिीव होंठों को खोलकर, महाधर्माध्यक्षीय आशीर्वाद दयिा:

'सभी पर शांति हो!'

पवत्रि धर्मवधिि के समारोह के दौरान, क्रसिोस्टोम के पवत्रि अवशेषों के माध्यम से रोगयिों पर कई चमत्कारी उपचार हुए, और इसी प्रकार रानी यूडोक्सयिा की कफ़न की दीर्घकालकि कम्पन भी बंद हो गई। पुरोहतिों ने यूहन्ना के

पवत्रि शरीर को वेदी-पट्टी के नीचे वेदी में रखा, और आनन्द और हर्ष के साथ मसीह परमेश्वर की महमिा की, जो पतिा और पवत्रि आत्मा के साथ सदा के लिए महमिामय हैं। आमीन।

ट्रोपारयिन, स्वर 2:

चूँकि अनुग्रह आपके होठों से आग की करिण की तरह चमका है, ब्रह्मांड को प्रबुद्ध करें: आपने धन के प्रेम से संसार के खजाने नहीं खोजे, बल्कि हमें वनिम्रता की ऊँचाइयों का मार्ग दखिाया। परन्तु आपके वचनों द्वारा, पतिा जॉन क्रसिोस्टोम, मसीह परमेश्वर के वचन से प्रार्थना करें कि हमारी आत्माएँ उद्धार पाएँ।

कॉन्टाकयिन, स्वर 1:

हे रहस्यमय रूप से सम्माननीय कलीसयिा, अपने सम्माननीय अवशेषों की वापसी पर आनन्दति हो; और, उन्हें बहुमूल्य सोने की तरह छपिाकर, तुम अपनी प्रार्थनाओं के द्वारा उन लोगों पर चंगाई की प्रचुर कृपा प्रदान करती हो जो तुम्हारी स्तुति करते हैं, योहन क्रसिोस्तम।

10 फरवरी

28 जनवरी (पुराना कैलेंडर)

उसी दनि, टोट्मा के पूजनीय थयिोडोसयिस का स्मरणोत्सव

हमारे पूजनीय पतिा एफ्रेम सीरयिाई का जीवन[1491]

28 जनवरी को स्मरणोत्सव

संत एफ्रेम मेसोपोटामयिा के नसिीबसि शहर के मूल नविासी थे[1492] । उनका जन्म महान कॉन्स्टेंटाइन के शासनकाल के दौरान ईसाई माता-पतिा के घर हुआ था[1493] और वे महान थयिोडोसयिस के शासनकाल तक जीवति रहे[1494] । अपनी युवावस्था में ही, संत एफ्रेम ने संसार को त्याग दयिा और रेगस्तिान में चले गए, जहाँ वे एक भक्षिु बने[1495] । उन्हें

[1491] आदरणीय एफ्रेम को 'सीरयिाई' कहा जाता है क्योंकि मेसोपोटामयिा, जहाँ उनका जन्म हुआ था, प्राचीन काल में सीरयिा का हस्सिा माना जाता था।

[1492] नसिीबसि (या नसिीबडिा) मेसोपोटामयिा में मैसेडोनयिा प्रांत का एक बड़ा और घनी आबादी वाला शहर था, जो रोमन साम्राज्य और फारसी साम्राज्य की सीमाओं पर स्थति था।

[1493] पूजनीय एफ्रेम अपने माता-पतिा के बारे में नम्निलखिति लखिते हैं: 'जनि लोगों ने मुझे देह में जन्म दयिा, उन्होंने मुझमें प्रभु का भय उत्पन्न कयिा। मेरे पूर्वजों ने न्यायाधीश के सामने मसीह की गवाही दी; मैं शहीदों का एक संबंधी हूँ। मेरे पूर्वज, जो समृद्धि में रहते थे, कसिान थे। मेरे माता-पतिा उसी व्यवसाय में लगे हुए थे।'

[1494] सम्राट थयिोडोसयिस महान ने 379 से 395 तक शासन कयिा।

[1495] एफ्रेम का युवा काल चुनौतयिों से रहति नहीं था। स्वभाव से जोशीले, वह, जैसा कि वह स्वयं कहते हैं, जल्दी गुस्सा करने वाले थे: 'मैं तुच्छ बातों पर झगड़ता था, लापरवाही से काम करता था, दुष्ट योजनाओं और कामुक वचिारों के आगे झुक जाता था...' मेरी जवानी ने मुझे लगभग इस बात पर यकीन दलिा दयिा था कि हमारे जीवन में जो कुछ भी होता है, वह महज़ संयोग की बात है। लेकनि ईश्वर की कृपा ने मेरे उन्मत्त यौवन को होश में ला दयिा।' एफ्रेम पर झूठा आरोप लगाया गया कि उसने भेड़ें चुराईं और उसे जेल में डाल दयिा गया; उसके बाद दो अन्य लोगों को भी कैद कयिा गया, और वे भी एफ्रेम की तरह ही नर्दिोष थे। 'वहाँ सात दनि बतिाने के बाद, आठवें दनि मैंने एक सपने में देखा, ' संत एफ्रेम ने बाद में बताया, 'कि किसी ने मुझसे कहा: "धार्मकि बनो और तुम दव्यि व्यवस्था को समझोगे; अपने मन में वचिार करो कि तुम क्या सोच रहे थे और क्या कर रहे थे, और तुम स्वयं ही समझ जाओगे कि ये लोग अन्याय से नहीं पीड़ति हैं, बल्कि यह भी कि दोषी दंड से नहीं बचेंगे।"' – एफ्रेम ने यह सब देखा, जैसा कि वे अपने एक लेख में वस्तिार से वर्णन करते हैं। – इन घटनाओं ने एफ्रेम को इतना प्रभावति कयिा कि उन्होंने जल्द ही संसार त्याग दयिा और संन्यासयिों के साथ रहने के लिए पहाड़ों में चले गए, जहाँ वे नस्सिा के बशिप, संत जेम्स (जनिका स्मरणोत्सव 13 जनवरी को मनाया जाता है) के शष्यि बने।

ईश्वर से ज्ञान का वरदान प्राप्त हुआ; उनके होठों से कृपा एक मीठी नदी की तरह बही, जिससे उनकी शिक्षाएँ सुनने वाले सभी के हृदय को कोमलता से भर दिया। यह उन्हें बहुत कम उम्र में ही पूर्वानुमानित किया गया था। जब वह अभी भी एक बच्चा था, तब उसके माता-पिता ने उसके बारे में निम्नलिखित सपना देखा: लड़के की जीभ पर एक बेल उगी और जैसे-जैसे वह बढ़ी, उसने अपनी टहनियों और अंगूरों की लताओं से पूरी दुनिया को भर दिया। आकाश के पक्षी इकट्ठा हुए और अंगूर खा गए, और जितना अधिक वे खाते गए, उतने ही अधिक अंगूर बढ़ते गए। बाद में, जब संत एफ्रेम एक सुनसान पहाड़ पर गहरी भक्ति और हार्दिक पश्चाताप से परिपूर्ण होकर एक तपस्वी के रूप में रह रहे थे, तो दैवीय पिताओं में से एक ने सपने में एक ऐसे व्यक्ति को देखा जो स्वर्गदूतों की तरह तेजस्वी और चमकता हुआ था। उसके हाथ में लेखों से भरी एक पांडुलिपि थी और उसने पूछा:

'यह पांडुलिपि कौन ग्रहण कर सकता है और संरक्षित रख सकता है?'

ऊपर से एक आवाज़ ने उन्हें उत्तर दिया:

'मेरे प्रिय एफ्राइम के सिवा और कोई नहीं।'

एफ्रेम उस प्रकट हुए व्यक्ति के सामने खड़ा हो गया। उसने अपना मुँह खोला, और उस व्यक्ति ने वह पांडुलिपि उसमें रख दी। आदरणीय एफ्रेम ने वह पांडुलिपि निगल ली, और फिर, थोड़ी ही देर बाद, उन्होंने प्रेरणादायक प्रवचन बोलना और लिखना शुरू कर दिया जो उन्हें पढ़ने या सुनने वाले सभी को भावुक कर देते थे। वे सभी में प्रभु का भय जगाने और उन्हें पश्चाताप के मार्ग पर मार्गदर्शन करने में सक्षम थे, जैसा कि उनकी दैवीय प्रेरित पुस्तकों से स्पष्ट है। इसी तरह, एक अन्य महान और पवित्र वृद्ध को संत एफ्रेम के बारे में एक सपने में इसी तरह का एक दृष्टिकोण मिला। उन्होंने परमेश्वर की आज्ञा से स्वर्ग से उतरते हुए ' ' स्वर्गदूतों के झुंड को देखा, जिनके हाथों में अंदर और बाहर दोनों तरफ लिखित एक पांडुलिपि थी। उन्होंने एक-दूसरे से कहा:

'यह पांडुलिपि कौन प्राप्त कर सकता है?'

जवाब में, कुछ ने एक नाम लिया, दूसरों ने किसी और को याद किया, जबकि कुछ ने कहा:

'सचमुच, जिन पुरुषों का उल्लेख किया गया है वे पवित्र और धर्मी हैं, लेकिन उनमें से कोई भी यह पट्टी नहीं ले सकता; केवल एफ्रेम, जो हृदय से नम्र और विनम्र है।'

तब वृद्ध ने देखा कि यह सूत्रपत्र एफ्राइम को कैसे दिया गया। अगले दिन सुबह उठकर, उसने धन्य एफ्राइम को भाइयों को उपदेश देते हुए सुना। ऐसा लगता था मानो उनके होठों से एक झरना बह रहा हो! उनके मुख से महान लाभ से परिपूर्ण शब्द निकल रहे थे। वह यह मानने लगा कि संत एफ्रेम के होठों से जो कुछ भी निकलता था, वह पवित्र आत्मा से प्रेरित था, और उसने परमेश्वर की महिमा की, जो अपने सेवकों पर ऐसा अनुग्रह प्रदान करता है।

वर्ष 363 में, निसीबिस फारसी शासन के अधीन आ गया, और कई ईसाई निसीबिस छोड़ गए। तब आदरणीय एफ्रेम ने एडेसा शहर के लिए वहाँ से प्रस्थान करने का संकल्प लिया[1496] । उन्होंने ईश्वर से इस प्रार्थना के साथ निवेदन किया:

'हे प्रभु यीशु मसीह! यह अनुग्रह करो कि मैं तेरा नगर देखूँ, और जब मैं उसमें प्रवेश करूँ, तो मुझे एक पुरुष मिलावे जो मेरे लाभ के लिए पवित्र धर्मग्रंथों से मेरे साथ वार्तालाप करे।'

जब उन्होंने इस प्रकार प्रार्थना करने के बाद शहर के पास पहुँचकर द्वारों में प्रवेश किया, तो एक महिला उनसे मिली। उसे देखकर, परमेश्वर के सेवक का मन उदास हो गया और वह मन ही मन परमेश्वर की ओर मुड़ गया:

'प्रभु, आपने अपने सेवक की प्रार्थना को अनसुनी कर दी है। क्योंकि वह मुझसे धर्मग्रंथों में पाई जाने वाली बुद्धि के बारे में कैसे बात कर सकती है?'

तथापि वह स्त्री वहीं खड़ी होकर उसे देखती रही। संत एफ्रेम ने उससे एक प्रश्न किया:

'मुझे बताओ, औरत, तुम वहाँ खड़ी मुझे क्यों देख रही हो?'

उस महिला ने उत्तर दिया:

मैं तुम्हें इसलिए देख रही हूँ क्योंकि एक स्त्री अपने पति से ली जाती है; परन्तु तुम्हें मुझ पर नहीं, बल्कि उस मिट्टी पर देखना चाहिए जिससे तुम लिए गए हो।'

[1496] एडेसा मेसोपोटामिया का एक शहर है; यह दक्षिणी मेसोपोटामिया के पथरीले रेगिस्तान और उपजाऊ भूमि के बीच की सीमा पर स्थित है। यह शहर, जैसा कि संत एफ्रेम कहते हैं, 'अपने शिष्य थैडोयूस के माध्यम से उद्धारकर्ता के जीवित होठों द्वारा धन्य था'; यहाँ उद्धारकर्ता की चमत्कारी छवि और प्रेरित थैडोयूस के पवित्र अवशेष रखे गए थे।

यह सुनकर, एफ्राइम उसके उत्तर से चकित हो गया और उसने उस परमेश्वर की महिमा की, जिसने उस स्त्री को ऐसी बुद्धि दी थी। उसे एहसास हुआ कि प्रिभु ने उसकी प्रार्थनाओं को तुच्छ नहीं समझा था। शहर में प्रवेश करने के बाद, वह वहाँ बहुत समय तक रहा[1497] ।

संयोग से, जिस घर में संत रहते थे, उसके पास एक और महिला रहती थी, जो एक वेश्या थी और उसकी पड़ोसी थी। शैतान की चालाकी से प्रेरित होकर, वह उस संत का अपमान करना चाहती थी। एक छोटी सी खिड़की खोलकर, जिससे वह संत के निवास को देख सकती थी, उसने एफ्राइम को वहां खड़े होकर अपना भोजन पकाते हुए देखा। उस महिला ने ऊँचे स्वर में पुकारा:

'मुझे आशीर्वाद दीजिए, महोदय!'

सम्माननीय ने छोटी सी खिड़की की ओर देखा और यह देखकर कि वह उसे देख रही है, उससे कहा:

'प्रभु आपको आशीर्वाद दें।'

तब उस महिला ने कहना जारी रखा:

'आपके भोजन में क्या कमी है?'

संत ने उत्तर दिया:

'तीन पत्थर और थोड़ी सी रेत चाहिए उस छोटी सी खिड़की को बंद करने के लिए, जिससे आप यहाँ अंदर देख रहे हैं।'

उस महिला ने निर्लज्जता से उत्तर दिया:

'मैंने पहले तुमसे बात की, और तुमने मुझे जवाब दिया। मैं तुम्हारे साथ लेटना चाहता हूँ, फिर भी तुम पहले ही शब्द पर इनकार कर देती हो।'

ईश्वर के सेवक ने उससे उत्तर दिया:

'अगर तुम मेरे साथ लेटना चाहती हो, तो उस जगह चली जाओ जहाँ मैं तुम्हें दिखाऊँगा।'

वेश्या ने कहा:

'मुझे वह जगह दिखाओ, और मैं आऊँगी।'

तब संत ने कहा:

'यदि तुमने मुझे चुना है, तो तुम मेरे साथ किसी अन्य स्थान पर नहीं लेट सकतीं, सिवाय शहर के बिलकुल केंद्र में।'

वेश्या चकित रह गई:

'क्या हमें लोगों के सामने शर्म नहीं आएगी?'

संत ने उत्तर दिया:

'यदि हमें लोगों के सामने शर्म आती है, तो हमें परमेश्वर से, जो सभी मानवीय रहस्यों को जानता है, उससे कितनी अधिक लज्जित—और साथ ही भयभीत—होना चाहिए! क्योंकि वह पूरी दुनिया का न्याय करेगा और प्रत्येक व्यक्ति को उनके कर्मों के अनुसार पुरस्कृत करेगा।'

यह सुनकर, वेश्या संत एफ्रेम के शब्दों से भावुक हो गई। वह आई और उनके पैरों पर गिर पड़ी, रोते हुए और कहती हुई:

'हे ईश्वर के सेवक! मुझे मोक्ष के मार्ग पर ले चलें, ताकि मैं अपने अनेक बुरे कर्मों से मुक्त हो सकूँ।'

[1497] एडेसा में अपनी आजीविका कमाने के लिए, पूजनीय एफ्रेम ने एक स्नानागार के मालिक के लिए काम किया और अपने खाली समय का उपयोग मूर्तिपूजकों को परमेश्वर का वचन प्रचार करने के लिए किया; बाद में, पवित्र वृद्ध जूलियन की सलाह पर, वे तपस्या करने के लिए सुनसान माउंट एडेसा में चले गए। शीघ्र ही वरिष्ठ एफ्रेम को एक दर्शन हुआ कि वह अपने सभी समकालीनों में से एकमात्र ऐसे व्यक्ति थे जिन्हें लोगों के निर्माण के लिए एक पुस्तक सौंपी गई थी। एफ्रेम ने पेंटेटेच पर एक भाष्य लिखना शुरू कर दिया। सीरियाक भाषा में व्याख्या का यह पहला प्रयास एडेसा से कई लोगों को एफ्रेम के पास ले आया, और एफ्रेम उनसे भागना चाहते थे। "एफ्राइम! तुम कहाँ भाग रहे हो?" प्रकट हुए स्वर्गदूत ने पूछा। 'मैं मौन में रहना चाहता हूँ और दुनिया के कोलाहल और आकर्षण से भाग रहा हूँ,' एफ्राइम ने उत्तर दिया। स्वर्गदूत ने कहा: 'सावधान रहो, कहीं ऐसा न हो कि धर्मग्रंथ का वचन तुम पर पूरा हो जाए: "एफ्राइम एक जवान सांड की तरह है जो अपनी गर्दन से जुआ उतारना चाहता है"' (होशे 10:11)। इसके बाद, एफ्रेम उस सेवा में लौट आए जिनके लिए उन्हें बुलाया गया था। उस समय से, उन्होंने मौखिक और लिखित दोनों रूपों में विश्वास और धार्मिकता की शिक्षा देना शुरू कर दिया। अपने धार्मिक कार्य को आगे बढ़ाने के लिए, उन्होंने एदेसा में एक स्कूल की स्थापना की, जिससे बाद में सीरियाई चर्च के प्रसिद्ध शिक्षक निकले।

परम पूज्य एफ्रेम ने उसे पवत्रि शास्त्र से बहुत उपदेश देकर, उसे पश्चाताप में दृढ़ कयिा और एक मठ को सौंपकर, उसका आत्मा अधर्म और पाप से बचाया।

तब एक और वेश्या, जब आदरणीय एफ्रेम कहीं जा रहे थे, उनके पास आई और उन्हें पाप करने के लिए उकसाया, कम से कम उन्हें क्रोधति करने के लिए, क्योंकि किसी ने भी उन्हें कभी क्रोधति होते नहीं देखा था।

आदरणीय ने उससे कहा:

'मेरे पीछे चलो।'

वह महलिा उनके पीछे चली आई। जब वे भीड़-भाड़ वाली जगह पर पहुँचे, तो संत ने उससे कहा:

'हम यहीं लेटेंगे और पाप करेंगे।'

लेकनि भीड़ देखकर उसने उससे कहा:

'जब चारों ओर इतने सारे लोग हैं, तो हम यहाँ कैसे रुक सकते हैं? क्या यह शर्मनाक नहीं है?'

संत ने उत्तर दयिा:

'अगर तुम्हें लोगों के सामने शर्म आती है, तो हमें परमेश्वर के सामने कतिनी अधकि शर्म आनी चाहए, जो हमारे सबसे गहरे रहस्यों को जानता है?'

तो वह महलिा लज्जति होकर उससे चली गई, क्योंकि वह न तो संत को पाप के लिए लुभा सकी और न ही उनका क्रोध भड़का सकी, क्योंकि वह सचमुच द्वेष से मुक्त और वनिम्र व्यक्ति थे, और उनमें क्रोध करने की क्षमता बलि्कुल नहीं थी।

उनकी दया के बारे में एक कहानी बताई जाती है। जब वे रेगस्तिान में उपवास कर रहे थे, तो उनका शष्यि उन्हें नयिमति समय पर भोजन लाया करता था। एक बार, भोजन लाते समय, रास्ते में वह गलती से उसे रखने वाला पात्र तोड़ बैठा। वह बूढ़े के गुस्से से डर गया, लेकनि बूढ़े ने अपने घबराए हुए शष्यि को देखकर कहा:

'दुखी मत हो, भाई—अगर भोजन हम तक आना नहीं चाहता, तो हम ही उसके पास चलेंगे।'

तब, टूटे हुए पात्र के पास जाकर, वे उसके बगल में बैठ गए और खाना इकट्ठा करके खाने लगे। उनके द्वेष की भावना का अभाव ऐसा था! उनके बारे में कहा जाता था कि जब से वे भक्षिु बने थे, वे कसिी पर एक बार भी गुस्सा नहीं हुए थे।

एक बार आदरणीय एफ्रेम को संत बेसलि द ग्रेट के बारे में एक दव्यि दर्शन हुआ। एक स्वप्न-दृश्य में, उन्होंने स्वर्ग तक पहुँचते हुए आग का एक स्तंभ देखा, और एक आवाज़ सुनी:

'एफ्रेम, एफ्रेम! जैसे तुम इस अग्नि के स्तंभ को देख रहे हो, वैसे ही बासलि हैं।'

तब एफ्रेम संत बेसलि को देखना चाहते थे। अपने साथ एक दुभाषयिा लेकर – क्योंकि वे ग्रीक नहीं बोल सकते थे – संत एफ्रेम कैपाडोसयिा के केसरयिा गए[1498] । उन्होंने चर्च में संत बेसलि को लोगों को सखिाते हुए पाया, और ऊँचे स्वर में उनकी प्रशंसा करना शुरू कर दयिा, कहते हुए:

'सचमुच, बेसलि महान हैं! सचमुच, वह आग का एक स्तंभ हैं! सचमुच, पवत्रि आत्मा उनके होठों से बोलता है!'

तब कुछ लोगों ने कहना शुरू कयिा:

'यह अजनबी कौन है जो महाधर्माध्यक्ष की इतनी प्रशंसा कर रहा है? क्या वह उनसे कुछ प्राप्त करने के लिए चापलूसी नहीं कर रहा है?'

सेवा समाप्त होने के बाद, जब आदरणीय एफ्रेम ने संत बेसलि के साथ दोस्ताना बातचीत शुरू की, तो उन्होंने उनसे पूछा:

'आपने मेरी इतनी प्रशंसा क्यों की?'

आदरणीय एफ्रेम ने उत्तर दयिा:

'क्योंकि मैंने आपके दाहनि कंधे पर एक सफेद कबूतर को बैठे देखा, जो आपके कान में वही शब्द फुसफुसा रहा था जो आप लोगों को बता रहे थे। इसके अलावा, आपके होठों से आग की एक जीभ बोली।'

इस पर संत बेसलि ने उनसे कहा:

[1498] कैपाडोसयिा - रोमन साम्राज्य का एक प्रांत - एशयिा माइनर के पूरव में स्थति था। केसरयिा कैपाडोसयिा की राजधानी थी।

'सचमुच, अब मैं समझ गया कि मैंने तुम्हारे बारे में जो सुना है, रेगिस्तान में रहने वाले और मौन के प्रेमी! जैसा कि भविष्यवक्ता दाऊद ने लिखा है: *"एफ्राइम मेरे सिर का कलि है"* (भजन संहिता 59:9)। निश्चय ही, ये भविष्यसूचक वचन आप पर लागू होते हैं, क्योंकि आपने कई लोगों को सद्गुण के मार्ग पर मार्गदर्शन दिया है और उसमें उन्हें मजबूत किया है। आपकी नम्रता और आपके हृदय की दया सभी के लिए प्रकाश की तरह चमकती है।

इसके बाद, बेसिल द ग्रेट ने कहा:

'आदरणीय पिताजी, आप पादरी के पद के लिए अभिषेक क्यों नहीं स्वीकार करते, जबकि आप इसके योग्य हैं?'

'क्योंकि मैं एक पापी हूँ, महामहिम!' एफ्रेम ने एक दुभाषिए के माध्यम से उत्तर दिया।

बेसिल ने कहा, 'काश मेरे भी आपके जैसे पाप होते!' और जोड़ा: 'आओ, हम जमीन पर सिर झुकाएँ।'

जब वे जमीन पर प्रणाम कर चुके, तो संत बेसिल ने आदरणीय एफ्रेम के सिर पर अपना हाथ रखा और एक डिकिन के अभिषेक के लिए निर्धारित प्रार्थना का पाठ किया। तब आदरणीय एफ्रेम तीन दिन तक संत बेसिल के साथ आध्यात्मिक आनंद में रहे। बेसिल ने उन्हें एक डिकिन और उनके दुभाषिए को एक प्रेस्बिटिर नियुक्त किया, और फिर उन्हें शांति से विदा कर दिया।

परम पूज्य एफ्रेम को परम पूज्य तपस्वी अब्राहमियस से बहुत प्रेम था, जिनकी स्मृति 29 अक्टूबर को मनाई जाती है। वे अक्सर एक-दूसरे से मिलने जाते थे और अपनी परस्पर शिक्षाप्रद मैत्रीपूर्ण बातचीत से आध्यात्मिक रूप से लाभान्वित होते थे। और जब धन्य मरियम, अव्राहमियस की भतीजी, शत्रु के प्रलोभनों का शिकार हो गई, तो आदरणीय एफ्रेम ने अपनी प्रार्थनाओं के द्वारा, उसके उद्धार में बहुत योगदान दिया। वह पाप करने वालों के लिए गहराई से दुखी होते थे और उनका पश्चाताप करवाने के लिए बहुत सावधानी बरतते थे।

आदरणीय एफ्रेम कभी-कभी मरुभूमि में[1499] में निवास करते थे, मौन में ईश्वर की सेवा करते हुए, और वहाँ अनेक शिष्यों को एकत्रित करते थे; अन्य समयों में, ईश्वर की आज्ञा से, वे एडेसा नगर में रहते थे, अनेक लोगों को पश्चाताप की ओर ले जाते और अपनी शिक्षाओं के माध्यम से खोई हुई आत्माओं को ईश्वर के लिए जीतते थे। वे आत्मा के लिए लाभदायक शब्दों में इतने समृद्ध और ईश्वर की कृपा से इतने परिपूर्ण थे कि कई अवसरों पर उनकी आवाज़ के तनाव से उनका गला थक जाता था और शब्दों के उच्चारण से उनकी जीभ थक जाती थी; फिर भी उनके भाषण संक्षिप्त नहीं होते थे, और यह और भी अधिक इसलिए था क्योंकि उनका मन गहरी बुद्धि और समझ से परिपूर्ण था[1500] । इसके अलावा, वह

[1499] रेवरेंड फादर ने मिस्र के रेगिस्तानों में भी समय बिताया; वे कुछ समय के लिए माउंट नाइट्रिया में रुके। एक सिरियाक जीवनीकार बताता है कि एफ्रेम वहाँ ईश्वर-चुने हुए संन्यासी पैसियस से मिले, जो 'सीरियाई तपस्वियों में एक महान पिता' थे। जॉन कोलोव कहते हैं, 'हमारे यहाँ सीरिया से ईश्वर का एक पुरुष था, जो पितरों में एक महान वरिष्ठ और मन तथा हृदय से प्रबुद्ध था।'

[1500] संत एफ्रेम ने लेखन का एक विशाल संग्रह पीछे छोड़ा। कुछ में, वह पवित्र धर्मग्रंथों के भाष्यकार हैं; (संत ग्रेगरी के अनुसार, संत एफ्रेम ने एक भाष्य लिखा जो दुनिया की रचना से लेकर बाइबिल की अंतिम पुस्तक तक की अवधि को कवर करता है); अन्य रचनाओं में, वह विधर्मों का उद्घाटनकर्ता और चर्च का भजनकार हैं; और अन्य रचनाओं में, वह ईसाई जीवन के शिक्षक और विशेष रूप से हृदय की पश्चाताप की शिक्षा देने वाले उपदेशक हैं। इस प्रकार की रचनाएँ, मानो, परम पूज्य एफ्रेम की आत्मा की मुहर और साथ ही सभी युगों के लिए उनकी महिमा हैं। निसिबिस के संत ग्रेगरी कहते हैं कि "एफ्रेम के लिए, रोना दूसरों के लिए हवा में सांस लेने के समान था - आँसू उससे दिन-रात बहते थे; फिर भी एफ्रेम का चेहरा आनंद से खिलता और चमकता था, भले ही उसकी आँखों से आँसुओं की धाराएँ बह रही थीं। फिर भी जब एफ्रेम पश्चाताप की बात करते हैं, तो उनके विचार ईश्वर की भलाई की ओर उड़ान भरते हैं, और वे परमपिता की स्तुति और धन्यवाद अर्पित करते हैं। उनके सभी नैतिक उपदेश हार्दिक कोमलता से ओत-प्रोत हैं। एफ्रेम अपने एक से अधिक उपदेशों की शुरुआत इस प्रकार करते हैं: 'हे मेरी आत्मा, पश्चाताप कर; उन आशीर्वादों के लिए पश्चाताप कर जो तुझे ईश्वर से प्राप्त हुए और तूने बर्बाद कर दिए। अपने द्वारा किए गए बुरे कर्मों के लिए पश्चाताप कर। उन सभी बातों के लिए पश्चाताप कर जिनमें ईश्वर ने तेरे प्रति अपना धैर्य दिखाया है। आओ, मेरे भाइयो, आओ, मसीह के सेवको; आओ हम अपने हृदय में पश्चाताप करें और दिन-रात उसके सामने रोएँ। आओ, हम उस भयानक और भीषण न्याय और हमारी बाद की निंदा पर मनन करें।" पश्चाताप की इस भावना में, संत एफ्रेम के प्रवचनों के सामान्य विषय हैं: पश्चाताप, मृत्यु और न्याय की याद, ईश्वर का भय, आत्म-परीक्षण, विनम्रता, घमंड का विरोध, और इसी तरह। – अपनी उच्च शिक्षाओं के लिए, संत एफ्रेम को उनके देशवासियों द्वारा 'सीरिया के भविष्यवक्ता' कहा गया। धन्य जेरोम लिखते हैं: 'एडेसा के डिकिन, एफ्रेम ने इतनी प्रसिद्धि प्राप्त की कि कुछ चर्चों में उनके लेखन को पवित्र धर्मग्रंथों के बाद सार्वजनिक रूप से पढ़ा जाता है।' 'मुझे उसकी प्रशंसा करनी चाहिए,' निसिबिस के ग्रेगरी कहते हैं, 'जो सभी ईसाइयों की जीभ पर है, सीरियाई एफ्रेम, वह एफ्रेम जिसका जीवन और शिक्षाएँ पूरी दुनिया में चमकती हैं।' – संत एफ्रेम ने कई धर्मशास्त्रीय ग्रंथ छोड़े। वे सभी उनके समय के विधर्मों के खिलाफ लिखे गए थे। इनमें शामिल हैं: क) धृष्ट परीक्षकों के खिलाफ 80 शब्द, यानी एटियंस और यूनोमियंस के खिलाफ; ख) 56 उपदेश विधर्मियों के विरुद्ध, जिनमें बार्डेसनेनियों (विधर्मी बार्डेसान के अनुयायी), मार्सियोनाइट्स और मेसालिएनों के लिए खंडन और उपदेश शामिल हैं; c) 'मोती पर', या यीशु मसीह के एक ही व्यक्तित्व में दो स्वभावों के मिलन पर, मार्सियोन और मैनस के विरुद्ध; d) विश्वास पर और यहूदियों के विरुद्ध तीन प्रवचन; e) स्वतंत्रता पर, अंध भाग्य के समर्थकों के विरुद्ध; पश्चाताप पर, जिसमें नोवाटियनों के विरुद्ध बोलते हुए, वह

गहरी विनम्रता से परिपूर्ण थे, और उन्होंने हर तरह से मानवीय सम्मान और क्षणिक महिमा से परहेज़ किया। एक अवसर पर, लोग उसे पकड़कर जबरदस्ती बिशप बनाना चाहते थे। जब एफ्रेम को इस बात की जानकारी मिली, तो वह एक पवित्र मूर्ख का नाटक करने लगा और एक पागल की तरह चौक में अपने कपड़े पीछे से घसीटते हुए इधर-उधर दौड़ने लगा – बिक्री के लिए रखी रोटी और सब्जियाँ उठाकर खाने लगा। यह देखकर, लोगों ने उसे पागल समझ लिया, और वह शहर से भाग गया और तब तक छिपकर रहा जब तक कि उस पद पर एक अन्य बिशप की नियुक्ति नहीं हो गई, जिस पर उन्होंने उसे नियुक्त करने का इरादा किया था। संत दिन-रात निरंतर प्रार्थना में लगे रहते थे। करुणा और आँसुओं के वरदान से युक्त, वे लगातार रोते रहते थे, न्याय के दिन पर ध्यान लगाते थे, जिसके बारे में उन्होंने विस्तार से लिखा और बात की। वह बहुत कम सोते थे और लगभग कुछ भी नहीं खाते थे – बस इतना ही कि गिर न जाएँ और भूख और नींद की कमी से मर न जाएँ। वह पूरी तरह से संसार से परे थे और धन-संपत्ति से अधिक गरीबी से प्रेम करते थे, जैसा कि वे अपनी वसीयत में अपने बारे में कहते हैं:

'एफ्रेम के पास कभी कोई सोना, चाँदी, या किसी भी प्रकार का खजाना नहीं था, जो धन्य शिक्षक मसीह की इच्छा को पूरा करता था, जिन्होंने आज्ञा दी थी: "पृथ्वी पर कुछ भी प्राप्त न करो" (देखें मत्ती 6:25 आदि)।'

उन वर्षों में अपोलिनारिस नाम का एक विधर्मी रहता था, जो प्रभु के अवतार के संबंध में झूठी बुद्धि का प्रचार करता था। वह वाक्पटु और हेलेनिस्टिक शिक्षा में पारंगत था, और परिणामस्वरूप उसने परमेश्वर की कलीसिया को बहुत परेशान किया और कई लोगों को अपनी विधर्म में भटका दिया। इस विधर्मी ने अपनी पूरी युवावस्था से लेकर वृद्धावस्था तक, अपना सारा श्रम और हर प्रयास, ऑर्थोडॉक्स को भ्रष्ट करने और उन्हें अपनी भ्रांति में ले जाने के लिए समर्पित कर दिया। उसने ऑर्थोडॉक्स के खिलाफ कई किताबें लिखीं, जिनमें से दो विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं, क्योंकि वे उसके हानिकारक सिद्धांत की संपूर्णता को सबसे पूरी तरह से व्यक्त करती हैं। उसने इनका इस्तेमाल हथियारों की तरह किया, और मौखिक बहसों के माध्यम से ऑर्थोडॉक्स के खिलाफ युद्ध छेड़ा। उसकी ये किताबें एक महिला, जो उसके साथ रहकर रहती थी, को सुरक्षित रखने के लिए सौंपी गई थीं। आदरणीय एफ्रेम ने, इन पुस्तकों के बारे में जानकर, इस विधर्मी चालाकी के खिलाफ अपनी ही, और भी आश्चर्यजनक युक्ति सोची: वह गुप्त रूप से उस महिला के पास गया और अपोलिनारिस की बहुत प्रशंसा की, साथ ही खुद को उसका शिष्य बताया। जैसे कि वह उससे अनजान ज्ञान सीखना चाहता हो, उसने उस महिला से अपोलिनारिस की किताबें थोड़ी देर के लिए उधार देने के लिए कहा, जिन्हें वह अपने पास रखती थी, ताकि वह उनमें से सबसे उल्लेखनीय अंशों को संक्षेप में नकल कर सके। महिला, यह मानकर कि वह वास्तव में उसके दोस्त का शिष्य है, उसे दोनों किताबें इस शर्त पर दे दी कि वह उन्हें जल्द से जल्द वापस कर देगा और किसी को उनके बारे में नहीं बताएगा। संत एफ्रेम, किताबें लेकर, उन्हें अपने मठ में ले गए और कुछ गोंद तैयार करके, एक-एक करके प्रत्येक पन्ने को मोड़कर उन्हें एक साथ चिपका दिया, जब तक कि अंत में उन्होंने सभी को इस तरह चिपका नहीं दिया कि किताबें, मानो, लकड़ी या पत्थर का एक ही टुकड़ा बन गईं, और एक भी पन्ना दूसरे से अलग नहीं हो सकता था। फिर उन्होंने किताबें उस महिला को वापस कर दीं। उसने, बदले में, उन्हें लिया और, अंदर देखे बिना, उन्हें उनकी जगह वापस रख दिया। तब ऑर्थोडॉक्स और विधर्मी अपोलिनारिस, जो अब वृद्ध हो चुका था, के बीच एक विवाद छिड़ गया।

पापों को क्षमा करने के लिए चर्च के अधिकार पर चर्चा करते हैं और सहस्राब्दी राज्य के सिद्धांत का खंडन करते हैं; पुरोहित पद पर; स्वर्ग पर और अंतिम न्याय पर। – धर्म और धार्मिकता के एक कट्टर रक्षक, संत एफ्रेम बार्डेसान और एरियस के संप्रदायों द्वारा एडसा और मेसोपोटामिया में मचाई गई हलचल के प्रति उदासीन नहीं रह सके। संप्रदायियों के विरोध में, जो गीतों के काव्यात्मक रूप में अपनी त्रुटियों को प्रस्तुत करते थे और अपने छंदों की सुंदरता से अनुभवहीनों को मोहित करके, आसानी से और स्थायी रूप से अपने संप्रदायिक विचारों को स्थापित कर देते थे, संत एफ्रेम ने स्वयं पवित्र धर्मग्रंथ के आधार पर, ईश्वर और हमारे साथ उनके संबंध के बारे में सच्चा सिद्धांत समझाना शुरू किया, उसी काव्यात्मक रूप में। लोग पवित्र तपस्वी के भजनों को उत्सुकता से सुनते थे और विधर्मी गीतों को भूल जाते थे। विधर्मी संत एफ्रेम की सफलता से इतने नाराज़ थे कि एक अवसर पर उन्होंने उन पर पत्थरों और हथियारों से हमला किया, और उन्हें लगभग मार ही डाला; लेकिन इससे उनके धर्म के प्रति उत्साह में बिल्कुल भी कमी नहीं आई। ये सभी कृतियाँ संत एफ्रेम द्वारा भक्तिपूर्ण चिंतन के रूप में लिखी गई थीं। उनका उद्देश्य इन्हें आम लोगों के उपयोग के लिए रखना था, और आंशिक रूप से चर्च में गाने के लिए भी, और ये छंदों में लिखी गई हैं। संत एफ्रेम ने कई मार्मिक प्रार्थनाएँ और संस्कार संबंधी भजन भी लिखे। उनके ऐसे ही भजन मसीह के जन्म के लिए हैं, जो अपनी विशेष गंभीरता के लिए जाने जाते हैं; वह अंतिम संस्कार में गाए जाने वाले अत्यंत मार्मिक स्टिचेरा के रचयिता भी हैं; उनके द्वारा रचित प्रार्थनाओं में, महा-व्रत के दौरान पढ़ी जाने वाली मार्मिक और हार्दिक प्रार्थना विशेष रूप से प्रसिद्ध है: 'हे मेरे जीवन के प्रभु और स्वामी! आलस्य, स्वच्छंदता या व्यर्थ वार्तालाप की भावना मुझ पर हावी न होने दें। परन्तु हे प्रभु, हे स्वामी, मुझे, अपने दास को, पवित्रता, नम्रता, धैर्य और प्रेम की भावना प्रदान करें। हे प्रभु, हे स्वामी, मुझे अपनी ही पापों को देखने की क्षमता प्रदान करें, और मेरे भाई को दोष न देने दें; युगों-युगों तक धन्य हो आप। आमीन।"

बहसों में अपनी पूर्व की तीव्र बुद्धि न रहने और वृद्धावस्था के कारण स्मृति-क्षीणता होने के कारण, उसने उन्हीं किताबों की मदद से ऑर्थोडॉक्स पर हावी होने की कोशिश की; लेकिन, उन्हें लेने के बाद, वह उन्हें खोल नहीं सका, क्योंकि पन्ने एक-दूसरे से मजबूती से चिपककर पत्थर जैसे कठोर हो गए थे। वह अत्यधिक लज्जित हो गया और पराजित व अपमानित होकर परिषद से चला गया; और कुछ ही समय बाद, दुख और अत्यधिक लज्जा के कारण, उसने अपनी जान दे दी, और अपमान के साथ अपनी शापित आत्मा को बाहर निकाल दिया।

हमारे पूजनीय पिता एफ्रेम ने, कई वर्षों तक एक ईश्वर-भक्त जीवन जीने और कई लोगों को मोक्ष का मार्ग दिखाने के बाद, समय रहते ही अपने निधन का पूर्वानुमान लगाया और अपने शिष्यों के लिए एक शिक्षाप्रद वसीयत लिखी। संक्षिप्त बीमारी के बाद, वे अपनी वृद्धावस्था में प्रभु के पास चले गए[1501] । उनके पवित्र शरीर को सीरिया के एडेसा की सीमाओं के भीतर रेगिस्तान में स्थित उनके मठ में दफनाया गया था, जबकि उनकी पवित्र आत्मा अब प्रभु के सिंहासन के सामने खड़ी है, हमारे लिए मध्यस्थता करते हुए, ताकि हम हमारे प्रभु यीशु मसीह की कृपा और दया से, उनकी प्रार्थनाओं के द्वारा, अपने पापों की क्षमा प्राप्त कर सकें, जिसे युगानुयुग महिमा हो। आमीन।

ट्रोपारियन, स्वर 8:

आपने अपने आँसुओं की धाराओं से उजाड़ रेगिस्तान को उपजाऊ बनाया, और अपने आहों की गहराई से सौ-सौ परिश्रमों द्वारा फल दिया; और आप संसार के लिए एक दीपक थे, चमत्कारों को प्रकाशित करते हुए, एफ्रेम, हमारे पिता। मसीह ईश्वर से प्रार्थना करें कि हमारी आत्माएँ उद्धार पाएँ।

कॉन्टाकियन, स्वर 2:

न्याय के घण्टे की पूर्वदृष्टि से, आप कड़के रोए, एफ्रेम, यद्यपि वाणी में मौन, फिर भी आप कर्मों में सक्रिय एक शिक्षक थे, हे पूजनीय। अत; हे संसार के सर्वपिता, आप सुस्त लोगों को पश्चाताप के लिए प्रेरित करते हैं।

गुफाओं के संत एफ्रेम, पेरियास्लाव के बिशप का जीवन।

28 जनवरी को स्मरणोत्सव

बॉयर के पुत्र धन्य बरलाम के बाद, धन्य खुसरो एफ्रेम आए, एक कुलीन जन्म और विशिष्ट वंश के व्यक्ति, जो राजकुमार इज़यिास्लाव के बहुत प्रिय थे[1502] और जिन्हें राजकुमार ने अपनी पूरी संपत्ति का प्रबंधन सौंपा था, राजकुमार के घर से हमारे पूजनीय पिता एंथनी के पास आए और उनसे राजकुमार की सेवा करने के बजाय, उन्हें स्वर्गीय राजा की सेवा में स्वीकार करने और उन्हें मठ के पवित्र दैवीय वस्त्र पहनाने के लिए कहा। आदरणीय एंथनी ने, उसे आत्मा के उद्धार के बारे में उपदेश देने के बाद, धन्य निकोन को उसे मुंडन करने का कार्य सौंपा। इस आज्ञा के अनुसार, निकोन ने धन्य एफ्रेम का मुंडन किया और उसे संन्यासी वस्त्र पहनाया। लेकिन दुष्ट, जो हर भलाई से नफरत करता है, ने इस धन्य एफ्रेम के मुंडन के लिए पूजनीयों पर बड़ी विपत्ति लाई, ठीक वैसे ही जैसे उसने धन्य बिलाम के मुंडन के लिए की थी, जैसा कि पूजनीय एंथनी और निकोन के जीवन में दर्ज है। वास्तव में, अंधकार का राजकुमार, यह देखकर कि वह उस पवित्र सभा से पराजित हो रहा था जो अंधेरी गुफा में इकट्ठी हुई थी, और यह महसूस करते हुए कि उस समय से यह स्थान महिमामय हो जाएगा, अपने ही पतन पर दुखी हुआ। उसने अपनी शत्रुतापूर्ण साज़िशों के माध्यम से, राजकुमार इज़्यास्लाव के हृदय में पूजनीयों के विरुद्ध उकसाना शुरू कर दिया, और उसे पवित्र सभा को भंग करने के लिए उकसाया। हालाँकि, वह ऐसा करने में असमर्थ रहा और स्वयं पूजनीयों की प्रार्थनाओं से भगा दिया गया; वह उसी गड्ढे में गिर पड़ा जिसे उसने तैयार किया था। यह सच है कि आदरणीय निकोन, जिन्होंने धन्य एफ्रेम का मुंडन किया था, को राजकुमार के सामने लाया गया और कड़ी फटकार लगाई गई, और स्वयं भाईचारे के प्रमुख, आदरणीय एंथनी को, अपने भाइयों के साथ,

[1501] संत एफ्रेम का वर्ष 373 में एदेसा शहर में शांतिपूर्वक निधन हो गया।

[1502] इज़्यास्लाव यारोस्लाविच – कीव के महान राजकुमार; उन्होंने 1054 से 1068 तक शासन किया।

राजकुमार के क्रोध के कारण गुफा से बाहर निकाल दिया गया; लेकिन जल्द ही बाद में, राजकुमारी द्वारा राजकुमार इज्यास्लाव से मध्यस्थता करने के बाद, या यूँ कहें – स्वर्ग की रानी, परमेश्वर की अति पवित्र माता, की प्रार्थनाओं के द्वारा, महिमा के राजा, मसीह परमेश्वर के समक्ष – भिक्षु अपने विरोधी – शैतान को हराकर, रणभूमि से लौटे पराक्रमी योद्धाओं की तरह, अपनी गुफा में लौट आए। इसके बाद, वे हर समय गुफा में रहे, परमेश्वर की महिमा और स्तुति करते हुए।

जो कुछ भी हुआ था, उसके बाद, हमारे पूजनीय पिता एफ्रेम ने, दुश्मन द्वारा पूरे पवित्र दल को पहुँचाए गए दुख को देखकर, गुफा में ईश्वर-प्रसन्न जीवन, निरंतर प्रार्थना, उपवास और पूरी रात की जागरण के द्वारा उसके विरुद्ध स्वयं को शक्तिशाली रूप से सशस्त्र किया। अपने पिता और मार्गदर्शक, परम पूज्य एंथनी की हर बात पर अमल करते हुए, उन्होंने उनके सभी गुणों का अनुकरण करने में बहुत उत्साह दिखाया। इसी कारण, आदरणीय एंथनी के उदाहरण का अनुसरण करते हुए, जिन्होंने रूस से पवित्र माउंट अथोस तक यात्राएँ कीं, हमारे आदरणीय पिता एफ्रेम पवित्र स्थानों की लालसा से उत्साह से भर गए। वे स्वयं पवित्र अथोनाइट पिताओं के दैवीय जीवन शैली को देखना चाहते थे, ताकि वे उनके सदाचारी श्रमों के प्रति प्रेम से प्रेरित हो सकें। इसलिए उन्होंने पूजनीय एंथनी से ग्रीस की अपनी यात्रा के लिए आशीर्वाद देने का आग्रह किया। पूजनीय पिता, उनकी तीर्थयात्रा के पुरस्कार से उन्हें वंचित नहीं करना चाहते थे, इसलिए उन्होंने उन्हें आशीर्वाद और प्रार्थना के साथ विदा किया, ठीक वैसे ही जैसे नूह ने एक बार जलप्रलय के समय जहाज़ से एक कबूतर को जैतून की टहनी लाने के लिए भेजा था। तब हमारे पूजनीय पिता एफ्रेम, उस आशीर्वाद और प्रार्थना को मानो दो कबूतरों के पंखों के समान ग्रहण कर, अपने सामने पथ पर चल पड़े और कॉन्स्टेंटिनोपल पहुँचे। रास्ते में हर जगह उन्होंने संतों के जीवन का अवलोकन किया और उन तपस्वियों, जो धरती के देवदूत थे, के आवासों का दौरा किया, जो आध्यात्मिक पोषण, आत्मा-उद्धारक वार्तालाप और पवित्र संतों की शिक्षाओं से भरपूर तृप्त हो रहे थे। परिणामस्वरूप, उन्होंने अपनी यात्रा को कुछ धीमा कर दिया। हालाँकि, जब अपने देश के लिए उनके प्रेम ने उन्हें वापस खींचा, तो वे—बिना किसी जैतून की टहनी के अपने 'आध्यात्मिक जहाज़' पर वापस न लौटने के लिए—स्टूडियोन के पवित्र मठ के नियम की एक प्रतिलिपि बनाई[1503] और उसे कीव केव्स मठ में ले आए; इस कारण से, जब वे ग्रीस में थे, धन्य मठाधीश थियोडोसियस ने, जब वे ग्रीस में थे, पूजनीय एंथनी की ओर से उन्हें पत्र लिखा था। पवित्र स्थलों से लौटने पर, वे केवल थोड़े समय के लिए पेचेरस्क मठ में रहे, लेकिन उस दौरान उन्होंने संतों के आध्यात्मिक लाभ के लिए कई सद्गुणों का आदर्श प्रस्तुत किया, जिससे सभी उनके लिए ईश्वर का धन्यवाद करने लगे। उस समय, पवित्र बिशप पीटर ऑफ पेरियास्लाव का निधन हो गया। ईश्वर की कृपा से, सभी की सलाह पर और ग्रैंड प्रिंस वसेवोल्ड यारोस्लाविच[1504] के अनुरोध पर, हमारे पूजनीय पिता एफ्रेम को कीव के मेट्रोपॉलिटन, उनकी उत्कृष्टता जॉन द्वारा पेरियास्लाव का बिशप नियुक्त किया गया।

धर्मप्राचीर का उच्च पद प्राप्त करने के बाद, उन्होंने अपने धर्मप्रांत के भीतर चर्चों की स्थापना के लिए महान उत्साह दिखाना शुरू कर दिया। उन्होंने इसे सबसे पवित्र ईश्वर के नाम की महिमा को बढ़ाने के उद्देश्य से अपना सबसे सम्मानित और प्रिय कार्य माना। ईश्वर ने उन्हें इस प्रयास में सफलता प्रदान की: केवल कुछ ही वर्षों में, उन्होंने संत माइकल द आर्कएन्जेल को समर्पित एक बड़ी और भव्य पत्थर की चर्च का निर्माण किया, जिसे उन्होंने पेरियास्लाव धर्मप्रांत का कैथेड्रल घोषित किया; फिर, इस चर्च के द्वार पर, उन्होंने सेंट थियोडोर का चर्च बनाया, और अंत में, पत्थर के चर्च के द्वार के सामने, उन्होंने सेंट एंड्रयू द फर्स्ट-कॉल्ड का चर्च बनाया। उन्होंने पेरियास्लावल नगर को विभिन्न चर्च भवनों से भी सुशोभित किया, जो सभी पत्थर के बने थे, ऐसा कुछ जो पहले वहाँ मौजूद नहीं था[1505] । यह सब कुछ थोड़ी ही देर बाद नष्ट हो गया जब, ईश्वर की अनुमति से, हमारे पापों की सजा के रूप में, दुष्ट

[1503] स्टुडाइट नियम का संकलन 9वीं शताब्दी की शुरुआत में कॉन्स्टेंटिनोपल में मठ के संस्थापक, सेंट थियोडोरेट ऑफ स्टुडियोन ने किया था। 11वीं शताब्दी के अंत में, इसे रूसी चर्च द्वारा अपनाया गया और यह 14वीं शताब्दी के मध्य तक उपयोग में रहा, जब यह यरूशलेम नियम के लिए रास्ता देने लगा; हालाँकि, कुछ स्थानों पर यह बहुत लंबे समय तक लागू रहा, और कुछ रूसी मठों में इसका पालन हाल के समय तक किया जाता रहा।

[1504] वसेवोल्द-आंद्रेयेविच यारोस्लाविच – पेरियास्लाव के राजकुमार (पेरियास्लाव-यूज़्नी; पेरियास्लाव के राजतंत्र की सीमा कीव से लगी हुई थी) – बाद में कीव के महा राजकुमार (1078–1093)।

[1505] इसके अलावा, सुज़दल में - जो एक दूरस्थ शहर था, लेकिन पेरियास्लाव के राजकुमार के अधिकार क्षेत्र में आता था - संत एफ्रेम ने दो चर्च भी बनाए।

ततार राजकुमार बटू ने रूस की भूमि पर आक्रमण किया[1506] । तब पेरियास्लावल के गौरवशाली नगर पर भी विनाश की बारी आई।

अपने एपिस्कोपेट के दौरान, पूज्य एफ्रेम हमारे पवित्र पिता गुफाओं के थियोडोसियस की पूजनीय अवशेषों के स्थानांतरण में भी उपस्थित थे। सदाचारी और ईश्वर-प्रसन्न जीवन जीने के बाद, उन्होंने इस सांसारिक जीवन को त्याग दिया, और उनकी आत्मा प्रभु के सिंहासन पर आरोहण कर गई, जो मानव हाथों से नहीं बना है[1507] । उनके पवित्र शरीर को सम्मान के साथ उसी चर्च में सुलाया गया जिसे उन्होंने स्थापित किया था, जिसमें उन्होंने पेरियास्लाव धर्मप्रांत की स्थापना की थी। हे प्रभु, स्वर्गीय राजा, हमें भी हमारे पूजनीय पिता एफ्रेम की प्रार्थनाओं की पुकार पर इकट्ठी भेड़ों की भाँति, आपके सिंहासन के सामने खड़े होने के योग्य ठहराएँ, ताकि हम उनके साथ मिलकर, प्रधान चरवाहे यीशु की, और उनमें और उनके साथ परमपिता और पवित्र आत्मा की, युगानुयुग महिमा कर सकें। आमीन।

नोवोटोरज़्स्क के पूजनीय एफ्रेम की स्मृति।

28 जनवरी को स्मरण किया जाता है

धर्मनिष्ठ महाप्रinces, रूस के पवित्र शहीद बोरिस और ग्लेब के दिनों में, रूस में एक ही माँ से तीन भाई पैदा हुए थे: एफ्राइम, जिनकी स्मृति 28 जनवरी को मनाई जाती है, जॉर्ज और मूसा। वे सभी उग्रियों की भूमि[1508] से थे और उन सभी ने बोयार की पदवी धारण करके महाप्रinces बोरिस और ग्लेब की सेवा की। जब संत बोरिस की हत्या अल्ता नदी पर की गई थी[1509] , तो बोयार एफ्राइम वहाँ राजकुमार बोरिस के साथ नहीं थे। इसीलिए वह मारे जाने से बच गया, जबकि उसका भाई जॉर्ज सेंट बोरिस के साथ मारा गया: वह अपने स्वामी के बगल में गिरा, और हत्यारों ने उस सोने के आभूषण के लिए उसका सिर काट दिया जो सेंट बोरिस ने उस पर रखा था। जहाँ तक उनके तीसरे भाई मूसा[1510] की बात है, जो हत्या के समय राजकुमार के साथ था, वह भागकर मौत से बच गया, और बाद में उसे एक पोलिश महिला के हाथों अपनी पवित्रता के लिए उस से अधिक कष्ट सहना पड़ा जितना कि यूसुफ को एक बार पोतीफर के हाथों झेलना पड़ा था। अंत में, वह कीव केव्स मठ में एक पवित्र भिक्षु बन गया, जैसा कि उसकी जीवनी में दर्ज है। – धर्मनिष्ठ राजकुमार बोरिस की हत्या के बाद, यही धन्य एफ्रेम उस स्थान पर गए जहाँ यह अन्यायपूर्ण हत्या की गई थी और, रोते-बिलखते हुए, अपने भाई का शव खोजने लगे – लेकिन उन्हें केवल उसका सिर मिला, जिसे उन्होंने अपनी मृत्यु तक अपने पास रखा। अपना बोयार (अभिजात वर्ग) का दर्जा और घर त्यागकर, वह टॉर्ज़ोक शहर[1511] पहुँचे और शहर के पास ट्वर्त्सा नदी के किनारे एक बहुत ही सुंदर जगह पाकर, उन्होंने वहाँ अपने शासकों, महान राजकुमारों और पवित्र यातना-भोगियों बोरिस और ग्लेब के नाम पर एक चर्च बनवाया; और कई भिक्षुओं को इकट्ठा करके, उन्होंने एक मठ की स्थापना की, जबकि वह स्वयं आर्चिमैंड्राइट[1512] बन गए। उपवास और प्रार्थना में बहादुरी से परिश्रम करने के बाद, उन्होंने परमेश्वर की कृपा प्राप्त की और 1053 में निधन कर गए। उनके निधन के बाद, उनके ताबूत पर कई चमत्कार हुए[1513] और बीमारों को चंगा किया गया; ये आज भी उन लोगों को प्रदान किए जाते हैं जो विश्वास के साथ आते हैं, हमारे परमेश्वर मसीह की महिमा के लिए, जो हमेशा के लिए पिता और पवित्र आत्मा के साथ महिमामय हैं। आमेन।

[1506] ततार खान बटू चंगेज खान का पोता था। बटू का आक्रमण 1237 में शुरू हुआ और 1240 में कीव पर कब्जा करने और रूसी भूमि को वश में करने के साथ समाप्त हुआ।

[1507] पेरियास्लाव के संत एफ्रेम की मृत्यु 1096 में हुई। उनके अवशेष संत एंथनी की गुफाओं में रखे गए हैं।

[1508] उग्रियों का देश, जिसे अन्यथा हंगरी के नाम से जाना जाता है, कार्पेथियन पहाड़ों के पास मध्य डेन्यूब के किनारे एक विशाल देश है; यह अब ऑस्ट्रो-हंगेरियन साम्राज्य का हिस्सा है।

[1509] संत बोरिस, धर्मनिष्ठ राजकुमार, की हत्या 1015 में हुई थी।

[1510] संत मूसा उग्रियन, गुफाओं के चमत्कार करने वाले; उनका पर्व दिवस 26 जुलाई है

[1511] टॉर्ज़ोक – अब ट्वर गवर्नोरेट में एक जिला शहर।

[1512] नोवोटॉर्ज़्स्क में बोरिस और ग्लेब मठ की स्थापना आदरणीय संत ने 1038 में की थी।

[1513] आदरणीय एफ्रेम के अवशेष अब नोवोटॉर्ज़्स्क में बोरिस और ग्लेब मठ में एक भव्य रूप से सजाए गए चाँदी के अवशेष-पात्र में विराजमान हैं – और उनके बगल में उनके भाई जॉर्ज का सिर पड़ा है, जिसे उनकी वसीयत के अनुसार उनके ताबूत में रखा गया है।

आदरणीय पलाडियस तपस्वी की स्मृति।

28 जनवरी को स्मरणोत्सव

आदरणीय पल्लैडियस ने अपने एकांत जीवन के द्वारा ईश्वर को प्रसन्न किया। एक पहाड़ पर अपना एक छोटा सा झोपड़ी बनाकर और उसमें खुद को बंद करके, उन्होंने खुद को अखंड जागरण, प्रार्थना और उपवास के लिए समर्पित कर दिया। उनके परिश्रम के लिए, ईश्वर ने उन्हें चमत्कार करने का वरदान देकर गौरवान्वित किया। एक बार, सोने की एक बड़ी खेप ले जा रहा एक व्यापारी की हत्या कर दी गई, और रात में उसके हत्यारे का शव संत की झोपड़ी के दरवाजे पर फेंक दिया गया। जब सुबह हुई और अपराध का पता चला, तो सभी ने व्यापारी की हत्या का आरोप संत पर लगाना शुरू कर दिया। भीड़ द्वारा घेर लिए जाने पर, संत ने प्रार्थना की और अपनी प्रार्थना के द्वारा, मृतक को जीवित कर दिया। जागने पर, उसने अपने हत्यारों के नाम बताए और हत्या के मामले में संत की बेगुनाही साबित की। और आदरणीय संत ने कई अन्य चमत्कार भी किए। सद्गुणों में पारंगत, आदरणीय पल्लैडियस ने शांतिपूर्वक ईश्वर के पास प्रस्थान किया, और ईश्वर के चर्च के लिए अपनी शिक्षाप्रद रचनाएँ छोड़ गए[1514] ।

11 फरवरी

29 जनवरी (पुराना संस्करण)

पवित्र शहीद इग्नाशियस द गॉड-बेयरर के अवशेषों का स्थानांतरण।

29 जनवरी को स्मरणोत्सव

जब संत इग्नेशियस द गॉड-बेयरर को सम्राट ट्राजन के आदेश पर रोम में मसीह के लिए जंगली जानवरों द्वारा टुकड़ों में फाड़ दिया गया[1515] , जैसा कि उनकी जीवनी में वर्णित है, तो उनके कुछ बड़े हड्डियाँ बची रहीं। उस समय रोम में मौजूद विश्वासियों ने उन्हें इकट्ठा किया और श्रद्धापूर्वक शहर के भीतर एक सम्मानित स्थान पर रख दिया; बाद में, उसी ट्राजन के शासनकाल के दौरान, उन्हें शहर की सुरक्षा के लिए – एंटिओक में स्थानांतरित कर दिया गया, बीमारों के उपचार के लिए, उनके संपूर्ण आध्यात्मिक झुंड के सांत्वना के लिए, और मसीह परमेश्वर की महिमा के लिए, जिसके नाम के लिए उन्होंने उत्साहपूर्वक[1516] कष्ट सहे। इस पर अधिक विस्तृत जानकारी 20 दिसंबर के लिए उनकी जीवनी में दी गई है।

हमारे पूजनीय पिता लॉरेंस, गुफाओं के तपस्वी का जीवन

29 जनवरी को स्मरण किया जाता है

गुफाओं के पूजनीय तपस्वियों, इसाक और निकिता पर आए परीक्षण के बाद, उसी पवित्र गुफाओं मठ में परिश्रम करने वाले धन्य लॉरेंस ने प्रसिद्धि प्राप्त की; वह भी, मसीह के एक बहादुर सैनिक के रूप में, आत्माओं के विनाशक और तपस्वियों के शत्रु, शैतान के विरुद्ध, केवल अपनी ही शक्ति से, युद्ध छेड़ने के लिए। वह कठोर एकांत में प्रार्थना के लिए स्वयं को समर्पित करना चाहता था, इस बात से आश्वस्त था कि यह ठीक एक तपस्वी का जीवन ही है जिसके बारे में प्रभु इन शब्दों में कहते हैं: *'परन्तु जब तुम प्रार्थना करो, तो अपने कमरे में जाओ, और अपना दरवाज़ा बन्द करके अपने उस पिता से प्रार्थना करो जो गुप्त में है; और तुम्हारा पिता, जो गुप्त में किया हुआ देखता है, तुम्हें खुले तौर पर पुरस्कृत करेगा'* (मत्ती 6:6)। लेकिन पवित्र पेचेर्स्क मठ में सम्मानित पादरियों ने उन्हें ऐसा करने के लिए दृढ़ता से मना

[1514] सम्माननीय पल्लैडियस तपस्वी चौथी शताब्दी के अंत में सीरिया के एंटिओक में एक तपस्वी के रूप में रहते थे।

[1515] 20 दिसंबर, वर्ष 107 में

[1516] संत इग्नेशियस द गॉड-बेयरर के अवशेषों का पहला स्थानांतरण वर्ष 108 में हुआ; दूसरा, उपनगरों से स्वयं एंटिओक में, वर्ष 438 में हुआ। बाद में (7वीं शताब्दी में), उनके अवशेषों को रोम ले जाया गया, जहाँ वे अब संत क्लेमेंट चर्च में रखे गए हैं।

कयिा, जहाँ उद्धार की तलाश करने वाले पादरयिों के खलिाफ साजशि रचने में शैतान सबसे अधकि सक्रयि था। उन्होंने याद दलिाया कि कैसे, यहाँ, दुश्मन इसाक और नकिति पर वजिय प्राप्त कर चुका था, जन्हिोंने अकेले एकांत में उसके साथ कुश्ती की थी; जनि दोनों को बहुत प्रार्थनाओं के बाद ही होश में लाया जा सका। फरि लॉरेंस, भाइयों से वदिा लेकर, प्रंसि इज्यास्लाव द्वारा नर्मिति[1517] के संत डेमेट्रयिस द ग्रेट मार्टायर के मठ में चले गए, और वहाँ एकांत में तपस्या में लग गए। उन्होंने सबसे कठोर अनुशासन का जीवन जीना शुरू कर दयिा और अपनी मुक्ति के लिए परम उत्साह दखिाया, प्रत्येक बीतते दनि के साथ और भी अधकि परशि्रम करते हुए, संयम और भूख के माध्यम से सभी कामुक इच्छाओं को दबाते हुए, उन्हें आध्यात्मकि तलवार—अर्थात् प्रार्थना की शक्ति—से जड़ से उखाड़ते हुए, और अपने आँसुओं के पानी से दुश्मन के आग के तीरों को बुझाते हुए। इस प्रकार, ईश्वर की कृपा से, उन्होंने न केवल स्वयं शैतान के तीरों से बचाव कयिा, बल्कि सर्व-उदार प्रभु से लोगों के वभिन्नि घावों और बीमारयिों को चमत्कारकि रूप से ठीक करने तथा दुष्ट आत्माओं को भगाने का वरदान भी प्राप्त कयिा।

एक अवसर पर, एक राक्षस-ग्रस्त व्यक्ति—जो इतना उग्र और शक्तशिाली था कि एक पेड़ जसिे दस आदमी मुश्कलि से उठा सकते थे, उसे वह अकेले ही आसानी से उठाकर दूर फेंक सकता था—को कीव से कई अन्य लोगों के साथ उपचार के लिए आदरणीय लॉरेंटयिस के पास लाया गया। उस धन्य तपस्वी ने, अपने आध्यात्मकि गृह, पवत्रि गुफाओं के मठ को ईश्वर की कृपा से महमिामय बनाना चाहकर, आदेश दयिा कि इस व्यक्ति को वहाँ ले जाया जाए। तब उस पसिति व्यक्ति ने चल्लिाना शुरू कर दयिा:

'तुम मुझे कसिके पास भेज रहे हो? मैं तो गुफा के पास भी जाने की हम्मित नहीं करता, क्योंकि वहाँ कई संत रहते हैं। मठ में स्वयं तीस पवत्रि भक्षिु हैं, जनिसे मैं डरता हूँ– जबकि दूसरों के साथ मैं संघर्ष करता हूँ।'

जब उस दैत्य-ग्रस्त व्यक्ति ने पवत्रि गुफाओं के मठ पर वरिाजमान कृपा के बारे में कहा, तो आदरणीय महंत ने फरि से आदेश दयिा कि उसे जबरदस्ती वहाँ ले जाया जाए, ताकि उसने जो कुछ भी कहा था, उसे और अधकि पूरी तरह से सत्यापति कयिा जा सके। उस व्यक्ति को ले जाने वालों ने, यह जानते हुए कि वह कभी पवत्रि गुफाओं के मठ नहीं गया था और वहाँ कसिी को नहीं जानता था, उससे पूछा:

'ये तपस्वी कौन हैं जनिसे तुम डरते हो?'

उस समय, गुफाओं के मठ में एक सौ अठारह भक्षिु थे।

उस पशिाचग्रस्त व्यक्ति ने उनमें से तीस के नाम गनिाए और कहा:

'वे सभी मुझे एक ही शब्द से बाहर नकिाल सकते हैं।'

तब उसे ले जा रहे लोगों ने उससे एक बार फरि कहा:

'हम तुम्हें एक गुफा में बंद करना चाहते हैं।'

इस पर उसने उत्तर दयिा:

'मेरे लिए मृतकों से लड़ने का क्या फायदा? क्योंकि उनके पास अपने भक्षिुओं और उन सभी के लिए ईश्वर से प्रार्थना करने की कहीं अधकि हम्मित है जो उनके पास आते हैं। लेकनि अगर आप मेरी लड़ाई की क्षमता देखना चाहते हैं, तो मुझे मठ ले चलिए: उन तीस पुरुषों के अलावा, मैं बाकी सभी से लड़ सकता हूँ।'

तब उसने अपनी क्षमताएँ दखिाना शुरू कयिा, और हब्रि्, लैटनि, ग्रीक—संक्षेप में, उन सभी भाषाओं में बोलने लगा, जन्हिें उसने पहले कभी सुना भी नहीं था। जो लोग उसके साथ आए थे, वे वस्मिति हो गए और उसके बोलने के ढंग में आए परविर्तन तथा वभिन्नि भाषाओं में बोलने की उसकी क्षमता को देखकर बहुत चकति हुए। इसके बाद, मठ में प्रवेश करने से पहले, उस पर सवार अशुद्ध आत्मा उस व्यक्ति से नकिल गई; वह चंगा हुआ व्यक्ति समझदारी से बोलने लगा, और उसके साथ आए लोग आनंद से भर गए। फरि, वे सभी एक साथ, परमेश्वर की स्तुति करने के लिए गुफाओं के पवत्रि और चमत्कारकि चर्च में प्रवेश कएि। यह सुनकर, मठाधीश पूरे समुदाय के साथ चर्च में आए। ठीक हुए आदमी ने न तो मठाधीश को पहचाना और न ही उन तीस आदमयिों में से कसिी को, जनिके नाम उसने वशीभूत होने के दौरान लिए थे। फरि उन्होंने उससे पूछना शुरू कयिा:

'तुम्हें कसिने चंगा कयिा?'

परमेश्वर की परम पवत्रि माता की चमत्कारी प्रतमिा को नहिारते हुए, उसने उत्तर दयिा:

[1517] थेस्सालोनकिी के महान शहीद सेंट डेमेट्रयिस का मठ पेचेरस्क मठ के पास स्थति था। 1128 में, इसे पेचेरस्क मठ से जोड़ दयिा गया था।

'तीस पवत्रि पुरुष हमारे पास उसके साथ आए, और मैं ठीक हो गया।'

उसे उन सभी के नाम याद थे, फरि भी वह उनमें से कसिी को भी देखकर पहचान नहीं सका।

तब वे सभी एक साथ परमेश्वर, उनकी परम पवत्रि माता और उनके पवत्रि सेवकों की स्तुति करने लगे।

[1518]इस प्रकार परमेश्वर की कृपा से कीव-पेचेरस्क लाव्रा का पवत्रि स्थल प्रसद्धि हो गया, जैसा कि धन्य तपस्वी लॉरेंस द्वारा घोषति कयिा गया था, जन्हिोंने कुछ समय बाद कीव-पेचेरस्क लाव्रा को छोड़ दयिा और टुरोव के सहिासन पर पदोन्नत हुए[1519] । संत लॉरेंस के धन्य नधिन के बाद, उनके शरीर को कीव-पेचेरस्क लावरा में स्थानांतरति कयिा गया और गुफाओं में सम्मानपूर्वक दफनाया गया, जहाँ उनके चमत्कारी अवशेष आज भी अपरविर्तति हैं, ईश्वर के सम्मान में, जो गुप्त रूप से देखता है लेकनि संन्यासयिों को खुले तौर पर पुरस्कृत करता है, और जो त्रमिूर्तमिें महमिामय है, जसिकी महमिा सदा के लिए हो। आमेन।

पवत्रि शहीदों बशिप सलिवानस, डकिन ल्यूक और रीडर मोकयिास की स्मृति

29 जनवरी को स्मरण कयिा जाता है

रोमन सम्राट नुमेरयिन[1520] के शासनकाल में ईसाइयों पर एक बड़ा उत्पीड़न हुआ; एमेसा शहर के राज्यपाल[1521] को स्थानीय बशिप, संत सल्विानस के खलिाफ एक शकिायत मलिी; संत को, डकिन ल्यूक और रीडर मोकयिस के साथ, बाँधकर न्यायाधीश के सामने लाया गया। यह जानने पर कि वे मसीह को सच्चा ईश्वर मानते थे, जबकि मूर्तयिों का सम्मान करने से इनकार कर रहे थे और उनकी नदिा कर रहे थे, राज्यपाल क्रोध से भर गया; मसीह के इन स्वीकारकर्ताओं को चापलूसी के माध्यम से मूर्तयिों की पूजा करने के लिए मनाने में असमर्थ, न्यायाधीश ने उन्हें कोड़ों से पटिवाया, जसिके बाद उन्हें जेल में डाल दयिा गया; संत वहाँ लंबे समय तक कष्ट भोगते रहे जब तक कि राज्यपाल ने उन्हें दूसरी बार बुलाया। उसने आदेश दयिा कि ये कष्ट-सहने वाले भूख और प्यास से पीड़ति कएि जाएँ, जसिके बाद उसने उन्हें जंगली जानवरों द्वारा चीर-फाड़ की सज़ा सुनाई। जब पवत्रि शहीदों को मृत्युदंड के स्थान पर लाया गया और वभिन्नि जानवर उन पर छोड़े गए, तो मसीह के सैनकिों ने प्रार्थना की कि प्रभु उन्हें वहीं मृत्यु प्रदान करें। उनकी प्रार्थना सुनी गई , और प्रभु ने उनकी पवत्रि आत्माओं को स्वीकार कयिा; जानवर उनके पवत्रि अवशेषों के पास आए लेकनि उन्हें छुआ नहीं; जबकि ईसाइयों ने रात के दौरान गुप्त रूप से पवत्रि शहीदों के अवशेष ले लिए और उन्हें उचति तरीके से दफनाया, और ईश्वर का धन्यवाद कयिा।

पवत्रि शहीदों रोमानस, जेम्स, फलिोथयिस, हाइपेरकियिस, अवविस, जूलयिन और पैरगिोरयिस की स्मृति

29 जनवरी को स्मरण कयिा जाता है

ये सभी पवत्रि शहीद, मसीह के लिए लड़ते हुए, सार्वजनकि रूप से मूर्तपिूजक भ्रांतयिों की नदिा करते थे, जसिके लिए उन्हें क्रूर यातनाओं का सामना करना पड़ा: उनके कंधों और घुटनों को कुचल दयिा गया; फरि उन्हें नर्दियता से कोड़ों से पीटा गया, उनके गलों में भारी लोहे की बेड़यिाँ डाल दी गईं, और उन्हें एक कालकोठरी में डाल दयिा गया; फरि उन्हें एक बार फरि से कालकोठरी से बाहर नकिाला गया, उनके शरीरों की फरि से खाल उधेड़ी गई, उन्हें फांसी दी गई, और उनके सरिों को सूली पर ठोक दयिा गया। ऐसे यातनाओं के बीच, उन्होंने अपनी आत्माएँ ईश्वर को सौंप दीं[1522] ।

[1518] उनकी मृत्यु 12वीं शताब्दी के अंत में हुई।

[1519] तुरोव अब मन्स्कि गवर्नरेट में एक शहर है। सेंट लॉरेंस 1182 से तुरोव के बशिप थे।

[1520] न्यूमेरयिस और कार्नकिस ने 283 और 284 में शासन कयिा।

[1521] एमेसा – जसिे अब जेम्स या गोम्स के नाम से जाना जाता है – फनिसिियिा में, ओरोन्टसि नदी के तट पर, आधुनकि सीरयिा (एशयिाई तुर्की) के तटीय क्षेत्र में स्थति थी।

[1522] उन्होंने 297 में सम्राट डायोक्लेटयिन के शासनकाल में सेमोसाटा शहर (सीरयिा में, यूफ्रेटसि नदी पर) में शहादत प्राप्त की।

12 फरवरी

30 जनवरी (पुराने कैलेंडर के अनुसार)

तीन महान सार्वभौमिक शिक्षकों का पर्व: बेसिल द ग्रेट, ग्रेगरी द थियोलोजियन और जॉन क्रिसोस्टोम।

30 जनवरी को स्मरणोत्सव

धर्मपरायण और मसीह-प्रेमी ज़ार अलेक्सियस कोम्नेनोस[1523] के शासनकाल में, जिन्होंने निकिफ़ोरस बोटानियाट्स[1524] के बाद सिंहासन संभाला, कॉन्स्टेंटिनोपल में ज्ञान के सबसे वाक्पटु शिक्षकों के बीच इन तीन पवित्र पिताओं को लेकर एक बड़ा विवाद हुआ। कुछ लोग संत बेसिल द ग्रेट को अन्य संतों से अधिक सम्मान देते थे, और उन्हें सबसे उत्कृष्ट वक्ता कहते थे, क्योंकि वे वचन और कर्म में सभी से श्रेष्ठ थे; वास्तव में, वे उनमें स्वर्गदूतों से मुश्किल से ही कमतर एक ऐसे व्यक्ति को देखते थे, जो चरित्र में दृढ़, अपराधों को क्षमा करने में धीमा और सभी सांसारिक चीजों से अलग-थलग था; उसके नीचे उन्होंने दिव्य जॉन क्रिसिस्टम को रखा, जिनमें उल्लेखित गुणों से भिन्न गुण थे: वह पापियों पर दया दिखाने के लिए प्रवृत्त थे और उन्हें आसानी से पश्चाताप के लिए स्वीकार कर लेते थे। इसके विपरीत, अन्य लोगों ने दिव्य क्रिसोस्टोम की मानवता के प्रति परम प्रेम वाले व्यक्ति के रूप में प्रशंसा की, जो मानव स्वभाव की कमजोरी को समझते थे, और एक वाक्पटु वक्ता के रूप में जिन्होंने अपने अनेक मधुर शब्दों से सभी को पश्चाताप के लिए प्रोत्साहित किया; इस कारण से, उन्होंने उन्हें बेसिल द ग्रेट और ग्रेगरी द थियोलोजियन से भी अधिक सम्मान दिया। अंत में, अन्य लोग संत ग्रेगरी द थियोलोजियन के पक्ष में थे, यह दावा करते हुए कि अपनी वाक्पटुता, पवित्र धर्मग्रंथों की कुशल व्याख्या और वाक्चातुर्य के कारण, वह हेलेनिक ज्ञान के सभी सबसे प्रतिष्ठित प्रतिनिधियों से श्रेष्ठ थे, चाहे वे उनसे पहले के रहे हों या उनके समकालीन। इस प्रकार, कुछ लोगों ने संत ग्रेगरी की महिमा का बखान किया, जबकि अन्य ने उनके महत्व को कम आँका। इससे कई लोगों के बीच असहमति उत्पन्न हुई, कुछ ने खुद को योहानिट्स, कुछ ने बेसिलियनists, और कुछ ने ग्रेगोरियनists कहा। वाक्पटुता और ज्ञान में सबसे बड़े कौशल वाले पुरुषों ने इन नामों पर बहस की।

इन विवादों के उत्पन्न होने के कुछ समय बाद, ये महान संत प्रकट हुए, पहले प्रत्येक अलग-अलग, और फिर तीनों एक साथ – और यह किसी सपने में नहीं, बल्कि वास्तविकता में, – यूकैटा के बिशप जॉन से, जो एक अत्यंत विद्वान व्यक्ति थे, जो हेलेनिक ज्ञान में पारंगत थे (जैसा कि उनके लेखन से भी प्रमाणित होता है), और अपने सदाचारी जीवन के लिए प्रसिद्ध थे[1525] । उन्होंने एक स्वर में उनसे कहा:

– हम परमेश्वर के सामने समान हैं, जैसा कि आप देख सकते हैं; हमारे बीच न तो कोई विभाजन है और न ही कोई विरोध। हम में से प्रत्येक ने, बारी-बारी से, दैवी आत्मा से प्रेरित होकर, मानव जाति के उद्धार के लिए उपयुक्त शिक्षाएँ लिखीं। जो हमने गुप्त रूप से सीखा, उसे हमने लोगों को खुले तौर पर प्रदान किया है। हममें न कोई पहला है और न ही कोई दूसरा। यदि आप हममें से किसी एक का उल्लेख करते हैं, तो अन्य दो उस बिंदु पर उससे सहमत होते हैं। इसलिए, उन

[1523] बाइज़ेंटाइन सम्राट अलेक्सियस प्रथम कोम्नेनोस ने 1081 से 1108 तक शासन किया।

[1524] निकिफ़ोरस तृतीय बोटानिएट्स ने 1078 से 1081 तक शासन किया।

[1525] यूकेइट के मेट्रोपॉलिटन जॉन, 11वीं शताब्दी में पूर्वी चर्च के उत्कृष्ट धार्मिक लेखकों और भजनकारों में से एक थे (उनकी मृत्यु 11वीं शताब्दी के अंत में हुई)। उन्होंने बहुत सारी कृतियाँ लिखीं। उनकी कृतियों में, निम्नलिखित ज्ञात हैं: 1) 15 तक स्तुति-प्रवचन, जिनमें से निम्नलिखित विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं: रूस के राजकुमार स्वयातोस्लाव पर विजय की स्मृति के लिए दो स्तुति-प्रवचन, पवित्र महान शहीद थियोडोर टायरॉन की याद में तीन स्तुति-प्रवचन, और तीन पवित्र धर्मगुरुओं को स्तुति-प्रवचन; 2) कविताएँ और चर्च संबंधी भजन: बाद वालों में, तीन पवित्र पदानुक्रमों के लिए एक संपूर्ण सेवा, संरक्षक देवदूत को एक कैनन, और सेंट थियोडोर टायरन को दो कैनन आज भी चर्च सेवाओं में उपयोग किए जाते हैं। इन सेवाओं में यह भी शामिल हैं: उद्धारकर्ता के लिए उनके 27 कैनन में से – सबसे प्यारे यीशु के लिए एक कैनन; ईश्वर की माता के लिए उनके 67 कैनन में से – छह; अग्रदूत के लिए उनके 11 कैनन में से – दो। सबसे प्यारे यीशु और संरक्षक देवदूत के लिए उनके कैनन विशेष रूप से उत्कृष्ट हैं।

लोगों को आदेश दें जो हमारे बारे में ववािद कर रहे हैं कि वे अपनी बहस बंद कर दें, क्योंकि जीवन में और मृत्यु के बाद, हम ब्रह्मांड के सरिों को शांति और मानसकि एकता में लाने के लिए कार्यरत हैं। इसे ध्यान में रखते हुए, हमारी स्मृति को एक ही दनि में एकजुट करें और, जैसा कि आपके लिए उचति है, हमारे लिए एक उत्सव सेवा रचें, और दूसरों को बताएं कि हम परमेश्वर के सामने समान गरमिा के अधकिारी हैं। जहाँ तक हमारी बात है, जो लोग हमारी स्मृति मनाते हैं, हम उनके उद्धार के सहायक होंगे, क्योंकि हमें आशा है कि हम परमेश्वर के सामने कुछ पुण्य के अधकिारी हैं।

बशिप से यह कहने के बाद, वे एक अनुपम प्रकाश से चमकते हुए और एक-दूसरे को नाम से पुकारते हुए स्वर्ग में आरोहण करने लगे। धन्य बशिप जॉन ने तुरंत ही, अपने प्रयासों से, युद्धरत पक्षों के बीच शांति बहाल कर दी, क्योंकि वह महान सद्गुणों वाले व्यक्ति थे और अपनी बुद्धमित्ता के लिए प्रसद्धि थे। उन्होंने तीनों पवत्रि पतिाओं का पर्व स्थापति कयिा, जैसा कि संतों ने उन्हें आज्ञा दी थी, और चर्चों को इसे उचति भव्यता के साथ मनाने का आदेश दयिा[1526]। इसमें इस महान व्यक्ति की बुद्धमित्ता स्पष्ट रूप से प्रकट हुई, क्योंकि उन्होंने देखा कि तीनों पवत्रि पतिाओं का स्मरण-ोत्सव जनवरी महीने में होता है, अर्थात्: पहले दनि – बेसलि द ग्रेट, पच्चीसवें दनि – ग्रेगरी द थयिोलोजयिन, और सत्ताइसवें दनि – सेंट क्रसिोस्टोम – इसलिए उन्होंने एक ही महीने के तीसरे दनि उनकी स्मृतयिों को एक साथ मनाने का आयोजन कयिा, और उनकी स्मृति के उत्सव को उपयुक्त रूप से कैनन, ट्रॉपारयिा और स्तुति गीतों से अलंकृत कयिा।

उनके बारे में यह भी जोड़ा जाना चाहिए। संत बेसलि द ग्रेट ने न केवल अपने समय के शक्षिकों, बल्कि प्राचीन काल के शक्षिकों को भी वद्वितापूर्ण ज्ञान में पीछे छोड़ दयिा: उन्होंने न केवल वाक्पटुता की पूरी कला को हर बारीकी तक महारत हासलि की, बल्कि दर्शनशास्त्र का भी गहन अध्ययन कयिा, साथ ही उस वज्ञिान को भी समझा जो सच्ची ईसाई प्रथा सखिाता है। इसके बाद, सांसारकि वस्तुओं से वैराग्य और ब्रह्मचर्य से युक्त एक पुण्य जीवन जीते हुए, और आत्मा में परमेश्वर के दर्शन तक आरोहण करके, वे चालीस वर्ष की आयु में बशिप के पद पर पदोन्नत हुए, और आठ वर्षों से कुछ अधकि समय तक चर्च के प्रमुख के रूप में सेवा की।

संत ग्रेगरी द थयिोलोजयिन इतने महान थे कि यदि सभी सद्गुणों से, एक-एक करके, एक मानव आकृति और एक स्तंभ बनाया जा सकता, तो वह महान ग्रेगरी जैसे होते। अपने पवत्रि जीवन के माध्यम से प्रकाशमान होकर, वे धर्मशास्त्र के क्षेत्र में ऐसी ऊँचाइयों पर पहुँचे कि वे अपनी बुद्धि से, मौखकि बहसों और धर्म के सद्धिांतों की व्याख्या, दोनों में ही सभी से श्रेष्ठ थे। इसीलिए उन्हें 'धर्मज्ञ' कहा जाता था। उन्होंने बारह वर्षों तक कॉन्स्टेंटनिोपल के पैट्रआर्क के रूप में सेवा की, और ऑर्थोडॉक्सी (सही आस्था) को बनाए रखा। फरि (जैसा कि उनकी जीवनी में दर्ज है) उन्होंने थोड़े समय के लिए पैट्रआर्क के सहिासन पर रहने के बाद, अपनी उन्नत आयु के कारण सहिासन त्याग दयिा और साठ वर्ष की आयु में पहाड़ी मठों में चले गए।

ईश्वरीय क्रसिोस्टोम के बारे में यह कहना उचति है कि वे बौद्धकि क्षमता, अपने शब्दों की प्रभावशीलता और अपनी वाक्पटुता में सभी ग्रीक ऋषयिों से आगे थे; उन्होंने पवत्रि शास्त्रों की अनुपम तरीके से व्याख्या और ववेचन की; इसी प्रकार, अपने सदाचारी जीवन और ईश्वर के चतिन में, वह सभी से बहुत आगे थे। वह दया और प्रेम का फव्वारा थे, और शक्षिण के प्रति उत्साह से भरपूर थे। कुल मलिाकर, उन्होंने साठ वर्ष तक जीवन यापन कयिा; उन्होंने छह वर्षों तक मसीह की कलीसयिा के चरवाहे के रूप में सेवा की। इन तीन पवत्रि पतिाओं की प्रार्थनाओं के द्वारा, मसीह हमारे ईश्वर, वधिर्मी कलह को समाप्त करें, हमें मन की शांति और एकता में सुरक्षति रखें, और हमें अपना स्वर्गीय राज्य प्रदान करें, क्योंकि वे युगानुयुग धन्य हैं। आमीन।

ट्रोपारयिन, स्वर 4:

सभी प्रेरतिों और संसार के शक्षिकों के समान, सभी के प्रभु से प्रार्थना करें कि वे संसार को शांति और हमारी आत्माओं को महान दया प्रदान करें।

[1526] तीन सार्वभौमकि शक्षिकों और पवत्रि पतिाओं: बेसलि द ग्रेट, ग्रेगरी द थयिोलोजयिन और जॉन क्रसिोस्टोम के सम्मान में पर्व

कॉन्टाकयिन, स्वर 2:

हे पवत्रि और दैवीय प्रेरति प्रचारकों, हे शकि्षकों में अग्रगण्य, हे प्रभु, आपने उन्हें अपने धन्य लोगों के आनंद और वशि्राम में स्वीकार कयिा है: क्योंकि आपने उनके श्रम और उनकी मृत्यु को सभी सांसारकि धन-संपत्ति से अधकि कीमती माना है, हे एक, जो अपने संतों को महमिामय बनाता है।

पवत्रि शहीद थयिोफलिस नव का स्मरणोत्सव

30 जनवरी को स्मरणोत्सव

संत थयिोफलिस का जन्म और पालन-पोषण सम्राट कॉन्स्टेंटनि पोर्फरिोजेनटिस और उनकी माता, संत आइरीन[1527] के शासनकाल के दौरान कॉन्स्टेंटनिोपल में हुआ था। अरब आक्रमण[1528] के दौरान, उन्हें ग्रीक सेनाओं का प्रधान सेनापति नियुक्त कयिा गया था; अपनी व्यक्तगित बहादुरी और सैन्य कौशल के कारण, उन्होंने कई दुश्मन जहाजों को डुबो दयिा और कई मौकों पर अरबों को हराया। ईश्वर की व्यवस्था से, एक बार उनके बेड़े को दुश्मन के जहाजों की बड़ी संख्या ने घेर लयिा, और संत थयिोफलिस को कैदी बना लयिा गया। जब उन्हें अरब शासक के सामने पेश कयिा गया, तो शासक, संत थयिोफलिस की सुंदरता और साहस से प्रभावति होकर, उन्हें ईसाई धर्म त्यागने के लिए कहने लगा; लेकनि न तो हर सम्मान का वादा और न ही वजिताओं की धमकयिों का उस बहादुर ईसाई कमांडर पर कोई असर पड़ा। जब उसने देखा कि उसके सैनकिों का कत्लेआम कर दयिा गया है, तो उसने बर्बरों की क्रूरता के लिए उन्हें फटकारना शुरू कर दयिा और उनके अधर्मी धर्म की नदिा की। उन्हें उनके देश ले जाया गया, जहाँ सेंट थयिोफलिस को कैद कर दयिा गया; चार साल बाद, अरबों द्वारा मनाए गए कसिी धार्मकि त्योहार के अवसर पर, पवत्रि शहीद को जेल से नकिालकर उत्सव में भाग लेने के लिए मजबूर कयिा गया; लेकनि जब संत थयिोफलिस ने आज्ञा मानने से इनकार कर दयिा, तो उनका सरि कलम कर दयिा गया, और इस प्रकार मसीह के इस सपिाही ने शहीद का मुकुट प्राप्त कयिा[1529] ।

पवत्रि शहीदों हप्पिोलीटस, केंसोरनि, सैवनिस, कन्या क्रसियिा और अन्य बीस शहीदों का स्मरणोत्सव

30 जनवरी को स्मरण कयिा जाता है

[1530]पवत्रि शहीदों हप्पिोलटिस, केंसोरनि, सावनि और क्रसियिा ने क्लॉडयिस के शासनकाल में जीवन यापन कयिा, जब रोमन उल्पयिस हेगेमोन के रूप में राज्यपाल का पद धारण कर रहे थे। केंसरनि सीनेट में मुख्य सलाहकार थे, और उन्होंने मैगस्टिर[1531] का पद धारण कयिा था। एक नदिा के आधार पर पूछताछ कएि जाने पर, उन्होंने मसीह की गवाही दी और इस कारण उन्हें जेल में डाल दयिा गया। वहाँ उन्होंने मसीह की शक्ति से कई चमत्कार कएि और यहाँ तक कि एक मृत व्यक्ति से भी प्रश्न कयिा। इन चमत्कारों को देखकर उपस्थति सैनकि मसीह में वशि्वास करने लगे, और इस कारण उनमें से बीस को सरि कलम कर दयिा गया। धन्य कन्या क्रसियिा को भी एक मसीही के रूप में पूछताछ के लिए लाया गया। सैनकिों ने उसे लटका दयिा, बैल की नसों से उसकी पटिाई की और उसकी पसलयिों को आग से झुलसाया, और फरि उसे एक कालकोठरी में डाल दयिा। कुछ दनिों बाद, उन्होंने उसे फरि से कालकोठरी से बाहर नकिाला, एक पत्थर से उसके जबड़े तोड़ दएि और टनि के हथौड़े से उसके कंधों पर वार कयिा; फरि, उसके गले में एक पत्थर बांधकर, उसे समुद्र की गहराई में फेंक दयिा। इस प्रकार पवत्रि कन्या ने मसीह के लिए अपने दुख को समाप्त कयिा। धन्य सावनि को भी एक भारी हथौड़े से शरीर पर पीटा गया और, एक पेड़ से लटका कर, मोमबत्तयिों से जलाया गया। ऐसी यातनाएँ सहते हुए और

[1527] वे 780 से 797 तक एक साथ शासन करते थे।

[1528] उस समय, अरबों ने पूरे अरब, सीरयिा, मस्रि और उत्तरी अफ्रीका को शामलि करते हुए एक शक्तशिाली राज्य का गठन कयिा था।

[1529] 784 में साइप्रस द्वीप (एशयिा माइनर के पास) पर।

[1530] क्लाउडयिस द्वतिीय, रोमन सम्राट, ने 268 से 270 तक शासन कयिा।

[1531] मैजस्टिर का शाब्दकि अर्थ 'शकि्षक' है। हालाँकि, बाइज़ेन्टाइन शाही दरबार में, मैजस्टिर की उपाधि दरबार के उच्चतम पदों में से एक को दर्शाती थी।

ईश्वर का धन्यवाद करते हुए, उन्होंने अपनी आत्मा उसे सौंप दी। यह सब जानने पर, रोम के चर्च के पवित्र बिशप, महान हिप्पोलीटस, राज्यपाल के पास गए और उनकी क्रूरता और अमानवीयता की निंदा की, उन्हें एक रक्तपिपासु तानाशाह कहा। साथ ही, उन्होंने साहसपूर्वक मसीह ईश्वर, संसार के सृष्टिकर्ता, की गवाही दी। इसके लिए, राज्यपाल के सेवकों ने उनक आँखों पर वार किया; दुष्टों ने उन्हें अन्य यातनाएँ भी दीं और अंत में, उनके हाथ-पैर बाँधकर उन्हें समुद्र में फेंक दिया। इन यातनाओं को सहने के बाद, संत हिप्पोलीटस परमेश्वर के राज्य के वारिस बने[1532] ।

आदरणीय ज़िनोन की स्मृति

30 जनवरी को स्मरणोत्सव

हमारे इन धन्य पिता, ज़ेनो, पोंटस[1533] के मूल निवासी थे; वहाँ अपनी महान संपत्ति को पीछे छोड़कर, उन्होंने संत बेसिल द ग्रेट[1534] की शिक्षा के झरनों से गहराई से ज्ञान प्राप्त किया, जिसने कापाडोसिया को सींचा, और उस शिक्षा के अनुरूप फल दिए। वे सम्राट वैलेंस[1535] के दरबार में उन सैनिकों के बीच सेवा करते थे जिनके माध्यम से शाही फरमान भेजे जाते थे; इस शासक की मृत्यु के बाद, संत ज़िनोन ने धन-संपत्ति और सम्मानों का त्याग कर दिया और एंटिओक के पास एक पहाड़ में स्थित एक कब्र[1536] में निवास कर लिया, जहाँ वे एकांत में रहे और अपनी आत्मा को शुद्ध किया। उस पवित्र तपस्वी के पास अपने फटे-पुराने कपड़ों के अलावा कोई संपत्ति नहीं थी, जिसे वह स्वयं को ढकता था; संत ज़िनोन को अपना भोजन एक परिचित से मिलता था, जो हर दो दिनों में उनके लिए एक छोटा सा रोटी का टुकड़ा लाता था, जबकि वह बहुत दूर से अपना पानी खुद लाता था। गहरी विनम्रता के एक आदर्श, पूजनीय ज़िनोन ने मठवासी तपस्या के अभ्यास में परम पूर्णता प्राप्त की; उन्होंने चालीस वर्ष उपवास में बिताए, हर रविवार को पवित्र चर्च में जाते थे, जहाँ वे ईश्वर के वचन को सुनते थे, उपदेशकों की शिक्षाओं पर ध्यान देते थे, और मसीह के पवित्र रहस्यों में भाग लेते थे; इसके बाद, आदरणीय ज़िनोन अपने एकांतवास में लौट आते थे, जहाँ न तो ताला था और न ही कोई पहरा, क्योंकि वह दुष्टों के लिए दुर्गम और पूरी तरह से सुरक्षित था। संसार से अलग होने के कुछ समय बाद, आदरणीय ज़िनोन ने अपने एक परिचित को अपने माता-पिता द्वारा छोड़ी गई संपत्ति बेचने और अपने भाई को उसका हिस्सा देने के लिए अपने देश वापस भेजा। यह करने के बाद, दूत ने संत का हिस्सा उन्हें सौंप दिया; इससे, पूजनीय ज़िनोन ने गरीबों को दान देना शुरू कर दिया; और जब उन्हें लगा कि उनका अंत निकट आ गया है, तो उन्होंने अंताकिया के बिशप अलेक्ज़ेंडर[1537] को अपने पास बुलाया और उनसे कहा:

'चूँकि मुझे इस जीवन से विदा होने का बुलावा आ रहा है, मैं यह तुम्हें सौंपता हूँ: जो कुछ भी मैं कर सकता था, मैंने अपनी समझ से बाँट दिया है; जहाँ तक शेष की बात है, इसे बाँटने का समय मुझे नहीं मिला, और मैं तुम्हें इसका प्रशासक नियुक्त करता हूँ, और गवाह के रूप में ईश्वर को बुलाता हूँ।'

[1532] पवित्र शहीदों हिप्पोलीटस, केंसोरिनि, सावनि और क्रिसिया ने 269 ईस्वी में शहादत प्राप्त की। पवित्र शहीद हिप्पोलीटस रोम के पास ओस्टिया के बिशप थे, जहाँ उन्हें डुबो दिया गया था। उनके अवशेष अब रोम में सेंट लॉरेंस और पोप डेमासस चर्च में रखे गए हैं। – हिप्पोलीटस ईसाई धर्मशास्त्रियों में सबसे विद्वान और एक विपुल, बहुमुखी लेखक थे। उनके अधिकांश कार्य प्राचीन विधर्मी - नोएटियनों, थियोडोटियनों, अलोगियों, मोंटानिस्टों, मार्सियोनाइट्स और अन्य के खिलाफ विवादात्मक लेखन को समर्पित हैं। उनकी रचनाओं में से, निम्नलिखित आज ज्ञात हैं: पास्काल कैनन, यहूदियों के विरुद्ध, प्लेटो के विरुद्ध, विधर्मियों के विरुद्ध, वेरॉन और हेलीकस के विरुद्ध, और मसीह और विरोधी मसीह पर एक ग्रंथ। हिप्पोलीटस की रचनाओं का एक अन्य समूह पवित्र धर्मग्रंथों पर उनकी कई टीकाओं से मिलकर बना है, जिनमें से अधिकांश के केवल अंश ही बचे हैं। इस प्रकार, उन्होंने उत्पत्ति, निर्गमन, नीतिवचन, उपदेशक, गीतों का गीत, मत्ती, लूका और यूहन्ना के सुसमाचारों, यशायाह, यहेजकेल, दानियेल और जकर्याह की भविष्यवाणियों, भजन संहिता और प्रकाशितवाक्य की टीकाएँ लिखीं। उनका उपदेश प्रारंभिक ईसाई उपदेशन के उदाहरणों के रूप में भी उल्लेखनीय है; इनमें से, केवल एपिफेनी पर उपदेश और दानियेल नबी पर उपदेश ही पूरी तरह से बचे हैं।

[1533] पोंटस उत्तर-पूर्वी एशिया माइनर का एक प्रांत था, जो पूर्व में आर्मेनिया और दक्षिण में कैपाडोसिया से सटा हुआ था।

[1534] उनका पर्व दिवस 1 जनवरी है।

[1535] वेलेन्स ने 364 से 378 तक शासन किया।

[1536] प्राचीन काल में, दक्षिण में कब्रें पहाड़ों से काटकर बनाई जाती थीं और गुफाओं जैसी दिखती थीं; शत्रु आक्रमणों के दौरान, उन्हें लूट लिया जाता था; खजाने की तलाश में कब्रों को खोजने वाले डाकुओं द्वारा मृतकों की शांति भी भंग की जाती थी। आदरणीय ज़ेनो इन्हीं सुनसान कब्रों में से एक में बस गए।

[1537] उन्होंने 413 से 420 तक एंटिओक में बिशप के रूप में कार्य किया।

इसके बाद, संत को चूमने के बाद, धन्य ने अपनी आत्मा ईश्वर को सौंप दी।

13 फरवरी

31 जनवरी (पुराने कैलेंडर के अनुसार)

फरवरी

पवित्र चमत्कार-कर्त्ता और बिना पारिश्रमिक सेवा करने वाले सायरस और जॉन, तथा पवित्र शहीद अथानासिया और उनकी तीन बेटियों, थियोक्टिस्टा, थियोडोटा और यूडोक्सिया का दुख-कथा

31 जनवरी को स्मरणोत्सव

[1538]ईश्वर के पवित्र पुरुष, साइरस, का जन्म और पालन-पोषण मिस्र के अलेक्जेंड्रिया शहर में हुआ था, जिसकी स्थापना महान अलेक्जेंडर ने की थी। अपनी विद्वता के कारण, वह एक प्रसिद्ध चिकित्सक थे और शारीरिक बीमारियों को पूरी तरह से निःशुल्क ठीक करते थे, जबकि अपने दैवीय प्रेरित शब्दों और अपने सदाचारी जीवन के उदाहरण द्वारा वह लोगों की आध्यात्मिक बीमारियों को ठीक करते थे। जब वे बीमारों से मिलने जाते थे, तो वे उन्हें गैलेन या हिप्पोक्रेट्स की सलाह नहीं देते थे, बल्कि पवित्र प्रेरितों और भविष्यवक्ताओं की शिक्षाएँ देते थे कि पापी कष्टों से कैसे बचा जाए, जो शारीरिक बीमारियों का कारण हैं: आध्यात्मिक बीमारियाँ किसी भी शारीरिक बीमारी से कहीं अधिक गंभीर कष्ट हैं; जब आत्मा पाप से गहराई से पीड़ित होती है, तो अक्सर ऐसा होता है कि शरीर भी एक गंभीर बीमारी से ग्रस्त हो जाता है, जो पाप की सजा के रूप में ईश्वर द्वारा अनुमत होती है। इस प्रकार, बीमारों को उपदेश देते और उन्हें दिव्य शिक्षा का प्रचार करते हुए, संत साइरस ने कई मूर्तिपूजकों को सच्चे ईश्वर के ज्ञान की ओर ले गए और उन्हें अपनी असाधारण कुशलता से उनके आत्मा और शरीर दोनों को चंगा करते हुए ईसाई बनाया।

उस समय, दुष्ट सम्राट डायोक्लेटियन का शासन था, जिसने ईसाइयों के खिलाफ एक उत्पीड़न शुरू किया था। अलेक्जेंड्रिया के प्रसिद्ध चिकित्सक, संत साइरस पर शहर के राज्यपाल के सामने एक ईसाई होने और कई लोगों को ईसाई धर्म में शिक्षित करने का आरोप लगाया गया; राज्यपाल ने उन्हें तुरंत गिरफ्तार करने का आदेश दिया। यह जानकर, संत साइरस शहर और मिस्र की भूमि से भाग गए और अरब आ गए। उन्होंने यह मसीह के लिए यातना या मृत्यु के डर से नहीं, बल्कि आंशिक रूप से मसीह के वचनों के पालन में किया: *'जब वे तुम्हें एक नगर में सताएँ, तो दूसरे नगर में भाग जाओ'* (मत्ती 10:23), आंशिक रूप से अपने पड़ोसियों की मदद करना जारी रखने की इच्छा से, और आंशिक रूप से मठवासी जीवन में अपने प्रभु के लिए पीड़ा सहने के लिए खुद को बेहतर ढंग से तैयार करने की इच्छा से। इसे ध्यान में रखते हुए, अरब में पहुंचने पर, उन्होंने तुरंत दैवीय मठवासी जीवन अपना लिया। अरब में उनका आगमन ही ईश्वर की विशेष कृपा से हुआ था, ताकि वहाँ भी वे कई लोगों को मसीह की ओर ले जा सकें, उन्हें मूर्ति पूजा के पाप से मुक्त कर सकें, और उन्हें मोक्ष के मार्ग पर स्थापित कर सकें। उन्होंने वहाँ अपनी चिकित्सा की प्रैक्टिस भी छोड़ दी, क्योंकि उन्हें ईश्वर से चमत्कार करने का वरदान मिला था, और अब वे हर तरह की बीमारियों का इलाज दवा और जड़ी-बूटियों से नहीं, बल्कि प्रार्थना और वचन के द्वारा करते थे। उनके इन चमत्कारों के माध्यम से, मसीह के नाम की महिमा हुई, और मूर्तिपूजकों की एक बड़ी भीड़, अपनी गलतियों को त्यागकर, सच्चे ईश्वर, मसीह की ओर मुड़ गई।

[1538] गेलेन – एक प्रसिद्ध यूनानी चिकित्सक और विद्वान, जिनका जन्म 131 ईस्वी में हुआ था और जो तीसरी शताब्दी की शुरुआत में ही निधन हो गए थे; उन्होंने अपने समय के रोमन सम्राटों के दरबारी चिकित्सक के रूप में कार्य किया। गेलेन ने दुनिया भर के चिकित्सकों पर बहुत बड़ा प्रभाव डाला, और 16वीं शताब्दी तक उनके दृष्टिकोण में उनका अधिकार अटूट बना रहा। – हिप्पोक्रेट्स – एक अन्य प्रसिद्ध यूनानी चिकित्सक जो गैलेन से बहुत पहले (460 से 356 ईसा पूर्व तक) जीवित थे; उनकी कई कृतियाँ आज भी मौजूद हैं, और गैलेन ने उन्हीं पर शिक्षा प्राप्त की थी।

उस समय, संत जॉन (1539) एडेसा में रहते थे; वह एक धर्मनष्ठि ईसाई थे जन्हिें एक सम्मानजनक सैन्य पद प्राप्त था। जब डायोक्लेटियन द्वारा ईसाइयों पर अत्याचार शुरू हुआ, तो उन्होंने अपना सैन्य पद और इस दुनिया का वैभव, अपना देश, त्याग दिया, अपने घर और अपने परविार, और अपनी संपत्ति – इन सभी को व्यर्थ मानकर – और यरूशलेम आ गए, जहाँ, कुछ समय बीत जाने के बाद, उन्होंने संत साइरस और उनके द्वारा कए गए चमत्कारों के बारे में सुना, जनिकी ख्याति दूर-दूर तक फैल चुकी थी। उसे संत साइरस को देखने और ईश्वर के ऐसे महान सेवक के साथ रहने की तीव्र इच्छा हुई। इस उद्देश्य के लिए, जॉन ने पहले साइरस की तलाश में अलेक्जेंड्रिया की यात्रा की, लेकनि, वहाँ उन्हें न पाकर, उन्होंने वनिम्रतापूर्वक पूछा कि वह कहाँ हो सकते हैं। तब, यह जानकर कि संत साइरस अरब में रहते थे, जॉन वहाँ जल्दी से पहुँचे और उन्हें पाकर, वे पूरे दलि से उनसे गहराई से जुड़ गए; वे उनके चमत्कारों के गवाह और उनके सदाचारी जीवन के उत्साही अनुकरणकर्ता दोनों थे।

इसी समय, अथानासिया नाम की एक ईश्वर-भयभीत महलिा को उसकी तीन बेटियों—थियोक्टिस्टा, थियोडोशिया और यूडोक्सिया—सहति गरिफ्तार कर मसीह के नाम के लिए यातनाएँ दी गईं; उसे कैनोपस शहर[1540] ले जाया गया, जहाँ मूर्तपिूजक पुरोहति कैसियिन रहता था और राज्यपाल एक सीरियिाई था। यह सुनकर, संत साइरस और जॉन को डर लगने लगा कि ये युवा कुंवारी लड़कियाँ या तो यातनाओं की धमकियों के डर से या चापलूसी भरे वादों के प्रलोभन के कारण मसीह से भटक सकती हैं – और यह डर और भी बढ़ गया क्योंकि ये बहुत छोटी थीं: सबसे बड़ी, थियोक्टिस्टे, पंद्रह साल की थी; दूसरी, थियोडोटा, तेरह साल की थी; और सबसे छोटी, यूडोक्सिया, ग्यारह साल की थी। संत साइरस को उनकी माँ, अथानासिया, की दृढ़ता पर भी संदेह था, उन्हें डर था कि अपनी बेटियों के लिए—ताकि उन्हें कठोर यातनाओं से न गुज़रना पड़े और न ही उनका खून बेरहमी से बहते देखना पड़े—वह मूर्तपिूजक अधर्म के आगे झुक सकती हैं; क्योंकि यह सर्ववदिति है कि माएँ, अपनी स्वाभावकि प्रवृत्ति का पालन करते हुए, अपने बच्चों के लिए अपने दलि में दुख करती हैं। इसलिए वह उन कन्याओं और उनकी माता को ईसाई धर्म की उनकी स्वीकारोक्ति में मजबूत करने और उन्हें नडिरता और साहस के साथ अपने यातनाओं को सहने के लिए तैयार करने हेतु उस शहर के लिए रवाना हुआ। संत जॉन, संत साइरस के पीछे-पीछे चले, और वे दोनों साथ में कैनोपस शहर की यात्रा पर गए। अपनी बेटियों के साथ, जो जेल में थीं, अथेनासियस के सामने उपस्थति होकर, उन्होंने वस्तिृत, प्रेरणादायक भाषणों से प्रभु यीशु मसीह के प्रति उनके प्रेम को मजबूत किया और उन्हें उत्साहपूर्वक अपने प्राणों का बलदिान करने के लिए मनाया। इसकी सूचना तुरंत शहर के राज्यपाल, सरियिनस को दी गई। एक वधिर्मी उसके पास आया और कहा:

'हमारे शहर में कुछ नए और अज्ञात पुरुष आए हैं: एक मठ के वस्त्रों में, और दूसरा सैन्य वर्दी में। वे अब कैद की गई कन्याओं को मना रहे हैं कि वे हमारे देवताओं की पूजा न करें, बल्कि अपने अधर्मी वशि्वास पर ही बनी रहें, और इसी प्रकार राजा की आज्ञाओं का पालन भी न करें।' वे उन्हें केवल कसिी यीशु की उपासना करने और मृत्यु की परवाह कए बनिा उसे दविय सम्मान देने के लिए मना रहे हैं।

यह सुनकर, सरियिन क्रोध से भर गया और आदेश दिया कि दोनों लोगों को तुरंत पकड़कर उसके सामने लाया जाए। संत साइरस और जॉन को तुरंत गरिफ्तार कर पूछताछ के लिए नर्दियी न्यायाधीश सरियिन के सामने लाया गया। उन्हें देखकर, उसने पूछा:

'क्या यह सच है, हे हमारे देवताओं के शापति शत्रुओं, कि तुम युवतियों को बहकाने और हर तरह की चालाकी से ईसाइयों की संख्या बढ़ाकर हमारे राजा का अपमान करना चाहते हो?' यदि अब तक तुम भ्रमति रहे हो, तो कम से कम अपनी झूठी आस्था को त्याग दो, जो हर तरह की जादू-टोने से भरी है, और प्रार्थनाओं तथा बलदिानों से देवताओं को प्रसन्न करने का प्रयास करो, ताकि न केवल तुम्हारे लिए तैयार की गई यातनाओं से बचाए जा सको, बल्कि हमारे द्वारा सम्मानति भी हो सको। यदि, तथापि, आप ऐसा करने में वफिल रहते हैं, तो आप न केवल सरियिनस या डायोक्लेटियन के, बल्कि उन स्वयं देवताओं के प्रकोप और अधक क्रोध का अनुभव करेंगे जनिका आप अपमान करते हैं – आप देवताओं का अनुभव करेंगे, भले ही वे आपकी अधर्मीता के प्रति सबसे दयालु दंडदाता हों।

इस पर, संत साइरस और जॉन ने उत्तर दिया:

[1539] एडेस – एशिया माइनर के दक्षणि-पूर्वी क्षेत्र, सलिसिया में एक शहर।

[1540] कैनोपस – नचिले (उत्तरी) मस्रि का एक शहर।

'हमारी प्रथा लंबी-चौड़ी बातें करना नहीं है। यह निश्चित रूप से जान लो: हम कभी भी तुम्हारे खोखले सम्मान की कामना नहीं करेंगे, और न ही हम मसीह का त्याग करेंगे, भले ही हमें उनके लिए कष्ट क्यों न उठाना पड़े।'

तब उस सीरियाई पर और भी अधिक क्रोध सवार हो गया; उसने दाँत पीसे और कहा:

'हे दुष्ट पुरुषो, तुम्हें न्यायाधीश की दया के लिए आभारी होना चाहिए। यदि तुम्हें कुछ भी समझ है, तो अपने भ्रम को त्याग दो ताकि भयानक दंड से बच सको। लेकिन चूंकि मैं तुममें केवल अहंकार, अवज्ञा और व्यर्थ घमंड ही देखता हूँ, इसलिए और शब्द व्यर्थ करने की कोई आवश्यकता नहीं; हमें तुरंत कार्य आरंभ करना चाहिए। तब तुम अपनी इच्छित इनाम भी प्राप्त करोगे और, यद्यपि अपनी इच्छा के विरुद्ध, राजा की आज्ञा का पालन करोगे।

यह कहकर, उसने दासियों और उनकी माँ को अंदर लाने का आदेश दिया और उनके सामने ही पवित्र शहीदों साइरस और जॉन को विभिन्न तरीकों से यातना देना शुरू कर दिया: उसने उन्हें कोड़ों से पीटा, मोटी लाठियों से उनकी हड्डियाँ तोड़ दीं, मोमबत्तियों से उन्हें जलाया, और उनके जले हुए अंगों पर सिरका डालकर नमक छिड़क दिया, जिसके बाद उसने उनके पैरों पर उबलता हुआ पिच डालते हुए उन्हें बालों वाली कमीज़ के खुरदरे किनारों से रगड़ा। अपनी क्रोध में आकर सोची-समझी हर यातना का इस्तेमाल करते हुए, उसने उनमें से किसी को भी नहीं बख्शा—आंशिक रूप से उनकी बहादुरी का बदला लेने और उनका साहस तोड़ने के लिए, और आंशिक रूप से उन युवा कन्याओं और उनकी माँ को डराने के लिए, जो इन भयानक यातनाओं को देख रही थीं। लेकिन वह अधर्मी यातना देने वाला कुछ भी हासिल करने में सफल नहीं हुआ: वह न तो पवित्र उत्साही संतों के साहस को हिला सका और न ही वह कुंवारी लड़कियों और उनकी माँ को आतंकित कर सका। फिर उसने संतों को खोलने का आदेश दिया और सेंट अथानासिया और उसकी बेटियों को यातना देना शुरू कर दिया। लंबी यातनाओं के बाद, वह अत्यधिक लज्जित हुआ, क्योंकि प्रतीत होने वाली कमजोर महिला जाति, अपने पुरुषों जैसे दुख सहने के धैर्य में, दृढ़ और अडिग पवित्र पुरुषों - साइरस और जॉन से किसी भी तरह से कमतर नहीं थीं। उनमें मसीह के प्रति एक समान विश्वास और प्रेम था, उन्होंने उनके लिए एक समान यातनाएँ सहन कीं, और ईश्वर की मदद से, एक समान साहस का प्रदर्शन किया। उन्होंने इस तरह कष्ट सहे जैसे यह उनके शरीर का दर्द ही न हो, और उन्होंने यातनाओं की ओर बिल्कुल भी ध्यान नहीं दिया। उन्होंने अपनी दृष्टि अपने प्रिय वरा, मसीह ईश्वर की ओर मोड़ ली, जो अपनी महिमा की ऊँचाइयों से अपनी वधूओं के दुखों को देख रहे थे और उनकी सहायता के लिए आगे आए। यातना देने वाले ने, पवित्र शहीदों को यातना के उपकरणों से खोलने का आदेश देने के बाद, उन्हें तलवार से सिर कलम करने की सजा सुनाई। वे आनंद के साथ अपनी मृत्यु की ओर बढ़े, जैसे कि किसी विवाह समारोह में जा रहे हों। उन सभी के—धन्य माता अथानासिया और उनकी तीन धन्य बेटियों: थियोक्टिस्टे, थियोडोटे और यूडोक्सिया—के सम्मानित सिर तलवार से काट दिए गए।

पवित्र शहीदों की फांसी के बाद, संत साइरस और जॉन को एक बार फिर पूछताछ के लिए लाया गया। यातना देने वाले ने उनके कल्याण के लिए चिंता का दिखावा करते हुए, उन्हें उपहार दिखाते हुए, और अधिक यातनाओं का वादा करते हुए, और अंत में, उन्हें मृत्युदंड की धमकी देते हुए एक लंबा भाषण दिया। जब उसने देखा कि उसकी कोशिशें व्यर्थ गई हैं, तो उसने यह अंतिम निर्णय सुनाया:

'गलील के शिक्षक के अनुयायी साइरस और उनके साथी विश्वासी जॉन, जिन्होंने राजा की आज्ञा का तिरस्कार किया और महान देवताओं को बलिदान चढ़ाने से इनकार कर दिया, हम आदेश देते हैं कि राजा के कानून के अनुसार उनके सिर काट दिए जाएँ।'

सैनिकों ने शहीदों को पकड़कर ठीक उसी स्थान पर उनका सिर कलम कर दिया जहाँ पवित्र कन्याओं और उनकी माँ ने अपने प्रभु के लिए अपनी जान दे दी थी, यह घटना January[1541] के 31वें दिन हुई। गुप्त ईसाइयों ने उनके पवित्र शरीरों को ले जाकर संत मार्क प्रेरित और सुसमाचारकर्ता के चर्च में सम्मानपूर्वक अलग-अलग ताबूतों में दफनाया: एक में, पवित्र शहीदों साइरस और जॉन; और दूसरे में, संत अथानासिया और उनकी बेटियाँ। कई वर्षों बाद, धर्मपरायण सम्राट थियोडोसियस द यंगर[1542] के शासनकाल के दौरान, संत सिरिल, अलेक्जेंड्रिया के पैट्रिआर्क, एक देवदूत के माध्यम से ईश्वर की आज्ञा पर, ने पवित्र शहीदों साइरस और जॉन के अवशेषों को मैनुफिन नामक गाँव में[1543] स्थानांतरित किया,

---

[1541] संत साइरस और जॉन की शहादत 311 में हुई थी।

[1542] सम्राट थियोडोसियस द्वितीय, या युवा, ने 408 से 450 तक शासन किया।

[1543] मनुफिन, या मनुफ, कैनोपस से बहुत दूर नहीं स्थित था। – बाद में, संत साइरस और जॉन के अवशेष रोम ले जाए गए, और वहां से म्यूनिख ले जाए गए।

ताकि वहाँ से अनेक राक्षसों को भगाया जा सके, हमारे ईश्वर मसीह की महिमा के लिए, जो पिता और पवित्र आत्मा के साथ युगानुयुग महिमामय हैं, आमीन।

ट्रोपारियन, स्वर 5:

हे मसीह हमारे परमेश्वर, जिन्होंने अपने पवित्र शहीदों के चमत्कारों के द्वारा हमें एक अभेद्य दीवार प्रदान की है: उनकी प्रार्थनाओं द्वारा, राष्ट्रों की सभाओं को नष्ट करें और राज्यों के राजदंडों को मजबूत करें, क्योंकि आप ही एकमात्र भले और मानवजाति के प्रेमी हैं।

कॉन्टाकियन, स्वर 3:

हे पवित्र संतों, दिव्य अनुग्रह से चमत्कारों का वरदान प्राप्त करके, आप परम-ज्ञानी कुसरू और महिमामय यूहन्ना के साथ, अपने अदृश्य हाथ से हमारे सभी सांसारिक भावों को काटते हुए, अनवरत चमत्कार करते हैं: क्योंकि आप दिव्य चिकित्सक हैं।

नोवगोरोड के बिशप संत निकिता का जीवन।

31 जनवरी को स्मरणोत्सव

वे बहादुर योद्धा जो एक-एक करके दुश्मन पर झपटकर लड़ने के आदी हैं, न कि एक साथ पंक्तिबद्ध होकर, वे सभी से बढ़कर सम्मान के पात्र हैं। यद्यपि प्रभु अक्सर उन्हें अस्थायी रूप से गिरने देते हैं, ताकि वे घमंडी न हो जाएँ, फिर भी वे उन्हें अंत तक अपनी कृपापूर्ण सहायता के बिना कभी नहीं छोड़ते, बल्कि उन्हें बहाल करते हैं और अजेय बना देते हैं। मसीह के ऐसे ही एक पराक्रमी योद्धा, अर्थात् धन्य निकिता ने, आदरणीय आइज़ैक तपस्वी के बाद विशेष ख्याति प्राप्त की। आदरणीय पॉलीकार्प, संत साइमन के वचनों के आधार पर, उनके बारे में निम्नलिखित बताते हैं।

जिस समय आदरणीय निकोन मठाध्यक्ष थे, उस समय पवित्र गुफाओं के मठ के एक भाई, जिसका नाम निकिता था, ने मठाध्यक्ष से अकेले में तपस्या करने और एक कोठरी में अलग रहने की अनुमति देने के लिए कहना शुरू कर दिया।

'मेरे पुत्र! तुम्हारी युवावस्था में निष्क्रिय बैठना तुम्हारे किसी काम का नहीं होगा। यह कहीं बेहतर होगा कि तुम भाइयों के साथ रहो और मिलकर काम करके अपना इनाम न गँवाओ। आप स्वयं ने देखा है कि हमारे भाई , गुफावासी इसाक को एकांत में राक्षसों ने कैसे प्रलोभित किया था और यदि हमारे पूजनीय पिता एंथनी और थियोडोसियस की प्रार्थनाओं द्वारा ईश्वर की महान कृपा से उनका उद्धार न हुआ होता, तो वे नष्ट हो गए होते।

निकिता ने उत्तर दिया:

'कभी भी, मेरे पिता, मैं किसी भी प्रलोभन से भटकूँगा नहीं। मेरा इरादा राक्षसों के प्रलोभनों के खिलाफ दृढ़ खड़ा रहने का है और मैं मानवता के प्रेमी, ईश्वर से प्रार्थना करूँगा, कि वह मुझे भी चमत्कार करने का वरदान दें, जैसे उन्होंने एक बार इज़ैक तपस्वी को दिया था, जो आज भी कई चमत्कार करते हैं।'

तब मठाधीश ने उससे और भी गंभीरता से कहा:

– तुम्हारी इच्छा तुम्हारी शक्ति से बढ़कर है। सावधान रहो, मेरे बेटे, कि कहीं तुम अपने अहंकार के कारण गिर न जाओ। मैं तुम्हें आज्ञा देता हूँ कि तुम भाइयों की अच्छी सेवा करो, और तुम्हारी आज्ञाकारिता के लिए ईश्वर तुम्हें मुकुट पहनाएगा।

हालाँकि, निकिता ने मठाधीश की सलाह मानने से इनकार कर दिया: वह अपने भीतर एक तपस्वी के जीवन के लिए तीव्र लालसा पर काबू नहीं पा सका। इसलिए, उसने ठीक वही किया जो वह करने का इरादा रखता था: वह खुद को एक गुफा में बंद कर गया, प्रवेश द्वार को अच्छी तरह से बंद कर दिया, और प्रार्थना में अकेला ही रहा, कभी बाहर नहीं निकला। फिर भी, केवल कुछ ही दिनों के बाद, वह शैतान की चालाकी से बच नहीं सका: अपनी प्रार्थनाएँ गाते समय, उसने अपने बगल में प्रार्थना करते हुए एक आवाज़ सुनी और एक अकथनीय सुगंध को महसूस किया। इससे मोहित होकर, उसने

अपने मन में वचिार कयिा: 'यदि यह एक देवदूत नहीं होता, तो वह मेरे साथ प्रार्थना नहीं कर रहा होता, और न ही पवत्रि आत्मा की सुगंध यहाँ होती।

उसने और भी अधकि लगन से प्रार्थना करना शुरू कर दयिा, यह कहते हुए:

'प्रभु! स्वयं को मुझे मूरत रूप में प्रकट करें, ताकि मैं आपको देख सकूँ।'

एक आवाज़ ने उत्तर दयिा:

'मैं तुझ पर प्रकट नहीं होऊँगा, क्योंकि तू जवान है; नहीं तो तू घमंडी हो जाएगा और गरि सकता है।'

तपस्वी ने आँसू भरी वनिती करना जारी रखा:

'प्रभु, मैं कभी भटकूँगा नहीं। मठाधीश ने मुझे शैतान के प्रलोभनों पर ध्यान न देने की शक्षिा दी है – परन्तु मैं वही करूँगा जो आप आज्ञा दें।'

तब आत्मा-वनिाशकारी सर्प ने उस पर अधकिार पाकर कहा:

'मांसल देहधारी मनुष्य के लिए मुझे देखना असंभव है। इसलिए, मैं अपनी दूत को तुम्हारे पास भेज रहा हूँ, और तुम्हें उसकी इच्छा का पालन करना होगा।'

तुरंत बाद, एक राक्षस उसके सामने एक देवदूत के रूप में प्रकट हुआ। नकिति जमीन पर गरि पड़ा और जैसे वह कोई देवदूत हो, वैसे ही उसके सामने झुक गया। राक्षस ने उससे कहा:

'अब से, प्रार्थना मत करना, बल्कि किताबें पढ़ना। इस तरह, तुम ईश्वर से संवाद करोगे और जो लोग तुमसे मलिने आएँगे, उन्हें उपयोगी मार्गदर्शन दोगे, जबकि मैं हमेशा सृष्टकिर्ता से तुम्हारे उद्धार के लिए प्रार्थना करूँगा।'

[1][5][4][4][1][5][4][6]तपस्वी ने इन शब्दों पर वश्विास कर लयिा और, भटक कर, अब प्रार्थना नहीं करता था, बल्कि लगन से कतिाबें पढ़ने लगा। साथ ही, उसने उस राक्षस को लगातार उसके लिए प्रार्थना करते देखा और यह सोचकर प्रसन्न हुआ कि यह स्वर्गदूत उसकी ओर से प्रार्थना कर रहा था। वह उसके पास आने वालों से आत्मा की भलाई के बारे में बात करने के लिए पवत्रि शास्त्रों का सहारा लेकर लंबी बातचीत करता था; उसने भवष्यिवाणी करना भी शुरू कर दयिा। उसकी ख्याति दूर-दूर तक फैल गई, और हर कोई उसकी भवष्यिवाणियों के पूरा होने पर आश्चर्यचकति था। एक अवसर पर, उन्होंने राजकुमार इज्यास्लाव को संदेश भेजा कि 'आज, राजकुमार ग्लेब स्वयितोस्लावचि मारे गए हैं; अपने बेटे स्वयितोपोलक को तुरंत नोवगोरोड के राजकुमार के सहिासन पर भेजो।' जैसा उन्होंने कहा था, वैसा ही हुआ। वास्तव में, कुछ ही दनिों बाद, राजकुमार ग्लेब की हत्या की खबर आई। उस समय से, लोग उस तपस्वी को एक भवष्यिवक्ता के रूप में और भी अधकि मानने लगे, और राजकुमारों तथा बोयारों दोनों ने उस पर दलि से वश्विास कयिा। वास्तव में, बेशक, एक राक्षस भवष्यि नहीं जानता, लेकनि जो कुछ भी उसने स्वयं कयिा हो – उदाहरण के लिए, यदि उसने बुरे लोगों को कसिी की हत्या करने या चोरी करने के लिए उकसाया हो – वही वह उद्घोषति करता है। इसी तरह, जब लोग सांत्वना के शब्दों की तलाश में तपस्वी के पास आते, तो राक्षस—जसिे वह एक देवदूत मानता था—उन्हें वह सब कुछ बता देता था जो उनके साथ हुआ था। नकिति ने भवष्यिवाणी की, और जो कुछ भी उसने बताया था, वह सब सच हो गया।

साथ ही, पुराने नयिम की पुस्तकों के ज्ञान में कसिी का मुकाबला नकिति से नहीं हो सकता था; वह उन्हें सभी कंठस्थ जानता था: उत्पत्ति, नर्गिमन, लेवयिों, गणना, न्याययिों, राजाओं और सभी भवष्यिवाणयिों को क्रमबद्ध रूप से। वास्तव में, वह पुराने नयिम की सभी पुस्तकों को बहुत अच्छी तरह जानता था, लेकनि जहाँ तक पवत्रि सुसमाचार और प्रेरतिों की पुस्तकों का सवाल है, जो हमारे उद्धार के लिए और हमें भलाई में मजबूत करने के लिए ईश्वर की कृपा से हमें दी गई हैं, वह उन्हें कभी देखना या सुनना भी नहीं चाहता था, पढ़ना तो दूर की बात है; न ही वह नए नयिम के बारे में कसिी से बात करना चाहता था। इससे सभी को स्पष्ट हो गया कि उसे शैतान ने भटका दयिा था। इस बात से गहराई से दुखी होकर, सम्मानति पति उस भटके हुए व्यक्ति के पास आए: मठाध्यक्ष नकिोन, जॉन, जो उनके बाद मठाध्यक्ष बने, उपवास करने वाले पमिेन, यशायाह, जो बाद में रोस्तोव के बशिप बने, दूरदर्शी मत्ती, आइसैक द हरमटि, अगपटिस द फजिशियिन, ग्रेगरी द वंडरवर्कर, नकिोलस, जो बाद में टमुटारकान के बशिप बने, नेस्टर द क्रॉनकिलर, ग्रेगरी द कंपाइलर ऑफ़

---

[1] इज्यास्लाव यारोस्लावचि – 1054 से 1068 तक कीव के महा राजकुमार।

[2] ग्लेब स्वयितोस्लावचि – नोवगोरोड के राजकुमार, कीव के महाप्रसि स्वयितोस्लाव के सबसे बड़े बेटे, की 1078 में फनिशि लोगों द्वारा हत्या कर दी गई थी।

[3] स्वआितोपोलक द्वतिीय (मखिाइल) इज्यास्लावकि, कीव के महाप्रसि इज्यास्लाव के पुत्र, 1078 से नोवगोरोड के राजकुमार और 1093 से 1114 तक कीव के राजकुमार थे।

कैनन्स, थियोक्टस्टि, जो बाद में चेर्नहिभि के बशिप बने, और ओनसीफोरोस द क्लेयरवॉयंट[1547] । वे सभी, जो अपने गुणों के लिए प्रसद्धि थे, आए और उन्होंने नकिता के लिए ईश्वर से प्रार्थना की और उसे उससे दूर भगा दिया, ताकि नकिता उसे फरि कभी न देख सके। तब, उसे गुफा से बाहर ले जाकर, उन्होंने उससे पुराने नयिम में से कुछ पढ़ने के लिए कहा। उसने, हालांकि, यह कसम खाना शुरू कर दिया कि उसने वे कतिाबें कभी पढ़ी भी नहीं थीं, जन्हिें वह हाल ही तक रटकर जानता था; इसके अलावा, अब वह उनमें से एक भी शब्द नहीं जानता था। अब वे बड़ी मुश्कलि से उसे पढ़ना-लखिना सखिा पाए। पूजनीय पादरयिों की प्रार्थनाओं से धीरे-धीरे होश में आते हुए, उसने अपना पाप स्वीकार कयिा और उस पर गहरा पछतावा कयिा। इसके बाद, उसने स्वयं पर वशिष संयम और तपस्या का पालन कयिा, एक कठोर और वनिम्र जीवन जीना शुरू कर दिया, और सद्गुणों में दूसरों से आगे नकिल गया। दयालु प्रभु ने, धन्य नकिता के ऐसे कर्मों को देखकर, और उसके उन पूर्व पुण्यों की अवहेलना न करते हुए, जन्हिें उसने अपनी जवानी से अभ्यास कयिा था, उसके सच्चे पश्चाताप को स्वीकार कर लयिा; और जैसे उन्होंने एक बार संत पीटर के पश्चाताप को स्वीकार कयिा था, जसिने उन्हें तीन बार नकार दिया था, उससे कहते हुए: 'मेरे भेड़ों को चराओ'[1548] ; इसी प्रकार उन्होंने धन्य नकिता को भी प्रायश्चति स्वीकार कए जाने का यही संकेत प्रदान कयिा। उनके आज्ञाओं के पालन में प्रकट हुए उनके महान प्रेम के लिए, प्रभु ने उन्हें वचन के झुंड का एक चरवाहा बनाया, और उन्हें नोवगोरोड के बशिप के पद पर पदोन्नत कयिा[1549] । वहाँ, प्रभु ने अपनी भेड़ों को आश्वस्त करने और संत पर आई परीक्षा की क्षमा के बारे में उन्हें पूरी तरह से वशि्वास दलिाने के लिए, उनके सदाचारी जीवन को चमत्कार करने का वरदान देकर गौरवान्वति कयिा। इस प्रकार, एक अवसर पर सूखे के दौरान, संत ने ईश्वर से प्रार्थना की और स्वर्ग से वर्षा कराई; एक अन्य अवसर पर, उन्होंने अपनी प्रार्थनाओं के द्वारा शहर में लगी आग को बुझा दिया; उन्होंने कई अन्य चमत्कार भी कए। अपने उपदेशों के माध्यम से अपने अनुयायियों का वफादारी से मार्गदर्शन करने के बाद, 30 जनवरी 1108 को वे प्रभु के साथ अनंत जीवन में प्रवेश कर गए। उन्होंने तेरह वर्षों तक बशिप के रूप में सेवा की थी। उन्हें प्रभु के पवत्रि माता-पति, संत जोआकमि और एना के महान चर्च की पार्श्व-गरिजाघर में सम्मान के साथ दफनाया गया। धन्य नकिता का शरीर चार सौ पचास वर्षों तक ताबूत में संजोकर रखा गया; फरि, 1558 में, धर्मपरायण शासक जॉन वासलिवh, ऑल रूस के सर्वोच्च शासक के शासनकाल के दौरान, मेट्रोपॉलटिन मकारयिोस और नोवगोरोड के आर्चबशिप थयिोडोसयिस के अधीन, संत नकिता के अवशेष पूरे और पूरी तरह से सुरक्षति पाए गए[1550] । आज भी, वे उन लोगों को अनेक चंगाइयाँ प्रदान करते हैं जो श्रद्धा के साथ उनके पास आते हैं। हमारे परमेश्वर की महमिा हो, अब और हमेशा और युगों-युगों तक, आमीन।

ट्रोपारयिन, स्वर 4:

हे ईश्वर-ज्ञानी, संयम में आनंदति होकर, और अपने शरीर की इच्छाओं को वश में कर, आपने पुरोहतित्व के सहिासन पर आसीनता प्राप्त की है; और एक दीप्तमिान तारे के समान, आप अपने चमत्कारों की प्रभात से वशि्वासयिों के हृदयों को प्रकाशति करते हैं, हमारे पति, संत नकिता; और अब मसीह हमारे ईश्वर से प्रार्थना करें कि वह हमारी आत्माओं को बचाए।

[1547] 23 मार्च को गुफाओं के संत नकिॉन का स्मरणोत्सव; 19 अप्रैल को 'पुराने गुफावासी' के नाम से जाने जाने वाले संत जॉन का स्मरणोत्सव; 27 अगस्त को उपवास करने वाले संत पमिेन का स्मरणोत्सव; 15 मई को रोस्तोव के बशिप इसाया का स्मरणोत्सव; संत मत्ती द दूरदर्शी का स्मरणोत्सव – 5 अक्टूबर; संत अगपटिस – 1 जून; संत ग्रेगरी – 8 अगस्त; चेर्नगिोव के बशिप थयिोक्टस्टि का स्मरणोत्सव – 6 अगस्त; संत ओनेसफिोरस द दूरदर्शी का स्मरणोत्सव – 9 नवंबर।

[1548] यूहन्ना 21:16–17।

[1549] संत नकिता को 1096 में नोवगोरोड के बशिप के रूप में अभषिक्ति कयिा गया था।

[1550] नोवगोरोड के बशिप, संत नकिता की अवशेषों की खोज से बहुत पहले, उन्हें एक संत के रूप में पूजा जाता था; उनके पर्व का उत्सव 13वीं शताब्दी के पहले छमाही में ही मनाया जाता था। वर्तमान में, उनके अक्षय अवशेष नोवगोरोड में सेंट सोफयिा कैथेड्रल में खुले तौर पर रखे गए हैं।

कॉन्टाकयिन, स्वर 6:

महाधर्माध्यक्ष के पद से सम्मानति और परम पवत्रि के समक्ष खड़े होकर, आपने अपने लोगों के लिए वनिम्र प्रार्थनाएँ अर्पति कीं; क्योंकि आपकी प्रार्थनाओं से आपने वर्षा कराई, और अन्य समयों में ओलावृष्टि की आग को बुझाया। और अब, संत नकिति, हमारे ईश्वर मसीह से अपने प्रार्थना करने वाले लोगों को बचाने के लिए प्रार्थना करें, ताकि हम सब आपसे पुकार सकें: हे अद्भुत पवत्रि पति, आनन्दति हो।

पवत्रि शहीदों वक्टिोरनिस, वक्टिर, नकिोफोरस, क्लॉडयिस, डायोडोरस, सेरापयिन और पापयिास का स्मरणोत्सव।

31 जनवरी को स्मरणोत्सव

इन सभी पवत्रि शहीदों ने डेसयिस के शासनकाल में मसीह के वश्विास के लिए कष्ट सहे। वक्टिोरनिस, वक्टिर और नकिफिोरस को एक पत्थर की ओखली में डालकर पत्थर की खलई से कुचल दयिा गया; क्लॉडयिस अपने हाथ और पैर कटवाने के बाद मर गए; डायोडोरस को जदिा जला दयिा गया; सेरापयिन का सरि कलम कर दयिा गया; पापयिास को समुद्र में फेंक दयिा गया[1551] ।

पवत्रि शहीद त्रफिेना की स्मृति।

31 जनवरी को स्मरणोत्सव

पवत्रि शहीद त्रफिैना साइज़किस शहर की रहने वाली थीं[1552] ; वह ईसाइयों की बेटी थीं: सक्लिेटकि अनास्तासयि[1553] और उनकी माँ सोक्रैटयिा। संत ने स्वेच्छा से खुद को कष्ट सहने के लिए प्रस्तुत कयिा। मूर्तपिूजा की भूल और मूर्तयिों को बेवकूफी से देवता मानने वालों की सार्वजनकि रूप से नदिा करते हुए, उन्होंने उन्हें व्यर्थ की पूजा त्यागने और सच्चे ईश्वर की ओर मुड़ने का आग्रह कयिा। इसके लिए, केसरिया के राज्यपाल ने उसे एक जलती हुई भट्टी में फेंकने का आदेश दयिा, लेकनि पवत्रि शहीद बनिा कसिी चोट के बाहर नकिली; फरि उसे एक ऊँचे पेड़ से लटकाया गया और ऊँचाई से तेज कीलों पर गरिा दयिा गया, जसिके बाद उसे जानवरों द्वारा खाए जाने के लिए फेंक दयिा गया, लेकनि उन्होंने उसे छुआ भी नहीं; अंत में, एक उग्र सांड के सींगों से उसे सींगों में घोंपकर मार डाला गया। यह दर्ज है कि जहाँ उसका रक्त बहा, वहाँ पानी का एक झरना फूट नकिला, जसिसे कई लोगों को सहायता और चंगाई मलिी।

14 फरवरी

1 फरवरी (पुराना तरीका)

इसी दनि, हम गालाटयिा के हमारे पूजनीय पति पीटर का स्मरण करते हैं, जनिका नधिन लगभग 429 ईस्वी में हुआ था। उनका स्मरण 22 फरवरी और 25 नवंबर को पीटर द स्टाइलाइट और मौन व्यक्ति के नाम से भी कयिा जाता है।

पवत्रि शहीद त्रफिोन का कष्टकथा

1 फरवरी को स्मरण कयिा जाता है

[1551] पवत्रि शहीदों वक्टिोरनिस, वक्टिर, नकिफ़ोर, क्लॉडयिस, डायोडोरस, सेरापयिन और पापयिास ने वर्ष 251 में कोरथि में शहादत प्राप्त की।
[1552] क्यज़किोस – फ्रीजयिा में एक शहर, एशयिा माइनर के पश्चमिी तट पर, मार्मारा सागर की एक प्रायद्वीप पर।
[1553] एक सनिक्लटिकि एक उच्च-श्रेणी का दरबारी अधकिारी, राज्य परषिद का सदस्य था।

संत त्रफिोन का जन्म फ्रीजयिा की भूमि में, अपामयिा शहर के पास[1554] के कम्प्सद गाँव में हुआ था। अपने शुरुआती वर्षों से ही, ईश्वर की कृपा उन पर बनी रही, और प्रभु ने उन्हें चमत्कार करने की शक्ति प्रदान की[1555], ताकि न केवल इस बच्चे के वचनों के माध्यम से, बल्कि उनके चमत्कारी कार्यों के माध्यम से भी उनकी महमिा हो सके। महान चार-दविसीय मेनोलॉजयिन[1556] में, पवत्रि युवक त्रफिोन द्वारा सभी प्रकार की बीमारयिों से चंगा करने और जो लोग उसकी ओर मुड़े, उनसे राक्षसों को भगाने के बारे में बहुत कुछ वर्णति है। हम पहले उनके कई चमत्कारों में से एक का वर्णन करेंगे, जो उन पर परमेश्वर की महान कृपा होने का प्रमाण है, और फरि हम मसीह के वश्विास के लिए उनके दुख-कष्टों का वर्णन करेंगे।

वर्ष 238 में, सम्राट गॉर्डयिन[1557] ने रोमन सहिासन संभाला; यद्यपि वह मूर्तपिूजक था, उसने ईसाइयों पर अत्याचार नहीं कयिा। इस सम्राट की गोरडयिना नाम की एक वयस्क बेटी थी – एक ऐसी कन्या जो अपनी बुद्धि और सुंदरता के लिए प्रसद्धि थी, इतनी प्रसद्धि कि कई महान और प्रतष्ठिति राजकुमार उसे अपने बेटों के ववािह के लिए चाहते थे। लेकनि इस युवती पर एक बड़ी वपित्ति आई, और उसके साथ उसके पूरे परविार पर भी: ईश्वर की अनुमति से, शैतान उसमें प्रवेश कर गया और उसे क्रूरता से पीड़ति कयिा, उसे आग और पानी में फेंक दयिा; बुद्धि के लिए प्रसद्धि चकित्सिक, जन्हिें उस बीमार युवती के पास लाया गया, उसकी मदद करने में असमर्थ रहे। लेकनि फरि, उस कन्या के भीतर वास करने वाली अशुद्ध आत्मा ने स्वयं, ईश्वर की आज्ञा से, बोलकर कहा:

'मुझे यहाँ से केवल युवक त्रफिोन ही नकिाल सकता है।'

राजा ने तुरंत ही दूर-दूर तक त्रफिोन की खोज भेज दी। उसी नाम के कई लोग राजा के सामने लाए गए, लेकनि उनमें से कोई भी राजा की बेटी से राक्षस को बाहर नहीं नकिाल सका। अंत में, पवत्रि युवक त्रफिोन को राजा के सामने लाया गया; उसे फ्राइजयिा के कम्पासेड गाँव में पाया गया था, जहाँ वह एक झील के कनिारे हंसों की देखभाल कर रहा था; उस समय युवक सत्रह वर्ष का था। जैसे ही संत रोम पहुँचे, शैतान, उनके आगमन के बारे में जानकर और युवती को और भी बेरहमी से सताना शुरू कर दयिा, और जोर से चल्लिाया:

'मैं अब यहाँ और नहीं रह सकता, क्योंकि त्रफिोन आ रहा है और तीसरे दनि यहाँ पहुँच जाएगा; मैं अब और सहन नहीं कर सकता।'

ऐसा चल्लिाने के बाद, अशुद्ध आत्मा ने युवती को छोड़ दयिा।

तीसरे दनि, संत त्रफिोन शहर में पहुँचे और उन्हें तुरंत शाही कक्षों में ले जाया गया, जहाँ राजा ने उनका बहुत गर्मजोशी से स्वागत कयिा; क्योंकि राजा ने उनमें वही त्रफिोन को पहचान लयिा था, जसिका उल्लेख शैतान ने उस युवती को छोड़ते समय कयिा था। लेकनि यह और भी नश्चिति करने के लिए कि वास्तव में त्रफिोन ही थे जन्होंने उसकी बेटी को ठीक कयिा था, राजा ने उनसे वनिती की कि वे शैतान को उसकी आँखों के सामने प्रकट करें, ताकि वह उसे अपनी शारीरकि आँखों से देख सके। संत ने राजा की प्रार्थना स्वीकार कर ली और छह दनि उपवास और प्रार्थना में बतिाए; इसके बाद, उन्हें स्वर्ग से अशुद्ध आत्माओं पर और भी बड़ी और शक्तशिाली शक्ति प्राप्त हुई। सातवें दनि, सूर्योदय के समय, राजा अपने पूरे दरबार के साथ उस धन्य व्यक्ति के पास आया, वह शैतान को देखना चाहता था। तब त्रफिोन, जो पवत्रि आत्मा से परपिूर्ण था और आध्यात्मकि नेत्रों से द्वेष की अदृश्य आत्मा को देख रहा था, उसने उससे कहा:

'मैं तुझसे कहता हूँ, अशुद्ध आत्मा, मेरे प्रभु यीशु मसीह के नाम पर, यहाँ उपस्थति लोगों की आँखों के सामने प्रकट हो, और उन्हें अपना घृणति और लज्जाहीन स्वरूप दखिा, और अपनी दुर्बलता प्रकट कर।'

और तुरंत शैतान उनकी सभी के सामने एक काले कुत्ते के रूप में प्रकट हुआ, जसिकी आँखें आग जैसी थीं, और वह अपना सरि ज़मीन पर घसीट रहा था।

[1554] *फ्रायजयिा* – एशयिा माइनर के प्रमुख क्षेत्रों में से एक। *अपामयिा* – फ्रायजयिा का सबसे महत्वपूर्ण शहर, जहाँ व्यापार फल-फूल रहा था।

[1555] ग्रीक यूचोलॉजयिन के अनुसार, कैप्सडा के नविासयिों को एक बार सेंट ट्रायफोन की प्रार्थनाओं से अकाल से बचाया गया था, जब हानकिारक सरीसृप और कीड़े दखिाई दए थे और वे अनाज, पेड़ों की पत्तयिों और हर तरह की हरयिाली को खा रहे थे। संत त्रफिोन, इस वपित्ति पर शोक करते हुए, प्रार्थना में प्रभु की ओर अपने हाथ उठाए और उनसे प्रार्थना की कि वे हानकिारक कीड़ों को नष्ट करने के लिए अपना स्वर्गदूत भेजें; उसी समय, पवत्रि शहीद ने स्वयं उन्हें एक शपथ से बाँध दयिा कि वे उनके नविास के लिए नर्धिारति दुर्गम स्थानों पर चले जाएँ।

[1556] *ग्रेट मेनायोन- चेतयि* का संकलन 16वीं शताब्दी में मॉस्को के मेट्रोपॉलटिन मकाराई द्वारा कयिा गया था। संतों के जीवन के अलावा, इसमें संपूर्ण पवत्रि शास्त्र, कई उपदेश और आध्यात्मकि प्रकृति के वभिन्नि लेख शामलि हैं। रोस्तोव के संत डेमेट्रयिस का मेनायोन-चेतयि मकाराई के मेनायोन के आधार पर संकलति कयिा गया था।

[1557] *गॉर्डयिन* ने 238 से 244 तक शासन कयिा।

संत ने उससे पूछते हुए कहा:

'तुम्हें यहाँ किसने भेजा है, राक्षस, इस कन्या में प्रवेश करने के लिए, और तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई ईश्वर की प्रतिमा में रची गई किसी प्राणी में प्रवेश करने की, जबकि तुम स्वयं इतने घृणित, दुर्बल और हर तरह की घृणा से परिपूर्ण हो?'

शैतान ने उत्तर दिया:

'मुझे मेरे पिता—शैतान, सभी बुराइयों के राजकुमार, जो नरक में वास करते हैं—ने भेजा है, जिन्होंने मुझे इस कन्या को यातना देने का आदेश दिया है।'

तब संत ने उससे फिर पूछा:

'तो फिर, ईश्वर की सृष्टि पर हाथ उठाने की शक्ति तुम्हें किसने दी?'

दैत्य, यद्यपि अपनी इच्छा के विरुद्ध, परन्तु ईश्वर की अदृश्य शक्ति से विवश होकर, सत्य बोलने के लिए बाध्य हुआ।

उसने कहा, 'हमारा उन पर कोई अधिकार नहीं है, जो ईश्वर को जानते हैं और उसके एकलौते पुत्र—मसीह, जिसके लिए पतरस और पॉल यहाँ मरे—में विश्वास रखते हैं। ऐसे लोगों से हम डरकर भाग जाते हैं, और केवल तब , जब हमें ऐसा करने की अनुमति मिलती है, हम उन पर केवल मामूली प्रलोभन ही थोपते हैं। जहाँ तक उन लोगों का सवाल है जो ईश्वर और ईश्वर के पुत्र में विश्वास नहीं करते, और जो अपनी वासनाओं का पालन करते हुए ऐसे कर्म करते हैं जो हमें प्रसन्न करते हैं, उन पर हमें उन्हें यातना देने का पूरा अधिकार है। ऐसे कर्म हमें प्रसन्न करते हैं: मूर्तिपूजा, ईश्वर-निंदा, व्यभिचार, जादू-टोना, ईर्ष्या, हत्या, अहंकार; इन और इसी प्रकार के कर्मों द्वारा, लोग जालों की तरह फँस जाते हैं, अपने स्रष्टा, ईश्वर से अलग हो जाते हैं, और अपनी इच्छा से हमारे मित्र बन जाते हैं, और हमारे साथ अनंतकालिक यातना सहते हैं।

यह सुनकर राजा और उसके आसपास के लोग बहुत डर गए और भय से भर गए; और कई लोगों ने अपने दुष्ट कर्मों को त्यागकर मसीह में विश्वास करना शुरू कर दिया; जबकि विश्वासियों का विश्वास और दृढ़ हो गया और उन्होंने परमेश्वर की महिमा की।

राजा ने संत को उदारतापूर्वक पुरस्कृत कर उन्हें शांति से घर भेज दिया; लेकिन संत ने राजा से मिली सारी संपत्ति रास्ते में गरीबों में बाँट दी; और स्वयं, अपने देश लौटकर, उन्होंने बीमारों को ठीक करने और एक पवित्र तथा निष्पाप जीवन के द्वारा ईश्वर को प्रसन्न करने में अपना समय समर्पित कर दिया।

[1558]गॉर्डियन के बाद, फिलिप[1559] ने रोमन सिंहासन संभाला; वह केवल थोड़े समय तक शासन कर पाया, क्योंकि उसे उसके ही सैनिकों ने मार डाला था; और उसके बाद क्रूर डेसियस[1560] आया, जिसने ईसाइयों के खिलाफ एक क्रूर उत्पीड़न शुरू किया; जिस दौरान अनगिनत ईसाइयों को मौत की सज़ा दी गई, जबकि कई डरपोक लोग, भयानक यातनाओं के डर से, मसीह से मुंह मोड़ गए और मूर्तिपूजा के आगे झुक गए। इस सम्राट ने अपने एपार्कों और हेगेमोनार्कों को आदेश दिया कि वे हर जगह ईसाइयों का उत्पीड़न करें और उन्हें बिना किसी दया के मौत की सज़ा दें। उस समय पूर्व में, एक अक्विलिनिस नामक व्यक्ति एपार्क था; उसे यह सूचना मिली कि त्रिफिोन ने मसीह के धर्म का प्रचार किया और विभिन्न देशों में घूमते हुए, एक अत्यधिक कुशल चिकित्सक के रूप में बीमारों को ठीक किया, और साथ ही सभी को मसीह में विश्वास करने की शिक्षा दी और इस प्रकार कई लोगों को अपने पक्ष में कर लिया; फिर भी त्रिफिोन ने राजा की आज्ञाओं की कोई परवाह नहीं की, और सभी देवताओं का मज़ाक उड़ाया। सैनिकों को तुरंत त्रिफ़ोन की तलाश में भेजा गया, जिसे उन्होंने जल्द ही ढूंढ लिया: क्योंकि ईश्वर के प्रति उत्साह से जलता और विश्वास तथा अच्छे कार्यों से दमकता एक दीपक छिपा नहीं रह सकता था। लेकिन संत स्वयं, यह जानकर कि उन्हें खोजा जा रहा है, न तो रेगिस्तान में भागे और न ही पहाड़ों या धरती की घाटियों में छिप गए; बल्कि, प्रार्थना और क्रूस के चिह्न से स्वयं को सशस्त्र करके, वे साहसपूर्वक उन्हें खोजने वालों से मिलने के लिए बाहर निकले और, स्वयं को उनके हाथों में सौंपकर, प्रसन्नतापूर्वक

[1558] *एक स्क्रिनियेरियस* एक दरबारी कोषाध्यक्ष होता था जो एपार्क (प्रांतीय गवर्नर) के अधीन काफी शक्ति का प्रयोग करता था, यही कारण है कि वह सम्राट का विशेष विश्वासपात्र था और उसे विभिन्न जिम्मेदार पदों पर सौंपा जाता था।

[1559] *फिलिप* (अरब) ने 244 से 249 तक शासन किया।

[1560] *डेसियस ने* 249 से 251 तक शासन किया।

राज्यपाल अक्वलिनिस के पास गए, जो उस समय नकियिा में थे[1561] । जब अक्वलिनिस, अपने हथयिार-वाहकों, कमांडरों, सेवकों और लोगों की एक बड़ी भीड़ से घरि, पीठ पर बैठ गए, तो उच्च पदस्थ लपिकि पोंपनियिानुस ने उनसे कहा:

'यहाँ अपमेया नगर का एक युवक है, जसिे महामहमि के पास भेजा गया है; वह आपके अधकिार के धर्मी न्याय के समक्ष खड़ा है।'

अकीलनि ने कहा:

'जो हमारे सामने खड़ा है, वह अपना नाम, अपना मूल स्थान और अपनी कस्मित बताए[1562] ।'

संत ने उत्तर दयिा:

मेरा नाम त्रफिोन है; मेरा स्वदेश अपमेआ नगर के पास काम्प्साडा गाँव है; जहाँ तक भाग्य की बात है, हम इसे स्वीकार नहीं करते, क्योंकि हमारा वश्विास है कि सभी चीजें ईश्वर की दव्यि-लखिति योजना और उनकी अकथनीय बुद्धमित्ता के अनुसार पूरी होती हैं, न कि भाग्य से, और न ही वे तारों की चाल या संयोग पर नर्भिर करती हैं, जैसा कि आप मानते हैं। जीवन में, मैं अपनी स्वतंत्र इच्छा से नर्दिेशति हूँ, और केवल मसीह की सेवा करता हूँ। मसीह मेरा वश्विास है, मसीह मेरी स्तुति है और मेरी महमिा का मुकुट है।

इस पर एपार्क ने संत से कहा:

'शायद तुमने आज तक उस शाही फरमान के बारे में नहीं सुना है, जसिके अनुसार जो कोई भी खुद को ईसाई कहता है और देवताओं की पूजा नहीं करता, उसे एक भयानक मृत्यु का सामना करना होगा; इसलएि, होश में आओ और अपने धोखेबाज़ वश्विास का त्याग करो, नहीं तो तुम आग में फेंक दएि जाओगे।'

लेकनि त्रफिोन ने कहा:

'हे, काश मैं अपने प्रभु और परमेश्वर यीशु मसीह के लएि, आग और हर प्रकार की यातनाओं के द्वारा, अपना अंत करने के योग्य ठहरता!'

गवर्नर ने जारी रखा:

'ट्राइफोन, मैं तुम्हें देवताओं को बलदिान चढ़ाने की सलाह देता हूँ, क्योंकि मैं देखता हूँ कि यद्यपि तुम शरीर से युवा हो, पर तुम्हारा मन पक्का है, और मैं नहीं चाहता कि तुम एक भयानक मृत्यु मरो!'

'मेरा मन तब स्वस्थ होगा,' संत ने उत्तर दयिा, 'जब मैं अपने ईश्वर के प्रति पूर्ण आत्मसमर्पण कर लूँगा, और यदि मैं उनमें अपनी धर्मपरायण आस्था को एक अनमोल खजाने की तरह अपरविर्तति रखूँगा, और उस ईश्वर के लएि बलदिान बन जाऊँगा जसिने स्वयं मेरे लएि बलदिान दयिा।'

तब राज्यपाल ने संत को धमकाते हुए क्रोध में चल्लिाया:

'मैं तुम्हारे शरीर को आग में फेंक दूँगा, और तुम्हारी आत्मा को सबसे क्रूर यातनाओं से वश में कर लूँगा।'

'तुम मुझे एक ऐसी आग से डरा रहे हो जो बुझ जाती है,' त्रफिोन ने उत्तर दयिा, 'जसिके बाद केवल राख रह जाती है; लेकनि मैं तुम्हें, अवश्विासयिों, एक शाश्वत, अवनिाशी आग से डराता हूँ; अपने व्यर्थ वश्विास को त्याग दो और सच्चे ईश्वर को जानो, कहीं ऐसा न हो कि बाद में जब तुम शाश्वत आग में पड़ जाओ तो तुम्हें पछताना पड़े।'

लेकनि अकीलनि, जो प्रचंड क्रोध से भड़क उठा था, ने संत को एक पेड़ से लटकाकर कोड़ों से पीटने का आदेश दयिा। यह आदेश सुनते ही, ट्रफिोन ने तुरंत अपने कपड़े उतार दएि और खुशी-खुशी अपने शरीर को यातना देने के लएि जल्लादों के हवाले कर दयिा। फाँसी देने वालों ने, उसे उसके हाथ पीछे बाँधकर एक पेड़ पर लटका दयिा और तीन घंटे तक क्रूरता से यातना दी। लेकनि संत ने साहस के साथ यातना सहन की, और पूरे समय जब उसे पीटा जा रहा था, तब उसने एक भी चीख या कराह नहीं नकिाली। जब उन्होंने उसे यातना देना समाप्त कर दयिा, तो अकलिनि ने फरि से उससे वनिती की:

'होश में आओ, त्रफिोन; अपनी मूर्खता छोड़ दो; देवताओं की पूजा करने का वादा करो, क्योंकि राजा की आज्ञा का पालन करने से इनकार करने वाला कोई भी व्यक्ति भयानक मृत्यु से बच नहीं सकता।'

संत ने नडिरता से उत्तर दयिा:

'और मैं तुम्हें बताता हूँ कि जो कोई भी स्वर्ग के राजा मसीह को अस्वीकार करता है, वह अनंत जीवन का वारसि नहीं बन सकता, बल्कि उसे उस अनंत आग में डाल दयिा जाएगा जो कभी बुझती नहीं है।'

[1561] *नकिाया* – प्राचीन काल में एशयिा माइनर के बथिनियिा में एक समृद्ध और फलता-फूलता शहर – अब बहुत गरीब और कम आबादी वाला है। प्रथम और सप्तम सार्वभौमकि परषिदें इसी शहर में आयोजति की गई थीं।

[1562] *फोर्च्यूना* – भाग्य और सौभाग्य की रोमन देवी।

राज्यपाल ने उत्तर दिया:

'Saturn[1563] के पुत्र ज़ीउस के सिवा कोई दूसरा स्वर्गीय राजा नहीं है; वह देवताओं और मनुष्यों दोनों का पिता है, और जो कोई भी उसके आगे नहीं झुकता वह जीवित नहीं रह सकता; यदि तुम इस जीवन की मिठास का आनंद लेना चाहते हो तो उसके आगे भी झुक जाओ।'

तब संत ने, उस मूर्तिपूजक को सत्य के प्रकाश से ज्ञान देने और मूर्तिपूजा की घोर घृणा को उजागर करने की इच्छा से, अक्विलिनिस से कहा:

'जो कोई भी तुम्हारे देवता ज्यूस की पूजा करता है और उस पर अपनी आशा रखता है, वह उसी जैसा हो; और उसके बारे में कहा जाता है कि वह पहला अधर्मी जादूगर और हानिकारक जादूगर था, सभी दुष्टता और अधर्मीपन का पिता; उसकी मृत्यु के बाद, जो लोग उसके बुरे कर्मों का अनुसरण करना चाहते थे, उन्होंने उसके सोने और चांदी के बुरे बनाए, और उसे एक देवता कहा; और उन्होंने यह इसलिए किया ताकि वे अपनी अशुद्धता और अधर्म के लिए अपने लिए एक बहाना बना सकें, कहीं कोई उनके शर्मनाक कर्मों के लिए उनकी निंदा न करे, क्योंकि उनका देवता भी ऐसा ही था; इसी तरह, अन्य नीच और अत्यंत दुष्ट पुरुषों को उनके अनुयायियों द्वारा देवताओं के दर्जे तक पहुँचाया गया[1564] ; फिर भी तुम, इन प्राचीन अधर्मी परंपराओं और झूठी कहानियों पर विश्वास करते हुए, निर्जीव और बहरी मूर्तियों की पूजा करते हो, जीवित परमेश्वर को भूल जाते हो, जिसने स्वर्गों को स्थापित किया, पृथ्वी को जल पर स्थापित किया, और वायु को फैलाया; ईश्वर, जिसने हर प्राणी की रचना की और उसे एक दृश्यमान रूप दिया, ने मनुष्य को—जिसे बाद में बनाया गया था—सभी का स्वामी नियुक्त किया; लेकिन मनुष्य, शैतान की ईर्ष्या के कारण और चालाक सांप (उत्पत्ति 3) द्वारा बहकाए जाने से, अनगिनत दुखों में पड़ गया; तब परमेश्वर—वचन—ने उस पर दया करके, अपनी इच्छा से, देहधारी होने की कृपा की, और मानव रूप में प्रकट हुए; वे क्रूस पर मरे, दफनाए गए, तीसरे दिन पुनर्जीवित हुए, स्वर्ग में आरोहण किए, और परमेश्वर पिता के दाहिने हाथ पर विराजमान हैं, जब तक सारी सृष्टि उन्हें जान न ले; तब वह बड़ी शक्ति और महिमा के साथ फिर आएगा और प्रत्येक व्यक्ति को उनके कर्मों के अनुसार पुरस्कृत करेगा। वह देवताओं का देवता, राजाओं का राजा और जीवितों तथा मृतकों का न्यायी है; परन्तु जिन देवताओं की तुम पूजा करते हो, वे और जो कोई उनकी पूजा करता है, वे सभी अनंतकालिक आग के लिए ईंधन बन जाएँगे।

इसके बाद, राज्यपाल अकिलिनि, शिकार के लिए निकलते समय, ने आदेश दिया कि संत त्रिफिोन को भी पकड़ लिया जाए, और उसे एक घोड़े से बाँधकर अपने पीछे-पीछे ले जाने का हुक्म दिया। संत को बहुत यातनाएँ सहनी पड़ीं: उसकी उंगलियाँ उखड़ गईं, क्योंकि भयानक ठंड में उसके पैर नंगे थे, और घोड़े ने अपने खुरों से उन्हें कुचल डाला - और उसके तलवे फट गए; फिर भी शहीद ने, ईश्वर पर अपनी आध्यात्मिक दृष्टि टिकाए हुए और उनके प्रति प्रेम से जलते हुए, इन यातनाओं पर कोई ध्यान नहीं दिया और दाऊद के वचन गाए: *'मेरे कदमों को अपने मार्गों में स्थिर कर, ताकि मेरे पाँव न फिसलें'* (भजन संहिता 16:5), और अन्य: *'मेरे पाँवों को अपने वचन में स्थिर कर, और कोई अधर्म मुझ पर हावी न हो'* (भजन संहिता 118:133)।

साथ ही, उन्होंने पवित्र प्रथम-शहीद, महादीकन स्तेफानुस के शब्दों को दोहराया:

– *'प्रभु, इस पाप को इनके खिलाफ न गिनिा'*[1565] (प्रेरितों के काम 7:60)। शिकार से लौटने पर, राज्यपाल ने शहीद को बुलाया और उससे कहा:

– 'अब, हे नीच, क्या तुझे अभी तक होश नहीं आया और देवताओं को बलिदान चढ़ाने का निर्णय नहीं लिया, या क्या तू अपनी पूर्व की मूर्खता पर अड़ा रहता है?'

संत ने उत्तर दिया:

'तुम स्वयं शैतान की अंधता से ग्रस्त हो, पागलपन और अज्ञानता से भरे हुए हो, क्योंकि तुम सभी चीज़ों के स्रष्टा को पहचानने और उसकी पूजा करने में असमर्थ हो; जबकि मैं बुद्धिमान बना रहता हूँ, उस सत्य से कभी विचलित नहीं होता जो मुझे बचाता है।'

[1563] *ज़ूयूस* (या जुपिटर) – ग्रीक-रोमन देवता, जिन्हें मूर्तिपूजकों द्वारा स्वर्ग और पृथ्वी के शासक, सभी देवताओं और मनुष्यों के पिता के रूप में पूजा जाता था।

[1564] आम तौर पर, उनके विश्वासों के अनुसार, यूनानियों और रोमनों के देवता मानवीय जुनून और आपराधिक प्रवृत्तियों से ग्रस्त थे।

[1565] पहले शहीद और महादीकन सेंट स्टीफन की स्मृति, जिन्हें यहूदियों द्वारा पत्थर मारकर हत्या कर दी गई थी, चर्च द्वारा 27 दिसंबर को मनाई जाती है।

गवर्नर ने संत को जेल भेजने का आदेश दिया; जबकि वह स्वयं देश की निकटतम सीमाओं की ओर रवाना हो गया, जहाँ वह कुछ समय तक रहा।

निकाया लौटने पर, एपार्क अदालत में उपस्थिति हुआ, उसने एक बार फिर त्रिफोन को बुलाया, और उससे कहा:

'क्या बेड़ियों में तुम्हारा लंबा समय बिताना तुम्हें राजा की आज्ञा मानना और देवताओं की ओर मुड़ना नहीं सिखा गया?'

'मेरे ईश्वर और प्रभु यीशु मसीह,' संत ने उत्तर दिया, 'जिनकी मैं शुद्ध मन से सेवा करता हूँ, उन्होंने मुझे सिखाया है, मेरा मार्गदर्शन किया है और मुझे मजबूत बनाया है, ताकि मैं उन पर अपना विश्वास अटूट और अडिग रख सकूँ; इसलिए, मैं केवल उसी की आज्ञा मानता हूँ, जो सच्चे राजा और ईश्वर हैं, और उसी की ओर मुड़ता हूँ; परन्तु मैं तुम्हारे और राजा के घमंड को तुच्छ जानता हूँ, और उन देवताओं से मुंह मोड़ता हूँ जिनकी तुम पूजा करते हो।

अधीक्षक, अत्यधिक क्रोधित होकर, अपने सेवकों से चिल्लाया:

'उसके पैरों में नुकीले कील ठोक दो और उसे शहर में घुमाते हुए पीटो।'

नौकरों ने तुरंत अपने यातनाकर्ता के आदेश का पालन किया। उन्होंने संत को शहर में ले जाना—या यूँ कहें कि घसीटना—शुरू कर दिया, और उसे यातनाएँ दीं, और उसने भयानक पीड़ा सहन की—न केवल उसके पैरों में ठोके गए कीलों से, बल्कि उस कठोर सर्दियों की कड़क ठंड से भी। लेकिन महान शहीद ने, मसीह को अपनी आध्यात्मिक दृष्टि के सामने रखते हुए और अपने भविष्य के पुरस्कार की प्रतीक्षा करते हुए, यह सब बड़ी धैर्य और आनंद के साथ सहन किया; और जब उसे फिर से राज्यपाल के सामने लाया गया, तो यातना देने वाले ने संत के धैर्य को देखकर, बड़ी चिड़चिड़ाहट से उससे कहा:

'त्रिफोन, तुम अपने यातनाओं के प्रति कब तक असंवेदनशील रहोगे, और तुम्हें अपनी पीड़ा का पूरा, भयानक दर्द कब महसूस होगा?'

संत ने उत्तर दिया:

'जब तुम भी उस मसीह की शक्ति को जानोगे जो मुझमें वास करता है; तब, हे नीच, तुम पवित्र आत्मा को परीक्षा में डालना कब बंद करोगे?'

तब, अत्यधिक क्रोध से जलते हुए, यातना देने वाले ने आदेश दिया कि उसे फिर से पेड़ से लटका दिया जाए और लोहे से निर्दयतापूर्वक पीटा जाए, जबकि उसकी पसलियों को जलती हुई मोमबत्तियों से झुलसाया गया। सेवकों ने यह सब बड़ी लगन से किया; लेकिन अचानक संत पर स्वर्गीय प्रकाश चमका, और स्वर्ग से एक सुंदर मुकुट उनके सिर पर उतरा; इस दृश्य से चकित, यातना देने वाले डर के मारे जमीन पर गिर पड़े। हालांकि, संत त्रिफोन, स्वर्ग से आई मदद को भांपते हुए, आनंद और प्रसन्नता से भर गए और, प्रार्थना करते हुए, कहा:

'मैं तुझे धन्यवाद देता हूँ, हे प्रभु, कि तूने मुझे मेरे शत्रुओं के हाथों में सहायता के बिना नहीं छोड़ा, बल्कि युद्ध के दिन मेरी रक्षा की और मुझे उद्धार प्रदान किया, और तेरे हाथ ने मुझे सहारा दिया है। और अब मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ, हे प्रभु, मुझे न छोड़ें, बल्कि मुझे बल और सुरक्षा दें, और यह अनुग्रह करें कि मैं यह कृत्य बिना किसी बाधा के पूरा कर सकूँ, ताकि मैं उन सभी के साथ धार्मिकता का मुकुट प्राप्त करने के योग्य ठहरूँ, जिन्होंने आपके पवित्र नाम से प्रेम किया है, क्योंकि केवल आपकी ही सदा-सर्वदा महिमा होती है। आमीन।

इसके बाद, यातना देने वाले ने, बँधे हुए संत को खोलने का आदेश देकर और उसे अपने पास बुलाकर, उसे धीरे से समझाना शुरू किया, और कहा:

'ट्राइफोन, महान ज्यूस को बलिदान चढ़ाओ और राजसी प्रतिमा के सामने सिर झुकाओ, और मैं तुम्हें आज़ाद कर दूँगा।'

लेकिन त्रिफोन ने मुस्कुराते हुए उत्तर दिया:

'यदि मैंने स्वयं राजा का तिरस्कार किया है और उसके अधर्मी आदेशों को अनदेखा किया है, तो मैं उसकी निर्जीव मूर्ति की पूजा कैसे कर सकता हूँ? ऐसा कभी नहीं होगा। जहाँ तक ज्यूस और अन्य झूठे देवताओं का सवाल है, अपने ही बुद्धिमानों से पूछो, जो तुम्हें बताएँगे कि इन देवताओं के घृणित कर्मों को छिपाने के लिए इनके नामों को अन्य चीज़ों पर लगाकर किस तरह की कल्पित कथाएँ गढ़ी जाती हैं—आकाश को 'ज्यूस', हवा को 'हेरा', पृथ्वी को 'सीरेस', कहकर, समुद्र

को पोसाइडन, सूर्य को अपोलो, और चंद्रमा को डायना कहकर[1566] । इन्हीं कथाकारों ने आपके देवताओं के नाम वभिन्नि बुरी प्रथाओं और मानवीय जुनूनों को भी दिए हैं, उन्होंने क्रोध और युद्ध के एक देवता—मार्स—की रचना की और कामुकता के जुनून को वीनस कहा[1567] । और इस प्रकार, सभी के स्रष्टा, ईश्वर, को त्यागकर, तुमने मूर्खतापूर्वक पूरे ब्रह्मांड को मूर्तियों से भर दिया है और स्रष्टा की अपेक्षा प्राणी को प्राथमकिता दी है; और न केवल आप स्वयं, अपना सही वविक खोकर और सच्चे मार्ग से भटककर, आत्मा-वनिाशकारी गर्त में सरि झोंक देते हैं, बल्कि आप हमें भी वहाँ खींचने का प्रयास करते हैं, ताकि हम भी आपके वनिाश में भागीदार बन जाएँ; फरि भी, हे चापलूसों, तुम्हें कोई सफलता नहीं मलिेगी! क्योंकि आप उन लोगों को, जो सच्चे और जीवति ईश्वर में अपनी आशा रखते हैं, कभी भी सच्चे मार्ग से भटका नहीं सकते और उन्हें अपनी मूर्तियों की ओर मोड़ नहीं सकते।

ये शब्द सुनकर, अकीलनि संत की नर्भिीकता से चकति रह गया और, अपने क्रोध में, उसे बनिा कसिी दया के कोड़े मारने का आदेश दिया; सैनकिों ने संत को पकड़ लिया और उसे कई घंटों तक अत्यंत क्रूरता से यातना दी।

अंत में, यातना देने वाले ने, यह देखकर कि वह वश्विास के इस अटूट स्तंभ को हलिा नहीं सका या उसे मसीह से दूर नहीं कर सका, उस पर नम्निलखिति अंतमि नर्णिय सुनाया:

'अपामेया के त्रफिोन, जसिने राजा की आज्ञा की अवहेलना की है और अनेक यातनाएँ सहने के बाद भी देवताओं को बलदिान देने से इनकार कर दिया है, को सरि कलम करके मृत्युदंड दिया जाएगा।'

और तुरंत सैनकिों ने शहीद को पकड़ लिया और उसे शहर से बाहर नष्पिादन के स्थान पर ले गए। संत ट्रायफोन ने, पूर्व की ओर मुड़कर, ईश्वर से इस प्रार्थना के साथ नविेदन किया:

– हे प्रभु परमेश्वर, राजाओं के राजा, सभी संतों से भी पवत्रि! मैं तुझे धन्यवाद देता हूँ कि तू मुझे इस पराक्रम को बनिा डगमगाए करने के योग्य समझा। और अब मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ: अदृश्य शत्रु के छीनने वाले हाथ को मुझसे छूने न दें, कहीं ऐसा न हो कि वह मुझे वनिाश की गहराइयों में ले जाए, बल्कि मुझे अपने पवत्रि स्वर्गदूतों के साथ अपने प्रयि नविासों में लाएँ, और मुझे अपने वांछति राज्य का वारसि बनाएँ; मेरी आत्मा को शांतसि ग्रहण कर; और जो भी तेरे दास के नाम को याद करेंगे और मेरी स्मृतमिें तेरा पवत्रि बलदिान चढ़ाएंगे, उनकी प्रार्थना अपने पवत्रि नविास की ऊँचाइयों से सुन; और अपने पवत्रि नविास से उन पर दृष्टि डालिए, और उन पर प्रचुर और अक्षय वरदानों की वर्षा कीजिए, क्योंकि केवल आप ही सदा-सदा के लिए भले और उदार दाता हैं।

इस प्रकार संत ने प्रार्थना की। और इससे पहले कि सैनकिों ने उसका सरि काट पाते, प्रभु ने उसकी आत्मा को ले लिया; जबकि त्रफिोन का सम्माननीय शरीर जमीन पर नर्जिीव पड़ा रहा। नकिया में ईसाइयों ने उसे शुद्ध कफ़न में लपेटा और सुगंधति तेलों से अभषिेक किया, और उसे अपने शहर की सुरक्षा के लिए वहीं दफनाने का इरादा किया। लेकनि संत, एक दर्शन में उनके सामने प्रकट हुए, और उन्होंने आज्ञा दी कि उनके अवशेषों को उनके जन्मस्थान, गाँव कम्पाडू में स्थानांतरति कर दिया जाए – और उनकी आज्ञा का पालन किया गया[1568] ।

[1566] *हेरा* (जूनो) को प्राचीन यूनानयिों और रोमनों द्वारा ज्यूस की बहन और पत्नी, तथा सभी देवी-देवताओं में सबसे सम्मानति देवी के रूप में पूजा जाता था; उन्हें पृथ्वी की देवी और ववािह तथा प्रसव की संरक्षक माना जाता था। *सीरेस* (या डेमेटर) रोमन और यूनानी धरती और उर्वरता की देवी थीं। *पोसीडॉन* (नेप्च्यून) को ज्यूस के भाई और समुद्रों, नदयिों, तथा सभी झरनों और जल नकिायों का सर्वोच्च शासक के रूप में पूजति किया जाता था। *अपोलो* (फीबस) प्राचीन यूनानयिों और रोमनों के बीच सबसे अधकि पूजे जाने वाले पैगन देवताओं में से एक थे; उन्हें सूर्य और बौद्धकि प्रबोधन के देवता, साथ ही कानून के संरक्षक के रूप में माना जाता था। *डायना* (आर्टमिसि) यूनानयिों और रोमनों के बीच एक प्रसद्धि पैगन देवी थीं, जो वशिेष रूप से उनकी भक्त थीं; डायना को चंद्रमा की देवी माना जाता था और एक सुंदर, गोरी रंगत वाली युवती शकिारी के रूप में चत्रिति किया जाता था।

[1567] *मंगल* (या एरेस) – ग्रीक-रोमन युद्ध के देवता। *शुक्र* – ग्रीक-रोमन सुंदरता और प्रेम की देवी। उनके सम्मान में मनाए जाने वाले त्योहारों में अत्यधकि कामुकता और व्यभचिार का प्रदर्शन होता था।

[1568] संत त्रफिोन के अवशेषों का एक हस्सिा मॉस्को में, नेप्ट्रुडनाया में उनके नाम पर बने चर्च में रखा गया है। इस चर्च के इतहिास से जुड़ी एक कवदिंती है। एक बार, जब ज़ार इवान वसीलीवचि द टेरबिल शकिार पर गए थे, तो बाज़ के मालकि बोयार त्रफिोन पत्रीकेव की कसिी चूक के कारण, उनका पसंदीदा बाज़ उड़ गया; ज़ार ने इस बाज़ के मालकि को तीन दनिों के भीतर हर हाल में बाज़ को खोजने का आदेश दिया, और असफल होने पर उसे मौत की सज़ा की धमकी दी। बाजराख्तार ने पूरे जंगल में छानबीन की, लेकनि उसकी खोज व्यर्थ गई। थका-हार कर, तीसरे दनि वह मैरी के बगीचे (नेप्ट्रुडनाया बस्ती में) के पास रुक गया और, चरम थकान से, एक पेड़ के नीचे गहरी नींद में सो गया। इससे पहले, पैट्रकिेव ने संत त्रफिोन द मार्टायर से मदद के लिए पूरी श्रद्धा से प्रार्थना की थी, जन्हिें वह उनके नाम के कारण ही अपना संरक्षक और सबसे भरोसेमंद मार्गदर्शक मानते थे। और बाजगर ने एक अद्भुत सपना देखा: एक शानदार युवक सफेद घोड़े पर सवार होकर उसके सामने प्रकट हुआ, जसिके हाथ में एक शाही बाज था। 'लो,' उसने कहा, 'अपना खोया हुआ पक्षी; ईश्वर के आशीर्वाद से ज़ार के पास जाओ और दुखी मत हो।' बाज़शकिारी जाग उठा

इस प्रकार संत त्रफिोन, जो अपने युवा काल से ही ईश्वर को समर्पति थे, जन्हिोंने कई लोगों को मसीह की ओर ले गए और उनमें से कई को उनकी बीमारयिों से चंगा कयिा, सत्य के लिए सहन की गई महान पीड़ाओं के बाद, पति और पुत्र और पवत्रि आत्मा, त्रमिूर्त मिें एक ईश्वर, द्वारा एक अक्षय मुकुट से वभिूषति हुए, जनिका युगानुयुग महमिा हो। आमीन[1569] .

ट्रोपारयिन, स्वर 4:

हे प्रभु, तेरे शहीद त्रफिोन ने अपने कष्टों के द्वारा हमारे परमेश्वर से एक अक्षय मुकुट प्राप्त कयिा: क्योंकि, तेरी शक्ति से, उसने अपने यातना देने वालों को परास्त कयिा और दुष्टात्माओं के दुर्बल अत्याचार को कुचल डाला। उनकी प्रार्थनाओं द्वारा, हमारी आत्माओं को बचा।

कॉन्टाकयिन, स्वर 8:

हे सर्व-महमिामय, मसीह में सम्मानति होकर, तूने त्रति्व की दृढ़ता के साथ, आरम्भ से ही मूर्तपिूजा को नष्ट कर दयिा; और उद्धारकर्ता मसीह में अपने यातनाकारों को परास्त करके, तूने एक अजेय के रूप में अपना शहीदी मुकुट और दव्यि उपचारों का वरदान प्राप्त कयिा।

बत्थिनियिा के तपस्वी, पूजनीय वेन्डमियिन की स्मृति

1 फरवरी को स्मरणोत्सव

आदरणीय वेंडमियिन, जो मसियिा के मूल नविासी थे[1570] , अपनी युवावस्था में काल्सेडोन के पास माउंट ऑक्सयिा पर आदरणीय ऑक्सेनटयिस द्वारा स्थापति मठ में आए[1571] । उन्हें आश्रय देने के बाद, ऑक्सेनटयिस अधकि समय तक जीवति नहीं रहे। उनकी मृत्यु के बाद, वेन्डमियिन ने पूज्य ऑक्सेंटयिस की कुटयिा से थोड़ा नीचे एक कुटयिा बनवाई, लेकनि वहाँ पाँच साल रहने के बाद, उन्होंने उस स्थान की कठोरता के कारण वहाँ से जाने की इच्छा की। प्रभु यीशु मसीह उन्हें दर्शन देने के लिए आए और उन्हें बल प्रदान कयिा, और वे अपने जीवनकाल में चमत्कार करते हुए वहाँ और 37 साल तक रहे। पूज्य वेन्डमियिन का लगभग 512 ईस्वी में नधिन हो गया।

और उसने देखा कि ज़ार का बाज़ सचमुच उसके हाथ पर बैठा था; वह उसे इवान द टेरबिल के पास ले गया और उसे अपना दर्शन सुनाया। शासक का पूर्व क्रोध और बाज़-पालक को हुई भयंकर आपदा की जगह ज़ार की कृपा ने ले ली; और धर्मपरायण बोयार त्रफिोन पत्रीकीव ने, ईश्वर और संत शहीद त्रफिोन, जो ईश्वर के प्रयि थे, के प्रति कृतज्ञता में अपनी जान बचने के लिए, तुरंत पहले एक चैपल का नर्मिाण उसी स्थान पर कयिा जहाँ उसे अपना बाज़ मलिा था, और फरि, जैसा कि कहा जाता है, स्वयं शासक की सहायता से, इस चैपल के पास, ठीक उसी स्थान पर जहाँ इस पवत्रि शहीद का उपर्युक्त साक्षात्कार उन्हें हुआ था, पवत्रि शहीद त्रफिोन को समर्पति एक पत्थर का चर्च बनाया।

[1569] द ग्रेट सर्वसि बुक (अध्याय 60) में 'यदि सरपों या अन्य जीवों से खेतों, या अंगूरों के बागों या फलों के बगीचों को कोई नुकसान हो, तो वहाँ करने योग्य सेवा' शामलि है। यह 'सेवा' उस स्थति मिें की जाती है जब 'कई प्रकार के जानवर, कीड़े, कैटरपलिर, कॉकचेफ़र और टड्डियिाँ, चूहे, मूषक और वोल, और वभिन्नि प्रकार की मक्खियिाँ और मच्छर' आदि प्रकट होते हैं, 'जो खेतों, अंगूर के बागों, बगीचों और सब्ज़ी के बागों को नुकसान और तबाही पहुँचाते हैं'। उपरोक्त 'संस्कार' में कहा गया है: 'संत त्रफिोन, या संत यूस्टैथियिस, या लवािनयिा के संत जूलयिन, या दोनों की लटिर्जी मनाना और दीपक जलाना उचति है', और लटिर्जी के बाद, 'दीपक से तेल और एपफिनी के पर्व के पानी को लेकर, "प्रार्थनाएँ पढ़ते हुए" उसे खेतों, अंगूर के बागों या बगीचों पर क्रॉस के आकार में छड़िकना है'। उसी 'क्रम' में 'पवत्रि शहीद त्रफिोन का मंत्र' मलिता है, जो इस पवत्रि पुरुष के नाम पर रचा गया है। यह वश्विास करते हुए कि संत त्रफिोन, जन्हिोंने अपने जीवनकाल में 'केवल अपनी उपस्थति से ही दुष्टात्माओं को भगाया' और अपनी प्रार्थनाओं के माध्यम से सार्वजनकि वपित्तयिों को टाल दयिा - और जो, अपने धन्य नधिन के बाद भी, उन लोगों की मदद करने में कभी असफल नहीं होते जो उनकी शरण में आते हैं - उपर्युक्त पौधों के लिए हानकिारक कीट और सरीसृपों के वरिुद्ध 'मंत्र' संत त्रफिोन के नाम पर पढ़ा जाता है, जो ईश्वर के सेवक हैं और जन्हिें ईश्वर की वशिेष कृपा प्राप्त है, और जो बड़ी नर्भिीकता से प्रभु के नाम पर उन्हें 'इस स्थान और ईश्वर के सेवकों के आसपास के क्षेत्रों से चले जाने' की आज्ञा दे सकते हैं।

[1570] मशियिा – एशयिा माइनर का एक उत्तर-पश्चमिी क्षेत्र।

[1571] चाल्केडोन – एशयिा माइनर में बोस्फोरस के तट पर एक शहर (इसके वपिरीत कॉन्स्टेंटनिोपल स्थति है)। चर्च के इतहिास में चाल्केडोन को चौथे सार्वभौमकि परषिद के स्थल के रूप में जाना जाता है।

पवित्र शहीद परपेटुआ की स्मृति और उनके साथ पवित्र युवक सैटायरस, रेवोकेटस, सैटरनिस, सेकंडस और उनकी पत्नी संत फेलसिटिस की स्मृति

1 फरवरी को स्मरण किया जाता है

संत पेरपेटुआ एक कुलीन परिवार से थीं और कार्थेज शहर में रहती थीं[1572] । उन्हें उनके पिता की जानकारी के बिना गुप्त रूप से बपतिस्मा दिया गया था—वह एक मूर्तिपूजक थे—और, उनकी आँसुओं भरी विनतियों और प्रार्थनाओं के बावजूद, वह सच्चे धर्म में दृढ़ रहीं। बाईस वर्ष की आयु में, पेरपेटुआ विधवा हो गईं, और उनके पास एक शिशु था जिसे उन्होंने स्वयं स्तनपान कराया। उनके भाई सैटायरस, उनकी दासी फेलिसिटेटा, और युवा पुरुष रेवोकैटस (एक सेवक), सैटरनलिस और सेकंडस (जो कुलीन जन्म के थे) भी पवित्र बपतिस्मा ग्रहण करने की तैयारी कर रहे थे। उन सभी को, पेरपेटुआ के साथ, मूर्तिपूजक न्यायाधीशों द्वारा गिरफ्तार कर एक तंग कालकोठरी में बंद कर दिया गया। संत पेरपेटुआ के पिता, जो उन्हें वहाँ देखने आए थे, ने शहीद के अपने शिशु के प्रति प्रेम को भड़काकर उनके विश्वास की दृढ़ता को हिलाने की कोशिश की; लेकिन मसीह के प्रति संत पेरपेटुआ का प्रेम सभी सांसारिक लगावों से ऊपर था।

अपने कष्टों से पहले, संत पेरपेटुआ को निम्नलिखित दर्शन प्राप्त हुआ[1573] , जिसका उन्होंने स्वयं जेल में रहते हुए वर्णन किया।

संत पेरपेटुआ कहती हैं, 'मैंने एक सुनहरी सीढ़ी देखी, जो अत्यंत ऊँची थी, जो पृथ्वी से स्वर्ग तक पहुँचती थी; यह इतनी संकरी थी कि एक समय में एक व्यक्ति के अलावा कोई भी मुश्किल से उस पर चढ़ सकता था; इस सीढ़ी के किनारों पर तेज तलवारें, छुरी, भाले, खंजर, कीलें, हुक और इसी तरह की तीखी वस्तुएं लटकी और जड़ी हुई थीं। सीढ़ी के नीचे एक भयानक सांप रहता था, जो उन लोगों पर झपटने के लिए तैयार था जो इसे चढ़ने का प्रयास करते थे। इस साँप की परवाह किए बिना, सैटर ने सबसे पहले निडर होकर सीढ़ी पर कदम रखा। सुरक्षित रूप से सबसे ऊपरी सीढ़ी पर पहुँचने के बाद, वह मुड़ा और मुझसे कहा: 'परपेटुआ! मैं तुम्हारा इंतज़ार कर रहा हूँ, लेकिन ध्यान रखना कि साँप तुम्हें न निगल ले।'

"मैं उससे नहीं डरती," परपेचुअ ने उत्तर दिया।

और तुरंत उसने हमारे प्रभु यीशु मसीह के नाम पर सीढ़ियाँ चढ़ने का संकल्प लिया। सीढ़ियों के पास पहुँचकर उसने पहले साँप के सिर पर पैर रखा, मानो वह पहला सीढ़ी का पायदान हो। और जब वह सीढ़ियों की चोटी पर पहुँची, तो उसने सुंदर स्वर्गीय आवास देखे और उनमें अनेक निवासियों की भीड़ देखी। जब संत पेरपेटुआ ने यह दृष्टि अपने साथियों को सुनाई, तो उन्होंने सभी ने इसे अपनी शहादत से संबंधित एक भविष्यवाणी के रूप में समझा। उस समय से उन्होंने सभी सांसारिक लगावों को पूरी तरह से त्याग दिया और अपने सभी विचारों को अनंतकाल पर केंद्रित कर लिया।

[1574]कारावास में बहुत कष्ट सहने के बाद, पवित्र शहीदों को अंततः मृत्युदंड सुनाया गया। युवकों को सर्कस में जंगली जानवरों के सामने टुकड़े-टुकड़े किए जाने के लिए फेंक दिया गया, जबकि पवित्र महिलाओं, पेरपेटुआ और फेलिसिटिस पर एक जंगली और उग्र गाय छोड़ दी गई, ताकि वह उन्हें अपने सींगों से सींगों में ले ले। लेकिन जानवरों ने पवित्र शहीदों को चीर-फाड़ कर नहीं डाला, और इसलिए बाद में सभी का सिर तलवारों और चाकुओं से कलम कर दिया गया। जब संत पेरपेटुआ का सिर कलम किया जाना था, तो जल्लाद का हाथ लंबे समय तक उसकी गर्दन तक नहीं पहुँच सका; तब पेरपेटुआ ने स्वयं उसकी तलवार को अपनी गर्दन पर उठाया और इस प्रकार मसीह के लिए बहादुरी से अपना बलिदान दे दिया[1575] ।

[1572] *कार्थेज* – उत्तरी अफ्रीका में सबसे पुरानी और सबसे प्रसिद्ध फ़िनिशियाई बस्ती, जो प्राचीन काल में अपनी शक्ति के शिखर पर पहुँची और 146 ईसा पूर्व में नष्ट हो गई; प्राचीन कार्थेज के खंडहरों पर, प्रारंभिक रोमन सम्राटों के शासनकाल के दौरान, एक नया कार्थेज उभरा, जो बहुत लंबे समय तक बड़ी भव्यता के साथ फलता-फूलता रहा। कार्थेज में, सभी अंधविश्वासों के साथ, मूर्तिपूजक ग्रीक-रोमन पंथ, अत्यधिक विकसित था।

[1573] उनके दुखों के रिकॉर्ड जेल में स्वयं पवित्र शहीदों: पेरपेटुआ और सैटरनिस द्वारा रखे गए थे। बाकी का विवरण एक प्रत्यक्षदर्शी द्वारा और प्रत्यक्षदर्शियों के लाभ के लिए जोड़ा गया है; क्योंकि कहा गया है: 'और हम, जिन्होंने अपने कानों से सुना और अपनी आँखों से देखा है, यह तुम लोगों को घोषित करते हैं, हे भाइयो और बहनो, ताकि तुम भी, जो उस समय उपस्थित थे, परमेश्वर की महिमा के लिए इसे फिर से याद करो'।

[1574] शहीदों में से एक, सेकंडस, जेल में ही मर गया।

[1575] ये सभी शहीद लगभग 203 ईस्वी में मारे गए थे।

15 फरवरी

2 फरवरी (पुराने कैलेंडर के अनुसार)

प्रभु के मंगनी का पर्व

2 फरवरी को स्मरणोत्सव

हमारे प्रभु यीशु मसीह के जन्म के चालीस दिन बाद, और निर्धारित शुद्धिकरण के दिनों के पूरा होने पर, परम पवित्र और परम धन्य कुँवारी माता, अपने मंगेतर संत जोसेफ के साथ, मसीह के चालीस दिन के शिशु को साथ लेकर बेथलहम से यरूशलेम में परमेश्वर के मंदिर में आईं, ताकि मूसा की व्यवस्था को पूरा कर सकें। इस कानून के अनुसार, सबसे पहले तो प्रसव के बाद ईश्वर को एक उपयुक्त बलिदान चढ़ाकर और पुरोहित की प्रार्थना के द्वारा शुद्ध होना आवश्यक था; और दूसरी बात, पहले जन्मे बच्चे को प्रभु के समक्ष प्रस्तुत करना और उसके लिए निर्धारित मूल्य पर मुक्ति का बलिदान करना आवश्यक था (लैव. 12:7)। इस प्रकार पुराने नियम में यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी थी, जिनकी पुस्तकों में माता के शुद्धिकरण के नियम के संबंध में इस प्रकार लिखा है: *'यदि कोई स्त्री गर्भधारण करके एक पुरुष शिशु को जन्म देती है, तो वह सात दिन तक अशुद्ध रहेगी; आठवें दिन उसका खतना किया जाएगा: और वह तेंतीस दिन तक अपने रक्त से शुद्ध होने के लिए रहेगी; उसे शुद्ध होने के दिनों के पूरे होने तक किसी भी पवित्र वस्तु को नहीं छूना चाहिए, और न ही उसे पवित्र स्थान में प्रवेश करना चाहिए। जब उसके शुद्ध होने के दिन पूरे हो जाएँ, तो उसे एक साल का मेमना होमबलि के लिए और एक जवान कबूतर या एक गौरैया पापबलि के लिए लाना चाहिए। यदि वह एक मेमना खरीदने में असमर्थ है, तो वह दो गौरैया या दो जवान कबूतर लेगी, एक को होमबलि के रूप में और दूसरे को पापबलि के रूप में; और याजक उसके लिए प्रायश्चित करेगा, और वह शुद्ध हो जाएगी'* (लैव्य. 12:7–8, 12:2–4)।

जहाँ तक नर प्रथमज को परमेश्वर के लिए पवित्र करने की बात है, व्यवस्था कहती है: *'हर नर प्रथमज (जो गर्भ का पहला हो) को मेरे लिए पवित्र कर* (निर्गमन 13:2)[1576] । और एक अन्य अवसर पर: *'अपने पुत्रों में से जो प्रथमज है, उसे मुझे देना'* (निर्गमन 22:29)। यह मिस्र में ईश्वर के महान दयालुता के कार्य के बदले में आवश्यक था, जब प्रभु ने मिस्र के पहलौठों को मार डाला, तो इस्राएल के पहलौठों को बख्श दिया (निर्गमन 11:5–7)। इसलिए, इस्राएलियों ने अपने पहले जन्मे शिशुओं को मंदिर में लाया, और उन्हें कानून द्वारा निर्धारित उचित शर्द्धांजलि के रूप में परमेश्वर को समर्पित किया। और फिर वे उन्हें एक निश्चित मूल्य पर परमेश्वर से छुड़ा लेते थे, जिसे 'छुड़ाने की रजत' कहा जाता था और यह परमेश्वर के मंदिर में सेवा करने वाले लेवियों को दी जाती थी, जैसा कि मूसा की चौथी पुस्तक में लिखा है (गिनती 3:49-51)। मुक्ति की निर्धारित कीमत मंदिर के मानक के पाँच पवित्र शेकेल थी, और प्रत्येक पवित्र शेकेल में बीस penny[1577] होते थे। प्रभु के इस विधान की पूर्ति के लिए, ईश्वर की माता अब विधानदाता के साथ मंदिर में आई हैं। वह शुद्ध होने आईं, यद्यपि उन्हें शुद्धिकरण की आवश्यकता नहीं थी, क्योंकि वे अशुद्धता से रहित, निर्दोष, अक्षय और परम पवित्र थीं। क्योंकि वह, जिसने बिना पति या वासना के गर्भधारण किया, और बिना किसी बीमारी या अपनी कुँवारी पवित्रता के उल्लंघन के प्रसव किया, वह उन महिलाओं की विशेषता वाले अपवित्रता से मुक्त थी जो प्राकृतिक नियम के अनुसार जन्म देती हैं: क्योंकि अपवित्रता उसको कैसे छू सकती थी जिसने पवित्रता के स्रोत को जन्म दिया? मसीह उनसे ऐसे उत्पन्न हुए, जैसे किसी वृक्ष से फल; और जैसे एक वृक्ष को अपने फल के जन्म से न तो कोई हानि पहुँचती है और न ही वह अपवित्र होता है, वैसे ही कुँवारी भी, मसीह, उस धन्य फल के जन्म पर, अक्षुण्ण और अपवित्र बनी रहीं। मसीह उनसे ऐसे प्रकट हुए, जैसे सूर्य की किरण काँच या स्फटिक से होकर गुजरती है। काँच या स्फटिक से होकर गुजरने वाली सूर्य की किरण न तो उसे तोड़ती है और न ही उसे खराब करती है, बल्कि उसे और भी अधिक प्रकाशित करती है।

[1576] इस कानून के अनुसार, इस तथ्य के स्मरण में कि मिस्र से यहूदियों के प्रस्थान से पहले की रात मृत्यु के दूत ने मिस्र के सभी पहलौठों को मार डाला था, सभी यहूदी पहलौठों को ईश्वर की एक विशेष सेवा के लिए समर्पित किया जाना था, अर्थात्, पवित्र स्थान में सेवा के लिए। हालाँकि, जब बाद में इस उद्देश्य के लिए केवल लेवी के गोत्र को चुना गया, तो पहले जन्मे के लिए चाँदी के पाँच शेकेल का फिरौती निर्धारित किया गया।
[1577] एक पवित्र शेकेल हमारी मुद्रा में लगभग 5 कोपेक के बराबर है।

और न ही धार्मिकता का सूर्य—मसीह—ने अपनी माता की कुँवारीपन को कोई हानि पहुँचाई। न ही उन्होंने प्राकृतिक जन्म के द्वार—जो पवित्रता से सीलबंद और कुँवारीपन द्वारा संरक्षित था—को महिलाओं में प्रचलित मासिक धर्म के प्रवाह से अपवित्र किया; बल्कि, उसमें अलौकिक रूप से होकर, उन्होंने उसकी पवित्रता को और बढ़ाया, उसे अपनी उत्पत्ति से पवित्र किया और अनुग्रह के दैवीय प्रकाश से प्रकाशित किया। जिसने बिना किसी कलंक के परमेश्वर के वचन को जन्म दिया, उसे शुद्ध होने की बिल्कुल भी आवश्यकता नहीं थी। फिर भी, व्यवस्था को तोड़ने के लिए नहीं, बल्कि उसे पूरा करने के लिए, जो पूर्ण रूप से शुद्ध और निर्दोष थीं, वे शुद्ध होने आईं। साथ ही, विनम्रता से परिपूर्ण होकर, उन्होंने अपनी अक्षुण्ण पवित्रता पर गर्व नहीं किया, बल्कि, मानो स्वयं अशुद्ध हों, प्रभु के मंदिर के द्वार पर अशुद्ध स्त्रियों के साथ खड़ी होने और शुद्धिकरण की खोज करने आईं, और अशुद्धों तथा पापियों को तुच्छ नहीं समझा। उसने एक बलिदान भी चढ़ाया, लेकिन अमीरों की तरह नहीं, जो एक निर्दोष एक वर्षीय मेमना चढ़ाते थे, बल्कि गरीबों की तरह, जो दो गौरैया या दो जवान कबूतर चढ़ाते थे, इस प्रकार हर बात में गरीबों के प्रति नम्रता और प्रेम दिखाते हुए और अमीरों के घमंड से बचते हुए। क्योंकि मिगों द्वारा लाए गए सोने से (मत्ती 2:11), उसने थोड़ा सा लिया और उसे गरीबों और ज़रूरतमंदों में बाँट दिया, और अपने लिए केवल वही रखा जो मिस्र की यात्रा के लिए बिल्कुल आवश्यक था। उल्लेखित दो पक्षियों को खरीदने के बाद, उसने उन्हें कानून के अनुसार बलिदान के रूप में लाया, और उनके साथ अपने प्रथम-जन्मे बच्चे को भी लाया। *'वे उसे यहोवा के सामने प्रस्तुत करने के लिए यरूशलेम ले गए* (लूका 2:22), सुसमाचार लेखक लूका कहते हैं—अर्थात् परमेश्वर की पवित्रता को परमेश्वर को वापस करना, क्योंकि यहोवा की व्यवस्था में लिखा है कि हर पहला नर शिशु यहोवा के लिए पवित्र किया जाएगा (निर्गमन 13:2)। अपने बाहुओं में नवजात शिशु को थामे, धन्य कुँवारी मरियम प्रभु के सामने घुटने टेककर, गहरी श्रद्धा के साथ, शिशु को परमेश्वर को एक अनमोल उपहार के रूप में अर्पित और प्रस्तुत की, यह कहते हुए:

हे अनन्त पिता, देखिए, आपका पुत्र, जिसे आपने मानव जाति के उद्धार के लिए मेरे द्वारा अवतार लेने के लिए भेजा! आपने उसे युगों से पहले बिना माँ के जन्म दिया, और मैंने, आपकी इच्छा से, वयस्क होकर, बिना पति के उसे जन्म दिया; देखिए, मेरी कोख का पहला फल, जो मुझ में पवित्र आत्मा द्वारा गर्भ में आया, और, एक ऐसे तरीके से जो शब्दों से परे है—जैसा आप ही जानते हैं—मुझसे जन्मा: वह मेरा प्रथम-जन्मा है, फिर भी सर्वप्रथम और सर्वोपरि आपका है, आपसे एकसार और आपके सह-शाश्वत है, वह प्रथम-जन्मा जो केवल आपके योग्य है, क्योंकि वही है जो आपकी दिव्यता से अलग हुए बिना, आपसे अवतरित हुआ। पहलौठे को स्वीकार करें, जिनके साथ आपने युगों की सृष्टि की (इब्रानियों 1:2) और जिनके साथ आपने मिलकर प्रकाश को चमकने की आज्ञा दी: अपने वचन को स्वीकार करें, जो मुझसे मूर्तिमान हुए, जिनके द्वारा आपने आकाशों को स्थापित किया, पृथ्वी की नींव डाली, और जल को एकत्रित किया: मेरे द्वारा अपने पुत्र को ग्रहण करें, जिसे मैं इस महान वेदी पर आपको अर्पित करती हूँ, ताकि आप मुझसे प्राप्त उनके शरीर और रक्त के द्वारा मानव जाति को मुक्ति प्रदान करें, और अपनी इच्छानुसार उनके और मुझ पर अपना अधिकार करें।

ये वचन कहने के बाद, उन्होंने अपने अनमोल बच्चे को महायाजक के हाथों में सौंप दिया, जो परमेश्वर का प्रतिनिधि था, मानो उसे स्वयं परमेश्वर को ही सौंप रही हों। इसके बाद, उन्होंने विधि के अनुसार निर्धारित मूल्य—पाँच पवित्र शेकेल पर उसे मुक्त किया, जिसकी संख्या मसीह के शरीर पर पाँच पवित्र घावों का पूर्वाभास देती प्रतीत होती थी, जो उन्होंने क्रूस पर सहे थे, जिनके द्वारा संपूर्ण विश्व को विधि के श्राप और शत्रु के कार्य से मुक्ति मिली[1578] ।

ठीक उसी क्षण जब परमेश्वर की माता ने कानून द्वारा निर्धारित रीति-रिवाज को पूरा करने के लिए शिशु यीशु को लाया, तब बुज़ुर्ग सिमीओन, जो एक धर्मी और भक्तिमय व्यक्ति थे, पवित्र आत्मा द्वारा निर्देशित होकर मंदिर में प्रवेश किए; वे इस्राएल के सांत्वना की प्रतीक्षा कर रहे थे, जो मसीहा के आगमन के साथ आने वाली थी[1579] । वह जानता

[1578] रोस्तोव के संत डेमेट्रियस के वृत्तांत के अनुसार, पवित्र पिताओं ने यह जोड़ा है कि जॉन द फॉररनर के पिता, पवित्र नबी जकरियाह ने, अति पवित्र कुँवारी को शिशु के साथ शुद्धिकरण के लिए मंदिर में शुद्धिकरण के लिए आने वाली महिलाओं के लिए आरक्षित स्थान पर नहीं रखा, बल्कि कुंवारी लड़कियों के लिए आरक्षित स्थान पर रखा, जहाँ विवाहित महिलाओं को खड़े होने की अनुमति नहीं थी। और जब लिखनेवाले और फरीसी यह देखकर अपना रोष प्रकट करने लगे, तो ज़करियाह, उनके सामने खड़े होकर, यह घोषणा करने लगे कि यह माता जन्म के बाद भी एक पवित्र कुँवारी ही रहीं। जब उन्होंने इस पर विश्वास करने से इनकार कर दिया, तो जकरियाह ने कहा कि मानव स्वभाव को, हर प्राणी की तरह, अपने सृष्टिकर्ता की सेवा करनी चाहिए, और यह कि उनके सर्वशक्तिमान हाथों में उनकी सृष्टि का संचालन है, जैसा उनकी इच्छा को प्रसन्न होता है—और इसी प्रकार वह व्यवस्था जिसके द्वारा कुँवारी ने जन्म दिया और जन्म के बाद भी कुँवारी बनी रही: 'इसी कारण,' उन्होंने कहा, 'मैंने इस माता को कुंवारीयों के लिए निर्धारित स्थान से नहीं हटाया है, क्योंकि वह सभी कुंवारीयों से परे हैं।'

[1579] *सत्तर सप्ताहों* की भविष्यवाणी दानियेल (दानियेल 9) में पाई जाती है।

था कि लंबे समय से प्रतीक्षित मसीहा पहले ही निकट आ रहा था, क्योंकि राजदंड यहूदा से हेरोद के पास चला गया था, और पूर्वज, कुलपिता याकूब की भविष्यवाणी पूरी हो रही थी—उसने भविष्यवाणी की थी कि यहूदा का राजकुमार तब तक असफल नहीं होगा जब तक कि राष्ट्रों की आशा, प्रभु मसीह, न आ जाए (उत्पत्ति 49:10)। इसी तरह, दानिय्येल के सत्तर सप्ताह समाप्त हो चुके थे, जिसके बाद, भविष्यवाणी के अनुसार, मसीहा का आगमन होना था। साथ ही, स्वयं संत सिमोन को पवित्र आत्मा द्वारा यह वचन दिया गया था कि वह प्रभु के मसीहा को देखे बिना मृत्यु नहीं देखेंगे। सिमोन, अत्यंत पवित्र कुँवारी और उसकी बाहों में शिशु को निहारते हुए, उसने माँ और शिशु के चारों ओर ईश्वर की कृपा को देखा; और, पवित्र आत्मा से यह पहचान कर कि वही बहुप्रतीक्षित मसीहा थे, वह आगे बढ़ा और, उन्हें अनुपम आनंद और श्रद्धायुक्त भय के साथ ग्रहण करते हुए, ईश्वर को महान धन्यवाद अर्पित किया। उसने, अपने मरने से पहले हंस की तरह सफेद हो चुके बालों के साथ, एक भविष्यसूचक गीत गाया: *'अब, हे प्रभु, आप अपने दास को अपनी बात के अनुसार शान्ति में जाने दें'*

ऐसा प्रतीत हुआ मानो वह कह रहा हो, 'मुझे चैन नहीं मिला, अपने पूरे जीवन भर तुम्हारा इंतज़ार करते हुए, और जब तक तुम नहीं आए, मैं दुख में रहा: लेकिन अब, तुम्हें देखने के बाद, मुझे उपहार मिल गया है, और दुख से मुक्त होकर, मैं यहाँ से अपने पूर्वजों के लिए शुभ समाचार लेकर जा रहा हूँ: मैं हमारे पूर्वज आदम और अब्राहम, मूसा और दाऊद, यशायाह और अन्य पवित्र पितरों और भविष्यद्वक्ताओं के पास तुम्हारे संसार में आगमन का प्रचार करूँगा; मैं उन लोगों को, जो अब तक शोक में रहे हैं, अकथनीय आनंद दूँगा; मुझे उनके पास भेजो, ताकि वे अपना दुख त्यागकर आप में—अपने उद्धारकर्ता—आनंदित हों। मुझे, अपने दास को, कई वर्षों की सेवा के बाद, अब्राहम की गोद में विश्राम करने के लिए भेज: मेरी आँखों ने पहले ही तेरा उद्धार देख लिया है, जो सभी लोगों के लिए तैयार किया गया है; मेरी आँखों ने उस प्रकाश को देखा है, जो अंधकार को दूर करने, राष्ट्रों को प्रकाशित करने, और उन्हें अज्ञात दिव्य रहस्यों को प्रकट करने के लिए तैयार किया गया है, – वह प्रकाश जो आपके इज़राइल के लोगों के महिमामंडन के लिए चमका है, जिसका आपने यशायाह भविष्यवक्ता के माध्यम से वचन दिया था, यह कहते हुए: *'मैं सिय्योन को उद्धार दूँगा, और अपनी महिमा इज़राइल को दूँगा'* (यशायाह 46:2)।

यूसुफ और परम पवित्र कुँवारी, शिशु के विषय में शिमोन की सारी बातें सुनकर, चकित हुए; इसके अलावा, उन्होंने देखा कि सिमीओन शिशु से एक बच्चे की तरह नहीं, बल्कि 'दिनों के प्राचीन'[1580] की तरह बात कर रहे थे, और प्रार्थना करते समय, उन्हें एक मनुष्य के रूप में नहीं, बल्कि परमेश्वर के रूप में संबोधित कर रहे थे, जिनके पास जीवन और मृत्यु पर अधिकार है और जो एक ही समय में पुराने मनुष्य को आने वाले जीवन में भेज सकते हैं या उसे इस वर्तमान जीवन में रख सकते हैं। शिमोन ने उन पर अपना आशीर्वाद भी दिया, उस निर्मल माता की स्तुति और प्रशंसा करते हुए जिन्होंने ईश्वर और मनुष्य को संसार में लाया था, और कथित पिता, संत जोसेफ का सम्मान करते हुए, जिन्हें ऐसे रहस्य का सेवक बनने के योग्य माना गया था। तब, मरियम, अपनी माता, की ओर मुड़कर, न कि यूसुफ की ओर – क्योंकि उन्होंने अपनी आँखों से उनमें कुँवारी माता को देखा था – सिमीओन ने कहा:

– यह इस्राएल में कई लोगों के पतन और उत्थान का कारण बनेगा: उन लोगों के पतन का जो उसकी बातों पर विश्वास करने से इनकार करते हैं, और उन लोगों के उत्थान का जो प्रेमपूर्वक उसकी पवित्र शिक्षा को स्वीकार करते हैं – दुष्टता से अंधे हो गए लिखनेवालों और फरीसियों के पतन का, और साधारण मछुआरों और अनपढ़ लोगों के उत्थान का। वह बुद्धिमानों को नहीं, बल्कि इस युग के बुद्धिमानों को लज्जित करेगा – जिससे पुराने नियम की यहूदी सभा का पतन होगा, और अनुग्रह से स्थापित परमेश्वर की कलीसिया का उदय होगा। वह विवाद का एक चिह्न होगा[1581] , क्योंकि उसके कारण लोगों में एक बड़ा विभाजन उत्पन्न होगा: कुछ उसे अच्छा कहेंगे, जबकि अन्य कहेंगे कि वह लोगों को धोखा देता है, और वे उसे—जिसके विषय में भविष्यवक्ता यिर्मयाह ने कहा है, *'तीरों का निशाना'* बनाएँगे / (विलाप-गीत 3:12), उसे क्रूस पर लटकाकर, तीरों, कीलों और भाले से भेदेंगे। उस समय, हे पति-विहीन माता,' वृद्ध ने जारी रखा, 'दुख और

[1580] *प्राचीन काल के* वृद्ध के रूप में, अर्थात् एक सम्मानित बुजुर्ग के रूप में, भविष्यवक्ता दानिय्येल ने परमेश्वर को देखा (दानिय्येल 7:9-13)। पवित्र शास्त्र में, वृद्धावस्था कभी-कभी परमेश्वर की *अनंतता के* प्रतीक के रूप में काम करती है।

[1581] विवाद के विषय के रूप में, एक विवादास्पद मानक – यह छवि युद्ध के दौरान एक सैन्य मानक से ली गई है, जिसे एक पक्ष कब्जा करने का प्रयास करता है जबकि दूसरा पक्ष इसकी रक्षा करना चाहता है। प्रभु विवाद का ध्वज बन गए, उसी अर्थ में कि कुछ लोगों—अविश्वासियों—ने उनका नाश करने का प्रयास किया (जो उन्होंने परमेश्वर के पुत्र को सूली पर चढ़ाकर कर लिया था, ऐसा उनका मानना था), जबकि अन्य—विश्वासी—इस ध्वज के नीचे खड़े रहे और खड़े हैं तथा इसके लिए लड़ते रहे और लड़ते रहेंगे।

हृदय-वेदना की तलवार तुम्हारी आत्मा को भेद देगी जब तुम अपने पुत्र को क्रूस पर कीलों से ठोंका हुआ देखोगी, जब, अपने हृदय में महान पीड़ा और वलिाप के साथ, तुम इस संसार से वदिा कहोगी उसको जसिे तुमने बनिा कसिी बीमारी के इस संसार में लाया था।

यहाँ मन्दरि में अस्कर के गोत्र की फानूएल की बेटी भवष्यिवक्ता अन्ना भी थीं। वे वधिवा थीं और आयु में बहुत वृद्ध थीं - उनकी आयु अस्सी-चार वर्ष की थी; वह अपने पतकि साथ केवल सात वर्ष ही रही थी और वधिवा होने के बाद, उसने ईश्वर को प्रसन्न करने वाला जीवन जयिा, मंदरि को कभी नहीं छोड़ा, बल्कि उपवास और प्रार्थना में दनि-रात ईश्वर की सेवा करती रही। उस घड़ी मंदरि में आकर, अन्ना ने प्रभु के मंदरि में लाए गए शशिु के बारे में वस्तिार से भवष्यिवाणी की, उन सभी यरूशलेमवासयिों को जो मुक्तकि प्रतीक्षा कर रहे थे[1582] ।

यह सब सुनकर और देखकर, धर्मशास्त्रयिों और फरीसयिों के मन में क्रोध भर गया और उन्होंने बालक के वषिय में शमिोन और अन्ना की गवाही के लिए उन पर रोष प्रकट कयिा। वे चुप नहीं रहे, बल्कि उन्होंने मंदरि में जो कुछ भी हुआ और कहा गया था, वह सब राजा हेरोद को बता दयिा[1583] । उसने तुरंत सैनकिों को आदेश देकर प्रभु दव्यि शशिु मसीह को ढूंढकर मार डालने के लिए भेजा; लेकनि वे उसे फरि नहीं ढूंढ पाए: यूसुफ को स्वप्न में दए गए आदेश के अनुसार, उसे मस्रि ले जाया गया था। मंदरि में वधिकि सभी नयिमों को पूरा करने के बाद, संत जोसेफ और परमेश्वर की अतपिवत्रि माता बेतलेहेम नहीं लौटे, बल्कि गलील में, अपने नगर नासरत चले गए[1584] , और वहाँ से शीघ्र ही मस्रि भाग गए (मत्ती 2:13-14)। इस बीच, बच्चा बढ़ता और आत्मा में बलवान होता गया, बुद्धसि परपिूर्ण होता गया, और ईश्वर की कृपा उस पर बनी रही (लूका 2:40)।

[1585]प्रभु के मन्दरि में समर्पण का पर्व जस्टनियिन के शासनकाल में स्थापति कयिा गया था; इससे पहले, यद्यपि चर्च में प्रभु के मन्दरि में समर्पण का स्मरण कयिा जाता था[1586] , इसे धूमधाम से नहीं मनाया जाता था। धर्मनष्ठि सम्राट जस्टनियिन ने इस पर्व को अन्य महान पर्वों के साथ प्रभु और परमेश्वर की माता का पर्व के रूप में मनाने के लिए स्थापति कयिा। इस पर्व की स्थापना असाधारण परस्थितियिों के कारण हुई। जस्टनियिन के शासनकाल में, बज़िन्टयिम और उसके आसपास, अक्टूबर के उत्तरार्ध में शुरू हुई तीन महीने की एक भीषण महामारी आई, जसिसे पहले तो हर दनि पाँच हज़ार लोग मरते थे, और बाद में दस हज़ार; अमीर और उच्च पदस्थ लोगों के शव भी बनिा दफनाए पड़े रहे, क्योंकि सभी नौकर और दास मर चुके थे, और उनके मालकिों को दफनाने के लिए कोई नहीं बचा था। और अंतीयक में, महामारी के अलावा, जो लोगों के पापों की सजा थी, ईश्वर की एक और सजा आई - एक भयानक भूकंप, जसिने सभी बड़े घरों, ऊंची इमारतों और मंदरिों को गरिा दयिा, और कई लोग उनकी दीवारों के नीचे दबकर मर गए; मृतकों में एंटओिक के बशिप यूफ्रेसयिस[1587] भी थे, जो गरिजाघर के ढहने से दबकर मर गए। इस भयानक और वनिाशकारी समय में, एक धार्मकि व्यक्तकि को यह प्रकट हुआ कि प्रभु की प्रस्तुतकि का एक भव्य उत्सव स्थापति कयिा जाना चाहए, ठीक वैसे ही जैसे प्रभु और परमेश्वर की माता के अन्य महान पर्वों के लिए होता है। और इस प्रकार, प्रभु के मंगनी के पर्व के दनि, यानी दो फरवरी को, जब उत्सव एक रात्र-िजागरण और क्रॉस के साथ एक जुलूस[1588] के साथ शुरू हुआ, तो परमेश्वर की दया

[1582] इससे यह स्पष्ट है कि उस समय यरूशलेम में काफी संख्या में ऐसे लोग थे जो प्रतज्ञिात मसीहा के शीघ्र आगमन की आशा में जी रहे थे—सच्चे इस्राएली जो नस्सिंदेह, अपनी अपेक्षाओं और प्रार्थनाओं की पूर्तकि समाचार को सुनकर अत्यंत आनन्दति हुए।

[1583] *हेरोद,* जसिे इतहिास में *महान,* एंटपिाटर का पुत्र, यहूदयिों का राजा के रूप में जाना जाता है, शुरू में गलील का राज्यपाल था, लेकनि पहले रोमन सम्राट, ऑगस्टस सीज़र के अधीन, 40 ईसा पूर्व में, उसे यहूदयिों के राजा का खतिाब मलिा और उसने पूरे यहूदयिा पर शासन कयिा, जो उस समय रोमन साम्राज्य के अधीन था।

[1584] लूका 2:39। *बेतलहम* यरूशलेम से दक्षणि में बहुत दूर नहीं, एक छोटा सा शहर है; और गलील के एक शहर *नासरत* से बेतलहम तक का सफर तीन दनि या उससे थोड़ा अधकि का है।

[1585] यह, बेशक, *अंटाकयिा की* ओर इशारा करता है – सीरयिा के सबसे पुराने और सबसे अमीर शहरों में से *एक,* और इसकी राजधानी; यह ओरोंटेस नदी पर स्थति है, जहाँ से यह भूमध्य सागर में मलिती है, उससे लगभग 10 वर्स्ट की दूरी पर। एंटीओक ईसाई चर्च के लिए यरूशलेम के बाद ईसाई धर्म का दूसरा महान केंद्र और गैर-यहूदयिों के बीच स्थापति ईसाई चर्चों की जननी होने के नाते वशिेष महत्व रखता है। आज एंटीओक लगभग 10,000 की आबादी वाला एक छोटा और गरीब कस्बा है।

[1586] तीसरी, चौथी और पाँचवीं शताब्दी के चर्च फादर्स के लेखों में इस पर्व का उल्लेख मलिता है।

[1587] *यूफ्रेसयिस* 523 से 527 तक अंकोई के बशिप थे।

[1588] कॉन्स्टेंटनिोपल में फैली महामारी और अंटाकयिा में आए भीषण भूकंप के अंत के उपलक्ष्य में, कुछ स्थानों पर यह प्रथा है कि चर्च *मठों के बाहर* लटिर्जी से पहले *लतिानी* के साथ जुलूस नकिालती है और इस जुलूस के दौरान, रीतकि अनुसार, पर्व के स्टचिैरा और कैनन का गायन करती है; और चर्च में लौटने पर, *लटिर्जी का* अनुष्ठान करती है /

और परमेश्वर की अतिपवित्र माता की प्रार्थनाओं के द्वारा, घातक महामारी, प्लेग और भूकंप तुरंत ही समाप्त हो गए। उसे और उससे जन्मे मसीह को, सदा और सर्वदा सम्मान, महिमा, आराधना और धन्यवाद हो। आमीन।

ट्रोपारियन, स्वर 1:

हे अनुग्रह-पूर्ण, परमेश्वर की कुँवारी माता, आनन्दित हो, क्योंकि तुमसे ही धार्मिकता का सूर्य, हमारे परमेश्वर मसीह, प्रकट हुए, जो अंधकार में रहने वालों को प्रकाशित करते हैं। हे धर्मी वृद्ध, तुम भी आनन्दित हो, क्योंकि तुम्हें हमारे आत्माओं के उद्धारकर्ता ने आलिंगन किया है, जो हमें पुनरुत्थान प्रदान करते हैं।

कॉन्टाकियन, स्वर 1:

अपने जन्म से कुँवारी के गर्भ को पवित्र करने, और सिमीओन के हाथों को यथोचित रूप से धन्य करने के बाद, पूर्व में आकर, अब तूने हमें बचा लिया है, हे मसीह हमारे परमेश्वर: परन्तु इस राज्य को कलह के बीच शांत कर और उस सम्राट को बल दे, जिसे तूने प्रिय जाना है, हे मानव जाति के एकमात्र प्रेमी[1589] ।

16 फरवरी

3 फरवरी (पुराने कैलेंडर के अनुसार)

उसी दिन, पवित्र शहीद इयाडोर की स्मृति, जिन्होंने सम्राट डेसियस के अधीन पीड़ा सहन की[1590] ।

संत सिमोन द गॉड-रिसीवर की स्मृति।

3 फरवरी को स्मरणोत्सव

ईश्वरीय सुसमाचार के अनुसार, वृद्ध सिमीयोन एक धर्मी और धर्मनिष्ठ व्यक्ति थे जो इस्राएल के सांत्वना की प्रतीक्षा कर रहे थे, और पवित्र आत्मा उन पर अवतरित हुआ। उन्हें ईश्वर द्वारा के बारे में बताया गया था कि सच्चे मसीहा का पृथ्वी पर शीघ्र आगमन होगा (लूका 2:2)। प्राचीन इतिहासकार इस कहानी को इस प्रकार बताते हैं कि सिमोन को यह प्रकाशन कैसे मिला। मिस्र के राजा टॉलेमी के आदेश पर, मूसा की व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओं की पुस्तकों का हिब्रू से ग्रीक में अनुवाद किया गया। इस कार्य के लिए, पूरे यहूदी लोगों में से सत्तर सबसे विद्वान पुरुषों को चुना गया था[1591] । उनमें सिमीओन भी थे, जो एक बुद्धिमान व्यक्ति और पवित्र शास्त्रों के एक गहरे विद्वान थे। जब सिमीओन ने

[1589] प्रभु के मन्दिर में प्रस्तुत होने के लिए कोंडाक में, कलीसिया उन विपत्तियों से मुक्ति का स्मरण करती है जो पूर्वी कलीसिया पर आई थीं और जो, ईश्वर की दया से, सम्राट जस्टिनियन के शासनकाल के दौरान समाप्त हुईं।

[1590] *डेसियस ने* 249 से 251 तक शासन किया।

[1591] टॉलेमी द्वितीय, फिलाडेल्फस, जो टॉलेमी लेग्स (285–247 ईसा पूर्व) के पुत्र और उत्तराधिकारी थे, मिस्र के महानतम शासकों में से एक थे। वे विशेष रूप से ज्ञान के प्रति अपने प्रबुद्ध प्रेम के लिए प्रसिद्ध हैं। उनके प्रयासों से ही अलेक्जेंड्रिया की लाइब्रेरी की स्थापना हुई थी। सीरिया को अपने साम्राज्य में शामिल करने की इच्छा से, उसने सीरिया के मार्ग पर स्थित यहूदिया को भी अपने अधीन कर लिया। यरूशलेम पर कब्ज़ा करने के बाद, यरूशलेम और उसके आसपास के साथ-साथ सामरिया के भी कई हज़ार यहूदियों को मिस्र में बंदी बना लिया गया; लेकिन चूँकि राजा ने यहूदियों के साथ दयालुता से व्यवहार किया और अलेक्जेंड्रिया में उन्हें मैसेडोनियाई लोगों के बराबर अधिकार भी दिए, इसलिए कई यहूदी स्वेच्छा से उस देश में बस गए। यह सुनकर कि यहूदी कानून ईश्वर से उत्पन्न हुआ था और उसमें सर्वोच्च ज्ञान और सबसे पवित्र आज्ञाएँ निहित थीं, राजा ने इसे ग्रीक में अनुवादित करवाना चाहा। वह इस अनुवाद को अलेक्जेंड्रिया में अपनी विशाल पुस्तकालय में जोड़ना चाहता था, और शायद यहूदियों पर एक एहसान भी करना चाहता था, जिनमें से कई, इतने लंबे समय तक अलेक्जेंड्रिया में रहने के कारण, अपनी मातृभाषा भूलने लगे थे। मंदिर के लिए कीमती उपहार लेकर एक राजदूत मिशन यरूशलेम भेजा गया। उच्च पुरोहित को लिखे एक पत्र में, राजा ने उनसे अपने पूर्वजों के कानून में अच्छी तरह से निपुण बुजुर्गों को भेजने के लिए कहा, जो इसे ग्रीक में सटीक रूप से अनुवाद करने में सक्षम हों। उस समय, महापुजारी अद्दू के पोते एलेआज़र थे। उन्होंने इज़राइल के बारहों कबीलों में से प्रत्येक से छह-छह बुजुर्गों का चयन किया और उन्हें पवित्र ग्रंथों की सबसे सटीक प्रति—जो बेहतरीन पार्चमेंट पर सोने के अक्षरों में अंकित थी—सौंपकर अलेक्जेंड्रिया भेज दिया। वहाँ उनका बहुत

भविष्यवक्ता यशायाह की पुस्तक का अनुवाद किया, तो वे *उन* शब्दों पर पहुँचे, *'देखो, एक कुँवारी गर्भधारण करेगी और एक पुत्र को जन्म देगी'* (यशायाह 7:14)। जब उन्होंने उन्हें पढ़ा, तो उन्हें संदेह होने लगा, यह सोचकर कि एक बिना पति वाली महिला का गर्भधारण करना असंभव है। सिमियोन ने पहले ही एक चाकू उठा लिया था और वह इन शब्दों को पांडुलिपि से काटकर 'कुंवारी' शब्द को 'पत्नी' में बदलने ही वाला था। लेकिन उसी क्षण प्रभु का स्वर्गदूत उसके पास प्रकट हुआ और उसे हाथ से पकड़कर कहा: 'लिखे हुए वचनों पर विश्वास रखो, और तुम स्वयं उनकी पूर्ति देखोगे; क्योंकि तुम तब तक मृत्यु नहीं देखोगे जब तक तुम प्रभु मसीह को नहीं देख लेते, जो पवित्र कुँवारी से जन्म लेने वाले हैं।'

स्वर्गदूत और भविष्यवक्ता के वचनों पर विश्वास करके, सिमीओं ने उत्सुकता से संसार में मसीह के आगमन की प्रतीक्षा की। उन्होंने एक धर्मी और निष्पाप जीवन जिया, सभी बुराइयों से दूर रहकर और निरंतर परमेश्वर के मंदिर में बने रहे। वहाँ, सिमीओं ने परमेश्वर से प्रार्थना की कि वह अपनी दुनिया पर दया करें और लोगों को अत्यंत दुष्ट शैतान से बचाएँ।

जब हमारे प्रभु यीशु मसीह को, उनके जन्म के चालीस दिन बाद, निर्धारित रीति के अनुसार (निर्गमन 13:2), उनकी अति पवित्र माता के हाथों से मंदिर में लाया गया, तो उसी क्षण धर्मी सिमीओन, जो परमेश्वर की आत्मा द्वारा निर्देशित थे, भी वहाँ पहुँचे। शाश्वत शिशु और उन्हें जन्म देने वाली निर्दोष कुँवारी को देखकर, उन्होंने पहचान लिया कि वही प्रतिज्ञित मसीहा थे, और वह वही कुँवारी थीं जिन पर यशायाह की भविष्यवाणी पूरी होनी थी—और हो चुकी थी। उसे स्वर्गीय प्रकाश से नहाई हुई और दैवी किरणों से दीप्तिमान देखकर, सिमीओन भक्ति और आनंद के साथ उसके पास आए, दिव्य शिशु[1592] को अपनी बाहों में उठा लिया, और कहा: *'हे प्रभु, अब आप अपने दास को अपनी बात के अनुसार शान्ति में जाने दें; क्योंकि मेरी आँखों ने आपका उद्धार देख लिया है, जो आपने सब लोगों के सामने तैयार किया है, जो अन्यजातियों के लिए प्रकट होने का प्रकाश और आपके प्रजा इज़राइल के लिए महिमा है'* (लूका 2:29–32)[1593] ।

इसके बाद, उन्होंने मसीह के दुख-क्लेश और उनके क्रूस पर चढ़ाए जाने के बारे में, साथ ही परमेश्वर की माता के बारे में भी भविष्यवाणी की, कि जब वह अपने पुत्र को क्रूस पर लटका हुआ देखेंगी तो दुख और शोक की तलवार उनकी आत्मा को भेद देगी (लूका 2:34-35)।

वृद्धावस्था में परिपक्व होकर, सिमीओन प्रभु में सो गए[1594] । उनके बारे में लिखा है कि वे कुल तीन सौ साठ वर्ष तक जीवित रहे, क्योंकि परमेश्वर को इस पवित्र वृद्ध की आयु बढ़ाना उचित लगा ताकि वे उस लंबे समय से प्रतीक्षित और सदा वांछित वर्ष को देख सकें, जब अनादि पुत्र कुँवारी से जन्मे, जिनके लिए युगानुयुग महिमा हो, आमीन[1595] ।

सम्मानपूर्वक स्वागत किया गया। उनके लिए फ़ारोस द्वीप पर एक घर प्रदान किया गया, जहाँ उन्होंने हर दिन नौवें घंटे या दोपहर तीन बजे तक अनुवाद पर काम किया। अनुवाद सत्तर दिनों में पूरा हो गया, जिसे अलेक्ज़ेंड्रिया के यहूदियों की उपस्थिति में पढ़ा गया और उन्होंने इसे मंज़ूरी दे दी। पवित्र पुस्तकों के इसी अनुवाद को 'सत्तर (या, अधिक सटीक रूप से, बहत्तर) व्याख्याकारों' या अनुवादकों का अनुवाद के नाम से जाना जाता है; यह आज भी ऑर्थोडॉक्स ईस्टर्न चर्च में प्रचलित है, और इसी से हमारे 'पुराने नियम का स्लावोनिक अनुवाद' लिया गया है।

[1592] इसीलिए संत सिमोन को 'ईश्वर-स्वीकर्ता' कहा जाता है।

[1593] संत सिमियन द गॉड-रिसीवर की मृत्यु-शय्या की प्रार्थना: 'हे प्रभु, अब अपने दास को शांति से जाने दे' – का चर्च में शाम की प्रार्थना के दौरान प्रतिदिन पाठ किया जाता है, ताकि प्रत्येक दिन की शाम हर विश्वासी को उसके जीवन की शाम, यानी उसकी मृत्यु की याद दिला सके। पवित्र वृद्ध सिमोन, देह के बंधनों से मुक्त होकर, आनंदपूर्वक परलोक में चले गए जब उन्होंने दिव्य शिशु, संसार के उद्धारकर्ता को, अपनी वृद्ध बाहों में लिया। इस प्रकार, प्रत्येक विश्वासी, अपने अंतिम क्षणों में, पवित्र उपहारों—मसीह के शरीर और रक्त—को सच्चे मन से ग्रहण करके, इस क्लेशपूर्ण और व्यर्थ संसार को आनंदपूर्वक छोड़ जाता है।

[1594] ईश्वर-स्वीकारकर्ता सनिक्लाइव के पवित्र अवशेषों को सम्राट जस्टिन द यंगर (565–578) के शासनकाल के दौरान कॉन्स्टेंटिनोपल ले जाया गया और वहाँ चैल्कोप्रैटिया चर्च में प्रभु के भाई, सेंट जेम्स के चैपल में रख दिया गया, जिसे उसी सम्राट ने बनवाया था। हमारे 12वीं सदी के रूसी तीर्थयात्री, नोवगोरोड के आर्चबिशप एंथनी ने भी यहाँ सेंट सिमियन द गॉड-रिसीवर की कब्र देखी थी।

[1595] कई लोगों का मानना है कि संत सिमोन, जिन्होंने शिशु यीशु को अपनी बाहों में लिया जब उन्हें मंदिर में लाया गया था और कन्या मरियम और यूसुफ को आशीर्वाद दिया, यरूशलेम के मंदिर में एक पुरोहित थे, ठीक वैसे ही जैसे ज़कारियाह ने पहले शिशु मरियम—जो यीशु की माँ बनने वाली थीं—का स्वागत किया था जब उन्हें मंदिर में लाया गया था। निम्नलिखित व्यक्ति इस बारे में बात करते हैं: संत अथेनासियस द ग्रेट – अपने प्रबंध में पिता और पुत्र की सामान्य प्रकृति पर; संत सिरिल ऑफ जेरूसलम – प्रभु की प्रस्तुति पर अपने प्रवचन में; संत एपिफेनियस – पुराने नियम के पैगंबरों पर अपने उपदेश में; और अन्य। सुसमाचार में धर्मी सिमीयोन के पद का उल्लेख नहीं है, लेकिन पवित्र चर्च के भजनों में उन्हें 'याजक', 'अभिषेककर्ता', 'पवित्रस्थान का सेवक', 'जो वैध बलिदान चढ़ाता था' और 'जो लहू के बलिदानों द्वारा इस्राएल के लोगों को शुद्ध करता था' के रूप में संदर्भित किया गया है। प्रभु की प्रस्तुति पर संत सिमोन के अपने कार्यों (लूका 2:23–37) से भी यह संकेत मिलता है कि वे एक याजक थे।

कॉन्टाकयिन, स्वर 4:

आज, उस संत ने इस नश्वर जीवन के बंधनों से मुक्त होकर, रचयता और प्रभु मसीह को अपनी बाहों में प्राप्त कयि।

भवष्यिवक्ता संत अन्ना की स्मृत

सुसमाचार में उल्लखिति भवष्यिवक्ता संत अन्ना ने, ईश्वर-स्वीकारकर्ता संत समियिोन के साथ, मंदरि में प्रभु यीशु से भेंट की और घोषणा की कि वे लंबे समय से प्रतीक्षति मसीहा – मसीह हैं[1596] ।

शहीद संत ब्लासयिस की स्मृत[1597]

3 फरवरी को स्मरण कयि जाता है

संत व्लासयिस एक चरवाहा थे और कैपाडोसयिा के सेज़ारयिा से आए थे[1598] । जब उत्पीड़न शुरू हुआ और ईसाइयों की तलाश की जा रही थी, तो व्लासयिस को भी एक ईसाई के रूप में आसपास के क्षेत्रों में खोजा गया। यह जानकर, संत व्लासयिस ने स्वेच्छा से अपने खुद को अपने अत्याचारयिों के हाथों में सौंप दयिा, जन्होंने उन्हें खींचकर बैल की नसों से पीटा। लेकनि ईश्वर ने उनके रोगों को ठीक कयिा और उनके घावों को भर दयिा। यह जानकर, राज्यपाल ने इसे जादू-टोना करार दयिा और आदेश दयिा कि इन यातनाओं के बाद, संत को उबलते पानी के एक बड़े पात्र में फेंक दयिा जाए। वहाँ मौजूद सभी को भयभीत करते हुए, शहीद को कोई हानि नहीं हुई और वह उबलते पानी में रहते हुए अपने चारों ओर खड़े लोगों से बात करने लगा, क्योंकि परमेश्वर के स्वर्गदूत प्रकट हुए और शहीद को सुरक्षति रखा। इसके बाद, राज्यपाल के आदेश पर, सैनकि संत को कड़ाही से बाहर नकिालने आए; उन्हें स्वर्गदूतों के साथ गाते हुए देखकर, सैनकिों ने भी खुद को ईसाई होने का दावा कयिा। यह जानकर, राज्यपाल ने अन्य सैनकि भेजे, लेकनि उन्होंने भी आने पर खुद को ईसाई होने का दावा कयिा। इसके बाद, राज्यपाल स्वयं वहाँ आए और संत को उबलते पानी में खड़ा हुआ देखा। यह सोचकर कि पानी ठंडा हो गया है, राज्यपाल ने उसमें अपना चेहरा धोया और तुरंत ही उसका चेहरा जल गया, और परणिामस्वरूप उसकी मृत्यु हो गई। अपने चमत्कारों के माध्यम से कई लोगों को मसीह की ओर ले जाने के बाद, संत ब्लासयिस ने ईश्वर से प्रार्थना की और अपनी पवत्रि आत्मा को उनके हवाले कर दयिा। उनके नधिन के समय उपस्थति लोगों ने उनके शरीर के ऊपर एक कबूतर को उड़ते हुए देखा। जहाँ तक व्लास की गड़रयि की लाठी का सवाल है, जब इसे जमीन में गाड़ा गया, तो यह एक वशिाल पेड़ में बदल गई, जसिकी शाखाओं ने संत की अवशेषों पर बनी चर्च के वेदी को ढक लयिा[1599] ।

पवत्रि शहीदों एड्रयिन और एवबुल की स्मृत

3 फरवरी को स्मरण कयि जाता है

पवत्रि शहीद एड्रयिन और एवबुल वानयिा शहर के मूल नविासी थे[1600] । मसीह के स्वीकारकर्ताओं के प्रति प्रेम से जलते हुए, वे केसरयिा शहर के लिए रवाना हुए[1601] , जहाँ, अपने शब्दों और अपने नर्दिोष जीवन के कारण, यह ज्ञात हो गया कि वे ईसाई थे। परणिामस्वरूप, उन्हें गरिफ्तार कर मुकदमे के लिए प्रांतीय गवर्नर, फर्मलियिन, के समक्ष लाया गया। उसके आदेश पर, उन्हें कंधों और पसलयिों पर पीटा गया और अन्य, और भी क्रूर यातनाएँ दी गईं, ताकि उन्हें मसीह का त्याग करने के लिए मजबूर कयिा जा सके। लेकनि जब वे अपने वश्विास पर अडगि रहे, तो फर्मलियिन और

[1596] लूका 2:36–38। – संत अन्ना भवष्यिवक्ता के बारे में अधकि जानकारी के लिए, प्रभु की प्रस्तुत का वृत्तांत देखें।
[1597] उन्हें βουκυλος (वुकोल) नाम से भी जाना जाता है, जो यूनानी शब्द βουκυλος – चरवाहा से लयिा गया है।
[1598] कैपाडोसयिा एशयिा माइनर के पूर्व में स्थति था; केसरयिा कैपाडोसयिा की राजधानी थी।
[1599] पवत्रि शहीद ब्लासयिस 3वीं शताब्दी में जएि और मर गए।
[1600] वन्नयिा, या वान का शहर, अर्मेनयिा में उसी नाम की झील के पूर्वी तट पर स्थति था।
[1601] सीज़रयिा शहर फलिस्तीन में भूमध्य सागर के तट पर स्थति था। यह फलिस्तीन प्रांत के रोमन गवर्नरों का केंद्र था।

उसके साथ मौजूद लोग क्रोधित हो गए, और संतों को चीर-फाड़ के लिए जंगली जानवरों के सामने फेंकने का निर्णय लिया गया। सबसे पहले धन्य एड्रियन को फेंका गया। एक शेर द्वारा पकड़े जाने पर, उन्होंने बहादुरी से उससे लड़ा, जिसके बाद तलवार से उनका सिर कलम कर दिया गया। जहाँ तक संत यूबुलस का सवाल है, उन्होंने विभिन्न विनतियों और प्रलोभनों के माध्यम से उन्हें अपने धर्म को त्यागने के लिए मनाने की एक बार फिर कोशिश की, लेकिन वह अडिग रहे; और इसलिए उन्हें भी जानवरों के सामने फेंक दिया गया। उन्होंने भी शेर से लड़ा और संत एड्रियन की तरह ही तलवार से अपना सिर कटवाकर प्राण गंवा दिए।

उग्लिच के विश्वासी राजकुमार और चमत्कारकर्ता संत रोमन का जीवन[1602]

3 फरवरी को स्मरणोत्सव

उग्लिच के पवित्र और विश्वासयोग्य राजकुमार रोमन रूसी भूमि पर तातारों के आक्रमण के कठिन समय के दौरान रहते थे। वह उग्लिच के दूसरे अपनगे राजकुमार व्लादिमीर कॉन्स्टेंटिनोविच के दूसरे पुत्र और कॉन्स्टेंटिन वसेवोदोविच के पोते थे, जो पहले रोस्तोव, यारोस्लावल और उग्लिच के अपानगे राजकुमार थे, और बाद में व्लादिमीर के महा राजकुमार बने[1603] । व्लादिमीर कॉन्स्टेंटिनोविच को उनके शुरुआती बचपन में उग्लिच्स्काया ज़मीन, या उग्लिच् शहर, अपने अपानगे के रूप में मिला था[1604] । राजकुमारी फोटिनी से विवाह करने के बाद, उनके दो पुत्र हुए – एंड्रे और रोमन[1605] ।

उग्लिच में व्लादिमीर के शासनकाल के दौरान, रूसी भूमि पर एक भयंकर तूफान आया, और साथ ही उग्लिच पर भी: बटू, मास्को और व्लादिमीर को तबाह करने और वहाँ ग्रैंड प्रिंस के परिवार का कत्लेआम करने के बाद, वोल्गा से आगे बढ़ गया, जहाँ ग्रैंड प्रिंस यूरी वसेवोल्दोविच अपनी सेना को इकट्ठा करते हुए पीछे हट गए थे। अपने रास्ते में, तातारों ने हर उस शहर को अपने अधीन कर लिया जहाँ वे पहुँचे, जबकि जिन्होंने आत्मसमर्पण करने से इनकार कर दिया, उन्हें लूट लिया गया और उनके निवासियों का कत्लेआम कर दिया गया। स्पष्ट और आसन्न खतरे को देखते हुए, उग्लिच के राजकुमार व्लादिमीर ने व्यर्थ प्रतिरोध न करने का फैसला किया, बल्कि तातारों के सामने आत्मसमर्पण करके शहर और उसके निवासियों को बचाया। हालाँकि, वह स्वयं अपने परिवार के साथ इस अपमान को सहन नहीं करना चाहते थे और उन्होंने उत्तर की ओर पनाह ली, तथा नोवगोरोड क्षेत्र में पीछे हट गए। सिटी नदी पर हुई विनाशकारी लड़ाई और ग्रैंड प्रिंस यूरी की मृत्यु के बाद, रूसी राजकुमारों को तातारों के अधिकार ( ) को स्वीकार करने और उन्हें कर देने के लिए मजबूर होना पड़ा। उग्लिच के राजकुमार को भी इस भाग्य को स्वीकार करने के लिए मजबूर होना पड़ा; बटू के दक्षिण की ओर प्रस्थान के बाद, अन्य राजकुमारों की तरह, खतरा टलने पर, वह उग्लिच लौट आया और ख़ान के एक सामंत के रूप में

[1602] 1605 में, 3 फरवरी से, उग्लिच के संत राजकुमार रोमन के अवशेषों के माध्यम से चमत्कार होने लगे। उस समय, पैट्रिआर्क जॉब ने कज़ान के मेट्रोपॉलिटिन, हर्मोजेनस—जो बाद में पैट्रिआर्क बने—को उग्लिच में पवित्र राजकुमार के अवशेषों की जांच करने और चमत्कारों की रिपोर्टों को सत्यापित करने का निर्देश दिया। पितृपिता जॉब के आशीर्वाद से, वोइवोड सेमेन रोमानोविच ओल्फेयेव और पेरियास्लाव में दानिलोव मठ के एक भिक्षु सेरगियस ने, सेंट प्रिंस रोमन की जीवनी, दैवीय सेवा और चमत्कारों का विवरण (3 फरवरी 1605 से) संकलित किया। 1609 में लिथुआनियाई लोगों द्वारा उग्लिच शहर को लूटने के बाद, यह नई लिखी गई संजीवनी, साथ ही 3 फरवरी से 2 मार्च 1605 तक के चमत्कारों का विवरण, खोजा नहीं जा सका; केवल दैवीय सेवा और 2 मार्च से बाद के चमत्कारों का विवरण ही प्रतिलिपि किया गया था। उग्लिच के ट्रांसफिगरेशन कैथेड्रल में संरक्षित एक पांडुलिपि के आधार पर, संत राजकुमार रोमन के चमत्कारों का विवरण 1873 के यारोस्लावल डायोसीशियन गज़ट, संख्या 46–48 में, और एक अलग पैम्फलेट के रूप में प्रकाशित किया गया था: 'पवित्र और धर्मी राजकुमार रोमन, उग्लिच के चमत्कार करने वाले की चमत्कारों की कथा'। यारोस्लावल। 1874। यह सेवा और चमत्कारों का वृत्तांत हमें कई अन्य पांडुलिपियों से भी ज्ञात हैं। 1605 में लिखी गई संजीवनी की हानि के बाद, 18वीं शताब्दी में उग्लिच के रूपांतरण कैथेड्रल में 'सबसे प्राचीन वंशावलीकारों और विश्वसनीय भौगोलिक इतिहासकारों से' एक नई, विस्तृत संजीवनी संकलित की गई थी; 18वीं सदी की एक प्रति पर आधारित, यह संजीवनी 1889 के यारोस्लावली डायोसीज़न गज़ट, संख्या 48-49 में, और एक अलग पैम्फलेट के रूप में प्रकाशित की गई थी: 'पवित्र और विश्वासपात्र राजकुमार रोमन व्लादिमीरोविच, उग्लिच के चमत्कार करने वाले की जीवन गाथा'। यारोस्लावली, 1890। यहाँ उल्लिखित 'कथा' और 'जीवन' में निहित जानकारी को वर्तमान विवरण में, वृत्तांतों और अन्य स्रोतों के साथ तुलना करके सत्यापित किया गया है।

[1603] कॉन्स्टेंटिन, महान प्रिंस वसेवोल्ड III यूरीविच 'द ग्रेट नेस्ट' के पुत्र थे, जिनका जन्म 1185 में हुआ था; 1207 से वे रोस्तोव, यारोस्लावल और उग्लिच के अपानगेज प्रिंस थे, और 1216 से व्लादिमीर के महान प्रिंस थे; उनकी मृत्यु 1219 में हुई।

[1604] उनका जन्म लगभग 1214 में हुआ था।

[1605] राजकुमार व्लादिमीर ने 1232 में विवाह किया; राजकुमार एंड्रे का जन्म 1233 में हुआ, और रोमन का 1 अक्टूबर 1235 को।

शासन करने लगा। यह ज्ञात नहीं है कि क्या राजकुमार व्लादिमीर खान के सामने अपनी अधीनता घोषित करने के लिए होर्डे गए, जैसा कि आवश्यक था और सभी शासक राजकुमारों के लिए करना अनिवार्य था। एक विस्तृत संजीवनी में दर्ज परंपरा के अनुसार, व्लादिमीर हॉर्ड नहीं गए, लेकिन ज़िम्मेदारी से बचने के लिए, वे उग्लिच में भी नहीं रुके; इसके बजाय, वे विभिन्न अन्य शहरों में रहे और 27 दिसंबर 1249 को व्लादिमीर में उनकी मृत्यु हो गई। उसके बाद उसके शरीर को उसकी पत्नी और बच्चों द्वारा उग्लिच ले जाया गया और ट्रांसफिगरेशन कैथेड्रल में दफनाया गया।

धार्मिक राजकुमार रोमन का बचपन, अपने बड़े भाई एंड्रे की तरह, भयानक उथल-पुथल और आपदाओं के बीच बीता, जो उग्लिच में अपने माता-पिता के साथ शांतिपूर्ण निवास की तुलना में निर्वासन और भटकन में अधिक व्यतीत हुआ।

व्लादिमीर की मृत्यु के बाद, उनके सबसे बड़े बेटे आंद्रेई, जो केवल 16 वर्ष के थे, उग्लिच के राजकुमार बने। हालाँकि, उनकी माँ उनके साथ थीं और उन्होंने बच्चों का प्रभार संभाला। आंद्रेई का 1261 में निधन हो गया, और उनके कोई संतान नहीं थी, और उग्लिच का राजसी क्षेत्र उनके भाई रोमन को मिला, जो उस समय 26 वर्ष के थे।

प्रिंस व्लादिमीर कॉन्स्टेंटिनोविच के धार्मिक परिवार में भयानक उथल-पुथल और परीक्षाओं के बीच पले-बढ़े और बहुत समय यात्रा में बिताने के कारण, प्रिंस रोमन अपनी धार्मिकता के लिए प्रसिद्ध थे और उन्हें शोर-शराबे भरे जीवन या मनोरंजन में कोई खास रुचि नहीं थी। काफी विद्वान व्यक्ति होने के नाते, उन्होंने खुद को किताबें पढ़ने में समर्पित कर दिया और उन्हें ईश्वर के घरों, पुरोहित वर्ग और चर्च सेवा से गहरा लगाव था। उनके शासनकाल में उग्लिच और पूरे उग्लिच के साम्राज्य में कई चर्चों का निर्माण हुआ, जो तातार शासन के कठिन दौर में, जहाँ तक संभव था, उनके शासन के तहत शांति का आनंद लेते थे। राजकुमार रोमन का अधिकार उग्लिच से आगे अन्य शहरों: काशिन, वेज़्हेत्स्की वेर्ख, उस्त्युज़्ना, दमित्रोव और ज़्वेनिगोरोड तक फैला हुआ था। वह वोल्गा के ऊँचे बाएँ किनारे पर, बोरिसोग्लेब्स्काया बस्ती के सामने, रोमानोवो नामक नए शहर के निर्माण के लिए भी जिम्मेदार थे।

राजकुमार रोमन अपनी धर्मार्थ गतिविधियों के लिए प्रसिद्ध थे और उन्होंने अनाथाश्रम और धर्मशालाएं स्थापित करने का ध्यान रखा।

1265 में, राजकुमार रोमन ने राजकुमारी अलेक्ज़ेंड्रा से विवाह किया, लेकिन उनके कोई संतान नहीं हुई। उनके साथ उग्लिच में उनकी धर्मपरायण माँ, राजकुमारी फोतिनी रहती थीं, जिन्होंने अपनी वृद्धावस्था में यूडोक्सिया नाम से संन्यास की शपथ ली; उनकी मृत्यु 1278 में हुई और उन्हें उनके पति के बगल में उग्लिच में दफनाया गया। 1281 में, राजकुमार रोमन ने अपनी पत्नी अलेक्ज़ेंड्रा को भी खो दिया और अपने अंतिम वर्ष एकांत में बिताए, खुद को धार्मिक कार्यों में समर्पित कर दिया। 3 फरवरी 1285 को उनका शांतिपूर्वक निधन हो गया, जिससे उनके प्रजाजनों और उनके रिश्तेदार, राजकुमारों को, जो उनसे प्यार करते थे और उनका सम्मान करते थे, गहरा दुख हुआ। राजकुमार रोमन के शरीर को प्रभु के रूपांतरण के कैथेड्रल में, उनके पिता, माता, भाई और पत्नी की कब्रों के बगल में दफनाया गया था।

प्रिंस रोमन की मृत्यु के ठीक दो सौ साल बाद, 1485 में, उग्लिच के प्रिंस एंड्रेई वासिलीविच[1606] ने उग्लिच शहर के किले के भीतर प्रभु के रूपांतरण का एक नया, पत्थर का कैथेड्रल बनाने का काम शुरू किया। जब नई चर्च की नींव के लिए खाई खोदी जा रही थी, तो ईश्वर ने प्रिंस आंद्रेई को प्रिंस रोमन के अक्षुण्ण अवशेष खोजने का वरदान दिया, जिन्हें बाद में नव-निर्मित चर्च में स्थापित किया गया और वे एक सौ बीस से अधिक वर्षों तक वहाँ पूरे और सुरक्षित रहे। इन अक्षुण्ण अवशेषों से विभिन्न बीमारियों से कई चमत्कारी उपचार हुए। उग्लिच के निवासियों और आसपास के क्षेत्रों के लोगों दोनों ने पवित्र राजकुमार की अवशेषों का श्रद्धापूर्वक सम्मान किया, लेकिन धार्मिक अधिकारियों से कोई आधिकारिक मान्यता नहीं मिली।

सोलहवीं शताब्दी के अंत और सत्रहवीं शताब्दी के शुरुआती वर्षों में उग्लिच में त्ज़ारेविच दिमित्री की हत्या के बाद, संत राजकुमार रोमन के अवशेषों के पास आने वाले बीमारों में चमत्कारिक उपचार विशेष रूप से अक्सर होने लगे। इन चमत्कारों की खबर दूर-दूर तक फैल गई, और पैट्रिआर्क जॉब ने काज़ान के मेट्रोपॉलिटिन हर्मोजेनेस को पवित्र अवशेषों और चमत्कारों के विवरणों की मौके पर ही जांच करने का निर्देश दिया। इस जांच के बाद, परम पावन पैट्रिआर्क

[1606] आंद्रेई वासिलीविच, जो ग्रैंड प्रिंस वासिली वासिलीविच द ब्लाइंड के पुत्र और ग्रैंड प्रिंस जॉन वासिलीविच III के भाई थे, ने 1462 से उग्लिच पर शासन किया; 1422 में उन्हें जॉन III द्वारा पेरियास्लाव्ल में कैद कर दिया गया था, जहाँ उनकी मृत्यु 1494 में हुई।

जॉब ने संत रोमन के सम्मान में एक जीवनी, स्टचिैरा और एक कैनन की रचना के साथ-साथ 3 फरवरी 1605 से चमत्कारों के रकिॉर्ड के लिए अपनी स्वीकृति दे दी[1607] ।

1609 में, उग्लिच शहर को एक बड़ी वपित्ति का सामना करना पड़ा, जैसा कि उस समय पूरे रूस को करना पड़ा: लथिुआनियाई तबाही। उग्लिच शहर पर कब्ज़ा कर लिया गया, इसके कई नविासियों का कत्लेआम किया गया, और घरों, कलि और ईश्वर के चर्चों को लूटकर आग लगा दी गई। दुश्मनों ने रूपांतरण कैथेड्रल पर भी हमला किया, उसे लूट लिया और उसमें आग लगा दी, और जानबूझकर संत रोमन के अवशेषों को नशिाना बनाया, जो वहां स्थापति थे। संत रोमन के भक्तों ने उनके अवशेषों की जली हुई हड्डियाँ—उनका सरि, पसलियाँ, हाथ और पैर—इकट्ठा कीं, उन्हें एक नए अवशेष-पात्र में रखा और उन्हें रूपांतरण कैथेड्रल वापस ले आए, जहाँ वे आज भी मौजूद हैं।

पैगंबर सेंट अजारीयाह की स्मृति

3 फरवरी को स्मरणोत्सव

ओदेद के पुत्र सेंट अजारीयाह ने यहूदा के राजा आसा के दनिों में भवषि्यवाणी की थी[1608] । इथयिोपिया के राजा जेरह पर आसा की शानदार वजिय के अवसर पर, अजारीयाह, जो परमेश्वर की आत्मा से भरपूर थे, ने राजा और लोगों से मूर्तपिूजा को त्यागने और सच्चे परमेश्वर की नषि्ठापूर्वक सेवा करने का आग्रह किया। अज़ार्याह की भवषि्यवाणी से प्रेरति होकर, राजा और लोगों ने यहूदा और बेन्यामीन की सारी भूमि से मूर्तयिों को नकिाल फेंका। उस समय कई इस्राएलयिों ने भी सच्चे परमेश्वर की ओर मुड़ गए, और यरूशलेम में इकट्ठा होकर, परमेश्वर के साथ एक वाचा में बँधे, यह शपथ लेते हुए कि वे कभी भी उससे पीछे नहीं हटेंगे। और परमेश्वर ने उन्हें स्थायी शांति का आशीर्वाद दिया[1609] ।

पवत्रि शहीदों पापयिास, डायोडोरस और क्लॉडयिन का दुख

3 फरवरी को मनाया जाता है

पवत्रि शहीदों पापयिास, डायोडोरस और क्लॉडयिन ने सम्राट डेसयिस ([1610]) के शासनकाल में पम्फलियिाई नगर अत्तालयि ([1611]) में कष्ट सहे। वे अपने देश में पशुओं के झुंडों की देखभाल करते थे और ईसाई होने के नाते, उन्होंने मूर्तपिूजकों के बीच मसीह में वशि्वास का प्रसार किया। परणिामस्वरूप, उनके खलिाफ एक शकिायत दर्ज की गई, और प्रांतीय राज्यपाल पॉलनिस के आदेश पर, उन्हें गरिफ्तार कर मुकदमे के लिए उनके सामने पेश किया गया। पूछताछ के दौरान, उन्होंने नडिर होकर मसीह को सच्चा ईश्वर स्वीकार किया और उन पर दृढ़ वशि्वास जताते हुए घोषणा की कि वही स्वर्ग और पृथ्वी तथा उनमें मौजूद सभी चीजों का सृष्टकिर्ता है, और उसके सवि कोई और ईश्वर नहीं है। यह सुनकर, प्रांतीय राज्यपाल क्रोध से आग-बबूला हो गया और उसने संतों को वभिन्नि प्रकार की यातनाएँ देने का आदेश दिया। लेकनि चूँकि वह ऐसा करके उन्हें मसीह में अपने वशि्वास से इनकार करने के लिए मजबूर नहीं कर सका, इसलिए उसने तलवार से उनका सरि कलम करने का आदेश दिया। इस प्रकार पवत्रि शहीदों ने मसीह के लिए प्राण दिए और उसी से अपने शहीद होने का मुकुट प्राप्त किया। ईसाइयों ने हमारे ईश्वर, मसीह की महमिा के लिए, उनके शरीरों को सम्मानपूर्वक दफनाया।

[1607] संत रोमन का जीवन और उनके प्रारंभकि चमत्कारों का वृत्तांत लथिुआनियाई तबाही के दौरान खो गया था। उनके अवशेषों द्वारा कए गए चमत्कारों का एकमात्र जीवति वृत्तांत, जो संत रोमन की सेवा के साथ संरक्षति है, उसी वर्ष 2 मार्च, 1605 का है।

[1608] ईसा पूर्व 10वीं शताब्दी में।

[1609] नबी अजर्याह का वृत्तांत 2 इतहिास 15:1–19 में मलिता है।

[1610] सम्राट डेसयिस ईसाइयों के सबसे नर्दियी उत्पीड़क में से एक थे, जनिका उद्देश्य रोमन साम्राज्य में ईसाई धर्म का पूर्ण उन्मूलन करना था। उन्होंने 249 से 251 तक, दो वर्षों तक शासन किया।

[1611] पम्फलिया एशिया माइनर के दक्षणिी भाग में भूमध्य सागर के तट पर स्थति था। इसके उत्तर में पसिीडिया, पश्चमि में लसििया और पूर्व में सलिसिया था। अटालयि शहर, जसिे अब अदालयि के नाम से जाना जाता है, इस क्षेत्र का तटीय शहर और प्रांतीय गवर्नर का केंद्र था।

17 फरवरी

4 फरवरी (पुराने कैलेंडर के अनुसार)

उसी दनि, पवत्रि और धर्मी ग्रैंड प्रसि जॉर्ज वेस्वेलोदोवचि[1612] की स्मृति।

हमारे पूजनीय पति इसडिोर ऑफ पलिुसयिोट की स्मृति

4 फरवरी को स्मरणोत्सव

आदरणीय इसडिोर अलेक्जेंड्रयिा के मूल नविासी थे[1613] । उनका जन्म कुलीन और धार्मकि माता-पति के घर हुआ था और वे अलेक्जेंड्रयिा के आर्चबशिप थयिोफलिस और उनके उत्तराधकिारी संत सरिील के रश्तिेदार थे। सांसारकि वज्ञिानों का सफलतापूर्वक अध्ययन करने और दव्यि ज्ञान में पारंगत होने के बाद, इसडिोर ने स्वयं को ईश्वर की सेवा के लिए समर्पति करने की इच्छा व्यक्त की। अपनी युवावस्था में ही, उन्होंने इस संसार के वैभव और धन-संपत्ति का त्याग कर दयिा और अपनी जन्मजात कुलीनता की परवाह कएि बनिा तथा सभी चीजों को धूल के समान मानकर, माउंट पलिुसयिोट[1614] चले गए। वहाँ, भकि्षु संन्यास की शपथ लेने के बाद, उन्होंने एक कठोर तपस्वी जीवन व्यतीत कयिा[1615] । इज़डिोर की आध्यात्मकि बुद्धि और कठोर जीवन शैली ने भक्ति के कई भक्तों को उनकी ओर आकर्षति कयिा, जन्हिोंने उन्हें एबॉट और प्रेस्बटिर के पद के लिए चुना[1616] । अपने कठोर तपस्या और उच्च शकि्षा के कारण, आदरणीय इसडिोर ने इतना सम्मान अर्जति कयिा कि न केवल बशिप और कुलीनों ने, बल्कि स्वयं सम्राट और अलेक्जेंड्रयिा के पैट्रआर्क ने भी उनसे सलाह और मार्गदर्शन के लिए रुख कयिा, और सभी ने उन्हें अत्यंत सम्मान की दृष्टि से देखा।

चर्च के इतहिासकार इवाग्रयिस[1617] , इसडिोर को याद करते हुए कहते हैं: 'थयिोडोसयिस[1618] के शासनकाल में, पलिस के इसडिोर को बहुत सम्मान दयिा जाता था; एक सदाचारी और शकि्षाप्रद व्यक्ति के रूप में उनकी ख्याति दूर-दूर तक फैली, और सभी द्वारा उनके नाम की प्रशंसा की गई। अपने परश्रिम से उन्होंने अपने शरीर को इतना थका दयिा कि सभी को उनका जीवन पृथ्वी पर एक दैवीय जीवन प्रतीत होता था। उन्होंने साधु जीवन और चतिन का एक सजीव उदाहरण प्रस्तुत कयिा, और दूसरों के शकि्षण के लिए बहुत कुछ लखिा जो अत्यंत उपयोगी था।"

इतहिासकार नकिफिोरस[1619] , इसडिोर के सदाचारी जीवन की गवाही देते हुए कहते हैं: 'अपनी युवावस्था से ही, दैवीय इसडिोर ने मठवासी परश्रिमों में इतना पसीना बहाया और अपने शरीर को इस हद तक वश में कयिा, जबकि अपने आत्मा को गूढ़ और उच्च शकि्षाओं से पोषति कयिा, कि सभी को वह सुसमाचार के जीवन का पूर्ण उत्कृष्टता के साथ पालन करते हुए प्रतीत हुए। वे मठवासी नयिमों और दैवी दृष्टि के एक जीवंत और सजीव स्तंभ थे, और, मानो, सबसे ऊँचे

[1612] 4 मार्च 1238 को सटिी नदी पर मंगोलों के खलिाफ लड़ाई में उनकी मृत्यु हो गई। उनके पवत्रि अवशेष व्लादमिीर कैथेड्रल में रखे गए हैं।

[1613] *अलेक्जेंड्रयिा* उत्तरी मस्रि में स्थति एक शहर है, जो नील नदी के मुहाने पर बसा है; इसकी स्थापना महान अलेक्जेंडर ने 331 ईसा पूर्व में की थी। यह कभी मूर्तपिूजक शकि्षा का केंद्र और वशि्व का प्रमुख व्यापारकि शहर था। चौथी शताब्दी की शुरुआत में, यह ईसाई शकि्षा का केंद्र और पादरी का मुख्यालय बन गया। आज, अलेक्जेंड्रयिा भूमध्यसागर के सबसे कलिबंद बंदरगाहों और सबसे महत्वपूर्ण व्यापारकि केंद्रों में से एक है।

[1614] *माउंट पलिुसयिोत्स्कायानचिले* मस्रि में, नील नदी से बहुत दूर नहीं स्थति था। – *पलिुसयिा,* या *पेलुसा* – उत्तरी मस्रि के शहरों में से एक है।

[1615] यहाँ गहरे एकांत में रहते हुए, इसडिोर ने तपस्वी जीवन के प्रति उत्साहपूर्वक खुद को समर्पति कर दयिा। उन्होंने मोटे कपड़े के वस्त्र पहने और केवल जड़ों और जड़ी-बूटयिों पर ही जीवन यापन कयिा। वहाँ से, पूजनीय इसडिोर संत जॉन क्रसिोस्टोम को देखने और सुनने के लिए कॉन्स्टेंटनिोपल गए। क्रसिोस्टोम से जो कुछ इसडिोर ने देखा और सुना, साथ ही उनके लेखन, यह सब इसडिोर के लिए जीवन भर सावधानीपूर्वक अध्ययन और आश्चर्य का वषिय बना रहा, जसिसे क्रसिोस्टोम की मानसकि स्पष्टता, सादगी और उत्साह इसडिोर के अपने चरत्रि का हस्सिा बन गए और उनके सभी कार्यों में झलकते थे। पलिुसयिोट मठ में लौटने पर, उन्होंने अपना तपस्वी जीवन जारी रखा, और पाखंडयिों तथा अन्याययिों की नदिा करने से नहीं हचिकचिाए: उन्होंने चर्च की सीटों की कीमतें तय करने के लिए अपने ही बशिप को फटकारा, और नागरकि अधकिारयिों को उनके पक्षपात के लिए फटकारा।

[1616] वस्त्रों में सादगी, मौन का पालन, भोजन में मतिव्ययति, और गरीबों के प्रति दान – ये वे नयिम थे जन्हिें पूज्य इसडिोर ने अपने भाइयों में स्थापति कयिा और जन्हिें उनके अपने जीवन के जीवंत उदाहरण से पुष्ट कयिा गया।

[1617] *एवाग्रयिस* छठी शताब्दी के एक चर्च-सम्बंधी इतहिासकार थे।

[1618] *थेओडोसयिस द्वतिीय* युवा, थेओडोसयिस महान के पोते, 408 से 450 तक बाइजेंटाइन सम्राट थे।

[1619] 14वीं सदी में रहे *नकिेफ़ोरस कैलस्टिोस* ने *द हस्ट्रिी ऑफ़ द चर्च* लखिा।

आदर्श और आध्यात्मिक शिक्षा के सबसे उत्तम अनुकरण के सर्वोच्च आदर्श थे। इसिडोर ने विभिन्न उपयोगी निर्देशों की एक बड़ी संख्या लिखी। उन्होंने विभिन्न व्यक्तियों को लगभग दस हजार पत्र छोड़े, जो दैवीय अनुग्रह और मानवीय ज्ञान से परिपूर्ण थे, जिनमें उन्होंने संपूर्ण पवित्र शास्त्र की व्याख्या की और लोगों के नैतिकता को सुधारने का काम किया।"

इन गवाहियों से यह स्पष्ट रूप से स्पष्ट है कि आदरणीय इसिडोर परमेश्वर के कितने महान पुरुष थे। यद्यपि उनके जीवन का कोई विस्तृत विवरण संरक्षित नहीं है, इतिहासकारों के संक्षिप्त शब्द भी उनकी पवित्रता और बुद्धिमत्ता को समझने के लिए पर्याप्त हैं, क्योंकि वह सभी के लिए सदाचार का एक आदर्श थे और उन्होंने अपनी ईश्वर-प्रेरित लेखनी से संसार को भर दिया। वह संत जॉन क्रिसोस्टोम के एक महान रक्षक साबित हुए, जिन्हें अन्यायपूर्ण ढंग से उनके बिशप पद से वंचित कर दिया गया था, और उन्होंने अलेक्जेंड्रिया के आर्चबिशप थियोफिलस और सम्राट आर्कैडियस[1620] को विस्तार से पत्र लिखे, जिसमें उन्हें अपने दुष्ट कर्मों से باز आने की सलाह दी; और, यद्यपि वह सफल नहीं हुए, फिर भी उन्होंने उनकी दुर्भावना और झूठ को उजागर कर दिया। और क्रिसोस्टोम की मृत्यु के बाद, उन्होंने संत , अलेक्जेंड्रिया के सिरिल, जो थियोफिलस के उत्तराधिकारी थे, को लिखा और उन्हें चर्च डिप्टिच[1621] में जॉन का नाम एक महान कन्फैसर के रूप में शामिल करने के लिए मनाया, जिन्होंने दुष्ट लोगों के हाथों सत्य के लिए बहुत कष्ट उठाया था।

उन्होंने सम्राट थियोडोसियस को भी लिखा, और उनसे चर्च के भीतर शांति सुनिश्चित करने का आग्रह किया। और उन्होंने उनसे दुष्ट विधर्मियों के विरुद्ध एफ़िसुस में तीसरा सार्वभौमिक परिषद[1622] बुलाने का आग्रह किया; क्योंकि वह स्वयं धर्मपरायणता के एक महान रक्षक थे, विधर्मियों के एक कट्टर विरोधी थे, जो ऑर्थोडॉक्स विश्वास के लिए दुख सहने और मरने को तैयार थे, जैसा कि उनके शब्दों से स्पष्ट है। एक निश्चित धर्मनिंदाकर्ता, फेरेशियस, को लिखे एक पत्र में, वह कहते हैं:

'मैं आपसे पूछता हूँ, जो हम पर उपहास करते हैं और स्वयं को हमारे सामने एक ऐसे हाज़िरजवाब और सख्त न्यायाधीश के रूप में प्रस्तुत करते हैं: यदि राजा आपको शहर की दीवारों पर तैनात कर दे, और आपको शहर की रक्षा और सुरक्षा का आदेश दे, और आप देखें कि दुश्मन शहर में आसानी से प्रवेश करने के लिए दीवार के नीचे सुरंग बनाकर उसे ध्वस्त कर रहे हैं - तो क्या आप दीवार को नष्ट होने से रोकने और दुश्मनों को बाहर रखने के लिए, अपने पास मौजूद हर हथियार और साधन का उपयोग करके विरोध नहीं करेंगे; बेशक, आप ऐसा करेंगे, ताकि शहर और खुद को दुश्मनों से बचा सकें, और राजा के प्रति विफादारी और उत्साही आज्ञाकारिता दिखा सकें। तो क्या यह उपयुक्त नहीं है कि हम—जिन्हें ईश्वर ने अपनी कलीसिया में शिक्षक नियुक्त किया है—एरियस[1623] के खिलाफ दृढ़ता से उठ खड़े हों, जिसने न केवल मसीह के झुंड पर युद्ध छेड़ा है, बल्कि कई लोगों को विनाश की ओर भी ले गया है? मैं इस कारण के लिए हर प्रकार की यातनाओं को सहन करना कुछ भी नहीं समझता, और सच्चे विश्वास के लिए हर तरह की कठिनाइयों को सहन करने से बढ़कर मैं कुछ भी नहीं चाहता।'

संन्यासी के ये शब्द स्पष्ट रूप से उनकी धार्मिकता के प्रति उत्साह को प्रकट करते हैं; लेकिन उनके पत्रों से उनके अन्य गुणों के बारे में भी जाना जा सकता है।

[1620] *आर्काडियस* – सम्राट थियोडोसियस महान के पुत्र और उत्तराधिकारी, ने 395 से 408 तक शासन किया।

[1621] *डिप्टिच* (ग्रीक शब्दों से जिसका अर्थ है 'दो बार' और 'मोड़ना') दो पट्टियों से मिलकर बनता है, जिनमें से एक पर जीवित लोगों के नाम अंकित होते थे, और दूसरी पर दिवंगत लोगों के नाम दर्ज होते थे। हमारी परंपरा में, इन्हें *साइनोडिकॉन्स,* या बस 'स्मरणोत्सव' और 'स्मारक' कहा जाता है। प्रारंभिक चर्च में, ईसाइयों को चर्च डिप्टिच में शामिल किया जाना सम्मान की बात मानी जाती थी; इसके विपरीत, उन लोगों के लिए यह अपमानजनक माना जाता था जिनके नाम डिप्टिच में शामिल नहीं थे या जिन्हें उससे हटा दिया गया था।

[1622] *तीसरा सार्वभौमिक धर्मसभा* नेस्टोरियस की विधर्म के जवाब में 431 में बुलाई गई थी, कॉन्स्टेंटिनोपल के पैट्रिआर्क, जिन्होंने यीशु मसीह के व्यक्तित्व के बारे में अपनी झूठी शिक्षा से चर्च में भ्रम पैदा कर दिया था, यह दावा करते हुए कि उनमें दिव्यता देहधारण के क्षण में मानवता के साथ नहीं मिली थी, और इसलिए उन्हें 'ईश्वर-वाहक' कहकर 'ईश्वर-पुरुष' कहने के बजाय, और परम पवित्र कुँवारी को 'ईश्वर की माता' कहने के बजाय 'मसीह की माता' कहा। नेस्टोरियस और उसके शिक्षण को विधर्मी घोषित करने के बाद, तृतीय सार्वभौमिक परिषद के धर्मगुरुओं ने भक्तिपूर्वक इस ऑर्थोडॉक्स सिद्धांत की पुनःपुष्टि की कि हमें अपने प्रभु यीशु मसीह में एक व्यक्ति और दो स्वभावों की स्वीकारोक्ति करनी चाहिए, और उनकी परम पवित्र माता की एक सदा-कुँवारी और परमेश्वर की सच्ची माता के रूप में महिमा करनी चाहिए।

[1623] *एरियस* (जो चौथी शताब्दी की शुरुआत में रहते थे) ने अपनी अधर्मी शिक्षा से परमेश्वर के पुत्र को नीचा दिखाया, और उन्हें सबसे उच्च प्राणी कहा, जिसके माध्यम से परमेश्वर ने पूरी दुनिया को बनाया। इस विधर्म की निंदा पहले सार्वभौमिक धर्मसभा में की गई थी।

वह कुँवारीपन की—जिसकी आइज़िडोरो स्वयं एक सख्त रक्षक थे—सभी अन्य गुणों से ऊपर प्रशंसा करते हैं, और इसे एक रानी कहते हैं जिसका सम्मान हर किसी को करना चाहिए, हालांकि वह सम्मानजनक विवाह का भी अपमान नहीं करते। स्कॉलैस्टिक एंथनी को लिखे अपने पत्र में, वे कहते हैं: 'जो अपनी कुँवारी अवस्था बनाए रखते हैं उन्हें सूर्य के समान, जो पवित्र विधवा जीवन जीते हैं उन्हें चंद्रमा के समान, और जो विवाह में सम्मानपूर्वक रहते हैं उन्हें तारों के समान कहा जाना चाहिए, ठीक वैसे ही जैसे पवित्र प्रेरित पौलुस कहते हैं: *'सूर्य की एक महिमा है, चंद्रमा की दूसरी महिमा है, और तारों की एक दूसरी महिमा है; और एक तारा दूसरे तारे से महिमा में भिन्न है'* (1 कुरिन्थियों 15:41)। वह सांसारिक ज्ञान के प्रेमी लोगों से आग्रह करते हैं कि वे वाक्पटुता की अपेक्षा एक सदाचारी जीवन को अधिक समर्पित करें। पैट्रिडि नामक एक भिक्षु को लिखे एक पत्र में, वे कहते हैं: 'मैंने आपके बारे में सुना है कि आपमें महान बुद्धि और प्राकृतिक प्रतिभा है, इसलिए आप वाक्पटु बनने के लिए उत्साह के साथ वाक्पटुता की कला का अध्ययन कर रहे हैं; लेकिन आध्यात्मिक जीवन का मार्ग केवल अच्छे कर्मों के प्रदर्शन से ही सफलतापूर्वक पार किया जाता है, न कि वाक्पटुता के माध्यम से; इसलिए, यदि आप एक अमर पुरस्कार प्राप्त करना चाहते हैं, तो वाक्पटुता की चिंता न करें, बल्कि उत्साह के साथ अच्छे कर्म करने का अधिक ध्यान रखें।"

इसी तरह, इसिडोर बिशप अपोलोनियस को लिखते हैं: 'चूंकि लोगों को—जो स्वतंत्र इच्छा से बनाए गए हैं, अपनी सहमति नहीं देते, और विरोध करते हैं—धार्मिकता के लिए मजबूर करना अनुचित और मूर्खतापूर्ण है, इसलिए आपको उन लोगों को जो अंधकार में रहते हैं, सही शिक्षा, अच्छे जीवन और सदाचारी आचरण के माध्यम से प्रबुद्ध करने का ध्यान रखना चाहिए।'

यह संत यह भी सिखाते हैं कि एक सदाचारी व्यक्ति को अपने अच्छे कर्मों पर गर्व नहीं करना चाहिए, बल्कि अपने बारे में विनम्रता से सोचना चाहिए: वे कहते हैं, 'एक ही सद्गुण का अभ्यास करने वाले धर्मात्मा के पास एक तेजस्वी मुकुट होता है; लेकिन जो कई सद्गुणों का अभ्यास करता है और फिर भी अपने बारे में सोचता है कि उसने बहुत कम अच्छा किया है, उसे अपने बारे में इस विनम्र दृष्टिकोण के कारण, एक और भी अधिक तेजस्वी मुकुट प्राप्त होगा; सद्गुणों के मामले में, अपने भीतर यह विचार कि बहुत कम हासिल हुआ है, स्वयं सद्गुणों से कम प्रशंसा का पात्र नहीं है; लेकिन मैं पूरी सच्चाई से कहूँगा: 'जो लोग विनम्र मानसिकता बनाए रखते हैं, उनके सद्गुण और भी अधिक चमकते हैं; लेकिन जिनमें यह मानसिकता नहीं होती, उनके उज्ज्वल सद्गुण भी फीके पड़ जाते हैं, और उनके महान क्षीण हो जाते हैं। इसलिए, जो कोई भी चाहता है कि उसके सद्गुण महान हों, उसे उन्हें महान नहीं मानना चाहिए, और वे वास्तव में महान साबित होंगे।'

दूसरों को इस तरह सिखाते हुए, आदरणीय इसिडोर स्वयं, सभी से बढ़कर, वही थे जिन्होंने जो सिखाया उसे अपने जीवन में उतारा। इस मामले में उन्होंने प्रभु का अनुकरण किया, जिन्होंने पहले तो स्वयं वह किया जिसे वे सिखाते थे, और फिर उसके बाद ही उसे सिखाया। इसिडोर को अपने पुण्य कर्मों पर कोई गर्व नहीं था, बल्कि वह विनम्रता का अभ्यास करते थे; और उन्होंने इस विनम्रता को ब्रह्मचर्य के साथ जोड़ा, जैसे एक जोड़ी बैल मिलकर मसीह के धन्य जुए को खींचते हुए श्रम करती हो।

संत इसिडोर की ब्रह्मचर्यता, हेलेनोपोलिस के बिशप पैलाडियस को लिखे उनके पत्र[1624] से स्पष्ट होती है, जिसमें वे अपने पाठकों से बार-बार आग्रह करते हैं कि वे महिलाओं से बातचीत करने से अत्यंत कठोरता से परहेज़ करें। 'यदि कोई बातचीत, – जैसा कि धर्मग्रंथ कहता है – अच्छे आचरण को भ्रष्ट करते हैं (1 कुरिन्थियों 15:33), तो यह विशेष रूप से महिलाओं के साथ बातचीत है, भले ही वे सभ्य हों, क्योंकि वे बुरी सोच के माध्यम से गुप्त रूप से आंतरिक व्यक्ति को भ्रष्ट कर सकती हैं; और भले ही शरीर शुद्ध रहे, आत्मा कलंकित हो जाएगी। इसलिए, आदरणीय इसिडोर इस बिशप को सलाह देते हैं, जो मौखिक बातचीत के माध्यम से महिलाओं को उपयोगी बातों की शिक्षा देने की आदत में थे – और जो घमंड करते थे कि उन्हें अपने भीतर कोई कामवासना महसूस नहीं होती थी। वे लिखते हैं, 'हे सज्जन पुरुष, जहाँ तक हो सके,

---

[1624] *हेलेनोपोलिस के पल्लैडियस* (368–430), जो परम पूज्य डोरोथेयस के शिष्य और गॉल के मूल निवासी थे, 388 में अलेक्जेंड्रिया पहुँचे, जहाँ से वे बाद में पास के रेगिस्तान में चले गए, जहाँ परम पूज्य डोरोथेयस भी एक तपस्वी के रूप में रहे थे, और बाद में बेथलहम चले गए। 399 में, उन्हें एशिया माइनर के बिथिनिया में हेलेनोपोलिस का बिशप चुना गया। बाद में, सम्राट आर्कैडियस ने उन्हें सेंट जॉन क्रिसोस्टोम के समर्थक होने के कारण एंटिनोए में निर्वासित कर दिया, लेकिन 412 में उन्हें हेलेनोपोलिस में अपने पद पर बहाल कर दिया गया। कैपाडोसियाई प्रिफिक्ट लाव्स के अनुरोध पर, 420 में उन्होंने संतों के जीवन और उनके बारे में विवरणों का एक संग्रह संकलित किया, जिसे उन्होंने उनके सम्मान में 'लावसाइक' नाम दिया। इस संग्रह की शिक्षाप्रद और सूचनात्मक प्रकृति के कारण, चर्च कैलेंडर पवित्र चालीस दिनों के दौरान मैटिन्स के दौरान इससे पाठ निर्धारित करता है।

महलिाओं से बातचीत से बचो! क्योंकि जो पुरोहति का पद धारण करते हैं, उन्हें उन लोगों से भी अधकि पवत्रि और शुद्ध होना चाहए जो पहाड़ों और रेगस्तिानों में रहते हैं। पहले वाले स्वयं और लोगों दोनों की देखभाल करते हैं, जबकि दूसरे केवल अपनी ही देखभाल करते हैं। इसके अलावा, पहले वालों को सम्मान के इतने ऊँचे सहिासन पर रखा जाता है कि हर कोई उनके जीवन की बारीकी से जाँच-पड़ताल करता है, जबकि दूसरे गुफाओं में रहते हैं, या तो अपने घावों की देखभाल करते हैं, या अपनी कमयिों की जाँच करते हैं, या अपने लए मालाएँ बुनते हैं। हालाँकि, यदि आपको महलिाओं से मलिने के लए मजबूर होना पड़े, तो अपनी दृष्टि नीचे रखें, और जनिके पास आप आए हैं, उन्हें अपनी दृष्टि पवत्रि रखने की शक्षिा दें। और एक संक्षप्ति बातचीत के बाद, जो उनकी आत्मा को मजबूत और प्रबुद्ध करने के लए पर्याप्त हो, तुरंत और शीघ्रता से प्रस्थान कर जाएँ, कहीं कि लंबी मुलाकात आपकी शक्ति को कमजोर और अस्थरि न कर दे, और, एक भयानक और राजसी शेर की तरह आप पर हावी होकर, उस झबरे को न काट डाले जो वास्तव में शेर को शेर बनाता है और उसकी राजसी गरमिा की रक्षा करता है। हालाँकि, यदि आप चाहते हैं कि महलिाएँ आपको सम्मान की दृष्टि से देखें (और एक आध्यात्मकि क्षमता वाले पुरुष को इस बात का वशिेष रूप से ध्यान रखना चाहए), तो उनके साथ दोस्ती के आधार पर मेलजोल न करें, और वे आपको बहुत आदर की दृष्टि से देखेंगी। क्योंकि यह तब सबसे आसानी से हासलि होता है जब हम इसकी सबसे कम चाहत करते हैं। यह मानवीय स्वभाव है कि हम उन लोगों की उपेक्षा करते हैं जो हमारी सेवा करते हैं, जबकि उन लोगों का सम्मान करते हैं जो हमें खुशामद नहीं करते। फरि भी, स्त्री स्वभाव में यह दोष सबसे अधकि प्रबल होता है। एक महलिा, जब खुशामद की जाती है, तो असहनीय हो जाती है; लेकनि वह उन लोगों का सम्मान करती है और उनसे सबसे अधकि प्रभावति होती है जो उसके साथ स्वतंत्रता और अधकिार के साथ व्यवहार करते हैं। लेकनि आप कहते हैं कि आप महलिाओं से लंबी बातचीत करते हैं और आपको कोई नुकसान नहीं होता। ठीक है। फरि भी, हर कोई जानता है कि पानी पत्थर को घसि डालता है, और बारशि की बूँदें, जो उन पर लगातार गरिती हैं, उन्हें छेद डालती हैं। वचिार कीजए: पानी या बारशि की बूँदों से नरम और क्या है? फरि भी उनकी अनवरत क्रयिा स्वयं प्रकृति को भी जीत लेती है। यदि एक ऐसा पदार्थ जो लगभग अजेय है, उस पर काबू पा लयिा जाता है—और उसे कसिी ऐसी चीज़ से हराया और घटाया जाता है जो उसकी तुलना में कुछ भी नहीं है—तो क्या मानवीय इच्छा, जो आसानी से प्रभावति हो जाती है, लंबे समय तक संपर्क में रहने से जीती और भ्रष्ट नहीं हो जाएगी?'

इस प्रकार बशिप पल्लैडयिस को उपदेश देते हुए, आदरणीय इसडिोर हमें सभी को एक पवत्रि जीवन जीने की शक्षिा भी देते हैं, ताकि हम न केवल अपने शरीर को कामुक पाप से बचा सकें, बल्कि अपनी आत्मा को भी पापी वचिारों से शुद्ध रख सकें।

आदरणीय इसडिोर ने अपने लेखों में सभी प्रकार के सद्गुणों पर कई शक्षिाएँ छोड़ीं, और अपने मौखकि प्रवचनों के माध्यम से सभी को इन सद्गुणों की शक्षिा देने के बाद, वे वृद्धावस्था प्राप्त कर, ईश्वर को प्रसन्न कर, शांतपिूर्वक देहांत को प्राप्त हुए[1625] ।

कॉन्टाकयिन, स्वर 4:

हे महमिामय कलीसयिा, आपके वचनों की बजिली से प्रकाशति एक नवीन प्रभात पाकर, वह आपको पुकारती है: हे सर्वधन्य ईश्वर-ज्ञानी इसडिोर, आनन्दति हो।

[1625] प्रतष्ठिति इसडिोर का लगभग 436 ईस्वी में नधिन हो गया। उनके लेखन से यह स्पष्ट होता है कि संत इसडिोर चर्च के महान धर्मपति (फादर्स) में से एक थे। उनके लेखन में पत्र शामलि हैं। कहा जाता है कि एक समय में उनकी संख्या 10,000 तक पहुँच गई थी, लेकनि आज उनकी संख्या 2,090 से अधकि नहीं है। उनके समकालीनों ने संत इसडिोर को पवत्रि धर्मग्रंथों के *एक* अनुभवी *व्याख्याकार के रूप में* माना और धर्मग्रंथों के वभिन्नि अंशों के बारे में उनकी व्याख्याएँ माँगी। इज़डिोर ने अपने पत्रों में अपने समकालीनों के अनुरोधों को पूरा कयिा। इस प्रकार के उनके पत्रों की संख्या लगभग 3,000 तक थी। आज ज्ञात संत इज़डिोर के पत्रों में से, अधकिांश में पवत्रि धर्मग्रंथ की व्याख्याएँ हैं, जनिमें संत इज़डिोर स्वयं को संत जॉन क्राइसोस्टोम का सबसे उत्तम शष्यि साबति करते हैं। संत इसडिोर ने बहुत अधकि धर्मशास्त्रीय पत्र नहीं लखि। हालाँकि, संत जॉन क्राइसोस्टोम की तरह, वह एक व्यावहारकि शक्षिक थे। *उनके शब्दों में, 'व्यावहारकि दर्शन, भवन की नींव और स्वयं भवन है; तर्क इसकी सजावट है; चतिन इसका मुकुट है।' 'सद्गुण आत्मा का सामंजस्य है।'*

हमारे पूजनीय पिता निकोलस, स्टुडियोन के मठाध्यक्ष, की जीवन-कथा

4 फरवरी को स्मरणोत्सव

[1626]हमारे पूजनीय पिता निकोलस का जन्म क्रीट द्वीप[1627] के कडिोनिया नामक गाँव में हुआ था, जहाँ के पवित्र शहीद बेसलिडिस, जिन्होंने क्रीट द्वीप पर दस शहीदों में से एक के रूप में यातनाएँ झेलीं, भी थे। धन्य निकोलस के माता-पिता ईसाई थे। बाल्यकाल में, उन्हें परमेश्वर का वचन सिखाने के लिए भेजा गया था। जब लड़का दस साल का हो गया और पवित्र पुस्तकों को पढ़ने में पर्याप्त निपुण हो गया, तो उसके माता-पिता ने उसे कॉन्स्टेंटिनोपल में उसके चाचा, धन्य थियोफानेस के पास भेजा, जो स्टुडियोन मठ[1628] में एक भिक्षु थे। थेओफ़ेनेस ने अपने भतीजे का गर्मजोशी से स्वागत किया और उसे स्टूडियो मठ के मठाध्यक्ष, आदरणीय थियोडोर के पास ले गए। आदरणीय थियोडोर ने, यह पूर्वानुमान लगाते हुए कि वह लड़का ईश्वर का एक चुना हुआ पात्र बनने वाला था, उसे आशीर्वाद दिया और उसे फिलहाल मठ के बाहर, एक अलग इमारत में रहने का निर्देश दिया, जिसमें युवकों के लिए एक स्कूल था। जब निकोलस वयस्क हो गया, तो मठाधीश ने उसकी सूझबूझ के साथ-साथ उसके सौम्य और विनम्र स्वभाव को देखकर उसे मठ में प्रवेश दिया और एक भिक्षु के रूप में उसका मुंडन किया। मठ में कई वर्षों तक सदाचारी जीवन जीने के बाद, मठाधीश ने निकोलस को एक पादरी के रूप में पवित्र पद ग्रहण करने के लिए मना लिया। यहीं, स्टुडाइट मठ में, उनके अपने भाई, जिसका नाम टाइटस था, निकोलस के पास आए। वे द्वीप पर सरैसेनों के एक हमले के बाद क्रीट द्वीप से भाग आए थे[1629] , और अपने भाई के पास यह दुखद समाचार लेकर आए कि उनके माता-पिता को बंदी बना लिया गया था। टाइटस ने यह खबर अपने भाई को बहुत दुख और आँसुओं के साथ दी। निकोलस ने, ऐसी दुखद खबर पाकर, यद्यपि उसका हृदय अपने माता-पिता के लिए व्यथित था, अपने भाई को सांत्वना देने की कोशिश की और उसे दुख न करने के लिए कहा।

'यह ईश्वर की इच्छा थी,' उसने अपने भाई से कहा, 'क्योंकि उनकी इच्छा के बिना सिर का एक बाल भी नहीं गिरता (तुलना करें मत्ती 10:30; लूका 12:7)। वह जानता है कि हमारे लिए क्या सबसे अच्छा है। इसलिए, आइए हम अपने दुख और अपने माता-पिता के लिए अपनी चिंता उसे सौंप दें। जहाँ तक हमारी बात है, हमें सावधान रहना चाहिए कि हम सांसारिक इच्छाओं और इस दुनिया के प्रलोभनों के दास न बन जाएँ, और यह कि अदृश्य शत्रुओं का हाथ हमें अंधकार और अनंत उदासी की भूमि में न ले जाए।

तितुस अपने भाई के इन शब्दों से प्रभावित और सांत्वना प्राप्त कर गया, और उसके आग्रह पर उसने संन्यास की शपथ ली और स्वयं एक अच्छा संन्यासी बन गया।

[1626] 793 में

[1627] *क्रीट द्वीप* (जिसे *कैंडिया के नाम* से भी जाना जाता है) भूमध्य सागर के पूर्वी भाग में स्थित है। अपनी विशालता और उपजाऊपन के कारण, इसे पहले भूमध्य सागर की 'द्वीपों की रानी' कहा जाता था। यहाँ मसीही धर्म प्रेरित युग से ही शुरू हो गया था; इसकी नींव प्रेरितों पर पवित्र आत्मा के अवतरण के प्रत्यक्षदर्शियों द्वारा रखी गई थी, क्योंकि उस समय क्रीतवासी मौजूद थे (प्रेरितों के काम 2:11)। बाद में इसका प्रचार यहाँ प्रेरित पौलुस द्वारा किया गया, जैसा कि उनके तितुस को लिखे पत्र से पता चलता है, जिन्हें प्रेरित ने क्रीट में बिशप नियुक्त किया था (तितुस 1:5)। 17वीं शताब्दी में, क्रीट द्वीप तुर्की के शासन में आ गया।

[1628] *स्टुडाइट मठ* कॉन्स्टेंटिनोपल के सबसे पुराने और सबसे प्रसिद्ध मठों में से एक है। इसकी स्थापना (संत जॉन द बैपटिस्ट के नाम पर) कुलीन स्टुडियस ने की थी, जो सम्राट कॉन्स्टेंटिन द ग्रेट के शासनकाल के दौरान रोम से कॉन्स्टेंटिनोपल आ गए थे; इसके नाम पर ही इसे 'स्टुडाइट' नाम दिया गया। इस मठ में भिक्षु सम्राट कोप्रोनियम के शासनकाल तक 'सारी रात जागरण करने वाले भिक्षुओं' के नियम का पालन करते हुए रहते थे। (इन भिक्षुओं को 'सारी रात जागरण करने वाले भिक्षु' इसलिए कहा जाता था क्योंकि, तीन समूहों में बँटे होने के कारण, वे चर्च में निरंतर आराधना करते थे)। लेकिन दुष्ट कोप्रोनिमस ने, प्रतिमा-भंजन के साथ ईश्वर की कलीसिया को उकसाने के बाद, सभी भिक्षुओं को बाइजेंटाइयम से निकाल दिया, और स्टुडाइट मठ सुनसान हो गया। कोप्रोनिमस के बाद, भिक्षुओं ने फिर से स्टुडाइट चर्च में रहना शुरू कर दिया, हालांकि वे कम संख्या में थे। अपने अस्तित्व के दौरान, कॉन्स्टेंटिनोपल के पतन तक, स्टुडियो मठ को राज्य और चर्च के प्रति अपने अथक और निडर भिक्षुओं द्वारा प्रदान की गई सेवाओं के लिए असाधारण ख्याति और विशेषाधिकार प्राप्त थे, विशेष रूप से प्रतिमा-भंजन के दौरान, जब स्टुडियो के भिक्षुओं ने खुद को मसीह के निडर योद्धा साबित किया। कई शताब्दियों तक प्रसिद्ध, स्टुडाइट मठ अब खंडहर में पड़ा है: मठ को ही एक मुस्लिम संन्यास आश्रम में और चर्च को एक मुस्लिम मस्जिद में बदल दिया गया है।

[1629] *सारासेन* अरब के निवासी हैं। मूल रूप से, यह नाम लुटेरों के एक खानाबदोश गिरोह को संदर्भित करता था, लेकिन बाद में ईसाई लेखकों ने इस शब्द को सामान्य रूप से सभी अरबों और मुसलमानों पर लागू कर दिया।

[1630][1631]उस समय, मसीह की कलीसिया, अच्छे चरवाहों के मार्गदर्शन में, शांति और सुकून से रहती थी; लेकिन उसकी शांति अचानक ही दुष्ट त्सार लियो द आर्मिनियिन[1632] के नेतृत्व में मूर्ति-विरोधी विधर्मियों द्वारा भड़काए गए उथल-पुथल के तूफान से भंग हो गई। पवित्र राजा माइकल, जिन्हें रंगव के नाम से जाना जाता था, के शासनकाल में लियो द आर्मेनियिन एक कुलीन व्यक्ति थे, लेकिन उसने चालाकी से माइकल को सिंहासन से उखाड़ फेंका और स्वयं सिंहासन पर बैठ गया। इस उद्देश्य के लिए, उसने ग्रीकों और बुल्गारों के बीच युद्ध का फायदा उठाया। राजा, युद्ध के लिए निकलते समय, लेव को अपनी सेना के पूर्वी दस्तों का कमांडर नियुक्त कर गया, यह जाने बिना कि वह धोखे से उसे सिंहासन से हटाने की साजिश रच रहा था। जब युद्ध हुआ, तो यूनानियों ने बढ़त बना ली और बुल्गारियाई भागने की कगार पर थे। लेकिन लियो ने, अपने कमांडरों के साथ पहले से ही व्यवस्था कर ली थी—जिन्हें उसने खुद रिश्वत दी थी—अचानक अपने सैनिकों को भागने का आदेश दे दिया, जबकि कोई उनका पीछा नहीं कर रहा था। बुल्गारियाई लोगों ने, ग्रीकों की बिना उकसाए हुई वापसी को देखकर, पहले तो उन्हें धोखे का संदेह किया, लेकिन फिर, यह महसूस करते हुए कि ग्रीक अपनी भागाई में रुका नहीं रहे थे, उन्होंने हिम्मत जुटाई और उन पर बढ़कर, उन्हें लंबे समय तक पीछा किया, और बहुत सारे ग्रीक सैनिकों को मार डाला, जिससे ज़ार माइकल को पूरी तरह से हार का सामना करना पड़ा। लियो अपना उद्देश्य हासिल कर चुका था, क्योंकि सेना और लोग राजा को कायर और डरपोक मानते थे, जो युद्ध का नेतृत्व करने में असमर्थ था। उसने लोगों और सेना में राजा के खिलाफ इस भावना का तुरंत फायदा उठाया। अपनी हार के बाद, माइकल कॉन्स्टेंटिनोपल लौट आया। इस बीच, सीमा की रक्षा के लिए बिथिनिया ([1633]) में अपनी सेना के साथ रुके हुए लियो ने, राजा के खिलाफ अपनी लंबे समय से सोची-समझी दुर्भावनापूर्ण योजना को तुरंत अमल में लाना शुरू कर दिया। उसने यह अफवाह फैलाई कि ग्रीक केवल राजा की कायरता और सैन्य मामलों में पूर्ण अनुभवहीनता के कारण ही पराजित हुए थे। इससे उसने अपनी पूरी सेना को माइकल के खिलाफ भड़का दिया; उन्होंने माइकल को राजा के रूप में स्वीकार करने से इनकार कर दिया और स्वयं लियो को राजा घोषित कर दिया। जब माइकल को लियो की कार्रवाइयों की खबर मिली, तो ज़ार ने अपने आसपास के लोगों की सलाह के बावजूद, उसका विरोध करने से इनकार कर दिया, यह कहते हुए कि वह अपने लिए एक गृह युद्ध में ईसाई रक्त की एक बूंद भी बहने नहीं देना चाहते। उसने गुप्त रूप से लियो को शाही ताज और बैंगनी चोगा भेजा, और उससे कहा: 'मैं तुम्हें राज्य सौंपता हूँ; बिना किसी डर के कॉन्स्टेंटिनोपल आओ और शासन करो।'

लेकिन लियो ने माइकल के साथ, जिसने इतनी विनम्रता से सिंहासन उसे सौंप दिया था, बहुत क्रूरता से व्यवहार किया। भव्य तामझाम के साथ कॉन्स्टेंटिनोपल में प्रवेश करने के बाद, उसने तुरंत माइकल और उसकी पत्नी को एक द्वीप पर निर्वासित कर दिया; जहाँ तक उसके दो बेटों, थियोफिलैक्ट और इग्नेशियस की बात है, उसने उन्हें नपुंसक बनाने का आदेश दिया।

अपने सिंहासनारोहण के कुछ समय बाद, अधर्मी लियो स्वयं मसीह ईश्वर और उनकी पवित्र चर्च के विरुद्ध उठ खड़ा हुआ। उसने प्रतिमाओं की पूजा के विरुद्ध एक अधर्मी परिषद बुलाई और पवित्र प्रतिमाओं को ईश्वर के गिरिजाघरों से बाहर फेंकने का आदेश दिया। परम पावन पैट्रिआर्क निकिफिोरस ने, धर्मनिष्ठ बिशपों, आर्चिमांड्राइट्स और सभी ईश्वर-प्रेरित पितृगणों की एक परिषद के साथ मिलकर, राजा के दुष्टतापूर्ण कार्यों का विरोध किया, और उसे समझाया कि वह मसीह की कलीसिया को विधर्म से विषादित या भ्रमित न करे। लेकिन उस अधर्मी ज़ार ने उन्हें सभी को उस कक्ष से अपमानपूर्वक बाहर निकाल दिया जहाँ धर्मपरायण सभा चल रही थी, और उन्हें विभिन्न देशों में निर्वासित कर दिया।

संत थियोडोर द स्टुडाइट और उनके शिष्य, धन्य निकोलस, ने दुष्ट लियो के हाथों विशेष रूप से कठोर यातनाएँ झेलीं, क्योंकि उन्होंने असाधारण उत्साह और साहस के साथ राजा की दुष्टता का विरोध किया। पहले, राजा ने उन दोनों को अपोलोनियाड झील के पास एक क्षेत्र में, मेटोपस के किले में निर्वासित कर दिया[1634] । वहाँ पूरे एक वर्ष तक जेल में

[1630] रोमन और पूर्वी (बाइज़ेंटाइन) साम्राज्यों में, *'पैट्रिशियिंस' शब्द* उच्चतम सामाजिक वर्ग के सदस्यों के लिए प्रयुक्त होता था, जो हमारी अपनी वंशानुगत कुलीनता के अनुरूप था।

[1631] *माइकल प्रथम रांगाब* – बीजान्टियम के सम्राट – ने 811 से 813 तक शासन किया।

[1632] *लियो पंचम अर्मेनियाई* – एक बीजान्टिन सम्राट और मूर्तिभंजक – ने 813 से 820 तक शासन किया।

[1633] *बिथिनिया* – एशिया माइनर का एक उत्तर-पश्चिमी प्रांत, जो ब्लैक सी, बोस्फोरस और कॉन्स्टेंटिनोपल जलडमरूमध्य के तटों पर स्थित है। 14वीं शताब्दी में, बिथिनिया तुर्की के शासन में आ गया, जिसके अधीन यह आज तक बना हुआ है।

[1634] यह झील *अपोलोनिया* के पास स्थित है – इलिरिया का एक प्राचीन शहर। *मेसोपा* या *मेटोपा* – अपोलोनिया का किला।

रहने के दौरान, उन्होंने पवत्रि प्रतमिाओं की पूजा के संबंध में सच्चे सद्धिांत का प्रचार करना जारी रखा और कई लोगों को वधिर्म से दूर करने में सफल रहे। यह सुनकर, राजा ने उन्हें पूर्वी प्रदेशों में, वोनति नगर[1635] को भेज दयिा। वहाँ उन्हें फरि से नामक एक कालकोठरी में कैद कर दयिा गया, जहाँ ज़ार के आदेश पर, उन्हें सबसे सख्त नगिरानी में रखा गया था, ताकि कोई भी उनसे न मलि सके और वे कसिी से बात न कर सकें। लेकनि धर्म-स्वीकारकों ने, मौखकि रूप से लोगों को धर्मनष्ठि में शक्षिति करने में असमर्थ होकर, अपनी शक्षिाओं का प्रचार लखिति रूप में कयिा। उन्होंने तहखाने से अपने संदेश वशि्वासयिों तक भेजे और इस प्रकार, मानो गर्जना करती तुरही के साथ, येरुशलम की दीवारों की तरह वधिर्मी शक्षिाओं को ध्वस्त कर दयिा, और वधिर्मयिों द्वारा नष्ट की जा रही धार्मकि आस्था के सद्धिांतों को सुधारकर पुनर्स्थापति कयिा। यह जानने पर, राजा ने उन्हें दंडति करने के लिए अनास्तासयिस नामक एक क्रूर सैनकि को भेजा। घटनास्थल पर पहुंचने पर, अनास्तासयिस ने वशि्वासयिों को क्रूर यातनाएं दीं, उन्हें पटिाई से भयानक घाव दिए, जसिसे उनके शरीर के टुकड़े-टुकड़े हो गए। वापस जाते समय, यातना देने वाले ने एक बार फरि धन्य लोगों को एक कालकोठरी में बंद कर दयिा, उनके प्रवेश द्वार को पूरी तरह से सील कर दयिा, और आदेश दयिा कि उन्हें भूखा मार दयिा जाए। पवत्रि कैदयिों को अपने भयानक घावों और भूख-प्यास, दोनों से भयंकर पीड़ा सहनी पड़ी, क्योंकि पहरेदार उन्हें केवल बहुत कम रोटी और पानी देते थे – और वह भी हर तीन-चार दनिों में, और कभी-कभी तो सात दनिों के बाद ही – और वह भी अपमान और उपहास के साथ खड़िकी से खाना फेंकते हुए। कैदी तीन साल तक इसी कैद में रहे। लेकनि उनके शरीर के घाव ठीक होने का समय भी नहीं मलिा था कि उन्हें ज़ार द्वारा भेजे गए एक नए यातनाकर्ता के हाथों और भी भयानक यातना सहनी पड़ी। यह दूत एक पत्र की जांच करने आया था जसिे ज़ार तक पहुँचाने से पहले ही रोक लयिा गया था। यह पत्र थयिोडोर की ओर से धन्य नकिोलस के हाथ से ऑर्थोडॉक्स ईसाइयों को लखिा गया था। इस संदेश में ज़ार की दुष्टता और आत्म-वनिाशकारी मूर्तभिंजनवादी वधिर्म की सबसे कठोर नदिा थी, साथ ही साथ भक्ति के लिए एक सुंदर और शक्षिाप्रद आह्वान भी कयिा गया था। राजदूत ने कैदयिों को उनके कालकोठरी से बाहर बुलाया, उन्हें पत्र दखिाया और पूछा कि क्या वे इसे अपना मानते हैं, जसि पर धर्मनष्ठिों ने खुले तौर पर जवाब दयिा कि पूजनीय थयिोडोर ने इसे सुनाया था, जबकि धन्य नकिोलस ने इसे अपने हाथ से लखिा था। फरि क्रोधति राजदूत ने कैदयिों को यातना देना शुरू कर दयिा। सबसे पहले, वह धन्य नकिोलस पर टूट पड़ा। यातना देने वाले के आदेश पर, नकिोलस के कपड़े फाड़े गए; नग्न हो जाने पर, उसे जमीन पर पेट के बल लटिा दयिा गया और लंबे समय तक पीटा गया। नकिोलस को पटिाई से आधा-मरा छोड़कर, उसने थयिोडोर को यातना देना शुरू कर दयिा, उसे इतनी बुरी तरह पीटा कि उसकी हड्डयिाँ लगभग टूट गईं। थयिोडोर को आधा-ज़दिा छोड़कर, यातना देने वाला एक बार फरि नकिोलस की ओर मुड़ा, इस उम्मीद में कि चापलूसी से उसे ज़ार के साथ सहमत होने के लिए मना लेगा। लेकनि धन्य व्यक्ति ने उसके शब्दों पर कोई ध्यान नहीं दयिा और उसकी चापलूसी के आगे नहीं झुका, और अपनी भक्ति में अडगि रहा। भयंकर क्रोध से आग-बबूला होकर, यातना देने वाले ने आदेश दयिा कि नकिोलस को सबसे क्रूर तरीके से यातना दी जाए। वे लंबे समय तक उसके पूरे शरीर पर वार करते रहे और उस पर कई घाव करने के बाद, उसे पूरी रात के लिए नग्न अवस्था में ज़मीन पर पड़ा छोड़ दयिा; यह सर्दयिों का समय था, और ठंड थी, क्योंकि यह फरवरी का महीना था। लेकनि धन्य व्यक्ति ने प्रभु का धन्यवाद करते हुए अपने सभी यातनाओं को सहन कयिा। इसके बाद, यातना देने वाले ने दोनों कन्फेशरों को फरि से कालकोठरी में बंद कर दयिा और प्रवेश द्वार बंद करके राजा के पास लौट गया। तथापि, पूजनीय संतों ने उन पर कए गए अनेक घावों से भयंकर पीड़ा सहन की, क्योंकि उनके शरीर के घाव हड्डी तक पहुँच गए थे, और उनकी खाल इतनी फट गई थी कि वह उनके शरीर पर फटे-पुराने कपड़ों की तरह लटक रही थी। वकि्रत शहीदों का दृश्य इतना भयानक था कि उनकी रखवाली कर रहे सैनकिों के कठोर हृदय में भी दया जागृत हो गई। दया से, सैनकिों ने उन्हें गर्म पानी और तेल दयिा। पीड़तिों ने पानी में डुबोए हुए स्पंज से अपने घाव धोए और उन पर तेल लगाया, जसिके बाद उनके घाव धीरे-धीरे भरने लगे; जहाँ तक उस त्वचा का सवाल है जो ढीली लटक रही थी और शरीर पर वापस नहीं उगी थी, उन्होंने उसे एक छोटे चाकू से काट दयिा।

लेकनि जब तक ये धन्यजन तहखाने में कष्ट भोग रहे थे, नब्बे दनि बीत चुके थे, और उनके शरीरों पर उनके भयानक घावों के नशिान अभी भी बचे हुए थे, तभी दुष्ट राजा ने उन्हें स्मर्ना की सीमाओं पर बुलाया[1636] और वहाँ, एक बार फरि नर्दियता से यातना देने के बाद, उन्हें कैद करने का आदेश दयिा, और उनके पैरों में बेड़यिाँ डाल दी गईं। यहाँ धन्यजन

[1635] *वोनति* या बोनति एनाटोलयिा में है, जसिे एशयिा माइनर के नाम से भी जाना जाता है।

[1636] यह वर्ष 819 का था। *स्मर्ना* एशयिा माइनर के पश्चमिी तट पर एक प्राचीन और प्रसद्धि व्यापारकि शहर है; यह वर्तमान में एशयिा माइनर के सबसे समृद्ध शहरों में से एक है, जसिकी जनसंख्या 1,20,000 से अधकि है।

बीस महीने तक शोक और उत्पीड़न के बीच कष्ट भोगते रहे। और परमेश्वर ने अपने सेवकों की दिन-रात पुकार सुनी; और, कैदियों की देखभाल करते हुए, उसने चाहा कि दुष्ट राजा नष्ट हो जाए: लियो को मंदिर में उसके ही सैनिकों ने मार डाला। लियो की मृत्यु के बाद, यूनानी साम्राज्य का राजदंड माइकल ने संभाला, जिन्हें वाल्बोस के नाम से जाना जाता था[1637] । यद्यपि यह राजा स्वयं प्रतिमा-विरोधियों की ओर झुकता था, उसने पवित्र प्रतिमाओं की पूजा करने के लिए विश्वासियों को सताया नहीं, और सभी को अपनी इच्छानुसार विश्वास करने की अनुमति दी। उसने प्रतिमा पूजा के लिए कैद किए गए सभी लोगों को रिहा करने का एक फरमान भी जारी किया। उस समय, धन्य निकोलस और महान थियोडोर, जेल से रिहा होकर, चल्सीडोन[1638] में पैट्रिआर्क निकिफोरस से मिलने आए, जो वहाँ कैद थे। धन्य निकिफोरस को उनके आगमन से बहुत सांत्वना मिली और, उनके शरीर पर उनके कष्टों के घाव देखकर, उन्होंने उन्हें पवित्र शहीदों के समान सम्मानित किया। कुछ समय चल्सेडॉन में रहने के बाद, वे पैट्रिआर्क निकिफोरस के साथ मिलकर कांस्टेंटिनोपल के लिए रवाना हुए, ताकि वे स्वयं सम्राट को मूर्तिभंजन छोड़ने और धर्मपरायणता की ओर मुड़ने के लिए मना सकें। लेकिन धर्म के पवित्र स्वीकारकर्ताओं को अपने इस महान प्रयास में कोई सफलता नहीं मिली, क्योंकि सम्राट ने, अपनी गहरी अज्ञानता में, उनकी उपदेशों पर कोई ध्यान नहीं दिया और पवित्र प्रतिमाओं की पूजा के लिए नहीं माना, हालांकि उसने दूसरों को उनकी पूजा करने की अनुमति देना जारी रखा। हालाँकि, आसपास के क्षेत्रों और उपनगरों में पवित्र प्रतिमाओं के प्रदर्शन पर रोक नहीं लगाते हुए, सम्राट ने शाही शहर के भीतर ऐसे प्रदर्शनों पर सख्त मनाही कर दी। इसी कारण, पवित्र पिता थियोडोर और निकोलस ने पैट्रिआर्क से विदा लेकर कॉन्स्टेंटिनोपल छोड़ दिया ताकि वे स्वतंत्र रूप से अपनी भक्ति का अभ्यास कर सकें, जिसमें पवित्र प्रतिमाओं की पूजा भी शामिल थी। वे पवित्र शहीद त्रिफिोन के चर्च के पास, मगनसिया (Akrit[1639]) में बस गए। यहाँ, कुछ समय बाद, संत थियोडोर ने अपना सांसारिक जीवन पूरा किया और शांतिपूर्वक ईश्वर में विलीन हो गए[1640] । जहाँ तक धन्य निकोलस की बात है, उन्होंने अपने आध्यात्मिक पिता की शवयात्रा के साथ रहते हुए, एक संन्यासी तपस्वी का जीवन जिया।

माइकल की मृत्यु के बाद, उसका पुत्र थियोफिलिस सिंहासन पर बैठा[1641] । यह राजा एक उत्साही प्रतिमा-भंजक था और उसने पूर्ण क्रूरता के साथ, पवित्र प्रतिमाओं की पूजा करने के लिए विश्वासियों पर अत्याचार करना शुरू कर दिया। एक बार फिर, विश्वासियों ने प्रतिमा-भंजकों के हाथों उत्पीड़न और यातना सहनी शुरू कर दी। उस समय, देह और आत्मा में दो भाइयों, पूजनीय पिता थियोडोर और थियोफेनेस द इंसक्राइब्ड ने बहुत कष्ट सहे। तभी धन्य निकोलस ने अपने आध्यात्मिक पिता, थियोडोर की कब्र के पास अपना आवास छोड़ दिया, और प्रतिमा-भंजक सम्राट थियोफिलिस की मृत्यु तक एक स्थान से दूसरे स्थान तक भटकते रहे।

थेओफिलिस की मृत्यु के बाद, शाही सत्ता उनकी पत्नी, धर्मपरायण महारानी थियोडोरा को मिल गई, जिन्होंने अपने पुत्र माइकल[1642] के साथ मिलकर राज्य पर शासन किया। कोंस्टेंटिनोपल में, पैट्रिआर्क सेंट मेथोडियस के अधीन ईसा मसीह की कलीसिया में, शांति लौट आई, और धर्मपरायणता एक बार फिर से चमक उठी। तब धन्य निकोलस स्टुडियन मठ आए। यहाँ, नवक्रैटियस द कन्फेसर[1643] की मृत्यु के बाद, पैट्रिआर्क सेंट इग्नेशियस—जो सेंट मेथोडियस के उत्तराधिकारी थे—के अधीन, उन्हें मठाध्यक्ष नियुक्त किया गया। तीन साल बाद, धन्य निकोलस ने धन्य सोफ्रोनीयस, जो एक सदाचारी व्यक्ति थे, को मठाध्यक्ष का पद सौंपकर एकांत में चले गए, जहाँ वे मौन में रहे। हालाँकि, चार वर्ष बीत जाने के बाद, जैसे ही सोफ्रोनीयस प्रभु के पास चले गए[1644] , भाइयों ने पूजनीय निकोलस के पास आकर, बहुत विनती करने के बाद, उन्हें एक बार फिर से मठाध्यक्ष का पद स्वीकार करने के लिए मना लिया। इसके बाद, धन्य निकोलस ने कई वर्षों तक मठाध्यक्ष के रूप में सेवा की।

[1637] *माइकल द्वितीय द बालबस (*अर्थात हकलाने वाले*)* ने 820 से 829 तक शासन किया।

[1638] *चल्केडोन*– बिथिनिया का प्रमुख शहर, एशिया माइनर के उत्तर-पश्चिमी तट पर, बोस्फोरस के दक्षिणी सिरे पर, कॉन्स्टेंटिनोपल के सामने स्थित है। चर्च के इतिहास में चल्केडोन को चौथे सार्वभौमिक परिषद (451) के स्थल के रूप में जाना जाता है।

[1639] *अक्रिट* निकोमेडिया के पास, कॉन्स्टेंटिनोपल के सामने बिथिनिया में एक प्रायद्वीप है।

[1640] आदरणीय थियोडोर द स्टुडाइट का 11 नवंबर 826 को 67 वर्ष की आयु में निधन हो गया।

[1641] *सम्राट थियोफिलिस* ने 829 से 842 तक शासन किया।

[1642] *सम्राट माइकल तृतीय* (842–867) चार वर्ष की आयु में सिंहासन पर बैठे, और इसलिए राज्य पर 865 तक उनकी माता, पवित्र सम्राज्ञी थियोडोरा, ने शासन किया।

[1643] *नवक्रैटियस स्टुडाइट्स,* कन्फैसर, का 18 अप्रैल 848 को निधन हो गया। उनकी ग्रीक चर्च में 8 जून को स्मृति मनाई जाती है।

[1644] *सोफ्रोनीयस* 851 से 854 तक स्टुडाइट मठ के मठाध्यक्ष थे।

इस बीच, ज़ार माइकल के वयस्क होने पर, वह अपने आचरण में अत्यधिक दुराचारी हो गया। अपने चाचा, जो उनकी माँ के भाई थे और वर्दा नामक व्यक्ति थे, की सलाह पर, उसने अपनी माँ, धन्य थियोडोरा को, शाही कक्षों से निर्वासित कर दिया और उन्हें महिलाओं के एक मठ में वेला धारण करने के लिए मजबूर किया, जबकि उसने स्वयं अपने चाचा वर्दा को अपने साथ शासन करने के लिए आमंत्रित किया। अपने ही बेटे द्वारा माँ के साथ ज़ार के इस व्यवहार ने लोगों के बीच बड़ी अशांति पैदा कर दी। यह घोटाला और भी गंभीर था क्योंकि राजा के सह-शासक, वर्दा ने, अपनी ही पत्नी को छोड़कर और उसकी जगह अपने बेटे की पत्नी को रखकर, एक भयानक गैर-कानूनी कृत्य किया था। परम पावन पैट्रिआर्क इग्नेशियस, राजाओं के इस तरह के पतन को सुधारने और वर्दा के गैर-कानूनी कृत्यों को समाप्त करने की इच्छा से, उन्हें लगातार फटकारते रहे, लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ। एक उत्सव के दिन, राजा वर्दा परम पवित्र रहस्यों को ग्रहण करने के इरादे से उपस्थित हुए; लेकिन पैट्रिआर्क ने न केवल उन्हें कम्युनियन ग्रहण करने की अनुमति देने से इनकार कर दिया, बल्कि पूरे लोगों की उपस्थिति में उनकी अराजकता के लिए उनकी निंदा की और उन्हें चर्च से बहिष्कृत कर दिया। वार्दा पितृराज के प्रति अत्यंत क्रोध से भर गया और उसने उसे तथा माइकल दोनों को उसके विरुद्ध भड़काया: दोनों राजाओं ने मिलकर पितृराज को पदच्युत कर दिया, उसे निर्वासित कर दिया, और उसकी जगह फोतिउस एसनिक्रिटिस[1645] को पितृराज नियुक्त किया।

चर्च में ऐसी अव्यवस्था देखकर, धन्य निकोलस ने अपना मठ छोड़ दिया और अपने भाई को साथ लेकर प्रिंकोनिसि द्वीप पर एक मठवासी बस्ती में चले गए[1646] , जहाँ उन्होंने शासकों के अत्याचार के बारे में कुछ भी सुनने की इच्छा न रखते हुए, मौन का जीवन जिया। लेकिन वे वहाँ अधिक समय तक नहीं रहे, क्योंकि उन्हें उस स्थान से निकाल दिया गया था । एक दिन, दोनों राजा उस स्थान के पास से नाव में जा रहे थे जहाँ संत ठहरे हुए थे। यह जानते हुए कि निकिलोस, एक सदाचारी व्यक्ति के रूप में, लोगों के बीच बहुत प्रसिद्ध थे, वे चापलूसी करके उन्हें अपने पक्ष में करने की उम्मीद में उनकी ओर मुड़े, ताकि वह अपने शब्दों से पादरी के निर्वासन की न्यायसंगतता की पुष्टि करें, और इसी तरह वर्दा के अवैध विवाह को भी स्वीकार करें। लेकिन उन्होंने न केवल उनके दुष्ट कर्मों को मंजूरी देने से इनकार कर दिया, बल्कि यह भी भविष्यवाणी की कि यदि वे अपने बुरे कर्मों से पश्चाताप नहीं करते तो उनकी मृत्यु अचानक और भयानक होगी—एक भविष्यवाणी जो बाद में सच साबित हुई। संत से यह सुनकर, राजा उससे क्रोधित हो गए और उसे वहाँ से निर्वासित कर दिया; और, उनके आदेश पर, स्टुडियन मठ के मठाधीश के रूप में किसी और को नियुक्त किया गया। और इस प्रकार, अपने वृद्धावस्था में, धन्य निकोलस को एक बार फिर से एक स्थान से दूसरे स्थान पर भटकने के लिए मजबूर होना पड़ा[1647] । लेकिन इसके बाद भी, उन अधर्मी राजाओं ने उसे चैन से नहीं रहने दिया। उनके आदेश पर, उसे एक बार फिर से पकड़ लिया गया और बेड़ियों में जकड़कर मठ ले जाया गया, जहाँ वह दो साल तक एक तहखाने में कष्ट भोगता रहा[1648] , जब तक कि दोनों राजा वास्तव में एक हिंसक मौत से नहीं मर गए: वर्दा की हत्या माइकल के नौकरों द्वारा तब हुई जब राजाओं के बीच क्रीट द्वीप पर सरैसेनों के खिलाफ अभियान के दौरान झगड़ा हो गया, और माइकल की हत्या उसके अपने ही घर वालों ने उसके महल में कर दी।

माइकल के बाद, धर्मपरायण बेसिल ने राजसी सिंहासन संभाला[1649] । उन्होंने तुरंत इग्नाटियस को पैट्रिआर्कल सिंहासन पर बहाल कर दिया, और धन्य निकोलस को जेल से रिहा कर दिया गया। राजा ने उन्हें बुलाया और उन्हें अपने मठ का प्रशासन फिर से संभालने के लिए प्रोत्साहित किया। निकोलस, अपनी उन्नत आयु के कारण, ऐसा करने के लिए बहुत अनिच्छुक थे, और केवल ज़ार के ज़ोरदार अनुरोध पर मठ का प्रभार लेने के लिए सहमत हुए। ज़ार ने अक्सर संत को अपनी उपस्थिति में बुलाया, उनसे बातचीत की, उनकी शिक्षाओं से एक सदाचारी जीवन के गुणों को सीखा, और संत को बहुत सम्मान दिया।

ईश्वर ने अपने सेवक को लोगों की बीमारियों को ठीक करने का वरदान प्रदान किया। ज़ार की पत्नी यूडोक्सिया एक गंभीर बीमारी से ग्रस्त हो गई थी, इसलिए जब उसे डॉक्टरों से कोई मदद नहीं मिली और उसने इलाज की हर उम्मीद

[1645] *संत फोटोस* ने 857 से 867 तक पैट्रिआर्क के रूप में कार्य किया। (*असिक्रीटोस* – सम्राट के निकट एक दरबारी पद।)

[1646] यह द्वीप साइज़िकस के पास स्थित है - जो एशिया माइनर के उत्तर-पश्चिमी भाग में, मार्मारा सागर के दक्षिणी तट पर एक शहर है।

[1647] उस समय, वह मितिलिनी (लेसबोस द्वीप पर) और चेरसोनेसोस प्रायद्वीप पर भी थे।

[1648] स्टूडियो के मठाध्यक्ष सावस के अधीन।

[1649] *बासिल प्रथम मैसेडोनियाई* ने 867 से 886 तक शासन किया।

छोड़ दी, तो उसे लगा कि उसकी मृत्यु निकट है। लेकिन एक दिन, गहरी नींद में सोते हुए, उसने एक वृद्ध व्यक्ति को मठीया वस्त्रों में, महिमा के प्रकाश से दमकते हुए देखा। उसके पास आकर, उस वृद्ध ने कहा:

– ईश्वर पर विश्वास रखो, क्योंकि आज तुम मरण नहीं पाओगे, बल्कि तुम चंगे हो जाओगे और स्वस्थ हो जाओगे।

जागते ही उसने तुरंत अपने पति को अपना सपना सुनाया और उनसे विनती की कि वे सभी मठों के उन वरिष्ठों को बुलाएँ जो अपने पुण्य जीवन के लिए प्रसिद्ध थे। रानी के कक्ष में आमंत्रित अन्य वरिष्ठों के साथ, धन्य निकोलस भी प्रकट हुए, उनका चेहरा मूसा जैसी प्रकाशमान रोशनी से दमक रहा था। रानी ने उसे वही वृद्ध व्यक्ति माना जिसे उसने अपने सपने में देखा था; वह उठकर उसके सामने झुक गई, और तुरंत ही पूरी तरह स्वस्थ हो गई।

एक और महिला, जिसका नाम हेलेना था, जो कुलीन मैनुअल की पत्नी थी, वह भी गंभीर रूप से बीमार पड़ गई। वह मौत के कगार पर थी, और उसके रिश्तेदारों ने पहले ही उसके अंतिम संस्कार के कपड़े तैयार कर लिए थे; लेकिन धन्य निकोलस, उसके घर पहुँचकर, उसके सिर और पूरे शरीर पर अपने हाथ से क्रॉस का चिह्न बनाया, और वह मरणासन्न महिला अपनी गंभीर बीमारी से पूरी तरह ठीक होकर अपने बिस्तर से उठ खड़ी हुई। उसका पति, मैनुअल, भी गंभीर रूप से बीमार पड़ गया। चूंकि डॉक्टरों से कोई मदद नहीं मिली थी, इसलिए मैनुअल ने ठीक होने की उम्मीद छोड़ दी थी और मृत्यु के आने का इंतजार कर रहा था। अपनी मृत्यु से पहले, वह मठवासी संन्यास की शपथ लेना चाहता था; उसने मुंडन कराने के लिए धन्य निकोलस से अनुरोध किया। लेकिन इस अवसर पर निकोलस ने उसकी इच्छा पूरी करने से इनकार कर दिया और भविष्यवाणी की कि ईश्वर उसे ठीक कर देंगे, और वह दरबार में एक उच्च पद धारण करेगा, और अपनी जिम्मेदारियों को निभाएगा, और केवल तब, संन्यासी की शपथ लेकर, वह पुण्य कर्मों के साथ परलोक में जाएगा। उनकी भविष्यवाणी सच हुई। मैनुएल जल्द ही ठीक हो गया, दरबार में उच्चतम पदों पर रहा, और फिर, अपने जीवन के अंत में, गंभीर रूप से बीमार पड़ने और धन्य निकोलस द्वारा संन्यास की दीक्षा दिए जाने के बाद, एक भिक्षु के रूप में ईश्वर में विलीन हो गया।

थेओफिलिस मेलिसिन नामक एक अन्य कुलीन व्यक्ति और उसकी पत्नी बहुत दुख में थे, क्योंकि उनके सभी बच्चे जन्म के बाद अचानक मर गए थे। जब एक दिन उन्हें एक बेटी हुई, तो वे नवजात शिशु को संत के पास ले आए और उनसे उसके बपतिस्मा पर उसके गॉडफादर बनने के लिए कहा, यह मानते हुए कि संत की प्रार्थनाएं उसे मृत्यु से बचा लेंगी। धन्य संत ने उसके गॉडफादर बनने से इनकार कर दिया, लेकिन, शिशु पर अपना हाथ रखकर, उन्होंने ईश्वर से प्रार्थना की और उस कुलीन व्यक्ति से कहा:

'पवित्र आत्मा कहते हैं: तुम्हारी बेटी जीवित रहेगी, और तुम उसके पुत्रों के पुत्रों को देखोगे।'

और जैसा उन्होंने भविष्यवाणी की थी, वैसा ही सब कुछ हुआ: उनकी बेटी पूरी सेहत के साथ बड़ी हुई और एक खूबसूरत युवती बनकर, जल्द ही उसकी शादी हो गई और उसे अच्छे बच्चे हुए।

अपने जीवन के अंत के करीब, धन्य निकोलस बीमार पड़ गए।

जब सभी भाई उसके बिस्तर के चारों ओर इकट्ठा हो गए, तो धन्य व्यक्ति ने भिक्षुओं की ओर मुड़कर पूछा:

'भाइयो, मुझे बताओ, तुम्हें इस समय क्या कमी है?'

इस प्रश्न से चकित होकर, उन्होंने उत्तर दिया:

'हमारे पास गेहूँ नहीं है।'

इस पर धन्य ने उनसे कहा:

'ईश्वर, जिसने जंगल में इस्राएल को खिलाया, वह तुम्हें भी नहीं छोड़ेंगे: मेरे निधन के तीसरे दिन, वह तुम्हें प्रचुर मात्रा में गेहूँ प्रदान करेंगे।'

पूर्व कोषाध्यक्ष क्लेमेंट को मठाध्यक्ष नियुक्त करने के बाद, पूजनीय निकोलस का पचहत्तर वर्ष की आयु में, फरवरी के चौथे दिन शांतिपूर्वक निधन हो गया, और उन्हें सम्मान के साथ दफनाया गया[1650] ।

ठीक तीसरे दिन, जैसा कि संत ने भविष्यवाणी की थी, तिसर बासिल द्वारा भेजा गया गेहूं से लदा एक जहाज मठ में पहुँचा। क्लेमेंट ने खुशी-खुशी तिसर का उपहार स्वीकार किया और संन्यासियों से कहा:

'देखो, पिताओं और भाइयों, हमारे पूजनीय पिता निकोलस ने हमें प्रचुर मात्रा में गेहूं भेजकर अपना वादा पूरा कर दिया है।'

[1650] संत निकोलस का 4 फरवरी 868 को निधन हो गया।

उसी मठ में एंथनी नाम का एक भिक्षु था, जो कई वर्षों से रक्तस्राव से पीड़ित था। चिकित्सकों से सारी आशा खोकर, वह मृत्यु के कगार पर था। मठाधीश ने उसे पूजनीय फादर निकोलस की झोपड़ी में रहने का आदेश दिया, जहाँ उसे अपनी मृत्यु तक रहना था। और इस प्रकार, जब एंथनी उस झोपड़ी में गया, लेट गया और सो गया, तो पूजनीय निकोलस उसे दिखाई दिए और पूछा:

'मेरे पुत्र एंथनी, तुम्हें क्या तकलीफ है?'

उसने उन्हें अपनी बीमारी के बारे में बताया। माननीय फादर ने कहा:

'डरो मत; इस क्षण से, तुम ठीक हो जाओगे।'

अचानक जागने पर, एंथनी ने देखा—सपने में नहीं बल्कि वास्तविकता में—कि आदरणीय पिता झोपड़ी से बाहर जा रहे थे, जिसमें एक तेज सुगंध बनी हुई थी। वह तुरंत स्वस्थ महसूस करने लगा और अच्छे स्वास्थ्य के साथ उठ खड़ा हुआ। इसके बाद, एंथनी चौदह साल तक जीवित रहा और आदरणीय पिता निकोलस की प्रार्थनाओं के कारण उसे किसी भी प्रकार की बीमारी नहीं हुई। उनकी मध्यस्थता से, हम भी आत्मा और शरीर, दोनों की सभी बीमारियों से मुक्त हों, हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा, जिनका महिमा युगानुयुग होती रहे। आमीन।

नोवोएज़र्सक के आदरणीय चमत्कार-कर्ता सिरिल की स्मृति

4 फरवरी को स्मरणोत्सव

परम पूज्य सिरिल का जन्म गालिच शहर में धर्मपरायण और अमीर माता-पिता के घर हुआ था[1651] / एक छोटे लड़के के रूप में भी, सिरिल को भिक्षु बनने की एक प्रबल इच्छा महसूस हुई। अपने माता-पिता का घर गुप्त रूप से छोड़कर, सिरिल गालिच से ओब्नोरा नदी[1652] की ओर, परम पूज्य कॉर्नेलियस के मठ[1653] के लिए रवाना हुए, जिसके बारे में उन्होंने अपने माता-पिता से सुना था[1654] । रास्ते में, सिरिल ने सफेद बालों वाले एक वृद्ध व्यक्ति को देखा। जब उस वृद्ध व्यक्ति ने उससे पूछा कि वह कहाँ जा रहा है, तो सिरिल ने जवाब दिया कि वह पूजनीय कॉर्नेलियस के मठ की ओर जा रहा है। उसकी मंशा को मंजूरी देते हुए, उस वृद्ध व्यक्ति ने उससे कहा कि वह उसके साथ वहाँ जाए। अगले दिन, वे दोनों आदरणीय कॉर्नेलियस के मठ के लिए रवाना हो गए। मठ से थोड़ी दूरी पर, बूढ़े आदमी ने लड़के को कुछ सलाह देने के बाद, उसके लिए लंबी प्रार्थना की और फिर, मठ की ओर इशारा करते हुए, कहा:

'जाओ, मेरे बच्चे, धन्य कोर्नेलियस के पास, और मैं धन्य कोर्नेलियस से तुम्हें एक भिक्षु के रूप में स्वीकार करने के लिए कहूँगा।'

इसके बाद, बड़े भिक्षु ने उस लड़के को आशीर्वाद दिया और दृष्टि से ओझल हो गए। चारों ओर देखकर और बड़े भिक्षु का कोई निशान न पाकर, सिरिल को एहसास हुआ कि यह ईश्वर का दर्शन था, और उन्होंने इसके लिए ईश्वर का धन्यवाद किया। मठ में पहुँचने पर, आँखों में आँसू लिए, उस लड़के ने परम पूज्य कोर्नेलियस से विनती की कि वे उसे अपने मठ में एक भिक्षु के रूप में स्वीकार कर लें। कॉर्नेलियस ने उनमें पवित्र आत्मा के एक चुने हुए पात्र को पहचाना और उन्हें प्रेम से स्वीकार कर लिया तथा उन्हें मठवासी संप्रदाय में दीक्षा दी[1655] । उस युवा भिक्षु ने स्वयं को पूरी तरह से ईश्वर को समर्पित कर दिया और उत्कट प्रेम के साथ, तपस्वी जीवन का अभ्यास करना शुरू कर दिया।

सिरील के माता-पिता उसे बहुत समय तक हर जगह खोजते रहे और जब वह कहीं नहीं मिला, तो उन्होंने अपने बेटे के खो जाने पर विलाप किया। कई साल बाद, उनके माता-पिता को पता चला कि सिरील कोर्नेलियस के मठ में रह रहा था। वहाँ सिरिल के रहने के बारहवें वर्ष में, उसके पिता मठ आए और वर्सोनोफियस नाम से मठवासी संन्यास ग्रहण किया; और कुछ समय बाद, सिरिल की माँ के बारे में खबर आई कि उन्होंने भी एक सदाचारी और धार्मिक जीवन जीने के बाद

[1651] अब कोस्त्रोमा गवर्नरेट में एक जिला शहर, जो गालिच झील के निम्न-स्थित दक्षिण-पूर्वी तट पर है।

[1652] *ओब्नोरा नदी* वोल्गोडा और यारोस्लाव प्रांतों से होकर बहती है और कोस्त्रोमा नदी में मिल जाती है।

[1653] *परम आदरणीय कॉर्नेलियस* ने ग्र्याज़ोवेट्स शहर से 5 वर्स्ट दूर, वोल्गोडा के पास कोमेल वन में एक मठ की स्थापना की। इस मठ को कोमेल के संत कॉर्नेलियस का मठ, प्रस्तुति के लिए समर्पित के नाम से जाना जाता है। संत कॉर्नेलियस का निधन 19 मई 1537 को हुआ; उनके पवित्र अवशेष भी वहीं रखे गए हैं। उनका पर्व दिवस 19 मई है।

[1654] यह मठ गालिच शहर से 80 वर्स्ट की दूरी पर स्थित था।

[1655] उस समय सिरिल लगभग 20 वर्ष के थे।

हेलेना नाम से एक नन के रूप में नधिन कर लयिा था। सरिील के पति, मठ में तीन वर्ष तक उपवास और प्रार्थना में जीवन व्यतीत करने के बाद, प्रभु के पास चले गए।

अपने माता-पति की मृत्यु के बाद, परम पूजनीय सरिलि ने अपने आध्यात्मकि कार्यों के प्रत और भी अधकि गंभीरता से खुद को समर्पति कर दयिा, एक के बाद एक कार्य करते हुए, रसोई और बेकरी दोनों में काम कयिा, और सभी मठवासी कर्तव्यों का पालन कयिा।

सर्वोच्च पूर्णता के लिए प्रयास करते हुए, पूजनीय सरिलि ने जंगलों के सुनसान इलाके में एक तपस्वी का जीवन जीने का संकल्प लयिा। संत कॉर्नेलयिस के आशीर्वाद से, वह रेगस्तिानों में भटकने के लिए उत्तर की ओर नकिल पड़े; अब उनका भोजन कभी वभिन्नि जड़ी-बूटयिों और जड़ों से, तो कभी चीड़ की छाल से होता था; उन्होंने लोगों की तुलना में जंगली जानवरों को अधकि बार देखा। वहाँ से, वह कभी-कभी नोवगोरोड और प्सकोव के क्षेत्रों में लौट आता था, जहाँ वह पवत्रि स्थलों का पूजन करता और प्रभु से स्थायी रूप से बसने के लिए कोई स्थान दखिाने की प्रार्थना करता था।

एक दैवीय प्रकट होने के बाद, धन्य सरिोइल वहाँ से बेलोज़ेरो[1656] के लिए रवाना हुए, और फरि सबसे पवत्रि परमेश्वर की माता को समर्पति टकि्वनि मठ[1657] गए, जहाँ उन्होंने तीन दनिों तक ईश्वर और उनकी सबसे पवत्रि माता से प्रार्थना की। एक सपने में, परमेश्वर की माता उन्हें दखिाई दीं और उन्होंने उन्हें नोवोये झील जाने का आदेश दयिा। कोबलिनिाया पहाड़ से, पूजनीय पताजी ने झील के बीच में जंगल से ढीले लाल द्वीप को देखा। इस द्वीप पर, सरिील ने उस स्थान पर जहाँ अब मठ खड़ा है, आग का एक स्तंभ देखा, जसिसे उन्होंने समझा कि यह स्थान उन्हें ईश्वर और परमेश्वर की अतपिवत्रि माता द्वारा इंगति कयिा गया था।

द्वीप पर पहुँचने पर, पूजनीय ने एक ऊँचे देवदार के पेड़ के नीचे डेरा डाल लयिा, और उसकी टहनयिों से अपने लिए एक झोपड़ी बना ली। यहाँ, प्रभु का स्वर्गदूत उन्हें एक सपने में प्रकट हुआ और कहा कि यह स्थान प्रभु द्वारा उनके लिए तैयार कयिा गया था। अपनी नींद से जागने पर, धन्य व्यक्ति द्वीप के पार चले गए और अपनी झोपड़ी के पास मानव के पैरों के नशिान देखे। इन पदचह्निों का अनुसरण करते हुए, वह शडिनेम गाँव पहुँचा, और उसने ग्रामीणों से द्वीप पर बसने की अनुमति माँगी; उनकी सहमति मिलिने पर, उसने वहाँ अपने लिए एक कोठरी बनाई। अगले वर्ष, उसने वहाँ दो छोटे चर्च बनाए: एक मसीह के पुनरुत्थान को समर्पति, और दूसरा परमेश्वर की परम पवत्रि माता, ओडजिट्रियिा को।

द्वीप पर अपने प्रवास के दौरान, पूजनीय फादर ने उपवास और प्रार्थना के लिए खुद को पूरी लगन से समर्पति कर दयिा, और राक्षसों तथा दुष्ट लोगों के हाथों कई परीक्षणों और कष्टों को सहन कयिा। समय के साथ, सरिील के चारों ओर भक्षिुओं का एक बड़ा समुदाय इकट्ठा हो गया, और क्रास्नी द्वीप पर एक मठ की स्थापना हुई, जसिे नोवोएज़ेर्स्क मठ ([1658]) के नाम से जाना जाता है।

दीर्घायु प्राप्त करने के बाद, परम पूजनीय सरिलि को प्रभु द्वारा दूरदर्शति का वरदान और चमत्कार करने की शक्ति प्राप्त हुई। अपनी मृत्यु से पहले, परम पूजनीय ने रूसी भूमि पर आने वाली वपित्तयिों की भवष्यिवाणी की।

उन्होंने कहा, 'लोगों में वद्रिोह होगा और हमारी भूमि में बड़ी वपित्तयिाँ आएँगी; ईश्वर का प्रचंड क्रोध बरसेगा; कई लोग तलवार से मारे जाएँगे, जबकि अन्य को बंदी बना लयिा जाएगा।'

जब उनके शष्यि डायोनसियिस उनके पास आए और उन्होंने रेवरेन्ड फादर से पूछना शुरू कयिा, 'हमें बताइए, फादर, आगे क्या होगा?', तो रेवरेन्ड फादर ने उत्तर दयिा: 'उसके बाद मैंने सहिासन पर वरिाजमान राजा को देखा, और उनके सामने सरि पर राजसी मुकुट धारण कए दो युवक थे।' और प्रभु ने उन्हें उनके शत्रुओं के वरिुद्ध हथयिार दए – और पृथ्वी के सभी राज्य सहिासन पर वरिाजमान के सामने नतमस्तक होंगे, और हमारा राज्य शांतपिूर्ण होगा और ईश्वर द्वारा स्थापति होगा। 'आप सभी, पादरयिों और भाइयों,' रेवरेन्ड फादर ने जोड़ा, 'रूसी राज्य की संप्रभुता के लिए ईश्वर और उनकी अतपिवत्रि माता से आँसुओं के साथ प्रार्थना करें।'

[1656] *बेलोज़ेरो* नोवगोरोड गवर्नरेट में, करिलिोव और बेलोज़ेरो जलिों की सीमा पर स्थति है।

[1657] ईश्वर की माता के स्वर्गारोहण की टकि्खवनि मठ नोवगोरोड गवर्नरेट के टकि्खवनि शहर में स्थति है। इसकी स्थापना ईश्वर की माता की प्रतमिा के प्रकट होने की जगह पर की गई थी, जसिे टकि्खवनि प्रतमिा के नाम से जाना जाता है।

[1658] *करिीलोव-नोवेज़ेर्स्की मठ* नोवगोरोड गवर्नोरेट के बेलोजेर्स्क शहर से 30 वर्स्ट दूर, नोवये झील पर क्रास्नी द्वीप पर स्थति है। मठ की पवत्रि-कोठरी में एक वेदी-क्रॉस है, जसिे परंपरा के अनुसार, पूजनीय सरिील की कब्र के एक तख्ते से तराशा गया था।

पवत्रि भोज ग्रहण करने और क्रॉस का चह्नि बनाने के बाद, संत सरिलि ने 4 फरवरी 1532 को अपना प्राण प्रभु को अर्पति कर दयिा, और उन्हें उसी मठ में दफनाया गया था जसिकी उन्होंने स्थापना की थी[1659] ।

संत अव्राम, पवत्रि पुरोहति-शहीद और अर्वलि के बशिप की स्मृति।

पवत्रि शहीद और अर्वलि के बशिप संत अव्राम की स्मृति[1660]

4 फरवरी को स्मरणोत्सव

संत अव्राम को फारस में ईसाइयों के खलिाफ छेड़े गए उत्पीड़न के पांचवें वर्ष में[1661] , मागी के प्रमुख के आदेश पर गरिफ्तार कयिा गया था[1662] । मागी के प्रमुख ने संत को मसीह का परत्यिाग करने और सूर्य की पूजा करने के लिए मजबूर कयिा[1663] , लेकनि धन्य अव्राम ने उससे कहा:

'हे नीच अवश्विासी! तुम मुझे ऐसा घृणति कार्य करने का आदेश देकर स्वयं को क्यों कष्ट देते हो? सृष्टकिर्ता को त्यागकर कसिी प्राणी की पूजा करना कैसी पागलपन है! हे मूर्ख! क्या सूर्य मेरे ईश्वर की रचना नहीं है?'

ये शब्द दुष्ट यातनाकर्ता को भयानक क्रोध से भर गए, और उसने तुरंत संत को नग्न करने, जमीन पर लटिाने और गाँठदार डंडों से पूरे शरीर पर पीटने का आदेश दयिा। संत अव्रामयिस ने बहादुरी से अपनी पीड़ा सहन की और अपने यातकों के लिए प्रार्थना करते हुए कहा:

'हे प्रभु, इस पाप को उनके खलिाफ न गनिो, क्योंकि वे नहीं जानते कि वे क्या कर रहे हैं।'

यह देखकर, जादूगरों के मुखयिा ने संत का सरि तलवार से काटकर अलग कर देने का आदेश दयिा। पवत्रि शहीद अव्रामयिस ने फेलमन नामक गाँव में शहादत प्राप्त की।

एक ईश्वर-भयभीत तपस्वी की स्मृति में

स्मरणोत्सव 4 फरवरी को

इस दनि हम एक ईश्वर-भयभीत और धर्मात्मा तपस्वी का स्मरण करते हैं जो मस्रि के शहर एंटनिोए[1664] की सीमाओं के भीतर एक सुनसान पहाड़ पर रहते थे; उनके पास आने वाले कई लोग उनके संवादों और अच्छे कार्यों से प्रेरति हुए। मानव जाति का शत्रु उस तपस्वी के पुण्य जीवन से ईर्ष्या करता था और उसकी ईश्वर-भक्ति का लाभ उठाकर, उसने उसके मन में यह वचिार डाला: 'यह उचति नहीं है कि दूसरे तुम्हारे लिए काम करें या तुम्हारी सेवा करें, क्योंकि तुम न केवल कसिी की सेवा के अयोग्य हो, बल्कि तुम स्वयं भी कसिी की सेवा करने के अयोग्य हो; अत; केवल अपने लिए ही काम करो। इसलिए, शहर जाओ और अपनी बनी टोकरी बेच दो, अपने लिए जो कुछ भी चाहिए वह खरीद लो, और इस जगह को छोड़ दो, ताकि दूसरों पर बोझ न बनो।' शैतान ने इस वचिार को तपस्वी के मन में इसलिए डाला क्योंकि वह उसकी मौन साधना और तपस्या से ईर्ष्या करता था, जसिसे दूसरों को भी महान आध्यात्मकि लाभ होता था; क्योंकि मानव जाति का शत्रु सभी को अपनी जाल में फँसाने का प्रयास करता है। और इस प्रकार, तपस्वी , जन्हिें उनके पुण्य जीवन के लिए

[1659] 1649 में एक नए चर्च की नींव के दौरान, जो दुर्भाग्य से बचे बोयार मोरोज़ोव द्वारा कए गए एक व्रत को पूरा करने के लिए बनाया जा रहा था, *परम पावन सरिलि के अवशेष* अक्षुण्ण पाए गए। परषिद के नर्णिय से, उनका परीक्षण वोलोग्दा के आर्चबशिप मार्केल द्वारा कयिा गया; और 22 अगस्त 1662 को, उन्हें एक अवशेष-पात्र में नई चर्च में स्थानांतरति कर दयिा गया, जहाँ वे अब चमत्कार करते हुए वश्राम कर रहे हैं। सेंट सरिलि के अवशेषों की खोज का स्मरणोत्सव 7 नवंबर को मनाया जाता है।

[1660] अरवलि या अर्बेल का शहर प्राचीन असीरयिाई साम्राज्य के भीतर, ऊपरी इलाकों में टबिर नदी *के* पूर्व में स्थति था।

[1661] मगों ने फ़ारसयिों के बीच, पुरोहति और धार्मकि अनुष्ठानों के संरक्षक, दोनों की भूमकिा नभिाई।

[1662] यह उत्पीड़न लगभग 343 ईस्वी में तब शुरू हुआ जब फारसयिों ने रोमनों के साथ युद्ध कयिा था। उत्पीड़न का कारण यह था कि शपूर ईसाइयों को रोमनों का गुप्त सहयोगी मानता था। उत्पीड़न का पाँचवाँ वर्ष लगभग 348–352 की अवधि में आता है।

[1663] फ़ारसी लोग आग और सूर्य की पूजा करते थे। बाद वाला, जसिे मनेराह कहा जाता था, उनकी सर्वोच्च देवी थी।

[1664] *एंटीनो* प्राचीन काल में मध्य मस्रि का एक काफी महत्वपूर्ण शहर था।

सभी सम्मान और प्रशंसा देते थे, ने इस दुष्ट सलाह पर ध्यान दिया—जो अच्छी लगती थी—और शैतान की धूर्त योजनाओं को समझने में असफल रहते हुए, अपनी कुटिया छोड़ दी। कुछ समय बाद, तपस्वी एक महिला से मिला और उसके साथ लंबी बातचीत के बाद, अपनी ही आध्यात्मिक लापरवाही के कारण वासना से भटक गया। फिर, शैतान के प्रभाव में आकर, नदी के किनारे एक सुनसान जगह पर जाने के बाद, उसे आखिरकार एहसास हुआ कि वह पाप में गिर गया है, जिससे उसका दुश्मन—शैतान—खुश हुआ। पवित्र आत्मा, स्वर्गदूतों और पवित्र पिताओं—जिनमें से कई ने शहरों में रहते हुए भी शैतान पर विजय प्राप्त की थी—को दुखी करने के दुख से निराश होकर, तपस्वी ने खुद को नदी की तेज धारा में फेंकने का इरादा किया, यह भूलकर कि प्रभु हमेशा उन सभी की सहायता के लिए तैयार रहते हैं जो उन पर विश्वास करते हैं और अपने पापों से मुक्त होना चाहते हैं। ऐसी आध्यात्मिक पीड़ा ने तपस्वी को शारीरिक रूप से थका दिया, जिससे शैतान को बहुत प्रसन्नता हुई। और यदि सर्व-दयालु ईश्वर उनकी सहायता के लिए न आते, तो वे पश्चाताप किए बिना ही मर जाते, जिससे राक्षसों को प्रसन्नता होती। तब होश में आकर, भिक्षु ने विचार करना शुरू किया कि ईश्वर को प्रसन्न करने के लिए वे पश्चाताप और ईसाई धैर्य का कौन सा सबसे कठिन कार्य कर सकते हैं – आँसुओं और एक पश्चात्तापी हृदय के साथ। और इस प्रकार वह अपनी कुटिया में लौट आया और, प्रवेश द्वार को बंद करके, ईश्वर से प्रार्थना करने और अपने पाप पर रोने लगा, अपने ऊपर ऐसे आँसू बहा रहा था मानो किसी मृतक पर, साथ ही उपवास कर रहा था, शोक मना रहा था और अपने शरीर को थकान में डाल रहा था; फिर भी इन सब के बावजूद, उसे अपने घोर पाप के प्रायश्चित की आशा नहीं थी।

जब भी भाई-बंधु, अपनी प्रथा के अनुसार, आध्यात्मिक शिक्षा के लिए उसके पास आते और उसके दरवाज़े पर दस्तक देते, तो वह उत्तर देता:

'मैं तुम्हारे लिए दरवाज़ा नहीं खोल सकता, क्योंकि मैंने पूरे एक साल इसी तरह पश्चाताप करते हुए बिताने की कसम खाई है; फिर भी तुम मेरे लिए प्रार्थना करो, भले ही मैं इसके लायक नहीं हूँ।'

इस प्रकार तपस्वी ने उनसे उत्तर दिया, यह सोचकर कि क्या कहे, यह जानते हुए कि यदि वह उन्हें अपने पाप में गिरने के बारे में बताएगा तो वह उन्हें भटका सकता है, क्योंकि वह सभी के लिए एक सख्त और धर्मनिष्ठ भिक्षु के रूप में जाना जाता था। इस प्रकार उसने पूरा साल कड़ा उपवास करते हुए और अपने अपराध पर पश्चाताप करते हुए बिताया।

जब ईस्टर का पर्व निकट आया, तो मसीह के पुनरुत्थान से ठीक एक रात पहले, उस तपस्वी ने एक नया दीपक लिया, उसमें तेल डाला, उसे एक नए पात्र में रखा, उसे ढक दिया, और संध्या से ही प्रार्थना में खड़ा हो गया, यह कहते हुए:

हे उदार और दयालु प्रभु, जो विधर्मी लोगों को भी बचाना चाहते हैं और उन्हें सत्य के ज्ञान की ओर ले जाना चाहते हैं! मैं आपकी शरण में आता हूँ, हे हमारे आत्माओं के उद्धारकर्ता: मुझ पर दया करें, जिसने आपको बहुत क्रोधित किया है और शत्रु को प्रसन्न करने के लिए बहुत कुछ किया है, ताकि अब, शत्रु की बात सुनकर, मैं, मानो, एक मृतक बन गया हूँ। किन्तु हे प्रभु, जो दुष्टों और निर्दयों पर भी दया करते हैं, और जो हमें अपने पड़ोसी से प्रेम करना सिखाते हैं, मुझ पर दया करें और मेरी दीनता पर तरस खाएँ, क्योंकि सर्व-दयालु, आपके लिए सब कुछ संभव है। मुझ पर दया करें, क्योंकि आप अपनी सृष्टि के प्रति भले और दयालु हैं, और आप पुनरुत्थान के दिन सड़ चुके शरीरों को भी जिला उठाना चाहते हैं। हे प्रभु, मेरी सुनो, क्योंकि मेरा मन मेरे भीतर उदास है, और मेरी दीन आत्मा मुरझा गई है, और मेरा शरीर, जिसे मैंने अपवित्र किया है, कमज़ोर हो गया है; मैं तो जी भी नहीं सकता, क्योंकि मैं इसके लायक नहीं हूँ। अब, अत; पश्चाताप के साथ, मैं आपकी शरण लेता हूँ और अपने पापों के लिए क्षमा याचना करता हूँ। मैंने घोर पाप किया है, क्योंकि मैं गिर गया हूँ और निराश हो गया हूँ; परन्तु हे प्रभु, मुझे जो टूटे-फूटे हृदय का है, उसे फिर से जीवित कर, और आज्ञा दे कि यह दीपक तेरी आग से प्रज्वलित हो जाए, ताकि मैं यह जान सकूँ कि तू, जो दया में महान है, मेरे पापों को क्षमा करता है। अपने शेष जीवन में, जो आप, हे प्रभु, मुझे प्रदान करें, मैं आपके भय में निवास करूँगा, और आपके आज्ञाओं का पालन करूँगा।

मसीह के पुनरुत्थान की रात को इस प्रकार बहुत रोते हुए प्रार्थना करते हुए, वह तपस्वी यह देखने के लिए उठा कि क्या दीपक जल गया है; और, पात्र खोलकर, उसने देखा कि दीपक नहीं जला था। तब वह फिर से अपने मुँह के बल गिर पड़ा और प्रभु से प्रार्थना करते हुए कहा:

'हे प्रभु, मैं जानता हूँ कि मुझे एक पुण्य कर्म से मुकुटित किया जाना चाहिए था, परन्तु मैंने देहिक वासना के बहकावे में आकर तेरी आज्ञाओं पर ध्यान नहीं दिया, और इसके लिए मुझे अधर्मी लोगों के साथ मिलकर यातना सहनी होगी; परन्तु हे प्रभु, मुझ पर दया करो, जिसने तेरा विरोध किया है और सभी स्वर्गदूतों और धर्मी लोगों के सामने अपना पाप कबूल किया है। और अगर मुझे लोगों को गुमराह करने का डर न होता, तो मैं अपना पाप सारी दुनिया के सामने कबूल कर देता। हे प्रभु, मुझ पर दया करो, जो अपने पतन पर पश्चाताप करता हूँ; मुझे पुनर्जीवित कर, ताकि मैं दूसरों को भी उपदेश दे सकूँ।

इस प्रकार तीन बार प्रार्थना करने पर, उसकी प्रार्थना सुनी गई। अपनी प्रार्थना के बाद उठकर, तपस्वी ने देखा कि दीपक तेज़ी से जल रहा था, और वह इस पर बहुत प्रसन्न हुआ और परमेश्वर में अपनी दृढ़ आशा से बलवान हुआ। और वह ईश्वर की ऐसी महान कृपा और मानव जाति के प्रति प्रभु के प्रेम पर चकित हुआ, और उसकी आत्मा इस बात से प्रसन्न हुई कि ईश्वर ने उसके पापों को क्षमा कर दिया था और उसकी विनिम्र प्रार्थना सुनी थी, और उसने कहा:

'मैं तुझसे धन्यवाद करता हूँ, हे प्रभु, कि इस क्षणिक जीवन में तूने मुझ जैसे अयोग्य पर दया की है, और मुझे इस महान और नए चिह्न के द्वारा तेरे सामने निडरता प्रदान की है: क्योंकि तू दयालुता से उन आत्माओं को क्षमा कर देता है जिन्हें तूने बनाया है।'

जब वह ईश्वर का यह धन्यवाद कर रहा था, तो दिन का उदय हुआ, और तपस्वी प्रभु में आनंदित हुआ; अपने आनंद में, वह उस दिन अपने शारीरिक भोजन के बारे में भी भूल गया। जहाँ तक उस दीपक की लौ की बात है, उसने उसे अपने जीवन के बाकी दिनों तक जलाए रखा, उसमें तेल डालता रहा ताकि लौ बुझ न जाए। और एक बार फिर परमेश्वर का आत्मा उनमें वास करने लगा; एक बार फिर, सभी ने उनके बारे में जाना और उनसे प्रोत्साहन प्राप्त किया। जब उनका अंत निकट आया, तो अपने निधन से कुछ दिन पहले उन्होंने अपनी मृत्यु का समय जान लिया और परमेश्वर के हाथों में अपनी आत्मा को सौंपकर शांति से विश्राम किया।

- उसी दिन, पवित्र और विश्वासयोग्य ग्रैंड प्रिंस जॉर्ज वेसेवोल्दोविच की स्मृति।

18 फरवरी

5 फरवरी (पुराने कैलेंडर के अनुसार)

शहीद संत अगाथा का कष्टकथा

5 फरवरी को स्मरण किया जाता है

[1665]दुष्ट डेसियस के शासनकाल में[1666] , उस समय जब क्विंटियिनस, जिसे उसने नियुक्त किया था, सिसिली का राज्यपाल था[1667] , पूरे देश में एक अधर्मी आदेश जारी किया गया कि सभी ईसाइयों को मृत्युदंड दिया जाए। उस समय, पैनोर्मा नगर[1668] में अगथिया नाम की एक कुंवारी रहती थी, जो कुलीन और धनी माता-पिता की पुत्री थी और जिसे ईसाई भक्ति में पाला गया था। ईसाइयों की पिटाई के संबंध में उत्पीड़क के अधर्मी आदेश को सुनकर, अगथिया अपने प्रभु मसीह के लिए उत्साह से भर गई, जिनके साथ उसने अपनी कुंवारी पवित्रता के माध्यम से स्वयं को सगाई कर रखी थी। उसने अपने देशभक्ति के प्रेम को एक तरफ रख दिया, अपने कुलीन जन्म के सम्मान को कुछ भी नहीं समझा, और अपने माता-पिता द्वारा छोड़ी गई संपत्ति तथा इस संसार की सारी महिमा को तिरस्कार कर, मसीह के लिए पीड़ा सहने की तैयारी

[1665] कैटानिया सिसिली के पूर्वी तट पर एक प्राचीन शहर है – अब यह शिक्षा और व्यापार के क्षेत्र में फल-फूल रहा एक घनी आबादी वाला शहर है, जिसकी जनसंख्या 100,000 से अधिक है।

[1666] डेसियस ने 249 से 251 तक शासन किया।

[1667] सिसिली अपेनीन प्रायद्वीप के पास भूमध्य सागर के सबसे बड़े द्वीपों में से एक है।

[1668] पैनोर्म (अब पलेर्मो) सिसिली द्वीप के उत्तरी तट पर, उसी नाम की खाड़ी पर स्थित है; यह एक बहुत ही प्राचीन और महत्वपूर्ण शहर है, जिसकी स्थापना फ़िनिशियाई लोगों ने की थी।

करने लगी। गवर्नर क्वटियिन, इस पवत्रि कन्या की सुंदरता, कुलीनता और धन-संपत्ति के बारे में सुनकर, उसके प्रति एक अशुद्ध जुनून से भर गया और उसने उसे देखने और अपनी आपराधिक वासना में फँसाने का निश्चय किया, साथ ही उसकी संपत्ति पर भी कब्ज़ा करने का मन बनाया। यह जानकर कि वह मसीह में विश्वास रखती थी, उसने तुरंत कैटानियि शहर के सैनिकों को पैनोर्मस भेजा ताकि संत को एक ईसाई के रूप में मुकदमे के लिए लाया जा सके। दूतों ने, संत अगथा के निवास पर पहुँचकर, उसे बंदी बनाने का प्रयास किया और वादा किया कि यदि वह उनके देवताओं की पूजा करने का वचन दे तो वे उसे सम्मानपूर्वक अपने कमांडर के पास पहुँचा देंगे। उन्हें थोड़ी देर प्रतीक्षा करने के लिए कहने के बाद, अगथा घर के भीतर एक ऊपरी कमरे में चली गईं और वहाँ खुद को बंद करके, उन्होंने अपने हाथ स्वर्ग की ओर उठाए और प्रार्थना करते हुए कहा:

हे प्रभु यीशु मसीह! आप मेरे हृदय और मेरी आत्मा की प्रवृत्ति, मुझमें आपके प्रति प्रेम और विश्वास को जानते हैं! हे मेरे परमेश्वर, शत्रु के विरुद्ध मेरा मार्गदर्शक और सहायक बनें, जिसे मैंने पहले ही आपके लिए पैरों तले कुचलकर मार डाला है। और अब, हे प्रभु, मैं तुझ से विनती करती हूँ, उस अत्यंत दुष्ट और कपटी मनुष्य, उस दानवों के सेवक को, मेरे शरीर को अपवित्र करने न देना, जिसमें मैं अब तक पवित्रता और सम्मान के साथ रही हूँ; शैतान और उसके सेवक क्वटियिन की पराजय को शीघ्र और त्वरित कर, कहीं ऐसा न हो कि वह कहे: 'उसका परमेश्वर कहाँ है?' (देखें भजन संहिता 78:10) मेरी आँसुओं को बलिदान और भेंट के रूप में, एक सुगंधित सुगंध के रूप में स्वीकार करें, क्योंकि केवल आप ही परमेश्वर हैं, और आपको ही युगानुयुग महिमा मिले। आमीन।

इस प्रकार प्रार्थना करने के बाद, वह कुछ नागरिकों, पड़ोसियों और परिचितों के साथ सैनिकों के संग शहर से निकल गई; वह अपने प्रभु के लिए एक अटूट दीवार की तरह साहसपूर्वक खड़े होने के लिए पूरी तत्परता से चली; और उसने अपने मन में विचार किया: 'देखो, पहले मैंने शैतान से लड़ाई लड़ी, अपनी कुँवारीपन की पवित्रता को बनाए रखने और अपनी देह संबंधी वासनाओं पर काबू पाने का प्रयास किया, जिस पर मैंने अपने मसीह की कृपा की सहायता से विजय प्राप्त की, और मैंने उन शत्रुओं को पैरों तले रौंद डाला जो वासनाओं और कामनाओं के द्वारा मानव जाति पर युद्ध छेड़ते हैं; अब मैं दूसरी लड़ाई में जा रही हूँ, जिसमें मुझे मसीह के लिए अपनी आत्मा अर्पित करनी है। लेकिन, हे शैतान, तू मेरे कारण आनंदित नहीं होगा; बल्कि, तुझे स्वयं लज्जित होना पड़ेगा: क्योंकि मैं अपने परमेश्वर मसीह में अपनी आशा रखती हूँ, कि वह अपने पवित्र स्वर्गदूतों की भीड़ के साथ, ऊँचे से मेरे संघर्ष पर दृष्टि डालेंगे, और मेरी सहायता करेंगे, जो कमज़ोर हूँ।'

जैसे ही उसने मन में ऐसा विचार किया, उसने गरम आँसुओं से अपना चेहरा धो लिया। जैसे ही वह अपने रास्ते पर आगे बढ़ी, उसकी चप्पल का फीता खुल गया; उसे बाँधने के लिए, उसने अपना पैर एक पत्थर पर रखा और चारों ओर देखा, और उसे अब वे पड़ोसी कहीं भी दिखाई नहीं दे रहे थे जो उसके साथ चल रहे थे: वे सभी, उसे छोड़कर, वापस मुड़ गए थे। इसलिए वह और भी अधिक रोई और ईश्वर से प्रार्थना करने लगी, यह कहते हुए:

'हे सर्वशक्तिमान प्रभु, मेरे उन साथी नागरिकों के लिए, जिन्होंने मुझ पर विश्वास नहीं किया जब मैंने कहा कि मैं आपके पवित्र नाम के लिए कष्ट सहना चाहती हूँ, इसी स्थान पर कोई चमत्कार दिखाएँ!'

और तुरंत एक जंगली, बाँझ जैतून का पेड़ उग आया, जो पैनोर्मो के नागरिकों के जंगली मन का प्रतीक था।

जब संत अगथिया कैटानियि शहर में पहुँचीं, तो सैन्य कमांडर ने आदेश दिया कि उन्हें एफ्रोडिसिया नामक एक अमीर महिला के घर में ठहराया जाए। उसकी पाँच छोटी बेटियाँ थीं, जिन्हें उसने अपनी चापलूसी भरी बातों और विभिन्न सुखों के माध्यम से अगथिया को कामुक प्रेम में फँसाने और देवताओं को बलिदान चढ़ाने के लिए मनाने का निर्देश दिया। बारी-बारी से उसकी प्रशंसा और गुणगान करके, कई वादे करके, और धमकियों का सहारा लेकर, उन्होंने अगथिया को क्वटियिानस की इच्छा पूरी करने के लिए मनाने की कोशिश की, लेकिन व्यर्थ: न तो शब्द और न ही कर्म से वे उसे दिव्य प्रेम से हटाकर सांसारिक प्रेम की ओर मोड़ सके। उन्होंने उसे कीमती वस्त्रों से सजाया, उपहार और तरह-तरह के महंगे व्यंजन और स्वादिष्ट भोजन दिए, संगीतकारों के साथ नाटक और नृत्य का मंचन किया, और उसके सामने ही हर तरह के व्यभिचार और हास्यास्पद कृत्य किए। लेकिन उसने, यह सब देखने की इच्छा भी न रखते हुए, कहा:

'यह तुम्हें ज्ञात हो कि मेरा मन और विचार एक चट्टान पर स्थिर हैं और मसीह के प्रेम से विमुख नहीं हो सकते: तुम्हारे चापलूसी भरे शब्द हवा के समान हैं, और सांसारिक सुखों की पेशकश वर्षा से अधिक कुछ नहीं है; जबकि तुम्हारी धमकियाँ उन नदियों के समान हैं जो यद्यपि मेरे पवित्र स्थान के विरुद्ध उफान सकती हैं, परन्तु उसे हिला नहीं सकतीं, क्योंकि यह एक दृढ़ नींव पर खड़ा है, मानो चट्टान पर, जो जीवते परमेश्वर का पुत्र, मसीह है।

जैसे ही उसने कहा, उसके स्तन आँसुओं की धाराओं से भीग गए: क्योंकि जैसे एक हरिण जल की धाराओं की खोज करता है (देखें भजन संहिता 41:2), वैसे ही वह अपने प्रभु के लिए दुख सहने की लालसा रखती थी।

एफ्रोडिसिया, अगाथिया के हृदय की दृढ़ता और अटलता को देखकर, सैन्य कमांडर क्विंटियानस के पास गई और उससे कहा:

'इस कन्या को मसीह से मुँह मोड़ने के लिए मनाने की अपेक्षा एक पत्थर को कुचलना और लोहे को टिन में बदलना आसान होगा; मैंने स्वयं और मेरी बेटियों ने अपने दिन-रात केवल उसे हमारे विचारों से सहमत कराने की कोशिश में बिताए हैं – कभी दया और विनती से, तो कभी धमकियों से: मैंने उसके सामने दुर्लभ हार और लॉकेट, कीमती वस्त्र, सोना और कीमती पत्थर रखे; मैंने उसे उपहार में दास और अपनी ही दासियाँ दीं, फिर भी वह इन सबको पैरों तले कुचली गई धूल के समान तुच्छ समझती है।

तब क्रोधित सेनापति क्विंटियिन ने अगाथिया को अपने निजी कक्ष में लाने का आदेश दिया; वहाँ, अपने सिंहासन पर बैठे और अशुद्ध विचारों से भरे, उसने उस युवती से पूछा कि वह किस वंश की है। संत अगाथिया ने उत्तर दिया:

'मैं कुलीन वंश की हूँ और मेरे प्रतिष्ठित और धनी रिश्तेदार हैं।'

क्विंटियिन ने उससे कहा:

'यदि आप कुलीन कुल की हैं, तो आप किसी दासी की तरह इतने घटिया कपड़े क्यों पहनती हैं?'

'मैं मसीह की सेविका हूँ,' संत ने उत्तर दिया, 'और इसीलिए मैं एक दासी का रूप धारण करती हूँ।'

तब क्विंटियिन ने कहा:

'जब तुम कुलीन माता-पिता की बेटी होकर स्वतंत्र हो, तो खुद को दास कैसे कह सकती हो?'

'हमारी कुलीनता और स्वतंत्रता,' संत ने उत्तर दिया, 'मसीह की सेवा करने में निहित है।'

कमांडर ने पूछा:

'क्या हम, जो आपके मसीह की सेवा नहीं करते और जिन्हें हम नकारते हैं, सचमुच स्वतंत्र नहीं हैं?'

अगाथिया ने उत्तर दिया:

'तुम ऐसी कैद और दासता में हो कि तुम न केवल पाप की दास बन गई हो, बल्कि घृणित और निर्जीव मूर्तियों की पूजक भी बन गई हो, जो लकड़ी और पत्थर को देवता मानती हो।'

क्विंटियिन ने उससे कहा, "यदि तुम ऐसे अपमानजनक शब्द बोलना जारी रखोगी, तो तुम्हें बहुत यातनाएँ दी जाएँगी; लेकिन मुझसे बताओ, तुम हमारे देवताओं का त्याग क्यों करती हो?"

'मैं उन्हें त्यागती हूँ,' अगाथिया ने उत्तर दिया, 'क्योंकि वे देवता नहीं बल्कि राक्षस हैं, जिनकी मूर्तियाँ तुम तांबे और संगमरमर से बनाते हो, और उनके चेहरों पर सोने की परत चढ़ाते हो।'

क्विंटियिन ने कहा:

'मेरी अच्छी बात मानो, युवती, और बलिदान चढ़ाओ, कहीं ऐसा न हो कि तुम तरह-तरह की यातनाएँ भोगो और अपने कुलीन वंश पर अपमान और कलंक लगाओ; जिसके बाद, तुम्हारी इच्छा के विरुद्ध, तुम्हें ब्रह्मांड के शासक देवताओं की पूजा करने के लिए मजबूर किया जाएगा।'

संत अगाथा ने उत्तर दिया:

'तुम्हारी पत्नी अफ्रोडाइट[1669] जैसी हो, जो तुम्हारी देवी है; और तुम स्वयं ज्यूस[1670] जैसे हो, जो तुम्हारे देवता हैं।'

जब संत ने ये शब्द कहे, तो क्विंटियिन ने उन्हें चेहरे पर मारने का आदेश दिया और कहा:

'कमांडर का अपमान मत करो।' संत अगाथा ने उत्तर दिया:

'कमांडर, तुम्हारा विवेक कहाँ है? मैं चाहता हूँ कि तुम अपने देवता जैसे बनो, फिर भी तुम उनके जैसे बनना नहीं चाहते और स्वयं अपने देवताओं से शर्मिंदा हो: इसलिए, मेरे साथ उनका त्याग करो।'

कमांडर ने कहा:

[1669] एफ्रोडाइट प्रेम और सुंदरता की यूनानी देवी हैं। उनके सम्मान में मनाए जाने वाले त्योहारों में अत्यधिक कामुकता और विलासिता का प्रदर्शन किया जाता था।

[1670] ग्रीक लोग ज्यूस को प्रमुख देवता, सभी देवताओं और मनुष्यों के पिता के रूप में पूजते थे। ग्रीक मिथकों में ज्यूस को विभिन्न कामुक दुर्गुणों, अशुद्ध जुनून और अपराधों का दोषी बताया गया है।

'तुम कई यातनाओं की हकदार हो, जिन्हें मैं तुम्हें तुरंत ही भुगताऊँगा यदि तुम मुझे दिए गए आदेशों का पालन नहीं करती।'

'मैं किसी से नहीं डरती,' युवती ने उत्तर दिया; 'यदि तुम मुझे जानवरों के सामने खाने के लिए फेंक दोगे, तो जानवर मुझे देखकर और मसीह का नाम सुनकर वश में हो जाएँगे; यदि तुम मुझे आग में डालोगे, तो स्वर्ग के स्वर्गदूत मुझे ओस से ठंडा कर देंगे; यदि तुम मुझे घाव और यातनाएँ पहुँचाओगे, तो मेरे पास सत्य का आत्मा है जो मेरी मदद करेगा, जो मुझे तुम्हारे हाथ से छुड़ाएगा।'

इसके बाद, कमांडर ने अगथा को एक अंधेरी और बदबूदार कालकोठरी में ले जाने का आदेश दिया; लेकिन संत वहाँ एक दावत और उत्सव के लिए जाते हुए गईं, और उन्होंने खुद को अपने प्रभु के हवाले कर दिया। सुबह, क्वेटियिन ने संत अगथा को एक बार फिर मुकदमे के लिए बुलाया और उनसे पूछा कि क्या उन्होंने अपनी भलाई के बारे में पर्याप्त विचार किया था। संत अगथा ने उत्तर दिया:

'मेरी सेहत मसीह है।'

लेकिन राज्यपाल ने कहा:

'मसीह को त्याग दो, नहीं तो तुम अपनी जवानी में ही बर्बाद हो जाओगी।'

'अपने स्वयं के देवताओं का त्याग करो,' संत ने उत्तर दिया, 'जो पत्थर और लकड़ी से अधिक कुछ नहीं हैं, और सच्चे ईश्वर की ओर मुड़ो जिसने तुम्हें बनाया है, अन्यथा तुम अनंतकालिक यातनाओं के अधीन हो जाओगे।'

तब, क्रोधित होकर, यातना देने वाले ने अगथिया को एक पेड़ से नग्न लटकाने और कोड़ों से पीटने का आदेश दिया। जब संत को कोड़ों से पीटा जा रहा था, तो यातना देने वाले ने उससे कहा:

'अपना मन बदल और देवताओं की पूजा कर, ताकि तू जीवित रह सके।'

लेकिन उसने उत्तर दिया:

'इन यातनाओं के माध्यम से मैं परमानंद प्राप्त करता हूँ और उनमें उसी प्रकार आनंदित होता हूँ जैसे कोई व्यक्ति महान खजाना प्राप्त करके आनंदित होता है: ये अस्थायी यातनाएँ मेरे लिए लाभदायक हैं। जैसे गेहूँ को भूसी से अलग किए बिना भंडारगृह में नहीं रखा जाता, वैसे ही मेरी आत्मा के लिए स्वर्ग में प्रवेश करना तब तक असंभव है जब तक मेरा शरीर पहले यातनाओं से टुकड़े-टुकड़े न हो जाए।'

कमांडर ने अपने नौकरों को अगथिया को और अधिक यातना देने का आदेश दिया, फिर आदेश दिया कि उसके स्तनों को लोहे की कैंची से फाड़कर काट दिया जाए। जब यह किया जा रहा था, तो शहीद ने कमांडर से कहा:

'हे अधर्मी और अमानवीय यातनाकर्ता! क्या तुझे शर्म नहीं आती एक ऐसी महिला के स्तन काटने में, जिनसे तू स्वयं अपनी माँ के गर्भ में पोषित हुआ था? लेकिन मेरी आत्मा में अन्य स्तन हैं, जिन्हें तू छू भी नहीं सकता, क्योंकि वे मेरी जवानी से ही ईश्वर को समर्पित हैं।'

इसके बाद, संत को एक कालकोठरी में फेंक दिया गया। आधी रात को, संत पतरस प्रेरित एक सम्मानित वृद्ध के भेष में उनके सामने प्रकट हुए, जिनके हाथों में उनके लिए कई औषधियाँ थीं; उनके आगे एक सुंदर युवक जलती हुई मोमबत्ती लिए हुए चल रहा था; संत ने सोचा कि कोई डॉक्टर आ गया है। प्रेरित ने उनसे कहा:

'दुष्ट यातना देने वाले ने, यद्यपि तुम्हें घाव पहुँचाए, पर कुछ भी हासिल नहीं किया; इसके विपरीत, तुमने अपने साहस से उस पर विजय प्राप्त की; उसने न केवल यह आदेश दिया कि तुम्हारे स्तनों को चीर दिया जाए, बल्कि यह भी कि उन्हें काट दिया जाए: इसके लिए, उसकी आत्मा अनंतकाल तक यातना सहन करेगी।' जब तुम अपने कष्ट सह रही थीं, मैं खड़ी देख रही थी, और मैंने महसूस किया कि तुम्हारे स्तनों का इलाज हो सकता है; इसीलिए मैं यहाँ आई हूँ।"

पवित्र शहीद अगथिया ने उत्तर दिया:

'मैंने अपने शरीर के लिए कभी भी किसी भी प्रकार का चिकित्सकीय उपचार नहीं किया है; मुझे लगता है कि मुझे अब भी इस अच्छी प्रथा को नहीं तोड़ना चाहिए, जिसका पालन मैं अपनी जवानी से करता आ रहा हूँ।'

'लेकिन मैं भी एक ईसाई हूँ,' बूढ़े ने कहा, 'और मैं तुम्हें ठीक करने की उम्मीद में आया हूँ; इसलिए मुझसे शर्म मत करो।'

लेकिन संत ने उत्तर दिया:

'आप एक पुरुष हैं, और मैं एक कुँवारी हूँ; मैं शर्म के बिना आपके सामने अपना शरीर कैसे खोलूँ? मैं किसी पुरुष की आँखों के सामने खुद को खोलने की बजाय अपने घावों का दर्द सहना बेहतर समझूँगी।' 'मैं आपका धन्यवाद करती हूँ,

आदरणीय पतिाजी, कि आप मेरे घावों को ठीक करने के इरादे से यहाँ आए; लेकिन जान लीजिए कि कोई भी मानवीय उपचार कभी भी मेरे शरीर को छू नहीं पाएगा।'

बुज़ुर्ग ने उससे कहा:

'तो फिर, तुम नहीं चाहतीं कि मैं तुम्हारा इलाज करूँ?'

संत ने उत्तर दिया:

'मेरे पास मेरे प्रभु यीशु मसीह हैं, जो एक ही इशारे से सभी को चंगा करते हैं और एक ही शब्द से गिरे हुए को फिर से खड़ा करते हैं; वे, यदि वे चाहें, तो मुझे, अपनी इस अयोग्य दासी को, चंगा कर सकते हैं।'

पवित्र शहीद के इतने महान विश्वास से प्रेरित होकर प्रेरित प्रसन्न हुए और मुस्कुराते हुए उससे कहा:

'उसने मुझे तुम्हारे पास भेजा है, हे कन्या, क्योंकि मैं उसका प्रेरित हूँ; देखो – तुम चंगी हो गई हो।'

यह कहकर वह अदृश्य हो गया। तब संत अगाथिया शहीद ने, यह समझते हुए कि यह कौन था जो उसके सामने प्रकट हुआ था, ईश्वर का धन्यवाद किया, यह कहते हुए:

'मैं तुझसे धन्यवाद करती हूँ, हे मेरे प्रभु, यीशु मसीह, कि तूने मुझे याद किया और मुझे चंगा करने के लिए अपना प्रेरित भेजा।'

अपने शरीर को देखकर, उसने देखा कि उसके स्तन पूरे थे और उसके घाव भर गए थे; और सारी रात एक असाधारण प्रकाश ने कालकोठरी को प्रकाशित कर रखा था; इससे डरकर, सैनिक भाग गए और कालकोठरी का ताला खोलकर छोड़ गए। वहाँ मौजूद अन्य कैदियों ने यह देखकर संत से कहा:

'दरवाज़े खुले हैं, और कोई उनकी रखवाली नहीं कर रहा है: बाहर आओ और भाग जाओ।'

'मैं अपना शहीद का मुकुट खोना नहीं चाहती,' अगाथिया ने उत्तर दिया, 'और न ही रक्षकों पर कोई विपत्ति लाना चाहती हूँ; मेरे सहायक मेरे प्रभु जीसस क्राइस्ट, जीवित परमेश्वर के पुत्र, जो मुझे चंगा कर चुके हैं, के साथ मैं अंत तक यहाँ रहूँगी, और उनकी ही घोषणा करती रहूँगी।'

चार दिन बीत जाने के बाद, पाँचवें दिन, यातना देने वाले ने फिर से न्यायपीठ पर अपनी सीट ली और संत अगथिया को अपने पास बुलाकर कहा:

'तुम कितने समय तक राजा की आज्ञा का उल्लंघन करोगी? देवताओं को बलिदान चढ़ाओ, नहीं तो तुम्हें सबसे भयानक मृत्यु का सामना करना पड़ेगा।'

संत ने उत्तर दिया:

'तेरे शब्द व्यर्थ हैं, और तेरे राजा की आज्ञा अन्यायपूर्ण है, जो वायु को भी अपवित्र कर देती है; मुझसे बता, हे नीच और मूर्ख मनुष्य, जो एक पेड़ या निर्जीव पत्थर से मदद माँगता है? मैं, हालाँकि, उस की स्तुति का बलिदान अर्पित करती हूँ जिसने मेरे स्तनों को चंगा किया और मेरे शरीर को स्वास्थ्य प्रदान किया।'

यातना देने वाले ने उसके स्तनों को उजागर करने का आदेश दिया और उन्हें पहले की तरह ही पूरे और सुरक्षित देखकर पूछा:

'तुम्हें किसने चंगा किया है?'

शहीद ने उत्तर दिया:

'जीवित परमेश्वर का पुत्र, यीशु मसीह।'

क्विंटियिनस ने कहा:

'तुम फिर से मसीह का नाम ले रही हो, जिसका नाम मैं सुनना भी नहीं चाहता!'

और उसने आदेश दिया कि आग में गर्म की गई नुकीली छत की पट्टियाँ जमीन पर बिछा दी जाएँ, और उन पर गर्म कोयले बिखेरे जाएँ, और संत को नग्न अवस्था में उन पर फेंक दिया जाए, ताकि वह जलकर यातना भोगे। जब यह किया जा रहा था, तो अचानक न केवल उस स्थान के पास, बल्कि पूरे शहर में भूकंप आने लगा; पृथ्वी फट गई और उसने क्विंटियिन के मित्र वल्टियस और उसके सहयोगी थियोफिलस को निगल लिया, जिनकी सलाह पर क्विंटियिन ने ऐसा अत्याचार करने का आदेश दिया था। भूकंप से भयभीत सभी नागरिक, क्विंटियिन के पास प्रेटोरीयम में दौड़ पड़े, और उस पर चिल्लाने लगे कि वह उस निर्दोष कन्या को यातना देना बंद करे, जिसके लिए यह भूकंप हुआ था। भूकंप और जन आक्रोश से भयभीत कटियिन ने संत को जेल भेजने का आदेश दिया। जेल में प्रवेश करते ही, शहीद ने अपने हाथ स्वर्ग की ओर उठाकर कहा:

'मैं तुझसे धन्यवाद करती हूँ, हे प्रभु, कि तूने मुझे अपने पवित्र नाम के लिए दुख सहने योग्य समझा और, इस सांसारिक जीवन की इच्छा को मुझमें समाप्त कर, मुझे धैर्य प्रदान किया। हे प्रभु, इस घड़ी मेरी प्रार्थना सुन, और यह अनुग्रह कर कि मैं इस संसार को छोड़कर तेरी महान और समृद्ध दया में प्रवेश करूँ।'

इस प्रकार प्रार्थना करने के बाद, उन्होंने अपनी आत्मा ईश्वर के हाथों में सौंप दी[1671] । यह जानकर, नागरिक घटनास्थल पर दौड़ पड़े, और उनके पवित्र शरीर को उठाकर सम्मानपूर्वक दफनाने के लिए ले गए। अचानक, शहर में किसी के भी अनजान एक सुंदर युवक ने पवित्र शहीद के शरीर के पास आकर उसके साथ सौ सुंदर युवक आ गए। पवित्र शहीद के शरीर को कब्रिस्तान तक पहुँचाने के बाद, उसने उसकी कब्र में एक छोटा पत्थर का शिलालेख रखा जिस पर लिखा था:

– एक निर्मल मन, ईश्वर के प्रति एक स्वैच्छिक बलिदान, और मातृभूमि की मुक्ति।

इस शिलालेख वाली पट्टिका को पवित्र शहीद के सिर के पास रखने के बाद, वह युवक तुरंत अदृश्य हो गया; और सभी को एहसास हुआ कि वह ईश्वर का एक स्वर्गदूत था।

इसके बाद, राज्यपाल कैटियिन अपने सैनिकों को लेकर पैनोर्म शहर के लिए रवाना हुआ, ताकि वह पवित्र शहीद अगथिया की संपत्ति पर कब्ज़ा कर सके और उसकी सारी संपत्ति अपने नाम कर सके। रास्ते में, उसे एक गहरी नदी पार करनी पड़ी। वह अपने घोड़ों के साथ एक नाव पर चढ़ा और नदी पार करने के लिए निकल पड़ा। अचानक घोड़ों ने उस पर हमला कर दिया; एक ने अपने दाँतों से उसका चेहरा नोच डाला, जिससे उसका चेहरा पूरी तरह विकृत हो गया, जबकि दूसरे ने उसे लात मारना शुरू कर दिया, और तब तक मारता रहा जब तक कि उसने उसे नदी में नहीं फेंक दिया, जहाँ वह डूब गया और एक दयनीय मृत्यु के साथ अपने दुष्ट जीवन का अंत कर लिया। उन्होंने उसके शरीर को बहुत देर तक ढूँढा, लेकिन उसे नहीं मिला: वह उसकी आत्मा के साथ ही नष्ट हो गया था। इसके बाद, किसी भी शाही शासक ने संत अगाथा के रिश्तेदारों को कोई नुकसान पहुँचाने की हिम्मत नहीं की। उनकी ख्याति दूर-दूर तक फैल गई, और उनके अवशेषों पर एक चर्च बनाया गया; जिस कपड़े में संत चलती थीं, उन्हें उनकी विनम्रता की याद दिलाने के लिए उनके ताबूत पर रखा गया[1672] ।

पवित्र शहीद अगथा की मृत्यु के एक साल बाद, कैटानिया शहर के पास माउंट एटना[1673] ने आग का लावा उगलना शुरू कर दिया, जो पहाड़ में एक दरार से एक शक्तिशाली नदी की तरह ज़ोरदार गर्जना के साथ बह रहा था, और ऊपर से पिघली हुई चट्टानों को इस तरह फेंक रहा था जैसे वे मोम हों। कैटानिया के निवासी बहुत डरे हुए थे, और अपने शहर के विनाश से भयभीत थे। तब न केवल ईसाइयों ने, बल्कि अविश्वासियों ने भी – सभी पवित्र शहीद अगाथा के चर्च में इकट्ठा होकर, उसके वस्त्र लेकर, शहर की ओर बढ़ती आग के सामने खड़े हो गए, और इन वस्त्रों को ढाल की तरह बनाकर, विनाशकारी और भयानक लपटों से अपनी रक्षा की। आग, जैसे पवित्र शहीद के वस्त्रों के सामने लज्जित हो, पीछे हट गई और बुझ गई। इस चमत्कार को देखकर, निवासी बहुत प्रसन्न हुए, उन्होंने ईश्वर की स्तुति की, और पवित्र शहीद अगथा की महिमा की। यह चमत्कार पांच फरवरी को हुआ, उसी दिन जब पवित्र शहीद ने अपने प्रभु मसीह के लिए पीड़ा सहन की, जिनकी महिमा युगों-युगों तक हो। आमीन।

कॉन्टाकियन, स्वर 4:

चर्च आज महिमामय बैंगनी रंग से सुसज्जित हो, शहीद अगाथा के पवित्र रक्त में सराबोर: हे पुकारने वाली, कैटानिया की स्तुति, आनन्दित हो।

पवित्र शहीद थियोडुलिया का कष्टकथा

५ फरवरी को स्मरण किया जाता है

[1671] संत अगथा की मृत्यु वर्ष 251 में हुई।

[1672] संत अगथा के अवशेषों को 1040 में कॉन्स्टेंटिनोपल ले जाया गया था, लेकिन 1126 में उन्हें कैटानिया वापस कर दिया गया।

[1673] एटना सिसिली द्वीप पर, कैटानिया शहर के पास एक ज्वालामुखी है।

रोमन सम्राटों[1674] के शासनकाल के दौरान, अनाज़रवे शहर के राज्यपाल[1675] एक पेलैजियिस नामक व्यक्ति था, जो ईसाइयों का एक क्रूर उत्पीड़क था। उसने अपने सेवकों को आदेश दिया कि वे उसके प्रांत में ईसाइयों की तलाश करें, उन्हें पकड़कर उसके सामने न्याय के लिए लाएं, जहाँ, शाही फरमान सुनने के बाद, उन्हें देवताओं की पूजा करनी थी। दासों ने आदेश को पूरा करने के लिए निकलते हुए थियोडुलिया नाम की एक ईसाई महिला को पकड़ लिया। यातनाओं से कम और अविश्वासियों द्वारा अपवित्र किए जाने की संभावना से अधिक भयभीत होकर, उसने उन्हें बहुत सारा सोना देकर जाने की विनती की। लेकिन उन्होंने सोना लेने से इनकार कर दिया और थियोडुलिया को अपने राज्यपाल के सामने ले आए, और उससे कहा कि उसने उन्हें सोने की रिश्वत देने की कोशिश की थी। राज्यपाल ने सोना ठुकराने और उसे जाने न देने के लिए सेवकों की प्रशंसा की, और इस पर उन्हें उपहार देकर पुरस्कृत किया। वह स्वयं न्यायपीठ पर बैठ गया और इस धन्य महिला को अपने सामने बिठाकर उसने उसका नाम पूछा। उसने उत्तर दिया:

'मैं एक ईसाई हूँ।'

तब राज्यपाल पेलैजियिस ने कहा:

'तुम्हें यातनाएँ देने से पहले, अपना नाम बताओ।'

संत ने उत्तर दिया:

'मैं पहले ही कह चुका हूँ, और मैंने झूठ नहीं बोला, कि मेरा नाम क्रिश्चियिन है। यह मेरा सम्मानजनक और शाश्वत नाम है; लोग मुझे थियोडुलिया कहते हैं। मैं ईसाई माता-पिता के यहाँ जन्मी थी और ईसाई धर्म में अच्छी परवरिश पाई।'

राज्यपाल ने कहा:

– मैं देखता हूँ कि तुम एक पागल औरत की तरह मेरा जवाब दे रही हो।

'तुम स्वयं पागल हो,' संत थियोडुलिया ने उत्तर दिया, 'क्योंकि ईश्वर को त्यागकर तुम एक पत्थर की पूजा करते हो।'

शासक ने जारी रखा:

उसने कहा, 'मैं तुम्हें एक बहन के रूप में आग्रह करता हूँ, देवताओं को बलिदान चढ़ाओ, और फिर मेरी संपत्ति पर जाकर आनंद लो, और तुम्हारा बहुत सम्मान किया जाएगा।'

थेओडुलिया ने उत्तर दिया:

'जाओ और अपने पिता—शैतान—के साथ अपनी संपत्ति पर आनंद लो—और तुम दोनों अनंतकालिक यातनाओं के वारिस बनोगे।'

इस पर शासक ने कहा:

'मैं जानती हूँ कि तुम स्त्रियाँ जल्दी क्रोधित होती हो और चिड़चिड़ी होती हो, और तुम अधिकारियों के लिए परेशानी खड़ी करती हो; परन्तु मैं जल्दी क्रोधित नहीं होती, और मैं तुम्हें कोमलता से समझाती हूँ, कि तुम मेरे अधीन हो जाओ और देवताओं को बलिदान चढ़ाओ, और अपनी आत्मा पर विनाश न लाओ।'

संत ने उत्तर दिया:

ईश्वर के प्रति विफादार रहकर, मैं अपनी आत्मा को नष्ट नहीं कर रही हूँ, बल्कि उसका उद्धार कर रही हूँ, जबकि मेरा शरीर पृथ्वी पर लौट जाएगा; इसलिए, मैं आपसे किसी पागल औरत की तरह बात नहीं कर रही हूँ: यदि आप चाहें तो मेरे शरीर को यातना दें। लेकिन ईश्वर, मेरे धैर्य और उनके लिए पीड़ा सहने की मेरी पूर्ण तत्परता को देखकर, मुझे अपनी सहायता प्रदान करेंगे, क्योंकि उन्होंने स्वयं हमारे लिए क्रूस पर पीड़ा सहकर अपने लोगों का उद्धार किया।

पेलाजियिस ने उससे उत्तर दिया:

'तुम्हें लगता है कि इन शब्दों से तुम मेरे क्रोध को भड़का सकती हो, ताकि मैं तुम्हें और जल्दी नष्ट कर दूँ; लेकिन यह जान लो: मैं तुम्हें लंबे समय तक यातना दूँगा, तुम्हारे एक-एक अंग को काटता जाऊँगा, जब तक कि मैं तुम्हें नष्ट नहीं कर दूँ।'

'हे चालाक और लालची भेड़िये,' संत ने उत्तर दिया, 'तुम उस भेड़ को कैसे नष्ट कर सकते हो जिसका चरवाहा मसीह है, जो सभी का सृष्टिकर्ता है? क्या कोई मुझे उसकी पकड़ से छीन सकता है?'

[1674] डायोक्लेटियिन (पूर्व में) और मैक्सिमियिन (पश्चिम में) ने 284 से 305 तक शासन किया।

[1675] *अनाज़ारबस* – एशिया माइनर के दक्षिण-पूर्व में, सिलिसिया का *एक शहर*।

तब यातना देने वाले ने, क्रोधित होकर, संत को नग्न कर के उसके बालों से एक सरू के पेड़ से लटकाने और लाल-गरम लोहे के हुकों से यातना देने का आदेश दिया, जो उसके स्तन-मुण्डों को झुलसा रहे थे। लेकिन संत ने, अपनी यातनाओं के बीच, कहा:

'तुम देख रही हो, राज्यपाल, कि मुझे कोई दर्द महसूस नहीं हो रहा है – फिर भी तुम, जैसा कि मैं देख सकती हूँ, अधिक पीड़ित हो और मुझसे पराजित हो गए हो।'

शासक ने उससे उत्तर दिया:

'हमारे देवता दयालु हैं और जानते हैं कि तुम उनके पास लौटोगी; इसलिए, तुम पर दया करके, उन्होंने तुम्हारा दर्द दूर कर दिया है ताकि तुम यातना महसूस न करो।'

लेकिन संत ने कहा:

'वे कौन से देवता हैं जो मुझे बचा रहे हैं? उन्हें मेरे सामने लाओ, ताकि मैं उनका सम्मान कर सकूँ।'

ये शब्द सुनकर राज्यपाल बहुत प्रसन्न हुआ और उसने आदेश दिया कि उसे तुरंत खोल दिया जाए और हैड्रियन के मंदिर में ले जाया जाए, जिसकी वे एक जीवित और शक्तिशाली देवता की तरह पूजा करते थे[1676] । इस मंदिर में प्रवेश करते ही, संत ने हैड्रियन की मूर्ति देखी और सच्चे ईश्वर से प्रार्थना करने के बाद, मूर्ति पर फूँक मारी, जिस पर वह तुरंत बिजली गिरने से टूटकर तीन टुकड़ों में बिखर गई। बाहर आकर, संत ने राज्यपाल से कहा:

'अंदर जाओ और अपने देवता की सहायता करो, क्योंकि वह गिर गया है और टुकड़े-टुकड़े हो गया है।'

अंदर प्रवेश करने पर, राज्यपाल ने मूर्ति को जमीन पर टूटे हुए तीन टुकड़ों में पड़ा हुआ देखा, और उस पर जोर-जोर से रोया। हैड्रियन की मूर्ति के विनाश की खबर राजाओं तक पहुँची; उन्होंने इस अफवाह की सच्चाई की पुष्टि करने के लिए अपने दरबार से एक आदमी को अनाज़रव शहर भेजा, और यदि यह सच साबित होता, तो शहर के राज्यपाल को जंगली जानवरों द्वारा नोंच डाले जाने के लिए सौंप देना था। यह जानकर, राज्यपाल रोते हुए संत थियोडुलिया के सामने गिर पड़ा, और उसने उनसे अपने देवता को उसकी पूर्व अवस्था में लौटाने की विनती की, यह वादा करते हुए कि यदि वह इस देवता को उसी स्थान पर खड़ा हुआ देखेगा जहाँ वह पहले खड़ा था, तो वह ईसाई बन जाएगा।

संत ने सर्वशक्तिमान ईश्वर से एक भक्तिपूर्ण प्रार्थना करने के बाद, मूर्ति को उसके स्थान पर अखंड रूप से उठने का आदेश दिया; और मूर्ति तुरंत उठकर, अखंड रूप से, उसी स्थान पर चली और खड़ी हो गई जहाँ वह पहले खड़ी थी। राजाओं द्वारा भेजा गया आदमी, मूर्ति को अखंड देखकर, शासक को कोई नुकसान पहुँचाए बिना राजाओं के पास लौट आया। इसके बाद, राजाओं की ओर से पेलाजियस को एक आदेश मिला, जिसमें उसे थियोडुलिया को विभिन्न यातनाएँ देने और उसे मौत की सज़ा देने का आदेश दिया गया। हालाँकि, पेलैजियस न केवल ईसाई बनने का अपना वादा पूरा करने में विफल रहा, बल्कि उसने सेंट थियोडुलिया द्वारा दिखाई गई दया को भी भूल गया; और इसलिए उसने उसे एक बार फिर यातनाएँ दीं, यह आदेश देते हुए कि उसके पैरों को लाल-गरम लोहे की छड़ों से भेदा जाए। जब यह उसके साथ किया जा रहा था, तो टीकाकार[1677] हेलाडियस पेलैजियस के पास आया और कहा:

'मैं आपके प्रभुत्व से विनती करता हूँ, इस युवती को मेरे अधिकार में सौंप दें, और मैं उसे देवताओं की पूजा करने के लिए मना लूँगा; लेकिन अगर मैं ऐसा करने में असफल रहा, तो आप मेरा सिर काट सकते हैं।'

गवर्नर ने संत को उसके अधिकार में सौंप दिया। फिर उसने पाँच लंबे कील निकाले और एक कील उसके बाएँ कान में ठोक दिया जो दाहिनी ओर से निकल गया, और एक कील उसके दाहिने कान में ठोक दिया जो बाईं ओर से निकल गया; उसने तीसरा कील उसके माथे में ठोक दिया, और दो अन्य कीलों से उसके स्तनों को भेद दिया। हालाँकि, संन्यासिनी ने स्वर्ग की ओर अपनी दृष्टि उठाई और ईश्वर से धैर्य प्रदान करने की प्रार्थना की – और तुरंत उसे ईश्वर की सहायता

[1676] यह संभवतःएक ऐसे मंदिर को संदर्भित करता है जिसमें रोमन सम्राट हैड्रियन (*जो 117 से 138 तक शासन किया था*) की मूर्ति या प्रतिमा थी। रोमनों ने, जैसा कि सर्ववदित है, अपने दिवंगत सम्राटों को देवताओं के पैंथियन (*तथाकथित 'सीज़र्स का* पंथ') में शामिल किया, जिन्हें वे दिव्य सम्मान देते थे, बलिदान चढ़ाते थे, और इसी तरह करते थे। सम्राटों की यह पूजा अगस्टस के साथ शुरू हुई और मूर्तिपूजक रोमन साम्राज्य की पूरी अवधि के दौरान जारी रही। केवल दिवंगत सीज़र्स (यानी सम्राटों) को ही देवता नहीं बनाया गया, बल्कि जीवित सम्राटों को भी। यह श्रद्धा सभी के लिए अनिवार्य थी। अपने घर में अपने पेनेट्स (घरेलू देवताओं) के बीच, शासक सम्राट की एक प्रतिमा रखना अनिवार्य माना जाता था। सीज़र्स के पंथ का पालन पूरे रोमन साम्राज्य में सख्ती से लागू किया जाता था, और जो कोई भी लापरवाही या अनादर के कारण सम्राट को श्रद्धांजलि देने से इनकार करता था, उसे सबसे गंभीर अपराधियों *के रूप में* माना जाता था। रोमन शासकों ने ईसाइयों से भी सम्राटों की इस धार्मिक श्रद्धा की मांग की।

[1677] *एक कमेंटारियस* एक अधिकारी था जो कैदियों की देखरेख करता था और उनका रिकॉर्ड रखता था।

और चंगाई मिली: कीलें बाहर गिर गईं और वह बिना किसी चोट के बच गई। हेलाइडियस ने संत को अपने घर में ले लिया और चापलूसी से उसे मनाने लगा, उसे अपने साथ देवताओं की पूजा करने के लिए प्रेरित करते हुए, 'ताकि मुझे भी,' उसने कहा, 'नगरपाल से सम्मान मिले, और आपको स्वयं राजाओं द्वारा महान महिमा प्राप्त हो'।

लेकिन संत ने उससे उत्तर दिया:

'तुम्हारे लिए यह बेहतर होगा कि तुम खुद यकीन करो और ईसाई बन जाओ, ताकि तुम्हें हमारे प्रभु यीशु मसीह के राज्य में क्षणिक नहीं बल्कि शाश्वत सम्मान प्राप्त हो, जो जीवितों और मृतकों का न्याय करेंगे और प्रत्येक व्यक्ति को उनके कर्मों के अनुसार पुरस्कृत करेंगे।'

तब हेल्लाइडियस ने उससे कहा:

'पूरा सच बताओ, मसीह के सेवक, क्योंकि तेरे वचनों से मेरा हृदय भीतर से चंचल हो उठा है।'

तब थियोडुलिया उससे बोलने लगी:

'यह संसार और इसकी सारी संपत्ति, और इसकी सारी महिमा, क्षणिक हैं, लेकिन आने वाला युग अनंत है: और जो यहाँ अच्छा करता है उसे उस युग में अच्छा प्रतिफल मिलेगा; लेकिन जो इस संसार में बुराई करते हैं उन्हें वहाँ हमेशा के लिए यातना दी जाएगी; और जो मूर्तियों की पूजा करते हैं, जैसे तुम, उन्हें विशेष रूप से अनंत यातनाओं में डाल दिया जाएगा।'

इस प्रकार की शिक्षाओं के माध्यम से, संत थियोडुलिया ने हेलाडियस को सत्य के ज्ञान की ओर ले गईं, और उसने, भावनाओं से भरे हृदय से, उनसे कहा:

'मैं आपसे विनती करता हूँ, लेडी थियोडुलिया, मैंने आपसे जो अन्याय किया है, उसे मुझसे न रंजिश बनाएँ, बल्कि मेरे लिए अपने ईश्वर से प्रार्थना करें, कि मैं भी ईसाई बन सकूँ।'

जब सुबह हुई, तो हेलाडियस, थियोडुलिया के साथ, राज्यपाल के पास गए और कहा:

'मैं सच्चे ईश्वर की सेविका को धर्मपरायण और धन्य मार्ग से भटका नहीं सकता; इसके विपरीत, उसने मुझे सही मार्ग पर स्थापित किया, मुझे अज्ञानता के अंधकार से मुक्ति दिलाई और मुझे मसीह, सच्चे ईश्वर की ओर ले गई, जिन पर मैं बिना किसी संदेह के विश्वास करता हूँ, और जिनका पवित्र नाम मैं स्वीकार करता हूँ और जिनकी मैं पूरे हृदय से पूजा करता हूँ।'

ये शब्द सुनते ही, राज्यपाल ने आदेश दिया कि उसकी तलवार से तुरंत सिर कलम कर दिया जाए और उसके शरीर को समुद्र में फेंक दिया जाए। इस प्रकार चौबीस जनवरी को उनका बलिदान पूरा हुआ। जहाँ तक संत थियोडुलिया का सवाल है, उन्हें एक भयंकर जलती हुई भट्टी में फेंक दिया गया, लेकिन वे बाल-बाल सुरक्षित रहीं। इसके बाद, यातना देने वाले ने धन्य थियोडुलिया के लिए एक कड़ाही गर्म करने का आदेश दिया; उसने उन्हें उस पर लिटा दिया और उनके ऊपर उबलता हुआ पिच, मोम और तेल डाल दिया; लेकिन जिस आग से उसे गर्म किया गया था, उसके कारण वह टुकड़ों में टूट गया, और चिंगारियों और लपटों ने पास खड़े कई लोगों को झुलसा दिया; गवर्नर स्वयं, लपटों में घिरकर, एक भयानक मृत्यु को प्राप्त हुआ, जबकि संत थियोडुलिया एक बार फिर सुरक्षित रहीं।

इस चमत्कार को देखकर बहुत से लोग मसीह में विश्वास करने लगे, जिनमें सम्माननीय नागरिक मकरियस और एवाग्रियस भी शामिल थे।

इसके बाद, अविश्वासियों ने भट्टी को फिर से प्रज्वलित किया, और उसमें संत थियोडुलिया को मैकारियस और इवाग्रियस के साथ-साथ मसीह में विश्वास करने वालों की भीड़ के साथ डाल दिया। और उन सभी ने वहाँ प्रार्थना करने के बाद, अपना अंत पाया, और अनंत जीवन में प्रवेश किया, जहाँ उन्हें विजेता की माला पहनाई गई है और वे सभी संतों के साथ आनंद मनाते हैं, और पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा की अनंतकाल तक महिमा करते हैं। आमीन।

हमारे पवित्र पिता थेओडोसियस, चेरनिहिव के आर्चबिशप का जीवन

स्मरणोत्सव 5 फरवरी को

चेर्नगिोव के आर्चबशिप संत थयिोडोसयिस, ज़ाडनप्रिोवये क्षेत्र के कुलीन उग्लचि परविार से थे[1678] । थयिोडोसयिस के पति, नकिति, लटिलि रूस में एक पादरी थे; उनकी माँ का नाम मारयि था। उनके माता-पति ने अपने पुत्र का पालन-पोषण ईश्वर के भय और ईसाई भक्त में कयि; उनकी शक्षिाओं के प्रभाव में, बहुत कम उम्र से ही उसने उस भक्त के पहले संकेत दखिाए जो उसके पूरे बाद के जीवन की वशिषता बनेंगे। स्वभाव से वनिम्र, आज्ञाकारी और प्रभावशील, थयिोडोसयिस बचपन से ही ईश्वर के प्रत गिहरे प्रेम और ईश्वर के घर के प्रत उत्साह से भरपूर थे। घर पर अपनी प्रारंभकि शक्षिा प्राप्त करने के बाद, जहाँ उन्होंने पढ़ना और लखिना सीखा, थयिोडोसयिस को उनके पति ने आगे की शक्षिा के लए कीव-ब्रैट्सक एपफिेनी स्कूल[1679] भेजा। यहाँ, धर्मनष्ठि गुरुओं के प्रभाव और मार्गदर्शन में, पवत्रि धर्मग्रंथों और पवत्रि पतिाओं की कृतयिों के अध्ययन में स्वयं को समर्पति करते हुए, संत ने अपने जीवन को उनके समान ढालने का प्रयास कयि; यहाँ वह ऑर्थोडॉक्स वश्विास के सत्यों की अपनी समझ और अपनी धार्मकिता के कार्यों के माध्यम से आत्मा में वकिसति और मजबूत हुआ। और यहीं, स्कूल में पढ़ाई के दौरान, युवा थयिोडोसयिस ने पूजनीय एंथनी और थयिोडोसयिस तथा गुफाओं के अन्य तपस्वयिों - प्राचीन कीव के प्रार्थना के महान पुरुषों और दव्यि संरक्षकों - के दव्यि जीवन का यथासंभव अनुकरण करने की इच्छा महसूस की, जनिकी कृपापूर्ण सुरक्षा में वह रहता और पला-बढ़ा था, और जनिके अक्षय, महमिामय अवशेष वह लगातार अपने सामने देखता था। अपने खाली समय में, थयिोडोसयिस के पसंदीदा शौक प्रार्थना, ईश्वर पर मनन, और ईश्वर के वचन का पाठ करना थे। यहीं पर संत थयिोडोसयिस को उनकी उत्कृष्टता लाजर बारानोवचि द्वारा आयोजति भजन वद्यिालय में चर्च के कोरल गायन से अच्छी तरह परचिति होने का अवसर मलि। आम तौर पर, कीव-ब्रैट्सक एपफिेनी स्कूल, जसिकी स्थापना पोलशि-कैथोलकि पादरयिों और जेसुइट्स[1680] के हमलों के खलिाफ ऑर्थोडॉक्स धर्म की रक्षा और समर्थन के लए की गई थी, अपनी सभी शक्षिा को पूरी तरह से ऑर्थोडॉक्स ईसाई भावना में संचालति करता था, जो उसके छात्रों की युवा आत्माओं में व्याप्त थी; और इसके शक्षिकों में ऑर्थोडॉक्स आध्यात्मकि प्रबोधन के सच्चे दग्गिज शामलि थे। इसमें कोई संदेह नहीं है कि संत थयिोडोसयिस ने वहाँ अपने समय की उच्चतम और उत्तम शक्षिा भी प्राप्त की, जसिका उद्देश्य उनकी आत्मा की सभी समृद्ध प्रतभिाओं के पूर्ण वकिास को बढ़ावा देना था।

कएिव-ब्रात्स्क एपफिेनी स्कूल से अपनी शक्षिा पूरी करने के तुरंत बाद, थयिोडोसयिस ने संन्यास की शपथ ली, एक ऐसा मार्ग जसिके लए उनकी आत्मा—आध्यात्मकि उपलब्धयिों के लए तीव्र आकांक्षा रखती हुई—स्कूल में रहते हुए ही प्रयास कर रही थी। और इस प्रकार, अभी युवा ही थे कि मसीह के इस सच्चे तपस्वी ने इस संसार की सभी भोग-वलिास को शून्य समझा, इस कलहपूर्ण, व्यर्थ संसार को पीछे छोड़ दयि, और कीव-पेचेरस्क लाव्रा में मठवासी संन्यास की शपथ ली, तथा नाम बदलकर थयिोडोसयिस रख लयि, कएिव-पेचेरस्क लाव्रा के महान तपस्वी और रूस में सामुदायकि संन्यासी जीवन के संस्थापक - आदरणीय थयिोडोसयिस के सम्मान में, जनिका वह बहुत गहराई से सम्मान करते थे और जनिसे वह कएिव में छात्र रहते हुए भी अक्सर मध्यस्थता की प्रार्थना करते थे। इस समय से, थयिोडोसयिस ने कठोर तपस्या का जीवन शुरू कयि, जसिने जल्द ही उन्हें न केवल मठवासी हलकों में बल्कि सामान्य लोगों के बीच भी प्रसद्धि दिलिाई।

उस युवा तपस्वी की वनिम्रता और अनुकरणीय जीवन ने कीव के तत्कालीन मेट्रोपॉलटिन, डायोनसियिस[1681] (वालाबन) का ध्यान आकर्षति कयि, जन्होंने उन्हें कीव-सोफयि कैथेड्रल का आर्चडीकन नयिुक्त कयि, जहाँ उन्होंने

[1678] परंपरा के अनुसार, उग्लचि शहर से दुश्मन को खदेड़ने में उनकी वशिष्टि सेवा के लए सेंट थयिोडोसयिस के एक पूर्वज को यह उपनाम प्रदान कयि गया था।

[1679] यह रूस का सबसे प्रसद्धि सबसे पुराना स्कूल है, जसिकी स्थापना 16वीं सदी के अंत में हुई थी; आज यह कीव थयिोलॉजकिल अकादमी है, जो कीव के पोडलि में ब्रैटस्की मठ में स्थति है।

[1680] कीव-ब्रैट्सक एपफिेनी स्कूल, जो पूरे दक्षणि ऑर्थोडॉक्स रूस के लए शक्षिा का मुख्य केंद्र था, साथ ही साथ इसने अपनी दीवारों के भीतर दक्षणि रूसी चर्च के भीतर ऑर्थोडॉक्स धर्म के कई प्रसद्धि रक्षकों को भी जन्म दयि, जो अपने दुश्मनों - कैथोलकिों और उनके वचिारों वाले यूनएिट्स, जन्होंने ऑर्थोडॉक्स धर्म को ठुकराकर खुद पर पोप की सर्वोच्चता को स्वीकार कर लयि था, और उससे भी अधकि कपटी जेसुइट्स, के नरिंतर हमलों के अधीन था, कैथोलकि संप्रदाय के भक्षिुओं, जन्होंने हर संभव तरीके से हर जगह कैथोलकि धर्म और पोप की सर्वोच्चता स्थापति करने का लक्ष्य खुद के लए नरि्धारति कयि था।

[1681] मेट्रोपॉलटिन डायोनसियिस ने कीव मेट्रोपोलसि का शासन आधे वर्ष से अधकि समय तक नहीं चलाया। उन्हें फरवरी 1658 में मेट्रोपोलसि में नयिुक्त कयि गया था और उन्होंने जुलाई 1658 में कीव छोड़ दयि, हालांकि नाममात्र के लए उन्हें कीव के मेट्रोपॉलटिन के रूप में सूचीबद्ध कयि जाना जारी रखा गया।

मेट्रोपॉलटिन डायोनसियिस के कीव से हटने तक बड़ी सम्मान के साथ सेवा की, जसिके बाद उन्हें मेट्रोपॉलटिन के कैथेड्रल आवास का व्यवस्थापक नयिुक्त कयिा गया। हालाँकि, सांसारकि हलचल से वचिलति, कीव में जीवन इस वनिम्र संन्यासी की मौन की आंतरकि लालसा और ईश्वर के साथ नरिंतर प्रार्थनापूर्ण संगतमिें रहने की इच्छा को संतुष्ट नहीं कर सका। इसलिए, धर्मपरायणता और मठवासी मौन के प्रतप्रिेम से प्रेरति संत थयिोडोसयिस ने जल्द ही कीव छोड़ दयिा और दूरस्थ, छोटे क्रुपति्स्की बटुरस्कि मठ[1682] में बस गए, जो लंबे समय से अपने मठवासी जीवन की कठोरता के लिए प्रसद्धि था, जहाँ उन्हें एक हायरोमोंक के रूप में अभषिक्ति कयिा गया। लेकनि इस शक्षिति, धार्मकि और सक्रयि भक्षिु ने दुनयिा से जतिना भी छपिने की कोशशि की, वह उच्च धार्मकि अधकिारयिों की नज़रों से नहीं बच सका। संत थयिोडोसयिस क्रुपति्स्की मठ में अधकि समय तक नहीं रहे; वे अपनी आध्यात्मकि बुद्धि और अपने कठोर तपस्वी, सदाचारी जीवन के कारण मठ के अन्य साधुओं से पूरी तरह अलग थे, और यही कारण है कि, कुछ ही समय बाद, उन्हें कीव के धर्मप्रांत में स्थति कर्सून मठ का मठाध्यक्ष नयिुक्त कयिा गया। संत थयिोडोसयिस की नई नयिुक्तनि े उनकी आंतरकि आकांक्षाओं को संतुष्ट कयिा। रोस नदी के एक द्वीप पर, सांसारकि आवासों से दूर, एक सुरम्य वातावरण में स्थति कर्सुन मठ[1683] , संत की एकांत और सांसारकि दखिावे से दूर धर्मपरायणता के कार्यों की इच्छा के लिए पूरी तरह से उपयुक्त था। यहाँ, उन्होंने अपने धर्मपरायण, वास्तव में तपस्वी जीवन के माध्यम से मठ समुदाय के लिए एक चमकदार उदाहरण प्रस्तुत कयिा और मठ के प्रबंधन में एक बुद्धमिानीपूर्ण क्षमता का प्रदर्शन कयिा। परणिामस्वरूप, उन्हें जल्द ही प्रसद्धि कीव वडिुबचिी मठ[1684] का मठाधीश नयिुक्त कयिा गया। यह प्राचीन मठ, कुछ ही समय पहले, यूनएिट्स और पोलशि कैथोलकिों के हाथों में था, जनि्होंने इसकी बर्बादी कर दी थी। अधकिांश भक्षिु बखिर गए थे, क्योंकि कोई भी एक खंडहर मठ में जाकर रहने की इच्छा नहीं रखता था; मठ की इमारतें जर्जर हालत में थीं, और मठ की कुछ जमीनों पर अन्यायपूर्वक कब्जा कर लयिा गया था। सामान्य रूप से, मठ को आंतरकि और बाहरी दोनों तरह से मरम्मत की आवश्यकता थी, और इसे उसकी पूर्व स्थतिि में बहाल करने के लिए बहुत प्रयास और कौशल की आवश्यकता थी। लेकनि थयिोडोसयिस ने हम्मित नहीं हारी और ईश्वर की मदद से, उन्होंने अपना काम सफलतापूर्वक पूरा कयिा, और प्रसद्धि प्राचीन मठ को उसकी पूर्व वैभव और व्यवस्था में बहाल कर दयिा। उन्होंने वभिन्नि स्थानों पर भूमकि लिबंदी के लिए लटिलि रूस के हेतमैन से याचना की और ज़ार से हर पाँच साल में अपने भक्षिुओं को भीख माँगने और ज़ार की कृपा प्राप्त करने के लिए मास्को भेजने की अनुमतप्रिाप्त की, जो उन्हें उदारतापूर्वक मलिी। साथ ही, उन्होंने मठ की इमारतों और चर्चों को बहाल कयिा और, आम तौर पर, मठ के बाहरी स्वरूप को नया कयिा; उन्होंने मठ में दैवीय सेवाओं के क्रम और वैभव को सुनश्चिति करने के लिए वशिेष ध्यान रखा: चर्च के भजन में पारंगत, संत थयिोडोसयिस ने अपने मठ में एक ऐसा उत्कृष्ट गायन मंडली बनाया कि वह न केवल कीव और पूरे लटिलि रूस में, बल्कि मॉस्को में भी प्रसद्धि हो गया; इस कारण से, मॉस्को के अनुरोध पर, थयिोडोसयिस ने वहां गायन का आयोजन करने के लिए गायक भेजे। लेकनि इससे भी अधकि ध्यान देने योग्य हैं मठ के अनुशासन को बहाल करने और वडिुबचिी मठ के आंतरकि जीवन को व्यवस्थति करने के लिए इस सच्चे ख्रीस्तीय तपस्वी के प्रयास। मठ के ध्येय के कर्तव्यों को लगन से नभिाते हुए, उन्होंने भक्षिुओं के लिए एक कठोर तपस्वी जीवन का एक चमकता हुआ उदाहरण प्रस्तुत कयिा, जसिसे मोक्ष की तलाश में आने वाले कई लोग उनके मठ की ओर आकर्षति हुए। साथ ही, वडिुबचिी मठ के भक्षिुओं में सच्ची तपस्या की भावना को और भी गहराई से स्थापति करने की इच्छा से, संत ने मठ की भूमपिर, मोज़रि जलि में[1685] , एक छोटा आश्रम स्थापति कयिा, जो भ्रातृत्व के उन सदस्यों के लिए था जो पूर्ण एकांत और कठोर तपस्या के अभ्यास की तलाश में थे।

हालाँकि बाद में, उद्धारकर्ता के वचनों के अनुसार: *'जगत में तुम्हें क्लेश होगा; परन्तु धीरज धरो: मैं जगत पर जय प्राप्त कर चुका हूँ* (यूहन्ना 16:33), मसीह की दाख की बारी में इस वश्विासयोग्य मजदूर, संत थयिोडोसयिस ने

[1682] बातुरीन शहर के पास, जो अब चेर्नगिोव गवर्नरेट में है, कोनोतोप शहर से 30 वर्स्ट की दूरी पर; 16वीं शताब्दी में स्थापति।

[1683] कोनेव्स्की जलि, कीव गवर्नरेट में। – सेंट थयिोडोसयिस को लगभग 1661 में कोर्सुन मठ का मठाधीश नयिुक्त कयिा गया था।

[1684] यह 1664 में हुआ था। कीव-वडिुबचिी मठ कीव धर्मप्रांत के सबसे पुराने और सबसे महत्वपूर्ण मठों में से एक था; 11वीं शताब्दी के अंत में स्थापति; 17वीं शताब्दी की शुरुआत में, पोलशि शासन के दौरान, वहाँ संघ की स्थापना की गई थी, लेकनि बाद में इसे कीव के मेट्रोपॉलटिन के अधकिार क्षेत्र में वापस कर दयिा गया; यह अब एक दूसरे दर्जे का पुरुष मठ है।

[1685] मनि्स्क गवर्नोरेट में, 'मखिाइलोव्श्चनि' नामक एक द्वीप था, जो कीव-वडिुबचिी मठ का था; वहीं, 1680 में, संत थयिोडोसयिस ने एक छोटे से स्केट की स्थापना की, और इसके मठाध्यक्ष के रूप में वडिुबचिी मठ के एक कट्टर तपस्वी, हरिोमोंक जॉब ओपालस्की को नयिुक्त कयिा।

बदनामी और मानवीय ईर्ष्या के कारण कई अन्यायपूर्ण कष्ट और दुख झेले[1686] – फरि भी उनके तपस्वी जीवन और संतों के प्रतबिुद्धमिानी भरे मार्गदर्शन ने उन्हें कीव के लोगों का सार्वभौमकि सम्मान दलिाया। वशिेष रूप से, संत थयिोडोसयिस को कीव मेट्रोपोलसि के तत्कालीन लोगम टेनेन्स, चेरनहिभि के आर्चबशिप लाज़ार बारानोवचि[1687] , द्वारा बहुत सम्मान दयिा जाता था और वे उनके प्रयि थे, जो पहले कीव-एपफिेनी ब्रदरहुड स्कूल में उनके शक्षिक और प्रधानाचार्य रह चुके थे। इस अवधि के एक पत्र में, उनकी उत्कृष्टता लाजर ने भवष्यिवाणी करते हुए अपनी इच्छा व्यक्त की कि 'उनका (थयिोडोसयिस) नाम स्वर्ग में लखिा जाए'। कीव मेट्रोपोलसि के लोगम टेनेन्स के रूप में, संत लाजरस ने थयिोडोसयिस को, जो तब भी वायडुबचिी के आर्चमिांड्राइट थे, मेट्रोपोलसि के लिए अपना प्रतनिधि नियुक्त कयिा[1688] । बाद में, जब लुट्स्क के बशिप गेदयिन[1689] को लटिलि रूस द्वारा कीव का मेट्रोपॉलटिन चुना गया, तो लाज़ार बारानोवचि ने थयिोडोसयिस को - एक ऐसे व्यक्ति के रूप में जन्हिोंने लटिलि रूस की चर्च की व्यापक रूप से सेवा की थी[1690] - एक अन्य सम्मानति मठाधीश के साथ चुनाव की पुष्टि का अनुरोध करने के लिए भेजा। इससे, संत लाजरस और लटिलि रूस के अन्य धार्मकि और धर्मनरिपेक्ष गणमान्य व्यक्तयिों ने स्पष्ट रूप से थयिोडोसयिस को उच्चतम पद धारण करने के लिए वशिेष रूप से योग्य और सक्षम व्यक्ति के रूप में प्रस्तुत करना चाहा। साथ ही, मास्को में, संत थयिोडोसयिस ने वडिुबचिी मठ को मास्को में दान इकट्ठा करने के लिए प्रतनिधि भेजने की अनुमति देने वाले एक ज़ार के फरमान के लिए मध्यस्थता की। उस समय से, हर उपयुक्त अवसर पर, उग्लचि के थयिोडोसयिस को उच्चतम पद के लिए एक योग्य उम्मीदवार के रूप में देखा जाने लगा। इस प्रकार, कीव के मेट्रोपॉलटिन गेडयिन की मृत्यु के बाद, थयिोडोसयिस कीव मेट्रोपॉलसि के पद के लिए उम्मीदवारों में से एक थे। इससे भी पहले, उनकी उत्कृष्टता लाज़ार बारानोवचि के कहने पर, जो अपने धर्मप्रांत के मामलों को देखने के लिए कीव से चेरनहिभि लौटे थे, उन्हें चेरनहिभि बुलाया गया और चेरनहिभि के येलेट्स मठ का आर्चमिैंड्राइट नयिुक्त कयिा गया[1691] , ताकि वह उस मठ के दविंगत मठाध्यक्ष, प्रसद्धि इओनकियिस गोल्याटोव्स्की[1692] के उत्तराधकिारी बन सकें।

उस समय येलेट्स मठ अत्यंत गरीब और दयनीय था। इसके पास कुछ ही संपत्तयिाँ और थोड़ी साधु संपत्ति थी, और साधुओं को आम तौर पर अपनी आजीवकिा के लिए बहुत कठनिाइयों का सामना करना पड़ता था। नए मठाधीश ने अपने सुपुर्द कयि गए मठ का उत्साहपूर्वक संगठन करना शुरू कर दयिा। अपना पदभार संभालते ही, वह लटिलि रूस के हेतमैन,

---

[1686] संत थयिोडोसयिस को म्स्तस्लिाव और ओर्श के बशिप मेथोडयिस की साजशिों के कारण वशिेष रूप से बहुत कष्ट झेलना पड़ा, जसिने कीव के मेट्रोपॉलटिन पद पर दावा कयिा और अपने उद्देश्यों को आगे बढ़ाने के लिए, संत के साथ-साथ कीव के अन्य मठों के मठाध्यक्षों पर राजनीतकि साजशिों और मॉस्को सरकार के खलिाफ राजद्रोह का आरोप लगाकर उनकी बदनामी की; लेकनि सच्चाई तुरंत ही सामने आ गई, और उसी क्षण थयिोडोसयिस की बेगुनाही स्पष्ट रूप से साबति हो गई।

[1687] लाज़ार बारानोवचि – कीव-एपफिेनी ब्रदरहुड स्कूल के रेक्टर, 1657 से चेर्नगिोव के आर्चबशिप, दक्षणि रूस में एक प्रमुख राजनीतकि और साहत्यिकि हस्ती, कैथोलकिों और यूनएिट्स के खलिाफ एक उपदेशक और वाद-ववािदकर्ता; उन्हें अपने समकालीनों द्वारा बहुत सम्मान दयिा जाता था; रॉस्टोव के संत डेमेट्रयिस उन्हें 'चर्च का एक महान स्तंभ' कहते हैं।

[1688] उस समय, राजनीतकि उथल-पुथल के कारण कीव का धर्माध्यक्षीय पद काफी समय से खाली पड़ा था, जसिके परणिामस्वरूप इसके प्रशासन का अस्थायी रूप से दक्षणिी रूस के सबसे सम्मानति महा-धर्मगुरु, अर्थात् लाज़ार बारानोवचि को सौंपा गया था।

[1689] गेदेओन (स्वयिातोपोलक – चेर्टवर्टस्कि) – लुट्स्क के बशिप, 1686 से कीव के मेट्रोपॉलटिन, का 1690 में नधिन हुआ; वे वभिन्नि पुरोहतिों को लखिे अपने पत्रों और प्रेषणों के लिए जाने जाते हैं।

[1690] संत थयिोडोसयिस, सबसे सम्मानति पुरोहतिों में से एक के रूप में, उस प्रतनिधिमिंडल के सदस्य थे जसिे 1685 में मेट्रोपॉलटिन को चुनने वाली परषिद ने नव-नर्वािचति मेट्रोपॉलटिन के पास भेजा था, जो उनके चुनाव की खबर और कीव मेट्रोपोलसि के पदभार को संभालने के लिए एक नमिंत्रण लेकर गया था। उसी वर्ष, 'सबसे सम्मानति' और 'लटिलि रशयिन चर्च में प्रतष्ठिति' हेग्यूमेन थयिोडोसयिस को पेरयिास्लाव के हेग्यूमेन, जेरोम डुबनिा के साथ, ज़ार जॉन और पीटर अलेक्ज़ेवचि तथा पैट्रआर्क जोआकमि के पास लटिलि रशयिा द्वारा चुने गए मेट्रोपॉलटिन की पुष्टि के अनुरोध के साथ भेजा गया था। यह ध्यान देने योग्य है कि उस समय, लटिलि रूस से प्रतष्ठिति व्यक्तयिों को न केवल कोई याचकि पहुँचाने और, जब अवसर मलिता, तो उनके लिए मध्यस्थता करने के लिए मास्को भेजा जाता था, बल्कि उन्हें ज़ार और पैट्रआर्क के समक्ष उच्चतम पदों के लिए नयित सक्षम व्यक्तयिों के रूप में प्रस्तुत करने के उद्देश्य से भी भेजा जाता था। मास्को में भी यही दृष्टकिोण अपनाया गया था, जहाँ प्रतनिधिमिंडल के दोनों प्रतनिधियिों, वडिुबचिी और पेरयिास्लाव के मठाधीशों, का 'लटिलि रूसी चर्च के प्रतष्ठिति व्यक्तयिों' के रूप में स्वागत कयिा गया। इस मशिन का परणिाम दक्षणि रूसी चर्च का मास्को पैट्रआर्केट के साथ संघटन का महत्वपूर्ण घटनाक्रम था।

[1691] चेर्नगिोव के महा राजकुमार स्वयिातोस्लाव यारोस्लावचि द्वारा 1060 में चेर्नगिोव के येलेट्स में स्थति 'दॉरमशिन ऑफ द मदर ऑफ गॉड' का प्रथम-श्रेणी मठ स्थापति कयिा गया था।

[1692] इओनकिी गोल्याटोव्स्की – 17वीं सदी के एक प्रसद्धि दक्षणि रूसी उपदेशक और ववािदास्पद लेखक, जो शुरू में कीव-मोहलिा अकादमी के रेक्टर और बाद में चेर्नगिोव के येलेट्स्की मठ के आर्चमिांड्राइट थे।

माज़ेपा[1693] से मिलने गया, और समझाया कि 'येलेट्स मठ में अनाज की आपूर्ति और विशेष रूप से जलाऊ लकड़ी की कमी है, जिससे भाइयों के लिए रहना मुश्किल हो गया है, और उनकी मदद करने के लिए कुछ भी नहीं है, क्योंकि आर्चिमंड्राइट के अधिकार क्षेत्र में बहुत कम प्रजा है', – और माज़ेपा, जो आम तौर पर पुरोहितों और मठों के प्रति अपनी उदारता के लिए नहीं जाने जाते थे, ने सेंट थियोडोसियस के प्रति विशेष सम्मान के कारण उनकी विनती मान ली, और मठ को मोशोंक गाँव सौंप दिया। इसी तरह, थियोडोसियस के प्रति सम्मान से अन्य संपन्न लोगों को भी येलेट्स मठ को दान देने के लिए प्रेरित किया।

इस प्रकार, संत थियोडोसियस के अधीन, दो या तीन वर्षों की अवधि में, येलेट्स मठ ने समृद्धि का एक ऐसा स्तर हासिल कर लिया जिसने उसके अस्तित्व को पूरी तरह से सुरक्षित कर दिया। मठ के बाहरी सुधार पर ध्यान देने के साथ-साथ, संत थियोडोसियस इसकी आंतरिक भलाई और उसमें एक सच्चे मठवासी जीवन की स्थापना और उसे बनाए रखने के लिए भी उतने ही चिंतित थे। इस संबंध में, उनके बहुत ही व्यक्तिगत कार्यों ने मठवासी जीवन की खोज में येलेट्स मठ समुदाय के लिए एक अत्यंत शिक्षाप्रद उदाहरण का काम किया।

इन और अन्य मठवासी कर्तव्यों के साथ-साथ, थियोडोसियस एक ही समय में धर्मप्रचार के कार्य में आर्चबिशप लाज़ारस के एक सक्रिय सहायक थे और, आर्चपास्टर के अनुरोध पर, उन्होंने अपने आर्चबिशपल आवास के वित्तीय और कुछ हद तक धर्मप्रांतीय मामलों की भी देखरेख की। जैसे-जैसे समय बीतता गया, उनकी उत्कृष्टता लाज़ार ने देखा कि उग्लिच के आर्चिमंड्राइट थियोडोसियस ने उन्हें सौंपे गए मामलों को समझदारी और बुद्धिमानी से संभाल रहे थे, और पूरी तरह से आश्वस्त हो गए कि वह चेर्निगोव धर्मप्रांत के प्रशासन में उनके सर्वश्रेष्ठ सहायक हो सकते हैं; इसलिए, लिटिल रूस के हेतमैन की सहमति से, उन्होंने प्रस्ताव रखा कि उन्हें मॉस्को जाकर पैट्रिआर्क एड्रियन[1694] से उन्हें अपना सहायक नियुक्त करने का अनुरोध करना चाहिए। यह 1691 की बात है। मास्को में, थियोडोसियस के पुण्य जीवन और आध्यात्मिक ज्ञान की खबर बहुत पहले ही अधिकारियों तक पहुँच चुकी थी; परिणामस्वरूप, पैट्रिआर्क ने चेरनिहिव के सम्मानित और वृद्ध संत की इच्छा को सहर्ष स्वीकार कर लिया, जिन्हें सभी बहुत मान-सम्मान देते थे, और लिटिल रूस के हेत्मान को एक पैट्रिआर्कल पत्र के माध्यम से इसकी सूचना दी, जिसमें उन्होंने संत थियोडोसियस की बहुत प्रशंसा की।

लेकिन यह सहायता उस वृद्ध संत के लिए पर्याप्त नहीं थी, जो अपने जीवन के अंतिम दिनों के करीब थे। अपने झुंड की देखभाल में उत्साही भागीदारी के लिए थियोडोसियस के प्रति कृतज्ञता से भरकर, उनकी उत्कृष्टता लाजर ने, जीवित रहते हुए, थियोडोसियस को बिशप के रूप में नियुक्त होते देखना चाहा, ताकि उसमें अपने योग्य एक उत्तराधिकारी तैयार कर सकें।

1692 में, उन्होंने और हेतमैन ने ज़ार इवान और पीटर अलेक्ज़ेविच तथा पैट्रिआर्क एड्रियन को मॉस्को में लिखित याचिकाएं भेजीं, जिसमें येलेत्स के आर्चिमंड्राइट थियोडोसियस, उग्लिच के, को आर्चबिशप के पद पर पदोन्नत करने का अनुरोध किया गया था[1695] , और दोनों ने अपने-अपने नामों से गवाही दी कि 'अत्यंत पूजनीय आर्चिमंड्राइट एक अच्छे व्यक्ति हैं, जो मठवासी जीवन के गुणों से सुशोभित हैं, जिसे उन्होंने अपने युवा काल से ही जिया है; मठों के प्रशासन में अनुभवी, ईश्वर के भय और आध्यात्मिक ज्ञान से परिपूर्ण, प्रबुद्ध, चर्च की महिमा के लिए अत्यधिक उत्साही, और सी (See) तथा चेर्निगोव धर्मप्रांत के शासन करने में सक्षम'। सम्मानित वरिष्ठ और संत की याचिका स्वीकार कर ली गई, और उसी वर्ष थियोडोसियस अभिषेक के लिए मास्को रवाना हो गए। वहाँ, 11 सितंबर को, उन्हें बिशप के रूप में नामित किया गया, और उसी महीने की 18 तारीख को उन्हें आर्चबिशप के रूप में अभिषेक किया गया। नव-पदस्थ आर्चबिशप लगभग दो महीने तक मास्को में रहे, पैट्रिआर्क के अनुरोध पर, जो संत थियोडोसियस का बहुत सम्मान करते थे और उन्होंने इस अनुकूल क्षण का लाभ उठाकर उन्हें चर्चा करने और साथ में दैवीय अनुष्ठान करने के लिए मास्को में रोका।

[1693] इवान माज़ेपा – 1687 से 1709 तक लिटिल रूस के हेतमैन, जब उन्होंने स्वीडिश राजा चार्ल्स XII के पक्ष में जाकर पीटर महान और रूस के साथ विश्वासघात किया; उनकी मृत्यु उसी वर्ष हुई।

[1694] एड्रियन – सर्व रूस के अंतिम (10वें) पैट्रिआर्क, जिन्होंने 1690 से 1700 तक चर्च का नेतृत्व किया।

[1695] जहाँ तक इस तथ्य का सवाल है कि थियोडोसियस को तुरंत *आर्चबिशप के* पद पर पदोन्नत किया गया, इसका कारण यह है कि 1667 की महान मास्को परिषद ने चेर्निगोव में *एक आर्चबिशपरी की* स्थापना की, *और* उस समय रूसी चर्च की अन्य आर्चबिशपरीज़ में चेर्निगोव का पद प्रथम था।

चेर्नगिोव के वृद्ध आर्चबशिप, लाज़ार बारानोवचि की बहुत प्रसन्नता हुई, जब उन्होंने अपने प्रयि सहायक को एक संत के पद पर देखा। संत थयिोडोसयिस से श्रद्धापूर्वक प्रेम और सम्मान करने वाला उनका झुंड भी इससे अत्यंत प्रसन्न हुआ। इस प्रकार, चेर्नगिोव की कलीसयिा को दो प्रसद्धि धर्मगुरुओं - अर्थोडॉक्सी के स्तंभों - के नेतृत्व का आशीर्वाद मलिा, जन्हिोंने संपूर्ण वशि्व में शांतऔिर अपने ईश्वर-रक्षति झुंड की भलाई के लिए ईश्वर से दया याची। इस बीच, संत का पद धारण करने के बावजूद, थयिोडोसयिस—उनकी उत्कृष्टता लाजरस की सहायता करते हुए, और अक्सर उनके पूर्ण प्रतनिधिके रूप में कार्य करते हुए—उनके प्रतएिक पुत्र के समान असीम प्रेम और भक्तबिनाए रखे, और अपने उपकारी के प्रतपिूर्ण आज्ञाकारतिा दखिाई, चेर्नगिोव के प्रायमेट की सहमतके बनिा कुछ भी नहीं करते थे, और पादरी प्रशासन के मामलों में उनकी आज्ञाओं और इच्छा के अनुसार कार्य करने का प्रयास करते थे।

लेकनि प्रभु ने ऑर्थोडॉक्सी के इन दो महान और प्रतष्ठिति स्तंभों को चेर्नगिोव के झुंड की रक्षा करते हुए, लंबे समय तक एक साथ नहीं रहने दयिा। 3 सतिंबर 1693 को, महान एल्डर और आर्चपास्टर का नधिन शांतपिूर्वक और सौम्य रूप से हुआ। उन्होंने छत्तीस वर्षों तक चेर्नगिोव के डायोसीस का शासन कयिा था। संत थयिोडोसयिस ने चेरनहिवि के सभी पुरोहतिों और अन्य स्थानों से आए लोगों के साथ, चेरनहिवि के बोरसि और ग्लेब कैथेड्रल में, बाईं ओर के कोरस लॉफ्ट के पीछे, उनका भव्य रूप से अंतमि संस्कार कयिा।

उनकी उत्कृष्टता लाजरस की मृत्यु की सूचना ज़ार और पैट्रआिर्क को देने से पहले, संत थयिोडोसयिस लटिलि रूस के हेतमैन के पास इस दुखद घटना की सूचना देने के लिए गए। उनके साथ, उन्होंने पवत्रि-भक्षिु पाचोमयिस और कई अन्य लोगों को उनकी उत्कृष्टता लाजरस की मृत्यु और दफन के संबंध में एक रपिोर्ट के साथ ज़ार और पैट्रआिर्क के पास मास्को भेजा; हेतमन ने लखिा कउिन्हें लाजरस के नधिन पर दुख और शोक हुआ था, लेकनि अब उन्हें इस तथ्य में सांत्वना और सुकून मलिा कि, उनके नधिन के बाद, उग्लचि के परम पावन थयिोडोसयिस ने तुरंत बशिप का पदभार संभाल लयिा था, और यह कअिपने गुणों के द्वारा वे चर्च को सुशोभति करेंगे और, कुशल ववेिक के साथ, धार्मकि शासन के मामलों का प्रबंधन करेंगे।

जवाब में, ज़ार ने लखिा कवि ह थयिोडोसयिस को वही शाही कृपा देंगे जसिका आनंद उनकी उत्कृष्टता लाजरस ने लयिा था; अपने हस्सि के लिए, पैट्रआिर्क ने हेतमैन को लखिा कउि न्होंने आर्चबशिप लज़ारस के जीवति रहते हुए आर्चबशिप थयिोडोसयिस के अभषिेक को ईश्वर की एक वशिेष व्यवस्था माना, जो चेर्नहिभि के झुंड को लाभान्वति करती है, और हेतमैन से, चर्च के एक पुत्र के रूप में, पवत्रि चर्च की देखभाल में उनकी Eminence थयिोडोसयिस की सहायता करने का अनुरोध कयिा। साथ ही, पैट्रआिर्क ने सेंट थयिोडोसयिस को चेरनहिवि के सनिेड्रयिन के रूप में एक स्वतंत्र आर्चपास्टर के रूप में अंतमि पुष्टकि लिए एक 'वेदी-पार्श्व' पत्र भेजा, जसिमें, अन्य बातों के अलावा, वह उन्हें एक सदाचारी व्यक्तकि रूप में वर्णति करते हैं, जो अपने युवा काल से ही सदाचार के मठवासी जीवन से सुसज्जति थे और सम्मानति मठों के प्रशासन में कुशल थे, ईश्वर के भय और आध्यात्मकि समझ से परपिूर्ण, ज्ञान के प्रेमी, कलीसयिाई वैभव के एक अत्यंत उत्साही समर्थक, जन्हिोंने पूरी तरह से सही ढंग से चेर्नगिोव के घर और धर्मप्रांत को शासति करने का अधकिार अर्जति कयिा था।

चेर्नगिोव के एकमात्र आर्चपास्टर बनने के बाद, संत थयिोडोसयिस ने पतृिसुलभ उत्साह के साथ अपने झुंड की भलाई का ध्यान रखा, और साथ ही, पहले से भी अधकि, उन्होंने सभी के सामने अपने जीवन की पवत्रिता, तपस्या के प्रतसिच्चे प्रेम का प्रदर्शन कयिा, उनकी ओर मुड़ने वाले सभी के प्रतईसाई परोपकार और प्रेम। अपने अच्छे कार्यों और ईसाई सद्गुणों के माध्यम से, वह न केवल चेर्नहिभि के झुंड के लिए, बल्कउिसकी सीमाओं से बहुत दूर भी चमके।

खुद मास्को में, उनके नाम का लंबे समय से वशिेष सम्मान के साथ उल्लेख कयिा जाता था, क्योंकवि ह अपनी आध्यात्मकि बुद्धमित्ता और नैतकि गुणों के कारण उस समय के सभी रूसी धर्मगुरुओं में सबसे अलग थे। चेर्नगिोव के चर्च के मामलों को व्यवस्थति करते हुए, संत थयिोडोसयिस स्वयं परमेश्वर की व्यवस्था में गहरे वशि्वास, प्रार्थना और चर्च पूजा के प्रतउित्साह के लिए अपनी मंडली के लिए एक आदर्श बने, अपने पड़ोसयिों की कमजोरयिों के प्रतकिोमल सहनशीलता और उनकी जरूरतों के प्रतकिरुणा; इस कारण से, उन्होंने अपने अनुयाययिों का सर्वसम्मत और सच्चा प्रेम और सम्मान अर्जति कयिा। अपने जीवन के अंतमि क्षणों तक, एक सच्चे योद्धा और मसीह के एक सच्चे तपस्वी के रूप में, उन्होंने पवत्रि ऑर्थोडॉक्स धर्म की महमिा और अपने पड़ोसयिों के भले के लिए परशि्रम कयिा। प्रेरति के शब्दों में, उन्होंने *'परमेश्वर की सेवा उत्साह से की'* (रोमयिों 12:11); और अपने आस-पास के सभी लोगों के लिए, वे *'एक जलता और प्रकाश देने वाला दीपक'* थे (यूहन्ना 6:35)।

चेर्नगिोव के झुंड ने यह स्वीकार कयिा कि उनका आर्चपैस्टर, संत थयिोडोसयिस, परमेश्वर के एक सच्चे सेवक, परमेश्वर के भवन में एक वशि्वसनीय नरि्माता, कलीसयिा के एक चौकस रक्षक, एक अथक परशि्रमी, प्रार्थना के एक पुरुष, और प्रभु के सामने सभी के लिए एक भरोसेमंद मध्यस्थ थे। संत ने वशिेष रूप से अपने न्याय—जो न्यायसंगत और दयालु था—के माध्यम से सभी का दलि जीता, और वह असहायों और अनाथों के प्रति दयालु थे, जनिके लिए उन्होंने धर्मपरायणता से न्याय में जो आवश्यक था, उसे सुनश्चिति कयिा, साथ ही सुसमाचार की भावना में उदार दान और ईसाई दया के माध्यम से भी।

वास्तव में, वह उन सार्वजनकि हस्तयिों में से एक थे जो केवल मसीह के राज्य में ही पाई जाती हैं, जो इस दुनयिा के महान और शक्तशिाली लोगों की तुलना में सामान्य भलाई के लिए कहीं अधकि करने में सफल होती हैं। *'एक दूसरे से सहमत रहो; उच्च बातों पर मन न लगाओ, बल्कि नम्र लोगों के साथ मलिजुल कर रहो; अपने आप को बड़ा न समझो'* (रोमयिों 12:16)।

संत थयिोडोसयिस ने परम लगन के साथ अपने झुंड में तपस्वी जीवन के प्रति प्रेम को मजबूत करने का ध्यान रखा, जसिे उन्होंने अपने शुरुआती वर्षों से ही बहुत प्रयि माना था और जसिका उन्होंने स्वयं सभी के लिए एक उच्च आदर्श प्रस्तुत कयिा। इस उद्देश्य के लिए, उन्होंने न केवल अपने धर्मप्रांत में पहले से मौजूद मठों का समर्थन करने का, बल्कि नए मठ समुदाय स्थापति करने का भी पुरजोर प्रयास कयिा। इस प्रकार, उन्होंने ननयिों के लिए तथाकथति पेचेनकि कॉन्वेंट की स्थापना की[1696] । मठ समुदाय के कल्याण के लिए संत थयिोडोसयिस की पतिृत्वपूर्ण देखभाल का सबसे बेहतरीन प्रमाण पेचेनकि कॉन्वेंट की ननयिों को प्रदान कयिा गया उनका धन्य पत्र है। एक पतिा के प्रेम से नव-स्थापति कन्वेंट को आशीर्वाद देते हुए, संत ने ननों को अपनी मठाधीश के प्रति निम्रता और पूर्ण आज्ञाकारतिा के गुण' का अभ्यास करने का नरि्देश दयिा, जो शांति का स्रोत और उनकी, संत की, और ईश्वर की कृपा की गारंटी है।

इसके तुरंत बाद, संत के आशीर्वाद से, ल्यूबेच शहर से दो वर्स्ट की दूरी पर एक और मठ की स्थापना की गई[1697] । साथ ही, चेर्नगिोव के धर्मप्रांत में मठवाद के वकिास और मठ समुदाय की स्थापना का ध्यान रखते हुए, संत थयिोडोसयिस ने ईश्वर के चर्चों के नरि्माण और उन्हें सुशोभति करने के लिए उत्साहपूर्वक स्वयं को समर्पति कर दयिा[1698] । अपने धर्मप्रांत की नैतकि भलाई का ध्यान रखते हुए, उन्होंने मुख्य रूप से पादरयिों पर अपना ध्यान केंद्रति कयिा, पुरोहति के पदों के लिए योग्य और सक्षम व्यक्तयिों को चुनने का प्रयास कयिा और हर संभव तरीके से पैरशि पादरयिों की पादरी संबंधी और शैक्षकि गतविधियिों को मजबूत कयिा।

संत थयिोडोसयिस ने चेर्नगिोव डायोसीस के प्रमुख के रूप में अपने कार्यकाल के दौरान लटिलि रूस में ऑर्थोडॉक्सी के उद्देश्य के लिए, वहाँ के हानकिारक पोलशि यूनएिट-कैथोलकि प्रभाव का मुकाबला करने और क्षेत्र में रूसी राष्ट्रीय पहचान को मजबूत करने के लिए भी बहुत प्रयास कयिा। उन्होंने अपने नैतकि प्रभाव, वाक्पटुता और ईसाई शांतप्रियिता के कारण हमेशा आवेगपूर्ण और जद्दिी यूक्रेनयिों के उग्र प्रदर्शन को शांत करके रूसी राज्य की भी काफी सेवा की, और इस प्रकार राज्य को हानकिारक और खतरनाक अशांति से बचाया।

लेकनि चेर्नगिोव के सहिासन पर संत थयिोडोसयिस का कार्यकाल अल्पकालकि था। वे चेर्नगिोव में केवल लगभग आठ साल रहे: पांच साल येलेत्स के आर्चमिांड्राइट के रूप में, तीन साल और चार महीने आर्चबशिप के रूप में, इस दौरान उन्होंने अपनी परम पावन लाज़ार बारानोवचि की मृत्यु के बाद लगभग दो साल तक स्वतंत्र रूप से अपने अनुयायियों का नेतृत्व कयिा। यह भांपते हुए कि उनका अंत नकिट है, संत ने ब्रीआन्स्क-स्वेन्स्की मठ के मठाध्यक्ष को चेरनहिभि बुलाया, हायरोमोंक जॉन मैक्समिोवचि[1699] ने मध्य-1695 में उन्हें येलेट्स मठ के आर्चमिैंड्राइट के रूप में अभषिक्ति कयिा, जसिका प्रबंधन उन्होंने तब तक स्वयं कयिा था, और इस प्रकार नए आर्चमिैंड्राइट को अपने पद का एक योग्य

[1696] यह मठ मारयिा सुलमिोवा द्वारा, जो स्टारोडुब के एक कर्नल की वधिवा थीं, उस भूमि पर बनाया गया था जसिे उन्होंने अपने दविंगत पति के साथ मलिकर खरीदा था, जनिहें 'पेचनकिी' के नाम से जाना जाता था; यहीं से मठ का नाम पड़ा; यह अब मौजूद नहीं है।

[1697] ल्यूबेच अब चेर्नगिोव गवर्नरेट के गोरॉडन्या जलि में एक बाज़ार शहर है, जो चेर्नगिोव से 52 वर्स्ट दूर है।

[1698] इस प्रकार, उन्होंने इलस्किी मठ के पास पवतिर त्रमिूर्ति के सम्मान में भव्य चर्च का अभषिक कयिा, और डोमनत्स्की पुरुष मठ (चेर्नहिभि से 35 वर्स्ट दूर) में परमेश्वर की अति पवतिर माता के जन्म को समर्पति चर्च का अभषिक कयिा।

[1699] इवान मक्समिोवचि – जो बाद में टोबोल्स्क और पूरे साइबेरयिा के मेट्रोपॉलटिन बने, जहाँ उन्होंने स्वदेशी लोगों के बीच ईसाई धर्म का प्रसार करने के लिए बहुत प्रयास कयिा – का 1716 में नधिन हो गया। उनकी स्मृति को स्थानीय रूप से एक संत पुरुष के रूप में भक्तपिूर्वक सम्मानति कयिा जाता है।

उत्तराधिकारी बनने के लिए तैयार किया। इसके तुरंत बाद, रूसी चर्च के इस महान दिग्गज का निधन हो गया। संत थियोडोसियस का निधन 5 फरवरी 1696 को हुआ। अपने शोकाकुल अनुयायियों द्वारा गहरा शोक मनाए जाने के बाद, संत थियोडोसियस को चेर्निहिव के बोरिसि और ग्लेब कैथेड्रल मठ में, दाहिने कोरस लॉफ्ट के पीछे दफनाया गया।

अपनी सांसारिक सेवा पूरी करने के बाद, संत थियोडोसियस ने अपनी मंडली को नहीं छोड़ा, उनका अक्षत शरीर कैथेड्रल चर्च में विराजमान किया गया; और उनके निधन के ठीक बाद से ही, उन्होंने उन सभी पर अपना आशीर्वाद बरसाना जारी रखा जिन्होंने उनकी सहायता मांगी, और जिन्होंने ईश्वर के समक्ष उनकी मध्यस्थता की, उन पर प्रचुर चमत्कारी चंगाइयों के माध्यम से ईश्वर की कृपा प्रदान की। संत थियोडोरियस की प्रार्थनापूर्ण मध्यस्थता से, उनके परम विश्राम के तुरंत बाद ईश्वर की कृपा के चमत्कारों की एक श्रृंखला शुरू हुई, जिसकी शुरुआत चेर्निगोव के सिंहासन के उनके उत्तराधिकारी, परम आदरणीय आर्चबिशप जॉन मैक्सिमोविच के एक गंभीर बीमारी से चमत्कारिक रूप से ठीक होने से हुई। उनकी उत्कृष्टता जॉन बुखार से गंभीर रूप से बीमार पड़ गए; बीमारी तेजी से बिगड़ गई, और वे बकबक करने लगे। अचानक, अपनी बीमारी के चरम पर, उनकी उत्कृष्टता ने अपने सेल के परिचारक को बुलाया और उसे तुरंत अपने कक्षों में संध्या सेवा आयोजित करने और उनके लिए धार्मिक अनुष्ठान पढ़ने का निर्देश दिया, और अगले सुबह चर्च में उनकी अगुवाई के लिए सब कुछ तैयार करने को कहा। बीमार महाधर्माध्यक्ष की देखभाल करने वाले लोग सोचते थे कि वह बकबक कर रहे हैं, लेकिन उन्हें उनकी ज़िद के आगे झुकना पड़ा और उनकी इच्छा पूरी करनी पड़ी। अगले दिन, सभी को आश्चर्यचकित करते हुए, उनकी तबीयत पूरी तरह से ठीक हो चुकी थी और उन्होंने दैवीय अनुष्ठान का आयोजन किया। फिर उन्होंने उपस्थित लोगों को बताया कि पिछले दिन संत थियोडोसियस उनके सामने प्रकट हुए थे और कहा था: 'कल अनुष्ठान करो और तुम ठीक हो जाओगे।' एक गंभीर बीमारी से तुरंत, चमत्कारिक रूप से ठीक होने की कृतज्ञता में, उनकी उत्कृष्टता आर्चबिशप जॉन मैक्सिमोविच ने तुरंत, ईश्वर के उस पुरुष के सम्मान में, उस समय की प्रथा के अनुसार छंदों में लिखी एक 'स्तुति रची[1700] , जिसमें वे उन्हें 'एक सांसारिक देवदूत और सेराफिम के बीच निवास करने वाले एक संत' कहते हैं। उनके आदेश पर, बोरिसि और ग्लेब कैथेड्रल की नींव में सेंट थियोडोसियस की कब्र के ऊपर एक पत्थर की गुफा का निर्माण किया गया, जिसका प्रवेश द्वार एक घुमावदार सीढ़ी से था।

उनकी उत्कृष्टता जॉन मैक्सिमोविच के चंगा होने का अद्भुत चमत्कार संत थियोडोसियस की कृपा-पूर्ण चमत्कार-कर्ता और ईश्वर-प्रसन्न व्यक्ति के रूप में पूजा की शुरुआत का प्रतीक था। समय के साथ, संत थियोडोसियस की चंगा करने वाली अवशेषों के माध्यम से ईश्वर की कृपा के नए और प्रचुर प्रकट होने के कारण यह पूजा चेरनिहीव गवर्नरेट की सीमाओं से बहुत दूर तक फैल गई। ये चमत्कार और भी अधिक स्पष्ट और प्रभावशाली थे क्योंकि अक्सर इनके साथ संत थियोडोरस का बीमारों को उनकी नींद में प्रकट होना भी शामिल था, जिसके दौरान वह उन्हें प्रार्थना करने, उपवास करने, प्रार्थना सेवा करवाने आदि का निर्देश देते थे, और ठीक होने का वादा करते थे; हालांकि, कभी-कभी वह उन लोगों को निर्देश देते, फटकारते और पितृसुलभ तरीके से डाँटते थे जो उनके पास आते थे और जिन्होंने किसी न किसी तरह से पाप किया था। इस प्रकार, संत एक बहरे व्यक्ति को सपने में प्रकट हुए और कहा: 'कैथेड्रल जाओ और एक प्रार्थना सभा आयोजित करवाओ, और तुम ठीक हो जाओगे।' अगले दिन, उसे आश्चर्य हुआ कि वह गूंगा आदमी बोलने लगा; और फिर, कैथेड्रल में संत की एक तस्वीर देखकर, उसने उसमें उसी ईश्वर-प्रसन्नकर्ता को पहचान लिया जो उसके सपने में प्रकट हुआ था। संत उस पुरोहित से कहते हैं, जिसने सपने में उनके सामने अपने पापों का इकबालिया बयान दिया था और अपने बेटे के ठीक होने के लिए प्रार्थना की थी, "मैं तुम्हें आशीर्वाद देता हूँ और तुम्हें क्षमा करता हूँ", और उन्होंने उस शिशु को ठीक करने का वादा किया, जो ठीक अगले ही दिन ठीक हो गया। एक महिला, जिसने बड़े कष्ट में, पवित्र लेंट के दौरान मदद के लिए संत को पुकारा था और आँसुओं के साथ उनसे प्रार्थना की थी, उससे उन्होंने प्यार से डाँटते और समझाते हुए कहा: 'तुमने उपवास नहीं किया है; यह अच्छा नहीं है। तुम ईस्टर के भोजन में भाग लेने के लिए अयोग्य रहोगी। महा शनिचर को पवित्र कम्युनियन ग्रहण करने का प्रयास करना।' एक अन्य महिला, जो आँसू बहाकर ईश्वर से प्रार्थना कर रही थी और संत से अपने पति के ठीक होने के लिए प्रार्थना करने का आग्रह कर रही थी, उससे चमत्कार करने वाले संत ने स्नेहपूर्वक बात की, उसे सांत्वना दी और आशा जगाई: 'रोओ मत; मैं ईश्वर से विनती करूँगा, और तुम्हारा पति ठीक हो जाएगा।' और कुछ ही समय बाद, उसके पति, जो लगभग एक साल से एक दर्दनाक

[1700] यह 'प्रशंसा-लेख' चेर्निगोव के बोरिसि और ग्लेब कैथेड्रल में संत थियोडोसियस के एक चित्रात्मक चित्र के नीचे लिखा गया था, उस पत्थर के चैपल के प्रवेश द्वार के ऊपर जहाँ संत के अवशेष रखे गए थे।

बीमारी से पीड़ित थे, पूरी तरह से ठीक हो गए। संत एक बीमार महिला के सपने में प्रकट हुए, जिसने उनसे प्रार्थना की थी, और उससे केवल एक ही शब्द कहा: 'शांति से रहो' - और उसका मानसिक कष्ट हमेशा के लिए समाप्त हो गया। संत थियोडोसियस की प्रार्थनापूर्ण मध्यस्थता से हुई सभी अद्भुत चंगाइयों की सूची बनाना मुश्किल है: बस इतना कहना ही काफी है कि रूसी भूमि के सभी कोनों से, तीर्थयात्रियों की विशाल भीड़ उनकी कब्र पर आने लगी।

संत थियोडोसियस का शरीर 14 फरवरी 1772 को उनके परम विश्राम के 76 साल बाद पहली बार अक्षुण्ण पाया गया, जब स्थानीय बिशप थियोफिलिस के आशीर्वाद से, इसे एक नए लकड़ी के ताबूत में स्थानांतरित किया गया, जबकि इस ईश्वर-पुरुष की पहली सरू की ताबूत को उपासकों के बीच टुकड़ों में बाँट दिया गया था। पिछली सदी की शुरुआत से, उग्लिच के संत थियोडोसियस की एक अनुग्रह-पूर्ण चमत्कार-कर्ता के रूप में श्रद्धापूर्वक पूजा विशेष रूप से प्रबल हो गई है। उनके और उनके अवशेषों से होने वाले चमत्कारों की अफवाहें, इस समय तक, चेर्निगोव गवर्नरेट की सीमाओं से बहुत आगे तक, जीवन के विभिन्न वर्गों और पदों के ऑर्थोडॉक्स ईसाइयों के बीच फैल चुकी हैं। 1824 में, संत थियोडोसियस की कफ़न पर, चेर्निगोव के एक संप्रदायिक व्यापारी गोरबुनोव को एक गंभीर बीमारी से ठीक होने का चमत्कार हुआ; परिणामस्वरूप, वह बाद में ऑर्थोडॉक्स धर्म में परिवर्तित हो गया और अपने चमत्कारी ठीक होने की स्मृति में, उसने अपने खर्च पर संत की अक्षय अवशेषों के लिए एक नई कफ़न बनवाई। समय के साथ, चेरनिगोव कैथेड्रल में और कुछ अन्य स्थानों पर, संत थियोडोरस की अवशेषों के माध्यम से हुई चंगाइयों के लगभग सटीक और नियमित रिकॉर्ड रखे जाने लगे, जिन्हें पर्याप्त रूप से सत्यापित और प्रमाणीकृत किया गया था। 1850 से, चेरनिहिव कैथेड्रल में, साथ ही कुछ अन्य स्थानों पर, संत थियोडोसियस से प्रार्थनाओं के कारण हुए चमत्कारों का एक विस्तृत वृत्तांत लगातार रखा जाता रहा है।

इस बीच, संत थियोडोसियस के अवशेषों वाले मकबरे पर भक्तों की निरंतर और बड़ी संख्या में होने वाली भीड़, इस पर संकीर्ण और असुविधाजनक पहुँच के कारण, 1856 में बोरिस और ग्लेब कैथेड्रल के नारथेक्स के सामने वाले हिस्से के दक्षिणी हिस्से में एक अर्धवृत्ताकार पार्श्व-गिरिजाघर का निर्माण किया गया, जिसमें एक सुविधाजनक सीढ़ी थी, जबकि गुफा को स्वयं बड़ा और उज्जवल बनाया गया।

पिछली सदी के अंत तक, संत थियोडोसियस का नाम, ईश्वर के एक महान पुरुष, दुर्भाग्य और आपदाओं से रक्षक, सभी बुरी परिस्थितियों से मुक्तिदाता और ईश्वर के समक्ष एक प्रबल मध्यस्थ के रूप में, पूरे रूस में प्रसिद्ध हो गया था; और यद्यपि संत की कब्र पर केवल स्मरणोत्सव सेवाएं आयोजित की जाती थीं, लोगों ने उनका सम्मान इस तरह किया मानो वह पहले से ही एक महिमामंडित संत हों। संत थियोडोसियस के प्रति लोगों की संत के रूप में श्रद्धा, साथ ही उनके अक्षुण्ण अवशेषों से जुड़े कई चमत्कारी उपचारों के मामलों ने, नागरिक अधिकारियों का ध्यान आकर्षित किया, जैसा कि 1889 के वर्ष के लिए चेरनिहिव के गवर्नर की सबसे विनम्र रिपोर्ट में व्यक्त किया गया है, और यह रिपोर्ट, बदले में, दिवंगत सम्राट अलेक्जेंडर अलेक्जेंड्रोविच के ध्यान में आई। इसको देखते हुए, पवित्र धर्मसभा ने दिवंगत संत के शरीर की अक्षुण्णता और उनके ताबूत पर होने वाले चमत्कारिक घटनाओं के सत्यापन के साथ आगे बढ़ना उचित समझा[1701] । संत का शरीर, लगभग 200 वर्ष तक एक गुफा में रहने के बावजूद, जो कि विशेष रूप से सूखी भी नहीं थी, अक्षुण्ण पाया गया; साथ ही, संत थियोडोसियस के प्रार्थनात्मक आह्वान के माध्यम से चमत्कारी उपचार के कई मामलों की उचित रूप से जांच की गई, जैसा कि स्वयं ठीक हुए लोगों, उनके रिश्तेदारों और प्रत्यक्षदर्शियों द्वारा शपथ के तहत प्रमाणित किया गया है[1702] । इस दृष्टि से, पवित्र धर्मसभा ने यह आदेश दिया: 'स्वर्गीय थियोडोसियस की पुण्य स्मृति में, चेर्निगोव के आर्चबिशप, को संतों में गिना जाए, और उनके शरीर, जो ईश्वर की कृपा से महिमामय और अक्षुण्ण है, को पवित्र अवशेष के रूप में मान्यता दी जाए", और उनका भव्य अनावरण किया जाए, जिसके लिए उनकी सम्राज्ञी महोदय निकोलस अलेक्जेंड्रोविच की सहमति तुरंत प्रदान कर दी गई।

संत थियोडोसियस के अवशेषों का भव्य अनावरण 9 सितंबर 1896 को हुआ। यह समारोह कीव के मेट्रोपॉलिटिन, उनकी उत्कृष्टता इओआनिकियोस द्वारा छह बिशपों और कई आर्चिमैंड्राइट्स, मठाधीशों और अन्य पुरोहितों की सहायता से संपन्न किया गया। इस अवसर पर, परमेश्वर के सेवक के अवशेषों को सेंट्स बोरिस और ग्लेब के कैथेड्रल से

[1701] इस परीक्षा का संचालन कीव के मेट्रोपॉलिटिन, उनकी उत्कृष्टता इओआनिकी द्वारा, स्थानीय बिशप एंथनी, चेर्निहिव थियोलॉजिकल सेमिनरी के रेक्टर, कीव धार्मिक परिषद के सदस्य एक आर्चप्रीस्ट, और स्थानीय कैथेड्रल के दो आर्चप्रीस्टों के साथ मिलकर किया गया था।

[1702] कुल 49 ऐसे मामलों की जांच की गई।

ट्रांसफगिरेशन के कैथेड्रल में स्थानांतरति कयिा गया और एक नए सरू के ताबूत और एक नए कीमती चांदी के अवशेष पात्र में रखा गया; वहाँ, कई दीयों से सुसज्जति एक छतरी के नीचे, उन्हें कैथेड्रल के दाईं ओर रखा गया, जहाँ वे अब वशि्राम कर रहे हैं। नए घोषति परमेश्वर के सेवक के उत्सव के दनिों के दौरान, एक लाख पचास हज़ार लोगों की एक वशिाल भीड़ ने शहर को भर दयिा, जो संत थयिोडोसयिस से भक्तपिूर्वक वनिती कर रहे थे, परमेश्वर के समक्ष उनके लिए प्रार्थना करने का आग्रह कर रहे थे और उनके पवत्रि, अक्षत अवशेषों की पूजा करने के लिए उत्सुक थे। महमिामंडन के पर्व के दौरान अनेक अद्भुत चंगाईयाँ हुईं और इसने न केवल ऑर्थोडॉक्स बल्कि विभाजनवादयिों पर भी गहरा प्रभाव डाला। महमिा हो परमेश्वर की, जो अपने संतों में अद्भुत हैं!

ट्रोपारयिन, स्वर 4:

महाधर्माध्यक्षों में अतसिम्माननीय, संत थयिोडोसयिस, आप अपने झुंड के लिए एक प्रकाशस्तंभ थे, और अब आप शाश्वत नविासों में प्रस्थान कर गए हैं: महमिा के राजा के सहिासन के समक्ष मध्यस्थता करें कि हम उन बुराइयों से मुक्त हो सकें जो हमें घेरे हुए हैं और हमारी आत्माएं आपके प्रार्थनाओं के द्वारा, हे पवत्रि एक, उद्धार पा सकें।

कॉन्टाकयिन, स्वर 4:

हे संत थयिोडोसयिस, आप मसीह, प्रधान चरवाहे के लिए परशि्रम करते रहे, आपने आध्यात्मकि चरागाह में अपने शब्दों से अपने झुंड को पोषति कयिा, और आपने मसीह उद्धारकर्ता से वह चंगा करने का वरदान प्राप्त कयिा, जसिसे आप अपने चंगा करने वाले अवशेषों के पास वशि्वास के साथ आने वालों की सभी शारीरकि और आध्यात्मकि दुर्बलताओं का उपचार करते हैं। हे पवत्रि एक, प्रार्थना करें कि हमारे प्राण, जो आपके नाम का आह्वान करते हैं, शत्रु की युक्तयिों से मुक्त हों।

19 फरवरी

6 फरवरी (पुराने कैलेंडर के अनुसार)

पवत्रि कुंवारी शहीद फाउस्टा का कष्टकथा, इवलिासयिा और मैक्समिस के साथ

6 फरवरी को स्मरणोत्सव

दुष्ट राजा मैक्समियिन के शासनकाल में, साइज़किस नगर में[1703] , फाउस्टा नाम की एक युवती रहती थी। वह धनी ईसाइयों की बेटी थी, जन्हिोंने उसे ईसाई शक्षिाओं की भावना में पाला था; लेकनि तेरह वर्ष की आयु में वह अनाथ हो गई। अपने माता-पति की मृत्यु के बाद, कन्या फाउस्टा ने अपना सारा समय उपवास, प्रार्थना और पवत्रि धर्मग्रंथों के अध्ययन में बतिाया।

अपनी कुँवारीपन को पूरी तरह से बनाए रखते हुए, उसने इस दुनयिा के सभी प्रलोभनों - धन, वलिासति और हर तरह के कामुक सुख - को ठुकरा दयिा; और उसने जीवन के संकीर्ण और दुखद मार्ग पर चलना शुरू कर दयिा – इसीलिए वह जल्द ही सभी के बीच जानी-पहचानी और सभी द्वारा महमिामंडति हो गई; क्योंकि प्रभु के वचन के अनुसार, इतना सदाचारी जीवन लोगों से छपिा नहीं रह सकता: *'तुम जगत का प्रकाश हो। पहाड़ पर बसा हुआ नगर छपिा नहीं रह सकता'* (मत्ती 5:14)। फाउस्टा की खबर स्वयं राजा मैक्समियिन तक पहुँची। मैक्समियिन ने तुरंत अपने मुख्य पुरोहति, जसिका

[1703] कज़िकि – प्रोपोंटसि (मार्मारा सागर) की एक प्रायद्वीप पर स्थति एक शहर।

नाम इवलिासयिस था, को साइज़किस भेज दयिा ताकि वह मसीह की दुल्हन को ढूंढकर पकड़ लाए। राजा ने उसे इस प्रकार नरि्देश दयिा:

'यदि वह देवताओं को बलदिान चढ़ाने के लिए सहमत हो, तो उसे क्षमा कर देना; लेकनि यदि नहीं, तो उसे पानी की गहराई में फेंक देना।'

साइज़किस पहुँचने पर, इवलिासयिस ने पाया कि फाउस्टा उम्र में तो कम थी, परन्तु वशि्वास और समझ में पूरी तरह से परपिक्व थी। अपने न्याय-आसन पर बैठकर, उसने उसे झूठे देवताओं को बलदिान करने के लिए मजबूर करना शुरू कर दयिा। लेकनि संत ने उससे उत्तर दयिा:

'मैं उन देवताओं को बलदिान नहीं चढ़ाऊँगी जो बहरे और अंधे हैं, और जो मानव हाथों की कृति के अलावा और कुछ नहीं हैं। स्वर्ग में मेरा एक पति और एक वर है—यीशु मसीह—और मैं उसे नहीं छोड़ सकती; मैं उस वरिासत को नहीं छोड़ सकती जो मुझे अपने प्रभु के साथ मलिी है।'

तब इवलिासजि ने उससे कहा:

'फाउस्टा, देवताओं को बलदिान चढ़ाओ, नहीं तो तुम्हें एक क्रूर और पीड़ादायक मृत्यु का सामना करना पड़ेगा।'

इस पर संत ने उत्तर दयिा:

'मुझे एक मूर्ख महलिा न समझो: यद्यपि मैं उम्र में छोटी हूँ, मेरा हृदय साहसी और पूर्ण है।'

तब क्रोध से उन्मत्त इवलिासयिोस ने आदेश दयिा कि संत के बाल काट दिए जाएँ, उसे अपमानति और नीचा दखिाया जाए, और उसे एक पेड़ से लटका कर नरि्दयता से कोड़ा मारा जाए। हालाँकि फाउस्टा को क्रूरतापूर्वक यातनाएँ दी गईं, उसने अपनी आँखें स्वर्ग की ओर उठाईं और ईश्वर से प्रार्थना करने लगी। जब वह प्रार्थना कर रही थी, अचानक एक भयंकर बजिली की चमक गरिी, जसिसे कई लोग मारे गए। यह देखकर इवलिासयिोस बहुत डरा और संत को पुकार कर बोला:

'कन्या, मुझे बताओ, तुम कौन हो? क्योंकि मैं देखती हूँ कि तुम जादुई करम कर रही हो।'

संत ने उत्तर दयिा:

'इवलिासयि, मेरी बात सुनो: चत्रिकार को आज्ञा दो कि वह मेरा चत्रि बनाए, और साथ ही उन सभी यातनाओं को भी चत्रिति करे जो मैं सह रही हूँ।'

जब उसकी मांग पूरी हो गई, तो फाउस्टा ने उससे कहा:

'यह जान लो: जैसे यह प्रतमिा यहाँ दर्शाए गए कष्टों को न तो सहती है और न ही झेलती है, वैसे ही मेरा शरीर उन पीड़ाओं को महसूस नहीं करता जो तुम मुझे पहुँचा रहे हो: मेरी आत्मा अपने प्रभु में पूरी तरह से दृढ़ है; और जो कुछ भी तुम मुझसे और करवाना चाहते हो, उसे तुरंत कर डालो।'

तब इवलिासस ने आदेश दयिा कि संत फाउस्टा को एक लकड़ी के संदूक में रखा जाए, और उसे लकड़ी के कीलों से ठोककर बंद कर दयिा जाए, और फरि उसे आरी से चीर दयिा जाए। नौकरों ने लगन से अपने आदेशों का पालन करना शुरू कर दयिा, जबकि संदूक के अंदर संत प्रभु की स्तुति करते हुए भजन गा रही थीं। नौकरों ने लंबे समय तक उस डबि्बे को काटा, लेकनि वे उसे काट नहीं सके: आरी शहीद को छू नहीं सकी, मानो वह ठोस अडामेंट (एक प्रकार का कठोर पत्थर) से बनी हो। अंत में, थक-हारकर, नौकर मृतप्राय होकर लेट गए। फरि, एवलिासयिोस के पास आकर, उन्होंने कहा:

'हे स्वामी, उस महलिा को जसिे आपने हमें यातना देने के लिए सौंपा था—हमने उस डबि्बे को जसिमें वह बंद थी, पहले घंटे से छठे घंटे तक आरी से काटने की कोशशि की, लेकनि कुछ भी नहीं कर सके: हमने छह आरीएं खराब कर दीं, फरि भी वे उसे छू भी नहीं सकीं; हमने उसे जलाने के लिए इस डबि्बे में आग लगा दी, लेकनि आग न केवल उसके सामने बेबस थी, बल्कि उसने डबि्बे को झुलसा भी नहीं दयिा। इस पूरे समय, वह गाती रही: *'जब तुम जल से गुज़रोगे, तो मैं तुम्हारे साथ रहूँगा; और नदयिों से, वे तुम्हें डुबा नहीं पाएंगे; जब तुम आग से गुज़रोगे, तो तुम जलोगे नहीं, और लौ तुम्हें भस्म नहीं करेगी'* (यशायाह 43:2)।

यह सुनकर इवलिासयिोस बहुत हैरान हो गया और उसने संत को अपने पास बुलाकर उससे कहा:

'तुम ऐसे चमत्कार करके मुझे अत्यंत चकति कर देती हो! मैं अब अस्सी वर्ष की हूँ, फरि भी मैंने ऐसा कुछ कभी नहीं देखा। मैं तुम्हारे उस ईश्वर की शपथ लेकर तुमसे वनिती करती हूँ, जसि पर तुम वशि्वास करती हो, कि मुझे पूरा सच बताओ।'

संत फाउस्टा ने उनसे उत्तर दयिा:

'मैं आपसे वनिती करती हूँ, मेरे स्वामी, कि आप ध्यान से सुनें जो मैं आपको बताने जा रही हूँ: यह ईश्वर की शक्ति है जो मेरे दुःखों के बीच मुझे सहारा देती है, जैसा आपने स्वयं देखा है; और यदि आप अब मेरी बात ध्यान से सुनेंगे, तो आप भी जल्द ही मेरे धर्म में परविर्तति हो जाएँगे।'

इस पर इवलिासयिो ने उससे कहा:

'तुरंत सच बोलो; मैं तुम्हें सुनूँगा।'

तब संत ने उससे कहा:

'ईश्वर अमर और शाश्वत है, और उसके सभी कार्य सत्य हैं; उसका न्याय पवत्रि और धर्मी है, और वह अपने उन सेवकों की हर जगह रक्षा करता है जो धार्मकि और पवत्रि जीवन जीते हैं और अपने वीर कर्मों को पूरा करते हैं; वह उन सभी की रक्षा करता है, जन्हिोंने अपने जीवन से ही शैतान को शर्मदिा कयिा है, उन मूर्तयिों को अस्वीकार और तरिस्कार कयिा है जन्हिें आप देवता मानते हैं, और इस दुनयिा की बुराई पर वजिय प्राप्त की है। सर्वोच्च ईश्वर उन सभी को हर बुराई से बचाता है, जो सभी सांसारकि चीजों को तरिस्कार कर, स्वर्गीय चीजों के लिए प्रयास करते हैं और धार्मकि रूप से जीवन जीते हुए, ईश्वर की आज्ञाओं का नरि्दोषता से पालन करते हैं। और ऐसा इसलिए है क्योंकि ऐसे लोगों ने उन्हें एकमात्र परमेश्वर के रूप में जान लयिा है और इस बात से आश्वस्त हो गए हैं कि उनके सविा कोई और देवता नहीं है, जो स्वर्ग से पृथ्वी पर उतरे और परम पवत्रि और नरि्मल कुँवारी के गर्भ में वास करके, अकथनीय तरीके से उनसे जन्म लेने की कृपा की; और फरि, वयस्क होकर, उन्होंने कई गौरवशाली और अद्भुत कार्य कए और लोगों को सत्य सखिाने के बाद, स्वेच्छा से क्रूस पर चढ़े और हमारे लिए पीड़ा सहन की, ताकि वे हमें बचा सकें; दफ़नाए जाने के बाद, तीसरे दनि वे पुनर्जीवति हुए और महमिा में स्वर्ग में आरोहण कर गए, ताकि युगों के अंत में वे जीवतिों और मृतकों का न्याय करने और प्रत्येक को उसके कर्मों के अनुसार पुरस्कृत करने के लिए फरि से प्रकट हों। इसीलिए हम मसीह का अनुसरण करते हैं, स्वर्ग के राज्य के लिए स्वयं को घावों और यातनाओं के अधीन करते हैं, ताकि हम अनंतकाल तक नष्ट न हों; यहाँ पृथ्वी पर हम मरते हैं, लेकनि वहाँ हम अनंत जीवन जएिंगे।

यह सुनकर, इवलिासयिस ने जीवति परमेश्वर की महान शक्ति को पहचान लयिा। उसका हृदय करुणा से भर गया, और वह बेहतर हो गया। उसने पवत्रि शहीद फाउस्टा के बंधन खोल दिए और उसे पूर्ण स्वतंत्रता प्रदान कर दी।

तब एवलिासयिस के एक दास ने राजा मैक्समियिन के पास जाकर उससे कहा:

'महाराज, एवलिासयिस ने उन पर कए गए भरोसे को तोड़ा है और अब वह ईसाई बनना चाहता है; अतः इससे पहले कि वह ईसाई धर्म अपना ले, उसे इस भूल से रोकने के लिए अपनी पूरी कोशशि करें।'

यह सुनकर राजा बहुत परेशान हो गया। उसने तुरंत अपने एपार्क, मैक्समिस—जो अपनी महान क्रूरता और अमानवीयता के लिए कुख्यात था—को बुलाया और देवताओं के सामने शपथ दलिाकर उसे साइज़किस में इवलिासयिो के पास भेज दयिा।

साइज़किस पहुँचने पर, मैक्समिस ने बड़े क्रोध के साथ धन्य इवलिासयिस से इस प्रकार पूछताछ करना शुरू कयिा:

'मुझसे कहो, हे दुष्ट पुरुष, तुझे हम्मित कैसे हुई हमारे महान देवताओं को त्यागने की और, उन्हें तरिस्कार करने के बाद, उन पागल ईसाइयों पर वशि्वास करने और उनसे मेलजोल रखने की?'

इवलिासयिस ने उत्तर दयिा:

'मैं अपने सरि की कसम खाता हूँ कि यदि तुम कुँवारी फाउस्टा की सुनोगे, तो तुम भी जल्द ही सच्चे ईश्वर को जानोगे और धन्य महसूस करोगे।'

तब राज्यपाल मैक्समिस, अत्यधकि क्रोधति होकर, ने इवलिासयिस को एक पेड़ से लटकाने और क्रूरतापूर्वक कोड़े लगाने का आदेश दयिा[1704] । और लंबे समय तक पवत्रि शहीद को वहाँ यातनाएँ दी गईं; फरि भी अपनी पीड़ाओं के बीच उसने मसीह ईश्वर से इस प्रकार प्रार्थना की:

'हे प्रभु, सर्वशक्तमिान परमेश्वर, जन्हिोंने अपनी दासी फाउस्टस को उसके द्वारा सहन कए गए सभी कष्टों में मदद की और अपने चमत्कार मेरे नेत्रों के सामने प्रकट कए, मुझे, एक दीन सेवक को, इस क्रूर और नरि्दयी एपार्क से बचाओ, क्योंकि हे प्रभु, मैं आपके अनेक और महान चमत्कारों के कारण आपसे प्रेम करने लगा हूँ।'

[1704] उस समय, इवलिासयि लगभग 80 वर्ष का था।

तब राज्यपाल ने आज्ञा दी कि पवित्र शहीद की पसलियों को जलती हुई मोमबत्तियों से झुलसाया जाए; इस प्रकार झुलसाए जाने के दौरान, पवित्र पीड़ित ने फाउस्टा से, जो वहाँ खड़ी होकर उनके कष्टों को देख रही थी, प्रभु से उनके लिए प्रार्थना करने का अनुरोध किया।

उस संत ने, उस पर दया करके, इस प्रकार प्रार्थना करना शुरू किया:

'हे मेरे प्रभु परमेश्वर, अपनी कृपा दिखा और मुझे, अपने दास को, सुन: एवलिसियस को अपनी आध्यात्मिक भेड़-बकरियों के झुंड में स्वीकार कर और उसे अपने धर्मी लोगों में गिन, क्योंकि तू सदा के लिए धन्य है, आमीन।'

तब राज्यपाल ने आदेश दिया कि संत फाउस्टा को भी ईवालासियस को ईसाई बनने के लिए मनाने के कारण उसकी अन्यायपूर्ण अदालत में लाया जाए।

मैक्सिमिस ने उससे कहा, 'दुष्ट स्त्री, तुझे हिम्मत कैसे हुई कि तू हमारे महिमामय पुरोहित इवालासियस को महान देवताओं से दूर कर दे और उसे अपने ईश्वर का अनुयायी बना दे?'

संत फाउस्टा ने उत्तर दिया:

'मैं अपने भले और दयालु ईश्वर पर अपना भरोसा रखती हूँ, जिसने इवलिसियस को प्रकाश का पुत्र बनने के लिए बुलाया, कि वह तुम्हें भी उसकी उपासना करने और उसे जानने के लिए बुलाएगा।'

'फाउस्टा,' एपार्क ने आपत्ति जताई, 'मुझे इवलिसियस जितना पागल मत समझो, जिसने तुम्हारी बातों पर ध्यान दिया।'

और तुरंत उसने उसे बांधने और उसके पैरों में लोहे के कील ठोकने का आदेश दिया।

जबकि नौकरानियों ने इस आदेश को लगन से पूरा किया, संत को बिल्कुल भी दर्द महसूस नहीं हुआ। गवर्नर मैक्सिमिस ने, यह देखकर कि संत फाउस्टा इन घावों पर बिल्कुल भी ध्यान नहीं दे रही थीं, सैनिकों के एक दस्ते को बुलाया और उनसे कहा कि अगर कोई कर सकता है, तो वे उसके लिए और भी अधिक क्रूर यातनाएं सोचें।

तब सैनिकों में से एक, जिसका नाम क्लॉडियस था, ने कहा:

'महोदय, यदि आप उसे शीघ्रता से मारना चाहते हैं, तो उसे जंगली जानवरों के सामने फेंक दें।'

राज्यपाल ने तुरंत इसे अमल में लाने का आदेश दिया, और संत को नग्न अवस्था में उस स्थान पर ले जाया गया जहाँ आम तौर पर ईसाइयों को जानवरों के सामने फेंका जाता था।

वहाँ, एक सिंहिनी को उस पर छोड़ दिया गया, लेकिन वह सिंहिनी चुपचाप आकर संत के सामने अपना सिर झुका दिया। फिर संत फाउस्टा पर कई अन्य जानवर छोड़ दिए गए, लेकिन वे सभी उसके पैरों पर गिरकर उसके सामने झुक गए।

यह देखकर राज्यपाल बहुत हैरान हो गया और उसने आदेश दिया कि उसे ज़मीन पर घसीटा जाए, उसके पैरों को रस्सी से बाँधकर। जब संत को इस तरह नग्न अवस्था में घसीटा जा रहा था, तो उसने प्रभु से पुकारा:

'हे प्रभु यीशु मसीह, अपनी सृष्टि को ढक लो, कहीं कि निर्लज्ज और अधर्मी आपकी दुल्हन के शरीर की नग्नता को न देखें।'

और तुरंत एक बादल ऊपर से उतर आया और संत को एक सुंदर वस्त्र की तरह ढक लिया।

इसके बाद, एक बार फिर सैनिकों में से एक, जिसका नाम यूसेबियस था, ने एपार्क मैक्सिमिस से कहा:

'यदि आपकी अनुमति हो, तो उसे मेरी हिरासत में सौंप दें।'

एपार्क ने उत्तर दिया:

'इसे ले जाओ और जितना चाहो और जैसे चाहो, इसे यातना दो।'

उस सैनिक ने पवित्र शहीद को पकड़कर एक लोहार के पास ले गया और उससे बहुत सारे लंबे लोहे के कील बनाने का आदेश दिया, और उसे उन कीलों को उसके सिर, उसके माथे, उसकी आँखों, उसके स्तनों, उसकी पिंडलियों और उसके पूरे शरीर में ठोकने का आदेश दिया।

इस बीच, संत ने इस प्रकार प्रार्थना की:

– हे प्रभु यीशु मसीह, मैं तुझे धन्यवाद देता हूँ, क्योंकि तू हृदयों का जानने वाला, और धर्मी लोगों का गौरव और मुकुट है! यह अनुग्रह करें कि मैं, आपका नम्र और अयोग्य सेवक, आपके शांतिपूर्ण शरणस्थल की ओर ले जाने वाले मार्ग पर चलूँ, और एपार्क मैक्सिमिस को पवित्र विश्वास और आपके प्रेम की ओर ले जाऊँ; उसे आपके भय में स्थिर

करें और उसे उन लोगों में गनिें जो आपका स्वीकार करते हैं, सच्चे ईश्वर, ताकि सभी जान सकें कि आप एकमात्र ईश्वर हैं, और यह कि दिव्य सम्मान और महिमा सदैव और अनंतकाल तक आपको ही अर्पति होती है। आमीन।

यूसेबियस ने देखा कि वह युवती, कीलों से पूरी तरह भेदी गई और खून से लथपथ थी, फरि भी एक ही समय में उसे कोई पीड़ा नहीं हो रही थी और ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो उसे कोई दर्द ही न हो, उसने एक बड़ा हांडी लाने का आदेश दयिा, जसिे गोंद और गंधक से भरकर आग लगा दी गई, और उसमें संत फावस्टस को संत इवलिस के साथ डाल दयिा गया, और हांडी के नीचे एक बड़ी आग जला दी गई।

पवत्रि शहीदों ने, उस कड़ाही में जैसे कसिी सुंदर और ठंडी जगह में खड़े हों, ईश्वर का भजन कयिा और उसकी महिमा की। और तुरंत ही आग बुझ गई, और कड़ाही ठंडी हो गई।

तब राज्यपाल मैक्समिस ने संतों का वशि्वास और धैर्य देखकर कहा:

'हे शाश्वत ईश्वर, जनि्होंने एवलिासयिस को अपनी दासी फाउस्टा के साथ, आपके लिए दुख सहने में मदद की! मुझे भी स्वीकार करें, यद्यपि मैं नीच और पापी हूँ, और मुझे इन दोनों के साथ संगति में शामलि करें, ताकि मैं, जो उनमें से सबसे बुरा और सबसे छोटा हूँ, पवत्रि त्रमिूर्ति की प्रतमिा में, तीन की संख्या पूरी कर सकूँ।' हे सर्वशक्तमिान प्रभु परमेश्वर! अपनी कृपा मुझ पर, अपने अयोग्य सेवक पर, दखिाइए, और मुझ पर शीघ्र ही दया कीजिए, ताकि मेरे द्वारा आप और भी अधकि महिमा प्राप्त करें!

जैसे ही उसने ये शब्द कहे, स्वर्ग फट गया, और स्वर्ग का पुत्र स्वर्ग में पवत्रि स्वर्गदूतों और महादूतों की सेनाओं और सभी संतों की सभा के साथ देखा गया, जो प्रकाश की तरह चमक रहे थे। इस भयानक और डरावने दृश्य को देखकर, मैक्समिस ने ऊँचे स्वर में परमेश्वर से पुकारा:

'हे प्रभु, मुझे वैसे ही स्वीकार करो जैसे आपने अपने सेवक इवलिासयिस को स्वीकार कयिा था, और मेरे अपराधों और अधर्मों को याद न करो, बल्कि अपने पापी और अयोग्य सेवक को क्षमा करो, और मुझे क्षमा करो, जैसे आपने एक बार चोर को क्षमा कयिा था।'

यह कहकर, वह तुरंत उस कड़ाही की ओर दौड़ा जसिमें संत फावस्टस और एवलिास को उबाला जा रहा था, और स्वर्ग की ओर अपनी आँखें उठाकर, उसने क्रॉस का चहि्न बनाया और कहा:

'पति, पुत्र और पवत्रि आत्मा के नाम पर – मैं तुम्हारे साथ हूँ!'

इसके बाद, उसने अपने कपड़े उतार दिए और अपने पूरे शरीर पर एक बार फरि से क्रूस का चहि्न बनाते हुए, खुद को कड़ाही में डाल दयिा।

तब संत और धन्य फाउस्टा, इस महान आनंद और हर्ष से भरकर कि प्रभु ने उनकी सुनी और मैक्समिस को पवत्रि वशि्वास तक पहुँचाया, उदघोषणा की:

– महिमा तेरी हो, हे मसीह हमारे परमेश्वर, क्योंकि तू नहीं चाहता कि कोई नाश हो, बल्कि चाहता है कि सब बचें और सत्य के ज्ञान में पहुँचें! मैं यहाँ हूँ, आपके दो सेवकों के बीच खड़ी हूँ, जैसे अंगूरों की एक गुच्छा लिए हुए अंगूर की लता की टहनी, और जैसे *'तीन गुनी रस्सी'* (उपदेशक 4:12), जो उनसे अवभिाज्य है, क्योंकि आपने कहा है: *'जहाँ दो या तीन मेरे नाम पर इकट्ठे हैं, वहाँ मैं उनके बीच में हूँ'* (मत्ती 18:20)। जब संत ये वचन बोल रहे थे, तो स्वर्ग से एक आवाज आई: *'मेरे पास आओ, हे सब* जो परशि्रमति *और बोझलि* हो, *और मैं तुम्हें वशि्राम दूँगा'* (मत्ती 11:28) मेरे स्वर्गीय राज्य में।

यह आवाज सुनकर, संत अकथनीय आनंद से भर गए और, प्रभु का धन्यवाद करने के बाद, उन्होंने शांतपिूर्वक अपनी आत्माएँ उन्हें सौंप दीं; यह घटना[1705] के फरवरी महीने के छठे दनि हुई।

हे प्रभु, उनकी प्रार्थनाओं के द्वारा, हमारे पापों को क्षमा कर, और हमें अपनी दया के योग्य बनाकर, हमें अनंत जीवन का भागीदार बना, क्योंकि तू पति और पवत्रि आत्मा के साथ धन्य है और सदा के लिए महिमा प्राप्त है। आमीन।

[1705] उनकी मृत्यु 305 और 311 के बीच हुई।

पवत्रि शहीद डोरोथेया का कष्ट-सहन, क्रसि्टीना, कैलसि्टा और थयिोफाइला के साथ

6 फरवरी को स्मरण कयिा जाता है

कैपाडोसयिा की भूमि में, केसरयिा नगर में[1706] , डोरोथेया नाम की एक धर्मनष्ठि कन्या रहती थी। उसने अपना सारा समय ईश्वर की सेवा में, नम्रता और वनिम्रता के साथ, पवत्रिता, आध्यात्मकि संयम और ब्रह्मचर्य में बतिाया। इसके अलावा, वह इतनी महान बुद्धवािली कन्या थी कि विद्वान पुरुष भी इस मामले में उसकी बराबरी नहीं कर सकते थे। और जो भी उसे जानते थे, वे हमारे प्रभु यीशु मसीह के नाम की महमिा करते थे, जनिके पास अपनी सेवकिा के रूप में ऐसी कन्या थी: क्योंकि उसकी दृष्टि श्रद्धा से भरी थी, उसका जीवन पवत्रि था, उसकी बुद्धि अतुलनीय थी, और उसकी कुँवारीपन नर्दिोष था। मसीह के प्रति अपने प्रेम में, वह इतनी परपिूर्ण थी कि वह स्वर्गीय महल के लिए पूरी तरह से योग्य थी। लेकनि उनके लिए उसने अपने प्रयासों को दोगुना कर दयिा। अपने शरीर और शैतान पर वजिय प्राप्त करके, संत डोरोथेया ने अपने लिए दोहरा मुकुट बुना: कुँवारीपन का मुकुट और शहादत का मुकुट; और, आनंदति होकर, वह अपने वधू-वर, मसीह के पास चली गई। उसने उनके लिए कैसे कष्ट सहे, इसका वर्णन नम्निलखिति कथा में कयिा जाएगा।

जब संत डोरोथेया की ख्याति लोगों में फैली, तो उसकी खबर ईसाइयों के उत्पीड़क, राज्यपाल सैप्रसियिस तक पहुँची। वह तुरंत केसरयिा शहर के लिए रवाना हो गया और पवत्रि कन्या को हरिासत में लेकर, उसने उसे अपनी अन्यायपूर्ण अदालत में पेश करने का आदेश दयिा।

संत डोरोथीया, दुष्ट न्यायाधीश के सामने खड़ी होकर, चुपचाप प्रभु से प्रार्थना करने लगीं और सहायता के लिए अपने उद्धारकर्ता ईश्वर से पुकार लगाई।

सप्रसियिस ने उससे पूछा:

'मुझे बताओ, तुम्हारा नाम क्या है?'

संत ने उत्तर दयिा:

'मेरा नाम डोरोथयिा है।'

'मैंने तुम्हें इसलिए बुलाया है,' सैप्रकियिस ने जारी रखा, 'ताकि हमारे गौरवशाली राजाओं के आदेश से, तुम महान देवताओं को बलदिान अर्पति करो।'

संत डोरोथेया ने उत्तर दयिा:

– स्वर्ग के राजा, ईश्वर ने मुझे केवल उसी की सेवा करने की आज्ञा दी है। जैसा कि धर्मग्रंथ में लखिा है: *'तब यीशु ने उससे कहा, "मेरे पास से दूर हो जा, शैतान! क्योंकि लिखा है: 'अपने प्रभु परमेश्वर की आराधना कर और केवल उसी की सेवा कर'"* (मत्ती 4:10)।*"तुम उनसे ऐसा कहना: "जो देवता न तो आकाश और न ही पृथ्वी को बनाए हैं, वे पृथ्वी से और आकाश के नीचे से लुप्त हो जाएँगे"* (यर्मि. 10:11)। अतः हमें वचिार करना चाहिए: हमें कसि आज्ञा का अधकि पालन करना चाहिए—एक सांसारकि राजा की आज्ञा या स्वर्गीय राजा की आज्ञा? और हमें कसिकी सुननी चाहिए – ईश्वर की या मनुष्य की? राजा क्या हैं? – वे केवल नश्वर मनुष्य ही हैं; यही बात आपके देवताओं, उन मूर्तयिों पर भी सच्ची है जनिकी आप पूजा करते हैं।

'यदि तुम जीवति, स्वस्थ और नर्दिोष रहना चाहते हो,' सैप्रकियिस ने आपत्ति जताई, 'तो ईसाई धर्म का त्याग करो और देवताओं को बलदिान चढ़ाओ; यदि नहीं, तो कानून के अनुसार, तुम्हें क्रूरता से यातना दी जाएगी और तुम दूसरों के लिए एक भयानक उदाहरण बनोगे।'

संत ने उत्तर दयिा:

'मैं सभी वशि्वासयिों के लिए ईश्वर के भय का एक उदाहरण बनूँगा—वे ईश्वर से डरें, लेकनि क्रूर मनुष्यों से न डरें; क्योंकि वे दुष्ट कुत्तों की तरह व्यवहार करते हैं: वे बेवकूफी और लापरवाही से नर्दिोष लोगों को सताते हैं, गुस्से में, मुँह में झाग नकिालते हुए, भौंकते हुए, और राहगीरों को अपने दाँतों से पकड़कर फाड़ते हैं।'

[1706] कैपाडोसयिा – एशयिा माइनर के पूर्वी भाग में स्थति एक क्षेत्र का प्राचीन नाम, जो सलिशियिन टॉरस, फरात नदी, काला सागर और गैडसि नदी के बीच था। केसरयिा – कैपाडोसयिा की राजधानी।

जवाब में सैप्रसियिस ने कहा, 'जैसा मैं देखता हूँ, आपने इस अधर्मी स्वीकारोक्ति पर दृढ़ रहने का निश्चय कर लिया है और आप दूसरों की तरह ही दर्दनाक मृत्यु चाहते हैं। मेरी बात सुनें: देवताओं को बलिदान अर्पित करें, और आपको इन भयानक यातनाओं से बचा लिया जाएगा।'

संत ने उत्तर दिया:

'तुम्हारी यातनाएँ अस्थायी हैं, लेकिन गेहेन्ना की यातनाएँ शाश्वत हैं। इसलिए, शाश्वत पीड़ा से बचने के लिए, मैं अस्थायी पीड़ा से नहीं डरूँगा!' मुझे मेरे प्रभु के वचन याद हैं: *'उनसे मत डरो जो शरीर को तो मार सकते हैं पर आत्मा को नहीं मार सकते; बल्कि उससे डरो जो आत्मा और शरीर दोनों को गेहन्ना में नाश कर सकता है'* (मत्ती 10:28)।

तब सैप्रकियिस ने कहा:

'यही कारण है कि तुम्हें देवताओं से डरना चाहिए, कहीं वे तुम पर क्रोधित न हों: यदि तुम उन्हें बलिदान नहीं चढ़ाओगे, तो वे तुम्हारी आत्मा और शरीर दोनों को नष्ट कर देंगे।'

संत डोरोथिया ने उत्तर दिया, 'सप्रसियिस, मैंने तुम्हें पहले ही बता दिया है कि तुम मुझे व्यर्थ मूर्तियों में रहने वाले राक्षसों को बलिदान चढ़ाने के लिए किसी भी तरह से मना नहीं सकते।'

यह सुनकर सैप्रकियिस बहुत क्रोधित हो गया और, मृत्युदंड के लिए पहले से ही तैयार खड़े सेवकों की ओर मुड़कर, उनसे कहा:

'उसे फांसी के स्थान पर ले जाओ, ताकि यातनाओं के भय से वह हमारे देवताओं की दासी बनने के लिए राज़ी हो जाए।'

तब ईश्वर की दासी डोरोथिया, मृत्युदंड के स्थान पर खड़ी होकर, अपने न्यायाधीश से साहसपूर्वक और निडर होकर बोली:

'तुम मेरे कष्ट देने में देरी क्यों कर रहे हो? जो करना है कर डालो – ताकि मुझे शीघ्र ही उन्हें देखने का अवसर मिल सके, जिनके प्रेम के लिए मैं न तो पीड़ा से और न ही मृत्यु से डरती हूँ।'

सप्रसियिस ने पूछा, 'लेकिन वह कौन हैं जिनकी तुम इतनी लालसा करती हो?'

संत डोरोथेया ने उत्तर दिया:

'मसीह – परमेश्वर का पुत्र।'

'तो फिर यह मसीह कहाँ है?' राज्यपाल ने पूछा।

संत ने उत्तर दिया:

– अपनी दिव्यता की सर्वशक्तिमानता से, वह सर्वत्र हैं; फिर भी, मनुष्यों के रूप में, हम यह स्वीकार करते हैं कि वह स्वर्ग में, अपने पिता के दाहिने हाथ पर विराजमान हैं; उनके साथ, परमपिता परमेश्वर के साथ, और पवित्र आत्मा के साथ, वह एक ईश्वर हैं। वही हमें शाश्वत आनंद के स्वर्ग में बुलाते हैं; वहाँ, बगीचे अनवरत रूप से फल देते हैं; वहाँ लिली, गुलाब और अन्य सुंदर फूल हमेशा खिले रहते हैं; उस स्वर्ग के मैदान, पहाड़ और टीले सदाबहार हैं, और झरने मीठे हैं; मसीह में संतों की आत्माएँ वहाँ अनवरत आनंदित होती हैं। हे सैप्रकियिस, यदि तुम मेरी बातों पर विश्वास करोगे, तो तुम विनाश से बच जाओगे और परमेश्वर के साथ इस अकथनीय आनंद के स्वर्ग में प्रवेश करोगे।

तब सैप्रकियिस ने उससे कहा:

'तुम्हें इस भ्रम को त्यागकर देवताओं को बलिदान चढ़ाना चाहिए; फिर विवाह करो और अपने जीवन का आनंद लो, कहीं ऐसा न हो कि तुम भी उसी तरह नष्ट हो जाओ जैसे तुम्हारे पूर्वज अपनी मूर्खता के कारण नष्ट हो गए थे।'

संत डोरोथेया ने उत्तर दिया:

'मैं राक्षसों को बलिदान नहीं चढ़ाऊँगी, क्योंकि मैं एक ईसाई हूँ, और न ही मैं शादी करूँगी, क्योंकि मैं पहले से ही मसीह की दुल्हन हूँ। और यही मेरा विश्वास है; यह मुझे स्वर्ग में और मेरे वर के महल में ले जाएगा।'

और फिर संत को क्रूरता से यातनाएँ दी गईं।

यातनाओं के बाद, सैप्रसियिस ने आदेश दिया कि संत डोरोथिया को दो महिलाओं – जो जन्म से बहनें थीं – क्रिस्टीना और कैलिस्टा के पास ले जाया जाए; पहले वे ईसाई थीं, लेकिन बाद में, यातनाओं के डर से, उन्होंने मसीह का त्याग कर दिया और, अपनी निराशा में, दुष्टता से जीने लगीं, अपना समय विलासिता और सांसारिक व्यर्थता में बिताती रहीं; मसीह से उनके धर्मत्याग के लिए, उन्हें मूर्तिपूजकों ने धनी कर दिया था। सप्रसियिस ने पवित्र कन्या डोरोथेया को इन्हीं महिलाओं के पास भेजा; साथ ही, उसने उन्हें यह कहने का निर्देश दिया:

'जैसे तुमने ईसाई धर्म के भ्रम और जादू-टोने को त्यागकर अजेय देवताओं को बलदिान चढ़ाया और हमसे उपहार प्राप्त कयि, वैसे ही इस पागल औरत को ईसाई पागलपन से दूर करो और उसे हमारे देवताओं के धर्म में परविर्तति करो; और यदि तुम इसमें सफल हो जाती हो, तो हम तुम्हें और भी बड़े उपहारों से धनवान कर देंगे।'

इन महलिाओं ने पवत्रि कन्या को अपने घर में आश्रय देकर, उसे इस प्रकार समझाना शुरू कयि:

'न्यायाधीश के सामने समर्पण करो और उसकी सलाह मानो; हम जैसी, तुम भी खुद को यातना से बचाओ: क्योंकि सबसे बढ़कर, कसिी को भी इस अस्थायी और सुंदर जीवन को कष्ट के कारण बर्बाद नहीं करना चाहए, और न ही समय से पहले मरना चाहए।'

संत डोरोथेया ने उत्तर दयि:

'ओह, काश तुम मेरी बात मानकर, अपने द्वारा चढ़ाए गए मूर्तपिूजक बलदिान पर पश्चाताप करतीं और मसीह की ओर लौट आतीं! तुम खुद को गेहेन्ना (नरक) की यातनाओं से बचा लेतीं; क्योंकि हमारे प्रभु भले हैं, उदारता में धनी हैं और उन सभी पर दयालु हैं जो पूरे दलि से उनकी ओर लौटते हैं।'

तब क्रस्टिीना और कैलस्टिा ने उससे कहा:

'चूंकि हम पहले ही मसीह से दूर हो चुके हैं, हम फरि से उनकी ओर कैसे मुड़ सकते हैं?'

संत ने उनसे उत्तर दयि:

ईश्वर की दया से नराश होना मूर्तयिों की पूजा करने से कहीं बड़ा पाप है; इसलए, हमारे दयालु और कुशल चकित्सिक पर नराश या संदेह न करें: वह आपके सभी घावों को ठीक कर सकते हैं। ऐसा कोई घाव नहीं है जसिे वह ठीक नहीं करना चाहते। यही कारण है कि उन्हें उद्धारकर्ता कहा जाता है, क्योंकि वह सभी को बचाते हैं; यही कारण है कि वह मुक्तदिाता हैं, क्योंकि वह सभी को मुक्ति देते हैं; और यही कारण है कि उन्हें मुक्तदिाता कहा जाता है, क्योंकि वह सभी को स्वतंत्रता प्रदान करते हैं। आपको केवल पश्चाताप में अपना सम्पूर्ण हृदय उनके प्रति मोड़ना है, और आपको नस्सिंदेह क्षमा प्रदान की जाएगी।

तब ये दो बहनें – क्रस्टिीना और कैलस्टिा – संत के चरणों में गरि पड़ीं, रोईं, और उनसे वनिती करने लगीं कि वह उनके लए दयालु ईश्वर से प्रार्थना करें, ताकि वह उनके पश्चाताप को स्वीकार करें और उन्हें क्षमा प्रदान करें।

इसके बाद, पवत्रि कन्या ने आँखों में आँसू लए प्रभु से पुकारा:

'हे परमेश्वर, जन्हिोंने कहा: *"मैं पापी के मरने में कोई आनंद नहीं मानता, बल्कि मैं यह चाहता हूँ कि पापी अपने बुरे मार्ग से लौट आए और जीवति रहे। हे मनुष्य, अपने बुरे मार्ग से लौट आ; तू क्यों मरना चाहता है?"* (यहेजकेल 33:11)?[1707] प्रभु यीशु मसीह, जन्हिोंने हमसे कहा कि *'एक पश्चाताप करने वाले पापी पर स्वर्ग में उन नन्यिानबे धर्मी लोगों से कहीं अधकि आनन्द होगा जन्हिें पश्चाताप की आवश्यकता नहीं है'* (लूका 15:7)। इन अपनी भेड़ों पर अपनी दया दखिाइए, जन्हिें शैतान छीनकर आपसे अलग करने की कोशशि कर रहा था, और उन्हें वापस अपने झुंड में लाएँ; और हे परमपालक, जो भी आपसे दूर हो गए हैं, उनके उदाहरण से परविर्तति हों!

कुछ समय बीत जाने के बाद, राज्यपाल सैप्रसियिस ने क्रस्टिीना और कैलस्टिा को संत डोरोथेया के साथ अपने पास बुलाया; और जब वे पहुँचीं, तो उसने दोनों बहनों से अकेले में पूछा:

'क्या तुम डोरोथयिा को हमारे देवताओं की पूजा करने के लए मनाने में सफल हुईं?'

तब क्रस्टिीना और कैलस्टिा ने राज्यपाल से ऊँचे स्वर में उत्तर दयि:

'हमने पाप कयि है और बहुत गलत काम कयि है, क्योंकि, सांसारकि यातनाओं के डर से, हमने मूर्तयिों को बलदिान चढ़ाया। इसलए, हमने संत डोरोथयिा से वनिती की, और उन्होंने हमें पश्चाताप करने के लए मनाया, ताकि हम अपने प्रभु मसीह से अपने पापों की क्षमा प्राप्त कर सकें।'

सैप्रकियिस, अपने कपड़े फाड़ते हुए, बड़े क्रोध से भर गया; उसने दोनों बहनों को एक साथ बांधने, उनकी पीठ एक-दूसरे से मलिाने और उन्हें एक तारकोल के टब में फेंकने का आदेश दयि, और फरि, उसके नीचे लकड़ी रखकर, उन्हें जलाने का आदेश दयि।

तब पवत्रि बहनों ने इस प्रकार प्रार्थना करना आरंभ कयि:

'हे प्रभु यीशु मसीह! हमारी पश्चाताप को स्वीकार करो और हमें क्षमा प्रदान करो।'

[1707] पवत्रि संचार के लए संत बेसलि द ग्रेट की प्रार्थना। तुलना करें यहेजकेल की पुस्तक 33:11 से।

जब ये कुंवारी इस प्रकार जलाई जा रही थीं, तब संत डोरोथेया ने यह देखकर आनंदति होकर पुकारा:

'हे बहनों, मुझसे पहले चलीं जाओ, और अपने पापों की क्षमा के प्रति निश्चिति रहो, और जान लो कि शिहादत का मुकुट, जो तुमने पहले खो दिया था, वह तुमने अब, निस्संदेह, वापस पा लिया है; और अब तुम्हारा दयालु पिता तुम्हारे स्वागत के लिए बाहर आएगा, जैसे कोई व्यर्थ-व्ययी पुत्र की वापसी पर प्रसन्न होता है; वह आपको गले लगाएगा और अपनी सच्ची बेटियों के रूप में आपको महिमामय बनाएगा, अपने स्वर्गदूतों के सामने आपका गौरव बढ़ाएगा, और आपको पवित्र शहीदों के दल में शामिल करेगा।

और इस प्रकार पवित्र स्त्रियाँ, क्रिस्टीना और कैलिस्टा, एक ही गर्भ की बहनें, पश्चाताप की अवस्था में पीड़ा में मर गईं, जिन्होंने मसीह से क्षमा के साथ-साथ विजय का मुकुट प्राप्त किया था।

इसके बाद, सैप्रिकियस ने आदेश दिया कि संत डोरोथेया को यातना देने के लिए एक बार फिर से पकड़ लिया जाए और, उसे लटका कर, पहले की तरह ही उसे पीड़ा दी जाए।

फिर भी, इतने बड़े यातनाओं के बीच, संत इतनी प्रसन्नता से भर गईं कि ऐसा लगा मानो वह पहले ही अपने प्रिय वधूवर – मसीह – के महल में प्रवेश कर रही हों।

तब सैप्रिकियस ने उससे कहा:

'इसका क्या मतलब है, कि आनंद तुम्हारे चेहरे पर झिलमिलाता प्रतीत होता है, और यह कि, यातना सहते हुए, तुम इतनी प्रसन्न दिखाई देती हो?'

संत डोरोथेया ने उत्तर दिया:

'अपने पूरे जीवन में मैं कभी भी उतनी प्रसन्न नहीं हुई जितनी मैं अब हूँ, और सबसे बढ़कर मैं उन लोगों के लिए प्रसन्न हूँ जिनकी आत्माओं को शैतान ने आपके द्वारा ईश्वर से छीन लिया था, लेकिन जिन्हें मसीह ने अब वापस ले लिया है।' इस क्षण स्वर्ग में बड़ी खुशी का माहौल है; क्योंकि स्वर्गदूत उनकी आत्माओं पर आनंदित हैं, महादूत हर्षित हैं, और उनके साथ सभी पवित्र प्रेरित, शहीद और भविष्यवक्ता उत्सव मना रहे हैं। इसलिए, सैप्रिकियस, उस संकल्प को पूरा करने में शीघ्रता कर, जि , ताकि मैं भी शीघ्र ही पवित्र कुंवारी कन्याओं के आनंद में प्रवेश कर सकूँ और स्वर्ग में उन लोगों के साथ आनंदित हो सकूँ जिनके साथ मैंने पृथ्वी पर रोया था।

तब सैप्रिकियस ने आज्ञा दी कि पवित्र शहीद को जलती हुई मोमबत्तियों से झुलसाया जाए। परन्तु वह और भी अधिक आनन्दित होकर, एक तेजस्वी और प्रसन्न मुख के साथ, अपने न्यायाधीश से इस प्रकार पुकार उठी:

'तुम, अपनी मूर्तियों सहित, कुछ भी नहीं हो!'

इन शब्दों के बाद, यातना देने वाले ने आदेश दिया कि संत डोरोथेया को पेड़ से उतारकर हाथों से पीटा जाए।

उसने कहा, 'उसके चेहरे को, जो मेरा अपमान करता है, पीटा जाए।'

जब संत को पीटा जा रहा था, वह आनंदित होना बंद नहीं हुईं, और उन्हें पीटने वाले थक गए।

तब राज्यपाल ने यह मृत्युदंड सुनाया:

'सबसे गर्वित कन्या डोरोथेया, जिसने अमर देवताओं को बलिदान चढ़ाने और जीवित रहने से इनकार कर दिया, और इसके बजाय मसीह नामक किसी अज्ञात पुरुष के लिए मरना चुना – हम आदेश देते हैं कि उसकी तलवार से गर्दन काट दी जाए।'

यह सुनकर, पवित्र कुंवारी डोरोथेया ने जोर से पुकारा:

'मैं आपको धन्यवाद देती हूँ, हे मसीह, आत्माओं के प्रियतम, कि आप मुझे अपने स्वर्ग में बुला रहे हैं और मुझे अपने परम पवित्र महल में ले जा रहे हैं।'

और इस प्रकार, जब पवित्र शहीद को मृत्युदंड के लिए ले जाया जा रहा था और वह प्राटोरियम से बाहर जा रही थी, तो राज्यपाल के एक विद्वान और सलाहकार, थियोफिलस नामक व्यक्ति ने उपहास करते हुए उससे कहा:

'सुनो, मसीह की वधू, स्वर्ग में अपने वर से मेरे लिए एक सेब और कुछ गुलाब की पंखुड़ियाँ भेजना।'

संत डोरोथेया ने उनसे उत्तर दिया:

'मैं ऐसा अवश्य करूँगी।'

जब वे फाँसी के स्थान पर पहुँचे, तो शहीद ने जल्लाद से अपने प्रभु से प्रार्थना करने के लिए एक क्षण का समय देने का आग्रह किया। और जब उसने अपनी प्रार्थना समाप्त कर ली, तो प्रभु का स्वर्गदूत एक अति सुंदर युवक के रूप में उसके सामने प्रकट हुआ; एक स्वच्छ वस्त्र पर उसने तीन सुंदर सेब और तीन गुलाब के फूल रखे हुए थे।

तब पवत्रि शहीद ने उससे कहा:

– मैं आपसे वनिती करती हूँ, यह सब थयिोफलिस के पास ले जाइए और उससे कह दीजिए: 'लो, अब तुम्हारे पास वह है जो तुमने माँगा था।'

यह कहकर उसने अपना पवत्रि सरि तलवार के नीचे झुकाया और सरि कटने पर आनंदपूर्वक अपने वधूवर प्रभु मसीह के पास प्रस्थान कयिा, जन्हिें वह अपने यौवन से प्रेम करती थी, और अब स्वर्गीय महल में उनके हाथ से वजिय का मुकुट प्राप्त कयिा।

थेओफलिस ने, पवत्रि कन्या डोरोथेया के वचन का उपहास करते हुए, अपने मत्रिों से कहा:

'अभी-अभी, जब संत डोरोथेया—जो खुद को मसीह की दुल्हन कहती थी और घमंड करती थी कि वह उनके स्वर्ग में प्रवेश करेगी—को मौत के घाट उतारने के लिए ले जाया जा रहा था, तो मैंने उससे कहा: "मेरी बात सुनो, मसीह की दुल्हन—जब तुम अपने दूल्हे के स्वर्ग में प्रवेश करो, तो वहां से मेरे लिए कुछ गुलाब और सेब भेजना।"

और उसने उत्तर दयिा:

'सचमुच, मैं उन्हें तुम्हें भेजूँगी।'

यह कहकर थयिोफलिस और उसके मत्रि हँस पड़े। और अचानक एक देवदूत उसके सामने तीन सुंदर सेब और तीन फूल लेकर प्रकट हुआ और उससे कहा:

'अपने वादे को पूरा करते हुए, पवत्रि कुंवारी डोरोथयिा ने यह सब तुम्हें अपने वधू-वर के स्वर्ग से भेजा है।'

तब थयिोफलिस ने सेब और फूल देखकर उन्हें अपने हाथों में लेते हुए, ज़ोर से कहा:

'मसीह सच्चे ईश्वर हैं, और उनमें एक भी झूठ नहीं है!'

उसके मत्रिों और साथयिों ने उत्तर दयिा:

'थेओफलिस, क्या तुम्हें होश नहीं है, या तुम हमारा मज़ाक उड़ा रहे हो?'

उसने उनसे उत्तर दयिा:

'मैं न तो पागल हूँ और न ही मज़ाक कर रहा हूँ, बल्कि सच्चा तर्क मुझे सच्चे ईश्वर, यीशु मसीह में वश्विास करने के लिए मजबूर करता है।'

– 'लेकिन तुम्हारे इस अचानक बदलाव का क्या मतलब है?' उन्होंने उससे पूछा।

'मुझे बताओ, अब कौन सा महीना है?' थयिोफलिस ने अपने दोस्तों से पूछा।

'फरवरी,' उन्होंने जवाब दयिा।

थेओफलिस ने कहा, "सर्दयिों के इस समय में, पूरा कैपाडोसयिा ओस और बर्फ से ढका रहता है, और एक भी पेड़ या पौधा पत्तयिों से सजा नहीं होता; तो, आप क्या सोचते हैं - ये फूल और ये सेब, अपनी टहनयिों और पत्तयिों के साथ, कहाँ से आए हैं?"

यह कहकर, उन्होंने उन्हें सेब और गुलाब की कलयिाँ दखिाईं। थयिोफलिस के मत्रिों ने ये फल देखकर और उनकी अद्भुत सुगंध को सूंघकर कहा:

'फल और फूलों के सामान्य समय में भी, हमने कभी ऐसा कुछ नहीं देखा है।'

इस पर थयिोफलिस ने उत्तर दयिा:

'जब पवत्रि कन्या डोरोथेया को मृत्युदंड के लिए ले जाया गया, तो मुझे वह पागल लगी, क्योंकि वह मसीह को अपना वर कहती थी और लगातार उनके स्वर्ग के बारे में बात करती थी। तब, उपहास करते हुए, मैंने उससे वैसा ही कहा जैसा कोई पागल औरत से कहता है: "जब तुम अपने वर के स्वर्ग में पहुँचो, तो मुझे वहाँ से सेब और फूल भेजना।" इस पर उसने जवाब दयिा: 'मैं ऐसा अवश्य करूँगी।' उस समय मैं उसकी बातों पर हँसा, लेकिन अब, उसके सरि कलम कए जाने के बाद, अचानक मेरे सामने एक छोटा लड़का प्रकट हुआ – जो चार साल से अधकि का नहीं था और जसिकी सुंदरता का वर्णन नहीं कयिा जा सकता; मुझे नहीं लगा कि वह बोल भी सकता है, लेकिन, मुझे धक्का देकर, इस लड़के ने एक परपिक्व पुरुष की तरह बोलना शुरू कर दयिा:

'हे पवत्रि कुँवारी डोरोथयिा,' उसने मुझसे कहा, 'जैसा आपने वादा कयिा था, आपने अपने वधू के स्वर्ग से उपहार भेजे हैं।'

यह कहकर, उसने जो कुछ भी भेजा गया था, वह सब मेरे हाथों में रख दयिा और अदृश्य हो गया। यह कहकर, थयिोफलिस ने उद्घोष कयिा:

'धन्य हैं वे जो मसीह में वशि्वास करते हैं और उनके पवत्रि नाम के लिए दुख उठाते हैं, क्योंकि वह सच्चे ईश्वर हैं, और जो कोई भी उन पर वशि्वास करता है वह वास्तव में बुद्धमिान है!'

थेओफलिस से इस प्रकार और इसी तरह की उद्घोषणाओं के बाद, कुछ लोग राज्यपाल के पास गए और उससे कहा:

'आपके परामर्शदाता थयिोफलिस, जो अब तक मसीहयिों से घृणा करते थे और उन्हें क्रूर मृत्यु द्वारा नष्ट करने का प्रयास करते थे, अब सबके सुनने के लिए, एक यीशु मसीह के नाम की प्रशंसा और आशीर्वाद कर रहे हैं, और उनके वचन सुनने वालों में से कई इस मनुष्य पर वशि्वास करने लगे हैं।'

गवर्नर ने तुरंत थयिोफलिस को अपने सामने लाने का आदेश दयिा और उससे पूछा:

'तुमने अभी सार्वजनकि रूप से क्या कहा?'

थेओफलिस ने उत्तर दयिा:

'मैं मसीह की स्तुति कर रहा था, जसिकी मैं पहले, आज के दनि तक, नदिा कयिा करता था।'

इस पर राज्यपाल ने उससे कहा:

'मैं तुमसे, एक वविकेशील व्यक्ति से, चकति हूँ कि तुम अब उसी के नाम का महमिा कर रहे हो, जसिके उपासकों को तुमने अब तक सताया है।'

– 'यही कारण है कि मैं मसीह में सच्चे परमेश्वर के रूप में वशि्वास करने लगा हूँ,' थयिोफलिस ने उत्तर दयिा, 'क्योंकि उन्होंने अचानक मुझे भूल से सत्य के मार्ग पर ला दयिा और मुझे, सच्चे परमेश्वर को, जानने की कृपा की।

तब राज्यपाल ने कहा:

'ज्ञान की ओर झुकाव रखने वाले सभी लोग ज्ञान में और अधकि नपिुण होते जाते हैं, फरि भी तुम, जो कभी बुद्धमिान थे, अचानक मूर्ख बन गए हो, उसको ईश्वर कह रहे हो जसिे यहूदयिों ने सूली पर चढ़ाया था, जैसा कि तुमने स्वयं ईसाइयों से भी सुना है।'

इस पर थयिोफलिस ने उत्तर दयिा:

'मैंने सुना था कि मसीह को सूली पर चढ़ाया गया था, और मैं इस भ्रम में था कि मैं उसे ईश्वर नहीं मानता था और प्रतदिनि उसकी नदिा करता था। अब, मैं अपने पूर्व के पापों और नदिाओं पर पश्चाताप करता हूँ और उसे सच्चा ईश्वर स्वीकार करता हूँ।'

'तो फरि, आप ईसाई कहाँ और कब बने?' गवर्नर ने पूछा, 'जबकि आप आज तक देवताओं को बलदिान चढ़ाते रहे हैं?'

'ठीक उसी क्षण,' थयिोफलिस ने उत्तर दयिा, 'जब मैंने मसीह में वशि्वास कयिा और उनकी गवाही दी—तभी मैं ईसाई बना; और अब मैं अपने पूरे हृदय से अमर मसीह, परमेश्वर के पुत्र में वशि्वास करता हूँ, और उसके सच्चे नाम, उसके पवत्रि नाम, उसके नर्दिोष नाम का प्रचार करता हूँ - एक ऐसा नाम जसिमें न तो पाखंड है और न ही मूर्तयिों के बीच राज करने वाला भ्रम है।

तब राज्यपाल ने कहा:

'तो, फरि, क्या हमारे देवता एक भ्रम हैं?'

'उन मूर्तयिों में झूठ कैसे नहीं हो सकता,' थयिोफलिस ने उत्तर दयिा, 'जन्हिें मनुष्य के हाथ ने लकड़ी से गढ़ा है, तांबे और लोहे से ढाला है, और टनि से साँचा है—जनि पर उल्लुओं का घोंसला होता है और मकड़यिाँ अपना जाल बुनती हैं, जबकि उनके अंदर चूहे भरे होते हैं? और यदि मैं अब झूठ बोल रहा हूँ, तो मुझे झूठा कहने दो; परन्तु तुम्हें स्वयं वचिार करना चाहिए कि क्या मैं सत्य नहीं बोल रहा हूँ। और चूँकि मैं झूठ नहीं बोल रहा, तुम स्वयं शीघ्र ही सत्य से सहमत हो जाओगे और झूठ से मुँह मोड़ लोगे। क्योंकि तुम, एक ऐसे न्यायाधीश के रूप में जो दूसरों को उनके झूठ के लिए दण्डति करते हो, तुम्हें स्वयं झूठ से सत्य की ओर—ईश्वर मसीह की ओर—मुड़ना चाहिए।

तब राज्यपाल ने कहा:

'तो, क्या हमारे देवता जीवति प्राणी नहीं हैं?'

'मूर्तयिों में हम मानवीय समानता देखते हैं,' थयिोफलिस ने उत्तर दयिा, 'लेकनि वे नर्जिीव हैं; परमेश्वर, हालांकि, एक अदृश्य, जीवति प्राणी और सभी जीवन के दाता हैं।' मूर्तयिों को, यदि वे कीमती सामग्रयिों से बनी हों, तो आमतौर पर

उनकी रक्षा की जाती है ताकि चोर उन्हें चुरा न लें; लेकिन स्वर्गीय ईश्वर की रक्षा कोई नहीं करता, फिर भी वह सभी की रक्षा करते हैं, अपनी सृष्टि को संरक्षित रखते हैं।

तब राज्यपाल ने कहा:

'हे दुष्ट थियोफिलस! मैं देखता हूँ कि तुम एक भयानक मृत्यु से मिलना चाहते हो।'

'मैं एक अच्छा जीवन प्राप्त करना चाहता हूँ,' धन्य थियोफिलस ने उत्तर दिया।

इसके बाद, राज्यपाल ने कहा:

'यह जान लो: अगर तुम अपनी इस पागलपन पर अड़े रहे, तो मैं तुम्हें बड़े-बड़े कष्टों में डालूँगा, और फिर आदेश दूँगा कि तुम्हें क्रूर मृत्यु दी जाए।'

'अब मैं केवल हमारे ईश्वर मसीह के लिए मरना चाहता हूँ,' थियोफिलस ने उत्तर दिया।

'अपने घर, अपनी पत्नी, अपने बच्चों और अपने रिश्तेदारों के बारे में सोचो,' राज्यपाल ने कहा, 'और मूर्खता से खुद को एक क्रूर मृत्यु के हवाले मत करो, क्योंकि यह वास्तव में मूर्खता है कि आप स्वेच्छा से उन यातनाओं और सज़ाओं को झेलें जिनसे आमतौर पर दुष्टों को दंडित किया जाता है।'

इस पर पवित्र शहीद ने उत्तर दिया:

'यह मूर्खता नहीं, बल्कि महान बुद्धिमानी है—क्योंकि जिसने भी अकथनीय और शाश्वत आशीर्वादों और शाश्वत जीवन के लिए, इन क्षणिक और अस्थायी यातनाओं की परवाह किए बिना, एक समय से पहले मृत्यु को स्वीकार किया है।'

तब राज्यपाल ने कहा:

'तो, आप शांति के बजाय यातना को, और जीवन के बजाय मृत्यु को तरजीह देते हैं?'

'मैं यातनाओं से डरता हूँ,' थियोफिलस ने उत्तर दिया, 'और मृत्यु के विचार से कांपता हूँ—लेकिन मैं उन यातनाओं से भयभीत हूँ जिनका कोई अंत नहीं होगा, और मैं उस मृत्यु से भयभीत हूँ जो अपने साथ अनंतकाल की सज़ा लाती है।' वे यातनाएँ जिनका आप मुझे दे सकते हैं, वे जल्द ही समाप्त हो जाएँगी, लेकिन मूर्तिपूजकों के लिए आरक्षित दंड कभी समाप्त नहीं होगा!

तब राज्यपाल ने संत थियोफिलस को एक पेड़ से नग्न लटकाने और बुरी तरह कोड़े लगाने का आदेश दिया। जब उन्होंने संत को कोड़े मारना शुरू किया, तो उन्होंने कहा:

'अब मैं एक सच्चा ईसाई हूँ, क्योंकि मैं एक पेड़ पर लटका हुआ हूँ, और यह क्रूस के समान है। इसलिए, मैं तुझसे, हमारे ईश्वर मसीह, धन्यवाद करता हूँ कि तूने मुझे अपने चिन्ह पर लटकाए जाने का वरदान दिया है।'

'दुर्भाग्यपूर्ण मनुष्य,' राज्यपाल ने कहा, 'अपने शरीर को बचा!'

'दुर्भाग्यशाली मनुष्य, अपनी आत्मा पर दया कर!' थियोफिलस ने उत्तर दिया। 'मैं अपने क्षणिक जीवन को नहीं बचाता, परन्तु इसके बदले में मेरी आत्मा अनन्तकाल के लिए बच जाएगी।'

तब यातनाकर्ता, और भी अधिक क्रोधित होकर, ने आदेश दिया कि शहीद को लोहे की पंजाओं से खुरचकर मोमबत्तियों से जलाया जाए। संत, हालांकि, जैसे कोई पीड़ा महसूस ही न कर रहे हों, अपनी यातनाओं में आनंदित हुए और केवल इतना कहा:

'हे मसीह, परमेश्वर के पुत्र, मैं तुझे स्वीकार करता हूँ – मुझे अपने संतों की पंक्ति में गिन!'

इस बीच उनका चेहरा आनंद से दमक रहा था।

जब यातना देने वाले के सेवक अपने काम से थक गए, तो राज्यपाल सैप्रिकियस ने संत पर यह मृत्युदंड सुनाया:

'जहाँ तक थियोफिलस की बात है, जिसने अब तक अमर देवताओं को बलिदान नहीं चढ़ाया है, लेकिन अब वह भ्रष्ट हो गया है और हमारे देवताओं से मुँह मोड़कर ईसाई दल में शामिल हो गया है, हम आदेश देते हैं कि उसकी गर्दन तलवार से काट दी जाए।'

यह सुनकर, संत थियोफिलस ने उद्घोष किया:

'मैं आपको धन्यवाद देता हूँ, हे मसीह मेरे ईश्वर!'

और, आनंदित होकर, उन्होंने अपना पवित्र सिर तलवार के नीचे झुका दिया। शिरच्छेद के पश्चात्, उन्हें शहादत का मुकुट पहनाया गया और, अपने जीवन के ग्यारहवें घंटे में प्रभु के पास पहुँचकर, उन्होंने पहले मजदूरों के समान

पुरस्कार प्राप्त कयिा (मत्ती 20:1–16) – हमारे परमेश्वर मसीह के राज्य में, जनिके साथ, पिता और पवत्रि आत्मा के साथ, युगानुयुग सम्मान और महमिा हो, आमीन।

पवत्रि शहीद जूलयिन का स्मरणोत्सव।

6 फरवरी को स्मरण कयिा जाता है

पवत्रि शहीद जूलयिन एमेसा नगर के नविासी थे[1708] । अपनी युवावस्था में चकित्सिा की कला का गहन अध्ययन करने के बाद, उन्होंने न केवल लोगों के शरीरों को बल्कि उनकी आत्माओं को भी चंगा कयिा: क्योंकि बीमारयिों का इलाज करते समय, उन्होंने उन्हें मसीह में वश्विास करना सखिाया और कई वधिर्मी लोगों को हमारे परमेश्वर मसीह के धर्म में परविर्तति कयिा।

जब पवत्रि शहीदों बशिप सलिवान, डीकन ल्यूक और रीडर मोकयिस – जनिकी स्मृति 29 जनवरी को मनाई जाती है – को पकड़कर जंगली जानवरों द्वारा खाए जाने के लिए जेल से बाहर ले जाया गया, तो जूलयिन उन शहीदों पर झपट पड़ा, उन्हें चूमा और उनसे प्रभु के लिए मृत्यु से न डरने की वनिती की।

इसके बाद, उसे मूर्तपिूजकों ने पकड़ लयिा और एक गुफा में कैद कर दयिा; वहाँ, उसके सरि में एक लंबा कील ठोंका गया, और उसके हाथों और पैरों में भी कीलें ठोंकी गईं; इसके बाद, उसने अपनी आत्मा ईश्वर को सौंप दी।

स्मर्ना के बशिप संत वुकोल की स्मृति

6 फरवरी को स्मरण कयिा जाता है

ईश्वर-प्रसन्न वुकोल, अपने शशिु-काल से ही, अपनी कोमलता और पवत्रिता के लिए वशिष्टि थे, और पवत्रि आत्मा से परपिूर्ण थे।

योहन द थयिोलोजयिन, मसीह के सर्व-स्तुत्य और प्रयि शष्यि तथा उनके घनष्ठि साथी, ने यह देखकर कि वह आध्यात्मकि अनुभव और योग्यता वाले व्यक्ति थे, उन्हें स्मर्ना की कलीसयिा के बशिप[1709] के रूप में नयिुक्त कयिा; स्मर्ना के ईसाइयों के लिए यह नयिुक्ति अत्यंत उपयुक्त समय पर हुई, और पवत्रि बशिप वुकोल ने उनके लिए बहुत भलाई की। पवत्रि आत्मा से प्रबुद्ध होकर, वह एक चौकी पर रखे दीपक के समान चमका (मत्ती 5:15): उसने भूल-भुलैया और मूर्तपिूजक भ्रम के अंधकार में रहने वालों को स्वर्गीय प्रकाश से प्रबुद्ध कयिा, और पवत्रि बपतस्मिा के माध्यम से उन्हें प्रकाश के पुत्र बना दयिा (यूहन्ना 12:36), और उन्होंने उन सभी की रक्षा की उन अनगनित, अदृश्य, फरि भी क्रूर और अजेय जानवरों से जो हमेशा मंडराते रहते हैं, यह खोजते हुए कि किसे वे नगिल सकें (1 पतरस 5:8)।

अपने नधिन से पहले, संत वुकोल[1710] ने अपने आध्यात्मकि झुंड को धन्य पॉलीकार्प को सौंपा और इस अस्थायी जीवन से शाश्वत जीवन में चले गए। संत के शरीर को दफनाए जाने के बाद, ईश्वर ने उचति समझा कि उनके कब्र के पास एक मूर्रा-युक्त पौधा[1711] उगना चाहिए, जो बीमारों को ठीक करने की अपनी क्षमता के लिए प्रसद्धि था।

[1708] एमेसा – उत्तरी-पश्चमिी सीरयिा में ओरोंटेस नदी के पूर्व में स्थति एक शहर, जो भूमध्य सागर में मलिती है।

[1709] स्मर्ना – ईजयिन सागर (द्वीपसमूह) के पूर्वी तट पर स्थति आयोनयिा का एक प्रसद्धि व्यापारकि शहर, एफ़सिस से 66 वर्स्ट दूर, मेलेस नदी के मुहाने पर, एशयिा माइनर के सबसे पुराने शहरों में से एक; चर्च की स्थापना स्मर्ना में संत जॉन द थयिोलोजयिन, द एपोस्टल द्वारा की गई थी। स्मyrna वर्तमान में तुर्कों के अधकिार में है, लेकनि ईसाई धर्म आज भी वहाँ संरक्षति और फल-फूल रहा है। यह शहर साम्राज्य के सबसे समृद्ध शहरों में से एक बना हुआ है।

[1710] उनकी मृत्यु लगभग 100 ईस्वी के आसपास हुई।

[1711] मर्सिनि – मेरेटी का पेड़। यह एशयिा, अमेरकिा, अफ्रीका – मस्रि में – और भूमध्य सागर के तटों पर, दक्षणिी यूरोप में उगता है। इस पेड़ की टहनयिों का उपयोग त्योहारों के दौरान घरों को सजाने के लिए कयिा जाता था; दावतों, वशिषकर शादयिों के दौरान, सरि पर मेरेटील की मालाएँ पहनी जाती थीं। प्राचीन लोगों के बीच, मेरेटील को आम तौर पर प्रेम और शांत खुशी के प्रतीक के रूप में पूजा जाता था, जो वर्तमान में प्रसन्नता की परस्थितियिों और भवष्यि के लिए उज्ज्वल आशाओं का प्रतनिधित्वि करता था।

पवत्रि शहीदों मार्था और मैरी तथा उनके भाई, पवत्रि शहीद युवा लकिेरयिस की स्मृति।

6 फरवरी को स्मरण कयिा जाता है

ये शहीद एशयिा की भूमि[1712] में रहते थे, उस समय जब मसीह की कलीसयिा दुष्ट मूर्तपिूजक राजाओं और राजकुमारों द्वारा उत्पीड़न का शकिार हो रही थी।

मार्था और मैरी, कुंवारी रहते हुए, केवल प्रभु को प्रसन्न करना चाहती थीं और उनके लिए मृत्यु स्वीकार करने की प्रबल इच्छा से भरपूर थीं।

संयोग से एक दनि एक दुष्ट राज्यपाल उनके घर के पास से गुजर रहा था। उसी क्षण, मार्था ने अपनी बहन के साथ मलिकर अपने घर के दरवाजे खोले और राज्यपाल को संबोधति करते हुए चल्लिाई:

'हम ईसाई हैं!'

ये शब्द सुनकर राज्यपाल ने अपने सेवकों सहति उन पर कोई ध्यान नहीं दयिा और आगे बढ़ गया। फरि बहनों ने एक बार फरि राज्यपाल के पीछे पुकारा:

'हम मसीही हैं!'

इस पर राज्यपाल ने उत्तर दयिा:

'मैं तुम्हारी जवानी के कारण तुम्हें माफ करता हूँ; तुम्हें मौत की सजा देना मेरे लिए अप्रयि होगा।'

यह सुनकर, संत मार्था ने उद्घोष कयिा:

'हे राज्यपाल, एक शहीद की मृत्यु मृत्यु नहीं, बल्कि जीवन है!'

यह सुनकर राज्यपाल बहुत क्रोधति हो गया और उसने उस पवत्रि कन्या को ले जाने का आदेश दयिा।

तब मरयिम भी घर से बाहर आई और राज्यपाल से कहा:

– 'जो मेरी बहन ने कहा है, वही मैं भी कहूँगा।'

तब शहीदों का भाई, लकिारयिोन नामक एक छोटा लड़का, घर से बाहर नकिला और चल्लिाया:

'मैं भी मार्था और मैरी की ही बात दोहराती हूँ, क्योंकि मैं एक ईसाई हूँ।'

और राज्यपाल ने तीनों को सूली पर चढ़ाने का आदेश दयिा। उनकी माँ भी वहाँ खड़ी थीं और उन्होंने उनसे कहा:

'बचाए जाओ, मेरे प्रयि बच्चों, और मसीह से अपना मुकुट प्राप्त करो।'

और मरयिम, सूली पर चढ़ी हुई, ने कहा:

'तुम भी बच जाओ, हमारी माँ, अपने गर्भ के फल के साथ, क्योंकि तुमने हमें मसीह के पास लाया है।'

इसके बाद, मार्था और मैरी को सूली पर चढ़ाया गया, जबकि लाइकयिस का एक सैनकि की तलवार से सरि कलम कर दयिा गया।

20 फरवरी

7 फरवरी (पुराने कैलेंडर के अनुसार)

हमारे पवत्रि पति पार्थेनयिस, लैम्प्साकस के बशिप का जीवन।

7 फरवरी को स्मरण कयिा जाता है

संत पार्थेनयिस, जनिका नाम दविस वर्जनि मैरी के प्रस्तुति पर्व ([1713]) के ही दनि आता है, मेलटिोपोल ([1714]) में पैदा हुए थे। उनके पति, जनिका नाम क्रस्टिोफ़र था, उस शहर के एक चर्च में डीकन थे। पार्थेनयिस को बचपन में पढ़ना

[1712] एशयिा – रोमन साम्राज्य का एक प्रांत, एशयिा माइनर प्रायद्वीप के पश्चमि में, जसिकी राजधानी एफ़सिुस थी।

[1713] ग्रीक शब्द 'पारथेनोस' से, जसिका अर्थ 'कुंवारी' या 'अप्सरा' है।

[1714] मेलटिोपोल – एशयिा माइनर के एक उत्तर-पश्चमिी प्रांत, मसियिा के शहरों में से एक।

या लखिना नहीं सखिाया गया था, लेकनि चर्च में पवत्रि धर्मग्रंथों को सुनकर, उन्होंने उनसे इतना कुछ सीख लयिा कि वह कसिी भी कुशल लपिकि का मुकाबला कर सकते थे। अपनी युवावस्था में, वह अक्सर पास की एक झील पर जाता था जहाँ, मछली पकड़ते और अपनी पकड़ी हुई मछली बेचते समय, वह उससे प्राप्त होने वाली आय गरीबों को दे देता था। बहुत कम उम्र से ही, वह ईश्वर की कृपा से परपिूर्ण था; और अठारह वर्ष की आयु में, मसीह के पवत्रितम नाम का स्मरण करते हुए, उसने लोगों से दुष्ट आत्माओं को भगाना और कई चमत्कार करना शुरू कर दयिा।

एक बार जब संत पार्थेनयिस की ख्याति लोगों में फैल गई, तो मेलटिोपोल के बशिप फलिपि ने उन्हें अपने समक्ष बुलाया। पवत्रि युवक के बारे में उसने जो कुछ भी सुना था, उसकी जाँच-पड़ताल करने और सब कुछ सत्य पाकर, वह उसकी सद्गुणों और उसमें वद्यिमान ईश्वर की कृपा को देखकर चकति रह गया, और आदेश दयिा कि उसे वद्विता की कला सखिाई जाए। इसके तुरंत बाद, बशिप फलिपि ने सेंट पार्थेनयिस को उनकी इच्छा के वरिुद्ध एक पुरोहति नयिुक्त कयिा और उन्हें एक चर्च की देखभाल सौंप दी। पुरोहति के पद पर, संत पार्थेनयिस ने सदाचार के जीवन के लिए खुद को और भी अधकि समर्पति कर दयिा। प्रभु से पवत्रिता की एक वशिेष कृपा और चमत्कार करने की शक्ति प्राप्त करने के बाद, उन्होंने हर तरह की बीमारयिों को ठीक कयिा और हमारे प्रभु यीशु मसीह के नाम पर कई अद्भुत चमत्कार कए। इन चमत्कारकि संकेतों में, अन्य बातों के अलावा, नम्निलखिति शामलि था।

एक बार, यात्रा के दौरान, चमत्कार करने वाले संत की मुलाकात एक ऐसे व्यक्ति से हुई जसिकी आँख एक युवक द्वारा नकिाल दी गई थी; घायल आँख उसके गाल से लटक रही थी, और वह व्यक्ति पीड़ा और रोते हुए, उसे अपने हाथ से पकड़े हुए था। संत पार्थेनयिस ने नकिाली हुई आँख को अपने हाथ में लयिा, उसे वापस उसकी जगह पर रखा और पानी से धोया; तीन दनि बाद, वह व्यक्ति पूरी तरह से ठीक हो गया।

एक अन्य अवसर पर, एक महलिा जो एक गंभीर और लाइलाज शारीरकि बीमारी से पीड़ति थी, संत पार्थेनयिस के पास आई और उनसे उपचार की भीख माँगी; जब पूजनीय ने उसके माथे पर क्रॉस का चहि्न बनाया, तो वह तुरंत ठीक हो गई।

एक बार, संत पार्थेनयिस एक बीमार व्यक्ति से मलिने नकिले; जब वे एक कुलीन व्यक्ति के घर के पास से गुजर रहे थे, तो एक बड़ा कुत्ता अपनी रस्सी तोड़कर संत की ओर दौड़ पड़ा; अपने अगले पंजे उनके कंधों पर रखकर, उसने उनके चेहरे को काटने की कोशशि की। लेकनि संत ने उस पर फूँक मारी, क्रॉस का चहि्न बनाया, और उसी क्षण कुत्ता मर गया; जसि पर संत पार्थेनयिस ने उसे अपने कंधों से झटक दयिा।

ऐसे चमत्कारों के बारे में सुनकर, साइज़किस के आर्चबशिप अचलियस ने संत पार्थेनयिस को अपने पास बुलाया और उन्हें लैम्प्सैक्स का बशिप नयिुक्त कयिा[1715] । अपने सुपुर्द कए गए धर्मप्रांत में पहुँचने पर, पार्थेनयिस ने पाया कि वहाँ के सभी नविासी अधार्मकि हेलेनकि मूर्तपिूजा में लीन थे, जबकि उस समय वहाँ बहुत कम ईसाई थे। मसीह के इस नेक चरवाहे को इस बात से गहरा दुख हुआ। उन्होंने सबसे पहले अपनी भेड़ों को समझाना, फटकारना और वनिती करना शुरू कयिा; उन्होंने मसीह के नाम पर सत्य का मार्ग दखिाया और चमत्कार करके बीमारों को ठीक कयिा, और इस प्रकार कई लोगों को सच्चे ईश्वर के ज्ञान की ओर ले गए। अंत में, यह देखकर कि उस शहर के नविासी वशि्वास में प्रगति कर रहे थे और मूर्तपिूजा को अस्वीकार कयिा जा रहा था, संत पार्थयिस ने वहां के घृणति मूर्तपिूजक पूजा स्थलों को ध्वस्त करने और उनकी जगह पर ईश्वर के भव्य पवत्रि चर्च बनाने का संकल्प लयिा। इस उद्देश्य के लिए, संत पार्थयिस इस कार्य की अनुमति मांगने के लिए महान सम्राट कॉन्स्टेंटनि के पास गए। धर्मपरायण और मसीह-प्रेमी सम्राट द्वारा सम्मान और महान दया से प्राप्त, मसीह के पवत्रि पुरुष ने वह प्राप्त कयिा जसिकी वह मांग कर रहे थे: महान संत कॉन्स्टेंटनि ने उन्हें मूर्तपिूजक पूजा स्थलों को ध्वस्त करने का अधकिार देने वाला एक शाही फरमान प्रदान कयिा और, पवत्रि चर्चों के नरि्माण के लिए बहुत सारा सोना भेंट करने के बाद, उन्हें शांति से वदिा कयिा।

लैम्प्सैक्स लौटने पर, ईश्वर के संत पार्थेनयिस ने तुरंत सभी मूर्तपिूजक पूजास्थलों को धूल-चटा दयिा और जल्द ही शहर के केंद्र में ईश्वर का एक वशिाल और सुंदर चर्च बनवाया; उन्होंने स्वयं इसके नरि्माण में भाग लयिा और अपने हाथों से नरि्माणकर्ताओं की सहायता की।

[1715] लैम्प्सैक्स – एशयिा माइनर के उत्तर-पश्चमिी क्षेत्र में स्थति मसियिा का एक महत्वपूर्ण शहर, जसिकी स्थापना फोसीयन लोगों ने की थी।

जब यह चर्च बन रहा था, तो एक व्यक्ति, जो एक अशुद्ध आत्मा के वश में था, संत पार्थेनियस के पास आया; उस दानव ने बहुत पहले ही उस पर अधिकार कर लिया था, लेकिन वह इसके बारे में अनजान था। और इस प्रकार यह दानव-ग्रस्त व्यक्ति, संत पार्थेनियस के पास आकर, उन्हें दयालु शब्दों से अभिवादन करने लगा। किन्तु मसीह के पवित्र व्यक्ति ने, उसके भीतर एक अशुद्ध आत्मा की उपस्थिति को भांपते हुए, अभिवादन का उत्तर देने से परहेज़ किया।

तब उस मनुष्य के द्वारा लज्जित शैतान ने संत से कहा:

'मैं तुम्हें देखने के लिए तरस रहा था, इसीलिए मैंने तुम्हें अभिवादन किया; तो फिर, तुमने मेरा अभिवादन क्यों नहीं किया?'

'तुमने मुझे देख लिया है; तो तुम चाहते क्या हो?' संत पार्थेनियस ने उत्तर दिया।

'मैंने तुम्हें देखा और पहचान लिया,' दानव ने कहा।

'अगर तुमने मुझे देखकर सचमुच मुझे पहचान लिया होता,' संत पार्थेनियस ने उत्तर दिया, 'तो तुम इस ईश्वर की रचना को छोड़ देते।'

इस पर राक्षस ने कहा:

'मैं आपसे विनती करता हूँ, मुझे मेरे इस निवास से न निकालें, जिसमें मैं इतने लंबे समय से रहा हूँ।'

'और तुम इस आदमी में कब से हो?' संत ने पूछा।

'उसके बचपन से ही,' दानव ने उत्तर दिया, 'और अब तक किसी ने मुझे महसूस नहीं किया, सिवाय आपके; और अब, जैसा कि मैं देख रहा हूँ, आप मुझे बाहर निकाल रहे हैं; लेकिन अगर ऐसा है, तो आप मुझे कहाँ जाने का आदेश देंगे?'

'मैं तुम्हारे रहने के लिए एक जगह का प्रबंध करूँगा,' संत पार्थेनियस ने उत्तर दिया।

'मुझे लगता है कि आप निश्चित रूप से मुझे सूअरों के झुंड में प्रवेश करने का आदेश देंगे,' राक्षस ने कहा।

'नहीं, मैं तुम्हें एक ऐसा आदमी दिखाऊंगा जिसमें तुम वास कर सकते हो; बस इस वाले को छोड़ दो,' संत पार्थेनियस ने उत्तर दिया।

'लेकिन क्या आप सच में ऐसा करने का इरादा रखते हैं, या आप बस यूँ ही कह रहे हैं? मुझे बताइए,' शैतान ने संत पार्थेनियस से पूछा।

'मैं तुम्हें सच बता रहा हूँ,' संत ने कहा, 'मैं एक ऐसे आदमी को जानता हूँ जिसमें, अगर तुम चाहो, तो तुम वास कर सकते हो – बस इसको तुरंत छोड़ दो।'

इसके बाद, संत के शब्दों से आश्वस्त होकर, राक्षस उनसे ऐसे व्यक्ति का पता बताने के लिए विनती करने लगा।

तब संत पार्थेनियस ने अपना मुँह खोलकर राक्षस से कहा:

'यही वह आदमी है: प्रवेश करो और मुझमें वास करो।'

शैतान, जैसे आग से झुलस गया हो, जवाब में चिल्लाया:

'हाय! यदि इतने लंबे समय के बाद, आप मुझे एक अजनबी से बाहर निकाल रहे हैं, तो मेरे साथ क्या बुराई नहीं करेंगे यदि मैं आपके अंदर वास करूँ? और मैं परमेश्वर के भवन में कैसे प्रवेश करूँगा?'

यह कहकर, दानव सुनसान और दुर्गम स्थानों में भाग गया; जबकि वह मनुष्य, ईश्वर की कृपा से, स्वस्थ हो गया और प्रभु की स्तुति करने लगा।

एक बार जब चर्च का निर्माण पूरा हो गया, तो संत पार्थेनियस ने पवित्र स्थल में एक सिंहासन का निर्माण शुरू किया, ताकि दिव्य अनुष्ठान उसी पर संपन्न हो सके।

उस समय, उन्हें एक खंडहर पड़े हुए मूर्तिपूजक मंदिर में एक बड़ा पत्थर मिला; यह पवित्र वेदी के निर्माण के लिए बहुत उपयुक्त प्रतीत हुआ, और इसलिए मसीह के संत ने राजमिस्त्रियों को इसे एक सुंदर आकार देने और इसे पवित्र भोज के समारोह के लिए तैयार करने का आदेश दिया।

कर्मकारों द्वारा पत्थर को आवश्यक रूप से तैयार करने के बाद, उन्होंने उसे ठीक से एक गाड़ी पर रखा और उसे चर्च ले जाने के लिए मजबूत बैलों को उससे जोड़ दिया।

शैतान, मूर्तिपूजक मंदिर से उठाए गए पत्थर से क्रोधित होकर, जुते हुए बैलों को डरा गया, और वे अचानक इतनी तेज़ी से भाग खड़े हुए कि कोई भी उन्हें रोक नहीं सका। उनके बगल में चलकर उनका मार्गदर्शन कर रहे चालक, जिसका

नाम यूटकियिन था, राक्षसों के काम के कारण, पहियों के नीचे पीछे की ओर गरि गया; और पत्थर के बोझ से भारी गाड़ी उस पर चली गई, जसिसे उसकी हड्डयिाँ टूट गईं और वह कुचल गया; और चालक की तुरंत ही मृत्यु हो गई।

यह जानकर, परमेश्वर के पवत्रि पुरुष, पार्थेनयिस ने कहा:

'यह शैतान की दुष्टता का काम है, लेकनि, हे शैतान, ईश्वर के कार्य में बाधा न डाल!'

वे तुरंत उठे, अपने साथ उन धर्मनष्ठि पुरुषों को लेकर जहाँ यह दुर्भाग्य हुआ था, वहाँ पहुँच गए। मृतक का शव देखकर, उन्होंने प्रार्थना के लिए अपने पवत्रि घुटने टेके और आँसुओं के साथ, प्रभु से वनिम्रतापूर्वक प्रार्थना करने लगे:

'हे सर्वशक्तमिान ईश्वर, जीवन और मृत्यु के दाता, आप जानते हैं कि दुष्ट शत्रु ने अपनी चालाकी से आपके प्राणी पर मृत्यु क्यों ला दी है; परन्तु, हे परम कृपालु, जैसा सदा होता आया है, वैसे ही अब भी, उसकी दुष्ट मंशा को व्यर्थ कर दे और अपने सेवक यूटकियिन में जीवन लौटा दे, और इस प्रकार वश्विासयिों को अपनी अजेय शक्तकिा दर्शन करा – क्योंकि तू ही एक परमेश्वर है, और तुझ में ही युगानुयुग महमिा हो। आमीन।

जब संत पार्थेनयिस यह प्रार्थना कर ही रहे थे, कि लोगों की आँखों के सामने मृत पड़ा वह आदमी जीवति हो उठा और चल्लिाया:

'महमिा तेरी हो, हे मसीह हमारे परमेश्वर, क्योंकि तू मृतकों को भी जलिा उठाता है!'

और तुरंत, पहले की तरह स्वस्थ हो जाने पर, उसने बैलों को हांका और उनका उपयोग चर्च तक पत्थर ले जाने के लिए कयिा।

तब जन्हिोंने यह चमत्कार और मरे हुओं के अचानक जी उठने को देखा था, उन्होंने परम धन्य परमेश्वर की महमिा और स्तुतकिी और चारों ओर से उन लोगों को लाने लगे जो बीमार और अशुद्ध आत्माओं से पीड़ति थे; और वे सब, संत पार्थेनयिस की प्रार्थना से, परमेश्वर की कृपा और सामर्थ्य से चंगे हो गए, और उस समय लगभग कोई भी चकित्सिा की कला का सहारा नहीं लेता था, क्योंकि वे इसे पूरी तरह से अनावश्यक मानते थे; और लोग डॉक्टरों के पास जाना बंद कर दिए, क्योंकि सभी बीमारयिाँ हमारे प्रभु यीशु मसीह के नाम पर, मसीह के पवत्रि सेवक द्वारा नःशिुल्क ठीक हो जाती थीं।

अन्य रोगयिों के अलावा, संत पार्थेनयिस ने तीन दनिों के भीतर, शाही वंश की एक डायोनसियिस नामक महलिा की दानव-ग्रस्त बेटी, डैफ्नी को ठीक कयिा।

एक अन्य अवसर पर, उन्होंने स्मर्ना के राजकुमार मामैलयिस की बेटी अगालमैटयिा को चंगा कयिा; वह भी एक राक्षस के वश में थी और अक्सर जमीन पर तड़पती थी; उसके मुंह से झाग नकिलता था, और कभी-कभी वह मृतक जैसी प्रतीत होती थी।

संत पार्थेनयिस ने ज़ोइल नाम की एक कुलीन महलिा की भी मदद की, जो पहले अवश्विास की आत्मा के वश में थी, जसिसे उसे बहुत कष्ट होता था।

एक अवसर पर, नकिॉन नाम का एक युवक, जो एक पादरी का पुत्र था, को इस ईश्वर के पवत्रि पुरुष के पास लाया गया; उस पर भी एक राक्षस सवार था जो उसे बहुत कष्ट देता था। उसके माता-पति ने अपने पुत्र को संत पार्थेनयिस के चरणों में लटिाकर उनसे दया करने और उसे उस अशुद्ध आत्मा से मुक्त करने की वनिती की।

तब मसीह के पवत्रि व्यक्तनि ने उनसे कहा:

'तुम्हारा पुत्र चंगा होने के योग्य नहीं है, और दुष्टात्मा उसे दंड के रूप में दी गई है, क्योंकि वह पतिृहत्यारा है: वास्तव में, तुम स्वयं, उसके हाथों अक्सर अपमान और अन्याय सहने के बाद, अपने प्राणों की पीड़ा में प्रार्थना कर चुके हो कि प्रभु उसे दंडति करें; इसलिए, उसे इस कष्ट में रहने दो—यह दंड उसके लिए आवश्यक है।'

लेकनि वे, एक प्रेमपूर्ण माता-पति के रूप में, अपने पुत्र के लिए अपने दलि में दुख करते हुए, आँखों में आँसू लिए, संत से पुकार उठे:

'हे परमेश्वर के संत, उसके लिए परमेश्वर से प्रार्थना करें, ताकि वह क्रूर शैतान से मुक्त हो जाए!'

तब धन्य पार्थेनयिस ने माता-पति के आँसू देखकर उन पर दया की; उन्होंने प्रभु से भक्तपिूर्वक प्रार्थना की, और राक्षस तुरंत ही युवक को छोड़ गया। माता-पति, अपने पुत्र को स्वस्थ हुआ देखकर, परमेश्वर की स्तुतिऔर आशीर्वाद करते हुए अपने घर लौट गए।

आरसिवा नगर की अलेक्जेंड्रा नाम की एक महिला को भी परमेश्वर के पवित्र पुरुष, पार्थेनियस के पास लाया गया; यह महिला, शैतान की शक्ति से, सांप की आत्मा से ग्रस्त थी: वह कभी-कभी उस सरसरी जीव की तरह फुफकारती थी और, ऐसे समय में, कई लोगों की मौत का कारण बनती थी। मसीह के पवित्र पुरुष ने, उससे दुष्ट आत्मा को निकालने के बाद, उसे चंगा कर दिया और उसे अच्छे स्वास्थ्य के साथ उसके परिवार के पास भेज दिया।

एक अन्य अवसर पर, संत पार्थेनियस ने अपने हाथ रखने और प्रार्थना के द्वारा, एक छोटी लड़की को ठीक किया जिसे उसके माता-पिता उनके पास लाए थे—वह अबडिनिया के एक नागरिक, सिनोडियस की बेटी थी—जो एक राक्षस के वश में थी और पहाड़ों में भटक रही थी।

उसी समय, ईश्वर के इस सेवक ने अक्सान नामक एक सैनिक पर एक चमत्कार किया। इस व्यक्ति के सभी अंग लकवाग्रस्त थे, लेकिन मसीह के पवित्र व्यक्ति ने उसे पानी से धोया और उस पर प्रार्थना करने के बाद, उसे अच्छे स्वास्थ्य के साथ विदा कर दिया।

सीरिया का एक निवासी, एलन नाम का एक व्यक्ति, अपने भीतर वास करने वाली एक दुष्ट आत्मा के प्रभाव में, सेंट पार्थिनियिस द्वारा स्थापित चर्च में फांसी लगा ली और कैटेकुमेन (श्रद्धालुओं) के लिए बने प्रवेश-कक्ष (नार्टेक्स) में मृत लटका हुआ पाया गया; यह जानकर, संत उसके शव के पास गए और अपनी प्रार्थना के द्वारा उसमें से शैतान को निकालकर उसे मृतकों में से जीवित कर दिया।

परेया (Lampsacus और Cyzicus के बीच स्थित एक नगर) का निवासी यूट्रोपियस अपनी राक्षस-ग्रस्त पत्नी को संत पार्थेनियस के पास लाया। मसीह के इस पवित्र पुरुष ने पीड़िता के मुख पर फूँक मारकर और उसके सिर पर प्रार्थना करके उसे तुरंत ही चंगा कर दिया।

संत ने फेला नामक गाँव से लाई गई अकाकिया नामक एक और राक्षस-ग्रस्त महिला को भी चंगा किया।

उसी समय, संत पार्थिनियिस ने कुलीन व्यक्ति अगपटिस की पत्नी यूचेरिया नाम की एक महिला को भी चंगा किया; उस पर प्रार्थना करने और उसे पवित्र तेल पिलाने के बाद, उन्होंने उसे तुरंत चंगा कर दिया, जबकि उससे पहले, ज़हर खाने के कारण, वह बहुत कष्ट सह चुकी थी और घातक ज़हर से पीड़ित थी।

विज़ा शहर का मैक्समिस नाम का एक युवक, लैम्प्सैक्स में रहते हुए, एक डीकन की सेवा करता था। एक बार पेट की बीमारी से बीमार पड़ने पर, उसका इलाज नहीं हो सका और उसकी मृत्यु हो गई। उनके माता-पिता, अपने बेटे की मौत की खबर पाकर, उसे दफनाने के लिए वीज़ा से लैम्प्साकस आए; वहाँ ताबूत से मैक्समि का शव निकालकर, वे रोते हुए उसे चर्च ले गए और रास्ते में, उसे ठीक उसी जगह पर रख दिया जहाँ से संत पार्थिनियिस को गुजरना था। उस स्थान पर पहुँचने पर, मृतक को और उसके विलाप करते माता-पिता को देखकर, ईश्वर-प्रसन्न संत की आँखों में आँसू आ गए; वह घुटनों के बल झुककर उसके लिए ईश्वर से प्रार्थना करने लगा - और तुरंत ही मैक्समि में प्राण वापस आ गए; वह उठ खड़ा हुआ, बैठ गया और बोलने लगा। तब संत पार्थिनियिस ने उसकी ओर अपने हाथ फैलाए, उसे उठाया, और उसे अच्छे स्वास्थ्य में उसके माता-पिता के पास लौटा दिया। उस नगर के सभी निवासी इस गौरवशाली चमत्कार को देखकर अत्यंत चकित हुए और प्रभु की महिमा की।

ईश्वर के पवित्र पुरुष के पास अस्सेरिया गाँव की डिकिनेस थियोफाइला और उसी गाँव की रूफिना नामक एक युवती को भी लाया गया; दोनों राक्षसों की शक्ति से लकवाग्रस्त थीं। पार्थेनियस ने उन पर पवित्र जल छिड़ककर और उनके लिए प्रार्थना करके, दोनों को चंगा कर दिया।

इसी प्रकार, उनकी प्रार्थनाओं के द्वारा, मसीह के इस सेवक ने प्रेस्बटिर हिलारियिन के एकमात्र पुत्र फेलसियिस नामक एक व्यक्ति को चंगा किया; यह बीमार व्यक्ति शैतान के कामों के कारण मानसिक रूप से विक्षिप्त था।

एक अन्य अवसर पर, उन्होंने कैलिओपे नाम की एक निर्धन बूढ़ी महिला और उसके साथ कुंवारी सिरियाका को चंगा किया; दोनों अशुद्ध आत्माओं से पीड़ित थीं; उनके भरण-पोषण के लिए उन्हें पैसे देकर, उन्होंने उन्हें अच्छे स्वास्थ्य के साथ विदा कर दिया।

इन और संत के कई अन्य अकथनीय चमत्कारों के अलावा, अन्य बातों के साथ-साथ निम्नलिखित भी हुआ।

शैतान ने उस घर में डेरा डाल लिया था जहाँ राजा के बैंगनी परिधान और शाही अधिकारियों के वस्त्र तैयार किए जाते थे, और वह कामगारों को बहुत नुकसान पहुँचा रहा था: वह उनके काम को बर्बाद कर देता था और उन्हें भूत-प्रेतों से डराता था। इस वजह से, हर कोई बहुत दुख में था, जबकि उनके निगरानीकर्ता राजा के क्रोध और इतनी सारी वस्तुओं

के बर्बाद खर्च के लिए यहाँ तक कि मृत्युदंड से भी डरते थे। ईश्वर के संत पार्थेनियस, यह सब जानकर, पर्यवेक्षकों के अनुरोध पर तुरंत वहाँ आए और मसीह के भयानक और पवित्र नाम से उस दानव को भगा दिया। जब उसे बाहर निकाला जा रहा था, तो राक्षस ने ई की सुनने की दूरी तक चिल्लाकर कहा कि कोई दैवीय अग्नि उसे अग्निमय गेहन्ना में धकेल रही थी; और उस समय से, उस घर में शैतान की सारी चालाकियाँ बंद हो गईं।

एक अन्य अवसर पर, एक अशुद्ध आत्मा मछली पकड़ने वालों को परेशान करने लगी: जब भी वे अपनी जाल पानी में डालते, तो शैतान की धोखेबाजी से, उन्हें हमेशा ऐसा लगता कि उनमें बहुत सारी मछलियाँ फँसी हैं; लेकिन जब वे बड़ी मेहनत से अपनी जाल को किनारे खींचते, तो उन्हें उसमें एक भी मछली नहीं मिलती; और इस प्रकार मछली पकड़ने वाले लंबे समय तक व्यर्थ में परिश्रम करते रहे। यह न केवल लैम्प्साकस में हुआ, बल्कि उस देश के सभी पड़ोसी कस्बों और क्षेत्रों में भी हुआ। और इस प्रकार दूर-दूर से मछुआरे संत पार्थेनियस के पास इकट्ठा हुए और उनसे अपने लिए ईश्वर से प्रार्थना करने का आग्रह किया, ताकि उनकी मेहनत व्यर्थ न जाए। जब संत ने उनके लिए आँसुओं के साथ प्रभु से प्रार्थना की, तो ईश्वर द्वारा उन्हें यह प्रकट किया गया कि ये परीक्षाएँ जो मछुआरे झेल रहे थे, शैतान का काम थीं। तुरंत संत उठे, बाहर गए और सभी तटों और मछली पकड़ने की जगहों पर घूमे, प्रार्थना करते हुए और पानी में बसे हुए शैतान को भगाते हुए; फिर उन्होंने मछुआरों को अपने सामने पानी में अपने जाल डालने का निर्देश दिया। जब उन्होंने संत की प्रार्थनाओं के माध्यम से ऐसा किया, तो उनका शिकार इतना बड़ा था कि मछलियों की भारी संख्या के कारण, वे मुश्किल से ही जाल किनारे खींच सके; और उस समय से, पहले की तरह, उनका शिकार हमेशा भरपूर रहा।

एक बार, मछली पकड़ते समय, संत पार्थेनियस काटाप्टेलिया घाट पर बैठे थे, जब मछली पकड़ने वालों के जाल में एक बड़ी मछली, जिसे फिनिस (टूना) के नाम से जाना जाता है, फँस गई। जाल से कूदकर वह संत के पैरों पर गिर पड़ी। उस पर क्रॉस का चिह्न बनाकर, उन्होंने इसे काटकर भाइयों में बाँट देने का आदेश दिया ताकि ईश्वर की महिमा के लिए इसे खाया जा सके।

बाद में, मसीह के उस पवित्र पुरुष ने कैलकिस्टस नामक एक लंगड़े व्यक्ति को चंगा किया, जो उसके बाद ठीक से चलने में सक्षम हो गया।

उस समय, उन्होंने लेज़्वियस नामक एक अन्य व्यक्ति को भी चंगा किया; सिर से पैर तक वह पपड़ियों से ढका हुआ था, इसलिए वह एक कोढ़ी से अलग नहीं दिखता था: उसे पवित्र तेल से अभिषेक करके और तीन दिनों तक उसके लिए प्रार्थना करके, संत ने उसे अच्छे स्वास्थ्य के साथ विदा कर दिया।

एक अवसर पर, परमेश्वर के पवित्र पुरुष, पार्थेनियस, चर्च के काम से थ्रेस के लिए रवाना हुए; हेराक्लिया नगर[1716] पहुँचने पर, उन्होंने उस समय गंभीर रूप से बीमार महाधर्माध्यक्ष हाइपैटियस से मुलाकात की, और उनसे बात करते हुए, उनकी बीमारी का कारण पूछा। उसी रात, प्रभु ने अपने सेवक पार्थेनियस को प्रकट किया कि आर्चबिशप हाइपैटियस अपनी लालच और लोभ के कारण एक गंभीर बीमारी से पीड़ित थे, क्योंकि वे भिखारियों और बेसहारा लोगों की संपत्ति और सामान भी हड़प लेते थे।

सुबह, संत पार्थेनियस एक बार फिर महाधर्माध्यक्ष के पास गए और कहा:

'उठो, हे महान बिशप, क्योंकि तुम शारीरिक दुर्बलता से नहीं, बल्कि अपनी आत्मा की दुर्बलता के कारण दण्डित हो रहे हो: इसे त्याग दो, और तुम चंगे हो जाओगे।'

इस पर उस बीमार व्यक्ति ने उत्तर दिया:

'मैं स्वयं मानता हूँ कि मैं एक पापी हूँ, और इसीलिए प्रभु मुझे दंडित कर रहे हैं, लेकिन मैं आपसे विनती करता हूँ, मेरे लिए प्रार्थना करें, ताकि मैं अपने अपराधों से शुद्ध हो जाऊँ।'

तब संत पार्थेनियस ने उससे कहा:

'यदि कोई अपने पड़ोसी के विरुद्ध पाप करता है, तो क्या उसकी प्रार्थना नहीं सुनी जाएगी? लेकिन तुमने परमेश्वर के विरुद्ध पाप किया है: इसलिए, जो गरीबों का है उसे परमेश्वर को लौटा दो, और तुम आत्मा और शरीर दोनों से चंगा हो जाओगे।'

इन शब्दों से प्रभावित होकर, आर्चबिशप ने कहा:

'पिताजी, मैंने अपने प्रभु के विरुद्ध पाप किया है—वह धर्मी न्यायी हैं!'

[1716] हेराक्लिया – थ्रेस के शहरों में से एक, जो बाल्कन प्रायद्वीप के उत्तर-पूर्वी भाग में स्थित, बीजान्टिन साम्राज्य के भीतर एक क्षेत्र था।

और तुरंत, अपने व्यवस्थापक को बुलाकर, उन्होंने उसे गरीबों की संपत्ति से एकत्र की गई चांदी लाने का आदेश दिया। यह देखकर कि उसमें कितनी मात्रा थी, उन्होंने संत पार्थेनियस से विनती की कि वह सब कुछ गरीबों को दे दें। लेकिन ईश्वर के पुरुष ने उन्हें सलाह दी कि वह स्वयं गरीबों की चीज़ें बाँट दें।

तब बीमार महाधर्माध्यक्ष ने आदेश दिया कि उसे एक गाड़ी पर बिठाकर पवित्र शहीद ग्लेसेरिया के चर्च ले जाया जाए: वहाँ, भिखारियों और गरीबों को इकट्ठा करके, उसने अपना सारा चाँदी का सामान उनमें बाँट दिया। लेकिन दयालु और परम दयालु ईश्वर, जिसने विधवा के दो पैसा और वेश्या के आँसुओं को तुच्छ नहीं समझा, और जिसने कर वसूल करने वाले के पश्चाताप को स्वीकार किया, उसने इस महाधर्माध्यक्ष के पश्चाताप को भी स्वीकार किया और तीन दिन बाद, उसे पूरी तरह से ठीक कर दिया। जहाँ तक संत पार्थेनियस का सवाल है, वह हर दिन हेराक्लिया के चर्चों में जाते थे, और उनमें अपनी नियमित प्रार्थनाएँ करते थे।

एक दिन वह एक चर्च में गया; वहाँ उसने एक बीमार आदमी को पड़ा हुआ देखा, जो पूरी तरह से दुबला-पतला था। उसके प्रति करुणा से प्रेरित होकर, ईश्वर के पवित्र पुरुष ने घुटने टेक दिए और आँसुओं के साथ, सबसे दयालु ईश्वर से उसके लिए प्रार्थना की, यह कहते हुए, ' '; फिर, अपनी प्रार्थना से उठकर, उन्होंने उस बीमार व्यक्ति पर पवित्र तेल का अभिषेक किया, और उसे तुरंत ही चंगा कर दिया; और, उसे खड़ा करके, उन्होंने उसे जाने का आदेश दिया। और वह चंगा हुआ व्यक्ति, प्रभु की स्तुति करते हुए, पूरी तरह से स्वस्थ होकर घर चला गया।

इस असाधारण चमत्कार के बारे में सुनकर, हेराक्लिया के नागरिक, चाहे वे किसी भी बीमारी और रोग से पीड़ित हों, ईश्वर के संत के पास उमड़ पड़े, और सभी, हमारे प्रभु यीशु मसीह की शक्ति और संत की प्रार्थनाओं के द्वारा, अच्छे स्वास्थ्य के साथ लौट गए।

जब संत पार्थेनियस मसीह की कृपा और शक्ति से ये चमत्कार कर रहे थे, और विभिन्न रोगों को ठीक कर रहे थे, तब हेराक्लिया के चर्च का आर्चडीकन उनके साथ था; उसका नाम भी आर्चबिशप, हाइपैशियन के नाम के समान ही था।

यह आर्चडीकन, पार्थेनियस द्वारा किए गए चमत्कारों को देखकर, एक बार संत के पैरों पर गिर पड़ा और आँखों में आँसू लिए, उन्हें बताया कि सूखे के कारण, उसके गाँव में बोए गए बीज और सभी वनस्पतियाँ—खेत, बगीचे और अंगूर के बाग—नष्ट हो गए थे।

'आदरणीय पिताजी,' उसने उनसे विनती की, 'वहाँ जाइए, जो कुछ भी सूख गया है, उसे देखिए, और ईश्वर से प्रार्थना कीजिए कि वे इस भूमि पर वर्षा भेजें, ताकि हमारा पूरा क्षेत्र अकाल से बच सके।'

संत पार्थेनियस खेतों, बगानों और अंगूर के बागों की ओर दौड़े; और यह देखकर कि जो कुछ भी बोया गया था और सभी बगान सूख गए थे, वे आँसुओं से भर आए। घुटनों के बल झुककर, आँसुओं से भरी आँखों के साथ, उन्होंने मानवता के प्रेमी ईश्वर से लंबी प्रार्थना की, उनसे पृथ्वी पर वर्षा भेजने का आग्रह करते हुए ताकि सभी वनस्पतियाँ फल-फूल सकें।

ईश्वर, जो अपने भक्तों की इच्छा पूरी करते हैं, संत के प्रार्थना कर ही रहे थे कि उन्होंने आकाश को वर्षा-भरे बादलों से ढक दिया, और एक भारी वर्षा हुई, जिसने पृथ्वी को छलक-छलक कर भर दिया।

अपने गाँव में आर्चडीकन के यहाँ रात बिताने के बाद, संत पार्थेनियस ने पूरा समय प्रार्थना में बिताया; सुबह, उन्होंने आर्चडीकन से कहा:

'भाई, अपना ध्यान रखना, क्योंकि तुम जानते हो कि तुम्हारे आर्चबिशप को धन के प्रति उनके प्रेम के कारण ईश्वर ने एक गंभीर बीमारी से दंडित किया था; लेकिन आज ही रात प्रभु ने मुझे प्रकट किया कि कुछ ही दिनों में वह इस क्षणिक जीवन से चले जाएँगे, और उनकी जगह आप हेराक्लिया के आर्चबिशप बनेंगे; इसलिए, जान लीजिए कि आपको हमेशा गरीबों की देखभाल करनी चाहिए, क्योंकि इससे बढ़कर परमेश्वर को कुछ भी प्रसन्न नहीं होता।

तब संत पार्थेनियस ने आर्चडीकन के खेतों, बगानों और अंगूर के बागों पर आशीर्वाद दिया और अपनी प्रार्थना तथा आशीर्वाद से उन्हें फलदायी बना दिया, फिर वे शहर लौट आए और वहाँ सबसे पहले आर्चबिशप के पास गए, उन्हें प्रणाम किया और फिर अपनी यात्रा के लिए रवाना हो गए। आर्चबिशप ने परमेश्वर के उस पुरुष का गर्मजोशी से स्वागत किया और उसके गाल पर चूम लिया; और जब वे बैठ गए और एक-दूसरे से बातें करने लगे, तो संत पार्थेनियस ने उससे कहा:

'मैं आपको सूचित करता हूँ, हे पवित्र पिता, कि कुछ ही दिनों में आप इस जीवन से विदा लेकर प्रभु के पास चले जाएँगे, क्योंकि मिसीह, हमारे सच्चे ईश्वर, आपको बुला रहे हैं; और जैसा कि प्रभु ने मुझे प्रकट किया है, जब आप ईश्वर के पास जाएँगे, तो आप अपने अच्छे हाइपेशियिन, अपने आर्चडीकन को, अपना उत्तराधिकारी छोड़ जाएँगे।'

आर्चबिशप ने उत्तर दिया:

'प्रभु की इच्छा पूरी हो!'

और, पवित्र चुंबन का आदान-प्रदान करने के बाद, वे अलग हो गए। संत पार्थेनियिस, हेराक्लिया से प्रस्थान करने के बाद, कुछ दिनों में अपने गृहनगर लैम्प्सैक्स पहुँचे; जबकि हेराक्लिया के आर्चबिशप, कुछ समय बाद फिर से बीमार पड़कर, प्रभु के पास चले गए, और उनके स्थान पर पूर्व आर्चडीकन, हाइपैटियिन की नियुक्ति हुई, और इस प्रकार संत की भविष्यवाणी पूरी हुई।

जब फसल काटने और हर तरह के फलों को इकट्ठा करने का समय आया, तो आर्चबिशप इपाटियिंस अपने राज्यों, उन खेतों और अंगूर के बागों की ओर रवाना हुए जो पहले बारिश की कमी से सूख गए थे, और वहाँ उन्होंने फलों की भरमार पाई, जो किसी भी पिछले साल से कहीं ज़्यादा थी – यह सेंट पार्थेनियिस की प्रार्थनाओं और आशीर्वाद के कारण था।

आर्चबिशप ने गेहूँ, शराब और हर प्रकार के फलों से एक बड़ा जहाज भरकर चमत्कार करने वाले संत के पास लैम्प्साकस के लिए प्रस्थान किया, ताकि वे उनके आशीर्वाद के लिए धन्यवाद अर्पित कर सकें।

संत पार्थेनियिस ने आर्चबिशप का आदरपूर्वक स्वागत किया, लेकिन उन्होंने लाए गए उपहार स्वीकार करने से इनकार कर दिया, और कहा:

'हर बात के लिए परमेश्वर का धन्यवाद करो, और इन्हें भाइयों में बाँट दो।'

संत के साथ एक काफी लंबी और सौहार्दपूर्ण बातचीत के बाद, आर्चबिशप हाइपेशियिन, घर लौटने पर, संत के कहने पर अपने भाइयों में बड़ी मात्रा में गेहूं, शराब और सभी प्रकार के फल वितरित कर दिए; और अपने जीवन के अंत तक उन्होंने सभी के सामने उन महान चमत्कारों की गवाही दी जो प्रभु ने अपने सेवक पार्थेनियिस के माध्यम से किए थे।

इस प्रकार, ईश्वर के सेवक और महान चमत्कार करने वाले – संत पार्थेनियिस, जो स्वर्गदूतों के समान जीवन में दमकते थे, ने कई लोगों को मूर्तिपूजा से हटाकर सच्चे ईश्वर की ओर मोड़ा और विभिन्न प्रकार की बीमारियों से पीड़ित अनेक लोगों को स्वस्थ किया; अंततः वे स्वयं बीमार पड़ गए और, प्रभु द्वारा बुलाए जाने पर, सात फरवरी को एक सम्मानजनक आयु में निधन कर शांति प्राप्त की। जब पड़ोसी शहरों और गांवों को संत के सम्मानजनक निधन की खबर मिली, तो हर जगह से बिशप—हेराक्लिया के, किज़िकि के, मेलिटिपोल के, पारोस के, और कई अन्य बिशप और पुरोहित। वे सभी, मानो पहले से तय हो, लैम्प्सैक्स शहर में पहुँचे और संत के लिए एक भव्य अंतिम संस्कार का आयोजन किया; भजन और अन्य पवित्र भजन गाते हुए, उन्होंने उनके सम्मानित शरीर को कैथेड्रल चर्च के पास, उस चैपल में सुलाया जिसे उन्होंने[1717] में स्थापित किया था।

और संत पार्थेनियिस की ताबूत पर कई बीमारों का चंगा होना हुआ: न केवल उनके जीवनकाल में, बल्कि उनके निधन के बाद भी, इस निस्वार्थ और चमत्कार करने वाले चिकित्सक ने कोढ़ियों को स्वच्छ किया और लोगों से दुष्ट आत्माओं को भगाया; और आज भी वह हमारे प्रभु यीशु मसीह की कृपा से, अपनी प्रार्थनाओं के द्वारा हमारी आत्मा और शरीर को चंगा और पुनर्स्थापित करते हैं; पिता और पवित्र आत्मा के साथ, युगों-युगों तक महिमा उसी की हो, आमीन।

कॉन्टाकियन, स्वर 3:

हे ईश्वर-ज्ञानी पुरोहित पार्थेनियिस, हे ईश्वर-धारी चमत्कार-कर्ता, तुमने चमत्कारों की दिव्य कृपा प्राप्त की है, जो सभी विश्वासियों के भावों को शुद्ध करते हो और छल की आत्मा को भगाते हो, हे पिता। इसी कारण हम तुम्हें ईश्वर की कृपा का एक महान प्रबंधक गाते हैं।

[1717] संत पार्थेनियिस की मृत्यु 318 में हुई।

हमारे पूजनीय पति ल्यूक ऑफ़ एफ़ेसस का जीवन

हमारे पूजनीय पति ल्यूक ऑफ़ हेलास का जीवन

स्मरणोत्सव 7 फरवरी को

[1718]संत ल्यूक का जन्म हेलेस में हुआ था[1719] ; उनके माता-पिता एक विदेशी भूमि से आए प्रवासी थे: वे एजियन सागर में स्थित ईजिया नामक द्वीप से यहाँ आए थे[1720] . अरबों के लगातार हमलों को सहन न कर पाने के कारण, वे अपना स्वदेश छोड़कर ग्रीस चले गए और वहाँ भटकते रहे, जब तक कि वे अंततः कास्टोरिया नामक स्थान में नहीं बस गए। यहीं पर धन्य ल्यूक का जन्म हुआ; उनके माता-पिता के नाम स्टीफन और यूफ्रोसीन थे।

अपने शुरुआती वर्षों से ही, धन्य ल्यूक ने अन्य बच्चों के साथ घुलते-मिलते हुए भी लड़कपन का कोई लक्षण नहीं दिखाया; उसने स्वेच्छा से सभी बच्चों के खेल और मनोरंजन को त्याग दिया। अपनी युवावस्था में भी, वह एक उत्तम चरित्र का व्यक्ति प्रतीत होता था: वह मौन और एकांत को पसंद करता था और अपनी विनम्रता के लिए प्रसिद्ध था।

और सबसे आश्चर्यजनक बात यह है कि, इतनी कम उम्र में ही, वह पहले से ही एक महान उपवासी और संयमी था। वह न केवल मांस से परहेज़ करता था, बल्कि दूध, पनीर और अंडों से भी दूर रहता था; वह सेब या बगीचे के अन्य फलों को भी हाथ नहीं लगाता था, जो छोटे लड़कों को विशेष रूप से मीठे और प्रिय लगते हैं: वह केवल रोटी, पानी और बगीचे की हरी सब्जियों पर ही जीवन यापन करता था। वह बुधवार और शुक्रवार को, सूर्यास्त तक, बिल्कुल कुछ भी नहीं खाता था।

लेकिन इससे भी अधिक आश्चर्य की बात यह है कि, इतने उपवास और संयम के बावजूद, ल्यूक के पास न तो कोई मार्गदर्शक था और न ही कोई गुरु; अपने आप, अपने भीतर काम कर रही ईश्वर की कृपा की शक्ति के द्वारा, वह दिन-ब-दिन और भी महान कार्यों तक पहुँचा: – वह अधिक खाने और मीठे खाद्य पदार्थों से बचता था; – उसे श्रम के साथ उपवास, हर चीज़ में मितव्ययिता, यहाँ तक कि आवश्यक चीज़ों में भी, और वास्तव में वह सब कुछ पसंद आने लगा जो देह को दंडित करता है: – ये वे कारनामे थे जिनका अभ्यास उसने अकेले ही किया। और जो कुछ भी दूसरों को बहुत मीठा, आनंददायक और सुखद लगता था - यह सब धन्य लूकस के लिए कुछ बोझिल, घृणित और अप्रिय था; और जो चीज़ लगभग सभी को जीवन में कठिन, अप्रिय और असहनीय लगती थी, वह उनके लिए सुखद और वांछनीय थी।

संत लूक के माता-पिता, उनके जीवन के तरीके को देखकर—जो एक युवा व्यक्ति के लिए बहुत असामान्य था—बहुत आश्चर्यचकित हुए, लेकिन वे विशेष रूप से उनके उपवास और संयम से स्तब्ध थे। यह सोचकर कि यह किसी पुण्य की प्रवृत्ति से नहीं बल्कि केवल बचकानेपन से हो रहा था, उन्होंने उसे इस प्रकार आजमाने का फैसला किया: उन्होंने एक ही बर्तन में मांस और मछली पकाई और भोजन के समय उसे यह व्यंजन परोसा; उसके पिता ने मछली उठाकर धन्य ल्यूक को दे दी। यह समझे बिना कि यह मछली मांस के साथ पकाई गई थी, उसने इसे खाना शुरू कर दिया, लेकिन जब उसने इसका स्वाद चखा और यह समझा कि इसे कैसे तैयार किया गया था, तो वह बहुत दुखी हो गया और उसने तुरंत जो कुछ भी खाया था उसे उगल दिया; और जैसे कि उसने अपनी मर्जी से कोई बड़ा पाप कर दिया हो, रोते और आहें भरते हुए, वह रोटी भी नहीं चखता था, और उसने तीन दिन ऐसे ही रोने और उपवास में बिताए। तब उसके माता-पिता ने, यह देखकर कि धर्मपरायणता की यह इच्छा बचकानेपन के कारण नहीं बल्कि ईश्वर की कृपा के कारण थी, उसे उस समय से अपनी इच्छा के अनुसार जीने की अनुमति दे दी।

धन्य लूक, अपनी ओर से, अपने माता-पिता की हर बात का पालन करते थे, और जो कुछ भी वे आज्ञा देते थे, उसे लगन से पूरा करते थे: वे भेड़ों की देखभाल करते थे; जब वे वयस्क हुए, तो उन्होंने खेती करना शुरू कर दिया, और साथ ही कभी-कभी घरेलू कर्तव्य भी निभाते थे, अपने युवा शरीर को दंडित करते और अपनी इच्छाओं को वश में करते थे। वह गरीबों के प्रति इतना दयालु था कि, उनके लिए, वह अक्सर खुद को सभी आवश्यक चीजों से वंचित कर लेता था। जब भी वह किसी काम से घर से बाहर जाता, तो वह अपने साथ लिया हुआ सारा भोजन गरीबों में बाँट देता, जबकि वह खुद भूखा

[1718] कास्टोरिया हेलास या मध्य ग्रीस के दक्षिण-पूर्वी क्षेत्र एटिका में एक गाँव है।

[1719] प्राचीन काल में, हेलास ग्रीस के केंद्रीय भाग को दिया गया नाम था।

[1720] एजियाना – द्वीपसमूह के द्वीपों में से एक। एजियन सागर – द्वीपसमूह के उत्तर-पश्चिम में स्थित, जिसे थेस्सालोनिकी की खाड़ी के नाम से भी जाना जाता है।

रहता। इसी तरह, वह बड़ी उत्सुकता और प्रेम से उन्हें अपने कपड़े दे देता था, और अक्सर नंगा घर लौट आता था, जिसके लिए उसके माता-पिता उसे डाँटते थे, उसे डाँटते और यहाँ तक कि सज़ा भी देते थे; और कभी-कभी वे उसे नग्न घूमने के लिए छोड़ देते और लंबे समय तक उसे कोई कपड़ा नहीं देते थे, यह सोचकर कि वह अपनी नग्नता से शर्मिंदा होगा और गरीबों को अपने कपड़े देना बंद कर देगा। लेकिन उस सदाचारी युवक ने परोपकार के कार्य करना बंद नहीं किया: वह अपनी नग्नता से शर्मिंदा नहीं हुआ और न ही उसे सज़ा का डर था; उसके लिए, गरीबों के लिए नग्नता एक शाही पोशाक के समान थी, और वह उनके लिए सज़ा और पिटाई को सम्मान और प्रशंसा मानता था - और इसके बाद से उसने गरीबों को और भी उदारतापूर्वक दान दिया।

एक बार, धन्य ल्यूक गेहूँ बोने के लिए खेत से गुज़र रहे थे, जब उन्हें रास्ते में कुछ भिखारी मिले; तब उन्होंने गेहूँ उनमें बाँट दिया, और अपने लिए बोने के लिए केवल थोड़ा सा रख लिया। हालाँकि, प्रभु, जो गरीबों के प्रति दान को सौ गुना बढ़ाकर पुरस्कृत करते हैं, ने इस मामूली बुआई को आशीर्वाद दिया: उस गर्मी में, उसके गेहूँ के खेत में पिछले वर्षों से अधिक उपज हुई, इसलिए जब फसल काटने का समय आया, तो उन्होंने पहले से कहीं अधिक गेहूँ काटी।

जब संत ल्यूक के पिता, स्टीफन, बीमार पड़कर चल बसे, तो इस ईश्वर-पुरुष ने खेती-बाड़ी छोड़ दी और खुद को विद्वितापूर्ण अध्ययन में समर्पित कर दिया। ईश्वर के चिंतन और प्रार्थनाओं के अध्ययन में विशेष रूप से खुद को समर्पित करके, उस धर्मनिष्ठ युवक ने इतनी प्रगति की कि, जब वह अपना मन ईश्वर की ओर लगाता, तो कभी-कभी वह देह सहित जमीन से ऊपर उठ जाता था, जैसा कि उसकी माँ, यूफ्रोसीन ने, एक बार स्पष्ट रूप से देखा था। एक अवसर पर यह देखकर कि उसका बेटा लंबे समय से अपने कमरे से बाहर नहीं आया है, वह यह जानने की इच्छा से कि वह क्या कर रहा है, उसने चुपके से कुंडी के छेद से झाँका और उसे प्रार्थना करते हुए देखा: उसका मन ईश्वर में लगा हुआ था, जबकि उसका पूरा शरीर हवा में खड़ा था, जो जमीन को बिल्कुल भी नहीं छू रहा था और मानो एक कोहनी की लंबाई से लटका हुआ था; यूफ्रोसीन ने यह न केवल एक बार, बल्कि दो या तीन बार देखा, और वह इससे बहुत आश्चर्यचकित हुई; बाद में, उन्होंने इसकी सच्चाई की कसम खाते हुए यह बात दूसरों को बताई।

इस धन्य युवक के मन में लंबे समय से इस उथल-पुथल भरी दुनिया को पीछे छोड़कर मठवास की मौन और तपस्या में खुद को समर्पित करने की इच्छा थी। एक दिन, इसी पर विचार करते हुए, मठवासी संन्यास ग्रहण करने की तीव्र इच्छा से जलता हुआ, वह ग्रीस छोड़ने के इरादे से घर से चोरी-छिपे निकल गया; रास्ते में उसकी मुलाकात उन सैनिकों और पहरेदारों से हुई जो अपने मालिकों से भाग रहे गुलामों को पकड़कर जेल में डाल रहे थे।

खस्ताहाल कपड़े पहने उस युवक को देखकर, उन्होंने सोचा कि वह भगोड़े गुलामों में से एक है और उसे पकड़ लिया; उन्होंने पूछा कि वह किसका गुलाम है, कहाँ से आया है, और कहाँ भाग रहा है। उस युवक ने उत्तर दिया कि वह मसीह का दास है और प्रार्थना करने के लिए पवित्र संतों के पास जा रहा है। लेकिन सैनिकों ने उस पर विश्वास नहीं किया; यह सोचकर कि वह अपनी दासता और उनसे अपनी फरारी छिपाने की कोशिश कर रहा था, उन्होंने उस निर्दोष युवक को बेरहमी से पीटना शुरू कर दिया; फिर उन्होंने उसे एक कालकोठरी में बंद कर दिया – जब तक कि उसने यह नहीं बता दिया कि वह किसका दास था और वह अपने मालिक से कैसे भागा था। धन्य ल्यूक ने इन सब को एक ईर्ष्यालु शत्रु द्वारा डाली गई परीक्षा माना, जो उनके अच्छे इरादों में बाधा डाल रहा था। लेकिन कुछ समय बाद, कुछ लोगों ने संत को पहचान लिया; उनके पक्ष में उनकी गवाही के आधार पर, धन्य ल्यूक को अपनी बेड़ियों से मुक्त कर दिया गया।

जब मसीह के सेवक ने घर वापसी की, तो उसे न केवल अपने परिवार से डाँट-फटकार और ताने सुनने पड़े, बल्कि पिटाई भी झेलनी पड़ी। संत दिन-रात ईश्वर से प्रार्थना करते थे कि वह उन्हें मठवासी जीवन में स्वीकार कर लें, और जल्द ही उनकी इच्छा इस प्रकार पूरी हुई।

प्राचीन रोम से दो भिक्षु उस क्षेत्र में आए; उन्हें देखकर, ल्यूक को तुरंत अपना इरादा याद आया, और उसका हृदय ईश्वर के प्रति प्रेम से और भी अधिक प्रज्वलित हो उठा। उनसे बात करते हुए, उसने पूछा कि वे कहाँ जा रहे हैं। उन्होंने जवाब दिया कि वे यरूशलेम जा रहे हैं। तब धन्य लूक ने उनसे विनती करना शुरू किया कि वे उसे अपनी यात्रा पर अपने साथ ले जाएँ और इस प्रकार उसे अपने मठवासी जीवन का हिस्सा बना लें। लेकिन उन्होंने उसे साथ ले जाने से इनकार कर दिया, और इसके लिए उन्होंने दो कारण बताए: एक तो यह कि वह अभी भी जवान था—महज सत्रह साल का और लंबी यात्रा का अभ्यस्त नहीं था—और दूसरा यह कि उन्हें उसके माता-पिता से डर था, कि कहीं वे सब कुछ जानकर, उनका पीछा कर के उन्हें पकड़ न लें और उनके हाथों उन्हें कोई हानि हो जाए। तथापि, धन्य ल्यूक ने उन्हें बताया कि वह एक अनाथ और भटकता हुआ व्यक्ति है, और उसकी देखभाल करने वाला कोई नहीं है, और उसने उन भिक्षुओं से

उसे अपने साथ लेने का आग्रह कयिा। फरि भी, वे उसे लेकर गुप्त रूप से उस क्षेत्र से चले गए और एथेंस पहुँचकर, वहाँ सबसे पवत्रि वर्जनि मैरी के सुंदर चर्च में प्रार्थना करने गए, और मठ में रात बतिाई। जब वे यरूशलेम की अपनी यात्रा पर रवाना हुए, तो भक्षिुओं ने धन्य लूक को उसी मठ में छोड़ दयिा।

उन्होंने उससे कहा, 'युवक, यह तुम्हारे उद्देश्य को पूरा करने के लिए एक अच्छी जगह है; यहाँ तुम वह प्राप्त कर सकते हो जसिकी तुम इच्छा करते हो और जल्द ही तुम्हारा नाम मठ समुदाय के कुलीन वर्गों में गनिा जाएगा।

उसे मठाधीश के हवाले करके वे अपनी यात्रा पर चल पड़े।

मठाधीश ने उससे कई बार पूछा कि वह कहाँ से आया है और कसि तरह के परविार से है, लेकनि उन्हें कुछ भी पता नहीं चल सका: ईश्वर के सेवक ने अपनी मातृभूमि और अपने घर को छपिा रखा था और कसिी के सामने अपनी पहचान उजागर नहीं करना चाहता था। हालाँकि, यह देखकर कि वह अच्छे चरत्रि, शांत, सौम्य, वनिम्र और आज्ञाकारी युवक था, उन्होंने उसे एक नवसखिया (novice) के पद पर दीक्षा दे दी।

जहाँ तक धन्य लूक की माता का प्रश्न है, वह उसके लिए गहराई से दुखी हुई: वह अपने प्रयि पुत्र से वयिोग सहन नहीं कर सकी, जसिे वह अपनी वधिवा-जीवन की एकमात्र सांत्वना और अपने दुख में एक आराम मानती थी, और वह उसके लिए कड़वी आँसू बहाते हुए ईश्वर से पुकारती रही:

– हाय, हे प्रभु! आप जो मेरी वधिवा-जीवन और मेरे अनाथ होने की गवाहयिाँ देते हैं—पहले आपने मुझे मृत्यु द्वारा उस मत्रि से वंचति कर दुखी कयिा जसिे आपने मुझसे ववािह के बंधन में बाँधा था, और फरि आपने मुझे वधिवा-जीवन की वपित्तयिों का शकिार बनाया, जो मेरे लिए मृत्यु से भी अधकि भयानक हैं, – और अब आपने मेरी दृष्टि से उस व्यक्ति को छीन लयिा है जो इतनी बड़ी वपित्तयिों में मेरा सांत्वनादाता था, और अब मुझे नहीं पता कि मैं उसे कहाँ देख सकूँ – जो मेरे अनेक दुखों भरे जीवन में प्रकाश की एकमात्र करिण था। अब मुझे दाऊद के साथ पुकारना चाहिए: *'मेरा हृदय काँपता है; मेरी शक्ति मुझ में न रही, और मेरी आँखों की रोशनी—वह भी मैं खो चुका हूँ'* (भजन संहति 37:11)। और यह युवक हमसे इतना दूर क्यों चला गया है? क्या हमने शायद उसे आपकी अनवरत सेवा करने से रोका था, हे हमारे प्रभु? या क्या हमने शायद उसे घर का कोई काम करने का आदेश दयिा, जसिसे वह अपनी नयिमति प्रार्थनाओं को नज़रअंदाज़ करने के लिए मजबूर हो गया? क्या मैंने शायद उसे आध्यात्मकि से अधकि सांसारकि, स्वर्गीय से अधकि भौतकि, और शाश्वत से अधकि अस्थायी से प्रेम करना सखिाया? मैंने अपने माता-पति से सीखा कि एक माँ केवल देह से ही नहीं बल्कि आत्मा से भी होती है, और मैं अपने बेटे को सद्गुणों में परपिूर्ण देखना चाहती थी; मैंने उसे मेरी सेवा करने की तुलना में प्रार्थना के लिए अधकि समय दयिा; मेरे लिए यह खुशी की बात थी कि मैं अपने प्रयि बच्चे को, भले ही हमेशा के लिए नहीं, तो कम से कम कुछ समय के लिए तो देख सकूँ; मेरे लिए इतना ही काफी था कि मैं अपने पड़ोसयिों को उसके अच्छे चरत्रि की प्रशंसा करते सुनूँ और इस प्रकार अपनी दुखी आत्मा को सांत्वना दूँ। अत; हे प्रभु और राजा, मेरी आँखों के आँसुओं को तुच्छ न समझिए, बल्कि उन्हें सुनिए और कृपा करके मेरे महान दुख को शांत कीजिए; आप इसे तब शांत कर देंगे जब आप इन मातृ-नेत्रों को एक बार फरि मेरे प्रयि पुत्र को देखने का सौभाग्य देंगे: तब, अपने पुत्र को पाकर, मैं सभी को एक साथ इकट्ठा करूँगी और आपकी महमिा का घोष करूँगी, और मैं अपने जीवन के सभी दनिों में आपकी स्तुति करूँगी।

अपने दुख में इस प्रकार प्रार्थना करने के बाद, उस शोकाकुल माँ ने स्वयं को दयालु ईश्वर की दया पर छोड़ दयिा, और उसे ठीक वही मलिा जसिकी उसने प्रार्थना की थी।

प्रभु, जो अपनी इच्छा मात्र से सभी कार्यों को पूर्ण करते हैं, ने उस मठ के मठाधीश को एक दर्शन दयिा जहाँ धन्य ल्यूक ने अपना तपस्वी जीवन सबसे पहले शुरू कयिा था: एक सपने में, उन्होंने उस रोती हुई माँ को देखा, जसिने उनसे इस प्रकार पुकारा:

'तुमने एक वधिवा के साथ अन्याय क्यों कयिा?' तुमने मेरे दुखों में यह दुख क्यों जोड़ दयिा है? तुमने इतनी नर्दियता से मेरी वधिवा होने का एकमात्र सांत्वना-साधन मुझसे क्यों छीन लयिा है? तुमने मेरे बेटे को, जो मेरे बुढ़ापे का सहारा था, मुझसे क्यों छीन लयिा है? इस दुख को सहते हुए भी, मैं सभी का राजा, ईश्वर की ओर मुड़ना और तुम्हारे वरिुद्ध पुकारना नहीं छोड़ूंगी।"

इस सपने जैसी दृष्टि और कहे गए शब्दों से भयभीत होकर, मठाधीश ने पहले तो सोचा कि यह केवल एक दैवीय भ्रम है; लेकनि जब, अगली रात और फरि तीसरी रात को, उन्होंने अपने सपने में उसी महलिा को देखा और उससे वही क्रोधति शब्द सुने, तो उन्हें एहसास हुआ कि यह कोई दैवीय धोखा नहीं, बल्कि ईश्वर द्वारा भेजा गया एक प्रकटीकरण था।

सुबह, मठाधीश ने ल्यूक नामक एक युवक को, जो उनके साथ दीक्षा ग्रहण कर रहा था, बुलाया और उससे गुस्से में कहा:

'तुमने अपने बारे में सब कुछ छपिाने का नश्चिय क्यों कयिा, जबकि मैंने तुमसे कई बार पूछा था कि तुम कौन हो और कहाँ से आए हो? तुमने यह क्यों कहा कि तुम्हारे न तो माता-पिता हैं और न ही कोई रश्तिेदार? और तुमने इस पवत्रि संप्रदाय में प्रवेश करने और हमारे बीच रहने की हम्मिमत कैसे की, जबकि तुम चापलूसी और झूठ से भरे हुए हो, जैसा कि तथ्य स्वयं गवाही देते हैं? यदि तुमने शुरू से ही हमें सच बताया होता, तो अब, तुम्हारी इच्छा के वपिरीत, तुम्हारे बारे में कोई खुलासा नहीं होता। इसलिए, हमसे और हम सभी मठाधीशों से दूर हो जाओ, और उस पर लौट जाओ जसिने तुम्हें जन्म दयिा है; उसकी, जो गहराई से दुखी है, वजह से मैं लगातार तीसरी रात से बहुत कष्ट सह रहा हूँ।

जब महाधर्माध्यक्ष ऐसा कह रहे थे, तब धन्य ल्यूक, अत्यधकि भयभीत होकर, जैसे सुन्न हो कर खड़ा रहा; वह नीचे की ओर देखने लगा, और उसकी आँखों से आँसू बहने लगे: वह अपने पवत्रि भाइयों से बछिड़ने के लिए इतना अनचि्छुक था। महाधर्माध्यक्ष, उसकी आँसू और वनिम्रता को देखकर, दया से भर गए और उससे कोमल स्वर में इस प्रकार बोलने लगे:

'मेरे बच्चे, अब तुम्हारे लिए अपनी माँ के पास न लौटना संभव नहीं है; हालाँकि, बाद में तुम्हें मठ में रहने से कोई मना नहीं करेगा; मैं तुम्हें यही सलाह देता हूँ; क्योंकि यह स्पष्ट है कि उसकी प्रार्थना इतनी शक्तशिाली है कि वह ईश्वर को भी प्रभावति कर सकती है और तुम्हारी अपनी प्रार्थना से कहीं बढ़कर है।'

यह सुनकर, धन्य ल्यूक ने मठाधीश की बातों पर कोई आपत्ति नहीं जताई; उन्होंने मठाधीश के सामने सिर झुकाया और केवल उनकी प्रार्थना और आशीर्वाद माँगा। और इस प्रकार, यद्यपि वह मठ छोड़ना भी नहीं चाहता था, उसे कास्टोरयिा गाँव में अपनी माँ के पास अपनी यात्रा पर नकिलने के लिए मजबूर होना पड़ा।

घर में प्रवेश करते ही, उसने अपनी माँ को वलिाप करते हुए पाया; लेकनि जब उसने उसे देखा, तो वह आनंद और कोमलता से भर गई, फिर भी वह तुरंत अपने बेटे को गले लगाने के लिए नहीं दौड़ी: मजबूत आत्मा और ईश्वर के प्रति भय वाली महलिा होने के नाते, उसने सबसे पहले अपनी आँखें उठाकर ईश्वर की ओर देखा और अपने हाथ उनकी ओर उठाकर उन्हें धन्यवाद दयिा कि उनकी मदद से वह अब अपने प्रयि पुत्र से फिर से मलि पाई थी, जसिसे वह पहले वंचति थी।

उसने कहा, 'धन्य है प्रभु, जन्हिोंने मेरी प्रार्थना सुनी है और मुझसे अपनी दया नहीं रोकी है।'

इस प्रकार लूक, ईश्वर की इच्छा से, अपनी माँ के पास लौट आया; उसने एक पुत्र के रूप में उनकी सेवा की और चार महीने तक उनके साथ रहा। फिर धन्य लूक, ईश्वर और ईश्वर में मौन जीवन के प्रति उत्साह से जलते हुए, एक बार फिर अपनी माँ को छोड़ने का संकल्प लयिा। इस बार उसने उसके नेक इरादे के आड़े नहीं आया और न ही उसे उसकी यात्रा से रोका, क्योंकि वह जानती थी कि उसके बेटे को, किसी और की तरह, अपने माता-पिता से अधकि ईश्वर का सम्मान करना चाहिए।

इस प्रकार, संत लूक, एक नष्ठिावान मार्गदर्शक के रूप में अपनी माँ की प्रार्थनाओं के साथ, जल्द ही समुद्र के कनिारे जॉन का पहाड़ नामक एक पहाड़ पर पहुँचे; वहाँ पवत्रि अनमरसेनरीज़—चकित्सिक कोस्मास और डैमयिन—को समर्पति एक चर्च था। वहाँ, अपने लिए एक छोटा सा कोठरीनुमा आश्रम बनाकर, उन्होंने उसमें एक ईश्वरवादी जीवन जीना शुरू कर दयिा। वहाँ उन्होंने जो कठनि परश्रिम कयि, राक्षसों से लड़ाई और अपने शरीर को कष्ट देना, उनका वस्तिार से वर्णन करना असंभव है; फिर भी, इस मामले पर पूरी तरह से चुप नहीं रहा जा सकता। इसलिए, कई बातों में से, हम केवल कुछ ही बातें बताएँगे, ताकि हम जान सकें कि ईश्वर के इस सेवक का जीवन में कैसा चरत्रि था।

रेवरेंड फादर का एक शष्यि था जसि अपने गुरु के बारे में भ्रम था: वह सोचता था कि संत पाखंडपूर्वक नरिंतर प्रार्थना कर रहे थे। यह देखकर कि वह किसी भी काम में व्यस्त नहीं थे—न तो पवत्रि धर्मग्रंथों का पाठ कर रहे थे और न ही धर्मपतिामहों के ग्रंथों का अध्ययन—इस शष्यि ने सोचा कि उसके गुरु, जो पवत्रि धर्मग्रंथों से अनभज्ञि एक अनपढ़ व्यक्ति थे, अपनी सारी रातें जागरण में नहीं बल्कि नींद और आलस्य में बतिाते थे। और इसलिए, एक देर रात, जब वृद्ध ने अपनी कोठरी के दरवाज़े पहले ही बंद कर लिए थे, उनका शष्यि दरवाज़े के बाहर बैठ गया और अपना सिर उससे टकिाकर यह सुनने लगा कि वृद्ध रात में क्या कर रहे थे - क्या वे आराम कर रहे थे या प्रार्थना कर रहे थे? और इस तरह चुपके से सुनते हुए, वह सुबह तक दरवाज़े के पास ही रहा। बाद में उसने स्वयं वहाँ जो सुना था, उसका वर्णन कयिा। उसने कहा, 'मैंने सुना, कि कैसे संत घुटने टेककर अपना सिर जमीन पर टकिाते थे और हर प्रणाम के साथ श्रद्धापूर्वक कहते थे: "हे प्रभु, दया करें!"' तब, ईश्वर के प्रति और भी अधकि उत्साह से भरकर, वह और अधकि बार झुकने लगा, और और

भी अधिक उत्कटता से पुकारने लगा: 'हे प्रभु, दया करें!' और इस प्रकार वह तब तक प्रार्थना करता रहा जब तक उसका शरीर थक नहीं गया; लेकिन जब वह जमीन पर लोट गया, तब भी उसकी आत्मा नहीं डगमगाई, क्योंकि वहां लेटे-लेटे भी वह प्रार्थना में ईश्वर का नाम जपता रहा। फिर, उठकर, वह घुटने टेकता और यही करने लगा, और पूरी रात ऐसे ही प्रार्थना में बिताई, जब तक कि भोर न हो गया। इसके बाद, यह शिष्य, अपने पिता के कारनामों से आश्वस्त होकर, अपने पूर्व संदेह पर पछताया और, संत के निधन के बाद, शपथ लेकर यह सब दूसरों के सामने स्वीकार किया।

लेकिन उस आदरणीय पिता ने न केवल रात में प्रार्थना में घुटने टेककर, बल्कि दिन में अपने परिश्रम के माध्यम से भी अपने शरीर को वश में किया। उन्होंने अपने लिए एक छोटा सा बगीचा बनाया और वहाँ विभिन्न प्रकार के पेड़ लगाने और हर तरह के बीज बोने लगे, अपने उपयोग या बिक्री के लिए नहीं, बल्कि शरीर को थकाने के लिए; क्योंकि वे हर दिन अपने बगीचे में तब तक मेहनत करते थे जब तक कि उनके माथे पर पसीना न आ जाए, और यदि उनके पेड़ों और बीजों से कोई फल मिलता भी था, वह उन्हें उसके पास आने वालों में बाँट देता; अन्य समयों में, एक बड़ी टोकरी भरकर, वह उसे दूसरों के पड़ोसी खेतों में ले जाकर छोड़ देता; इस प्रकार संत ल्यूक ने अपनी मेहनत के फलों से दूसरों का पोषण किया, जबकि वह स्वयं लगातार उपवास में रहता था।

ऐसा हुआ कि हिरण उसके बगीचे में आने लगे; वे कुछ पौधों को खाते और दूसरों को पैरों तले रौंदते हुए, उन्होंने बगीचे को बहुत नुकसान पहुँचाया। संत उन्हें भगा देते, लेकिन जब वे अपनी कुटिया में लौटते, तो वे वापस आ जाते; और ऐसा कई बार हुआ। तब संत, क्रोधित होकर, हिरणों के पास गए और उनमें से एक से, जो बाकी से बड़ा था, मानो किसी तर्कशील और चालाक प्राणी से बात कर रहे हों, कहा:

'तुम मुझे परेशानी क्यों देते हो और मेरी मेहनत को बर्बाद क्यों करते हो, जबकि मैंने तुम्हारा कभी कोई अहित नहीं किया? आखिरकार, हम एक ही प्रभु के सेवक और एक ही ईश्वर की रचना हैं; इसके अलावा, मैं ईश्वर की छवि में बनाया गया हूँ और मुझे सारी सृष्टि पर अधिकार दिया गया है, क्योंकि सृष्टिकर्ता ने सभी चीजों को मनुष्य के अधीन कर दिया है। इसलिए, प्रभु की आज्ञा से, उस स्थान से जहाँ तुम खड़े हो, हिलना नहीं, बल्कि अपनी उचित सज़ा भुगतो।

और संन्यासी के ये शब्द कहते ही, हिरण मानो किसी तीर से घायल हो कर, ज़मीन पर गिर पड़ा और निष्प्रभ हो गया, जबकि अन्य हिरण भाग गए। रेगिस्तान में चल रहे शिकारीयों ने यह सब देख लिया; वे हिरण के पास दौड़ पड़े और, प्रसन्न होकर, अपने इस अप्रत्याशित शिकार को काटने के लिए खींचने लगे। तथापि, रेवरेंड ने हिरण पर दया करके, उनसे कहा:

'भाइयो, तुम्हें इस हिरण को ले जाने का कोई अधिकार नहीं है: तुमने इसका शिकार नहीं किया, न ही इसे पकड़ा है, बल्कि तुम तो बस उस पर आ गए हो जिसे पहले ही पकड़ लिया गया है और अब तुम इसे मार डालना चाहते हो। तुम्हें इस पर दया करनी चाहिए थी, क्योंकि यह कमज़ोरी के कारण गिर गया है और अब यहाँ पड़ा है, भागने का कोई विचार किए बिना।'

यह सुनकर, शिकारी संत की दया पर आश्चर्यचकित होकर, हिरण को छोड़कर चले गए। संत ने, अपनी ओर से, हिरण को सुरक्षित और सही-सलामत वापस रेगिस्तान में छोड़ दिया।

हालाँकि वह इतने अनुकरणीय आचरण वाले भिक्षु थे, हमारे आदरणीय पिता ल्यूक को अभी तक संपूर्ण भिक्षु वेशभूषा नहीं पहनाई गई थी। फिर भी वह इसे बहुत चाहते थे और उन्होंने ईश्वर से विनम्रतापूर्वक प्रार्थना की कि वह उन्हें यह पवित्र, दैवीय रूप प्रदान करें; और उनकी प्रार्थना सुनी गई: उन्हें वह मिला जिसकी उन्होंने इच्छा की थी।

एक दिन, दो वृद्ध भिक्षु कहीं से उसके पास आए, जिनके बाल उम्र की पवित्र चांदी से सुशोभित थे और चेहरे पवित्रता से दमक रहे थे: उन्होंने कहा कि वे प्राचीन रोम जा रहे हैं; इन्हीं भिक्षुओं ने, एक प्रार्थना करने के बाद, पूज्य ल्यूक को संपूर्ण भिक्षु वेशभूषा पहनाई; उसे उपदेश देने के बाद, वे अपनी यात्रा की तैयारी करने लगे। आदरणीय ल्यूक के पास उनकी यात्रा के लिए देने को कुछ भी नहीं था—क्योंकि वह शरीर और आत्मा दोनों से ही दरिद्र था और उसके पास भोजन जैसी बुनियादी ज़रूरतें भी नहीं थीं—फिर भी वह उनके साथ चल पड़ा, और रास्ते में उनसे आध्यात्मिक रूप से ज्ञानवर्धक बातचीत करके अपना पोषण करता रहा। समुद्र तट पर पहुँचने पर, यात्री थोड़ा आराम करने के लिए बैठ गए और प्रभु में उन्हें चूमकर, उस स्थान पर वे धन्य ल्यूक से विदा होने ही वाले थे। लेकिन जब वे वहाँ बैठे ही थे, तो अचानक एक बड़ी मछली समुद्र से कूदकर उनके पैरों तले किनारे पर आ गिरी; फिर दूसरी भी कूदकर आई, और दोनों जमीन पर पटक-पटक कर हिलने लगीं, मानो वे अपने आप को उनके हाथों में सौंप रही हों। यह संत ल्यूक की प्रार्थनाओं का उत्तर था; क्योंकि, अपनी यात्रा के लिए अपने उपकारियों को भोजन देने के लिए उनके पास कुछ भी नहीं था, इसलिए

उन्होंने सभी प्राणियों के प्रबंधक, प्रभु से, अपनी गुप्त, हार्दिक प्रार्थना के द्वारा, उनसे यात्रा के लिए भोजन भेजने का आग्रह किया। और जिसने एक बार कबूतर के द्वारा एलियाह को रोटी और मांस भेजा था, उसी ने इन पूजनीय पिताओं को भी समुद्र के जल से भोजन भेजा। और उन्होंने, दोनों मछलियाँ लेकर, परमेश्वर का धन्यवाद किया, जो अपना हाथ खोलता है और हर जीवित प्राणी को तृप्त करता है।

हमारे पूजनीय पिता ल्यूक ने, दिव्य स्वर्गदूतों की परम श्रेणी प्राप्त कर, जीवन-यापन का एक और भी उत्तम मार्ग अपनाया; उन्होंने पहले से अधिक कठोर तपस्याएँ अपनाते हुए और भी अधिक परिश्रम किया, तथा आँसुओं और पूरी रात की जागरणों से अपनी भक्ति को और भी प्रगाढ़ किया। उनका भोजन जौ की रोटी, और कभी-कभी कच्ची सब्जियाँ और पानी होता था; वे स्वयं को शायद ही कभी सोने देते थे – इस उद्देश्य के लिए, उन्होंने अपनी कोठरी में ताबूत जैसी एक खाई खुदवाई; वे ऐसा मृत्यु की निरंतर याद दिलाने के लिए करते थे। और जब उन्हें रात को सोने की ज़रूरत होती, तो वे इसी ताबूत में लेट जाते, मानो मर रहे हों और दफ़नाए जा रहे हों; और थोड़ी देर आराम करने के बाद, वे तुरंत प्रार्थना करने के लिए फिर से उठ खड़े होते, और भविष्यवक्ता दाऊद के वचन का पाठ करते: *'आप अपना हाथ खोलते हैं और अपनी कृपा के अनुसार हर जीवित प्राणी को तृप्त करते हैं'* (भजन संहिता 144:16)। *'मैं भोर से पहले उठकर पुकारता हूँ; मैं तेरे वचन की प्रतीक्षा करता हूँ। मेरी आँखें भोर की पहर से पहले जागती हैं, ताकि मैं तेरे वचन का ध्यान करूँ'* (भजन संहिता 118:147–148)। जब संत ल्यूक ने ऐसा जीवन जीना शुरू किया, तो उनकी सद्गुण की ख्याति शीघ्र ही आस-पास के सभी निवासियों में फैल गई, और लोग हर ओर से उनके पास आने लगे।

एक दिन, दो भाई रेवरेंड फादर के पास आए और उन्हें बताया कि उनके पिता ने अपनी मृत्यु से पहले अपना सारा सोना, चाँदी और सिक्के एक अज्ञात स्थान पर जमीन में गाड़ दिए थे, और मरते समय उन्होंने उन्हें वह जगह नहीं बताई जहाँ उन्होंने अपना खजाना छिपाया था। 'इसलिए, पिताजी,' उन्होंने कहा, 'हम आपसे विनती करते हैं कि आप ईश्वर से प्रार्थना करें कि वह इस छिपे हुए स्थान को प्रकट कर दें, और फिर हमारे रोज़ के झगड़े बंद हो जाएँगे। क्योंकि हम, भाई होने के नाते, एक-दूसरे पर शक करते हैं: हमें लगता है कि हम में से किसी एक ने हमारे पिता की विरासत चुरा ली है और उसे अपने लिए रख लिया है।' तो, आपकी प्रार्थनाओं से, हमारे बीच की शत्रुता शांत हो जाए, और मिले हुए खजाने से हमारी गरीबी दूर हो जाए।

हालाँकि, पादरी ने मना कर दिया और भाइयों को भगा दिया, यह कहते हुए कि उनकी प्रार्थना इस मामले में प्रभु को मना नहीं सकती। लेकिन वे बार-बार आते रहे, अपनी विनतियों से उन्हें परेशान करते रहे, और अंततः उन्होंने दया दिखाने के लिए उन्हें मना लिया।

संत ने, सर्व-द्रष्टा ईश्वर से उनके लिए प्रार्थना करने के बाद और एक प्रकटवाणी के माध्यम से, उन दो भाइयों के पिता द्वारा अपना खजाना छिपाने की जगह का पता लगा लिया और उन्हें वह जगह दिखा दी। फिर, वहाँ जाकर, उन्होंने उस जगह पर जमीन खोदना शुरू कर दिया और जल्द ही उन्हें अपने पिता का सोना और चाँदी मिल गई, और उन्होंने यह चमत्कार सभी पड़ोसी गाँवों में प्रचारित कर दिया। जो कुछ भी अच्छा है उसका शत्रु—शैतान—यद्यपि वह मसीह के इस पराक्रमी योद्धा द्वारा हमेशा पराजित होता रहा था, फिर भी उसने एक बार फिर उसके विरुद्ध युद्ध छेड़ने का निश्चय किया। उससे अपमान और हानि पहुँचाने की इच्छा से, उसने अपनी चालाकी से निम्नलिखित योजना बनाई।

उसके उकसावे पर, पड़ोस के एक गाँव से तीन महिलाएँ संत के पास आईं; वे रोते-बिलखते हुए उनके पैरों पर गिर पड़ीं, और अपने गंभीर पापों का इकबालिया बयान करने लगीं तथा उनसे विनती करने लगीं कि वे अपनी अच्छी सलाह और प्रार्थना से उनकी आत्मा को चंगा करें। संत लूक, हर तरह से उनकी परेशानी से बचने और उनसे खुद को दूर करने की इच्छा रखते हुए, उन्हें पुरोहितों के पास भेज दिया, क्योंकि वह स्वयं वह पद नहीं रखते थे, बल्कि केवल एक साधारण, बिना दीक्षा प्राप्त भिक्षु थे; हालाँकि, इन महिलाओं ने संत की बात नहीं मानी, और यहीं पर उन्होंने उनसे महिलाओं के सबसे भयानक पापों का इकबालिया बयान सुना।

जब ये पापी चले गए, तो मानवता का शत्रु, जो सीधे दिल वालों पर वार करता है (भजन संहिता 10:2), ने एक बार फिर संत पर अशुद्ध विचारों से हमला किया और उनके शरीर के मर्त्य अंगों में पापी कलह को भड़काया। तब संत लूकस, शैतान की चालाकी को भांपते हुए, प्रार्थना के हथियार से उसका सामना करने के लिए खुद को सशस्त्र कर लिया। तीन दिन तक एक ही स्थान पर खड़े रहकर, लगातार ईश्वर से प्रार्थना करने के बाद, उन्होंने शैतान की इस चालाकी पर विजय प्राप्त की, आँसुओं की बौछार से वासना की भयंकर ज्वाला को बुझा दिया और इस प्रकार, ईश्वर की मदद से, नरकीय सर्प का सिर कुचल दिया।

तीन दिन की प्रार्थना के बाद, जब संत का शरीर पूरी तरह से थक गया था, तो वह कुछ देर के लिए सो गया; उसी क्षण, एक स्वर्गदूत एक सुंदर युवक के रूप में एक दर्शन में उसके सामने प्रकट हुआ; उसके हाथ में एक मछली पकड़ने की छड़ी थी, जिसे वह उसके मुँह और गले में घुसाने लगा; और ऐसा प्रतीत हुआ मानो धन्य लूक ने उसे पूरा निगल लिया हो, और वह सीधे उसकी आंतों तक पहुँच गई हो; फिर वह युवक जो प्रकट हुआ था, ने उससे छड़ी छीन ली और उसका उपयोग करके उसके शरीर का एक निश्चित हिस्सा—मांसल और खूनी—निकाल लिया और, उसे एक तरफ फेंकते हुए, उससे कहा:

'हौसला रखो और मत डरना।'

तुरंत अपनी नींद से जागते ही, संत को एहसास हुआ कि प्रभु ने उन्हें कामुक, पापी जुनून से मुक्त कर दिया है, और उन्होंने अपने उद्धारकर्ता और मुक्तिदाता का धन्यवाद किया।

आदरणीय लूक, पवित्रता का जीवन जीने के साथ-साथ, दूरदर्शिता का वरदान भी रखते थे और भविष्य बता सकते थे: उदाहरण के लिए, उन्होंने बुल्गारियाई सैनिकों द्वारा ग्रीक क्षेत्र पर आक्रमण की पहले से भविष्यवाणी की थी, जो समय आने पर सच साबित हुई, जैसा कि नीचे बताया जाएगा।

पवित्र तपस्वी मानव हृदय के रहस्यों को भी जान सकते थे। रेवरेंड की गली नाम की एक बहन थीं; वह न केवल रक्त से बल्कि आत्मा से भी उनकी बहन थीं: हर तरह से अपने भाई का अनुकरण करते हुए, उन्होंने कुँवारीपन, पवित्रता और मठवासी तपस्या का जीवन जिया। कभी-कभी, वह नवोदितों के साथ अपने मठ से अपने भाई के पास आती और जब भी उसे किसी चीज़ की ज़रूरत होती तो उसकी सेवा करती; अन्य समयों में, वह उसके बगीचे की देखभाल करती, पेड़ों को लगाती और छाँटती थी।

एक अवसर पर, आदरणीय ने उनसे और उनके साथ मौजूद लोगों से कहा:

'हमारी ओर एक आदमी आ रहा है, जिसके कंधों पर एक भारी बोझ है, और इसलिए वह बहुत बोझिल है।'

यह कहकर, वे उनके पास आई हुई महिलाओं को छोड़कर स्वयं अपने पहाड़ पर चले गए। वे महिलाएँ, हालांकि, यह न समझ सकीं कि उनसे क्या कहा गया था और हैरान होकर सोचने लगीं कि पादरी के शब्दों का क्या मतलब था: यह बोझिल आदमी कौन था, और वह किस बोझ से दब रहा था? और देखो, कुछ समय बाद, एक व्यक्ति यहाँ आया जो न केवल क के लिए कोई बोझ ढो रहा था, बल्कि उसके पास कुछ भी नहीं था, और उसने महात्मा के बारे में पूछना शुरू कर दिया: 'मुझे एक खास मामले में उनसे मिलना है,' उसने कहा। संत की बहन ने उस व्यक्ति से कहा:

'वह यहाँ नहीं हैं; वे कुछ समय के लिए मरुभूमि में गए हैं, लेकिन यदि आप उन्हें देखना चाहते हैं, तो उनके लौटने तक प्रतीक्षा करें।'

आगंतुक ने कहा:

'मैं उसे देखे बिना नहीं जाऊँगा,' और, संत का इंतजार करते हुए, वह सात दिनों तक उनकी कुटिया के पास बैठा रहा। सात दिन बीत जाने के बाद, पूज्यनीय अपनी मरुभूमि से लौटे, और, इस आदमी को देखकर, उन्होंने अपनी सामान्य सौम्यता के बिना, वास्तव में क्रोध से, उसे देखा और कठोर स्वर में उससे कहा:

'तुम इस मरुभूमि में क्यों आए हो? शहरों को छोड़कर पहाड़ों में क्यों चले आए हो? चर्च के चरवाहे और पुरोहितों को ठुकराकर, तुम हम जैसे अनपढ़ साधारण लोगों के पास क्यों आए हो? और ईश्वर के प्रकोप से न डरते हुए, अपार पापों के दोषी होकर, हमारे सामने आने की तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई?'

संत के शब्दों से भयभीत होकर, वह आदमी रोने लगा और डर के मारे एक भी शब्द नहीं बोल सका। फिर संत लूक ने उससे फिर कहा:

उसने पूछा, 'तुम चुप क्यों हो? तुम अपने कर्मों का प्रायश्चित क्यों नहीं करते और उस हत्या के बारे में क्यों नहीं बताते जो तुमने की है—ताकि अपनी सभी अधर्मों से पश्चाताप करके, तुम कम से कम कुछ हद तक ईश्वर को प्रसन्न कर सको?'

तब वह आदमी, अपने रोने और सिसकियों के बीच मुश्किल से बोलते हुए, संत से बोला:

'हे ईश्वर के मनुष्य! आप मुझसे और क्या सुनना चाहते हैं? आपके भीतर निवास करने वाले ईश्वर की कृपा से प्रकाशित होकर, आपने स्वयं, मेरे स्वीकारोक्ति से पहले ही, मेरे घोर पाप के बारे में बताया। जहाँ तक मैं समझता हूँ, आप वह सब कुछ जानते हैं जो मैंने गुप्त रूप से किया है। हालाँकि, यदि आप आज्ञा दें, तो मैं अपने इस अन्याय को सभी के सामने बयां करूँगा।'

और उस आदमी ने सबके सामने वसि्तार से बताना शुरू कयिा कि उसने यात्रा के दौरान अपने दोस्त को कैसे, कहाँ और क्यों मारा था, और इस पाप को रोते और नम्रता से स्वीकार कयिा; फरि, संत ल्यूक के पैरों पर गरिकर, उसने संत से वनिती करनी शुरू कर दी कि उसे शैतान के जालों में उलझा हुआ न छोड़ें। संत ने उस व्यक्ति को वसि्तार से उपदेश देकर उसे मोक्ष के मार्ग पर स्थापति कयिा और उसे पादरयिों के पास भेज दयिा।

यह सब संत ल्यूक की सूझबूझ को प्रदर्शति करने के लिए बताया गया है, यह दर्शाते हुए कि वह मनुष्यों के गुप्त पापों को भी कैसे जान सकते थे।

मैं एक और इसी तरह का मामला भी उल्लेख करना चाहूँगा।

दमित्रिी नामक एक जहाज के कप्तान, जो अक्सर अपनी नाव संत की कोठरी के पास स्थति घाट पर लाया करता था, उससे अच्छी तरह परचिति हो गया; और जब भी वह उनसे मलिने आता, तो वह उनकी पवत्रि प्रार्थनाओं से धन्य होता और उनकी बातों से प्रसन्न होता था।

एक दनि, कनिारे पर नाव बाँधकर और पूज्य के पास जाने की तैयारी करते हुए, उसने नश्चिय कयिा कि वह खाली हाथ नहीं जाएगा, बल्कि अपने शकिार में से कुछ लेकर जाएगा; वह अक्सर उसी घाट पर मछली पकड़ता था, लेकनि इस बार, अपने नावकिों के साथ समुद्र में अपनी लाइन डालते समय, उसे कुछ भी नहीं मलिा और वह पूरे दनि व्यर्थ में ही मेहनत करता रहा। लेकनि शाम के देर से, पूजनीय ल्यूक को याद करते हुए, उसने संत के नाम से अपनी लाइन फेंकी और इतनी बड़ी मछली पकड़ी कि वह उसे मुश्कलि से पानी से बाहर खींच सका; फरि, संत के नाम से दूसरी बार लाइन फेंककर, उसने पहली जैसी ही लेकनि थोड़ी छोटी एक और मछली पकड़ी। रेवरेंड ल्यूक से मलिने के लिए नकिलते समय, वह छोटी मछली अपने साथ ले गया, जबकि बड़ी मछली अपने लिए रख ली। संत ल्यूक, जो एक दूरदर्शी व्यक्ति थे, जानते थे कि क्या हुआ था; फरि भी, उन्होंने अपने मेहमान और उसके द्वारा लाए गए उपहार का स्नेहपूर्वक स्वागत कयिा। लेकनि, उससे बात करते हुए, उन्होंने उसे अन्य बातों के अलावा यह याद दलिाया कि कैसे अनानयिस ने अपने खेत के लिए मलिी कीमत का एक हसि्सा छपिाकर ईश्वर के वरिुद्ध पाप कयिा था, और कैसे पवत्रि प्रेरति पतरस ने यह जान लयिा था (प्रेरतिों के काम 5:1-5)। यह सुनकर, डेमेट्रयिस को एहसास हुआ कि संत के शब्द उस पर भी लागू होते हैं, क्योंकि उसने बड़ी मछली को छपिाया था; धन्य पति की दूरदर्शति से भयभीत और अपने पाप के उजागर होने पर शर्मदिा होकर, वह उनके पैरों पर गरि पड़ा और अपने पाप का इकबाल करते हुए और पश्चाताप करते हुए, उनसे क्षमा मांगी। संत लूक ने उसे कोमलता से समझा-बुझाकर क्षमा कर दयिा; जहाँ तक लाई गई मछली का सवाल था, उन्होंने अपने शष्यि को उसे पकाकर उनके पास आए भाइयों को देने का नरि्देश दयिा, क्योंकि वे स्वयं मछली नहीं खाते थे। और कई मौकों पर, यह पूर्वानुमान लगाते हुए कि भाई जल्द ही उनके पास आएँगे, वे अपने शष्यि को यह बता देते थे और उन्हें भोजन और रोटी तैयार करने का नरि्देश देते थे।

[1721]संत ल्यूक के अपने पहाड़ पर नविास करने के सात साल बाद, बुल्गारयिाई सेनाओं ने ग्रीक भूमि पर आक्रमण करना शुरू कर दयिा, यह एक ऐसी घटना थी जसिकी भवष्यिवाणी रेवरेंड फादर ने पहले ही कर दी थी। नविासी भाग गए, कुछ शहरों और के कलिों में, अन्य यूबोया द्वीप और पेलोपोनेस[1722] में; फरि पूजनीय ल्यूक, अपने पहाड़ को छोड़कर, एक जहाज पर चढ़े और कोरथि[1723] के लिए रवाना हो गए। वहाँ, पात्रास में तपस्या कर रहे एक स्तंभवासी के बारे में सुनकर, वह उनके पास गया और दस वर्ष तक उनके साथ रहा, एक पुत्र की तरह पूर्ण आज्ञाकारति और उत्साह के साथ उनकी सेवा करता रहा। एक नश्चिति पुरोहति ने इस स्तंभवासी के बारे में बुरा-भला कहना शुरू कर दयिा और सुनने वालों को बहकाते हुए, उस धर्मी व्यक्ति का अपमान कयिा और उस पर नदिा की। आदरणीय ल्यूक ने, अपने पति का अपमान करने वाले अपमानजनक शब्दों को सुनकर, अपनी वशिष्टि नम्रता को एक तरफ रख दयिा और, पुरोहति के वरिोध में, तपस्वी की प्रशंसा करने लगे; पुरोहति के झूठों को उजागर करते हुए, वे अपने गुरु की बेगुनाही की रक्षा में दृढ़ खड़े रहे।

[1721] पैट्रास पेलोपोनेस के उत्तरी तट पर एक प्राचीन शहर है।

[1722] यूबोइया मध्य ग्रीस, बोएटिया और एटकिा क्षेत्रों के तटों के साथ उत्तर-पश्चमि से दक्षणि-पूर्व तक फैला एक लंबा द्वीप है। – पेलोपोनेस दक्षणिी ग्रीस है।

[1723] कोरथि – प्राचीन ग्रीस का सबसे पुराना, सबसे प्रसदि्ध और सबसे अमीर शहर; यह कोरथि की जलडमरूमध्य पर स्थति था, जो पेलोपोनेस को बाकी ग्रीस से जोड़ता था, कोरथि की खाड़ी के दक्षणि-पूर्वी तट पर आयोनयिन और एजयिन सागरों के बीच एक सुंदर और उपजाऊ मैदान में था; आज, प्राचीन कोरथि के खंडहर वर्तमान कोरथि शहर के पास स्थति हैं, जसिे कोरोन्टो के नाम से जाना जाता है, जसिकी आबादी केवल लगभग 5,000 है।

हालाँकि, वह पुरोहित एक क्रूर व्यक्ति था, उसने संत लूका के गाल पर थप्पड़ मारा – और तुरंत ही उस पर ईश्वर का दंड आ पड़ा: पागलपन के दौरे में, वह जमीन पर गिर पड़ा और अपनी मृत्यु तक वहीं पड़ा रहा, उसे शरीर के विनाश के लिए शैतान के हवाले कर दिया गया था, ताकि उसकी आत्मा बच सके (1 कुरिन्थियों 5:5)।

दस साल बाद, पूज्य लूका एक बार फिर अपनी मातृभूमि हेलास लौटे और माउंट जॉन पर अपने पहले निवास स्थल पर बस गए।

एक दिन कोरिंथ के बिशप कांस्टेंटिनोपल जाते समय संत के पहाड़ से गुजर रहे थे और उन्होंने रेवरेन्ड लूका की कोठरी के पास विश्राम करने के लिए रुका; यह जानकर संत लूका सम्मान प्रकट करने गए और अपने श्रम के उपहार—पेड़ों के फल, बगीचे की जड़ वाली सब्जियाँ और हरी सब्जियाँ—ले आए। बिशप ने, उन्हें आदरपूर्वक स्वीकार करते हुए, उनकी कुटिया देखने गए और उनके तपस्वी तथा मौन जीवन-यापन, उनके बगीचे और उनके श्रम को देखकर, वे आश्चर्य से भर गए और इससे उन्हें महान प्रेरणा मिली। उन्होंने उस तपस्वी को दान देने का निश्चय किया और उनके साथ आए प्रत्येक व्यक्ति को कुछ सिक्के देने का आदेश दिया; उन्होंने स्वयं कुछ सोना दान किया, और इस प्रकार बहुत सारा पैसा जमा हो गया, जिसे वे उन्हें देना चाहते थे; लेकिन संत लूका ने इसे स्वीकार नहीं किया।

'हे पवित्र पिता,' उसने कहा, 'मैं सोना नहीं, बल्कि आपकी पवित्र प्रार्थनाओं और शिक्षाओं को चाहता और माँगता हूँ; और सोने का मेरे लिए क्या उपयोग है, जब मैंने गरीबी और इस विनम्र जीवन को चुना है? अत; जो मैं माँगता और इच्छा करता हूँ, वह मुझे प्रदान करें: मुझे, एक साधारण मनुष्य को, सिखाएँ कि कैसे मोक्ष प्राप्त किया जाए?'

उदास बिशप ने, यह सोचकर कि संत लूका दान को नहीं बल्कि स्वयं उसे अस्वीकार और तुच्छ समझ रहे थे, आदरणीय से कहा:

'आप हमारा उपहार क्यों ठुकरा रहे हैं, और उसके साथ हमें स्वयं भी?' क्योंकि मैं भी एक विश्वासी ईसाई हूँ, यद्यपि पापी; एक बिशप, यद्यपि अयोग्य। और क्यों, सभी बातों में मसीह का अनुकरण करते हुए, आप इस बात में उनका अनुकरण नहीं करते: क्योंकि उन्होंने भी धर्मपरायण लोगों द्वारा दी गई भीख स्वीकार की थी; इसलिए, यदि आपको सोने की आवश्यकता नहीं है, तो भी इसे स्वीकार करें और ज़रूरतमंदों में बाँट दें। यदि आप दान को अनावश्यक मानते हैं, तो आप गरीबों को उनकी ज़रूरत की चीज़ों से वंचित कर रहे हैं और दान देने वालों के मोक्ष से इनकार कर रहे हैं: क्योंकि यदि कोई गरीब व्यक्ति दान स्वीकार नहीं करता है, तो वह अपनी ज़रूरत की सभी चीज़ें कहाँ से प्राप्त करेगा? और हम, यदि हम दान नहीं देते हैं, तो हम कैसे बचेंगे?

बिशप के इन शब्दों से सहमत होकर, पूजनीय ने दान स्वीकार कर लिया, लेकिन सारा सोना नहीं, केवल एक सिक्का; और बिशप ने उन्हें अपना आशीर्वाद देकर अपनी यात्रा पर चल पड़े।

पाम संडे के सप्ताह के दौरान संत लूका की प्रथा थी कि वे सुबह-सुबह पहाड़ की चोटी पर चढ़ते और अपने हाथों में एक क्रॉस लेकर, 'हे प्रभु, दया करें' का जाप करते थे। एक बार, जब वह अपनी आदत के अनुसार इसी तरह पहाड़ पर चढ़ रहे थे, तो एक बिल से एक विषैला साँप निकल आया और शैतान के उकसावे पर, उसने उनके पैर की बड़ी उँगली को डस लिया और उससे चिपक गया। संत ने झुककर, उस साँप को उठाया, उसे अपने पैर से हटा दिया, और उससे कहा:

'न तो तुम मुझे नुकसान पहुँचाओगे, और न ही मैं तुम्हें नुकसान पहुँचाऊँगा, बल्कि हम दोनों अपने-अपने रास्ते चलते हैं: क्योंकि हम एक ही सृष्टिकर्ता की रचना हैं और अपने सृष्टिकर्ता की इच्छा और आज्ञा के बिना कुछ भी नहीं कर सकते।'

और इचिडना फिसलकर अपनी गुफा में वापस चली गई, जबकि संत बिना किसी चोट के पहाड़ पर अपनी राह चलते रहे, इचिडना के डंक से उन्हें कोई नुकसान नहीं हुआ।

एक दरबारी, जो शाही खजाने का प्रभारी था, को एक बार राजा द्वारा एक अफ्रीकी देश में भेजा गया था; जब वह कोरिंथ में था, और अपने साथ राजा का बहुत सारा सोना ले जा रहा था, तो उससे लूटपाट कर दी गई , और सारा शाही सोना खो गया। चोरी हुए सामान की तलाश के दौरान, कई लोगों को यातना दी गई और उन्हें मार डाला गया, लेकिन सोना नहीं मिला, और शाही अधिकारी बहुत दुःख में था। शहर के कुलीनों ने उसे सांत्वना देने के लिए आकर भी उसे सांत्वना नहीं दे सके: सोने के मिलने की आशा छोड़कर, वह जीवित रहने के बारे में नहीं सोच रहा था, क्योंकि उसे राजा के क्रोध का भय था। तब उपस्थित लोगों में से एक आगे बढ़कर बोला:

'चोरों का माल कहाँ है, यह कोई नहीं बता सकता, सिवाय भिक्षु लूका के, जिसके माध्यम से ईश्वर अनेक चमत्कार करते हैं।'

यह सुनकर, अन्य लोगों ने कहा, 'बिल्कुल सही' – और वे सभी उसके बारे में बोलने लगे, उसकी पुण्यमय जीवन शैली और उसमें निहित ईश्वर की कृपा की प्रशंसा करने लगे। शाही अधिकारी ने यह सुनकर, संत को निम्नलिखित विनती के साथ एक संदेश भेजा:

'उसके उदाहरण का अनुसरण करें, जिसने मानव जाति के उद्धार के लिए स्वर्ग से उतरने से इनकार नहीं किया, और हमारे शहर में थोड़ी देर के लिए आकर महान दुख से पीड़ित लोगों से मिलने आए।'

पहले तो, संत ल्यूक नहीं जाना चाहते थे, क्योंकि वे व्यर्थ की शोहरत और मानवीय सम्मान से दूर रहते थे, लेकिन फिर, उस सोने की चोरी के कारण पीड़ित हो रहे कई लोगों की खातिर, वे चले गए; शहर में शाही अधिकारी और नागरिकों ने उनका सम्मानपूर्वक स्वागत किया, और सबसे पहले उन्होंने भोजन तैयार करने का आदेश दिया:

उन्होंने उस अधिकारी से कहा, 'आओ पहले हम अपने पेट को तृप्त करें, और परमेश्वर की महिमा के लिए आनंद मनाएँ: जिसने दया के दाखमद्य से हमारी प्यास बुझाई है, वह मानवजाति के प्रति अपने प्रेम में हमारे प्याले आनंद से भरने के लिए पर्याप्त शक्तिशाली है।'

जब वे बैठकर भोजन कर रहे थे—हालाँकि उन्होंने अपने शरीर को भोजन से कम, बल्कि संत की बुद्धिमानी भरी शिक्षा से अपनी आत्मा को अधिक पोषित किया—तब पूजनीय ल्यूक ने, उन लोगों में से एक पर अपनी दृष्टि डालते हुए जो उनकी सेवा कर रहे थे, उसे नाम से बुलाया, अपने पास बुलाया और उससे कहा:

'तुमने राजा का सोना चुराने की हिम्मत करके लगभग अपनी मौत को क्यों बुला लिया, और अपने स्वामी पर इतनी बड़ी विपत्ति क्यों ला दी? अगर तुम दया और क्षमा पाना चाहते हो तो तुरंत जाओ और वह सोना लाओ जिसे तुमने जमीन में छिपाया है।'

यह सुनकर, वह नौकर बहुत डर गया और पूरी तरह काँपते हुए चुपचाप खड़ा रहा: वह, जिसे उसका अपना विवेक भी दोषी ठहरा चुका था, अब एक भी शब्द नहीं बोल सकता था; फिर, ज़मीन पर गिरकर और संत के पैरों को पकड़कर, उसने सारी सच्चाई बताई, आँसुओं के साथ क्षमा की भीख माँगी, जो उसे मिल गई। संत न केवल उसकी पापी पीड़ा को उजागर करना चाहते थे, बल्कि उसे ठीक भी करना चाहते थे। और तुरंत चोर बाहर गया और जल्द ही चोरी किया हुआ सोना, पूरी तरह से सुरक्षित लेकर वापस आया, और उसे सभी के सामने रख दिया; और राजसी अधिकारी और उसके साथ मौजूद सभी लोगों के लिए बहुत खुशी हुई, और जो लोग सोने को लेकर डरे हुए थे, वे सभी निश्चिंत हो गए। जहाँ तक उस शैतान का सवाल है, जिसने इस चोरी को भड़काया था, वह इस बात से लज्जित हुआ कि चोर को क्षमा कर दिया गया था, और सभी के होंठों पर प्रभु यीशु की स्तुति हुई। संत ने, हालांकि, अपने चारों ओर के सभी लोगों से मिली स्तुति का कोई श्रेय नहीं लिया, बल्कि इस चमत्कार की सारी महिमा केवल परमेश्वर को ही अर्पित करते हुए, घर लौट आए।

कुछ समय बाद, पूजनीय ल्यूक, एबॉट एंथनी से मिलने के लिए थेब्स शहर में स्थित एक मठ गए[1724] : यह उनकी आदत थी कि वे ईश्वर से प्रेरित पुरुषों से मिलें और उनके साथ आत्मा-उद्धार संबंधी बातें करें। जब वह एबॉट एंथनी के साथ थे, तो ऐसा हुआ कि शहर के एक कुलीन व्यक्ति का पुत्र घातक रूप से बीमार पड़ गया। यह सुनकर कि संत ल्यूक उनके मठ में आए हैं, वह व्यक्ति तुरंत वहाँ पहुँचा और उनके पैरों पर गिरकर, रोते हुए, उनसे विनती करने लगा कि वे उसके घर आकर उस बीमार लड़के से मिलें, जो अब मौत के कगार पर था: उसका मानना था कि इस ईश्वर-पुरुष के आने के बाद, उसका बेटा स्वस्थ हो जाएगा। संत ने विनम्रतापूर्वक इनकार करते हुए कहा:

'मैं कौन हूँ? और आप मुझमें ऐसी कौन सी महानता देखते हैं कि आप मुझे इतना सम्मान दे रहे हैं? आत्माओं और शरीरों का केवल एक ही चिकित्सक है जो हमें मृत्यु से बचा सकता है – वह ईश्वर जिसने हमें बनाया है; एक पापी और नश्वर मनुष्य ऐसा कुछ भी नहीं कर सकता।'

और वह आदमी दुख में, अपने बेटे के जीवन से निराश होकर और रोते हुए चला गया। उस शाम, मठाधीश ने पूजनीय से निजी तौर पर बात करते हुए उनसे कहा:

'मेरे विचार से, आदरणीय फादर, आपने उस बीमार व्यक्ति से मिलने और उस शोकाकुल पिता को सांत्वना देने का काम करके गलत किया; क्योंकि हमें भी मसीह के ये वचन सुनने होंगे: *"मैं बीमार था और जेल में था, और तुम मुझसे मिलने नहीं आए"* (मत्ती 25:43)।'

इस पर संत लूक ने उत्तर दिया:

[1724] थेब्स – प्राचीन ग्रीस के एक केंद्रीय क्षेत्र बोइओटिया की राजधानी।

बीमारों को चंगा करना ईश्वर की शक्ति का कार्य है, जबकि दुखी लोगों को सांत्वना देना उन लोगों के लिए उपयुक्त है जिनके होठों पर वचन और ज्ञान है; मैं, हालाँकि, पहले वाले से बहुत दूर हूँ, और दूसरे में पूरी तरह से कमी हूँ, क्योंकि मैं एक साधारण और अनपढ़ आदमी हूँ; लेकिन अगर आप सहमत हैं और सोचते हैं कि इससे ईश्वर प्रसन्न होंगे, तो आप पहले जाएँ और रास्ता दिखाएँ, और मैं आपका अनुसरण करूँगा।

और तुरंत, देर शाम को, वे दोनों नगर की ओर चल पड़े। नागरिक के घर पहुँचने पर, उन्होंने लड़के को आधा-मुर्दा और बोलते हुए पाया, जबकि घर वाले सब उसकी मृत्यु का इंतजार कर रहे थे। लड़के का पिता, घर में मौजूद सभी लोगों के साथ, संत के पैरों में गिर पड़ा और आँसू भरी आँखों से उससे अपने मरणासन्न बेटे के लिए प्रार्थना करने का आग्रह किया, ताकि उसे मृत्यु के द्वार से वापस लाया जा सके। बीमार लड़के के पिता के भावों से प्रभावित होकर और एबॉट एंथनी के आग्रह पर, पूज्य भिक्षु ने अपने हाथ उठाकर बीमार लड़के के लिए प्रार्थना की; अपनी प्रार्थना के बाद, वे तुरंत मठ लौट आए, और जैसे ही भोर हुई, वे अपने पहाड़ की ओर चल दिए; इस प्रकार उन्होंने मानवीय महिमा से परहेज़ किया। जैसे ही भोर हुई, एबॉट एंथनी ने अपने सेवक को शहर में यह पता लगाने के लिए भेजा कि बीमार लड़के की हालत कैसी है: क्या आदरणीय ल्यूक की प्रार्थनाओं का कोई प्रभाव पड़ा था। और यह सेवक, लगभग तुरंत ही लौटकर, एबॉट को एक अजीब और अद्भुत बात बताने लगा:

'वह लड़का जो कल रात मौत के दरवाजे पर था,' नौकर ने कहा, 'मैंने उसे एक घोड़े पर सवार होकर स्नानागार में स्नान करने जाते हुए देखा।'

यह सुनकर, मठाधीश चकित हो गए और उन्होंने ईश्वर की स्तुति की।

कई लोग, अपनी ज़रूरतों के लिए परम पूजनीय ल्यूक के पास आकर और उनके लिए अति प्रिय शांति को भंग करके, उनके लिए एक उपद्रव थे, और उन्होंने एक अधिक एकांत स्थान पर जाने का निश्चय किया। लेकिन उन्होंने अपना इरादा तुरंत पूरा नहीं किया; इसके बजाय, उन्होंने पहले अपने शिष्य हरमन को कोरिंथ में, थियोफिलैक्ट नामक एक अनुभवी और ईश्वर-प्रेरित व्यक्ति के पास, यह पूछने के लिए भेजा कि क्या उन्हें एक ही जगह, माउंट जॉन पर रहकर उनके पास आने वालों से होने वाली परेशानी को सहना चाहिए, या उन्हें किसी अज्ञात दूसरे स्थान पर चले जाना चाहिए? थेओफिलैक्ट ने उन्हें वही उत्तर भेजा जो एक बार स्वर्ग से महान संत आर्सेनियस को दिया गया था:

'लोगों से दूर भागो, और तुम बच जाओगे।'

आदरणीय ल्यूक ने खुशी-खुशी इस सलाह को स्वीकार कर लिया और अपने शिष्य के साथ माउंट जॉन छोड़कर कलवी नामक एक सुनसान जगह पर समुद्र के पास बस गए; वहाँ रहते हुए, उन्होंने अपने हाथों की मेहनत से अपनी आजीविका कमाई: संत ने जमीन खोदी, गेहूं बोया और उसे चक्की पर पीसकर अपनी रोटी बनाई।

एक बार, कुछ नाविक उसके पास से गुज़रे और पूजनीय की कुटिया से ज़्यादा दूर नहीं, तट के पास लंगर डाल दिया; अंदर जाने पर, उन्हें वहाँ कोई नहीं मिला, क्योंकि संत ल्यूक और उनके शिष्य कहीं गए हुए थे। एक अच्छी चक्की का पत्थर देख कर, वे उसे उठा ले गए और अपने जहाज़ पर ले गए। जल्द ही रेवरेंड अपनी कुटिया में लौटे और, यह देखकर कि उनका चक्की का पाट गायब था, वे नाविकों के पास गए और उनसे इसे वापस करने के लिए कहा। लेकिन उन्होंने बहस की और जोर देकर कहा कि उन्होंने इसे नहीं लिया है। तब सेंट ल्यूक ने उनसे कहा:

'अगर तुमने इसे नहीं लिया है, तो समुद्र में नाव चलाओ; लेकिन अगर यह तुम्हारे पास है, तो प्रभु तुम्हारे साथ वैसा ही व्यवहार करेंगे जैसा उन्हें उचित लगे।'

यह कहकर, पूज्यनीय चले गए, और तुरंत ही वह व्यक्ति जिसने पत्थर लिया था, मृत पड़ा मिला। इसके बाद, सभी नाविकों में बहुत डर छा गया; वे आए और संत से क्षमा याचना करने लगे, और पत्थर लौटा दिया। परन्तु ईश्वर के पुरुष, नाविक की अप्रत्याशित मृत्यु से बहुत दुखी हुए और कई दिनों तक उसके लिए रोते रहे।

इस स्थान पर रेवरेंड के बसने के तीन वर्ष बाद, अरबों ने ग्रीकों पर आक्रमण किया, और संत जल स्रोतों से रहित एक निर्जन द्वीप, जिसे अम्पलि कहा जाता था, पर चले गए; वहाँ उन्होंने काफी समय तक भूख और प्यास सहन की, और वहाँ से वे सोतारी नामक एक उपजाऊ स्थान पर चले गए। उस भूमि से उस राक्षस को भगा देने के बाद, जो उसे भूत-प्रेत दिखाकर डराना चाहता था, वह अपने परमधाम गमन तक वहीं रहे; वहाँ उनके शिष्य उनके पास एकत्रित हुए, और एक छोटा सा मठ स्थापित किया गया। उस भूमि के प्रेटोर, जिनका नाम क्रिनिट था, जो आदरणीय संत का बहुत सम्मान करते थे, ने मठ के भीतर एक चर्च का निर्माण किया जो पवित्र महा शहीद बार्बरा को समर्पित था; और संत उपवास और प्रार्थना में इस मठ में रहे, ईश्वर के लिए अथक परिश्रम करते हुए और मानव जाति के मोक्ष की सेवा करते हुए: क्योंकि

अपनी शिक्षाओं और जीवन शैली के माध्यम से उन्होंने अपने भाइयों की आत्माओं को आध्यात्मिक लाभ पहुँचाया, जबकि अपनी प्रार्थनाओं के माध्यम से उन्होंने शारीरिक बीमारियों को ठीक किया। उन्होंने एक ही शब्द से भिक्षु ग्रेगरी को ठीक किया, जो लगभग हमेशा पेट दर्द से पीड़ित रहता था। उन्होंने थेब्स में रहने वाली एक कुलीन महिला को भी ठीक किया; वह एक गंभीर और लंबे समय से चली आ रही बीमारी से पीड़ित थी और डॉक्टरों से मदद मिलने की उम्मीद छोड़ चुकी थी; उन्होंने अपने शिष्य पैंक्रैटियस को उसके पास भेजा, जो पहुँचने पर उसे पवित्र तेल से अभिषेक करने लगा, और वह महिला अचानक ठीक हो गई। आम तौर पर, रेवरेंड फादर ' ' सभी बीमारियों से शीघ्र स्वास्थ्य लाभ दिलाते थे, और कई लोगों के लिए भविष्य भी बता देते थे। उस स्थान पर सात वर्ष तक रहने के बाद, संत ल्यूक अपनी मृत्यु के करीब आ गए।

उनकी मृत्यु से पहले, निम्नलिखित घटना घटी। आदरणीय के शिष्यों में थियोडोसियस नाम का एक व्यक्ति था, जिसका भाई, फिलिप, एक सामान्य व्यक्ति था। एक अवसर पर, उसने आदरणीय के मठ का दौरा करने का फैसला किया, आंशिक रूप से अपने भाई से मिलने और आंशिक रूप से संत ल्यूक से मिलने के लिए, जिनके बारे में उसने कई गौरवशाली बातें सुनी थीं। रेवरेंड ने, उनके आगमन की पूर्व सूचना पाकर, थियोडोसियस से कहा:

'भाई, एक अच्छे भोजन के लिए आवश्यक सब कुछ तैयार करो; तुम्हारा भाई आज शाम हमारे यहाँ भोजन करने आ रहा है।'

थेओडोसियस, आश्चर्य और खुशी से भरकर, ध्यान से भोजन तैयार किया और बार-बार द्वार से बाहर निकलकर सड़क की ओर निहारता रहा और उत्सुकता से अपने भाई के आने का इंतजार करता रहा। शाम को, फिलिप भोजन के लिए आवश्यक बहुत सारी चीजें साथ लेकर आया। संत ने उसका गर्मजोशी से स्वागत किया, और उस शाम वे सभी एक साथ रात के खाने के लिए बैठे, और ईश्वर की महिमा के लिए परोसी गई सभी चीजों का स्वाद लिया। इस भोजन पर, रेवरेंड फादर ने सामान्य से अधिक खाया और पिया - और उन्होंने ऐसा फिलिप की आतिथ्य के लिए किया। रात्रि के भोजन और सोने से पहले की प्रथागत प्रार्थनाओं के बाद, फिलिप आराम करने के लिए लेट गया; लेकिन बिस्तर पर लेटे-लेटे, वह परमेश्वर के पवित्र पुरुष, ल्यूक के बारे में भटक गया: उसने सोचा, 'यह एल्डर एक पाखंडी है; वह बहुत अधिक पीता और खाता है, और केवल तपस्वी और पवित्र होने का दिखावा करता है।' इसके बाद, सो जाने पर, फिलिप ने एक सपने में दो तेजस्वी युवक देखे जिन्होंने क्रोधित आँखों से उसकी ओर देखा; उनके चेहरे भयानक थे, और उन्होंने कठोर शब्द बोले:

'तुम उस पूजनीय के बारे में इतनी बुरी सोच क्यों रखते हो? और तुम एक निर्दोष और पवित्र व्यक्ति को दोषी क्यों ठहराते हो? अपनी आँखें उठाओ, जो केवल सांसारिक चीजें देखती हैं, और उस महान सम्मान को देखो जो उस पर दिया गया है जिसे तुम एक पाखंडी और धोखेबाज़ मानते हो।'

फिलिप ने ऊपर देखा, तो उसने एक अत्यंत शानदार स्थान देखा, जो पूरी तरह से पर्पलरी पत्थर से पक्का किया गया था, और वहाँ पूजनीय ल्यूक खड़े थे: वे दिव्य महिमा से, सूर्य की तरह, चमक रहे थे। नींद से चौंककर जागते ही, फिलिप भय से भर गया और उसने यह सब अपने भाई थियोडोसियस और अन्य भिक्षुओं को सुनाया; फिर, पश्चाताप के साथ, उसने अपना पाप स्वयं पूजनीय ल्यूक के सामने स्वीकार किया; उनसे क्षमा याचना करने के बाद, वह महान आध्यात्मिक लाभ प्राप्त कर प्रस्थान कर गया।

ईश्वर के पास अपने निकटवर्ती प्रस्थान का पूर्वाभास पाकर, संत ल्यूक उस मरुभूमि में रहने वाले सभी संतों से मिलने निकले और उन्होंने सभी को अंतिम चूमन चूमा।

उन्होंने उनसे कहा, 'भाइयो, मेरे लिए प्रार्थना करो, हमारे प्रभु मसीह से प्रार्थना करो; हम नहीं जानते कि हम फिर से एक-दूसरे से मिलेंगे या नहीं।'

उन सभी से इस प्रकार भेंट करने के बाद, उन्होंने स्वयं को अपनी कोठरी में बंद कर लिया और अगले तीन महीने अपनी मृत्यु की तैयारी में बिताए। अंत में, अपनी मृत्यु से आठ दिन पहले, संत ल्यूक बीमार पड़ गए; जब वे पहले से ही बहुत बीमार थे और जमीन पर लेटे हुए थे, तो पुरोहित ग्रेगरी ने उनसे पूछा:

'आपकी अंत्येष्टि के संबंध में आपकी क्या इच्छाएँ हैं? और आप अपना शरीर कहाँ विश्राम के लिए रखना चाहेंगे?'

इस पर संत ने उत्तर दिया:

'मेरे पैरों में एक जंजीर बाँधकर मुझे जंगल की गहराई में फेंक दो, ताकि किसी काम का न रहकर, मैं कम से कम जानवरों का भोजन बन सकूँ।'

तब पुरोहति ने संत से वनिती की कि वे अपने शरीर के लिए कोई अन्य व्यवस्था करें और अपने दफ़न के लिए कोई स्थान बताएं। कुछ समय बाद, आदरणीय संत ने कहा:

'मुझे उसी जगह दफ़ना दो जहाँ मैं पड़ा हूँ: प्रभु अपने पवित्र नाम की महमिा के लिए इस स्थान को गौरवान्वति करना चाहते हैं।'

यह कहकर, संत ने, जब सूर्य अस्त हो रहा था, अपनी आँखें आकाश की ओर उठाईं और कहा:

'हे प्रभु, मैं अपनी आत्मा तेरे हाथों में सौंपता हूँ!'

और वह नश्वर मृत्यु की नींद में सो गए; यह फरवरी का सातवाँ दनि था; और उनकी पवित्र आत्मा परमेश्वर के पास, अनंत जीवन के लिए प्रस्थान कर गई।

जब सुबह हुई, तो आसपास के क्षेत्रों के सभी भक्षिु और गृहस्थ इस पवित्र मठ में इकट्ठा हुए, और वहाँ लोगों की भारी भीड़ थी; सभी ने दुनिया के लिए ऐसी महान ज्योति के चले जाने पर वलिाप किया। उन्होंने परमेश्वर के उस पुरुष को सम्मान के साथ ठीक उसी स्थान पर दफनाया जहाँ उन्होंने आज्ञा दी थी - उस कोठरी में जहाँ उन्होंने अपना तपस्वी जीवन जिया था।

छह महीने बाद, कोस्मा नामक एक ख़ास भक्षिु, जो पाफ्लागोनिया[1725] की भूमि से इटली की यात्रा कर रहा था, को ईश्वर का एक दर्शन हुआ; इस दर्शन में उसे आज्ञा दी गई कि वह उस स्थान पर जाए जहाँ आदरणीय ल्यूक वश्राम करते थे, और उनकी कब्र के पास लगातार रहे। इस स्थान पर पहुँचकर और वहाँ बस जाने के बाद, भक्षिु कोस्मास ने एक अवशेष-पात्र खोदा जसिमें आदरणीय ल्यूक के अक्षय अवशेष थे और, उसे कब्र पर रखने के बाद, इस पवित्र अवशेष-पात्र को तख्तों और एक जाली से घेर दिया, और अपनी कोठरी को एक चर्च में बदल दिया; और इन पवित्र अवशेषों के माध्यम से महान चमत्कार हुए: उनसे सुगंधति मूर्रा बही, और जो भी उससे स्वयं पर अभषिेक करते थे, वे चंगे हो जाते थे: लंगड़ों को चंगा किया गया, अंधों को दृष्टि प्राप्त हुई, कोढ़ियों को शुद्ध किया गया, और लोगों से दुष्टात्माएँ नकिल गईं, परम पूज्य ल्यूक की प्रार्थनाओं द्वारा और हमारे प्रभु यीशु मसीह की शक्ति से, जनिका महमिा हो, पति और पवित्र आत्मा के साथ, युगानुयुग। आमीन।

नकिोमेडिया में पीड़ति 1,003 पवित्र शहीदों का स्मरणोत्सव।

7 फरवरी को स्मरण किया जाता है

दुष्ट और क्रूर सम्राट डायोक्लेटियिन के शासनकाल के दौरान, मसीह की कलीसिया के वरिुद्ध एक बड़ा उत्पीड़न शुरू किया गया था: उस समय, मसीह के नाम के लिए मसीहयिों को हर जगह कैद किया गया और मृत्युदंड दिया गया। उनमें मसीह के सेवक, बशिप थियोपेम्प्टस और थियोनास, जो एक पूर्व जादूगर थे, और चार राजसी अधकिारी थे: वास, यूसेबियस, यूटकियिस और बेसलिडिस, जन्हिें पवित्र शहीद पीटर, डायोक्लेटियिन के चेंबरलेन, की हरिासत में सौंपा गया था; और उन अधकिारियों की पत्नियाँ, जन्हिोंने पवित्र वश्वास को अपनाया था, मसीह की गवाही में दृढ़ रहीं और प्रभु के लिए अपना जीवन बलदिान कर दिया। इन शहीदों की मृत्यु के बाद, उनके घर के सभी लोगों—दासों और स्वतंत्र लोगों, सभी सेवकों ने—आपस में वचिार-वमिर्श करके एक स्वर में कहा:

'देखो, हमारे स्वामी, जन्हिोंने इस संसार में हम पर शासन किया, ने मसीह में पवित्र वश्वास के लिए इस क्षणकि जीवन को तुच्छ समझकर स्वर्ग के राज्य को प्राप्त कर लिया है और सांसारकि चीज़ों को ठुकराकर अब स्वर्गीय आशीर्वादों का आनंद ले रहे हैं: तो फरि हम अपने स्वामयिों का अनुसरण क्यों न करें? आओ हम सम्राट डायोक्लेटियिन के पास जाएँ और उससे कहें: हम मसीही हैं और इस जीवन में हमारे स्वामयिों के साथ मलिकर, आने वाले जीवन में अक्षय मुकुट प्राप्त करना चाहते हैं।

आपस में यह नर्णिय लेने और सभी के सहर्ष सहमत हो जाने के बाद, उन्होंने अपनी पत्नियों और बच्चों सहति अपनी संख्या गनिी, और पाया कि वे एक हजार तीन थे।

सब एक साथ नकिल पड़े, वे दुष्ट उत्पीड़क डायोक्लेटियिन की अदालत में खड़े हो गए और एक स्वर में पुकार उठे:

[1725] पाफ्लागोनिया – एशिया माइनर के उत्तरी भाग में एक ऊबड़-खाबड़ पहाड़ी क्षेत्र।

'हम भी मसीही हैं और अपने उन पूर्वजों और स्वामियों का अनुसरण करेंगे जिन्होंने मसीह के लिए अपना रक्त बहाया; लेकिन हम राक्षसों की आज्ञा नहीं मानेंगे, और न ही उन मूर्तियों की पूजा करेंगे जो अंधी, बहरी, गूंगी और निर्जीव हैं!'

सम्राट, यह देखकर कि वे इतने सारे थे, क्रोध से भर गया; फिर भी, पहले नम्रता का दिखावा करते हुए, उसने उन्हें सौम्य शब्दों से लुभाना शुरू कर दिया। उसने उनसे कहा:

'तुम इतनी मूर्खता क्यों कर रहे हो और स्वेच्छा से खुद को ऐसी तबाही में क्यों डाल रहे हो? तुम्हारे लिए बेहतर होगा कि तुम मेरी बात मानो, एक ऐसे पिता की तरह जो तुम्हारे लिए केवल अच्छा चाहता है, और देवताओं को बलिदान चढ़ाओ; इस तरह तुम उस पागलपन से बच जाओगे जिसने यूसेबियस और उसके दोस्तों को धोखा दिया था, जिसके कारण उन्हें इतनी भयानक मृत्यु मिली। जहाँ तक तुम्हारा सवाल है, यदि तुम मेरी बात मानोगे और अमर देवताओं को बलिदान दोगे, तो तुम्हें मुझसे बड़ा सम्मान और उपहार मिलेगा, और, हमारी कृपा से, तुम बहुत धनी हो जाओगे।"

संतों ने यातना देने वाले को उत्तर दिया:

'हम न तो आपके उपहारों को माँगते हैं और न ही हमें आपकी धमकियों से डर लगता है, बल्कि हम जीवित और सच्चे परमेश्वर को स्तुति का बलिदान चढ़ाने का प्रयास करते हैं; जहाँ तक आपकी बात है, आप हमारे साथ जो चाहें करें, और जल्दी करें: हमारे लिए मसीह से अधिक कीमती कुछ भी नहीं है।'

पवित्र शहीदों के ये वचन सुनकर डियोक्लेशियन को डर लगा कि वे लोगों के बीच कुछ अशांति भड़का सकते हैं, क्योंकि उसने देखा था कि वे कितनी बड़ी बहादुरी से मसीह में अपने विश्वास का बचाव कर रहे थे; अपने हाथ के इशारे से उसने सैनिकों को आदेश दिया कि वे अपने हथियार खींचकर पूरे ईसाई समुदाय को घेर लें; उनमें कई छोटे बच्चे भी थे, जिन्हें उनकी माताएँ अपनी बाहों में पकड़े हुए थीं: उनमें से कुछ एक साल के थे, जबकि अन्य दो या तीन महीने के थे।

जब सशस्त्र सैनिकों ने ईसाइयों को घेर लिया, तो राजा ने उनसे कहा:

'अब, अतः मेरी सलाह मानो और घोषणा करो कि तुम देवताओं को बलिदान चढ़ाने और उनकी पूजा करने के लिए सहमत हो, ताकि तुम सुरक्षित और कुशल अपने घर लौट सको; स्वयं को और अपने शिशुओं को बचाओ, जैसे मैं तुम्हें बचाता हूँ, कहीं ऐसा न हो कि तुम और तुम्हारे बच्चे अपनी मूर्खता के कारण नष्ट हो जाओ; क्योंकि यदि तुम मेरी बात नहीं मानोगे, तो तुम्हारा मसीह भी तुम्हारी कोई मदद नहीं कर पाएगा।

इस पर संतों ने उत्तर दिया:

'हमने स्वर्ग में एकमात्र जीवित परमेश्वर की, और उनके एकलौते पुत्र और वचन, हमारे प्रभु यीशु मसीह की, जिनके द्वारा सभी वस्तुएँ बनीं, और उनकी पवित्र आत्मा की आराधना करना सीखा है; इसलिए, अपनी व्यर्थ दया के किसी भी वादे से हमें बहकाने का प्रयास न करें: तुम न तो अपनी भेंटों से हमें मना सकोगे और न ही अपनी धमकियों से हमें हमारे प्रभु मसीह में अपने विश्वास को त्यागने और उन निर्जीव मूर्तियों की पूजा करने के लिए डरा सकोगे जिन्हें तुम पूजते हो: हमारे लिए मसीह से अधिक प्रिय या अधिक वांछनीय कुछ भी नहीं हो सकता, जो युगों-युगों तक जीवित रहते हैं।

तब डायोक्लेटियन, क्रोधित होकर, ने एक बार फिर सैनिकों को आदेश दिया कि वे सभी को तुरंत तलवार से काट डालें। और उन्होंने, जंगली जानवरों की तरह, हर तरफ से ईसाइयों पर हमला किया और मसीह के पवित्र शहीदों को तलवारों से काट डाला; उन्होंने किसी को नहीं बख्शा, यहाँ तक कि अपनी माताओं की गोद में दूध पी रहे शिशुओं को भी नहीं, और 1,003 'survived[1726] ' में से एक को भी नहीं।

इस प्रकार मसीह के पवित्र शहीदों ने मसीह की सच्ची गवाही में अपना बलिदान दिया, मिस्रियों द्वारा 'मेहरि' नामक महीने के 13वें दिन—जो हमारे कैलेंडर में 7 फरवरी के अनुरूप है—निकोमेडिया में, जो बिथिनिया प्रांत की प्रांतीय राजधानी थी[1727] , डायोक्लेटियन के शासनकाल के दौरान; – और उस समय हम पर शासन कर रहे थे, जैसे कि वे अब शासन करते हैं और सदैव शासन करेंगे, यीशु मसीह, सच्चे परमेश्वर और हमारे उद्धारकर्ता, जिनका महिमा और स्तुति हो, परमेश्वर पिता और पवित्र, शुभ और जीवन-दायक आत्मा के साथ, युगानुयुग, आमीन।

[1726] वे 303 में मर गए।

[1727] बिथिनिया – एशिया माइनर का एक उत्तर-पश्चिमी क्षेत्र। निकोमेडिया – बिथिनिया की राजधानी, सम्राट डायोक्लेटियन का पसंदीदा निवास।

21 फरवरी

8 फरवरी (पुराने कैलेंडर के अनुसार)

महान शहीद, संत थयिोडोर द स्ट्रैटेलेट्स का कष्टकथा।

8 फरवरी को स्मरणोत्सव

धर्मद्रोही सम्राट लसिनियिस[1728] ने, धर्मद्रोही मैक्समियिन के बाद राजदंड ग्रहण करके और हर बात में उसकी नकल करते हुए, तुरंत ही उन लोगों के खलिाफ एक बड़ा उत्पीड़न शुरू कर दयिा जो अपनी धार्मकिता के लिए प्रसद्धि थे; उसने इस धर्मद्रोही आदेश के बारे में सभी शहरों और देशों में एक फरमान भेजा। उस समय, मसीह के बहुत से पराक्रमी सैनकि मारे गए: लसिनियिस ने सेबास्टे के चालीस शहीदों को, साथ ही अपने ही दरबार के प्रसद्धि सैनकिों और राजकुमारों को मृत्युदंड दयिा, और अंत में मैसेडोनयिा के तीन सौ पुरुषों को मार डाला।

जब दुष्ट लकिनियिस ने देखा कि लगभग सभी ईसाई, उसके आदेश की अवहेलना करते हुए, पवत्रि वश्विास के लिए अपनी जान दे रहे थे, तो उसने आदेश दयिा कि उनमें से केवल सबसे वशिष्टि और कुलीन लोगों को ढूंढा जाए—अर्थात्, केवल वे जो उसकी सेना में थे या शहरों में रहते थे—और आज्ञा दी कि केवल उन्हें (साधारण लोगों की भीड़ की परवाह कए बनिा) मूर्तयिों की पूजा करने के लिए मजबूर कयिा जाए; वह चाहता था कि अपने अधकिार में आने वाले सभी लोगों को डर के माध्यम से मूर्तपिूजा के प्रतविफादार बनाए रखे।

जबकि सबसे प्रमुख ईसाइयों को हर जगह बड़ी लगन से खोजा जा रहा था, नकिोमेडयिा में मौजूद लकिनियिस को पता चला कि काले सागर के पास हेराक्लयिा[1729] में थयिोडोर स्ट्रैटेलेट्स नाम का एक पवत्रि व्यक्ति रहता था, कि वह एक ईसाई था और कई लोगों को मसीह के धर्म में परविर्तति कर रहा था।

संत थयिोडोर हरेक्लयिा शहर के पास स्थति यूकैटा[1730] के मूल नविासी थे; वह एक बहादुर और पराक्रमी व्यक्ति थे, और देखने में बहुत सुंदर थे; इसके अलावा, वह अपनी बुद्धि और महान वाक्पटुता के लिए प्रतष्ठिति थे, इतने कि उन्हें 'vrîitor' कहा जाता था, यानी, एक अत्यंत कुशल वक्ता[1731] । राजा की आज्ञा से, उन्हें स्ट्रैटलिट्स, यानी एक सैन्य कमांडर नयिुक्त कयिा गया, और हेराक्लयिा शहर उनके अधीन कर दयिा गया; इस प्रकार उन्हें उनकी बहादुरी के लिए पुरस्कृत कयिा गया, जो यूखाइटा में सर्प को मारने के बाद सभी को ज्ञात हो गई।

यूकेइटा शहर से बहुत दूर नहीं, इसके उत्तर में, एक सुनसान मैदान था, और उसमें एक बड़ी खाई थी, जसिके अंदर एक वशिाल सर्प रहता था। जब भी वह इस खाई से बाहर नकिलता, उस स्थान पर पृथ्वी कांप उठती; और एक बार बाहर नकिलने के बाद, वह अपने रास्ते में आने वाली हर चीज़ को, इंसान और जानवर दोनों को, नगिल जाता था।

यह सुनकर, मसीह के पराक्रमी योद्धा, संत थयिोडोर, जो उस समय सेना के साथ थे, ने अपने इरादे के बारे में कसिी को बताए बनिा, अकेले ही उस क्रूर साँप का सामना करने के लिए नकिल पड़े।

वह अपने साथ केवल अपने सामान्य हथयिार ही ले गया, जबकि उसने अपनी छाती पर एक कीमती क्रॉस पहन रखा था। उसने अपने आप से कहा:

'मैं जाकर मसीह की शक्ति से अपने देश को इस क्रूर सर्प से मुक्त करूँगा।'

जब वह उस मैदान में पहुँचा, तो उसने लंबी घास देखी, अपने घोड़े से उतर गया और आराम करने के लिए लेट गया। उस देश में यूसेबयिा नाम की एक धार्मकि महलिा रहती थी। वह एक वृद्ध महलिा थी; कुछ साल पहले, मैक्समियिन और मैक्समिनिस के शासनकाल में शहीद हुए संत थयिोडोर टायरॉन के पवत्रि अवशेष प्राप्त करने के बाद, उसने उन्हें यूकैटा में अपने घर में सुगंधति जड़ी-बूटयिों के साथ दफनाया था और हर साल उनकी स्मृति मनाती थी। जब उस महलिा ने ख्रीस्त

[1728] लकिनियिस – साम्राज्य के पूर्वी भाग का एक रोमन सम्राट, जसिने 307 से 324 तक शासन कयिा।

[1729] हेराक्लेया – एशयिा माइनर के उत्तरी भाग में पोंटस का एक शहर।

[1730] यूकेइटा – एशयिा माइनर के उत्तर में एक शहर, हेराक्लआि से बहुत दूर नहीं; अब मार्सविान के नाम से जाना जाता है।

[1731] ग्रीक शब्द 'रसिटोर' – वक्ता, वाक्पटुता – और 'व्री' – एक अवभिाज्य अक्षर जो उस शब्द के अर्थ को तीव्र करता है जसिके साथ यह जुड़ा होता है।

के योद्धा, 'स्ट्रेटेलेट्स' के नाम से प्रसद्धि दूसरे थयिोडोर को उस खेत में सोया हुआ देखा, तो वह बड़े भय के साथ उसके पास आई; और, उसका हाथ पकड़कर, उसे जगाते हुए कहा:

'उठो, भाई, और तुरंत इस जगह से चले जाओ: क्या तुम नहीं जानते कि इसी जगह पर कई लोगों को क्रूर मौत का सामना करना पड़ा है? इसलिए, जल्दी से उठो और अपने रास्ते पर चलो।'

मसीह के धर्मी शहीद थयिोडोर उठकर उससे कहने लगे:

'माँ, आप किस डर और आतंक की बात कर रही हैं?'

ईश्वर की दासी, यूसेबिया, ने उनसे उत्तर दिया:

– मेरे बच्चे, एक विशाल सर्प ने इस जगह पर डेरा डाल रखा है, और इसीलिए किसी को भी यहाँ नहीं आना चाहिए: हर दिन यह सर्प, अपनी बिल से निकलकर, किसी को न किसी को – चाहे वह आदमी हो या जानवर – ढूंढ लेता है और तुरंत उसे मारकर खा जाता है।

मसीह के पराक्रमी योद्धा, थयिोडोर, ने उत्तर दिया:

'पीछे हट जाओ और इस जगह से कुछ दूरी पर खड़े हो जाओ, और तुम मेरे मसीह की शक्ति को देखोगे।'

वह स्त्री, उस स्थान से हटकर, रोती और पुकारती हुई जमीन पर गिर पड़ी:

'हे ईसाइयों के ईश्वर, इस घड़ी उसकी सहायता करो!'

तब पवित्र शहीद थयिोडोर ने, क्रॉस का चिह्न बनाते हुए, अपनी छाती पर हाथ मारा और स्वर्ग की ओर देखकर इस प्रकार प्रार्थना करने लगा:

'हे प्रभु यीशु मसीह, जो पिता की सार से प्रकाशित हुए, जिन्होंने युद्धों में मेरी सहायता की और मुझे मेरे विरोधियों पर विजय प्रदान की – हे प्रभु मसीह परमेश्वर, आप अब भी वही हैं: अत; मुझे अपनी पवित्र ऊँचाइयों से शक्ति भेजें, ताकि मैं इस शत्रु – साँप – पर विजय प्राप्त कर सकूँ।'

तब, अपने घोड़े से मानो किसी मनुष्य से बात करते हुए, उसने कहा:

'हम जानते हैं कि ईश्वर की शक्ति और सामर्थ्य सभी चीजों में, मनुष्यों और जानवरों दोनों में मौजूद है; इसलिए, मसीह के द्वारा मेरी मदद करो, ताकि मैं शत्रु पर विजय प्राप्त कर सकूँ।'

घोड़े ने अपने स्वामी के शब्द सुनकर रुक गया, और साँप के प्रकट होने की प्रतीक्षा करने लगा। तब मसीह के शहीद ने, खाई के पास आकर, साँप को ज़ोर से पुकारा:

'मैं तुझसे हमारे प्रभु यीशु मसीह के नाम पर बोलता हूँ और आज्ञा देता हूँ, जो मानव जाति के लिए अपनी इच्छा से सूली पर चढ़ाए गए: अपनी बिल से निकल और मेरी ओर रेंगकर आ।'

साँप ने संत की आवाज़ सुनकर हिलना शुरू किया, और उसी क्षण उस स्थान पर धरती हिल उठी। संत थयिोडोर ने, क्रॉस का चिह्न बनाकर, अपने घोड़े पर सवार हो गए, जिसने जैसे ही साँप बाहर निकला, उसे फाड़ते और कुचलते हुए, अपने चारों खुरों के बल उस पर खड़ा हो गया।

तब मसीह के योद्धा थयिोडोर ने अपनी तलवार से साँप पर वार किया और उसे मारकर घोषणा की:

'मैं आपको धन्यवाद देता हूँ, हे प्रभु यीशु मसीह, कि आपने इस घड़ी मेरी प्रार्थना सुनी और मुझे साँप पर विजय प्रदान की!'

इसके बाद, वह सुरक्षित रूप से अपनी रेजिमेंट में लौट आया, और आनंदित होकर परमेश्वर की महिमा करने लगा। यूकैटा के नागरिकों और पड़ोसी निवासियों ने यह सुनकर उस खेत में जाकर, संत थयिोडोर द्वारा मारे गए साँप को देखकर चकित हो गए और चिल्ला उठे:

'थेओडोर का ईश्वर महान है!'

तब बहुत से लोग मसीह पर विश्वास करने लगे, विशेषकर सैनिक, और उन सभी ने बपतिस्मा लेकर, पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा की महिमा करते हुए, मसीह की एक भेड़शाला बन गए।

इसके बाद, सेंट थयिोडोर, हेराक्लिया में रहते हुए, सच्चे ईश्वर, मसीह का उपदेश देते थे, और कई विधर्मी मसीह के पास आ गए। हर दिन नागरिक बपतिस्मा के लिए इकट्ठा होते थे, और हेराक्लिया के लगभग सभी लोगों ने पहले ही पवित्र विश्वास को अपना लिया था।

यह सब सुनकर, दुष्ट राजा लकिनियिस बहुत परेशान हो गया और उसने नकिोमेडयिा से—जहाँ वह स्वयं उस समय ठहरा हुआ था—अधकिारयिों को अपने अंगरक्षकों के साथ हेराक्लयिा भेजा, ताकि वे थयिोडोर द स्ट्रैटलिट्स को पकड़कर सम्मानपूर्वक उसके सामने ले आएं।

जब वे हेराक्लयिा पहुँचे, तो संत थयिोडोर ने उनका सम्मानपूर्वक स्वागत कयिा: उन्होंने उनकी मेजबानी की और उनमें से प्रत्येक को एक उपहार दयिा, जैसा कि राजा के सेवकों के लिए उचति था। फरि उन्होंने संत से लसिनियिस के पास जाने का आग्रह करना शुरू कर दयिा:

उन्होंने कहा, 'जाओ, नकिोमेडयिा, उस राजा के पास जो तुमसे बहुत प्यार करता है; क्योंकि तुम्हारी वीरता, तुम्हारी सुंदरता और तुम्हारी बुद्धमित्ता के बारे में सुनकर, वह तुम्हें देखने के लिए बहुत उत्सुक है, और तुम्हारी वीरता को उपयुक्त सम्मान और उपहारों से सम्मानति करने का इरादा रखता है।'

संत थयिोडोर ने उनसे उत्तर दयिा:

'राजा की और आपकी इच्छा पूरी हो; बस आज आनंदति रहो और हर्ष मनाओ, और कल हम वह करेंगे जो करना आवश्यक है।'

तीन दनि बीत चुके थे, और फरि भी, दूतों द्वारा सेंट थयिोडोर से राजा के पास उनके साथ चलने की वनिती करने के बावजूद, वह अपने शहर में ही रहा। तब, राजा के कुछ दूतों को अपने पास रोककर, संत थयिोडोर ने बाकी लोगों को एक पत्र के साथ राजा के पास वापस भेज दयिा जसिमें उन्होंने समझाया कि वह ऐसे समय में अपना शहर नहीं छोड़ सकते जब लोगों के बीच इतना बड़ा उथल-पुथल था: क्योंकि उन्होंने लखिा, 'कई लोग, अपने पूर्वजों के देवताओं को त्यागकर, मसीह की पूजा करते हैं, और लगभग पूरा शहर, देवताओं से मुंह मोड़कर, मसीह की महमिा करता है, और इस बात का खतरा है कि हेराक्लयिा आपके राज्य से अलग हो जाएगा'; 'इसलिए,' उन्होंने आगे लखिा, 'हे राजा, कृपया स्वयं यहाँ आएं, और अपने साथ अधकि गौरवशाली देवताओं की मूर्तयिाँ लाएं – यह दो कारणों से करें:

1) वद्रिोही लोगों को शांत करने के लिए, और

2) प्राचीन धार्मकिता को बहाल करने के लिए; क्योंकि जब आप स्वयं, हमारे साथ, पूरे लोगों के सामने उनके लिए बलदिान करेंगे, तो लोग, हमें महान देवताओं की पूजा करते हुए देखकर, हमारे उदाहरण का पालन करेंगे और अपने पूर्वजों के धर्म में दृढ़ हो जाएंगे।"

संत थयिोडोर ने सम्राट लसिनियिस को यह पत्र लखिा, जसिमें उन्होंने उन्हें हेराक्लयिा आने का आग्रह कयिा: संत अपनी ही नगर में कष्ट सहना चाहते थे, ताकि वे मसीह के लिए बहाए गए अपने रक्त से उसे पवत्रि कर सकें, और अपने शहादत तथा वीरतापूर्ण कृत्यों के माध्यम से दूसरों को पवत्रि वश्विास में मजबूत कर सकें।

सम्राट लकिनियिस को स्ट्रैटलिट्स का यह पत्र मलिा और इसे पढ़कर वह अत्यंत प्रसन्न हुआ।

बलि्कुल भी देरी कएि बनिा, वह अपने साथ लगभग आठ हजार सैनकि और नकिोमेडयिा के सबसे प्रतष्ठिति नागरकिों को लेकर, अपने राजकुमारों और गणमान्य व्यक्तयिों के साथ हरेक्लयिा के लिए प्रसन्नचत्ति होकर रवाना हो गया; वह अपने साथ लोगों द्वारा सबसे अधकि पूजे जाने वाले देवताओं की मूर्तयिाँ भी ले गया—सोने और चांदी दोनों की।

उसी रात, जब संत थयिोडोर अपनी प्रथा के अनुसार प्रार्थना कर रहे थे, उन्हें एक दर्शन हुआ: उन्हें ऐसा प्रतीत हुआ कि वह एक ऐसे मंदरि में हैं जसिकी छत फट गई थी, और वहाँ से एक स्वर्गीय प्रकाश नकिल रहा था, जैसे कसिी महान प्रकाश-स्तंभ से, जो उनके सरि को प्रकाशति कर रहा था; और फरि एक आवाज़ सुनाई दी:

'हौसला रखो, थयिोडोर, मैं तुम्हारे साथ हूँ!'

इसके बाद, वह दर्शन समाप्त हो गया।

तब संत थयिोडोर को एहसास हुआ कि मसीह के लिए दुख सहने का समय आ गया है, और वह आनंदति हुआ, उसका आत्मा उत्साह से भर गया। यह सुनकर कि ज़ार शहर की ओर बढ़ रहा था, वह अपने प्रार्थना कक्ष में गया और आँसुओं के साथ प्रार्थना करने लगा, यह कहते हुए:

हे प्रभु, सर्वशक्तमिान परमेश्वर, जो अपनी दया में आशा रखने वालों को नहीं छोड़ते, बल्कि उनकी रक्षा करते हैं, मुझ पर भी दया करें, और अपनी मध्यस्थता से मुझे शत्रु की छल से बचाएँ—ताकि मैं अपने शत्रुओं के सामने न गरिूँ, और न ही मेरा शत्रु मुझ पर प्रसन्न हो; मेरे उद्धारकर्ता, मेरे सामने आने वाली परीक्षा के समय मेरी सहायता करें, जसिे मैं आपके पवत्रि नाम के लिए सहन करने की इतनी इच्छा रखता हूँ; मुझे बलवान और दृढ़ करें, और मुझे आपके लिए

साहसपूर्वक, यहाँ तक कि रक्तपात तक, खड़े रहने की शक्ति दें, और आपके प्रति अपने प्रेम के लिए अपनी आत्मा का बलिदान करने की शक्ति दें, जैसे आपने भी हमसे प्रेम करके हमारे लिए क्रूस पर अपनी आत्मा का बलिदान दिया।

आँसुओं के साथ इस प्रकार प्रार्थना करने के बाद, संत थियोडोर ने अपना चेहरा धोया। फिर, सफेद वस्त्र पहनकर, वह अपने घोड़े पर सवार हो गया—वही घोड़ा जिस पर उसने एक बार यूकैटा में साँप को मारा था—और अपनी सेना तथा नागरिकों के साथ राजा से मिलने के लिए निकल पड़ा; जैसा कि उचित था, उसने उसके सामने झुककर सम्मानपूर्वक अभिवादन किया और कहा:

'जय हो, हे परम दिव्य राजा, हे सर्वशक्तिमान निरंकुश शासक!'

राजा ने भी संत थियोडोर का बहुत आदरपूर्वक स्वागत किया; उन्होंने उन्हें चूमा और कहा:

'हे अति सुन्दर युवक, वीर योद्धा, गौरवशाली सेनापति, और सूर्य के समान तेजस्वी—हमारे पूर्वजों के कानूनों के परम बुद्धिमान रक्षक और राजमुकुट के योग्य! यह उचित है कि मेरे बाद तुम राजा बनो।'

इतनी सौहार्दपूर्ण और प्रसन्नतापूर्वक बातचीत करते हुए, वे ढोल-नगाड़ों और तुरहियों की धुन के साथ शहर में प्रवेश किए, और दोनों उस दिन आनंदपूर्वक विश्राम करने लेटे।

सुबह, जब शहर के केंद्र में चौक के एक ऊँचे मंच पर शाही सिंहासन तैयार किया गया था, तो राजा लिसिनियस अपने पूरे दल और थियोडोर स्ट्रैटेलेट्स के साथ पहुँचे; और सिंहासन पर अपनी जगह लेने के बाद, उन्होंने शहर, उसके नागरिकों और संत स्ट्रैटेलेट्स की प्रशंसा करते हुए कहना शुरू किया:

'वास्तव में, यह स्थान ईश्वर के सिंहासन कहलाने का योग्य है: इसे मानव जाति के लिए दूसरे स्वर्ग के रूप में सम्मानित किया जाना चाहिए; यह शहर महान है, और इसके निवासी बहुत हैं, और इसके अलावा वे सभी धर्मपरायण और अपने देवताओं के प्रति समर्पित हैं। सचमुच, किसी अन्य स्थान पर हमारे महान देवताओं का उतना सम्मान नहीं किया जाता जितना यहाँ किया जाता है; और महान देवताओं की पूजा के लिए इस से अधिक उपयुक्त और सटीक स्थान और कोई नहीं है; इसीलिए हेराक्लेस, हमारे देवताओं में से वह अद्भुत और सबसे पराक्रमी देवता, जो महान देवता डीउस और देवी अल्केमेन[1732] के पुत्र थे, को यह स्थान पसंद आया और उन्होंने अपने नाम पर इसका नाम हेराक्लिया रखा; और वास्तव में, थियोडोर, यह आपके राज्य के योग्य है: यह आपके लिए इस अद्भुत शहर पर अधिकार करने के लिए उपयुक्त है, और केवल आप ही ऐसे लोगों पर शासन करने के योग्य हैं। क्योंकि आप हमारे देवताओं का सम्मान करते हैं, और आपका सारा प्रेम उन्हीं के प्रति है; दिन-रात आप प्राचीन हेलेनिक देवताओं को प्रसन्न करने के अलावा किसी और बात की परवाह नहीं करते। इसलिए, अब उन पर अपना प्रेम दिखाओ और उनकी उपासना के साथ बलिदान अर्पित करो, ताकि सारा जनसमूह देवताओं के प्रति आपकी भक्ति देख सके और यह पहचान सके कि आप महान देवताओं के एक सच्चे मित्र और राजा को प्रिय हैं।

इस प्रकार लिसिनियस ने संत की चापलूसी और फुसलाने की कोशिश करते हुए कहा। संत थियोडोर ने राजा को निम्नलिखित उत्तर दिया:

'हे राजा, दीर्घायु प्राप्त करो। आपकी इच्छा पूरी हो; केवल आज मुझे उन महान हेलेनिक देवताओं की मूर्तियाँ दे दें जो आपने अपने साथ लाई हैं—सोने और चांदी की—ताकि आज रात और अगली रात मैं पहले अपने घर में बलिदानों, धूप और सुगंधित तेलों से उनका सम्मान करूँ; और फिर, यदि आप आज्ञा दें, तो मैं पूरे लोगों के सामने खुलेआम उनकी बलिदान चढ़ाऊँगा।"

यह सुनकर राजा अत्यंत प्रसन्न हुआ। उसने तुरंत स्वर्ण और चांदी की मूर्तियों को उसके पास लाने का आदेश दिया। संत थियोडोर उन्हें अपने साथ ले जाकर घर गए और वहाँ रात में उन्हें कुचलकर छोटे-छोटे टुकड़े कर दिए, जिन्हें उन्होंने गरीबों में बाँट दिया।

दो दिन बाद, राजा ने संत को बुलवाया और उन्हें अपना वादा पूरा करने तथा उसी दिन, सभी लोगों के सामने देवताओं को बलिदान चढ़ाने का आदेश दिया। यह सब करने का वादा करने के बाद, थियोडोर राजा के दरबार में जल्दी से पहुँचे, और

[1732] हेराक्लेस या हरक्यूलिस – प्राचीन यूनानी कविदंतियों का एक नायक, जो मानव शारीरिक शक्ति का प्रतीक था और बाद में प्राचीन यूनानियों द्वारा अपने पसंदीदा देवताओं में से एक के रूप में पूजित किया गया। प्राचीन यूनानियों द्वारा ज्यूस की पूजा देवताओं और मनुष्यों के पिता, स्वर्ग और पृथ्वी के शासक के रूप में की जाती थी, जो पृथ्वी पर गरज और बिजली भेजता था। ग्रीक मिथकों के अनुसार, अल्केनी एक नश्वर महिला थी, जिसने ज्यूस के साथ संभोग करके हरक्यूलिस को गर्भ में धारण किया और जन्म दिया।

राजा उनके साथ शहर के केंद्र में स्थित चौक तक घोड़े पर सवार होकर गए; वहाँ, अपने सिंहासन पर बैठकर, उन्होंने सेंट थियोडोर से कहा:

'हे अति बुद्धिमान थियोडोर, उत्कृष्ट सेनापति, जो हमसे पहले आए राजाओं द्वारा सम्मानित हैं! बलिदान और उत्सव का दिन अब आ गया है। अतः लोगों के सामने देवताओं को बलिदान अर्पित करें, ताकि सभी निवासी उनकी प्रति आपकी श्रद्धा देख सकें और, इसके माध्यम से, वे अपनी स्वयं की भेंटों में और भी अधिक परिश्रमी और उत्साही हो जाएँ।'

जब राजा बोल ही रहे थे, वहाँ खड़े एक शताध्यक्ष, मैक्सेंटियस नामक, ने उनसे कहा:

'हे राजा, मैं महान देवताओं की शपथ खाकर कहता हूँ कि इस अधर्मी थियोडोरस द्वारा तुम्हें धोखा दिया जा रहा है। क्योंकि कल मैंने देवी आर्टेमिस का सुनहरा सिर[1733] एक भिखारी के हाथों में देखा था, जो खुशी से चल रहा था। मैंने उससे पूछा, "यह तुम्हें कहाँ मिला?" और उसने मुझे बताया कि थियोडोरस स्ट्रैटेलेट्स ने उसे यह दिया था।'

यह सुनकर राजा लिसिनियस काँप उठा और, हक्का-बक्का होकर, लंबे समय तक चुप रहा।

तब संत थियोडोर ने उससे कहा:

'मेरे लिए मसीह की शक्ति का यही मतलब है: हे राजा, जो कुछ भी शतमुख मॅक्सेंटियस ने आपसे कहा, वह सब सच है, और मैंने आपकी मूर्तियों को तोड़कर सही किया। क्योंकि अगर वे खुद टूटते समय अपनी मदद नहीं कर सके, तो वे आपकी कोई मदद कैसे कर सकते हैं?'

संत थियोडोर का उत्तर सुनकर, लिसिनियस कुछ समय के लिए मूक बना रहा, मानो वह एक गूंगा व्यक्ति हो जिसने अपना होश खो दिया हो। गहरे दुःख में बैठा, अपने सिर को अपने दाहिने हाथ पर टिकाए, शोक मनाते और विलाप करते हुए, उसने अंततः कहा:

हाय मेरी दुर्दशा! हाय मेरी दुर्दशा! मैं कितना अपमानित हुआ हूँ! और अब मैं क्या कहूँ, क्या करूँ—मुझे कुछ नहीं सूझता। राजाओं में सबसे शक्तिशाली होकर और योद्धाओं का इतना बड़ा दल इकट्ठा करके, मैं इस नीच मनुष्य के पास आया, और अब मेरे सभी दुश्मन मेरा मज़ाक उड़ा रहे हैं, खासकर इसलिए क्योंकि इस शापित मनुष्य ने मेरे विजयी देवताओं को चूर-चूर कर दिया है और उन्हें गरीबों को दे दिया है।

फिर, संत की ओर मुड़कर, उन्होंने कहा:

'थियोडोर, क्या इसी तरह तुम उन देवताओं का बदला चुकाते हो जिन्होंने तुम्हें वरदान दिए हैं? क्या मैं ऐसी महान सम्मानों की वर्षा करते समय ऐसी ही उम्मीद कर रहा था? और क्या इसी लिए मैं निकोमेडिया छोड़कर अब तुम्हारे पास आया हूँ? हे दुष्ट और भ्रष्ट व्यक्ति! सचमुच, तुम छल के पुत्र और दुष्टता के आगार हो, जिन्होंने चापलूसी से मुझे यहाँ मूर्ख बनाकर लाया है। लेकिन मैं अपने महान देवताओं की शक्ति की कसम खाता हूँ कि मैं इसे बर्दाश्त नहीं करूँगा, और तुम्हारी चालाकी का अंत तुम्हारे लिए अच्छा नहीं होगा।

संत ने लिसिनियस को उत्तर दिया:

'मूर्ख राजा, तुम इतने क्रोधित क्यों हो? स्वयं देखो और अपने देवताओं की शक्ति को समझो। यदि वे वास्तव में देवता होते, तो वे स्वयं की मदद क्यों नहीं करते? जब मैं उन्हें टुकड़े-टुकड़े कर रहा था तो वे मुझ पर क्यों नहीं गुस्सा हुए, और उन्होंने मुझे जलाने के लिए स्वर्ग से आग क्यों नहीं भेजी? लेकिन वे आत्मा रहित और शक्तिहीन चीजें हैं, जिन्हें एक आदमी का हाथ सोने और चांदी की तरह ही आसानी से काट सकता है। हे राजा, आप क्रोधित और आक्रोशित हैं, लेकिन मुझे आपका यह पागलपन हास्यास्पद लगता है। तुम क्रोधित और उग्र हो, परन्तु मैं साहस करता हूँ और तुम्हारे क्रोध की परवाह नहीं करता। तुम शोक करते हो, परन्तु मैं तुम्हारे देवताओं के विनाश पर आनन्दित हूँ। तुम प्रभु का विरोध करते हो, परन्तु मैं उनका धन्यवाद करता हूँ। तुम सच्चे परमेश्वर का अपमान करते हो, परन्तु मैं गीतों में उनकी स्तुति करता हूँ। आप मृत देवताओं की पूजा करते हैं, जबकि मैं जीवित ईश्वर की पूजा करता हूँ। आप घृणित सेरापिस[1734] की सेवा करते हैं, जबकि मैं अपने सबसे पवित्र और सम्माननीय प्रभु मसीह की सेवा करता हूँ, जो सबसे पवित्र सेराफिम पर विराजमान हैं। आप घृणित अपोलो[1735] का सम्मान करते हैं, जबकि मैं उस ईश्वर का सम्मान करता हूँ जो हमेशा जीवित

[1733] आर्टेमिस, या डायना, प्राचीन यूनानियों की मान्यताओं के अनुसार, चंद्रमा और शिकार की देवी थीं।

[1734] सेरापिस मृतकों की आत्माओं के मिस्र के देवता थे, जिन्हें बीमारी और मृत्यु से उद्धारकर्ता के रूप में पुकारा जाता था। बाद में, उनकी पूजा ग्रीस और रोम में फैल गई, जहाँ यह बहुत व्यापक हो गई।

[1735] अपोलो – सूर्य और बौद्धिक प्रबोधन के ग्रीक-रोमन देवता।

रहता है। तुम 'थ्रेसियन कोयला'[1736] हो, जबकि मैं रोम का राजकुमार हूँ; तुम लसिनियिस, 'फूंकने वाले', जबकि मैं थियोडोर, 'ईश्वर का उपहार'[1737] हूँ। अत; हे राजा, क्रोधित न हो और न ही भड़क; ऐसा करके, तुम केवल अपनी आंतरिक पीड़ा को प्रकट कर रहे हो और एक गधे या किसी खच्चर के समान हो जाओगे।

तब राजा लसिनियिस और भी अधिक क्रोधित हो गया और उसने संत को नग्न अवस्था में क्रूस के आकार में फैलाकर कच्चे बैल की नसों से कठोरता से कोड़े मारने का आदेश दिया।

और सैनिकों ने पवित्र शहीद को बेरहमी से पीटा, वे बारी-बारी से मारते थे, ताकि कभी तीन, तो कभी चार सैनिक उस पर वार करते थे; और इस दौरान, संत थियोडोर की पीठ पर छह सौ और पेट पर पाँच सौ प्रहार हुए।

हालाँकि राजा लसिनियिस ने उनका मज़ाक उड़ाते हुए कहा:

'थेओडोर, थोड़ा और धैर्य रखो, जब तक कि तुम्हारा ईश्वर मसीह तुम्हारे पास न आए, जो तुम्हें तुम्हारे यातना देने वाले के हाथों से छुड़ाएगा।'

संत ने उत्तर दिया:

'मेरे साथ जो चाहो करो, और कोई कमी मत छोड़ना: क्योंकि न तो दुख, न संकट, न घाव, न तलवार, और न ही कोई अन्य यातना मुझे मसीह के प्रेम से अलग कर सकती है।'

तब राजा, और भी अधिक क्रोध से जलता हुआ, बोला:

'क्या तुम अब भी मसीह की गवाही देते हो?'

और उसने आदेश दिया कि पवित्र शहीद को फिर से टिन की छड़ों से पीठ पर निर्दयता से पीटा जाए, और फिर उसके शरीर को लोहे के पंजे से खुरोचा जाए और जलती हुई मोमबत्तियों से जलाया जाए, जबकि उसके घावों पर मिट्टी के बर्तनों के तेज टुकड़ों से रगड़ा जाए।

संत ने धैर्यपूर्वक यह सब सहते हुए, केवल इतना ही कहा: 'महिमा तेरी हो, हे मेरे ईश्वर!' इन सभी यातनाओं के बाद, राजा ने आदेश दिया कि संत थियोडोर को कैद किया जाए, उसके पैरों में बेड़ियाँ डाल दी जाएँ, और उसे पाँच दिनों तक भोजन से वंचित रखा जाए। जब पाँच दिन बीत गए, तो उसने एक सूली तैयार करने का आदेश दिया और संत को उस पर सूली पर चढ़ा दिया गया।

और इस प्रकार, जैसे हमारे प्रभु मसीह को एक बार पिलातुस द्वारा सूली पर चढ़ाया गया था, वैसे ही अब संत थियोडोर को लिकिनियिस द्वारा सूली पर चढ़ाया गया, उनके हाथों और पैरों को क्रूस पर कीलों से ठोंका गया।

लेकिन क्रूर यातना देने वालों ने संत के कष्ट और पीड़ा को और भी बढ़ाने की कोशिश की। उन्होंने उसके शरीर में एक लंबा, तेज कील ठोक दिया और रेजर से उसके शरीर को काटा; जबकि जिवान और लड़के अपनी धनुष तानकर उसके चेहरे पर तीर चला रहे थे, जिससे उसके आँखों की पुतलियाँ तीरों से भेदी गईं।

'मैं,' उनके कष्टों के वृत्तांतकार, नोटरी[1738] -Uar, 'इन सभी भयानक यातनाओं को देखकर और मानो उनके अंतर्मन के कराहने की आवाज़ सुनकर, उस किताब को फेंक दिया जिसमें मैं यह सब दर्ज कर रहा था, और, रोते हुए उनके पैरों पर गिर पड़ा, और कहा:

'मुझे आशीर्वाद दीजिए, मेरे स्वामी, मुझे आशीर्वाद दीजिए! अपने अंतिम शब्द मुझसे कहिए, आपके सेवक से!'

और मेरे स्वामी, मसीह के योद्धा थियोडोर ने मुझसे शांत स्वर में कहा:

'उर, अपने कर्तव्य को न त्यागो, और मेरी पीड़ाओं की गवाही देना बंद न करो; उनका वर्णन करो, मेरे प्रस्थान का भी वर्णन करो, और उस दिन को चिन्हित करो।'

तब, प्रभु को पुकारते हुए, संत ने कहा:

'प्रभु, आपने मुझसे पहले कहा था: "मैं तेरे संग हूँ।" तो फिर आपने मुझे अब क्यों त्याग दिया है? देखिए, प्रभु, कैसे जंगली जानवरों ने मुझे आपके लिए चीर-फाड़ डाला है: मेरी आँखों के पुतले छेद दिए गए हैं, मेरा शरीर घावों से चूर-चूर हो गया है, मेरा चेहरा चीर दिया गया है, मेरे दाँत कुचल दिए गए हैं; केवल मेरी नंगी हड्डियाँ ही सूली पर लटक रही हैं; हे प्रभु,

---

[1736] उपनाम 'लिकिनियिस' थ्रेस में उनकी विनम्र उत्पत्ति का संकेत देता है।

[1737] लसिनियिस, लैटिन से अनुवादित, का अर्थ है 'फूंकने वाला'; थियोडोरस, ग्रीक से, का अर्थ है 'ईश्वर का उपहार'।

[1738] नोटरी – एक लिपिक। प्रारंभिक ईसाई युग में, यह शब्द साम्राज्यिक सचिवों के लिए आम तौर पर इस्तेमाल किया जाता था जो दस्तावेजों को प्रामाणिकता प्रदान करते थे।

मुझे याद रखना, जब मैं आपके लिए सूली का दुख सह रहा हूँ: आपके लिए ही मैंने लोहे, आग और कीलों को सहा है; अब मेरी आत्मा को स्वीकार करो, क्योंकि मैं इस जीवन से पहले ही विदा हो रहा हूँ।

वास्तव में, थियोडोर का पूरा शरीर टुकड़ों में फाड़ दिया गया था।

लिसिनियस ने यह सोचकर कि शहीद मर गया है, उसे क्रूस पर लटका छोड़ दिया। लेकिन देखो, रात की पहली पहर में, प्रभु का स्वर्गदूत पवित्र शहीद को क्रूस से उतार लाया और उसे उसके पूर्व स्वास्थ्य और कल्याण की अवस्था में वापस कर दिया; उसे अभिवादन करते हुए, स्वर्गदूत ने उससे कहा:

'प्रसन्न हो और हमारे प्रभु यीशु मसीह की कृपा से बलवान हो जा; देख, प्रभु तेरे संग है; तूने क्यों कहा कि उसने तुझे त्याग दिया? इसलिये, अपने पराक्रम को अंत तक पूरा कर, और तू प्रभु के पास आकर अपने लिए तैयार की गई अमरता का मुकुट ग्रहण करेगा।'

पवित्र शहीद से यह कहने के बाद, स्वर्गदूत अदृश्य हो गया। इसके बाद, पवित्र शहीद थियोडोर ने ईश्वर का धन्यवाद करते हुए इस प्रकार गाना शुरू किया: *'मैं तेरी महिमा करूँगा, हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे राजा, और तेरे नाम का धन्यवाद युगानुयुग करता रहूँगा'* (भजन संहिता 144:1)।

लेकिन दुष्ट लिकिनियस ने, भोर से पहले ही, अपने दो शताधिकरणों, एंटिओकस और पैट्रिसियस को यह आज्ञा देते हुए भेजा:

'जाओ और मुझे यातनाओं में मरे हुए थियोडोर का शरीर ला दो: मैं उसे एक टिन के डिब्बे में रखकर समुद्र की गहराइयों में फेंक दूँगा, कहीं वे पागल ईसाई उसे किसी तरह न ले लें।'

जब वे रवाना हुए और उस स्थान के पास पहुँचे जहाँ थियोडोर को सूली पर चढ़ाया गया था, तो उन्होंने सूली तो देखी, लेकिन जिस शहीद को उस पर चढ़ाया गया था, वह वहाँ नहीं था। और एंटिओकस ने पैट्रिसियस से कहा:

'गलीलवासी सत्य बोलते हैं[1739] , कि उनका मसीह मरे हुओं में से जी उठा है। मुझे लगता है कि उसने अपने सेवक थियोडोर को भी मरे हुओं में से जिला दिया है।'

उसी क्षण, पॅट्रिसियस, क्रूस के पास पहुँचकर, संत थियोडोर को जमीन पर बैठे और प्रभु की स्तुति करते हुए देखा। तब पॅट्रिसियस ने जोर से पुकारा:

'ईसाइयों का परमेश्वर महान है, और उसके सिवा कोई और देवता नहीं है!'

इसके बाद, दोनों शतदलपति संत के पास आए और कहा:

'हे मसीह के शहीद, हम आपसे विनती करते हैं, हमें स्वीकार कर लें, क्योंकि इस घड़ी से हम भी मसीही हैं।'

और उसी दिन दोनों शताधिपतियों ने सत्तर सैनिकों के साथ मिलकर मसीह में विश्वास कर लिया।

जब लिसिनियस को इस बात की खबर मिली, तो उसने अपने राज्यपाल, सिक्सटस को, तीन सौ सैनिकों के साथ भेजा, ताकि वे उन सभी को मार डालें जो मसीह में विश्वास करने आए थे।

जब ये सैनिक पहुँचे और उन्होंने वे चमत्कार देखे जो संत थियोडोर मसीह की शक्ति से कर रहे थे, तो वे तुरंत हमारे प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास करने लगे। और लोगों की एक अनगिनत भीड़ उस स्थान पर इकट्ठी हो गई, और सभी चिल्ला उठे:

'केवल एक ही ईश्वर है, ईसाइयों का ईश्वर, और उसके सिवाय कोई दूसरा ईश्वर नहीं!'

और फिर:

'यह यातना देने वाला लिसिनियस कौन है? आओ इसे पत्थर मारें! हमारे लिए एक ही ईश्वर और राजा है - मसीह, जिसका थियोडोर ने प्रचार किया!'

और लोगों में हंगामा और दंगा छिड़ गया, और खून-खराबा भी शुरू हो गया।

एक सैनिक, जिसका नाम लियांडर था, अपनी खींची हुई तलवार लेकर घटनास्थल पर दौड़ा और थियोडोर पर वार करने के इरादे से उस पर झपट पड़ा। लेकिन शाही राज्यपाल, सिक्सटस ने उसे रोक लिया, उसके हाथों से तलवार छीन ली और उसे काट गिराया। एक अन्य योद्धा, जिसका नाम मिरिपॉस था, जो उग्रियिनों का मूल निवासी था[1740] , राजा के राज्यपाल सिक्सटस पर झपट पड़ा और उसे मार डाला।

[1739] यह वह तिरिस्कारपूर्ण शब्द था जिसका उपयोग मूर्तिपूजकों द्वारा ईसाइयों के लिए किया जाता था, क्योंकि वे मानते थे कि मसीह गलील से आए थे, एक ऐसा क्षेत्र जिसकी यहूदियों के बीच भी बदनाम थी।

[1740] 'उग्रियिन' शब्द उस स्लाव जाति को संदर्भित करता है जो उग्रियिन या चेर्वोन्नाया रूस (अब पश्चिमी यूक्रेन) की भूमि से उत्पन्न हुई थी।

लोकप्रयि वदि्रोह को दबाने की इच्छा से, संत थयिोडोर ने पुकारा:

'रुक जाओ, मेरे प्रयि! मेरे प्रभु यीशु मसीह ने, जब वे क्रूस पर लटके हुए थे, स्वर्गदूतों को रोका, ताकि वे मानव जाति से प्रतशिोध न लें।'

जब शहीद थयिोडोर ने लोगों से इस प्रकार वनिती और उपदेश कयिा, तो कोलाहल और सार्वजनकि हलचल शांत हो गई।

उसी क्षण, पवत्रि शहीद पूरे भीड़ और सैनकिों के साथ गुज़र रहे थे; जबकि अपनी कोठरयिों में बैठे कैदी संत को ज़ोर से पुकार रहे थे:

'हे सर्वोच्च ईश्वर के सेवक, हम पर दया करो!'

अपने शब्दों से, संत ने उन्हें उनके बंधनों से मुक्त कर दयिा, जेल के दरवाजे खोल दिए और उनसे कहा:

'शांति से जाओ, भाइयों, और मुझे याद रखना।'

और सारा शहर इकट्ठा हो गया, और सभी ने मूर्ति पूजा का त्याग कर दयिा और मसीह - एकमात्र परमेश्वर की महमिा की।

उस समय, बीमार चंगे हो गए, और लोगों से दुष्टात्माएँ नकिल गईं। जसि भी संत ने अपने हाथ से छुआ, या जन्हिोंने केवल उनके वस्त्र को भी छुआ, वे तुरंत चंगे हो गए।

तब लसिनियिस के एक दरबारी ने, जो हो रहा था उसे देखकर, उसके पास जाकर कहा:

'पूरा शहर, देवताओं को त्यागकर, थयिोडोर की शकि्षाओं और जादू के माध्यम से मसीह में वशि्वास करने लगा है।'

राजा, क्रोध से भरकर, तुरंत संत थयिोडोर का सरि कलम करने के लिए एक सैनकि भेजा। लेकनि जब लोगों ने इस सैनकि को देखा, तो उन्होंने फरि से शोर मचाया और वदि्रोह कर दयिा: लसिनियिस के खलिाफ उठ खड़े होकर, उन्होंने उसके सेवक को मारने की कोशशि की। तब संत ने लोगों से इस इरादे को छोड़ देने के लिए समझाना शुरू कयिा। उन्होंने कहा:

'हे भाइयो और पतिृवर! लसिनियिस के वरिुद्ध वदि्रोह न भड़काओ: क्योंकि वह अपने पति, शैतान, का सेवक है, जबकि अब मेरा कर्तव्य है कि मैं अपने प्रभु यीशु मसीह के पास जाऊँ।'

यह कहने के बाद, उन्होंने ईश्वर से प्रार्थना करना शुरू कर दयिा और, एक काफी लंबी प्रार्थना के बाद, लोगों को आशीर्वाद दयिा।

तब, क्रॉस का चहि्न बनाकर, उन्होंने अपने सेवक उआर से कहा:

'मेरे पुत्र, उआर, यह सुनश्चिति कर कि मेरे मरने के दनि को दर्ज कयिा जाए, और मेरे शरीर को यूकैटाई में, मेरे माता-पति की संपत्ति पर दफना देना; और जब तू भी मृत्यु के समीप आए, तो अपनी अंतमि इच्छा यही बनाना कि मुझे दफनाने के समय मेरे बाईं ओर दफनाया जाए।'

तब मसीह के शहीद ने एक बार फरि प्रार्थना की और अंत में 'आमीन' शब्द उच्चारति करते हुए, अपना सम्मानति और पवत्रि सरि तलवार के नीचे झुका दयिा और उसका सरि कलम कर दयिा गया।

यह घटना 8 फरवरी, शनविार को, दनि के तीसरे पहर में घटी[1741] ।

उनके सरि कलम कए जाने के बाद, सभी लोगों ने शहीद को बहुत सम्मान दयिा: मोमबत्तयिाँ और धूपदान लेकर, ईसाइयों ने उनके शरीर को एक वशिेष स्थान पर रखा, और फरि, 8 जून को, इसे बड़ी धूमधाम से यूकैटा ले जाया गया, जहाँ मसीह परमेश्वर की महमिा के लिए अनगनित चमत्कार हुए, – उसी को, पति और पवत्रि आत्मा के साथ, युगानुयुग सम्मान और आराधना हो। आमीन।

[1741] संत थयिोडोर का 319 ईस्वी में तलवार से सरि कलम कर दयिा गया था।

ट्रोपारयिन, स्वर 4:

हे शहीद, आपने सच्ची वीरता के साथ स्वर्गीय राजा थियोडोर के एक अति उत्तम सेनापति के रूप में कार्य किया: क्योंकि आपने बुद्धिमानी से स्वयं को विश्वास के हथियारों से लैस किया, और आपने राक्षसों के दलों को पराजित किया, और आपने स्वयं को एक विजयी पीड़ित साबित किया। इसलिए, हम विश्वास में सदैव आपको धन्य कहते हैं।

कॉन्टाकियन, स्वर 2:

हे महान शहीद थियोडोर, अपनी आत्मा के साहस से विश्वास के वस्त्र धारण कर, और परमेश्वर के वचन को हाथ में भाला बनाकर, आपने शत्रु को पराजित किया; उनके साथ, हम सभी के लिए मसीह हमारे परमेश्वर से अनवरत प्रार्थना करें।

सर्प-वश में करने वाले पवित्र भविष्यवक्ता जकरियाह की स्मृति।

8 फरवरी को स्मरणोत्सव

बाबेल में बंदी बनाए गए यहूदियों के लिए यह समाचार कितना आनंददायक था: फारस के राजा साइरस का उनका रिहाई का आदेश[1742] ; और उनमें से जो एक विदेशी भूमि में कैद में पीड़ित थे, *'अंधकार और मृत्यु की छाया में, दुख से बँधे'* (भजन संहिता 106:10), वे अपने पूर्वजों की भूमि की ओर शीघ्रता से बढ़े। वे अपने साथ यरूशलेम के विनाश के समय नबूकदनेसर द्वारा जब्त किए गए पवित्र पात्र भी ले आए (1 एस्द्रास 1:7–8), और ये बसावट करने वाले, जिनका नेतृत्व दाऊद के राजघराने के वंशज राजकुमार जरूब्बाबेल कर रहे थे (1 एस्द्रास 1:8, 2:2; 1 इतिवृत्त 3:19, 9–17), वे अपने स्वदेश लौट आए। अपनी वापसी के सातवें महीने में, उन्होंने मलबे के ढेर से वेदी का पुनर्निर्माण किया (1 एस्द्रास 3:1–6), और फिर नष्ट किए गए मंदिर को बहाल करने का काम शुरू किया। दूसरे वर्ष के दूसरे महीने में, दाऊद के नियमों के अनुसार नए मंदिर की नींव रखी गई, *'और सभी लोग ऊँचे स्वर में चिल्लाए, और प्रभु की स्तुति करने लगे क्योंकि यहोवा के भवन की नींव रखी गई थी'* (1 एस्द्रास 3:11); फिर भी, पहले के मंदिर को देखने वाले कई बुजुर्ग अपने आँसू नहीं रोक सके, यह जानते हुए कि लौटने वालों की गरीबी को देखते हुए, दूसरा मंदिर कभी भी उतना भव्य नहीं हो सकता था; वे ज़ोर से रोए, अपनी सिसकियों को आनंद के उद्घोषों के साथ मिलाते हुए (1 एस्द्रास 3:12-13)। लेकिन शुरुआत में दान के उदार प्रवाह के बावजूद, मंदिर का वास्तविक निर्माण अत्यंत धीमी गति से आगे बढ़ा। देश में उथल-पुथल मची थी; डाकू हर जगह घूमते थे, और अनाज की उचित बुवाई और कटाई करना असंभव था; फारसी अधिकारियों के अधीन शासन का भारी बोझ (नेहेम्याह 9:36–37), बार-बार पड़ने वाली सूखा और अकाल (हग्गै 1:6, 10–11) ने लोगों को थका दिया था। इसके अलावा सामरी लोगों की शत्रुता[1743] भी थी। गरिज़िम पर्वत पर अपना पूजा स्थल होने और फिलिस्तीन को पहले से ही अपना क्षेत्र मानने के कारण, वे यहूदियों के प्रति अत्यधिक शत्रुतापूर्ण थे, विशेषकर तब जब यहूदियों ने मंदिर के निर्माण में भाग लेने के उनके प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया था; फारसी सरकार को लक्षित विभिन्न बदनामियों के माध्यम से, सामरी लगभग पंद्रह वर्षों तक इस कार्य को ठप कराने में सफल रहे[1744] ।

इन बाधाओं ने यहूदियों के राष्ट्रीय तीर्थस्थल के पुनर्स्थापन के प्रति उनके धार्मिक उत्साह को कमजोर कर दिया; चुने हुए लोगों के धार्मिक उत्साह को पुनर्जीवित करने के लिए विशेष रूप से मजबूत आत्मा वाले पुरुषों की

[1742] उन्होंने 559 से 530 ईसा पूर्व तक शासन किया। यहूदियों के प्रति कुसरू की दया इस तथ्य से स्पष्ट होती है कि नबी दानियेल ने उन्हें यशायाह की भविष्यवाणी (यशा. 44:28, 45:1) दिखाई, जिसमें कुसरू के माध्यम से यहूदियों की बंधन से मुक्ति की भविष्यवाणी एक सौ पचास साल से भी अधिक पहले की गई थी।

[1743] समारियाई एक मिश्रित लोग थे, जो अस्सिरियों द्वारा इस्राएल के दस-कबीला राज्य के विनाश के बाद उसके क्षेत्र पर बसने वाले बसने वालों के, और बंधुत्व में लिए गए इस्राएली लोगों के अवशेषों के मिलन से बने थे। एक विदेशी भूमि में, बस्तियों के लोगों ने अपने पूर्व देवताओं की पूजा जारी रखी, लेकिन जब प्रभु ने इस कारण उनके ऊपर शेरों के झुंड भेजे, तो सामरी, इस विपत्ति को टालने के लिए, ने अपने बीच सच्चे परमेश्वर की उपासना स्थापित की, जबकि साथ ही मूर्तिपूजा को नहीं छोड़ा (2 राजा 17:27-34)

[1744] (1 एस्द्रास 4:1–3) यहूदियों ने समरीयों को विधर्मी घोषित कर अस्वीकार कर दिया।

आवश्यकता थी; और प्रभु ने अपने भविष्यवक्ताओं हग्गै और जकर्याह के रूप में ऐसे पुरुषों को उत्पन्न किया, जिनके बारे में हम अब बात करने वाले हैं।

पवित्र नबी ज़कार्याह[1745] , जो दूरदर्शी थे[1746] , लेवी के वंश से थे; वे बराकियाह के पुत्र और अद्दा या इद्दो के पोते थे[1747] ; बाद वाले ज़रुबबेल के साथ बेबीलोन की बंधुआई से लौटे थे और नेहेमायाह की पुस्तक में एक पुरोहित परिवार के प्रमुख के रूप में उनका उल्लेख है[1748] . शास्त्र ने भविष्यवक्ता जकरियाह के जीवन के बारे में विस्तृत या निश्चित जानकारी संरक्षित नहीं की है; यह केवल समय-समय पर परमेश्वर के भविष्यवक्ता के जीवन के बारे में यह या वह खंडित जानकारी देने के लिए पर्दा उठाता है। इस प्रकार, यह भविष्यवक्ता ज़करियाह के जन्म के समय और स्थान के बारे में मौन है, और उनके जीवन का वृत्तांत तब से शुरू करता है जब उन्होंने अपनी भविष्यवाणी की सेवकाई शुरू की थी। उन्हें ईश्वर ने अभी एक जवान ही थे, तब उनकी भविष्यवाणी की सेवा के लिए बुलाया था (ज़ेख. 2:4), हस्तस्पास के पुत्र दारा के राज्य के दूसरे वर्ष के दूसरे महीने में (ज़ेख. 1:1) – भविष्यवक्ता हग्गै (हग्ग. 1:1) के बुलाए जाने के ठीक दो महीने बाद। अपनी संयुक्त भविष्यसूचक सेवकाई के माध्यम से, पवित्र पुरुष हग्गै और ज़ेकार्याह यहूदियों को अपनी ज़रूरतों को अलग रखकर उत्साह के साथ मंदिर का पुनर्निर्माण शुरू करने के लिए मनाने में सफल रहे। एज्रा गवाही देते हैं कि, *'नबी हग्गै और अद्दा के पुत्र नबी जकर्याह ने यहूदा और यरूशलेम में रहने वाले यहूदियों से बात की, और इस्राएल के परमेश्वर के नाम पर भविष्यवाणी के संदेश दिए।' तब शालतिएल का पुत्र जरुब्बाबेल और योसादाक का पुत्र येशू उठे और यरूशलेम में परमेश्वर का भवन बनाना आरंभ किया, और उनके साथ परमेश्वर के भविष्यद्वक्ता भी थे, जो उन्हें प्रोत्साहित करते थे'* (1 एज्रा 5:1–2)। *'और यहूदी बुज़ुर्गों ने भविष्यवक्ता हग्गै और अद्दा के पुत्र ज़करिया की भविष्यवाणी के अनुसार निर्माण किया और उसमें सफलता प्राप्त की' (1 एस्द्रास 6:14) ।*

यशायाह भविष्यवक्ता की सेवा शायद मंदिर के बन जाने के बाद भी जारी रही; अपने बाद के प्रवचनों में, जो अध्याय 9 से अंत तक उनकी पुस्तक की सामग्री बनाते हैं, अब मंदिर के निर्माण को बिना देरी के पूरा करने के लिए कोई आग्रह नहीं है, और यह माना जा सकता है कि जब ये प्रवचन दिए गए थे, तब मंदिर पहले से ही पूरा हो चुका था[1749] . परंपरा के अनुसार, पवित्र भविष्यवक्ता ज़करिया एक वृद्ध आयु तक जीवित रहे और उन्हें यरूशलेम के पास, भविष्यवक्ता हग्गै के बगल में दफनाया गया था।

नबी ज़करियाह ने एक अनमोल विरासत छोड़ी - एक पुस्तक जिसमें उनके भविष्यसूचक दर्शन और भाषण शामिल हैं। ज़करियाह की पुस्तक की सामग्री की एक विशिष्ट विशेषता मसीही भविष्यवाणियों की प्रचुरता है: किसी अन्य नबी में हमें हमारे उद्धारकर्ता के जीवन के अंतिम दिनों के बारे में ज़करियाह नबी जितनी विस्तृत जानकारी नहीं मिलती है। ज़ेकार्याह की पुस्तक को उसकी सामग्री के अनुसार दो भागों में विभाजित किया जा सकता है: पहले भाग (ज़ेकार्याह 1:1-21 से 6:1-15 तक) में दर्शन हैं, और दूसरे भाग (ज़ेकार्याह 7:1-14 से अंत तक) में उपदेश हैं। कुल मिलाकर आठ दर्शन हैं; उनमें से अधिकांश की व्याख्या प्रभु के स्वर्गदूत द्वारा नबी को की गई है; उनका उद्देश्य यहूदी लोगों को ईश्वर की सुरक्षा का आश्वासन देना है। *पहली* दृष्टि में, जिसमें घोड़सवार पूरी पृथ्वी पर घूमते हैं और उसे शांति में पाते हैं, परमेश्वर प्रकट करते हैं कि समृद्ध राष्ट्र—यहूदियों के उत्पीड़क—उनके क्रोध से नष्ट कर दिए जाएँगे , जबकि यरूशलेम को बहाल किया जाएगा और यहूदा के नगरों को महिमामय बनाया जाएगा (ज़ेख. 1:7–17)। गैर-यहूदियों की नियति चार लोहारों के *दूसरे* दर्शन में समझाई गई है, जो सींग काटने आते हैं—यह उन राष्ट्रों का प्रतीक है जिन्होंने यहूदियों को बिखेर दिया और यरूशलेम को नष्ट कर दिया (ज़ेख. 1:18–21)। यहूदियों के उत्पीड़क, जिन्होंने नगर और मंदिर के पुनर्निर्माण में बाधा डाली थी, के कुचल दिए जाने के बाद, यरूशलेम में फिर से लोग बसेंगे; यह प्रभु के स्वर्गदूत के *तीसरे*

[1745] हिब्रू से: 'प्रभु का स्मरण'।

[1746] यह नाम कुछ चर्च फादर्स द्वारा भविष्यवक्ता ज़करियाह को एक ऐसे प्रकाशन के आधार पर दिया गया है जो उन्हें मिला था, जिसमें उन्होंने हवा में उड़ता हुआ एक लपेटा देखा था, जो शायद दरांती की तरह वक्राकार था (ज़ेख. 5:1-2)।

[1747] ज़ेका. 1:1। पवित्र धर्मग्रंथों की पुस्तकों में, भविष्यवक्ता ज़ेकार्याह को अद्दा का पुत्र कहा गया है; इसका स्पष्टीकरण या तो वंशावली में अधिक प्रमुख पूर्वजों के नाम सूचीबद्ध करने की यहूदी प्रथा से दिया जाता है, या शायद इस तथ्य से कि, उनके पिता की मृत्यु के बाद, भविष्यवक्ता ज़ेकार्याह को उनके दादा ने पाला था; बाद वाला दृष्टिकोण अलेक्ज़ेंड्रिया के संत सिरिल द्वारा माना जाता है।

[1748] नेहेम्याह 12:16। महापुजारी यहोयाकीम, जो महापुजारी यहोयादा (*ज़करियाह, अध्याय 3*) के पुत्र थे, के समय में, भविष्यवक्ता ज़करियाह स्वयं पहले से ही एक याजक और अपने कुल के मुखिया थे, संभवतःअपने पिता की अल्पायु में मृत्यु के कारण। (नेहेम्याह 12:12-16)।

[1749] मंदिर का निर्माण hystaspes के पुत्र दारा के शासन के छठे वर्ष में पूरा हुआ था (1 एस्द्रास 6:15)। दारा ने 521 से 486 तक शासन किया; अतःमंदिर के निर्माण का वर्ष ईसा पूर्व 515 में आता है।

दर्शन में प्रकट होता है, जो यरूशलेम को मापने के लिए एक नापने की रस्सी लेकर आता है, क्योंकि शहर इतने सारे लोगों से भर जाएगा कि वह लबालब भर जाएगा, और प्रभु स्वयं इसके चारों ओर आग की एक दीवार होंगे (ज़ेख. 2:1-13)। लोगों के पाप अब यहोवा के सिय्योन पर वास करने में बाधा नहीं डालेंगे, क्योंकि वे क्षमा कर दिए जाएँगे, जैसा कि *चौथा* दर्शन दिखाता है: नबी महायाजक यीशु को अशुद्ध वस्त्रों में—जो पापपूर्ण अशुद्धता का प्रतीक हैं—देखता है और शैतान उस पर आरोप लगाता है; परन्तु परमेश्वर उसका पक्ष लेते हैं, और लोगों के प्रतिनिधि—महापुजारी—से मैले वस्त्र हटा दिए जाते हैं और उन्हें साफ वस्त्रों से बदल दिया जाता है, इस प्रकार परमेश्वर की दया के भविष्य के महान कार्य की पूर्वसूचना मिलती है: शाखा, मसीहा द्वारा एक ही दिन में सारी पृथ्वी के पापों को मिटा देना (जकर्याह 3:1–10)। *पाँचवें* दर्शन में, भविष्यवक्ता को एक सुनहरा दीपकदान (मंडली का प्रतीक - प्रका. 1:13, 20) दिखाया गया है, जिसमें सात दीपक हैं, जो इसके दोनों ओर खड़े दो जैतून के पेड़ों के तेल से भरे हैं; इसका संकेत था कि परमेश्वर स्वयं मन्दिर और लोगों की देखभाल करते हैं, जबकि दो जैतून के वृक्ष—ज़ेरोबबेल और यीशु—उनकी व्यवस्था के साधन हैं (ज़ेख. 4:1–14)। लेकिन यहूदी लोग लंबे समय तक पिछले पाँच दृष्टि-बिंबों में वर्णित परमेश्वर की कृपा का आनंद नहीं उठा पाएंगे: वे एक बार फिर से भ्रष्ट हो जाएंगे और एक बार फिर से दंड झेलेंगे; यह विचार *छठी* दृष्टि में प्रकट होता है, जिसमें एक लपेटे में चोरों और झूठी कसम खाने वालों के विरुद्ध एक श्राप है (जकर्याह 5:1-4), और एफा (तरल का एक माप) के *सातवें* दर्शन में, जिसमें एक महिला बैठी है—जो दुष्टता का प्रतीक है—जिसे दो अन्य लोग सेनnaar या बेबीलोन ले जा रहे हैं (ज़ेख. 5:5-10)।

जिस समय की भविष्यवक्ता ने कल्पना की थी, जैसा कि पाँचवीं और छठी दृष्टि दिखाती हैं, उस समय चुने हुए लोगों का भ्रष्टाचार चरम पर पहुँच जाएगा; तब यह शाप पूरे यहूदा में फैल जाएगा और दुष्टों को मार गिराएगा, जब तक कि लोगों के अधर्म का पूरा नाप भर नहीं जाता और वे अपनी अंतिम सज़ा भुगतते हैं; दुष्ट स्त्री यहूदी लोगों का प्रतिनिधित्व करती है; एफा उन अधर्मों का माप है जिन्होंने इस शाप को जन्म दिया। और मूर्तिपूजक भी दंडित हुए बिना नहीं बचेंगे, जैसा कि विभिन्न रंगों के घोड़ों द्वारा खींचे गए चार रथों के अंतिम, *सातवें* दर्शन से पता चलता है - जो प्रभु के स्वर्गदूतों का प्रतीक है, जो परमेश्वर के शत्रुओं का न्याय करने के लिए पूरी पृथ्वी पर यात्रा करेंगे। मूर्तिपूजक दुनिया के विनाश के बाद, मसीहा का राज्य स्थापित होगा, जिसे नबी निम्नलिखित प्रतीकात्मक कार्य के माध्यम से दर्शाता है: वह महायाजक यीशु के सिर पर दो मुकुट रखता है, एक सोने का और एक चांदी का – जो आने वाले मसीहा की महायाजकीय और राजसी गरिमा का प्रतीक है, – इस भविष्यवाणी के साथ कि अंकुर (मसीहा) आएगा और मंदिर का निर्माण करेगा और महापुजारी के रूप में सेवा करेगा: जब ऐसा होगा, तो दूर-दराज के राष्ट्र भी इस्राएल के परमेश्वर के लिए एक मंदिर बनाने आएंगे (जकर्याह 6:1–15)।

दूसरा भाग (ज़ेख. 7:1–14 से अंत तक) ज़कर्याह की भविष्यवाणियाँ समेटे हुए है। पहले प्रवचन में, अपने समकालीन लोगों के एक प्रश्न के उत्तर में कि क्या उन्हें बंधुत्व के दुखद घटनाओं की स्मृति में स्थापित उपवासों का पालन करना चाहिए, नबी सिखाते हैं कि उपवास के साथ धार्मिकता और अपने पड़ोसी के प्रति प्रेम के कर्म भी होने चाहिए; तब उपवास उत्सव के दिनों में परिवर्तित हो जाएंगे, और ईश्वर का आशीर्वाद तथा उद्धार का आनंद—जो अन्यजातियों को भी समाहित करने का अर्थ रखता है—इस्राएल पर विराजमान होगा। (ज़ेका. 7:1–14, 8:1–23)। अपने दूसरे प्रवचन में, नबी इस्राएल के शत्रु राष्ट्रों के विनाश की भविष्यवाणी करते हैं, जबकि यिरूशलेम परमेश्वर की विशेष सुरक्षा में रहेगा, और कोई अत्याचारी फिर कभी वहाँ पैर नहीं रखेगा। फिर नबी यहूदी लोगों को आनंदित होने के लिए आमंत्रित करते हैं, क्योंकि एक धर्मी और कोमल राजा उनके पास आ रहा है; वह पृथ्वी पर धार्मिकता स्थापित करेगा और अपने लोगों को बचाएगा, मानव जाति के अहंकार और दंभ को नष्ट करेगा। वह अपने राज्य का उद्घाटन अपनी राजधानी में एक गधे और एक बछेड़े पर सवार होकर करेगा, जो शांति का प्रतीक हैं[1750] । मसीहा का राज्य - शांति का राज्य - यहूदिया से लेकर सारी पृथ्वी तक फैलेगा; राजा लोगों को इसमें जबरदस्ती नहीं, बल्कि उस रक्त बलिदान के माध्यम से खींचेंगे जो वह सभी लोगों के लिए उन्हें परमेश्वर से मिलाने के लिए चढ़ाएंगे। यूनानियों – परमेश्वर के लोगों के शत्रुओं – के पराजित होने की भविष्यवाणी की गई है, जबकि यहूदियों को प्रचुरता और संतान की बहुतायत का आशीर्वाद देने का वादा किया गया है। निकट भविष्य में इज़राइल के लिए प्रतीक्षित उज्ज्वल भविष्य को दर्शाने के बाद, नबी यहूदी लोगों

[1750] पवित्र सुसमाचार लेखक, प्रभु के यरूशलेम में विजयी प्रवेश का वर्णन करते हुए, भविष्यवक्ता ज़कर्याह की पुस्तक से इस अंश का हवाला देते हैं, और इस प्रकार इसे उद्धारकर्ता मसीह पर लागू करते हैं (मत्ती 21:4–6; यूहन्ना 12:14–16)

के आसन्न अस्वीकृति का वर्णन करने के लिए आगे बढ़ते हैं: नबी लेबनान से अपील करते हैं कि वह दुश्मन के लिए अपने द्वार खोल दे, जो पूरे यहूदा को उजाड़ देगा। यशायाह भविष्यवक्ता इस विपत्ति के कारण को स्वर्गीय चरवाहे की दो लाठियों के बारे में एक प्रतीकात्मक कहानी के माध्यम से समझाते हैं। एक पर *'कृपा'* अंकित था, जबकि दूसरी पर *'बंधन'* अंकित था; जब भेड़ों ने, उनके लिए चरवाहे की देखभाल के बावजूद, अपने रास्ते नहीं सुधारे, तो उन्होंने *'कृपा'* अंकित छड़ी तोड़ दी, जो ईश्वर और उसकी प्रजा के बीच की वाचा के अंत का संकेत था; फिर उन्होंने अपने चरवाहे के काम के लिए भुगतान की मांग की, लेकिन यहूदियों ने उनके काम का मोल तीस चांदी के सिक्कों में लगाया; चौकीदार ने इन चाँदी के टुकड़ों को कुम्हार[1751] के लिए प्रभु के भवन में फेंक दिया। इसके बाद, चौकीदार ने एक और *लाठी—बंधन*—तोड़ दी, यह संकेत देने के लिए कि यहूदा और इस्राएल के बीच की भाईचारा समाप्त हो गई थी। जब भले चरवाहे को अस्वीकार कर दिया गया, तो झुंड भाड़े के सैनिकों के हाथों में पड़ गया (जकर्याह 9:1–17, 10:1–12, 11:1–17)।

अपने अंतिम प्रवचन में, नबी घोषणा करते हैं कि संसार के सभी राष्ट्र यरूशलेम के विरुद्ध उठ खड़े होंगे, लेकिन प्रभु स्वयं इसकी रक्षा करेंगे और हमलावरों को नष्ट कर देंगे; और यहूदी लोगों पर प्रभु अनुग्रह और दया का आत्मा उंडेलेंगे, और यहूदे उसी को देखेंगे जिसे उन्होंने भेदा है, और उसके लिए ऐसा शोक मनाएंगे जैसे किसी एकलौते son[1752] के लिए शोक मनाया जाता है। तब दाऊद के घराने के लिए एक फव्वारा खोला जाएगा जो उनके पापों को धो डालेगा, और मूर्तियों और झूठे नबियों की सारी स्मृति निष्ट हो जाएगी; चरवाहा मारा जाएगा, और भेड़ें बिखर जाएँगी[1753] । प्रभु अनुग्रह का एक राज्य स्थापित करेंगे, जो संख्या में छोटा होगा—पृथ्वी पर रहने वालों में से केवल एक तिहाई का—लेकिन परखा हुआ और पवित्र होगा। अंत में, अन्यजाति फिर से यरूशलेम को घेराबंदी करेंगी, लेकिन प्रभु उसकी रक्षा के लिए उठेंगे और उन्हें परास्त कर देंगे; और फिर एक ऐसा दिन होगा, जो केवल प्रभु को ही ज्ञात होगा: उसमें कोई प्रकाश नहीं होगा, खगोलीय पिंड पीछे हट जाएँगे, और न तो दिन होगा और न ही रात; केवल संध्या के समय ही प्रकाश दिखाई देगा[1754] . यरूशलेम से जीते जल बहेगा; यह नए राज्य का केंद्र बन जाएगा, जिसमें केवल धर्मी ही निवास करेंगे – इसमें अब कोई भी अशुद्ध वस्तु नहीं रहेगी। (ज़ेख. 12:1–14, 13:1–19, 14:1–21)[1755] .

22 फरवरी

9 फरवरी (पुराने कैलेंडर के अनुसार)

शहीद संत निकिफोरस का कष्टकथा

9 फरवरी को स्मरणोत्सव

सीरिया के महानगर अंत्योखिया में सैप्रिकियस नामक एक पुरोहित और निकोफोरस नामक एक साधारण नागरिक रहते थे। वे एक-दूसरे से इतना प्रेम करते थे और इतने घनिष्ठ थे कि कुछ लोग उन्हें भाई ही समझते थे।

[1751] सुसमाचार लेखक संत मत्ती, सन्हेड्रिन के उस निर्णय का वर्णन करते हुए, जिसमें यहूदा द्वारा धोखा देकर दिए गए चाँदी के सिक्कों का उपयोग अजनबियों के दफ़न के लिए कुम्हार से एक भूखंड खरीदने के लिए किया गया, वे इसमें ज़करिया की भविष्यवाणी की पूर्ति देखते हैं, लेकिन इसे यिर्मयाह की भविष्यवाणी के रूप में संदर्भित करते हैं—संभवतःइसलिए क्योंकि भविष्यवाणी की पुस्तकों वाली पांडुलिपि, जो पवित्र सुसमाचार लेखक के पास थी, में भविष्यवक्ता यिर्मयाह का नाम अंकित था।

[1752] संत यूहन्ना सुसमाचारकर्ता, मसीह यीशु में इस भविष्यवाणी की पूर्ति का वर्णन करते हुए, स्वयं भविष्यवाणी को शब्दशःउद्धृत करते हैं (यूहन्ना 19:34-37)।

[1753] प्रभु स्वयं इस भविष्यवाणी को अपने ऊपर लागू करते हैं, जब गेथ्सेमनी के रास्ते में अंतिम भोज के बाद, वे प्रेरितों से कहते हैं कि वे जल्द ही उनका परित्याग कर देंगे (मत्ती 26:31; मरकुस 14:27)।

[1754] यहाँ हम मसीह के सूली पर चढ़ाए जाने के समय सूर्यग्रहण के बारे में भविष्यवाणी देखते हैं (लूका 23:44-45)।

[1755] ज़ेकार्याह की पुस्तक के कुछ अंश वेस्पर्स के दौरान पैरेमिया के रूप में पढ़े जाते हैं। इस प्रकार, ज़ेच. 9:9–14 वै के सप्ताह के दौरान पढ़े जाते हैं; ज़ेच. 11:10–13 – गुड फ्राइडे को; ज़ेच. 8:7–17, 19–23 चीज़ शुक्रवार को; और ज़ेच. 14:4, 8–11 (जो जैतून के पहाड़ पर प्रभु के प्रकट होने के बारे में बताता है) प्रभु के स्वर्गारोहण पर, जो उसी पहाड़ पर हुआ था।

ऐसी दोस्ती के कई वर्षों के बाद, शैतान, जो हर अच्छी चीज़ से नफरत करता है, उनसे ईर्ष्या करने लगा और उनके बीच वैर के ऐसे बीज बो दिए कि वे एक-दूसरे से सड़क पर भी मिलना नहीं चाहते थे: वे एक-दूसरे से इतनी नफरत करने लगे; और जिस प्रकार कभी उनके बीच प्रेम और मित्रता का राज था, उसी प्रकार शैतान के प्रभाव से, उनके बीच घृणा और वैमनस्य उबल पड़ा।

एक-दूसरे के प्रति इतनी नफ़रत और वैमनस्य में काफी समय तक जीने के बाद, निकिफोर को होश आया और यह एहसास हुआ कि यह शैतान ही था जो यह वैमनस्य फैला रहा था, तो उसने अपने दोस्तों और पड़ोसियों से प्रज़िबाइटर सैप्रकियोस के पास जाकर एक पश्चातापी व्यक्ति को क्षमा करने और पहले की तरह उससे प्रेम करने के लिए विनती करने को कहना शुरू कर दिया; लेकिन पुरोहित ने उससे अपनी शत्रुता त्यागने से इनकार कर दिया।

तब निकिफोर ने उसी निवेदन के साथ एक बार फिर से अन्य मित्रों को भेजा, लेकिन पुरोहित ने उनकी बात तक नहीं सुनी। उसने तीसरी बार भेजे गए लोगों को भी ठुकरा दिया और उनकी विनतियों पर कोई ध्यान नहीं दिया; इस प्रकार, वह अपने भाई को माफ करने की दया नहीं दिखा सका, जो नम्रतापूर्वक क्षमा मांग रहा था। इसके विपरीत, उसने अपना हृदय कठोर कर लिया, और अडिग रहा, हमारे प्रभु यीशु मसीह के वचनों को भूल गया, जिन्होंने कहा था: *'क्षमा करो, और तुम्हें क्षमा किया जाएगा'* (लूका 6:37); और फिर: *'इसलिए, यदि तुम अपनी भेंट वेदी पर चढ़ाने आओ और वहाँ तुम्हें याद आए कि तुम्हारे भाई को तुमसे कोई शिकायत है, तो अपनी भेंट वेदी के सामने ही छोड़ दो, और पहले अपने भाई से मेल मिलाप करो, और फिर आकर अपनी भेंट चढ़ाओ... क्योंकि यदि तुम मनुष्यों के अपराध क्षमा करोगे, तो तुम्हारा स्वर्गीय पिता भी तुम्हें क्षमा करेगा'* (मत्ती 5:23–24, मत्ती 6:14)।

तब निकिफोर ने, यह देखकर कि पुरोहित सैप्रकियिस उसकी ओर से मध्यस्थता स्वीकार करने को तैयार नहीं थे, स्वयं उनके पास गया और उनके पैरों पर गिर पड़ा, और उनसे कहा:

'मुझे क्षमा करें, पिताजी; प्रभु के वास्ते, मुझे क्षमा करें।'

लेकिन सैप्रकियिस ने उसकी ओर देखा भी नहीं; वह एक निर्दयी आदमी था और उसे प्रभु से न तो प्रेम था और न ही भय; एक ईसाई और एक पुरोहित होने के नाते, उसे बिना मांगे ही अपने भाई को क्षमा कर देना चाहिए था। क्षमा न मिलने पर, निकिफोर उसे अपमानित और अस्वीकार कर छोड़कर चला गया।

उस समय – वैलेरियन और गैलिनिस के शासनकाल में[1756] – सैप्रसियिस को भी एक ईसाई होने के कारण गिरफ्तार कर यातना देने के लिए राज्यपाल के सामने लाया गया था।

गवर्नर ने पूछा:

'मेरा नाम सैप्रकियिस है,' उसने उत्तर दिया।

'मेरा नाम सैप्रसियिस है,' उसने जवाब दिया।

'तुम्हारा परिवार क्या है?' गवर्नर ने पूछा।

"मैं एक ईसाई हूँ," सैप्रकियिस ने उत्तर दिया।

'क्या आप एक पुरोहित हैं?' गवर्नर ने फिर पूछा।

– 'मैं एक पादरी हूँ,' सैप्रकियिस ने उत्तर दिया। फिर राज्यपाल ने कहा:

'हमारे राजा, इस भूमि और सभी रोमन प्रांतों के शासक, वैलेरियन और गैलिनिस ने यह आदेश दिया है कि जो स्वयं को ईसाई कहते हैं, उन्हें अमर देवताओं को बलिदान चढ़ाना होगा; और जो कोई भी अवज्ञा में राजकीय आज्ञा को अस्वीकार करता है, उसे यह जान लेना चाहिए कि हर प्रकार की यातनाओं के बाद, उसे एक दुखद मृत्यु की सजा दी जाएगी।

इन शब्दों के बाद, हेगेमोन के सामने खड़े सैप्रसियिस ने कहा:

'हे हेगेमोन! हम ईसाइयों का एक राजा है—मसीह परमेश्वर—क्योंकि केवल वही स्वर्ग और पृथ्वी, समुद्र और उनमें जो कुछ भी है, का सच्चा परमेश्वर और सृष्टिकर्ता है; फिर भी मूर्तिपूजक देवता राक्षस हैं, और वे सारी पृथ्वी के मुख से नष्ट हो जाएँ; क्योंकि वे मानव हाथों की रचना हैं, वे किसी की भी मदद नहीं कर सकते।'

[1756] वैलेरियन ने 253 से 259 तक शासन किया; उसके पुत्र गैलियस ने 260 से 268 तक शासन किया। जब उसके पिता जीवित थे, तब उसे उनके द्वारा सीज़र और सह-शासक नियुक्त किया गया था।

तब क्रोधति राज्यपाल ने उसे पहयि पर खींचने और नरि्दयता से यातना देने का आदेश दयिा। इन यातनाओं के बीच, सैप्रकियिस ने राज्यपाल से कहा:

'तुम्हारे पास मेरे शरीर पर अधकिार है, लेकनि मेरी आत्मा पर तुम्हारा कोई अधकिार नहीं है: केवल यीशु मसीह, जनि्होंने इसे बनाया है, के पास ही उस पर अधकिार है।'

इसके बाद, सैप्रकियिस ने साहसपूर्वक उन सभी यातनाओं को सहन कयिा जो उस पर दी गई थीं।

जब उसने देखा कि वह अडगि रहा, तो क्रूर न्यायाधीश ने उस पर नम्निलखिति मृत्युदंड सुनाया:

'हम आदेश देते हैं कि पुरोहति सैप्रकियिस, जसिने राजा की आज्ञा की अवहेलना की है और अमर देवताओं को बलदिान चढ़ाने तथा ईसाई वधिर्म को त्यागने से इनकार कर दयिा है, उसका सरि तलवार से काट दयिा जाए।'

जब सैप्रकियिस शहादत के लिए जा रहे थे, और शहादत का स्वर्गीय मुकुट प्राप्त करने की आशा कर रहे थे, तब धन्य नकिफिोरस ने यह सुनकर उनसे मलिने के लिए जल्दी की और उनके पैरों पर गरिकर कहा:

'हे मसीह के शहीद, मुझे क्षमा करें, क्योंकि मैंने आपके वरिुद्ध पाप कयिा है!'

लेकनि उसने कोई उत्तर नहीं दयिा, क्योंकि उसका हृदय अभी भी दैवीय द्वेष से भरा था।

फाँसी के स्थान तक जाने वाले रास्ते में आगे, संत नकिफिोरस फरि से सैप्रकियिस के पैरों पर गरि पड़े, और कहा:

'हे मसीह के शहीद, मुझे क्षमा करें; एक मनुष्य के रूप में मैंने आपके प्रति किसि प्रकार पाप कयिा है? देखिए, स्वर्ग से मसीह द्वारा आपको एक मुकुट प्रदान कयिा गया है, क्योंकि आपने उनका इनकार नहीं कयिा, बल्कि बहुतों के सामने उनके पवत्रि नाम का अंगीकार कयिा।'

हालाँकि, सैप्रयिस, घृणा से अंधा और माफ करने को तैयार न था, अडगि रहा, और उसे क्षमा करने का कोई भी इरादा नहीं दखिा रहा था। उसने अपने साथी भक्षिु से, जो उससे वनिती कर रहा था, एक शब्द भी नहीं कहा, यहाँ तक कि यातना देने वालों ने भी सैप्रयिस की क्रूरता पर आश्चर्य व्यक्त कयिा और नकिफिोरस से कहा:

'हमने तुम्हारे जैसा पागल कभी नहीं देखा: वह तो पहले से ही अपनी मौत की राह पर है, और फरि भी तुम उससे और भी ज्यादा वनिती कर रहे हो: क्या वह अपनी मौत के बाद तुम्हें कसिी भी तरह से नुकसान पहुँचा सकता है? और तुम ऐसे व्यक्ति से सुलह क्यों करना चाहते हो जो मरने ही वाला है?'

इस पर, संत नकिफिोरस ने उत्तर दयिा:

'तुम नहीं जानते कि मैं इस मसीह के स्वीकारकर्ता से क्या मांग रहा हूँ, लेकनि ईश्वर जानते हैं।'

जब वे उस स्थान पर पहुँचे जहाँ सैप्रकियिस का सरि कलम कयिा जाना था, तो संत नकिफिोरस ने एक बार फरि उनसे कहा:

उन्होंने कहा, 'हे मसीह के शहीद, मैं आपसे वनिती करता हूँ, एक साथी मनुष्य के रूप में, यदि मैंने कसिी भी तरह से आपके खलिाफ पाप कयिा हो तो मुझे क्षमा करें। लखिा है: *"माँगो, तो तुम्हें दयिा जाएगा"* (मत्ती 7:7) - इसलिए मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ - मुझे अपनी क्षमा प्रदान करें।'

लेकनि उसका कठोर-हृदय मत्रि सैप्रकियिस ऐसी वनितयिों के आगे नहीं झुका; उसे प्रभु के वचन याद नहीं आए: *'यीशु ने उससे कहा: "तू अपने प्रभु परमेश्वर से अपने पूरे हृदय से प्रेम कर... तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम कर"* (मत्ती 22:37, 39); लेकनि, अपने हृदय और शरीर के कान बंद करके, वह एक बहरे साँप की तरह बना रहा, और उससे वनिती करने वाले की प्रार्थना को ठुकराता रहा। इस प्रकार, सैप्रसियिस ने सुसमाचार में कही गई बात पर कोई ध्यान नहीं दयिा—कि जो कोई अपने पड़ोसी को क्षमा करता है, उसे भी क्षमा कयिा जाएगा—और न ही उसने प्रभु के वचनों पर ध्यान दयिा: *'जसि नाप से तुम नापोगे, उसी से तुम्हारे लिए भी नापा जाएगा'* (मत्ती 7:2)। इसीलिए प्रभु, जो न्यायी न्यायाधीश हैं, ने अपने न्यायपूर्ण नरि्णय के अनुसार, सैप्रकियिस से अपनी कृपा वापस ले ली, और तुरंत ही वह प्रभु से दूर हो गया और उस शहीदी मुकुट से वंचति हो गया जसिे उसने अपने लिए बुना था।

जब उसके यातना देने वालों ने सैप्रकियिस से कहा, 'अपने घुटने मोड़ो ताकि हम तुम्हारा सरि काट सकें', तो उसने उत्तर दयिा:

'तुम मेरा सरि क्यों काटना चाहते हो?'

सैनकिों ने उत्तर दयिा:

'क्योंकि तुमने देवताओं को बलदिान चढ़ाने से इनकार कर दयिा और मसीह नामक एक व्यक्ति के लिए राजा की आज्ञा की अवज्ञा की।'

यह सुनकर, दुष्ट सैप्रकियिस ने उनसे कहा:

'मुझे मत मारो, क्योंकि मैं राजा की आज्ञा मानूँगा: मैं देवताओं की पूजा करूँगा और उनके लिए बलिदान चढ़ाऊँगा।'

इस प्रकार घृणा ने सैप्रकियिस के हृदय को अंधा कर दिया था! इसने उसे ईश्वर की कृपा से अलग कर दिया था, और वह, जो पहले यातनाओं से पीड़ित होकर भी मसीह का त्याग नहीं किया था, अब—शहीद का महिमा का मुकुट प्राप्त करने के बजाय—शाश्वत जीवन का त्याग कर धर्मत्यागी बन गया।

सप्रकियिस के इन पागलपन भरे शब्दों को सुनकर, निकिफोरस ने आँसू भरी आँखों से उससे विनती करना शुरू कर दिया:

'ऐ प्रिय भाइ, ऐसा मत करो! हमारे प्रभु यीशु मसीह का परित्याग मत करो! उस स्वर्गीय मुकुट को मत गँवाओ जिसे तुमने अपने दुखों के बीच अपने लिए बुना है! देखो, प्रभु मसीह द्वार पर खड़े हैं; वे एक बार फिर तुम्हारे सामने प्रकट होंगे और इस क्षणिक मृत्यु के बदले, जिसे तुमने इस स्थान पर स्वीकार किया है, तुम्हें अनंत जीवन प्रदान करेंगे।'

लेकिन सैप्रकियिस ने उसकी विनतियों पर कोई ध्यान नहीं दिया: वह शाश्वत मृत्यु की ओर तेज़ी से बढ़ गया, और इस प्रकार उसने वह शाश्वत जीवन खो दिया जो उसे तलवार के एक ही वार से प्राप्त होने वाला था।

संत निकिफोरस ने, यह देखकर कि सैप्रकियिस पवित्र विश्वास से पूरी तरह से भटक गया था और मसीह—सच्चे ईश्वर—से मुंह मोड़ लिया था, यातना देने वालों से ऊँचे स्वर में चिल्लाने लगे:

'मैं एक ईसाई हूँ और हमारे प्रभु यीशु मसीह में विश्वास करता हूँ, जिन्हें सैप्रकियिस ने अस्वीकार कर दिया है; इसलिए, सैप्रकियिस की जगह मेरी गर्दन उड़ा दो।'

सैनिक, राज्यपाल की आज्ञा के बिना उसे मारने की हिम्मत न करते हुए, इस बात से बहुत हैरान थे कि वह स्वेच्छा से मृत्यु को स्वीकार कर रहा था, और निडर होकर कह रहा था:

'मैं एक ईसाई हूँ और मैं तुम्हारे देवताओं को बलिदान नहीं चढ़ाऊँगा!'

तब यातना देने वालों में से एक, राज्यपाल के पास जाकर, उसे बताया कि सैप्रकियिस ने देवताओं को बलिदान देने का वादा किया था; लेकिन, उसने यह भी जोड़ा कि एक निश्चित व्यक्ति था जो तथाकथित मसीह के लिए मरना चाहता था, और इसलिए वह ज़ोर से चिल्ला रहा था:

'मैं एक ईसाई हूँ; मैं तुम्हारे देवताओं को बलिदान नहीं चढ़ाऊँगा, और न ही मैं राजा की आज्ञाओं का पालन करूँगा!'

यह सुनकर, राज्यपाल ने आदेश दिया कि सैप्रकियिस को मुक्त कर दिया जाए, और उसकी जगह निकोफोरस का सिर तलवार से काट दिया जाए। इस प्रकार पवित्र शहीद को मसीह के लिए, 'February[1757] ' महीने के नौवें दिन मृत्युदंड दिया गया, और आनंदित होकर वह प्रभु मसीह के पास चला गया, ताकि वह उनके दाहिने हाथ से विजय का मुकुट प्राप्त कर सके और पवित्र शहीदों की संगति में उनके सामने खड़ा हो सके, और त्रिमूर्ति में एक परमेश्वर, पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा की महिमा कर सके। उसे ही अनंतकाल तक सम्मान और आराधना, महिमा और सामर्थ्य प्राप्त हो, आमीन।

कॉन्टाकियन, स्वर 1:

प्रेम के बंधन से बँधे, निकिफोरस, तुमने घृणा की दुष्टता को नष्ट किया, और देहधारी उद्धारकर्ता के हे दिव्य शहीद, अपने सिर पर तलवार से मार गिराए गए; हम जो तुम्हारी महिमामय स्मृति का गान करते हैं, हमारे लिए उनसे प्रार्थना करो।

एक और कोंटाकियन, स्वर 3:

हे महिमामय, प्रभु के प्रेम से परिपूर्ण होकर, और उनके महिमामय क्रूस को अपने कंधों पर उठाकर, आपने शैतान की चालाकियों को लज्जित किया; आपने मृत्यु तक दुख सहकर स्वयं को एक विजेता, एक योद्धा और परमेश्वर की कृपा का प्रबंधक सिद्ध किया।

[1757] संत निकिफोरस शहीद ने लगभग वर्ष 257 में यातनाएँ भोगीं और मृत्यु प्राप्त की।

पवत्रि शहीदों मार्सेलस, ससिलिी के बशिप, और फलिाग्रयिस, साइप्रस के बशिप का स्मरणोत्सव

9 फरवरी को स्मरण कयिा जाता है

पवत्रि शहीद मार्सेलस और फलिाग्रयिस पवत्रि प्रेरति पतरस के शष्यि थे। मसीह के पृथ्वी पर जीवन के दौरान, संत मार्सेलस अंतीयक शहर में रहते थे। प्रभु के चमत्कारों के बारे में सुनकर, वह उन्हें देखने के लिए अंतीयक से यरूशलेम आए, और वहाँ उनकी मुलाकात प्रेरति पतरस से हुई। मसीह के पुनरुत्थान के बाद, संत मार्सेलस को प्रेरति द्वारा ससिलिी का बशिप नयिुक्त कयिा गया और कई मूर्तपिूजकों को मसीह में परविर्तति करने के बाद वहाँ उन्होंने शहादत प्राप्त की। जहाँ तक संत फलिाग्रयिस का प्रश्न है, वे साइप्रस द्वीप के बशिप थे; उन्होंने मसीह में वशि्वास का उत्साहपूर्वक प्रचार कयिा और इसके लिए कई यातनाएँ सहने के बाद, प्रभु के पास प्रस्थान कयिा।

23 फरवरी

10 फरवरी (पुराने कैलेंडर के अनुसार)

मैग्नेशयिा के बशिप संत चरालाम्पीयस की शहादत, और उनके साथ शहीदों पोर्फीरयिस और वाप्टोस, और तीन महलिा शहीदों की शहादत।

10 फरवरी को स्मरण कयिा जाता है

नष्ठिुर रोमन सम्राट सेवरस के शासनकाल में[1758] , जैसे-जैसे हमारे प्रभु यीशु मसीह की कलीसयिा फैली, राक्षसों की पूजा कम होने लगी और मूर्तपिूजा स्वयं समाप्त होने लगी। उस समय, मैग्नेशयिा नगर में[1759] , पवत्रि बशिप चरालाम्पीयस रहते थे। उन्होंने लोगों को उद्धार के मार्ग पर नर्दिेशति कयिा और उन्हें परमेश्वर के वचन में शक्षिति कयिा; उन्होंने कहा: 'मेरे राजा, यीशु मसीह ने, पवत्रि आत्मा के द्वारा प्रेरतिों और भवष्यिद्वक्ताओं को भेजा, ताकि लोग, उनकी पवत्रि उपदेश से प्रबुद्ध होकर, धार्मकिता के मार्ग पर दृढ़ता से चलें। लेकनि तुम्हारा राजा, सेवरस, क्रूर यातनाओं के द्वारा लोगों को नर्जिीव मूर्तयिों की बलि चढ़ाने के लिए मजबूर करता है और इस प्रकार उनकी आत्माओं को अनंत मृत्यु की ओर धकेल देता है। यीशु मसीह, मेरे राजा, ने भवष्यिवक्ताओं और प्रेरतिों के द्वारा हमें स्वर्गीय जीवन के वचन सौंपे हैं – और इस उपदेश के द्वारा हमारा शत्रु बाहर नकिाला जाता है, साँप पैरों तले कुचल दयिा जाता है, अवशि्वास वशि्वास में बदल जाता है, दुष्टात्माओं की शक्षिाएँ नष्ट हो जाती हैं, और शत्रु की सारी शक्ति अपने भयानक पतन में गरि जाती है। इसलिए, उस उद्देश्य के लिए खड़े होने से बेहतर है जो शाश्वत वनिाश लाता है, उन शब्दों पर वशि्वास करना है जो हमें शाश्वत जीवन के मार्ग पर मार्गदर्शन करते हैं।

इन शब्दों के बाद, पवत्रि बशिप को अवशि्वासयिों ने पकड़ लयिा और यातना देने तथा मुकदमा चलाने के लिए हेगेमोन लूसयिन और सैन्य कमांडर लूसयिस के सामने पेश कयिा।

जब पवत्रि शहीद चारलाम्पीयस ने उनके सामने वही शब्द दोहराए, तो राज्यपाल ने उनसे कहा:

'तुम अपने हृदय की प्रचुरता से लापरवाह शब्द बोलते हो, और भलाई और बुराई में अंतर नहीं कर पाते। लेकनि, सम्माननीय वृद्ध, यह मत सोचिए कि आप इन शब्दों के लिए यातना नहीं झेलेंगे। इसलिए, हमारी सलाह मानिए, एक वृद्ध के योग्य आचरण कीजिए और, अच्छी तरह सोच-वचिार कर, देवताओं को बलदिान अर्पति कीजिए, नहीं तो हम आपको ऐसी यातनाएँ देंगे जो आपकी कल्पना से भी परे हैं।

[1758] रोमन सम्राट सेप्टमियिस सेवेरस ने 193 से 211 तक शासन कयिा।

[1759] मैग्नेशयिा – प्राचीन यूनान के उत्तर-पूर्वी क्षेत्र थेस्साली का एक शहर।

संत चारलाम्पीयस ने उत्तर दिया:

'मैं अब बूढ़ा हो गया हूँ और इस क्षणकि जीवन के अंत के करीब हूँ; दुनिया में किसी भी चीज़ के लिए मैं उन स्वर्गीय आशीर्वादों को तुच्छ नहीं समझूँगा जो मेरा इंतज़ार कर रहे हैं।'

तब न्यायाधीश क्रोध से आग-बबूला हो गए और क्रूर यातनाओं की तैयारी करने लगे तथा उससे कहने लगे:

'देवताओं को बलिदान चढ़ाओ, हे दुष्ट मनुष्य!' संत चारलाम्पास ने उत्तर दिया:

'मैं राक्षसों को बलिदान नहीं चढ़ाऊँगा। क्योंकि तुम देख सकते हो कि जिन राक्षसों की तुम पूजा करते हो, वे मसीह के क्रूस के चिह्न से कांपते और थर्राते हैं।'

इसके बाद, न्यायाधीशों ने आदेश दिया कि चारालाम्पीयस के पवित्र वस्त्र उतार दिए जाएँ, और उन्होंने इस दैवीय पुरुष को नग्न अवस्था में यातना देना शुरू कर दिया। पवित्र शहीद को लटकाने के बाद, दो सेवकों ने लोहे की पंजाओं से उसके शरीर को नोचना शुरू कर दिया, और तब तक ऐसा करते रहे जब तक कि उन्होंने उसके सिर से पैर तक सारी खाल नहीं उधेड़ दी।

संत चारलाम्पीयस, यद्यपि पूरी तरह से टुकड़े-टुकड़े हो गए थे, फिर भी उन्होंने अपने यातना देने वालों से इस प्रकार कहा: 'मैं तुम लोगों का धन्यवाद करता हूँ, भाइयों, क्योंकि मेरे नश्वर शरीर को फाड़कर, तुमने मेरी आत्मा को नया कर दिया है, जो एक नए, शाश्वत जीवन में प्रवेश करने के लिए लालायित है।'

संत के ये शब्द सुनकर, उसे यातना देने वाले दो सैनिक भय से ग्रस्त हो गए, और उन्होंने न्यायाधीशों से कहा: 'आपने इस व्यक्ति पर जो अपमान किया है, वह उसके लिए सम्मान में बदल गया है, और उसकी यातनाएँ आनंद में। क्या वह स्वयं मसीह नहीं है? वृद्ध व्यक्ति का रूप धारण करके, क्या वह एशिया में सभी निवासियों को अपने धर्म में परिवर्तित करने नहीं आया है? उसका शरीर, जो लोहे की पंजाओं से छीले जाने पर भी, लोहे से भी अधिक कठोर हो जाता है, ताकि पंजाएँ उसमें धँस तो जाती हैं, परन्तु उसे स्वयं कोई हानि नहीं पहुँचती।"

जब सैनिकों ने यह कहा, तो राज्यपाल दाँत पीसते हुए चिल्लाया: 'हे दुष्ट सेवकों और आज्ञाओं को पूरा करने में सबसे आलसी! तुम न केवल आज्ञा का पालन करने में विफल रहते हो, बल्कि तुम यातनाओं को भुगतने के लिए दंडित किए गए व्यक्ति का बचाव भी करते हो!'

हालाँकि, सेंट चारालाम्पास को यातना देने वाले सैनिक अंततः पूरी तरह से थक गए और उन्होंने खुले तौर पर मसीह की शक्ति का इकरार करना और उसकी महिमा करना शुरू कर दिया, जिसने पीड़ित को इतना मजबूत बनाया था; और इस प्रकार, तुरंत बाद, दोनों को प्रभु के नाम के लिए सिर कलम कर दिया गया; उनके नाम पोर्फिरियस और वैप्टोस थे।

तीन महिलाएँ जो शहीद की पीड़ा को देख रही थीं, वहाँ भी मसीह में विश्वास करने लगीं। उन्होंने उनके परम पवित्र और सर्वशक्तिमान नाम की महिमा करना शुरू कर दिया और इसी के लिए उन्हें यातना देकर मार डाला गया।

इसके बाद, कमांडर लूसियस अपनी कुर्सी से उठा, जल्लादों के औज़ार उठा लिए, और स्वयं संत चारालाम्पुस को यातना देने लगा, उसके पूरे शरीर को क्रूरता से पीड़ा पहुँचाते हुए। और तुरंत ही उसकी बाहें कोहनियों से कट गईं, मानो किसी तलवार से काटी गई हों, और शहीद के शरीर से चिपकी हुई लटक गईं।

अब बाहुहीन लूसियस ज़मीन पर गिर पड़ा और चिल्लाया: 'यह आदमी एक जादूगर है! हेगेमोन, मेरी मदद करो!'

हेगेमोन, पास आकर और अपने कमांडर के हाथ शहीद के शरीर से लटके हुए देखकर, संत चारलाम्पीयस के मुँह पर थूक दिया; और उसी क्षण हेगेमोन का सिर घूम गया और उसका चेहरा पहले से ही पीछे की ओर देख रहा था।

तब मैग्नेशिया के लोग, बड़े भय से ग्रस्त होकर, पवित्र शहीद से विनती करने लगे, और कहने लगे: 'अपना क्रोध त्यागो और ईश्वर के प्रकोप को टाल दो! क्योंकि तुम्हें स्वयं आज्ञा दी गई है कि बुराई का बदला बुराई से न चुकाओ।'

इस पर संत चारालाम्पियस ने उत्तर दिया: 'जिस प्रभु परमेश्वर के जीवित हैं, उसकी कसम, मेरे हृदय में कोई द्वेष नहीं है, और न ही मेरी जीभ पर चापलूसी है! आप स्वयं देखें कि मसीह परमेश्वर ने इन अधर्मी शासकों को कैसे दंडित किया है; वही हमें अनंत जीवन प्रदान करते हैं, परन्तु दुष्टों का नाश कर देंगे।'

तब सभी ने प्रभु से पुकारा: 'प्रभु, हम पर जो तेरे विरुद्ध पाप कर चुके हैं, हमें नष्ट न कर! देख, हे परमेश्वर, तूने अब हमारे शासकों को दंड दे दिया है, ताकि तू हमें प्रकाश में ले जा सके और हमें अनंत जीवन के योग्य बना सके।'

और वहाँ बहुत भीड़ ने मसीह पर विश्वास किया।

इसके बाद, लूका ने कहा: 'हे परमेश्वर के मनुष्य, हे प्रभु के स्वर्गदूत, मुझ पर दया करो, जो भयंकर पीड़ा सह रहा हूँ; देखो, मेरे हाथ तुम्हारे शरीर से लटके हुए, तुम्हारा बोझ बन गए हैं: उन्हें उनके सही स्थान पर लौटा दो, और तब

तुम भी इस बोझ से मुक्त हो जाओगे, और मैं अपनी पीड़ा से चंगा हो जाऊँगा; और यदि तुम ऐसा करोगे, तो मैं तुम्हारे परमेश्वर पर विश्वास करूँगा।'

तब संत ने प्रभु के समक्ष अपनी विनती अर्पित करते हुए पुकारा: 'बारूख, मनुइड, मारोन-अफा, रव्वुनी—अर्थात्, धन्य हो परमेश्वर, जो हमारे साथ हैं, हमारे प्रभु, जिन्होंने हमारा शरीर धारण किया, मेरे शिक्षक—बंधनों में जकड़े हुए लोगों की विनम्रता को देखें, मुझे दंड के बंधनों से मुक्त करें—ये मेरे न्यायाधीश हैं—और मुझे, अपने स्वीकारकर्ता को, चंगा करें, जो फोड़ों से ढका हुआ है!'

और फिर स्वर्ग से एक आवाज़ सुनाई दी, जो कह रही थी: 'चारलाम्पीयस – वह सांसारिक दीपक जो स्वर्ग को भी प्रकाशित करता है, स्वर्गदूतों का सेवक, भविष्यवक्ताओं का साथी, प्रेरितों का मित्र, शहीदों का साथी और मेरे संवाद का योग्य – मैंने तुम्हारी प्रार्थनाएँ सुनी हैं और तुम्हारे होठों से निकले शब्दों को स्वीकार किया है; तुम्हारी यह विनती इन पीड़ितों को चंगा करे।'

और तुरंत ल्यूक और राज्यपाल लूसियन अपनी बीमारियों से चंगा हो गए।

तब लूक, पवित्र शहीद के चरणों में गिरकर, बपतिस्मा के लिए निवेदन करने लगा, जो उसे शीघ्र ही प्रदान कर दिया गया, जबकि राज्यपाल ने ईसाइयों पर अपना अत्याचार बंद कर दिया: 'फिलहाल,' उसने कहा, 'मैं इस बारे में राजा को कुछ नहीं बताऊँगा।'

इसके बाद, कई लोग संत के पास आए; उन्होंने अपने पापों का इकरार किया, और उन्हें बपतिस्मा दिया गया, जबकि विभिन्न बीमारियों से पीड़ित लोग चंगे हो गए।

जहाँ तक राज्यपाल लूसियन का सवाल है, वह सम्राट सेवरस के पास गया, जो उस समय पिसीडिया के एंटिओक में थे[1760] , और उसने उसे मैग्नेशिया में हुई सभी बातों के बारे में बताया: 'गालीलियाई लोगों के समुदाय का एक व्यक्ति,' उसने कहा, 'हमारे पास आया; उसने सभी को देवताओं से दूर करना शुरू कर दिया, जबकि बीमारों को चंगा भी किया; कमांडर लुसियस, चंगा हो जाने के बाद, मसीह में विश्वास करने लगा, और वास्तव में मैग्नेशिया के लगभग सभी लोग उसके धर्म को अपना चुके हैं; जहाँ तक मेरी बात है, मैं भी चंगा हो जाने के बाद, यह सब आपकी शाही महोदयता को बताने के लिए यहाँ आया हूँ।"

यह सुनकर, क्रोध से भरकर सेवेरस चिल्लाया: 'हे शाश्वत देवताओं, जिनका धर्महीन मनुष्यों द्वारा अपमान किया गया है! इन कपटी लोगों की शिक्षा पृथ्वी पर इतनी व्यापक रूप से क्यों फैल गई है!'

और तुरंत उसने संत चरालाम्पास को पकड़ने के लिए तीन सौ निर्दयी और क्रूर सैनिक भेजे। उसने उन्हें पहले संत को यातना देने, और फिर उसे मैग्नेशिया से एंटिओक लाने का आदेश दिया।

सैनिक राजा के पास लौट आए, और मसीह के शहीद को अपने साथ ले आए; उन्होंने उसके शरीर में एक तेज लोहे का कील ठोंका, और उसकी काफी लंबी दाढ़ी में एक रस्सी फँसा दी; उसे उसकी गर्दन के चारों ओर लपेटकर, वे संत को राजा के रास्ते पर घसीटते हुए ले गए।

और जब वे मैग्नेशिया से पंद्रह स्टेडियम आगे निकल चुके थे[1761] , तो दाहिनी ओर चल रहा घोड़ा सैनिकों की ओर मुड़ा और स्पष्ट रूप से मानव आवाज़ में बोला: 'हे तीन सौ सैनिकों, तुम शैतान के तीन बार दुष्ट सेवकों! क्या तुम इस मनुष्य के साथ मसीह परमेश्वर और पवित्र आत्मा को उपस्थिति नहीं देखते? तो फिर, तुम उसके साथ यह सब क्यों कर रहे हो? हे कठोर-हृदय लोगों! उसे मुक्त करो जिसे तुम बाँध नहीं सकते, ताकि तुम स्वयं अपनी बेड़ियों से मुक्त हो सको।"

घोड़े से ऐसी मानवीय भाषा सुनकर सैनिक बहुत डर गए; फिर भी, राजा की आज्ञा का पालन करते हुए, वे पवित्र शहीद को अंटीओक की ओर खींचते रहे।

उस क्षण, शैतान, एक बूढ़े आदमी का रूप धारण करके, राजा सेवरस के सामने प्रकट हुआ और उससे कहा: 'हाय मेरे लिए, हे राजा! मैं स्वयं स्कैथियनों का शासक हूँ, लेकिन चरालाम्पीयस नाम का एक व्यक्ति—एक महान जादूगर—मेरी भूमि में आ गया है, और उसने मेरी पूरी सेना को मेरे विरुद्ध कर दिया है, जबकि सभी लोग मेरी सेना में शामिल हो गए हैं; और इसलिए मैं, सभी द्वारा त्यागा हुआ, आपको चेतावनी देने आया हूँ, कि कहीं आपके साथ भी ऐसा ही न हो।"

[1760] पिसीडिया में एंटिओक – एशिया माइनर के पश्चिमी भाग में, फ्रीजिया की सीमा पर।

[1761] हमारे हिसाब से लगभग 2 2/3 वर्स्ट।

शैतान के ये शब्द कहते ही, सैनिकों द्वारा घसीटकर संत चरालाम्पीयस को राजा के सामने लाया गया। राजा ने उसे देखते ही तुरंत उसके सीने में तीन नुकीले खंभे ठोक दिए, और फिर आदेश दिया कि लकड़ी लाई जाए, उसे आग लगाई जाए, और शहीद को आग से धीरे-धीरे जलाया जाए, ताकि वह तुरंत न मरे, बल्कि यथासंभव अधिक समय तक अपनी यातनाएं सह सके।

जब संत चारलैम्बोस को लंबे समय तक इस तरह यातना दी जा रही थी, तो उस समय वहाँ खड़ी एक महिला, राजा को खुश करने की इच्छा से, कुछ गर्म कोयले लेकर शहीद के सिर, चेहरे और दाढ़ी पर बिखेर दिया, और कहा: 'मर जा, बूढ़े, मर जा; अपने चापलूसी भरे उपदेशों से हमें लुभाने की बजाय तेरा मरना बेहतर है।'

यह महिला राजा की एक रखेलियों में से एक थी। हालाँकि, उसकी बहन ने उससे कहा: 'हे नीच स्त्री, क्या तू ईश्वर से नहीं डरती? राजा की इच्छा पूरी करके, तू ईश्वर के क्रोध को भड़का रही है। जब मसीह तुझ पर क्रोधित होंगे तो उत्तर (राजा) तुझे कोई मदद नहीं करेगा।'

और, शहीद की ओर मुड़कर, उसने कहा: 'हे ईश्वर के पुरुष, आपकी वृद्धावस्था सम्माननीय है, और ईश्वर आपके साथ हैं, जिन पर मैं भी विश्वास करना चाहती हूँ और अपने पापों से मुक्ति पाना चाहती हूँ।'

इसके बाद, जब आग पहले ही बुझ चुकी थी और संत को यातना देने वाले नौकर थक चुके थे, हालांकि शहीद स्वयं अछूते और पूरी तरह से स्वस्थ रहे, राजा ने घोषणा की: 'इस आदमी को यातना देना बंद करो: उसे मेरे सवालों का जवाब देने दो।'

और जब पवित्र शहीद को राजा के पास लाया गया, तो सेवरस ने उससे कहा:

'चारलाम्पीयस, आज सुबह शीघ्र ही स्कैथियन राजा से बात करते समय, मैं क्रोधित हो गया और मैंने आपके प्रति अपमानजनक शब्द कहे; लेकिन, अब इस यातना को सहने के बाद, आप हमारी दृष्टि में सम्मानित बने रहेंगे, बशर्ते आप मेरे द्वारा पूछे गए प्रश्नों का उत्तर दें। आपकी आयु क्या है?'

संत चरालाम्पीयस ने उत्तर दिया:

'मैंने इस क्षणभंगुर जीवन में बहुत समय बिताया है: मैं एक सौ तेरह वर्ष का हूँ।'

सेवरस ने कहा, 'यह कैसे है कि इतने वर्षों तक जीने के बाद भी, आप अभी तक अमर देवताओं को नहीं जानते?' पवित्र शहीद ने उत्तर दिया:

'हे राजा, कई वर्ष जीने के बाद, मैंने महान ज्ञान भी प्राप्त किया है: मसीह – एक सच्चे परमेश्वर – को जानकर, मैं उन पर विश्वास करने लगा हूँ।'

तब राजा ने उससे पूछा कि क्या उसकी कोई पत्नी है या नहीं।

संत ने उत्तर दिया:

'मैंने अपने लिए स्वर्गीय कन्या, अर्थात् मेरे मसीह का राज्य प्राप्त किया है; परन्तु पृथ्वी पर मेरी कोई पत्नी नहीं रही।' तब राजा ने उससे पूछा:

'क्या तुम मृतकों को जीवित कर सकते हो?'

संत ने उत्तर दिया, 'यह मानव शक्ति में नहीं है, बल्कि मसीह की शक्ति में है।'

तब राजा ने आज्ञा दी कि एक आदमी को उसके सामने लाया जाए जो लंबे समय से एक दुष्ट आत्मा के वश में था; पैंतीस वर्षों से शैतान इस आदमी को पीड़ित कर रहा था: उसे नष्ट करने की इच्छा से, दुष्ट आत्मा उस दुर्भाग्यशाली आदमी को रेगिस्तानों और पहाड़ों से होकर ले जाती थी, या उसे झाड़ियों, दलदलों और धरती की दरारों में फेंक देती थी।

जब उस आदमी को संत के पास लाया गया, तो संत की सुगंध को सूंघते ही, वह तुरंत चिल्लाया: 'मैं आपसे विनती करता हूँ, हे ईश्वर के सेवक, उचित समय से पहले मुझे पीड़ा न दें! लेकिन एक शब्द से मुझे निकलने का आदेश दें, और, यदि आप चाहें, तो मैं आपको बताऊँगा कि मैं इस आदमी में कैसे प्रवेश किया था।'

संत ने हाँ कर दी, और शैतान ने निम्नलिखित बातें बताईं: 'इस आदमी ने अपने पड़ोसी को लूटने की इच्छा की, लेकिन उसने अपने आप से कहा: "जब तक मैं पहले उसका वारिस नहीं मार देता, मैं उसकी संपत्ति पर कब्ज़ा नहीं कर पाऊँगा।" और अपने पड़ोसी को मारने के बाद, वह पहले से ही उसकी विरासत पर कब्ज़ा करने की तैयारी कर रहा था; उसे ऐसी हालत में देखकर, मैं उसमें प्रवेश कर गया, और अब मैं पैंतीस साल से उसमें वास कर रहा हूँ।'

तब संत चारलाम्पुस ने शैतान से कहा: 'इस आदमी से निकल जा और उसे और कोई हानि न पहुँचा।'

और तुरंत शैतान उससे निकल गया, और वह ग्रस्त व्यक्ति चंगा हो गया।

इसके बाद, राजा ने उद्घोष कयिा:

'सचमुच, ईसाइयों का ईश्वर महान है!'

तीन दनि बाद, एक युवक की मृत्यु हो गई; राजा ने शव को अपने सामने लाने का आदेश दयिा और संत चारलाम्पास से कहा:

'अपने ईश्वर से प्रार्थना करो कि यह मृतक जीवति हो उठे।'

संत ने प्रार्थना करके मृतक को जीवति कर दयिा, और इस पर बहुत से लोग मसीह में वशि्वास करने लगे; राजा स्वयं भी ऐसे चमत्कारों से चकति रह गया।

उस समय, राजा के दरबार में क्रस्पि नाम का एक एपार्क था; सेवरस के साथ परामर्श में, उसने उससे कहा: 'इस आदमी को पृथ्वी के चेहरे से मटिा दो - वह एक जादूगर है और जादू-टोने के माध्यम से अपने चमत्कार करता है।'

राजा ने क्रस्पि की बातों पर वशि्वास कयिा और शहीद के प्रति अपनी पूर्व सद्भावना को त्यागकर, उससे कहा:

'चारलाम्पीयस, देवताओं को बलदिान चढ़ाओ, और तुम जल्लाद के हाथ से बच जाओगे।'

संत ने उत्तर दयिा:

'ये यातनाएँ मेरे लिए बहुत लाभदायक हैं: जतिना अधकि मेरा शरीर घावों से ढक जाता है, उतनी ही अधकि मेरी आत्मा मेरे भीतर आनंदति होती है।'

तब राजा, क्रोधति होकर, संत के मुँह में पत्थर फेंकने का आदेश दयिा, और उन्हें मारने वाले चल्लिा रहे थे: 'राजा के आगे समर्पण करो, नहीं तो तुम बेवजह मर जाओगे।'

अंत में, राजा ने सैनकिों से कहा: 'जलती मशालें लो और उसकी दाढ़ी में आग लगा दो और उसका चेहरा झुलसा दो।'

और देखो, जब सैनकिों ने संत की दाढ़ी पर मशालें रखीं, तो उसमें से एक बड़ी आग की लपट फूट पड़ी और पास खड़े लोगों पर टूट पड़ी, और उसने सत्तर तक दुष्टों को झुलसा दयिा।

यह देखकर, क्रोध से भरकर सेवेरस ने कहा: 'स्कैथयिन राजा ने मुझसे सच कहा था, कि चरालाम्पुस एक जादूगर है और वह मेरी सेना को भी मेरे खलिाफ करना चाहता है।'

और फरि, अपने कुलीनों की ओर मुड़कर, उन्होंने उनसे पूछा:

'क्या तुम मुझे यह नहीं बताओगे कि यह मसीह कौन है, जसि पर चरालाम्पीयस का वशि्वास है?'

क्रस्पिस ने उत्तर दयिा, 'मसीह मरयिम के पुत्र हैं, जो व्यभचिार से उनका जन्म हुआ था।'

तब अरस्तिार्कस नामक एक व्यक्ति ने क्रस्पिास से कहा:

'अपमान मत करो; तुमने यह रहस्य कहाँ सुना, और तुम्हें कैसे पता कि मरयिम और मसीह कौन थे?'

इस पर क्रस्पिस ने गुस्से में जवाब दयिा:

'क्या तुम मुझसे अधकि बुद्धमिान हो?'

'हाँ, मैं तुमसे ज्यादा जानता हूँ,' अरस्टिार्कस ने जवाब दयिा। फरि राजा सेवरस ने कहा:

'हे दुष्ट पुरुष! क्या तुम मुझसे असहमत होना चाहते हो?'

इस पर, अरस्तिार्खुस ने उत्तर दयिा:

'नहीं, महाराज, मैं न तो आपको और न ही कसिी और को चुनौती देना चाहता हूँ; मैं तो केवल मसीह का बचाव कर रहा हूँ।'

इसके बाद, क्रोध से आग-बबूला राजा ने अपना धनुष उठाया, उसे पीछे खींचा और ऊपर की ओर एक तीर चलाते हुए कहा: 'हे मसीह, यदि तुम स्वर्ग में रहते हो, तो हमारे पास उतर आओ और पृथ्वी पर अपने डेरे डालो; यहाँ मैं तेरे वरिुद्ध युद्ध की तैयारी कर रहा हूँ और मेरे पास तेरे वरिुद्ध उठने के लिए एक बड़ी सेना है; इसलिए, पृथ्वी पर उतर आ और मेरा सामना कर। परन्तु यदि तू नहीं उतरता, तो मैं स्वर्गों को नीचे गरिा दूँगा, सूर्य को बुझा दूँगा, और तुझे अपने हाथों से पकड़ लूँगा।'

जब राजा प्रभु मसीह के वरिुद्ध इतनी हम्मित और नरि्लज्जता से ऐसी धर्मनदिा कर रहा था, तब पृथ्वी काँप उठी, और सभी पर एक महान भय छा गया। प्रभु ने अपने क्रोध में पृथ्वी को ऐसे हलिा दयिा मानो वह एक पत्ता हो; और ऊपर से गरज की भयानक गड़गड़ाहट आई, और बजिली की चमक दखिाई दी, जसिसे वहाँ खड़े सभी लोग भय से लकवाग्रस्त हो गए। तथापि राजा, राज्यपाल क्रस्पिस के साथ, कुछ अदृश्य जंजीरों से बँधे हुए, जमीन से उठाये गए और ऐसा प्रतीत हुआ मानो वे हवा में लटक रहे हों।

तब राजा ने शहीद से पुकारा: 'चारलाम्पीयस, यह सब मेरे पापों के कारण हुआ है, और मैं इस यातना को न्यायसंगत रूप से भुगत रहा हूँ; परन्तु अपने परमेश्वर से प्रार्थना करो कि मैं इस यातना से छुड़ाया जाऊँ - और मैं पूरे नगर में उनके नाम और तुम्हारे नाम का गौरव करूँगा, क्योंकि मैं तुम्हारे मसीह के महान भय से ग्रस्त हूँ।'

उसी क्षण, गलीना नाम की राजा की बेटी उनके पास आई और सेवेरस से कहा: 'मेरे पिता, कोई भी ईश्वर का विरोध नहीं कर सकता: क्योंकि ईसाइयों के लिए वह आशा हैं, लेकिन अधर्मी लोगों के लिए, विनाशकर्ता। उस पर विश्वास करो, और वह तुम्हें सुरक्षित रखेगा और उन अदृश्य बंधनों से मुक्त कर देगा जिनसे तुम अब उससे बँधे हुए हो: जिसने तुम्हें बाँधा है, वह शाश्वत और सर्वशक्तिमान ईश्वर है।"

पवित्र शहीद के सामने सिर झुकाते हुए, धन्य गलीना ने कहा: 'मैं आपसे विनती करती हूँ, हे ईश्वर के सेवक, प्रभु मसीह से प्रार्थना करें और अपनी प्रार्थना के द्वारा, मेरे पिता को इन अदृश्य बंधनों से मुक्त करें।'

और जैसे ही संत चारलाम्पास ने प्रार्थना की, ईश्वर की यह भयानक ताड़ना समाप्त हो गई, और एपार्क के साथ मृत्युदंड से बचे राजा, अपने पैरों पर खड़े हो गए और कहा: 'हे स्वर्ग के स्वामी और पृथ्वी के सृष्टिकर्ता, मुझ पर दया करो! हे प्रभु जो स्वर्ग में वास करते हो, पृथ्वी पर कृपा दृष्टि डालो!'

इसके बाद, राजा, एपार्क और अपने सभी कुलीनों के साथ अपने महल लौट आया और तीन दिनों तक उसे नहीं छोड़ा, और इस पूरे समय ईश्वर के क्रोध और प्रभु की उस भयानक सज़ा के बारे में सोचता रहा जो अभी-अभी हुई थी।

उस समय, राजा की बेटी, गालिना को एक दर्शन हुआ, जिसे उसने संत चरालाम्पीयस को सुनाया: उसने कहा, 'मुझे ऐसा लगा, जैसे मैं किसी अच्छी तरह से सिंचित ग्रामीण इलाके में खड़ी थी; और अचानक मैंने एक बड़ा, बाड़ से घिरा हुआ बगीचा देखा, जिसमें सभी प्रकार के सुगंधित पेड़ लगाए गए थे; और उनके बीच एक सुंदर अंगूर का बगीचा उगा था, और इस बगीचे में एक ऊँचा देवदार का पेड़ खड़ा था, जिसकी जड़ों से एक झरना बह रहा था। इस स्थान के पास एक भयानक रक्षक खड़ा था, जो किसी को भी इस बगीचे में प्रवेश करने की अनुमति नहीं देता था। नज़दीक ही मैंने अपने पिता और एपार्क क्रिस्पस को देखा, जिन्हें इस बगीचे का रक्षक अपनी जलती तलवार से इस स्थान से भगा रहा था। उस क्षण मुझे बहुत डर सता गया और मैं केवल यही प्रार्थना कर सकता था कि यह रक्षक मुझे वहीं रहने दे। फिर उसने मुझसे कहा: 'यहाँ आओ, और मैं तुम्हें अपनी पीठ पर उठा लूंगा (कंधों पर। – *संपादक*) सम्मान के साथ इस बगीचे में ले जाएगा।' और जब मैं देवदार के पेड़ के नीचे, झरने के पास था, तो मैंने किसी को यह कहते सुना: 'यह स्थान तुम्हें और तुम्हारे जैसे लोगों को दिया गया है।' यह वह दर्शन था जो मुझे हुआ था, और अब मैं आपसे विनती करती हूँ, 'मुझे बताएं कि इसका क्या अर्थ है?' गालिना ने अपनी बात समाप्त करते हुए कहा,

तब संत चरालाम्पियोस ने उससे कहा: 'तुम्हारे सपने का अर्थ यह है: पानी की प्रचुरता पवित्र आत्मा के वरदानों का प्रतीक है, जबकि घिरा हुआ बगीचा स्वर्ग का प्रतीक है। अंगूर का बगीचा धर्मी लोगों के स्वर्ग में विश्राम का प्रतीक है, और सुगंधित पेड़ पवित्र स्वर्गदूतों के चेहरों का प्रतीक हैं। ऊँचा देवदारु मसीह के क्रूस की महिमा का प्रतीक है, जबकि झरना शाश्वत जीवन का प्रतीक है, जो क्रूस के माध्यम से मानव जाति को प्रदान किया गया है। और वह रखवाला जिसने तुम्हें अपने कंधों पर उठा लिया, वह प्रभु मसीह हैं, जिन्होंने नब्बे-नौ भेड़ों को पहाड़ों में छोड़कर खोई हुई भेड़ की खोज की और उसे पाकर अपने कंधों पर उठा लिया (लूका 15:4–5)। जहाँ तक तुम्हारे पिता का प्रश्न है, वे एपार्क के साथ मिलकर परमेश्वर के सुवर्ग से निकाल दिए जाएँगे, क्योंकि यद्यपि वे अब परमेश्वर के प्रति कृतज्ञ हैं, परन्तु वे जल्द ही शैतान के जालों में फँसकर एक बार फिर से उसकी अवज्ञा करेंगे।'

वास्तव में, ईश्वर की भयानक सज़ा के तुरंत बाद, राजा सेवरस फिर से भूल में पड़ गया और ईश्वर—जिसकी महान शक्ति को वह अभी-अभी जान पाया था—को त्यागकर मूर्तियों की ओर लौट गया। शहीद को अपने पास बुलाकर, उसने उससे कहा:

'चारलाम्पीयस, मेरी सलाह मानो: देवताओं की पूजा करो, और तुम्हें हमारे बीच बहुत सम्मान मिलेगा।'

संत ने उत्तर दिया:

'ऐसा नहीं हो सकता कि ईश्वर का एक सेवक यातना देने वाले के शब्दों से बहक जाए; सचमुच, हे राजा, आपके शब्द लापरवाह और निरर्थक हैं।'

तब, क्रोध में, सेवरस ने कहा:

'हे पागल, तुम मेरे शब्दों को लापरवाह समझते हो!'

और उसने आदेश दिया कि उसके होठों में एक मछली पकड़ने का काँटा ठोंक दिया जाए और उसे इस तरह पूरे शहर में घुमाया जाए।

लेकिन राजा की बेटी, अपने पिता के पास आकर, बोली: 'पिताजी, आप क्या कर रहे हैं? आप इस धर्मी मनुष्य को क्यों सता रहे हैं? आप स्वयं को शैतान के फंदों में क्यों फंसा रहे हैं और, जो अच्छा है उसे त्यागकर, जो बुरा है उसे क्यों चुन रहे हैं? जीवन को अस्वीकार कर, आप मृत्यु को ही क्यों पसंद कर रहे हैं? आप मसीह के इस सेवक के विरुद्ध एक यातना देने वाले की क्रोधाग्नि से क्यों उठते हैं? मेरी बात सुनिए, पिताजी, और जैसे आप ने एक समय बुराई के लिए यत्न किया था, वैसे ही अब जो कुछ भी भला है, उसके लिए पूरी लगन से यत्न कीजिए; क्योंकि जो बुराई बोता है, वह बुराई ही काटेगा, पर जो आशीष के साथ बोता है, वह भलाई ही काटेगा। 'उस ईश्वर की सज़ा को याद करो जो तुम पर आई थी, जब तुम अदृश्य ज़ंजीरों से बँधे थे और हवा में लटकते हुए, सच्चे ईश्वर की गवाही दी थी; फिर भी अब, उन ज़ंजीरों से मुक्त होकर, तुम उनका त्याग कर रहे हो। इस प्रकार कई शासक, जब प्रभु द्वारा दंडित होते हैं, तो उसकी शक्ति को जान जाते हैं, लेकिन एक बार सज़ा से मुक्त हो जाने पर, वे अपने प्रभु को फिर से भूल जाते हैं।'

यह सुनकर राजा सेवर को जरा भी पछतावा नहीं हुआ, बल्कि वह और भी अधिक क्रोधित हो गया और बोला:

'देवताओं को बलिदान चढ़ाओ, गैलिनो!'

'जो कुछ भी आप चाहें, मैं सब करूँगी, पिताजी,' उसने जवाब दिया।

तब राजा, अत्यंत प्रसन्न होकर, घोषणा करने लगा:

'चरालाम्पीयस को रिहा कर दो, क्योंकि मेरी बेटी देवताओं को बलिदान चढ़ाने के लिए तैयार हो गई है।'

जब पवित्र शहीद को राजा के सामने लाया गया, तो सेवेरस ने उससे कहा: 'देखो, हमारी बेटी गलीना ने तुम्हारे धर्म को त्यागकर हमारा धर्म अपना लिया है और अब देवताओं को बलिदान चढ़ाना चाहती है; चरालाम्पीयस, तुम भी उसके साथ हमारे देवताओं के मंदिर में प्रवेश करो और वैसा ही करो जैसा हम तुमसे चाहते हैं।'

चूंकि चरालाम्पीयस ने कोई जवाब नहीं दिया, राजा ने यह मान लिया कि वह मान गया है।

इस बीच, गैलिनो डायो और अपोलो के मंदिर में गई और वहाँ के पुरोहितों से कहा: 'मैं पश्चाताप करते हुए उन देवताओं से विनती करने आई हूँ, जिन्हें मैंने मसीह में विश्वास करके नाराज़ किया है।'

तथापि पुरोहितों ने पुकारा:

'हे महान देवताओं! हे सर्वशक्तिमान अपोलो! हे स्वर्ग के स्रष्टा और सभी शासकों के राजा, गलीना पर दृष्टि डालो और उत्तर के राजा की खातिर उस पर दया करो!'

धन्य गैलिनो ने, मूर्तिपूजक मंदिर में प्रवेश करते ही, पुरोहितों को अपने पास बुलाया और उनसे पूछा:

'मुझे सबसे पहले किस मूर्ति को गिराना चाहिए – डीईई की मूर्ति, या हरक्यूलिस और अपोलो की?'

'नहीं, गलीना,' पुरोहितों ने उत्तर दिया, 'ऐसी बुराई की साजिश मत रचो, और हमारे उद्धारकों का मज़ाक मत उड़ाओ; क्योंकि अगर वे क्रोधित हो गए, तो वे आकाश को गिरा देंगे और पूरी पृथ्वी को कुचल देंगे।'

तब गालिनो ने दिया की मूर्ति उठाकर उससे कहा:

'अगर तुम देवता हो, तो तुम्हें अब तक यह कैसे पता नहीं चला कि मैं तुम्हें नष्ट करने आई हूँ?'

यह कहकर, गालिनो ने मूर्ति को ज़ोर से ज़मीन पर पटक दिया, और वह तीन टुकड़ों में टूट गई; फिर उसने अपोलो की मूर्ति को पकड़कर उसे भी तोड़ दिया, और कहा:

'पृथ्वी पर गिर जा, हे शैतान, हे कुबड़े बूढ़े, क्योंकि तुम केवल धूल ही हो!'

और उसने सभी मूर्तियों को तोड़ डाला। फिर पुरोहित राजा सेवेरस के पास गए और उससे कहा:

'हे राजा, हमारी आशा समाप्त हो गई है; अब तो सूर्य भी अस्त हो जाएगा, और संसार नष्ट हो जाएगा, क्योंकि हमारे देवता मर चुके हैं।' राजा, चकित होकर, पूछा:

'इन शब्दों का क्या मतलब है?'

'गालिनो, तुम्हारी बेटी, ने हमारे देवताओं को चकनाचूर कर दिया है,' उन्होंने उत्तर दिया।

तब सेवरस ने कहा:

'जाओ और इसी रात मुझे पचास लोहारों को बुलाओ; मूर्तियों को फिर से ठीक करवाओ, उन्हें उनके मंदिर में वापस रख दो, और घोषणा करो कि वे मृतकों में से जी उठे हैं, ठीक वैसे ही जैसे गलील के लोग अपने मसीह के बारे में कहते हैं, कि वह मृतकों में से जी उठा है।'

पुरोहतिों ने यह सब बड़ी सावधानी से कयिा; सुबह, जब वे रानी के सामने उपस्थति हुए, तो उन्होंने उससे कहा:

'मंदरि जाओ और हमारे पुनर्जीवति देवताओं को देखो।'

'क्या देवता पुनर्जीवति हो गए हैं?' गालनिा ने पूछा। 'तो मैं चलती हूँ, और उन्हें देखती हूँ!' पुजारयिों ने कहा:

'सचमुच, यह एक महान चमत्कार है: कल अपमानति और नंदिा कएि गए, वे अब और भी अधकि सम्मान और महमिा के साथ चमक रहे हैं।'

अगली सुबह, धन्य गलीना ने कहा:

'मेरे लएि नए मूर्तयिों को नष्ट करना पुराने मूर्तयिों की तुलना में आसान है।'

और, डयिा की मूर्तकिी ओर मुड़कर, उसने कहा:

'जुपटिर, जो मृतकों में से जी उठा है, मैं तुझे आज्ञा देती हूँ: मृतकों में लौट जा!'

यह कहकर, गैलनिा ने एक बार फरि सभी मूर्तयिों को तोड़ दयिा।

तब पुजारी, क्रोध से भरकर, एक बार फरि अपने देवताओं के वनिाश की सूचना राजा को देने गए।

सेवर ने अपनी बेटी को अपने पास बुलाकर कहा:

'तुमने हमारे देवताओं को क्यों तोड़-फोड़ दयिा?'

गलनिा ने उत्तर दयिा:

'तुम उन्हें अपने देवता केवल इसलएि कहती हो क्योंकि तुम झूठी शक्षिाओं से भ्रमति हो: वे तो नर्जिीव वस्तुएँ मात्र हैं।'

यह सुनकर राजा चल्लिाया:

'देवताओं को बलदिान अर्पति करो, हे दुष्टता की संतान, न कि मेरे वंश को!'

इस पर, धन्य गलीना ने, जैसे अपने पति का मज़ाक उड़ाते हुए, कहा:

'मैंने तो पहले ही उनकी यथासंभव बलि चढ़ा दी है, लेकनि अगर आप चाहें तो मैं आपके बाकी देवताओं के साथ भी यही कर सकती हूँ।'

तब क्रोधति राजा अपनी बेटी को छोड़कर एक बार फरि पवत्रि शहीद चारलाम्पीयस को यातना देने की ओर मुड़ गया: उसने उसे एक वधिवा के उपहास के लएि सौंप दयिा।

जब चरालाम्पीयस वधिवा के घर में प्रवेश कयिा, तो वह वहाँ खड़े एक स्तंभ से सहारा लेकर खड़ा हुआ, और तुरंत ही वह स्तंभ एक वशिाल वृक्ष बन गया, जसिकी शाखाओं ने उस महलिा के पूरे घर को ढक लयिा।

ऐसा चमत्कार देखकर वधिवा भयभीत हो गई और बोली: 'मेरे पास से चले जाओ, चरालाम्पीयस; मैं तुम्हें ग्रहण करने के योग्य नहीं हूँ; मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि तुम या तो मसीह हो, या एक स्वर्गदूत, या एक नबी, या एक प्रेरति; अतः मैं तुमसे वनिती करती हूँ, मेरे पास से चले जाओ: मैं तुम्हें अपनी छत के नीचे आश्रय देने के योग्य नहीं हूँ।'

इस पर पवत्रि शहीद ने उत्तर दयिा: 'हौसला रखो, मेरी बेटी, क्योंकि तू प्रभु की दृष्टि में अनुग्रह पा चुकी है। केवल यह वश्विास रख कि वह *"महान है प्रभु"* और दयालु *"और स्तुति के योग्य"* है (भजन संहति 47:2, 95:4)।'

अगली सुबह, पड़ोसयिों ने एक लंबा, पत्तों से भरा पेड़ देखा, जसिकी छाया वधिवा के घर पर फैली हुई थी, और वे एक-दूसरे से कहने लगे:

'यह कसि प्रकार का चमत्कार है?'

कुछ ने उत्तर दयिा:

'यह इसलएि है क्योंकि संत चारलाम्पयिोस वहाँ हैं: इसीलएि यह स्तंभ एक ऊँटा पेड़ बन गया है।'

घर में प्रवेश करने पर, पड़ोसयिों ने संत को वधिवा के साथ बैठे और उसे उपदेश देते हुए पाया; उन्होंने उससे कहा:

'धन्य है तू, क्योंकि तूने मसीह पर वश्विास कयिा है; धन्य है तू, क्योंकि तेरे पाप क्षमा हुए हैं: क्योंकि प्रभु पश्चाताप करने वालों को स्वीकार करते हैं।'

और वहाँ इकट्ठा हुए लोगों ने उससे कहा:

'तुम हमें यह क्यों नहीं बताते कि क्या तुम सचमुच मसीह हो?'

संत चारलाम्पयिस ने उत्तर दयिा:

'मुझे क्षमा करो, मेरे बच्चों; मैं तुम्हारी दासी और मसीह की दासी हूँ, और मैं यह सब उनके नाम पर करती हूँ।'

तब वधिवा ने धैर्यपूर्वक और ऊँचे स्वर में पुकारा:

'हे चरालाम्पीयो, अविनाशी ज्योति से सदा प्रकाशमान, आनंदति हो[1762] , हे चरालाम्पीयो, अनुग्रह के मार्गदर्शक, आनंदति हो, हे चरालाम्पीयो, सर्वप्रकाशमान दीपक।'

जब वह ये शब्द बोल रही थी, तो उसके पड़ोसी जो उसके पास आए थे, और जिन्होंने पूरे हृदय से मसीह पर विश्वास कर लिया था, संत चारलैम्पियस के सामने घुटनों के बल गिर पड़े, उन्होंने खुले तौर पर मसीह की गवाही दी, और सभी ने उद्धार करने वाले बपतिस्मा को प्राप्त किया।

अगले दिन, राजा ने संत को दरबार में लाने का आदेश दिया; लेकिन जो लोग मसीह में विश्वास करने आए थे, वे राजा के पास पहुँचकर उसे उस चमत्कार के बारे में बताया कि कैसे स्तंभ में अंकुर फूटकर एक बड़ा पेड़ बन गया था।

सेवरस बहुत आश्चर्यचकित हुआ, लेकिन गवर्नर क्रिस्पस ने उससे कहा: 'हे राजा, यदि आप इस जादूगर को तलवार से मारने का आदेश नहीं देते हैं, तो जल्द ही हर कोई उसके चमत्कारों से मोहित हो जाएगा और हमारे देवताओं और हमें छोड़कर उसका अनुसरण करेगा।'

तब राजा ने उस संत को तलवार से सिर कलम करने की सज़ा सुनाई। यह सुनकर, शहीद चारलाम्पीयस ने आनंदपूर्वक दाऊद का यह भजन गाया: *'हे प्रभु, मैं तेरी दया और तेरे न्याय का भजन करूँगा। मैं सत्यनिष्ठा के मार्ग का गायन करूँगा और उसे समझूँगा: 'तुम मेरे पास कब आओगे?'* (भजन संहिता 100:1–2 और भजन के अंत तक)।

जहाँ उन्हें अपना सांसारिक संघर्ष पूरा करना था, उस स्थान पर आनंदपूर्वक पहुँचकर, संत चारलाम्पास ने कहा: 'मैं तुझसे धन्यवाद करता हूँ, हे प्रभु परमेश्वर, कि तू मेरे प्रति इतना दयालु और उदार है; हे यीशु, जिसने शत्रुओं को मार गिराया, नरक पर विजय प्राप्त की और घातक बीमारियों को चंगा किया, हे मेरे प्रभु परमेश्वर, अपने राज्य में मुझको याद रखना।'

जब वह इस प्रकार प्रार्थना कर रहा था, तो स्वर्ग खुल गया, और प्रभु स्वयं पवित्र स्वर्गदूतों की भीड़ के साथ उस शहीद के पास उतरे; उसके सामने एक सुंदर पन्ने का सिंहासन रखा गया, और उस पर विराजमान महिमा के राजा ने संत चारलम्पास से कहा:

'आओ, चरालाम्पीयस, तुमने मेरे लिए इतना कुछ सहा है; मुझसे जो चाहो मांगो, और मैं तुम्हें वह दे दूँगा।' इस पर पवित्र शहीद ने उत्तर दिया:

'हे प्रभु, मेरे लिए यह एक महान दया है कि आपने मुझे अपनी भयानक महिमा को देखने के योग्य समझा है; किन्तु, हे प्रभु, यदि आपकी इच्छा हो, तो अपने नाम की महिमा करें: उस प्रदेश में न तो अकाल हो, न महामारी, और न ही कोई विनाशकारी वायु जो फल नष्ट कर दे, जहाँ मेरे अवशेष विश्राम करेंगे और जहाँ मेरी स्मृति का सम्मान होगा; बल्कि उस स्थान में शांति, समृद्धि और गेहूँ तथा दाखमधु की प्रचुरता बनी रहे; और हे प्रभु, उन लोगों की आत्माओं को बचा; क्योंकि तू स्वयं जानता है कि मनुष्य मांस और रक्त हैं, इसलिए उनके पापों को क्षमा कर और उन्हें पृथ्वी के फलों की प्रचुरता प्रदान कर, ताकि वे तृप्त होकर और अपने श्रम के बीच आनंद लेते हुए, तेरी, अपने परमेश्वर—सभी अच्छी चीजों के दाता—की महिमा करें; और स्वर्ग से गिरने वाली ओस उनके लिए उपचार बन जाए। हे प्रभु, मेरे ईश्वर! सभी पर अपनी कृपा बरसाओ!

संत द्वारा यह प्रार्थना करने के बाद, प्रभु ने कहा:

– 'तू जो माँगा है, वही हो, हे मेरे पराक्रमी योद्धा!'

इसके बाद, प्रभु स्वर्ग में आरोहण कर गए, अपने स्वर्गदूतों से घिरे हुए, और संत चरालाम्पियस की आत्मा उनका अनुसरण करने लगी।

तब योद्धा निकल पड़े और उन्होंने राजा को शहीद पर मिली महिमा की सूचना दी: कि कैसे प्रभु उसे दिखाई दिए, कैसे वह तलवार से मारे बिना ही मर गया, और कैसे उन्होंने उसकी आत्मा को स्वर्ग की ओर उठते हुए देखा। सेवरस इन सब बातों से बहुत चकित हुआ और उसे बहुत डर सताने लगा। धन्य गालिना, राजा की पुत्री, ने उससे शहीद का शरीर माँगा; और, उसे लेकर, उसने उसे शुद्ध कफ़न में लपेटा, सुगंधित तेलों और कीमती मूरा से अभिषिक्त किया, और प्रभु की महिमा करते हुए, उसे एक सुनहरे अवशेष-पात्र में रख दिया। राजा अपनी बेटी को न्याय या दंड देने से डरता था; यह देखकर कि प्रभु उसके साथ रहते थे, उसने उसे अपनी इच्छानुसार ईसाई भक्ति में जीने दिया।

[1762] चरालाम्पीयस, ग्रीक से अनुवादित, का अर्थ है 'आनंद से प्रकाशमान'।

यह अजेय और अडगि महान शहीद चारलाम्पीयस, जो अब संपूर्ण जगत के लिए मध्यस्थता करते हैं, ने फरवरी महीने की दसवीं तारीख को कष्ट सहे[1763] ; परमेश्वर के सिंहासन के दाहिने हाथ में खड़े होकर, वह हमारे लिए हमारे प्रभु यीशु मसीह से अविरिम प्रार्थना करते हैं; महिमा और प्रभुत्व उसी का हो, अब और सदा और युगानुयुग, आमीन।

कॉन्टाकियन, स्वर 8:

हे महिमामय, पुरोहितत्व की कृपा प्राप्त करके, आपने अपनी दिव्य पीड़ा के द्वारा चर्च को तेज से सुशोभित किया, जिसे आपने मसीह के लिए वीरतापूर्वक स्वीकार किया, आनंदित होकर, हे चरालाम्पीयस, संपूर्ण संसार के सम्माननीय दीपक; हे अजेय, पृथ्वी के छोरों पर प्रकाशित हो।

गुफाओं के चमत्कार करने वाले, पूजनीय प्रोखोरस का जीवन।

10 फरवरी को स्मरणोत्सव

प्रभु, जो उदारता और दया से परिपूर्ण हैं, अक्सर लोगों पर कष्ट भेजते हैं, ताकि ऐसे अनुशासन के माध्यम से वे उन्हें सत्य की ओर ले जा सकें और उन्हें अच्छे कर्मों की ओर आकर्षित कर सकें। भले ही वे लोगों को यातना सहने और कष्ट झेलने देते हैं, वे उन पर दया दिखाने और उनके घावों को चंगा करने में देरी नहीं करते – जैसा कि हम इस पूजनीय प्रोखोरस के जीवन से देखते हैं।

[1764]स्वेतोपोलक इज्यास्लावित्च[1765] के शासनकाल में, कीव के लोगों ने इस राजकुमार के हाथों बहुत हिंसा सहनी पड़ी, जिसने अपने ही घर में बिना कारण कुलीनों को मार डाला और उनकी संपत्ति पर कब्ज़ा कर लिया; इसीलिए प्रभु ने उस समय रूस के दुश्मनों को इतनी ताकत हासिल करने की अनुमति दी: पोलोवत्सियों की बड़ी सेनाएँ स्वेतोपोलक के खिलाफ उठ खड़ी हुईं[1766] ; इसके अलावा, राजकुमारों के बीच गृहयुद्ध छिड़ गया, और फिर रूस की भूमि पर एक बड़ी अकाल और गरीबी आ पड़ी। इस समय, धन्य प्रोकहोर स्मोलेंस्क से पेचेरस्क मठ आए, जहाँ उन्होंने मठाध्यक्ष जॉन से भेंट की और उनसे मठवासी संन्यास की शपथ ग्रहण की। मठ में, उन्होंने स्वयं को सद्गुणों के अभ्यास में पूरी लगन से समर्पित कर दिया और इतनी कठोर तपस्या की कि वे साधारण रोटी खाने से भी इनकार कर देते थे; वे क्वैकिंग ग्रास (एक प्रकार का जंगली घास) इकट्ठा करते और उसे अपने हाथों से रगड़कर उससे अपनी जीविका चलाने के लिए रोटी बनाते थे। गर्मियों में वह इस रोटी को पूरे साल के लिए पर्याप्त मात्रा में तैयार कर लेते थे, और जब फिर से गर्मी आती, तो वह अगले साल के लिए भी यही करते थे, ताकि उन्हें रोटी की बिल्कुल भी ज़रूरत न पड़े; इसी कारण से उन्हें 'क्वलिवॉर्ट-ईटर' ('क्वलिवॉर्ट खाने वाला') उपनाम दिया गया था; प्रोस्फोरा के अलावा, वह कुछ और नहीं खाता था; वह सब्जियां भी नहीं खाता था, बल्कि केवल लैम्ब्स क्वार्टर्स खाता था, और पानी के अलावा कुछ नहीं पीता था। हालाँकि, प्रभु ने संन्यासी के इतने बड़े संयम में धैर्य देखकर, उसके लिए बथुए से बनी रोटी की कड़वाहट को एक सुखद आनंद में बदल दिया, और ईश्वर के इस सेवक ने अपने जीवन के सभी दिन दुख और अभाव में नहीं, बल्कि आनंद में बिताए: धन्य प्रोकोरस कभी दुखी नहीं हुए, बल्कि हमेशा प्रभु के लिए प्रसन्नता से काम करते थे। वह कभी भी शत्रु के आक्रमणों से नहीं डरता था, क्योंकि वह एक पक्षी की तरह रहता था, जिसके पास लैंब्स क्वार्टर्स के सिवा और कुछ भी नहीं था। वह सुसमाचार के उस धनी मनुष्य की तरह घमंड नहीं कर सकता था: *'आत्मन्! तेरे पास बहुत से अच्छे वस्तुएँ कई सालों के लिए जमा हैं: आराम कर, खा, पी और आनंद कर'* (लूका 12:19); फिर भी, उसने साल भर के लिए इकट्ठा की गई घास के लिए भी खुद को फटकारा, यह कहते हुए: 'प्रोखोरस, *"इसी रात तेरी जान ले ली जाएगी; तब तू जो कुछ तैयार कर रखा है, वह किसका होगा?"*' (लूका 12:20)। संत ने वास्तव में प्रभु के इस वचन को पूरा किया: *'आकाश के पक्षियों को देखो: वे न बोते हैं, न काटते हैं, और न कोठारों में इकट्ठा करते हैं; और तुम्हारा स्वर्गीय पिता उन्हें खिलाता है'* (मत्ती 6:26)। पक्षियों की

[1763] संत चरालाम्पीयस, पवित्र शहीद, का निधन वर्ष 202 में हुआ।

[1764] 1089 और 1108 के बीच, इस दौरान जॉन कीव केव्स मठ के मठाधीश थे।

[1765] वह 1093 से 1113 तक शासन किया।

[1766] पोलोव्त्सी तुर्की मूल के एक जंगली, खानाबदोश लोग थे, जो 11वीं शताब्दी के दूसरे भाग से कैस्पियन घास के मैदानों के पार से दक्षिणी रूसी घास के मैदानों में आए और उन्होंने दक्षिणी रूसी रियासतों पर बार-बार और विनाशकारी छापे मारे।

तरह, धन्य प्रोकोरस उस स्थान तक आसानी से पैदल चले जाते जहाँ लैम्ब्स क्वार्टर्स उगता था, और वहाँ से उसे अपने कंधों पर, मानो पंखों पर उड़ते हुए, मठ तक ले जाते थे। इस प्रकार वह, हवा के पक्षी की तरह, बिना जोती गई भूमि से उगे अनाज पर अपना भोजन करता था। उस समय, रस में, निरंतर युद्ध के कारण एक बड़ी अकाल पड़ गई थी, जिससे लोगों के जीवन को मृत्यु का खतरा था।

लेकिन प्रभु, अपने संत को महिमामय बनाना चाहते हुए और लोगों को मृत्यु से बचाना चाहते हुए, ने उस वर्ष भेड़-पालक की फसल को आशीर्वाद दिया, और यह पिछले वर्षों की तुलना में अधिक प्रचुर मात्रा में उगी। तब धन्य प्रोकोरस ने और भी अधिक परिश्रम करना शुरू कर दिया । इस जड़ी-बूटी को अथक रूप से इकट्ठा करते हुए, वह इसके बीजों को अपने हाथों से पीसता और इस आटे से रोटी बनाकर, उसे गरीबों और भूख से मर रहे लोगों में बाँट देता था।

कुछ लोगों ने, जब देखा कि संत प्रोकोरस लैम्ब्स क्वार्टर्स कैसे इकट्ठा करते थे, तो वे भी अकाल के दौरान अपना जीवन यापन करने के लिए इसे इकट्ठा करने लगे, लेकिन उन्हें यह रोटी खाने के लिए बहुत कड़वी लगी। तब सभी ज़रूरतमंद लोग धन्य प्रोकोरस के पास आने लगे; संत ने किसी को भी लैम्ब्स क्वार्टर्स से बनी अपनी रोटी देने से इनकार नहीं किया। और सभी को इस रोटी का स्वाद सुखद लगता था, मानो उसमें शहद मिलाया गया हो। इस प्रकार, लोगों ने गेहूं से बनी रोटी की तुलना में धन्य प्रोकोरस द्वारा जलकुंडली से बनी रोटी को अधिक पसंद किया। और फिर भी, जो बात विशेष रूप से अद्भुत थी, वह यह थी: यह रोटी केवल तब ही शुद्ध और मीठी लगती थी जब इसे धन्य प्रोकोरस अपनी कृपा से देते थे; लेकिन अगर कोई इसे संत की कृपा के बिना लेता, तो यह मिट्टी की तरह काली और कड़वी जड़ी-बूटी की तरह कड़वी लगती थी। तो भाइयों में से एक ने संत की रोटी में से कुछ चुपके से, बिना आशीर्वाद के ले ली और उसे खाने लगा। लेकिन उसके हाथों में वह मिट्टी की तरह हो गई और इतनी कड़वी थी कि उसे खाना असंभव था। और यह कई बार हुआ। लेकिन यह भिक्षु धन्य संत के सामने अपना पाप स्वीकार करने और उनसे आशीर्वादित रोटी मांगने के लिए बहुत शर्मिंदा था। हालाँकि, लंबे समय तक बहुत भूख सहने के बाद, वह अब और सहन नहीं कर सका और, अपनी आँखों के सामने निश्चित मृत्यु को देखते हुए, वह मठाधीश जॉन के पास गया और, जो कुछ भी हुआ था वह सब बताकर, उनसे क्षमा याचना करने लगा। एबॉट को इस पर विश्वास नहीं हुआ, इसलिए उन्होंने एक दूसरे भाई को चुपके से संत प्रोकोरस से कुछ रोटी लेने का आदेश दिया ताकि यह पता लगाया जा सके कि यह सच था या नहीं। जब रोटी लाई गई, तो यह पुष्टि हो गई कि पिहले भाई ने जो कहा था वह सच था: उसकी कड़वाहट के कारण कोई भी उसे खा नहीं सकता था। उस रोटी को अपने पास रखकर, मठाधीश ने संत से एक बार फिर उनके आशीर्वाद से रोटी माँगने के लिए किसी को भेजा; 'और जब तुम उनसे विदा लो,' उन्होंने कहा, 'तो एक और रोटी चुपके से ले लेना।' इन रोटी लाए जाने के बाद, जो चोरी-छिपे ली गई थी, वह उनकी आँखों के सामने ही बदल गई और मिट्टी की तरह काली तथा कड़वी जड़ी-बूटी की तरह हो गई, बिल्कुल पहली रोटी की तरह; जबकि संत प्रोखोरस के आशीर्वाद से ली गई रोटी शुद्ध और शहद की तरह मीठी साबित हुई। इस चमत्कार के परिणामस्वरूप, धन्य प्रोखोरस दूर-दूर तक प्रसिद्ध हो गए और कई लोगों को भोजन कराकर उन्हें बहुत लाभ पहुँचाया। उस समय, कीव के राजकुमार स्वियातोपोलक इज़्यास्लावचि, व्लादिमीर-वोल्हिनिया के राजकुमार डेविड इगोरविच के साथ एक गृहयुद्ध में शामिल हो गए। उन्होंने प्रिंस वासिलको रोस्टिस्लावचि को ट्रेबोव्लिया में अंधा करने के मामले को लेकर उनसे टकराव किया, जिन्हें प्रिंस स्वियातोपोलक ने डेविड इगोरविच के उकसावे पर अंधा करने का आदेश दिया था। इसी समय, स्वियातोपोलक इज़्यास्लावकि ने वासिलको के भाई और पेरेमेश्ल् के राजकुमार व्लादिमीर रोस्टिस्लावकि के साथ, और यहाँ तक कि स्वयं वासिलको के साथ भी एक गृहयुद्ध शुरू कर दिया – यह सब उनके पिता इज़्यास्लाव की भूमि के लिए था, जिसे रोस्टिस्लावकिों ने जब्त कर लिया था[1767] ।

राजकुमार स्वियातोपोलक ने डेविड को पोलिश लोगों के पास भगा दिया और डेविड के शहर व्लादिमीर में अपने बेटे म्स्तिस्लाव को स्थापित करने के बाद, स्वयं अपनी मुहिम से कीव लौट आए। लेकिन वह व्लादिमीर को वश में करने में असमर्थ रहे, और वासिल्को ने अपने दूसरे बेटे यारोस्लाव को उग्रियों के साथ उनके खिलाफ भेज दिया। इस महान सामाजिक उथल-पुथल और कानूनहीन लूटपाट के दौरान, हालिच और पेरेमिश्ल के व्यापारियों को कीव से होकर गुज़रने से रोक दिया गया; परिणामस्वरूप, लगभग पूरे दक्षिणी रूसी क्षेत्र में नमक खत्म हो गया, और लोगों पर एक बड़ी विपत्ति आई।

[1767] यह सब 1099 में हुआ था

इस विपत्ति को देखकर, धन्य प्रोखोरस ने सभी कोठड़ियों से बड़ी मात्रा में राख इकट्ठा करके अपनी कोठड़ी में रख ली और प्रभु से प्रार्थना करने के बाद, नमक की आवश्यकता वाले सभी लोगों को बाँटना शुरू कर दिया: संत की प्रार्थनाओं के द्वारा, यह शुद्ध नमक निकल आया। और जितना उदारता से उन्होंने इसे बांटा, उतना ही यह बढ़ता गया; यह न केवल मठ के लिए, बल्कि आम लोगों के लिए भी पर्याप्त से अधिक था, जो बड़ी संख्या में धन्य प्रोखोरस के पास अपने लिए कुछ लेने आए। और इन सब के लिए, धन्य प्रोकोरस ने बदले में कुछ भी नहीं लिया: उन्होंने अपना नमक सभी को मुफ्त में दिया, जितना भी कोई माँगता, ताकि अक्सर यह देखा जा सकता था कि बाज़ार खाली था, जबकि संत का मठ नमक प्राप्त करने आए लोगों से भरा रहता था।

उस समय, शैतान ने उन लोगों के बीच प्रोखोरस के प्रति बहुत नफ़रत पैदा कर दी जो बाज़ार में नमक बेचते थे और अब अपना अपेक्षित मुनाफ़ा कमाने में असफल हो रहे थे। उन्होंने सोचा था कि उन दिनों वे नमक से अपार संपत्ति जमा करेंगे, लेकिन वे बुरी तरह से चूक गए, क्योंकि जो वस्तु उन्होंने शुरू में ऊँचे दाम पर बेची थी, उसे बाद में कोई तुच्छ मूल्य पर भी नहीं खरीद रहा था। एकत्रित होकर, सभी नमक के व्यापारी राजकुमार स्वयितोपोलक के पास गए और उस धन्य व्यक्ति पर इस प्रकार निंदा करने लगे: 'पेचेर्स्क मठ के भिक्षु प्रखोर ने हमें महान धन से वंचित कर दिया है, क्योंकि उसने सभी को नमक खरीदने के लिए अपनी ओर आकर्षित कर लिया है, जबकि हम, जो आपको कर देते हैं, अपना नमक नहीं बेच पा रहे हैं, और इस प्रकार बर्बाद हो गए हैं।'

उनकी बात सुनने के बाद, राजकुमार ने यह निश्चय किया कि वह व्यापारियों के बीच की शिकायत को समाप्त करेगा और साथ ही अपने लिए धन भी प्राप्त करेगा। उसने अपने सलाहकारों के साथ मिलकर नमक की कीमत बढ़ाने का निर्णय लिया ताकि, प्रोखोर से नमक छीनकर, वह उसे अपने नौकरों के माध्यम से खुद बेच सके। राजकुमार ने इन विश्वासघाती नौकरों से कहा: 'तुम्हारे लिए, मैं भी इस भिक्षु को लूटूँगा।'

व्यापारियों के हित में काम करने का दिखावा करते हुए, वह केवल व्यक्तिगत लाभ के बारे में ही सोचता था; फिर भी, ईर्ष्या से प्रेरित होकर, वह केवल उन्हें नुकसान पहुँचाना चाहता था: क्योंकि ईर्ष्या दूसरों के लिए लाभदायक चीज़ को सहन नहीं कर सकती।

तो स्व्यातोपोलक ने प्रोखोर से सारा नमक जब्त करने के लिए आदमी भेजे। और जब उसे लाया गया, तो वह स्वयं उसे देखने गया, उन उपद्रवियों के साथ जिन्होंने उस धन्य पुरुष की बदनामी की थी। और वहाँ सभी ने देखा कि उनकी आँखों के सामने जो था वह धूल थी। फिर राजकुमार ने कुछ लोगों को इस नमक का स्वाद चखने का आदेश दिया, लेकिन स्वाद में भी वह धूल ही निकली। और वे सभी इस परिवर्तन को देखकर चकित और हैरान रह गए।

तब राजकुमार, यह निश्चित रूप से जानने की इच्छा से कि यह सारा चमत्कार कैसे समाप्त होगा, ने आदेश दिया कि इस धूल को तीन दिनों तक रखा जाए। इस बीच, लोगों की भीड़ संत प्रोकोरस के पास से नमक लेने आई, लेकिन इसकी लूट के बारे में पता चलने पर, वे खाली हाथ लौट गए, और इस काम को करने वाले को कोसने लगे।

लेकिन धन्य प्रोकोरस ने उनसे कहा: 'जब राजकुमार इस नमक को फेंक दे, तो जाकर इसे खुद इकट्ठा कर लेना।'

वास्तव में, राजकुमार ने इस नमक को तीन दिनों तक अपने पास रखा और उसमें केवल धूल के सिवा कुछ भी न देखकर, उसे फेंक देने का आदेश दिया। लेकिन जब उसे बाहर गिराया गया, तो वह फिर से नमक बन गया। जब नागरिकों को इस बात का पता चला, तो वे उस स्थान पर उमड़ पड़े और खुशी-खुशी नमक इकट्ठा करने लगे। जब यह अद्भुत चमत्कार हुआ, तो वह राजकुमार, जिसने संत को इतना दुख पहुँचाया था, भय से भर गया। वह इस चमत्कार को छिपा नहीं सका, क्योंकि यह पूरे शहर के सामने हुआ था, और इसलिए उसने यह पता लगाने की कोशिश की कि इसका क्या मतलब हो सकता है। तब उन्होंने उसे वह सब कुछ बताया जो धन्य प्रोकोरस ने किया था - न केवल धूल से बने नमक के बारे में, बल्कि भेड़ के साग से बने रोटी के बारे में भी, जिससे उसने इतनी बड़ी भीड़ को खिलाया था, और कैसे ये रोटी उस धन्य व्यक्ति के हाथों से उसकी आशीर्वाद से लेने पर मीठी हो जाती थीं, और कैसे, इसके विपरीत, जब कोई उन्हें चोरी-छिपे लेता तो वे कड़वे लगते थे।

यह सब सुनकर राजकुमार स्वयितोपोलक को अपने कृत्यों पर शर्म आई; वह पेचेर्स्क मठ गया और मठाध्यक्ष जॉन के साथ सुलह कर ली। हालाँकि, इससे पहले उसने उसकी अतृप्त लालच और लोगों पर अत्याचार की निंदा करने के

कारण उससे शत्रुता रखी थी। इसके लिए उसने तुरोव में जॉन को कैद भी कर दिया था[1768] , लेकिन मसीह-प्रेमी राजकुमार व्लादिमीर मोनोमाख के हस्तक्षेप के डर से, उसने जल्द ही उसे सम्मानपूर्वक पेचेरस्क मठ में वापस भेज दिया।

इस चमत्कार के बाद, स्वियातोपोलक ने परमेश्वर की परम पवित्र माता और गुफाओं के पूजनीय संतों एंथनी और थियोडोसियस के प्रति गहरी भक्ति विकसित कर ली; जहाँ तक धन्य प्रोकोरस का प्रश्न है, वह उसे परम सम्मान देता था और उसे ईश्वर के एक सच्चे सेवक के रूप में मानकर उसका सम्मान करता था: उसने उसे अपना वचन दिया कि वह किसी को भी और कोई हानि नहीं पहुँचाएगा; उसने इस वादे की पुष्टि निम्नलिखित समझौते से और की: 'यदि ईश्वर की इच्छा से, मैं तुमसे पहले मर जाऊँ, तो मुझे अपनी ताबूत में अपने हाथों से लिटा देना, ताकि यह दिखाया जा सके कि मेरे प्रति तुम्हारी कोई दुर्भावना नहीं है; लेकिन यदि तुम मुझसे पहले परलोक सिधार जाओ, तो मैं तुम्हारी ताबूत अपने कंधों पर उठा लूंगा और तुम्हें स्वयं गुफा में ले जाऊँगा, ताकि मैं प्रभु से तुम्हारे प्रति अपने घोर पाप के लिए क्षमा प्राप्त कर सकूँ।'

यह समझौता करने के बाद, धन्य प्रोकोरस कई वर्षों तक परमेश्वर को प्रसन्न करने वाला जीवन जिए—जो निर्दोष और कष्टों से भरा था—और फिर बीमार पड़ गए। इस बीच, राजकुमार पोलोव्त्सीयों के खिलाफ एक अभियान पर निकल पड़ा था। तब धन्य प्रोकोरस ने राजकुमार को संदेश भेजा कि उसकी मृत्यु का समय नजदीक आ गया है।

'यदि तुम अपना वादा पूरा करना चाहते हो,' उन्होंने घोषणा की, 'और ईश्वर से अपने पापों की क्षमा प्राप्त करना चाहते हो, तो मेरे पास आओ, और हम एक-दूसरे को क्षमा करेंगे, और तुम मुझे अपनी कफ़न में अपने हाथों से रखोगे। इसलिए मैं आपके आने का इंतजार कर रहा हूँ। लेकिन अगर आप देरी करेंगे और मैं आपके बिना ही चल बसूँ, तो दोष मेरा नहीं होगा, और आपका संघर्ष आपके लिए वैसा ही समाप्त हो जाएगा जैसा कि मेरे पास आने पर समाप्त हो जाता।"

यह सुनकर, स्व्यातोपोलक अपनी सेना को पीछे छोड़कर, तुरंत ही बीमार प्रोकहोर के पास चल पड़ा। उस धन्य व्यक्ति ने राजकुमार को दान-पुण्य, अंतिम न्याय, शाश्वत जीवन और अनंत यातनाओं के बारे में विस्तार से उपदेश दिया; उसने उसे पापों से मुक्ति और अपना आशीर्वाद दिया, और राजकुमार के आसपास मौजूद सभी लोगों से विदा ली; और फिर, स्वर्ग की ओर अपने हाथ उठाकर, उन्होंने अपनी आत्मा ईश्वर के हाथों में सौंप दी। राजकुमार स्वियातोपोलक ने भिक्षुओं के साथ मिलकर उस पूजनीय की देह को उठाया, उसे एक गुफा तक ले गए और उसे अपनी ही हाथों से ताबूत में रख दिया।

इसके बाद, वह एक अभियान पर निकले और पोलोवत्सियाई लोगों पर पूर्ण विजय प्राप्त की; उन्होंने पोलोवत्सियाई क्षेत्र के लगभग सभी निवासियों को बंदी बना लिया और उन्हें अपनी भूमि पर ले आए। रूसी भूमि को ईश्वर द्वारा प्रदान की गई यह विजय, उस प्रार्थना करने वाले व्यक्ति - आदरणीय प्रोखोरस - की भविष्यवाणी के अनुसार जीती गई थी, जिन्होंने इसके लिए मध्यस्थता की थी। उस समय से, राजकुमार स्वियातोपोलक, जब भी वह अपने दुश्मनों के खिलाफ युद्ध में जाता या शिकार के लिए निकलता, तो हमेशा आशीर्वाद लेने के लिए पेचेरस्क मठ में रुकता और वहाँ, पवित्र सृष्टि के चर्च में, वह परम पवित्र परमेश्वर की माता की चमत्कारी प्रतिमा की पूजा करते और परम पूजनीय थियोडोरस और प्रोखोरस के समाधियों पर बड़ी भक्ति और कृतज्ञता के साथ श्रद्धांजलि अर्पित करते, और तभी वह अपने अभियान पर निकलते।

और इसके बाद, कई क्रूर परीक्षाओं के बाद, धन्य प्रोखोरस की प्रार्थनाओं के माध्यम से ईश्वर का आशीर्वाद प्राप्त करने के पश्चात्, स्वियातोपोलक का शासन सुखद रूप से चलने लगा। स्वयं मसीह-प्रेमी राजकुमार स्वियातोपोलक इज्यास्लावित्च ने, एक गवाह के रूप में, इस ईश्वर-पुरुष के सभी चमत्कारों और संकेतों को सभी के सामने खुले तौर पर स्वीकार किया।

गुफाओं के चमत्कार करने वाले, आदरणीय प्रोखोरस की पवित्र प्रार्थनाओं के द्वारा, प्रभु मसीह हमें सभी आपदाओं और बुरी परिस्थितियों से अभी भी बचाएँ; क्योंकि उसी को, उनके अनंतकालिक पिता और उनके परम पवित्र, शुभ और जीवन-दायक आत्मा के साथ, सारी महिमा हो, अब और हमेशा और युगों-युगों तक।

संत एन्नाफा, वैलेंटीना और पावला की स्मृति

10 फरवरी को स्मरणोत्सव

[1768] यह लगभग 1107 का समय था। सेंट प्रोकोरस के अवशेष अब सेंट एंथनी की गुफा में हैं।

पवत्रि शहीदों एन्नाफा, वैलेंटीना और पाउला ने फलिस्तिीन प्रांत के राज्यपाल फर्मलियिन के हाथों शहादत प्राप्त की। संत एन्नाफा गाजा[1769] की थीं, जबकि संत वैलेंटीना केसरिया शहर[1770] के आसपास की थीं। दोनों कुंवारी थीं। संत एन्नाफा को सबसे पहले फर्मलियिन के सामने मुकदमे के लिए लाया गया। अपनी पूछताछ के दौरान, उन्होंने बहादुरी से खुद को एक ईसाई घोषति कयिा, और इसके लिए, गवर्नर के आदेश पर, उन्हें पहले क्रूरता से पीटा गया, फरि एक स्तंभ से बांध दयिा गया और एक आरी से उनके शरीर को खुरच दयिा गया। इसके बाद, संत वैलेंटीना को फर्मलियिन के सामने लाया गया। उन पर मूर्तपिूजक देवताओं का अपमान करने का आरोप लगाया गया, और राज्यपाल ने उन्हें मूर्तयिों को बलदिान चढ़ाने का आदेश दयिा। इस उद्देश्य के लिए, उन्हें अदालत से कुछ दूर स्थति एक मूर्तपिूजक मंदरि में ले जाया गया। लेकनि जब संत को मंदरि में लाया गया, तो मूर्तयिों को बलदिान चढ़ाने के बजाय, उसने साहसपूर्वक वेदी पर एक पत्थर फेंका और उस पर जल रही आग से मुंह मोड़ लयिा। तब फर्मलियिन क्रोध से आग-बबूला हो गया और उसने आदेश दयिा कि उसकी पसलयिों पर नर्दियता से लाठयिाँ मारी जाएँ, और फरि उसे और संत एनाफा को तलवार से सरि कलम करने की सज़ा सुनाई। यह सब होने के बाद, संत पाउला को यातना देने के लिए बाहर लाया गया। राज्यपाल के आदेश पर, उसे तरह-तरह की यातनाएँ दी गईं, लेकनि मसीह की कृपा की मदद से, उसने बड़ी हम्मित से अपनी पीड़ा को सहन कयिा, और यातना देने वाले ने आदेश दयिा कि उसकी गर्दन तलवार से काट दी जाए। अपने नष्पिादन से पहले, उन्होंने ईश्वर का धन्यवाद कयिा और नष्पिादन में उपस्थति ईसाइयों को प्रणाम कयिा, फरि तलवार के नीचे अपना सरि झुकाया और इस प्रकार अपनी आत्मा ईश्वर को सौंप दी[1771] ।

24 फरवरी

11 फरवरी (पुराने कैलेंडर के अनुसार)

सेबास्टे के बशिप संत ब्लासयिस और उनके साथ पीड़ा सहने वालों का जीवन और शहादत

11 फरवरी को स्मरणोत्सव

उन प्राचीन समयों में, जब अधर्मी मूर्तयिों की पूजा करते थे और बहुत से लोग अपने हाथों के बनाए हुए की उपासना करते थे, तब कई संतों का वश्विास प्रकाशति हुआ, और उनमें पवत्रि और महमिामय शहीद ब्लासयिस की धार्मकिता फलती-फूलती रही। यह संत, हर बुराई से दूर रहकर, अपना पूरा जीवन नम्रता और धार्मकिता से जिए, जो परमेश्वर को भाता और नर्दिोष था। उनके सह-नागरकि - काप्पाडोसयिा में स्थति सेबास्टे शहर के नविासी[1772] - धर्मपरायण लोग थे जो चाहते थे कि ब्लाइस को उनका बशिप नयिुक्त कयिा जाए, और उनकी इच्छा पूरी हुई। नए चरवाहे ने उत्साहपूर्वक मसीह के झुंड की देखभाल की, उस समय जब मसीह की कलीसयिा के खलिाफ बार-बार उत्पीड़न हो रहे थे, और कई लोगों ने दुख सहने के बाद शहीद का मुकुट प्राप्त कयिा। उस समय, डायोक्लेटयिन[1773] के शासनकाल में, पवत्रि महा शहीद यूस्ट्राटयिस, जो पाँच शहीदों में से एक थे, ने अपने साथयिों[1774] के साथ मलिकर एक महान कार्य कयिा; वह मसीह के

[1769] गाज़ा भूमध्य सागर के तट पर स्थति है; प्राचीन काल में यह पाँच सबसे प्रसद्धि फ़लिस्तिीनी शहरों में से एक था और फ़लिस्तिीन में कनानी लोगों की दक्षणिी सीमा के रूप में कार्य करता था। 4वीं शताब्दी से ही गाज़ा एक ईसाई शहर था, और 7वीं शताब्दी में इस पर मुसलमानों ने वजिय प्राप्त की। वर्तमान में, एक समय के प्रसद्धि गाज़ा के केवल खंडहर ही बचे हैं, जसिके पास उसी नाम का एक नया शहर है - जो फ़लिस्तिीन के काफी फलते-फूलते शहरों में से एक है।

[1770] केसरिया फ़लिस्तिीन में भूमध्यसागरीय तट पर स्थति एक बड़ा शहर है, जहाँ रोमन प्रोकोरेटर्स - रोमन साम्राज्यकि प्राधकिरण के प्रतनिधिि - रहते थे। आज, केसरिया के अवशेष केवल खंडहर हैं जो जंगली वनस्पतयिों से ढके हुए हैं।

[1771] इसे 308 में मैक्समियिन II गैलेरयिस के अधीन नष्ट कर दयिा गया था।

[1772] कैपाडोसयिा एशयिा माइनर के पूर्वी हस्सि में एक बड़ा क्षेत्र है। सेबास्टे, इस क्षेत्र के उत्तर-पूर्वी भाग में, लघु आर्मेनयिा की सीमा पर कैपाडोसयिा में स्थति एक शहर है।

[1773] उन्होंने 284 से 305 तक शासन कयिा।

[1774] चर्च 3 दसिंबर को उनकी स्मृति मनाता है।

वशि्वास के लिए अपना रक्त बहाने तक दृढ़ रहे और इसलिए उन्हें कैद कर लिया गया। वहाँ, संत व्लासीयस ने जेलर को सोने की एक बड़ी राशि की रशि्वत देकर रात में उनसे मुलाकात की। ब्लासियिस ने मसीह के शहीद को सांत्वना दी, जिसने इतनी बहादुरी से अपने कष्टों को सहन किया। यूस्ट्रैटियिस ने ब्लासियिस को अपनी मृत्यु से पहले तैयार की गई अपनी अंतिम वसीयत दी, जिसमें उसने अपने शरीर और अपनी संपत्ति के संबंध में प्रावधान किए, जैसा कि उनकी जीवनी में वर्णित है। संत व्लासियिस अपने उत्पीड़कों से छिप गए, जैसा कि उस समय कई अन्य संत भी करते थे, और ईश्वर की विशेष अनुमति के बिना यातनाओं का सामना करने से इनकार कर दिया; उस समय शहर में बहुत कम ईसाई रहते थे, और वे भी गुप्त रूप से मसीह की पूजा करते थे; अधिकांश लोग, यातनाओं के डर से, रेगिस्तानों, पहाड़ों और गुफाओं में भाग गए; जबकि कुछ लोग, यातनाओं को सहन न कर पाकर, अस्थायी रूप से मूर्तियों की पूजा करने लगे। इस प्रकार, संत ब्लासियिस ने न केवल डियोक्लेटियिन के शासनकाल में बल्कि लिकिनियिस के शासनकाल में भी[1775] (इसी सम्राट के अधीन उन्होंने यातनाएं झेलीं), भयानक उत्पीड़न से एक सुनसान पहाड़, आर्जियोस[1776] , में छिपकर अपना जीवन व्यतीत किया; वहाँ वे एक गुफा में रहे और मौन व उपवास में तपस्या करते हुए ईश्वर से अखंड प्रार्थनाएँ करते रहे। जंगली जानवर उनके पास आते थे, और यदि वे संत को मौन प्रार्थना में, ईश्वर से संवाद करते हुए पाते, तो वे, मानो बुद्धिमान प्राणी हों, उनकी ईश्वर में एकाग्रता में बाधा नहीं डालते थे, बल्कि गुफा के सामने खड़े हो जाते, और तब तक प्रतीक्षा करते जब तक कि संत अपनी प्रार्थना समाप्त करके उनके पास नहीं आ जाते, और संत के बाहर आकर उन पर हाथ रखने और उन्हें आशीर्वाद देने तक वे वहाँ से नहीं जाते; और यदि कोई जानवर अस्वस्थ होता, तो वह संत के पास आता और उनके पवित्र हाथ रखने से चंगा हो जाता।

उस समय, राज्यपाल एग्रिकोलास ने यथासंभव अधिक से अधिक ईसाइयों को नष्ट करने के लिए अपनी पूरी शक्ति लगा दी, और उन्हें विभिन्न भयानक यातनाओं से गुज़ाराया: कुछ को उसने तलवार का सामना कराया, दूसरों को खंभे से बाँधकर जलाने का आदेश दिया, कुछ को नदियों में डुबो दिया, और कुछ को जानवरों के खाने के लिए फेंक दिया। इस उद्देश्य के लिए, उसने अपने शिकारियों को अधिक से अधिक शिकारी जानवरों को पकड़ने का आदेश दिया। इस आदेश का पालन करते हुए, शिकारी शिकार के लिए निकल पड़े और पहाड़ों तथा रेगिस्तानों से होते हुए वे भी माउंट आर्गेओस पर पहुँचे, जहाँ बिशप संत ब्लासियिस छिपे रहे थे; संत की गुफा के पास पहुँचकर और उसके सामने खेलते हुए जानवरों की भीड़ को देखकर, उन्होंने एक-दूसरे से कहा: 'आओ, चलकर देखें कि वहाँ क्या हो रहा है।'

जैसे ही वे और करीब पहुँचे, उन्होंने देखा कि संत ब्लाइस अपनी गुफा में, मानो किसी महल में हों, ईश्वर से भक्तिपूर्वक प्रार्थना कर रहे थे। पवित्र बिशप से एक शब्द भी बोले बिना, वे घर लौट आए और उन्होंने जो कुछ भी देखा था, वह सब कुछ इग्यूमेन एग्रिकोला को सुनाया; जिसने शिकारियों के साथ बड़ी संख्या में सैनिकों को भेजने का आदेश दिया, ताकि वे वहां छिपे हुए ईसाइयों को पकड़कर उसके पास ले आएं। उस पहाड़ पर पहुंचकर और गुफा में प्रवेश करने पर, सैनिकों को वहां केवल संत व्लासीय मिले, जो ईश्वर से प्रार्थना कर रहे थे और उनके पवित्र नाम की महिमा कर रहे थे।

उन्होंने ब्लेज़ से कहा, 'यहाँ से बाहर आओ, और हमारे साथ शहर चलो: राज्यपाल तुम्हें बुला रहे हैं।'

यह सुनकर, संत प्रसन्न हुए और कहा:

'बहुत अच्छा, मेरे बच्चों, चलो हम सब एक साथ चलें; प्रभु ने मुझको याद किया है: वे आज रात मुझे तीन बार प्रकट हुए, और कहा, "उठो और मेरे लिए एक बलिदान चढ़ाओ, जैसा कि बिशप के रूप में तुम्हारे पद के लिए उचित है।" इसलिए, मेरे बच्चों, तुम आज सही समय पर यहाँ आए हो; मेरी प्रभु, यीशु मसीह, तुम्हारे साथ हों।"

रास्ते में, मूर्तिपूजकों ने संत की कोमलता को देखकर, उनकी शिक्षा सुनकर, और उनके चमत्कारों से चकित होकर, सच्चे ईश्वर की ओर मुड़ गए; क्योंकि उनकी प्रार्थनाओं के द्वारा, कई पीड़ितों को प्रभु से चंगाई मिली, न केवल लोगों को बल्कि जानवरों को भी; जब बीमारों को उनके पास लाया या ले जाया जाता था, तो वह उन पर अपने हाथ रखते थे, उनके लिए प्रार्थना करते थे, और उन्हें पूरी तरह से स्वस्थ होकर भेज देते थे। एक महिला का एकमात्र पुत्र था; भोजन करते समय, उसकी गले में एक मछली की हड्डी अटक गई, जिससे वह एक भी शब्द नहीं बोल पा रहा था और मौत की कगार पर था; उसकी माँ, उसे अर्ध-मृत अवस्था में उठाकर संत के पास ले गई और उसे उनके चरणों में रख दिया, जोर-

[1775] उन्होंने 307 से 324 तक शासन किया।

[1776] अर्जियोस – जिसे आर्जेई भी कहा जाता है – एशिया माइनर में एक बड़ा पहाड़ है, जो उत्तरी-पश्चिमी काप्पाडोसिया में एंटी-टॉरस पर्वतमाला का हिस्सा है, जिसकी चोटी हमेशा बर्फ से ढकी रहती है और इसकी तलहटी एक सुंदर जंगल से सुशोभित है।

जोर से रोते हुए और पुकारते हुए: 'हमारे उद्धारकर्ता यीशु मसीह के सेवक, मेरे बेटे पर दया करो; वह मेरा एकमात्र बेटा है।'

उसी समय उसने व्लासियस को बताया कि उसके पुत्र के साथ क्या हुआ था। ईश्वर का पवित्र व्यक्ति, लड़के की गर्दन पर अपना हाथ रखकर और अपनी दृष्टि स्वर्ग की ओर उठाकर, प्रभु से इस प्रकार प्रार्थना करने लगा: 'हे मेरे उद्धारकर्ता! तुम विश्वास से पुकारने वालों की सभी सहायता करते हो: मेरी प्रार्थना सुनो, और अपनी अदृश्य शक्ति से इस लड़के के गले में अटकी हड्डी को निकालो और उसे चंगा करो। और भविष्य में, यदि किसी मनुष्य या पशु पर कोई संकट आए और वे मेरे नाम का स्मरण करते हुए कहें: 'हे ईश्वर, अपने सेवक ब्लासियस की प्रार्थनाओं से सहायता करो', तो हे प्रभु, जो सहायता करने में शीघ्र हैं, उनकी सहायता करें और उन्हें चंगा करें, यह सब आपके पवित्र नाम की महिमा और सम्मान के लिए हो।'

इस प्रकार प्रार्थना करके, उन्होंने लड़के को ठीक कर दिया और उसे उसकी माँ के पास लौटा दिया, जो बड़ी खुशी में, निरंतर ईश्वर की स्तुति करती रही। ऐसे चमत्कारों के परिणामस्वरूप, व्लासियस का नाम न केवल सेबास्टे में, बल्कि निकोपोलिस में भी प्रसिद्ध हो गया[1777] । जब संत अभी भी सेबास्टे से बहुत दूर नहीं, रास्ते में थे, तो निम्नलिखित घटना घटी।

एक गरीब विधवा के पास एक ही सूअर का बच्चा था; एक भेड़िया चुपके से आकर उसे छीन ले गया। वह गरीब औरत जोर-जोर से रोने लगी; संत को आते देख, वह उनकी ओर दौड़ी और आँसुओं में उन्हें अपनी दुखद कहानी सुनाई। संत मुस्कुराए और उससे कहा: 'हे महिला, दुख में मत डूबो, मत रोओ: तुम्हारा सूअर का बच्चा जीवित और सुरक्षित तुम्हें वापस मिल जाएगा।'

यह कहकर संत अपने रास्ते पर आगे बढ़ गए, जबकि भेड़िया उस गरीब विधवा के पास दौड़ा, अपने जबड़ों में उसके सूअर के बच्चे को लिए हुए; उसने सूअर के बच्चे को उसके सामने बिना किसी चोट के नीचे रख दिया और रेगिस्तान में वापस भाग गया; विधवा ने, अपनी ओर से, अपने सूअर के बच्चे को लेकर खुशी मनाई और ईश्वर की स्तुति की।

जब संत ब्लासियस सेबास्टे पहुँचे, तो राज्यपाल एग्रिकोलाउस को यह खबर मिलते ही उन्हें तुरंत जेल में डालने का आदेश दे दिया। अगले दिन, न्यायपीठ पर अपना आसन संभालने के बाद, एग्रिकोलास ने परमेश्वर के उस पवित्र पुरुष को अपने सामने लाने का आदेश दिया; उसे देखकर, राज्यपाल ने सबसे पहले उसे इन चापलूसी भरे शब्दों से संबोधित किया: 'खुश हो जाओ, ब्लासियस, हमारे देवताओं और हम सबके प्रिय मित्र!'

इस पर संत ने उत्तर दिया: 'आप भी आनंदित हों, हे शक्तिशाली शासक, परन्तु राक्षसों को "देवता" न कहें, क्योंकि वे उनकी पूजा करने वालों के साथ अनंत अग्नि में डाल दिए जाएँगे।'

अपने क्रोध में, राज्यपाल ने संत को निर्दयता से पीटने का आदेश दिया; एक लंबी यातना के बाद, संत ने राज्यपाल से एक बार फिर कहा: 'हे मानव आत्माओं के पागल धोखेबाज, क्या तुम्हें सच में लगता है कि तुम्हारी यातनाएँ मुझे सच्चे ईश्वर से विमुख कर देंगी? नहीं, यह असंभव है, क्योंकि मेरा भरोसा यीशु मसीह पर है, जो मुझे बल देते हैं; फिर भी, जो चाहो सो करो।"

संत के अटूट विश्वास को देखकर, राज्यपाल ने उसे वापस जेल ले जाने का आदेश दिया।

तब उस गरीब विधवा ने, मसीह के लिए संत ब्लासियस द्वारा सहन किए गए वीरतापूर्ण कष्टों और पवित्र विश्वास में उनकी अटूट दृढ़ता से प्रेरित होकर, अपने सूअर के बच्चे को—जिसे उसने भेड़िये के जबड़ों से बचाया था—मार डाला, उसका सिर और पैर उबालकर एक थाल में रख दिया; जिसमें उसने अपनी गरीबी के अनुसार बीज, धरती के फल और अपने बगीचे की सब्जियां डाल दीं; सब कुछ एक टोकरी में छिपाकर और एक मोमबत्ती जलाकर, वह टोकरी लेकर संत के कालकोठरी में आई; शहीद के पैरों में गिरकर, वह उनसे इस भोजन को लेने और चखने का आग्रह करने लगी। ईश्वर का धन्यवाद करने के बाद, संत ने लाया गया भोजन चखा; फिर, विधवा को आशीर्वाद देते हुए, उन्होंने उससे कहा: 'हे महिला, हर साल मेरे पर्व का उत्सव इसी तरह मनाया करना, और फिर तुम्हारे घर में तुम्हारी किसी भी आवश्यकता की कमी नहीं होगी; लेकिन अगर कोई और तुम्हारी मिसाल पर चलता है और मेरे पर्व का उत्सव मनाता है, तो उन्हें ईश्वर के उपहार प्रचुर मात्रा में प्राप्त होंगे, और प्रभु का आशीर्वाद उनके पूरे जीवन भर उन पर बना रहेगा।'

[1777] निकोपोलिस – लघु आर्मेनिया में, लाइक्स नदी के पास सीमा पर स्थित एक शहर, जिसे अब एंडरेस के नाम से जाना जाता है।

धार्मिक विधवा, संत से ऐसा उपदेश पाकर, परमेश्वर की स्तुति करती हुई अपने घर लौट गई; और सुसमाचार का वचन उस पर पूरा हुआ: *'सारी दुनिया में उसकी स्मृति में यह कहा जाएगा, और जो कुछ उसने किया है'* (मत्ती 26:13)।

इस बीच, दुष्ट यातना देने वाले ने, अदालत में फिर से अपनी सीट पर बैठकर, संत ब्लासियस को यातना देने के लिए लाने का आदेश दिया।

उसने शहीद से कहा, 'ब्लासियस, क्या तुम देवताओं को बलिदान चढ़ाओगे? तब तुम जीवित रहोगे। या क्या तुम खुद को एक दर्दनाक मृत्यु के हवाले करना चाहते हो?'

इस पर संत ने उत्तर दिया:

'"जो देवता न तो आकाश और न ही पृथ्वी को बनाए हैं, वे पृथ्वी से और आकाश के नीचे से लुप्त हो जाएँगे" (यिर्म. 10:11), लेकिन जिस मृत्यु से तुम मुझे डरा रहे हो, वह मुझे अनंत जीवन प्रदान करती है।'

संत के अटूट विश्वास को देखकर, राज्यपाल ने आदेश दिया कि उसे नग्न कर दिया जाए, एक पेड़ से लटका दिया जाए और लोहे के औजारों से बुरी तरह कोड़ा मारा जाए। लंबे समय तक यातना सहने के बाद, पवित्र शहीद ने राज्यपाल से कहा:

'हे दुष्ट और अशुद्ध मनुष्य, क्या तू सचमुच सोचता है कि तू मुझे घावों से डरा सकता है, जबकि यीशु मसीह मेरी सहायता हैं? मैं तेरी दृश्य यातनाओं से नहीं डरता, क्योंकि मैं भविष्य की उन अदृश्य आशीषों की प्रतीक्षा करता हूँ जो परमेश्वर से प्रेम करने वालों को दी गई हैं।'

इसके बाद, यातना देने वाले ने उसे पेड़ से उतारकर वापस कालकोठरी में ले जाने का आदेश दिया। जब संत ब्लेज़ को कारावास के लिए ले जाया जा रहा था, तो सात धर्मपरायण और ईश्वर-भयभीत महिलाएँ उनके पीछे-पीछे चलीं, जिन्होंने संत के शरीर से जमीन पर टपकते हुए रक्त को इकट्ठा करके उससे स्वयं का अभिषेक किया। संत के साथ चल रहे सेवकों ने यह देखकर उन्हें पकड़ लिया और राज्यपाल के सामने ले गए, यह कहते हुए:

'ये महिलाएँ भी मसीह की अनुयायी हैं।' तब राज्यपाल ने महिलाओं की ओर मुड़कर कहा:

'होश में आओ, देवताओं को बलिदान चढ़ाओ, और मैं तुम्हें महान सम्मान दूँगा।'

सदाचारी और पवित्र महिलाओं ने उत्तर दिया:

'हे हेगेमोन, यदि आप चाहते हैं कि हम आपके देवताओं की पूजा करें और उन्हें बलिदान अर्पित करें, तो सबसे पहले हमें स्वयं को शुद्ध करना होगा; अतः हमें निकटतम झील पर चलने दें और, रीति के अनुसार, वहाँ अपना मुख और अपना पूरा शरीर धोने दें: आज्ञा दें कि आपके देवताओं को भी वहाँ लाया जाए; स्वयं को धोने के बाद, हम उसी झील के किनारे उनकी पूजा करेंगे।'

प्रसन्न होकर, हेगेमोन ने अपनी मूर्तियों को लाने का आदेश दिया; उन्हें बोरी में रखकर और टिन से सील करके, हेगेमोन ने उन्हें महिलाओं को सौंप दिया; फिर उसने सैनिकों को आदेश दिया कि वे महिलाओं को मूर्तियों के साथ झील के किनारे तक ले जाएँ और वहाँ से उन्हें सम्मान के साथ वापस लाएँ। मूर्तियों वाली बोरी कंधों पर लादकर, महिलाएँ उन्हें झील के किनारे ले गईं; जब वे एक ऐसे स्थान पर पहुँचीं जहाँ झील बहुत गहरी थी, तो उन्होंने सैनिकों से पीछे हटने के लिए कहा, मानो वे उनकी मौजूदगी में नग्न होने में शर्मिंदा हों, और उनसे थोड़ी देर प्रतीक्षा करने के लिए कहा जब तक वे अपने स्नान-संस्कार पूरा कर लें। जब योद्धा दूर चले गए, तो प्रत्येक महिला ने वह मूर्ति जिसे वह उठाए हुए थी, झील में फेंक दिया, और वे दुष्ट मूर्तियाँ सीसे की तरह पानी में तेजी से डूब गईं। यह देखकर, योद्धा क्रोधित होकर उन पर टूट पड़े और उन्हें हेगेमोन के पास ले जाकर उन्होंने मूर्तियों के डूब जाने की बात बताई। हेगेमोन का चेहरा क्रोध से विकृत हो गया और वह शेर की तरह सैनिकों पर गरजा: 'दुष्ट सेवकों, तुमने देवताओं को क्यों नहीं पकड़ रखा? तुमने उन महिलाओं को उन्हें झील की गहराई में फेंकने से क्यों नहीं रोका?'

जवाब में, सैनिकों ने कहा: 'हे अतिशय प्रसिद्ध हेगेमोन, इन महिलाओं ने आपको धोखा दिया है और चालाकी से आपके देवताओं को ले गई हैं; उनकी विश्वासघात से अनजान, हमने उन्हें नहीं रोका।'

तब पवित्र पत्नियों ने शासक से कहा: 'सच्चा ईश्वर किसी मानवीय चापलूसी को नहीं जानता, परन्तु तुम्हारे देवता, जो निर्जीव पत्थर और लकड़ी, सोने और चांदी के बने हैं, उन्हें हमने चापलूसी द्वारा छीन लिया और डुबो दिया; वे न तो हमारे हाथों से खुद को मुक्त करने में और न ही डूबने से खुद को बचाने में शक्तिशाली थे: तो फिर वे दूसरों को कैसे बचा सकते हैं और उन्हें दुर्भाग्य से कैसे मुक्त कर सकते हैं?'

क्रोध से भरकर, राज्यपाल ने भट्टी जलाने, टिन पिघलाने, और लोहे की कंघियाँ और त्रिशूल लाने का आदेश दिया, साथ ही कपड़ों के समान बनी सात लाल-गरम तांबे की पट्टियाँ भी; उसने यह सब एक तरफ रखने का आदेश दिया, जबकि दूसरी तरफ उसने नरम कपड़े और विभिन्न प्रकार के महिला आभूषण रखे, और उन पवित्र महिलाओं से कहा: 'दो में से एक चुनो: या तो देवताओं की पूजा करो और उन्हें बलिदान चढ़ाओ, इस स्थिति में तुम अपनी जान बचा लोगी और वे चमकीले वस्त्र और कीमती आभूषण पहनोगी; लेकिन अगर तुम ऐसा नहीं करोगी, तो तुम इन सभी यातनाओं को सहोगी जो तुम्हारे लिए तैयार की गई हैं।'

उन महिलाओं में से एक, जिसके दो छोटे बेटे थे, ने उस चमकीले वस्त्र को पकड़कर भट्टी में फेंक दिया, जहाँ वह जल गया; और लड़के अपनी माँ से विनती करने लगे, कहते हुए: 'प्रिय माँ, हमें इस पृथ्वी पर नष्ट होने के लिए अकेला न छोड़ें, बल्कि जैसे आपने हमें पृथ्वी पर अपने मीठे दूध से पोषित किया, वैसे ही हमें स्वर्ग के राज्य को प्राप्त करने में मदद करें।'

उसके बाद, राज्यपाल ने आदेश दिया कि उन्हें नग्न अवस्था में फाँसी दी जाए और उनके शरीर को लोहे की कंघियों से खुरचा जाए। फिर सैनिकों ने देखा कि उनके घावों से खून के बजाय दूध बह रहा था, और उनके शरीर बर्फ की तरह सफेद हो गए; ईश्वर के स्वर्गदूत, स्वर्ग से उतरकर, उन पवित्र महिलाओं को उनके कष्टों के बीच मजबूत बनाए और इस प्रकार उन्हें सांत्वना दी: 'डरो मत, बल्कि अपने संघर्ष को जारी रखो, एक अच्छे किसान की तरह जो फसल की कटाई शुरू करके उसे पूरा करता है; काम पूरा करने पर, वह अपने स्वामी से धन्यवाद और पुरस्कार प्राप्त करता है और आनंदपूर्वक अपने घर लौटता है। इसी प्रकार, प्रयास करते रहो, ताकि तुम हमारे उद्धारकर्ता यीशु मसीह से अनंत धन्य जीवन प्राप्त कर सको।'

तब राज्यपाल ने आज्ञा दी कि उन्हें उस वृक्ष से उतारकर आग की भट्टी में डाल दिया जाए। जब उन्हें उसमें डाला गया, तो आग तुरंत बुझ गई, और वे भट्टी से बिना किसी चोट के निकल आए। तब राज्यपाल ने उनसे कहा:

'अपनी जादू-टोना छोड़ दो और हमारे देवताओं को बलिदान चढ़ाओ।'

पवित्र महिलाओं ने एक स्वर में उत्तर दिया:

'शैतान के पुत्र, इससे तुम्हें कोई भला नहीं होगा; हम अपने प्रभु यीशु मसीह को नहीं छोड़ेंगे, और न ही हम पत्थर और लकड़ी की मूर्तियों को, तुम्हारे जैसे बहरे और असंवेदनशील, को सिर झुकाएंगे, क्योंकि हमें स्वर्ग के राज्य के लिए बुलाया गया है।'

यह सुनकर, राज्यपाल ने तलवार से उनके सिर कलम करने का आदेश दिया। जब उन्हें उस स्थान पर ले जाया गया जहाँ उनकी मृत्यु उनका इंतजार कर रही थी, तो उन्होंने सैनिकों से पूछा:

'थोड़ी देर रुकिए, जब तक कि हम ईश्वर से प्रार्थना न कर लें।'

घुटने टेककर, उन्होंने इस प्रकार प्रार्थना करना शुरू किया: 'महिमा हो आपकी, हमारे महान और महिमामय ईश्वर; महिमा हो आपकी, हे मसीह, जो सदा राज्य करते हैं और हमें मोक्ष के मार्ग पर बुलाया है; क्योंकि आप जैसे महान और कौन है, जिन्होंने हमें अंधकार को त्यागने और आपके सच्चे प्रकाश में आने के लिए प्रेरित किया है! हे प्रभु, हम आपसे विनती करते हैं कि हमें अपनी प्रथम शहीद, थेक्ला, के अनुयायियों में गिनें, और हमारे परम पवित्र पिता और चरवाहे, ब्लासियस, द्वारा हमारे लिए अर्पित प्रार्थना को स्वीकार करें, जिन्होंने हमें सच्चे मार्ग पर मार्गदर्शन दिया है।"

इस प्रकार प्रार्थना करके और जमीन से उठकर, उन्होंने स्वर्ग की ओर अपने हाथ फैलाए और अपनी आँखें उठाकर, एक स्वर और शुद्ध हृदय से परमेश्वर को पुकारा: 'महिमा तेरी हो, हे मसीह हमारे परमेश्वर, क्योंकि तूने हमें इस स्थान पर खड़े होने के योग्य समझा है, मानो हम वध के लिए भेड़ें हों, तेरे पवित्र नाम के लिए: हम तुझ पर बलिदान बनना चाहते हैं; तो फिर, हमारे प्राणों को अपने स्वर्गीय वेदी पर ग्रहण कर।'

उल्लेखित दो युवक अपनी माता के पास आकर उनसे कहने लगे:

'माँ, स्वर्ग में प्रभु ने आपके लिए मुकुट तैयार किए हैं; हमें पवित्र शहीद, परम पवित्र बिशप ब्लासियस के हवाले कर दें।'

तब जल्लाद आगे बढ़ा और उसने उन सात पवित्र स्त्रियों के मान्य सिर काट दिए; यही उनका अंत था।

इसके बाद, राज्यपाल ने संत ब्लासियस को कालकोठरी से लाने का आदेश दिया और उनसे पूछा:

'क्या तुम अब देवताओं को बलिदान दोगे, या नहीं?'

'हे नीच अंधा मनुष्य,' संत ने उत्तर दिया, 'तू सच्ची रोशनी नहीं देखता: जीवित ईश्वर को जानने वालों में से कौन बलिदान चढ़ाएगा या निर्जीव मूर्तियों की पूजा करेगा?' यह जान लो, हे अंधकारमय और अधर्मी मनुष्य: तुमने जीवित परमेश्वर को त्याग दिया है और एक निर्जीव पत्थर की पूजा करते हो; मैं तुम्हारी धमकियों से नहीं डरता; मुझे जितना चाहो पीड़ा दो – देखो, मैं अपना शरीर तुम्हारे हवाले करता हूँ, मसीह के लिए; मेरे आत्मा पर केवल एकमात्र परमेश्वर का अधिकार है।

तब राज्यपाल ने संत से कहा:

'यदि मैं तुम्हें झील में फेंकने का आदेश दूँ, तो क्या तुम्हारा मसीह, जिसकी तुम पूजा करते हो, तब तुम्हारी मदद कर पाएगा?'

'तुम अंधे और मूर्ख हो,' संत ने उत्तर दिया, 'तुम मूर्तियों की पूजा करके खुद को बचा हुआ समझते हो; लेकिन मैं, मसीह की पूजा करके, क्या तुम्हें पानी पर अपने परमेश्वर की शक्ति नहीं दिखाऊँगा?'

तब राज्यपाल ने आदेश दिया कि उसे झील पर ले जाया जाए और उसकी गहराई में फेंक दिया जाए; लेकिन संत, तट पर पहुँचकर, पानी पर क्रॉस का चिह्न बनाया, पानी पर सूखी भूमि की तरह चला, और झील के बीच में पहुँचकर, पानी पर जमीन की तरह बैठ गया, और किनारे पर खड़े अपने यातनाकर्ता के सैनिकों और नौकरों से ये शब्द कहकर संबोधित किया:

'यदि तुम्हारे देवता हैं, तो उनकी शक्ति दिखाओ: जाओ और स्वयं पानी पर चलो।'

तब अस्सी पुरुष, अपने देवताओं के नामों का उच्चारण करते हुए, पानी पर चलने के इरादे से झील में उतरे, और वे सभी अचानक पानी में इस तरह डूब गए जैसे वह सीसा हो, और मर गए। लेकिन प्रभु का स्वर्गदूत, स्वर्ग से संत के पास उतरकर, ने उससे कहा: 'बिशप, ईश्वर की कृपा से परिपूर्ण, पानी से ऊपर आओ और ईश्वर द्वारा आपके लिए तैयार किया गया मुकुट प्राप्त करो।'

पृथ्वी पर उतरकर, संत, जिनका चेहरा चमकते हुए बर्फ की तरह दमक रहा था, राज्यपाल के पास गए और उसे फटकारने लगे। तब राज्यपाल ने व्लासियि के खिलाफ मृत्युदंड की सजा सुनाई, यह कहते हुए: 'व्लासियि मेरी अवज्ञा करता है, राजा का तिरस्कार करता है, हमारे देवताओं का अपमान करता है, और अपनी जादू-टोने से अस्सी-आठ पुरुषों को पानी में डुबो दिया है - इन सब के लिए उसे दो युवकों के साथ तलवार से सिर कलम कर दिया जाना चाहिए।'

युवकों के साथ, व्लासी को राज्यपाल की उपस्थिति से बाहर ले जाया गया। निष्पादन स्थल पर पहुँचने पर, उन्होंने अपने पापों के लिए, पूरी दुनिया के लिए, और विशेष रूप से उन लोगों के लिए प्रार्थना की जो उनकी स्मृति का सम्मान करेंगे; और उनके लिए उन्होंने प्रार्थना की कि उन पर कोई बीमारी न आए, उनके घर हर आशीर्वाद से भर जाएँ, और उनकी प्रार्थनाएँ सुनी जाएँ। उस क्षण, एक उज्जवल बादल ऊपर से उतरकर उस पर छा गया, और बादल से मसीह की आवाज़ सुनाई दी: 'मैं तुम्हारी सभी प्रार्थनाएँ स्वीकार करूँगा, मेरे प्रिय तपस्वी।'

तब जल्लाद ने सेबास्टे की शहर की दीवारों के बाहर एक ही चट्टान पर उनका उत्तम सिर कलम कर दिया, और उनके बाद उन दो युवकों के भी सिर कलम कर दिए; यह घटना February[1778] के ग्यारहवें दिन हुई।

एलिसा नाम की एक धर्मनिष्ठ महिला ने शहीदों के पवित्र शरीर को लेकर उसी स्थान पर सम्मानपूर्वक दफनाया; संतों की कब्र से बीमारों को स्वास्थ्य लाभ मिला।

संत ब्लाज़ियिस की शहादत के बारे में जानने पर, उक्त महिला, जिसके पास एक ही सूअर का बच्चा था, ने अपने पड़ोसियों और परिचितों को इकट्ठा करके संत की स्मृति का सम्मान किया, और ईश्वर ने उसके घर को हर तरह की समृद्धि से आशीर्वाद दिया। उसके उदाहरण का अनुसरण करते हुए, अन्य धर्मनिष्ठ लोगों ने भी संत ब्लेज़ की वार्षिक स्मृति मनाना शुरू कर दिया, वे चर्च में मोमबत्तियाँ और धूप लाते, अपने साथी विश्वासियों के घरों में इकट्ठा होते, और गरीबों तथा ज़रूरतमंदों को दान देते थे। तब से ही वह धार्मिक रीति-रिवाज शुरू हुआ, जिसे कुछ लोग आज भी मनाते हैं, जो इस प्रकार है: उस विधवा के उदाहरण का पालन करते हुए, जो पहली थीं जिन्होंने इस तरह की स्मृति का पालन किया, पवित्र शहीद ब्लेज़ की स्मृति मनाने के लिए; और यह स्मृति हमारे प्रभु यीशु मसीह की महिमा के लिए आयोजित की जाती है, जो पिता और पवित्र आत्मा के साथ सदा और युगानुयुग महिमामय और पूजित हैं। आमीन।

[1778] संत ब्लाज़ियिस, पवित्र शहीद, ने लगभग 316 ईस्वी में यातनाएँ सहन कीं और मृत्यु प्राप्त की। उनके अवशेष क्रूसेड के दौरान पश्चिम ले जाए गए; उनके कुछ हिस्से अब कई यूरोपीय देशों में रखे गए हैं।

ट्रोपारयिन, स्वर 2:

दव्यि सुगंध, अक्षय फूल, मसीह की बेल की धीरजवान लता, ईश्वर-वाहक व्लासयिस, उन लोगों को आनंद से भर दें जो वशि्वास के साथ आपकी स्मृति का सम्मान करते हैं, और हम सभी के लिए अनवरत प्रार्थना करें।

एक और कोंटाकयिन, स्वर 8:

हे महमिामय व्लासयिस, आप अभषिक के अभषिक और अपने शहादत के रक्त से सुशोभति हुए, और आप स्वर्ग में सर्वत्र प्रकाशमान हैं, हमें देखकर प्रसन्न होते हैं और उन पर दृष्टि रखते हैं जो आपके गरिजाघर में आए हैं और जो वहां नरिंतर आपको पुकारते हैं: हम सभी की रक्षा करें।

रानी संत थयिोडोरा की स्मृति

11 फरवरी को स्मरणोत्सव

संत थयिोडोरा सम्राट थयिोफलिस द आइकोनोक्लास्ट[1779] की पत्नी थीं, लेकनि उन्होंने अपने पति के मूर्तभिंजनवादी वधिर्म को नहीं माना। मूर्तभिंजनवादी सम्राट ने कॉन्स्टेंटनिोपल के पैट्रआिर्क मेथोडयिस को राजधानी से नकिाल दयिा, उनकी जगह एनीयस को नयिुक्त कयिा, और पवत्रि प्रतमिाओं को जला दयिा। उत्साही सम्राज्ञी थयिोडोरा, यद्यपि स्पष्ट रूप से पवत्रि प्रतमिाओं की खुलेआम पूजा करने की हम्मित नहीं करती थीं, उन्होंने उन्हें गुप्त रूप से अपने शयनकक्ष में रखा और अपनी रातें प्रार्थना में बतिाईं, ईश्वर से ऑर्थोडॉक्स पर अपनी दया बरसाने का आग्रह करती रहीं। उनका एक पुत्र था जसिका नाम माइकल था, जसि उन्होंने ऑर्थोडॉक्स धर्म में पाला। अपने पति की मृत्यु के बाद, धन्य थयिोडोरा ने संत मेथोडयिस को कॉन्स्टेंटनिोपल के पैट्रआिर्कल सहिासन पर पुनर्स्थापति कयिा और एक पवत्रि परषिद बुलाई, जसिमें प्रतमिा-वरिोधयिों को चर्च से बहष्कृत कर दयिा गया, एनीयस को सहिासन से हटा दयिा गया, और पवत्रि प्रतमिाओं को ईश्वर के चर्चों में वापस लाया गया[1780] । सभी धर्मगुरुओं की पवत्रि परषिद से परामर्श करने के बाद, थयिोडोरा ने अपने पति के लिए ईश्वर से प्रार्थना की, कि वह उसे अनंत यातना से मुक्त कर दे, ताकि वह उस जीवन को प्राप्त कर सके जो शब्दों से परे है। इसके बाद, धन्य रानी थयिोडोरा ने अपना सम्पूर्ण जीवन धर्मपरायणता को समर्पति कर दयिा और शीघ्र ही परमेश्वर को अपनी आत्मा अर्पति कर दीं, जनिकी वह दीर्घकाल से आकांक्षा करती थीं, तथा राज्य अपने पुत्र माइकल को सौंप दयिा[1781] ।

वोलोग्दा के चमत्कार करने वाले, प्रलिुत्स्क के पूजनीय डेमेट्रयिस की स्मृति

11 फरवरी को स्मरण कयिा जाता है

हमारे पूजनीय और ईश्वर-धारी पति डेमेट्रयिस का जन्म पेरयिास्लाव्ल् नगर[1782] में धर्मपरायण माता-पति के घर हुआ था। छोटी उम्र से ही, वह वद्वितापूर्ण अध्ययन और पवत्रि धर्मग्रंथों को पढ़ने के अभ्यास के प्रति समर्पति थे; उन्होंने अपनी बुद्धि में अपने कई समकालीनों को पीछे छोड़ दयिा और अपनी वनिम्र बुद्धि के लिए उनमें सबसे अलग खड़े थे, जसि वह हमेशा अपने हृदय में छपिाकर रखते थे। धन्य व्यक्ति अक्सर आने वाले युग, ईश्वर के न्याय, प्रत्येक व्यक्ति को उनके कर्मों के अनुसार मलिने वाले पुरस्कार, स्वर्ग के राज्य, धर्मी लोगों के आनंद और स्वर्ग की

[1779] सम्राट थयिोफलिस, मूर्तभिंजक, ने 829 से 842 तक शासन कयिा।

[1780] इस प्रकार, 842 में कॉन्स्टेंटनिोपल की परषिद में प्रतमिा पूजा की बहाली हुई। इसकी स्मृति में, उस समय चर्च में एक वशिेष 'ऑर्थोडॉक्सी सेवा' स्थापति की गई थी, जसि आज भी महा-उपवास के पहले रवविार को मनाया जाता है।

[1781] सम्राट माइकल तृतीय ने 855 से 867 तक शासन कयिा।

[1782] उत्तर में स्थति पेरयिास्लाव-ज़ालेस्की अब व्लादमिीर गवर्नोरेट का एक जलिा शहर है।

आनंदमयता पर मनन करना पसंद करते थे। पुरानी और नई वाचा के पवत्रि धर्मग्रंथों का अध्ययन करने के बाद, संत को यह एहसास हुआ कि इस संसार का जीवन क्षणभंगुर है। और इसलिए उन्होंने जल्द ही इस व्यर्थ संसार को छोड़ दिया और एक पश्चात्तापी आत्मा के साथ, ईश्वर के भय को अपनाते हुए, पेरियास्लावल में ही नागोर्नी बोरसोग्लेब्स्की मठ में संन्यास की शपथ ली। यहाँ, एक सदाचारी जीवन जीने का गंभीर प्रयास करते हुए, उन्होंने आध्यात्मिक संयम और प्रार्थना का अभ्यास किया, और अपनी पवित्रता, अत्यंत विनम्रता और सभी के प्रति आध्यात्मिक प्रेम से खुद को विशिष्ट बनाया। इस प्रकार, ईश्वर की सेवा में समर्पित, दिन-रात प्रभु के विधान का अध्ययन करने वाले, इस मेहनती और अथक तपस्वी ने ब्रह्मचर्य और पवित्र हृदय के माध्यम से ईश्वर की खोज करते हुए और स्वर्गदूतों के समान जीवन जीते हुए मोक्ष का फल प्राप्त किया। संन्यासी और आम लोग दोनों ही उनके महान सद्गुणों के लिए संत से प्रेम करते थे। कुछ समय बीत जाने के बाद, ईश्वर ने परम पूज्य डेमेट्रियस को पुरोहित पद प्राप्त करने के योग्य समझा। उस समय, रडोन्येज़ के चमत्कार करने वाले परम पूज्य सर्गियस ने पवित्र त्रिमूर्ति के नाम पर रडोन्येज़ के पास एक मठ स्थापित किया था और ईश्वर की इच्छा से वहाँ एक मठवासी समुदाय की स्थापना की थी। आदरणीय डेमेट्रियस अक्सर आदरणीय सर्गियस से इस बात पर आध्यात्मिक चर्चा करने के लिए मिलते थे कि मठ समुदाय का प्रबंधन कैसे किया जाए और चुने हुए लोगों को ईश्वर तक कैसे पहुँचाया जाए। इसके बाद, पूज्य दिमित्री ने संत निकोलस चमत्कारकर्ता को समर्पित एक चर्च का निर्माण किया और उससे सटे हुए, पेरेयासलाव झील के तट पर एक मठ की स्थापना की[1783] , और वे उस मठ के मठाध्यक्ष बने। कई भिक्षु और गृहस्थ आध्यात्मिक लाभ की चाह में और उनके मठ में रहने की इच्छा से आदरणीय के पास आने लगे, और आदरणीय ने उन्हें विनम्रता से उपदेश देते हुए स्वीकार किया और गृहस्थों का मुंडन करके उन्हें पवित्र मठवासी संप्रदाय में शामिल किया। इस प्रकार उन्होंने अपने चारों ओर मसीह के भेड़ों का एक बड़ा झुंड इकट्ठा किया। थोड़ी ही देर बाद, आदरणीय संत ने अपने मठ के भीतर एक सामुदायिक निवास स्थापित किया, और उसे सख्त नियमों से संचालित किया। भाइयों ने संत के सभी कामों में प्रेम और आज्ञाकारिता से आज्ञा मानी, क्योंकि वे परमेश्वर के एक स्वर्गदूत और एक सच्चे मार्गदर्शक थे, और विशेष रूप से स्वर्ग के राज्य के लिए एक मध्यस्थ थे। बाद में, मानवीय महिमा को त्यागते हुए[1784] , धन्य दिमित्री वहाँ से वोलोग्दा चले गए; वहाँ, शहर के पास ही, पूजनीय को वोलोग्दा नदी के एक मोड़[1785] पर एक एकांत स्थान पसंद आया, उन्होंने वहाँ सर्व-दयालु उद्धारकर्ता के नाम पर एक चर्च बनाया, और एक सामुदायिक मठ[1786] की स्थापना की। जब प्रलिकी में आदरणीय के बसेरे की खबर फैली , तो उनके कई शिष्य पेरियास्लाव्ल से वहाँ अपने प्रिय गुरु से मिलने चले आए; मठवासी जीवन के कई अन्य खोजी भी विभिन्न प्रदेशों से आदरणीय के पास आए। इस प्रकार प्रलिकी में सामुदायिक मठ की स्थापना हुई। और यहाँ पूजनीय दिमित्री

[1783] अब 'निकोल्स्की ना बोलोटे' के नाम से जाना जाने वाला, यह पेरियास्लाव-ज़ालेस्की में एक अपवित्र कर दिया गया मठ है।

[1784] आदरणीय दिमित्री के पुण्य जीवन की खबर मॉस्को के महान राजकुमार, दिमित्री इवानोविच डॉन्स्कोय तक पहुँची, और उन्होंने आदरणीय व्यक्ति को अपने दरबार में अपने बच्चों के गॉडफादर के रूप में सेवा करने के लिए आमंत्रित किया। रेवरेंड ने राजकुमार की इच्छा पूरी की और मठ के लिए उससे उदार उपहार प्राप्त किए। इसके बाद, उन्होंने पेरियास्लाव मठ छोड़ने और एकांत स्थान पर जाने का संकल्प लिया।

[1785] लुका का अर्थ है एक मोड़, एक वक्रता, एक विकीर्ण तट, या नदी द्वारा घुमावदार बना एक प्रायद्वीप।

[1786] यह 1371 में हुआ था। स्पासो-प्रलुित्स्की (द्वितीय श्रेणी) मठ वोल्गोडा से 15 वर्स्ट की दूरी पर स्थित है। जब मठ की स्थापना हुई, तो जमींदारों ने प्यार से अपनी जमीन रेवरेंड फादर को सौंप दी। वोलोग्दा के नागरिकों ने भी बहुत उत्साह दिखाया। चर्च के निर्माण के लिए हर कोई रेवरेंड फादर को अपनी क्षमता के अनुसार दान देने के लिए तत्पर था। ग्रैंड प्रिंस दिमित्री डोंस्कोय ने, रेवरेंड फादर दिमित्री द्वारा नए स्पासो-प्रलुित्स्की मठ की स्थापना के बारे में जानकर, अपनी ओर से एक दान भेजा।

ने एक बड़ी भ्रातृसंघ इकट्ठी की[1787] । मसीह के झुंड—उनकी देखभाल में सौंपी गई आध्यात्मकि भेड़ों—की वफादारी से देखभाल करने के बाद, पूजनीय व्यक्ति 11 फरवरी 1392 को प्रभु के पास चले गए[1788] ।

ट्रोपारयिन, स्वर 1:

हे पूज्यवर, आपने परमेश्वर से आध्यात्मकि अनुग्रह प्राप्त कयिा, और हे धन्यवर, केवल उसी द्वारा आपको पहचाना गया। इसी कारण, आपने भी अपने आत्मा में आने वाले युग में उनके सर्वोत्तम नविास को पहचाना, और अपने मठ के कोठरयिों में उपवास के द्वारा स्वयं को सद्धि कयिा। और अब, स्वर्गदूतों के साथ आनंदति होकर, हे संत डेमेट्रयिस, हम सभी के लिए उद्धारकर्ता से प्रार्थना करें, ताकि हम सब पुकार सकें: महमिा उसको जो आपको शक्ति देता है, महमिा उसको जो आपको मुकुट पहनिाता है, महमिा उसको जो आपके द्वारा सबको चंगा करता है।

कॉन्टाकयिन, स्वर 8:

हे पूज्यनीय, आपने अपने यौवन से ही अपना क्रूस उठाया और प्रार्थना तथा उपवास के द्वारा मसीह का अनुसरण कयिा, तथा जागरण और कष्टों के द्वारा अपने शरीर को कष्टति कयिा। इसलिए, सर्व-द्रष्टा ने, आपके श्रम को देखकर, चमत्कारों के द्वारा आपको महमिामय बनाता है, और सभी को आपको पुकारना सखिाता है: हे पूजनीय पति डेमेट्रयिस, आनंदति हो, जो उपवास करने वालों के सांत्वनादाता हैं।

पवत्रि और वशि्वासयोग्य राजकुमार वसेवोल्द की स्मृति, जन्हिें उनके पवत्रि बपतस्मिा में गब्रयिल नाम दयिा गया था।

11 फरवरी को स्मरण कयिा जाता है

पवत्रि और वशि्वासयोग्य राजकुमार व्लादमिीर मोनोमाख के पुत्र म्स्तस्लिाव के पुत्र, बपतस्मिा ग्रहण करने पर गेब्रयिल नामति, थे[1789] । 1117 में, वृद्ध व्लादमिीर मोनोमाख ने अपने पुत्र म्स्तस्लिाव को कीव-बेलगोरोद[1790] में स्थापति कयिा ताकि वहाँ उनका एक सहायक हो, जबकि उन्होंने अपने पोते, म्स्तस्लिाव के पुत्र, धन्य राजकुमार व्सेवोल्द को नोवगोरोद में उनके स्थान पर राजकुमार नयिुक्त कयिा। धन्य राजकुमार वसेवोल्द ने एक धार्मकि जीवन जयिा और ऑर्थोडॉक्स राजकुमारों के अनुरूप, अपने सुपुर्द कएि गए सामंती राज्य पर न्यायपूर्वक शासन कयिा। वह हर

[1787] अपने कर्मों और गुणों के माध्यम से, रेवरेंड फादर अपने मठ में एकत्रति मठवासी समुदाय के लिए एक चमकदार उदाहरण और आदर्श के रूप में कार्य करते थे, साथ ही साथ उन्हें अथक रूप से नर्दिेशति और मार्गदर्शन भी करते थे। वे गरीबों के प्रति अपने प्रेम और अपने परोपकारी कार्यों के लिए वशिष्टि थे। वे स्वयं, हमेशा प्रॉस्फोरा और गर्म पानी से अधकि कुछ नहीं लेकर संतुष्ट रहते थे, मठ की ज़मीन पर घूमते थे और यह सुनश्चिति करते थे कि भाइयों के भोजन के लिए आवश्यक सब कुछ समय पर पहुँचाया जाए। वे सर्दी और गर्मी दोनों में एक ही वस्त्र पहनते थे - भेड़ की खाल का एक पुराना कोट, जसिके नीचे गर्मी में पसीने से भीग जाते और सर्दयिों में ठंड से कांपते थे। फरि भी, वे भाइयों के साथ काम करने बाहर नकिलते थे। ताकि दूसरे उनकी आँसुओं भरी प्रार्थनाओं के साक्षी न बनें, वे अक्सर चर्च के बाईं ओर एक एकांत स्थान पर चले जाते थे, जहाँ इस उद्देश्य के लिए एक लकड़ी का संलग्नक बनाया गया था। अपने महान त्याग और आत्म-संयम के कार्यों के माध्यम से, परम पूज्य ने आध्यात्मकि पूर्णता की उच्चतम डग्रिी प्राप्त की और उन्हें दूरदर्शति का वरदान मलिा।

[1788] संत दमित्रिी के शरीर को उद्धारकर्ता के चर्च में दफनाया गया था, जसिकी उन्होंने स्थापना की थी। उनके ताबूत पर और उनकी मध्यस्थता से चमत्कार और वभिन्नि प्रकार के उपचार हुए। और आज भी, प्रलिुत्स्क के संत दमित्रिी के अवशेष उसी चर्च में वराजमान हैं, जहाँ इस संत की चमत्कारी प्रतमिा भी रखी गई है, जो कज़ान के खलिाफ अभयिान के दौरान ग्रैंड प्रसि जॉन तृतीय के साथ थी।

[1789] यारोस्लाव द वाइज़ के पोते और एक पुराने रूसी राजकुमार का प्रतीक, व्लादमिीर मोनोमाख, सबसे बढ़कर झगड़ालू राजकुमारों के बीच शांति स्थापति करने वाले के रूप में जाने जाते हैं; 1114 से 1125 तक, वह कीव के ग्रैंड प्रसि थे।

[1790] बेलगोरोद - कीव के सामंतशाही में एक छोटा सा शहर, जो हालांकि व्लादमिीर महान के उत्तराधकिारयिों के शासनकाल के दौरान, बशिप का पद धारण करता था और कुछ समय के लिए एक अपानज सीट के रूप में कार्य करता था। आजकल, यह कीव गवर्नरेट और जलि में, इरपेन नदी के कनिारे एक गाँव है, जो कीव के मेट्रोपॉलटिन के अधीन है, जसिमें 1,900 देसयिाटनि भूमि और *112,000* से अधकि *की आबादी है, और एक पैरशि चर्च है।*

तरह के अच्छे कर्मों और एक अच्छे चरित्र के लिए प्रसिद्ध थे: वह ईश्वर-भयभीत, सत्यवादी, सौम्य और विनम्र थे, और सभी के प्रति समान रूप से सच्चा प्रेम रखते थे। राजकुमार वसेवोल्द चर्चों का निर्माण करना पसंद करते थे, पादरियों और संन्यासी वर्ग को मानते थे, उन्हें उदार दान देते थे, और उन्हें परमेश्वर की बंधुत्व के रूप में सम्मानित करते थे। चर्चों के निर्माण के प्रति उनके उत्साह का प्रमाण सेंट जॉन द बैपटिस्ट को समर्पित भव्य चर्च है, जिसे उन्होंने नोवगोरोड के व्यापारिक चौक ( ) के पेट्र्याटिन आंगन में बनवाया था, जिसमें एक पार्श्व चैपल, कीमती आइकन, एक अत्यधिक मूल्यवान सुसमाचार और सभी पूजा-संबंधी पुस्तकें शामिल थीं; एक विशेष चार्टर द्वारा, उन्होंने चर्च और उसके पुरोहितों के रखरखाव को सुनिश्चित किया, जो आंशिक रूप से व्यापार किए जाने वाले सभी सामानों पर लगाए गए शुल्क से होता था, जिसका एक महत्वपूर्ण हिस्सा सेंट सोफिया कैथेड्रल के रखरखाव के लिए भी जाता था। वह धर्मनिष्ठ राजकुमार विधवाओं और अनाथों का रक्षक था, गरीबों पर दयालु था, बीमारों की देखभाल करता था और प्रचुर मात्रा में भोजन वितरित करता था। 1132 में, धन्य राजकुमार वसेवोल्द के पिता, म्स्तिस्लाव[1791] का कीव में निधन हो गया, और कीव का महाप्रसिद्ध सिंहासन म्स्तिस्लाव के भाई, यारोपोलक ने ले लिया, जिसने वसेवोल्द को दक्षिणी पेरियास्लावल प्रदान किया, जिसे कीव के बाद दूसरा सबसे महत्वपूर्ण शहर माना जाता था[1792] । नोवगोरोड के लोगों ने अनिच्छा से वसेवोलॉड को जाने दिया; इस बीच, मोनोमाख के छोटे बेटों, वसेवोलॉड के चाचों ने पेरियास्लावल को लेकर महाप्रसिद्ध के खिलाफ विद्रोह कर दिया, उन्हें संदेह था कि वह अपने भतीजे को कीव के सिंहासन का उत्तराधिकारी बनाना चाहते थे। इन राजकुमारों में से एक, यूरी व्लादिमीरोविच[1793] , ने व्लादिमीर मोनोमाख के खिलाफ हथियार उठा लिए और पेरियास्लावल पर कब्जा करने की कोशिश की। हालाँकि, संत ने यह सुनकर और गृहयुद्ध से बचना चाहते हुए, बिना किसी खून-खराबे के पेरियास्लावल छोड़कर नोवगोरोड चले गए, और पेरियास्लावल को राजकुमार यूरी के हवाले कर दिया।

इस समय तक, नोवगोरोड के स्वतंत्र नागरिक पहले ही वसेवोल्ड के उदार शासन को भूल चुके थे और शुरू में उन्हें वापस स्वागत करने से हिचकिचा रहे थे, लेकिन उन्होंने जल्द ही अपना मन बदल लिया और उस राजकुमार को, जिसने उनके लिए इतना कुछ अच्छा किया था, लौटने के लिए आमंत्रित किया। कुछ ही समय बाद, नोवगोरोडवासियों के आग्रह पर, धन्य राजकुमार वसेवोल्ड को सुज़दाल और रोस्तोव के खिलाफ एक अभियान पर उनके साथ शामिल होने के लिए मजबूर होना पड़ा[1794] । एक खूनी लड़ाई हुई, लेकिन सुज़दाल और रोस्तोव की सेनाएं विजयी रहीं, हालांकि उन्हें नोवगोरोडवासियों की तुलना में अधिक नुकसान उठाना पड़ा। उसी वर्ष, धन्य राजकुमार ने धर्मपरायण आर्चपास्टर निफोंट के साथ मिलकर संत क्लेमेंट को समर्पित एक भव्य पत्थर का चर्च स्थापित किया, लेकिन वे इसे पूरा होते देखने के लिए जीवित नहीं रहे। मई 1136 में, नोवगोरोड में एक विद्रोह भड़क उठा। नोवगोरोड के अहंकारी और जिद्दी लोगों ने, इस बात से क्रोधित कि वे सुज़दाल के लोगों पर जीत का ढिंढोरा नहीं पीट पाए थे, संत राजकुमार वसेवोल्द के खिलाफ विद्रोह कर दिया और उन्हें पदच्युत घोषित कर दिया। उन्होंने संत से कहा, 'हमें आपसे कोई मदद नहीं मिली,' और उन्हें नोवगोरोड से निर्वासित कर दिया।

तब धन्य राजकुमार वसेवोल्द अपने चाचा, व्लादिमीर मोनोमाख के पुत्र, ग्रैंड प्रिंस यारोपोलक के पास कीव चले गए। यारोपोलक ने वसेवोल्द को विशेगोरोद के प्रशासन की जिम्मेदारी सौंपी[1795] , लेकिन धन्य राजकुमार वहाँ लंबे समय

[1791] पवित्र और धन्य राजकुमार वसेवोल्द के पिता, म्स्तिस्लाव व्लादिमीरोविच, 1125 से 1132 तक कीव के महा राजकुमार थे। उनके बाद उनके भाई यारोपोलक ने शासन संभाला, जिन्होंने 1132 से 1138 तक कीव पर शासन किया।

[1792] पेरियास्लाव के प्रिंसिपिल्टी को केवल कीव के ग्रैंड डची के बाद दूसरे स्थान पर महत्वपूर्ण माना जाता था। पेरियास्लाव-विडेनी अब पोल्टावा गवर्नरेट में एक जिला शहर है, जो अल्या और ट्रुबेज़ नदी के किनारे स्थित है।

[1793] यूरी (जॉर्जी) व्लादिमीरोविच dolgoruky, सुज़दाल के राजकुमार और बाद में 1148 से 1150 तक कीव के ग्रैंड प्रिंस, व्लादिमीर मोनोमाख के सबसे छोटे बेटे; उन्हें बाद में इज्यास्लाव म्स्तिस्लाविच द्वारा निष्कासित कर दिया गया था, लेकिन कुछ समय बाद उन्होंने कीव के ग्रैंड प्रिंसिपिल्टी पर नियंत्रण फिर से हासिल कर लिया, हालांकि यह अल्पकालिक था।

[1794] यह इस प्रकार हुआ। इज्यास्लाव म्स्तिस्लाविच, सत्ता-लोलुप राजकुमार यूरी डोलगोरुकी की कृपा से, यूरी के खिलाफ मदद मांगने के लिए तुरोव से नोवगोरोड गया, जिसने म्स्तिस्लाविचों का बेधड़क अपमान किया था। नोवगोरोड के लोगों में भारी आक्रोश फैल गया, और वे यूरी के खिलाफ इज्यास्लाव की रक्षा के लिए स्वेच्छा से आगे आए। धन्य राजकुमार व्लादिमीर मोनोमाख अपने चाचा के साथ कोई लेना-देना नहीं रखना चाहते थे, जबकि संत माइकल ने नोवगोरोड के लोगों को शीतकालीन अभियान के खतरों की ओर इशारा करते हुए, अभियान से रोकने की कोशिश की। लेकिन, अंत में, व्लादिमीर मोनोमाख को नोवगोरोड के लोगों की इच्छाओं के आगे झुकना पड़ा और उन्होंने सुज़दाल और रोस्तोव के लोगों के खिलाफ अभियान शुरू किया।

[1795] विशेगोरोड – कीव के पास एक छोटा शहर।

तक नहीं रहे। पस्कोव के लोगों ने, जो वसेवोल्द के अच्छे कर्मों और उनके कुलीन गुणों के लिए उन्हें बहुत मान-सम्मान देते थे, वस्हिगोरोड को प्रतनिधि भेजे और इस आग्रह के साथ नविेदन कयिा कि वह उन पर शासन करने आएं: उस समय, पस्कोव का कोई राजकुमार नहीं था। संत वसेवोल्द मान गए और पस्कोव में शासन करने के लिए नकिल पड़े। रास्ते में, जब वह पोलोत्स्क[1796] से गुजर रहे थे, तो पोलोत्स्क के राजकुमार वासलिको ने संत के आगमन की खबर सुनकर उनसे मलिने के लिए जल्दी से बाहर आ गए; उन्होंने मसीह के नाम पर संत को गाल पर एक भाईचारे वाला चुंबन देकर अभविादन कयिा, उन्हें कई उपहार दिए, और बड़ी धूमधाम से वदिा कयिा। इस बीच, पुरोहतिों के नेतृत्व में और पवत्रि क्रॉस उठाए हुए पस्कॉव के लोग धन्य राजकुमार वसेवोल्द का स्वागत करने के लिए बाहर गए और इस प्रकार उन्होंने उन्हें शहर में स्वागत कयिा। और संत के आगमन पर पस्कॉव में बहुत खुशी हुई। इसी तरह, संत प्सकोव में अपने आगमन पर आनंदति हुए, मानो स्वर्गीय यरूशलेम में हों, और अपने आत्मा में यह पूर्वानुमान लगाते हुए कि उनके पवत्रि अवशेष वहीं स्थापति कएि जाएँगे। और तुरंत ही उन्होंने शासन करना शुरू कर दयिा, और अपने जीवन के अंत तक प्सकोव के लोगों का न्यायपूर्वक शासन कयिा। धर्मात्मा राजकुमार ने तुरंत पवत्रि त्रमिूर्त को समर्पति एक पत्थर के चर्च की नींव रखी, जो अगले वर्ष पूरा हो गया। लैटनि-भाषी सभी लोग संत के नाम से ही डरते थे और उन्होंने पस्कॉव पर हमला करने की हम्मित नहीं की। पवत्रि राजकुमार वसेवोल्ड ने पस्कॉव में एक साल से कुछ अधकि समय तक शासन कयिा। तब, ईश्वर की इच्छा से, वह गंभीर रूप से बीमार पड़ गए; अंतमि सांस लेते समय उन्होंने मसीह के परम पवत्रि शरीर और रक्त को ग्रहण कयिा, और अपने परविार तथा पस्कॉव के सभी नागरकिों को वदिा कहकर, वे प्रभु के पास चले गए और अपने पूर्वजों के पास पहुँच गए, जहाँ सभी संत वश्राम करते हैं। धन्य राजकुमार वसेवोल्द-गैब्रयिल का नधिन चीज़ वीक के गुरुवार, 11 फरवरी 1138 को हुआ। संत के शरीर को पस्कोव के सभी नागरकिों, मठाधीशों और पादरयिों की एक बड़ी संख्या ने सम्मानपूर्वक वदिाई दी, और उसे थ्रेस के महान शहीद सेंट डेमेट्रयिस के चर्च में दफनाया गया। धन्य राजकुमार वसेवोल्ड की तलवार और ढाल उनके ताबूत पर रखी गईं, जो प्सकोव शहर की प्रशंसा और सम्मान के लिए थीं, जहाँ वे आज भी ट्रनिटिी कैथेड्रल में मौजूद हैं। पवत्रि और धर्मी राजकुमार वसेवोल्ड-गेब्रयिल के धन्य नधिन के पचास-दो साल बाद, उनके अवशेष अक्षुण्ण पाए गए। 1192 में, पवत्रि राजकुमार एक ईश्वर-भयभीत व्यक्ति को एक दर्शन में दखिाई दिए और कहा: 'प्राधकिरणों से कहो कि वे अवशेषों को पवत्रि त्रमिूर्त के चर्च में स्थानांतरति करें: मैं वहीं वश्राम करना चाहता हूँ। प्रभु यीशु मसीह ने प्सकोव शहर मुझे सौंपा है, ताकि मैं इसकी रक्षा करूँ।'

उस समय, उनके पवत्रि अवशेषों को श्रद्धापूर्वक पवत्रि त्रमिूर्त के कैथेड्रल में स्थानांतरति कयिा गया था[1797]। तब से, धन्य राजकुमार वसेवोल्ड की कब्र पर, उनके पवत्रि अवशेषों के पास वश्वास के साथ आने वालों के लिए अनेक चमत्कारकि उपचार होने लगे हैं, हमारे प्रभु, मसीह यीशु की महमिा के लिए, जसिकी महमिा अब और हमेशा और युगों-युगों तक हो।

ट्रोपारयिन, स्वर 4:

हे ईश्वर-ज्ञानी राजकुमार गैब्रयिल, अपने यौवन से ही आप एक दव्यि पात्र के रूप में प्रकट हुए, जो ईश्वर द्वारा चुने गए और भक्ति में पाले गए; आपने एक नर्दिोष आस्था को बनाए रखा और कई पवत्रि चर्चों की स्थापना करने के बाद, आपने अपने ही लोगों से नर्वासन सहा, ठीक वैसे ही जैसे आपके पवत्रि पूर्वजों को उनके भाई के हाथों हत्या का शकिार होना पड़ा। पवत्रि त्रमिूर्त के समक्ष उनके साथ खड़े होकर, प्रार्थना करें कि रूसी साम्राज्य संरक्षति रहे और हम सभी का उद्धार हो।

कॉन्टाकयिन, स्वर 8:

धन्य राजकुमार गैब्रयिल, आप बुद्धमिानी से प्सकोव नगर में बस गए, इस जीवन में आप परमेश्वर के लिए एक अच्छा फल थे, सदा गुणों से खलि रहे, और अपनी नष्किपटता में दाऊद के समान थे: इस कारण से आपको स्वर्ग में अनंत

[1796] पोलोत्स्क अब वटिेब्स्क गवर्नरेट में एक जलिा शहर है, जो पोलोटा नदी और पश्चमिी ड्वनिा के संगम पर स्थति है। पोलोत्स्क की रयिासत ने वटिेब्स्क गवर्नरेट के अधकिांश भाग के साथ-साथ मोगलिेव, मन्स्क और वल्नियिस गवर्नरेट के कुछ हस्सिों पर भी कब्ज़ा कयिा था।
[1797] यह 1192 में था।

जीवन प्राप्त हुआ है, जहाँ आप सदा पवित्र त्रिमूर्ति को निहारते हैं। प्रार्थना करें कि हम सभी विपत्तियों से मुक्त हों, ताकि हम आपसे पुकार कर कह सकें: "हे हमारे नगर की शक्ति, आपको हर्षित होने का अभिनंदन।"

25 फरवरी

12 फरवरी (पुराना कैलेंडर)

हमारे पवित्र पिता मेलेटियस, अंकोना के आर्चबिशप का जीवन।

12 फरवरी को स्मरण किया जाता है

संत मेलेटियस प्रारंभ में आर्मेनिया में सेबास्टे के बिशप थे[1798] , लेकिन बाद में उन्हें निम्नानुसार अंकोन के आर्चबिशप के पद पर पदोन्नत किया गया। एंटिओक के आर्चबिशप यूडोक्सियस[1799] , जो एरियन विधर्म के अनुयायी थे, कॉन्स्टेंटिनोपल के धर्मप्रांत की संपत्ति से लुभाकर वहाँ आना चाहते थे, क्योंकि दुष्ट विधर्मी मैसेडोनियस[1800] , जो पहले कॉन्स्टेंटिनोपल में महा-चरवाहे का पद धारण कर चुके थे, को पदच्युत कर दिया गया था, और कॉन्स्टेंटाइन महान के पुत्र कॉन्स्टैंटियस[1801] के शासनकाल में, कॉन्स्टेंटिनोपल की चर्च कई खजानों से भरपूर थी और अंत्योकिया तथा अन्य चर्चों की तुलना में कहीं अधिक समृद्ध थी; अतः यूडोक्सियस ने अंत्योकिया के सिंहासन की परवाह किए बिना कॉन्स्टेंटिनोपल के सिंहासन पर लालच करना शुरू कर दिया। अपने आर्चबिशप की साजिशों के बारे में पता चलने पर, अंत्योखिया के लोगों को यूडॉक्सियस से बहुत आघात पहुँचा, वे अपने ही चर्च को तुच्छ समझने के लिए उससे नाराज़ हो गए, और परिणामस्वरूप उसे निकाल दिया। कॉन्स्टेंटिनोपल के लिए रवाना होने पर, यूडॉक्सियस को वहाँ बिशप के रूप में स्थापित किया गया[1802] ; जबकि एंटिओक के निवासियों ने एक परिषद बुलाई और इस पर विचार-विमर्श किया कि यूडॉक्सियस की जगह किसे चुना जाए; इस परिषद में, उपस्थित लोगों में से अधिकांश एरियन थे, जो उस समय बहुत शक्तिशाली थे; हालाँकि, ऑर्थोडॉक्स की संख्या कम थी; इसके अलावा, उन्हें तुच्छ समझा जाता था और उन्हें संत यूस्टेथियस के नाम पर यूस्टेथियन कहा जाता था, जो एंटिओक के आर्चबिशप रहते हुए अपने ऑर्थोडॉक्स विश्वास के लिए निर्वासित कर दिए गए थे। उस परिषद में उपस्थित सभी लोगों के मुख पर संत मेलेटियस का नाम था; हर कोई उन्हें अपना आर्चबिशप बनाना चाहता था, लेकिन एरियनों की यह इच्छा सबसे अधिक थी: क्योंकि वे उन्हें अपने विचारधारा का मानते थे और आशा करते थे कि वह, एक यूस्टैथियन होने के नाते, उनके सिद्धांतों से सहमत हो जाएंगे और पूरे एंटिओक को एरियन विधर्म सिखाएंगे। इस प्रकार, उस परिषद में मेलेटियस को सर्वसम्मति से आर्चबिशप के पद पर चुना गया; सभी ने अपने हस्ताक्षर के साथ परिषद के प्रस्ताव की पुष्टि की और इसे सामोसाटा के बिशप, संत यूसेबियस की देखभाल में सौंप दिया, जो ऑर्थोडॉक्स आस्था वाले व्यक्ति थे और उस परिषद में उपस्थित थे। फिर उन्होंने शाही फरमान के साथ अपनी विनती संत मेलेटियस को भेजी, और लोगों की एक बड़ी सभा के बीच, बड़े सम्मान के साथ, वे उन्हें अंतीयक ले आए; बिशप थियोडोरेट[1803] इस पवित्र व्यक्ति के शहर में आगमन का वर्णन इस प्रकार करते हैं: 'जब महान मेलेटियस, राजा द्वारा बुलाए गए, अंtओक के पास पहुँचे, तो पुरोहित का पद धारण करने वाले सभी, चर्च के सेवकों और सभी

[1798] आर्मेनिया में सेबास्टे – एशिया माइनर के उत्तर-पूर्व में।

[1799] यूडोक्सियस ने 357 से 358 तक एंटिओक में पैट्रिआर्क का पद संभाला।

[1800] कॉन्स्टेंटिनोपल के पैट्रिआर्क, मैकेडोनियस प्रथम ने 341 में पैट्रिआर्क का पद संभाला; बाद में उन्हें एक विधर्मी के रूप में पदच्युत कर दिया गया, लेकिन उन्होंने 360 तक कई बार पैट्रिआर्क का अधिकार छीन लिया। मैसेडोनियस ने पवित्र आत्मा के विषय में विधर्मी शिक्षा दी, यह दावा करते हुए कि वह केवल एक प्राणी है, और उसमें पिता और पुत्र की दिव्यता और महिमा में कोई हिस्सा नहीं है।

[1801] सम्राट कॉन्स्टैंटियस ने 337 से 361 तक शासन किया।

[1802] यूडोक्सियस ने 360 से 370 तक कॉन्स्टेंटिनोपल के पैट्रिआर्क के रूप में कार्य किया।

[1803] साइप्रस के बिशप थियोडोरेट, चर्च के सबसे उल्लेखनीय शिक्षकों में से एक और 5वीं शताब्दी के एक प्रसिद्ध चर्च-इतिहासकार थे। वे अपनी 'चर्च-इतिहास' में उपरोक्त घटना का वर्णन करते हैं।

नागरकिों ने उनका स्वागत कयिा: वहाँ यहूदी और अवशि्वासी भी मौजूद थे, और सभी एक ही बात चाहते थे - सबसे गौरवशाली मेलेटयिस को देखना।'

थेओडोरेट इस घटना का वर्णन इस प्रकार करते हैं। इस प्रकार, संत मेलेटयिस को अंtओक का आर्चबशिप पद पर अभषिक्ति कयिा गया, क्योंकि वह इस पद के योग्य, अत्यंत बुद्धमिान और पवत्रिता से परपिूर्ण व्यक्ति थे; उसी समय में जीवति संत एपफिेनयिस भी उनकी गवाही देते हैं। उनकी प्रशंसा करते हुए, वे उनके बारे में इस प्रकार लखिते हैं: 'वह पुरुष (संत मेलेटयिस) हमारे बीच बहुत सम्मानति हैं; उनकी अच्छी ख्याति दूर-दूर तक फैली हुई है; वे अपने जीवन में दृढ़ और ईमानदार हैं, और उनका आचरण प्रशंसनीय है; लोग उनके नर्दिोष जीवन के लिए उनसे प्रेम करते हैं; सभी उनसे बहुत प्रभावति हैं।'

इस प्रकार संत एपफिानयिस मेलेटयिस के बारे में कहते हैं। लोगों का उनके प्रति कितिना स्नेह था, यह इस तथ्य से स्पष्ट है कि उनके अभषिेक के अवसर पर, हर कोई उन्हें अपने घर आमंत्रति करने का प्रयास करता था, इस आशा में कि संत के आगमन से उन पर आशीर्वाद की वर्षा होगी।

एंटीओक के सहिासन पर आसीन होने पर, संत मेलेटयिस ने लोगों को सदाचारी जीवन और अच्छे आचरण के लिए उत्साहपूर्वक उपदेश देना शुरू कर दयिा, और उनके हृदयों को सच्ची ऑर्थोडॉक्सी के मार्ग के लिए तैयार कयिा; क्योंकि संत का मानना था कि यदि वह पहले लोगों की बुरी आदतों को सुधारें, उनके हृदय के खेत से काँटों और खरपतवारों को उखाड़ फेंकें, तो वह अपने झुंड की आत्माओं में ऑर्थोडॉक्सी के बीज अधकि सफलतापूर्वक बो सकते हैं। तभी मेलेटयिस ने महान बेसलि को, जो अंतीयक से यरूशलेम आए थे, एक डकिन के रूप में नयिुक्त कयिा। उस समय के एक अन्य प्रसद्धि व्यक्ति, संत जॉन क्राइसोस्टोम, उस समय एक छोटे लड़के थे; उन्हें संत ने बपतस्मिा दयिा था, वे मेलेटयिस का स्वागत करने वाली भीड़ में थे, और जब बेसलि अंफयिोपोलसि में थे, तब वे अपनी धर्मशास्त्रीय शक्षिा प्राप्त कर रहे थे; बाद में, सेंट मेलेटयिस के लिए अपने प्रशंसा-भाषण में, उन्होंने चर्च से उस तीस-दविसीय बहष्किार का वर्णन कयिा जसिके अधीन संप्रदायवादयिों ने संत को रखा था। यह इस प्रकार हुआ। पूरी मंडली यह जानना चाहती थी कि उनका नया आर्चबशिप ठीक-ठीक कसि धर्म-वशि्वास का पालन करता था; जब मेलेटयिस से इस बारे में पूछा गया, तो उन्होंने चर्च में लोगों को परमेश्वर के वचन पर एक उपदेश दयिा, जसिमें उन्होंने नकियिा में आयोजति प्रथम सार्वभौमकि परषिद में पुष्टि कएि गए ऑर्थोडॉक्स वशि्वास की प्रशंसा की; उन्होंने यह भी स्वीकार कयिा कि परमेश्वर का पुत्र समभावकि है, एक ही सार का और परमेश्वर पति के समान है, कि वह सृजति नहीं है, और वह सभी सृष्टि का सृष्टकिर्ता है। इस प्रकार संत ने ऊँचे स्वर में लोगों को उपदेश दयिा; यह सुनकर, अंफ़यिोकी़ कलीसयिा का महादीक़न, जो आरयिस की वधिर्मी शक्षिाओं का अनुयायी था, अपने महाधर्माध्यक्ष के पास आया और नडिर होकर संत के मुँह पर अपना हाथ रख दयिा, ताकि वह न तो सच्चे वशि्वास की घोषणा कर सके और न ही ऑर्थोडॉक्स धर्म की शक्षिा दे सके। हालाँकि महाधर्माध्यक्ष के हाथ ने मेलेटयिस को बोलने से रोक दयिा, फरि भी उन्होंने अपना हाथ लोगों की ओर बढ़ाया और अपनी उंगलयिों से अपनी जीभ से भी अधकि स्पष्ट रूप से पवत्रि त्रमिूर्ति की घोषणा की: पहले उन्होंने तीन उंगलयिाँ उठाईं, जो ईश्वरत्व के तीन व्यक्तयिों का प्रतनिधित्वि करती थीं; फरि, दो को नीचे झुकाकर, उन्होंने एक को ऊपर उठाए रखा, जो तीन व्यक्तयिों में एक ईश्वरत्व को दर्शाता था। यह देखकर, महादीकन ने संत के होंठ छोड़ दएि और उस हाथ को पकड़ लयिा जसिने त्रमिूर्ति को इतनी स्पष्ट रूप से दर्शाया था। स्वयं को मुक्त करने के बाद, संत ने अपनी जीभ से एक ही त्रमिूर्ति की घोषणा और महमिा करना शुरू कर दयिा, और उनसे सुनने वाले लोगों को नकियिा परषिद में स्थापति धर्म-वशि्वास पर दृढ़ता से और अटूट रूप से कायम रहने के लिए प्रोत्साहति कयिा: उन्होंने कहा, 'जो कोई भी नकियिा परषिद के सद्धिांतों को अस्वीकार करता है, वह सत्य से बहुत दूर है।' और ऐसा बहुत समय तक चलता रहा: उपर्युक्त आर्चडीकन या तो संत के मुँह पर हाथ रखकर उन्हें बोलने से रोकता, या उनके हाथ को रोककर उन्हें अपनी उंगलयिों से त्रमिूर्ति का चह्नि बनाने से रोकता, जबकि संत बारी-बारी से अपने होठों और अपनी उंगलयिों से लोगों को स्पष्ट रूप से ऑर्थोडॉक्स धर्म का उपदेश देते रहे। तब ऑर्थोडॉक्स, जन्हिें वधिर्मी 'यूस्टैथयिन्स' कहते थे, प्रेरतिकि सहिासन पर ऐसे धर्मनष्ठि बशिप को देखकर परम हर्षति हुए, और अपने चरवाहे की सच्ची स्वीकारोक्ति का समर्थन करते हुए, उल्लास से उद्घोषणा करने लगे; पूर्व एरयिनों को गहरा दुख हुआ। उन्होंने चर्च से ईश्वर के बशिप को नकिाल दयिा और

हर जगह उनकी बदनामी करने लगे, यह दावा करते हुए कि वह एक विधर्मी, सेबेलीउस की शिक्षाओं का अनुयायी था[1804] : उन्होंने राजा कॉन्स्टेंटियस को मेलेटियस की निंदा करने और उसे उसके मूल देश आर्मेनिया में निर्वासित करने के लिए भी मना लिया। रात के दौरान, संत को अंतीयक से बाहर ले जाया गया और आर्मेनिया भेज दिया गया, जबकि यूज़ो नामक एक व्यक्ति, जो एरियस का अनुयायी था और मेलेटियस के चुनाव के समय तक डीकन था, को उनके स्थान पर चुन लिया गया।

समोसता के बिशप, संत यूसेबियस ने, यह देखकर कि विधर्मियों के हाथों अंताकिया की कलीसिया में इतना उथल-पुथल मची हुई थी, जिन्होंने अपने निर्दोष बिशप, संत मेलेटियस को निकाल दिया था, इस पर गहरा खेद व्यक्त किया। वे उठे, किसी को सूचित किए बिना एंटिओक छोड़ दिया और अपने शहर के लिए रवाना हो गए। यूसेबियस के प्रस्थान के बारे में पता चलने पर, एरियनों को याद आया कि उनके पास संत मेलेटियस के महाधर्माध्यक्ष पद के लिए नियुक्ति पत्र था, जिसे पूरी परिषद ने तैयार किया और हस्ताक्षर किया था: उन्हें डर था कि संत यूसेबियस एक दिन किसी परिषद में उनकी निंदा कर सकते हैं, क्योंकि उन्होंने स्वयं सर्वसम्मति से एक आर्चबिशप चुना था और बाद में उसे निकाल दिया था; इसलिए, उन्होंने उस राजा से विनती की, जो उस समय अंताकिया में था, कि वह यूसेबियस से चार्टर वापस लेने के लिए एक दूत भेजे।

राजा ने तुरंत यूसेबियस के पीछे एक घुड़सवार भेजा, ताकि वह जल्द से जल्द बिशप तक पहुँच सके। जब संदेशवाहक यूसेबियस तक पहुँचा और उसे राजा का आदेश दिया, तो पवित्र बिशप ने उत्तर दिया: 'मैं अभी पत्र सौंप नहीं सकता, बल्कि तब ही सौंपूँगा जब वे सभी जो इसे मुझे सौंपे थे, फिर से एक साथ इकट्ठा हो जाएँ।'

इस प्रकार संदेशवाहक कुछ भी हासिल किए बिना राजा के पास लौट आया। तब राजा बहुत क्रोधित हो गया और एक पत्र लिखकर उसे संत यूसेबियस के पास भेज दिया; इस पत्र में लिखा था कि यदि यूसेबियस ने चार्टर नहीं सौंपा, तो उसका दाहिना हाथ काट दिया जाएगा। राजा ने यह केवल संत को डराने के लिए लिखा था, लेकिन उसने दूत को अपनी धमकी को अंजाम देने से मना कर दिया। जब राजा का दूत दूसरी बार पवित्र बिशप के पास पहुँचा और उन्हें धमकी भरा पत्र सौंपा, तो यूसेबियस ने उसे पढ़कर दोनों हाथ फैला दिए और कहा: 'तुम मेरा दाहिना हाथ ही नहीं, बल्कि बायाँ हाथ भी काट सकते हो, फिर भी मैं यह दस्तावेज़ नहीं दूँगा, क्योंकि यह स्पष्ट रूप से एरियनों की दुर्भावना और अराजकता को उजागर करता है।'

एक बार फिर, दूत को खाली हाथ लौटना पड़ा। संत के उत्तर को सुनकर, राजा यूसेबियस के निडर साहस और अटूट दृढ़ता से बहुत आश्चर्यचकित हुआ, और बाद में उसने कई लोगों के सामने उनकी बहुत प्रशंसा की।

संत मेलेटियस को आर्चबिशप के पद से हटाए जाने के बाद, ऑर्थोडॉक्स एरियनों से अलग हो गए; उन्होंने अपने लिए शहर की दीवारों के बाहर पैलिया नामक स्थान पर एक चर्च ले लिया, और उस चर्च में पादरी पावलिनि ने ऑर्थोडॉक्स चर्च की रीतियों के अनुसार उनके लिए प्रार्थना सभा आयोजित की। कुछ वर्षों बाद, सम्राट कॉन्स्टैंटियस की मृत्यु हो गई, और जूलियन द एपोस्टेट[1805] उनके उत्तराधिकारी बने। अपने शासन की शुरुआत में, जूलियन ने पाखंडपूर्वक खुद को धार्मिक दिखाया; उन्होंने निर्वासन में रहे सभी बिशपों को रिहा कर दिया और उन्हें अपने-अपने पद पर लौटने का आदेश दिया। तब शाही फरमान द्वारा, संत मेलेटियस अपनी कैद से अंतीयक लौटे। उन्होंने पाया कि उस शहर में ऑर्थोडॉक्स चर्च दो गुटों में विभाजित हो गई थी: कुछ उनके, यानी संत मेलेटियस के, आर्चबिशप के पद पर लौटने का इंतजार कर रहे थे, जबकि अन्य, उनका इंतजार किए बिना, उपरोक्त पादरी पॉलिनस को बिशप चुन चुके थे; बाद वालों को तब पॉलिनियंस और पहले वालों को मेलेटियंस कहा जाता था: संप्रदायिक विभाजन का कारण यह भी था कि पॉलिनियंस अपने संप्रदाय में अरिअस के सिद्धांत के उन अनुयायियों को स्वीकार नहीं करते थे जो संत मेलेटियस की शिक्षा के माध्यम से ऑर्थोडॉक्सी में लौट आए थे, और उन्होंने ऐसे लोगों को दो कारणों से स्वीकार करने से इनकार कर दिया: पहले, इन व्यक्तियों का बपतिस्मा एरियनों द्वारा दिया गया था; और दूसरे, क्योंकि संत मेलेटियस स्वयं को एरियनों द्वारा अंफ़ियालोपोलिस का आर्चबिशप चुना गया था, जो परिषद में ऑर्थोडॉक्स से संख्या में अधिक थे: दोनों समूह समान रूप से ऑर्थोडॉक्स सिद्धांतों का पालन करते थे, लेकिन यह विभाजन केवल वर्णित परिस्थितियों के कारण हुआ। वापस आने पर, संत ने मसीह

[1804] सेबेलीयस ने पवित्र त्रिमूर्ति के रहस्य के बारे में गलत शिक्षा दी, यह दावा करते हुए कि ईश्वर एक ही व्यक्ति हैं: पिता के रूप में, वे स्वर्ग में हैं; पुत्र के रूप में, पृथ्वी पर; और पवित्र आत्मा के रूप में, सृजित प्राणियों के भीतर।

[1805] जूलियन द एपोस्टेट ने 361 से 363 तक शासन किया।

के वभिाजति झुंड को फरि से एकजुट करने के लिए लगन से प्रयास करना शुरू कर दयिा। आर्चबशिप, जो हृदय से नम्र और वनिम्र थे, ने पॉलनिस के बशिप पद को नकार नहीं दयिा बल्कि उसे मान्यता दी, जबकि उन्होंने स्वयं एक नए झुंड का मार्गदर्शन कयिा – अर्थात् वे लोग जो एरयिनवाद से ऑर्थोडॉक्सी में परविर्तति हुए थे, जन्हिें उस समय पॉलनियिनों ने संप्रदाय में शामलि करने से इनकार कर दयिा था। जब अधर्मी जूलयिन, सहिासन पर स्थापति हो जाने के बाद, ने खुले तौर पर मसीह का त्याग कर दयिा और मूर्तयिों की पूजा करने लगा, तो संत मेलेटयिस को एक बार फरि से एंटओिक से नकिाल दयिा गया। जूलयिन के वशिाल साम्राज्य में मसीहयिों के खलिाफ उत्पीड़न शुरू कर दयिा गया, और यह एंटओिक में वशिेष रूप से गंभीर था। अधर्मी राजा, अपनी पूरी सेना के साथ फारस के लिए एक अभयिान पर नकिलकर, एंटओिक पहुँचा: यहाँ उसने अपोलो मूर्तकिो कई बलदिान चढ़ाए, जो डाफ्ने नामक स्थान पर स्थति थी; यह स्थान एंटओिक के उपनगरों में स्थति था: जहाँ पवत्रि शहीद बेबलिस और तीन शशिुओं के अवशेष भी रखे गए थे। एक दनि, राजा ने अपने झूठे देवता अपोलो से—जो कभी लोगों को उत्तर दयिा करता था—पूछा कि क्या वह फारसयिों को हराएगा। मूर्तनि ने उसे कोई जवाब नहीं दयिा, क्योंकि जब से संत बाबलिस के अवशेष उस स्थान पर लाए गए थे, तब से वह दानव वहां से भाग गया था: उस समय से, मूर्ति, जो पहले कई बातों की भवष्यिवाणी करती थी, जवाब देना बंद कर गई, क्योंकि यह वही दानव था जो मूर्तकि माध्यम से भवष्यिवाणी कर रहा था। राजा इस बात से दुखी था कि मूर्तभिवष्यिवाणी करना बंद कर देगी: स्थानीय पुरोहतिों से यह जानने के बाद कि बेबीलस के अवशेष अपोलो की मूर्तकि मौन का कारण थे, उसने गलीलयिाई लोगों - जैसा कि वह ईसाइयों को कहता था - को उन अवशेषों को वहां से हटाने का आदेश दयिा। वे वहाँ से हटे ही थे कि स्वर्ग से अपोलो के मंदरि पर आग बरस पड़ी और मूर्तसिहति पवत्रि स्थल को जला दयिा: इसने धर्मद्रोही पुरोहतिों को बहुत दुख और शर्मदिगी पहुँचाई, और उन्होंने ईसाइयों से बदला लेने का संकल्प लयिा। इस उद्देश्य के लिए, उन्होंने राजा को बताना शुरू कर दयिा कि गलीलयिाई लोगों ने नफरत के कारण रात में अपोलो के मंदरि में आग लगा दी थी। तब राजा क्रश्चियिनों पर आग-बबूला हो गया: उसने उन्हें सताने और भगा देने का आदेश दयिा; उसी समय, आर्चबशिप सेंट मेलेटयिस को शहर से नकिाल दयिा गया; अन्य क्रश्चियिन, अपनी मर्जी से अंऽओक से भागकर, गुप्त आश्रयों में छपि गए। उस समय, अंफ़ियिोके़ के दो पवत्रि पुरोहति—यूजीन और मकारयिस—और संत आर्टेमयिस को भी यातनाएँ दी गईं। जब इस ईश्वर-द्वेषी सम्राट जूलयिन की भयानक मृत्यु हुई, तो धर्मपरायण और मसीह-प्रेमी जोवयिन[1806] , साम्राज्य सहिासन पर आसीन हुए। तब संत मेलेटयिस एक बार फरि अंतीयक में ऑर्थोडॉक्सी के चरवाहे और शक्षिक बने, और सम्राट जोवयिन ने पूजनीय संत का बहुत सम्मान कयिा और उनसे अत्यधकि स्नेह कयिा। परणिामस्वरूप, एरयिन संत से डरने लगे। उनके कुछ बशिपों ने तो पाखंडपूर्वक ऑर्थोडॉक्स धर्म-स्वीकृतकिा समर्थन करना भी शुरू कर दयिा, ताकि वे सम्राट और एंटओिक के आर्चबशिप मेलेटीयस को खुश कर सकें।

उस समय, सेंट मेलेटयिस और सेमोसाटा के यूसेबयिस द्वारा आयोजति, अंतीयक में एक स्थानीय परषिद बुलाई गई। इस परषिद में, अरअिनों ने पुत्र को पति के समान सार का माना और नकिया की प्रथम सार्वभौमकि परषिद में स्थापति सच्चे धर्म को स्वीकार कयिा; लेकनि उनका यह बयानी असत्यपूर्ण और झूठा था, क्योंकि जब कुछ ही समय बाद राजा जोवयिन की मृत्यु हो गई और वैलेंस[1807] सहिासन पर बैठ गया, तो वधिर्मीयों ने स्पष्ट रूप से प्रदर्शति कयिा कि उन्होंने अपना वधिर्म नहीं छोड़ा था; उन्होंने अपनी पत्नी, डोमनीका के माध्यम से राजा को भी गुमराह कयिा। तब ऑर्थोडॉक्स चर्च पर फरि से अत्याचार शुरू हो गया, और उसके पादरयिों को एक बार फरि से भगा दयिा गया: यह अधर्मी राजा वैलेंस लंबे समय तक एंटओिक में रहा, जहाँ उसने एरयिन संप्रदाय की कुरीतकिो बढ़ावा दयिा और फैलाया; मूर्तविादयिों द्वारा उकसाए जाने पर, उसने सबसे पवत्रि आर्चबशिप मेलेटयिस को भी नर्विासति कर दयिा; और संत वेलेंट की मृत्यु तक नर्विासन में रहे।

वैलेन्टनिस के बाद, धर्मपरायण राजा ग्राटयिन सहिासन पर आसीन हुए[1808] ; उस समय शाही आदेश द्वारा ऑर्थोडॉक्स बशिपों को एक बार फरि कैद से रहिा कयिा गया और उन्होंने बनिा कसिी बाधा के अपने पद ग्रहण कएि। तब संत मेलेटयिस तीसरी बार अपनी आसन एंटओिक में लौटे, लेकनि दो बशिप – पॉलनिस और मेलेटयिस – को लेकर वशि्वासयिों में असहमतबिनी रही: कुछ लोग एक को वैध बशिप मानते थे, जबकि अन्य दूसरे को, और दोनों पक्ष एक-

[1806] जोवयिन ने 363 से 364 तक शासन कयिा।
[1807] वैलेन्स ने 364 से 378 तक शासन कयिा।
[1808] ग्रेटयिन ने 383 से 392 तक शासन कयिा।

दूसरे से अलग-थलग थे; संत ने उन्हें सुलझाने में अपनी सारी कोशशिें लगा दीं। तब धर्मपरायण और मसीह-प्रेमी राजा ग्राटयिन ने अपने पूरे राज्य के लिए एक फरमान जारी कयिा, जसिके अनुसार सभी चर्चों को एरयिनों से छीनकर ऑर्थोडॉक्स को लौटाया जाना था। सपोर् नामक एक राजकुमार यह शाही फरमान लेकर अंतीयकयिा पहुँचा। राजा के दूत की उपस्थतिि में, संत मेलेटयिस ने बशिप पॉलनिस से ये शब्द कहे: 'चूंकि प्रभु ने मुझे इस झुंड की देखभाल का कार्य सौंपा है, और आपने अपने मार्गदर्शन में उनमें से एक हस्सिा मुझसे ले लयिा है, जबकि भेड़ें स्वयं वशि्वास के मामलों में एक-दूसरे से कसिी भी तरह से भन्नि नहीं हैं, तो आइए हम झुंड को एक करें, मेरे भाई; आइए हम सर्वोच्चता को लेकर सभी ववािदों को समाप्त करें; आइए हम इन आध्यात्मकि भेड़ों की एक साथ चरवाहा करें, और उनकी संयुक्त रूप से देखभाल करें। यदि, तथापि, महाधर्मपालक सहिासन का स्वामत्वि हमारे बीच कलह का कारण बनता है, तो मैं इसे समाप्त करने का प्रयास करूँगा: मैं इस सहिासन पर दव्यि सुसमाचार रखूँगा, और हम इस प्रकार आगे बढ़ेंगे: हम दोनों सुसमाचार के दोनों ओर बैठेंगे, और यदि मैं पहले अपना सांसारकि सफर पूरा करूँ, तो तुम अकेले ही झुंड का चरवाहा बनना; लेकनि यदि तुम पहले अपना प्राण ईश्वर को अर्पति करोगे, तो मैं अपनी पूरी क्षमता से झुंड की देखभाल करूँगा।' यह प्रस्ताव संत मेलेटयिस ने रखा था, जो अपनी असाधारण नम्रता के लिए प्रसद्धि थे, लेकनि पॉलनिस इससे सहमत नहीं हुए। तब राजकुमार सापor ने यह बात राजा को बताई और उससे उत्तर मलिने पर, उसने एरयिनों से कैथेड्रल चर्च और अन्य चर्चों को छीनकर परम पावन मेलेटयिस को सौंप दयिा, जबकि पाउलनिस उन भेड़ों का चरवाहा बना रहा जन्हिें उसने एक बार मेलेटयिस से छीन लयिा था। इस प्रकार, पवत्रि आर्चबशिप ने उस सहिासन का पदभार संभाला जसिके लिए उन्हें एक संप्रदायकि फरमान द्वारा सर्वसम्मतिसे चुना गया था। उन्होंने अपने झुंड का उत्साहपूर्वक और बुद्धमिानी से, शांति और सुकून के साथ मार्गदर्शन करना शुरू कयिा, जब तक कि उनका परम धन्य नधिन नहीं हो गया। अब अरीयनों का चर्च ऑफ़ क्राइस्ट और उसके अच्छे चरवाहों पर हावी होना या उनका उत्पीड़न करना संभव नहीं रहा; वशिेष रूप से, वे अब सेंट मेलेटयिस का उत्पीड़न नहीं कर सकते थे, जो सूर्य की तरह चमके, चर्च को प्रकाशति कयिा और संप्रदायवाद के अंधकार को दूर कयिा। उनकी शक्षिाओं का पालन करते हुए, कई एंटओकयिाई सद्गुण और ऑर्थोडॉक्स वशि्वास में फलते-फूलते हुए, उनके जैसे ही चर्च के चमकते हुए दीपक बन गए। ऐसे थे फ्लेवयिन[1809] , जो मेलेटयिस के बाद उनके पद पर आसीन हुए; अकाकयिस, जो बाद में बेरयिा के बशिप बने; टारस के डायोडोरस; और एल्पडियिस, मेलेटयिस के व्यवस्थापक, जन्होंने बाद में लाओडसियिा में बशिप का पद संभाला। वशिेष रूप से संत जॉन, जन्हिें बाद में क्रसिोस्टोम के नाम से जाना गया, जो संत मेलेटयिस द्वारा डीकन नयिुक्त कएि गए थे, और जॉन के मत्रि बेसलि—सीज़रयिा के नहीं, बल्कि उसी नाम के एक अन्य, हालांकि छोटे, जो अंoओकयिा के मूल नवािसी थे और संत जॉन के साथ बड़े हुए—प्रसद्धि हैं। इन लोगों और कई अन्य लोगों ने बाद में मसीह की कलीसयिा को, प्रत्येक ने अपनी-अपनी जगह पर, एक दीवट में रखे दीयों की तरह सुशोभति और प्रबुद्ध कयिा। उस समय, सीरयिा की भूमि में, जहाँ अंटीओक भी स्थति था, संत समिोन[1810] ने अपने तपस्वी प्रयास की शुरुआत की; उन्होंने बाद में स्तंभ पर चढ़ाई, लेकनि शुरुआत में उन्होंने खुद को एक ऊँटे पहाड़ पर लोहे की ज़ंजीर से बाँध लयिा, जैसा कि उनकी जीवनी में वर्णति है। यह सुनकर, धन्य मेलेटयिस उनके पास आए और उन्हें बेड़यिों में जकड़ा हुआ देखकर कहा: 'एक व्यक्ति बेड़यिों के बनिा भी खुद पर काबू रख सकता है; वह खुद को एक जगह से लोहे की ज़ंजीर से नहीं, बल्कि अपनी इच्छा और ववेिक से बांधता है।'

ये शब्द सुनकर, पूजनीय समिोन ने इस सलाह को अपने हृदय में बसा लयिा; उन्होंने अपनी बेड़यिाँ उतार दीं और अपनी ही इच्छा से खुद को बाँध लयिा, ताकि वे यीशु मसीह के एक स्वैच्छकि कैदी बन सकें।

संत मेलेटयिस के परमधाम गमन से ठीक पहले, धर्मपरायण थयिोडोसयिस[1811] सहिासन पर आसीन हुए; वे पहले राजा ग्राटयिन के अधीन एक प्रसद्धि सेनापति थे और अपनी बहादुरी के लिए बहुत सम्मानति थे, क्योंकि उन्होंने अक्सर वदिेशी आक्रमणकारी सेनाओं को बड़ी सम्मान के साथ पराजति कयिा था। यह थयिोडोसयिस, साम्राज्य सहिासन पर आरोहण करने से पहले ही, एक बार सपने में अंको के आर्चबशिप, संत मेलेटयिस को खड़ा देखा; उन्होंने उन्हें पहले कभी व्यक्तगित रूप से नहीं देखा था, बल्कि केवल उनके बारे में सुना था। अपने सपने में, थयिोडोसयिस ने मेलेटयिस को अपने बगल में खड़े होकर उस पर शाही खलमसि और शाही मुकुट रखते हुए देखा। जागने पर, थयिोडोसयिस ने अपनी इस दृष्टि

[1809] फ्लैवयिन ने 381 से 404 तक पैट्रआर्क के रूप में कार्य कयिा।

[1810] बेशक, संत समियिन, पहले स्तंभ संत, जनिकी स्मृति चर्च 1 सतिंबर को मनाती है।

[1811] थेओडोसयिस महान ने 379 में सहिासन संभाला और 395 तक शासन कयिा।

को अपने एक घरेलू नौकर को सुनाया और इस बात पर अचंभित हुआ कि इसका क्या अर्थ हो सकता है; कुछ ही समय बाद, यह दृष्टि सच हो गई। सम्राट ग्राटियन, यह महसूस करते हुए कि साम्राज्य के विशाल क्षेत्र के कारण अकेले उनके लिए पूर्व और पश्चिम दोनों पर शासन करना असंभव था, और यह देखते हुए कि बिर्बर लोग हर तरफ से खतरा पैदा कर रहे थे, ने राज्य के शासन के लिए एक सदाचारी, साहसी और रूढ़िवादी व्यक्ति के रूप में गवर्नर थियोडोसियस को अपना सहायक चुना: उसे उसने साम्राज्य के पूरे पूर्वी हिस्से का प्रभार सौंप दिया, जिसे पहले सम्राट वैलेंस के पास रखा गया था, जबकि उसने स्वयं पश्चिमी भाग ले लिया। पूर्वी आधे हिस्से पर कब्ज़ा करने और थ्रेस पर चढ़ाई कर रहे गोथों को हराने के बाद, थियोडोसियस कॉन्स्टेंटिनोपल पहुँचे और संत मेलेटियस से मिलना चाहते थे, जिन्होंने, जैसा कि उन्होंने एक सपने में देखा था, उन्हें सम्राट के रूप में ताज पहनाया था। उस समय, पवित्र और महान पितिओं, अर्थोडॉक्स बिशपों, और धर्मपरायण सम्राटों ग्रेटियन और थियोडोसियस की इच्छा से, दूसरा सार्वभौमिक परिषद कॉन्स्टेंटिनोपल में आयोजित होने लगा[1812] । पूरे विश्व के बिशपों को शाही फरमानों द्वारा इस परिषद में बुलाया गया था। तभी उनकी परम पावनता अंत्योखिया के आर्चबिशप मेलेटियस कास्तान्तिनोपल पहुँचे। सम्राट थियोडोसियस ने अपने कुलीनों और गृहस्थों को आदेश दिया कि कोई भी उनके सामने संत मेलेटियस की ओर इशारा न करे: वह स्वयं उन्हें पहचानना चाहते थे, उन्हें उस चेहरे से मिलाकर जिसे उन्होंने सपने में देखा था, और यह पूरी तरह से सुनिश्चित करना चाहते थे कि यह वास्तव में मेलेटियस ही थे, न कि कोई अन्य बिशप, जिन्होंने उन्हें अपने दर्शन में मुकुट पहनाया था। जब बिशपों की महान सभा शाही कक्ष में प्रवेश की, तो सम्राट ने उन्हें देखते ही तुरंत सेंट मेलेटियस को पहचान लिया। दूसरों को पीछे छोड़ते हुए और आगे बढ़ते हुए, वह मेलेटियस के पैरों पर गिर पड़े और संत के हाथों, छाती, आँखों, होंठों और सिर को चूमने लगे, मानो कोई सबसे श्रद्धालु पुत्र अपने पिता का अभिवादन कर रहा हो, जिसे वह बहुत लंबे समय से देखने के लिए तरस रहा था। सबके सामने, राजा ने बताया कि कैसे यह संत एक दर्शन में उसके सामने प्रकट हुए थे, उस पर एक शाही ताज और एक बैंगनी चोगा रखा था, और सभी बिशपों पर उसे प्राथमिकता दी थी। उस परिषद में, संत मेलेटियस ने निम्नलिखित चमत्कारिक संकेत से सभी को चकित कर दिया। जब एरियन लोग पवित्र त्रिमूर्ति के बारे में विधर्मी सिद्धांतों का प्रचार कर रहे थे और अपनी दुष्ट शिक्षाओं से पवित्र विश्वास को भ्रष्ट कर रहे थे, तब यह ईश्वर-भक्त खड़ा हुआ और, जिन लोगों ने उससे शिक्षा मांगी थी, उनके लिए उसने पवित्र त्रिमूर्ति के तीन व्यक्तियों के संकेत के रूप में तीन उंगलियां उठाईं; फिर, दो उंगलियों को एक साथ जोड़कर और एक को नीचे झुकाकर, उसने लोगों पर आशीर्वाद दिया। उस क्षण, एक ज्वाला, बिजली की चमक की तरह, उन्हें घेरे हुए थी, और संत ने ज़ोर से कहा: 'हम तीन हाइपोस्टेसीज़ को समझते हैं और एक सार के बारे में बात करते हैं।'

इस प्रकार संत मेलेटियस ने सभी को चकित कर दिया, विधर्मियों को शर्मिंदा किया, और ऑर्थोडॉक्स को ऑर्थोडॉक्स धर्म में मजबूत किया: उन्होंने कॉन्स्टेंटिनोपल के पैट्रिआर्कल सिंहासन पर संत ग्रेगरी द थियोलोजियन की भी पुष्टि की। थोड़ी ही देर बाद, जब परिषद अभी तक नहीं हुई थी और सभी बिशप कॉन्स्टेंटिनोपल में एकत्रित नहीं हुए थे, संत मेलेटियस थोड़े बीमार पड़ गए और उन्होंने शांतिपूर्वक अपना प्राण प्रभु[1813] को सौंप दिया, जिससे राजा, बिशप और सभी ऑर्थोडॉक्स लोग गहरे शोक में डूब गए। सभी ने इस महिमामय महा-धर्मगुरु को सम्मान के साथ दफनाया और उनके अवशेषों को अंतीयक ले जाया गया: वहाँ उनके पवित्र शरीर को शहर की सुरक्षा के लिए पवित्र शहीद बाबिला के पास विश्राम के लिए रखा गया, हमारे ईश्वर मसीह की महिमा के लिए, जो पिता और पवित्र आत्मा के साथ सदा-सदा महिमामय हैं। आमीन।

[1812] 381 में, इस परिषद में, मैसिडोनियाई विधर्म की निंदा की गई, और नाइसीन धर्मावार को पाँच नए अनुच्छेदों के साथ पूरक और पूरा किया गया।

[1813] एंटीओक के पैट्रिआर्क, संत मेलेटियस का 381 में दूसरे सार्वभौमिक परिषद के दौरान निधन हो गया। परिषद से पहले, निसा के संत ग्रेगरी ने संत मेलेटियस की स्मृति को एक प्रशंसा-भाषण से सम्मानित किया, और संत क्रिसोस्टोम ने पुरोहित के रूप में अपने अभिषेक पर ऐसा ही किया। संत मेलेटियस का एक प्रवचन प्राप्त हुआ है, जो मुख्य रूप से परमेश्वर पिता के साथ परमेश्वर के पुत्र की एकसारता से संबंधित है, साथ ही सम्राट जोवियन को लिखा एक पत्र भी है जिसमें उन्होंने पवित्र त्रिमूर्ति के प्रति अपने विश्वास का बयां किया है। संत मेलेटियस के अवशेष कॉन्स्टेंटिनोपल से एंटिओक ले जाए गए थे।

कॉन्टाकयिन, स्वर 6:

आपकी आत्मा की धृष्टता से भयभीत होकर, वधिर्मी मैसेडोनयिा से भाग जाता है; जब आपके सेवक अपनी प्रार्थनापूर्ण सेवा का नर्विहन करते हैं, हम प्रेम से आपकी ओर शीघ्रता से आते हैं, हे स्वर्गदूतों के सहचर, मेलेटीयस, हमारे परमेश्वर मसीह की अग्नमिय तलवार, जो सभी अधर्मीयों का वध करती है: हम आपके बारे में गाते हैं, हे दीपक जसिने सभी को प्रकाशति कयिा है।

हमारे पवत्रि पतिा अलेक्सयिस, मॉस्को और सर्व रूस के मेट्रोपॉलटिन, चमत्कार करने वाले की जीवन गाथा

12 फरवरी को स्मरणोत्सव

पवत्रि चमत्कार-कर्ता अलेक्सयिस, रूस के मेट्रोपॉलटिन, बोयार वंश के थे। उनके माता-पतिा, थयिोडोर और मैरी, चेरनगिोव के प्रसिपिल्टी के बोयार थे। संत अलेक्सयिस का जन्म मॉस्को में[1814] , मॉस्को के राजकुमार डैनयिल अलेक्जेंड्रोवचि[1815] के शासनकाल के दौरान हुआ था; उनके पुत्र और उत्तराधकिारी, राजकुमार जॉन डैनयिलोवचि[1816] – जो उस समय एक छोटे लड़के थे – उनके पवत्रि बपतस्मिा पर अलेक्सयिस के गॉडफादर थे, जब शशिु को एलेउथेरीउस नाम दयिा गया था। जब वह बड़ा हुआ, तो उसकी शक्षिा के लयि उसे शक्षिकों के हवाले कर दयिा गया। एक दनि, जब एलेउथेरीउस बारह वर्ष का था, वह खेत में पक्षयिों को पकड़ने के लयि जाल बछिा रहा था। उसी क्षण, वह लड़का गलती से सो गया और उसने एक आवाज़ सुनी: 'एलेक्सयिस, तुम व्यर्थ में परश्रिम क्यों कर रहे हो? मैं तुम्हें मनुष्यों का पकड़ने वाला बना दूँगा।'

जागने पर, लड़के ने अपने चारों ओर कोई नहीं देखा और जो उसने सुना था, उससे वह बहुत हैरान था। उस समय से, उसने इस आवाज़ का क्या मतलब हो सकता है, इस पर गहराई से सोच-वचिार करना शुरू कर दयिा। छोटी उम्र से ही ईश्वर से प्रेम करने के कारण, उन्होंने अपने माता-पतिा को छोड़ दयिा, ववािह का त्याग कर दयिा और एकमात्र प्रभु मसीह की सेवा करने की इच्छा से, मास्को में एपफिेनी मठ में आए, जहाँ उन्हें भक्षिु बनाया गया; भक्षिु बनने पर, उन्हें वह नाम दयिा गया जो उन्होंने अपने सपने में सुना था - अलेक्सयिस[1817] । उस समय, एपफिेनी मठ के मठाधीश महान चमत्कार-कर्ता राडोनेज़ के सर्गयिस के भाई स्टीफन थे; उन्होंने स्वयं सेंट एलेक्सयिस को संन्यास दीक्षा दी, जो तब बीस वर्ष के थे।

उस समय से लेकर चालीस वर्ष की आयु तक पहुँचने तक, संत अलेक्सयिस ने अथक परश्रिम कयिा; उन्होंने उपवास कयिा, हर रात प्रार्थना की और अन्य मठवासी तपस्या का अभ्यास कयिा, जसिसे कई लोग उनके उत्साह पर चकति हुए। अपने दैवी जीवन के कारण, सभी ने संत अलेक्सयिस का सम्मान और आदर कयिा; यहाँ तक कि मास्को के ग्रैंड प्रसि समियिन इओनोवचि[1818] और मेट्रोपॉलटिन थयिोग्नोस्टस[1819] ने भी उन्हें बहुत सम्मान दयिा। उनके कई सद्गुणों के लयि, उन्हें व्लादमिीर का बशिप[1820] नयिुक्त कयिा गया।

[1814] मेट्रोपॉलटिन सेंट एलेक्सयिस के पतिा, बोयार थयिोडोर ब्यकोन्ट, मास्को चले गए क्योंकि बटू खान द्वारा तबाह कए गए चेरनगिोव क्षेत्र पर लूटपाट करने वाले हमलावरों के हमले जारी थे। मजबूत और धार्मकि राजकुमार दानयिल अलेक्जेंड्रोवचि की सुरक्षा में, उन्होंने एक शांतपिूर्ण और शांत जीवन पाया। संत अलेक्सयिस का जन्म 1300 में हुआ था।

[1815] प्रसि डैनयिल अलेक्जेंड्रोवचि, सेंट अलेक्जेंडर नेवस्की के सबसे छोटे बेटे, जो मास्को के स्वतंत्र प्रसिपिल्टी के संस्थापक और मास्को के राजकुमारों के पूर्वज थे (1261–1303) – बाद में रूसी चर्च द्वारा उन्हें संत घोषति कयिा गया, और उनकी अवशेष, जो 1652 में अपरविर्तनीय पाए गए, अभी भी दानलिोव मठ के चर्च में सार्वजनकि रूप से रखे गए हैं, जसिकी स्थापना उन्होंने मस्कोवा नदी के तट पर की थी।

[1816] इसके बाद, मॉस्को के ग्रैंड प्रसि इयान दानलिोवचि कालति, 1328 से 1340 तक।

[1817] यह 1320 में था। मॉस्को में एपफिेनी (प्रथम श्रेणी) मठ की स्थापना 1296 में मॉस्को के राजकुमार दानयिल अलेक्ज़ान्द्रोवचि के शासनकाल में हुई थी।

[1818] मॉस्को के गर्वति महाप्रसि समियिन इओआनोवचि ने 1340 से 1353 तक शासन कयिा।

[1819] संत थयिोग्नोस्ट ने 1328 से 1353 तक रूसी चर्च का नेतृत्व कयिा। उन्होंने व्लादमिीर के बजाय मास्को में रूसी मेट्रोपॉलटिन्स का सहिासन नश्चिति रूप से स्थापति कयिा।

[1820] संत पीटर और थयिोग्नोस्टस से पहले, मेट्रोपॉलटिन का मुख्यालय क्लाज़्मा पर स्थति व्लादमिीर था। संत अलेक्सयिस को 1352 के अंत में व्लादमिीर का बशिप नयिुक्त कयिा गया था। बारह साल पहले, मेट्रोपॉलटिन थयिोग्नोस्टस ने एलेक्सयिस को अपने आर्चबशिपल दरबार में रहने

जब मेट्रोपॉलिटन थियोग्नोस्टस का निधन हो गया, तो मास्को के ग्रैंड प्रिंस जॉन इयानोविच[1821] — जिन्होंने अपने भाई, ग्रैंड प्रिंस सिमियन के बाद सरकार की बागडोर संभाली थी — ने परिषद के आदेश द्वारा संत अलेक्सियस को मेट्रोपॉलिटन चुना और उन्हें परम पावन पैट्रिआर्क फिलोथियस[1822] द्वारा अभिषिक्त होने के लिए कॉन्स्टेंटिनोपल भेजा। फिलोथेउस ने संत अलेक्सियस को कीव और सम्पूर्ण रूस के मेट्रोपॉलिटन के रूप में अभिषिक्त किया। कॉन्स्टेंटिनोपल से लौटने पर, संत अलेक्सियस ने रूसी चर्च का नेतृत्व संभाला[1823] और उन्होंने अपने कार्यों के प्रति और भी अधिक समर्पण दिखाया, एक के बाद एक उपलब्धियाँ हासिल कीं, और अपने शब्दों, कर्मों और जीवन, अपने विश्वास और पवित्रता, तथा अपने आत्मा और प्रेम के माध्यम से सभी के लिए एक प्रकाशस्तंभ बने।

संत अलेक्सियस की ख्याति न केवल धर्मनिष्ठ ईसाइयों में फैली, बल्कि उन गैर-ईसाई मुसलमानों में भी जो मसीह को नहीं जानते थे। तीन साल पहले, तातार खान जानबिक ताइडुल की पत्नी ने अपनी दृष्टि खो दी। यह सुनकर कि ईश्वर संत अलेक्सियस की प्रार्थनाओं के माध्यम से अनेक चमत्कार कर रहे थे, जनबिक ने मॉस्को के महा राजकुमार दिमित्री इओआनोविच[1824] को संदेश भेजा, जिसमें उन्होंने अनुरोध किया कि वे इस ईश्वरपुरुष को उनके पास भेजें, ताकि वह उनकी रानी के लिए ईश्वर से प्रार्थना करके उसकी दृष्टि पुनःलौटा सके। जनबिक ने आगे कहा:

'यदि उस व्यक्ति की प्रार्थनाओं से रानी को स्वास्थ्य लाभ हो जाता है, तो आपसे मेरी शांति बनी रहेगी। लेकिन यदि आप उसे मेरे पास नहीं भेजते हैं, तो मैं आग और तलवार से आपके देश को तबाह कर दूँगा।'

जब जानबिक का अनुरोध मॉस्को पहुँचा, तो संत अलेक्सियस इस कार्य को अपनी शक्ति से परे समझकर दुखी हो गए। हालाँकि, ग्रैंड प्रिंस दिमित्री के अनुरोध पर, वे फिर भी खान जानबिक के दरबार के लिए रवाना हो गए। मॉस्को से प्रस्थान करने से पहले, उन्होंने परम पवित्र ईश्वर माता के डोर्मिशन को समर्पित कैथेड्रल में पुरोहितों के साथ एक प्रार्थना सभा का नेतृत्व किया। इस प्रार्थना सभा के दौरान, संत पीटर द वंडरवर्कर की कब्र के पास रखी मोमबत्ती अपने आप जल उठी, और सभी ने इस चमत्कार को देखा। इससे संत अलेक्सियस ने समझ लिया कि प्रभु उन्हें संकेत दे रहे थे कि उनकी यात्रा सुरक्षित होगी। उस मोमबत्ती का कुछ मोम लेकर और उससे एक छोटी मोमबत्ती बनाकर, संत ने अपने पुरोहितों के साथ मिलकर ईश्वर की दया में दृढ़ विश्वास रखते हुए, यात्रा की तैयारी शुरू कर दी।

धन्य व्यक्ति के मंगोलियाई राजधानी में आगमन से पहले ही, रानी ने अपने सपने में एक दर्शन देखा, जिसमें उन्होंने परमेश्वर के सेवक, संत अलेक्सियस को उनके धर्माध्यक्षीय वस्त्रों में, पुरोहितों के साथ देखा। जागने पर, उन्होंने तुरंत आदेश दिया कि बिशप और पुरोहितों के लिए, उनके द्वारा अपने दर्शन में देखे गए नमूने पर आधारित, कीमती वस्त्र बनाए जाएं। जैसे ही संत अलेक्सियस तातार की राजधानी पहुँचे, जानीबेक बड़े सम्मान के साथ उनका स्वागत करने के लिए बाहर आए और उन्हें अपने कक्षों में ले गए। संत ने प्रार्थना सेवा शुरू करने के बाद, आदेश दिया कि उनके साथ लाई गई छोटी मोमबत्ती को जलाया जाए। एक लंबी प्रार्थना के बाद, उन्होंने रानी पर पवित्र जल छिड़का, और वह तुरंत अपनी दृष्टि वापस पा गईं। खान, अपने कुलीनों और उपस्थित सभी लोगों के साथ, इस अद्भुत और शानदार चमत्कार से बहुत चकित हुए और उन्होंने ईश्वर की स्तुति की। एलेक्सियस[1825] और उनके साथियों को सम्मानित करने और उन्हें उदारतापूर्वक पुरस्कृत करने के बाद, जनबिख ने उन्हें शांति से विदा कर दिया।

हॉर्ड से लौटने के बाद, कुछ समय बीत जाने पर, संत अलेक्सियस को एक बार फिर से हॉर्ड के लिए निकलने के लिए मजबूर होना पड़ा। खान जानबिक की मृत्यु हो गई थी, और उसका क्रूर और खून का प्यासा बेटा, बर्दबिक, सिंहासन पर बैठ गया था। अपने बारह भाइयों को मारने के बाद, उसका इरादा अपनी सेना के साथ रूसी भूमि पर चढ़ाई करने का था। तब, ग्रैंड प्रिंस जॉन के अनुरोध पर, संत अलेक्सियस बर्दबिक से मिलने के लिए हुण्डी की ओर रवाना हुए और अपने कोमल और बुद्धिमानी भरे शब्दों से, क्रूर खान के क्रोध को शांत कर दिया। ईसाइयों के लिए शांति हेतु उस भयानक

और चर्च के न्यायिक मामलों की देखरेख करने का निर्देश दिया था; इसके अलावा, ग्रीक संत के साथ अपने निरंतर और सीधे संपर्क के माध्यम से, संत एलेक्सियस को ग्रीक भाषा से पूरी तरह से परिचित होने का अवसर और साधन दोनों मिले।

[1821] मॉस्को के महान राजकुमार जॉन द्वितीय इओनोविच ने 1353 से 1359 तक शासन किया।

[1822] पितृपक्षीय फिलोथियोस ने 1354 से 1355 तक, और फिर 1362 से 1376 तक कॉन्स्टेंटिनोपल के चर्च का नेतृत्व किया।

[1823] मॉस्को के मेट्रोपॉलिटन, सेंट एलेक्सियस ने 1354 से 1378 तक रूसी चर्च का नेतृत्व किया।

[1824] डोन के महान राजकुमार दिमित्री इवानोविच का जन्म 12 अक्टूबर 1350 को हुआ था; उन्होंने 1362 में महान राजकुमार का पद संभाला; उन्होंने मास्को में पत्थर का क्रेमलिन बनवाया; उन्होंने 27 वर्षों तक शासन किया और 40 वर्ष की आयु में निधन हो गया। उन्होंने 8 सितंबर 1380 को डॉन पर खान मामई को हराया; उनका निधन 19 मई 1389 को हुआ।

[1825] कृतज्ञ ख़ान ने संत को सम्मान के प्रतीक के रूप में एक अंगूठी भेंट की, जिसे आज भी पैट्रिआर्शल सैक्रिस्टी में रखा गया है।

शासक से मध्यस्थता करने के बाद, संत अलेक्सियस मास्को लौट आए, क्योंकि यहीं पर कीव के मेट्रोपॉलिटन, संत पीटर ने, बर्बर लोगों द्वारा बार-बार युद्धों और आक्रमणों के परिणामस्वरूप कीव मेट्रोपोलिस का धार्मिक केंद्र स्थानांतरित कर दिया था।

जब महान राजकुमार जॉन की मृत्यु हो गई, तो मास्को के नाबालिग राजकुमार दिमित्री इओआनोविच की देखभाल की जिम्मेदारी संत के कंधों पर आ गई। सुज़दल के ग्रैंड प्रिंस, दिमित्री कॉन्स्टेंटिनोविच[1826] ने होर्डे के भीतर अपने लिए ग्रैंड प्रिंस का अधिकार सुनिश्चित कर लिया था। संत को ग्रैंड प्रिंसिपैलिटी के लिए सुज़दल के प्रिंस को आशीर्वाद देना था, लेकिन उन्होंने दृढ़ता से ग्रैंड प्रिंस के व्लादिमीर में रहने के अनुरोध को मानने से इनकार कर दिया, और इसके बजाय युवा प्रिंस दिमित्री इओआनोविच के लिए एक देखभाल करने वाले पिता समान बने रहने का विकल्प चुना। इस बीच, होर्डे में उथल-पुथल मची हुई थी; हर साल कई ख़ां उभरते थे, जो एक-दूसरे को नष्ट करने की कोशिश करते थे; 1362 में, दो प्रतिद्वंद्वी ख़ां उभरकर आए। युवा दिमित्री ने उनमें से एक से रूस के महाप्रमुख का खिताब देने की विनती की और दिमित्री कॉन्स्टेंटिनोविच को व्लादिमीर से हटने के लिए मजबूर कर दिया। संत अलेक्सियस ने अपने शिष्य को मातृत्व की चमत्कारी व्लादिमीर प्रतिमा के साथ बड़े डची के लिए प्रसन्नतापूर्वक आशीर्वाद दिया। वे राजकुमार दिमित्री की सलाह और कार्यों के पीछे प्रेरक शक्ति थे; संत के परिश्रमों के माध्यम से, मास्को के ग्रैंड प्रिंसी की शक्ति बढ़ी और मजबूत हुई।

इस बीच, संत अलेक्सियस मठवासी बस्तियों के निर्माण में लगे हुए थे। इस प्रकार, उन्होंने याउज़ा नदी के तट पर हमारे प्रभु यीशु मसीह को समर्पित एक चर्च का निर्माण किया, जो उनके 'हस्तनिर्मित नहीं' चित्र के सम्मान में था; उन्होंने इस चर्च के बगल में एक मठ की स्थापना की और वहाँ एक सामुदायिक नियम लागू किया[1827] । उन्होंने नए मठ का महाधर्माध्यक्ष का पद पवित्र चमत्कार करने वाले सर्गियस के शिष्य एंड्रोनिकोस[1828] को सौंपा। इस मठ के अलावा, संत अलेक्सियस ने मॉस्को और अन्य रूसी शहरों में अन्य चर्च और मठ भी बनाए। इस प्रकार, उन्होंने मॉस्को में संत माइकल द आर्कएन्जेल को समर्पित एक पत्थर का चर्च बनाया, जो कोनाई[1829] में हुए उनके गौरवशाली चमत्कार के सम्मान में था, और एक मठ की स्थापना की, जिसे आज भी चुदोव मठ[1830] के नाम से जाना जाता है; साथ ही, संत अलेक्सियस ने यह वसीयत की कि उनके शरीर को वहीं सुलाया जाए। संत अलेक्सियस ने ईश्वर की महिमा के लिए कई अन्य स्मरणीय—महान और अद्भुत—कार्य किए, और उन्होंने अपने जीवन के अंत तक अपने झुंड का अच्छी तरह से मार्गदर्शन किया।

प्रभु के पास अपने प्रस्थान की पूर्वदृष्टि प्राप्त कर, संत ने दैवीय लीटर्जी का अनुष्ठान किया और पवित्र सहभाग ग्रहण किया। सभी को शांति की कामना करते हुए, उन्होंने सभी को अंतिम चुंबन दिया और 12 फरवरी 1378 को अपना प्राण शांतिपूर्वक प्रभु को सौंप दिया[1831] । इन महान मंत्री ने 24 वर्षों तक बिशप के पद पर कार्य किया; उनका

[1826] दिमित्री कॉन्स्टेंटिनोविच 1359 से 1363 तक महा राजकुमार थे।

[1827] यह मठ एक व्रत-पूरा करने वाला मठ था। जब संत अलेक्सियस कीव और पूरे रूस के मेट्रोपॉलिटन के रूप में अभिषिक्त होने के लिए कॉन्स्टेंटिनोपल के लिए रवाना हुए, तो अपनी वापसी की यात्रा में उन्हें एक ऐसी आपदा का सामना करना पड़ा जिसने उनके जीवन को ही खतरे में डाल दिया: समुद्र में एक भयानक तूफान आ गया, और जहाज किसी भी पल लहरों में खो सकता था। मेट्रोपॉलिटन के साथ यात्रा कर रहे सभी लोग अपनी जान बचने की उम्मीद छोड़ चुके थे। इस बीच, संत ने ईश्वर से भक्तिपूर्वक प्रार्थना की, यह संकल्प लेते हुए कि जिस संत का पर्व उस दिन पड़ेगा जिस दिन तैराक किनारे पहुंचेंगे, उनके नाम एक चर्च का निर्माण किया जाएगा। प्रभु ने संत की प्रार्थना सुनी। शांति लौट आई, और जहाज 16 अगस्त को तट पर पहुँच गया। इस व्रत को पूरा करते हुए, मेट्रोपॉलिटन सेंट अलेक्सियस ने लगभग 1360 में सर्व-दयालु उद्धारकर्ता, उनकी हस्तनिर्मित न बनी छवि के सम्मान में उपरोक्त मठ की स्थापना की। आदरणीय एंड्रोनिकॉस, जो आदरणीय सर्जियस के शिष्य थे, ने मठ के निर्माण में संत की बहुत सहायता की, और इसी कारण इसे स्पासो-एंड्रोनिकोव (एंड्रोनिएव) मठ के नाम से जाना जाने लगा; यह अब एक द्वितीय-श्रेणी का मठ है। मठ में आज भी उद्धारकर्ता की अकरगतचित्र प्रतिमा रखी है, जिसे संत अलेक्सियस कन्स्टेंटिनोपल से लाए थे और जिसे एक भव्य चोगा पहनाया गया है।

[1828] संत एंड्रोनिकस की स्मृति 13 जून को मनाई जाती है। उनके अवशेष स्पासो-एंड्रोनिकोव मठ में हैं, जिसकी स्थापना उन्होंने संत अलेक्सियस के साथ मिलकर की थी।

[1829] खोनेख में हुए चमत्कार की स्मृति 6 सितंबर को मनाई जाती है।

[1830] चुडोव मठ (कैथेड्रल) की स्थापना 1365 में तातार रानी ताइदुला के चमत्कारी उपचार की स्मृति में की गई थी।

[1831] आध्यात्मिक साहित्य में, महानरीक्षक सेंट एलेक्सियस ने पत्र, उपदेश और अनुवाद छोड़े हैं। मॉस्को में चुदोव मठ में एक सुसमाचार है जिसे उन्होंने ग्रीक से अनुवादित किया था और अपने हाथ से लिखा था।

कुल जीवनकाल 85 वर्ष था। उचित सम्मान के साथ, उनके शरीर को उसी चर्च में दफनाया गया था जिसे उन्होंने स्थापित किया था, जो महादूत माइकल को समर्पित था, और जो परम पवित्र वर्जिन की घोषणा के पार्श्व चैपल में स्थित था।

कई वर्षों बाद, उनके पवित्र और जीवन-दायक अवशेष पाए गए, जो पूरी तरह से अपरिवर्तित थे[1832] । दिवंगत संत के वस्त्र भी पूरी तरह से सुरक्षित थे, मानो उन्हें एक दिन पहले ही पहनाया गया हो। इसके बाद, इन पवित्र अवशेषों को इस ईश्वर के पुरुष के सम्मान में बनी चर्च में स्थानांतरित कर दिया गया।

आज भी, उनसे अनेक चंगे होते हैं, जैसे किसी अक्षय झरने से, और उनकी पवित्र प्रार्थनाओं के द्वारा, विश्वास के साथ उनकी शरण में आने वाले सभी को सहायता मिलती है, हमारे प्रभु यीशु मसीह की अगणित दया से, जिनका महिमा युगानुयुग होती रहे। आमीन।

ट्रोपारियन, स्वर 8:

प्रेरितों के साथ सह-आसन प्राप्त, एक अति उत्तम चंगा करने वाले, और एक अनुग्रहकारी सेवक के रूप में, हम आपके परम सम्मानित अवशेष-कोष की ओर शीघ्रता से बढ़ते हैं, हे ईश्वर-ज्ञानी, चमत्कार-कर्ता संत अलेक्सियस, हम जो आनंदपूर्वक एकत्र हुए हैं, प्रेम के साथ आपकी स्मृति का उत्सव मनाते हैं, गीतों और भजनों में आनंदित होते हुए और मसीह की महिमा करते हुए, जिन्होंने आपको चंगा करने की ऐसी कृपा और आपके नगर को महान शक्ति प्रदान की है।

एक और ट्रोपारियन, स्वर 4:

अत्यंत धन्य संत अलेक्सियस, प्रेरितों के धर्मसिद्धान्तों के रक्षक, रूसी चर्च के चरवाहे और शिक्षक की स्मृति का उत्सव मनाते हुए, हम अपने ईश्वर मसीह की उपयुक्त भजनों से महिमा करते हैं, जिन्होंने हमें अपना प्रिय सेवक प्रदान किया है, जो उपचार से बहने वाले एक प्रचुर झरने के समान है, और मास्को शहर को स्तुति और शक्ति प्रदान की है।

कॉन्टाकियन, स्वर 8:

आओ हम सभी, विश्वासियों, प्रेम से मसीह के दिव्य और अति सम्माननीय संत, नए चमत्कार करने वाले अलेक्सियस को, रूस की भूमि के महान चरवाहे, सेवक और अति बुद्धिमान शिक्षक के रूप में भजन गाएं। आज, उनके पर्व के दिन, हम आनन्दपूर्वक ईश्वर-वाहक के लिए एक स्तोत्र गाएँ: क्योंकि ईश्वर के समक्ष साहस रखते हुए, उन्होंने हमें अनेक परीक्षाओं से मुक्त किया है; अतः हम आपसे प्रार्थना करते हैं: हे हमारे नगर की शक्ति, आनन्दित हो।

आदरणीय मैरी का जीवन, जो मरीना नाम से पुरुष के रूप में रहती थीं, और उनके पिता, आदरणीय यूजीन का।

12 फरवरी को स्मरण किया जाता है

बिथिनिया में[1833] एक धर्मपरायण व्यक्ति यूजीन नामक रहते थे। उनकी पत्नी भी ईश्वर-भयभीत थीं और उनके हृदय में ईश्वर का भय था। उनकी एकमात्र पुत्री थी - मैरी। जब उनकी माँ का निधन हो गया, तो यूजीन ने अपनी पुत्री का पालन-पोषण प्रभु की आज्ञाओं के अनुसार किया। जब वह कन्या बड़ी हो गई, तो उसके पिता ने उससे कहा:

[1832] यह 20 मई 1431 को हुआ था।

[1833] एशिया माइनर का उत्तर-पश्चिमी प्रांत।

'मेरी प्रिय पुत्री, मैं अपनी सारी संपत्ति तुझे विरासत में देता हूँ, जबकि मैं स्वयं अपनी आत्मा को बचाने के लिए एक मठ में चला जाऊँगा।'

लेकिन उस युवती ने अपने पिता से उत्तर दिया:

'मेरे पिता, आप स्वयं को बचाना चाहते हैं, लेकिन कृपया मुझे भी बचाने की उपेक्षा न करें। क्योंकि आप जानते हैं कि प्रभु ने सुसमाचार में कहा है: *"सच्चा चरवाहा भेड़ों के लिए अपनी जान देता है"* (यूहन्ना 10:11); क्योंकि जो किसी की आत्मा को बचाता है, वह उसे एक तरह से नया जीवन देता है।'

यह सुनकर यूजीन इस बात से अत्यंत प्रसन्न हुआ कि उसकी बेटी इतनी धार्मिक थी। और युवा मारिया, अपने पिता से बात करते हुए, रो पड़ी।

युजीन ने कहा, 'मेरी प्यारी बेटी, मुझे समझ नहीं आ रहा कि मैं तुम्हारे साथ क्या करूँ। आखिरकार, तुम एक महिला हो, जबकि मुझे पुरुषों के लिए बने एक मठ में जाना है। तुम मेरे साथ वहाँ कैसे रह सकती हो? शैतान तुम्हारी मौजूदगी का इस्तेमाल किसी को पाप में डालने के लिए कर सकता है।'

यह सुनकर, युवती ने कहा:

'पिताजी, मैं पत्नी के भेष में पुरुषों के मठ में प्रवेश नहीं करूँगी। मैं अपने बाल कटवा लूँगी, पुरुषों के वस्त्र धारण करूँगी, और आपके साथ मठ में प्रवेश करूँगी, और किसी को भी पता नहीं चलेगा कि मैं एक पत्नी हूँ।'

यह सुनकर, धन्य यूजीन और भी अधिक प्रसन्न हुए; उन्होंने अपनी सारी संपत्ति गरीबों और बेसहारा लोगों, अनाथों और विधवाओं में बाँट दी, अपनी बेटी के सिर के बाल मुंडवा दिए, उसे पुरुषों के वस्त्र पहनाए, और उसका नाम मैरी के बजाय मारिन रख दिया।

उन्होंने उससे कहा, 'मेरी बेटी, तुम्हें शालीनता से रहना होगा और अपनी लिंग पहचान छिपाकर रखनी होगी; तुम जानती हो कि विवाहित महिलाएँ मठ में प्रवेश नहीं करतीं; तुम पुरुषों के बीच रहोगी, जैसे आग के बीच; अपनी कुँवारी अवस्था की रक्षा करना। यदि हम अपना वादा पूरा करते हैं, तो हमें स्वर्ग के राज्य का उत्तराधिकारी बनने के योग्य समझा जाएगा।'

ईश्वर से प्रार्थना करने के बाद, यूजीन अपनी बेटी के साथ पुरुषों के वस्त्र पहनकर मठ में प्रवेश कर गया। दोनों ने अन्य भिक्षुओं के बीच तपस्वी जीवन में खुद को समर्पित कर दिया। दिन-प्रतिदिन, उसकी बेटी ने सदाचारी जीवन में और भी अधिक प्रगति की। उसने अपनी आज्ञाकारिता और विनम्रता से खुद को विशिष्ट बनाया, और हमेशा महान कार्यों के लिए प्रयास किया। कुछ साल बीत गए। उस मठ के भिक्षुओं ने उसे एक नपुंसक समझ लिया, क्योंकि उसके होंठों पर न तो मूँछें थीं और न ही दाढ़ी, और उसकी आवाज़ तीखी थी। हालाँकि, दूसरों ने सोचा कि मिरीना की आवाज़ उसके महान तपस्या और उपवास का परिणाम था, क्योंकि मिरीना बहुत कम भोजन करता था, और वह भी हर दिन नहीं, बल्कि हर दूसरे दिन।

कुछ समय बाद, पूजनीय यूजीन का मठवासी अवस्था में निधन हो गया, जिससे उनकी पुत्री मारिया—जिसे कन्या मारिन के नाम से भी जाना जाता था—अनाथ हो गई। उस समय से उन्होंने तपस्या में और अधिक मन लगा दिया, अनेक कठोर परिश्रमों और उपवास के माध्यम से अपने शरीर को दंडित करते हुए। ईश्वर की कृपा से वह सद्गुणों में इतनी निपुण हो गई कि उसे दुष्ट आत्माओं पर भी अधिकार प्राप्त हो गया: अशुद्ध आत्माओं से पीड़ित लोगों को अक्सर उसके पास लाया जाता था; संत अपने हाथ उन पर रखती, प्रार्थनाओं द्वारा राक्षसों को भगा देती, और बीमार पूरी तरह से ठीक हो जाते।

इस मठ में भाईचारे के कुल 40 सदस्य थे, जो हर सद्गुण और आध्यात्मिक ज्ञान से विभूषित थे। हर महीने, भाईचारे के चार भिक्षुओं को मठ की ज़रूरतों का ध्यान रखने के लिए सब्जी के खेतों में भेजा जाता था, क्योंकि मठ के पास स्वयं मठ से काफी दूरी पर स्थित गाँव थे। मठ और सब्जी के खेतों के बीच के रास्ते में आधे रास्ते पर एक सराय थी, जहाँ भाई लोग काम पर जाते या काम से लौटते समय आराम करने के लिए रुकते थे। सराय का मालिक स्वयं भिक्षुओं के साथ दयालुता से पेश आता था, उनके लिए एक विशेष कमरा अलग रखता था और उनकी देखभाल करता था। मानवता का शत्रु, एक पुरुष के भेष में इस युवा कन्या के पुण्य जीवन—ईश्वर के प्रति उसका प्रेम, अपने श्रम और संन्यासी कार्यों में उसकी लगन, और उसका अटूट धैर्य—को सहन न कर सका और उसके विरुद्ध हो गया। वह उसके प्रयास में बाधा डालना चाहता था और उसे बदनाम करना चाहता था। अपनी चालाकी और विश्वासघात से, उसने निम्नलिखित योजना बनाई। एक दिन, उस मठ के प्रधान ने भिक्षु मारिन को अपने पास बुलाया और उससे कहा, 'भैया मारिन, मुझे तुम्हारे पुण्य जीवन का

पता है; मुझे पता है कि तुम आज्ञाकारिता में परिश्रम करते हो। मना मत करना; जाओ और मठ का काम करो।' क्योंकि कुछ भिक्षु इस बात से नाराज़ हैं कि आप लगातार मठ के भीतर ही रहते हैं और हमारे समुदाय के लिए आवश्यक काम करने हेतु कभी भी सब्जी के खेतों में नहीं जाते। वहाँ जाओ, मेरे बच्चे, और तुम्हें सर्व-पवित्र ईश्वर से सबसे बड़ा पुरस्कार मिलेगा, क्योंकि उन्होंने स्वयं अपने शिष्यों की सेवा करने से इनकार नहीं किया।' यह सुनकर, मारिन मठाध्यक्ष के सामने साष्टांग दंडवत हो गया और बोला: 'मुझे आशीर्वाद दीजिए, आदरणीय पिता: मैं वहाँ जाऊँगा जहाँ आप आज्ञा दें।'

तीन अन्य भिक्षुओं के साथ, मारिन मठ का काम करने के लिए निकल पड़ा। रास्ते में, उसने पहले बताई गई सराय में रात बिताई। सरायकिया की एक बेटी थी जो पहले से ही एक युवती थी। एक सैनिक, उस सराय में ठहरने के दौरान, उसके साथ बलात्कार कर गया, और वह गर्भवती हो गई। उसी सैनिक ने उसे यह बताने का निर्देश दिया कि उसके पतन के लिए मारिन दोषी है। जब उसके माता-पिता ने अपनी बेटी से पूछा कि किसिने उसे बहकाया है, तो उसने मारिन की ओर इशारा किया। उसके पिता को बहुत दुख हुआ। वह मठ गए और गुस्से में चिल्लाने लगे:

'यह कपटी और झूठा ईसाई, जो एक भिक्षु होने का ढोंग करता है, कहाँ है?'

मठ का व्यवस्थापक उससे मिलने बाहर आया और कहा:

'आप ठीक समय पर आए हैं, लेकिन आप इतने दुखी क्यों हैं, और आप इतनी क्रोध से क्यों चिल्ला रहे हैं? कृपया शांत हो जाइए।'

इस पर यात्री ने उत्तर दिया:

'धिक् है उस घड़ी पर जब मैं पहली बार आपके मठ से मिला। हाय रे मेरी किस्मत! मुझ पर क्या आफत आ पड़ी है। मुझे समझ नहीं आ रहा कि क्या करूँ।'

यह सुनकर मठाधीश ने अतिथि को बुलाया और पूछा कि उसे क्या हुआ है, वह इतना परेशान क्यों है, और उसकी क्या इच्छा है।

मेहमान ने कहा, 'मुझे क्या चाहिए?' 'मैं चाहता हूँ कि मैं कभी, कहीं भी, किसी एक भिक्षु को न देखूँ और न उससे बात करूँ।'

जब मठाधीश ने पूछा कि वह ऐसा क्यों कह रहा है, तो मेहमान ने उत्तर दिया:

'मेरी एक इकलौती बेटी थी। मैंने सोचा था कि वह मेरी बुढ़ापे में सहारा बनेगी - और यह वही मारिन ने किया, जिसे आप एक अच्छे और धर्मात्मा ईसाई मानते हैं - उसने मेरी बेटी का अपमान किया, और वह उसके बच्चे की माँ बनी।'

यह सुनकर, मठाधीश बहुत हैरान हो गए और उन्होंने सरायकी से कहा:

'मैं क्या करूँ? मारिन इस समय मठ में नहीं है, क्योंकि वह अभी तक अपने संन्यासी कर्तव्यों से वापस नहीं आया है। जब वह लौटेगा, तो मैं उसे तुरंत मठ से निकाल दूँगा।'

इसी बीच, मारिन अन्य तीन भिक्षुओं के साथ मठ लौट आया। मठाधीश ने उसे तुरंत बुलाया और कहा:

'भाई, क्या यही जीवन है जो तुम जी रहे हो, क्या यही तुम्हारा कारनामा है: सराय में रहते हुए, तुमने सरायकिन की बेटी को कलंकित किया, और अब वह कुंवारी नहीं रही। उसका पिता यहाँ आ गया है और तुम्हारी वजह से उसने हम सबकी बेइज्जती की है।'

यह सुनकर मारिन मठाध्यक्ष के चरणों में गिर पड़ा और उनसे कहा:

'पिताजी, मुझे, एक पापी को, क्षमा करें; प्रभु के लिए मुझे क्षमा करें; मैंने एक मनुष्य के रूप में पाप किया है।'

तब मठाध्यक्ष, इस पर बहुत क्रोधित होकर, मारिन को अपमानपूर्वक मठ से निकाल दिया।

मठ से निष्कासित होने के बाद, निर्दोष मारिन मठ के द्वार पर ही रह गया; वहाँ बिना कपड़ों के बैठकर, उसने धैर्यपूर्वक गर्मी और ठंड दोनों को सहन किया। मठ में प्रवेश करने या बाहर निकलने वाले उससे पूछते थे:

'अब्बा, आप यहाँ नग्न क्यों बैठे हैं, ये कठिनाइयाँ क्यों सह रहे हैं?'

'मैंने पाप किया है,' मारिन ने उत्तर दिया, 'और इसीलिए मुझे मठ से निकाल दिया गया है।'

इस बीच, सरायकी की बेटी को एक लड़का हुआ; उसका पिता, शिशु को लेकर मठ आया और, मारिन को द्वार पर बैठे हुए पाकर, शिशु को उसके सामने फेंककर चला गया। बच्चे को उठाते हुए, मारिन ने रोते हुए कहा: 'हाय मेरे भाग्य, मैं कितना दुखी और बहिष्कृत हूँ। सचमुच, मैं, एक दुखी आदमी, अपने कर्मों का फल भोग रहा हूँ, लेकिन यह बेचारा शिशु मेरी देखभाल में क्यों कष्ट सहे और मरे?'

मारनि ने चरवाहों से दूध माँगना शुरू कर दयिा और एक सच्चे पतिा की तरह उसे शशिु को पलिाया। मारनि ने न केवल लगातार गर्मी और भूख, उपहास और हर तरह की कमी को सहन कयिा, बल्कि शशिु की देखभाल ने भी उसे बहुत मेहनत और चंतिा दी। शशिु अक्सर अपने कपड़े गंदे कर देता था, लेकनि पूजनीय मारनि ने तीन साल तक बनिा कसिी शकिायत के यह सब सहन कयिा, इसे झेलते हुए और ईश्वर का धन्यवाद करते हुए। तीन साल बाद, भाइयों को मारनि के लिए तरस आने लगा। भक्षिु एकत्रति हुए, मठाधीश के पास गए और उससे कहा: 'माननीय पतिाजी, मारनि का प्रायश्चित्ति काफी लंबा चल चुका है; अब हम आपसे अनुरोध करते हैं कि आप उसे मठ में वापस स्वीकार कर लें। आखरिकार, उसने सभी के सामने पश्चाताप कयिा है और अपने पाप को स्वीकार कयिा है।'

लेकनि मठाधीश ने मरीना को वापस लेने के उनके अनुरोध पर ध्यान नहीं दयिा। तब भक्षिुओं ने एक बार फरि से उनसे वनिती करना शुरू कर दयिा, यह कहते हुए:

'यदि आप भाई मरीना को मठ में स्वीकार नहीं करते हैं, तो हम सभी चली जाएँगी। क्योंकि हम प्रभु से अपने पापों की क्षमा कैसे माँग सकती हैं, जबकि हम स्वयं अपने भाई को माफ नहीं करते, जो तीन वर्षों से हमारे मठ के द्वार पर बनिा आश्रय के कष्ट झेल रहा है?'

यह सुनकर, मठाधीश ने भक्षिुओं से कहा:

'सचमुच, मारनि ने जो पाप कयिा है, उसके कारण वह यहाँ प्रवेश करने के योग्य नहीं है, लेकनि आपके प्रेम और आपकी वनिती के लिए, मैं उसे स्वीकार करूँगा।'

मठ के प्रमुख ने मारनि को अपने पास बुलाया और सभी भक्षिुओं की उपस्थतिि में उससे कहा:

'भाई, तुमने जो पाप कयिा है, उसके कारण तुम भाइयों के बीच अपने पूर्व सम्मानति स्थान पर रहने के योग्य नहीं हो। लेकनि उन भाइयों के प्रेम के लिए, जन्हिोंने तुम्हारे लिए मध्यस्थता की है, मैं तुम्हें मठ में सबसे नचिला स्थान प्रदान करता हूँ - और तुम्हें भक्षिुओं में सबसे आखरिी होना होगा।'

आँखों में आँसू लिए, मरीना ने मठाधीश से कहा:

'परम सम्माननीय पतिाजी, यह मेरे लिए पहले से ही बहुत कुछ है कि आप मुझे मठ में प्रवेश करने की अनुमतिि दे रहे हैं, जहाँ मैं पूरे भाईचारे की सेवा कर सकूँ।'

मारनि को स्वीकार करने के बाद, मठाधीश ने उसे मठ में सबसे कठनि और तुच्छ कार्य करने का नर्दिेश दयिा। संत मारनि ने उन्हें बड़ी लगन से, एक पश्चात्तापी हृदय के साथ, और पूर्ण वनिम्रता से कयिा। उसके साथ एक छोटा लड़का था, जो लगातार मारनि का अनुसरण करता था, उसे 'पतिाजी' कहता था और उससे खाना मांगता था। आदरणीय मारनि ने उस लड़के के पालन-पोषण की जम्मिेदारी ली। जब वह लड़का बड़ा हुआ, तो अपने पालक पतिा की प्रार्थनाओं से, वह वनिम्रता और प्रार्थना में उत्कृष्ट होने लगा: अपने सद्गुणों के लिए सभी उससे प्रेम करते थे और उसने संन्यासी की शपथ ली। लेकनि यह सब संत मारनि के नधिन के बाद ही हुआ, जनिका धन्य नधिन इस प्रकार हुआ।

मसीह ने अपनी वधू के वश्विास और धैर्य को देखा, जसिने पुरुष का भेष धारण करके उनके नाम पर परश्रिम कयिा था, और जसिने इतने बड़े परीक्षणों और कष्टों को सहा था। और प्रभु ने उसकी दुखों में उसे सांत्वना देना चाहा, उसे उसके कई परश्रिमों से वश्राम देना चाहा, और उसे स्वर्गीय नविासों में स्वागत करना चाहा। ईश्वर की इच्छा से, वह अपनी कोठरी में नधिन कर गईं – और कसिी को इसकी खबर नहीं हुई। मठाध्यक्ष ने, यह देखकर कि मारनि तीन दनिों से न तो चर्च गए थे और न ही मठ के काम पर, भक्षिुओं से पूछा: 'आज मुझे मारनि को देखे तीन दनि हो गए हैं। वह हमेशा प्रार्थना सेवा की शुरुआत में सबसे पहले पहुँचते हैं, फरि भी अब वह यहाँ नहीं हैं। उनकी कोठरी में जाओ और पता लगाओ कि क्या उन्हें बीमारी हो गई है।'

भाई लोग गए और उन्होंने देखा कि मारनि ने अपना प्राण प्रभु को सौंप दयिा था; उसके पास एक रोता हुआ लड़का बैठा था। भाई लोगों ने तुरंत मठाध्यक्ष को सूचति कयिा कि मारनि का नधिन हो गया है। यह सुनकर, मठाध्यक्ष चकति रह गए और कहा:

'उसकी आत्मा उसके शरीर से अलग हो गई है; वह अपने पापों के वषिय में प्रभु को क्या उत्तर देगा?'

इसके बाद, उन्होंने रीति के अनुसार आदेश दयिा कि मारनि के शरीर को दफनाने के लिए तैयार कयिा जाए। उसी क्षण, भक्षिुओं को एहसास हुआ कि भाई मारनि एक महलिा थी। वे भयभीत हो गए और सभी एक स्वर में चल्लिाने लगे: 'हे प्रभु, दया करो!'

उनकी चीखें सुनकर मठाधीश चकति हो गए और कहा:

'यह क्या है?' उन्होंने उत्तर दिया:

'हमारे भाई मारिन स्वभाव से एक महिला हैं।'

आदरणीय संत के पास पहुँचकर, उन्होंने यह अद्भुत और अप्रत्याशित दृश्य देखा, वे जमीन पर गिर पड़े और संत के पैरों को छूते हुए, पुकार उठे: 'हे प्रभु यीशु मसीह, मुझे क्षमा करें, कि मैंने अपनी अज्ञानता में पाप किया और आपकी पवित्र और शुद्ध वधू को इतना दुख पहुँचाया।'

और एक बार फिर, संत के चरणों में प्रणाम करके, वह चिल्लाया: 'यहीं मैं आपके पवित्र चरणों में मर जाऊँगा, या मैं तब तक पुकारता रहूँगा जब तक मुझे अपने पापों के लिए क्षमा न मिल जाए, जिनसे मैंने आपको दुख पहुँचाया है।'

तो वह लंबे समय तक रोया और विलाप करता रहा। अचानक स्वर्ग से एक आवाज़ गूँजी: 'यदि तुमने यह जानबूझकर किया होता, तो तुम्हें क्षमा नहीं मिलता, लेकिन तुमने अज्ञानता में पाप किया है; इसलिए, तुम्हारे पाप अब क्षमा कर दिए गए हैं।'

तब मठाधीश पवित्र अवशेषों से उठे और यात्री को संदेश भेजा: 'तुरंत हमारे पास आओ; मुझे तुम्हें कुछ बताना है।'

जब सरायकिया मठ पहुँचा, तो मठाध्यक्ष ने उससे कहा:

'भाई मारिन का निधन हो गया है।'

जिस पर उन्होंने उत्तर दिया:

– ईश्वर उसके पाप को क्षमा करे! लेकिन मठाधीश ने उसे बीच में टोकते हुए कहा:

– पश्चाताप करो, भाई, क्योंकि तुमने प्रभु के सामने पाप किया है और अपनी बातों से मुझे भटका दिया है, और तुम्हारे कारण मैंने भी पाप किया है। मारिन – मेरी पत्नी!

यह सुनकर, सरायकिया भयभीत हो गया और चुप हो गया, मानो वह गूंगा हो गया हो। तथापि, मठाधीश ने उसका हाथ पकड़कर उसे उस स्थान पर ले गए जहाँ धन्य मरियम का पवित्र शरीर पड़ा था, और उससे कहा कि उसने मारिन पर अपनी बेटी को बिगाड़ने का गलत आरोप लगाया था। ऐसा अद्भुत चमत्कार देखकर, सरायकुल मालकिन रोने लगा और उस कड़वाहट पर पश्चाताप करने लगा जो उसने पहले संत के प्रति पाली थी। इस बीच, मठाधीश, भिक्षुओं के साथ, अंतिम संस्कार के भजन गाते हुए, सम्मानपूर्वक मसीह की निर्दोष वधू के पवित्र, कुंवारी शरीर को मठ के भीतर एक विशेष रूप से तैयार की गई जगह पर विराम के लिए रख दिया। सरायकिन की बेटी, जिसे एक अशुद्ध आत्मा ने सताया था, भी वहाँ आई। उसने सभी के सामने खुलेआम पूरा सच बताया। जब उसे संत मरियम की कफ़न तक ले जाया गया, तो अशुद्ध आत्मा तुरंत उससे निकल गई, और उस क्षण से वह पूरी तरह से ठीक हो गई। इस चमत्कार को देखने वालों ने सभी ने परम दयालु ईश्वर और उनकी पवित्र सेविका मरियम की महिमा की, जिन्होंने सभी के अज्ञान में रहकर अपनी मृत्यु तक रहस्य बनाए रखा और स्वर्ग के राज्य के लिए बहुत कुछ सहन किया[1834] ।

भाइयों, हम भी उनके शहीद होने, दृढ़ता और धैर्य का अनुकरण करें; तब हम भी आने वाले जीवन में महान परमेश्वर और हमारे उद्धारकर्ता यीशु मसीह की कृपा प्राप्त करेंगे, जिनका महिमा और सामर्थ्य पिता और पवित्र आत्मा के साथ, अब और सदा और युगानुयुग हो। आमीन।

कॉन्स्टेंटिनोपल के पैट्रिआर्क संत एंथनी की स्मृति

12 फरवरी को स्मरण किया जाता है

संत एंथनी का जन्म एशिया में हुआ था, लेकिन उनका पूरा जीवन, बचपन से लेकर उनके धन्य निधन तक, यूनानी साम्राज्य[1835] की राजधानी कॉन्स्टेंटिनोपल में व्यतीत हुआ। इसी शहर में इन सम्माननीय संत का पालन-पोषण हुआ, उन्होंने अपना बचपन और यौवन बिताया, शिक्षा प्राप्त की और अंत में, एक बिशप बने। चर्च में एक बिशप के रूप में संत की भविष्य की उच्च सेवा की ओर इशारा करने वाले कई संकेत थे। अन्य बातों के अलावा, एक शिशु रहते हुए भी, वह ध्यान से देखते थे कि प्रोस्कोमेडिया कैसे किया जाता है, धूपदान कैसे पकड़ा जाता है, और आम तौर पर चर्च में दैवीय

[1834] पूजनीय मैरी, जिन्होंने मारिन नाम अपनाया था, और उनके पिता यूजीन की मृत्यु छठी शताब्दी की शुरुआत में हुई।

[1835] संत एंथोनी का जन्म लगभग 829 में हुआ था।

दव्यि सेवा (Divine Liturgy) कैसे मनाई जाती है। इस प्रकार, अपने शुरुआती वर्षों से ही, ईश्वर की कृपा आदरणीय संत को दव्यि अनुष्ठान के अनुष्ठान के लिए तैयार कर रही थी। वयस्कता प्राप्त करने पर, संत एंथोनी ने कॉन्स्टेंटनिोपल के एक मठ में मठवासी संकल्प लिए और मठवासी जीवन के तपस्वी श्रमों को बहादुरी से करना शुरू कर दयिा। उनके कठोर तपस्या के प्रयासों ने जल्द ही उनका ध्यान आकर्षति कयिा और उनकी इच्छा के वरिुद्ध, उन्हें पहले एक पादरी और फरि, पैट्रआिर्क के आदेश से, मठाधीश नयिुक्त कयिा गया। इस समय, आदरणीय के पति ने भी संन्यास की शपथ ली। मठाध्यक्ष के नए कर्तव्यों को नभिाते हुए भी, संत एंथनी ने फरि भी अपनी सामान्य तपस्या को बनिा चूके जारी रखा, और नरिंतर सतर्कता, उपवास और अखंड प्रार्थना बनाए रखी। इस प्रकार अपना समय बतिाते हुए, उन्होंने अपने हाथों से गरीबों को दान देने का भी काम अपने ऊपर ले लयिा। और इस प्रकार, जब यह महान तपस्वी अपना कठनि संन्यासी जीवन जी रहे थे और परोपकार के कार्य कर रहे थे, तो एक दनि कसिी ने उनके पास सोने की एक बोरी लाकर उन्हें देते हुए कहा: 'इसे गरीबों को देने के लिए ले लो।'

ये शब्द सुनते ही, पूज्य पतिाजी ने केवल सोने की बोरी पकड़े हुए एक हाथ देखा; उसे अर्पति करने वाला व्यक्ति अदृश्य रहा। उस समय से, पूज्य पतिाजी ने उन सभी को प्रचुर मात्रा में दान देना शुरू कर दयिा जो इसके योग्य थे।

समय आया जब कॉन्स्टेंटनिोपल में पैट्रआिर्क का पद खाली हो गया, और आदरणीय एंथनी को बशिपों के धर्मसभा और सम्राट के सर्वसम्मत चुनाव द्वारा कॉन्स्टेंटनिोपल के पैट्रआिर्क के रूप में सहिासनारूढ़ कयिा गया[1836]। उस समय तक वे पहले से ही वृद्ध हो चुके थे, लेकनि अपने बुढ़ापे के कमजोर शरीर के बावजूद, पवत्रि आत्मा की शक्ति से मजबूत होकर, उन्होंने प्रार्थना की शक्ति से अपने युग के अनुसार यथासंभव अस्थायी बीमारयिों पर काबू पाते हुए अपने पैट्रआिर्केट के सभी चर्चों का दौरा कयिा। भौतकि संसाधनों की कमी के कारण पुरोहति वर्ग की दुर्दशा देखकर, रेवरेंड फादर ने उदार वत्तिीय सहायता से उनकी कठनिाइयों को दूर कयिा। चर्चों में प्रवेश करने पर, उनका हमेशा हजारों भखिारयिों से सामना होता था, और वह उन सभी पर दान करते थे। सामान्यत; वह अनेक तरीकों से बहुतों का सेवक था। अनेक चमत्कार करने के बाद, पूजनीय एंथनी अपनी वृद्धावस्था में प्रभु के पास चले गए।

26 फरवरी

13 फरवरी (पुराना तरीका)

हमारे पूजनीय पति मार्टनियिन का जीवन, और पवत्रि स्त्रयिों जोई और फोतनियिा का स्मरणोत्सव।

13 फरवरी को स्मरणोत्सव

फलिस्तिीन में, केसरयिा शहर के पास[1837], एक पहाड़ है जसिे 'द आर्क' कहा जाता है। वहाँ कई संन्यासी रहते थे, और उनमें से एक धन्य और प्रशंसनीय, दव्यि अनुग्रह से परपिूर्ण भक्षिु थे - संत मार्टनियिन। छोटी उम्र से ही, वह ईश्वर से प्रेम करते थे और उन्होंने संन्यासी जीवन जीना शुरू कर दयिा। मार्टनियिन, जो अत्यंत सुंदर व्यक्ति थे, अठारह वर्ष की आयु में शहर और अपने रश्तिेदारों को छोड़कर, सांसारकि मोह-माया का त्याग कर, मौन और एकांत का जीवन जीने के लिए इस पहाड़ पर आ गए। उन्होंने अवांतर स्वर्गदूतों के समान जीवन जयिा और यहाँ 25 वर्ष तक रहे। अपने पुण्य जीवन के लिए, उन्हें ईश्वर द्वारा रोगों और बीमारयिों को ठीक करने का वरदान मलिा। उनकी पवत्रि प्रार्थनाओं के माध्यम से कई लोग वभिन्नि रोगों से ठीक हुए; कई जो दुष्ट आत्मा के वश में थे, पहाड़ पर उनके पास आकर, दुष्ट की चालाकयिों से मुक्त हो गए। ईश्वर ने अपने प्रयि सेवक की प्रार्थनाओं से कई अन्य चमत्कार भी कए। दनि-प्रतदिनि, मार्टनियिन अपने तपस्वी प्रयासों में और अधकि नपिुण होता गया; उसके सदाचारी जीवन की ख्याति उस भूमि की सीमाओं

[1836] संत एंथनी द्वतिीय (उपनाम कावलेई) 893 में कॉन्स्टेंटनिोपल के पैट्रआिर्क के सहिासन पर आसीन हुए और 895 में अपनी मृत्यु तक पैट्रआिर्क के रूप में कार्य कयिा।

[1837] *केसरयिा* फ़लिस्तिीन में भूमध्य सागर के कनिारे एक बड़ा शहर है; यह रोमन प्रोकोरएिटर्स का केंद्र था।

से बहुत दूर तक फैल गई; जो भी उसके बारे में सुनते थे, वे अपनी आध्यात्मिक भलाई के लिए उसके पास आते थे। लेकिन शैतान, मानव जाति का शत्रु, उस युवा तपस्वी द्वारा जीए जा रहे ऐसे सदाचारी जीवन को सहन नहीं कर सका, जिसने खुद को आध्यात्मिक पराक्रमों से इस प्रकार सुसज्जित कर रखा था। पहले, उसने धन्य मार्टिनियन को हर संभव तरीके से प्रलोभित करना शुरू कर दिया और उसे विभिन्न तरीकों से डराने की कोशिश की। फिर मानव जाति के प्राचीन शत्रु ने उसी हथियार का सहारा लिया, जिससे उसने एक बार आदम को स्वर्ग से बाहर निकाल दिया था, इस तपस्वी को भी उसके शांत मरुस्थल से बाहर निकालने और उसे शाश्वत आनंद से वंचित करने की इच्छा से।

एक दिन, जब धन्य मार्टिनियन दाऊद के भजन गा रहे थे, तो शैतान एक बड़े साँप का रूप धारण कर, संत की कोठरी की दीवार के पास आकर, ज़ोर-ज़ोर से ज़मीन खोदने लगा। उसका इरादा ज़मीन को खोखला करके उस धन्य संत पर कोठरी को गिरा देने का था। लेकिन मार्टिनियन, बिना किसी भय या भ्रम के, अपना गायन समाप्त करके, अपनी कोठरी की छोटी सी खिड़की से बाहर देखा और साँप से कहा:

'सचमुच, तुम्हारे लिए धरती पर रेंगना ही उचित है; तुम व्यर्थ ही क्यों परिश्रम करते हो? तुम्हारी योजनाएँ मुझे डरा नहीं सकतीं। क्योंकि मेरे प्रभु यीशु मसीह मेरी सहायता करते हैं: वह तुम्हारी योजनाओं को परास्त करेंगे और तुम्हारी शक्ति को लज्जित करेंगे।'

यह सुनकर, शैतान, एक काले आँधी-तूफान में बदलकर, लज्जित होकर भाग गया, यह कहते हुए:

'रुक, रुक; मुझे पता है कि तुम्हें कैसे हराना है। मैं तुम्हें अपना दास बना लूँगा; मैं तुम्हारी सारी उम्मीदों को चकनाचूर कर दूँगा। मैं तुम्हारे ऊपर एक ऐसा प्रलोभन लाऊँगा जिसे तुम सहन नहीं कर पाओगे; मैं तुम्हें तुम्हारी कोठरी से फाड़कर हवा में उड़ते पत्ते की तरह इधर-उधर फेंक दूँगा। तब मैं देखूँगा कि तुम्हारी मदद कौन करेगा।'

यह कहकर, शैतान गायब हो गया। हालाँकि, मार्टिनियन अपने विश्वास में इतना दृढ़ था कि वह बिना किसी डर या भय के रहा, मानो उसने कोई प्रेत-भूत ही न देखा हो। उसने बस प्रभु की स्तुति की, और स्वयं को ईश्वर के चिंतन तथा पवित्र धर्मग्रंथों के अध्ययन और समझ में समर्पित कर दिया।

इसके बाद, यह हुआ। एक बार केसरिया के कुछ निवासी मार्टिनियन के सदाचारी जीवन के बारे में आपस में बात कर रहे थे। वे उसके साहस और धैर्य पर बहुत आश्चर्यचकित थे। संयोग से, एक कुख्यात महिला ने यह बातचीत सुन ली। शैतान के उकसावे पर, वह इन लोगों के पास जाकर निम्नलिखित शब्द बोली:

'तुम इस तपस्वी के जीवन से इतने आश्चर्यचकित क्यों हो? क्या वह वास्तव में सदाचार में इतना दृढ़ है? अगर मैं चाहूँ, तो मैं उसे वैसे ही हिला सकती हूँ जैसे हवा पेड़ की पत्तियों को हिलाती है। और उसमें ऐसा क्या है जो तुम्हें इतना प्रशंसनीय लगता है? क्या यह बस इसलिए नहीं है कि वह एक जंगली जानवर की तरह, शहर में देह की कामनाओं और सांसारिक प्रलोभनों से लड़ने में असमर्थ होकर, रेगिस्तान में चला गया है? और इसमें आश्चर्य की क्या बात है अगर वह एक भी महिला को न देखकर निर्लिप्त रहता है? आप स्वयं अच्छी तरह जानते हैं कि सूखी घास आग के बिना नहीं जलती; लेकिन अगर आग के पास रखी सूखी घास में आग न लगे, तो यह बहुत आश्चर्य की बात होगी। इसी प्रकार हमें इस आदमी के बारे में भी तर्क करना चाहिए। अगर मैं उसके पास जाऊँ, और वह उतना ही उदासीन रहे, और मेरी सुंदरता से मोहित न हो, तो वह न केवल मनुष्यों की दृष्टि में, बल्कि परमेश्वर और उनके स्वर्गदूतों की दृष्टि में भी महान होगा।

इन बातों के बाद, उसने उन आदमियों के साथ शर्त लगाई और घर चली गई। वहाँ उसने अपने कीमती कपड़े उतार दिए, पतले और फटे-पुराने कपड़े पहन लिए, अपने सिर पर एक फटी-पुरानी चादर ओढ़ ली और कमर में एक रस्सी बाँध ली। और अपने सारे सुंदर कपड़े, अंगूठियाँ और बालियाँ, सोने की मुहरें, हार और वह सब कुछ जो युवकों के मन और आँखों को मोहित करता है – उसने उन्हें एक बोरी में डालकर अपने साथ ले लिया। शाम को वह केसरिया से निकल गई और रात में उस रेगिस्तान के पहाड़ पर पहुँच गई जहाँ वह पूजनीय व्यक्ति रहता था। यह एक बरसाती और तूफानी रात थी। जैसे ही वह मार्टिनियन की कोठरी के पास पहुँची, उस महिला ने कराहने का नाटक किया और संत से विनती करने लगी:

'हे ईश्वर की सेवक, मुझ पर दया करो! मुझे, एक बेचारी आत्मा को, जंगली जानवरों के खाने के लिए अकेला न छोड़ें। मैं रेगिस्तान में रास्ता भटक गई हूँ और मुझे नहीं पता कि कहाँ जाऊँ। दया करें, इस दुख में मेरी परवाह करें, और मुझे, एक पापी को, तुच्छ न समझें, क्योंकि मैं भी ईश्वर की एक प्राणी हूँ। मैं आपसे विनती करती हूँ, हे पवित्र पिता, मुझे बिना मदद के न छोड़ें।

उसने ये शब्द और ऐसे ही कई शब्द रोते और पुकारते हुए कहे। धन्य मार्टिनियन ने अपनी छोटी सी खिड़की खोली, बाहर देखा, और उसे इतने फटेहाल कपड़ों में, मूसलाधार बारिश में खड़ी देखा तो मन ही मन सोचा:

'हाय रे मुझ दुखी पापी। अब मैं एक परीक्षा का सामना कर रहा हूँ: या तो मुझे दयालु होने की ईश्वर की आज्ञा का पालन करना है, या मुझे अपने संन्यासी के व्रत को तोड़ना है। यदि मैं इस महिला को, जो इतनी दयनीय स्थिति में है, अपनी कोठरी में नहीं ले गया, तो वह जंगली जानवरों द्वारा खाई जाएगी या कड़क ठंड से मर जाएगी। तब मैं अपनी आत्मा को कलंकित करूँगा और एक हत्यारे के समान हो जाऊँगा। लेकिन अगर मैं उसे अपनी कोठरी में ले आता हूँ, तो मुझे डर है कि मुझ पर प्रलोभन आ सकता है। तब मैं अपने शरीर और अपनी आत्मा दोनों को कलंकित करूँगा, और अपने प्रभु के सामने एक अशुद्ध व्यभिचारी बन जाऊँगा। मुझे नहीं पता कि क्या करूँ।

और स्वर्ग की ओर अपने हाथ उठाकर, धन्य मार्टिनियन ने पुकारा:

'हे प्रभु, मैं अपनी आत्मा तेरी ओर उठाता हूँ' (भजन संहिता 24:1), मुझे परीक्षा में न पड़ने दे और छल करने वाले शैतान का दास न बना। परन्तु इस घड़ी मुझे बचा और शत्रु की बदनामी से मेरी रक्षा कर, क्योंकि तू युगानुयुग धन्य है।'

प्रार्थना करने के बाद, उन्होंने दरवाज़ा खोला, उस महिला को अपनी कोठरी में बुलवाया और आग में ईंधन डालकर उसे खुद को गर्म करने के लिए आमंत्रित किया; फिर उन्होंने अपनी कोठरी के पास खड़े एक पेड़ से तोड़े हुए कुछ खजूर लाए, उन्हें उस महिला को दे दिया और कहा:

'स्त्रियो! खा, और यहाँ आग के पास अपना शरीर गर्म कर लो; सुबह मेरे कोठरी से चली जा।'

उसके बाद, उसने उसे कोठरी के बाहरी हिस्से में छोड़ दिया, जबकि वह स्वयं अंदरूनी हिस्से में गया और अपने पीछे दरवाज़े बंद कर दिए। रात के तीसरे पहर में, अपनी आदत के अनुसार, उसने भजन और प्रार्थनाएँ गाना शुरू कर दिया। उसके बाद, वह फर्श पर लेट गया और सो गया। लेकिन उस रात शैतान ने उसे कामुक वासना से परीक्षा में डाला। आधी रात को, उसकी पत्नी उठी, उसने अपने सभी आभूषण अपनी थैली से निकालकर संत को लुभाने के लिए पहन लिए। अपने सादे वस्त्र को वापस थैली में रखकर, वह मार्टिनियन के बाहर आने का इंतजार करने लगी। सुबह, संत अपने कक्ष से बाहर आए, उनका इरादा उस महिला को अपनी कोठरी से दूर भेजने का था। उसे शानदार कपड़ों में और आभूषणों से सजी हुई देखकर, वह उसे पहचान नहीं पाए। भयभीत होकर, वह रुक गए और काफी देर तक चुप रहे। अंत में, उन्होंने उससे कहा:

'तुम कौन हो, और कहाँ से आई हो, और तुम्हें ऐसे शैतानी वस्त्र कहाँ से मिले?'

उसने जवाब दिया कि वह वही महिला थी जिसे उसने खुद अपनी कोठरी में आने दिया था।

'तो फिर, तुमने अपने कपड़े क्यों बदले?' मार्टिनियन ने उससे पूछा। 'कल रात तुम फटेहाल कपड़ों में थीं, फिर भी अब तुम शानदार परिधान पहने हुए हो।'

तब उसने कहा:

मैं फिलिस्तीन के केसरिया से हूँ; मैंने आपके बारे में, आपकी सुंदरता के बारे में बहुत कुछ सुना है, और मेरे दिल में आपके लिए प्यार की आग जल उठी है। मैंने आपके लिए इतनी लंबी यात्रा की है। तुम्हारे संयम का क्या लाभ, अपने शरीर को इतने कठोर उपवास से पीड़ा पहुँचाने का क्या उद्देश्य? किस पुस्तक में तुमने पाया कि किसी को न तो पीना चाहिए, न खाना चाहिए, और न ही विवाह करना चाहिए? क्या प्रेरित पौलुस ने यह नहीं कहा: *'विवाह सभी के बीच सम्माननीय हो, और विवाह का शयनागार अशुद्ध न हो'* (इब्रानियों 13:4)?

किस भविष्यवक्ता को केवल इसलिए स्वर्ग के राज्य से वंचित किया गया था क्योंकि उसकी एक पत्नी थी? क्या महान और अद्भुत हनोक का विवाह नहीं हुआ था? फिर भी उसे स्वर्ग में उठा लिया गया और आज तक उसने मृत्यु का स्वाद नहीं चखा है (उत्पत्ति 5:24; इब्रानियों 11:5)। पुरख अब्राहम की तीन पत्नियाँ थीं, और उन्हें परमेश्वर का मित्र भी कहा गया; इतना ही नहीं, बल्कि उन्हें अपने तम्बू में स्वयं परमेश्वर को तीन व्यक्तियों के रूप में प्राप्त करने के योग्य भी समझा गया (उत्पत्ति 18)। इसहाक, जो मसीह का पूर्वसंकेत थे, भी विवाहित थे (उत्पत्ति 24:67)। याकूब की दो पत्नियाँ और दो उपपत्नियाँ थीं, फिर भी वह एक स्वर्गदूत से कुश्ती करने में सक्षम था और उसे परमेश्वर की महिमा देखने के योग्य समझा गया (उत्पत्ति 22)। क्या महान मूसा, जो परमेश्वर के परम भविष्यवक्ता और सेवक थे, विवाहित नहीं थे (निर्गमन 2)? और फिर भी उन्होंने ईश्वर से संवाद किया, यहूदी लोगों को विदेशी राष्ट्रों के कड़वे बंधन से मुक्त कराया, और उन्हें स्वर्ग के राज्य का पात्र माना गया। इसी प्रकार, दाऊद, अन्य नबियों और पवित्र पुरुषों की वैध पत्नियाँ और बच्चे थे - और वे सभी स्वर्ग के राज्य में प्रतिष्ठित हैं।'

यह कहकर, पापी ने संत को चकराने और उनका संकल्प डगमगाने की कोशिश की; उसने संत का हाथ पकड़ लिया और उन्हें विनाश की ओर ले जाने लगी।

'लेकिन अगर मैं तुम्हें अपनी पत्नी बना लूँ,' मार्टिनियिन ने कहा, 'तो मैं तुम्हारा गुज़ारा कैसे करूँगा? जब मेरे पास कुछ भी नहीं है, तो मैं तुम्हारा भरण-पोषण कैसे करूँगा? तुम मेरा जीवन देखती हो; मैंने अपनी जवानी से ही इन नाशवान चीज़ों में से कोई भी प्राप्त करने का प्रयास नहीं किया है।'

इस पर उस महिला ने उत्तर दिया:

'मेरे स्वामी, बस मेरे साथ रहिए और मुझे आपकी सुंदरता का आनंद लेने दीजिए; बाकी की चिंता मत कीजिए। मेरे पास एक घर और विशाल संपत्तियाँ हैं: सोना, चाँदी, और पुरुष व महिला दास। आप इन सबके मालिक होंगे।'

उस स्त्री के वचन सुनकर—या यूँ कहें कि उस प्राचीन हत्यारे, स्वयं शैतान के, जो उसके होठों से बोल रहा था—मार्टिनियिन पाप करने के विचार में डगमगाने लगा। अंत में, उसने उस स्त्री से कहा:

'थोड़ी देर रुक जाओ: कुछ लोग आशीर्वाद के लिए आमतौर पर मेरे पास आते हैं। मैं जाकर देखता हूँ कि वहाँ कोई है या नहीं, ताकि हमें कोई देख न ले। हम अपना पाप ईश्वर से नहीं छिपा सकते; कम से कम इसे लोगों से तो छिपाएँ, ताकि वे हम पर अपशब्द न कहें या हमारी निंदा न करें।'

यह कहकर, वह अपनी कुटिया से निकल गया और वहाँ एक चट्टान पर खड़ा होकर, सड़क पर ध्यान से नज़र दौड़ाने लगा। लेकिन ईश्वर, जो मानवता का प्रेमी है, किसी के भी विनाश को नहीं चाहता। उन्होंने संत मार्टिनियिन के उन प्रयासों को, जो उन्होंने अपनी जवानी से किए थे, अनदेखा नहीं किया; उन्होंने उनकी प्रार्थनाओं को याद किया, उन्हें अपनी सहायता प्रदान की, और उनके बुरे विचार को एक अच्छे विचार में बदल दिया। चट्टान से उतरकर, मार्टिनियिन को कुछ सूखी टहनियाँ मिलीं, उसने उन्हें उठाया और अपनी कोठरी में ले गया। इसे अपनी कोठरी के बीच में रखकर, उन्होंने उसमें आग लगा दी। जब आग भड़क उठी, तो संत ने अपने चप्पल उतार दिए, आग में कदम रखा, और तब तक वहां खड़े रहे जब तक कि लिपटें उनके पूरे शरीर को झुलसाने लगीं। इसके बाद, वे आग की लपटों से बाहर निकले और जैसे खुद को फटकारते हुए कहा:

'तो फिर, मार्टिनियिन, क्या यह क्षणिक आग सुखद है? क्या यह यातना स्वीकार्य है? यदि तुम इसे सहन कर सकते हो, तो आगे बढ़ो और इस पत्नी को ले लो। वह—या उसके माध्यम से शैतान—तुम्हारे लिए एक शाश्वत आग तैयार करेगा।' नहीं, दोष उसकी नहीं है, बल्कि उस शैतान का है जिसने उसके मन में यह विचार डाला है – वह ऐसा इसलिए करता है क्योंकि वह तुम्हें विनाश की खाई में घसीटना चाहता है। विचार करो, अयोग्य मार्टिनियिन, उस यातना के बारे में जो तुम्हारा इंतज़ार कर रही है; उस शाश्वत अग्नि को याद करो; इस क्षणिक अग्नि को पानी से बुझाया जा सकता है। इसमें प्रकाश है। हालाँकि, नरक की आग में बिल्कुल भी रोशनी नहीं है; दुनिया के सभी समुद्र और नदी, चाहे आकाश के नीचे कितने भी हों, इसे बुझा नहीं सकते। यदि तुम इस अविनाशी आग को सहन कर सकते हो, तो अपनी पत्नी के पास जाओ और अपनी इच्छा पूरी करो।

तो उसने अपने आप से कहा। जब उसका दर्द थोड़ा कम होने लगा, तो वह आग में वापस चला गया और वहाँ बहुत देर तक, जब तक संभव था, खड़ा रहा। आग से बाहर निकलते ही, वह ज़मीन पर गिर पड़ा और टूटे दिल से, आहें भरते और रोते हुए, उसने प्रभु से पुकारा:

'हे प्रभु, हे मेरे परमेश्वर, मुझ पापी पर दया करें; मेरे मन के अंधकार और पाप की ओर झुकाव को क्षमा करें।' हे प्रभु, जो हृदयों और मन की गहराइयों की परीक्षा करते हैं, मेरे हृदय को भी जानते हैं; आप जानते हैं कि मैंने अपनी जवानी से ही आपसे प्रेम किया है और आपके लिए अपने शरीर को आग से झुलसाया है। मुझे क्षमा करें, हे मेरे प्रभु और स्वामी, क्योंकि केवल आप ही भले और दयालु हैं, और आप सदा के लिए धन्य हैं।

इस प्रकार संत ने ज़मीन पर पेट के बल लेटकर प्रार्थना की: वह अपने गंभीर जलने के कारण खड़ा नहीं हो पा रहा था। इसके बाद, उसने गाना शुरू किया: *'परमेश्वर इस्राएल के प्रति, और उन लोगों के प्रति जो हृदय से शुद्ध हैं, कितने भले हैं! परन्तु मैं तो लगभग फिसल गया था, मेरे पाँव लगभग लड़खड़ा गए थे'*[1838] (भजन संहिता 72:1–2)।

यह देखकर उसकी पत्नी यह सोचकर चकित रह गई कि संत ने अपनी ही मुक्ति के लिए कैसे स्वयं को आग की लपटों के हवाले कर दिया था। और उसने स्वयं अपने पापों को याद किया और आत्मा में ऊँचा उठाई गई, जैसे नींद से जागी

[1838] अर्थात्, मैं उन सुदृढ़ विचारों को त्यागने के खतरे में था जो मुझे बनाए रखते हैं, और सबसे बड़े प्रलोभन के आगे झुकने का। – जैसा कि धन्य थियोडोरेट बताते हैं, भविष्यवक्ता विचारों को 'पैर और तलवे' के रूप में संदर्भित करते हैं।

हो। उसने अपने कपड़े और अपना सारा आभूषण फाड़ दिया, उन्हें आग में फेंक दिया और, एक बार फिर फटे-पुराने कपड़े पहनकर, संत मार्टिनियन के पैरों पर गिर पड़ी और, आँसुओं के साथ, उससे बात करना शुरू किया:

'मुझे क्षमा करो, हे दयनीय और पापी, हे ईश्वर के सेवक; आप जानते हैं कि शैतान की युक्तियाँ और छल कितने शक्तिशाली और अनेक हैं। उसने ही मेरे मन में आपको परीक्षा में डालने का विचार डाला था। हे पवित्र पिता, मेरे लिए प्रार्थना करें, ताकि आपकी प्रार्थनाओं के द्वारा मैं भी—एक बड़ी पापी—मोक्ष प्राप्त कर सकूँ। यह जान लीजिए, पिताजी: मैं न तो शहर में कभी लौटूँगी, न अपने घर में प्रवेश करूँगी, और न ही अपने परिवार या परिचितों को देखूँगी। नहीं, मैंने अपने दुष्ट कर्मों को त्यागने का दृढ़ संकल्प लिया है; मैं केवल अपनी दीन आत्मा के उद्धार के लिए ही प्रयास करूँगा। यह भी जानिए, मेरे प्रभु: हमारे प्रभु यीशु मसीह के नाम पर, मैं शैतान के विरुद्ध उसी तरह युद्ध करूँगा जैसे उसने मुझे आपके विरुद्ध उठने के लिए प्रेरित किया था। और मुझे उम्मीद है कि मैं उसे शर्मिंदा कर दूँगा: इस प्राचीन धोखेबाज़ ने, मुझे आपके विरुद्ध करके, खुद को ही मेरे विरुद्ध कर लिया है। वह मुझसे आपके ऊपर विजय प्राप्त करना चाहता था, लेकिन हमारे प्रभु की मदद से, जो वेश्याओं को भी पश्चाताप के लिए बुलाते हैं, वह स्वयं मुझसे पराजित होगा।

यह कहकर, वह रो पड़ी। धन्य ने उससे उत्तर दिया:

'मेरी प्रभु और ईश्वर तुम्हें, पत्नी, तुम्हारे पाप के लिए क्षमा करें। शांति से जाओ और, जैसा तुमने कहा, अपनी आत्मा के उद्धार का ध्यान रखना। अपने ऊपर तपस्या थोपकर अपनी वासनाओं से लड़ो, और इस प्रकार तुम दुष्ट को लज्जित कर पाओगी।'

इसके उत्तर में, उसने धन्य व्यक्ति से कहा:

उसने उत्तर दिया:

उन्होंने उत्तर दिया:

'बेथलहम जाओ और वहाँ पवित्र कन्या पावला[1839] को ढूँढ़ो, जिसने वहाँ एक पवित्र चर्च बनवाया है। जब तुम उसके पास पहुँचो, तो उसे सब कुछ बता देना जो हुआ है और उसके द्वारा मोक्ष की याचना करना।'

वह महिला उठी, उसके सामने झुकी और कहा:

'मेरे लिए प्रार्थना करें, पिता, एक पापी के लिए!'

संन्यासी, तीव्र पीड़ा से ग्रस्त, बड़ी मुश्किल से ज़मीन से उठ पाया। उसने महिला को यात्रा के लिए कुछ खजूर दिए, उसे अपनी कुटिया से बाहर ले गया और यरूशलेम का रास्ता दिखाते हुए कहा:

'शांति से जाओ, अपनी आत्मा को बचाओ, और पश्चाताप में प्रयासरत रहो। ध्यान रखना कि पीछे मुड़कर मत देखना: *'जो कोई हल पर हाथ रखकर पीछे मुड़ता है, वह परमेश्वर के राज्य के योग्य नहीं है* (लूका 9:62)। अपना ध्यान रखना, कहीं शत्रु तुम्हें फिर से अशुद्ध न कर दे; पश्चाताप में दृढ़ रहो, क्योंकि परमेश्वर पश्चाताप करने वालों को स्वीकार करता है।

यह सुनकर, उस स्त्री ने और भी ज़ोर से रोते हुए कहा:

'और मैं उसी में अपनी आशा रखती हूँ जिसमें जातियों ने अपनी आशा रखी है और उन्हें लज्जित नहीं होना पड़ा। मैं दृढ़ता से विश्वास करती हूँ और आशा करती हूँ कि अब से शैतान को मुझमें कोई सेवक नहीं मिलेगा।'

धन्य मार्टिनियन ने उस पर क्रॉस का चिह्न बनाते हुए कहा:

'प्रभु मेरा परमेश्वर तुम्हारी आत्मा की रक्षा करे और अंत तक तुम्हें सुरक्षित रखे।'

यह महिला, संत के सामने सिर झुकाकर, चली गई, जबकि संत अपनी कोठरी में लौट आए, जहाँ उन्होंने आँसुओं के साथ प्रभु से प्रार्थना करना शुरू कर दिया। इस बीच, वह महिला चलती रही, और आँसुओं के साथ ईश्वर से प्रार्थना करती रही कि वह उसे मोक्ष के मार्ग पर ले जाएँ। रात हो चुकी थी, फिर भी वह रेगिस्तान में चल रही थी। वहाँ वह रात बिताने के लिए रुकी। सुबह उठकर, वह फिर से प्रार्थना करते और आँसू बहाते हुए अपने रास्ते पर चल पड़ी। वह अगले दिन की देर शाम तक ही बेथलहम पहुँच सकी। धन्य पॉल द्वारा स्थापित मठ में प्रवेश करके, वह उनके सामने झुकी और जो कुछ भी हुआ था, सब कुछ बता दिया। उसकी कथा सुनकर, धन्य पाउला ने मानव जाति के प्रेमी ईश्वर की स्तुति की, उसे खुशी-खुशी अपने मठ में स्वीकार किया, और हर दिन उसे सिखाया और मोक्ष के मार्ग पर उसका मार्गदर्शन किया।

[1839] संत *पॉल की* विधवा ने 384 ईस्वी से 20 वर्षों तक बेथलहम में तपस्या का जीवन जिया; उनकी मृत्यु 26 जनवरी 404 को हुई।

इस महिला ने तपस्या और उपवास में इतनी लगन से खुद को समर्पित कर दिया कि कई मौकों पर धन्य पाउला ने उससे कहा:

'अपने शरीर को आराम दे, मेरी बेटी, कहीं वह थक न जाए; प्रयास करना कि तुम अंत तक अपने तपस्या के प्रयासों को जारी रख सको।'

लेकिन उसने अपने तपस्या के प्रयासों में कोई ढील नहीं दी। अपनी मृत्यु से ठीक पहले, धन्य ज़ोई – क्योंकि यही उस महिला का नाम था – ने प्रभु से प्रकट करने के लिए कहा कि क्या उनका पश्चाताप स्वीकार किया गया था। उनकी दया के प्रतीक के रूप में, मानवता से प्रेम करने वाले ईश्वर ने उन्हें चंगा करने का वरदान दिया। आँखों की गंभीर बीमारी से पीड़ित एक महिला उपचार की आशा में उस मठ में आई। धन्य पाउला, जो ज़ोए के पश्चाताप की सत्यता जानना चाहती थीं, ने उससे कहा:

'मेरे बच्चे, इस महिला के लिए प्रार्थना करो: शायद तुम्हारी प्रार्थना के द्वारा प्रभु उसे चंगा कर दें।'

थोड़ी ही देर बाद, जब ज़ोई उस बीमार महिला के लिए प्रार्थना कर रही थी, तो वह चंगी हो गई। अपनी चंगाई के लिए कृतज्ञता स्वरूप, उस महिला ने उस मठ में वेला लिया और बड़ी लगन के साथ मठवासी तपस्या में स्वयं को समर्पित कर दिया।

बारह वर्षों तक, धन्य जोई ने तपस्या की और शांतिपूर्वक अपना आत्मा प्रभु को सौंप दिया। अपने पश्चाताप की पूरी अवधि के दौरान, उन्होंने न तो शराब, न तेल, न ही सब्जियां खाईं, बल्कि केवल थोड़ी सी रोटी और पानी लिया। वह दिन में केवल एक बार शाम को भोजन करती थीं, और कभी-कभी तो हर दो दिन में एक बार ही; कठोर धरती ही उनका बिस्तर था। संत का तपस्वी जीवन ऐसा था, और उनका निधन भी ऐसा ही हुआ।

लेकिन आइए हम धन्य मार्टिनियन के वृत्तांत पर वापस लौटें।

सिर्फ सात महीने बाद ही पूजनीय मार्टिनियन के जलने के घाव ठीक हुए। उसके बाद, उन्होंने इस प्रकार मनन करना शुरू किया:

'यदि मैं इस स्थान को छोड़कर कहीं और नहीं जाता, तो धूर्त शत्रु मुझे अकेला नहीं छोड़ेगा और मुझे कोई शांति नहीं देगा। वास्तव में, मुझे ऐसी जगह रहना चाहिए जहाँ महिलाओं की पहुँच बिल्कुल न हो।'

ऐसा सोचकर, वह उठ खड़ा हुआ और ईश्वर से प्रार्थना करने लगा:

'हे स्वर्ग और पृथ्वी के प्रभु और समुद्र के स्रष्टा! जो मेरे भले के लिए है, वही करो; मुझे न छोड़ो; मुझे अंत तक विनिष्ट न होने दो; मेरा सहायक और रक्षक बनो। हे शक्ति के स्वामी! मुझे मोक्ष का मार्ग दिखाओ।'

क्रॉस का चिह्न बनाने के बाद, धन्य व्यक्ति अपनी कोठरी से निकल गया और समुद्र की ओर चल पड़ा। जब शैतान ने देखा कि तपस्वी इस स्थान को छोड़ गया है, तो वह चिल्लाया:

'मेरा नाम महिमामय हो, क्योंकि मैंने तुम्हें, मार्टिनियन, तुम्हारी कोठरी से भगा दिया है, तुम्हारे शरीर को झुलसा दिया है, तुम्हें एक भगोड़ा और अपना कैदी बना दिया है।' 'तो फिर, मार्टिनियन, क्या तुम यहाँ से भाग रहे हो? लेकिन यह जान लो: तुम जहाँ भी जाओगे, मैं तुम्हारा पीछा करूँगा; जैसे मैंने तुम्हें इस जगह से भगाया है, वैसे ही मैं तुम्हें वहाँ से भी भगा दूँगा जहाँ तुम कहीं भी बसेगा; मैं तुम्हें तब तक नहीं छोड़ूँगा जब तक मैं तुम्हें पूरी तरह से परास्त करके अपना दास नहीं बना लेता।' धन्य ने उत्तर दिया:

'हे दुर्बल और दीन प्राणी! क्या तू सचमुच सोचता है कि अपनी कोई शक्ति न होते हुए भी तूने मुझे इस कोठरी से भगा दिया है, या क्या तू सोचता है कि मैं निराश होकर यहाँ से चला गया? नहीं, मैं यहाँ से इसलिए गया हूँ ताकि मैं तेरे विरुद्ध और भी अच्छी तरह से लड़ सकूँ और तुझ पर विजय प्राप्त कर सकूँ। यदि तुमने मुझ पर लाए वे दो प्रलोभन पर्याप्त नहीं थे, तो एक बार फिर मुझे प्रलोभित करने का प्रयास करो। अपने परमेश्वर की सहायता से, मैंने तुम्हारी चालाक धोखेबाज़ी को नष्ट कर दिया है, और मैंने तुम्हारे लिए नहीं, बल्कि अपने प्रभु परमेश्वर के नाम के लिए दुख सहे हैं। क्योंकि वह पत्नी भी, जिसे तुमने मुझे लुभाने के लिए प्रेरित किया था, अब तुम्हारी तुच्छता को जानती है और तुम्हारी तुलना धुएँ से करती है: उसने तुम्हारी दुष्ट और बुरे षड्यंत्रों को पैरों तले कुचल दिया है, इसलिए तुम उसकी छाया के पास आने की हिम्मत भी नहीं करते।

संत के ये वचन सुनकर, शैतान गायब हो गया। तब धन्य व्यक्ति ने भजन गाना शुरू किया: *'ईश्वर उठे, और उसके शत्रु बिखर जाएँ; जो उससे द्वेष करते हैं, वे उसके सामने से भाग जाएँ'* (भजन संहिता 67:2)। यह भजन गाते हुए, वह समुद्र

की ओर चल पड़ा। एक बंदरगाह पर पहुँचने पर, उसे वहाँ एक ईश्वर-भयभीत जहाज का कप्तान मिला और उसने उससे कहा:

'भाई! क्या आप समुद्र में किसी छोटे, निर्जन द्वीप के बारे में जानते हैं?'

नाव के मालिक ने उत्तर दिया:

'आप यह क्यों पूछ रहे हैं? आपको इसकी क्या ज़रूरत है?'

मार्टिनियन ने उत्तर दिया, 'मैं इस व्यर्थ संसार से अलग होकर मौन का तप करना चाहता हूँ, लेकिन मुझे इसके लिए कोई उपयुक्त स्थान नहीं पता है।'

उस आदमी ने कहा:

'ऐसी एक जगह है, लेकिन वह भयानक है: समुद्र के बीच में एक ऊँची चट्टान है जहाँ से जमीन भी दिखाई नहीं देती।'

'ऐसी जगह मेरे लिए उपयुक्त है,' उस धन्य व्यक्ति ने उत्तर दिया, 'मैं वहाँ बसना चाहता हूँ, क्योंकि कोई भी पत्नी वहाँ तक नहीं पहुँच सकती।'

'लेकिन तुम्हारे लिए खाना कौन लाएगा?' जहाज के कप्तान ने पूछा।

मार्टिनियन ने कहा:

'मैं आपसे यही निवेदन करना चाहता हूँ। आप मेरे लिए भोजन लाएँगे, और मैं आपके लिए प्रार्थना करूँगा। यदि आप खजूर की पत्तियाँ लाएँगे, तो मैं उन्हें बुनूँगा; जब आप आएँगे, तो आप मेरी बुनी हुई चीज़ें ले जाकर बेच देंगे; और उस पैसे से आप मेरे लिए रोटी खरीदेंगे; साथ ही एक पात्र में पानी भी लाएँगे।' मैं आपसे अनुरोध करता हूँ कि आप साल में दो-तीन बार मेरे पास रोटी और पानी लेकर आया करें।

यह सुनकर जहाज़ के कप्तान को एहसास हुआ कि एक संत उसके सामने खड़े हैं; उसने वचन दिया कि वह उस धन्य व्यक्ति का जो कुछ भी मांगेगा, पूरा करेगा। जहाज़ पर चढ़कर, वे उस सुनसान जगह के लिए रवाना हो गए। एक अनुकूल पछुआ हवा के साथ, वे शाम तक उस चट्टानी खड्डे पर पहुँच गए। उसे देखकर, आशीषित व्यक्ति आत्मा में आनंदित हुआ और परमेश्वर की स्तुति की। नाविक को आशीर्वाद देने के बाद, वह चट्टान पर चढ़ा और गाने लगा: *'मैंने प्रभु पर अपना भरोसा किया है, और वह मेरी ओर झुका और मेरी पुकार सुनी; उसने मुझे भयानक गड्ढे और कीचड़ भरी दलदल से बाहर निकाला, और मेरे पैरों को चट्टान पर स्थिर किया तथा मेरे कदमों को दृढ़ किया'* (भजन संहिता 39:2)। (संत अथेनासियस की व्याख्या के अनुसार, वासनाओं की खाई दुराचार और अज्ञानता है। और भ्रम की कीचड़ से, क्योंकि पापों में, कीचड़ की तरह, जो लोग उनमें फँस जाते हैं, वे कीचड़ में फँस जाते हैं।)

भजन समाप्त करके, उन्होंने नाविक से प्रार्थना की और कहा:

'भाई, शांति से जाओ, और मेरे लिए रोटी, पानी और टहनियाँ लाओ ताकि मैं टोकरी बना सकूँ।'

नाविक ने उत्तर दिया, 'यदि आप चाहें, तो मैं कुछ लकड़ी भी ले आऊँगा। यहाँ हम आपके लिए एक छोटी झोपड़ी बना देंगे।'

लेकिन धन्य व्यक्ति ऐसा नहीं चाहते थे: वह खुले आसमान के नीचे उस चट्टान पर रहने के लिए रुके रहे, और दिन की गर्मी और रात की ठंड दोनों को धैर्यपूर्वक सहते रहे। साल में दो या तीन बार, नाविक उनके लिए रोटी और पानी लाता था, जैसा कि संत ने उससे कहा था। चट्टान पर रहते हुए, धन्य मार्टिनियन इस बात से बहुत प्रसन्न थे कि वे दुनिया के व्यर्थ के दिखावे से भाग गए थे। दिन-रात वे ईश्वर की स्तुति करते और निरंतर दैवीय विषयों पर ध्यान लगाते थे। लेकिन धूर्त शैतान यहाँ भी संत को चैन से नहीं रहने देता था और हर तरह से उन्हें परेशान करने का प्रयास करता था। एक रात, उसने समुद्र में एक बड़ा तूफान खड़ा कर दिया और धन्य व्यक्ति के सिर के ऊपर एक विशाल लहर उठा दी। यह चट्टान से पंद्रह कोहनी ऊपर उठी हुई थी। ऐसा होते ही, शैतान चिल्लाया:

'अब मैं तुम्हें डुबा दूँगा, मार्टिनियन!'

लेकिन धन्य व्यक्ति ने बिना किसी हिचकिचाहट के उत्तर दिया:

'तुम व्यर्थ ही परिश्रम करते हो, हे दुर्बल और धिक्कारित: तुम्हारी युक्तियाँ मुझे भयभीत नहीं करेंगी, और न ही तुम्हारी चालाकियाँ मुझे अस्थिर करेंगी। मैं अपने प्रभु यीशु मसीह पर भरोसा रखता हूँ, और उनके नाम में मैं तुम्हें लज्जित करूँगा।'

यह कहने के बाद, धन्य व्यक्ति ने गाना शुरू किया: *'हे परमेश्वर, मेरा उद्धार कर, क्योंकि जल मेरी आत्मा तक आ गया है। मैं गहरे कीचड़ में डूब गया हूँ जहाँ कोई ठिकाना नहीं है; मैं गहरे पानी में आ गया हूँ और बाढ़ मुझे बहा ले जा रही है'* (भजन संहिता 68:2)।

इस भजन को समाप्त करने के बाद, मार्टिनियन प्रार्थना करने लगा:

उसने पुकारा, 'हे प्रभु यीशु मसीह, अदृश्य पिता के एकमात्र पुत्र, आप हमारे उद्धार के लिए पृथ्वी पर आए; आप समुद्र पर राज्य करते हैं और हवाओं को आज्ञा देते हैं। सभी विस्मय से आपकी सुनते हैं। हे प्रभु, इस घड़ी मेरी सुनिए, और इस तूफ़ान को शांत कीजिए; उस शैतान को लज्जित कीजिए, जो मेरा नाश करना चाहता है; हे प्रभु, आपके लिए सब कुछ संभव है; सब कुछ आपकी शक्ति में है।" संत के इन शब्दों पर, शैतान भाग गया। तूफ़ान शांत हो गया, जिससे संत को कोई हानि नहीं हुई। इसके बाद, संत उस चट्टान पर अपने मोक्ष के लिए छह और वर्षों तक बारिश, ठंड और गर्मी को सहते रहे। लेकिन शैतान ने अपनी चालाकी नहीं छोड़ी। उसने संत को एक और, उससे भी अधिक कठिन परीक्षा में डाला और उन्हें एक और भी बड़ी परीक्षा में उजागर किया।

एक दिन, शैतान ने समुद्र में एक जहाज को चलता हुआ देखा, जिसमें पुरुष और महिलाएं दोनों सवार थे। उसने एक तूफान खड़ा कर दिया, और एक तेज हवा ने जहाज को एक चट्टान से टकरा दिया, जिससे वह टुकड़े-टुकड़े हो गया। नाव में सवार सभी लोग डूब गए, सिवाय एक छोटी लड़की के जो एक तख्ते से चिपकने में कामयाब रही और उस पर तैरते हुए मार्टिनियन के रहने वाली चट्टान तक आ पहुंची। चट्टान से चिपककर, उस छोटी लड़की ने पुकारना शुरू कर दिया:

'हे ईश्वर के सेवक, मुझ पर दया करो; मुझे अपना हाथ दो; मुझे बचा लो और मुझे विनाश के लिए अकेला मत छोड़ो।'

यह देखकर कि केवल वही उस युवती को बचा सकता है, धन्य व्यक्ति ने कहा:

'यह भी राक्षसों का काम है, लेकिन अब, हे शैतान, तुम मुझे हरा नहीं सकते।'

इस पर विचार करते हुए, धन्य व्यक्ति ने कहा:

हाय, मैं पापी, एक बार फिर मैं एक परीक्षा का सामना कर रहा हूँ: मैं क्या करूँ? यदि मैं उस युवती को अपना हाथ नहीं देता और उसे पानी से बाहर नहीं खींचता, तो वह डूब जाएगी, और फिर एक भारी पाप मेरी आत्मा पर बोझ बनेगा, क्योंकि तब मैं ही उसकी हत्यारा बन जाऊँगा। लेकिन अगर मैं उसे बाहर खींचता हूँ, तो मैं उसके साथ यहाँ नहीं रह सकता। तब मैं पहली से भी बड़ी विपत्ति का सामना करूँगा। पहले, जब मैं जमीन पर था, तो मैं भाग सकता था, लेकिन अब - मैं कहाँ भाग जाऊँ? क्योंकि यहाँ एक ही छोटी सी चट्टान है, जो हर तरफ से समुद्र से घिरी हुई है।

तब, उस धन्य ने स्वर्ग की ओर अपने हाथ फैलाकर प्रार्थना करना शुरू किया:

'हे प्रभु, मुझे नष्ट न करें, बल्कि मेरी आत्मा के भले के लिए सब कुछ व्यवस्थित करें।'

यह कहकर, उसने युवती को अपना हाथ दिया और उसे समुद्र से बाहर चट्टान पर ले गया। जब उसने देखा कि वह अत्यंत सुंदर थी, तो मार्टिनियन ने कहा:

'सचमुच, घास और आग एक साथ नहीं हो सकते; आपके और मेरे लिए यहाँ एक साथ रहना असंभव है। यहाँ रहो और कुछ भी मत डरना: यहाँ रोटी और पानी है; एक जहाज का कप्तान इन्हें यहाँ लाता है। दो महीने में वह यहाँ आएगा। उसे सब कुछ बता देना जो हुआ है, और वह तुम्हें समुद्र पार ले जाएगा।'

इसके बाद, संत ने समुद्र पर क्रॉस का चिह्न बनाया और कहा:

'हे प्रभु यीशु मसीह! आपने हवाओं को आज्ञा दी है, जो भय से आपकी आज्ञा का पालन करती हैं; मुझ पर दृष्टि डालिए और मुझ पर दया कीजिए, और मुझे नाश न होने दीजिए। मैं आपके नाम पर स्वयं को समुद्र में फेंक दूँगा, क्योंकि किसी स्त्री के प्रति दैहिक वासना से भस्म हो जाने से तो लहरों में मर जाना मेरे लिए बेहतर है।'

तब कुंवारी की ओर मुड़कर मार्टिनियन ने कहा:

'अपनी जान के लिए भागो, युवती; ईश्वर तुम्हारी आत्मा को दुश्मन की सभी बदनामियों से बचाए और तुम्हें अंत तक सुरक्षित रखे!'

ये शब्द कहते ही, वह खुद को समुद्र में फेंककर तैर गया। ईश्वर की कृपा से, दो डॉल्फ़िनों ने उसे अपनी पीठ पर उठा लिया और उसे ले चलीं। यह देखकर, युवती तब तक उसे देखती रही जब तक वह नज़रों से ओझल नहीं हो गया। डॉल्फ़िनों ने उस धन्य व्यक्ति को सूखी ज़मीन पर ले आईं। किनारे पर पहुँचने पर, मार्टिनियन ने प्रभु का धन्यवाद करना शुरू किया:

'मैं तेरी स्तुति करता हूँ, हे प्रभु मेरे परमेश्वर, क्योंकि तूने अपने पापी और अयोग्य सेवक पर अद्भुत रीति से अपनी दया दिखाई है। अंत तक मेरा परित्याग न करना।'

इसके बाद, उन्होंने मनन करना शुरू किया:

'मुझे नहीं पता कि क्या करूँ। दुश्मन मुझे न तो पहाड़ों में चैन देता है, न ही रेगिस्तानों में। और न ही उसने मुझे समुद्र में चैन से रहने दिया है। लेकिन मुझे हमेशा सुसमाचार के वचनों को अपने हृदय में रखना चाहिए: *'जब वे तुम्हें एक नगर में सताएँ, तो दूसरे नगर में भाग जाओ। क्योंकि मैं तुम से सच कहता हूँ, कि मनुष्य का पुत्र आने से पहिले तुम इस्राएल के सब नगरों में प्रचार न कर लेब'* (मत्ती 10:23)।

यह कहकर, धन्य व्यक्ति एक स्थान से दूसरे स्थान, एक नगर से दूसरे नगर जाने लगा, और इस प्रकार बोला:

'भाग जाओ, मार्टिनियिन, कहीं तुम्हें कोई विपत्ति न आ जाए।'

इस प्रकार, निरंतर भटकते हुए, उन्होंने अपना जीवन व्यतीत किया। ऐसा करते हुए, वे अपने साथ न तो लाठी, न थैला, न रोटी, न दो जोड़े कपड़े, न ही पैसा रखते थे - संक्षेप में, हमारे दैनिक जीवन के लिए आवश्यक कुछ भी नहीं। जब वे किसी नगर या किसी गाँव में प्रवेश करते थे, तो वे पूछते थे कि वहाँ के निवासियों में से कौन अपनी धार्मिकता के लिए प्रसिद्ध है, और वे उसी व्यक्ति के साथ ठहरते और उससे भोजन प्राप्त करते थे। रात जहाँ भी ढलती, वह वहीं बिता देता: रेगिस्तान में या किसी खेत में; फिर भी वह केवल बहुत थोड़ी देर के लिए ही आराम करने लेटता। इस तरह यात्रा करते हुए, उन्होंने दो वर्षों में एक सौ चौसठ शहरों का दौरा किया और अंततः एथेंस पहुँचे[1840] /ईश्वर ने उस शहर के बिशप को धन्य मार्टिनियिन के बारे में सब कुछ प्रकट करना उचित समझा। यहाँ, यह महसूस करते हुए कि उनका अंत निकट है, संत, जो पहले से ही बीमार थे, चर्च में गए, जमीन पर लेट गए और अपने आसपास के लोगों से कहा:

'बिशप को तुरंत यहाँ बुलाओ!'

मौजूद लोगों ने सोचा कि वह पागल है। लेकिन जब मार्टिनियिन ने फिर से उनसे पूछना शुरू किया, तो उन्होंने उसकी आज्ञा मानी, बिशप के पास गए और उनसे कहा:

'एक आदमी चर्च में लेटा है; हम नहीं जानते कि वह पागल है या कुछ और। उसने हमसे कहा है कि हम आपको उसके पास बुलाएँ।'

बिशप ने उनसे उत्तर दिया:

– तुम इस आदमी को पागल कहकर गलत कर रहे हो: वह मुझसे कहीं बेहतर और महान है!

उठकर बिशप चर्च की ओर चल दिए। धन्य व्यक्ति, बिशप को देखकर, उठ नहीं सका। उसने अपनी बाहें उनकी ओर फैला दीं, और इस प्रकार ईश्वर के महापुजारी को उचित सम्मान देना चाहा। बिशप ने भी उन्हें सम्मानित करने का प्रयास किया और कहा:

'ईश्वर ने एक बार मुझसे वादा किया था कि वह मुझे अपना सेवक दिखाएगा। अब उनका वादा पूरा हो गया है। जब आपको स्वर्ग का राज्य प्राप्त हो, तो मेरी भी याद करना।'

धन्य व्यक्ति ने उत्तर दिया:

'पिताजी, मुझे आशीर्वाद दीजिए, और मेरे लिए प्रभु से प्रार्थना कीजिए, कि मैं उनकी धर्मी न्याय-सभा के सामने दोष-मुक्त होकर उपस्थित हो सकूँ।'

यह कहकर, संत ने अपनी आँखें स्वर्ग की ओर उठाईं और कहा:

'हे प्रभु यीशु मसीह! मैं अपनी आत्मा तेरे हाथों में सौंपता हूँ!'

और क्रॉस का चिह्न बनाकर, उन्होंने बिशप से कहा:

'मुझे दफ़ना दीजिए, पिताजी, प्रभु के लिए!'

उस क्षण, धन्यजन के मुख पर एक मुस्कान खिल उठी – और इस प्रकार उन्होंने अपना प्राण प्रभु को सौंप दिया[1841] । इस प्रकार संत मार्टिनियिन ने सम्मानपूर्वक अपनी सांसारिक यात्रा पूरी की, अपने विश्वास को अक्षुण्ण रखा, और स्वर्ग के राज्य में उनके लिए तैयार किए गए मुकुट को प्राप्त करने के योग्य माने गए। बिशप ने उनके पवित्र शरीर को उस चर्च में बड़े सम्मान के साथ दफनाया।

[1840] ग्रीस में एक शहर; अब ग्रीस के साम्राज्य की राजधानी; प्राचीन काल में, यह शहर अपनी विद्वता के लिए प्रसिद्ध था।

[1841] संत मार्टिनियिन की मृत्यु चौथी शताब्दी के अंत या पाँचवीं शताब्दी की शुरुआत में हुई।

इस तपस्वी पर कौन आश्चर्यचकित नहीं होगा, उसकी स्मृति का सम्मान कौन नहीं करेगा! अपने जीवन के अंतिम क्षण तक, उन्होंने अपनी आत्मा को बचाने का प्रयास किया। उन्होंने स्वेच्छा से स्वयं को यातनाओं के अधीन कर लिया। उस समय, ईसाइयों के खिलाफ अभी तक कोई उत्पीड़न शुरू नहीं हुआ था, फिर भी संत ने स्वयं पर शहादत ला दी। उन्होंने शैतान को परास्त किया और उसकी सभी चालाकियों को विफल कर दिया। वह स्वयं अपने उत्पीड़क थे और स्वेच्छा से अपने ऊपर कष्ट झेले। वास्तव में, उन्हें एक शहीद और एक धर्मी पीड़ित कहा जाना चाहिए; इस जीवन की अग्नि के द्वारा, उन्होंने अनंतकाल की अग्नि पर विजय प्राप्त की। शैतान ने उनकी पत्नी को उनके विरुद्ध कर दिया, लेकिन इस धन्य व्यक्ति ने उसे सही और धर्मी मार्ग पर ला दिया।

लेकिन आइए हम उस कन्या की ओर मुड़ें जिसे मार्टिनियनस ने चट्टान पर छोड़ गया था, और हम देखेंगे कि धन्य संत की प्रार्थनाएँ उसकी बहुत मददगार रहीं।

चट्टान पर अकेली छोड़ी गई, फोटिनिया – क्योंकि वह युवती का नाम था – ने उसी तरह जीवन-यापन किया जैसा कि धन्य व्यक्ति ने उसे सिखाया था, यानी रोटी और पानी पर। प्रथा के अनुसार, दो महीने बाद जहाज के कप्तान ने चट्टान के लिए प्रस्थान किया, और साथ में आदरणीय व्यक्ति के लिए रोटी और पानी ले गया। जब वह चट्टान के पास पहुँचा, तो उसने भिक्षु के बजाय युवती को देखा और समझा कि वह एक भूत है। भयभीत होकर, वह चट्टान से दूर नौका चलाने लगा। लेकिन फोटिनिया ने उससे पुकारा:

'डरो मत; मैं वास्तव में एक महिला और एक ईसाई हूँ; मुझे मत छोड़ो, बल्कि आओ और सुनो कि मुझे तुम्हें क्या बताना है।'

लेकिन नाविक ने उस पर विश्वास नहीं किया। फिर, उससे विनती करते हुए, उसने कहा:

'मैं मसीह की कसम खाकर कहता हूँ कि मैं एक ईसाई हूँ; बिना किसी डर के यहाँ आओ और मेरी कहानी सुनो।'

तब नाविक, चट्टान के पास नाव लगाकर, उससे बोला:

'वह संन्यासी जो यहाँ था, वह कहाँ है? वह यहाँ से कैसे और कहाँ जा सकता था? तुम्हें यहाँ किसने लाया और इस चट्टान पर छोड़ गया?'

क्रॉस का चिह्न बनाते हुए, फोटिनिया ने अपने साथ हुई सारी घटनाएँ बतानी शुरू कीं। उसकी कहानी सुनकर वह आदमी बहुत हैरान हो गया और उससे बोला:

'चलो, मैं तुम्हें यहाँ से मुख्यभूमि पर ले चलूँगा, ताकि तुम अपने शहर जा सको।'

'नहीं, भाई,' उसने उत्तर दिया, 'मैं आपसे विनती करती हूँ, मुझे यहाँ से न ले जाएँ, बल्कि मुझ पर दया करें: गाँव में जाएँ, मेरे लिए बालूड़े के कपड़े लाएँ; मेरे लिए रोटी और पानी लाएँ, जैसा आपने उस धन्य पुरुष के लिए किया था, और आपको उस आशीर्वाद की प्राप्ति होगी जिसका उसने वादा किया था।' क्योंकि पुरुषों और महिलाओं में कोई अंतर नहीं है, जैसा कि प्रेरित ने कहा: *'न तो यहूदी है और न यूनानी, न दास है और न स्वतंत्र, न नर है और न मादा; क्योंकि तुम सब मसीह यीशु में एक हो'* (गलातियों 3:28)। मुझे, एक पापी को, तुच्छ न समझो, क्योंकि मैं भी मोक्ष प्राप्त करना चाहती हूँ। शायद ईश्वर, मुझे बचाने की इच्छा से, अपनी बुद्धिमानी पूर्व नियति से मुझे इस चट्टान पर बसाने के लिए कृपा कर बैठे हैं। केवल इसलिए मुझे न छोड़ें क्योंकि मैं एक महिला हूँ; याद रखें कि ईश्वर ने आदम और हव्वा को बनाया था, और वही स्वयं परम पवित्र कुँवारी मरियम से जन्म लेने के लिए कृपा कर बैठे थे। मेरी सेवा करो जैसे तुमने उस धर्मी व्यक्ति की सेवा की थी, और जो कुछ भी मैंने तुमसे माँगा है, वह सब मुझे ला दो। कुछ ऊन भी लाना, ताकि मैं सुई का काम कर सकूँ। अपनी पत्नी को भी अपने साथ यहाँ ले आना: वह मुझे पुरुषों के वस्त्र पहनाएगी, और मैं वही काम करूँगी जो वह मुझे करने का निर्देश देगी। प्रभु और मेरा परमेश्वर जीवन भर आपके साथ रहे, और आपको इस जीवन और अगले जीवन में अनुग्रह, दया और पापों की क्षमा प्रदान करे।

जहाज़रानी ने उससे उत्तर दिया:

'मैं तुम्हारी हर बात मानूँगा; बस खुश रहो और हिम्मत रखो, और ईश्वर तुम्हारी इच्छा पूरी करेगा।'

इन शब्दों के साथ, वह घर के लिए रवाना हो गया; दो दिन बाद, वह अपनी पत्नी के साथ यहाँ लौट आया, और साथ में वह सब कुछ लाया था जो उस युवती ने माँगा था। जहाज से उतरकर, उसकी पत्नी चट्टान पर चढ़कर धन्य फोटिनी के पास गई। उसने उन्हें चूमा और जमीन पर सिर झुकाया। फिर उसने जहाज से उनके कपड़े और रोटी लाई। नाव के कप्तान से थोड़ी दूर हटने के लिए कहने के बाद, धन्य फोटिनी ने अपने स्त्री वस्त्र उतार दिए, और साथ ही अपनी नारी दुर्बलता

को भी त्याग दिया, और पुरुषों के वस्त्र धारण किए, स्वयं को ज्ञान और पुरुषों जैसी शक्ति से सुसज्जित किया। ऐसा करते समय, उन्होंने पुकारा और प्रार्थना की:

हे प्रभु परमेश्वर! तूने प्राचीन काल से अपने सभी संतों की प्रार्थनाओं पर ध्यान दिया है; मुझ पापी की भी सुन; मुझे इस स्थान पर पुरुषों के वस्त्र पहनकर शांति और धार्मिकता से जीने में मदद कर; मेरी आत्मा की रक्षा कर, मेरे हृदय को मजबूत कर, मेरे शरीर को बलवान कर, और मुझे मोक्ष के मार्ग पर चला; और उन लोगों को उचित प्रतिफल प्रदान करें जो मेरी सेवा करेंगे। क्योंकि आप सदा के लिए धन्य और महिमामय हैं। आमीन।

इसके बाद, उसने अपनी पत्नी से कहा:

'मेरी मालकिन, मैं आपसे विनती करती हूँ: कृपया मुझे ऊन के साथ-साथ रोटी और पानी भी दें, ताकि मैं बिना किसी प्रतिफल के आपकी रोटी न खाऊँ; और मेरी इस विनम्रता की निशानी के रूप में मेरे ये वस्त्र स्वीकार करें।'

इसके बाद, उसने उन्हें शांति से विदा किया। तीसरे महीने में, जहाज का कप्तान और उसकी पत्नी फिर से फोतिनी के पास आए और उसके लिए कुछ रोटी लाए।

द्वीप पर रहते हुए, उस धन्य कन्या ने अपने जीवन के लिए प्रभु की स्तुति की। वह हर दिन ईश्वर से बारह प्रार्थनाएँ करती थी, और हर रात वह इस धार्मिक प्रयास को दोगुना कर देती थी, प्रभु से चौबीस बार प्रार्थना करती थी। एक पाउंड रोटी दो दिनों तक उसके भोजन के रूप में पर्याप्त थी। इस प्रकार, ईश्वर की सहायता से, वह अपने जीवन के अंत तक पहुँची। जब वह इस चट्टान पर बसी, तब उसकी आयु पच्चीस वर्ष थी, और वह वहाँ छह वर्ष तक रही; अत; उसने शांतिपूर्वक अपनी शुद्ध और पवित्र आत्मा प्रभु को सौंप दी। उनकी मृत्यु के ठीक दो महीने बाद, जब जहाज का कप्तान और उसकी पत्नी नियत समय पर पहुँचे, तो उन्होंने पाया कि धन्य फोटिनी का निधन हो चुका था; उनके हाथ क्रॉस के चिह्न में जुड़े हुए थे, उनका चेहरा दमक रहा था: वह इस तरह दिख रही थीं मानो वे केवल सो रही हों। उसके पवित्र शरीर को श्रद्धांजलि अर्पित करने और उसे लेने के बाद, उन्होंने उसे जहाज पर रखा और फिलिस्तीन के केसरिया शहर के लिए रवाना हो गए। वहाँ, जहाज के कप्तान ने केसरिया के बिशप के पास जाकर उन्हें संत फोटोनी के पुण्य जीवन के बारे में सब कुछ बताया। सम्पूर्ण पुरोहित वर्ग के साथ, बिशप ने सम्मानपूर्वक उनका शरीर दफनाया, और दिव्य प्रेरित भजन और स्तोत्र गाते हुए, उन्होंने पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा को सम्मान और महिमा दी, अब और हमेशा और युगों-युगों तक। आमीन।

ट्रोपारियन, स्वर 8:

हे धन्य, तुमने आँसुओं की धाराओं से प्रलोभनों की ज्वाला बुझा दी, और समुद्र के उथल-पुथल तथा जंगली जानवरों की क्रूरता को वश में कर, तुमने पुकारा: 'हे सर्वशक्तिमान, तुम अत्यधिक महिमामय हो, जो मुझे आग और तूफान से बचाते हो।'

कॉन्टाकियन, स्वर 2:

धर्मनिष्ठ कुशल तपस्वी, स्वैच्छिक पीड़ित, मरुभूमिवासी और एकांतवासी के रूप में, आइए हम अपने भजनों में सदा-सम्मानित मार्टिनियन की यथोचित रूप से प्रशंसा करें: क्योंकि उन्होंने सर्प को पैरों तले कुचल डाला।

मान्यवर सिमोन मिरिा-प्रदाता, सर्बिया के राजा की स्मृति[1842]

13 फरवरी को स्मरणोत्सव

[1842] संन्यास का व्रत लेने से पहले, संत सिमियन एक महान सर्बियाई जुपान (राजकुमार) थे और *स्टेफन नेमान्या के नाम से* जाने जाते थे / उन्होंने अधिकांश सर्बियाई भूमि को एकीकृत किया और उनकी राजनीतिक स्वतंत्रता सुनिश्चित की। अपने शासनकाल के दौरान, उन्होंने लैटिनवाद, एरियनवाद और अन्य विधर्मों के प्रभाव से अपने लोगों की रक्षा के लिए अथक प्रयास किया। स्टीफन नेमान्या की पत्नी, धर्मपरायण अन्ना ने, अपने पति के उदाहरण का अनुसरण किया, संन्यास की शपथ ली और महिलाओं के एक मठ में बस गईं।

आदरणीय समिोन सर्बयिा के शासक थे, लेकनि उन्होंने अपने सांसारकि राज्य का त्याग कर दयिा और अपना संपूर्ण जीवन स्वर्ग में अमर राज्य प्राप्त करने के लिए समर्पति कर दयिा। उन्होंने अपने देश में कई मठों की स्थापना की और स्टुडेनकिा नदी के तट पर परमेश्वर की अतिपवत्रि माता के सम्मान में एक भव्य चर्च का नरि्माण कयिा; उन्होंने आदेश दयिा कि इसके अंदरूनी हसि्से को फर्श से लेकर छत तक संगमरमर से ढँका जाए और सोने से सजाया जाए। गरीबों को हमेशा उनकी ज़रूरत की हर चीज़ प्रदान करते हुए, संत समियिन ने अंततः अपनी सारी अपार संपत्तिि बेसहारा लोगों में बाँट दी: इसके बाद, अपने शासन के अधीन सभी भूमि को स्वेच्छा से अपने पुत्र स्टीफन के प्रशासन, , को सौंपने के बाद, उन्होंने तुरंत संसार का त्याग कर दयिा और अपने पुत्र, परम पूजनीय साव्हा, का अनुसरण कयिा, जनि्होंने कुछ ही समय पहले माउंट अथोस के एक मठ में संन्यास का संकल्प लयिा था। पवत्रि पर्वत पर पहुँचने पर, आदरणीय संत ने अपने पुत्र की सहायता से, हलिैंडर के नाम से प्रसदि्ध एक खंडहर पड़े मठ और चर्च का जीर्णोद्धार कयिा और वहाँ मठवासी जीवन में स्वयं को समर्पति कर दयिा। ईश्वर का भय सीखकर और प्रार्थना तथा उपवास संबंधी मठ के नयिमों का दृढ़ता से पालन करते हुए, संत समियिन ने वैराग्य प्राप्त कयिा, अपने पापी मन को वश में कयिा और ईश्वर की कृपा की मदद से एक महान तपस्वी बन गए। संयम और उपवास में उन्होंने ऐसी ऊँचाइयों को छुआ कि उनकी तुलना स्वर्गदूतों से की जाने लगी।

परणिामस्वरूप, जब वे जीवति थे, वभिनि्न देशों से भक्तिुओं की भीड़ ईश्वर की महमिा करने के लिए उनके मठ में उमड़ पड़ी, और उनमें से कई के लिए वे मोक्ष के मार्ग पर एक गुरु और मार्गदर्शक के रूप में सेवा करते थे। वहाँ एक धार्मकि जीवन जीने के बाद, पूजनीय समिोन ने अपनी वृद्धावस्था में, परमात्मा के पास प्रस्थान कयिा—जसिे उन्होंने अपने जीवनकाल में इतना प्रेम कयिा था—और वे आनंद और शाश्वत आनंद की उज्ज्वल आशा के साथ परमात्मा में वलिीन हो गए[1843] ।

आदरणीय संत के नधिन के बाद, प्रभु ने उनके महान सद्गुणों के सम्मान में उन्हें चमत्कार करने का वरदान प्रदान कयिा। उनके शरीर से मूर्रा (एक प्रकार का सुगंधति द्रव) नकिलने लगा, और उसके द्वारा, ईश्वर की शक्तिसे, कई चमत्कार होने लगे। इसके बाद, संत के पुत्र, आदरणीय सव्वा ने अपने पति के शरीर को सर्बयिा ले जाकर, नदी स्टुडेनकिा पर स्थति 'भगवान की परम पवत्रि माता के चर्च' में सम्मानपूर्वक सुला दयिा, जसिे स्वयं संत समिोन ने अपनी जेब से इतने प्रेम के साथ बनवाया था। आज भी, धर्मनष्ठि ईसाई उस अवशेष-पेटकिा से मरि्रा लेते हैं जहाँ आदरणीय समियिन के अवशेष रखे हैं; वे वभिनि्न बीमारयिों के लिए इससे अभषिेक करते हैं और ठीक हो जाते हैं।

अलेक्जेंड्रयिा के आर्चबशिप, संत यूलोजउिस की स्मृति

13 फरवरी को स्मरण कयिा जाता है

संत यूलोजीयस प्रारंभ में अंतीयक में जस्टनियिन के 'मदर ऑफ गॉड' मठ के मठाध्यक्ष थे। सम्राट टबिेरयिस[1844] ने उन्हें अलेक्जेंड्रयिा के आसन पर नयिुक्त कयिा। वहाँ, संत यूलोजयिस ने वधिर्मयिों के खलिाफ अथक उत्साह के साथ संघर्ष कयिा[1845] , और उन्होंने अपने लेख एक के बाद एक मस्रि के मठों को भेजे, जो यूटकियिनज्रिम से बुरी तरह प्रभावति थे। उन्हें सामरी लोगों से भी नपिटना पड़ा, जो उस समय एक नश्चिति डोसफियेस को उस नबी के रूप में प्रस्तुत कर रहे थे जसिके बारे में मूसा ने बात की थी। संत ने इस मामले पर एक परषिद बुलाई। यूलोगयिस का 608 के आसपास, 18 फरवरी को, बहुत वृद्धावस्था में नधिन हो गया[1846] ।

[1843] परम पूजनीय समियिोन का 13 फरवरी 1200 को 86 वर्ष की आयु में नधिन हो गया।

[1844] सम्राट टबिेरयिस द्वतिीय ने 578 से 582 तक शासन कयिा।

[1845] संत ग्रेगरी द डायलॉजस्टि के संत यूलोजअिस को लखिे पत्रों में, हमें अलेक्जेंड्रयिा के आर्चबशिप की फलदायी सेवा का मूल्यवान ववरिण मलिता है। संत ग्रेगरी के अनुसार, संत यूलोजअिस की शक्षिाओं ने 'चर्च के दुश्मनों की संख्या को काफी कम कर दयिा और प्रभु के झुंड को बढ़ा दयिा'।

[1846] उनकी रचनाएँ अब लगभग पूरी तरह से पैट्रआर्क फोटीयस द्वारा प्रदान कएि गए अंशों के माध्यम से ही जानी जाती हैं। उनमें से लगभग सभी समकालीन ववािदों के जवाब में लखिी गई थीं: 1) मसीह यीशु में दो स्वभावों के मलिन के संबंध में; 2) नोवाटयिनों के खलिाफ छह पुस्तकें; 3) सामरी लोगों के खलिाफ तीन पुस्तकें; और अन्य। संत यूलोगयिस के कई प्रवचनों में से, केवल एक ही हमें अपनी संपूर्णता में प्राप्त हुआ है – वह 'वा'ई' के सप्ताह के लिए।

27 फरवरी

14 फरवरी (पुराने कैलेंडर के अनुसार)

उसी दिन, संत सिरिल, प्रेरितों के समकक्ष, स्लावों के शिक्षक की स्मृति

हमारे पूजनीय पिता ऑक्सेनटियस का जीवन

14 फरवरी को स्मरणोत्सव

थेओडोसियस युवा के शासनकाल में[1847] , अदद्दा द परशियन के पुत्र ऑक्सेंटियस नामक एक धार्मिक व्यक्ति, कॉन्स्टेंटिनोपल में शाही दरबार में एक महत्वपूर्ण पद पर थे। उन्हें सभी द्वारा एक पवित्र व्यक्ति के रूप में सम्मानित किया जाता था, जो पवित्र धर्मग्रंथों के साथ-साथ सांसारिक ज्ञान में भी पारंगत थे, और अपने अच्छे कार्यों के लिए प्रसिद्ध थे। यह ऑक्सेनटियस परम पूजनीय मार्शियन से परिचित था, जो बाद में महान चर्च का व्यवस्थापक बना; वह सदाचारी भिक्षु जॉन को भी जानता था, जो कॉन्स्टेंटिनोपल के 'यूडोमा' नामक उपनगर में स्थित सेंट जॉन द फोररनर के चर्च में रहता था, और अन्य धर्मपरायण पुरुषों के साथ मैत्रीपूर्ण संबंध बनाए रखता था। उनके जीवन के तरीके का अनुकरण करने की इच्छा से, ऑक्सेनटियस ने इस दुनिया के व्यर्थता, महिमा और कलह का त्याग कर दिया, और मठवासी संस्कार लेकर स्वर्गीय राजा, मसीह का एक सैनिक बन गया। पहले उन्होंने प्रभु की सेवा एक डिकन के रूप में की, फिर एक प्रेस्बिटिर के रूप में, और उन्हें दुष्टात्माओं पर इतनी शक्ति प्रदान की गई कि वे लोगों से दुष्ट आत्माओं को भगा सकते थे, जिसके लिए कॉन्स्टेंटिनोपल में सभी ने उनकी प्रशंसा की। लेकिन संत ऑक्सेनटियस ने मानवीय महिमा की तलाश नहीं की: यह उन पर भारी पड़ती थी; मौन जीवन की खोज में, उन्होंने भीड़-भाड़ वाले शहर को छोड़ दिया, बिथिनिया के लिए रवाना हुए और 'ऑक्सिया' नामक एक एकांत पहाड़ पर आए, जो काल्सेडोन से दस स्टेडियम दूर था। उसे वह स्थान भा गया; वह पहाड़ी पर चढ़ा और, अपने पवित्र हाथ उठाकर, वहाँ परमेश्वर की महिमा करने लगा, यह कहते हुए: *'क्योंकि हे प्रभु, केवल आप ही मुझे सुरक्षा में रहने देते हैं'* (भजन संहिता 4:9)।

और संत उसी पहाड़ पर बस गए, जिसका बाद में उनके नाम पर 'ऑक्सेन्टियस' रखा गया; इसी नाम से इस पहाड़ का उल्लेख पूजनीय स्टीफन के जीवन में मिलता है, जिन्होंने प्रतिमा-भंजकों के हाथों कष्ट सहे और जो बाद में इसी पहाड़ पर रहे।

इस पहाड़ पर रहते हुए, कुछ चरवाहों ने परम पूज्य ऑक्सेन्टियस को वहाँ पाया; वे अपनी भटकी हुई भेड़ों की तलाश में थे, जिन्हें उन्होंने परम पूज्य की प्रार्थनाओं के माध्यम से ढूंढ लिया। उस समय से संत की ख्याति फैल गई, और बहुत से लोग उनके पास आने लगे: कुछ शारीरिक उपचार के लिए, क्योंकि संत की प्रार्थनाओं से वे हर तरह की बीमारियों से ठीक हो गए; और अन्य अपनी आत्मा के लिए। बाद में, पड़ोसी गांवों के धर्मनिष्ठ लोग एकत्रित हुए और उन्होंने पहाड़ की चोटी पर ही पूजनीय पिताजी के लिए एक कोठरी बनाई। उसमें बंद होकर, संत एक छोटी सी खिड़की से अपने पास आने वालों से बात करते, उन्हें सद्गुण सिखाते और बीमारों को ठीक करते; क्योंकि वह, मानो, ईश्वर की कृपा से परिपूर्ण एक जीवनदायी झरना थे, इसलिए विभिन्न नगरों के लोग उनके पास एक ऐसे चिकित्सक के पास आते थे जो कोई शुल्क नहीं लेते थे। एक बार, निकोमेडिया के एक कोमिटि[1848] की पत्नी, जिसकी दृष्टि चली गई थी, ऑक्सेंटियस के पास आई और उनसे विनती करने लगी:

'हे परमप्रभु के सेवक, मुझ पर दया करो!'

इस पर पूजनीय ने उपस्थित सभी लोगों को संबोधित करते हुए उत्तर दिया:

[1847] *थेओडोसियस युवा* 408 से 450 तक राज करता था।

[1848] *'कोमिट्स' शब्द* मूल रूप से किसी प्रांत के उच्चतम रैंक वाले अधिकारी के साथियों को संदर्भित करता था, और बाद में सम्राटों के साथियों को, जो उनकी सबसे करीबी संगति बनाते थे। कॉन्स्टेंटिन द ग्रेट के समय से, यह उपाधि सभी दरबारी और सरकारी अधिकारियों पर लागू की गई, भले ही वे शाही संगति के सदस्य न हों।

'मैं एक पापी मनुष्य हूँ; तुम्हारी तरह, मैं भी वासनाओं के अधीन हूँ। लेकिन अगर तुम विश्वास करती हो कि जिसने जन्म से अंधे आदमी को चंगा किया, वह इस महिला को भी तुच्छ नहीं समझेंगे, तो चलो हम सभी उसके लिए प्रभु से मन लगाकर प्रार्थना करें।'

जब सभी ने प्रार्थना कर ली, तो संत ने उसकी आँखों को छुआ और कहा:

'यीशु मसीह, सच्चा प्रकाश, तुम्हें चंगा करते हैं।'

तुरंत ही उस स्त्री की दृष्टि लौट आई, और सभी परमेश्वर की स्तुति करने लगे। अपनी चंगाई के लिए कृतज्ञता स्वरूप, उसने उस पहाड़ की तलहटी में भीख मांगने वाले भिखारियों को उदारतापूर्वक दान दिया, जो संत से मिलने आने वालों से भीख मांग रहे थे; और उन्होंने स्वयं भी अपने शिष्यों के माध्यम से उनके बीच लाया गया रोटी बांटकर उनकी देखभाल की। चंगा करने के वरदान के अलावा, पूजनीय पिता के पास एक और वरदान था - विवेक का वरदान। इस प्रकार, एक अवसर पर, दो व्यक्ति उनके पास आए: एक रूढ़िवादी ईसाई था, दूसरा विधर्मी का अनुयायी; संत ने रूढ़िवादी व्यक्ति का दयालुता से स्वागत किया और उसके साथ आध्यात्मिक लाभ के बारे में लंबी बात की, जबकि उन्होंने विधर्मी से एक भी शब्द नहीं कहा, क्योंकि उन्होंने उसके अविश्वास को पहचान लिया था। जब वे संत के पास से चले गए, तो विधर्मी ने आदरणीय पिता की निंदा करना और उन्हें पाखंडी कहना शुरू कर दिया। वे अपने घर भी नहीं पहुँचे थे कि रास्ते में एक नौकर उससे मिला और उसे बताया कि एक दानव उसकी बेटी पर हावी हो गया था और अब उसे बुरी तरह से सता रहा था। यह खबर सुनकर विधर्मी बहुत दुखी हुआ; उसने अपने पापों से पश्चाताप किया, अपनी बेटी—जिसे एक अशुद्ध आत्मा ने ग्रस्त कर रखा था—को पूजनीय ऑक्सेंटियस के पास ले गया, और संत से विनम्रतापूर्वक अपनी बेटी को ठीक करने की भीख मांगने लगा; और वह राक्षस के कष्टों से मुक्त हो गई, जबकि उसके पिता अंधविश्वास से मुक्त हो गए।

एक अन्य अवसर पर, दो कोढ़ी ऑक्सेंटियस के पास आए और उनसे उन्हें ठीक करने का अनुरोध करने लगे। संत ने उनसे पूछा:

'तुमने कौन से पाप किए हैं कि ईश्वर ने तुम्हें ऐसी सजा भेजी है?'

वे संत के सामने झुककर विनती करने लगे:

'हे मसीह के सेवक, हम पर दया करो और हमारे चंगा होने के लिए प्रार्थना करो।'

इस पर संत ने उत्तर दिया:

'भाइयो, यह बीमारी तुम पर इसलिए आई है क्योंकि तुम गालियाँ देने और व्यर्थ में ईश्वर का नाम लेने के आदी हो गए हो, और इस प्रकार तुमने स्वयं पर ईश्वर का क्रोध बुलाया है।'

संत के ये शब्द सुनकर, वे यह जानकर बहुत हैरान हुए कि वह उनके पापों के बारे में जानता था; वे पूजनीय पिता के सामने जमीन पर गिर पड़े, और अपने पापों से तौबा की। ऑक्सेंटियस को उन पर दया आ गई, उन्होंने उन्हें सिर से पैर तक पवित्र तेल से अभिषेक किया, और कहा:

'यीशु मसीह तुम्हें चंगा करते हैं; जहाँ तक मेरी बात है, मैं तो केवल एक पापी मनुष्य हूँ।'

तत्काल ही कुष्ठरोगियों को उनकी पीड़ा से मुक्ति मिल गई।

एक अवसर पर, एक लकवाग्रस्त व्यक्ति को, जो एक बिस्तर पर लेटा हुआ था, एक गाड़ी में संत के पास लाया गया; उस व्यक्ति के माता-पिता, सम्माननीय संत के पैरों पर गिरते हुए, रोते हुए उनसे कहने लगे:

'हमारे कई पापों के कारण हमारे पुत्र को पक्षाघात हो गया है।'

तब ऑक्सेन्टियस ने उनसे पूछा:

क्या आप विश्वास करते हैं कि ईश्वर मेरे जैसे पापी के माध्यम से आपके पुत्र को चंगा कर सकता है?

उन्होंने उत्तर दिया:

– सचमुच, आप हमारे उद्धार के लिए भेजे गए एक स्वर्गदूत हैं, और हम विश्वास करते हैं कि ईश्वर के लिए सब कुछ संभव है।

इस पर पूज्य ने उत्तर दिया:

– तुम्हारे विश्वास के अनुसार, तुम्हारे लिए ऐसा ही हो।

और पवित्र तेल लेकर, उन्होंने लकवाग्रस्त व्यक्ति के पूरे शरीर पर उसका लेप लगाया; वह व्यक्ति तुरंत उठ खड़ा हुआ, पूरी तरह से ठीक हो गया; इस चमत्कार को देखने वालों ने सभी ने प्रभु परमेश्वर की स्तुति की। उन सभी अवसरों का वर्णन करना असंभव है जिनमें संत ने दुष्टात्माओं को भगाया: संत की प्रार्थनाओं के द्वारा बहुत बड़ी संख्या

में लोग अशुद्ध आत्माओं से मुक्त हुए, इसलिए भूत-प्रेत ग्रस्त बड़ी संख्या में लोग लगातार विभिन्न, यहाँ तक कि दूर-दराज के देशों से पूजनीय संत के पास आते रहे, जबकि अन्य लोगों को जबरदस्ती संत के पास लाया गया, और उन सभी को उनकी पवित्र प्रार्थनाओं के द्वारा अशुद्ध आत्माओं से मुक्ति मिली। इस धन्य तपस्वी को ईश्वर से दानवों पर इतनी महान शक्ति और अधिकार प्राप्त हुआ।

संत ऑक्सेनियस को पवित्र पिताओं के चौथे सार्वभौमिक परिषद में भी बुलाया गया था, जो कालसेडन में आयोजित की गई थी[1849] ; वहाँ उन्होंने यूटिकियन और नेस्टोरियन विधर्म का विरोध करते हुए बहुत परिश्रम किया, जिसके कारण उन्हें विधर्मियों के हाथों बहुत उत्पीड़न सहना पड़ा। लेकिन धर्मनिष्ठ सम्राट मार्शियन ने उन्हें बहुत सम्मानित किया, और सभी पवित्र धर्मपिता उन्हें बहुत प्यार करते थे; वास्तव में, वह अपनी बुद्धिमत्ता और चमत्कारों, और अपने सुसमाचारिक विश्वास के कारण परिषद के एक प्रतिष्ठित सदस्य थे; उन्हें बहस में हराना असंभव था, क्योंकि वह पवित्र धर्मग्रंथ को पूरी तरह से जानते थे। संक्षेप में, *'एक नबी, जो परमेश्वर और सब लोगों के सामने कर्म और वचन में सामर्थी था'* (लूका 24:19) यह वचन उस पर लागू *होता है*।

इस परिषद में अन्य पवित्र पिताओं के साथ सच्चे ऑर्थोडॉक्स धर्म की पुष्टि करने के बाद, संत ऑक्सेनटियस एक बार फिर अपने रेगिस्तानी पहाड़ और अपनी एकांत कुटिया में लौट आए। कालसेडोन की यात्रा में, आने-जाने दोनों ही समय, उन्होंने कई शानदार चमत्कार किए, लोगों से भूत-प्रेत भगाए और हर तरह की बीमारी तथा अक्षमता को ठीक किया। अपनी कोठरी में रहते हुए भी, वह संसार के लिए बहुत लाभदायक थे, उन्होंने एक सदाचारी जीवन का उदाहरण प्रस्तुत किया, साथ ही अपनी आध्यात्मिक शिक्षाओं के माध्यम से भी, जिनका स्वाद विभिन्न देशों से आने वाले सभी लोग चखते थे, ठीक वैसे ही जैसे वे उनके द्वारा किए गए चमत्कारों से चकित होते थे। अपनी दिव्य दृष्टि वाली आँखों से, संत ऑक्सेनियस दूर की चीज़ों को इतनी स्पष्टता से देख सकते थे मानो वे उनके सामने ही हों – वे तो अमूर्त धन्य आत्माओं और धर्मात्माओं की आत्माओं को भी देख सकते थे। इस प्रकार, एक रात, अपनी कोठरी में विश्राम करने के बाद, वह ईश्वर से अपनी प्रथागत प्रार्थनाएँ करने लगा, जबकि उसके शिष्य और संत को देखने आए लोग उसकी कोठरी के बाहर थे और अभी तक सोने नहीं गए थे; अचानक, अपनी सामान्य प्रथा के विपरीत, पूज्यनीय ने अपनी छोटी सी खिड़की खोली और ऊँचे स्वर में उद्घोष किया:

'प्रभु परमेश्वर धन्य हैं! प्रभु परमेश्वर धन्य हैं! प्रभु परमेश्वर धन्य हैं!'

ये शब्द कहते ही, उन्होंने गहरी साँस ली और अपना सिर जमीन की ओर झुका लिया। जब सभी वहाँ खड़े रहे, और उनसे कुछ पूछने की हिम्मत नहीं कर सके, तब उन्होंने कहा:

'मेरे बच्चों! पूर्व का प्रकाश, हमारे पिता सिमोन, प्रभु के पास चले गए हैं।'

यह कहकर वह जोर-जोर से रोया; फिर, कुछ देर बाद, वह फिर बोला:

'हमारे पवित्र पिता, सत्य के स्तंभ और रक्षक—सीमोन द स्टाइलाइट—का निधन हो गया है; उनकी निर्मल और पवित्र आत्मा, जाते हुए, मुझे, एक पापी और दुर्भाग्यशाली को, अभिवादन करने से नहीं हिचकिचाई।'

ये शब्द सुनकर, सभी चकित हो गए और उनकी दूरदर्शिता की शक्ति पर आश्चर्यचकित हुए, और उन्हें वह घड़ी याद आई जब संत ने उन्हें यह खबर दी थी; बाद में, संत सिमियन द स्टाइलाइट की मृत्यु की खबर राजा लियो को दी गई, जो मार्शियन के बाद सिंहासन पर बैठे थे, और यह खबर दूर-दूर तक फैल गई। तभी ऑक्सेंटियस के शिष्यों ने, उस पूजनीय की मृत्यु के बारे में जानकर, अपने पवित्र गुरु के शब्दों की सच्चाई को एक बार फिर से सत्यापित किया: उनकी मृत्यु का समय वास्तव में संत की भविष्यवाणी के समय के साथ मेल खाता था।

धन्य साइमियन द स्टाइलाइट के निधन के तुरंत बाद, पहले से ही वृद्धावस्था को प्राप्त कर चुके संत ऑक्सेनटियस का धन्य निधन भी निकट आ गया; और इस प्रकार ईश्वर के इस सेवक, जिसने एक धार्मिक और ईश्वर-प्रसन्न जीवन जिया था, ने अपने आशीर्वाद से विभिन्न स्थानों पर कई मठों की स्थापना की, बिथिनिया के पूरे क्षेत्र के आध्यात्मिक नेता के रूप में सेवा की, और कई लोगों को मोक्ष के मार्ग पर मार्गदर्शन किया, वह भी शांतिपूर्वक प्रभु के पास प्रस्थान कर गया[1850] ।

[1849] चौथा सार्वभौमिक परिषद 451 में हुआ था।

[1850] संत ऑक्सेनटियस का निधन लियो द ग्रेट के शासनकाल के दौरान, लगभग 470 ईस्वी में हुआ।

ट्रोपारयिन, स्वर 1:

हे मरुस्थलवासी, देहधारी स्वर्गदूत, और चमत्कार-कर्ता, आप प्रकट हुए, हमारे ईश्वर-धारी पिता ऑक्सेन्टियस: उपवास, जागरण और प्रार्थना के द्वारा, आप स्वर्गीय वर प्राप्त करते हैं, और विश्वास के साथ आपके पास आने वालों के रोगों तथा आत्माओं का उपचार करते हैं। उसकी महिमा हो जिसने आपको शक्ति दी, उसकी महिमा हो जिसने आपको मुकुट पहनाया, उसकी महिमा हो जो आपके द्वारा सभी चंगाइयाँ करता है।

गुफाओं के तपस्वी, पूजनीय इसाक का जीवन

१४ फरवरी को स्मरणोत्सव

किसी मनुष्य के लिए प्रलोभनों से बचना असंभव है; यदि प्रलोभक ने स्वयं प्रभु के पास जंगल में जाने की हिम्मत की (मत्ती 4:3), तो वह प्रभु के सेवक को प्रलोभित करने की कितनी अधिक हिम्मत करता है; परन्तु जैसे आग से शुद्ध किया हुआ सोना लोगों के सामने सूर्य की तरह चमकता है, वैसे ही एक व्यक्ति भी, जो विरोधी की परीक्षाओं से परखा गया और अनंत आग को सौंपा गया है, अपने अच्छे कर्मों के द्वारा परमेश्वर के सामने दिन के उज्ज्वल प्रकाश की तरह चमकेगा। यह सत्य हमारे पूजनीय पिता इसाक, गुफाओं के तपस्वी में स्पष्ट रूप से प्रकट हुआ। अपने सांसारिक जीवन में, ये आदरणीय पिता टोरोपेट्स के एक धनी व्यापारी थे[1851] ; भिक्षु बनने का निश्चय करके, उन्होंने अपना सारा धन जरूरतमंदों और मठों में बाँट दिया, आदरणीय एंथनी की गुफा में गए और उनसे मठ समुदाय में उन्हें स्वीकार करने का अनुरोध किया। आदरणीय एंथनी ने, यह पूर्वानुमान लगाते हुए कि यह व्यक्ति स्वर्गदूतों की तरह सदाचार में प्रयास करेगा और स्वयं भी स्वर्गदूतों जैसा बन जाएगा, उसकी इच्छा को स्वीकार कर लिया। भिक्षु बनने के बाद, आदरणीय इसाक को कठोर जीवन पसंद आ गया: उन्होंने न केवल बाल-कपड़ा धारण किया, बल्कि एक बकरी खरीदकर उसका चमड़ा उतारने का भी आदेश दिया; इस कच्ची और गीली खाल से, उसने अपने लिए एक वस्त्र बनाया और उसे बाल-कपड़े के ऊपर पहना, ताकि खाल उसके शरीर पर सूख जाए। उस समय, इसाक ने खुद को एक संकरी गुफा में बंद कर लिया, जिसका आकार केवल लगभग चार कोहनी (क्यूबिट) था[1852] , और वहाँ उसने आँसुओं के साथ ईश्वर से प्रार्थना की; उनका एकमात्र भोजन एक प्रोस्फोरा था, लेकिन वह भी वे केवल हर दूसरे दिन ही खाते थे; वे अपनी प्यास पानी से बुझाते थे, और वह भी केवल थोड़ी मात्रा में। भोजन और पानी दोनों उन्हें पूजनीय एंथनी द्वारा एक ऐसी खिड़की से दिया जाता था जो इतनी संकरी थी कि उसमें से केवल एक हाथ ही जा सकता था; इसके अलावा, परम पूज्य इसाक कभी बिस्तर पर नहीं लेटते थे, बल्कि बैठे-बैठे ही थोड़ी देर की नींद से अपना शरीर तरोताज़ा कर लेते थे। इस प्रकार, अपने महान तपस्यापूर्ण कार्यों के बीच, वे सात वर्षों तक अपनी तंग कोठरी से बाहर नहीं निकले।

एक दिन, जब शाम ढली, तो उन्होंने अपनी आदत के अनुसार, आधी रात तक भजन जपते हुए प्रार्थना में घुटने टेकना शुरू कर दिया; जब वे थक गए, तो उन्होंने मोमबत्ती बुझा दी और अपनी जगह पर बैठ गए। अचानक, गुफा एक महान प्रकाश से भर गई, जो सूर्य के समान चमकदार था, और दो राक्षस, सुंदर युवकों के रूप में, पूजनीय के पास आए; उनके चेहरे सूर्य की तरह चमक रहे थे; उन्होंने संत से कहा:

'इज़ाक! हम स्वर्गदूत हैं, और देखो, मसीह स्वर्ग की सेनाओं के साथ तुम्हारे पास आ रहे हैं।'

अपने पैरों पर खड़े होकर, इसाक ने राक्षसों की एक भीड़ देखी; उनके चेहरे सूरज की तरह चमक रहे थे; लेकिन उनमें से एक बाकी सभी से ज़्यादा चमक रहा था, और उसके चेहरे से किरणें निकल रही थीं; फिर राक्षसों ने इसाक से कहा:

'इज़ेक! देखो, मसीह यहाँ हैं; उनके सामने गिर पड़ो और उनकी आराधना करो।'

राक्षसों की चाल को पहचानने में असफल और क्रॉस का चिह्न बनाने को भूलकर, आदरणीय संत ने उस राक्षस के सामने झुककर उसे मसीह समझ लिया।

तुरंत राक्षसों ने एक बड़ा शोर मचाते हुए घोषणा की:

'इज़ाक – अब तुम हमारे हो!'

[1851] *टोरोपेट्स* प्सकोव गवर्नरेट में एक जिला शहर है।

[1852] लोकोट या लाकोट लंबाई की एक इकाई है जो 10.5 वर्शोकोक के बराबर होती है।

उसे बठिाने के बाद, वे स्वयं उसके चारों ओर बैठ गए; उस सेल और उस सेल के पास की गुफा का मार्ग राक्षसों से भर गया। फरि राक्षसों में से एक, झूठे मसीह ने कहा:

'बाँसुरी, सारंगयिों और ढोलकयिाँ ले लो और बजाओ, और इसाक को हमारे सामने नाचने दो।'

तुरंत राक्षसों ने बांसुरी, ढोलक और सारंगयिों को बजाना शुरू कर दयिा; उन्होंने इसाक को पकड़कर उसके साथ कूदने और लंबे समय तक नृत्य करने लगे; पूजनीय संत को थका-हार कर और उन्हें मुश्कलि से जीवति छोड़कर, और इस प्रकार उनका मज़ाक उड़ाने के बाद, राक्षस गायब हो गए।

अगले दनि, जब इज़ाक आमतौर पर अपना भोजन करते थे, तो पूजनीय एंथनी अपनी आदत के अनुसार छोटी सी खड़िकी के पास आए और कहा:

'मुझे आशीर्वाद दीजए, पतिा इसाक।'

कोई जवाब नहीं आया; हैरान होकर, एंथनी ने सोचा कि क्या संत इसाक का नधिन हो गया है। फरि उन्होंने पवत्रि थयिोडोसयिस और मठ के बाकी भाइयों को बुलाया। जब वे पहुँचे, तो भाइयों ने गुफा खोदकर आइज़ैक को बाहर नकिाला, यह सोचकर कि उसकी मृत्यु हो गई है, और उसे गुफा के सामने लटिा दयिा; लेकनि फरि उन्हें एहसास हुआ कि आइज़ैक अभी भी जीवति था। तब मठाध्यक्ष, परम पूज्य थयिोडोसयिस ने कहा:

'सचमुच, जो कुछ भी उसके साथ हुआ है, वह राक्षसों का काम है।'

तब इसाक को एक बस्तिर पर लटिाया गया, और संत एंथनी स्वयं उसकी देखभाल करने लगे। उस समय, कीव के राजकुमार इज्यास्लाव पोलैंड से कीव लौट रहे थे; राजकुमार इज्यास्लाव ने पवत्रि एंथनी के प्रति पोलोत्स्क के राजकुमार व्सेस्लाव के कारण द्वेष रखना शुरू कर दयिा था, जसिने पवत्रि व्यक्ति के जीवति रहते हुए कुछ समय के लिए कीव का सहिासन अपने कब्जे में कर लयिा था। तब चेर्नगिोव के राजकुमार स्वयितोस्लाव ने रात में सेंट एंथनी को चेर्नगिोव बुलाया; चेर्नगिोव पहुँचने पर, उन्हें बोल्डन्स्का पहाड़ नामक एक जगह पसंद आई; एक गुफा खोदने के बाद, परम पूज्य वहाँ बस गए, जहाँ आज भी मठ स्थति है। जब महात्मा थयिोडोसयिस को पता चला कि संत एंथनी चेर्नगिोव चले गए हैं, तो उन्होंने इसाक को उठाया, उसे अपनी कोठरी में ले आए और उसकी देखभाल की, – क्योंकि इसाक मन और शरीर दोनों से लकवाग्रस्त था, इसलिए वह न तो बैठ सकता था, न खड़ा हो सकता था, और न ही अपनी दूसरी ओर मुड़ सकता था, बल्कि केवल एक तरफ लेटा रहता था, जसिके कारण उसके नीचे अक्सर कीड़े पनप जाते थे। माननीय थयिोडोसयिस ने स्वयं अपने हाथों से उन्हें धोया, कपड़े पहनाए और इस तरह पूरे दो साल तक उनकी सेवा की, जब तक इसाक वहीं पड़े रहे। यह आश्चर्यजनक है कि, दो साल तक, इसाक ने न तो रोटी, न पानी, न सब्जयिां और न ही कोई अन्य भोजन चखा, फरि भी वे अपने बस्तिर पर पड़े हुए, गूंगे और बहरे, जीवति रहे। आदरणीय थयिोडोसयिस दनि-रात उनके लिए प्रार्थना करते रहे, जब तक कि तीसरे वर्ष में इसाक बोलना शुरू नहीं कर दयिा; तब उन्होंने खड़े होने में मदद माँगी और एक बच्चे की तरह चलने लगे; फरि भी, उन्होंने चर्च जाने की कोई इच्छा नहीं दखिाई, इसलिए उन्हें जबरदस्ती वहाँ ले जाया गया, और बाद में वे अपनी मर्जी से चर्च जाने लगे। तब वह सामूहकि भोजन में शामलि होने लगा, जहाँ उसे भाइयों से अलग बठिाया जाता था; उसके सामने रोटी रखी जाती थी, लेकनि वह उसे छूता नहीं था; भाई उसकी हथेलयिों में रोटी रखने ही वाले थे, लेकनि आदरणीय थयिोडोसयिस ने कहा:

– रोटी उसके सामने रखो, पर उसे उसके हाथों में मत दो, ताकि वह खुद ही उसे खा सके।

और इस प्रकार, पूरे एक सप्ताह तक उन्होंने भाइयों को इसाक के हाथों में रोटी रखने की अनुमति नहीं दी; इसाक ने दूसरों को देखते हुए स्वयं रोटी खाना शुरू कयिा और इस तरह खाना सीख लयिा। इस प्रकार आदरणीय थयिोडोसयिस ने उन्हें शैतान की चालाकयिों और प्रलोभनों से मुक्त कयिा।

जब आदरणीय थयिोडोसयिस का नधिन हो गया और उनके स्थान पर धन्य स्टीफन मठाध्यक्ष बने, तो इसहाक ने एक बार फरि तपस्वी जीवन जीना शुरू कर दयिा, और प्रलोभक से कहा:

'हे शैतान, जब मैं गुफा में एकांत में था तब तूने मुझे धोखा दयिा, लेकनि अब मैं खुद को और अधकि अलग-थलग नहीं रखूंगा; बल्कि, ईश्वर की मदद से, मैं मठ में परश्रिम करके तुझ पर वजिय प्राप्त करने का प्रयास करूंगा।'

तब इसाक ने फरि से अपनी रस्सी की कमीज़ पहनी; उस पर उन्होंने एक मोटी चादर ओढ़ी[1853] और रसोइयों की सहायता करने लगे, भाइयों के लिए काम कयिा, कसिी से पहले ही भोर की प्रार्थना के लिए चर्च में प्रवेश कयिा, और चर्च

[1853] *एक 'स्वति' या 'स्वट्कि'* एक साधारण, मोटा बाहरी वस्त्र है।

में अपने स्थान पर अचल खड़े रहे। जब सर्दी आती, तो वह कड़कती ठंड की परवाह कए बिना, बुरी तरह फटे जूतों में चर्च में खड़ा रहता था, जिससे उसके पैर अक्सर पत्थर के फर्श से जम जाते थे, लेकिन वह सेवा समाप्त होने तक अपने पैरों को हिलाता नहीं था। मैटिन्स के बाद, वह किसी से पहले रसोई में जाता, आग तैयार करता, लकड़ी इकट्ठा करता और पानी लाता; तभी अन्य भिक्षु, जिन्हें यह कर्तव्य सौंपा गया था, आते थे।

एक बार, इन भिक्षुओं में से एक, जिसका नाम भी इसाक था, ने उस धन्य व्यक्ति से उपहास करते हुए कहा:

'इज़ाक! वहाँ एक कागा बैठा है; जाओ और उसे पकड़ लाओ।'

जमीन पर झुकते हुए, वह विनिम्र भिक्षु गया, काले कौवे को पकड़ा और उसे भिक्षुओं के लिए रसोई में ले आया। यह देखकर सभी चकित रह गए और उन्होंने इसके बारे में मठाधीश और अन्य भिक्षुओं को बताया; और तब से, अन्य भिक्षुओं ने उसका सम्मान करना शुरू कर दिया। लेकिन, मनुष्यों से महिमा की इच्छा न रखते हुए, आदरणीय ने एक पवित्र मूर्ख का भेष धारण कर लिया और अब कभी मठाधीश, कभी भाइयों, तो कभी गृहस्थों का अपमान करने लगे, यहाँ तक कि कई लोगों ने उन्हें पीटा भी। एक पवित्र मूर्ख बनकर, वे फिर से वहीं रहने लगे जहाँ वे पहले रहते थे - आदरणीय एंथनी की गुफा में, जिनका निधन हो चुका था। वे अपने चारों ओर बच्चों को इकट्ठा करते और उन्हें भिक्षुओं के वस्त्र पहनाते थे। इसके लिए, उन्हें उस समय के मठाधीश, धन्य निकोन द्वारा दंडित किया गया, और कभी-कभी बच्चों के माता-पिता द्वारा पीटा भी गया; फिर भी उन्होंने सभी कुछ आनंदपूर्वक सहन किया, प्रहारों, नग्नता और ठंड को झेलते हुए।

एक रात, धन्य इसाक ने गुफा के चूल्हे में आग जलाई; चूल्हा कमजोर था, और जब आग भड़क उठी, तो लपटें दरारों से ऊपर उठने लगीं; इन दरारों को ढकने के लिए कुछ भी न होने के कारण, इसाक अपने नंगे पैरों पर लपटों पर खड़े हो गए और तब तक वहीं रहे जब तक चूल्हा पूरी तरह से जलकर राख नहीं हो गया; फिर वह नीचे उतर आए, और उन्हें बिल्कुल भी कोई हानि नहीं हुई थी। इसहाक ने और भी कई अद्भुत कार्य किए। अंततः उन्होंने राक्षसों पर इतनी शक्ति प्राप्त कर ली कि वह उनसे न डरते थे, और न ही उनकी धमकियों या प्रलोभनों से; फिर भी राक्षस अक्सर उन्हें सताते थे और कहते थे:

'तुम हममें से एक हो, इसाक, क्योंकि तुमने हमारे राजकुमार की पूजा की।'

लेकिन उन्होंने उन्हें उत्तर दिया:

तुम्हारा राजकुमार राक्षसों का राजकुमार—बीलज़ेबब है; मैं उससे वैसे ही डरता हूँ जैसे मक्खियों की मूर्ति से (क्योंकि इस तरह उसका नाम अनुवादित होता है)[1854] ; और मैं आप लोगों, उसके सेवकों से भी नहीं डरता; भले ही आप लोगों ने पहले मुझे धोखा दिया हो, क्योंकि मैं आपके छल और चालाकी को नहीं जानता था, पर अब, मेरे प्रभु यीशु मसीह की शक्ति और पूजनीय पिता एंथनी और थियोडोसियस की प्रार्थनाओं के द्वारा, मैं आप पर विजय प्राप्त करूँगा।

इतना कहकर, उसने क्रॉस का चिह्न बनाया और इस प्रकार उन्हें भगा दिया। कभी-कभी राक्षसों ने उस धन्य व्यक्ति को डराने की कोशिश की, वे रात में हल[1855] और फावड़ियों से लैस होकर बड़ी संख्या में उसके पास आते थे, और कहते थे:

'हम तुम्हारी गुफा खोदकर तुम्हें मलबे के नीचे दफन कर देंगे।'

उनमें से अन्य लोग उससे कहते थे:

'बाहर आओ, इसहाक: वे तुम्हें गुफा में जिंदा दफनाना चाहते हैं।'

इस पर धन्य व्यक्ति ने उत्तर दिया:

'यदि तुम इंसान होते, तो दिन के उजाले में चलते; परन्तु तुम अंधकार के पुत्र हो, और इसलिए तुम अंधकार में चलते हो।'

जैसे ही उन्होंने यह कहा, उन्होंने क्रॉस का चिह्न बनाया, जैसा कि वे हर बार जब भी उन्हें प्रताड़ित किया जाता था, करते थे, और राक्षस तुरंत ही गायब हो गए। कभी-कभी, उन्हें डराने के लिए, वे भालू या शेर और अन्य क्रूर जानवरों के रूप में प्रकट होते थे; तो कभी वे साँपों, मेंढकों, चूहों और अन्य सरीसृपों के भेष में उनकी ओर रेंगते थे; लेकिन कुछ भी करने में असफल रहने पर, उन्होंने अंत में कहा:

'इज़ाक, तुमने हमें हरा दिया है!'

[1854] *बील्ज़ेबूब* – फिलिस्तीन में एक अक्कारोनयिन मूर्ति, अनाज के गोदामों और खाद्य आपूर्ति का शासक, जो मक्खियों और अन्य कीट-पतंगों को भगाता था। मत्ती 12:24 और लूका 11:15 में उसे राक्षसों का राजकुमार कहा गया है।

[1855] *कुदाल* – एक फावड़ा, एक बेलचा, एक लोहे का फावड़ा।

जसि पर उन्होंने उत्तर दयिा:

'तुमने एक बार यीशु मसीह और स्वर्गदूतों के रूप में प्रकट होकर मुझे हराया था, हालांकि तुम ऐसे रूप के लायक नहीं थे; अब तुम अपने असली रूप में प्रकट हो, जानवरों और मवेशयिों, साँपों और सरीसृपों के रूप में, क्योंकि असल में तुम वही हो।'

और उस समय से आगे, राक्षस संत को कोई नुकसान नहीं पहुँचा सके; अपने ही कथन के अनुसार, वह तीन वर्षों से उनके खलिाफ लड़ रहा था, जब से उसने स्वयं फरि से गुफा में नविास करना शुरू कर दयिा था। इसके बाद, उसने और भी कठोर जीवन जीना शुरू कर दयिा, और भी अधकि संयम का अभ्यास कयिा; उसने और भी कड़ा उपवास क रह कयिा और तपस्या में स्वयं को समर्पति कर दयिा। ऐसे तपस्वी प्रयासों के बीच, उनके नधिन का समय आ गया; वे अपनी गुफा में गंभीर रूप से बीमार पड़ गए। भाइयों ने उस बीमार व्यक्ति को मठ में ले गए; वहाँ वे आठ दनिों तक बीमार रहे और, एक अच्छा इक़रार करने के बाद, प्रभु के पास चले गए[1856] । आबट जॉन और संपूर्ण समुदाय ने पूजनीय की देह को तैयार करके, उसे सम्मान के साथ उस गुफा में दफनाया जहाँ अन्य पवत्रि पति भी वशि्राम करते थे। इस प्रकार मसीह के इस अच्छे योद्धा ने, यद्यपि शुरू में शत्रु से पराजति हुआ था, बाद में स्वयं शैतान पर वजिय प्राप्त की और स्वर्ग के राज्य को प्राप्त करने के योग्य माना गया। उनकी पवत्रि प्रार्थनाओं के द्वारा, हम भी अपनी आत्माओं के शत्रुओं पर वजिय प्राप्त करके, नरक के वजिेता, महमिा के राजा यीशु के साथ राज्य करें, जनि्हें सारी महमिा, सम्मान और आराधना उनके अनन्त पति और परम पवत्रि, शुभ और जीवन-दायक आत्मा के साथ, अब और हमेशा और युगानुयुग प्राप्त हो, आमेन।

पूजनीय मारोन की स्मृति

14 फरवरी को स्मरण

आदरणीय मारोन ने अपने लिए एक तपस्वी के तपस्वी जीवन को चुना। इस उद्देश्य के लिए, वह एक पहाड़ की चोटी पर चढ़े जसि कभी कुछ मूर्तपिूजकों द्वारा पूजति कयिा जाता था; वहाँ उन्हें एक मूर्तपिूजक मंदरि मलिा जसि छोड़ दयिा गया था और, उसे ईश्वर को समर्पति करने के बाद, उन्होंने उसमें नविास कर लयिा[1857] । बाद में, उन्होंने अपने लिए एक छोटी झोपड़ी बनाई, लेकनि उसका बहुत कम उपयोग कयिा। स्वयं कमजोर शरीर के होने के कारण, उन्होंने इसे अन्य बीमार लोगों को दे दयिा, जो बड़ी संख्या में उनके पास आते थे। और तपस्या के प्रदाता ईश्वर ने अपने अनुग्रह से पवत्रि तपस्वी को बल प्रदान कयिा और उनकी प्रार्थनाओं के द्वारा, उपचार की खोज में उनके पास आने वालों को चंगा कयिा। जल्द ही, वे आदरणीय व्यक्ति केवल प्रार्थना के द्वारा बुखार, कंपकंपी और कई अन्य बीमारयिों को ठीक करने के साथ-साथ दुष्ट आत्माओं को भगाने के लिए भी प्रसद्धि हो गए। अपने जीवनकाल में, उन्होंने कई मठों की स्थापना की और कई संतों के तपस्वी प्रयासों के माध्यम से, उन्हें ईश्वर को प्रयि बनाया। इस प्रकार, धर्मपरायणता का उत्साहपूर्वक अभ्यास करते हुए, संत मारोन ने लोगों के शरीर और आत्मा दोनों को स्वस्थ कयिा। कई वभिन्नि रोगों को सहने के बाद, परम पावन पति, एक संक्षप्ति बीमारी के बाद, इस जीवन से वदिा हो गए और शांतपिूर्वक प्रभु के पास चले गए[1858] ।

करियिा के बशिप संत अब्राहम की स्मृति

14 फरवरी को स्मरणोत्सव

[1856] आदरणीय इसाक का 12वीं शताब्दी में नधिन हो गया। उनके अवशेष आदरणीय एंथनी की गुफाओं में खुले तौर पर रखे गए हैं, जबकि उनका एक हस्सिा 1711 में मठ के एबॉट कुदनि द्वारा कीव से टोरोपेट्स ले जाया गया था।

[1857] यह पहाड़ सीरयिा में करि शहर के पास स्थति था, जो यूफ्रेटसि के धर्मप्रांत में एंटओक से दो दनि की यात्रा पर था।

[1858] उनकी मृत्यु चौथी शताब्दी में हुई। – मारोन के शष्यि थे: जेम्स द हरमटि, लम्निियस – 22 फरवरी, और डोमननि – 1 मार्च।

[1859]आदरणीय अब्राहम सम्राट थियोडोसियस महान के शासनकाल में रहते थे[1860] । उनका जन्म और पालन-पोषण साइप्रस द्वीप पर हुआ था[1861] । परपिक्वता प्राप्त करने पर, उन्होंने अपनी संपत्ति मठ समुदायों के बीच वितरित कर दी, उनमें से एक में मठवासी संस्कार ग्रहण किए, और खुद को मठवासी तपस्या के लिए समर्पित कर दिया। निद्रारहित जागरण, लंबे प्रार्थना और उपवास के माध्यम से, उन्होंने अपने शरीर को इतना थका दिया कि वे लंबे समय तक हिल-डुल नहीं सके और पूरी तरह से चलने में असमर्थ हो गए। जब उन्हें पता चला कि लेबनान पर्वत में एकांत तपस्या के लिए उपयुक्त एक स्थान था, तो पूज्य अब्राहम मठ से निकलकर वहाँ चले गए। उन्होंने एक छोटी सी कुटिया बनाई और तपस्वी के एकांत जीवन को समर्पित कर दिया। उन्होंने अपनी कुटिया में तीन दिन पूर्ण मौन में बिताए और चौथे दिन ही उतनी ही चुपचाप उससे बाहर निकले। इस स्थान पर आदरणीय ने बहुत कष्ट सहन किए। विधर्मी, उनके बारे में जानकर, पहले उन पर रेत फेंकते थे, और फिर उन पर अन्य प्रकार के अत्याचार करने लगे, ताकि उन्हें हमेशा के लिए इस स्थान को छोड़ने पर मजबूर किया जा सके। इसके अलावा, पड़ोसी गाँव के गरीब किसान बार-बार उसके पास आकर भीख माँगकर उसे बहुत परेशान करते थे। लेकिन रेवरेंड ने यह सब धैर्यपूर्वक सहन किया, और उनके कष्टदायक तानों से खुद को बचाने के लिए, उन्होंने भिखारियों को वह सब कुछ दे दिया जो कुछ धर्मपरायण आगंतुक उनके लिए लाए थे। पुरोहित की करुणा से गाँववाले इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने एक चर्च, '', का निर्माण किया और, ईसाई होने के नाते, उन्हें पुरोहित के रूप में अभिषिक्त होने और अपना पादरी बनने के लिए प्रेरित करने लगे। संत अब्राहम ने उनकी इच्छा पूरी की और अपने अनुयायियों को एक धर्मपरायण जीवन में स्थापित करने के बाद, उन्होंने अपनी जगह पर एक अन्य पादरी को छोड़ दिया, जबकि वे स्वयं मठ लौट गए। वे जल्द ही अपने महान कार्यों के लिए प्रसिद्ध हो गए और एक महान संन्यासी के रूप में, उन्हें कार्रा शहर का बिशप नियुक्त किया गया[1862] । अपने कठोर तपस्या के उदाहरण और अपने दैवीय प्रेरित उपदेशों के माध्यम से, उन्होंने शीघ्र ही अपने अनुयायियों को ईश्वर को प्रसन्न करने वाले जीवन की ओर ले गए। पवित्र पद पर रहते हुए अपने पूरे समय के दौरान, संत अब्राहम ने न तो रोटी का स्वाद चखा, न ही आग पर पकाया गया कोई भोजन, और न ही पानी में उबली या अचार वाली कोई सब्जी; उनका भोजन केवल कच्ची सब्जियां, जंगली बेर और इसी तरह की चीजों से ही होता था। जब पूजनीय अब्राहम की खबर सम्राट थियोडोसियस द्वितीय[1863] को मिली, तो उन्होंने उन्हें अपने दरबार में आमंत्रित किया। आदरणीय संत कांस्टेंटिनोपल के लिए रवाना हुए और वहाँ थोड़े समय तक रहने के बाद, उन्होंने अपनी आत्मा प्रभु को सौंप दी। धर्मपरायण सम्राट के आदेश पर, उनके शरीर को विधिवत कांस्टेंटिनोपल से कैर शहर में स्थानांतरित किया गया और वहाँ दफनाया गया।

चेर्नगिोव के पवित्र और धर्मी राजकुमार माइकल वसेवोदोवचि तथा उनके बोयार थियोडोर की अवशेषों का स्थानांतरण

14 फरवरी को स्मरण किया जाता है

ये शहीद 20 सितंबर 1244 को बटू खान के हाथों शहीद हुए थे। उनके अवशेष 14 फरवरी 1578 को चेर्नगिोव से मास्को लाए गए और तायनट्स्की द्वार के पास, उनके नाम समर्पित एक चर्च में, क्रेमलिन में रखे गए; 25 अगस्त 1770 को, उन्हें 'पोर्च' पर स्थित महल में स्थित प्रेजेंटेशन कैथेड्रल में स्थानांतरित कर दिया गया; 21 नवंबर 1774 को, उन्हें आर्चएन्जेल कैथेड्रल में रखा गया, जहाँ वे आज भी विराजमान हैं।

[1859] लेबनानी पर्वत श्रृंखला फिलिस्तीन की उत्तरी सीमाओं से भूमध्य सागर के तट के साथ उत्तर की ओर तक फैली हुई है।

[1860] थेओडोसियस प्रथम महान ने 379 से 395 तक शासन किया। उन्होंने रोमन साम्राज्य के पूर्वी भाग पर शासन किया।

[1861] साइप्रस द्वीप भूमध्य सागर के पूर्वी भाग में स्थित है; यह एक पहाड़ी द्वीप है जो प्राचीन काल में बहुत उपजाऊ था। प्रेरित पौलुस ने अपनी धर्मप्रचार यात्राओं के दौरान इसका दौरा किया था (प्रेरितों के काम 13:4–12)। 16वीं शताब्दी से, यह द्वीप तुर्की के शासन के अधीन रहा है।

[1862] एडेसा शहर के थोड़ा दक्षिण में, मेसोपोटामिया में यूफ्रेटिस नदी के ऊपरी इलाके में, इसके एक सहायक नदी (खोवारे) के किनारे कार शहर स्थित था।

[1863] सम्राट थियोडोसियस द्वितीय युवा 408 से 450 तक राज किया।

28 फरवरी

15 फरवरी (पुराने कैलेंडर के अनुसार)

उसी दिन, पूजनीय पाफनुटियस और उनकी पुत्री यूफ्रोसीन की स्मृति

सत्तर में से एक, संत ओनेसमिस प्रेरित का जीवन और शहादत

15 फरवरी को स्मरणोत्सव

प्रेरितीय काल में, फ्रीजिया के कोलोसाई नगर[1864] में, फिलेमोन नामक एक कुलीन वंश का ईसाई रहता था; बाद में उसे बिशप नियुक्त किया गया और सत्तर प्रेरितों में गिना गया। अपनी प्रेरितित्व से पहले भी, फिलेमोन के पास ओनेसिमस नाम का एक दास था। अपने स्वामी को नाराज़ करने और दंड के भय से, ओनेसिमस उसके पास से भाग गया और रोम[1865] पहुँचा, जहाँ उसने पवित्र प्रेरित पौलुस को बेड़ियों में जकड़ा हुआ पाया; उनकी पवित्र शिक्षा सुनने और हमारे प्रभु यीशु मसीह में विश्वास की शिक्षा प्राप्त करने के बाद, उसे प्रेरित द्वारा बपतिस्मा दिया गया और उसने संत तिखिकुस के साथ मिलकर उनकी निष्ठापूर्वक सेवा की। पवित्र प्रेरित पौलुस ने, कोलस्सियों के नाम अपने पत्र के साथ संत तिखिकुस को भेजते हुए, उन्हें संत ओनेसिमुस को साथी के रूप में दिया, जैसा कि वे स्वयं पत्र के अंत में लिखते हैं: *'तिखिकुस, मेरा प्रिय भाई और विश्वासयोग्य सेवक और प्रभु में सहकर्मी, तुम्हें मेरी सब बातें बता देगा। मैं उसे तुम्हारे पास इसलिये भेजता हूँ कि वह तुम्हारी दशा की खबर ले और तुम्हारे हृदय को सांत्वना दे, हमारे विश्वासयोग्य और प्रिय भाई ओनेसिमुस के साथ, जो तुम में से एक है। वे आपको सब कुछ बता देंगे जो यहाँ हो रहा है'* (कुलुस्सियों 4:7–9)।

प्रेरित ने कोलस्सियों को तिखिकुस के द्वारा लिखा, जबकि ओनेसिमुस के द्वारा उन्होंने अपने स्वामी फिलेमोन को एक विशेष संदेश भेजा; इस संदेश में, प्रेरित ने फिलेमोन से ओनेसिमुस के अपराध को क्षमा करने और उसे दास के रूप में नहीं, बल्कि स्वयं प्रेरित पौलुस के रूप में स्वीकार करने के लिए कहा। अपने पत्र में, प्रेरित पौलुस ओनेसिमुस को अपना पुत्र बताते हैं: *'मैं अपने पुत्र ओनेसिमुस की ओर से तुमसे विनती करता हूँ, जिसे मैंने बेड़ियों में रहते हुए जन्म दिया है: वह कभी तुम्हारे काम का नहीं था, पर अब वह तुम्हारे और मेरे काम का है; मैं उसे तुम्हारे पास वापस भेजता हूँ; अतः तुम उसे वैसे ही ग्रहण करो जैसे तुम मुझे ग्रहण करते'* (फिलेमोन् 1:10–12)। खुशी-खुशी, फिलेमोन ने प्रेरित की सलाह मानी: उसने न केवल ओनेसिमुस का प्रेम से स्वागत किया, बल्कि उसे आजाद भी कर दिया और उसे रोम में पवित्र प्रेरित पौलुस के पास वापस भेज दिया, ताकि ओनेसिमुस वहाँ प्रेरित की सेवा कर सके, क्योंकि संत पौलुस यही चाहते थे: 'मैं उसे अपने पास रखना चाहता था, ताकि सुसमाचार के लिए मेरी कैद में वह तुम्हारी जगह मेरी सेवा करे; परन्तु मैं तुम्हारी इच्छा के बिना कुछ भी नहीं करना चाहता था, ताकि तुम्हारा भला काम जबरदस्ती का न हो, बल्कि तुम्हारी स्वेच्छा से हो' (फिलेमोन् 1:13–14)।

इस प्रकार, पवित्र प्रेरित ओनेसिमुस रोम में ही रहे और प्रेरितों की मृत्यु तक उनकी सेवा करते रहे; उन्हें वचन के प्रचार के लिए उनके द्वारा एक बिशप के रूप में नियुक्त किया गया था। पवित्र प्रेरितों के निधन के बाद, वह रोम से चले गए और कई शहरों और देशों में यात्रा करते हुए, स्पेन[1866] , कोरिंथ, कोलोसा, पतसरा[1867] में मसीह का प्रचार किया,

---

[1864] कोलोसी एशिया माइनर के फ्रीजिया क्षेत्र के दक्षिण-पश्चिमी भाग में, लाओदिकिया और हेरापोलिस के पास, लिकस नदी पर स्थित एक शहर है। नीरो के शासन के 10वें वर्ष (64 ईस्वी) में कोलोसा एक भूकंप से नष्ट हो गई थी; बाद में इसका पुनर्निर्माण किया गया, लेकिन यह अपनी पूर्व महिमा को कभी वापस नहीं पा सकी। बाद में, यह शहर *कोनी के नाम से* जाना जाने लगा / आज यह माउंट कोनास की एक ढलान पर एक छोटा सा गाँव है, जिसके पास इस प्राचीन शहर के खंडहर आज भी मौजूद हैं। संत पॉल द एपोस्टल की एक पत्रिका इस शहर के निवासियों के लिए लिखी गई थी।

[1865] रोमन साम्राज्य की राजधानी; यह मध्य इटली में टिबर नदी के दोनों किनारों पर स्थित है, जहाँ यह समुद्र में मिलती है।

[1866] प्राचीन काल में, स्पेन में आज का स्पेन और पुर्तगाल दोनों शामिल थे। उत्तर में, यह पिरेनीस पर्वत द्वारा फ्रांस से अलग होता है; पूर्व में, इसकी सीमा भूमध्य सागर से मिलती है; दक्षिण में, भूमध्य सागर और जिब्राल्टर जलडमरूमध्य हैं; और पश्चिम में, अटलांटिक महासागर है।

[1867] पैट्रास पेलोपोनेस के उत्तरी तट पर एक प्राचीन शहर है; यह अकेयन क्षेत्र के 12 स्वतंत्र शहरों में से एक था; इसे सम्राट अगस्टस द्वारा एक रोमन कॉलोनी में बदल दिया गया था; 1205 और 1408 के बीच, यह फ्रेंकिश डची ऑफ़ अकेया की राजधानी थी; 1463 में, यह तुर्कों के कब्जे में आ गया; आज, यह शहर ग्रीस के साम्राज्य के भीतर, लेपैंटो की खाड़ी (कोरिंथ की खाड़ी) के प्रवेश द्वार के पास स्थित है।

और फरि संत तीमथयिुस और संत यूहन्ना द थयिोलोजयिन के बाद एफेसुस[1868] में पद संभाला। संत इग्नासयिस द गॉड-बेयरर स्मर्ना से एफसियिों को लखिे अपने पत्र में एफसिुस में अपने बशिप पद की स्पष्ट रूप से गवाही देते हैं; जब उन्हें जानवरों के सामने फेंके जाने के लिए अंताकयिा से रोम ले जाया जा रहा था, तो स्मर्ना में रास्ते पर उनकी मुलाकात संत ओनेसमिस से हुई, जनिके साथ एफसिुस के कुछ नविासी भी थे। संत इग्नाजयिस एफसियिों को इसके बारे में इस प्रकार लखिते हैं:

'मैंने, ईश्वर के नाम पर, ओनेसमिस के व्यक्तित्व में आपकी बहुसंख्यक मंडली को स्वीकार कयिा है, जो अकथनीय प्रेम से परपिूर्ण, देह में आपका बशिप हैं। उसे प्रेम करो, मैं यीशु मसीह के नाम पर तुमसे वनिती करता हूँ, और तुम सब उसकी तरह बनो; क्योंकि धन्य है वह जसिने तुम्हें ऐसा बशिप पाने के योग्य बनाया है। अंताकयियिों को लखिी अपनी पत्रकिा में, वह फरि लखिते हैं:

'एफसिुस का चरवाहा ओनेसमिस आपको अपनी शुभकामनाएँ भेजता है।'

इससे हमें पता चलता है कि संत ओनेसमिस, कई देशों और शहरों की यात्रा करने के बाद, एक वृद्ध व्यक्ति के रूप में एफसिुस पहुँचे; वहाँ उन्होंने कुछ समय के लिए परमेश्वर की कलीसयिा का चरवाहा कयिा, फरि अवशि्वासयिों द्वारा पकड़े गए और उस शहर से रोम ले जाए गए, जो ट्राजन के शासनकाल के दौरान हुआ था[1869] ; रोम में, उन्हें यातना देने के लिए एपार्क टर्टलिस के हवाले कर दयिा गया। एपार्क ने संत से पूछा:

'तुम कौन हो?'

ओनेसमिस ने उत्तर दयिा:

'मैं एक ईसाई हूँ।'

तब एपार्क ने फरि पूछा:

'आप कसि सामाजकि वर्ग से हैं?'

इस पर संत ने उत्तर दयिा:

'मैं कभी एक आदमी का दास था, लेकनि अब मैं हमारे अच्छे प्रभु और उद्धारकर्ता, यीशु मसीह का एक वफादार सेवक हूँ।'

गवर्नर ने ओनेसमिस से पूछताछ जारी रखी:

'तो फरि, तुम दूसरे मालकि के लिए काम करने क्यों गए?'

ओनेसमिस ने उत्तर दयिा:

'क्योंकि मैं सत्य को जान गया हूँ और मूर्तपिूजा से घृणा करने लगा हूँ।'

तब एपार्क ने पूछा:

'तुम्हें तुम्हारे नए स्वामी को कतिने में बेचा गया था?'

ओनेसमिस ने उत्तर दयिा:

'परमेश्वर के पुत्र, यीशु मसीह ने मुझे अपने बहुमूल्य लहू से वनिाश से छुड़ाया और मुझे अक्षय जीवन में पहुँचाया, जैसा कि हमारी पवत्रि शास्त्रों में लखिा है: *'तुम्हें तुम्हारे व्यर्थ जीवन के रीतिरिवाज़ों से, जो तुम्हारे पूर्वजों से तुम्हें वरिासत में मलि थे, चाँदी और सोने जैसी नष्ट हो जाने वाली वस्तुओं से नहीं, बल्कि मसीह के अनमोल लहू से छुड़ाया गया है, जो एक नरि्दोष और नरि्दोष मेमने के समान है*' (1 पतरस 1:18-19)।

बशिप ने पूछा:

'हमें बताइए, आपके धर्मग्रंथ कसि प्रकार के जीवन को "व्यर्थ" कहते हैं?'

'एक व्यर्थ जीवन वधिर्म है, जो थोड़ी सी देहगत तुष्टि के लिए, उन लोगों के लिए अनंत आग तैयार करता है जो कामुक हैं और पाप से प्रेम करते हैं; यह धन के प्रेम में भी नहिति है, जसिके लिए कोई अपने पड़ोसी पर अत्याचार करता है, और जादू-टोने में, जब कोई राक्षसों के साथ मेलजोल रखता है – यह बाद वाला बुराई सभी बदनामी और धोखे की जड़ है; यह अहंकार है, जसिके द्वारा कोई, अपनी ही घमंड के कारण, स्वयं को दूसरों से ऊपर मानता है; यह ईर्ष्या है, जसिने

[1868] एजयिन सागर पर स्थति एफ़सिस, एशयिा माइनर में एक महत्वपूर्ण व्यापारकि केंद्र था। इसकी तटीय स्थति, अनुकूल जलवायु, उत्कृष्ट बंदरगाह और डायना का प्रसद्धि मंदरि इसे एशयिा माइनर के सबसे अमीर और सबसे प्रसद्धि शहरों में से एक बनाते थे। प्रेरति पौलुस ने यहाँ सुसमाचार का प्रचार कयिा।

[1869] 98 से 117 तक

काइन और कई अन्य लोगों को भातृहत्या करने की शिक्षा दी; यह बदनामी और एक असंयमी जीभ है, जो बादल की तरह सभी पर उपहास फैलाती है; यह पाखंड और झूठ है, सत्य का शत्रु, शैतान का साथी, जिसके द्वारा सर्व-दुष्ट शत्रु ने हव्वा को भी बहकाया था; यह क्रोध है, जो शाप देने के लिए उकसाता है और संघर्ष तथा पितृहत्या को जन्म देता है; – मद्यपान, जिसके साथ अनुशासनहीनता जुड़ी होती है और जो वासना को जन्म देता है, जिससे अभद्र भाषा बोलने के लिए उकसाता है; इसमें कोई अच्छा विचार नहीं है, केवल पतन है। ये सभी दुराचार व्यर्थता का जीवन बनाते हैं। ऐसे जीवन का स्रोत और इन सबकी जननी मूर्तियों की पूजा है जिसे आप करते हैं; यह व्यभिचार की नींव है, ईश्वर के अज्ञान की शिक्षिका है, मन को अंधा करने वाली है, कामुक भावों की उकसाने वाली है; इसमें कोई सम्मान नहीं है; यह सर्व के प्रभु के विरुद्ध युद्ध छेड़ती है, ईश्वर की सच्ची उपासना को नष्ट करने का प्रयास करती है; यह पूजा मृत्यु की अगुआ, सर्प की दासी, दुष्टों का पोषण, सदाचार की शत्रु है; यह अक्षय से भागती है; यह आपके विनाशकारी विधान की प्रचारक, अंधकार और निराशा की उत्साही पैरोकार, रक्तपात की मित्र, घृणा का राजकुमार है; यह उन भोles लोगों को फँसाता है जो परमेश्वर को नहीं जानते, जो अनुग्रह के प्रकाश से अपरिचित हैं; यह अपने सेवकों को अपमानजनक कर्मों के बंधनों में बाँधता है और उन्हें व्यर्थता सिखाता है; यह सफेद बालों वाले बुजुर्गों को अपमान से भर देता है, उन्हें पुरोहितों की तुरही की धुन पर नाचने के लिए उकसाता है; यह कन्याओं की पवित्रता को नष्ट करता है; यह अपने त्योहारों पर तलवार और लोहे का, पशुओं का रक्त बहाने और उनकी अशुद्धियों का लेप लगाता है; यह अपनी निर्लज्जता की अशुद्धियों का प्रदर्शन करता है; यह पुरुषों को शहर के बीच में अपने शरीर खोलने के लिए मजबूर करता है और उन्हें अपनी पत्नियों के सामने नग्न कर देता है; यह अपने संस्कारों के साथ हत्या और व्यभिचार को जोड़ता है; यह मानव मन को मूर्तिपूजा के विभिन्न रूपों से इस तरह अभिभूत कर देती है, जैसे वे जहाज हों: कभी-कभी यह अपने पुरोहितों को विषैले साँपों का सेवन करने का आदेश देती है; तो कभी, दूसरों के देवताओं को निगलने के लिए उन्हें उकसाते हुए, यह उन्हें एक बैल का वध करने, या एक बैल को बलिदान के रूप में चढ़ाने, या एक भेड़ को एक भेड़ की बलि चढ़ाने के लिए प्रेरित करती है, एक ही वस्तु को एक देवता और एक animal[1870] दोनों मानना; या पत्थर और लकड़ी से बने एक मनुष्य के बलिदान के लिए एक मनुष्य की हत्या करना, ताकि अच्छा करने के बजाय, यह हत्या करे, जीवितों को निर्जीवों के लिए बलिदान करे। लेकिन मैं इतना क्यों कहूँ? आपकी अंधश्रद्धा तो लहसुन को भी दिव्य सम्मान प्रदान करती है, ताकि वह, बड़ी अंधता और अज्ञानता में, लोगों को नरक में धकेल सके। ऐसे व्यर्थ, अधर्मी और नीच जीवन-मार्ग पर विचार करने के बाद, जिसका आप अपनी मूर्तिपूजक उपासना में पालन करते हैं—एक ऐसा जीवन-मार्ग जिसे पवित्र शास्त्रों ने निन्दित किया है— मैं उससे एक तूफानी समुद्र से भागकर एक सुरक्षित बंदरगाह पर पहुँचा—एक धर्मी और धार्मिक जीवन, जो एक सच्चे परमेश्वर में पवित्र विश्वास, और अपने पड़ोसी के प्रति विश्वास और प्रेम से मिलकर बना है। और मैं तुम्हें भी, टर्टुलिस, प्रेम के विधान को पूरा करने के लिए आग्रह करता हूँ, जो हमें आज्ञा देता है कि हम अपने पड़ोसी से स्वयं के समान प्रेम करें; तब तुम भी, मेरे समान सत्य को जानकर, इस संसार की व्यर्थता और इस संसार की सभी क्षणभंगुर चीज़ों को एक सपने या छाया की तरह त्याग दोगे; तब तुम सभी के सृष्टिकर्ता परमेश्वर की ओर फेरोगे, और सच्ची समझ प्राप्त करके उद्धार पाओगे; ईश्वर उन लोगों की मृत्यु में प्रसन्न नहीं होता जो उनके क्रोध को भड़काते हैं, बल्कि उनके परिवर्तित होने और पश्चाताप करने में प्रसन्न होता है, और उनके पूर्व पापों को क्षमा कर देता है।

तब एपार्क टर्टुलि ने उत्तर दिया:

'तो तुम न केवल स्वयं देवताओं की पूजा करने से इनकार करते हो, यातनाओं से अविचलित रहते हो, बल्कि हमें भी अपनी भूल में ले जाना चाहते हो।'

'तुम्हारे यातनाएँ मुझे डरा नहीं सकतीं,' संत ओनेसिमिस ने उत्तर दिया, 'वे चाहे कितनी भी कठोर क्यों न हों, क्योंकि भविष्य की आशीर्वादों की आशा से सांत्वना पाकर और मेरे मसीह की शक्ति से बल प्राप्त कर, मैं उन कष्टों को आसानी से सहन कर लूंगा, जिनके लिए तुम मुझे दंडित करोगे।'

तब राज्यपाल ने ओनेसिमिस को कैद करने का आदेश दिया; संत वहाँ 18 दिनों तक रहे, फिर भी वह कालकोठरी उनके लिए कैद का कोई भयानक स्थान नहीं, बल्कि एक उज्ज्वल स्वर्ग थी, जो आध्यात्मिक आनंद से परिपूर्ण थी, जहाँ वे अपने प्रभु में आनंदित होकर रहे। विश्वासी उसके पास आए, संत के दुख को महिमामय बताया और अपने शब्दों

[1870] संत ओनेसिमिस यहाँ उस एक स्पष्ट विरोधाभास की ओर इशारा करते हैं जो मूर्तिपूजक धर्म में, स्थान या समय के भेद के बिना, समग्र रूप से मौजूद था: एक क्षेत्र में एक जानवर की देवता के रूप में पूजा की जाती थी, जबकि दूसरे में उसे अन्य चार-पैर वाले जीवों से अलग नहीं माना जाता था और किसी देवता के लिए उसका बलिदान कर दिया जाता था।

से उसके इस पराक्रम में उसे मजबूत कयिा। संत ने वहां ईसाइयों के साथ आए अवशि्वासयिों को परमेशि्वर का वचन प्रचार कयिा, और उन्हें मसीह के सच्चे धर्म में परविर्तति कर दयिा। इसके बाद, राज्यपाल ने लोगों के सामने दयालु दखिने की इच्छा से, संत को मृत्युदंड नहीं दयिा, बल्कि उन्हें पुटयिोला (1871) में नरि्वासन के लिए भेज दयिा। वहाँ भी, पवत्रि प्रेरति ने उत्साहपूर्वक मसीह की शकि्षाओं का प्रचार कयिा और कई लोगों को सच्चे मार्ग पर मार्गदर्शन दयिा। जब टर्टलिस को यह पता चला, तो उसने उसे फरि से गरिफ्तार कर लयिा और मुकदमे के लिए उसे बेड़यिों में जकड़कर अपने सामने पेश करने का आदेश दयिा। उसने उससे पूछताछ की और पाया कि संत ने, पहले की तरह ही, अटूट वशि्वास के साथ मसीह के धर्म की घोषणा की। तब राज्यपाल ने संत को लटिाने और चार गदहों से नरि्दयता से पीटने का आदेश दयिा। यातना देने वालों ने पवत्रि शहीद पर लंबी और नरि्दयी पटिाई की, जसिसे उनकी पंडलियाँ और अन्य हड्डयिाँ टूट गईं; अंत में, उन्होंने तलवार से उनका सरि कलम कर दयिा। इस प्रकार संत ओनेसमिस[1872] का नधिन हो गया। राजसी वंश की एक महलिा ने उनके पवत्रि शरीर को उठाया, उसे चाँदी के एक अवशेष पात्र में रखा, और शहीद की स्मृति का उत्सव मनाया। इस प्रकार उसने पवत्रि प्रेरति ओनेसमिस की प्रार्थनाओं के द्वारा स्वर्ग के राज्य में प्रभु के साथ अपनी जगह बनाई; हे प्रभु यीशु मसीह, हमें भी यह अनुग्रह प्रदान करें, जनिका महमिा युगानुयुग होती रहे। आमीन।

कॉन्टाकयिन, स्वर 4:

हे धन्य और सर्व-प्रकाशमान पौलुस, सूर्य के प्रभात के समान, तुमने संपूर्ण ब्रह्मांड पर प्रकाश डाला, और संसार को ज्ञान का प्रकाश दयिा: इसलयि हम तुम्हारा सम्मान करते हैं, हे महमिामय ओनेसमिस।

आदरणीय यूसेबयिस तपस्वी की स्मृति

१५ फरवरी को स्मरणोत्सव

इस पूजनीय की जन्मस्थल या माता-पति के बारे में कोई जानकारी उपलब्ध नहीं है। यह केवल ज्ञात है कि वह शुरू में एक मठ में गया, लेकनि बाद में उसे छोड़ दयिा, एक पहाड़ की चोटी पर चढ़ा जसिके पास असखिा नामक एक गाँव था[1873] , और वहाँ सूखी पथरी से अपने लिए एक बाड़ बनाकर, उसने अपने शरीर को कष्ट देना शुरू कर दयिा। अपने पूरे जीवन में, उन्होंने केवल चमड़े के वस्त्र ही पहने और केवल अचार वाले मटर और सेम पर ही जीवन यापन कयिा। अपने शारीरकि दुर्बलता की परवाह कए बनिा, आदरणीय महंत इस प्रकार बहुत बूढ़े होने तक जारी रहे, जब उनके सभी दांत गरि गए, जसिसे वे अपना भोजन चबा नहीं सकते थे, और, हर तरह के खराब मौसम को बहादुरी से सहते हुए, वे कभी भी घर में नहीं रहे। उनका चेहरा झुर्रयिों से भरा था और उनके अंग इतने दुबले-पतले थे कि उनकी कमरबंद बँधी नहीं रह पाती थी: उनके पैर और कमर इतने पतले हो गए थे। जब बड़ी संख्या में भीड़ पादरी के पास आने लगी, तो वह, प्रसदि्धि से डरकर, पास के एक मठ में चले गए और उसकी दीवार के पास एक छोटा सा घेरा बनाकर, अपने सामान्य तपस्या के अभ्यास को जारी रखा। आदरणीय यूसेबयिस का उपवास इतना कठोर था कि, महा-व्रत (Great Lent) के सात सप्ताहों के दौरान, वे 15 अंजीरों से अधकि नहीं खाते थे। इतना कठोर तपस्वी जीवन जीते हुए, आदरणीय यूसेबयिस 90 वर्ष से अधकि आयु तक जीवति रहे और एक गंभीर बीमारी के बाद, प्रभु के पास चले गए[1874] ।

- इसी दनि, हम पूजनीय पाफनुटयिस और उनकी पुत्री यूफ्रोसीन का स्मरण करते हैं। उनके जीवन का उत्सव 25 सतिंबर को मनाया जाता है।

[1871] पुतयिोली – मध्य इटली के एक क्षेत्र, कैंपानयिा, का एक तटीय शहर।

[1872] लगभग 109 ईस्वी में।

[1873] सीरयिा में।

[1874] आदरणीय यूसेबयिस का नधिन लगभग 400 ईस्वी में हुआ।

मार्च

1 मार्च

16 फरवरी (पुराने कैलेंडर के अनुसार)

बारह पवत्रि शहीदों, पादरी पम्फलिुस और उनके साथयिों का कष्टकथा

16 फरवरी को स्मरणोत्सव

ये बारह पवत्रि शहीद, जो भवष्यिवाणी और प्रेरतित्व के वरदानों से युक्त थे और संख्या में बारह प्रेरतिों के बराबर थे, ने डायोक्लेटयिन के शासनकाल के दौरान फलिस्तिीन के सेज़रयिा[1875] में मसीह के लिए यातनाएँ भोगीं। इनमें, पद में सबसे बड़े और सबसे पहले शहीद होने वाले सेसरेया के पादरी संत पम्फलिस थे। वह बेरूत[1876] के मूल नविासी थे, और अपने युवा काल से ही मूर्तपिूजक शक्षिा में प्रशक्षिति थे; साथ ही, पम्फलिस आध्यात्मकि ज्ञान[1877] से परपिूर्ण थे और अपने सदाचारी जीवन के कारण चमकते थे। बाद में वह मसीह के नाम का साहसपूर्वक स्वीकारोक्ति करने के लिए प्रसद्धि हो गया। शहीदों में दूसरे स्थान पर थे वैलेंट, एलयिा के चर्च के एक डकिन – जो काफी वृद्ध व्यक्ति थे। वह एक वद्विान व्यक्ति भी थे और पवत्रि शास्त्रों के उत्कृष्ट ज्ञान के लिए वशिेष रूप से प्रसद्धि थे। तीसरे थे पॉल, जो मसीह में वश्विास से परपिूर्ण थे और धार्मकिता के प्रति उत्साह से जलते थे। वह जामनयिा शहर के रहने वाले थे[1878] और उन्होंने पहले मसीह के लिए खंभे पर जलाए जाने का दुख सहा था। ये तीनों शहीद, प्रीफेक्ट अर्बन के हाथों मसीह के नाम के लिए वभिन्नि यातनाएँ सहने के बाद, जेल में डाल दिए गए। वे वहाँ पूरे दो साल तक कष्ट भोगते रहे, जब तक कि फिर्मलियिन, उरबान के उत्तराधकिारी के रूप में, प्रीफेक्ट नहीं बन गया। मस्रि में इस गवर्नर के शासनकाल के दौरान, मसीह के 130 स्वीकारकर्ताओं को नर्विासन की सजा दी गई: उन्हें सोना नकिालने के लिए सलिसियिा[1879] भेजा गया। उस समय, युवा पुरुषों का एक समूह—जो न केवल रक्त से बल्कि आत्मा से भी भाई थे—जो उन शहीदों के साथ मस्रि से सलिसियिा तक आए थे, वे वहां से अपने मूल देश मस्रि लौट रहे थे और चूंकि उनका मार्ग सीज़रयिा से होकर गुज़रता था, वे पहले ही सीज़रयिा के पास आ चुके थे; उनमें से पांच थे। जब वे शहर के द्वारों से प्रवेश कर रहे थे, तो पहरेदारों ने उनसे पूछा कि वे कौन हैं और कहाँ से आए हैं। शहीदों ने, सत्य को छपिाए बनिा, उत्तर दयिा कि वे ईसाई हैं और स्वर्गीय यरूशलेम को अपना स्वदेश बताया। तब उन्हें अपराधयिों की तरह पकड़ लयिा गया और जेल में डाल दयिा गया। अगले दनि - अर्थात् 16 फरवरी - इन युवकों को उपर्युक्त मसीह के स्वीकारकर्ताओं, पाम्फलिस, वैलेंटाइनस और पॉल के साथ कालकोठरी से बाहर लाया गया, और वे उनके साथ दुष्ट उत्पीड़क, राज्यपाल फर्मलियिन की अदालत में उपस्थति हुए। पहले, हेगेमोन ने मस्रि के युवकों को वभिन्नि यातनाओं की धमकी देकर भटकाने की कोशशि की। उसने उनमें से एक को—सबसे बड़े को—बीच में खड़ा कयिा और उससे पूछा कि वह कौन है। पवत्रि शहीद ने नडिर होकर जवाब दयिा कि वह और उसके साथी ईसाई हैं। जब राज्यपाल ने उनके नाम पूछे, तो इस युवक ने अपना नाम एलयिा, दूसरे ने यर्मियाह, तीसरे ने यशायाह,

---

[1875] केसरयिा – फलिस्तिीन में भूमध्य सागर पर स्थति एक बड़ा शहर।

[1876] बेरटिस – अब बेरूत – सीरयिा के एशयिाई-तुर्की वलियत की राजधानी, सैद और तारबुलस (यरीपोलसि) के बीच सीरयिाई तट पर सबसे महत्वपूर्ण व्यापारकि केंद्र।

[1877] संत पैम्फलिस के मुख्य कार्यों में से एक पवत्रि शास्त्र के पांडुलपियिों का संकलन और सुधार करना था, जनिके पाठ को उस समय तक नकल करने वालों द्वारा काफी हद तक वकिृत कर दयिा गया था। उनकी देखभाल और परश्रिम से, सेज़रयिा में एक वशिाल पुस्तकालय का संकलन कयिा गया। धन्य जेरोम शहीद पम्फलिस का बहुत सम्मान करते थे, और उनके कुछ पांडुलपियिाँ मलिने पर उन्होंने खुद को क्रोइसस से भी अधकि धनी समझा।

[1878] फलिस्तिीनी शहर यावनीया का यूनानी नाम, जो एक्रोन और समुद्र के बीच स्थति था; आज यह इवना नामक एक बड़ा गाँव है।

[1879] सलिसियिा – एशयिा माइनर का एक दक्षणि-पूर्वी तटीय क्षेत्र।

चौथे ने शमूएल और पांचवें ने दानियेल बताया। इन पवित्र युवकों ने अपने मूर्तिपूजक नामों—जो उन्हें ऐसे माता-पिता ने दिए थे जो मसीह में विश्वास नहीं करते थे—को त्याग दिया था और इसके बजाय पैगंबरों के नाम अपना लिए थे। ऐसा करके वे स्पष्ट रूप से यह दिखाना चाहते थे कि वे न केवल अपने कर्मों में, बल्कि अपने नामों में भी इस्राएल के परमेश्वर के सेवक थे। ऐसे नामों को न जानते हुए, राज्यपाल फर्मिलियन ने उनसे उनके मूल देश के बारे में पूछना शुरू कर दिया।

तब एलियाह ने प्रेरित पौलुस के वचनों को याद किया: 'ऊपर का यरूशलेम स्वतंत्र है; वह हमारी माता है' (गलातियों 4:26), और उनके अन्य वचनों को: *'परन्तु तुम सियोन पहाड़ और जीवते परमेश्वर के नगर, स्वर्गीय यरूशलेम और हजारों स्वर्गदूतों के पास, प्रथमजातियों की उत्सव सभा और मंडली के पास आ पहुँचे हो* (इब्रानियों 12:22), ने स्वयं को स्वर्गीय यरूशलेम का नागरिक कहा, इस नगर को अपना आध्यात्मिक स्वदेश समझते हुए, न कि सांसारिक स्वदेश। हालांकि, राज्यपाल फर्मिलियन यह नहीं जानते थे कि यरूशलेम किस प्रकार का शहर था या यह कहाँ स्थित था। क्योंकि उस समय पवित्र शहर को यरूशलेम नहीं, बल्कि एलिया कहा जाता था। यह नाम उसे अधर्मी रोमन सम्राट हैड्रियन ने दिया था। पूर्व यरूशलेम की जगह, जिसे टाइटस ने नष्ट कर दिया था, उसने एक नया शहर बसाया और उसका नाम अपने ही नाम पर रखा, क्योंकि उसे एलियस हैड्रियन कहा जाता था। इसके अलावा, यरूशलेम का नाम बदलकर 'एलिया' रखकर, हैड्रियन ने वहाँ के सभी पवित्र स्थानों का अपमान किया, प्रभु के कब्र को रेत और पत्थरों से भर दिया, और हर जगह नीच मूर्तियाँ स्थापित कर दीं। इसके बाद, उसने आदेश दिया कि हर कोई इस शहर को 'एलियह' के अलावा कुछ भी न कहे। उसने यह सब इसलिए किया क्योंकि वह पृथ्वी की सतह से यीशु मसीह के नाम की याद को भी मिटा देना चाहता था। इसके बाद, दो सौ वर्षों तक, अधर्मी मूर्तिपूजकों ने इस शहर को यरूशलेम नहीं कहा और इसे तिरस्कार की दृष्टि से देखा। यह धर्मपरायण सम्राट कॉन्स्टेंटाइन और उनकी माता हेलेना के समय तक जारी रहा। इसीलिए डायोक्लेटियन के शासनकाल में फिलिस्तीन में रहने वाले राज्यपाल फर्मिलियन को यह नहीं पता था कि यरूशलेम नामक शहर कहाँ था, जिसके बारे में उस पवित्र युवक ने उनसे बात की थी। उसने उस धन्य युवक, जो खुद को एलिया कहता था, को आदेश दिया कि उसके हाथ पीछे बाँध दिए जाएँ, उसे यातना स्थल पर नग्न लटका दिया जाए, और बुरी तरह पीटा जाए, ताकि वह बता सके कि यरूशलेम किस प्रकार का शहर था और वह किस देश में स्थित था।

धर्मनिष्ठ युवक ने उत्तर दिया कि यरूशलेम केवल ईसाइयों का ही देश है, और कोई भी मूर्तिपूजक उसमें प्रवेश नहीं कर सकता, और यह नगर पूर्व में स्थित है, जहाँ सूर्य पृथ्वी पर अपनी पहली किरणें डालना शुरू करता है। इस प्रकार संत ने यातनाओं की परवाह किए बिना, राज्यपाल से स्वर्गीय, आध्यात्मिक यरूशलेम के बारे में बात की, मानो वह अदेह हों। हालाँकि, राज्यपाल यह समझने में असफल रहा कि संत उसे आध्यात्मिक यरूशलेम के बारे में बता रहे थे, उसने सोचा कि ईसाइयों ने कहीं अपने लिए एक शहर बसा लिया है और वे रोमनों का विरोध करना चाहते हैं। इसलिए उसने आदेश दिया कि पवित्र युवक को और भी अधिक यातनाएँ दी जाएँ, ताकि वह उसे इस ईसाई शहर के बारे में विस्तार से सब कुछ बता सके और यह भी बता सके कि यह कहाँ स्थित था। लेकिन जब राज्यपाल उससे मसीह के नाम की स्वीकारोक्ति के अलावा और कुछ नहीं सुन सका, तो उसने उस पवित्र युवक का सिर तलवार से कलम करने का आदेश दिया। फिर उसने अन्य युवकों—यिर्मियाह, यशायाह, शमूएल और दानियेल—को यातनाएँ दीं। लेकिन उनसे भी पहले वाले से ही जैसी बात सुनने पर, उसने उनके भी सिर कलम करने का आदेश दिया। जांच में यह भी पता चलने पर कि पवित्र पुरोहित पम्फिलस, डिकिन वैलेंटाइनस और पॉल को उससे पहले ही हेगेमोन अर्बन द्वारा दो साल तक जेल में रखा गया था, फर्मिलियन ने उन्हें और अधिक यातना देना उचित नहीं समझा। उसने केवल यह आदेश दिया कि उनसे पूछा जाए कि क्या वे राजा की आज्ञा का पालन करेंगे; और जब उसे पता चला कि वे अडिग रहे, तो उसने उन्हें भी मृत्युदंड दे दिया।

पाम्फिलस के नौकरों में से एक, अठारह वर्षीय एक युवक, जिसका नाम पोरफिरीउस था, जिसे उसके स्वामी, पवित्र पुरोहित पाम्फिलस, उसकी पवित्रता और विवेक के कारण बहुत प्यार करते थे, ने पवित्र शहीदों पर मृत्युदंड सुनाए जाने पर भीड़ के बीच से ज़ोर से पुकारा:

'मैं आपसे विनती करता हूँ, मुझे संतों के शव दे दीजिए ताकि उन्हें दफ़नाया जा सके।'

इन शब्दों के साथ, वह भीड़ से बाहर निकलकर राज्यपाल के सामने खड़ा हो गया। जब राज्यपाल को पता चला कि पोर्फिरियस भी एक ईसाई है, तो उसने आदेश दिया कि उसे उसी जगह नग्न अवस्था में फांसी दी जाए जहाँ उसने पाँच पवित्र युवकों को यातनाएँ दी थीं, और उसे बुरी तरह कोड़े मारने का आदेश दिया। दुष्ट यातनादाताओं ने तब तक उसे पीटा जब तक कि उसका पूरा शरीर घावों से ढक नहीं गया और मांस टुकड़ों में जमीन पर गिरने लगा, यहाँ तक कि उसकी हड्डियाँ और आंतरिक अंग भी दिखाई देने लगे। लेकिन संत पोर्फिरीयस ने इन यातनाओं को धैर्यपूर्वक सहन किया; ऐसा लग रहा

था मानो उन्हें कुछ महसूस ही न हो रहा हो: वे कराहें भी नहीं, न ही चल्लिाए, बल्कि चुप रहे, जैसे कि यातना देने वाले उन्हें नहीं बल्कि किसी खंभे या दीवार को घायल कर रहे हों। यह सब केवल राज्यपाल के क्रोध को और बढ़ा गया: फर्मलियिन ने आदेश दयिा कि उसके घावों को एक मोटे, कांटेदार बाल वाले कपड़े से फाड़ा जाए, और इसके बाद उसे खंभे पर जलाने की सजा सुनाई। यातना देने वालों ने एक स्तंभ खड़ा कयिा, पवत्रि शहीद को उससे बांध दयिा, उसके चारों ओर लकड़ी का ढेर लगाकर उसमें आग लगा दी। जब आग ने उसे चारों ओर से घेर लयिा था, तो शहीद ने जोर से पुकार लगाई, मदद के लिए ईश्वर के पुत्र, यीशु मसीह को पुकारा; फरि वह चुप हो गया और अपनी पवत्रि और नरि्मल आत्मा को प्रभु के हवाले कर दयिा। और इस प्रकार उन्होंने अपने स्वामी के बाद अपने प्रभु के लिए दुख उठाया, लेकनि उनसे पहले शहीद का मुकुट प्राप्त करने के योग्य माने गए ; क्योंकि जब संत पोर्फरियस, चिता पर अपनी आत्मा अर्पति करके प्रभु के पास चले गए, तब संत पम्फलिस का, अन्य शहीदों के साथ, तलवार से सरि कलम नहीं कयिा गया था।

जब संत पोर्फरियस को फांसी पर जलाया जा रहा था, तो भीड़ में सेल्यूकस नाम का एक धर्मपरायण व्यक्ति था, जो पहले एक सैनकि था। जब पोर्फरियस ने पहले ही अपना प्राण प्रभु को सौंप दयिा था, तो वह उन पवत्रि शहीदों के पीछे चल पड़ा, जन्हिें उनके कष्ट के स्थान पर ले जाया जा रहा था। वह उन्हें अभी भी जीवति पाया, क्योंकि संतों ने अपने यातना देने वालों से प्रार्थना की थी कि उन्हें प्रार्थना के लिए थोड़ा समय दे दयिा जाए। सेल्यूकस, संत पाम्फलिस के पास जाकर, उसे संत पोर्फरियस की शहादत के बारे में सब कुछ बताया; और पाम्फलिस ने आनंद मनाया और परमेश्वर का धन्यवाद करना शुरू कर दयिा। वहाँ, सेल्यूकस ने शहीदों को अंतमि बार चूमा, क्योंकि वे पहले ही तलवार के सामने अपना सरि झुकाने के लिए तैयार थे। वहाँ मौजूद सैनकिों ने यह देखकर और यह समझकर कि सेल्यूकस एक ईसाई है, उसे पकड़ लयिा और राज्यपाल के सामने ले आए। फर्मलियिन ने आदेश दयिा कि सेल्यूकस को भी बनिा कसिी देरी के तलवार से मार डाला जाए। यह संत कैपैडोसयिा के मूल नविासी थे और रोमन सेना में एक बहादुर और प्रतष्ठिति सैनकि रहे थे; ईसाइयों पर अत्याचार की शुरुआत में, मसीह में अपने वश्विास की घोषणा करने के लिए, उन्हें बुरी तरह पीटा गया, उनकी सैन्य पदवी और सम्मान से वंचति कर दयिा गया, और उनकी रेजमिेंट से नकिाल दयिा गया। फरि भी वह शहर की सड़कों पर पड़े बीमारों की देखभाल करता था, गरीबों और अनाथों की देखभाल करता था, और फरि, पवत्रि शहीदों और स्वीकारयिों की कतार में शामलि होकर, आनंदपूर्वक अपने प्रभु और उद्धारकर्ता मसीह के पास चला गया।

उसी समय, सेंट सेलेवकयिस के बाद, सेंट थयिोडुलस को भी शहीदों में गनिा गया। वह गवर्नर फर्मलियिन के नौकरों में से एक था; इस व्यक्ति का सभी उसकी अधकि आयु के कारण सम्मान करते थे: उसके परपोते भी हो चुके थे। एक गुप्त ईसाई होने के नाते, वह अपने कष्टों के लिए ले जाए जा रहे पवत्रि शहीदों में से एक के पास गया, उसे चूमा, और उससे प्रार्थना करने का आग्रह कयिा कि वह मसीह का पवत्रि शहीद उसके साथ मलिकर प्रभु परमेश्वर से उसके लिए प्रार्थना करे। गवर्नर के कुछ नौकरों ने यह देखकर अपने मालकि को थयिोडुलस के बारे में बताया और कहा कि वह भी एक ईसाई है। जब फर्मलियिन ने संत थयिोडुलस से पूछताछ की और यह जान लयिा कि वह वास्तव में एक ईसाई है, तो वह उस पर बहुत क्रोधति हो गया और संत थयिोडुलस को सूली पर चढ़ाने का आदेश दयिा।

बारह प्रेरतिों की संख्या पूरी करते हुए, संत जूलयिन शहीदों की कतार में शामलि होने वाले अंतमि व्यक्ति थे। वह भी कैपैडोसयिा के मूल नविासी थे और एक ईमानदार और सदाचारी व्यक्ति थे। उन्हें काम के सलिसलिे में फलिस्तिीन के सेज़रयिा की यात्रा करनी पड़ी। जैसे ही वह शहर के पास पहुँचा, जूलयिन ने देखा कि पवत्रि शहीदों के शवों को कुत्तों और पक्षयिों द्वारा खाए जाने के लिए शहर के पास फेंक दयिा गया था। उसकी आत्मा में आनंद हुआ, और वह उनके सामने साष्टांग दंडवत हो गया, उसने मसीह के पीड़तिों के शरीरों को चूमा और उनकी शहादत की प्रशंसा की, जसिके बाद उन्हें मसीह के साथ अनंत जीवन प्रदान कयिा गया। लेकनि दूर पर सैनकि तैनात कए गए थे ताकि यह सुनश्चिति हो सके कि कोई गुप्त ईसाई शवों को चुरा न ले। संतों के शवों के सामने एक आदमी को प्रणाम करते और उन्हें चूमते हुए देखकर, उन्हें एहसास हुआ कि वह भी एक ईसाई है; जसि पर सैनकिों ने उसे पकड़ लयिा और राज्यपाल के पास ले गए। उससे पूछताछ करने के बाद, फर्मलियिन ने उस पवत्रि व्यक्ति को जलाने की सज़ा सुनाई; और इस प्रकार संत जूलयिन ने संत पोर्फ़री की ही तरह मसीह के लिए कष्ट सहे।

इस प्रकार ये बारह शहीद, जो संख्या में प्रेरतिों के बराबर थे, स्वर्ग के राज्य में परमेश्वर के सहिासन के सामने उनके साथ खड़े होने के योग्य समझे गए, जो वजिय के मुकुटों से सुसज्जति थे[1880] । उनके पवत्रि शरीर चार दनिों तक शहर

[1880] यह वर्ष 309 का था।

के बाहर धूल में पड़े रहे। दुष्टों ने, यह देखकर कि न तो कुत्तों ने, न ही जानवरों ने और न ही पक्षियों ने उन्हें छुआ, घोषणा कर दी कि जो कोई चाहे, वह उन्हें ले जाकर उचित तरीके से दफना सकता है; जिस पर ईसाइयों ने इन पवित्र देहों को लेकर, परमपिता और पुत्र और पवित्र आत्मा, त्रिमूर्ति में एक परमेश्वर की महिमा करते हुए, उन्हें श्रद्धापूर्वक दफनाया। आमीन।

कॉन्टाकियन, स्वर 4:

भयंकर यातनाओं का सामना करते हुए, प्रभु के शहीदों ने निडर और आनंदमय बुद्धि से स्वर्ग के समीप पहुँचे, इस प्रकार संवाद करते हुए और शरीर की परवाह न करते हुए; इस प्रकार उन्होंने अनंत महिमा का वारिस पाया, हम उन लोगों के लिए हमेशा प्रार्थना करते हुए जो उनके कार्यों की स्तुति करते हैं।

महाधर्माध्यक्ष सेंट मारूफ़ और मार्टियोपोल में कष्ट सहने वाले पवित्र शहीदों का स्मरणोत्सव।

16 फरवरी को स्मरण किया जाता है

संत मारूफ़ मेसोपोटामिया-सोपोसेन क्षेत्र के प्रमुख शहर, Tagrit[1881] के बिशप थे: यह क्षेत्र यूनानी साम्राज्य और मूर्तिपूजक फारस की सीमाओं पर स्थित था; वहाँ, वह धर्मनिष्ठ बिशप ईश्वर के ज्ञान के प्रकाश से दीपक की तरह चमके: अपने उपदेश के माध्यम से, उन्होंने मूर्तिपूजक फ़ारसियों को ईसाई धर्म में परिवर्तित किया, फ़ारसी राजाओं के समक्ष ईसाइयों के लिए मध्यस्थता की, और हर जगह शांति और सुव्यवस्था लाने का प्रयास किया। इस प्रकार, थियोडोसियस द यंगर के शासनकाल के दौरान, दोनों साम्राज्यों के बीच एक शांति संधि करने के लिए मारूफ को दो बार इज़्देगरद[1882] के पास भेजा गया, और अपनी भक्ति और बुद्धिमानी के माध्यम से उन्होंने इज़्देगरद का पूरा सम्मान अर्जित किया। फारसी मगियों को संत मारूफ के प्रति राजा के पक्षपात से बहुत नाराज़गी हुई, और इसलिए उन्होंने उस धर्मनिष्ठ बिशप को नष्ट करने का संकल्प लिया; जब मरुफ़ ने इज़्देगर्ड को एक खतरनाक सिर की बीमारी से ठीक कर दिया, जिसे मगी ठीक नहीं कर पाए थे, तो उनके खिलाफ कार्रवाई करने का फैसला किया गया। एक दिन, जब राजा, अपनी आदत के अनुसार, अग्नि की पूजा करने के लिए मंदिर में प्रवेश किया, तो उन्होंने एक आवाज़ सुनी:

'देखो राजा—ईसाई पुरोहित के प्रति उसका प्रेम कितना दुष्ट है!'

इसके बाद, हैरान हुए इज़्देगर्ड ने मारूफ़ को अपनी उपस्थिति से हटाने की कोशिश की, लेकिन धोखा जल्द ही उजागर हो गया, और मगियों को मार डाला गया; इसके बाद, अग्नि-पूजकों के बीच ईसाई धर्म का प्रसार शुरू हो गया।

वर्ष 414 में, मारूफ़ ने एक बार फिर इज़्देगर्ड के दरबार में राजदूत के रूप में सेवा की। मगियों ने पवित्र बिशप के खिलाफ एक बार फिर साज़िश रची थी, लेकिन उनकी साज़िश फिर से विफल हो गई, और मारूफ़ को फ़ारसी राजा का और भी अधिक विश्वास प्राप्त हुआ। इसी समय, संत मारूफ ने बिशप अवदा के साथ मिलकर प्रार्थना की शक्ति से यज्दगर्द के पुत्र को, जो एक दानव के वश में था, ठीक कर दिया; इसके बाद, यज्दगर्द ने बपतिस्मा लेने का इरादा भी किया और फारस में ईसाई धर्म को स्वतंत्र रूप से अभ्यास करने की अनुमति दे दी।

फ़ारसी राजा के अनुकूल स्वभाव का लाभ उठाते हुए, संत मारूफ़ ने मसीह की शिक्षाओं को दूर-दूर तक फैलाया, शापुर के उत्पीड़न के दौरान नष्ट हुए चर्चों को बहाल किया, और परिषदों का आयोजन किया।

साथ ही, उन्होंने राजा शापूर के अधीन पीड़ित हुए पवित्र शहीदों के अवशेष इकट्ठा किए और उन्हें टैग्रिथ शहर में स्थानांतरित कर दिया, जिसकी उन्होंने स्थापना की थी, जहाँ उनकी मृत्यु लगभग 422 ईस्वी में हुई[1883] ।

[1881] *टैग्राइट,* या ग्रीक में *मार्टिरोपोल,* जस्टिनियन के समय तक यूनानी साम्राज्य का हिस्सा था और यह फारसी साम्राज्य के साथ इसकी सीमावर्ती नगर था।

[1882] फ़ारसी राजा इज़्देगर्ड प्रथम ने 399 से 420 तक शासन किया।

[1883] मारूफ़ ने सिरियाक भाषा में काफी संख्या में कृतियाँ छोड़ीं, जिनमें से सभी अभी तक प्रकाशित नहीं हुई हैं। निम्नलिखित विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं: 1) *सुसमाचार पर* उनकी अप्रकाशित *टीका;* 2) *फ़ारसी शहीदों का इतिहास;* 3) मारूफ़ का *लेक्चनी;* 4) उनकी *लिटिर्जी;* और 5) निकिया परिषद के

2 मार्च

17 फरवरी (पुराने कैलेंडर के अनुसार)

संत थियोडोर टायरॉन, महान शहीद की शहादत

17 फरवरी को स्मरण किया जाता है

धर्मद्रोही राजा मैक्सिमियिन और मैक्सिमिनिस[1884] ने अपने पूरे राज्य में एक फरमान जारी किया कि जो कोई भी मसीह के धर्म को अपना चुका था, उसे मृत्युदंड से छूट दी जाएगी बशर्ते वे मूर्तिपूजक बलिदानों में हिस्सा लें, जबकि जो लोग मना करेंगे उन्हें मुकदमे का सामना करना पड़ेगा। उस समय, संत थियोडोर टायरॉन[1885] , जिन्हें हाल ही में एक सैनिक के रूप में भर्ती किया गया था, को मार्मारिट रेजिमेंट में नियुक्त किया गया था, जो व्रिका नामक एक प्रीपोसिटिस[1886] के अधीन था; यह रेजिमेंट तब पोंटस[1887] के एक शहर अमासिया में तैनात थी। जब संत थियोडोर को उस रेजिमेंट में लाया गया, तो अविश्वासियों ने उसे मूर्तियों को बलिदान चढ़ाने के लिए मजबूर करना शुरू कर दिया; लेकिन थियोडोर, जो मसीह का सच्चा सैनिक और ईश्वर के प्रति विफादार था, पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होकर, जोर से घोषणा की:

'मैं एक ईसाई हूँ, और मुझे उन घृणित मूर्तिपूजक देवताओं को बलिदान चढ़ाने से मना किया गया है, क्योंकि मैं यीशु मसीह, सच्चे ईश्वर और स्वर्गीय राजा की उपासना करता हूँ।'

तब प्रोवोस्ट वृंका ने संत को समझाने की कोशिश की:

'मेरी बात सुनो, थियोडोर, अपने सभी हथियार अपने साथ ले लो और एक योद्धा की तरह आओ और देवताओं को बलिदान चढ़ाओ।'

संत थियोडोर ने उनसे उत्तर दिया:

'मैं अपने राजा, मसीह का योद्धा हूँ, और मैं किसी अन्य राजा का योद्धा नहीं हो सकता।'

इस पर, प्रीपोसिटिस व्रिका ने कहा:

'यहाँ के ये सभी योद्धा ईसाई हैं, और फिर भी वे रोम के राजा के योद्धा हैं।'

'हर कोई जानता है कि वे किसकी सेवा करते हैं,' संत थियोडोर ने उत्तर दिया, 'लेकिन मैं अपने स्वर्गीय राजा और प्रभु – ईश्वर और उनके एकमात्र पुत्र, यीशु मसीह की सेवा करता हूँ।'

तब वहाँ खड़े शतपति पोसिडोनियस ने पूछा:

'क्या तुम्हारे ईश्वर का, थियोडोर, कोई पुत्र है?'

संत थियोडोर ने उत्तर दिया:

'उसका वास्तव में एक पुत्र है, सत्य का वचन[1888] , जिसके द्वारा उसने सभी चीज़ों की रचना की।'

---

73 *कैनन,* उस परिषद की कार्यवाही के विवरण के साथ। सेंट मारूफ के अवशेष बाद में मिस्र ले जाए गए और 'स्केट मठ ऑफ द मदर ऑफ गॉड' में स्थापित किए गए।

[1884] यहाँ 'मैक्सिमियिन' से हमारा तात्पर्य मैक्सिमियिन गैलेरियस से है, जो सम्राट डायोक्लेटियिन (284–306) के दामाद, पूर्व में उनके सह-शासक और बाद में उनके उत्तराधिकारी (305–311) थे। मैक्सिमिस डैक्स, मैक्सिमियिन गैलेरियस के सह-शासक थे, जो उनके चाचा थे। अपने चाचा से उन्हें सीज़र की उपाधि के साथ सीरिया और मिस्र का क्षेत्र मिला। उन्होंने लगभग गैलेरियस (305–313) के साथ-साथ शासन किया।

[1885] *टायरोन एक* रोमन *शब्द है* जिसका अर्थ है *'नव-भर्ती या 'नया सैनिक'।*

[1886] '*Prepositus*' एक लैटिन शब्द है जिसका अर्थ 'प्रमुख' है।

[1887] *अमासिया* – पोंटस में एक अत्यधिक किलेबंदी किया गया शहर, जो आइरिस नदी के दोनों किनारों पर स्थित है, और पोंटिक राजाओं की पूर्व राजधानी थी। *पोंटस* – एशिया माइनर का एक उत्तर-पूर्वी क्षेत्र, जो ब्लैक सी, या यूक्सिन सी (जैसा कि प्राचीन काल में इसे जाना जाता था) के तट के साथ फैला हुआ है। इस प्रकार, पोंटस क्षेत्र का नाम समुद्र से पड़ा।

[1888] पवित्र त्रिमूर्ति के दूसरे व्यक्ति का नाम, *'वचन',* सुसमाचारकार यूहन्ना द थियोलोजियिन से लिया गया है। सुसमाचारकार यूहन्ना अपनी सुसमाचार की शुरुआत ईश्वर वचन के बारे में प्रेरित पंक्तियों से करते हैं, जो समय की शुरुआत से पहले परमपिता के साथ थे – वचन, *'जिसके द्वारा सभी वस्तुएँ बनीं; उसके बिना कुछ भी नहीं बना जो बना है'* (यूहन्ना 1:1–3)।

प्रोवोस्ट ने उनसे पूछा:

– क्या हम उसे जान सकते हैं?

इस पर संत ने उत्तर दिया:

– मैं चाहूँगा कि ईश्वर आपको ऐसी समझ दे कि आप उन्हें जान सकें।

तब पोसिडोनियस ने उनसे पूछा:

– यदि हम उसे जान जाएँ, तो क्या हम अपने राजाओं को छोड़कर उसी की ओर मुड़ सकेंगे?

– आपके रास्ते में कुछ भी बाधा नहीं है, – संत थियोडोर ने उत्तर दिया, – अंधकार और क्षणिक सांसारिक राजाओं को पीछे छोड़ने के लिए, जीवित परमेश्वर, शाश्वत राजा और प्रभु की ओर मुड़ने के लिए, और मेरे जैसे ही उनके योद्धा बनने के लिए।

तब प्रोवोस्ट वृंका ने शतदलपति से कहा:

– चलो हम उसे (थियोडोर) कुछ दिनों के लिए छोड़ दें; उसे विचार करने दें और खुद तय करने दें कि क्या करना है।

विचार करने के लिए थियोडोर को दिए गए पूरे समय में, उन्होंने अखंड प्रार्थना की और प्रभु की महिमा की; लेकिन दुष्ट लोग, मसीह में विश्वास करने वाले कुछ अन्य नागरिकों के प्रति क्रोध से भरकर, उन पर टूट पड़े और उन्हें जेल ले गए; जब उन्हें ले जाया जा रहा था, तो संत थियोडोर, उनके पीछे-पीछे चलते हुए, उन्हें विश्वास और धैर्य में शिक्षित किया, और उन्हें अपने स्वर्गीय राजा - मसीह - को न छोड़ने के लिए प्रेरित किया। जब वे कैद हो गए, तो संत थियोडोर ने एक अनुकूल क्षण चुनकर, रात के समय देवताओं की माता, ई[1889] के मंदिर में आग लगा दी। कुछ नागरिकों ने संत को मंदिर में आग लगाते हुए देखा और उन्होंने अधिकारियों को इसकी सूचना दी। तब शहर के राज्यपाल, क्रोनाइड्स, इस डर से कि उसे थियोडोर के लिए जवाबदेह ठहराया जा सकता है, उसे पकड़ लिया, हेगेमोन पब्लियस के सामने ले आए और कहा:

'हे स्वामी, यह व्यक्ति, जो हाल ही में एक सैनिक के रूप में भर्ती हुआ है, एक खतरनाक व्यक्ति है; दुष्ट इरादे से वह हमारे शहर में आया, हमारे देवताओं की माता के मंदिर को जला दिया और देवताओं का अपमान किया; उसे पकड़कर मैं आपके समक्ष लाया हूँ, हे महामहिम , ताकि ब्रह्मांड के शासकों के दैवीय आदेश से – राजाओं के फरमान से – उसे उसकी दुस्साहसीता के अनुरूप पूर्ण दंड मिल सके।" हेगेमोन ने प्रीपोसिटस विचिस को बुलाकर उससे पूछा:

'क्या आपने ही सैनिक थियोडोरस को हमारे देवताओं की माता के मंदिर को जलाने की अनुमति दी थी?'

उसने उत्तर दिया:

'मैंने उसे अक्सर समझाया, और अंत में उसे एक समय-सीमा दी ताकि, विचार करने के बाद, वह देवताओं को बलिदान दे सके। और अगर उसने ऐसा किया, तो इसका मतलब है कि उसने हमारे देवताओं से पूरी तरह मुँह मोड़ लिया है और शाही आदेश को अनदेखा किया है; इसलिए, आप, एक न्यायाधीश के रूप में, वह करें जो राजाओं ने आदेश दिया है।'

तब हेगेमोन, बेंच पर अपनी सीट पर बैठकर, धन्य थियोडोर को बुलवाया और उससे पूछा:

'जब देवी को बलिदान और धूप चढ़ाने के लिए कहा गया था, तो आपने उन्हें आग क्यों अर्पित की?'

संत थियोडोर ने उत्तर दिया:

मैं यह नहीं छिपाऊँगा कि मैंने ऐसा क्यों किया। मैंने लकड़ी इसलिए जलाई ताकि आग पत्थर को झुलसा दे। क्या तुम्हारी देवी इतनी शक्तिहीन है कि आग उसे छूकर झुलसा सकती है?'

इन शब्दों से क्रोधित होकर, राज्यपाल ने उसे पीटने का आदेश दिया, और कहा:

'मेरी सहनशीलता तुम्हें अभद्र बना रही है। लेकिन मैं तुम्हें सलाह देता हूँ कि लंबा-चौड़ा भाषण मत दो। क्योंकि अगर तुम अपनी मर्ज़ी से राजा की आज्ञा का पालन नहीं करोगे, तो हम तुम्हें क्रूर यातनाओं के ज़रिए ऐसा करने पर मजबूर कर देंगे।'

इस पर संत ने उत्तर दिया:

[1889] यह, बेशक, पगन देवी साइबेल का संदर्भ है, जो आकाश (यूरानस) और पृथ्वी (गाया) की बेटी थी; उन्हें देवताओं की महान माँ के रूप में पूजा जाता था, क्योंकि यूनानी पौराणिक कथाओं में उन्हें ओलंपियन देवताओं की माँ माना जाता था, जिनके प्रमुख ज़्यूस थे।

'मैं न तो तुमसे डरता हूँ और न ही तुम्हारे यातनाओं से, चाहे वे कितनी भी भयानक क्यों न हों। जो करना है कर लो; मैं अपने प्रभु पर अपना भरोसा रखता हूँ, मुझे स्वर्ग में उनसे अपना इनाम मिलने की उम्मीद है, और मैं उनके लिए दुख सहने को तैयार हूँ।'

न्यायाधीश ने कहा, 'थेओडोर, देवताओं को बलिदान चढ़ाओ, और तुम्हें उन यातनाओं से बचा लिया जाएगा जो तुम्हारा इंतज़ार कर रही हैं; अन्यथा, एक भयानक मृत्यु तुम्हारा इंतज़ार कर रही है।'

लेकिन संत थियोडोर ने बहादुरी से उत्तर दिया:

'तुम्हारे यातनाएँ मुझे डरा नहीं सकतीं। क्योंकि मेरे सामने प्रभु और मेरे राजा, यीशु मसीह खड़े हैं। वे मुझे तुम्हारी यातनाओं से मुक्ति देंगे। लेकिन तुम उन्हें नहीं देख सकते, क्योंकि तुम आध्यात्मिक आँखों से नहीं देख सकते।'

न्यायाधीश, एक जंगली जानवर की तरह क्रोध से भरकर, ने संत को एक कालकोठरी में फेंकने और दरवाज़े सील करके भूख से मरने के लिए वहीं छोड़ देने का आदेश दिया। लेकिन पवित्र आत्मा ने उस धन्य व्यक्ति को अपनी कृपा से जीवित रखा। इसके अलावा, एक रात प्रभु यीशु मसीह उसके सामने प्रकट हुए और कहा:

'हौसला रखो, थियोडोर, मैं तुम्हारे साथ हूँ; सांसारिक भोजन या पेय का सेवन मत करो, क्योंकि स्वर्ग में मेरे साथ अनंत जीवन तुम्हारे लिए तैयार किया गया है।'

इसके बाद, प्रभु संत की दृष्टि से ओझल हो गए। इस दर्शन से सांत्वना पाकर, धन्य थियोडोर ने भजन गाना शुरू कर दिया और उनकी आत्मा आनंद से भर गई। पवित्र स्वर्गदूतों की एक बड़ी भीड़ ने उन्हें सुना। कारागार के रक्षकों ने यह मधुर गायन सुनकर कारागार के दरवाजों के पास आए। दरवाजे बंद और मुहर अछूती देखकर, उन्होंने खिड़की से झाँका और देखा कि सफेद वस्त्रों में लिबिड़े पुरुषों की एक भीड़ संत थियोडोर के साथ मिलकर गा रही थी। डर से भरकर, उन्होंने यह बात राज्यपाल पब्लियस को बताई। वह तुरंत तेजी से तहखाने की ओर रवाना हुआ और घटनास्थल पर पहुंचकर उसने देखा कि दरवाजे बंद थे और ताला अपनी मुहर के साथ सुरक्षित था। और चूंकि राज्यपाल को संत थियोडोर के साथ अंदर गाने वालों की आवाजें सुनाई दे रही थीं, इसलिए उसने सशस्त्र सैनिकों को तहखाने को चारों ओर से घेरने का आदेश दिया। उसे लगा कि कुछ ईसाई थियोडोर के साथ कालकोठरी में हैं। लेकिन कालकोठरी में प्रवेश करने पर, उसे वहाँ ईश्वर के वफादार सेवक, संत थियोडोर के अलावा कोई नहीं मिला, जो बंधा हुआ था। राज्यपाल और उसके साथियों पर भय और कंपकंपी छा गई। कालकोठरी से बाहर निकलकर, उन्होंने दरवाज़े फिर से बंद किए और चले गए। न्यायाधीश ने आदेश दिया कि संत को हर दिन रोटी का एक छोटा सा टुकड़ा और थोड़ा सा पानी दिया जाए। लेकिन पवित्र धर्मग्रंथ के वचनों की पुष्टि में: *'धर्मी अपने विश्वास से जीवित रहेगा'* (हाब. 2:4; रोम. 1:17), संत थियोडोर ने रोटी और पानी लेने से इनकार कर दिया, यह कहते हुए:

'प्रभु और मेरे राजा, यीशु मसीह, मुझे पोषण देते हैं।'

सुबह, न्यायाधीश ने संत को अदालत के सामने लाने का आदेश दिया और उनसे कहा:

'मेरी सलाह मानो और मुझे यह आदेश देने के लिए मजबूर मत करो कि तुम्हें यातनाएँ दी जाएँ: महान देवताओं को बलिदान चढ़ाओ। तब मैं हमारे राजाओं—ब्रह्मांड के शासकों—को लिखूँगा और वे तुम्हें देवताओं का महापुजारी बना देंगे, ताकि तुम मुझे मिलने वाले सम्मान के बराबर सम्मान प्राप्त कर सको।'

स्वर्ग की ओर देखकर और क्रॉस का चिह्न बनाते हुए, संत थियोडोर ने अपने यातनाकर्ता को उत्तर दिया:

'मेरे शरीर को आग से जला दो, मुझे हर तरह की यातनाओं से गुज़ारो, मुझे तलवारों से काट दो, मुझे चीज़ों को खिलाने के लिए दरिंदों के सामने फेंक दो, लेकिन मैं अपने जीवन के अंत तक अपने मसीह का त्याग नहीं करूँगा।'

प्रोवोस्ट से सलाह-मशविरा करने के बाद, यातना देने वाले ने संत को एक पेड़ से लटकाने और उसके शरीर को लोहे के दाँतों से खुरचने का आदेश दिया। संत को इस तरह यातना दी गई कि उनकी हड्डियाँ दिखाई देने लगीं। इस दौरान धन्य संत ने अपने यातना देने वाले से कुछ नहीं कहा, बल्कि केवल गाते रहे:

'जिसमें विश्वास से विश्वास तक परमेश्वर का धार्मिक गुण प्रगट होता है, जैसा कि लिखा है: "धर्मी विश्वास से जीवित रहेगा" (रोमियों 1:17)। *'मैं हर समय प्रभु का धन्यवाद करूँगा; उसकी स्तुति सदा मेरे मुख में रहेगी'* (भजन संहिता 33:2)। *'ज्ञान प्राप्त करना सोने से कहीं उत्तम है, और समझ प्राप्त करना चुने हुए चाँदी से बेहतर है'* (नीतिवचन 16:16)।

यातना देने वाले ने संत थियोडोर के साहस और धैर्य को देखकर आश्चर्यचकित होकर उससे कहा:

'नश्चिय ही तुम, जो सभी मनुष्यों में सबसे नीच हो, उस मनुष्य में अपनी आशा रखने से लज्जति नहीं हो, जसिे मसीह कहते हैं, जसिे स्वयं एक लज्जास्पद तरीके से मार डाला गया था? क्या तुम इस मनुष्य के लिए इतनी लापरवाही से स्वयं को यातनाओं का शकिार बना रहे हो?'

मसीह के शहीद ने उत्तर दयिा:

'ऐसा अपमान मुझ पर और प्रभु यीशु मसीह का नाम लेने वालों पर सब पर पड़े!'

तब भीड़ चल्लिाने और यह मांग करने लगी कि संत थयिोडोर को तुरंत फांसी दी जाए। लोगों के हंगामे को सुनकर, न्यायाधीश ने एक दूत के माध्यम से थयिोडोर से पूछा:

'क्या तुम देवताओं को बलदिान चढ़ाना चाहते हो, या क्या तुम और भी बड़े कष्ट सहने का इरादा रखते हो?'

इस पर मसीह के शहीद ने नडिरता से उत्तर दयिा:

'हे दुष्ट मनुष्य, जो हर प्रकार की गंदगी और चापलूसी से भरा है, शैतान के सेवक, क्या तू उस परमेश्वर से नहीं डरता, जसिने तुझे इतना अधकिार और शक्ति दी है? क्योंकि उसी के द्वारा *"राजा राज्य करते हैं और हाकमि न्याय ठहराते हैं"* (नीतविचन 8:15)। तुम मुझसे जीवति ईश्वर को त्यागकर एक नर्जिीव पत्थर की पूजा करने के लिए कैसे कह सकते हो?

कुछ वचिार करने के बाद, न्यायाधीश ने थयिोडोर से कहा:

'तुम क्या चुनते हो: हमारे साथ रहना या अपने मसीह के साथ?'

बड़े आनंद से संत ने उत्तर दयिा:

'मैं अपने मसीह के साथ था, हूँ और रहूँगा; और तुम अपनी इच्छा के अनुसार करो।'

न्यायाधीश ने, यह देखकर कि थयिोडोर का संकल्प अटूट था, मृत्युदंड की घोषणा की।

उसने कहा, 'थयिोडोर, जो महान राजाओं के अधकिार की अवज्ञा करता है, महान देवताओं को स्वीकार नहीं करता, और यीशु मसीह में वश्विास करता है, जसिे यहूदयिों के अनुसार पोंटयिस पलिातुस के अधीन सूली पर चढ़ाया गया था, मैं आदेश देता हूँ कि तुम्हें आग में डाल दयिा जाए।'

यातनाकर्ता का आदेश तुरंत पूरा कयिा गया: उसके सेवकों ने पास के घरों और स्नानागारों से बहुत सारी लकड़यिाँ इकट्ठी कीं, एक वशिाल चति बनाई, और संत थयिोडोर को उस पर लाया। चारों ओर से आग लगाई जाने पर, चति तेज लौ से जल उठी। मशाल पर चढ़ते ही, संत थयिोडोर ने क्रॉस का चह्नि बनाया, और अचानक पवत्रि आत्मा अवतरति हुआ और लपटों के बीच, पवत्रि शहीद को ठंडक प्रदान की। संत, ईश्वर का गायन और महमिा करते हुए, शांतपिूर्वक अपनी आत्मा उसे सौंप दी।

'और हमने देखा,' महान शहीद के धन्य नधिन के एक प्रत्यक्षदर्शी ने लखिा, 'उनकी सम्मानति और पवत्रि आत्मा बजिली की तरह स्वर्ग में उठती हुई।'

[1890]यूसेबयिा नाम की एक धर्मनष्ठि और सदाचारी महलिा ने पवत्रि और महमिामय महा-शहीद थयिोडोर के शरीर का अनुरोध कयिा। जब संत के सम्मानति अवशेष उसे दे दिए गए, तो उसने उन्हें सुगंधति मूर के तेल से अभषिक्ति कयिा और उन्हें एक शुद्ध कफ़न में लपेटकर, अमासयिा के मेट्रोपोलसि में स्थति ईज़ेबयिा नामक नगर में अपने घर में दफना दयिा, और हर साल शहीद की पवत्रि स्मृति का उत्सव मनाया। मसीह के पवत्रि महा-शहीद थयिोडोर का नधिन लगभग 306 ईस्वी में, सम्राट मैक्समियिन के शासनकाल के दौरान, 17 फरवरी को हुआ।

पवत्रि महा शहीद थयिोडोर टायरॉन के चमत्कार पर।

कांस्टेनटाइन महान के पुत्र, कॉन्स्टैंटयिस के बाद, जूलयिन अपोस्टेट[1891] ने शाही सहिासन संभाला। उसने मसीह का त्याग कर दयिा, मूर्तयिों की पूजा शुरू कर दी, और ईसाइयों के खलिाफ एक बड़ा उत्पीड़न शुरू कर दयिा। जूलयिन ने ईसाइयों पर खुलेआम नहीं बल्कि गुप्त रूप से अत्याचार कयिा; क्योंकि वह सभी ईसाइयों को सार्वजनकि रूप से क्रूर और अमानवीय यातनाओं में डालने की हम्मित नहीं कर सका, क्योंकि उसे डर था कि कई वधिर्मी, यातनाग्रस्त ईसाइयों के धैर्यपूर्ण सहनशीलता ( ) को देखकर, स्वयं ईसा की ओर मुड़ सकते हैं। इसलिए, इस अधर्मी सम्राट ने ईसाइयों को गुप्त रूप से अपवत्रि करने की एक योजना बनाई। वह जानता था कि महा-व्रत (Great Lent) के पहले सप्ताह के दौरान, ईसाई

[1890] यूकेइता अमासयिा के पास, पोंटस क्षेत्र में स्थति एक छोटा सा शहर था।

[1891] जूलयिन 361 में सहिासन पर चढ़ा और 363 तक शासन कयिा। ईसाई धर्म में पले-बढ़े, उसने सम्राट बनने के तुरंत बाद ईसाई धर्म का त्याग कर दयिा और मूर्तपिूजक धर्म अपना लयिा। इस कारण से, वह 'धर्मत्यागी' के रूप में जाना जाता है।

वशिेष पवत्रिता का पालन करते हैं और अपने पापों से पश्चाताप करते हैं। और इसलिए उसने कॉन्स्टेंटनिोपल के राज्यपाल को बुलाया और उसे आज्ञा दी, कि वह पहले सप्ताह के दौरान, बाज़ारों में रोज़ाना बेचे जाने वाले भोजन को मूर्तपिूजक बलदिानों के रक्त से दूषति करे, जसिसे ईसाई हमेशा परहेज़ करते हैं (देखें प्रेरतिों के काम 15:29)। राजा का आदेश पूरा कयिा गया, और अवशि्वासयिों द्वारा अपवत्रि कए गए खाद्य पदार्थ सभी बाज़ारों में रख दए गए। लेकनि सर्वज्ञ प्रभु ने, मूर्तपिूजकों को लज्जति करते हुए और अपने सच्चे सेवकों की परवाह करते हुए, इस गुप्त साज़शि को वफिल कर दयिा। उन्होंने अपने पवत्रि कष्ट-भोगी थयिोडोर को—जन्हिोंने कई साल पहले मसीह के लए कष्ट सहे थे और अब स्वर्ग के राज्य में महमिा में वास कर रहे थे—कॉन्स्टेंटनिोपल के आर्चबशिप यूडॉक्सयिस के पास भेजा[1892] । संत थयिोडोर यूडॉक्सयिस के पास सपने में नहीं, बल्कि वास्तवकिता में प्रकट हुए, और उनसे कहा:

'मसीह के झुंड को तुरंत इकट्ठा करो और सभी ऑर्थोडॉक्स को आज्ञा दो कि उनमें से कोई भी बाज़ारों से भोजन न खरीदे, क्योंकि अधर्मी राजा के आदेश से, यह मूर्तपिूजक बलदिानों के रक्त से दूषति है।'

मशिनरी, हैरान होकर, ने पूछा कि जो गरीब, जनिके पास घर पर पर्याप्त भोजन नहीं था, वे बाज़ारों से खरीदे गए भोजन के बजाय क्या उपयोग कर सकते हैं:

संत ने उत्तर दयिा:

'उन्हें कोलवि देकर, आप उनकी कठनिाई को दूर कर देंगे!'

लेकनि बशिप अपनी उलझन व्यक्त करते रहे, क्योंकि वह नहीं जानते थे कि कोलवि क्या था। तब संत थयिोडोर ने कहा:

'कोलवि शहद के साथ उबली हुई गेहूँ है[1893] । यूकैटा में इस व्यंजन को इसी नाम से जाना जाता है।' फरि बशिप ने संत से पूछा:

'तुम कौन हो, और तुम ऑर्थोडॉक्स ईसाइयों की इतनी परवाह क्यों करते हो?'

इस पर संत ने उत्तर दयिा:

'मैं थयिोडोर हूँ, मसीह का एक शहीद; मुझे ईश्वर की आज्ञा से आपकी सहायता के लए भेजा गया है।'

यह कहकर, संत अदृश्य हो गए। बशिप ने तुरंत सभी ईसाइयों को इकट्ठा कयिा और उन्हें वह सब बताया जो उन्होंने देखा और सुना था। कोलवि तैयार करके, उन्होंने अपने झुंड को दुश्मन की धोखेबाज़ी से बचाया। दुष्ट राजा, यह देखकर कि उसकी साजशिें वफिल हो गई थीं, बहुत शर्मदिा हुआ और आदेश दयिा कि बाज़ारों में बनिा मलिावट वाला भोजन लाया जाए। और ईसाइयों ने, प्रभु की अकथनीय दया के लए धन्यवाद देते हुए और मसीह के पवत्रि महा-शहीद थयिोडोर की स्तुति करते हुए, महा-उपवास के पहले सप्ताह के शनविार को पवत्रि महा-शहीद का पर्व मनाया, और उनके सम्मान और स्मृति में वशि्वासयिों द्वारा खाने के लए कोलवि का आशीर्वाद कयिा। और उस समय से लेकर आज तक, महा-प्रायश्चति के पहले शनविार को, चर्च आर्चबशिप यूडोक्सयिस के समय में हुए चमत्कार की स्मृति में कोलवि का आशीर्वाद करती है, और मसीह के कष्ट-भोगी, थयिोडोर की महमिा करती है, ताकि वशि्वासयिों को अपने सेवकों के प्रति ईश्वर की दयालु व्यवस्था की एक नरिंतर याद दलिाई जा सके। – और पवत्रि महान शहीद थयिोडोर द्वारा ईसाइयों को प्रदान की गई सहायता की[1894] ।

[1892] संत यूडोक्सयिस ने 340–341 तक कॉन्स्टेंटनिोपल का पद संभाला।

[1893] कोलवि, जसिे कुटयिा या सोचवि भी कहा जाता है, एक सरल व्यंजन है। यह सूखे गेहूं, दाल और जौ से बना होता है, जन्हिें पानी में भगिोकर शहद के साथ खाया जाता है।

[1894] महान शहीद थयिोडोर का आर्चबशिप यूडॉक्सयिस के समक्ष चमत्कारकि रूप से प्रकट होने के उपलक्ष्य में यह उत्सव शनविार की पूर्व संध्या को शुरू होता है – शुक्रवार को लटिर्जी के दौरान, एम्बो से प्रार्थना के बाद। इस समय, कोलवि का आशीर्वाद कयिा जाता है, जसिके साथ महान शहीद को समर्पति वनितीपूर्ण कैनन का गायन होता है, जसिे सेंट जॉन ऑफ़ डेमास्कस ने रचा है। शनविार को, चर्च ने यह आदेश दयिा है कि सेंट थयिोडोर की स्तुति पढ़ी जाए और यूकेइटा के मेट्रोपॉलटिन जॉन द्वारा रचति कैनन का गायन कयिा जाए।

ट्रोपारयिन, स्वर 2:

वशि्वास का एक महान स्तंभ, लौ के फव्वारे में, वशि्राम के जल पर, पवत्रि शहीद थयिोडोर ने आनंद मनाया: क्योंकि वह त्रमिूर्त को अर्पति कएि गए मीठे आटे की तरह आग में भस्म हो गए। उनकी प्रार्थनाओं के द्वारा, हे मसीह हमारे ईश्वर, हमारी आत्माओं को बचाओ।

कॉन्टाकयिन, स्वर 8:

हे दीर्घ-सहष्णिु, आपने अपने हृदय में मसीह के वशि्वास को ढाल के रूप में धारण कर वरिोधी शक्तयिों को कुचल डाला; और हे थयिोडोर, आप अजेय के रूप में, शाश्वत रूप से स्वर्गीय मुकुट से वभिूषति हुए।

संत मारअिम्ना की स्मृति

17 फरवरी को स्मरणोत्सव

संत मरयिमना, संत फलिपि प्रेरति की बहन थीं। कुँवारी रहने का व्रत लेने के बाद, वह अपने भाई और प्रेरति बरथोलोम्यू के साथ अपने भाई से तब मलिीं, जब संत फलिपि एशयिा माइनर के क्षेत्रों में सुसमाचार का प्रचार करते हुए लडियिा और मसियिा आए थे[1895] । उस समय से, संत मारअिम्ना ने पवत्रि प्रेरति फलिपि और बरथोलोमयिस की उनकी प्रेरतिीय कष्टसाध्य सेवाओं में सहायता की और उनके साथ मलिकर प्रेरतित्व की सभी कठनिाइयों और दुखों को सहा। परमेश्वर का वचन प्रचार करते हुए, वे फ्राइजयिा के हएिरापोलसि आए[1896] । यहाँ, जैसे ही वे पहुँचे – जैसा कि चर्च इतहिासकार नकिफिोरस कैलस्टिोस प्राचीन परंपराओं के आधार पर वर्णन करते हैं – मूर्तयिों की पूजा तुरंत बंद हो गई; साँप, जसिे हाइरापोलसि के नविासयिों ने पूजनीय बना रखा था, को मंदरि से बाहर नकिाल दयिा गया, और जो लोग इसकी पूजा करते थे वे शर्म और क्लेश से भर गए। उनके उपदेश की सफलता को रोकने के लएि, राज्यपाल ने फलिपि, बरथोलोम्यू और मरयिाम्ने को गरिफ्तार करके जेल में डालने का आदेश दयिा। फरि प्रेरति फलिपि को सूली पर चढ़ाकर मौत की सज़ा दी गई। जहाँ तक मरयिाम्ने और बरथोलोमयिुस का सवाल है, शहर के राज्यपाल और एचडिना के पुरोहतिों (जनि्हें पृथ्वी ने नगिल लयिा था) पर ईश्वर के क्रोध के एक चमत्कारी प्रकटन के बाद, उन्हें रहिा कर दयिा गया। अपने शहीद भाई के शरीर को, जसिे क्रूस से उतार लयिा गया था, प्यार से चूमने के बाद, संत मरयिमना ने प्रभु की महमिा की और लकिाओनयिा में सुसमाचार का प्रचार करने के लएि नकिल पड़ीं[1897] । वहाँ, सुसमाचार का सफलतापूर्वक प्रचार करते हुए, वह अपने कार्यों से वशि्राम पाकर शांतपिूर्वक स्वर्ग सधिार गईं।

पवत्रि शहीद मीना कैलकिेलस के अवशेषों की खोज

17 फरवरी को स्मरण कयिा जाता है

एथेंस के मूल नविासी, संत मीना ने उत्कृष्ट शकि्षा प्राप्त की और अपनी वाक्पटुता के लएि प्रसद्धि थे, इसीलएि उन्हें कैलकिेलैडोस (वाक्पटु) नाम दयिा गया। सम्राट मैक्समिनिस[1898] के शासनकाल में, उन्होंने लगभग 313 ईस्वी में शहादत प्राप्त की[1899] । उनके अवशेषों की खोज बाइज़ेंटाइन सम्राट बेसलि द मैसडिोनयिन[1900] के शासनकाल में हुई।

[1895] लडियिा और मसियिा – एशयिा माइनर के उत्तर-पश्चमिी क्षेत्र।

[1896] फ्राइजयिा का हएिरापोलसि फ्राइजयिा के दक्षणिी भाग में (एशयिा माइनर के मध्य भाग में) स्थति था; प्राचीन काल में यह अपनी संगमरमर की खदानों और गर्म झरनों के लएि एक काफी महत्वपूर्ण शहर था। आजकल, यहाँ केवल खंडहर ही बचे हैं, और यह स्थान कोढ़यिों के लएि एक आश्रय स्थल के रूप में काम करता है।

[1897] लकिोनयिा एशयिा माइनर के केंद्रीय क्षेत्रों में से एक है, जो फ्रीजयिा से सटा हुआ है।

[1898] यह, बेशक, मैक्समिनिस डाज़ा को संदर्भति करता है, जसिने 305 से 313 तक सीरयिा और मस्रि पर शासन कयिा।

[1899] इसका वस्तिृत वृत्तांत 10 दसिंबर के 'संतों के जीवन' (Lives of the Saints) में देखें।

[1900] बाइज़ेंटाइन सम्राट बेसलि प्रथम द मेसेडोनयिन ने 867 से 869 तक शासन कयिा।

3 मार्च

18 फरवरी (पुराने कैलेंडर के अनुसार)

हमारे पवित्र पिता लियो, रोम के पोप की स्मृति

18 फरवरी को स्मरणोत्सव

[1901][1902]ईश्वर की कलीसिया के महान संत और चरवाहे – रोम के पोप लियो – इटली के मूल निवासी थे; उनके पिता का नाम क्विंटियन था। कम उम्र से ही, संत लियो को सभी प्रकार की विद्वतापूर्ण बुद्धिमत्ता में शिक्षित किया गया, उन्होंने सांसारिक दर्शन[1903] से परिचित कराया और उन्हें ईसाई सद्गुण सिखाए गए। दुनियावी जीवन की तुलना में आध्यात्मिक जीवन से अधिक प्रेम करने के कारण, वह शुरू में पोप सिक्सटस तृतीय के अधीन एक आर्चडीकन थे। अपनी महान ब्रह्मचर्य और पवित्रता के लिए, सिक्सटस की मृत्यु के बाद उन्हें सर्वसम्मति से रोम के चर्च का प्राइमेट चुना गया। एक अच्छे चरवाहे के रूप में, संत लियो ने उत्साहपूर्वक मसीह के झुंड की देखभाल की, और उनके लिए अपना जीवन बलिदान कर दिया।

उस समय, क्रूर तानाशाह अटिला, हूणों का नेता[1904] , जिसे 'ईश्वर का दंड' कहा जाता था, कई देशों को जीतकर इटली भी आया, और उसे भी आग और तलवार से तबाह करने का इरादा रखता था। जब उन्होंने देखा कि कोई भी उस भयानक विजेता का विरोध नहीं कर सकता, तो पोप लियो ने परमेश्वर से भक्तिपूर्वक प्रार्थना की; उन्होंने स्वयं पर उपवास रखा और पवित्र प्रमुख प्रेरितों पतरस और पौलुस की सहायता माँगी, और आँसुओं के साथ प्रभु से विनती की कि वे अपने सेवकों को उस क्रूर शत्रु से बचाएँ। अपनी प्रार्थना से साहस और दृढ़ संकल्प प्राप्त कर, संत लियो ने उस अत्याचारी के क्रोध को शांत करने और उसके आक्रोश को दबाने के लिए उसके सामने जाने का निश्चय किया, और आवश्यकता पड़ने पर अपने झुंड के लिए अपना जीवन भी बलिदान करने को तैयार थे। बुद्धिमानी, वाक्पटुता और दैवीय प्रेरणा से भरे शब्दों में, उन्होंने अटिला से बात की और उसे एक क्रूर भेड़िये से एक नम्र मेमने में बदल दिया; उस भयंकर और अदम्य योद्धा ने ईश्वर के सेवक के शब्दों को नम्रता और विनिम्रता से सुना, उसकी धर्माध्यक्षीय गरिमा को देखकर चकित हो गया और उसके सम्मानजनक मुखमंडल की पवित्रता से अभिभूत हो गया। संत लियो की इच्छानुसार सब कुछ करने के बाद, वह भयंकर अटिला इटली की सीमाओं से अपने देश वापस चला गया।

[1901] एक आर्चडीकन वरिष्ठ या प्रमुख डीकन होता है। प्रत्येक एपिस्कोपल सी (episcopal see) में एक आर्चडीकन होता था। प्रारंभिक चर्च में, आर्चडीकन के पद को बहुत सम्मान दिया जाता था, और आर्चडीकन बिशप के सबसे करीबी लोगों में से एक होता था। आर्चडीकनों को अक्सर बिशप चुना जाता था, जैसा कि संत अथेनासियस द ग्रेट, रोम के पोप लियो, और कई अन्य के उदाहरणों में देखा जा सकता है। आजकल, 'आर्चडीकन' शब्द वरिष्ठ हाइरोडीकनों पर लागू होता है, यानी वे डीकन जो बड़े मठों—विशेषकर स्टाउरोपैजियल मठों—और कैथेड्रल चर्चों में भिक्षु होते हैं। यह पद केवल मान-सम्मान का दर्जा देता है, अधिकार का नहीं, क्योंकि एक आर्चडीकन डीकनों का प्रमुख नहीं होता, बल्कि मंत्रालय और सभाओं में स्थिति के मामले में उनमें से केवल पहला होता है।

[1902] पोप सिक्सस तृतीय ने 432 से 440 तक रोम की धर्मपीठ संभाली

[1903] *'बाहरी दर्शन'* शब्द का तात्पर्य मूर्तिपूजक दार्शनिकों - प्लेटो, अरस्तू, पाइथागोरस और अन्य - के कार्यों से था, अर्थात् वे लेखक जो विश्वास के मामले में मसीह की कलीसिया के बाहर थे।

[1904] हूण एशियाई लोग थे जिन्होंने चौथी शताब्दी के अंत में यूरोप पर आक्रमण किया और वहाँ काफी तबाही मचाई, शहरों और पूरे राज्यों को नष्ट कर दिया। यूरोप में, हूणों ने अपनी आधारशिला टिसिज़ा नदी की घाटी में स्थापित की, जो डेन्यूब की एक सहायक नदी है, और जो अब ऊपरी हंगरी में है। अटिला (433–454) का शासन हूण शक्ति के चरम पर था। अटिला ने बीजान्टिन सम्राट को निरंतर भय की स्थिति में रखा, और उसे एक भारी कर देने तथा डैन्यूब नदी के दक्षिण की सभी भूमि हूणों को सौंपने के लिए मजबूर किया। 440 में, अटिला ने 500,000 सैनिकों की सेना का नेतृत्व करते हुए पश्चिम की ओर चढ़ाई की। आग और तलवार के सिवा कुछ भी अपने रास्ते में न रहने देकर, वह पूरे जर्मनी से होते हुए राइन नदी तक पहुंच गया, फिर नदी पार कर गया और कई शहरों को तबाह कर दिया। हालांकि, फ्रांस के दक्षिण में, उसे पीछे हटना पड़ा और जर्मनी लौटने के लिए मजबूर होना पड़ा। 452 में, उसने एक नया आक्रमण किया - इस बार इटली पर। रोम और पूरा इटली अपने दुश्मनों के चंगुल में पड़ने के खतरे में थे; लेकिन अटिला ने अपनी विजयी प्रगति को रोका और पोप लियो महान के साथ बातचीत के बाद, वापस लौट गया। इस अभियान के कुछ ही समय बाद, अटिला की मृत्यु हो गई।

अटलि के सेनापतियों को इस बात पर बहुत आश्चर्य हुआ कि लियो ने अटलि को इतनी तेजी से और इतनी असाधारण रूप से एक इतने उग्र राजकुमार से एक इतने विनिम्र व्यक्ति में कैसे बदल दिया; उन्होंने अटलि से पूछा:

'तुम एक बिना हथियार के आए रोमन से क्यों डरे? तुमने उसकी आज्ञा क्यों मानी? तुम, जैसे पराजित हो गए हो, इटली में इतनी सारी संपत्ति छोड़कर भाग क्यों गए?'

अटलि ने उनसे जवाब दिया, 'तुमने वह नहीं देखा जो मैंने देखा, लेकिन मैंने पोप के दोनों ओर दो स्वर्गदूतों को खड़ा देखा (वे पवित्र प्रमुख प्रेरित पतरस और पॉल थे); उनके हाथों में खींची हुई तलवारें थीं और उन्होंने मुझे मौत की धमकी दी कि अगर मैं परमेश्वर के महापुजारी की आज्ञा नहीं मानता।

ईश्वर के ऐसे महान संत थे लियो, जिन्होंने न केवल अदृश्य शत्रुओं के हृदय में, बल्कि दृश्य शत्रुओं के हृदय में भी भय पैदा किया; उन्हें अपने अनुयायियों से बहुत स्नेह था, उनके लिए वे उस भयानक विजेता के सामने जाने से नहीं हिचकिचाए, और यदि आवश्यक हुआ तो उसके हाथों पीड़ा सहने के लिए भी तैयार थे।

अपने धर्मप्राचीन काल में, विधर्मी नेस्टोरियस[1905] के अनुयायी, कॉन्स्टेंटिनोपल के आर्चमिंड्राइट यूटिकस, और अलेक्जेंड्रिया के पैट्रिआर्क डियोस्कोरस[1906] , निर्लज्ज ईश्वर-निन्दक के रूप में उभरे, जिन्होंने हमारे प्रभु मसीह में दो स्वभावों—दैवीय और मानवीय—को एक में मिला दिया। अपनी विधर्म के माध्यम से, उन्होंने परमेश्वर की कलीसिया को बहुत परेशान किया। एफ़िसुस[1907] में उन्होंने अपना अन्यायपूर्ण परिषद[1908] बुलाया, और उन्होंने कॉन्स्टेंटिनोपल के पैट्रिआर्क, ऑर्थोडॉक्सी के रक्षक संत फ्लावियन को अन्यायपूर्वक दोषी ठहराया और यातनाएँ दीं, जिससे ऑर्थोडॉक्सों को बहुत हानि पहुँची। उस समय, संत पोप लियो ने चर्च को मजबूत करने और उसे शांति प्रदान करने के लिए अपने सभी प्रयास समर्पित कर दिए, जिसे विधर्मियों द्वारा परेशान किया जा रहा था; उन्होंने सम्राटों को लिखा, पहले थियोडोसियस[1909] को, फिर मार्सियन[1910] को, और उनसे एक सार्वभौमिक परिषद बुलाने का आग्रह किया। अंतत; मार्सियन और पुलकेरिया के शासनकाल के दौरान, काल्सेडन[1911] में एक सार्वभौमिक परिषद बुलाई गई - जो संख्या में चौथी थी - यूटिकिस और डियोस्कोरस के खिलाफ, जिन्होंने प्रभु मसीह में एक ही स्वभाव, एक ही क्रिया और एक ही इच्छा का उपदेश दिया था ; इस परिषद में 630 पवित्र पिताओं ने भाग लिया[1912] । परम पावन पोप लियो इस परिषद में शामिल नहीं हो सके – यात्रा की लंबाई और उनकी उन्नत आयु दोनों के कारण, और इसलिए भी कि उस समय देश पर शत्रुओं के बार-बार आक्रमणों के कारण उनके लिए इटली छोड़ना असंभव था; इसलिए उन्होंने अपने प्रतिनिधियों को भेजा: बिशप पास्कासियस और लुसेंटियस, और पुरोहित बोनफेस और बेसिल। उस परिषद में विधर्मियों के साथ बहसों के दौरान, कई लोग गहरे संदेह में पड़ गए; जिस पर, पवित्र पिताओं के आदेश पर, संतों के विरोधियों के आपत्तियों के जवाब में, रोम के पोप संत लियो का एक पत्र पढ़ा गया; यह पत्र कॉन्स्टेंटिनोपल के पूर्व पैट्रिआर्क, संत फ्लैवियन को लिखा गया था, जिन्होंने पहले यूटिकिस के खिलाफ कॉन्स्टेंटिनोपल का स्थानीय परिषद बुलाया था। कहा जाता है कि इस पत्र को स्वयं प्रमुख प्रेरित, संत पतरस ने अपने प्रेरितिक हाथ से सुधार किया था; हमें इसका प्रमाण यरूशलेम के संत सोफ्रोनीयस के *लिमोनार* में मिलता है:

संत सोफ्रेनियस लिखते हैं, 'अलेक्जेंड्रिया के पास स्थित सलामाना नामक मठ के मठाधीश, बाबा मीना ने हमें बताया कि उन्होंने यह वृत्तांत अलेक्जेंड्रिया के पैट्रिआर्क, बाबा यू□गियस से सुना था।' 'जब मैं कॉन्स्टेंटिनोपल पहुँचा,'

[1905] कॉन्स्टेंटिनोपल के पैट्रिआर्क नेस्टोरियस, जिन्होंने 428 से 431 तक पद संभाला, ने यह विधर्मी सिद्धांत प्रचारित किया कि यीशु मसीह सच्चे ईश्वर नहीं हैं, लेकिन एक मनुष्य, जो यूसुफ और मरियम का पुत्र था, जिसे उसके पवित्र जीवन के कारण परमेश्वर से एक विशेष अनुग्रह मिला था, और जो हमें छुटकारा दिलाने वाली मृत्यु के द्वारा नहीं, बल्कि अपनी शिक्षाओं और अपने जीवन के उदाहरण के द्वारा बचाता है। इस धर्मद्रोह के लिए, नेस्टोरियस को तीसरे सार्वभौमिक परिषद में चर्च से बहिष्कृत कर दिया गया था और 436 में निर्वासन में उसकी मृत्यु हो गई।

[1906] उन्होंने 444 से 451 तक अलेक्जेंड्रिया के पैट्रिआर्कल सिंहासन पर कार्य किया।

[1907] यह वर्ष 449 का था।

[1908] एफ़िसुस – एशिया माइनर के पश्चिमी तट पर एक शहर, जो मूल रूप से एशिया माइनर में यूनानी उपनिवेशों का केंद्र था, और साम्राज्य काल के दौरान एशिया माइनर के प्रमुख शहरों में से एक था। पवित्र प्रेरित जॉन द थियोलोजियन ने अपना शेष जीवन एफ़िसुस में बिताया और वहीं उनकी मृत्यु हुई; तीसरी सार्वभौमिक परिषद भी वहीं आयोजित की गई थी।

[1909] उन्होंने 408 से 450 तक शासन किया।

[1910] वह 460 से 467 तक शासन किया।

[1911] काल्सेडोन – कॉन्स्टेंटिनोपल का एक उपनगर – इसके सामने, बोस्फोरस के एशियाई तट पर स्थित था।

[1912] परिषद 8 अक्टूबर 451 को शुरू हुई।

इव्लोगयिस ने बताया, 'तो मैं रोम के चर्च के आर्चडीकन, मास्टर ग्रेगरी के साथ रहा, जो एक वास्तव में असाधारण और सदाचारी व्यक्ति थे, और मैं अक्सर उनसे बातचीत करता था। उन्होंने ही मुझे सबसे धन्य और सबसे पवित्र लियो, रोम के पोप के बारे में बताया: रोमन चर्च में यह दर्ज है कि उनके संबंध में निम्नलिखित हुआ: जब संत लियो ने अवशिवासी यूटकिस और नेस्टोरियस के विरुद्ध कॉन्स्टेंटिनोपल के बिशप, संत फ्लावियन को एक पत्र लिखा, तो उन्होंने यह पत्र प्रमुख प्रेरित पतरस के मकबरे पर रखा, और स्वयं प्रार्थना और उपवास के साथ इस प्रेरित से विनती की:

'यदि मैंने, एक मनुष्य के रूप में, किसी भी तरह से कोई गलती की है या किसी बात को स्पष्ट रूप से समझाने में विफल रहा हूँ, तो आप, जिनके सुपुर्द प्रभु परमेश्वर और हमारे उद्धारकर्ता यीशु मसीह ने चर्च और इस धर्मपीठ को किया है, तो इसे सुधारें।'

चालीस दिन बाद, जब वह प्रार्थना कर रहे थे, तो प्रेरित उन्हें दिखाई दिए और कहा:

'मैंने इसे पढ़ लिया है और सुधार दिया है।' धन्य पेत्रुस की कब्र से अपना पत्र निकालकर, लियो ने उसे खोला और पाया कि उसे प्रेरित के हाथ से सुधार दिया गया था। यही बात हमें संत सोफ्रोनीयस बताते हैं।

जब संत पोप लियो का यह पत्र चौथे सार्वभौमिक परिषद में पढ़ा गया, तो सभी पवित्र पिताओं ने पुकारा:

'पवित्र प्रेरित पतरस लियो के मुख से बोलते हैं।'

इस प्रकार, परिषद के पितरों ने अपने निर्णय संत लियो के पत्र पर आधारित किए और इस पत्र के माध्यम से विधर्मियों को शर्मिंदा किया। तब ही नहीं, बल्कि बाद में भी, इस पत्र को, जिसने ऑर्थोडॉक्सी (सही आस्था) की पुष्टि की और विधर्मियों को चुप करा दिया, पवित्र पिताओं और अन्य लोगों के साथ-साथ, अलेक्जेंड्रिया के पूर्वोक्त धन्य यूलोगियस, पैट्रिआर्क द्वारा बहुत सम्मान दिया गया। इस यूलोगियस ने, जब विधर्मी लोग लियो के पत्र की जोरदार निंदा कर रहे थे और उसमें लिखी बातों पर आपत्ति जता रहे थे, तो उसका दृढ़ता से बचाव किया; इस कारण से, वह संत लियो को प्रिय थे, जो तब तक इस जीवन से चल बसे थे और संतों के साथ परमेश्वर के सामने खड़े थे।

संत सोफ्रोनीयस स्वयं इसका वर्णन करते हैं: 'लिबिया के डार्ना नगर के बिशप संत थियोडोर[1913] ने हमें निम्नलिखित बात बताई: जब मैं अलेक्जेंड्रिया के पवित्र पैट्रिआर्क यूलोगियस का क्यूबिकुलारियस[1914] था, तो मैंने एक सपने में एक पवित्र और तेजस्वी रूप वाले व्यक्ति को देखा, जिसने मुझसे कहा: "पैट्रिआर्क यूलोगियस को मेरे बारे में बताओ।"'

मैंने पूछा:

'आप कौन हैं, परम पावन, और मुझे आपके बारे में कैसे बात करनी चाहिए?'

उन्होंने उत्तर दिया:

'मैं लियो हूँ, रोम का पोप।'

पैट्रिआर्क यूलोजिउस की उपस्थिति में प्रवेश करते ही, मैंने उनसे कहा:

'परम पावन और अति धन्य पोप लियो, रोम के प्रमुख, आपको देखना चाहते हैं।'

यह सुनकर, पैट्रिआर्क यूलोगियस जल्दी से उठे और उनका स्वागत करने बाहर गए; एक प्रार्थना करने के बाद, उन्होंने एक-दूसरे को चूमा और अपनी-अपनी सीटों पर बैठ गए। फिर धन्य लियो ने संत पैट्रिआर्क यूलोगियस से कहा:

'क्या आप जानते हैं कि मैं आपसे मिलने क्यों आया हूँ?'

उन्होंने उत्तर दिया:

'नहीं।'

लियो ने उनसे कहा:

मैं आपके धन्यवाद करने आया हूँ कि आपने मेरे पत्र का इतनी अच्छी और इतनी दृढ़ता से बचाव किया, मेरे आशय को स्पष्ट किया, इसके द्वारा विधर्मियों को मौन कर दिया, और इस प्रकार मेरे उस पत्र की व्याख्या की, जो मैंने अपने भाई फ्लावियन, कॉन्स्टेंटिनोपल के पैट्रिआर्क को लिखा था, नेस्टोरियस और यूटकिस की दुष्ट विधर्मियों की निंदा करने के लिए: तो जानो, हे भाई, कि मैंने ही इस पत्र पर परिश्रम नहीं किया, बल्कि पवित्र प्रधान प्रेरित पतरस ने भी इसे

[1913] लीबिया – उत्तरी अफ्रीका का एक प्रांत, जो मिस्र से सटा हुआ है, भूमध्य सागर के तट से पश्चिम की ओर फैला हुआ और अफ्रीका के भीतरी हिस्सों तक जाता है।

[1914] क्युबिकुलारिस – बिस्तर बनाने वाला या कोषाध्यक्ष।

पढ़ा और सुधार कयि, और सबसे बढ़कर, हमारे प्रभु मसीह स्वयं—जसि सत्य का हम प्रचार करते हैं—ने इसे पवत्रि कयि।

यह दर्शन मुझे (जैसा कि बिशिप थयिोडोर बताते हैं) एक बार नहीं, बल्कि दो और तीन बार हुआ: धन्य पिता—लयिो और यूलोगयिस—तीन अवसरों पर मेरी आध्यात्मकि आँखों के सामने प्रकट हुए और एक-दूसरे से बात की; मैंने यह दर्शन, जो तीन बार दोहराया गया, संत यूलोगयिस को बताया। यह सुनकर संत यूलोगयिस की आँखों में आँसू आ गए और उन्होंने स्वर्ग की ओर अपने हाथ फैलाकर ईश्वर का धन्यवाद करते हुए कहा:

'मैं आपके महान और अकथनीय कृपा के लिए धन्यवाद देता हूँ, हे प्रभु मसीह हमारे परमेश्वर, कि आपने मुझे, यद्यपि मैं इसके अयोग्य हूँ, अपनी सच्चाई का प्रचारक बनने के योग्य समझा है और, आपके सेवकों, पतरस और लयिो की प्रार्थनाओं के द्वारा, मेरी इस वनिम्र कोशशि को, वधिवा के दो तांबे के सक्किों के समान, स्वीकार करने की कृपा की है[1915] ।'

सोफ्रोनीयस का वृत्तांत इस प्रकार है। यहाँ वर्णति यह दृष्टि संत लयिो के नधिन के कई वर्षों बाद हुई, क्योंकि संत यूलोजयिस बहुत बाद में, अर्थात् सम्राटों मॉरसि और फोकास के शासनकाल के दौरान रहते थे[1916] , जबकि रोम के पोप संत लयिो, उसी नाम के राजा, ग्रेट लयिो के शासनकाल के दौरान पहले ही नधिन कर चुके थे[1917] ।

संत पोप लयिो के जीवन के अंतमि दनिों के बारे में यह ज्ञात है:

परपिक्व वृद्धावस्था में पहुँचकर और अपने सांसारकि जीवन के अंत के करीब पहुँचने पर, संत लयिो को ईश्वर द्वारा सूचति कयि गया कि उनकी मानवीय दुर्बलताओं को क्षमा कर दयि जाएगा। यह नम्निलखिति परस्थितियिों में हुआ: पोप लयिो ने पवत्रि प्रेरति पतरस की कब्र पर प्रार्थना और उपवास करते हुए चालीस दनि बतिाए, पवत्रि प्रेरति से वनिती करते हुए कि वे प्रभु से प्रार्थना करें कि सर्व-दयालु ईश्वर उनके पापों को क्षमा कर दें; चालीस दनि बीत जाने के बाद, पवत्रि प्रेरति पतरस उनके सामने प्रकट हुए और कहा:

मैंने आपके लिए प्रार्थना की है, और आपके सभी पाप क्षमा कर दिए गए हैं, सविाय उन पापों के जो आपने दूसरों को पुरोहति पद पर नयिुक्त करते समय कयि थे। आपको केवल इसी बात का उत्तर देना होगा: कि आपने कसिी को वैध रूप से नयिुक्त कयि था या नहीं।

इस घोषणा के बाद, संत लयिो ने अपनी प्रार्थनाएँ और तीव्र कीं, अपने उपवास को और गहरा कयि, और अपने दान को बढ़ा दयि, और अपने हृदय के वेदना में पुकारते रहे जब तक कि उन्हें पूर्ण क्षमा का सांत्वना नहीं मलि। तब, अपने प्रस्थान के लिए यथोचति रूप से स्वयं को तैयार करके, उन्होंने अपनी पवत्रि आत्मा को ईश्वर के हाथों में सौंप दयि और उन संतों की पंक्ति में शामलि हो गए जो उनसे पहले चले गए थे, महान धर्मगुरु और शक्षिक[1918] ; उनके साथ वे अब मसीह हमारे ईश्वर के सहिासन के सामने खड़े हैं , जो पति और पवत्रि आत्मा के साथ युगानुयुग महमिामय और पूजनीय हैं। आमीन।

[1915] तुलना करें *'और यीशु कोषालय के सामने बैठ गए और यह देखने लगे कि लोग कोषालय में पैसा डाल रहे हैं। कई धनी लोगों ने बड़ी रकम डाली'* (मरकुस 12:41–44)।

[1916] सम्राट मॉरसि ने 582 से 602 तक शासन कयि। सम्राट फोकास ने 602 से 610 तक शासन कयि।

[1917] बाइज़ेंटाइन सम्राट संत लयिो प्रथम ने 457 से 474 तक शासन कयि।

[1918] संत लयिो, रोम के पोप, का 461 में नधिन हो गया। उनके अवशेष वेटकिन में सेंट पीटर्स बेसलिकिा में उनके नाम से समर्पति चैपल में रखे गए हैं। पोप लयिो ने सौ तक उपदेश और 140 तक पत्र पीछे छोड़े—जो धर्मशास्त्रीय और नैतकि वषियों पर थे। ये सभी लेखन सख्त रूढ़विादी सद्धिांत की भावना से चह्नति हैं। इस प्रकार, चौथे सार्वभौमकि परषिद में कॉन्स्टेंटनिोपल के पैट्रआर्क, फ्लावयिन को लखि अपने प्रसद्धि पत्र में, संत लयिो ने ईश्वर के अवतार पर नम्निलखिति वचिार व्यक्त कयि हैं: 'देवत्व ने हमारी दुर्बलता को ग्रहण कयि, बनिा दोनों में से कसिी की प्रकृति को बदले। सच्चे ईश्वर एक सच्चे और पूर्ण मानव स्वभाव में प्रकट हुए, जसिमें उनमें वह सब कुछ पूर्ण रूप से नहिति था जो उनके लिए उचति है और वह सब कुछ भी पूर्ण रूप से नहिति था जो हमारे लिए उचति है। मानव दव्यिता की महमिा से नष्ट नहीं होता है। दोनों स्वभाव, अपने पारस्परकि मेलजोल में, प्रत्येक के लिए उचति तरीके से कार्य करते हैं।" पोप लयिो की नैतकि शक्षिा भी वशिेष ध्यान देने योग्य है। संत लयिो ने अक्सर अपने अनुयायियिों से परोपकार के कार्य करने का आग्रह कयि। उन्होंने कहा, परोपकार का कर्तव्य उपहारों की मात्रा से नहीं, बल्कि हृदय की प्रवृत्ति से नर्धिारति होता है। अमीरों को स्वयं गरीबों को ढूंढकर उनकी मदद करनी चाहिए। ईश्वर धन इसलिए प्रदान करते हैं ताकि वह गरीबों तक पहुँच सके। प्रार्थना के बारे में बात करते हुए, संत लयिो ने लोगों को संतों के मध्यस्थता के माध्यम से मदद मांगने के लिए प्रोत्साहति कयि और उन्हें पवत्रि अवशेषों का सम्मान करने का आदेश दयि।

कॉन्टाकयिन, स्वर 3:

याजकीय गौरव के सहिासन पर वरिाजमान होकर, और अपने वचनों से सहिों के मुँह बंद कर, आपने पवत्रि त्रमिूर्ति के ईश्वर-प्रेरति सद्धिांतों के द्वारा अपने झुंड पर दव्यि ज्ञान का प्रकाश फैलाया। इसी कारण, आपको ईश्वर की कृपा का एक दव्यि प्रबंधक के रूप में महमिामंडति कयिा गया।

हमारे पवत्रि पति फ्लैवयिन, कन्स्टेंटनिोपल के पैट्रआिर्क, स्वीकारकर्ता की स्मृति

१८ फरवरी को स्मरणोत्सव

कृत्य

• कन्स्टेंटनिोपल के आर्चबशिप फ्लावयिन का, पुराने रोम के पोप लयिो को पत्र, अधर्मी यूटकिस की त्रुटयिों के संबंध में

• कॉन्स्टेंटनिोपल के बशिप फ्लावयिन के वश्विास की (घोषणा की) एक प्रति, जो उनके अपने हाथ से लखिी गई और सम्राट को उनकी वनिती पर प्रस्तुत की गई थी

• कॉन्स्टेंटनिोपल के आर्चबशिप फ्लावयिन का पत्र, पवत्रि रोमन चर्च के आर्चबशिप लयिो को

हमारे परम पावन पति फ्लावयिन पहले कॉन्स्टेंटनिोपल की पवत्रि और महान कलीसयिा[1919] में एक डकिन और पुरोहति थे; फरि, परम पावन पैट्रआिर्क प्रोकॉस के नधिन के बाद, उन्हें उनके नष्किलंक और ईश्वर-भक्तपिूर्ण जीवन के कारण पैट्रआिर्क के पद पर पदोन्नत कयिा गया। यह थयिोडोसयिस द यंगर और उनकी बहन पुलकेरयिा के शासनकाल के दौरान हुआ था। सम्राट के पास क्रसिाफयिस नाम का एक नपुंसक था, जो चालाकी और दुर्भावना से भरपूर था; एक वधिर्मी होने और यह जानते हुए कि फ्लावयिन धर्मपरायण और ऑर्थोडॉक्स धर्म में दृढ़ थे, क्रसिाफयिस उन्हें नापसंद करता था और हर संभव तरीके से संत की पैट्रआिर्काट के लिए नयिुक्ति का वरिोध करता था। जब, उनके वरिोध के बावजूद, संत फ्लावयिन को पैट्रआिर्क के रूप में स्थापति कयिा गया, तो क्रसिाफयिस ने पैट्रआिर्क को नुकसान पहुँचाने के लिए कोई बहाना ढूँढना शुरू कर दयिा। और वह अपनी कपटपूर्ण योजनाओं में बहुत कुशल था, क्योंकि वह राजा की कृपा का पात्र था और उसके पास बहुत शक्ति थी।

राजा पर अपने प्रभाव का उपयोग करते हुए, क्रसिाफयिस ने जल्द ही पवत्रि पैट्रआिर्क के प्रति राजा की नाराज़गी जगाने का एक बहाना ढूंढ लयिा। चर्च के इतहिासकार नकिफिोरोस[1920] के अनुसार, उसने राजा को पैट्रआिर्क को एक संदेश भेजने के लिए मना लयिा, जसिमें उन्हें, नव-नयिुक्त पैट्रआिर्क के रूप में, राजा की शाही गरमिा के योग्य एक उपहार तैयार करने का नर्दिेश दयिा गया था। जसि पर परम पावन फ्लावयिन ने, उत्तम आटे से रोटयिाँ बनाकर, यह उपहार आशीर्वाद के लिए ज़ार को भेजा—एक ऐसा उपहार जो वास्तव में ज़ार के हाथों के योग्य था। हालाँकि, क्रसिाफयिस ने इन रोटयिों को एक तरफ रख दयिा, यह कहते हुए कि पैट्रआिर्क को ज़ार को रोटी नहीं, बल्कि सोना भेजना चाहिए था। परम पावन पैट्रआिर्क ने अपने दूतों के माध्यम से उत्तर दयिा कि उनके पास ऐसा कोई उपहार नहीं है।

उन्होंने कहा, 'मेरे पास सोना नहीं है, क्योंकि मैंने इस दुनयिा के सभी खजाने को ठुकरा दयिा है। मैं चर्च के खजाने से कुछ भी कैसे दे सकता हूँ? लेकनि चर्च का चाँदी और सोना ईश्वर का है, और इसे गरीबों के अलावा कसिी को नहीं दयिा जाना चाहिए - यह एक ऐसा तथ्य है जसिसे क्रसिाफयिस स्वयं अच्छी तरह वाकफि होंगे।'

हालाँकि, जैसा कि इतहिासकार इवाग्रयिस आगे लखिते हैं[1921] , जब क्रसिाफयिस ने बाद में एक कीमती उपहार भेजने के लिए लगातार दबाव डालना शुरू कर दयिा, तो पैट्रआिर्क ने उन्हें वेदी से उठाकर कई सोने के बर्तन भेज दिए;

[1919] यह, बेशक, सेंट सोफयिा चर्च, द वजिडम ऑफ गॉड (ईश्वर की बुद्धि) - राजधानी के कैथेड्रल का संदर्भ है, जसिमें कॉन्स्टेंटनिोपल के पैट्रआिर्क का सहिासन स्थापति कयिा गया था।

[1920] यह *नकिफिोरस कैलस्टिोस* को भी संदर्भति करता है, जो कॉन्स्टेंटनिोपल में सेंट सोफयिा मठ के एक भकि्षु *थे,* जनिकी मृत्यु लगभग 1350 में हुई; उनकी *चर्च का इतहिास* बज़िantine सम्राट फोकास (611) की मृत्यु तक की अवधि को कवर करती है।

[1921] *एवाग्रयिस स्कॉलैस्टकिस,* 431 से 594 तक की अवधि को कवर करने वाले एक चर्च इतहिास के लेखक, 537 और 594 के बीच।

इस उपहार से पैट्रआिर्क क्रसिाफयिस को शर्मदिा करना चाहते थे और सोने के प्रतिउसके अतृप्त जुनून को उजागर करना चाहते थे।

क्रसिाफयिस आग-बबूला हो गया और उसने सम्राट को महाधर्माध्यक्ष के वरिुद्ध भड़काना शुरू कर दयिा, यह बताते हुए कि नव-नयिुक्त महाधर्माध्यक्ष उनके अधकिार का मज़ाक उड़ा रहे थे। लेकनि यह वशि्वासघाती दरबारी पैट्रआिर्क को अधकि नुकसान नहीं पहुँचा सका, क्योंकि धर्मपरायण सम्राज्ञी पल्केरयिा, जो सम्राट थयिोडोसयिस की बहन थीं और उस समय पूरे ग्रीक साम्राज्य पर शासन कर रही थीं, पैट्रआिर्क की रक्षक के रूप में खड़ी थीं और इस नरि्दोष और पवत्रि व्यक्तिकी रक्षा कर रही थीं। फरि क्रसिाफयिस ने धर्मपरायण पुलकेरयिा के खलिाफ भी साजशि रचनी शुरू कर दी, और चालाकी से रानी यूडोक्सयिा को उसके खलिाफ कर दयिा, जैसा कि संत पुलकेरयिा के जीवन में वस्तिार से वर्णति है। क्रसिाफयिस यहाँ तक सफल हो गया कि उसने सम्राट की बहन को शाही महल से नकिलवा दयिा और उसका अधकिार छीन लयिा। यह इस प्रकार हुआ: सम्राट थयिोडोसयिस, अपनी पत्नी यूडोक्सयिा और क्रसिाफयिस की सलाह पर, चाहते थे कि पैट्रआिर्क उनकी बहन को संन्यास की शपथ लेने के लिए मनाएं, इस उम्मीद में कि इस तरह उन्हें शाही पद से हटा दयिा जाएगा। इसलिए, सम्राट द्वारा गुप्त रूप से एक परषिद बुलाई गई, जसिमें परम पावन पैट्रआिर्क को भी आमंत्रति कयिा गया था; परषिद में, पैट्रआिर्क ने यह दखिावा कयिा कि वह सम्राट की इच्छा पूरी करेंगे, लेकनि मन ही मन वह इससे सहमत नहीं थे, क्योंकि वे पल्केरयिा को ग्रीक राज्य के प्रशासन से हटाने को अनुचति मानते थे; वह अपनी बुद्धि, ववेिक, पवत्रिता और पवत्रिता के लिए वख्यिात थीं, और उनके माता-पति के नधिन के बाद उनके बचपन में उन्होंने सम्राट की माँ का स्थान ले लयिा था, और, इसके अलावा, वह धर्मपरायणता की रक्षक और राज्य की एक बुद्धमिान शासक रही थीं। पल्केरयिा के प्रतिसम्मान और श्रद्धा के कारण, संत फ्लेवयिन ने उन्हें ज़ार की गुप्त परषिद में हुई सभी बातों की गुप्त रूप से जानकारी दी। तब धर्मनष्ठि राजकुमारी पुलकेरयिा ने रानी और क्रसिाफयिस के बीच की शत्रुता को भांपते हुए और अपने भाई के इरादों को देखकर, स्वयं राज्य का शासन त्याग दयिा, शाही कक्ष और शहर छोड़ दयिा, और एकांतवास में चली गईं। उसके बाद, चालाक क्रसिाफयिस ने एक अनुकूल क्षण की प्रतीक्षा करके, एक बार फरि परम पवत्रि पैट्रआिर्क फ्लावयिन के खलिाफ साजशि रचने लगा, उसने स्वयं राजा को उनके खलिाफ भड़काया और यह दावा कयिा कि उसने राजा का रहस्य बनाए रखने में वफिलता दखिाई है और वह राजा के बजाय पल्केरयिा का पक्ष ले रहा है। क्योंकि जल्द ही सभी को पता चल गया कि पैट्रआिर्क ने पल्केरयिा को राजा के इरादों के बारे में सूचति कर दयिा था। इस प्रकार, क्रसिाफयिस यह सुनश्चिति करने में सफल रहा कि सम्राट, पैट्रआिर्क फ्लावयिन से बहुत क्रोधति हो जाएँ।

उस समय, आर्चमिंड्राइट यूटकिस कॉन्स्टेंटनिोपल में रहते थे; उन्होंने अपनी धर्मनदिा करने वाली शक्षिाओं के लिए कुख्यातिप्राप्त की थी, क्योंकि उन्होंने हमारे प्रभु यीशु मसीह की दो प्रकृतयिों – दव्यि और मानवीय – को एक ही प्रकृतिमें मलिा दयिा था। यह यूटकियिस क्रसिाफयिस का आध्यात्मकि पति था, क्योंकि वह उसके पवत्रि बपतस्मिा में उसका धर्मपति था। कॉन्स्टेंटनिोपल में स्थानीय परषिद '1922 ' का आयोजन करने के बाद, परम पावन पैट्रआिर्क फ्लावयिन ने यूटकियिस को उसमें बुलाया ताकि वह सभी के सामने अपना धर्मोपदेश खुले तौर पर घोषति कर सके। लेकनि यूटकियिस ने परषिद में शामलि होने से इनकार कर दयिा, और अपनी अनचि्छा को सही ठहराने के लिए वभिन्नि बहाने बनाए: कभी-कभी उसने दावा कयिा कि वह अपनी मठ नहीं छोड़ सकता, मानो यह एक कब्र हो, क्योंकि उसने इस संबंध में एक व्रत लयिा था; तो कभी उसने कहा कि वह बूढ़ा और गंभीर रूप से बीमार है। फरि भी, परम पावन पैट्रआिर्क ने बार-बार आर्चमिंड्राइट्स को भेजा, पुजारयिों और डकिनों ने प्रेमपूर्वक उसे परषिद में आमंत्रति कयिा, उसका पश्चाताप कराने के लिए अपनी शक्तिका सर्वस्व प्रयास कयिा, और यह सुनश्चिति करने का प्रयत्न कयिा कि वह सार्वजनकि रूप से अपनी वधिर्मी शक्षिाओं का परत्यिाग करे और पवत्रि ऑर्थोडॉक्स चर्च में पुनःशामलि हो जाए, इस आशा में कि अन्य लोग, उसके उदाहरण का अनुसरण करते हुए, अपनी त्रुटयिों को त्याग देंगे और सच्चे धर्म की ओर लौटेंगे। बार-बार अनुरोध करने के बाद ही यूटकियिस परषिद में शामलि होने के लिए राज़ी हुआ, और तब भी अनचि्छा से। परषिद के लिए नकिलते समय, वह पहले शाही कक्षों में गया, राजा से सुरक्षा और सहायता की मांग करने। क्रसिाफयिस के माध्यम से, उसने राजा से वनिती की कि वह चुनंदिा गणमान्य व्यक्तयिों और कई सैनकिों को उसके साथ परषिद में भेजे। राजा ने पैट्रसियिन फ्लोरेन्टयिस और अन्य गणमान्य व्यक्तयिों को सैनकिों के साथ यूटकियिस के साथ भेज दयिा। इस प्रकार

1922 यह वर्ष 448 का था।

यूटकियिस सैनकिों और शाही गणमान्य व्यक्तयिों से घरि हुए कसिी प्रकार की लड़ाई के लिए नकिल पड़े। बाद वालों ने परषिद के पतिरों को संदेश भेजा:

'हम स्वयं परषिद में उपस्थति नहीं होंगे, और न ही हम यूटकिीस को उपस्थति होने देंगे, जब तक कि आप हमें पहले से यह वादा न करें कि आप उसे एक स्वतंत्र व्यक्ति के रूप में सभा से रहिा कर देंगे।'

परषिद में एकत्रति पादरयिों ने अपना वादा दे दयिा। जब यूटकिसि परषिद के सामने उपस्थति हुआ, तो पहले उसकी कतिाबें पढ़ी गईं—जो वधिर्मी सद्धिांतों से भरी थीं, जन्हिें उसने वभिन्नि मठों में भेजा था और जनिके माध्यम से उसने कई लोगों को अपनी हानकिारक भ्रांति में डाल दयिा था। तब, यूटकिस के लंबे-चौड़े टालमटोल के बाद, परषिद के धर्मगुरुओं ने उसे मौखकि रूप से अपना स्वीकारोक्ति करने के लिए मजबूर कयिा। यूटकिस ने कहा:

'मैं स्वीकार करता हूँ कि हमारे प्रभु यीशु मसीह में उनके अवतार से पहले दो स्वभाव थे, लेकनि अवतार के बाद उनमें एक ही स्वभाव था[1923] ।'

तब परषिद में उपस्थति धर्मगुरुओं ने उससे अपनी वधिर्मी शक्षिाओं का परत्यिाग करने और ऑर्थोडॉक्स सद्धिांतों को स्वीकार करने की मांग की, लेकनि उसने बत्तीस बशिपों, तेईस आर्चमिंड्राइट्स और बहुत सारे प्रेस्बटिरों और डीकनों की उपस्थतिि में पूरी परषिद के सामने ऐसा करने से इनकार कर दयिा। तदनन्तर, परम पावन फ्लावयिन और परषिद में उपस्थति सभी पवत्रि पतिरों ने यूटकिीस को पवत्रि मंत्रालय से बर्खास्त कर दयिा और नम्निलखिति फरमान तैयार कयिा: 'यूटकिस, जो पहले एक पुरोहति और आर्चमिंड्राइट था, ने अपने पछिले लेखों और अपने वर्तमान मौखकि स्वीकारोक्ति में यह दखिाया है कि वह वैलेन्टनिस और अपोलनिारसि के धर्मद्रोह का अनुयायी है[1924] ; इन वधिर्मीयों की त्रुटयिों का दृढ़ता से अनुसरण करते हुए, उसने हमारी उपदेशों की अवहेलना की है और, सच्चे धर्म-सद्धिान्त को अस्वीकार करते हुए, रूढ़वािदी सद्धिांतों का पालन करने से इनकार कर दयिा है। इसलिए, हम, उनके अंतमि वनिाश पर रोते और वलिाप करते हुए, हमारे प्रभु यीशु मसीह के नाम पर, जनिकी वह नदिा करता है, यह संकल्प लेते हैं कि उन्हें पुरोहतित्व, मठ पर उनके अधकिार और हमारी संगति से हटा दयिा जाए। यह बात उन सभी को बता दी जाए जो भवष्यि में उससे बातचीत करेंगे या उससे मलिेंगे; उन लोगों को पता हो कि वे अपने ऊपर दंड लाएँगे और बहष्किार के अधीन होंगे, क्योंकि वे उसकी गलतयिों से मुंह नहीं मोड़ा है।'

इस पत्र पर न्यू रोम के बशिप फ्लेवयिन ([1925]) के साथ-साथ अन्य सभी बशिपों और आर्चमिंड्राइट्स ने भी हस्ताक्षर कएि थे।

[1926]पदच्युत होने के बाद, यूटकियिस ने शाही दरबार में समर्थन तलाशा, क्योंकि प्रभावशाली क्रसिाफयिस हर मामले में उसकी बहुत मदद करता था। यह चालाक नपुंसक परम पावन फ्लावयिन के प्रति गहरी क्रोध और रोष रखता था; वह हर संभव तरीके से पवत्रि महाधर्माध्यक्ष को उनके सहिासन से हटाने का प्रयास करता था, क्योंकि ऐसा करके वह न केवल यूटचिस का बदला लेना चाहता था, बल्कि वशिेष रूप से पल्केरयिा के लिए परेशानी खड़ी करना चाहता था, जो संत फ्लावयिन का अत्यधकि सम्मान करती थी। राजा पर अपने प्रभाव का उपयोग करते हुए—जो इतना अधकि था कि

[1923] यूतखिसि के शब्दों का अर्थ स्पष्ट रूप से यह है कि *गर्भधारण के* क्षण में दो स्वभाव—दैवीय और मानवीय—प्रत्येक का स्वतंत्र अस्तत्वि था और वे पृथक थे; लेकनि यह केवल एक क्षण था; जब ईश्वर के अवतार में दव्यिता मानवता के साथ एक हो गई, तब मानवता दव्यिता में वलिीन हो गई और मसीह में एक ही स्वभाव बन गई।

[1924] *वैलेन्टनिस* दूसरी शताब्दी के पहले भाग में रहने वाला एक वधिर्मी था। उसने उद्धारकर्ता में देहधारी स्वभाव के अस्तत्वि को स्वीकार नहीं कयिा और इस प्रकार उसे एक पूर्ण, परपिूर्ण मानव नहीं माना। *अपोलीनारसि* चौथी शताब्दी में रहते थे। वैलेन्टनिस के वपिरीत, उन्होंने सखिाया कि मसीह का एक शरीर था, लेकनि उन्होंने उसमें दैवी स्वभाव के मानव स्वभाव के साथ मलिन के संबंध में एक बहुत ही अनूठा दृष्टकिोण रखा। यह मानते हुए कि एक पूर्ण मानव और एक पूर्ण दव्यिता एक ही व्यक्ति में एकजुट नहीं हो सकते, अपोलनिारसि ने यह सखिाया कि मसीह में मानव के केवल दो भाग थे - शरीर और आत्मा - जबकि तीसरा भाग - आत्मा - उनके भीतर दव्यि लोगोस (वचन) द्वारा दर्शाया गया था। इस प्रकार, उन्होंने भी मसीह को एक पूर्ण मानव नहीं माना। यूतखिसि के मत में वैलेन्टनिस और अपोलनिारसि दोनों के वचिारों का मेल मलिता है। चूंकि, उनकी शक्षिा के अनुसार, मसीह में मानवता दव्यिता में वलिीन हो जाती है, मसीह केवल परमेश्वर हैं, न कि ईश्वर-पुरुष; उनकी मानवता अब वास्तव में अस्तत्वि में नहीं है, बल्कि कुछ काल्पनकि है; और यह वैलेन्टनिस के दृष्टकिोण के काफी करीब आता है, जसिने सखिाया था कि मसीह का मानव शरीर वास्तवकि नहीं, बल्कि केवल मायाजाल था। दूसरी ओर, ईश्वरत्व द्वारा मानवता के अवशोषण का सद्धिांत अपोलनिारसि की इस शक्षिा से काफी मलिता-जुलता है कि मसीह में, मनुष्य के उच्चतम भाग - आत्मा - को दव्यि लोगोस (Divine Logos) द्वारा प्रतस्थिापति कर दयिा गया था।

[1925] कॉन्स्टेंटनिोपल को नई रोम के नाम से जाना जाता था।

[1926] 'कोमाइट्स' शब्द का अर्थ प्रांतों में उच्च-पदस्थ अधकिारयिों के परचिारकों (अनुचर) से था, और बाद में सम्राटों के परचिारकों से भी।

वह जो चाहे कर सकता था—क्रसिैफयिस ने अलेक्जेंड्रयिा के पैट्रआिर्क डायोस्कोरस को एक पत्र लखिा[1927] , जो हर तरह के बुरे काम करने में सक्षम, धोखे में अनुभवी और अपनी अधर्मीता के लिए प्रसद्धि व्यक्ति था; अपने पत्र में, क्रसिाफयिस ने फ्लैवयिन के खलिाफ डयिोस्कोरस को भड़काने की कोशशि की, यूटकिीस को उसकी सुरक्षा में सौंप दयिा, और उसे राजा के साथ महान कृपा का वादा कयिा। यह पत्र राजा के नाम पर लखिा गया था, जसिके नाम पर क्रसिाफयिस ने अलेक्जेंड्रयिा के पैट्रआिर्क को आदेश दयिा कि वे अपनी अधकिार-सीमा के अंतर्गत यथासंभव समान वचिारधारा वाले बशिपों को एकत्र करें, जल्द से जल्द एफ़सिुस के लिए प्रस्थान करें, और वहाँ वशि्वास के सद्धिांतों के संबंध में एक सार्वभौमकि परषिद बुलाएँ, क्योंकि फ्लावयिन चर्च में कुछ वधिर्मी वचिारों को ला रहे थे और वशि्वासी लोगों को भ्रमति कर रहे थे। क्रसिाफयिस ने लखिा, 'इसलिए, डयिोस्कोरस परषिद में पूरे मामले की जांच करे और फ्लावयिन को पदच्युत करे; और जहाँ तक यूटकिस का सवाल है, यदि वह नरि्दोष पाया जाता है, तो उसे परषिद की शपथ से मुक्त कर दयिा जाए और उसके पद पर बहाल कर दयिा जाए।' क्रसिाफयिस ने स्वयं सम्राज्ञी यूडोक्सयिा को यूटकिस के पक्ष में कर लयिा, ताकि वह भी फ्लावयिन के वरिुद्ध उस वधिर्मी की सहायता करे। इस बीच, डयिोस्कोरस, अपने साथ मगारओिन के बशिप , अपने वचिारों से सहमत दस से अधकि बशिपों और वर्सुमा नामक एक आर्कमिंड्राइट को लेकर, 1,000 भक्षिुओं के साथ एफ़सिुस पहुँचा। यहाँ, सम्राट के आदेश से, एक परषिद[1928] का आयोजन कयिा गया, जसिकी अध्यक्षता डयिोस्कोरस ने की, जसिमें वभिन्नि देशों से आए 128 बशिप शामलि हुए; परम पावन फ्लावयिन भी इस परषिद में पहुँचे, जन्हिें मुकदमे का सामना करने के लिए वहाँ बुलाया गया था। सम्राट—या, बल्कि, क्रसिाफयिस ने राजा की ओर से, सेना के साथ वहां मौजूद अन्य कोमेतास, एल्पडियिोस और अन्य कोमेतास को एक पत्र लखिा, जसिमें उन्हें नरि्देश दयिा गया कि वे उन बशिपों को परषिद में प्रवेश न दें, जन्हिोंने फ्लावयिन के साथ मलिकर कॉन्स्टेंटनिोपल में आयोजति स्थानीय परषिद में यूटकिस को दोषी ठहराया था और उसके पदच्युक्ति के फरमान पर हस्ताक्षर कए थे।

जब डयिोस्कोरस की अध्यक्षता में वह कपटी परषिद इकट्ठी हुई, तो यूटचिैस खड़ा हुआ और उसने एक वशि्वास-स्वीकृति प्रस्तुत की जो उसने स्वयं लखिी थी, जसिमें उसने अपने वधिर्मी सद्धिांत को अस्पष्ट अभव्यिक्तयिों द्वारा कुशलतापूर्वक छपिाकर रखा था। जैसे ही यूटकिस ने अपना धर्म-स्वीकार पढ़ना समाप्त कयिा, परषिद के प्रतभिागयिों के बीच कलह और हंगामा मच गया: कुछ ने यूटकिस का बचाव कयिा और कहा कि वह नरि्दोष था, क्योंकि उसने पवत्रि धर्म की सही-ठीक व्याख्या की थी, जबकि अन्य फ्लैवयिन के पक्ष में खड़े रहे; लेकनि बाद वाले संख्या में बहुत कम थे, क्योंकि सभी प्रकाश से अधकि अंधकार और सत्य से अधकि झूठ से प्रेम करने लगे थे, और वे स्वर्गीय राजा को खुश करने के बजाय सांसारकि राजा को खुश करना चाहते थे। सम्राट थयिोडोसयिस, यद्यपि धार्मकि थे, फरि भी एक मनुष्य के रूप में, अज्ञानता के कारण पाप कयिा, और उन्होंने यूटकिस, डयिोस्कोरस और क्रसिाफयिस की धूर्तता को नहीं समझा। और बाद वाले लगातार चालाकी से राजा की चापलूसी करते थे, और उसकी आत्मा को अपनी वशि्वासघाती जालों में फँसाने की कोशशि करते थे। अपनी अज्ञानता के कारण, राजा ने वधिर्मयिों को ऑर्थोडॉक्स माना और भोलेपन से झूठ को सच समझ लयिा, क्योंकि उसकी बुद्धमिान बहन, धन्य पल्केरयिा, अब उसके साथ नहीं थीं। इस प्रकार, लंबे मतभेदों और ववािदों के बाद, एफ़सिुस की अधर्मी परषिद में सच्ची ऑर्थोडॉक्सी के वरिोधी गुट की वजिय हुई। अवैध परषिद ने यह सद्धिांत घोषति कयिा कि मसीह में दो स्वभाव नहीं हैं, बल्कि एक है, और यूटकिस को नरि्दोष और एक सच्चा वशि्वासी घोषति कर दयिा, जबकि वास्तव में वह एक वधिर्मी था; वहीं ऑर्थोडॉक्स और धार्मकि पैट्रआिर्क फ्लेवयिन को परषिद द्वारा अन्यायपूर्ण रूप से एक वधिर्मी के रूप में दोषी ठहराया गया। उन्हें अपने बचाव में बोलने की अनुमति भी नहीं दी गई। अलेक्जेंड्रयिा के पैट्रआिर्क, डयिोस्कोरस, जन्हिोंने परषिद की अध्यक्षता की, ने उन्हें उनके पद से हटाए जाने, उनके पवत्रि पद, पुरोहतित्व और सभी आध्यात्मकि अधकिारों से वंचति कए जाने की घोषणा की, और इस संबंध में एक लखिति फरमान तैयार कयिा गया। इसके अलावा, इस अवैध परषिद में पवत्रि पैट्रआिर्क को नरि्वासन में भेजने का नरि्णय लयिा गया। तब इकोनयिम के बशिप ओनेसफिोरस ([1929]) खड़े हुए और फ्लैवयिन की बेगुनाही में वशि्वास रखने वाले अन्य बशिपों के साथ, डयिोस्कोरस के सामने घुटने टेककर उनसे वनिती करने लगे:

[1927] अलेक्जेंड्रयिा के पैट्रआिर्क डयिोस्कोरस ने 444 से 451 तक यह पद संभाला।

[1928] परषिद 8 अगस्त 449 को शुरू हुई। यह एफ़सिुस के उसी चर्च में आयोजति की गई थी जहाँ 18 साल पहले तीसरी सार्वभौमकि परषिद हुई थी।

[1929] इकोनयिम एशयिा माइनर के केंद्र में एक ऊँचे, उपजाऊ मैदान पर स्थति एक शहर है; यह कभी लाइकोनयिा की राजधानी था, जो एशयिा माइनर के मध्य भाग में स्थति एक प्रांत था।

'महान सम्माननीय पिता, अपने इरादे को पूरा न करें, क्योंकि फ्लावियन ने निश्चित रूप से ऐसा कुछ भी नहीं किया है जो पदच्युति का औचित्य सिद्ध करे; यदि उसे दंडित किया ही जाना है, तो उसे दंडित करें, लेकिन उसे पदच्युत न करें।'

दीओस्कोरोस सिंहासन से उठे और उसके सामने एक मंच पर खड़े होकर बोले:

'भले ही वे मेरी जीभ काट देने की धमकी दें, तब भी मैं इस निर्णय को नहीं बदलूँगा।'

तब डियोस्कोरस के एक करीबी सहयोगी, आर्चमिंड्राइट वरसुमा, ने ज़ोर से चिल्लाना शुरू कर दिया:

'जो कोई यह स्वीकार करता है कि मसीह में दो स्वभाव हैं, उसे दो टुकड़ों में काट दिया जाएगा।'

जब बिशपों ने डियोस्कोरस से फ्लैवियन पर हाथ न उठाने की विनती की, तो अध्यक्ष ने पूछा:

'कोमिट्स कहाँ हैं?'

और तुरंत ही एल्पिडियस के नेतृत्व में कोमाइट्स, जो सैनिकों की एक बड़ी सेना के साथ थे, चर्च में घुस आए और संत फ्लेवियन के लिए तैयार की गई बड़ी लोहे की ज़ंजीरों को लेकर आए; वरसुमा के भिक्षु भी सैनिकों के साथ-साथ अंदर आए। फिर बिशपों ने ज़ोर से घोषणा करना शुरू कर दिया:

'वर्सुमा एक डाकू है; उसने पूरे सीरिया को तबाह कर दिया है और अपने भिक्षुओं को हमारे खिलाफ लाया है। वर्सुमा एक डाकू है; वर्सुमा पर शाप!'

और वर्सुमा ने चिल्लाया:

'मसीही धर्मद्रोही फ्लावियन को मारो, उसे मारो!'

दुस्साहस के उन्माद में, दुष्ट लोगों ने संत पर टूट पड़े और उन्हें पीटना शुरू कर दिया, कुछ ने मुक्कों से, तो कुछ ने लाठियों से। यहाँ तक कि डायोस्कोरस खुद फ्लैवियन पर झपट पड़ा, उसे जमीन पर पटक दिया और पैरों तले कुचल दिया; उन्होंने उसे कुछ समय तक ऐसे ही पीटा, और फिर उस पर बेड़ियाँ डाल दीं, हालाँकि वह मुश्किल से ज़िंदा था। डायोस्कोरस ने बिशपों को फ्लैवियन के पदच्युत होने की घोषणा करने वाले एक दस्तावेज़ पर हस्ताक्षर करने के लिए मजबूर किया। डायोस्कोरस के समर्थकों ने तुरंत इस पर हस्ताक्षर कर दिए; लेकिन वे बिशप जिन्होंने अपनी आँखों के सामने हो रहे अन्याय और अराजकता को देखा, उन्होंने दस्तावेज़ पर हस्ताक्षर करने से इनकार कर दिया; फिर भी, चर्च के आसपास तैनात सशस्त्र सैनिकों ने उन्हें जाने नहीं दिया; जबकि विरसम के भिक्षु गुस्से से चिल्ला रहे थे और उनका अपमान कर रहे थे। और उन बिशपों को रात होने तक चर्च में ही रोका गया, जब तक कि वे धमकियों से डराकर अपनी इच्छा के विरुद्ध इस दस्तावेज़ पर हस्ताक्षर नहीं कर दिए। इस प्रकार इस अधर्मी सभा का अंत हुआ, जिसे इतिहास में 'डकैती परिषद' के नाम से जाना जाता है।

जहाँ तक मसीह के पवित्र स्वीकारकर्ता, फ्लावियन का सवाल है, क्रूर पिटाई सहने के तीसरे दिन, उन्होंने अपनी पवित्र आत्मा को प्रभु के हाथों में सौंप दिया, जिनके लिए उन्होंने हाबिल की तरह निर्दोष होकर पीड़ा सहन की थी; और इस प्रकार, निर्वासन के बजाय, वे स्वर्ग सिधार गए। अनातोलियस[1930] को कॉन्स्टेंटिनोपल के पैट्रआर्क के रूप में उनका उत्तराधिकारी चुना गया।

कुछ समय बाद, क्रिसाफियस के दुष्ट कर्म और विश्वासघात का खुलासा हो गया, जिसके कारण उसे अपमानपूर्वक शाही महल से निकाल दिया गया और एक अपमानजनक मृत्यु प्राप्त हुई; उसकी सहयोगी रानी यूडोक्सिया, थियोडोसियस के क्रोध से भयभीत होकर, यरूशलेम के लिए रवाना हो गई। इसके बाद, सम्राट ने स्वयं अपनी बहन संत पल्केरिया से विनम्रतापूर्वक और विस्तार से विलासिता में लौटने और राजकीय मामलों में उसकी सहायता जारी रखने का आग्रह किया; अपने भाई की इच्छा पूरी करते हुए, संत अपने एकांतवास से लौट आईं। शासन की बागडोर अपने हाथ में लेने के तुरंत बाद, संत पुलकेरिया ने ऑर्थोडॉक्स सिद्धांत के साथ-साथ ऑर्थोडॉक्सी के रक्षकों के सम्मान को बहाल करने का काम शुरू किया। उन्होंने मसीह के पवित्र कन्फेशर, फ्लेवियन के अवशेषों को बड़े सम्मान के साथ कॉन्स्टेंटिनोपल[1931] में स्थानांतरित किया। हालाँकि, डियोस्कोरस और यूटकिस, जिन्हें कालसीडोन[1932] में आयोजित चौथे सार्वभौमिक परिषद में दोषी ठहराया गया था, ने अपने ऊपर शाश्वत शाप लाया। और मसीह की कलीसिया, जिसके विरुद्ध नरक के द्वार भी प्रबल नहीं हो सके, फल-फूल उठी, मसीह की दो स्वभावों में उसकी महिमा करते हुए, जिसे बिना मिश्रण

[1930] संत अनातोलियस ने लगभग 449 से 458 तक कॉन्स्टेंटिनोपल में पैट्रआर्क का पद संभाला।

[1931] यह वर्ष 451 का था।

[1932] परिषद् 8 अक्टूबर 451 को शुरू हुई। इस समय तक थियोडोसियस की मृत्यु हो चुकी थी, और बिज़ान्टियम में शाही सिंहासन मार्सियन (शासनकाल 450–457) के पास था, जिन्होंने सम्राट बनने पर पुलकेरिया से विवाह कर लिया था

या वभिाजन के एक के रूप में जाना जाता है, और जो पति और पवत्रि आत्मा के साथ युगानुयुग प्रशंसति और ऊँचा कयि जाता है। आमीन।

सनिादा के बशिप, संत अगपटिस स्वीकारकर्ता की स्मृति

18 फरवरी को स्मरण कयि जाता है

आदरणीय अगपटिस का जन्म कैपाडोसयि[1933] में सम्राटों डायोक्लेटयिन और मैक्समियिन[1934] के शासनकाल के दौरान हुआ था। उनके माता-पति ईसाई थे। युवावस्था में ही, उन्होंने संन्यास का संकल्प लयि और अपने देश के एक मठ में प्रवेश कयि, जहाँ एक हजार से अधकि भक्षिु रहते थे। उनसे साधु जीवन के गुण सीखकर, आदरणीय शीघ्र ही प्रभु की आज्ञाओं के एक कुशल आचरणकर्ता बन गए। उन्होंने उपवास, जागरण और प्रार्थना में इतनी लगन से स्वयं को समर्पति कर दयि कि उन्होंने सभी की प्रशंसा अर्जति की, और अपने कठोर तप के लिए मठ के भीतर सार्वभौमकि सम्मान प्राप्त कयि। वे पेड़ की छाल से बने वस्त्र पहनते थे, अक्सर 80 दनिों तक रोटी के बजाय राख पर जीवति रहते थे, नींद त्याग देते थे, और मठ के सभी भक्षिुओं को अपना गुरु मानकर उन्हें वभिन्नि मठवासी कर्तव्यों के माध्यम से सेवा करने का प्रयास करते थे। ऐसे कर्मों के लिए, प्रभु ने रेवरेंड को चमत्कार करने की कृपा प्रदान की। प्रार्थना के माध्यम से, उन्होंने एक बार एक साँप को मार डाला और बाद में एक गंभीर बीमारी से पीड़ति एक युवती को ठीक कयि।

सम्राट लसिनियिस[1935] को जब यह पता चला कि आदरणीय अगापटिस में महान शारीरकि शक्ति थी, तो उन्होंने उन्हें मठ से ले जाकर उनकी इच्छा के वरिुद्ध अपने सैनकिों में भर्ती कर लयि। अपने सैन्य कर्तव्यों का पालन करते हुए, आदरणीय अगपटिस ने अपनी मठ की साधना को नहीं छोड़ा और ईश्वर ने उन्हें केवल अपनी उपस्थति से ही पीड़ादायक दौर्यों वाले रोगों को ठीक करने की क्षमता से सम्मानति कयि। इसके अलावा, उन्होंने चमत्कारकि रूप से न केवल लोगों, बल्कि घोड़ों, बैलों और अन्य जानवरों के वभिन्नि रोगों को भी ठीक कयि। उस समय, लसिनियिस ने ईसाइयों के खलिाफ एक उत्पीड़न शुरू कयि, और जब महमिामय शहीदों वक्टिर, डोरोथयिस, थयिोडुलस, एAgrippa[1936] और कई अन्य को उनकी आज्ञा पर मसीह में उनके वश्विास के लिए क्रूर यातनाओं का सामना करना पड़ा, तो आदरणीय अगपटिस उनमें गनि जाने की इच्छा रखने लगे। मसीह के लिए शहादत भोगने के बाद, पूजनीय अगपीटस भाले से घायल हो गए, लेकनि प्रभु ने उनके जीवन को बचाया ताकि वे बाद में कई लोगों को बचा सकें।

इसके तुरंत बाद, लकिनियिस की मृत्यु हो गई, और ईश्वर की इच्छा से, सम्राट कॉन्स्टेंटाइन महान ने पूरे रोमन साम्राज्य पर अधकिार कर लयि। सम्राट के सेवकों में एक ऐसा व्यक्ति था जसिे वह वशिेष रूप से पसंद करता था, और जो एक अशुद्ध आत्मा के वश में था। रेवरेन्ड अगापटिस के बारे में सुनकर, सम्राट ने उसे बुलाया, उस पीड़ति सेवक को उसके सामने लाया, और उससे उसे ठीक करने के लिए कहा। रेवरेन्ड अगापटिस ने प्रार्थना की, और सेवक तुरंत ठीक हो गया। सम्राट उस संत को पुरस्कृत करना चाहते थे, लेकनि संत ने कसिी अन्य पुरस्कार की मांग नहीं की, सवािय इसके कि उन्हें सैन्य सेवा छोड़ने और अपने प्रयि संन्यासी जीवन में लौटने की अनुमति दी जाए। सम्राट ने उनकी यह मांग मान ली, और अपनी सैन्य पदवी त्यागकर, वह उसी मठ में लौट आए जहाँ वह पहले एक भक्षिु के रूप में रहते थे।

इसके कुछ समय बाद, सनिादा के बशिप,[1937] , ने आदरणीय अगपटिस को अपनी उपस्थति में बुलाया और उनकी इच्छा के वरिुद्ध, उन्हें एक पुरोहति नयिुक्त कयि; इसके तुरंत बाद उनका नधिन हो गया।

तब, ईश्वर की इच्छा से और पुरोहति वर्ग तथा जनता की पसंद से, संत अगपटिस को सनिाडा का बशिप नयिुक्त कयि गया। बशिप का पद ग्रहण करने पर, परमेश्वर ने आदरणीय संत को भवषि्यद्रष्टि का वरदान प्रदान कयि। यह

[1933] कैपाडोसयि, रोमन साम्राज्य के भीतर पूर्वी एशयि माइनर का एक क्षेत्र, पूर्व में आर्मेनयि, उत्तर में पोंटस और दक्षणि में सलिसियि से सटा हुआ था।

[1934] सम्राट डायोक्लेटयिन (284–305) ने वशिाल रोमन साम्राज्य पर अधकि प्रभावी ढंग से शासन करने के लिए अपने शासन की शुरुआत में सह-शासकों को चुना, जनिमें 285 से आगे मैक्समियिन हर्क्यूलस भी शामलि थे।

[1935] सम्राट लकिनियिस, जो 311 में सम्राट गैलेरयिस के उत्तराधकिारी बने, रोमन साम्राज्य के पूर्वी भाग के शासक और कॉन्स्टेंटाइन महान के सह-शासक थे।

[1936] उनका पर्व दविस पूजनीय अगपटिस के समान ही मनाया जाता है।

[1937] सनिाडा शहर फ्राइजयि में स्थति था।

वरदान निम्नलिखित अवसरों पर प्रकट हुआ। एक महिला, नव-नियुक्त बिशप के बारे में सुनकर, एक दिन उनका आशीर्वाद लेने आई। जब वह संत के सामने आई, तो उन्होंने उसके बचपन से शुरू होकर उसके पूरे जीवन में जो कुछ भी उसके साथ हुआ था, वह सब कुछ उसे बता दिया; उन्होंने उसे मार्गदर्शन भी दिया, और वह ईश्वर-भरा जीवन जीने के दृढ़ संकल्प के साथ उनके पास से चली गई। बाद में, जब हरक्लेया के एक डीकन[1938] का नौकर आशीर्वाद लेने के लिए उनके पास आया, तो माननीय अगपटिस ने एक युवती के साथ यौन शोषण के लिए उसे बेनकाब कर दिया। भविष्य-दृष्टि के वरदान से युक्त, माननीय अगपटिस ने चमत्कार भी किए। उदाहरण के लिए, सिलिंड्रिया के बिशप[1939] एक बार उनके पास आए और उन्होंने बताया कि शहर के पास बहने वाली नदी सर्दियों के महीनों के दौरान इतनी बढ़ गई कि उसने खेतों में बाढ़ ला दी और फसलें बर्बाद कर दीं। तब रेवरेंड ने ईश्वर से प्रार्थना की, और नदी का बहाव दूसरी दिशा में मोड़ दिया गया। संत अगपटिस ने कई (उनके जीवन के वृत्तांत के अनुसार सौ से अधिक) अन्य चमत्कार किए, जिनमें उन्होंने मिर्गी से पीड़ित लोगों को एक ही शब्द से, अपने हाथ के स्पर्श से, और अपने शरीर से पड़ने वाली छाया से ठीक किया। अपना धर्मपरायण और ईश्वर-प्रसन्न जीवन पूरा करने के बाद, रेवरेंड फादर, अपनी वृद्धावस्था में, हमारे उद्धारकर्ता प्रभु यीशु मसीह में निद्रित हो गए[1940] ।

4 मार्च

19 फरवरी (पुराना संस्करण)

हमारे पूजनीय पिता दोसिथिस का जीवन, जो पूजनीय डोरोथियस के शिष्य थे।

19 फरवरी को स्मरणोत्सव

हमारे धन्य पिता डोरोथेयस, जो ईश्वर को प्रसन्न करने वाले जीवन के लिए उत्सुक थे और जिन्होंने मठवासी जीवन से प्रेम कर लिया था, बाबा सेरिड के सेनोबियम के लिए रवाना हुए[1941] , जहाँ उन्होंने कई महान तपस्वियों को मौन में परिश्रम करते हुए पाया; जिनमें दो महान वृद्ध विशेष रूप से प्रमुख थे: पवित्र वरसनोफियस और उनके शिष्य एवं साथी तपस्वी, बाबा जॉन, जिन्हें नबी कहा जाता था, क्योंकि उन्हें प्रभु से दूरदर्शिता का वरदान प्राप्त हुआ था। संत डोरोथेयस ने स्वयं को इन तपस्वियों के मार्गदर्शन में रख लिया और पूरे दिल से उनकी नकल करने लगे। पवित्र पिता सेरिड के साथ, आदरणीय डोरोथेयस अक्सर महान वरिष्ठ बार्सानुफियस से मिलने और उनसे बातचीत करने जाते थे, जबकि उन्हें भविष्यवाणी के वरदान से विशिष्ट, पिता जॉन की सेवा करने का सम्मान प्राप्त हुआ। इस प्रकार धन्य डोरोथेयस अब्बा सेरिद के मठ में रहे और आज्ञाकारिता का सद्गुण अपनाया। तब उपर्युक्त पवित्र पिताओं ने निर्णय लिया कि फादर डोरोथेयस एक अस्पताल स्थापित करें और स्वयं उसका प्रभार संभालें, क्योंकि जब भाइयों को बीमारी होती थी तो वे बहुत कष्ट सहते थे – उनकी देखभाल करने वाला कोई नहीं था। ईश्वर की मदद से, पूज्य ने अपने जन्मजात भाई की सहायता से अस्पताल का निर्माण किया, जो धार्मिक और संतों से प्रेम करने वाले थे, और उन्होंने संत डोरोथेयस को निर्माण के लिए आवश्यक धनराशि प्रदान की। उस समय से, बाबा डोरोथियस ने कुछ अन्य धर्मनिष्ठ भिक्षुओं के साथ मिलकर बीमारों और अजनबियों की सेवा की, इसे मठ के पिताओं द्वारा सौंपी गई एक जिम्मेदारी मानते हुए[1942] । एक दिन,

---

[1938] हरक्लेया का शहर बिथिनिया में यूक्सिन सागर के तट पर स्थित था, जिसे अब काला सागर कहा जाता है।

[1939] सिलिंड्रिया, या सेलेन का शहर, फ्रीजिया क्षेत्र में मींडर नदी के स्रोत पर स्थित था, जो एजियन सागर में बहती थी।

[1940] संत अगपटिस की मृत्यु चौथी शताब्दी में हुई थी।

[1941] *आदरणीय सेरिड* छठी शताब्दी में रहते थे और गाजा शहर के पास एक फिलिस्तीनी मठ के संस्थापक थे। उनका पर्व दिवस चीज़ शनिवार को मनाया जाता है। उसने जो मठ स्थापित किया था, वह एक प्रकार का सामुदायिक मठ था जिसमें भ्रातृगण न केवल रहते थे, बल्कि मठ से वस्त्र और इसी तरह की अन्य चीजें भी प्राप्त करते थे, जैसा कि मठाधीश द्वारा निर्देशित किया जाता था, जबकि, अपनी ओर से, वे अपने सभी श्रम और उसके फलों को मठ की सामान्य जरूरतों के लिए समर्पित करने के लिए बाध्य थे। इस प्रकार के मठों को 'किनोवियास' कहा जाता था (ग्रीक शब्द से जिसका अर्थ है 'सामूहिक')।

[1942] जिस प्रेम के साथ आदरणीय डोरोथियस ने यह कर्तव्य निभाया, वह उनके अपने शब्दों से स्पष्ट है: 'उस समय, मैं अभी-अभी एक गंभीर बीमारी से उबरा था। और इस प्रकार, जब यात्री शाम को पहुँचते, तो मैं उनके साथ शाम बिताता था - और उनमें ऊँट चालक भी होते थे - और मैं

मठाध्यक्ष सेरडि ने पूजनीय डोरोथयिस को बुलाया; मठाध्यक्ष के क्वार्टर में पहुँचने पर, डोरोथयिस ने वहाँ सैन्य पोशाक में एक बहुत ही युवा और सुंदर युवक को पाया: वह राजकुमार के कुछ सेवकों के साथ मठ में आया था, जिन्हें अबा सेरडि बहुत मान-सम्मान देते थे और जो अक्सर उनसे मिलने आते थे। जब फादर डोरोथयिस आए, तो अबा सेरडि ने उन्हें अकेले अंदर बुलाया और उनसे कहा:

'ये लोग इस युवक को यहाँ लाए हैं; वे कहते हैं कि वह हमारे मठ में शामिल होना चाहता है; लेकिन मुझे डर है कि वह किसी कुलीन व्यक्ति का बेटा है जिसने कुछ चोरी किया है या कोई बुरा काम किया है और अब छिपना चाहता है: अगर हम उसे स्वीकार कर लेते हैं, तो हम सीधे खतरे में पड़ जाएँगे।' मैं ऐसा इसलिए सोचता हूँ क्योंकि न तो उसके कपड़े और न ही उसका रूप-रंग यह बताता है कि वह तपस्या में अपना जीवन समर्पित करना चाहता है।

वह युवक वास्तव में एक गवर्नर का रिश्तेदार था; तब तक धन-संपत्ति में रहते और लाड़-प्यार भरी जीवनशैली का आदी होने के कारण, उसने पहले कभी परमेश्वर का वचन नहीं सुना था। उस गवर्नर के कुछ नौकर कभी-कभी उसकी उपस्थिति में पवित्र शहर यरूशलेम के बारे में बात करते थे, जिससे वह युवक पवित्र स्थानों को देखने के लिए लालायित हो गया और उसने गवर्नर से पवित्र शहर जाने की अनुमति देने के लिए कहा। इंकार करके उसे दुखी नहीं करना चाहकर, राज्यपाल ने अपने एक करीबी दोस्त की ओर मुड़कर, जो पवित्र स्थानों की यात्रा करने की योजना बना रहा था, उससे कहा:

'मेरा एक काम करो और इस युवक को अपने साथ ले चलो, ताकि वह पवित्र स्थानों को देख सके।'

यात्री उस युवक को अपने साथ ले गया, उसके साथ अत्यधिक सम्मान से पेश आया और उसकी सुविधा सुनिश्चित करने का पूरा ध्यान रखा।

जब यात्री पवित्र शहर पहुँचे और वहाँ के पवित्र स्थलों पर अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की, तो वे गेथ्सेमनी[1943] भी गए / वहाँ ईश्वर के अंतिम न्याय का एक चित्रण था, जिसमें नारकीय यातनाओं के विभिन्न रूप दिखाए गए थे। इस चित्रण को देखकर, उस युवक ने उसे ध्यान से देखा और उससे चकित हो गया। उसके पास ही, उसने बैंगनी वस्त्रों में सजी एक सदाचारी महिला को देखा; उसने उसे प्रत्येक शापित की यातनाओं के बारे में समझाना शुरू किया और समझाते हुए अपने कुछ शब्द भी जोड़े। जब वह उसकी कथा सुन रहा था, तो वह युवक मौन रहकर विस्मित हो गया, क्योंकि जैसा पहले ही उल्लेख किया गया था, उसने कभी ईश्वर का वचन नहीं सुना था और अंतिम न्याय के बारे में कुछ भी नहीं जानता था। अंततः महिला की ओर मुड़कर उसने उससे कहा:

'मैडम, इन यातनाओं से मुक्ति पाने के लिए क्या करना चाहिए?'

जवाब में, उसने उससे कहा:

'उपवास करो, मांस मत खाओ, जब भी हो सके प्रार्थना करो, और तुम इन यातनाओं से मुक्त हो जाओगे।'

उसे ये तीनों आज्ञाएँ देने के बाद, रक्तिम वस्त्र धारण किए हुए वह महिला दृष्टि से ओझल हो गई।

उस युवक ने पूरे इलाके में उसे खोजा, उसे खोजने की बहुत कोशिश की; वह सोचता था कि वह एक साधारण महिला थी, और उसे कहीं नहीं ढूंढ सका, क्योंकि वह स्वयं परम पवित्र और अति पवित्र कुँवारी मरियम, ईश्वर की माता थीं।

उस रहस्यमयी महिला की बातों ने उस युवक पर गहरा प्रभाव डाला: उसके हृदय में करुणा जागी, और उसने गेथ्सेमनी में देखी गई उस महिला द्वारा दिए गए तीन आज्ञाओं का कड़ाई से पालन करना शुरू कर दिया। वापसी की यात्रा पर, राज्यपाल के मित्र ने जब देखा कि वह युवक उपवास कर रहा था और मांस नहीं खा रहा था, तो वह राज्यपाल से डरकर दुखी होने लगा, क्योंकि वह जानता था कि राज्यपाल उस युवक से बहुत स्नेह करता था। उनके साथ मौजूद सैनिकों ने युवक में ऐसी संयम भावना देखकर उससे कहना शुरू कर दिया:

उनकी ज़रूरत का सामान तैयार करता था; कई बार, जब मैं सोने चला जाता, तो कोई और ज़रूरत पड़ जाती और मुझे जगाया जाता, और फिर प्रहर की बारी नज़दीक आ जाती।"

[1943] *गेथ्सेमनी* – किद्रोन घाटी के पार, जैतून पहाड़ के तल पर एक गाँव या स्थान, जहाँ एक बगीचा था जहाँ प्रभु अक्सर अपने शिष्यों के साथ एकांत में जाते थे, और जहाँ यहूदा ने उनका विश्वासघात किया था (मत्ती 26:36; यूहन्ना 18:1–3)। रूसी में गथ्शेमनी का अर्थ है: 'जैतून का स्थान', या 'जैतून से रस निकालने का प्रेस'। गेथ्सेमनी का बगीचा आज भी जैतून पहाड़ के पैर में - इसकी दक्षिणी ओर - दिखाया जाता है; बगीचे के भीतर, कलवारी में अपने दुख-कष्टों से पहले गेथ्सेमनी में प्रभु की प्रार्थना की जगह को इंगित किया गया है, और साथ ही परमेश्वर की माता की समाधि गुफा भी है, जहाँ अब उनकी कब्र है।

'प्रभु, आप वह कर रहे हैं जो संसार में रहने वाले लोग नहीं करते। ऐसी बातें तो केवल मठों में ही होती हैं। वहाँ जाइए, और वहाँ आप अपनी आत्मा को बचा लेंगे।'

ईश्वर के बारे में कुछ भी न जानते और मठ क्या होता है, इसका कोई अंदाज़ा न होने के कारण, उस युवक ने उत्तर दिया:

'मुझे ले चलो और किसी भी मठ में पहुँचा दो। मुझे खुद नहीं पता कि कहाँ जाना है।'

उस युवक के साथ आए कुछ सैनिकों ने अबा सेरिदि का विशेष सम्मान किया। इसीलिए वे उस युवक के साथ मिलकर उनके मठ में आए।

मठाधीश ने युवा से बात करने और यह पता लगाने के लिए कि वह कौन है, आदरणीय डोरोथियस को भेजा। आदरणीय डोरोथियस के सभी प्रश्नों का युवा ने एक ही उत्तर दिया:

'मैं बचाया जाना चाहता हूँ।'

फिर डोरोथेयस मठाध्यक्ष के पास गए और उनसे कहा:

'यदि आप उसे स्वीकार करना चाहते हैं, तो बिना किसी भय के स्वीकार करें। उससे कोई बुराई की उम्मीद नहीं की जा सकती।'

मठाध्यक्ष ने उत्तर दिया:

'फादर, उस पर दया करें और उसे आश्रय दें, ताकि वह आपके मार्गदर्शन में मोक्ष प्राप्त कर सके।'

लेकिन विनम्र भिक्षु ने यह कहते हुए मना कर दिया:

'मैं उसे आश्रय नहीं दे सकता, क्योंकि यह मेरी शक्ति से परे है; मैं उसे मोक्ष के मार्ग पर मार्गदर्शन नहीं कर सकता।'

इस पर मठाधीश ने उत्तर दिया:

'मुझे आपकी और आप सभी के मोक्ष की चिंता है; फिर भी आप एक युवक के मोक्ष की चिंता करने को तैयार नहीं हैं।'

'यदि आप यही चाहते हैं, पिताजी,' डोरोथेयस ने कहा, 'तो आइए हम महान वरिष्ठ बार्सानुफियस की सलाह लें।'

मठाधीश ने उत्तर दिया, 'ठीक है, मैं उसे बता दूँगा।'

बार्सानुफीयस के पास जाकर, मठाधीश ने उन्हें वह सब कुछ बताया जो हुआ था। फिर संत बार्सानुफीयस ने डोरोथेयस से कहा:

'इस लड़के को अपने यहाँ रख लो, क्योंकि प्रभु तुम्हारे द्वारा उसे बचाने में प्रसन्न हैं।'

इन शब्दों के बाद, धन्य डोरोथियस ने उस युवक का बड़ी खुशी से स्वागत किया और उसे अपने साथ चिकित्सालय में ठहराया। उस युवक का नाम डोसफिउस था। जब दोपहर के भोजन का समय हुआ, तो बाबा डोरोथियस ने डोसफिउस से कहा:

'जाकर कुछ खा लो; बस मुझे बताना कि तुमने कितना खाना खाया है।'

वापस आकर, दोसफियिस ने कहा:

'मैंने एक रोटी और आधी रोटी खाई, और हर रोटी का वजन चार पाउंड था।'

डोरोथियस ने उससे पूछा:

'क्या तुम्हारे लिए इतना काफी है?'

युवक ने उत्तर दिया:

'हाँ, मेरे स्वामी, मेरे लिए इतना ही काफी है।'

'और क्या तुम्हें भूख नहीं लगी?' डोरोथियस ने पूछा।

'नहीं,' दोसफिई ने उत्तर दिया।

'अगली बार,' अब्बा डोरोथेउस ने कहा, 'तुम एक रोटी और एक चौथाई खाओगे, और बची हुई चौथाई को दो हिस्सों में बाँटकर उनमें से एक भी खाओगे।'

अगली बार दोसफिई ने ठीक वैसा ही किया।

"क्या तुम्हें भूख लगी है?" डोरोथियस ने पूछा।

'हाँ, मुझे थोड़ी भूख लग रही है,' दोसफिई ने जवाब दिया। कुछ दिनों बाद, धन्य डोरोथियस ने फिर से उससे पूछा:

'क्या तुम्हें भूख लग रही है, मेरे बच्चे?'

उस युवक ने उत्तर दिया:

'नहीं, मेरे स्वामी, आपकी प्रार्थनाओं की बदौलत मैं बहुत अच्छा महसूस कर रहा हूँ।'

'अब से, केवल रोटी खाओ और किसी दूसरी चीज़ का आधा चौथाई हिस्सा।'

दोसिथेई ने ठीक वैसा ही किया। कुछ दिनों बाद, रेवरेंड डोरोथियस ने उससे फिर पूछा:

– क्या तुम्हें अब भूख नहीं लग रही, मेरे बेटे?

'नहीं, मैं पूरी तरह तृप्त हूँ।'

'इसे बाँट दो,' संत डोरोथियस ने कहा, 'और बाकी एक चौथाई को दो हिस्सों में बाँट दो; तुम उनमें से एक खा सकते हो और दूसरे को रख सकते हो।'

दोसथिउस ने अपने गुरु की बात मानी। धीरे-धीरे, ईश्वर की मदद से, दोसथिउस 6 पाउंड के बजाय केवल 8 लॉट खाने लगा, क्योंकि, सभी चीजों की तरह, भोजन के मामले में आदत महत्वपूर्ण है: हर कोई उतनी मात्रा में खाता है जिसकी वह आदत डाल चुका होता है।

धन्य डोसथियस हर काम चुपचाप और नम्रता से करते थे; वे अस्पताल में बीमारों की देखभाल करते थे, और हर कोई उनकी देखभाल के लिए उनका आभार व्यक्त करता था, क्योंकि वे हर चीज़ को स्वच्छ रखने का पूरा ध्यान रखते थे। हालाँकि, यदि थिकान के कारण वह किसी मरीज से गुस्से में कुछ कह देता, तो वह तुरंत अस्पताल छोड़ देता, भंडारगृह में चला जाता और वहाँ रोता। ऐसे अवसरों पर अस्पताल के अन्य परिचारक उसे सांत्वना देने की कोशिश करते थे, लेकिन उनकी कोशिशें व्यर्थ जाती थीं: डोसीफेई अपने प्रति कठोर ही रहता था। फिर वे फादर डोरोथियस के पास जाते और कहते:

'कृपा करें, फादर, पता लगाएँ कि भाई डोसीफेई क्यों रो रहे हैं; हम नहीं जानते, और हम उन्हें सांत्वना नहीं दे सकते।'

आदरणीय डोरोथियस अंदर जाते और अपने शिष्य को फर्श पर बैठे-बैठे रोते हुए पाते। वे उससे पूछते:

'तुम्हें क्या हुआ है, दोसिथेउस? तुम क्यों रो रहे हो?'

इस पर दोसिथेयस ने उत्तर दिया:

'मुझे क्षमा करें, पिताजी; क्रोध में मैंने अपने भाई से कठोरता से बात की।'

तब अबा डोरोथियस ने उससे कहा:

'डोसिथियस, तुम क्यों गुस्से में हो? तुम अपने भाई से गुस्से में बात करने की अनुमति खुद को कैसे देते हो? क्या तुम नहीं जानते कि उसे अपमानित करके, तुम मसीह का अपमान कर रहे हो?'

डोसिथियस ने सिर झुका लिया और कुछ नहीं कहा। जब डोरोथियस ने उससे कहा:

'ईश्वर तुम्हें क्षमा कर देगा; उठो, और आज से हम तुम्हारे सुधार की शुरुआत करें, हम भलाई करने के लिए अपने उत्साह को दोगुना कर दें, और ईश्वर हमारी मदद करेगा।'

तब डोसिथेउस उठता और खुशी-खुशी अपने काम में लग जाता, मानो उसे ईश्वर से क्षमा मिल गई हो। अस्पताल में रहने वालों को जल्द ही डोसिथेउस की इस आदत का पता चल गया, और जब वे उसे रोते हुए देखते, तो कहते:

'डोसिथियस के साथ कुछ हुआ है; उसने किसी तरह का पाप किया है।'

और फिर वे धन्य डोरोथियस की ओर मुड़ते:

'फादर, गोदाम में जाओ; वहाँ तुम्हारे लिए काम है।'

जब डोरोथियस अंदर गए और अपने शिष्य को रोते हुए देखा, तो उन्हें एहसास हुआ कि डोसथियस ने एक बार फिर किसी से कठोर शब्द कहे थे, और उन्होंने उससे कहा:

– दोसिथेई, तुम्हें क्या हो गया है? क्या तुमने सचमुच फिर से ईश्वर को दुख पहुँचाया है? क्या तुम सचमुच एक बार फिर क्रोध के आगे झुक गए हो? क्या तुम सचमुच अपने सुधार के संकल्प को भूल गए हो?

जब पूजनीय डोरोथियस देखते कि उनका शिष्य पहले ही बहुत रो चुका है, तो वे उससे कहते:

'उठो, डोसिथेउस, और ईश्वर तुम्हें क्षमा करें; अपनी ओर से, सुधार करने का एक और प्रयास करो।'

इन शब्दों से सांत्वना पाकर, दोसफिउस ने अपना दुख एक तरफ रख दिया और बिस्तर लगाने गया, जिसे उसने अब नम्रता से किया। अपने गुरु, धन्य दोसफिउस के सामने अपने सभी कर्मों और विचारों का लगातार इकरार करते हुए, बीमारों के लिए नरम बिस्तर बनाते समय, वह अक्सर गुजरते हुए डोरोथेउस से कहता था:

'पिताजी, मेरा अंतरात्मा कहता है कि मैं बिस्तर अच्छी तरह से बनाता हूँ।'

इस पर अब्बा डोरोथेउस उत्तर देते:

'यह एक अजीब बात है, दोसफिउस: तुम एक अच्छे सेवक और एक उत्कृष्ट बिस्तर बनाने वाले तो बन रहे हो, लेकिन तुम एक अच्छे संन्यासी नहीं बन रहे हो।'

आदरणीय डोरोथेयस ने कभी भी डोसफिेयस को किसी भी चीज़ के प्रति लगाव विकसित करने की अनुमति नहीं दी, और शिष्य अपने गुरु के सभी निर्देशों का पालन करता था। जब भी दोसफिेयस को कपड़ों की ज़रूरत होती, तो अबा डोरोथेयस अपने शिष्य को अपने कपड़े खुद सिलने का निर्देश देते और उसे कपड़ा देते थे। धन्य दोसफिेयस अलग हटकर इस काम को बड़ी सावधानी से करते थे। जब वे अपना काम पूरा कर लेते, तो अबा डोरोथेयस उन्हें बुलाते और कहते:

'क्या तुमने अपना काम पूरा कर लिया, डोसथियिस?'

'हाँ, मेरे पिता, मैंने कपड़े अच्छी तरह सिल दिए हैं,' डोसथियिस ने उत्तर दिया।

'जाओ और उन्हें ऐसे-वैसे भाई (वे उसका नाम बताते थे) या किसी बीमार व्यक्ति को दे दो।'

दोसफिेउस ने अपने गुरु के इस निर्देश को खुशी-खुशी पूरा किया, और धन्य डोरोथियिस उसे सिलने के लिए एक और वस्त्र दे देते; जब उसने वह भी पूरा कर लिया, तो उसके गुरु उससे कहते:

'इसे अमुक भाई को दे दो!'

और डोसफिेउस उन्हें दे देता था। उसने कभी इस बारे में शिकायत नहीं की, न ही कहा, 'वह मेरे कपड़े ले रहा है और किसी और को दे रहा है,' बल्कि उत्साह और प्रेम के साथ उसने अपने गुरु द्वारा दिए गए सभी आदेशों का पालन किया।

1944एक दिन, मठ के कारीगर ने लोहार से एक अच्छी, तेज छुरी लाई। दोसथिेउस ने उसे लिया, अबा डोरोथेउस के पास ले गया और कहा:

'फादर, निर्माण करने वाले भाई यह चाकू लाए हैं; मैंने इसे अस्पताल में रखने के लिए ले लिया है, यदि आप अनुमति दें।'

लेकिन धन्य डोरोथियिस हमेशा चिकित्सालय में केवल नमि्न-गुणवत्ता वाली वस्तुएँ ही रखते थे; इसलिए, उन्होंने डोसथियिस से कहा:

'मुझे दिखाओ; मैं देखूँगा कि यह अच्छी है या नहीं।' डोसएिथियिस ने चाकू अपने गुरु को दे दिया। हालाँकि संत डोरोथियिस देख सकते थे कि चाकू अच्छी थी, लेकिन वह नहीं चाहते थे कि उनका शिष्य किसी भी भौतिक वस्तु से जुड़ जाए, इसलिए उन्होंने उससे कहा:

'क्या यही तुम चाहते हो, डोसफिेउस—इस छुरी का दास बनना? और क्या तुम्हें डर नहीं लगता कि यह छुरी, ईश्वर के बजाय, तुम पर अधिकार कर लेगी?'

ये शब्द सुनकर, दोसफिेयस चुप हो गया। उसे पर्याप्त लज्जित करने के बाद, पूजनीय डोरोथियिस ने अपने शिष्य से कहा:

'जाओ और इस चाकू को कहीं रख दो, और इसे मत छूना।'

धन्य दोसथिेउस ने इस आज्ञा का वफादारी से पालन किया; उसने इस चाकू को किसी और को देने की हिम्मत भी नहीं की, भले ही दूसरे नौकर इसे ले लेते थे: उसने अकेले ही इसे नहीं छुआ; उसने एक बार भी ऐसा सोचने की हिम्मत नहीं की:

'ऐसा क्यों है कि मुझे ही इसे लेने से मना किया गया है; क्या मैं दूसरों के बराबर नहीं हूँ?'

आदरणीय डोसथियिस ने कभी भी ऐसे विचारों को मन में नहीं लाया, बल्कि अपने गुरु द्वारा दिए गए हर आदेश को हमेशा खुशी-खुशी पूरा करते थे।

1944 'निर्माता' – जिसे अन्यथा प्रबंधक, गृहस्वामी, कोषाध्यक्ष, प्रबंधक, या चेंबरलेन के रूप में भी जाना जाता है। यह उस उपाधि का नाम था जो मठ के मामलों का प्रबंधन करने वाले भिक्षुओं को दी जाती थी!

यहाँ तक कि जब आबा डोरोथियस ने उन्हें डाँटते हुए रूपक रूप में बात कही, तब भी संत डोसथियिस अपने गुरु की इच्छाओं को समझने और उन्हें पूरा करने का प्रयास करते थे। इस प्रकार, उनके जीवन में निम्नलिखित घटना घटी। शुरुआत में, दोसफिेउस बहुत ज़ोर से बोलने की आदत रखता था। धन्य डोरोथियस, यह चाहकर कि वह धीरे बोले, बोले:

'दोसफिेउस, हमें एक कप बिना मिलावट की शराब चाहिए। जाओ और एक पात्र ले आओ!'

वह तुरंत चल दिया और एक भरा हुआ प्याला शराब और कुछ रोटी ले आया। जब उसने ये अपने गुरु को भेंट किए, तो उसने, जैसा कि रिवाज था, उनका आशीर्वाद पाने की आशा की। यह देखकर डोरोथियस को आश्चर्य हुआ और उन्होंने उससे पूछा:

'डोसफियिस, तुम क्या करने की कोशशि कर रहे हो?'

– पतिाजी, – उनके शष्यि ने उत्तर दिया, – आपने मुझे बिना मिलावट की शराब का पात्र लाने का आदेश दिया था; अत; मुझे अपना आशीर्वाद दीजिए।

अब्बा डोरोथियस ने उत्तर दिया, 'हे मूर्ख, तुम गोथों[1945] की तरह बहुत ज़ोर से बोल रहे हो, जब वे शराब के नशे में होते हैं। इसीलिए मैंने तुमसे कहा था: शराब का प्याला ले लो, क्योंकि तुम गोथों की ही तरह ज़ोर से चिल्ला रहे हो।'

संत डोसफिेउस ने झुककर जो कुछ लाया था, उसे वापस रख दिया, और तब से वह धीरे-धीरे बोलने लगा।

एक अवसर पर, वह आदरणीय डोरोथियस के पास गया और उनसे पवित्र शास्त्र के एक अंश की व्याख्या करने का अनुरोध किया – क्योंकि, अपने मन को प्रबुद्ध करने के लिए उत्साही होकर, उसने पवित्र शास्त्र के कुछ अंशों पर चिंतन करना शुरू कर दिया था।

लेकिन उनके गुरु नहीं चाहते थे कि दोसफिेउस धर्मग्रंथों का अध्ययन करे, क्योंकि उन्हें डर था कि वह अहंकारी हो जाएगा और अपनी आध्यात्मिक गरीबी के प्रति विनिम्र जागरूकता बनाए रखने में असफल रहेगा। इसलिए, अपने शष्यि के प्रश्न के उत्तर में, पूजनीय डोरोथियस ने उत्तर दिया:

'मुझे नहीं पता।'

एक अन्य अवसर पर, जब डोसफिेउस एक बार फिर अपने गुरु के पास आए और उन्हें पवित्र शास्त्र के एक अन्य अंश के बारे में पूछा, तो उन्हें यह उत्तर मिला:

'मठाधीश के पास जाओ और उनसे इसके बारे में पूछो; मैं तुम्हें इसका स्पष्टीकरण नहीं दे सकता।'

अपने गुरु के आदेश का पालन करते हुए, धन्य दोसफिेयस मठाध्यक्ष के पास गए। लेकिन बाबा डोरोथेयस ने मठाध्यक्ष को चेतावनी दी थी:

– 'यदि दोसथिेउस आपके पास आए, फादर, और पवित्र धर्मग्रंथ के विभिन्न अंशों के बारे में पूछना शुरू करे, तो उस पर प्रहार करें।'

जब दोसफिेउस मठाधीश के पास आए और उनसे पवित्र धर्मग्रंथ के उन अंशों की व्याख्या करने के लिए कहा जिन्हें वे नहीं समझते थे, तो मठाधीश ने उन्हें मारना शुरू कर दिया, यह कहते हुए:

'अगर तुम्हें कुछ भी समझ नहीं आता है तो तुम चुप क्यों नहीं रहते? तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई यह पूछने की? तुम्हें धर्मग्रंथों की परीक्षा लेने निकलने के बजाय अपनी शुद्धता की अधिक चिंता नहीं करनी चाहिए?'

फिर, गालों पर दो और बार मारने के बाद, मठाधीश ने उसे जाने दिया। फादर डोरोथियस के पास लौटकर, उस सम्मानित भिक्षु ने उन्हें अपने गाल दिखाए, जो प्रहारों से लाल हो गए थे, और कहा:

'मठाधीश ने मुझे पीठ पर भी मारा,' और इससे ज़्यादा कुछ नहीं कहा। उसने अपने गुरु को न तो फटकारा, और न ही उनसे कहा, 'आपने मुझे सही क्यों नहीं बताया? आपने मुझे मठाधीश के पास क्यों भेजा?' नहीं, धन्य दोसफिेउस ने ऐसा कुछ नहीं कहा; उसने अपने गुरु के हर आदेश को विश्वास के साथ स्वीकार किया और बिना किसी सवाल के तुरंत उनका पालन किया। जब बाबा डोरोथेयस अपने शष्यि से उसके विचारों के बारे में पूछते, तो दोसफिेउस उन्हें अपने गुरु के साथ साझा करता और विनिम्रता से उनकी सभी आज्ञाओं को सुनता। ऐसा करते हुए, उसने अपने गुरु की आज्ञाओं का पालन इतनी सटीकता से करने का प्रयास किया कि संत डोरोथेयस को कभी भी अपनी आज्ञाएँ दोहराने की आवश्यकता नहीं पड़ी। मठ में अपने संक्षिप्त प्रवास के दौरान उन्होंने हमेशा ऐसा ही व्यवहार किया, क्योंकि वे वहाँ केवल लगभग पाँच

[1945] गोथ जर्मनिक मूल के अर्ध-घुमंतू लोग थे जो मूल रूप से बाल्टिक सागर के दक्षिण-पूर्व में रहते थे। महान प्रवासन (5वीं शताब्दी) के दौरान, गोथ दक्षिण की ओर फैले और कुछ समय के लिए उन्होंने बीजान्टिन साम्राज्य के लिए खतरा पैदा कर दिया। उस समय, और बाद में भी, कई गोथिक भाड़े के सैनिक ग्रीक सम्राट की सेनाओं में सेवा कर रहे थे, और इसलिए यह लोग फिलिस्तीन में भी जाने जाते थे।

साल ही रहे। इस प्रकार उन्होंने अपना जीवन समाप्त किया, वे कभी भी अपने गुरु और पिता की आज्ञा से विमुख नहीं हुए, उन्होंने अपनी इच्छा का पूर्णतःत्याग कर दिया था और किसी भी चीज़ से कोई लगाव नहीं रखा।

आदरणीय डोसफिथियस अपनी सेहत का जरा भी ध्यान नहीं रखते थे। जब वह इतनी गंभीर रूप से बीमार पड़ गए कि उन्हें खून की खांसी होने लगी, तो उन्होंने सुना कि अधपके अंडे उनकी हालत में सुधार ला सकते हैं। आदरणीय डोरोथियस, जिन्होंने अपने शिष्य को उसकी बीमारी से ठीक करने के लिए हर संभव प्रयास किया था, ने भी इस उपाय के बारे में सुना था, लेकिन उस समय वह इसे भूल गए थे। और इसलिए, एक दिन, संत डोसितिथियस ने अपने गुरु से कहा:

'फादर, मैं आपको कुछ बताना चाहता हूँ। मुझे अपनी बीमारी का एक इलाज पता है, लेकिन मैं चाहता हूँ कि आप मुझे इसका उपयोग करने से मना करें, क्योंकि मुझे डर है कि अन्यथा मेरे मन में ठीक होने की व्यर्थ आशाओं से मेरी आत्मा परेशान हो जाएगी।'

"मुझसे बताओ, मेरे बच्चे, यह उपाय क्या है?" पूज्य डोरोथियस ने पूछा।

'मुझसे पहले ही वादा कर दें कि आप मुझे यह नहीं देंगे,' धन्य दोसफिउस ने फादर डोरोथियस से एक बार फिर विनती की।

'ठीक है,' गुरु ने उत्तर दिया, 'मैं तुम्हारी इच्छा पूरी करूँगा।'

तब उस बीमार ने उससे कहा:

'मैंने कुछ लोगों से सुना है कि अधपके अंडे मेरे जैसे मरीज़ों के लिए फायदेमंद होते हैं, लेकिन मैं आपसे विनती करता हूँ कि मुझे उन्हें खाने का आदेश न दें, कहीं ऐसा न हो कि ठीक होने की झूठी उम्मीदें मुझे परेशान करने लगें।'

'ठीक है, मेरे बेटे, मैं तुम्हें जबरदस्ती नहीं करूँगा, जैसा कि तुमने खुद मुझसे कहा है। बस दुखी मत होना या हतोत्साहित मत होना।'

और वास्तव में, नरम उबले अंडों के बजाय, रेवरेंड डोरोथियस ने अपने शिष्य को उसकी बीमारी में मदद के लिए अन्य उपचार बताए। इस प्रकार, गंभीर बीमारी से पीड़ित होने पर भी, संत डोसफियिस ने अपनी इच्छा का त्याग करने का प्रयास किया।

आदरणीय पादरी हमेशा ईश्वर को अपने विचारों और अपने होठों पर रखते थे। उनके आध्यात्मिक पिता ने उन्हें लगातार दोहराने की सलाह दी: 'हे प्रभु यीशु मसीह, मेरे परमेश्वर, मुझ पर दया करें', और 'हे परमेश्वर के पुत्र, मेरी सहायता करें'। संत डोसफियिस के होंठों पर हमेशा ये प्रार्थनाएँ रहती थीं। जब उनकी बीमारी बढ़ गई, तो फादर डोरोथियस ने उनसे कहा:

'डोसफियिस, अपनी प्रार्थनाएँ मत भूलना और अपनी विनतियों को दोगुना कर देना!'

'मेरे लिए ईश्वर से प्रार्थना करें, फादर,' पीड़ित ने उत्तर दिया। जब उसकी बीमारी और भी बिगड़ गई, तो डोरोथियस ने पूछा:

'हाँ, फादर, मैं पहले की तरह ही अपनी प्रार्थनाएँ कर रहा हूँ।'

'हाँ, फादर, आपकी प्रार्थनाओं की बदौलत, मैंने इस अभ्यास को नहीं छोड़ा है।' जब उनकी बीमारी और भी गंभीर हो गई, इतना कि दोसफियेस अब अकेले नहीं उठ सकते थे और उन्हें स्ट्रेचर पर ले जाया जाना पड़ता था, तो पूजनीय डोरोथियस ने उनसे पूछा:

'क्या तुम अभी भी प्रार्थना कर रहे हो, डोसफियेस?'

'मुझे क्षमा करें, पिताजी,' बीमार व्यक्ति ने उत्तर दिया, 'मैं अब प्रार्थना नहीं कर सकता।'

"तो प्रार्थना को अलग रख दो," डोरोथियस ने उत्तर दिया, "लेकिन बस ईश्वर के नाम का स्मरण करो और उसे सदैव अपनी आँखों के सामने रखो।"

संत डोसफिउस का कष्ट और भी बढ़ गया, और एक दिन उन्होंने वृद्ध वर्सोनोफियस से यह निवेदन किया:

'मुझे जाने दीजिए, पिताजी; मैं अब और जीवित नहीं रह सकता।'

संत बार्सानुफियस ने उन्हें संदेश भेजा:

'धैर्य रखो, मेरे बच्चे, क्योंकि ईश्वर की दया दूर नहीं है।'

जब संत डोसीथियस को गंभीर रूप से बीमार देखा, तो परम पूज्य डोरोथियस को इस पर गहरा दुख हुआ। कुछ दिनों बाद, उस बीमार व्यक्ति ने संत बार्सानुफियस को एक बार फिर संदेश भेजा:

'हे प्रभु, मैं अब और जीवित नहीं रह सकता।'

इस पर, महान बर्सानुफीयस ने उत्तर दिया:

'शांति से जाओ, परम पवित्र त्रिमूर्ति के समक्ष खड़े होओ और सर्वशक्तिमान के सिंहासन के सामने हमारे लिए प्रार्थना करो।'

महान बार्सानुफियस के ये वचन सुनकर, भिक्षुओं ने बड़बड़ाना शुरू कर दिया; उन्होंने एक-दूसरे से कहा:

'डोसितिउस ने कौन सा महान कार्य किया है? उसका कारनामा क्या था? उसे महान वृद्ध से ऐसा उत्तर क्यों मिला?'

उन्होंने वास्तव में पूजनीय डोसफिउस का कोई विशेष चमत्कार नहीं देखा था; उन्होंने उसे हर दूसरे दिन ही भोजन करते नहीं देखा था, जैसा कि वहाँ के कुछ भिक्षु करते थे; उन्होंने डोसफिउस को किसी और से पहले चर्च आते हुए नहीं देखा था, और न ही उन्होंने उसे कोई विशेष संयम का पालन करते देखा था। वे सभी देखते थे कि डोसथियिस अपना भोजन कैसे करता था, भले ही वह कम मात्रा में ही क्यों न हो। वे जानते थे कि संत डोसथियिस कभी-कभी बीमारों को बाँटने के बाद बचे हुए रस, या मछली के सिरों, या इसी तरह के अन्य भोजन पर गुज़ारा करता था। और इस मठ में कई भिक्षु थे जिन्होंने लंबे समय से उत्साहपूर्वक संयम का अभ्यास किया था, केवल हर दूसरे दिन ही भोजन करते थे, और लगातार प्रार्थना करते थे; ये भिक्षु, महान बार्सानुफियस द्वारा उस बीमार व्यक्ति को दिए गए उत्तर—''—को सुनकर, जो मठ में पाँच साल से अधिक समय नहीं बिताया था, स्तब्ध रह गए; क्योंकि वे संत डोसथियिस की बिना शिकायत के और पूर्ण आज्ञाकारिता से अनभिज्ञ थे, और उनके इस महान कार्य को समझ नहीं सके। इसीलिए जब उन्होंने संत बार्सानुफियस द्वारा उनसे कहे गए शब्द सुने तो वे कुड़कुड़ाने लगे।

लेकिन प्रभु को यह उचित लगा कि वे डोसीथेउस के लिए उनकी महान आज्ञाकारिता के कारण तैयार की गई महिमा को प्रकट करें, और साथ ही सभी के सामने यह दिखाएँ कि आदरणीय डोरोथियिस ने कितनी बुद्धिमानी और तेजी से अपने शिष्य को मोक्ष के मार्ग पर मार्गदर्शन किया था। डोसीथेउस के निधन के कुछ ही समय बाद, एक पवित्र वृद्ध और अनुभवी तपस्वी,[1946] मठ में आए और सम्मान के साथ उनका स्वागत किया गया। यह वृद्ध, उससे पहले निधन कर चुके मठ के पवित्र पिताओं को देखने की इच्छा से, प्रभु से प्रार्थना करने लगा कि वह उन्हें उनके बारे में कुछ बताएँ। उसकी प्रार्थना सुनी गई, और उसे मठ के सभी पिताओं का एक दर्शन हुआ जो प्रकाश की एक जगह पर खड़े थे, जिनमें एक प्रसन्न मुख वाले युवक को भी देखा गया। इस दर्शन के बाद, उस संत ने पूछना शुरू किया कि वह युवक कौन था जिसे उन्होंने पवित्र पिताओं के बीच देखा था। जब उन्होंने उसका वर्णन किया, तो सभी को एहसास हुआ कि वह धन्य दोसथिउस ही थे। तब सभी ने परमेश्वर की स्तुति की और उनकी अगणित दया पर आश्चर्यचकित हुए।

इस प्रकार, पूजनीय डोसीथियिस ने स्वर्ग के राज्य में थोड़े ही समय में महान महिमा प्राप्त की, क्योंकि उन्होंने आज्ञाकारिता में परिश्रम किया, अपनी इच्छा का त्याग किया, और उसे अपने गुरु की इच्छा के अधीन कर दिया, मानो स्वयं ईश्वर की इच्छा के अधीन कर दिया हो। इसीलिए, वह अब स्वर्ग में सभी पवित्र पुरखों के साथ जीवित परमेश्वर के सामने खड़ा है, जो नम्र और आज्ञाकारियों पर अनुग्रह की दृष्टि डालते हैं, जिनका महिमा युगानुयुग हो। आमीन।

पवित्र प्रेरितों आखिप्पस, फिलेमोन और अफ़िया की स्मृति

19 फरवरी को स्मरण किया जाता है

धन्य एम्ब्रोस की गवाही के अनुसार, पवित्र प्रेरित अर्किप्पस, सत्तर में से एक, फ्रीजिया के कोलोसाई शहर[1947] में संत एपाफ्रास के बाद बिशप थे; पवित्र प्रेरित पौलुस, फिलिमोन को लिखे अपने पत्र में, संत अर्किप्पस को अपना सहकर्मी कहते हैं (फिलिमोन 1:2)। संत फिलेमोन कोलोसा के एक प्रतिष्ठित नागरिक थे, जबकि जॉन क्राइसोस्टोम के अनुसार, संत अप्फिया फिलेमोन की पत्नी थीं। मसीह में विश्वास करने के बाद, फिलेमोन ने अपने घर को एक चर्च में बदल दिया; इस प्रकार, कोलोसे के सभी विश्वासी फिलेमोन के घर में इकट्ठा होते थे, और दिव्य सेवाएं

[1946] उनकी मृत्यु 7वीं शताब्दी में हुई।

[1947] कोलोसा – फ्रीजिया (एशिया माइनर का एक क्षेत्र) के दक्षिण-पश्चिमी भाग में, लाओदिकिया और हेरापोलिस के पास, लिकस नदी पर स्थित एक नगर। प्राचीन काल में, यह एक बड़ा, घनी आबादी वाला और समृद्ध नगर था। आज, यह माउंट होकस की एक ढलान पर एक छोटा सा गाँव है, जिसके पास कोलोसा के प्राचीन शहर के खंडहर आज भी खड़े हैं।

वहाँ एक मंडली (church[1948]) की तरह आयोजित की जाती थीं। बाद में, संत फिलेमोन को सुसमाचार का प्रचार करने में प्रेरितों की सहायता करने के लिए एक बिशप के रूप में नियुक्त किया गया।

पवित्र प्रेरितों के दिनों में, कुछ बिशपों का एक स्थायी निवास होता था और वे एक विशिष्ट धर्मप्रांत में रहते थे, जबकि अन्य, जिनका ऐसा कोई निवास नहीं था, नगर-नगर और गाँव-गाँव घूमते थे; इन्हें 'प्रेरितीय बिशप' कहा जाता था, क्योंकि उन्हें प्रेरितीय मिशनों पर भेजा जाता था। संत फिलेमोन ऐसे ही एक बिशप थे; उन्हें कुछ स्थानीय बिशपों की तरह सत्तर पवित्र प्रेरितों में गिने जाने के योग्य माना गया था; उन्होंने फ्राइजिया और कुछ अन्य शहरों में यात्रा की, और हर जगह उत्साहपूर्वक परमेश्वर के वचन का प्रचार किया। हमें यह बताया गया है कि वह गाजा में भी एक बिशप थे[1949] ।

संत अप्फिया ने कोलोसा में अपने घर में एक चर्च स्थापित किया, और दिन-रात प्रभु की सेवा में लगन से लगी रहीं, तथा प्रार्थना और उपवास में स्वयं को समर्पित कर दिया; उन्होंने उन लोगों का आनंदपूर्वक स्वागत किया और उन्हें आश्रय दिया जो मसीह की शिक्षाओं का प्रचार करने के लिए परिश्रम करते थे उसने गरीबों, बेसहारा लोगों और राहगीरों को भोजन प्रदान किया, ताकि उसका घर न केवल एक चर्च, बल्कि एक छात्रावास, एक अस्पताल और उन सभी के लिए एक आश्रय बन गया जिनके पास आराम करने और शांति पाने के लिए और कोई जगह नहीं थी।

एक अवसर पर, कोलोसा में मूर्तिपूजक देवी आर्टेमिस[1950] के सम्मान में एक अधर्मी उत्सव आयोजित किया जा रहा था। उस समय, पवित्र प्रेरित आर्किप्पस और फिलेमोन, जो उस शहर में थे, ने सभी विश्वासियों को फिलेमोन और अप्फिया के घर में इकट्ठा किया, प्रभु से अपनी प्रथागत प्रार्थनाएँ कीं और दैवीय अनुष्ठान मनाया। इस बीच, मूर्तिपूजकों, जो विश्वासियों से गहरी घृणा रखते थे, को पता चला कि सभी ईसाई फिलिमोन के घर में इकट्ठा हो गए थे। इस अवसर का लाभ उठाते हुए, विधर्मी विश्वासियों पर अचानक हमला कर दिया, मसीह के पूरे झुंड को तितर-बितर कर दिया, कुछ को पीटा और कुछ को मार डाला; फिर, पवित्र प्रेरितों आर्चिप्पस और फिलेमोन के साथ-साथ संत अप्फिया को पकड़कर, वे उन्हें एफेस के राज्यपाल, आर्टोकल्स के सामने ले गए, और, उसके आदेश पर, उन्होंने संतों को यातना दी: पहले, यातना देने वालों ने उन्हें जमीन पर पटक दिया और उन्हें घसीटना शुरू कर दिया, और ऐसा करते हुए निर्दयता से उन पर वार किया; फिर उन्होंने उनमें से प्रत्येक को जांघों तक मिट्टी में दफ़नाया और उन पर पत्थर फेंकना शुरू कर दिया। उन्होंने संत फिलीमोन और संत अप्फिया को पत्थर मारकर मौत के घाट उतार दिया; जबकि उन्होंने संत आर्चिप्पस को बच्चों के मनोरंजन के लिए मुश्किल से जीवित छोड़ दिया; वहाँ युवकों की एक भीड़ इकट्ठा हो गई और उन्होंने संत को चाकुओं से प्रताड़ित करना शुरू कर दिया। इस प्रकार ये तीनों संत स्वर्ग में परम पवित्र, जीवन-दायक, दिव्य और अविभाज्य त्रिमूर्ति के सिंहासन के सामने प्रकट हुए[1951] ।

प्रेरित आर्चिप्पस का कोंटाकियन, स्वर 4:

एक महान तारे के समान, कलीसिया, आपके, अर्चिप्पस, को पाकर और आपके चमत्कारों की किरणों से प्रकाशित होकर, आपको पुकारती है: उन लोगों को बचाइए जो विश्वास के साथ आपकी स्मृति का सम्मान करते हैं।

[1948] प्रेरितों के समय में, ईसाइयों के पास प्रार्थना सभाओं के लिए विशिष्ट स्थान नहीं थे। आमतौर पर, उपलब्ध सबसे अच्छा ऊपरी कमरा इस उद्देश्य की पूर्ति करता था, जो अक्सर किसी धनी विश्वासी के घर में होता था, और वहीं शहर के सभी ईसाई यूखरिस्त की संस्कार मनाने और सामूहिक प्रार्थना करने के लिए इकट्ठा होते थे। इस प्रकार, एक साधारण ऊपरी कमरा, एक तरह से, चर्च के रूप में काम करता था। हमें ऐसे 'चर्च-ऊपरी कमरे' का पहला उदाहरण सियोन के प्रसिद्ध ऊपरी कमरे में मिलता है, जहाँ, परंपरा के अनुसार, प्रभु यीशु मसीह ने अपने दुख-क्लेश से पहले अंतिम भोज किया था, और जहाँ, प्रभु के स्वर्गारोहण के बाद, प्रेरित पचासवें दिन एकत्रित हुए, और वहाँ उन्होंने पवित्र आत्मा को प्राप्त किया, उनके पुनरुत्थान के बाद, पवित्र आत्मा के वरदान प्राप्त किए, जो उन पर अवतरित हुए।

[1949] गाज़ा सबसे प्राचीन फ़िलिस्तीनी शहरों में से एक है, जो फ़िलिस्तीन में कनानी लोगों की दक्षिणी सीमा के रूप में कार्य करता था। बाद में, यह कभी-समृद्ध शहर अपना सारा महत्व खो बैठा, और अब केवल रेतीले टीले और दयनीय खंडहर ही इस बात की गवाही देते हैं कि कभी यहाँ एक महत्वपूर्ण शहर बसा करता था। यहाँ से बहुत दूर नहीं, बाद में बसा एक नया शहर है जिसका नाम भी यही है।

[1950] आर्टिमिस, जिन्हें डायना के नाम से भी जाना जाता है, यूनानियों और रोमनों के बीच एक प्रसिद्ध मूर्तिपूजक देवी थीं, जो चंद्रमा का प्रतीक थीं और उन्हें जंगलों और शिकार की संरक्षक माना जाता था। इस देवी की पूजा बड़े भव्यता और दिखावे के साथ की जाती थी; उन्हें विशेष रूप से एफ़िसुस शहर में पूजित किया जाता था।

[1951] प्रेरित अर्चिप्पस और फिलेमोन, और पवित्र स्त्री अफ़िया, रोमन सम्राट नीरो (54–68 ईस्वी) के शासनकाल के दौरान निधन हो गए थे। उनकी स्मृति का चर्च द्वारा 22 नवंबर को भी स्मरण किया जाता है।

आदरणीय रवुला की स्मृति

19 फरवरी को स्मरणोत्सव

संत रवुला का जन्म सामोसटा शहर में हुआ था[1952] । उन्होंने अपनी शिक्षा वरीप्सावा नामक एक प्रसिद्ध विद्वान के मार्गदर्शन में प्राप्त की, जो सिरियाक भाषा में पारंगत थे। कम उम्र से ही एक सदाचारी जीवन जीने के बाद, आदरणीय संत ने परिपक्वता प्राप्त करने पर संन्यासी की शपथ ली और स्वयं को असाधारण तपस्या के कार्यों में लगा दिया।

पवित्र भविष्यवक्ता एलिया की तरह, वे अकेले पहाड़ों और गुफाओं में रहे, और अपने जीवन के तरीके में उन्होंने संत जॉन द बैपटिस्ट का अनुकरण किया।

कुछ समय बाद, रेवरेंड एक अन्य भिक्षु के साथ फिनिसिया[1953] के लिए रवाना हुए और वहाँ परिश्रम करते हुए, उन्होंने अपने उच्च गुणों के कारण सभी का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया, जिससे जल्द ही, अपनी इच्छा के विरुद्ध, वे सभी के बीच प्रसिद्ध हो गए। सम्राट ज़ेनो[1954] से वित्तीय अनुदान प्राप्त करने के बाद, उन्होंने बेरिटस के बिशप जॉन[1955] की सहायता से, पहाड़ों के बीच एक एकांत स्थान पर एक बड़ा मठ बनवाया और वहाँ भिक्षुओं को बसाया। मठ के आसपास के क्षेत्र में कई कट्टर मूर्तिपूजक रहते थे। आदरणीय रवुला और मठ में उनके साथ परिश्रम करने वाले भिक्षुओं ने, पवित्र प्रेरितों पॉल और बरनबास, साथ ही पतरस और यूहन्ना के उदाहरण का अनुसरण करते हुए, कभी-कभी उनकी गलतियों के लिए उन्हें फटकारते, अक्सर उनके साथ बहस करते, और अन्य समयों में उन्हें विश्वास में शिक्षित करते; और जल्द ही उन्होंने उन सभी को सच्चे परमेश्वर के ज्ञान की ओर ले गए। यह आदरणीय महंत का पहला गौरवशाली कार्य था।

सम्राट ज़ेनो की मृत्यु के बाद, सम्राट अनास्तासियस[1956] ने साम्राज्य का नियंत्रण संभाला। आदरणीय रवुला कॉन्स्टेंटिनोपल के लिए रवाना हुए और, अपनी कोशिशों से, सम्राट से एक नया वित्तीय अनुदान हासिल किया, जिसका उपयोग उन्होंने दूसरा मठ बनाने के लिए किया। इसके बाद, उन्होंने विभिन्न स्थानों पर कई अन्य मठों का निर्माण किया। संत रवुला हर अच्छे कार्य में हमेशा परिश्रमी, नम्र, दयालु और करुणामय थे; वे कभी क्रोध में नहीं आते थे, हमेशा प्रार्थना में रहते थे और सभी के साथ दयालुता से पेश आते थे। और जब शैतान, उसके भावों को भड़काकर, उससे युद्ध में भिड़ गया, तो उसने—पुराने और नए नियम के पवित्र धर्मग्रंथों का पूर्ण ज्ञान और समझ रखते हुए—परमेश्वर के वचन और धार्मिक कार्यों, दोनों से उसका विरोध किया, और इस प्रकार अपने विरोधी को खुद से दूर भगा दिया। ये आदरणीय संत जस्टिनियन महान के शासनकाल तक जीवित रहे[1957] , जिन्होंने कॉन्स्टेंटिनोपल में प्रसिद्ध सेंट सोफिया चर्च का निर्माण किया था[1958] । अस्सी वर्ष की आयु प्राप्त करने पर, उन्होंने एक बार स्वर्ग से एक आवाज सुनी जो उनसे कह रही थी: *'मेरे पास आओ, तुम सब जो परिश्रम करते हो और बोझ से दबे हो, और मैं तुम्हें विश्राम दूँगा'* (मत्ती 11:28); इसके बाद, थोड़ी बीमारी के बाद, वे प्रभु के पास चले गए[1959] ।

[1952] सामोसटा शहर सीरिया में, यूफ्रेटिस नदी के ऊपरी भाग में, इसके दाहिने, पश्चिमी किनारे पर स्थित था।

[1953] फ़िनिसिया, फ़िलिस्तीन के उत्तर में, भूमध्य सागर और लेबनान पर्वत के बीच स्थित थी।

[1954] ज़ेनो ने 474 से 491 तक, एक संक्षिप्त अंतराल के साथ, शासन किया। उनके शासनकाल के दौरान, ऑर्थोडॉक्स और मोनोफिसाइट विधर्मीयों के बीच एक संघर्ष हुआ, और उन्होंने इस संघर्ष में सक्रिय भाग लिया, चर्च के ऑर्थोडॉक्स सिद्धांत के प्रतिनिधियों के लिए वर्चस्व और विजय सुनिश्चित करने का प्रयास किया।

[1955] बेरिटस, जिसे अब बेरूत कहा जाता है, फोएनीशिया का एक तटीय शहर था, जो मगोरा नदी के मुहाने के पास स्थित था।

[1956] सम्राट अनास्तासियस ने 491 से 518 तक साम्राज्य पर शासन किया।

[1957] जस्टिनियन ने 527 में जस्टिन के बाद सिंहासन संभाला और 565 तक शासन किया।

[1958] कॉन्स्टेंटिनोपल का मुख्य कैथेड्रल, जो सेंट सोफिया – ईश्वर की बुद्धि – को समर्पित था, मूल रूप से कॉन्स्टेंटाइन द ग्रेट द्वारा स्थापित किया गया था। सम्राट जस्टिनियन के अधीन, 537 में इसे भव्य रूप से बहाल और विस्तारित किया गया था। 1453 में, जब कन्स्टेंटिनोपल पर तुर्कों ने कब्ज़ा कर लिया, तो इसे एक मस्जिद में बदल दिया गया। जस्टिनियन की हागिया सोफिया आज भी बाइज़ेंटाइन-शैली की ईसाई वास्तुकला का सबसे उल्लेखनीय और भव्य स्मारक है, जो इसके विकास के चरम काल की है।

[1959] संत रवुला का निधन लगभग 530 में हुआ।

आदरणीय इवजेनी और मकारियोस, स्वीकारकर्ताओं की स्मृति।

19 फरवरी को स्मरण किया जाता है

रोमन साम्राज्य में जूलियन के शासनकाल के दौरान, सभी ईसाई छिप गए क्योंकि सम्राट के आदेश से, हर जगह मूर्तिपूजक देवताओं को बलिदान चढ़ाया जा रहा था, और मूर्तिपूजकों ने, अपने शासक को खुश करने के लिए, स्वयं को अपवित्र करते हुए और न तो परमेश्वर के न्याय से और न ही अनंत दंड से डरते हुए, मसीह के दृढ़ विश्वासियों को जबरदस्ती इन बलिदानों में भाग लेने के लिए मजबूर किया। उस समय, अंतीयक की कलीसिया के दो पुरोहित, यूजीन और मकरियस, को पकड़कर जुलियन के पास मुकदमे के लिए लाया गया। मुकदमे में, उन्होंने मसीह को जीवितों और मृतकों के सच्चे ईश्वर और न्यायाधीश के रूप में स्वीकार किया, और धर्मत्यागी सम्राट को एक दुष्ट व्यक्ति और एक हत्यारा, ईश्वर की आज्ञाओं का उल्लंघनकर्ता, एक मूर्तिपूजक और मूर्तियों का सेवक कहकर उसकी निंदा की, और उससे कहा:

'धिक्कार है तुझ पर, हे दुष्ट मनुष्य और शाश्वत, न बुझने वाली आग के वारिस! धिक्कार है तेरी व्यर्थता पर! तू कैसे अपने आपको प्रकाश के बजाय अंधकार का चुनाव करने के लिए तैयार कर सका?'

यह शब्द सुनते ही जूलियन क्रोध से आग-बबूला हो गया और उसने आदेश दिया कि पहले संतों को पतली पट्टियों से बाँधा जाए, उल्टा लटकाया जाए और जहरीले, बदबूदार मल से धूम्रपान किया जाए; और फिर लोहे की एक चादर को आग से तपाया जाए और उन्हें नग्न करके उस पर लिटा दिया जाए। ऐसी यातनाओं को सहते हुए, संत यूजीन और मकरियस ने अपनी आँखें स्वर्ग की ओर उठाईं और ईश्वर की शक्ति से समर्थित होकर, बिना किसी चोट के रहे, उनके चेहरे आनंद से दमक रहे थे, जिससे उनके यातनाकर्ता की दुष्टता का पर्दाफाश हो गया। इसके बाद, जूलियन ने उन्हें बेड़ियाँ डालने और अरब के ओएससि में निर्वासित करने का आदेश दिया[1960] । जब वे अपने निर्वासन स्थल की ओर जा रहे थे, तो संत इस बात पर प्रसन्न हुए कि वे मसीह के लिए निर्वासन का दुख उठा रहे थे, और गा उठे: *'धन्य हैं वे जिनका मार्ग निर्दोष है, जो प्रभु की व्यवस्था में चलते हैं'* (भजन संहिता 118:1)।

उत्साहित हृदय से वे ओएससि पहुँचे, एक पहाड़ पर चढ़े और वहाँ अकेले रहने लगे। देश के शासकों ने उनसे कहा:

'भाइयो, इस स्थान को छोड़ दो, क्योंकि यहाँ से दूर नहीं एक भयंकर साँप रहता है जो उसके पास आने वाले सभी को निगल जाता है।'

इस पर संतों ने उत्तर दिया:

'हमें वह गुफा दिखाओ जहाँ यह सर्प रहता है।'

उन्हें साँप के बिल तक ले जाया गया और उन्हें दूर से वह गुफा दिखाई गई जहाँ वह पड़ा था। तब संतों ने घुटने टेककर ईश्वर से प्रार्थना की, और अचानक स्वर्ग से एक गरज की आवाज़ आई और साँप पर गिर पड़ी। मारा गया साँप आग की लपटों में घिर गया और तुरंत जलकर राख हो गया; गुफा की रेत भी उसके साथ जलकर राख हो गई, और गुफा के ऊपर धूल का एक प्रचंड, बदबूदार बवंडर उठ खड़ा हुआ। इस चमत्कार को देखकर, देश के शासक, जो मूर्तिपूजक थे, मसीह में विश्वास करने लगे।

इस बीच, संत यूजीन और मकारियस उस गुफा में गए जहाँ साँप रहता था और उन्होंने तीस दिन तक प्रार्थना की, और उनके पास न तो भोजन था और न ही पानी। अंत में उन्होंने एक आवाज़ सुनी जो उनसे कह रही थी:

'हे सच्चे परमेश्वर और हमारे उद्धारकर्ता यीशु मसीह के सेवको, अपने पास की चट्टान पर जाओ।'

संतों ने आज्ञा का पालन किया, और जब वे चट्टान के पास पहुँचे, तो उन्होंने पहले उसमें एक प्रकाश देखा; फिर चट्टान दो भागों में टूट गई, और उससे प्रचुर मात्रा में पानी बहने लगा। इस पानी में से कुछ लेकर, उन्होंने तृप्त होकर पिया और इस प्रकार अपनी भूख और प्यास दोनों बुझाई। गुफा में रहते हुए, संतों ने प्रार्थना की कि प्रभु उन्हें एक ही समय में मरने और मसीह के साथ रहने का वरदान दें, और प्रभु ने उनकी प्रार्थना स्वीकार कर ली: वे दोनों एक साथ प्रभु के पास चले गए, धन्यवाद देते हुए और उसकी महिमा करते हुए[1961] ।

[1960] अरब दक्षिण-पश्चिमी एशिया में एक चट्टानी प्रायद्वीप है। यह मरुद्यान अरब रेगिस्तान के मरुद्यानों में से एक था।

[1961] इन संतों की मृत्यु का समय 363 ईस्वी का है।

- उसी दिन, हम पवित्र शहीदों मैक्सिमिस, थियोडोडोटस, इसचियिस और पवित्र शहीद एस्क्लेपियोडोटा का स्मरण करते हैं, जिन्होंने एड्रियानोपल में सम्राट मैक्सिमियिन गैलेरियस के अधीन यातनाएँ सहन कीं[1962] ।

5 मार्च

20 फरवरी (पुराना कैलेंडर)

हमारे पवित्र पिता लियो, कैटानिया के बिशप का जीवन

20 फरवरी को स्मरण किया जाता है

ईश्वर के सेवक लियो, जो कुलीन और धार्मिक माता-पिता के पुत्र थे, रैवेना क्षेत्र के मूल निवासी थे[1963] । अपने पवित्र जीवन और बुद्धि के कारण, उन्हें उचित समय पर सभी पवित्र पदों से सम्मानित किया गया, और कातानिया के बिशप, धन्य सावनिस के निधन के बाद, उन्हें ईश्वर की चयना द्वारा बिशप के पद पर नियुक्त किया गया। कटानिया शहर सिसिली द्वीप पर, माउंट एटना के पास स्थित है, जो आज भी आग उगलता है। बिशप का पदभार संभालने पर, संत लियो ने अपने नए पद की सभी जिम्मेदारियाँ भी अपने ऊपर ले लीं। वे अनाथों, गरीबों, विधवाओं, बीमारों और परदेशियों की देखभाल करते थे, उन्हें चर्च की संपत्ति से भोजन और वस्त्र प्रदान करते थे, और अपनी प्रार्थनाओं के माध्यम से उनकी बीमारियों को ठीक करते थे; वे अपने बच्चों के लिए एक दयालु पिता और अपने झुंड के लिए एक वफादार चरवाहा थे, लेकिन राक्षसों और उनके सेवकों के लिए वे वैसे ही भयानक थे जैसे एक शेर भेड़ियों के लिए होता है। उस समय, कैटानिया में हेलियोडोरस नाम का एक जादूगर था; वह ईसा मसीह में विश्वास रखने वाले धर्मनिष्ठ माता-पिता का पुत्र था, और वह स्वयं भी पवित्र बपतिस्मा द्वारा प्रबुद्ध हुआ था, लेकिन बाद में उसने एक यहूदी से जादू-टोना सीखकर गुप्त रूप से मसीह का त्याग कर दिया और राक्षसों की सेवा करने लगा। इस प्रकार उसे एक ईसाई माना जाता था, लेकिन वास्तव में वह एक मूर्तिपूजक, राक्षसों का सेवक और एक महान जादूगर था, जो उस प्राचीन जादूगर सिमोन से किसी भी तरह से बेहतर नहीं था, जिसे पवित्र प्रमुख प्रेरित पतरस और पौलुस ने अपनी प्रार्थना द्वारा मार डाला था; हर तरह से, हेलियोडोरस उसकी तरह ही था: आश्चर्यजनक जादुई चमत्कार करते हुए, उसने अपनी सुन्न करने की शक्ति से लोगों को ऐसा महसूस कराया मानो सूखी ज़मीन पर, सड़कों और खेतों से होकर नदियाँ बह रही हों, ताकि दोनों लिंगों के नागरिक, नग्न होकर, उस जगह से गुज़रें जिसे वे शहर के बीच से होकर बहती नदी समझ रहे थे; वह पत्थरों को सोने में बदल देता था, हालांकि केवल थोड़े समय के लिए; बाज़ारों में, अपनी जादूगरी से, उसने व्यापारियों को भारी नुकसान पहुँचाया; वह अपनी जादू-टोने से कुलीन कन्याओं—जो सम्मानित और प्रतिष्ठित नागरिकों की बेटियाँ थीं—को कामवासना के पाप के लिए इतना उकसाता था कि वे लज्जा की सारी भावनाएँ भूलकर अपने घर और माता-पिता को छोड़कर व्यभिचार के पीछे विभिन्न स्थानों पर भाग जाती थीं। जब हेगेमोन लुसियस ने यह बात सम्राट लियो और उनके पुत्र कॉन्स्टेंटाइन पोर्फिरोजेनिटिस[1964] को बताई, तो सम्राटों ने उन्हें गिरफ्तार करने का आदेश जारी किया; लेकिन हेलीओडोरस ने खुद को उन लोगों के हवाले कर दिया जो उनकी तलाश कर रहे थे; वह कैटानिया में उनके साथ एक जहाज पर चढ़ा और उसी दिन कॉन्स्टेंटिनोपल पहुँच गया, एक ही घंटे में ऐसी दूरी तय करके जिसे केवल वे ही समझ सकते हैं जो पश्चिम से – सिसिली से पूर्व की ओर – थ्रेस तक नौकायन करते हैं। ২৯৫৫ के सामने पेश होने पर, उन्होंने उसे मृत्युदंड की सजा सुनाई, लेकिन तुरंत ही, राज□□□ की आँखों के सामने, वह अदृश्य हो गया और कैटानिया में फिर से प्रकट हो गया; दूसरी बार कॉन्स्टेंटिनोपल बुलाए जाने और तलवार से सिर कलम करने की सज़ा मिलने पर, जादूगर ठीक उसी क्षण एक बार फिर अदृश्य हो गया जब सैनिक ने अपनी तलवार सिर के ऊपर उठाकर बड़ी ताकत से घुमाई, जिससे तलवार केवल हवा में ही चली गई; और एक बार फिर यह जादूगर खुद को कैटानिया में पाया।

[1962] उनमें से तीन – मैक्सिमिस, थियोडोडोटस और एस्क्लेपियोडोडोटस (जिन्हें एस्क्लेइएड के नाम से भी जाना जाता है) – की स्मृति का भी 15 सितंबर को स्मरण किया जाता है।

[1963] रैवेना अब एड्रियाटिक सागर पर एक इतालवी प्रांत है।

[1964] लियो चतुर्थ प्रज्ञावान (717–741); उनके पुत्र कांस्टेंटिन ने 741 से 775 तक शासन किया।

[1965]मसीह के सेवक, संत लयिो, ने अक्सर उसे ऐसे बुरे कर्मों से باز रहने और पश्चाताप कर ईश्वर की ओर मुड़ने के लिए कहा; लेकिन इलिओडोर को मनाना असंभव था, जैसे एक इथियोपियाई को गोरा करना या एक कठोर पत्थर को नरम मोम में बदलना असंभव है। वह दुष्ट व्यक्ति केवल सुधरने में विफल रहा, बल्कि उसने एक और भी बड़ा बुराई का विचार किया: उसने अपनी जादू-टोना सीधे परमेश्वर के महाधर्माध्यक्ष तक बढ़ा दिया, और अपनी जादू-टोने के द्वारा उनका मज़ाक उड़ाना चाहा। एक दिन, एक पर्व के पवित्र दिन, संत, सभी लोगों की उपस्थिति में, अपने पूरे पुरोहित वर्ग के साथ चर्च में दैवीय अनुष्ठान कर रहे थे; जादूगर हेलिओडोरस एक पाखंडी ईसाई का भेष धारण करके चर्च में घुसा और गुप्त रूप से अपना जादू करने लगा; इसके प्रभाव से, उसने कुछ लोगों को चर्च में घोड़ों की तरह पैर पटकने और जानवरों की तरह फुंकारने पर मजबूर कर दिया; कुछ अन्य बेकाबू होकर हँसने लगे, जबकि कुछ और क्रोधित हो गए; हालाँकि, जादूगर ने घमंड किया कि वह यहाँ तक कर देगा कि बिशप स्वयं, अपने सभी पुरोहितों और पादरियों के साथ, पूजा बंद कर देंगे और तुरंत संगीत और ऑर्गन की धुन पर झूमने और नाचने लगेंगे। ईश्वर के पवित्र व्यक्ति, इलिओडोर के इरादों को भांपकर, वे परमेश्वर के सिंहासन के सामने घुटने के बल झुके और, प्रार्थना करने के बाद, उठे, पवित्र स्थान से बाहर गए और, जादूगर को अपनी ओमोफोरीयॉन से गर्दन पकड़कर बाँध दिया; फिर, उसे चर्च से बाहर शहर के केंद्र में ले जाकर, उन्होंने लोगों को आज्ञा दी कि वे तुरंत बहुत सारी लकड़ी लाएँ और एक बड़ी आग जलाएँ। जब उनका आदेश पूरा हो गया, तो संत ने इलिओडोर से उसकी सारी जादू-टोने और तंत्र-मंत्र के बारे में पूछताछ की; और बाद में, उसे अपने ओमोफोरीयॉन से बँधे हुए ही, वह उसके साथ आग में कूद गया और लपटों के बीच खड़ा होकर, उसे मजबूती से पकड़े रहा और तब तक अपनी जगह से नहीं हटा जब तक कि वह दुष्ट जादूगर पूरी तरह से जलकर राख नहीं हो गया; जिसके बाद ईश्वर के बिशप, लयिो, चर्च लौट आए और उन्होंने दैवीय अनुष्ठान पूरा किया। इस गौरवशाली चमत्कार से सभी विस्मित हो गए, क्योंकि जादूगर को लपटों में थामे रहने के दौरान, संत स्वयं न केवल आग से अप्रभावित रहे, बल्कि आग ने उनके पवित्र वस्त्रों को छुआ भी नहीं: पवित्र आत्मा की ओस ने उन्हें लपटों में घेर लिया और उन्हें जलने से बचाया; इसकी खबर पृथ्वी के दूर-दराज के कोनों तक फैल गई; इस चमत्कार के बारे में जानकर राजाओं ने संत को बड़े सम्मान के साथ कॉन्स्टेंटिनोपल बुलाया और उनके पवित्र चरणों में गिरकर उनसे अपने लिए प्रार्थना करने का आग्रह किया। जब वह शाही कक्ष में प्रवेश किया, तो धन्य संत ने अपने वस्त्रों पर जलते हुए कोयले रखे हुए थे, फिर भी उनके वस्त्र जल नहीं गए। और ईश्वर के इस महान सेवक ने कई अन्य चमत्कार भी किए: उन्होंने अंधों को दृष्टि प्रदान की, बीमारों को ठीक किया, लोगों से भूत-प्रेत निकाले, अपनी प्रार्थना से एक मूर्तिपूजक मंदिर को नष्ट कर दिया, और अपने वचन से मूर्तियों को गिरा दिया; अंत में, अपनी वृद्धावस्था में, वे प्रभु के पास चले गए। उसी समय, सीनेटर वंश की, सिराक्यूज़ क्षेत्र की एक महिला, जिसे रक्तस्राव की समस्या थी, संत से मिलने के लिए कैटानिया शहर आई थी। वह लंबे समय से इस समस्या से पीड़ित थी: डॉक्टरों ने पहले ही उसका इलाज करने से इनकार कर दिया था; यह सुनकर कि बिशप सेंट लयिो अपनी प्रार्थनाओं के माध्यम से बीमारियों से चंगा करते थे, वह संत से अपने लिए प्रार्थना करने का अनुरोध करने आई; जैसे ही वह शहर के द्वार से प्रवेश कर रही थी, उसने मृतकों के लिए घंटियाँ बजती सुनी; जब उसने पूछा कि कौन निधन कर गया है, तो उसे बताया गया कि बिशप सेंट लयिो का निधन हो गया था; गहरे दुख से भरकर, वह दिवंगत बिशप के पास गई और जैसे ही उसने उनके ताबूत को छुआ, उसका रक्तस्राव तुरंत बंद हो गया, और वह पूरी तरह से ठीक हो गई। बिशप लयिो का पवित्र शरीर पवित्र शहीद लुसिया के चर्च में दफनाया गया; और इसने हमारे ईश्वर मसीह की महिमा के लिए विभिन्न प्रकार की बीमारियों को ठीक किया।

कॉन्टाकियन, स्वर 8:

चूंकि किलीसिया के पास एक अति महिमामय दीपक है, हे सर्व-धन्य, जो सूर्य से भी अधिक प्रकाशमान है, उसे अपनी प्रार्थनाओं द्वारा संरक्षित करो, हे धन्य, हर विधर्म के विरुद्ध अजेय और अडिग, और एक सदा-स्मरणीय के रूप में निष्कलंक।

[1965] *सिरैक्यूज़* – सिसिली द्वीप के पूर्वी तट पर पहली ग्रीक बस्तियों में से एक, जिसे परंपरा के अनुसार, लगभग 735 ईसा पूर्व में कोरिंथियों द्वारा स्थापित किया गया था। अब एक इतालवी प्रांत है।

पवत्रि ह्यरोमार्टायर, फारस के बशिप, संत सदोक और उनके साथ 128 शहीदों की शहादत

फ़ारस के बशिप संत सदोक और उनके साथ 128 शहीदों की शहादत

20 फरवरी को स्मरण कयिा जाता है

पर्सयिा के बशिप, संत समिीओन के वहाँ शहीद होने के बाद, संत सदोक ने पर्सयिा के शहरों सैलकिा और क्तेसफिोन में बशिप का पदभार संभाला। एक दनि, संत सदोक ने एक भयानक सपना देखा; जागने पर, उन्होंने अपने पुरोहतिों, वरष्ठि पादरयिों और डकिन्स को बुलाया – उस समय वे सभी राजा के डर से छपि रहे थे – और उनसे बात करना शुरू कयिा:

'कल रात मैंने एक सपने में एक सीढ़ी देखी जसिका ऊपरी सरिा स्वर्ग तक पहुँच रहा था; उस पर पवत्रि समिोन बशिप बड़ी महमिा में खड़े थे, जबकि मैं जमीन पर खड़ा था; पवत्रि समिोन ने मुझसे ऊँचे स्वर में कहा: "मेरे पास ऊपर आओ, सदोक, और मत डरो – मैं कल ऊपर गया, और तुम आज ऊपर जाओगे।"' इस दर्शन और संत के शब्दों के बाद, मुझे वशि्वास है कि मुझे मसीह के लिए पीड़ति होने के लिए ले जाया जाएगा; संत समिोन के शब्द, 'मैं कल चढ़ा, और तुम आज चढ़ोगे', का अर्थ है कि उन्होंने पछिले साल पीड़ा सहन की, जबकि मुझे इस साल पीड़ा और मृत्यु सहनी है।

इसके बाद, संत सदोक ने पुरोहतिों को इस प्रकार उपदेश देना शुरू कयिा:

'मेरे प्रयि भाइयो और पतिाओं, हम परमेश्वर से अपने पूरे हृदय से और हमारे प्रभु यीशु मसीह से अपने पूरे मन से प्रेम करें; वशि्वास का कवच पहनकर, हम कसिी भी बुराई से नहीं डरेंगे, और न ही हम भयभीत होंगे यदि हमें कष्ट और मृत्यु प्राप्त हो – हम में से प्रत्येक यीशु मसीह का एक अच्छा सपिाही बने। यदि हमें मरना ही है, तो हम सद्धिों के योग्य मृत्यु प्राप्त करें; यदि, तथापि, हमारा भाग्य जीवति रहने का है, तो हम धर्मी लोगों की तरह जीवन जएिँ। भले ही हम मरें, हम अपने उद्धारकर्ता के लिए मरेंगे, और हम तलवार से नहीं डरेंगे यदि तलवार के द्वारा हमें अनंत जीवन का प्रकटीकरण प्राप्त हो। जबकि दनि अभी है[1966] , आओ हम अपने आत्मा के उद्धार के लिए उत्साहपूर्वक परशि्रम करें, ताकि हम अक्षय आशीषों से धनी हों, और स्वर्ग के राज्य में सम्मान और अनंत महमिा के योग्य ठहरें, ताकि मसीही जाति की स्मृति में हमारा नाम महमिामय बना रहे। भाइयो, हम अपने परमेश्वर से प्रार्थना करें कि वह शीघ्र ही उस बात को पूरा करे जो मुझे एक दर्शन में प्रकट की गई थी। क्योंकि जो आत्मा का है, वह आनन्दपूर्वक और बड़े प्रेम से मसीह के लिए दुख और मृत्यु सहने की खोज करता है और नहीं डरता, क्योंकि वह ऐसे काम के लिए हमेशा तैयार रहता है। परन्तु मृत्यु का समय शरीर वालों के लिए भयानक और डरावना होता है; धर्मात्मा स्वयं ऐसी मृत्यु को लगन और उदारता से खोजते हैं, ताकि उसके द्वारा वे अनन्त जीवन का वारसि बनें; जबकि आलसी और लापरवाह लोग जब अपने सामने मृत्यु को देखते हैं तो खुद को छपिा लेते हैं। क्योंकि जो परमेश्वर से प्रेम करते हैं वे परमेश्वर तक पहुँचते हैं, जबकि जो संसार से प्रेम करते हैं वे संसार में ही रहते हैं; पहले वाले शरीर को आनंद और प्रसन्नता के लिए छोड़ते हैं, जबकि बाद वाले इस जीवन में दुर्भाग्य और आहों के बीच रहते हैं।

उत्पीड़न के दूसरे वर्ष में, फारसी राजा शपूर उपर्युक्त सलकि और क्तेसफिोन शहरों में पहुँचा; इस समय, पवत्रि बशिप सदोक—जनिका नाम ' 'राजा का मत्रि', और वास्तव में वह स्वर्गीय राजा, मसीह से, अपने पूरे हृदय और अपनी पूरी शक्ति से प्रेम करता था: वह महान संयम से वशिष्टि था और धार्मकिता तथा वशि्वास से परपिूर्ण था; उसने संत समिीओन के उदाहरण का अनुसरण कयिा, जनिके बाद वह बशिप के सहिासन पर आरूढ़ हुआ। तब शपूर ने बशिप को उनके पुरोहतिों सहति गरिफ्तार करने के लिए सैनकि भेजे; उनके साथ कई अन्य ईसाई और भकिषु भी पकड़े गए, कुल 128 लोग; उन्हें सभी लोहे की जंजीरों से बाँधकर एक कालकोठरी में कैद कर दयिा गया, जो एक अंधेरी, बदबूदार और भयानक जगह थी। वहाँ, पाँच महीने तक वे असहनीय पीड़ा में तड़पते रहे, क्योंकि अधर्मी राजा के दुष्ट सेवकों ने प्रत्येक शहीद के पूरे शरीर को पतली चाबुक से बाँध दयिा और एक लकड़ी की बीम की सहायता से उन्हें मोड़ दयिा, जसिसे पीड़तिों की हड्डयिाँ टूट गईं और उनकी त्वचा फट गई - संतगण ने ऐसी तीव्र यातनाएँ सहन कीं।

[1966] मसीह के शब्दों का एक संदर्भ: *'क्या दनि में बारह घंटे नहीं होते? जो दनि में चलता है, वह ठोकर नहीं खाता, क्योंकि वह इस संसार की रोशनी देखता है; पर जो रात में चलता है, वह ठोकर खाता है, क्योंकि उसके साथ रोशनी नहीं है* (यूहन्ना 11:9-10)।

इस बीच, यातना देने वालों ने कहा:

'सूर्य और अग्नि की पूजा करो, राजा की आज्ञा मानो, और तुम जीवित रहोगे।'

लेकिन संत सदोक ने उन सभी की ओर से उत्तर दिया:

'हम ईसाई हैं, और हम एकमात्र ईश्वर की पूजा करते हैं, जो स्वर्ग और पृथ्वी के सृष्टिकर्ता हैं; हम उनकी सेवा अपनी पूरी आत्मा और अपनी पूरी शक्ति से करते हैं; लेकिन हम सूर्य और अग्नि की पूजा नहीं करते, न ही हम उनका सम्मान करते हैं, क्योंकि उन्हें मानवता की सेवा करने के लिए बनाया गया था।' हम राजा की आज्ञा का पालन नहीं करेंगे और न ही हम अपने ईश्वर से मुंह मोड़ेंगे; हम मृत्यु से नहीं डरेंगे, जो हमें इस क्षणिक और व्यर्थ जीवन से शाश्वत राज्य में ले जाती है; अत; देरी न करो, हमें मार डालो, और हमारे रक्त को बख्शो मत, जो तुम्हारी आँखों के सामने पहले भी कई बार बहाया जा चुका है।

इसके बाद, संतों को राजा की आज्ञा दूसरी बार मिली:

'यदि तुम मेरी आज्ञा का पालन नहीं करते और मेरी इच्छा पूरी नहीं करते, तो शीघ्र ही एक भयानक विनाश तुम पर आ पड़ेगा।'

लेकिन संतों ने एक स्वर में उत्तर दिया:

हम अपने परमेश्वर में नष्ट नहीं होंगे; हम उनके मसीह में नहीं मरेंगे, क्योंकि वह हमें धन्य और शाश्वत जीवन प्रदान करते हैं और हमें अमर राज्य को हमारी विरासत और हमारा विश्राम के रूप में देते हैं; परन्तु हमारे मरने में विलम्ब न करो, क्योंकि हम अपने परमेश्वर के लिए दुख सहने के लिए उत्सुक हैं; हम न तो सूर्य की पूजा करेंगे और न ही अग्नि की, और न ही हम दुष्ट शाही फरमानों की सुनेंगे, जो मृत्यु और विनाश से भरे हैं।

राजा ने, उनकी आस्था में दृढ़ता देखकर, एक आदेश जारी किया कि उन्हें सभी को तलवार से मार डाला जाए। संतों ने, राजा के आदेश को सुनकर, सभी ने खुशी-खुशी मृत्यु की तैयारी शुरू कर दी। उन्हें शहर से बाहर ले जाया गया। रास्ते में, उन्होंने खुशी से गाया:

– हे परमेश्वर, हमारा न्याय करो, और हमारे विवाद को निपटाओ; हमें दुष्ट लोगों से, अधर्मी और कपटी लोगों से बचाओ (देखो भजन संहिता 42:1), जो रक्त बहाते हैं; हमें बचाओ, क्योंकि हे प्रभु, आप ही हमारी आशा हैं।

जब वे फाँसी के स्थान पर पहुँचे, तो वे सभी एक स्वर में पुकार उठे:

– धन्य हैं आप, हे हमारे प्रभु परमेश्वर, जिन्होंने हमें यह अनुग्रह प्रदान किया है; आपने हमारी प्रार्थनाओं को तुच्छ नहीं जाना, बल्कि हमें यह सबसे कीमती मुकुट – शहादत – प्रदान किया है। हे प्रभु, आप जानते हैं कि हम इसे कितनी लालसा से चाहते थे। धन्य हो आपके एकलौते पुत्र, हमारे परमेश्वर, हे पिता, जिन्होंने हमें बचाया है और हमें अनंत जीवन के लिए बुलाया है। हे प्रभु, हमें इस संसार में दुख सहने के लिए न छोड़िए, बल्कि अपनी भलाई के लिए हमें सदा के लिए अपने सामने स्थापित कीजिए; हमें हमारे ही रक्त से हमारे पापों से शुद्ध कीजिए, क्योंकि केवल आप ही परम महिमामय परमेश्वर हैं, और आपका एकलौता पुत्र, और आपका परम पवित्र आत्मा, युगानुयुग। आमीन।

जब संत प्रभु से यह प्रार्थना कर रहे थे, तब दुष्ट लोग उन्हें मार रहे थे, लेकिन शहीदों ने तब तक परमेश्वर की महिमा करना जारी रखा जब तक कि उनमें से आखिरी व्यक्ति की भी मृत्यु नहीं हो गई। जहाँ तक सम्माननीय और गौरवशाली कष्ट-सहने वाले ज़ादोक का प्रश्न है, उसके यातना देने वालों ने उसे बेड़ियों में जकड़कर बेथलाफत नामक एक दूसरे नगर में ले गए, और वहाँ उन्होंने उसका सम्माननीय और पवित्र सिर काट दिया। इस प्रकार इन सभी पवित्र और महिमामय शहीदों ने हमारे प्रभु यीशु मसीह की स्तुति और महिमा करते हुए, इस जीवन से शांतिपूर्वक विदा ली, जिनके लिए पिता और पवित्र आत्मा के साथ, अब और हमेशा और युगों-युगों तक सारी महिमा, सम्मान और आराधना योग्य है। आमीन।

रोम के पोप, संत अगथोन की स्मृति

20 फरवरी को स्मरण किया जाता है

यह सम्माननीय पुरुष इटली में धनी माता-पिता के यहाँ पैदा हुए थे जो मसीह में विश्वास रखते थे और एक धार्मिक जीवन जीते थे। अपने पुत्र से प्रेम करते हुए, उन्होंने उसे हर तरह की उपयोगी और दैवीय रूप से प्रेरित किताबों से पढ़ाया। वे पवित्र शास्त्र के ज्ञान में इतने निपुण थे कि, अपने माता-पिता की मृत्यु के बाद, उन्होंने उनके द्वारा छोड़ी गई संपत्ति

(लगभग 1,633 लीटर[1967]) को इकट्ठा कयि और गरीबों, अनाथों और वधिवाओं को बुलाकर, वह सब एक ही दनि में उन्हें बाँट दयि।

इसके बाद, उन्होंने एक मठ में संन्यास की शपथ ली और स्वयं को मठवासी तपस्या को समर्पति कर दयि, दनि-रात ईश्वर को प्रसन्न करने और पूरी दुनयि के लिए प्रार्थना करने के लिए अथक परश्रिम कयि। उन्होंने सदाचार में इतनी लगन से प्रयास कयि कि उन्हें प्रभु द्वारा महान चमत्कारों का वरदान मलि। संत अगाथोन का पुण्यमय जीवन लोगों से छपिा नहीं रह सकता था, और उन्हें रोम का आर्चबशिप नयिुक्त कयि गया। अपने अनुयायियों को पुण्य का उपदेश देकर और अपने चमत्कारों के लिए प्रसद्धि होकर, परम पूजनीय ने, बशिप के पद पर रहते हुए, प्रभु के पास प्रस्थान कयि।[1968] ।

6 मार्च

21 फरवरी (पुराना संस्करण)

हमारे पूजनीय पति टमिोथी, समि्बोले के तपस्वी की स्मृति

21 फरवरी को स्मरणोत्सव

ओलंपस पर्वत के पास[1969] एक सुनसान जगह थी, जहाँ एक मठ था। उस मठ के आर्चमिैंड्राइट परम पूज्य थयिोक्टस्टि थे, जो एक सदाचारी व्यक्ति थे, जनिसे परम पूज्य कन्फेसर प्लेटो ने मठवासी जीवन सीखा। धन्य आर्चमिांड्राइट थयिोक्टस्टि के शष्यिों में परम पूज्य तमिोथी भी थे; कम उम्र से ही उन्होंने स्वयं को मठवासी तपस्या के लिए समर्पति कर दयि, वे उपवास और संयम का अभ्यास करते थे और पूरी-पूरी रातें प्रार्थना में बतिाते थे; अंततःअपने भीतर देह को मृत्यु के घाट उतारने के बाद, वह वासनाओं से मुक्त और आध्यात्मकि पूर्णता से वशिष्टि थे; और अपने जीवन के अंत तक उन्होंने अपनी आध्यात्मकि और शारीरकि पवत्रिता बनाए रखी, क्योंकि अपने शुरुआती वर्षों से ही उन्होंने कसिी महलिा के चेहरे को न देखने की कसम खाई थी। इसी कारण, उन्हें पवत्रि आत्मा का मंदरि बनने के लिए योग्य माना गया और उन्हें चंगा करने का वरदान तथा दुष्टात्माओं पर अधकिार प्राप्त हुआ; उनकी प्रार्थनाओं के द्वारा, कई चमत्कार हुए: संत ने हर प्रकार के रोगों को ठीक कयि और लोगों से अशुद्ध आत्माओं को भगाया। कई वर्षों तक वह पहाड़ों और रेगस्तिानों में भटकते रहे, प्रभु में अकेले जीवन यापन करते हुए, अनवरत प्रार्थना में, भरपूर आँसू बहाते हुए, और उन आँसुओं से अपनी आत्मा को ओस की तरह सींचते हुए। ऐसा जीवन जीते हुए, वे वृद्धावस्था को प्राप्त हुए और प्रभु के पास चले गए।

कॉन्टाकयिन, स्वर 4:

पूर्व से चमकने वाले एक तेजस्वी तारे के रूप में, हे सर्व-धन्य चमत्कार-कर्ता थमिोथी, आपने अपने चमत्कारों के सद्गुणों से वश्विासयिों के हृदयों को प्रकाशति कयि है।

अमास्त्रसि के बशिप, संत जॉर्ज की स्मृति।

21 फरवरी को स्मरणोत्सव

[1967] लत्रिा वजन की एक इकाई है। एक यहूदी लत्रिा में 72 ज़ोलोटनकि होते थे। देखें 3 राजा 10:17।

[1968] अगाथोनयिस, रोम के पोप, ने 679 से 682 तक रोम के चर्च पर शासन कयि। उनका 10 जनवरी को नधिन हुआ।

[1969] एशयि माइनर में, फ्राइजयि और बथिनियि की सीमा पर।

उनके माता-पिता, थियोडोर और मगिफुसा, धार्मिक लोग थे, जो एक कुलीन परिवार से थे और अपने सदाचारी जीवन के लिए प्रसिद्ध थे[1970] । संतानहीन होने के कारण, उन्होंने ईश्वर से प्रार्थना की कि वह उन्हें संतान दें, और केवल उनके वृद्धावस्था में ही प्रभु ने उनकी प्रार्थना स्वीकार की। स्वर्ग से एक आवाज़ ने उन्हें एक पुत्र के जन्म की सूचना दी, उसका नाम रखा, और भविष्यवाणी की कि यह बच्चा बिशप के पद की कृपा से सम्मानित होगा। पुत्र का जन्म हुआ। यह थे पूजनीय जॉर्ज। जब वह किशोरावस्था में पहुँचा, तो उसके बारे में की गई भविष्यवाणी पूरी होने लगी, क्योंकि वह सांसारिक और आध्यात्मिक दोनों तरह की पढ़ाई में शानदार ढंग से उत्तीर्ण हुआ, और यह देखकर उसके माता-पिता ने ईश्वर की स्तुति की। वयस्क होने और अपनी शिक्षा पूरी करने के बाद, पूजनीय जॉर्ज ने अपना देश छोड़ दिया और सिरीकी पहाड़ों में चले गए। वहाँ उनकी मुलाकात एक धर्मनिष्ठ वृद्ध से हुई, जिन्होंने उन्हें संन्यास दीक्षा दी, और उनके मार्गदर्शन में उन्होंने संन्यासी जीवन जीना शुरू कर दिया। वृद्ध की मृत्यु के बाद, परम पूज्य योनसिा गए और वहाँ उन्होंने संन्यासी जीवन के कठोर तपस्या में स्वयं को समर्पित कर दिया। संत जॉर्ज का धार्मिक जीवन जल्द ही सभी को ज्ञात हो गया, और जब अमास्ट्रिस के बिशप ए [1971] का निधन हो गया, तो ईश्वर की इच्छा से उन्हें पुरोहितों और लोगों द्वारा बिशप चुना गया। अपने अभिषेक के लिए कॉन्स्टेंटिनोपल पहुँचने पर, उन्होंने सम्राट कॉन्स्टेंटिन VI और उनकी माँ आइरीन का अनुग्रह प्राप्त किया, और उन्हें पैट्रिआर्क तारासियस द्वारा अभिषिक्त किया गया। इस प्रकार, अंतत; वह सब कुछ जो प्रभु ने एक बार उनके माता-पिता से उनके बारे में भविष्यवाणी की थी, पूरा हुआ - आदरणीय व्यक्ति को अमास्ट्रिस के सिंहासन पर पदोन्नत किया गया, जैसे एक दीपक जिसे बोरा के नीचे नहीं छिपाया जाता है, बल्कि एक खंभे पर रखा जाता है (मत्ती 5:15)। जब वे राजधानी से अपने बिशप के शहर में पहुँचे, तो उन्होंने अपने झुंड को दिव्य शिक्षा में मजबूत किया, चर्चों में चर्च के सामान और सजावट को बढ़ाया, और वेदी के संबंध में धार्मिक नियम बनाए। साथ ही, वे हमेशा विधवाओं और अनाथों के रक्षक, गरीबों के पालनहार और कर्ज चुकाने वाले थे, और सभी के लिए एक सच्चे ईश्वर-प्रसन्न जीवन का आदर्श थे। परम पूजनीय ने कई चमत्कार किए: उदाहरण के लिए, अपनी प्रार्थनाओं के द्वारा उन्होंने आसपास के ग्रामीण इलाकों में तबाही मचा रहे सारासेनों को शहर से दूर भगा दिया; उन्होंने अमास्ट्रिस के उन व्यापारियों को चमत्कारिक रूप से बचाया जिन्हें ट्रेबिज़ॉन्ड में पकड़ लिया गया था और जिन्हें अन्यायपूर्वक मृत्युदंड दिया गया था। इतनी भक्ति से अपना सांसारिक जीवन जीने के बाद, पूजनीय जॉर्ज ने इस जीवन को त्याग दिया और शांतिपूर्वक अपनी आत्मा प्रभु को सौंप दी, जिनका महिमा अब और हमेशा और युगों-युगों तक हो[1972] ।

हमारे पवित्र पिता यूस्टेथियस, एंटिओक के बिशप का जीवन

21 फरवरी को स्मरण किया जाता है

मसीह की कलीसिया के महान संतों के समूह में, एशिया माइनर के पूर्व की प्राचीन राजधानी और ग्रीक-रोमन साम्राज्य के बिशप, अंत्योखिया के संत यूस्टाथियुस—[1973] —ईश्वर में सच्चे विश्वास के सबसे प्रतिष्ठित ईसाई स्वीकारकर्ताओं और रक्षकों में से एक हैं।

[1970] वे काला सागर के किनारे, पफ्लागोनिया के क्रोम्ना नगर में रहते थे।

[1971] अमास्ट्रिस शहर पाफलैगोनिया में स्थित था, जो रोमन साम्राज्य के उत्तरी एशिया माइनर प्रांतों में से एक था, और यह बिथिनिया और पोंटस के बीच पोंटस यूक्सिनिस (अब ब्लैक सी) के तट पर स्थित था।

[1972] संत जॉर्ज का निधन 3 मार्च को निकिफ़ोरस लोगोथेतेस (802–811) के शासनकाल के दौरान हुआ। उनकी कब्र पर कई चमत्कार हुए।

[1973] यरूशलेम के बाद ईसाई धर्म का दूसरा महान केंद्र होने के कारण, और इस तथ्य के कारण कि इसी में मूर्तिपूजकों के बीच पहली ईसाई चर्च की स्थापना हुई थी, एंटिओक शहर ईसाई चर्च के लिए विशेष महत्व रखता है। अंतियोक की स्थापना मसीह के जन्म से 300 साल पहले सीरियाई राजा सेल्यूकस निकिटर द्वारा की गई थी, जिन्होंने अपने पिता, एंटिओकस के नाम को अमर बनाना चाहा, इसलिए उन्होंने अंतियोक नाम के दस से अधिक अन्य शहरों की भी स्थापना की। अन्य शहरों से अलग करने के लिए, इस राजधानी एंटीऑक को एंटीऑक-एपिडाफना कहा जाता था, यानी डाफ्ने के मंदिर और वन के पास; इसे ओरोंटेस पर स्थित एंटीऑक के नाम से भी जाना जाता था, जिसका नाम उस नदी के नाम पर रखा गया था जिसके किनारे यह स्थित था, इसकी मुहाने से लगभग 10 वर्स्ट दूर जहाँ यह भूमध्य सागर में मिलती है। सीरियाई राजाओं और रोमन सम्राटों ने इस अंताकिया को सजाने-संवारने में बहुत सावधानी बरती, ताकि यह अपनी इमारतों की भव्यता और शानदार वैभव से चकित कर दे, जो पूर्व से पश्चिम तक 15 वर्स्ट तक फैली हुई थीं, और जिनके बीच से दो पंक्तियों में खंभों से सुसज्जित एक मार्ग गुजरता था, जो एक खुले, पक्के रास्ते के दोनों ओर एक ढका हुआ मार्ग बनाता था... आबादी मिश्रित थी: उनमें यहूदी भी थे; जीवन प्रसन्न और जीवंत था; वहाँ कवियों, वक्ताओं, दार्शनिकों, विद्वानों और भविष्यवक्ताओं ने उदारतापूर्वक अपनी बौद्धिक कृतियों की प्रस्तुति दी; सामान्य तौर पर, मूर्तिपूजक संस्कृति

[1974] संत यूस्टाथियस तीसरी शताब्दी के अंत से चौथी शताब्दी के मध्य तक जीवित थे। उनका जन्म पम्फलिया के सिडे[1975] शहर में हुआ था, और उन्होंने शुरू में सीरिया के बेरिया[1976] में महाधर्माध्यक्ष के रूप में सेवा की, जहाँ से, अपने गुणों और चर्च के प्रति सेवाओं के कारण, और लोगों के अनुरोध पर, उन्हें प्रथम सार्वभौमिक परिषद के पितृगणों द्वारा अंकोना में स्थानांतरित कर दिया गया।

संत यूस्टाथियस की पादरीय सेवा का काल मसीह की कलीसिया के सदियों लंबे इतिहास में एक असाधारण और अद्वितीय समय था। यह कलीसिया के सार्वभौमिक शिक्षकों, यानी इसके महान व्यक्तियों, की संख्या और महानता दोनों ही दृष्टि से एक विशेष रूप से तेजस्वी युग था। यद्यपि इसके बाद के शताब्दियाँ भी अपने विश्वास के शिक्षकों के लिए गौरवमय थीं, वे पहले से ही चौथी शताब्दी के सबसे धर्मपरायण पितरों के अनुकरणकर्ता और शिष्य थे। पहली तीन शताब्दियों तक मसीह के क्रूस के झंडे तले चला गया मूर्तिपूजा के विरुद्ध ईसाई धर्म का संघर्ष, चौथी शताब्दी की शुरुआत में मूर्तिपूजा पर पूर्ण विजय के साथ समाप्त हुआ; अब सार्वभौमिक ग्रीक-रोमन साम्राज्य के भीतर मूर्तिपूजा के विरुद्ध ईसाई धर्म की रक्षा करने की कोई आवश्यकता नहीं थी, और न ही मूर्तिपूजा पर ईसाई धर्म की श्रेष्ठता को साबित करने की कोई आवश्यकता थी। तब मसीह की कलीसिया पर जो बाहरी शांति छा गई, उसने कलीसिया के आंतरिक मामलों का एक समान संगठन स्थापित करना और पादरियों तथा उनके झुंडों के बीच बिना किसी बाधा के सैद्धांतिक चर्चाएं आयोजित करना संभव बना दिया। लेकिन ठीक उसी समय कलीसिया के आंतरिक शत्रुओं, अर्थात् विधर्मियों[1977] के खिलाफ एक और भी कठिन संघर्ष की आवश्यकता उत्पन्न हुई।

उस समय चर्च को परेशान करने वाले विधर्मियों में सबसे प्रमुख मिस्र के अलेक्जेंड्रिया के चर्च के एक विद्वान पुरोहित[1978] थे, जिनका नाम एरियस[1979] था। अपनी सीमित तर्कशक्ति के अहंकारी जोश में, एरियस ने गैर-देवताओं को दिव्यता के संचार के पवन सिद्धांत को पुनर्जीवित करते हुए, अपमानजनक रूप से यह दावा किया कि:

पनपी, यद्यपि एक विकृत रूप में... अपने उदय के बिल्कुल शुरुआती समय से ही, ईसाई धर्म ने अपनी शिक्षाओं की दैवीय प्रकाश से एंटिओक को प्रकाशित किया; यहीं पर उन पहले ईसाइयों ने शरण ली थी; महादीकन स्तेफानोस की हत्या के बाद, अपनी निति से बचने के लिए, उन्हें यरूशलेम से भागने के लिए मजबूर होना पड़ा था, और अंतीयक में उन्होंने जो प्रचार शुरू किया वह इतना आवश्यक माना गया कि यरूशलेम की कलीसिया ने प्रेरित बरनबास और पौलुस को वहाँ विश्वास स्थापित करने के लिए भेजा; उन्होंने 'कई लोगों को सिखाया, और एंटिओक में ही शिष्यों को पहली बार ईसाई कहा गया' (प्रेरितों के काम 11:20–26)। एंटिओक में ही पहला ईसाई मिशन भी शुरू हुआ; यहीं से प्रेरित पौलुस ने अपनी धर्मप्रचार यात्राएँ आरंभ कीं; प्रेरित पतरस ने भी वहाँ चर्च की अध्यक्षता की। और यरूशलेम के पतन के बाद, अंतीयक एशिया की कलीसिया में प्रथम स्थान पर आ गया, जिसकी महत्त्वता रोम, कॉन्स्टेंटिनोपल और अलेक्जेंड्रिया के प्रतिस्पर्धी थी। अंतियोकिया में एक प्रसिद्ध धर्मशास्त्रीय विद्यालय फल-फूल रहा था, जिसने चर्च के कई उत्कृष्ट शिक्षकों को जन्म दिया जिन्होंने मूर्तिपूजा, यहूदी धर्म और विधर्मियों के विरुद्ध ईसाई धर्म का बचाव किया; विधर्मी संघर्ष के समय यह चर्च के पादरियों की कई परिषदों का स्थल भी था... तेरहवीं शताब्दी में, मिस्र के सुल्तान द्वारा अंत्ज़िक को पूरी तरह से नष्ट कर दिया गया था, और अब उसकी जगह पर अंटाकया नामक एक दयनीय, गंदा तुर्की शहर खड़ा है, जो अपने इस विकृत नाम से ही ओरोन्टिस पर लंबे समय से प्रसिद्ध अंत्ज़िक के पूर्व गौरवशाली सोलह-शताब्दी अस्तित्व की याद दिलाता है... फिर भी आज भी, अंत्योखिया के ईसाई पैट्रिआर्क पूर्वी चर्च के पैट्रिआर्कों में महत्वपूर्ण तीसरे स्थान पर हैं और 'सम्पूर्ण पूर्व के पैट्रिआर्क' की उपाधि धारण करते हैं।

[1974] यूस्टैथियस नाम ग्रीक है; इसका अर्थ है 'स्थिर', 'अडिग'।

[1975] सिडि पम्फलिया में एक महत्वपूर्ण बंदरगाह शहर था, जो एशिया माइनर के दक्षिणी भाग में, टॉरस पर्वत की तलहटी में, सीरिया के तटीय हिस्से को शामिल करने वाला एक क्षेत्र है।

[1976] बेरीया सीरिया में एक शहर था, जो भूमध्य सागर के पूर्व में एशिया माइनर का एक क्षेत्र था।

[1977] संत बेसिल द ग्रेट के नियम में कहा गया है कि चर्च के प्राचीन पिताओं ने उन लोगों को विधर्मी कहा जो 'विश्वास से पूरी तरह से अलग हो गए थे और खुद को उससे अलग कर लिया था'।

[1978] अलेक्जेंड्रिया मिस्र का एक प्रसिद्ध शहर है, जिसकी स्थापना महान अलेक्जेंडर ने मसीह के जन्म से 300 साल पहले भूमध्य सागर के तट पर की थी। अलेक्जेंड्रिया अपनी विद्वता और व्यापार के लिए प्रसिद्ध था, और चौथी शताब्दी की शुरुआत से यह ईसाई चर्च और धर्मशास्त्र की शिक्षा का एक महत्वपूर्ण केंद्र बन गया। प्रसिद्ध अलेक्जेंड्रियाई धर्मशास्त्र विद्यालय ने न केवल ईसाइयों बल्कि मूर्तिपूजकों के बीच से भी छात्रों को आकर्षित किया।

[1979] उस समय अलेक्जेंड्रिया में चर्च के एक डीकन रहे एरियस को अलेक्जेंड्रिया के बिशप सेंट पीटर ने चर्च से निष्कासित कर दिया था; लेकिन सेंट पीटर के उत्तराधिकारी, वृद्ध बिशप अचिल ने एरियस को क्षमा कर दिया, उसे डीकन के रूप में बहाल कर दिया और यहां तक कि एक प्रेस्बिटिर (पादरी) के रूप में भी नियुक्त कर दिया। तब आरियस ने अलेक्जेंड्रिया में एक महत्वपूर्ण पद प्राप्त कर लिया; वह बौकलिस के बड़े पैरिश का प्रमुख था, जहाँ वह ईसाई सिद्धांत पढ़ाता था। आरियस विद्वान था, अपने नैतिक आचरण में निर्दोष था; उसका रूप कठोर था, वह लंबा था, गरिमा के साथ चलता था, और उसका संपूर्ण आचरण कई लोगों को आकर्षित करता था। उसका पहनावा एक भिक्षु जैसा था; वह हमेशा एक बिना आस्तीन की चोगा और एक बहुत ही संकीर्ण लबादा पहनता था, जबकि उसकी कोमल वाणी, दिखावा की नम्रता और जब भी उसे सुविधाजनक

1) यद्यपि परमेश्वर पिता शाश्वत हैं, एक समय था जब वे पिता नहीं थे और न ही उनका कोई पुत्र था;

2) पुत्र का सृजन किया गया था, उसे सभी से पहले पिता द्वारा अस्तित्व में लाया गया था, और पुत्र के माध्यम से दुनिया का सृजन हुआ था;

3) पुत्र शाश्वत नहीं है, बल्कि सभी प्राणियों में सर्वोच्च है; पुत्र पिता के समान है – नाम मात्र से ईश्वर, लेकिन सार में नहीं;

4) परमेश्वर पिता ने अपनी दयालुता में पुत्र को ज्ञान प्रदान किया: फिर भी पुत्र परमेश्वर पिता को पूरी तरह से नहीं जानता;

5) पवित्र आत्मा भी ईश्वर का व्यक्ति नहीं है, बल्कि पुत्र द्वारा सृजित किया गया था[1980] ।

ऐसी धर्मनिंदापूर्ण झूठी शिक्षा से आक्रोशित होकर, अलेक्जेंड्रिया के बिशप अलेक्जेंडर[1981] ने एरियस से इस विधर्म को त्यागने का आग्रह किया। और जब एरियस ने बिशप की कोमल अनुनय-विनय पर ध्यान नहीं दिया, तो मिस्र और लीबिया के एक सौ बिशपों का एक स्थानीय परिषद बुलाया गया। अलेक्जेंड्रिया के चर्च की इस प्रांतीय परिषद ने एरियस को, उनके विचारों से सहमत कई पुरोहितों और डिकन्स के साथ, धर्मनिंदा करने वाले विधर्मी घोषित कर चर्च से बहिष्कृत कर दिया; उन्होंने बदले में न केवल पड़ोसी चर्चों के पादरियों के बीच बल्कि लोगों के बीच भी सक्रिय रूप से समर्थन हासिल करने की कोशिश की। इस उद्देश्य के लिए, उन्होंने अपने समान विचारधारा वाले अनुयायियों और अपनी धूर्त झूठी शिक्षाओं वाले पत्रों को पूर्व की सभी चर्चों में भेजा, और एरियस की झूठी शिक्षाओं की भावना में भजन रचे, जिन्हें लोकप्रिय धुनों पर सेट किया गया था। उस समय पूर्व में धर्मशास्त्रीय चर्चाओं और विवादों का जुनून इतना अधिक था कि धार्मिक मामलों पर न केवल घरों में, बल्कि सार्वजनिक चौराहों और सड़कों पर भी बहस होती थी; मूर्तिपूजकों ने तो अपने थिएटरों में इन विवादों का मज़ाक भी उड़ाया और खारिज किए गए मूर्तिपूजक धर्म के लाभ के लिए ईसाइयों के मतभेदों का फायदा उठाया।

चतुर एरियन विधर्मीयों द्वारा इस तरह से विचलित, सीरिया और उस क्षेत्र में स्थित चर्च, जहाँ संत यूस्टाथियस आर्चबिशप के रूप में सेवा कर रहे थे, धर्मशास्त्रीय प्रश्नों और संदेहों के समाधान पर बहस करते हुए उथल-पुथल में थे... हालाँकि, संत यूस्टाथियस, जो अपने गहरे धर्मशास्त्रीय ज्ञान और सांसारिक शिक्षा के लिए विख्यात थे, मसीह के ईसाई धर्म के एक दृढ़, निडर स्वीकारोक्तिकर्ता[1982] थे, बरेया में ईसाइयों के अंतिम पगन उत्पीड़न के दौरान भी, और अब, चर्च के भीतर एरियनवाद से उत्पन्न उथल-पुथल के दौरान, वह उन पहले संतों में से एक थे जिन्होंने मौखिक और लिखित रूप से, एरियस और एरियनों की धर्मनिंदा करने वाली झूठी शिक्षाओं का उत्साहपूर्वक विरोध किया।

यहाँ तक कि सम्राट कॉन्स्टेंटिन द ग्रेट, जिन्हें प्रेरितों के बराबर माना जाता था, ने अलेक्जेंड्रिया, सीरिया और अन्य चर्चों में ऑर्थोडॉक्स और एरियनों के बीच सामंजस्य और शांति बहाल करने का प्रयास किया, लेकिन वे ऐसा करने में असमर्थ रहे। इसलिए, इस कलह को समाप्त करने के लिए, सम्राट ने पूरे ईसाई चर्च के एपिस्कोपेट से अपील करने का निर्णय लिया और निकिया में चर्च का पहला सार्वभौमिक परिषद बुलाया[1983] ।

लगता था दूसरों पर की जाने वाली चापलूसी श्रोताओं को उसकी ओर आकर्षित करती थी। जब, सार्वभौमिक परिषद द्वारा एरियस के बहिष्कार के बाद, 336 में एक बार फिर—उसके समान विचारधारा वाले अनुयायियों के उकसावे पर—उसे चर्च की गोद में पुनःस्वीकार करने का निर्णय लिया गया, तो एरियस, चर्च पहुँचने से पहले ही, अचानक बीमार पड़ गया; उसकी आंतें बाहर निकल आईं और वह चौक में ही मर गया।

[1980] फिलिरेत, चेर्नगिव के आर्चबिशप, ऑर्थोडॉक्स डॉगमैटिक थियोलॉजी, 1865 संस्करण, भाग 1, पृ. 164। और 'द टीचिंग ऑफ द चर्च फादर्स', 1859 संस्करण, खंड 2, पृ. 13।

[1981] संत अलेक्जेंडर, ऑर्थोडॉक्सी के एक उत्साही रक्षक, जिन्होंने 313 से 328 तक अलेक्जेंड्रिया के बिशप के रूप में कार्य किया और जो आस्था में अपनी दृढ़ता के लिए प्रसिद्ध थे। 325 में निकिया के प्रथम सार्वभौमिक परिषद में, वह अंकोई के संत यूस्टाथियस और संत अथेनासियस के साथ ऑर्थोडॉक्सी के एक प्रभावशाली पैरोकार थे, जिन्हें उन्होंने बाद में अलेक्जेंड्रिया में अपना उत्तराधिकारी नियुक्त किया। संत अलेक्जेंडर ने ऑर्थोडॉक्सी के एक प्रसिद्ध रक्षक, संत यूस्टाथियस को एरियस के संबंध में एक पत्र लिखा।

[1982] ईसाई चर्च में, 'कन्फेशर्स' (confessors) वे लोग हैं, जिन्होंने विश्वास के लिए उत्पीड़न के दौरान, खुले तौर पर ईसाई धर्म का प्रचार किया और इसके लिए यातनाएं झेलीं, फिर भी जीवित रहे। उन्हें ईसाइयों के बीच विशेष सम्मान दिया जाता था और मुख्य रूप से उन लोगों को चर्च के साथ फिर से मिलाने का काम सौंपा जाता था, जो धर्म से भटक गए थे या उन्होंने धर्म त्याग दिया था।

[1983] निकाया, एशिया माइनर के एक उत्तर-पश्चिमी प्रांत बिथिनिया की राजधानी थी, जिसे मसीह के जन्म से 75 साल पहले रोमनों ने जीत लिया था। प्राचीन काल में, निकाया एक समृद्ध और फलता-फूलता शहर था; आज, इसकी जगह पर इज़्निक का गरीब छोटा सा कस्बा बसा है।

उस समय के इतिहासकार यूसेबियस के अनुसार, इस परिषद को बुलाने में, सम्राट कॉन्स्टेंटाइन ने मसीहा मसीह को 'सुंदर फूलों का एक पुरोहितीय हार, जो दुनिया की एकता से बुना और बंधा हुआ हो' समर्पित करना चाहा। और सम्राट के आह्वान पर, एशिया, अफ्रीका और यूरोप से लगभग तीन सौ बिशप निकिया शहर में एकत्रित हुए; यहाँ तक कि उन देशों के बिशप भी थे जो ग्रीको-रोमन साम्राज्य के अधीन नहीं थे, जैसे फारस और स्किथिया[1984] । उनके साथ आए प्रेस्बिटिरों, डिकिन्स और अन्य पुरोहितों की संख्या बिशपों की संख्या से कहीं अधिक थी। सामान्य लोगों में, उच्चतम पदाधिकारियों के अलावा, कई दार्शनिक[1985] और विद्वान निकिया आए। और इस प्रकार, इस परिषद में, संत यूस्टैथियस को उनकी महान भक्ति और धर्मशास्त्र तथा सांसारिक मामलों के गहरे ज्ञान, साथ ही ऑर्थोडॉक्स सिद्धांत की शुद्धता को बनाए रखने के प्रति अटूट उत्साह के कारण, चर्च के पवित्र पिताओं द्वारा एक विशेष रूप से प्रमुख और महत्वपूर्ण भूमिका सौंपी गई। महान सार्वभौमिक परिषद में संत यूस्टाथियस को प्रथम अध्यक्षता[1986] सौंपी गई; उन्होंने पहले बिशप की सीट पर, सम्राट के दाहिने ओर बैठकर, पूरे सार्वभौमिक परिषद की ओर से 'अपोस्टलों के समान' सम्राट कॉन्स्टेंटिन को संबोधित करने का सम्मान प्राप्त किया। यहाँ संत यूस्टाथियस का यह वाक्पटु भाषण है, जो विश्वास और आत्मा में शक्तिशाली है:

'अत्यंत धर्मनिष्ठ शासक!'

धन्य है वह ईश्वर, जिसने आपको पृथ्वी का शासक चुना है, जिसने आपके हाथ से मूर्तिपूजा को नष्ट किया है और आपके द्वारा, विश्वासियों के हृदयों में शांति स्थापित की है। दुष्टात्माओं की शक्ति पहले ही पैरों तले कुचल दी गई है; बहुदेववाद की वेदियों को उलट दिया गया है; अधर्मीपन का अंधकार दूर हो रहा है; और दिव्य शिक्षा का प्रकाश पूरे ब्रह्मांड को प्रकाशित कर रहा है। पिता की महिमा होती है, पुत्र का सम्मान होता है, और पवित्र आत्मा की घोषणा की जाती है—एकसार त्रिमूर्ति; तीन व्यक्तियों या हाइपोस्टासीस में एक ईश्वर का सर्वत्र प्रचार किया जाता है। हे शासक, इस सिद्धांत पर आपकी धार्मिकता की महानता स्थापित होती है। इसे हमारे लिए पूर्ण और अखंडित रूप से संरक्षित करें, ताकि कोई भी विधर्मी, चर्च में घुसपैठ करके, त्रिमूर्ति परमेश्वर की एकता को न तोड़ सके या हमारे विश्वास का अपमान न कर सके! इस सभा और हमारी विचार-चर्चा का कारण उत्कट एरियस है, जो अलेक्जेंड्रिया के चर्च में एक पुरोहित के रूप में नियुक्त किया गया था , और जिसने स्वयं को परम धन्य भविष्यवक्ताओं और प्रेरितों की शिक्षाओं से अलग साबित किया। क्योंकि वह एकमात्र पुत्र और पिता के वचन को एकसार (same substance) और पिता के समान मानने से इनकार करता है; और, सृष्टि की उपासना करने वाले के रूप में, वह सृष्टिकर्ता को सृष्टि में गिनने का प्रयास करता है। हे सर्वशक्तिमान, आज्ञा दें कि वह अपनी भूल को त्यागकर प्रेरितों की शिक्षा के विरुद्ध विद्रोह न करे; या, यदि वह अपनी अधर्मी राय पर अडिग रहता है, तो उसे ऑर्थोडॉक्स चर्च की संगति से निष्कासित कर दें—कहीं ऐसा न हो कि वह अपनी अधर्मी रायों से कमजोर आत्माओं के विश्वास को और अधिक डगमगाए[1987] '। संत यूस्टाथियस ने ऐसा कहा।

कई मूर्तिपूजक दार्शनिक ईसाइयों के इस प्रथम सार्वभौमिक परिषद के लिए निकिया आए थे; कुछ ईसाई सिद्धांत से बेहतर परिचित होने के लिए आए, जबकि अन्य, इस सिद्धांत से घृणा के कारण, बिशपों के प्रवचनों को भ्रमित करने और ईसाई शिक्षण को खंडित करने के लिए जटिल तर्कों का उपयोग करने की उम्मीद कर रहे थे। चर्च लेखक उल्लेख करते हैं कि अंθοओक के संत यूस्टाथियस[1988] , जो गहरे दार्शनिक ज्ञान के धनी थे, ने संपूर्ण परिषद की ओर से इन दार्शनिकों में से सबसे घमंडी, फेडो नामक एक व्यक्ति के खिलाफ पहला खंडन प्रस्तुत किया, जो अधर्मी एरियस और उसके अपमानजनक सिद्धांत का बचाव कर रहा था। और पवित्र परिषद के साथ अपनी बहस के अंत में, यह दार्शनिक संतों के उत्तरों से इतना प्रभावित हुआ कि उसने ऊँचे स्वर में कहा: 'महिमा तेरी हो, हे ईश्वर, जिन्होंने अपने संतों को

[1984] संत अथेनासियस द ग्रेट, अलेक्जेंड्रिया के बिशप, का यह दावा है कि प्रथम सार्वभौमिक परिषद हमारे संपूर्ण ब्रह्मांड का प्रतिनिधित्व करती थी, क्योंकि सम्राट कॉन्स्टेंटाइन के निमंत्रण इस परिषद के लिए रोमन साम्राज्य की सीमाओं से भी परे बिशपों तक पहुँचाए गए थे, जो इस परिषद में फारस और स्किथिया के बिशपों की उपस्थिति की व्याख्या करता है, वे देश जो रोमन साम्राज्य का हिस्सा नहीं थे

[1985] दार्शनिक का अर्थ है: ज्ञान का प्रेमी। दार्शनिक वे लोग हैं जिन्होंने अस्तित्व के सर्वोच्च प्रश्नों के अध्ययन के लिए स्वयं को समर्पित किया है: ईश्वर, दुनिया और मानवता की उत्पत्ति और नियमों, अस्तित्व के अंतिम उद्देश्यों, और इसी तरह के विषयों से संबंधित।

[1986] पहले सार्वत्रिक परिषद की अध्यक्षता बारी-बारी से सबसे प्रतिष्ठित धर्मप्रांतों के बिशपों ने की, और इन अध्यक्ष बिशपों में से पहले संत यूस्टाथियस ऑफ़ एंटिओक थे। (अधिक जानकारी के लिए देखें डी. बी. वीएल. गेटे की *चर्च का इतिहास*, 1875 में प्रकाशित, खंड 3, पृष्ठ 6–7 और 10)।

[1987] एकीकृत परिषदों के कार्यवृत्त, काज़ान थियोलॉजिकल अकादमी द्वारा 1859 में रूसी अनुवाद में प्रकाशित, खंड 1, पृष्ठ 86–87।

[1988] एक्ट्स ऑफ द इक्यूमेनिकल काउंसिल्स, 1859 में प्रकाशित, खंड 1, पृष्ठ 104–106।

शुद्ध, असीम और अकल्पति ईश्वरत्व का रहस्य प्रकट कयि है, जो सभी समझ से परे है।' मैं आपसे वनिती करता हूँ, हे मसीह, सर्व-सत्पुरुष पति के सर्व-सत् पुत्र, कि आप मुझे उन सभी पापों के लिए क्षमा करें जो मैंने आपके वरिुद्ध कए हैं, क्योंकि मैं अब तक एरयिस की अधर्मी शक्षिाओं से भटक गया था... आज से, मैं हमेशा के लिए एरयिस और उसके अधर्मी वचिारों को, तथा उन सभी को जो उसकी तरह, पति, पुत्र और पवत्रि आत्मा के वरिुद्ध तर्क करने और अपमान करने का दुस्साहस करते हैं, नन्दिा करता हूँ..."[1989]

लेकनि एरयिस स्वयं, कुछ समान वचिारधारा वाले अनुयायियों के साथ, अपने वचिारों पर अडगि रहा। तब परषिद के धर्मगुरुओं ने, जनिमें संत यूस्टेथयिस का सम्मान का स्थान था, गंभीरता से और सर्वसम्मति से ईश्वर के पुत्र को ईश्वर पति के समान सार का स्वीकार कयि; जबकि आरयिस की शक्षिा, परमेश्वर के वचन और पतिरों की परंपरा के वपिरीत होने के कारण, आरयिस के झूठे सद्धिांत को मानने वालों के साथ, शाप और ऑर्थोडॉक्स चर्च से बहष्किार की दंड-सूचना को प्राप्त हुई। और सभी भावी काल के लिए सटीकता के साथ वश्विास की सच्ची स्वीकारोक्ति को स्थापति करने के लिए, परषिद के पतिरों ने इस स्वीकारोक्ति को धर्म-सूत्र (Creed) में प्रस्तुत कयि, जैसा कि ईश्वर द्वारा दयि गया है[1990] । एरयिस और उसके वचिारों को साझा करने वाले दो बशिप, थयिोन और सेकंडस[1991] , को चर्च से बहष्कृत कए जाने के बाद सम्राट ने नर्विासति कर दयि।

ईसाई धर्म की इस स्वीकारोक्ति, जिसे सार्वभौमकि परषिद ने अनुमोदति कयि था, पर एरयिस के कई समर्थकों ने भी हस्ताक्षर कए थे; हालाँकि, नकिोमेडयि के बशिप यूसेबयिस और नाइके के थयिोग्नसि ने, इस परषिद की स्वीकारोक्ति पर हस्ताक्षर करते समय, एरयिस की नदिा पर हस्ताक्षर करने से इनकार कर दयि। इसके लिए, एरयिन वधिर्म के रक्षकों के रूप में, सम्राट ने उन्हें उनके धार्मकि पदों से हटा दयि और नर्विासति कर दयि; हालाँकि, वहाँ से उन्होंने अपनी गलती का एक लखिति स्वीकारोक्ति भेजा और इसलिए उन्हें क्षमा कर दयि गया और वे अपने धर्मप्रांतों में लौट आए।

[1992]उस समय के एक चर्च इतहिासकार, साइरस के बशिप ब्लेस्ड थयिोडोरेट[1993] , ने प्रथम सार्वभौमकि परषिद के अपने वृत्तांत में, अन्य बातों के अलावा, एरयिनों के वरिुद्ध लखिी गई एंटओिक के संत यूस्टेथयिस की एक रचना से नम्निलखिति अंश का हवाला दयि है: 'जब नकियि में धर्म की बातों पर वचिार करने के लिए महान परषिद का आयोजन हुआ, जसिमें लगभग 270 बशिप इकट्ठा हुए (मैं 'लगभग' कहता हूँ, क्योंकि इतने बड़ी संख्या में लोगों के इकट्ठा होने के कारण मैं उनकी सटीक संख्या नर्धिारति नहीं कर सकता, और न ही, इसके अलावा, मैंने इसकी वशिेष सावधानी से जाँच की है) और जब वे धर्मसूत्र स्थापति करने लगे, तो नकिोमेडयि के यूसेबयिस का एक ग्रंथ, जो ईश्वरनन्दिापूर्ण शक्षिाओं से भरा था, परषिद के बीच में प्रकट हुआ। सभी को यह ज़ोर से पढ़कर सुनाए जाने पर, इसने अपनी बेतुकी बातों से श्रोताओं को तुरंत अवर्णनीय दुख पहुँचाया, जबकि लेखक स्वयं को असहनीय लज्जा से ढक दयि। अब यूसेबयिस का कार्य[1994] उजागर हो गया है, और यह अधर्मी ग्रंथ (यूसेबयिस का धर्म-सूत्र) सभी के सामने चीर-फाड़ कर फेंका गया

[1989] एक्ट्स ऑफ़ द इक्यूमेनकिल काउंसलि, 1859 में प्रकाशति, पृ. 145।

[1990] एक्ट्स ऑफ द इक्यूमेनकिल काउंसलि, 1859 में प्रकाशति, पृ. 157, 22, 29, आदि। चर्च के इतहिासकारों के अनुसार, नकिय की परषिद, पहली सार्वभौमकि परषिद, 'मैसेडोनिया के राजा अलेक्जेंडर के 636वें वर्ष में, पालनिस और जूलयिन के कौंसुलत्व के दौरान, मई के 20वें दनि' हुई थी; यह कॉन्स्टेंटनि महान के शासन का 20वां वर्ष और 325 ईस्वी का वर्ष था।

[1991] मार्मेरसि के बशिप थयिोन, और टोलेमाइस के बशिप सेकंडस, जन्हिोंने पूरी परषिद द्वारा अनुमोदति धर्म-सूत्र पर हस्ताक्षर करने से इनकार कर दयि।

[1992] इनमें थे: नकिोमेडयि के यूसेबयिस, नकिी के थयिोगनज़ि, मार्मारसि के थयिोनस, पटोलेमाइस के सेकंडस, लाओडकियि के थयिोडोटस, तारस के पॉलनिस, अनाज़ारबस के अथेनासयिस, लडिस के एटयिस, बेरूत के ग्रेगरी, एफेसस के मेनोफैंटस, स्कथिोपोलसि के पैट्रोफलिस, काल्सेडोन के मारसि, और नेरोनयिास के नार्ससिस।

[1993] प्रसद्धि चर्च इतहिासकार थयिोडोरेट, साइरस के बशिप, का जन्म 390 में ओरोंटेस पर स्थति एंटओिक में हुआ था; उन्हें 423 में एंटओिक के पैट्रआिर्केट के भीतर साइरस का बशिप नयिुक्त कयि गया था, और 457 में उनकी मृत्यु हो गई; उन्हें पाँचवीं शताब्दी के पूर्वी चर्च के सबसे वद्विान महा-धर्मोपचारकों में गनिा जाता था।

[1994] नकिोमेडयि के बशिप यूसेबयिस, एफ़सिस के बशिप मेनोफोन के साथ, स्कैथोपोलसि के पाट्रोफलिस, नकिी के थयिोगनज़ि, नेरोनयिास के नार्ससिस, मार्मारीस के थयिोनस और टोलेमाइस के सेकंडस ने, एरयिन संप्रदाय की कुरीतयिों के अनुसार रचति धर्मवश्विास का एक मसौदा प्रस्तुत कयि, जसिे उन्होंने अस्पष्ट अभव्यिक्तयिों से छपिाने की कोशशि की; लेकनि इस चाल को वश्विास के सच्चे सद्धिांत के रक्षकों द्वारा तुरंत बेनकाब कर दयि गया, और नकिोमेडयि के यूसेबयिस के धर्म-वश्विास को वधिर्मी घोषति कर बनिा कसिी हचिकचिाहट के खारजि कर दयि गया। धर्म-वश्विास का एक दूसरा मसौदा, जो फलिस्तीन के केसरयि के एक अन्य यूसेबयिस द्वारा प्रस्तुत कयि गया था, इस शर्त पर मंजूरी

है... यह भय मानते हुए कि कहीं ऐसा न हो कि इतने बड़े परिषद के आदेश से उन्हें चर्च से निकाल दिया जाए, एरियस के अनुयायियों ने भी (परिषद में) उठ खड़े हुए और परिषद द्वारा निंदित सिद्धांत (एरियस के सिद्धांत) पर पाबंदी लगा दी... इस प्रकार, कई षड्यंत्रों के माध्यम से, उन्होंने चर्च के भीतर अपने पदों (अर्थात् अपने बिशप के पद) को बनाए रखा, जबकि उन्हें पश्चाताप की अवस्था में होना चाहिए था; (और सार्वभौमिक परिषद के बाद) उन्होंने कभी-कभी गुप्त रूप से, कभी-कभी खुलेआम, परिषद द्वारा अस्वीकार किए गए विचारों का पक्ष लेना और यहाँ तक कि उन्हें पुष्ट करना शुरू कर दिया। इसके अलावा, व्यर्थ की बातों को फैलाने को मजबूत करने की इच्छा से, उन्होंने पवित्र शास्त्रों में पारंगत लोगों के संपर्क से परहेज किया, निगिरानी से बचा और इस प्रकार, मानो, धर्मपरायणता के प्रचारकों को कुचल दिया। लेकिन हमारा विश्वास है कि अधर्मी लोग दैवीय पर विजय प्राप्त नहीं कर सकते: 'क्योंकि यदि वे फिर से सफल हो भी जाएँ, तो उन्हें फिर से पराजित किया जाएगा...'[1995]

निकाया के सार्वभौमिक परिषद से अंóoओक लौटने पर, संत यूस्टाथियस ने अंóoओक के मेट्रोपॉलिटन के रूप में अपने अधिकार क्षेत्र के कई चर्च क्षेत्रों के बिशपों और पुरोहितों की एक परिषद बुलाई[1996] , उन्होंने उन्हें निकिया के सार्वभौमिक परिषद के सभी फरमानों की कार्यवाही से अवगत कराया और उनसे इन फरमानों का दृढ़ता से पालन करने का आग्रह किया, और विशेष रूप से, धर्म-विश्वास की सही स्वीकारोक्ति का, जो धर्म-विश्वास-सूत्र में व्यक्त की गई थी, जिसे संपूर्ण ईसाई चर्च के प्रतिनिधियों की परिषद द्वारा अनुमोदित किया गया था[1997] ।

अगले वर्ष, 326 में, संत यूस्टेथियस को जॉर्जिया, प्राचीन इबेरिया[1998] की भूमि की यात्रा करने का कार्य सौंपा गया, ताकि वे ईसाई धर्म अपनाने के इच्छुक निवासियों का बपतिस्मा करें और वहाँ ऑर्थोडॉक्स चर्च की स्थापना करें। प्राचीन इबेरिया (जॉर्जिया), या जॉर्जिया में रहने वाले जनजातियाँ मूर्तिपूजक और अग्निपूजक थीं; वे कुछ हद तक ग्रीको-रोमन साम्राज्य के अधीन थीं, लेकिन उनके अपने राजा और अपनी नागरिक व्यवस्था थी। स्थानीय परंपरा के अनुसार, यह संत एंड्रयू द एपोस्टल थे, जो साइमन द कनानाइट के साथ, जिन्होंने जॉर्जिया के कुछ तटीय जनजातियों को सर्वप्रथम मसीह उद्धारकर्ता का उपदेश दिया। अधिकांश निवासियों और शाही परिवार को चौथी शताब्दी के पहले भाग में सीरिया से आई पवित्र कुंवारी नीना ने ईसाई धर्म में परिवर्तित किया।

जब संत नीना के उपदेश—चमत्कारों के साथ—के बाद, यहां तक कि सबसे कट्टर मूर्तिपूजक—जॉर्जिया की रानी नाना और राजा मिरियन—भी मसीह में विश्वास करने लगे, तो उन्होंने सम्राट कॉन्स्टेंटाइन द ग्रेट ( ) के पास एक राजदूत दल भेजा, यह अनुरोध करते हुए कि जॉर्जिया में पादरियों को भेजा जाए ताकि वे उन्हें और उनके लोगों को बपतिस्मा

दे दी गई कि शब्द: 'एकसार पदार्थ का'। हालाँकि, परिषद ने कार्डुब के बिशप ओसियास द्वारा प्रस्तुत विश्वास की घोषणा को अपनाया, जिन्हें सम्राट का विशेष अनुग्रह प्राप्त था, और जिसे बाद में निकेन क्रीड के नाम से जाना जाने लगा।

[1995] धन्य थियोडोरेट, साइरस के बिशप की चर्च का इतिहास। रूसी संस्करण, सेंट पीटर्सबर्ग, 1852, अध्याय VIII, पृ. 46–47।

[1996] पवित्र प्रेरितों के उदाहरण का अनुसरण करते हुए और पवित्र प्रेरितों के नियम 31 के आधार पर, प्राचीन काल से ही ऑर्थोडॉक्स चर्च में प्रमुख शहरों के अध्यक्ष बिशपों द्वारा 'स्थानीय' परिषदों का आह्वान किया जाता रहा है, या 'विशेष' परिषदें, जिनमें उस देश के प्रमुख शहर के बिशप के अधीनस्थ बिशप और प्रेस्बिटिर शामिल होते हैं, ताकि उस क्षेत्र के भीतर सिद्धांत और प्रशासन से संबंधित प्रश्नों और मामलों को चर्च के नियमों और परंपरा के अनुसार हल किया जा सके। ऐसी परिषदों के फरमान केवल उसी देश या क्षेत्र के भीतर बाध्यकारी होते हैं, जिनके प्रतिनिधियों ने उस विशेष परिषद के सदस्यों का गठन किया था।

[1997] यहाँ विश्वास का यह प्रतीक है, जैसा कि पवित्र धर्मसभा द्वारा अनुवादित है, जो पवित्र प्रेरितों, पवित्र धर्मसभाओं और पवित्र पितरों के नियमों की पुस्तक में दिया गया है। 'हम एक परमेश्वर, पिता, सर्वशक्तिमान, सभी दृश्य और अदृश्य चीजों के सृष्टिकर्ता में विश्वास करते हैं। और एक प्रभु यीशु मसीह में, जो परमेश्वर का पुत्र है, एकमात्र जनमेला, पिता से जनमेला, अर्थात् पिता के सार से, परमेश्वर से परमेश्वर, ज्योति से ज्योति, सच्चे परमेश्वर से सच्चे परमेश्वर, जनमेला, न बना, जो पिता के समरूप है, जिसके द्वारा स्वर्ग और पृथ्वी पर की सारी सृष्टि बनी; जो हमारे लिए मनुष्य बने, और हमारे उद्धार के लिए उतर आए, और देहधारी हुए, दुख भोगे, और तीसरे दिन पुनरुत्थित हुए, और स्वर्ग में आरोहण किए, और पिता के दाहिने बैठते हैं, और जीवितों और मरे हुओं का न्याय करने के लिए फिर आएँगे। और पवित्र आत्मा में। परन्तु जो परमेश्वर के पुत्र के विषय में कहते हैं कि एक समय था जब वह अस्तित्व में नहीं था, या कि अपने जन्म से पहले वह अस्तित्व में नहीं था, या कि वह अस्तित्वहीन से उत्पन्न हुआ, या कि वह दूसरे तत्व या सार का है, या कि वह परिवर्तनशील या परिवर्तनीय है, उन पर कैथोलिक और प्रेरितिक चर्च द्वारा शाप की घोषणा की जाती है।' – वर्तमान में प्रचलित धर्म-सत्य की संहिता 381 में कॉन्स्टेंटिनोपल में दूसरे सार्वभौमिक परिषद द्वारा स्थापित की गई थी।

[1998] जॉर्जिया, या प्राचीन इबेरिया, ट्रांसकॉकेसस में एक देश है, जो कैस्पियन और ब्लैक सीज़ द्वारा पूर्व और पश्चिम में, कॉकेसस पर्वत द्वारा उत्तर में, और अराक्स नदी और माउंट अ ार त द्वारा दक्षिण में घिरा एक चतुर्भुज बनाता है। जॉर्जिया में काखेती, गुरिया, इमेरेती, कार्टली, मिंग्रेलिया, अब्खज़िया, स्वानेती, ओसेटिया और दागेस्तान शामिल थे।

दे सकें। सम्राट ने कहा कि उन्हें इबेरीय लोगों के ईसाई धर्म अपनाने पर अपनी साम्राज्य में एक पूरे राज्य के वलिय से भी अधकि प्रसन्नता हुई, और उन्होंने तुरंत एंटओिक के संत यूस्टाथयिस[1999] को कई पुरोहतिों, डकिन्स और अन्य पादरयिों के साथ जॉर्जयिा के लिए रवाना होने का आदेश दयिा। वे अपने साथ जॉर्जयिा में सभी पूजा संबंधी पात्र और पवत्रि वस्तुएँ भी लाए। जॉर्जयिा की राजधानी मत्स्खेता में संत यूस्टाथयिस के आगमन पर, राजा मरियिन ने प्रांतीय गवर्नरों, सैन्य कमांडरों और दरबारयिों को एक फरमान जारी कयिा, जसिमें उन्हें सभी को राजधानी आने का आदेश दयिा गया। जब वे इकट्ठा हो गए, तो राजा मरियिन ने सभी की उपस्थतिि में बशिप यूस्टाथयिस से पवत्रि बपतस्मिा ग्रहण कयिा, जसिके बाद रानी और उनके बच्चों ने भी ऐसा ही कयिा; कुरा नदी पर बने पुल पर, जहाँ पहले एक मूर्तपिूजक पूजा स्थल हुआ करता था, एक बपतस्मिा स्थल बनाया गया, जहाँ संत यूस्टाथयिस ने जॉर्जयिा के प्रांतीय गवर्नरों, सैन्य कमांडरों और दरबारयिों का बपतस्मिा दयिा; इस प्रकार इस स्थान का नाम 'म्टावार्ता सानट्लावी' रखा गया, जसिका अर्थ है, कुलीनों का फव्वारा। इस कुंड से थोड़ा आगे नदी के नीचे की ओर, संत यूस्टाथयिस के साथ आए पुरोहतिों ने संत नीना के उपदेश से प्रेरति होकर बपतस्मिा लेने आए लोगों का बपतस्मिा दयिा – क्योंकि जो कोई जल और पवत्रि आत्मा के द्वारा पुनर्जन्म प्राप्त नहीं करता, वह अनंत जीवन और प्रकाश को नहीं देखेगा... फरि पुरोहति इबेरयिा के अन्य नविासयिों का बपतस्मिा देने और उन्हें उपदेश देने के लिए शहरों और गांवों में घूमे। इस प्रकार, ईश्वर की सहायता से, लगभग पूरे देश का बपतस्मिा हुआ, और संत नीना तथा अंताकयिा के संत यूस्टाथयिस के प्रयासों से इबेरयिा में सुसमाचार स्थापति हुआ। मत्स्खेता में, संत यूस्टाथयिस ने बारह प्रेरतिों को समर्पति चर्च का अभषिेक कयिा, जसिे उनके आगमन से ठीक पहले शाही उद्यान में बनाया गया था, और उन्होंने नव-स्थापति जॉर्जयिाई चर्च को ऑर्थोडॉक्स ग्रीक चर्च की पूजा और सद्धिांत का क्रम प्रदान कयिा। पादरी जॉन को जॉर्जयिाई चर्च का पहला बशिप नयिुक्त कयिा गया, जो अंताकयिा के मेट्रोपोलसि के अधीन था; इसीलिए, आज भी, अंताकयिा का पैट्रआर्क यह उपाधि धारण करता है: 'और इबेरयिा का'[2000] . इस प्रकार, वर्तमान जॉर्जयिाई चर्च के रूसी चर्च के साथ एकीकरण के बाद, संत यूस्टाथयिस को वर्तमान सर्व-रूसी ऑर्थोडॉक्स चर्च के पूरे प्राचीन ऑर्थोडॉक्स एक्ज़ार्केट के पहले पदानुक्रमति के रूप में माना जाता है।

तत्कालीन नई जॉर्जयिाई ऑर्थोडॉक्स चर्च के संगठन के पूरा होने पर, संत यूस्टेथयिस ने मसीह की युवा चर्च को शांति का आशीर्वाद दयिा और अंतीयक लौट आए।

अंत्योख में, उत्साही संत यूस्टाथयिस पहले से ही कठनि परशि्रम और गंभीर परीक्षाओं का सामना कर रहे थे। इस बात पर उनका भरोसा कि सार्वभौमकि परषिद के बाद, चर्च में शांति और पूर्ण एकता का राज होगा, व्यर्थ साबति हुआ। यह स्पष्ट हुआ कि उपर्युक्त बशिप, जो अरअिनविाद के अनुयायी थे, परषिद के अधकिांश सदस्यों से ईमानदारी से सहमत नहीं थे, बल्कि केवल दखिावटी तौर पर, अपने व्यक्तगित कारणों और गणनाओं के लिए थे। जब नकियिा की परषिद के बाद, सम्राट कॉन्स्टेंटनि साम्राज्य के पश्चमिी भाग की यात्रा पर गए, तो अरअिनों ने एक बार फरि सरि उठा लयिा। सबसे पहले, उन्होंने सम्राट के नकिट एक पुरोहति के माध्यम से, एरयिस और उसके खुले तौर पर समर्थन करने वाले बशिपों को नर्विासन से वापस लाने के लिए याचकिा दायर करना शुरू कर दयिा; और यह तर्क देते हुए कि वे गलत वचिारों का शकिार हो गए थे और नर्विासति लोग सम्राट को नकियिा के सार्वभौमकि परषिद के फरमानों को स्वीकार

[1999] हालांकि यूनानी लेखकों द्वारा एंटओिक के बशिप यूस्टेथयिस के इबेरयिा-जॉर्जयिा आगमन का वशिेष रूप से उल्लेख नहीं कयिा गया है, इस बात की नस्सिंदेह पुष्टि जॉर्जयिा की सार्वभौमकि परंपरा और कॉन्स्टेंटनिोपल के सम्राटों तथा जॉर्जयिाई राजाओं द्वारा माउंट अथोस के इवेरॉन मठ को प्रदान कए गए लखिति चार्टरों से होती है, जो आज भी वहां संरक्षति हैं। (जॉर्जयिाई चर्च का संक्षप्ति इतहिास। संकलन पी. इओसेलयिन। दूसरा संस्करण, सेंट पीटर्सबर्ग, 1843, पृ. 13. द लाइफ ऑफ़ सेंट नीना, इक्वल टू द अपोस्टल्स, माउंट अथोस मठ द्वारा प्रकाशति, 1900।)

[2000] जॉर्जयिा की प्रेरतिों के समान संत नीना का जीवन। 5वां संस्करण, 1900, पृ. 23–25; जॉर्जयिाई चर्च का संक्षप्ति इतहिास, संकलनकर्ता इओसेलयिन। दूसरा संस्करण, सेंट पीटर्सबर्ग, 1843, पृष्ठ 12-14 और 20। कई साल बीत जाने के बाद, राजा मरियिन ने सम्राट कॉन्स्टेंटनि के पास एक दूसरा राजदूत भेजा, जसिमें जॉर्जयिा में और भी अधकि पादरयिों और कुशल चर्च नर्मिाताओं को भेजने का अनुरोध कयिा गया था। इस अनुरोध के जवाब में, महान कॉन्स्टेंटाइन ने बहुत सारा सोना और चाँदी भेजा, साथ ही जीवन-दायक क्रूस के वृक्ष का एक पैर, और उन कीलों में से एक भी भेजा जनिसे प्रभु यीशु मसीह को क्रूस पर ठोक दयिा गया था। जॉर्जयिाई लोगों को उद्धारकर्ता मसीह और परमेश्वर की परम पवत्रि माता की कई प्रतमिाएँ, साथ ही पवत्रि शहीदों के अवशेष भी भेंट कए गए, जन्हिें चर्चों की नींव में स्थापति कयिा जाना था। साथ ही, मरियिन का पुत्र और राज्य का उत्तराधकिारी, जसिे रोम में बंधक बनाकर रखा गया था, को उसके पति के पास छोड़ दयिा गया; वह ईसाई धर्म का एक उत्साही प्रचारक था, जसिने हर जगह चर्च बनवाए और धर्म को मजबूत कयिा।

करने वाला एक लिखित घोषणा पत्र देंगे, उन्होंने उनकी वापसी सुनिश्चित कर ली। चर्च के भीतर शांति बहाल करने के लिए हर तरह से उत्सुक, सम्राट ने निर्वासन से लौटे लोगों के प्रति भी अपनी कृपा के संकेत दिखाए, लेकिन उन्होंने इसका फायदा उठाकर एरियन संप्रदाय की कुरीतियों का प्रचार किया और विभिन्न कपटपूर्ण बहानों के तहत, उन्होंने ईसाई धर्म की मुख्य धारा के प्रमुख पैरोकारों पर अत्याचार करना शुरू कर दिया: पवित्र बिशप अलेक्ज़ेंडर और, बाद में, अलेक्ज़ेंड्रिया के एथनासियस, और एंटिओक के संत यूस्टेथियस।

एरियन समर्थकों को उम्मीद थी कि निकिया की परिषद के बाद, सम्राट कॉन्स्टेंटाइन की चर्च में सभी के लिए बिना किसी अपवाद के पूर्ण शांति की जोरदार मांग के बाद, अब कोई भी एरियन विधर्म के प्रसार का विरोध नहीं करेगा। लेकिन संत यूस्टाथियस ने और भी अधिक उत्साह के साथ एरियनवाद के प्रसार का विरोध करना जारी रखा और सार्वभौमिक परिषद द्वारा इसकी निंदा पर भरोसा करते हुए, इसकी और भी जोरदार निंदा की। हालांकि, यह जानते हुए कि फिलिस्तीन के केसरिया के बिशप यूसेबियस—जो कुछ हद तक एंटिओक के बिशप के अधीन थे—ने सार्वभौमिक परिषद से पहले भी एरियन विचारों को अपनाया था, ऐसे विचार जिनसे उनके धर्मविश्वास की शब्दावली अपरिचित नहीं थी, संत यूस्टाथियस ने यूसेबियस को भी पत्र लिखा, जिसमें उन्होंने उपदेश दिया और एरियन विधर्म की निंदा की। इस पर यूसेबियस को बहुत आक्रोश हुआ; उन्होंने संत यूस्टेथियस की शिक्षाओं—जिन्हें परिषद द्वारा अनुमोदित किया गया था—की निंदा करते हुए उन्हें सेबेलीय[2001] कहा, और, एरियन सिद्धांतों पर कायम रहते हुए, अपने मित्र निकोमेडिया के यूसेबियस से, जो निर्वासन से लौटे थे, संत यूस्टेथियस के बारे में शिकायत की। और निकोमेडिया का यह यूसेबियस एरियन बिशपों में सबसे चालाक और विश्वासघाती था। यहाँ तक कि सम्राट कॉन्स्टेंटिन, स्वयं ईश्वर की गवाही देते हुए, ने निकोमेडिया के लोगों को लिखा कि यूसेबियस, ईसाइयों के क्रूर उत्पीड़क और यातनाकर्ता लिसिनियस का सहयोगी और साथी था, कि यूसेबियस ने निर्लज्जतापूर्वक उन एरियन झूठों का बचाव किया जिन्हें हर जगह खंडित कर दिया गया था, और यहाँ तक कि यहाँ तक कि उसने, सम्राट कॉन्स्टेंटाइन को, एक घृणित तरीके से धोखा दिया[2002] ... और इस प्रकार निकोमेडिया के इस बहुत ही धूर्त यूसेबियस ने, अपने मित्रों निकिया के थियोगनिस और सेसरिया के यूसेबियस[2003] के साथ मिलकर, एरियनों को सेंट यूस्टैथियस से छुटकारा दिलाने का संकल्प लिया, जो उनकी गलतियों का अथक और उत्साही उद्घाटक था।

कॉन्स्टेंटिनोपल के निर्माण से पहले, सम्राट कॉन्स्टेंटाइन अक्सर निकोमेडिया में ठहरते थे; और, उन्हें खुश करने और संत यूस्टेथियस को हटाने की अपनी योजना को अंजाम देने के लिए, निकोमेडिया के चालाक यूसेबियस ने सम्राट से पवित्र सेपल्चर पर कॉन्स्टेंटाइन द्वारा अभी-अभी निर्मित भव्य चर्च को देखने की तीव्र इच्छा व्यक्त की। इस अनुरोध से प्रसन्न होकर, सम्राट ने अपने शाही रथ यूसेबियस के उपयोग के लिए दे दिए, जिसने यूसेबियस की यात्रा को एक विशेष प्रतिष्ठित स्वरूप प्रदान किया। यरूशलेम में पवित्र स्थल को श्रद्धांजलि देने के बहाने, निकिया का थियोगनिस, जो उसकी दुष्ट योजनाओं में एक वफादार सहयोगी था, भी उसके साथ शामिल हो गया। धर्मपरायणता के भेष में अंत्योकिया पहुँचने पर, संत यूस्टाथियस ने उन्हें दयालुता और बिशपों के योग्य सम्मान के साथ स्वागत किया। जब वे

[2001] सावेलियोस एक विधर्मी था। उसके जीवन के बारे में जानकारी बहुत कम है। वह तीसरी शताब्दी के मध्य के आसपास रहता था; वह लीबिया के टोलेमाइस का मूल निवासी था। सावेलियोस ने यह सिखाया कि ईश्वर केवल नाम मात्र से त्रिमूर्ति हैं: पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा ईश्वर के एक ही व्यक्ति के केवल तीन नाम और तीन कार्य हैं। पुराने नियम में, ईश्वर पिता के रूप में प्रकट होते हैं, जो मानव जाति को कानून देते हैं; नए नियम में, ईश्वर पुत्र के रूप में प्रकट हुए, जो मानव जाति को बचाते हैं, और पवित्र आत्मा के रूप में प्रकट होते रहते हैं जो मानव जाति को पवित्र करते हैं। तीसरी शताब्दी के दूसरे भाग में अलेक्ज़ेंड्रिया और रोम में चर्च के धर्मपिता के परिषदों द्वारा सेबेलीउस की शिक्षाओं को विधर्मी घोषित किया गया था।

[2002] यूसेबियस और थियोगनिस के विरुद्ध निकोमेडिया के लोगों को सम्राट कॉन्स्टेंटिन का पत्र – *एक्ट्स ऑफ द इक्यूमेनिकल काउंसिल्स* में। 1859 संस्करण, खंड 1, पृष्ठ 199–203।

[2003] निकोमेडिया के यूसेबियस, लूसियन के एंटिओक स्कूल में अरिअस के मित्र और सहपाठी थे, जिन्हें धर्मद्रोह के कारण चर्च से बहिष्कृत कर दिया गया था। हालाँकि, सेसारिया के यूसेबियस, दोनों के मित्र थे और उन्होंने न केवल परिषद में बल्कि हर जगह, पहले और बाद में भी, उनका पक्ष लिया; उन्हें उदारवादी अरिअसियों के नेता के रूप में माना जाता है। फ़िलिस्तीन में केसरिया भूमध्य सागर के पूर्वी तट पर फ़िलिस्तीन का प्रमुख शहर था; इसका नाम यहूदी राजा हेरोद ने रोमन सम्राट (ऑक्टेवियन) अगस्टस के सम्मान में रखा था, जिसने सम्राट के सम्मान में शहर बनाए थे। केसरिया में ईसाई धर्म की शुरुआत संत पतरस प्रेरित द्वारा शतदलपति कोर्नेलियुस और उसके पूरे घर के धर्म परिवर्तन से हुई (प्रेरितों के काम 10)। यरूशलेम के विनाश के बाद, केसरिया बिशप की सीट बन गई, जिसके अधीन यरूशलेम की चर्च वर्ष 451 तक थी। आज, कभी भव्य रहे केसरिया के केवल खंडहरों के टीले ही बचे हैं।

यरूशलेम पहुँचे, तो प्राचीन इतिहासकार आगे लिखते हैं[2004] , और अपने समान विचारधारा वाले लोगों से मिले (अरीयनों) सेसरिया के यूसेबियस, स्किथोपोलिस के पैट्रोफिलस, लिडिस के एटियस, लाओडिसिया के थियोडोटस और अन्य, जो एरियस के उपदेशों से प्रभावित थे, ने उन्हें संत यूस्टाथियस को हटाने का अपना गुप्त इरादा बताया। निकोमेडिया के यूसेबियस का सम्मान करने के बहाने, ये समान विचारधारा वाले पुरुष उनके साथ अंत्योकिया गए, जहाँ उन्होंने संत यूस्टाथियस का भी बहुत सम्मान किया, ताकि उन्हें उनके लिए बिछाए गए विश्वासघाती जालों का संदेह न हो। और चूँकि उस समय अंफ़ियोक़िया में कुछ रूढ़िवादी बिशप भी थे, इसलिए एरियनों ने चर्च के कुछ सामान्य मामलों और कार्यों पर चर्चा करने के लिए एक भ्रातृ परिषद आयोजित करने का प्रस्ताव रखा, जिसके लिए संत यूस्टाथियस और अन्य बिशप सहमत हो गए।

और जैसे ही बिशप एकत्र हुए, एक महिला अचानक उनकी ओर एक बच्चे को अपनी बाहों में लिए हुए प्रकट हुई, और चिल्लाई कि यूस्टाथियस उसके शिशु के पिता थे। बिना किसी संकोच के, एंटिओक के संत ईस्टाथियस ने उस महिला से कहा कि वह ऐसे गवाह पेश करे जो उसके दावे की पुष्टि कर सकें और उसके समर्थन में सबूत दे सकें। लेकिन उसने जवाब दिया कि उसके पास कोई गवाह नहीं है। इस पर, एरियन बिशपों ने घोषणा की कि महिला के लिए अपनी शिकायत की पुष्टि शपथ द्वारा करना ही काफी होगा। हालांकि, ऑर्थोडॉक्स बिशप इससे सहमत नहीं थे, उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि प्राचीन नियम और प्रेरितों की आज्ञा (1 तीमुथियुस 5:19) के अनुसार, एक पुरोहित के खिलाफ आरोप को साबित करने के लिए कम से कम दो या तीन गवाहों की आवश्यकता होती है; इसी कारण, उन्होंने उस फैसले का विरोध किया जिसे एरियन बिशप सेंट यूस्टाथियस ऑफ़ एंटीओक की निंदा के संबंध में लागू करना चाहते थे[2005] ।

इस बीच, अंफ़ियाकी के ऑर्थोडॉक्स लोगों ने, अतिथि बिशपों की साज़िशों के माध्यम से अपने प्रिय महा-पड़ोसी यूस्टैथियस पर की गई अपमान की खबर सुनकर, कार्रवाई के लिए प्रेरित हुए और एरियनवाद के अनुयायियों के खिलाफ हथियार उठाने के लिए तैयार हो गए। तब निकोमेडिया के यूसेबियस और निकिया के थियोगनिज़, यह महसूस करते हुए कि सेंट यूस्टाथियस के खिलाफ उनकी साज़िश चर्च के भीतर विफल हो गई थी, वे तुरंत सम्राट के पास गए और उन्हें सूचित किया कि अंtओक में एक लोकप्रिय विद्रोह हो रहा था, जो कथित तौर पर अपने धार्मिक विचारों की रक्षा में अंटीओक के बिशप यूस्टेथियस द्वारा भड़काया गया था, जिससे चर्च की बहुप्रतीक्षित शांति बाधित हो रही थी; उन्होंने इस पर एक और बदनामी जोड़ी, अर्थात् कि बिशप यूस्टेथियस ने सम्राट Constantine[2006] की माता के बारे में अपमानजनक बातें कही थीं। उन्हें संत यूस्टेथियस के खिलाफ सम्राट को और भी दृढ़ता से भड़काने के लिए ऐसी घोर बदनामी का सहारा लेना पड़ा, क्योंकि वह महिला, जिन्होंने एंटिओक में संत यूस्टैथियस पर बदनामी की थी, इस बदनामी के बाद एक गंभीर बीमारी से पीड़ित होकर, कई पुरोहितों और ऑर्थोडॉक्स नागरिकों को बुलाया और उन सभी के सामने स्वीकार किया कि उसे एरियनों द्वारा बिशप यूस्टैथियस पर बदनामी करने के लिए रिश्वत दी गई थी; उसने आगे यह भी बताया कि बिशपों के सामने उसकी कसम पूरी तरह से झूठी नहीं थी, क्योंकि उसके बच्चे का पिता, एक स्थानीय तांबे का कारीगर, का नाम भी यूस्टैथियस था। इस महिला के इस स्वीकारोक्ति से कि उसे एरियनों ने रिश्वत दी थी, संत यूस्टाथियस के दुश्मन अपनी ही साथी द्वारा अपमानित हुए, और उस महिला के आरोप के आधार पर बिशप यूस्टाथियस को हटाने की उनकी योजना विफल हो गई, और इसीलिए उन्होंने इस घोर बदनामी का सहारा लिया कि एंटिओक के संत ने रानी माता का अपमान किया था।

धोखा खाए और आक्रोशित सम्राट, जिसने ईसाइयों के बीच शांति बनाए रखने के लिए हर संभव प्रयास किया था, ने संत यूस्टाथियस को सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण रूप से एंटिओक के लोगों के बीच अशांति को शांत करने के लिए कॉन्स्टेंटिनोपल[2007] बुलाया।

संत यूस्टाथियस, अंतियक से अपने निर्वासन की पूर्वानुमान लगाते हुए, उससे पहले के दिनों में बार-बार ऑर्थोडॉक्स नागरिकों को एकत्रित किया और अपनी हार्दिक वाक्पटुता और गहरे ज्ञान की पूरी शक्ति से, उन्हें अपने

[2004] थियोडोरेट, साइरस के बिशप। चर्च का इतिहास, 1852 संस्करण, अध्याय 21, पृष्ठ 84–86।

[2005] चर्च का इतिहास, मूल स्रोतों के आधार पर प्रकाशित। डी. बी. व्लाद. गेटे। सेंट पीटर्सबर्ग, 1875, खंड, पृ. 64–65।

[2006] चर्च फादर्स पर ऐतिहासिक निबंध, आर्चबिशप फिलारेट ऑफ चेर्निगोव द्वारा, 1859 में प्रकाशित, खंड II, पृ. 25। यही गवाही प्रोफेसर एन. बार्सोव द्वारा भी दी गई है।

[2007] ऐतिहासिक अनुसंधान, 'संतों के कृत्यों में निष्कर्ष' (हॉलैंडिस्टों द्वारा संपादित), जुलाई, पुस्तक IV. और पवित्र पिताओं और शहीदों के जीवन का एंग्लो-जर्मन-फ्रेंच संस्करण, बटलर, रेस और वाइस द्वारा अनुवादित और संपादित, भाग 9, जर्मन संस्करण, 1824।

अनुपस्थिति में विधर्मी झूठी शिक्षाओं से भटकने न जाने और ऑर्थोडॉक्सी के प्रति दृढ़ता से वफादार बने रहने के लिए प्रेरित किया[2008] ।

संत जॉन क्राइसोस्टोम इस बात की गवाही इस प्रकार देते हैं[2009] : 'संत यूस्टाथियस, पहरा देते हुए और दूर से सब कुछ देख रहे थे और जो कुछ होने वाला था (ऑर्थोडॉक्सी पर एरियन हमला) उसकी पूर्व सूचना दे रहे थे, एक बुद्धिमान चिकित्सक की तरह, जब वे अभी भी यहाँ थे, इससे पहले कि बीमारी शहर में फैल जाती, उन्होंने उपचार तैयार किए और महान दूरदर्शिता के साथ एंटिओकिया के झुंड के पवित्र जहाज को चलाया, हर स्थान का दौरा करते हुए, सभी को प्रेरित करते हुए और उन्हें चौकस और सतर्क रहने के लिए आग्रह करते हुए, मानो समुद्री डाकू हमला कर रहे हों और विश्वास के खजाने को जब्त करने का प्रयास कर रहे हों... और, सभी को इकट्ठा करने के बाद, उन्होंने उन्हें प्रोत्साहित किया कि वे सच्चे विश्वास से न भटकें, भेड़ियों के आगे न झुकें और न ही झुंड को उनके हवाले कर दें, बल्कि भीतर ही बने रहें, उन्हें चुप कराते हुए और उनके झूठ का पर्दाफाश करते हुए, साथ ही भाइयों में सबसे सरल लोगों को भी मजबूत करते हुए... और हर जगह उसने लोगों को सिखाने, मनाने, सलाह देने और विरोधियों का रास्ता रोकने के लिए भेजा...'

और अंतीयोकिया के झुंड का बहुमत ऑर्थोडॉक्सी के प्रति वफादार रहा, भले ही संत यूस्टैथियस के स्थान पर अंतीयोकिया में एरियन विचारधारा के एक बिशप की नियुक्ति की गई थी; क्योंकि लोग ऐसे बिशपों से दूर रहते थे और, कई ऑर्थोडॉक्स पादरियों के साथ मिलकर, एरियनों से अलग सभाएँ बनाते थे, और इसीलिए एरियनों ने उन्हें 'यूस्टाफ़ियन्स'[2010] क्योंकि वे सार्वभौमिक, प्रेरितिक और ऑर्थोडॉक्स सिद्धांत के प्रति वफादार रहे।

हालाँकि, लोगों के बीच यह विभाजन—एंटीओकिया के बहुमत की सेंट यूस्टेथियस की ऑर्थोडॉक्स शिक्षाओं के प्रति वफादारी के कारण—सम्राट को संत के विरुद्ध और भड़काता रहा और 331 में एक शाही फरमान जारी किया गया, जिसमें सेंट यूस्टेथियस को बिना मुकदमे या उनके बिशप पद से हटाए, थ्रेस में निर्वासन में भेजने का आदेश दिया गया[2011] । यहाँ तक कि वहाँ भी, मसीह के इस स्वीकारकर्ता ने विधर्मियों की निंदा करते हुए सच्चे ऑर्थोडॉक्स धर्म का प्रचार करना जारी रखा। क्रिसोस्टोम के अनुसार, 'वह आत्मा की कृपा से अच्छी तरह शिक्षित थे कि चर्च के प्रमुख को न केवल आत्मा द्वारा सौंपी गई उस एक चर्च की, बल्कि पूरे ब्रह्मांड में समस्त चर्च की भी देखभाल करनी चाहिए; उन्होंने यह पवित्र प्रार्थनाओं से सीखा। संत यूस्टाथियस ने कहा, 'यदि सार्वभौमिक चर्च के लिए, ब्रह्मांड के एक छोर से दूसरे छोर तक, प्रार्थना करना आवश्यक है, तो और भी अधिक, एक को संपूर्ण रूप से देखभाल करनी चाहिए, सभी

[2008] 'उन सिद्धांतों को संरक्षित और भ्रष्टाचार से सुरक्षित रखने का प्रयास, जो अविभाजित चर्च की अवधि में निर्धारित किए गए थे, जिसमें पूर्व और पश्चिम दोनों शामिल थे, ठीक वही है जिसे पूर्वी चर्च में ऑर्थोडॉक्सी कहा जाता है।' 'ऑर्थोडॉक्स चर्च वह है जो प्राचीन सार्वभौमिक चर्च की शिक्षा को सही और अपरिवर्तित रूप से संरक्षित करती है और अपने संस्थापक, यीशु मसीह, और उनके प्रेरितों द्वारा इसके लिए निर्धारित सिद्धांतों के प्रति सभी बातों में वफादार रहती है।' (ऑर्थोडॉक्स कैनन कानून का परिचय। डी. बी. एम. ए. ऑस्ट्रौमोव। खंड 1, 1893 संस्करण, पृष्ठ 27-28 और 670)।

[2009] संत जॉन क्राइसोस्टोम की संपूर्ण कृतियाँ। 1896 में प्रकाशित, खंड 2, पुस्तक 2, पृष्ठ 646–647 और 649। महान अंतीयक के आर्चबिशप, पवित्र पिता यूस्टाथियस को समर्पित स्तुति-विचन – संत जॉन क्राइसोस्टोम, कॉन्स्टेंटिनोपल के आर्चबिशप, चौथी शताब्दी के मध्य और पाँचवीं शताब्दी की शुरुआत के सार्वभौमिक चर्च के एक प्रसिद्ध फादर, जो विशेष रूप से अपने प्रवचनों और पवित्र धर्मग्रंथों की व्याख्या के लिए प्रसिद्ध थे। उन्हें उनकी असाधारण प्रतिभाशाली वाक्पटुता के कारण 'क्रिसोस्टोम' (स्वर्णमुखी) नाम दिया गया था। उनका जन्म 347 में एंटिओक में हुआ था और 23 वर्ष की आयु में उन्होंने बपतिस्मा ग्रहण किया। अपने जीवन के अधिकांश समय तक उन्होंने ग्रेट एंटिओक में एक पुरोहित के रूप में सेवा की, और चौथी शताब्दी के अंत में उन्हें कॉन्स्टेंटिनोपल का बिशप नियुक्त किया गया; अपने मंत्रालय के इस अंतिम दौर के दौरान, उन्हें सम्राज्ञी यूडोक्सिया के उकसावे पर बहुत उत्पीड़न सहना पड़ा, जो सम्राट आर्काडियस की पत्नी थीं, के उकसावे पर, और 407 में आर्मेनिया में निर्वासन के दौरान शहीद हो गए। उन्हें वर्ष के अधिकांश समय में ऑर्थोडॉक्स चर्च में मनाए जाने वाले अनुष्ठान (लिटर्जी) के क्रम को रचने का श्रेय दिया जाता है। उनकी स्मृति 30 जनवरी और 13 नवंबर को मनाई जाती है।

[2010] थियोडोरेट, साइरस के बिशप, *चर्च हिस्ट्री*. 1852 संस्करण, अध्याय 22, पृष्ठ 87। वी. गेते द्वारा *हिस्ट्री ऑफ द चर्च*, 1875 संस्करण, खंड 3, पृष्ठ 65। इसके बाद, एरियनों ने ऑर्थोडॉक्स एंटिओकियनों को 'कैम्पेन्स' (शब्द 'कैमपस' - से अर्थ, मैदान) कहना शुरू कर दिया, क्योंकि वे पूजा के लिए, अन्य स्थानों के अलावा, खुले मैदानों में इकट्ठा होते थे, इस तथ्य के कारण कि एरियनों ने, धर्मनिरपेक्ष अधिकारियों के समर्थन से, ऑर्थोडॉक्स के चर्चों पर कब्जा कर लिया था और उन्हें अपने कब्जे में कर लिया था। धन्य जेरोम ऑफ स्ट्रिडॉन के कार्य देखें। द्वितीय संस्करण, 1893, भाग 1, पृ. 55–56 (जीवन)।

[2011] सेंट जेरोम लिखते हैं कि यह 'ऑर्थोडॉक्स धर्म' के लिए निर्वासन था। (जेरोम का क्रॉनिकल, वर्ष 332)। प्राचीन काल में, 'थ्रेस' शब्द का अर्थ बाल्कन प्रायद्वीप पर मैसेडोनिया, एजियन सागर और मार्मारा सागर के उत्तर में स्थित पूरे क्षेत्र से था, जिसमें अब हंगरी, ट्रांसिल्वेनिया, बेसरबिया, रोमानिया, बुल्गारिया, सर्बिया और रुमेली का पूर्वी भाग शामिल है। थेसली अपनी धातुओं, गायन और संगीत की प्रचुरता के लिए प्रसिद्ध थी। रोमनों ने इसे मसीह के जन्म से लगभग 20 साल पहले जीत लिया था।

(चर्चों) की समान रूप से परवाह करते हुए और उन सभी की देखभाल करते हुए...' यूस्टाथियस को नर्विासति कर दयिा गया, लेकनि उनकी आवाज़ खामोश नहीं हुई; व्यक्ति को नर्विासति कर दयिा गया, लेकनि उनके उपदेश का वचन नर्विासति नहीं हुआ'[2012] ।

एरयिन वधिर्मी, जो पहले से ही सम्राट कॉन्स्टेंटाइन के उत्तराधकिारयिों के अधीन पूरी तरह से प्रभावशाली हो चुके थे, ने एक और शाही फरमान जारी करने पर जोर दयिा, जसिमें संत यूस्टाथियस को थ्रेस से मेसडिोनयिा के शहर फलिपि्पी में स्थानांतरति करने का आदेश दयिा गया, ताकि संत यूस्टाथियस को और अधकि कठोर नयिंत्रण में रखा जा सके और उनकी गतविधियिों की नगिरानी की जा सके[2013] । वहीँ, लगभग 345 ईस्वी में, अंतीयोकयिा के संत यूस्टाथियस, जन्हिोंने अपना पूरा जीवन वधिर्मी त्रुटयिों के खलिाफ अथक संघर्ष करने और एकमात्र सच्चे ईश्वर में सच्चे वशि्वास का प्रचार करने में बतिाया था, का नधिन हो गया[2014] ।

[20152016]द्वतिीय सार्वभौमकि परषिद, जो 381 में आयोजति हुई, के तुरंत बाद कॉन्स्टेंटनिोपल में, जसिने नकियिा की प्रथम सार्वभौमकि परषिद के धर्मवशि्वास की पुष्टि की और साथ ही एरयिनवाद, अर्ध-एरयिनवाद और ऑर्थोडॉक्स ईसाई सद्धिांत के वरिुद्ध उत्पन्न हुई सभी वधिर्मों के खलिाफ शाप को दोहराया – सच्चे वशि्वास के शहीद, एंटओिक के संत यूस्टाथियस के गौरव के लिए एक अनुकूल समय आ गया। और वर्ष 382 में, कोंस्टेंटनिोपल में आयोजति दूसरे सार्वभौमकि परषिद के तुरंत बाद, उनके पवत्रि अवशेषों को बड़ी धूमधाम से एंटओिक ले जाया गया, ताकि वे एंटओिक के लोगों को सांत्वना दे सकें, जो उन्हें बड़ी श्रद्धा से पूजते थे।

जनप्रयि, चर्च के सभी ऑर्थोडॉक्स पतिृपुरुषों द्वारा अत्यधकि सम्मानति, और चर्च लेखकों द्वारा प्रशंसति, संत यूस्टाथियस चर्च के प्रति अपने परश्रिम और सेवाओं के कारण, गौरवशाली चौथी शताब्दी के सबसे प्रतष्ठिति बशिपों में से एक हैं। सातवें सार्वभौमकि परषिद के पवत्रि पतिाओं ने[2017] संत यूस्टाथियस ऑफ़ एंटीओक को 'ऑर्थोडॉक्स वशि्वास के एक दृढ़ रक्षक और एरयिन वधिर्म के वनिाशक' के रूप में संदर्भति कयिा[2018] । प्राचीन पश्चमिी चर्च के शक्षिण पतिाओं में सबसे प्रसद्धि, सेंट जेरोम[2019] , गवाही देते हैं कि सेंट यूस्टाथियस अरअिस के खलिाफ लखिने वाले

[2012] सेंट जॉन क्राइसोस्टोम द्वारा, 'हमारे पवत्रि पतिा एंटओिक के यूस्टेथियस की प्रशंसा में', 1896, खंड 2, पुस्तक 2, पृष्ठ 647।

[2013] फलिपि्पी – मैसेडोनयिा में मारत्सिा नदी पर एक शहर – एक प्राचीन यूनानी बस्ती थी जसिे मैसेडोनयिा के फलिपि ने जीता था, जसिने इसका नाम बदलकर फलिपि्पी रख दयिा। आज यह फलिपिोपोलसि, या बुल्गेरयिाई में प्लैव्डनिोग्राद के नाम से जाना जाता है। प्रेरति पौलुस ने इस शहर के ईसाइयों, फलिपि्पयिों, को अपना प्रसद्धि पत्र लखिा।

[2014] प्राचीन स्रोतों में संत यूस्टाथियस की मृत्यु के वर्ष के बारे में कोई सटीक जानकारी नहीं है। चेर्नगिोव के आर्चबशिप फलिारेट, और प्रोफेसर एन. बार्सोव उनके मृत्यु के वर्ष को 345 मानते हैं।

[2015] द कम्प्लीट ईस्टर्न कैलेंडर। आर्चबशिप सेरजयिस। 1876 में प्रकाशति, खंड II, भाग 2, पृ. 58। 21 फरवरी के लिए नोट्स। अवशेषों के स्थानांतरण का वर्णन थयिोडोरेट द्वारा कयिा गया है, जो 6वीं शताब्दी के एक प्रसद्धि इतहिासकार थे, जन्हिोंने चर्च के इतहिास पर चार पुस्तकें लखिीं – पहले दो पूर्ववर्ती इतहिासकारों पर आधारति, और बाद की दो स्वतंत्र रूप से।

[2016] पवत्रि चर्च में, 'अवशेष' शब्द का अर्थ, व्यापक अर्थ में, प्रत्येक दविंगत ईसाई का शरीर समझा जाता है। इस प्रकार, दविंगत की दफन की रस्म में कहा जाता है: 'दविंगत के अवशेष लेकर, वे (उन्हें लेकर) चर्च की ओर बढ़ते हैं'। लेकनि सख्ती से कहें तो, 'पवत्रि अवशेष' शब्द का अर्थ ईश्वर के पवत्रि संतों के पूजनीय अवशेषों से है। हालाँकि, यहाँ भी 'अवशेष' शब्द के वभिन्नि अर्थ हैं। सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण, 'अवशेष' शब्द का अर्थ पवत्रि संतों की 'हड्डयिों' से है। इस प्रकार, प्रारंभकि ईसाइयों ने पवत्रि शहीदों इग्नेशयिस द गॉड-बेयरर और स्मyrna के पॉलीकार्प की हड्डयिों की पूजा की। चर्च के इतहिासकार यूसेबयिस, चौथी शताब्दी में संत ल्यूक द अपोस्टल और संत टमिोथी की अवशेषों के स्थानांतरण के बारे में बताते हुए, यह जोड़ते हैं कि पैट्रआर्क उन्हें छोटे 'डब्बों या पेटयिों' में अपनी गोद में रखते थे। जाहरि है, इन अवशेष-पात्रों में केवल पवत्रि प्रेरतिों की हड्डयिाँ ही रखी जा सकती थीं। हमारे पूर्वजों के लिए 'अवशेष' शब्द का मुख्य अर्थ 'हड्डयिाँ' ही था। हालांकि, कुछ संतों की अवशेषों में दविंगत लोगों का पूरा शरीर शामलि होता है और वे इतनी अच्छी तरह से संरक्षति होते हैं कि उनके अंगों की कोमलता और लचीलेपन से भी वे पहचाने जाते हैं; उदाहरण के लिए, कोर्फू द्वीप पर, ट्रमिायथस के संत स्परिडिोन की अवशेषें डेढ़ हजार वर्षों से अधकि समय से एक नम और गर्म जलवायु में पड़ी हैं, फरि भी उनके अंगों का लचीलापन बरकरार है। (मशिनरी सीरीज़: द शील्ड ऑफ़ फेथ। संकलनकर्ता आई. स्मोलनि। सेंट पीटर्सबर्ग, 1904, पृ. 64 और बाद के पृष्ठ)।

[2017] चर्च का सातवां सार्वभौमकि परषिद 787 में महारानी आइरीन और उनके पुत्र कॉन्स्टेंटनि के शासनकाल में, पहले सार्वभौमकि परषिद के समान ही बथिनियिा के नकियिा शहर में आयोजति कयिा गया था; इसने प्रतमिा-भंजकों के वरिुद्ध प्रतमिा पूजा के सद्धिांत को स्थापति कयिा। इस परषिद के प्रामाणकि कार्य पूरे रूप में संरक्षति हैं और 1891 में काज़ान थयिोलॉजकिल अकादमी द्वारा रूसी में प्रकाशति कएि गए थे।

[2018] सार्वत्रकि परषिदों के कार्यवृत्त 1891 में काज़ान थयिोलॉजकिल अकादमी द्वारा रूसी अनुवाद में प्रकाशति हुए, खंड VII, पृ. 233।

[2019] स्ट्रडिॉन के पूजनीय जेरोम का जन्म 330 में डल्मेशयिा और पैनोनयिा के छोटे से शहर स्ट्रडिॉन में हुआ था; उनके पतिा एक धर्मपरायण कुलीन व्यक्ति थे। जेरोम का 420 में, 90 वर्ष की आयु में नधिन हो गया। अपने व्यापक और वस्तिृत ज्ञान, अपनी अथक गतविधि और ईसाई वद्विता तथा मसीह की कलीसयिा के लाभ के लिए अपने महान लखिति कार्यों, और अपने वास्तव में तपस्वी और अनुकरणीय जीवन के कारण,

पहले व्यक्ति थे; वे संत की विद्वता से चकित थे और उन्होंने कहा कि वे आध्यात्मिक और सांसारिक दोनों विज्ञानों, विशेष रूप से दर्शनशास्त्र में, अत्यधिक शिक्षित थे, और उन्होंने विश्वास पर अनगिनत पत्र लिखे। अलेक्जेंड्रिया के संत अथेनासियस, जॉन क्रिसोस्टोम, बेसिल द ग्रेट[2020] , साइप्रस के एपिफेनियस[2021] , सिनाई के अनास्तासियस[2022] और अन्य भी संत यूस्टाथियस के उच्च स्तर के ज्ञान और धार्मिक उत्साह की गवाही देते हैं। उस काल के प्रसिद्ध इतिहासकार, साइरस के बिशप थियोडोरेट, संत यूस्टाथियस को चर्च और धार्मिकता का सबसे बड़ा स्तंभ बताते हैं, जो संत अथेनासियस ऑफ़ अलेक्जेंड्रिया और उस समय के ऑर्थोडॉक्सी के अन्य प्रमुख पैगलों के समकक्ष थे[2023] । इस बीच, मध्य-पाँचवीं शताब्दी के इतिहासकार सोजोमेन का कहना है कि 'संत यूस्टाथियस के समकालीन उनके उपदेश देने के कौशल और वाक्पटुता से बहुत चकित थे। यह (कला) यूस्टाथियस की पुस्तकों में देखी जा सकती है, जो आज भी मौजूद हैं', सोजोमेन का दावा है[2024] । चेर्निहिव के आर्चबिशप फिलिरेट[2025] टिप्पणी करते हैं, 'दुर्भाग्य से, आज यह नहीं कहा जा सकता कि यूस्टैथियस की पुस्तकें संपूर्ण हैं; फिर भी, जो कुछ हमें मिला है, उसमें भी वे सभी गुण स्पष्ट हैं जिनकी प्राचीनों ने यूस्टैथियस के लेखन में प्रशंसा की थी।' केवल उपरोक्त कृतियाँ – 'पहले सार्वभौमिक परिषद में सम्राट कॉन्स्टेंटाइन

धन्य जेरोम प्राचीन पश्चिमी कलीसिया के सबसे प्रतिष्ठित धर्मपिता और शिक्षकों में से एक हैं; उन्होंने अपना अधिकांश जीवन पूर्व में बिताया। धन्य जेरोम की रचनाएँ, कीव थियोलॉजिकल अकादमी द्वारा प्रकाशित, दूसरा संस्करण, 1894, खंड 2, पृष्ठ 266: सुसमाचार के प्रेसीबेरियन को पत्र 68; और पृष्ठ 251–252: पत्र 65।

[2020] कैपाडोसिया के सेसरिया के बिशप, संत बेसिल द ग्रेट, का जन्म लगभग 330 में कैपाडोसिया की राजधानी सेसरिया में एक प्रतिष्ठित और उच्च शिक्षित परिवार में हुआ था। 18 वर्ष की आयु में, वह कॉन्स्टेंटिनोपल और एथेंस की यात्रा पर गए, जहाँ उन्होंने उत्कृष्टता के साथ अपनी शैक्षणिक शिक्षा पूरी की; 25 वर्ष की आयु में सेसरिया लौटने पर, उनका बपतिस्मा हुआ और उन्हें 'रीडर' के रूप में नियुक्त किया गया। 364 में उन्हें एक प्रेस्बिटर और 370 में एक बिशप नियुक्त किया गया; उनकी मृत्यु 379 में हुई। उन्होंने एरियनवाद के खिलाफ विश्वास के रूढ़िवादी सिद्धांत का उत्साहपूर्वक बचाव किया, लेकिन उन्हें न केवल एरियनों से बल्कि रूढ़िवाद के कट्टरपंथियों से भी शत्रुता का सामना करना पड़ा, जिन्हें लगा कि वह एरियनों के प्रति बहुत अधिक समझौतापरक व्यवहार कर रहे थे; उन्होंने उस समय के सम्राट वैलेंस, जो एरियन विधर्म के एक उत्साही अनुयायी थे, के सेसरिया की चर्च को एरियनवाद की ओर खींचने के प्रयासों का दृढ़ता से विरोध किया। संत बेसिल द ग्रेट ने अपनी अनेक अद्भुत रचनाओं और 'संत बेसिल की धर्मविधि' के माध्यम से पैट्रिस्टिक साहित्य में एक विशाल योगदान दिया, जिसके लिए उन्हें ईसाई धर्म के 'सार्वभौमिक शिक्षक' की उपाधि दी गई। उनके पर्व के दिन 1 और 30 जनवरी हैं।

[2021] साइप्रस के बिशप सेंट एपिफानियस—या, अधिक सटीक रूप से, साइप्रस द्वीप पर सालामिस शहर के—यहूदी वंश के थे; उनका बपतिस्मा 16 वर्ष की आयु में हुआ और 60 वर्ष की आयु में उन्हें बिशप के रूप में अभिषेक किया गया। एक कठोर तपस्वी, वह बाल-सुलभ विश्वास, दया और परोपकार के लिए प्रसिद्ध थे। उन्होंने फिलिस्तीन में एक मठवासी समुदाय की स्थापना की, जहाँ उन्होंने लगभग 30 वर्षों तक मठाध्यक्ष के रूप में सेवा की। उनमें चमत्कार करने की शक्ति थी, उन्हें कई भाषाओं का ज्ञान था और वह ऑर्थोडॉक्सी के एक उत्साही रक्षक थे; वर्ष 403 में एक सम्मानित वरिष्ठ के रूप में उनका निधन हो गया। उनकी मुख्य कृतियाँ 'मूर्तिभिंगों पर' हैं *द एंकर अगेंस्ट एरियनइज्म एंड द स्पिरिट-फाइटर्स* और *द मेडिसिन चेस्ट अगेंस्ट एटी हरेसिस* – जो उनके समकालीन और प्राचीन दोनों थे। उनका पर्व दिवस 12 मई है।

[2022] सिने के अनास्तासियस, या कनिोवटि, जो छठी शताब्दी के उत्तरार्ध के सिनाइटिक तपस्वियों में से एक थे, एंटिओक के पैट्रिआर्क थे, और वे विधर्मियों (शाही दरबार में) के खिलाफ ऑर्थोडॉक्सी के एक उत्साही रक्षक थे, जिसके कारण सम्राट जस्टिनियन का क्रोध उन पर पड़ा; और, अपने पवित्र जीवन के बावजूद, उन्हें निर्वासन में भेज दिया गया, जहाँ वे 20 से अधिक वर्षों तक रहे। निर्वासन की इस अवधि के दौरान, उन्होंने कई धर्मशास्त्रीय ग्रंथ लिखे, विशेष रूप से यीशु मसीह में दो स्वभावों और दो व्यक्तियों के प्रश्नों पर। सिनाई के संत अनास्तासियस, संत यूस्टेथियस ऑफ़ एंटीओक को 'दिव्य' कहते हैं और लिखते हैं कि वह उन्हें ईश्वर के मार्गों में एक सिद्ध पुरुष, एक बुद्धिमान उपदेशक, एक पवित्र शहीद और शिक्षक, अपने पिता और रक्षक, और ईश्वर द्वारा प्रेरित व्यक्ति के रूप में मानते हैं।

[2023] सायरस के बिशप, धन्य थियोडोरेट द्वारा चर्च का इतिहास। रूसी संस्करण, सेंट पीटर्सबर्ग, 1852, खंड 1, अध्याय VIII, XXV, आदि। डी. बी. ए. पी. लेबेदेव द्वारा संपादित 'चर्च हिस्टियोग्राफी' में भी, संस्करण 1898।

[2024] सैलामी के हर्मियास सोजोमेन, जिनका नाम उनके पारिवारिक नाम पर रखा गया था, एक यूनानी चर्च-संबंधी इतिहासकार, फिलिस्तीन के मूल निवासी और एक न्यायवादी थे। उनकी *चर्च-संबंधी इतिहास* 323 से 439 की अवधि को कवर करती है। उनका पालन-पोषण मध्य-पाँचवीं शताब्दी में संतों के प्रभाव में हुआ था। ईसाई धर्म की पहली तीन शताब्दियों का उनका इतिहास संरक्षित नहीं है। हालांकि, चौथी शताब्दी का उनका *चर्च हिस्ट्री* 1851 में रूसी अनुवाद में प्रकाशित हुआ था। इसमें पृष्ठ 22, 121, 123 और अन्य जगहों पर एंटिओक के यूस्टेथियस के संदर्भ हैं। हालाँकि, सोज़ोमेन जिस यूस्टैथियस के बारे में लिखते हैं (पृ. 404 पर)—कि उसे जोविनियन द्वारा पुनर्स्थापित किया गया था और एवार्गियस को बिशप के रूप में अभिषिक्त किया गया था—वह एक अलग व्यक्ति था, संत नहीं। (चर्च फादर्स पर ऐतिहासिक सिद्धांत, पृ. 25-26)।

[2025] चर्च फादर्स पर ऐतिहासिक सिद्धांत। चेर्निगोव के आर्चबिशप फिलिरेट द्वारा। 1859 में प्रकाशित, खंड 2, पृष्ठ 26।

को संबोधन' और एंडोरा की जादूगरनी पर प्रबंध – ही पूरी तरह से संरक्षित हैं; संत यूस्टैथियस की कई अन्य कृतियों में से, केवल प्राचीन लेखकों द्वारा संकलित अंश ही हमें प्राप्त हुए हैं[2026] .

एरियस के विरुद्ध पुस्तकों के बचे हुए अंशों से यह स्पष्ट है कि संत यूस्टाथियस ने उनमें से आठ लिखी थीं। ये अंश दर्शाते हैं कि इस सत्य के रक्षक ने, सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण रूप से, पवित्र धर्मग्रंथ के उन अंशों को अलग करने का प्रयास किया जो मसीह यीशु की मानवता के बारे में बात करते हैं, उन अंशों से जो उन्हें परमेश्वर के पुत्र और परमेश्वर के रूप में चित्रित करते हैं, और संत यूस्टाथियस यह काम विशेष सफलता के साथ करते हैं, दोनों प्रकार के अंशों के अर्थ की सही व्याख्या करते हुए[2027] . इस प्रकार, उन्होंने एरियनों को सबसे निर्णायक प्रहार किया, जो जानबूझकर मसीह यीशु की विनम्र अवस्था से संबंधित अंशों को ढूंढते थे, जबकि एक अलग प्रकृति के अंशों को अनदेखा करते थे—और, विशेष रूप से, दूसरों का ध्यान उनसे हटा देते थे। सोलोमन के नीतिवचन (8:22) और दाऊद के भजन (15–56 और 92) पर भी अरिअनों के विरुद्ध टिप्पणियाँ लिखी गईं। अरिअनों ने अपने सिद्धांत की सच्चाई के प्रमाण के रूप में पहले उद्धरण और भजनों से उद्धृत कुछ शब्दों, दोनों का उपयोग करने का प्रयास किया। यहाँ भी, संत यूस्टाथियस ने उनके विरुद्ध उसी पद्धति का उपयोग किया - उन्होंने उद्धारकर्ता के मानवीय और दैवीय स्वभावों से संबंधित पवित्र धर्मग्रंथों के अंशों को एक साथ लाकर उनकी व्याख्या की। पवित्र शास्त्र की इस प्रकार व्याख्या करके, संत यूस्टाथियस ने एरियनों को दिखाया कि मसीह में दिव्यता और मानवता उनके-उनके गुणों में किसी भी परिवर्तन के बिना एकजुट थे, और यह कि परमेश्वर का पुत्र केवल उन लोगों को बचाने के लिए व्यवस्था के अधीन था जो पाप और निंदा के दास थे। संत यूस्टाथियस लिखते हैं, 'यह वचन नहीं था जो व्यवस्था के अधीन था, जैसा कि अपमानजनक बात कहने वाले मानते हैं, बल्कि वचन स्वयं ही व्यवस्था है; और न ही परमेश्वर को शुद्धिकरण बलिदानों की कोई आवश्यकता थी; वह एक ही इशारे से सभी को शुद्ध और पवित्र करता है। लेकिन चूँकि उसने कुँवारी से प्राप्त मानव पात्र को धारण किया, वह व्यवस्था के अधीन था – ताकि वह शपथ द्वारा दण्डित लोगों को व्यवस्था की दासता से मुक्त कर सके..."

संत यूस्टाथियस के लेखन का यह केंद्रबिंदु पूरी तरह से स्पष्ट करता है कि पवित्र धर्मग्रंथों पर 'टिप्पणियों के संग्रह' में अक्सर एंटिओक के संत यूस्टाथियस की व्याख्याएँ क्यों शामिल होती हैं[2028] ।

निबंध 'आत्मा पर' प्रभु यीशु मसीह की आत्मा पर संत यूस्टाथियस का दार्शनिक और धर्मशास्त्रीय प्रवचन था और यह एरियन लोगों की त्रुटियों के विरुद्ध भी निर्देशित था।

[20292030]अंत में, संत यूस्टाथियस का प्रबंध 'एंडोरा की जादूगरनी पर' अपने विचारों की महान प्रस्तुति और अपनी शैली तथा कल्पना की सुंदरता, दोनों के लिए एक आदर्श कृति है, और इस प्रकार उन सभी लेखकों और चर्च पिताओं

[2026] एंडोरा की जादूगरनी पर ये अंश और संपूर्ण प्रबंध, जिसमें सम्राट कॉन्स्टेंटाइन को संबोधित पत्र भी शामिल है, हॉलैंड लाइब्रेरी के चौथे खंड और मिग्ने पैट्रोलॉजिया, खंड 18 में प्रकाशित हुए थे। यह फैब्रिसियस की ग्रीक लाइब्रेरी (वॉल्यूम 9, पृष्ठ 133, फोलियो 68, 170) में भी पाया जाता है। चेरनिहिव के आर्चबिशप फिलारेट द्वारा लिखित चर्च फादर्स पर ऐतिहासिक ग्रंथ, 1859, वॉल्यूम II, पृष्ठ 26।

[2027] चेर्निगोव के आर्चबिशप फिलारेट द्वारा चर्च फादर्स पर ऐतिहासिक प्रबंध, 1859, खंड II, पृ. 27.

[2028] उदाहरण के लिए, उत्पत्ति की पुस्तक पर उनकी टीकाओं के संग्रह में (फैब्रिट. बाइबिल. ग्रेक. 8, पृष्ठ 641, 643–645), राजाओं की पुस्तकों पर और सुलैमान की नीतिवचन पर (बुकलियोट. कोइस्लियान, पृष्ठ 43–45, पृष्ठ 60, 247)।

[2029] ओरिजिन तीसरी शताब्दी के मध्य में अलेक्जेंड्रियाई चर्च के एक प्रसिद्ध ईसाई शिक्षक थे (उनकी मृत्यु 254 में हुई) और अलेक्जेंड्रियाई स्कूल ऑफ़ कन्फेशन में, और बाद में फिलिस्तीन के सेसरिया में एक उत्कृष्ट धर्मोपदेशक थे, जहाँ उन्होंने एक पादरी के रूप में कार्य किया। ओरिजिन का जन्म दूसरी शताब्दी के अंत में अलेक्जेंड्रिया में हुआ था और 17 वर्ष की आयु में उनके पिता को ईसाई धर्म अपनाने के कारण मृत्युदंड दिए जाने के बाद वे अनाथ हो गए। डिसियस के उत्पीड़न के दौरान, उन्हें कैद कर लिया गया, जिससे उनका स्वास्थ्य बिगड़ गया, और परिणामस्वरूप वे लगभग 70 वर्ष की आयु में मृत्यु हो गए। उनके अथक परिश्रम के कारण उनका उपनाम 'हीरा' रखा गया था। उदाहरण के लिए, चर्च के कई पवित्र पिताओं ने अपनी प्रारंभिक शिक्षा और मूर्तिपूजक धर्म से ईसाई धर्म में अपने परिवर्तन के लिए ओरिजिन का आभार माना, जैसे कि नियोकेसरिया के संत ग्रेगरी। उनकी कई रचनाओं का उद्देश्य विधर्मियों और ईसाइयों के दुश्मनों के खिलाफ ईसाई धर्म का बचाव करना था; विशेष रूप से पवित्र धर्मग्रंथ पर उनकी कृतियाँ उल्लेखनीय हैं, जिनमें उन्होंने विश्वास को ज्ञान और दर्शन के साथ सामंजस्य स्थापित करने का प्रयास किया। हालाँकि, ओरिजिन ने अक्सर मनमाने अर्थ और विचार व्यक्त किए जो पूरी कलीसिया से साझा नहीं थे, उदाहरण के लिए, पवित्र त्रिमूर्ति के व्यक्तियों और आत्माओं की सृष्टि के संबंध में, यद्यपि उन्होंने इन्हें अपने व्यक्तिगत अनुमानों के रूप में प्रस्तुत किया था, जिन्हें उनके अनुयायियों ने चरम तक ले जाकर विधर्म में बदल दिया। छठी शताब्दी में, ओरिजिन पर दस विधर्मों का आरोप लगाया गया था, और 543 में कॉन्स्टेंटिनोपल की स्थानीय परिषद में, उन्हें एक विधर्मी घोषित कर निष्कासित कर दिया गया, और उनके लेखन को विधर्मी और विनाश के अधीन घोषित कर दिया गया।

[2030] सैमूएल इस्राएल के न्यायाधीशों में अंतिम और सबसे प्रसिद्ध थे, जो मसीह के जन्म से ग्यारह सदी पहले रहते थे। उन्होंने भविष्यवाणी सभाओं, या स्कूलों की स्थापना की, जिन्हें लोगों के बीच देशभक्ति और ज्ञानवर्धन को बढ़ावा देने के लिए धार्मिक और नैतिक समाजों के रूप में

द्वारा संत यूस्टाथियस की रचनाओं को दी गई प्रशंसा को यह उचित ठहराता है, जिनके पास ये कृतियाँ थीं। इस कृति में, संत यूस्टाथियस, अन्य बातों के अलावा, ओरिजेन की पवित्र शास्त्रों की रूपकात्मक व्याख्या के प्रति अत्यधिक लगाव के लिए कड़ी लेकिन उचित आलोचना करते हैं, अर्थात्, शब्दों के साधारण, शाब्दिक अर्थ के अनुसार नहीं। इस प्रकार, ओरिजेन 'शब्दों के शाब्दिक अर्थ से बिल्कुल अलग, रूपकात्मक रूप से व्याख्या करते हैं, – संत यूस्टैथियस लिखते हैं – अब्राहम द्वारा खोदे गए कुओं और अन्य संबंधित मामलों पर, एक लंबी व्याख्या में, पूरे मामले को एक अलग अर्थ देते हुए, जबकि ये कुएँ उस भूमि में आज भी नग्न आँखों से देखे जा सकते हैं'... और एंडोर की जादूगरनी के संबंध में[2031] (1 शमूएल 28), संत यूस्टाथियस, ओरिजेन के विपरीत, यह तर्क देते हैं कि वह भविष्यवक्ता शमूएल की आत्मा को बुला नहीं सकती थी और न ही बुलाया, बल्कि उसकी जादू-टोने के द्वारा केवल एक भूत प्रकट हुआ, जो शमूएल का प्रतिनिधित्व करते हुए साउल को धोखा देने और विनाश लाने के लिए आया था[2032] । यहाँ, संत यूस्टाथियस यह सिखाते हैं कि पुराने नियम में धर्मी लोगों की आत्माएं अब्राहम की गोद में विश्राम करती थीं[2033] , लेकिन वे तब तक स्वर्ग में प्रवेश नहीं कर सकती थीं जब तक कि यीशु मसीह ने अपने पुनरुत्थान के माध्यम से स्वर्ग के राज्य के द्वार नहीं खोल दिए थे; नए नियम के धर्मी उन धर्मियों से अधिक सुखी हैं – शरीर से अलग होने पर, वे पहले ही स्वर्गीय महिमा और प्रभु यीशु मसीह के साथ एक निश्चित सहभागिता प्राप्त कर लेते हैं[2034] ...

अंतियोखिया के संत यूस्टाथियस का जीवन और कार्य न केवल चर्च के पादरियों के लिए, बल्कि ऑर्थोडॉक्स ईसाइयों के जीवन के सभी क्षेत्रों के लोगों के लिए भी अत्यधिक शिक्षाप्रद हैं। उपरोक्त बिंदुओं के अलावा, यहाँ कुछ और सामान्य दिशानिर्देश हैं जो ईसाई धर्म के सार्वभौमिक शिक्षक, क्रिसोस्टोम, हमारे पवित्र पिता एंटिओक के यूस्टाथियस को समर्पित अपनी विस्तृत 'ईयूलॉजी' (प्रशंसात्मक भाषण) में सभी ऑर्थोडॉक्स ईसाइयों को प्रदान करते हैं[2035] ।

'इस बात पर आश्चर्यचकित न हों कि मैंने संत यूस्टाथियस ऑफ़ एंटीओक की इस प्रशंसा-भाषण की शुरुआत में इस संत को एक शहीद कहा है; उन्होंने अपनी मृत्यु के साथ अपना जीवन समाप्त किया, तो वह शहीद कैसे हो सकते हैं? मैंने आपसे अक्सर कहा है, मेरे प्रिय, कि किसी को शहीद केवल मृत्यु ही नहीं बनाती, बल्कि मिन की अवस्था भी बनाती है। शहीदी का ताज अक्सर न केवल किसी के कर्मों के परिणाम के लिए, बल्कि उसके इरादे के लिए भी बुना जाता है... संत यूस्टाथियस ने मसीह के लिए मृत्यु अपने देश में नहीं, बल्कि एक विदेशी भूमि में भोगी। यह उनके शत्रुओं का काम था; उन्होंने उन्हें अपमानित करने के लिए उनके स्वदेश से निर्वासित कर दिया, लेकिन एक विदेशी भूमि में निर्वासन के माध्यम से वे और भी अधिक गौरवशाली और प्रसिद्ध हो गए, जैसा कि घटनाओं के परिणाम ने साबित कर दिया... संत यूस्टाथियस, प्रेरित पौलुस की तरह, अनगिनत मौतों का सामना करने के लिए तैयार थे, और उन्होंने उन सभी का धैर्य और उत्साह के साथ सामना किया; उन्होंने अपने स्वयं के अनुभव के माध्यम से आने वाले कई खतरों का भी सामना किया। और उन्होंने उसे उसके स्वदेश से निर्वासित कर दिया और उस समय इस धन्य पुरुष पर कई अन्य आरोप लगाए, यद्यपि उनके पास आरोप लगाने का कोई न्यायसंगत कारण नहीं था, सिवाय इसके कि, प्रेरित पौलुस के शब्दों में, उसके शत्रुओं

बनाया गया था। उन्होंने लोगों पर बुद्धिमानी से शासन किया; उन्होंने शाऊल को पहला राजा नियुक्त किया और 88 वर्ष की आयु में निधन हो गया। शमूएल के जीवन का वर्णन राजाओं की पहली पुस्तक के शुरुआती अध्यायों में किया गया है।

[2031] एंडोर, या एंडर ('निवास का स्रोत'), फिलिस्तीन में किसन की धारा के पास एक छोटा सा शहर था। एंडोर के पास 1 शमूएल 28 में उल्लेखित जादूगरनी रहती थी, जिसके पास यहूदी राजा शाऊल रात में गया और उससे अपने लिए मृत शमूएल को बुलाने को कहा। आज भी यात्रियों को नासरत के पास एक गुफा दिखाई जाती है, जहाँ कहा जाता है कि वह जादूगरनी रहती थी। आजकल, ऐन-डोर के स्थान पर एंडूर नामक एक छोटा, गरीब गाँव बसा हुआ है।

[2032] कीश का पुत्र शाऊल, यहूदी लोगों का पहला राजा, जिसे सामूएल ने सिंहासन के लिए अभिषेक किया था, 40 वर्षों तक राज किया—शुरुआत में सदाचारी ढंग से, लेकिन बाद में सत्ता के भूखे और क्रूर तरीके से, जब उसने सामूएल की सलाह मानना बंद कर दिया। उसके जीवन का वर्णन 1 शमूएल 9:31 में किया गया है।

[2033] 'अब्राहम की गोद में' एक बाइबिलिक अभिव्यक्ति है जो परलोक में उस स्थान को दर्शाती है जहाँ पुराने नियम के धर्मी लोग रहते हैं (लूका 16:22-23)। यह मुहावरा यहूदी रीति-रिवाज़ से लिया गया है जिसमें दावत में लेटना शामिल था, जिसके तहत किसी की छाती या गोद पर सिर टिकाना इस तरह लेटने वालों के बीच विशेष निकटता का संकेत था।

[2034] चर्च फादरों का ऐतिहासिक सिद्धांत। चेर्नहिवि के आर्चबिशप फिलारेट द्वारा। प्रकाशित 1869, खंड II, पृ. 28।

[2035] हमारे पवित्र पिता जॉन क्रिसोस्टोम, कॉन्स्टेंटिनोपल के आर्चबिशप, के कार्य, रूसी अनुवाद में। सेंट पीटर्सबर्ग थियोलॉजिकल अकादमी द्वारा 1896 में प्रकाशित, खंड 2, पुस्तक 2, पृष्ठ 642–650।

ने *'परमेश्वर की सच्चाई को झूठ के लिए बदल दिया, और सृष्टिकर्ता के बजाय प्राणी की आराधना और सेवा की'* (रोमियों 1:25); उसने, तथापि, दुष्टता से मुंह मोड़ लिया और अधर्म से दूर रहा, परन्तु यह मुकुट का योग्य है, न कि आरोप का।"

तो फिर संत यूस्टाथियस को निर्वासित क्यों किया गया, और ईश्वर ने उनके उत्पीड़कों को अपनी मनमानी करने की अनुमति क्यों दी? क्यों? यह मत सोचिए कि ये शब्द केवल इस एक भ्रम को दूर करने के लिए ही पर्याप्त हैं; नहीं, यदि आप कभी भी मूर्तिपूजकों या विधर्मियों के साथ ऐसे मामलों पर चर्चा करें, तो यहाँ कही गई बात किसी भी भ्रम को दूर करने के लिए पर्याप्त होगी। ईश्वर अपनी सच्ची और प्रेरितीय आस्था को अनेक आक्रमणों का शिकार होने देते हैं, जबकि वे विधर्म और मूर्तिपूजा को शांति का आनंद लेने देते हैं; क्यों? ताकि आप उनकी दुर्बलता को पहचान सकें, जब वे, बिना विचलित हुए, स्वयं को नष्ट कर लेते हैं, और ताकि आप उस विश्वास की शक्ति से आश्वस्त हो सकें जो आक्रमणों को सहन करता है और अपने ही विरोधियों के हाथों से बढ़ता है... क्या आप देखते हैं कि परमेश्वर शैतान के स्वर्गदूतों को अपने सेवकों पर आक्रमण करने और उन पर अनगिनत विपत्तियाँ लाने की अनुमति देते हैं, ताकि उनकी शक्ति प्रिकट हो सके? सचमुच, चाहे हम मूर्तिपूजकों से बहस कर रहे हों या दुष्ट यहूदियों से, ईश्वरीय शक्ति के प्रमाण के रूप में हमारे लिए यह पर्याप्त होगा कि मसीह में विश्वास, अनगिनत युद्धों को सहन करने के बाद, विजयी रहा है; और जबकि पूरा ब्रह्मांड उनके विरुद्ध खड़ा था और हर कोई उन बारह पुरुषों—अर्थात्, प्रेरितों—का बड़े उत्साह से उत्पीड़न कर रहा था, वे, यद्यपि वे कोड़े खाए, सताए गए और अनगिनत विपत्तियों को झेल रहे थे, फिर भी वे थोड़े ही समय में उन लोगों को पूर्ण प्रभुत्व के साथ परास्त करने में सक्षम हुए जिन्होंने यह सब उनके साथ किया था। इसी कारण, ईश्वर ने अंतीयक के धन्य यूस्टाथियस को निर्वासन में भेजे जाने की अनुमति दी, ताकि हमें सत्य की शक्ति और विधर्मियों की दुर्बलता दोनों और भी स्पष्ट रूप से दिखाई दे सके।

'संत यूस्टाथियस की प्रार्थनाओं के द्वारा, प्रभु परमेश्वर अपनी कलीसिया को हर प्रकार के मिथ्या ज्ञान और विभाजन से बचाए, और नम्रता और मसीही प्रेम की भावना में कलीसियाई एकता और शांति को बनाए रखे; और वह हम सभी विश्वासियों पर दया करे और हमें बचाए।'

'और, सभी बातों के लिए परमेश्वर का धन्यवाद करने के बाद, आइए हम संतों के गुणों का अनुकरण करें, ताकि हम उनके साथ हमारे प्रभु यीशु मसीह के मुकुटों, अनुग्रह और मानवता के प्रति प्रेम में सहभागी हो सकें, जिनके द्वारा और जिनके साथ, पवित्र आत्मा के साथ, पिता को युगानुयुग महिमा, सम्मान और शक्ति प्राप्त हो। आमीन।'

7 मार्च

22 फरवरी (पुराना तरीका)

शहीद संत मॉरसियिस, उनके पुत्र फोटिनिस, और उनके साथ 70 सैनिकों की यातनाएँ।

22 फरवरी को स्मरणोत्सव

अधर्मी और अधर्मी राजा मैक्सिमियिन[2036] का मानना था कि अपने झूठे देवताओं की सेवा करके वह अपने लिए मदद और अपने राज्य की उन्नति सुनिश्चित करेगा; इसलिए, उसने अपने सभी प्रजाजनों को अधर्मी मूर्तियों को बलिदान चढ़ाने का आदेश दिया। वह स्वयं राक्षसों की वेदियों के सामने अनुष्ठान करके, दूसरों को घृणित बलिदान करने के लिए मजबूर करने का उदाहरण स्थापित करने का प्रयास करता था। उसके लिए, पुराने राजाओं की तरह, केवल प्रांतों के राज्यपालों को मूर्तियों की पूजा सुनिश्चित करने का निर्देश देते हुए आदेश जारी करना ही पर्याप्त नहीं था: वह स्वयं, बिना किसी आलस्य के, अपने पूरे राज्य में घूमा, राक्षसों की वेदियों के सामने अनुष्ठान करता हुआ; वह अधर्मी राजा आशा करता था कि, उसकी उपस्थिति के कारण, जो भी लोग मूर्तिपूजा के भ्रम से मुड़ गए थे और उन्हें मसीह की सच्चाई जानने की कृपा मिली थी, वे एक बार फिर अपनी पुरानी मूर्तिपूजा की ओर लौट आएंगे। इस इरादे से, वह रोम से निकलकर

[2036] मैक्सिमियिन गैलेरियस, रोमन सम्राट – 306 से 311 तक।

पूर्वी प्रांतों की ओर रवाना हुआ; अन्य स्थानों के अलावा, वह सीरिया के अपामिया शहर पहुँचा। यहाँ, मूर्तिपूजक पुरोहित उसके पास आए और ईसाइयों पर निंदा करते हुए कहने लगे:

'हे सर्वशक्तिमान राजा, चूंकि देवताओं ने हमें आपके साथ स्वतंत्र रूप से बात करने का अवसर प्रदान किया है, हम आपको घोषणा करते हैं कि हम में से प्रत्येक अपने पूर्वजों के महान देवताओं का भय और भक्ति के साथ सम्मान करता है, विशेष रूप से ज्यूस[2037] और अद्भुत अपोलो[2038] , हमारे प्रमुख देवता, जो आपके राज्य के रक्षक और संरक्षक हैं।' लेकिन मौरिसियस, आपके अन्य सत्तर सैनिकों के साथ, सम्मानों से फूलकर और आपके महान उपहारों से समृद्ध होकर, हमारे देवताओं का तिरस्कार करते हैं और आपके महान और अजेय अधिकार का विरोध करते हैं—वे ईसाई धर्म के भ्रम में बहक गए हैं।

यह सुनकर राजा मैक्सिमियन अत्यंत क्रोधित हो गए; उनका क्रोध भट्टी में जलती लपटों से भी अधिक प्रचंड हो गया; उन्हें विशेष रूप से इस बात पर आक्रोश था कि उनकी सेना में ऐसे सैनिक पाए गए। के पवित्र दिनों में से एक दिन, उन्होंने आमसिक्का नामक सार्वजनिक प्रदर्शन के स्थान पर एक न्यायाधिकरण स्थापित करने का आदेश दिया; यह उत्तरी शहर के द्वारों के बीच स्थित था। मैक्सिमियन ने इस स्थान को इसलिए चुना ताकि पूरा जनसमूह मुकदमे का साक्षी बन सके; उन्होंने आदेश दिया कि पवित्र शहीदों को वहाँ लाया जाए। निर्धारित दिन, जब नामित स्थान पर एक बड़ी भीड़ इकट्ठा हो गई थी—यहाँ तक कि युवतियाँ भी घर पर नहीं रुकी थीं—सम्राट मैक्सिमियन ने ऊँचे मंच पर अपनी सीट ली। फिर मसीह के सत्तर पवित्र योद्धाओं को, उनके नेता संत मॉरिस के साथ, उनके परिचारकों द्वारा वहाँ लाया गया। उन पर नज़र डालते हुए, सम्राट ने मॉरिस से कहा:

'हमने आशा की थी, मौरिसियस, कि तुम, हमारे शाही अनुग्रह से वंचित न रहे ऐसे पुरुषों के रूप में, जिन्हें हमारी तनख्वाह से पोषित किया गया है और जिन्हें हमने सर्वोच्च सम्मानों से सम्मानित किया है, हमारे धर्मपरायण उदाहरण का अनुसरण करोगे और, अपने वीर कर्मों और बुद्धिमानी भरी सलाह के माध्यम से, उन लोगों को समझाओगे जो हमारे कानून को अस्वीकार करते हैं, जो देवताओं को प्रिय है; कि तुम उन लोगों के विचारों को सुधारोगे जो भ्रम में हैं, जो सुधार की आवश्यकता है उसे सुधारें, और जो कलह मचाते हैं उन्हें वश में करें – संक्षेप में, हमें विश्वास था कि आप हमारी आज्ञा के बिना, हमारे विरुद्ध और हमारी इच्छा के विपरीत की गई हर चीज़ को सुधारेंगे। लेकिन हम सुनते हैं कि आप ठीक इसके विपरीत कर रहे हैं - आप न केवल हमारे कानून के खिलाफ विद्रोह करने वालों को वश में करने में विफल रहते हैं, बल्कि आप स्वयं हमारे सर्वशक्तिमान देवताओं के विरोधी हैं; आप उन्हें अनदेखा करते हैं, उनका सम्मान करने में विफल रहते हैं, और कोई बलिदान या भेंट नहीं करते हैं; और तो और, आप दूसरों के लिए अगुआ भी बन गए हैं और उन्हें विनाशकारी गर्त में ले जा रहे हैं, यदि वास्तव में आपके बारे में हमें जो बताया गया है उसमें कोई सच्चाई है।

इस पर, संत मॉरिसियस ने उत्तर दिया:

'हे राजा, जो अपराध हम तुम्हारे निर्जीव देवताओं पर करते हैं, वह हमारे सच्चे ईश्वर से हमारे लिए विजय का एक गौरवशाली मुकुट तैयार करता है। हम उस ईश्वर का अपमान या तिरस्कार नहीं करते, जिसने हमें बनाया है, जैसा कि आप अपने पागलपन में सोचते हैं, बल्कि हम उसकी महिमा करते हैं जो एकमात्र सच्चा ईश्वर है, जिसने स्वर्ग और पृथ्वी, समुद्र और उनमें जो कुछ भी है, उसे बनाया है। न ही यह उचित है कि उन घृणित और अशुद्ध राक्षसों को 'देवता' कहा जाए जो लोगों को विनाश की ओर ले जाते हैं, और न ही उनकी मूर्तियों को, जो बहरी, अंधी और निर्जीव हैं।

तब राजा ने कहा:

'क्या इसी तरह तुम, मौरिसियस, उन देवताओं का धन्यवाद करते हो जिन्होंने तुम्हें सम्मानित किया है और तुम्हें सेना में सर्वोच्च स्थान प्रदान किया है?'

लेकिन संत मॉरिस ने उत्तर दिया:

'मैंने कभी आपके देवताओं से कोई सम्मान स्वीकार नहीं किया है, और न ही मैं उन्हें सम्मानित करना चाहता हूँ। क्योंकि परमेश्वर को जानने वालों में से कौन मूर्ख वस्तुओं को श्रद्धांजलि देना चाहेगा, सिवाय उन लोगों के जिनमें विवेक

[2037] ज़ीउस या जुपिटर – एक ग्रीको-रोमन देवता, जिन्हें स्वर्ग और पृथ्वी के शासक तथा सभी देवताओं और मनुष्यों के पिता के रूप में पूजित जाता था।

[2038] अपोल्लो को सूर्य और बौद्धिक प्रबोधन के देवता, साथ ही सार्वजनिक कल्याण और व्यवस्था, कानून के संरक्षक, और भविष्यवाणी के देवता के रूप में पूजा जाता था।

नहीं है और जो मूर्ख पशुओं जैसे हैं (भजन संहिता 48:13); केवल ऐसे ही लोग पत्थरों और पेड़ों को देवता मानते हैं, यह मानकर कि उनमें विवेक है, और उनकी पूजा देवताओं के रूप में करते हैं।

लेकिन राजा ने कहा:

'तुम्हें हमारी सेवा करने वालों में सर्वोच्च पद दिया गया है; इसीलिए तुम हमसे इतनी बहादुरी और बिना किसी डर के बात करते हो।'

यह कहने के बाद, राजा ने संत मॉरिटियस को सत्तर योद्धाओं से अलग करने का आदेश दिया और शेष योद्धाओं से दयालु शब्दों में कहा:

'भाइयो, किसने आपको बहकाया है और आपके उद्धारकों – हमारे देवताओं – से मुँह मोड़ने तथा क्रूस पर चढ़ाए गए मनुष्य की पूजा करने वालों, जो कि किसी प्रकार का खलनायक है, के भ्रम में शामिल होने का विचार आपके मन में डाला है?'

तब धन्य थियोडोरेट ने फिलिप के साथ मिलकर सभी पवित्र शहीदों की ओर से उत्तर दिया:

'हे अधर्मी यातनाकर्ता, न केवल हम स्वयं भ्रम में नहीं हैं, बल्कि हम तुम्हें भी उस भ्रम से मुक्त करना चाहते हैं जिससे हम स्वयं मुक्त हो चुके हैं, एक सच्चे परमेश्वर – सर्वशक्तिमान पिता और उनके एकमात्र पुत्र, हमारे प्रभु यीशु मसीह – सच्चे परमेश्वर, और परमेश्वर की बुद्धि और उनकी पवित्र आत्मा की उपासना करके, जिन्होंने हम में ज्ञान और समझ फूँकी है, ताकि हम एकसार स्वभाव वाली त्रिमूर्ति की गवाही दे सकें। हम तुम्हारे अधर्मी विश्वास से घृणा करते हैं; हम एक क्षणिक सैनिक की पदवी का त्याग करते हैं, ताकि हम शक्तियों के राजा, परमेश्वर के सैनिक बनने के योग्य ठहरें।

तब मैक्सिमियिन ने कहा:

'मैं देखता हूँ, फिलिप, कि तुम पहले ही एक सम्मानजनक आयु में पहुँच चुके हो, फिर भी ज्ञान में तुम जवानों से बहुत पीछे हो; तुम्हारे लिए बेहतर होगा कि तुम हमारे देवताओं की ओर मुड़ जाओ और इस प्रकार अपने साथी सैनिकों के लिए एक अच्छा उदाहरण प्रस्तुत करो, ताकि वे भी ऐसा ही करें; तब तुम हमें से बड़ा सम्मान और उपहार प्राप्त करोगे।'

लेकिन संत फिलिप ने उत्तर दिया:

इस पर मॅक्सिमियिन ने उत्तर दिया:

इस पर, मैक्सिमियिन ने कहा:

'फिलिप, हमारे धैर्य और नम्रता के कारण तुम अभद्र हो। तुम्हारे लिए अच्छा होगा कि तुम अपनी अंधश्रद्धा को त्याग दो, कहीं ऐसा न हो कि तुम हमारे क्रोध और प्रचंडता को भड़का दो; यदि तुम उस मनुष्य की गवाही देने की हिम्मत करोगे जिसे तुम देवताओं में से एक मानते हो, तो तुम्हें भयंकर यातनाओं का सामना करना पड़ेगा।'

तब पवित्र सत्तर शहीदों ने अपने यातनाकर्ता को उत्तर दिया:

'हे अधर्मी राजा, तुम्हारी व्यर्थ और निष्फल धमकी हमें शक्ति और धैर्य देती है; हम किसी यातना से नहीं डरते, क्योंकि प्रभु से प्रेम करने वाले के हृदय में कोई भय नहीं होता।'

इस उत्तर से मैक्सिमियिन क्रोधित हो गया और उसने आदेश दिया कि उनके कमरबंद और सैन्य वस्त्र उतार दिए जाएँ, और कहा:

'देखो कि तुमने क्या महिमा और सम्मान खो दिया है, और अपनी अवज्ञा के कारण तुमने अपने ऊपर क्या अपमान लाया है।'

लेकिन संतों ने उत्तर दिया:

'हमें हमारे वस्त्र और कमरबंद उतारकर, तुमने हमें हमारी सैन्य पदवी से वंचित कर दिया है; लेकिन स्वर्ग में एक ईश्वर हैं जिन्हें हम सम्मानित करते हैं: वह हमें ऐसे वस्त्र और कमरबंद पहनाएंगे जो नष्ट नहीं होंगे और हमें अपनी शाश्वत महिमा प्रदान करेंगे, जिसे देखने के तुम बिल्कुल भी योग्य नहीं हो, क्योंकि यह तुम्हारा पिता, शैतान है, जो तुम्हारे माध्यम से बोलता और काम करता है।'

तब राजा, और भी अधिक क्रोधित होकर, संतों से बोला:

'हे शापित लोगो, जो हमारे देवताओं के उपहारों के अयोग्य हो, तुमने स्वयं पर अपमान लाया है: हमने तुम पर बहुत सम्मान बरसाया, फिर भी तुमने महान देवताओं का अपमान किया और हमारी दया को ठुकराया; अब वह प्राप्त करो जिसके तुम हकदार हो।'

संतों ने उत्तर दिया:

हे राजा, आपकी सेवा में योद्धा बनना व्यर्थ और क्षणिक कार्य है, जबकि आपका सम्मान वास्तव में अपमान है; क्योंकि आपने उस ईश्वर को भुला दिया है, जिसने आपको राजसी अधिकार प्रदान किया, और अपनी मूर्खता में आप व्यर्थ और निर्जीव मूर्तियों की पूजा देवताओं के रूप में करते हैं, यद्यपि वे आपको कोई लाभ नहीं देतीं और उन्हें यह भी पता नहीं चलता कि कोई उनका सम्मान करता है या अपमान।

तब राजा ने कहा:

'अपनी शाही दया से, तुम्हारी जान बख्शने की इच्छा से, मैं तुम्हें और समय देता हूँ।'

इसके बाद, उसने उन्हें तीन दिनों के लिए कैद करने का आदेश दिया, ताकि वे विचार-विमर्श करके, अपने लिए वही चुनें जो वे चाहें। हालाँकि, संतों को कैद करके और बेड़ियों में जकड़कर, उन्होंने इस प्रकार कहा:

'प्रिय भाइयो, आओ हम अपनी आत्मा को प्रार्थना की ओर मोड़ें और अपने दयालु और कृपालु ईश्वर से विनम्रतापूर्वक निवेदन करें कि वह अपनी पवित्र आत्मा के द्वारा हम पर ज्ञान और समझ प्रदान करें: आओ हम उनसे प्रार्थना करें कि वे हमारे मुख में वे वचन डालें जिनसे हम राजा का उत्तर दे सकें, ताकि हमारा यातनाकर्ता हमारे विश्वास की सच्चाई से चकित हो जाए।'

इसके बाद, वे एक स्वर में पुकारते हुए प्रार्थना करने लगे:

– हे प्रभु यीशु मसीह, सर्वशक्तिमान परमेश्वर, जिनकी शक्ति शाश्वत है और जिनका राज्य अनंत है, हम पर अपना पवित्र आत्मा उतारें – जो हमें मार्गदर्शन दे और हमें आनंद और हर्ष से भर दे; वह हमें दुष्ट भ्रम पर विजय प्रदान करे, और हमें आपके पवित्र आत्मा के द्वारा विश्वास में दृढ़ करे, जो आपके सच्चे और अटूट वादे के अनुसार हम में बोलता है (मत्ती 10:19–20)। चूंकि आपने हमसे सांसारिक सम्मान छीन लिया है, कृपा करें कि हम आपके स्वर्गीय नगर में योद्धा बनें और स्वर्ग के नागरिकों के बीच उन सभी संतों के साथ निवास करें जिन्होंने प्राचीन काल से आपको प्रसन्न किया है। आप एकमात्र परमेश्वर हैं, और आपको ही युगानुयुग महिमा और सामर्थ्य प्राप्त हो, आमीन।

तीन दिन बाद, राजा मैक्सिमियिन ने फिर से अमाक्सियिन गेट्स पर उसी न्यायपीठ पर अपनी सीट संभाली और पवित्र शहीदों को अपने सामने लाने का आदेश दिया; शहर के सभी निवासी भी मुकदमे का साक्षी बनने के लिए वहाँ इकट्ठा हुए। उत्पीड़क ने अपने क्रोध को रोकते हुए, संतों से दयालुता से कहा:

'हे मनुष्यों, अपने लिए चुनो कि क्या तुम्हारे लिए सबसे अच्छा है: आगे आओ और देवताओं को बलिदान चढ़ाओ, और तुम जीवन पाओगे और एक कड़वी मृत्यु से बच जाओगे।'

तब संतों ने उत्तर दिया:

'हे राजा, हमने सब कुछ ध्यान से विचार कर लिया है: हमारी बात ध्यान से सुनो और हमें अब और मजबूर मत करो कि हम तुम्हारे देवताओं को बलिदान चढ़ाएँ; क्योंकि हमने दृढ़ संकल्प लिया है कि हम इस वर्तमान जीवन को तुच्छ समझेंगे और मसीह के प्रेम के लिए हमें जो मृत्यु की प्रतीक्षा कर रही है, उसे वरीयता देंगे, जिनसे हमें अनंत जीवन प्राप्त होने की आशा है।' इसलिए, हमारे साथ जो चाहो करो: हम अपने परमेश्वर से नहीं मुड़ेंगे, और न ही हम कभी तुम्हारे राक्षसों की पूजा करेंगे; क्षणिक मृत्यु की सज़ा पाकर, हम शाश्वत दंड से मुक्त हो जाते हैं।

ऐसा था संतों का उत्तर। यातना देने वाले ने, हालांकि, उनके बीच एक युवक को देखकर उससे पूछा:

'मुझे बताओ, युवक, तुम्हारा नाम क्या है और तुम कहाँ से हो?'

युवक ने उत्तर दिया:

मेरा नाम फोटोइनस है; मुझे यह नाम सच्चे प्रकाश से मिला है। मैं अपने मसीह का एक सिपाही हूँ, जिसने आपके पिता, शैतान को शर्मिंदा किया है।' मैं जन्म से एक रोमन हूँ, सबसे प्रतिष्ठित मॉरसियिस का पुत्र—न केवल देह से बल्कि आत्मा से भी—क्योंकि मुझसे उसी के यहाँ जन्म हुआ और मैंने उसी से ईश्वर का ज्ञान प्राप्त किया; उसने मुझे प्रभु मसीह की पवित्र आस्था में पाला, जिसे आप, हे राजा, अस्वीकार करके स्वयं को मूर्ख पशुओं के समान बना लिया है।

इस पर यातना देने वाले ने उत्तर दिया:

'तुम मूर्ख हो, युवक, और तुम्हारे शब्द तुम्हारी जवानी को दर्शाते हैं; लेकिन अब समय आ गया है कि तुम समझो कि तुम्हारे लिए क्या सबसे अच्छा है – आगे आओ और महान ज्यूस को बलिदान चढ़ाओ, और अपनी जवानी को बचाओ।'

तब उस युवक ने कहा:

'तुम मुझे केवल इसलिए मूर्ख कहते हो क्योंकि मैं तुम्हारी आज्ञा नहीं मानता और मूर्तियों की पूजा नहीं करता। नहीं, मैं तुम सब से अधिक बुद्धिमान हूँ, क्योंकि मैं अपने प्रभु यीशु मसीह में विश्वास करता हूँ, जिसमें तुम विश्वास नहीं करते और न ही जानना चाहते हो।'

तब यातना देने वाले ने फिर से संतों से कहा:

'हे नीचों, तुम्हारी मूर्खता को हम और कितनी देर तक सहन करें? हमारी अतिशय दया के आगे झुककर, हम तुम्हारे कष्ट को और कितनी देर तक टालें? देवताओं को बलिदान चढ़ाओ; अपने ऊपर हमारा धर्मी न्याय मत लाओ; हमें निर्दयता और क्रूरता के लिए उकसाओ मत।'

संतों ने उत्तर दिया:

'हे राक्षसों के दुष्ट और अधर्मी सेवक, यदि तुझमें जरा भी समझ होती, तो तू पहले ही हमारे विश्वास और फोतिनिस की शक्ति के बारे में जान चुका होता; यद्यपि वह आयु में जवान है, तथापि उसने अपने धर्मी विश्वास और मसीह की स्वीकारोक्ति के द्वारा तेरी दुष्टता को लज्जित कर दिया है; इसीलिए हम इन यातनाओं को सहन करने का और भी अधिक प्रयास करते हैं, ताकि आपके पिता, शैतान को लज्जित कर सकें और हमारे ईश्वर मसीह को प्रसन्न कर सकें।

तब यातना देने वाले ने, क्रोध से भरकर, संतों को नग्न करने और बैल की खाल की रस्सियों से कोड़े लगाने का आदेश दिया। नौकरों ने उनके आदेशों का पालन करना शुरू कर दिया: उन्होंने मसीह के प्रत्येक सिपाही को लिटा दिया और, बिना किसी दया के, उनके पूरे शरीर पर प्रहार किया। इस प्रकार संतों को तब तक यातनाएँ दी गईं जब तक कि उनके पवित्र शरीर चूर-चूर नहीं हो गए और गिराए गए रक्त की बड़ी मात्रा से सारा स्थान लाल हो गया। इस बीच, अपनी यातनाओं के बीच, संतों ने प्रभु मसीह से सहायता के लिए पुकारा। प्रभु ने अपनी अदृश्य शक्ति से उनका परित्याग नहीं किया; उन्होंने उनके दुखों को कम किया और धैर्य तथा दैवी प्रेम में उनके हृदयों को बल दिया। जब सेवक पूरी तरह थक गए, तो राजा ने संतों से कहा:

'क्या तुमने समझा, हे अभद्र और मूर्खों, कि हम कितनी आसानी से तुम्हारी जान ले सकते हैं? इसलिए देवताओं को बलिदान चढ़ाओ, कहीं तुम अपने ऊपर और भी कठोर दंड न लाओ!'

लेकिन संतों ने उत्तर दिया:

'हे दुष्ट राजा, जो हमारे परमेश्वर को नहीं जानता, यह जान ले: जैसे कि तुम मसीह के प्रेम और सच्चे प्रकाश से बहुत दूर हो, और दानवी भ्रम के अंधकार से अंधा हो गया हो, वैसे ही हम भी उन यातनाओं से कोई पीड़ा नहीं महसूस करते जो तुम हमें देते हो, क्योंकि हमारे मन हमारे परमेश्वर मसीह के विश्वास और प्रेम से प्रबुद्ध हैं। तो, हे यातना देने वाले और दानवों के सेवक, हमारे ऊपर क्या नई और सबसे भयानक यातनाएँ थोपने की योजना बना; हमारी आत्माएँ तरसती हैं, और हमारे भीतर मसीह का प्रेम, पीड़ा के माध्यम से, शरीर से मुक्त होकर सदा और सदा राज्य करने वाले जीवित परमेश्वर को देखने की लालसा करता है।

यह सुनकर, यातना देने वाले को और भी अधिक क्रोध आ गया और उसने एक बड़ी आग जलाने का आदेश दिया, जिसमें पवित्र शहीदों को फेंका जाना था।

तब एक बड़ी आग जलाई गई; लेकिन संतों ने जल्लाद के सेवकों के उन्हें आग में फेंकने का इंतज़ार नहीं किया, बल्कि वे स्वयं इस तरह आग के पास गए मानो वह पानी हो, और लपटों के बीच प्रवेश करके, बिना किसी चोट के आग से होकर गुज़रे, जल्लाद को डाँटते हुए और उसके देवताओं को लज्जित करते हुए। वहाँ मौजूद सभी लोग इस गौरवशाली चमत्कार को देखकर चकित रह गए। लेकिन यातना देने वाले ने, विनाश के पात्र की तरह, यह मानने से इनकार कर दिया कि संतों को ईश्वर की शक्ति से सहायता मिली थी, जिससे उन्होंने आग की शक्ति पर विजय प्राप्त की; इसके बजाय, और भी अधिक क्रोध के साथ, उसने संतों को नष्ट करने का प्रयास किया। उसने पवित्र शहीदों को—जिन्हें भयानक लपटों से कोई हानि नहीं हुई थी—आग से खींचकर उन पेड़ों से बांधने का आदेश दिया जहाँ आमतौर पर अपराधियों को यातना दी जाती थी, और उनके शरीरों को लोहे के पंखों से निर्दयतापूर्वक खुरचने का आदेश दिया। फिर भी संतों ने शारीरिक पीड़ा से न डरते हुए, इस क्रूर यातना को भी बहादुरी से सहन किया। यहाँ तक कि लोग भी राजा के क्रोध और पागलपन पर चकित थे। संत मॉरटियिस ने राजा की ओर मुड़कर उससे कहा:

'हे दुष्ट और घृणित यातनाकर्ता, क्या तुम अपनी ही कमजोरी नहीं देखते? क्या तुम अपनी तुच्छता का एहसास नहीं करते? क्योंकि फोटिनिस, जो केवल एक युवक था, इतनी भयंकर यातनाओं को सहन कर सका; इस प्रकार उसने

तुम्हारे कानूनहीन राज्य की शक्ति को कुचल दिया और तोड़ दिया। तो फिर, आप हम सभी पर कैसे विजय प्राप्त कर सकते हैं, जबकि आप स्वयं एक युवा लड़के से पराजित और लज्जित हुए हैं?"

मैक्सिमियिन ने संत पर क्रोध से घूरते हुए, दाँत पीसते हुए आदेश दिया कि पवित्र युवक फोटिनिस को उसके पिता की आँखों के सामने तलवार से तुरंत सिर कलम कर दिया जाए; इससे वह मौरसियिस से बदला लेना चाहता था; उसने सोचा कि उसके पुत्र की मृत्यु उसके पिता – संत मौरसियिस – को बहुत दुखी करेगी; लेकिन जब उस पवित्र व्यक्ति ने अपने पुत्र की शहादत और मसीह ईश्वर के लिए उसकी मृत्यु देखी तो वह आनंद और हर्ष से भर गया।

जब संत फोटोइनस, तलवार से वार कर गिराए जाने पर, ने अपना प्राण प्रभु को सौंप दिया, तो मौरसियिस ने मैक्सिमियिन से कहा:

'हे अधर्मी यातनाकर्ता, तूने फोटिनिस को हमारे पहले मसीह परमेश्वर के पास भेजकर हमारी इच्छा पूरी कर दी है; अब, निस्संदेह, स्वर्ग के लिए हमारा प्रस्थान भी दूर नहीं है: हम में से कौन मसीह के योद्धा फोटिनिस के उदाहरण का अनुसरण नहीं करेगा, जिसने पहले ही स्वर्गीय निवासों में अपनी जगह बना ली है और शैतान, तेरे पिता को लज्जित कर दिया है?' तो फिर, और भी बड़े और अधिक क्रूर यातनाओं की योजना बनाओ, और यह परखने के लिए अपनी पूरी कोशिश करो कि मसीह में हमारा विश्वास दृढ़ है या नहीं।

जब मैक्सिमियिन ने देखा कि पवित्र शहीद अपने सभी यातनाओं को नम्रता और साहस से, अपने विश्वास से बिना डिगे सहन कर रहे थे, तो उसने अपने सभी दुष्ट और अधर्मी सलाहकारों को बुलाया और उनके साथ मिलकर शहीदों को नष्ट करने के लिए सबसे क्रूर मृत्यु की योजना बनाने लगा, ताकि जहाँ भी वे रहते हों, सभी ईसाइयों के दिलों में आतंक पैदा किया जा सके। कुछ ने उसे एक बात की सलाह दी, दूसरों ने कुछ और; अंत में, उनमें से एक—जो सबसे क्रूर और दुष्ट, पूरी तरह से अमानवीय और दुर्भावनापूर्ण था—ने मैक्सिमियिन से कहा:

'अब, हे राजा, गर्मी का मौसम है—जुलाई का महीना; और हमारे शहर के बाहर, पश्चिम में, दो नदियों और एक झील के बीच, एक दलदली और घास से ढकी जगह है; वहाँ अब मच्छरों, तिलचट्टों, डंक मारने वाले कीड़ों और भौंरों के झुंड हैं, इतना कि किसी आदमी के लिए उस जगह से गुजरना भी मुश्किल है, और वहाँ एक घंटा रुकना तो बिल्कुल असंभव है; उन लोगों को यहाँ लाओ; आदेश दो कि उन्हें नग्न कर दिया जाए और पेड़ों से बाँध दिया जाए; इसके अलावा, उन्हें शहद से लथपथ कर दो; तब मच्छर, डंक मारने वाले कीड़े और सभी प्रकार की मक्खियाँ उन्हें क्रूरता से सताएँगी; यह सभी से भीषण और भयानक यातना है जिसे सोचा जा सकता है; तब उन्हें एहसास होगा कि हमारे अजेय और शाश्वत देवताओं का अपमान नहीं करना चाहिए।'

यह सलाह धर्मद्रोही राजा और उसके सभी दुष्ट सलाहकारों को बहुत भाई, और मसीह के पवित्र शहीदों को इस यातना की सज़ा दी गई। तब सैनिकों ने उन्हें पकड़ लिया, बाँध दिया, और उपर्युक्त स्थान पर ले गए; वहाँ उन्होंने संतों को झरने और दलदल के ऊपर उगे पेड़ों से मजबूती से बाँध दिया, और उनके नग्न शरीर पर सिर से पैर तक शहद मल दिया; इसके अलावा, उन्होंने धन्य फोटिनिस के शरीर को उसके पिता की आँखों के सामने ही जमीन पर फेंक दिया। इसके बाद, वे चले गए। हर तरह की मक्खियाँ, मच्छर, घोड़ों की मक्खी, ततैया और डंक मारने वाले कीड़े संतों पर टूट पड़े; एक घने बादल की तरह, उन्होंने कष्ट सहने वालों को घेर लिया, और उन्हें बेरहमी से सताया। संतों ने यह असहनीय यातना दस दिन और दस रातों तक सहन की। उन्होंने स्वर्ग की ओर अपनी आँखें उठाकर प्रार्थना की, और कहा:

'हे प्रभु, हमारे परमेश्वर, आपने हमें अपनी प्रतिमा और समानता में बनाया; आपने हमें अपना सत्य जानने में सक्षम बनाया; आप प्रसन्न हुए कि हमें अपनी दिव्यता, अपने एकलौते पुत्र, और परम पवित्र तथा जीवन-दायक आत्मा का प्रकटीकरण करें। हम अपनी आत्माओं को तुझ पर सौंपते हैं और तुझ से विनती करते हैं कि हमें उन सभी संतों में गिन, जिन्होंने प्राचीन काल से तुझे प्रसन्न किया है। क्योंकि हमने तुझ से प्रेम किया है और तुझे अपनी पूरी आत्मा से खोजा है; तेरे ही कारण हम इस यातना के अधीन हैं। केवल तू ही भला और दयालु परमेश्वर है, और तुझ ही महिमा हो युगानुयुग। आमीन।"

इसके बाद, उन्होंने अपनी पवित्र आत्माएँ प्रभु को सौंप दीं और उन्हें अनंत महिमा के मुकुट प्रदान किए गए। हालाँकि, अधर्मी उत्पीड़क मैक्सिमियिन ने संतों के विरुद्ध उनके मृत्यु के बाद भी क्रूरता जारी रखी, जबकि वे पहले ही अमर जीवन का आनंद ले रहे थे (क्योंकि जो प्रभु में मर गए हैं, वे परमेश्वर के सामने जीवित हैं, भले ही उन्होंने इस संसार को छोड़ दिया हो)। यह सुनकर कि संत पहले ही मर चुके थे, मैक्सिमियिन ने उनके सम्मानित सिर काटकर उन्हें बिना दफ़नाए छोड़ने का आदेश दिया। फिर उनके शरीर और सिर को उस घास के मैदान और वहाँ खड़े ओक के झुंड में बिखेर

दयिा गया, ताकपिक्षी और जानवर उन्हें नोच-नोच कर खा जाएँ। कुछ वशि्वासी, रात में आकर, भय और कांपते हुए पवत्रि शहीदों के बखिरे अवशेषों को इकट्ठा कयिा और उन्हें उसी स्थान पर दफना दयिा, और हमारे प्रभु यीशु मसीह की महमिा की, जो पता और पवत्रि आत्मा के साथ सदा-सदा महमिा पाते हैं, आमीन।

आदरणीय फलासयिस, सीरयिाई तपस्वी की स्मृत।

22 फरवरी को स्मरणोत्सव

आदरणीय फलासयिस ने, जब वे एक युवक थे, एक पहाड़ पर अपना एक आवास बनाया और वहाँ रहने लगे। अपनी स्वाभावकि ईमानदारी और वनिम्रता के कारण वशिष्टि, वे जल्द ही तपस्वी जीवन की ओर आकर्षति हो गए। वे तारगाला गाँव के पास एक पहाड़ की चोटी पर चले गए और वहाँ तपस्या में 38 वर्ष बतिाए, उनका कोई आवास नहीं था: न कोई कोठरी, न कोई तंबू, और न ही कोई आश्रय; बल्कि, उन्होंने केवल एक छोटा सा पत्थर का घेरा बनाया था और आकाश ही उनका एकमात्र आश्रय था, और वे हर समय वहीं रहते थे। ऐसे कर्मों के लिए, प्रभु ने पवत्रि तपस्वी को चमत्कार करने की कृपा प्रदान की। आदरणीय फलासयिस ने भूत-प्रेत भगाए, वभिन्नि बीमारयिों को ठीक कयिा और अपने चमत्कारी वरदान की शक्ति से, उन्हें पवत्रि प्रेरतिों के समान माना जाने लगा। एक बार, एक साँप ने उन पर हमला कयिा और उन्हें नगिलने की कोशशि की, लेकनि उन्होंने प्रार्थना की और अपनी प्रार्थना के माध्यम से, उन्होंने खुद को मौत से बचा लयिा। एक अन्य अवसर पर, उन्हें पेट की बीमारी हो गई जसिसे उन्हें अत्यधकि पीड़ा हुई, लेकनि उन्होंने ईश्वर का नाम लयिा और इस प्रकार अपनी पीड़ादायक बीमारी से ठीक हो गए। लोग हमेशा उनके चमत्कारों को देखने के लिए रेवरेंड के पास उमड़ते थे, और आने वालों में से कई ने उनसे अपने साथयिों की पंक्ति में शामलि करने का अनुरोध कयिा। आदरणीय फादर ने ऐसी मांगों को अस्वीकार नहीं कयिा। उन्होंने उनके साथ तपस्या करने के इच्छुक लोगों के लिए कोठरयिाँ बनवाईं, और उन्हें वहाँ रहने की अनुमति दी, तथा उन्हें वह भोजन बाँटा जो उनके भक्त वभिन्नि स्थानों से उनके लिए लाते थे। ऐसे तपस्यापूर्ण प्रयासों में अपना जीवन व्यतीत करने के बाद, आदरणीय फादर फलासयिस का शांतपिूर्वक नधिन हो गया।

सम्माननीय वरादत, सीरयिाई तपस्वी की स्मृत दविस।

22 फरवरी को स्मरणोत्सव

आदरणीय वरादत एंटओिक के मूल नविासी थे[2039] । ध्यानमग्न तपस्वी जीवन को अपनाने के बाद, उन्होंने पहले खुद को एक झोपड़ी में बंद कर लयिा, और फरि, कुछ समय बाद, एक ऊँचे पहाड़ पर चले गए और अपने लिए बनाई गई एक कोठरी में एकांत में रहने लगे। आदरणीय वरादत ने जानबूझकर इस कोठरी को इस तरह बनाया था कि यह उनकी अपनी लंबाई से छोटी हो; परणिामस्वरूप, वे अंदर रहते समय हमेशा झुके हुए खड़े रहते थे, और सोते समय मुड़े हुए लेटते थे। कोठरी में कोई खड़िकयिाँ नहीं थीं, और केवल एक ही दरवाजा था, और उस दरवाज़े को भी संत हमेशा अनधकिृत आगंतुकों से खुद को बचाने के लिए बंद रखते थे; और खड़िकयिों के बजाय, सेल में दनि की रोशनी आने के लिए, उन्होंने दीवार में दरारें बनाई थीं, जो इतनी चौड़ी थीं कि उन्हें अपने नविास में न तो बारशि से और न ही तपती धूप से कोई सुरक्षा मलिती थी। संत बरादात कई वर्षों तक ऐसे तंग और असुवधिाजनक आवास में रहे। बाद में, एंटओिक के बशिप थयिोडोरेट के आग्रह पर मान जाने के बाद, वह अपने नविास से बाहर नकिला; लेकनि उस समय से उसने एक साथ सलि दिए गए चमड़ों से बना एक वस्त्र पहनना शुरू कर दयिा, जो उसके सरि से पैर तक पूरे शरीर को ढकता था, और सांस लेने के लिए उसके मुंह और नाक के चारों ओर केवल छोटी-छोटी दरारें छोड़ी गई थीं। ऐसे वस्त्र पहनकर चल न पाने के कारण, आदरणीय संत नरिंतर अपने हाथ स्वर्ग की ओर उठाए खड़े रहते थे, और ईश्वर की स्तुति करते थे। इस प्रकार, संत बरादत हमेशा एकांत में रहे। उन्होंने यह तपस्या का कठनि कार्य शरीर की तुष्टि के लिए नहीं, बल्कि खुद को शारीरकि पीड़ा सहने के लिए मजबूर करने और इस प्रकार अपने शरीर को वश में करने के लिए कयिा, क्योंकि उन पर प्रबल

[2039] यह, बेशक, सीरयिा के एंटओिक को संदर्भति करता है, जो कभी सीरयिाई साम्राज्य की वशिाल और समृद्ध राजधानी थी, और अब एशयिाई तुर्की में एक मामूली शहर है।

वासनाएँ हावी थीं और वे प्रचंड, अनयिंत्रति कामवासनाओं से लगातार भड़के रहते थे। जब आदरणीय संत ने, अनंतकाल में तपस्वयिों को वादा कएि गए पुरस्कार को प्राप्त करने के लएि, अपने शरीर को थकान की हद तक पहुँचा दयिा, तो वे प्रभु के पास चले गए और उनसे अनंतकालीन वश्रिाम प्राप्त कयिा।

परम पूजनीय अथेनासयिस, धर्मस्वीकारक की स्मृति।

22 फरवरी को स्मरणोत्सव

आदरणीय अथेनासयिस का जन्म कॉन्स्टेंटनिोपल शहर में धर्मपरायण माता-पति के घर हुआ था, जो एक ईश्वरवादी जीवन जीते थे और बहुत अमीर थे। बचपन से ही वह अपने धार्मकि स्वभाव के लएि प्रसद्धि थे, और उनके युवा में उनका प्रयि सपना एक भकि्षु के रूप में अपना जीवन बतिाना था। इसलएि, परपिक्वता की आयु प्राप्त करने पर, वे नकिोमेडयिा के एक मठ में चले गए[2040] और वहाँ उन्होंने संन्यास की शपथ ली। अपने संन्यासी प्रयासों में, परम पूजनीय ने ऐसी ऊँचाइयों को प्राप्त कयिा कि उनकी धार्मकिता स्वयं सम्राट के ध्यान में आई। लयिो द आइकॉनोकलास्ट[2041] के शासनकाल के दौरान, आदरणीय संत के खलिाफ एक शकिायत दर्ज की गई, जसिमें उन पर पवत्रि प्रतमिाओं की पूजा करने का आरोप लगाया गया; इसके लएि उन्हें वभिन्नि यातनाओं का सामना करना पड़ा, उन्हें कठोर नर्विासन सहना पड़ा और उन्होंने बहुत कष्ट उठाया। फरि भी, इन सबके बावजूद, संत अथेनासयिस अडगि रहे। अपने जीवन के अंत तक ऑर्थोडॉक्स धर्म की रक्षा करते हुए, वे प्रभु के पास चले गए[2042] ।

8 मार्च

23 फरवरी (पुराने कैलेंडर के अनुसार)

स्मरिना के बशिप सेंट पॉलीकार्प का जीवन और शहादत

23 फरवरी को स्मरणोत्सव

एशयिा माइनर के आयोनयिा क्षेत्र में स्थति स्मर्ना नगर में, पवत्रि प्रेरतिों के समय में, संत वुकोल बशिप थे; इस बशिप के दनिों में, कैलस्टिा नाम की एक धार्मकि और ईश्वर-भयभीत वधिवा वहाँ रहती थी। प्रभु का एक स्वर्गदूत उसे सपने में दखिाई दयिा और उसे एक अनाथ, युवा पॉलीकार्प को आश्रय देने का आदेश दयिा; चूँकि कैलस्टिा की अपनी कोई संतान नहीं थी, उसने खुशी-खुशी उस लड़के को अपने यहाँ ले लयिा और उसे धार्मकिता में इस प्रकार पाला मानो वह उसका अपना पुत्र हो। जब वह बड़ा हो गया और वयस्क हो गया, तो उस वधिवा ने अपने घर की सारी संपत्ति उस पर सौंप दी। इस दौरान एक अवसर पर, उन्हें अपनी संपत्तयिों के मामलों के सलिसलि में घर से काफी दूर यात्रा करनी पड़ी, और वह काफी समय तक दूर रहीं; जब वह दूर थीं, तब धन्य पॉलीकार्प, जो गरीबों के प्रति अत्यंत दयालु थे, ने बेसहारा लोगों, अनाथों और वधिवाओं को उदारतापूर्वक दान देना शुरू कर दयिा; उन्होंने रोटी, शराब, तेल और हर तरह का भोजन उन सभी को बाँटा जो माँगते थे, यहाँ तक कि उनकी पालक माँ के गोदाम खाली हो गए। जब कैलस्टिा लौटी, तो एक नौकर, उसका स्वागत करने के लएि बाहर आकर, पॉलीकार्प के बारे में शकिायत करने लगा, यह कहते हुए कि उसने पूरी संपत्ति का बेवकूफी से दुरुपयोग कर दयिा था, और अब, उसने बदनामी की, घर पूरी तरह से गरीबी में था। इस बात से कैलस्टिा बहुत दुखी हुई: घर पहुँचने पर, वह तुरंत भंडारगृहों में गई और वहाँ उसने हर तरह के खजाने की भरमार पाई। क्योंकि धन्य

[2040] नकिोमेडयिा शहर एशयिा माइनर में प्रोपोंटसि की एक खाड़ी के कनिारे स्थति था, जो अब मरमरा सागर है, और यह सम्राट डायोक्लेटयिन का पसंदीदा नविास स्थान और उनके शासनकाल के दौरान कई पवत्रि शहीदों के लएि पीड़ा और मृत्यु का स्थान था। जसि मठ में उस सम्मानति भकि्षु ने अपनी प्रतज्ञिाएँ लीं, उसे पावलोपेट्रयिा के नाम से जाना जाता था, क्योंकि यह संत पतरस और पवत्रि प्रेरति पौलुस को समर्पति था।

[2041] पवत्रि प्रतमिाओं की पूजा करने वालों पर अत्याचार लगभग सौ वर्षों तक चला। इस अवधि के तीन सम्राटों में से, जनिका नाम लयिो था, यहाँ 'प्रतमिा-भंजक' की उपाधि लियो द आर्मनियिन पर लागू की गई है, जसिने 813 से 820 तक शासन कयिा।

[2042] आदरणीय अथेनासयिस का 821 में नधिन हो गया।

पॉलीकार्प ने, कैलस्टि्रा के आने से पहले, प्रभु से यह प्रार्थना की थी: 'हे मेरे प्रभु परमेश्वर, आपने अपने भवष्यिवक्ता एलयिा के समय में सारफेथ की वधिवा के घड़ों को भर दयिा था (1 राजा 17:10–16); इस घड़ी मेरी भी सुनो, और मसीह के नाम पर यह अनुग्रह करो कि इस घर के सभी भण्डार भर जाएँ।'

और प्रभु ने तुरंत उसकी प्रार्थना सुनी और अपनी भक्त की कोठरी को हर प्रकार के आशीर्वाद से भर दयिा। यह देखकर कि अब घर में पहले की तुलना में कहीं ज़्यादा था, कैलस्टि्रा उस नौकर से नाराज़ हो गई जसिने संत पॉलीकार्प के कारण हुई कमी की शकिायत की थी: उसे लगा कि वह नौकर या तो उसका मज़ाक उड़ा रहा था या नफ़रत के कारण पॉलीकार्प की बदनामी कर रहा था। अपने गुस्से में, वह उसे सज़ा देना चाहती थी। हालांकि, संत पॉलीकार्प उसकी रक्षा के लिए आगे आए और अपनी पालक माता से कहा: 'मैं आपसे वनिती करता हूँ, महोदया, मेरी जगह कसिी और को दंड न दें, बल्कि मुझे दंड दें; यह सेवक दंड का नहीं, बल्कि आप के प्रति अपनी वफादारी और भक्ति के लिए प्रशंसा का पात्र है; उसने आपसे पूरा सच बताया है: वास्तव में, हमारी सारी संपत्ति खत्म हो गई है और हमारे सभी भंडार खाली हो गए हैं, क्योंकि जब मैंने अपने भूखे भाइयों, भखिारयिों और बेसहारा लोगों को देखा, तो मैंने सब कुछ उन्हें दे दयिा और हमारे सभी भंडार समाप्त हो गए; वे ही थे जन्हिोंने ईश्वर से प्रार्थना की, और उन्होंने अपना स्वर्गदूत भेजा, जसिने आपकी सारी संपत्ति को फरि से भर दयिा, ताकि आप, अपनी प्रथा के अनुसार, ज़रूरतमंदों पर उदार दान देना जारी रख सकें'।

यह सब सुनकर और देखकर, कैलस्टि्रा बहुत आश्चर्यचकति हुई और उस समय से उसने सच्चे वश्विास में अच्छे कर्मों के लिए और भी अधकि लगन से खुद को समर्पति कर दयिा, और उदारतापूर्वक दान दयिा; वह संत पॉलीकार्प से अपने बेटे से भी अधकि प्रेम करने लगी, और उनके सद्गुणों पर मोहति हो गई; अंत में, अपना ईश्वरीय जीवन पूरा करने के बाद, उन्होंने अपनी आत्मा प्रभु के हाथों में सौंप दी, और अपने दत्तक पुत्र, संत पॉलीकार्प को अपनी पूरी संपत्ति का उत्तराधकिारी छोड़ गईं। उस धन्य व्यक्ति ने सब कुछ गरीबों में बाँट दयिा, और स्वयं पवत्रि धर्मग्रंथों के अध्ययन में लगन से जुट गया, तथा ईश्वर के चतिन और प्रार्थना में गंभीरता से संलग्न रहा; उसने महान संयम और पवत्रि कुँवारीपन का जीवन जयिा, प्रभु के लिए दनि-रात अथक परश्रिम कयिा, तथा प्रेमपूर्वक बीमारों, दुर्बल और वृद्धों की सेवा की। ऐसे जीवन के कारण, उन्हें स्मर्ना के बशिप, संत वुकोल द्वारा बहुत प्यार कयिा जाता था; पहले बशिप ने पॉलीकार्प को एक क्लेरकि के रूप में, फरि एक डीकन के रूप में नयिुक्त कयिा; संत पायोनयिस, जन्हिोंने धन्य पॉलीकार्प का जीवन लखिा था, की गवाही के अनुसार, संत वुकोल ने पॉलीकार्प को, जब वह अभी भी एक डकिन थे, ईश्वर के वचन का प्रचार करने का अतरिक्ति दायत्वि सौंपा, क्योंकि संत पॉलीकार्प अपनी बुद्धि और वाक्पटुता के लिए वख्यिात थे, इसलिए उस पवत्रि तपस्वी को चर्च में और अन्य स्थानों पर लोगों को उपदेश देने के लिए बाध्य होना पड़ा। केवल संत वुकोल ही नहीं, बल्कि पवत्रि प्रेरतिों, पौलुस और दैवज्ञ यूहन्ना ने भी, मसीह के अन्य शष्यिों के साथ मलिकर, संत پولिकार्प को बहुत सम्मान दयिा; संत پولिकार्प पवत्रि प्रेरतिों के साथ उनकी यात्राओं पर जाते थे, वे उनके शष्यि, उनके कार्य में एक सहकर्मी, और उनके जीवन-यापन के तरीके के अनुयायी थे; प्रेरतिों ने उन्हें एक बार फरि से स्मyrna में संत वुकोल के पास भेजा, जन्हिोंने उन्हें एक पुरोहति के रूप में नयिुक्त कयिा। संत पॉलीकार्प ने मसीह की कलीसयिा के लिए कई लाभकारी वचन और पत्र भी लखि, लेकनि उनके लेखन का अधकिांश भाग उत्पीड़नों के दौरान खो गया, इसलिए केवल उनका एक छोटा सा अंश ही बचा है। धर्मप्राची वुकोल को यह भवष्यिवाणी की गई थी कि उनकी मृत्यु के बाद स्मर्ना की कलीसयिा का धर्मप्राची पद प्रेस्बटिर पॉलीकार्प द्वारा ही ग्रहण कयिा जाएगा, और कसिी और द्वारा नहीं; और इसलिए, जब वे मर रहे थे, तो संत वुकोल ने पॉलीकार्प का दाहनिा हाथ पकड़ा और उसे अपनी छाती पर रखा, उसे अपने झुंड की देखभाल सौंपते हुए, और 'महमिा तेरी हो, हे प्रभु' शब्दों के साथ वे शांतपिूर्वक अनंत जीवन में प्रवेश कर गए। तब प्रेरतिकि बशिपों ने, जो संत वुकोल के अंतमि संस्कार के लिए इकट्ठा हुए थे, संत पॉलीकार्प को अभषिेक कयिा; जब यह हो रहा था, तो उनमें से कई को भयानक दर्शन प्राप्त हुए। जब बशिप के रूप में अभषिेक शुरू हुआ, तो एक दव्यि प्रकाश ने चर्च में मौजूद सभी लोगों को रोशन कर दयिा; कुछ योग्य लोगों ने एक सफेद कबूतर देखा जो बजिली की तरह चमक रहा था और संत पॉलीकार्प के सरि के चारों ओर उड़ रहा था; दूसरों को, पवत्रि तपस्वी एक योद्धा के वेश में दखिाई दएि: उन्होंने सैन्य पट्टा बाँध रखी थी और जैसे युद्ध के लिए सशस्त्र थे; कुछ और लोगों ने उन्हें शाही बैंगनी रंग के परधिान में देखा[2043] और उनका चेहरा तेजस्वी था; एक युवती को वह वास्तवकिता से कहीं अधकि लंबा दखिाई दयिा, और उसके दाहनिे कंधे पर उसकी चोगा लाल रंग की थी। जब संत पॉलीकार्प अपनी दीक्षा ग्रहण करने के लिए घुटने टेकने

[2043] पोर्फ़ायरा एक महँगा बैंगनी रंग का लंबा चोगा होता है, जसिे शासक औपचारकि अवसरों पर पहनते थे।

लगे, तो उन्होंने अपने सामने स्वयं प्रभु मसीह के पैर देखे, जो उनकी दीक्षा के समय अदृश्य रूप से उपस्थिति थे। इस प्रकार, स्वयं मसीह और पवित्र आत्मा द्वारा अभिषिक्त होकर, पॉलिकार्प ने पवित्र प्रेरितों के विधान के अनुसार परमेश्वर की कलीसिया का शासन किया; उन्होंने मानव आत्माओं को बचाते हुए कई कठिनाइयों को सहन किया, और अपने एपिस्कोपेट के दौरान कई अद्भुत चमत्कार किए।

एक अवसर पर, संत पॉलीकार्प उसी आयोनियन क्षेत्र के एक नगर थियोस में थे, जो लेवेडिया के नाम से प्रसिद्ध गर्म झरनों के पास स्थित था; वे उस नगर के बिशप, डैफ्नी नामक व्यक्ति के यहाँ ठहरे, जिसका उल्लेख संत इग्नेशियस द गॉड-बेयरर ने स्मर्ना के निवासियों को लिखे अपने पत्र में किया है। संत पोलीकार्प ने, बिशप के घर में गरीबी और अभाव देखकर, उनके लिए ईश्वर से प्रार्थना की कि प्रभु उनके घर को आशीर्वाद दें; और उस क्षण से, बिशप डैफ्नी को फिर कभी अभाव का सामना नहीं करना पड़ा: उनके खेत और अंगूर के बाग, जो तब तक बंजर थे, उनमें असाधारण फसलें लगीं और वे अत्यधिक फलदायी हो गए; शराब, जो केवल थोड़ी मात्रा में थी, संत की प्रार्थना से इतनी बढ़ गई कि वह प्रचुर मात्रा में हो गई। एक बार, स्मyrna लौटते समय, पॉलीकार्प अपने साथ चल रहे डिकिन के साथ सड़क से उतरकर रास्ते में एक सराय पर रुके; शाम हो चुकी थी, और थके हुए यात्री आराम करना चाहते थे; थोड़ा खाने के बाद, पॉलीकार्प और उनका साथी सो गए; लेकिन उनकी नींद ज्यादा देर तक नहीं टिकी; आधी रात को, प्रभु का स्वर्गदूत पॉलीकार्प को बगल में ठेलकर जगाया और उससे कहा:

'पॉलिकार्प!'

तब संत ने पूछा:

'क्या बात है, प्रभु?'

'उठो,' स्वर्गदूत ने कहा, 'और तुरंत इस सराय को छोड़ दो, क्योंकि यह जल्द ही नष्ट हो जाएगी: इस सराय में रहने वाले मसीह प्रभु पर विश्वास नहीं करते थे और उन्होंने बहुत सारे पाप किए हैं।'

तब संत उठकर अपने डिकिन को जगाने लगे और उसे उठने का आदेश दिया; लेकिन डिकिन, जो गहरी नींद में था, उठना नहीं चाहता था; उसने संत को मना करना शुरू कर दिया:

'हे पवित्र पिता, अभी तक पहली नींद भी नहीं टूटी है; हम कहाँ जाएँगे? आप, जो दिव्य धर्मग्रंथों पर निरंतर ध्यान करते हैं, स्वयं तो सोते नहीं हैं, और न ही दूसरों को सोने देते हैं।'

ये शब्द सुनकर संत पॉलीकार्प चुप हो गए, लेकिन देवदूत दूसरी बार उन्हें दिखाई दिए और उन्हें बाहर जाने का आदेश दिया; फिर संत ने फिर से डिकिन से आग्रह करना शुरू किया, यह कहते हुए कि यह इमारत ढहने वाली थी; लेकिन डिकिन ने जवाब दिया:

'मैं ईश्वर में विश्वास करता हूँ और मुझे लगता है कि जब तक आप, पिताजी, इसमें हैं, यह इमारत नहीं गिरेगी।' तब पॉलिकार्प ने कहा:

'मैं भी ईश्वर में विश्वास रखता हूँ, परन्तु मैं अपनी आशा इस पत्थर की इमारत में नहीं रखता।'

इस बीच, स्वर्गदूत तीसरी बार प्रकट हुआ और वही आज्ञा दोहराई; तब जाकर बिशप ने अपने साथी को सराय छोड़ने के लिए मनाया। जैसे ही वे बाहर गए, वह इमारत तुरंत अपनी नींव तक ढह गई, और जो भी अंदर थे, वे सभी बिना किसी अपवाद के मर गए; जबकि संत पॉलीकार्प, खड़े होकर स्वर्ग की ओर देखते हुए, इस प्रकार प्रार्थना करने लगे: 'हे प्रभु, सर्वशक्तिमान परमेश्वर, आपके धन्य पुत्र यीशु मसीह के पिता, आपने भविष्यवक्ता योना के द्वारा नीनवे के लोगों को उनके नगर के विनाश की भविष्यवाणी सुनाई थी, फिर भी आपने दया दिखाई और उन्हें बचाया; मैं सचमुच तुझे धन्य कहता हूँ, क्योंकि अपने स्वर्गदूत के द्वारा तूने हमें इस भवन से बाहर निकाल लिया और अचानक मृत्यु से बचा लिया, जैसे तूने लूत को सदोम से निकाला था; तू अपने सेवकों को हर बुराई से निरन्तर बचाता रहता है; तू सदा के लिए भला और दयालु है।"

स्मyrna में, राजकुमार के घर पहुँचने के बाद—जो मसीह में विश्वास नहीं करता था—एक रात एक अशुद्ध आत्मा अचानक उसके एक दास में प्रवेश कर गया; वह आदमी ज़ोर से चिल्लाया और बहुत हंगामा मचाया, जिससे सारा घर भय से भर गया, और सभी निवासियों पर भय और कम्पन छा गया। दिन के उजाले में, बड़ी संख्या में यहूदी राक्षस को भगाने की इच्छा से राजकुमार के घर आए; लेकिन अशुद्ध आत्मा से ग्रस्त सेवक उन पर टूट पड़ा और इस तथ्य के बावजूद कि वे कई थे और वह अकेला था, उसने फिर भी उन सभी को बुरी तरह पीटा; कोई भी उस पर काबू नहीं पा सका, कोई भी उसकी पकड़ से नहीं बच सका, इस कदर कि वे मुश्किल से जीवित और खून से लथपथ होकर उससे भाग गए: भूत-ग्रस्त

आदमी ने उनके पहने हुए सभी कपड़े फाड़ दिए और अपने दांतों से उनके शरीर को काटा। उस घर में एक ईसाई था, जिसने राजकुमार से कहा: 'यदि आप आज्ञा दें, तो मैं एक ऐसे व्यक्ति को बुलाऊंगा जो आपके सेवक को बड़ी आसानी से ठीक कर देगा।'

जब राजकुमार इस प्रस्ताव के लिए सहमत हो गया, तो नौकर पवित्र बिशप पॉलीकार्प के पास गया और उन्हें राजकुमार के घर आमंत्रित किया। धन्य व्यक्ति के राजकुमार के घर में प्रवेश करने से पहले ही, दानव ने चिल्लाना शुरू कर दिया: 'हाय मेरे लिए! पॉलीकार्प आ रहे हैं; मेरी इच्छा के विरुद्ध मुझे यहाँ से भागने के लिए मजबूर होना पड़ेगा।'

संत के अंदर आते ही राक्षस तुरंत भयभीत होकर राजकुमार के दास से भाग गया; राजकुमार ने यह देखकर अत्यंत आश्चर्य व्यक्त किया। उस चमत्कार के बाद, उसी रात स्मिर्ना में आग लग गई; चूँकि सभी सो रहे थे, आग तेजी से फैली और शहर के अधिकांश हिस्से को अपनी लपेट में ले लिया; उसी समय, जैसा कि हमेशा होता है, एक बड़ा शोर-शराबा, चिल्लाहट और विलाप मच गया, और हर किसी पर दहशत छा गई; पूरी आबादी आग बुझाने में जुट गई, लेकिन कुछ भी नहीं कर सकी: आग और भी भड़कती गई; यहूदी भी आग बुझाने का प्रयास करते हुए इकट्ठा हो गए, लेकिन उनके सभी प्रयास व्यर्थ साबित हुए। तब राजकुमार को संत पॉलीकार्प याद आए और उन्होंने अपने कमांडरों और सलाहकारों से कहा: 'ईसाइयों के शिक्षक पॉलीकार्प के सिवा इस आग को कोई नहीं बुझा सकता, जिन्होंने हाल ही में मेरे नौकर से एक राक्षस को भगाया था।'

उसे बुलवाकर, उन्होंने उसे अपनी उपस्थिति में आमंत्रित किया और उससे उस शहर की मदद करने के लिए कहा, जो ऐसी विपत्ति से ग्रस्त था। अपने पवित्र हाथ उठाकर, संत ने तुरंत उनके सामने प्रार्थना करना शुरू कर दिया, और आग, जैसे पानी के प्रवाह से बुझ गई हो, बुझ गई, और लपटें शांत हो गईं। ऐसा चमत्कार देखकर, लोगों ने सोचना शुरू कर दिया कि संत देवताओं में से एक थे; लेकिन पॉलीकार्प ने उन सभी के सामने स्वर्ग में रहने वाले एकमात्र सच्चे ईश्वर के बारे में उपदेश देना शुरू कर दिया, जिनके वह स्वयं केवल एक सेवक हैं, जिसके परिणामस्वरूप कई लोग विश्वास करने लगे और मसीह की पवित्र चर्च में शामिल हो गए। एक अन्य अवसर पर, एक लंबी अवधि तक सूखा पड़ा; इसके बाद अकाल पड़ा, और उसके साथ ही भूखमरी भी; तब सभी लोगों ने, राजकुमार और उसके सलाहकारों के साथ मिलकर, संत से दया करने और अपने ईश्वर से पृथ्वी पर वर्षा के लिए प्रार्थना करने का आग्रह करना शुरू कर दिया। जब संत ने प्रार्थना की, तो तुरंत ही मूसलाधार बारिश हुई, जिससे धरती नमी से भर गई, और उस वर्ष की फसल पहले से कहीं बेहतर हुई। संत के ऐसे और कई चमत्कारों के माध्यम से, साथ ही उनके हाथ रखने से विभिन्न बीमार लोगों के रोगों के ठीक होने के कारण, कई लोग प्रभु यीशु मसीह की ओर मुड़ गए; दिन-ब-दिन मसीह की कलीसिया बढ़ती गई, जबकि स्मyrna में मूर्तिपूजा घटती गई, जहाँ संत ﷺकिर्प ने प्रेरितों की आज्ञा से वचन की सेवकाई अपने ऊपर ली, जैसा कि संत आइरेनियस गवाही देते हैं: कि ﷺकिर्प न केवल एक प्रेरित शिष्य और कई लोगों के मित्र और साथी थे जो जिन्होंने मसीह को अपनी आँखों से देखा था, बल्कि जिन्हें प्रेरितों द्वारा एशिया भेजा भी गया था ताकि (संत वुकोल के बाद) स्मyrna में वहां का बिशप पद ग्रहण करें; हमने (संत आइरेनियस जोड़ते हैं) भी उन्हें अपनी युवावस्था में देखा था, जब वे पहले से ही एक बहुत बूढ़े व्यक्ति थे, और जो कुछ भी उन्होंने स्वयं प्रेरितों से सीखा था, वही उन्होंने दूसरों को सिखाया और चर्च को सौंपा—केवल वही जो सत्य है और असत्य नहीं; एशिया की कलीसिया में उनके बाद आए सभी बिशप भी संत पॉलीकार्प की गवाही देते हैं, यह गवाही देते हुए कि वह वास्तव में सत्य के एक दृढ़ और विश्वसनीय योद्धा थे, वैलेन्टिनस, मार्कियन और उन सभी विधर्मी नेताओं के विपरीत जिन्होंने मसीह की कलीसिया में ऐसे हानिकारक भ्रमों को पेश किया। ये धन्य पोलीकार्प, जब एनीसेटस रोम के पोप थे, रोम आए और उन्होंने मार्कियोनी संप्रदाय से कई लोगों को हटाकर उन्हें सच्ची कलीसिया और विश्वास की ओर ले गए, और उन्होंने उस सत्य का खुले तौर पर प्रचार किया जो उन्हें प्रेरितों से प्राप्त हुआ था[2044] । अन्य बातों

[2044] चर्च की भलाई की चिंता में, संत पॉलीकार्प ने पोप एनीसेटस (157–168) के पोन्टीफिकेट के दौरान, ग्नॉस्टिक वैलेन्टिनिस और मार्सियन की विधर्मों का मुकाबला करने के लिए रोम की यात्रा की। एशिया माइनर और पश्चिम के चर्चों के बीच ईस्टर की समझ और उत्सव के संबंध में उनके मतभेद के बारे में, स्मिर्ना और रोम के बिशपों ने अपनी-अपनी स्थानीय प्रथाओं पर समझौता करने से इनकार कर दिया, अर्थात्, संत पॉलीकार्प ने यहूदी महीने निसान के 14वें दिन ईस्टर के पूर्वी ईसाइयों के उत्सव और इस दिन को प्रभु के अपने शिष्यों के साथ अंतिम भोज और उस अवसर पर स्थापित यूखरिस्त की संस्कार की स्मृति को समर्पित करने को सही माना, जबकि इसके विपरीत, एनीसेटस ने पश्चिम में स्थापित ईस्टर की समझ को सही माना, अर्थात् मसीह के पुनरुत्थान का वार्षिक पर्व और वसंत की पूर्णिमा के बाद पहले रविवार को इसका उत्सव मनाना। फिर भी, इस मतभेद ने बिशपों के बीच शांति भंग नहीं की; इसके संकेत के रूप में, एनासेटस ने संत पॉलीकार्प को रोमन चर्च में यूखरिस्त मनाने की अनुमति दी।

के अलावा, उन्होंने निम्नलिखित का वर्णन किया: प्रभु के शिष्य यूहन्ना, एफिसुस में रहते हुए, एक बार स्नानागार गए; वहाँ उन्होंने विधर्मी हेरेंट को स्नान करते देखा; प्रेरित तुरंत स्नानागार से निकल आए और अपने साथियों से कहा कि वे भी उनका अनुसरण करें, यह जोड़ते हुए कि वह स्नानागार जहाँ हेरिथ—परमेश्वर के सत्य का शत्रु—स्नान कर रहा था, वह अचानक ढह सकता था। एक अन्य अवसर पर, वही پولی کارپ संप्रदायिक मार्किन से मिले; बाद वाले ने साहसपूर्वक उनसे कहा:

'हमें पहचानो।'

इस पर, पॉलीकार्प ने उत्तर दिया:

'मैं जानता हूँ कि तुम शैतान के पहलौठे पुत्र हो; यहाँ तक कि स्वयं प्रेरितों और उनके शिष्यों ने भी विधर्मियों से इतनी सावधानी से दूरी बनाए रखी कि वे उन लोगों से बात भी नहीं करते थे जो अपनी चालाक बेकार बातों से सत्य को अस्पष्ट करने की कोशिश करते थे, और संत पौलुस आज्ञा देते हैं: 'जहाँ तक किसी विधर्मी का प्रश्न है, पहली और दूसरी चेतावनी के बाद उससे कोई संबंध न रखो, यह जानते हुए कि ऐसा व्यक्ति भटक गया है और पाप करता है, और स्वयं को दोषी ठहरा चुका है' (तीतुस 3:10–11)।

पॉलिकार्प का फिलिप्पियों के नाम पत्र[2045] भी संरक्षित है; यह इतनी गहन विचारशीलता से लिखा गया है कि जो लोग अपनी मुक्ति के लिए चिंतित हैं और उनके विश्वास और उपदेश को स्वीकार करते हैं, वे इसकी ओर ध्यान दिए बिना नहीं रह सकते।

[2046]पॉलिकार्प के बारे में सेंट आइरेनियस का विवरण ऐसा है। एंटोनिनस के इक्कीस साल के शासन के बाद, उनके बेटे मार्कस ऑरेलियस[2047] ने सिंहासन संभाला, और अपने भाई लूसियस के साथ सत्ता साझा की। उस समय एशिया में ईसाइयों पर एक कठोर उत्पीड़न शुरू किया गया था, और तभी संत पॉलीकार्प ने अपने रक्त से अपने विश्वास की गवाही दी। इस धर्मी व्यक्ति के दुख और मृत्यु के वृत्तांत स्मyrna की कलीसिया के पत्र में पाए जाते हैं, जहाँ संत पॉलीकार्प ने बिशप का पद संभाला था; इस पत्र की सामग्री इस प्रकार है।

'स्मर्ना की कलीसिया से फिलोमेला की कलीसिया और विभिन्न राष्ट्रों में सभी अन्य पवित्र कैथोलिक कलीसियाओं के लिए—परमेश्वर पिता और हमारे प्रभु यीशु मसीह की दया, शांति और प्रेम आप पर हो। हमने आप लोगों को लिखा है, हे भाइयों, संत पोलीकार्प के विषय में, जिन्होंने अपने ही रक्त का बहाव करके उत्पीड़न की आग को बुझा दिया, और अन्य शहीदों के विषय में। उस समय कई पवित्र शहीदों ने अजेय साहस का प्रदर्शन किया; कुछ को इतनी देर तक पीटा गया कि उनके सभी जोड़ और टेंडन चकनाचूर हो गए और उनकी आंतें बाहर निकल आईं; दूसरों को पत्थरों और तेज छत की टाइलों पर घसीटा गया, और उन्होंने उन सभी अत्यंत कष्टदायक यातनाओं को असाधारण संयम के साथ सहन किया जो उनके यातनाकर्ता सोच सकते थे; कुछ और को जानवरों को खिला दिया गया। और दुष्ट लोग संतों के इतने साहसी कष्टों को देखकर गहराई से चकित और अत्यंत आश्चर्यचकित थे। अन्य शहीदों में, ईश्वर की कृपा से, जर्मनिकस नामक एक युवक ने उत्कृष्ट साहस का प्रदर्शन किया; निडर हृदय और अडिग मन के साथ, उसने बहादुरी से मृत्यु का सामना किया, जो स्वभाव से ही सभी के लिए इतनी भयानक है। न्यायाधीश ने जर्मनिकस को बहुत देर तक समझाया कि

[2045] संत इरेनियस के अनुसार, चर्चों या व्यक्तियों को लिखी गई संत पॉलीकार्प की कई पत्रिकाओं में से, केवल यही एक हमें प्राप्त हुई है। फिलिप्पियों के नाम संत पोलीकार्प के पत्र के बारे में, संत आइरेनियस कहते हैं, 'इससे, जो लोग अपनी मुक्ति की इच्छा रखते हैं और उसकी परवाह करते हैं, वे (पोलीकार्प के) विश्वास की प्रकृति और सत्य के उनके उपदेश को सीख सकते हैं'। चर्च इतिहास के पिता, यूसेबियस (263–340), इस पत्र से कई अंश उद्धृत करते हैं, यह उल्लेख करते हुए कि यह तब भी ईसाइयों के बीच प्रचलन में था। धन्य जेरोम बताते हैं कि, उनके समय में, एशिया माइनर के चर्चों में दिव्य सेवा के दौरान संत पॉलीकार्प का फिलिप्पियों को लिखा पत्र पढ़ा जाता था। यह पत्र इग्नाशियस द गॉड-बेयरर (107 ईस्वी) की मृत्यु के तुरंत बाद लिखा गया था और यह फिलिप्पी शहर के ईसाइयों के एक अनुरोध से प्रेरित था कि वे उनके पास मौजूद इग्नाशियस के पॉलीकार्प और अन्य ईसाइयों को लिखे पत्र उन्हें भेजें। उनके अनुरोध के जवाब में, संत पॉलीकार्प ने एक विशेष पत्र में फिलिप्पियों को कई ईसाई शिक्षाएँ दीं, – यहूदी-विरोधियों से सावधान रहने की चेतावनी देता है, पुरोहितों और डिकनों, युवकों और कुंवारी लड़कियों, विवाहित जोड़ों और विधवाओं के कर्तव्यों को निर्धारित करता है, और उनसे धन के प्रेम से बचने, प्रार्थना और उपवास का अभ्यास करने, और धैर्य तथा अपने शत्रुओं के प्रति प्रेम को विकसित करने का आग्रह करता है। इस पत्र का अनुवाद आर्चप्रीस्ट प्रीओब्राज़ेन्स्की की पुस्तक *द राइटिंग्स ऑफ़ द अपोस्टोलिक फ़ादर्स* (सेंट पीटर्सबर्ग, 1895) में पाया जा सकता है।

[2046] संत पॉलीकार्प की शहादत पर लिखी गई परिपत्र पत्र, जिसे चर्च के वे प्रमुख थे और जिसके सदस्यों के बीच उन्होंने यातनाएं झेलीं, ईसाई प्राचीनता के सबसे पुराने स्मारकों में से एक है। यूसेबियस ने अपने *इतिहास* (पुस्तक IV, अध्याय 14) में इस पत्र को लगभग पूरा ही शामिल किया है। रॉस्टोव के संत डेमेट्रियस द्वारा हमारी प्रार्थना पुस्तकों में अनुवाद

[2047] ईस्वी 161 से 180 तक

वह अपनी जवानी की परवाह करे और इस मीठे जीवन को इतनी कड़वी मृत्यु से नष्ट न करे; लेकिन जैसे ही उसने उन पर टूट पड़ने वाले जानवरों को देखा, वह उन पर ही कूद पड़ा, उन्हें भड़काते हुए ताकि वे उसे चीर-फाड़ डालें। फ्रीजिया का एक व्यक्ति, क्विंटिस नामक, जानवरों और भयानक यातना को देखकर, वह तुरंत भयभीत हो गया और अपने उद्धार से मुंह मोड़ लिया; जिससे यह स्पष्ट हो गया कि वह दुष्टों के न्यायालय में शुद्ध हृदय से नहीं बल्कि लापरवाही से—जैसे अचानक हवा के झोंके से उड़ा दिया गया हो—आया था और उसने स्वयं को यातना सहने के लिए प्रस्तुत करने की हिम्मत की थी। वे सभी के लिए एक उदाहरण बने कि किसी को भी उचित सावधानी के बिना स्वयं को यातनाओं के अधीन करने जैसे महान कार्य में नहीं उतरना चाहिए। इन यातनाओं के बारे में सुनकर, पॉलीकार्प को पता चला कि यूनानी लोग, जो मसीह में विश्वास नहीं करते थे, अन्य शहीदों के दुखों को देखकर, खुलेआम न्यायाधीश से चिल्ला रहे थे: 'पॉलीकार्प को ढूंढो; इन अधर्मी लोगों का सफाया कर दो।'

यह सुनकर, पॉलीकार्प, यद्यपि वह पकड़े जाने तक शहर में ही रहना चाहते थे, फिर भी उन्होंने ईसाइयों की विनतियों को मान लिया, शहर छोड़ दिया और एक गाँव में शरण ली, जहाँ, अपनी आदत के अनुसार, उन्होंने चर्च की शांति के लिए दिन-रात प्रार्थना की। दुष्टों द्वारा पकड़े जाने से तीन दिन पहले, उन्होंने एक सपने में देखा कि उनका सिर आग की लपटों में घिर गया है और आग से भस्म हो गया है। नींद से जागने पर, संत ने अपने साथ मौजूद लोगों से कहा: 'मैं प्रभु यीशु मसीह के लिए आग में जलाया जाऊँगा।'

तीन दिन बाद, राज्यपाल द्वारा भेजे गए दूत पॉलीकार्प की तलाश में उस गाँव में पहुँचे। उन्होंने दो छोटे लड़कों को पकड़ लिया और उनसे पॉलीकार्प के ठिकाने का पता लगाने के लिए अंगूर की बेल की लकड़ी से पीटना शुरू कर दिया, और लड़कों ने उन्हें ऊपर एक कमरे में बता दिया; हालाँकि वह वहाँ से भाग सकते थे, लेकिन उन्होंने ऐसा नहीं किया, यह कहते हुए, 'मेरे प्रभु परमेश्वर की इच्छा पूरी हो।'

जब उसने नौकरों को अपने पीछे आते सुना, तो वह स्वयं सीढ़ियों से उतरकर उनसे मिलने गया और प्रसन्न मुख से उनका गर्मजोशी से अभिवादन किया। नौकरों ने, जिन्होंने उसे पहले कभी नहीं देखा था, उसके सफेद बालों और वृद्ध आयु को, और उसके गरिमामय चेहरे पर मृदुता और शांत आनंद को देखकर आश्चर्यचकित होकर कहा, 'क्या इस बूढ़े आदमी को खोजने के लिए इतनी बड़ी मेहनत और प्रयास करना वास्तव में आवश्यक था?'

तुरंत ही पॉलीकार्प ने उनके लिए भोजन तैयार करने का आदेश दिया और उनसे खाने-पीने के लिए कहा, जबकि उन्होंने प्रार्थना के लिए एक घंटे का समय मांगा। और उन्होंने परमेश्वर से भक्तिपूर्वक प्रार्थना की, उन सभी देखभालों के लिए धन्यवाद देते हुए जो परमेश्वर ने उनके प्रति दिखाई थीं – छोटी और बड़ी दोनों चीजों के लिए, उनके युवा दिनों से – और संसार भर में फैली पवित्र कलीसिया को परमेश्वर के सुपुर्द करते हुए। उनकी लंबी प्रार्थना के बाद, दूतों ने उस वृद्ध को उठाया, उसे एक गधे पर बिठाया और उसे स्मर्ना नगर ले गए – यह पवित्र शनिचर का दिन था। रास्ते में, उनकी मुलाकात दो सम्मानित सेनेटर्स, हेरोड और निकिटिस से हुई, जिन्होंने उन्हें अपनी रथ में बिठाकर मुकदमे में सिर्फ एक शब्द कहकर अपने धर्म को त्यागने की सलाह दी: 'क्या यह कहना इतना मुश्किल है, "प्रभु सीज़र, मैं बलिदान चढ़ाऊँगा?" क्योंकि इस तरह आप मृत्यु से बच जाएँगे।'

पॉलिकार्प उनकी बातों पर चुप रहे; लेकिन जब उन्होंने उन पर ज़ोर डाला, तो उन्होंने जवाब दिया: 'मैं वह कभी नहीं करूँगा जिसकी तुम मुझे सलाह दे रहे हो।'

वे क्रोधित हो गए और उसे फटकारने लगे, और उसे रथ से बाहर फेंक दिया; जैसे ही वह गिरा, उसके पैर की पिंडली में चोट लगी, लेकिन उसने उस पर कोई ध्यान नहीं दिया। जब उसे अदालत के सामने लाया गया, तो अधर्मी भीड़ इस खुशी से चिल्लाई कि , पॉलीकार्प पकड़ा गया है!'; लेकिन उसने स्वर्ग से हमारे प्रभु की आवाज़ सुनी, जो उससे कह रही थी: 'साहस रख, पॉलीकार्प, और उदार आत्मा के साथ संघर्ष कर!'

हम में से अन्य लोगों ने भी यह आवाज़ सुनी (जैसा कि स्मिर्ना की पत्रिका में वर्णित है)।

न्यायाधीश ने उससे पूछा:

'मैं वही हूँ,' उसने उत्तर दिया।

'मैं ही हूँ,' उसने उत्तर दिया।

न्यायाधीश ने कहा, 'अपने बुढ़ापे पर दया करो, मसीह का त्याग करो और सम्राट की किस्मत की कसम लो।' न्यायाधीश ने यह और इसी तरह की बातें कहते हुए कहा:

'होश में आओ, पॉलीकार्प, और कहो: "अधर्मी को नष्ट करो।"'

तब पॉलीकार्प ने अपनी आँखें आकाश की ओर उठाकर और अपने हाथ अधर्मी भीड़ की ओर फैलाकर ईश्वर से कहा:

'अधर्मी लोगों का नाश करो!' न्यायाधीश ने कहा:

'मसीह का त्याग करो, उनकी निंदा करो, और मैं तुम्हें आज़ाद कर दूँगा।'

'अस्सी-छह वर्षों से,' पॉलीकार्प ने उत्तर दिया, 'मैंने मसीह की सेवा की है, और उन्होंने मेरे साथ कोई बुराई नहीं की है; तो फिर मैं अपने राजा का अपमानजनक शब्दों से कैसे निंदा करूँ, जो आज तक मुझे संजोए हुए हैं?'

न्यायाधीश ने कहा:

'मैं तुम्हारे ऊपर क्रूर जानवर छोड़ दूँगा।'

'इन्हें छोड़ दो,' पॉलीकार्प ने उत्तर दिया, 'लेकिन मैं सबसे अच्छे को सबसे बुरे के लिए नहीं बदलूँगा।'

'मैं तुम्हें जला दूँगा,' न्यायाधीश ने कहा। उन्होंने उत्तर दिया:

'तुम मुझे एक ऐसी आग से डरा रहे हो जो बुझ जाएगी, लेकिन तुम उस अविनाशी आग के बारे में कुछ नहीं जानते, जहाँ अधर्मी और अविश्वासी हमेशा के लिए जलाए जाएँगे। अब और देरी मत करो, बल्कि जो कुछ तुमने मेरे साथ करने की योजना बनाई है, उसे जल्दी करो।'

तब न्यायाधीश ने उद्घोषक को लोगों को यह घोषणा करने का आदेश दिया कि पॉलीकार्प खुद को एक ईसाई घोषित करता है। यह सुनकर, यूनानियों और यहूदियों ने ऊँचे स्वर में चिल्लाया: 'वह पूरी एशिया का भ्रष्टकर्ता है, वह ईसाइयों का पिता है, वह हमारे देवताओं को नष्ट करता है; उसे जिंदा जला दो!'

और भीड़, यहूदियों के साथ मिलकर, इस बात पर ज़ोर देने लगी कि पॉलीकार्प को जला दिया जाए। जब बहुत सारी लकड़ी और झाड़-झंखाड़ तैयार हो गई, तो پولीकार्प ने अपनी कमरबंद उतार दी और अपने कपड़े उतारने लगे; उन्होंने अपने जूते भी उतार दिए, जबकि उनके यातना देने वाले लोहे के औजार और कीलें तैयार कर रहे थे, इस इरादे से कि वे پولीकार्प को खंभे से ठोक दें ताकि वह किसी भी तरह आग से न बच सके। लेकिन संत ने उनसे कहा: 'मुझे कीलें ठोकना उचित नहीं है, क्योंकि वही जो मुझे अग्नि की लपटों में धैर्य प्रदान करता है, वह मुझे इस स्थान से न हटने या किसी भी दिशा में न मुड़ने का साहस भी प्रदान करेगा।'

तब यातना देने वालों ने उसे कीलों से नहीं ठोंका, बल्कि केवल बाँध दिया, और इस सफेद बालों वाले वरिष्ठ को झुंड के सबसे अच्छे नर मेमने की तरह, जो बलिदान के लिए हो, ईश्वर को सुगंधित भेंट के रूप में आग में डाल दिया। हालाँकि, संत पॉलीकार्प ने प्रार्थना करते हुए कहा: 'मैं तुझे धन्यवाद देता हूँ, हे प्रभु परमेश्वर, कि तूने मुझे अपने शहीदों और स्वीकार करने वालों में गिनने की कृपा की है; और मैं तेरे मसीह के दुःखों का प्याला पीता हूँ और उनके कष्टों में सहभागी होता हूँ, ताकि पुनरुत्थान के समय मैं उनके साथ अनंत जीवन में रहूँ। तब मुझे अपनी दृष्टि में एक समृद्ध और प्रसन्न करने वाले बलिदान के रूप में ग्रहण करें, जिसे आपने स्वयं पूर्वनिर्धारित और स्थापित किया है, और जिसे आपने अब पूरा किया है, हे सच्चे परमेश्वर, जिसकी मैं महिमा और स्तुति करता हूँ, आप और आपके पुत्र, शाश्वत महायाजक यीशु मसीह की; उसे और पवित्र आत्मा को ही सर्व सम्मान, महिमा और आराधना मिले, अब और सदा के लिए और युगानुयुग, आमीन।"

और जब उन्होंने 'आमीन' कहा, तो सेवकों ने तुरंत आग जला दी; जब चारों ओर लकड़ी में आग लग गई और लपटें ऊंची उठ गईं, तो एक चमत्कार हुआ जिसने सभी को चकित कर दिया: संत के चारों ओर की लपटें और उसके सिर के ऊपर उठने वाली लपटें न तो उसे छू सकीं और न ही उसके पास आईं, बल्कि, हवा में लहराती जहाज की पाल की तरह, उससे दूर फैल गईं, और ऊपर उसकी ओर एकत्रित हो गईं। इस बीच संत पॉलीकार्प आग के बीच खड़े थे, जैसे कि वे भट्टी में शुद्ध किया गया सोना हों, और आग ने उनके शरीर को न तो जलाया और न ही झुलसाया; हम सबने, जैसा कि स्मिर्नाई लोग अपनी पत्रिका में कहते हैं, आग से इतनी मीठी सुगंध सूंघी कि वह अन्य सभी सुगंधों से अतुलनीय रूप से बढ़कर थी। दुष्टों ने यह देखकर जल्लाद पर चिल्लाना शुरू कर दिया, और उसे आगे बढ़ने, संत तक पहुँचने के लिए आग में अपना हथियार घुसाने और उन्हें मार डालने के लिए उकसाने लगे। आगे बढ़कर, यातना देने वाले ने संत को एक लंबे हथियार से भेद दिया, और घाव से असाधारण मात्रा में खून बहने लगा; एक झरने से निकलती धारा की तरह, इसने आग को पूरी तरह से बुझा दिया; यह देखकर सारी भीड़ चकित रह गई, और उन्हें एहसास हुआ कि विश्वासियों और अविश्वासियों के बीच कितना बड़ा अंतर था। पॉलिकार्प अपने समय के एक उत्कृष्ट व्यक्ति, स्मिर्ना के कैथोलिक चर्च के बिशप, प्रेरितों की परंपरा के एक शिक्षक, और एक पवित्र भविष्यवक्ता थे: जो कुछ भी वे कहते थे, वह सत्य सिद्ध होता था।

तब यहूदियों ने न्यायाधीश से विनती की कि वे पॉलिकार्प का शरीर ईसाइयों को न सौंपें। यहूदियों ने कहा, 'वे उसे अपना देवता मान लेंगे, ठीक वैसे ही जैसे वे सूली पर चढ़ाए गए को मानते हैं।'

अधर्मी यह नहीं समझ सके कि ईसा मसीह, जो संपूर्ण जगत के उद्धार के लिए सलीब पर मरे, से मुंह मोड़ना और किसी अन्य को देवता मानना ईसाइयों के लिए असंभव था: हम परमेश्वर के सच्चे पुत्र को दिव्य सम्मान अर्पित करते हैं, जबकि हम शहीदों को मसीह के योग्य शिष्यों और अनुकरणीयों के रूप में सम्मानित करते हैं, जिन्होंने उनसे प्रेम के कारण उनके लिए दुख उठाया; हम उन्हें प्रेम से गले लगाते हैं और धार्मिकता में उनकी नकल करना चाहते हैं, और हम उनकी शाश्वत महिमा में सहभागी होने के लिए तरसते हैं। हालाँकि, शताब्दीपति ने न्यायाधीश के आदेश पर—जिसे यहूदियों ने मनाया था—पॉलिकार्प के शरीर को यूनानी रीति के अनुसार आग के हवाले कर दिया; जब यह तपस्वी जीवित था, तो आग ने उसके शरीर को कोई नुकसान नहीं पहुँचाया, लेकिन उसकी मृत्यु के बाद वह आग की शक्ति के आगे झुक गया। हम, हालाँकि (स्मिर्नाई कहते हैं), उसकी राख से उसकी हड्डियाँ इकट्ठी कीं, सोने की तरह शुद्ध और कीमती रत्नों से भी कहीं अधिक अनमोल, और हमने उन्हें एक उपयुक्त स्थान पर संरक्षित कर रखा है, जहाँ हम उसकी पीड़ा के दिन को आनंदपूर्वक मनाएँगे, एक ओर तो मसीह के लिए इतना महान कार्य करने वाले की स्मृति में, और दूसरी ओर उन लोगों को प्रोत्साहित करने के लिए, जो उसी प्रकार की मृत्यु के द्वारा हमारे सच्चे परमेश्वर मसीह की गवाही देंगे और उसकी महिमा करेंगे। हमने यह आपको भाई मार्क के माध्यम से भेजा है, और जब आप इसे पढ़ लें, तो इस संदेश को दूर-दूर तक बिखरे हुए अन्य भाइयों तक भेज दें, ताकि वे भी प्रभु की महिमा करें, जिसने हमें अपने सेवकों में से ऐसा महान चुने हुए व्यक्ति दिखाया है, जो हमें अपनी कृपा से भरने और हमें अपने एकलौते पुत्र, यीशु मसीह के द्वारा अपने अनंत राज्य में लाने में सक्षम है, जिसे युगानुयुग महिमा, सम्मान और आराधना मिले। आमीन। सभी संतों को नमस्कार कहिए; हमारे साथ रहने वाले आपको अपनी शुभकामनाएँ भेजते हैं, और एवेरेस्ट, जिसने यह पत्र लिखा है, अपने पूरे परिवार सहित आपको अपनी शुभकामनाएँ भेजता है। पॉलिकार्प ने मई की कैलेंड्स के सातवें दिन, यानी 25 अप्रैल को, महा शनिचर के दिन, दिन के आठवें घंटे पर, महापुजारी फिलिप के अधीन, ट्रालेयनस की गवर्नरी के दौरान, यीशु मसीह के अनंत राज्य में अपना शहादत पूर्ण किया। हम उन भाइयों को उत्तम स्वास्थ्य की कामना करते हैं जो यीशु मसीह के वचन के सुसमाचार में चलते हैं, जिनके द्वारा चुने हुए संतों के उद्धार के लिए परमेश्वर की महिमा हो – जैसे कि संत पॉलिकार्प ने अपना बलिदान सहा; काश हम भी मसीह के राज्य में उनके वारिस हों। इस पत्र को धन्य पॉलिकार्प के शिष्य, संत आइरेनियस के शिष्यों में से एक, गयिस ने प्रतिलिपि बनाई; कोरिंथ के सोक्रेटिस ने उसी प्रति से इसकी प्रतिलिपि बनाई; और मैंने, пресвитер पियोनियस ने, बदले में यह सब उपर्युक्त व्यक्तियों से प्राप्त किया है और इसे संत पॉलिकार्प द्वारा मुझे दिए गए प्रकाशन के अनुसार सत्यापित किया है, जो मुझे एक दर्शन में दिखाई दिए थे। और मैंने यह लिखा है, समय के साथ अस्पष्ट हो गई सभी बातों को पुनर्स्थापित करते हुए, ताकि हमारे प्रभु यीशु मसीह मुझे अपने चुने हुओं के साथ अपने स्वर्गीय राज्य में स्वीकार करें; महिमा उसी की हो, पिता और पवित्र आत्मा के साथ, युगानुयुग। आमीन।"

कॉन्टाकियन, स्वर 1:

हे बुद्धिमान पॉलिकार्प, प्रभु के वचन के फल उत्पन्न करके और सद्गुणों की बलि चढ़ाकर, तू परमेश्वर द्वारा एक उच्च पदस्थ पुरोहित के रूप में महिमामय होने के योग्य समझा गया। इसी कारण, आज तेरे वचनों से प्रबुद्ध होकर, हम तेरी प्रशंसनीय स्मृति का गायन करते हैं, और प्रभु की महिमा करते हैं।

आदरणीय जॉन, एंटिओकस, एंटोनिस और मूसा की स्मृति

23 फरवरी को स्मरणोत्सव

इन पूजनीयों में से, संत जॉन ने पूजनीय लिम्निउस (2048) को जानते थे, जो तारगाला गाँव के आसपास रहते और तपस्या करते थे; वह उनके शिष्य थे और उन्होंने उनके तपस्वी जीवन के तरीके का अनुकरण किया। नदी के किनारे एक पहाड़ी ढूंढकर, जो हर तरफ से हवा के संपर्क में थी और जिसमें कोई भी वनस्पति नहीं थी, उन्होंने, जिसके पास रहने के

2048 परम पूजनीय लिम्निउस की स्मृति 22 फरवरी को मनाई जाती है।

लिए कोई आवास नहीं था, वहाँ तपस्या में 25 वर्ष बिताए। इस पूरे समय, वह केवल रोटी और नमक पर ही जीवित रहा, और भेड़ के ऊन के कपड़े पहनता था, जबकि उसका पूरा शरीर भारी लोहे की ज़ंजीरों में जकड़ा हुआ था। इन ज़ंजीरों के बोझ तले दबकर और सूरज की तेज़ किरणों से लगातार झुलसते हुए, उसने कभी छाँव की तलाश नहीं की और न ही कभी गर्मी से राहत माँगी। एक बार, रेवरेंड के एक नियमित आगंतुक ने उनके निवास तक जाने वाले रास्ते के किनारे एक बादाम का पेड़ लगाया, लेकिन जब पेड़ बड़ा हो गेल और उस पर छाया देने लगा, तो उन्होंने उसे काट देने का आदेश दिया ताकि उन्हें कहीं भी ठंडक से राहत न मिले। ऐसे तपस्वी कार्यों के बीच, रेवरेंड प्रभु के पास चले गए।

आदरणीय मूसा संत जॉन के तपस्वी जीवन के प्रति अपने प्रेम से प्रेरित थे और उन्होंने रामा नामक एक गाँव के ऊपर स्थित एक पहाड़ की चोटी पर उनकी तरह तपस्या की।

आदरणीय एंटओकस, जो पहले से ही वृद्ध थे, ने एक सुनसान जगह पर अपने लिए एक घेरा बनाया और वहाँ एक तपस्वी के रूप में तपस्या की; उनके पास आदरणीय एंटोननिस रहते थे, जो एक वरिष्ठ भी थे, और हर बात में उनकी नकल करते थे: भोजन में, वस्त्रों में, जागने में, साथ ही अपने दैनिक और पूरी रात की प्रार्थनाओं में। न तो उनकी उन्नत आयु, न ही वृद्धावस्था, न ही उस आयु की स्वाभाविक दुर्बलताएं, इन पूजनीय पिताओं को उनके तपस्वी जीवन की सभी कठिनाइयों को धैर्यपूर्वक सहने में परास्त कर सकीं। वे ईश्वर को प्रसन्न करने के लिए इतनी लगन से परिश्रम करते थे मानो उनमें अभी भी युवाओं का जोश हो। ऐसे परिश्रमों के बीच, उन्होंने शांतिपूर्वक अपना आत्मा प्रभु को सौंप दिया। शारीरिक उपवास का पालन करते हुए, उन्होंने उतनी ही मेहनत की जितनी कि आदरणीय जॉन ने की थी[2049] ।

आदरणीय ज़ेवनि, पॉलीक्रोनियस, मूसा और डेमियन की स्मृति

23 फरवरी को स्मरणोत्सव

आदरणीय ज़ेवनि एक पहाड़ पर तपस्वी के रूप में रहते थे। वहाँ अपना घर बसाकर, उन्होंने अपने पूरे जीवन को उसी स्थान पर तपस्या करते हुए, एक वृद्ध आयु तक व्यतीत किया। आसपास के क्षेत्र के निवासी हमेशा आदरणीय ज़ेवनि के पास आते थे और उनकी अखंड प्रार्थनाओं से उन्हें बहुत लाभ होता था। बहुत अधिक वृद्धावस्था प्राप्त करने के बाद, वे वृद्धावस्था की दुर्बलता के कारण खड़े नहीं हो पाते थे, परन्तु वे अपने बेंत के सहारे अपनी भक्ति निरन्तर करते रहे। अद्भुत और ईश्वर-प्रसन्न करने वाले कार्यों में अपना जीवन व्यतीत करने के पश्चात्, पूज्य ज़ेवनि का निधन हो गया।

आदरणीय पोलिख्रोनीयस संत ज़ेवनि के शिष्य थे और, जिस प्रकार मोम उस उंगली के निशान को बनाए रखता है जो उस पर लगी हो, उसी प्रकार वे अपने जीवन में अपने गुरु के गुणों का एक पूर्ण प्रतिबिंब थे। उन्होंने अपने उत्साही सतर्कता, अपने धैर्य और अपने भक्तिपूर्ण कार्यों में अपने गुरु का अनुकरण किया। हालाँकि, आदरणीय ने अपने ऊपर बेड़ियाँ डालना नहीं चाहा, क्योंकि अपने गुरु के जीवन में इसका कोई उदाहरण न होने के कारण, उन्हें डर था कि वे किसी को भी प्रलोभन में डाल सकते हैं; बेड़ियों के बजाय, उन्होंने अपने कंधों पर एक बड़े ओक के पेड़ की जड़ रखी जो उन्होंने जमीन से उखाड़ी थी, और जो इतनी भारी थी कि उसे दोनों हाथों से भी नहीं हिलाया जा सकता था, और इस प्रकार उन्होंने अपने शरीर पर बोझ डाला। ऐसे कारनामों के लिए, परम पूज्य पॉलीक्रोनियस को ईश्वर द्वारा चमत्कार करने की कृपा प्रदान की गई थी। एक बार, सूखे के दौरान, उन्होंने प्रार्थना के माध्यम से पृथ्वी पर वर्षा कराई, और एक अन्य अवसर पर उन्होंने एक खाली पत्थर के पात्र को तेल से भर दिया। कई अन्य चमत्कार करने के बाद, वे प्रभु के पास चले गए।

आदरणीय मूसा और डेमियन संत पॉलीक्रोनियस के शिष्य थे। आदरणीय मूसा ने अपने गुरु के साथ मिलकर काम किया और उनके गुणों को अपनाकर, अपने जीवन को हर तरह से वैसे ही जिया जैसे उनके गुरु ने जिया था। हालाँकि, पूजनीय डेमियन इरा नामक एक मठ में चले गए और वहाँ एक खाली कोठरी पाकर, अपने गुरु के जीवन का अनुकरण करते हुए, उसमें रहने लगे। उनके आवास में एक छोटी सी पेटी के सिवा और कुछ नहीं था, जिसमें थोड़ी मात्रा में दलिया था, जिस पर वे जीवन यापन करते थे। इन पूजनीय पिताओं को संत पोलिख्रोनीयस के साथ रहने से इतना महान लाभ मिला, और उन्होंने अपना जीवन भक्ति में समाप्त किया[2050] ।

[2049] ये सभी पूजनीय पिता पाँचवीं शताब्दी में सीरिया में रहते थे।

[2050] आदरणीय ज़ेवनि, पोलिख्रोनीयस, मूसा और डेमियन पाँचवीं शताब्दी में रहते थे; उनके कार्यों का स्थान सीरिया था।

- इसी दिन, हम 'नदि्रारहतिों' के मठ के संस्थापक, आदरणीय भकि्षु अलेक्जेंडर का स्मरण करते हैं[2051] ।

9 मार्च

24 फरवरी (पुराना संस्करण)

प्रथम और द्वतिीय खोज: प्रभु के पूर्ववर्ती और बपतस्मिादाता योहन के सम्माननीय सरि की।

24 फरवरी को स्मरणोत्सव

जब संत यूहन्ना बपतस्मिादाता का सम्मानति सरि काटा गया (मत्ती 14:11), तो हेरोदयिास की बेटी ने उसे एक थाल में रखकर अपनी माँ के पास ले आई। इस दुष्ट महलिा ने संत की जीभ में सुई से छेद कर दयिा—क्योंकि उन्होंने उसकी दुष्टता की नदिा की थी—और, उनके पवत्रि सरि का अपमान करने के बाद, उसे उनके शरीर के पास दफनाने की अनुमति देने से इनकार कर दयिा: हेरोदयिास को डर था कि यदि जॉन का शरीर उसके सरि के साथ दफनाया गया, तो वह फरि से उठ खड़ा होगा और उसकी नदिा करना फरि से शुरू कर देगा। संत जॉन बपतस्मिादाता के शष्यिों ने चुपके से उनके शरीर को ले जाकर रात के समय सेबास्टे (Sebaste) में दफनाया (मत्ती 14:12; मरकुस 6:29), जो सामरयिा का एक शहर था[2052] । जहाँ तक पवत्रि अग्रदूत के सरि की बात है, हेरोदयिास ने उसे अपने महल में एक गुप्त, अपमानजनक स्थान पर गहराई में दफना दयिा। केवल हेरोद के व्यवस्थापक चुज़ा की पत्नी जोआना—जनिका उल्लेख पवत्रि सुसमाचार लेखक लूका ने कयिा है (लूका 8:3)—ही उस स्थान को जानती थी। महान पवत्रि नबी यूहन्ना की हत्या और उनके सम्मानति सरि के अपमान पर अपने हृदय में शोक करते हुए, उसने रात के अँधेरे में चुपके से वह सरि ले लयिा, उसे एक कुम्हार के घड़े में रखा[2053] और हेरोद के एक भू-स्वामतिव पर जैतून के पहाड़ पर[2054] दफना दयिा। इस बीच, यीशु मसीह के बारे में अफवाहें हेरोद तक पहुँचीं। वह और उसकी पत्नी हेरोदयिास यह सोचने लगे कि क्या यह वही यूहन्ना हो सकता है, जो मृतकों में से जी उठा है। उन्होंने यूहन्ना का सरि खोजना शुरू कयिा और जब उन्हें वह नहीं मलिा, तो वे चकति रह गए। हेरोद ने यीशु के बारे में अपने घर वालों से यहाँ तक कहा: 'यह वही यूहन्ना है, जसिे मैंने सरि कटवाने का आदेश दयिा था। अब वह मरे हुओं में से जी उठा है, और इसीलिए ये चमत्कार उसके द्वारा कए जा रहे हैं' (मत्ती 14:2; मरकुस 6:16)।

बहुत बाद में, इनोसेंट नाम का एक बहुत ही प्रतष्ठिति कुलीन व्यक्ति यीशु मसीह पर वश्विास करने लगा। दुनिया को पीछे छोड़कर, वह यरूशलेम आया, जैतून के पहाड़ पर उस जमीन को खरीद लयिा जो कभी हेरोद की थी, वहाँ अपने लिए एक कोठरी बनवाई, और मसीह की आज्ञाओं का पालन करते हुए एक भकि्षु बन गया। अपने लिए एक छोटी सी पत्थर की चर्च बनाना चाहकर, उसने नींव के लिए एक खाई खोदनी शुरू कर दी। और देखो, ईश्वर की व्यवस्था से, उसे ज़मीन में छपिा हुआ एक घड़ा मलिा जसिमें मसीह के अग्रदूत का सरि था। वभिन्नि धन्य संकेतों और चमत्कारों के माध्यम से, और ईश्वर से प्राप्त प्रकटवाणी द्वारा, उसे एहसास हुआ कि यह सरि संत योहन का था और उसने इसे बड़ी श्रद्धा से रखना शुरू कर दयिा। उनकी मृत्यु से पहले, पूरे देश में अवश्विास फैल गया: राजा सच्चे ईश्वर के बजाय मूर्तयिों की पूजा करते थे, और यरूशलेम में हर जगह उन्होंने अपनी मूर्तयिाँ स्थापति कीं और उन पर दुष्ट बलदिान चढ़ाए। यह देखकर

[2051] उनके जीवन के लिए, 3 जुलाई देखें

[2052] सेबास्टे सामरयिा का प्रमुख शहर था, जसिे अगस्टस ने महान हेरोद को उपहार में दयिा था, जसिने इसे पूरी तरह से पुनर्स्थापति और सुशोभति कयिा और अगस्टस के प्रति कृतज्ञता में इसका नाम सेबास्टे या सेबास्टयिा रखा, जसिका अर्थ है 'अगस्टस का शहर'। परंपरा के अनुसार, सेबेस्ट में मसीह के बारे में उपदेश देते समय, संत ल्यूक सुसमाचारकार ने नवािसयिों से बपतस्मिा देने वाले यूहन्ना का दाहनिा हाथ प्राप्त कयिा और इसे अंतीयक ले गए। 10वीं शताब्दी में, बपतस्मिादाता का दाहनिा हाथ कॉन्स्टेंटनिोपल ले जाया गया, और 1798 में इसे सेंट जॉन ऑर्डर द्वारा सम्राट पॉल प्रथम को उपहार के रूप में प्रस्तुत कयिा गया था और यह अभी भी वटिर पैलेस के चर्च में रखा है। (इस पर अधकि वविरण 12 अक्टूबर को दए गए हैं।)

[2053] 'स्कुडेल्नी' का अर्थ है 'मट्टिी'; 'स्कुडेल्नकि' एक कुम्हार या मट्टिी के बर्तन बनाने वाला होता है।

[2054] जैतून का पहाड़ – यरूशलेम के पूर्व में स्थति यहूदी पहाड़ों में से एक; इसका नाम वहां उगे जैतून के पेड़ों की बहुतायत के कारण पड़ा।

और अपनी मृत्यु की पूर्वसूचना पाकर, इस भिक्षु ने अग्रदूत के पवित्र सिर को फिर से धरती की गहराई में छिपा दिया: उसे डर था कि, उसकी मृत्यु के बाद, कोई उसके साथ अनादर कर सकता है। उन्होंने इसे ठीक उसी स्थान पर रखा जहाँ उनकी कोठरी और चर्च स्थित थे। उनकी मृत्यु के बाद, वह चर्च जर्जर हो गया, ढह गया और उसे पूरी तरह से ध्वस्त कर दिया गया, इसलिए लंबे समय तक किसी को नहीं पता था कि जॉन द बैपटिस्ट का पूजनीय सिर कहाँ रखा था।

जब महान सम्राट कॉन्स्टेंटाइन सिंहासन पर आसीन हुए और पवित्र बपतिस्मा के माध्यम से अपने राज्य को प्रकाशित किया, तो उनकी माता, संत हेलेना, ने यरूशलेम में सभी पवित्र स्थलों को पुनर्स्थापित और शुद्ध करने का कार्य आरंभ किया[2055] । उन्होंने ही पवित्र पर्वत को उसकी पूर्व वैभव लौटाया। उस समय, पूर्व में परिश्रम कर रहे दो भिक्षु, रानी हेलेना द्वारा खोजे गए पवित्र क्रूस और पवित्र सेपल्चर की पूजा करने और उस भूमि के सभी पवित्र स्थलों को देखने के लिए यरूशलेम की यात्रा पर एक साथ जाने के लिए सहमत हुए। यरूशलेम पहुँचने पर, उन्होंने पवित्र स्थलों का दौरा करना शुरू किया, उनकी पूजा की और प्रभु से प्रार्थना की। वहाँ, एक सपने में, संत जॉन द फोरेरनर उनमें से एक के सामने प्रकट हुए, उन्होंने वह स्थान बताया जहाँ उनका पवित्र सिर दफ़न था, और उसे पृथ्वी की गहराई से निकालने का आदेश दिया। जागने पर, उस भिक्षु ने यह दृष्टि अपने साथी को सुनाई, लेकिन बाद वाले ने, इसे केवल एक सपने मानकर, खुद इस पर विश्वास नहीं किया और दूसरे को भी यही सोचने के लिए मना लिया। अगली रात, संत जॉन दूसरी बार प्रकट हुए, लेकिन इस बार प्रत्येक भिक्षु को व्यक्तिगत रूप से, और कहा: 'उठो, अपने अविश्वास और आलस्य को दूर करो, और जो तुम्हें प्रकट किया गया है उसे करो।'

जागने पर, दोनों ने एक-दूसरे को वह सब कुछ बताना शुरू किया जो उन्होंने देखा था, और फिर वे उस स्थान पर चले गए जो उन्हें उनके सपने में बताया गया था। वहाँ उन्होंने जमीन खोदना शुरू किया और एक अनमोल खजाना पाया – बपतिस्मा दाता जॉन का पवित्र सिर। उसे ऊँट के ऊन से बने एक थैले में रखकर, वे अपने मठ वापस चल पड़े।

उस समय, एमेसा नगर के एक गरीब कुम्हार[2056] को गरीबी के कारण अपना वतन और अपनी पत्नी छोड़कर दूसरे देश जाने के लिए मजबूर होना पड़ा। रास्ते में, उसकी मुलाकात उन दो भिक्षुओं से हुई जो जॉन द बैपटिस्ट का सिर ले जा रहे थे; वह उनसे मिल गया और उनके साथ अपनी यात्रा जारी रखी। भिक्षुओं ने एक साथी मिल जाने पर, उसे जॉन द बैपटिस्ट के सिर वाला बोरा[2057] दे दिया कि वह उसे ले जाए। और वह, यह जाने बिना कि वह क्या ले जा रहा था, शांतिपूर्वक अपनी राह पर चलता रहा। अचानक, संत जॉन द बैपटिस्ट उसके सामने प्रकट हुए और कहा: 'अपने साथियों को छोड़ दो और उस बोरे के साथ उनसे भाग जाओ जो तुम्हारे हाथों में है।'

संत ने यह आज्ञा इसलिए दी क्योंकि उन्होंने उन संतों की आलस्य और उदासीनता देखी थी, जो पहले तो उनके प्रकट होने पर विश्वास नहीं करते थे, और फिर स्वयं उनके सम्मानित सिर को उठाने के लिए अनिच्छुक थे, बल्कि इसे एक ऐसे साधारण व्यक्ति को सौंप दिया जिसे वे नहीं जानते थे। साथ ही, संत इस गरीब आदमी पर एक कृपा करना चाहते थे और उसे एक अच्छे और ईश्वरवादी जीवन के मार्ग पर मार्गदर्शन देना चाहते थे। उस आदमी ने संत के आदेश का पालन करते हुए, भिक्षुओं से खुद को छिपाया, उनसे भाग गया और अपने घर अपनी पत्नी के पास लौट आया, तथा जॉन द बैपटिस्ट के सम्मानित सिर को इस तरह श्रद्धापूर्वक ले आया मानो वह सभी सांसारिक खजानों में सबसे कीमती हो। और प्रभु ने, जॉन द बैपटिस्ट के सिर की खातिर, उनके घर को हर तरह की समृद्धि से आशीर्वाद दिया। कुम्हार अपनी पूर्व दुर्भाग्य को भूलकर, ऐश्वर्य में रहने लगा। फिर भी वह घमंडी नहीं हुआ: उसने अपनी संपत्ति से गरीबों और ज़रूरतमंदों को उदार दान दिया। यह दृढ़ता से ध्यान में रखते हुए कि उसे यह सब मसीह के अग्रदूत के प्रति अपनी श्रद्धा के कारण प्राप्त हुआ था, उसने हमेशा उनके पवित्र सिर का सम्मान किया, प्रतिदिन उनके सामने धूप जलाया, दीपक जलाए, प्रार्थना की, और एक सम्मानजनक जीवन जीने तथा मसीह की आज्ञाओं के अनुसार कार्य करने का प्रयास किया। जब उनके निधन का समय निकट आया, तो उन्होंने स्वयं मसीह के अग्रदूत के आदेश पर, पवित्र सिर को पानी के

[2055] कॉन्स्टेंटाइन महान – एक संत और प्रेरितों के समान – को 306 में सम्राट घोषित किया गया था; 312 में, उन्होंने रोमन साम्राज्य में ईसाई धर्म को प्रमुख धर्म घोषित किया; 325 में, उन्होंने पहली सार्वभौमिक परिषद बुलाई; उनकी मृत्यु 337 में हुई। संत हेलेना, कॉन्स्टेंटिन द ग्रेट की माता, ईसाई धर्म को फैलाने के अपने उत्साह और ईश्वर के चर्चों की भव्यता के लिए प्रसिद्ध हुईं; 326 में वह यरूशलेम गईं, जहाँ उन्होंने प्रभु के क्रूस की खोज की, और उन स्थानों को चर्चों से सुशोभित किया जो उद्धारकर्ता के पृथ्वी पर जीवन के दौरान महिमामय हुए थे; उनका निधन 327 में हुआ। संत कॉन्स्टेंटाइन और हेलेना, प्रेरितों के समान, का पर्व दिवस 21 मई को मनाया जाता है।

[2056] एमेसा सीरिया में ओरोन्टिस नदी के पूर्व में एक शहर है, जो उत्तर-पश्चिमी सीरिया में भूमध्य सागर में मिलती है।

[2057] बोरी का कपड़ा – मोटे कपड़े या रस्सी, फटे-पुराने कपड़ों, या बालों वाली कमीज़ से बना एक थैला।

एक पात्र में रखा, इस पात्र को एक संदूक में बंद कयिा, उसे सील कर दयिा, और इस खजाने को अपनी बहन के हवाले कर दयिा। साथ ही, उन्होंने उसे वस्तिार से बताया कि कैसे इस पवत्रि सरि की खातरि, उन्हें अत्यधकि गरीबी से छुटकारा मलिा और वे एक धनी व्यक्तबिन गए थे। उसने अपनी बहन को वसीयत की कि वह इस पवत्रि सरि को हमेशा श्रद्धा और सम्मान के साथ रखे, और संत जॉन स्वयं अनुमतदिने तक इस अवशेष-पात्र को कभी न खोले। अपनी मृत्यु से पहले, उसे इस खजाने को कसिी ईश्वर-भयभीत और सदाचारी व्यक्तको सौंपना था।

इस प्रकार मसीह के अग्रदूत का पवत्रि और पूजनीय सरि, एक लंबे समय तक एक व्यक्तसे दूसरे व्यक्तके पास जाता हुआ, श्रद्धालु ईसाइयों के बीच क्रमबद्ध रूप से संरक्षति रहा; अंत में, इसे एमेसा के पास एक गुफा में रहने वाले यूस्टैथयिस नामक एक मठवासी पुरोहति को सौंप दयिा गया; वह एरयिस के संप्रदाय से प्रभावति हो गया था और उसे ईश्वर का कोई भय नहीं था। उसके पास आने वाले रोगी, जो उसने छपिा कर रखा था, उस सरि से नकिलने वाली चमत्कारी कृपा से ठीक हो जाते थे। लेकनि यूस्टैथयिस ने, एक चोर की तरह, इस कृपा का श्रेय स्वयं को और अपनी वधिर्म को देना शुरू कर दयिा, और लोगों से उन चमत्कारी उपचारों के वास्तवकि कारण को छपिाने का प्रयास कयिा, और इस तरह उसने कई लोगों को अपनी वधिर्म की ओर भटका दयिा। हालाँकि, एमेसा के नविासयिों ने अंततःउसकी दुष्टता का पता लगा लयिा। एमेसा के राजकुमार ने बशिप से सलाह-मशवरि करने के बाद, उसे गुफा से और उस क्षेत्र की सीमाओं से बाहर नकिाल देने का आदेश दयिा। यूस्टैथयिस ने दूतों से वनिती करनी शुरू कर दी कि वे उसे उस दनि के लिए गुफा में रहने दें, और वादा कयिा कि वह अगली सुबह नकिल जाएगा। जब दूतों ने इस पर सहमतदि दी, तो उसने रात में उस गुफा में पवत्रि सरि वाले पात्र को गहराई में भूमगित छपिा दयिा; क्योंकि उसे उम्मीद थी कि, कुछ समय बीत जाने के बाद, वह वापस आ सकता है, इस खजाने को वापस ले सकता है और अग्रदूत के पवत्रि सरि की सहायता से चमत्कार करके, एक बार फरि अपनी वधिर्म को फैला और स्थापति कर सकता है। लेकनि उस वधिर्मी की आशाएँ पूरी नहीं हुईं। जब वह गुफा से चला गया, तो कुछ धर्मनष्ठि और सदाचारी भक्षिुओं ने वहाँ नविास कर लयिा, इसलिए वह उसमें प्रवेश करके पीछे छोड़ा हुआ खजाना नहीं नकिाल सका।

कुछ समय बाद, उस स्थान पर एक समुदाय इकट्ठा हुआ, और एक मठ की स्थापना हुई। लेकनि कसिी को यह नहीं पता था कि अग्रदूत का पूजनीय सरि उस गुफा में पाया जाना था। बहुत समय बाद ही एमेसा मठ के आर्चमिंड्राइट मार्सेलस, जो एक सदाचारी व्यक्तथि, ने इसका पता लगाया, जैसा कि वे स्वयं इस प्रकार वर्णन करते हैं:

2058"ईश्वर, यीशु मसीह धन्य हों! उन्होंने अपने दास मार्केल को, जब मैं रात में सो रहा था, एक दर्शन देने की कृपा की। यह 18 फरवरी का दनि था, लेंट के पवत्रि और महान उपवास के मध्य सप्ताह के दौरान। मैंने देखा कि हमारे मठ के सभी द्वार खुले हुए थे। मैं भय से कांप उठा, और मैं द्वार बंद करने के लिए बाहर जाना चाहता था। लेकनि उसी क्षण मैंने मठ के द्वारों से एक नदी का पानी बहते हुए देखा। मैं चकति रह गया और सोचने लगा कि पानी का इतना प्रचंड बहाव कहाँ से आ रहा है। जब मैं इस पर वचिार कर ही रहा था, तभी मुझे अचानक पूर्व की ओर से पानी के बीच शोर मचाते हुए हमारी ओर मार्च करते हुए कई समूहों के लोगों की आवाजें सुनाई दीं। वे सभी – प्रत्येक अपनी-अपनी अलग भाषा में – घोषणा कर रहे थे: 'देखो, यह मसीह के बपतस्मिा देने वाले संत जॉन हैं।'

ऐसे ही चीखों के साथ वे मठ में प्रवेश कर गए। जहाँ तक मेरी बात है, डर से मैं पानी के बारे में सब भूल चुका था; द्वार को पीछे छोड़कर मैं सीढ़ियों के शीर्ष पर पहुँच गया। वहाँ खड़े होकर मुझे लगा कि मैं मठ के भीतर दो आँगन देख सकता हूँ: एक पश्चमि में, दूसरा दक्षणि में; उनके बीच एक वशिाल चर्च खड़ी थी। प्रत्येक जुलूस पश्चमिी आंगन में प्रवेश कर चर्च की ओर बढ़ता; वहाँ नमन करने के बाद, वह दक्षणिी द्वार से बाहर नकिल जाता। जब संप्रदायों का जुलूस समाप्त हो गया, तो मैंने फरि से दूसरों की आवाज़ें सुनीं जो चल्लिा रहे थे: 'देखो, महान संत जॉन बपतस्मिादाता।'

ऊपर देखते ही, मैंने उन्हें चर्च में देखा। उनके साथ दो व्यक्तथि, जो उनके दोनों ओर खड़े थे। उसी क्षण, भक्षिुओं ने संत जॉन के पास जाकर उनका आशीर्वाद लेना शुरू कर दयिा। और मैंने भी संकल्प लयिा कि मैं बपतस्मिादाता के पास जाकर उनका आशीर्वाद लूंगा। डर और कांपते हुए, मैं उन वशिेष दरवाजों से प्रवेश करने वाला आखरिी व्यक्तथि, मैं बपतस्मिादाता के सामने सरि झुकाकर उनके पैरों को छूने लगा। लेकनि उन्होंने मुझे उठने का इशारा कयिा, मुझे

2058 मध्य-लेंट सप्ताह – यह नाम चर्च वधिानों में महा-लेंट के मध्य (चौथे) सप्ताह को दयिा गया है; इसी सप्ताह को क्रूस की वंदना का सप्ताह भी कहा जाता है।

प्यार से गले लगाया, मेरे चेहरे को छुआ, शहद से भरा एक पात्र लिया, और उसे मुझे देते हुए कहा: 'यह आशीर्वाद स्वीकार करो!'

यह कहकर वह चले गए। जैसे ही मैं उनका पीछा करने वाला था, मैंने संत के आगे आग का एक स्तंभ देखा। इस दृश्य से भयभीत होकर, मैं जाग गया। जब अगली शाम आई, तो मैंने भाइयों को सामान्य नियम के अनुसार भजनों के छंद गाने का निर्देश दिया। जब वे गा रहे थे, इसहाक नाम के एक भाई ने ऊपर देखा और खिड़की से देखा कि उस गुफा चर्च में आग जल रही थी जहाँ संत जॉन का पूजनीय सिर छिपाया गया था। यह देखकर, वह चिल्लाया: 'पिताजी! देखो, पवित्र गुफा में आग जल रही है।' 'डरो मत, भाई,' मैंने उससे कहा, 'लेकिन, क्रॉस का चिह्न बनाकर, इसे अपने तक ही रखना।'

उसके बाद पाँच दिन बीत गए। छठे दिन की रात, जब मैं सो गया था, तो किसी ने दाईं ओर तीन बार मुझे धक्का दिया, और एक आवाज़ गूँजी: 'देखो, मैं तुम्हें दिया गया हूँ; उठो, उस तारे का अनुसरण करो जो तुम्हारे आगे-आगे चलेगा, उस स्थान को खोदो जहाँ वह तुम्हें ले जाए, और तुम मुझे पाओगे।'

कांपते और डरते हुए मैं अपनी नींद से जागा, अपने बिस्तर पर बैठ गया, और—देखो तो—मेरी कोठरी के दरवाजों के सामने एक तारा चमक रहा था। मैं भयभीत था, लेकिन, प्रभु का चिह्न बना कर, मैं बाहर निकला; तारा मेरे आगे-आगे चलता गया; उसका अनुसरण करते हुए, मैं एक गुफा में प्रवेश किया; जब मैं उस स्थान पर पहुँचा जहाँ अग्रदूत का पवित्र सिर रखा था, तारा अचानक गायब हो गया। मैं ज़मीन पर गिर पड़ा और प्रभु की स्तुति करने लगा। एक लंबी प्रार्थना के बाद, मैंने एक मोमबत्ती जलाई, धूप जलाई और प्रभु का नाम लेकर खोदना शुरू कर दिया। जैसे ही मैं खोद रहा था, एक बहुत बड़ा शोर और खड़खड़ाहट हुई, और मिट्टी पीतल की तरह कठोर थी। मैंने बहुत समय तक परिश्रम किया; अंत में मुझे कुछ ईंटें मिलीं; उन्हें हटाने पर, मैंने एक पत्थर की स्लैब देखी; बड़ी कठिनाई से मैं इसे गड्ढे से हटाने में कामयाब हुआ – और वहाँ मुझे वह पवित्र पात्र मिला जिसमें अग्रदूत का सम्मानित सिर रखा था: आनंदित, फिर भी एक ही समय में भयभीत, मैंने मोमबत्ती और धूप ले ली, पात्र उठाने का साहस किया, झुका, और इसे फिर से ढककर, गुफा से बाहर निकल गया। प्रवेश द्वार पर, मेरा सामना आर्चमैंड्राइट जेनाडियस से हुआ, जो हमारे मठ में आए थे। उन्होंने मुझे गुफा के अंदर ले जाकर, एक प्रार्थना करने के बाद, मुझे अपने दर्शन के बारे में बताना शुरू किया।

'मैंने देखा,' उन्होंने अपना वृत्तांत शुरू किया, 'जैसे हम दोनों ठीक उसी जगह खड़े थे जहाँ हम अभी खड़े हैं। यहाँ जौ की रोटी की बहुत बड़ी मात्रा थी, जो सूर्य से भी अधिक शुद्ध और चमकदार थी। लोगों का एक बड़ा समूह गुफा में प्रवेश कर रहा था और हमारे हाथों से यह रोटी प्राप्त कर रहा था। हालाँकि, यह कम होने के बजाय, इसकी मात्रा बढ़ती ही जा रही थी।"

यह वही है जो गेनाडी ने मुझे बताया। तब मुझे एहसास हुआ कि यह दर्शन उसे ईश्वर से मिला था, और यह बपतिस्मा देने वाले मसीह की अक्षय कृपा का संकेत था, जो उस विशिष्ट स्थान पर सभी पर प्रचुर मात्रा में प्रदान की जाएगी। तो मैंने भी उसे अपने दर्शन के बारे में बताया और उसे वह अनमोल खजाना दिखाया जो मुझे मिला था। यह देखकर वह आनंदित हुआ, और हमने इस पर चर्चा करनी शुरू की कि आगे कैसे बढ़ना है। मैंने सलाह दी कि हमें पहले इस बारे में किसी से बात नहीं करनी चाहिए, यहाँ तक कि चर्च के मुख्य चरवाहे - एमेसा के बिशप उराटियस - से भी नहीं, बल्कि हमें पहले धन्य एल्डर स्टीफन को सूचित करना चाहिए, जो डारोमियम मठ में रहते हुए, उपवास के तपस्वी अभ्यास में लगे हुए थे। उसे, बदले में, उस बिशप को सूचित करना था, जिसके साथ उसके बहुत सौहार्दपूर्ण संबंध थे। हालाँकि, डारोमियन मठ पहुँचने पर, हमें स्टीफन वहाँ नहीं मिला, क्योंकि वह अपने अन्य मठों का निरीक्षण करने के लिए निकल गए थे। फिर हमने उस शहर के कैथेड्रल में सर्वोच्च पद पर रहे डिकिन सिरियाकस को बुलवाया। हमारे पास आकर, सिरियाकस ने हमें मसीह में अभिवादन किया और हमें अपने दर्शन के बारे में बताया। यह हर तरह से वैसा ही था जैसा जेनाडियस ने देखा था। फिर हमने उसे अपना रहस्य बताया। उन दोनों, जेनाडियस और सिरियाकस ने, कहना शुरू कर दिया कि इस मामले की सूचना बिशप को दी जानी चाहिए, लेकिन मैंने स्टीफन के लौटने का इंतजार करने का फैसला किया। पाँच दिन पहले ही बीत चुके थे। छठे दिन - जो शनिवार था - हम सब एक साथ बैठे बातें कर रहे थे। अचानक मैं घुटनों के बल गिर पड़ा: मुझे अचानक किसी तरह की बीमारी हो गई थी। मैं न तो खड़ा हो सकता था और न ही हिल सकता था। मेरे साथी, इस घटनाक्रम से चकित होकर, मेरे लिए प्रभु से प्रार्थना करने लगे। अपनी प्रार्थना समाप्त करने के बाद, उन्होंने मुझसे कहा: 'क्या हमने तुम्हें नहीं बताया था कि तुम्हें इस रहस्य के बारे में बिशप को बता देना चाहिए था?'

तब मुझे खुद एहसास हुआ कि मैंने बिशप को ऐसे रहस्य के बारे में न बताकर गलत किया था, जिसे परमेश्वर की महिमा के लिए प्रकट किया जाना चाहिए था; फिर भी मेरी बीमारी कम नहीं हुई। शाम को, प्रार्थना की सामान्य सेवा के बाद, गेनाडियस और सिरिलिकस मेरे पास आए और कहा:

'हमने एक-दूसरे से वादा किया है कि हम भोर से पहले, मैटिन्स के दौरान, बिशप को आपके रहस्य के बारे में बताएँगे।'

जिस पर मैंने उत्तर दिया:

'आपका निर्णय अच्छा है; जैसा आपने कहा है, वैसा ही हो।'

जैसे ही मैं उनसे सहमत हुआ, मैं पूरी तरह से स्वस्थ महसूस करने लगा: मेरी बीमारी दूर हो गई थी। अगले सुबह हम सभी एक साथ शहर के लिए रवाना हुए और हमें बिशप ठीक उसी समय मिले जब वे मैटिन्स के बाद चर्च से बाहर जा रहे थे, और हमने उन्हें जॉन द बैपटिस्ट के पवित्र सिर की खोज के बारे में सब कुछ बताया। यह खबर सुनकर बिशप बहुत प्रसन्न हुए। हालाँकि, उन्होंने हमें फिलहाल इसके बारे में दूसरों को बताने से मना किया और हमें अपने मठ लौटने का आदेश दिया। अगली सुबह, वह स्वयं पुरोहितों और डिकिनों के साथ वहाँ आए। संयुक्त रूप से दैवीय अनुष्ठान संपन्न करने के बाद, वह उस स्थान पर गए जहाँ पवित्र सिर वाला पात्र रखा गया था। जब डिकिन ने घोषणा की, 'आओ हम घुटने टेकें और प्रभु से प्रार्थना करें', तो सभी लोग साष्टांग दंडवत हो गए। उसी क्षण, बिशप यूरेनस प्रार्थना कर रहे थे; प्रार्थना समाप्त करने के बाद, उन्होंने पूजनीय सिर वाले पात्र को उठाया और उसे जमीन से बाहर निकाला। बिशप के साथ आए पुरोहितों में से एक, जिसका नाम मल्खुस था, इस पर विश्वास नहीं कर सका और कहा, 'पूर्ववर्ती का सिर यहाँ कैसे आ सकता है?'

यह कहकर, उसने अहंकारपूर्वक अपना हाथ पात्र पर रखा और अग्रदूत के पवित्र सिर के बालों को छू लिया। अचानक, अपने अविश्वास के कारण, उसका हाथ सूख गया और पात्र से चिपक गया। यह देखकर, सभी बहुत भयभीत हो गए। बिशप, उपस्थित सभी लोगों के साथ, ईश्वर से प्रार्थना करने लगे। फिर मल्खुस, बड़ी कठिनाई से, अपना हाथ पात्र से खींचने में कामयाब रहा, लेकिन वह स्वयं बीमार पड़ गया। यूरेनस ने, पूरी चर्च की पादरी मंडली के साथ, उस पवित्र पात्र को लिया जिसमें वह खजाना था, उसे पवित्र चर्च में ले गए और उसे वेदी में, डीकन के कक्ष में रखा[2059] । यह अवशेष वहाँ तब तक रखा गया जब तक कि ईमेसा में मसीह के अग्रदूत के सम्मान में एक विशेष चर्च, शानदार ढंग से सुसज्जित, नहीं बना[2060] । पवित्र सिर को इस चर्च में स्थानांतरित किए जाने से ठीक पहले, यूहन्ना बपतिस्मादाता अविश्वासी पुरोहित मल्खुस को एक दर्शन में दिखाई दिए और उन्होंने उसे आज्ञा दी, जब सिर को ले जाया जा रहा था, तो वह अपने हाथ से पवित्र पात्र को छूए। पुरोहित ने ऐसा करने पर चंगा हो गया।' इस प्रकार धन्य मार्सेलस का वृत्तांत समाप्त होता है।

एक अन्य लेखक, संत सिमियन मेटाफ्रastes[2061] , ने पूजनीय मैट्रोना के जीवन में, अग्रदूत के सम्मानित सिर की खोज के बारे में निम्नलिखित अतिरिक्त विवरण दिया है। 'उस समय, एक आदमी अपने खेत में हल जोत रहा था, उसने देखा कि एक जगह - ठीक उसी जगह जहाँ कभी एक गुफा और एक मठ था - जमीन से आग निकल रही थी। उन्होंने इसे एक से अधिक अवसरों पर देखा: कई दिनों तक जमीन से आग निकलती रही। एक रविवार को—ठीक उसी दिन जब मार्सेलस, जेनाडियस और सिरियाकस के साथ बिशप के आवास पर पहुँचे थे—यह व्यक्ति भी एमेसा शहर आया और बिशप उरांस को इस चमत्कारी आग के बारे में बताया। बिशप, पुरोहितों के साथ, उस स्थान की ओर बढ़े – वह वही गुफा थी जहाँ विधर्मी यूस्टैथियस कभी रहता था। प्रार्थना करने के बाद, बिशप ने उस स्थान की मिट्टी खोदने का आदेश दिया। जब उनका आदेश पूरा हुआ, तो वहाँ एक पात्र मिला। उसमें न तो सोना था और न ही चाँदी, बल्कि सभी सांसारिक खजानों से कहीं अधिक कीमती खजाना था – प्रभु के अग्रदूत और बपतिस्मा देने वाले संत योहन का सिर। इसकी खबर दूर-दूर तक फैल गई: न केवल एमेसा के निवासी, बल्कि सभी पड़ोसी कस्बों और गांवों के लोग भी वहाँ इकट्ठा होने लगे। आदरणीय मत्रोना,

---

[2059] डीकन का कक्ष – वेदी का दक्षिणी भाग, जिसमें डीकन की देखरेख में पवित्र वस्तुओं के भंडारण के लिए एक स्थान आरक्षित होता है, जैसे: वेषभूषा, पवित्र पात्र, वेदी की सुसमाचार पुस्तकें और क्रॉस, टबरनेकल, और इसी तरह।

[2060] पूर्ववर्ती सेंट जॉन के सिर की दूसरी खोज वर्ष 452 में हुई। आर्चिमैंड्राइट मार्केल के विवरण के अनुसार, यह पवित्र सिर उन्हें 18 फरवरी को प्रकट हुआ, जिसे बिशप यूरेनस ने 24 फरवरी को चर्च के डायकोनिकॉन में ले जाया, और उसी वर्ष, 452, के 26 अक्टूबर को उनके सम्मान में निर्मित चर्च में स्थानांतरित कर दिया गया।

[2061] सिमोन मेटाफ्रास्टेस – 10वीं शताब्दी († 940) के एक प्रसिद्ध चर्च-संबंधी लेखक, संतों के जीवन के संकलक और संग्राहक; इस क्षेत्र में उनके कार्यों ने बाद में सेंट डेमेट्रियस ऑफ रोस्टोव के दैनिक मेनियन के लिए मुख्य स्रोत के रूप में काम किया।

अपनी सभी बहनों के साथ, पवत्रि सरि की पूजा करने के लिए अपने मठ से यहाँ आईं। मसीह के अग्रदूत के पवत्रि सरि से सुगंधति मूर्र नकिल रहा था, जसिसे पुरोहतिों ने इकट्ठा हुए लोगों के सरिों पर क्रूस के आकार में अभषिेक कयिा। आदरणीय मत्रोना ने उस मूर के एक हस्सिे को एक छोटे से अवशेष पात्र में ले लयिा, ताकि वह उसे अपने मठ में आशीर्वाद के रूप में वापस ले जा सकें। लेकनि एक बड़ी भीड़ उनके चारों ओर इकट्ठी हो गई: हर कोई पुरोहतिों से आशीर्वाद लेना चाहता था और मूर से अभषिेक करवाना चाहता था। कुछ लोगों ने, यह देखते हुए कि पूजनीय मत्रोना के पास अवशेष-पात्र में मूर्रा था, उनसे उस तेल से उन्हें अभषिेक करने का अनुरोध कयिा, क्योंकि वे स्वयं पुरोहतिों तक नहीं पहुँच सकते थे, और उन्होंने उनका अनुरोध मान लयिा। भीड़ में एक अंधा आदमी था जसिने जन्म से कभी दनि की रोशनी नहीं देखी थी। वह पूजनीय मत्रोना के पास गया और उनसे उसे पवत्रि मर्रिा से अभषिेक करने के लिए कहा। उन्होंने उसकी आँखों पर अभषिेक कयिा, और उसने तुरंत अपनी दृष्टि वापस पा ली। इस प्रकार संत समियिन मेटाफ्रastes ने जॉन द बैपटस्टि के सरि की खोज का वर्णन कयिा है।

कुछ समय बाद, जॉन द बैपटस्टि का पवत्रि सरि एमेसा से कॉन्स्टेंटनिोपल ले जाया गया। यहाँ, यूडोम नामक स्थान पर, शाही फरमान द्वारा एक भव्य चर्च का नर्मिाण कयिा गया, जसिमें उस पवत्रि सरि को रख दयिा गया। आइकॉनोकलास्टकि वधिर्म के दौरान, जब कई पवत्रि प्रतमिाओं को जलाया जा रहा था, अन्य प्रतमिाओं को समुद्र और नदयिों में फेंक दयिा गया, पैरों तले कुचल दयिा गया और वभिन्नि तरीकों से अपमानति कयिा गया, कुछ धर्मनष्ठि ईसाइयों ने, जो संप्रदायवादयिों द्वारा घेर लिए गए कॉन्स्टेंटनिोपल से भाग रहे थे, गुप्त रूप से बपतस्मिादाता का सरि अपने साथ ले लयिा और इसे कोमाना[2062] ले आए, जहाँ सेंट जॉन क्राइसोस्टोम का एक बार नधिन हुआ था। वहाँ उन्होंने इसे एक चाँदी के पात्र में रखकर एक बार फरि से धरती की गहराई में छपिा दयिा। यह कीमती अवशेष तब तक वहीं छपिा रहा जब तक कि थियोफलिस के पुत्र ज़ार माइकल और उनकी माँ, रानी थयिोडोरा का शासन नहीं आ गया, जन्हिोंने ऑर्थोडॉक्सी को फरि से स्थापति कयिा[2063] । माइकल के शासनकाल के दौरान, इस अवशेष को दैवीय कृपा से फरि से खोजा गया[2064] और पैट्रआर्क इग्नेशयिस द्वारा हमारे ईश्वर मसीह के सम्मान और महमिा के लिए कॉन्स्टेंटनिोपल ले जाया गया, जो सदा पति और पवत्रि आत्मा के साथ महमिामय हैं। आमीन।

ट्रोपारयिन, स्वर 4:

हे अग्रदूत के प्रमुख, पृथ्वी से प्रकाशमान होकर, आप अक्षयत्व की करिणें प्रसारति करते हैं, जो वश्विासयिों को आरोग्य प्रदान करती हैं; ऊपर से आप स्वर्गदूतों की भीड़ को एकत्र करते हैं, जबकि पृथ्वी पर आप मानव जाति को एक स्वर में हमारे ईश्वर मसीह की महमिा करने के लिए बुलाते हैं।

कॉन्टाकयिन, स्वर 2:

हे परमेश्वर के भवष्यिवक्ता और अनुग्रह के अग्रदूत, पृथ्वी से आपके सरि—जो एक काँटे के समान अति पवत्रि है—को पाकर, हम सदा चंगाई प्राप्त करते हैं, क्योंकि आप संसार में पहले की भाँति पुनःपश्चाताप का उपदेश देते हैं।

[2062] कोमाना – एशयिा माइनर के उत्तर-पूर्व में, पोंटस प्रांत का एक शहर।

[2063] थेओडोरा – बीजान्टनि सम्राट थयिोफलिस द आइकनोक्लास्ट की पत्नी। उनकी मृत्यु के बाद, उन्होंने अपने पुत्र माइकल के साथ मलिकर साम्राज्य पर शासन कयिा। सम्राट माइकल III ने 842 से 867 तक शासन कयिा; वह चार साल की उम्र में सहिासन पर चढ़ा, और इसलिए उसकी माँ, सम्राज्ञी थयिोडोरा ने 855 तक साम्राज्य पर शासन कयिा। 842 में सम्राज्ञी थयिोडोरा के अधीन, कॉन्स्टेंटनिोपल की परषिद में प्रतमिाओं की पूजा को बहाल कयिा गया और ऑर्थोडॉक्सी का पर्व स्थापति कयिा गया, जसिे महा-उपवास के पहले सप्ताह के दौरान मनाया जाना था।

[2064] योहन बपतस्मिादाता के सरि की यह तीसरी खोज लगभग 850 ईस्वी में हुई; इसे चर्च 25 मई को मनाता है। पूर्वसूचक के पूजनीय सरि को, दूसरी बार कॉन्स्टेंटनिोपल ले जाया जाने के बाद, पहले शाही महलों में रखा गया, और बाद में इसका एक हस्सिा स्टुडयिो में पूर्वसूचक के मठ में ले जाया गया; इस मठ में, तीर्थयात्री एंथनी ने 1200 में सरि का ऊपरी हस्सिा देखा था; सरि का एक और हस्सिा पेट्रा में अग्रदूत के मठ में था; इसे धर्मयुद्ध सेनानयिों द्वारा फ्रांस के एमअिन्स में स्थानांतरति कयिा गया था, और इसका एक हस्सिा रोम ले जाया गया था, जहाँ इसे पोप सल्वि्स्टर के चर्च में रखा गया है। अन्य हस्सिे माउंट एथोस पर डायोनसियिस के मठ और कलुई के उग्रोव्लाचयिन मठ में रखे गए हैं।

गुफाओं के पूजनीय एरास्मस की स्मृति

२४ फरवरी को स्मरणोत्सव

'बुद्धिमानों का मुकुट उनकी संपत्ति है,' सोलोमन कहते हैं (नीतिवचन 14:24), लेकिन अपनी संपत्ति का उपयोग मसीह के गिरजाघरों को सजाने के लिए करना विशेष रूप से उपयुक्त है, क्योंकि इसके माध्यम से स्वर्ग के राज्य को प्राप्त करना संभव है। हमारे पूजनीय पिता एरास्मस, गुफाओं के एक भिक्षु, ईश्वर के मंदिरों के ऐसे ही सजावटकर्ता थे। इसके लिए उन्हें स्वर्ग के राज्य का मुकुट प्राप्त करने का योग्य समझा गया। महान संपत्ति के स्वामी होते हुए भी, उन्होंने यह निर्णय लिया कि एक भिक्षु के लिए सांसारिक खजाने रखना उचित नहीं है; चर्च की भव्यता से प्रेम कर, उन्होंने अपनी सारी संपत्ति चर्च की सजावट पर खर्च कर दी – गुफाओं के चर्च में कई प्रतिमाओं को सोने और चांदी से सुसज्जित किया। उनके सामने प्रार्थना करते हुए और उन पर विश्वास की दृष्टि से निहारते हुए, उसने अपनी आत्मा को—जीवित ईश्वर के इस मंदिर को—भौतिक चांदी और सोने से नहीं, बल्कि पवित्रता, प्रेम और एक भिक्षु के लिए उपयुक्त अन्य गुणों से सुशोभित किया। नबी की तरह, वह अपनी ही भव्यता के बारे में उद्घोषित कर सकता था: *'तेरे वचनों का नियम मुझे हजारों सोने और चांदी के टुकड़ों से भी बढ़कर प्रिय है'* (भजन संहिता 118:72)।

आदरणीय एरास्मस को इस प्रकार के प्रलोभन का सामना करना पड़ा। जब उन्होंने अपनी पूरी संपत्ति खर्च कर दी और निर्धन हो गए, तो लोगों ने उन पर कम ध्यान देना शुरू कर दिया। तब चालाक शैतान ने उनके हृदय में यह दुष्ट विचार डालना शुरू कर दिया कि चर्च की सजावट पर अपनी पूरी संपत्ति खर्च करने के बाद, उन्हें इसके लिए कोई प्रतिफल या पुरस्कार नहीं मिला। 'यह बेहतर होता,' दानव ने उससे कहा, 'कि तुम अपना सारा धन गरीबों को दे देते।' यह महसूस किए बिना कि ये विचार शैतान द्वारा उसके मन में डाले जा रहे थे, एरास्मस निराशा में पड़ गया, लापरवाही से जीने लगा, और अपनी आत्मा के उद्धार की परवाह करना छोड़ दिया। लेकिन उदार और धर्मी प्रभु ने, एरास्मस के पूर्व सद्गुणों को याद करते हुए, उसे बचाया। उन्होंने उस पर एक गंभीर बीमारी भेज दी; एरास्मस पहले से ही अपने निकट मृत्यु पर विचार कर रहा था और सात दिनों तक कुछ भी कहे बिना, अपनी आँखें बंद करके बीमारी में पड़ा रहा; केवल उसकी साँस से ही पता चल रहा था कि वह अभी भी जीवित है। आठवें दिन, सभी भिक्षु उसके चारों ओर इकट्ठा हो गए; और, उसे देखकर, वे भयभीत हो गए और कहने लगे: 'हाय, हाय इस भाई की आत्मा के लिए; वह पाप और आलस्य में जीया; लेकिन अब उसकी आत्मा एक निश्चित दर्शन देख रही है और उथल-पुथल में है, और अपने शरीर को छोड़ नहीं पा रही है।'

अचानक, धन्य एरास्मस, जैसे कि वह कभी बीमार ही न थे, उठ खड़े हुए, बैठ गए और भिक्षुओं से कहा: 'पिता और भाइयो! आपके शब्द सत्य हैं। मैं एक पापी हूँ और मैंने पश्चाताप नहीं किया है। लेकिन अब हमारे पूजनीय पिता एंथनी और थियोडोसियस मुझे प्रकट हुए हैं और कहा है: 'हमने आपके लिए प्रभु से प्रार्थना की, और प्रभु ने आपको पश्चाताप के लिए समय दे दिया है।' इसके बाद, मैंने परमेश्वर की अति पवित्र माता को देखा – जैसा कि वह आइकनों में चित्रित हैं – जो अपने सम्मानित बाहों में शाश्वत शिशु को धारण किए हुए थीं, और उनके साथ संतों की एक बड़ी भीड़ थी। और उन्होंने मुझसे कहा: 'एरास्मस! जैसे तुमने मेरी कलीसिया को सजाया और उसे प्रतिमाओं से समृद्ध किया है, वैसे ही मैं तुम्हें मेरे पुत्र के राज्य में सुसज्जित और गौरवान्वित करूँगी। गरीब तो हर जगह तुम्हारे साथ हैं, पर मेरी कलीसिया हर जगह तुम्हारे साथ नहीं है। उठो, पश्चाताप करो, और दिव्य स्वर्गदूत का रूप धारण करो; और अपने पश्चाताप के तीसरे दिन, मैं तुम्हें अपने पास ले जाऊँगा क्योंकि तुमने मेरे भवन की शोभा से इतना प्रेम किया है।"

यह कहने के बाद, एरास्मस ने पूरे समुदाय के सामने अपने पापों का इकबालिया बयान देना शुरू कर दिया, कुछ भी छिपाए बिना और बिना कोई शर्म महसूस किए। फिर, उठकर, वह चर्च गया, एक स्कीमा-भिक्षु के रूप में दीक्षा ली, और तीसरे दिन उसने आनंदपूर्वक अपना आत्मा प्रभु और उनकी परम पवित्र माता को सौंप दिया, ठीक वैसे ही जैसे उन्होंने स्वयं भविष्यवाणी की थी।

इससे यह स्पष्ट है कि प्रतिमाओं से गिरजाघरों को सजाना ईश्वर को प्रसन्न करता है, और प्रभु ऐसे लोगों को अपने संतों में गिनते हैं।

संत एरास्मस की प्रार्थनाओं के द्वारा, प्रभु उन सभी की सहायता करें जो पवित्र चर्चों को सुशोभित करते हैं, ताकि वे आने वाले जीवन में हमारे प्रभु यीशु मसीह के साथ शाश्वत आनंद प्राप्त कर सकें, जिनका महिमा परमपिता और पवित्र आत्मा के साथ, अब और सदा के लिए और युगों-युगों तक हो। आमीन[2065] .

[2065] प्रतिष्ठित इरास्मस का निधन लगभग 1160 में हुआ। उनके अवशेष सेंट एंथनी की गुफा में रखे गए हैं।

10 मार्च

25 फरवरी (पुराना कैलेंडर)

हमारे पवत्रि पति तारासयिस, कॉन्स्टेंटनिोपल के आर्चबशिप का जीवन

25 फरवरी को स्मरणोत्सव

संत तारासयिस का जन्म कॉन्स्टेंटनिोपल में हुआ था; उनके पति, जॉर्ज, और उनकी माता, यूक्रैटयिा, कुलीन व्यक्तथि और कुलीन वर्ग से संबंधति थे[2066] । वयस्क होने और अच्छी शकि्षा प्राप्त करने के बाद, तारासयिस ने शाही दरबार में वभिन्नि पदों पर कार्य कयिा; अपनी ववि्कशीलता और अच्छे चरत्रि के कारण, वहाँ हर कोई उन्हें प्यार और सम्मान देता था, और उन्हें शाही सलाहकारों में से एक नयिुक्त कयिा गया। उस समय, कांस्टेंटनि पोर्फ्योजेनटिस[2067] , जो लीओ द खज़ार[2068] के पुत्र और कोप्रोनयिम[2069] के पोते थे, साम्राज्य सहिासन पर वरिाजमान थे; उन्होंने अकेले शासन नहीं कयिा, बल्कि अपनी माँ आइरीन[2070] के साथ मलिकर शासन कयिा, क्योंकि सहिासनारोहण के समय उनकी आयु केवल 10 वर्ष थी। उस समय के पादरी साइप्रयिन के पॉल[2071] थे, जो एक सदाचारी और धार्मकि व्यक्तथि, लेकनि वे बहुत कमजोर इच्छाशक्ति और डरपोक थे। उन्हें उपर्युक्त कोप्रोन्यमस के पुत्र लयिो खज़ार के शासनकाल के दौरान पादरीपद पर पदोन्नत कयिा गया था, जनिके अधीन प्रतमिा-भंजकों का वधिर्म—जो लयिो आइसोरीयन[2072] के साथ शुरू हुआ था—और भी मजबूत हो गया। जब उन्होंने देखा कि कई लोग पवत्रि प्रतमिाओं की पूजा करने के लिए दुष्ट ज़ार के हाथों महान यातनाएँ झेल रहे थे, तो पादरी डर गया और अपनी भक्ति छिपाने लगा, यहाँ तक कि उसने वधिर्मी लोगों के साथ भी संबंध बना लिए। लिओ द खज़ार की मृत्यु के बाद, पैट्रआिर्क पवत्रि प्रतमिाओं की पूजा की धार्मकि प्रथा को बहाल करना चाहते थे, लेकनि ऐसा नहीं कर सके क्योंकि उनके पास कोई सहायक नहीं था, जबकि प्रतमिा-वरिोधियों का वधिर्म न केवल राजधानी में बल्कि साम्राज्य के अन्य क्षेत्रों में भी लगातार मजबूत होता गया। इससे पैट्रआिर्क को बहुत दुख हुआ। यह महसूस करते हुए कि वह ऑर्थोडॉक्सी की वजिय सुनश्चिति करने के लिए कुछ नहीं कर सकता, पॉल ने पैट्रआिर्कल सहिासन त्यागने का संकल्प लयिा, जसि पर वह चार साल से भी कम समय तक रहा था। बीमार पड़ने के बाद, वह गुप्त रूप से पैट्रआिर्कल कक्षों से नकिल गया और सेंट फ्लोरस के मठ में चला गया, जहाँ उसने पवत्रि स्कीमा ग्रहण की। पैट्रआिर्क के संन्यासी बनने की खबर जल्द ही दूर-दूर तक फैल गई, और इस घटनाक्रम से हर कोई बहुत हैरान था। रानी आइरीन को गहरा दुख हुआ, क्योंकि पैट्रआिर्क ने अपने इरादे की कोई पूर्व सूचना दिए बनिा पद त्याग दयिा था। इसलिए वह अपने बेटे, ज़ार कॉन्स्टेंटनि के साथ उन्हें देखने के लिए नकिलीं, और उनसे पूछा:

'पतिाजी, आपने हमारे साथ यह क्या कयिा? आपने पतिृसत्तात्मक सहिासन क्यों छोड़ दयिा?'

पॉल ने उत्तर दयिा:

'मेरी बीमारी और मेरी नकिट मृत्यु की आशंका, और वशिेष रूप से हमारे चर्च के भीतर की परस्थितियिों ने, मुझे पैट्रआिर्क का सहिासन त्यागने और पवत्रि स्कीमा ग्रहण करने के लिए प्रेरति कयिा है।' आइकनोकलास्टों (मूर्तभिंजकों) के हाथों चर्च को बहुत कष्ट झेलना पड़ा है और मूर्तभिंजक वधिर्म के लंबे प्रचलन के परणिामस्वरूप, उसे एक लाइलाज घाव लगा है। कई अन्य लोगों की तरह, मैं, एक दीन-हीन व्यक्ति, वधिर्मी लोगों के जाल से बच नहीं सका

[2066] 'पैट्रशियिंस' रोमन साम्राज्य और बाद में बाइज़ेंटाइन साम्राज्य में सबसे ऊँची सामाजकि श्रेणी थे, जो हमारे अपने कुलीन वर्ग के अनुरूप थे।

[2067] कॉन्स्टेंटनि VI पोर्फ्योजेनटिस ने 780 से 797 तक शासन कयिा।

[2068] लेओ चौथे खज़ार ने 775 से 780 तक शासन कयिा।

[2069] कॉन्स्टेंटनि पंचम कोप्रोन्यमस ने 741 से 775 तक शाही सहिासन पर शासन कयिा।

[2070] सम्राट कॉन्स्टेंटनि की माँ, लीओ द खज़ार की पत्नी थीं। अपने बेटे के सहिासनारोहण के बाद, उन्होंने 790 तक, दस वर्षों तक उसकी ओर से राज्य पर शासन कयिा; बाद में, कॉन्स्टेंटनि के पदच्युत होने के बाद, उन्होंने 802 तक शासन कयिा।

[2071] पॉल चौथे ने 686 से 693 तक पैट्रआिर्कल सहिासन पर शासन कयिा।

[2072] लयिो तृतीय इसाउरयिन ने 716 से 741 तक शासन कयिा।

और उसमें फँस गया, जिसके लिए मैं अब कड़वे शब्दों में पश्चाताप करता हूँ; क्योंकि मैंने तीन बार अपने हाथ से विधर्मी फरमानों पर हस्ताक्षर किए। लेकिन जो बात मुझे सबसे अधिक दुख और क्लेश पहुँचाती है, वह यह है: मैं देखता हूँ कि आपके अधिकार क्षेत्र के सभी प्रदेश, यद्यपि विश्वास के नियमों का सख्ती से पालन करते हैं और ऑर्थोडॉक्स सिद्धांत का अनुसरण करते हैं, फिर भी हमारी कलीसिया से दूर भागते हैं और स्वयं को मसीह के झुंड मानकर, हमें अपने पास से भगा देते हैं, मानो हम एक ही झुंड के भेड़ें न हों। इसलिए मैं एक विधर्मी सभा के बीच चरवाहा बनने से इनकार करता हूँ और चार प्रेरितिक sees के प्रमुखों द्वारा निष्कासित किए जाने से बेहतर मुझे मृत्यु है। ईश्वर ने आपके हाथों में राजसी अधिकार इसलिए सौंपा है ताकि आप पृथ्वी पर रहने वाले ईसाई झुंड की देखभाल कर सकें। अतः अपनी माता—चर्च—के दुख को देखें और उसे अविरल शोक में रहने न दें, बल्कि यह सुनिश्चित करें कि वह अपनी पूर्व की भव्यता पुनः प्राप्त कर सके। इस अधर्मी विधर्म को, जो मैदानों में खुलेआम घूमते सूअर की तरह है, अपने शासनकाल में मसीह की दाख की बारी को तबाह और नष्ट करने न दें, और न ही उसे अपनी दुष्ट तुर्कता से कलंकित करने दें। आपके पास एक कुशल कारीगर, , हैं, जो आपके उत्कृष्ट प्रयासों में आपकी सहायता करेंगे। वे सच्चे विश्वासोक्ति की बेल को संवार सकते हैं और उसे ईश्वर की कलीसिया की मक्खन-शिला में डालकर, ज्ञान के प्याले को उससे भर सकते हैं और विश्वासियों के लिए सच्चे ऑर्थोडॉक्स विश्वास का पान तैयार कर सकते हैं।

पैट्रिआर्क के इन शब्दों के बाद, रानी आइरीन ने उनसे पूछा:

'आप किसके बारे में बात कर रहे हैं, पिताजी?'

'मैं यहाँ तारासियस का उल्लेख कर रहा हूँ, जो आपके शाही दरबार में सर्वोच्च पद पर हैं,' पादरी ने उत्तर दिया, 'मैं जानता हूँ कि वह चर्च का शासन करने के लिए पूरी तरह से योग्य हैं, क्योंकि वह अपनी बुद्धि के राजदंड से विधर्मियों की झूठी शिक्षाओं को खारिज कर सकते हैं, मसीह के वचन के झुंड के लिए एक अच्छे चरवाहे बन सकते हैं, और उसे एक साथ ला सकते हैं।'

पात्रिआर्क पॉल से यह सुनकर, धर्मपरायण महारानी आइरीन और उनके पुत्र, सम्राट कॉन्स्टेंटिन, दुख के साथ पॉल से विदा हुए। हालाँकि, उन्होंने अपने साथ बचे कुछ सेनेटर्स से कहा:

'काश! मैंने उस समय पाट्रिआर्की का सिंहासन न संभाला होता जब हमारा कॉन्स्टेंटिनोपल का चर्च अपने उत्पीड़कों के कारण उथल-पुथल में था और उसने स्वयं पर रोम, अलेक्जेंड्रिया, एंटिओक और यरूशलेम के चार सार्वभौमिक पाट्रिआर्कों का श्राप ला दिया था। जब तक कि सप्तम सार्वभौमिक परिषद का आयोजन नहीं किया जाता और प्रतिमा-भंजकों की विधर्मिता की निंदा नहीं की जाती, तब तक हमारे उद्धार होना असंभव होगा।

तब सेनेटर्स ने उससे पूछा:

'आपने पैट्रिआर्क के रूप में अपने अभिषेक के समय प्रतिमा-विरोधियों के चार्टर पर हस्ताक्षर क्यों किए?'

पॉल ने उत्तर दिया:

'यही वह कारण है कि मैं अब उस पर हस्ताक्षर करने का पश्चाताप करता हूँ, और मुझे डर है कि प्रभु मुझे दंडित करेंगे, क्योंकि डर के मारे मैं चुप रहा और विधर्म का विरोध नहीं किया; लेकिन अब मैं पश्चाताप करता हूँ और घोषणा करता हूँ कि यदि आप विधर्म पर अड़े रहते हैं तो आपका उद्धार नहीं हो सकता।'

कुछ ही समय बाद, पैट्रिआर्क पॉल का प्रभु में शांतिपूर्वक निधन हो गया। उस समय, कॉन्स्टेंटिनोपल के निवासियों ने बिना किसी भय या आशंका के, विधर्मी लोगों के साथ पवित्र प्रतिमाओं के बारे में चर्चा और बहस करना शुरू कर दिया, जबकि तब तक, लियो द इसाउरियन के समय से, किसी ने भी पवित्र प्रतिमाओं के बचाव में बोलने की हिम्मत नहीं की थी[2073] ।

धर्मनिष्ठ सम्राज्ञी आइरीन ने, पूरी शाही परिषद के साथ मिलकर, पॉल के उत्तराधिकारी के रूप में एक ऐसे व्यक्ति की तलाश शुरू की, जो चर्च के भीतर के उथल-पुथल को समाप्त कर सके; लेकिन उन्हें तारासियस के अलावा कोई और नहीं मिला। उस समय तारासियस एक धर्मनिरपेक्ष व्यक्ति थे; लेकिन जब उन्हें याद आया कि पॉल ने स्वयं उन्हें चुनने की सलाह दी थी, तो सभी की पसंद उन्हीं पर ठहरी। लेकिन तारासियस ने दृढ़ता से इनकार कर दिया। तब रानी आइरीन ने हर पद के लोगों—साधारण और पादरियों—और सभी जनता को मैग्नावरा नामक महल में इकट्ठा किया—जो

[2073] यह इस तथ्य से स्पष्ट होता है कि उस समय आइरीन ने सार्वभौमिक अंतरात्मा की स्वतंत्रता की घोषणा करते हुए एक फरमान जारी किया था। सम्राज्ञी के आदेश पर, आइकॉन्स को उनके स्थानों पर वापस कर दिया गया, और उत्सव मना रहे लोगों के बीच अतीत की पीड़ाओं और चमत्कारों की कई कहानियाँ थीं।

एडोम स्थल पर उपनगरों में स्थति था—और पूरे पवत्रि सनिड के सामने उन्होंने कहा: 'जैसा कि आप जानते हैं, पैट्रआर्क पॉल हमें छोड़कर चले गए हैं; अब हमें उनकी जगह लेने के लिए चर्च का एक और अच्छा चरवाहा और शक्षिक चुनना होगा।'

इतना सुनते ही सभी चल्लिा उठे:

'यह तारासयिस के अलावा कोई और नहीं हो सकता।'

मध्य में खड़े धन्य तारासयिस ने कहा:

मैं देखता हूँ कि ईश्वर की कलीसयिा वभिाजति और असम्बद्ध है। पूर्वी और पश्चमिी दोनों मसीही हमें शाप देते हैं; यह असम्बद्धता एक भारी बोझ है, और ईश्वर के राज्य से बहष्किार एक भयानक बात है। एक सार्वभौमकि परषिद बुलाई जाए, जहाँ हमें वश्विास में एकता करनी चाहए; हमारा वश्विास एक हो, जैसे हम एक ही बपतस्मिा से प्रबुद्ध हुए हैं; क्योंकि परमेश्वर की दृष्टि में सभी का वश्विास और प्रेम की एकता में बने रहना इससे अधकि प्रसन्न करने वाला कुछ भी नहीं है। मैं, यद्यपि अयोग्य और अनुभवहीन हूँ, चर्च के शासन को अपने ऊपर लेते हुए, यही मांग करता हूँ। यदि एक सार्वभौमकि परषिद नहीं बुलाई जाती है, यदि मूर्तभिंजक वधिर्म की उचति रूप से नदिा नहीं की जाती है, और यदि ऑर्थोडॉक्स पूर्वी और पश्चमिी चर्चों के बीच वश्विास की एकता नहीं होती है, तो मैं पैट्रआर्केट स्वीकार करने के लिए सहमत नहीं होऊँगा, कहीं ऐसा न हो कि मैं अपने ऊपर शाप और नदिा ला दूँ, क्योंकि तब कोई भी सांसारकि राजा मुझे ईश्वर के न्याय और अनंत दंड से नहीं बचा सकता।

यह सुनकर, उन्होंने सभी ने सप्तम सार्वभौमकि परषिद बुलाने का संकल्प लयिा और संत तारासयिस से वनिती की कि वे उनके चरवाहे बनने से इनकार न करें। उन्होंने उन्हें पूर्ण आज्ञाकारति का वादा कयिा, ठीक वैसे ही जैसे ईसा मसीह के भेड़ें अपने चरवाहे की आवाज़ मानती हैं, क्योंकि वे दृढ़ता से वश्विास करते थे कि संत तारासयिस वचन के झुंड को सही मार्ग पर ले जा सकते थे। इस प्रकार, उन्होंने तारासयिस को प्राइमेट का पद और कॉन्स्टेंटनिोपल के चर्च के शासन को स्वीकार करने के लिए मना लयिा। सभी पदानुक्रमति पदों से लगातार अभषिक्ति होने के बाद, संत को पैट्रआर्केट[2074] के पद पर पदोन्नत कयिा गया, इस दृढ़ आशा के साथ कि प्रभु उन्हें आइकनोक्लास्टों के संप्रदाय को उखाड़ फेंकने में मदद करेंगे।

इस दर्जे में बदलाव के साथ, संत तारासयिस ने अपने जीवन के तरीके को भी बदल दयिा, हालाँकि पहले भी, दुनयिा में रहते हुए, वह आत्मा में पहले से ही एक भक्षिु थे; लेकनि अब, पैट्रआर्कात्मक सहिासन पर आरोहण करने के बाद, उन्होंने आध्यात्मकि तपस्या के लिए और भी अधकि उत्साह के साथ खुद को समर्पति कर दयिा और देह में एक स्वर्गदूत बन गए, जो पवत्रि आत्मा से प्रज्वलति थे, प्रभु के सामने उत्साहपूर्वक परश्रिम करते हुए, अपने शरीर को आत्मा के अधीन करते हुए और उसे दबोचकर उस नर्मिल पवत्रिता को प्राप्त करते हुए, जसिमें स्वर्गदूतों को वस्त्र पहनाए जाते हैं। उनका संयम आश्चर्यजनक, उनका तपस्या-भाव महान और उनका उत्साह अटूट था; वे सोने के लिए केवल कुछ ही घंटे नकिालते थे, और पूरी-पूरी रातें प्रार्थना और ईश्वर के चंतिन में बताते थे; उनके पास कोई नरम बस्तिर नहीं था और वे नरम वस्त्रों से दूर रहते थे। पैट्रआर्क के कसिी भी परचिारक ने कभी भी तारासयिस को अपनी कमरबंद या वस्त्र उतारते हुए नहीं देखा जब वह थोड़ी देर की नींद से अपनी शक्ति पुनर्स्थापति करना चाहते थे; उस पवत्रि पुरुष ने कभी भी कसिी और को अपने पैरों से जूते उतारने नहीं दिए, उद्धारकर्ता के इन शब्दों को ध्यान में रखते हुए: *'मनुष्य का पुत्र सेवा कराए के नहीं, परन्तु सेवा करे के आया'* (मत्ती 20:28), और वह हमेशा स्वयं सेवा करते थे, दूसरों के लिए नम्रता का उदाहरण स्थापति करते हुए। वे गरीबों और बेसहारों के प्रति अत्यंत दयालु थे; उन्होंने भूखे को भोजन कराया, बेसहारों को वस्त्र पहनाए, अस्पतालों की स्थापना की, और अपने पैट्रआर्कल दरबार से प्रतदिनि भोजन का वतिरण कयिा; और मसीह के पुनरुत्थान के दनि और अन्य पर्वों के दनिों में, उन्होंने गरीबों के लिए एक भोज का आयोजन कयिा, जसिमें वे स्वयं बेसहारों की सेवा करते थे। इसके अलावा, संत तारासयिस ने आश्रय-गृह स्थापति कए और अपने माता-पति द्वारा छोड़े गए धन का उपयोग करके थ्रेसयिन बोस्फोरस पर एक मठ की स्थापना की[2075] , जहाँ उन्होंने सदाचारी भक्षिुओं का एक समुदाय इकट्ठा कयिा; जनिमें से कई ने इतनी पूर्णता प्राप्त की कि उन्हें बशिप के पद पर बुलाया गया और वे कैथोलकि धर्म के अटूट स्तंभ बन गए। संत तारासयिस ने पवत्रि प्रतमिाओं की पूजा को बहाल करने और अपमानजनक

[2074] संत तारासयिस ने 784 से 806 तक पैट्रआर्क का पद संभाला।

[2075] यह ब्लैक सी को मार्मारा सागर से जोड़ने वाले जलडमरूमध्य का नाम है। कॉन्स्टेंटनिोपल बोस्फोरस के तट पर स्थति है।

प्रतिमा-विरोधी विधिरम को उखाड़ फेंकने के लिए विशेष ध्यान दिया। इसी कारण, उन्होंने सम्राटों पर लगातार एक सार्वभौमिक परिषद बुलाने का आग्रह किया।

और इस प्रकार सम्राट कॉन्स्टेंटिन और उनकी माता महारानी आइरीन—जो अपने पुत्र की कम उम्र के कारण उस समय पूरे साम्राज्य पर शासन कर रही थीं—ने परम पावन तारासियस के साथ मिलकर सभी पैट्रिआर्क और बिशपों को पत्र लिखे, जिसमें उन्हें परिषद में बुलाया गया। विभिन्न स्थानों के बिशप कॉन्स्टेंटिनोपल में एकत्रित हुए, जबकि पैट्रिआर्क ने अपने प्रतिनिधियों को भेजा: रोम के पोप एड्रियन[2076] ने लंबी यात्रा की कठिनाइयों के कारण परिषद में व्यक्तिगत रूप से भाग नहीं लिया; जबकि उस समय अलेक्जेंड्रिया, एंटिओक और यरूशलेम के पैट्रिआर्क पहले से ही अगारियन के अधीन थे, और इसलिए वे व्यक्तिगत रूप से परिषद में शामिल नहीं हो सके; परिणामस्वरूप, उन्होंने अपने प्रतिनिधियों के रूप में अपनी भक्ति और बुद्धिमानी के लिए प्रसिद्ध पुरोहितों को भेजा।

[2077][2078]महा चर्च[2079] , जिसे कॉन्स्टेंटाइन महान ने बनवाया था और सम्राट जस्टिनियन[2080] द्वारा भव्य रूप से सुसज्जित किया गया था, को परिषद की कार्यवाही के लिए स्थल चुना गया था; इसी चर्च में बिशप और अन्य पैट्रिआर्क के प्रतिनिधि परम पावन तारासियस के साथ एकत्रित हुए; युवा सम्राट कॉन्स्टेंटाइन भी अपनी माँ आइरीन के साथ वहां मौजूद थे। अचानक, सशस्त्र सैनिकों का एक बड़ा दल चर्च में घुस आया; वे मूर्तिभंजन की विधिरम के अनुयायी थे, जिसमें उन्हें ज़ार के दादा, कॉन्स्टेंटिन कॉप्रोन्यमस ने खींचा था, और जिसमें वे आज तक बने रहे। कुछ बिशपों और कुलीनों द्वारा, जो उसी विधिरम से प्रभावित थे, गुप्त रूप से उकसाए गए इन सैनिकों ने—जो प्रतिमा-भंजन के भ्रम में पूरी तरह डूबे हुए थे—हथियारबंद होकर चर्च आए और बड़े शोर-शराबे के साथ अंदर घुस पड़े। वे चिल्लाए, 'हम आपको ज़ार कॉन्स्टेंटिन के धर्मसिद्धान्तों को अस्वीकार करने नहीं देंगे; जो कुछ उन्होंने अपनी परिषद में स्थापित और आदेशित किया, वह दृढ़ और अटूट बना रहे; हम ईश्वर के घर में मूर्तियों (जैसा कि वे पवित्र प्रतिमाओं को कहते थे) को लाने की अनुमति नहीं देंगे; और यदि किसी ने कॉन्स्टेंटिन कॉप्रोन्यमस की परिषद के आदेशों की अवज्ञा करने की हिम्मत की और उसके फैसलों को खारिज कर मूर्तियाँ लाना शुरू किया, तो यह भूमि बिशपों के रक्त से रंजित हो जाएगी।'

ऐसी उथल-पुथल और हंगामा देखकर, महारानी और सम्राट ने बिशपों को अपनी सीटों से उठने का इशारा किया – और फिर परिषद में उपस्थित सभी लोग तितिर-बितिर हो गए। लेकिन कुछ दिनों बाद, धर्मपरायण रानी आइरीन द्वारा सैनिकों और उनके नेताओं को उचित दंड दिया गया; उन्हें उनके सैन्य पदों से हटा दिया गया और जमीन पर काम करने के लिए गांवों में भेज दिया गया। इसके बाद, बिथुनिया के निकिया शहर में परिषद के सत्रों के लिए एक स्थान तैयार किया गया[2081] । यहीं पर पहले सार्वभौमिक परिषद पहले ही हो चुकी थी, जिसे दुष्ट एरियस की विधिरम की निंदा करने के लिए बुलाया गया था[2082] , और यहीं पर एक बार फिर मिलने का निर्णय लिया गया था। और इस प्रकार परम पावन तारासियस, कॉन्स्टेंटिनोपल के पैट्रिआर्क, यहाँ पैट्रिआर्शल विकारों के साथ पहुँचे, जो थे: एड्रियन से, रोम के पोप – रोम के मुख्य पुरोहित, पीटर, और एक अन्य पीटर, एक भिक्षु; पॉलीकियन, अलेक्जेंड्रिया के पैट्रिआर्क[2083] – मठवासी पुरोहित थॉमस; थियोडोरेट ऑफ़ एंटीओक[2084] और यरूशलेम के एलियास[2085] – मठवासी पुरोहित जॉन। इसके अतिरिक्त, संत तारासियस ने शाही सलाहकारों में से एक व्यक्ति – निकिफोरस – को भी अपने साथ लिया, जिन्हें संत तारासियस की मृत्यु के बाद उनके पुण्य जीवन की मान्यता में पैट्रिआर्कल सिंहासन पर पदोन्नत किया गया। कुल मिलाकर, 367 पवित्र

[2076] पोप एड्रियन प्रथम ने 772 से 795 तक रोम की प्रेरितिक सीट पर कार्य किया।

[2077] यह, बेशक, कॉन्स्टेंटिन कॉप्रोन्यमस को संदर्भित करता है, जो कॉन्स्टेंटिन पोर्फियोगेनिटिस के दादा थे।

[2078] यह परिषद 754 में बोस्फोरस के एशियाई तट पर कॉन्स्टेंटिनोपल के पास शाही महल में हुई थी। परिषद ने घोषणा की कि प्रतिमाओं की पूजा मूर्तिपूजा के समान थी और आदेश दिया कि सभी चर्चों से प्रतिमाओं को हटा दिया जाए।

[2079] स्वाभाविक रूप से, संत सोफिया का चर्च, कॉन्स्टेंटिनोपल का मुख्य कैथेड्रल।

[2080] सम्राट जस्टिनियन प्रथम ने 527 से 565 तक शासन किया।

[2081] बिथिनिया – एशिया माइनर का एक उत्तर-पश्चिमी प्रांत, जो मारमारा सागर, बोस्फोरस और काला सागर के तटों पर स्थित था। निकिया (अब इस्पीक) – प्राचीन काल में, बिथिनिया का एक समृद्ध और फलता-फूलता शहर था।

[2082] यह वर्ष 325 में हुआ था।

[2083] पोलिशियन, अलेक्जेंड्रिया के पैट्रिआर्क, का 801 में निधन हो गया।

[2084] थियोडोरेट, एंटिओक के पैट्रिआर्क, ने 777 से 794 तक पैट्रिआर्क का पद संभाला।

[2085] एलियह तृतीय, यरूशलेम के पैट्रिआर्क, की मृत्यु 797 में हुई।

पतिाओं ने इस परषिद में भाग लयिा। नकियिा में उनके साथ एकत्रति होकर, परम पावन पैट्रआिर्क तारासयिस ने शहर के सबसे बड़े चर्च[2086] में परषिद की कार्यवाही का उद्घाटन कयिा।

सातवें सार्वभौमकि परषिद का पहला सत्र 24 सतिंबर को, प्रथम शहीद संत थेक्ला के पर्व के दनि आयोजति कयिा गया था। सत्र की शुरुआत संत तारासयिस के एक परचियात्मक भाषण से हुई, जसिमें उन्होंने परषिद बुलाने के कारण बताए और बशिपों से नष्पिक्ष रूप से वचिार-वमिर्श करने तथा हाल ही में चर्च में प्रवेश कर चुकी गैर-पारंपरकि शक्षिाओं को जड़ से उखाड़ फेंकने का आग्रह कयिा। परषिद को एक शाही संदेश भी पढ़कर सुनाया गया, जसिमें उल्लेख था कि कैसे पैट्रआिर्क पॉल ने अपने अंतमि समय में सलाह दी थी कि प्रतमिा-भंजकों के वधिर्म को जड़ से उखाड़ने के लिए एक परषिद बुलाई जाए। पवत्रि पतिाओं ने रूढ़िवादी धर्म के प्रति उनकी महान देखभाल के लिए ज़ार और उनकी माँ को आशीर्वाद दयिा। इसके बाद, उन्होंने वधिर्म में पड़े बशिपों से पश्चाताप की अभव्यिक्ति सुनी, जन्हिोंने अपनी पछिली गलतयिों पर पाबंदी लगाई और रूढ़िवादी धर्म की घोषणा की। उनमें से एक – एंकीरा के बेसलि[2087] – ने इस पांडुलपिि को अपने हाथों में पकड़कर पढ़ा: 'उन लोगों पर नंदिा जो पवत्रि प्रतमिाओं की पूजा नहीं करते; नंदिा उन लोगों पर जो पवत्रि प्रतमिाओं को मूर्तयिाँ कहते हैं; नंदिा उन लोगों पर जो पवत्रि प्रतमिाओं की पूजा के वरिुद्ध पवत्रि धर्मग्रंथों से उद्धरण देते हैं; जो पवत्रि पतिाओं की परंपराओं को अस्वीकार करते हैं, जैसे कि एरयिस, नेस्टोरयिस, यूटकिस और डयिोस्कोरस ने उन्हें अस्वीकार कयिा था – उन पर शाप हो; जो यह दावा करते हैं कि प्रतमिाओं की पूजा पवत्रि पतिाओं से उत्पन्न नहीं हुई है – उन पर शाप हो; जो यह दावा करते हैं कि कैथोलकि चर्च मूर्तयिों को स्वीकार करती है – उन पर शाप हो'।

कई अन्य बशिपों ने भी इसी तरह काम कयिा, और जो भी बशिप पश्चाताप कर लेते थे, उन्हें अन्य ऑर्थोडॉक्स बशिपों के बीच परषिद में एक स्थान प्रदान कयिा गया। हालांकि, जो लोग हचिकचिाए थे, उनके फैसले को कुछ समय के लिए स्थगति कर दयिा गया था। इस संबंध में, संत तारासयिस ने कहा: 'पुरानी बीमारयिों का इलाज करना मुश्कलि होता है, और बुरी आदतों को जड़ से मटिाना मुश्कलि होता है। लेकनि यदि जो लोग आध्यात्मकि रूप से अस्वस्थ हैं, वे वास्तव में पश्चाताप करते हैं, तो पवत्रि परषिद उन्हें स्वीकार करती है और उन्हें उनके पद से वंचति नहीं करती है।'

पवत्रि परषिद 30 दनिों तक चली[2088] ; इस दौरान, प्रतभिागी पवत्रि धर्मग्रंथों और चर्च के पवत्रि पतिाओं और शक्षिकों की शक्षिाओं में उन अंशों की जांच करने के लिए एकत्रति हुए, जो पवत्रि प्रतमिाओं की पूजा से संबंधति सद्धिांत से संबंधति थे, और पवत्रि धर्मग्रंथ और चर्च की परंपरा के आधार पर, वधिर्मयिों के वकिृत तर्क का खंडन कयिा। ऐसा करते हुए, उन्होंने उस पवत्रि वस्त्र के प्रामाणकि वृत्तांत का हवाला दयिा जसि पर प्रभु मसीह ने अपनी पवत्रि छवि अंकति की और इसे एडसा के अब्गार को भेजा[2089] ; जो केवल , छवि के सामने झुककर, अपनी बीमारी से तुरंत ठीक हो गया[2090] ; उन्होंने पवत्रि प्रेरतिों पतरस और पौलुस की प्रतमिा के संबंध में परंपरा को भी याद कयिा, जसि रोम के पोप संत सल्विेस्टर ने सम्राट कॉन्स्टेंटनि को दखिाया था; उन्होंने मसीह की उस प्रतमिा के बारे में भी बात की, जसि यहूदयिों ने बेरूत में अपवत्रि कयिा था, जसिके लिए उन्हें दंडति कयिा गया था; उन्होंने याद कयिा कि कैसे संत अथेनासयिस इस बात की गवाही देते हैं। जब इस प्रतमिा का वृत्तांत पढ़ा गया, तो सभी पवत्रि पतिाओं ने रोया। अंत में, उन्होंने प्रतमिा-भंजकों के वधिर्म की नंदिा की और पवत्रि प्रतमिाओं की पूजा की पुष्टि की; इस अवसर पर पवत्रि गरिजाघरों में बहुत आनंद हुआ, जन्हिोंने प्रतमिा पूजा की पुष्टि को हार्दकि प्रसन्नता के साथ स्वीकार कयिा, और सभी लोगों ने राजाओं और पादरयिों को अपनी शुभकामनाएँ देते हुए उत्सव मनाया। इस प्रकार, परम पावन पैट्रआिर्क तारासयिस की महान देखभाल और धर्मनष्ठि रानी आइरीन की लगन के माध्यम से, प्रतमिा-भंजकों के वधिर्म को खारजि कर दयिा गया और रौंद दयिा गया, और मसीह की कलीसयिा को शांति प्रदान की गई।

संत तारासयिस ने ईश्वर के चर्च का बुद्धमिानीपूर्वक शासन कयिा; वह उत्पीड़तिों के पक्षधर और संकटग्रस्तों के सहायक थे। इस प्रकार, शाही प्रोटोस्पैथारयिोस[2091] जॉन को कसिी अपराध के लिए कैद कर दयिा गया और अत्यंत

[2086] यह वर्ष 787 का था।

[2087] एन्सीरा एशयिा माइनर के एक केंद्रीय प्रांत, फ्रीजयिा में एक शहर है।

[2088] परषिद का अंतमि सत्र 23 अक्टूबर को हुआ।

[2089] एडेसा मेसोपोटामयिा के उत्तर-पश्चमिी भाग में, फरात नदी के पार एक शहर है। अवगर एडेसा का राजकुमार या शासक था।

[2090] यह ववरिण पलेस्टाइन के केसरयिा के बशिप यूसेबयिस († 383), जो प्रारंभकि ईसाई चर्च के प्रसद्धि इतहिासकार थे, द्वारा दर्ज कयिा गया है, जन्हिोंने इसे एडेसा शहर के सार्वजनकि अभलिेखागार में संरक्षति प्राचीन लखिति अभलिेखों से लयिा था।

[2091] प्रोटोस्पैथारयिस – शाही अंगरक्षकों, या सेवकों का कमांडर, जन्हिें स्पैथारी (स्पैथी – हथयिार, तलवार से) कहा जाता था।

क्रूर यातनाएँ दी गईं; रात में अपनी बेड़ियों से मुक्त होकर, वह चर्च में भाग गया और भोजनशाला में शरण ली, दया और मृत्यु से मुक्ति की याचना करते हुए। तब परमेश्वर के पवित्र पुरुष, तारासियस ने, उसकी रक्षा की और उसे रानी आइरीन द्वारा भेजे गए सैनिकों के सामने नहीं सौंपा, जो उसे गिरफ्तार करने आए थे। उन्होंने उस चर्च के दरवाजों पर दिन-रात उसकी पहरेदारी करनी शुरू कर दी, इस क्षण की प्रतीक्षा में कि वह कब बाहर निकलेगा। क्योंकि वे सोचते थे कि, अंततः वह चर्च छोड़ने के लिए मजबूर हो जाएगा। लेकिन ईश्वर के उस पवित्र पुरुष ने, उसे अपने भोजन में से भोजन भेजकर, उसे चर्च के गर्भगृह के भीतर रहने में सक्षम बनाया; और जब भी उसे चर्च से बाहर निकलना आवश्यक होता था, तो वे स्वयं उसे अपने चोगा के नीचे छिपाकर साथ ले जाते, और फिर उसी सावधानी के साथ उसे चर्च में वापस छोड़ देते। उन्होंने लंबे समय तक इस तरह काम किया और उस व्यक्ति की दास के रूप में सेवा की, ऐसे कार्य से इनकार नहीं किया। और उस भले चरवाहे ने अपनी भेड़ का पालन-पोषण किया, उसे मृत्यु से बचाया; अंततः अपने बिशप के अधिकार के बलबूते, संत तारासियस ने साहसपूर्वक उन षड्यंत्रकारियों की साजिशों को रोक दिया जो उसके संरक्षण में रहने वाले व्यक्ति को मारना चाहते थे: उन्होंने उन्हें घोषणा की कि यदि वे कैदी को सताते रहे तो वह उन्हें चर्च से बहिष्कृत कर देंगे। इस प्रकार, अपने अच्छे चरवाहे, संत तारासियस के हस्तक्षेप की बदौलत, उस प्रोटोस्पैथारियो को बरी कर दिया गया और वह मृत्युदंड से बच गया।

इस बीच, बीस वर्ष की आयु प्राप्त करने पर, अपने दुष्ट सलाहकारों की बदनाम करने वाली सलाह पर, राजा कॉन्स्टेंटिन ने अपनी माता, धर्मपरायण रानी आइरीन—जिन्होंने बुद्धिमानी से पूरे राज्य पर शासन किया था—को सत्ता से हटा दिया, और अकेले शासन करना शुरू कर दिया। इस प्रकार अपनी माता की संरक्षकता से मुक्त होकर, वह विलासिता में डूब गया और एक अनैतिक जीवन जीने लगा। बिना किसी कारण के, वह अपनी वैध पत्नी, रानी मारिया से नफरत करने लगा[2092] , और थियोडोटा नाम की एक दूसरी महिला के प्रति अपराधी जुनून में डूब गया; वह उसके साथ गुप्त रूप से रहने लगा और अपनी वैध पत्नी को कैद करके उसे अपनी पत्नी और रानी बनाने का संकल्प लिया। मारिया पर झूठा आरोप लगाने के लिए, उसने उन पर यह झूठा आरोप लगाया कि उन्होंने उसे जहर देकर मारने की कोशिश की थी। राजा ने इस झूठ को सभी के सामने सच के रूप में पेश किया और सभी को इसके बारे में बताया। लोगों ने राजा पर विश्वास किया, और लोगों के बीच रानी द्वारा उसे जहर देने के इरादे की अफवाहें फैल गईं। इसकी खबर महाधर्माध्यक्ष तारासियस तक पहुँची। महाधर्माध्यक्ष राजा की इस विश्वासघात को जानकर दुखी हुए, क्योंकि उन्हें रानी मैरी की बेगुनाही पर पूरा भरोसा था। इसलिए उन्होंने यह सोचना शुरू कर दिया कि वे कांस्टेंटिन को कैसे होश में लाएँ और उसे उसके पाप और झूठ का एहसास कराएँ। उस समय, राजा के एक पसंदीदा कुलीनों में से एक पवित्र पादरी के पास आया और झूठ को सच के रूप में पेश करते हुए यह खबर सुनाने लगा कि रानी ने राजा के लिए जहर तैयार किया था। अपने बयान के अंत में, उसने कहा: 'अब, हे परम पवित्र पिता, यह आपकी जिम्मेदारी है कि आप राजा के अपनी सबसे वफादार पत्नी के साथ नए विवाह को आशीर्वाद दें।'

ये शब्द संत तारासियस को बहुत दुखी कर गए; उन्होंने आँसू भी बहाए और इस प्रकार कहना शुरू किया: 'यदि ज़ार ने वास्तव में वही सोचा है जो आप कह रहे हैं, यदि वह सचमुच मारिया को त्यागना चाहता है, जो ईश्वर के विधान के अनुसार उससे विवाहित है और उसके साथ एक देह है, तो मुझे नहीं पता कि वह सभी लोगों की लज्जा और निंदा को कैसे सहन करेगा?' यह भी मुझे चकित करता है कि वह इसके बाद अपने प्रजा के लिए पवित्रता का उदाहरण कैसे बन सकता है; वह सभी को संयम का अभ्यास करने के लिए कैसे प्रेरित कर सकता है? क्या वह वास्तव में व्यभिचार के पापों का न्याय करने और उन्हें दंडित करने में सक्षम होगा, जबकि वह स्वयं ऐसी अवैध वासना से ग्रस्त है? मान लीजिए कि आपने जो कुछ भी कहा है वह सब सच है, लेकिन निस्संदेह हमें प्रभु की इस वाणी पर ध्यान देना चाहिए: *''जो कोई अपनी पत्नी को व्यभिचार के सिवाय तलाक देता है, वह उसे व्यभिचार करने के लिए मजबूर करता है*' (मत्ती 5:32)। और क्या यह सचमुच सच है कि रानी ने राजा के लिए एक घातक जहर तैयार किया था? क्योंकि अगर ऐसा होता, तो क्या वह संभवतः हमारे शासक से अधिक बहादुर और सुंदर किसी दूसरे पति की हो सकती थी, जो अपनी सुंदरता और खिलती जवानी के लिए प्रसिद्ध है? नहीं, मैं स्पष्ट रूप से देख सकता हूँ कि ये सभी झूठ केवल एक पवित्र विवाह का अपमान करने, एक निर्दोष शय्या को कलंकित करने, और व्यभिचार को विजयी बनाने के उद्देश्य से हैं। यही मेरा उत्तर है, और यह केवल मेरा व्यक्तिगत उत्तर नहीं है, बल्कि मेरे जैसे सभी पादरियों और पिताओं का भी। तुम्हें भेजने वालों से कह दो कि हम तुम्हारी

[2092] यह धर्मपरायण रानी, 1 दिसंबर को मनाए जाने वाले संत फिलारेट द मर्सीफुल की पोती थीं।

बातों पर वशि्वास नहीं करते; हम ऐसे अनुचति कार्य को अपनी सहमतदिने की बजाय मृत्यु और भयंकर यातनाएँ सहने को अधकि तैयार हैं। राजा को बता दो कहिम उसकी अधर्मी योजना को स्वीकार नहीं करते।'

यह सुनकर, कुलीन व्यक्तभिारी मन से पैट्रआिर्क के पास से चला गया और उसने राजा को वह सब कुछ बताया जो उसने धन्य तारासयिस से सुना था। तब राजा संदेह में पड़ गया, और वह पैट्रआिर्क के दृढ़ संकल्प और नडिर उत्साह से चकति रह गया; उसे यह डर भी सताने लगा कसिंत तारासयिस उसके उद्देश्य को प्राप्त करने में बाधा डाल सकते हैं। इसलएि उसने उस संत को अपने दरबार में बुलाने और सम्मानपूर्वक स्वागत करने का नशि्चय कयिा, इस आशा में कि उनके शब्द पैट्रआिर्क के हृदय को नरम कर देंगे और उन्हें अपने पक्ष में कर लेंगे।

पैट्रआिर्क संत तारासयिस, सम्माननीय एल्डर जॉन के साथ सम्राट के पास आए, जनि्होंने सातवें सार्वभौमकि परषिद में एंटओिक और यरूशलेम के पैट्रआिर्कों के प्रतनिधिकि रूप में कार्य कयिा था। जब कांस्टेंटनि और उनके साथयिों ने, जैसा कि प्रथा थी, अपनी सीटें ले लीं, तो सम्राट ने पैट्रआिर्क से नम्निलखिति शब्दों में संबोधति कयिा: 'मैंने आपको पहले ही, अतसिम्माननीय पति, एक दूत के माध्यम से सूचति कर दयिा है कहिमारे साथ क्या हुआ है। मैं आपको एक पति के रूप में सम्मान और आदर देता हूँ, और इसलएि आपसे कुछ भी छपिाना नहीं चाहता। लेकनि मैं आपको व्यक्तगित रूप से उस शत्रुता और उन षड्यंत्रों के बारे में सूचति करना आवश्यक समझता हूँ जो मेरी पत्नी मेरे खलिाफ रच रही है। ईश्वर ने मुझे वह नहीं दी है; क्योंकि उसे मेरी सहायक होना चाहएि था, परन्तु वह मेरे लएि सहायक नहीं, बल्कि मेरी सबसे बड़ी शत्रु साबति हुई है। स्वयं कानून मुझे उससे अलग होने का आदेश देता है, और कोई भी मेरे इरादे के रास्ते में नहीं आ सकता। क्योंकि उसका अपराध और उसकी दुर्भावना सभी के देखने के लएि स्पष्ट है। अत; न्यायालय के नर्णिय के अनुसार, उसे या तो मृत्युदंड भुगतना होगा या भक्षिुणी बनाकर सरि मुंडवाना होगा। दया दखिाने की इच्छा से, मैं उसे केवल एक मठ में बंद करने के लएि तैयार हूँ: उसे अपने अपराध पर अपनी मृत्यु के दनि तक शोक और पश्चाताप करने दो। आखरिकार, उसने न तो कसिी आम व्यक्तकिो, न ही कसिी अजनबी को, बल्कि अपने पति, ज़ार को जहर देने की कोशशि की, जो अपने दुश्मनों के लएि एक ख़तरनाक दुश्मन है। अगर उसकी घनिौनी साज़शि सफल हो जाती, तो पूरा राज्य भारी उथल-पुथल में पड़ जाता, और उसके दुष्कर्म की अफ़वाहें दूर-दूर तक फैल जातीं।'

जैसे ही उन्होंने ये अंतमि शब्द कहे, राजा ने अपने नौकरों को इशारा कयिा। वे तुरंत एक शीशे का पात्र लेकर आए जसिमें कुछ धुंधला तरल था। राजा ने उसे महामहमि पैट्रआिर्क को दखिाते हुए कहा कि यह वही घातक जहर है जसिसे रानी ने गुप्त रूप से उसकी जान लेने की कोशशि की थी।

उन्होंने आगे कहा: 'जब हमारे हाथों में उसकी दुष्ट मंशा का यह साधन है, तो क्या हमें रानी के अपराध का और कोई सबूत चाहएि? क्या यह स्पष्ट नहीं है कि वह क्या заслуживаती है? तो फरि, हम उसका मुकदमा और क्यों टालें? नहीं, फादर, अगर आप उसे जीवति देखना चाहते हैं तो तुरंत उसे परदा डालने की सलाह दें। मैं अब उसके पति के रूप में उसके साथ नहीं रह सकता; मैं उसे देख भी नहीं सकता; मैं उसकी मौजूदगी सहन नहीं कर सकता, क्योंकि मेरी आँखों के सामने लगातार वह घातक जहर घूमता रहता है जो उसने मेरे लएि तैयार कयिा था।'

जब उन्होंने देखा कि राजा अशुद्ध वासना से ग्रस्त था, और यह महसूस करते हुए कि उसने अपनी इच्छा को पूरा करने के लएि नर्दिोष और पवत्रि रानी पर अन्यायपूर्ण आरोप लगाया था, तो परम पावन तारासयिस ने बनिा कसिी डर के उससे कहा:

'हे राजा, स्वयं ईश्वर द्वारा स्थापति कानून के वरिुद्ध युद्ध न छेड़ो; चालाकी भरी रचना के पीछे छपिकर सत्य के वरिुद्ध गुप्त वशि्वासघात न करो, और ईश्वर की आज्ञाओं का उल्लंघन और उनका नाश न करो। एक राजा के लएि यह उचति है कि वह सभी कार्य खुलेआम, स्वतंत्र रूप से और स्पष्ट ववि्क से करे; उसे ईश्वर के वरिुद्ध, जसिने उस पर राजसी मुकुट प्रदान करके दव्यि आज्ञाओं का उल्लंघन कयिा है, कुछ भी गुप्त रूप से या वशि्वासघात से नहीं करना चाहएि। यह सभी के लएि स्पष्ट है कि रानी उस आरोप से पूरी तरह से नर्दिोष हैं जो उन पर लगाया गया है, अर्थात् कि उन्होंने राजा को मारने की साजशि रची। क्योंकि सुंदरता के मामले में आपकी बराबरी कौन कर सकता है? वह आपसे अधकि कसिी से इतना प्रेम कैसे कर सकती थी, कि वह आपको जहर देने जैसा बुरा वचिार अपने मन में रखती? आपसे अधकि अधकिार कसिके पास है या आपसे अधकि सम्मान कसिे प्राप्त है? कुलीनता और धन के मामले में, आपसे श्रेष्ठ कौन है—आप, जनि्हें राजसी शक्तऔिर गरमिा से सम्मानति कयिा गया है और जो महान धन के स्वामी हैं—रानी संभवतः कसिे प्राथमकिता दे सकती थी? आपकी शक्तमिहान है; आप कुलीनता में सभी से श्रेष्ठ हैं, क्योंकि आपके पति, दादा और परदादा सभी राजसी सहिासन पर वरिाजमान रहे हैं; आप पृथ्वी भर में प्रसद्धि हैं, और आपके खजाने अनगनित हैं।

तो फरि, रानी के लिए आपसे बेहतर कौन हो सकता है? नहीं, हे राजा, जो आप कह रहे हैं वह सच नहीं हो सकता; यह एक झूठ है, जिसे आपकी शाही शक्ति को कमजोर करने और आपको राष्ट्रों के बीच मज़ाक का पात्र बनाने के लिए रचा गया है, ताकि आप लोगों के बीच एक कहावत बन जाएँ। हम आपके वैध विवाह को नष्ट करने की हिम्मत नहीं करते, क्योंकि हम ईश्वर के न्याय से डरते हैं, और हम उन अफवाहों पर विश्वास नहीं कर सकते जिनसे वे राजा की रानी की बदनामी करना चाहते हैं। नहीं, हम ऐसा नहीं करेंगे, भले ही हमें यातना और पीड़ा सहनी पड़े। हम जानते हैं कि आप एक विशेष महिला के लिए पापी वासना रखते हैं और यहाँ तक कि उसके साथ एक अवैध विवाह करना भी चाहते हैं। हे ज़ार, हम आपका सम्मान कैसे कर सकते हैं, जब हम देखते हैं कि आप स्पष्ट रूप से ईश्वर की आज्ञाओं का उल्लंघन कर रहे हैं? तो फिर, आप हमारे साथ मसीह के परम पवित्र रहस्यों में भाग लेने के लिए दिव्य सिंहासन के पवित्र स्थल में कैसे प्रवेश कर सकते हैं? हम स्वयं परमेश्वर के समक्ष गवाही देते हैं कि हम आपको दिव्य संचार के पवित्र स्थल में प्रवेश नहीं करा सकते, भले ही आप ज़ार हों। क्योंकि प्राचीन याजकों से भी कहा गया था: 'मेरे वेदी को पैरों तले कुचलने न दो।'

यह कहने के बाद, परम पवित्र पैट्रिआर्क चुप हो गए। उनके बाद, उपर्युक्त वृद्ध योहन ने राजा को विस्तार से समझाया। लेकिन राजा ने उनकी बात तक नहीं सुनी, और वह बहुत क्रोध और रोष में भर उठा। राजा के चारों ओर मौजूद सभी गणमान्य व्यक्ति और शासक भी नाराज़ थे। उनमें से एक, जो जन्म से कुलीन था, ने तो यहाँ तक घमंड किया कि वह राजा की इच्छा के विरुद्ध बोलने के लिए अपने हाथों से बुजुर्ग जॉन के पेट में तलवार घोंप देगा। क्रोध से भरकर, राजा ने आदेश दिया कि उन दोनों - परम पावन पैट्रिआर्क तारासियस और सम्माननीय एल्डर जॉन - को अपमानपूर्वक शाही महल से निर्वासित कर दिया जाए। और ये दोनों व्यक्ति सत्य के लिए निर्वासित होकर उनसे अलग हो गए, संत जॉन द बैपटिस्ट के उदाहरण का अनुसरण करते हुए, जिन्होंने एक बार हेरोद के अवैध विवाह की निंदा की थी[2093] । जब वे चले गए, तो उन्होंने अपने पैरों की धूल झाड़ी और कहा: 'हम आपके अन्याय के लिए कोई जिम्मेदारी नहीं लेते।'

राजा ने, अपनी ओर से, अपनी वैध रानी को अपने कक्षों से एक मठ में निर्वासित कर दिया, जहाँ उसने जबरदस्ती उसका मुंडन करवा दिया, जबकि उसने स्वयं अपनी रखैल थियोडोटा के साथ विवाह किया, जो उसके पिता की ओर से एक दूर की रिश्तेदार थी। यह अवैध विवाह पादरी के ज्ञान के बिना चर्च के व्यवस्थापक, प्रेस्बिटिर जोसेफ द्वारा संपन्न किया गया था, जिसे बाद में अपने इस दुस्साहसी कार्य के लिए चर्च से बहिष्कृत कर दिया गया। परम पावन पैट्रिआर्क ने हर संभव तरीके से इस व्यभिचारपूर्ण विवाह को रद्द करने की कोशिश की, लेकिन वे ऐसा नहीं कर सके, क्योंकि ज़ार ने डींग मारी कि यदि इस विवाह को मना कर दिया गया तो वह प्रतिमा-भंजकों के विधर्म को पुनर्जीवित कर देगा। इसलिए, संत तारासियस ने ज़ार को अपनी अराजकता पर कायम रहने दिया, ताकि मसीह की कलीसिया पर इससे भी बड़ा बुरा प्रभाव न पड़े। क्योंकि पवित्र पैट्रिआर्क को हमेशा याद था कि इस ज़ार के पिता, दादा और परदादा प्रतिमा-भंजक विधर्मी थे, जिन्होंने पवित्र प्रतिमाओं की पूजा करने के लिए कई ईसाइयों को मौत के घाट उतार दिया था। पात्रिआर्क के क्रोधित होने पर राजा ने हर तरह से उनका उत्पीड़न किया, लेकिन पवित्र पात्रिआर्क ने सब कुछ धैर्यपूर्वक सहन किया, ईश्वर का धन्यवाद किया और महा-गड़रिये के रूप में अपने उच्च पद के अनुसार कार्य किया। लेकिन कुछ समय बाद, राजा पर ईश्वर का दंड पड़ा। उनकी माता, धर्मपरायण रानी आइरीन, लंबे समय से उनके दुष्ट और अव्यवस्थित जीवन से अवगत थीं; उन्होंने देखा कि कैसे उनका पुत्र ईश्वर के विधान का उल्लंघन कर रहा था और प्रतिमा-भंग को पुनर्जीवित करने के लिए तैयार था। अपने बेटे से बढ़कर ईश्वर और उनके सत्य से प्रेम करते हुए, उन्होंने मुख्य गणमान्य व्यक्तियों से परामर्श करने के बाद, अपने ही बेटे के खिलाफ मोर्चा खोल दिया, उसे हिरासत में ले लिया और उसे उसी महल में कैद कर दिया जहाँ वह पैदा हुआ था, जिसे पोर्फिरियस का महल के नाम से जाना जाता है। फिर उसने आदेश दिया कि उसकी आँखें फोड़ दी जाएँ, ठीक वैसे ही जैसे उसने पाँच साल पहले अपने पिता के तीन भाइयों—निकिता, अंफिमि और यूडोक्सियस—की आँखें फोड़ी थीं। इस प्रकार, अपने कर्मों की उचित सज़ा पाकर, ज़ार की मृत्यु बीमारी से हो गई। और इरिना ने एक बार फिर से राजसी राजदंड संभाला और अपने बेटे के शासनकाल के दौरान जो कुछ भी अव्यवस्थित हो गया था, उसे ठीक कर दिया।

उस समय से, ईश्वर के पवित्र पुरुष, तारासियस, शांति और सुकून से रहे, उन्होंने उत्साहपूर्वक अपने आध्यात्मिक झुंड की देखभाल की और चर्च का शासन किया, जिसे विधर्मीयों से शुद्ध कर दिया गया था। अपने अभिषिक

[2093] यह, बेशक, हेरोद महाकाय के पुत्र हेरोद अग्रिप्पा को संदर्भित करता है, जो गलील और यॉर्डन के पूर्व के क्षेत्र का शासक था, जिसने अपने भाई फिलिप के जीवित रहते हुए ही उसकी पत्नी हेरोदिया से विवाह कर लिया था।

के पहले दिन से ही, उन्होंने हर दिन स्वयं दिव्य लिटिर्जी का अनुष्ठान किया और बीमारी के समय को छोड़कर इस अभ्यास को कभी नहीं छोड़ा। जब संत वृद्धावस्था में पहुँचे, तो वे बीमार पड़ गए। अपनी मृत्यु के निकट आने का आभास होने पर भी, परम पावन पैट्रिआर्क तारासियस ने अपनी प्रथा को तब तक नहीं छोड़ा, जब तक कि वे इतने कमजोर नहीं हो गए कि वे अपने बिस्तर से उठ नहीं पा रहे थे। केवल तभी उन्होंने स्वयं दिव्य लिटिर्जी का अनुष्ठान करना बंद कर दिया।

अपने निधन के समय, संत तारासियस ने अशुद्ध आत्माओं से लड़कर उन्हें परास्त किया। जब उन्होंने, उनके यौवन काल से ही उनके जीवन की बारीकी से जाँच करते हुए, उन पर कई अन्यायपूर्ण कर्मों का झूठा आरोप लगाया, तो उन्होंने उनसे उत्तर दिया: 'मैं उस बात का दोषी नहीं हूँ जो आप कह रहे हैं; आप झूठी बदनामी कर रहे हैं; आप पर मेरा कोई अधिकार नहीं है।'

उस समय निकिया के बिशप इग्नातिउस—जो उस समय तक डिकिन ही थे—अपनी जीवन-कथा का विवरण दर्ज कर रहे थे। रोगी व्यक्ति की ओर झुककर इग्नातिउस ने संत से ये शब्द सुने। जब संत तारासियस बोल नहीं पा रहे थे, तो वे अपने हाथ से राक्षसों को भगा देते और उन पर विजय प्राप्त करते थे। जैसे ही दिन समाप्त होने लगा, जब रीति के अनुसार दाऊद की भजन-संग्रह की स्तुतियाँ गाई जा रही थीं और उन्होंने यह भजन गाना शुरू किया: *'हे प्रभु, अपना कान लगा और मुझे सुन'* (भजन संहिता 85:1), तो संत तारासियस ने शांतिपूर्वक अपनी पवित्र आत्मा प्रभु को सौंप दी, और उनका चेहरा प्रकाश से दमक रहा था। इन पवित्र धर्मगुरु ने 22 वर्षों तक परमेश्वर की कलीसिया का मार्गदर्शन किया और सम्राट निकिफ़ोरस[2094] के शासनकाल में उनका निधन हो गया, जो आइरीन के बाद सिंहासन पर बैठे थे। सम्राट, सभी लोग, कुलीनों, पुरोहित वर्ग और सामान्य जनता—और विशेष रूप से गरीब और बेसहारा, अनाथ और विधवाओं ने—उनके लिए गहरा शोक मनाया। क्योंकि वह सभी के प्रति दयालु थे, एक अच्छे चरवाहे, एक प्यार करने वाले पिता और एक अनुभवी मार्गदर्शक के रूप में सभी के साथ व्यवहार करते थे, और सभी की उनकी परेशानियों और दुर्भाग्यों में मदद करते थे।

संत तारासियस के पवित्र अवशेष बोस्फोरस पर स्थित मठ में दफनाए गए थे, जिसे उन्होंने स्वयं स्थापित किया था, और उनकी कब्र पर कई लोग चंगे हुए।

उदाहरण के लिए, ऐसा ही मामला एक महिला के साथ हुआ जो कई वर्षों से रक्तस्राव से पीड़ित थी। चूँकि महिलाओं को उस मठ में प्रवेश की मनाही थी, वह पुरुषों के वस्त्र पहनकर मठ में प्रवेश कर गई। विश्वास के साथ, उसने परम पवित्र तारासियस की कब्र को छुआ, कब्र के सामने लटके दीपक से कुछ तेल लिया – और वह तुरंत अपनी बीमारी से ठीक हो गई। अन्य महिलाओं ने भी ऐसा ही किया - और सभी अपने-अपने रोगों से ठीक हो गईं। एक व्यक्ति, जो केवल एक आँख से देख सकता था, संत की कब्र पर ठीक हो गया जब उसने अपनी अंधी आँख पर दीपक का तेल लगाया। एक आदमी जिसका हाथ सूख गया था, विश्वास के साथ आकर, अपने हाथ पर तेल लगाया और ठीक हो गया। संत तारासियस की प्रार्थनाओं से कई अन्य बीमार लोग भी चंगे हो गए; जिन पर राक्षसों का साया था, वे भी अपनी पीड़ाओं से मुक्त हो गए।

ऑर्थोडॉक्सी के इस महान रक्षक ने न केवल अपने जीवनकाल में, बल्कि अपनी मृत्यु के बाद भी प्रतिमा-विरोधी विधर्मियों के खिलाफ युद्ध छेड़ा। ग्रीस के राजा, लियो द आर्मिनियिन के अधीन[2095] , प्रतिमा-विरोधी विधर्म ने फिर से ताकत पकड़ी, क्योंकि राजा स्वयं इसका संरक्षण करता था। संत तारासियस एक सपने में लियो के सामने प्रकट हुए और, बड़े क्रोध के साथ, माइकल नामक एक योद्धा को आज्ञा दी कि वह इस विधर्मी राजा को अपनी तलवार से मार डाले। माइकल ने वार किया और राजा को भेद दिया। लियो इस सपने से डर और कांपते हुए जागा, और वह बहुत हैरान था। यह सोचकर कि संत तारासियस के मठ में एक माइकल नाम का व्यक्ति था जो उसकी जान लेने की साजिश रच रहा था, उसने इस माइकल के बारे में पता लगाने के लिए वहाँ अपने आदमियों को भेजा। उसे यह नहीं पता था कि यह माइकल पहले से ही उसके साथ था – वह वाल्वोस, या ट्रैवलियोस नाम का एक सैन्य कमांडर था[2096] , जिसने बाद में मसीह के जन्म के दिन ही राजा को अपनी तलवार से मार गिराया। इस प्रकार यह दुष्ट राजा, संत तारासियस की प्रार्थनाओं से पराजित होकर, नष्ट हो गया, जिन्होंने परम पवित्र त्रिमूर्ति में विश्वास बनाए रखा। आमीन।

[2094] सम्राट निकिफ़ोरस प्रथम ने 802 से 811 तक शासन किया।

[2095] सम्राट लियो पंचम अर्मेनियाई ने 803 से 820 तक बाइज़ेंटाइन सिंहासन पर शासन किया।

[2096] नाम: वलबोस (बाल्बा) ग्रीक है, जबकि ट्रॉलीयस लैटिन है। रूसी में, दोनों का अर्थ 'जीभ-बंधित' है। यह माइकल बाद में सम्राट बना और 820 से 829 तक शासन किया।

कॉन्टाकयिन, स्वर 3:

चर्च के ऑर्थोडॉक्स सद्धिांतों को स्पष्ट करने और सभी को मसीह की पवत्रि और सम्माननीय प्रतमिा का सम्मान और पूजा करना सखिाने के बाद, हे धन्य, आपने प्रतमिा-भंजकों के अधर्मी फरमान की नदिा की। इसी कारण हम आपसे पुकारते हैं: हे पतिा, आनंदति हो, हे बुद्धमिान तारासयिस।

11 मार्च

26 फरवरी (पुराना संस्करण)

हमारे पवत्रि पतिा गज़ा के बशिप पोर्फरियस का जीवन

26 फरवरी को स्मरणोत्सव

गाज़ा फ़लिस्तिीन का एक शहर है[2097] , जो मस्रि की भूमकि पास स्थति है, जो मूल रूप से यहूदा के कुल के इज़राइल के बेटों का था, और बाद में इस पर फ़लिस्तिीनयिों ने वजिय प्राप्त की[2098] – वही शहर जहाँ शमिशोन ने एक बार बंद द्वारों को अपने कंधों पर उठा लयिा था (न्यायधियों 16:3)। यह शहर मूर्तपिूजा की दुष्टता से भरपूर था। हमारे प्रभु मसीह के अवतार के बाद, यह आंशकि रूप से पवत्रि प्रेरतिों और उनके उत्तराधकिारी बशिपों द्वारा प्रचारति पवत्रि वश्विास से प्रबुद्ध हुआ; फरि भी इसके अधकिांश नविासी लंबे समय तक मूर्तपिूजा के अंधकार में भटकते रहे, एक मूर्तकिी पूजा करते हुए जसिे: 'मार्नास'[2099] , साथ ही वीनस[2100] और अन्य अधर्मी हेलेनकि देवताओं की। इसके अलावा, वहाँ कई मौकों पर ईसाई रक्त बहाया गया, वशिेष रूप से अधर्मी सम्राट जूलयिन द एपोस्टेट[2101] के शासनकाल के दौरान: क्योंकि उस समय अवश्विासयिों ने परमेश्वर को समर्पति सभी पुरोहतिों, भक्षिुओं और कुंवारी महलिाओं का नर्दियता से वध कर दयिा था। गाज़ा नगर में ऐसी दुष्टता लंबे समय तक बनी रही, और कोई भी उसे मूर्तपिूजा से मुक्त नहीं कर सका और पवत्रि वश्विास से पूरी तरह से प्रकाशति नहीं कर सका, जब तक कि संत पोर्फ़री गाज़ा के बशिप नहीं चुने गए, जनिके बारे में हम आगे बात करेंगे। उन्होंने गाज़ा को पूरी तरह से प्रबुद्ध कयिा, सभी मूर्तयिों को नष्ट कर दयिा, शहर के केंद्र में एक चर्च का नर्मिाण कयिा, और, बहुत प्रयासों से, पूरे शहर को ईश्वर की ओर मोड़ दयिा, जैसा कि नम्निलखिति ववरिण से पता चलेगा। वे संत धनी माता-पतिा के पुत्र थे, और थस्सिलुनीके के मूल नविासी थे[2102] । अपने पतिा का घर, अपने भाइयों और अपनी संपत्तकिो छोड़कर, वे पच्चीस वर्ष की आयु में पहले मस्रि, फरि स्केटे[2103] गए, जहाँ उन्होंने तपस्वी

[2097] गाज़ा शहर भूमध्य सागर के पूर्वी तट पर स्थति है और एक समय में यह कनानी लोगों की दक्षणिी सीमा के रूप में कार्य करता था। रोमन शक्तकि चरम पर, गाज़ा फलिस्तिीन में एक प्रमुख व्यापारकि केंद्र था। बाद में, यह कभी-समृद्ध शहर अपना सारा महत्व खो बैठा, और अब केवल रेतीले टीले और दयनीय खंडहर ही इस बात की गवाही देते हैं कि कभी यहाँ एक महान शहर बसा करता था।

[2098] फलिस्तिीनी एक ऐसा लोग था जो मस्रि से नकिलकर एशयिा में मस्रि की सीमा पर, भूमध्य सागर के तट के साथ बस गया था। वे जसि भूमपिर बसे थे, वह फलिस्तिीन के दक्षणि-पश्चमि में, ठीक मस्रि और यहूदयिों द्वारा जीती गई कनान की भूमकि बीच थी। फलिस्तिीनयिों ने यहूदयिों के खलिाफ अक्सर युद्ध कएि और एक से अधकि मौकों पर उन्हें अधीन कर लयिा, उन्हें जज़यिा देने के लएि मजबूर कयिा और उनके शहरों पर कब्ज़ा कर लयिा। दूसरी ओर, यहूदयिों ने भी अक्सर फलिस्तिीनयिों पर बढ़त हासलि की।

[2099] मूर्ती मारनास की पूजा गाज़ा में ही वशिष्टि थी। उस शहर के नविासी उसे सभी प्रकार के रोगों का एक महान चकित्सिक और, इसके अलावा, बारशि के देवता और स्वामी मानते थे; सूखे के समय, उसे प्रसन्न करने के लएि भव्य धार्मकि जुलूस नकिाले जाते थे।

[2100] वीनस – प्रेम, सौंदर्य, कामुकता और अशुद्ध इच्छाओं की ग्रीक-रोमन देवी।

[2101] उन्होंने 361 से 363 तक शासन कयिा।

[2102] थेस्सालोनकिा (जसिे सोलुन के नाम से भी जाना जाता है) मैसेडोनयिा का एक बहुत ही महत्वपूर्ण, प्राचीन शहर है, जो एजयिन सागर (द्वीपसमूह) पर थेस्सालोनकिा की खाड़ी या फर्मे की खाड़ी के अंदर गहराई में स्थति है। वर्तमान में, यह शहर, जसिे थेस्सालोनकिी के नाम से जाना जाता है, कॉन्स्टेंटनिोपल के बाद, यूरोपीय तुर्की में सबसे प्रमुख वाणज्यकि केंद्र है, जसिकी जनसंख्या बहुत बड़ी है।

[2103] यह, बेशक, परचिति प्रकार की मठवासी बस्तयिों—यानी, एकांतवासी संन्यासयिों के व्यक्तगित कोठों—का उल्लेख नहीं करता है, बल्कि मस्रि के उत्तर-पश्चमिी भाग में एक क्षेत्र का उल्लेख करता है, जो माउंट नाइट्रयिन से एक दनि की यात्रा (25–30 वर्स्ट) पर था। यह एक शुष्क, चट्टानी रेगस्तिान था, जो मस्रि के तपस्वयिों का एक पसंदीदा ठकिाना था, और यह उन संतों के तपस्या संबंधी कारनामों के लएि प्रसद्धि

जीवन जीने के इरादे से संन्यासी वस्त्र धारण कए। स्केट में पवत्रि पताओं के साथ पाँच वर्ष बताने के बाद, वे यरूशलेम आए और जीवन-दायक क्रूस तथा पवत्रि सेपुलक्र को श्रद्धांजलि अर्पति करने तथा सभी पवत्रि स्थानों का भ्रमण करने के बाद, वे यॉर्डन के क्षेत्रों में चले गए[2104] । वहाँ, एक गुफा में बसकर, संत पोर्फरियिस उपवास और अखंड प्रार्थना में जीवन यापन करते और परश्रिम करते रहे। पाँच वर्षों के बाद, वह बीमार पड़ गया और उसने अपने एक परचिति से उसे यरूशलेम ले जाने का आग्रह कयि, क्योंकि उसकी बीमारी के कारण वह बनि सहायता के चल नहीं सकता था। हालाँकि, यरूशलेम में, अपनी बीमारी के बावजूद, वह हर दनि प्रभु की उपासना करते हुए पवत्रि स्थानों में जाते थे; और जब अपनी बीमारी के कारण वे चल नहीं पाते थे, तो वे घुटनों के बल रेंगते थे – फरि भी, पुनरुत्थान के पवत्रि चर्च और पवत्रि क्रूस का दौरा कए बनि एक भी दनि नहीं बीतता था। उसे इस तरह अपनी बीमारी के बावजूद दनि-प्रतदिनि कष्ट करते देख, मार्क नामक एक युवा भक्षिु (जन्हिोंने बाद में उनकी जीवनी लखिी) ने ईश्वर की खातरि उनकी सेवा करना शुरू कर दयि। इस मार्क को संत पोर्फरियस ने एक पत्र के साथ थ्रेसलॉनीकी भेजा, ताकि वह अपने माता-पति द्वारा छोड़ी गई संपत्ति को अपने छोटे भाइयों में बाँट सके, और पोर्फरियस का हस्सिा उसे लाकर दे, ताकि वह उसे गरीबों में बाँट सके। मार्क चल पड़ा, उसने आवश्यकतानुसार सब कुछ बाँट दयि, और पोर्फरियिस का हस्सिा तीन हजार ज्लातनि में बेच दयि; इसके अतरिक्ति, पोर्फरियिस को अपने माता-पति के सोने का एक और हस्सिा – एक हजार चार सौ ज्लातनि – साथ ही कपड़े और चांदी भी मलि। मार्क ने यह सब यरूशलेम में संत पोर्फरियिस को सौंप दयि, जन्हिें वह पूरी तरह से स्वस्थ पाया। पोर्फरियस ने अपने पास लाए गए ईसा मसीह के वस्त्र ( ) को स्वीकार कर लयि, और तुरंत ही उसे गरीबों और गरीबी-ग्रस्त मठों में बाँट दयि, और स्वयं भी एक भक्षिुक बन गए। इसके बाद संत ने बताया कि कैसे वह अपनी बीमारी से ठीक हुए थे।

उन्होंने सुनाया, 'जब मैं महान चर्च में पवत्रि सप्ताह के दौरान पूरी रात की प्रार्थना सभा में शामलि हो रहा था, तो मुझे बीमारी का दौरा पड़ा। और अधकि सहन करने की शक्ति न रहते हुए, मैं पवत्रि क्रूस के पास गया और लेट गया, और अपनी गंभीर बीमारी से मूर्छति होकर, मैं जैसे समाधि में था। और मैंने हमारे उद्धारकर्ता को देखा, जो क्रूस पर ठोक दए गए थे, और उनके साथ एक चोर को, जो दूसरे क्रूस पर लटका हुआ था, और मैं चल्लिाने लगा, यह कहते हुए: 'हे प्रभु, जब आप अपने राज्य में पहुँचें तो मुझको याद रखना।' लेकनि उद्धारकर्ता ने चोर से कहा: 'क्रूस से उतरकर उसे उसके शारीरकि रोग से चंगा कर, जैसे मैं तुझे तेरे आत्मकि रोग से चंगा कर चुका हूँ।' चोर, अपने क्रूस से उतरकर मेरे पास आया, उसने मुझे गले लगा लयि और चूमा, और मुझे जमीन से उठा लयि, यह कहते हुए: 'उद्धारकर्ता के पास आओ।' प्रभु के पास पहुँचने पर, मैंने उन्हें क्रूस से उतरते देखा, और उन्होंने मुझसे कहा: 'यह लकड़ी ले लो और इसे रख लो।' मैंने मसीह का क्रूस प्राप्त कर, उसे उठाना शुरू कयि और तुरंत होश में आ गया और खुद को पूरी तरह से स्वस्थ पाया, मानो मैं कभी बीमार ही न हुआ हो।'

कुछ ही समय बाद, धन्य पोर्फरियस को यरूशलेम के पैट्रआर्क द्वारा एक प्रेस्बटिर (पादरी) के रूप में नयिुक्त कयि गया, और जीवन-दायक क्रूस की कीमती लकड़ी, जसिे एक वशिेष ताले वाले सुनहरे अवशेष-पात्र में रखा गया था, उनकी देखभाल के लिए सौंपा गया, जबकि इसका एक और हस्सिा पवत्रि महारानी हेलेना द्वारा कॉन्स्टेंटनिोपल ले जाया गया। इस प्रकार पोर्फरियस की वह दृष्टि पूरी हुई, जसिमें उन्होंने प्रभु को अपना क्रूस उनकी देखभाल के लिए सौंपते हुए देखा था।

आदरणीय पोर्फीरयिस को पादरी नयिुक्त हुए तीन साल बीत चुके थे। उस समय, एनीअस नामक एक बशिप गाजा शहर में नधिन हो गए। गाज़ा के श्रद्धालु नविासयिों ने पुरोहति वर्ग के साथ मलिकर पैलेस्टाइन के सेज़रिया[2105] में उस मेट्रोपॉलटिन को देखने के लिए यात्रा की, जसिके अधकिार क्षेत्र में गाज़ा आता था, धन्य जॉन, और उनसे वनिती की कि वे उन्हें एक ऐसा बशिप प्रदान करें जो मूर्तपिूजकों—जनिकी गाज़ा में बहुत संख्या थी—का वचन और कर्म दोनों में वरिोध

हो गया, जन्हिोंने वहाँ शरण ली थी। यही वह क्षेत्र था जसिसे बाद में मठवासी मरुस्थल आश्रमों को, जन्हिें 'स्केट्स' के नाम से जाना जाता है, अपना नाम मलि; ये वे स्थान थे जहाँ सबसे अधकि भक्तमिय संन्यासी सबसे कठोर एकांत और अखंड मौन की खोज में बस गए थे।

[2104] बेशक, जॉर्डन का रेगस्तिान भी है, जो जॉर्डन नदी के कनिारे स्थति है, जहाँ तपस्वी बस गए थे और जहाँ कई मठवासी बस्तयिाँ थीं।

[2105] कैसरयिा, जसिे एशयिा माइनर में कैपाडोसयिा के कैसरयिा से अलग करने के लिए कैसरयिा-इन-पैलेस्टाइन के नाम से जाना जाता था, – भूमध्य सागर के पूर्वी तट पर एक बड़ा शहर, जसिे यहूदी राजा हेरोद ने स्ट्रोटन के प्राचीन शहर के स्थान पर बनाया था और जो लंबे समय तक फलिस्तिीन की राजनीतकि राजधानी रहा, जहाँ फलिस्तिीन के राज्यपाल रहते थे। इस शहर को कई बार नष्ट कयि गया, और आज केवल खंडहर ही बचे हैं, जो जंगली वनस्पतयिों से ढँके हुए हैं।

करने में सक्षम हो। मेट्रोपॉलिटन जॉन ने सभी पर उपवास का आदेश देते हुए ईश्वर से प्रार्थना की कि वह उन्हें इस कार्य को करने के लिए एक योग्य और सक्षम पुरुष दिखाएँ; और उन्हें एक दर्शन में यह प्रकट हुआ कि वह थे आदरणीय पोर्फिरियस, यरूशलेम के एक पुरोहित और जीवन-दायक वृक्ष के संरक्षक। तुरंत, मेट्रोपॉलिटन ने यरूशलेम के पैट्रिआर्क परम पावन को एक पत्र लिखा, जिसमें उन्होंने उनसे पिता पोर्फिरियस को उनके पास भेजने का अनुरोध किया, हालाँकि उन्होंने इस अनुरोध का कारण नहीं बताया। पैट्रिआर्क ने पोर्फिरियस को बुलाया और मेट्रोपॉलिटन का पत्र दिखाया, और उन्हें सेसरिया जाने का आदेश दिया। पहले तो आदरणीय पोर्फीरियस हिचकिचाए, लेकिन फिर उन्होंने कहा:

'प्रभु की इच्छा पूरी हो!'

फिर, महाधर्माध्यक्ष की उपस्थिति से निकलने के बाद, उन्होंने अपने शिष्य से कहा:

'भाई मार्क, चलो हम पवित्र स्थानों और पवित्र तथा जीवन-प्रदायक क्रूस की पूजा करें: क्योंकि हम इसे लंबे समय तक फिर नहीं देख पाएंगे।'

शिष्य ने कहा:

'आप ऐसा क्यों कह रहे हैं, पिताजी? मुझे लगता है कि आप कैसरिया में एक सप्ताह से अधिक नहीं रहेंगे।'

संत ने उत्तर दिया:

'कल रात मैंने उद्धारकर्ता को देखा, जिन्होंने मुझसे कहा: "मुझे वह खजाना (क्रूस) दे दो जो मैंने तुम्हें सौंपा है; क्योंकि मैं तुम्हें एक दुल्हन के साथ मिलाना चाहता हूँ, भले ही वह वास्तव में गरीब है और लोगों द्वारा अस्वीकार की गई है, फिर भी वह अच्छे चरित्र की है; और तुम, उसे लेने के बाद, उसे सँवारो, ताकि वह अपनी पूर्व की गरीबी को भूल जाए; क्योंकि यद्यपि वह गरीब है, वह मुझसे अपरिचित नहीं है, बल्कि मेरी सच्ची बहन है। अतः सावधान रहना, कि उसे लेने और घर बसाने में, तुम झूठ या चोरी, या अवैध रूप से कुछ भी प्राप्त न करना; क्योंकि ऐसा करने से तुम मुझे क्रोधित करोगे और उसे आहत करोगे। आशा रखो और हियाव न खोओ, और सब कुछ तुम्हें वहाँ से मिलेगा जहाँ से तुम्हें इसकी सबसे कम उम्मीद है।' यह वही है जो प्रभु ने मुझे एक रात्रि-दर्शन में प्रकट किया, और मुझे डर है कि जब मेरे अपने ही इतने सारे पाप हैं, तो दूसरों के पापों का बोझ मुझ पर न लाद दिया जाए।

अपने शिष्य से यह कहने के बाद, संत पोर्फिरियस गए और सभी पवित्र स्थानों के साथ-साथ बहुमूल्य क्रूस के जीवन-दायक वृक्ष को भी नमन किया; और उसे एक अवशेष-पात्र में रखकर, वे गए और सबसे पवित्र पैट्रिआर्क को चाबी सौंप दी। पैट्रिआर्क का आशीर्वाद प्राप्त कर, वह अपने शिष्य मार्क और एक अन्य युवक बरोख के साथ पैलेस्टाइन के सेज़रिया के लिए रवाना हुआ, जिसे उसने कुछ समय पहले एक बीमार के बिस्तर पर पाया था, , फोड़ों से ढका हुआ, और जिसे उसने अपनी प्रार्थना से ठीक किया था। जब पूजनीय पोर्फिरीउस कैसरिया पहुँचे, तो उनका वहाँ बड़े हर्ष के साथ स्वागत किया गया। तब उनकी उत्कृष्टता मेट्रोपॉलिटन जॉन ने उन्हें गाजा के बिशप के रूप में अभिषेक स्वीकार करने के लिए मनाना शुरू किया। पूज्यनीय ने कड़वी और अविरल रुदन करते हुए कहा कि वह ऐसे पद के अयोग्य हैं; लेकिन फिर उन्होंने स्वयं को ईश्वर की इच्छा के हवाले कर दिया और उन्हें पुरोहितों तथा गाजा के लोगों के साथ गाजा भेज दिया गया। लेकिन गाज़ा के पास एक निश्चित गाँव के अधर्मी निवासियों ने, उनके आगमन की आशंका में, उस पूरे मार्ग को काँटों से भर दिया, जिसके साथ ईसाई बिशप सेंट पोर्फिरियस को गुजरना था, उसके किनारे-किनारे खाईयाँ खोद दीं, बदबूदार गोबर की भारी मात्रा ढेर कर दी, और एक बड़ी और बदबूदार धुआँ फैला दिया, ताकि उन्होंने उस रास्ते को पार करने लायक नहीं छोड़ दिया: उन्होंने यह सब ईसाइयों से नफरत और संत पोर्फिरियस के प्रति शैतानी दुश्मनी के कारण किया था। इस प्रकार, संत और उनके साथियों ने रास्ते में बहुत सी कठिनाइयों को सहन किया, वे खतरे, काँटों और धुएँ से पीड़ित हुए और पूरे दिन कड़ी मेहनत करते रहे; अंत में, रात में, वे शहर पहुँचे। हालाँकि, शहर में केवल एक ही ईसाई चर्च था, और वह भी छोटा था, क्योंकि वहाँ बहुत सारे ईसाई नहीं थे। इसके विपरीत, शहर में कई मूर्तिपूजक मंदिर थे, और मूर्तियाँ तो सड़कों पर भी खड़ी थीं; शहर के ठीक केंद्र में उनके सबसे पुराने देवता, मार्नास का मंदिर था—एक प्राचीन समय में निर्मित एक विशाल और भव्य संरचना, जो अपनी भव्यता, ऊँचाई और शानदार वास्तुकला से पूरे शहर को सुशोभित करती थी। और पूजनीय पोर्फिरियस, अपना आसन ग्रहण करने के बाद, वहाँ मसीह के छोटे से झुंड का चरवाहा बन गए।

जिस वर्ष मसीह के संत पोर्फिरियस गाज़ा पहुँचे, उस वर्ष सूखा और एक बड़ी अकाल पड़ गई। और सभी अधर्मी नागरिकों ने कहा कि, शहर में पोर्फिरियस के आगमन के कारण, देवता, क्रोधित होकर, ने आकाश बंद कर दिया था;

जबकि पुरोहितों ने लोगों में यह अफवाह फैलाई कि देवता मार्नास ने उन्हें बताया था कि यह सब बुराई पोर्फरियिस के कारण थी। और इस प्रकार, सभी मूर्तपिूजकों ने मार्नास के मंदरि में इकट्ठा होकर कई बलदिान दएि, प्रार्थना करते हुए और मार्नास से बारशि भेजने के लएि पुकारते हुए, क्योंकि वे कहते थे कि वह बारशि का देवता था। इस प्रकार वे सात दनिों तक प्रार्थना करते रहे, अपने पवत्रि भजन गाते हुए और गंभीर जुलूसों में शहर से बाहर जाते हुए; लेकनि फरि भी बारशि नहीं हुई। तब सभी ईसाई अपनी पत्नयिों और बच्चों के साथ इकट्ठा हुए, ताकि उनकी संख्या दो सौ अस्सी हो गई: क्योंकि उस समय गाज़ा में मसीह में वशि्वास करने वालों की कुल संख्या इतनी ही थी। और उन्होंने अपने बशिप, संत पोर्फरियिस से, एक सामूहकि प्रार्थना का नेतृत्व करने और ईश्वर से वर्षा की याचना करने के लएि क्रॉस उठाकर शहर से बाहर जाने का अनुरोध कयिा, क्योंकि अकाल पहले से ही सभी पर एक भारी बोझ था; इसके अलावा, वे अधर्मी लोगों के दुर्व्यवहार और उत्पीड़न को सहन कर रहे थे, जो बारशि की कमी के लएि ईसाई बशिप को दोषी ठहरा रहे थे। संत पोर्फीरयिस ने उपवास का आदेश दयिा और सभी वशि्वासयिों को उस शाम चर्च में इकट्ठा होने का हुक्म दयिा; और पूरी रात जागरण मनाने के बाद, उन्होंने अगली सुबह पवत्रि क्रॉस को लेकर एक प्रार्थना जुलूस का नेतृत्व कयिा। इस प्रकार, ईसाई शहर के बाहर एक जुलूस में पश्चमि की ओर स्थति प्राचीन, जीर्ण-शीर्ण चर्च की ओर चल पड़े, जसिे एक बार परम धन्य बशिप एस्कलेपयिस द्वारा स्थापति कयिा गया था, जो मसीह के एक स्वीकारकर्ता थे और जन्हिोंने ऑर्थोडॉक्स धर्म के लएि बहुत कष्ट सहे थे; वहाँ से, भजन गाते हुए, वे संत थमिोथी के बलदिान स्थल पर गए, जहाँ अन्य संतों के अवशेष भी दफनाए गए थे। इस प्रकार प्रार्थना करने के बाद, वे दनि के नौवें घंटे पर जुलूस के साथ शहर में लौटे और उन्होंने शहर के द्वार बंद पाए; क्योंकि अधर्मी मूर्तपिूजकों ने, ईसाइयों को उनके बशिप के साथ शहर से बाहर जाते हुए देख लयिा था, इसलएि उन्होंने द्वार बंद कर दएि थे, और वे वशि्वासयिों को अंदर नहीं आने देना चाहते थे। ईसाई दो घंटे तक द्वारों के सामने खड़े रहे, और कसिी ने उन्हें नहीं खोला। और इस प्रकार परमेश्वर ने, अपने सेवकों के धीरज और आँसुओं भरी वनिती को देखकर और अपने प्रयि पोर्फरियिस की प्रार्थनाओं को सुनकर, दक्षणि से एक हवा उठाई, जैसा उसने एक बार भवष्यिवक्ता एलयिाह के समय में कयिा था (1 राजा 18:17–45), और आकाश को वर्षा लाने वाले बादलों से ढक दयिा; वहाँ बजिली चमकी और गरज हुई, और जैसे ही सूर्य अस्त हुआ, एक बड़ी बौछार गरिी। तब कुछ वधिर्मी, ऐसा चमत्कार देखकर, नगर के द्वार खोल दएि और, ईसाइयों के साथ मलिकर, यह कहते हुए आगे बढ़ चले:

'केवल मसीह ही सच्चे ईश्वर हैं!'

और वे सभी बड़ी खुशी के साथ चर्च में प्रवेश कर गए, और जो वधिर्मी वशि्वास में आए थे, उन्होंने बशिप से पवत्रि आशीर्वाद और बपतस्मिा के लएि शक्षिा प्राप्त की; और, परमेश्वर का धन्यवाद करने के बाद, वे अपने घरों को लौट गए। जो वशि्वास में आए थे, उनमें एक सौ सात पुरुष, पैंतीस महलिाएँ और चौदह बच्चे थे। और उस पूरी रात, तथा दूसरे और तीसरे दनि भी भारी वर्षा हुई, और उसने पृथ्वी को प्रचुर मात्रा में सींचा। यह देखकर, तीसरे दनि और 127 लोग मसीह के झुंड में शामलि हो गए, और उनके बाद, उसी वर्ष, और 105 लोग शामलि हुए। और, पवत्रि बपतस्मिा प्राप्त करने के बाद, वे सभी पवत्रि वशि्वास में उत्साही हो गए। जहाँ तक अन्य मूर्तपिूजकों का सवाल है, उन्होंने संत पोर्फरियिस के प्रति शत्रुता रखना और ईसाइयों को सताना बंद नहीं कयिा; क्योंकि जब भी हेगेमोन शहर में आता था, वे उसे ईसाइयों को यातना देने के लएि उकसाने हेतु बड़ी मात्रा में सोने की रशि्वत देते थे, और इसके अलावा उन्होंने वशि्वासयिों पर शहर के कामों का बोझ डालकर अत्याचार कयिा, ठीक वैसे ही जैसे मस्रिवासयिों ने एक बार इस्राएलयिों पर अत्याचार कयिा था। संत पोर्फीरयिस, वशि्वासयिों पर हो रहे अन्याय को देखकर, बहुत दुखी हुए और दनि-रात आँसुओं के साथ ईश्वर से अवरिाम प्रार्थना की, कि वे भटक गए लोगों को सत्य को जानने के मार्ग पर वापस लाएँ।

बाद में, संत के उपर्युक्त शष्यि, बरूख को, एक पड़ोसी गाँव में एक ऐसे मूर्तपिूजक से ईसाई चर्च का बकाया वार्षकि भुगतान वसूल करने के लएि भेजा गया, जो चर्च की जमीन पर रहता था। भुगतान को बाद की तारीख तक टालने की इच्छा से, उस व्यक्ति ने बरूख से बहस शुरू कर दी, और उनके बीच ववािद खड़ा हो गया। ववािद के दौरान, अन्य मूर्तपिूजक इकट्ठा हो गए और उन्होंने धन्य बरूख को खंभों से पीट-पीट कर मार डाला; फरि, उसे पहले ही मृत समझकर, वे उसे गाँव से बाहर खींच ले गए और एक सुनसान जगह पर फेंक दयिा। अगले ही दनि, डीकन कॉर्नेलयिस दो अन्य ईसाइयों के साथ उस जगह से गुजर रहे थे और उन्होंने बारूख को वहाँ मृतप्राय पड़ा हुआ पाया, क्योंकि वह न बोल सकता था, न सुन सकता था, न अपनी आँखों से देख सकता था, और न ही अपने हाथ-पैर हलिा सकता था; केवल उसकी आत्मा ही उसमें शेष थी। बारूख को अपनी पीठ पर उठाकर, वे उसे शहर में ले गए। हालाँकि, कुछ मूर्तपिूजकों ने बारूख को उठाए जाते देख,

यह सोच लिया कि वे एक मृतक को शहर में ला रहे हैं; इसलिए वे उसे उठाए हुए लोगों पर टूट पड़े और उन्हें पीटने लगे, यह कहते हुए:

'तुम एक मरे हुए आदमी को शहर में लाकर ऐसी घृणित हरकत क्यों कर रहे हो?'

क्योंकि गाज़ियानों की रीत यह थी कि वे दफ़नाने के लिए मृतकों को शहर के बाहर ले जाते थे। बरूख को छीनकर, दुष्ट लोगों ने उसे पैरों से पकड़ लिया और उसे खींचकर शहर के बाहर ले गए। तब डिकन कॉर्नेलियस ने इस घटना की सूचना पवित्र बिशप पोर्फीरियस को देने के लिए दौड़ लगाई। और बिशप अन्य भाइयों के साथ शीघ्रता से रवाना हुए, और जब वे उन्हें खींचकर ले जा रहे लोगों तक पहुँचे, तो उन्होंने नम्रतापूर्वक उनसे इस क्रूरता को छोड़ देने का आग्रह किया; लेकिन उन्होंने बिशप को भी सताना शुरू कर दिया। एक बड़ी भीड़ इकट्ठी हो गई थी, और बिशप के धैर्य और विनम्रता को देखकर—कि वह उसे सताने वालों का कोई विरोध नहीं कर रहे थे—उन्होंने बरोख को खींचकर ले जा रहे उत्पीड़कों से बहस करनी शुरू कर दी; और उनके बीच एक विवाद और झगड़ा छिड़ गया, जिससे उन्होंने एक-दूसरे पर हाथ उठा दिए और एक-दूसरे को मारना शुरू कर दिया; और वहाँ बड़ा हंगामा और कोलाहल मच गया। इस बीच, पवित्र बिशप, ईसाइयों के साथ, धन्य बरोक को लेकर चर्च पहुँचे, तब तक शाम हो चुकी थी। जब उन्होंने देखा कि वह अभी भी जीवित है, तो सभी विश्वासियों ने उसके ठीक होने की देखभाल में जुट गए। संत ने, अपनी ओर से, पूरी रात उसके लिए आँसुओं के साथ ईश्वर से प्रार्थना की। और फिर उस बीमार ने अपनी आँखें खोलीं और बोला, उसने पानी मांगा; और जब उन्होंने उसे पानी पिला दिया, तो वह बोलने लगा और उसने अपने साथ हुई सारी बातें बता दीं। सुबह, शहर के बुज़ुर्ग एक बड़ी भीड़ के साथ चर्च आए और चिल्लाने और पुकारने लगे:

'हमारे पूर्वजों के प्राचीन कानून की अवहेलना करते हुए, एक मृतक को शहर में क्यों लाया गया है?'

तब संत पोर्फिरियस बिशप, अपने साथियों के साथ, उनके पास बाहर आए। बिशप को देखते ही, उन्होंने उन पर बदनामी और अपमान करना शुरू कर दिया, और फिर उनके साथ मौजूद ईसाइयों पर टूट पड़े और उन्हें पीटने लगे। और अचानक, धन्य बरोक ने ईश्वर से असाधारण शक्ति प्राप्त कर, इतनी तेजी से उठ खड़े हुए, मानो वे कभी बीमार ही न रहे हों, और एक लाठी पकड़कर, चिल्लाती हुई, अधर्मी भीड़ पर वार करने और उसे पीछे धकेलने लगे। पगनों ने जब उन्हें जीवित देखा तो वे बहुत भयभीत हो गए, क्योंकि उन्हें लगा कि वह मृतकों में से जी उठे हैं; और आंशिक रूप से डर और आंशिक रूप से बुरी तरह पीटे जाने के कारण, वे एक-दूसरे को रौंदते हुए भाग गए। और बारूक ने उन्हें चर्च से भगा दिया, ठीक वैसे ही जैसे फिलिस्तीनियों के शमिशोन ने एक बार किया था, और उन्हें मारनासोस में उनके सबसे घृणित मंदिर तक खदेड़ दिया। उस समय से, सभी अधर्मी बारूख से डरने लगे और सड़क पर उससे मिलने से भी डरने लगे। और संत पोर्फिरियस ने, बारूख के अचानक ठीक होने के लिए ईश्वर को धन्यवाद देते हुए, उसे एक डिकन नियुक्त किया; उन्होंने अपने एक अन्य शिष्य, मार्क को भी उसी पद पर पदोन्नत किया।

अविश्वासियों द्वारा विश्वासियों पर हो रहे निरंतर अत्याचार को देखकर, पवित्र पोरफिरियस ने अपने डिकन मार्क को गाजा में मूर्तिपूजक मंदिरों को ध्वस्त करने का आदेश देने का आग्रह करने के लिए, धर्मात्मा सम्राट आर्कैडियस[2106] के पास कॉन्स्टेंटिनोपल भेजा। उन्होंने कॉन्स्टेंटिनोपल के परम पवित्र पैट्रिआर्क, जॉन क्रिसोस्टोम को भी एक पत्र लिखा, जिसमें उन्होंने सम्राट के साथ उनकी मदद और मध्यस्थता का अनुरोध किया। और राजा ने गाज़ा में मूर्तिपूजक मंदिरों को बंद करने और ताला लगाने का आदेश दिया, ताकि वहाँ और कोई घृणित बलिदान न किया जाए; लेकिन उसने उन्हें ध्वस्त करने का आदेश नहीं दिया, कहीं मूर्तिपूजक बहुत अधिक दुखी न हो जाएँ। इस शाही आदेश को पूरा करने के लिए, हिलारियन नामक एक दरबारी अधिकारी गाज़ा पहुँचा; अशदोद और अशकलॉन से कई सहायकों और सैनिकों को लेकर[2107] और गाज़ावासियों को शाही फरमान दिखाकर, उसने मूर्तिपूजक मंदिरों को बंद कर दिया और ताला लगा दिया। लेकिन अधर्मी लोगों ने बहुत सारा सोना इकट्ठा करके, उसे शाही अधिकारी हिलारी के पास ले आए, और उनसे विनती करने लगे कि वे उनके मार्नासोस के एक बड़े मंदिर को न बंद करें, जो शहर के केंद्र में स्थित था। तब हिलारियन, जो मसीह ईश्वर से अधिक सोने से प्रेम करता था, ने उनके मुख्य मंदिर, मार्नासोव, को जनता के लिए खुला छोड़ दिया, जबकि छोटे मंदिरों को बंद कर दिया और उनके भीतर की मूर्तियों को तोड़ दिया। और यह स्वर्ण-प्रेमी पीछे हट गया,

---

[2106] बाइज़ेंटाइन सम्राट आर्कैडियस ने 396 से 408 तक शासन किया।

[2107] *अशदोद* भूमध्य सागर के पूर्वी तट पर, गाजा से बहुत दूर नहीं, फिलिस्तीनियों द्वारा स्थापित एक प्राचीन शहर है। आज, यहाँ येजुद नाम का एक छोटा सा गाँव है। *अशकलॉन* फिलिस्तीनी इतिहास में एक और प्रसिद्ध शहर है, जो गाजा और अशदोद के बीच भूमध्यसागरीय तट पर स्थित है। वर्तमान में, अशकेलोन निर्जन है और यहाँ केवल मंदिरों और मठों के खंडहरों को देखने के लिए लोग आते हैं।

मानो उसने राजा की आज्ञा का पालन कर लिया हो: क्योंकि वास्तव में, हलिारियिन हमारे प्रभु मसीह से अधिक सोने से प्रेम करने लगा था, उसने मार्नस के मुख्य मंदिर को जनता के लिए खुला छोड़ दिया, जबकि छोटे मंदिरों को बंद कर दिया और उनमें रखी मूर्तियों को तोड़ दिया।दुष्टों ने, हालांकि, मार्नस का महान मंदिर अपने अधिकार में होने के कारण, बंद किए गए अन्य मंदिरों के लिए दुखी नहीं हुए, और न ही उन्होंने ईसाइयों के लिए परेशानी पैदा करना बंद किया। धर्मद्रोहियों के पास मारनासोस का महान मंदिर होने के कारण, वे अन्य बंद मंदिरों के लिए दुखी नहीं हुए और उन्होंने ईसाइयों को परेशान करना बंद नहीं किया।

उस समय, संत पोर्फरियस ने एक चमत्कार किया जिससे कई लोग पवित्र विश्वास की ओर आकर्षित हुए। एक कुलीन महिला, जो शहर के एक प्रमुख नागरिक की बेटी और एलजिा नामक एक उच्च पदस्थ व्यक्ति की पत्नी थी, और जो गर्भवती थी, प्रसव के समय पर पहुँच गई; लेकिन वह प्रसव नहीं कर सकी, और उसके रोग दिन-प्रतिदिन बढ़ते गए, क्योंकि दूसरे दिन उसकी हालत और खराब थी, और तीसरे दिन और भी खराब हो गई; कई दाइयाँ, जादूगरनी और भविष्य बताने वाली, जिन्हें उसके पास लाया गया था, उसकी मदद करने में असमर्थ रहीं। इस प्रकार वह सात दिनों तक पीड़ित रही। उसके पति, साथ ही उसके पिता और माता और उसके सभी रिश्तेदारों ने उन दिनों में मारनास के मंदिर में अखंड बलिदान चढ़ाए और उसकी खातिर भक्तिपूर्वक प्रार्थना की, अपने देवता से आँसू भरी विनती करते हुए। लेकिन कोई राहत नहीं मिली; इसके विपरीत, वह बहुत कमजोरी से ग्रस्त हो गई और अत्यधिक पीड़ा और तीव्र हो गई, क्योंकि वह प्रसव करने में असमर्थ थी। और उसके इस कष्ट को देखकर, हर कोई पहले ही इस महिला के जीवन से निराश हो चुका था; उनका अपना दिल उसके लिए दुखता था, और वे उसकी मृत्यु की प्रतीक्षा करते हुए उसके लिए रोते और विलाप करते थे। उनमें से एक ईसाई धर्म की एक वृद्ध महिला थी; वह चर्च दौड़ी और बहुत आँसू बहाकर, उस पीड़ित महिला के लिए प्रभु मसीह से प्रार्थना करने लगी। इस वृद्ध महिला को घुटनों के बल रोते और प्रार्थना करते हुए देखकर, बिशप संत पोर्फरियस ने उससे रोने का कारण पूछा। संत के चरणों में गिरकर, उसने उन्हें वह सब कुछ बताया जो हो रहा था और उनसे उस महिला के लिए दयालु ईश्वर से प्रार्थना करने का आग्रह किया जो इतनी बुरी तरह से पीड़ित थी। संत ने उसे उस बीमार महिला के पास वापस भेज दिया, और उसे यह निर्देश दिया कि क्या करना है और क्या कहना है। इसलिए, उस घर पहुँचने पर, उस वृद्ध महिला ने बीमार महिला के माता-पिता, पति और उसके सभी रिश्तेदारों को इकट्ठा किया और उनसे कहा:

'यहाँ एक दयालु और कुशल चिकित्सक हैं; उन्होंने मुझे आप लोगों के पास भेजा है और पूछा है कि यदि वह उस बीमार स्त्री को ठीक कर दे तो आप उसे क्या देंगे?'

यह सुनकर, माता-पिता ने कहा:

'अगर वह चाहे, तो वह हमारी सारी संपत्ति ले ले, बशर्ते कि हम अपनी प्यारी बेटी को जीवित और स्वस्थ देख सकें।'

उसके पति ने भी यही कहा, जो अपनी पत्नी के जीवन और स्वास्थ्य के लिए सब कुछ देने को तैयार था। तब बूढ़ी महिला ने उनसे कहा:

'अपने हाथ उठाओ और कसम खाकर अपने शब्दों की पुष्टि करो, ताकि तुम्हारा वादा सच हो, कि तुम उस चिकित्सक को ठुकराओगे नहीं।'

और उन्होंने, उत्साह और आँसुओं के साथ अपने हाथ उठाकर कहा:

'जब तक हम ज़िंदा हैं, हम उसकी सेवा करेंगे, बशर्ते कि वह हमारी इकलौती बेटी को ठीक कर दे, जिसके बिना हम जी भी नहीं सकते: क्योंकि उसके बिना हमारा जीवन और आनंद कैसा होगा?'

यह सुनकर, बूढ़ी औरत ने बीमार लड़की के ऊपर ऊँचे स्वर में पुकारा:

'ईश्वर के महापुजारी, पोर्फरियस, तुमसे यह कहते हैं: जीवित ईश्वर के पुत्र, यीशु मसीह, तुम्हें चंगा करते हैं। उन पर विश्वास करो, और तुम जीवित रहोगे।'

और तुरंत उस स्त्री ने एक चीख के साथ अपने बच्चे को जन्म दिया, और उसकी बीमारी दूर हो गई। वहाँ उपस्थित सभी लोग, चकित होकर, चिल्ला उठे:

'महान है ईसाई ईश्वर, और महान हैं उनके पुरोहित पोर्फरियस।'

अगली सुबह, उस महिला के माता-पिता, उसके पति और उसके सभी रिश्तेदार संत पोर्फरियस के पास आए, उनके पैरों पर गिर पड़े और ईसाई के रूप में बपतिस्मा लेने का अनुरोध किया। संत ने उन्हें उपदेश देने के बाद, उन्हें उपवास

करने और पवत्रि चर्च में जाने की आज्ञा दी; और कुछ समय बीत जाने के बाद, उन्होंने उन्हें, उस महलिा को जसिने बच्चे को जन्म दयिा था और नवजात शशिु को भी बपतस्मिा दयिा, जसिका नाम उन्होंने अपने नाम पर, पोर्फरियस रखा, क्योंकि वह लड़का था। और इस प्रकार चौसठ लोग मसीह की कलीसयिा में शामलि हुए।

जैसे-जैसे मसीह का झुंड बढ़ता गया, वैसे-वैसे मूर्तपिूजकों का शत्रुत्व भी बढ़ता गया; और दनि-प्रतदिनि उन्होंने वशि्वासयिों को और भी क्रूरता से सताया, उन पर नरिंतर नगरपालकिा के कामों का बोझ लाद दयिा और उन्हें, गुलामों की तरह, पटिाई की धमकी के तहत हर तरह का काम करने के लिए मजबूर कयिा। इसके अलावा, उन्होंने खेतों और अंगूर के बागों में वशि्वासयिों को परेशान कयिा, जसिसे वशि्वासयिों ने बहुत गरीबी में जीवन यापन कयिा और वे प्रचलति लोक कर और शाही करों का भुगतान करने में असमर्थ थे। यह देखकर और अवशि्वासयिों द्वारा वशि्वासयिों पर कएि गए ऐसे अत्याचार को सहन न कर पाकर, पवत्रि पोर्फरियि अपने मेट्रोपॉलटिन, धन्य जॉन के पास सेज़रयिा गए और उनसे वनिती की कि या तो वे उन्हें उनके एपस्कोपेट से मुक्त कर दें या उनके साथ कॉन्स्टेंटनिोपल जाएँ ताकि वे सम्राट से प्रार्थना कर सकें कि वे मूर्तपिूजक मंदरिों के पूर्ण वनिाश और pagans के घमंड को उखाड़ फेंकने का आदेश दें। मेट्रोपॉलटिन जॉन ने यह बेहतर समझा कि सर्दयिों में भी यात्रा की कठनिाइयों को सहना , बलात् पोर्फीरयिस को उनके बशिप पद से मुक्त करने की तुलना में बेहतर है। इस प्रकार, एक जहाज पर सवार होकर वे चल पड़े। सुरक्षति यात्रा के बाद, वे दस दनिों में रोड्स नामक द्वीप[2108] पहुँचे; वहाँ उन्होंने प्रोकोपयिस नामक एक संन्यासी के बारे में सुना, जो एक सुनसान जगह पर तपस्वी के रूप में रहते थे, और जो एक पवत्रि तथा दूरदर्शी व्यक्ति थे, वे उनसे मलिने गए। उन्होंने, उनके आगमन की पूर्व सूचना पाकर और उनके बशिप पद को पहचानकर, उनका ऐसे बशिपों के अनुरूप स्वागत और सम्मान कयिा; और, उनकी यात्रा का कारण जानकर, उन्हें यह नर्दिेश दयिा कि वे जो चाहते हैं उसे प्राप्त करने के लिए उन्हें कॉन्स्टेंटनिोपल में क्या करना चाहिए।

उन्होंने कहा, 'सबसे पहले राजधानी के परम पावन पैट्रआर्क, जॉन क्रसिोस्टोम के पास जाओ।' यह सच है कि वह स्वयं अब शाही कक्षों में नहीं आता-जाता, क्योंकि सम्राज्ञी यूडोक्सयिा उससे नाराज़ हैं; लेकनि सम्राज्ञी का चेंबरलेन[2109] , ख़ास तौर पर ख़ास[2110] Amantius—एक धार्मकि और सदाचारी व्यक्ति—उसके प्रति समर्पति है, और वह आपको उसी के हवाले कर देगा। इस ख़ास के हस्तक्षेप से, आपको सब कुछ मलि जाएगा; क्योंकि वह आपको महारानी के सामने ले जाएगा, और आप स्वयं उसे अपनी ज़रूरत बताएँगे। साथ ही, उसे यह भवषि्यवाणी करें कि वह एक पुत्र को जन्म देगी जो राज करेगा, और जब वह आपसे यह सुनेगी, तो वह प्रसन्न होगी, क्योंकि वह अब नौ महीने से बाँझ है। इसलिए, आपकी भवषि्यवाणी सुनकर, वह आपको वह सब कुछ देगी जो आप चाहते हैं।

पवत्रि बशिप जॉन और पोर्फ़रिी, ऐसा नर्दिेश और आश्वासन प्राप्त करके, प्रसन्नचति्त होकर अपनी यात्रा पर नकिल पड़े और, दस दनि बाद, बाइज़ेन्टयिम पहुँचे। पूजनीय प्रोकॉपयिस की सलाह का पालन करते हुए, वे सबसे पहले परम पावन पैट्रआर्क जॉन क्रसिोस्टोम के पास गए। उन्होंने उनका सम्मानपूर्वक स्वागत कयिा और उनकी यात्रा का कारण जानकर, उन्हें अपना समर्थन देने का वादा कयिा। अगले दनि, रानी के चेंबरलेन, ख़ास आदमी अमानतउिस को बुलाकर, उन्होंने उसे फ़लिस्तिीन से आए बशिपों से मलिवाया और उसे उनका ख्याल रखने तथा राजा से उनकी ओर से मध्यस्थता करने का नर्दिेश दयिा। नपुंसक ने, गाज़ा में मूर्तपिूजकों के हाथों वशि्वासयिों द्वारा झेली गई सभी पीड़ाओं का पवत्रि बशिपों से वस्तिृत वृत्तांत सुनकर, आँसू बहाए और दवि्य उत्साह से भरकर कहा:

'पवत्रि पतिाओं, दुखी न हों, क्योंकि प्रभु यीशु मसीह स्वयं अपने वशि्वासयोग्य सेवकों की रक्षा करेंगे और उन्हें उनके उत्पीड़कों से बचाएंगे। इसलिए, प्रभु से प्रार्थना करो, और मैं रानी से बात करूँगा; और मुझे सभी का उद्धारकर्ता परमेश्वर पर भरोसा है कि वह उसका हृदय दया की ओर मोड़ देगा। सुबह, मैं तुम्हें स्वयं उसके सामने ले जाऊँगा, और तुम यह सब अपने ही होठों से बोलना।"

बशिपों से यह कहकर, ख़ास ने वदिाई ली। सुबह, उसने ईश्वर के पवत्रि पुरुषों, जॉन और पोर्फ़रियिस को शाही कक्षों में बुलाया और उन्हें रानी के सामने ले गया। पवत्रि पुरुषों को देखकर, रानी ने सबसे पहले बात की:

'हमें आशीर्वाद दीजिए, पतिृगण।'

[2108] रोड्स भूमध्य सागर में एक द्वीप है, जो एशयिा माइनर के तट से बहुत दूर नहीं है।

[2109] कुवकि्युलारयिन – एक शयनकक्ष परचिारक, शाही दरबार में एक चेंबरलेन, एक काफी महत्वपूर्ण दरबारी पद।

[2110] यूनाक का अर्थ है 'नपुंसक पुरुष'। बाद में, यह शब्द सामान्यतःसभी दरबारी लोगों के लिए प्रयुक्त होने लगा, भले ही वे नपुंसक न हों।

इसके बाद उन्होंने भी उनके सामने झुककर प्रणाम कयि। जब उन्होंने पवत्रि बशिपों का स्वागत कयि, तो रानी एक सुनहरे सहिासन पर बैठी थीं; इसलएि, उन्होंने उनसे कहा:

'हे परमेश्वर के बशिपों, मुझे क्षमा करें, कि मैं आपको वह सम्मान नहीं दे सकती जसिके आप हकदार हैं, क्योंकि मैं अपने गर्भ में एक शशिु को धारण कर रही हूँ; क्योंकि मेरे लएि दरवाजे पर आपका स्वागत करना उचति होता; लेकनि मेरे लएि प्रभु से प्रार्थना करें, कि उनकी कृपा से मैं अपने गर्भ में शशिु को जन्म दे सकूँ।'

पवत्रि पतिाओं ने, उसकी वनिम्रता से चकति होकर, कहा:

'जसिने साराइन, रेबेका और एलजिाबेथ की कोख को आशीर्वाद दयि, वही तुम्हारी कोख को भी आशीर्वाद दे और तुम्हारे गर्भ में पल रहे शशिु को जीवन दे!'

तब रानी ने उन्हें बैठने का इशारा कयि और बोलने लगीं:

'मैं जानती थी कि आपने इतना कठनि सफर क्यों तय कयि है, क्योंकि अमांतयिस ने मुझे सब कुछ बता दयि है। हालाँकि, यदि आप चाहें, तो स्वयं बोलें, ताकि मैं बेहतर ढंग से समझ सकूँ कि आप क्या माँग रहे हैं।'

और बशिपों ने रानी को मूर्तपिूजकों के हाथों ईसाइयों द्वारा सहे गए सभी उत्पीड़नों के बारे में वस्तिार से बताया, और उससे उन पर हो रहे अत्याचारों को रोकने में मदद करने की वनिती की। उनकी बात सुनकर उसने कहा:

'हे पवत्रि फादरगण, उदास न हों; क्योंकि मैं परमेश्वर के पुत्र, प्रभु यीशु मसीह में अपनी आशा रखती हूँ, कि मैं राजा को आपकी वनिती मानने के लएि मना सकूँ; परन्तु अब जाइए और अपनी यात्रा से वशि्राम लीजएि; मैं देख सकती हूँ कि आप थके हुए हैं। और मेरी खातरि परमेश्वर से प्रार्थना कीजएि, कि वह आपके पक्ष में मेरी मध्यस्थता में सहायता करें।'

पवत्रि बशिपों से यह कहने के बाद, रानी ने उन्हें वदिा कर दयि। जब राजा रानी के पास आया, तो उसने उसे आए हुए फलिस्तिीनी बशिपों और उनकी यात्रा के कारण के बारे में बताया, और गाज़ा में मूर्तपिूजक मंदरिों को नष्ट करने का आग्रह कयि। यह अनुरोध सुनकर, राजा ने कहा:

'मैं जानती हूँ कि इस शहर में मूर्तयिों की पूजा बड़े उत्साह से की जाती है, लेकनि इससे हमें वहाँ लगाए गए कर के माध्यम से काफी धन प्राप्त होता है।' तो, यदि हम गाज़ा के देवताओं के मंदरिों को तुरंत नष्ट कर दें और इस प्रकार मूर्तपिूजक नविासयिों को भड़का दें, तो वे अपने डर में भाग जाएँगे और शहर सुनसान हो जाएगा, जबकि हम उस कर का बहुत बड़ा हस्सिा खो देंगे। इसलएि, क्या यह बेहतर नहीं होगा कि उन्हें धीरे-धीरे वश में कयि जाए? पहले, शहर पर उनका अधकिार छीन लयि जाए, फरि उनके मंदरिों को बंद कर दयि जाए और मूर्तयिों को बलदिान चढ़ाने पर रोक लगा दी जाए? जब वे देखेंगे कि उन्हें कैसे वश में कयि जा रहा है, तो वे सत्य को जान जाएंगे और वशि्वासयिों में शामलि हो जाएंगे।

सम्राट के ये शब्द सुनकर, सम्राज्ञी गहरे दुख में पड़ गईं और आँसुओं के साथ कहने लगीं:

'यदि हम उनकी मदद करने के लएि तैयार नहीं हैं, तो स्वयं मसीह ईश्वर अपने सेवकों, यानी ईसाइयों की मदद करेंगे।'

शाही बातचीत सुनने के बाद, दरबारी अधकिारी अमान्टयिस ने इसे पवत्रि बशिपों तक पहुँचाया। अगले दनि, रानी ने पवत्रि बशिपों को एक बार फरि बुलाया और उनसे कहा:

'मैंने राजा से आपके बारे में, आपकी दुर्दशा और आपकी वनिती के बारे में बात की, लेकनि वह मेरी नहीं सुनेगा, क्योंकि वह गाज़ा के मूर्तपिूजकों को नाराज़ करना मूर्खतापूर्ण समझता है। लेकनि दुखी न हों; मैं राजा को अपनी वनितयिों से तब तक परेशान करती रहूँगी जब तक कि वह आपकी प्रार्थना स्वीकार नहीं कर लेता।'

यह सुनकर, बशिप उसके सामने झुक गए। फरि संत पोर्फरियस ने, संत प्रोकॉपयिस के भवष्यिसूचक शब्दों को याद करते हुए, उससे कहा:

'हे माता, मसीह के वास्ते हमारी भी मध्यस्थता कीजएि। वह स्वयं, आपकी मध्यस्थता के बदले में, आपको एक पुत्र देंगे जो आपके जीवति रहते ही सहिासन पर आरूढ़ होगा, और जो हर प्रकार की राजसी समृद्धि में कई वर्षों तक जीवति रहेगा।'

यह सुनकर रानी आनंद से भर गईं, और उनका चेहरा प्रसन्नता से खलि उठा। फरि उन्होंने कहा:

'पवत्रि पतिाओं, मेरी खातरि प्रार्थना करें कि मुझे एक पुत्र हो; और यदि ऐसा हुआ, तो मैं वादा करती हूँ कि मैं आपकी जो भी इच्छा होगी, उसे पूरा करूँगी; वास्तव में, मसीह की मदद से, मैं न केवल वह करूँगी जो आप माँगते हैं, बल्कि

वह भी जो आप नहीं माँगते, क्योंकि मैं गाज़ा शहर के केंद्र में एक पवित्र चर्च का निर्माण करूँगी।' तो, शांति से जाओ और प्रतीक्षा करो, मानवता के प्रेमी ईश्वर से मेरे लिए प्रार्थना करते हुए।

तब रानी को प्रसव का समय आया, और उन्होंने एक पुत्र को जन्म दिया, ठीक वैसे ही जैसे पवित्र पिताओं ने भविष्यवाणी की थी, और उसे उसके दादा का नाम - थियोडोसियस - दिया गया - क्योंकि राजा आर्काडियस के पिता थियोडोसियस[2111] थे, जो ग्रेटियन[2112] के साथ शासन करते थे। यह दूसरे थियोडोसियस का जन्म एक 'शर्ट' में हुआ था, मानो एक बैंगनी चोगा, जो उनके शासन का शुभ संकेत था; और राजा आर्कैडियस तथा पूरे शाही नगर में बहुत आनंद हुआ। रानी यूडोक्सिया ने, अपनी ओर से, अपने चेंबरलेन अमानटियस को पवित्र पुरोहित जॉन और पोर्फिरियस के पास इन शब्दों के साथ भेजा:

'मैं हमारे ईश्वर मसीह की धन्यवाद करती हूँ, जिन्होंने आपकी पवित्र प्रार्थनाओं के द्वारा मुझे एक पुत्र प्रदान किया है। अतः हे पवित्र फादरों, प्रभु से प्रार्थना करें, नवजात शिशु के जीवन और दीर्घायु के लिए, और मेरे, एक दीन स्त्री, अच्छे स्वास्थ्य के लिए, ताकि मैं आपसे किया गया अपना वचन पूरा कर सकूँ।'

सात दिन बाद, रानी ने एक बार फिर से ईश्वर के पवित्र पुरुषों, जॉन और पोर्फ़िरी को बुलाया और अपने नवजात शिशु को अपनी बाहों में लिए हुए अपने शयनकक्ष के द्वार पर उनसे मिली। उनके सामने अपना सिर झुकाते हुए, उन्होंने कहा:

'पिताजी, मुझे और मेरे पुत्र को आशीर्वाद दीजिए, जिसे ईश्वर ने आपकी पवित्र प्रार्थनाओं के माध्यम से मुझे प्रदान किया है।'

संत जॉन और पोर्फ़िरी ने उस पर और उसके पुत्र पर क्रॉस का चिह्न बनाया, और अपनी सीट पर बैठकर, उन्होंने कई उपयोगी विषयों पर उससे बात की। अन्य बातों के अलावा, रानी ने कहा:

'पिताजी, क्या आप जानते हैं कि मैंने आपके अनुरोध के संबंध में क्या निर्णय लिया है?'

संत पोर्फिरियस ने उत्तर दिया:

'आपने जो भी निर्णय लिया है, मेरी महारानी, आपने वह ईश्वर की इच्छा से लिया है; क्योंकि आज ही रात मुझे एक दर्शन में यह प्रकट हुआ: मैंने खुद को गाजा में, मारनास के मूर्तिपूजक मंदिर में खड़ा हुआ देखा; और आप, वहाँ भी खड़ी हुई, ने मुझे पवित्र सुसमाचार देते हुए कहा: "इसे लो और पढ़ो।" आपके हाथों से सुसमाचार लेकर, मैंने उसे खोला और वह अंश पाया जहाँ प्रभु प्रेरित पतरस से कहते हैं: 'मैं तुझ से कहता हूँ, तू पतरस है, और मैं इस चट्टान पर अपनी कलीसिया की स्थापना करूँगा, और नरक के द्वार उस पर हावी नहीं हो सकेंगे' (मत्ती 16:18)।

आपने, मेरी स्वामिनी, इसके अनुसार मुझसे कहा: 'तुम्हें शांति मिले; हियाव धर और बलवान हो।' मैं हौसले में भर गया, और इससे मुझे विश्वास हो गया है कि परमेश्वर के पुत्र ने हमारे विषय में आपके हृदय में एक अच्छा परामर्श डाला है। तो मुझे बताइए, मेरी स्वामिनी, आपने हमारे लिए क्या भलाई सोची है?

रानी ने उत्तर दिया:

– यदि मिसीह की इच्छा हो, तो कुछ समय बाद शिशु को पवित्र बपतिस्मा प्रदान किया जाएगा। तब तक, जाओ और एक पट्टी तैयार करो जिस पर तुम अपनी इच्छानुसार सब कुछ लिखोगे, और जब बच्चा पवित्र बपतिस्मा के लिए तैयार हो, तो वह पट्टी उस व्यक्ति को सौंप देना जो नवजात को अपनी बाहों में उठाएगा; मैं उसे बताऊँगा कि उसे क्या करना है, और मैं परमेश्वर के पुत्र पर अपना भरोसा रखता हूँ कि वह सब कुछ सर्वोत्तम रूप से व्यवस्थित कर देंगे।

इसलिए वे बाहर गए और एक पट्टा तैयार किया, जिसमें उन्होंने न केवल मूर्तियों के विनाश और उनके मंदिरों को ध्वस्त करने की, बल्कि श्रद्धालुओं को श्रम और करों से राहत देने और उन्हें शहर पर नियंत्रण प्रदान करने की भी याचना लिखी। उन्होंने यह भी अनुरोध किया कि पवित्र ईसाई चर्च, जो बहुत गरीब और जर्जर थी, को शाही संपत्तियों का एक हिस्सा प्रदान किया जाए और उसके मंत्रियों के लिए आजीविका प्रदान की जाए। उन्होंने अपनी याचिका में उत्पीड़ित और गरीब ईसाइयों के लिए कई अन्य उत्साहजनक बातें लिखीं और फिर उस दिन का इंतजार करने लगे जिस दिन राजा का बेटा बपतिस्मा ग्रहण करेगा। उनके बपतिस्मा से पहले ही यह घोषणा कर दी गई थी कि वह राजा बनेगा, क्योंकि उसका जन्म शाही वस्त्रों में हुआ था और शुरू में उसे लंगोट में नहीं बल्कि शाही वस्त्रों में लपेटा गया था। फिर

[2111] यह, बेशक, थियोडोसियस महान की ओर इशारा करता है, जिसने 379 से 395 तक शासन किया।

[2112] ग्रेटियन पश्चिमी सम्राट थे, जिन्होंने थियोडोसियस के साथ ही 375 से 383 तक शासन किया।

भविष्य के राजा को उसके बपतिस्मा के लिए गंभीरता से चर्च ले जाया गया, जबकि पूरा शहर भव्य रूप से सजाया गया था और लोग सबसे महंगे और शानदार कपड़े पहनकर आए थे। भविष्य के राजा को शाही बैंगनी वस्त्रों में लिपटाकर, कीमती परिधानों में सुसज्जित एक विशेष रूप से चुने हुए व्यक्ति द्वारा ले जाया जा रहा था; उसके आगे-पीछे राजकुमारों और बोयारों (अमीरों) की भीड़ चल रही थी; जबकि चारों ओर कवच पहने और सोने से दमकते हथियार लिए सेना मार्च कर रही थी। और कोई भी राजा की सारी महिमा, सुंदरता और वैभव को देख सकता था, इतना कि संत पोर्फ़िरी ने कहा:

'यदि एक सांसारिक, क्षणिक राजा की महिमा ऐसी है, तो स्वर्गीय, शाश्वत राजा की महिमा कैसी होगी!'

जब राजकुमार को चर्च में ले जाया गया, तो दो पवित्र बिशप तैयार कुरान लेकर चर्च के दरवाज़ों पर खड़े थे; और पवित्र बपतिस्मा संपन्न होने के बाद, जब सभी लोग नव-बपतिस्मित राजकुमार के साथ चर्च से बाहर जा रहे थे, तो पवित्र बिशपों ने उद्घोष किया:

– हे नवजात राजा, हम आपसे विनती करते हैं, हमारी प्रार्थना स्वीकार करें और अपने शासन की शुरुआत में ही दयालुता दिखाएँ।

यह कहने के बाद, पवित्र पिताओं ने शिशु पर वह पट्टी रखी। राजकुमार को ले जा रहा व्यक्ति रुक गया; उसने लपेटा हुआ पत्र लेकर उसे खोलकर ज़ोर से पढ़ना शुरू कर दिया, क्योंकि रानी ने उसे ऐसा ही करने का आदेश दिया था। पत्र का एक हिस्सा पढ़ने के बाद, उसने उसे फिर से लपेट दिया; शिशु के सिर के नीचे अपना दाहिना हाथ रखकर, उसने उसे थोड़ा ऊपर उठाया, मानो अपनी सहमति का संकेत दे रहा हो, और उद्घोष किया:

'महामहिम की आज्ञा है कि यहाँ लिखा गया सब कुछ बिना चूके पूरा किया जाए; यह उनका शाही फरमान है, जिसे किसी भी तरह से बदला नहीं जा सकता।'

यह सब देखने और सुनने वालों को आश्चर्य हुआ; उन्होंने नवजात राजा को आशीर्वाद दिया और उनके दीर्घकालीन शासन की कामना की, क्योंकि उन्होंने अपने शासन की शुरुआत दया के कार्य से की थी, साथ ही उन्होंने सम्राट आर्कैडियस की भी प्रशंसा की और कहा कि वह ईश्वर द्वारा धन्य थे, क्योंकि उन्हें एक पुत्र मिला था जो उनके साथ शासन करता था और पहले से ही ऐसे अच्छे कार्यों के लिए आदेश दे रहा था। यह सब रानी को बताया गया। वह आनंद से भरकर, ईश्वर के सामने दंडवत प्रणाम कर धन्यवाद अर्पित करने लगी। जब नव-बपतिस्मा प्राप्त बच्चे को शाही कक्षों में लाया गया, तो उसकी माँ उसे लेने के लिए बाहर आई और उसे अपनी बाहों में लेकर, एक माँ की तरह स्नेह से चूमा। फिर, उसे अपने पति, राजा आर्कैडियस के पास ले जाकर, उन्होंने उन्हें बधाई देते हुए कहा:

'धन्य हैं आप, हे स्वामी, कि आपके जीते-जी आपकी आँखें उस राजा को देखें जो आपकी कोख से उत्पन्न हुआ है।'

यह सुनकर राजा आर्कैडियस बहुत प्रसन्न हुए। और रानी ने, उसे इतना प्रसन्न और आनंदित देखकर, कहा:

'यदि आप अनुग्रह करें, तो आइए यह पता करें कि हमारे राजकुमार को भेंट की गई इस पांडुलिपि में क्या लिखा है, ताकि यहाँ जो कुछ भी लिखा है, उसके संबंध में उनकी पहली आज्ञा बिना किसी देरी के पूरी की जा सके।'

राजा ने आदेश दिया कि वह पट्टिका पढ़ी जाए, और जब वह पढ़ ली गई, तो उन्होंने कहा:

'इस प्रार्थना को मानना कठिन है, परन्तु इसे अस्वीकार करना भी कठिन है, क्योंकि ऐसा करने से हम अपने पुत्र की पहली आज्ञा को रद्द कर देंगे, और यह अनुचित और अयोग्य होगा।'

रानी ने उत्तर दिया:

'न केवल हमारे पुत्र के पहले फरमान को रद्द करना अनुचित है, बल्कि उन पवित्र पुरुषों की विनतियों को अनदेखा करना भी एक पाप है, जिन्होंने मुझे मेरे पुत्र के जन्म की भविष्यवाणी की थी।'

और तुरंत राजा आर्कैडियस ने आदेश दिया कि पैलेस्टाइन के बिशपों द्वारा पट्टिका पर लिखा गया सब कुछ शाही फरमानों द्वारा मान्य किया जाए। जब दोनों राजाओं, आर्कैडियस और थियोडोसियस के नाम पर लिखित आदेश तैयार हो गए, तो रानी ने ईश्वर के बिशप, जॉन और पोर्फिरी को बुलाया, और उन्हें आदेश दिखाते हुए पूछा कि क्या वे उनके लिए स्वीकार्य हैं। वे उनके सामने झुक गए, उनकी कृपापूर्ण और बुद्धिमानी भरी देखभाल के लिए उन्हें धन्यवाद दिया, और अनुरोध करना शुरू किया कि शाही आज्ञा को पूरा करने के लिए गाजा में एक धार्मिक, सम्मानित और वफादार व्यक्ति भेजा जाए, न कि ऐसा कोई जिसे पहले भेजा गया था। और दृढ़ आस्था तथा ईश्वर-भयभीत चरित्र वाला एक व्यक्ति काइनेजियस नामक व्यक्ति के रूप में मिला, जिसे राजाओं ने गाजा जाकर आज्ञा के अनुसार सब कुछ सर्वोत्तम तरीके से व्यवस्थित करने का काम सौंपा। रानी ने, अपनी ओर से, संत पोर्फिरीयस को गाज़ा शहर के केंद्र में एक पत्थर के चर्च

के नरि्माण के लिए, साथ ही एक अतथि गृह की स्थापना के लिए, बहुत सारा सोना दयिा, और उन्होंने चर्च के नरि्माण के लिए जो कुछ भी और आवश्यक होगा, वह प्रदान करने का वादा भी कयिा; इसके अलावा, उसने दोनों बशिपों को केसरयिा और गाजा के चर्चों के लिए सोने और चांदी के उपहार और चर्च के बर्तन दिए, साथ ही उनकी यात्रा के लिए सोना भी दयिा। इसी तरह, राजा ने पवत्रि बशिपों का सम्मान करने और उन्हें उदारतापूर्वक उपहार और धन देने के बाद, उन्हें शांतपिूर्वक वदिा कर दयिा। उन्होंने, परम पावन पैट्रआिर्क जॉन क्रसिोस्टोम को प्रणाम करने के बाद, अपने धर्मप्रांतों के लिए समुद्र यात्रा आरंभ की; और उनके बाद, शाही कुलीन कनिेजयिस, जसिे राजा के आदेश सौंपे गए थे, भी अपनी यात्रा पर नकिल पड़ा।

जब यात्री रोड्स द्वीप के पास पहुँचे, तो पवत्रि संत जॉन और पोर्फीरी ने नावकि से कनिारे लगने का आग्रह कयिा ताकि वे पूजनीय तपस्वी प्रोकोपयिस का अभविादन कर सकें; लेकनि उसने यह कहते हुए मना कर दयिा कि हवा अनुकूल नहीं थी, और उसने मसीह के पवत्रि पुरुषों के अनुरोध पर बलि्कुल भी ध्यान नहीं दयिा; क्योंकि वह गुप्त रूप से एक एरयिन था और ऑर्थोडॉक्स बशिपों से नफरत करता था। लेकनि जब वे उस द्वीप से आगे नकिल गए, तो समुद्र में तुरंत एक तूफान और भारी लहरें उठ खड़ी हुईं, और वे सभी बहुत डर गए, उन्हें डर था कि उनका जहाज टूट जाएगा। यह उथल-पुथल पूरे एक दनि और पूरी रात तक चलती रही। जब भोर का समय हुआ, तो संत पोर्फरियस थोड़ी देर के लिए सो गए और, अपनी नींद में, उन्होंने पूजनीय प्रोकॉपयिस को उनसे बात करते हुए देखा: 'नावकि को अरअिन संप्रदाय को त्यागने[2113] और उसे शाप देने के लिए मना लो, और उसे पवत्रि बपतस्मिा के लिए तैयार करो, और यह भयानक उथल-पुथल तुरंत समाप्त हो जाएगी।' चौंककर जागते ही, संत पोर्फरियस ने यह सब धन्य मेट्रोपॉलटिन जॉन और उनके साथ मौजूद अन्य लोगों को सुनाया; फरि, नावकि को बुलाने के बाद, संतों ने उससे कहा:

'यदि तुम चाहते हो कि तुम्हारा जहाज़ और हम सब डूबने से बच जाएँ, और सबसे बढ़कर तुम्हारी आत्मा अनंतकाल की सज़ा से मुक्त हो जाए, तो अपनी अंधवशि्वास, एरयिन वधिर्म, का त्याग करो और कैथोलकि चर्च में शामलि हो जाओ।'

नावकि यह देखकर चकति था कि पवत्रि बशिपों को एक ऐसा रहस्य पता चल गया था जो कसिी और को नहीं पता था, और उसने उनसे कहा:

'चूँकि ईश्वर ने तुम्हें मेरे हृदय के रहस्य प्रकट कर दिए हैं, मैं एरयिस की शकि्षाओं का त्याग करता हूँ और तुम लोगों की तरह वशि्वास करता हूँ: तो फरि, मुझे पवत्रि वशि्वास में दृढ़ करो।'

जैसे ही उसने यह कहा, तूफ़ान तुरंत थम गया, और समुद्र शांत हो गया। और संतों ने, उसे दविय धर्मग्रंथों से उपदेश देकर और ऑर्थोडॉक्स (सही) वशि्वास में उसे दृढ़ करके, उसे सुसमाचार का प्रचार कयिा और उसका बपतस्मिा दयिा। बाकी यात्रा सुरक्षति रूप से पूरी हुई, और पवत्रि बशिप गाज़ा से बीस स्टेडयिम[2114] दूर मायूम[2115] में उतरे; वहाँ से वे ज़मीनी मार्ग से गाज़ा शहर गए। उनके आगमन की खबर मलिते ही, वशि्वासी भजन और गायन करते हुए, पवत्रि क्रॉस लेकर उनका स्वागत करने के लिए बाहर नकिले, और बड़ी खुशी और उत्सव के साथ उन्होंने परमेश्वर के बशिपों को शहर में प्रवेश कराया। हालाँकि, मूर्तपिूजकों ने यह देखकर क्रोध से भरकर दाँत पीसे, परन्तु उन पर कोई अत्याचार करने का साहस नहीं कयिा; क्योंकि उन्होंने पहले ही सुन लयिा था कि ईसाई बशिपों को राजा ने सम्मानपूर्वक स्वीकार कयिा है और उनके पीछे एक शाही फरमान भेजा जा रहा था, ताकि मूर्तपिूजकों की उग्रता को दबाया जा सके और उनके देवताओं के मंदरिों को नष्ट कयिा जा सके। इस बीच, पवत्रि क्रूस और अपने बशिपों के साथ मार्च करते हुए ईसाई वीनस की मूर्ति के पास पहुँचे; इस मूर्ति को गाज़ा के नविासयिों, वशिेषकर महलिाओं द्वारा बहुत सम्मान दयिा जाता था, जो मोमबत्तयिाँ जलाती थीं और धूपदानों में धूप जलाती थीं: क्योंकि उस मूर्ति के भीतर रहने वाला राक्षस कई लोगों को सपनों में धोखा देता था, और कुंवारी लड़कयिों या ववािहति महलिाओं को हर तरह के कामुक पापों के लिए बहकाता था। तो, जब ईसाई उस मूर्ति के पास पहुँचे, जो सड़क पर एक ऊँचे स्थान पर खड़ी थी, तो राक्षस तुरंत भाग गया, और मूर्ति को ज़मीन

[2113] एरयिन वधिर्म की उत्पत्ति प्रारंभकि चौथी शताब्दी के अधर्मी एरयिस से होती है, जसिने यह शकि्षा दी कि परमेश्वर का पुत्र स्वयं परमेश्वर नहीं है, न ही परमपति के समतत्त्व का है, बल्कि वह सर्वोच्च प्राणी है जसिके माध्यम से परमपति ने संसार की सृष्टि की। इस वधिर्म की नदिा प्रथम सार्वत्रकि परषिद (326 में) में की गई थी, जसिमें परमेश्वर के पुत्र के वषिय में सच्चा सद्धिांत वशि्वास के पहले सात अनुच्छेदों में नरि्धारति कयिा गया था।

[2114] स्टेडयिम लंबाई की एक इकाई है, जो लगभग 88 फाथम होती है; 20 स्टेडयिम 3 वर्स्ट से थोड़ा अधकि है।

[2115] मायूमा – फलिस्तीन में एक बंदरगाह शहर, जो गाजा के लिए एक बंदरगाह के रूप में काम करता था, जो सीधे समुद्र तट पर नहीं बल्कि उससे कुछ दूरी पर स्थति था।

पर गरि दयि; और मूर्त ज़मीन पर गरिकर, कई टुकड़ों में टूट गई, क्योंकि यह संगमरमर की बनी थी, और इसने दो अवशि्वासयिों को मार डाला जो वहाँ खड़े थे , और ईसाई पूजा का मज़ाक उड़ा रहे थे और उसकी नदिा कर रहे थे। यह चमत्कार देखने पर, कई मूर्तपिूजक मसीह में वशि्वास करने लगे और, ईसाइयों में शामलि होकर, पवत्रि चर्च गए और पवत्रि बपतस्मिा के लिए प्रार्थना की: वशि्वास करने वालों में बत्तीस पुरुष और सात महलिाएँ थीं। और अपने चरवाहों के सुरक्षति आगमन और मानव आत्माओं के उद्धार पर वशि्वासयिों के बीच बहुत आनंद हुआ। उसके बाद, धन्य मेट्रोपॉलटिन जॉन गाज़ा में दो दनि रहे और फरि काइसारयिा के लिए प्रस्थान कर गए, जबकि ईसाइयों ने उन्हें वदिाई दी। कुछ दनिों बाद, शाही कुलीन, उपर्युक्त काइनेगयिस, गाज़ा पहुँचे, उनके साथ कई गणमान्य व्यक्ति और गवर्नर अपनी सैन्य शक्ति के साथ थे। मूर्तपिूजक बहुत डरे हुए थे, और उनमें से कुछ शहर से भाग गए। सुबह को, शहर के सभी बुज़ुर्गों और संपूर्ण आबादी को इकट्ठा करके, काइनेजयिस ने उन्हें शाही फरमान दखिाया, जसिके तहत गाज़ा में मूर्तपिूजक मंदरिों को ध्वस्त कयिा जाना था और मूर्तयिों को तोड़ा जाना था। जब यह फरमान सभी के सुनने के लिए ज़ोर से पढ़ा गया, तो अधर्मी भीड़ ने शोर मचाना शुरू कर दयिा और वे रोने और वलिाप करने लगे। हालाँकि, काइनेजयिस, उनकी वलिाप-ध्वनि सहन न कर सका, और उसने सैनकिों को इशारा कयिा; और वे, मूर्तपिूजकों पर टूट पड़े, और उन पर वार करने लगे; और अधर्मी लोगों की भीड़ ततिर-बतिर हो गई, जबकि ईसाई, परम आनंद से हर्षति होकर, राजाओं का धन्यवाद करने लगे और उनकी बहुत प्रशंसा करने लगे। फरि, सैनकिों के साथ मलिकर, वे मूर्तपिूजक मंदरिों पर टूट पड़े और उन्हें बड़े शोर-शराबे के साथ नष्ट करने लगे। शहर में आठ प्रमुख मूर्तपिूजक तीर्थस्थल थे: सूर्य के[2116] , वीनस, अपोलो[2117] , प्रॉसर्पनि[2118] , हेकेट[2119] , फॉर्च्यून[2120] और मार्नस के; अंतमि मंदरि सबसे बड़ा था और उसे नास्तकि मूर्तपिूजकों द्वारा सबसे अधकि बार देखा जाता था। वहाँ बाज़ारों और सड़कों पर, वभिन्नि भवनों में और शहर की दीवारों पर, तथा शहर के बाहर सड़कों के कनिारे, बगीचों और खेतों में अनगनित अन्य मूर्तयिाँ खड़ी थीं: और दस दनिों के भीतर ईसाइयों ने उन सभी मूर्तयिों को तोड़ दयिा और घृणति मूर्तपिूजक मंदरिों को धूल-चटा कर दयिा, सवािय मार्नास के वशिाल और सबसे भव्य मंदरि के, जसिके बारे में कई लोगों ने कहा कि इसे नष्ट नहीं कयिा जाना चाहए, बल्कि मूर्तपिूजक अशुद्धयिों से शुद्ध करके, ईश्वर के चर्च के रूप में पवत्रि कयिा जाना चाहए। मार्नास के मंदरि को संरक्षति करने की इस व्यापक इच्छा को देखते हुए, संत पोर्फरियिस ने ईश्वर से मार्गदर्शन के लिए प्रार्थना करना शुरू कर दयिा; और जैसे ही वह पवत्रि चर्च में दैवीय पूजा का अनुष्ठान कर रहे थे, भीड़ के बीच से एक बच्चे की आवाज़ गूँजी:

'मरनास का मंदरि जला दयिा जाए और नष्ट कर दयिा जाए, क्योंकि इसे राक्षसों को बलदिान कए गए लोगों के रक्त से अपवत्रि कर दयिा गया है; इसकी नींव को धरती से खोदकर बखिेर दयिा जाए, और उस स्थान पर ईश्वर की महमिा के लिए एक नया मंदरि बनाया जाए।'

बच्चा सात साल का था, इसलिए पादरयिों ने सोचा कि उसकी माँ ने उसे यह सखिाया था। उसे पकड़कर उन्होंने डराना शुरू कर दयिा, जैसे कि उसे पीटने का इरादा हो, ताकि वह बता दे कि यह बात उसे कसिने सखिाई थी। लेकनि बच्चा ग्रीक में बोलने लगा, वही शब्द दोहराते हुए – कि मारनास का मंदरि जला दयिा जाए और बर्बाद कर दयिा जाए; तब सभी को एहसास हुआ कि वह पवत्रि आत्मा द्वारा बोल रहा था, क्योंकि यद्यपि वह केवल सात वर्ष का था और उसने कभी ग्रीक नहीं सीखी थी, बच्चा अब उस भाषा में धाराप्रवाह बोल रहा था। इस प्रकार, बच्चे की बातों पर वशि्वास करके, उन्होंने मार्नास के भव्य मंदरि को उसकी नींव तक जलाकर और ध्वस्त कर दयिा; उसे जमीन से खोदने के बाद, उन्होंने उसके खंडहरों को सड़कों और रास्तों पर बखिेर दयिा, ताकि सभी उन पर पैर रख सकें। इसके बाद, सैनकिों ने मूर्तपिूजकों की सभी इमारतों और आवासों की तलाशी लेना शुरू कर दयिा, और जहाँ भी उन्हें छपिी हुई मूर्तयिाँ मलिीं, वे उन्हें इकट्ठा करने लगे; बड़ी संख्या में मूर्तयिाँ इकट्ठा करने के बाद, उन्होंने मूर्तयिों का ढेर लगाकर उन्हें आग लगा दी; इस प्रकार गाज़ा में मूर्तपिूजा का उन्मूलन हो गया। जहाँ तक कनिगियिस का सवाल है, उसने दुष्ट शासकों को पर्याप्त रूप से वश में

[2116] ग्रीक सूर्य देवता, *हेलीओस,* की कई स्थानों पर पूजा की जाती थी। कला में उसे अपोलो जैसा ही चत्रिति कयिा गया, लेकनि उसका चेहरा अधकि गोल था।

[2117] *अपोल्लो* को प्रकाश के साथ-साथ बौद्धकि प्रबोधन, कवति और संगीत के देवता के रूप में पूजा जाता था।

[2118] *प्रसफोन* को पाताल लोक की शासकिा के साथ-साथ पृथ्वी की गहराइयों से उगने वाली अनाज की फसलों की देवी के रूप में भी पूजा जाता था।

[2119] *हेकेट* – एक भयानक अधोलोक देवी जो बुराई और दुष्ट राक्षसों पर शासन करती है; वह अधोलोक से मृतकों की आत्माओं को बुला सकती है और प्रेतों से लोगों को डरा सकती है।

[2120] *फोर्चूना* – को संयोग की देवी, वशिेष रूप से खुशी और समृद्धकि की देवी के रूप में पूजा जाता था।

कर लिया और ईसाइयों पर अत्याचार करने के लिए उन्हें दंडित किया, और फिर वह राजाओं के पास लौट गया; लेकिन, संत के अनुरोध पर, उसने शहर में सेना का एक हिस्सा छोड़ दिया ताकि मूर्तिपूजक फिर से ईसाइयों के खिलाफ़ अपना सिर न उठा सकें। इसके बाद, मसीह के संत ने उस स्थान पर एक क्रूस के आकार का चर्च स्थापित किया जहाँ मार्नस का मंदिर हुआ करता था; रानी यूडोक्सिया द्वारा पार्चमेंट पर चित्रित इस चर्च की एक प्रति भेजी गई थी। इस चर्च के लिए, उसने तीस संगमरमर के स्तंभ भी भेजे, जिनमें से दो पन्ने की तरह चमकते थे। इस प्रकार, महारानी की सहायता से, पाँच वर्षों के भीतर एक चर्च का निर्माण हो गया, जो मारनास के पूर्व मंदिर से अतुलनीय रूप से अधिक सुंदर था। इस चर्च को पवित्र करने के बाद, ईश्वर के बिशप ने दैवीय अनुष्ठान का अनुष्ठान करना शुरू किया, और प्रभु मसीह का इस बात के लिए बहुत धन्यवाद किया कि जिस स्थान पर पहले नीच, खूनी बलिदान झूठे देवताओं को चढ़ाए जाते थे, उसी स्थान पर अब सच्चे ईश्वर को निर्मल, रक्तहीन बलिदान चढ़ाया जा रहा था। तब संत पोर्फिरियस ने धर्मपरायण रानी द्वारा दिए गए सोने का उपयोग करके एक धर्मशाला बनवाई और वहाँ यात्रियों को आश्रय दिया तथा गरीबों को भोजन कराया। ईश्वर की मदद से, उन्होंने ईश्वर के वचन के द्वारा मसीह के झुंड का बुद्धिमानी से मार्गदर्शन किया, जिससे विश्वासियों की संख्या लगातार बढ़ती गई: क्योंकि कई विधर्मी, अपनी मूर्तिपूजक दुष्टता को त्यागकर, ईश्वर मसीह की ओर मुड़ गए; जबकि अन्य मूर्तिपूजक क्रोध और ईर्ष्या से भर गए थे, क्योंकि उन्होंने ईसाई चर्च को फलते-फूलते और शानदार ढंग से बढ़ते हुए देखा, जबकि मूर्तिपूजा मुरझा रही थी और घटती जा रही थी। और इस प्रकार उन्होंने एक बार फिर पवित्र चरवाहे और उनकी भेड़ों के खिलाफ उठने का प्रयास किया। एक अवसर पर, चर्च के व्यवस्थापक और एक मूर्तिपूजक, सैम्पसिकिस नामक एक प्रतिष्ठित नागरिक के बीच, चर्च की संपत्ति से संबंधित एक वस्तु को लेकर विवाद उत्पन्न हुआ। इस हंगामे पर, विश्वासियों और अविश्वासियों दोनों ने अपने-अपने पक्ष का समर्थन करते हुए इकट्ठा हो गए—विश्वासी व्यवस्थापक का समर्थन कर रहे थे, जबकि अविश्वासी सैम्पसिकिस का समर्थन कर रहे थे। लेकिन चूँकि अविश्वासियों की संख्या अधिक थी, उन्होंने विश्वासियों पर काबू पा लिया और लाठियाँ तथा हथियार उठाकर दंगा कर दिया। सात विश्वासियों को मार डालने और कई अन्य को गंभीर रूप से घायल करने के बाद, मूर्तिपूजकों ने जंगली चीखों और हंगामे के साथ बिशप के आँगन में धावा बोल दिया, और संत पोर्फिरियस को मारने के इरादे से आगे बढ़े। यह जानकर, उन्होंने डीकन मार्क से कहा:

'भाई, चलो भाग चलें और कुछ समय के लिए शरण ले लें, जब तक प्रभु का क्रोध शांत नहीं हो जाता।'

और दीवार पर चढ़कर, वे विद्रोहियों के विपरीत दिशा में भाग गए और सलाफी नाम की एक युवती के यहाँ शरण ली, जो धर्म से मूर्तिपूजक थी। अनाथ होने के कारण, वह अपनी बीमार दादी के साथ रहती थी; वह उनकी सेवा करती थी और अपने हाथों की मेहनत से उनका भरण-पोषण करती थी। इस युवती ने अपने घर में पवित्र बिशप और उनके डीकन को छिपा रखा था, और उन्हें भोजन और पानी देती थी। और संत पोर्फिरियस उस दिन और रात, और पूरे अगले दिन तक उसके साथ ही रहे। अगली रात, जब हंगामा और विद्रोह शांत हो गया, तो संत मार्क के साथ अपने घर लौटे और पाया कि वहाँ की हर चीज़ लूट ली गई थी, और धन्य बरोख वहाँ पटिकर और घावों से ढके हुए पड़े थे, कि वे मुश्किल से सांस ले रहे थे। ईसाइयों ने यह सब सीज़रिया में रहने वाले एम्फीपेट[2121] को बताया। उन्होंने इस विद्रोह को भड़काने और हत्या करने वालों को गिरफ्तार करने के लिए सैनिक भेजे; कुछ को उन्होंने मौत की सज़ा दी, जबकि अन्य को बुरी तरह पीटने के बाद जीवित छोड़ दिया। उस समय से, दुष्ट चुप हो गए। और पोर्फ़िरियस, मसीह के पवित्र सेवक, ने अपने जीवन का शेष समय शांति और सुकून से बिताया। संत ने उस पूर्वोक्त कन्या सलाफा का धन्यवाद किया, जिसके साथ उन्होंने अपने उत्पीड़क के हत्यारे हाथों से शरण ली थी, और उसे पवित्र बपतिस्मा के माध्यम से प्रबुद्ध किया; उन्होंने उसकी बीमार वृद्ध माँ को ठीक किया, उसका भी बपतिस्मा किया, और चर्च की संपत्तियों से उनका भरण-पोषण किया। उनका इरादा उस कन्या का विवाह एक योग्य पति से कराने का था, लेकिन वह मसीह से सगाई करना चाहती थी, जिस पर संत आत्मा में बहुत प्रसन्न हुए; उसे मसीह की सेवा के लिए समर्पित करने के बाद, उन्होंने उसे निर्दोष कुंवारी कन्याओं की पंक्ति में शामिल कर लिया: उसने, अपनी ओर से, अपने जीवन के अंत तक ईश्वर को प्रसन्न रखा, उपवास और प्रार्थना के द्वारा अपनी पवित्र कुँवारी अवस्था को बनाए रखा, संत पोर्फिरियस की ईश्वर-प्रसन्न करने वाली प्रार्थनाओं की सहायता से, जो दिन-रात अपने झुंड के लिए ईश्वर से अखंड निवेदन किया करते थे।

[2121] एन्फिपेट – प्रांत का सर्वोच्च मजिस्ट्रेट।

[2122]मसीह के पवत्रि संत एक महान चमत्कारी के रूप में प्रसद्धि हुए। इस प्रकार, उनकी प्रार्थनाओं के द्वारा, उन्होंने तीन युवकों को बचाया जो एक गहरे कुएँ में गरि गए थे, और उन्हें पूरी तरह से सुरक्षति और अक्षुण्ण छोड़ दयिा, और उन्होंने अपनी प्रार्थना से एक ऐसी महलिा को मृत्युदंड दयिा जो मनीकयिाई वधिर्म की अनुयायी थी, जो दैवीय चालाकी और वधिर्मी कथाओं से भरी थी, जसिने ऑर्थोडॉक्सी का बहुत अपमान कयिा और कई लोगों को अपनी दुष्टता में भटकाया: क्योंकि, अचानक गरि पड़ने पर, उसने अपनी अंतमि सांस ली। और संत पोर्फरियस ने ईश्वर की महमिा के लिए कई अन्य चमत्कार कए। चौबीस वर्ष, ग्यारह महीने और आठ दनिों तक मसीह की कलीसयिा का चरवाहा रहने के बाद, संत परम चरवाहे, ईश्वर के पुत्र, महान महायाजक, यीशु मसीह के पास चले गए, जन्हिें पति और पवत्रि आत्मा के साथ, युगानुयुग सम्मान और महमिा प्राप्त हो, आमेन। आमेन।

- उसी दनि, हम पवत्रि शहीद सेबेस्टयिन का स्मरण करते हैं, जनिका सरि सम्राट नीरो के शासनकाल में तलवार से कलम कर दयिा गया था[2123] ।

कॉन्टाकयिन, स्वर 2:

हम आपके परम पवत्रि सद्गुणों से सुशोभति हैं; हे सर्वधन्य ईश्वर-ज्ञानी पोर्फरियस, आप पुरोहतित्व के वस्त्र से भूषति थे, और आप अपनी मध्यस्थता से चंगाई लाते हैं, हम सभी के लिए अनवरत प्रार्थना करते हुए।

12 मार्च

27 फरवरी (पुराना कैलेंडर)

हमारे पूजनीय पति डेकापोलटिन प्रोकोपयिस, कन्फेशर की स्मृति

27 फरवरी को स्मरणोत्सव

डेकापोलसि का क्षेत्र, जसिका नाम इसके भीतर स्थति दस शहरों के नाम पर पड़ा है, गलील की समुद्र के कनिारे स्थति है; पवत्रि सुसमाचार प्रचारक मरकुस इस क्षेत्र का उल्लेख करते हुए कहते हैं: 'यीशु फरि से गलील की समुद्र पर, डेकापोलसि की सीमाओं के पार गए'[2124] (मरकुस 7:31)। आदरणीय प्रोकोपयिस द कन्फैसर इस क्षेत्र के मूल नविासी थे। मठवासी तपस्या में नपिुण, कठोर अनुशासन द्वारा परखे गए, और अपनी आत्मा की पवत्रिता से वशिष्टि, वे तपस्वयिों के बीच प्रसद्धि और प्रतष्ठिति थे। उस समय, प्रतमिा-भंग के वधिर्म के कठनि दनि शुरू हो गए थे; इसका पहला उत्प्रेरक कानूनहीन ग्रीक सम्राट लयिो द इसाउरयिन[2125] था, जसिने अन्यायपूर्वक पवत्रि प्रतमिाओं को मूर्तयिाँ कहा और उनकी पूजा करने वालों को मूर्तपिूजक कहा। उसने नर्दियता से कई नर्दिोष ऑर्थोडॉक्स ईसाइयों को मार डाला और पवत्रि प्रतमिाओं की पूजा करने के लिए अपने से पहले आए सभी ऑर्थोडॉक्स राजाओं, संतों और ईसाइयों को दोषी ठहराया, जसिसे वह सभी के शाप का पात्र बन गया। तब ऑर्थोडॉक्सी का महान और अटूट स्तंभ तथा सच्चे धर्म के दृढ़ रक्षक, आदरणीय प्रोकॉपयिस, ने धार्मकिताहीनों की भीड़ के वरिुद्ध बहादुरी से खड़े होकर उनका सामना कयिा, जन्होंने अपने अधर्म में, परमेश्वर के वचन के अवतार का अपमान कयिा और पवत्रि प्रतमिाओं का अपमानपूर्वक खंडन कयिा। उन्होंने वधिर्मयिों को उनकी मूर्खतापूर्ण तर्कशक्ति को उजागर करके और अपने अजेय, ईश्वर-प्रेरति

[2122] संत पोर्फरियिस की मृत्यु का वर्ष 420 माना जाता है।

[2123] यह पवत्रि शहीद संत फोतनि के अनुचर दल से संबंधति था, जनिका पर्व दविस 20 मार्च को होता है। रोमन सम्राट नीरो ने 54 से 68 ईस्वी तक शासन कयिा।

[2124] डेकापोलसि – यॉर्डन के दूसरी ओर का एक क्षेत्र या जलि, जो उत्तर में दमश्कि, दक्षणि में फलिाडेल्फयिा, पश्चमि में स्कथिोपोलसि और पूर्व में कनाफा तक फैला हुआ था। यहाँ दस शहर थे, जनिमें मुख्य रूप से मूर्तपिूजक रहते थे, हालांकि उनमें कई यहूदी भी थे।

[2125] वह 717 से 741 तक शासन कयिा।

शब्दों से परास्त करके शर्मदिा कयिा; जैसे मकड़ी के जाले को फाड़ते हुए, पूजनीय प्रोकॉपयिस ने उनकी चालाक मौखकि उलझनों को सुलझा दयिा।

इसके कारण उन्हें अधर्मी राजा का क्रोध झेलना पड़ा, जो मरुभूमसि े नकिले एक जंगली शेर की तरह शकिार की तलाश में गरज रहा था। उसकी आज्ञा पर, पूजनीय संत को पकड़ लयिा गया और बेरहमी से पीटा गया; उनके यातनादाताओं ने लोहे के औजारों से उनके शरीर को चीर-फाड़ डाला, और फरि उन्हें एक अंधेरी और बदबूदार कालकोठरी में डाल दयिा। लेकनि संत ने अपने सभी दुखों को दृढ़ता से सहन कयिा। उनके साथ पीड़ति थे आदरणीय बेसलि, जो पहले प्रोकॉपयिस के साथ उपवास और सदाचार में साथ काम कर चुके थे। दोनों ने अब पवत्रि प्रतमिाओं के लिए एक साथ महान यातनाएं सहन कीं। दोनों को एक साथ कैद कयिा गया और अवश्विासी अत्याचारी की मृत्यु तक वहीं रखा गया। जब लयिो की मृत्यु हो गई, और वह न केवल अपने वर्तमान जीवन से बल्कि अपने भवष्यि के शाश्वत जीवन से भी वंचति हो गया, तो संत प्रोकॉपयिस को अपने मत्रि बेसलि और अन्य संतों के साथ जेल से रहिा कर दयिा गया। उन्होंने अपने जीवन के शेष भाग को तपस्या के कार्यों में बतिाया, कई लोगों को सद्गुणों का उपदेश दयिा और उन्हें मोक्ष की ओर ले गए। अपने पूजनीय वृद्धावस्था में, वे मसीह परमेश्वर के पास चले गए, ताकि वे उन्हें केवल एक प्रतमिा में ही नहीं, बल्कि आमने-सामने देख सकें, और ताकि मसीह के लिए एक तपस्वी और पीड़ति के रूप में, जन्हिोंने उनकी पवत्रि प्रतमिा के लिए रक्त बहाने तक प्रयास कयिा था, वे अपने श्रम का एक योग्य पुरस्कार प्राप्त कर सकें।

द्रोपारयिन, स्वर 8:

आपने अपने अश्रुओं की धाराओं से उजाड़ रेगस्तिान को उपजाऊ बनाया, और अपने आहों की गहराइयों से सौ परश्रिम उत्पन्न कए; आप संसार के लिए एक दीपक थे, जो चमत्कारों से जगमगा रहे थे, हे हमारे पतिा प्रोकॉपयिस: मसीह परमेश्वर से प्रार्थना करें कि हमारी आत्माओं का उद्धार हो।

कॉन्टाकयिन, स्वर 4:

आज चर्च को अपनी प्रभात मानकर, वह सभी बदनामी के अंधकार को दूर करती है, हे दव्यि रहस्यवादी, अति महमिामय प्रोकोपयिस, तुम्हारा सम्मान करते हुए।

परम पूजनीय फलालेयस की स्मृति।

27 फरवरी को स्मरणोत्सव

संत फलाले,[2126] के सलिसियिाई क्षेत्र के मूल नविासी थे। सांसारकि मोह-माया का त्याग करने के बाद, वे सबसे पहले पूजनीय सव्वास द सैंक्चअ्इड के मठ में आए। मठ जीवन के तपस्वी कार्यों को पसंद करने के बाद, उन्होंने एक दैवीय आचरण अपनाया और अपने पुण्य जीवन के लिए, उन्हें पुरोहति (presbyter) का पद देकर सम्मानति कयिा गया। कुछ वर्षों बाद, वह लाओदीकयिा के मेट्रोपोलसि से संबंधति सीरयिाई शहरों में से एक, गावाला गए। शहर से बीस स्टेडयिम दूर एक बड़ा कब्रस्तिान का टीला था। उस पर एक मूर्तपिूजक मंदरि था, जो अब खंडहर हो चुका था और प्राचीन कब्रों से घरि हुआ था; वहाँ अशुद्ध आत्माओं की भीड़ नविास करती थी। जो भी वहाँ से गुजरता, वह इस स्थान से डरता था, क्योंकि अशुद्ध आत्माएँ न केवल भूत-प्रेत दखिाकर यात्रयिों को डराती थीं, बल्कि अक्सर उन पर हमला भी करती थीं, जसिसे मनुष्यों और जानवरों दोनों को बहुत नुकसान पहुँचता था। यह सुनकर, पूजनीय फलालेई उस स्थान के लिए रवाना हुए और वहाँ बस गए। उन्होंने अपने लिए एक छोटा सा तंबू बनाया और उसमें रहे, उपवास का अभ्यास करते हुए, तपस्या द्वारा शरीर को कष्ट देते हुए, और दनि-रात अखंड प्रार्थना करते हुए। अशुद्ध आत्माएँ ऐसा पड़ोसी सहन नहीं कर

[2126] सलिसियिा – एशयिा माइनर का एक दक्षणि-पूर्वी प्रांत, जो कभी रोमन साम्राज्य के सबसे समृद्ध क्षेत्रों में से एक था – इसकी सीमा पूर्व में सीरयिा, उत्तर में कैपैडोसयिा और लकिोनयिा, पश्चमि में पसिीडयिा और पम्फलियिा से लगती है, और दक्षणि में भूमध्य सागर और एक खाड़ी से घरि हुआ था। आज, यह क्षेत्र तुर्की का हस्सिा है।

सकीं। एक वशिाल झुंड में इकट्ठा होकर, वे बड़े क्रोध के साथ उस संत पर टूट पड़ीं, उन्होंने जंगली चीखों से उन्हें डराने की कोशशि की, उन्हें धमकाया, और हर तरह की चालाकी से उस संत को उस जगह से नकिलने के लिए मजबूर करने का प्रयास कयिा जसिे वे लंबे समय से अपना मानते थे। लेकनि, ईश्वर में अपने वशि्वास में अडगि, पूजनीय फलालेई, प्रार्थना और क्रॉस के चहि्न से स्वयं की रक्षा करते हुए, एक बहादुर और अजेय योद्धा की तरह दृढ़ खड़े रहे, और दुष्ट आत्माओं की कमजोर शक्ति को पैरों तले कुचल दयिा।

इस प्रकार, लंबे समय तक, हर दनि और वशिेष रूप से रात में, संत ने अशुद्ध आत्माओं के खलिाफ बहादुरी से लड़ाई लड़ी और ईश्वर की मदद से, अंततःउन्हें हरा दयिा। वे शर्म के मारे भाग गए, क्योंकि वे मसीह के अजेय योद्धा पर वजिय प्राप्त करने में असमर्थ थे।

भूतों को भगाने के बाद, परमेश्वर के उस मनुष्य ने अपने लिए एक छोटा, तंग कोठरी बनाया जो उसके कद के लिए कसिी भी तरह से उपयुक्त नहीं थी—बस दो कोहनी ऊँची और एक कोहनी चौड़ी; उसमें वह न केवल खड़ा हो सकता था, बल्कि सामान्य रूप से बैठ भी नहीं सकता था: आदरणीय फलालेउस लंबी कद-काठी के थे, और इसलिए, अपनी कोठरी में बैठे समय, उन्हें हमेशा अपने घुटनों तक सरि झुकाए रहने के लिए मजबूर होना पड़ता था। वे लगभग दस वर्षों तक इतने तंग हालात में रहे। उस समय, साइरेन के बशिप थयिोडोरेट उनसे मलिने आए, जनि्होंने परम पूज्य फलालेउस को सुसमाचार पढ़ते हुए पाया। जब बशिप ने उनसे पूछा कि उन्होंने जीवन का ऐसा मार्ग क्यों चुना, तो संत ने उत्तर दयिा:

'मैं एक बड़ा पापी हूँ; यह वशि्वास करते हुए कि आने वाले जीवन में मेरे लिए महान यातनाएँ प्रतीक्षा कर रही हैं, मैंने अपनी स्वेच्छा से अपने लिए इतनी छोटी सी कोठरी बनाई है, इस आशा में कि इन छोटी-मोटी कठनिाइयों के माध्यम से मैं शाश्वत यातना से बच सकूँ।'

उनसे बात करके, बशिप को स्वयं को बहुत लाभ हुआ।

ईश्वर ने आदरणीय फलालेउस को चमत्कार करने का वरदान भी प्रदान कयिा: अपनी प्रार्थनाओं के द्वारा, वह हर प्रकार की बीमारयिों से पीड़ति लोगों को ठीक करने में सक्षम थे, और उन्होंने न केवल लोगों को बल्कि पशुओं को भी ठीक कयिा। इसलिए, कई लोग एक चंगा करने वाले झरने की तरह उनके पास आए, और उन्हें न केवल शारीरकि बल्कि आध्यात्मकि स्वास्थ्य भी मलिा, जसिसे कई पड़ोसी यूनानी प्रभु मसीह की ओर मुड़ गए। गावाला शहर में रहने वाले ईसाइयों के बीच कई मूर्तपिूजक थे। वे सभी संत फलालेउस के चमत्कारों के माध्यम से सत्य के ज्ञान की ओर ले जाए जाने पर पवत्रि वशि्वास से प्रबुद्ध हुए। इन नव-धर्म परविर्तन कएि हुए ईसाइयों की मदद से, रेवरेंड ने मूर्तपिूजक मंदरि को नष्ट कर दयिा और कब्रों को ध्वस्त कर दयिा। इस स्थान को दैवीय अशुद्धता से शुद्ध करने के बाद, उन्होंने वहाँ सभी पवत्रि शहीदों के नाम पर ईश्वर का एक चर्च बनाया और ईश्वर की महमिा के लिए उसमें दैनकि पूजा स्थापति की। उन्होंने अपने जीवन का शेष समय पहले की तरह ही तपस्या के कार्यों में व्यतीत कयिा, और ईश्वर को प्रसन्न कर, उन्होंने बहुत वृद्धावस्था में में देहांत कयिा। यरूशलेम के संत सोफ्रोनीयस 'लमिोनार'[2127] में इस सम्मानति पति के बारे में नम्निलखिति लखिते हैं:

'संत सावस के मठ के पुरोहति, बाबा पीटर ने, हमें सलिसिियि के बाबा फलाले के बारे में बताया, कि यह धन्य पति साठ वर्षों तक एक भकि्षु रहे और रोना कभी बंद नहीं कयिा, यह कहते हुए: 'हे भाइयो, परमेश्वर ने हमें यह समय पश्चाताप के लिए दयिा है, और यदि हम इसे बर्बाद कर देते हैं, तो हमें इसके लिए कठोरता से परखा जाएगा।'

आदरणीय फलालेई का लगभग 460 ईस्वी में नधिन हो गया, उन्होंने 60 वर्षों तक एक भकि्षु के रूप में जीवन व्यतीत कयिा।

[2127] 'लमिोनार' (ग्रीक में 'घास का मैदान' या 'चरागाह' के लिए) ग्रीक भकि्षु जॉन मॉस्कस (622) की एक बहुत ही व्यापक रूप से पढ़ी जाने वाली रचना है। फलिस्तीन, सीरयिा, मस्रि, साइप्रस, कॉन्स्टेंटनिोपल और रोम के मठों में, मोस्चस ने ईसाई तपस्वयिों के जीवन के वृत्तांतों, साथ ही उनकी कहावतों और नैतकि शकि्षाओं का एक वशिाल संग्रह कयिा, और इस सब को अपने *लमिोनेर* में प्रस्तुत कयिा, जो बाद के समय के संतों के जीवन पर आधारति कृतयिों (hagiographical works) के लिए एक प्रमुख स्रोत के रूप में काम आया। मोस्कुस ने *लमिोनार* रोम में पूरा कयिा, जहाँ उनके साथ उनका शष्यि, यरूशलेम के पैट्रआर्क, भकि्षु सोफ्रोनीयस थे। *लमिोनार* पूरा करने के बाद, मोस्कुस ने इसे सोफ्रोनीयस को सौंप दयिा।

गुफाओं के पुरोहति, परमपूज्य टाइटस का जीवन

27 फरवरी को स्मरण कयि जाता है

जैसे *'परमेश्वर का क्रोध आकाश से सब अधर्म के वरिुद्ध प्रगट होता है'* (रोमयिों 1:18) और जैसे 'परमेश्वर का शान्त, जो सब समझ से परे है (फलिप्पियिों 4:7), उस व्यक्त के शरीर और आत्मा की रक्षा के लिए उतरती है जो उसे खोजता है—यह सब हम धन्य टाइटस के जीवन में देखते हैं। वे कीव-पेचेरस्क लाव्रा[2128] के एक भक्षिु थे, जन्हिें पुरोहति का पद दयिा गया था। आदरणीय टाइटस को शाश्वत आनंद के योग्य कर्म करने की प्रेरणा नम्निलखिति परस्थितिि से मलिी: उनके एक भाई थे, शरीर से नहीं बल्क आत्मा से, उसी मठ के एक भक्षिु, जनिका नाम इवाग्रयिस था, जो डकिन के पद पर थे। दोनों भक्षिुओं को एक महान और सच्चा प्रेम बाँधता था, इसलिए हर कोई उनके सामंजस्य और पारस्परकि स्नेह को देखकर चकति होता था। लेकनि शैतान, जो हर अच्छी चीज़ से नफरत करता है और गेहूँ के बीच जंगली अनाज बोने का आदी है (मत्ती 5:22), ने उनके बीच वैमनस्य बो दयिा। उसने उनके हृदयों को इतने क्रोध और घृणा से भर दयिा क वि एक-दूसरे का चेहरा तक नहीं देख सकते थे और इसलिए हर तरह से एक-दूसरे से बचने की कोशशि करते थे। जब एक धूपदान लेकर चर्च में जाता, तो दूसरा धूप की गंध से भाग जाता; यद, हालांक, एक हटता नहीं, तो दूसरा उसके पास से बनिा धूप दखिाए नकिल जाता। वे लंबे समय तक ऐसे पापी अंधकार में रहे, क शैतान के प्रभाव में, उन्होंने एक-दूसरे से मेल-मलिाप कयि बनिा और एक-दूसरे से क्षमा मांगे बनिा दव्यि उपहार अर्पति करने और पवत्रि Communion ग्रहण करने की भी हम्मित कर ली। भाइयों ने उनसे कई बार मेल-मलिाप करने के लिए कहा, लेकनि वे सुनते ही नहीं थे। एक बार, ईश्वर की व्यवस्था से, पूजनीय टाइटस इतने गंभीर रूप से बीमार पड़ गए क उन्हें अब अपनी जान बचने की कोई उम्मीद नहीं थी। तब उन्होंने अपने अपराध पर बहुत रोया और नम्रतापूर्वक डकिन इवाग्रयिस को संदेश भेजकर कहा:

'भाई, प्रभु के वास्ते मुझे क्षमा करो, क्योंक मैंने अपने क्रोध से तुम्हें आहत कयि है।'

लेकनि इवाग्रयिस ने न केवल टाइटस को माफ नहीं कयि, बल्क उस पर और भी अधकि अपमान करने और उसे शाप देने लगा। हालाँक, भाइयों ने, यह देखकर क टाइटस पहले से ही मर रहा था, इवाग्रयिस को जबरदस्ती उसके पास ले आए ताक वह अपने भाई से मेल-मलिाप कर सके। उसे देखते ही, बीमार व्यक्त, थोड़ा उठते हुए, इवाग्रयिस के पैरों पर गरि पड़ा, और अपने आँसुओं के बीच बोला:

'मुझे क्षमा करो, पति, और मुझे आशीर्वाद दो!'

लेकनि नर्दियी और अमानवीय एवाग्रयिस अपने भाई से मुँह फेर लयि और, सभी के सामने, घृणा से भरे शब्द बोले:

'मैं उससे कभी मेल नहीं करना चाहता: न इस जीवन में और न ही अगले जीवन में!'

यह कहकर, वह भाइयों की पकड़ से खुद को छुड़ाकर गरि पड़ा। भक्षिुओं ने उसे उठाने की कोशशि की, लेकनि वह मृत पाया गया। वे न तो उसके हाथ जोड़ पाए, न उसके होंठ बंद कर पाए, न उसकी आँखें — मानो वह बहुत पहले ही मर चुका हो। उसी क्षण, धन्य टाइटस पूरी तरह से स्वस्थ होकर उठ खड़ा हुआ, मानो वह कभी बीमार ही न हुआ हो। एक की अचानक मृत्यु और दूसरे के शीघ्र स्वस्थ होने के दृश्य से सभी भयभीत हो गए। उन्होंने धन्य पुरोहति टाइटस से पूछना शुरू कयि क इसका क्या अर्थ है। धन्य टाइटस ने उन्हें वह बताया जो उन्हें स्वर्ग से प्रकट कयि गया था:

'मेरी बीमारी के दौरान,' इस प्रकार धन्य टाइटस ने अपना वृत्तांत शुरू कयि, 'जब मैं अभी भी क्रोध से भरा हुआ था, मैंने स्वर्गदूतों को मुझसे मुंह मोड़ते देखा। वे मेरी आत्मा के वनिाश पर रो रहे थे, जबक राक्षस इस बात पर प्रसन्न हो रहे थे क मैं अपने भाई के प्रत क्रोध रखता था। इसीलिए मैंने आपसे मेरे लिए मेरे भाई से क्षमा मांगने जाने के लिए कहना शुरू कयि। जब तुम उसे मेरे पास लाए, और मैं उसके सामने झुका, लेकनि वह मुझसे मुँह मोड़ गया, तब मैंने एक नर्दियी दूत को देखा, जो एक जलती हुई भाला लिए हुए था, जसिसे उसने उस व्यक्त को मारा जसिने मुझे माफ नहीं कयि था, और वह मरकर गरि पड़ा। उसी दूत ने मुझे अपना हाथ दयिा, मुझे उठाया, और इस प्रकार मैं स्वस्थ हो गया।

इस कहानी से भयभीत होकर, भक्षिुओं ने मृतक इवाग्रयिस के लिए कड़के आँसू बहाए। उन्होंने उसे दफनाया, लेकनि उसके हाथ जोड़ने या उसकी आँखें और मुँह बंद करने में असमर्थ रहे। अपनी ओर से, उन्होंने क्रोध से बचने का वशिष ध्यान रखा, एक-दूसरे को कसिी भी दुखद शब्द के लिए क्षमा कयि, और प्रभु के वचनों को ध्यान में रखा: *'जो कोई बनिा कारण अपने भाई पर क्रोध करता है, वह न्याय के अधीन होगा'* (मत्ती 5:22)। इसी प्रकार, संत एफ्रेम सीरयिाई

[2128] स्वाभावकि रूप से, कीव-पेचेरस्क लाव्रा, जसिकी स्थापना 1073 में परम पूज्य एंथनी और परम पूज्य थयिोडोसयिस ने की थी

ने कहा: 'यदि कोई शत्रुता की अवस्था में मर जाता है, तो एक नरि्दयी न्याय उसकी प्रतीक्षा कर रहा है।' और तब प्रबुद्ध भाइयों के बारे में कहा जा सकता है: *'जो तेरे वचन से प्रेम करते हैं, उनके बीच में बड़ी शान्ति है'* (भजन संहिता 118:165)।

लेकिन विशेष रूप से स्वयं पुरोहित टाइटस, यह देखकर कि अपने भाई से मेल-मिलाप के द्वारा, उसे परमेश्वर से मेल-मिलाप प्राप्त हुआ था और वह मृत्यु से—केवल शारीरिक ही नहीं बल्कि आध्यात्मिक रूप से भी—छुड़ाया गया था, उस समय से उसने किसी पर क्रोध करने का विचार भी नहीं किया; बल्कि, क्रोध को त्यागकर, उसने भाइयों के प्रति एक स्थिर प्रेम प्राप्त किया, जो, शांति की जड़ के रूप में, परिपूर्णता का बंधन है, जो *'शुद्ध हृदय, अच्छी विवेकबुद्धि और सच्चे विश्वास'* (1 तीमु. 1:5) से उत्पन्न होता है; यह *'धीरज और सहनशील है; प्रेम ईर्ष्या नहीं करता'* (1 कुरिन्थियों 13:4); इसमें सभी सद्गुण समाहित हैं, और विशेष रूप से: उपवास, पवित्रता और निरंतर प्रार्थना। उस समय से, धन्य व्यक्ति ने हमेशा अपने हृदय में धर्मग्रंथ के वचन रखे: *'समझदार बनो और अपनी प्रार्थनाओं में जागते रहो। सबसे बढ़कर, एक-दूसरे से पूरी लगन से प्रेम करो, क्योंकि प्रेम बहुत से पापों को ढाँप देता है'* (1 पतरस 4:7-8)।

रक्तहीन बलिदान चढ़ाकर, inspectवित्र टाइटस ने सुसमाचार के निम्नलिखित वचनों को भी पूरा किया: *'अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम करना सभी दहन-बलि और बलिदानों से बड़ा है'* (मरकुस 12:33)। उन्होंने इतनी अटूट शांति प्राप्त की कि, पूर्ण प्रेम की भावना से भरकर, वे अपने दुख में यह नहीं कह सके: *'तेरे क्रोध के कारण मेरा कोई अंग भी चैन में नहीं है; मेरे पापों के कारण मेरी हड्डियों में कोई शांति नहीं है'* (भजन संहिता 37:4)। इस तपस्वी की आत्मा का पूर्ण शांति का भाव इतना था कि उसमें प्रेरित की यह बात सचमुच पूरी हुई: *'क्योंकि परमेश्वर का राज्य खाने-पीने का नहीं, परन्तु धार्मिकता और शान्ति और पवित्र आत्मा में आनन्द का है'* (रोमियों 14:17)।

इसलिए, स्वर्ग में भी, धन्य टाइटस को उस विश्राम को प्राप्त करने के योग्य समझा गया, जिसके लिए उन्होंने प्रभु के पास प्रस्थान करने से पहले, कई परिश्रमों और धार्मिकता के कार्यों के बाद, प्रयास किया था। उनका पवित्र शरीर केव्स मठ की गुफाओं में से एक में विश्राम करता है, जो निचले स्वर्ग की तरह संतों से भरी है; जबकि उनकी आत्मा स्वर्ग में उपस्थित है, जहाँ उन्हें उनके सामने प्रकट हुए स्वर्गदूतों के हाथों ले जाया गया था। इस पूर्व पापी—जो बाद में योग्य पश्चाताप के द्वारा एक धर्मी व्यक्ति बन गया—के बारे में वे बस इतना ही कह सकते थे जो संत पौलुस ने प्रेरित टाइटस के बारे में कहा था: 'ईश्वर, जो दीन लोगों को सांत्वना देते हैं, ने हमें टाइटस के आगमन से सांत्वना दी' (2 कुरिन्थियों 7:6)। हम भी, आनंदित होकर, उसी धर्मग्रंथ से इन स्वर्गीय निवासियों को उत्तर में कह सकते हैं: आपकी सांत्वना को देखकर हमें सांत्वना मिली है, और विशेष रूप से तितुस के आनंद में हम आनन्दित हुए हैं, जिसे आपके बीच विश्राम मिला है। परम पूजनीय तितुस की पवित्र प्रार्थनाओं के द्वारा, हम भी, सभी क्रोध को त्यागकर, पापों की क्षमा प्राप्त करें और हमारे प्रभु मसीह यीशु से लौकिक और शाश्वत विश्राम प्राप्त करें, जो *'प्रेम और शान्ति के परमेश्वर'* हैं / (2 कुरिन्थियों 13:11)। उसी की महिमा हो, पिता और पवित्र आत्मा के साथ, युगानुयुग[2129] । आमीन।

13 मार्च

28 फरवरी (पुराना संस्करण)

एलेक्ज़ेंड्रिया के पवित्र हायरोमार्टायर और पैट्रिआर्क, संत प्रोटेरियस का जीवन और कष्ट-संहार।

28 फरवरी को स्मरण किया जाता है

[2129] आदरणीय टाइटस 12वीं शताब्दी में रहते थे।

[2130]संत सरिलि की मृत्यु के बाद, वधिर्मी डयिोस्कोरस[2131] अलेक्जेंड्रयिा के पैट्रआिर्कल सहिासन[2132] पर आसीन हुआ। इस अधर्मी व्यक्ति ने मस्रि भर में अपनी वधिर्म फैला दी। उस समय वहाँ एक धर्मनष्ठि पुरोहति रहते थे, जो सच्चे धर्म में अडगि थे, जनिका नाम प्रोटेरयिस था। वे अपने जीवन की पवत्रिता के लएि प्रसद्धि थे और दैवीय प्रेरति समझ और ज्ञान से परपिूर्ण थे। प्रोटेरयिस ने देखा कि कई लोग उस पादरी के संप्रदाय में भटक गए थे, जसिने झूठमूठ दावा कयिा था कि मसीह में एक ही स्वभाव है, और उन्होंने संप्रदायवादयिों के खलिाफ जोरदार संघर्ष कयिा। पैट्रआिर्क डयिोस्कोरस को उन पर बहुत क्रोध आया; इस ईश्वर-वश्विासी रक्षक को भी अपने वचिारों के लएि मनाने की इच्छा से, उन्होंने चालाकी से प्रोटेरयिस की चापलूसी की और उन्हें प्रोटोप्रेस्बटिर (प्रमुख पुरोहति) का पद भी दयिा, लेकनि उनकी कोशशिें व्यर्थ रहीं। अलेक्जेंड्रयिा के परम पावन पैट्रआिर्क सरिलि द्वारा वश्विास में दृढ़ कएि गए संत प्रोटेरयिस अडगि रहे। सम्राट मार्सयिन के शासनकाल में कालसीडोन में आयोजति चौथे सार्वभौमकि परषिद में, Dioscorus को उसकी वधिर्म के लएि दोषी ठहराया गया, उसे उसके पैट्रआिर्कल पद से हटा दयिा गया, चर्च से बहष्कृित कर दयिा गया और पाफ्लागोनयिा क्षेत्र[2133] के गंगा नामक शहर में नर्विासति कर दयिा गया, जहाँ कुछ समय बाद उसकी मृत्यु हो गई। पदच्युत डयिोस्कोरस के स्थान पर, संत प्रोटेरयिस, जो वास्तव में ऐसे पद के योग्य थे, को ऑर्थोडॉक्स बशिपों, पुरोहतिों और धर्मनष्ठि ईसाइयों द्वारा अलेक्जेंड्रयिा के पैट्रआिर्क के पद पर चुना गया।

लेकनि अलेक्जेंड्रयिा के अधकिांश लोग, जो डयिोस्कोरस के वधिर्म के जहर में डूबे हुए थे और कुछ वधिर्मी पुरोहतिों द्वारा और अधकि उकसाए गए थे, प्रोटेरयिस की पैट्रआिर्क के रूप में नयिुक्ति के वरिोधी थे। और जब संत प्रोटेरयिस, ऑर्थोडॉक्स पैट्रआिर्क के रूप में स्थापति हो जाने के बाद, अपने पदभार संभालकर चल्सेडॉन परषिद में पवत्रि पतिाओं द्वारा प्रमाणीकृत सच्चे धर्म का प्रचार करने लगे, तो लोगों के बीच वद्रिोह भड़क उठा और संघर्ष फैल गया। कुछ पुरोहति, जनिका नेतृत्व एलूर के नाम से जाने जाने वाले पादरी थमिोथी और डकिन पीटर मोंग कर रहे थे—जो डयिोस्कोरस के गुंडे और उसकी वधिर्म के समर्थक थे—उन्होंने अन्य लोगों के साथ मलिकर ऑर्थोडॉक्स धर्म को त्याग दयिा, सेंट प्रोटेरयिस के साथ संप्रभुता (कॉम्युनयिन) करने से इनकार कर दयिा, और लोगों के बीच फूट डाल दी। परणिामस्वरूप, अलेक्जेंड्रयिा के चर्च के भीतर एक बड़ा वभिाजन उत्पन्न हो गया: कुछ लोगों ने नव-नयिुक्त पैट्रआिर्क को मान्यता दी और ऑर्थोडॉक्सी (सही आस्था) पर दृढ़ रहे, जबकि अन्य ने डयिोस्कोरस की वापसी की मांग की और काल्सेडोन परषिद में स्थापति सद्धिांतों को शाप दयिा। दोनों पक्षों ने एक-दूसरे के खलिाफ एक भयंकर संघर्ष छेड़ा। डायोस्कोरस के समर्थकों ने सेंट प्रोटेरयिस के खलिाफ वद्रिोह कर दयिा, और उन्हें व्यभचिारी कहा, क्योंकि जब डायोस्कोरस जीवति था, तब उसने अपनी मंगेतर - अलेक्जेंड्रयिा के चर्च - को अपना ही मान लयिा था; उन्होंने प्रोटेरयिस को एक वधिर्मी कहा, जो पैट्रआिर्क के पद के अयोग्य था। सेंट प्रोटेरयिस ने वधिर्मयिों के हाथों बहुत कष्ट सहे; यह डरते हुए कि पादरी उसे मार सकते हैं, उन्होंने सैन्य सुरक्षा की मांग की; वह आम लोगों के असंतोष की आशंका में नरिंतर भय में रहते थे, क्योंकि डयिोस्कोरस के अनुयायी पहले ही शहर के मजस्ट्रिेटों और वहां तैनात सैनकिों के खलिाफ उठ खड़े हुए थे। इस समय, थबिाइड के कौंसल अशांति को शांत करने के लएि अलेक्जेंड्रयिा पहुंचे। वद्रिोहयिों ने कौंसल के साथ आए सैनकिों पर पत्थर फेंकना शुरू कर दयिा। सैनकिों ने, लोकप्रयि वद्रिोह को देखकर, सेरापसि के मंदरि में जाकर खुद को अंदर से बंद कर लयिा। वद्रिोहयिों ने मंदरि को घेर लयिा और, उसे अपने कब्जे में लेने के बाद, अंदर मौजूद सभी सैनकिों को जला दयिा। जब इस खबर की सूचना धर्मपरायण राजा मार्सयिन को मलिी, वह बहुत क्रोधति हुआ और अशांति

[2130] काल्सीडोन की परषिद (ईस्वी 451), मसीह में दो स्वभावों के मलिन के प्रश्न पर ऑर्थोडॉक्स सत्य की अभव्यिक्ति के रूप में, एक परभिाषा जारी की जसिके अनुसार मसीह को पूर्णतःईश्वर और पूर्णतःमानव के रूप में स्वीकार कयिा गया, पति के साथ दव्यिता में एकसार और हमसे मानवता में एकसार, अवतार के बाद *दोनों स्वभावों में* बने रहने वाले, *असपष्ट और अवभिाजति,* ताकि प्रत्येक स्वभाव की वशिष्टिता बनी रहे जबकि वे मसीह के एक ही व्यक्तित्व में एकजुट हों।

[2131] डायोस्कोरस, कॉन्स्टेंटनिोपल के आर्चमैंड्राइट, यूटकिस की वधिर्म का मुख्य प्रस्तावक था; बाद वाले का तर्क था कि मसीह, यद्यपि *दो स्वभावों से* जन्मे थे, *दो में नहीं* रहे, क्योंकि परमेश्वर के वचन के अवतार के समय, उन्होंने जो मानवीय स्वभाव ग्रहण कयिा, उसने अपनी सारी वास्तवकिता खो दी और वह दव्यिता में वलीन हो गया। चर्च के इतहिास में, यूटकिस के धर्मद्रोह को *मोनोफज़िटिज़िम* (मोनोफज़िटिस - वे जो एक ही स्वभाव में वश्विास रखते हैं) के रूप में जाना जाता है।

[2132] अलेक्जेंड्रयिा – एक प्रसद्धि शहर जसिे लगभग 333 ईसा पूर्व में महान अलेक्जेंडर ने भूमध्य सागर के दक्षणिी तट पर एक प्रायद्वीप पर (वर्तमान समान नाम वाले शहर से कुछ दक्षणि में) स्थापति कयिा था; यह कभी शक्षिा का केंद्र और पृथ्वी पर सबसे प्रमुख व्यापारकि शहर था; चौथी शताब्दी की शुरुआत में, यह ईसाई धर्म का केंद्र और पादरी का मुख्यालय बन गया।

[2133] पाफ्लागोनयिा एशयिा माइनर के उत्तरी भाग में एक ऊबड़-खाबड़, पहाड़ी क्षेत्र है।

को शांत करने के लिए एक बड़ी सैन्य टुकड़ी भेजी, यह आदेश देते हुए कि मिस्र के शहरों से जहाजों द्वारा अलेक्जेंड्रिया लाया गया अनाज और गेहूं अब से अलेक्जेंड्रिया नहीं भेजा जाए, बल्कि पाइलस को भेजा जाए, और वहां से कॉन्स्टेंटिनोपल को। इसके अलावा, मार्सियन ने अलेक्जेंड्रिया के लोगों से सार्वजनिक स्नानागार और अन्य सुविधाएँ छीन लीं, निवासियों की स्वतंत्रता पर प्रतिबंध लगा दिया, और वे जिन सार्वजनिक मनोरंजन का आनंद लेते थे, उन्हें बंद कर दिया। नागरिक, इस पर दुखी और सबसे बढ़कर रोटी की कमी से पीड़ित, विनम्र हो गए और उन्होंने परम पावन पैट्रिआर्क प्रोटेरियस से सम्राट के पास जाकर उनकी ओर से मध्यस्थता करने का अनुरोध किया। संत प्रोटेरियस ने प्रस्थान किया और अपने शहर की ओर से सम्राट से विनती की, और सम्राट ने, उन पर दया करके, उस पवित्र पुरुष के सभी अनुरोधों को मान लिया। नागरिकों को उनकी पूर्व स्वतंत्रता पुनर्स्थापित कर दी गई, और रोटी सीधे अलेक्जेंड्रिया में पहुँचाई जाने लगी। इसके बाद, पैट्रिआर्क ने कुछ समय तक अपने अनुयायियों का शांतिपूर्वक शासन किया और तिमोथी एलूर को चर्च से बहिष्कृत कर दिया, जिसने पश्चाताप करने से इनकार कर दिया था।

धार्मिक मार्सियन की मृत्यु के बाद, विधर्मी एक बार फिर सिर उठा बैठे और आम लोगों को भड़काने लगे, और केवल तब रुके जब उन्होंने अपना उद्देश्य हासिल कर लिया। चतुर और धूर्त थिमोथी एलूर, जो जादू-टोने में भी शामिल था, ने मठों में रहने वाले या रेगिस्तान में तपस्या करने वाले मिस्र के संतों को निम्नलिखित तरीके से धोखा दिया।

एक अँधेरी, अमावस्या की रात, थॉमस ने गहरे वस्त्र पहनकर एक-एक कोठरी में जाकर हर भिक्षु को नाम से पुकारना शुरू कर दिया। जब भिक्षुओं ने उससे पूछा कि वह कौन है और क्या चाहता है, तो उसने उत्तर दिया:

'मैं स्वर्गदूतों में से एक हूँ, मुझे ईश्वर ने इसलिए भेजा है ताकि तुम प्रोटेरियस के साथ कोई संबंध न रखो और कालसेडोन परिषद के आदेशों को स्वीकार न करो। तुम्हें तिमोथी एलूर को अलेक्जेंड्रिया का बिशप नियुक्त करना होगा।'

इस प्रकार, एक राक्षस की सहायता से, उस चालाक चापलूस ने उन्हें धोखा दिया। हालाँकि, भिक्षुओं ने दुश्मन की चालाकी को पहचानने में असफल रहते हुए, झूठ को सच मान लिया और, एक-दूसरे को उस देवदूत के दर्शन के बारे में बताते हुए, सहमत हो गए और इकट्ठा हो गए। एक-दूसरे से सलाह-मशविरा करने के बाद, वे सभी अलेक्जेंड्रिया के लिए रवाना हो गए - मानो युद्ध के लिए; वे सभी पवित्र बिशप प्रोटेरियस के खिलाफ क्रोध से अंधे हो गए थे और उसे चर्च से बाहर निकालना चाहते थे। उस समय, थिमोथी ने अलेक्जेंड्रिया में अपने चारों ओर कई विद्रोहियों को इकट्ठा कर लिया था; कुछ को उसने बहकाया, जबकि दूसरों को गुप्त रूप से पैसे दिए। एक अनुकूल क्षण की प्रतीक्षा में, जब कांसुल डायोनिसियस शहर से अनुपस्थित थे – उन्हें ऊपरी मिस्र में हिरासत में रखा गया था – थॉमस, कई समान विचारधारा वाले लोगों, किराए पर रखी गई एक सशस्त्र सेना, और उनके साथ शामिल भिक्षुओं के साथ, चर्च के लिए रवाना हो गए। विद्रोहियों में दो पदच्युत बिशप और कई पादरी भी शामिल थे जिन्हें चर्च से बहिष्कृत कर दिया गया था। उन्होंने थॉमस को बिशप के रूप में अभिषिक्त किया और उसे अलेक्जेंड्रिया का पैट्रिआर्क घोषित कर दिया। उसने यह सब सभी धार्मिक नियमों की अवहेलना करते हुए, सभी शाही कानूनों को नज़रअंदाज़ करते हुए, और केवल विद्रोही जनता तथा धोखा खाए हुए भिक्षुओं पर भरोसा करके किया।

परम पावन पैट्रिआर्क प्रोटेरियस ने, ऐसी बगावत देखकर और कौंसुल की अनुपस्थिति के कारण मदद के लिए किसी के न होने पर, भाग जाने का निश्चय किया। वे रात में गुप्त रूप से शहर से निकल गए। जब वे एक सुनसान जगह पर सो गए, तो भविष्यवक्ता यशायाह उन्हें सपने में दिखाई दिए और कहा:

'शहर लौट जाओ; वहाँ मैं तुम्हारा इंतज़ार करूँगा!'

उस दर्शन पर विचार करते हुए, प्रोटेरियस को एहसास हुआ कि एक शहीद की मृत्यु उनका इंतजार कर रही है। वह लौट आए और चर्च के बपतिस्मा गृह में प्रवेश कर गए। इस बीच, विद्रोही, संत प्रोटेरियस को मारने की इच्छा से, उन्हें हर जगह खोज रहे थे। जब उन्हें पता चला कि वह बपतिस्मा गृह में हैं, तो उन्होंने उन्हें वहीं बंद कर दिया। तब उनमें से कुछ अंदर गए और उन्होंने संत के शरीर को यातना देने वालों द्वारा साथ लाई गई लोहे की छड़ों के नुकीले सिरे से चीर-फाड़ कर, उन्हें और उनके साथ मौजूद छह अन्य लोगों को मार डाला। उन्होंने ठीक उसी क्षण निर्दोष रक्तपात किया जब हमारे पासकॉवर—मसीह—हमारे लिए बलिदान किए गए थे; यह हत्या पवित्र शनिवार को हुई। लेकिन हत्यारे खून से तृप्त नहीं हुए और अपनी क्रूरता को और भी आगे बढ़ा दिया। मसीह के शहीद के पैरों में रस्सियाँ बाँधकर, उन्होंने उनके पवित्र शरीर को शहर के केंद्र में घसीटा, उन्हें विभिन्न औज़ारों से मारा और उनके टुकड़े-टुकड़े कर दिए। कुछ लोगों ने, अपने चरम क्रोध में, कुत्तों या जंगली जानवरों की तरह, उसके शरीर में अपने दाँत गड़ा दिए। एक बड़ी चिता बनाकर,

उन्होंने मसीह के पीड़ति के शरीर को जला दयिा, और उसकी राख को हवाओं में बखिेर दयिा[2134] । इसी समय, उनके झूठे पादरी टमिोथी के आदेश पर, उन्होंने उस बशिप के सहिासन को भी जला दयिा जसि पर संत प्रोटेरयिस बैठे थे, मानो वह पवत्रि व्यक्तदि्वारा अपवत्रि कर दयिा गया हो; इस प्रकार इन दुष्ट और अधर्मी लोगों ने ईश्वर के सेवक को अधर्मी घोषति कर दयिा।

संत प्रोटेरयिस की अमानवीय हत्या के बाद, तमिोथी ने मस्रि के सभी शहरों में अपने सैनकि भेजकर ऑर्थोडॉक्स बशिपों को नकिाल दयिा और उनकी जगह उन लोगों को नयिुक्त कर दयिा जन्हिें उसने स्वयं नयिुक्त कयिा था। तब उत्पीड़ति ऑर्थोडॉक्स बशिपों और पुरोहतिों ने, सभी वश्विासयिों के साथ मलिकर, धर्मपरायण सम्राट लयिो को एक याचकिा भेजी, जो मार्शयिन के बाद सहिासन पर बैठे थे; ऑर्थोडॉक्स ने एक समान याचकिा उनकी पवत्रिता अनातोलयिस, कॉन्स्टेंटनिोपल के पैट्रआर्क को भी भेजी; अपनी याचकिाओं में उन्होंने वह सब कुछ बताया जो हुआ था और आँसू भरी वनिती की कअिलेक्जेंड्रयिा के चर्च को ऐसी वपित्तसि मुक्तमिलि। सम्राट और पैट्रआर्क दोनों ने ईश्वर के पवत्रि और नर्दिोष बशिप, प्रोटेरयिस की अमानवीय हत्या पर गहरा शोक व्यक्त कयिा। सम्राट ने तुरंत अपने गणमान्य व्यक्तयिों को एक सेना के साथ अलेक्जेंड्रयिा भेजा, और कई वद्रिोहयिों को मौत की सज़ा दी गई: कुछ के हाथ काट दएि गए, दूसरों की जीभ काट दी गई, कुछ को कैद कर दयिा गया, जबकअिन्य को कोड़ों से पीटा गया और गेलओिपोलसि ( ) में नर्वासति कर दयिा गया। जहाँ तक झूठे पैट्रआर्क, थमिोथीउस एल्यूर का सवाल है, उसे मुकदमे का सामना करना पड़ा। ऑर्थोडॉक्स बशिपों द्वारा नदिा कएि जाने पर, उसे उसका उचति दंड मलिा: न केवल उससे उसका बशिप पद छीन लयिा गया, बल्कउिसे मसीह की कलीसयिा से बहष्कृत भी कर दयिा गया और गंग्रा शहर में नर्वासति कर दयिा गया, जहाँ उसके शक्षिक डयिोस्कोरस को एक बार बंदी बनाकर रखा गया था। उनकी जगह, सलोफाकयिोल के नाम से जाने जाने वाले एक अन्य थओिडोराइट्स को अलेक्जेंड्रयिा में पैट्रआर्केट के पद पर पदोन्नत कयिा गया। वे अपने दृढ़ वश्विास, ज्ञान और सदाचारी जीवन के लएि वशिष्टि थे, जसिके लएि सभी उन्हें बहुत सम्मान देते थे। और अलेक्जेंड्रयिा की कलीसयिा में शांतआिई, जसिने उस समय से, सभी ऑर्थोडॉक्स के साथ मलिकर, त्रमिूर्तमिें एक ईश्वर, पतिा, पुत्र और पवत्रि आत्मा की महमिा करना शुरू कर दयिा। आमीन।

हमारे पूजनीय पतिा बेसलि द कन्फैसर की स्मृत

28 फरवरी को स्मरण कयिा जाता है

संत बेसलि प्रतमिा-भंजक, लयिो द इसाउरयिन के शासनकाल में रहते थे। संसार और उसकी प्रलोभनों को त्यागकर, वे एक मठ में चले गए और एक पुण्यपूर्ण मठवासी जीवन व्यतीत कयिा। जब पवत्रि प्रतमिाओं की पूजा के वरिुद्ध उत्पीड़न शुरू हुआ, तो संत बेसलि ने प्रतमिा-भंजकों का साहसपूर्वक वरिोध कयिा। इसके लएि उन्हें गरिफ्तार कर कई यातनाएँ दी गईं; फरि भी, इसके बावजूद, बेसलि ने प्रतमिा-भंजकों की वधिर्मी शक्षिाओं को अस्वीकार कर दयिा और सत्य के लएि संत प्रोकोपयिस के साथ खड़े रहे, यहाँ तक कअिपना रक्त भी बहाया। आदरणीय प्रोकॉपयिस की तरह, उनके पूरे शरीर पर कोड़े बरसाए गए; फरि उन्हें कैद कर दयिा गया, जहाँ वे दुष्ट राजा की मृत्यु तक लंबे समय तक कष्ट भोगते रहे। अपने उत्पीड़क की मृत्यु के बाद, परम पूज्य बेसलि को संत प्रोकॉपयिस और अन्य कन्फेशर्स के साथ रहिा कर दयिा गया, और वे पहले की तरह तपस्या के कार्यों में लगे रहे, कई लोगों को ऑर्थोडॉक्स धर्म में परविर्तति कयिा और उन्हें सदाचारी जीवन का उपदेश दयिा। ईश्वर को समर्पति जीवन के कई वर्षों के बाद, उन्हें धन्य नधिन प्राप्त हुआ और प्रार्थना, धन्यवाद तथा अकथनीय आनंद के साथ, उन्होंने प्रभु[2135] की ओर प्रस्थान कयिा, जन्हिें वे बचपन से ही प्रेम करते थे।

[2134] संत प्रोटेरयिस ने 467 में, लयिो महान के शासनकाल के दौरान, शहादत प्राप्त की।

[2135] संत बेसलि का नधिन लगभग 750 में हुआ।

ट्रोपारयिन, स्वर 1:

हे हमारे ईश्वर-धारी पिता बेसलि, आप एक तपस्वी, देह में एक स्वर्गदूत और एक चमत्कारी के रूप में प्रकट हुए; उपवास, जागरण और प्रार्थना के द्वारा, आपने दिव्य वर प्राप्त किए, और विश्वास के साथ आपके पास आने वालों को रोगों से चंगा किया तथा उनकी आत्माओं का उपचार किया। उसकी महिमा हो जिसने आपको शक्ति दी, उसकी महिमा हो जिसने आपको मुकुट पहनाया, उसकी महिमा हो जो सभी को चंगा करने के लिए आपके माध्यम से कार्य करता है।

कॉन्टाकयिन, स्वर 8:

हे परम धन्य और परम पवित्र बेसलि, आपने उच्च स्थान से दिव्य प्रकटिकरण प्राप्त किया; हे बुद्धिमान, आप संसार के मध्य से चले गए, और, मठवासी धार्मिकता का जीवन जीने के बाद, आपको अनुग्रह से चमत्कार करने और दुर्बलताओं को ठीक करने की शक्ति प्रदान की गई।

पवित्र शहीद नेस्टर, मैगडिया के बिशप की स्मृति

28 फरवरी को स्मरणोत्सव

संत नेस्टर को प्रार्थना करते समय उनके घर से ले जाया गया, जिसके दौरान उन्हें एक नर भेड़िये के दर्शन से उनके शहीद होने की पूर्व चेतावनी मिली थी; उन्हें मैगडिसि (एशिया माइनर में पम्फिलिया क्षेत्र में) के राज्यपाल इरिनार्कस द्वारा व्यक्तिगत रूप से पेरगा लाया गया था[2136] । रास्ते में, संत नेस्टर को एक भूकंप और स्वर्ग से आई एक आवाज़ से बल मिला। पर्गा में, भयानक यातनाओं के बाद, वर्ष 250 में डेसियस के उत्पीड़न के दौरान वे क्रूस पर मर गए।

पूज्यनीय महिलाएँ मरीना और काइरा की स्मृति

28 फरवरी को स्मरण किया जाता है

आदरणीय मरीना और कीरा का जन्म बेरिया शहर में हुआ था[2137] , उनके माता-पिता शहर में कुलीन और प्रसिद्ध थे। लेकिन उन्होंने अपने कुलीन वंश को दरकिनार कर दिया और वयस्क होने पर, शहर के बाहरी इलाके में चले गए, उन्होंने अपने लिए ज़मीन का एक छोटा सा टुकड़ा घेर लिया, और अपने आश्रम के प्रवेश द्वार को पत्थरों और मिट्टी से बंद कर दिया—केवल एक छोटा सा रास्ता छोड़ दिया जिससे उन्हें अपनी ज़रूरत का भोजन प्राप्त हो सके और आगंतुकों से बातचीत हो सके—और वे इस घिरे हुए स्थान में, खुली हवा में, तपस्या का जीवन जीने लगे। अपने हृदय में ईश्वर की महिमा करते हुए, पूजनीय पिता हर समय मौन में रहते थे, और केवल पचास दिनों में एक बार एक ही दिन के लिए मौन तोड़ते थे। अपनी ढीली मठवासी चोगा के नीचे, संतों ने बहुत भारी लोहे की जंजीरों को पहना हुआ था और उन्होंने भूख और उसके परिणामस्वरूप होने वाले दुखों को असाधारण धैर्य के साथ सहन किया। लगातार तीन वर्षों तक, वे हर चालीस दिनों में केवल एक बार ही भोजन करते थे। एक अवसर पर, प्रभु के जीवन-दायक समाधि की पूजा करने के लिए निकलने के बाद, उन्होंने अपनी पूजा पूरी करने तक कुछ भी नहीं खाया; और अपनी वापसी की यात्रा में, उन्होंने अपनी यात्रा की पूरी दूरी—जो 20 स्टेडियम थी—एक निवाला भी चखा बिना तय की। उन्होंने पवित्र शहीद थेकला के चर्च की यात्रा के दौरान भी यही कारनामा किया। इस प्रकार के तपस्वी जीवन द्वारा खुद को विशिष्ट बनाने के बाद, ये पवित्र महिलाएं अंततः उस शाश्वत जीवन में प्रवेश कर गईं जिसकी उन्होंने इतनी लालसा की थी[2138] ।

[2136] एशिया माइनर का एक शहर।

[2137] बेरिया शहर सीरिया में, सीरियाई राज्य की प्राचीन राजधानी एंटिओक के पूर्व में स्थित था।

[2138] वे लगभग 450 ईस्वी में निधन हो गए।

14 मार्च

29 फरवरी (पुराना संस्करण)

मार्च

हमारे पूजनीय पिता रोम के कैसियिन की स्मृति

29 फरवरी को स्मरणोत्सव

आदरणीय कैसियिन रोम के मूल निवासी थे और कुलीन तथा प्रतिष्ठित माता-पिता के पुत्र थे। अपने प्रारंभिक यौवन से ही, उन्होंने ज्ञान और पवित्र धर्मग्रंथों के प्रति प्रेम दिखाया। अपनी लगन और स्पष्ट बुद्धि के लिए प्रसिद्ध, उन्होंने पहले दर्शनशास्त्र और खगोल विज्ञान का अध्ययन किया, और फिर पवित्र धर्मग्रंथ के भक्तिपूर्ण अध्ययन की ओर रुख किया, जिसमें उन्होंने इतनी अच्छी तरह से महारत हासिल की कि, अपने ज्ञान के कारण, वह अपने समय के सबसे उत्कृष्ट पुरुषों में से एक थे। इसके अलावा, उन्होंने एक पवित्र जीवन जिया और वे हृदय की पवित्रता, अच्छे चरित्र और अन्य सद्गुणों के लिए विख्यात थे। अपने स्वदेश को छोड़कर, वे संत जॉन क्राइसोस्टोम के साथ रहने के लिए कॉन्स्टेंटिनोपल गए। उससे और ज्ञान प्राप्त करने और सदाचारी जीवन सीखने के बाद, वे एक संन्यास-आश्रम में चले गए। वहाँ के एक मठ में, संत कैसियिन ने मठवासी संन्यास के संकल्प लिए, और स्वयं को पूरी तरह से आज्ञाकारिता और सभी मठवासी श्रमों के लिए समर्पित कर दिया, उन्होंने स्वयं को कठिन मठवासी जीवन के अनुकूल बनाया, जिसमें उपवास और अन्य तपस्या की मांग थी। इन तपस्या प्रयासों ने उनमें नए और उच्चतर प्रयासों की इच्छा जगाई, और वह वहाँ मौन जीवन जीने के लिए एक सुनसान जगह पर चले गए। काफी समय तक, संत कैसियिन ने इसी तरह परिश्रम किया, प्रलोभन को समझना सीखा और महान परिश्रमों से खुद को थकाया। अन्य पवित्र संतों से अपने लिए अधिक लाभ प्राप्त करने की इच्छा से, उन्होंने उस स्थान को छोड़ दिया जहाँ उन्होंने पूर्ण मौन का पालन किया था और मिस्र, थेबाइड, माउंट नाइट्रियिन, एशिया, पोंटस और कैपाडोसिया के सभी मठों का दौरा किया। अपनी यात्राओं के दौरान कई महान संतों के जीवन से परिचित होकर और मठवासी तपस्या के विभिन्न रूपों का अध्ययन करने के बाद, संत कैसियिन ने मैसेलिया में दो मठों की स्थापना की, एक पुरुषों के लिए और एक महिलाओं के लिए। इसके अतिरिक्त, उन्होंने शिक्षाप्रद कथनों की कई पुस्तकें लिखीं, जो ज्ञान और लाभ की प्रेरक चेतावनियों से भरी हैं, ताकि कोई भी व्यक्ति उन्हें ध्यान और लगन से पढ़कर अपनी आत्मा के लिए पर्याप्त लाभ प्राप्त कर सके और जान सके कि इन आत्मा-लाभकारी पुस्तकों के पवित्र लेखक का जीवन और तर्क कैसा था [2139] । आदरणीय कैसियिन ने परम पवित्र कुँवारी मरियम से परमेश्वर के वचन के अवतार के संबंध में नेस्टोरियस के विरुद्ध भी लिखा[2140] ; परमेश्वर की माता की एक ऑर्थोडॉक्स तरीके से महिमा करके,

---

[2139] आदरणीय कैसियिन – तपस्वी जीवन के लिए एक मार्गदर्शक। 12 पुस्तकों में से पहली पुस्तक 'कीनोबिया के नियमों पर' में, वह एक भिक्षु की बाहरी आकृति, यानी उसके वस्त्रों पर चर्चा करते हैं; दूसरे में, रात के भजनों और प्रार्थनाओं के क्रम पर; तीसरे में, दिन की प्रार्थनाओं और भजनों के क्रम पर; चौथे में, संसार का त्याग करने के क्रम पर। 'पिताजी के साथ 24 संवाद' में मरुभूमि के पिताजी द्वारा विभिन्न आध्यात्मिक विषयों पर चर्चाएँ शामिल हैं। 13वें संवाद में, वे अनुग्रह पर चर्चा करते हैं।

[2140] नेस्टोरियस – एक संप्रदाय-प्रवर्तक जो मूल रूप से यूफ्रेटिस पर स्थित सीरियाई शहर केसरिया जर्मैनिकि से था; न तो उसकी उत्पत्ति और न ही उसके जन्म का वर्ष ज्ञात है; उसके मुख्य विरोधी, अलेक्जेंड्रिया के संत सिरिल की गवाही के अनुसार: 'वह कीचड़ से आया था और उसकी उत्पत्ति शर्मनाक थी'। कॉन्स्टेंटिनोपल का पैट्रिआर्क बनने के बाद, उन्होंने शुरू में खुद को विधर्मों का एक उत्साही उत्पीड़क के रूप में प्रस्तुत किया, लेकिन बाद में अप्रत्याशित रूप से खुद एक विधर्मी निकले। उन्होंने चर्च के भीतर यह दावा करना शुरू कर दिया कि परम पवित्र कुँवारी मरियम को ईश्वर की माता नहीं कहा जाना चाहिए, क्योंकि उन्होंने ईश्वर को जन्म नहीं दिया था, बल्कि केवल मनुष्य यीशु को जन्म दिया था, जो केवल दिव्यता का वासस्थान और हमारे उद्धार का साधन थे; यह व्यक्ति, पवित्र आत्मा की प्रेरणा से, मसीह, अर्थात् अभिषिक्त, बन गया, और परमेश्वर का वचन उसके साथ एक विशेष, शुद्ध रूप से नैतिक मिलन में वास किया। तीसरे सार्वभौमिक परिषद (431) में, नेस्टोरियस के धर्म-विश्वास को निंदा किया गया, और उसे स्वयं पहले एंटिओक के पास एवरिनिया के मठ में, और फिर मिस्र के दूरस्थ इबसिस के ओएसिस में निर्वासित कर दिया गया, जहाँ कुछ वर्षों बाद उसकी मृत्यु हो गई।

संत ने परमेश्वर को प्रसन्न कयिा, जो उनसे जन्मे थे। इस प्रकार के श्रम और कार्यों के बीच कई वर्ष जीने और अपने लेखनों के माध्यम से संतों को बहुत लाभ पहुँचाने के बाद, संत कैसयिन शाश्वत नविासों के लिए प्रस्थान कर गए[2141] ।

वरसानोफयिस के नाम से प्रसद्धि परम पूजनीय जॉन की स्मृति

29 फरवरी को स्मरण कयिा जाता है

आदरणीय जॉन फलिस्तीन के मूल नविासी थे; अठारह वर्ष की आयु में उन्होंने बपतस्मिा ग्रहण कयिा और संन्यासी जीवन की शपथ ली, तथा वशिेष रूप से उपवास के अभ्यास को समर्पति हो गए। अपने पुण्य जीवन के कारण, उन्हें दमश्कि का आर्चबशिप नयिुक्त कयिा गया[2142] । हालाँकि, थोड़े ही समय तक यह पद संभालने के बाद, उन्होंने महसूस कयिा कि अपने उच्च पद के कर्तव्यों को साधु जीवन के तपस्यावाद के साथ मलिाना मुश्कलि था; इसलिए, जॉन ने बशिप पद त्याग दयिा और गुप्त रूप से दमश्कि से चले गए। अलेक्ज़ेंड्रयिा[2143] पहुँचने पर, उन्होंने अपना नाम बदलकर बार्सानुफयिस रख लयिा ताकि कोई भी उन्हें पहचान न सके और उनकी वास्तवकि स्थति का पता न चल सके। अलेक्ज़ेंड्रयिा से वह एक गरीब यात्री के रूप में माउंट नाइट्रयिा[2144] के लिए रवाना हुआ; वहाँ मठ के मठाधीश को प्रणाम करने के बाद, संत जॉन ने उनसे भ्रातृत्व की सेवा करने के लिए उसे स्वीकार करने का अनुरोध कयिा। मठाधीश ने उसे स्वीकार कर लयिा और उसे संन्यासी का वस्त्र प्रदान कयिा। संत ने भक्षिुओं की सेवा लगन से करनी शुरू कर दी; दनि में वह इसी काम में व्यस्त रहते थे, जबकि रात में बनिा सोए प्रार्थना में लगे रहते थे। सुबह-सुबह वह सभी कुटयिों से लौकी और पात्र इकट्ठा करते और नदी पर जाते; पानी भरकर, वह उसे वापस लाते और प्रत्येक कुटयिा के सामने एक पात्र पानी रख देते थे।

भक्षिुओं में से एक, जो कमजोर दमिाग का था, संत को बहुत सताता था, कभी-कभी उसे अपमानजनक नामों से बुलाता, तो कभी उस पर गंदा पानी फेंकता। शैतान के उकसावे पर, उस अयोग्य भक्षिु ने उस कोठरी की दीवार में छेद कर दयिा जहाँ पूजनीय जॉन रहते थे, और उस छेद के माध्यम से संत के बस्तिर पर अपना मल-मूत्र त्याग दयिा, जसिसे उसमें से एक भयानक बदबू आने लगी।

यह जानकर, मठाधीश ने उस भाई को दंडति करने के लिए बुलाया। लेकनि बार्सानुफयिस मठाधीश के पैरों पर गरि पड़ा और रोते हुए कहा कि इस सब के लिए वह स्वयं दोषी है:

संत ने कहा, 'मैं स्वयं ही हूँ, जो अपने भाई को उकसाता हूँ और उसका क्रोध भड़काता हूँ; प्रभु के लिए उसे क्षमा कर दें।'

इस प्रकार उसने अपने भाई को दंड से बचा लयिा। लेकनि कुछ समय बाद, जॉन को नाइट्रयिा के पूजनीय थयिोडोर ने पहचान लयिा; वह पहाड़ छोड़कर मस्रि भाग गया। वहाँ उन्होंने ववेक का ऐसा वरदान प्रदर्शति कयिा कि वे लोगों के वचिारों को भी जान सकते थे। उन्होंने चर्च को वधिर्मयिों से मुक्त कराया, कई धर्मोपकारी पुस्तकें लखिीं, और मसीह

[2141] संत कैसयिन की मृत्यु 23 जुलाई 435 को हुई। परम पूज्य कैसयिन का पर्व दविस - 29 फरवरी - केवल एक लीप वर्ष में ही आता है। जब फरवरी महीने में 28 दनि होते हैं, तो संत कैसयिन के लिए सेवा संध्या के समय गाई जाती है।

[2142] दमास्कस सीरयिा का प्रमुख और सबसे अमीर वाणज्यिकि शहर है, और दुनयिा के सबसे पुराने शहरों में से एक है; यह फलिस्तीन के उत्तर-पूर्व में, बरादा नदी के तट पर स्थति है, जो इसके बीच से होकर गुजरती है, और यह एंटी-लेबनान पहाड़ों के पूर्वी ढलान पर एक सुंदर और उपजाऊ मैदान में है। आज भी, दमश्कि, जो उस्मानी साम्राज्य का हस्सिा है, एशयिा के सबसे अमीर शहरों में से एक है और इसकी आबादी 1,50,000 तक है।

[2143] अलेक्ज़ेंड्रयिा एक प्रसद्धि शहर है जसिकी स्थापना सकिंदर महान ने 331 ईसा पूर्व में भूमध्य सागर के तट पर, नचिले (उत्तरी) मस्रि में, नील नदी के मुहाने पर की थी। अलेक्ज़ेंड्रयिा कभी दुनयिा का सबसे प्रमुख शहर था और यह व्यापार, उद्योग और वशिेष रूप से मूर्तपिूजक शक्षिा का केंद्र था; जबकि ईसाई धर्म की शुरुआती शताब्दयिों में, यह ईसाई प्रबोधन का पालना था। परंपरा के अनुसार, ईसाई धर्म को यहाँ सुसमाचार प्रचारक मार्क (जन्हिें तुर्की और अरबी में इस्कांदर के नाम से जाना जाता है) द्वारा लाया गया था; यह भूमध्यसागर के सबसे कलिबंद बंदरगाह शहरों और सबसे महत्वपूर्ण व्यापारकि केंद्रों में से एक है, जसिकी जनसंख्या 230,000 से अधकि है।

[2144] माउंट नाइट्रयिा मस्रि के उत्तर-पश्चमिी भाग में स्थति नाइट्रयिन मरुभूमि से एक दनि की यात्रा (25–30 वर्स्ट) की दूरी पर है। यह शुष्क, चट्टानी मरुभूमि मस्रि के तपस्वयिों का प्रयि ठकिाना थी, जो अपनी तपस्या के कारनामों के लिए प्रसद्धि हुए। यहाँ, भक्षिु सबसे कठोर एकांत और अखंड मौन की तलाश में बस गए – ताकि वे एकमात्र ईश्वर में नविास कर सकें।

यीशु में शांति से निधन किया[2145] ; परमपिता और पवित्र आत्मा के साथ, उसी की अनंतकाल तक महिमा और सम्मान हो। आमीन।

पेलकिटि के शहीद और मठाधीश संत थिओक्टिस्ट की स्मृति

स्मरण 29 फरवरी को

8वीं शताब्दी में, कॉन्स्टेंटिन कॉप्रोनिमस[2146] के शासनकाल के दौरान, उन्होंने प्रतिमाओं की पूजा के लिए कष्ट सहे: उनके नाक और हाथों को पिच से जला दिया गया था। संत थियोक्टिस्ट ने संत स्टीफन द न्यू के दुखों में भाग लिया।

14 मार्च

1 मार्च (पुराने कैलेंडर के अनुसार)

इसी दिन, पवित्र शहीदों मार्सेलस और एंथनी की स्मृति, जिन्हें मसीह के लिए सूली पर जला दिया गया था।

पवित्र पूजनीय शहीद यूडोक्सिया का जीवन और शहादत

1 मार्च को स्मरण किया जाता है

ट्राजन के शासनकाल में[2147] , फिनिसिया लिबिनेन्सिस के क्षेत्र[2148] में स्थित कोएले-सीरिया[2149] के हेलीओपोलिस[2150] नगर में, यहूदियों की भूमि से सटे, यूडोक्सिया नाम की एक कन्या रहती थी। जन्म और धर्म से वह सामरी थी[2151] । अपनी महान सुंदरता से दूसरों को मंत्रमुग्ध कर, उसने निर्दयतापूर्वक कई लोगों को विनाश की ओर धकेल दिया, और कामुक अशुद्धता—जो कि संपत्ति अर्जित करने का एक आसान साधन था—के माध्यम से उन प्रदेशों की संपदा से अपनी लज्जास्पद संपत्ति इकट्ठी की। उसका चेहरा इतना सुंदर था कि एक कलाकार के लिए भी ऐसी सुंदरता को चित्रित करना कठिन होता। उसकी ख्याति दूर-दूर तक फैल गई, और बहुत से कुलीन युवक और यहाँ तक कि

[2145] आदरणीय जॉन का 5वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में निधन हो गया। 457 में, सम्राट लियो ने उन्हें अन्य बिशपों के साथ, अलेक्जेंड्रिया के पैट्रिआर्क प्रोटेरियस (देखें 28 फरवरी) की शहादत की सूचना दी।

[2146] कांस्टेंटिन कोप्रोन्यमस (741–775) का शासनकाल ग्रीक चर्च में मूर्तिभंजनवाद (iconoclastic heresy) के चरम का समय था। उस समय मूर्ति पूजा के सबसे साहसी रक्षक भिक्षु थे, जिसके लिए सम्राट ने उन्हें क्रूरतापूर्वक मृत्युदंड दिया। इतिहासकार निकिफोरस के अनुसार, भिक्षुओं के सिर उन्हीं प्रतिमाओं से कुचल दिए गए जिनकी वे रक्षा कर रहे थे। सामान्य तौर पर, कोप्रोन्यमस के अधीन ऑर्थोडॉक्स का उत्पीड़न ईसाइयों के क्रूर उत्पीड़क, मूर्तिपूजक सम्राट डायोक्लेटियन के समय की याद दिलाता था।

[2147] रोमन सम्राट ट्राजन ने 98 से 117 ईस्वी तक शासन किया।

[2148] लेबनानी फिनिसिया – फिनिसिया का पूर्वी भाग, जो लेबनान पर्वत की सीमा से लगा हुआ है, जबकि फिनिसिया स्वयं फिलिस्तीन के उत्तर-पश्चिमी भाग में स्थित है, जो भूमध्य सागर से सटा हुआ है। इसके मुख्य शहर – टायर, सीडोन और ज़रेफ़थ – का उल्लेख सुसमाचार में मिलता है।

[2149] केलेसिरिया – 'आंतरिक सीरिया' – फिलिस्तीन के उत्तर में लेबनान पहाड़ों में एक निचली भूमि की पट्टी।

[2150] हेलिओपोलिस – सूर्य का नगर।

[2151] समारिया – फ़िलिस्तीन का केंद्रीय भाग, जो उत्तर में गलील और फोनीशिया, दक्षिण में यहूदिया से सटा हुआ है, और भूमध्य सागर से भी घिरा हुआ है। इसकी आबादी में यहूदा और बेन्यामीन के कुल को छोड़कर, इस्राएल के दस कुल शामिल थे। सामरी धर्म एक सामरी विभाजन है। मूल रूप से, सामरिया के निवासी यहूदियों से अलग नहीं थे, वे मूसा के उसी कानून का पालन करते थे। बाद में, मूर्तिपूजक विदेशियों के संपर्क के परिणामस्वरूप, वे यहूदी धर्म की पवित्रता खो बैठे और धीरे-धीरे यहूदियों से अलग हो गए, यहाँ तक कि लगभग 335 ईसा पूर्व में उन्होंने माउंट गेरीज़िम पर यहूदियों के मंदिर से अलग एक मंदिर का निर्माण किया और वहाँ पूजा का एक अलग रूप स्थापित किया, जिसमें यरूशलेम के मंदिर में की जाने वाली पूजा के साथ कुछ समानताएँ थीं। उस समय से, यहूदियों और सामरी लोगों को विभाजित करने वाला मुख्य सिद्धांत सच्ची उपासना के स्थान के बारे में शिक्षा थी (यूहन्ना 4:19-20)। इसके अलावा, पुराने नियम की सभी पुस्तकों में से, उन्होंने केवल मूसा की पेंटेटेच (Pentateuch) को ही पवित्र माना, जिसे मूल पाठ से कई जगहों पर बदल दिया गया था। उन्होंने पुराने नियम की अन्य सभी पुस्तकों को अस्वीकार कर दिया, हालांकि उनके पास अपना एक वृत्तांत था, जिसे 'यीशु की पुस्तक' के नाम से जाना जाता था - जो यहोशू की पुस्तक का एक पुनर्लेखन था।

दूसरे देशों और शहरों के अधिकारी भी हेलीओपोलिस में उमड़ पड़े, दिखावे के लिए किसी अन्य उद्देश्य से, लेकिन वास्तव में केवल यूडोक्सिया की सुंदरता को निहारने और उसमें आनंद लेने के लिए, जिसने पापपूर्ण कृत्यों के माध्यम से एक ऐसी संपत्ति इकट्ठी कर ली थी, जो लगभग शाही खजाने के बराबर थी। और खजाने के इस लंबे समय तक संचय के कारण, यूडोक्सिया की आत्मा अपने अशुद्ध जीवन से इतनी सुन्न और अपने हृदय की कटुता में इतनी कठोर हो गई थी कि दिव्य शक्ति के अलावा कोई भी शक्ति इस हताश पापी की निराशाजनक आध्यात्मिक बीमारी को ठीक नहीं कर सकती थी। हालाँकि, वह समय आया जब भले चरवाहे का उद्धार करने वाला हाथ, खोए हुए भेड़ें की तलाश में, उसकी ओर भी बढ़ा: सृष्टिकर्ता ने अपनी सृष्टि को, जो शैतान की दुष्टता से भ्रष्ट हो गई थी, देखा और उसे नया करने की इच्छा की। सच्चे गृहस्वामी ने अपनी दाख की बारी के फलों की देखभाल की, जो शत्रु द्वारा लूट लिए गए थे। स्वर्गीय खजानों के स्वामी, कीचड़ में पड़ी और नष्ट हो रही एक ड्रैक्मा को अपनी शाश्वत खजाना-गृह में ग्रहण करने के लिए शीघ्रता से आए। धर्मियों द्वारा प्रतीक्षित आशीर्वादों के रक्षक ने इस हताश सामरी स्त्री को अपनी पूर्ण आशा की ओर बुलाया, और शैतान को लज्जित कर दिया। उन्होंने ऐसा कार्य किया कि जो स्त्री कभी मवेशियों की तरह कीचड़ में लोटती थी, वह एक मेमने की तरह शुद्ध हो गई; अशुद्धता का पूर्व पात्र शुद्धता से भर गया; गोबर से भरी खाई एक शुद्ध, शांत झरना बन गई; गंदी धारा एक सुगंधित झील में बदल गई; सड़ी हुई और बदबूदार कुएँ की बदबू अनमोल लोहबान का संगमरमर साबित हुई; जो कई लोगों के लिए आध्यात्मिक मृत्यु थी, वह कई अन्य लोगों के लिए उद्धार का कारण बनी। इस प्रकार इस महान पापी का ईश्वर की ओर रूपांतरण शुरू हुआ।

हरमन नाम का एक भिक्षु अपने मठ की यात्रा से हेलीओपोलिस होते हुए लौट रहा था। वह शाम को शहर पहुँचा और शहर के द्वार के पास रहने वाले एक ईसाई परिचित के यहाँ ठहरा; उसका कमरा उस युवती के घर की दीवार के बगल में था। भिक्षु, थोड़ी देर सोने के बाद, रात में अपनी प्रथा के अनुसार भजन गाने के लिए उठा; और, अपनी निर्धारित प्रार्थना पूरी करने के बाद, वह बैठ गया, अपनी छाती में रखे पुस्तक को उठाया, और लंबे समय तक पढ़ने में गहराई से मग्न हो गया। उस पुस्तक में ईश्वर के अंतिम न्याय और इस बात का वर्णन था कि कैसे धर्मात्मा स्वर्ग के राज्य में सूर्य की तरह चमकेंगे, जबकि दुष्ट अविनाशी अग्नि में चले जाएँगे, जहाँ उन्हें अनंत काल तक भयंकर यातनाएँ सहनी होंगी। उसी रात, दैवीय व्यवस्था से, यूडोक्सिया अकेली थी। जिस शयनकक्ष में उसने खुद को बंद कर रखा था, वह ठीक उसी दीवार से सटा हुआ था जिसके पीछे भिक्षु प्रार्थना और पठन में व्यस्त था। जब भिक्षु ने भजन-गायन शुरू किया, तो यूडोक्सिया तुरंत जाग गई और, अपने बिस्तर पर लेटी, पढ़ने की पूरी प्रक्रिया को अंत तक सुनती रही। वह भिक्षु द्वारा पढ़ी जा रही हर बात को सुन सकती थी, क्योंकि उनके बीच केवल एक ही दीवार थी—और वह भी मोटी नहीं—और यह और भी आसान था क्योंकि भिक्षु ज़ोर से पढ़ रहा था। जैसे ही उसने पाठ सुना, वह पापी गहरी भावनाओं से अभिभूत हो गई और भोर तक सोई नहीं, वह कांपते दिल से अपने अनगिनत पापों, अंतिम न्याय और पापियों के असहनीय यातनाओं पर मनन करती रही। जैसे ही दिन चढ़ा, उसने (दिव्य कृपा से प्रेरित होकर, जिसने उसे पश्चाताप के लिए प्रेरित किया) आदेश दिया कि जिस व्यक्ति ने रात भर किताब पढ़ी थी, उसे उसके पास बुलाया जाए, और जब वह आया, तो उसने उससे पूछा:

'तुम कौन हो, और कहाँ से आए हो? तुम कैसे जीते हो, और तुम्हारा धर्म क्या है? मैं तुमसे विनती करती हूँ, मुझे पूरा सच बताओ।' कल रात तुम जो पढ़ रहे थे, उसे सुनकर मैं बेचैन हूँ, और मेरी आत्मा पीड़ित है, क्योंकि मैंने कुछ भयानक और अद्भुत सुना, जो अब तक मेरे लिए अज्ञात था। और यदि यह सच है कि पापियों को आग में डाल दिया जाता है, तो फिर कौन बच सकता है?

धन्य हरमन ने उससे कहा:

'मेरी रानी! आपका विश्वास कैसा है, यदि आपने ईश्वर के अंतिम न्याय के बारे में कभी नहीं सुना है और उन शब्दों का अर्थ नहीं समझतीं जिन्हें मैं पढ़ रहा था?'

यूदोसिया ने कहा, 'मेरे जन्म और मेरे विश्वास के अनुसार, मैं एक सामरी हूँ; मेरी संपत्ति असीम है, और मैं उस दुख और उस शाश्वत, न बुझने वाली आग से विशेष रूप से परेशान और भयभीत हूँ, जिससे आप जो किताब पढ़ रहे थे, वह अमीरों को डराती है।' मैंने हमारे धर्म की पुस्तकों में कभी भी इस तरह के शब्द नहीं पढ़े हैं, और इसलिए जब मैंने कुछ नया और अप्रत्याशित सुना तो मैं बहुत परेशान हो गई।

धन्य हरमन ने पूछा:

'क्या आपका कोई पति है, मैडम? और जैसा आप कह रही हैं, यह आपकी असीम संपत्ति कहाँ से आई है?'

उसने जवाब दिया, 'मेरा कोई वैध पति नहीं है, लेकिन मेरी संपत्ति कई पतियों से जुटाई गई है। और अगर मृत्यु के बाद अमीरों को ऐसी भयानक और शाश्वत यातना दी जाएगी, तो मेरी संपत्ति का मेरे लिए क्या फायदा?'

जर्मन ने उससे कहा:

'मुझे साफ़-साफ़ सच बताओ (क्योंकि मिसीह, जिसकी मैं सेवा करती हूँ, सत्य हैं, झूठे नहीं): क्या तुम अपनी संपत्ति के बिना उद्धार पाकर अनंत काल तक शांति, आनंद और प्रसन्नता में जीना चाहती हो? या तुम अपनी संपत्ति के साथ अनंत आग में क्रूर यातना सहना चाहती हो?'

यूदोक्सिया ने उत्तर दिया, 'मेरे लिए धन के बिना अनंत जीवन प्राप्त करना कहीं बेहतर है, बजाय इसके कि मैं इसके साथ एक बार और हमेशा के लिए नष्ट हो जाऊँ। लेकिन मैं हैरान हूँ, मृत्यु के बाद अमीरों को इतनी कठोर सज़ा क्यों दी जानी चाहिए? क्या आपका ईश्वर वास्तव में अमीरों के प्रति इतना क्रूर और निर्दयी द्वेष रखता है?'

'नहीं,' – हर्मन ने कहा, – ईश्वर धनी लोगों से मुंह नहीं मोड़ता, न ही वह उन्हें धनी होने से रोकता है; लेकिन वह धन के अन्यायपूर्ण अधिग्रहण और धन का उपयोग सुख-भोग और पापी वासनाओं के जीवन के लिए करने से घृणा करता है; इसलिए, यदि कोई वैध साधनों से धन अर्जित करता है और अर्जित धन को पुण्य कार्यों पर खर्च करता है, तो वह व्यक्ति ईश्वर के सामने निर्दोष और धर्मी है, लेकिन जो कोई चोरी, लूट और अन्याय से, या वास्तव में किसी भी पापपूर्ण कृत्य से धन इकट्ठा करता है; जो कोई अपने खजानों में धन संचित करता है, गरीबों पर दया नहीं दिखाता, पूछने वालों को कुछ नहीं देता, नग्न को कपड़े नहीं पहनाता, न ही भूखे को भोजन कराता है – उसके लिए बिना दया के यातना होगी।

यूदोक्सिया ने पूछा:

'और क्या मेरी संपत्ति तुम्हें अधर्मी नहीं लगती?'

हर्मन ने उत्तर दिया:

'वास्तव में, यह अन्यायपूर्ण है और ईश्वर के लिए किसी भी पाप से अधिक घृणित है।'

तब उसने कहा:

'ऐसा क्यों है? आखिरकार, मैंने कई नंगों को कपड़े दिए हैं, कई भूखे लोगों को तब तक खाना खिलाया जब तक वे तृप्त नहीं हो गए, और कुछ की थोड़े से सोने से मदद की है। आप धन को बुरा कैसे कह सकते हैं?'

– मेरी मालकिन,' हर्मन ने कहा, 'ध्यान से मेरी बात सुनो: निश्चित रूप से कोई भी, नहाने के लिए स्नानागार में जाकर, अपना शरीर उस पानी में डुबोना नहीं चाहेगा जो अशुद्ध, मैला, घिनौना और बदबूदार हो, बल्कि वह खुद को उस जगह धोएगा जहाँ साफ पानी हो। तो फिर, आप केवल कुछ दान-पुण्य के कार्यों से पाप की इस घिनौनी और घृणित गंदगी से खुद को शुद्ध करने की उम्मीद कैसे कर सकते हैं, जबकि आप अपनी मर्जी से इसमें लिप्त रहते हैं और, साथ ही, ईश्वर की दया के शुद्ध जल को ठुकराते हैं? वैसे भी, पाप की इस गंदगी का दलदल, एक बाढ़ की तरह, आपको बड़ी ताकत से गंधक और पिघले हुए कोयले की खाई में फेंक देगा, जो ईश्वर के क्रोध की शाश्वत ज्वाला से जल रही है। क्योंकि तुम्हारे पास इतनी प्रचुरता से जो धन-संपत्ति है, वह महान प्रभु और शाश्वत न्यायाधीश को घृणित है, और अंतिम न्याय के समक्ष पहले ही निन्दा की जा चुकी है कि इसे धोखे और व्यभिचार के माध्यम से इकट्ठा किया गया है। और यह भी आपकी कोई मदद नहीं करेगा कि आपने इस महान लेकिन नीच और पापी धन में से कभी-कभी कुछ गरीबों को थोड़ा-सा हिस्सा दिया है – क्योंकि इस छोटे से पुण्य का फल अनगिनत बुरे कर्मों से रद्द हो जाता है, जैसे एक कोमल सुगंध एक तेज बदबू में डूब जाती है। नहीं, जब तक आप स्वेच्छा से अशुद्धि में बने रहेंगे, तब तक आपको कभी भी कोई अनुग्रह प्राप्त नहीं होगा, और जब तक आप अपने पाप की असीम दुर्गंध को नहीं त्याग देते, पश्चाताप के आँसुओं से स्वयं को नहीं धोते, और धार्मिक कार्यों से स्वयं को नहीं सजाते, तब तक आपको ईश्वर की दया के योग्य नहीं माना जाएगा। जिस प्रकार काँटों में नंगे पैर चलने वाले को कई तीखे काँटे चुभ जाते हैं, और भले ही कुछ निकाल दिए जाएँ, फिर भी कई शरीर में रह जाते हैं और पीड़ा देते रहते हैं; इसी तरह, किसी भिखारी को कभी दिखाया गया आपका कोई छोटा सा दान—भले ही वह कुछ छोटे पापों को मिटाने में मदद कर दे—पाप की सबसे बड़ी काँटी आपके अंतरात्मा में बनी रहती है और आपको सबसे भयानक यातनाओं की ओर ले जाएगी। ईश्वर, जो भयानक और धर्मी न्यायाधीश हैं, आपसे क्रोधित हैं और आपको अनंत तथा असहनीय यातनाओं से डराते हैं, जो अविचल पापियों के लिए तैयार की गई हैं। लेकिन यदि आप मेरी बात सुनने को तैयार हैं, तो आप उन यातनाओं से बच सकते हैं जो आपका इंतजार कर रही हैं और शाश्वत आनंद प्राप्त कर सकते हैं।

यूदोक्सिया ने कहा:

'हे जीवति परमेश्वर के सेवक, मैं आपसे वनिती करती हूँ, कि कुछ समय मेरे साथ ठहरें; मुझे वस्तिार से उन कर्मों के बारे में बताएं जनिसे कोई परमेश्वर की दया का पात्र बन सकता है, ताकि मैं भी, इस उदाहरण का अनुसरण करते हुए, मोक्ष प्राप्त कर सकूँ। मैं अपने धन को पुण्य कार्यों में लगाने के लिए तैयार हूँ।' आपने कहा कि ईश्वर धन के न्यायोचति और सदाचारी वतिरण से प्रेम करते हैं: मेरे रास्ते में कुछ भी बाधा नहीं है, भले ही इसका मतलब मेरे घराने की संपत्ति में थोड़ी कमी हो, ताकि मैं उन यातनाओं से खुद को मुक्त कर सकूँ, जनि्हें आपके शब्दों के अनुसार, ईश्वर से घृणति लोग न्याय के दनि सहन करेंगे। देखिए, आदरणीय पति, मेरे पास बहुत सारे दास हैं। आपके मार्गदर्शन में, मैं उन्हें सोने, चांदी और कीमती वस्तुओं से लदकर आपके ईश्वर के पास ले जाऊँगा, बशर्ते कि वह, आपके हस्तक्षेप से, मेरी भेंट स्वीकार करने और मुझे मोक्ष प्रदान करने की कृपा करें।

'ईश्वर का मनुष्यों के पैमाने से न्याय मत करो,' हरमन ने उससे कहा, 'यह मत सोचो कि उसे उन तुच्छ चीज़ों की ज़रूरत है जो लोगों के लिए कीमती हैं; क्योंकि वह, पृथ्वी के सभी राजाओं से अतुलनीय रूप से अधकि धनी होने के कारण, अपनी इच्छा से हमारे लिए गरीब हो गया, ताकि इस दुखद गरीबी के माध्यम से वह हमारे लिए अनंत मोक्ष खरीद सके।' मेरी बेटी, अपनी संपत्ति बीमारों और गरीबों को दे दो, क्योंकि वे ईश्वर के प्रयि हैं: जो कुछ भी कोई उन्हें देता है, वह उसे स्वयं को दयिा हुआ मानते हैं, और गरीबों में बांटी गई क्षणकि संपत्ति के लिए, वह स्वर्गीय खजाने से पुरस्कृत करते हैं जो कभी खत्म नहीं होते। ऐसा करो, और फरि बपतस्मिा के पवत्रि और उद्धार करने वाले कुंड के पास जाओ; और, अपने सभी पापों की अशुद्धि से शुद्ध हो जाने पर, तुम पवत्रि और नरि्दोष हो जाओगी, पवत्रि आत्मा की कृपा से पुनर्जीवति हो जाओगी, और एक धन्य वरिासत प्राप्त करोगी, जहाँ तुम अक्षय, शाश्वत प्रकाश का आनंद लोगी, जहाँ न कोई शोक है, न कोई बीमारी, न कोई दुष्टता। तुम एक पवत्रि मेमना बनोगे, जसिकी देखभाल हमारे उद्धारकर्ता यीशु मसीह द्वारा स्वर्गीय चरागाहों में की जाएगी। संक्षेप में: यदि तुम बचना चाहते हो, मेरी बेटी, तो मेरी सलाह पर चलो, और तुम हमेशा के लिए धन्य हो जाओगे।

यूदोसयिा ने उत्तर दयिा:

'यदि आपके द्वारा पढ़े गए शब्द मेरे मन में अंकति न होते—वे शब्द जो मैंने कल रात इतनी स्पष्टता से सुने थे—तो मैं आपको यहाँ न बुलाती। पतिाजी, आप मुझसे जतिना सोना चाहें ले लें, और कुछ दनिों के लिए यहीं रुकें, मुझे अपने ईसाई धर्म की शक्षिा दें और सद्गुणों का मार्ग दखिाएँ, ताकि मैं अपनी संपत्ति और धन-दौलत बाँटकर और सब कुछ उचति रूप से व्यवस्थति करके, आपकी wherever आप जाएँ, आपके पीछे चल सकूँ।

धन्य हरमन ने उत्तर दयिा:

मुझे सोने की कोई आवश्यकता नहीं है: तुम्हारे उद्धार की आशा मेरे लिए पर्याप्त है, और यदि मैं खोए हुए भेड़ को ढूंढकर मसीह के झुंड में ला सकूँ, तो मेरे लिए कुछ दनि यहाँ ठहरने का यह एक पर्याप्त कारण है। इसलिए, यद्यपि मैं अपनी मठ में वापस जाने के लिए जल्दी कर रहा था, मैं ईश्वर की ओर तुम्हारे रूपांतरण के लिए कुछ दनि यहाँ ठहरूँगा। जहाँ तक तुम्हारा सवाल है, मैं जो कुछ भी तुमसे कहूँ, वह सब करना: इस नगर में रहने वाले ईसाई पुरोहतिों में से कसिी एक को बुलाओ, और वह तुम्हें उपदेश दे और चर्च की रीतयिों के अनुसार तुम्हारा बपतस्मिा दे, क्योंकि इसी में उद्धार की शुरुआत और नींव नहिति है; और फरि अन्य सभी धर्मपरायण कार्य समय आने पर अपने आप हो जाएँगे।

धन्य वृद्ध से यह सुनकर, यूडोक्सयिा ने अपने एक गृह-सेवक को बुलाया और उसे आदेश दयिा कि वह तुरंत ईसाई चर्च जाए और पुरोहति से कहकर उसे तुरंत उस व्यक्ति के पास भेजे जो उसे ढूंढ रहा था; हालाँकि, उसने उसे यह बताने से मना कर दयिा कि वास्तव में कौन उसे ढूंढ रहा था या कसि उद्देश्य से। कुछ ही देर बाद पादरी आ गए। उन्हें देखते ही यूडोक्सयिा ने ज़मीन पर सरि झुकाया, उनके पैरों को चूमा और कहा:

'मैं आपसे वनिती करती हूँ, मेरे स्वामी, मुझे अपने वशि्वास के बारे में बताइए: मैं भी ईसाई बनना चाहती हूँ।'

प्रेषति, इन शब्दों से चकति होकर, यूडोक्सयिा से पूछा:

'तो आपका धर्म क्या है, कि आप ईसाई धर्म में परविर्तति होना चाहती हैं?'

उसने उत्तर दयिा:

'मैं जन्म और वशि्वास दोनों से एक सामरी हूँ, और मैं संपूर्ण वशि्व की पत्नी थी। मैं आपको एक ही वाक्य में संपूर्ण सत्य का इकरार करूँगी। मैं बुराइयों का एक समुद्र हूँ; लेकनि जब मैंने सुना कि पापी, जब तक वे पश्चाताप करके ईसाई नहीं बन जाते, मृत्यु के बाद अनंत आग में यातना सहेंगे, तो मैंने अपने हृदय में ईसाई बनने का संकल्प लयिा।

पुजारी ने उत्तर दयिा:

'यदि तुम पापों का सागर रही हो, तो अब उद्धार का बंदरगाह बन जाओ; यदि तू कई हवाओं से उछाली गई थी, तो अब एक शांत बंदरगाह में प्रवेश कर; और यदि तू भयंकर उथल-पुथल का शिकार हुई थी, तो अब स्वर्ग से उतरने वाली प्रातःकी ओस को खोज; यदि तू एक लंबे बाढ़ में डूबी थी, तो अब एक अच्छे नाविक को खोज, ताकि वह तुम्हें सुरक्षित रूप से अपने शांत बंदरगाह में ले जाए, जहाँ सभी धार्मिकता के खजाने पड़े हैं; वहाँ मिलने वाले आशीर्वादों का वारिस बनने का प्रयास करो। अपनी सांसारिक संपत्ति को ज़रूरतमंदों में बाँट दो और स्वयं को पाप के दुख से, और साथ ही उस अंधकार और अविनाशी अग्नि से मुक्त करो जो तुम्हारा इंतज़ार कर रही है यदि तुम पश्चाताप नहीं करते।

यह सुनते ही यूडोक्सिया फूट-फूट कर रो पड़ी और अपने सीने पर हाथ मारते हुए कहा:

'क्या यह सच है कि आपके ईश्वर को पापियों पर कोई दया नहीं है?'

पुजारी ने उत्तर दिया:

'पश्चाताप करने वाले पापियों को, एक बार जब वे विश्वास का चिह्न—अर्थात् पवित्र बपतिस्मा—प्राप्त कर लेते हैं, तो प्रभु उनके पूर्व जीवन, उनके अविश्वास के जीवन, के सभी पापों को क्षमा कर देते हैं; लेकिन जो अपने पापों में बने रहते हैं और पश्चाताप पर विचार नहीं करते, उनके लिए कोई क्षमा नहीं है, और ऐसे लोगों को बिना दया के यातना दी जाएगी।'

यूदोक्सिया ने पूछा, 'मुझसे कहिए, पादरी जी, क्या आपको लगता है कि स्वर्ग में पृथ्वी पर मिलने वाली किसी भी चीज़ से कुछ बड़ा और बेहतर है?' आखिरकार, हमारे पास सचमुच सोने, चांदी और कीमती पत्थरों के कई खजाने हैं, हर तरह के सुख और आनंद; इसके अलावा, मछलियाँ और पक्षियों की भरमार है और हर तरह के भोजन और पेय की अथाह मात्रा है। तो फिर, स्वर्ग में ऐसा क्या हो सकता है जो इन सब से भी बड़ा हो?

'जब तक तुम इस संसार के मोह से अपना मन नहीं हटाती,' पुरोहित ने उससे कहा, 'और क्षणिक सुखों को तुच्छ नहीं समझती, तब तक तुम शाश्वत जीवन पर अपनी दृष्टि नहीं टिका पाओगी और उन अनुपम आनंदों और अकथनीय संपदाओं को नहीं जान पाओगी जो वहाँ प्राप्त होती हैं। लेकिन यदि आप उन्हें प्राप्त करना चाहती हैं, तो इस जीवन के गर्व और आनंद को भूल जाइए; इस संसार के सुखों में मन न लगाइए।

यूदोक्सिया ने उत्तर दिया:

'हे प्रभु, मुझसे दूर रहे कि मैं किसी क्षणभंगुर और शीघ्र नष्ट होने वाली वस्तु से अमर और धन्य जीवन से अधिक प्रेम करूँ; परन्तु हे पिता, मैं इस बात का निश्चय पाना चाहती हूँ: क्या मैं, मसीही विश्वास को अपना लेने के बाद, यह दृढ़ और अटूट आशा रख सकती हूँ कि मैं उस अमर जीवन को प्राप्त करूँगी जिसके बारे में आप बात करते हैं? और आपके शब्दों की सच्चाई का भरोसा दिलाने के लिए आप मुझे क्या प्रमाण देंगे? अंतत; मुझे कैसे पता चलेगा कि आपके ईश्वर ने मेरे अनेक पापों को क्षमा कर दिया है? क्योंकि यदि मैं अपनी संपत्ति—जो मेरे जीवन के कई वर्षों तक हर सुख और आनंद प्रदान करने के लिए पर्याप्त से अधिक है—को ज़रूरतमंदों में बाँट दूँ, जैसा कि आप मुझे सलाह देते हैं, और फिर भी वह प्राप्त करने में विफल रहूँ जिसका आपने वादा किया है; तो इस अंतिम, निराशाजनक दुविधा से अधिक दुखद और निराशाजनक और क्या हो सकता है, जिससे निकलने का कोई रास्ता नहीं होगा? आखिरकार, जिन लोगों को मैंने अपने बुरे व्यवहार से आहत किया है, वे, अगर मैं अपनी बदकिस्मती में उनसे मदद मांगूं, तो मुझे तिरिस्कार से मुंह मोड़ लेंगे। इसीलिए मैं दुखी और परेशान हूं, क्योंकि मुझे भविष्य के बारे में पर्याप्त निश्चितता नहीं है। मैं उस बात के बारे में अधिक ज्ञान और निश्चितता चाहता हूँ जिसका आप इतनी उदारता से वादा करते हैं, आपके ईश्वर की दया का आह्वान करते हुए, जो पश्चातापी लोगों के पापों को सहजता से क्षमा कर देते हैं। यदि मैं इस बात से पूरी तरह आश्वस्त हो जाऊँ, तो मैं शांतिपूर्वक अपनी सारी संपत्ति दान कर दूँगा और जहाँ आप मुझे बुलाएँगे, वहाँ चला जाऊँगा, और मैं अपने जीवन के सभी दिनों में एकमात्र परमेश्वर की सेवा करूँगा; और जैसे मैं कभी कई लोगों के लिए अधर्म का उदाहरण था, वैसे ही अब मैं पश्चाताप का उत्तम उदाहरण बनूँगा। और पिता जी, मेरे संदेहों पर आश्चर्यचकित न हों: मैंने यह सब पहली बार सुना है—यह नया और अप्रत्याशित है, और हमारी पुस्तकों में और सामरी धर्म में, जिसमें मेरा पालन-पोषण हुआ, मैंने न केवल इसके बारे में कभी नहीं सुना है, बल्कि ऐसी शिक्षा का सबसे छोटा सा भी कोई अंश नहीं पाया है।

पुजारी ने उससे कहा:

'परेशान न हो, अपने विचारों को भटकने न दो, यूदोसिया! अपने मन को भटकने न दो: जो तुम्हें परेशान कर रहा है वह बुराई के राजकुमार और ईर्ष्यालु की एक चाल है जो तुम्हारे उद्धार को विफल करना चाहता है—शैतान। जैसे ही इस दुष्ट आत्मा ने देखा कि तुम मसीह की सेवा के लिए जाग रहे थे, उसने तुरंत इस अच्छे इरादे को नष्ट करने के लिए तुम्हारे

हृदय में ऐसे संदेह जगा दिए। वह आशा करता है कि भय के माध्यम से, आपको सही मार्ग से भटका दे और आपको आपके पूर्व पापी जीवन में पुनःस्थापित कर दे, ताकि आपको सांसारिक सुखों और वासनाओं के प्रति शर्मनाक रूप से बाँधकर और आपको अपना दास बनाकर, वह आपको मृत्यु और विनाश की ओर ले जा सके। क्योंकि उसकी धूर्त योजना, उसका एकमात्र और उत्साही प्रयास, लोगों को धर्म के मार्ग से भटकाना, उन्हें पतन की ओर ले जाना, और इस प्रकार उन्हें बुझने वाली आग में उसके शाश्वत यातनाओं में भागीदार बनाना है। परन्तु हमारा प्रभु परमेश्वर, जिनकी भलाई, अकथनीय दया और मानवजाति के प्रति प्रेम के प्रति आप आश्वस्त होना चाहते हैं, वे तैयार हैं—जैसा कि आपने पहले ही दूर से सुना है—पश्चातापी लोगों को एक पिता की भाँति, खुली बाहों से स्वीकार करने के लिए, और उनके पापों को क्षमा करके, उन्हें अनंत जीवन प्रदान करने के लिए। आप इस बात से तब आश्वस्त होंगे जब आप अपना मन सांसारिक चीजों से हटाकर स्वर्ग की ओर मोड़ेंगे; यदि, क्षणिक चिंताओं को त्यागकर, आप शाश्वत जीवन पर मनन करेंगे। लेकिन इसके लिए एकाग्र और विनम्र प्रार्थना की आवश्यकता है, क्योंकि केवल इसी तरह ईश्वर आत्मा से मेल-मिलाप करते हैं, और दिव्य प्रकाश आत्मा के भीतर प्रकट होता है, जो संपूर्ण सत्य को प्रकट करता है, और मनुष्य स्पष्ट रूप से इस क्षणभंगुर संसार की तुच्छता को, आने वाले युग का स्वरूप, इस जीवन के सुखों की हानिकारकता, और यह कि प्रभु कितने अच्छे हैं तथा उनकी दया कितनी असीम है, देखता है। इसलिए, यदि आप उद्धार पाना चाहते हैं, तो मेरी बात सुनें: अपने सुंदर वस्त्र त्याग दें, मोटे वस्त्र पहन लें, और अपने घर के एक एकांत कमरे में खुद को बंद करके, सात दिनों तक वहीं रहें, अपने पापों को याद करते हुए और उन्हें अपने सृष्टिकर्ता, परमेश्वर के सामने आँसुओं के साथ कबूल करते हुए। उपवास करो और हमारे प्रभु यीशु मसीह से प्रार्थना करो कि वे तुम्हें ज्ञान दें और यह सिखाएँ कि उन्हें प्रसन्न करने के लिए तुम्हें क्या करना चाहिए। मेरी बात मानो, तुम मेरी दी गई सारी सलाह व्यर्थ नहीं करोगी: हमारे प्रभु दयालु और असीम अनुग्रहकारी हैं, और वे दूर से ही उन लोगों से अपने अनुग्रह से मिलते हैं जो उनकी ओर मुड़ना चाहते हैं, क्योंकि उन्हें एक पापी के पश्चाताप में हमेशा आनंद आता है।

जब यूदोसिया ने उनकी सलाह मान ली, तो पादरी उठे और विदा हो गए, और उन्होंने भविष्यद्वाणी की भाँति उससे ये सांत्वनादायक वचन कहे:

'ईश्वर मसीह, जिसने महसूल लेने वाले को धर्मी ठहराया और अपने पैरों तले रोने वाले पापी पर दया की, वह तुम्हें भी धर्मी ठहराए और तुम पर दया करे, और तुम्हारे नाम को सारी पृथ्वी पर महिमामय बनाए। आमीन।'

जैसे ही पादरी चले गए, धन्य यूडोक्सिया ने तुरंत अपनी दासी को बुलाया और उससे कहा:

'यदि कोई मुझे देखना चाहता है और मेरे क्वार्टर में प्रवेश करने का इरादा लेकर यहाँ आता है, तो यह सुनिश्चित करो कि उन्हें यह पता न चले कि मैं घर पर हूँ; किसी को भी, किसी भी परिस्थिति में, उनसे मेरे बारे में बात न करने दो; उन्हें बता दो कि मैं किसी काम से किसी दूर के गाँव में चली गई हूँ और वहाँ काफी समय तक रहूँगी; दरबान को सख्त हिदायत दो कि वह किसी को भी यहाँ अंदर न आने दे; मेरे घर में सभी नियमित कामकाज और गतिविधियाँ बंद कर दो, और जो मेरे लिए रोज़ाना भोजन बनाते हैं वे अब इसे यहाँ न लाएँ; साथ ही, घर के पास वाले बड़े द्वार को तब तक बंद रखो जब तक मैं उसे फिर से खोलने का आदेश न दूँ, और आम तौर पर, ऐसा सब कुछ करो मानो मैं घर पर ही न हूँ।

नौकरानी को ये निर्देश देने के बाद, उसने धन्य हरमन से कहा:

'मैं आपसे विनती करती हूँ, पिताजी, कि आप मुझे वह बात समझाएँ जो मैं पूछने जा रही हूँ: आप भिक्षु सामाजिक जीवन के सुखों को त्यागकर सुनसान स्थानों में क्यों रहते हैं? क्या आपको वास्तव में रेगिस्तान में अधिक आनंद मिलता है?'

'नहीं, मेरे बच्चे,' धन्य हरमन ने उत्तर दिया, 'हमारे लिए रेगिस्तान में ऐसी कोई चीज़ नहीं है जिसे तुम सुखद समझो; हम शहरों और सांसारिक सुखों को पीछे छोड़कर केवल व्यर्थ गर्व से बचने और भूख, प्यास, परिश्रम, फटे-पुराने कपड़ों तथा सभी आवश्यकताओं की कमी के माध्यम से देह की इच्छाओं को दंडित करने के लिए रेगिस्तान में चले जाते हैं; संक्षेप में, पाप के अवसर प्रदान करने वाली सभी जगहों से दूर रहने के लिए। जो नगरों में रहते हैं, वे बहुत आसानी से पाप में पड़ जाते हैं, या तो अपनी प्रकृति की कमजोरी से वशीभूत होकर, या शैतान के छल से, या सुंदर चेहरों को देखने और अश्लील बातों की आवाज़ से प्रलोभित होकर: इससे अशुद्ध विचार उत्पन्न होते हैं जो आत्मा को कलंकित करते हैं। और एक कलंकित आत्मा के लिए, स्वर्ग के राज्य का द्वार तब तक बंद है जब तक कि वह पश्चाताप के माध्यम से शुद्ध नहीं हो जाती; क्योंकि स्वर्ग में केवल शाश्वत प्रकाश, सच्ची खुशी और सच्ची प्रसन्नता का सिंहासन है—एक ऐसा सिंहासन जो सभी अंधकार, दुःख और शोक, और सभी बुरे कर्मों से रहित है। तो आप समझ गए होंगे कि हम मरुस्थल में

क्यों जाते हैं: हम अपने आने वाले जीवन के दनिों में पाप से स्वयं को बचाना चाहते हैं, और मरुस्थल में अपने प्रवास की कठनिाइयों के द्वारा अपने अतीत के अपराधों को शुद्ध करना चाहते हैं, और इस प्रकार उस परम आनंद की ओर हमारी यात्रा को आसान बनाना चाहते हैं जसिका वादा कयिा गया है। हमारे सभी प्रयास और चंताएँ अपने शरीरों को दाग-रहति और अपने मन को बुरे वचिारों से नरि्दोष रखने, तथा सभी द्वेष, छल, पाखंड, बड़बड़ाहट और बदनामी, ईर्ष्या, क्रोध और रोष से मुक्त रखने के लिए नरि्देशति हैं। और इस प्रकार हम स्वर्गदूतों के समान हो जाएँगे, जैसा कि मसीह ने सुसमाचार में अपने पवत्रि वचनों द्वारा हमसे कहा। धन, चाहे कोई उससे कतिना भी लगाव रखे और उसे कतिनी भी लालच से इकट्ठा कर ले, वह स्वर्ग के राज्य को प्राप्त करने में थोड़ी भी मदद नहीं करेगा: वह, ताबूत में पड़े मृतक की तरह, कसिी भी सहायता का नहीं होगा। इसलिए, यदि हम अपने पापों की क्षमा प्राप्त करना चाहते हैं, तो आइए हम अपने जीवन के शेष दनिों में, प्रभु की आज्ञाओं के मार्ग पर, धार्मकिता और सत्य के पथों पर चलने का प्रयत्न करें; आइए हम अपने पापों के लिए पश्चाताप से, जैसे कोई वस्त्र फाड़ता है, वैसे ही अपने हृदयों को फाड़ें, और आइए हम परमेश्वर से अवरिाम पुकारें; इस प्रकार हम स्वयं को पाप की उस मैल से शुद्ध करेंगे जसिके बारे में दाऊद कहते हैं: *'मेरे घाव मेरी मूर्खता के कारण सड़ गए और फोड़े पड़ गए* (भजन संहति 37:6)। और ताकि हम हमेशा प्रार्थना में प्रभु के वचन गा सकें, दाऊद स्वयं याद करते हैं: *'तेरे वचन मेरी जीभ के लिए कतिने मीठे हैं! 'मेरे होठों के लिए मधु से भी अधकि मीठे'* (भजन संहति 118:103)। प्रभु के वचन इतने मीठे हैं कि वे सबसे मीठे व्यंजनों और सबसे कीमती पेयों की मठिास से भी बढ़कर हैं, और वे आत्मा को उस भोजन से कहीं अधकि बल देते हैं जतिना भोजन शरीर को देता है। इसीलिए पवत्रि शास्त्र उनके वषिय में कहते हैं: *'शराब मनुष्य के हृदय को प्रसन्न करती है, और रोटी मनुष्य के हृदय को बल देती है'* (भजन संहति 103:15), जसिमें उस शराब और रोटी से हमारे प्रभु यीशु मसीह की आज्ञाओं का उल्लेख है। वे वास्तव में, मानो, मानव आत्मा के लिए रोटी और दाखमधु हैं; क्योंकि यदि कोई व्यक्ति उनका लगन से और अवरिाम अध्ययन करता है, तो वे हृदय को शक्ति और आनंद देते हैं, पापी को सभी दुष्ट कर्मों से मुक्त करते हैं और उसे प्रभु के सामने धर्मी ठहराते हैं। इसलिए, अपने सुंदर वस्त्र त्यागकर और सबसे नम्र वस्त्र धारण करके, अपना पूरा मन अच्छे कर्मों के द्वारा पश्चाताप की ओर लगाओ; पृथ्वी पर प्रचुर आँसू बहाओ, ताकि तुम स्वर्ग में आनंद और अनंत हर्ष प्राप्त कर सको; अपने पापों की ज्वाला को आँसुओं से बुझाओ, और तुम्हें प्रभु से सांत्वना मलिेगी और तुम धर्मी लोगों के आनंद में प्रवेश करोगे। अपने पापों के लिए रोओ, जनि्हें शैतान ने तुम्हारे हृदय के लिए मीठा बना दयिा है, और हो सकता है कि उद्धार का मध्यस्थ, दूत, तुम्हारे आँसुओं के कारण तुम्हारे समीप आए; उस भ्रष्टाचार की बदबूदार कीचड़ को सुखा दो जसिमें तुम लंबे समय से लप्ति रहे हो, वह कीचड़ जसिने तुम्हें नगिल लयिा और सभी बुराइयों के स्रष्टा की शक्ति के अधीन तुम्हें कैदी बना लयिा, ताकि इस समय से तुम स्वर्गीय आनंद के सहभागी बन सको ; उस व्यक्ति का बदला लो और उसे नराशिा से बोझलि कर दो जसिने तुम्हें वासनाओं से लुभाकर पापों का बोझ दयिा है। ईश्वर के लिए लगन से परश्रिम करो, ताकि तुम अक्षय प्रकाश की वारसि बन सको; और, एक मधुमक्खी की तरह, एक परश्रिमी कार्यकर्ता बनो, जो कई पवत्रि कर्मों से सत्य एकत्र करती हो और नरिंतर ईश्वर को प्रसन्न करने का प्रयास करती हो।

हर्मन के ये शब्द यूडोक्सयिा के हृदय में गहराई तक उतर गए, जो पहले ही उसकी पछिली बातों से तैयार हो चुका था। अपने पापों पर शोक करते हुए, वह वनिम्रता से उसके पैरों पर गरि पड़ी, और कहा:

'हे परमेश्वर के मनुष्य, मैं आपसे वनिती करती हूँ कि आप मेरे लिए आरंभ कए गए कार्य को एक उपयुक्त नष्किर्ष तक पहुँचाएँ, और मुझे अपने परमेश्वर के सामने पवत्रि प्रस्तुत करें, ताकि मैं उन लोगों का उपहास न बनूँ जो मुझे धोखा देना चाहते हैं, बल्कि, आरंभ कए गए कार्य को पूरा करने के बाद, आपकी उद्धारकारी शकि्षा के माध्यम से आनंद के योग्य मानी जाऊँ।' तैयार की गई पट्टकिा से अपना कुशल हाथ तब तक न हटाओ, जब तक तुमने मेरे भीतर मसीह का पूर्ण चत्रिण नहीं कर दयिा है।"

जर्मनस ने उससे उत्तर दयिा:

'मेरे बच्चे, प्रभु के भय में रह, और अपने कक्ष में अकेले रहकर, नरिन्तर आँसुओं के साथ उनसे प्रार्थना कर, जब तक कि वह तेरे सभी पापों को जड़ से न उखाड़ दे और तेरे पापों को शुद्ध कर दे और तुझे अपनी दया का अटूट वश्विास न दे दे: हमारे प्रभु यीशु मसीह भले और दयालु हैं; वे शीघ्र ही आप पर अपनी दया दखिाएंगे और अपनी कृपा से आपको सांत्वना देने में वलिंब नहीं करेंगे।

यह कहकर, धन्य जर्मैनस ने ईश्वर से प्रार्थना की, यूडोक्सयिा पर क्रॉस का चह्नि बनाया और उसे उसके शयनकक्ष में बंद कर दयिा, और उसके लिए हेलयिोपोलसि में सात दनिों तक रहने का वचन दयिा।

जब यूदोसयिा ने उपवास और प्रार्थना में सात दनि बति लिए, तो धन्य जर्मन उसके पास आए और दरवाज़ा खोलकर उसे अपने शयनकक्ष से बाहर आने के लिए कहा। जब उन्होंने देखा कि उसका चेहरा पीला पड़ गया था, उसका शरीर दुबला-पतला हो गया था, उसकी दृष्टि निम्र थी, और उसका पूरा रूप पहले से बहुत अलग था, तो उन्होंने उसका हाथ पकड़कर उसे बैठने के लिए कहा। फिर, ईश्वर से प्रार्थना करने के बाद, वे उसके साथ बैठ गए और उससे पूछना शुरू किया:

'मुझसे कहो, मेरी बेटी, इन सात दिनों में तुम क्या सोचती रही हो? तुमने क्या सीखा है? तुमने क्या देखा है? तुम्हें क्या प्रकट हुआ है?'

उसने कहा:

'मैं आपको सब कुछ बताऊँगी, हे पवित्र पिता। मैंने पूरे सात दिन पूरी लगन से प्रार्थना की, ठीक वैसे ही जैसे आपने मुझे सिखाया था। कल रात, जब मैं क्रूस के आकार में जमीन पर लेटी अपने पापों के लिए प्रार्थना कर रही थी और रो रही थी, तो मुझे एक महान प्रकाश से प्रकाशित किया गया, जो सूर्य की किरणों के प्रकाश से भी बढ़कर था। मुझे लगा कि सूर्य उदय हो गया है, इसलिए मैं ज़मीन से उठ खड़ी हुई और अचानक मैंने एक तेजस्वी और भव्य युवक को देखा, जिसके वस्त्र बर्फ़ से भी ज़्यादा सफ़ेद थे। उसने मेरा दाहिना हाथ पकड़कर मुझे हवा में उठा लिया, मुझे एक बादल पर बिठा दिया, और मुझे स्वर्ग की ओर ले गया। और वहाँ एक महान और अद्भुत प्रकाश था, और मैंने सफेद वस्त्रों में अनगिनत पुरुषों को देखा, जो एक-दूसरे को देखकर आनंदित और मुस्कुरा रहे थे और शब्दों से परे आनंदित हो रहे थे। जब उन्होंने देखा कि मैं उनकी ओर जा रही थी, तो वे हर्षोल्लास के साथ मेरा स्वागत करने आए और खुशी-खुशी मुझे एक बहन के रूप में स्वीकार किया। लेकिन जैसे ही मैं, उनके द्वारा घिरी और साथ में लिए जा रही, इस प्रकाशमान क्षेत्र में प्रवेश करने ही वाली थी—जिसकी रोशनी सूर्य की किरणों से भी कहीं अधिक थी—अचानक हवा में एक आकृति प्रकट हुई, जो देखने में भयानक थी, और कोयले तथा पिच की तरह काली थी। यह एक ऐसी राक्षसी आकृति थी जो सभी अंधकार और निराशा से भी बढ़कर थी।

मुझ पर सबसे भयानक और क्रोधित दृष्टि डालते हुए, दाँत पीसते हुए और निर्लज्जता से हमला करते हुए, उसने मुझे मेरे रक्षक के हाथों से छीनने की कोशिश की; उसी समय, वह इतनी ज़ोर से चिल्लाया कि उसकी आवाज़ हवा में गूँज गई:

'क्या तुम सच में,' वह चिल्लाया, 'उसे स्वर्ग के राज्य में प्रवेश देना चाहते हो? तो फिर मैं, पृथ्वी पर लोगों को पकड़ने के अपने काम को लगन से करते हुए, अपनी मेहनत व्यर्थ क्यों बर्बाद कर रहा हूँ? उदाहरण के लिए, इसको ही ले लो: इसने व्यभिचार से पूरी पृथ्वी को अशुद्ध कर दिया है और अपनी परक्रीड़ा की घृणित हरकत से सारी मानवता को भ्रष्ट कर दिया है।' मेरी सारी चालाकी और शक्ति मैंने अकेले उसी पर खर्च की: मैंने उसके लिए मनुष्यों में से सबसे कुलीन और सबसे अमीर लोगों को—और वे भी अनगिनत संख्या में—प्रेमी बनाए; और उसके प्रेम पर बर्बाद की गई संपत्ति से, उसने सोने और चांदी का इतना खजाना इकट्ठा कर लिया है जितना शायद शाही खजानों में भी मुश्किल से मिलता है। मैंने गर्व से सोचा था कि मैंने उसे अपनी पकड़ में ले लिया है, जैसे कि मेरे विजयी ध्वज और अजेय हथियार को, जिसके द्वारा मैं उन पर विजय प्राप्त कर सकता था जो ईश्वर से मुंह मोड़ते हैं और मेरे जालों में फंस जाते हैं। और अब उसका क्या? हे ईश्वर की सेनाओं के महादूत, क्या तुम मुझ पर इतने क्रोधित हो गए हो कि तुम मुझे इस वेश्या के पैरों तले फेंक देते हो? क्या मुझ पर आपका क्रोध अभी तक शांत नहीं हुआ है, जबकि आप हर गुज़रते दिन के साथ मुझसे और भी ज़्यादा उग्रता और निर्दयता से बदला ले रहे हैं? क्या आप मुझसे मेरे इस सच्चे सेवक को भी छीनना चाहते हैं, जिसे मैंने इतनी ऊँची कीमत पर खरीदा है? निश्चय ही पृथ्वी पर अब कुछ भी ऐसा नहीं बचा है जो वास्तव में और अपरिवर्तनीय रूप से मेरा हो! मुझे डर है कि तुम मेरे हाथों से उन सभी को भी छीन लोगे जो अभी जीवित हैं—पापियों को—और उन्हें स्वर्ग के राज्य के योग्य वारिसों के रूप में परमेश्वर के सामने प्रस्तुत करोगे! मेरी चिंताएँ व्यर्थ हैं! मेरी मेहनत व्यर्थ है! तुम मुझ पर इतनी ज़ोरदार हमला क्यों करते हो ? अपना क्रोध त्यागो और उन बंधनों को थोड़ा ढीला कर दो जिनसे मैं बंधा हूँ, और तुम देखोगे कि कैसे, पलक झपकते ही, मैं मानव जाति को पृथ्वी के चेहरे से मिटा दूँगा और एक भी वारिस पीछे नहीं छोड़ूँगा। मुझे अवज्ञा के एक ही कृत्य के लिए स्वर्ग से गिरा दिया गया है, फिर भी आप सबसे बड़े पापियों को—जिन्होंने ईश्वर का मज़ाक उड़ाने की हिम्मत की और कई वर्षों तक उन्हें बुरी तरह भड़काया—स्वर्ग के राज्य में स्वीकार करते हैं! अगर इससे तुम्हें इतना आनंद मिलता है, तो तुम्हारे लिए बेहतर होगा कि तुम एक ही घड़ी में, पृथ्वी के सभी कोनों से, उन सभी को इकट्ठा करो जो मानवीय जीवन नहीं बल्कि पशु-सदृश, पशुवादी जीवन जीते हैं, और उन्हें सभी को परमेश्वर

के पास लाओ; जबकि मैं स्वयं को अंधकार में छपिा लूँगा और मेरे लिए तैयार की गई शाश्वत यातनाओं की खाई में पूरी तरह से डूब जाऊँगा।

जब वह क्रोध और बड़े वकि्षोभ में ऐसे और इसी प्रकार के शब्द बोल रहा था, तो जो मुझे ले जा रहा था, उसने धमकी भरी दृष्टि से उसे घूरा, परन्तु मेरी ओर मुड़कर, वह प्रोत्साहन देने के लिए मुस्कुराया। और उस प्रकाश से एक आवाज़ सुनाई दी, जो कह रही थी:

'यह परमेश्वर की इच्छा है, जो मनुष्यों के पुत्रों पर दया करता है, कि पापी, यदि वे पश्चाताप करें, तो इब्राहीम की गोद में स्वीकार किए जाएँ।'

और फिर उस व्यक्ति से, जो मुझे ले जा रहा था, एक आवाज़ आई:

'मैं तुमसे कहता हूँ, माइकल, मेरे वादे के रक्षक, इस महिला को वापस वहीं ले जाओ जहाँ तुमने उसे पाया था—उसे अपना काम पूरा करने दो: क्योंकि मैं स्वयं उसके जीवन के सभी दिनों में उसके साथ रहूँगा।'

और उसने तुरंत मुझे मेरे शयनकक्ष में बिठा दिया और मुझसे कहा:

'यूदोसिया, परमेश्वर की सेवक, तेरा कुशल हो! हौसला रख और मज़बूत बन; परमेश्वर का अनुग्रह अब तेरे साथ है और जहाँ भी तू जाएगी, वह हमेशा तेरे साथ रहेगा।'

इन शब्दों से उत्साहित होकर, मैंने पूछा:

'प्रभु, आप कौन हैं? मुझे बताइए, ताकि मैं जान सकूँ कि सच्चे परमेश्वर में कैसे विश्वास करूँ और सच्चा जीवन कैसे प्राप्त करूँ?'

उसने उत्तर दिया, 'मैं ईश्वर के स्वर्गदूतों का प्रमुख हूँ, और मेरा कर्तव्य पश्चाताप करने वाले पापियों की देखभाल करना, उनका स्वागत करना और उन्हें एक धन्य और शाश्वत जीवन में ले जाना है।' और स्वर्ग में स्वर्गदूतों के बीच बहुत आनंद होता है जब कोई पापी पश्चाताप की शुद्ध प्रकाश की ओर मुड़ता है, क्योंकि ईश्वर, सभी का पिता, यह नहीं चाहता कि मानव आत्मा—जिसे उसने अनादि काल से अपनी सबसे पवित्र हाथों से अपनी ही छवि में बनाया है—नष्ट हो जाए। इसीलिए सभी स्वर्गदूत प्रसन्न होते हैं जब वे किसी मानव आत्मा को धार्मिकता से सुसज्जित, शाश्वत पिता की उपासना करते हुए देखते हैं, और वे सभी उसका अपनी बहन के रूप में स्वागत करते हैं; क्योंकि, पाप के अंधकार को त्यागकर, वह जीवित परमेश्वर, जो प्रकाश के सभी बच्चों के सामान्य पिता हैं, की ओर मुड़ती है, और उससे अटूट रूप से जुड़ जाती है।

यह कहने के बाद, उसने मुझ पर क्रॉस का चिह्न बनाया; मैं उसके सामने जमीन पर झुक गया, और जैसे ही मैं झुका, वह स्वर्ग में आरोहण कर गया।

धन्य हरमन ने उससे कहा:

'अब से निश्चित रहो, मेरी बेटी, और अब और संदेह मत करो कि स्वर्ग में एक सच्चा ईश्वर है, जो अपने पापों से पश्चाताप करने वालों को ग्रहण करने और उन्हें अपनी शाश्वत ज्योति में ले जाने के लिए तैयार है, जहाँ वह अपने राज्य के सेवकों - पवित्र स्वर्गदूतों - से घिरा हुआ शासन करता है। आपने इन स्वर्गदूतों को उस दिव्य प्रकाश में देखा, जहाँ आपने हमारे प्रभु यीशु मसीह की राजसी और अमर महिमा को देखा और इस बात से आश्वस्त हुईं कि वह दया और पापों की क्षमा में कितने उदार हैं, वह उन लोगों पर कितनी शीघ्रता से अपनी कृपा प्रदान करते हैं जो उनके साथ मेल-मिलाप करना चाहते हैं; तुमने उसकी दिव्य महिमा को जाना और उसके स्वर्गीय दरबार को देखा, जो अकथनीय सुंदरता से परिपूर्ण है, जहाँ वह वास करता है; तुमने यह महसूस किया कि स्वर्गीय तेज के सामने इस संसार का प्रकाश कितना छोटा और तुच्छ है। तुम और क्या सोच रहे हो, किस बात पर विचार कर रहे हो? मुझे बताओ!

धन्य यूडोक्सिया, एकमात्र परमेश्वर, महिमा के राजा की, अपने पूरे हृदय से सेवा करने के दृढ़ संकल्प के साथ, उत्तर दिया:

'मैंने विश्वास किया, और मैं अब भी विश्वास करती हूँ, कि पापी लोगों को बचाने वाला उस के सिवाय कोई और देवता नहीं है, जिसके स्वर्गीय द्वार, अकथनीय प्रकाश से जगमगाते हुए, मैंने देखे हैं।'

जर्मन ने कहा:

'हे पुत्री, स्वयं को परमेश्वर की निष्ठापूर्वक सेवा के लिए तैयार करो; बड़ी सावधानी बरतो कि तुम्हारे पश्चाताप के फल, जब तराजू पर रखे जाएँ, तो वे तुम्हारे पूर्व जीवन के पापों से भारी पड़ें, और स्वयं को अमर और शाश्वत परमेश्वर को एक प्रसन्न करने वाले उपहार के रूप में अर्पित करो; अपने आँसुओं से अपनी सभी अशुद्धियों को पूरी तरह धो डालने

तक रोओ और वलिाप करो, और इस प्रकार मसीह की पवत्रि वधू बनने के योग्य बन जाओ। अपने पूर्व के गर्व और अपने यौवन के हानकिारक और उग्र भावों को भूल जाओ, ताकि मसीह भी बदले में तुम्हारे पापों को भूल जाएँ; अपनी गर्दन को उस शर्मनाक परशि्रम के भारी जुए से मुक्त करो जो शैतान ने तुम्हारे पापों के द्वारा तुम पर डाला है; जीवन-दायक पश्चाताप का अच्छा और हल्का बोझ अपने ऊपर उठा लो, और अब से पाप से मुक्त हो जाओ और सभी धर्मी लोगों तथा पवत्रि स्वर्गदूतों के बीच को जानने वाले बनो। इसलिए, सच्चे वशि्वास और पवत्रिता में स्वयं को मज़बूत करो, और, अब से एक नरि्मल अंतरात्मा रखते हुए, शैतान के सामने नडिर होकर बोलो: 'अब मेरा तुझसे कोई संबंध नहीं, और न ही तेरा मुझसे, क्योंकि मैंने अपने सच्चे प्रभु को पा लिया है और स्वयं को सदैव के लिए उसी को अर्पति कर दिया है; मैंने अंततः अपने पूर्व भ्रष्टकर्ता—कामवासना—को त्याग दिया है और स्वयं को धार्मकिता के नए, अवनिाशी और तेजस्वी वस्त्र से परधिानति किया है। इस वस्त्र में मुझे परमेश्वर की कृपा मलिेगी, जो मुझे हमेशा के लिए बचाती है; अब मुझमें एक भी सांसारकि आसक्ति नहीं है, न ही सांसारकि सुखों की कोई इच्छा है, जनिकी तुच्छता और क्षणभंगुरता को मैं पहचान चुका हूँ; अब मैं स्वर्ग के आशीर्वादों को प्राप्त करने के लिए उत्सुकता से इच्छा और प्रयास करता हूँ। 'इसलिए, शैतान, जो तेरे पास है, उसे तू ही रख; परन्तु मैं, अजनबी, धोखेबाज़, चोर और अनन्त अंधकार का दास, दूर हो जा।'

यूदोक्सिया, इन शब्दों से और अधकि दृढ़ होकर, संन्यासी से बोली:

'माननीय पताजी, अब आप मुझे क्या आज्ञा देते हैं?'

उसने उत्तर दिया, 'मेरी इच्छा है कि तुम सबसे पहले वशि्वास का चहि्न—पवत्रि बपतस्मिा—ग्रहण करो, जो तुम्हें तुम्हारे पूरे जीवन में सुरक्षति रखेगा; और मैं, ईश्वर की सहायता से, अपने मठ जाऊँगा और प्रभु की इच्छा होने पर, फरि तुम्हारे पास लौट आऊँगा।'

आँखों में आँसू लिए, उसने उससे वनिती करना शुरू कर दिया:

'मेरे स्वामी, मुझे अकेला न छोड़ें; जब तक मैं पूरी तरह से ईश्वर की ओर न मुड़ जाऊँ और उनकी कृपा प्राप्त न कर लूँ, तब तक मुझे न छोड़ें, जसिकी मुझे इतनी लालसा है, कहीं ऐसा न हो कि प्राचीन धोखेबाज़, मुझे परत्यिक्त और असहाय देखकर, मुझे फरि से कहीं भी भटका दे, और मुझे मेरे पहले के व्यभचिार भरे जीवन में वापस ले जाए।'

और धन्य हरमन ने उससे कहा:

'एक बेहतर जीवन की यह दृढ़ लालसा, जसिे स्वयं ईश्वर ने आपके भीतर जगाया है, और आपकी धन्य आशा, ही आपको शत्रु के उन जालों से बचाएगी, जनिसे आप भयभीत हैं। इसलिए थोड़ी देर और ईश्वर से वनिम्र प्रार्थना में और अपने पापों का स्वीकार करते हुए रहो, और पवत्रि बपतस्मिा अवश्य ग्रहण करना। जहाँ तक मेरी बात है, मैं पवत्रि आत्मा की सहायता से, तुम्हारे जीवन के लिए जो लाभदायक है, उसे खोजकर शीघ्र ही तुम्हारे पास लौट आऊँगा।

उसे ईश्वर के सुपुर्द कर, धन्य हरमन अपने मार्ग पर चल पड़े। हरमन के जाने के बाद, धन्य यूडोक्सिया कई और दनिों तक उपवास करती रहीं, उनकी मेज़ पर रोटी, तेल और पानी के सवि और कुछ नहीं था; दनि-रात वह प्रार्थना करती रहीं और रोती रहीं। फरि, उस शहर के बशिप के पास जाकर, उन्होंने उनसे पवत्रि त्रमिूर्ति के नाम पर बपतस्मिा ग्रहण किया। उनके बपतस्मिा के कुछ दनिों बाद, उन्होंने उसी बशिप को एक प्रार्थनापूर्ण पत्र लखिा; उन्होंने उसे अपनी संपत्ति के बारे में सूचति किया, उसका वस्तिार से ववरिण देते हुए, और अनुरोध किया कि बशिप उसे मसीह को अर्पति कर दें। पत्र पढ़ने के बाद, बशिप ने धन्य यूडोक्सिया को अपने पास बुलाया और पूछा:

'तुमने, मेरी बेटी, यह पत्र मुझे, एक पापी को लखिा है?'

'हाँ, मैंने ही लखिा है,' यूदोसिया ने उत्तर दिया, 'और अब मैं एक बार फरि आपकी पवत्रिता से वनिती करती हूँ: चर्च के कोषाध्यक्ष को आदेश दें कि वह मेरा यह उपहार स्वीकार कर लें, और इसे गरीबों और ज़रूरतमंदों, अनाथों और वधिवाओं में बाँट दें, जैसा कि आप स्वयं जानते हैं, क्योंकि मुझे अब यह एहसास हो गया है कि मेरी यह दौलत अन्यायपूर्ण है, जो अधर्म से प्राप्त हुई है।'

तब उस बशिप ने, जसिका नाम थयिोडोडोटस था, उसकी अच्छी मंशाओं को देखकर, साथ ही परमेश्वर के प्रति उसके वशि्वास और प्रेम को जानकर, उस पर दृष्टि डाली और अपनी आत्मा में उसके भवषि्य के जीवन के मार्ग को समझकर कहा:

'मेरे लिए प्रार्थना करो, हे प्रभु में मेरी बहन, तुम जनि्हें मसीह की वधू कहलाने के योग्य समझा गया है; तुम जनि्होंने अशुद्ध कामुक प्रेम से घृणा की, पवत्रिता से प्रेम किया, और व्यभचिार के जीवन को अस्वीकार कर दिया; आप जो कुँवारी पवत्रिता का अनुकरण करने आई हैं और एक ही स्वर्गीय मोती खरीदने के लिए इस नरिर्थक संसार को बेच

दिया है; आप जिन्होंने पापपूर्ण भ्रम में थोड़ी ही अवधि जिए, पश्चाताप के द्वारा स्वर्गीय जीवन के अनंत युगों को सुनिश्चित किया है, जबकि मृत्यु पहले ही आपकी आँखों के सामने थी और आपने अमरत्व प्राप्त कर लिया है; आप, जिन्होंने कभी कई लोगों को विनाश की ओर ले गईं और अब, मसीह के द्वारा, कई लोगों को जीवन देंगी! आपने उदास अंधकार को त्यागकर विश्वास के प्रकाश से स्वयं को आच्छादित किया है, आप मसीह के मेमने कहलाने के योग्य हैं। सचमुच, तुम यूडोक्सिया, अनुग्रह की साक्षात् मूरत हो: प्रभु ने तुम पर अनुग्रह किया है, जिन्होंने कामवासना से मुंह मोड़ लिया और दिव्य स्वरूप से प्रेम किया। मेरे लिए प्रार्थना करो, मैं एक बार फिर तुमसे विनती करता हूँ, हे ईश्वर की दासी और मित्र, और स्वर्ग के राज्य में मेरा स्मरण करना।

उससे लंबी बात करने के बाद, आँखों में आँसू लिए, बिशप ने अपने डिकन से कहा:

'चर्च के दानगृह के अधीक्षक को तुरंत मेरे पास बुलाओ।'

जब वह व्यक्ति उपस्थित हुआ, तो बिशप ने उससे ये शब्द कहे:

'मैं तुम्हें एक धार्मिक और ईश्वर-भयभीत व्यक्ति के रूप में जानता हूँ, जो कई आत्माओं की परवाह करता है। इसलिए मैं ईश्वर की इस दासी को तुम्हारे हवाले करता हूँ, जो बेहतर के लिए प्रयास करती है, ताकि तुम उसके उद्धार का ध्यान रखो; और जो कुछ भी वह दे, उसे तुम गरीबों के हाथों के माध्यम से ईश्वर को सौंप देना।'

इस व्यक्ति ने पुरोहित का पद संभाला था; अपनी युवावस्था से ही उसने अपनी पवित्रता बनाए रखी थी, अपने माता-पिता से विरासत में मिली अपनी सारी संपत्ति परमेश्वर की पवित्र चर्च को दे दी थी, और स्वयं को पूरी तरह से प्रभु की सेवा के लिए समर्पित कर दिया था। यूदोक्सिया को अपने साथ लेकर, वह उसके घर गया, और जब वे अंदर गए, तो यूदोक्सिया ने अपने घर के व्यवस्थापकों को बुलाया और उनसे कहा:

'तुम में से प्रत्येक, जो कुछ भी तुम्हारे सुपुर्द किया गया है, वह मुझे ला दो।'

उन्होंने तुरंत उसके लिए सोने के दो 'टमी'—अर्थात बीस हजार—हर तरह के उत्तम बर्तन की अनगिनत संख्या, अनगिनत कीमती पत्थर और शाही मोती, रेशमी परिधानों के दो सौ सत्ताईस मर्तबान, सफेद लिनेन के परिधानों के चार सौ दस मर्तबान, सोने से बुने हुए परिधान, साठ संदूकों, और एक सौ बयासी संदूकों में अन्य वस्त्र जो कीमती पत्थरों और सोने की कढ़ाई से सजे थे; पच्चीस टेम ढले हुए सोने के, यानी दो लाख पचास हजार; सुगंधित पदार्थों के बीस डिब्बे; असली भारतीय मरहम के तेईस संदूकों;[2152] विभिन्न पात्रों में आठ हजार लीटर चांदी, एक सौ बत्तीस लीटर सोने की कढ़ाई वाले रेशमी कपड़े, सत्तर लीटर सादे रेशमी कपड़े, और अन्य कपड़ों तथा कम मूल्य की वस्तुओं की अनगिनत संख्या। इन चल संपत्तियों के अलावा, यूडोक्सिया के पास अचल संपत्ति भी थी: ज़मीनें, गाँव और पूरे जिले, जिनसे सालाना आठ सौ से दो हज़ार[2153] तक एकत्र किए जाते थे। चर्च के दानगृह के प्रभारी पुरोहित के चरणों में ये सारी संपत्ति रखकर, धन्य यूडोक्सिया ने अपने सभी पुरुष और महिला सेवकों को बुलाया और उन्हें संदूक से निकाले गए दो हजार सिक्के, साथ ही बर्तन, परदे, बढ़िया बिस्तर, सोने का काम किया हुआ फर्नीचर, वितरित कर दिया, और घर में मौजूद हर सुंदर वस्तु जो संदूकों में नहीं थी; उन्होंने ये सब उन्हें दे दिया और बाँट दिया। अंत में, उन्होंने अपने अंतिम शब्द कहे:

[2152] लित्रा वजन की एक इकाई है जो 72 ज़ोलोटनिक के बराबर होती है। चांदी में, इसका मूल्य 42 रूबल तक था; सोने में, 506 रूबल तक।

[2153] 'पाठक और श्रोता को यह अजीब या अविश्वसनीय न लगे,' – जैसा कि माइनई-चेती में कहा गया है – यह आश्चर्यजनक या अविश्वसनीय न लगे कि एक पापी पत्नी ने वेश्यावृत्ति के माध्यम से इतनी बड़ी संपत्ति अर्जित की, जैसा कि वर्णित है, क्योंकि यूनानियों के बीच, जो अभी तक सच्चे ईश्वर को नहीं जानते थे और मूर्तियों की पूजा करते थे, वेश्याओं को न केवल तिरस्कृत नहीं किया जाता था, बल्कि उनका बहुत सम्मान भी किया जाता था, जैसे, उदाहरण के लिए, एफ्रोडाइट, जिसे वे अपने व्यर्थ देवताओं में भी गिनते थे। जहाँ तक हेलेनिक वेश्याओं की संपत्ति का प्रश्न है, हमें प्राचीन इतिहासकारों की रचनाओं में निम्नलिखित मिलता है। फ्राइनी, एक एथेनियन वेश्या, ने महान सिकंदर द्वारा प्रसिद्ध हेलेनिक शहर थीब्स की पत्थर की दीवारों को ध्वस्त करने के बाद, अपने खर्च पर उन दीवारों को फिर से बनाने और शहर को पहले से बेहतर स्थिति में लाने की पेशकश की, इस एकमात्र शर्त पर कि दीवारों पर निम्नलिखित अंकित किया जाए: 'सिकंदर ने इसे नष्ट किया, और वेश्या फ्राइनी ने इसे फिर से बनाया'। लाइस, एक कोरिंथियन वेश्या, इतनी धनी और प्रसिद्ध थी कि, कुछ विवरणों के अनुसार, एक समय में पूरा ग्रीस उसके दहलीज पर था। फ़ाइस, एक और एथेनियन वेश्या, इतनी सुंदर, प्रसिद्ध और धनी थी कि महान अलेक्ज़ेंडर के बाद पहला मिस्र का राजा, टॉलेमी, उसे अपनी वैध पत्नी बनाने में शर्म नहीं महसूस करता था। थ्रेस की राडोने, एक मिस्र की वेश्या, के पास इतनी संपत्ति थी कि, मिस्र के शाही घराने की महिमा का अनुकरण करते हुए, उसने अपने ही गौरव के लिए एक पिरामिड बनवाया, जो शाही पिरामिडों से किसी भी तरह कम नहीं था। और यूडोक्सिया अपने जीवन-यापन और अपनी संपत्ति में उन जैसी ही थी; लेकिन जब उसने इन चीज़ों का त्याग कर दिया, आत्मा और शरीर से दरिद्र हो गई, और पश्चाताप के द्वारा परमेश्वर को प्रसन्न किया, तो वह पवित्र कुँवारियों के समान हो गई, स्वर्गदूतों के साथ संगति में आ गई, और अनंत धन की वारिस बनी, जिसे किसी भी आँख ने कभी नहीं देखा।

यूदोसयिा ने कहा, 'मैं तुम्हें इस अस्थायी श्रम से मुक्त करती हूँ; और तुम, यदि चाहो, तो खुद को राक्षसों के श्रम से भी मुक्त कर सकते हो। तो स्वयं को मुक्त करो, यदि तुम मेरी बात मानो और मसीह, सच्चे ईश्वर की ओर मुड़ो, और वह तुम्हें ईश्वर के पुत्रों के पास जो शाश्वत स्वतंत्रता है, वह प्रदान करेगा, और तुम्हें अपनी सेना में भर्ती कर लेगा।

तब, पुरोहति की ओर मुड़कर यूदोसयिा ने कहा:

'अब, हे स्वामी, जो कुछ भी आपको प्रस्तावति कयिा गया है, उसकी देखभाल करना और उसे अपनी इच्छानुसार नपिटाना आपके ऊपर है, क्योंकि मैं उस प्रभु की खोज में हूँ जो मुझे खोजता है।'

उसमें इतनी तीव्र और अप्रत्याशति परविर्तन, उसके पश्चाताप और ईश्वर के प्रति इतनी महान प्रेम को देखकर पुरोहति ने उससे कहा:

'धन्य हो, यूदोसयिा, क्योंकि तुम मसीह के वधू-कक्ष की कुँवारियों में गनिती के योग्य बन गई हो: वधू-वर के आगमन का समय तुम्हारे लिए अज्ञात नहीं है, और न ही तुम इस बात से अनभज्ञि हो कि वधू-कक्ष में कैसे प्रवेश करना है। नश्चिय ही, आपने महल के बाहर न रहने के लिए बड़ी सावधानी बरती है: आपने अपने दीपक में तेल भर लयिा है, और अंधकार आप पर हावी नहीं होगा। इस सद्गुण की शक्ति में फलते-फूलते रहें, और ईश्वर आपकी सहायता करेंगे; और मेरे लिए, एक पापी के लिए प्रार्थना करें, क्योंकि आप संतों में गनि जाने के योग्य हैं।

उस समय, आदरणीय जर्मनस, पवत्रि आत्मा की कृपा से प्रकाशति होकर, आए; और यह देखकर कि यूडोक्सयिा ने अपनी संपत्ति ईश्वर को दे दी थी, अपने पुरुष और महलिा दासों को मुक्त कर दयिा था, और मसीह के लिए, आध्यात्मकि और भौतकि रूप से दोनों ही तरह से नर्धिन हो गई थी, उन्होंने उसे अपने देश में, अपने पुरुषों के मठ के पास ही, स्थति महलिाओं के मठ में ले गए, और वहाँ उन्होंने उसकी भक्षिुणी दीक्षा दी; और उसने मठ जीवन के श्रम और तपस्या में स्वयं को समर्पति कर दयिा, और दनि-रात ईश्वर की सेवा की।

धन्य हरमन के कोएनोबयिम (सामूहकि मठ) में सत्तर भक्षिु थे[2154] और रेगस्तिान के मठ में तीस नन थीं, जनिमें संत यूडोक्सयिा भी थीं। तेरह महीने बाद, उस मठ की अधीक्षक, चैरटिीना नाम की महलिा, जन्होंने एक पवत्रि जीवन जयिा था, का नधिन हो गया। उनके मार्गदर्शन में, यूडोक्सयिा ने अपने आध्यात्मकि प्रयासों में काफी प्रगति की; उन्होंने भजन संहति को कंठस्थ कर लयिा और पवत्रि आत्मा से प्रबुद्ध होकर, एक बार ध्यानपूर्वक संपूर्ण पवत्रि धर्मग्रंथ को पढ़ने के बाद, उसे अच्छी तरह से समझ लयिा। चूंकि वह उपवास के अभ्यास में अपनी सभी बहनों से आगे थी, इसलिए सभी ने सर्वसम्मति से उन्हें मठाधीश चुना। और ईश्वर ने तुरंत ही एक चमत्कार द्वारा उनकी योग्यता की गवाही दी और उनके चुनाव की पुष्टि की।

फलिोस्ट्राटस नामक एक युवक, जो एक अमीर व्यक्ति था और कभी उससे प्यार करता था, उसे यूडोक्सयिा के प्रति अपने पुराने प्यार की याद आई और शैतान के उकसावे पर वासना से भरकर, उसने उसे फरि से अपनी पुरानी अनैतकिता में फंसाने का एक तरीका सोचना शुरू कर दयिा। लंबा वचिार करने और दनि-ब-दनि उसके लिए प्रेम में और अधकि जलते हुए, उसने अंततः नम्निलखिति चाल सोची। मठीय वस्त्र धारण करके और जतिना सोना वह उठा सकता था, उठाकर, वह अपनी योजना को अंजाम देने के दृढ़ संकल्प के साथ, यूडोक्सयिा के मठ के लिए पैदल चल पड़ा।

जब उसने मठ के द्वार पर दस्तक दी, तो द्वारपाल ने खड़िकी से झाँककर पूछा:

'तुम यहाँ क्या ढूंढ रहे हो, आदमी?'

उसने उत्तर दयिा:

'मैं, एक पापी, इसलिए आया हूँ कि आप मेरे लिए प्रार्थना करें और मुझे आशीर्वाद दें।'

दरबान ने कहा:

'भाई, इस जगह में पुरुषों को प्रवेश की अनुमति नहीं है, लेकनि यहाँ से ज्यादा दूर नहीं तुमको लॉर्ड हर्मन का मठ मलिेगा: वहाँ तुमको प्रार्थना और आशीर्वाद मलिेगा, लेकनि यहाँ खटखटाकर हमें परेशान मत करो: तुमको वैसे भी अंदर नहीं आने दयिा जाएगा।'

यह कहकर युवती ने खड़िकी बंद कर दी। लज्जा और पछतावे से भरा, फरि भी यूडोक्सयिा के प्रति प्रेम की आग में जलता हुआ, फलिोस्ट्रैटस हर्मन के मठ की ओर चल पड़ा और वहाँ उपयुक्त समय पर पहुँच गया। जब उसने धन्य हरमन से भेंट की, जो मठ के द्वार पर एक पुस्तक पढ़ रहे थे, तो उसने उनके सामने जमीन पर सरि झुकाया। पवत्रि वृद्ध

[2154] कनिोवयिा एक सामुदायकि नयिम वाला मठ है, जहाँ हर कोई मठ के समर्थन से एक साथ रहता है।

ने मठ की परंपरा के अनुसार एक प्रार्थना की, और फलिोस्ट्रैटस ने उनका आशीर्वाद प्राप्त कयिा। पूजनीय हरमन ने कहा:

'बैठ जाओ, भाई, और मुझे बताओ: तुम कसि देश और कसि मठ से आए हो?'

उसने उत्तर दयिा:

'मैं अपने माता-पति का एकमात्र पुत्र हूँ, जनिका हाल ही में नधिन हो गया है; मैं शादी नहीं करना चाहता था, बल्कि मठवासी जीवन में ईश्वर की सेवा करना चाहता था, और तुरंत ही मैंने मठवासी वस्त्र धारण कर लिए—ये वस्त्र—और मेरा इरादा एक ऐसी जगह और एक ऐसे गुरु को खोजने का है जो मुझे मठवासी जीवन में शकि्षति कर सकें।' आपकी पवत्रिता, आदरणीय पतिाजी, के बारे में सुनकर, मैं यहाँ आने के लिए लंबा सफर तय करके आया हूँ, यह इच्छा लेकर कि आपके चरणों में गरिकर आपसे वनिती करूँ कि आप मुझे, जो अपने अतीत के पापों से पश्चाताप करना चाहता है, अपने मठ में स्वीकार कर लें।

जब वह बोल रहा था, तब धन्य हर्मन ने ध्यान से उसे देखा और, उसके कामुक स्वभाव को भांपते हुए, कहा:

'बेटा, तुम एक बड़ा श्रम करने की इच्छा रखते हो; मुझे नहीं पता कि तुममें इसके लिए शक्ति होगी या नहीं। हम बुजुर्ग भी मुश्कलि से शैतान के उन प्रलोभनों का वरिोध कर पाते हैं जो अशुद्धि की ओर ले जाते हैं; तो फरि तुम्हारा क्या होगा, जो जीवन के चरम पर एक युवा हो, और जो जलते हुए, तीव्र जुनून के वर्षों में हो?'

फलिोस्ट्राटस ने उत्तर दयिा:

'पतिाजी! क्या मेरे जैसे युवकों के सदाचारी जीवन के उदाहरण नहीं हैं, जन्होंने साहसपूर्वक प्रलोभन पर वजिय प्राप्त की है? आपकी यूडोक्सयिा, जसिके बारे में मैंने बहुत कुछ सुना है—क्योंकि उसके सदाचारी जीवन की ख्याति दूर-दूर तक फैली हुई है—क्या वह युवा नहीं थी और क्या वह ऐश्वर्य में नहीं रहती थी? फरि भी उसने आपके मार्गदर्शन का पालन कयिा और अब अपने मांसल शरीर पर वजिय प्राप्त कर, अपने संन्यासी जीवन में दृढ़ और अडगि बनी हुई है। मैं इसे छपिाऊँगा नहीं, पतिाजी: मैं वशिेष रूप से उसके उदाहरण से प्रेरति हूँ और उसका अनुकरण करना चाहता हूँ। मुझे याद है कि वह कतिनी सुंदर थी , कतिनी धनी थी, और वह अपना समय कनि सुख-भोगों में बतिाती थी; फरि भी, वह एक क्षण में बदल गई और एक संकीर्ण और दुख्दद मार्ग पर मसीह की सेवा करने लगी। यदि वह मसीह के प्रति अपने प्रेम के लिए उन सभी चीज़ों को एक तरफ रखकर अपनी इच्छाओं को मार डालने में सक्षम थी, तो फरि, पतिाजी, आप मुझ पर, एक पुरुष पर, जो एक महलिा से अधकि शक्तशिाली है, अपनी आशा क्यों नहीं रखते? अगर मैं उसे एक बार भी देख पाता, तो मुझे उम्मीद है कि उसके संवाद और शकि्षा से मैं ईश्वर के लिए इतना उत्कट उत्साह और संघर्ष के लिए इतनी शक्ति प्राप्त करता कि वह मेरे बाकी जीवन के लिए शैतान के सभी प्रलोभनों पर वजिय पाने और उन्हें दूर करने के लिए पर्याप्त होती।

ईश्वर के सेवक हरमन ने, ऐसे शब्द सुनकर, झूठ को सच मान लयिा और यह सोचकर कि वह वास्तव में ईश्वर की सेवा करना चाहता है, उससे कहा:

'हम तुम्हें यूडोक्सयिा से मलिने और उससे उपयोगी शकि्षा प्राप्त करने से नहीं रोकेंगे, क्योंकि तुम उसके उदाहरण का अनुसरण करके सदाचार का मार्ग अपनाना चाहते हो।'

इसके बाद, एबॉट हरमन ने एक सम्मानति वृद्ध भकि्षु को बुलाया जो मठ में धूप ले जाया करता था और अक्सर आवश्यक कार्यों के लिए वहाँ भेजा जाता था। उससे हरमन ने कहा:

'जब तुम मठ में जाओ, तो इस भाई को अपने साथ ले जाना: उसे यूडोक्सयिा से मलिवाना, क्योंकि वह उससे आध्यात्मकि लाभ प्राप्त करना चाहता है और उसके दैवी जीवन का अनुकरण करना चाहता है।'

कुछ समय बाद, उस भकि्षु को मठ जाना पड़ा, और मठाध्यक्ष के नर्दिेशों का पालन करते हुए, वह उस युवा भ्राता को अपने साथ ले गया। फलिोस्ट्रैटस, भेड़ की खाल ओढ़े भेड़यिे की तरह संन्यासी के वस्त्रों में लपिटा, मठ में प्रवेश कयिा और मसीह की वधू, संत यूडोक्सयिा को देखकर, उनके वनिम्र स्वरूप, उनकी गरीबी और उनके दुबले-पतले शरीर से चकति रह गया। उसका चेहरा पीला पड़ गया था, उसकी आँखें झुकी हुई थीं, उसके होंठ चुप्पी में सीले हुए थे; उसके कपड़े फटे-पुराने थे, उसका बस्तिर जमीन पर एक चटाई थी, और उस पर काँटों वाली ऊन की कमीज़ थी। एक अनुकूल क्षण का लाभ उठाते हुए, उसने धीमी आवाज़ में उससे बात करना शुरू कयिा (अन्य नन दूर खड़ी थीं):

'यूदोसयिा, इसका क्या मतलब है? कसिने तुम्हें बहकाया है—तुम्हें, जो कभी महल जैसे कमरों में रहती थीं, धन-संपत्ति और हर तरह की वलिासति से परपिूर्ण, और जो हमेशा हर्षोल्लास में रहती थीं—और तुम्हें इन दयनीय स्थानों

पर ले आया है? उस महानगर से तुम्हें किसने वंचित कर दिया, जहाँ तुम अत्यंत सुन्दर वस्त्रों से सुसज्जित होकर चलती थीं और हर कोई तुम्हें सम्मान देता था, तुम्हारी सुंदरता पर विस्मित होता था और हर प्रकार की प्रशंसा से तुम्हारा गुणगान करता था? किस प्रलोभी ने तुम्हें उस परमानंद से पूर्ण गरीबी और दरिद्रता में, इस दीन-हीन जीवन में ला खड़ा किया है? और अब पूरा हेलियोपोलिस आपको ढूंढ रहा है; हर कोई आपको देखने के लिए तरस रहा है; आपके शानदार महलों की दीवारें भी आपके लिए रो रही हैं। मैं लोगों की ओर से बोल रहा हूँ; मुझे सभी की ओर से आपके पास भेजा गया है ताकि आपसे विनती करूँ कि आप शहर लौट आएं और अपने आगमन से लोगों के दुख को समाप्त करें। मेरी बात सुनो, मेरी रानी, मेरा अनुसरण करो, इस दयनीय मठ को छोड़ दो, भूख, बदबूदार कपड़ों, कठोर रस्सी के बिस्तर को पीछे छोड़ दो, और एक बार फिर अपने महलों, अपनी पूर्व मनोरंजन, उन सुखों में लौट आओ जिनका तुम कभी भरपूर आनंद लेती थीं। भले ही आपने अपनी संपत्ति बर्बाद कर दी हो, अजनबियों को व्यर्थ में बाँट दी हो, हर कोई आपको फिर से अमीर बनाने के लिए तैयार है। आप देरी क्यों कर रही हैं और हिचकिचा रही हैं? जब हर कोई आपसे प्यार करता है और आपकी भलाई चाहता है, तो आप खुद को अपना दुश्मन और सताने वाला क्यों बना रही हैं? क्या यह बर्बादी नहीं है, क्या यह शर्म की बात नहीं है, कि ऐसी सुंदर मुखाकृति को संन्यास जीवन के अंधकार में छिपाया जाए? क्या यह बर्बादी नहीं है कि ऐसी आँखों को, जो सूर्य की किरणों जैसी हैं, अनावश्यक रोने और आँसुओं से खराब किया जाए? इस सुंदर युवा शरीर को भूख, प्यास और अन्य कष्टों से थकाने का क्या लाभ? वे इत्र अब कहाँ हैं, जिनसे तुमने नगर की हवा को महकाया था और हर कोई तुम्हें देवी समझता था?[2155] और फिर भी, तुमने इन इत्रों के बजाय एक भिखारी के तिरिस्कृत जीवन की बदबू को स्वेच्छा से चुन लिया है! तुम्हें इस भ्रम में किसने डाला है? ऐसी बड़ी संपत्ति से आपका ध्यान किस झूठी आशा ने भटकाया है, जो और भी बढ़ सकती थी? कौन-सा धनी अपनी संपत्ति को ठुकराता है या उसे व्यर्थ में बाँट देता है, जैसा आपने किया है? लेकिन हम जानते हैं कि आपने जिन संपत्तियों को ठुकराया है, वे कहाँ हैं, और हम उन्हें आसानी से आपको वापस दिला सकते हैं – बस हमारे शहर लौट आइए, लेडी यूडोक्सिया! मैंने यात्रा के लिए पर्याप्त सोना लाया हूँ, और हम बाकी का सोना—जिसे तुमने बर्बाद कर दिया है—हेलिओपोलिस पहुँचते ही वापस ले लेंगे।

जैसे ही उसने ये पागलपन भरे शब्द बोले, यूडोक्सिया ने गुस्से से उसे घूरा और, उसकी चालाकी भरी और चापलूसी भरी बातें और सुनने की हिम्मत न करते हुए, क्रोध में उससे कहा:

'प्रतिशोध के ईश्वर आपको सज़ा दें! हमारे प्रभु यीशु मसीह, धर्मी न्यायाधीश, जिनके सेवक मैं हूँ—हालाँकि अयोग्य—आपको, जो बुरी मंशा से यहाँ आए हैं, उनके पास लौटने की अनुमति नहीं देंगे, क्योंकि आप शैतान के पुत्र हैं।'

यह कहकर, उसने उसके चेहरे पर फूँक मारी, और तुरंत वह झूठा संन्यासी और शापित प्रलोभी मृत होकर जमीन पर गिर पड़ा। बहनें, जिन्होंने उन्हें बातें करते देखा था लेकिन उनकी बातें नहीं सुनी थीं, यह देखकर बहुत डर गईं कि यूदोसिया की साथी उसकी साँस से जमीन पर गिर पड़ी और उसके पैरों तले मृत लेटी थी। पहले तो वे इस तरह के अलौकिक घटनाक्रम पर चकित रहीं और इसे ईश्वर का कार्य मानकर पहचान लिया, लेकिन फिर उन्हें डर सताने लगा कि सांसारिक लोग और न्यायाधीशों को इस घटना का पता चल जाएगा और वे इसे हत्या मानकर इसकी जांच शुरू कर देंगे, और मठ को जला देंगे, क्योंकि मूर्तिपूजक यूनानी ईसाइयों और मठों से नफरत करते थे। यूडोक्सिया से पूछने की हिम्मत न करते हुए, उन्होंने आपस में ही इस बात पर चर्चा की कि क्या हुआ था। और उनमें से एक ने कहा:

'हम अभी इंतजार करें: रात तो हो ही रही है; रात में हम प्रार्थना करें; शायद प्रभु हमें इस भिक्षु की मृत्यु का कारण बताएँगे और हमें मार्गदर्शन देंगे कि हमें क्या करना चाहिए।'

आधी रात हो गई। आधी रात के सामान्य मंत्रोच्चारण से पहले, प्रभु यूडोक्सिया को एक सपने में प्रकट हुए और कहा:

'उठो, यूडोक्सिया, और अपने ईश्वर की महिमा करो। शैतान द्वारा तुम्हारे पास भेजे गए परीक्षाकर्ता की लाश के पास घुटनों के बल प्रार्थना करो, और मैं उसे उठने की आज्ञा दूँगा; और वह उठेगा और पहचान लेगा कि मैं कौन हूँ, जिस पर तुम विश्वास करती हो, और मेरी कृपा तुम पर प्रचुर मात्रा में होगी।'

[2155] पगानों ने अपने देवताओं और देवियों को सभी मानवीय गुणों, और यहां तक कि दोषों से भी, हालांकि अतिशियोक्तिपूर्ण हद तक, संपन्न किया। इसीलिए वे उन्हें उपहार के रूप में मानव जीवन में सबसे कीमती और बेहतरीन चीजें अर्पित करते थे: उत्तम व्यंजन, महँगे पेय, सुगंधित पदार्थ, आदि। इसलिए ऐश-ओ-आराम में डूबी, सुंदर, हमेशा शानदार कपड़े पहनने वाली और इत्र लगाई रहने वाली यूडोक्सिया अपने समकालीनों को वास्तव में किसी देवी जैसी ही लग सकती थी।

जागने पर, यूदोसयिा ने अपने प्रभु से प्रार्थना की और मृतक को जीवति कर दयिा। फलिोस्ट्रैटस, मृत्यु से जैसे नींद से जागकर, उस सच्चे ईश्वर को पहचान गया जसिने उस पर दया दखिाई थी, धन्य की चरणों में गरि पड़ा और कहा:

'मैं आपसे वनिती करती हूँ, धन्य यूडोक्सयिा, सच्चे परमेश्वर की सच्ची सेवकिा, मुझे एक पश्चातापी के रूप में स्वीकार करें और मुझे क्षमा करें, क्योंकि मैंने आपको छलपूर्ण और अशुद्ध शब्दों से दुख पहुँचाया है। अब मैं समझती हूँ कि आप कसि महान और दयालु प्रभु की सेवा करती हैं।'

और धन्य यूदोसयिा ने उससे कहा:

'शांति से जाओ; तुम पर ईश्वर द्वारा प्रदान की गई आशीर्वादों को मत भूलना; पवत्रि वश्विास के उस सच्चे मार्ग से भटकना मत, जसि तुमने जान लयिा है और जसि अपनाने का तुमने वादा कयिा है।'

उस समय, देश पर राजा अव्रलियिन का शासन था (रोमन सीज़र नहीं, बल्कि उसी नाम का एक और, जो रोमन सीज़रों के अधकिार के अधीन था), और यूडोक्सयिा पर उसके सामने बदनामी की गई। उनके पूर्व प्रशंसक एकत्रति हुए और आपस में सलाह-मशवरि करने के बाद, उन्होंने राजा को एक पत्र लखिा, जसिमें यूडोक्सयिा पर यह आरोप लगाया गया कि वह अपने साथ रेगस्तिान में शाही खजाने के बराबर सोना ले गई थी। उन्होंने राजा से सैनकिों का एक दल मुहैया कराने का अनुरोध कयिा ताकि भगोड़ी को ढूंढकर वे उसे शहर वापस ला सकें और सोने को शाही खजाने में लौटा सकें, क्योंकि उसने एक नश्चिति मसीह में गलीलयिाई धर्म को अपना लयिा था और उन देवताओं को अस्वीकार कर दयिा था जनिकी पूजा राजा भी करते हैं। सोने की वशिाल मात्रा के बारे में सुनकर, ऑरेलयिन ने तुरंत उनकी मांग मान ली और एक काउंट ई[2156] को बुलाकर उसे आदेश दयिा कि वह सैनकिों को लेकर जाए, यूडोक्सयिा को उसके सोने के साथ पकड़कर उसके पास ले आए। तीन सौ सैनकिों को लेकर, वह काउंट रेगस्तिान की ओर, उस मठ के लिए रवाना हो गया जहाँ यूडोक्सयिा रहती थी। जब वे यात्रा कर रहे थे, तो प्रभु रात में यूडोक्सयिा के पास प्रकट हुए और कहा:

'राजा तुमसे क्रोधति है, परन्तु मत डरना: मैं सदा तुम्हारे संग हूँ।'

जब काउंट और उसके सैनकिों के दल ने मठ की दीवारें देखीं, तो वह अँधेरा होने का इंतज़ार करने के लिए रुक गया, क्योंकि दनि ढल रहा था, और उसने अपने दल को समूहों में बाँट दयिा ताकि वे रात में मठ पर चारों ओर से हमला कर सकें। और जैसे ही वे अपना हमला शुरू करने वाले थे, परमेश्वर के अदृश्य हाथ की सर्वशक्तमिान शक्ति ने उन्हें वफिल कर दयिा, और पूरी रात वे मठ की ओर एक कदम भी आगे नहीं बढ़ सके। दनि चढ़ आया। वे मठ की दीवारें देख सकते थे लेकनि उसके पास नहीं जा सकते थे; तीन दनि और तीन रातों तक उनकी कोशशिें व्यर्थ साबति हुईं, और वे यह समझ नहीं पा रहे थे कि आगे क्या करें।

और फरि, अचानक, एक भयानक, वशिाल सर्प ने उन पर हमला कर दयिा, और वे, अपने हथयिार फेंक कर, भयभीत होकर भाग गए। लेकनि भले ही वे सांप के जबड़ों से बच गए थे, वे उसके जहर से नहीं बच सके। सांप की घातक साँस से ग्रस्त होकर, उनमें से कुछ वहीं पर मृत पड़े रह गए, जबकि अन्य मुश्कलि से सड़क पर जीवति पड़े थे; और सेनापति केवल तीन योद्धाओं के साथ राजा के पास लौटा। क्रोधति राजा ने अपने सामंतों से कहा:

'इस जादूगरनी का क्या करें जसिने अपने जादू से इतने सारे योद्धाओं को मार डाला है? आपकी क्या सलाह है? इतना घनिौना अपराध बनिा सज़ा के नहीं रह सकता।'

वचिार-वमिर्श के बाद, राजा के पुत्र ने कहा:

'मैं एक बड़ी सेना के साथ जाऊँगा, इन वेश्याओं के अड्डे को धूल चटा दूँगा, और यूडोक्सयिा को यहाँ ले आऊँगा।'

ज़ार और बाकी सभी सहमत हो गए, और अगले दनि ज़ार का बेटा अपने सैनकिों के साथ रेगस्तिान के मठ को लूटने और यूडोक्सयिा को कैद करने के लिए नकिल पड़ा। रास्ते में उसे अपने पति का एक गाँव मलिा और चूंकि रात होने लगी थी, उसने इस सुवधिाजनक वश्राम स्थल पर रात बतिाने का नर्णिय लयिा। युवा जोश के एक झोंके में, वह अपने घोड़े से कूद पड़ा, एक पत्थर से टकराया और उसकी टांग बुरी तरह घायल हो गई, इसलिए उसे उसके सैनकिों द्वारा बस्तिर पर ले जाया गया। रात के दौरान, उसकी हालत बगिड़ गई, और वह मर गया; और सैनकि राजा के पास लौट आए, अपने साथ उसके मृत पुत्र को लेकर। अपने बेटे की अचानक मौत को देखकर, राजा की भी मौत हो गई। पूरा शहर इकट्ठा हो गया, और लोग राजा के बेटे और खुद राजा, जो दुख से मर रहा था, के शोक में रोने लगे। लोगों में फलिोस्ट्रैटस भी था। राजा के दरबारयिों

[2156] एक 'कोमति' ज़ार की कर वसूली का प्रभारी एक वशिेष अधकिारी था। इस शब्द का उपयोग सामान्य रूप से शहर के गवर्नरों को संदर्भति करने के लिए भी कयिा जाता था।

के पास जाकर, उसने उनसे कहा कि यूडोक्सिया ईश्वर की सेविका थी, और कोई भी उसे नुकसान नहीं पहुँचा सकता था, क्योंकि वह एक स्वर्गीय शक्ति द्वारा संरक्षित थी। लेकिन अगर राजा अपने बेटे को जीवित देखना चाहता है, तो उसे उसके पास एक सम्मानजनक अनुरोध भेजे, ताकि वह मृत लड़के को जीवित करने के लिए ईश्वर से प्रार्थना कर सके।

फिलोस्ट्राटस ने कहा, 'मैंने स्वयं उसकी प्रार्थना की शक्ति और ईश्वर की दया का अनुभव किया है।'

यह सुनकर राजा कुछ शांत हुआ और फिलोस्ट्रैटस से विस्तार से यह जानने के बाद कि उसके साथ क्या हुआ था, उसने उसकी बातों पर विश्वास किया और तुरंत ट्रिब्यून[2157] बबलि को एक सम्मानजनक, विनम्र और विनती भरा पत्र लेकर यूडोक्सिया के पास भेजा। जब वह मठ पहुँचा, तो संत यूदोक्सिया ने नम्रतापूर्वक सिर झुकाकर राजा का पत्र स्वीकार किया और कहा:

'राजा अपना पत्र मुझ जैसी नीच और अयोग्य पापी को क्यों भेज रहे हैं?'

जब संत के राजा का पत्र पढ़ने का इंतजार कर रहे थे, तो ट्रिब्यून मठ के एक कमरे में गया और वहाँ एक खुली किताब देखकर झुककर पढ़ने लगा: *'धन्य हैं वे जो उसकी आज्ञाओं का पालन करते हैं, जो उसे पूरे मन से खोजते हैं'* (भजन संहिता 118:2); और, भजन संहिता के अंत तक पढ़ने के बाद, वह झपकी लेने लगा और, किताब पर सिर टिकाकर सो गया। अपने सपने में, एक तेजस्वी युवक उसके सामने प्रकट हुआ और, अपने हाथ में पकड़े हुए बेंत से उसकी बगल में ठेलते हुए, कहा:

'बाविला, उठो! मृतक तुम्हारा इंतज़ार कर रहा है।'

जागने पर, बाविला स्वर्गदूत के प्रकट होने से भयभीत हो गया और उसने धन्य यूडोक्सिया को इसके बारे में बताया, उनसे विनती करते हुए कि उसे तुरंत जाने दें। उसने सभी बहनों को बुलाया और उनसे कहा:

'राजा ने मेरी इस तुच्छता को जो लिखा है, उसके संबंध में आप मुझे क्या सलाह देती हैं?'

बहनों ने एक स्वर में उत्तर दिया:

'पवित्र आत्मा की कृपा आपका मार्गदर्शन करे: राजा को वही लिखें जो ईश्वर को प्रसन्न करे।'

दिल से प्रार्थना करने के बाद, संत ने बैठकर राजा को इस प्रकार लिखा: 'मैं, एक तुच्छ महिला, नहीं जानती कि महामहिम ने मुझे किस अवसर पर संदेश भेजने की कृपा की है। मैं, एक अयोग्य और पापी महिला, जो अपने विवेक द्वारा कई और भयानक अपराधों के लिए दण्डित हूँ, में यह साहस नहीं है कि मैं अपने ईश्वर मसीह से आप पर दया करने और आपके पुत्र को जीवित वापस करने की विनती करूँ। लेकिन मैं अपने प्रभु की प्रसिद्ध भलाई और शक्ति में अपनी आशा रखती हूँ, कि वह आप पर और आपके पुत्र पर अपनी महान दया दिखाएंगे, यदि आप पूरे हृदय से सच्चे परमेश्वर में विश्वास करें, जो मृतकों को जीवित करते हैं, और अपनी आशा उन पर रखें। यह असंभव है कि आप उनके पवित्र और भयानक नाम का स्मरण करें और उनसे किसी भी चीज़ के लिए प्रार्थना करें, जब तक कि आप पहले अपनी पूरी आत्मा से उन पर विश्वास न करें। इसलिए, यदि आप अपनी पूरी आत्मा से विश्वास करती हैं, तो आप अमर ईश्वर की महान महिमा को देखेंगी, उनकी दया के योग्य बनेंगी, और उनके आशीर्वादों का आनंद लेंगी।'

पत्र लिखने और उसे तीन बार क्रॉस के चिह्न से सील करने के बाद, उसने उसे दूत को दे दिया और उसे भेज दिया। राजा के पास लौटकर, ट्राइब्यून ने संत यूडोक्सिया का संदेश उसे नहीं दिया, बल्कि उसे मृतक की छाती पर रख दिया, और ऊँचे स्वर में मसीह का नाम पुकारा। तुरंत ही मृत व्यक्ति जीवित हो उठा, उसने अपनी आँखें खोलीं, बोला और जैसे नींद से जागा हो, जीवित और कुशल होकर अपने पैरों पर खड़ा हो गया। हर कोई इस असाधारण दृश्य को देखकर चकित और स्तब्ध रह गया। और राजा ने ऊँचे स्वर में पुकारा:

'ईसाई यूडोक्सिया का परमेश्वर महान है! सच्चा और धर्मी परमेश्वर ईसाई परमेश्वर है! यह उचित है कि बहुत से लोग आपकी शरण लें, और जो प्रभु मसीह में विश्वास करते हैं, वे धार्मिक रूप से आचरण करें! मुझे भी स्वीकार करें, हे प्रभु ईसा मसीह, क्योंकि मैं आपकी ओर आता हूँ, क्योंकि मैं आपके पवित्र नाम में विश्वास करता हूँ और यह स्वीकार करता हूँ कि आप ही एकमात्र सच्चे परमेश्वर हैं, जो हमेशा के लिए पवित्र और धन्य हैं!

ईश्वर मसीह में विश्वास करने के बाद, राजा का शहर के बिशप द्वारा अपनी पत्नी और पुत्र—जिसे मृतकों में से जिलाया गया था—और अपनी बेटी गेलासिया के साथ बपतिस्मा दिया गया। इसके बाद, गरीबों और ज़रूरतमंदों को उदार दान देने के बाद, उन्होंने एक पवित्र चर्च के निर्माण के लिए संत यूडोक्सिया को बहुत सारा सोना भेजा। इसके अलावा,

---

[2157] एक 'ट्रिब्यून' सैन्य अधिकारियों का प्रतिनिधि, एक छोटी टुकड़ी का कमांडर, आधुनिक कर्नल के समान होता था।

उन्होंने उसी स्थान पर एक शहर बसाने का आदेश दिया जहाँ यूडोक्सिया रहती थीं, और वह अक्सर उन्हें पत्र लिखकर उनकी पवित्र प्रार्थनाओं का अनुरोध करते थे। कुछ ही समय बाद, राजा, जो पवित्र विश्वास और अच्छे कर्मों में फल-फूल रहे थे, प्रभु में सो गए, और उनकी पत्नी की मृत्यु भी जल्द ही हो गई। उनके पुत्र को एक डिकन नियुक्त किया गया, और बाद में, जब बिशप का निधन हो गया, तो उन्हें बिशप के रूप में अभिषिक्त किया गया। जहाँ तक उनकी बहन गेलासिया का सवाल है, उन्होंने दुनिया की व्यर्थता को तुच्छ समझा और वैवाहिक जीवन से परहेज किया, फिर भी प्रभु की सेवा करने की इच्छा से, वे गुप्त रूप से संत यूडोक्सिया के मठ में चली गईं और वहाँ अपनी मृत्यु तक रहीं, प्रभु की लगन से सेवा करते हुए और उन्हें प्रसन्न करते हुए।

उस समय, मूर्तिपूजक दुष्टता का बोलबाला था, और जो लोग गुप्त रूप से प्रभु की सेवा करते थे, उन्हें ईश्वर-विरोधी लोगों द्वारा उजागर कर दिया जाता था और उन्हें भी उसी नियति का सामना करने के लिए मजबूर किया जाता था। उस समय, हेलीओपोलिस शहर का राज्यपाल डायोजेनेस था, जो झूठे देवताओं का एक उत्साही रक्षक, उनका सबसे समर्पित सेवक, और मूर्तियों की पूजा करने से इनकार करने वालों का उत्पीड़क था। वह उपर्युक्त राजकुमारी, गेलासिया को अपनी पत्नी बनाना चाहता था, एक ऐसा प्रस्ताव जिसे उसके पिता, ऑरेलियन ने तब स्वीकार कर लिया था जब वह अभी भी एक अविश्वासी था। लेकिन जब उसे पवित्र बपतिस्मा द्वारा ज्ञान प्राप्त हुआ, तो उसने उसे एक अविश्वासी पति को तब तक देने से इनकार कर दिया जब तक कि वह ईसाई धर्म को न अपना ले। इसके तुरंत बाद, अव्रेलियन की मृत्यु हो गई, और गेलासिया, इस डर से कि डायोजेनेस उसे जबरदस्ती ले जाएगा, जैसा कि कहा गया है, संत यूडोक्सिया के मठ में भाग गई; लेकिन किसी को ठीक-ठीक नहीं पता था कि वह कहाँ गई थी। केवल यह अफवाह थी कि वह यूडोक्सिया के पास कहीं छिपी हुई थी। गवर्नर डायोजेनेस ने यूडोक्सिया को एक ईसाई होने के नाते पूछताछ के लिए पकड़ने हेतु पचास सैनिक भेजे। जब सैनिक उसका पीछा कर रहे थे, तो उस रात प्रभु यूडोक्सिया के पास प्रकट हुए और कहा:

'बेटी यूदोसिया! सतर्क रहो और अपने विश्वास में दृढ़ रहो। तुम्हारे लिए मेरा नाम स्वीकार करने और मेरी महिमा को बढ़ाने का समय आ गया है। वह पराक्रम जो तुम्हें करना है, वह निकट आ रहा है। बहुत जल्द, जानवरों जैसे भयानक लोग तुम पर हमला करेंगे, लेकिन निराश या भयभीत मत होना, क्योंकि मैं तुम्हारे सभी कार्यों और परिश्रमों में तुम्हारा करीबी साथी और स्थिर सहायक रहूँगा।"

जब यह दर्शन समाप्त हुआ, तो रात के समय सैनिकों ने मठ की दीवार पर चढ़ाई कर दी। पूजनीय भिक्षुणी ने दिव्य प्रेरणा से यह जानकर, उनसे मिलने के लिए बाहर आकर पूछा:

'तुम यहाँ क्या करने आए हो? तुम किसकी तलाश में हो?'

सैनिकों ने उसे पकड़ लिया और यूडोक्सिया के बारे में पूछा। उसने वादा किया कि वह यूडोक्सिया को उन्हें सौंप देगी, बशर्ते वे उसे थोड़ी देर के लिए छोड़ दें। और, चर्च में प्रवेश करने के बाद, वह पवित्र वेदी पर चढ़ी, मसीह के परम शुद्ध जीवन-दायक रहस्यों वाले अवशेष-पात्र को खोला, और इस महान पवित्र खजाने का एक हिस्सा लेकर, उसे अपने वक्षस्थल से लगा लिया। इसके बाद, वह बाहर आई और सैनिकों से कहा:

'मैं यूडोक्सिया हूँ; मुझे ले जाओ और उसे सौंप दो जिसने तुम्हें भेजा है।'

वे उसे ले गए और अपने साथ ले चले। यह एक अमावस्या की अँधेरी रात थी, और देखो, एक तेजस्वी और सुंदर युवक प्रकट हुआ, जो उसके सामने एक मोमबत्ती लेकर रास्ता रोशन कर रहा था। वह प्रभु का स्वर्गदूत था, जो केवल यूडोक्सिया को ही दिखाई दे रहा था, जबकि सैनिकों ने न तो उसे देखा और न ही प्रकाश को। सैनिक यूडोक्सिया को एक गधे पर बिठाना चाहते थे, लेकिन उसने मना कर दिया और कहा:

'"*कुछ रथों पर सवार होते हैं, और कुछ घोड़ों पर*" (भजन संहिता 19:8), परन्तु मैं, मसीह पर भरोसा रखकर, बाकी का रास्ता पैदल चलूँगी।'

शहर में पहुँचने पर, राज्यपाल ने यूडोक्सिया को दो दिनों के लिए कैद करने का आदेश दिया; तीसरे दिन, उसने जेलर को बुलाया और उससे पूछा:

'क्या किसी ने उस जादूगरनी को खाना या पीना दिया है?'

रक्षक ने उत्तर दिया:

'मैं आपके आदर की कसम खाता हूँ, मेरे स्वामी, कि किसी ने उसे न तो भोजन दिया है और न ही पेय, और जब भी मैंने उसे देखा है, मैंने उसे हमेशा जमीन पर लोटते हुए, (मेरा मानना है) अपने ईश्वर से प्रार्थना करते हुए पाया है।'

गवर्नर ने कहा:

'कल मैं उसकी जांच करूंगा और उसका मुकदमा चलाऊंगा, लेकिन फिलहाल मैं अन्य मामलों में व्यस्त हूं।'

चौथे दिन, राज्यपाल डायोजनीस न्यायालय में अपनी सीट पर बैठ गए और यूडोक्सिया को उनके सामने लाने का आदेश दिया। उसे नम्र व्यवहार, फटे-पुराने कपड़ों में और सिर झुकाए हुए देखकर, उन्होंने अपने नौकरों को उसका चेहरा खोलने का आदेश दिया, और वह तुरंत बिजली की तरह चमक उठा। डायोजेनेस चकित रह गया और लंबे समय तक चुप रहा, वह उसके चेहरे की अतुलनीय गरिमा और सुंदरता को देखकर विस्मित था, जो दिव्य अनुग्रह से दमक रहा था। उसकी सुंदरता को लंबे समय तक निहारने के बाद, वह भावनाओं में बह गया और, न्यायाधीशों की ओर मुड़कर, कहा:

'मैं अपने देवता, सूर्य की शपथ खाता हूँ! ऐसी सुंदरता को, जो स्वयं सूर्य के समान है, मृत्युदंड नहीं दिया जा सकता। मुझे नहीं पता कि क्या करूँ!'

न्यायाधीशों में से एक ने कहा:

'क्या महामहिम को नहीं लगता कि ऐसी सुंदरता स्वाभाविक नहीं है? नहीं, यह एक जादुई प्रकटिकरण है। क्या आप नहीं जानते कि जादूगरों के पास क्या शक्ति होती है? और जब जादुई मंत्र टूट जाएगा, तो उसकी असली कुरूपता तुरंत प्रकट हो जाएगी।'

राज्यपाल ने युवती से कहा:

'सबसे पहले, हमें अपना नाम, अपनी उत्पत्ति और अपनी जीवन कहानी बताओ।'

क्रॉस का चिह्न बनाते हुए, संत ने कहा:

मेरा नाम यूडोक्सिया है, और मुझे मेरी उत्पत्ति या जीवन-शैली के बारे में पूछने की कोई आवश्यकता नहीं है; अत; मैं आपसे विनती करती हूँ, राज्यपाल महोदय, व्यर्थ की बातों में समय बर्बाद न करें, बल्कि मेरे साथ वही करें जो आप आमतौर पर ईसाइयों के साथ करते हैं। मेरा न्याय करो, मुझे अपनी इच्छानुसार यातना दो, मुझे मार डालो, लेकिन मैं अपनी आशा मसीह, मेरे सच्चे ईश्वर में रखती हूँ, कि वह मुझे तुच्छ नहीं समझेंगे और न ही मुझे त्यागेंगे।

राज्यपाल ने कहा:

'तुम एक छोटे से प्रश्न का इतना लंबा उत्तर दे रहे हो; जब हम तुम्हें यातनाएँ देना शुरू करेंगे तो तुम और कितना कुछ कहोगे? तो हमें बताओ: शहर छोड़कर और देवताओं को अस्वीकार करके, तुम लोगों की संपत्ति अपने साथ ले जाकर और चालाकी से शहर का खज़ाना खाली करके रेगिस्तान में क्यों गए?'

संत ने उत्तर दिया:

'जहाँ तक बात है कि मैंने शहर क्यों छोड़ा, तो मैं इसे एक ही शब्द में कहूँगा: मैं स्वतंत्र था, और मैंने अपनी इच्छा से किया।' कोई कानून एक स्वतंत्र व्यक्ति को अपनी मर्जी से कहीं भी जाने से कैसे रोक सकता है? जहाँ तक सोना चोरी करने के आरोप का सवाल है, काश वह बदनाम करने वाला मेरे सामने आ जाए; तब यह बदनामी बेनकाब हो जाएगी और सच के सामने झूठ मिट जाएगा। क्या मैंने सचमुच दूसरों की चीज़ें चोरी करके भाग गया था?"

एक लंबे विवाद के बाद, संत अपने शब्दों में अडिग और अपने विश्वास में दृढ़ रहीं। फिर राज्यपाल ने आदेश दिया कि उसे एक पेड़ से लटकाया जाए और चार सैनिकों द्वारा क्रूरतापूर्वक कोड़े मारे जाएँ। सैनिकों ने उसे पकड़ लिया, कमर तक के कपड़े उतारकर लटका दिया। जब वे उसके कपड़े उतार रहे थे, तो मठ से निकलते समय उसने अपने साथ रखी प्रभु के परम शुद्ध और जीवनदायी शरीर का एक अंश उसकी छाती से गिर पड़ा। नौकरों ने, यह न जानते हुए कि यह क्या था, उसे उठाकर राज्यपाल के पास ले गए। इसे लेने के लिए अपना हाथ बढ़ाते ही, राज्यपाल का हाथ तुरंत एक बड़ी लपट में जलकर राख हो गया, जिसने यातना देने वाले के नौकरों को झुलसा दिया और राज्यपाल के अपने बाएं कंधे को घायल कर दिया। वह दर्द से जमीन पर गिर पड़ा और सूर्य से, जिसकी वह भगवान के रूप में पूजा करता था, पुकार लगाई:

'हे सूर्य प्रभु! मुझे चंगा कर, और मैं तुरंत इस जादूगरनी को आग के हवाले कर दूँगा। मैं जानता हूँ कि अब तक उसे नष्ट न करने के लिए आप मेरा दंड दे रहे हैं!'

ये शब्द सुनते ही, आग बिजली की तरह उस पर बरसी और उसे मार डाला, उसके शरीर को जलते अंगारे की तरह झुलसा दिया। सभी पर भय और आतंक छा गया। लेकिन एक योद्धा ने देखा कि ईश्वर का एक तेजस्वी दूत संत के पास खड़ा था, जो उसके कान में बोलकर उसे सांत्वना दे रहा था और उसके शरीर को बर्फ से भी अधिक सफेद कपड़े से ढक रहा था। यह देखकर, वह योद्धा संत के पास गया और कहा:

'मैं भी आपके ईश्वर में विश्वास रखती हूँ; मुझे स्वीकार करें, मैं जीवित ईश्वर की एक पश्चातापी दासी हूँ।'

संत ने उससे उत्तर दिया:

'मेरे बच्चे, सच्चे परिवर्तन की कृपा तुझ पर हो। मैं देखती हूँ कि तू एक नया जीवन शुरू कर रहा है, जैसे कोई नया जन्मा हो – यदि तू बचाया जाना चाहता है, तो अपने पूर्व अविश्वास से दूर रह।'

योद्धा ने कहा:

'मैं आपसे विनती करती हूँ, प्रभु की सेवक, राज्यपाल पर दया करें; अपने ईश्वर से प्रार्थना करें कि वह उसे जीवन वापस दे दें, ताकि बहुत से लोग सच्चे ईश्वर को जान सकें और उस पर विश्वास कर सकें।'

इन शब्दों के बाद, वह पेड़ के पास गया और पवित्र शहीद को मुक्त कर दिया, और वह, घुटनों के बल गिरकर, लंबे समय तक प्रार्थना करने लगी। फिर वह उठी और ज़ोर से चिल्लाई:

– हे प्रभु यीशु मसीह, जो मनुष्य के रहस्य जानते हो, जिन्होंने अपने वचन से आकाशों को स्थापित किया और बुद्धि से सभी चीज़ों की रचना की! आज्ञा दें कि आपकी सर्वशक्तिमान और सर्वसमर्थ इच्छा से, आप द्वारा भेजी गई आग से दग्ध सभी लोग जीवित हो उठें, ताकि विश्वासियों में से बहुत से लोग पवित्र विश्वास में दृढ़ हो सकें, और अविश्वासी आपके, शाश्वत परमेश्वर, की ओर लौट सकें, और इस प्रकार आपका परम पवित्र नाम युगों-युगों तक महिमामय हो!

इसके बाद, वह मृतकों के पास गई और, प्रत्येक को हाथ से पकड़कर, कहा:

'प्रभु यीशु मसीह के नाम पर, जो मरे हुओं में से जी उठे हैं, उठो और पहले की तरह स्वस्थ हो जाओ।'

और इस प्रकार, एक-एक करके, उसने उन्हें उठाकर और जैसे नींद से जगाकर, उन्हें जीवित कर दिया। जबकि सभी लोग इन अद्भुत चमत्कारों को आश्चर्य और भय के साथ देख रहे थे, अचानक एक चीख और रोना सुनाई दिया: काउंट डायोडोरस, जो अपने सैनिकों के साथ वहां थे, को अपनी पत्नी फर्मिनिा की अचानक मृत्यु की खबर मिली, जो स्नानागार में बुखार से मर गई थी। इस अप्रत्याशित खबर से स्तब्ध होकर, डायोडोरस ने अपने कपड़े फाड़ लिए और दुःख से अभिभूत होकर, आँसुओं में उस स्थान की ओर दौड़ पड़ा जहाँ उसकी पत्नी की मृत्यु हुई थी। कई लोग उसके पीछे दौड़े, और गवर्नर डायोजनीज़, जो मृतकों में से जी उठे थे, भी वहाँ पहुँचे। यह देखकर कि कोमीटे की पत्नी वास्तव में मर चुकी थी, वह सेंट यूडोक्सिया के पास लौटा और उससे कहा:

'मैं सचमुच मानता हूँ कि आपका ईश्वर हमारे देवताओं से अतुलनीय रूप से महान और अधिक शक्तिशाली है, लेकिन यदि आप मेरे नवजात और अभी भी कमजोर विश्वास को मजबूत और दृढ़ करना चाहती हैं, तो मैं आपसे विनती करता हूँ, मेरे साथ मृत फर्मिनिा के पास चलिए। यदि आप उसे मृतकों में से जीवित कर दें, तो बिना किसी देरी या संदेह के मैं एक बार और हमेशा के लिए आपके ईश्वर पर विश्वास कर लूंगी।"

संत यूडोक्सिया ने उससे कहा:

'ईश्वर अपनी असीम दया में अपनी इच्छा का प्रकटीकरण केवल तुम्हारे लिए ही नहीं, बल्कि उन सभी के लिए भी करेंगे जो उनके राज्य में प्रवेश करना चाहते हैं। तो, ईश्वर की मदद से, चलो वहाँ चलते हैं जहाँ तुम मुझे बुला रहे हो।'

जब वे लोगों के साथ चल रहे थे, तो वे मृतक के शव को ले जाने वालों से मिल गए। संत ने शव वाहक को रोकने का आदेश दिया, आँसू बहाए, कुछ देर प्रार्थना की और, मृतक का हाथ पकड़कर, ऊँचे स्वर में कहा:

'हे महान और शाश्वत ईश्वर, प्रभु यीशु मसीह, पिता के वचन, जो मृतकों को जिला उठाते हैं! हम आपसे प्रार्थना करते हैं: यहाँ उपस्थित लोगों को आश्वासन देने के संकेत के रूप में, कृपा करके एक महान चमत्कार करें, फर्मिनिा को जीवित होने का आदेश दें, और उसे पश्चाताप की आत्मा प्रदान करें, ताकि वह आप, सदा-जीवित और शाश्वत ईश्वर की ओर मुड़ सके।'

इस प्रार्थना के बाद, फर्मिनिा तुरंत स्ट्रेचर से उठ खड़ी हुई, और भीड़ ने एक स्वर में पुकारा:

'महान है यूडोक्सिया का ईश्वर, सच्चा और धर्मी ईसाई ईश्वर! हम आपसे विनती करते हैं, हे जीवित ईश्वर के सेवक, हमें बचाएँ, क्योंकि हम भी आपके ईश्वर में विश्वास करते हैं।'

और डायोडोरस, अपनी पत्नी को जीवित देखकर, अत्यंत हर्षित हुआ और, उस पूजनीय महिला के चरणों में गिर पड़ा, और कहा:

'मैं आपसे विनती करता हूँ, हे मसीह के सेवक, मुझे भी ईसाई बना दीजिए, क्योंकि अब मैं सचमुच जान गया हूँ कि वह सर्वशक्तिमान ईश्वर कौन हैं जिनकी आप सेवा करते हैं।'

और डायोडोरस, अपनी पत्नी और अपने पूरे परिवार के साथ, पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम पर बपतिस्मा लिया – और राज्यपाल डायोजेनेस और उनके परिवार सहित बहुत से लोगों ने भी बपतिस्मा लिया और अपनी मृत्यु तक पवित्र विश्वास में बने रहे।

इसके बाद, डायोडोरस के अनुरोध पर, संत यूडोक्सिया उनके घर में रहने लगीं और नव-प्रबुद्ध ईसाइयों को परमेश्वर का वचन सिखाने लगीं। ज़ीनोन नाम का एक छोटा लड़का, पास के एक बगीचे में काम करते समय, एक साँप की घातक साँस से मर गया, और उसकी माँ, जो एक विधवा थी, उसके लिए बेइंतहा रोई। यह जानकर, मसीह के मेमने यूडोक्सिया ने डायोडोरस से कहा:

'आओ हम उस विलाप करती विधवा को सांत्वना देने चलें, और तुम हमारे परमेश्वर की अद्भुत दया देखोगे।'

जब वे पहुँचे, तो उन्होंने देखा कि साँप के विष से लड़का सूज गया था, फूला हुआ था और काला पड़ गया था। संत ने डायोडोरस से कहा:

'अब यह दिखाने का समय आ गया है कि ईश्वर में तुम्हारा विश्वास कितना महान है। अत; स्वर्ग की ओर अपनी आध्यात्मिक दृष्टि उठाकर प्रार्थना करो, और मृतक को जीवित कर दो।'

डायोडोरस ने कहा:

'हे मेरी स्वामिनी, मसीह की दासी! मैं अभी हाल ही में विश्वास में आया हूँ; मैं अभी तक मनन के द्वारा अपने हृदय की दृष्टि परमेश्वर पर केंद्रित नहीं कर सकता।'

संत ने उससे कहा:

'मुझे इसमें कोई संदेह नहीं है कि ईश्वर पश्चातापी पापियों की सुनता है और शीघ्रता से उनकी प्रार्थनाओं को स्वीकार करता है। अत; सर्वशक्तिमान प्रभु को अपने पूरे हृदय से पुकारो, और वह हम पर अपनी दया दिखाएगा।'

तब डियोडोरस ने सिर झुकाकर और छाती पीटते हुए, आँसुओं के साथ ऊँचे स्वर में प्रार्थना करना शुरू किया:

हे प्रभु परमेश्वर, जिन्होंने मुझ जैसे एक अयोग्य पापी और अविश्वासी को पवित्र विश्वास में बुलाने की कृपा की, और जिन्होंने हमारी आत्माओं के उद्धार के लिए इस सम्माननीय सेवक को भेजा! मेरे अटूट और दृढ़ विश्वास को जानते हुए, मेरी पापी और अयोग्य प्रार्थना सुनें और साँप द्वारा मारे गए युवक को अपने महिमामय कार्य के लिए पुनर्जीवित होने का आदेश दें, ताकि वह और हर आत्मा आपके परम पवित्र नाम की सदा-सदा महिमा कर सकें।

प्रार्थना के बाद, डायोडोरस ने मृतक से कहा:

'ज़िनोन! यीशु मसीह के नाम पर, जो पोंतियस पिलातुस के अधीन क्रूस पर चढ़ाया गया था, उठ!'

और तुरंत मृतक उठ खड़ा हुआ, उसने कालिख पोंछ दी, और उसका शरीर पहले की तरह स्वस्थ हो गया; और सभी ने विश्वास किया और स्वर्ग और पृथ्वी के सृष्टिकर्ता परमेश्वर की महिमा की। जब लोग बिखरने लगे, तो मसीह का धन्य मेमना, यूडोक्सिया, ने कहा:

'भाइयो! एक क्षण रुकिए। हमारे उद्धारकर्ता मसीह की महिमा एक बार फिर होगी।'

भीड़ रुक गई। संत ने प्रार्थना की, और देखो, उस युवक को मारने वाली सर्प एक भयानक फुफकार के साथ, एक चमत्कारी आग से प्रेरित होकर, बाहर निकल आई और सभी की आँखों के सामने तड़पने और मुड़ने लगी; वह फटकर मर गई। तब जो भी इस घटना के साक्षी बने थे, वे अपनी पत्नियों और बच्चों के साथ हेलीओपोलिस के बिशप के पास गए और पवित्र बपतिस्मा ग्रहण किया। जहाँ तक पूजनीय यूडोक्सिया का प्रश्न है, वह अपने मठ लौट आईं और अपने जीवन को सामान्य मठवासी श्रमों में व्यतीत करने लगीं। कभी-कभी वह शहर में आती थीं, श्रद्धालुओं को प्रोत्साहित करती थीं और अविश्वासियों को हमारे ईश्वर मसीह में विश्वास की ओर ले जाती थीं। उनके बपतिस्मा के बाद, वे छप्पन वर्ष जीवित रहीं और निम्नलिखित तरीके से शहीद हुईं। गवर्नर डायोजेनेस, जो ईसाई धर्म में मृत हुआ था, की मृत्यु के बाद, उसका पद विंसेंट नामक एक क्रूर व्यक्ति ने संभाल लिया, जो ईसाइयों का शत्रु था। पवित्र यूडोक्सिया के बारे में सुनकर, उसने उनके सम्मानित सिर को कलम करने के लिए सैनिक भेजे।

इस प्रकार, मार्च के प्रथम दिन, पवित्र पूजनीय शहीद यूदोक्सिया ने हमारे प्रभु यीशु मसीह के लिए तलवार से प्राण त्यागे; महिमा उसी की हो, पिता और पवित्र आत्मा के साथ, अब और सदा और युगानुयुग। आमीन।

ट्रोपारियन, स्वर 8:

धर्मपरायणता के द्वारा अपनी बुद्धिमान आत्मा को मसीह के प्रेम से बाँधकर, आपने वचन की शिष्या के रूप में, नश्वर, सुंदर और क्षणिक सभी चीजों की विस्मृति को पार कर लिया: पहले उपवास के द्वारा कामवासनाओं को मारकर,

और दूसरे, अपने दुखों के द्वारा, आपने शत्रु को लज्जति कयि। इसलिए मसीह ने आपको एक दोहरा मुकुट प्रदान कयि है, महमिामय यूडोक्सयि, पूजनीय कष्ट-सहने वाली; मसीह हमारे ईश्वर से प्रार्थना करें कि हमारी आत्माएँ बच सकें।

कॉन्टाकयिन, स्वर 4:

हे सर्व-स्तुत्य, अपने दुख-क्लेश में अच्छी लड़ाई लड़कर, और अपने चमत्कारों की वर्षा द्वारा मृत्यु के पश्चात् हमें पवत्रि करके, हम जो आपकी दव्यि कलीसयि में वश्विास में शरण लेते हैं। और आनन्द के साथ, हम आपसे, हे पूजनीय शहीद यूदोक्सयि, प्रार्थना करते हैं, कि हम आत्मा की दुर्बलताओं से छुड़ाए जाएँ और आपके चमत्कारों की कृपा प्राप्त करें।

पवत्रि शहीदों नेस्टर और त्रविमियिस की शहादत।

1 मार्च को स्मरणोत्सव

पवत्रि संत नेस्टर और त्रविमियिस अधर्मी डेसयिस के शासनकाल में रहते थे[2158] और पर्गा शहर के मूल नविासी थे[2159] । ईसाई होने के कारण, उन्होंने नडिर होकर मसीह के बारे में प्रचार कयि, और इसी के लिए मूर्तपिूजकों ने उन्हें प्रांतीय राज्यपाल के पास रपिोर्ट कर दयि। अधीक्षक ने तुरंत सैनकिों के एक बड़े दल को आदेश देकर उन्हें बाँधकर मुकदमे के लिए अपने सामने पेश करने को कहा। जब पवत्रि शहीदों को अदालत में पेश कयि गया, तो अधीक्षक ने उन्हें डराने के लिए यातना के सभी उपकरण उनके सामने बछिाने का आदेश दयि; लेकनि उन्होंने, यह खतरा देखकर, ऊँचे स्वर में मसीह के बारे में प्रचार करना शुरू कर दयि। तब राज्यपाल ने आदेश दयि कि उनके कपड़े उतार दिए जाएँ और उन्हें सूखी बैल की नसों से नर्दियता से कोड़ा मारा जाए, जसिके बाद उन्हें एक पेड़ से लटका दयि गया और उनके शरीर को तब तक खुरचते रहे जब तक कि उनकी अंतड़ियाँ बाहर नहीं आ गईं। अंततःयह महसूस करते हुए कि संत हमारे ईश्वर, मसीह में अपने वश्विास में अडगि थे, राज्यपाल ने जल्लादों को उन्हें पेड़ से उतारने और चाकुओं से उनके सरि कलम करने का आदेश दयि। प्रभु का धन्यवाद हो, इस प्रकार पवत्रि शहीदों का नधिन हुआ, और मसीह हमारे ईश्वर ने उन्हें अपने राज्य में स्वीकार कयि।

संत एंटोननिा की शहादत

1 मार्च को स्मरण कयि जाता है

संत अंटोनीना, मसीह के लिए एक शहीद, ने डायोक्लेटयिन और मैक्समियिन के शासनकाल[2160] में नकिीया शहर[2161] में यातनाएँ सहन कीं। क्योंकि वह मसीह में वश्विास करती थी, यह खबर मैक्समियिन को दी गई कि वह एक ईसाई थी। नकिीया लाई गई और सम्राट के सामने पेश की गई, उसने नडिर होकर अपने वश्विास की गवाही दी। उसे मसीह का त्याग करने और मूर्तयिों को बलदिान चढ़ाने के लिए मजबूर करने के प्रयास में, उसे क्रूर यातनाएँ दी गईं, लेकनि वह अपने यातना देने वालों की मांगों के आगे नहीं झुकी और उसे कैद कर दयि गया। कुछ ही समय बाद, मैक्समियिन ने उसे जेल से बाहर लाने का आदेश दयि और एक बार फरि से उसे मसीह का त्याग करने के लिए मजबूर करने की कोशशि की, लेकनि इस अवसर पर भी उसने सम्राट की अवज्ञा की। तब मैक्समियिन ने आदेश दयि कि उसे फांसी दी जाए और उसकी

[2158] रोमन सम्राट डेसयिस ने 249 से 251 तक शासन कयि और वह ईसाइयों का एक नर्दियी उत्पीड़क था।

[2159] पर्गा शहर एशयि माइनर के पम्फलियि क्षेत्र में स्थति था, जो एशयि माइनर के दक्षणिी भाग में भूमध्य सागर के तट पर स्थति था।

[2160] 284 में, रोमन साम्राज्य को एक पूर्वी भाग, जसिका शासन डायोक्लेटयिन के अधीन था, और एक पश्चमिी भाग, जो 285 से ऑगस्टस मैक्समियिन हर्क्यूलस के शासन में था, में वभिाजति कयि गया था। हालांकि, यहाँ मक्समियिन हर्क्यूलस का नहीं, बल्कि मक्समियिन गैलेरयिस का मतलब है, जो पूर्व में डायोक्लेटयिन का पूर्व सह-शासक, उसका दामाद और बाद में उसका उत्तराधकिारी (306–311) था। हालांकि ईसाइयों का खुला उत्पीड़न 303 में शुरू हुआ था, गैलेरयिस ने उससे कई साल पहले ही नजिी तौर पर ईसाइयों का उत्पीड़न करना शुरू कर दयि था।

[2161] नकिाया शहर एशयि माइनर के बथिनियि क्षेत्र में स्थति था, जो एशयि माइनर के उत्तरी भाग में मरमरा सागर और काला सागर के तटों पर स्थति था। यह इतहिास में प्रथम और सप्तम सार्वभौमकि परषिदों की मेजबानी करने के लिए जाना जाता है।

पसलयिों को खुरच दयिा जाए। अपने पूरे यातनाकाल में, संत एंटोननि लगातार सम्राट की गलती की नदिा करती रहीं और मसीह के बारे में उपदेश देती रहीं। यह देखकर, मैक्समियिन ने जल्लादों को आदेश दयिा कि वे उसके कपड़े उतार दें और उसके नग्न शरीर पर उसे पीटें। लेकनि जब जल्लाद सम्राट की आज्ञा का पालन करने ही वाले थे, तो स्वर्गदूत प्रकट हुए और पवत्रि शहीद की रक्षा करते हुए, उन्होंने यातना देने वालों को ही यातना दी। इसके बाद, संत को एक लाल-गरम लोहे के बस्तिर पर लटिाया गया, लेकनि वह सुरक्षति रही। फरि उसे एक बोरी में डालकर नकिीया झील में फेंक दयिा गया।

पूज्य डोमननि का पर्व दविस

1 मार्च को स्मरणोत्सव

पूजनीय कुंवारी डोमननि़ा सीरयिा में एक नन के रूप में रहती थीं। अपनी माँ के घर के बगीचे में खुद द्वारा लगाये गए एक तम्बू में रहते हुए, वह लगातार रोती रहती थीं, केवल पानी से भीगे हुए दाल पर ही जीवति रहती थीं, और हर सुबह और शाम प्रार्थना करने के लिए चर्च जाती थीं, सरि से घुटनों तक घूंघट ओढ़कर ताकि कोई भी उनका चेहरा न देख सके। वह 450 और 460 के बीच शांतपिूर्वक नधिन कर गईं।

15 मार्च

2 मार्च (पुराना तरीका)

उसी दनि, मस्रि के एक तपस्वी, पूजनीय अगथोन की स्मृति, जनिका नधिन पाँचवीं शताब्दी में हुआ था।

उसी दनि, शहीद ट्रॉएडयिस की स्मृति, जो नेओकेसरयिा शहर में राजा डेसयिस के अधीन पीड़ति हुए एक युवक थे।

पवत्रि पुरोहति-शहीद थयिोडोतस, सरिोएने के बशिप की शहादत।

2 मार्च को स्मरणोत्सव

पवत्रि हयरोमार्टायर थयिोडोटस, जो गलातयिा के मूल नविासी थे[2162] , साइप्रस द्वीप पर करिनयिा शहर के बशिप थे[2163] । ईसाई माता-पति के पुत्र, उन्हें पढ़ना और लखिना सखिाया गया था और कम उम्र से ही ज्ञान और सद्गुणों में उत्कृष्ट थे । वह परमेश्वर का वचन प्रचार करने के लिए साइप्रस द्वीप पर आए और उन्होंने मूर्तपिूजकों को अपनी भ्रांति और मूर्तपिूजा को त्यागने तथा मसीह में वश्विास करने का उपदेश दयिा। अपने उपदेश के माध्यम से, उन्होंने कई लोगों को मूर्तपिूजक दुष्टता से हटाकर उन्हें उद्धार के मार्ग पर मार्गदर्शन कयिा; इसी कारण से, उन्हें साइप्रस के करिनयिा शहर का बशिप नयिुक्त कयिा गया। उस समय, दुष्ट लकिनियिस[2164] का शासन था, और सावनि साइप्रस द्वीप का राज्यपाल था; उस समय ईसाइयों पर एक कठोर उत्पीड़न हो रहा था। संत थयिोडोटस, मसीह के लिए पीड़ा सहने की इच्छा रखते हुए, ने बहादुरी से मूर्तपिूजकों के साथ बहस की, उनकी गलतयिों को उजागर कयिा, और खुले तौर पर मसीह के बारे में प्रचार कयिा। यह सुनकर, गवर्नर सावनि ने आदेश दयिा कि संत को यातना के लिए ले जाया जाए; लेकनि ईश्वर के सेवक ने, यह जानकर, उनके बुलाए गए लोगों का इंतजार कएि बनिा, तुरंत गवर्नर के सामने उपस्थति होकर कहा:

'मैं ही वह हूँ जसिकी तुम तलाश कर रहे हो। मैं न तो तुमसे छपिा हूँ और न ही मुझे जबरदस्ती तुम्हारे सामने लाया गया है, बल्कि मैं अपनी इच्छा से अपने ईश्वर मसीह का प्रचार करने, उस सत्य को प्रकट करने जो छपिाया नहीं जा

[2162] गलाटयिा, जसिे गैलो-ग्रीस के नाम से भी जाना जाता है, एशयिा माइनर का एक क्षेत्र है जसिका नाम गॉल लोगों के नाम पर पड़ा है, जो आज के फ्रांस के नविासी थे और जनिहें तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व में एशयिा में बसाया गया था। प्रेरति पौलुस ने अपनी पहली और दूसरी यात्राओं के दौरान गलाटयिा में ईसाई धर्म की स्थापना की।

[2163] साइप्रस द्वीप भूमध्य सागर के उत्तर-पूर्वी भाग में, सलिसिियिा और सीरयिा के तटों के बीच के कोने में स्थति है। यहीं पर प्रेरति संत पौलुस ने सुसमाचार का प्रचार कयिा था।

[2164] लकिनियिस ने 311 से 324 तक शासन कयिा।

सकता, और तुम्हारी दुष्टता की व्यर्थता और शक्तिहीनता को उजागर करने आया हूँ। आपकी असहायता के बारे में लंबा-चौड़ा बयां करने की कोई आवश्यकता नहीं है: यह मामला स्वयं स्पष्ट रूप से दिखाता है कि आप मेंढकों से भी अधिक कायर हैं। एक अकेले ईसाई के कारण, पूरा शहर और सेना भ्रम में पड़ गई, क्योंकि राक्षस मसीह के एक सेवक के सामने भी कांपते हैं और उसे नष्ट करने का प्रयास करते हैं, इस डर से कि वह उनके यातनाओं से बचकर, उन सेवकों को हराकर उनकी असहायता को शर्मिंदा कर देगा, जो उन पर कोई भरोसा नहीं करते।

राज्यपाल ऐसा आरोप सहन नहीं कर सका और संत को कठोर रस्सियों से निर्दयतापूर्वक कोड़े मारने का आदेश दिया; फिर भी, अपने लंबे यातनाकाल के दौरान, उन्होंने दाऊद के शब्दों में पुकारा:

– *'दुष्टों ने मेरे ऊपर अपने काम किए हैं; उन्होंने अपनी अवज्ञा जारी रखी है'* (भजन संहिता 128:3)[2165] ।

जब नौकरों ने शहीद को पीटना समाप्त कर दिया, तो राज्यपाल ने कहा:

– 'क्या तुम देखती हो कि तुम्हारी अभद्र बातों ने तुम्हारे लिए क्या भलाई की है?'

संत ने उत्तर दिया:

– 'यदि तुम्हारी आत्मा की आँखें प्रबुद्ध हो जातीं, तो मैं तुम्हें दिखाता कि मेरे साहस—जिसे तुम अभद्रता कहते हो—ने मुझे क्या लाभ पहुँचाया है। परन्तु तुम अंधे हो, और उस आनंद को नहीं देख सकते जो मेरा इंतज़ार कर रहा है। कम से कम इस बात पर ध्यान दो कि, जब मैं अपनी आत्मा से मसीह के लिए शहीद हुए लोगों के लिए तैयार किए गए स्वर्गीय पुरस्कारों को निहारता हूँ, तो मैं अपने दुःखों में अडिग रहता हूँ और कोई पीड़ा महसूस नहीं करता, क्योंकि मेरी आत्मा का आनंद सभी शारीरिक पीड़ाओं पर विजय प्राप्त कर लेता है।

सावनि ने कहा:

'थियोडोतस, तू व्यर्थ ही घमंड करता है, और अपने श्रोताओं को धोखा देता है; तू अपने शब्दों से मुझे फुसला नहीं पाएगा: मैं तुझे तब तक यातना दूँगा जब तक कि तू हमारे देवताओं की प्रभुता को स्वीकार नहीं कर लेता।'

संत ने उत्तर दिया:

'तुम मुझे जो चाहो यातना दो, अपनी सारी चालाकी दिखाओ – और मसीह के एक योद्धा की शक्ति को जान लो। तुम देखोगे कि कौन विजयी होगा: शहीद, या वे जो उसे यातना देते हैं!'

राज्यपाल ने कहा:

'क्या तुम्हें नहीं पता कि राजा की आज्ञा से मैं तुम्हारे शरीर को कुचल सकता हूँ और तुम्हारा सर्वनाश कर सकता हूँ?'

संत ने उत्तर दिया:

'जिसे ईश्वर की मैं सेवा करता हूँ, उसने मुझे राजाओं से भी अधिक शक्तिशाली और राजकुमारों से भी अधिक बलवान बनाया है - इसीलिए मैं तुमसे एक दास की तरह बात करता हूँ, और तुम्हें एक बंदी से भी नीच समझता हूँ। अपने ईश्वर की मदद से, जिसने मुझे जीवन की सभी नेमतों को भूसी, पुआल और गोबर के समान तुच्छ समझना सिखाया है, मैं सभी यातनाओं का तिरस्कार करता हूँ। अपने घमंडी धमकियों से मुझे डराने का सोच भी मत करना। तुम घमंड करते हो कि तुम्हारे पास मेरे शरीर पर अधिकार है, लेकिन रेगिस्तान के डाकूओं के पास भी वही शक्ति होती है जब वे यात्रियों पर हमला करके उन्हें पीड़ित करते हैं। तुम खुद को अपनी तलवार पर भरोसा करके शक्तिशाली समझते हो—एक गैरकानूनी तलवार—क्योंकि तुमने वैध अधिकार को तानाशाही से बदल दिया है: तुम व्यभिचारियों और हत्यारों को सज़ा से बचाते हो, जबकि निर्दोष और धर्मपरायण लोगों को इसकी चपेट में लाते हो।

राज्यपाल, अत्यंत क्रोधित होकर, ने नग्न शहीद को एक पेड़ से लटकाने और उसके पार्श्वों को तेज औज़ारों से खुरचने का आदेश दिया। इन भयंकर यातनाओं को सहते हुए, मसीह के लिए पीड़ित ने इस प्रकार प्रार्थना की:

– हे प्रभु यीशु मसीह, सभी दृश्य और अदृश्य चीजों के स्रष्टा, जिन्होंने मृत्यु पर विजय प्राप्त की, नरक को नष्ट किया, क्रूस पर अधोलोक की शक्तियों और प्रधानताओं को मार डाला, इस संसार के राजकुमार को दंडित किया, अपने पवित्र प्रेरितों पर स्वर्गीय शक्ति प्रदान की और उन्हें प्रलोभन से बचाया, जिन्होंने एक बार युवक दाऊद को दैत्य गोलियाथ पर विजय प्रदान की, जिन्होंने बेबीलोन की भट्टी की लपटों को वश में किया, जिस से आग को ठंडा किया

[2165] रूसी अनुवाद: *'मेरी पीठ पर हलवाहों ने जोता, अपनी लंबी खुरपियाँ खींचते हुए'* धन्य थियोडोरेट समझाते हैं: 'भविष्यसूचक वचन दुष्टों द्वारा विजयी शहीदों पर दी गई कोड़ों की चोटों और घावों को संदर्भित करता है।'

ताकि वह पवित्र युवकों के शरीरों को नुकसान न पहुँचाए, मुझे भी इन परीक्षाओं में मज़बूत करें। आप मानव दुर्बलता को जानते हैं; आप जानते हैं कि हमारी ताकत भूसी के समान बेकार है, और हमारी शक्ति एक फूल से भी जल्दी मुरझा जाती है। हे प्रभु, अपने नाम को महिमा दें, और मेरी दुर्बलता पर शक्ति प्रदान करें। उन लोगों के कलि को नष्ट कर दें जो आपके पवित्र झुंड के विरुद्ध उठते हैं, ताकि सारा ब्रह्मांड यह समझ सके कि आप ही सर्वोच्च परमेश्वर हैं, जो उन पर शक्ति और सामर्थ्य प्रदान करते हैं जो आप में आशा रखते हैं!

प्रार्थना के दौरान, जल्लादों ने संत के शरीर को इतनी बुरी तरह से फाड़ दिया था कि उसकी हड्डियाँ तक नंगी हो गई थीं, और राज्यपाल ने उसे जेल ले जाने का आदेश दिया।

कारागार जाते समय, संत ने ऊँचे स्वर में पुकारा:

'मेरे यातनाओं के गवाह, यह जान लो कि मैं निराशा में नहीं बल्कि आशा में कष्ट सह रहा हूँ। मसीह के साथ शहादत के कार्यों का एक पुरस्कार है, जिनमें मैं अपनी आशा रखता हूँ। यदि एक सांसारिक, क्षणिक राजा अपने वीर योद्धाओं को, जो अपना रक्त बहाते हैं, सम्मानित और पुरस्कृत करता है, मारे गए लोगों को कितिबों में महिमामय बनाता है, उनकी मूर्तियाँ बनाता है और उनकी स्मृति को संरक्षित करने का प्रयास करता है, तो हमारे पराक्रम के दाता, शाश्वत, स्वर्गीय राजा, अपने योद्धाओं और संन्यासियों को इस वर्तमान जीवन में महिमा प्रदान करते हैं, और पुनरुत्थान के बाद – उनके राज्य में एक हिस्सा प्रदान करते हैं। इस बात के गवाह हैं हमारे से पहले परिश्रम करने वाले पवित्र शहीदों के सम्माननीय अवशेष। इन अवशेषों का सभी ईसाइयों द्वारा श्रद्धापूर्वक सम्मान किया जाता है और उन्हें सभी सांसारिक खजाने और धन-संपत्ति से अधिक कीमती माना जाता है। यह श्रद्धा स्पष्ट रूप से शहीदों की आत्माओं की स्वर्गीय महिमा को दर्शाती है, जो उन्हें ईश्वर और उनके स्वर्गदूतों द्वारा प्रदान की गई है।

शहीद ने कई अन्य विषयों पर विस्तार से बात की, और भीड़ के साथ अंधकूप तक गए, जहाँ वे पाँच दिनों तक रहे, इससे पहले कि उन्हें एक बार फिर मुकदमे के लिए राज्यपाल के सामने पेश किया गया।

और राज्यपाल ने शहीद से कहा:

'मेरा मानना है कि तुम्हें और सज़ा देने की कोई ज़रूरत नहीं है; अपने शुरुआती यातनाओं की गंभीरता का अनुभव करने के बाद जब तुम होश में आ गए हो, तो तुम हमारे देवताओं का सम्मान करोगे, क्योंकि तुम फिर से ऐसी पीड़ा सहन नहीं करना चाहोगे। लेकिन अगर तुम समर्पण नहीं करते हो, तो तुम मुझे तुम्हें और भी अधिक गंभीर यातनाएँ देने के लिए मजबूर करोगे। इसलिए, मेरी आज्ञा मानो और खुद को उन यातनाओं से बचाओ जो तुम्हारा इंतज़ार कर रही हैं।'

संत थियोडोतस ने उत्तर दिया:

'क्या तुम नहीं समझते, हे त्रिनित्र, कि यद्यपि मेरा शरीर यातनाओं से टूट गया है और मेरी पसलियाँ फट गई हैं, फिर भी मैं धैर्य के साथ तुम्हारे सामने आया हूँ, अपने शहीद होने का कार्य पूरा करने और मेरे प्रभु यीशु मसीह द्वारा मेरे लिए तैयार किया गया मुकुट प्राप्त करने तक सभी कष्टों को सहने के लिए तैयार हूँ?'

'यहाँ सूली पर चढ़ाए गए का नाम मत लो, क्योंकि तुम इस अदालत का अपमान कर रहे हो,' राज्यपाल ने उसे बीच में टोकते हुए कहा।

'हे पागल, हर प्रकार की अशुद्धि से भरा!' थियोडोतस ने कहा। 'तुम्हारी दृष्टि में, तुम अपने घृणित और अधर्मी देवताओं के नामों का उच्चारण करके इस स्थान को अपवित्र नहीं करते, फिर भी जब मैं अपने परम पवित्र प्रभु मसीह, सर्व के राजा और प्रभु का नाम लेता हूँ, तो तुम आहत हो जाते हो, अपमान करते हो और दुखी हो जाते हो, मानो मसीह के नाम से न्यायालय अपवित्र हो रहा हो?' इस प्रकार जब मैं उनके परम पवित्र नाम का उच्चारण करता हूँ तो आपका मन पीड़ित होता है। और उसी प्रकार उन राक्षसों ने भी, जिन्हें आप पूजते हैं, कष्ट भोगा, क्योंकि वे मसीह को देखने के कष्ट को सहन नहीं कर सके, और वे चिल्ला उठे:

'हे *परमेश्वर के पुत्र यीशु, हमारा तुझसे क्या काम? क्या तू हमें सताने के लिए समय से पहले यहाँ आ गया है?*' (मत्ती 8:29)। इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि तुम भी मसीह का नाम सुनना बर्दाश्त नहीं कर सकते, क्योंकि तुम उन दुष्टात्माओं जैसे ही हो, जो उनका अनुकरण करती हैं और उनकी सेवा करती हैं, ठीक वैसे ही जैसे तुम्हारे पूर्वज करते थे।

सावनि ने कहा:

'मुझे लगा कि अपनी पिछली यातनाओं के बाद तुम ज़्यादा नरम पड़ जाओगे और मेरी बात सुनोगे, जो तुम्हें मोक्ष की पेशकश कर रहा है, लेकिन तुम और भी बुरे हो गए हो और हमारे साथ बहस करते रहते हो, यह सोचकर खुद को धोखा

देते हो कि तुम मसीह के लिए कष्ट सह रहे हो। इसके लिए, मैं तुम्हें नई यातनाएँ दूँगा और तुम्हें दिखा दूँगा कि मसीह में तुम्हारी आशा व्यर्थ है।' यह चापलूस, जिसकी आशा में तुम पीड़ा सहने जा रहे हो, तुम्हारे किसी काम नहीं आएगा।

और पवित्र शहीद ने उत्तर दिया:

'यदि मैं किसी मनुष्य के लिए दुख सह रहा होता, तो मैं तुम अधर्मी लोगों से भी अधिक दीन होता और आने वाले जीवन के लिए मेरी कोई आशा न होती। यदि मैं स्वर्ग के राज्य की ओर न देखता, जहाँ मसीह मनुष्य के कर्मों से परे पुरस्कार देते हैं, तो मैं अंत तक दुख सहन न कर सकता; मैं ऐसे कष्टों को सहन न कर पाता। इसलिए, मसीह की सहायता से, मैं प्रतिज्ञात शाश्वत आनंद के लिए महान यातनाओं को सहन करूँगा। तो फिर, मसीह की सहायता में, ईश्वर की कृपा में निश्चिंत रहो, और यह मान लो कि मैं अपनी आशा उसी में रखता हूँ। उसकी शक्ति की सुरक्षा में, मैं तुम्हारी यातनाओं से नहीं डरता और न ही मुझे कोई पीड़ा होती है। भले ही नश्वर शरीर पीड़ा सहन करे, परन्तु ईश्वर में स्थापित मेरा दृढ़ संकल्प अडिग रहता है।

तब राज्यपाल सावनि ने आज्ञा दी कि शहीद को लोहे के बिस्तर पर लिटाया जाए और उसके नीचे झाड़-झंखाड़ और पुआल में आग लगा दी जाए। जब पीड़ित ने इस यातना को भी सहन कर लिया, तो राज्यपाल चकित हो गया और बोला:

'तुम्हारे ईसाइयों में ऐसी निर्दयता कहाँ से आती है? तुम किस पर दया दिखा सकते हो, जब तुम अपने ही प्रति इतने निर्दयी हो? तुम किसके प्रति दयालु होगे, जब तुम अपने ही प्रति दयालु नहीं हो?'

संत थियोडोडस ने उत्तर दिया:

'तुम मानवता के लिए सच्चे प्रेम को नहीं जानते, फिर भी दया की बात करते हो। मैं तुम्हारा आभारी रहूँगा जब तुम मुझे मृत्युदंड दोगे, मुझे इस क्षणिक जीवन से मुक्त करोगे, और मुझे स्वर्ग के राज्य में भेजोगे। क्योंकि तुम मुझे गौरवान्वित करना चाहते हो; तुम मुझे जितना अधिक यातना देते हो, उतना ही बड़ा इनाम तुम मेरे लिए तैयार करते हो।' यदि आप वास्तव में मुझ पर दया करना चाहते हैं, तो मुझे दुख के माध्यम से इस क्षणिक जीवन से मुक्त कर दें। मेरे यहाँ के कष्टों को गुणा करो: वे वहाँ मेरे धार्मिकता के मुकुट में जुड़ जाएँगे। मुझे मृत्यु के कगार तक यातना दो, ताकि मैं अपने उद्धारकर्ता मसीह के पास एक पूर्ण तपस्वी के रूप में जा सकूँ, और ताकि सभी स्वर्गदूतों की सेनाएँ मुझे आनंद और हर्ष के साथ प्राप्त करें।

गवर्नर ने कहा:

'मैं सबसे कठोर यातनाएँ रचूँगा और तुम्हें एक पूर्ण तपस्वी बना दूँगा।'

और मसीह के शहीद ने उत्तर दिया:

'हे, काश तुम मेरे परमेश्वर की दया को जानते, जिनमें मैं अपनी आशा रखता हूँ, कि इन क्षणिक यातनाओं के लिए मुझे उनके साथ अनंत जीवन का पात्र समझा जाऊँगा! तुम स्वयं भी मेरे जैसे दुख सहना चाहते, परन्तु जिन राक्षसों की तुम पूजा करते हो, उन्होंने तुम्हारे हृदयों को कठोर कर दिया है, और तुम्हारे पास मृत्यु के बाद कोई आशा नहीं है। इसीलिए तुम सांसारिक व्यर्थता में डूबे हुए हो, और शाश्वत के बजाय क्षणिक और नश्वर को प्राथमिकता देते हो।

ये शब्द सुनकर, राज्यपाल ने आश्चर्य से कहा:

'मुझे बताया गया था कि आप एक साधारण व्यक्ति हैं, लेकिन मैं देख सकता हूँ कि आप एक महान ऋषि हैं!'

संत थियोडोटस ने उत्तर दिया:

'यदि मेरे माध्यम से मसीह बोलते हैं, तो कौन-से वक्ता मेरे विरुद्ध टिक सकते हैं? जान लो कि तुम्हें सत्य बताया गया था: मैं एक साधारण मनुष्य हूँ, परन्तु मेरे मसीह का अनुग्रह, जो मेरी सहायता करता है, मुझे बोलना सिखाता है और मेरी यातनाओं में मुझे बल देता है, जिससे मेरा दुख कम हो जाता है।'

'मैं तुम्हारे साथ कोई दया नहीं दिखाऊँगा, थियोडोटस,' राज्यपाल ने कहा।

'जो करना है कर लो; मैं तैयार हूँ,' संत ने उत्तर दिया।

तब सावनि ने सिपाहियों को आज्ञा दी कि वे उसके पैरों में कीलें ठोकें और उसे जबरदस्ती चलने पर मजबूर करें। और जब वे उसमें कीलें ठोक रहे थे, तो उसने अपने हाथ आकाश की ओर उठाकर कहा:

'मैं तुझसे धन्यवाद करता हूँ, हे मेरे प्रभु यीशु मसीह, कि तूने मुझे, जो कि अयोग्य हूँ, अपने दुखों में सहभागी होने के योग्य समझा। यह कैसे हुआ कि इतनी बड़ी कृपा मुझ पर, एक तिरस्कारित व्यक्ति पर आई है – यहाँ मैं, मानो, पहले ही स्वर्ग में हूँ?! मैं तुझसे धन्यवाद करता हूँ, हे मेरे उद्धारकर्ता, क्योंकि तूने मेरी आत्मा को मेरे उत्पीड़कों से छुड़ाया है। हे प्रभु मसीह, मेरे शरीर में तेरा नाम महिमामय हो! हे परमेश्वर के पुत्र! तू मेरा जीवन है, और तेरे निमित्त मृत्यु मेरा लाभ

है! मैं तेरे नाम के लिए पीड़ित होने वालों को तुझ पर सौंपता हूँ; उनका सहायक बन। इस तूफान को शांत होने की आज्ञा दे, जो तेरी पवित्र कलीसिया के विरुद्ध उठते हैं उन्हें तितर-बितर कर दे, ताकि लोग सदा के लिए शांति में तेरा महिमामंडन कर सकें!

उन्होंने अपने चारों ओर इकट्ठा हुए मसीहियों से भी कहा:

'भाइयो! मेरा संघर्ष समाप्त होने को है; मुकुट निकट है—मेरी धार्मिकता का वचन, जो यीशु मसीह मुझ पर प्रदान करेंगे। वह मेरे लिए सूली पर चढ़ाया गया; उसके लिए मैंने अपने शरीर को यातनाओं के हवाले कर दिया है। वह मेरे लिए मर गया ताकि मुझे भ्रष्टता से बचा सके; मैं उसके लिए मरता हूँ ताकि उसके राज्य के योग्य बनूँ। हे मसीह की महान कृपा! क्योंकि उनके लिए थोड़ी देर की पीड़ा के बदले में – वह हमें हमारे कर्मों से परे, शाश्वत और अकथनीय आनंद का पुरस्कार देते हैं: 'क्योंकि मैं यह मानता हूँ कि *इस समय की पीड़ाएँ उस महिमा के बराबर भी नहीं हैं जो हम पर प्रकट होने वाली है*' (रोमियों 8:18)।

और ऐसा कहकर, वह सिपाहियों द्वारा आगे बढ़ा, उसके पैरों में बेड़ियाँ जकी हुई थीं। उसकी सहनशीलता को देखकर और उसके मधुर वचनों को सुनकर, कई विधर्मी मसीह में विश्वास करने लगे, उन्होंने अपनी घृणित मूर्तियों का तिरस्कार किया, यातना देने वाले को डांटा, और मसीह के नाम की महिमा की। यह जानकर, सावनि ने संत को वापस जेल में डालने का आदेश दिया, ताकि लोग उसकी जादुई (जैसा कि उसने कहा) शिक्षाओं से बहक न जाएँ; और इसके बाद वह अपने सलाहकारों के साथ इस पर विचार करने लगा कि किसि प्रकार की मृत्यु पवित्र शहीद को नष्ट कर देगी। कुछ समय बाद, शहीद के घाव सड़ने लगे, और मिलने आने वाले भक्तिपूर्ण ईसाई उनके पपोटों को साफ़ कपड़ों से पोंछ देते थे।

जब महान कॉन्स्टेंटिन ने सभी ईसाइयों को पूजा की स्वतंत्रता प्रदान की, तो उनसे एक फरमान आया कि उत्पीड़न को समाप्त किया जाए और मसीह के लिए जंजीरों में बंद सभी लोगों को रिहा किया जाए। संत थियोडोटस, यह सुनकर कि वे उन्हें मुक्त करना चाहते थे, बहुत दुखी हुए, क्योंकि वे अपने दुखों के बीच मसीह के लिए मरना चाहते थे। अपनी रिहाई के बाद, वे अपने गृह नगर करिनिया के लिए रवाना हुए और, दो साल तक एपिस्कोपल सिंहासन पर सेवा करने के बाद, प्रभु में सो गए और मसीह प्रभु से संतों और शहीदों का दोहरा मुकुट प्राप्त किया, जो अपने तपस्वियों को अनंत महिमा का मुकुट पहनाते हैं, जिसके हम भी पवित्र पुरोहित-शहीद थियोडोटस की प्रार्थनाओं और हमारे प्रभु यीशु मसीह की कृपा से योग्य ठहरें, जिन्हें पिता और पवित्र आत्मा के साथ युगानुयुग महिमा मिले। आमीन।

कॉन्टाकियन, स्वर 3:

हे पवित्र पिता थियोडोटस, आपने विधर्म के समुद्र को उजागर किया, और धर्मनिष्ठा के विश्वास से मूर्तिपूजक अधर्मीता की चापलूसी को भेद दिया; और एक दिव्य बलिदान बनकर, आप अपने चमत्कारों से पृथ्वी के छोरों को सींचते हैं; हमारे प्रभु परमेश्वर मसीह से प्रार्थना करें कि वे हम पर अपनी महान दया करें।

पवित्र शहीद यूफालिया की स्मृति

2 मार्च को स्मरणोत्सव

संत यूफालिया तीसरी शताब्दी में रहती थीं और सिसिली की मूल निवासी थीं। उनकी माँ एक मूर्तिपूजक थीं और उन्हें रक्तस्राव की समस्या थी। पवित्र शहीदों अल्फियस, फिलाडेल्फस और साइप्रियन (जिनकी स्मृति 10 मई को मनाई जाती है) एक सपने में उनके सामने प्रकट हुए और उनसे कहा कि यदि वह मसीह में विश्वास करेंगी तो वह ठीक हो जाएँगी। उसे बपतिस्मा दिया गया और वह चंगी हो गई; फिर उसने अपनी बेटी को भी बपतिस्मा दिलाया। यह जानकर उसका बेटा, सेरमलियिन, अपनी माँ को मारने की कोशिश करने लगा, और अपनी बहन यूफालिया को बुरी तरह पीटा, फिर उसे एक नौकर के हवाले कर दिया ताकि उसका अपमान किया जा सके। उसकी प्रार्थनाओं के द्वारा, संत यूफालिया ने उस नौकर को अंधा कर दिया, लेकिन उसका भाई तलवार से उसका सिर काटकर उसे मार डाला।

हमारे पवत्रि पतिा आर्सेनयिस, ट्वेर के बशिप का जीवन[2166]

2 मार्च को स्मरणोत्सव

संत आर्सेनयिस का जन्म टवर शहर में धर्मपरायण, कुलीन और धनी माता-पतिा के घर हुआ था। न तो उनके जन्म का वर्ष ज्ञात है और न ही उनके माता-पतिा के नाम। एक पुत्र के लिए ईश्वर से प्रार्थना करने के बाद, उस धन्य बालक के माता-पतिा ने उसके हृदय में ईश्वर का भय स्थापति करने का पूरा ध्यान रखा। कुछ समय बाद, उन्होंने उस लड़के को पढ़ना और लखिना सखिाने के लिए भेजा। ईश्वर की मदद से, उन्होंने जल्द ही इतनी प्रगतिकी कि वे अपने सभी समकालीनों से आगे नकिल गए। आर्सेनयिस अभी भी युवा थे, लेकनि वे अच्छी तरह समझते थे कि इस जीवन की सभी नश्वर्तें क्षणकि और अस्थायी हैं। वे केवल ईश्वर को प्रसन्न करने और अपनी आत्मा को बचाने के बारे में ही सोचते थे। कुछ समय बाद, संत के माता-पतिा का नधिन हो गया; अपनी मृत्यु से पहले, उन्होंने अपने बेटे को एक पवत्रि और ईश्वर-प्रसन्न जीवन जीने, प्रभु की आज्ञाओं का दृढ़ता से पालन करने और ईसाई धर्म को बनाए रखने का नर्दिेश दयिा, और उन्होंने अपनी पूरी संपत्तिउसे वरिासत में दे दी। अपने माता-पतिा को अंतमि संस्कार देने के बाद, संत ने अपनी आत्मा के उद्धार के बारे में और भी अधकि बार सोचना शुरू कर दयिा। उन्होंने सोचा:

'मैं जानता हूँ कमिैं पृथ्वी पर एक परदेशी और यात्री हूँ। यहाँ का जीवन क्षणकि और क्षणभंगुर है, जबकिआने वाला जीवन अनंत है। मेरे माता-पतिा ने मुझे एक बड़ी संपत्तिछोड़ी है, लेकनि मेरी आत्मा को इसमें कोई आनंद नहीं मलिता। क्योंकिधर्मग्रंथ में लखिा है: *'एक मनुष्य के लिए सारी दुनयिा प्राप्त करना और अपनी आत्मा को खो देना क्या लाभ है? या एक मनुष्य अपनी आत्मा के बदले में क्या दे सकता है?'* (मत्ती 16:26.)

इस प्रकार मनन करके, उन्होंने अपना धन गरीबों में बाँटना शुरू कर दयिा: उन्होंने नंगों को कपड़े पहनाए, बीमारों से मुलाकात की, वधिवाओं और अनाथों की मदद की, और उत्पीड़तिों के लिए खड़े हुए। लेकनि मानव जातिका ईर्ष्यालु, संत आर्सेनयिस के धार्मकि जीवन को देखकर, उन पर युद्ध छेड़ दयिा। उसने धन्य व्यक्तिके कुछ रश्तिेदारों के मन में यह वचिार डाला कियुवक अपने माता-पतिा की संपत्तिको उदारतापूर्वक बाँटकर गलत कर रहा था। संत के रश्तिेदार बारी-बारी से उसे शादी करने की सलाह देते, या उसकी नदिा और अपमान करते हुए कहते:

'देखो, यह ढोंगी संन्यासी पूरे पारविारकि संपत्तिको बर्बाद कर चुका है और कुछ भी कएि बनिा अपना जीवन व्यर्थ गँवा रहा है।'

लेकनि ऐसे शब्दों ने उस धर्मनष्ठि युवक को वचिलति नहीं कयिा। प्रभु ने उसे कीव-पेचेरस्क लाव्रा की ओर प्रस्थान करने के लिए प्रेरति कयिा, जहाँ आदरणीय एंथनी और थयिोडोसयिस एक बार रहे थे और अपने गुणों से जगमगा उठे थे। अपने सभी दासों को मुक्त कर और अपना धन गरीबों में बाँट कर, वह युवा तपस्वी गुप्त रूप से अपने गृहनगर से नकिल पड़ा और कीव-पेचेरस्क लाव्रा की ओर चल पड़ा, जहाँ उसे एक स्वप्न में सुना गया स्वर बुला रहा था। मठ पहुँचने पर, संत आबट के सामने घुटनों के बल झुक गया और उनसे वनिती की:

'पतिाजी, मुझ पर दया करें, इस पापी पर दया करें। मुझे इस पवत्रि मठ से न ठुकराएँ; याद रखें कमिसीह भी पश्चातापी पापयिों को नहीं ठुकराते।'

इस प्रकार संत ने गुफाओं के मठाधीश से वनिम्रतापूर्वक नविेदन कयिा। मठाधीश आश्चर्यचकति हो गए और उनसे पूछा:

'बेटा, तुम अभी इतने जवान हो, फरि भी अपने पापों को लेकर इतने दुखी क्यों हो?'

'मैं एक बड़ा पापी हूँ,' संत आर्सेनयिस ने उत्तर दयिा, 'क्योंकिऐसा कोई मनुष्य नहीं है जसिने पाप न कयिा हो, भले ही वह केवल एक दनि ही क्यों न जयिा हो। मुझ पर दया करें, पतिाजी, और मुझे इस पवत्रि मठ से न नकिालें।' मैं जानता हूँ कएिक दनि मुझे भी मसीह के भयानक न्याय के समक्ष उपस्थति होना है—तब मैं नष्पिक्ष न्यायाधीश को क्या उत्तर दूँगा?

संतों के मुखयिा उस युवक के उत्तर से चकति रह गए। उन्होंने अपनी आध्यात्मकि आँखों से देखा कि उस युवक पर ईश्वर की एक वशिेष कृपा बनी हुई थी। लेकनि यह देखकर कि आर्सेनयिस अभी भी युवा था, गुफाओं के संत ने उससे कहा:

[2166] संत अर्सेनयिस का प्राचीन जीवन 15वीं शताब्दी के अंत में भक्षिु थयिोडोसयिस द्वारा लखिा गया था। संत के चमत्कार 16वीं शताब्दी के दूसरे भाग और 17वीं शताब्दी में दर्ज कएि गए थे।

'संन्यासी जीवन कठनि है; इसमें कई कष्ट और दुख शामलि हैं। इतनी कम उम्र में आपके लिए संन्यासी जीवन की सभी परीक्षाओं को सहना आसान नहीं होगा। लेकनि प्रभु ने मानव जाति के उद्धार के लिए कई मार्ग बनाए हैं। अपने लिए कोई और मार्ग चुनें, जो आसान हो।'

'मैं साधु जीवन के श्रम से नहीं डरता,' संत ने उत्तर दिया, 'क्योंकि वे मेरे लिए मीठे और सुखद हैं। मैं आपसे केवल एक ही बात का अनुरोध करता हूँ: मुझे इस पवित्र मठ का सबसे नीचला सेवक बना दें, और मैं अपने सभी कर्तव्यों को कृतज्ञतापूर्वक निभाऊँगा।' ईश्वर मेरी रक्षा करें, और आपकी पवित्र प्रार्थनाएँ मेरी सहायता करें। मैं धर्मग्रंथ के वचनों को दृढ़ता से याद रखता हूँ: *'जो कोई हल पर हाथ रखकर पीछे मुड़ता है, वह परमेश्वर के राज्य के योग्य नहीं है'* (लूका 9:62)। कृपया मुझे स्वीकार कर लें, पतिाजी।

युवक की भक्ति से प्रभावित होकर, मठाध्यक्ष ने आर्सेनियस को मठ में स्वीकार कर लिया और उसे संन्यासी वस्त्र पहनाए। नवसंयमी को आध्यात्मिक संघर्षों में अनुभवी, एक सदाचारी वरिष्ठ के मार्गदर्शन में सौंप दिया गया।

कई तपस्वी, चमकते सितारों की तरह, केवल कीव-पेचेरस्क लाव्रा के भीतर ही चमके। उन्होंने उस धर्मनिष्ठ युवक के लिए एक अच्छा उदाहरण प्रस्तुत किया: एक अपने दृढ़ विश्वास के लिए; एक ने अपनी सारी आशा एकमात्र प्रभु में रखी; एक मौन और आज्ञाकारिता के द्वारा फलता-फूलता था; और एक ने अपने ही शरीर के विरुद्ध एक विजयी लड़ाई लड़ी और उसे आत्मा के अधीन कर लिया। संत आर्सेनियस ने धर्मपरायणता के इन कारनामों को देखा और उनमें से प्रत्येक का अनुकरण करने लगे, तथा एक भी अच्छे उदाहरण को नज़रअंदाज़ न करने का प्रयास करते रहे। अत्यंत विनम्रता से, उन्होंने मठाध्यक्ष और अन्य भिक्षुओं के सभी आदेशों का पालन किया; उन्होंने अथक परिश्रम किया, एक भी दिव्य सेवा नहीं छोड़ी, अत्यंत साधारण भोजन से ही संतुष्ट रहे, और केवल कुछ ही क्षणों के लिए सोते थे।

कीव केव्स मठ में, यह प्रथा थी कि हर भिक्षु आज्ञाकारिता की सभी श्रेणियों से, सबसे निचले से लेकर सबसे ऊँचे तक, गुज़रे। दूसरों की तरह, संत आर्सेनियस ने भी अपने सभी कर्तव्यों का पालन किया और उन्हें बड़े उत्साह से पूरा किया। वह दिन-रात परिश्रम करते थे, अपने हाथों को एक घंटे के लिए भी आराम नहीं करने देते थे: वे भाइयों के लिए भोजन बनाते थे, लकड़ी काटते थे और पानी लाते थे; उनसे कभी शिकायत या आलस्य का एक शब्द भी नहीं सुना गया। उन्होंने खुद को सद्गुणों से इतनी समृद्ध रूप से सुसज्जित किया कि वे मठ के सभी अन्य भिक्षुओं से ऊपर थे। भाई उनके परिश्रमी श्रम और द्वेष की कमी को देखकर चकित थे।

उस समय, भविष्य के मॉस्को के संत[2167] , सेंट साइप्रियन कीव में रह रहे थे। यह देखकर कि आर्सेनियस तीव्र बुद्धि से संपन्न थे और सद्गुणों में उत्कृष्ट थे, उन्होंने उस युवा भिक्षु को अपनी छत्रछाया में ले लिया और उससे स्नेह करने लगे, अक्सर उससे बातचीत करते और उसे ईश्वर की आज्ञाओं के बारे में सिखाते थे। और जब संत ने मॉस्को के मेट्रोपोलिस का पदभार संभाला, तो वे संत अर्सेनियस से अलग नहीं होना चाहते थे। संत उन्हें अपने साथ मॉस्को ले गए, ने उन्हें एक आर्चडीकन नियुक्त किया और उन्हें पत्राचार के प्रबंधन का जिम्मा सौंपा[2168] । पहले तो, संत आर्सेनियस ने इस जिम्मेदारी का बोझ न डालने का अनुरोध किया, यह कहते हुए कि वह चुपचाप प्रार्थना करना चाहते थे और सदाचार के अभ्यास में खुद को समर्पित करना चाहते थे। लेकिन बाद में, संत के समझाने पर, वह मान गए – केवल यह अनुरोध करते हुए कि उन्हें पुरोहित के उच्च पदों पर न बढ़ाया जाए।

इस बीच, धन्य आर्सेनियस के गृह-नगर, ट्वेर में, अशांति उत्पन्न हो गई थी। ट्वेर के बिशप, यूथमिियस[2169] ने अपने अनुयायियों के बीच काफी भ्रम पैदा किया; अपनी जिद्दी प्रकृति के कारण, वह सांसारिक मामलों में दखलअंदाजी करता था; ईसाई विनम्रता से रहित, वह अत्यधिक गर्व और व्यर्थ घमंड से परिपूर्ण था। अपने आचरण से, बिशप ने न केवल राजकुमार और बोयारों को, बल्कि पादरियों, भिक्षुओं और आम जनता को भी अलग-थलग कर दिया। ट्वेर के राजकुमार, मिखाइल अलेक्जेंड्रोविच[2170] , ने जब देखा कि यह कलह बढ़ रही थी, तो उन्होंने मॉस्को को एक दूत भेजकर मामले का निपटारा करने के लिए मेट्रोपॉलिटन साइप्रियन को बुलाया। मेट्रोपॉलिटन संत साइप्रियन, दो ग्रीक मेट्रोपॉलिटन, माइकल और निकिंडर, परम के बिशप संत स्टीफन, और स्मोलेंस्क के बिशप माइकल, साथ ही संत

[2167] संत साइप्रियन को 2 दिसंबर 1375 को कीव और ऑल रस का मेट्रोपॉलिटन नियुक्त किया गया था। वह अगले वर्ष, 1376 में कीव पहुँचे, और मई 1381 में मास्को के सिंहासन पर अपनी स्थापना तक वहाँ रहे।

[2168] दूसरे शब्दों में: मेट्रोपॉलिटन साइप्रियन

[2169] यूथमिियस (उपनाम वसिलेन) को 9 मार्च 1374 को ट्वेर का बिशप नियुक्त किया गया था।

[2170] Mikhail अलेक्जेंड्रोविच 1339 से 1399 तक ट्वेर के ग्रैंड प्रिंस थे। अपनी मृत्यु से पहले, उन्होंने मैथ्यू नाम से संन्यास की शपथ ली।

आर्सेनियस और कई आर्चमैंड्राइट्स और मठाधीशों को अपने साथ लेकर ट्वेर के लिए रवाना हुए। जैसे ही पवित्र सनिड टवर पहुँचा, राजकुमार माइकल स्वयं, लोगों की एक बड़ी भीड़ के साथ, उनका स्वागत करने के लिए बाहर आए और आगंतुकों का सम्मानपूर्वक स्वागत किया। जैसे ही साइप्रियन और अन्य पादरी शहर पहुँचे, वह तुरंत सम्माननीय और गौरवशाली रूपांतरण को समर्पित चर्च में गए और पहले एक प्रार्थना सभा, फिर दैवीय धर्मविधि का अनुष्ठान किया, और सभी पर अपना आशीर्वाद प्रदान किया।

चार दिन बाद, मेट्रोपॉलिटिन ने पूरे पवित्र सिनिड के साथ मिलकर ट्वेर के बिशप के मामले की जांच की। यूथिमियस ने शुरू में अपना बचाव किया। लेकिन सिनिड के पादरियों ने उनके गलत कार्यों की निंदा की; उन्हें पदच्युत कर दिया गया और मॉस्को के चुदोव मठ में नजरबंदी में भेज दिया गया।

त्वर के लोग लंबे समय से संत अर्सेनियस के पुण्य जीवन से परिचित थे। अब राजकुमार मिखाइल ने मेट्रोपॉलिटिन से उन्हें अपने शहर का बिशप नियुक्त करने का अनुरोध किया।

राजकुमार ने मेट्रोपॉलिटिन से कहा, 'मेरा मानना है कि आर्सेनियस हमारे शहर में शांति और सुकून ला सकते हैं। मुझे ऐसा कोई और व्यक्ति नहीं पता जो उनसे अधिक सदाचारी या अधिक योग्य हो। इसके अलावा, उनका जन्म यहीं हुआ है। न केवल मैं, बल्कि कई नागरिक उन्हें और उनके धर्मपरायण माता-पिता को जानते हैं।'

उनकी उत्कृष्टता साइप्रियन ने राजकुमार के इरादे को मंजूरी दे दी और आर्सेनियस को बुलाया। जब संत ने राजकुमार की इच्छा के बारे में सुना, तो उन्होंने दृढ़ता से इनकार कर दिया:

'महोदयों, मुझे क्षमा करें, मैं एक पापी व्यक्ति हूँ और ऐसे पद के लिए अयोग्य हूँ। मैं प्रभु को अपना गवाह मानता हूँ कि मुझे कभी कोई और इच्छा नहीं हुई, और न ही अब है, सिवाय इसके कि मैं एकांत में अपने पापों पर शोक मनाऊँ। इसीलिए मैंने पहले पादरी का पद ठुकरा दिया था; जहाँ तक बिशप के पद की बात है, उसके बारे में सोचना भी एक पाप है।'

संत ने लंबे समय तक मना किया, लेकिन अंत में राजकुमार और मेट्रोपॉलिटिन ने उससे कहा:

'यदि आप हमारी इच्छा का पालन नहीं करना चाहते हैं, तो हम, पवित्र धर्मसभा के साथ मिलकर, आपके निष्कासन का अधिकार रखते हैं।'

संत आर्सेनियस अब विरोध नहीं करना चाहते थे और उन्होंने अपनी सहमति दे दी। इस प्रकार उन्हें बिशप चुना गया (24 जुलाई 1390), लेकिन उन्हें शासन के बोझ से डर लगता था, बिशप यूथिमियस को हटाए जाने के बाद ट्वेर में अभी भी शांत न हुई कलह और अशांति से उन्हें भय था, और वे पूरे दिल से एकांत में तपस्या में खुद को समर्पित करना चाहते थे। इसलिए, कुछ समय बाद, संत आर्सेनियस ने एक बार फिर महाधर्माध्यक्ष साइप्रियन से इस भारी बोझ से मुक्त करने का अनुरोध किया। लेकिन महाधर्माध्यक्ष ने उनका उत्साह बढ़ाया और उन्हें एक बार फिर रुकने के लिए मना लिया। इसमें ईश्वर की इच्छा देखकर, आर्सेनियस ने महाधर्माध्यक्ष की इच्छा के आगे समर्पण कर दिया और 15 अगस्त 1390 को ट्वेर के बिशप के रूप में अभिषिक्त हुए।

आर्चपास्टोरल सिंहासन पर आरोहण करने पर, संत आर्सेनियस ने सबसे बढ़कर अपने आध्यात्मिक झुंड के भीतर शांति और सद्भाव स्थापित करने और किसी भी विद्रोह को दबाने का प्रयास किया। उन्होंने उत्साह के साथ परमेश्वर का वचन प्रचार किया: संत अर्सेनियस ने एक प्रेम करने वाले पिता की तरह उनके पास आने वाले सभी लोगों को उपदेश दिया; परमेश्वर के घर में, उन्होंने एक देखभाल करने वाले चरवाहे की तरह अपनी भेड़-बकरियों को प्रोत्साहित किया। वे हमेशा नबी यहेज़केल के शब्दों को ध्यान में रखते थे: *'और जहाँ तक तुम्हारा संबंध है, हे मनुष्य के पुत्र, मैं ने तुम्हें इस्राएल के घराने का पहरुआ ठहराया है; जो वचन मैं उन से कहूँ वह तुम सुनना और मेरी ओर से उन्हें सचेत करना'* (यहेज़केल 33:7)। इस प्रकार पवित्र बिशप ने सभी को उपदेश दिया, और अपने शब्दों के माध्यम से उन्होंने सभी को अपनी ओर आकर्षित किया। ट्वेर के नागरिक अपने शिक्षाप्रद चरवाहे की बातें सुनने के लिए उत्सुक थे। अपने जीवन में, संत आर्सेनियस ने सभी के लिए एक अच्छा उदाहरण प्रस्तुत किया: सिंहासन पर बैठने के बाद, उन्होंने और भी अधिक कठोर और संयमी जीवन जीना शुरू कर दिया, और अपने शरीर को पूरी तरह से अपनी आत्मा के अधीन कर लिया। उनके जीवन की पवित्रता और उनकी अथक सतर्कता को देखकर सभी चकित थे। हालांकि वह स्वयं के प्रति सिख्त थे, लेकिन उन्होंने दूसरों के साथ कोमल व्यवहार किया और गरीबों पर दया दिखाई: उन्होंने उत्पीड़ितों की रक्षा की, बेसहारों को कपड़े और भोजन वितरित किए, और दासों तथा बंदियों को मुक्त कराया। उनके सदाचारी जीवन की ख्याति दूर-दूर तक फैल गई; कई लोग उनकी प्रार्थना और आशीर्वाद की चाह में दूर-दराज से आए।

अपने पुण्य जीवन के लिए, संत को प्रभु द्वारा चमत्कार करने का वरदान मिला। बड़ी संख्या में लोग उनके पास आते थे; जो भी किसी भी बीमारी से पीड़ित थे, वे संत के पास आते थे, और ईश्वर की कृपा से, उन्होंने विभिन्न प्रकार के रोगों को ठीक किया। कुछ बीमारों पर उन्होंने अपने हाथ रखे; कुछ पर उन्होंने प्रार्थनाएँ पढ़ीं; कुछ को उन्होंने आशीर्वाद दिया और पवित्र जल छिड़का या तेल से अभिषेक किया – उन्होंने सभी को प्रभु से प्रार्थना के माध्यम से ठीक किया।

ट्वेर में रहते हुए, संत अर्सेनियस ने कभी पेचेर्स्क मठ को नहीं भुलाया, जहाँ उन्होंने अपना मठवासी जीवन शुरू किया था, और वे इसके पूजनीय संस्थापकों – एंथनी और थियोडोसियस – के जीवन को लगातार याद करते रहे। संत ने अपना स्वयं का मठ स्थापित करने का संकल्प लिया, जो उन्हें गुफाओं के मठ की याद दिलाए, और उन्होंने अपनी मृत्यु के बाद अपने शरीर को वहीं विश्राम के लिए रखे जाने की इच्छा व्यक्त की। संत अर्सेनियस ने ट्वेर के राजकुमार को अपनी इस मंशा के बारे में बताया। राजकुमार ने संत के इस नेक इरादे की सराहना की और मठ के निर्माण के दौरान उनकी सहायता करने का वादा किया, तथा इसके रखरखाव के लिए आवश्यक भूमि प्रदान की। इसके बाद संत ने ट्वेर शहर से चार वर्स्ट की दूरी पर टमाका नदी के किनारे एक स्थान चुना, जो उन्हें बहुत पसंद आया। इसे झेल्टकोवो कहा जाता था। ईश्वर का आशीर्वाद प्राप्त करने के बाद, उन्होंने अपने महान गुरुओं, केव्स के पूजनीय एंथनी और थियोडोसियस के सम्मान में वहाँ एक लकड़ी का चर्च बनाने का आदेश दिया। कोठरियों की व्यवस्था करने के बाद, संत ने भिक्षुओं का एक समुदाय इकट्ठा किया और उनके लिए एक मठाधीश नियुक्त किया। यह 1394 में हुआ। दस साल बाद, संत ने ज़ेल्टकोवो मठ में एक पत्थर के चर्च की नींव रखी और इसे परम पवित्र ईश्वर की माता और उनकी सम्मानित और गौरवशाली डोर्मिशन के सम्मान में समर्पित किया, जिससे स्वाभाविक रूप से कीव-पेचेर्स्क लाव्रा के डोर्मिशन चर्च की याद आती है। चर्च का 30 अगस्त 1405 को अभिषेक किया गया; इसे भव्य रूप से सजाया गया और भित्ति-चित्रों से सुशोभित किया गया। ट्वेर के महा राजकुमार ने अपना वादा पूरा किया – उन्होंने मठ को कई संपत्तियाँ दान कीं। संत अक्सर अपने मठ में आते थे और भाइयों के कार्यों में भाग लेते थे, जिससे सभी के लिए मठवासी जीवन का एक उदाहरण स्थापित हुआ। उन्होंने भाइयों के बीच न तो सम्मान चाहा और न ही महिमा, बल्कि वे स्वयं द्वारा स्थापित मठ में एक साधारण भिक्षु बनना चाहते थे। अपने गुणों में महान, उन्होंने पूरे समुदाय को निर्देशित और प्रबुद्ध किया: जैसे चंद्रमा तारों के बीच चमकता है, वैसे ही संत आर्सेनियस मठ के भिक्षुओं के बीच अपनी भक्ति से चमके। संत ज़ेल्तिकोव मठ को अपनी अंतिम विश्राम स्थली बनाना चाहते थे। उन्होंने अपने हाथों से यहाँ सफेद पत्थर से अपने लिए एक कब्र बनाई, और एक अन्य पत्थर के टुकड़े से उसके लिए एक ढक्कन बनाया। यह इच्छा रखते हुए कि नए मठ के भिक्षु गुफाओं के पिताओं के कार्यों से हमेशा प्रेरित हों, संत आर्सेनियस ने प्राचीन 'गुफाओं के पितृकोन' को प्रतिलिपि बनाने का आदेश दिया - यह एक पुस्तक है जो कीव-पेचेर्स्क लाव्रा के पवित्र तपस्वियों के कार्यों और महान परिश्रमों को दर्शाती है[2171] । इससे यह स्पष्ट है कि संत ने अपने कर्मों, अपने शब्दों और अपने शिक्षाप्रद लेखनों के माध्यम से अपने अनुयायियों को प्रबुद्ध करने और शिक्षित करने का प्रयास किया; उन्होंने निरंतर अपने हृदय में धर्मग्रंथ के इन शब्दों को धारण किया: *'प्रभु के सेवक को झगड़ना नहीं चाहिए, बल्कि सभी के प्रति दयालु, शिक्षित करने में सक्षम और धैर्यवान होना चाहिए'* (2 तीमु. 2:24)। संत अर्सेनियस ऐसे ही एक चरवाहे थे। उन्होंने स्वयं शहर और उसके आसपास ईश्वर के कई चर्च बनाए; उन्होंने ट्वेर में रूपांतरण के मुख्य कैथेड्रल का भी नवीनीकरण किया।

ट्वेर के राजकुमार माइकल इस योग्य पादरी का हार्दिक सम्मान करते थे। वे अक्सर संत आर्सेनियस से बातचीत करते थे और इन वार्तालापों से उन्हें काफी आध्यात्मिक लाभ मिलता था। संत के कोमल शब्द राजकुमार के हृदय में गहराई से उतर गए। संत के मार्गदर्शन में, महाप्रसि ने चर्च बनवाए, परोपकार के कार्य किए, अपनी रियासत में गरीबों की मदद की, और कॉन्स्टेंटिनोपल को दान भेजा। यह महसूस करते हुए कि उनका अंत निकट आ रहा है, राजकुमार ने संन्यास की शपथ लेने की इच्छा व्यक्त की। संत आर्सेनियस ने उनके इस नेक इरादे को मंजूरी दी, राजकुमार का मुंडन किया और उन्हें मठवासी नाम मैथ्यू दिया, और कुछ ही समय बाद, संत का अंतिम आशीर्वाद प्राप्त करने के बाद, भिक्षु-राजकुमार ने इस सांसारिक जीवन को त्याग दिया। शांति से प्रेम करने वाले संत आर्सेनियस हमेशा शत्रुता में पड़े राजकुमारों के बीच सुलह कराने का प्रयास करते थे। उस समय, राजकुमारों के बीच अक्सर विवाद होते थे, और संत हमेशा

[2171] 'पेटेरिकॉन' शब्द का अर्थ है 'पितृजी की पुस्तक', यानी पितृजी के बारे में एक पुस्तक। पेटेरिकॉन तपस्वियों या उनके कथनों के संक्षिप्त विवरणों का एक संग्रह है। पेचेर्स्क पैट्रिकॉन, जिसे संत आर्सेनियस के आदेश पर संकलित किया गया था, में शामिल हैं: सम्माननीय नेस्टर द्वारा लिखित, गुफाओं के सम्माननीय थियोडोसियस का जीवन; पेचेर्स्क मठ की स्थापना का क्रॉनिकल का विवरण; व्लादिमीर के बिशप साइमन और गुफाओं के एक भिक्षु पॉलीकार्प द्वारा गुफाओं के तपस्वियों के बारे में लिखे गए वृत्तांतों का एक संग्रह।

इन राजसी झगड़ों को समाप्त करने का प्रयास करते थे। ईश्वर की मदद से, 1403 में उन्होंने ट्वेर के राजकुमार जॉन मखिाइलोवचि को उनके भाई, काशीन के राजकुमार बेसलि मखिाइलोवचि के साथ सुलह कराने में सफलता प्राप्त की, जनिके साथ ट्वेर के राजकुमार ने अन्याय कयिा था। लेकनि कुछ समय बाद, भाई राजकुमारों के बीच ववािद फरि से भड़क उठा। तब संत ने, ईश्वर के भयानक क्रोध और शाश्वत नरक की चेतावनी देते हुए, 1406 में जीवन-दायक त्रमिूर्ति के पर्व के दनि इस ववािद को समाप्त कर दयिा।

लड़ाई-झगड़ा करने वाले पक्षों को सुलह कराने में, संत ने सभी के साथ कोमलता और नम्रता से व्यवहार करने का प्रयास कयिा: वह कसिी के साथ अन्याय नहीं होने देना चाहते थे, और जो भी उनके पास आता था, उसे सुरक्षा और शरण मलिती थी; संत अनाथों और वधिवाओं के रक्षक थे; उन्होंने गरीबों और बेसहारों के साथ प्रेम से व्यवहार कयिा; उन्होंने थके-हारों को प्रोत्साहति कयिा; और उन्होंने सभी की मदद की, चाहे वह अच्छी सलाह हो, पैसा हो या पतिृसुलभ मार्गदर्शन।

स्वर्गीय चरवाहे, मसीह के उदाहरण का अनुसरण करते हुए, उन्होंने हमेशा अपने झुंड के भटकते भेड़ों की देखभाल की और उन्हें पश्चाताप के अड्डे में लाए।

संत साइप्रयिन ने संत आर्सेनयिस को एक से अधकि बार सनिोडल बैठकों के लिए मॉस्को बुलाया।

संत अर्सेनयिस का धन्य नधिन 1409 में महा-उपवास के दौरान हुआ। सभा के रवविार तक, ट्वेर के धर्मप्रांत के पुरोहति अपने पारंपरकि वार्षकि सनिड के लिए ट्वेर में इकट्ठा हो चुके थे[2172] । रवविार को, उन्होंने अपने बशिप का स्वागत कयिा; मंगलवार को, संत आर्सेनयिस ने पादरयिों को एक उपदेश दयिा, जसिमें उन्होंने उन्हें पादरी सेवा के मामलों में नर्दिेश दयिा और वभिन्नि मुद्दों को सुलझाया; उसी दनि, उन्होंने इकट्ठा हुए पादरयिों को आशीर्वाद दयिा, उनसे वदिा ली और धर्मसभा को स्थगति कर दयिा। दूसरे सप्ताह के गुरुवार को, संत गंभीर रूप से बीमार पड़ गए और उनकी जीभ का काम करना बंद हो गया। शुक्रवार सुबह (1 मार्च), ग्रैंड प्रंसि जॉन मखिाइलोवचि[2173] अपने भाइयों और बोयारों के साथ उनके पास आए; उन्होंने बीमार संत को मरणासन्न संस्कार देने के लिए आर्चमिैंड्राइट्स, मठाधीशों और पुरोहतिों को बुलाया। दस भकि्षु अपने बशिप से वदिाई का अंतमि शब्द सुनने की इच्छा से बीमार व्यक्ति के बस्तिर के पास बैठे थे। लेकनि वह मौन रहे। अगली रात, संत आर्सेनयिस का नधिन हो गया। 19 वर्षों और 7 महीनों तक, उन्होंने ईश्वर द्वारा उन्हें सौंपी गई मंडली का बड़े उत्साह के साथ मार्गदर्शन कयिा था। धर्मनषि्ठ संत के नधिन की खबर सुनकर, राजकुमार इयान मखिाइलोवचि, एक बड़ी भीड़ के साथ, संत की अवशेषों को श्रद्धांजलि देने आए। सभी ने शोक मनाया और रोए: 'हमारा सूरज डूब गया है; हमने एक अच्छे चरवाहे और पति को खो दयिा है।'

अगले दनि, संत आर्सेनयिस के अवशेषों को बशिप के आवास से कैथेड्रल तक ले जाया गया, जहाँ ट्वर के नागरकिों ने अपने चरवाहे को वदिाई दी, और उन्हें ज़ेल्टकिोवो मठ में, सोने के चर्च (जो बनिा हाथों से बनी छवि को समर्पति था) के दाहनिे पार्श्व-चैपल के नार्टेक्स में दफनाया गया, उसी पत्थर के मकबरे में जसिे संत ने अपने हाथों से बनाया था।

उनके अंतमि संस्कार में कई बीमार लोग मौजूद थे। उन्होंने संत से स्वास्थ्य लाभ की प्रार्थना की और अपनी बीमारयिों से राहत पाई। ऐसा था संत आर्सेनयिस का जीवन, ऐसा था उनका धन्य नधिन; अब वह स्वर्गदूतों के साथ प्रभु के सहिासन के सामने खड़े हैं, परम पवत्रि त्रमिूर्ति: पति, पुत्र और पवत्रि आत्मा की महमिा करते हुए।

[2174]संत अर्सेनयिस की मृत्यु के बाद, नागरकिों ने उनकी स्मृति का सम्मान करना कभी बंद नहीं कयिा। उनके मकबरे पर हुए चमत्कारों को देखकर, ट्वेर के धर्मपरायण नवािसयिों ने अपनी प्रार्थनाओं में संत अर्सेनयिस का आह्वान कयिा और अपनी परेशानयिों में मदद और मध्यस्थता प्राप्त की। उनके नधिन के सत्तर-चार वर्ष बाद (1483 में), त्वर के बशिप वासयिन ने ज़ार जॉन वासलिीवच के आदेश पर, उनके अवशेषों को खोलने का नर्णिय लयिा। एक बड़ी भीड़ के साथ कैथेड्रल की जमात इकट्ठा करने के बाद, वह ज़ेल्टकिोवो मठ के लिए रवाना हो गए। जसि ताबूत में ईश्वर के संत की अवशेष रखी गई थीं, उसे खोदकर बाहर नकिाला गया और कैथेड्रल चर्च में ले जाया गया। जब ढक्कन खोला गया, तो पूरा चर्च एक मीठी सुगंध से भर गया। संत आर्सेनयिस की अवशेषों को सड़न ने छुआ तक नहीं था; यहाँ तक कि उनके

[2172] प्राचीन काल में, 'सभा रवविार' (या, संक्षेप में, 'सभा' या 'सम्माननीय सभा') से तात्पर्य ग्रेट लेन्ट के पहले सप्ताह, अर्थोडॉक्सी के सप्ताह के बाद वाले रवविार से था, क्योंकि इस दनि हर साल पादरी बशिप के सामने एक धर्मप्रांतीय परषिद आयोजति करने के लिए इकट्ठा होते थे।

[2173] इवान मखिाइलोवचि 1499 से 1525 तक टवर के महान राजकुमार थे। अपनी मृत्यु से पहले, उन्होंने संन्यासी की शपथ ली और जॉब नाम अपनाया।

[2174] बशिप वासयिन (जन्म नाम प्रंसि स्ट्रगिनि-ओबोलेन्स्की) ने 1477 से 1508 तक ट्वेर के धर्मप्रांत का शासन कयिा।

वस्त्र भी पूरी तरह से सुरक्षित थे। फिर बिशप ने ताबूत को एक बार फिर से ढकने का आदेश दिया, संत की एक प्रतिमा बनाने का हुक्म दिया (जो आज भी सुरक्षित है), और आगंतुकों की पूजा के लिए उसे ताबूत के बगल में रख दिया। चमत्कार करने वाले की छवि वाले एक आवरण को ताबूत पर रखा गया। बिशप वासियन के आशीर्वाद से, संत अर्सेनियस के लिए एक प्रार्थना सेवा तैयार की गई। फिर ज़ेल्तिकोवो मठ में उनके सम्मान में एक स्थानीय पर्व दिवस स्थापित किया गया। उस समय से, उनके ताबूत पर और भी अ चमत्कार होने लगे। ट्वेर में संत अर्सेनियस का स्थानीय पर्व दिवस 1547 में मॉस्को परिषद द्वारा स्थापित किया गया था।

संत अर्सेनियस के चमत्कारों में सबसे उल्लेखनीय और आश्चर्यजनक 1566 में हुआ। उस समय, ट्वेर में टेरेन्टियस नामक एक मछुआरा रहता था। शुरुआत में उसे संत अर्सेनियस में गहरी आस्था थी, लेकिन बाद में वह अविश्वासी हो गया और मानसिक रूप से विक्षिप्त हो गया। उसके माता-पिता उसे ज़ेल्तिकोवो मठ ले गए, इस उम्मीद में कि उनका बेटा वहाँ ठीक हो जाएगा। लेकिन उसकी मृत्यु हो गई। दो दिन बाद, उसका शरीर परम पवित्र माता ईश्वर की चर्च में ले जाया गया, जहाँ संत की अवशेष रखी गई थीं। उसके माता-पिता बहुत दुखी हुए, यहाँ तक कि उन्होंने संत से शिकायत भी की:

'हमने आपसे दया की आशा की थी, फिर भी हमारा बेटा मर गया। आपके प्रति हमारी लगन फीकी पड़ रही है, और हमारा विश्वास कमजोर पड़ रहा है।'

प्रभु अपने प्रिय सेवक के विरुद्ध ऐसे दोषारोपण वाले शब्दों को सहन नहीं करेंगे। जब सुसमाचार पढ़ा जा रहा था, तो मृत व्यक्ति अचानक उठ खड़ा हुआ और अपने पाप के लिए जोर-जोर से रोने लगा। तेरेंटियस के माता-पिता ने भी संत के विरुद्ध अपनी शिकायत पर पश्चाताप किया।

अकाकियोस, जो उस समय ट्वेर के बिशप थे[2175] , एक धर्मी और धर्मपरायण व्यक्ति, ने पुनर्जीवित व्यक्ति को अपनी आँखों से देखा और घटना की सच्चाई की पुष्टि की।

1606 में, जब रूसी भूमि पोलिश और लिथुआनियाई लोगों के आक्रमण से पीड़ित थी, तो दुश्मनों ने जबरदस्ती रूसी राज्य के कई क्षेत्रों को तबाह कर दिया, जिसमें ट्वेर मठ भी शामिल था। दुश्मनों ने झेल्टिकोवो मठ को भी नहीं बख्शा। वे इसमें घुस पड़े, यह उम्मीद करते हुए कि उन्हें बड़ी संपत्ति मिलेगी। लेकिन भिक्षुओं ने समय रहते मठ के खजाने को छिपा दिया था और खुद ट्वेर भाग गए थे। संत की अवशेषों पर केवल सोने की कढ़ाई वाला एक आवरण बचा था जिस पर उनकी छवि अंकित थी। मठ में कुछ भी न पाकर दुश्मन बहुत निराश हुए। उनमें से एक, अपनी बदकिस्मती से हताश होकर, संत की अवशेषों से आवरण छीनकर अपने घोड़े पर डाल लिया। लेकिन जैसे ही वह घोड़े पर सवार हुआ, किसी अज्ञात शक्ति के कारण, घोड़ा और सवार दोनों हवा में उठ गए और फिर ज़मीन पर पटक दिए गए। वे इस ज़बरदस्त टक्कर से मर गए, जबकि वह कफ़न चमत्कारिक रूप से चर्च ऑफ़ द डॉर्मिशन की छत पर जा पहुँचा। यह कफ़न आज भी मठ में संरक्षित है।

1637 में, मठ में एक नया पत्थर का कैथेड्रल चर्च बनाया जा रहा था। परिणामस्वरूप, संत की अवशेषों को अस्थायी रूप से गुफाओं के संत एंथनी और थियोडोसियस को समर्पित लकड़ी के चर्च में स्थानांतरित कर दिया गया था। हर्मोजेनेस नाम के एक भिक्षु, वेस्पर्स (सांध्यकालीन प्रार्थना) के बाद नशे में चर्च में गया और संत की अवशेषों के पास ही सो गया। रात में जागने पर, उसे एक अद्भुत दर्शन हुआ। चर्च में उज्ज्वल रोशनी थी; संत आर्सेनियस उठे और अपनी पत्थर की कब्र पर बैठ गए। हरमोगेनेस, भय से ग्रस्त, भागने ही वाला था। लेकिन संत आर्सेनियस ने उसे देखकर सख्त लहजे में कहा:

'हे दुष्ट मनुष्य, तू नशे में धुत होकर ईश्वर के घर में क्यों घुसा?'

हरमोगेनेस मृतप्राय होकर गिर पड़ा। वह काफी देर तक वहीं पड़ा रहा, लेकिन फिर होश में आकर, बड़ी मुश्किल से चर्च के उत्तरी दरवाजों से बाहर निकला, जो अंदर से बंद थे। इसके बाद, वह लंबे समय तक बीमार रहा। लेकिन संत केवल उस मूर्ख व्यक्ति को होश में लाना चाहते थे और उसे उसके दुराचार से मुक्त करना चाहते थे। जब हरमोजेनेस ने सभी के सामने अपने पाप का सच्चे मन से इकरार करके संत से क्षमा मांगी, तो वह संत आर्सेनियस के अवशेषों के सामने अपनी बीमारी से ठीक हो गया।

[2175] बिशप अक्काकियि ने 1522 से 1567 तक ट्वेर के धर्मप्रांत का शासन किया।

ईश्वर के उस पवित्र पुरुष ने अक्सर पीड़ितों पर अपनी अद्भुत सहायता प्रदान की, और उनकी प्रार्थनाओं से बीमार लोग ठीक हो जाते थे। उनके कई चमत्कारों में से, हम निम्नलिखित का उल्लेख करेंगे।

ट्वेर में बसील नामक एक पुजारी का बेटा, गेराسيم नाम का एक युवक रहता था। गेराسيم की शादी के भोज में, उसे पीने के लिए एक जहरीली जड़ी-बूटी मिलाकर शराब दी गई। वह गंभीर रूप से बीमार पड़ गया और वह पहले ही मौत के बारे में सोच रहा था। अपने दुख में, गेराسيم ने निज़्निवार्थ उपचारक – संत आर्सेनियस – की ओर रुख किया और उनकी स्मृति के दिन (2 मार्च) उनकी अवशेषों के पास गए, जहाँ उन्होंने भक्तिपूर्वक प्रार्थना की; और संत ने चमत्कारिक रूप से उस बीमार युवक को ठीक कर दिया।

कई साल बाद, गेराسيم, एक पुरोहित बनकर, मॉस्को में रहने चले गए। उनकी भतीजी, दारिया, जो लंबे समय से आँखों की बीमारी से पीड़ित थी, उनके घर में रहती थी। जैसे-जैसे समय बीतता गया, बीमारी और भी खराब होती गई, यहाँ तक कि दारिया रात में सो भी नहीं पाती थी और लगातार कराहती रहती थी। वह रोशनी में नहीं देख पाती थी। अंततः संत अर्सेनियस के पर्व के दिन, उनके नाम से समर्पित चर्च का पुरोहित पवित्र जल लेकर गेराسيم के घर आया और उससे दारिया की आँखें धोईं। वह तुरंत ठीक हो गई।

जब गेरासिम ने अपनी भतीजी को अच्छे स्वास्थ्य में देखा तो वह बहुत आश्चर्यचकित हुआ। वह पहले ही अपने स्वर्गीय मध्यस्थ के प्रति कृतज्ञ महसूस कर चुका था। उसकी ओर से इस नए दयालुता के कार्य को देखकर, गेरासिम ने अपने घर में संत की एक सेवा और जीवनी करवाने की इच्छा व्यक्त की। हालाँकि, मास्को में संत आर्सेनियस की कोई जीवनी नहीं मिल सकी। गेरासिम के अनुरोध पर, झेल्टिकोवो मठ के आर्चिमंड्राइट ने उन्हें संत का जीवन-चरित्र और कैनन भेजा, और उनसे यह पढ़ने के बाद उन्हें मठ में वापस करने के लिए कहा। गेरासिम ने जल्दबाजी में जीवन-चरित्र की नकल करना शुरू कर दिया। लेकिन उस पर एक विपत्ति आ पड़ी। जब वह अपना काम शुरू करने से पहले प्रार्थना कर रहा था, और जमीन की ओर झुकते हुए, उसकी दाहिनी आँख फर्श से निकले एक कील से टकरा गई। वह बड़ी मुश्किल से खड़ा हो सका और ज़ोर से चिल्लाया:

'हे प्रभु, मुझ पापी पर दया करो!'

उस समय, ज़ेल्टिकोवो मठ के इऑन और थियोफिलिस नामक भिक्षु गेरासिम के घर पर ठहरे हुए थे; वे अपने साथ संत आर्सेनियस की जीवनी लाए थे। गेरासिम की पीड़ा को देखकर, उन्होंने घाव से बह रहे खून को पोंछना शुरू कर दिया और गेरासिम को आर्सेनियस से प्रार्थना करने की सलाह दी। जैसे ही गेराسيم ने संत से अपने ठीक होने की प्रार्थना करनी शुरू की, खून का बहना तुरंत ही रुक गया। तब सभी ने देखा कि गेरासिम ने अपनी पलक और भौंह फाड़ ली थी, लेकिन स्वयं आँख, ईश्वर की कृपा से, सुरक्षित रही। जल्द ही घाव पूरी तरह भर गया, और गेरासिम, कृतज्ञता और भावनाओं से भरे दिल के साथ, उस संत का जीवन लिखना समाप्त कर दिया, जिनकी प्रार्थनाओं से उसे इतनी शीघ्र चिकित्सा मिली थी।

[2176]आर्किमैंड्राइट सव्वती के समय में एक अद्भुत चमत्कार हुआ था। सेंट आर्सेनियस के मठ के पास रहने वाले एक किसान ने अपने खजाने को सुरक्षित रखने के लिए जंगल में गाड़ दिया था। कुछ समय बाद, वह आदमी उस जगह पर लौटा जहाँ उसका पैसा छिपाया गया था और उसे खोजने लगा, लेकिन उसे वह नहीं मिल सका। उस किसान पर गहरा शोक छा गया; वह दुखी होकर रोने लगा। वह खुद को फांसी तक देना चाहता था और उसने एक पेड़ पर फांसी का फंदा भी लटका दिया था। अचानक, एक भव्य रूप वाला व्यक्ति उसके सामने प्रकट हुआ और कहा:

'मेरे बच्चे, तुमने अपने दिल में बुराई क्यों पाल रखी है? तुम अपनी आत्मा का नाश करके खुद को शाश्वत यातनाओं के लिए क्यों दोषी ठहराना चाहते हो?'

किसान भय से कांप उठा: वह रोने लगा। जब उस अद्भुत व्यक्ति ने पूछा कि वह इतनी बुरी तरह क्यों रो रहा है, तो किसान ने कहा कि उसने अपना पैसा छिपाया था और उसे ढूंढ नहीं पा रहा था।

उस पूजनीय व्यक्ति ने अपनी लाठी से ज़मीन पर टकराया और कहा:

'यहीं उस जगह पर तुम्हें वह मिल जाएगा जिसकी तुम तलाश कर रहे हो।'

किसान ने मिट्टी खोदकर अपना खजाना निकाल लिया। यह देखकर चकित हो गया, और प्रकट हुए व्यक्ति का धन्यवाद करने लगा और उससे पूछा:

[2176] साव्वती नाम के दो ज्ञात आर्चिमांड्राइट थे: पहले ने 1566 में पदभार संभाला, जबकि दूसरे का उल्लेख 1650 में मिलता है। यहाँ संदर्भ, बेशक, दूसरे की ओर है।

'आप कहाँ से हैं, आदरणीय पतिाजी, और आपका नाम क्या है, ताकि मैं अपनी मुक्ति और अपना खजाना खोजने के लिए आपका धन्यवाद कर सकूँ!'

'मैं आर्सेनियस हूँ, और मैं अपनी मेहनत से बने एक मठ में रहता हूँ। वहाँ जाओ और ईश्वर का उचित धन्यवाद करो।'

कसिान उस संत के सामने घुटनों के बल गरिने ही वाला था, लेकनि वह उसकी दृष्टि से ओझल हो गया। तब कसिान को एहसास हुआ कि वह पूजनीय व्यक्ति स्वयं संत अर्सेनियस थे; ज़ेल्टकिोवो मठ पहुँचने पर, उसने ईश्वर और उनके संत का धन्यवाद कयिा और अपने साथ हुई सारी बातें बताईं।

[2177]1657 में, संत अर्सेनियस के अवशेष-पात्र पर एक नया चमत्कार हुआ। उस समय, डकिन जॉन ज़ेल्टकिोवो मठ में रहता था। शैतान के उकसावे पर, उसने उस चर्च से चांदी और सोने के वेष्टन चोरी करने की साजशि रची जहाँ संत के अवशेष रखे थे। एक दनि दोपहर में, उसने चर्च के सेवक से चर्च की चाबयिाँ माँगीं, चर्च में प्रवेश कयिा और संत की अवशेष-पेटी के पास रखे सभी चाँदी और सोने के वेषभूषण उठा ले गया। लालच के वश में होकर, वह अवशेषों से चाँदी का pectoral क्रॉस भी लेना चाहता था, जसिे संत ने अपने जीवनकाल में पहना था। अचानक, एक अज्ञात शक्ति ने चोर को पवत्रि अवशेषों से इतनी दूर फेंक दयिा कि वह चर्च के मंच से टकरा गया और बेहोश हो गया। कुछ समय बाद, चर्च में प्रवेश करने वाले भक्षिुओं ने देखा कि जॉन चर्च के बीचों-बीच मृतक की तरह पड़ा था। यह समझते हुए कि क्या हुआ था, उन्होंने उसे चर्च से बाहर ले जाकर ट्वेर में आर्चबशिप जोआसाफ के पास भेज दयिा और उन्होंने जो कुछ भी देखा था, वह सब बता दयिा। जॉन स्वयं बोल नहीं सकता था: वह अपनी जीभ नहीं हलिा पा रहा था और उसका पूरा शरीर लकवाग्रस्त हो गया था। बशिप के आदेश पर, लकवाग्रस्त डीकन को मठ वापस ले जाया गया और फरि चर्च लाया गया। धीरे-धीरे, वह होश में आने लगा और, अंततःपश्चाताप करने के बाद, पूरी तरह से ठीक हो गया।

हमारे प्रभु यीशु मसीह की अनुग्रह से[2178] , मसीह के झुंड के गौरवशाली संत और चरवाहे की पवत्रि अवशेषों से कई अन्य चमत्कार भी हुए। युगों-युगों तक परमेश्वर की महमिा हो। आमीन।

ट्रोपारयिन, स्वर 8:

पुरोहति के रूप में एक धार्मकि जीवन जीने के बाद, आपने अपनी शक्षिा से लोगों को प्रबुद्ध कयिा, और सर्वशुद्ध की कलीसयिा के लिए बहुत परश्रिम कयिा; और, संन्यासयिों के प्रेमी होने के कारण, इसी कारण से आपने मसीह से अपने झुंड का मुकुट प्राप्त कयिा। इसलिए, आपको प्रेरतिकि सहिासन के उत्तराधकिारी और एक महान संत के रूप में सम्मानति करते हुए, हम प्रार्थना करते हैं, हे धन्य, हमें, अपने बच्चों को, मसीह के प्रति अपनी प्रार्थनाओं द्वारा सभी कष्टों से बचाएँ, हे मसीह के संत आर्सेनियस, हमारे पति।

कॉन्टाकयिन, स्वर 8:

हे परम पवत्रि कलीसयिा, हमने आनन्दपूर्वक आपके सम्मानति अवशेष प्राप्त कए हैं, जन्हिें पवत्रि भक्षिुओं और वश्विासयोग्य राजकुमारों की भीड़ ने सम्मानपूर्वक लाया था, और जन्हिें आपने एक अनमोल खजाने के रूप में ग्रहण कयिा। इसलिए, हम भी अब, आपके आध्यात्मकि झुंड के भेड़ें, आपके अवशेष-पात्र के सामने खड़े होकर, प्रेम से आपको पुकारते हैं: अपने बच्चों को न भूलें, पति, जन्हिें आपने बुद्धमिानी से इकट्ठा कयिा और प्रेम कयिा, ताकि हम आपको पुकार सकें: आनंदति हो, संत आर्सेनियस, हमारे चरवाहे और शक्षिक।

[2177] आर्चबशिप जोआसाफ ने 1657 से 1676 तक ट्वेर के धर्मप्रांत का शासन कयिा।

[2178] संत अर्सेनियस की अवशेषों की खोज के बाद, उन्हें एक सफेद पत्थर के मकबरे में रखा गया था जसिे उन्होंने अपने हाथों से तराशा था; बाद में, 1655 में पैट्रआर्क नकिोन के अधीन, उन्हें संत फलिपि के अवशेष-पात्र में स्थानांतरति कर दयिा गया, और इस पर्व दविस के लिए एक प्रार्थना-वधिि रची गई। 1734 में, ट्वेर के नागरकि इवान और मैक्समि यांकोव्स्की तथा वासलिी वोल्चाननिोव ने चमत्कार-कर्ता की अवशेषों के लिए एक चांदी का अवशेष-पात्र बनवाया, जसिमें वे आज तक रखे हुए हैं।

16 मार्च

3 मार्च (पुराने कैलेंडर के अनुसार)

इस दिन हम संत ज़िनोन और ज़ोइलस का स्मरण करते हैं, जो शांतिपूर्वक इस संसार से चल बसे।

उसी दिन, पूजनीय पियाम की स्मृति, जो मिस्र की भूमि में रहने वाली एक कुंवारी थीं और जिनके पास भविष्यवाणी का वरदान था; उनका निधन वर्ष 337 में हुआ।

पवित्र शहीदों यूट्रोपियस, क्लियोनकिस और बेसलिस्किस की शहादत।

3 मार्च को स्मरणोत्सव

[2179]पवित्र महा-शहीद थियोडोर टायरन के दुख-क्लेश और शहादत के बाद, उनके साथी विश्वासी और करीबी दोस्त—यूट्रोपियस, क्लियोनकिस और उनके भतीजे बेसलिस्किस—मसीह के लिए कैद में रहे। पब्लियस, शहर का गवर्नर जिसने संत थियोडोर को यातनाएँ दी थीं, ईश्वर के क्रोध से पहले ही मर चुका था। उनकी जगह पर फ्रीजिया का एक क्रूर और अधर्मी व्यक्ति, एस्क्लेपियोडोटस नामक एक और व्यक्ति को नियुक्त किया गया। उसने ईसाइयों पर बहुत अत्याचार किया, क्योंकि उसे सम्राट मैक्सिमियन से ईसाइयों को मूर्तियों की बलि चढ़ाने के लिए मजबूर करने और अवज्ञा करने वालों को क्रूर यातनाओं में मार डालने का अधिकार मिला था।

एक दिन, जब वह अपने सलाहकारों के साथ एक अदालती सत्र की अध्यक्षता कर रहा था, तो उसने पुस्तकालयाध्यक्ष यूलासियस को बुलाया और उसे पिछले अदालती रिकॉर्ड पढ़ने का आदेश दिया। जब यूलासियस ने थियोडोर टायरन के दुखों के बारे में पढ़ा, तो सभी पवित्र शहीद के धैर्य पर चकित हो गए, और राज्यपाल ने पूछा:

'पुस्तक में उल्लेखित थियोडोर के मित्र कहाँ हैं?'

यूलासियस ने उत्तर दिया:

वे अन्य बंदियों के साथ जेल में बंद हैं।'

जब उन्होंने अपनी दुष्ट देवी जूनो का मंदिर—जिसे देवताओं की माता के रूप में जाना जाता था—देखा, जो टायरोन द्वारा जला दिया गया था, तो राज्यपाल शेर की तरह गरजा और तुरंत सैनिकों को तहखाने में भेजने का आदेश दिया ताकि पवित्र शहीदों यूट्रोपियस, क्लियोनकिस और बेसलिस्किस को उसके सामने लाया जाए।

यूट्रोपियस और क्लियोनकिस जन्म से भाई थे, जो कैपाडोसिया के रहने वाले थे, जबकि सेंट थियोडोर के भतीजे बेसलिस्किस का जन्म अमासिया में हुआ था; फिर भी, आपसी प्रेम के कारण तीनों एक-दूसरे को भाई कहते थे।

कारागार में पहुँचने पर, सैनिकों ने जेलर से कहा:

'थियोडोर के मित्र हमें सौंप दो।'

तब पहरेदार संत लोगों के पास गया और कहा:

'उठो! वह समय आ गया है जिसका तुम दिन-रात बेसब्री से इंतजार कर रहे थे; राज्यपाल तुम्हें बुला रहे हैं। लेकिन मैं तुमसे विनती करता हूँ, अपनी प्रार्थनाओं में मेरा स्मरण करना।'

कारागारपाल ने ऐसा कहा, क्योंकि उसने उन्हें दिन-रात प्रार्थना करते और उनके बीच होने वाले चमत्कारों को देखा था: उनके बीच एक असाधारण प्रकाश चमकता था, और कालकोठरी कई बार अपने आप खुल गई थी। इसीलिए वह यह मानने लगा कि प्रभु उनके साथ थे। गवर्नर के बुलावे पर, संत आनंद से चले गए, जबकि शेष कैदी पवित्र शहीदों की मैत्रीपूर्ण संगति से वंचित होने पर दुखी हुए। फिर संत यूट्रोपियस ने उनसे कहा:

'मेरे मित्रों, रोओ मत, क्योंकि हम फिर मिलेंगे; परन्तु हमारे प्रभु यीशु मसीह से प्रार्थना करो कि वह हमें अपने लिए दुख और मृत्यु प्रदान करे, और यह कि दानवी मूर्तिपूजा समाप्त हो जाए, और संसार परमेश्वर की कृपा से भर जाए।'

इन शब्दों से कैदियों को सांत्वना देने के बाद, संत सैनिकों के साथ बाहर गए। संत यूट्रोपियस ने गाया: *'भाइयों का एकता में एक साथ रहना कितना अच्छा और सुखद है!'* (भजन संहिता 132:1)

और फिर स्वर्ग से एक आवाज़ गूँजी:

[2179] 285 से 310 तक रोमन सम्राट, सम्राट डायोक्लेटियन के सह-शासक।

'मैं तुम्हें तुम्हारे भाइयों से तब तक अलग नहीं करूँगा जब तक तुम सब थियोडोर के पास नहीं पहुँच जाते और दिव्य प्रकाश में रहने वाले महापुरुषों की गोद में विश्राम नहीं करते।'

यूट्रोपियस बहुत सुंदर और बुद्धिमान थे। जब संतों को शासक के सामने लाया गया, तो उसने उनसे पूछा:

'तुम्हारे चेहरे जेल में लंबे समय तक रहने से उदास क्यों नहीं हैं, बल्कि आनंदित हैं, जैसे कि लगातार हर्षोल्लास से?'

धन्य यूट्रोपियस ने उत्तर दिया:

– सचमुच, हे शासक, हमारे मसीह हमें अपनी कृपा से मिलकर सदैव आनंदित करते हैं, और धर्मग्रंथ के वचन हम में पूरे होते हैं: *'प्रसन्न हृदय मुँह को हँसमुख बनाता है'* (नीतिवचन 15:13)

शासक ने पूछा:

– आपका नाम क्या है?

– मेरा पहला नाम,' संत ने उत्तर दिया, 'क्रिश्चियन है, लेकिन मेरे माता-पिता ने मेरा नाम यूट्रोपियस रखा था।'

तब शासक ने स्नेहपूर्वक कहा:

'मैं देखता हूँ कि आप जितने सुंदर हैं, उतने ही सदाचारी भी हैं; मुझे लगता है कि आप बहुत पहले ही इतने बुद्धिमान व्यक्ति बन चुके हैं।'

संत ने उत्तर दिया:

'मैंने आध्यात्मिक ज्ञान अपने प्रभु यीशु मसीह से सीखा है; मैं उसी में अपनी आशा रखता हूँ कि वह मुझे आपके प्रश्नों का बुद्धिमानी से उत्तर देने में मदद करेंगे।'

शासक ने कहा:

'यूट्रोपियस, मेरी बात सुनो, और अपने भाइयों को देवताओं को बलिदान चढ़ाने के लिए राजा की आज्ञा का पालन करने के लिए मनाओ। इसके बदले में, मैं तुम्हारे बारे में राजाओं को लिखूँगा, और वे तुम्हें इस भूमि का राज्यपाल नियुक्त करेंगे, एक राजकुमार के रूप में सम्मानित करेंगे, और तुम्हारे ऊपर अपार धन-संपत्ति की वर्षा करेंगे। तब तुम स्वयं देखोगे कि राजाओं की बात मानना और उनके हुक्मों का पालन करना कितना अच्छा है। लेकिन अगर तुम मेरी बातों से राज़ी नहीं होते हो, तो मैं तुम्हारे शरीर के टुकड़े-टुकड़े कर दूँगा और उन्हें कुत्तों और जंगली जानवरों को खाने के लिए फेंक दूँगा। तुम्हारी हड्डियों का जो कुछ भी बचेगा, उसे मैं आग में जला दूँगा और उसकी राख नदी में बहा दूँगा। यह आशा न करो कि ईसाई तुम्हारे अवशेषों को इकट्ठा करेंगे और उन्हें एक पवित्र अवशेष के रूप में पवित्र तेल से अभिषिक्त करेंगे। इसलिए, समर्पण करो; देवताओं को बलिदान चढ़ाओ, या कम से कम लोगों के सामने घोषणा करो कि तुम समर्पण करते हो और बलिदान चढ़ाना चाहते हो: सभी की निगाहें तुम पर हैं, जो तुम्हारे फैसले का इंतज़ार कर रही हैं। जो लोग उन्हें बलिदान चढ़ाना चाहते हैं, उन्हें देवताओं से न हटाओ, कहीं ऐसा न हो कि तुम खुद को शर्मनाक और क्रूर यातनाओं के अधीन करके अपना नाम कलंकित कर दो।

इस पर यूट्रोपियस ने राज्यपाल से उत्तर दिया:

'अपनी व्यर्थ की बातें बंद करो, शैतान के पुत्र, गेहेन्ना के वारिस! ईश्वर के सेवकों को बहकाना बंद करो, हे ईश्वर के शत्रु, जो अमर आशीर्वादों और स्वर्गीय आनंद से निष्कासित हो गया है, नरक की गहराइयों का शाश्वत कैदी! ऐसे अनुचित शब्द बोलना बंद करो, हे बुराइयों के शिक्षक और नेता, जो अच्छे कर्मों के मार्ग में बाधा डालता है! मैं नहीं जानता कि तुम्हें और क्या कहूँ, हे धूर्त प्रलोभी! तुम मुझे क्षणिक सम्मान और धन का वादा करते हो, जो इस पृथ्वी पर ही रह जाता है। मुझे उस चीज़ से क्या लाभ जो आत्मा को भ्रष्ट करने वाले जुनून को भड़काती है, जिससे घमंड, व्यभिचार, डकैती, हत्या और अन्य अपराध होते हैं? पूर्व राजकुमार पब्लियस, जिसने संत थियोडोर को सताया था, को अपनी क्षणिक महिमा और धन-संपत्ति से क्या लाभ मिला? अब वह पृथ्वी में दफन है, कीड़ों द्वारा खाया जा रहा है, और अनबुझने वाली आग के बीच नरक में पीड़ित है। और ईश्वर का क्रोध जल्द ही तुम पर भी आ पड़ेगा, और तुम भी नष्ट हो जाओगे, हे दुष्ट कानून तोड़ने वाले। तुम मुझे क्रूर यातनाओं, तलवार, आग और जंगली जानवरों से डराते हो, लेकिन ऐसी धमकियों से मुझे डराने या ऐसी यातनाओं के द्वारा मेरे विश्वास से मुँह मोड़ने की आशा मत करो: मेरे परमेश्वर मसीह के लिए दुख सहना मेरी सबसे बड़ी इच्छा है, क्योंकि वही हमारी संपत्ति, सम्मान, शक्ति और महिमा हैं। न तो मैं और न ही मेरे भाई उससे मुँह मोड़ेंगे, बल्कि हम अपने उद्धारकर्ता के लिए दुख सहेंगे: हमारा जीवन उनके हाथ में है; वे अजेय सेनापति हैं जो उन लोगों को उनकी मुसीबतों से बचाते हैं जो उनसे प्रार्थना करते हैं; वे हमें भी आपके हाथों से बचा सकते हैं।

यह सुनकर, राज्यपाल क्रोध से भर गया और संत को चेहरे पर मारने का आदेश दिया, यह कहते हुए:

'अरे नीच! तुझे यहाँ देवताओं को बलिदान चढ़ाने के लिए बुलाया गया है, न कि हमें फटकार लगाने के लिए!'

लेकिन जब उन्होंने संत पर बुरी तरह प्रहार करना शुरू किया, तो प्रहार करने वालों के हाथ सूख गए।

राज्यपाल के आदेश पर, मुकदमे में जो कुछ भी किया और कहा गया था, उसे विस्तार से दर्ज किया गया। और जब लिपिकों ने देखा कि यातना देने वालों के हाथ सूख गए थे, तो वे भय से लिखना बंद कर दिए। हालाँकि, भीड़ में खड़े एक ईसाई ने जो हो रहा था उसे दर्ज किया। राज्यपाल ने शहीद से ये शब्द कहे:

'क्या तुम अंततः अपने जीवन को बचाने के लिए देवताओं की पूजा करोगे, या तुम चाहते हो कि मैं तुम्हें मृत्युदंड दूँ?'

'नहीं,' संत यूट्रोपियस ने उत्तर दिया, 'मैं मूर्खतापूर्ण देवताओं की पूजा नहीं करूँगा। यदि आप इस तरह का व्यवहार करते हैं तो आप स्वयं मूर्ख हैं। लेकिन मैं अपने ईश्वर की पूजा करूँगा और उन्हें बलिदान के रूप में अपनी स्तुति-गीत अर्पित करूँगा।' धन्य दाऊद और उनके द्वारा स्वयं मसीह कहते हैं: *'उनके देवता चाँदी और सोने के हैं, मनुष्यों के हाथों के बनाए हुए। उनके मुँह हैं, पर वे बोलते नहीं; उनकी आँखें हैं, पर वे देखते नहीं'* (भजन संहिता 113:12-13)। और वह इसमें यह जोड़ते हैं: *'जो उन्हें बनाते हैं, और जो उन पर भरोसा करते हैं, वे भी उनके जैसे हों* (भजन संहिता 113:16)। तुम बहरे और अंधे हो; क्या तुम मुझे भी वैसा ही बनाना चाहते हो? लेकिन मैं अपने प्रभु यीशु मसीह से मुंह नहीं मोड़ूंगा।

तब राज्यपाल ने संत क्लेओनिकिस और बेसलिस्किस की ओर मुड़कर कहा:

'और तुम क्या कहते हो: क्या तुम अपने प्राणों को बचाने के लिए देवताओं को बलिदान चढ़ाओगे, या यूट्रोपियस की तरह दृढ़ रहोगे और इस प्रकार उन्हीं यातनाओं को सहोगे?'

संत क्लौनिकिस और बेसलिस्कि ने उत्तर दिया:

'जैसे हमारे भाई और स्वामी यूट्रोपियस यीशु मसीह में विश्वास करते हैं, वैसे ही हम भी परमपिता, पुत्र और पवित्र आत्मा में विश्वास करते हैं। जैसे यूट्रोपियस मसीह के लिए कष्ट सह रहे हैं, वैसे ही हम भी कष्ट सहना चाहते हैं, और शैतान हमें अलग नहीं कर सकता, क्योंकि हम मसीह में पवित्र विश्वास और आपसी प्रेम से एकजुट हैं। जैसे तीन बार घुमाई गई रस्सी नहीं टूटती, वैसे ही हम तीनों अडिग रहेंगे; और जैसे परम पवित्र त्रिमूर्ति अविभाज्य है, वैसे ही हम विश्वास और प्रेम से एकजुट हैं। तो हमें और भी क्रूरता से यातना दो; हम इन यातनाओं को हमारे प्रभु यीशु मसीह की महिमा के लिए सहन करेंगे, जिनके आप शत्रु हैं।

जब उन्होंने यह कहा, तो राज्यपाल ने चार सैनिकों को आदेश दिया कि वे उनमें से प्रत्येक को खींचकर बिछा दें और उन्हें बिना किसी दया के मोटे रस्सियों से पीटें। संतों को इतनी बुरी तरह पीटा गया कि उनके शरीर के खून से सने टुकड़े जमीन पर गिर पड़े। फिर भी उन्होंने इसे साहसपूर्वक सहन किया और ईश्वर से प्रार्थना की। यातना क्रूर थी, लेकिन ईश्वर की मदद से, शहीदों को ऐसा लगा जैसे उन्हें बिल्कुल भी पीड़ा नहीं हो रही थी। संत यूट्रोपियस ने इन शब्दों के साथ प्रार्थना की:

हे सर्वशक्तिमान ईश्वर, हे दयालु और कृपालु! हे प्रभु, हमें तुच्छ न समझो, आप जो धर्मी को बचाते हैं, दुष्टों को होश में लाते हैं, भटकों को सीधा करते हैं, बुद्धिमानों की रक्षा करते हैं और मूर्खों को शिक्षा देते हैं। आपने शैतान को बाँध दिया है और मानवता को मुक्त कर दिया है। आप बेड़ियों में जकड़े लोगों के सहायक, पीड़ितों के रक्षक, भलाई के स्रोत, और हमारी आत्माओं के उद्धारकर्ता हैं। आप कष्ट भेजते हैं और यातनाओं को सहने का साहस प्रदान करते हैं। कृपा करें कि हम भी शहीद के मुकुट के लिए पीड़ा सहन कर सकें। हमारी सहायता के लिए आएं, जैसे आपने अपने सेवक, थियोडोर की मदद की थी। लोगों को शैतान की दुष्टता और आपकी दया दिखाएँ, और अपनी सर्वशक्तिमान सहायता से सभी को यह प्रकट करें कि हम अकेले आपको ही अपने राजा, यीशु मसीह के रूप में सम्मानित करते हैं, और आपको पिता और पवित्र आत्मा के साथ युगानुयुग महिमामय करते हैं।

संत क्लियोनिकिस और बेसलिस्कि ने कहा:

– आमेन।

अचानक एक भयंकर भूकंप आ गया, जिससे पूरा न्यायालय हिल उठा; थके और भयभीत जल्लाद पीछे हट गए, जबकि संत, एक अदृश्य शक्ति द्वारा मुक्त होकर, अक्षुण्ण रहे। और देखो, प्रभु स्वर्गदूतों और संत थियोडोर के साथ उनके पास प्रकट हुए। संत यूट्रोपियस ने प्रभु से कहा:

'महिमा तेरी हो, हे मेरे प्रभु मसीह, कि तूने मेरी प्रार्थना इतनी शीघ्र सुनी; और मैं कौन हूँ कि मेरा प्रभु स्वयं मेरे पास आया है?'

और संत क्लेओनकिस और वासलिस्किा से, संत यूट्रोपयिस ने कहा:

'क्या तुम देखते हो? देखो, हमारे राजा यीशु मसीह थिओडोर के साथ अपनी सारी महमिा में वहाँ खड़े हैं।'

'हाँ, हम देखते हैं,' उन्होंने उत्तर दयिा।

प्रभु के साथ प्रकट हुए संत थयिोडोर ने कहा:

'भाई यूट्रोपयिस! तुम्हारी प्रार्थना सुनी गई है, और उद्धारकर्ता शाश्वत आनंद की शुभ-सूचना के साथ तुम्हारी सहायता के लिए आए हैं।'

प्रभु स्वयं उनसे बोले:

– जब तुम्हें यातनाएँ दी जा रही थीं, तब मैं तुम्हारे सामने खड़ा था, तुम्हारी सहनशक्तिको देख रहा था। चूँकि तुमने बहादुरी से अपनी पहली पीड़ाओं को सहा है, मैं तुम्हारा सहायक रहूँगा जब तक तुम अपना पराक्रम पूरा नहीं कर लेते, और तुम्हारे नाम जीवन की पुस्तक में अंकति कए जाएँगे।

इन शब्दों के बाद, प्रभु संत थयिोडोर के साथ अदृश्य हो गए।

तब उन सैनकिों ने, जन्हिोंने संतों को यातना दी थी, राज्यपाल से वनिती करनी शुरू कर दी:

– हम आपसे वनिती करते हैं, महोदय, हमें इस कार्य से मुक्त कर दें; हम इन लोगों को यातना नहीं दे सकते।

संतों की ओर इशारा करते हुए, राज्यपाल ने कहा:

'ये जादूगर जादू-टोना कर रहे हैं और इस प्रकार सैनकिों के दलिों में डर पैदा कर रहे हैं।'

कई लोगों, जन्हिें उस दैवीय प्रकट होने की एक झलक देखने का सौभाग्य मलिा था, ने उद्घोष कयिा:

'नहीं, यह जादू-टोना या तंत्र-मंत्र नहीं है, बल्कि ईसाई ईश्वर हैं जो अपने सेवकों की मदद कर रहे हैं: अभी-अभी हमने उनके राजा, मसीह को देखा, और एक स्वर्गदूत की आवाज़ सुनी।'

'मैंने कुछ भी नहीं देखा,' राज्यपाल ने कहा, 'और न ही मैंने कोई आवाज़ सुनी।'

संत यूट्रोपयिस ने उनसे ये शब्द कहे:

'तुम यह कहने में सही हो कि तुमने दव्यि प्रकटकिरण नहीं देखा और न ही स्वर्गीय स्वर सुना: तुम अपनी आत्मा की आँखों से नहीं देखते, क्योंकि शैतान ने तुम्हें अंधा कर दयिा है, और यशायाह की भवष्यिवाणी तुम पर पूरी हो रही है: *"उनके कान सुनने के लिए कठोर हैं, और उन्होंने अपनी आँखें बंद कर ली हैं"* (यशायाह 6:10)।

यह सुनकर और यह देखकर कि लोग हंगामा कर रहे थे, राज्यपाल ने संतों को बाँधकर जेल ले जाने का आदेश दयिा। जब संत जेल में दाखलि हुए, तो कैदी बहुत प्रसन्न हुए, जबकि मसीह के शहीदों ने यह भजन गाया: *'हमारी सहायता यहोवा के नाम में है, जसिने आकाश और पृथ्वी को बनाया'* (भजन संहति 123:8)।

उस दनि बाद में, अपने सलाहकारों के साथ भोजन करते हुए, राज्यपाल ने उनसे कहा:

'मुझे नहीं पता कि इन लोगों के बारे में क्या करना चाहिए: इनकी वजह से पूरा शहर अस्त-व्यस्त है। आप क्या सोचते हैं?'

एक सलाहकार ने कहा:

'मैं आपसे वनिती करता हूँ, उन्हें तुरंत मौत की सज़ा दें। यदि आप उनके नष्पिादन में देरी करेंगे, तो पूरा शहर देवताओं से मुँह मोड़कर इन लोगों का अनुसरण कर लेगा। और सबसे बढ़कर, उस बकबकयिा यूट्रोपयिस को इतनी लंबी-चौड़ी बातें करने की अनुमति न दें।'

'मैंने उसे देवताओं की पूजा करने के लिए, वनितयिों और धमकयिों दोनों से कहा है,' राज्यपाल ने कहा, 'लेकनि उसने देवताओं और राजा दोनों की नंदिा की है, और अपनी फटकारों से मुझे नाराज़ कयिा है। लेकनि आइए हम उसे अकेले बुलाएं और वनितयिों से उसे मनाने की कोशशि करें। अगर वह हमारी बात सुनेगा, तो दयालु देवताओं को महमिा मलिेगी; लेकनि अगर नहीं, तो मैं उन्हें मौत की सजा दे दूंगा।'

यह कहकर, उसने युट्रोपयिस को कालकोठरी से अपने पास लाने के लिए सैनकि भेजे। युट्रोपयिस अंदर आया, और भोजन पर बैठे शासक ने उससे कहा:

'क्या आप चाहेंगे कि मैं आपको स्वयं सम्मान के साथ हमारे देवताओं के मंदरि तक ले जाऊँ, ताकि आप उनके लिए बलदिान कर सकें?'

संत यूट्रोपयिस ने उत्तर दयिा:

'जसि प्रकार मेरा प्रभु ईश्वर जीवति है! मसीह के धर्म को त्यागने का मेरा मन में तनकि भी वचिार नहीं है, जो एक अटूट चट्टान पर आधारति है।'

अधकिारयिों ने शहीद को अपने साथ भोजन करने के लएि आमंत्रति कयिा, लेकनि उन्होंने मना कर दयिा। और मेज पर बैठे अन्य लोगों ने उन पर ज़ोर दयिा:

'यूट्रोपयिस, हमारे साथ बैठो, खाओ और पयिो; राज्यपाल के अधीन हो जाओ!'

संत ने उत्तर दयिा:

'नहीं, मैं, मसीह का सेवक, दुष्टों के साथ नहीं बैठूँगा, जैसा कि धन्य भवष्यिवक्ता दाऊद कहते हैं: *"धन्य है वह मनुष्य जो दुष्टों की सभा में नहीं चलता, न पापयिों की सभा में खड़ा होता है"* (भजन संहति 1:1)। और दूसरी जगह: *'मैं कपटी लोगों के साथ नहीं बैठा, और न ही मैं वश्विासघाती लोगों के साथ चलूँगा'* (भजन संहति 25:4)। एक अन्य भवष्यिवक्ता उद्घोषति करते हैं: *'उनके बीच से नकिल आओ और अलग हो जाओ, प्रभु कहते हैं; अशुद्ध वस्तुओं को न छूओ, और मैं तुम्हें ग्रहण करूँगा'* (यशायाह 52:11)।

शासक ने कहा:

'यूटरपयिस, तुम पहले अच्छे चरत्रि वाले थे, लेकनि अब तुम दुष्ट चरत्रि वाले प्रतीत होते हो।'

'मैं दुष्ट नहीं हूँ,' संत ने उत्तर दयिा, 'बल्कि मैं परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करता हूँ। यदि आप सांसारकि राजाओं की आज्ञाओं को पूरा करने का प्रयास करते हैं, तो मैं स्वर्गीय और अमर राजा, जसिकी मैं सेवा करता हूँ, की आज्ञाओं को पूरा करने का और भी अधकि प्रयास करता हूँ।'

गवर्नर संत को मनाने का प्रयास करता रहा:

'तुम्हें अकेले, अपने भाइयों के बनिा, कल देवताओं को बलदिान चढ़ाना है, ताकि लोग यह देखकर यह मान लें कि उन्हें देवताओं से मुँह न मोड़ना चाहिए, बल्कि बलदिान चढ़ाकर उनका सम्मान करना चाहिए।'

संत यूट्रोपयिस ने मना कर दयिा:

'हे दुष्ट मनुष्य! क्या तू मुझे मसीह के झुंड का भटकाने वाला बनाना चाहता है? नहीं, ऐसा कभी नहीं होगा, क्योंकि मेरे प्रभु कहते हैं: *"और जो कोई इन छोटे बच्चों में से एक को जो मुझ पर वश्विास करते हैं, ठोकर खलिाता है, तो उसके लिए यह भला होगा कि उसके गले में चक्की का पाट लटका दयिा जाए और वह समुद्र की गहराई में डूब जाए।"* (मत्ती 18:6)। और दूसरी जगह उन्होंने कहा है: *'तुम परमेश्वर और धन-दौलत दोनों की सेवा नहीं कर सकते'* (मत्ती 6:24) और *'प्रकाश का अंधकार के साथ क्या मेल है? परमेश्वर के मंदरि और मूरतयिों का क्या समझौता है?'* (2 कुरन्थियिों 6:14, 16)।

[2180]यह सुनकर, राज्यपाल ने सोना, वभिन्नि कीमती वस्त्र और 150 लीटर चाँदी लाने का आदेश दयिा, और कहा:

'मैं तुम्हें यह सब और इससे भी अधकि दूँगा, बस कल लोगों से कह देना कि तुम राज्यपाल के सामने झुक गए हो, और फरि अपने ईश्वर से जतिनी चाहो प्रार्थना करना।'

'हे दुष्ट प्रलोभक!' संत यूट्रोपयिस ने कहा। 'नहीं, तुम परमेश्वर के दास को प्रलोभति नहीं करोगे!' मुझे धर्मग्रंथ के वचन स्पष्ट रूप से याद हैं: *'एक मनुष्य को सारी दुनयिा प्राप्त करने से क्या लाभ, यदि वह अपनी आत्मा खो दे? या एक मनुष्य अपनी आत्मा के बदले में क्या दे सकता है?'* (मत्ती 16:26)। जैसे तुम्हारे भाई यहूदा ने, जो चाँदी से प्रेम करता था, अपनी आत्मा को नष्ट कर दयिा, वैसे ही तुम भी उसके साथ नाश हो जाओगे। लेकनि तुम हमें मारने में देरी क्यों कर रहे हो? यह जान लो: कुछ भी हमें मसीह के प्रति अपने प्रेम से दूर नहीं कर सकता। राज्यपाल ने उसके साथ लंबी बहस की, लेकनि शहीद ने न केवल उसकी आज्ञा मानने से इनकार कर दयिा, बल्कि उसे और भी अधकि फटकारा और देवताओं का अपमान कयिा। रात के बारह बज चुके थे; सोने का समय हो गया था, और राज्यपाल ने अपने सेवकों से कहा:

'यूट्रोपयिस को कालकोठरी में ले जाओ और उसे और उसके साथयिों को वहाँ बाँध दो। यह स्पष्ट है कि दुष्ट कभी नहीं बदलेंगे, और उनसे कोई भलाई की उम्मीद नहीं की जा सकती।'

जैसे ही वह जा रहा था, संत ने राज्यपाल से कहा:

[2180] *एक लीटर* (ग्रीक: λιτρα, लैटनि: *libra*) रूसी पाउंड के 2/3 के बराबर होता है। परणिामस्वरूप, 150 लीटर चांदी का वजन 100 पाउंड चांदी के बराबर होता है, या, चांदी की वर्तमान कीमत पर, लगभग 2,200 रूबल। (150 लीटर = 49 कग्रि 117.5 ग्राम – 'अज़बुका वेर' संपादकीय टीम)

'हे छल का बगीचे, जो धार्मिकता का कोई फल नहीं देता, तू जल्द ही नष्ट हो जाएगा और आग में फेंका जाएगा। तू बांझ भूमि है, जो गेहूं नहीं बल्कि खरपतवार उगाती है! शैतान ने तेरी आत्मा पर कब्ज़ा कर लिया है और उसमें बुराई के बीज बो दिए हैं।'

यह कहकर वे चले गए। जब वे कालकोठरी में पहुँचे, तो उन्होंने संत क्लियोनिकिस और बैसलिस्क को भक्तिपूर्वक प्रार्थना करते हुए पाया: वे पूरी रात उनके लिए प्रार्थना कर रहे थे।

अगली सुबह, राज्यपाल देवताओं को सार्वजनिक बलिदान चढ़ाना चाहता था और उसने नगर-घोषकों को सड़कों पर यह चिल्लाने का आदेश दिया कि सभी लोग अपनी-अपनी भेंटों के साथ आर्टेमिस के मंदिर में इकट्ठा हों। जब लोग वहाँ इकट्ठा हो गए और राज्यपाल पहुँचा, तो पवित्र शहीदों यूट्रोपियस, क्लियोनिकिस और बेसलिस्किस को उसके आदेश पर उसके सामने लाया गया। सभी ने मूर्तियों की पूजा की और बलिदान चढ़ाए—कुछ ने धूप, तो कुछ ने जानवर।

'यूट्रोपियस,' राज्यपाल ने कहा, 'अपने भाइयों के साथ जाओ और देवताओं को बलिदान चढ़ाओ, नहीं तो तुम्हारी भयानक मृत्यु होगी।'

संत यूट्रोपियस और उनके साथियों ने कहना शुरू किया:

'हे प्रभु, सर्वशक्तिमान परमेश्वर, शाश्वत, अछूते, परम पवित्र, अपरिवर्तनीय, स्वर्ग में वास करने वाले, पृथ्वी पर महिमामय! आपने स्वर्गों की स्थापना की, पृथ्वी को उसकी नींव पर स्थापित किया, पहाड़ों को उनकी जगह पर रखा, अनगिनत तारों की गिनती की और उन सभी को उनके नाम दिए; आपने अद्भुत ढंग से हम पर अपना प्रकाश डाला। तूने एक बार तीन पवित्र युवकों को बेबीलोन की भट्टी से बचाया, संत दानियेल को सिंह के बिल से बचाया, अपनी दासी सुसन्ना को मृत्यु से बचाया, संत थेक्ला को आग और जंगली जानवरों से बचाया, और संत थियोडोर के दुखों के समय में उनके साथ खड़ा रहा। हमारे साथ भी रहो, और, इस स्थान पर आकर, अपनी शक्ति दिखाओ और सभी विधर्मी पागलपन को नष्ट कर दो। यह अनुग्रह करो कि इस स्थान पर मसीही तुम्हें, सच्चे परमेश्वर को, निर्मल बलिदान अर्पित कर सकें, क्योंकि तुम हमारे प्रभु यीशु मसीह के पिता हो। महिमा हो तुझको, तेरे एकलौते पुत्र को और तेरे पवित्र आत्मा को, अब और सदा और युगानुयुग। आमीन।

जब संतों ने ये शब्द कहे, तो गरज हुई और पृथ्वी काँप उठी, जिससे मंदिर हिल गया, और राज्यपाल, वहाँ मौजूद सभी लोगों के साथ, अपनी जान बचाने के डर से मंदिर से भाग गए। आर्टेमिस की मूर्ति गिरकर टुकड़े-टुकड़े हो गई। भूकंप के कोलाहल के बीच, ऊपर से एक आवाज सुनाई दी:

'तुम्हारी प्रार्थना सुनी गई है, और इस स्थान पर मसीहियों के लिए प्रार्थना का एक घर होगा।'

संतों ने प्रभु में आनंद मनाया।

जब भूकंप थम गया और सभी अपने डर से धीरे-धीरे उबर गए, तो राज्यपाल ने न्यायपीठ पर अपनी सीट ली और संतों पर क्रोध से दाँत पीसते हुए आदेश दिया कि गंधक और पिच लाया जाए, तीन कड़ाहियों में पिघलाया जाए, और संतों के शरीर पर डाला जाए। गवर्नर ने यह भी आदेश दिया कि जमीन में मजबूत खंभे गाड़े जाएँ, संतों को नग्न अवस्था में उनके बीच खड़ा किया जाए, और उन्हें सूली पर चढ़ाया जाए, उनके हाथ अलग-अलग खंभों से बांध दिए जाएँ। जब यह किया गया और कड़ाहियों में पिच जोर-जोर से उबलने लगी, तो संत क्लेओनिकिस ने संत यूट्रोपियस की ओर मुड़कर कहा:

'भाई, आइए हम प्रभु से प्रार्थना करें; हमारे सामने महान पीड़ा है।'

संतों ने प्रार्थना करना शुरू कर दिया:

'हे प्रभु यीशु मसीह, हमारी सहायता करो और अपनी शक्ति दिखाओ: हम कमजोर हैं; हमें इन यातनाओं को सहने के लिए बल दो।'

सेवकों ने गंधक और पिच से उबलते हुए बर्तन लाए, जिन्हें उन्होंने लोहे की चिमटियों से पकड़ा हुआ था। धन्य यूट्रोपियस ने सेवकों से कहा:

'प्रभु तुम्हारे कर्म तुम्हारे विरुद्ध कर दे।'

अचानक, ईश्वर की शक्ति से, शहीदों ने खंभों से अपने हाथ खोल लिए, उबलते हुए बर्तन अपने हाथों में ले लिए और एक-दूसरे की पीठ पर तारकोल डाल दिया। उनके शरीरों से बहकर, तारकोल संगमरमर के फर्श पर पानी की तरह फैल गया, नौकरों तक पहुँचा और उन्हें हड्डी तक झुलसा गया। यह देखकर, राज्यपाल भयभीत हो गया, लेकिन उसने इसे ईसाइयों की जादू-टोने का परिणाम माना। उसने अन्य सेवकों को आदेश दिया कि वे लोहे के पंजे से संतों के शरीर को नोचें,

और उनके घावों पर सरिका मलि हुआ सरसों और नमक डालें। संतों ने यह सब बहादुरी से सहन कयि। अपनी यातनाओं के बीच, संत यूट्रोपयिस ने राज्यपाल से कहा:

'हे ईश्वर-वरिोधी नीच, जो ईश्वर की महमिा से घृणति है! और भी अधकि यातनाएँ सोच, ताकि हम अधकि कष्ट सहकर शहीद का मुकुट और भी अधकि महमिा से प्राप्त कर सकें।'

इन शब्दों से क्रोधति होकर, यातना देने वाले ने अपने सेवकों को संतों को और भी कठोर यातना देने का आदेश दयि, जबकि उन्होंने कहा:

'हे अत्यंत दुष्ट, हमें जल्द से जल्द खत्म करने की पूरी कोशशि कर; हम तरस रहे हैं कि तुमसे छुटकारा पाकर हम अपने प्रभु यीशु मसीह का मुख दर्शन कर सकें।'

संतों को बहुत देर तक यातनाएँ दी गईं, और केवल सूर्यास्त के समय राज्यपाल ने उन्हें वापस कालकोठरी में फेंकने और बेड़ियों में जकड़ने का आदेश दयि। कालकोठरी में संत इस प्रकार प्रार्थना करने लगे:

'हे प्रभु परमेश्वर! जब तक हम अपने सभी दुखों को सहन नहीं कर लेते और अपने यातना देने वाले से मुक्त होकर उस शांतपिूर्ण आश्रय तक नहीं पहुँच जाते जहाँ न बीमारी है, न दुख, न शोक, न ही आहें, तब तक हमें न छोड़ना।'

जब वे इस प्रकार प्रार्थना कर रहे थे, आधी रात को प्रभु प्रकट हुए और उनसे कहा:

'मैं तुमसे सच कहता हूँ: चूंकि तुम मेरे लिए अपनी मृत्यु को प्राप्त करने जा रहे हो, तुम संतों के साथ मुझसे अनंत जीवन प्राप्त करोगे।'

प्रभु के आगमन से सांत्वना पाकर, शहीदों का वश्विास और दृढ़ हो गया।

सुबह, राज्यपाल ने फरि से अदालत में अपनी सीट संभाली और संतों को बुलाकर कहा:

'तो फरि? क्या तुमने देवताओं की पूजा करने और उन्हें बलदिान चढ़ाने का नर्णिय लयि है, या तुम एक भयानक मृत्यु मरना चाहते हो?'

संत यूट्रोपयिस ने उत्तर दयि:

'क्या तुमने हमसे यह नहीं सुना, हे अंधकारमय, नेत्रहीन और कठोर वनिाशक, कि हम तुम्हारे देवताओं—उन बहरे और गूंगे राक्षसों—की पूजा नहीं करेंगे, न ही उन्हें बलदिान चढ़ाएंगे?!'

यह सुनकर, राज्यपाल ने संत यूट्रोपयिस और क्लेओनकिस को सूली पर चढ़ाने की सज़ा सुनाई, और नम्निलखिति फरमान जारी कयि:

'यूट्रोपयिस, जो मागी का शक्षिक है, और दूसरा मागी, क्लयिोनकिस, जन्होंने शाश्वत राजाओं की आज्ञाओं की अवज्ञा की है, लेकनि ईसाई धर्म का प्रचार करते हैं, उन्हें सबसे सम्मानति अदालत के नर्णिय द्वारा सूली पर चढ़ाया जाएगा। जहाँ तक बेसलिस्कि की बात है, उसे अन्य कैदयिों के साथ कैद कयि जाएगा।'

यह सुनकर, संत वासलिस्कि ने शासक से पुकारा:

– मुझे भी मृत्युदंड दो; मैं अपने दोस्तों से अलग नहीं होना चाहता, बल्कि उनके साथ हमारे ईश्वर मसीह के सामने खड़े होने की लालसा रखता हूँ।

'नहीं,' राज्यपाल ने कहा, 'देवताओं ने मुझे ऐसा प्रेरति कयि है: तुमने एक-दूसरे को न छोड़ने का व्रत लयि है; लेकनि मैं तुम सबको एक साथ मौत की सज़ा नहीं दूँगा, कहीं ऐसा न हो कि तुम्हारा व्रत टूट जाए और तुम्हारी इच्छा अधूरी रह जाए।'

'सचमुच,' यूट्रोपयिस ने कहा, 'तुम कसिी भी जानवर से अधकि क्रूर हो, सभी प्राणयिों में सबसे नर्दियी! तुम उस समूह को अलग कर रहे हो जो वश्विास और प्रेम में अवभिाज्य है। लेकनि जल्द ही ईश्वर तुमसे बदला लेगा; ईश्वर की कृपा के फूल खलिेंगे और ईश्वर की कलीसयिाओं के लिए फल देंगे।'

इन शब्दों के बाद, संत यूट्रोपयिस को संत क्लयिोनकिस के साथ शहर से बाहर उस स्थान पर ले जाया गया जहाँ क्रॉस खड़े थे। पूरा शहर उनके पीछे चल पड़ा: न केवल ईसाई, बल्कि मूर्तपिूजक भी। अपने क्रॉस को देखकर, पवत्रि शहीदों ने कहा:

– हे प्रभु हमारे परमेश्वर, यीशु मसीह! हम आपको क्रूस पर मरने के योग्य बनाने के लिए स्तुति और धन्यवाद देते हैं, जैसे आपने स्वेच्छा से दुख सहे। हमें धार्मकिता का मुकुट प्रदान करें, ताकि आपके साथ दुख सहकर, हम आपके राज्य में महमिामय हो सकें। हम पवत्रि कलीसयिा के लिए प्रार्थना करते हैं; जो आपके सेवकों के वरिुद्ध उठते हैं उन्हें वश में करें और ईसाई लोगों को शांति प्रदान करें।

जब यह प्रार्थना कही जा रही थी, तो सैनकिों ने शहीदों को सूली पर ठोक दयिा। और फरि स्वर्ग से एक आवाज़ सुनाई दी, जो संतों को शाश्वत वशि्राम के लिए बुला रही थी। संत यूट्रोपयिस और क्लयिोनकिस ने इस प्रार्थना के साथ अपनी आत्माएँ प्रभु को सौंप दीं: 'हे प्रभु, हम अपनी आत्माएँ तेरे हाथों में सौंपते हैं।'

इस प्रकार वे मार्च के तीसरे दनि परलोक सधिार गए। आमसयिा शहर के दो धर्मनष्ठि पुरुष, कोइंट और वेलोनकि, ने राज्यपाल से शहीदों के शरीर ले जाने की अनुमतमिांगी। राज्यपाल ने उनकी मांग से इनकार नहीं कयिा। फरि वेलोनकि ने संत यूट्रोपयिस के शरीर को लयिा और उसे मूर के तेल से अभसिचिति करके, शहर से 18 स्टेडयिम[2181] की दूरी पर स्थति अपने गांव में सम्मान के साथ दफना दयिा। कोइंट ने क्लेओनकिस के शरीर को लयिा और उसे कमि गाँव में समान सम्मान के साथ दफनाया। इन स्थानों पर, शहीदों की कब्रों के पास, ईश्वर की महमिा के लिए कई चमत्कार हुए।

संत बैसलिस्कि, जो जेल में रहे, उन्हें आने वाले लंबे समय तक बेड़यिों में जकड़कर रखा गया। गवर्नर एस्कलेपयिोडोतस की मृत्यु हो गई; उनके उत्तराधकिारी अग्रप्पिा के अधीन, संत बैसलिस्कि का 22 मई को सरि कलम कर दयिा गया। इस दनि उनकी स्मृतहिमारे ईश्वर, मसीह की महमिा के लिए सम्मानति की जाती है, जो पता और पवत्रि आत्मा के साथ युगानुयुग महमिामय हैं। आमेन।

- उसी दनि, संतों ज़निोन और ज़ोइलस की स्मृत,ि जनि्होंने शांतपूर्वक इस जीवन से वदिा ली।
- उसी दनि, पूजनीय कुंवारी पयिाम्मा की स्मृतमिनाई जाती है, जो मस्रि की भूमि में रहती थीं और जनिके पास दूरदर्शता का वरदान था; उनकी मृत्यु वर्ष 337 में हुई।

17 मार्च

4 मार्च (पुराना तरीका)

इस दनि, साइप्रस द्वीप पर कॉन्स्टेंस शहर के बशिप, संत ग्रेगरी की स्मृत,ि जो शांतपूर्वक नधिन हो गए।
इस दनि, वर्ष 1303 में, मास्को के पवत्रि और धर्मी राजकुमार डेनयिल अलेक्ज़ेंड्रोवचि का नधिन हुआ।
इसी दनि, वर्ष 1238 में तातारों द्वारा रस्तोव के धन्य राजकुमार वासलिी (वासलि्को) कॉन्स्टेंटनिोवचि की हत्या।

हमारे पूजनीय पता गेरासमिस का जीवन, जो यॉर्डन नदी के कनिारे रहते थे।

4 मार्च को स्मरणोत्सव

महान तपस्वी, आदरणीय गेरासमिस, लसियिा[2182] के मूल नविासी थे। उन्होंने अपने युवा काल से ही ईश्वर के भय में स्वयं को प्रशक्षिति कयिा और, मठवासी व्रत ग्रहण करने के बाद, थेबाइड के मस्रि क्षेत्र के गहरे रेगस्तिान में चले गए। वहाँ कुछ समय तक धार्मकि कृत्यों में बतिाने के बाद, वे एक बार फरि से लसियिा में अपने स्वदेश लौट आए। फरि वे थयिोडोसयिस द यंगर के शासनकाल के अंत के आसपास[2183] फलिस्तीन आए और जॉर्डन के रेगस्तिान में बस गए, जहाँ उन्होंने अपने पुण्य जीवन से एक उज्ज्वल तारे की तरह चमक बखिेरी। वहाँ, जॉर्डन नदी के कनिारे, उन्होंने एक मठ की स्थापना की। पैलेस्टाइन में अपने प्रवास के दौरान, मार्सयिन और पुलकेरयिा के शासनकाल में, पवत्रि पताओं का चौथा सार्वभौमकि परषिद काल्सेडन में अलेक्ज़ेंड्रयिा के पैट्रआर्क, धर्मद्रोही डयिोस्कोरस, और आर्चमैंड्राइट यूटकिस के खलिाफ आयोजति कयिा गया था, जनि्होंने यह सखिाया था कमिसीह में केवल एक ही स्वभाव है—दव्यि; पवत्रि पताओं ने उन्हें नंदिा कयिा। बाद में, कुछ वधिर्मी सामने आए जनि्होंने परषिद का अपमान कयिा और दावा कयिा कउिसमें सच्चे

[2181] *एक स्टेडयिम* (στάδιον), लंबाई की एक ग्रीक इकाई, लगभग 74 साज़ेन के बराबर होती है। परणिामस्वरूप, 18 स्टेडयिम 2.5 वर्स्ट से थोड़ा अधकि हैं। (एक एटकि स्टेडयिम 177.6 मीटर, एक ओलंपकि स्टेडयिम 192.27 मीटर *है– 'अज़बुका वेरी' संपादकीय टीम*)

[2182] लसियिा एशयिा माइनर के दक्षणिी भाग में स्थति एक क्षेत्र था।

[2183] थेओडोसयिस द्वतीय, जनि्हें उनकी जीवनी में 'युवा' कहा गया है, थेओडोसयिस महान के पोते थे। उनका जन्म वर्ष 400 में हुआ था और, 408 में, उन्होंने अपने पता आर्कैडयिस के उत्तराधकिारी के रूप में पूर्वी रोमन साम्राज्य पर शासन कयिा। कठोर धार्मकिता में पले-बढ़े थयिोडोसयिस ने साम्राज्य में मूरतपूिजा के अंतमि अवशेषों को मटिाने का प्रयास कयिा। उनकी मृत्यु 450 में हुई।

धर्म के सद्धिांतों को खारजि कर दयिा गया था और नेस्टोरयिस की शक्षिाओं को बहाल कर दयिा गया था[2184] । ऐसा ही एक वधिर्मी थयिोडोसयिस नाम का एक भक्षिु था, जो यूटकिसि के वधिर्म से प्रभावति था। यरूशलेम पहुँचने पर, उसने पूरे फलिस्तीन को अराजकता में डाल दयिा, और न केवल आम लोगों को बल्कि कई संतों और उस समय यरूशलेम में रह रही सम्राट थयिोडोसयिस द यंगर की वधिवा रानी यूडोक्सयिा को भी धोखा दयिा। उसे और कई फलिस्तीनी संतों की मदद से, जन्हिें उसने गुमराह कयिा था, उसने यरूशलेम के धन्य जुवेनाल को सहिासन से हटा दयिा और स्वयं सहिासन पर बैठ गया। जो लोग सच्चे धर्म के प्रतवि फादार रहे, उन्हें झूठे पैट्रआर्क थयिोडोसयिस के हाथों बहुत कष्ट झेलना पड़ा और वे रेगस्तिान की गहराइयों में भाग गए। सबसे पहले पीछे हटने वाले परम पूज्य यूथमीयस महान थे; अन्य पवत्रि पतिाओं ने उनके पदचन्हिों का अनुसरण कयिा। उस समय, ईश्वर की अनुमतसि, परम पूज्य गेरासमिस को भी गुमराह कर दयिा गया था, लेकनि उन्होंने जल्द ही पश्चाताप कर लयिा, जैसा कयिरूशलेम के सरिलि अपनी संजीवनी में लखिते हैं[2185] । वे कहते हैं कि उस समय जॉर्डन के रेगस्तिान में एक नश्चिति तपस्वी था, जो हाल ही में लसियिा से आया था, जसिका नाम गेरासमिस था। उन्होंने मठवासी जीवन के सभी नयिमों का पालन कयिा था और अशुद्ध आत्मा के खलिाफ बहादुरी से लड़ाई लड़ी थी; लेकनि, अदृश्य राक्षसों को हराने और भगाने के दौरान, वे दृश्यमान राक्षसों - अर्थातपंथयिों - द्वारा बहकाए गए और यूटचिैस के अर्थदोष में पड़ गए। उस समय, यूथमियिस के पुण्य जीवन की ख्यातदिूर-दूर तक फैल चुकी थी। यही थे जनिके पास पूजनीय गेरासमिस गए, रूवा नामक रेगस्तिान में, और वहाँ लंबे समय तक रहे। संत की शक्षिाओं और उपदेशों की मठिास से पोषति होकर, उन्होंने वधिर्मीयों की झूठी शक्षिाओं को अस्वीकार कर दयिा, सच्चे धर्म की ओर मुड़ गए, और अपनी गलती पर कड़वे आँसू बहाकर पश्चाताप कयिा। सरिील ऐसा ही वर्णन करते हैं। अंत में, परम पावन ज्यूवेनाल ने एक बार फरि से पैट्रआर्कल सहिासन पर अपना स्थान ग्रहण कयिा: धर्मपरायण राजा मार्सयिन ने झूठे पैट्रआर्क थयिोडोसयिस को गरिफ्तार करने के लिए लोग भेजे, ताकि उसे अपने कर्मों के लिए मुकदमे का सामना कराया जा सके। लेकनि यह जानकर कि थयिोडोसयिस को पता चल गया है, वह सनिाई पर्वत पर भाग गया और बनिा कसिी सुराग के गायब हो गया। इस प्रकार, यरूशलेम और पूरे फलिस्तीन में सच्चा धर्म एक बार फरि से चमका, और जो कई लोग वधिर्म में भटक गए थे, वे धर्मपरायणता में लौट आए। इसी तरह, रानी यूडोक्सयिा ने अपनी गलती को समझते हुए ऑर्थोडॉक्स चर्च के साथ फरि से मलिन कर लयिा।

आदरणीय गेरासमिस का मठ पवत्रि शहर यरूशलेम से 35 स्टेडयिम और नदी यॉर्डन से एक स्टेडयिम दूर स्थति था। यहाँ वे नए आगमन वालों को स्वीकार करते थे, जबकि जन्हिोंने पहले ही अपनी परीक्षाएँ दे ली थीं, उन्हें उन्होंने रेगस्तिान में संन्यासयिों की कोठरयिाँ प्रदान कीं। कुल मलिाकर, उनके पास कम से कम 70 रेगस्तिानवासी थे, जनिके लिए पूजनीय गेरासमिस ने नम्निलखिति नयिम स्थापति कयिा। सप्ताह में पाँच दनि, प्रत्येक भक्षिु अपने एकांत कोठरी में मौन में बतिाता था, कसिी न कसिी प्रकार के काम में लगा रहता था, और मठ से लाई गई थोड़ी सी सूखी रोटी, पानी और जड़याँ खाता था। इन पाँच दनिों के दौरान, कुछ भी पकाया हुआ खाने पर प्रतबिंध था, और आग जलाने की भी अनुमतनिहीं थी, ताकि भोजन पकाने का कोई वचिार भी न आए। शनविार और रवविार को, सभी मठ में आते थे, दव्यि लटिर्जी के लिए चर्च में इकट्ठा होते थे और मसीह के परम शुद्ध और जीवन-दायक रहस्यों को ग्रहण करते थे; इसके बाद, भोजन के समय, वे ईश्वर की महमिा के लिए पका हुआ भोजन और थोड़ी सी शराब पीते थे, और पाँच दनिों के दौरान उन्होंने जो काम पूरा कयिा था, उसे मठाधीश को प्रस्तुत करते थे। रवविार दोपहर को, सभी एक बार फरि से रेगस्तिान में अपने एकांत कोशों में चले जाते थे, अपने साथ थोड़ी सी रोटी, कुछ जड़ें, एक पात्र पानी और टोकरी बुनने के लिए खजूर की टहनयिाँ लेते हुए। वे सांसारकि संपत्तसि इतने वरिक्त और गरीब थे कि उनमें से कसिी के पास एक घसिा-पटिा वस्त्र, सोने के लिए एक चटाई और पानी का एक छोटा पात्र छोड़कर और कुछ भी नहीं था। मठाधीश ने तो उन्हें अपनी कोठरी से बाहर जाते समय दरवाजा बंद करने तक मना कर दयिा था, ताकि कोई भी आकर इन मामूली संपत्तयिों में से जो चाहे स्वतंत्र रूप से ले सके। और इस प्रकार वे 'एक हृदय और एक आत्मा' के प्रेरति नयिम के अनुसार रहते थे, और कोई भी कसिी भी चीज़ को अपना

[2184] कॉन्स्टेंटनिोपल के बशिप *नेस्टोरयिस* ने यह सखिाया कि यीशु मसीह सच्चे ईश्वर नहीं थे, बल्कि केवल एक मनुष्य, जोसेफ और मरयिम के पुत्र थे, जन्हिें उनके पवत्रि जीवन के कारण ईश्वर से एक वशिष अनुग्रह प्राप्त हुआ था। नेस्टोरयिस की शक्षिा के अनुसार, यीशु मसीह हमें उनके उद्धारकारी पुण्यों के द्वारा नहीं, बल्कि एक अच्छे जीवन के उदाहरण के द्वारा बचाते हैं। नेस्टोरयिस की शक्षिा को 431 में आयोजति तीसरे सार्वभौमकि परषिद में नंदिा कयिा गया था।

[2185] 315 से 386 तक यरूशलेम के बशिप, यानी आदरणीय गेरासमिस की सेवा से पहले। हगीओग्राफी में, लेखक की पहचान गलती से की गई प्रतीत होती है; शायद इसे अलेक्जेंड्रयिा का सरिलि (412 से 444 तक आर्चबशिप) होना चाहिए, जन्हिोंने वधिर्मयिों के खलिाफ बड़े पैमाने पर लखिा था।

नहीं कहता था, बल्कि सब कुछ साझा था। कहा जाता है कि कुछ संन्यासियों ने आदरणीय गेरासमिस से पढ़ने के लिए रात में मोमबत्ती जलाने, या ज़रूरत पड़ने पर पानी गर्म करने के लिए आग जलाने की अनुमति मांगी। लेकिन संत गेरासमिस ने उनसे उत्तर दिया:

'यदि तुम रेगिस्तान में आग चाहते हो, तो आओ और नए भर्ती हुए लोगों के साथ मठ में रहो: जब तक मैं जीवित हूँ, मैं रेगिस्तानवासियों को आग रखने की कभी अनुमति नहीं दूँगा!'

यरिहो के नगरवासियों ने, संत गेरासमिस के मार्गदर्शन में इतनी कठोर तपस्या के बारे में सुनकर, यह नियम बना लिया कि वे हर शनिवार और रविवार को पूजनीय संत के मठ में आएँ और प्रचुर मात्रा में भोजन, शराब और मठ के लिए आवश्यक सभी चीजें लाएँ।

आदरणीय गेरासमिस ने अपने उपवासों का पालन इतना कठोरता से किया कि पवित्र और महान लेंट के दौरान उन्होंने ब्राइट संडे तक बिल्कुल कुछ भी ग्रहण नहीं किया, और अपनी शारीरिक तथा आध्यात्मिक शक्ति केवल दैवीय रहस्यों के सेवन से बनाए रखी। धन्य सिरिआकस ने भी इस धर्मनिष्ठ गुरु के मार्गदर्शन में तपस्या का अभ्यास किया, जैसा कि उनकी जीवनी में दर्ज है: अपने पास आए सिरीकस का हार्दिक स्वागत करने और उसमें ईश्वर की महिमा को पहचानने के बाद, पूजनीय यूथिमियस ने स्वयं उन्हें मठवासी वस्त्र पहनाए और उन्हें जॉर्डन नदी पर संत गेरासमिस के पास भेज दिया। संत गेरासमिस ने, सिरीकस की युवावस्था को देखकर, उन्हें मठ में रहने और अपने कर्तव्यों का पालन करने का निर्देश दिया। कोई भी कार्य करने के लिए उत्सुक, सिरिकस पूरे दिन मठ के कार्यों में लगे रहते थे, जबकि पूरी रात प्रार्थना में खड़े रहते थे, और कभी-कभी खुद को केवल थोड़ी देर की नींद की अनुमति देते थे। उन्होंने खुद पर उपवास लगाया और हर दो दिन में केवल रोटी और पानी खाते थे। किरिकियस में उसकी कोमल आयु के बावजूद ऐसी आत्म-अनुशासन देखकर, पूजनीय गेरासमिस आश्चर्यचकित हो गए और उन्हें पसंद करने लगे। संत गेरासमिस की आदत थी कि वे लेंट के दौरान रेगिस्तान के सबसे दूरस्थ हिस्से, जिसे रूवा कहा जाता था, में एकांतवास करते थे, जहाँ पूजनीय यूथिमियस एक बार रहते थे; धन्य सिरिआकस को उनके महान संयम के लिए प्यार करते हुए, उन्होंने उन्हें अपने साथ ले लिया, और वहाँ सिरिआकस ने हर हफ्ते संत गेरासमिस के हाथों से पवित्र Communion प्राप्त की, पाम संडे तक मौन में रहे, और महान आध्यात्मिक लाभ प्राप्त करके मठ लौट आए।

कुछ समय बाद, हमारे पूजनीय पिता यूथिमियस का निधन हो गया, और संत गेरासमिस को उनकी मृत्यु की खबर उनकी कोठरी में रहते हुए ही मिली: उन्होंने देखा कि कैसे परमेश्वर के स्वर्गदूत पूजनीय यूथिमियस की आत्मा को आनंदपूर्वक स्वर्ग में ले जा रहे थे। सिरिअकस को अपने साथ लेकर, वे यूथिमियस के मठ गए और उन्हें पहले ही मृत पाया। अपने आदरणीय शरीर का उचित अंतिम संस्कार करने के बाद, वे अपने प्रिय शिष्य सिरिआकस के साथ अपनी कुटिया में लौट आए।

यहाँ तक कि एक मूक पशु भी परमेश्वर के महान संत, गेरासमिस की, एक बुद्धिमान व्यक्ति की तरह सेवा करता था, जैसा कि धन्य पिता एविरात और सोफिस्ट सोफ्रोनीयस *लिमोनार*[2186] में लिखते हैं: हम जॉर्डन से एक स्टेडियम की लंबाई पर स्थित फादर गेरासमिस के मठ में आए, और वहाँ रहने वाले भिक्षुओं ने हमें फादर गेरासमिस के बारे में बताया। एक बार, जॉर्डन के रेगिस्तान में चलते समय, उनकी मुलाकात एक शेर से हुई जिसने उन्हें अपना पंजा दिखाया, जो एक काँटे के चुभने से सूजा हुआ और पीप से भरा हुआ था। शेर ने नम्रता से संत की ओर देखा और, शब्दों में अपनी विनती व्यक्त न कर पाने के कारण, अपने नम्र व्यवहार से उपचार की भीख माँगी। संत ने, शेर को ऐसी पीड़ा में देखकर, बैठ गए, उस जानवर का पंजा पकड़ा और उसमें से काँटा निकाल दिया। जब मवाद निकल गया, तो उन्होंने घाव को अच्छी तरह से साफ किया और एक रूमाल से पट्टी बाँध दी। उस समय से, ठीक हो चुका शेर कभी भी बूढ़े के पास से नहीं गया, बल्कि एक शिष्य की तरह उनका अनुसरण करने लगा, जिससे संत गेरासमिस उस जानवर की बुद्धिमत्ता और कोमलता से चकित रह गए। बूढ़े उसे रोटी या अन्य भोजन देकर खिलाते थे। भिक्षुओं के पास एक गधा था, जिस पर वे भाईचारे के लिए पवित्र जॉर्डन से पानी लाते थे। बड़े भिक्षु ने शेर को गधे के साथ रहने और जॉर्डन के किनारों पर चरने के दौरान उसकी रखवाली करने का निर्देश दिया। एक दिन ऐसा हुआ कि शेर चर रहे गधे से काफी दूर भटक गया और धूप में सो गया। उसी समय, अरब का एक आदमी अपनी ऊँटों के साथ गुज़र रहा था; जब उसने देखा कि गधा अकेला चर रहा है, तो वह उसे उठाकर

[2186] 'लिमोनार' ('आध्यात्मिक चरागाह') – यूनानी संन्यासी जॉन मॉस्कस की एक कृति; 7वीं शताब्दी की शुरुआत में लिखी गई, इसमें संतों के जीवन और कार्यों का संक्षिप्त विवरण है।

अपने साथ ले गया। जागने पर, शेर ने गधे को ढूँढना शुरू कर दिया और उसे न पाकर, उदास और निराश होकर फादर गेरासीम से मिलने मठ गया। बूढ़े संत ने सोचा कि शेर ने गधे को खा लिया है और पूछा:

'गधा कहाँ है?'

शेर एक मनुष्य की तरह, चुपचाप खड़ा रहा और उसकी आँखें झुकी हुई थीं। तब वृद्ध ने कहा:

'तुमने उसे खा लिया है! लेकिन प्रभु धन्य हों; तुम इस जगह से नहीं जाओगे, बल्कि मठ के लिए वही सब काम करोगे जो गधा किया करता था।'

बड़े के आदेश पर, उस समय से उन्होंने शेर पर भी, ठीक वैसे ही जैसे पहले गधे पर, चार मेचा[2187] का एक बैरल लादना शुरू कर दिया, और उसे मठ के लिए पानी लाने के लिए यॉर्डन नदी भेजने लगे।

एक दिन, एक सैनिक प्रार्थना करने के लिए बूढ़े के पास आया और पानी ढोते हुए शेर को देखकर उस पर दया आ गई। एक नई गधी खरीदकर शेर को उसके काम से मुक्त कराने के लिए, उसने भिक्षुओं को तीन सोने के सिक्के दे दिए। मठ की सेवा के लिए एक गधी खरीदी गई, और शेर को उसके काम से मुक्त कर दिया गया।

कुछ समय बाद, अरब का एक व्यापारी, जिसने गधा ले लिया था, गेहूं बेचने के लिए अपने ऊंटों के साथ यरूशलेम के लिए रवाना हुआ; गधा उसके साथ था। यॉर्डन के पास, शेर का सामना उस कारवां से हुआ; गधे को पहचानकर, वह गरजा और उस पर झपट पड़ा। व्यापारी और उसके साथी डरकर भाग गए, जबकि शेर ने, पहले की तरह ही अपने दाँतों के बीच लगाम पकड़कर, गेहूं से लदे एक के बाद एक तीन ऊँटों को बाँधकर गधे को साथ ले गया। खोए हुए गधे को पाकर खुशी से दहाड़ता हुआ, शेर उसे बूढ़े के पास ले आया। सम्मानित बूढ़े ने चुपचाप मुस्कुरा कर भाइयों से कहा:

'हम गलत थे कि हमने शेर को डांटा, यह सोचकर कि उसने हमारी गधी खा ली थी।'

शेर का नाम जॉर्डन रखा गया। उसके बाद, वह अक्सर बड़े के पास आता था, उनसे खाना लेता था, और पाँच साल से अधिक समय तक मठ नहीं छोड़ा। जब आदरणीय फादर गेरासिमस प्रभु के पास चले गए[2188] और भाइयों द्वारा उनका अंतिम संस्कार किया गया, तो ईश्वर की व्यवस्था से, शेर उस समय मठ में नहीं था, लेकिन कुछ समय बाद लौट आया और अपने गुरु की तलाश करने लगा। फादर सावतीय और फादर गेरासिमस के एक शिष्य ने, शेर को देखकर, उससे कहा:

'जॉर्डन! हमारे बड़े भाई ने हमें अनाथ छोड़ दिया है: वे प्रभु के पास चले गए हैं!'

उन्होंने उसे खाना देना शुरू कर दिया, लेकिन शेर ने नहीं खाया; इसके बजाय, वह पूजनीय पिता गेरासीम को खोजते हुए चारों ओर देखने लगा, और उदासी से गुर्राया। पिता सव्वती और अन्य बुजुर्गों ने उसकी पीठ पर हाथ फेरा और दोहराया:

'वरिष्ठ प्रभु के पास चले गए हैं; उन्होंने हमें अकेला छोड़ दिया है!'

लेकिन ये शब्द शेर को विलाप करने और दुखी स्वर में गुर्राने से नहीं रोक सके; और जितना अधिक वे उसे शब्दों से सांत्वना देने की कोशिश करते, उतना ही वह अधिक दुखी होकर गुर्राता, बूढ़े संत को न देख पाने के अपने दुख को अपनी आवाज़, अपने चेहरे और अपनी आँखों से व्यक्त करता। फिर फादर सव्वती ने कहा:

'अगर तुम्हें हम पर विश्वास नहीं है, तो हमारे साथ चलो; हम तुम्हें वह जगह दिखाएंगे जहाँ वरिष्ठ विश्राम कर रहे हैं।'

और वे उसके साथ उस कब्र तक गए जहाँ आदरणीय गेरासिमस को दफनाया गया था। कब्र चर्च के ठीक बगल में स्थित थी। कब्र के ऊपर खड़े होकर, फादर सव्वती ने शेर से कहा:

'हमारे साधुजी यहीं दफ़न हैं।'

और, घुटनों के बल गिरकर, वह रोने लगा। यह सुनकर और यह देखकर कि सावतिरो रहा था, शेर ने अपना सिर जमीन पर पटक दिया और भयानक गर्जना करने लगा। एक ज़बरदस्त दहाड़ के साथ, वह वृद्ध के मकबरे के ऊपर मर गया। शेर शब्दों में कुछ भी व्यक्त नहीं कर सकता था, फिर भी, ईश्वर की इच्छा से, उसने वृद्ध को उनके जीवनकाल में और मृत्यु के बाद भी महिमामय किया, जिससे हमें पता चलता है कि आदम के पतन और स्वर्ग से निष्कासन से पहले जानवर उनसे कितने आज्ञाकारी थे।'

[2187] एक 'मेच' एक चमड़े का थैला है जिसका उपयोग तरल पदार्थों के माप के लिए किया जाता है।

[2188] वर्ष 475 में।

इस प्रकार जॉन और सोफ्रोनीयस यह कहानी सुनाते हैं। इस वृत्तांत से यह स्पष्ट है कि आदरणीय गेरासिमिस ईश्वर को प्रिय थे, और उन्होंने अपनी युवावस्था से वृद्धावस्था तक उनकी महिमा के लिए परिश्रम किया। वे प्रभु के पास अनंत जीवन में चले गए, जहाँ वे संतों के साथ मिलकर, पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा की अनंत काल तक महिमा करते हैं। आमीन।

कॉन्टाकियन, स्वर 4:

स्वर्गीय आह्वान से प्रेरित होकर, आपने संसार के सभी मधुर सुखों की अपेक्षा जॉर्डन के रेगिस्तान की कठोरता को वरीयता दी; अत; हे पिता, यहाँ तक कि पशु ने भी मृत्यु तक आपका आज्ञापालन किया, और आज्ञाकारी तथा दयालु होकर, आपके शव-पेटिका पर प्राण त्यागकर ईश्वर के समक्ष आपका गौरव बढ़ाया, जिनसे आप प्रार्थना करते हैं; और हमें स्मरण कीजिए, हे पिता गेरासिमिस।

पवित्र शहीदों पॉल और उनकी बहन जूलियाना, तथा उनके साथियों का कष्टकाल

4 मार्च को स्मरणोत्सव

रोमन सम्राट ऑरेलियन[2189] ने पूरे साम्राज्य में एक फरमान जारी किया कि सभी ईसाइयों को देवताओं को बलिदान चढ़ाना चाहिए। जिन्होंने इस फरमान का विरोध किया, उन्हें क्रूर यातनाओं के बाद मृत्युदंड देने का आदेश दिया गया। सम्राट स्वयं, इसौरिया से होकर, सभी ईसाइयों को मूर्तिपूजक बलिदान करने के लिए मजबूर करने के उद्देश्य से, फोनीशियन शहर टोलेमाइस[2190] पहुँचा। जैसे ही राजा शहर में प्रवेश किया, धन्य पौलुस अपनी बहन जूलियानिया के साथ वहाँ थे। पौलुस ने राजा को आते देख, क्रूस का चिन्ह बनाया और जूलियानिया से कहा:

'हौसला रखो, मेरी बहन, और मत डरना, क्योंकि ईसाइयों पर एक बड़ी विपत्ति आने वाली है।'

ऑरेलियन ने, यह देखकर कि पॉल ने क्रूस का चिह्न बनाया था, उसे पकड़कर सुबह तक बेड़ियों में जकड़ने का आदेश दिया। सुबह, एक प्रमुख स्थान पर उसके लिए एक सिंहासन लगवाने का आदेश देकर, राजा सभी लोगों की उपस्थिति में बैठ गया और धन्य पॉल को यातना के लिए लाने का आदेश दिया। जब उसे उसके सामने लाया गया, तो राजा ने कहा:

'अभद्र मनुष्य, तुझे हिम्मत कैसे हुई कि जब मैं नगर में प्रवेश कर रहा था, तब तूने अपने चेहरे पर ईसाई चिह्न बनाया? क्या तूने ईसाइयों के विरुद्ध हमारे शाही फरमान के बारे में नहीं सुना?'

धन्य पौलुस ने राजा को उत्तर दिया:

'मैंने आपका फरमान सुना है, लेकिन कोई भी हमें ईसाइयों को कभी भी इस हद तक डरा नहीं सकता कि हम डर के मारे सच्चे ईश्वर का त्याग कर दें और मसीह, परमेश्वर के पुत्र, में अपने विश्वास का प्रचार करना बंद कर दें।' तुम जो यातनाएँ हमें देते हो वे क्षणिक हैं, जबकि ईश्वर के निष्पक्ष न्याय द्वारा निर्धारित यातनाएँ शाश्वत होंगी, ठीक उसी प्रकार जैसे ईश्वर द्वारा ईसाइयों को प्रदान की गई महिमा भी शाश्वत है। हम में से कौन इतना मूर्ख होगा जो जीवित परमेश्वर को त्यागकर बहरी और गूंगे देवताओं की पूजा करे? हमारे उद्धारकर्ता यीशु मसीह स्वयं सुसमाचार में कहते हैं: *'जो कोई मनुष्यों के सामने मुझ से इनकार करेगा, मैं भी स्वर्गीय अपने पिता के सामने उससे इनकार करूँगा'* (मत्ती 10:33)।

ऑरेलियन ने पॉल से कहा:

'मैं देखता हूँ कि मैंने तुम्हारे अभद्र शब्दों को बहुत समय से सहन किया है; आगे आओ और देवताओं को बलिदान चढ़ाओ, नहीं तो मैं तुम्हें क्रूर मृत्यु दूँगा।'

[2189] 270 से 275 तक शासन किया।

[2190] *टॉलेमाइस* – फिनिसिया में एक शहर, जो तिरे के दक्षिण और माउंट कैरियुस्ला के उत्तर में स्थित था। यहीं पर प्रेरित पौलुस यरूशलेम की अपनी अंतिम यात्रा के दौरान रुके और उन्होंने मसीहियों के बीच एक पूरा दिन बिताया (प्रेरितों के काम 21:7)।

धन्य पौलुस ने एक बार फरि उत्तर दयिा:

'मैं हमारे प्रभु यीशु मसीह के सविा कसिी दूसरे ईश्वर को नहीं जानता, जसिकी मैंने बचपन से शुद्ध हृदय से सेवा की है।'

तब राजा ऑरेलयिन ने सैनकिों से कहा:

'उसे लटका दो और क्रूरता से यातना दो जब तक उसका मसीह न आकर उसे तुम्हारे हाथों से न छुड़ा ले।'

सैनकिों ने तुरंत राजा की आज्ञा का पालन कयिा: उन्होंने धन्य पॉल को एक पेड़ से नग्न लटका दयिा और उसे यातना दी। और संत ने ऊँचे स्वर में ईश्वर से प्रार्थना की:

[2191]– हे प्रभु यीशु मसीह, सच्चे परमेश्वर पता के सच्चे पुत्र, जनिके जन्म को कोई भी समझ नहीं सकता—न तो स्वर्गदूत, न तो महादूत, न तो सहिासनधारी, न तो प्रभुत्वधारी, न तो प्रधानताधारी, न तो सामर्थ्यधारी, न तो सेनाधारी, न तो करूब, न ही पवत्रिताधारी, परन्तु केवल परमेश्वर पता ही, – हे प्रभु, अपने इस दीन और त्यागे हुए सेवक की सहायता करो, और मुझे ऑरेलयिन के हाथों से बचा लो।

उनकी प्रार्थना से, प्रभु यीशु मसीह ने उनके क्रूर यातनाओं को कम कर दयिा, ताकि संत को उन पर कएि गए घावों से कोई दर्द महसूस न हो। उसी क्षण, मसीह की पवत्रि वधू, जुलयिाना, यह देखकर कि उनके भाई को यातना दी जा रही थी, मुकदमे की जगह पर आईं और यातना देने वाले से जोर से कहा:

'यातनाकर्ता ऑरेलयिन, तुम मेरे नर्दिोष भाई को इतनी क्रूरता से क्यों यातना दे रहे हो?'

उसकी बातों से क्रोधति होकर, ऑरेलयिन ने अपने सेवकों से कहा:

'इस औरत का सरि ढक दो और उसके चेहरे पर मारो, ताकि वह हमसे इतनी अभद्रता से बात न करे; और उस अधर्मी आदमी को और भी बुरी तरह यातना दो, और हम देखेंगे कि क्या मसीह उसकी रक्षा और मदद करेंगे।'

धन्य जुलयिाना ने राजा की बातों का उपहास करते हुए कहा:

'मैं हैरान हूँ कि हे राजा, आप पागलपन में कैसे काम कर रहे हैं और मसीह की शक्ति को समझ नहीं पा रहे, जो उन लोगों के दुख को कम करते हैं जो वश्विास के साथ उनकी प्रार्थना करते हैं।'

ऑरेलयिन, अपने चारों ओर खड़े लोगों की ओर मुड़कर बोला:

'इस महलिा से बात करते समय मेरी कोमलता उसे पागल कर रही है।'

और संन्यासनिी की ओर क्रूरता से देखते हुए, उसने उससे कहा:

'देवताओं के पास आओ और उनकी पूजा करो, क्योंकि तुम मेरी पकड़ से नहीं बच पाओगी।'

लेकनि संत जुलयिाना ने दृढ़ता से उत्तर दयिा:

'मैं तुम्हारे यातनाओं से नहीं डरती और न ही तुम्हारी धमकयिों की परवाह करती हूँ, क्योंकि स्वर्ग में एक ईश्वर हैं जो हमें तुम्हारे दुष्ट हाथों से बचा सकते हैं। मुझे हर यातना दो, और तुम देखोगे कि मेरे प्रभु यीशु मसीह मेरी सहायता करेंगे।'

तब ऑरेलयिन ने चालाकी से संत से बात करना शुरू कयिा:

'मैं तुम्हारी सुंदरता को देखती हूँ, और इसके लएि मैं तुम्हें क्षमा करना चाहती हूँ; मैं तुमसे वनिती करती हूँ कि मेरी प्रार्थनाओं पर ध्यान दो और देवताओं को बलदिान चढ़ाओ; मैं तुम्हें अपनी वैध पत्नी बनाऊँगा, और तुम हमारे जीवन के बाकी दनिों तक मेरे साथ शासन करोगी। तुम्हारे भाई को मैं उसके कष्टों के लएि एक बड़ा इनाम दूँगा और उसे सर्वोच्च पद से सम्मानति करूँगा।'

इन चालाकी भरे शब्दों के जवाब में, संत जुलयिाना ने स्वर्ग की ओर अपनी आँखें उठाकर और क्रॉस का चह्नि बनाकर हँस दीं।

'तुम्हारी हँसी से,' ऑरेलयिन ने कहा, 'तुम मेरे प्रति मेरी महान उदारता का अपमान कर रही हो।'

लेकनि संत ने उत्तर दयिा:

'नहीं, मैं आपको अपमानति नहीं कर रही हूँ, बल्कि मैं इसलएि प्रसन्नता से हँसी क्योंकि मैं अब अपनी आध्यात्मकि आँखों से अपने स्वर्गीय वधूवर की दव्यि सुंदरता को नहिार रही हूँ, जो अपने पवत्रि सहिासन पर वरिाजमान

[2191] पवत्रि शास्त्र स्वर्गदूतों के बीच वभिन्नि आदेशों या रैंकों को अलग करता है, जनिका यह नौ का उल्लेख करता है (उत्पत्ति 3:24; यशायाह 6:2; कुलुस्सयिों 1:16; इफसियिों 1:20–21; रोमयिों 8:38; 1 थस्सिलुनीकयिों 4:16; यहूदा 1:6)। संत डायोनसियिस द एरोपागटि की *सेलेस्टयिल हयिरार्की* में, सेराफमि दैवीय आदेशों में पहला स्थान रखते हैं।

हैं और सभी लोगों के उद्धार की कामना करते हैं। उसने मुझसे कहा कि मैं स्वेच्छा से पीड़ा की इस कठिन परीक्षा को स्वीकार करूँ, और तुम्हारी—एक कपटी और व्यर्थ मनुष्य—तिरस्कार करूँ, क्योंकि यद्यपि तुम स्वयं को राजा कहते हो, तुम लकड़ी और पत्थर की पूजा करते हो।

शहीद के उत्तर से ऑरेलियन क्रोध से भर गया, और उसने सैनिकों से कहा:

'इस महिला को लटका दो और उसका क्रूरता से अत्याचार करो, ताकि उसे एहसास हो जाए कि वह राजा की अदालत के सामने खड़ी है।'

जब सैनिकों ने संत को यातना देना शुरू किया, तो उनके भाई, संत पॉल, ने उनकी ओर देखा और कहा:

'हे बहन, यातना देने वाले द्वारा दी जाने वाली यातनाओं से मत डर, और उसकी धमकियों से भी मत डर; क्योंकि यहाँ थोड़ा सा दुख सहकर, हम अपने प्रभु ईश्वर मसीह से अनंत पुरस्कार प्राप्त करेंगे।'

इस बीच, ऑरेलियन ने उन सैनिकों से कहा जो संत को यातना दे रहे थे:

'उसे और भी कठोर यातना दो, ताकि वह अपना घमंड और मूर्खता त्याग दे।'

निर्ममता से यातनाएँ झेल रही संत जुलियाना ने राजा के शब्द सुनकर फिर हँसते हुए कहा:

'ओरेलियन, हे यातना देने वाले! तुम्हें लगता है कि तुम मुझे यातना दे रहे हो, लेकिन मेरे मसीह की मदद से मुझे कोई दर्द महसूस नहीं हो रहा है।'

इस पर ऑरेलियन ने उत्तर दिया:

– यद्यपि तुम झूठ बोलती हो कि तुम्हें कोई यातना नहीं हो रही, मैं तुम्हारी हठधर्मिता को तोड़कर तुम्हें यातना देना जारी रखूँगा।

संत ने उत्तर दिया:

'मेरे प्रभु यीशु मसीह मुझे नहीं छोड़ेंगे, और न ही वे मुझे तुम्हारे हाथों पराजित होने देंगे, क्योंकि वे अब और हमेशा मेरे सहायक हैं, और अंत तक मेरी मदद करेंगे, ताकि तुम उनकी शक्ति और मेरे ईसाई धैर्य को जान सको।' जहाँ तक तुम्हारा सवाल है, मेरे ईश्वर तुम्हें शाश्वत, अविनाशी आग से पीड़ित करने का आदेश देंगे और तुमसे उन मानव आत्माओं की माँग करेंगे जिन्हें तुमने अपनी चालाक धोखाधड़ी से नष्ट किया है।

संत के शब्दों ने ऑरेलियन को प्रचंड क्रोध से भर दिया। उसने एक पिघलती हुई कड़ाही लाने और उसके नीचे एक भयंकर आग जलाने का आदेश दिया। जब कड़ाही में पिघलती हुई कड़ाही उबलने लगी, और उसके पास जाना असंभव हो गया, तो यातना देने वाले ने पवित्र शहीदों पॉल और जूलियाना को उसमें फेंकने का आदेश दिया। उसमें फेंके जाने पर, उन्होंने अपनी आँखें स्वर्ग की ओर उठाईं और, मानो एक ही स्वर में, प्रार्थना की:

– हे प्रभु परमेश्वर, हमारे पूर्वजों अब्राहम, इसहाक और याकूब के पिता, जो बेबीलोन की आग की भट्टी में शद्रक, मेशक और अबेद्नेगो के पास उतरे और आग से उन्हें कोई हानि नहीं होने दी (दानियेल 3), आप, हे प्रभु यीशु मसीह, अकल्पनीय ज्योति, पिता के रहस्य और महिमा, सर्वोच्च ईश्वर के प्रभात तारे, जो हमारे पापों के लिए अवतार धारण हुए और मनुष्यों के बीच वास किए, उन आत्माओं को बचाने की इच्छा से जिन्हें हमारे शत्रु, शैतान ने, धृष्टता से धोखा दिया, बखिर दिया और अधोलोक में डाल दिया है—जैसा कि उसका शिष्य ऑरेलियन अब कर रहा है— – हे प्रभु, हमें भी इस दुखद यातना से उबारें।

जब शहीदों यह प्रार्थना कर रहे थे, तो उबलता हुआ तारकोल ठंडा पानी बन गया, और वहाँ उपस्थित सभी लोग परमेश्वर की शक्ति देखकर चकित हो गए और उसकी महिमा करने लगे। हालाँकि, ऑरेलियन क्रोध से पागल होकर, ईश्वर की महिमा नहीं कर रहा था, बल्कि, इसे जादू-टोना समझकर, उसने संतों को कड़ाही से बाहर निकालने का आदेश दिया, जिसमें राल की गंध का एक निशान भी नहीं बचा था, बल्कि केवल ठंडा पानी था। जब शहीदों को बाहर निकाला गया, तो ऑरेलियन ने उनसे कहा:

'क्या तुम्हें लगता है कि यहाँ मौजूद लोग, जिन्होंने जो कुछ भी हुआ वह सब देखा है, तुम्हारे धोखे में आकर यह मान लेंगे कि ईश्वर ने तुम्हें याद किया है – बजाय इसके कि तुमने जादू-टोने की शक्ति से कड़ाही को ठंडा कर दिया है?'

'मैं अपने देवताओं की कसम खाता हूँ कि मैं यह सुनिश्चित करूँगा कि तुम्हारा जादू-टोना तुम्हारे किसी काम न आए, और यह कि, कई और लंबे यातनाओं के माध्यम से—आग से झुलसकर, घायल और थककर—तुम, अपनी इच्छा के विरुद्ध, देवताओं को बलिदान चढ़ाओगे।'

संत पौलुस ने इन अभद्र शब्दों का उत्तर दिया:

'हम कभी भी जीवित ईश्वर को नहीं त्यागेंगे, जिसने स्वर्ग और पृथ्वी की रचना की, जिसने हमें अंधकार से मुक्त किया और तुम्हारे हाथों से बचाया; कभी भी, हे यातना देने वाले ऑरेलियन, तुम हमें तुम्हारी निश्चिद्र, निर्जीव और निर्विकार मूर्तियों की पूजा करने के लिए मना नहीं पाओगे। हमें जो भी यातनाएँ उचित समझो, दे दो, और उनमें ही तुम हमारे ईश्वर की शक्ति को जानोगे।

तब ऑरेलियन ने आज्ञा दी कि दो लोहे के पलंग लाए जाएँ, सार्वजनिक स्नानागार से बड़ी मात्रा में कोयला लाया जाए और उनसे पलंगों को गर्म किया जाए, और फिर पवित्र शहीदों को नग्न अवस्था में लाल-गरम पलंगों पर लिटाया जाए और उन पर पिघला हुआ सूअर का चर्बी डालकर उन्हें सताया जाए। इस यातना के दौरान, ऑरेलियन ने शहीदों से कहा:

'अब मैंने तुम्हारी जादुई शक्ति को हरा दिया है, और तुम जानोगे कि ऑरेलियन कौन है – तुम्हारा मसीह आकर तुम्हारी मदद करे।'

'हमारा मसीह,' संत जुलियाना ने यातना देने वाले से कहा, 'पहले से ही हमारे साथ यहाँ हैं, हमारी मदद कर रहे हैं और आग को हमें नुकसान पहुँचाने से रोक रहे हैं – फिर भी तुम उन्हें नहीं देख सकते, क्योंकि तुम इसके लायक नहीं हो। मैं तुम्हें सलाह देती हूँ कि तुम अपना यह पागलपन छोड़ दो और मसीह की ओर मुड़ जाओ। यदि तुम उस पर विश्वास करना चुनते हो, तो वह तुम्हें पश्चाताप करने वाले के रूप में स्वीकार कर लेगा, क्योंकि वह प्रेम और दया से मानव पापों को क्षमा करता है; लेकिन यदि तुम उसकी ओर नहीं मुड़ते, तो तुम्हें अनंतकाल की आग में डाल दिया जाएगा।

उस क्षण, दो सैनिकों ने जब देखा कि संतों को, यद्यपि वे अपने बिस्तरों पर झुलस गए थे, आग से कोई हानि नहीं हुई, तो वे ऊँचे स्वर में चिल्ला उठे:

'स्वर्ग के परमेश्वर के सिवाय कोई अन्य ईश्वर नहीं है, जो पौलुस और जुलियाना की मदद कर रहा है।'

इस पर क्रोधित होकर राजा ने आदेश दिया कि दोनों का तुरंत सिर कलम कर दिया जाए। उसे लगा कि उन्हें रिश्वत दी गई है और उन्होंने संतों को क्रूरता से यातना न देने के लिए ईसाइयों से बहुत सारा सोना लिया है। जब इन सैनिकों को उनके निष्पादन के लिए ले जाया जा रहा था, तो संत पॉल ने उन्हें यह सलाह दी:

'डरो मत,' उन्होंने कहा, 'तुम कभी नहीं मरोगे, बल्कि संतों के साथ स्वर्ग के राज्य के वारिस बनोगे।'

उनके शब्द सुनकर, सैनिक रुक गए और प्रार्थना करने लगे:

'हे प्रभु यीशु मसीह! हे सच्चे परमेश्वर, जिनका प्रचार पॉल और जूलियाना करते हैं, आप हमारे साथ भी रहें, क्योंकि हम बिना कोई बुराई किए मर रहे हैं।'

इन शब्दों के बाद, उन्हें तलवार से सिर कलम कर दिया गया। उनके नाम क्वाड्रैटस और अकाकियस थे। इन सैनिकों की मृत्यु के बाद, अन्य लोगों को संतों को सताने के लिए भेजा गया जब वे लाल-गरम जाली पर पड़े थे। उन्होंने आग को और भी भड़काने के लिए नमक बिखेरा; लेकिन संतों को कोई पीड़ा नहीं हुई और वे अपने अत्याचारी को डांटते रहे। शहीदों के सामने अपनी शक्तिहीनता से लज्जित होकर, ऑरेलियन ने आदेश दिया कि उन्हें एक कालकोठरी में फेंक दिया जाए, उनके गलों में भारी लकड़ी के खंभे बांध दिए जाएं, उनके पैरों में बेड़ियाँ डाल दी जाएं, और उनके हाथों में लोहे की अंगूठियाँ पहना दी जाएं। कारागार में, यातना देने वाले ने फर्श पर तीखे कील बिछाने का आदेश दिया, जैसे खेत में कांटेदार झाड़ियाँ और कँटीली बेलें होती हैं, और शहीदों के पैरों को उन पर रखने का आदेश दिया, ताकि न केवल उन्हें अपने कष्ट से कोई राहत न मिले, बल्कि उनके शरीरों को चीरने वाले कीलों से वे और भी अधिक यातना भोगें। साथ ही, यातना देने वाले ने यह सुनिश्चित करने के लिए कड़ी निगरानी रखने का आदेश दिया कि कोई भी ईसाई उनके पास न आए या उन्हें भोजन या पेय न लाए। आधी रात को, जब संत तीखे कीलों पर पड़े हुए प्रार्थना कर रहे थे, तो तहखाने में अचानक एक प्रकाश चमका; प्रभु का स्वर्गदूत प्रकट हुआ और शहीदों से कहा:

'पौलुस और जुलियाना, सर्वोच्च प्रभु के सेवको, उठो और परमेश्वर की महिमा करो!'

यह कहने के बाद, देवदूत ने शहीदों की जंजीरों और बेड़ियों को छुआ – और तुरंत ही बंधन टूट गए और उनके शरीरों से गिर पड़े, उनके घाव भर गए, और वे स्वस्थ हो गए। और देखो, उन्होंने दो मेजें देखीं जो एक शुद्ध वस्त्र से ढकी थीं और उनके सामने एक भोज सजा हुआ था, जो हर प्रकार के स्वादिष्ट व्यंजनों से भरा हुआ था। स्वर्गदूत ने संतों से कहा:

'यह भोजन लो जिसे यीशु मसीह ने तुम्हारे लिए भेजा है।'

पवित्र शहीदों पॉल और जूलियाना मेज पर बैठ गए और, अपने हाथों में रोटी लेकर, उन्होंने अपनी आँखें स्वर्ग की ओर उठाईं और ईश्वर का धन्यवाद किया; फिर उन्होंने वह खाया और पिया जो प्रभु ने भेजा था, और वे बलवान हो गए।

कोठरी में बंद कैदियों ने देखा कि कैसे एक प्रकाश प्रकट हुआ, कैसे संत अपनी बेड़ियों से मुक्त होकर मेज पर उनके लिए तैयार की गई जगहों पर बैठ गए, उन्होंने भोजन किया और आनंदित हुए। आश्चर्यचकित होकर, वे उनके पास आए और उन्हें इस भोजन में भाग लेने का सौभाग्य प्राप्त हुआ, जो एक अदृश्य हाथ द्वारा तैयार किया गया था। ईश्वर की महिमा करने के बाद, जिसने अपने सेवकों पर ऐसी दया दिखाई, और उस पर विश्वास करने के बाद, वे सभी ईसाई बन गए।

तीसरे दिन, सम्राट ऑरेलियन ने फिर से दरबार में अपनी सीट ली और पवित्र शहीदों पॉल और जूलियाना को अपने सामने लाने का आदेश दिया, और उनसे कहा:

'मुझे आशा है कि यातनाओं का तुम पर असर पड़ा होगा और अपनी मूर्खता को त्यागकर, अब तुम देवताओं की ओर मुड़ोगे और उन्हें बलिदान चढ़ाओगे।'

संत पॉल ने उत्तर दिया:

'यह मूर्खता—मसीह का परित्याग न करना—मेरे और उन सभी के साथ हमेशा रहे जो परमेश्वर से प्रेम करते हैं: *"क्योंकि परमेश्वर की मूर्खता मनुष्यों से अधिक बुद्धिमानी है, और परमेश्वर की दुर्बलता मनुष्यों से अधिक शक्तिशाली है"* (1 कुरिन्थियों 1:25)। *'क्योंकि इस संसार का ज्ञान परमेश्वर के सामने मूर्खता है, जैसा कि लिखा है: "वह बुद्धिमानों को उनकी चालाकी में पकड़ता है"* (1 कुरिन्थियों 3:19)। और मैं सचमुच पागल हो जाऊँगा, यदि सच्चे परमेश्वर से मुँह मोड़कर मैं तुम्हारे राक्षसों की पूजा करूँ।

ऑरेलियन एक बार फिर से क्रोधित हो गया और उसने आदेश दिया कि दोनों शहीदों को नग्न अवस्था में एक पेड़ पर लटका दिया जाए और उनकी पसलियों को लोहे के पंजों से खुरोचा जाए। हालाँकि, वे अपने कष्ट सहते हुए, ईश्वर से प्रार्थना करने लगे:

'हे प्रभु यीशु मसीह, जीवते परमेश्वर के पुत्र, ईसाई धर्म के प्रकाश, अटूट विश्वास, हम पर प्रकट हो और हमारी सहायता करो, और अपने पवित्र नाम के लिए हमें न छोड़ो।'

उनकी प्रार्थना का उत्तर देते हुए, उद्धारकर्ता, उनके बगल में अदृश्य रूप से खड़े होकर, उनके कष्ट को कम कर गए, और संतों को कोई पीड़ा महसूस नहीं हुई। सैनिकों में से एक, जिसका नाम स्ट्रैटोनिकि था, जिसे संत जुलियाना की पसलियों को खुरचने के लिए उसकी बाईं ओर रखा गया था, उसकी सुंदरता पर तरस खा गया और ऐसा करने से बाज़ार आया। संत ने उसके विचारों को भांपते हुए, अपने बाएं पैर से उसे लात मारी और उससे कहा:

'स्ट्राटोनिकि, यातना देने वाले के आदेशों का पालन कर और मुझ पर कोई दया न दिखा, क्योंकि मेरा राजा और प्रभु यीशु मसीह, शाश्वत परमेश्वर, मेरी मदद कर रहे हैं; वे मेरी आत्मा की रक्षा करते हैं और मेरे शारीरिक कष्टों को कम करते हैं।'

स्ट्राटोनिकि ने अपने हाथों में पकड़े उपकरण को फेंक दिया, राजा के दरबार के स्थान पर दौड़ा और चिल्लाया:

'ऑरेलियन, हे दुष्ट यातनाकर्ता! तुम ईसाइयों को इतनी अन्यायपूर्ण यातना क्यों देते हो? इस सच्चे ईश्वर की पूजा करने वाले लोगों ने क्या बुरा किया है? वे इतनी यातना क्यों झेल रहे हैं? क्या यह सचमुच सिर्फ इसलिए है क्योंकि वे सभी के स्वामी, मसीह की पूजा करते हैं?'

उसके शब्द सुनते ही राजा क्रोध से आग-बबूला हो गया और पूरे एक घंटे तक बोल नहीं सका। अंत में उसने कहा:

'और तुम भी, स्ट्रैटोनिकोस, इसी पागलपन का हिस्सा बन गए हो! तुम्हें किसने बहकाया है? क्या यह जूलियाना की सुंदरता है, या तुम उसके स्त्री-सुलभ शब्दों से मोहित हो गए?'

स्ट्राटोनिकि ने स्वर्ग की ओर अपनी आँखें उठाईं, तो उसने देखा कि यातना के उपकरणों पर लटके पवित्र शहीदों के चेहरे, ईश्वर के स्वर्गदूतों के चेहरों की तरह ही तेजस्वी थे। तुरंत, क्रॉस का चिह्न बनाते हुए, वह वहाँ स्थापित दुष्ट मूर्तिपूजक वेदी की ओर दौड़ा, उसे उलट दिया, उसे पैरों तले रौंद दिया, और चिल्लाया:

'मैं भी एक ईसाई हूँ! मेरे साथ जो मन आए, कर, यातना देने वाले।' ऑरेलियन बहुत क्रोधित हुआ और उसने उसका सिर काट देने का आदेश दिया।

जब स्ट्रैटोनिकिस को मृत्युदंड के स्थान पर ले जाया गया, तो उसने ईश्वर से इस प्रकार प्रार्थना की:

'हे प्रभु यीशु मसीह, जिनके उपदेश द्वारा पौलुस और जुलियाना आपकी दिव्यता से सुरक्षित रहकर अजेय बने रहते हैं, और यातना देने वाले को लज्जित करते हैं, मैं आपसे विनती करता हूँ—मेरी आत्मा को अपने स्वर्गीय राज्य में

स्वीकार करें; मुझे अस्वीकार न करें, जिसने थोड़े समय के लिए ही सही, यातना देने वाले ऑरेलियन के सामने आपके पवित्र नाम का इकरार किया है।"

इस प्रार्थना के बाद, उसे तलवार से सिर से अलग कर दिया गया, और ईसाइयों ने उसके शरीर को लेकर उसे छिपा दिया। जहाँ तक संतों पॉल और जूलियाना का सवाल है, उन्हें उस पूरे दिन यातनाएँ दी गईं और वे अपनी यातनाओं के बीच जरा भी नहीं डगमगाए। ऑरेलियन, जूलियाना की ओर मुड़कर, उससे बोला:

'दुष्ट और अधर्मी स्त्री! जब यह सैनिक यातनाएँ झेल रहा था, तब तुमने इसे कैसे बहकाया? उसकी मृत्यु का दोष तुम्हारा ही है।'

संत ने उत्तर दिया:

'मैंने उसे बहकाया नहीं, और न ही मैं उसकी मृत्यु की दोषी हूँ; मसीह, जिन्होंने मुझे अपनी वधू के रूप में चुना, ने इस सैनिक को एक योग्य व्यक्ति के रूप में अपने पास बुलाया, क्योंकि यदि वह योग्य नहीं होता, तो वह कभी भी शहीद का मुकुट प्राप्त नहीं कर सकता था। आप स्वयं गेहेना की ज्वालाओं में पीड़ित होंगे, जबकि आप उसे स्वर्ग के राज्य में देखेंगे।' तब तुम अपने दुष्ट वक्ष को पीटोगे, यह देखकर कि तुम्हारा पूर्व अधीनस्थ—एक तुच्छ व्यक्ति जिसे तुमने अस्वीकार कर दिया था—तुम्हारे ऊपर प्रतिष्ठित किया गया है और मसीह द्वारा स्वर्ग के राज्य की महिमा से उसका मुकुटबद्ध किया गया है। तब तुम बड़े दुख से भर जाओगे और दया की भीख माँगते हुए पुकारोगे, लेकिन तुम्हें वह कभी नहीं मिलेगी।

इसके बाद, ऑरेलियन ने आदेश दिया कि संतों के कष्टों को समाप्त किया जाए और उन्हें एक बार फिर कैद कर दिया जाए। उसी शाम, ऑरेलियन ने उन्हें कालकोठरी से सार्वजनिक स्नानागार में स्थानांतरित करने का आदेश दिया। तब, जादूगरों, तंत्र-मंत्र करने वालों और साँप पकड़ने वालों को बुलाकर, उसने उन्हें आदेश दिया कि वे अपने पास मौजूद सभी सबसे ज़हरीले सरसरी जीव—इचिडना, विषैले साँप और नाग—को लाएँ और उन्हें उस स्नानागार में छोड़ दें जहाँ शहीदों को बंद किया गया था। जादूगरों ने, राजा की आज्ञा का पालन करते हुए, बड़ी संख्या में सरसरी जीव इकट्ठा किए और उन्हें संतों के बीच स्नानागार में छोड़ दिया। लेकिन वे कीड़े-मकोड़े पवित्र शहीदों के पैरों तले रेंगने लगे और उन्होंने उन्हें कोई नुकसान नहीं पहुँचाया, जबकि संतों ने निडर होकर भजन गाए और ईश्वर की स्तुति की। संत इन कीड़े-मकोड़ों के साथ स्नानागार में तीन दिन और तीन रात तक इसी बंदी में रहे; चौथी रात, ऑरेलियन ने यह पता लगाने के लिए लोगों को भेजा कि क्या पॉल और जूलियाना को कीड़े-मकोड़ों ने खा लिया था। जब दूत स्नानागार के दरवाजों के पास पहुँचे, तो उन्होंने संतों को भजन गाते और ईश्वर की स्तुति करते हुए सुना। अंदर क्या हो रहा है, यह और भी स्पष्ट रूप से देखने की इच्छा से, दूत स्नानागार की छत पर चढ़ गए और एक खिड़की से नीचे झाँका। उन्होंने एक तेज रोशनी देखी और संत पॉल को अपनी बहन, संत जूलियाना के साथ बैठे हुए देखा। ईश्वर का एक देवदूत उनके बगल में खड़ा था, जो साँपों को संतों को छूने से रोक रहा था। यह देखकर, दूत राजा ऑरेलियन के पास गए और उन्होंने जो देखा था उसकी रिपोर्ट की। अगले सुबह, वह एक बार फिर न्यायपीठ पर विराजमान हुआ और जादूगरों और जादू-टोना करने वालों को आदेश दिया कि वे स्नानागार से साँपों को लाएँ और शहीदों को न्याय के लिए उसके सामने पेश करें। जादूगर स्नानागार के दरवाजों के पास पहुँचे और मंत्रों के द्वारा साँपों को बुलाने लगे, लेकिन साँपों ने उनकी कोई परवाह नहीं की। जब स्नानागार के दरवाजे खोले गए, तो सभी साँप तुरंत अपने बुलाने वालों और उनके साथ आए अन्य लोगों पर टूट पड़े; उन्हें जानलेवा डँसने के बाद, साँप गायब हो गए। सापों के बिखर जाने के बाद, यातना देने वाले के दूत आए; उन्होंने पवित्र शहीदों को लेकर उन्हें न्याय के लिए उसके सामने प्रस्तुत किया। यातना देने वाले ने उन्हें देखकर मुस्कुराते हुए कहा:

'मुझे तुमसे फिर से बात करके खुशी हो रही है, क्योंकि मुझे उम्मीद है कि मैं तुमसे कुछ महान सीखूंगा। मैं देवताओं की कसम खाता हूँ कि अगर तुम मुझे सच बताओगे, तो तुम मुझे से कई और महान उपहार प्राप्त करोगे और मेरे राज्य में विशिष्ट पुरुष बन जाओगे।' मुझे बताओ—क्या यह सच है, जैसा मैंने तुम्हारे स्नानागार में खिड़की से झाँककर देखने वालों से सुना है, कि हमारे स्वामी अपोलो तुम्हारे पास आए और उन्होंने तुम्हारी मदद की, तुम्हें साँपों से बचाया, और तुमने अपनी आँखों से उनका चेहरा देखा?

संत पौलुस ने राजा को उत्तर दिया:

'हम अपोलो को नहीं जानते और न ही हमने उसे कभी देखा है, क्योंकि हम सच्चे ईश्वर की सेवा करते हैं, जिन्होंने अपने सेवकों के लिए मोक्ष तैयार किया है। हालाँकि, तुम्हारी आत्मा विनाश के लिए अभिशप्त है, क्योंकि तुम सत्य को जानना या पश्चाताप करना नहीं चाहते। आपके द्वारा रची गई यातनाओं से उत्पन्न तीव्र क्रोध ने आपको उस हद तक

पहुँचा दिया है जहाँ आप ईश्वर के अमूर्त सेवक, पवित्र देवदूत का अपमान करने की हिम्मत करते हैं, जिसे हमारे प्रभु यीशु मसीह ने साँपों को चुप कराने के लिए हमें भेजा था, और आप अभद्रतापूर्वक उसे अपोलोस कहते हैं।

शहीद के शब्दों ने ऑरेलियन को बहुत क्रोधित कर दिया, और उसने आदेश दिया कि संत पॉल के चेहरे पर सीसे की छड़ों से मारा जाए और साथ ही यह भी कहा जाए:

'तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई इतनी गर्व और अभद्रता से उत्तर देने की? जान लो कि तुम राजा के सामने खड़ी हो।'

इस यातना के बाद, ऑरेलियन ने सेंट पॉल को ले जाने और सेंट जुलियाना को उसके सामने लाने का आदेश दिया। यातना देने वाले ने उससे कहा:

'हे जुलियाना, मेरे हृदय की स्वामिनी! मैं तुमसे विनती करता हूँ, अपने भाई की मूर्खता का अनुसरण मत करो; मैं देखता हूँ कि तुम एक समझदार और अत्यंत बुद्धिमान कन्या हो, इसलिए मेरी सलाह मानो, और तुम मेरे साथ रानी बनोगी, क्योंकि मैं तुम्हें अपनी पत्नी बनाऊँगा और साम्राज्य के हर शहर में तुम्हारी सोने की मूर्तियाँ स्थापित करूँगा।'

लेकिन संत ने राजा से उत्तर दिया:

'तुम मुझे किसी भी चीज़ से फुसला नहीं सकते, हे अधर्मी यातना देने वाले; तुम सर्वोच्च ईश्वर की दासी को अपनी चालाकी से फँसा नहीं सकते, और न ही तुम मुझे शाश्वत मृत्यु की सज़ा दे सकते हो। भले ही तुम चाहो, तुम मुझे मसीह की महिमा और स्वर्ग के राज्य से वंचित नहीं कर सकते।'

तब ऑरेलियन ने संत को न्यायाधीश की कुर्सी से दूर ले जाने और संत पॉल को एक बार फिर उसके सामने लाने का आदेश दिया, जिनसे उसने कहा:

'देखो, पॉल, तुम्हारी बहन जूलियाना ने देवताओं को बलिदान चढ़ाने का हमसे वादा किया है; इसी कारण मैं उसे अपनी पत्नी बनाना चाहता हूँ, और वह मेरे पूरे राज्य की मालकिन होगी। तुम भी मान जाओ, और देवताओं को बलिदान चढ़ाने की मेरी आज्ञा का पालन करो: तुम मेरे मित्र बनोगे और तुम्हें इनाम में एक उच्च पद मिलेगा।'

लेकिन संत पौलुस ने इन कपटपूर्ण शब्दों का उत्तर दिया:

'सचमुच, तुमने झूठ बोला है, यह दावा करते हुए कि मेरी बहन अपने सबसे पवित्र और अमर वधू-वर, मसीह, से मुंह मोड़कर तुम्हारी, जो घृणित और नश्वर हो, और तुम्हारे राक्षसों की संगिनी बन गई है। लेकिन इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि तुमने झूठ बोला है, क्योंकि तुम्हारा पिता शैतान है, जो झूठ का पिता है (यूहन्ना 8:44); उससे झूठ बोलना सीखकर, तुम वही करते हो जो वह करता है, और झूठ के सिवा किसी को धोखा नहीं दे सकते। लेकिन तुम व्यर्थ परिश्रम करते हो, क्योंकि तुम अपनी कपटी चालाकी से हमें धोखा नहीं दे सकते, भले ही तुम हमें सारी दुनिया का राज्य ही क्यों न दे दो।

शहीद के उत्तर से क्रोधित होकर, ऑरेलियन ने उससे कहा:

'तुम हमसे इतनी अभद्रता से और कितनी देर तक बात करोगे, हे मूर्ख? मैं देवताओं की शपथ खाता हूँ कि मैं तुम्हें हर तरह की यातनाओं में डाल दूँगा, और कोई भी तुम्हें मेरे हाथों से नहीं बचा पाएगा।'

यह कहने के बाद, राजा ने एक बड़ी अलाव जलाने का आदेश दिया, चौदह लोहे की छड़ियाँ लाकर आग में गर्म करने का; फिर उसने सेंट पॉल के हाथ-पैर बाँधने, उनके हाथों और पैरों के बीच एक लाल-गरम छड़ी घुसाने, उन्हें जमीन में गाड़ देने, और दो सैनिकों को बारी-बारी से उन लाल-गरम छड़ियों से पीटने का आदेश दिया। आदेश का पालन किया गया। जुलियाना के बारे में, यातना देने वाले ने आदेश दिया कि उसे वेश्यालय ले जाया जाए और वहाँ अपवित्र किया जाए। यह आज्ञा सुनते ही, कई लोग वहाँ पहुँच गए, उसकी सुंदरता से घोड़ों की तरह उत्तेजित होकर, सबसे पहले प्रवेश करने के लिए एक-दूसरे से धक्का-मुक्की करने लगे। जब संत को वेश्यालय लाया गया, तो प्रभु का एक स्वर्गदूत उसके सामने प्रकट हुआ और कहा:

'जुलीयाना, डरो मत, क्योंकि प्रिभु यीशु मसीह, जिसकी तुम सेवा करती हो, ने तुम्हारी रक्षा के लिए मुझे भेजा है, ताकि जो लोग उनसे डरते हैं, उनके बीच उनका पवित्र नाम महिमामय हो।'

और स्वर्गदूत ने उन भ्रष्ट पुरुषों को, जो संत को छूने का प्रयास कर रहे थे, अंधा कर दिया, उन्हें मसीह की वधू के पैरों से धूल की तरह झाड़ दिया, ताकि वे उसके पास न आ सकें; वे टटोलते हुए आगे बढ़े और दीवारों से टकरा गए। यह चमत्कार देखकर, लोगों ने एक स्वर में पुकारा:

'महान है पॉल और जुलियाना का ईश्वर, जो हर जगह उनका भय मानने वालों को बचाता और उनकी रक्षा करता है!'

अंधा किए गए दुष्ट पुरुष, घुटनों के बल गिरकर, संत से पुकार उठे:

'जुलीयाना, सर्वोच्च ईश्वर की दासी, हमने तुम्हारे सामने पाप किया है, तुम्हें अपवित्र करने की इच्छा करके; परन्तु तुम, सदाचारी ईश्वर की सेविका के रूप में, हमें क्षमा करो, और अपने मसीह से हमारे लिए प्रार्थना करो, कि वह हमें दृष्टि प्रदान करें।'

संत को उन पर दया आ गई, उन्होंने थोड़ा पानी लिया और स्वर्ग की ओर अपनी आँखें उठाकर ईश्वर से इस प्रकार प्रार्थना करना शुरू किया:

– हे यीशु मसीह, सच्चे परमेश्वर, सर्व मानव जाति के उद्धारकर्ता, मुझे, अपनी दासी को, सुनो, और अब वे चिह्न और चमत्कार दिखाओ जो आप लोगों के लिए करते हैं; इन पुरुषों को दृष्टि प्रदान करें, ताकि वे आपके पवित्र नाम का महिमा कर सकें।

प्रार्थना करने के बाद, संत ने सभी अंधे पुरुषों पर पानी छिड़का, और वे तुरंत अपनी दृष्टि वापस पा गए; दृष्टि प्राप्त करने वाले पुरुष जमीन पर गिर पड़े, उन्होंने ईश्वर का धन्यवाद किया और, ईसाई चर्च में आकर, अपने पापों से पश्चाताप किया और उन्हें पवित्र बपतिस्मा के योग्य समझा गया। इस बीच, राजा के आदेश पर सैनिक संत पॉल को यातना देते रहे, वे उन्हें आग में तपे हुए लोहे की छड़ों से निर्दयता से मारते रहे, और बार-बार नौकरों और छड़ों को बदलते रहे। इन यातनाओं के बीच, संत ने राजा से पुकारा:

'ओरेलियन, हे अधर्मी यातना देने वाले, मैंने क्या बुरा किया है कि तुम मुझे इतनी क्रूरता और अधर्मीता से यातना दे रहे हो? परन्तु सचमुच, मेरे प्रभु यीशु मसीह मेरी पीड़ा को कम करते हैं, जबकि तुम्हारा इंतजार अनंत आग कर रही है— जो तुम्हारे और उस शैतान के लिए तैयार की गई है जो तुम्हें हमारे विरुद्ध उकसाता है।'

ऑरेलियन, संत को कष्ट पहुँचाने की इच्छा से, ने कहा:

'पौलुस, तुम्हारी बहन जुलियाना कहाँ है? तुम सोचते हो कि वह एक कुँवारी है; परन्तु आज उसे वेश्यालय में अपवित्र किया जाने के लिए सौंप दिया गया है।'

संत पौलुस ने इस बदनामी का उत्तर दिया:

'मुझे विश्वास है कि मेरा परमेश्वर, जो मेरे दुखों को कम करता है और मुझे आपकी धूर्त दुष्टता से बचाता है, मेरी बहन की रक्षा करेगा और उसे हर तरह की अशुद्धता से अछूत रखेगा, और स्वर्ग से अपना स्वर्गदूत उसकी रखवाली के लिए भेजेगा।'

कुछ समय बाद, पॉल ने फिर कहा:

'देखो, मेरी बहन निर्दोष लौट रही है, उसने अपनी कुँवारी अवस्था की रक्षा की है, और वह मेरे कष्टों और मेरे घावों को देखने आ रही है।'

संत ने ऐसा इसलिए कहा क्योंकि, अपनी दूरदर्शी आँखों से, उन्होंने संत जुलियाना के साथ जो कुछ भी हुआ था, वह सब देख लिया था। यातना देने वाले ने संत को वापस लाने का आदेश दिया। जब संत जुलियाना को एक बार फिर अदालत के सामने लाया गया और संत पॉल ने उन्हें देखा, तो वह बहुत प्रसन्न हुए और अपनी बहन का एक तेजस्वी मुस्कान के साथ अभिवादन किया। ऑरेलियन ने संत से पूछा:

'जुलीयाना, क्या उन कामुकों ने तुम्हारी सुंदरता में आनंद लिया?'

संत ने उत्तर दिया:

'मेरी खुशी, मेरी सुंदरता और मेरा सारा आभूषण मसीह हैं, जिन्होंने अपना स्वर्गदूत भेजा और मुझे, अपनी इस विनिम्र दासी को, सुरक्षित रखा: मैंने उन पर अपना भरोसा रखा है और उनके परम पवित्र नाम का महिमामंडन करती हूँ, क्योंकि वे ही सच्चे ईश्वर हैं, चमत्कार करने वाले हैं, और उनके सिवा कोई दूसरा ईश्वर नहीं है।'

संत पॉल के यातना बंद करने का आदेश देने के बाद, राजा ने आज्ञा दी कि तीन फर्से गहरी एक खाई खोदी जाए, उसे जलाने की लकड़ी से भरा जाए और आग लगा दी जाए। जब लकड़ी पूरी तरह जल गई और खाई में लाल-लाल अंगारे रह गए, तो यातना देने वाले ने पवित्र शहीदों, पॉल और जूलियाना को उसमें फेंकने का आदेश दिया। लेकिन वे अपनी इच्छा से आग के गड्ढे में गए, ईश्वर की स्तुति करते हुए और अपने सहायक, उद्धारकर्ता मसीह को पुकारते हुए। गड्ढे तक पहुँचने पर, शहीदों ने क्रॉस का चिह्न बनाया और आग में कूद पड़े। आग में रहते हुए, उन्होंने प्रभु का भजन किया और उसकी स्तुति की, क्योंकि प्रभु का स्वर्गदूत स्वर्ग से उतरा, आग की शक्ति को कम कर दिया और अंगारों को बिखेर दिया, और शहीदों को पूरी तरह से सुरक्षित और अक्षुण्ण रखा। संत गड्ढे में खड़े रहे और गाए:

'धन्य है युगों का राजा परमेश्वर, जिसने हमारी दीनता को याद किया और स्वयं आग की लपटों को बुझा दिया, और अपनी महान भलाई से हमारे पापों को क्षमा किया; हे प्रभु, आपने हमें, अयोग्यों को, यातना देने वाले ऑरेलियन के क्रोध से सुरक्षित और पूरी तरह से अक्षुण्ण रखा है।'

सभी लोगों ने संतों का गायन सुना, और कई विधर्मी, परमेश्वर की महिमा को देखकर, अपने हृदय में प्रभावित हुए और मूर्तियों को त्यागकर मसीह में विश्वास करने लगे। राजा ने आज्ञा दी कि गड्ढे में पड़े संतों पर पत्थर बरसाए जाएँ। लेकिन अचानक बिजली की एक चमक दिखाई दी और गरज के साथ एक ज़ोर की गड़गड़ाहट हुई; आग का एक बादल प्रकट हुआ, जिससे आग की वर्षा पृथ्वी पर हुई, और स्वर्ग से एक आवाज़ सुनाई दी:

'ओरेलियन, तुम उस अग्निमय गेहेना में जाओगे जो तुम्हारे और तुम्हारे पिता—शैतान—के लिए तैयार की गई है।'

ऑरेलियन और सभी लोग भयभीत हो गए, और यातना देने वाले ने संतों को गड्ढे से बाहर निकालकर जेल में डालने का आदेश दिया। उन्होंने, हालांकि, उनके लिए ईश्वर द्वारा किए गए सभी चमत्कारों के लिए ईश्वर की स्तुति की। सात दिन बाद, ऑरेलियन ने एक बार फिर दरबार में अपनी सीट संभाली और पुरोहितों को आदेश दिया कि वे अपने पास मौजूद सभी मूर्तियाँ - सोने, चांदी की और कीमती पत्थरों से जड़ी-बुनी - ले आएं और उनके पैरों के नीचे अपना शाही बैंगनी चोगा बिछा दें। फिर, पवित्र शहीदों पॉल और जूलियाना को बुलाकर, उसने उनसे बड़ी क्रोध के साथ कहा:

'अब आओ और देवताओं की पूजा करो, क्योंकि तुम मेरी पकड़ से नहीं बच सकते।'

संत पॉल ने उनके शब्दों पर हँसते हुए उनसे कहा:

'कदापि नहीं, हे हमारे यातनाकर्ता, हम उस ईश्वर को नहीं त्यागेंगे, जिसने स्वर्ग और पृथ्वी की रचना की है; यह आशा मत रखना कि तुम हमें कभी मूर्तियों की पूजा करने के लिए मना लोगे।'

तब ऑरेलियन ने शहीद से कहा:

'हे क्रूर मृत्यु के योग्य, क्या तुम सोचते हो कि ये मूर्तियाँ हैं? क्या तुम उस शक्ति को नहीं समझते जो इनमें निहित है?'

संत पौलुस ने उत्तर दिया:

'ज्यूस, जिसे तुम देवता कहते हो, एक जादूगर था, जो वासना से भरपूर था, और सबसे अश्लील व्यभिचारी था।' जब भी वह सुंदर महिलाओं और कुंवारी लड़कियों को देखता था, तो वह अपनी जादू-टोने से उन्हें विभिन्न तरीकों से बहका देता था—कभी-कभी वह खुद को एक सांड, कभी एक पक्षी, एक चील या हंस, तो कभी सोने में बदल लेता था—और इस प्रकार को बहकाकर और अनगिनत लोगों को कलंकित करके, उसे वे एक देवता कहते हैं और उसकी पूजा करते हैं। लेकिन मैं उसके सभी कामुक, शर्महीन और गैर-कानूनी कृत्यों को क्रम से सूचीबद्ध नहीं करूँगा, क्योंकि मैं देखता हूँ कि मेरे शब्दों से आप क्रोधित हैं – फिर भी, मैं आपके क्रोध से नहीं डरता, लेकिन, यह सुनने वालों को भटकाने से बचने के लिए, मैं बाकी बातों पर चुप रहूँगा। आपके दूसरे देवता अपोलो हैं। क्या वह लेटो नामक एक महिला से व्यभिचार से नहीं जन्मा था, जिसने उसे दो पेड़ों के बीच जन्म दिया था? इस अपोलो ने भी अपने पिता ज्यूस की नकल करते हुए कई कामुक कृत्य किए। इसी तरह, क्या आपका प्रसिद्ध देवता डिओनिसिस कैडमस की बेटी सेमेल से व्यभिचार से नहीं जन्मा था?[2192]

[2192] *ज़ीउस*, या *जुपिटर*, एक ग्रीक-रोमन देवता थे जिन्हें मूर्तिपूजकों द्वारा स्वर्ग और पृथ्वी के शासक, सभी देवताओं और मनुष्यों के पिता के रूप में पूजित किया जाता था। पैगन लेखकों के विवरणों के अनुसार, ज्यूस ने महिलाओं को बहकाने के लिए ऐसे रूपांतरणों का सहारा लिया: उदाहरण के लिए, वह सुनहरी बारिश के रूप में डैनो पर अवतरित हुआ, हंस का रूप धारण करके लेडा को बहकाया, और खुद को एक सफेद सांड में बदलकर यूरोपा का अपहरण कर लिया।

एपोलो – प्राचीन यूनानियों और रोमनों का एक देवता, जिन्हें प्रकाश, विशेष रूप से सूर्य के प्रकाश, साथ ही बौद्धिक प्रबोधन, कविता और संगीत के देवता के रूप में पूजा जाता था; वह भविष्यवाणी के देवता, रोगों के उपचारक और सभी नागरिक व्यवस्था के संरक्षक भी थे।

लेटो – पौराणिक परंपरा के अनुसार, हेरा से पहले ज्यूस की पत्नी, जिनसे उन्होंने अपोलो और *आर्टेमिस को* जन्म दिया (या, रोमन पौराणिक कथाओं में, *डायना* – प्रसव, शिकार और चंद्रमा की देवी); जब ज्यूस की शादी हेरा से हुई थी तब भी वह उसकी पसंदीदा बनी रही और ईर्ष्यालु हेरा ने पूरे देश में उसका पीछा किया, जब तक कि उसने माउंट साइना के पास डेल्फ़ोस में अपोलो को जन्म नहीं दिया।

डायोनिसिस, या *बाकस* – अंगूर की बेल और शराब बनाने के देवता। उनकी माँ सेमेल, कैडमस की बेटी थीं; उनके पिता ज्यूस थे; संत डायोनिसिस के जन्म को व्यभिचार का कृत्य मानते हैं, क्योंकि, पौराणिक परंपरा के अनुसार, ज्यूस ने हेरा से विवाहित रहते हुए सेमेल के साथ संभोग करके उन्हें जन्म दिया था।

जूनो – जो ग्रीक *हेरा का* रोमन नाम है – ज्यूस की पत्नी है। ज्यूस के बारे में इस प्रकार की मूर्तिपूजक कहानियाँ यह दर्शाती हैं कि मूर्तिपूजक धार्मिक विचार कितने हद तक ईश्वर के ज्ञान के सच्चे मार्ग से भटक गए थे, यहाँ तक कि उन्होंने अपने देवताओं के व्यक्तित्व में उन कृत्यों को भी दिव्य कर दिया जिन्हें एक स्वस्थ, प्राकृतिक नैतिक भावना एक मनुष्य में भी निंदनीय समझती है।

'झूठ बोल रहे हो, तुम नीच!' ऑरेलियन चिल्लाया, 'डिओनिसिस का जन्म देवताओं की माता, जूनो से हुआ था।'

संत पॉल हँसे और कहा:

'क्या कोई देवता किसी महिला से पैदा हो सकता है? क्या कोई ऐसा व्यक्ति देवता बन सकता है जो पहले देवता न रहा हो? क्या किसी देवता की पत्नी होती है, और क्या वह उससे बच्चे पैदा कर सकता है?'

इस उत्तर से क्रोधित ऑरेलियन ने संत से कहा:

'हे दुष्ट और अभद्र मनुष्य! तुम अपने कपटी शब्दों से हमारे देवताओं की आलोचना और उनकी निंदा करना कब तक जारी रखोगे? क्या तुम्हारा मसीह, जिसे तुम स्वर्ग का ईश्वर कहते हो, किसी महिला से नहीं जन्मा था?'

संत पॉल ने उस ईश्वर-निन्दक से उत्तर दिया:

– यद्यपि आप दिव्य प्रकटीकरण के रहस्य को जानने के अयोग्य हैं, ताकि आपके चारों ओर खड़े लोग आपके शब्दों से भटक न जाएँ, फिर भी उस विषय पर, जिसके बारे में आप पूछताछ कर रहे हैं, कम से कम संक्षेप में बात करना आवश्यक है। आरंभ में, ईश्वर ने स्वर्ग और पृथ्वी और उनमें जो कुछ भी है, समुद्रों और उनमें जो कुछ भी है, सृजित किया; उसने मनुष्य को अपनी ही प्रतिमा और समानता में, शुद्ध, बिना किसी पाप के, धर्मी और धर्मपरायण, सृजित किया और उसे हर अच्छी चीज़ से परिपूर्ण स्वर्ग में स्थापित किया, और उसकी पसली से उसके लिए एक सहायक बनाई। परन्तु तुम्हारा पिता, शैतान, ऐसी मानवीय आनंद से ईर्ष्या करके, ईव को बहकाया और, उसके द्वारा, आदम को भी परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन करने के लिए प्रेरित किया। आदम और हव्वा को स्वर्ग से निकाल दिया गया; उन्होंने पुत्रों और पुत्रियों को जन्म दिया, जिनके माध्यम से पूरी दुनिया लोगों से भर गई – और संसार में प्रवेश किए गए पाप के कारण संपूर्ण मानव जाति मृत्यु के अधीन हो गई, ताकि हमारे सभी पूर्वज और धर्मी लोग पापियों के साथ नरक में डाल दिए गए: *'आदम से लेकर मूसा तक मृत्यु राज करती रही, यहाँ तक कि उन पर भी जिन्होंने पाप नहीं किया था, ठीक उसी प्रकार जैसे आदम के अपराध के द्वारा, जो आने वाले की एक आकृति है'* (रोमियों 5:14), जैसा कि मसीह के प्रेरित पौलुस कहते हैं। इसी कारण, स्वर्गीय पिता, सर्वशक्तिमान परमेश्वर ने, मानव जाति पर दया करके और उसकी सहायता करने की इच्छा से, अपने पुत्र को मानव देह धारण करने के लिए भेजा, ताकि आदम और उसके साथ नरक के बंधनों में बंद लोगों को बचाया जा सके। ईश्वर का यह पुत्र, पिता का वचन है, जो सभी युगों से पहले पिता से जन्मा, उनकी बुद्धि और सामर्थ्य और दहिना हाथ है; जिनके अवतार की शुभ-सूचना महादूत गब्रियल ने परम पवित्र कुँवारी को दी, जो एक भविष्यद्वक्ता और राजसी वंश से थीं; उसके अत्यंत शुद्ध और पवित्र गर्भ में स्वयं परमेश्वर—अर्थात् पिता का वचन—अदृश्य रूप से वास किया, जब स्वर्गदूत ने उससे कहा: *'हे अनुग्रह से परिपूर्ण, नमस्ते! प्रभु तुम्हारे साथ है; स्त्रियों में धन्य है तू। पवित्र आत्मा तुझ पर आएगा, और सर्वोच्च की सामर्थ्य तुझ पर छा जाएगी; इसलिये जो पवित्र बालक तुझ से उत्पन्न होगा, उसे परमेश्वर का पुत्र कहा जाएगा* (लूका 1:28, 35)। और परमेश्वर का पुत्र, पिता का वचन, मानव जाति के उद्धार के लिए, मानो वस्त्र की भाँति देह धारण करके, निष्कलंक कुँवारी से जन्मा। कोई भी सच्चे परमेश्वर को नहीं देख सकता, क्योंकि परमेश्वर एक आग के समान हैं जो सब कुछ भस्म कर देती है; पृथ्वी पर कोई भी मनुष्य परमेश्वर का मुख नहीं देख सकता और जीवित रह सकता। इसलिए, हमारे परमेश्वर, देहधारी होकर, का जन्म हुआ और एक शिशु के रूप में दूध से पोषित हुए, जबकि वे अपनी दिव्यता में परिपूर्ण थे। वह एक बालक, फिर एक युवक थे, जो देह में बढ़ते हुए एक परिपूर्ण मनुष्य बने; उन्होंने तेईस वर्षों तक लोगों के बीच जीवन यापन किया, शहरों, देशों और गांवों में यात्रा करते हुए, सभी पर आशीर्वाद लुटाते हुए और हमें, जो शैतान द्वारा पराजित और दास बनाए गए थे, मुक्ति प्रदान की। तब वे स्वेच्छा से क्रूस पर चढ़ाए गए, ताकि वे संसार को उद्धार प्रदान कर सकें, जो शैतान की चालाकी से नाश हो रहा था, और वे देह में मरे, अपनी पवित्र आत्मा के साथ अधोलोक में उतरे, और पीतल के द्वार तोड़ डाले, लोहे की सलाखें तोड़ डालीं, और संतों की आत्माओं को शैतान के अंधकार और फंदों से बाहर निकाला, और उन्हें स्वर्गीय क्षेत्रों में ऊपर उठाया। तीसरे दिन वे अपने शरीर में मरे हुओं में से जी उठे, अपने शिष्यों, अपने प्रेरितों और उन कई अन्य लोगों के सामने प्रकट हुए जिन्होंने उन पर सच्चा विश्वास किया था; वे चालीस दिनों तक प्रेरितों के साथ खाते-पीते रहे, फिर स्वर्ग में आरोहण करके अपने शरीर में परमेश्वर पिता के दाहिने हाथ पर बैठ गए। अब शैतान पीड़ा में तड़प रहा है, क्योंकि मसीह परमेश्वर ने उसे मसीहियों के पैरों तले गिरा दिया है, ताकि स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करने वाले उसे पैरों तले रौंद सकें—एक ऐसा राज्य जिससे तुम पराये हो, और जिसमें तुम अपने पिता, शैतान की विरासत, गेहन्ना की अनंत आग में होगे।

यह सब सुनकर ऑरेलियन का चेहरा क्रोध से विकृत हो गया; उसने दाँत पीसे और चिल्लाया:

'अभद्र और नीच मनुष्य! मैंने धैर्यपूर्वक तुम्हारे कपटपूर्ण वचन सुने हैं, जो हम पर अपमान करते हैं और देवताओं का अपमान करते हैं। मैं तुम्हें आखिरी बार कहता हूँ: यदि तुम देवताओं को बलिदान नहीं चढ़ाओगे, तो मैं तुम्हें क्रूर मृत्यु दंड दूँगा।'

संत पॉल और जुलियाना ने ज़ोर से पुकारा:

'हम ईसाई हैं और हमारी आशा मसीह में है; हम न तो तुम्हारे देवताओं की पूजा करेंगे और न ही तुम्हारे राक्षसों की सेवा करेंगे, और न ही हम तुम्हारे यातनाओं से डरते हैं, चाहे तुम हमारे लिए कितनी भी यातनाएँ रच दो। क्योंकि हम ईश्वर में विश्वास रखते हैं और आशा करते हैं कि आप हमसे पराजित होंगे, ठीक वैसे ही जैसे शैतान मसीह द्वारा पराजित हुआ था, जो हमें शक्ति देता है और आपकी दुष्ट योजनाओं को नष्ट करता है।

तब ऑरेलियन ने संत पॉल को एक पेड़ से बांधने और उनके चेहरे को आग से झुलसाने का आदेश दिया, जबकि एक उद्घोषक को यह उद्घोषणा करनी थी:

'राजा से अभद्र शब्द न बोलो, और देवताओं की निंदा न करो।'

अपने भाई को यातनाएँ झेलते हुए देखकर, संत जुलियाना ने पुकारा:

'दुष्ट यातनाकर्ता! मेरे भाई ने क्या बुरा किया है कि तुमने उसे ऐसी क्रूर यातना दी है?'

ऑरेलियन ने आदेश दिया कि संत जुलियाना को भी पेड़ से बाँधा जाए और उसके चेहरे को आग से झुलसाकर यातना दी जाए; उसी समय, उसने जुलियाना से कहा:

'अशर्मिंदा औरत, एक महिला के योग्य होकर समर्पण कर।'

संत ने उत्तर दिया:

'ऑरेलियन, मैं तुम्हारी आज्ञा मानूँगी, जो मुझे, एक महिला को, आत्मसमर्पण करने का आदेश देते हो; लेकिन मैं मसीह, जीवित परमेश्वर से डरती हूँ, जो मेरी आँखों के सामने खड़े हैं; मैं उनका त्याग नहीं कर सकती, और न ही मैं राक्षसों की पूजा करूँगी।'

ऑरेलियन, यह देखकर कि पवित्र शहीदों ने उसे शर्मिंदा कर दिया है, बहुत क्रोधित हो गया और फिर से आदेश दिया कि शहीदों के शरीरों को जलाकर राख कर दिया जाए। संतजनों के साथ ऐसा कष्ट होते देख सभी लोगों ने पुकारा:

'राजा ऑरेलियन, तुम उन्हें अनुचित रूप से न्याय कर रहे हो और उन्हें यातना दे रहे हो क्योंकि वे देवताओं को बलिदान चढ़ाने से इनकार करते हैं; मृत्यु के बाद तुम्हें उनके लिए जवाब देना होगा।'

ऑरेलियन, इस डर से कि लोगों में कुछ अशांति पैदा हो सकती है, ने पवित्र शहीदों का सिर कलम करने और उनके शरीरों को कुत्तों, जंगली जानवरों और पक्षियों को खाने के लिए फेंक देने का आदेश दिया। और इस प्रकार संतों को मृत्यु के घाट पर ले जाया गया। वे आनंदित और प्रसन्न थे, और गाए: *'परन्तु तू हमें हमारे शत्रुओं से बचाएगा, और हमें घृणा करने वालों को लज्जित करेगा'* (भजन संहिता 43:8)।

जब उन्हें शहर से बाहर फांसी के स्थान पर ले जाया गया, तो संत पॉल ने सिपाही से संत जूलियाना का सिर पहले काटने के लिए कहा, क्योंकि उसे डर था कि वह अपने ही सिर कटने का दृश्य देखकर डर सकती है। संत जूलियाना ने, क्रॉस का चिह्न बनाकर और आनंदित होकर, अपनी गर्दन अर्पित की और तलवार से उसका सिर कलम कर दिया गया। संत पौलुस ने जब देखा कि उनकी बहन ने शहीद की मृत्यु प्राप्त की है, तो उन्होंने स्वर्ग की ओर अपनी आँखें उठाईं और ईश्वर का धन्यवाद किया; फिर, क्रॉस का चिह्न बनाकर, उन्होंने भी अपनी गर्दन बढ़ा दी और तलवार से उनका सिर कलम कर दिया गया। शहीदों के पवित्र शरीर शहर के बाहर बिना दफनाए पड़े रहे, क्योंकि राजा की आज्ञा से, उन्हें पहरे पर रखने के लिए पास में सैनिक तैनात किए गए थे, कहीं ईसाई उन्हें न ले जाएँ। कुत्ते फाँसी के स्थान पर दौड़े, लेकिन उन्होंने शहीदों के शरीरों को नहीं छुआ; भेड़िये भी दौड़ते हुए आए, और उन्होंने भी शवों को नहीं छुआ, बल्कि उनकी रक्षा करते हुए लगातार उनके पास ही रहे; शिकारी पक्षी उड़ते हुए आए, लेकिन वे सम्मानित शवों पर नहीं उतरे; वे उनके ऊपर उड़ते रहे, उनकी रक्षा करते हुए और मक्खियों को भी उन पर बैठने से रोकते रहे। यह सात दिन और सात रातों तक चलता रहा, जिसके बाद सैनिकों ने इसकी सूचना ऑरेलियन को दी। उनका वृत्तांत सुनकर, उन्होंने कहा:

'ईसाइयों का जादू कितना शक्तिशाली है! हम उन्हें मृत्यु में भी हरा नहीं सके।'

और ऑरेलियन ने सैनिकों को उनकी पहरेदारी से हटने का आदेश दिया, लेकिन दिन में नहीं, बल्कि रात में, कहीं वे ईसाइयों के बीच उपहास का पात्र न बन जाएँ।

जब दनि चढ़ा, तो ईसाइयों ने, यह देखकर कि कोई पहरेदार नहीं थे, पवत्रि शहीदों पॉल और जूलयिाना के दीर्घ-पीड़ति शरीरों को उठाया और उन्हें सम्मान के साथ दफनाया। हमारे प्रभु यीशु मसीह को, जो पति और पवत्रि आत्मा के साथ राज्य करते हैं, महमिा और सम्मान हो, हमेशा, अब और अनंत काल तक। आमीन।

हमारे पूजनीय पति जेम्स तपस्वी का जीवन

4 मार्च को स्मरण कयि जाता है

फीनसियि की भूमि में[2193] , पोर्फरियन नगर के पास[2194] , जेम्स नाम का एक संन्यासी रहता था, जसिने इस क्षणकि जीवन की व्यर्थताओं को त्यागकर और संन्यासी जीवन अपनाकर, पंद्रह वर्षों तक एक गुफा में नविास कयि। जेम्स अपने तपस्वी प्रयासों में बहुत आगे थे और सद्गुणों में इतने महान और ईश्वर को इतने प्रयि हो गए कि उन्हें ईश्वर द्वारा राक्षसों पर अधकिार प्रदान कयि गया और हमारे उद्धारकर्ता यीशु मसीह के नाम पर उन्होंने कई चमत्कार कए। सभी लोग उनके सदाचारी जीवन को देखकर वस्मिति हुए, और न केवल वश्विासी बल्कि अवश्विासी भी उनके पास उमड़ पड़े। दव्यि अंतर्ज्ञान से यह पहचानकर कि उनसे कौन बात कर रहा है, इस ईश्वर-प्रेरति व्यक्ति ने उन्हें पवत्रि शास्त्रों से उपदेश दयि और उन्हें सच्चे ईसाई धर्म की ओर ले गए। लेकनि शैतान, मानव जाति का पुराना दुश्मन—जो मसीह के उत्साही सेवकों के प्रति विशिष रूप से शत्रुतापूर्ण है—ने यह देखकर कि वह इस पवत्रि पुरुष के अनेक सद्गुणों और नर्दिोष जीवन से लज्जति हो गया है, अपनी चालाकयिों से उसके वरिुद्ध उठ खड़ा हुआ, और उस पवत्रि पुरुष को उन स्थानों से भगा देने की इच्छा रखने लगा। इस उद्देश्य के लिए, वह पोर्फरियन नगर में रहने वाले एक अवश्विासी सामरी के अंदर प्रवेश कर गया, ठीक वैसे ही जैसे वह एक बार यहूदा के अंदर प्रवेश कयि था, और उसे याकूब को देश से बाहर नकिालने का नर्दिेश दयि। इस सामरी ने कई समान वचिारधारा वाले लोगों, रश्तिेदारों, दोस्तों, परचितिों, पड़ोसयिों और नौकरों को इकट्ठा कयि, और उनके साथ अपने दुष्ट पुरोहति के घर गया। वहाँ उन्होंने एक सभा की यह चर्चा करने के लिए कि जेम्स को उनके देश से कैसे नकिाला जाए, क्योंकि वह बहुत से लोगों को उनके धर्म से हटाकर मसीह की ओर ले जा रहा था। लंबी वचिार-वमिर्श के बाद, उन्होंने एक चालाकी भरी योजना बनाई। एक वेश्या को बुलाकर, उन्होंने उसे बीस सोने के सकि्के दिए और वादा कयि कि अगर वह जाकर तपस्वी जेम्स को पाप में फँसा दे तो वे उसे उतनी ही राशि फरि से देंगे। तब वे उस पर व्यभचिारी होने का आरोप लगाकर अपमानति करके उसे अपने देश से नकिाल देते। उन्होंने जेम्स के दरवाज़े पर दस्तक दी और उससे दरवाज़ा खोलकर उसे अंदर आने की वनिती की। जब धन्य व्यक्ति ने उसके लिए दरवाज़ा नहीं खोला, तो उसने और भी ज़ोर से दस्तक दी और उससे कई वनिती करके उसे परेशान कयि। आखरिकार संत ने दरवाज़ा खोला और वहाँ खड़ी महलिा को देखकर समझा कि वह एक भूत है; इसलिए, उन्होंने क्रॉस का चह्नि बनाया और तुरंत दरवाज़ा अच्छी तरह से बंद कर दयि और अपनी कुटयि में लौटकर, पूर्व की ओर मुख करके ईश्वर से वनिम्रतापूर्वक प्रार्थना की कि वह उनसे इस दैवीय प्रलोभन को दूर कर दें। इस बीच, आधी रात हो गई, फरि भी उस महलिा ने दरवाज़ा खटखटाना बंद नहीं कयि; आखरिकार, उसने संत से ज़ोर से पुकारा:

'हे जीवति परमेश्वर के सच्चे सेवक, मुझ पर दया करो! मेरे लिए दरवाज़ा खोलो, कहीं मैं तुम्हारी कोठरी के सामने ही जंगली जानवरों का भोजन न बन जाऊँ।'

आदरणीय जेम्स ने, यह महसूस करते हुए कि आधी रात हो चुकी थी और चारों ओर कई जंगली जानवर थे, अनचि्छा से ही सही, उसके लिए दरवाज़ा खोल दयि और कहा:

'तुम कहाँ से आई हो, और यहाँ क्या ढूंढ रही हो?'

उस महलिा ने उत्तर दयि:

मैं मठ से हूँ और मुझे मठ की प्रमुख ने शहर में एक काम से भेजा था, लेकनि जब मैं लौट रही थी, तो अँधेरी रात हो गई, और मैं रास्ता भटक गई और यहाँ आ गई। मैं आपसे वनिती करती हूँ, हे ईश्वर के सेवक, मुझ पर दया करें और मुझे आपके द्वार पर खड़े जंगली जानवरों द्वारा टुकड़े-टुकड़े होने न दें, बल्कि मुझे इस रात आपके साथ रहने दें जब तक कि भोर न हो जाए, और फरि मैं अपने रास्ते चली जाऊँगी।

[2193] *फ़निसियि* भूमध्य सागर के तट पर स्थति एक देश था। इसके मुख्य शहर टायर और सडिोन थे।

[2194] *पोर्फ़रीऑन* फ़निसियि में माउंट कार्मेल के पास एक शहर था। सख्त मायनों में, यह एक बस्ती या एक बड़ा गाँव था।

आदरणीय जेम्स को उस पर दया आ गई, उन्होंने उसे अपने आवास में लाया और रोटी-पानी देने के बाद, उसे बाहरी कोठरी में छोड़कर खुद अपनी भीतरी कोठरी में चले गए। कुछ रोटी खाने के बाद, वह थोड़ी देर के लिए सो गई। तब, बीमार होने का नाटक करते हुए, वह जोर-जोर से रोने और कराहने लगी; और, भीतरी कोठरी के दरवाज़े से सटकर, उसने रेवरेंड फादर से अपनी मदद करने की विनती क । संत ने छोटी सी खड़िकी से देखा और यह देखकर कि वह बीमार पड़ गई है, यह सोचकर असमंजस में पड़ गए कि उससे क्या कहें या क्या करें। उस महिला ने, हालांकि, उनसे विनती की:

उसने कहा, 'फादर, मैं आपसे विनती करती हूँ, मेरी दुर्बलता पर दया करें और मुझे क्रॉस के चिह्न से सुरक्षित करें, क्योंकि मेरा दिल बहुत ज़ोर से दर्द कर रहा है।'

संत ने उसकी विनती सुनकर तुरंत आग जलाई और अपने साथ लाए पवित्र तेल को लेकर उसके पास बैठ गए। अपना बायाँ हाथ आग पर रखकर, संत ने अपना दायाँ हाथ पवित्र तेल में डुबोया और महिला के शरीर को छुआ, कभी-कभी क्रॉस का चिह्न बनाते हुए, कभी-कभी अपने हाथ से उसका हृदय अभिषिक्त और गर्म करते हुए, क्योंकि वह अपने हृदय में तीव्र पीड़ा की शिकायत कर रही थी। अशुद्ध इच्छाओं से प्रेरित होकर, उस महिला ने पुरोहित में कामुकता जगाने और उसे पाप की ओर ले जाने का प्रयास किया, और इसलिए उसने उससे कहा:

'मैं आपसे विनती करती हूँ, फादर, मुझे एक बार फिर से तेल लगाकर मेरे हृदय को अपने हाथ से गर्म करें, ताकि मेरी पीड़ा पूरी तरह से समाप्त हो जाए।'

धन्य जेम्स, हृदय से सरल और निष्पाप होने के कारण, उस महिला की बातों पर विश्वास कर गए और उन्होंने उसकी माँग के अनुसार किया। लेकिन, शरीर के विरुद्ध युद्ध करने वाले शैतान की छल-कपट से अवगत होकर, और इस बात से भयभीत होकर कि महिला के प्रति अत्यधिक दया और करुणा उसकी आत्मा को अनंत विनाश की ओर ले जा सकती है, उसने दो या तीन घंटे तक अपनी बाईं हथेली को आग पर रखा, और दर्द को दृढ़ता से सहन किया, यहाँ तक कि उसकी उंगलियों के जोड़ गिर पड़े। इस प्रकार धन्य व्यक्ति ने शैतान के प्रलोभन के विरुद्ध संघर्ष किया, ताकि असहनीय दर्द से कोई अशुद्ध विचार उसके मन में प्रवेश न कर सके। संत ने जो किया, उसे देखकर वह महिला भय से भर गई। उसका हृदय करुणा से भर उठा, और, तुरंत उठकर, वह रोते हुए संत के पैरों पर गिर पड़ी, अपना सीना पीटते हुए और पुकारते हुए:

'हाय, मैं दुर्भाग्यपूर्ण और अंधी हूँ! हाय, मैं शैतान का निवास स्थान बन गई हूँ।'

संत ने जब उसे रोते देखा और उसके शब्द सुने, तो वे अत्यंत आश्चर्यचकित हो गए और उससे कहा:

'उठो, महिला!'

उसे जल्दी से जमीन से उठाकर और ईश्वर से एक भक्तिपूर्ण प्रार्थना करते हुए, उन्होंने पूछा:

'मुझसे बताओ, इसका क्या मतलब है? तुम मेरे पास क्यों आई हो?'

महिला ने बड़ी मुश्किल से अपने होश में आकर, संत को सब कुछ विस्तार से बताया: कि कैसे दुष्ट सामरी लोगों ने उसे संत को बहकाने की शिक्षा दी थी; उसने कहा कि स्वयं शैतान ने इस धर्मी व्यक्ति को—जो अपने जीवन में निराकारों की नकल करता था—शारीरिक पाप में फँसाने के लिए यह प्रलोभन रचा था। महिला की बात सुनने के बाद, पूजनीय संत ने आह भरकर, बहुत सारे आँसू बहाते हुए, ईश्वर का धन्यवाद किया; फिर, महिला को उपदेश देकर और आशीर्वाद देकर, उन्होंने उसे बिशप अलेक्जेंडर के पास भेज दिया। चर्च पहुँचने पर, महिला ने बिशप के सामने अपने सभी पापों का इकबालिया बयान दिया। संत ने उसे पर्याप्त रूप से उपदेश दिया और यह देखकर कि उसने सचमुच पश्चाताप कर लिया है, उसे पवित्र बपतिस्मा द्वारा ज्ञान का प्रकाश दिया और एक मठ में भेज दिया। इस प्रकार वेश्या मसीह की दुल्हन बन गई।

तब, सभी ईसाइयों और अपने पुरोहितों को इकट्ठा करके, बिशप ने सभी सामरी लोगों को शहर से निकाल दिया। इसके बाद, धन्य जेम्स के पास जाकर, बिशप ने अपनी पितृवत् उपदेशों से उनके धन्य जीवन को और भी सुदृढ़ किया। और वह महिला, जो पहले एक पापी थी, अपने जीवन द्वारा परमेश्वर को प्रसन्न करने लगी और उसे दुष्टात्माओं पर अधिकार की शक्ति प्राप्त हुई।

कुछ ही समय बाद, एक कुलीन और धनी व्यक्ति की बेटी, जो एक अशुद्ध आत्मा से पीड़ित थी, संत जेम्स का नाम पुकारने लगी। उसके माता-पिता उसे संत के पास ले आए और उस युवती के प्रति दिया दिखाते हुए, उनसे अनुरोध किया कि वे उसके अंदर से अशुद्ध आत्मा को निकाल दें। संत ने उसके लिए ईश्वर से प्रार्थना की और अपना हाथ उसके ऊपर रखा, और ईश्वर की शक्ति से तुरंत ही उसके अंदर से दानव को निकाल दिया, और वह युवती ठीक हो गई। यह चमत्कार

देखकर, लड़की के माता-पिता ने ईश्वर का धन्यवाद किया और, ईश्वर के उस पुरुष के प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त करने की इच्छा से, उसे तीन सौ सोने के सिक्के भेंट किए। लेकिन उस धर्मी पुरुष ने न केवल सोना स्वीकार करने से इनकार कर दिया, बल्कि उसने उसकी ओर देखा भी नहीं, और कहा:

'ईश्वर की देनों को बेचना-खरीदना उचित नहीं है, जैसा कि पवित्र शास्त्र कहता है: *"बीमारों को चंगा करो, कोढ़ियों को शुद्ध करो, मरे हुओं को जिलाओ, दुष्टात्माओं को निकालो; तुमने मुफ्त में पाया है, मुफ्त में दो"* (मत्ती 10:8)। सोना गरीबों को दिया जाना चाहिए, क्योंकि मैं मरुस्थल में रहता हूँ, मुझे इसकी कोई ज़रूरत नहीं है।"

यह कहकर, संत ने सोने के साथ भेजे गए लोगों को वापस भेज दिया। उसी क्षेत्र में एक युवक था जो शैतान के काम से दोनों पैरों से लकवाग्रस्त था; उसके माता-पिता इस युवक को संत जेम्स के पास ले आए और उनसे उसके लिए ईश्वर से प्रार्थना करने का अनुरोध किया। सम्माननित पिता ने तीन दिन तक उपवास और प्रार्थना की और लकवाग्रस्त व्यक्ति को ठीक कर दिया; फिर, उसे आशीर्वाद देकर, उन्होंने उसे अपने पैरों पर घर लौटने का आदेश दिया। विभिन्न बीमारियों से पीड़ित कई अन्य लोग इस चमत्कार करने वाले के पास आए, और सभी, उनकी प्रार्थनाओं के द्वारा, ठीक हो गए और अच्छे स्वास्थ्य के साथ उनके पास से लौट गए। ईश्वर के उस पुरुष ने, यह देखकर कि सभी उसका सम्मान कर रहे थे, इस बात से डर गया कि वह अहंकार में पड़ सकता है, और इसलिए वह गुफा छोड़कर मानव महिमा से दूर भाग गया। शहर से चालीस कदम दूर जाने के बाद, उसे नदी के किनारे चट्टान में एक बड़ी गुफा मिली और वह वहीं रहने लगा। यहाँ वे तीस साल तक रहे, और उन्होंने अपने सभी दिन-रात प्रार्थना और आँसुओं में बिताए। लंबे समय तक उन्होंने नदी के किनारे उगने वाले समुद्री शैवाल पर जीवन यापन किया, और बाद में उन्होंने एक छोटा सा सब्जी का बगीचा लगाया, जहाँ वे दिन का कुछ हिस्सा काम करते थे और अपने द्वारा बोई और काटी गई फसलों से अपना पेट भरते थे। संत जेम्स के तपस्वी जीवन ने उन्हें इतनी प्रसिद्धि दिलाई कि बीस या तीस मठों के भिक्षु और पुरोहित आध्यात्मिक मार्गदर्शन के लिए उनके पास आने लगे। और केवल पादरी ही नहीं, बल्कि कई आम लोग भी उनके पास आने लगे, जो सदाचारी जीवन का उपदेश प्राप्त करते और उनकी कृपा और प्रार्थनाएँ प्राप्त कर अपने आत्मा के लिए महान लाभ के साथ लौट जाते थे।

ईश्वर की कृपा प्राप्त ऐसे महान व्यक्ति के पतन की कहानी इस प्रकार है। ऐसा संभवतः इसलिए हुआ क्योंकि उन्होंने अपनी पवित्रता और ईश्वरीय जीवन पर बहुत अधिक ध्यान देना शुरू कर दिया, और स्वयं को एक महान तपस्वी मानने लगे। उसके पतन की शुरुआत इस प्रकार हुई। मानव जाति के प्राचीन शत्रु, शैतान—जो परमेश्वर को प्रसन्न करने वाले जीवन जीने वालों से ईर्ष्या करता है और उनके लिए विनाश का गड्ढा लगातार खोदता रहता है—एक अमीर आदमी की बेटी, एक युवा कुंवारी में प्रवेश कर गया और उसे सताने लगा, उसे जेम्स का नाम लेने पर मजबूर करते हुए और कहने लगा:

'मैं उसे तब तक नहीं छोड़ूँगा जब तक तुम मुझे जकूब तपस्वी के पास नहीं ले जाओगे।'

उस युवती के माता-पिता उसे अपने साथ लेकर, पवित्र फादर जेम्स की तलाश में लंबे समय तक मठों और रेगिस्तानों में घूमते रहे। जब उन्हें आखिरकार वह मिल गए, तो वे उनके चरणों में गिर पड़े और उनसे विनती करने लगे:

'हमारी बेटी पर दया करो, क्योंकि वह एक अशुद्ध आत्मा से बहुत कष्ट झेल रही है; उसे अब बीस दिन हो गए हैं जब से उसने न तो भोजन लिया है और न ही पानी पिया है, परन्तु, चीखें मारते हुए, वह खुद को सताती है और आपके नाम को पुकारती है।'

संत, प्रार्थना करने के लिए उठे, और उन्होंने उसके लिए ईश्वर से इतनी आस्थापूर्वक प्रार्थना की कि जिस स्थान पर वे खड़े थे, वह भी काँप उठा। जब उन्होंने प्रार्थना समाप्त की, तो जेम्स ने उस युवती पर फूँक मारी और अशुद्ध आत्मा से कहा:

'हमारे प्रभु यीशु मसीह के नाम पर, मैं तुझे आज्ञा देता हूँ: इस कन्या से निकल जा।'

और तुरंत शैतान, जैसे आग से झुलस गया हो, उस कन्या से निकल गया। वह, हालांकि, जमीन पर गिर पड़ी और लंबे समय तक मूक बनी रही। लेकिन संत जेम्स ने एक बार फिर ईश्वर से प्रार्थना की, उसका हाथ पकड़ा, उसे जमीन से उठाया, और उसे उसके माता-पिता के पास लौटा दिया। उन्होंने, ऐसा चमत्कार देखकर, ईश्वर की स्तुति की। लेकिन, इस डर से कि अशुद्ध आत्मा उसकी ओर वापस आ सकती है, उन्होंने संत से विनती की कि उनकी बेटी को तीन दिनों तक उनके पास रहने दें, जब तक कि वह पूरी तरह से ठीक न हो जाए। इस प्रकार वह कन्या संत के साथ रुकी, जबकि उसके माता-पिता घर लौट गए।

जब तक वह युवती संत जेम्स के साथ रही, शैतान ने, यह देखकर कि संत उस युवती के साथ एक सुनसान, एकांत स्थान पर अकेले थे, और यह महसूस करते हुए कि उसकी योजनाओं के लिए सबसे उपयुक्त क्षण आ गया था, उस तपस्वी के भीतर अशुद्ध विचारों और घृणित कामुक इच्छाओं का तूफान खड़ा कर दिया, और इस प्रकार उसकी कामवासना को भड़काया, कि वह पवित्र पुरुष—वही जो पहले सामरी लोगों द्वारा भेजी गई वेश्या के प्रलोभन में नहीं फँसा था, जिसने शुद्धता और पवित्रता की रक्षा के लिए, अपनी ही आग में अपना हाथ जला लिया था, वह जिसने कई चमत्कार किए थे और दुष्टात्माओं को भगाया था—वह कामुक इच्छा से इतना प्रबल रूप से भड़क उठा कि, ईश्वर के भय और अपने कई वर्षों के तपस्या के श्रम, साथ ही ईश्वर द्वारा प्रेषित अनुग्रह और चंगा करने की शक्ति को भूलकर, और पहले से ही वृद्धावस्था में होने के कारण, वह शैतान के वश में आ गया और गिर पड़ा। उसने एक कुंवारी के साथ बलात्कार किया, उसे और उसकी कुँवारीपन को अपवित्र किया, और शरीर तथा आत्मा दोनों को अपवित्र करके, अपने सभी पूर्व के तपस्या के प्रयासों को नष्ट कर दिया। उसके लिए एक पाप करना ही काफी नहीं था; उसने उसमें एक और भी गंभीर पाप जोड़ दिया। जैसे कोई पर्वत पर फिसलकर नीचे की ओर गिरता है, चट्टान से चट्टान पर गिरता हुआ खुद को चूर-चूर कर लेता है, वैसे ही संत जेम्स के साथ हुआ: एक बड़ा पाप करने के बाद, वह दूसरे, और भी बड़े और अधिक गंभीर पाप में गिर गया, और एक बुराई के ऊपर दूसरी बुराई जोड़ता गया। शत्रु ने उसके भीतर भय उत्पन्न किया, और वह विचार करने लगा: 'अब वह कन्या अपने माता-पिता से कहेगी कि मैंने उसके साथ बलात्कार किया है, और मुझे शर्म और निंदा का सामना करना पड़ेगा, और मैं उसके कारण बड़ी मुसीबत में पड़ जाऊँगा।' शैतान के उकसावे में आकर, उसने उस निर्दोष कन्या को मार डाला, यह सोचकर कि वह अपने पाप को लोगों से छिपा लेगा और अपमान से बच जाएगा। लेकिन वह यहीं नहीं रुका; बल्कि, उसने खुद को पाप के और भी अधिक हवाले कर दिया: क्योंकि उस युवती के शरीर, जिसे उसने अपवित्र किया था और अपने ही हाथों निर्दयता से मार डाला था, उसे जमीन में ठीक से दफनाया नहीं, बल्कि उसे नदी में फेंक दिया। अहंकार का यही फल है; क्योंकि यदि इस भिक्षु ने स्वयं को पवित्र और सद्गुणों में महान नहीं समझा होता, तो वह इतने घोर पापों में नहीं पड़ता, और न ही शत्रु उस वृद्ध का मज़ाक उड़ाता, जिसने अपनी जवानी में एक बार उसकी चालाकियों पर विजय प्राप्त की थी।

इसके बाद, शैतान जेम्स को एक बँधे हुए कैदी की तरह, विनाश की अंतिम खाई में, सभी पापों में सबसे गंभीर पाप में, काइन और यहूदा की निराशा में खींचने लगा। बड़े भाई, अपनी कोठरी में बैठे, यह नहीं जानते थे कि उनके लिए अब क्या करना शेष था। अपनी अंतरात्मा द्वारा कड़ी फटकार सुनते हुए, वह आहें भरता और निराशा के आगे झुकता हुआ, अब न तो प्रार्थना के लिए अपने होंठ हिलाने की हिम्मत कर पा रहा था और न ही अपना मन ईश्वर की ओर मोड़ पा रहा था। उसने किसी अन्य दूर के देश में भाग जाने का, संन्यासी जीवन त्यागकर संसार में बस जाने का, और अपनी वृद्धावस्था में संसार और शैतान की सेवा करने का निश्चय किया। गुफा छोड़कर, वह तेजी से चल पड़ा, निराशा से एक प्रचंड समुद्री तूफान की तरह उछाला और बहका जा रहा था,

लेकिन मसीह की परम, असीम और दयालु भलाई—जिसे पूरी दुनिया के पाप भी नहीं हरा सकते, और जो चाहती है कि सभी लोग बचें और कोई भी नष्ट न हो—ने इस खोए हुए वृद्ध को नहीं छोड़ा; इसने दुष्टात्माओं को अंत तक उसकी बर्बादी पर प्रसन्न होने नहीं दिया, लेकिन, अपनी अकथनीय दिव्य-प्रज्ञा के अनुसार, उसने उसके पतन से उठने और नए सिरे से जी उठने की व्यवस्था की। क्योंकि जब वह अपनी यात्रा पर निकला, तो उसने सड़क के किनारे एक मठ देखा; उसमें प्रवेश करने पर, उसने मठाधीश और भाइयों को प्रणाम किया। उन्होंने उसे कुछ रोटी दी, लेकिन उसने उसकी बात तक नहीं सुनी, और केवल बार-बार और गहरी आहें भरता रहा। जब भाइयों ने उससे कुछ खाने का आग्रह किया, तो उसने उनसे कहा:

'हाय रे मुझ दुष्ट मानव! मैं स्वर्ग की ओर अपनी दृष्टि उठाने का साहस कैसे करूँ? मैं मसीह का नाम लेने का साहस कैसे करूँ, जिन्हें मैंने दुःख पहुँचाया है? और मैं एक व्यभिचारी और हत्यारा होकर उनकी देनियों को कैसे छू सकता हूँ?'

तब उसने उनके सामने विस्तार से सब कुछ कबूल किया जो उसके साथ हुआ था। महाधर्माध्यक्ष और भाइयों ने, उसका पाप-स्वीकार सुनकर, गहराई से प्रभावित हुए और उसके प्रति सहानुभूति रखते हुए, उसे सांत्वना देने लगे, ताकि वह निराशा में न डूब जाए, बल्कि पश्चाताप करके अपने पापों के लिए प्रायश्चित स्वीकार कर सके। उन्होंने जेम्स से काफी देर तक उनके साथ रहने का आग्रह किया, लेकिन उन्होंने उनकी बात नहीं मानी और संसार में चले गए। वह लंबे समय तक रेगिस्तान में भटकते रहे। अंत में, ईश्वर की इच्छा से, उनकी मुलाकात एक ईश्वर-प्रेरित व्यक्ति से हुई जिसने

उस वरष्ठि से रास्ता छोड़कर अपनी कुटयिा में आने के लिए कहा। जेम्स को मना लेने के बाद, वह उसे अपने नविास में ले गया, उसके पैर धोए और जो कुछ भी भोजन उसके पास था, वह उसे परोसकर खाने के लिए कहा। लेकनि जेम्स, अपने ववेक से पीड़ति और लज्जति होकर, अपने हृदय की गहराई से गहरी आह भरते हुए अपनी छाती पीटने लगा, और वह भोजन को छूना भी नहीं चाहता था। तब वह आदमी याकूब के पैरों पर गरि पड़ा, उसे सांत्वना दी, और कसम खाई कि जब तक वह बूढ़ा परोसा गया भोजन चखने के लिए राजी नहीं हो जाता, तब तक वह जमीन से नहीं उठेगा। जब याकूब मान गए, तो भक्षिु जमीन से उठा, और दोनों ने उस भोजन का सेवन कयिा जो रेगस्तिान में संभव था। खाना खाने के बाद, वे दोनों उठे, ईश्वर का धन्यवाद कयिा, और फरि से बैठ गए। फरि तपस्वी ने जेम्स से कहा:

'पतिाजी, मेरी आत्मा के कल्याण के लिए मुझे मार्गदर्शन दें; मुझे, अपने पुत्र के रूप में, मसीह के बारे में सखिाएँ, और मेरे हृदय को मजबूत करें, क्योंकि मैं अक्सर और गहराई से वभिन्नि वचिारों से परेशान रहता हूँ।'

याकूब जोर-जोर से रोया और, असहनीय आँसू बहाते और अपनी छाती पर हाथ मारते हुए, कहा:

– भाई, मुझे अपने घोर पापों पर रोने के लिए छोड़ दो, जनिके कारण मैंने परमेश्वर को क्रोधति कयिा है; क्योंकि, शैतान द्वारा बहकाए गए एक कमज़ोर युवक की तरह, मैं अपनी इस व्यर्थ और अपमानजनक वृद्धावस्था में वनिाश में गरि गया हूँ, और अब पूरी तरह से खो गया हूँ। अपने वृद्धावस्था में, मैं उन वासनाओं का शकिार हो गया हूँ जनि्हें मैंने अपनी जवानी में जीता था: मैं अशुद्ध व्यभचिार में गरि गया हूँ और मैंने इससे भी गंभीर पाप करने की हम्मित की है।

याकूब की बात सुनकर, संन्यासी गहरे दुख और शोक से भर गया और उसने वृद्ध से शैतान के सभी प्रलोभनों का वस्तिार से वर्णन करने के लिए कहना शुरू कर दयिा। उसने यह दो कारणों से पूछा: पहला, ताकि वरष्ठि अपने पापों का इक़रार करके पश्चाताप की ओर प्रेरति हों; और दूसरा, ताकि वह स्वयं, वरष्ठि के पतन की कहानी सुनकर, सतर्कता सीख सके और उसी प्रलोभन में न फँसे। फरि जेम्स ने अपनी कथा शुरू की।

उसने कहा, 'मैंने पचास वर्षों से अधकि समय तक उपवास और जंगल में जीवन यापन करके प्रभु की सेवा की है, और अपने वासनाओं का दृढ़ता से वरिोध कयिा है; मैं तो अपने शरीर पर इसके नशिान भी रखता हूँ, क्योंकि मैंने पवत्रिता के लिए आग में अपना हाथ जला लयिा था।' और मैं, यद्यपि अयोग्य हूँ, फरि भी मुझे उस सद्भगवान से महान अनुग्रह प्राप्त करने के योग्य समझा गया, क्योंकि मुझ जैसे पापी के माध्यम से, ईश्वर ने कई चमत्कार कए हैं। अंत में, शैतान एक युवती में प्रवेश कर गया, जसिके माता-पति, मुझमें नविास करने वाले मसीह के अनुग्रह के बारे में सुनकर, उसे मेरे पास ले आए ताकि मैं उसके लिए प्रार्थना करूँ। ईश्वर की सहायता से, मैंने उससे राक्षस को भगा दयिा। उन्होंने अनुरोध कयिा कि उनकी बेटी तीन दनिों तक मेरे पास रहे, जब तक कि वह पूरी तरह से स्वस्थ न हो जाए, और उसे मेरे पास छोड़कर वे चले गए। जहाँ तक मेरी बात है, मैं कामुक वासना में इतना डूब गया था कि मेरा मन अंधा हो गया था, उस समय मैंने ईश्वर को भुला दयिा था, नर्क की आग से नहीं डरा, और अपने कई वर्षों के श्रम की भी परवाह न करते हुए, मैंने उस कन्या के साथ बलात्कार कयिा और उसकी पवत्रिता को कलंकति कयिा। और मेरे लिए एक पाप करना ही काफी नहीं था; बल्कि, शैतान के उकसावे पर, मैंने पहले से भी अधकि भयंकर दूसरा पाप करने की हम्मित की, क्योंकि मैंने उस कन्या की हत्या कर दी और उसके शव को नदी में फेंक दयिा। अपने मोक्ष से नरिाश होकर, मैं उस स्थान से भाग गया और अब संसार में चला जाता हूँ; क्योंकि मैं अपनी आँखें स्वर्ग की ऊँचाइयों की ओर कैसे उठा सकता हूँ? यदि मैं मसीह के नाम को पुकारने की हम्मित करूँ, तो स्वर्ग की आग मुझे भस्म कर देगी।

जब जेम्स ने भरपूर आँसू बहाते और जोर-जोर से रोते हुए अपना पाप-स्वीकार पूरा कर लयिा, तो संन्यासी का हृदय दया से भर गया; और, वृद्ध के गले में बाहें डालते हुए, उसने उसे चूमा और कहा:

'मैं आपसे वनिती करता हूँ, पतिाजी, हतोत्साहति न हों, अपनी मुक्ति के लिए नरिाश न हों, बल्कि इस वश्विास के साथ कि ईश्वर पश्चाताप सुनते हैं, अपने पापों का उनसे स्वीकार करें, क्योंकि प्रभु परम दयालु हैं और हमारी प्रति उनकी दया अकथनीय है। यदि ईश्वर पश्चाताप स्वीकार न करते, तो दाऊद, जसिे पहले ही भवष्यिवाणी का वरदान प्राप्त था, फरि भी व्यभचिार और हत्या के पापों में गरि गया था, उसे ऐसे पापों के लिए क्षमा कैसे मलि गई? संत पतरस, जहाज़ के नावकि, जो मुख्य प्रेरति थे और जनि्हें प्रभु ने स्वर्ग के राज्य की कुंजयिाँ सौंपी थीं, मसीह की स्वेच्छा से उठाई गई पीड़ा के दौरान उन्हें तीन बार नकारने के बाद, न केवल पश्चाताप के कड़वे आँसुओं के माध्यम से अपने पापों की क्षमा प्राप्त कर सके, बल्कि उन्हें मसीह के झुंड का चरवाहा होने के महान सम्मान के योग्य भी कैसे माना गया? इसलिए, जब तक हमारे पास ऐसा करने का समय है, हम प्रायश्चति करें।

इन शब्दों से याकूब की आत्मा को बल देते हुए, तपस्वी ने उससे रुकने और उसके साथ रहने का आग्रह कयि। लेकनि याकूब मानने को तैयार नहीं हुआ। तब तपस्वी, वृद्ध के पैरों पर गरिकर उन्हें चूमने लगा और उससे और भी वनिम्रता से नविेदन करने लगा कि वह उसे न छोड़े, क्योंकि उसे डर था कि वृद्ध नरिाशा में पड़कर उसकी आत्मा को पूरी तरह से बर्बाद कर सकता है। जेम्स को मना न सकने पर, तपस्वी बहुत दुखी हुआ और रो पड़ा। अंत में, उसकी ओर से ईश्वर से एक भक्तपिूर्ण प्रार्थना करने के बाद, उसने उसे जाने दयि, यात्रा के लिए आवश्यक भोजन दयि, और पंद्रह स्टेडयिम तक उसके साथ चला, और इस पूरे समय उसे पश्चाताप करने के लिए प्रेरति करता रहा। तब, याकूब को गले लगाकर और आँसुओं से चूमकर, तपस्वी अपनी कुटयि में लौट गया। याकूब, दुनयि की ओर जाने वाली सड़क पर काफी दूरी तय कर लेने के बाद, रास्ते से थोड़ा हटकर एक प्राचीन कब्र गुफा में पहुँचा, जहाँ बहुत सारी हड्डयिाँ थीं, जो कब की मट्टिी में मलि चुकी थीं। उस गुफा में प्रवेश करके, याकूब ने सभी हड्डयिों को इकट्ठा कयि, उन्हें एक कोने में रख दयि, और गुफा में रहने लगा[2195] । घुटनों के बल गरिते हुए, याकूब ने अपने सीने पर हाथ मारते हुए, जोर-जोर से रोते और वलिाप करते हुए, परमेश्वर से भक्तपिूर्वक प्रार्थना करना शुरू कर दयि, और कहा:

'हे मेरे ईश्वर, मैं आपसे बात करने का साहस कैसे करूँ? मैं अपनी मुक्ति की खोज कहाँ से शुरू करूँ? मैं अपनी अशुद्ध जीभ और कलंकति होठों से प्रार्थना करने का साहस कैसे करूँ? मैं सबसे पहले कसि पाप के लिए क्षमा माँगूँ? व्यभचिार या हत्या?' हे परम कृपालु प्रभु, मेरे घोर पापों को क्षमा करें; हे परम दयालु प्रभु, मैं अयोग्य हूँ, मुझ पर दया करें, और मुझे मेरे दुष्ट कर्मों के साथ नष्ट न करें, क्योंकि मेरे अपराध बहुत बड़े हैं: मैंने व्यभचिार कयि है; मैं एक हत्यारा बन गया हूँ, नर्दिोषों का रक्त बहाया है, शरीर को पानी, जानवरों और पक्षयिों को खाने के लिए सौंप दयि है; अब, हे प्रभु, मैं अपने सभी पापों का इकरार आप सर्वज्ञ से करता हूँ, क्षमा की याचना करते हुए। हे प्रभु, मुझे तुच्छ न समझिए, बल्कि मानव जाति के लिए अपने अगोचर प्रेम से, मुझ दुष्ट और नीच पर दया कीजिए; मुझे अपनी महान दया दखिाइए और मुझे मेरे सभी अधर्मों से शुद्ध कीजिए, कहीं ऐसा न हो कि शित्रु मुझे डुबा दे, जो पहले से ही पाप की खाई में डूबा हुआ है, और अधोलोक का सर्प मुझे नगिल ले।

अपने पापों की इस स्वीकारोक्ति और पश्चाताप में, धन्य जेम्स दस वर्ष तक रहे, और इस पूरे समय उस कब्र में रहे। और वह एक जीवति मृतक के समान हो गए, मृतकों के बीच रहते थे और जीवतिों के बीच कभी दखिाई नहीं देते थे। भले ही कोई उस जगह आ जाता, जेम्स कसिी से बात नहीं करता था; अगर कोई उससे कुछ पूछता, तो वह एक भी शब्द नहीं बोलता, अपना मुँह केवल ईश्वर से प्रार्थना करने और अपने पापों पर पश्चाताप करने के लिए खोलता था। उसका भोजन उन रेगस्तिानी जगहों पर उगने वाली जड़ी-बूटयिों से होता था, और उन्हें भी वह बहुत कम और थोड़ी मात्रा में ही खाता था, बस भूख से मरने से बचने के लिए। इस प्रकार याकूब ने लगातार दस वर्ष अखंड आँसुओं, आहों और प्रार्थनाओं में बतिाए, दनि-रात ईश्वर से पुकारते हुए, अपने पापों का स्वीकार करते हुए और बनिा कसिी दया के अपनी छाती पीटते हुए।

सर्व-उदार और परम दयालु प्रभु, जो पापी के वनिाश की कामना नहीं करते, बल्कि उसके धर्म-परविर्तन का इंतजार करते हैं, उन्होंने धन्य जेम्स के प्रायश्चति की लंबी अवधि को अनदेखा नहीं कयि; उसकी पुकार और पापों की स्वीकारोक्ति सुनकर, उन्होंने उसके अपराधों को क्षमा कर दयि और एक बार फरि उस पर चमत्कार करने की कृपा प्रदान की।

उस भूमि पर सूखा और भीषण शुष्कता छा गई। सभी ने उपवास रखा और प्रार्थना की, ईश्वर से पृथ्वी पर वर्षा भेजने का आग्रह कयि। और उस नगर के बशिप, जो एक सदाचारी और पवत्रि पुरुष थे, को एक दविय दर्शन हुआ। इस दर्शन में, उन्हें बताया गया:

'यदि किब्र वाली गुफा में रहने वाले पवत्रि वरष्ठि आपके लिए ईश्वर से प्रार्थना करें, तो आपकी सभी वपित्तयिाँ दूर हो जाएँगी और फलदायी वर्षा होगी।'

अगले दनि, बशिप ने पुरोहतिों और सभी लोगों को इकट्ठा कयि और उन्हें प्राप्त प्रकटवाणी सुनाई। क्रॉस को लेकर और प्रार्थना के भजन गाते हुए, वे सभी उस गुफा की ओर चल पड़े। वहाँ पहुँचने पर, बशिप और सभी लोगों ने बंद दरवाजों पर खटखटाना शुरू कर दयि और ईश्वर के संत से अपनी भूमि पर दया करने, ईश्वर से प्रार्थना करने कि वह उनसे अपना धार्मकि क्रोध और दंड टाल दें और पृथ्वी पर वर्षा भेजकर सूखे को समाप्त कर दें, की वनिती की। लेकनि

[2195] यह गुफा फलिस्तीन में, माउंट कार्मेल के पास स्थति थी।

उस धन्य व्यक्ति ने गुफा के भीतर से उन्हें कोई उत्तर नहीं दिया, वह स्वर्ग की ओर अपनी दृष्टि उठाने का साहस भी नहीं कर सका; उसने केवल अपनी छाती पीटी और मन ही मन कहा:

'हे मसीह, मेरे अनेक और घोर पापों पर दया करो!'

बिशप ने, लंबे समय तक, गंभीरता से खटखटाया और जेम्स से विनती की; लेकिन, उनसे कोई उत्तर न पाकर, वे अपने साथ आए सभी लोगों के साथ दुखी और रोते हुए लौट आए। चर्च में प्रवेश करने पर, उन्होंने सभी ने एक बार फिर प्रार्थना के भजन गाए, आँसू बहाते हुए। इस बीच, तूफ़ान और भी ज़ोरों पर आ गया, और उसके साथ ही एक भीषण अकाल और अकाल पड़ा; इसलिए, लोगों ने अपने उपवास और प्रार्थनाओं को और भी कड़ा करते हुए, ईश्वर से और भी अधिक लगन से प्रार्थना करना शुरू कर दिया। फिर बिशप को एक और दिव्य-दर्शन हुआ, जिसमें उन्होंने स्पष्ट रूप से एक आवाज़ सुनी जो कह रही थी:

'मेरे सेवक जेम्स के पास जाओ, जिसके बारे में मैंने तुम्हें पहले बताया है, और यदि वह तुम्हारे लिए मुझसे प्रार्थना करेगा, तो तुम तुरंत उन विपत्तियों से मुक्त हो जाओगे जो तुम्हारे देश पर आई हैं।'

इस प्रकटवाणी के बाद, बिशप, सभी पुरोहितों और लोगों के साथ, एक बार फिर गुफा में गए और ईश्वर के सेवक से विनम्रतापूर्वक—यहाँ तक कि उन्हें परेशान कर—उनके लिए प्रार्थना करने का आग्रह किया; फिर उन्होंने जबरदस्ती दरवाज़ा खोला और संत को बाहर ले आए। धन्य जेम्स ने, अनिच्छा के बावजूद, स्वर्ग की ओर अपनी आँखें उठाईं और अपने हाथ ऊपर उठाकर इन लोगों के लिए लंबी प्रार्थना की। और जब प्रार्थना अभी भी उनके होठों पर थी, अचानक धरती पर मूसलाधार बारिश होने लगी, और तूफान थम गया। क्योंकि प्रभु ने अपने भयभीत सेवक की विनती स्वीकार की थी और उसकी पुकार सुनी थी, और इस प्रकार उस भविष्यवाणी में लिखी बात को क्रम में सिद्ध किया: *'तब तुम पुकारोगे, और प्रभु उत्तर देगा; तुम चिल्लाओगे, और वह कहेगा, "मैं यहाँ हूँ"'* (यशायाह 58:9)।

बिशप और सभी लोग, इस अति महिमामय चमत्कार से चकित और परमानंदित होकर, आनंद और उत्सव के साथ परमेश्वर का एक धन्यवाद-गीत गाए, और उनके पवित्र सेवक याकूब का बहुत सम्मान किया। और उन्होंने यह स्थापित किया कि जिस दिन, संत जेम्स की प्रार्थनाओं के द्वारा, उन्हें आपदाओं से छुटकारा मिला और प्रभु की दया प्राप्त हुई, उस दिन को वर्ष-दर-वर्ष मनाया जाना चाहिए।

इसके बाद, पूजनीय जेम्स को एक प्रकटवाणी प्राप्त हुई कि ईश्वर ने उनका पश्चाताप स्वीकार कर लिया था और उनके पापों को क्षमा कर दिया था। इसलिए, मसीह की कृपा से, उन्होंने एक बार फिर से कई चमत्कार करना शुरू कर दिया; क्योंकि पूरे देश से उनके पास लाए गए सभी बीमार और किसी भी रोग से पीड़ित लोग तुरंत ठीक हो जाते थे, और संत के वचन द्वारा दुष्टात्माओं को निकाल दिया जाता था। कुछ ही समय बाद, जेम्स ने अपने पाप से पहले किए गए चमत्कारों से भी बड़े चमत्कार किए।

जिस वर्ष उन्होंने ईश्वर से वर्षा माँगी थी, उसी वर्ष जेम्स को अपनी निकट मृत्यु के बारे में बताया गया। बिशप को बुलाकर, संत ने उसे वसीयत की कि उनकी मृत्यु के बाद, उनके शरीर को उस गुफा में दफनाया जाए जहाँ वे रहते थे। इसके बाद, कुछ दिनों में, धन्य जेम्स प्रभु में निद्रित हो गए, और उनकी पवित्र आत्मा उन संतजनों के साथ प्रभु के धन्य लोगों में अपना स्थान प्राप्त कर गई, जिन्होंने पश्चाताप के द्वारा परमेश्वर को प्रसन्न किया था। जेम्स अपने जन्म के दिन से पचहत्तर वर्ष तक जीवित रहे। संत के निधन की खबर तुरंत ही पूरे देश में फैल गई, और बड़ी संख्या में लोग मोमबत्तियाँ, धूपदान, धूप और सुगंधित तेल लेकर हर दिशा से उनके अंतिम संस्कार के लिए उमड़ पड़े; बिशप भी सभी पुरोहितों के साथ आए, और उपयुक्त भजन गाते हुए, उन्होंने जेम्स के पवित्र शरीर पर कीमती इत्र से अभिषेक किया और उसे उसी गुफा में सम्मान के साथ दफनाया, ठीक वैसे ही जैसे संत जेम्स ने स्वयं अपनी मृत्यु से पहले बिशप को वसीयत की थी। कुछ ही समय बाद, बिशप ने उस गुफा के पास, जहाँ संत जेम्स रहते थे, एक चर्च का निर्माण किया; और, गुफा से उनके पवित्र अवशेष निकालकर, उन्होंने उन्हें चर्च में स्थानांतरित कर दिया और हमारे पूजनीय पिता जेम्स, ईश्वर के सम्मानित सेवक की पवित्र स्मृति की वार्षिक स्मृति स्थापित की, हमारे ईश्वर मसीह की महिमा के लिए, जो पिता और पवित्र आत्मा के साथ सदा महिमामय हैं। आमीन।

- उसी दिन, हम साइप्रस द्वीप पर कॉन्स्टेंस शहर के बिशप, संत ग्रेगरी का स्मरण करते हैं, जो शांतिपूर्वक इस जीवन से परलोक सिधार गए।
- उसी दिन, वर्ष 1303 में, मास्को के पवित्र और धर्मी राजकुमार डेनियल अलेक्जेंड्रोविच का निधन हुआ।

- आज के दिन, वर्ष 1238 में, तातारों द्वारा रस्तोव के धन्य राजकुमार बासलि (वासलि्को) कॉन्स्टेंटिनोविच की हत्या की गई।

18 मार्च

5 मार्च (पुराने कैलेंडर के अनुसार)

पवित्र शहीद ओनसिीयस की स्मृति, जो इसौरिया के शहीद कोनोन के साथ एक ही समय में जीवित थे और कष्ट सहते थे।

पवित्र शहीद यूलाम्पियस का स्मरणोत्सव, जिनका सिर तलवार से कलम कर दिया गया था।

पवित्र शहीद इराइडा की स्मृति, जिनकी मृत्यु का समय और स्थान अज्ञात है।

स्मोलेंस्क और यारोस्लाव के पवित्र धर्मी राजकुमार थियोडोर और उनके पुत्रों डेविड और कॉन्स्टेंटिन के अवशेषों का स्पसो-यारोस्लाव्स्की मठ के कैथेड्रल चर्च में स्थानांतरण। उनका पर्व दिवस 19 सितंबर है। अवशेष 1463 में खोजे गए थे।

इसाउरिया के संत कोनोन का जीवन और शहादत

5 मार्च को स्मरणोत्सव

[2196]पवित्र पौलुस, जो अन्यजातियों के प्रेरित थे[2197] , ने अपनी एक धर्म-प्रचार यात्रा के दौरान[2198] , इसौरिया नगर के निवासियों को हमारे प्रभु यीशु मसीह में सच्चे विश्वास के प्रकाश से प्रकाशित किया। उसी समय, इसौरिया नगर से 18 स्टेडियम[2199] दूर स्थित बेथनी गाँव में, नेस्टर नामक एक व्यक्ति अपनी पत्नी नाडा के साथ रहता था। उनके एक पुत्र था जिसका नाम कोनोन था। जब वह लड़का बड़ा हो गया, तो उसके माता-पिता ने उसकी शादी करने का फैसला किया और उसे अन्ना नाम की एक सुंदर कन्या के साथ सगाई कर दी। लेकिन उससे पहले ही, पवित्र महादूत माइकल कोनोन के सामने एक तेजस्वी पुरुष के रूप में प्रकट हुए। कोनोन को सच्चे धर्म की शिक्षा देने के बाद, महादूत उसे एक नदी तक ले गए, उसे परम पवित्र त्रिमूर्ति के नाम पर बपतिस्मा दिया, उसे दैवीय रहस्य प्रदान किए, और फिर, उस पर क्रॉस का चिह्न बनाने के बाद, अदृश्य हो गए। उस समय से, वह लड़का पवित्र आत्मा से भर गया, और महादूत माइकल

[2196] *इसौरिया*– प्राचीन एशिया माइनर का एक छोटा सा क्षेत्र, जो पहाड़ों में छिपा हुआ था, पूर्व में लिकोनिया, उत्तर में फ्रीजिया का एक हिस्सा, पश्चिम में पिसीडिया, और दक्षिण में पहाड़ी सिलिसिया से लगा हुआ था।

[2197] संत पौलुस प्रेरित को उनके महान उपदेश देने के प्रयासों के लिए 'अन्यजातियों के प्रेरित' की उपाधि दी गई थी, जिसके दौरान उन्होंने एशिया की गहराइयों से रोम तक और परंपरा के अनुसार, स्पेन और ब्रिटेन तक भी सुसमाचार पहुँचाया।

[2198] ईसाइयों के उत्पीड़क से मसीह के एक आत्म-बलिदानी अनुयायी में परिवर्तित होने के बाद, संत पौलुस प्रेरित ने अपना पूरा जीवन मिशनरी कार्य को समर्पित कर दिया। प्रेरित ने सुसमाचार का प्रचार करने के लिए अपना पहला प्रवास एंटिओक से शुरू किया, जहाँ उन्हें और बरनबास को पवित्र आत्मा ने सुसमाचार प्रचार के महान कार्य के लिए बुलाया (प्रेरितों के काम 13:1–3): वे अपने साथ यूहन्ना मर्कुस को लेकर, प्रेरितों ने साइप्रस की यात्रा करने के बाद एशिया माइनर में प्रवेश किया, और वहाँ, पिसीदिया के एंटीओकिया, इकोनियम, और लाइसट्रा और डर्बे के लिकाओनियाई शहरों में, उन्होंने यहूदियों से निरंतर उत्पीड़न सहते हुए, मसीह की शिक्षा से कई लोगों को ज्ञान प्रदान किया (प्रेरितों के काम 13:4–14:28)। पवित्र प्रेरितों की परिषद (ईस्वी 51) के बाद सिलास के साथ संत पौलुस ने अपनी *दूसरी* यात्रा की (प्रेरितों के काम 15): पहले स्थापित की गई कलीसियाओं का दौरा करने के बाद, संत पौलुस ने मैसेडोनिया और ग्रीस में सफलतापूर्वक प्रचार किया, और फिलिप्पी, थिस्सलुनीके, बेरिया, एथेन्स और कोरिन्थ में प्रसिद्ध चर्चों की स्थापना की; वह कोरिन्थ में डेढ़ साल तक रहा। (प्रेरितों के काम 15:36–18:28)। प्रेरित ने एक बार फिर अंतीयक से अपनी *तीसरी* यात्रा शुरू की: अपनी स्थापित की हुई कलीसियाओं का फिर से दौरा करने के बाद, प्रेरित एफ़िसुस पहुँचे, जहाँ उन्होंने दो साल से अधिक समय तक प्रचार किया; फिर वे एक बार फिर मैसेडोनिया और यूनान से होकर यरूशलेम लौट आए। वहाँ उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया और सेज़रिया में दो साल की कैद के बाद, उन्हें रोम भेज दिया गया, जहाँ वे दो साल तक रहे, और निरंतर रूप से परमेश्वर के राज्य का प्रचार करते रहे (प्रेरितों के काम 18:1–22:30)। परंपरा यह मानती है कि प्रेरित, सीज़र की अदालत में बरी होने के बाद, सुसमाचार का प्रचार करने के लिए एक बार फिर अपनी चौथी यात्रा पर निकले, पश्चिम की सीमाओं तक पहुँचे (यूसेबियस और रोम के क्लेमेंट) और रोम में दूसरी बार कैद होने के बाद, नेरो के शासनकाल के दौरान शहीद हो गए।

[2199] *स्टेडियम* दूरी की एक प्राचीन इकाई है, जो लगभग 80 या उससे थोड़ा अधिक फथॉम के बराबर होती है।

हर समय उसके साथ अदृश्य रूप में रहे। उनके विवाह के दिन, आम हर्षोल्लास के बीच, दुल्हन और दूल्हे को विवाह कक्ष में ले जाया गया। वहाँ, कोनोन ने एक जलती हुई मोमबत्ती को एक पात्र से ढक दिया और युवती से पूछा:

'कौन सा बेहतर है – अंधेरा या प्रकाश?'

युवती ने उत्तर दिया:

'अँधेरे से तो रोशनी ही बेहतर है।'

तब संत कोनोन ने अपने दैवीय अनुग्रह से परिपूर्ण होठ खोले और दुल्हन को अपनी कुँवारीपन और जीवन की पवित्रता बनाए रखने तथा सच्चे ईश्वर, मसीह में विश्वास करने के लिए मनाना शुरू किया।

उन्होंने कहा, 'यह अक्षय प्रकाश है, जबकि सांसारिक जीवन और मूर्तिपूजक, अधर्मी विश्वास अंधकार है।'

उस कन्या का हृदय शुद्ध था, इसलिए ईश्वर के वचन के बीज उपजाऊ भूमि पर गिरे, और वह वधू जल्द ही अपने वर से हर बात में सहमत हो गई। वह मसीह में विश्वास करने लगी और उसने हमेशा के लिए अपनी कुँवारी अवस्था बनाए रखने का संकल्प लिया। इस प्रकार यह पवित्र जोड़ा भाई और बहन की तरह, या यूँ कहें कि, सेराफिम की तरह ईश्वर के प्रति प्रेम से जलते हुए और केवल उसे ही प्रसन्न करते हुए, दो स्वर्गदूतों की तरह कुँवारी पवित्रता में रहा। कुछ समय और बीता, और धन्य कोनोन अपने माता-पिता को मूर्तिपूजा त्यागकर मसीह की ओर मुड़ने के लिए मनाने में सफल हो गए। कोनोन ने अपने पिता, अपनी माता और अपनी मंगेतर को बपतिस्मा दिया, और वे सभी, संत कोनोन के मार्गदर्शन और निर्देशन में, परमेश्वर को प्रसन्न करने लगे। कोनोन के पिता, धन्य नेस्टर को भी शहीद का मुकुट प्राप्त हुआ, क्योंकि उन्होंने मूर्तिपूजकों की गलतियों की निंदा की थी, जिसके लिए उन्हें मूर्तिपूजकों द्वारा मार डाला गया । कुछ ही समय बाद, संत की माता, धन्य नादा, प्रभु में शांतिपूर्वक निधन कर गईं, और उनके बाद, पवित्र कुंवारी अन्ना, कोनोन की मंगेतर, अपने स्वर्गीय वधू-वर, मसीह के अमर महल के लिए प्रस्थान कर गईं। संत कोनोन ने सभी को एक ही स्थान पर सम्मानपूर्वक दफनाया।

अकेले रहकर, कोनोन ईश्वर के लिए जीवन यापन करते रहे, उन्होंने ईश्वर के चिंतन का अभ्यास किया और उपवास, परिश्रम तथा पूरी रात की प्रार्थनाओं के माध्यम से अपने शरीर को संयम में रखा। अपने इन प्रयासों के लिए, उन्हें पवित्र आत्मा की कृपा प्राप्त हुई, जो एक छिपे हुए खजाने की तरह लंबे समय तक उनके भीतर सुप्त रही और संत कोनोन की वृद्धावस्था में ही प्रकट हुई। यह इस प्रकार हुआ।

[2200]उस देश में, अतिकठिन पहाड़ों के बीच एक सुनसान जगह पर, एक भयानक और अंधेरी गुफा थी। गुफा के भीतर एक मूर्तिपूजक पूजा स्थल था, जहाँ अधर्मी देवता अपोलो की एक विशाल पत्थर की मूर्ति खिड़ी थी, जो इसौरिया के देश में विशेष रूप से पूजे जाने वाले देवता थे। इसौरी लोगों की यह प्रथा थी कि वे अपोलो के सम्मान में त्योहार के दिन हर साल बलिदान चढ़ाने और इस अधर्मी त्योहार को मनाने के लिए वहाँ इकट्ठा होते थे। जब इस त्योहार का दिन आया और शहर के सभी निवासी गुफा में स्थित पवित्र स्थल पर जाने के लिए इकट्ठा हो गए, तो संत कोनोन, जो परमेश्वर की आत्मा से प्रेरित थे, शहर में आए। घोड़े पर सवार और पैदल, युद्ध के लिए तैयार, सशस्त्र लोगों की एक बड़ी भीड़ को देखकर, उन्होंने ऊँचे स्वर में उनसे पुकारा:

'इसाउरिया के पुरुषों, एक क्षण ठहरो; मैं तुमसे बात करना चाहता हूँ। तुम हथियारबंद क्यों हो? क्या किसी शत्रु सेना ने अचानक तुम्हारी भूमि पर आक्रमण कर दिया है और तुम्हें युद्ध के लिए बुलाया है?'

लोगों ने कोनोन से उत्तर दिया:

'नहीं, बल्कि हम देवता अपोलो को बलिदान चढ़ाने और उनके सम्मान में एक उत्सव मनाने जा रहे हैं।'

संत कोनोन ने उनसे फिर पूछा:

'मैं आपसे जानना चाहता हूँ कि यह अपोलो कौन है और उसके पास क्या शक्ति है।'

लोगों ने उत्तर दिया:

'वह हमारा पालनहार है, जो हम पर सभी अच्छी चीज़ें प्रदान करता है; उसने हमारे पूर्वजों का भी पालन-पोषण किया, जिनसे हमें उसे मनाने की प्रथा विरासत में मिली है।'

तब संत ने उनका मज़ाक उड़ाते हुए उनसे यह प्रश्न पूछा:

[2200] *एपोलो* – प्राचीन यूनानियों और रोमनों का एक देवता – को प्रकाश, विशेष रूप से सूर्य के प्रकाश, साथ ही बौद्धिक प्रबोधन, कविता और संगीत के देवता के रूप में पूजित जाता था; वह भविष्यवाणी के देवता, रोगों के उपचारक और नागरिक व्यवस्था के संरक्षक भी थे।

'क्या तुमने कभी अपने देवता की आवाज़ या कोई शब्द सुना है?'

उन्होंने उत्तर दिया:

'नहीं! लेकिन हमारे पूर्वजों ने हमें उस पर विश्वास करने का आदेश दिया था।'

तब संत कोनोन ने उनसे कहा:

'तुम्हारे पूर्वज, बोलहीन पशुओं की तरह, स्वयं भ्रम में थे, क्योंकि वे सच्चे परमेश्वर को नहीं जानते थे; क्योंकि यदि वे उसे जानते, तो वे एक बहरे, गूंगे और घृणित मूर्ति को इतनी श्रद्धा नहीं देते। मुझे अपने देवता पर अधिकार करने दो, और मैं तुम्हें दिखाऊँगा कि तुम जिसकी पूजा करते हो, तुम्हारा यह देवता कौन है। अगर मैं उस पर रंग लगा दूँ, तो क्या वह उसे धो पाएगा? अगर मैं उसे लोहे के हथौड़े से तोड़ दूँ, तो क्या वह फिर से पूरा हो पाएगा? अगर मैं उसे खाना दूँ, तो क्या वह खाना लेने के लिए अपना हाथ बढ़ाएगा और खाना शुरू कर देगा?! तुम अपनी मूर्खता में और कब तक पड़े रहोगे? मेरी बात सुनो, क्योंकि मैं तुम्हारे ही नगर का हूँ, फिर भी तुम्हारे रीति-रिवाजों से अपरिचित हूँ; मूर्ति पूजा को त्याग दो, और मैं तुम्हें सिखाऊँगा कि सच्चे परमेश्वर का सम्मान कैसे किया जाए और उस की उपासना कैसे की जाए जो ऊँचे सिंहासन पर विराजमान है। यह अदृश्य शिल्पकार ईश्वर है, जो स्वर्ग, पृथ्वी और समुद्र का, तथा उनमें जो कुछ भी है, उसका सृष्टिकर्ता है, वह शक्तिशाली और सर्वशक्तिमान राजा है, जो अपने सेवकों को बचाता है और अपने शत्रुओं का नाश करता है—जो मूर्तियों की पूजा करते हैं और राक्षसों को बलिदान चढ़ाते हैं। यह परमेश्वर रक्त बलिदान नहीं चाहता, बल्कि यह चाहता है कि जो उसके पास आते हैं वे उससे द्वेष या कपट के बिना जानें, और यह विश्वास करें कि वही सच्चा परमेश्वर है, अपने एकलौते पुत्र, हमारे प्रभु यीशु मसीह के पिता है, जो कभी भी पिता से अलग नहीं होता, जिसके द्वारा उसने युगों की रचना की; और उनके साथ अनन्त पवित्र आत्मा का राज्य है, जो पिता से निकलता है। ये तीनों व्यक्ति, सार में, एक ही ईश्वर हैं, जो उन मूर्तिपूजकों को आग से भस्म कर देते हैं जो उनसे घृणा करते हैं, लेकिन उन लोगों से प्रेम करते हैं जो उनसे प्रेम करते हैं; उनकी दया की कोई सीमा नहीं है, क्योंकि वह उन सभी पर कृपाशील हैं जो उन पर अपनी आशा रखते हैं और विश्वास में उनका आह्वान करते हैं।

संत के शब्दों से भीड़ उत्तेजित हो गई, और उनके बीच एक बड़ा हंगामा मच गया: कुछ लोग संत को मारने के लिए उस पर टूट पड़े, जबकि अन्य उन्हें रोक रहे थे, और उन्हें संत के खिलाफ हाथ उठाने से रोक रहे थे, क्योंकि वे चाहत थे कि उससे और कुछ सुनें। जब हंगामा कुछ शांत हुआ, तो कुछ लोगों ने संत से पूछा:

'तुम हमें कैसे विश्वास दिला सकते हो कि हमारे देवता अपोलो से भी बड़ा कोई देवता है, जिसकी हम सभी अन्य देवताओं से बढ़कर पूजा करते हैं? हमें अपने देवता का कोई संकेत दिखाओ, ताकि हम उस पर विश्वास कर सकें।'

संत कोनोन, यह सुनकर कि वे एक संकेत मांग रहे थे, उन्होंने ईश्वर में अपना विश्वास रखा और लोगों से कहा:

'देखो, तुम में से कई घोड़े पर सवार हैं, और कई पैदल हैं—जवान और मजबूत लड़के। तो चलिए, हम सब अपोलो की गुफा, आपके सभा स्थल, की ओर चलते हैं; आप आगे चलिए, और मैं, एक बूढ़े आदमी के रूप में, आपके पीछे चलूँगा, और आइए यह तय कर लें कि हम में से जो पहले पहुँचेगा, उसके ईश्वर महान और सच्चे हैं, और उन पर विश्वास करना ही उचित है। यदि तुम में से कुछ घोड़े पर सवार, और अन्य—मजबूत और जवान—पैदल, मुझे, एक बूढ़े और कमजोर शरीर वाले व्यक्ति को, पीछे छोड़ दें, और मुझसे पहले अपोलो के मंदिर पहुँच जाएँ, तो तुम्हारा देवता वास्तव में ईश्वर है। लेकिन यदि मैं, एक बूढ़ा व्यक्ति, तुमसे पहले पैदल वहाँ पहुँचूँ, तो मेरा ईश्वर तुम्हारे देवता से महान है, और तुम्हें उस पर विश्वास करना चाहिए।

सभी ने उसके भाषण की सराहना की और उसके द्वारा प्रस्तावित शर्त पर सहमत हो गए, और आपस में कहने लगे:

'यह बूढ़ा चार दिनों में वहाँ नहीं पहुँच पाएगा: यह यात्रा लंबी और कठिन है, क्योंकि यह घने झाड़ियों से ढके ऊँचे पहाड़ों और गहरी घाटियों से होकर गुज़रती है।'

इसके बाद, सभी गुफा की ओर भागे: कुछ अपने घोड़ों पर भरोसा करके, अन्य अपने पैरों पर – जबकि संत कोनन बड़ी कठिनाई से चलते हुए उनके पीछे-पीछे आ रहे थे। रास्ते में, उन्होंने ईश्वर से भक्तिपूर्वक प्रार्थना की, और तुरंत ही पवित्र महादूत माइकल उनके सामने प्रकट हुए, उन्हें उठा लिया, और क्षण भर में उन्हें ठीक उसी स्थान पर ले गए जिसकी ओर सभी लोग तेज़ी से जा रहे थे। जहाँ तक घोड़े पर और पैदल भाग रहे लोगों का सवाल है, महादूत ने उन्हें एक अदृश्य शक्ति से भ्रमित कर दिया, और वे पहाड़ों और जंगली इलाकों में भटकते रहे; मनुष्य और घोड़े दोनों पहाड़ी चोटियों से गिरकर चकनाचूर हो गए, और वे दिन-रात अपोलो की गुफा तक नहीं पहुँच सके और उन्हें यह भी यकीन नहीं था कि वे

सही रास्ते पर चल रहे हैं या नहीं। सुबह, उन्हें आश्चर्य हुआ कि संत कोनोन उनके स्वागत के लिए बाहर आए। उन्हें देखकर लोग बहुत हैरान हो गए। हालांकि, संत ने उन पर हँसते हुए पूछा:

'तुम पहले क्यों नहीं आ सके? मैं तुम्हारा बहुत समय से इंतजार कर रहा था और तुम्हें मिलने के लिए बाहर आने का निर्णय लिया।'

वे लोग, जो पूरी तरह से थक चुके थे, उन्होंने संत कोनन को वह सब कुछ बताया जो उनके साथ हुआ था और उनसे अपोलो के मंदिर का रास्ता दिखाने का आग्रह किया। फिर संत कोनन उनके आगे चल दिए और, उन्हें गुफा तक ले जाकर, उनसे कहा:

'वहाँ, मैंने अपना वादा पूरा कर लिया है और आपसे पहले यहाँ पहुँच गया हूँ। अब आपको यह मानना होगा कि मेरा ईश्वर महान है और उस पर विश्वास करना होगा; जहाँ तक आपके ईश्वर की बात है, उसे मुझे सौंप दें, और मैं अब तक आपको धोखा देने के लिए उसके साथ निपट लूँगा।'

लेकिन उन्होंने संत से पुकारा:

'नहीं, दोष हमारे देवता पर न लगाओ और न ही उससे बदला लो: देर होने का दोष स्वयं हम पर है; हम रास्ता भटक गए थे और इसलिए अपना समझौता पूरा नहीं कर सके।'

इस उत्तर से संत को बहुत क्रोध आया, और उन्होंने उनसे कहा:

'यदि तुम अब भी मेरे ईश्वर में विश्वास नहीं करते, बल्कि अपनी मूर्ति में ही विश्वास करते हो, तो क्या तुम तब भी वही करोगे जो वह स्वयं तुमसे करने को कहे?'

वे सभी उत्तर देने लगे:

'यदि हम वास्तव में अपने ईश्वर की वाणी सुनेंगे, तो हम तुरंत उसके वचन का पालन करेंगे, क्योंकि हम उस पर निश्चिंदेह विश्वास करते हैं।'

एक बार फिर उन्होंने संत के साथ संधि की और पहले से भी अधिक दृढ़ प्रतिज्ञा की कि वे अपने ईश्वर की हर बात पर विश्वास करेंगे। फिर संत, जहाँ अपोलो का मंदिर स्थित था उस गुफा के सामने खड़े होकर, मूर्ति को ऊँचे स्वर में पुकारने लगे:

'मूर्ति! मैं तुझसे कहता हूँ: मेरे प्रभु यीशु मसीह की आज्ञा है, मंदिर से निकल आ और यहाँ मेरे पास आ।'

और तुरंत निर्जीव मूर्ति, मानो जीवित हो, डोलने लगी, अपनी जगह से गिर पड़ी और जमीन पर लुढ़कते हुए संत के पास आकर रुक गई; फिर, जमीन से उठकर, वह उनके सामने खड़ी हो गई। सारी भीड़ भयभीत हो गई और ऊँचे स्वर में चिल्लाते हुए भागने के लिए दौड़ पड़ी। संत कोनन ने उन्हें हाथ से इशारा करके डरने के लिए मना किया, और बड़ी मुश्किल से उन्हें रोक पाए। उन्हें शांत करने के बाद, वे फिर से मूर्ति की ओर मुड़े, और सभी बड़ी ध्यान से देख रहे थे कि आगे क्या होगा। और संत ने मूर्ति से पूछना शुरू किया:

'हमें बता, हे निर्जीव मूर्ति, सच्चा ईश्वर कौन है: क्या तू है, या मेरा प्रभु यीशु मसीह, जिसकी मैं प्रचार करता हूँ?'

तुरन्त पत्थर की मूर्ति ने कांपते हुए स्वर्ग की ओर अपनी बाहें फैला दीं और एक ऊँचे, मानव स्वर में घोषणा की:

'एकमात्र सच्चा ईश्वर मसीह है, जिसकी आप प्रचार करते हैं।'

यह कहकर, मूर्ति गिर पड़ी और टुकड़े-टुकड़े हो गई। यह चमत्कार देखकर, भीड़ के सभी लोग चिल्ला उठे:

'एकमात्र सच्चा ईश्वर, कोनोन का ईश्वर: उसने विजय प्राप्त की है।'

और बहुत से लोग मसीह पर विश्वास करने लगे और मूर्तियों को तोड़कर पवित्र बपतिस्मा ग्रहण किया। हालाँकि, अन्य लोग, जो हृदय से कठोर थे, अपने पूर्व अविश्वास में बने रहे और अपोलो की मूर्ति के विनाश पर गहरा शोक मनाया। लेकिन बाद में, संत कोनोन द्वारा किए गए कई चमत्कारों को देखने के बाद, उस भूमि के शेष मूर्तिपूजक भी मसीह पर विश्वास करने लगे।

इसी इसाउरिया देश में, एक और गुफा में, जो एक सुनसान जगह पर स्थित थी, एक भयानक राक्षस रहता था। एक योद्धा या डाकू की तरह, वह रास्ते से गुजरने वाले लोगों और जानवरों पर हमला करता और उन्हें मार डालता था। इसौरिया के लोगों ने उसे कई बलिदान चढ़ाए, और उससे विनती की कि वह उन्हें नुकसान न पहुंचाए या मार न डाले, लेकिन उनकी विनती का उन पर कोई असर नहीं हुआ; बल्कि, इससे उनकी बर्बादी और भी बढ़ गई। तब विश्वासियों और मूर्तिपूजकों, दोनों की एक बड़ी भीड़ इकट्ठा हुई, और वे सभी संत कोनोन के पास गए और उनसे विनम्रतापूर्वक विनती की कि वे उस

राक्षस को उनकी भूमि से भगा दें। विश्वासियों ने प्रार्थना की, उन्हें संत कोनोन के माध्यम से मसीह की शक्ति पर जरा भी संदेह नहीं था; जबकि विधर्मी, चालाकी से संत कोनोन को लुभा रहे थे, क्योंकि वे स्वयं सोचते थे कि वह उस क्रूर दानव को भगाने में असमर्थ होगा, बल्कि इसके विपरीत, दानव उसे मार डालेगा। इसौरियाई लोगों की विनतियों को मानते हुए, संत कोनोन एक बड़ी भीड़ के साथ निकल पड़े। वे उसी गुफा के पास पहुँचे जहाँ दानव रहता था, जबकि लोग डर से काँपते हुए दूर खड़े थे। गुफा की ओर मुड़कर, संत ने मसीह के नाम पर, पूरी भीड़ के सामने अशुद्ध आत्मा को गुफा से बाहर आने का आदेश दिया। अंदर से, दानव ने संत से पुकार लगाई, उनसे विनती करते हुए कि उसे अदृश्य होकर बाहर निकलने दें, ताकि लोग उसका भयानक रूप न देख सकें। लेकिन संत ने सख्त लहजे में उसे सभी के सामने प्रकट होने का आदेश दिया। फिर, पूरी भीड़ के सामने, दानव गुफा से एक भयानक, कांपती हुई महिला के रूप में बाहर निकला। संत ने राक्षस को किसी को नुकसान पहुँचाने से मना करते हुए, उसे गेहेन्ना ([2201]) में भेज दिया। तुरंत राक्षस अदृश्य हो गया, और भीड़ ने जोर से पुकारा:

'कोनोन का ईश्वर महान है!'

बहुत से मूर्तिपूजक मसीह में विश्वास करने लगे। और संत कोनोन, लोगों को सच्चे ईश्वर के विश्वास में पर्याप्त रूप से शिक्षित करने के बाद, शहर लौट आए। लोग आनंदपूर्ण गायन के साथ उनका साथ दे रहे थे; संत ने स्वयं गायन शुरू किया, और लोग भी सच्चे ईश्वर, मसीह की महिमा करते हुए, उसमें शामिल हो गए। अपने लौटने पर, संत कोनन अपने गाँव में, अपने पिता के घर में बस गए, चमत्कार करते हुए, उन लोगों के बीच हर तरह की बीमारियों को ठीक करते हुए जो विश्वास के साथ उनके पास आए, और दुष्टात्माओं को भगाते हुए, जिन पर ईश्वर ने उन्हें अधिकार दिया था।

इसौरिया के सबसे प्रतिष्ठित निवासियों में से एक को चोरों ने लूट लिया, जो उससे बहुत सारा सोना ले गए। कई लोगों पर इस चोरी का झूठा आरोप लगाया गया और उन्हें यातना दी गई: निर्दोषों को बेड़ियों और कालकोठरियों में बंद कर दिया गया, लेकिन सोना नहीं मिला। तब लूटे गए व्यक्ति ने, झूठे आरोपियों के रिश्तेदारों के साथ, जो जेल में सड़ रहे थे, संत कोनोन के पास आकर संत के पैरों पर गिरकर उनसे विनती की कि वे चोरी हुए सोने को खोजने में मदद के लिए ईश्वर से प्रार्थना करें। संत ने, झूठे आरोपियों और निर्दोष पीड़ितों पर दया करके, नागरिकों की प्रार्थना स्वीकार कर ली। वे शहर के लिए रवाना हो गए। वहाँ, चौक में खड़े होकर, उन्होंने अपने हाथ आकाश की ओर उठाए और ईश्वर से इस समय तक भक्तिपूर्वक प्रार्थना की जब तक कि ईश्वर ने उन्हें यह प्रकट नहीं कर दिया कि चोरी हुआ सोना कहाँ छिपा था। अपने साथ कई लोगों को लेकर, संत कोनोन उनके साथ शहर के बाहर गए और रेगिस्तान में काफी लंबी दूरी तय करने के बाद एक चट्टान पर पहुँचे। उस चट्टान के नीचे चोरों द्वारा छिपाया गया सोना पड़ा था; संत कोनन ने अपने साथ आए लोगों को सोना लेने और उसे शहर वापस ले जाने का आदेश दिया। इसौरिया के सभी लोग अत्यंत चकित हुए और ईश्वर की स्तुति करने लगे। जब उस व्यक्ति ने, जिससे सोना चुराया गया था, यह जानना चाहा कि चोर कौन थे और उसने कोनन से इस बारे में पूछा, तो संत ने उत्तर दिया:

'अपना सोना ले लो, और इस बात से संतुष्ट रहो कि यह तुम्हें बिना किसी नुकसान के वापस मिल गया है; जहाँ तक जेल में पड़े लोगों का सवाल है, उन्हें आज़ाद कर दो।'

उसने वैसा ही किया। इस चमत्कार की खबर पूरे देश में फैल गई; कई लोग ईश्वर की ओर मुड़े, और दिन-प्रतिदिन मसीह की कलीसिया बढ़ती और फलती-फूलती गई।

कुछ समय बाद, जब संत कोनोन अपने घर में चुपचाप बैठे थे, तो उन्होंने अपने खिलाफ इकट्ठा हो रहे राक्षसों की भीड़ देखी। द्वीप पर रहने वाले सभी राक्षस—जो लोगों और मूर्तिपूजक पूजा स्थलों से निकाले गए थे—संत के खिलाफ हथियारबंद हो गए। दानवों को देखकर, संत ने उन्हें यीशु के नाम पर बाँध दिया, ताकि वे हिल न सकें। तब दानवों ने कोनोन से विनती करनी शुरू कर दी कि उन्हें गर्त में न भेजें, बल्कि उन्हें वही करने का आदेश दें जो वह चाहें। संत ने उन्हें लोगों को नुकसान पहुँचाने से मना करते हुए, उन्हें विभिन्न कार्य करने के लिए भेज दिया: कुछ को उसने सब्जी के बागों में मिट्टी खोदने और खरपतवार, कांटेदार झाड़ियाँ और बिच्छू घास उखाड़ने का आदेश दिया; दूसरों को खेत जोतने और उनमें

[2201] *गेहेन्ना* एक हिब्रू शब्द का यूनानी रूपांतरण है जिसका अर्थ है *'हिन्नोम की घाटी'* या 'हिन्नोम के पुत्र'; यह घाटी एक गहरी, संकरी घाटी को संदर्भित करती है जहाँ यहूदियों ने कभी अपने बच्चों को मोलक के लिए बलिदान किया था (2 राजा 24:10; यिर. 7:11)। बाद के समय में, यह हर तरह की गंदगी फेंकने का स्थान बन गया, और उसे नष्ट करने के लिए वहाँ एक आग लगातार जलती रहती थी: इस कारण से, हिन्नोम की घाटी शाश्वत यातना के स्थान का प्रतीक बन गई। ठीक इसी अर्थ *में—नरक के* अर्थ में—नए नियम में 'गेहेना' शब्द का उपयोग किया गया है (मत्ती 5:24–40, 10:28, 18:9, 23:15; लूका 9:43, 45; लूका 12:5; याकूब 3:6)।

बीज बोने का; फिर कुछ को फसलों की रखवाली करने का; कुछ को झुंड की देखभाल करने और उन्हें जंगली जानवरों से बचाने का; दूसरों को लकड़ी काटने और पानी लाने का; और हर तरह के घरेलू काम करने का। दैत्य, गुलामों और बंदियों की तरह, धन्य कोनन की सेवा तब तक करते रहे जब तक उन्हें उचित लगा, और उन्होंने जो भी कार्य सौंपा, उसे वे उत्साह के साथ पूरा करते थे; क्योंकि, ईश्वर की अजेय शक्ति से बँधे होने के कारण, वे ईश्वर के सेवक के दास थे।

ऐसा हुआ कि एक रात चोरों ने संत के घर पर हमला किया, इस उम्मीद में कि उन्हें वहाँ भारी लूट का माल मिलेगा, क्योंकि वह पूरे देश में प्रसिद्ध थे।

संत को बाँधने के बाद, चोरों ने उन्हें यातना देकर उनके सोने की जगह बताने के लिए मजबूर करने की कोशिश की। वे पहले ही उसे प्रताड़ित करना शुरू कर चुके थे, तभी अचानक, ईश्वर की आज्ञा से, संत की सेवा में रहने वाले राक्षस प्रकट हुए, उन्होंने डाकुओं को पकड़ लिया और उन्हें बेरहमी से पीटा; फिर उन्होंने भट्टी में आग लगाई और उनके शरीर को झुलसाना शुरू कर दिया, जबकि संत को उसके बंधनों से मुक्ति मिल गई। संत ने डाकुओं पर दया करके राक्षसों को रुकने का आदेश दिया, और उन्होंने मुश्किल से जिंदा बचे डाकुओं पर अपना अत्याचार बंद कर दिया। संत की प्रार्थना से, डाकू होश में आ गए, और संत ने उन्हें शांति से जाने दिया, और उन्हें डकैती का जीवन छोड़ने का आदेश दिया। दैत्यों ने न केवल संत कोनन को डाकुओं से मुक्त कराया, बल्कि ईश्वर की इच्छा से उनके नाम के सम्मान की भी रक्षा की। क्योंकि यदि किसी भी अविश्वासी इसौरीयन ने कोनन का अपमान करने की हिम्मत की, तो दैत्य तुरंत और अदृश्य रूप से उन पर हमला करते और उन्हें मारते थे, जिससे कोनन का नाम सभी के लिए श्रद्धा और भय का विषय बन गया। एक बार, दो मूर्तिपूजकों ने कोनोन को याद किया और अपमानजनक शब्दों से उसकी निंदा करने लगे। तुरंत, राक्षसों ने उन पर हमला किया, उन्हें पीटा, उनके बालों से खींचकर सड़क पर घसीटा, और उन अपमान करने वालों को संत के पैरों तले ला पटका। इसके बाद, सभी अविश्वासियों में कोनोन का डर इतना बढ़ गया कि वे संत कोनोन के बारे में बुरा सोचने की हिम्मत भी नहीं करते थे। एक अवसर पर, एक आदमी सेब चुराने के इरादे से कोनोन के बगीचे में चोरी-छिपे घुसा। लेकिन अदृश्य रक्षकों ने उसे पकड़ लिया, उसे पीटा, और उसके गधे और फलों से भरी बोरी के साथ, उसे संत के सामने ले आए। संत ने उसे समझाया और, उसे फिर कभी चोरी न करने की आज्ञा देने के बाद, उसे शांति से जाने दिया।

फसल काटने के समय, एक गरीब विधवा खेत में गई और फसल काटने वालों के पीछे-पीछे चलकर बचे हुए मकई के भुट्टे इकट्ठा करने लगी। वह अपने एकमात्र छोटे बेटे को अपनी बाहों में लिए हुए थी। अचानक, एक भेड़िया जंगल से निकला, बच्चे को उसकी माँ की बाहों से छीन लिया और उसे लेकर सुनसान जगह पर चला गया। लोगों ने उसका पीछा किया, लेकिन वे भेड़िये को पकड़ नहीं सके और न ही बच्चे को उसके जबड़ों से छुड़ा सके। व्याकुल महिला पवित्र चमत्कार करने वाले कोनॉन के पास गई, रोई, और उनके पैरों पर गिरकर उन्हें अपनी दुखकथा सुनाई। उन्होंने तुरंत अपने अदृश्य सेवकों को आदेश दिया, और पलक झपकते ही उन्होंने उस भेड़िये को पकड़ लिया, जो बच्चे को अपने जबड़ों में दबाए हुए था, और उसे संत के सामने ले आए। संत ने बेटे को उसकी माँ के पास जीवित और सुरक्षित लौटा दिया, और भेड़िये को अपने बिल में लौटने का आदेश दिया।

हालाँकि, सभी राक्षस संत के वचन से बँधे नहीं थे; और इसलिए उनमें से कुछ ने उस भूमि के निवासियों को विभिन्न बीमारियों, विशेष रूप से चेचक से पीड़ित करना शुरू कर दिया। संत ने राक्षसों की योजनाओं को भांपते हुए ईश्वर से प्रार्थना की और तुरंत इन राक्षसों पर भी अधिकार प्राप्त कर लिया। उन्होंने सभी को एक साथ इकट्ठा करके उन्हें मना किया; उन्होंने कुछ को रेगिस्तान में भगा दिया, कुछ को गर्त में भेज दिया, और कुछ को टिन से भरे तीस मिट्टी के बर्तनों में बाँधकर बंद कर दिया; और, उन्हें क्रॉस के चिह्न से सील करने के बाद, उन्हें अपने घर के नीचे जमीन में दफना दिया।

उस समय, ईसाइयों पर अत्याचार शुरू हो गया, और मैगडोन नामक एक राज्यपाल शाही फरमान लेकर इसौरिया आया। राज्यपाल ने सबसे पहले उसोरवो गाँव में संत ओनेसीयस को यातनाएँ देकर मार डाला। फिर संत कोनोन को गिरफ्तार कर लिया गया। उन्हें कई क्रूर यातनाएँ दी गईं, और मूर्तियों को बलिदान चढ़ाने के लिए मजबूर किया गया। इसाव्रिया के लोगों ने, यह सुनकर कि राज्यपाल ने संत कोनोन को यातनाएँ दी थीं, बड़ी संख्या में हथियारबंद होकर राज्यपाल को मारने के लिए उसोरोवो गाँव के लिए रवाना हो गए। उनके इरादे के बारे में जानकर, राज्यपाल अपने नौकरों के साथ अपने घोड़े पर सवार होकर उस क्षेत्र से भाग गया। इसाउरियनों ने उसका पीछा किया, लेकिन वे उसे पकड़ नहीं सके। जब उन्हें पवित्र शहीद कोनन बंधा हुआ, पूरे शरीर पर घावों से ढका और खून से लथपथ मिला, तो उन्होंने उसे खोल दिया और उस पर रो पड़े। उसका खून पोंछकर, उन्होंने संत के रक्त से पवित्र होने की इच्छा से अपने शरीर पर उसका लेप लगाया, और गहरी भावना के साथ उन घावों को चूमा जिन्हें वे मसीह के घाव मानते थे। पवित्र शहीद ने गहराई से शोक

मनाया और अपनी आत्मा में दुखी हुए, कि उन्हें अंत तक पीड़ा सहने की अनुमति नहीं मिली थी, क्योंकि वे अपने मसीह के लिए यातना में मरना चाहते थे। इसके बाद, विश्वासियों ने संत को उनके पिता के घर, बेथनी गाँव में ले गए, और उनके घावों को ठीक करने के लिए हर संभव देखभाल की। अपनी पीड़ा के दो साल बाद, संत कोनन परमेश्वर के पास चले गए। इसौरिया के पूरे क्षेत्र के निवासी इकट्ठा हुए और संत के लिए रोए। उन्हें उनके धन्य माता-पिता और उनकी पवित्र मंगेतर के बगल में दफनाया गया, जिन्होंने अपने जीवन के अंत तक अपनी अछूत कुँवारीपन को बनाए रखा था। संत कोनोन के दफन के बाद, इसौरिया के लोगों ने शहीद के घर को एक चर्च में बदलने का संकल्प लिया। जब उन्होंने नींव के लिए जमीन खोदना शुरू किया, तो उन्हें मिट्टी में तीस मिट्टी के बर्तन मिले, जिनमें संत कोनन ने राक्षसों को कैद किया था। यह न जानते हुए कि उन बर्तनों के अंदर क्या था, लेकिन यह संदेह करते हुए कि उनमें छिपा हुआ सोना या चांदी है, जिन्हें पाया उन्होंने प्रसन्न होकर उन बर्तनों में से एक को तोड़ दिया। तुरंत, उसमें से राक्षस घने, बदबूदार धुएँ के रूप में निकले और हवा को अँधकारमय कर एक भयानक आँधी पैदा कर दी। सभी भय से ग्रस्त हो गए – कुछ डर के मारे बेहोश हो गए, जबकि अन्य घटनास्थल से भाग गए। इस बीच, राक्षस हवा में उड़ते हुए, एक बड़ा शोर मचाते हुए, एक-दूसरे को नाम से पुकार रहे थे। उस गाँव में हर कोई इतनी भयंकर दहशत में आ गया कि कोई भी सूर्यास्त के बाद अपना घर छोड़ने की हिम्मत नहीं करता था, क्योंकि रात में कई राक्षसी आकृतियाँ प्रकट होती थीं और लोगों और जानवरों दोनों को डराती थीं – यह एक परीक्षा थी जिसे ईश्वर ने कुछ समय के लिए उन धन-प्रेमी लोगों को दंड के रूप में अनुमति दी थी, जो उन बर्तनो में खजाना खोजने की उम्मीद कर रहे थे। संत कोनन की प्रार्थनाओं से, दैवीय आकृतियाँ भगा दी गईं। बाकी बचे उनतीस पात्र, जिनमें राक्षस थे, उन्हें संत कोनन के चर्च के नीचे दफना दिया गया। हे प्रभु, उनकी पवित्र प्रार्थनाओं के द्वारा, हम भी राक्षसों से हमेशा सुरक्षित रहें, और हम पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा की महिमा करें – त्रिमूर्ति में एक परमेश्वर, युगों-युगों तक। आमीन।

कॉन्टाकियन, स्वर 3:

एक स्वर्गदूत की पवित्रता के साथ पृथ्वी पर जीवन जीने के बाद, आपको एक स्वर्गदूत का साथी बनने के योग्य समझा गया; आपने अपने माता-पिता को मसीह के ज्ञान की ओर ले जाया; और, त्रिमूर्ति में एक ईश्वर की गवाही देते हुए, आपने, हे शहीद कोनोन, रक्त तक पीड़ा सहन की; हम सभी के लिए उस से अनवरत प्रार्थना करें।

पवित्र शहीद कोनोन, उपनाम माली, की स्मृति।

5 मार्च को स्मरणोत्सव

संत कोनोन डेसियस के शासनकाल में रहते थे और गलील के नाज़रेथ के मूल निवासी थे। वहाँ से वह पम्फलिया के मंडोन (या मगदिो) नगर में चला गया, और वहाँ कारमेना नामक स्थान पर उसने अपने लिए एक सब्जी का बगीचा लगाया, और उसी की उपज से अपना जीवन यापन किया। वह एक दयालु, सौम्य और सरल-हृदय व्यक्ति था। यद्यपि वह निरक्षर था, उसने ईश्वर को प्रसन्न करने वाला जीवन जिया। जब राज्यपाल पब्लियस, जो ईसाइयों पर अत्याचार करने के लिए शहर आया था, ने उसके बारे में सुना, तो उसने तुरंत उसे गिरफ्तार करने के लिए सैनिक भेजे। दूत कोनोन के पास आए और उपहास करते हुए, उसे मीठे शब्दों से अभिवादन किया। कोनोन ने खुशी-खुशी उनका अभिवादन लौटाया और उनका गर्मजोशी से स्वागत किया। फिर सैनिकों ने उससे कहा:

'गवर्नर पब्लियस तुम्हें बुला रहे हैं।'

संत ने उत्तर दिया:

'उसका मुझसे क्या काम हो सकता है? आखिरकार, मैं एक ईसाई हूँ। उसे अपने साथियों को बुलाना चाहिए।'

सैनिकों ने संत कोनन को बाँधकर हेगेमोन के सामने पेश किया। जब उन्होंने उसे मूर्तियों को बलिदान चढ़ाने के लिए मजबूर करना शुरू किया, तो वह—अविश्वासियों की अंधाधुंधता और भ्रम पर अपने हृदय में गहरा शोक व्यक्त करते हुए और हेगेमोन की अधर्मीता के लिए उसे फटकारते हुए—मसीह में अपने विश्वास की स्वीकारोक्ति पर अडिग रहा। तब उसके पैरों में लोहे के कील ठोक दिए गए, और उसे राज्यपाल के रथ के आगे तब तक घसीटा गया जब तक कि पवित्र शहीद थकान से घुटनों के बल नहीं गिर पड़े और, होंठों पर एक प्रार्थना लिए हुए, उन्होंने अपनी आत्मा प्रभु को सौंप दी।

आदरणीय उपवासी इसचियिस की स्मृति

5 मार्च को स्मरणोत्सव

ईश्वर के महान सेवक, इसकियिस, को उनके शुरुआती वर्षों से ही सद्गुणों में शिक्षित और पाला गया था। सांसारिक वस्तुओं के सभी लगाव को त्यागकर, उन्होंने स्वर्गीय सियोन के शाश्वत आशीर्वादों पर निरंतर ध्यान लगाया। इसी कारण, उन्होंने अपना जन्मस्थान एड्रापु शहर छोड़ दिया और एड्रानिया के पास रेगिस्तान में चले गए[2202]।

एकांत में तपस्या करने के लिए, संत मायोनजि नामक एक पहाड़ पर बसना चाहते थे; लेकिन वहाँ रहने वाले राक्षसों ने, संत द्वारा पहाड़ से अपने निष्कासन की पूर्व सूचना पाकर और उसे वहाँ प्रवेश करने की अनुमति नहीं देना चाहकर, जॉन और हिलारियन नामक दो पुरुषों में प्रवेश कर गए, और, ईश्वर के उस पुरुष से मिलने पर, उससे पूछा:

'तुम कहाँ जा रहे हो?'

उसके इरादे के बारे में जानकर, उन्होंने उससे कहा:

'क्या तुम्हें नहीं पता कि यह जगह बेहद खतरनाक है? तुम निश्चित मृत्यु की ओर जा रहे हो, क्योंकि यहाँ कई मांसाहारी जानवर रहते हैं; इसके अलावा, यहाँ लुटेरे भी रहते हैं, इसलिए तुम यहाँ एक दिन भी जीवित नहीं बचोगे।'

संत ने, अपने आत्मा में यह महसूस करते हुए कि ये मनुष्यों के नहीं बल्कि राक्षसों के शब्द थे, कहा:

'अपने अनेक पापों के कारण, मैं लंबे समय से मृत्यु का पात्र रहा हूँ; अतः मैं जाऊँगा, जंगली जानवरों या डाकुओं के हाथों मरने के लिए।'

यह कहने के बाद, संत ने प्रार्थना की और, क्रूस की शक्ति से अशुद्ध राक्षसों को भगाकर, अपने रास्ते पर आगे बढ़े। पहाड़ पर चढ़ने के बाद, संत ने अपने लिए एक जगह चुनी, एक कोठरी बनाई और तपस्या के कार्यों में खुद को लगाना शुरू कर दिया; संत ने वहाँ एक बगीचा भी लगाया और, उसे जोतकर और बीज बोकर, अपने हाथों की मेहनत से अपना जीवन यापन किया।

एक दिन ऐसा हुआ कि पक्षियों का एक बड़ा झुंड संत के बगीचे पर टूट पड़ा, अनाज और बीजों को खाकर संत की मेहनत को बर्बाद कर दिया। तब संत ने प्रार्थना में ईश्वर से निवेदन किया, और तुरंत ही जो पक्षी उनकी मेहनत का स्वाद चख चुके थे, वे जमीन पर गिर पड़े; उड़ नहीं पाने के कारण, वे अपने पंख फैलाए हुए वहीं पड़े रहे; जो भी पक्षी अनाज को छू चुके थे, वे अब उड़ नहीं सकते थे, बल्कि, जैसे किसी जहर के असर में, जमीन पर पसरे पड़े थे; और वह जगह जमीन पर पड़े पक्षियों की भीड़ से भर गई थी।

कुछ समय बाद, संत को पक्षियों पर दया आ गई, और वे अपनी कुटिया से बाहर आए और उनसे कहा:

'यहाँ से चले जाओ और अब भिक्षुओं की मेहनत का अनाज मत खाना।'

संत के ये शब्द कहते ही, ज़मीन पर पड़े सभी पक्षी तुरंत ऊपर उड़ गए, और तब से उन्होंने संत के बगीचे के पास फिर कभी कदम नहीं रखा।

एक निश्चित घाटी में एक झरना मिलने पर, पूज्य ने वहाँ संत एंड्रयू द अपोस्टल के नाम पर एक छोटा सा चर्च बनाया, जहाँ वे अपने शिष्यों के साथ ध्यान में रहे।

एक दिन, एक राक्षस के वश में आई एक युवती को संत के पास लाया गया; उसके माता-पिता, संत के चरणों में गिरकर, उनसे अपनी बेटी से उस अशुद्ध आत्मा को भगाने की विनती करने लगे। पूज्य ने ईश्वर से प्रार्थना करने के बाद, तुरंत उस लड़की से राक्षस को भगा दिया, और उसके माता-पिता से कहा:

'पवित्र आत्मा इस प्रकार कहते हैं: इसी स्थान पर, मेरी मृत्यु के बाद, एक तपस्वी पवित्र स्त्रियों का मठ होगा, जिनकी प्रार्थनाएँ यहाँ से सभी राक्षसों की सेनाओं को भगा देंगी।'

समय आने पर संत की यह भविष्यवाणी सच साबित हुई।

[2202] *एड्रापा* (या एंट्रापा) गलाटिया में एन्सिरा और एम्फिसा, जिसे क्लॉडियोपोलिस के नाम से भी जाना जाता है, से समान दूरी पर स्थित एक शहर है। *एड्रानिया* बिथिनिया में एक तटीय शहर है (जिसे तुर्की में एड्रेनोस के नाम से जाना जाता है)।

एक दनि, अपनी कुटयिा से बाहर नकिलते समय, पादरी पतिा ने भारी भरकम लदी हुई गाड़ी वाले एक आदमी को देखा। गाड़ी बैलों से खींची जा रही थी, और उनमें से एक ठोकर खाकर जमीन पर गरि गया और वापस खड़ा नहीं हो सका। उस आदमी ने उसे उठाने की कोशशि की, लेकनि वह नहीं उठा सका; गरिा हुआ बैल एक बड़े पत्थर की तरह अचल पड़ा रहा; इस प्रयास से थककर, वह आदमी रोने लगा।

यह देखकर, पूज्य ने उस पर दया की और, बैल के पास जाकर, उसकी गर्दन पर हाथ फेरा और उस मूक प्राणी से कहा, मानो वह उसके शब्दों को समझता हो:

'उठो, ऐ आलसी प्राणी, और अपने रास्ते पर आगे बढ़ो, कहीं तुम शत्रु की दुर्भावना का साधन न बन जाओ।'

यह कहने के बाद, संत ने बैल पर क्रॉस का चह्नि बनाया। और तुरंत ही बैल उठ खड़ा हुआ और शांतपिूर्वक भारी गाड़ी को खींचने लगा। वह आदमी जो हुआ उसे देखकर बहुत हैरान हुआ और संत के सामने झुककर, उन्हें धन्यवाद दयिा और खुशी-खुशी अपने रास्ते पर चल पड़ा।

दनि-प्रतदिनि, संत ने महान कार्यों के लएि प्रयास कयिा और अधकि पूर्ण गुणों को प्राप्त कयिा, ताकि उन्हें स्वर्गदूतों से बातचीत करने के योग्य माना गया। ईश्वर के एक स्वर्गदूत से, उन्होंने अपनी मृत्यु से तीस दनि पहले ही अपने नधिन के बारे में जान लयिा था। जब वे अपने प्रस्थान की तैयारी कर रहे थे, तो संत महान आनंद से भर गए।

अपने नधिन से पहले, संत ने अपने साथ रहने वाले शष्यिों को बुलाया और उन्हें वस्तिार से उपदेश दयिा। आधी रात को, अचानक स्वर्ग से एक प्रकाश चमका, जसिने न केवल संत के कक्ष को बल्कि पूरे स्थान को रोशन कर दयिा; और परम पूज्य ने, प्रसन्नतापूर्वक यह कहते हुए, 'हे प्रभु, मैं अपनी आत्मा तेरे हाथों में सौंपता हूँ', स्वर्गीय धाम के लएि प्रस्थान कयिा[2203] ।

उनके पवत्रि और सम्मानति शरीर को, संत एंड्रयू द अपोस्टल को समर्पति उपर्युक्त चर्च में, पवत्रि द्वारों के सामने एक पत्थर के ताबूत में दफनाया गया।

बाद में, संत के पूजनीय अवशेषों को अमासयिा के बशिप थयिोफाइलेक्ट द्वारा, कॉन्स्टेंटनि और आइरीन के शासनकाल में 792 ईस्वी वर्ष में, अमासयिा शहर में[2204] स्थानांतरति कयिा गया और वेदी के दाईं ओर रखा गया[2205] । और उस सुनसान स्थान पर जहाँ पूज्यनीय ने एक तपस्वी के रूप में जीवन व्यतीत कयिा था, एक मठ का नर्मिाण कयिा गया, ठीक वैसे ही जैसे संत ने भवष्यिवाणी की थी।

आदरणीय मार्क तपस्वी का पर्व दविस

5 मार्च को स्मरण कयिा जाता है

यह पवत्रि तपस्वी अपने उपवास के जीवन द्वारा सभी संतों से श्रेष्ठ थे। साथ ही उन्होंने पवत्रि धर्मग्रंथों के अध्ययन को भी समर्पति कयिा, और उन्होंने सद्गुणों में पूर्णता प्राप्त की, जैसा कि उनके द्वारा लखि गए प्रवचनों से स्पष्ट होता है[2206] , और उन्होंने कई चमत्कार कए। उस पूज्य की आत्मा की पवत्रिता इतनी महान थी कि मठ के पुरोहति ने, जैसा कि उन्होंने स्वयं शपथ के तहत गवाही दी, कभी भी अपने हाथ से उन्हें दव्यि रहस्य प्रदान नहीं कयिा; बल्कि जब भी वे पवत्रि सहभागति के लएि आगे आते, तो उन्हें एक स्वर्गदूत से पवत्रि उपहार प्राप्त होते थे, जो चम्मच पकड़े रहता था और स्वयं उन्हें सहभागति प्रदान करता था। परम पूज्य के सेवक ने कहा कि उन्होंने उन्हें कभी जमीन

[2203] संत की मृत्यु लगभग 790 ईस्वी में हुई।

[2204] *अमासयिा* एशयिा माइनर के उत्तरी भाग में, ब्लैक सी के तट पर स्थति है।

[2205] बाइजेंटीयम के सम्राट कांस्टेंटनि छठे पोरफ्योजेनटिस ने 780 से 797 तक शासन कयिा, जबकि आइरीन ने 797 से 803 तक शासन कयिा।

[2206] परम पूज्य मार्क ने ईश्वर के वचन का इतना गहराई से अध्ययन कयिा कि वे पूरे पवत्रि शास्त्र को कंठस्थ जानते थे; वे संत जॉन क्राइसोस्टोम के शष्यि थे और उन्होंने कई शक्षिाप्रद कृतयिाँ लखिीं। इन कृतयिों का रूसी अनुवाद में 1858 में प्रकाशन हुआ था।

पर थूकते नहीं देखा, इतनी थी उनकी विनम्रता। परम पूज्य चालीस वर्ष तक मठवासियों के जीवन में रहे और साठ वर्ष तक उपवास के तपश्चर्यात्मक अनुशासन का पालन किया[2207] । एक सौ वर्ष की आयु में, वे प्रभु के पास चले गए[2208] ।

पवित्र शहीद यूलोजियस की स्मृति

5 मार्च को स्मरणोत्सव

पवित्र शहीद यूलोगियस फलिस्तीन के मूल निवासी थे। उनके माता-पिता अविश्वासी थे। उनकी मृत्यु के बाद, संत ने विरासत में मिली अपनी संपत्ति गरीबों में बाँट दी, और मसीह के लिए निर्धन होकर, वे एक तीर्थयात्री की तरह पूरे फलिस्तीन देश में घूमने लगे, अविश्वासियों को उपदेश देते हुए और उन्हें मसीह के धर्म में परिवर्तित करते हुए। उस देश के शासक के समक्ष उनकी बदनामी होने पर, संत ने मूर्तियों को बलिदान चढ़ाने से इनकार कर दिया, जिसके कारण उन्होंने कई यातनाएँ सहन कीं। अंत में, उनका सिर कलम कर दिया गया।

- पवित्र शहीद ओनेसीयस की स्मृति, जो इसौरिया के शहीद कोनोन के साथ एक ही समय में जीवित रहे और कष्ट सहते रहे।
- पवित्र शहीद यूलाम्पियस की स्मृति, जिनका सिर तलवार से कलम कर दिया गया था।
- पवित्र शहीद इराइडा की स्मृति, जिनकी मृत्यु का समय और स्थान अज्ञात है।
- स्मोलेंस्क और यारोस्लाव के पवित्र और धर्मी राजकुमार थियोडोर और उनके पुत्रों, डेविड और कॉन्स्टेंटिन के अवशेषों का स्पसो-यारोस्लाव मठ के कैथेड्रल चर्च में स्थानांतरण। उनका पर्व दिवस 19 सितंबर है। अवशेष 1463 में पाए गए थे।

19 मार्च

6 मार्च (पुराने कैलेंडर के अनुसार)

पवित्र संन्यासी-शहीद कोनोन और उनके पुत्र कोनोन की शहादत, जिन्होंने इकोनियम में यातनाएँ सहन कीं

6 मार्च को स्मरण किया जाता है

धर्मद्रोही ऑरेलियन[2209] के शासनकाल में, इकोनियम[2210] शहर में कोनोन नाम का एक व्यक्ति रहता था। वह सुंदर और ईश्वर-भयभीत था। कोनोन की पत्नी का भी प्रभु में दृढ़ विश्वास था। दोनों पति-पत्नी स्वर्गीय स्वदेश के प्रति प्रेम से परिपूर्ण थे और उन्होंने सांसारिक सम्मानों के बजाय स्वर्गीय सम्मान और महिमा की खोज की। उन्होंने लंबे समय तक ईश्वर से प्रार्थना की कि वह उन्हें एक पुत्र प्रदान करें। प्रभु ने उनकी प्रार्थनाएँ सुनीं और उन्हें एक पुत्र दिया, जिसका उन्होंने कोनोन नाम रखा। शिशु के जन्म के उसी दिन, माँ परमेश्वर के पास चली गईं, उन्हें उद्धार की दृढ़ आशा थी, प्रेरित के वचनों के अनुसार: *'वह संतान को जन्म देने से उद्धार पाएगी'* (1 तीमुथियुस 2:15)।

धन्य कोनन स्वयं अपने सभी दिन-रात प्रार्थना में बिताते थे। जब उनका बेटा सात साल का हो गया, तो कोनन ने अपनी सारी संपत्ति गरीबों में बाँट दी और लड़के को साथ लेकर एक मठ में चले गए, जहाँ उन्होंने संन्यासी जीवन व्यतीत

[2207] माना जाता है कि परम पूज्य मार्क ने 40 वर्ष की आयु में संन्यास का संकल्प लिया और 60 वर्ष संन्यासी जीवन को समर्पित किया। उनके तपस्या के श्रम का स्थल नीचले मिस्र में स्थित माउंट नाइट्रिया था, जो अलेक्जेंड्रिया से 70 वर्स्ट दक्षिण में और नील नदी के पश्चिम में, लीबिया के रेगिस्तान के पास है।

[2208] संत का निधन लगभग पाँचवीं शताब्दी के मध्य में हुआ।

[2209] *ऑरेलियन*, रोमन सम्राट, ने 270 से 275 तक शासन किया।

[2210] *आइकॉनियम* – एशिया माइनर का एक शहर, जिसे अब कोन्या के नाम से जाना जाता है।

कयिा। प्रभु ने उस पर अनुग्रह कयिा, जसिसे उसने अंधों को दृष्टि दी, कुष्ठरोगयिों को शुद्ध कयिा, दुष्टात्माओं को भगाया, वभिन्नि बीमारयिों को ठीक कयिा, और कई महमिामय चमत्कार कए।

इकोनयिम से होकर बहने वाली नदी वसंत में काफी उफान पर आ जाती थी, जसिसे वह अपने तटों से बाहर नकिल जाती और उस क्षेत्र के नविासयिों के लए बड़ी तबाही मचाती, उनके खेतों, बगीचों और घरों में बाढ़ आ जाती थी। ऐसी ही एक बाढ़ के दौरान, नदी ने सामान्य से कहीं अधकि गांवों में बाढ़ ला दी। इकोनयिम के लोग परमेश्वर के मनुष्य कोनोन के पास आए, और उसके चरणों में गरिकर, उससे वनिती करने लगे:

'हे ईश्वर के सेवक, हमारी सहायता करो, क्योंकि यह बाढ़ सामान्य से भी बदतर है और इसने हमें और हमारी सारी संपत्ति को डुबो दयिा है; कई लोग नदी के दूसरी तरफ फंसे हुए हैं और यहाँ नहीं आ सकते।'

धन्य कोनन ने उत्तर दयिा, 'हे मेरे भाइयों, मैं एक पापी और अयोग्य मनुष्य हूँ; मैं क्या कर सकता हूँ?'

लेकनि सारी भीड़ ने ऊँचे स्वर में उनसे पुकारना शुरू कर दयिा:

'संत कोनन, हे ईश्वर के सेवक, हमारी मदद करो!'

तब संत कोनोन नदी के कनिारे गए और स्वर्ग की ओर अपनी आँखें उठाकर प्रार्थना करने लगे:

'हे प्रभु यीशु मसीह, जैसे आपने एक बार लाल सागर के कनिारे अपने सेवक मूसा की सुनी थी और इस्राएल के बच्चों को सूखी भूमि पर ले गए थे, वैसे ही अब मेरी भी सुनें, हे प्रभु, और इस जनसमूह के लए मेरी भी सुन, ताकि वे तेरे चमत्कारों को देखें और तेरे धन्य नाम का युगानुयुग महमिामंडन करें।

सारी मंडली ने उत्तर दयिा:

– आमेन।

तुरंत नदी दो भागों में बंट गई: एक हस्सिा अचानक पीछे की ओर बहने लगा, जबकि दूसरा अपने मार्ग पर आगे बढ़ता रहा। वहाँ मौजूद सभी लोगों ने, पुरुषों और महलिाओं ने, एक स्वर में परमेश्वर की स्तुति करते हुए पुकारा, जो उन सभी को बचाता है जो उस पर वश्विास करते हैं। लोग और जानवर अपने गाँवों में लौट आए, जहाँ से पानी ने उन्हें बाहर नकिाल दयिा था। लेकनि जो पानी वापस बह गया था, उसने ऊपरी धारा में बसे गांवों में बाढ़ ला दी, और न केवल घाटयिों और जंगलों को भर दयिा, बल्कि ऊँची जगहों को भी ढक लयिा। तब सभी लोग एक बार फरि परमेश्वर के पुरुष के पास आए और उन्हें जो हुआ था, वह बताया। संत कोनोन नदी के पास गए और उस पर क्रॉस का चन्हि बनाते हुए, कहा:

'सर्वशक्तमिान परमेश्वर की आज्ञा सुनो: अपने सभी जल को अपने बहाव में इकट्ठा करो; अपने कनिारों से बाहर मत बहना, और लोगों के बस्तयिों में बाढ़ मत लाना।'

तुरन्त नदी, अपने स्वामी की आज्ञा मानने वाले सेवक की तरह, अपने कनिारों से बाहर छलकने के बनिा अपने मार्ग पर बहने लगी, यद्यपि पहले उसमें पानी एक पहाड़ की ऊँचाई तक खड़ा था।

इस प्रकार प्रभु का वचन पूरा हुआ: *'यदि तुम में सरसों के दाने के बराबर भी वश्विास होगा, तो तुम इस पहाड़ से कहोगे, "यहाँ से उठकर वहाँ गरि जा," और वह उठकर गरि जाएगा'* (मत्ती 17:20)।

संत कोनन, मानव आत्माओं के उद्धार के लए चतिति, ने कई मूर्तपिूजक पूजा स्थलों को नष्ट कर दयिा और अवश्विासयिों को मसीह में परविर्तति कर दयिा। ऐसा न केवल इकोनयिम में बल्कि आसपास के क्षेत्रों में भी हुआ। संयोग से संत कोनन की खबर शासक डोमशियिन तक पहुँच गई। यह अधर्मी और कानून तोड़ने वाला व्यक्ति इकोनयिम पहुँचा और शहर में इतना भय और भ्रम फैला दयिा कि कोई भी खुले तौर पर खुद को ईसाई कहने की हम्मित नहीं कर सका। कई लोग पहाड़ों और रेगस्तिानों में भाग गए, जहाँ वे जंगली जानवरों के बीच रहते थे, और डर के मारे अपने ईसाई धर्म को त्यागने के लए तैयार नहीं थे। राज्यपाल डोमशियिन ने, शैतान के उकसावे पर, आदेश दयिा कि ईश्वर के पुरुष, कोनन को पकड़कर उसके सामने लाया जाए।

जब संत को यातना देने के लए लाया गया, तो डोमशियिन ने उसे एक दोस्ताना मुस्कान के साथ देखा और कहा:

'नमस्कार, आदरणीय वृद्ध।'

'आपको भी नमस्कार,' संत ने उत्तर दयिा।

डोमशियिन ने कहना जारी रखा, 'मैं देखता हूँ कि जो मैंने तुम्हारे बारे में सुना है वह सच है, क्योंकि तुम्हारा मुखमंडल तेजस्वी है और सम्मान का अधकिारी है; तुम्हारी आँखें तारों की तरह चमकती हैं, और तुम्हारी प्रौढ़ आयु में कोई दोष नहीं नकिाला जा सकता। हमें खबर मलिी है कि आप ईसाई धर्म के घातक वषि से ग्रस्त हो गए हैं, और न केवल आप स्वयं

भटक गए हैं, बल्कि आप कई अन्य लोगों को भी उसी भूल में ले जा रहे हैं। फिर भी, हमने इस अफवाह पर विश्वास नहीं किया, क्योंकि हम जानते थे कि आप एक कुलीन व्यक्ति हैं और हमारे धर्म के प्रति समर्पित हैं।

डोमिशियिन के शब्दों पर, संत कोनन ने उत्तर दिया:

'लिखा है कि मनुष्य को हितकर उपदेश का पालन करना चाहिए, हानिकारक सलाह का नहीं। तो फिर, आपने हमारे प्रभु को क्यों अस्वीकार कर दिया, जिन्हें गिरफ्तार किया गया और मृत्युदंड दिया गया, जो सूली पर मर गए और एक कब्र में रखे गए? आप पवित्रतम कुँवारी से उनके जन्म पर क्यों चकित नहीं हुए, जो, यद्यपि उन्होंने जन्म दिया, फिर भी कुँवारी रहीं? आप उस जन्म पर आश्चर्यचकित क्यों नहीं हुए जिसकी घोषणा स्वर्गदूतों ने की, जिन्होंने आनंदित होकर गाया: *'परम ऊँचे में परमेश्वर की महिमा, और पृथ्वी पर शांति, और मनुष्यों में प्रसन्नता'* (लूका 2:14)? आप उस की सामर्थ्य पर आश्चर्यचकित क्यों नहीं हैं जिसने पाँच रोटी और दो मछलियों से पाँच हजार लोगों को भोजन कराया? ऐसा चमत्कार और कौन कर सकता था, सिवाय उसी के जिसने जन्म से अंधे आदमी की आँखें खोल दीं, चार दिन से मृत लाजरुस को जीवन दिया, और अंत में, अपनी इच्छा से, पूरी दुनिया के उद्धार के लिए पीड़ा सहन की—जिसकी मृत्यु पर चट्टानें फट गईं, कब्रें खुल गईं, और कई पवित्र मृतकों को जीवन मिला?

'लेकिन अगर तुम्हारी बात सच होती,' डोमिशियिन ने संत से आपत्ति जताई, 'तो सारी दुनिया तुम्हारे मसीह पर विश्वास कर लेती, और ज्यूस की शक्ति निष्ट हो जाती।'

संत कोनोन ने कहा:

'ऐसा ही होगा – यह जीउस और आपके सभी देवता हमारे प्रभु यीशु मसीह की अजेय शक्ति द्वारा नष्ट हो जाएँगे, जिन्होंने मुझे सत्य का प्रचार करने की आज्ञा दी है, जिसके प्रति मैं अंत तक वफादार रहूँगा; क्योंकि मसीह के विधान में लिखा है: *"मैं मार्ग, सत्य और जीवन हूँ"* (यूहन्ना 14:2)। हम विश्वासियों के लिए यह उचित है कि हम बहुत सी कष्टों के द्वारा परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करें, जबकि इस युग के बच्चे, जो सांसारिक वस्तुओं के बीच ऐश्वर्य में रहते हैं, उन्हें बाहर के अंधकार में फेंक दिया जाएगा, जहाँ रोना और दांत पीसना होगा।

शहीद के इन शब्दों ने डोमिशियिन को बहुत क्रोधित कर दिया, और उसने संत कोनन को कोड़ों से पीटने और विभिन्न यातनाओं देने का आदेश दिया। संत ने निडर होकर कहा:

'मैं तुम्हारे यातनाओं से नहीं डरता; अपनी योजना तुरंत पूरी करो; मैं तुमसे विनती करता हूँ कि मुझे सबसे कठोर यातनाओं में डाल दो, ताकि मैं अपने मसीह से एक बड़ा इनाम पाने के योग्य समझा जाऊँ।'

डोमिशियिन ने कहा:

'मैं तुम्हें एक अच्छी सलाह दूँगा: हमारी बात सुनो, और तुम हमारे साथ जीवन का आनंद लेने के योग्य बन जाओगे।'

लेकिन संत कोनन ने उत्तर दिया:

'मैं अपनी आत्मा को बचाना चाहता हूँ, न कि अपने शरीर को, और मैं आध्यात्मिक आनंद लेना चाहता हूँ, न कि शारीरिक। जहाँ तक तुम्हारा सवाल है, हे दुष्ट मनुष्य, तुम्हें अपने पिता, शैतान के साथ, नरक में यातनाओं का सामना करना पड़ेगा, जहाँ तुम्हारा दुख कभी समाप्त नहीं होगा।'

इसके बाद, डोमिशियिन ने संत से पूछा:

'हे दुष्ट बूढ़े आदमी, तुम अपने धर्म में कौन सा पद धारण करते हो? क्या तुम पादरी हो?'

'नहीं,' शहीद ने उत्तर दिया, 'मैं एक साधारण व्यक्ति हूँ और उस पवित्र पद के अयोग्य हूँ, जिन्हें इसके लिए योग्य माना जाता है, वे मसीह और उनके पवित्र स्वर्गदूतों के साथ आध्यात्मिक आनंद में आनंदित होते हैं। फिर भी, मैं भी अपने प्रभु यीशु मसीह के लिए जीता हूँ; मैं उनके सामने सिर झुकाता हूँ और उनके नाम में आनंदित होता हूँ।'

"क्या तुम्हारी पत्नी थी?" डोमिशियिन ने पूछना जारी रखा।

'थी,' संत ने उत्तर दिया, 'लेकिन मैं उसके साथ अधिक समय तक नहीं रहा, क्योंकि वह हमारे प्रभु मसीह के पास चली गई है।'

'क्या तुम्हारे कोई बच्चे हैं?' डोमिशियिन ने फिर पूछा।

'मेरा एक बेटा है,' संत ने उत्तर दिया, 'वह मेरे घर में रहता है, लेकिन मैं चाहता हूँ कि वह भी आपके सामने आ जाए।'

डोमिशियिन ने पूछा, 'क्या वह भी हमारे देवताओं की पूजा नहीं करता?'

'जैसा पेड़ है,' संत ने उत्तर दिया, 'वैसी ही उसकी डालियाँ हैं; परन्तु मैं आपसे विनती करता हूँ कि आज्ञा दें कि मेरा पुत्र भी यहाँ लाया जाए, ताकि हम दोनों एक साथ शहादत का मुकुट प्राप्त कर सकें।'

तुरंत, डोमशियिन के आदेश पर, जवान कोनन को लाने के लिए सैनिक भेजे गए। जब उसे लाया गया और उसके यातनाकर्ता के सामने खड़ा किया गया, तो बाद वाले ने कोनन के पिता से पूछा:

'तुम्हारे बेटे की उम्र क्या है?'

कोनन ने उत्तर दिया:

– जब वह सात वर्ष का था, तो मैंने उसे पढ़ाई के लिए एक मठ में भेजा, और वहाँ उसने पढ़ना-लिखना सीखा। जब वह बारह वर्ष का हुआ, तो उसे चर्च का पाठक नियुक्त किया गया। अब वह सत्रह वर्ष का है और, मसीह की कृपा से, वह डिकन का पद धारण करता है और ईश्वर के पवित्र सेवकों में गिना जाता है। मैंने बचपन से ही उसे पवित्र जीवन जीना सिखाया, और वह शहीद के मुकुट का योग्य है। मैं आपसे विनती करता हूँ: देरी न करें, बल्कि हमें यातनाएँ देने का आदेश दें, ताकि हम दोनों को हमारे ईश्वर मसीह द्वारा एक साथ मुकुट पहनाया जाए, क्योंकि हम मसीही हैं और मसीह के लिए मरना चाहते हैं।

डोमशियिन ने पूछा, 'तुम्हारे पुत्र का नाम क्या है?' शहीद ने उत्तर दिया:

'उसका नाम उसके पिता के नाम पर है।'

डोमशियिन ने युवा कोनन की ओर मुड़कर उससे कहा:

'युवक, तुमने सुना है कि तुम्हारे पिता ने कई साल जिए, उन्होंने विवाह किया, एक पुत्र को जन्म दिया और काफी समय तक जीवन का आनंद लिया, फिर भी अब वे बूढ़े हो गए हैं; इसलिए इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि वे मृत्यु की कामना करते हैं। लेकिन तुम अभी जवान हो और तुमने अभी-अभी जीवन के सभी सुखों को जानना शुरू किया है—क्या तुम सच में अपने पिता की आज्ञा मानना चाहते हो?'

यातना देने वाले के चालाक शब्दों पर, उस युवक ने उत्तर दिया:

'मेरे पिता ने मुझे एकमात्र सच्चे ईश्वर का आदर करना सिखाया, सभी दृश्य और अदृश्य सृष्टि के स्रष्टा का सम्मान करना, और एक पवित्र तथा ईश्वरीय जीवन जीना; उन्होंने मुझे मोक्ष का मार्ग दिखाया और बताया कि यह जीवन जीवन नहीं, बल्कि मृत्यु है, और जो कोई भी इस क्षणिक जीवन से प्रेम करता है, वह अनंतकाल के लिए मर जाता है, जबकि हमारे प्रभु यीशु मसीह में अनंत जीवन है, जो वह उन लोगों को प्रदान करते हैं जो उनसे प्रेम करते हैं। इसके अलावा, मुझे मेरे पिता ने यह भी सिखाया है कि गेहन्ना की आग में अनंतकालिक यातना, जो कभी बुझती नहीं, अधर्मी मूर्तिपूजकों की प्रतीक्षा कर रही है, जबकि स्वर्गीय महिमा में अविनाशी मुकुट मसीह के धर्मी सेवकों की प्रतीक्षा कर रहे हैं, हमारे परमेश्वर मसीह के अनंत राज्य में, जिसके लिए हमने संसार को त्याग दिया है, और संसार ने हमें त्याग दिया है। मेरे पिता द्वारा यह सिखाए जाने के बाद, मैं उनसे सहमत हूँ; मैं उसी मार्ग पर चलना चाहता हूँ जिस पर वे चलते हैं, और मैं उन्हीं कष्टों को सहन करने के लिए स्वयं को प्रस्तुत करता हूँ जिन्हें उन्होंने सहन किया है। क्योंकि मेरे प्रभु मसीह ने इस प्रकार कहा है: *'मेरा पिता अब भी कार्य कर रहा है, और मैं भी कार्य कर रहा हूँ'*, *'पुत्र अपने आप से कुछ भी नहीं कर सकता, जब तक वह पिता को करते हुए न देखे: क्योंकि जो कुछ पिता करता है, वही पुत्र भी करता है'* (यूहन्ना 5:17, 19)।

डोमशियिन ने पूछा, 'और अगर मैं तुम्हारे पिता को क्रूर मृत्यु दूँ, तो क्या तुम भी वही हश्र झेलना चाहोगे?'

'हाँ, मैं चाहता हूँ,' धन्य युवक कोनन ने उत्तर दिया, 'मैं अपने पिता के साथ मरना चाहता हूँ, ताकि हम हमारे प्रभु के राज्य में एक साथ जीवित भी रह सकें; क्योंकि मसीह के लिए मरना मृत्यु नहीं, बल्कि अनंत जीवन की प्राप्ति है।'

तब डोमशियिन ने वृद्ध कोनन की ओर मुड़कर उससे कहा:

'सचमुच, यह युवक तुमसे अधिक बुद्धिमान है, और उसमें केवल एक ही कमी है – कि सत्य को जानने के बाद भी वह हमारे देवताओं की पूजा करे।'

वरिष्ठ कोनोन ने यातना देने वाले से उत्तर दिया:

'यह युवक सत्य को अच्छी तरह जानता है, क्योंकि वह मुझसे साथ उस एक की उपासना करता है जिसने कहा: *"मैं ही सत्य हूँ"* (यूहन्ना 14:6); परन्तु न तो वह और न ही मैं कभी तुम्हारी दैवीय मूर्तियों, तुम्हारे झूठे देवताओं की उपासना करेंगे।'

डोमशियिन ने कहा, 'मैं तुझे आखिरी बार कहता हूँ: मेरी आज्ञा मान और देवताओं की पूजा कर, ताकि तू क्रूर यातनाओं और मृत्यु से बच जाए, और हमसे महान पुरस्कार प्राप्त करे।'

इस पर, वृद्ध कोनोन ने उत्तर दिया:

'हे परमेश्वर द्वारा निकाल दिए गए अधर्मी, मानव रक्त के लिए अतृप्त यातना देने वाले और सभी मनुष्यों में सबसे दुष्ट, क्या मैंने तुम्हें शुरू से ही नहीं बताया कि मैं एक ईसाई हूँ और अपने पुत्र के साथ मसीह के लिए मरना चाहता हूँ, फिर भी तुम, द्वेष और पागलपन में मदहोश, मेरी बातें याद नहीं करते?'

तब डोमशियिन ने एक लोहे का बिस्तर लाने का आदेश दिया; जब उसे लाल-लाल तपा दिया गया, तो पवित्र शहीदों को नग्न करके उस पर लिटाया गया और झुलसाया गया। यातना देने वाले के आदेश का पालन करते हुए, कुछ नौकरों ने जलते हुए कोयलों में आग भरी, जबकि अन्य ने पवित्र शहीदों पर उबलता हुआ तेल डाला – फिर भी संत सुरक्षित रहे। तब वृद्ध कोनोन ने यातना देने वाले से कहा:

'क्या तुम्हें याद नहीं, डोमशियिन, कि मैंने तुमसे मुझे क्रूर यातनाएँ देने को कहा था? फिर भी तुमने ऐसा करने का प्रयास भी नहीं किया, क्योंकि यह यातना हमारे लिए तुच्छ है और हमें कोई जलन महसूस नहीं हो रही है।'

जब यह देखकर कि इससे शहीदों को बिल्कुल भी नुकसान नहीं हुआ, यातना देने वाले ने एक तांबे का पात्र तैयार करने का आदेश दिया; उसमें टिन, गंधक और पिच भरकर, उसने उसमें आग लगा दी और पवित्र शहीदों को उस पात्र में फेंक दिया। ऐसा करते हुए, उसने कहा:

'अगर उन्हें तवे पर ठंडक महसूस होती है, तो मैं उन्हें उबलते हुए कड़ाही में गर्म करूँगा और देखूँगा कि क्या उनका ईश्वर उन्हें आग की लपटों से बचा सकता है।'

कड़ाही में डाले गए संतों ने स्वर्ग की ओर अपनी आँखें उठाईं और प्रार्थना की:

हे प्रभु, हे सर्व सृष्टि के रचयिता! हमारी प्रार्थना सुनें; हमारे पास अपना पवित्र स्वर्गदूत भेजें, ताकि वह इस प्रचंड तपे हुए कड़ाही को ठंडा कर दे, जैसे उसने एक बार तीन युवकों के लिए बेबीलोन की आग की भट्टी को ठंडा किया था; हे प्रभु, हमारी सुनो, और हमारी सहायता के लिए शीघ्रता करो, ताकि सभी यह जान सकें कि आप जीवित परमेश्वर के पुत्र हैं, जो संसार में आए हैं।

तुरन्त, उनकी प्रार्थना का उत्तर देते हुए, प्रभु ने अपना स्वर्गदूत भेजा, जिसने स्वर्गीय ओस से उस कड़ाही को ठंडा कर दिया और उनसे कहा:

'तुम्हें शान्ति मिले, हे अच्छे योद्धाओं, विश्वासयोग्य तपस्वियों! न डरो और न ही निराश हो, क्योंकि मसीह तुम्हारे संग है; वह तुम्हें विजेता और अनन्त आनन्द के सहभागी बनाएगा।'

इसके बाद, डोमशियिन ने पवित्र शहीदों को उल्टा लटकाने और बदबूदार धुएँ के हवाले करने का आदेश दिया। संत कोनन द एल्डर, इस आज्ञा पर मुस्कुराते हुए, ने कहा:

'हे पागल! आग ने हमें कोई नुकसान नहीं पहुँचाया; तो क्या हम निश्चित रूप से धुएँ से डर जाएँगे?'

जैसे-जैसे संतों को उस बदबूदार धुएँ से यातना दी जाती रही, वे अपने यातना देने वाले पर हँसे और कहा:

'हे नीच, क्या तुझे शर्म नहीं आती कि मसीह के दो सैनिकों ने तेरी सारी घमंडी शक्ति को परास्त कर दिया है, तेरे पिता शैतान को शर्मिंदा किया है, और उसकी सभी दुष्ट योजनाओं को कुचलकर हरा दिया है?'

डोमशियिन क्रोध से भर गया और, अपमानित होकर और कुछ करने को न जानते हुए, उसने आदेश दिया कि इस यातना को रोका जाए और शहीदों को लकड़ी की आरी से आधा कर दिया जाए। जब नौकरों ने उन्हें सही स्थिति में बिठा दिया और आरी चलाने वाले थे, तो संतों ने नौकरों से प्रार्थना करने के लिए समय देने को कहा, और इस प्रकार उन्होंने ईश्वर से प्रार्थना की:

'हे प्रभु, सर्वशक्तिमान परमेश्वर, स्वर्ग और पृथ्वी के सृष्टिकर्ता, राजाओं के राजा और प्रभुओं के प्रभु, हम आपको धन्यवाद देते हैं कि आपने हमें अपने पवित्र नाम के लिए पीड़ा सहने के योग्य समझा, हमारे कष्टों में हमें बल दिया, अपने शत्रुओं को हमें उपहास करने नहीं दिया, और हमें शैतान पर विजयी बनाया। हम तुझे महिमामय करते हैं—हे मसीह परमेश्वर, सर्वशक्तिमान और सर्व-सद्भावनामय मानवता के प्रेमी—और हम तुझ से विनती करते हैं: अपने पवित्र चर्च को, जो संपूर्ण ब्रह्मांड में है, शांति प्रदान कर; जो उसे सताते हैं उन्हें लज्जित और पराजित कर; घृणित मूर्तिपूजक पूजा स्थलों को शीघ्र ही उखाड़ फेंक और नष्ट कर; अपनी शक्ति को उठा और अपने पवित्र नाम की स्तुति को फैला; ईसाई जाति की रक्षा कर और उसे बढ़ा, जो अपने जीवन के अंत तक यथोचित रूप से तेरा महिमामंडन करती है। हे प्रभु, हम आपसे और भी विनती करते हैं कि हमारी आत्माओं को शांति से ग्रहण करें; दंडदाता की आज्ञा पूरी न हो, और हमें आरी से चीरकर दो भागों में न काटा जाए, कहीं ऐसा न हो कि इससे हमारे शत्रु को आनंद मिले, जो यह घमंड करना चाहता है कि उसने हमें नष्ट कर दिया है। आपकी दया हम पर सदैव बनी रहे और हमें अपने पास ले जाएँ, और डोमशियिन यह जान जाए

कि हम आपके दास हैं, और आपने हमारे साथ वही कयिा जो आपकी इच्छा थी; और जो कोई भी इन घटनाओं के बारे में सुने, वह सदा के लिए आपके परम पवत्रि नाम की महमिा करे।

जब संतों ने 'आमीन' कहा, तो स्वर्ग से एक आवाज़ सुनाई दी जो उन्हें स्वर्गीय नविासों में बुला रही थी; पवत्रि शहीदों ने, क्रॉस का चह्नि बनाकर, अपनी पवत्रि आत्माओं को ईश्वर के हाथों में सौंप दयिा। तुरन्त एक भीषण भूकम्प आ गया; मूर्तपिूजक मंदरि ढह गए और नगर की सभी मूर्तयिाँ चकनाचूर हो गईं, जबकि डोमशियिन भागकर अपने घर में छपि गया।

मठ में रहने वाले भाइयों ने, जब यह सुना कि पवत्रि शहीदों के साथ क्या हुआ था, तो वे आए और उनके सम्मानति शरीरों को उठा लयिा; उन्हें मठ में ले जाकर, उन्होंने सम्मानपूर्वक उनका दफन कयिा, और पति, पुत्र और पवत्रि आत्मा, त्रमिूर्त में एक परमेश्वर की महमिा की, जसिकी सृष्टि की सभी चीज़ों द्वारा युगानुयुग महमिा की जाती है। आमेन।

४२ पवत्रि शहीदों का कष्टकथा

6 मार्च को स्मरणोत्सव

ग्रीक सम्राट थयिोफलिस[2211] , जो सम्राट माइकल के पुत्र थे, जन्हिें वाल्वोस या ट्रैवलोस उपनाम से जाना जाता था और जो अमोरेआ[2212] के मूल नविासी थे, ने अरबों के खलिाफ अक्सर युद्ध कए, कभी उन्हें हराया और कभी वे उनसे पराजति हुए।

एक अवसर पर, एगारयिों के खलिाफ एक बड़ी सेना के साथ अभयिान पर नकिलकर, थयिोफलिस ने सोज़ोपेत्रा नामक एक शहर की घेराबंदी की, जो सारसेन राजकुमार अमीर-मुना का जन्मस्थान था, और इस शहर पर कब्जा करने का प्रयास कयिा।

अगारीय राजकुमार अमीर-मुम्ना (जन्हिें अवसिाक के नाम से भी जाना जाता है) उस समय कहीं और थे; उन्होंने राजा थयिोफलिस के पास दूत भेजे, और उनसे वनिम्रतापूर्वक सोज़ोपेत्रा शहर से पीछे हटने तथा अपने प्रयि गृहनगर को बर्बाद न करने का आग्रह कयिा। लेकनि थयिोफलिस ने उसकी वनिती पर कोई ध्यान नहीं दयिा; उसने शहर पर कब्ज़ा कर लयिा, उसे पूरी तरह से तबाह कर दयिा, और लूट के माल के साथ घर लौट आया।

अपने पैतृक शहर के वनिाश से गहराई से दुखी, अमीर-मुम्ना बहुत क्रोधति हो गया और उसने बेबीलोन, फनिसियिा, फलिस्तीन, कोएले-सीरयिा और दूर के अफ्रीका में बड़ी रकम के लिए हर जगह सैनकिों को भर्ती करना शुरू कर दयिा।

[2213]कुछ समय बाद, तारसस में अपनी पूरी सेना इकट्ठा करने के बाद, उन्होंने फ्रीजयिा में स्थति अम्मोरयिा के सुंदर शहर पर चढ़ाई करने का संकल्प लयिा—जो सम्राट थयिोफलिस के पति, राजा माइकल ट्राउलोस का जन्मस्थान था—ताकि वे अपने मूल शहर सोज़ोपेत्रा का बदला ले सकें, जसिे थयिोफलिस ने नष्ट कर दयिा था।

यह सुनकर, यूनानी राजा थयिोडोरस ने भी पूर्व, पश्चमि और फारस से एक बड़ी सेना इकट्ठी की; और, दुश्मन के खलिाफ युद्ध छेड़ने के लिए नकिलकर, वह अम्मोरयिा नगर से तीन दनि की यात्रा पर स्थति फ्रीजयिाई नगर डोराइलयिम पहुँचा। राजा के कई दरबारी, यह नश्चिति रूप से जानकर कि सारासेन सेना यूनानी सेना से कहीं बड़ी थी, राजा को सलाह देने लगे कि वह अगारयिों के राजकुमार की सेना से युद्ध न करे, बल्कि अम्मोरयिा के नविासयिों को नकिालकर अन्य कलिबंद नगरों में बसा दे। लेकनि थयिोफलिस ने कहा कि युद्ध से पीछे हटना और सुंदर शहर अम्मोरयिा को खाली छोड़ देना शर्मनाक होगा।

उसने अपनी सेना को युद्ध के लिए तैयार करना शुरू कर दयिा और उसका एक हस्सिा अम्मोरयिा की रक्षा के लिए भेज दयिा। नम्निलखिति कमांडर सेना के साथ गए: कॉन्स्टेंटाइन, जन्हिें ड्रुंगारयिस के नाम से जाना जाता था[2214] , जो

[2211] थेओफलिस, बीजान्टनि सम्राट, ने 829 से 842 तक शासन कयिा।

[2212] *अम्मोएया* – एशयिा माइनर में फ्राइजयिा का एक शहर।

[2213] *टारसस* – एशयिा माइनर के एक प्रांत सलिसियिा की राजधानी

[2214] *'ड्रुंगारयि' शब्द* वशिेष रूप से युद्धपोतों के कमांडरों को संदर्भति करता था।

पैट्रसियिन की पदवी रखते थे[2215] ; एटियस, जो भी एक पैट्रसियिन थे; थयिोफलिस, जो भी एक पैट्रसियिन थे; थयिोडोर, जन्हिें क्रैटर के नाम से जाना जाता था[2216] , जो प्रोटोस्पैथारयिस की पदवी रखते थे[2217] ; मलिसिन और कैलकिस्टस, जन्हिें टर्मार्च के नाम से जाना जाता था[2218] ; वासोई; और कई अन्य कमांडर और कुलीन।

थोड़ी ही देर बाद, थयिोफलिस और अमीरमुन्ना की सेनाओं का आमना-सामना हुआ; एक भयंकर युद्ध छड़ि गया, और दोनों ओर से कई लोग मारे गए। शुरू में यूनानी अगारयिों पर भारी पड़ रहे थे; फरि, ईश्वर की इच्छा से, युद्ध का पासा पलट गया, क्योंकि प्रभु मसीह, थयिोफलिस के मूर्त-िभंजन से क्रोधति होकर, यूनानयिों से उनका साहस छीन लयिा; अगारयिों ने वापसी की और यूनानयिों पर हावी होने लगे।

अचानक, पूरी ग्रीक सेना भाग खड़ी हुई, और अपने राजा को छोड़ दयिा, जसिकी रक्षा केवल एक ही फारसी सेना कर रही थी, जसि उसने पैसे के लिए करिाए पर रखा था।

नस्िसंदेह, यदि रात न हो जाती तो राजा थयिोडोरस वहीं मारे जाते। लेकनि स्वर्गीय राजा, जो *'हमेशा के लिए क्रोधति नहीं रहता, और न ही हमेशा के लिए रंजशि रखता है'* (भजन संहति 102:9), ने ईसाइयों पर दया की और अचानक अगारयिन रेजमिेंटों पर भारी वर्षा भेज दी, जसिसे उनके धनुष बेकार हो गए और वे भाग रहे राजा थयिोफलिस और पराजति ग्रीक योद्धाओं का पीछा करना बंद कर दिए।

इस भयंकर पराजय के बाद, अगारयिन राजकुमार अमीर-मुन्ना तुरंत अम्मोरयिा शहर पर आगे बढ़ गया और उसने उसे घेर लयिा, उसे एक गहरे खंदक से घेर लयिा। उसने इसे लंबे समय तक हर तरफ से घेरा, इसे जीतने का इरादा रखता था।

हालाँकि, यूनानी राजा थयिोफलिस अपमानति होकर डोरीलेई भाग गया; वहाँ से उसने राजकुमार अमीर-मुना को कई कीमती उपहारों के साथ राजदूत भेजे, और उससे अम्मोरयिा शहर से पीछे हटने की वनिती की। लेकनि सोजोपेत्रा शहर के वनिाश से अत्यधकि क्रोधति, राजकुमार अपनी बात पर अड़ा रहा। राजा की वनिती और उसके उपहारों का मज़ाक उड़ाते हुए, और उसे कायर तथा भगोड़ा कहकर, राजकुमार ने राजा के दूतों को मामले के परणिाम तक ज़ंजीरों में बाँधकर रखने का आदेश दयिा, और उसके बाद कई दनिों तक उसने शहर पर ज़ोरदार हमले करने का आदेश दयिा।

हालाँकि, शहर के अंदर के लोगों ने ज़बरदस्त प्रतरिोध कयिा, और शहर की दीवारों से कई एगारीय सैनकि और उनके सबसे प्रमुख कमांडर मारे गए। यह संदेह करते हुए कि क्या शहर पर कब्ज़ा कयिा जा सकता है, राजकुमार अमीर-मुन्ना पहले ही इसे छोड़कर अपने देश लौटने की कगार पर था। और यह नश्चिति रूप से हो जाता अगर अमोराइट कमांडरों में से एक, वादत्ज़िसि नामक व्यक्ति की वश्विासघाती धोखाधड़ी न हुई होती। मुख्य सेनापति से अनबन होने के बाद, उसने शहर को दुश्मन के हवाले करने का नश्चिय कयिा।

उसने एक तीर में कागज़ का टुकड़ा बाँधा और उसे अगारयिों की ओर छोड़ा, जो पहले से ही शहर की दीवारों से पीछे हटने की तैयारी कर रहे थे; उस कागज़ पर उसने नम्निलखिति लिखा था:

'इतनी देर यहाँ रहकर और इतना प्रयास करने के बाद, तुम बनिा जीते ही क्यों जा रहे हो? हम्मित रखो, बहादुर बनो, और शहर की दीवार के उस हस्सि पर हमला करो जहाँ एक स्तंभ है जसि पर शेर की संगमरमर की मूर्ति है, और उस स्तंभ के शीर्ष पर पत्थर से तराशी गई खजूर की मूर्ति है; मैं यहाँ इस तरफ पहरा दे रहा हूँ; मैं तुम्हारी मदद करूँगा, और तुम आसानी से शहर पर कब्ज़ा कर लोगे, क्योंकि यहाँ कोई दीवार नहीं है। तुम खुद तय कर सकते हो कि मेरी इस सेवा के लिए मुझे कौन सा सम्मान दोगे।

जब तीर से बँधा यह नोट मलिा और उसे अगेरयिन राजकुमार अमीर-मुना को लाया गया, तो उन्होंने इसे पढ़ा और बहुत प्रसन्न हुए। उन्होंने तुरंत अपनी पूरी सेना को नर्दिष्टि दीवार की ओर बढ़ने का आदेश दयिा और वश्विासघाती वादत्ज़िसि की सहायता से, पूरा अगेरयिन सैन्य दल शहर में प्रवेश कर गया, जहाँ एक बड़ा कत्लेआम हुआ, जसिसे ईसाई खून शहर की सड़कों पर नदी की तरह बहने लगा; शहर स्वयं न केवल तलवार से बल्कि आग से भी नष्ट हो गया, क्योंकि इसे तुरंत चारों ओर से आग लगा दी गई थी, और यह उस समय ग्रीकों के बीच बढ़ी हुई वधिर्म के लिए लोगों पर प्रभु का

[2215] अर्थात् एक सेनेटर।

[2216] *क्रैटर* (खराटसि) – शक्तशिाली, मजबूत।

[2217] *प्रोटोस्पैथारयिोस* – तलवार धारण करने वालों में सर्वोपरि – बीजान्टनि सम्राटों के दरबार में एक मानद उपाधि

[2218] *टुरमार्क्स* ड्रुंगारयिों के समान थे।

दंड था। उस समय इस शहर के नविासयिों में से लगभग कोई भी अगारयिन की तलवार या आग से नहीं बच पाया; और जो उस समय सुरक्षति रहे, वे बाद में मृत्यु से नहीं बच पाए, जबकि अन्य को बंदी बना लयिा गया।

जब नविासयिों का कत्लेआम बंद हो गया, तो शहर की रक्षा के लिए राजा द्वारा भेजे गए उपरोक्त कमांडरों को बंदी बना लयिा गया: कॉन्स्टेंटाइन, एटयिस, थयिोफलिस, थयिोडोर, मलिसिन, कैलकिस्टस, वासोई और अन्य उच्च-पदस्थ सैन्य नेता, जनिकी कुल संख्या बयालीस थी। बचे हुए पुरुष और महलिाएँ, युवक और युवतयिाँ, कैद कर लिए गए; अगारयिा के राजकुमार ने आदेश दयिा कि पुरुषों को महलिाओं, युवकों और युवतयिों से अलग कयिा जाए, और यह पता चला कि लगभग सत्तर हजार पुरुष थे, जबकि महलिाएँ, युवतयिाँ और युवक इतने अधकि थे कि उनकी गनिती नहीं की जा सकती थी। राजकुमार ने सभी पुरुषों को तलवार से मार डालने का आदेश दयिा, केवल उपर्युक्त राज्यपालों और सैन्य कमांडरों को छोड़कर, जबकि महलिाएं और बच्चे उसके सैनकिों में बांट दिए गए। इस प्रकार, ईश्वर-भक्त राजा थयिोफलिस के पापों के कारण, जो चर्चों से प्रतमिाएँ हटा चुका था और प्रतमिाओं की पूजा करने के लिए कई पवत्रि स्वीकारकर्ताओं को क्रूरता से यातनाएँ देता था, अम्मोरयिा का यह सुंदर शहर एक ही दनि में तलवार और आग से नष्ट हो गया।

इसके बाद, अत्याचारी अमीर मुना ने आदेश दयिा कि थयिोफलिस द्वारा भेजे गए पुरुषों—जन्हिोंने शहर के पूर्ण वनिाश को देखा था—को उनकी बेड़यिों से मुक्त कर दयिा जाए, और उन्हें राजा के पास वापस भेज दयिा ताकि वे उसे वह सब कुछ बता सकें जो उन्होंने देखा था।

यह समाचार पाकर राजा गहरे दुख से भर गया। फरि उसने अपने राज्यपालों और सैन्य कमांडरों की रहिाई के लिए दो सौ सेंटेनरी[2219] की फरिौती की पेशकश करते हुए अमीर मुम्ना के पास दूत भेजे। लेकनि बाद वाले ने इतनी कीमत पर बंदयिों को लौटाने से इनकार कर दयिा , यह कहते हुए कि उसने अपनी सेना इकट्ठा करने पर एक हजार सेंटनेरी खर्च कए थे; राजा के संदेश और दूतों का मज़ाक उड़ाने के बाद, राजकुमार ने उन्हें अपमानति करके भेज दयिा।

तब थयिोफलिस गहरे दुख से बीमार पड़ गया और थोड़े ही समय बाद उसी बीमारी से उसकी मृत्यु हो गई। इस बीच, बंदयिों को सीरयिा ले जाया गया। वादत्ज़िसि, वह कमांडर जसिने शहर दुश्मन के हवाले कर दयिा था, ने मसीह से मुंह मोड़ लयिा और धर्मत्यागी बनकर अगारयिन धर्म अपना लयिा, जसिके लिए उसे राजकुमार से बड़े सम्मान और उपहार मलिे।

राजकुमार आमरि-मुना ने, कब्ज़ा कए गए यूनानी कमांडरों और उनके अनुयायियिों—जो संख्या में बयालीस थे—को अपने देश लाकर, उन्हें एक अंधेरी कोठरी में ज़ंजीरों में बांधने का आदेश दयिा, जहाँ उनके पैरों में बेड़यिाँ डाल दी गईं और उन्हें भूखा-प्यासा तड़पने के लिए छोड़ दयिा गया। इस प्रकार संत बड़े संकट में रहे, उन्हें अगारयिों के हाथों से कम और उपर्युक्त धर्मत्यागी वादत्ज़िसि के हाथों से अधकि पीड़ा हुई, जो उनके प्रति बहुत द्वेष रखता था।

कुछ समय बाद, उनके राजकुमार के उकसावे पर, अधर्मी अगारयिों ने पवत्रि कैदयिों को अपने अगारीय धर्म में परविर्तति करने का प्रयास शुरू कर दयिा, क्योंकि यह अधर्मी राजकुमार उन लोगों की आत्माओं के साथ-साथ उनके शरीरों को भी दास बनाने को अपनी व्यक्तगित उपलब्धि मानता था जन्हिें उसने बंदी बनाया था।

एक दनि, कुछ लोग उस कालकोठरी में आए जहाँ संतों को बंदी बनाया गया था और, मानो उन पर दया करके, उन्होंने उन्हें एक छोटा सा दान दयिा, साथ ही संतों को खुद को बचाने और अपनी कठोर कैद से मुक्त करने की सलाह दी – एक ऐसी रहिाई जो केवल तभी संभव थी जब वे इस्लाम धर्म अपना लेते। लेकनि संत इन कपटी शब्दों को नहीं सुनते थे, उन्होंने मसीह का त्याग करके मोहम्मद के अधर्मी धर्म में परविर्तति होने के बजाय, अपने शेष जीवन के लिए कठोर कष्ट और कारावास सहना, और यहाँ तक कि सबसे क्रूर मृत्यु को भी भुगतना पसंद कयिा। ये धोखेबाज़ प्रलोभक संतों के पास ऐसे प्रलोभनों के साथ न केवल एक बार, बल्कि कई बार आए। हालाँकि, वे कुछ भी हासलि नहीं कर सके, भले ही उन्होंने अपने राजकुमार की ओर से संतों को न केवल स्वतंत्रता बल्कि सम्मान और महान उपहारों का वादा कयिा था।

एक अवसर पर, कुछ सबसे प्रतष्ठिति पुरुष आए और कैदयिों को दान दयिा; वे उनके बगल में बैठ गए और, आँसू बहाने का नाटक करते हुए, रोने लगे, मानो उन्हें इतने लंबे समय तक कैद में रहने पर दया आ गई हो, और आपस में बोले:

'महान पैगंबर मुहम्मद में अवश्विास कतिना दुख लाता है! देखो, जन्हिें हम अब भारी बेड़यिों में देखते हैं—क्या वे महान पुरुष नहीं हैं, जन्हिें उनके राजा द्वारा सम्मानति कयिा जाता है, युद्ध में बहादुर और अपने लोगों के बीच प्रसद्धि हैं? क्या उनके अधीन सत्तर हज़ार से अधकि योद्धा और अम्मोरी का मज़बूत कलिा नहीं था? फरि भी वे यहाँ हैं, हमारे

[2219] *केंटनारयिस* – उच्च मूल्य का एक प्रकार का स्वर्ण सक्कि।

प्रोटोसबिल[2220] (जैसा कि वे अपने राजकुमार को कहते थे) के हाथों में सौंप दिए गए हैं; किसने उनसे उनकी ताकत और दृढ़ संकल्प छीन लिया है? क्या यह हो सकता है कि उन्हें शक्तिहीन बनाने वाली एकमात्र चीज़ महान पैगंबर मुहम्मद को उनकी अस्वीकृति ही थी, जिनके सेवकों—जो उन पर विश्वास करते हैं—ने इतनी शानदार जीत हासिल की है? फिर भी यह आश्चर्य की बात नहीं है कि वे अभी तक उन पर विश्वास नहीं करते हैं, क्योंकि वे अभी तक उन्हें नहीं जानते, क्योंकि उन्हें किसी ने सिखाया ही नहीं है; जिन्हें पता नहीं है और जो केवल अज्ञानता के कारण पाप करते हैं, उन्हें आसानी से क्षमा किया जा सकता है।

तब दरबारी संतों की ओर मुड़कर बोले:

'हे उन लोगों, जिनसे हम अब बात कर रहे हैं और जिनके लिए हमें दुख है, हमारी बात सुनो जब हम तुम्हें अच्छी सलाह देते हैं: उस संकीर्ण मार्ग से मुंह मोड़ लो जिसका पालन मरियम के पुत्र तुम्हें करने का आदेश देते हैं, और इसके बजाय उस मार्ग पर चलो जो इस वर्तमान युग और आने वाले युग दोनों में चौड़ा है, और जिसे महान पैगंबर हमें दिखाते हैं। क्या हमारे पैगंबर कुछ अविश्वसनीय बात कह रहे हैं जब वे यह सिखाते हैं कि ईश्वर में यह शक्ति है कि वह आज्ञाकारियों को यहाँ हर तरह की नेमतों से पुरस्कृत करे, और उन्हें परलोक में जन्नत का वारिस बनाए? क्या ईश्वर के पास सोना कम है, या किसी चीज़ की कमी है? अज्ञानी लोगों के अविश्वास से मुंह मोड़ो, क्योंकि ईश्वर की उन कृपाओं का तिरस्कार करना जो इस जीवन और परलोक दोनों में प्रदान की जाती हैं, सामान्य ज्ञान के विरुद्ध है। या क्या आप स्वयं ईश्वर की कृपाओं के प्रबंधक बनना चाहते हैं, उन्हें तब स्वीकार करना जब ईश्वर भेजते हैं, न कि तब जब आप स्वयं चाहें? आप ऐसा अत्यधिक अहंकार के कारण करते हैं, ईश्वर की उदारता का तिरस्कार करते हुए और उसकी दया को क्रोध में बदलते हुए; क्योंकि यदि आप स्वयं अपने सेवकों को कुछ देते, और वे आपके उपहार ठुकरा देते हैं और आपसे मुंह मोड़ लेते हैं, क्या आप उन पर क्रोधित नहीं होंगे और, उनसे गहराई से आहत होकर, क्या आप उपहारों के बजाय उन पर दंड नहीं लगाएंगे? यदि निश्चित मनुष्य इस तरह का व्यवहार करते हैं, तो क्या अमर ईश्वर आपसे और भी अधिक कठोर व्यवहार नहीं करेंगे? हमारे पैगंबर की शिक्षाओं को स्वीकार करें; तब आप अपनी वर्तमान पीड़ाओं से मुक्त हो जाएंगे और जीवित रहते हुए ही आप पर प्रदान किए गए दैवीय उपहारों का आनंद लेंगे, और मृत्यु के बाद वादा किए गए उपहारों का भी। क्योंकि, परम दयालु होने के नाते, ईश्वर यह देखकर कि मनुष्य, जो इस जीवन में यीशु के कठोर विधान को पूरा करना चाहता है, जो थक चुका है, ने अपने पैगंबर मुहम्मद को लोगों को इस परिश्रम और हर तरह की कठिनाइयों से मुक्त करने के लिए भेजा, इस जीवन के सभी सुखों के बाद परलोक में आनंद का वादा करते हुए, और यह सिखाते हुए कि जो लोग उनकी आज्ञा का पालन करते हैं, वे केवल विश्वास द्वारा, बिना अच्छे कर्म किए ही बच सकते हैं।

एगारीयों के इन अधर्मी शब्दों को सुनकर, बुद्धिमानों ने एक-दूसरे की ओर देखा और कोमल मुस्कान बिखेरी। फिर उन्होंने भजनकार के साथ मिलकर कहा:

'घमंडी लोगों ने आपके विधान का उल्लंघन करते हुए मेरे लिए एक गड्ढा खोदा है। आपकी सारी आज्ञाएँ सत्य हैं' (भजन संहिता 118:85-86)।

अगारीयों को देखकर, उन्होंने उत्तर दिया:

क्या यह वास्तव में आपके पैगंबर की शिक्षा है? और क्या तुम सचमुच मानते हो कि यह धर्मसंगत और ईश्वर को प्रसन्न करने वाला है जब शरीर हर तरह की वासनाओं, अशुद्ध और तीव्र इच्छाओं से वशीभूत हो जाता है, और हमारा मन इन भावनाओं के अधीन इतना हो जाता है कि संयम के द्वारा नीच भौतिक कृत्यों से ऊपर उठने का विचार भी हमारे मन में कभी नहीं आता? इस तरह जीने वाले मनुष्य और एक निर्विवेकी पशु में क्या अंतर होगा? नहीं, पुरुषो, नहीं! हम ऐसे नहीं बनना चाहते, और हम सदाचारी और शुद्ध ईसाई कानून से विमुख नहीं होंगे, क्योंकि हम उन लोगों के शिष्य हैं जिन्होंने परमेश्वर से पुकारा: 'हम आपसे विमुख नहीं होंगे, क्योंकि *"आपके ही कारण हमें दिन भर मार डाला जाता है; हमें वध के लिए भेड़ों की तरह गिना जाता है"* (रोमियों 8:36)। *'न मृत्यु, न जीवन, न स्वर्गदूत, न प्रधानताएँ, न शक्तियाँ, न वर्तमान, न भविष्य, न ऊँचाई, न गहराई, और न कोई अन्य सृजित वस्तु, हमें परमेश्वर के उस प्रेम से अलग नहीं कर सकती जो हमारे प्रभु मसीह यीशु में है'* (रोमियों 8:38-39)। संतों से यह उत्तर सुनकर, अगेरियन उनसे चले गए, क्योंकि वे उन्हें अपना विश्वास अपनाने के लिए मनाने में असफल रहे।

[2220] *प्रोटोसबिल* – मुख्य सलाहकार।

कुछ समय बीत जाने के बाद, राजकुमार द्वारा भेजे गए प्रलोभक—जिन्हें 'ग्मनोसोफसि्ट' ([2221]) के नाम से जाना जाता था—पहले समूह की ही तरह, एक बार फरि से संतों के पास उनकी जेल में आए। उन्होंने भी कैदयिों को दान दयिा और उनमें से प्रत्येक को चूमा; फरि वे बैठ गए और संतों से पूछा:

'ईश्वर के लिए क्या असंभव है?'

'कुछ भी नहीं,' संतों ने उत्तर दयिा, 'उसके लिए सब कुछ संभव है, क्योंकि ईश्वर का स्वभाव ही ऐसा है।'

'यदि ईश्वर के लिए सब कुछ संभव है,' भजन-दार्शनकिों ने कहना जारी रखा, 'तो आइए देखें कि वह वर्तमान में अपनी सर्वशक्तमित्ता के माध्यम से कसि पर दया कर रहा है – यूनानयिों पर या इस्माइलयिों पर?' ईश्वर ने पृथ्वी पर सबसे उपजाऊ और सुंदर भूमि किसि दी है – आपको या हमें? ईश्वर कसिकी सेना को मजबूत कर रहा है? और कसिकी रेजमिेंटों को वह ऐसे नष्ट कर रहा है, मानो वे पुआल हों? नश्चिय ही ईश्वर अन्यायी नहीं है? यदि वह यह न देखता कि हम उसकी आज्ञाओं का पालन करते हैं, तो वह हम पर इतनी बड़ी कृपाएँ न करता; और इसके वपिरीत, यदि वह यह न जानता कि आप उस पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वि सल्लम) पर वश्विास नहीं करते जिन्हें उसने भेजा है, तो वह आपको हमारे अधीन न करता और न ही आपको बंदी बनाता।

भजन-दार्शनकिों के भाषण सुनने के बाद, संतों ने उनसे उत्तर दयिा:

'यदि आप पैगंबर की गवाहयिों पर वश्विास करते, तो आप समझ जाते कि आपकी कल्पनाएँ झूठी हैं, क्योंकि क्या जो आप कहते हैं उसे दैवीय धर्मग्रंथ द्वारा प्रमाणति कयिा जा सकता है? कभी नहीं। और जसिका कोई गवाह न हो वह सब झूठ है। हमारे अगले प्रश्न का उत्तर दें: यदि दो व्यक्ति एक ही खेत के मालकिाना हक पर ववािद करें, और उनमें से एक, जसिके पास कोई गवाह न हो, चल्लिाकर दावा करे कि खेत उसका है, जबकि दूसरा, बनिा कसिी ववािद या झगड़े के, कई ईमानदार और भरोसेमंद गवाह प्रस्तुत करे जो गवाही दें कि खेत उसके हैं, न कि पहले व्यक्ति के, – आप सारसेन क्या सोचेंगे, और आप यह खेत कसिे देंगे? उन्होंने उत्तर दयिा:

– वास्तव में, वह खेत उसी का है जसिके पास गवाह हैं।

– आपने न्यायपूर्ण नर्णिय दयिा है, – संतों ने कहा। – बल्किुल इसी तरह, हम आपके शक्षिक मुहम्मद और परमेश्वर के एकलौते पुत्र, हमारे प्रभु यीशु मसीह के वषिय में तर्क करते हैं। हमारे प्रभु यीशु मसीह, जो परम पवत्रि कुँवारी से जन्म लेकर संसार में आए और मनुष्य बने—एक तथ्य जसिके बारे में, जैसा कि हमने सुना है, आप स्वयं भी अक्सर बात करते हैं—उन्हें उन सभी प्राचीन पवत्रि भवष्यिवक्ताओं की गवाही प्राप्त थी, जिन्होंने संसार में उनके आगमन की भवष्यिवाणी की थी। आपके महान पैगंबर और कानून देने वाले, मुहम्मद, जिन्हें आप ईश्वर द्वारा भेजा हुआ कहते हैं, वे भी आए—और इससे क्या होता है? क्या उन्हें दो पैगंबरों, या कम से कम एक से गवाही नहीं मलिनी चाहिए थी, ताकि यह स्पष्ट हो सके कि उन्हें वास्तव में ईश्वर ने भेजा था?

संतों के इन शब्दों ने भजन-गाने वाले दार्शनकिों को शर्मदिा कर दयिा, क्योंकि उन्होंने खुद को उनसे पराजति पाया।

तब संत वासा मुस्कुराते हुए बोले:

उन्होंने कहा, 'यहाँ तक कि सारसेन कानून-नर्िमाता के पास भी एक गौरवशाली और सच्चा पैगंबर है जसिने उनके बारे में भवष्यिवाणी की थी, संत यशायाह; और अगर इन सबसे बुद्धमिान लोगों (यानी, भजन-दार्शनकिों) को दुखी करने का डर न होता, तो मैं उन्हें इस भवष्यिवाणी के बारे में बता देता।'

वे बोले, 'हमें बल्किुल भी दुख नहीं होगा, क्योंकि हम जानते हैं कि अज्ञानता में पाप करने वालों को कैसे क्षमा करना है, भले ही वे हमारे पैगंबर के बारे में बुरा बोलें।'

'क्या यह आप ही नहीं कहते,' संत ने कहना जारी रखा, 'कि पैगंबर मुहम्मद ही अंतमि पैगंबर हैं?'

'हाँ, ऐसा ही है,' उन्होंने उत्तर दयिा।

तब संत वासली ने कहा:

'यशायाह, जसिे आप स्वयं ईश्वर का नबी मानते हैं, अपनी एक भवष्यिवाणी में कहते हैं: *"प्रभु इस्राएल का सरि और पूँछ दोनों काट डालेंगे"* (यशायाह 9:14)। इसके अलावा, यशायाह स्वयं अपने शब्दों की और व्याख्या करते हैं, जसिका अर्थ 'सरि' से वे हैं जो चेहरों को देखते हैं—अर्थात्, जो अन्यायपूर्ण नर्णिय देते हैं—और 'पूंछ' से पैगंबर: *'झूठा पैगंबर ही*

[2221] *जम्निोसोफसि्ट* – वे दार्शनकि जिन्होंने सभी सांसारकि सुखों का त्याग कर दयिा और नग्न घूमते थे।

पूंछ है' (यशायाह 9:15)। हे पुरुषों, क्रोधित न हो—क्या तुम्हारा नबी एक 'पूंछ' नहीं है, जो भविष्यद्वक्ताओं में सबसे अंतिम है (तुम्हारे ही शब्दों में)? और क्या वह तुम्हें कानून तोड़ने वाले काम करने की शिक्षा नहीं देता? क्योंकि क्या यह अत्याचार नहीं है कि आपके पैगंबर ने आपके लिए कानून के रूप में यह निर्धारित किया है, उदाहरण के लिए, कि यदि कोई व्यक्ति अपनी पत्नी से नफरत करने लगे और उसे तलाक दे दे, तो वह उसे तब तक वापस नहीं ले सकता जब तक कि वह किसी दूसरे आदमी से शादी न कर ले? हम मोहम्मद के कानून के अन्य अत्याचारी फरमानों के बारे में और कुछ नहीं कहेंगे; यह यशायाह की भविष्यवाणी को समझने के लिए पर्याप्त है, कि उसने यह भविष्यवाणी किसी और के बारे में नहीं बल्कि केवल आपके पैगंबर मुहम्मद के बारे में ही की थी, यह कहते हुए: *'और इस प्रजा के अगुवे उन्हें भटका देंगे, और जिनके वे अगुवे हैं, वे नाश हो जाएंगे'* (यशायाह 9:16)।

'हम भी दार्शनिकता करने में सक्षम हैं,' भजन-दार्शनिकों ने कहा, 'लेकिन चूँकि यह ईश्वर की इच्छा है, तो हम उसकी इच्छा का विरोध करने वाले कौन होते हैं? और मुहम्मद को मानवीय गवाही की कोई आवश्यकता नहीं है, क्योंकि उन्हें ईश्वर ने नियुक्त किया है, जिनसे उन्होंने ऐसे कानून प्राप्त किए हैं।'

'क्या उसने सचमुच तुम्हारे लिए ईश्वर से ऐसा कानून लाया है—कि कई पत्नियाँ रखीं और अपने उपवास के दौरान, सूर्योदय तक उनके साथ दावत और कामुक सुखों में पूरी रात बिताई जाए?' संत वासिली ने पूछा।

उन्होंने उत्तर दिया:

'हाँ, यह सच है।'

तब अन्य संतों ने कहा:

'हमें आपके पहले प्रश्न का भी उत्तर देना होगा, जो इस दावे के बारे में है कि सर्वश्रेष्ठ धर्म उन लोगों में पाया जाता है जो युद्ध में अधिक साहस दिखाते हैं और विजय प्राप्त करते हैं। यदि आप अपना विश्वास सैन्य शक्ति से प्राप्त करते हैं, तो फारसियों की प्राचीन शक्ति को याद करें, जिन्होंने कई देशों पर विजय प्राप्त की और लगभग पूरी दुनिया को वश में कर लिया; उनके बाद यूनानियों का राज आया, जब सिकंदर महान ने फारसियों को हराया; फिर रोम ने पूरी दुनिया पर विजय प्राप्त की। तो क्या? क्या वे सभी के पास केवल इसलिए सच्चा विश्वास था क्योंकि वे युद्ध में शक्तिशाली थे? बिल्कुल नहीं। वे सभी मूर्तिपूजा में गहरे डूबे हुए थे, और वे सच्चे ईश्वर, सभी चीजों के स्रष्टा, को नहीं जानते थे। तो फिर, आप यह कैसे दावा कर सकते हैं कि आपका विश्वास केवल इसलिए सच्चा है क्योंकि आपने (ईश्वर की अनुमति से, हमारे पापों के परिणामस्वरूप) हाल ही में अपनी सेना की ताकत से हमें हराया है? क्योंकि ऐसा अक्सर होता है कि हम ईसाई, जो परमेश्वर की सच्ची आराधना करते हैं, उसकी सहायता से अपने शत्रुओं पर विजय प्राप्त करते हैं और कामयाब होते हैं। लेकिन जब हम, अपने प्रभु मसीह को क्रोधित करके, पश्चाताप नहीं करते, तो वह हमारे पापों का प्रायश्चित करने के लिए हमारे विरुद्ध अधर्मी लोगों को भेजता है। फिर भी, दंडित होते हुए भी, हम अपने प्रभु का परित्याग नहीं करते, बल्कि उनकी दया के लिए प्रार्थना करते हैं; हम विश्वास करते हैं और आशा करते हैं कि वह हम पर दया करेंगे। जहाँ तक आपके शिक्षक की बात है, जिसके पास नबियों की कोई गवाही नहीं है और जो पवित्र नबियों के भी विरोधी हैं, हम उसका तनिक भी सम्मान नहीं करते, बल्कि उसे पूरी तरह से अस्वीकार करते हैं।

इस बातचीत के बाद, भजन-दार्शनिक, लज्जित और क्रोधित होकर, अपने राजकुमार के पास लौट आए।

इस बीच, संतों को उस तंग और अंधेरी कोठरी में बेड़ियों में जकड़े हुए सात वर्ष बीत चुके थे। वे दिन-रात प्रार्थना में लगे रहते थे, निरंतर दाऊद के भजन गाते और उन पर उनकी सर्व-प्रभुता के लिए ईश्वर का धन्यवाद करते थे: क्योंकि इस कारावास और कष्ट के माध्यम से वह उनके जीवन के पिछले वर्षों को, जो सुख-सुविधाओं में बीते थे, शुद्ध कर रहे थे, और उन्हें ऐसी दीर्घकालीन सहनशक्ति के लिए मजबूत कर रहे थे, जिसकी उन्होंने पहले कल्पना भी नहीं की थी।

जब वे इस प्रकार कष्ट सह रहे थे, तभी उपर्युक्त धर्मत्यागी वादित्सिस, जिसने अम्मोरिया नगर को बर्बरों के हवाले कर दिया था और मसीह से मुँह मोड़ लिया था, मार्च के पाँचवें दिन, सूर्यास्त के समय, जेल में आया, और, एक छेद से कैदियों में से एक को पुकारा—जो पहले अपने स्वामी, पैट्रिसियन कॉन्स्टेंटिन के लिए एक नोटरी[2222] था, और जिसे कॉन्स्टेंटिन भी कहा जाता था—उसने उससे गुप्त रूप से कहा:

'हे विद्वान, जानो कि मैंने तुम्हारे स्वामी, कुलीन कांस्टेंटाइन के प्रति कई वर्षों से और आज भी जो प्रेम रखा है। मुझे अब निश्चित रूप से पता चला है कि यदि तुम कल उसकी आस्था स्वीकार नहीं करोगे तो राजकुमार तुम्हें सभी को मार

[2222] अर्थात् सचिव।

डालने का इरादा रखता है, और मैं तुम्हें यह सूचित करने आया हूँ। अपने स्वामी को सलाह दो कि वह सारसेन धर्म अपनाने की सहमति का दिखावा करके मृत्यु से बच निकले, और तुम स्वयं भी ऐसा ही करो – परन्तु अपने हृदय में मसीही धर्म से जरा भी विचलित न होना; परन्तु इस विपत्ति के लिए, राजकुमार के प्रति आज्ञाकारिता का दिखावा करो, और तुम्हारा मसीह इस बात के लिए तुम पर क्रोधित नहीं होगा।

लेकिन इस ईश्वर-भयभीत व्यक्ति ने, अपने दाहिने हाथ से क्रॉस का चिह्न बनाते हुए, धर्मत्यागी को उत्तर दिया:

'हमसे दूर हो जा, हे अधर्म के कर्ता,' और वादित्ससि उससे हट गया।

तब लॉर्ड कॉन्स्टेंटाइन, पैट्रसियिन ने, कॉन्स्टेंटाइन नोटरी से पूछा:

'तुम्हें कालकोठरी की खिड़की पर किसने बुलाया, और किस कारण से?'

पूरे दल के सामने इस बारे में बात नहीं करना चाहकर, कहीं कोई मौत के डर से व्याकुल न हो जाए और अपने संकल्प पर डगमगा न जाए, वह कुलीन श्रीमान कॉन्स्टेंटिन के साथ एक तरफ गया और उन्हें वह बताया जो वादित्ससि ने घोषित किया था। कुलीन कॉन्स्टेंटिन ने ईश्वर का धन्यवाद करते हुए कहा:

– प्रभु की इच्छा पूरी हो।

फिर, अपने आदमियों की ओर मुड़कर, उन्होंने कहा:

'भाइयो, आइए हम यह पूरी रात प्रार्थना में बिताएँ।'

सब उठ खड़े हुए और भोर तक दाऊद की भजन-पुस्तक से भजन गाते हुए प्रार्थना की।

अगली सुबह जल्दी, राजकुमार द्वारा भेजा गया एक क्रूर राज्यपाल सशस्त्र सैनिकों के साथ कालकोठरी में पहुँचा; उसने बयालीस पवित्र शहीदों को भीतरी कालकोठरी से बाहर निकालकर बाहरी घेरे के द्वार बंद करने का आदेश दिया, और उनसे पूछताछ शुरू की:

'तुम्हें इस जेल में कितने साल हो गए हैं?' उसने पूछा।

'आप वह क्यों पूछ रहे हैं जो आप पहले से ही जानते हैं?' संतों ने उत्तर दिया। 'आज हमें यहाँ कैद किए हुए सातवें वर्ष का अंत हो गया है।'

'क्या हो सकता है,' राज्यपाल ने कहा, 'कि इस सारे समय में तुमने उस दया को महसूस नहीं किया जो हमारे सबसे न्यायप्रिय राजकुमार तुम पर करते हैं? क्योंकि उन्होंने तुम्हें इन सभी वर्षों तक जीवित छोड़ा है, भले ही वह तुम्हें बहुत पहले ही मौत की सज़ा दे सकते थे।' तुम्हें तुम्हारे प्रति दिखाई गई ऐसी दया के लिए उसकी कृतज्ञता व्यक्त करनी चाहिए, उसके लिए प्रार्थना करनी चाहिए और उसे पूरे दिल से प्रेम करना चाहिए।

संतों ने उत्तर दिया:

'हमारा विधान हमें अपने शत्रुओं और जो हमें सताते और अन्याय करते हैं, उनके लिए प्रार्थना करने की आज्ञा देता है;' इसलिए, हम आपके राजकुमार के लिए भी ईश्वर से प्रार्थना करते हैं। लेकिन हम उसे पूरे दिल से प्रेम नहीं कर सकते, क्योंकि पवित्र भविष्यवक्ता दाऊद हमें ऐसा करने से रोकते हैं, और ईश्वर से इस प्रकार पुकारते हैं: *'हे प्रभु, क्या मैं उनसे घृणा न करूँ जो तुझसे घृणा करते हैं, और उनसे घृणा न करूँ जो तेरे विरुद्ध उठते हैं?'* (भजन संहिता 138:21)।

इस पर राज्यपाल ने उत्तर दिया:

'कोई भी उससे कैसे प्रार्थना कर सकता है जिससे वह नफरत करता है? सचमुच, तुम झूठ बोल रहे हो जब तुम कहते हो कि तुम एक ऐसे राजकुमार के लिए प्रार्थना करते हो जिससे तुम नफरत करते हो।'

संतों ने उत्तर दिया:

'जब हम कहते हैं कि हम उसके लिए परमेश्वर से प्रार्थना करते हैं, तो हम सत्य बोलते हैं, कि परमेश्वर उसकी आत्मा की आँखों को प्रकाशित करे, जो अविश्वास से अँधी हो गई हैं, ताकि वह धार्मिकता के मार्ग को जान सके और परमेश्वर की उचित रीति से आराधना कर सके, उस झूठे (ईसाई) विश्वास के स्थान पर सच्चा विश्वास स्वीकार करके जिसे वह अभी धारण करता है और जिसे वह सत्य समझता है। यदि आपका राजकुमार सच्चे धर्म को जान और स्वीकार कर ले, तो हम न केवल उसे पूरे दिल से प्रेम करेंगे, बल्कि भविष्यवक्ता दाऊद के शब्दों में, उसे उचित सम्मान भी देंगे: 'हे परमेश्वर, तेरे मित्र मेरे बहुत प्रिय थे।'

तब राज्यपाल ने कहा:

'क्या यूनानी और रोमन राजकुमार पागल नहीं हैं, यदि वे सोचते हैं कि हमारे लोग, जो इतने स्वतंत्र, पराक्रमी और शक्तिशाली हैं, उन्हें दिव्य कृपा के बिना एक साथ लाया जा सकता था? यदि हम ईश्वर द्वारा घृणित होते और उनके पास हमारे लिए कोई दिव्य कृपा न होती, तो हम इतने अधिक नहीं बढ़ते और न ही हम वैसे होते जैसे हम अब हैं, जैसा कि आप स्वयं देख सकते हैं।'

संतों ने उत्तर दिया:

'हम यह नहीं कह रहे कि आप दैवीय कृपा के बिना रहते हैं, क्योंकि कोई भी उसकी कृपा से वंचित नहीं है। भले ही कोई ईश्वर को नहीं जानता हो, या कोई अपने दुष्ट कर्मों से उसका अपमान करता हो, फिर भी वह पृथ्वी पर दैवीय कृपा के बिना नहीं रहता और न ही चलता-फिरता है। हम तो बस इतना कह रहे हैं कि आप सच्चे ईश्वर में गलत तरीके से विश्वास करते हैं; क्योंकि, सभी दृश्य और अदृश्य प्राणियों के स्रष्टा होने का दावा करते हुए भी, आप यह कहकर उनका मज़ाक उड़ाते हैं कि वह सभी अच्छाइयों और सभी बुराइयों, सत्य और असत्य, के स्रष्टा और कारण हैं, धर्म और अधर्म, विनम्रता और अहंकार, नम्रता और क्रोध, पवित्रता और अनियंत्रित व्यभिचार, और अन्य सद्गुण तथा उनके विपरीत दुर्गुण, जिनका यहाँ विस्तार से उल्लेख करने की आवश्यकता नहीं है। यदि ईश्वर के बारे में आप जो कहते हैं वह सच होता, तो हम कहते कि आपकी ईश्वर की समझ सही है। लेकिन चूँकि, जैसे अँधेरा प्रकाश से भिन्न है, वैसे ही आपका इकरार सत्य से भिन्न है, हम आपको ईश्वर का सच्चा ज्ञान होने का दावा करने के लिए निंदा किए बिना नहीं रह सकते, जबकि वास्तव में आपके पास वह नहीं है। इसमें कोई आश्चर्य नहीं होगा यदि ईश्वर आपसे क्रोधित हों, भले ही आप उनकी दिव्य व्यवस्था द्वारा संरक्षित हों।

राज्यपाल ने उनसे कहा:

'तो फिर क्या? या क्या तुम यह दावा करते हो कि कोई दूसरा ईश्वर है, जो सभी बुराइयों और हर पाप का स्रष्टा है? दो ईश्वर कैसे हो सकते हैं – एक अच्छा, और दूसरा बुरा? जब दो ईश्वर एक-दूसरे के शत्रु हों, तो यह संसार कैसे टिक सकता है?'

संतों ने राज्यपाल को उत्तर दिया:

'हम यह नहीं कहते कि कोई दूसरा ईश्वर है, जो बुराई का स्रष्टा हो, जो उस ईश्वर से अलग हो, जो सभी अच्छाइयों का स्रष्टा है; नहीं, ऐसा नहीं है। लेकिन हम आपको बताते हैं कि स्वर्गदूतों में से एक था जिसने, अपनी स्वतंत्र इच्छा से, उस चीज़ को चुना जो हानिकारक और अच्छाई के विपरीत है; और, इसे प्रेम करने लगने के बाद, उसने पहले अपने स्रष्टा, ईश्वर से, और फिर मानवता से भी घृणा करने लगा। तब उसे हमारी सद्भावना की परीक्षा करने की अनुमति दी गई – कि क्या वह ईश्वर की ओर प्रयासरत रहती है या उसकी प्रलोभनकारी उकसावे के आगे झुक जाती है; तुम उसके द्वारा भटक गए हो, और इसलिए झूठमूठ ही उसके छल को पूर्णतःपापहीन और अपरिवर्तनीय ईश्वर पर थोप रहे हो।

'फिर भी,' राज्यपाल ने आपत्ति जताई, 'हमारे पैगंबर मुहम्मद सिखाते हैं कि सिर्वशक्तिमान ईश्वर मनुष्य द्वारा किए गए हर बुरे कर्म का कारण है, ठीक वैसे ही जैसे वह हर अच्छे कर्म का है।'

इस पर संतों ने उत्तर दिया:

'यह स्पष्ट है कि उसने झूठमूठ एक दूसरे ईश्वर की कल्पना की है, ठीक वैसे ही जैसे यूनानियों ने कभी अगथोडेमन[2223] की कल्पना की थी, और वह आपको एक ऐसे ईश्वर की पूजा करने के लिए मजबूर करता है जो कभी था ही नहीं और कभी होगा भी नहीं। लेकिन हम उस सच्चे ईश्वर को जानते हैं और उसी की गवाही देते हैं, जिसकी शिक्षा पवित्र भविष्यवक्ताओं ने पुराने नियम में और मसीह के पवित्र प्रेरितों ने नए नियम में दी थी—जो सभी भलाई का स्रष्टा है; हम किसी अन्य ईश्वर को नहीं जानते।

तब राज्यपाल ने उनसे कहा:

'क्या आप आज सबसे न्यायी राजकुमार, प्रोटोसबिल के साथ, हमारे धर्म की प्रथा के अनुसार ईश्वर से प्रार्थना करना नहीं चाहेंगे? क्योंकि मुझे आपके पास इसी कारण भेजा गया है। मैं जानता हूँ कि आप में से कुछ इस बात से सहमत हैं। जहाँ तक असहमत लोगों का सवाल है, जब वे इन लोगों को उपहारों से पुरस्कृत होते देखेंगे, तो उन्हें अपनी लापरवाह हठ पर पछतावा होगा।'

इस पर, सभी संतों ने एक स्वर में उत्तर दिया:

[2223] अर्थात् ईश्वर – अच्छाई और बुराई दोनों का स्रोत।

हम एक सच्चे ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि न केवल प्रोटो-सबिल, आपके राजकुमार, बल्कि सभी सारासेन लोग भी मोहम्मद के अधर्मी भ्रम से मुंह मोड़ लें और एक ईश्वर को उचित सम्मान और पूजा अर्पित करें, जैसा कि मसीह के भविष्यवक्ताओं और प्रेरितों द्वारा प्रचारित किया गया है। हम प्रकाश को त्यागकर स्वेच्छा से अंधकार में नहीं जा सकते।

'जो कुछ भी कहो, सोच-समझकर कहना, कहीं बाद में पछताना न पड़े,' राज्यपाल ने कहा, 'क्योंकि अपने इस विरोध के लिए तुम कठोर दंड से नहीं बच पाओगे।'

लेकिन संतों ने उत्तर दिया:

'हम अपनी आत्मा को अमर और धर्मी ईश्वर के हवाले करते हैं, और हम अपनी अंतिम सांस तक उस पर ही अपना भरोसा रखते हैं; और हम उस विश्वास को भी नहीं त्यागेंगे जो हम पर रखते हैं।'

तब राज्यपाल ने फिर से संतों को मनाने का प्रयास करते हुए कहा:

'प्रलय के दिन, तुम्हारे बच्चों का अनाथ होना और तुम्हारी पत्नियों का विधवा होना तुम्हारे विरुद्ध गवाही देगा, क्योंकि तुम अब उनसे वंचित हो, क्योंकि तुम राजकुमार की इच्छाओं को पूरा नहीं करते और उसके धर्म को अस्वीकार करते हो; अन्यथा, हमारे महान राजकुमार ने तुम्हारे वर्तमान राजा, उस जवान लड़के को, आज्ञा दी होती कि वह तुम्हारी पत्नियों और बच्चों को यहाँ तुम्हारे पास भेजे। लेकिन अभी भी, यदि आप हमारी बात मानने और पैगंबर मुहम्मद में आस्था व्यक्त करने के लिए सहमत हो जाते हैं, तो, जैसा कि मैंने आपसे कहा है, आप जल्द ही अपने पूरे परिवार को देखेंगे, और उन्हें देखकर आप बहुत प्रसन्न होंगे। आपकी ग्रीक भूमि में, थियोडोरा अब अपने छोटे बेटे माइकल के साथ शासन कर रही है, और वह हमारे महान प्रोटोसबिॉल के आदेश का विरोध नहीं कर पाएगी। जहाँ तक धन-संपत्ति की बात है, चिंता न करें, क्योंकि मिस्रियों से मिलने वाला कर—जिसका उपयोग हमारे परम कृपालु राजकुमार आपको, अपने मित्रों के रूप में, एक वर्ष की अवधि के लिए प्रदान करेंगे—आपको इतना समृद्ध कर देगा कि आपका विशाल भाग्य दसवीं पीढ़ी तक आपके वंशजों के लिए बना रहेगा।

गवर्नर के ये शब्द सुनते ही, संतों ने एक स्वर में पुकारा:

'मुहम्मद और जो कोई भी उन्हें पैगंबर के रूप में स्वीकार करता है, वे शापित हों।'

जब संतों ने ईश्वर के विषय में इतनी बड़ी निर्भीकता और अवज्ञा के साथ ये शब्द कहे, तो क्रोधित राज्यपाल ने तुरंत सशस्त्र सैनिकों को आदेश दिया कि वे प्रत्येक संत को पकड़ लें, उनके हाथ पीठ पीछे बाँध दें, और उन्हें भेड़ों की तरह मृत्युदंड के स्थान पर ले जाएँ। यह दृश्य देखकर, सरैसेन और उनके बीच रहने वाले ईसाइयों की एक अनगिनत भीड़ इकट्ठा होने लगी, जो पवित्र शहीदों की हत्या का साक्षी बनना चाहती थी।

जब शहीद पहले ही फरात नदी के पास पहुँच चुके थे, तो राज्यपाल ने उन शहीदों में से एक, सेंट थियोडोर, जिन्हें 'क्रेटर' — यानी 'मजबूत' या 'बहादुर' — उपनाम से जाना जाता था, को अपने पास बुलाया और उससे कहा:

'तुम कभी एक पुरोहित थे (जैसा हमने तुम्हारे बारे में सुना है) और, पवित्र पद को त्यागकर, तुमने एक भाला उठाया, सैन्य कवच पहना और युद्ध में मानव रक्त बहाया। अब, हालांकि, तुम पाखंडपूर्वक खुद को एक ईसाई होने का दावा करते हो, जबकि तुम्हारा विवेक तुम्हें दोषी ठहराता है कि तुमने बहुत पहले ही ईसाई धर्म को अस्वीकार कर दिया था; क्या आपके लिए पैगंबर और ईश्वर के रसूल, मुहम्मद की शिक्षाओं की ओर मुड़ना और उनसे मृत्यु से सहायता और मुक्ति प्राप्त करना बेहतर नहीं होगा, खासकर जब आपको मसीह में कोई आशा या विश्वास नहीं हो सकता, जिनसे आप बहुत पहले स्वेच्छा से मुंह मोड़ चुके हैं।

लेकिन मसीह के पराक्रमी शहीद थियोडोर ने राज्यपाल को दृढ़ता से उत्तर दिया:

'आप झूठ बोल रहे हैं, राज्यपाल, मानो मैंने मसीह परमेश्वर से मुख मोड़ लिया हो; मैंने केवल अपनी अयोग्यता के कारण पवित्र पुरोहित वर्ग को छोड़ दिया है, और इसीलिए अब मुझे, पहले से कहीं ज्यादा, मसीह के विश्वास के लिए अपना रक्त बहाना है और मसीह के प्रेम के लिए मरना है, ताकि मेरे दयालु प्रभु अब मुझसे उन पापों को क्षमा कर दें जो मैंने पहले उनके सामने किए थे। क्योंकि यदि आपका अपना दास आपसे भाग जाए, और फिर आपके पास लौट आए, और आपके लिए अपनी जान भी न बख्शे, तो क्या आप उसे बाद में दिखाई गई वफादारी के कारण, पहले भाग जाने के लिए माफ नहीं करेंगे?

'तव इच्छा पूरी हो,' राज्यपाल ने कहा, 'मैंने तो तुम्हें मृत्यु से बचने का केवल एक रास्ता ही सुझाया है।'

जब सारसेन जल्लादों ने अपनी तलवारें खींच लीं और पवित्र शहीदों को पकड़कर, प्रत्येक को अलग-अलग सिर कलम करने के लिए ले गए, तो संत थियोडोर द क्रेटर संयोग से पैट्रिसियन कॉन्स्टेंटिन के बगल में खड़े थे। थियोडोर को डर था कि कांस्टेंटिन, उसे फांसी होते देख, हिचकिचा सकता है और मृत्यु के भय से डर सकता है; और इसलिए उसने उसे समझाना शुरू किया, कहते हुए:

'सुनो, हे स्वामी, चूंकि आप पद और पुण्य दोनों में हम सभी से श्रेष्ठ हैं, यह उचित है कि आप हम में से पहले शहीद बनें, अपने प्रभु के लिए हम में से किसी के भी पहले तलवार के सामने अपना सिर झुकाएं, और स्वर्गीय राजा, यीशु मसीह से मुकुट प्राप्त करने वाले पहले व्यक्ति बनें, ठीक वैसे ही जैसे सांसारिक राजा ने आपको सभी से ऊपर सम्मानित किया था।

लेकिन संत कॉन्स्टेंटिन ने उनसे उत्तर दिया:

'इतनी बहादुरी वाले व्यक्ति के रूप में यह आपके लिए कहीं अधिक उपयुक्त है कि आप ऐसा करें और मसीह के लिए अपना जीवन सबसे पहले बलिदान करें; आप पाएँगे कि मैं और हमारे अन्य मित्र आपके अनुयायी बनेंगे।'

तब संत थियोडोर ने प्रार्थना की और अपनी आत्मा को ईश्वर के हवाले कर, जल्लाद के पास गए और खुशी-खुशी तलवार से एक गौरवशाली शहीद की मृत्यु को स्वीकार किया।

उनके बाद, अन्य संत, क्रम से और अपने पूर्व पदों के अनुसार, मानो किसी शाही दावत के लिए बुलाए गए हों, एक-एक करके तलवार पर चले गए, और उन्होंने मृत्यु का कोई भय, न ही कायरता दिखाई, जिससे राज्यपाल यह देखकर बहुत आश्चर्यचकित हुआ कि शहीद इतनी प्रसन्नता से अपनी मृत्यु की ओर जा रहे थे।

इस प्रकार बयालीस पवित्र शहीदों ने छठे मार्च को अपने प्रभु के लिए एक वीरतापूर्ण मृत्यु के साथ अपने जीवन समाप्त किए।

पवित्र शहीदों के वध के बाद, सारसेन राजकुमार ने उपर्युक्त धर्मत्यागी, वादित्सिस को तलवार से मार डालने का आदेश दिया, और कहा:

'अगर वह एक सच्चा ईसाई होता, तो उसके लिए अपने धर्म को त्यागना उचित नहीं होता; और अगर उसने अपने मसीह के प्रति विश्वास नहीं रखा, तो वह हमारे मोहम्मद के प्रति विश्वास कैसे रख सकता है? अगर वह अपने साथी ईसाइयों को हमारे हाथों में धोखा देकर उनका दुश्मन बन गया है, तो, जब हमें संकट का समय आएगा, तो वह हमारा भी गद्दार बन सकता है। अपने ही लोगों के प्रति बेवफ़ा होकर, क्या वह अजनबियों के प्रति विफ़ादार होगा? कतई नहीं।

और उन्होंने इस शापित गद्दार का सिर तलवार से काट दिया, और इस प्रकार उसने सरैसेनों के प्रति अपनी दोस्ती का उचित प्रतिफल पाया, जब उसने गौरवशाली और सुंदर ईसाई शहर अम्मोरिया को उनके हाथों में सौंप दिया था।

अगले दिन, राजकुमार के आदेश से, पवित्र बयालीस शहीदों के शवों को फरात नदी में फेंक दिया गया। मारे गए धर्मत्यागी का शव भी नदी में फेंक दिया गया। थोड़ी ही देर बाद, पवित्र शहीदों के शरीर नदी के दूसरी तरफ के किनारे पर पाए गए, अक्षुण्ण अवस्था में, प्रत्येक सिर अपने शरीर से जुड़ा हुआ था, और सभी शरीर वैभव के साथ एक-दूसरे के बगल में पड़े थे। हालाँकि, धर्मत्यागी का शव संतों से बहुत दूर पाया गया, और उसका सिर शव से बहुत दूर पड़ा था। संतों के पवित्र शरीरों को विश्वासियों ने उठाया और सम्मान के साथ दफनाया, जबकि दुष्ट विश्वासघाती का शव और सिर फाड़कर मगरमच्छों ने खा लिया। इन सब के लिए, महिमा हो हमारे प्रभु मसीह परमेश्वर की, जिनकी पिता और पवित्र आत्मा के साथ युगानुयुग आराधना की जाती है। आमीन।

कॉन्टाकियन, स्वर 4:

हे धर्मपरायण मुकुट-धारिणी स्त्रियों, मसीह के लिए पृथ्वी पर दुख सहने के बाद, तुम्हें स्वर्ग में आनंद से निवास करने का वरदान मिला है: क्योंकि, अपनी बीमारियों और घावों के रक्त द्वारा शत्रु की प्रत्येक चालाकी को परास्त करके, तुम उन लोगों को पापों की क्षमा प्रदान करती हो जो सदैव उच्च से तुम्हारी स्तुति करते हैं।

कॉन्टाकयिन, स्वर 2:

वशि्वास के नव-प्रकट तारे, जनि्होंने मसीह के लिए उत्साहपूर्वक दुख उठाया, हम सभी आपको महमिामय मुकुटों से योग्य रूप से वभिूषति करते हैं, क्योंकि आप मसीह के समक्ष हमारे लिए मध्यस्थता करते हैं, जो ईसाई वशि्वास के स्तंभ और दुर्ग हैं।

परमपूज्य आर्काडयिस (और शहीदों जूलयिन और यूबुलस) का स्मरणोत्सव

6 मार्च को स्मरणोत्सव

संत आर्काडयिस, कॉन्स्टेंटनि द ग्रेट के शासनकाल के दौरान साइप्रस द्वीप पर रहते थे। कम उम्र से ही, उन्होंने खुद को मठवासी तपस्या के लिए समर्पति कर दयिा और जूलयिन द एपोस्टेट[2224] के शासनकाल तक इसी तरह जारी रखा, जनिके शासनकाल के दौरान उनका नधिन हो गया। वे संत जूलयिन चकित्सिक और यूबुलस के गुरु थे, जनि्होंने अपने गुरु की मृत्यु से कुछ समय पहले जूलयिन के हाथों[2225] पीड़ा सहन की। अपने शष्यिों की शहादत पर शोक मनाने के बाद, संत आर्कैडयिस ने उनके सम्मानति शरीरों को दफनाया, और, उनका अनुसरण करते हुए, उन्होंने स्वयं, ईश्वर की कृपा से, इस दुनयिा से प्रस्थान कयिा।

20 मार्च

7 मार्च (पुराने कैलेंडर के अनुसार)

पवत्रि हायरोमार्टायर एफ्रेम, बेसलि, यूजीन, एल्पडियिस, अगथोडोरस, एफेरयिस और कैपटिो की शहादत, जनि्होंने वभिनि्न समयों में चेरसन में बशिप के रूप में सेवा की।

7 मार्च को स्मरणोत्सव

डायोक्लेटयिन के reign[2226] के सोलहवें वर्ष में, यरूशलेम के परम पावन पैट्रआर्क, हर्मोन ने प्रेरतिों के उदाहरण का अनुसरण करते हुए, परमेश्वर के वचन का प्रचार करने और मसीह का उपदेश देने के लिए, वभिनि्न देशों और वभिनि्न लोगों के पास कई बशिपों को भेजा।

इनमें से दो बशिप, एफ्रेम और बेसलि, टौरकिा की भूमपिर आए और यहाँ, चेरसन शहर में, दोनों ने कुछ समय तक काम कयिा, एक ऐसे लोगों को सच्चे ईश्वर का उपदेश दयिा जो उन्हें नहीं जानते थे और उन लोगों को ज्ञान प्रदान कयिा जो हेलेनकि मूर्तपिूजा के अंधकार से अंधे हो गए थे। इसके बाद, संत एफ्रेम, चेरसन के नविासयिों को संत बेसलि के पास छोड़कर, डैन्यूब के कनिारे रहने वाले स्कैथयिनों के पास गए; अपने उपदेश के माध्यम से उन्होंने वहाँ कई लोगों को ईसाई धर्म में परविर्तति कयिा और सुसमाचार का प्रचार करते हुए बहुत दुख और परशि्रम सहने के बाद, मार्च के सातवें दनि उनका सरि कलम कर दयिा गया।

इस बीच, सेंट बेसलि ने चेरसन में अवशि्वासयिों की गलतयिों की नंदिा करके और उन्हें मोक्ष का सही मार्ग दखिाकर लोगों का क्रोध भड़काया: दुष्टों ने उन्हें पकड़ लयिा, बेरहमी से पीटा और शहर से बाहर नकिाल दयिा। एक

[2224] कांस्टैंटाइन महान, 306–337; जूलयिन धर्मत्यागी, 361–363।

[2225] संत जूलयिन और यूबुलस लगभग 361 में शहीद हुए थे; उनकी स्मृति का उत्सव आदरणीय आर्काडयिस के साथ एक साथ मनाया जाता है।

[2226] रोमन सम्राट डायोक्लेटयिन ने 285 से 305 तक शासन कयिा। अपने शासन के 18 वर्षों तक उन्होंने ईसाइयों को खुले तौर पर अपने धर्म का प्रचार करने की अनुमति दी, लेकनि 303 से उन्होंने उनका उत्पीड़न शुरू कर दयिा, और वह भी वशिेष क्रूरता के साथ।

पहाड़ पर चले जाने के बाद, वह एक गुफा में रहने लगा; वह पहाड़ 'Cherson[2227] ' से सौ स्टेडियम दूर था और उसका नाम *पार्टेनॉन* था, जिसका अर्थ है *'कुंवारी'*, क्योंकि उस पर एक मंदिर और किसी यूनानी देवी—एक कुंवारी—की मूर्ति खड़ी थी। उस पहाड़ पर रहते हुए, संत बेसिल आत्मा में इस बात से प्रसन्न थे कि उन्हें मसीह के लिए घाव और निर्वासन सहने के योग्य समझा गया था; वे शैतान द्वारा धोखा दिए गए मानव आत्माओं के विनाश पर रोए, और आँसुओं के साथ उन्होंने उनके धर्म परिवर्तन के लिए ईश्वर से प्रार्थना की।

इस प्रकार कुछ समय बीत गया। खेरसन के एक अधिकारी का एकमात्र पुत्र मर गया और उसे शहर के बाहर दफनाया गया। बड़े दुख के साथ, उसके माता-पिता उसके ताबूत के पास बैठे, शोक मनाते और रोते रहे; और रात हो गई, फिर भी वे अपने बेटे के ताबूत को नहीं छोड़ गए। और देखो, एक सपने में उनका मृत पुत्र उन्हें दिखाई दिया, और कहने लगा:

'तुम मेरे मरने पर शोक क्यों कर रहे हो? तुम मुझे यहाँ से जीवित नहीं ले जा सकते, क्योंकि हमारे देवता—वे निर्जीव मूर्तियाँ जिन्हें शैतान ने लोगों को भटकाने और उनके विनाश के लिए बनाया है—मुझे मृतकों में से जीवित नहीं कर सकते। यदि आप मुझे पुनर्जीवित करना चाहते हैं, तो उस अजनबी से विनती करें जिसे आपने पीटा और बाहर निकाल दिया, कि वह मेरी ओर से अपने ईश्वर से प्रार्थना करे, और उस ईश्वर पर विश्वास करें जिसकी वह घोषणा करता है: क्योंकि वही सच्चा ईश्वर है, जिसके पास जीवितों और मृतकों पर अधिकार है, और वह उस मनुष्य की जीवित प्रार्थनाओं के द्वारा मुझे मृतकों में से जिलाने के लिए पर्याप्त शक्तिशाली है, जिसके साथ आपने अन्याय किया है।

तुरंत जागते ही, माता-पिता ने एक-दूसरे को अपने-अपने दर्शन के बारे में बताया और इस बात पर बहुत आश्चर्यचकित हुए कि दोनों के लिए यह एक ही था। अत्यंत प्रसन्न होकर, वे शहर में दौड़ पड़े और अपने दोस्तों को उस दर्शन के बारे में बताया। जैसे ही दिन चढ़ा, उन्होंने परमेश्वर के उस मनुष्य को हर जगह खोजना शुरू कर दिया, और उसे उपरोक्त गुफा में पाया। शहर का मजिस्ट्रेट, अपने परिवार के साथ, उसके पास आया, उसके पवित्र चरणों में गिर पड़ा और उससे अपने बेटे को मृतकों में से जीवित करने की विनती करने लगा।

'मैं एक पापी आदमी होकर यह कैसे कर सकता हूँ?' संत ने आपत्ति जिताई। 'लेकिन यदि तुम उस ईश्वर पर विश्वास करते हो, जिसका मैं प्रचार करता हूँ, तो तुम्हें जो माँगोगे वह मिलेगा, क्योंकि केवल उसी के पास मृतकों को कब्रों से उठाने की शक्ति है।'

मृत युवक के माता-पिता ने कहा, 'यदि हमें हमारा बेटा जीवित वापस मिल गया, तो हम पूरे दिल से वही करेंगे जो आप चाहेंगे और आज्ञा देंगे।'

संत बेसिल ऑफ गॉड उठे, उनके साथ कब्र तक गए, और जब कब्र से पत्थर हटा दिया गया, तो वे अंदर गए, मृतक पर क्रॉस का चिह्न बनाया और लंबी प्रार्थना की; फिर उन्होंने कुछ पानी लिया, उसे पवित्र किया और पवित्र बपतिस्मा की शैली में, परम पवित्र त्रिमूर्ति का आह्वान करते हुए, उसे मृत व्यक्ति पर डाल दिया। तुरंत ही मृतक जीवित हो उठा और परमेश्वर की महिमा करते हुए बोलने लगा। वहाँ उपस्थित सभी लोगों पर भय और आतंक छा गया, जबकि उसके माता-पिता अगणित आनंद से भर गए। सभी लोग संत के पैरों पर गिर पड़े, उसे महान कहने लगे और जिस ईश्वर का उन्होंने प्रचार किया था, उसे सच्चा और सर्वशक्तिमान मान लिया। उन्होंने ईश्वर के बिशप, संत बेसिल को, बड़े सम्मान के साथ शहर में ले गए। उस सरदार ने अपने पूरे परिवार के साथ मसीह में विश्वास करना शुरू कर दिया और बपतिस्मा लिया; इसी प्रकार, इस चमत्कार के साक्षी बने कई लोग, , भी विश्वासी बन गए। और इस प्रकार खेरसन में मसीह की कलीसिया बढ़ने लगी, जबकि अशुद्ध हेलेनिक मंदिर धीरे-धीरे समाप्त कर दिए गए।

अपने पूजा स्थलों की तबाही को देखकर, शैतान ने चेरसन में रहने वाले यहूदियों के हृदयों को भड़काया, और उन्होंने ग्रीकों को ईसाइयों के खिलाफ, और विशेष रूप से उनके नेता, संत बेसिल के खिलाफ उठ खड़े होने और उन्हें मार डालने के लिए उकसाया।

उन्होंने कहा, 'यदि ईसाइयों के शिक्षक को मार दिया जाए, तो ईसाई धर्म आसानी से नष्ट हो जाएगा।'

असंख्य सशस्त्र दुष्ट पुरुष इकट्ठा हो गए: कोलाहल और चीख-पुकार के साथ, उन्होंने अचानक परमेश्वर के बिशप पर हमला किया, उन्हें चर्च से बाहर घसीटा, उनके पैरों में बंधन डाल दिया और उन्हें घेरकर, शहर की सड़कों से

[2227] स्टेडियम दूरी की एक यूनानी इकाई है, जिसका मान समय के साथ बदलता रहा। तीसरी शताब्दी ईस्वी में, एक स्टेडियम 184.97 मीटर या 87 फथॉम मापा जाता था।

होते हुए घसीटा, उन्हें डंडों और पत्थरों से पीटा और पैरों तले रौंदा। वे उसे उस स्थान पर ले गए जहाँ ईसाइयों ने एक स्तंभ स्थापति कयिा था जसिके शीर्ष पर एक क्रॉस था; वहाँ, मसीह के पवत्रि शहीद ने अपना पवत्रि आत्मा ईश्वर को सौंप दयिा, और मार्च के उसी सातवें दनि शहीद की मृत्यु को प्राप्त हुए, उसी दनि जसि दनि स्कैथयिा में संत एफ्रेम का सरि तलवार से काट दयिा गया था।

संत बेसलि के शरीर को शहर के द्वारों के बाहर घसीटकर कुत्तों और पक्षयिों के हवाले कर दयिा गया। यह कई दनिों तक बनिा दफनाए वहीं पड़ा रहा; फरि भी, ईश्वर द्वारा संरक्षति, यह बनिा कसिी नुकसान के रहा; रात में, इस शहीद शरीर के ऊपर एक अत्यंत तेजस्वी तारा दखिाई दयिा, और पास में बैठे एक भेड़यि ने इसे कुत्तों से बचाया, जबकि दनि के समय एक चील शरीर के ऊपर मंडराता रहा, और मांसाहारी पक्षयिों को पास आने से रोकता रहा, जब तक कि ईसाइयों ने रात में चुपके से इसे नहीं ले जाकर सम्मान के साथ दफनाया।

महाधर्माध्यक्ष संत बेसलि की हत्या के बाद, उनके एक शष्यि ने हेलेस्पोंट के क्षेत्रों के लिए समुद्री यात्रा की और वहाँ तीन बशिप—यूजनियिस, एल्पडियिस और अगाथोडोरस—को पाया, जो सुसमाचार का प्रचार करने में लगे हुए थे; उन्हें यरूशलेम के पैट्रआर्क, परम पावन हर्मन ने, संत एफ्रेम और संत बेसलि के साथ मलिकर उपदेश देने के लिए भेजा था। वहाँ उन्हें पाकर, शष्यि ने उन्हें संत बेसलि के नधिन के बारे में बताया, और उन्होंने उस ईश्वर की स्तुति की, जसिने अपने सेवक को शहादत का मुकुट पहनाया था। आपस में परामर्श करने के बाद, बशिपों ने संत बेसलि के उदाहरण का अनुसरण करने की इच्छा से एक जहाज पर सवार होकर चेरसन शहर की ओर प्रस्थान कयिा। उन्होंने चेरसन में मसीह ईश्वर का उपदेश दयिा, और वश्विासयिों की संख्या दनि-ब-दनि बढ़ती गई। लेकनि जैसे शैतान ने संत बेसलि के खलिाफ यहूदयिों और यूनानयिों को भड़काया था, वैसे ही उसने इन बशिपों के खलिाफ भी उन्हें भड़काया; बड़ी संख्या में इकट्ठा होकर, उन्होंने पवत्रि बशिपों को पकड़ लयिा, उन्हें बांध दयिा, उन्हें सड़कों पर घसीटा, और लाठी और पत्थरों से पीटा, जब तक कि पवत्रि शहीदों ने अपने धर्मी आत्माओं को अपने प्रभु के हाथों में नहीं सौंप दयिा। उनके शवों को शहर से उस द्वार से बाहर ले जाया गया जो आमतौर पर मृतकों को दफ़नाने के लिए इस्तेमाल कयिा जाता था, और कुत्तों व पक्षयिों द्वारा खाए जाने के लिए बनिा दफ़नाए बाहर छोड़ दयिा गया; लेकनि ईसाइयों ने उन्हें चुपके से बरामद कर, उन्हें उचति तरीके से दफ़नाया। तीन पवत्रि बशिप, यूजीन, एल्पडियिस और अगथोडोरस ने, संत बेसलि की हत्या के एक साल बाद, 7 मार्च को शहादत प्राप्त की।

कई वर्षों बाद, कॉन्स्टेंटनि महान के शासनकाल में, जब वह पहले से ही ईसाई धर्म की ओर झुक रहे थे, बशिप एफेरयिस चेरसन पहुँचे, जन्हिें यरूशलेम के पैट्रआर्क ने भी भेजा था। यह देखकर कि अवश्विासी लोग, अपनी क्रूरता और क्रोध के कारण, चेरसन में ईसाई धर्म के प्रसार को रोक रहे थे, एफ्रेम सम्राट कॉन्स्टेंटनि से मलिने के लिए बज़िन्टयिम के लिए रवाना हो गए और उन्होंने चेरसन के अधर्मी लोगों के खलिाफ शकिायत दर्ज की जो ईसाइयों पर अत्याचार कर रहे थे। सम्राट ने ईसाइयों को चेरसन में स्वतंत्र रूप से और बनिा कसिी बाधा के रहने की अनुमति दी, और ईश्वर की महमिा के लिए खुले तौर पर और बनिा कसिी बाधा के अपनी प्रार्थना सभाएं आयोजति करने की अनुमति दी; उन्होंने यह भी आदेश दयिा कि जो कोई भी ईसाइयों को रोकता है, उसे शहर से नकिाल दयिा जाए। इस शाही फरमान के साथ, संत एफ्रेम चेरसन लौट आए और मसीह के अनुयायियों को अत्यधकि प्रसन्न कयिा, जबकि अवश्विासयिों को दुख और नराशिा हुई। शहर में एक ईसाई चर्च का नर्मिाण करने और सब कुछ सुव्यवस्थति करने के बाद, बशिप इस अच्छे कार्य के लिए अपनी कृतज्ञता व्यक्त करने हेतु एक बार फरि सम्राट के पास गए। अपने वापसी के सफर में, वह बीमार पड़ गए और आसा द्वीप तक नौकायन करने के बाद, उन्होंने अपना सांसारकि जीवन समाप्त कयिा और शाश्वत जीवन की शुरुआत की। वश्विासयिों ने उनका दफ़न कयिा और उनकी कब्र के ऊपर एक स्तंभ खड़ा कयिा; वहाँ उगे लंबे पेड़ दूर से संत की कब्र को चह्निति करते थे। संत एफ्रेम का नधिन मार्च के सातवें दनि हुआ, उसी दनि जब पूर्व बशिप भी शहीद हुए थे।

ईसाइयों ने दविंगत संत के लिए लंबे समय तक शोक मनाया; फरि उन्होंने राजा कॉन्स्टेंटनि को अपने बशिप की मृत्यु की सूचना दी और उनकी जगह कसिी और को नयिुक्त करने का अनुरोध कयिा। धन्य कैपटिोन, चेरसन के चर्च के बशिप, को एफ्रेम के उत्तराधकिारी के रूप में भेजा गया, और वश्विासयिों ने उनका हर्षोल्लास के साथ स्वागत कयिा। अवश्विासयिों की एक बड़ी भीड़ भी इकट्ठा हुई; नव-आए बशिप के पास आकर, उन्होंने उनसे उनके वश्विास की सच्चाई के प्रमाण के रूप में एक चमत्कारकि संकेत माँगा, ताकि वे भी आश्वस्त हो सकें।

उन्होंने कहा, 'चमत्कार यह हो: एक बड़ी आग की भट्टी जलाई जाए, और ईसाई बिशप उसमें प्रवेश करे; और यदि वह न जले और जीवित रहे, तो हम सभी बपतिस्मा लेंगे।'

संत कैपिटोन, ईश्वर में विश्वास करके, उनकी मांग मान गए और एक बड़ी भट्टी बनाने का आदेश दिया। जब इसे पूरी तरह से भड़का दिया गया, तो पवित्र बिशप ने लोगों के सामने अपना ओमोफोरीयोन[2228] पहना और गहरी भक्ति के साथ ईश्वर से प्रार्थना की, कि वे अपनी दिव्य शक्ति प्रकट करें, जैसा उन्होंने एक बार अविश्वासी लोगों को विश्वास दिलाने के लिए बेबीलोन की भट्टी में[2229] किया था। एक लंबी प्रार्थना के बाद और सभी द्वारा सुना गया डिकन का आह्वान: 'आओ ध्यान दें', के बाद संत भट्टी में प्रवेश कर गए और लगभग एक घंटे तक आग की लपटों में खड़े रहे, प्रार्थना करते हुए और अपने हाथ स्वर्ग की ओर फैलाए हुए, और उन्हें उस महान अग्नि की लपट से कोई हानि नहीं हुई; फिर, अपनी पेल्टस[2230] में गर्म कोयले इकट्ठा करके, वे लोगों के सामने बिना किसी चोट के बाहर निकले। इस अति महिमामय चमत्कार को देखकर, सभी आश्चर्य और भय से भर गए; क्योंकि उन्होंने देखा कि आग ने संत के वस्त्रों को भी नहीं छुआ था, और जलते हुए कोयलों से भरा उनका चोगा भी अछूता रहा।

लोगों ने एक स्वर में, मानो एक ही आवाज़ में, पुकारा, 'एक ईश्वर, ईसाई ईश्वर, महान और शक्तिशाली, जिसने अपने सेवक को भट्टी में अक्षुण्ण रखा है!'

तब सारा खेरसन और उस देश ने इस गौरवशाली चमत्कार से इसकी सच्चाई से आश्वस्त होकर ईसाई धर्म को अपना लिया। इस चमत्कार की सूचना महान कॉन्स्टेंटाइन को दी गई और निकिया में प्रथम सार्वभौमिक परिषद में पवित्र पिताओं को सुनाई गई[2231] , और सभी ने ईश्वर की महिमा करते हुए, संत कैपिटोन के महान विश्वास और ईश्वर के प्रति उनके उत्साह पर आश्चर्य व्यक्त किया।

कुछ वर्षों बाद, संत कैपिटन खेरसन से कॉन्स्टेंटिनोपल के लिए समुद्र यात्रा पर रवाना हुए; एक तूफान आ गया, और लहरों ने जहाज को नदी डनीपर के मुहाने पर ले जाकर फेंक दिया; वहाँ, अविश्वासियों और अधर्मी लोगों ने जहाज को लूट लिया और उस पर सवार सभी को पकड़ लिया, जबकि ईश्वर के बिशप, कैपिटन, पानी में डूब गए।

वे 21 दिसंबर को शहीद हुए, लेकिन उनकी स्मृति खेरसन के पूर्व पवित्र धर्मगुरुओं में गिनती की जाती है, जिन्होंने 7 मार्च को यातनाएँ झेलीं। उनकी पवित्र आत्मा स्वर्ग में उनके साथ एक हो गई है, और ईश्वर के सभी सात बिशप, खेरसोन के बिशप, सात प्रमुख स्वर्गदूतों की तरह[2232] , परम पवित्र त्रिमूर्ति—पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा, एक ईश्वर—के समक्ष एक साथ खड़े हैं, और सभी संतों के साथ सदा-सदा उनकी महिमा करते हैं। आमीन।

कॉन्टाकियन, स्वर 2:

उन चरवाहों के लिए प्रकाश का एक दिन उदय हुआ है, जिन्होंने खेरसन में तेजस्वी होकर अगुवाई की, जिनका पर्व हम मनाते हैं, और जिन्होंने मसीह के झुंड के लिए कष्ट सहे। हे पवित्र शहीदों, मसीह, प्रधान चरवाहे से प्रार्थना करो, कि वह हमें अपने झुंड में स्थान प्रदान करें, ताकि हम तुमसे पुकार सकें: हे पवित्र पिताओं, जो मसीह के लिए अपना रक्त बहा गए, आनन्दित हो।

[2228] *ओमोफोरीयॉन* एक लंबा कपड़ा है जिस पर चार क्रॉस की छवियाँ होती हैं, जिसे कंधों पर रखा जाता है और यह सामने और पीछे की ओर लटकता है; ओमोफोरीयॉन के बिना, एक बिशप पवित्र अनुष्ठान नहीं कर सकता। प्रतीकात्मक अर्थ में – खोया हुआ भेड़ (मानवता), जिसे भले चरवाहे (प्रभु) ने विनाश से बचाया। लूका 15:5.

[2229] अनन्या, अजर्याह और मिसैल की आग से चमत्कारिक रूप से मुक्ति – दानियेल 3।

[2230] *फेलोनियन* एक बिशप और पुरोहित का वस्त्र है; यह आकार में गोल और बिना आस्तीन का होता है।

[2231] पहला सार्वभौमिक परिषद 325 में आयोजित किया गया था और इसमें 318 बिशप शामिल थे। इसने एरियस की विधर्म की निंदा की, जिसने यह सिखाया था कि परमेश्वर का पुत्र परमपिता परमेश्वर के बराबर नहीं था; उसी परिषद में, पवित्र पास्का के उत्सव की तारीख को सटीक रूप से निर्धारित किया गया था।

[2232] उनके नाम हैं: माइकल, गैब्रियल, राफेल, उरीएल, सलाफिएल, येहुदिएल और जेरेमिएल।

आदरणीय एमलियिन की स्मृति

7 मार्च को स्मरणोत्सव

रोम में वकि्टोरनिस नाम का एक व्यक्ति रहता था; अपनी जवानी में वह बहुत पाप करता था, लेकनि बाद में, अपनी वृद्धावस्था में, वह होश में आया और अपने पापों को याद करके ईश्वर के न्याय के वचिार से कांप उठा। एक पवत्रि मठ में आकर और मठाधीश से उसे स्वीकार करने का आग्रह करने पर, उसने इस संसार के सभी बंधनों को त्याग दयिा और एक भक्षिु बन गया; उसने खुद को पूरी तरह से वनिम्रता और आज्ञाकारिता के लिए समर्पति कर दयिा, उस पर दिए गए आज्ञाओं का पालन करते हुए और दनि-रात अपने शरीर को कष्ट देते हुए। संन्यासी जीवन में, उन्हें एमलियिन नाम दयिा गया। मृत्यु को नरिंतर अपने हृदय में धारण करते हुए और परमेश्वर के भयानक न्याय तथा न्याय के दनि अपने पापों का हसिाब देने के लिए हमेशा तैयार रहते हुए, एमलियिन गेहेना (नरक) की शाश्वत यातनाओं के नरिंतर भय में रहते थे; इस भय के कारण उन्होंने अपने शरीर को इतना थका दयिा और दुबला-पतला कर दयिा कि ईश्वर के प्रेम से मठ में रहने वाले पूरे ईसाई समुदाय को शरीर की इस महान तपस्या, वनिम्रता और परश्रिम पर आश्चर्य हुआ। और सभी ने उसके जीवन के तरीके की नकल करने और आज्ञाकारिता के उसके कारनामों की बराबरी करने का प्रयास कयिा, ताकि इस तरह के कठोर तपस्या के माध्यम से वे अपने पापों को शुद्ध कर सकें; उन्होंने देखा कि वह हर दनि भूख और प्यास सहता था, जमीन पर सरि झुकाता था, कम सोता था, और अपने शरीर को कष्ट देता और कुचलता था - और इससे उन्हें बहुत लाभ होता था।

जसि मठ में एमलियिन रहता था, वह एक ऊँचे पहाड़ पर बना था, जसिकी एक ढलान पर एक गुफा थी; और धन्य एमलियिन की यह प्रथा थी कि वह कसिी को बताए बनिा, देर रात को मठ से चुपके से नकिलकर इस गुफा में चला जाता था और वहाँ प्रातकालीन प्रार्थना (मैटनि्स) तक सारी रात आँसुओं के साथ प्रार्थना करता था।

बहुत समय बीत गया; एक दनि मठाधीश की मुलाकात एमलियिन से तब हुई जब वह देर रात मठ से जा रहा था। यह न जानते हुए कि यह भाई मठ क्यों छोड़ रहा था, मठाध्यक्ष अपनी कोठरी से नकिले, चुपके से उसका पीछा कयिा और जब उन्होंने देखा कि वह गुफा में प्रवेश कर गया है, तो वे उसके पास खड़े हो गए और उसका बाहर आने तक इंतजार करने का फैसला कयिा, ताकि वे उससे पूछ सकें कि वह गुफा में क्यों गया था। कुछ ही समय बाद, सूर्य की करिणों से भी अधकि तेज एक दविय प्रकाश अचानक उस पहाड़ को प्रकाशति कर गया, और मठाधीश ने पूजनीय एमलियिन को गुफा में अपनी बाहें ऊपर की ओर फैलाए, ईश्वर से प्रार्थना करते हुए खड़े देखा; और वह दविय प्रकाश उस धन्य व्यक्ति के सरि पर उतर आया। यह दृश्य देखकर, मठाध्यक्ष भय और आतंक से भर गया; मठ लौटते समय, वह इस भयानकता के मारे आतंकति होकर भागा, और वह इतना डरा हुआ था कि मुश्कलि से एक पैर के बाद दूसरा पैर रख पा रहा था। जब वह मठ के द्वार पर पहुँचा, तो उसने स्वर्ग से एक आवाज सुनी जो कह रही थी:

'एमलियिन, तुम्हारे पाप क्षमा कर दिए गए हैं।'

मठाध्यक्ष और भी अधकि भयभीत हो गया; वह अपनी कोठरी में चला गया और चुपचाप भोर का इंतज़ार करने लगा। भाइयों को इससे लाभ पहुँचाने की इच्छा से, मठाध्यक्ष ने भोर की प्रार्थना के बाद, सभी के सामने एमलियिन से कहा और पूछा:

'भैया, आप कल रात कहाँ थे?'

आदरणीय ने मठाध्यक्ष के सामने झुककर उत्तर दयिा:

'मैं पूरी रात मठ में, भाइयों के साथ रहा।'

लेकनि मठाधीश ने उसे डांटा और उससे ईश्वर की उस दया को छपिाने के लिए मना कयिा, जो सच्चे मन से पश्चाताप करने वाले पापयिों पर प्रदान की जाती है। एमलियिन को पूरे समुदाय के सामने वह रहस्य प्रकट करने के लिए मजबूर होना पड़ा: कि कैसे स्वर्ग से, दया के सहिासन से, एक प्रकाश और एक आवाज उस पर उतरी थी। फरि मठाधीश ने समुदाय से कहना शुरू कयिा:

'सुनो, मेरे प्रयि भाइयो। सर्वशक्तमिान ईश्वर इस भाई के पापों को चुपचाप भी क्षमा कर सकते थे, लेकनि हमारे लिए—हमारे हृदयों में पश्चाताप जगाने के लिए—उन्होंने उसे अपनी दया प्रकाश के रूप में, अपनी वाणी के साथ भेजी, ताकि हम भी हमारे स्रष्टा की मानवता के प्रति दया और प्रेम को जान सकें और उसकी महमिा कर सकें, जो सच्चे पश्चातापी लोगों के नकिट हैं।

इस प्रकार यह जानकर कि उसका पाप क्षमा कर दिया गया है, पूजनीय एमलियिन ने अपना शेष जीवन आध्यात्मिक आनंद में बिताया और अथाह प्रकाश में प्रस्थान किया, ताकि वे धर्मी लोगों के आनंद और हर्ष का स्वर सुन सकें, जो स्वर्गीय निवासों में अनंत काल तक आनंद मनाते हैं।

आदरणीय पॉल, स्वीकारकर्ता की स्मृति

7 मार्च को स्मरणोत्सव

संत पॉल प्लुसियाडा के बिशप थे[2233] जब चर्च के भीतर प्रतिमा-भंजकों का विधर्म उभरा। पवित्र प्रतिमाओं के विरोधियों को मसीह के विश्वास के विरुद्ध उग्र होते, पवित्र प्रेरितों की शिक्षाओं को विकृत करते, सम्माननीय प्रतिमाओं के प्रति तिरिस्कार दिखाते और उनके विरुद्ध अपमानजनक शब्द बोलते देख, परम पूजनीय ने परमेश्वर के एक विजयी योद्धा की तरह उनका विरोध किया और दिव्य धर्मग्रंथों के शब्दों को जैसे तीरों की तरह उन पर चलाकर उन्हें धराशायी कर दिया। इसके लिए उन्होंने जीवन में उत्पीड़न, निर्वासन और हर तरह की कठिनाइयों को सहन किया। ऐसे वीर कार्यों के बीच, उन्होंने शांतिपूर्वक अपना प्राण प्रभु को सौंप दिया और स्वर्गीय राज्य में प्रवेश कर गए, जो उनके लिए अत्यंत प्रिय था[2234] ।

उस तपस्वी की कथा जिसे ईश्वर ने भीख स्वीकार करने वालों की नियति प्रकट की

स्मरणोत्सव 7 मार्च को

एक तपस्वी अपने आश्रम में अत्यंत सम्मानित थे, क्योंकि उन्होंने अपनी युवावस्था से ही पवित्र जीवन जिया था। सभी सांसारिक सुखों का त्याग कर, वह एक तंग कोठरी में स्वयं को बंद कर लेता था और उपवास तथा पूरी रात जागकर शरीर को कष्ट देकर ईश्वर की सेवा करता था, स्वयं और संपूर्ण विश्व के लिए सर्वोच्च प्रभु से प्रार्थना करता था, तथा ईश्वर के चिंतन में अपने मन को प्रशिक्षित करता था। नियत समय पर वह एक साधु परिचारक के हाथों से थोड़ी मात्रा में भोजन ग्रहण करता था; और मठ के ईसाई भाइयों द्वारा ईश्वर की ओर से भेजे गए उपहारों—सोना, चाँदी, भोजन और शराब—में से वह स्वयं के लिए कभी कुछ नहीं लेता था।

एक बार उन्हें भीख लेने वालों के बारे में एक दर्शन हुआ: एक अवसर पर, शहर का मजिस्ट्रेट उस मठ में भीख देने आया, और सभी को एक चाँदी का सिक्का दिया[2235] । वह एक सोने का सिक्का लेकर उस तपस्वी के पास गया[2236] , और उसे लेने के लिए आग्रह किया; उस सम्माननीय व्यक्ति के सामने लज्जित होकर, वृद्ध ने सोने का सिक्का ले लिया और अपनी जेब में रख लिया।

शाम को, अपनी रोज़ की दिनचर्या पूरी करने के बाद, वरिष्ठ एक चटाई[2237] पर लेट गए, थोड़ी देर के लिए सोने का इरादा लेकर। और फिर उन्हें ऐसा लगा कि वे उस मठ के बाकी भाइयों के साथ एक विशाल खेत में थे; पूरा खेत कांटों से भरा था, और एक युवक (वह प्रभु का एक स्वर्गदूत था) ने उस मठ के भिक्षुओं से कहा:

'काँटों की कटाई करो।'

यह युवक उसके (तपस्वी) पास आया और उससे कहा:

'कमर कस लो और काँटों की कटाई करो।'

[2233] प्लुसियाडा का शहर, जिसे 7वीं शताब्दी तक प्रुसियास के नाम से जाना जाता था और जिसकी स्थापना हनीबल ने की थी, एशिया माइनर के उत्तर-पश्चिमी भाग में एक रोमन प्रांत बिथिनिया में स्थित था।

[2234] आदरणीय पॉल का निधन लगभग 860 ईस्वी में हुआ।

[2235] *एक* चांदी *का सिक्का* – एक ऐसा चांदी का सिक्का जिसका मूल्य समय के साथ बदलता रहता था। उद्धारकर्ता के समय में, एक चांदी का सिक्का लगभग 80 कोपेक के बराबर था।

[2236] *ज़ूलाटनिकि* सामान्यतः अनिश्चित मूल्य का एक सोने का सिक्का होता है।

[2237] प्राचीन मरुभूमि के संतों और तपस्वियों का बिस्तर आमतौर पर एक चटाई होता था, जो अक्सर खपच्चियों से बनी होती थी।

लेकिन जब तपस्वी ने मना करना शुरू किया, तो देवदूत ने कहा:

'तुम्हारे पास कोई बहाना नहीं होना चाहिए, क्योंकि कल तुम उन दूसरे भिक्षुओं में शामिल हुए थे जिन्होंने मसीह के उस प्रेमी से एक चाँदी का सिक्का लिया था; तुमने एक सोने का सिक्का लिया, और इसलिए तुम्हें दूसरों से अधिक परिश्रम करना चाहिए, काँटों की कटाई करके, एक ऐसे व्यक्ति के रूप में जिसने अधिक मजदूरी प्राप्त की है।' जो कांटेदार झाड़ियाँ आप देख रहे हैं, वे उस व्यक्ति के कर्म हैं जिससे आपने कल भीख ली थी; इसलिए जाओ और दूसरों के साथ उन्हें काटो।

जब वह जागा और उसने जो देखा था उस पर विचार किया, तो तपस्वी बहुत दुखी हो गया और उसने उस व्यक्ति को तुरंत बुलवाया जिसने उसे दान दिया था, और उससे अपने सोने के सिक्के को वापस लेने का आग्रह किया। लेकिन उस ईश्वर के पुरुष ने उसे वापस लेने से इनकार कर दिया और तपस्वी से कहा:

'इसे रखिए, पिताजी, या जिसे आप चाहें उसे दे दीजिए।'

तब वृद्ध ने उससे कहा:

'मैं दूसरों के पापों की काँटों को तोड़ना नहीं चाहता, जबकि मैं स्वयं अपनी पापी काँटों से छुटकारा पाने में असमर्थ हूँ।'

फिर उसने सोने का सिक्का अपनी कोठरी से बाहर फेंक दिया और खिड़की बंद कर दी।

जब उस व्यक्ति को यह कारण पता चला कि बड़े भाई ने उसका दान क्यों ठुकरा दिया था, तो उसने अपने जीवन को सुधारना शुरू कर दिया और गरीबों तथा ज़रूरतमंदों को उदारतापूर्वक दान देने लगा, यह याद करते हुए कि धर्मग्रंथ के अनुसार, पापों का शुद्धिकरण दान और विश्वास से होता है[2238] ।

21 मार्च

8 मार्च (पुराने कैलेंडर के अनुसार)

संत थियोडोरेट, अंकोच के पवित्र पुरोहित-शहीद का कष्टकथा

8 मार्च को स्मरणोत्सव

महान सम्राट कॉन्स्टेंटाइन और उनके पुत्र कॉन्स्टेंटियस ने सीरिया के एंटिओक में एक कैथेड्रल चर्च का निर्माण कराया और उसे भव्य रूप से सजाया। लोगों में यह *'स्वर्ण चर्च' के* नाम से जाना जाने लगा, क्योंकि इसे सोने से कलात्मक रूप से चित्रित किया गया था और सोने से दमकते हुए मोज़ाइक से सजाया गया था; इसका ऊपरी भाग भी पूरी तरह से सोने की परत चढ़ाकर सजाया गया था; अनगिनत चर्च के बर्तन सभी सोने और शुद्ध चांदी के बने थे। सम्राटों ने चर्च के अनेक पुरोहितों के भरण-पोषण के लिए विशाल संपत्तियाँ प्रदान कीं। इस महान कैथेड्रल चर्च के पुरोहितों में से एक संत थियोडोरेट थे; उन्हें बर्तनों, पूजा के उपकरणों और चर्च की सभी संपत्तियों की सुरक्षा का जिम्मा सौंपा गया था। अपनी युवावस्था से ही उन्होंने एक सदाचारी जीवन जिया और अपने हृदय में सच्चे विश्वास को संजोए रखा, और धर्मग्रंथ के वचनों को पूरा किया: 'क्योंकि *धर्मी ठहरने के लिए मन से विश्वास किया जाता है, और मुक्ति के लिए मुख से घोषणा की जाती है*' (रोमियों 10:10)।

उपवास, प्रार्थना, दान-पुण्य, मानव आत्माओं के उद्धार की चिंता, और निर्दोष पुरोहितीय सेवा के माध्यम से, उन्होंने ईश्वर को प्रसन्न किया।

जब कॉन्स्टैंटिन के पुत्र कॉन्स्टैंटियस की मृत्यु हो गई, तो उनके उत्तराधिकारी जूलियन द एपोस्टेट बने। सिंहासन संभालने पर, उसने शुरू में खुद को एक धर्मनिष्ठ ईसाई के रूप में प्रस्तुत किया और उन बिशपों को कैद से रिहा कर दिया जिन्हें राजा कॉन्स्टेंटियस ने उनकी धार्मिकता के कारण निर्वासित किया था; लेकिन एक बार जब उसने अपना शासन मजबूती से स्थापित कर लिया, तो उसने सभी के सामने खुले तौर पर मसीह का परित्याग कर दिया, जिन्हें उसने

[2238] लूका 11:41; तोबित 12:9; सिरिख 3:30।

बहुत पहले ही गुप्त रूप से अस्वीकार कर दिया था, और खुद को राक्षसों और जादू-टोने के हवाले कर दिया था। और उसने मसीह की कलीसिया का उत्पीड़न करना शुरू कर दिया; और यद्यपि उसने सभी ईसाइयों का बिना किसी अपवाद के संहार नहीं किया, उसने कम से कम नेताओं, पुरोहितों और धर्मनिरपेक्ष पदाधिकारियों को जब्त कर लिया, उन्हें यातना दी और मार डाला; उसने ईसाइयों से ईश्वर के चर्च छीन लिए और उन्हें अपनी मूर्तियों के लिए पूजा स्थल बना दिया; उसने चर्च की सारी संपत्ति लूट ली और उस नीच ने घोषणा की:

'ईसाइयों के लिए किसी भी धन-संपत्ति का मालिक होना उचित नहीं है, क्योंकि मसीह ने उन्हें गरीब रहने की आज्ञा दी थी, कहते हुए: "न सोना जमा करो और न चाँदी।"'

इस भयानक समय के दौरान, अंऺओक का कैथेड्रल—जो अपनी सुंदरता के लिए *'स्वर्ण चर्च* के रूप में जाना जाता था—भी बर्बाद कर दिया गया*;* इसके सभी कीमती आभूषण शाही खजाने में ले जाए गए, चर्च की संपत्ति लूट ली गई, पुरोहित बिखर गए, और संत थियोडोरेट को शहीद कर दिया गया।

यह इस प्रकार हुआ। राजा जूलियन का एक चाचा भी था, जिसका नाम भी जूलियन था, जो उसकी माँ का सगा भाई था; उसने उसे पूर्वी प्रांतों का राज्यपाल और उत्पीड़क नियुक्त किया। उस जूलियन, राजा के चाचा, पहले एक ईसाई था, लेकिन अपने भतीजे, धर्मत्यागी राजा जूलियन को खुश करने की इच्छा से, उसने मसीह का त्याग कर दिया और मूर्तियों की पूजा की। वह राजा से पहले ही अंऺओक पहुँच गया, उसके साथ फेलिक्स नाम का एक और शाही अधिकारी था, जो शाही खजाने का प्रभारी था। यह जानते हुए कि कैथेड्रल चर्च में बहुत धन था, जूलियन ने चर्च के संरक्षक, धन्य पुरोहित थियोडोरेट को पकड़ लिया (जबकि बाकी पादरी, डर के मारे, सभी भाग गए थे और जहाँ भी हो सके छिप रहे थे); इसी कारण, उसने उसे पकड़ने का प्रयास किया, क्योंकि उसके हाथों में चर्च के वेषभूषाएँ थीं। उससे चाबियाँ छीनकर, उसे कसकर बाँधकर और कैद करके, जूलियन, शाही कोषाध्यक्ष फेलिक्स और एक बड़ी सशस्त्र सेना के साथ, ईश्वर के चर्च में प्रवेश किया ताकि वह उसकी सजावट, सोना-चाँदी और सभी कीमती वस्तुओं को जब्त कर सके, और उन्हें शाही कोष में जोड़ सके। एक चोर और लुटेरे की तरह ईश्वर के पवित्र स्थल में प्रवेश करके, उसने कितनी बड़ी निर्लज्जता और धृष्टता से चर्च की भव्यता को लूटा, प्रभु के पवित्र स्थल के विरुद्ध अत्याचार किया और उसे अपवित्र किया! उस नीच व्यक्ति ने तो ईश्वर के सिंहासन के ठीक सामने पेशाब करने की भी हिम्मत की; और जब वेदी से चर्च के बर्तन बाहर लाए गए और जमीन पर एक साथ रख दिए गए, तो वह उन पर उपहास करते हुए बैठ गया, और अपने अशुद्ध होठों से हमारे प्रभु यीशु मसीह के विरुद्ध अपमानजनक शब्द और बदनामी करने लगा। उपस्थित लोगों में से एक, जिसका नाम वज़ोई था, ने उसे डाँटा कि वह प्रभु के पवित्र स्थान का ऐसा निर्लज्ज अपमान न करे और मसीह का अपमान न करे। लेकिन उसने उसके सिर पर जोर से वार किया और कहा:

'ईसाइयों के पास कोई दैवीय व्यवस्था नहीं है, और वे इस देखभाल से पूरी तरह वंचित हैं।'

ईश्वर के मंडप को लूटने और अपवित्र करने के बाद, उस अधर्मी शासक ने अपना ध्यान ईश्वर के सेवक, संत थियोडोरेट को यातना देने पर केंद्रित किया। जब उसे बँधी हुई अवस्था में उस अधर्मी दरबार के सामने लाया गया, तो जूलियन ने उससे कहा:

'थियोडोरेट! सम्राट कॉन्स्टेंटिन के शासनकाल में, तुमने प्राचीन देवताओं के मंदिरों को क्यों उजाड़ दिया, मृतकों की कब्रों को क्यों सजाया, और उनके ऊपर चर्च बनाने का आदेश क्यों दिया?'

संत ने उत्तर दिया:

'दिव्य चर्च और संतों के मकबरे हमारे पूर्वजों द्वारा बनाए और सजाए गए थे, क्योंकि ईश्वर ने अपने संतों को महिमामय बनाया है, उन्हें इसके योग्य पाया है; लेकिन जहाँ तक आपकी बात है, हे शासक, मैं हैरान हूँ कि आप एक ईसाई होने से मूर्तिपूजक बन गए हैं।'

शासक ने आज्ञा दी कि संत के मुँह पर थप्पड़ मारा जाए।

संत ने उससे कहा, 'जूलियन, तुम पाप कर रहे हो, तुम पत्थर और लकड़ी की मूर्तियों को देवता कहते हो।'

तब यातना देने वाले ने आज्ञा दी कि संत को नग्न कर दिया जाए, एक पेड़ से लटका दिया जाए, और लोहे की पंजों से उसके पूरे शरीर को खुरच दिया जाए। उन्होंने तीन घंटे तक उसे खुरचा, और खून की धाराएँ बहने लगीं, फिर भी संत का चेहरा आनंद से चमक रहा था, मानो उसे बिल्कुल भी दर्द महसूस नहीं हो रहा हो। और यातना देने वाले ने उससे कहा:

'दुर्भाग्यशाली मनुष्य, देवताओं को बलिदान अर्पित कर, और मैं तुम्हें चर्च की संपत्ति पर तुम्हारा जो कर्ज है, उससे मुक्त कर दूँगा, जिसे तुमने इतनी बुरी तरह से कम कर दिया है। लेकिन अगर तुम बलिदान नहीं अर्पित करोगे, तो तुम एक हिंसक मृत्यु से अपनी आत्मा को गँवा दोगे।'

संत ने उत्तर दिया:

'शापित तो तुम और तुम्हारा राजा हो, हे अधर्मी, क्योंकि तुमने मसीह को त्याग दिया है और विरोधी मसीह से चिपके हो, और तुम्हें अनंत आग में जलाया जाना चाहिए; परन्तु मैं अपने प्रभु यीशु मसीह के सिवा किसी का ऋणी नहीं हूँ, जिनके सामने मेरा कर्तव्य है कि मैं अपनी अंतिम साँस तक सच्चे विश्वास को बनाए रखूँ।'

एक बार फिर यातना देने वाले ने उससे कहा:

– थियोडोरेट! यदि तुम उस सूली पर चढ़ाए गए जादूगर का, जिसे तुम ईश्वर का पुत्र कहते हो, परित्याग कर दो, तो मैं तुम्हें मुझसे बहुत सम्मान और सोना दूँगा।

पवित्र शहीद ने उत्तर दिया:

'तुम्हारा सोना तुम्हारे साथ तुम्हारे ruin[2239] तक रहे; परन्तु मैं अपनी आशा अपने प्रभु में रखता हूँ, जो अपने सेवकों को नश्वर आशीर्वादों के बदले अविनाशी आशीर्वाद और सांसारिक आशीर्वादों के बदले स्वर्गीय आशीर्वाद देता है।'

और यातनाकर्ता ने आदेश दिया कि शहीद की पसलियों को दो मोमबत्तियों से झुलसाया जाए। जब उन्होंने उसे जलाना शुरू किया, तो उसने अपनी आँखें आकाश की ओर उठाईं और प्रार्थना करने लगा – और तुरंत ही दोनों नौकर जो उसे जला रहे थे, मृत पड़े जमीन पर गिर पड़े। जूलियन और उसके साथियों ने आदेश दिया कि उन नौकरों को सावधानीपूर्वक जमीन से उठाया जाए, और उनसे कहा:

'तुमने उस अधर्मी ईसाई को जलाने के लिए क्यों छोड़ दिया, जबकि तुम स्वयं निद्रा और लापरवाही में डूबे रहे?'

होश में आने पर, नौकरों ने यातनाकर्ता को उत्तर दिया:

'यदि तुम यह नहीं देख सकते कि परमेश्वर के स्वर्गदूत परमेश्वर के सेवक की रक्षा कैसे कर रहे हैं, तो तुम दुष्ट और अपनी आत्मा में अंधे हो। देखो, चार स्वर्गदूत उसके साथ बात कर रहे हैं, और वे हमें उसके सम्मानित शरीर को छूने से सख्त मना कर रहे हैं। धर्मद्रोही! व्यर्थ के शब्द न बोलो, बल्कि यह जान लो कि मसीही परमेश्वर महान है, और अब हम उस पर विश्वास करते हैं।'

शर्म से मारे गए यातनाकर्ता ने इन सेवकों को समुद्र की गहराई में फेंक देने का आदेश दिया। जब उन्हें डुबोने के लिए ले जाया जा रहा था, तो मसीह के पवित्र शहीद ने उन्हें पुकार कर कहा:

'मेरे बच्चों, शांति से अपनी धन्य यात्रा पर प्रस्थान करो; और मैं भी तुम्हारे पीछे आऊँगा और स्वर्ग के राज्य में तुम्हारे साथ अनंत आनंद में आनंदित होऊँगा।'

और ये सेवक डूबकर मर गए, क्योंकि उन्हें मसीह परमेश्वर से शहीद का मुकुट प्राप्त करने के योग्य समझा गया, जिस पर उन्होंने विश्वास किया था। दुष्ट शासक ने पवित्र शहीद थियोडोरेट के पास आते हुए पुकारा:

'देवताओं को बलिदान चढ़ाओ।'

भविष्यवाणी की आत्मा से परिपूर्ण, संत ने उससे कहा:

'हे मनुष्यों में सबसे दुष्ट और शापित, तू अपनी ही आंतों को चबाएगा, और शीघ्र ही तू अपनी घृणित आत्मा को हिंसक रूप से बाहर निकालकर उसे अनंत अग्नि में फेंक देगा; इसी प्रकार, तेरा सबसे अधर्मी राजा, तुझसे कुछ ही समय बाद, फारस की भूमि में प्राण त्याग देगा; एक अदृश्य हाथ से गिरा दिया जाएगा, और उसे अग्निमय गेहन्ना में फेंक दिया जाएगा। निश्चित रूप से जान लो कि तुम्हारे प्रयास सफल नहीं होंगे, क्योंकि तुम्हारा अंत निकट है, और तुम्हारा विनाश सोया नहीं है।

संत से ऐसे शब्द सहन न कर पाने पर, दुष्ट यातनाकर्ता ने तुरंत उनका सिर कलम करने का आदेश दिया, और संत खुशी-खुशी मृत्यु को प्राप्त हुए, अपने और पूरी दुनिया के लिए ईश्वर से प्रार्थना करते हुए, और कुल्हाड़ी से सिर पर वार लगने पर उनकी मृत्यु हो गई।

उनके सम्मानित शरीर को दफनाने के बाद, विश्वासियों ने यातना देने वाले से उनके कष्ट में कहे गए भविष्यसूचक शब्दों को अपने दिलों में रखा, और उनके पूरा होने का इंतजार किया। और ऐसा हुआ कि दोनों जूलियन, चाचा और भतीजा,

---

[2239] प्रेरितों के काम 8:2। जादूगर शिमोन से प्रेरित पतरस के शब्द, जो पवित्र आत्मा की देन को पैसे से खरीदना चाहता था।

जल्द ही अपमानजनक तरीके से मर गए। सम्राट का चाचा और पूर्वी प्रांतों का शासक जूलियन, जिसने संत थियोडोरेट को मारा था, उसी क्षण से बीमार पड़ गया जब उसने अपने मूत्र से ईश्वर के सिंहासन को अपवित्र किया और पवित्र पात्रों पर पैर रखा, पवित्र वस्तुओं का अपमान किया और मसीह का निरादर किया। तुरंत ही, उसके गुप्तांगों में कीड़े निकलने लगे; वे भीतर से उसे चबाते रहे, और दिन-प्रतिदिन उसकी बीमारी बढ़ती गई। सबसे कुशल चिकित्सकों ने उसे ठीक करने के लिए हर संभव प्रयास किया, लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ; और घड़ी-घड़ी उसकी हालत बिगड़ती गई, क्योंकि कीड़े तेजी से बढ़े और उसके शरीर को खा गए, जिस पर ईश्वर के धर्मी हाथ का स्पर्श हुआ था। और यातना देने वाले से संत द्वारा कहे गए शब्द पूरे हुए: 'तुम अपनी ही आंतों को चबाओगे', क्योंकि जब उसकी आंतें बंद हो गईं, तो उसका ईश्वर-निंदा करने वाला मुँह एक गंदा मार्ग बन गया: इस प्रकार, कीड़ों द्वारा खाया गया, उसने अपनी शापित आत्मा की बुराई को उगल दिया। इसी तरह, उसका मित्र फेलिक्स, जो शाही खजाने का प्रभारी था, भी ईश्वर की त्वरित सज़ा से नहीं बच सका: ईश्वर के प्रकोप से, उसके आंतों का विनाश हो गया, और उसके ईश्वर-निंदा करने वाले मुँह से एक झरने की तरह दिन-रात रक्त की धारा बही, और जल्द ही उसकी मृत्यु हो गई, और उसने अपनी शापित आत्मा को अनंत काल के लिए नरक को सौंप दिया। जब दुष्ट राजा जूलियन अंթιοκ में पहुँचा और उसे यह पता चला, तो उसने अपोलो के डाफ्ने में विश्राम कर रहे पवित्र शहीद बाबिला के अवशेषों का अपमान करने की हिम्मत नहीं की, बल्कि ईसाइयों को उन्हें वहाँ से हटाने का आदेश दिया - जैसा कि इस संत के जीवन में 4 सितंबर को दर्ज है। बाद में, धर्मत्यागी जूलियन, फारसियों के खिलाफ एक अभियान पर निकलकर, वहीं पर मर गया, ठीक वैसे ही जैसे मसीह के पवित्र शहीद थियोडोरेट ने भविष्यवाणी की थी[2240] । अपनी भविष्यवाणी को पूरा होते देखकर, विश्वासियों ने मसीह, सच्चे परमेश्वर की महिमा की, जो पिता और पुत्र के साथ युगानुयुग महिमामय है। आमीन।

निकोमेडिया के बिशप, पूजनीय थिओफाइलेक्ट द कन्फेसर की स्मृति

8 मार्च को स्मरण किया जाता है

उन दिनों, जब कलीसिया प्रतिमा-भंग की विधिर्मिता[2241] से परेशान थी, तो धर्मात्मा थियोफिलैक्ट पूर्वी देशों से कॉन्स्टेंटिनोपल आए और कलीसिया के प्रमुख, संत तारासियस के निकट हो गए - जो उस समय अभी भी एक सामान्य व्यक्ति और सेनेटर, शाही महल में गुप्त मामलों के मुख्य प्रशासक थे। मूर्तिभंजन सम्राट कॉन्स्टेंटिन कॉप्रोन्यमस[2242] की मृत्यु के बाद, उनके पुत्र लियो[2243] अपनी माँ आइरीन के साथ सिंहासन पर आसीन हुए; पैट्रिआर्क पॉल, जिन्हें दयालु के नाम से जाना जाता था, ने स्वेच्छा से अपना पद त्याग दिया, और उनकी जगह संत तारासियस को पैट्रिआर्केट का पद

[2240] जूलियन एक फारसी द्वारा छोड़े गए तीर से घायल हो गया। मृत्यु के निकट होने का अनुभव करते हुए, उसने अपने घाव पर हाथ रखा, कुछ खून निकाला, उसे हवा में फेंका और कहा, मानो अपने सामने उस मसीह को देख रहा हो, जिसे उसने सताया था: 'तुम विजयी हो गए, गलीलियाई!' (363 ईस्वी)

[2241] बाइज़ेंटाइन साम्राज्य में मूर्तिभंजन की शुरुआत लियो तृतीय इसाउरियन (717–741) के अधीन हुई और इसका अंत महारानी थियोडोरा (842) के अधीन हुआ। इस अवधि के दौरान, निम्नलिखित शासक रहे: कॉन्स्टेंटिन पंचम (775 तक), लियो चतुर्थ (780 तक), कॉन्स्टेंटिन छठे और आइरीन (802 तक), निकिफ़ोरस प्रथम (811 तक), स्टाव्रकियोस और माइकल प्रथम (813 तक), लियो V द आर्मेनियन (820 तक), माइकल II (821 तक), थियोफिलिस (840 तक), थियोडोरा और माइकल III (867 तक)। इन सम्राटों के अधीन कॉन्स्टेंटिनोपल का पैट्रिआर्कल पद इनके द्वारा धारण किया गया था: अनास्तासियस द आइकनोक्लास्ट (753), कॉन्स्टेंटिन II आइकनोक्लास्ट (766), निकिटस आइकनोक्लास्ट (780), संत पॉल, जिनका स्मरण 1 अगस्त को किया जाता है (784), संत तारासियस, जिनका स्मरण 25 फरवरी को किया जाता है, जिनके शासनकाल में 787 में सप्तम सार्वभौमिक परिषद का आयोजन किया गया था (806), सेंट निकिफिोरस (815), थियोडोर द आइकनोक्लास्ट (821), एंथनी द आइकनोक्लास्ट (832), जॉन VII द आइकनोक्लास्ट (842) और सेंट मेथोडियस (846)।

[2242] उपाधि 'कोप्रोनाइमस' ग्रीक शब्द 'कोप्रोस' - मल से व्युत्पन्न है।

[2243] उन्होंने 775 से 780 तक शासन किया। – लीओ चौथा खज़ार, यद्यपि प्रतिमा-भंजन के समर्थक थे, अपने विरोधियों के प्रति अधिक सुलह-प्रिय थे: उन्होंने भिक्षुओं - प्रतिमा पूजा के रक्षकों - जिन्हें उनके पिता के शासनकाल में भागना पड़ा था, को लौटने की अनुमति दी, और यहाँ तक कि उन्हें धर्माध्यक्षीय पद भी ग्रहण करने दिए; इस प्रकार, साइप्रस के पॉल, जो प्रतिमा पूजा के एक गुप्त समर्थक थे, को पैट्रिआर्की के सिंहासन पर पदोन्नत किया गया। महल में भी प्रतिमाएँ दिखाई दीं, सम्राज्ञी आइरीन के कक्षों में, जिन्होंने अपने पति की पीठ पीछे गुप्त रूप से प्रतिमा-पूजकों का समर्थन किया था। जब यह बात सामने आई, तो लियो ने आइरीन को महल से निर्वासित कर दिया, लेकिन कुछ ही समय बाद उनकी मृत्यु हो गई।

दयिा गया; उन्होंने सातवें सार्वभौमकि परषिद का आयोजन कयिा और प्रतमिा-भंजन की वधिर्म की नदिा की[2244] । उस समय, धन्य थयिोफलैक्ट, सनिाद के माइकल के साथ, संसार त्यागकर भकि्षुत्व का संकल्प लयिा और उन्हें परम पावन तारासयिस द्वारा काले सागर के तट पर बने एक मठ में भेजा गया: वहाँ, मठ के कर्तव्यों में परश्रिम करते हुए, वे सद्गुणों में उत्कृष्ट हुए और अपनी प्रार्थनाओं में परमेश्वर के समक्ष धैर्य प्राप्त कयिा।

यह फसल काटने का समय था, और भीषण लू चल रही थी; लोग अत्यधकि प्यास के कारण बेहोश हो रहे थे। संतों ने ईश्वर से प्रार्थना की, और एक सूखे तांबे के पात्र से इतनी मात्रा में पानी बहने लगा कि उनकी ज़रूरतें पूरी हो गईं। इस प्रकार प्रभु अपने भयभीत लोगों की इच्छा को पूरा करते हैं और उनकी प्रार्थनाओं पर ध्यान देते हैं! यह चमत्कार उस प्राचीन चमत्कार के समान था जो नर्जिन स्थान में हुआ था, जब परमेश्वर ने प्यासे इस्राएल के लोगों के लिए चट्टान से पानी नकिाला था (नर्गिमन 17:6), और दूसरे के समान था, जब, प्यास से मर रहे शमिशोन के लिए, गधे की जबड़े की सूखी हड्डी जीवति जल का सोता बन गई थी (न्याययिों 15:19)। जब पूजनीय फादर थयिोफलैक्ट और माइकल अपने पुण्य जीवन द्वारा तारों की तरह चमके, तो परम पावन पैट्रआर्क तारासयिस ने उन्हें उच्च एपस्कि़ोपल पद के योग्य समझा; दोनों को अभषिक्ति करने के बाद, उन्होंने माइकल को सनिाई भेजा और धन्य थयिोफलैक्ट को नकिोमेडयिा का बशिप नयिुक्त कयिा। नकिोमेडयिा में मसीह के झुंड के प्रति संत थयिोफलैक्ट द्वारा दखिाई गई देखभाल, और गरीबों, अनाथों और वधिवाओं के प्रति उनकी चंति, उनके द्वारा स्थापति चर्चों, अस्पतालों और आश्रयों, और उनके द्वारा प्रतदिनि कएि जाने वाले अनगनित परोपकारी कार्यों से स्पष्ट थी। वे स्वयं बीमारों, अंधों, लंगड़ों और दुर्बल लोगों की सेवा करते थे; एक पात्र गर्म पानी लेकर भकि्षागृहों और नगर चौकों में घूमते हुए, वे अपने हाथों से मलि हुए कुष्ठरोगयिों को धोते और साफ़ करते थे, और उनकी सेवा करने में कोई कसर नहीं छोड़ते थे।

महानतम पवत्रि तारासयिस के नधिन के बाद, वद्विान नकिफिोरस ने कॉन्स्टेंटनिोपल के चर्च के पैट्रआर्क के रूप में उनका स्थान लयिा; फरि मूर्तभिंजक वधिर्म का तूफान एक बार फरि भड़क उठा, जसिे अधर्मी सम्राट लयिो द आर्मनियिन ने भड़काया था। परम पावन पैट्रआर्क नकिफिोरस ने चुने हुए बशिपों—काइज़कि़ोस के एमलियिन, सार्डसि के यूथमियिस, थ्रेसैलोनकिा के जोसेफ, अमोरयिम के यूडोक्सयिस, सनिाडा के माइकल, और नकिोमेडयिा के धन्य थयिोफलैक्ट—को बुलाया और उनके साथ दुष्ट सम्राट के पास रवाना हुए: पवत्रि पतिाओं ने शास्त्रों से वस्तिार से राजा को समझाया, उसे आग्रह कयिा कि वह उस वधिर्म के द्वारा मसीह की कलीसयिा में कलह न बोए, जसिे सप्तम सार्वभौमकि परषिद द्वारा नन्दिति कयिा गया था। परन्तु वे उन्मत्त राजा को मना न सके, जो साँप के वषि से भरपूर था और उन पर क्रोध और रोष उगलता था। जब पवत्रि पतिाओं ने मौन धारण कर लयिा, तो धन्य थयिोफलैक्ट ने राजा से कहा:

'मैं जानता हूँ कि ईश्वर की दीर्घ सहनशीलता का अपमान करके और अपनी मुक्ति की उपेक्षा करके, तुम पवत्रि पतिाओं की प्राचीन परंपरा का वरिोध कर रहे हो और कलीसयिा में भ्रम पैदा कर रहे हो; लेकनि, एक तूफ़ान की तरह, प्रचंड वनिाश और अप्रत्याशति वपित्ति अचानक तुम पर आ पड़ेगी, और तुम्हें अपने लिए कोई उद्धारकर्ता नहीं मलिेगा।'

यह सुनकर राजा और भी अधकि क्रोधति हो गया और उसने बशिपों को अपमानति करके नष्कासति कर दयिा, और उन्हें वभिन्नि स्थानों पर नर्वासन की सजा दी: उनकी पवत्रिता पैट्रआर्क नकिफिोरस को प्रोकॉन्नसि द्वीप[2245] ; सनिैडा के बशिप, संत माइकल को यूडोक्सयिा; अन्य लोगों को वभिन्नि अन्य स्थानों पर; और नकिोमेडयिा के संत थयिोफलैक्ट को कविरेओट्स में स्ट्रोवोल के तटीय शहर[2246] में भेजा गया। वहाँ, मसीह के इस स्वीकारकर्ता और धर्मपरायणता के महान योद्धा ने प्रभु के पास प्रस्थान करने से पहले, लगभग तीस वर्ष तक, कई लोगों के उत्पीड़न और दुःखों के बीच अपने जीवन का शेष समय बतिाया।

[2244] यह परषिद 787 में हुई। प्रतमिा-भंजकों को चर्च से बहष्कृत करने के बाद, परषिद ने प्रतमिा पूजन को इस अर्थ में स्थापति कयिा कि प्रतमिाओं की पूजा केवल ईश्वर के योग्य तरीके से नहीं की जानी चाहएि, बल्कि उन्हें पवत्रि जीवन-दायक क्रूस (जसिकी पूजा प्रतमिा-भंजकों ने अस्वीकार नहीं की थी) की तरह सम्मानति कयिा जाना चाहएि।

[2245] *प्रोकोन्नज़ि*– साइज़कि़स के उत्तर-पश्चमि में स्थति प्रोकोन्नज़ियिन सागर (अब मर्मरा सागर) का एक द्वीप; यह अपनी संगमरमर की खदानों के लिए जाना जाता था।

[2246] *साइबेरयिोट्स* या *कैरयिन*– एशयिा माइनर का एक दक्षणि-पश्चमिी क्षेत्र।

राजा लियो द आर्मनियिन की मृत्यु, जैसा कि संत ने भविष्यवाणी की थी, एक क्रूर और अप्रत्याशित अंत हुआ: उसे चर्च में मैटिन्स में शामिल होने के दौरान, मसीह के जन्म के दिन, अपने ही सैनिकों की तलवारों से मार डाला गया (820 ईस्वी)। उनके बाद माइकल, जिन्हें हकला कहकर जाना जाता था (829), और माइकल के पुत्र थियोफिलस (842) आए, जो दोनों ही प्रतिमा-भंजक सम्राट थे, जिन्होंने शासन किया और जिनका निधन हो गया। जब सम्राज्ञी थियोडोरा (842–855) और उनके पुत्र माइकल (855–867) (माइकल नाम के तीसरे शासक) ने राज्य का राजदंड संभाला, तो संत मेथोडियस को पैट्रिआर्केट (842) का पद दिया गया, और उस अवैध विधिर्म का नाश हो गया, और ऑर्थोडॉक्सी का प्रकाश हुआ – उस समय हमारे पूजनीय पिता थियोफिलैक्ट का पवित्र शरीर निर्वासन से निकोमेडिया लाया गया और निकोमेडिया शहर की सुरक्षा के लिए उन्होंने जो चर्च स्थापित किया था, उसमें हमारे ईश्वर मसीह के सम्मान और महिमा के लिए उसे सुला दिया गया।

कॉन्टाकियन, स्वर 2:

हे संत थियोफिलैक्ट, आप पृथ्वी के छोर तक एक दीप्तिमान दीपक के रूप में प्रकट हुए; पिता और आत्मा के सह-तत्त्व वचन का उपदेश देकर, आपने पवित्र पुरखों की दिव्य परिषद को स्पष्ट किया, और स्वयं को त्रिमूर्ति का सेवक सिद्ध किया। उनकी उपस्थिति में, हम सभी के लिए अनवरत प्रार्थना करें।

22 मार्च

9 मार्च (पुराना संस्करण)

सेबास्टे, अर्मेनिया में चालीस पवित्र शहीदों का कष्टकर्म

9 मार्च को स्मरणोत्सव

दुष्ट सम्राट लिसिनियस के शासनकाल में ईसाइयों पर एक भयंकर उत्पीड़न शुरू किया गया[2247] , और सभी विश्वासियों को मूर्तियों को बलिदान चढ़ाने के लिए मजबूर किया गया। आर्मेनियाई शहर सेबास्टे[2248] में उस समय का सैन्य कमांडर अग्रिकोला था, जो उग्र स्वभाव का और मूर्तिपूजा का उत्साही समर्थक था। और चूंकि उस समय शाही रेजिमेंटों की पंक्तियों में पहले से ही काफी ईसाई थे, एक आदेश जारी किया गया कि उन्हें भी राक्षसों को बलिदान चढ़ाना चाहिए। कमांडर एग्रिकोला की रेजिमेंट में कैपैडोसिया[2249] के क्षेत्र के चालीस सैनिक थे, जो एक विशेष रूप से सम्मानित कंपनी बनाते थे, जो ईश्वर मसीह में भक्तिपूर्वक विश्वास रखते थे और अपनी अटूट हिम्मत से विशिष्ट थे, जो युद्ध में हमेशा अजेय रहते थे: उनमें किरियन, कैंडिडस और डोमनस, जो पवित्र धर्मग्रंथों में भी पारंगत थे। जब राज्यपाल एग्रिकोला को पता चला कि इस कंपनी के सैनिक ईसाई हैं, तो उन्होंने उन्हें मूर्तियों की पूजा करने के लिए मजबूर करने का निश्चय किया। उन्हें अपने सामने बुलाकर, राज्यपाल ने उनसे इन शब्दों में कहा:

'जिस प्रकार शत्रु के विरुद्ध युद्धों में तुम हमेशा आपस में सहमत और एकमत रहे हो और बहादुरी दिखाई है, उसी प्रकार अब, समान उद्देश्य की एकता के साथ, शाही आदेश के प्रति अपनी सर्वसम्मत आज्ञाकारिता दिखाओ – अपनी इच्छा से देवताओं को बलिदान चढ़ाओ, ताकि तुम्हें यातनाओं का सामना न करना पड़े।'

[2247] लिकिनियस, रोमन साम्राज्य के पश्चिमी भाग के सम्राट, महान कॉन्स्टेंटाइन का दामाद, 307 से 323 तक पूर्वी भाग का सम्राट था। 313 में, दोनों सम्राटों ने एक फरमान जारी किया जिसमें ईसाई धर्म को राज्य धर्म घोषित किया गया, और इसे प्राचीन मूर्तिपूजक धर्म के बराबर का दर्जा दिया गया। हालाँकि, लिकिनियस - जो एक मूर्तिपूजक था - का कॉन्स्टेंटाइन से मतभेद था, जो ईसाई धर्म का एक कट्टर संरक्षक बन गया था, और उसके खिलाफ युद्ध की तैयारी करते समय, एक भविष्यवक्ता ने उसे भ्रमित कर दिया जिसने उसे विजय का वादा किया था; इसलिए उसने अपनी साम्राज्य की सीमाओं के भीतर ईसाई धर्म को खत्म करने का संकल्प लिया, विशेष रूप से अपनी ही सेना में विश्वासघात के डर से।

[2248] आर्मेनिया, जिसमें सेबास्टे शहर – एशिया माइनर का उत्तर-पूर्वी भाग – शामिल था, पूर्वी रोमन साम्राज्य का हिस्सा था।

[2249] कैपाडोसिया का क्षेत्र - एशिया माइनर का पूर्वी भाग; इसका मुख्य शहर, सेज़रिया, अपनी शिक्षा के लिए प्रसिद्ध था।

इस पर संतों ने साहसपूर्वक उत्तर दिया:

'यदि सांसारिक राजा के लिए बहादुरी से लड़ते हुए, हम हमेशा विजयी रहे हैं - जैसा कि तुम स्वयं, हे दुष्ट, गवाह हो - तो क्या हम अमर राजा के लिए प्रयास करते हुए, तुम्हारी दुर्भावना पर विजय प्राप्त नहीं करेंगे और तुम्हारी धूर्तता पर काबू नहीं पा लेंगे?'

एग्रिकोला ने कहा:

'तुम्हारे सामने दो विकल्प हैं: या तो देवताओं को बलिदान चढ़ाओ और महान सम्मान प्राप्त करो, या अवज्ञा करने पर, अपना सैन्य पद खो दो और अपमान सहो; इस पर विचार करो और स्वयं चुनो कि तुम्हें क्या अधिक लाभदायक लगता है।'

सैनिकों ने कहा, 'जो हमारे लिए लाभदायक है, वह प्रभु के हाथ में है।'

'लंबी-चौड़ी बातें मत करो,' कमांडर ने कहा, 'और अपनी झूठी बातें बंद करो; कल सुबह तक, देवताओं को बलिदान चढ़ाने के लिए तैयार रहो।'

और यह कहकर, एग्रिकोला ने उन्हें कैद करने का आदेश दिया। अंदर पहुँचने पर, पवित्र योद्धा, प्रार्थना में घुटने टेककर, ईश्वर से पुकारने लगे:

'हे प्रभु, हमें अधर्मी लोगों के प्रलोभनों और जालों से बचा।'

उस शाम उन्होंने भजन गाना शुरू किया:

– *'जो परमप्रधान के छाया में रहता है, वह सर्वशक्तिमान के साए में निवास करेगा'* (भजन संहिता 90:1–16)।

भजन का अंत तक गायन करने के बाद, पवित्र योद्धाओं ने प्रभु से प्रार्थना की; प्रार्थना के बाद, उन्होंने अपना भजन-गायन फिर से शुरू किया और आधी रात तक, बिना सोए, उसी में लगे रहे। संत किरियिन ने गायन का नेतृत्व किया: उन्होंने छंदों का पाठ किया, जबकि संत कैंडिडस और डोमनस, अन्य लोगों के साथ, उनके पीछे दोहराते रहे। आधी रात को, पवित्र योद्धाओं ने प्रभु की आवाज़ सुनी, जो उनके सामने प्रकट हुए:

'धन्य हैं वे जो अंत तक धीरज धरते हैं, क्योंकि वे उद्धार पाएँगे' (मत्ती 10:22)।

उन्होंने सभी ने प्रभु की यह वाणी सुनी और भय से भर गए, फिर भी उनके भय ने अलौकिक आनंद को जन्म दिया। और वे सुबह तक नहीं सोए।

अगली सुबह, एग्रिकोलास ने अपने मित्रों और सलाहकारों को अपने चारों ओर इकट्ठा किया, और पैंतालीस योद्धाओं के पवित्र दल को कालकोठरी से लाने का आदेश दिया और उनसे इन विश्वासघाती शब्दों में कहा:

'जो मैं तुमसे कहने वाला हूँ वह न तो चापलूसी है और न ही झूठ, बल्कि बिल्कुल सच्चाई है: हमारे राजा के पास कई योद्धा हैं, लेकिन उनमें से कोई भी बुद्धि, साहस या सुंदरता में तुमसे तुलना नहीं कर सकता, और न ही वे मेरी कृपा तुम जितनी पाते हो, उतनी पाते हैं; इसलिए ऐसा कुछ भी मत करो जो मेरे प्रति तुम्हारे लिए मेरे प्रेम को घृणा में बदल दे; यह आपके हाथ में है और केवल आप पर निर्भर करता है कि आप मेरे प्रति मेरा प्रेम बनाए रखते हैं या अपने ऊपर मेरी घृणा लाते हैं।

संत कैंडिड ने उत्तर दिया:

'तुम एक क्रूर चापलूस हो, एग्रिकोलास! तुम्हारा नाम, '[2250] ', तुम्हारे चरित्र पर खूब जमता है।'

राज्यपाल ने दोहराया:

'क्या मैंने तुम्हें नहीं बताया कि यह तुम्हारे बस में है कि या तो तुम मेरी मोहब्बत को बनाए रखो या मेरी नफ़रत को भड़काओ?'

संत कैंडिड ने कहा:

'चूँकि हमारे प्रति आपका प्रेम या घृणा, जैसा कि आप स्वयं कहते हैं, हम पर निर्भर करती है, हम घृणा का चुनाव करते हैं, क्योंकि हम भी आपसे घृणा करते हैं और केवल हमारे ईश्वर की दया की कामना करते हैं; जहाँ तक आपकी बात है, आप एक जंगली और क्रूर व्यक्ति और हमारे ईश्वर के शत्रु हैं, आप हमसे प्रेम न करें, क्योंकि आप अधर्मी और ईर्ष्यालु हैं – भ्रान्ति के अंधकार में लिपटे हुए और, एक पशु-स्वभाव के साथ, अपने उग्र नाम के अनुरूप जीवन जी रहे हैं।

[2250] 'एग्रिओस' का अर्थ है 'जंगली' या 'क्रूर'; 'कोलैक्स' का अर्थ है 'चापलूस'।

संत के साहसी उत्तर से क्रोधित होकर, राज्यपाल ने शेर की तरह दाँत पीसते हुए, पवित्र योद्धाओं को हथकड़ी पहनाकर जेल में डालने का आदेश दिया; लेकिन संत करियिन ने उससे कहा:

'तुम्हारे पास हमें यातना देने का राजा का कोई अधिकार नहीं है, बल्कि तुम केवल हमारी पूछताछ कर सकते हो[2251]।'

पवित्र योद्धा की इस फटकार से डरकर, एग्रिकोलाउस ने आदेश दिया कि उन्हें बिना किसी हिंसा के ले जाया जाए और जेल में रखा जाए, और उन पर कोई बेड़ियाँ न डाली जाएँ; उसने केवल जेलर को उन्हें बारीकी से देखने का निर्देश दिया। उस समय, राज्यपाल लिसियस के आगमन की प्रतीक्षा कर रहा था - एक राजकुमार जिसके पास बहुत बड़ा अधिकार था।

कारावास में, पवित्र योद्धाओं ने अपने दिन-रात प्रार्थना में, भजन गाने और संत करियिन की शिक्षाओं को सुनने में बिताए।

उन्होंने अन्य बातों के अलावा कहा, 'ईश्वर की कृपा से, हम भाइयों, अस्थायी और क्षणिक सैन्य सेवा में एकजुट हुए हैं, लेकिन आइए हम प्रयास करें कि हम हमेशा के लिए अलग न हों; जिस प्रकार हम अब तक हृदय और मन की एकता में रहे हैं, उसी प्रकार हम एक होकर शहादत का पराक्रम करेंगे: जिस प्रकार हम नश्वर राजा को प्रसन्न करते थे, उसी प्रकार हम अमर राजा, हमारे ईश्वर मसीह को प्रसन्न करने का प्रयास करेंगे।

सात दिनों के बाद, जब तक पवित्र सैनिक जेल में रहे, राजकुमार लाइसियस उस देश में पहुँचे और सेबास्टे पहुँचने पर, उन्होंने तुरंत बहादुर सैनिकों पर ध्यान दिया: अगले ही दिन, कमांडर एग्रिकोला के साथ न्यायिक अदालत में उपस्थित होकर, उन्होंने पवित्र चालीस शहीदों को यातना के लिए लाने का आदेश दिया। इस अन्यायपूर्ण अदालत के रास्ते में, धन्य करियोन ने अपने साथियों को इस प्रकार प्रोत्साहित किया:

'भाइयो, हम डरें नहीं! जब हमने उन्हें पुकारा और अपने शत्रुओं पर विजय प्राप्त की, तब क्या ईश्वर ने युद्ध में हमारी सहायता नहीं की? याद करो: एक बार ऐसा भी हुआ था जब हमने एक बड़े युद्ध में भाग लिया था, जब हमारी रेजिमेंट के सभी साथी-सैनिक भाग गए थे और हम अकेले ही शत्रुओं के बीच बचे थे - हम चालीस; तब हमने ईश्वर से आँसुओं भरी प्रार्थना की, और उनकी मदद से हमने कुछ को मार गिराया और अन्य को—जो घायल थे—भागने पर मजबूर कर दिया, और शत्रुओं की भारी संख्या और युद्ध की भीषणता के बावजूद, हम में से कोई भी घायल नहीं हुआ। अब, हालाँकि, हमारे विरुद्ध तीन दुश्मन उठ खड़े हुए हैं – शैतान, लाइसियस और राज्यपाल एग्रिकोला; या यूँ कहें कि, एक ही दुश्मन हमसे लड़ रहा है – एक अदृश्य दुश्मन; और क्या वह सचमुच हमारे चालीस लोगों के दल को हरा देगा? ऐसा कभी न हो!... अब हमें वैसे ही काम करना चाहिए जैसा हम हमेशा से करते आए हैं: आइए हम परमेश्वर की ओर उत्कट प्रार्थना के साथ मुड़ें! – और वह हमारी मदद करेगा – और न तो बेड़ियाँ और न ही यातनाएँ हमें नुकसान पहुँचाएंगी। युद्ध में जाते समय, यह भजन गाना हमारी हमेशा से प्रथा रही है:

'हे परमेश्वर, अपने नाम के द्वारा मेरा उद्धार कर; हे परमेश्वर, अपनी सामर्थ्य के द्वारा मेरा न्याय ठहरा! मेरी प्रार्थना सुन; मेरे मुँह के वचन पर कान लगा' (भजन संहिता 53:3); तो आइए हम भी अब यही करें, हे मेरे हथियार-बंधुओं – और परमेश्वर हमें सुनेगा और हमारी सहायता करेगा।

और पवित्र योद्धाओं ने कालकोठरी से लेकर मुकदमे की जगह तक यह भजन गाया। पूरे शहर के लोग इस दृश्य को देखने के लिए इकट्ठा हुए।

चालीस के दल ने अपने मुकदमे के लिए लाइसियस और एग्रिकोला के समक्ष उपस्थित होकर कहा:

'मुझे विश्वास है कि ये पुरुष उच्चतम सम्मान के इच्छुक और इसके योग्य हैं।'

तब उसने उनसे ये शब्द कहे:

'तुम मुझे सबसे अधिक सम्मान और उपहार प्राप्त करोगे, बशर्ते कि तुम राजा की आज्ञा का पालन करो - देवताओं को बलिदान चढ़ाओ। तुम्हारे पास दो विकल्पों में से एक चुनने की स्वतंत्रता है: या तो देवताओं की पूजा करो और महान पुरस्कार और सम्मान प्राप्त करो, या, यदि तुम ऐसा करने से इनकार करते हो, तो तुरंत अपनी सैन्य पदवी से वंचित कर दिए जाओ और यातनाओं का शिकार बनो।'

[2251] इसी प्रकार प्रेरित संत पौलुस ने भी, मसीह के लिए पीड़ा सहते हुए, न्यायाधीशों से यह मांग की कि वे अपनी द्वेषपूर्ण भावना को व्यक्त करते हुए भी मानवीय और राजकीय कानूनों का उल्लंघन न करें – कि वे एक रोमन नागरिक को अपनी मनमर्जी से यातना न दें। (प्रेरितों के काम 16:37; प्रेरितों के काम 22:26–30)।

इस पर, संत कैंडिड ने उत्तर दिया:

'हमसे न केवल हमारा सैन्य पद छीन लो, बल्कि हमारे शरीर भी छीन लो, क्योंकि हमारे लिए मसीह हमारे ईश्वर से अधिक प्रिय और अधिक सम्माननीय कुछ भी नहीं है।'

तब अहंकारी राजकुमार ने आज्ञा दी कि संतों के मुँह पर पत्थर मारे जाएँ; जिस पर संत कैंडिड ने टिप्पणी की:

'अंधकार के राजकुमार और अत्याचार के संरक्षक! यह काम स्वयं शुरू करो, और तुम प्रतिशोध देखोगे।'

क्रोध से उबलते हुए और दाँत पीसते हुए, राज्यपाल ने कहा:

'दुष्ट दासों! तुम राजकुमार की आज्ञा का पालन करने में इतनी सुस्ती क्यों बरत रहे हो?'

सेवकों ने पत्थर उठा लिए, लेकिन जब उन्होंने उन्हें फेंकना शुरू किया, तो वार संतों पर नहीं लगे, बल्कि उन पर ही गिरे—वे एक-दूसरे से टकरा गए। यह देखकर, पवित्र शहीदों का प्रभु में साहस और भी बढ़ गया। क्रोधित राजकुमार लाइसियस ने स्वयं एक पत्थर उठाया और उसे संतों में से एक पर फेंका, लेकिन पत्थर अग्रिकोला के चेहरे पर लगा और उसके होंठ फट गए। तब संत करियिन ने कहा:

'हमारे विरोधी जो हमसे लड़ रहे हैं, वे थक गए हैं और लज्जित हुए हैं; सचमुच, *"उनकी तलवार उनके ही हृदय में प्रवेश करेगी, और उनके धनुष टूट जाएँगे"* (भजन संहिता 36:15)।'

राज्यपाल ने, आवाज़ टूटती हुई, कहा:

'मैं देवताओं की कसम खाता हूँ – कोई जादुई शक्ति उनकी मदद कर रही है!'

संत डोमन ने उत्तर दिया:

'और मैं, मसीह के नाम पर, गवाही देता हूँ कि यह जादू नहीं, बल्कि ईश्वर हैं जो हमारी मदद करते हैं, और उनकी शक्ति ने तुम्हारे निर्लज्ज चेहरों—जिन्होंने उनके पुत्र के विरुद्ध झूठ बोला है—को लज्जित कर दिया है। क्या तुम्हें शर्म नहीं आती, हे पागल, सत्य से पराया, शैतान की अधोलोक की अँधेरी से भरा, हे प्रलोभन का बीजारोपण करने वाले! 'तुम, एग्रिकोला, शैतान की दुष्टता के मुखिया हो, और जो राजकुमार तुम्हारे साथ है वह उसके क्रोध की पूँछ है; तुम दोनों शैतान के सेवक हो। लेकिन अगर तुम्हें अभी तक हमारे भीतर विद्यमान ईश्वर की शक्ति पर विश्वास नहीं हुआ है, तो उन यातनाओं की शुरुआत में ही, जिनका तुमने हमें विषय बनाया है, तो फिर और यातनाएँ शुरू करो।'

सेवकों में से कुछ ऐसे थे जो अपने अपमानित अधिपतियों का समर्थन करना चाहते थे:

उन्होंने पवित्र शहीदों से कहा, "हे हमारे देवताओं के पागल शत्रुओं, तुम उनके लिए बलिदान क्यों नहीं चढ़ाते?"

संत करियिन ने उनसे उत्तर दिया:

'हम एकमात्र ईश्वर की, उनके पुत्र यीशु मसीह की और पवित्र आत्मा की आराधना करते हैं, और हम निडर होकर अपना पराक्रम सिद्ध करने का प्रयत्न करते हैं, ताकि तुम्हारी चापलूसी पर विजय प्राप्त करके हमें अमर जीवन के मुकुट प्राप्त हों।'

और राजकुमार लाइसियस ने आदेश दिया कि पवित्र योद्धाओं को वापस जेल ले जाया जाए ताकि यह विचार किया जा सके कि उनके साथ क्या किया जाए।

कारागार में बंद, पवित्र योद्धा भजन गाने लगे।

उन्होंने गाया, 'तेरी ओर, हे स्वर्ग में रहने वाले, मैं अपनी आँखें उठाता हूँ! देखो, जैसे दासों की आँखें अपने स्वामी के हाथ की ओर, जैसे दासी की आँखें अपनी स्वामिनी के हाथ की ओर, वैसे ही हमारी आँखें प्रभु हमारे परमेश्वर की ओर हैं, जब तक कि वह हम पर दया न करे' (भजन संहिता 122:1–2)।

और उनकी प्रार्थना के बाद, उन्हें एक बार फिर स्वर्ग से प्रोत्साहन मिला: रात के छठे घंटे पर, उन्होंने उस प्रभु की आवाज़ सुनी जो उन पर प्रकट हुआ था:

'जो मुझ पर विश्वास करता है, वह यदि मर भी जाए, तो भी जीवित रहेगा' (यूहन्ना 11:25)। हौसला रखो और इन अस्थायी परीक्षाओं से मत डरो, क्योंकि वे जल्द ही बीत जाएँगी; थोड़ी देर और सहो, उचित रीति से दुख उठाओ, और तुम अपने मुकुट प्राप्त करोगे।

हमारे प्रभु मसीह के इस सांत्वना से बल प्राप्त करके, पवित्र योद्धाओं ने उस रात आत्मा में आनंद मनाते हुए बिताई।

अगले दिन, पवित्र योद्धाओं को फिर से अधर्मी न्यायाधीशों के सामने लाया गया और बिना किसी हिचकिचाहट के उन्होंने घोषणा की:

'तुम हमारे साथ जो चाहो करो; हम मसीही हैं और मूर्तियों की पूजा करने से इनकार करते हैं।'

उस कृष्ण, एग्रकिोला के बगल में खड़ा शैतान, मानव रूप में प्रकट हुआ, अपने दाहनि हाथ में तलवार और बाएं हाथ में एक साँप पकड़े हुए, कमांडर से फुसफुसा रहा था:

'तुम मेरे हो; अपना कर्तव्य नभिाओ!'

यातना देने वालों ने चालीस पवत्रि योद्धाओं को बाँधकर सेबास्टे शहर के पास स्थति प्रचुर जल वाली एक झील तक घसीटने का आदेश दयिा। उस समय सर्दी का मौसम था, और कड़ाके की ठंड के बीच तेज हवा चल रही थी; दनि भी लगभग समाप्त हो ही चुका था। पवत्रि योद्धाओं को नग्न करके पूरी रात झील के बीच में छोड़ दयिा गया, जबकि जेलर के नेतृत्व में एक पहरेदार को उन पर नजर रखने के लिए तैनात कयिा गया था। पवत्रि योद्धाओं को लुभाने के लिए, झील के पास एक गर्म स्नानागार बनाया गया, जो कड़की पड़ती ठंड को सहने के लिए दंडति लोगों को लुभा रहा था और चालीसों में से कसिी को भी, जो ठंड से थककर मूर्तियों की पूजा करने और खुद को गर्म करने के लिए पानी से बाहर भागने के लिए प्रलोभति हो सकता था, उसे त्वरति राहत का वादा कर रहा था। रात के पहले पहर में, जब ठंड अपनी चरम तीव्रता पर पहुँच गई, और संतों के शरीर जम रहे थे, तो चालीसों में से एक और अधकि सहन नहीं कर सका और संतों के समूह से अलग होकर स्नानागार की ओर भागा; लेकनि जैसे ही वह स्नानागार की दहलीज़ पार कर गया, जैसे ही उसने गर्मी महसूस की, वह पघिल गया और मृत पड़ा रह गया। ऐसी लज्जास्पद पलायन को देखकर, पवत्रि योद्धा एक स्वर में परमेश्वर से पुकार उठे: *'हे प्रभु, क्या तेरा क्रोध नदयिों पर भड़का है? क्या तेरा प्रचंड क्रोध नदयिों पर, या तेरा प्रकोप समुद्र पर है?'* (अबदीय 3:8)। – 'जो हमसे अलग हो गया है, वह पानी की तरह पघिल गया है, और उसकी हड्डयिाँ बखिर गई हैं' (भजन संहति 21:15)। 'परन्तु हम आप से न मुड़ेंगे; हमें जलिाइए, और हम तेरा नाम पुकारेंगे' (भजन संहति 79:19)।

– हे प्रभु, जसिकी सारी सृष्टि स्तुति करती है, जसिकी महान मछली और सारी गहराइयाँ महमिा करती हैं, आग और ओले, हमिपात और कुहासा और आँधी-तूफ़ानी हवा (भजन संहति 148:7-8), और जसिने समुद्र पर वैसे ही चला जैसे सूखी भूमि पर (मत्ती 14:25), और अपने हाथ के इशारे से उफनती लहरों को शांत कयिा (लूका 8:24)! हे प्रभु, आप आज भी वही हैं; आपने याकूब की वनितयिों पर ध्यान दयिा जब वह अपने भाई एसाव की धमकयिों से भाग रहा था (उत्पत्ति 27:1–46, 28:1–22); जो यूसुफ की सहायता के लिए आए और उसे उसकी संकट से उबार लयिा (उत्पत्ति 39:1–23); जन्होंने मूसा की सुनी और उसे मस्रि में फरिौन और उसके दरबारयिों के सामने चह्नि और आश्चर्य करने की शक्ति प्रदान की (नरि्गमन 7:1–25, 11:1–10); जसिने समुद्र को फाड़ा और अपने लोगों को जंगल में ले गया (नरि्ग. 14:1–31); जसिने अपने पवत्रि प्रेरतिों की प्रार्थना पर, अपने पवत्रि पुत्र यीशु के नाम पर चंगा करने और चह्नि तथा अद्भुत कार्य करने के लिए अपना हाथ फैलाया (प्रेरतिों के काम 4:24–31, 16:25–26), – हे प्रभु, हमारी भी सुनो: जल का गर्त हमें नष्ट न करे, और गहराई हमें न नगिल ले, क्योंकि हम बलिकुल लाचार हैं; हे हमारे उद्धारकर्ता परमेश्वर, हमारी सहायता करो, क्योंकि हम पानी में खड़े हैं और हमारे पैर अपने ही लहू से रंगे हुए हैं; हमारे बोझ का भार हल्का कर दो और हे हमारे प्रभु परमेश्वर, तूफ़ान का प्रकोप शांत कर दे! हम अपनी आशा तुझ पर रखते हैं, और हमें लज्जति न करना, बल्कि सभी को यह समझ आवे कि तुझ से पुकार कर हम उद्धार पाए हैं।

रात के तीसरे पहर में, पवत्रि शहीदों पर एक प्रकाश चमका, मानो यह फसल कटने के समय का ग्रीष्मकालीन सूर्य हो; इस प्रकाश ने ठंड को दूर कर दयिा, बर्फ को पघिला दयिा और पानी को गर्म कर दयिा। इस बीच, संतों की रखवाली के लिए नयिुक्त सैनकि नींद के बोझ तले दब गए, और केवल एक जेलर जागता रहा। शहीदों को ईश्वर से प्रार्थना करते सुनकर, वह सोचने लगा: 'यह क्या है कि जो आदमी स्नानागार में भाग गया था, वह गर्मी से मोम की तरह पघिल गया, जबकि अन्य, इतनी कड़ी ठंड में भी, जीवति और सुरक्षति हैं?' पवत्रि शहीदों पर चमक रही रोशनी से प्रभावति होकर, और यह देखने की इच्छा से कि यह अद्भुत प्रकाश कहाँ से आ रहा था, उसने ऊपर देखा और देखा कि उनतीस (39) तेजस्वी मुकुट संतों के सरिों पर उतर रहे थे; और जब वह इस बात पर वचिार कर रहा था कि पीड़ा सहने वाले चालीस पुरुषों के लिए चालीसवां मुकुट क्यों नहीं था, तो उसे एहसास हुआ कि जो व्यक्ति स्नानागार में भाग गया था, उसे संतों की संगति से बाहर नकिाल दयिा गया था, और इसीलिए चालीसवां मुकुट गायब था। उसने तुरंत सो रहे सैनकिों को जगाया, अपने कपड़े उतार दिए और सभी की आँखों के सामने नग्न होकर, यह कहते हुए झील में दौड़ गया: 'मैं भी एक ईसाई हूँ।' पवत्रि शहीदों के समूह में शामलि होकर, उसने ईश्वर से पुकारा:

– हे प्रभु परमेश्वर! मैं तुझ पर वश्विास करता हूँ, जसि पर ये भी वश्विास करते हैं; मुझे इनकी गनिती में गनि और मुझे अपने इन सेवकों के साथ दुःख सहने का अवसर दे; ताकि मैं भी परीक्षा में उत्तीर्ण होकर, तेरे योग्य बनूँ! – और इस

प्रकार पवत्रि शहीदों की संख्या फरि से पूरी हो गई – **चालीस**[2252] ; वधिर्मी की जगह जेलर ने ले ली, जो दस के चौथे समूह का पवत्रि पूरक बन गया[2253] । उसका नाम अग्लाइउस था।

पवत्रि शहीदों की चालीस की संख्या के इस अद्भुत पूर्ण होने पर, शैतान, खुद को पराजति और लज्जति देखकर, मानव रूप धारण कर रोया, और सबके सुनने के लिए चल्लिाया:

'हाय मेरे लिए! मैं इन लोगों से हार गया हूँ; अब मैं सभी का मज़ाक और तरिस्कार का पात्र बन गया हूँ! मेरी वजिय का बचाव करने के लिए न तो मुझे मत्रि मलि और न ही वफादार सेवक! तो फरि, मेरे लिए और क्या बचा है? सवािय इसके कि मैं उन राजकुमार और सेनापति के हृदय को जीत लूँ जो मुझसे वफादार हैं – उन्हें संतों के शरीर जलाने और उनकी राख को नदी में फेंकने के लिए मनाऊँ, ताकि उनका कुछ भी न बचे, यहाँ तक कि सबसे छोटा सा नशिान भी न मलि।

इस बीच, संत करियिन ने पुकार लगाई:

'*[हमारे] ईश्वर के समान महान ईश्वर कौन है! हे ईश्वर, तू चमत्कार करने वाला है*' (भजन संहति 76:14-15); हे प्रभु, तूने यह कर दखिाया है कि जो हमारे वरिोधी थे, वे अब हमसे जुड़ गए हैं और हमारे पक्ष में खड़े हैं; तूने दस के चौथे समूह की हानि की भरपाई कर दी है और शैतान को लज्जति कर दयिा है!

और सभी शहीदों ने भजन गाना शुरू कर दयिा: *'हे प्रभु, मेरा उद्धार कर, क्योंकि कोई धर्मी नहीं है*' (भजन संहति 11:2)।

सुबह हुई; दुष्ट यातना देने वाले झील पर आए और पवत्रि शहीदों को पानी में खड़ा हुआ, जीवति और सर्दयिों की ठंड से अछूता देखकर, हैरान रह गए, लेकनि उन्होंने इस अद्भुत घटना को शहीदों की जादुई चालाकी का परणिाम माना। उनका आश्चर्य तब और भी बढ़ गया जब उन्होंने जेलर को शहीदों के बीच खड़ा देखा। उन्होंने पहरा देने के लिए नयिुक्त सैनकिों से पूछा कि ऐसा क्यों और कैसे हुआ। सैनकिों ने उत्तर दयिा:

'हम रात में गहरी नींद में पड़ गए थे, लेकनि वह—कारागार का पहरेदार—बल्कुिल भी नहीं सोया और अचानक हमें जगा दयिा; 'जागने पर, हमने पानी में खड़े लोगों पर एक बड़ी रोशनी चमकती हुई देखी, और **इस** आदमी ने जल्दी से अपने कपड़े उतार दिए, उन्हें एक तरफ फेंक दयिा, पानी में कूद पड़ा और वहां खड़े लोगों में शामलि हो गया, **और** जोर से घोषणा की: "**मैं भी एक ईसाई हूँ**।"'

तब यातना देने वालों के हृदय क्रोध से भर गए; उन्होंने बंधे हुए संतों को कनिारे तक खींच लाने और वहाँ से शहर में यातना स्थल तक ले जाने का आदेश दयिा, और न्यायाधीशों ने पवत्रि शहीदों को यातना के एक नए रूप की सज़ा सुनाई – उनके पडिुओं को हथौड़ों से कुचल दयिा जाए।

जब संतों पर यह अमानवीय यातना दी जा रही थी, तब उनमें से सबसे कम उम्र के एक, मेलटिन की धर्मनष्ठि माँ, यातना के स्थान पर आई और पीड़तिों के पास खड़ी होकर, उन्हें बहादुरी से अपनी यातना सहने के लिए शब्दों से प्रोत्साहति कयि; लेकनि सबसे बढ़कर, इस डर से कि उसका छोटा बेटा शायद डर जाए या यातनाओं से घबरा जाए, उसने प्यार से उसकी ओर देखा और, उसकी ओर हाथ बढ़ाते हुए, उसे प्रोत्साहति और सांत्वना देते हुए कहा:

'मेरे प्रयितम पुत्र! थोड़ा और सहन कर और तू सद्धि हो जाएगा; मत डर, मेरे बच्चे, क्योंकि मसीह स्वयं तेरे सामने खड़े हैं, तेरी सहायता करने के लिए!'

[2252] संख्या 40 को हमेशा से महत्वपूर्ण और पवत्रि माना गया है: नूह के समय में 40 दनि और 40 रात तक बारशि हुई, और पृथ्वी पूर्व-प्रलय की मानवीय दुष्टता से शुद्ध हो गई – उत्पत्ति 7:12; इस्राएलयिों ने 40 वर्षों तक जंगल में भटकते रहे और केवल तभी प्रतज्ञिात देश में प्रवेश कयि – यश. 5:6; मूसा ने सनिाई पर्वत पर 40 दनि और 40 रातें बतिाईं और व्यवस्था की पट्टयिाँ प्राप्त कीं – नर्गि. 34:28; उनके जन्म के चालीसवें दनि, यहूदी पहले जन्मे पुत्रों को परमेश्वर को समर्पति कयि जाता था – लेवी 12:2-4; भवष्यिवक्ता एलयिा चालीस दनि और चालीस रातें होरेब पर्वत तक चले और उन्हें शांत, मृदु स्वर में प्रभु का दर्शन मलि – 3 राजा 19:8; प्रभु यीशु मसीह स्वयं ने जंगल में 40 दनि और 40 रातें उपवास कयि – मत्ती 4:2; वे अपने पुनरुत्थान के बाद 40 दनि तक पृथ्वी पर रहे, अपने शष्यिों के सामने प्रकट हुए और परमेश्वर के राज्य के वषिय में बात की – प्रेरतिों 1:3।

[2253] यहाँ जो हुआ वह वही था जो प्रेरतिों के साथ हुआ था: *'यहूदा चला गया, और मत्तीआस को उसकी जगह चुने जाने के लिए चुना गया*' – प्रेरतिों के काम 1:25-26; – एक नया पौलुस प्रकट हुआ, जो कल तक मसीह के चेलों के वरिुद्ध क्रोध और उत्पीड़न उगल रहा था, लेकनि अब सुसमाचार का प्रचार करने लगा। और इस व्यक्ति को भी, दूसरे की तरह, न तो मनुष्यों से और न ही मनुष्य के द्वारा बुलावा मलि था – गलातयिों 1 – वह प्रभु यीशु मसीह में वश्विास करता था, और उसे कसिी और ने नहीं बल्कि उसके अपने वश्विास ने ही उसमें बपतस्मिा दयिा, पानी में नहीं बल्कि उसके अपने रक्त में'। (बेसलि द ग्रेट। 'होमीली ऑन द फोर्टी होली मार्टयर्स'।)

पवत्रि शहीदों ने, घृणति खलनायकों की तरह, अपनी पंडिलयिों के टूटने (यूहन्ना 19:31) से होने वाले भयानक यातनाओं को सहते हुए और अपने उत्साह में कभी भी डगमगाए बनिा, अपने अंतमि क्षणों में आध्यात्मकि आनंद से पुकार लगाई:

– *'हमारी आत्मा शकिारयिों के जाल से पक्षी की तरह नकिल भागी है: जाल टूट गया है, और हम स्वतंत्र हैं। हमारी सहायता यहोवा के नाम में है, जसिने आकाश और पृथ्वी को बनाया*' (भजन संहति 123:7–8)।

और 'आमीन' कहने के बाद, उन्होंने सभी ने अपनी आत्माएँ ईश्वर को सौंप दीं; केवल एक, मेलटिन, अपनी माँ की सांत्वना से, मुश्कलि से साँस लेते हुए जीवति बचा रहा। इसके बाद, यातना देने वालों ने अपने सेवकों को आदेश दयिा कि वे मृतक संतों के शवों को रथों पर रखकर उन्हें जलाने ले जाएँ, और युवा मेलटिन को पीछे छोड़ दें, इस आशा में कि वह बच जाए। लेकनि धर्मनष्ठि माँ, अपने एकमात्र पुत्र को उसके यातना स्थल पर पीछे छूटे देख, अपनी स्वाभावकि स्त्री-कमज़ोरी ( ) को त्यागकर, साहस से प्रेरति होकर, अपने पुत्र को कंधों पर उठा लयिा और नडिर होकर उन रथों का पीछा करने लगी, जनि पर पवत्रि शहीदों के शव रखे गए थे, जैसे पके हुए गेहूं की बालयिाँ। और जब शहीद, जसिे उसकी माँ उठाए हुए थी, प्रभु में आनंदति होकर अपनी अंतमि साँस ली, तो उसके शरीर को उसकी अपनी माँ के हाथों द्वारा रथ पर, अपने साथयिों के शवों के बगल में रखा गया[2254] । जब पवत्रि शहीदों के शवों को नदी के पास दहन के स्थान पर लाया गया, तो दुष्ट न्यायाधीशों के आदेश पर सैनकिों ने बहुत सारी लकड़ी और झाड़-झंखाड़ इकट्ठा कयिा, एक बहुत बड़ी चति तैयार की, और संतों के शवों को उस पर रखकर आग लगा दी। चति जलकर राख हो गई, और शहीदों की केवल हड्डयिाँ बचीं। लेकनि यातना देने वालों की दुष्टता शांत नहीं हुई!

वे आपस में तर्क करने लगे, 'यदि हम इन हड्डयिों को यहीं छोड़ देंगे, तो ईसाई उन्हें ले लेंगे और दुनयिा भर में बखिेर देंगे, उन्हें टुकड़ों में तोड़कर एक स्मारक के रूप में संरक्षति करेंगे; इसलिए, हमें उन्हें नदी में फेंक देना चाहिए, ताकि उनकी राख भी न बचे।'

और इस प्रकार पवत्रि अवशेषों को नदी में फेंक दयिा गया, ताकि वीर शहीदों की स्मृति को पूरी तरह से नष्ट कयिा जा सके। लेकनि प्रभु, 'जो अपने संतों की सभी हड्डयिों की रक्षा करते हैं' (भजन संहति 33:21), ने उनके एक भी कण को पानी में नष्ट होने नहीं दयिा; बल्कि, वे सभी सुरक्षति रहे। तीन दनि बाद, पवत्रि शहीदों ने सेबास्टे के बशिप, धन्य पीटर को दर्शन दयिा, और उनसे कहा:

'रात को आओ और हमें नदी से बाहर नकिालो।'

धन्य बशिप ने अपने पुरोहति वर्ग के भक्तपिूर्ण पुरुषों को बुलाया और रात के अंधेरे में उनके साथ नदी के कनिारे गए। और वहाँ, उनकी आँखों के सामने एक अद्भुत दृश्य था: संतों की हड्डयिाँ पानी में तारों की तरह चमक रही थीं, और नदी में वे स्थान भी जहाँ उनके सबसे छोटे टुकड़े पड़े थे, उज्ज्वल थे। संतों की हर एक हड्डी इकट्ठा करने के बाद, बशिप

[2254] संत एफ्रेम सीरयिाई ('चालीस शहीदों के लिए स्तुति') एक शहीद की धन्य माता के मुख से नम्निलखिति मार्मकि शब्द कहते हैं: 'शांत रहो, मेरे बेटे, थोड़ी देर के लिए रथ में; अपना रक्त धर्मी लोगों के रक्त के साथ मलिा दो; एक पल के लिए उनके साथ वशि्राम करो, ताकि उनके साथ ही तुम स्वर्गीय नविास तक पहुँच सको। उनके साथ देह की अग्नि में जाओ, ताकि उनके साथ ही तुम सच्चे प्रकाश से परधिानति हो सको; उनके साथ भट्टी में प्रवेश करो, ताकि उनके साथ ही तुम शुद्ध सोने के रूप में उभर सको। मैं जानती हूँ कि तुम कसि तूफ़ान से बचे हो और कसि बंदरगाह के लिए प्रयासरत हो। मैं जानता हूँ कि तुम स्वर्गीय पति के पास जा रहे हो..., उस भूमि में नविास करने के लिए शीघ्रता कर रहे हो जहाँ से बीमारी, दुख और आहें भाग गई हैं, जहाँ न तो शोक है, न क्षय, न ही कटाक्षपूर्ण ईर्ष्या, न ही कोई दुष्ट शत्रु है। हे मेरे पुत्र, मैं तेरे साथ क्यों नहीं मरा? मैं तेरे इस तेजस्वी उत्सव में क्यों शामलि नहीं हूँ, और मैं इसमें क्यों भाग नहीं ले सकता? – क्या यह सच में इसलिए है क्योंकि मैं एक पापी हूँ, जो केवल आँसुओं और गहरे पछतावे का पात्र है?!... नहीं, मैं आपके साथ नहीं जाता इसका कारण यह नहीं है, बल्कि इसलिए कि आपको प्रायश्चति की आवश्यकता नहीं है – आप परमेश्वर के सामने चालीस लोगों का एक समूह बन गए हैं, जनि्हें सुसमाचार के भोज के लिए दस-दस करके बुलाया गया है (मत्ती 25:1–13)... इसलिए, मेरे पुत्र, चूँकि तुम्हें ऐसी महमिा के योग्य ठहराया गया है, मसीह उद्धारकर्ता से मेरे लिए प्रार्थना करना जब वह तुमसे कहे: *'आओ, मेरे राज्य का उत्तराधकिारी बनो,* जसिे मैंने तुम्हारे लिए तैयार कयिा है' (मत्ती 25:34)। मुझे उन लोगों के साथ याद रखना जो सम्मान में आप समान हैं, और मेरे लिए प्रकाश के पति से एक पुरस्कार माँगना, ताकि, जैसे आपके शरीर ने मुझ पर अपनी अंतमि साँस ली, वैसे ही मसीह की उदारताएँ मुझ पर साँस लें; और जैसे आपके रक्त ने मेरे फटे-पुराने कपड़ों को रँग दयिा, तो प्रभु की दया मुझ पर बरसे; और जैसे मैं आपके साथ यह एकल दौड़ दौड़ा हूँ, वैसे ही मैं आपके साथ संतों के नविास स्थान पर पहुँचूँ, ताकि मैं भी, आपके साथ मलिकर, गाऊँ और कहूँ: *'प्रभु के समान कोई पवत्रि नहीं; क्योंकि आप के सवि्राय और कोई नहीं; और हमारे परमेश्वर के समान कोई चट्टान नहीं'* (1 शमूएल 2:2)। उसने अपने वशि्वासयोग्य सेवकों की सींग को ऊँचा कयिा है और अपने शत्रुओं को लज्जति कयिा है। उसकी महमिा युगानुयुग होती रहे'।

ने उन्हें सम्मान के स्थान पर रख दिया। इस प्रकार, जो मसीह के लिए पीड़ित हुए और जिन्हें उनके द्वारा मुकुट पहनाया गया, वे संसार में स्वर्गीय पिंडों की तरह चमकते हैं[2255] ।

उन्होंने ईश्वर में विश्वास किया, मसीह की गवाही दी, पवित्र आत्मा का विरोध नहीं किया, और पवित्र जीवन-दायक त्रिमूर्ति द्वारा महिमामय बने, तथा उन सभी के निर्माण और उद्धार के लिए अपने पराक्रम का एक रिकॉर्ड छोड़ा जो पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा में विश्वास करते हैं। चालीस पवित्र शहीदों के नाम इस प्रकार हैं: करियोन (करियस), कैंडिडस, डोमनस, इसचियस, हेराक्लियस, स्मारागडस, यूनॉइकस (यूनिकस), वैलेन्टिनस (उल), वियिनस, क्लॉडियस, प्रस्किस, थियोडुलस, यूटकियस, जॉन, ज़ैथस, इलियस, सिसिनस, एगियस, अप्टियस, फ्लैवियस, अकाकियस, एक्डिसियस (एक्डटि), लाइसमैचस, अलेक्ज़ेंडर, इलियस, गोरगोनियस, थियोफिलस, डोमशियिन, गियस, लियोन्टियस, अथेनासियस, सिरिलि, सकरडोन, निकोलस, वैलेरियस, फलिोक्टमिोन, सेवेरियिन, हूडयिोन, मेलटिन और अग्लाइयस।

पवित्र चालीस शहीदों को 26 फरवरी को मसीह के लिए कष्ट सहने के लिए ले जाया गया, और उन्होंने 9 मार्च को अपना प्राण प्रभु को सौंप दिया[2256] , जबकि साम्राज्य पर अभी भी मूर्तिपूजक लिकिनियस का शासन था, , हालाँकि यह कहना अधिक सटीक होगा कि हमारे प्रभु यीशु मसीह पहले से ही राज्य कर रहे थे। उसे पिता और पवित्र आत्मा के साथ, युगानुयुग महिमा, सम्मान और आराधना हो। आमीन।

ट्रोपारियिन, स्वर 1:

अत्यंत सम्माननीय कष्ट-सहने वालों, मसीह के चालीस योद्धाओं, दृढ़ योद्धाओं, क्योंकि तुम आग और पानी से होकर गुज़रे और स्वर्गदूतों के सह-नागरिक बन गए; विश्वास के द्वारा तुम्हारी स्तुति करने वालों के लिए मसीह से उनके साथ प्रार्थना करो। उसकी महिमा हो जिसने आपको शक्ति दी, उसकी महिमा हो जिसने आपको मुकुट पहनाया, उसकी महिमा हो जो आपके द्वारा सभी को चंगा करता है।

पवित्र शहीद उर्पसियिन का कष्टकथा

९ मार्च को स्मरणोत्सव

जब अधर्मी मैक्सिमियिन[2257] ने रोमन साम्राज्य में शासन करना शुरू किया, जो मूर्तिपूजक देवताओं का सम्मान नहीं करने वालों का एक निर्दयी उत्पीड़क था, तो उसने निकोमेडिया[2258] के आसपास रहने वाले ईसाइयों को यातनाएँ दीं, जबकि साम्राज्य के अन्य सभी भागों में रहने वालों के विरुद्ध वह एक बड़ी ज्वाला की तरह क्रोध से भड़क उठा। एक

[2255] 40 पवित्र शहीदों का स्मरणोत्सव पूर्व और पश्चिम के सबसे प्राचीन मासिक कैलेंडर में सबसे पूजनीय संतों के पर्वों और स्मरणोत्सवों के बीच सूचीबद्ध है (देखें आर्चबिशप सेरजियस द्वारा 'द कम्प्लीट मंथली कैलेंडर ऑफ़ द ईस्ट', खंड 1, पृष्ठ 17-19; खंड 2, भाग 2, पृ. 75); विधान के अनुसार, उनके सम्मान में होने वाली सेवा में दो कैनन शामिल हैं; उनकी स्मृति के दिन, उपवास की कठोरता को कम किया जाता है – शराब और यहां तक कि तेल का सेवन करने की अनुमति है – और यह निर्धारित है कि यह सेवा अनिवार्य रूप से अग्रदूत (Forerunner) के लिए निर्धारित सेवा के क्रम में, पूर्व-पवित्रिकृत भेंटों की धर्मविधि (Liturgy of the Presanctified Gifts) के साथ मनाई जानी चाहिए।

[2256] पवित्र शहीदों ने 320 ईस्वी में यातनाएँ सहन कीं, और 323 ईस्वी में सम्राट कॉन्स्टेंटाइन पूरे रोमन साम्राज्य के एकमात्र शासक बन गए। चालीस शहीदों का स्मरणोत्सव 9 मार्च को मनाया जाता है, लेकिन इसे कभी-कभी, विधान के अनुसार, अन्य दिनों में स्थानांतरित कर दिया जाता है, अर्थात्: यदि यह महा-प्रायश्चित के *पहले सप्ताह के* किसी भी दिन पड़ता है, तो शहीदों के लिए सेवा शनिवार को आयोजित की जाती है; यदि यह क्रूस की वंदना के सप्ताह के बुधवार को पड़ता है, तो सेवा उसी सप्ताह के मंगलवार को आयोजित की जाती है; इसी तरह, यदि यह महान कैनन के गुरुवार को पड़ता है, तो सेवा उसी पांचवें सप्ताह के मंगलवार को आयोजित की जाती है; और यदि यह अकाथिस्ट के शनिवार को पड़ता है, तो इसे लेंट के उसी पांचवें सप्ताह के रविवार को स्थानांतरित कर दिया जाता है।

[2257] यह, बेशक, मैक्सिमियिन गैलेरियस को संदर्भित करता है, जो रोमन साम्राज्य के पूर्वी भाग में डियोक्लेटियिन का दामाद और सह-शासक था। उसकी ज़िद पर, 303 ईस्वी में डियोक्लेटियिन ने ईसाइयों के खिलाफ एक सामान्य फरमान जारी किया; हालाँकि, इस फरमान के जारी होने से पहले ही, गैलेरियस ईसाइयों को निजी तौर पर सता रहा था: उन्हें अपनी अदालत से हटाना, उन्हें सैन्य सेवा से निकालना, और इसी तरह।

[2258] निकोमेडिया – पूर्वी साम्राज्य की राजधानी और सम्राट डायोक्लेटियिन का निवास; एशिया माइनर के बिथिनिया के उत्तर-पश्चिमी क्षेत्र में प्रोपोंटिस (मार्मारा सागर) के तट पर एक भव्य शहर।

बार जब उन्होंने अपने समान विचारधारा वाले लोगों और, कह सकते हैं, अपने साथी योद्धाओं, साथ ही अपने अधिकार के अधीन सभी गणमान्य व्यक्तियों को इकट्ठा कर लिया, तो उन्होंने उनसे ऊँचे स्वर में कहा:

'यदि तुम में से किसी ने भी एक अधर्मी विश्वास और ईसाई देवता की पूजा को अपना लिया है, और हमारे गौरवशाली देवताओं की उचित उत्साह के साथ सेवा नहीं करना चाहता, न ही उनकी पूजा या प्रार्थना करना चाहता है, तो वह तुरंत, सबके सामने, अपनी कमरबंद उतारकर[2259] हमारे दरबार और हमारे नगर से चला जाए; क्योंकि इस नगर के निवासी, अपने पूर्वजों के समय से, देवताओं की सेवा करने के आदी रहे हैं, न कि उस एक सूली पर चढ़ाए गए ईश्वर की।

इन शब्दों से यह स्पष्ट था कि वह कानून-विहीन राजा ईसाई धर्म के प्रति कितना तिरस्कार करता था। इसलिए, मसीह में विश्वास करने वाले सभी लोग भय और आतंक से भर गए; उनमें से कुछ ने राजा से ईमानदारी से वादा किया कि वे देवताओं की सेवा करेंगे, जबकि अन्य ने केवल यातना से बचने के लिए ऐसा किया; लेकिन जिनमें परमेश्वर के प्रति सच्चा प्रेम था, वे अपने शरीर की परवाह किए बिना, यातना देने वाले के शब्दों का जवाब अपनी कमरबंद उतारकर और उससे दूर चले जाकर दिया। उस समय, बुद्धिमान और आत्मविश्वासी उर्पेशियन, जो राजा के एक सम्मानित व्यक्ति थे, ईश्वर के प्रति उत्साह से भर गए; वे निर्दयी राजा के पास गए और सभी के सामने अपना ओढ़ना और कमरबंद उसके सामने फेंकते हुए कहा:

'हे राजा, चूंकि आज से मैं स्वर्गीय और अमर राजा, प्रभु यीशु मसीह, जो मेरे परमेश्वर हैं, का एक सैनिक हूँ, इसलिए आप मुझे जो सम्मान और महिमा के प्रतीक दिए हैं, उन्हें वापस ले लें, क्योंकि यह सम्मान और महिमा अस्थायी हैं, और मुझे अब इनकी कोई आवश्यकता नहीं है।'

उर्पासियन के ये शब्द मैक्सिमियिन के लिए इतने अप्रत्याशित थे कि, उन्हें सुनते ही, उसका चेहरा बदल गया और वह लंबे समय तक एक भी शब्द नहीं बोल सका। फिर उसने अपना चेहरा मलते हुए, पवित्र शहीद को क्रोध से घूरते हुए, एक जंगली जानवर की तरह गरजा, और कहा:

'इस नीच को तुरंत फांसी दो और बैल की खाल से कोड़ा मारो।'

राजा की आज्ञा तुरंत पालन की गई, और जब पवित्र शहीद को लंबी और निर्दयी यातनाएँ दी जा रही थीं, तब उन्होंने अपनी आँखें आकाश की ओर उठाईं, प्रार्थना की, और उन्हें बिल्कुल भी दर्द महसूस नहीं हुआ। बाद में, यातना देने वाले ने संत को पेड़ से उतारने का आदेश दिया और उपस्थित लोगों से कहा:

'इस गद्दार को एक अँधेरी कोठरी में बंद कर दो, जब तक मैं यह तय नहीं कर लेता कि इसे कैसे मारना है।'

कारागार में, पवित्र शहीद ने प्रभु से प्रार्थना करते हुए आनंद और प्रसन्नता की अनुभूति की। इस बीच, मैक्सिमियिन ने एक यातना उपकरण—जो, के अनुसार, लोहे के पिंजरे के रूप में था—लाने और यातनाओं के लिए तैयार करने का आदेश दिया; और संत को कारागार से बाहर ले जाकर, उसने उसे इस पिंजरे में डालने और इसके शीर्ष से लटकाने का आदेश दिया। जब राजा की आज्ञा का पालन हो चुका था और संत उर्पासियन पहले से ही वहां लटके हुए थे, तो क्रूर यातनाकर्ता ने मशालें जलाने और उनसे उनके शरीर को चारों ओर से झुलसाने का आदेश दिया। और जब यह सब हो रहा था, मसीह के पवित्र शहीद, पिंजरे के अंदर लटके हुए, प्रार्थना में लीन हो गए, जबकि उनके यातना देने वालों ने उन्हें मशालों से तब तक जलाया जब तक कि उनका पूरा शरीर बूंदों के रूप में जमीन पर नहीं टपक गया और मोम की तरह पिघलकर धरती की धूल में मिल गया, और उनकी हड्डियाँ राख में बदलकर खलिहान की धूल के समान नहीं हो गईं। जब पवित्र शहीद, प्रार्थना में डूबे, इस प्रकार जलाए जा रहे थे, तो वातावरण शांति की सुगंध से भर गया; और अंत में, उनकी पवित्र आत्मा, एक उज्ज्वल तारे के रूप में—जैसा कि कुछ विश्वासियों को देखने का सौभाग्य मिला—ईश्वर के पास आरोहण कर गई[2260] । तब क्रूर और निर्दयी राजा, जो पवित्र शहीद के प्रति क्रोध से अभी भी जल रहा था, ने आदेश दिया कि जिस भूमि पर उसका शरीर गिरा था और जहाँ उसकी हड्डियों की राख पड़ी थी, उसे सावधानी से इकट्ठा करके उसकी उपस्थिति में समुद्र में फेंक दिया जाए। यह सब निकोमेडिया शहर में हुआ।

[2259] रोमन साम्राज्य में, बेल्ट एक सैन्य कमांडर के विशेष भेदभाव चिह्न के रूप में काम करती थी।

[2260] पवित्र शहीद उर्पसियन लगभग 295 ईस्वी में निधन हो गए।

संत कैसरयिस का पर्व दविस

9 मार्च को स्मरण कयि जाता है

संत ग्रेगरी द थयिोलोजयिन के भाई, संत सीज़रयिस, सम्राट कॉन्स्टैंटयिस के मत्रि और कॉन्स्टेंटनोपल के दरबार में मुख्य चकित्सिक थे। वर्ष 368 में, नकियि में एक भूकंप के दौरान, उन्हें मलबे के नीचे से चमत्कारकि रूप से बचाया गया था। इस घटना से गहराई से प्रभावति होकर, संत ग्रेगरी के आग्रह पर, संत सीज़रयिस ने संसार का त्याग कर दयि और स्वयं को ईश्वर की सेवा के लिए समर्पति कर दयि। लेकनि उनके बपतस्मि के कुछ ही समय बाद, वह बीमार पड़ गए और उनका नधिन हो गया।

23 मार्च

10 मार्च (पुराना तरीका)

पवत्रि शहीद कोड्रैटस और उनके साथयिों का कष्टकथा

10 मार्च को स्मरणोत्सव

पवत्रि शहीद कोड्रैटस का जन्म और पालन-पोषण नम्निलखिति परस्थितियिों में हुआ था। अधर्मी राजाओं और राजकुमारों द्वारा ईसाइयों के क्रूर उत्पीड़न के दौरान, मसीह के स्वीकारकर्ताओं को भयानक यातनाओं और हसिक मौतों का सामना करना पड़ा; इसलिए, कई वश्विासयिों ने असहनीय यातनाओं के डर से, अपने शहरों, घरों और संपत्तयिों को छोड़ दयि; वे भागते हुए, मसीह में अपने पवत्रि वश्विास को अक्षुण्ण रखने के लिए पहाड़ों और रेगस्तिानों में शरण लेने लगे, और उन्होंने ईश्वर-वहिीन मूर्तपिूजकों के साथ रहने के बजाय जंगली जानवरों के बीच रहने को प्राथमकिता दी।

[2261]उन कठनि समयों में, रूफनिा नाम की एक धर्मनष्ठि महलिा, यातनाओं के भय से, कोरथि से रेगस्तिान में भाग गई और वहां दुर्गम स्थानों में छपि गई। शहर से भागते समय रूफनिा गर्भवती थी और जब समय आया, तो उसने रेगस्तिान में एक पुत्र को जन्म दयि; फरि वह केवल कुछ ही दनिों तक जीवति रहने के बाद चल बसी। ईश्वर, जो सभी प्राणयिों को भोजन प्रदान करते हैं, जो अपना हाथ खोलते हैं और हर जीवति प्राणी को तृप्त करते हैं (भजन संहति 103:27–28), ने अनाथ शशिु को नहीं छोड़ा, बल्कि उसके लिए पति और माता, पालनकर्ता और प्रदाता दोनों बन गए। परमप्रभु परमेश्वर की आज्ञा से, एक बादल ऊपर से उतरता और, पृथ्वी पर फैलकर, शशिु के होठों पर मीठी ओस बरसाता। इस प्रकार, बादलों ने शशिु को मानो दूध या शहद से पोषति कयि, जब तक कि वह बड़ा होकर रेगस्तिान के अनाज पर स्वयं भोजन करना शुरू नहीं कर दयि। बाप्तस्मि देने वाले यूहन्ना की तरह, यह शशिु रेगस्तिान में रहा, जो परमेश्वर की सुरक्षा में था और पवत्रि आत्मा द्वारा परमेश्वर के ज्ञान में शक्षिति और नर्दिेशति कयि गया था (लूका 1:80)। अपनी युवावस्था में ही, वह आस्था वाले लोगों को मलिा; वे उसे शहर ले आए, जहाँ उसने पढ़ना सीखा और चकित्सिा की कला में महारत हासलि की। फरि भी, उसने बीमारयिों का इलाज अपने ज्ञान से नहीं, बल्कि स्वर्ग से प्राप्त अनुग्रह के द्वारा कयि। बचपन से ही रेगस्तिान की खामोशी के आदी होने के कारण, उन्होंने मानव जीवन की हलचल से दूर रहने का वशिेष ध्यान रखा: एकांत को पसंद करते हुए, उन्होंने अपना अधकिांश जीवन पहाड़ों और रेगस्तिानों में बतिाया, और स्वयं को ईश्वर के चतिन को समर्पति कर दयि। जब भी वह अपनी आवश्यकताओं के लिए नगर आता, वह सभी पर अनगनित आशीर्वाद बरसाता, ईश्वर के वचन द्वारा शारीरकि रोगों का उपचार करता और आध्यात्मकि दुर्बलताओं को दूर करता। फरि भी वह नगर में अधकि समय नहीं ठहरता, शीघ्र ही उस मरुस्थली एकांत में लौट जाता जसिे वह अत्यंत प्रयि मानता था, जहाँ वह वृद्धावस्था के समीप पहुँच गया। यहाँ, रेगस्तिान में, मसीह में उससे प्रेम करने वाले उसके पास आते थे, वे उसके पवत्रि मुखमंडल के दर्शन से आनंदति होना चाहते थे और उसके ईश्वर-प्रेरति प्रवचनों से शक्षिा प्राप्त करना चाहते थे; ऐसे थे साइप्रयिन, डायोनसियिस और एनेक्टस, पॉल और क्रसिैन्ट, जन्हिोंने उसके साथ मलिकर मसीह के लिए दुख उठाया।

[2261] कोरथि – अकेया की राजधानी, जसिे प्रेरति पौलुस ने सुसमाचार प्रचारति कयि।

उनके दुख इस प्रकार शुरू हुए। अधर्मी रोमन सम्राट डेसियस[2262] के आदेश पर, राज्यपाल जेसन ईसाइयों को सताने और मारने के लिए कोरिथ आया। ईसाइयों को पकड़कर, उसने उन्हें जेल में डाल दिया। उस समय, संत कोड्रैटस को भी उनके धन्य मित्रों साइप्रियन, डायोनिसियस, एनेक्टस, पॉल और क्रिस्पस के साथ गिरफ्तार किया गया; उन्हें उन कई ईसाइयों के बीच जेल में डाल दिया गया जो पहले से ही वहाँ बेड़ियों में जकड़े हुए थे। कुछ समय बाद, जेसन ने एक अधर्मी न्यायाधिकरण की अध्यक्षता की, और ईसाइयों को जेल से बाहर निकालकर पूछताछ के लिए उसके सामने पेश करने का आदेश दिया। उनमें सबसे बड़े संत कोड्रैट थे: एक कमांडर की तरह, उन्होंने मसीह के चुने हुए दल का नेतृत्व किया, और वे उन सभी की ओर से यातना देने वाले का निडर होकर सामना करना चाहते थे। यातना देने वाले ने संत से ये शब्द कहे:

'कोड्रेटस! तुम्हें ऐसा क्या पागल कर गया है कि तुम स्वेच्छा से इतनी भयंकर यातनाओं को सहना चाहते हो? और किस आशा में तुम इतनी निडरता से बेड़ियाँ और जेल चुनते हो, अपना वतन और दोस्त छोड़कर? तुम राजा के कानूनों का पालन क्यों नहीं करते, ताकि देवताओं की पूजा करने के बाद, तुम हमारे साथ इस जीवन के सुखों का आनंद ले सको?'

संत कोद्रत ने उत्तर दिया, 'कोई भी व्यक्ति, जो होश में हो, इस जीवन का त्याग नहीं करेगा।' लेकिन चूँकि यह जीवन ईश्वर द्वारा प्रदान किया गया है, इसलिए उपहार से अधिक दाता से प्रेम करना आवश्यक है, महान उपकारी को धन्यवाद देना, उसकी स्तुति करना, एक सदाचारी जीवन जीना, और अपने दुखों के माध्यम से उसकी महिमा को दूर-दूर तक फैलाना आवश्यक है। हमें इस क्षणिक जीवन से इतना प्रेम नहीं करना चाहिए कि इसे खोने के डर से हम एकमात्र सच्चे ईश्वर को मिलने वाला सम्मान मूर्तियों को प्रदान कर दें! क्योंकि हम उस ईश्वर के अलावा और किस ईश्वर की सच्चे रूप में आराधना कर सकते हैं, जिसने हमें आरंभ से ही अपने प्रेम के शाश्वत उपहारों से समृद्ध किया है? और इन महान उपहारों में, हम स्वयं उद्धारकर्ता मसीह के अलावा और किसे पहचान सकते हैं? और वास्तव में, हम यीशु के अलावा और किसे सच्चा उद्धारकर्ता कह सकते हैं, जिन्होंने हमारे लिए दुख और मृत्यु को सहा? और हम, जो धर्मात्मा बनना चाहते हैं, को सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण रूप से सच्चे विश्वास और धार्मिकता के लिए दुख सहना चाहिए, और किसी भी परिस्थिति में उनसे विमुख नहीं होना चाहिए। जो लोग दिव्य रहस्यों के सच्चे भक्तों को धोखा देने और भटकाने का प्रयास करते हैं, उनके इरादे बुरे हैं, और उनकी प्रार्थनाएँ पापी हैं। सभी को वही चुनना चाहिए जो सर्वोत्तम है। किसी को भी केवल पुण्यशील प्रतीत होने वाले लोगों का अनुसरण करने में जल्दबाजी नहीं करनी चाहिए; लेकिन किसी के कर्मों की बारीकी से जाँच करनी चाहिए—कि वे बुरे तो नहीं हैं और क्या वे विनाश के महान भय को लाते हैं। जान लो कि हम, अपने पूर्वजों की प्रतिज्ञाओं को पूरा करके, सर्वोत्तम की ओर बढ़ रहे हैं; इसलिए, हमारे प्रति शत्रुतापूर्ण कार्यों के माध्यम से हमें अपने मार्ग से भटकने और मसीह को त्यागने के लिए मनाने का प्रयास न करो। हमारे लिए, सर्वोत्तम मार्गदर्शक ईश्वर का सत्य है, और धर्म के नियमों में महान प्रेरक शक्ति है; एक-दूसरे के अनुकूल होकर, वे हमें ईश्वर के साथ एक करते हैं। यह भी ध्यान में रखें कि, प्रकृति के सार्वभौमिक नियम के अनुसार, सभी को मरना है, और कोई भी इस नियम से छूट नहीं सकता। जब मृत्यु का समय आता है, तो सभी अधर्म के कार्य और मानवीय विचार नष्ट हो जाते हैं, और क्षणिक महिमा धूल में मिल जाती है। इसके विपरीत, एक अच्छे जीवन से उत्पन्न कर्म करने वालों को शाश्वत महिमा मिलती है, एक ऐसी महिमा जो उनकी मृत्यु के बाद भी बनी रहती है। इसी प्रकार, मसीह के लिए साहसपूर्वक दुख सहने के अपने इरादे को न छोड़ने का दृढ़ संकल्प करके, हम उन लोगों के लिए एक आदर्श स्थापित करेंगे जो हम पर पूरी तरह से चलना चाहते हैं। क्योंकि विवेकी और विश्वासी लोग इसके अलावा और कुछ नहीं सोचते कि पवित्र जीवन के बेहतर उदाहरणों को देखकर, वे उनका अनुकरण करें और इस प्रकार पूर्णता की ओर बढ़ें।

ये शब्द सुनकर, जेसन ने संत से कहा:

'कोड्रैटस! यदि तुम उस ईश्वर का सम्मान करते हो, जिनकी कृपा तुमने अपनी जवानी से प्राप्त की है, तो अपनी कृतज्ञता व्यक्त करना तुम्हारे लिए उचित है। लेकिन सावधान रहना, कहीं ऐसा न हो कि मनुष्य—मसीह—के बारे में उपदेश देते हुए तुम दिव्य स्वभाव को तुच्छ समझ बैठो।'

संत कोद्रत ने राज्यपाल को उत्तर दिया:

[2262] सम्राट डेसियस ने 249 से 251 तक रोमन साम्राज्य पर शासन किया। वह ईसाइयों के सबसे क्रूर उत्पीड़क में से एक था।

'यदि आप अपनी क्रोध को त्यागकर और अपने रोष को नम्रता में बदलकर मुझे सुनने के लिए तैयार हैं, तो यद्यपि ऐसे महान विषयों पर बात करना आसान नहीं है—और मैं स्वयं भी ऐसा करने में शायद ही सक्षम हूँ—फिर भी मैं आपको कुछ बताऊँगा।

'तो हमें समझाइए,' इग्यूमेन ने सुझाव दिया, 'मसीह के बारे में अपनी शिक्षा यथासंभव स्पष्ट रूप से।'

संत कोड्रत ने उत्तर दिया:

'ईश्वर ने अपनी इच्छा से संसार को अस्तित्व में लाया; उसने वचन के द्वारा संसार की रचना की और पवित्र आत्मा की शक्ति से इसे स्थापित किया। जिसने संसार के अस्तित्व की इच्छा की, वह पिता है; जिसने उसे बनाया, वह पुत्र है; और जिसने इसे स्थापित किया, वह पवित्र आत्मा है। जब यह सुंदर संसार, जिसे सृष्टिकर्ता ने एक विशिष्ट उद्देश्य के लिए बनाया था, बन गया, तो सृष्टिकर्ता ने उचित समझा कि किसी को उन आशीर्वादों का आनंद लेना चाहिए जिन्हें उसने बनाया है और कृतज्ञता में उसकी महिमा करनी चाहिए। इसलिए, उन्होंने मानव जाति को बनाया, ताकि वे सब कुछ का वारिस बनें जो दिखाई देता है। पहले मनुष्य में जीवन का श्वास फूँकने के बाद, उन्होंने उसे स्वर्ग - अकथनीय आनंद की एक जगह - में ले आए। वह मनुष्य, उसके लिए बनाई गई सहायक के साथ, इस सबसे सुंदर दुनिया की विविधता में आनंदित हुआ और उसने परमेश्वर से स्वर्ग के बगीचों का आनंद लेने का अधिकार प्राप्त किया। हमारे प्रथम माता-पिता ने, उस महान उद्देश्य पर विचार करते हुए जिसके लिए ईश्वर ने उन्हें स्वर्ग में रखा था, यह संकल्प लिया कि उन्हें अपने सृष्टिकर्ता और कल्याणकर्ता को योग्य धन्यवाद देना चाहिए, और उन्होंने एक वृक्ष के फल को न खाने की ईश्वर द्वारा स्थापित आज्ञा का पालन करते हुए एक सदाचारी जीवन जीना शुरू कर दिया। लेकिन चालाक धोखेबाज़, शैतान, जो क्रोध से प्रेरित था, जिसके होंठों पर चापलूसी और भीतर द्वेष था, ने हमारे प्रथम माता-पिता पर अपने द्वेष का सारा विष उगल दिया, और उन्हें उनके स्वर्गीय जीवन से वंचित करने की इच्छा रखी: उनके सम्मान को भ्रष्ट करके, उसने उनमें ईश्वर की आज्ञा को तोड़ने की तीव्र इच्छा जगाई, और इसके अलावा, अपनी स्वैच्छिक इच्छा से, उसके चालाक परामर्श का पालन करने के लिए प्रेरित किया। परिणामस्वरूप, जो परमेश्वर के साथ स्वर्ग में रहते थे, वे परमेश्वर की कृपा से गिर गए और स्वर्ग से वंचित हो गए, क्योंकि उन्हें उससे बाहर निकाल दिया गया था। उस समय से, जो पहले परमेश्वर की महिमा में सहभागी थे, पाप की जंजीरों से बंधे हुए, दुख सहने लगे, व्यर्थ की इच्छाओं की सेवा करते हुए। परन्तु परमेश्वर ने अपनी सृष्टि पर दया की और मानव दुर्बलता पर करुणा की दृष्टि डाली; वह प्रसन्न हुआ, कि उसने अपनी दिव्यता को उस देह में छिपा रखा था जिसे उसने धारण किया था, और हम दुखी और खोए हुए लोगों के पास आया, ताकि हमें शत्रु के बंधनों से मुक्त कर सके और मृत्यु के राज्य के दासों को स्वतंत्रता में ले जा सके, और हमें विनाश से बचा सके। इसलिए, उन्होंने चाहा कि उनका वचन, *समय की परिपूर्णता* में (गलातियों 4:4) परमेश्वर की माता—कन्या—के सबसे पवित्र गर्भ में आकर, अवतार के माध्यम से, एक पूर्ण मानव का रूप धारण करे। सबसे पवित्र कन्या ने, पवित्र आत्मा से गर्भधारण करके, देह में परमेश्वर को जन्म दिया। और इस प्रकार, वास्तविक मानवीय नेत्रों से, परमेश्वर को देह में देखा गया, जिन्हें हम मसीह कहते हैं। और उन्होंने स्वयं को मानवजाति के सामने सच्चे परमेश्वर के रूप में प्रकट किया, जिन्होंने कुँवारी से वास्तव में एक पूर्ण मानव का रूप धारण किया, जिन्होंने शत्रु की शक्ति का विरोध किया और अपने स्वर्गीय राज्य की सीमाओं का विस्तार किया। उन्होंने मृत्यु के नियमों को नष्ट किया और दिव्य शक्ति से इसके बंधनों को तोड़ दिया; उन्होंने नरक को उजाड़ दिया, हमारे आदि माता-पिता को और उनसे उत्पन्न लोगों की भीड़ को उससे बाहर निकाला, और सभी राष्ट्रों और भूमि को विनाश से मुक्त करके, उन्हें सबसे पहले उद्धारकर्ता कहा गया। अपनी दया के खजाने प्रकट करने के बाद, उन्होंने चाहा कि वे सभी के साथ साझा किए जाएँ। सभी को यातना देने वाले के जाल से मुक्त करने के बाद, वह अपनी विरासत को विनाश से मुक्त और सुरक्षित रखता है। उसके लिए कुछ भी रहस्य नहीं है: न तो हमारे जन्म की शुरुआत, न ही हमारे जीवन की अवधि, न ही मृत्यु का अंत, न ही कोई अन्य अज्ञात वस्तु; लेकिन जो कुछ भी पिता के आदेश से स्थापित है, वह पुत्र के लिए ज्ञात और स्पष्ट है, जो उनकी इच्छा को पूरा करता है। वही मसीह हैं जिनका हम प्रचार करते हैं। वही हैं जिन्होंने मानव जाति को बचाने का भार स्वयं अपने ऊपर लिया। सर्वदा और सर्वत्र विद्यमान, वे हमें अपनी भलाई का अक्षय धन प्रदान करते हैं, अपने सेवकों के साथ सदैव उपस्थित रहते हैं, और उनकी सहायता करते हैं।

हेगेमोन, यद्यपि संत कोड्रैटस के शब्दों से चकित था, तथापि, प्रकट हो रहे सत्य पर विश्वास करने के अनिच्छुक, ने कहा:

'कोड्राटस, मुझे तो ऐसा लगता है कि तुम महान वषियों के बारे में झूठ बोल रहे हो, क्योंकि तुम ईश्वर को केवल मानवीय गुणों से युक्त मानते हो, यह दावा करते हुए कि वह कुँवारी के गर्भ में समा सकता था, जिसने उसे अपने गर्भ में धारण करके मसीह को जन्म दिया।' और इस प्रकार आप दावा करते हैं कि एक ईश्वर को पृथ्वी पर मानव रूप में देखा गया, जबकि दूसरा सच्चा ईश्वर कहीं और था।

संत कोडरात ने उत्तर दिया:

'अविश्वासियों को भक्ति के रहस्यों की खोज नहीं करनी चाहिए, क्योंकि उन्हें समझने का महान कार्य सभी को आसानी से नहीं दिया जाता; और न ही हम अविश्वासियों को उनमें प्रवेश करने की अनुमति देते हैं। ईश्वर के पुत्र ने स्वेच्छा से स्वयं को नम्र किया, दास का रूप धारण किया, और यद्यपि वह ईश्वर था, उसने हमें शैतान के बंधन से मुक्त करने के लिए मनुष्य बनने की कृपा की । तुम, अविश्वास और अधर्मीपन से भरे व्यक्ति के रूप में, इसे समझ नहीं सकते; परन्तु यह जान लो कि तुम हमें चालाकी से धोखा देकर या भयानक धमकियों से मसीह से दूर नहीं कर सकते।

तब राज्यपाल ने आज्ञा दी कि मसीह के वफादार सेवक को नग्न कर दिया जाए और लाठी से निर्दयतापूर्वक पीटा जाए, जिसे निर्दयी जल्लादों ने क्रूरता से पूरा किया। हालाँकि, पवित्र शहीद ने साहसपूर्वक पिटाई को सहन किया और, जब यह हो रही थी, तो अपने अत्याचारी से कहा:

'क्या तुम नहीं जानते, राज्यपाल, कि जबरदस्ती थोपी गई कोई भी चीज़ स्वतंत्रता के विरुद्ध है और समझाने के योग्य नहीं है? जो इस तरह मनाता है वह स्वयं को एक अत्याचारी साबित करता है, जबकि जो सलाह देता है और प्रोत्साहित करता है वह कोमल और दयालु होता है। इसलिए, आप भी, हमें यातनाओं के माध्यम से मूर्तियों की पूजा करने के लिए मजबूर करने का प्रयास करके, यह उम्मीद न करें कि हम डर के मारे धर्मत्याग कर दें और आपके दुष्टता के दलदल में फँस जाएँ। मसीह के प्रति प्रेम से परिपूर्ण, हम न तो आपकी चापलूसी भरी प्रलोभनों पर ध्यान देते हैं और न ही उन यातनाओं पर जो आप रच सकते हैं; मसीह एक पुरस्कार की आशा से सभी दुखों और बीमारियों को दूर करते हैं, हमें मजबूत बनाते हैं ताकि हम विरोधी की आज्ञा न मानें, और हमें कष्ट सहने के कार्य में अजेय और दृढ़ बनाते हैं।

इन शब्दों से और भी क्रोधित होकर, यातना देने वाले ने संत को उल्टा लटकाने, उसके शरीर को लोहे की पंजों से खुरचने, और शहीद को उसके नीचे जलाई गई आग से झुलसाने का आदेश दिया। लेकिन उन्होंने, यह सब वीरता से सहते हुए, अडिग रहे।

इसके बाद, राज्यपाल ने संत साइप्रियन से चापलूसी भरे शब्दों में बात की, और उन्हें अपने पक्ष में लाने की कोशिश की। लेकिन संत साइप्रियन, यद्यपि वे अभी भी युवा थे, फिर भी निडर होकर अपने यातनाओं के लिए खुद को तैयार कर लिया। इस बीच, संत कोड्रैटस ने उनसे और उन अन्य लोगों से बात की जो उनके साथ अपनी यातनाओं के लिए तैयारी कर रहे थे और पहले ही अपने कपड़े उतारना शुरू कर चुके थे:

– हे मेरे मित्रों और साथी विश्वासियों! विचार करो कि प्रभु ने तुम्हारे लिए कितनी आशीषें संजो कर रखी हैं: भक्ति के लिए सम्मान, शहादत के लिए महिमा; और, सबसे बढ़कर, यह न भूलो कि तुम यीशु मसीह की दया के योग्य बन रहे हो, जो शीघ्र ही तुम्हें उच्च स्थान से अपनी सहायता भेजेंगे। अब, अत; हमें हमारे ईश्वर मसीह में अटूट विश्वास प्रदर्शित करना चाहिए। वीरतापूर्ण कार्यों का समय अब आ गया है; अत; प्रेम के विधान को बिना किसी हिचकिचाहट के पूरा करो – उस के लिए अपना जीवन बलिदान करो जिसे तुम प्रेम करते हो। आपको उन सभी के लिए एक उदाहरण प्रस्तुत करना चाहिए जो मसीह के लिए दुख सहने के योग्य माने जाना चाहते हैं। आपका दृढ़ धैर्य उन सभी को चकित कर दे जो आपको देखते हैं। अब धर्मी और दुष्ट के बीच का वास्तविक अंतर प्रकट हो गया है। अब, पहले से कहीं ज़्यादा, आपको धर्मपरायणता बनाए रखने का विशेष ध्यान रखना चाहिए, कहीं ऐसा न हो कि विश्वास में विभाजन हो – एक ही विश्वास और एक ही स्वीकारोक्ति पर दृढ़ रहें, क्योंकि आप जल्द ही अंतिम न्याय के दिन परमेश्वर के सामने खड़े होंगे। सदाचार के मार्ग से न भटकें, क्योंकि आप जल्द ही अपना सांसारिक सफर पूरा करके मसीह के पास चले जाएँगे। सदैव-सत्य परमेश्वर की भक्ति पूरे हृदय से करो; अपने यौवन के फूल को व्यर्थ न जाने दो, क्योंकि तुम जल्द ही एक कालातीत जीवन *में* प्रवेश करने वाले हो। यह विचार करो कि अंत निकट है (मत्ती 24:33) और यह कि, जवान होने के कारण, तुम हल्के हो—शारीरिक शक्ति के स्वामी—और हमारे परमेश्वर मसीह के लिए कष्टों को अधिक आसानी से सहन कर सकते हो। इसलिए, निडर होकर यातनाओं को सहन करो और उन्हें साहसपूर्वक सहो: शत्रु को परास्त करने के बाद, तुम प्रभु से महिमा प्राप्त करोगे और स्वर्ग में पवित्र शहीदों में गिने जाओगे।

अपने साथियों को संबोधित करते हुए संत कोड्रैटस के ये शब्द यातना देने वाले के मन में क्रोध भर गए: उसने तुरंत आदेश दिया कि संत साइप्रियन को नग्न करके कोड्रैटस की तरह लटका दिया जाए, और उसे पीटा जाए, उसका चमड़ा उधेड़ा जाए और आग से जला दिया जाए। उनके बाद, उसने डायोनसियिस, एनेक्टस, पॉल और अंत में, क्रसिन्स्ट को भी उन्हीं यातनाओं से गुज़ारा। उनसे शर्मिंदा और पराजित होकर, यातना देने वाले ने पहले उन्हें जंगली जानवरों द्वारा नोंचवाया। जब, हालाँकि, जानवरों ने पवित्र शहीदों को छुआ भी नहीं, तो उसने उन्हें तलवार से सिर कलम करने की सज़ा सुनाई, और पहले यह आदेश दिया कि उन्हें उनके पैरों से खींचकर शहर में घुमाया जाए। जब यह हो रहा था, तो लोगों की एक अनगिनत भीड़—विशेषकर बच्चों ने—संतों को डंडों और पत्थरों से तब तक मारा जब तक कि उन्हें शहर से बाहर निष्पादन के लिए निर्धारित स्थान पर नहीं ले जाया गया। वहाँ, संतों ने थोड़ा समय माँगकर प्रभु से भक्तिपूर्वक प्रार्थना की; फिर उन्होंने अपना मान्यवर सिर तलवार के नीचे झुका दिया और मार्च के दसवें दिन उनका सिर कलम कर दिया गया। जिस स्थान पर शहीदों के पवित्र रक्त से धरती रँग गई थी, वहाँ पानी का एक स्वच्छ झरना फूट पड़ा, जो कोरिंथ को संतों के कष्टों की याद दिलाता था। छह शहीदों—कोड्रैटस, साइप्रियन, डायोनसियिस, एनेक्टस, पॉल और क्रसिन्टनस—की हत्या के बाद, अन्य पकड़े गए ईसाइयों को भी यातना दी गई और विभिन्न तरीकों से मार डाला गया। एक अन्य डायोनसियिस को छुरा घोंपकर मार डाला गया, जबकि विक्टोरिनस, विक्टर और निकिफिोरस (जब टर्टियस गवर्नर के रूप में जेसन का उत्तराधिकारी बना) को एक पत्थर की ओट में डालकर उसमें पीट-पीट कर मार डाला गया। क्लॉडियस अपने हाथ और पैर कटवाए जाने के बाद मर गया; डायोडोरस ने स्वयं अपने लिए तैयार की गई चिता में छलांग लगा दी, और वहाँ, एक उज्ज्वल महल में, उन्होंने शांति से विश्राम किया । सेरापियन का सिर कलम कर दिया गया, और पापियास को समुद्र में फेंक दिया गया। इसी तरह, लियोनडिास, जिन्होंने गवर्नर वेनुस्टस के हाथों भयानक और अनगिनत यातनाएँ सहन कीं, जो टर्टियस के उत्तराधिकारी थे, समुद्र में डूब गए।

पवित्र स्त्रियों ने भी संत कोड्रैटस के उदाहरण का अनुसरण करते हुए और उनकी शिक्षाओं को अपने हृदय में धारण करते हुए, मसीह के लिए यातनाएँ सहने का संकल्प लिया—चारसिा, नुनेचिया, वासलिसिा, नीका, गली, गलिना, थियोडोरा और कई अन्य महिलाएँ, साथ ही पुरुष भी। उनमें से कुछ को तलवार से सिर कलम करके प्रभु के पास भेज दिया गया; अन्य पानी में डुबो दिए गए या अन्य प्रकार की यातनाओं से मार डाला गया। वे सभी, अपने नेता और शिक्षक, संत कोड्रैटस के साथ, शहीदों में गिने जाते हैं, जिन्होंने मसीह परमेश्वर के दाहिने हाथ से अपने विजय के मुकुट प्राप्त किए हैं, जिनकी महिमा पिता और पवित्र आत्मा के साथ युगानुयुग होती रहे। आमेन।

निकोमेडिया के पवित्र शहीद कोड्रैटस का कष्टकथा, पवित्र शहीदों सैटरनिस और रूफिनस और अन्य लोगों के साथ

10 मार्च को स्मरण किया जाता है

धर्मनिरपेक्ष रोमन सम्राट डेसियिस[2263] और उनके उत्तराधिकारी वैलेरियिन[2264] (जब कोरिंथ के संत कोड्रैटस ने भी अपने साथियों के साथ पीड़ा सहन की) के शासनकाल के दौरान, ईसाइयों को विभिन्न कस्बों और गांवों से पकड़कर बिथिनिया के निकोमेडिया शहर[2265] में लाया गया, जहाँ उन्हें जेल में रखा गया। तब निकोमेडिया में रहने वाले ईसाइयों में बड़ा

[2263] सम्राट डेसियिस ने 249 से 251 तक रोमन साम्राज्य पर शासन किया; वह ईसाइयों के सबसे क्रूर उत्पीड़क में से एक था।

[2264] वैलेरियिन ने 253 से 259 तक शासन किया।

[2265] बिथिनिया एशिया माइनर का एक उत्तर-पश्चिमी प्रांत था। यह ब्लैक सी, बोस्फोरस और कॉन्स्टेंटिनोपल जलडमरूमध्य के तटों पर स्थित है। यह क्षेत्र प्राचीन काल से जाना जाता है और इसका नाम बिथिनियाई लोगों के नाम पर पड़ा, जो थ्रेस से यहाँ आए थे। बिथिनिया मनोरम, उपजाऊ और पशुधन से समृद्ध था; बिथिनिया को दो प्रांतों में विभाजित किया गया था। पहले की राजधानी ब्रुसा (प्राचीन काल में, प्रूसिया) थी, और दूसरे की राजधानी निकोमेडिया थी। 6वीं शताब्दी ईसा पूर्व के मध्य तक, बिथिनियाई स्वतंत्र, स्वायत्त और कुशल नाविकों के रूप में प्रसिद्ध थे। 546 में, वे फारसी शासन के अधीन आ गए, लेकिन लंबे समय तक नहीं, और 327 से बिथिनिया एक बार फिर एक स्वतंत्र राज्य बन गया। 75 ईसा पूर्व में, अपने अंतिम दिनों में राजा निकोमेड्स तृतीय ने अपने देश को रोमनों को सौंप दिया, जिन्होंने इसे एक विशेष प्रोकोन्सल के अधीन एक स्वायत्त प्रांत के रूप में अपनी साम्राज्य में शामिल कर लिया। बिथिनिया में ईसाई धर्म प्रेरितों के युग (1 पतरस 1:1) जितनी जल्दी प्रकट हुआ; प्लिनी द यंगर, जिसने बिथिनिया पर शासन किया, और सम्राट ट्राजन (98–117 ईस्वी) के समय में, यहाँ बहुत सारे ईसाई थे, न केवल शहरों में बल्कि गाँवों और बस्तियों में भी। डायोक्लेटियन (284–305) के शासन के दौरान, बिथिनिया में ईसाइयों का भयंकर उत्पीड़न हुआ। चौथी और

भय फैल गया, वशिषकर इसलिए कि सम्राट डेसियस स्वयं उन क्षेत्रों की ओर बढ़ रहे थे, क्योंकि वे पहले ही केसरिया पहुँच चुके थे[2266] । परिणामस्वरूप, कई ईसाइयों ने अपने उत्पीड़कों के हाथों से भागकर पहाड़ों और रेगिस्तानों में शरण ली, जबकि अन्य नडिर होकर अपने घरों में रहे, उस घड़ी की प्रतीक्षा में जब उन्हें किसी प्रकार के बलदिान के माध्यम से प्रभु की महमिा करने के योग्य समझा जाएगा।

इनमें से एक संत कोड्रैटस थे, जनिके बारे में हम बात कर रहे हैं। वह अपनी सुंदरता के लिए प्रसद्धि थे, कुलीन वंश से थे, धनी, धार्मकि थे और उनमें वाक्पटुता का वरदान था। उन्होंने जेल के रक्षकों और सैनकिों को रश्वित देकर कालकोठरी तक नरि्बाध पहुँच बना ली थी; वहाँ संत कोड्रैटस ने जंजीरों में जकड़े अपने साथी वश्वािसयिों की सेवा की, और प्रत्येक को उसकी आवश्यकता की वस्तुएँ पहुँचाईं। उन्होंने उन्हें दृढ़ता से प्रोत्साहति कयिा कि वे साहसी बने रहें, मसीह परमेश्वर के प्रेम के लिए सहन कए गए यातनाओं की परवाह न करें, क्योंकि वह अपने स्वर्गीय राज्य में उनके लिए एक अनंत पुरस्कार तैयार कर रहे थे।

न्याय का दनि आ गया। राजा की आज्ञा से नकिोमेडयिा आए proconsul[2267] पेरनियिस ने लोगों की उपस्थतिि में न्यायपीठ पर अपनी सीट ली और सभी कैदयिों को पूछताछ के लिए सामने लाने का आदेश दयिा। जब उन्हें उसके सामने लाया गया, तो जेलर (कमेंटारसियिस) ने प्रोकोन्सुल से कहा:

'महोदय! आपकी आज्ञा से, कानून तोड़ने वाले ईसाइयों की भीड़, जनि्हें आज तक जेल में रखा गया था, अब अदालत में आपके सामने खड़ी है!' तब उप-राज्यपाल ने परमेश्वर के सेवकों से कहा:

'तुम में से प्रत्येक अपना नाम, पद, वंश और मूल स्थान बताओ।'

धन्य कोड्रैटस भी ईसाइयों की पूछताछ का साक्षी बनने आए; उन्होंने देखा कि कुछ ईसाइयों का हौसला पस्त हो गया था और वे डर से पीले पड़ गए थे, तो उन्हें डर लगा कि उनमें से कोई एक, यातना की कल्पना भी सहन न कर पाकर, मसीह का इनकार कर देगा; इसलिए, उन सभी के पीछे खड़े होकर, संत कोड्रैटस ने ऊँचे स्वर में कहा:

'हमें मसीही कहा जाता है; पद और दर्जे के अनुसार हम अदृश्य परमेश्वर, प्रभु यीशु मसीह के सेवक हैं, और हमारा नगर और स्वदेश स्वर्ग है, जहाँ परमेश्वर उन लोगों के साथ वास करते हैं जो उन पर वश्वािस करते हैं। क्या आप यह सुनते हैं, प्रोकॉन्सल?'

उप-प्रांतपति संत कोड्रैटस की इस नरि्भीकता से चकति, लगभग भयभीत हो गया, और अपने सेवकों से कहा:

'इस मूर्ख को पकड़ो और मुझे उसके पास लाओ।'

प्रोकन्सल के शब्द सुनकर, धन्य कोड्रैट भीड़ को चीरते हुए, अपनी इच्छा से आगे बढ़े, और प्रोकन्सल के सामने आ खड़े हुए, जबकि सभी की नगिाहें उन पर टकिी थीं। क्रॉस का चहि्न बनाते हुए, संत कोड्रैट ने प्रोकन्सल से कहा:

'मैं यहाँ अपनी मर्ज़ी से आया हूँ, किसी दबाव में नहीं, अपने भाइयों की रक्षा करने और शैतान का वरिोध करने। तो बनिा देरी के अपनी इच्छा पूरी करो, और हमारी हमि्मत को परखकर खुद देखो कि हम मसीह के अजेय योद्धा हैं!'

प्रोकन्सल ने कहा, "तुम पागल हो! सबसे पहले, मुझे अपना नाम और वंश बताओ।"

पाँचवीं शताब्दी में, बथिनियिा धार्मकि मामलों में वशिेष रूप से उल्लेखनीय था: वभिन्नि वधिर्मों से नपिटने के लिए वहाँ कई चर्च परषिदें आयोजति की गईं। क्रमशःसेल्जूक्s और फरि सारासेन्स के शासन में रहने के बाद, 1332 में बथिनियिा तुर्कों द्वारा वश में कर लयिा गया, जनिके शासन में यह आज तक बना हुआ है। यह कादावेनकयिात और कास्तामूनी के दो प्रांतों (वलियेट्स) का हस्सिा है और इसकी जनसंख्या 700,000 है। धार्मकि प्रशासन का प्रमुख नकिोमेडयिा का आर्चबशिप है, जसिके अधीन कॉन्स्टेंटनिोपल के सनिड द्वारा नयिुक्त 12 बशिप हैं।

[2266] केसरिया भूमध्य सागर के तट पर स्थति था। प्रेरति पौलुस ने अपनी यात्राओं के दौरान इस शहर का कई बार दौरा कयिा (प्रेरतिों के काम 9:29–30; प्रेरतिों के काम 18:28; प्रेरतिों के काम 21:8) और यहाँ एक कैदी के रूप में दो साल बतिाए (प्रेरतिों के काम 23:33; प्रेरतिों के काम 24:27; प्रेरतिों के काम 26:4 आदि)। शताध्यक्ष कोर्नेलयिुस, जसिे प्रेरति पतरस ने मसीह के पास लाया था, इस शहर में रहता था (प्रेरतिों के काम 10:1; प्रेरतिों के काम 10 आदि); प्रेरति फलिप्पिस भी यहाँ रहता था (प्रेरतिों के काम 21:8)। यहीं पर हेरोद अग्रप्पिा की मृत्यु हुई, जो एक स्वर्गदूत द्वारा मारा गया और कीड़ों ने उसे खा लयिा। मूल रूप से, केसरिया को स्ट्रोटन का शहर या मीनार के नाम से जाना जाता था। इस शहर का पुनर्नरि्माण हेरोद महान द्वारा कयिा गया था, जनि्होंने सम्राट (सीज़र, लैटनि शब्द का अर्थ 'काटा हुआ' या 'टुकड़े-टुकड़े कयिा हुआ') ऑगस्टस के सम्मान में इसका नाम सीज़रयिा रखा।

[2267] 'एम्फपिैटस' एक ग्रीक शब्द है जसिका अर्थ है 'प्रोकॉन्सल'। यह एक रोमन सार्वजनकि पद (एक प्रांत, यानी एक क्षेत्र का राज्यपाल) का पदनाम था।

'मैं तुम्हें पहले ही बता चुका हूँ,' संत ने उत्तर दिया, 'कि मैं एक ईसाई हूँ, और मेरे भाई मसीह के सेवक हैं; हमारा नाम और कुलीनता मसीह के सेवक कहलाने में निहित है।'

'मेरी बात सुनो, मेरे मित्र,' प्रोकॉन्सल ने कहना जारी रखा, 'मैं सम्राट को रिपोर्ट करूँगा, और वह तुम्हें एक कमांडर नियुक्त कर देगा—बशर्ते, बेशक, कि तुम हमारे देवताओं को बलिदान अर्पित करो।'

'प्रोकॉन्सल,' संत ने उत्तर दिया, 'यह दावा करके भ्रमित न हों कि कई देवता हैं: *"फिर भी हमारे लिए एक ही परमेश्वर है, पिता, जिससे सब कुछ हुआ है"* (1 कुरिन्थियों 8:6)।

'बहुत से देवता हैं,' प्रोकॉन्सल ने कहना जारी रखा, 'लेकिन, किसी भी हाल में, राजा ने अब आदेश दिया है कि बलिदान केवल बारह देवताओं[2268] को ही चढ़ाई जाए, जिनकी तुमको भी पूजा करनी होगी।'

– कई शासक नहीं होने चाहिए,' संत कोड्रैट ने ऊँचे स्वर में कहा, 'केवल एक प्रभु, एक राजा और ईश्वर हैं, हमारे प्रभु यीशु मसीह!

'क्या तुमने नहीं सुना,' प्रोकॉन्सल ने जारी रखा, 'कि होमर[2269] पोसीडॉन[2270] (नेप्च्यून) के बारे में क्या कहते हैं: "देवताओं के पिता ने बादल उतार दिए, हवाओं को भड़काया, आकाश को ढक दिया, और भयानक गर्जना की, क्योंकि पोसीडॉन पृथ्वी को छीनने के लिए उठ खड़े हुए थे," और इसी तरह। तो, क्या तुम पोसीडॉन की शक्ति के बारे में सुनते हो?

'क्या होमर और उसके जैसे अन्य कवि आपके देवताओं के बारे में सच कहते हैं, या नहीं?' धन्य कोड्रैटस ने पूछा।

'वे सच कह रहे हैं,' प्रोकंसुल ने उत्तर दिया।

'यदि वे सत्य बोलते हैं,' संत ने अपनी बात जारी रखी, 'तो क्या वे हमें यह नहीं बताते कि आपके देवता व्यभिचारी, अतृप्त और निर्लज्ज कामुक प्राणी हैं, जिन्होंने अस्वाभाविक घृणित कृत्य किए?' मुझे सचमुच आपके लिए शर्म आती है कि आप ऐसे देवताओं की पूजा करते हैं, जिनके बुरे कर्मों के लिए आप स्वयं ही उन पर आरोपित लोगों को दोषी ठहराते हैं! इस प्रकार, आप शर्मनाक कृत्यों के दोषियों को तो दंडित करते हैं, जबकि साथ ही उन लोगों को देवता मानते हैं जो उनसे भी कहीं अधिक बड़े अन्याय करते हैं। क्या तुम्हें इन देवताओं को उनकी इतनी अधिक और इतनी बड़ी अतार्किकताओं के लिए निंदित और दंडित नहीं करना चाहिए था? तुम कानून तोड़ने वाले मनुष्यों पर कोई दया नहीं दिखाते, फिर भी तुम उन देवताओं का सम्मान और स्तुति करते हो जिन्होंने कानूनहीन कृत्य किए हैं; ऐसे देवता, पूर्ण न्याय से कहूँ तो, देवता बिल्कुल नहीं, बल्कि उन्मत्त, मृतकामी कामी हैं!

संत के इन शब्दों पर, उप-राज्यपाल ने उत्तर दिया:

'चूंकि तुमने देवताओं की निंदा करना शुरू कर दिया है, मुझे डर है कि राजा मुझ पर इस बात से क्रोधित हो सकते हैं कि मैंने, अपनी दीर्घ सहनशीलता के कारण, तुम्हें अपनी जीभ से देवताओं का अपमान करने दिया। इसलिए, तुरंत अपना दृष्टिकोण बदल दो, कहीं ऐसा न हो कि तुम्हें तुम्हारे यातना देने वालों के हाथों तुरंत ही पकड़ लिया जाए!'

संत कोड्रैट ने कहना जारी रखा, 'मेरे संकल्प को कोई छीन नहीं सकता, न तुम, न तुम्हारा राजा, और न ही तुम्हारे पिता शैतान स्वयं।'

[2268] प्राचीन यूनानियों और रोमनों की मान्यताओं के अनुसार, सर्वोच्च या प्रमुख देवता पृथ्वी और आकाश के बीच की वायुमंडलीय जगह में निवास करते थे, और उनका निवासस्थान ग्रीस में माउंट ओलंपस की चोटी पर भव्य महलों में था। इसलिए, इन बारह देवताओं को ओलंपियन देवता के रूप में भी जाना जाता है। वे हैं: ज्यूस (बृहस्पति), हेरा (जूनो), पोसीडॉन (नेप्च्यून), डेमीटर (सीरस), अपोलो। (एपोलो), आर्टेमिस (डायना), हेफेस्टस (वल्कन), पैलास एथेना (मिनर्वा), एरिस (मंगल), एफ्रोडाइट (शुक्र), हर्मीस (बुध), और वेस्टा (वेस्टा)।

[2269] प्राचीन काल के एक प्रसिद्ध कवि जो ईसा पूर्व 10वीं शताब्दी के अंत या 9वीं शताब्दी की शुरुआत में रहते थे। प्राचीन लोगों ने होमर की कल्पना एक अंधे बूढ़े व्यक्ति के रूप में की थी। इसी कारण से, कुछ लोगों ने 'होमर' नाम को ही 'अंधा' शब्द से व्युत्पन्न किया। उन्हें महाकाव्य कृतियों *इलियड* और *ओडिसी* का श्रेय दिया जाता है; पहली में ट्रोजन युद्ध के दसवें वर्ष (1184 ईसा पूर्व) की घटनाओं का वर्णन है, जो इकवन दिनों तक चला, 'अकिलीज़ का क्रोध' (युद्ध का नायक) और उसके बाद की घटनाओं का वर्णन करता है, जबकि दूसरा – *ओडिसी* – युद्ध के नायकों में से एक, इथाका द्वीप (भूमध्य सागर में) के राजा ओडिसियस की भटकन के विभिन्न प्रसंगों को बताता है, जो ट्रॉय के पतन से पहले की घटना है, और यह 40 दिनों की एक छोटी अवधि को कवर करता है।

[2270] पोसीडॉन – क्रोनस और रिया का पुत्र – ज्यूस का भाई था, जिसके साथ उसने लॉटरी द्वारा अपना अधिकार साझा किया। पोसीडॉन का क्षेत्र समुद्र था, जिससे वह अटूट रूप से जुड़ा हुआ था, साथ ही उसे हवाओं पर सर्वोच्च प्रभुत्व और भूकंप लाने की शक्ति भी प्राप्त थी, यही कारण है कि पोसीडॉन को 'पृथ्वी-कंपक' (Earth-Shaker) के नाम से जाना जाता था। पोसीडॉन को एक लंबी दाढ़ी वाले उदास बूढ़े आदमी के रूप में चित्रित किया जाता था, जिसके हाथ में एक त्रिशूल होता था।

क्रोधित उप-राज्यपाल ने आदेश दिया कि संत के कपड़े उतार दिए जाएँ, उन्हें नग्न जमीन पर लिटाया जाए, और उन्हें कोड़े मारे जाएँ, साथ ही कहा जाए: 'अपना नाम बताओ।' लेकिन संत मौन रहे, एक भी शब्द नहीं बोले। तब प्रोकॉन्सल ने उपस्थित लोगों से पवित्र शहीद के बारे में पूछना शुरू किया: वह कौन था और उसका नाम क्या था। जो लोग संत को जानते थे, उन्होंने प्रोकॉन्सल को बताया कि शहीद कुलीन वंशज था और उसका नाम कोद्रत था। तब प्रोकॉन्सल ने जल्लादों से कहा:

'इसे क्षमा करो और इसे आज़ाद कर दो!'

जब संत को इस प्रकार यातनाओं से मुक्त कर कपड़े पहना दिए गए, तो यातनाकर्ता ने उन्हें पास बुलाया और पूछा:

'तुमने अपने और हमारे साथ यह क्या किया, कि तुमने हमें अपने कुलीन वंश के बारे में नहीं बताया? क्योंकि, तुम्हारी कुलीन उत्पत्ति के बारे में हमारी अज्ञानता के कारण, हमने तुम्हें अपमानित किया है, जबकि तुमने स्वयं अपने और अपने परिवार पर कलंक लगाया है। और क्यों, अपने कुलीन वंश को तुच्छ समझकर, तुमने लापरवाह ईसाई धर्म अपना लिया?'

संत ने उत्तर दिया, "*मैं दुष्टता के तंबुओं में रहने के बजाय अपने परमेश्वर के घर में द्वारपाल बनना पसंद करूँगा*" (भजन संहिता 83:11)।

– 'मेरी बात मानो,' यातना देने वाले, यानी उप-राज्यपाल, ने कहना जारी रखा, 'और देवताओं को बलिदान चढ़ाओ, नहीं तो तुम एक दुष्ट की तरह मरोगे!' क्या तुमने राजा और उसके सभी सलाहकारों द्वारा जारी किए गए उस फरमान के बारे में नहीं सुना है, जिसके द्वारा उन्होंने यह आदेश दिया है कि पृथ्वी पर एक भी ईसाई जीवित न रहे, और उन्होंने कई अच्छे और उल्लेखनीय पुरुषों को ईसाई भ्रम से मुक्त किया है?

– *'धन्य है वह मनुष्य जो दुष्टों की योजना में नहीं चलता, न पापियों के मार्ग पर खड़ा होता है, न भ्रष्टों की सभा में बैठता है*' (भजन संहिता 1:1), जो इस व्यर्थ संसार के मोह में नहीं फँसे; परन्तु जो भटक गए हैं और जिन्होंने तुम्हारी सुनी है, वे पृथ्वी के मुख से हवा द्वारा उड़ाई गई धूल के समान नाश हो जाएँगे (भजन संहिता 1:4), और वास्तव में, वे तो पहले ही नाश हो चुके हैं!

संत कोड्रैटस को बहकाने के अपने प्रयास में, उप-राज्यपाल ने उनसे आँसुओं और आहों के साथ मोहक शब्दों में बात की; और अंत में उन्होंने कहा:

'कोड्रैटस, चूँकि तुम स्वेच्छा से मृत्यु का चुनाव कर रहे हो, तो मनुष्य के लिए इतनी प्रिय इस रोशनी से खुद को वंचित मत करो; इस मीठे जीवन से खुद को वंचित मत करो।'

ये शब्द कहते ही, प्रलोभक ने रूमाल से अपना चेहरा पोंछा।

'हे लालची कुत्ते!' पवित्र शहीद ने प्रोकुलेस से उत्तर दिया। 'साँप जैसी चालाकी और दिखावे के आँसुओं से मुझे धोखा देने का विचार भी मत करना! तुम किसी भी तरह मुझे—जो परमेश्वर का सेवक हूँ—फँसा नहीं पाओगे!'

कमांडर मैक्सिमियन, प्रोकोन्सुल पेरेनिया के साथ मौजूद था। बाद वाले ने संत से कहा:

'अकृतज्ञ मनुष्य! मेरे अति सम्मानित स्वामी, प्रोकॉन्सल, तुम पर दया करते हैं, फिर भी तुम उनका अपमान करते हो।'

संत ने उत्तर दिया:

'उसे, अगर वह विनाश के लिए पैदा हुआ है, तो अपने लिए और अपने जन्म के क्षण के लिए रोने दो; लेकिन आप हम पर दोष क्यों लगा रहे हैं? अगर प्रोकोन्सुल न्याय कर रहे हैं, तो आप कौन होते हैं उनके सामने अदालत में बोलने वाले? हमारे लिए एक न्यायाधीश काफी है; लेकिन अगर आप भी हम पर न्याय करना चाहते हैं, तो हमारे प्रभु यीशु मसीह आपको नष्ट करें!'

तब जेलर ने प्रोकोन्सुल से कहा:

'महाशय! मैं आपकी शक्ति की कसम खाता हूँ कि यदि आप उसे इतनी बेधड़क बोलने देंगे, तो वह आगे चलकर शासकों के खिलाफ अपमानजनक और धर्मनिंदा करने की हिम्मत करेगा, और हम सभी बड़े खतरे में पड़ जाएँगे!'

'सचमुच,' संत ने उत्तर दिया, 'पवित्र शास्त्र कहते हैं: "जाति जाति क्यों क्रोधित होती है, और लोग व्यर्थ क्यों षड्यंत्र करते हैं? पृथ्वी के राजा खड़े हो जाते हैं, और हाकिम प्रभु और उसके अभिषिक्त (मसीह) के विरुद्ध मिलकर योजना बनाते हैं' (भजन संहिता 2:1-2)। अभी भी, मसीह को मूर्ख मनुष्यों द्वारा दोषी ठहराया जाता है और अपने ही शरीर, अर्थात् मसीह के वफादार सेवकों के माध्यम से पीड़ा सहते हैं।

'इस नीच को नंगा करो,' उप-राज्यपाल ने अपने नौकरों से कहा, 'और उसे पहले से भी ज़ोर से पीटो, जब तक कि वह शाही कानूनों का पालन न करे और देवताओं की पूजा न करे!'

कोड़ों की दूसरी बौछार के दौरान, संत कोड्रैटस ने कहा:

'प्रभु यीशु मसीह, तेरा महिमा हो, कि अपने पवित्र नाम के लिए तूने मुझे, अपने पापी और अयोग्य दास को, कष्ट सहने के योग्य समझा है, ताकि मैं तेरे प्रिय दासों में गिना जा सकूँ। मैं आपको धन्यवाद देता हूँ और प्रार्थना करता हूँ: मुझे अपनी पवित्र आत्मा से भर दें, मुझे ज्ञान दें और मुझे अपना विश्वास अटूट बनाए रखने की शक्ति दें; मुझे अपनी बुद्धि से प्रकाशित करें, ताकि अधर्मी मुझ पर विजय न प्राप्त कर सकें। हे मेरे प्रभु! मेरी सहायता करें! अब आपकी सहायता का समय है, अब आपकी मध्यस्थता का समय है! मुझे बल प्रदान करें, ताकि आपके सेवक के द्वारा आपका पवित्र नाम महिमामय हो! मुझे अपने स्वर्गीय पिता के पास ले जाएँ और उन्हें यह कहते हुए मेरा परिचय कराएँ: 'और यह आपका सेवक है!' हे प्रभु यीशु मसीह! मुझे अपने इस कार्य को सफलतापूर्वक पूरा करने में सहायता करें!

इस प्रकार संत ने प्रार्थना की, जबकि उन्हें कोड़ों से पीटने वाले जल्लाद थकान के कारण पाँच बार बदल गए – इतना लंबा समय तक संत को कोड़ों से पीटा गया! क्रूर कोड़ों के प्रहार से, धन्य शहीद की पीठ पूरी कोहनी भर सूज गई[2271] , खून धाराओं की तरह बह रहा था और मांस उनकी हड्डियों से गिर रहा था।

"तो फिर," प्रोकन्सल ने पूछा, "क्या तुम हमारे देवताओं में विश्वास करते हो, कोड्रैट?"

– *'पृथ्वी के राजा खड़े होते हैं, और हाकिम प्रभु और उसके अभिषिक्त के विरुद्ध मिलकर सलाह करते हैं'* (भजन संहिता 2:2)।

'उनकी मूरतें चाँदी और सोने की हैं, मनुष्यों के हाथों की बनाई हुई,' संत ने उत्तर दिया। *'उनके मुँह हैं, पर वे बोलती नहीं... जो उन्हें बनाते हैं, और जो उन पर भरोसा करते हैं, वे भी उनके समान हो जाएँ'* (भजन संहिता 113:12–13)।

– 'हमसे इस अविश्वसनीय भाषा में बात करके,' प्रोकुले ने कहा, 'क्या तुम सोचते हो कि तुम देवताओं के विरुद्ध अपनी ईश्वरनिंदा छिपा सकते हो?'

'हे अंधे मूर्ख,' संत ने उत्तर दिया, 'तेरे लिए उज्ज्वल सत्य अंधकारमय प्रतीत होता है, जबकि अंधकार—इस युग की छल-कपट—तेरे लिए प्रकाश है! तब मेरी सुनो, जो पवित्र पुस्तकों के वचनों में तुमसे बात करता हूँ। यह तुम्हें ज्ञात हो कि मैं तुम्हारे देवताओं को बलिदान नहीं चढ़ाऊँगा, और न ही मैं राजा और उसके परामर्शदाताओं की आज्ञा का पालन करूँगा। अतः यदि तुम मुझे यातना देना चाहते हो, तो अपनी इच्छा पूरी करो और इस प्रकार मुझे स्वर्गीय राजा के समक्ष भेजने में शीघ्रता करो!

'मैं देवताओं की कसम खाता हूँ,' यातना देने वाले ने कहा, 'कि मैं तुम्हारे प्रति कोई दया नहीं दिखाऊँगा, बल्कि आश्चर्यजनक यातनाओं और एक क्रूर मृत्यु से मैं तुम्हारा नाश कर दूँगा, हे दुर्भाग्यशाली!'

सूर्यास्त तक, संत को उसके यातनाओं से मुक्त कर दिया गया था और, अन्य ईसाइयों के साथ, उसे कालकोठरी में ले जाया गया। इसके अलावा, प्रोकंसुल ने आदेश दिया कि शहीद की पीठ के नीचे छोटे-छोटे कील बिखेरे जाएँ, उसकी छाती पर एक विशाल पत्थर रखा जाए, उसके पैरों को बेड़ियों में जकड़ा जाए[2272] , और उसके पूरे शरीर को भारी लोहे की बेड़ियों में जकड़ा जाए। इस अवस्था में संत को कई दिनों तक छोड़ दिया गया: उन्होंने इतनी कठोर यातनाओं को बहादुरी से सहन किया कि एक मनुष्य के लिए उन्हें सहन करना और जीवित रहना असंभव है – फिर भी मसीह के सर्वशक्तिमान दायें हाथ ने पीड़ित को उनकी दिव्य शक्ति की महिमा करने के लिए शक्ति प्रदान की।

बहुत समय बीत जाने के बाद, उप-राज्यपाल पेरेंनीउस ने नीकेया[2273] के लिए प्रस्थान करने का निर्णय लिया और कैद किए गए ईसाइयों को, संत कोड्रैटस के साथ, अपने साथ लाने का आदेश दिया। निकाया में, उप-प्रांतपति ने एक

[2271] *एक* 'कोहनी' बांह की लंबाई को मापती थी, जिसे कोहनी से मध्यमा उंगली की नोक तक मापा जाता था। बाइबिल में एक 'कोहनी' 10-*12 वर्शॉक्स होती थी।*

[2272] यह नाम अपराधियों को भागने से रोकने के लिए डिज़ाइन किए गए एक उपकरण को संदर्भित करता था। यह इस प्रकार काम करता था। आमतौर पर, एक मोटी लकड़ी का टुकड़ा लिया जाता था, जिसे कुंडलों से आधा बाँट दिया जाता था, और दोनों हिस्सों में पैरों को रखने के लिए दो छोटे गड्ढे काट दिए जाते थे; एक बार अपराधी के पैर इसमें डाल दिए जाने के बाद, लकड़ी को जोड़ दिया जाता था, फिर दोनों सिरों पर छेद किए जाते थे और कुंडों को कसकर ठोक दिया जाता था; एक अधिक परिष्कृत संस्करण में, दोनों सिरों को तालों से सुरक्षित किया जाता था, जबकि अन्य समय में सिरों को बस रस्सियों से बांध दिया जाता था।

[2273] निकाया अंतीयक का प्रमुख शहर था, जहाँ पहली और सातवीं सार्वभौमिक परिषदें आयोजित की गईं: पहली 325 ईस्वी में महान कॉन्स्टेंटाइन के अधीन, जिसकी अध्यक्षता अंतीयक के आर्चबिशप यूस्टेथियस ने की थी; परिषद् ने एरियस की निंदा की, आठवें अनुच्छेद तक धर्म-सूत्र

मूर्तिपूजक मंदिर में राक्षसों को बलिदान अर्पित किया और ईसाइयों को भी वहाँ लाने का आदेश दिया, ताकि उन्हें भी ऐसा करने के लिए मजबूर किया जा सके। जब मसीह के सेवकों को राक्षसों के मंदिर में लाया गया, तो संत कोड्रैटस ने सैनिकों से विनती की कि उसे पहले उप-प्रांतपति से मिलने के लिए मंदिर में प्रवेश करने दें: मसीह की शक्ति से, सेंट कोड्रैटस, गंभीर यातनाएँ सहने के बाद भी, स्वस्थ और अक्षुण्ण थे; और, ईसाइयों के जुलूस के आगे चलते हुए, उनका चेहरा चमक रहा था, जिससे न केवल शारीरिक शक्ति और जोश बल्कि आध्यात्मिक साहस भी झलक रहा था। जब सेंट कोड्रैटस को दूसरों से पहले मंदिर में ले जाया गया, तो उन्होंने अपने यातनाकर्ता को चकित कर दिया। प्रोकॉन्सल भयभीत हो गया जब उसने देखा कि संत शारीरिक रूप से स्वस्थ थे और उनके चेहरे पर आनंद की चमक थी।

'देवताओं को बलिदान चढ़ाओ!' प्रोकॉन्सल ने आज्ञा दी।

'मैं यीशु मसीह का सेवक हूँ,' संत ने उत्तर दिया, 'और मैं स्वयं को उनके लिए बलिदान के रूप में अर्पित करता हूँ; लेकिन तुम्हारे देवता, जिन्होंने न तो स्वर्ग बनाया और न ही पृथ्वी, वे नष्ट हो जाएँ!

'सम्राट के कानूनों का पालन करो, मसीह के नहीं,' प्रोकंसुल ने कहना जारी रखा।

'मैं स्वर्ग के राजा के नियमों का पालन करता हूँ,' संत ने उत्तर दिया, 'न कि उन लोगों के मूर्खतापूर्ण आदेशों का जो परमेश्वर को नहीं जानते। हालाँकि, पवित्र शास्त्र हमें उनके लिए प्रार्थना करने की आज्ञा देता है, कि वे परिवर्तित हों और सत्य को समझें।'

प्रोकन्सल ने उत्तर दिया:

'यदि तुम राजा के लिए प्रार्थना करते हो, तो तुम्हें उसके आदेशों का पालन भी करना चाहिए, क्योंकि तुम्हारे धर्मग्रंथों में लिखा है: *"जो सीज़र का है उसे सीज़र को दो, और जो परमेश्वर का है उसे परमेश्वर को दो"* (मत्ती 22:21)।

'आप सही कहते हैं,' संत ने टिप्पणी की, 'कि जो सीज़र का है वह सीज़र को दिया जाना चाहिए, और जो परमेश्वर का है वह परमेश्वर को। देखो, मैंने राजा को वह दिया है जो उस समय उस पर बकाया था जब मैंने अपनी संपत्ति के लिए उसके सामने क्षतिपूर्ति की थी; लेकिन जहाँ तक परमेश्वर का सवाल है, मैं अभी भी उस पर बकाया विश्वास को अंत तक पूरा करने के लिए बाध्य हूँ।' पृथ्वी के राजा ने आदेश दिया है कि ईसाइयों को या तो मूर्तियों को बलिदान चढ़ाना होगा या मरना होगा। और हम मसीह—हमारे परमेश्वर—के लिए न केवल एक बार, बल्कि कई बार मरने को तैयार हैं!

'क्या तुम्हें एहसास है,' प्रोकन्सल ने पूछा, 'कितने ईसाइयों ने हमारे देवताओं को बलिदान चढ़ाया है, और क्या तुम सच में सोचते हो कि तुम उनसे कहीं बेहतर हो?'

संत कोड्रैटस ने उत्तर दिया:

'एक ऐसे व्यक्ति के रूप में जिसने मूर्तियों के आगे अपने घुटने नहीं टेके हैं, मैं वास्तव में उन सभी से कहीं बेहतर हूँ जो अपने सृष्टिकर्ता ईश्वर से मुँह मोड़ गए हैं। तो फिर, वे कहाँ हैं जिन्होंने आपके देवताओं को बलिदान चढ़ाया है? मुझे उनमें से कोई भी नहीं दिखता!'

प्रोकॉन्सल ने ऐसे लोगों को बुलाने का आदेश दिया। इस बीच संत ने बंधन खोलने का अनुरोध किया, क्योंकि तब तक उसे बाँधकर रखा गया था। प्रोकॉन्सल ने यह मानकर कि संत देवताओं की पूजा करना चाहता है, उसे खोलने का आदेश दिया। लेकिन वह तुरंत आगे बढ़ा, उस विशाल मूर्ति को पैरों से पकड़कर जमीन पर पटक दिया और उसे टुकड़े-टुकड़े कर दिया; फिर वह अन्य मूर्तियों की ओर दौड़ा, लेकिन सैनिकों और पुरोहितों ने उसे रोक लिया। तब प्रोकॉन्सल, क्रोधित होकर, संत को मंदिर की दीवारों के बाहर लटकाने और उसके पूरे शरीर को लोहे के तेज टुकड़े से खुरचने का आदेश दिया। इस बीच, जो लोग ईसाई धर्म से भटक गए थे, वे पास आए, और संत कोद्रत ने अपने कष्ट सहते हुए उनसे बात की।

'दुर्भाग्यों! इतना कुछ सहने के बाद, क्या तुमने इतनी जल्दी मसीह—प्रभु—का त्याग कर दिया और स्वेच्छा से खुद को शैतान के हवाले कर दिया? क्या तुम मृतकों के पुनरुत्थान, परमेश्वर के न्याय और नरक की गहराइयों पर विश्वास नहीं करते थे? क्या तुमने उस न बुझने वाली आग और उस कीड़े के बारे में नहीं सुना जो कभी नहीं मरता?' हमारे उद्धारकर्ता यीशु मसीह के आने के उस महिमामय और महान दिन पर आप क्या उत्तर देंगे, जो जीवितों और मरे हुओं का न्याय करेंगे? अपने मन की आँखें खोलो और देखो कि तुम किस से गिर गए हो? एक क्षणिक और निरर्थक जीवन के लिए, तुमने, हे ,

---

तैयार किया, ईस्टर की तारीख स्थापित की, रोम, अलेक्जेंड्रिया और एंटिओक के बिशपों की सर्वोच्चता की पुष्टि की, और 20 चर्च संबंधी नियम जारी किए; सातवीं सार्वभौमिक परिषद 787 में सम्राज्ञी आइरीन के अधीन, कॉन्स्टेंटिनोपल के पैट्रिआर्क तारासियस की अध्यक्षता में आयोजित की गई थी; इसने प्रतिमा-भंजकों की निंदा की और 22 कैननों में चर्च व्यवस्था की पुष्टि की।

शाश्वत और स्वर्गीय राज्य को त्याग दिया है। परम मधुर और दयालु प्रभु की अवहेलना करके, तुमने स्वयं को शैतान की दासता में सौंप दिया है, वह नरिर्थक सेवक, जो यदि किसी पर हावी हो जाता है, तो उसे गिरा देता है और मार डालता है। जब हमारे प्रभु आएँगे, तो वे शैतान को अटूट जंजीरों से बाँधकर उसे उन लोगों के साथ आग की खाई में फेंक देंगे जिन्होंने स्वयं को उसकी दासता में सौंप दिया है। तब यह जानो कि तुमने क्या किया है! क्षणिक यातना के भय से, तुमने स्वयं को अनंतकाल की यातना के हवाले कर दिया है। आप स्वयं भविष्य देखेंगे जब आप यीशु मसीह के धर्मी न्याय के सामने खड़े होंगे, जो प्रत्येक व्यक्ति को उनके कर्मों के अनुसार पुरस्कृत करेंगे। क्या तुमने पवित्र सुसमाचार में लिखे प्रभु के वचन नहीं सुने: *'और जो देह को तो मार डालते हैं, पर आत्मा को नहीं मार सकते, उनसे मत डर; बल्कि उस से डर, जो आत्मा और देह दोनों को गेहन्ना (अग्नि की खाई) में नाश कर सकता है'* (मत्ती 10:28)?[2274]

जब संत ने ये शब्द कहे, तो पतित लोग आँसू बहाते हुए ऊँचे स्वर में चिल्ला उठे:

'हे परमेश्वर के सेवक, हम यातना से डरते थे और, बोलहीन पशुओं की तरह, भटक गए थे; खोए हुए भेड़ों की तरह, हम भेड़ियों का शिकार हो गए और टुकड़े-टुकड़े हो गए। हम अपने पापों के दास बन गए थे, और अब, थोड़ी देर के लिए यहाँ जीने की इच्छा करके, हम आने वाले अनंत जीवन से मर गए हैं। हम नहीं जानते कि क्या करें, हम दीन प्राणियों!'

उनके आँसू देखकर, धन्य कोद्रत आनंदित हो गए और कहा:

'हे भाइयो! हौसला रखो और निराश न हो! प्रभु मसीह दयालु हैं – पश्चाताप और आँसुओं के साथ उनके सामने स्वयं को नम्र करो, और मसीह के पक्ष में खुलकर खड़े हो जाओ, ताकि तुम में से प्रत्येक को उनके लहू से अपने पापों से शुद्ध होने का अवसर मिल सके।'

और इस प्रकार, ज़मीन पर गिर पड़कर, जो लोग इतने लंबे समय से मसीह से भटक गए थे, वे कड़वे आँसू बहाने लगे, अपने सिर पर राख डालते हुए और पत्थरों से अपनी छाती पीटते हुए। उनके रोने और विलाप से इतना शोर मच गया कि नीकेया शहर के सभी निवासी घटनास्थल पर जमा हो गए और विश्वास से भटक जाने पर उनके हार्दिक पश्चाताप को देखकर चकित रह गए।

यह शोर सुनकर, उप-राज्यपाल मूर्तिपूजक मंदिर से बाहर आए और जो हो रहा था, उसे देखकर आदेश दिया कि पवित्र शहीद को और भी बुरी तरह कोड़ा मारा जाए और उनकी कोड़े मारी गई पसलियों को गर्म मोमबत्तियों से जलाया जाए। हालाँकि, संत ने पश्चातापी लोगों के लिए ईश्वर से लंबे समय तक और उत्साहपूर्वक प्रार्थना की, कि उनका धर्मांतरण स्वीकार किया जाए। जब, अपनी प्रार्थना के अंत में, उन्होंने कहा: 'हे प्रभु, यीशु मसीह, मेरी आत्मा उनके बदले में दी जाए—बस उन पर दया करो,' तो यातना देने वाले जल्लाद तुरंत अपनी ताकत खो बैठे और मृतक की तरह जमीन पर गिर पड़े। इस बीच, एक उज्ज्वल बादल संत कोड्रैटस और वहाँ खड़े सभी बंधे और पश्चातापी ईसाइयों पर उतर आया। उप-राज्यपाल और उनके सलाहकार, सभी विधर्मीयों के साथ, अंधकार में लिपट गए; उन पर आतंक छा गया, और वे डर से कांपने लगे, यह मानकर कि शहर ढहने वाला है।

लंबी खामोशी के बाद, विश्वासियों ने ऊपर से पवित्र स्वर्गदूतों को गाते हुए सुना, जो परमेश्वर की स्तुति और महिमा कर रहे थे। दो घंटे बीत जाने के बाद, अंधकार छंटने लगा, और मूर्तिपूजकों ने, संतों की ओर अपनी दृष्टि मोड़कर, स्वर्गीय प्रकाश देखना शुरू कर दिया। जैसे ही उप-राज्यपाल का आपा शांत हुआ, उसने तुरंत उन सभी को गिरफ्तार करने का आदेश दिया, जो शहीद के उत्साहवर्धक शब्दों से प्रेरित होकर, पश्चाताप में एक बार फिर मसीह की ओर मुड़े थे। अदालत में मौजूद अन्य ईसाइयों के साथ उन्हें बाँधने के बाद, उसने उन्हें जेल भेजने का आदेश दिया। उसी समय, उसने संत कोड्रैटस को पेड़ से खोल दिया और एक बार फिर उसे उसकी पुरानी बेड़ियों में जकड़ दिया।

अगली सुबह, उप-प्रांतपाल पेरेनियस ने अदालत की फिर से बैठक बुलाई और सेंट कोड्रैटस को छोड़कर, कालकोठरी में बंद सभी ईसाइयों को बाहर लाने का आदेश दिया। पूरे दिन, उसने उनसे पूछताछ की, और उन्हें घृणित बलिदान चढ़ाने के लिए मनाने हेतु चापलूसी और यातना, दोनों का इस्तेमाल किया। यह देखते हुए कि ईसाई अपने विश्वास की स्वीकारोक्ति में अडिग और अटल थे, पेरेंनिअस ने कई पिटाई के बाद, उनमें से प्रत्येक को उनके गृहनगर ले जाकर

[2274] गेहेन्ना अनंतकालिक यातना का स्थान है। इसका नाम हिब्रू शब्दों से लिया गया है जिसका अर्थ यरूशलेम के पास हिन्नोम की घाटी है, जहाँ मोलक के सम्मान में बच्चों को जलाया जाता था (3 राजा 11:17; 4 राजा 16:3-4)। जब योशिय्याह ने इस भयानक बलिदान को समाप्त कर दिया (4 राजा 23:10), तो फांसी दिए गए दुष्टों के शव, सड़ी-गली लाशें और हर तरह की गंदगी हिन्नोम की घाटी में फेंक दी जाती थीं, जहाँ उन्हें जला दिया जाता था।

वहाँ जलाने का आदेश दिया। और सभी पवित्र शहीदों ने परमेश्वर की महिमा करते हुए, बड़ी प्रसन्नता से प्रस्थान किया। और इस प्रकार उनमें से प्रत्येक ने अपने-अपने स्वदेश में जलकर प्राण दे दिए, और स्वर्गीय स्वदेश को प्राप्त किया।

इसके बाद, उप-राज्यपाल नकिीया से अपामिया के लिए रवाना हुआ[2275] , और अपने साथ संत कोड्रैटस को ले गया। वह ईसाइयों को पकड़ने और उन्हें मूर्तियों को बलिदान चढ़ाने के लिए मजबूर करने के उद्देश्य से यहाँ भी आया था। उसे सम्राट डेसियस द्वारा शहरों और प्रांतों का दौरा करने, और उन ईसाइयों को यातना और मृत्यु देने का आदेश दिया गया था जो देवताओं की पूजा नहीं करना चाहते थे। अपामेआ पहुँचने पर, प्रोकोन्सल पेरेंनीउस मंदिर में गया और मूर्तियों की पूजा की। वहाँ संत कोड्रैटस शहीद को लाने के बाद, उसने उनसे पूछा:

'क्या तुम, हे दुष्ट जादूगर, देवताओं को बलिदान दोगे, या नहीं?'

एक साहसी भावना के साथ, संत कोड्रैटस ने उत्तर दिया:

'अपने पिता शैतान को एक चालाक जादूगर कहो, क्योंकि वह वास्तव में वही है। लेकिन मैं एक ईसाई हूँ और न तो जादू-टोना जानता हूँ और न ही चालाकी, और मैं राक्षसों को बलिदान नहीं चढ़ाऊँगा!'

तब उप-प्रांतपाल ने अपने मित्रों से कहा:

'मैं नहीं जानता कि मैं इस दुर्भाग्यपूर्ण ईसाई पर क्या यातना करूँ!'

वे चुप हो गए, क्योंकि उन्होंने देखा कि शहीद के पास अब शरीर नहीं था, बल्कि वह केवल हड्डियों का ढाँचा था, उसका पूरा शरीर टुकड़ों में फाड़कर खुरच दिया गया था। यातना देने वाले ने आदेश दिया कि संत को एक बोरी में डाल दिया जाए और उसके साथ सभी प्रकार के रेंगने वाले जीव डाल दिए जाएँ, और फिर उसे एक गहरे, दलदली गड्ढे में फेंक दिया जाए, और वैसा ही किया गया। अगली सुबह, यातना देने वाले ने, यह मानकर कि संत पहले ही मर चुके हैं, उन्हें गड्ढे से बाहर खींचने का आदेश दिया, और सभी को आश्चर्य हुआ कि संत को कोई चोट नहीं लगी थी। शहीद ने स्वर्ग की ओर अपनी आँखें उठाकर कहा:

'मैं तुझसे धन्यवाद करता हूँ, हे प्रभु यीशु मसीह, क्योंकि शिशुओं के तीरों (उनके मन में) ने स्वयं उनके लिए घाव बना दिए हैं, और उनकी शक्ति क्षीण हो गई है। परन्तु तूने मुझे बल दिया है और मुझे उन्हें लज्जित करने की शक्ति प्रदान की है, तेरे पवित्र नाम की महिमा के लिए।'

तब संत ने प्रोकॉन्सल से कहा:

'अरे मूर्ख! क्या तू नहीं देखता कि तेरी चालाकी से कुछ भी हासिल नहीं हुआ? मुझ पर इससे भी बुरा कुछ कर; इसे जल्दी कर, व्यर्थ समय बर्बाद किए बिना।'

'दुर्भाग्यशाली मनुष्य,' राज्यपाल ने क्रोध में उत्तर दिया, 'मैं तुम्हें पूरे रास्ते तक यातना दूँगा, भले ही तुम अपनी जादू-टोने पर भरोसा रखो।'

तब पेरेनियस पवित्र शहीद को अपने साथ लेकर केसरिया के लिए रवाना हुआ; वहाँ, मंदिर में प्रथागत बलिदान करते समय, उसने संत को अपने पास बुलाया और कहा:

'तुमने हर तरह की यातनाएँ काफी झेल ली हैं – अब आओ, आखिरकार, और देवताओं को बलिदान चढ़ाओ!'

'तुमने,' संत ने उत्तर दिया, 'मेरे यातनाओं से खिलवाड़ किया है, और मैं सचमुच हैरान था कि तुम मुझे ये यातनाएँ देते-देते पहले ही थक गए हो। जहाँ तक मेरी बात है, इन यातनाओं को सहते हुए मैं थकता नहीं हूँ, बल्कि मैं अपने ईश्वर के लिए इन्हीं—और इससे भी भयानक यातनाओं—को सहना चाहता हूँ।'

तब, अपने क्रोध में, उप-प्रांतपति ने फिर से आदेश दिया कि संत को यातना-चबूतरे पर लिटाकर, उसके नग्न शरीर पर चाबुक से निर्दयतापूर्वक पीटा जाए। हालाँकि, केवल उसकी हड्डियाँ ही टकराईं, क्योंकि उन पर कोई मांस नहीं था। पीटे जाने के दौरान, संत ने गाया: *'जवानी से ही कई लोगों ने मेरा पीछा किया है, पर वे मुझ पर हावी नहीं हुए। मेरी पीठ पर हलवालों ने हल जोता है, उन्होंने अपनी लंबी खोरियाँ खींची हैं* (भजन संहिता 128:2–3)। इस बीच, उप-प्रांतपति जिल्लादों पर चिल्लाया:

'और ज़ोर से मारो, क्योंकि उसे कोई दर्द नहीं होता।'

अपने यातना देने वाले की ओर मुड़कर, संत ने कहा:

'मारो, मेरे विनम्र शरीर को मारो, क्योंकि जब यह यातना सहता है, तो मेरी आत्मा मज़बूत होती है!'

[2275] अपामेया – एशिया माइनर में फ्राइजिया और पिसीडिया की सीमाओं पर स्थित एक शहर।

'दुर्भाग्यशाली मनुष्य,' प्रोकन्सल ने कहा, 'मुझे वशि्वास है कि तुझमें एक दुष्ट दानव प्रवेश कर गया है!'

'मैं न केवल कसिी दानव के वश में नहीं हूँ,' संत ने उत्तर दयिा, 'बल्कि, इसके वपिरीत, मुझमें स्वयं आपके पति शैतान पर अधकिार है, और न केवल उस पर ही, बल्कि उसके सभी सेवकों पर भी; और, मेरे मसीह की कृपा से, मैं उसकी पूरी सेना को आज्ञा देता हूँ: पाताल लोक की सारी शक्ति मेरे सामने डरती और कांपती है, क्योंकि वह मुझ पर यीशु मसीह के भयानक और अजेय चहि्न और मुझ में नविास करने वाली उनकी कृपा को देखती है।

तब, एक संक्षपि्त वरिाम के बाद, संत ने उद्घोष कयिा:

'पति और पुत्र और पवत्रि आत्मा की महमिा, अब और सदा और युगानुयुग।'

केसरयिा के उपस्थति लोगों ने 'आमेन!' की पुकार लगाई, क्योंकि भीड़ में कई ईसाई थे। तब, क्रोध के आवेश में, उप-राज्यपाल ने आदेश दयिा कि भीड़ में से दो पुरुषों को, जो अपनी कुलीनता के लिए जाने जाते थे, पकड़ लयिा जाए; उसने आज्ञा दी कि उन्हें नग्न कर दयिा जाए, तुरंत यातना स्थल पर फांसी दे दी जाए, और उनके शरीरों को पीटा और छील दयिा जाए। संत कोड्रैटस को छोड़कर, जल्लादों ने उन दो ईसाइयों को यातना देना शुरू कर दयिा, जनिके नाम सटोरनि और रूफनि थे। उन्हें तब तक यातना दी गई जब तक कि उनके आंतड़े बाहर नकिलने को नहीं हो गए। यातना के दौरान, सटोरनि और रूफनि ने संत कोड्रैटस और उपस्थति सभी भाइयों से वनिती की कि वे उनके लिए प्रभु से प्रार्थना करें। संत कोद्रत ने ईश्वर से प्रार्थना करते हुए कहा:

'हे प्रभु यीशु मसीह, अदृश्य पति के पुत्र! अपने सेवकों को सहायता भेजो; दीनों पर कृपा दृष्टि रखो और उन पर दया करो! अपने पीड़तिों को धैर्य और अजेय शक्ति प्रदान करो, ताकि अंत तक सहन करके, वे वजिय प्राप्त करें और उनके वरिुद्ध उठने वाले शत्रु को लज्जति करें!'

बहुत समय बीत गया – पवत्रि शहीद चुप रहे, क्योंकि वे अपनी तीव्र पीड़ा के कारण बोल नहीं सकते थे। अंत में, यातना देने वाले ने आदेश दयिा कि उन्हें खोल दयिा जाए और उनके सरि काट दिए जाएं। इस प्रकार, दो पवत्रि शहीद, सटोरनि और रुफनि, स्वर्ग में प्रभु मसीह के पास गए, जो दो स्वभावों में वद्यिमान हैं, जनिके लिए उन्होंने पीड़ा सहन की थी।

इसके बाद, प्रोकोन्सल पेरेंनीउस, सीज़रयिा छोड़कर अपोलोनयिा[2276] आए, जहाँ भी वे जाते थे संत कोड्रैटस को अपने साथ लेते और अन्य ईसाइयों को भी पकड़कर उन्हें यातनाएँ देते थे। अपोलो के मंदरि में प्रवेश करते ही पेरेंनीउस ने शहीद से कहा:

'देवताओं की पूजा करो, और तुम ठीक हो जाओगे: मैं चकित्सिकों को तुम्हारी देखभाल करने का आदेश दूँगा। तो आओ, देवता एस्क्लेपयिस[2277] के सामने, और वह तुम्हें ठीक कर देगा। देवताओं की महमिा से डरो: लगभग-महान अपोलो[2278] , और हेराक्लेस[2279] , और सभी देवताओं के राजा ज़ीउस[2280] , गौरवशाली एरसि[2281] , और भयानक पोसीडॉन। क्या तुमने कभी समुद्र पार कसिी जहाज पर यात्रा नहीं की और देवता की भयंकर शक्ति का साक्षात्कार नहीं कयिा?

[2276] अपोल्लोनयिा – इल्यूरयिा में एक शहर, जो समुद्र से बहुत दूर नहीं है, रोमन शासन के दौरान वज्ञिान के उत्कर्ष के लिए प्रसद्धि था।

[2277] एस्कलेपयिस या एस्क्युलैपयिस – चकित्सिा के देवता – अपोलो और थसिोपयिा के राजा की बेटी कोरोनसि के पुत्र थे। उन्हें एक सम्मानति, दाढ़ी वाले व्यक्ति के रूप में चत्रिति कयिा जाता था, जनिका चेहरा गरमिामय और दयालु भाव वाला होता था, वे सफेद वस्त्र पहने होते थे और उनके हाथ में एक लाठी होती थी जसिके चारों ओर एक साँप लपिटा होता था। कभी-कभी, साँप के अलावा, एस्कुलेपयिस को एक मुर्गे के साथ भी चत्रिति कयिा जाता था, जसिे इस देवता को समर्पति कयिा गया था।

[2278] अपोलो – ज्यूस और लेटो का पुत्र, आर्टेमसि का भाई – प्रकाश का देवता था; प्राचीन लोगों के वशि्वासों ने अपोलो को शाश्वत और अपरविर्तनीय यौवन और शक्ति प्रदान की, इस प्रकार प्रकाश और गर्माहट की सदैव युवा रहने वाली शक्ति का प्रतीक माना जाता था। उन्हें एक सुंदर, मजबूत युवक के रूप में चत्रिति कयिा जाता था, जसिके हाथों में एक धनुष या एक वक्राकार गड़रयि की लाठी होती थी, और उसकी पीठ पर तीरों की टोकरी होती थी। कभी-कभी उसके हाथ में एक लीर (एक वाद्य यंत्र) होती थी। उसके पैर या तो नंगे होते थे या सजावटी सैंडल पहने होते थे, और उसके सरि पर लौरल का मुकुट होता था।

[2279] हेराक्लेस या हरक्यूलसि – सबसे प्रसद्धि ग्रीक नायक, ज्यूस और राजा एम्फट्रियिन की पत्नी अल्केमेनी का पुत्र। उसे आमतौर पर जीवन के उत्कर्ष में, असाधारण रूप से सुगठति, मजबूत आदमी के रूप में चत्रिति कयिा जाता था, जो नग्न होता था या शेर की खाल पहने होता था, जसिके घुँघराले बाल और हाथ में एक भारी गदा होती थी।

[2280] ज्यूस स्वर्ग का देवता है। उनके कई उपनाम थे। वह क्रोनस के पुत्र थे, जो देवताओं में सबसे बड़े थे। उन्हें सहिासन पर बैठे, अपने हाथों में एजसि (एक ढाल) पकड़े हुए चत्रिति कयिा जाता था।

[2281] एरसि - ज्यूस और हेरा का पुत्र; उथल-पुथल और समुद्र के तूफानों का देवता, युद्ध, लड़ाई और संघर्ष का भयानक देवता, जो हत्या में आनंद लेता है और खून में मग्न रहता है। उसे एक युवा व्यक्ति के रूप में चत्रिति कयिा जाता था जसिके हाथों में एक ढाल और एक भाला होता था।

सूर्य को भी प्रणाम करो, जो स्वर्ग से पृथ्वी पर प्रकाशित होता है। क्या वह मुरझा गया है, और क्या अब वह स्वर्ग में नहीं है?

संत कोड्रैट ने उत्तर दिया:

मैं सच्चे परमेश्वर पिता, उनके एकमात्र पुत्र और पवित्र आत्मा की आराधना करता हूँ, और मैं उनकी सामर्थ्य, महिमा और अगोचर महिमा के सामने काँपता हूँ। मैं हमेशा उसकी अनुपम शक्ति और सर्वशक्तिमानता की स्तुति और महिमा करता हूँ; परन्तु मैं निर्जीव मूर्तियों के आगे नहीं झुकूँगा, और न ही मानव हाथों के कामों का सम्मान करूँगा: मैं न तो राक्षसों से डरता हूँ और न ही तुमसे, जिनके पास क्षणिक शक्ति है। कुछ ही दिनों में मैं अपने ईश्वर के पास जाऊँगा, जबकि तुम हमेशा के लिए कड़वाहट से कराहोगे, क्योंकि तुमने उस ईश्वर को जानने से इनकार कर दिया जिसने तुम्हें सच्चा जीवन दिया। शैतान के पुत्र, दुष्ट का भाई, दुष्ट राक्षसों का साथी, अपनी गूंगीपन में सूअरों से भी बदतर, पागल कुत्ते, खून का प्यासा जानवर, साँप, जो मंदिरों में जानवरों से भी अधिक लालच के साथ घृणित मांस खाता है। क्या तुझे अपने पागलपन पर शर्म नहीं आती, और क्या तुझे अपनी अंधापन का एहसास नहीं है? तुम देवताओं की बलि के लिए मवेशी और पक्षियों की बलि चढ़ाते हो—क्या तुम्हारे देवता, जो निर्जीव हैं, सच में भूख महसूस करते हैं? मूर्ति के मुँह में भोजन लाओ—क्या वह उसका स्वाद चख पाएगी? और अगर आपके देवता बलिदान की माँग करते हैं, तो पूछिए—और उनका जवाब सुनिए—आपके किस देवता को, चाहे वह पत्थर का हो या लकड़ी का, अपनी खातिर एक बकरी, एक बैल या एक मुर्गी की बलि चढ़ाई जाना चाहिए? हे विनाश के भाड़ो! तुम खुद विनाश की खाई में गिर चुके हो और हमें भी उसमें धकेलना चाहते हो।

इन शब्दों से उन्मत्त क्रोध में आकर उप-प्रांतपाल ने आदेश दिया कि संत के घावों पर नमक मिला हुआ सिरका डाला जाए, उन्हें रस्सियों से रगड़ा जाए, और उसकी पसलियों पर लाल-गरम लोहा रखा जाए। और फिर, जैसे ही दिन समाप्त होने को था, यातना देने वाले ने पीड़ित को एक कालकोठरी में फेंकने का आदेश दिया। अगली सुबह, उप-प्रांतपाल अपोलोनिया से निकलकर हेलस्पोंट[2282] की ओर रवाना हो गया, और उसके पीछे बंधे हुए और पकड़े गए ईसाइयों को ले जा रहा था; उनके साथ वे पवित्र शहीद कोड्रैटस को भी ले जा रहे थे, क्योंकि वह अपने सहन किए गए क्रूर यातनाओं के कारण अपने पैरों को भी हिला नहीं सकता था। रंटोक नामक नदी पार करने के बाद, उप-प्रांतपाल का उस क्षेत्र के राज्यपाल ने स्वागत किया। आसपास के गांवों से भी ईसाइयों की बड़ी भीड़ इकट्ठी हो गई थी, मानो वे प्रोकोन्सुल पेरेनियस का स्वागत करने आए हों, लेकिन वास्तव में वे पवित्र महान शहीद कोड्रैटस को देखने और सम्मानित करने आए थे, जिनकी ख्याति पूरे एशिया और संपूर्ण विश्व में फैल चुकी थी। प्रोकोन्सुल, प्रांतीय राज्यपाल के साथ रास्ते में मिले गाँव में प्रवेश करके, वहाँ रात बिताई; भोर होते ही, उसने राक्षसों को बलिदान चढ़ाने की इच्छा व्यक्त की, क्योंकि गाँव में कई मूर्तियाँ थीं – जबकि, बेशक, वह ईसाइयों को भी बलिदान चढ़ाने के लिए मजबूर करना चाहता था। सबसे पहले, उप-प्रांतपाल ने संत कोड्रैटस को अपने सामने लाने का आदेश दिया, और चूँकि उसमें चलने की ताकत नहीं थी, उसे रथ में लाया गया। लेकिन यद्यपि संत कोड्रैटस शारीरिक रूप से कमजोर थे, फिर भी वे अपने उद्धारकर्ता ईश्वर में प्रसन्न, मुस्कुराते और आनंदित दिखाई दिए। वहाँ पूरी भीड़ जमा हो गई थी, जो मसीह के शहीद की पीड़ा देखने के लिए उत्सुक थी। उप-राज्यपाल ने कोड्रैटस से पूछा:

'कोड्रैटस! क्या तुमने देवताओं को स्वीकार करने का निर्णय लिया है, या तुम अभी भी अपनी पागलपन पर अड़े हो?'

संत ने ऊँचे स्वर में उत्तर दिया:

'जन्म से ही मुझे सच्चे ईश्वर, मसीह को जानना सिखाया गया है; मैं अपनी माँ के गर्भ से ही ईसाई हूँ, और मैं उस ईश्वर के अलावा किसी और को नहीं जानता, जिस पर मैं बचपन से ही विश्वास करता आया हूँ!'

तब उप-राज्यपाल ने एक विशाल चिता जलाने, उस पर एक लोहे का पलंग रखने, और जब वह लाल-गरम हो जाए, तो शहीद को उस पर लिटा देने का आदेश दिया।

संत ने कहा, 'किसी को मुझे इस बिस्तर पर ले जाकर लिटाने की ज़रूरत नहीं है – मैं खुद इस पर चढ़ जाऊँगा!'

और इस प्रकार, मसीह की शक्ति से सुसज्जित, वह स्वयं आग में चला गया और, क्रूस का चिह्न बनाते हुए, लाल-गरम बिस्तर पर लेट गया और उस पर ऐसे विश्राम किया जैसे कोई नरम बिस्तर हो, और आग से उसे कोई भी हानि

[2282] मार्मारा सागर को ईजियन सागर से जोड़ने वाला जलडमरूमध्य।

नहीं हुई। आग, अपनी स्वाभाविक शक्ति खोकर, परमेश्वर के सेवक की सेवा करने लगी, और उसने पवित्र शहीद के अत्यधिक परेशान और अत्यधिक पीड़ित शरीर को शांत करने के लिए केवल उतनी ही गर्मी प्रदान की, जितनी आवश्यक थी। इस बीच, शैतान के सेवक बिस्तर के नीचे तारकोल, तेल और सूती रुआँ रख रहे थे, जबकि संत गा रहे थे: *'हे परमेश्वर, मुझे बचाने के लिए शीघ्र करो; हे प्रभु, मेरी सहायता के लिए शीघ्र करो। जो मेरे प्राण के खोजी हैं, वे लज्जित और कलंकित हों'* (भजन संहिता 69:2)। अपने यातना देने वाले का मज़ाक उड़ाते हुए, उन्होंने कहा:

'तुम्हारी आग ठंडी है, और इस बिस्तर का लोहा तुम्हारे कठोर हृदय से कहीं अधिक नरम है। तुमने बहुत अच्छा किया कि तुमने मुझे, जो अपनी यात्रा से थका हुआ है, इस नरम बिस्तर पर आराम करने का आदेश दिया!'

ये शब्द कहकर, संत बिस्तर पर ऐसे पलटे मानो वह एक नरम गद्दा हो। बहुत समय बीत गया, फिर भी पवित्र शहीद आग में जीवित, स्वस्थ और सुरक्षित रहे; तब यातना देने वाले ने, क्रोध से आग-बबूला होकर, आदेश दिया कि संत को बिस्तर से उतार लिया जाए और उनके सिर को बस्ती के बाहर काट दिया जाए। आग से अपने पैरों पर बाहर निकलने के बाद, संत को अब रथ या परिचारकों की आवश्यकता नहीं थी, बल्कि वह अपने आप फांसी के स्थान पर चले गए, जाते हुए गाते हुए:

– *'धन्य है प्रभु, जिसने हमें उनके दाँतों का शिकार नहीं बनाया'* (भजन संहिता 123:6)।

उनका अनुसरण कर रहे कुछ भाइयों ने भी उनके साथ गाया। और, ईश्वर का धन्यवाद करने के बाद, उन्होंने अपना सम्मानित सिर तलवार के नीचे झुका दिया।

इस प्रकार मसीह के पवित्र महान शहीद, कोड्रैटस की मृत्यु हो गई, जिन्हें मार्च के दसवें दिन तलवार से सिर कलम किया गया था, जिस दिन उन्हें अपने साथियों और अपने ही नाम के मित्र के साथ शहादत का ताज पहनाया गया, कोरिथ के कोड्रैटस, जिन्हें ग्रीकों और रोमनों पर वैलेरियन के शासनकाल के दौरान, और मसीहियों पर हमारे प्रभु यीशु मसीह के शाश्वत राज्य के अधीन, शहादत का मुकुट पहनाया गया, जिनके लिए महिमा और सामर्थ्य हो, पिता और पवित्र आत्मा के साथ, अब और हमेशा और युगानुयुग। आमीन।

हमारी पूजनीय माता अनास्तासिया की स्मृति, जिनका नाम बदलकर अनास्तासियिस खस्रा रखा गया था

10 मार्च को स्मरणोत्सव

सम्राट जस्टिनियिन महान के शासनकाल में[2283] , कॉन्स्टेंटिनोपल में एक धर्मपरायण और ईश्वर-भयभीत विधवा रहती थी, जो अमीर और कुलीन माता-पिता की बेटी थी, और शाही महल में सबसे प्रमुख कुलीन महिला थी, जिसका नाम अनास्तासिया था[2284] । ईश्वर का भय अपने हृदय में रखकर, उसने दृढ़ता और लगन से ईश्वर की आज्ञाओं का पालन किया। अनास्तासिया, उत्कृष्ट शारीरिक सौंदर्य की धनी, अपनी आत्मा की सुंदरता के कारण और भी विशिष्ट थी: वह इतनी नम्र और सदाचारी थी कि जो कोई भी उसके जीवन को जानता था, उसे एक आदर्श मानता था, और कई लोग उसके गुणों का अनुकरण करने का प्रयास करते थे। ज़ार स्वयं अनास्तासिया का बहुत सम्मान करते थे; लेकिन शैतान—जो कलह बोता है, धर्मात्माओं से ईर्ष्या करता है, मानव जाति के खिलाफ लगातार युद्ध छेड़ता है, और लोगों के बीच विवाद खड़ा करता है—उसने धन्य अनास्तासिया के प्रति भी घृणित शत्रुता पैदा कर दी। उसने रानी थियोडोरा के मन में संन्यासिनी के प्रति घृणा भर दी[2285] , और बाद वाली ने ईश्वर की निर्दोष सेविका के प्रति क्रोध पालना शुरू कर दिया। जब उन्होंने अपने प्रति अनुकूल एक व्यक्ति से यह सुना, और दिव्य अंतर्दृष्टि से परिपूर्ण होकर, अनास्तासिया ने अपने विचारों को एकत्रित किया, और अपने आप से इस प्रकार तर्क किया:

[2283] संत अनास्तासिया की मृत्यु 567 में हुई। सम्राट जस्टिनियिन ने 527 से 565 तक शासन किया; उनके शासनकाल के दौरान, मोनोफिसाइट आंदोलनों को समाप्त करने के उद्देश्य से 553 में कॉन्स्टेंटिनोपल में पाँचवीं सार्वभौमिक परिषद बुलाई गई थी।

[2284] पेट्रिसियिन – एक पेट्रिसियिन की पत्नी; यह शब्द रोम में कुलीन जन्म के लोगों के लिए इस्तेमाल किया जाता था। यह उपाधि बहुत सम्मान की बात थी और इसे प्रसिद्ध पुरुषों की पत्नियों, जैसे कि बेलीसैरियस की पत्नी एंटोनिना, या उनके अपने विशेष गुणों के लिए प्रदान किया जाता था।

[2285] जस्टिनियिन की पत्नी थियोडोरा – उनके प्रभाव के कारण ही निका विद्रोह, जिसने जस्टिनियिन को सिंहासन से हटाने की धमकी दी थी, को दबा दिया गया था।

'अनास्तासयिा! तुम्हें अपनी आत्मा को बचाना चाहिए, इस वर्तमान कष्ट को एक समयोचित अवसर के रूप में सदुपयोग करना चाहिए। सम्राज्ञी को भी अनुचित द्वेष के पाप से मुक्त दिलाओ, और अपने लिए भी स्वर्ग के राज्य की खोज करो!'

अपने मन में इस प्रकार विचार करने के बाद, अनास्तासयिा ने गुप्त रूप से एक जहाज किराए पर लयिा और अपने सोने का एक हिस्सा लेकर—बाकी छोड़कर—बिना किसी के ध्यान दिए अलेक्ज़ेंड्रयिा[2286] के लिए रवाना हो गई। शहर से पाँच पोपरीश्चे[2287] दूर यहाँ एक छोटा सा मठ स्थापित करने के बाद, वह वहाँ ईश्वर के लिए परिश्रम करते हुए और केवल उन्हें प्रसन्न करने का प्रयास करते हुए रहती थीं। अनास्तासयिा के हाथों में हमेशा अपने लिंग के अनुरूप सिलाई का काम रहता था, जबकि उनके होंठ लगातार भजन गाते और ईश्वर की स्तुति करते रहते थे। उसने जो मठ स्थापित किया, जिसे इसके संस्थापक, कुलीन अनास्तासयिा के नाम पर 'पैट्रिशियिन' नाम दिया गया, बाद में—मुस्लिम शासन के समय से पहले ही[2288] —बड़ा और प्रसिद्ध हो गया, हर तरह की समृद्धि से परिपूर्ण। लेकिन आइए हम अनास्तासयिा के अपने मूल वृत्तांत पर लौटें।

कॉन्स्टेंटिनोपल से संत अनास्तासयिा के निष्कासन के कई वर्षों बाद, सम्राज्ञी थियोडोरा, जो उनसे नाराज़ थीं, का निधन हो गया। सम्राट ने पैट्रिसियिन अनास्तासयिा को याद किया और उन्हें बड़ी लगन से खोजने के लिए दूर-दूर तक दूत भेजे। यह जानकर, परमेश्वर की भेड़ ने रात में अपनी कन्वेंट छोड़ दी, अबा डैनियिल के आश्रम में चली गईं[2289] और इस धन्य वृद्ध को वह सब कुछ बता दिया जो उनके साथ हुआ था। तब वृद्ध दानियिल ने उसे पुरुषों के मठ के वस्त्र पहनाए, उसका नाम अनास्तासयिा के बजाय ख़ास्रद अनास्तासियिस रखा, उसे लाव्रा से दूर स्थित एक गुफ़ा में ले गए, और उसे वहाँ बंद कर दिया; अनास्तासयिा को नियिम और जीवन-पद्धति सिखाने के बाद, उन्होंने उसे आदेश दिया कि वह न तो स्वयं गुफा छोड़े और न ही किसी को उससे मिलने दे।

डैनियिल ने उन भाइयों में से एक को, जो उसकी सेवा कर रहा था, गुफा के पास एक जगह दिखाई, जहाँ उसने उसे निर्देश दिया कि वह सप्ताह में एक बार रोटी का एक छोटा सा टुकड़ा और एक घड़ा पानी लाए, और उन्हें गुफा के सामने निर्धारित स्थान पर रख दे; फिर, तपस्वी का आशीर्वाद प्राप्त करने के बाद, तुरंत चला जाए। यहीं पर दृढ़ और साहसी अनास्तासयिा अट्ठाईस वर्ष तक पूर्ण एकांत में, किसी की भी दृष्टि से ओझल रहकर, वृद्ध द्वारा निर्धारित नियिम का कड़ाई से पालन करते हुए रहती थीं। अनास्तासयिा से मिलने कोई नहीं आता था, और रोटी-पानी लाने वाले भाई के अलावा कोई भी उनके बारे में नहीं जानता था। लेकिन वह भी यह नहीं जानता था कि वह स्वभाव से एक महिला थी; वह उसे एक पुरुष नपुंसक समझता था। तो फिर, कौन अपने मन से समझने, वाणी से बयां करने, या लेखनी से लिखने में सक्षम है, संत अनास्तासयिा के उन श्रम और कारनामों को, जो उन्होंने गुफा में अट्ठाईस वर्षों तक एकांत में ईश्वर को अर्पित किए? आँसू, कराहें, सिसकियाँ, निद्रारहित जागरण, गायन, प्रार्थना, पठन, खड़े रहना, घुटने टेकना, उपवास, जीवन की आवश्यकताओं से वंचित रहना—और इन सबसे ऊपर, दैवीय आक्रमण और उनसे संघर्ष, जो उसे लगातार उन कामुक सुखों और हर तरह के सांसारिक आनंद की याद दिलाते थे जिन्हें वह दुनिया में पीछे छोड़ आई थी?! उसने यह सब कैसे सहन किया और इस पर विजय प्राप्त की, और इसके अलावा उन वर्षों के हर दिन दृढ़ बनी रही—वह, जिसने इससे पहले, एक बोयारिना और उच्चतम दर्जे की कुलीन महिला के रूप में, कई वर्षों तक शाही महलों में जीवन व्यतीत किया था, कभी-कभी सांसारिक दावतों और सुखों में बड़ी संख्या में महिलाओं और पुरुषों के साथ समय बिताया था? यह सोचकर विस्मय होता है कि कैसे संत अनास्तासयिा ने इन सबको नज़रअंदाज़ कर दिया और अपने मन से इसकी हर याद को मिटा दिया! उसने इतनी विनम्रता, उपवास, संयम और दुख के मार्ग की कठोर तपस्या कैसे प्राप्त की? ऐसे वीर कार्यों के माध्यम से, संत पवित्र आत्मा का पात्र बन गईं और अंत तक ईश्वर को प्रसन्न करके, अपने धन्य निधन के करीब आ गईं।

ईश्वर के पास अपने प्रस्थान की पूर्वदृष्टि रखते हुए, अनास्तासयिा ने वृद्ध डेनियिल को एक टाइल पर निम्नलिखित लिखा:

[2286] अलेक्ज़ेंड्रयिा – मिस्र का प्रमुख शहर, जिसकी स्थापना सिकंदर महान ने की थी। यहीं पर, फ़ारोस द्वीप पर, 72 दिनों में पुराने नियिम का ग्रीक में अनुवाद किया गया था।

[2287] 'पॉपलिस' दूरी की एक इकाई थी: यह लगभग 690 फathom के बराबर थी।

[2288] इस्लामी शासन अलेक्ज़ेंड्रयिा में 7वीं शताब्दी के अंत में शुरू हुआ।

[2289] यहाँ उल्लेखित भिक्षु दानियिल वही हैं जिन्होंने 22 दिन के शिशु को बोलने के लिए प्रेरित किया था।

'हे पवत्रि पता! उस शष्यि को साथ लेकर जल्दी आओ जो मुझे रोटी और पानी लाकर देता है; साथ ही दफ़नाने का आवश्यक सामान भी ले आओ, और अपनी बेटी – नपुंसक अनास्तासयिा – को दफ़नाने आओ।'

यह लखिने के बाद, अनास्तासयिा ने उस टुकड़े को गुफा के बाहर, प्रवेश द्वार के पास रख दयिा। उसी समय, वृद्ध ने, उस रात प्राप्त ईश्वर के एक प्रकाशन से यह जानकर, अपने शष्यि से कहा:

'मेरे बच्चे! हमारे भाई, नपुंसक अनास्तासयिस, के रहने वाली गुफा पर जल्दी जाओ, और गुफा के आसपास की जगह की तलाशी लो। वहाँ तुम्हें एक लखिा हुआ टुकड़ा मलिेगा; उसे लेकर यथाशीघ्र हमारे पास लौट आओ।'

जैसा कि वृद्ध ने कहा था, जाकर वह शलिाखंड ढूँढ़ लेने के बाद, भाई उसे वृद्ध के पास ले आया। टुकड़े पर लखिा हुआ पढ़ने के बाद, वृद्ध दानयिेल रो पड़े और, दफ़नाने के लिए आवश्यक सभी चीज़ें इकट्ठा करके, संबंधति भाई के साथ गुफा की ओर चल पड़े। गुफा खोलने पर, उन्होंने उस नपुंसक को बुखार से ग्रस्त पाया। बाबा दानयिेल, नपुंसक की छाती पर गरिते हुए, रोते हुए बोले:

'धन्य हो तुम, भाई अनास्तासयिस, क्योंकि अपनी मृत्यु के दनि और घड़ी को सदैव स्मरण रखते हुए, तुमने सांसारकि राज्य को तुच्छ समझा!'

'धन्य हो तुम भी,' अनास्तासयिा ने उत्तर दयिा, 'हे नए अब्राहम!'

'इसलिए,' वृद्ध ने कहना जारी रखा, 'हमारे लिए प्रभु से प्रार्थना करो।'

'माननीय वृद्ध,' अनास्तासयिा ने उत्तर दयिा, 'इस क्षण मैं आपकी प्रार्थनाओं की अधकि आवश्यकता में हूँ।'

'यदि मैं आपसे पहले अपना जीवन समाप्त कर लूँ, तो मैं भी आपके लिए प्रार्थना करूँगा,' वृद्ध ने कहना जारी रखा।

तब अनास्तासयिा एक चटाई पर बैठ गई, उसने वृद्ध के सरि पर चूम लयिा और उसके लिए प्रार्थना करते हुए आशीर्वाद के शब्द बोले। वृद्ध ने अपने शष्यि को लेकर उसे संत के पैरों के पास लाया और कहा:

'इस पर आशीर्वाद करो, मेरे शष्यि, जो तुम्हारा भी पुत्र है।'

'मेरे पूर्वजों का ईश्वर, जो इस घड़ी मुझे इस देह से मुक्त करने के लिए मेरे सामने खड़ा है,' अनास्तासयिा ने कहा, 'जो इस गुफा में मेरे कदमों और उसके नाम के लिए मेरे जीवन की कठनिाइयों को जानता है, और जो मेरी वर्तमान शारीरकि बीमारी को देखता है—वह उसके पता की आत्मा को उस पर वश्राम दे, जैसे एलयिाह की आत्मा एलीशा पर वश्राम करती थी!'

तब ख़ास ने बूढ़े की ओर मुड़कर कहा:

'पताजी, प्रभु के वास्ते, मेरे कपड़े मत उतारए, कहीं कोई मेरा लगि न जान ले।'

तब मसीह के परम पवत्रि रहस्यों को ग्रहण करने के बाद, अनास्तासयिा ने कहा:

'पताजी, मुझ पर क्रूस का चह्नि बनाइए और मेरे लिए प्रार्थना कीजए।'

इसके बाद, अनास्तासयिा ने पूर्व की ओर देखा, और उसका चेहरा आग की तरह चमक उठा। फरि, अपने ऊपर क्रॉस का चह्नि बनाकर, अनास्तासयिा ने कहा:

'हे प्रभु, मैं अपनी आत्मा तेरे हाथों में सौंपती हूँ,' और ये शब्द कहकर वह नधिन हो गई।

इसके बाद, अबा डैनयिल और उनके शष्यि ने गुफा के सामने एक कब्र खोदी, और फरि बूढ़े ने, जो चोगा पहने हुए थे, उसे उतारकर अपने शष्यि से कहा:

'मेरे बच्चे! हमारी बहन को कपड़े पहनाओ।'

जब शष्यि संत को कपड़े पहना रहा था, तो उसकी नज़र उसके स्तनों पर पड़ी, जो सूखी पत्तयिों की तरह मुरझा गए थे; लेकनि, वह बनिा बूढ़े को बताए चुप रहा। उन्होंने पारंपरकि अंतमि संस्कार के भजनों के साथ अनास्तासयिा के पवत्रि शरीर को दफनाया।

बाद में जब वे घर लौट रहे थे, तो शष्यि ने बूढ़े से कहा:

'फादर, क्या आपको नहीं पता था कि ख़ासगर अनास्तासयिस एक महलिा थी?'

'हाँ, मेरे बच्चे, मैं यह जानता था,' वृद्ध ने उत्तर दयिा, 'और इसी कारण मैंने उसे पुरुषों के कपड़े पहनाए और उसे अनास्तासयिस—नपुंसक—कहा, ताकि कोई संदेह न हो और कोई उसके बारे में न जान पाए और अफवाहें दूर-दूर तक न फैलें; राजा के आदेश पर पूरे प्रदेशों में, और वशिेष रूप से इन इलाकों में, उसकी बहुत खोज की गई थी। लेकनि यहाँ, ईश्वर की कृपा से, वह हमारे बीच छपिी रही।

तब उस वृद्ध ने अपने शिष्य को संत का पूरा जीवन विस्तार से सुनाया, जो बाद में पूरी दुनिया में प्रसिद्ध हो गया और जो पढ़ने और सुनने वालों के लाभ के लिए लिखा गया था, हमारे प्रभु मसीह परमेश्वर की महिमा के लिए, जो अपने संतों में युगानुयुग महिमामय हैं[2290] । आमीन।

24 मार्च

11 मार्च (पुराना तरीका)

हमारे पिता सोफ्रोनीयस द वाइज़, यरूशलेम के पैट्रिआर्क की स्मृति, जिन्हें संतों में गिना जाता है

11 मार्च को स्मरणोत्सव

संत सोफ्रोनीयस, जिनका नाम ही पवित्रता का प्रतीक है[2291] , का जन्म दमिश्क में[2292] में धर्मपरायण और पवित्र माता-पिता के यहाँ हुआ था; वे प्रतिष्ठित नागरिक थे, और उनके नाम प्लेफिोस और मीरा थे। अपने युवा काल से ही, धन्य सोफ्रोनीयस ने अपने नाम के अनुरूप जीवन जिया, उन्होंने आध्यात्मिक और सांसारिक दोनों प्रकार की बुद्धि से प्रेम किया और अपनी कुँवारी पवित्रता को अपनी माँ के गर्भ से ही संरक्षित रखा; इन दोनों गुणों—आध्यात्मिक ज्ञान और कुंवारी पवित्रता—को संयम कहा जाता है; इस प्रकार, सेंट जॉन क्लाइमैकस[2293] के शब्दों में, संयम सभी गुणों के लिए एक सामान्य शब्द है; और संयमी सोफ्रोनीयस ने उन्हें सभी को लगन से आत्मसात किया। सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण, उन्होंने धर्मनिरपेक्ष[2294] दर्शन का अध्ययन किया, जिसके लिए उन्हें 'सोफिस्ट' कहा जाता था, यानी महान ज्ञान वाले व्यक्ति; उन दिनों, 'सोफिस्ट' की उपाधि अत्यंत सम्मानजनक थी, और यह उत्कृष्ट दार्शनिकों को प्रदान की जाती थी, जैसे कि लावियस द सोफिस्ट, जो सेंट बेसिल द ग्रेट के परिचित थे। धर्मनिरपेक्ष दर्शन का अध्ययन करने के बाद, आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त करने की इच्छा से, धन्य सोफ्रोनीउस ने मठों और तपस्वियों के आश्रमों का दौरा किया, और दैवीय पिताओं से अपनी आत्मा के लिए आध्यात्मिक लाभ प्राप्त किया। वे पवित्र नगर यरूशलेम भी आए और पड़ोसी मठों का दौरा करते हुए, उन्होंने महान थियोडोसियस के सेनोबियम (सामूहिक मठ) में प्रवेश किया, जहाँ उन्हें भिक्षु जॉन मिले, जिन्हें मोस्कस और एवरित के नाम से जाना जाता था, जो पद में एक पुरोहित, सदाचार के पुरुष और साथ ही बाहरी और आंतरिक दोनों ज्ञान में अत्यधिक निपुण थे। सोफ्रोनीउस पूरे दिल से उनसे इस प्रकार गहराई से जुड़ गए, जैसे एक पुत्र अपने पिता से, एक शिष्य अपने गुरु से, और उन्होंने मृत्यु तक उनका हर जगह अनुसरण किया, उनके साथ मठों और रेगिस्तानों में यात्रा करते हुए, पवित्र संतों से मिलते हुए और अपने स्वयं के लाभ के लिए उनके जीवन को दर्ज करते हुए, जैसा कि दोनों द्वारा लिखित पुस्तक, शीर्षक वाली, से प्रमाणित होता है 'लिमोनार', या 'फूलों का बगीचा', और

[2290] संत अनास्तासिया के अवशेष कॉन्स्टेंटिनोपल ले जाए गए और, 1200 में, हागिया सोफिया के पास रखे गए।

[2291] ग्रीक से अनुवादित।

[2292] दमिश्क – सीरिया का प्रमुख और सबसे धनी वाणिज्यिक शहर, तथा विश्व के सबसे पुराने शहरों में से एक – फिलिस्तीन के उत्तर-पूर्व में, बरादा नदी के तट पर स्थित है, जो इसके बीच से होकर बहती है, तथा यह एंटी-लेबनान पर्वतमाला के पूर्वी ढलान पर एक सुंदर और उपजाऊ मैदान में फैला हुआ है। आज, दमिश्क, जो उस्मानी साम्राज्य का हिस्सा है, एशिया के सबसे अमीर शहरों में से एक है और इसकी आबादी लगभग 150,000 है। मसीह की कलीसिया के इतिहास में, दमिश्क इस तथ्य के लिए उल्लेखनीय है कि प्रेरित सेंट पॉल का ईसाई धर्म में परिवर्तन के बाद पहला उपदेश यहीं दिया गया था (प्रेरितों के काम 9:1–43)।

[2293] संत जॉन क्लाइमक्स ने बीस वर्ष की आयु में मठवासी संन्यास ग्रहण किया और अपने जीवन के अंतिम चार वर्ष सिनाई मठ के मठाध्यक्ष के रूप में व्यतीत किए; उनकी मृत्यु लगभग 606 ईस्वी में 80 वर्ष की आयु में हुई। उनका पर्व दिवस 30 मार्च को मनाया जाता है। वे मुख्यतः मठवासी जीवन पर प्रसिद्ध मार्गदर्शिका के लेखक के रूप में जाने जाते हैं, जिसका शीर्षक है: 'स्वर्ग की सीढ़ी' – Klimax tou paradeisou, जिससे उन्हें 'सीढ़ी-निर्माता' नाम मिला; यहाँ, मठवासी जीवन को उनके द्वारा आध्यात्मिक आत्म-सुधार की सीढ़ी पर निरंतर और कठिन आरोहण के एक मार्ग के रूप में प्रस्तुत किया गया है; यह आरोहण अपने ही जुनून और दुर्गुणों के खिलाफ संघर्ष के माध्यम से हासिल किया जाता है, जिसमें मठाधीश को अपनी मुख्य सहायता मृत्यु के निरंतर स्मरण में मिलती है।

[2294] अर्थात्, धर्मनिरपेक्ष विज्ञान।

यह सातवें सार्वभौमिक परिषद[2295] में अनुमोदित हुई। इस पुस्तक में, संत सोफ्रोनीयस के गुरु अक्सर उन्हें एक 'सोफिस्ट' के रूप में, दार्शनिक शिक्षा में अपने समकक्ष के रूप में संबोधित करते हैं; लेकिन परम पूजनीय जॉन धन्य सोफ्रोनीयस को न केवल एक 'सोफिस्ट' और अपने गुरु के रूप में, बल्कि एक पिता के रूप में भी संबोधित करते हैं; वे उन्हें शिष्य नहीं, बल्कि एक उत्कृष्ट सद्गुणों वाले व्यक्ति के रूप में अपना मित्र, साथी और सहकर्मी मानते थे; इसके अलावा, उन्होंने अपने आत्मा में पूर्वानुमान लगाया था कि सोफ्रोनीयस एक महान चरवाहा और मसीह की कलीसिया का एक अटूट स्तंभ बनेंगे। इन आदरणीय जॉन के साथ, संत सोफ्रोनीयस ने अपनी मठवासी tonsure ( ) से पहले भी, काफी समय तक एक साथ जीवन यापन किया, पहले फिलिस्तीन में, महान थियोडोसियस के उसी cenobium (सामुदायिक मठ) में, और जॉर्डन के रेगिस्तान में, और संत सावस द्वारा निर्मित तथाकथित नए मठ में; और फिर दोनों, जॉन और सोफ्रोनीयस, फारसी आक्रमण के डर से फिलिस्तीन से चले गए और ग्रेटर एंटिओक के क्षेत्र के लिए रवाना हो गए। उस समय, फारसी राजा खुसरू द्वितीय ने निम्नलिखित कारण से ग्रीक भूमि पर युद्ध छेड़ा। तानाशाह फोकास ने (जैसा कि ग्रीक इतिहासकार निकिफ़ोरस विस्तार से लिखते हैं) ग्रीक सम्राट मॉरिस की हत्या कर दी और शाही सिंहासन पर कब्जा कर लिया। राजा मॉरिस ने एक बार फारस के खसरू पर एक बड़ा एहसान किया था: जब खसरू को फारस साम्राज्य से निकाल दिया गया था और वह ग्रीस भाग गया था, तो मॉरिस ने उसके पिता की भूमिका निभाई और अपनी संपत्ति और सैन्य शक्ति से उसे फारस में अपना सिंहासन फिर से हासिल करने में मदद की; इस प्रकार ग्रीकों और फारसियों के बीच एक स्थायी शांति स्थापित हुई। जब ख़सरो को अपने उपकारी, ग्रीक सम्राट मॉरिस की हत्या की खबर मिली, तो वह उनके लिए बहुत दुखी हुआ और ग्रीकों के साथ शांति संधि तोड़कर मॉरिस की हत्या का बदला लेने निकल पड़ा। फारसी सेनाओं ने कई ग्रीक क्षेत्रों, मुख्य रूप से सीरिया, फिनीशिया और फिलिस्तीन पर आक्रमण किया और उन्हें अपने अधीन कर लिया। उस समय, उन प्रदेशों में तपस्या का जीवन जी रहे पवित्र संतों ने अपने मठ और आश्रम छोड़ दिए और जहाँ भी हो सके वहाँ भाग गए। ठीक इसी समय संत जॉन और सोफ्रोनीयस ने भी फिलिस्तीन छोड़ दिया; और उनके प्रस्थान के बाद, पवित्र शहर यरूशलेम पर फारसियों ने कब्जा कर लिया, और पवित्र जीवन-दायक क्रूस का वृक्ष, परम पवित्र पैट्रिआर्क ज़कारियास के साथ, कैद कर लिया गया; यह सभी ईसाइयों के लिए बड़े दुख और खेद की बात थी, और चौदह वर्षों तक फारस में कैद में रहा। यरूशलेम पर कब्ज़ा होने से पहले, जैसा कि पिहले कहा गया है, संत जॉन और सोफ्रोनीयस अंतीयक के क्षेत्र में यात्रा कर गए और, अपनी प्रथा के अनुसार—जैसे मधुमक्खियाँ फूलों से फूलों पर उड़कर शहद इकट्ठा करती हैं—उन्होंने उन सभी स्थानों का दौरा किया जहाँ उन्होंने सदाचारी पिताओं के बारे में सुना था, और, आध्यात्मिक शहद का छत्ता इकट्ठा करते हुए, शहद से भी मीठे, उन्होंने उपर्युक्त पुस्तक *लिमोनार* में उनके जीवन को दर्ज किया। जब फारसी सेनाएँ उस क्षेत्र के भी करीब आने लगीं, तो वे मिस्र, अलेक्जेंड्रिया चले गए[2296] , जहाँ उन्होंने अपना काम जारी रखा। उन्होंने कई पवित्र पिताओं के कर्मों और शिक्षाओं को दर्ज करके सभी ईसाई वंशजों को महान लाभ पहुँचाया, जिन्हें उन्होंने अपनी आँखों से देखा था और अपने कानों से सुना था। जब संत सोफ्रोनीयस अलेक्जेंड्रिया पहुँचे, तब उन्होंने अभी तक संन्यास का व्रत ग्रहण नहीं किया था, जैसा कि उनके *लिमोनेर* के सत्तानवेवें अध्याय से स्पष्ट है, जहाँ सोफ्रोनीयस के गुरु, जॉन इविरित, निम्नलिखित कहते हैं:

'हम अलेक्जेंड्रिया आए, मैं और करियॉस[2297] , मेरे भाई सोफ्रोनीयस, उनके मुंडन से पहले, और अब्बा[2298] पैलाडियस के पास गए, जो एक सदाचारी व्यक्ति और ईश्वर के सेवक थे।'

और फिर, एक सौ और दसवें अध्याय में, वह कहते हैं:

– मेरे स्वामी सोफ्रोनीयस और मैं अलेक्जेंड्रिया से अठारह स्टेडियम दूर स्थित लावरा गए[2299] , एक वृद्ध के पास, जो महान सद्गुणों वाले और मिस्र के मूल के व्यक्ति थे, और मैंने उनसे कहा:

[2295] 787 में, आइकनोक्लास्ट्स (मूर्ति-विरोधियों) के संप्रदाय के विरुद्ध, जिन्होंने प्रतिमाओं की पूजा को अस्वीकार कर दिया था।

[2296] अलेक्जेंड्रिया – भूमध्य सागर के तट पर, निचले (उत्तरी) मिस्र में, नील नदी के मुहाने पर, 333 ईसा पूर्व में महान अलेक्जेंडर द्वारा स्थापित प्रसिद्ध शहर। रोम के बाद, अलेक्जेंड्रिया समुद्र तट पर सबसे प्रमुख शहर था और यह व्यापार, उद्योग और विशेष रूप से, मूर्तिपूजक शिक्षा का केंद्र था; ईसाई धर्म की शुरुआती शताब्दियों में, यह ईसाई प्रबोधन का गढ़ था। परंपरा के अनुसार, ईसाई धर्म को यहाँ लगभग 59-60 ईस्वी में सेंट मार्क द्वारा लाया गया था। आज, अलेक्जेंड्रिया (जो तुर्की और अरबी में इस्केन्डर के नाम से जाना जाता है) भूमध्यसागर के सबसे अधिक कलिबंदी वाले बंदरगाह शहरों और सबसे महत्वपूर्ण व्यापारिक केंद्रों में से एक है, जिसकी जनसंख्या 230,000 से अधिक है।

[2297] प्रभु, पिता।

[2298] वही।

[2299] एक 'पॉप्रश्चे' लगभग 690 साज़ेन था।

'हे स्वामी और पिता, हमें एक-दूसरे के साथ कैसे रहना चाहिए, इस पर अपनी सलाह दें; कि सोफिस्ट (सोफ्रोनीयस) संसार से अलग होकर एक भिक्षु बनना चाहते हैं।'

तब वृद्ध ने हमसे कहा:

'तुम अपने आत्मा के उद्धार के लिए संसार को छोड़कर अच्छा कर रहे हो; अपनी कोठरियों में मौन से रहो, अपने विचारों की रक्षा करो, और ईश्वर में अपनी आशा रखकर अखंड प्रार्थना करो – वह तुम्हें अपनी बुद्धि प्रदान करेगा और तुम्हारे मन को प्रबुद्ध करेगा।'

यहाँ हम पवित्र और ब्रह्मचारी सोफ्रोनीयस के असाधारण सद्गुण को देखते हैं: हालाँकि वह एक गृहस्थ थे, उन्होंने बहुत मेहनत की, विभिन्न समयों पर मठों और आश्रमों का दौरा किया, और इतनी लगन से आध्यात्मिक लाभ की खोज की—जैसे मोक्ष के मार्ग पर चलने के लिए निकल पड़े हों—कि भिक्षु के रूप में सिर मुंडवाने से पहले ही वह पूरी तरह से एक भिक्षु की तरह थे, और एक सदाचारी मठवासी जीवन जी रहे थे। तब उन्हें उनके गुरु ने एक ऐसी बीमारी से पीड़ित होते हुए मुंडन किया, जिससे उन्हें लगा कि वे मर जाएँगे, और उन्हें एक दिव्यदृष्टि प्राप्त हुई; उनके गुरु इस बारे में * * के अध्याय 102 में निम्नलिखित लिखते हैं: 'जब मेरे भाई सोफ्रोनीउस द वाइज़ अपनी मृत्युशय्या पर थे, हम अब्बा जॉन द स्कॉलैस्टिकस के साथ उनके पास खड़े थे, और सोफ्रोनीउस ने हमसे कहा: 'मुझे ऐसा प्रतीत हुआ कि मैं किसी सड़क पर चल रहा था और मैंने कन्याओं के एक पूरे समूह को देखा जो आनंदपूर्वक कह रही थीं: "सोफ्रोनीयस आ गए हैं, सोफ्रोनीयस का विवाह हो गया है!" वे कन्याएँ उनके सामने इसलिए आनंद मना रही थीं क्योंकि उनके नाम का ही अर्थ पवित्रता है।'

उनके शिक्षक ने उनके बारे में यही लिखा था। अपनी बीमारी से उबरने के बाद और अब एक भिक्षु के रूप में, उन्होंने और भी कड़ी मेहनत की और अपना तथा दूसरों का मोक्ष सुनिश्चित करने के लिए खुद को समर्पित कर दिया।

उस समय, सेवर का विधर्म पूरे मिस्र में फैल गया था[2300] , और उन्होंने और उनके गुरु ने विधर्मियों के खिलाफ कड़ा संघर्ष किया; धर्मग्रंथों में निपुण और पारंगत होकर, उन्होंने विधर्मियों के साथ बहस की और उन्हें हराया। इसी कारण, अलेक्ज़ेंड्रिया के पैट्रिआर्क, परम पावन जॉन द मर्सीफुल[2301] , उन्हें बहुत प्यार करते थे और उन्हें सच्चे दोस्तों के रूप में बहुत सम्मान देते थे, जो विधर्मीयों के खिलाफ उनकी मदद करते थे और उनके दुख में उन्हें सांत्वना देते थे। नेपल्स के बिशप लियोन्टियस द्वारा लिखित उनकी जीवनी में वर्णित है कि संत जॉन द मर्सीफुल की आदत थी कि वे बुधवार और शुक्रवार को चर्च के प्रवेश द्वार पर बैठते थे, जिससे कोई भी जो उनके पास आना चाहता था, वह स्वतंत्र रूप से आ सकता था, और वे सभी की जरूरतों को सुनते, मदद करते, और विवादों तथा झगड़ों को सुलझाते थे; इस प्रकार वह लोगों के बीच शांति लाता था। हालाँकि, यदि ऐसा होता कि जब वह वहाँ बैठा रहता था तो कोई भी उसके पास नहीं आता, और कोई भी उससे कुछ नहीं मांगता, तो वह उदास होकर उठता और आँसुओं के साथ घर चला जाता, यह कहते हुए:

'आज, निम्र जॉन को कुछ भी नहीं मिला; वह अपने पापों के लिए ईश्वर के पास कुछ भी नहीं लाया है।'

लेकिन धन्य सोफ्रोनीउस (जिनके बारे में हम बात कर रहे हैं), उसके मित्र ने, उसे सांत्वना देते हुए, उससे कहा:

'सचमुच, पिताजी, आपको आज आनंदित होना चाहिए, क्योंकि आपका झुंड ईश्वर के स्वर्गदूतों की तरह, बिना कलह या झगड़े के, शांति से रहता है।'

इससे स्पष्ट है कि इस परम पवित्र पैट्रिआर्क ने संत सोफ्रोनीयस और उनके गुरु को कितनी श्रद्धा और प्रेम से सम्मानित किया।

ये दोनों संत आमतौर पर हर दिन कुछ नया सीखने का प्रयास करते थे, जब भी उन्हें अपने लिए कुछ उपयोगी दिखाई देता या सुनाई देता था। और जैसा कि जॉन बताता है, उनके साथ निम्नलिखित घटना घटी।

[2300] सेवर, एंटीओक के पैट्रिआर्क, मोनोफिसाइट विधर्म के प्रमुख रक्षकों में से एक थे, जो यह मानता था कि यद्यपि मसीह दो स्वभावों से जन्मे थे, वे दो में मौजूद नहीं हैं, क्योंकि परमेश्वर वचन के अवतार के समय, उन्होंने जो मानवीय स्वभाव ग्रहण किया, उसने अपनी सारी वास्तविकता खो दी और इसे दिव्य से केवल विचार में ही अलग किया जा सकता है।

[2301] जॉन द मर्सीफुल (मृत्यु 617) – अलेक्ज़ेंड्रिया के पैट्रिआर्क, साइप्रस द्वीप पर एक अधिकारी के पुत्र; अपने परिवार को खोने के बाद, उन्होंने खुद को तपस्वी जीवन और गरीबों की देखभाल के लिए समर्पित कर दिया, और यद्यपि वह न तो एक भिक्षु थे और न ही एक पुरोहित, उन्हें लोगों के अनुरोध पर पैट्रिआर्क चुना गया। पात्रिआर्क बनने पर, उन्होंने सबसे पहले अलेक्ज़ेंड्रिया के सभी भिखारियों की गिनती की और, अपनी सारी संपत्ति उनमें बाँटने के बाद, पवित्र सेपल्चर को उदार दान भेजा, बेसहारा लोगों को आश्रय प्रदान किया, और बंदियों को छुड़ाया। जब अलेक्ज़ेंड्रिया के निवासी, फारसी आक्रमण के डर से, भागने लगे, तो जॉन शहर की रक्षा के लिए सैनिकों का अनुरोध करने हेतु कॉन्स्टेंटिनोपल के लिए रवाना हुए। लेकिन उनकी रास्ते में ही मृत्यु हो गई (617); उनका पर्व 12 नवंबर को मनाया जाता है।

मेरे स्वामी बुद्धमिान सोफ्रोनीयस और मैं दार्शनकि स्टीफन के घर गए, जो महान टेट्राफलि के पूर्व में पैट्रआर्क यूलोजयिस द्वारा नर्मिति परमेश्वर की परम पवत्रि माता के चर्च के रास्ते पर रहते थे; दोपहर का समय था। जब हम दार्शनकि के घर पहुँचे और द्वार पर दस्तक दी, तो द्वारपाल ने हमसे कहा:

'मेरे स्वामी अभी वशि्राम कर रहे हैं; कृपया थोड़ी देर प्रतीक्षा करें।' तब मैंने अपने स्वामी सोफ्रोनीयस से कहा:

'आओ हम टेट्राफलि चलते हैं और वहाँ प्रतीक्षा करते हैं।'

इस स्थान को अलेक्जेंड्रयिा के लोगों द्वारा बहुत सम्मान दयिा जाता है: वे कहते हैं कि महान राजा सकिंदर ने मस्रि से पवत्रि नबी यर्मियाह के अवशेष लाए और जब उन्होंने अपने सम्मान में इस शहर की स्थापना की तो उन्हें वहीं स्थापति कयिा। जब हम वहाँ पहुँचे, तो हमें तीन अंधे लोगों के अलावा वहाँ कोई नहीं मलिा, और हम अपनी कतिाबों के साथ चुपचाप उनके बगल में बैठ गए। जब वे आपस में बात कर रहे थे, तो एक अंधे ने दूसरे से कहा:

'मेरे मत्रि, तुम्हारी दृष्टि कैसे चली गई?'

जसि पर दूसरे ने उत्तर दयिा:

'जवानी में मैं एक नावकि था; जब हम अफ्रीका से नौकायन कर रहे थे, तो मुझे बहुत देर तक समुद्र की ओर देखना पड़ता था; मेरी आँखों में मोतयिाबदि हो गया, और मैं अंधा हो गया।'

फरि, जब उससे पूछा गया कि उसकी दृष्टि कैसे चली गई, तो दूसरे ने जवाब दयिा:

'मैं एक काँच के कारखाने में काम करता था और एक दनि, लापरवाही से काँच बनाते समय, मैं जल गया; आग से ही मेरी दृष्टि चिली गई।'

अपनी अंधापन का कारण बताने के बाद, दोनों अंधे लोगों ने तीसरे से पूछा कि उसने अपनी दृष्टि कैसे खोई।

उसने उत्तर दयिा:

– जब मैं जवान था, मुझे मेहनत या काम करना पसंद नहीं था; मैं आलस करना पसंद करता था। लेकनि चूँकि मैं सत्ता का भूखा था और मेरे पास खाने के लिए कुछ नहीं था, मैंने चोरी करना और कई बुरे काम करना शुरू कर दिए। एक दनि मैंने महंगे कपड़े पहने एक मृत व्यक्ति को देखा, जसिे दफनाने के लिए ले जाया जा रहा था; मैं ताबूत उठाने वालों का पीछा करने लगा यह देखने के लिए कि वे उसे कहाँ सुलाने ले जाएँगे; उस मृतक को सेंट जॉन चर्च ने दफनाया; जब रात हुई, तो मैंने कब्र खोली, अंदर गया और मृतक के सारे कपड़े उतार लिए, उसे सर्फि उसकी कमीज़ पहनकर छोड़ दयिा। जब मैं कब्र से बाहर नकिल रहा था, तो मेरे मन में बुरे वचिार आए: 'वापस जा, कमीज़ भी ले ले, क्योंकि यह बहुत अच्छी है।' और इस तरह मैं, एक दुर्भाग्यशाली इंसान, शर्ट भी लेने के लिए वापस गया, और मृतक को नग्न छोड़ दयिा। और फरि वह मृतक उठ खड़ा हुआ, मेरे सामने बैठ गया, उसने अपने हाथ उठाए और अपनी उंगलयिों से मेरे चेहरे को नोच डाला और मेरी दोनों आँखें नकिाल लीं। फरि मैं, एक दुर्भाग्यशाली इंसान, बड़ी मुश्कलि से उस कब्र से बाहर नकिल पाया, उस दुर्भाग्य और दर्द से अभभिूत होकर। इस तरह मैं अंधा हो गया!

यह सुनकर, मेरे स्वामी सोफ्रोनीयस ने मुझे इशारा कयिा, और हम ने अंधों को छोड़ दयिा। और सोफ्रोनीयस ने मुझसे कहा:

'सचमुच, फादर जॉन, आज और कुछ सीखने को नहीं है; हमने इतना सीख लयिा है कि हम नश्चिति हो सकें कि बुराई करने वाला कोई भी व्यक्ति ईश्वर से नहीं बच सकता।'

इससे यह स्पष्ट है कि इन दोनों संतों, जॉन और सोफ्रोनीस, ने अपने लिए दैनकि लाभ कैसे खोजा। 'आज सीखने के लिए और कुछ नहीं है; आज हमने पर्याप्त मूल्यवान सीख लयिा है' शब्दों के साथ, वह यह दर्शाता है कि वे हर दनि अपने लिए कुछ लाभ प्राप्त करने का प्रयास करते थे।

वहाँ ठहरने के दौरान, अलेक्जेंड्रयिा में, धन्य सोफ्रोनीउस ने अपनी आँखों के ठीक होने की कृतज्ञता में पवत्रि शहीदों साइरस और जॉन के चमत्कारों का वर्णन कयिा; क्योंकि जब उनकी आँखें बीमार पड़ गईं और वह प्रार्थना और वशि्वास के साथ उन पवत्रि, नस्विार्थ उपचारकों की ओर मुड़े, तो उन्हें अलेक्जेंड्रयिा में स्थति उनके चर्च में उनसे वह उपचार मलिा जसिकी वह तलाश में थे; और इस प्रकार उन्होंने उन्हें भक्तपिूर्वक सम्मानति कयिा। कुछ वर्षों बाद, मस्रि—जहाँ अलेक्जेंड्रयिा स्थति है—को फारसी आक्रमण के खतरे का सामना करना पड़ा, और धन्य पति जॉन और सोफ्रोनीयस को भी वहाँ से भागने के लिए मजबूर होना पड़ा; और महामहमि पैट्रआर्क जॉन द मर्सीफुल, बर्बरों से डरकर, भाग गए। उसके साथ, वे कॉन्स्टेंटनिोपल के लिए रवाना हुए और एक जहाज पर सवार हो गए, इस इच्छा के साथ कि वे उस व्यक्ति के साथ रहें जो उनसे अलग नहीं होना चाहता था। रास्ते में, परम पवत्रि पैट्रआर्क बीमार पड़ गए और

अपने पैतृक शहर अलसाफ़ुंटे में उनका नधिन हो गया; अतबिुद्धमिान सोफ्रोनीउस ने उनके अंतमि संस्कार पर एक प्रशंसा-भाषण देकर उनके अनुकरणीय जीवन और दया के अनगनित कार्यों को सम्माननति कयिा; पैट्रआिर्क के दफन के बाद, वे अपने शकि्षक जॉन और उनके चारों ओर इकट्ठा हुए भाईचारे के साथ प्राचीन रोम के लएि रवाना हुए, जसिमें बारह पुरुष शामलि थे; रोम में कई वर्षों तक रहने के बाद, आदरणीय जॉन, सोफ्रोनीउस के शकि्षक, जो पहले ही वृद्धावस्था में पहुँच चुके थे, प्रभु के पास चले गए। मरते समय, उन्होंने अपने प्रयि शष्यि और आध्यात्मकि पुत्र, धन्य सोफ्रोनीयस को यह आज्ञा दी कि उनके शरीर को रोम में दफनाया न जाए, बल्कि एक लकड़ी के ताबूत में रखकर माउंट सनिाई ले जाया जाए; और यदि बिर्बरों के हमले के डर से माउंट सनिाई तक पहुंचना असंभव हो, तो उनके अवशेषों को संत थयिोडोसयिस द ग्रेट के मठ में दफनाया जाए,[2302] , जहाँ आदरणीय जॉन ने पहली बार एक भकि्षु के रूप में जीवन व्यतीत कयिा था। और उन्होंने वैसा ही कयिा। पुरानी वाचा के यूसुफ की तरह, जसिने याकूब की लाश को मस्रि से उस स्थान तक ले गया जहाँ उसके पूर्वज दफन थे (उत्पत्ति 50:12–13), उसने अपने आध्यात्मकि पति, परम पूज्य जॉन की लाश को रोम[2303] से लयिा और अपने भाइयों के साथ ग्रीस के देशों के लएि समुद्र यात्रा पर नकिल पड़ा। अस्कलॉन[2304] पहुँचने और यह जानने के बाद कि बिर्बर लोगों के कारण माउंट सनिाई[2305] तक पहुँचना असंभव था, वह यरूशलेम गया, जो फारसियिों के कब्जे में था, और उसने अपने आध्यात्मकि पति के शरीर को थयिोडोसयिस के मठ में दफनाया, जबकि वह स्वयं यरूशलेम में अपने भाइयों के साथ रहने लगा; उस समय, मॉडेस्टस ने वहाँ पतिृसत्तात्मक पद संभाला था, पतिृसत्ता ज़कारयिास के स्थान पर, जन्हिें पवत्रि क्रॉस के साथ फ़ारस में बंधक बना लयिा गया था। रोम से फलिस्तिीन में संत सोफ्रोनीयस के आगमन के तुरंत बाद, ईश्वर ने पवत्रि क्रॉस और पैट्रआिर्क ज़कारयिास को बंधन से यरूशलेम वापस लाने की कृपा की। यह इस प्रकार हुआ। गवर्नर हेराक्लयिस ने उत्पीड़क-राजा फोकास[2306] को मारकर स्वयं ग्रीक सहिासन[2307] पर आरूढ़ होकर, फारस के खलिाफ युद्ध छेड़ा और खसरू की सेनाओं पर कई जीत हासलि करने के बाद, सात वर्षों तक उसके शहरों पर कब्जा बनाए रखा। तब खुसरो के पुत्र सरिस ने अपने पति को मारकर स्वयं फारस का राजा बन गया, और उसने यूनानी राजा हेराक्लयिस के साथ शांति स्थापति करने की कोशशि की; लेकनि राजा हेराक्लयिस ने शांति की यह शर्त रखी कि फारस का राजा यरूशलेम यूनानयिों को सौंप दे और पवत्रि क्रूस तथा उसके साथ पैट्रआिर्क ज़कारयिास को वापस कर दे। ऐसा ही कयिा गया: चौदह साल की कैद के बाद, पवत्रि क्रॉस को बहुत सम्मान के साथ फारस से वापस लाया गया, जसिे राजा हेराक्लयिस ने स्वयं अपने कंधों पर उठाकर पवत्रि शहर में ले जाया (जैसा कि 14 सतिंबर को दर्ज है); महामहमि पैट्रआिर्क ज़कारयिास ने एक बार फरि से अपने पैट्रआिर्कल सहिासन पर आसीन हुए। कुछ वर्षों बाद, उसी सम्राट हेराक्लयिस ने प्रभु के जीवन-दायक क्रूस की पवत्रि लकड़ी को यरूशलेम से कॉन्स्टेंटनिोपल स्थानांतरति कर दयिा, ताकि इस महान ईसाई खजाने को फरि से कसिी भी दुश्मन द्वारा कैद न कयिा जा सके: वास्तव में, यरूशलेम बाद में फरि से दुश्मनों के कब्जे में चला गया, जैसा कि नीचे वर्णति कयिा जाएगा। हालाँकि, कैद से लौटने के बाद पैट्रआिर्क ज़कारयिास लंबे समय तक सहिासन पर नहीं रहे और प्रभु के पास चले गए; सहिासन पर उनके उत्तराधकिारी फरि से मोडेस्टस थे, लेकनि वे केवल दो साल तक ही जीवति रहे; मोडेस्टस की मृत्यु के बाद, संत सोफ्रोनीयस को यरूशलेम का पैट्रआिर्क चुना गया। इस समय, मोनोथेलटि्स — अर्थात्, 'एक-इच्छाधारी' — का वधिर्म उभरा, जो मसीह के व्यक्तित्व में, उनकी दो प्रकृतयिों, दविय और मानवीय, में एक ही इच्छा और एक ही क्रयिा को मानते थे, मानो प्रत्येक प्रकृति के

[2302] थेओडोसयिस महान - 379 से 395 तक रोमन सम्राट। उनके शासनकाल के दौरान, रोमन साम्राज्य में ईसाई धर्म को नर्णिायक रूप से स्थापति कयिा गया था।

[2303] रोम – रोमन राज्य (अब इटली का साम्राज्य) की राजधानी – मध्य इटली में, टायबर नदी के दोनों कनिारों पर स्थति है, जहाँ यह समुद्र में मलिती है।

[2304] अष्केलोन – पाँच प्रमुख फ़लिस्तिीनी शहरों में से एक (न्यायियों 1:18)। हेरोद महान ने इसे भव्य रूप से सुशोभति कयिा, क्योंकि यह उनका जन्मस्थान था। मध्य युग में भी, यह एक सैन्य बंदरगाह था और धर्मयुद्ध के दौरान (1191) नष्ट हो गया था।

[2305] वास्तव में, माउंट सनिाई ग्रेनाइट चट्टानों से बने पहाड़ों का एक समूह है, जो ऊँची और खुरदरी घाटियों से घरि हुआ और उनके बीच से होकर गुजरता है; अरब अब इसे माउंट टूर या जेबेल टूर-सनिा कहते हैं। यह ब्लैक सी की प्रसद्धि खाड़ियों के लगभग केंद्र में स्थति है, जो मलिकर सनिाई प्रायद्वीप का नर्माण करती हैं। इसमें तीन पर्वत श्रृंखलाएँ शामलि हैं। माउंट सनिाई स्वयं—जहाँ इस्राएलयिों ने ईश्वर के साथ एक संधि की और उनसे कानून की आज्ञाएँ प्राप्त कीं—केंद्रीय श्रृंखला की सबसे ऊँची दक्षणि-पूर्वी चोटी है, जबकि सबसे नचिली, उत्तर-पश्चमिी चोटी माउंट होरेब है।

[2306] बाइज़ेंटाइन सम्राट फोकास ने 602 से 610 तक शासन कयिा।

[2307] हेराक्लयिस ने 610 से 641 तक शासन कयिा।

पास अपनी अलग, वशिषि्ट क्रयिा और इच्छा न हो; जो लोग इस सदि्धांत का प्रचार करते हैं, वे मसीह का अपमान करते हैं, क्योंकि वे उन्हें दोनों स्वभावों में अपूर्ण मानते हैं। इस वधिर्म का वर्णन अधकि वसि्तार से 21 जनवरी को, मैक्समिस द कन्फेशर के जीवन में कयिा गया है। अलेक्जेंड्रयिा के पैट्रआिर्क इस वधिर्म के एक वशिेष समर्थक और प्रचारक थे; उन्होंने एक स्थानीय परषिद बुलाई और यह आदेश दयिा कि यही सही वशि्वास है; उनके बाद कॉन्स्टेंटनिोपल के पैट्रआिर्क सेरजयिस, और उनके बाद परि्रस और अन्य लोग आए; उस समय इस वधिर्म को स्वीकार करने से इनकार करने के लएि कई लोगों को कष्ट झेलने पड़े। परम पावन यरूशलेम के पैट्रआिर्क संत सोफ्रोनीयस ने इस वधिर्म का कड़ा वरिोध कयिा; एक स्थानीय परषिद बुलाने के बाद, उन्होंने यूनविोल्यूशनसि्ट्स के वधिर्म की नदिा की और अपनी परषिद के फरमानों की प्रतयिां दूर-दूर तक भेजीं, जनि्हें बाद में छठी सार्वभौमकि परषिद में पढ़ा गया, पवति्र पतिाओं द्वारा अनुमोदति कयिा गया, और ऑर्थोडॉक्स के रूप में स्वीकार कयिा गया। संत सोफ्रोनीयस ने मसीह की कलीसयिा के लएि कई अन्य वचन, शकि्षाएँ और भजन लखिे, साथ ही कुछ संतों के जीवन भी लखिे, जैसे मसि्र की संत मरयिम, जनि्होंने स्वर्गदूतों की तरह, सामान्य मानवीय आयु से अधकि समय तक रेगसि्तान में जीवन व्यतीत कयिा[2308] । उन्होंने परमेश्वर की कलीसयिा का भलीभाँति चरवाहा कयिा, वधिर्मयिों को चुप करा दयिा और उन्हें भेड़यिों की तरह वचन के झुंड से दूर भगा दयिा।

फरि, एक बार फरि ईश्वर की अनुमति से, सीरयिा और फलिसि्तीन पर एक बर्बर आक्रमण हुआ, लेकनि इस बार फारसयिों द्वारा नहीं, बल्कि मुसलमानों द्वारा,[2309] जनि्होंने पहले दमशि्क शहर पर कब्जा कयिा, फरि परमेश्वर के नगर, यरूशलेम की घेराबंदी की, और दो साल बाद उसे जीत लयिा। जब सीरयिा में यूनानी सेना उनके हाथों पराजति हो गई और सेनापति सेरजयिस मारा गया, तब परम पावन पैट्रआिर्क सोफ्रोनीयस ने फलिसि्तीनी ईसाइयों के साथ मलिकर पवति्र नगर में शरण ली। उनका प्रवचन, जो घेराबंदी के दौरान मसीह के जन्म के दनि लोगों को दयिा गया था, संरक्षति है; इसमें, एक नए यरि्मयाह की तरह, वे पवति्र स्थानों के उजाड़ और वनिाश पर शोक व्यक्त करते हैं, जो मानव पापों के कारण ईश्वर द्वारा अनुमत था। वशिेष रूप से, वह इस बात पर शोक व्यक्त करते हैं कि बेथलहम में पहले से ही अगारयिों के कब्जे में होने के कारण, बेथलहम में यीशु के जन्म का पारंपरकि तरीके से उत्सव मनाना असंभव था। घेराबंदी के दूसरे वर्ष के अंत में, संकट की चरम सीमा पर पहुँच चुके ईसाइयों को अपने दुश्मनों के सामने आत्मसमर्पण करने और उनके लएि शहर के द्वार खोलने के लएि मजबूर होना पड़ा। लेकनि पहले, परम पावन पैट्रआिर्क सोफ्रोनीयस ने अगारयिन राजकुमार उमर को शांति की शर्तें भेजीं, जनिमें से पहली यह थी कि ईसाई धर्म या परमेश्वर के पवति्र चर्च पर कोई हसिा या हानि न की जाए। उमर ने इस और अन्य शर्तों को पूरा करने का वादा कयिा। जब संधि हो गई, तो ईसाइयों ने अगारयिन राजकुमार के लएि शहर के द्वार खोल दएि; लेकनि वह, कपटी और चालाक होने के कारण, भेड़ के बच्चे की तरह वनिम्र और नम्र होने का दखिावा कर रहा था, जबकि अंदर से वह एक क्रूर भेड़यिा था; उसने ऊँट के बाल का फटा-पुराना वस्त्र पहना, पैदल शहर में प्रवेश कयिा, और यह पूछा कि सुलैमान का चर्च कहाँ है, ताकि वह वहाँ अपनी अधर्मी प्रार्थनाएँ कर सके। परम पावन सोफ्रोनीउस उनके स्वागत के लएि बाहर गए और उन्हें इतने पाखंडी वेश में देखकर कहा:

'देखो, भवषि्यवक्ता दाऊद द्वारा बताई गई पवति्र स्थान में वनिाश की घृणा हमारे ऊपर आ पड़ी है!'

[2308] संत सोफ्रोनीयस की बड़ी संख्या में रचनाएँ संरक्षति हैं, और उन्हें प्रमुख धर्मशास्त्रीय धर्मवजि्ञानयिों में से एक के रूप में मान्यता प्राप्त है। उनके परषिद संबंधी पत्र के अलावा, जसिमें त्रमिूर्ति और परमेश्वर के वचन के अवतार के सदि्धांत को प्रस्तुत कयिा गया है—और जसिमें वे ह्यूपोस्टेससि (नेस्टोरयिस के खलिाफ) की एकता और स्वभावों की द्वैतता (यूटीकेस के खलिाफ) का बचाव करते हैं—नमि्नलखिति बदिुओं पर उनके शब्द वशिेष रूप से उल्लेखनीय हैं: 1) उद्धारकर्ता के बपतसि्मा पर – यीशु मसीह में दो स्वभावों का बचाव, और इसके साथ ही दो क्रयिाओं और दो इच्छाओं का सदि्धांत; 2) क्रूस पर, जसिमें दो प्रवचन शामलि हैं; इनमें से दूसरा हमारे महा-व्रत के दौरान उपवास और क्रूस की पूजा के पर्व का सदि्धांत प्रस्तुत करता है; 3) θυσις और ουσια शब्दों की व्याख्या के संबंध में बेसलि द ग्रेट के लएि एक अपोलॉजी; 4) प्रस्तुति पर; 5) जॉन द बैपटसि्ट पर एक प्रवचन; 6) मसि्र की संत मैरी की प्रशंसा में एक प्रवचन, जसिसे सप्तम सार्वभौमकि परषिद के मूल पाठ में अंश उद्धृत कएि गए हैं; 7) शहीदों साइरस और जॉन का जीवन; 8) 'लनिाजी की व्याख्या', जो धर्मशास्त्रीय दृष्टकिोण से सबसे उल्लेखनीय कृतयिों में से एक है; 9) 'तीन भजन', जो महा-लेंट के दनिों से शुरू होकर आरोहण के पर्व पर समाप्त होते हैं; 10) मसीह के जन्म के पर्व के घंटों के लएि ट्रॉपारयिा या स्व-स्वर स्टचिेरा, घंटों के पूर्ण क्रम के साथ; 11) महा-शुक्रवार के लएि घंटों का क्रम, स्टचिेरा के साथ, जो वर्तमान क्रम के समान नहीं है; 12) एपफिेनी के पर्व पर जल का आशीर्वाद के लएि स्टचिेरा; 13) कुछ काव्यात्मक कृतयिाँ; 14) अंत में, हाइरोमोंक के पद पर रहते हुए, संत सोफ्रोनीयस ने 'संत सावस द सैंक्चइड के मठ का नयिम' का संशोधन और सुधार कयिा।

[2309] अरब।

और वह सभी ईसाइयों के साथ कड़वे आँसू रोया और राजकुमार से अपने फटे-पुराने कपड़े उतारकर अपने पद के अनुरूप राजसी वस्त्र धारण करने का आग्रह कयिा। इस प्रकार पवत्रि शहर अगारयिों के कब्जे में चला गया, और ईसाई धर्म को दासता के कठोर जुए के अधीन कर दयिा गया। लेकनि इस दुष्ट अगारयिन राजकुमार ने परम पावन पैट्रआर्क सोफ्रोनीयस से वादा कएि गए शांतकि नयिमों का सम्मान नहीं कयिा, और यरूशलेम के ईसाइयों पर कई वपित्तयिाँ डालनी शुरू कर दीं। यह देखकर, संत सोफ्रोनीयस लगातार रोते रहे और ईश्वर से प्रार्थना की कि वह उनकी आत्मा को जीवतिों की भूमि से उठा लें, ताकि वह अब और ईसाइयों की दुर्दशा और पवत्रि स्थानों को अपवत्रि करने वाले वनिाश के घृणति कार्य के साक्षी न बनें – और उनकी प्रार्थना स्वीकार हो गई, जल्द ही उन्होंने अपने दुखद जीवन का अंत कयिा, और पृथ्वी के दुखति यरूशलेम से स्वर्गीय, आनंदति यरूशलेम में, हमारे प्रभु मसीह यीशु में आनन्दति होने वालों के नविास में प्रवेश क[2310] र कयिा, जनिका महमिा युगानुयुग हो। आमीन।

स्मyrna के पुरोहति, पवत्रि ह्येरोमार्टायर पयिोनयिस और उनके साथयिों का कष्टकथा

11 मार्च को स्मरण कयिा जाता है

प्रेरति हमें संतों की स्मृति का सम्मान करने की आज्ञा देते हैं: *'उन अगुवों को याद करो,'* वे कहते हैं, *'जनि्होंने तुम्हें परमेश्वर का वचन सुनाया'* (इब्रानयिों 13:7); यह इसलिए है ताकि, उनके वशि्वास, उनके जीवन और उनके सदाचारी नधिन को याद करके, हम उनका अनुकरण करने का प्रयास करें। इसी प्रकार, पवत्रि शहीद पयिोनयिस की स्मृति का सम्मान करना हमारे लिए उचति है, क्योंकि जब वह संसार में थे, तो उन्होंने कई लोगों को शैतान के जालों से दूर करके ईश्वर की ओर मोड़ा; वह प्रेरतिों के समान पदवी के व्यक्ति थे, और जब उन्होंने शहीद का मुकुट प्राप्त कर प्रभु के पास बुलावा पाया, तो उन्होंने हमें सद्गुण का एक आदर्श छोड़ दयिा, ताकि आज भी हम उनकी शकि्षा को याद रख सकें। उनके शहीद होने की शुरुआत इस प्रकार हुई।

छठे महीने के तेईसवें दनि (अर्थात् फरवरी - सतिंबर से गनिती में छठा महीना), जसि दनि स्मyrna के पवत्रि शहीद-बशिप पॉलीकार्प की स्मृति मनाई जाती थी, स्मyrna शहर में[2311] - जहाँ बहुत सारे यहूदी रहते थे - में पादरी पयिोनयिस, सावनि, जो धर्म की एक उत्साही रक्षक थी, अस्क्लेपयिाडेस, मेसेडोनयिा और लनिस, जो कैथेड्रल चर्च के एक पुरोहति थे: उस समय डेसयिस के शासनकाल में ईसाइयों पर अत्याचार हो रहा था[2312] । हालाँकि, पयिोनयिस ने उस दनि से पहले ही जान लयिा था कि उन्हें संत पॉलीकार्प के पर्व के दनि गरिफ्तार कयिा जाएगा। इसलिए, सवनि और अस्क्लेपयिड्स के साथ उपवास करने के बाद, उन्होंने तीन गुंथी हुई जंजीरें लीं, उन्हें स्वयं, सवनि और अस्क्लेपयिड्स पर डाल लयिा, और घर पर ही रहे, इस बात का इंतजार करते रहे कि वे आकर उन्हें ले जाएँ।

संत पोलीकार्प की स्मृति के ठीक उसी दनि, जब प्रार्थना के बाद उन्होंने थोड़ी सी रोटी खाई और कुछ पानी पयिा था, मूर्तपिूजक बलदिानों के आयोजक पोलेमोन सैनकिों के साथ आ पहुँचा; वह ईसाइयों को घृणति मूर्तपिूजक बलदिान करने के लिए मजबूर करने के लिए उन्हें ढूंढ रहा था, और उसने पयिोन से कहा:

'क्या तुम्हें राजा के फरमान का पता है? क्या तुम जानते हो कि तुम्हें देवताओं को बलदिान चढ़ाने का आदेश दयिा गया है?' पयिोनयिस ने उत्तर दयिा:

'हम अपने परमेश्वर की आज्ञाओं को जानते हैं, जनिके द्वारा वह हमें केवल उसी की आराधना करने की आज्ञा देता है।'

"सभा में जाओ," पोलमिोन ने कहा, "वहाँ तुम अपनी इच्छा के वरिुद्ध भी समर्पण करोगे।" सवनि और अस्कलेपआिडेस ने उत्तर दयिा:

[2310] स्मyrna – आयोनयिा का एक प्रसदि्ध प्राचीन व्यापारकि शहर, जो एजयिन सागर (या द्वीपसमूह) के पूर्वी तट पर स्थति था। स्मyrna में चर्च की स्थापना संत जॉन द थयिोलोजयिन, प्रेरति ने की थी। वर्तमान में स्मyrna तुर्कों के अधकिार में है, लेकनि आज भी वहाँ ईसाई धर्म संरक्षति है और फल-फूल रहा है।

[2311] रोमन सम्राट डेसयिस ने 249 से 251 तक शासन कयिा।

[2312] 641 या 644

'हम जीवति ईश्वर के समक्ष समर्पति हैं।'

और पोलमिोन ने उन्हें बनिा जबरदस्ती के ले जाया, जबकि लोग, यह देखकर कि वे अपनी इच्छा से अपनी बेड़ियाँ पहने हुए थे, एक-दूसरे को धक्का देते हुए उनके पीछे दौड़े, मानो कोई अभूतपूर्व चमत्कार देख रहे हों।

जब संत नगर के मजस्ट्रिेटों के सामने सभा में पहुँचे, तो ग्रीकों की एक अनगनित भीड़, और उससे भी अधकि यहूदयिों की भीड़, प्रवेश द्वारों और ऊपरी कमरों में हर जगह भर गई थी। संतों को बीच में खड़ा करके, पोलमिोन ने कहा:

'पयिोनयिस! राजा की आज्ञा का पालन करो, जैसे अन्य लोगों ने कयिा है, और देवताओं को बलदिान चढ़ाओ, नहीं तो तुम्हें क्रूर यातनाएँ दी जाएँगी।'

लेकनि पयिोनयिस ने अपना हाथ बढ़ाया और, एक तेजस्वी मुखमंडल के साथ, लोगों से बोलना शुरू कयिा:

'स्मyrna के लोगों, तुम जो अपने शहर की सुंदरता और इस तथ्य पर घमंड करते हो कि होमर यहाँ रहते थे[2313] , और तुम यहूदी जो यहाँ मौजूद हो, मैं जो कुछ शब्द कहने जा रहा हूँ उन्हें सुनो। मैं सुनता हूँ कि तुम हँस रहे हो और इस बात पर आनंदति हो कि हम में से कुछ लोग तुम तक आए हैं; तुम मूर्तयिों को बलदिान चढ़ाने के पाप को, जो अपनी इच्छा से नहीं बल्कि जबरदस्ती कयिा गया है, एक मज़ाक और तुच्छ बात समझते हो। लेकनि तुम, हे यूनानयिों, अपने शकि्षक होमर की बात मानो, जो कहते हैं कि किसी मनुष्य के वनिाश पर आनंदति होना उचति नहीं है। जहाँ तक आप यहूदयिों की बात है, मूसा आज्ञा देते हैं: *'यदि तुम अपने शत्रु की खच्चर को बोझ के नीचे गरि हुआ देखो, तो उसे न छोड़ो; उसके साथ मलिकर उसे उठाओ'* (नरि्गमन 23:5)।

आपको सुलैमान के वचनों पर भी ध्यान देना चाहिए: *'जब तेरा बैरी गरि, तब तू आनन्द न करना; और जब वह ठोकर खाए, तब तेरा हृदय प्रसन्न न हो'* (नीतविचन 24:17)। और मैं, अपने स्वामी की आज्ञा मानते हुए, उनके वचन का उल्लंघन करने के बजाय मरना पसंद करूँगा, और मैं अपनी पूरी शक्ति से उनके आज्ञाओं से भटकने का प्रयास नहीं करता, जनि्हें मैंने स्वयं बहुत समय पहले सीखा था, और बाद में दूसरों को सखिाया। यहूदी, तुम हम पर क्यों हँसते हो? भले ही हम आपके दुश्मन हों, जैसा आप कहते हैं, हम फरि भी इंसान ही हैं; आप कहते हैं कि हम आपको नुकसान पहुँचाते हैं जब हम सच बोलते हैं; लेकनि मुझसे कहए: हमने कसिका अहति कयिा है, हमने कसिका उत्पीड़न कयिा है, हमने कसिको मूर्तयिों के सामने झुकने के लएि मजबूर कयिा है? क्या आप अपने पापों को उन लोगों के पापों के बराबर नहीं मानते, जो मनुष्यों के भय से, अब ईश्वर की आज्ञा का उल्लंघन करते हैं और मूर्तयिों के सामने झुकते हैं? लेकनि कसिने तुम्हें बेल[2314] की सेवा करने, मृतकों की बलि[2315] खाने, अन्यजातयिों की बेटयिों का मज़ाक उड़ाने, अपने बेटों और बेटयिों की बलि राक्षसों को चढ़ाने, परमेश्वर के वरि्द्ध कुड़कुड़ाने, मूसा के बारे में बुरा बोलने, या मसि्र लौटने की साजशि रचने के लएि मजबूर कयिा है? मैं तुम्हारे अन्य कर्मों का उल्लेख भी नहीं करूँगा; फरि भी तुम दावा करते हो कि कोई तुम्हें धोखा नहीं दे सकता: क्या तुमने अपनी ही पुस्तकें—नरि्गमन, न्याययिों, राजाओं और बाकी—नहीं पढ़ीं, जनिमें तुम्हारी पोल खुलती है? तुम हम में से कुछ लोगों की ओर इशारा करते हो, जो जबरदस्ती नहीं बल्कि अपनी मर्ज़ी से मूर्तयिों की ओर मुड़ गए हैं, और इन कुछ लोगों के कारण तुम सभी ईसाइयों की नदिा और नन्दिा करते हो। लेकनि, यहूदयिों, इस वर्तमान जीवन पर वचिार करो: यह एक खलहिान की तरह है जहाँ ज़मीन पर एक बड़ा ढेर पड़ा है—क्या? भूसी का या गेहूँ का? जब मजदूर अपनी कुदाल से छंटनी करने आता है, तो हल्की भूसी हवा से आसानी से उड़ जाती है, जबकि गेहूँ जमीन पर रह जाता है। समुद्र में फेंके गए एक मछली पकड़ने के जाल पर वचिार करो: क्या उसमें फँसकर कनिारे पर लाया गया हर मछली अच्छी होती है? नहीं। इस जीवन के साथ भी ऐसा ही है। तो फरि, आप चाहते हैं कि हम कैसे दुख सहें: अपराधी की तरह या नरि्दोष की तरह? यदि दोषी के रूप में, तो आपको भी तब पीड़ा सहनी होगी जब आपके अपने कर्म आपको गलत काम का दोषी ठहराएँगे; लेकनि यदि नरि्दोष के रूप में, तो आपके लएि, अधर्मी के लएि, उद्धार की क्या आशा है, यदि धर्मी पीड़ति होते हैं: *'और यदि धर्मी बड़ी मुश्कलि से बचेंगे, तो दुष्ट और पापी का क्या ठकिाना?'* (1 पतरस 4:18)। संसार का न्याय नकिट आ रहा है, और इसके संकेत स्पष्ट हैं। मैं सभी यहूदी प्रदेशों में यात्रा कर चुका हूँ, यॉर्डन नदी को पार कयिा है, और उस भूमि को देखा है जो, आज तक, उस पर रहने वाले लोगों के पापों के लएि ईश्वर के क्रोध का नशिान वहन करती है, जो हत्या और यात्रयिों के खलिाफ कई अत्याचार करते हैं। मैंने उसमें से उठता हुआ धुआं देखा, खेत और खेती की ज़मीन आग से झुलसी

[2313] होमर – एक यूनानी कवि, जनि्होंने परंपरा के अनुसार *द इलयिड* और *द ओडसिी* कवताएँ लखिीं; उनका जन्मस्थान अज्ञात है, और स्मरि्ना सहति कई शहरों ने उनके जन्मस्थान होने का सम्मान पाने का दावा कयिा।

[2314] वील्फेगोर या वाल्फेगोर – एक सीरो-फ़निशियिन (मोआबटि) देवता, जसिकी पूजा अनैतकिता की वशिेषता थी।

[2315] यह, बेशक, मानव शवों का उपयोग करके की जाने वाली जादू-टोने और तंत्र-मंत्र का संदर्भ है।

हुई, हर तरह के फल से खाली, नमी से रहति। मैंने मृत सागर (यानी, वह तारकोल की झील जो पचि बनाती है) और वह पानी भी देखा जसिने परमेश्वर के क्रोध के कारण अपनी सभी गुणधर्म खो दी थीं; यह न तो कसिी जानवर की प्यास बुझा सकता है और न ही मानव शरीर को जीवति रख सकता है, और जो कुछ भी इसमें फेंका जाता है वह तुरंत बाहर नकिल आता है। लेकनि मैं ऐसी दूर की जगहों को क्यों याद कर रहा हूँ! आप लडियिा में डेकापोलसि[2316] को आग से जलता हुआ देखते हैं, और आज भी यह अधर्मी लोगों के लिए दंड के रूप में झुलसा हुआ पड़ा है... माउंट एटना के वसि्फोट और ससिलिी द्वीप के वनिाश[2317] को याद करें। यदयिह आपसे बहुत दूर का लगता है, तो पृथ्वी से नकिलने वाले गर्म पानी पर वचिार करें: वे गर्म क्यों हो जाते हैं और तप क्यों जाते हैं? क्या यह पृथ्वी के भीतर पापयिों के लिए तैयार की गई आग से नहीं है? इससे हम सीखते हैं कि संसार पर न्याय होगा और पापयिों के लिए ईश्वर द्वारा उनके अवतारति वचन, हमारे प्रभु यीशु मसीह के माध्यम से आग द्वारा दंड दयिा जाएगा; और इसलिए हम यूनानयिों के देवताओं की सेवा नहीं करते, न ही हम सुनहरे मूर्ति की पूजा करना चाहते हैं।

संत पयिोनयिस ने और कहा, जबकि पोलमिोन, नगर के मजस्ट्रेट और सभी लोग गहरी शांति में सुन रहे थे। फरि कुछ नागरकिों ने, पोलमिोन के साथ, पयिोनयिस से वनिती करना शुरू कयिा, कहते हुए:

'पयिोनयिस, सुनो, हम तुम्हारे अच्छे स्वभाव और कोमलता के लिए तुमसे प्रेम करते हैं, और हम चाहते हैं कि तुम जीवति रहो: नस्संदेह जीना और सूर्य का प्रकाश देखना अच्छा और मीठा है!'

संत ने उत्तर दयिा:

'मेरी दृष्टि में, यह अस्थायी जीवन सुखद है, लेकनि वह जीवन जसिके लिए हम ईसाई तरसते हैं, वह अतुलनीय रूप से अधकि सुखद है; यह प्रकाश आनंददायक और सुखद है, मैं यह स्वीकार करता हूँ, लेकनि उससे भी अधकि आनंददायक और सुखद वह सच्चा प्रकाश है जसिे हम देखने की आशा करते हैं।' यह सब, जो भौतकि आँखों से दखिाई देता है, सुंदर है; हम ईश्वर की सृष्टि की न तो नदिा करते हैं और न ही उससे घृणा करते हैं; लेकनि एक और भी चीज़ है, अदृश्य, जो वास्तव में और भी अधकि सुंदर है और जसिे हम दखिाई देने वाली सभी चीज़ों से ऊपर मानते हैं।

अलेक्जेंडर नामक एक धृष्ट व्यक्ति, जो बहुत चालाक था, ने कहा:

'मेरी बात सुनो, पयिोनयिस!' संत ने उत्तर दयिा:

'तुम्हें मेरी बात सुननी चाहए, क्योंकि जो कुछ तुम जानते हो, मैं भी जानता हूँ, परन्तु तुम वह नहीं जानते जो मैं जानता हूँ।' अलेक्जेंडर ने, संत की नदिा करते हुए, उनसे कहा:

'और तुम ये बेड़यिाँ क्यों पहने हो?'

संत ने उत्तर दयिा, 'ताकि तुम यह न सोचो कि हम तुम्हारी मूर्तयिों की पूजा करने जा रहे हैं, बल्कि यिह जान लो कि हम अपने ईश्वर के लिए जेल और मृत्यु की ओर जा रहे हैं।'

अलेक्जेंडर ने बहुत समय तक वभिन्नि प्रलोभनों से पयिोनयिस को मनाने की कोशशि की, लेकनि उसे कुछ भी हासलि नहीं हुआ; अंत में उसने कहा:

'इतने सारे शब्द क्यों बर्बाद करें जब वे जीवति रहना ही नहीं चाहते?'

हालाँकि, लोग चाहते थे कि पयिोनयिस को एक प्रमुख स्थान पर रखा जाए ताकि उसके शब्द सभी सुन सकें; लेकनि पोलमिोन ने ऐसा करने की अनुमति नहीं दी, इस डर से कि इससे लोगों के बीच अशांति और वभिन्नि अफवाहें फैल सकती हैं। उसने पयिोनयिस से कहा:

'यदि तुम देवताओं को बलदिान नहीं चढ़ाना चाहते, तो कम से कम उनके मंदरिों में तो प्रवेश करो।' संत ने उत्तर दयिा:

'मेरे उनके पास आने से मूर्तयिों को क्या लाभ होगा?'

'ठीक है, पयिोनयिस,' पोलमिोन ने दोहराया।

'काश मैं तुम सबको ईसाई बनने के लिए मना ही सकता!' पओिनयिस ने उत्तर दयिा। लेकनि वे हँस पड़े और बोले:

'नहीं, कृपया, जब हम अभी जीवति हैं तो हमें आग में न जलाएं।' और संत ने उनसे कहा:

'मृत्यु के बाद न बुझने वाली आग में अनंतकाल तक जलना तो और भी भयानक है।'

[2316] लडियिा एशयिा माइनर का एक प्रांत है।

[2317] ससिलिी – भूमध्य सागर के बड़े द्वीपों में से एक – अब इटली के साम्राज्य का हस्सिा है।

धन्य सावनि मुस्कुराईं, जबकि पोलमिोन और अन्य लोग उनसे कहने लगे:

'तुम हँस क्यों रही हो?' उसने उत्तर दिया:

'मैं इस बात की आनंदित हूँ कि मैं एक ईसाई हूँ, क्योंकि जो कोई भी मसीह के विश्वास में दृढ़ रहता है, वह सदा के लिए आनंदित रहेगा।' अधर्मी ने उससे कहा:

'तब हँसना, जब तुम्हें वह सहना पड़ेगा जो तुम नहीं चाहते: जो स्त्रियाँ देवताओं को प्रणाम नहीं करतीं, उन्हें वेश्यालयों में ले जाया जाता है।'

लेकिन उसने उत्तर दिया:

'पवित्र और सच्चा ईश्वर मेरी देखभाल करेगा।'

इसके बाद, उन्होंने संतों के नाम और उनके उत्तर लिखना शुरू कर दिया, जिनके द्वारा उन्होंने मसीह की गवाही दी और मूर्तियों को अस्वीकार किया; जब वे सवनि का नाम लिखना चाहते थे, तो संत पियोनियस ने चुपचाप उससे कहा कि वह अपना असली नाम न दे, बल्कि खुद को थियोडोतिया कहें; उन्होंने ऐसा इसलिए किया ताकि उसकी मालकनि को उसके कर्मों के बारे में पता न चल सके। वास्तव में, संत सावनि एक दासी थी जो एक प्रसिद्ध ग्रीक महिला की थी, जिसने कई साल पहले, गॉर्डियन[2318] के शासनकाल में, अपनी दासी, धन्य सावनि को मसीह से दूर न कर पाने के कारण, उसे बँधी हुई अवस्था में सुनसान पहाड़ों में निर्वासित कर दिया था, जहाँ विश्वासियों द्वारा उसे गुप्त रूप से भोजन दिया जाता था; बाद में, संत पियोनियस के महान प्रयासों से, उन्हें उनकी बेड़ियों और उनकी मालकनि की दासता से मुक्त कर दिया गया। संत पियोनियस को डर था कि उनकी मालकनि किसी तरह नाम से उन्हें पहचान लेगी और उन्हें वापस ले जाना चाहेगी; इस कारण, उन्होंने संत सावनि को खुद को थियोडोतिया कहने का निर्देश दिया। जब पोलमिोन ने उनसे उनका नाम पूछा, तो उन्होंने उत्तर दिया:

'मेरा नाम थियोडोतिया है।'

पोलमिोन ने पूछा, 'क्या तुम ईसाई हो?'

और संत ने उत्तर दिया:

'हाँ, मैं ईसाई हूँ।'

उनके उत्तरों को उसी तरह दर्ज किया गया जैसे पियोनियस और एस्क्लेपियाडेस के। पोलमिोन ने आगे पूछा:

– आप किसि देवता की पूजा करती हैं? संत ने उत्तर दिया:

– सर्वशक्तमिान परमेश्वर, जिन्होंने स्वर्ग और पृथ्वी और हम सभी को बनाया; जिन्हें हम उनके वचन के द्वारा जानते हैं, जो हमारे प्रभु यीशु मसीह के रूप में परमेश्वर की अति पवित्र और निर्मल कुँवारी माता से अवतारित हुए।

संतों के नाम दर्ज करने के बाद, उन्हें जेल ले जाया गया, और पूरी भीड़ उनका अनुसरण करती रही।

कुछ ने संत पियोनियस के बारे में कहा:

– देखो: वह हमेशा पीला रहता था, लेकिन आज उसकी गाल कितने गुलाबी हैं!

अन्य लोग चिल्लाए:

'यदि ये पुरुष देवताओं को बलिदान चढ़ाने से इनकार करते हैं तो इन्हें यातना दी जानी चाहिए।'

संत पियोन ने उत्तर दिया:

'जो भी तुम्हारे रास्ते में आए, उन्हें यातना दो! हमारे पास हमें बचाने के लिए कोई कवच-वाहक नहीं, कोई सैनिक नहीं; हम तुम्हारे हाथों में हैं: हमें यातना दो!'

किसी ने सेंट एस्क्लेपियाडेस की ओर इशारा किया और कहा:

'यह देवताओं को बलिदान चढ़ाना चाहता है।'

'तुम झूठ बोल रहे हो,' संत पियोनियस ने उत्तर दिया, 'हम में से कोई भी ऐसा नहीं करेगा।'

हालाँकि, दूसरों ने उन लोगों को याद किया जो मसीह से भटक गए थे और, उन्हें एक-एक करके नाम लेते हुए, कहा:

'अमुक और अमुक ने बलिदान चढ़ाया है; तुम क्यों नहीं चढ़ाओगे?'

संत पियोन ने उत्तर दिया:

'हर किसी की अपनी मर्ज़ी होती है; दूसरों का मैं क्या करूँ? मैं पियोनियस हूँ।'

[2318] गॉर्डियन – एक रोमन सम्राट जिसने 238 में (कुल 36 दिनों के लिए) शासन किया।

भीड़ संत पयिोन और उनके साथयिों से नाराज़ थी; जैसे ही वे कालकोठरी में पहुँचे, भीड़ ने लगभग उन्हें पीट-पीट कर मार ही डाला।

कारागार में प्रवेश करने पर, उन्हें वहाँ कैथेड्रल चर्च के एक पुरोहति लनिस मलि, जन्हिें मसीह के लिए कैद कयिा गया था, और करनिा गाँव की मैसेडोनयिा नामक एक महलिा भी थी; कई वशि्वासी उनके पास आए और उन्हें उनकी ज़रूरत की चीज़ें लाए, लेकनि उन्होंने उन्हें स्वीकार करने से इनकार कर दयिा और वे चीज़ें जेल के रक्षकों में बाँट दीं। कुछ यूनानयिों ने भी संतों से मुलाकात की और उन्हें आस्था से भटकाने की कोशशि की, लेकनि, उनके दृढ़ उत्तर सुनकर, वे आश्चर्यचकति होकर चले गए। मसीह के कैदयिों के पास वे लोग भी आए जो पहले मसीही थे लेकनि उन्हें अपनी इच्छा के वरिुद्ध, सच्चे वशि्वास से भटकने के लिए मजबूर कयिा गया था: यातना के डर ने उन्हें मूर्तयिों को बलदिान चढ़ाने के लिए प्रेरति कयिा था; वे संतों के सामने कालकोठरी में घंटों और दनिों तक कड़वा रोते रहे; संत पयिोनयिस ने उनके लिए भी कड़के आँसू बहाए, वशिेष रूप से उन लोगों के लिए जन्होंने एक अच्छे और सम्मानजनक जीवन से खुद को प्रतष्ठिति कयिा था, लेकनि यातनाओं के डर से मूर्तयिों को बलदिान अर्पति कर दयिा था; उन्होंने रोते हुए कहा:

'मेरे हृदय में एक नया क्लेश है; जब मैं देखता हूँ कि कैसे सूअर चर्च के मोतयिों को रौंद रहे हैं[2319] , कैसे स्वर्ग के तारे एक साँप की पूँछ से पृथ्वी पर फेंके जा रहे हैं (प्रकाशतिवाक्य 12:4), और कैसे परमेश्वर के दाहनिे हाथ से लगाई गई दाख की बारी एक जंगली सूअर द्वारा खाई जा रही है और राहगीरों द्वारा लूटी जा रही है। मेरे बच्चों, मैं तुम्हारे लिए तब तक शोक मनाता हूँ जब तक मसीह फरि से तुम में वास नहीं करता; मेरे प्रयि भरोसे, जो स्वर्ग की रोटी से पोषति हुए, तुम पाप के मार्ग पर क्यों भटक गए; अब अधर्मी बुज़ुर्गों ने पवत्रि सुसन्ना, अर्थात् मसीह की कलीसयिा को अशुद्ध कर दयिा है; अब हaman जयजयकार कर रहा है, जबकि एस्तेर और उसकी सारी प्रजा नराश है; अब अकाल है—रोटी या पानी की नहीं, बल्कि परमेश्वर के वचन का; अब सुसमाचार की सभी कुँवारयिाँ सो गई हैं और नद्रिालु पड़ी हैं। प्रभु का वचन पूरा हुआ है: 'जब मनुष्य का पुत्र आएगा, तो क्या वह पृथ्वी पर वशि्वास पाएगा?' (लूका 18:8)। और उनका एक और वचन: 'भाई भाई को मृत्यु तक धोखा देगा' (लूका 21:16); मैं सुनता हूँ, हे , कि अब हर कोई अपने पड़ोसी को धोखा दे रहा है। सचमुच, शैतान ने हमें गेहूँ की तरह छानने के लिए माँगा है, परन्तु परमेश्वर के वचन के हाथों में जलती हुई फावड़ी उसकी खलचक्की को छाँटे; नमक ने अपनी शक्ति खो दी है, और उसे बाहर फेंक दयिा गया है, और लोग उसे पैरों तले रौंदते हैं। पर मेरे बच्चों, कोई यह न सोचे कि प्रभु थक गए हैं: यह प्रभु नहीं है, बल्कि हम हैं जो थक गए हैं, क्योंकि, जैसा कि वह कहते हैं, 'क्या मेरा हाथ तुम्हें बचाने से थक गया है? या क्या मेरा कान भारी हो गया है, कि मैं तुम्हें नहीं सुन सकता?' परन्तु तुम्हारे पापों ने तुम्हें तुम्हारे परमेश्वर से अलग कर दयिा है। भाइयों, हमने पाप कयिा है; हमने प्रभु की आज्ञाओं का उल्लंघन कयिा है और अधर्म कयिा है; हमने परमेश्वर को क्रोधति कयिा है और अपने पड़ोसी को दुखी कयिा है; हमने एक-दूसरे की नदिा की है, झूठ बोला है, और एक-दूसरे की बुराई की है, और एक-दूसरे को नगिल लयिा है, जबकि हमारी धार्मकिता फरीसयिों और शास्त्रयिों से अधकि होनी चाहए थी। मैं यह भी सुनता हूँ कि यहूदी तुम में से कुछ को अपनी सभाओं में बुला रहे हैं; सावधान रहो कि कहीं तुम और भी बुरे जालों में न फँस जाओ और एक ऐसा पाप न कर बैठो जो क्षमा न हो सके, अर्थात् पवत्रि आत्मा के वरिुद्ध अपमान – सोदोम के यहूदी राजकुमारों और गोमोरा के लोगों जैसे न बनो, जनिके हाथ खून से रंगे हुए हैं। हमने न तो कसिी नबी को मार डाला है, और न ही मसीह को धोखा दयिा है और न ही सूली पर चढ़ाया है। लेकनि इतना सब क्यों कहें! याद करो जो तुमने मुझसे पहले भी कई बार सुना है; तुम अच्छी तरह जानते हो कि यहूदी दावा करते हैं कि मिसीह एक साधारण मनुष्य थे और एक नश्वर के रूप में उन्हें मृत्युदंड दयिा गया था। लेकनि उन्हें हमसे यह बताने दीजए: यदि वह केवल एक नश्वर मनुष्य था, तो यह कैसे है कि पूरी दुनयिा उसके शष्यिों की भीड़ से भर गई है; और यह कैसे है कि इतने सारे लोग उसके नाम के लिए क्रूरता से पीड़ति हैं; यह कैसे है कि, केवल एक नश्वर मनुष्य के नाम पर, उसके देहांत के इतने वर्षों बाद, दुष्टात्माओं को नकिाला गया और अब नकिाला जा रहा है, और समय के अंत तक नकिाला जाता रहेगा? और वशि्वासयिों की कलीसयिा में उनके सर्वशक्तमिान नाम के द्वारा और भी बहुत से चमत्कार कए जाते हैं। वे शापति यहूदी यह नहीं समझते कि मिसीह, हमारे प्रभु, ने अपनी इच्छा से दुख उठाया, हमारे लिए मरे, और तीसरे दनि महमिा में फरि जी उठे। लेकनि अधर्मी दावा करते हैं कि मिसीह एक जादूगर थे और जादू की शक्ति से मरे हुओं में से जी उठे; तो उनसे पूछो कि उनके या हमारे धर्मग्रंथों में से कसिमें मसीह के बारे में यह कहा गया है, या कसि धर्मी व्यक्ति ने कभी ऐसी बात कही है? क्या यह अच्छी तरह ज्ञात नहीं है कि यह एक झूठ है, और जो लोग ऐसे झूठ बोलते हैं

[2319] अर्थात् मसीह की शक्षिा (मत्ती 7:6)

वे सबसे दुष्ट अधर्मी हैं? और ऐसे लोगों पर धर्मी लोगों की अपेक्षा अधिक विश्वास क्यों किया जाता है? मैंने ये झूठे शब्द उनसे अपने बचपन में भी सुने थे। पवित्र शास्त्र में लिखा है कि कैसे शाऊल एक जादूगरनी के पास गया और उससे मृतकों में से भविष्यवक्ता शमूएल को बुलाने के लिए कहा; उस स्त्री ने जादू-टोना किया, और शाऊल ने एक बूढ़े आदमी को पृथ्वी से निकलते हुए देखा, जो एक लंबा चोगा पहने हुए था, और उसने पहचान लिया कि वह शमूएल है, और उससे पूछा कि वह क्या चाहता है। तो अब, क्या यह जादूगरनी सचमुच सैमुएल को मृतकों में से उठा सकती थी, या नहीं? यदि यहूदी कहते हैं कि वह ऐसा कर सकती थी, तो वे यह स्वीकार करते हैं कि झूठ सच्चाई से और जादू-टोना पवित्रता से अधिक शक्तिशाली है, क्योंकि पवित्र नबी जादूगरनी की अवज्ञा नहीं कर सकता था; जो इस प्रकार बोलते हैं वे घृणित और शापित हैं। हालाँकि, यदि वे कहते हैं कि जादूगरनी वास्तव में अपने जादू-टोने से पैगंबर सैमुअल को मृतकों में से नहीं उठा सकती थी, तो वे हमारे प्रभु मसीह के बारे में यह नहीं कह सकते कि वे जादू-टोने की शक्ति से कब्र से उठे थे। पवित्र धर्मग्रंथ में इस वृत्तांत की व्याख्या इस प्रकार की गई है। शैतान, जो जादूगरनी के भीतर वास कर रहा था, पवित्र भविष्यवक्ता की आत्मा को, जो अब्राहम की गोद में विश्राम कर रही है, इस संसार में कैसे बुला सकता था? क्योंकि छोटा बड़े पर अधिकार नहीं रखता, और शैतान किसी संत को आज्ञा नहीं दे सकता; परन्तु जो स्वर्गदूत परमेश्वर से भटक गए हैं, वे उन लोगों की आज्ञा मानते हैं जिन्होंने परमेश्वर को त्याग दिया है, उनकी सेवा करते हैं और उन्हें जादू-टोने के द्वारा बुलाते हैं; और जादूगर उनसे जो कुछ भी मांगते हैं, शैतान उसे पूरा करते हैं: जादूगरनी ने शैतान से पूछा जिसने उसकी आज्ञा मानी, और उसने पैगंबर का रूप धारण कर लिया। और यह आश्चर्य की बात नहीं है, क्योंकि प्रेरित के वचन (2 कुरिन्थियों 11:14) के अनुसार, शैतान स्वयं को प्रकाश के स्वर्गदूत के रूप में प्रच्छन्न कर लेता है; इसलिए, उसके सेवक भी परमेश्वर के सेवकों का रूप धारण कर सकते हैं, ठीक वैसे ही जैसे मसीह-विरोधी मसीह का रूप धारण करेगा। तो, यह निष्कर्ष निकलता है कि जादूगरनी ने पवित्र भविष्यवक्ता शमूएल को मृतकों में से नहीं उठाया, बल्कि परमेश्वर से भटक चुके शाऊल को शमूएल के वेश में शैतान दिखाया; स्वयं पवित्रशास्त्र इसकी गवाही देता है; क्योंकि जो शमूएल के रूप में प्रकट हुआ, वह शाऊल से कहता है: 'और तुम भी कल मेरे साथ होओगे'। तो फिर, परमेश्वर का शत्रु साऊल, पवित्र नबी शमूएल के साथ कैसे हो सकता है? क्या उसके लिए शैतान के साथ होना बेहतर नहीं है, जिसके अधीन वह परमेश्वर से मुंह मोड़ने के बाद हो गया था? कपटी यहूदियों को पता चलना चाहिए कि किसी भी प्रकार की जादू-टोने से मृतकों को सचमुच जीवित करना असंभव है; और जैसे उसने जादू-टोने से शमूएल को मृतकों में से नहीं उठाया, वैसे ही मसीह जादू-टोने से नहीं उठे, बल्कि अपनी दिव्य शक्ति से उन्होंने मृत्यु की शक्ति को नष्ट किया; और जैसे उन्होंने अपनी इच्छा से दुख उठाया और मृत्यु भोगी, वैसे ही उन्होंने अपनी इच्छा से, सर्वशक्तिमान होकर, परमेश्वर के रूप में पुनरुत्थान किया। यदि, तथापि, वे इसमें भी विश्वास नहीं करते, तो उनसे कहो: भले ही हमने मूर्तियों को बलिदान चढ़ाया हो, हम फिर भी तुमसे कहीं बेहतर हैं: तुमने अपनी मर्जी से राक्षसों को बलिदान चढ़ाया, जबकि हम ऐसा करने के लिए मजबूर थे। और संत पियोनियस ने धर्मत्यागियों को यह कहते हुए प्रोत्साहित किया: 'भाइयो, निराश न हो; यद्यपि तुमने मूर्तियों को बलिदान चढ़ाकर एक बड़ा पाप किया है, परन्तु सच्चे मन से पश्चाताप करो और फिर से पूरे हृदय से मसीह, अपने परमेश्वर, की ओर लौट आओ: वह दयालु है और पश्चाताप करके उसके पास आने वालों को ग्रहण करने के लिए तैयार है, और वह तुम्हें अपने बच्चों के रूप में आनन्द के साथ ग्रहण करेगा।'

और वे, कड़वे आँसू बहाते हुए, अपने पाप से पश्चाताप किया और एक बार फिर हमारे ईश्वर मसीह की ओर लौट आए।

इसके बाद, मूर्तिपूजक अनुष्ठानों के आयोजक पोलेमोन और मजिस्ट्रेट थियोफिलुस[2320] सेना और लोगों के साथ जेल आए; उन्होंने संतों को बाहर निकाला और कहा:

'देखो, तुम्हारे बिशप यूक्टिमोन ने हमारे देवताओं की पूजा की है और उनके लिए बलिदान चढ़ाया है; उसकी आज्ञा मानो और जैसा उसने किया है, वैसा ही करो; परन्तु यदि तुम ऐसा नहीं करोगे, तो पुरोहित लेपडिोन और यूक्टिमोन तुम्हारा न्याय देवताओं के मन्दिर में करेंगे।'

संत पियोन ने उत्तर दिया:

[2320] मजिस्ट्रेट – एक महत्वपूर्ण रोमन सरकारी अधिकारी जिसे सैन्य और न्यायिक दोनों अधिकार प्राप्त थे।

'यदि बिशप यूक्टमिोन ने मूर्तियों को बलदिान अर्पति कयिा है, तो वह उसका अपना मामला है—यह हमारी क्या चंति है? हम बलदिान नहीं चढ़ाएंगे। हमें तो एंटीपेट्स[2321] को ही न्याय करना है, न कि लेपडिोन को, न यूक्टमिोन को, और न ही आपको; तो फरि आप, एंटीपेट्स के आने का इंतज़ार कएि बनिा, उनका अधकिार हड़प कैसे रहे हैं?'

जो लोग आए थे, उन्होंने संतों पर अपना क्रोध नकिालने के बाद, पीछे हट गए। फरि वे एक सेना और लोगों की भीड़ के साथ वापस आए और झूठ बोलकर घोषणा की:

[2322]'एंटपिाटस ने आपको एफ़सिुस में मुकदमे के लएि बुलाने का आदेश भेजा है।' पयिोन ने उत्तर दयिा:

'संदेशवाहक आए, हमें ले जाएँ और हमारा नेतृत्व करें।' तब थयिोफलिस ने कहा:

'तुम मुझ पर वशि्वास क्यों नहीं करते? मैं एक राजकुमार हूँ, और मुझ पर भरोसा कयिा जा सकता है।'

और, संत पयिोन की गर्दन में रस्सी डालकर, उसने सैनकिों को आदेश दयिा कि वे सभी को मूर्तपिूजक मंदरि ले जाएँ; उन्होंने सभी को पकड़ लयिा और जबरदस्ती ले गए, क्योंकि संतों ने मूर्तियों के पास जाने से इनकार कर दयिा और जोर से चलि्लाए:

'हम ईसाई हैं; हम मूर्तियों के पास क्यों जाएँ?'

लेकनि सैनकिों ने संतों को जबरदस्ती घसीटा, और रस्सी से गर्दन पकड़कर खींचते हुए उन्होंने पयिोनयिस को लगभग घुटन से मार ही डाला।

जब उन्हें चौक के केंद्र में लाया गया और वे मंदरि के पास पहुँचे, तो संत पयिोन ज़मीन पर गरि पड़े, यह घोषणा करते हुए कि वह एक ईसाई है और मूर्ति-घर में प्रवेश नहीं करना चाहता। तब छह नौकर उस पर टूट पड़े और हाथों, पैरों और घुटनों से उसकी पसलयिों पर वार करते हुए उसे पीटने लगे; लेकनि उसने उनकी कोई परवाह नहीं की; इसलएि उन्होंने उसे उठाया, ले गए और शापति वेदी के सामने मंदरि में फेंक दयिा, जहाँ दुखी बशिप यूक्टमिोन अभी भी मूर्तियों को बलदिान चढ़ाते हुए खड़ा था। इसके बाद, लेपडिोन ने कहा:

'पयिोनयिस, तुम देवताओं को बलदिान चढ़ाने से क्यों इनकार कर रहे हो?'

संत ने उत्तर दयिा:

'क्योंकि हम ईसाई हैं।'

'तुम कसि देवता की पूजा करते हो?' लेपडिोन ने पूछा।

'एकमात्र वही,' पायन ने उत्तर दयिा, 'जसिने स्वर्ग और पृथ्वी, समुद्र और उनमें जो कुछ भी है, उसे बनाया।' लेपडिोन ने पूछा:

– तो फरि, कसिको सूली पर चढ़ाया गया था? संत ने उत्तर दयिा:

'जसिको परमेश्वर पति ने संसार को बचाने के लएि भेजा था, उसे सूली पर चढ़ाया गया था।'

राजकुमार ज़ोर से हँसे, जबकि लेपडिोन ने धन्य पयिोनयिस की नदिा और अपमान करना शुरू कर दयिा। फरि उन्होंने पवत्रि शहीदों पर जबरदस्ती वे मालाएँ पहना दीं जनिमें अधर्मी आमतौर पर अपने बलदिान करते थे, और उन्हें बलि का मांस खाने के लएि मजबूर कयिा। लेकनि उन्होंने मुकुट तोड़ दएि, उन्हें जमीन पर फेंक दयिा, उन्हें पैरों तले कुचल दयिा, और बलदिान की भेंटों पर थूक दयिा। दुष्ट मूर्तपिूजकों ने शोर मचाया और संतों को अपमान और पटिाई के बीच वापस कालकोठरी में ले गए।

जैसे ही संत पयिोन जेल के द्वार में प्रवेश कएि, एक सैनकि ने कसिी वस्तु से उनके सरि पर जोर से वार कयिा और उन्हें घायल कर दयिा। तुरंत ही, हमलावर को अपने हाथों में दर्द महसूस हुआ; वह बीमारी से ग्रस्त हो गया, उसके शरीर पर छाले नकिल आए और वह सूज गया, जसिसे वह मुश्कलि से सांस ले पा रहा था।

बाद में, अँटपिैट क्वंटिलियिन स्मर्ना पहुँचा और अदालत में अपनी सीट पर बैठकर, सेंट पयिोनयिस को पूछताछ के लएि बुलाया। उससे पूछताछ करने और यह देखने के बाद कि वह झुकने वाला नहीं है, उसने उसे नग्न लटकाने और उसके शरीर को लोहे के हुक से खुरचने का आदेश दयिा। उन्होंने संत को इस तरह यातना दी, यह कहते हुए:

'तुम मौत की ओर क्यों भाग रहे हो?' जसि पर संत ने उत्तर दयिा:

'मैं मृत्यु की ओर नहीं, बल्कि अनंत जीवन की ओर अग्रसर हो रहा हूँ।'

[2321] एंटीपेट्स, या प्रोकोन्सल, प्रांत का राज्यपाल।

[2322] एफ़सिुस – एशयिा माइनर में स्थति एक शहर, जो एजयिन सागर के तट पर बसा था। प्राचीन काल में यह अपनी संपत्ति और व्यापार के लएि प्रसद्धि था।

इस यातना के बाद, संत को मृत्युदंड सुनाया गया, और, रोमन रीति के अनुसार, उन्हें निम्नलिखित मृत्युदंड सुनाया गया:

'पियोनियस, जिसने स्वयं को एक ईसाई घोषित किया है, उसे सूली पर चढ़ाने और जिंदा जलाने का आदेश दिया गया है।'

सूली और जलाने के स्थान पर लाए जाने पर, उन्होंने स्वयं अपने कपड़े उतार दिए और अपने शरीर को देखकर उसकी शारीरिक पवित्रता पर अत्यंत हर्षित हुए; फिर उन्होंने स्वर्ग की ओर देखा और ईश्वर का धन्यवाद किया कि उन्होंने उन्हें अंत तक इतनी निर्मल पवित्रता में संरक्षित रखा।

जमीन पर एक लकड़ी का टुकड़ा पड़ा था, जो क्रूस के आकार का था, जिस पर उसे सूली दी जानी थी; वह स्वयं उस पर लेट गया, और फैल गया, और उसने सैनिकों को उसे उसमें कीलें ठोकने दिया। जब उसमें कीलें ठोक दी गईं, तो उन्होंने उससे कहा:

'सुन, पियोन, राजा की आज्ञा का पालन कर: हम कीलें निकाल देंगे, डॉक्टर तुम्हें ठीक कर देंगे, और तुम ठीक हो जाओगे।'

लेकिन संत ने, एक पल की चुप्पी के बाद, कहा:

'मैं सोना चाहता हूँ, ताकि मैं अंतिम पुनरुत्थान के समय सर्वोत्तम अवस्था में पुनर्जीवित हो सकूँ।'

पियोन को सूली पर ठोकने के बाद, उन्होंने लकड़ी को उठाया, उसे सीधा खड़ा किया, उसके निचले सिरे को जमीन में मजबूती से गाड़ दिया, उसके चारों ओर जलाने की लकड़ी ढेर की, और उसमें आग लगा दी। एक प्रचंड आग ने संत को चारों ओर से घेर लिया, लेकिन उन्होंने अपनी आँखें बंद करके चुपचाप ईश्वर से प्रार्थना की और आग में नष्ट नहीं हुए। उन्हें आँखें बंद देखकर हर किसी ने सोचा कि वह पहले ही मर चुके हैं। लेकिन काफी समय बाद, जब आग की लपटें धीरे-धीरे शांत होने लगीं, तो उन्होंने अपने दिल की गहराई में अपनी प्रार्थना पूरी कर ली और अपनी आँखें खोल दीं।

लोग इतनी भयंकर आग के बीच उसके जीवित रहने पर बहुत हैरान थे। फिर, एक प्रसन्न भाव के साथ, उसने अपनी प्रार्थना पर 'आमीन' कहा, और यह जोड़ते हुए कि 'हे प्रभु, मेरी आत्मा को ग्रहण करो', वह चल बसा।

आग बुझ गई, और उसका शरीर पूरी तरह से सुरक्षित मिला; उसके सिर का एक भी बाल तक नहीं जला था। हालाँकि, उसका चेहरा दिव्य अनुग्रह से दमक रहा था: यह उसके पवित्र आत्मा के आनंद का संकेत था, जो स्वर्गीय आनंद में प्रवेश कर चुका था और मसीह के दाहिने हाथ से एक मुकुट प्राप्त कर चुका था।

यह घटना डेसियस[2323] के शासनकाल में, स्मिर्ना शहर में, एंटीपेट क्वाटिलियिन के अधीन, रोमन कैलेंडर के अनुसार मार्च की आइड्स के पांचवें दिन, और पूर्वी कैलेंडर के अनुसार सातवें महीने के ग्यारहवें दिन (यानी सितंबर से सातवां महीना, मार्च में) एक शनिवार को, दिन के दसवें घंटे पर हुई। मेटाफ्रैस्टस[2324] सेंट पियोनियस के बारे में ऐसा लिखते हैं।

जहाँ तक अन्य पवित्र शहीदों का प्रश्न है जिन्हें संत पियोनियस के साथ गिरफ्तार कर जेल में रखा गया था, इस बात का कोई अभिलेख नहीं है कि उन्होंने अपना बलिदान किस प्रकार पूरा किया; हालाँकि, इसमें कोई संदेह नहीं है कि उन्होंने मसीह के लिए कष्ट सहे और संत पियोनियस के साथ स्वर्गीय जीवन प्राप्त किया।

इन पवित्र पुरोहित, पियोनियोस ने, स्मyrna के बिशप, पवित्र पुरोहित-शहीद पॉलीकार्प के जीवन और शहादत पर लिखा, और बाद में वे स्वयं, उनके साथ, हमारे प्रभु यीशु मसीह के राज्य के योग्य ठहरे, जो पिता और पवित्र आत्मा के साथ युगानुयुग राज्य करते हैं। आमीन।

हमारे पवित्र पिता यूथमियस, नोवगोरोड के आर्चबिशप की स्मृति

11 मार्च को स्मरण किया जाता है

[2323] डेसियस, एक रोमन सम्राट, ने 249 से 251 तक शासन किया। संत पियोनियस की शहादत 250 में हुई।

[2324] सिमोन मेटाफ्रास्टेस – 11वीं शताब्दी के एक उल्लेखनीय बीजान्टिन सार्वजनिक व्यक्ति और चर्च संबंधी लेखक थे। उनकी कृतियों में, संतों के जीवन विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। इस कृति को संकलित करते समय, सिमोन ने खुद को केवल प्राचीन किंवदंतियों को इकट्ठा करने तक ही सीमित नहीं रखा, बल्कि उन्हें दोबारा सुनाया और उन्हें बोलचाल की भाषा में प्रस्तुत किया। इसीलिए उनका उपनाम मेटाफ्रास्टेस (metaprxxein – दोहराने से) पड़ा।

धन्य यूथमियिस के माता-पिता वेलकिी नोवगोरोड में रहते थे[2325] । उनके पिता, जो सेंट थयिोडोर के चर्च में पुरोहति थे, का नाम मकिा था, और उनकी माँ का नाम अन्ना था। एक वैध ववािह करने और सम्मानजनक वैवाहकि भक्तकिा जीवन जीने के बाद भी, उनके कोई संतान नहीं थी और वे इस बात से बहुत दुखी थे। अपने दुख में, उन्होंने अपनी बाँझपन के उपचार के लिए ईश्वर और परमेश्वर की परम पवत्रि माता से भक्तपिूर्वक प्रार्थना की। और प्रभु ने उनकी प्रार्थना सुनी: अन्ना गर्भवती हुईं और एक पुत्र को जन्म दयिा, जो कोई और नहीं बल्कयिही धन्य यूथमियिस थे। उनके जन्म के तुरंत बाद, शशिु का बपतस्मिा हुआ, और उनके पवत्रि बपतस्मिा पर उन्हें जॉन नाम दयिा गया। जब वह अभी भी लंगोटों में थे, तब उनके माता-पिता उन्हें उसी चर्च में ले गए जहाँ उन्होंने एक बच्चे के वरदान के लिए प्रार्थना की थी, और उन्हें परमेश्वर की माता की प्रतमिा के सामने रखकर उन्होंने कहा:

– हे रानी और स्वामनिी! यहाँ हम आपके पास उस बच्चे को लाए हैं जसिे आपने हमें दयिा है। हमारे हृदय के कष्ट में, हमारे होठों से रानी और स्वामनिी के रूप में आपके प्रतजिो शब्द नकिले, उनके अनुसार हम अपने बच्चे को आपके हवाले करते हैं। जैसा आप स्वयं चाहें, उसके जीवन का मार्गदर्शन करें। हालाँकि, अभी हम उसे अपने साथ ले जा रहे हैं, ताकि वह हमारे घर में हमारे साथ रहे, क्योंकि एक बच्चा अपनी माँ के बनिा नहीं रह सकता।

ईश्वर की कृपा से, शशिु का पालन-पोषण अच्छी तरह से हुआ, और जब समय आया, तो उसके माता-पिता ने उसे पवत्रि धर्मग्रंथों का अध्ययन करने के लिए भेजा। पवत्रि त्रमिूर्तमिें महमिामंडति ईश्वर, जो सभी लोगों के मोक्ष के इच्छुक हैं, ने युवा जॉन को तीव्र बुद्धप्रिदान की, और उसने सफलतापूर्वक पवत्रि धर्मग्रंथों का अध्ययन कयिा। अपनी पढ़ाई के दौरान, उन्होंने खुद को उन कार्यों के अलावा कसिी और काम में नहीं लगाया जो उन्हें दव्यि वषियों पर चतिन करने की ओर ले जाते थे; और जब वे पंद्रह वर्ष के हुए, तो वे ईश्वर के प्रतप्रिेम से भर गए और उन्होंने संसार को त्यागने और संन्यास की शपथ लेने की इच्छा व्यक्त की। उसे नहीं पता था कि यह बुलावा उसे कहाँ ले जाएगी, क्योंकि ईश्वर के वधिान अज्ञेय हैं; फरि भी उसने अपनी इस महान इच्छा को पूरा करने के लिए पूरी लगन से प्रयास कयिा, और ईश्वर ने, स्वर्ग से यह देखते हुए कि भवषि्य में उसके साथ क्या होने वाला था—जो, जैसा कि वर्तमान वृत्तांत से स्पष्ट है, वास्तव में उचति समय पर घटति हुआ—शीघ्र ही उसकी इच्छा को पूरा कर दयिा।

यूफ्रोसनिस नामक एक भक्षिु ने, दो अन्य भक्षिुओं इग्नाटयिस और गैलाक्शयिन के साथ, जो स्वयं को ईश्वर की सेवा के लिए समर्पति कर चुके थे, एकांत में तपस्या करने का संकल्प लयिा और इस उद्देश्य के लिए एक उपयुक्त स्थान खोजने के लिए नकिल पड़े। जल्द ही ऐसा एक स्थान मलि गया। इसे वेझशि्चे[2326] कहा जाता था, और वहाँ जंगल और दलदल के अलावा और कुछ नहीं था। जब भक्षिु इस स्थान पर पहुँचे, तो उन्होंने हवा में एक वशिेष सुगंध महसूस की और इसे महज संयोग नहीं, बल्कि दैवीय अनुग्रह का एक वशिेष संकेत माना। उन्होंने वहाँ मसीह के संत नकिोलस को समर्पति एक चैपल का नरि्माण कयिा, और फरि अपने लिए कोठरयिाँ बनाईं। शीघ्र ही पमिैन नामक एक पादरी उनके पास आए और उनके साथ रहकर तपस्या करने की इच्छा व्यक्त की। फरि, आपसी सहमतसि,े उन्होंने उसी पवत्रि चमत्कारी संत, सेंट नकिोलस[2327] को समर्पति एक लकड़ी का चर्च बनाया, और उपवास तथा तपस्या का जीवन जीना शुरू कर दयिा। उन्हें स्थानीय नविासयिों के हाथों, वशिेष रूप से एक कुलीन व्यक्तकि े कारण, जो शैतान के प्रभाव में था और नहीं चाहता था कि भक्षिु उसके पास रहें, बहुत कठनिाइयों का सामना करना पड़ा; लेकनि संत नकिोलस चमत्कारकर्ता, जो अपने नाम समर्पति कसिी मठ को कभी भी आवश्यकता में नहीं छोड़ते थे, जब भी वे उनसे श्रद्धापूर्वक प्रार्थना करते थे, उन्होंने इन भक्षिुओं को भी हमेशा जीवकिोपार्जन प्रदान कयिा। जल्द ही, मठ के पास रहने वाले एक कुलीन व्यक्तकि ी टांग पर एक घातक फोड़ा हो गया, जसिसे वह बहुत कष्ट में था। अपनी बीमारी के बीच, वह होश में आया और मदद के लिए संत नकिोलस चमत्कारकर्ता से प्रार्थना करने लगा; फरि वह मठ गया और वहाँ प्रार्थना करने के बाद वह ठीक हो गया। इस उपचार के लिए आभारी होकर, उसने मठ को एक भूखंड दान कर दयिा, जो आज भी इसके पास स्थति है, और उस समय से उसने संत नकिोलस के मठ को भक्तपिूर्ण आस्था से सम्मानति कयिा। इसके बाद, ईश्वर की कृपा और संत नकिोलस चमत्कारकर्ता की प्रार्थनाओं से, मठ में भक्षिुओं की संख्या बढ़ने लगी, और उपरोक्त पमिैन, जो मठ के पहले मठवासी पुरोहति थे, इसके मठाध्यक्ष बने[2328] ।

[2325] प्राचीन काल में वर्तमान नोवगोरोड शहर को यही नाम दयिा गया था। यह प्राचीन रूस के सबसे पुराने और सबसे प्रसद्धि शहरों में से एक था।
[2326] वेझशि्चे या वाझशि्चे नोवगोरोड के पश्चमि में 12 वर्स्ट की दूरी पर स्थति एक बस्ती थी।
[2327] यह 1411 में था।
[2328] पमिैन ने संन्यासी नाम पाचोमयिस लयिा।

ईश्वर की व्यवस्था से, धन्य युवक जॉन उनके पास आए और उनसे अपना संन्यास-शरिच्छेदन करने का अनुरोध कयि। पमिेन ने उस युवक को देखकर, उसे स्वयं ईश्वर द्वारा भेजा गया मान लयि, उसे एक भकि्षु के रूप में दीक्षा दी और, उस अवसर पर, उसे यूथमिीयस नाम दयि। यह घटना, जो ईश्वर की इच्छा से हुई, दैवीय व्यवस्था द्वारा इस प्रकार नरि्देशति की गई थी कि यूथमिीयस के माध्यम से मठ और भी अधकि महमिामय हो, जो वास्तव में समय आने पर हुआ भी। मठ में रहते हुए, आदरणीय यूथमिीयस ने अपने मठाध्यक्ष और समुदाय के प्रतसिभी बातों में इतनी कठोर आज्ञाकारति दखिाई कि यह देखकर सभी आश्चर्यचकति रह गए, और इस बात की प्रशंसा भी हुई कि अपनी कोमल आयु के बावजूद, उनके पास कई वर्षों के अनुभव वाले व्यक्ति का मन था। परणिामस्वरूप, पादरी के रूप में उनकी दीक्षा से पहले ही, हर कोई उन्हें एक भवषि्य के चरवाहे के रूप में पहचानता था, और परपिक्वता की आयु तक पहुँचने से पहले ही, वह सभी के लिए मठवासी जीवन के मार्गदर्शक बन गए थे। जब आदरणीय यूथमिीयस ने अपने मठ में इतनी प्रसदि्धि प्राप्त कर ली, तो आर्चबशिप समियिन[2329] ने भी उनके बारे में सुना। उन्हें अपने समक्ष बुलाकर और यह देखकर कि वह सद्भावना से पूर्ण और वाक्पटु थे, उन्हें उन पर बहुत स्नेह हो गया और, इस तथ्य के बावजूद कि वे नहीं चाहते थे कि अपनी मठशाला छोड़ें, उन्होंने उन्हें चर्च की संपत्ति के प्रबंधन का कार्य सौंप दयि[2330]। इन नई जमि्मेदारयिों को संभालने के बाद, पूज्य यूथमिीयस ने अपने मठवासी तपस्या का अभ्यास जारी रखा और मठवासी जीवन के नयिमों से कसिी भी तरह भटक नहीं।

[2331]कुछ वर्षों बाद, चर्च का उत्कृष्ट रूप से शासन करने के बाद, बशिप समियिन प्रभु के पास चले गए, शाश्वत आनंद में प्रवेश कयि, और यूथमिीयस[2332] को उनके स्थान पर नोवगोरोड के आर्चबशिप पद पर पदोन्नत कयि गया। तब आदरणीय यूथमिीयस खुटनि के नाम से प्रसदि्ध पवति्र उद्धारकर्ता मठ में चले गए और वहीं रहने लगे। हालाँकि, कुछ समय बाद, लस्यिा गोरा[2333] पर स्थति परम पवति्र मठ के बुजुर्गों के अनुरोध पर, उन्हें उस मठ का मठाधीश नयिुक्त कयि गया, जहाँ उन्होंने भकि्षुओं की अध्यक्षता करते हुए, उनके नरि्माण के लिए एक उत्तम उदाहरण प्रस्तुत कयि, क्योंकि वे सभी के प्रति दयालु थे और, साथ ही, सभी के साथ सम्मानपूर्वक व्यवहार करते थे।

थोड़ी ही देर बाद, वेलकिी नोवगोरोड की सामान्य सभा ने उन्हें नोवगोरोड के आर्चबशिप के पद[2334] के लिए चुनना चाहा और उन्हें अन्य उम्मीदवारों[2335] में शामलि कर लयि, यह जाने बनिा कि, अपने युवा दनिों से ही, उन्हें पादरयिाई सेवा के लिए बुलाया गया था, जैसा कि भवषि्यवक्ता ने लखिा है: *'तुम्हारी आँखों ने मेरे अवकि्रत शरीर को देखा था'* (भजन संहति 138:16)[2336]। और चूंकि प्रेरति कहते हैं कि सारी शक्ति परमेश्वर से आती है (रोमयिों 13:1), कोई मनुष्य इसे कैसे प्राप्त कर सकता है जब तक कि यह उसे ऊपर से न दयि जाए (यूहन्ना 19:11)? यह सम्माननीय यूथमिीयस के मामले में पूरा हुआ। चुने हुए उम्मीदवारों के लॉट्स को सील करने के बाद, वेलकिी नोवगोरोड की जनसभा और पुरोहतिों ने उन्हें सेंट सोफयि कैथेड्रल[2337] ले जाकर सहिासन पर बठिा दयि। जहाँ तक लॉटों की बात है, यह एक मानवीय प्रयास था; लेकनि चुने हुए लोगों में से कसिने ईश्वर के इतने ऊँचे सहिासन पर आसीन होना था, यह बाद में हुई घटनाओं से स्पष्ट हुआ: ईश्वर

[2329] नोवगोरोड के आर्चबशिप समिोन (सैमसन), जो एक साधारण भकि्षु थे, ने आर्चबशिप जॉन की मृत्यु के बाद 1416 से 1421 तक नोवगोरोड के धर्मप्रांत का प्रशासन कयि।

[2330] नोवगोरोड के धर्मगुरुओं की प्रथा में, यह पहला अवसर था जब चर्च की संपत्ति का प्रबंधन एक भकि्षु को सौंपा गया; तब तक, नोवगोरोड में आर्चबशिप के घर के व्यवस्थापकों का चयन धर्मनरिपेक्ष लोगों में से कयि जाता था।

[2331] खुत्यनि मठ (खुत्यनि) की स्थापना 1192 में नोवगोरोड के एक कुलीन व्यक्ति अलेक्सी द्वारा की गई थी, जो मठ जीवन में वरलाम के नाम से जाने जाते थे, और यह वोल्खोव नदी के दाहनि कनिारे, नोवगोरोड से 10 वर्स्ट नीचे स्थति है।

[2332] यह, बेशक, यूथमिीयस प्रथम (एमेलयिन) दाढ़ी वाले के बारे में है, जन्होंने थयिोडोसयिस के संक्षप्ति शासन (1421 से 1423 तक) के बाद नोवगोरोड में आर्चबशिप का पद संभाला, जन्हें चुना तो गया था लेकनि अभषिक्ति नहीं कयि गया था; यूथमिीयस प्रथम 1423 से 1429 तक नोवगोरोड के आर्चबशिप थे।

[2333] ईश्वर की माता के जन्म का लसिीत्स्की मठ (लस्यिा गोरा पर) नोवगोरोड के वाणज्यकि इलाके से 7 वर्स्ट दूर स्थति था। इसका पहला उल्लेख 1392 में मलिता है।

[2334] 1165 से नोवगोरोड के बशिपों ने आर्चबशिप का पदवी धारण की।

[2335] 1156 के बाद से, नोवगोरोड के बशिप का चुनाव मेट्रोपॉलटिन और बशिपों की परषिद पर नहीं, बल्कि वशिेष रूप से नोवगोरोड के लोगों पर ही उनके वेचे (सभा) के माध्यम से नरि्भर था। आमतौर पर तीन उम्मीदवारों को नामांकति कयि जाता था, और उनके लॉट सेंट सोफयि चर्च में वेदी पर रख दए जाते थे; ल[illegible]जी के अंत में, प्रोटोपोप द्वारा एक के बाद एक दो लॉट नकिाले जाते थे और पूरे लोगों को घोषति कए जाते थे; अंत में, वे लॉट जो वेदी पर बचता था, वह ईश्वर के चुने हुए व्यक्ति को इंगति करता था। इस प्रकार आदरणीय यूथमिीयस को भी चुना गया था।

[2336] अर्थात्, मेरी माँ के गर्भ में मेरे गर्भाधान के क्षण से ही, आपने मुझे देखा और मेरे जीवन का भाग्य नरि्धारति कयि।

[2337] नोवगोरोड के बशिपों का कैथेड्रल, जो आज तक मौजूद है।

की इच्छा और नर्णिय से, लॉट यूथर्मियस के हस्सि में आया, ताकि वह इस सहिासन पर वरिाजमान हो सके। इसके बाद, नोवगोरोड के लोग खुशी-खुशी पूजनीय के पास गए और जॉन क्रसिोस्टोम की स्मृति के दनि ही, उन्हें सम्मान के साथ सेंट सोफयि चर्च[2338] में ले गए। हालांकि, लंबे समय तक, पूजनीय यूथमियिस ने आर्चबशिप पद स्वीकार करने से इनकार कर दयिा और अनचि्छुक रहे, वशिेष रूप से यह कहते हुए कि वह खुद को इतने उच्च पद के लिए अयोग्य मानते थे; लेकनि चूँकि वह ईश्वर की इच्छा का वरिोध नहीं कर सकते थे, इसलिए उन्होंने अंततःउन्हें चुनने वालों की इच्छा के आगे आत्मसमर्पण कर दयिा। इससे नोवगोरोड के सभी नविासयिों को बहुत खुशी हुई, क्योंकि हर कोई उन्हें आर्चबशिप के पद की गरमिा के लिए पूरी तरह से योग्य मानता था। हालाँकि, अपने चुनाव के बाद, परम पूज्य यूथमियिस एक भकि्षु ही बने रहे, क्योंकि उस समय रूस में कोई मेट्रोपॉलटिन नहीं था, इसलिए उनका अभषिेक नहीं हो सका[2339] । चार साल से अधकि समय तक बनिा अभषिेक के रहने के बाद[2340] , वह स्मोलेंस्क शहर के लिए रवाना हुए, जब कीव और पूरे रूस के महानगर बशिप गेरसम[2341] वहाँ थे, और उन्हीं से उन्होंने आर्चबशिप के पद का अभषिेक प्राप्त कयि । और यहाँ पूजनीय यूथमियिस ने अपनी बुद्धि और सुदृढ़ नर्णिय से सभी को चकति कर दयिा, इतना कि स्वयं महाधर्माध्यक्ष भी चकति हो उठे और उनकी बुद्धि की बहुत प्रशंसा की। अपने अभषिेक के बाद, परम पावन यूथमियिस बड़े सम्मान के साथ वेलकिी नोवगोरोद में अपने धर्मप्रांत लौट आए और अपने अनुयाययिों पर पूर्ण अधकिार ग्रहण कयि। अपने द्वारा ग्रहण कए गए पद की पूरी गंभीरता को जानते हुए, उन्होंने अपने अभषिेक से पहले दखिाई गई उत्साह से भी अधकि उत्साह के साथ अपने मंत्रालय के कार्यों को समर्पति कर दयिा, और धर्मग्रंथ के शब्दों को ध्यान में रखा: 'जसि बहुत कुछ दयिा गया है, उससे बहुत कुछ माँगा जाएगा' (लूका 12:48)। इसलिए, अपने परश्रिम के माध्यम से, उन्होंने सुसमाचार के अनुसार फल देने का प्रयास कयि, तीस या साठ गुना नहीं, बल्कि एक hundred-fold[2342] । पहले, जब उन्होंने अभी तक बशिप का उच्च पद ग्रहण नहीं कयि था, तो वे केवल अपनी आत्मा की चति करते थे; लेकनि अब जब वे बशिप बन गए थे, तो कई लोगों की आत्माओं की देखभाल करने की आवश्यकता उत्पन्न हो गई, ताकि वे प्रभु और स्वामी से साहसपूर्वक कह सकें: *'मैं यहाँ हूँ और वे बच्चे जन्हिें प्रभु ने मुझे दए हैं'* (यशायाह 8:18)। अपने बुद्धमिान आत्मा में इस और अन्य कई बातों पर मनन करते हुए, पूजनीय यूथमियिस ने अपने हृदय में महान क्लेश महसूस कयि, लेकनि उन्होंने सब कुछ ईश्वर को सौंप दयिा, और प्रभु ने उनकी आशाओं को शर्मदिा नहीं कयि; महमिा उसी की हो अब और हमेशा और युगों-युगान्त ages[2343] ।

ट्रोपारयिन, स्वर 4:

कशिोरावस्था से ही ईश्वर द्वारा चुने गए, संत यूथमियिस, और इसी कारण से बशिप के पद से सम्मानति, आपने ईश्वर द्वारा आपको सौंपे गए लोगों का मार्गदर्शन कयि; और इस प्रकार, आपके नधिन के बाद भी, आपको प्रभु से वभिन्नि रोगों को ठीक करने के लिए चमत्कारों का वरदान प्राप्त हुआ। हमारे लिए प्रार्थना करें, जो आपकी सम्मानति स्मृति का उत्सव मनाते हैं, ताकि हम सभी नरिंतर आपकी महमिा कर सकें।

[2338] यह 1429 की बात थी।

[2339] 1 जुलाई 1431 को मेट्रोपॉलटिन फोतउिस की मृत्यु के बाद, मॉस्को में मेट्रोपॉलटिन का पद—इज़डिोर के संक्षप्ति शासन को छोड़कर—1448 तक खाली रहा।

[2340] आदरणीय यूथमियिस ने 1429 से 1434 तक एक बशिप के रूप में अभषिक्ति हुए बनिा नोवगोरोड के धर्मप्रांत का प्रशासन कयि। नोवगोरोड में यह प्रथा थी कि बशिप के रूप में अभषिेक होने से पहले ही एक धर्मप्रांत का प्रशासन कयि जाता था। इस प्रकार, जॉन, जनिका बशिप के रूप में अभषिेक नहीं हुआ था, उन्होंने आठ महीने तक धर्मप्रांत का प्रशासन कयि; थयिोक्टस्टि और मूसा ने प्रत्येक ने एक साल तक; क्लेमेंट ने दो साल तक; और बशिप थयिोडोसयिस तो बशिप के रूप में अभषिेक हुए बनिा ही नधिन हो गए।

[2341] 1433 में, मेट्रोपॉलटिन फोतउिस की मृत्यु के बाद, लथिुआनयिाई राजकुमार स्वड्रिगिाइलो ने स्मोलेंस्क के बशिप गेरसम को लथिुआनयिा के मेट्रोपॉलटिन के रूप में अभषिक्ति होने के लिए कॉन्स्टेंटनिोपल भेजा, लेकनि इसके बजाय पैट्रआर्क ने उन्हें 'ऑल रस' का मेट्रोपॉलटिन नयिुक्त कर दयिा। गरासमि पर राजद्रोह का संदेह करते हुए, श्वट्रिगिाइला ने उसे स्मोलेंस्क के पास पकड़ लयिा और वटिेब्स्क में फांसी पर जला दयिा। यह घटना जुलाई 1435 में हुई।

[2342] यह अभव्यिक्ति उद्धारकर्ता की बोनेवाले की दृष्टांत (मत्ती 13:8) से ली गई है।

[2343] परम पूज्य यूथमियिस का 10 मार्च 1458 को नधिन हो गया।

कॉन्टाकयिन, स्वर 8:

हे संत यूथमियस, एक बशिप, एक सह-सेवक और पवत्रिता के एक सच्चे योद्धा के रूप में, अपनी मातृभूमि, अपने शहर और अपने लोगों की रक्षा करना न छोड़ें, जो वश्विास में आपका सम्मान करते हैं और आपके पवत्रि अवशेषों की पूजा करते हैं; ताकि हम सभी एक स्वर में आपको पुकार सकें: हे ईश्वर-ज्ञानी संत, आनन्दति हो।

25 मार्च

12 मार्च (पुराना कैलेंडर)

हमारे पवत्रि पति थयिोफानेस द कन्फैसर का जीवन

12 मार्च को स्मरणोत्सव

आदरणीय थयिोफानेस का जन्म कॉन्स्टेंटनिोपल में कुलीन माता-पति - इसाक और थयिोडोटा के यहाँ हुआ था। इसाक का सम्राट लयिो द इसाउरयिन और उनके पुत्र कोप्रोनमिस से संबंध था[2344] , इसीलएि उन्हें 'द इसाउरयिन' के नाम से जाना जाता था, क्योंकि वे उसी शाही वंश से थे और इसाउरयिा की भूमि से थे। उन्होंने शाही दरबार में सम्मानति पदों पर कार्य कयिा और कोप्रोन्यमस के शासनकाल के दौरान एक सैन्य कमांडर के रूप में सेवा की।

इस समय, प्रतमिा-भंग की वधिर्म उत्पन्न हुई, और धर्मनष्ठिों के खलिाफ कठोर उत्पीड़न शुरू हो गया।

धार्मकि इसाक और उनकी पत्नी थयिोडोटा ने ऑर्थोडॉक्स सद्धिांत का कड़ाई से पालन कयिा और उन्हें एक पुत्र की प्राप्ति हुई, जो जल्द ही मसीह की कलीसयिा में भोर की तरह दमकने वाला था। उन्होंने उसका नाम थयिोफेनेस रखा, जसिका अर्थ है 'ईश्वर द्वारा प्रकट'[2345] । उसे यह नाम सबसे पहले इसलएि दयिा गया क्योंकि वह प्रभु के एपफिेनी पर्व पर जन्मा था, जसिे ग्रीक में थयिोफानयिा कहा जाता है[2346] ; लेकनि मुख्यतः उसे ईश्वर की व्यवस्था द्वारा ऐसा नाम दयिा गया था – इस बात के संकेत के रूप में कि, प्राचीन भवष्यिवक्ता यर्मियाह की तरह, प्रभु ने उसे उसकी माँ के गर्भ से ही अपनी कलीसयिा का एक महान दीपक बनने के लएि चुना और पवत्रि कयिा था (यर्मि. 1:5)। जैसा कि पुस्तकालयाध्यक्ष अनास्तासयिस गवाही देते हैं, उन्हें कभी-कभी उनके पति के नाम - इसहाक - से बुलाया जाता था - लेकनि यह उनके संन्यास-दीक्षा से पहले की बात है, जसिकी उन्होंने अपने पूरे युवा जीवन से ही तीव्र आकांक्षा की थी, जैसा कि उनके जीवन-चरत्रि में वर्णति होगा।

धन्य और दैवीय रूप से प्रकट हुए थयिोफानेस के जन्म के बाद, उनके पति इसाक, तीन वर्ष और जीवति रहने के पश्चात्, परम जीवन में प्रवेश कर गए। अपने मृत्यु शय्या पर, उन्होंने एक वसीयत लखिी जसिमें उन्होंने अपने तीन वर्षीय पुत्र को, उसकी माता के साथ, अपने संबंधी के रूप में, स्वयं सम्राट कॉन्स्टेंटनि कॉप्रोनमिस की देखभाल और सुरक्षा के लएि सौंप दयिा।

पवत्रि धर्मग्रंथों का अध्ययन करते हुए और एक सदाचारी जीवन में खुद को नखिारते हुए, जैसे-जैसे वर्ष बीतते गए, वह लड़का अपनी असाधारण बुद्धि के लएि प्रतष्ठिति हो गया। जब थयिोफेंस बारह वर्ष का था, तो एक सेनेटर ने अपनी दस वर्षीय बेटी का ववािह उसके साथ करना चाहा, क्योंकि युवा थयिोफेंस सुंदर, बहुत बुद्धमिान, अमीर और सम्राट का रश्तिेदार था। थयिोडोटा, थयिोफेनेस की माँ, ने इस सगाई के लएि तुरंत सहमति दे दी। हालाँकि, चूँकि राजा की अनुमति के बनिा यह सब कुछ नहीं हो सकता था, इसलएि सेनेटर ने स्वयं राजा से एक भावुक नविेदन कयिा, जसिमें वह अपनी बेटी

[2344] सम्राट लयिो द इसाउरयिन (717–741) पहले प्रतमिा-वरिोधी थे जन्हिोंने एक फरमान जारी कयिा था जसिमें चर्चों से पवत्रि प्रतमिाओं को हटाकर नष्ट करने का आदेश दयिा गया था। सम्राट कॉन्स्टेंटनि कॉप्रोन्यमस (741–775) ने मूर्तभिंजनवाद के पापसद्धिांत का पुरज़ोर समर्थन कयिा। उन्होंने कॉन्स्टेंटनिोपल में एक परषिद बुलाई, जसिे उन्होंने सार्वभौमकि परषिद का नाम दयिा, जसिमें प्रतमिाओं की पूजा को अस्वीकार कर दयिा गया। इसौरयिा – सम्राट लयिो द इसौरयिन और थयिोफेंस के पति इसाक दोनों का पैतृक देश – एशयिा माइनर में एक छोटा, कम-ज्ञात देश था, जो लाइकोनयिा और सलिसियिा से सटा हुआ था। आज, उलुबुणार के पास केवल खंडहर ही बचे हैं।

[2345] थयिोफ़ेनेस – ग्रीक: Θεοθανοσ – 'ईश्वर द्वारा प्रकट' या 'ईश्वर को प्रकट करने वाला'।

[2346] Θεοθανοσ (Θεος – ईश्वर और θαινω – प्रकट करना) – एपफिेनी।

का विवाह राजा के भतीजे से करके उनके साथ रिश्तेदारी बनाने का अनुरोध कर रहा था। जब सम्राट ने सहमति दे दी, तो बच्चों का सगाई का रिश्ता तय हो गया—जो अभी विवाह योग्य आयु के नहीं थे—लेकिन विवाह स्वयं तब तक के लिए स्थगित कर दिया गया जब तक कि वर-वधू वयस्क नहीं हो जाते।

इस समय, ज़ार कोप्रोन्यमस की मृत्यु हो गई; उनके बाद उनके पुत्र लियो चौथे का राज शुरू हुआ, जिन्हें उनकी माँ खज़ारा के नाम पर '[2347] ' के नाम से जाना जाता था, क्योंकि वह एक खज़ार खान की बेटी थीं और अपने पगान धर्म में उन्हें खज़ारा कहा जाता था, जबकि उनके पवित्र बपतिस्मा पर उनका नाम इरीना रखा गया था।

कुछ वर्षों बाद, थियोफेनेस की माता, थियोडोटा का भी निधन हो गया। वह अपने बेटे की शादी से पहले ही चल बसीं, और अपने पीछे एक विशाल संपत्ति छोड़ गईं।

उस समय, थियोफ़ेनेस के घर में एक ईश्वर-भयभीत और पवित्र सेवक रहता था; थियोफ़ेनेस उसे उसके सदाचारी जीवन के लिए बहुत प्यार करता था और इस सेवक को अपना सर्वश्रेष्ठ सलाहकार मानता था। उसके साथ बार-बार आत्मा-रक्षक वार्तालापों से प्रेरित होकर, और सर्वशक्तिमान पवित्र आत्मा द्वारा और भी अधिक मार्गदर्शन पाकर, थेओफेनेस को ब्रह्मचर्य से प्रेम हो गया, और वह केवल एक ही बात सोचता था: अपनी कुँवारी पवित्रता को अछूता कैसे रखे; और, मठवासी जीवन तथा आचार-व्यवहार की तीव्र इच्छा से, उसने अपना सारा धन गरीबों और ज़रूरतमंदों में बाँटना शुरू कर दिया।

यह जानकर, थियोफानेस के ससुर ने, दूल्हे की इच्छा के विरुद्ध, विवाह को जल्द से जल्द संपन्न कराने का प्रयास किया – और भी इसलिए क्योंकि अब दूल्हा और दुल्हन दोनों वयस्क हो चुके थे।

जब विवाह के लिए निर्धारित दिन आ गया और, जैसा कि रिवाज था, विवाह का भोज पूरे ज़ोरों पर था, तो भक्तिमय युवक थियोफानेस ने अपना मन ईश्वर की ओर लगाकर, अपने हृदय की गहराई में प्रार्थना की कि प्रभु, अपनी कृपा से, उसे शुद्ध कुँवारी अवस्था में संरक्षित रखें।

और इस प्रकार, जब युवा थियोफेंस अपनी वधू के साथ पहले से ही विवाह कक्ष में था, तो वह बिस्तर पर बैठ गया और, गहरी आह भरते हुए, अपने भीतर छिपे विचार को प्रकट किया और अपनी वधू से कहा:

'हे मेरी प्रिये, क्या तुम नहीं जानतीं कि हमारे जीवन का समय छोटा है, परन्तु हमारे मृत्यु का घंटा अज्ञात है, और जो लोग सुख-वैभव में अपना जीवन बिताकर अक्सर प्रभु का क्रोध भड़काते हैं, उनके लिए एक निर्दयी न्याय प्रतीक्षा कर रहा है? विवाह, यद्यपि स्वयं ईश्वर द्वारा स्थापित है, ऐसा है कि वैवाहिक जीवन के लिए आवश्यक सांसारिक चिंताएँ मनुष्य के मन को प्रभु से दूर कर देती हैं, लोगों के धार्मिक विचारों को व्यर्थ कर देती हैं, और उन्हें आत्मा की स्पष्ट दृष्टि से आने वाले जीवन की ओर देखने से रोकती हैं। हम जानते हैं कि लाजरुस को, उसकी अस्थायी पीड़ा के लिए, स्वर्गदूतों द्वारा अब्राहम की गोद में ले जाया गया, जबकि धनी व्यक्ति, जिसने ऐश्वर्य का जीवन जिया था, उसे नरक में डाल दिया गया और वह अपनी जीभ को ठंडा करने के लिए एक बूंद पानी भी नहीं पा सका (लूका 16:24)। हम सुसमाचार की धन्यवादों के बारे में भी सुनते हैं, जो स्वर्ग में तैयार की गई हैं (मत्ती 5)। ये किसके लिए प्रतिज्ञा की गई हैं? उन धनी लोगों के लिए नहीं, जो इस संसार के वैभव में और हर प्रकार की समृद्धि में रहते हैं, बल्कि गरीबों, जो शोक मनाते हैं, भूखे, प्यासे, जो मसीह के कारण सतावट और अपमान सहते हैं, के लिए; संक्षेप में कहें तो: संकीर्ण द्वार और संकीर्ण मार्ग जीवन की ओर ले जाते हैं, जबकि चौड़ा द्वार और चौड़ी राह गेहेना की ओर ले जाती है (मत्ती 7:13–14); हम यह भी जानते हैं कि जो कोई इस युग में व्यर्थ के सुखों के बीच ऐश-ओ-आराम में रहता है, वह आने वाले युग में दुःख और शोक झेलेगा – क्योंकि यह अन्यथा नहीं हो सकता। इसलिए, मेरी प्रिय वधू, यदि तुम चाहती हो, तो आओ हम शारीरिक वैवाहिक संबंध से परहेज़ करें और पवित्र कुँवारी अवस्था में एकजुट रहें; अभी के लिए, तुम्हारे निर्दयी पिता की खातिर, हम एक प्रकार से दैहिक विवाह में कुछ समय के लिए साथ रहें; परन्तु विवाह के बहाने हम भाई-बहन की तरह रहें; और फिर, जब प्रभु हमें अनुकूल समय देंगे, तो हम मठ चले जाएँगे: मैं पुरुषों के मठ में, और तुम स्त्रियों के मठ में। इस प्रकार हम अपने शेष जीवन के लिए स्वयं को प्रभु को समर्पित करेंगे, ताकि आने वाले युग में हमें उनके पवित्र सेवकों की संगति में रहने के योग्य समझा जाए।

[2347] सम्राट लियो चौथे, जिनका उपनाम खज़ार था, ने 775 से 780 तक शासन किया। उन्होंने मूर्तिभंजन का भी समर्थन किया, हालांकि अपने पूर्ववर्तियों की तुलना में कम हद तक।

पवित्र वधू थियोफ़ाना ने, अच्छी भूमि की तरह, इस अच्छे बीज को ग्रहण करके, अपने हृदय में आनंद के साथ धन्य थियोफ़ान को उत्तर दिया:

'मैं जानती हूँ, मेरे प्रिय प्रभु, हमारे उद्धारकर्ता के वचन, जो सुसमाचार में कहते हैं: *"यदि कोई अपने पिता और माता, और पत्नी और बच्चों, और भाइयों और बहनों से प्रेम नहीं करता—और जो कोई अपना क्रूस नहीं उठाता और मेरे पीछे नहीं आता—वह मुझ योग्य नहीं है"* (लूका 14:26; मत्ती 10:38)। तो आइए, हम अपने प्रभु के योग्य अनुयायी बनें और, यदि आप चाहें, तो हम सब व्यर्थ की चीज़ों को पीछे छोड़ दें। यदि आप सहमत हैं, तो मैं भी सहमत हूँ; यदि आपको यह पसंद है, तो मुझे भी यह पसंद है; और यदि आप कुँवारी रहना चाहती हैं, तो मैं भी चाहती हूँ। और आइए हम स्वयं को स्वर्गीय वरा के लिए निर्दोष प्रस्तुत करें, न केवल अपनी आत्माओं को बल्कि अपने शरीरों को भी शुद्ध रखकर। इससे हमें क्या लाभ होगा कि हम इस क्षणभंगुर जीवन को व्यर्थता में जीकर शाश्वत आशीर्वादों से वंचित हो जाएँ? और यदि हमें संतान होती है, तो हम उनके पालन-पोषण और उनकी तकदीर को लेकर दिन-रात चिंता करते हुए और भी बड़े दुख से भर जाएँगे, और इस दुनिया के अनेक जालों में फँस जाएँगे। जब मृत्यु, जो हमसे अपरिचित है, आती है, तो हम तब कहाँ जाएँगे—स्वर्ग में या गेहेना में? यह हम अभी नहीं जानते। इसलिए, आइए हम पवित्रता में जिएँ, अपनी कुँवारी अवस्था को गुप्त रूप से बनाए रखें, जब तक कि प्रभु हमें मठवासी जीवन के योग्य न समझें।

उस धन्य युवक ने, अपनी पवित्र मंगेतर से ये वचन सुनकर, उसकी बुद्धि पर आश्चर्य किया और, जमीन पर गिरकर, परमेश्वर का धन्यवाद किया, जिन्होंने अपनी पवित्र आत्मा द्वारा उस कन्या को ऐसे निर्णय के लिए मार्गदर्शन दिया था, जो पूरी तरह से उसकी अपनी इच्छा के अनुरूप था। और उन्होंने वह पूरी रात प्रार्थना में बिताई, उच्च स्थान से सहायता मांगते हुए, ताकि जिस जीवन के मार्ग की उन्होंने शुरुआत की थी, उसे पूर्णता तक जिया जा सके।

जब सुबह हुई, तो वे थोड़ी देर के लिए सो गए और दोनों ने एक ही सपना देखा: एक तेजस्वी चेहरे वाले युवक ने उन्हें एक दर्शन में प्रकट होकर मुस्कुराते हुए, उनसे कोमल स्वर में कहा:

'प्रभु ने तुम्हारे संकल्प को स्वीकार कर लिया है और तुम्हें उस जीवन में आशीर्वाद देने के लिए मुझे भेजा है जिसे तुमने चुना है—ताकि तुम उनके सामने पवित्र और निर्दोष खड़े हो सको।'

यह कहकर, उसने उनके पूरे शरीर पर क्रॉस का चिह्न लगाया और अदृश्य हो गया। चौंककर जागते हुए, उन्होंने एक-दूसरे को वह सपना बताया जो उन्होंने दोनों ने देखा था। उसी क्षण, उन्हें स्वर्गदूत की उपस्थिति से एक अकथनीय सुगंध आती हुई महसूस हुई, और वे चकित रह गए। और उसी क्षण, प्रभु के सामने भूमि पर गिरकर, उन्होंने उसकी उत्कट स्तुति की। वही स्वर्गीय सुगंध, उसके बाद बहुत समय तक, कई लोगों ने न केवल उनके कक्ष में बल्कि पूरे घर में भी महसूस की। और यह पवित्र जोड़ा देह में स्वर्गदूतों की तरह रहता था, दिव्य प्रेम की ज्वाला से ईश्वर के समक्ष जलता हुआ, जैसे दो पुरोहित या उदारता का तेल बहाने वाले दो जैतून के पेड़, क्योंकि वे हर दिन अनगिनत दान देते थे, और अपने सारे धन को उदारतापूर्वक गरीबों में बाँट देते थे।

कुछ समय बाद, थियोफानेस के ससुर को जब यह पता चला कि उसका दामाद और बेटी पवित्रता से जीवन यापन कर रहे थे और अपना सारा धन गरीबों में बाँट रहे थे, तो वह बहुत दुखी हुआ। वह ज़ार के पास गया, उसे यह सब बताया और अपने दामाद की शिकायत की:

'हाय रे मुझ दरिद्र जन!' वह चिल्लाया, 'हाय रे मेरे शापित बुढ़ापे के लिए, मेरे दुष्ट दामाद के कारण! वह अपनी संपत्ति का बेवकूफी से दुरुपयोग करता है और मेरी जवान बेटी को बेवजह बर्बाद कर रहा है, और उससे पति-पत्नी की तरह रहने से इनकार कर रहा है, और मुझे अपने पोते-पोतियों से कोई सांत्वना मिलने की उम्मीद नहीं है।' और उसने उसे क्यों लिया? विवाह से पहले उसने सगाई का व्रत क्यों नहीं तोड़ा और उससे किनारा क्यों नहीं किया, ताकि इतनी कम उम्र में उसे ऐसी विपत्ति में न डालता, और अपनी वृद्धावस्था को और भी बड़े दुख में न डालता? मेरा दुख दोहरा है: एक तो मेरी बेटी के लिए, जो शादीशुदा होते हुए भी पति-विहीन है और माँ नहीं बन सकती; और दूसरा इस व्यर्थ में बर्बाद हो रही संपत्ति के लिए, क्योंकि थियोफेनेस ने न केवल अपनी ही जायदाद बर्बाद कर दी है, बल्कि मेरी बेटी के लिए दिए गए दहेज का भी एक बड़ा हिस्सा पहले ही उड़ा दिया है।

और उसने ज़ार से अपने दामाद को दंडित करने और उसे विवाह के नियमों के अनुसार जीने तथा अपनी संपत्ति को व्यर्थ में बर्बाद न करने के लिए मनाने को कहा।

क्रोध से भरे राजा ने धन्य थियोफेंस को बुलाया और उस पर क्रूरता से घूरते हुए उसे धमकाने लगा, और उसे अपना जीवन यापन का तरीका बदलने का आदेश दिया; यदि वह मना कर देता, तो उसने उसकी आँखें निकालकर उसे निर्वासित करने का वादा किया।

लेकिन उस धर्मनिष्ठ युवक ने राजा की धमकियों की कोई परवाह नहीं की और अपने उस पवित्र, ब्रह्मचारी जीवन को नहीं छोड़ा, जिसकी शुरुआत इतनी शानदार ढंग से हुई थी: उसने सांसारिक राजा की कृपा की बजाय स्वर्गीय राजा की कृपा प्राप्त करने का प्रयास किया।

थोड़ी ही देर बाद, लोगों की कुछ आवश्यकताओं के जवाब में, राजा ने थियोफानेस को साइज़िकस क्षेत्र[2348] के लिए रवाना होने का आदेश दिया। यह यात्रा उसके ससुर द्वारा जानबूझकर रची गई थी: एक ओर, ताकि राजा द्वारा सौंपी गई जिम्मेदारियों में व्यस्त रहते हुए, थियोफेंस अपनी प्रार्थना, उपवास और संयम के सामान्य कार्य करना बंद कर दे और उन्हें भूल जाए; दूसरी ओर, ताकि वह अपनी संपत्ति का वितरण करना बंद कर दे, जिसकी देखभाल अब उसके ससुर करने लगे थे।

जब थियोफेन्स, राजा की आज्ञा का पालन करते हुए, साइज़िकस के लिए रवाना हुआ, तो राजा और उसके ससुर ने उसकी पत्नी को उसके साथ भेजने का आदेश दिया, क्योंकि उसके पिता यह सोच भी नहीं सकते थे कि उनकी बेटी, थोड़े समय के लिए भी, अपने पति से अलग हो जाए।

ऐसा हुआ कि उन्हें एक नदी पार करनी पड़ी जिसे पहले रिंडाकोस कहा जाता था, लेकिन जिसे बाद में लोग 'महान नदी' कहने लगे; एक किनारे पर ओलंपिया का क्षेत्र था, और दूसरे पर सिग्रिया का[2349] ।

धन्य थियोफ़ेनेस इस नदी को पार करना चाहते थे, हालांकि ज़मीन के रास्ते से यात्रा करना भी संभव था; लेकिन उस समय उन पर आई शारीरिक दुर्बलता को देखते हुए, उन्होंने नदी के रास्ते को चुना, क्योंकि वह आसान था। यह सब ईश्वर की व्यवस्था से हुआ। अपने घोड़ों और रथों के साथ अपने मित्रों और नौकरों को ज़मीनी मार्ग से भेजकर, वह स्वयं अपनी धन्य पत्नी और कुछ नौकरों के साथ एक नाव पर सवार हो गया; जैसे ही वह नदी से नीचे की ओर चला, थियोफानेस सुंदर सिग्रियन पहाड़ों, पहाड़ियों और रेगिस्तानों को देखकर चकित हो गया, और उसकी आत्मा उनमें से एक के बीच मौन जीवन के लिए तरसने लगी। और उसने पहाड़ों के बीच एक जगह पर घने जंगल से ढकी एक विशाल घाटी देखी; और उसे इस स्थान में बहुत आनंद आया। रात बिताने के लिए किनारे पर नाव बांधने के बाद, और बाकी सभी को नावों में ही रहने का आदेश देने के बाद, थियोफानिस इस घाटी की ओर चल पड़ा और, जब वह उस सुनसान जगह में घूम रहा था, तो उसकी आत्मा गहराई से प्रभावित हुई। घने जंगल में एक जगह खड़े होकर, उन्होंने ईश्वर से भक्तिपूर्वक प्रार्थना करना शुरू कर दिया। उन्होंने अपने हाथ स्वर्ग की ओर उठाए और आँसुओं से भरी आँखों के साथ कई बार जमीन पर सिर झुकाते हुए कहा:

– *'मुझे वह मार्ग दिखाओ जिस पर मुझे चलना चाहिए*'! (भजन संहिता 142:8).

संन्यासी जीवन की तीव्र लालसा से अभिभूत और सब कुछ तुरंत पीछे छोड़ देने का संकल्प लेकर, थियोफानेस उस मरुभूमि में चला गया। प्रार्थना से थककर विश्राम के लिए बैठते ही, उसने उस तेजस्वी देवदूत को देखा जो एक बार उसे और उसकी वधू को उनके विवाह कक्ष में प्रकट हुआ था। उस स्वर्गीय प्राणी ने रेगिस्तान की ओर अपनी उंगली दिखाते हुए थियोफानेस से कहा:

'तुम्हारे लिए यहीं बसना उचित है, परन्तु थोड़ी देर प्रतीक्षा करो जब तक कि वे जीव जो तुम्हारे मार्ग में बाधा डाल रहे हैं, पृथ्वी से हटाए नहीं जाते; वे शीघ्र ही यहाँ से चले जाएँगे, और तब तुम जहाँ चाहो बिना किसी बाधा के जा सकोगे।'

संत थियोफेनेस इस दर्शन से अत्यंत प्रसन्न हुए। उत्साहित होकर नावों में लौटकर, वे अपने रास्ते पर आगे बढ़े। उन सिग्रियन पहाड़ों में सुनसान मठों और संन्यासियों की झोपड़ियों को देखकर, वह अपनी पवित्र पत्नी के साथ उनका दौरा करने लगा। इन इलाकों में उसकी मुलाकात ग्रेगरी नामक एक दूरदर्शी वृद्ध से हुई, जिनका उपनाम स्ट्रैटगियास था, जो पॉलीक्रोनियन नामक स्थान में रहते थे। धन्य थियोफानेस ने इस बूढ़े को अपना इरादा और इच्छा बताई और उनसे

[2348] साइज़िकस का क्षेत्र (जिसकी राजधानी साइज़िकस है) एशिया माइनर के उत्तर-पश्चिमी भाग में, मारमारा सागर के दक्षिणी तट पर स्थित है।

[2349] सिग्रिया का क्षेत्र एशिया माइनर का एक हिस्सा है जो प्रॉपोंटिस (मारमारा सागर) के बीच, रिंडाक (प्राचीन काल में लाइकोस, अब ल्यूनैड, और अपने निचले मार्ग में मिकालिस) और ईज़ेस नदियों तक फैला हुआ है, जो मिसिया को ट्रॉयड से अलग करती थीं।

वह सुना जो पहले उनके सामने प्रकट हुए स्वर्गदूत ने कहा था। इस बूढ़े ने, जिन्हें उनके दैवीय जीवन के कारण ईश्वर द्वारा दूरदर्शिता का वरदान मिला था, थियोफानेस से कहा:

'थोड़ी देर और प्रतीक्षा करो, हे अच्छे युवक; शीघ्र ही राजा और तुम्हारे ससुर दोनों पृथ्वी के चेहरे से मिट जाएँगे, और तुम, स्वतंत्र होकर, अपने महान उद्देश्य को पूरा करोगे।'

थेओफानेस की सदाचारी मंगेतर को, पवित्र वृद्ध ने उसके कान में धीरे से फुसफुसाया कि उसका प्रिय भाई थेओफानेस, उचित समय पर, शहीद का मुकुट प्राप्त करेगा।

इसके बाद, संत थियोफानेस साइज़िकस के लिए रवाना हुए और लोगों के प्रशासन के संबंध में राजा के आदेशों का पालन किया। वहाँ, वे अक्सर अपने सेवकों के साथ पास के सिग्रियन पहाड़ों में जाते थे, जहाँ वे पवित्र संतों से मिलते थे। उनका आशीर्वाद और प्रार्थनाएँ प्राप्त करते हुए, थियोफानेस ने साथ ही साथ दिव्य प्रेरित वार्तालापों से उनकी आत्माओं को भी पवित्र किया।

विशेष रूप से, वह अक्सर दूरदर्शी ग्रेगरी द स्ट्रैटेगोस और 'लिटिल विलेज' - जैसा कि उस मठ का नाम था - के मठाधीश क्रिस्टोफ़र से मिलने जाता था। एक बार, जब थियोफानेस संन्यासियों से मिलने के लिए सिग्रियन पहाड़ों से होकर यात्रा कर रहे थे, तो उन्हें एक जगह रुकना पड़ा। उस समय भीषण लू चल रही थी, क्योंकि फसल काटने का समय था, और इसलिए थियोफानेस और उनके साथ मौजूद सभी लोग बहुत प्यासे थे।

हालाँकि, वह जगह सुनसान और पानी से रहित थी। जैसे-जैसे दिन ढलने लगा, उन्हें वहीं लेटना पड़ा और रात बितानी पड़ी। इस समय तक, वे स्वयं और उनके पशु दोनों ही प्यास से पूरी तरह से थक चुके थे। धन्य थियोफानेस ने प्रार्थना करने के बाद, एक पहाड़ी के नीचे बैठ गए, इस उम्मीद में कि वे थोड़ी देर सोकर अपनी प्यास को नींद से बुझा लेंगे। और देखो, वह झपकी लेते ही जीवित जल का एक झरना अचानक उसके सिर पर बहने लगा और उसे नहला दिया। इस प्रकार, प्रभु ने अपने सेवक को ठुकराया नहीं, जिसने एक बार कृतघ्न यहूदी लोगों के लिए चट्टान से पानी निकाला था; और तो और, उन्होंने अपनी इस आज्ञाकारी सेवक के लिए इतनी ज़रूरत के समय में यह करने की कृपा की। पवित्र व्यक्ति, पानी के उस अप्रत्याशित छींटे से जागकर, तुरंत अपनी सीट से उठ खड़ा हुआ और अपने साथ मौजूद सभी लोगों को बुलाया। और जब वे सभी इकट्ठा हो गए, तो वे उस अप्रत्याशित और अचानक हुए चमत्कार पर चकित हो गए और परमेश्वर की महिमा करने लगे। उन्होंने न केवल अपनी प्यास बुझाई, बल्कि अपने पशुओं को भी पानी पिलाया।

अगले दिन जब वे उठे, तो वह झरना वहाँ नहीं था: वह जगह सूख चुकी थी, और पानी का कोई निशान भी नहीं दिख रहा था।

वे इस पर विशेष रूप से चकित हुए और परमेश्वर की चमत्कारिक शक्ति की महिमा करने लगे, क्योंकि प्रभु ने प्यास के समय में और पानी से पूरी तरह रहित भूमि में एक झरना उत्पन्न किया था, और जब पानी की कोई आवश्यकता नहीं रही, उसने पानी को सूखा दिया, इस प्रकार स्पष्ट रूप से दिखाते हुए कि हर जगह प्रभु उन लोगों के लिए आवश्यक सभी चीजें प्रदान करने के लिए तैयार हैं जो पहले परमेश्वर के राज्य और उसकी धार्मिकता की खोज करते हैं (मत्ती 6:33)।

इसके बाद, थियोफानेस ने साइज़िकस में कुछ समय बिताया और वहाँ राजा के सभी आदेशों का विधिवत पालन करने के बाद, कॉन्स्टेंटिनोपल लौट आए।

इस समय, परमेश्वर के स्वर्गदूत की भविष्यवाणी और आदरणीय ग्रेगरी की भविष्यवाणी पूरी हुई: राजा लियो खज़ार, कोप्रोन्यमस का पुत्र और लियो इसाउरियन का पोता, की मृत्यु हो गई; और थियोफानेस के ससुर की भी मृत्यु हो गई। और वह, अपनी पवित्र वधू की तरह, स्वतंत्र हो गया। तुरंत, जैसा उन्होंने चाहा था, उन्होंने अपना सारा धन और सारी संपत्ति बाँट दी। फिर थियोफेंस ने अपनी मंगेतर का मुंडन बिथिनिया के एक महिला मठ में करवाया[2350] , और उस मठ को उसकी देखभाल के लिए कई संपत्तियाँ प्रदान कीं; मुंडन के समय उसका नाम इरिना रखा गया। अपनी संन्यासी जीवन में, इरिना ने ईश्वर को प्रसन्न किया और कई चमत्कार किए, क्योंकि उन्हें ईश्वर से बीमारों को ठीक करने और दुष्ट आत्माओं को भगाने का वरदान प्राप्त था। इन चमत्कारों को बाद में कॉन्स्टेंटिनोपल के पैट्रिआर्क, परम पावन मेथोडियस द्वारा वर्णित किया गया था।

[2350] बिथिनिया एशिया माइनर का उत्तर-पश्चिमी प्रांत है।

अपनी धन्य मंगेतर, कन्या इरिना के संन्यास ग्रहण करने के बाद, संत थियोफेंस ने अपनी संपत्ति का शेष भाग कॉन्स्टेंटिनोपल के गरीबों में बाँट दिया और, केवल थोड़ी सी धनराशि अपने पास रखकर, उपर्युक्त द्रष्टा, ग्रेगरी द स्ट्रैटेगोस से मिलने के लिए निकल पड़े। इसी के द्वारा थियोफानेस ने एक भिक्षु के रूप में सिर मुंडवाया था। वहाँ, अपने पास बचे हुए पैसे का उपयोग करके, संत थियोफानेस ने इस वृद्ध के लिए एक मठ की स्थापना की और वहाँ काफी समय तक रहे, तथा भिक्षु जीवन के तपस्या में खुद को निपुण बनाया।

बाद में, उसी संन्यासी की सलाह पर, संत थियोफेंस कालोनिमोस नामक द्वीप के लिए रवाना हुए[2351] ; इस द्वीप पर थियोफेंस के पास अपने माता-पिता से विरासत में मिली एक छोटी सी संपत्ति थी, जिसे उन्होंने अभी तक गरीबों में बांटने का समय नहीं निकाला था। वहाँ उन्होंने एक मठ की स्थापना की, जिसमें उन्होंने मोनोकहेरिया के नाम से जाने जाने वाले थियोडोरियन मठ के पूरे समुदाय को स्थानांतरित कर दिया; उन्होंने उनके लिए एक धर्मगुरु को भी बुलाया और नियुक्त किया – जो एक धार्मिक और अनुभवी व्यक्ति था। थियोफानेस स्वयं अपनी कोठरी में अलग-थलग हो गए और किताबें लिखने लगे, क्योंकि वे एक कुशल लेखक थे। उन्होंने ये किताबें बेच दीं और उससे मिली कमाई से न केवल अपना बल्कि दूसरों का भी भरण-पोषण किया।

कई वर्षों बाद, उस मठ के मठाध्यक्ष का निधन हो गया, और भाइयों ने पूजनीय थियोफेंस से स्वयं उनके मठाध्यक्ष बनने के लिए कहने लगे। लेकिन संत ने यह प्रस्ताव ठुकरा दिया और एक बार फिर माउंट सिग्रियन के लिए निकल पड़े; उस रेगिस्तान को याद करते हुए जहाँ उन्हें साइज़िकस के लिए नाव से यात्रा करते समय एक देवदूत का दर्शन हुआ था, थियोफेंस वहाँ गए और ईश्वर की सेवा करते हुए उस रेगिस्तान में रहने लगे। शीघ्र ही आदरणीय थियोफानेस ने उस रेगिस्तान को ईश्वर-भयभीत संन्यासियों से भर दिया, क्योंकि कई लोग उनके पास आने लगे और उनके पास बसने लगे, इसलिए जल्द ही एक मठ स्थापित करना आवश्यक हो गया।

इस रेगिस्तान में एक किसान की एक निश्चित ज़मीन का टुकड़ा था; इस जगह को 'महान गाँव' कहा जाता था। संत थियोफेंस ने अपने कुछ परिचितों को बुलाकर उनसे पैसे उधार लिए और इस भूखंड को खरीदकर वहाँ प्रभु की सहायता से एक मठ की स्थापना की, जो अपनी दिव्य व्यवस्था के अनुसार, हमारी सभी आवश्यकताओं को पूरा करते हैं। कुछ ही समय में, आदरणीय पिता ने उधार लिए गए पैसे चुका दिए, और अपने मठ में उनके पास अपने चारों ओर इकट्ठा हुई साधु-समाज को बनाए रखने के लिए आवश्यक सभी चीजों की प्रचुरता थी।

संत थियोफेंस अपने मठ में मठाध्यक्ष का पद स्वीकार करने के लिए विवश हो गए, क्योंकि सभी संन्यासियों ने उनसे ऐसा करने का आग्रह किया, और वास्तव में यह आवश्यक भी था।

मठाध्यक्ष के रूप में, थियोफानेस उस तरह के नेता थे जैसा मसीह स्वयं *हमें* सुसमाचार में बनने का आदेश देते हैं: *'तुम में जो बड़ा होना चाहता है, उसे तुम्हारा सेवक बनना चाहिए, और जो पहला होना चाहता है, उसे तुम्हारा दास बनना चाहिए'* (मत्ती 20:26-27)। आदरणीय मठाधीश थियोफानेस अपने हाथों से काम करते थे और सभी की सेवा करते थे, क्योंकि उस समय प्रभु ने उन्हें महान शारीरिक शक्ति प्रदान की थी, और प्रत्येक मठ संबंधी कार्य में वे किसी से भी अधिक भाग लेते थे तथा सभी के लिए एक सदाचारी और साथ ही मेहनती जीवन का उदाहरण थे।

उस समय, अर्थात् लियो के पुत्र और कोप्रोन्यमस के पोते कॉन्स्टेंटिन के शासनकाल में, उनकी धर्मपरायण माता आइरीन और कॉन्स्टेंटिनोपल के परम पवित्र पैट्रिआर्क, तारासियस के अधीन, प्रतिमा-भंजकों के खिलाफ निकिया में सप्तम सार्वभौमिक परिषद का आयोजन किया गया था[2352] । इस परिषद में, पवित्र चर्च ने प्रतिमा-भंजक विधर्म की निंदा की, और पवित्र प्रतिमाओं की श्रद्धापूर्वक पूजा को बहाल किया गया। सिग्रियन के ग्रेट विलेज के मठाधीश, आदरणीय थियोफेंस को भी इस परिषद में बुलाया गया था[2353] । इस परिषद में सच्ची ऑर्थोडॉक्सी को बनाए रखते हुए, थियोफेंस पवित्र पिताओं के बीच एक उज्ज्वल तारे की तरह चमके। परिषद में उनकी उपस्थिति कई लोगों के लिए बहुत

[2351] कालोनिमि या कालोनिमोस द्वीप (अब कालोमियोस, प्राचीन काल में बेसबिकोन) मारमारा सागर में, रिडिक नदी के मुहाने के सामने स्थित है।

[2352] संत आइरीन, लीओ द खज़ार की रानी और पत्नी, ने शुरू में, अपने पति की मृत्यु के बाद, अपने छोटे बेटे, सम्राट कॉन्स्टेंटिन पोर्फिरोजेनिटिस (780–792) की ओर से, जब तक वह नाबालिग था, साम्राज्य पर शासन किया, और बाद में अपने अधिकार से (797–802) – संत तारासियस, 784 से 806 तक पैट्रिआर्क (उनका पर्व 25 फरवरी को मनाया जाता है)। सातवां सार्वभौमिक परिषद, जिसने प्रतिमाओं की पूजा को मान्यता दी, 787 में बुलाई गई थी।

[2353] सिग्रियन मठ साइज़िकस और समुद्र से 22,000 पग दूर स्थित था। – द ग्रेट विलेज (मेगाग्रि – Μέγας Αγρός) उसी क्षेत्र में था; एक और मठ द लिटिल विलेज था, जहाँ क्रिस्टोफ़र मठाध्यक्ष के रूप में सेवा करते थे।

फायदेमंद थी; जबकि कई अन्य अपने सुंदर वस्त्रों, रथों और घोड़ों का दिखावा कर रहे थे, वह एक जर्जर गधे पर, पुराने कपड़े और पैबंद लगे चथिड़ों में आए। जो भी उसके पूर्व जीवन को जानते थे—जब वह अमीर, कुलीन, राजा के करीब और सिक्लाइट का सदस्य था—वे उसे इतनी विनिम्रता और गरीबी में देखकर दया से भर गए; और सभी ने जाना कि, प्रभु के लिए, कोई स्वयं को इतना नम्र कर सकता है और इतना दरिद्र बन सकता है, और दुनिया की सभी चीजों को कुछ भी नहीं मान सकता।

पवित्र परिषद के समापन पर, आदरणीय महंत अपने मठ में लौट आए, अपने साथ इस सार्वभौमिक परिषद में पुष्टि किए गए पवित्र विश्वास के धर्मसिद्धान्तों को अपने मठ के लिए सबसे उत्तम आभूषण के रूप में लाए। यहाँ थियोफानेस ने अपने आदी तपस्वी कार्यों में स्वयं को समर्पित करना जारी रखा, और अपने सदाचारी जीवन के उदाहरण से न केवल अपने मठ बल्कि आसपास के पूरे क्षेत्र को भी ज्ञान प्रदान किया; उनकी ख्याति दूर-दूर तक फैल गई, और सभी ने उनके कारण स्वर्गीय पिता की महिमा की। अपने धर्मपरायण जीवन के लिए, ईश्वर ने उन्हें चमत्कार करने की कृपा प्रदान की: उन्होंने बीमारों को ठीक किया और लोगों से भूत-प्रेत भगाए। एक बार, जब आदरणीय संत सो रहे थे, तो एक राक्षस ने उन पर हमला करने का निश्चय किया; एक जंगली सूअर का रूप धारण करके, उसने संत के अंगूठे को चबाना शुरू कर दिया, जिससे उन्हें बहुत दर्द हुआ। तुरंत नींद से जागकर, थियोफेनेस ने अपनी उंगली पर अपने दुश्मन के दाँतों के निशान देखे, जिसने उसकी उंगली को पूरी तरह से काटकर अलग करने की कोशिश की थी; और यद्यपि इस घाव से संत को बहुत दर्द हुआ, उन्होंने अपने साथ मौजूद जीवन-दायक क्रूस के वृक्ष की मिट्टी (मिश्रण) ली, उससे अपनी घायल उंगली पर लेप लगाया, और तुरंत ठीक हो गए। उस समय से, राक्षसों पर शक्ति प्राप्त करने के बाद, थियोफानेस ने अपने पास लाए गए पीड़ित लोगों से उन्हें अपने वचन द्वारा भगाना शुरू कर दिया।

एक दिन जहाज़ पर यात्रा करते समय, इन पूजनीय पिता ने तूफ़ान को शांत कर दिया। अपने मठ में आने वाले यात्रियों और गरीबों को वह प्रचुर मात्रा में रोटी और अन्य भोजन बाँटते थे, और फिर भी रोटी कम नहीं होती थी – ठीक वैसे ही जैसे भविष्यवक्ता एलिया ने उस विधवा के पास आटे के बर्तन के साथ किया था जिसके यहाँ वह ठहरे थे (3 राजा 7:16)।

एक अवसर पर, खज़ांची ने संत से गरीबों को रोटी देने पर बड़बड़ाना शुरू कर दिया, जबकि मठ में रहने वालों के लिए भी पर्याप्त नहीं था। तब पूजनीय थियोफानेस ने उसे आदेश दिया कि वह भंडारगृह में रखे गए सभी सामान की गिनती और माप करे, और यह पाया गया कि कुछ भी कम नहीं हुआ था; पूरी समुदाय ने इसके लिए ईश्वर की स्तुति की, जबकि शिकायत करने वाले व्यवस्थापक ने घुटनों के बल गिरकर संत से क्षमा याचना की।

जब वह पहले से ही पचास वर्ष का था, तो आदरणीय थियोफानेस को गुर्दे की पथरी हो गई और वह बहुत कष्ट सहता रहा। उस समय से, उसने अपना बाकी जीवन अपने बिस्तर पर ही बिताया, और जिसने अपनी प्रार्थनाओं के द्वारा दूसरों को उनकी बीमारियों से ठीक किया था, उसने अपने प्रभु से अपनी ही पीड़ा को दूर करने के लिए नहीं कहा, बल्कि उसे कृतज्ञता के साथ सहन किया। इसी बीमारी से पीड़ित रहते हुए, उस दूरदर्शी बुज़ुर्ग, ग्रेगरी की भविष्यवाणी के अनुसार, उनके शहीद होने का समय आ गया, जिसने चुपचाप अपनी मंगेतर, एक पवित्र कन्या, के कान में फुसफुसाया था कि उचित समय पर उसके मंगेतर को भी शहीद का ताज मिलेगा।

कई साल बाद, जब रेवरेंड बूढ़ा हो गया था और कई ग्रीक सम्राट आ चुके थे और चले गए थे (क्योंकि उपर्युक्त सम्राट कॉन्स्टेंटिन, जिसने अपनी माँ आइरीन के साथ शासन किया था, के बाद, निकिफोरस अपने बेटे स्टैव्रकियोस के साथ साम्राज्य सिंहासन पर चढ़ा, और उनके बाद माइकल कुरोपालेट्स ने शासन किया), – इन्हीं सम्राटों के बाद ही लियो द आर्मेनियन[2354] ने यूनानी राज्य का राजदंड ग्रहण किया। इस सम्राट ने मूर्तिभंजनवाद की कुप्रथा को बढ़ावा दिया। उन्होंने पवित्र पैट्रिआर्क निकिफोरस और उनके शिष्यों[2355] को उनके पदों से हटाकर मसीह की कलीसिया को बहुत कष्ट पहुँचाया; और उन्होंने मूर्तियों की पूजा करने के लिए कई अन्य ईसाइयों को सीधे यातनाएँ दीं और मार डाला।

[2354] सम्राट लियो द आर्मेनियन ने 813 से 820 तक शासन किया।

[2355] संत निकिफोरस, पैट्रिआर्क, ने 806 से 815 तक कॉन्स्टेंटिनोपल के चर्च का नेतृत्व किया; उनकी मृत्यु 828 में कैद में हुई; उनका पर्व 13 मार्च और 2 जून को मनाया जाता है। थियोडोर द स्टुडाइट – प्रसिद्ध स्टुडियो मठ के मठाध्यक्ष; उनका पर्व 11 नवंबर को मनाया जाता है।

चर्च के इतिहासकार जॉर्जी केड्रिन[2356] सेंट थियोफेंस के बारे में निम्नलिखित लिखते हैं। जब कॉन्स्टेंटिनोपल के पैट्रिआर्क निकिफोरस निर्वासन के लिए समुद्र मार्ग से यात्रा कर रहे थे और उनका जहाज उस क्षेत्र से गुज़रा जहाँ सम्माननीय थियोफेंस का मठ स्थित था, तो बाद वाले को यह अपने दूरदर्शी आध्यात्मिक नेत्रों से पता चल गया; उन्होंने अपने शिष्य को जलते हुए कोयलों वाला धूपदान लाने का आदेश दिया, उन पर लोबान डाला और मोमबत्तियाँ जलाने का आदेश देकर, जैसे किसी राहगीर से बात कर रहे हों, जमीन पर झुक गए। फिर शिष्य ने थियोफेंस से पूछा:

'पिताजी, आप क्या कर रहे हैं, और इस तरह झुकने के बाद आप किससे बात कर रहे हैं?'

माननीय ने उत्तर दिया:

'देखो, उनकी पवित्रता पैट्रिआर्क निकिफोरस, जो अपनी आस्था के कारण निर्वासित हैं, बंदी बनने की ओर जा रहे हैं और अब एक जहाज पर हमारी भूमि के पास से गुज़र रहे हैं। उनके ही लिए मैंने मोमबत्तियाँ और धूप जलाई है, ताकि हम पैट्रिआर्क को वह सम्मान दे सकें जिसके वे हकदार हैं।'

उनकी पवित्रता पादरी निकिफोरस, जो जहाज पर यात्रा कर रहे थे, ने यह महसूस किया; क्योंकि वे अचानक घुटने के बल बैठ गए, उन्होंने पवित्र एल्डर की प्रणाम मुद्रा का अपनी ही मुद्रा से जवाब दिया, और, अपने हाथ उठाकर, उन्हें आशीर्वाद दिया। उनकी पवित्रता पादरी के साथ मौजूद एक भिक्षु ने उनसे पूछा:

'आप किसका आशीर्वाद दे रहे हैं, परम पावन पिता, और आप किसके सामने घुटने टेक रहे हैं?'

इस पर, पैट्रिआर्क निकिफोरस ने उत्तर दिया:

'अभी-अभी, वेलिकोये सेलो के मठाधीश, कन्फेशनर थियोफेंस ने जली हुई मोमबत्तियाँ और धूप लेकर हमारा स्वागत किया; मैंने बदले में उन्हें प्रणाम किया; क्योंकि उन्हें भी, हम लोगों की तरह, जल्द ही कष्ट झेलना होगा।'

यह सब जल्द ही घटित हो गया।

कुछ ही समय बाद, दुष्ट ज़ार लियो द आर्मेनियन, आदरणीय थियोफानेस को अपने पक्ष में लाने की इच्छा से, उनके पास दूत भेजे और उन्हें सम्मानपूर्वक कॉन्स्टेंटिनोपल बुलाया; साथ ही, उसने चालाकी से उन्हें लिखा: 'मैं जल्द ही अधर्मी लोगों के खिलाफ युद्ध छेड़ने जा रहा हूँ, लेकिन उनके सामना करने से पहले, मुझे आपकी प्रार्थनाओं से खुद को लैस करना चाहिए; और इसलिए, सम्माननीय पिता, हमारे पास आने से इनकार न करें।'

यद्यपि आदरणीय थियोफानेस राजा की चालाकी को समझ गए थे और उस समय एक गंभीर बीमारी से पीड़ित थे, फिर भी उन्होंने सच्चे धर्म के लिए कष्ट सहने के उद्देश्य से निकलने का संकल्प लिया। एक जहाज पर सवार होकर, संत जल्द ही कॉन्स्टेंटिनोपल पहुँचे, लेकिन वहाँ उन्हें सम्राट से मिलने का अवसर नहीं मिला, क्योंकि सम्राट लज्जित था और उसे थियोफानेस की फटकारों का डर था। फिर भी, उसने अपने प्रतिष्ठित दरबारियों को आदरणीय थियोफानेस के पास भेजा, ताकि वे चापलूसी भरे वादों से उन्हें अपने धर्म-भ्रष्टता में फँसा सकें।

'यदि,' उसने उनके माध्यम से उस संत से कहा, 'आप हमारी बात से सहमत हैं, तो मैं आपके मठ को ऊँची पत्थर की इमारतों से बनवाऊँगा और हर तरह से समृद्ध करूँगा; और मैं आपको सभी से अधिक सम्मान दूँगा, और मैं आपके सभी करीबी रिश्तेदारों को भी उच्च पद प्रदान करूँगा।'

हालाँकि, इन वादों के साथ राजा ने एक धमकी भी जोड़ी:

'लेकिन अगर तुम,' उन्होंने जारी रखा, 'हमारा विरोध करोगे, तो तुम स्वयं एक बड़ी कलंक के दोषी बनोगे।'

इस पर, संत थियोफेंस ने अपने दूतों के माध्यम से राजा को उत्तर दिया:

'मैं इस संसार के धन-संपत्ति में से कुछ भी नहीं चाहता: यदि, एक युवा व्यक्ति के रूप में, मसीह के प्रेम के लिए, मैं अपना सारा सोना, चांदी और मेरे पास जो कुछ भी संपत्ति थी, उसे त्याग देता हूँ, तो क्या मैं सचमुच वृद्धावस्था में उनकी इच्छा करूँगा? ऐसा मुझसे दूर रहे। जहाँ तक मठ और मेरे भाइयों का सवाल है, प्रभु स्वयं उनकी देखभाल करते हैं, किसी भी सांसारिक राजा या राजकुमार से अधिक। तब हे राजा, आप मुझे अपनी धमकियों से क्यों डरा रहे हैं, मानो मैं कोई छोटा बच्चा हूँ जिसे लाठी से पीटा जाए! मेरे लिए यातनाएँ तैयार करो, आग जलाओ, और मैं, यद्यपि आप देख सकते हैं कि अपनी बीमारी के कारण चल नहीं सकता, फिर भी सच्चे धर्म के लिए आग में कूद जाऊँगा।

[2356] जॉर्जियस केड्रिन – 11वीं शताब्दी के अंत या 12वीं शताब्दी की शुरुआत के एक बीजान्टिन लेखक, तथाकथित *सिंऑप्सिस ऑफ हिस्टरीज़* के लेखक। उनका कार्य दुनिया की रचना से शुरू होता है और इसाक कोम्नेनोस (1057) के सत्ता संभालने तक यहूदी, रोमन और बीजान्टिन इतिहास को शामिल करता है।

संत के ये शब्द, जो उन्होंने बड़ी बहादुरी से कहे थे, सुनकर दूत राजा के पास गए और उसे यह सब बताया। राजा, ऐसी अभूतपूर्व बहादुरी से चकति होकर, जॉन नामक एक सोफसि्ट—जो एक चालाक जादूगर और वधिर्मी था—को आदेश दयिा कि वह आदरणीय पति के पास जाकर उनसे बातचीत करे; लेकनि पादरी के दैवीय प्रेरति शब्दों के सामने, वह, मानो, वाक्-रहति हो गया और उससे पराजति हो गया, और उसे भेजे वाले राजा के पास लज्जति होकर लौट गया।

तब राजा, क्रोध से भरकर, नेक धर्मज्ञ थयिोफेंस को तथाकथति एलेउथेरयिन कक्ष में एक अँधेरी और तंग कोठरी में बंद करने और उन पर पहरेदार तैनात करने का आदेश दयिा। इस उदास करने वाले बंदी में, पहले से ही बूढ़े और अस्वस्थ, नेक पति ने दो साल बतिाए; यहाँ, हर दनि, वे उसे दया और धमकयिों के साथ बारी-बारी से मूर्तभिंजन की ओर खींचने की कोशशि करते थे, जबकि दुष्ट वधिर्मी, जन्हिें जानबूझकर उसके पास भेजा गया था, उसका मज़ाक उड़ाते और उसकी नदिा करते थे। एक बार, जब राजा ने संत के पास अपना दूत दयालुता से भेजा, यह चाहकर कि वह प्रतमिाओं को हटाने के एक फरमान पर हस्ताक्षर करें, तो पूजनीय थयिोफेंस ने उससे उत्तर दयिा:

हे ज़ार, जानो, उसी को जसिने तुम्हें राज्य प्रदान कयिा है, वही जसिके द्वारा राजा शासन करते हैं और यातना देने वाले पृथ्वी पर राज करते हैं। जानो, मैं तुमसे कहता हूँ, कि प्रभु, यद्यपि वे अकथनीय हैं, फरि भी दृश्यमान होने की कृपा की और, हमारी प्रकृति धारण करके, पाप को छोड़कर हर तरह से हमारे समान हो गए; और इस स्वभाव से, स्वयं में दव्यि बनकर, उन्होंने मृतकों को जीवति कयिा, अंधों को दृष्टि दी, कोढ़यिों को शुद्ध कयिा, और कई अन्य चमत्कार कए। अपने इस मानवीय स्वभाव के द्वारा, उन्होंने यहूदयिों के हाथों स्वेच्छा से मृत्यु को स्वीकार कयिा, तीसरे दनि पुनरुत्थति हुए, महमिा में स्वर्ग में आरोहण कयिा, और फरि कभी पति से अलग नहीं हुए। सुसमाचार हमें मसीह में इस मानवीय स्वभाव के बारे में सखिाता है; इसीलए हम इस सुसमाचार को श्रद्धापूर्वक स्वीकार करते हैं, इसमें लखिी हर बात, मसीह के सभी चमत्कारकि कार्यों पर वशि्वास करते हैं – ताकि सुसमाचार में हम स्वयं उनका सम्मान करें, ऐसा कह सकते हैं। और यदि हम शब्दों में वर्णति मसीह के कार्यों पर वशि्वास करने के लए दण्डति नहीं कए जाते, तो फरि हम कसि बात के लए दण्डति कए जाएँगे यदि हम उसी सुसमाचार वृत्तांत को, जो आइकन में चत्रिति है, स्वीकार करते और सम्मानति करते हैं? यहाँ तक कि वे जंगली लोग भी जो आइकन के कारण हमारे धर्म में आए हैं, वे भी आसानी से लोगों के बीच पृथ्वी पर मसीह के संपूर्ण जीवन और उनके सभी चमत्कारकि कार्यों को पहचान लेते हैं। और कतिने अनपढ़ लोगों ने, आइकनों पर चत्रिति मसीह के चमत्कारों और उनकी स्वेच्छा से हुई मृत्यु को नहिारकर, हमारे लए पीड़ति प्रभु की महमिा नहीं की है? लेकनि आप, आइकनों को अस्वीकार करके, नस्संदेह उनकी मुक्ति से ईर्ष्या करते होंगे। और कसि परषिद ने कभी पवत्रि आइकनों की पूजा को पाप और अपवत्रिता माना है? क्या स्वयं मसीह ने एदेसा के राजकुमार अबगर को उनके उपचार के लए अपने चेहरे की एक प्रतमिूर्ति नहीं भेजी थी, जो मानव हाथों से नहीं बनी थी?[2357] और क्या पवत्रि प्रेरति लूक ने हमें सर्वपवत्रि कुँवारी मरयिम की एक प्रतमिा नहीं दी थी, जो बहुरंगी वर्णकों से चत्रिति की गई थी?[2358] यहाँ कुछ भी पवत्रि पतिाओं की परंपरा और शकि्षा के वरिुद्ध नहीं है: अतुलनीय रहस्यों के व्याख्याकार, महान संत बेसलि ने कहा कि एक प्रतमिा को दयिा गया सम्मान उस वस्तु की ओर नरि्देशति होता है जो उस पर चत्रिति है। इसी प्रकार, स्वर्णवाणी वाले यूहन्ना ने घोषणा की: 'मैं तो मोम से बनी प्रतमिा से भी प्रेम करता हूँ'[2359] । और संत सरिलि[2360] – पवत्रि आत्मा की लीर – ने कहा: 'अक्सर, जब मैं कसिी आइकन पर मसीह के दुख-क्लेश का चत्रिण देखता हूँ, तो मैं इस आइकन

[2357] प्रभु यीशु मसीह के पृथ्वी पर जीवन के दौरान, मेसोपोटामयिा के एदेसा शहर में अबगार नाम का एक राजकुमार रहता था, जो कोढ़ से पीड़ति था। यह सुनकर कि यीशु मसीह हर तरह की बीमारयिों को ठीक करते हैं, अबगार ने चत्रिकार अनानयिास के माध्यम से उन्हें एक पत्र भेजा, जसिमें उसने उनसे एदेसा आने और उसे ठीक करने का अनुरोध कयिा। प्रभु ने उत्तर दयिा कि वे उनके पास नहीं आ सकते, लेकनि पृथ्वी पर अपना कार्य पूरा करने के बाद, वे अपने शष्यिों में से एक को उनके पास भेजेंगे, जो फरि उन्हें चंगा कर देगा। इसके बाद, प्रभु ने अपना चेहरा धोया और उसे एक तौलयि से पोंछा। उस क्षण, इस कपड़े पर प्रभु के मुख की प्रतमिा प्रकट हुई। अवगार ने इसे लेकर चूमने के बाद अपनी बीमारी से बहुत राहत महसूस की। प्रभु के स्वर्ग आरोहण के बाद, सत्तर प्रेरतिों में से एक, संत थैडयिस, अवगार के पास आए और उसे कोढ़ से पूरी तरह से ठीक कर दयिा। एदेसा के नविासयिों को, उनके राजकुमार के साथ, प्रेरति द्वारा बपतस्मिा दयिा गया, और पवत्रि वस्त्र को शहर के मुख्य द्वार के ऊपर दीवार में रखा गया, जहाँ यह वर्ष 944 तक रहा, जब इसे एदेसा से कॉन्स्टेंटनिोपल ले जाया गया; इस स्थानांतरण का उत्सव 16 अगस्त को मनाया जाता है।

[2358] परंपरा के अनुसार, संत लूका प्रेरति और सुसमाचार लेखक एक चत्रिकार थे और, परमेश्वर की माता की अनुमति से, उन्होंने उनकी कई प्रतमिाएँ बनाईं (उनका जीवन देखें, 18 अक्टूबर)।

[2359] उनकी स्मृति 13 नवंबर और 30 जनवरी को मनाई जाती है।

[2360] संत सरिलि का पर्व दविस 18 जनवरी को मनाया जाता है।

के पास से आँसू बहाए बिना नहीं गुज़र सकता'। तो फिर, यदि पहले छह सार्वभौमिक परिषदें, जो सप्तम परिषद से पहले हुईं, ने पवित्र प्रतिमाओं की पूजा पर प्रतिबंध नहीं लगाया, बल्कि उन पर चित्रित व्यक्तियों और घटनाओं को सम्मान दिया, तो क्या आप सचमुच सोचते हैं कि आप उनसे अधिक बुद्धिमान हैं! हे ज़ार, विदेशी आक्रमणकारियों के खिलाफ़ युद्ध करना आपका कर्तव्य है; लेकिन धार्मिक सिद्धांतों और कानूनों की परीक्षा पवित्र पिताओं का काम है, न कि ज़ारों का।

पादरी महोदय का यह पत्र पढ़कर राजा क्रोध से आग-बबूला हो गया; उसने तुरंत अपने एक क्रूर अधिकारी को सिग्रियन की भूमि में भेजा ताकि वह 'द ग्रेट विलेज' के नाम से प्रसिद्ध थियोफेंस के मठ को लूट-खसूट कर उसे जलाकर राख कर दे; और उसके शिष्यों को बेरहमी से पीटने के बाद भगा देने का आदेश दिया। राजा ने परम पूज्य थियोफानेस के पास एक और दूत भेजा, जो उतना ही क्रूर था, और जो पहले से ही एलेफ्थेरीओउ महल के अंधेरे कालकोठरी में दो साल से कैद थे[2361] ।

इस दूत ने, उस पवित्र वृद्ध के कपड़े उतार दिए—जो पहले से ही उपवास और लंबी बीमारी से दुबला-पतला था—और उसे उसकी पीठ और पेट पर बैल की खाल के फट्टों से निर्दयता से पीटा; उस पर तीन सौ वार करने और उसे वापस कालकोठरी में बंद करने के बाद, वह चला गया।

सुबह, राजा के आदेश पर, यह यातनाकर्ता एक बार फिर उस पूजनीय के पास आया; उसे कालकोठरी से बाहर निकालकर उसने निर्दयता से पीटा। और फिर संत थियोफेंस को समोथ्रेस द्वीप पर निर्वासन के लिए भेजा गया[2362] । पूजनीय पिता ने अपनी दूरदर्शी आँखों से पहले ही इसका पूर्वानुमान लगा लिया था और कुछ दिन पहले, उन्होंने अपनी सेवा करने वाले नवसिखुए से कहा था कि उन्हें इस द्वीप पर भेजा जाएगा। उस स्थान पर केवल तेईस दिन रहने के बाद, पवित्र शहीद, इस सांसारिक जीवन से निर्वासन पाकर और कन्फेशनल पीड़ा की माला से विभूषित होकर, अपने स्वर्गीय स्वदेश[2363] के लिए प्रस्थान कर गए, और उनके पूजनीय शरीर को वहाँ एक लकड़ी के ताबूत में सुलाया गया। हालाँकि, ईश्वर ने अपने पवित्र सेवक को न केवल उनके जीवनकाल में बल्कि उनके निधन के बाद भी महिमामंडित किया: उन्होंने उनके पवित्र अवशेषों को चंगा करने की शक्ति प्रदान की, और कई बीमार लोग केवल उनके ताबूत को छूने से ही ठीक हो गए।

दुष्ट राजा लियो द आर्मेनियन के मारे जाने के बाद, संत थियोफेनेस के निर्वासित शिष्य एक बार फिर से माउंट सिग्रियन लौट आए और जलकर खाक हो चुके मठ का पुनर्निर्माण किया। यहाँ उन्होंने अपने पूजनीय पिता थियोफेन्स के पवित्र अवशेष सामोथ्रेस द्वीप से लाए और उन्हें श्रद्धापूर्वक चर्च में स्थापित किया, जिसके पश्चात् उनके द्वारा कई चमत्कार हुए – हमारे ईश्वर मसीह की महिमा के लिए, जो पिता और पवित्र आत्मा के साथ युगानुयुग महिमामय हैं। आमीन[2364] .

कॉन्टाकियन, स्वर 2:

ऊँचे स्वर्ग से दिव्य प्रकटवाणी प्राप्त करके, आप ने सांसारिक जीवन के कोलाहल से सावधानीपूर्वक त्याग कर एकांत में निवास किया, हे पूज्यनीय, और धन-संपत्ति तथा अपनी पत्नी का त्याग करके, चमत्कार करने की शक्ति और भविष्यवाणी का गौरव प्राप्त किया।

हमारे पवित्र पिता ग्रेगरी द डायलॉगिस्ट, रोम के पोप का जीवन

12 मार्च को स्मरणोत्सव

[2361] एलेउथेरियन किला (या महल) कोंस्टेंटिनोपल के उस हिस्से में स्थित है जहाँ अब सेराग्लियो (तुर्की सुल्तान का महल) खड़ा है।
[2362] समोट्रेस एजियन सागर में एक द्वीप है, जो थ्रेसियाई तट से साढ़े पाँच मील दूर स्थित है।
[2363] संत थियोफेंस का निधन लगभग 818 ईस्वी में हुआ।
[2364] संत थियोफेंस ने एक 'क्रोनोग्राफी' छोड़ी, जिसमें उन्होंने 285 से 813 तक चर्च की घटनाओं का वर्णन किया।

संत ग्रेगरी, रोम के पोप[2365] , जिन्हें उनकी प्रभावशाली भाषणकला के कारण 'वक्ता' या 'भाषणकर्ता'[2366] के नाम से जाना जाता था, रोम नगर में जन्मे थे। उनके पिता का नाम गॉर्डियन और उनकी माता का नाम धन्य सिल्विया था, दोनों ही सेनेटोरियल, कुलीन और धनी वंश से थे।

लेकिन संत ग्रेगरी की वंशावली की कुलीनता उनकी सेनेटोरियल (परिषदीय) वंशावली में नहीं, बल्कि उन धर्मपरायण और पवित्र लोगों में थी जिनसे उनका संबंध था। इस प्रकार, धन्य फेलिक्स[2367] , रोम के पोप, द्विभाषी ग्रेगरी के दादा थे; संत तर्सिला, जिन्होंने अपनी मृत्यु के समय प्रभु यीशु को अपनी ओर आते देखा था, और धन्य एमिलियाना, जिन्हें तर्सिला के साथ ही शाश्वत, स्वर्गीय जीवन का वरदान मिला था, ग्रेगरी की चाचियाँ थीं; इसी प्रकार सिल्विया, संत की माँ, जिन्हें रोम की कलीसिया द्वारा संतों में शामिल किया गया था।

लेकिन यह धन्य ग्रेगरी ही थे जिन्होंने अपनी पवित्रता से इस पवित्र परिवार को सबसे अधिक सुशोभित किया, क्योंकि उन्होंने अपने युवा काल से ही ईश्वर को प्रिय लगने वाले जीवन में सदाचार को समर्पित कर दिया था। बचपन से ही किताबें पढ़ने का शौक विकसित करने के बाद, वह बाद में एक प्रसिद्ध विद्वान और वक्ता बने; वह ज्ञान और अच्छे इरादों से भरपूर व्यक्ति थे, यही कारण है कि उन्हें प्रेटर के पद[2368] के लिए चुना गया। हालाँकि, ग्रेगरी के विचार और इच्छाएँ सांसारिक मामलों की तुलना में आध्यात्मिक मामलों की ओर अधिक निर्देशित थीं: वह एक भिक्षु बनना चाहता था। फिर भी, जब तक उसके माता-पिता जीवित थे, भविष्य के संत ने अपने भिक्षु जीवन की दीक्षा को अधिक अनुकूल समय तक के लिए स्थगित कर दिया, हालाँकि दुनिया में रहते हुए भी वह, एक तरह से, एक भिक्षु की तरह ही रहता था, और ब्रह्मचारी जीवन जीता था।

जब ग्रेगरी के पिता का निधन हो गया, तो उन्होंने विरासत में मिली अपनी विशाल संपत्ति को दान-पुण्य और पवित्र मठों, अस्पतालों और अतिथि-गृहों की स्थापना पर खर्च करना शुरू कर दिया। इस प्रकार, सिसिली में[2369] उन्होंने छह मठ स्थापित किए, उन्हें आवश्यक सभी चीजें प्रदान कीं, और रोम में उन्होंने संत एंड्रयू द अपोस्टल के सम्मान में एक मठ की स्थापना की; उन्होंने इस मठ की नींव अपने ही घर में रखी, जो शहीदों जॉन और पॉल के चर्च के पास, 'स्क्वायर' के नाम से प्रसिद्ध पहाड़ी के पास स्थित था।[2370] वहाँ अपने संकल्प लेने के बाद, ग्रेगरी ने अपने सोने के कढ़ाई वाले सांसारिक वस्त्रों को त्याग दिया और अनुभवी बुजुर्गों हिलारियन और मैक्सिमियन के मार्गदर्शन में मठवासी आदेश की रोंगटेदार कमीजें धारण कर लीं; और कुछ समय बाद वह उस मठ का मठाधीश बन गया[2371] ।

जहाँ तक धन्य सिल्विया, संत ग्रेगरी की माता का सवाल है, वह उस समय संत पॉल के द्वार के पास रहती थीं; प्रभु की सेवा करते हुए, उन्होंने अपना समय उपवास और प्रार्थना में बिताया, और दिन-रात 'प्रभु के घर में परिश्रम किया'[2372] । उनका भोजन कच्ची हरी सब्जियाँ थीं, जिसे वह हर दिन अपने बेटे, धन्य ग्रेगरी को भेजती थीं। वह गरीबों और बेसहारा लोगों के प्रति इतनी दयालु थीं कि उन्होंने अपनी लगभग सारी संपत्ति उन्हें बाँट दी।

[2365] 'पोप' उपाधि (ग्रीक पप्पास – पिता) का उपयोग 5वीं शताब्दी के अंत तक सभी बिशपों के लिए एक मानद उपाधि के रूप में किया जाता था; 5वीं शताब्दी के अंत से, यह मुख्य रूप से रोम के आर्चबिशप को संदर्भित करती थी, और 1075 के बाद से – विशेष रूप से उन्हीं के लिए।

[2366] संत ग्रेगरी महान को उनके कार्य *Conversations or Dialogues on the Lives and Miracles of the Italian Fathers* के कारण 'द डायलॉजिस्ट' (संवाददाता, वार्तालापकर्ता) के नाम से जाना जाता था।

[2367] संत पोप फेलिक्स तृतीय ने 483 से 492 तक चर्च पर शासन किया।

[2368] प्रेटर (लैटिन: praetor) वह उपाधि थी जो रोमनों द्वारा एक ऐसे गणमान्य व्यक्ति को दी जाती थी जिसे सर्वोच्च न्यायिक अधिकार सौंपा गया होता था।

[2369] सिसिली भूमध्य सागर के सबसे बड़े द्वीपों में से एक है और यह इटली के साम्राज्य का हिस्सा है; यह मेसिना जलडमरूमध्य द्वारा मुख्यभूमि से अलग है।

[2370] केलियन पहाड़ी के पास।

[2371] उस समय, पोप पास्कल द्वितीय ने ग्रेगरी को, उनकी अनिच्छा के बावजूद, वर्ष 577 में एक डीकन के रूप में नियुक्त किया। अगले वर्ष, उन्होंने उन्हें अपने अपोक्रीसारियस (राजदूत) के रूप में कॉन्स्टेंटिनोपल भेजा—आंशिक रूप से नए पोप पेलैजियस के मामले के संबंध में, और आंशिक रूप से लोम्बार्ड्स के खिलाफ रोम के लिए सहायता मांगने हेतु। कॉन्स्टेंटिनोपल में अपने प्रवास के दौरान, ग्रेगरी ने पूर्वी चर्च के अनुष्ठानों का सटीक ज्ञान प्राप्त करने का प्रयास किया, जहाँ प्रेरितों के समय से ही इतने सारे धर्मनिष्ठ पुरुष फल-फूल रहे थे। इसी समय, उन्होंने अपना प्रसिद्ध ग्रंथ, *कमेंटरी ऑन द बुक ऑफ जॉब, ऑर थर्टी-फाइव बुक्स ऑन मॉरैलिटी* लिखना शुरू किया। 585 में, ग्रेगरी रोम लौट आए और उन्हें उनके द्वारा स्थापित मठ का मठाधीश चुना गया।

[2372] यह अभिव्यक्ति भजन संहिता 83:11 से ली गई है। *'प्रसिटात्सया* का अर्थ है दहलीज पर लेटना, या कहीं आश्रय लेना।

इसी तरह, उनके पुत्र, धन्य ग्रेगरी, गरीबों के प्रति इतने समर्पित थे कि उन्होंने अंतिम वस्तु तक भी नहीं बख्शी, बल्कि जो उनसे मांगता था, उसे तुरंत सब कुछ बाँट देते थे।

एक दिन, जब वह अपनी कोठरी में अपनी आदत के अनुसार किताबें नकल कर रहा था, तो एक भिखारी उसके पास आया (वह भिखारी के भेष में प्रभु का एक स्वर्गदूत था) और उससे कहा:

'हे सर्वोच्च ईश्वर के सेवक, मुझ पर दया करो! एक जहाज के नाविक के रूप में, मैंने समुद्र में न केवल वही खो दिया जो मेरे पास स्वयं था, बल्कि वह भी जो दूसरों का था।'

गरीबों के प्रेमी और मसीह के सच्चे सेवक संत ग्रेगरी ने उस पर दया की, अपने एक भाई को बुलाया जो उनकी सेवा करता था, और आदेश दिया कि उस आदमी को छह सोने के सिक्के दे दिए जाएँ[2373] ; और भिखारी, जो दिया गया था उसे लेकर चला गया।

उसी दिन, कुछ ही घंटों बाद, वही भिखारी फिर से धन्य संत के पास आया और उनसे कहा:

'हे ईश्वर के सेवक, मुझ पर दया करो; मैंने बहुत कुछ खो दिया है, फिर भी आपने मुझे बहुत कम दिया है।'

संत ग्रेगरी ने फिर से अपने सेवादार भाई को बुलाया और उससे कहा:

'भाई, जाओ और भिखारी को छह और सोने के सिक्के दे दो।'

भाई ने वैसा ही किया जैसा उससे कहा गया था, और उस दिन भिखारी को संत ग्रेगरी से बारह सोने के सिक्के मिले और वह चला गया।

कुछ समय बाद, भिखारी तीसरी बार धन्य ग्रेगरी के पास आया और उनसे विनती करने लगा:

'पिताजी, मुझ पर दया करें और अपनी उदारता से मुझे थोड़ा और दें, क्योंकि समुद्र में मैंने दूसरे लोगों की बहुत सारी संपत्ति खो दी है।'

तब धन्य ग्रेगरी ने एक बार फिर अपने सेवक से कहा:

'भाई, जाओ और भिखारी को और छह सोने के सिक्के दो।' इस पर भाई ने उत्तर दिया:

'मुझ पर विश्वास कीजिए, आदरणीय पिताजी, हमारे पास एक भी सोने का सिक्का नहीं बचा है।'

लेकिन धन्य ग्रेगरी ने उससे कहा:

'क्या तुम्हारे पास देने के लिए और कुछ है: कुछ कपड़े या कोई बर्तन?'

भाई ने उत्तर दिया, 'मेरे पास केवल एक ही पात्र है, वह है वह चाँदी की थाली जिस पर आपकी माँ ने आपको अचार भेजा था।'

'जाओ, भाई,' ईश्वर-प्रसन्न ग्रेगरी ने कहा, 'और वह थाल उस भिखारी को दे दो, ताकि वह हमें दुख में न छोड़े, क्योंकि वह अपनी दुर्भाग्य में सांत्वना चाहता है।'

वह गरीब आदमी, चाँदी की थाली लेकर संत से प्रसन्न होकर चला गया; और यद्यपि वह फिर कभी खुलेआम भीख माँगने के लिए ग्रेगरी के पास नहीं आया, वह हर समय अदृश्य रूप से उनके साथ रहता था, उनकी रक्षा करता था और हर काम में उनकी मदद करता था। क्योंकि प्रभु का एक स्वर्गदूत उस संत को चमत्कारी अनुग्रह की शक्ति के साथ नियुक्त किया गया था, जिसके द्वारा संत ग्रेगरी बाद में प्रसिद्ध हुए, और उन्होंने अपने मठ में महान चमत्कार किए।

पेलाजियस, रोम के पोप[2374] के निधन के बाद, सभी ने सर्वसम्मति से संत एंड्रयू के मठ के मठाधीश, संत ग्रेगरी को पोप के सिंहासन पर चुना; लेकिन उन्होंने, इतने उच्च पद और सम्मान से विमुख होकर, शहर छोड़ दिया और निर्जन स्थान में शरण ले ली। अपने चरवाहे ग्रेगरी की तलाश में, लेकिन उन्हें न पाकर, रोम के लोग बड़े दुख से भर गए; और वे सभी ईश्वर से विनती करने लगे कि वह अपने सेवक को उनके सामने प्रकट करें। और देखो, आग का एक स्तंभ प्रकट हुआ, जो सभी को दिखाई दे रहा था, और वह उस स्थान पर उतर रहा था जहाँ संत ग्रेगरी एक सुनसान पहाड़ पर छिपे हुए थे। तब सभी को एहसास हुआ कि यह स्वर्गीय स्तंभ संत ग्रेगरी के लिए प्रकट हुआ था। तुरंत, सभी उस स्थान के लिए रवाना हो गए, जहाँ उन्होंने ग्रेगरी को पाया और, अकथनीय आनंद के साथ, उन्हें अपने साथ ले आए, भले ही वह ऐसा नहीं चाहते थे।

[2373] ज़्लाटिसा – सोना, एक सोने का सिक्का।

[2374] पोप पेलैजियस द्वितीय ने 578 से 590 तक रोमन चर्च का नेतृत्व किया।

मौरसि के शासनकाल में[2375] , संत ग्रेगरी को प्राचीन रोम का पोप नयिुक्त कयिा गया[2376] : वहाँ वे गरीबों और बेसहारा लोगों, अनाथों और वधिवाओं के प्रत अिपनी अकथनीय दया के लिए वशिेष रूप से प्रसदि्ध हुए। उन्होंने न केवल रोम में, बल्क अिन्य शहरों में भी गरीबों के लिए धर्मशालाएं और आश्रय बनाए। संत ग्रेगरी ने जानबूझकर अबा प्रोबस को एक बड़ी रकम के साथ यरूशलेम भेजा ताक वह वहाँ एक धर्मशाला ( ) स्थापति कर सकें। हर साल, वह साधुओं की देखभाल के लिए माउंट सनिाई ([2377]) को एक बड़ी दान राशि भेजते थे। रोम में भी, संत हर दनि सभी भखिारयिों और बीमारों को भोजन कराते थे, और उनके नाम एक वशिेष पुस्तक में दर्ज करते थे[2378] । वह अक्सर यात्रयिों और गरीबों को अपनी मेज पर आमंत्रति करते थे, और हमेशा स्वयं उनकी सेवा करते थे। एक अवसर पर, उन्होंने अपने सैकेलारयिस[2379] को बारह यात्रयिों को अपनी मेज़ पर बुलाने का नर्दिेश दयिा ताक वे उनके साथ भोजन कर सकें; लेकनि जब सभी मेज़ पर बैठ गए, तो पवत्रि पोप ने देखा क तेरह यात्री उपस्थति थे। तब उन्होंने सैकेलारयिस को बुलाया और उससे धीरे से कहा:

'क्या मैंने तुम्हें बारह यात्रयिों को बुलाने के लिए नहीं कहा था? फरि तुमने मेरी अवज्ञा करके तेरहवें को क्यों बुला लयिा!'

घबराए हुए सेकेलारयिस ने उत्तर दयिा:

'मेरी बात मानिए, परम पूज्य प्रभु, यहाँ कोई तेरहवाँ नहीं है।'

वास्तव में, न तो उन्होंने और न ही कसिी और ने तेरहवें को देखा था: केवल पवत्रि पोप ने ही उसे देखा था। भोजन के दौरान, संत ग्रेगरी ने मेज के बलि्कुल अंत में बैठे इस तेरहवें यात्री को देखा, और देखा क उिसका चेहरा बदलता रहता था: कभी वह एक सफेद बालों वाले बूढ़े आदमी के रूप में दखिाई देता था, तो कभी एक जवान लड़के के रूप में। जब सभी भोजन से उठ गए, तो संत ग्रेगरी ने सभी को जाने की आज्ञा दे दी; लेकनि उन्होंने इस तेरहवें यात्री को, जो रूप में अद्भुत था, रोक लयिा और, उसका हाथ पकड़कर, उसे अपने शयनकक्ष में ले गए और वहाँ उससे कहा:

'मैं तुझसे सर्वशक्तमिान ईश्वर की महान शक्त की कसम देता हूँ, मुझे बता: तू कौन है और तेरा नाम क्या है!' इस पर, उस अद्भुत यात्री ने उत्तर दयिा:

'तुम मेरा नाम क्यों पूछ रहे हो? यह अजीब है। यह एक बात याद रखो: मैं वही भखिारी-नावकि हूँ जो कुछ समय पहले, सेंट एंड्रयू के मठ में तुमसे मलिने आया था, जब तुम अपनी कोठरी में बैठकर लखि रहे थे, और तुमसे बारह सोने के सक्के और वह चाँदी की थाली प्राप्त की थी जसिे तुम्हारी धन्य माता, सल्वियि, ने सॉस के साथ तुम्हारे पास भेजा था। तुम्हें यह जान लेना चाहिए क जिसि दनि तुमने यह मुझे हार्दकि प्रेम से दयिा था, उसी दनि प्रभु ने तुम्हें इस पवत्रि चर्च का मठाधीश नयिुक्त कयिा, जसिके लिए उन्होंने अपना रक्त बहाया, और पवत्रि प्रमुख प्रेरति पतरस का उत्तराधकिारी बनाया, जनिका तुम अपने पुण्य जीवन में अनुकरण करते हो।

इस पर, धन्य ग्रेगरी ने उत्तर दयिा:

[2375] सम्राट मॉरसि ने 582 से 603 तक शासन कयिा।

[2376] संत ग्रेगरी 590 में पोप चुने गए। यह वनिम्र ग्रेगरी की इच्छा के वरिुद्ध हुआ, जो धन्य ऑगस्टीन के अनुकरण में, खुद को 'ईश्वर के सेवकों का सेवक' कहकर सम्मानति करते थे, वे अधकिार से दूर भागते थे और इससे बचने के लिए अपने सभी साधनों का उपयोग करते थे; फरि भी, एक बार जब उन्हें यह अधकिार सौंप दयिा गया, तो उन्होंने अपने पादरयिाई कर्तव्यों के पालन के लिए खुद को लगन से समर्पति कर दयिा—हालांक वे लगातार बीमार रहते थे। पोप ग्रेगरी की मुख्य चति परमेश्वर के वचन के प्रसार और व्याख्या की थी; उन्होंने कई वधिर्मयिों को सच्चे धर्म में परविर्तति कयिा; उन्होंने दूरस्थ ब्रटिेन (इंग्लैंड) में भी धर्म की स्थापना में योगदान दयिा, 597 में बेनेडक्टिनि भक्षिु ऑगस्टीन के नेतृत्व में वहाँ प्रचारकों को भेजा, जन्होंने राजा एथेलबर्ट को स्वयं पवत्रि बपतस्मिा ग्रहण करने के लिए मनाया, जसिने अंततः पूरे देश में ईसाई धर्म के प्रसार में सुवधि प्रदान की।

[2377] सनिई पर्वत सनिाई प्रायद्वीप के केंद्र में स्थति है; यह वास्तव में ग्रेनाइट चट्टानों से बने पहाड़ों का एक समूह है, जो ऊँची और खुरदरी घाटयिों से घरि हुआ है। पुरानी वाचा में, सनिाई पर्वत पर, इस्राएलयिों ने परमेश्वर के साथ एक वाचा की और उनसे व्यवस्था की आज्ञाएँ प्राप्त कीं (नर्गिमन 20)। 4वीं और 5वीं शताब्दी ईस्वी में, सनिाई पर्वत ईसाई तपस्वयिों के घर के रूप में प्रसदि्ध था, जो इसकी घाटयिों और गुफाओं में रहते थे।

[2378] जब कसिी गरीब आदमी का सड़क पर मृत पाया जाता था, तो संत ग्रेगरी कुछ समय के लिए यूखरस्ति का अनुष्ठान करने से परहेज़ करते थे, मानो वे खुद को उसकी मृत्यु के लिए जम्मिेदार मानते हों।

[2379] 'साकेलारयिोस' (ग्रीक शब्द सैक्सेला, सैक्सेलयिन - एक थैला, पैसे का डब्बिा, एक कोष से) का सामान्यतः अर्थ कोषाध्यक्ष होता है। कॉन्स्टेंटनिोपल की चर्च में, साकेलारयिोस को स्वयं चर्च के कोष के प्रबंधन की जम्मिेदारी सौंपी गई थी, जसिमें पैसा और अन्य कीमती सामान शामलि थे। रूसी चर्च में, सैकेलारयिोस की उपाधि बाद में सेंट पीटर्सबर्ग और मॉस्को के कुछ सबसे प्रसदि्ध गरिजाघरों के व्यवस्थापकों को प्रदान की गई।

'तुम्हें कैसे पता है कि प्रभु ने तब भी यह निर्धारित कर दिया था कि मुझे पोप बनना है?'

उसने उत्तर दिया, 'मैं सर्वशक्तिमान प्रभु का एक स्वर्गदूत हूँ, और इसीलिए मैं जानता हूँ; तब भी उन्होंने मुझे यह पता लगाने के लिए भेजा था कि क्या आप वास्तव में मानवता के प्रति प्रेम से दान कर रहे थे, न कि अहंकार से।'

यह सुनकर धन्य ग्रेगरी भयभीत हो गए: उस क्षण तक उन्होंने कभी स्पष्ट रूप से परमेश्वर के किसी स्वर्गदूत को नहीं देखा था, फिर भी अब वे उससे एक साधारण मनुष्य की तरह संवाद कर रहे थे। तब प्रकट हुआ स्वर्गदूत संत से बोला:

'डरो मत, क्योंकि प्रभु ने मुझे तुम्हारे जीवन भर तुम्हारे साथ रहने और तुम्हारी प्रार्थनाएँ परमेश्वर के समक्ष लाने के लिए भेजा है; अत; जो कुछ भी तुम उनसे आशा के साथ माँगोगे, वह तुम्हें प्राप्त होगा।'

तब पवित्र पोप, मुँह के बल ज़मीन पर गिरकर, प्रभु के सामने झुक गए और कहा:

'यदि, इतनी छोटी सी परोपकार की कृति के लिए, प्रभु ने मुझ पर इतनी सारी कृपाएँ बरसाई हैं—मुझे अपनी पवित्र चर्च का पोप बनाकर और मेरी रक्षा के लिए अपना पवित्र स्वर्गदूत नियुक्त करके—तो फिर वे उन लोगों पर क्या-क्या कृपाएँ बरसाएँगे जो उनके नियम का पालन करते हैं और धार्मिकता का अभ्यास करते हैं?'

इसके बाद, देवदूत अदृश्य हो गया, और संत ने प्रभु का बहुत-बहुत धन्यवाद करते हुए, लोगों के प्रति भलाई करने और परमेश्वर को प्रसन्न करने में और भी अधिक उत्साही हो गए।

एक अन्य अवसर पर, जब संत ग्रेगरी कुछ यात्रियों को भोजन करा रहे थे, तो उन्होंने अपनी विनम्रता में, उनमें से एक के हाथों में पानी डालना चाहा; लेकिन जब वह बर्तन लाने के लिए मुड़े, तो उन्होंने देखा कि वह आदमी वहाँ नहीं था; उसे खोजने और कहीं न पाने पर, ग्रेगरी बहुत आश्चर्यचकित हुए। अगली ही रात, जब पवित्र पोप सो रहे थे, तो प्रभु उन्हें दिखाई दिए और कहा:

'उन दिनों तुमने मेरे अपने, अर्थात् गरीबों का स्वागत किया; कल तुमने स्वयं मेरा स्वागत किया।'

संत ग्रेगरी की महान विनम्रता का उल्लेख यरूशलेम के पैट्रिआर्क, परम पावन सोफ्रोनीयस[2380] द्वारा लिखित *लिमोनार* में भी मिलता है। उनके बारे में वहाँ यह लिखा है।

'एक बार हम अबा जॉन द पर्शियन के पास गए थे; उन्होंने हमें महान और धन्य ग्रेगरी, रोम के पोप के बारे में बताया। 'मैंने एक बार,' उन्होंने कहा, 'पवित्र प्रमुख प्रेरितों पतरस और पौलुस की अवशेषों की पूजा करने की इच्छा की, और इस उद्देश्य के लिए मैं रोम के लिए रवाना हुआ। एक दिन जब मैं शहर में खड़ा था, मैंने भीड़ में सुना कि पोप गुजरने वाले हैं; इसलिए मैंने उनकी एक झलक पाने के लिए इंतजार किया। जब वह मेरे पास से गुज़रा, तो मैंने उसे प्रणाम करने का निर्णय लिया; लेकिन मैं आपसे कहता हूँ, भाइयों - ईश्वर मेरी गवाही है - कि वह, मुझे चेतावनी देने के बाद, ज़मीन पर गिर पड़ा, मुझसे झुककर प्रणाम किया, और तब तक ज़मीन से नहीं उठा जब तक उसने यह नहीं देखा कि मैं उससे पहले उठ गया हूँ; फिर उन्होंने मुझे बड़े प्रेम से चूमा, अपने हाथ से मुझे तीन सोने के सिक्के दिए और आदेश दिया कि मुझे मेरे जीवन-यापन के लिए आवश्यक सभी चीजें प्रदान की जाएँ; और मैंने ईश्वर की स्तुति की, जिन्होंने संत ग्रेगरी को इतनी महान विनम्रता, सभी के लिए प्रेम और दया प्रदान की थी।

और हम ईश्वर के इस महान बिशप की प्रार्थनाओं द्वारा मसीह के परम पवित्र रहस्यों पर किए गए अद्भुत चमत्कार का उल्लेख करना भी नहीं छोड़ सकते। रोम में एक प्रसिद्ध महिला, दिव्य वेदी पर प्रसफ़ोरा (प्रसाद) लाई; उस समय, परम पावन पोप ग्रेगरी स्वयं दिव्य लिटिर्जी का अनुष्ठान कर रहे थे। और इस प्रकार, जब वे लोगों को पवित्र भोज दे रहे थे, तो वह महिला पवित्र रहस्यों को ग्रहण करने के लिए आगे आई। लेकिन जब उसने ग्रेगरी के शब्द सुने: 'हमारे प्रभु यीशु मसीह का जीवन-दायक शरीर परोसा जा रहा है', तो वह हँस पड़ी। तब पोप ग्रेगरी, अपना हाथ उठाए हुए रुककर, उससे पूछा:

'आप हँस क्यों रही हैं?'

उसने उत्तर दिया, 'महाधर्माध्यक्ष महोदय, मुझे यह अजीब लगता है कि आप उस रोटी को, जिसे मैंने अपने हाथों से आटे से बनाया है, मसीह का शरीर कह रहे हैं।'

[2380] 'लिमोनार' या 'ज़िमोनार' (ग्रीक शब्द λειμών – घास का मैदान, चरागाह से)। यह यरूशलेम के पैट्रिआर्क (7वीं सदी) सोफ्रोनीयस की एक पुस्तक का शीर्षक है, जिसमें कुछ ऐसे मरुस्थलवासियों के कार्यों के बारे में कहानियों का संग्रह है जो अपने जीवन की पवित्रता से चमकते थे।

उसका अविश्वास देखकर, संत ने ईश्वर से प्रार्थना की, और तुरंत ही रोटी, रूप में, एक वास्तविक मानव शरीर में बदल गई। और यह खून से सना हुआ मानवीय मांस न केवल उस महिला ने, बल्कि चर्च में मौजूद लोगों ने भी देखा; इस चमत्कार के सभी साक्षी बने लोगों ने मसीह ईश्वर की महिमा की और अपने विश्वास में और अधिक दृढ़ हो गए, उन्हें इस बात पर बिल्कुल भी संदेह नहीं था कि परम पवित्र रहस्यों में, रोटी के रूप में मसीह का सच्चा शरीर और शराब के रूप में उनका सच्चा रक्त प्रदान किया जाता है। इसके बाद, पवित्र पोप ने एक बार फिर प्रार्थना की, और मानव शरीर का स्वरूप वापस रोटी में बदल गया। फिर उस महिला ने बड़ी श्रद्धा और दृढ़ विश्वास के साथ पवित्र कम्युनियन ग्रहण किया, रोटी को मसीह के शरीर के रूप में और दाखरस को मसीह के रक्त के रूप में ग्रहण किया।

विश्व का यह महान दीपक, परम पावन पोप ग्रेगरी ने, न केवल अपने दैवीय जीवन और अद्भुत चमत्कारों से, बल्कि अपने अनगिनत लेखन से भी मसीह की कलीसिया को सुशोभित किया, जिसने ऑर्थोडॉक्स विश्वास को एक महान सेवा प्रदान की। और जब वे उन्हें लिख रहे थे, तो पवित्र आत्मा कबूतर के रूप में उनके ऊपर मंडराया; इसे ग्रेगरी के महाधर्म-प्रहरी, पीटर - जो एक महान सद्गुणी व्यक्ति थे - ने अक्सर देखा था। इस महाधर्म-प्रहरी के साथ संत ग्रेगरी की बातचीत चार विशेष पुस्तकों में संकलित है, जो महान आध्यात्मिक लाभ से परिपूर्ण हैं; इनमें इटली की भूमि में ईश्वर-भक्ति से जीवन यापन करने वाले संतों के जीवन के संक्षिप्त वृत्तांत और आत्मा-रक्षक शिक्षाएँ[2381] शामिल हैं। संत ग्रेगरी ने तेरह वर्ष, छह महीने और दस दिनों तक मसीह की कलीसिया का मार्गदर्शन किया, और यूनानी सम्राट फोकास[2382] के शासनकाल के दौरान प्रभु के पास प्रस्थान किया।

रोम के महान चर्च के डिकन, जॉन ने, इस महान ग्रेगरी, रोम के पोप, के अन्य सभी कार्यों, चमत्कारों और चर्च प्रशासन, साथ ही उनके अद्भुत और पवित्र जीवन के बारे में चार पुस्तकें[2383] लिखीं; इन पुस्तकों में लगभग दो सौ साठ अध्याय हैं; इन पुस्तकों से केवल एक छोटा सा अंश लेते हुए, फिर भी विश्वासियों की आत्माओं के लाभ के लिए पूरी तरह से पर्याप्त वृत्तांत, हम मसीह हमारे परमेश्वर की स्तुति करते हैं, जो अपने संतों को महिमामय बनाते हैं, और जो पिता और पवित्र आत्मा के साथ, युगानुयुग महिमामय हैं। आमीन।

[2381] इस कृति का शीर्षक 'इटालियन पिताओं के जीवन और चमत्कारों पर संवाद या वार्तालाप' है। सेंट ग्रेगरी द डायलॉजिस्ट की अन्य कृतियों में, निम्नलिखित अच्छी तरह से जानी जाती हैं: (क) 'पास्टोरल रूल', जिसमें पादरियों के लिए निर्देश शामिल हैं, और (ख) सेंट ग्रेगरी के पत्र, जिनकी कुल संख्या 848 तक है, जिनमें कई नैतिक शिक्षाएँ शामिल हैं।

जहाँ तक 'प्रीसैंक्टिफाइड गिफ्ट्स' (Presanctified Gifts) की धर्मविधि का प्रश्न है, जिसका नाम संत ग्रेगरी द डायलॉजिस्ट के नाम पर है, यह ध्यान में रखना चाहिए कि, भले ही उन्होंने इस धर्मविधि को निर्धारित किया हो, उन्होंने ऐसा विशेष रूप से पश्चिमी चर्च के लिए किया था (जिस प्रकार, सामान्य रूप से, वह विशेष रूप से उस चर्च की दैवीय सेवा के संगठन से संबंधित थे), और न ही पूर्वी चर्च के लिए, जो इस अनुष्ठान का आदिकाल से पालन करती आ रही थी और जिससे संत ग्रेगरी ने इसे पश्चिमी चर्च के लिए बनाई अपनी *सैक्रामेंटरी* के लिए लिया था। प्रीसैंक्टिफाइड लिटिर्जी के क्रम की रचना का श्रेय संत ग्रेगरी को देने की परंपरा मुख्य रूप से उस गहरे सम्मान के कारण उत्पन्न हुई, जिसके साथ ऑर्थोडॉक्स पूर्व इस पवित्र व्यक्ति के नाम को देखता था। इसमें कोई संदेह नहीं है कि, पूर्व से लौटने और रोम के बिशप बनने के बाद, संत ग्रेगरी द डायलॉजिस्ट ने रोमन चर्च में कुछ प्राचीन अनुष्ठानों को बहाल करना शुरू कर दिया, जो वहाँ भूल गए थे लेकिन पूर्व में अपनी पूरी मूल शुद्धता में संरक्षित थे। ऐसा करते हुए, उन्होंने स्वयं को पूर्व में प्रचलित पवित्रीकृत उपहारों की प्रेरितीय पूजा का एक प्रशंसक और पश्चिम में इसके दृढ़ प्रतिष्ठापन तथा प्रसार के लिए एक उत्साही समर्थक साबित किया। उन्होंने इस अनुष्ठान को लैटिन में प्रकाशित किया और पश्चिमी चर्चों में इसका उपयोग शुरू किया, इस प्रकार, मानो, उन्होंने सार्वभौमिक चर्च के अन्य धर्मपितामहान की तुलना में अपने लिए यह अधिकार अर्जित किया कि उनका नाम हमेशा के लिए इस अनुष्ठान से जुड़ा रहे। पूर्वी चर्च ने पूर्व-पवित्रीकृत उपहारों की धर्मविधि के संबंध में संत ग्रेगरी के प्रयासों को नहीं भुलाया है। 11वीं शताब्दी से, ग्रीक सिनैक्सारिया में ऐसे विवरण शामिल हैं जिनमें कहा गया है कि संत ग्रेगरी ने रोमनों के लिए उपवास के दिनों में पूरी धर्मविधि का अनुष्ठान करने की व्यवस्था की थी, और बाद में इस विवरण की इस तरह व्याख्या और अनुवाद किया गया कि उन्होंने रोमन साम्राज्य (जिसे ग्रीक-बाइज़ेंटाइन साम्राज्य माना जाता था) के ईसाइयों के लिए पूर्व-पवित्रीकृत भेंटों की धर्मविधि मिनाने की व्यवस्था की। पश्चिमी चर्च में, यह अनुष्ठान अब वर्ष में एक बार, अर्थात् पवित्र सप्ताह के दौरान गुड फ्राइडे को मनाया जाता है। (प्रीसैंक्टिफाइड उपहारों के अनुष्ठान पर ग्रंथ देखें, स्मिरनोवा, ऑर्थोडॉक्स डिस्किशन, 1892, पृष्ठ 6-7)।

[2382] संत ग्रेगरी द डायलॉगिस्ट (जिन्हें इतिहास में 'द ग्रेट' के नाम से भी जाना जाता है) का 12 मार्च 604 को निधन हो गया। उनका शरीर वेटिकन में सेंट पीटर्स बेसिलिका में, संत ग्रेगरी को समर्पित एक पार्श्व चैपल में विश्राम करता है।

[2383] 9वीं शताब्दी के मध्य में रहे डिकन जॉन ने, प्राचीन विश्वसनीय विवरणों के आधार पर संकलित, संत ग्रेगरी की एक विस्तृत जीवनी लिखी, जबकि उनके बाद के चमत्कारों का वर्णन प्रत्यक्षदर्शियों के विवरणों पर आधारित था।

ट्रोपारयिन, स्वर 4:

हे महिमामय ग्रेगरी, जिन्होंने परमपिता परमेश्वर से दिव्य अनुग्रह प्राप्त किया, और उस शक्ति से दृढ़ होकर, सुसमाचार के मार्ग पर चलने की कृपा की। अतः हे सर्वधन्य, चूंकि आपने मसीह से अपने श्रम का प्रतिफल प्राप्त किया है, उनसे हमारे आत्माओं के उद्धार के लिए प्रार्थना कीजिए।

कॉन्टाकयिन, स्वर 3:

हे पिता ग्रेगरी, आप प्रधान चरवाहे, मसीह की समानता में एक चरवाहे के रूप में प्रकट हुए, और भिक्षुओं के झुंड का स्वर्गीय अड्डे की ओर मार्गदर्शन किया; और वहाँ से आपने मसीह के झुंड को उसकी आज्ञाओं की शिक्षा दी; अब आप स्वर्गीय महलों में उनके साथ आनंदित और गौरवान्वित हैं।

धर्मी फिनेस की स्मृति

12 मार्च को स्मरणोत्सव

पवित्र और धर्मी फिनेहास, जो यहूदी महापुजारी एलेआज़र के पुत्र और महापुजारी हारून के पोते थे, मूल रूप से यहूदी लोगों के पुजारी थे।

संत फिनेस इस्राएल के परमेश्वर के एक योग्य सेवक थे। अपने पूरे जीवन में, वह सच्ची उपासना के एक उत्साही रक्षक और संरक्षक थे। ईश्वर के सेवक के रूप में उनका कार्य, एक ओर, इस्राएल के परमेश्वर यहोवा के महिमामय नाम की महिमा करने की ओर निर्देशित था, और दूसरी ओर, यहूदी लोगों के बीच कभी-कभी देखे जाने वाले सभी दुर्गुणों और ईश्वर के कानून से विचलन को जड़ से उखाड़ फेंकने की ओर था।

एक बार ऐसा हुआ कि मोआबियों[2384] , जो इस्राएलियों के पड़ोसी थे और अपनी दुष्टता के लिए कुख्यात थे, ने इस्राएलियों को उनके देवता बाअल-पेओर[2385] की दुष्ट और घृणित पूजा में खींच लिया। इतनी बड़ी दुष्टता से क्रोधित होकर, प्रभु ने अधर्मी धर्मत्यागियों को कठोर दंड दिया: तुरंत उन पर एक महामारी पड़ने लगी, जिससे कई हजार इस्राएली मर गए। इसके अलावा, परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा दी कि वे लोगों के उन नेताओं को, जिन्होंने दुष्टता में स्वयं को समर्पित कर दिया था, फांसी देकर मृत्युदंड दें। कई इस्राएलियों ने, ईश्वर के क्रोध को देखकर, अपनी दुष्टता त्याग दी, पश्चाताप किया, और प्रभु को सामूहिक पश्चाताप अर्पित करने के लिए तंबू के द्वार पर एकत्रित हुए।

उस समय, शिमोन के कुल का एक नेता, जिम्री, मूसा और सारी मंडली की आँखों के सामने, एक मिद्यानी स्त्री को यहूदी छावनी में ले आया और उसे अपनी हँडिया में ले गया। तब पिनहास, उस सरदार के प्रति क्रोध और आक्रोश से भरकर, जिमरि के तम्बू में घुसा और अपनी भाला से उसे और उस मिद्यानी स्त्री को मार डाला।

साहसी फिनेहास के इस कार्य ने, जिसमें ईश्वर के प्रति उसका उत्कट उत्साह स्पष्ट रूप से झलकता था, इस्राएल के लोगों से ईश्वर का क्रोध टाल दिया। तुरंत ही, वह महामारी जो लोगों को सता रही थी, समाप्त हो गई[2386] ।

इसके बाद, परमेश्वर ने मूसा से कहा:

'पुजारी एलीआज़र के पुत्र फिनेहास ने मेरे नाम के प्रति उत्साही होकर इस्राएलियों से मेरा क्रोध मोड़ दिया है। इसलिए, उससे कहो: देखो, मैं उसे अपना शान्ति का निशान प्रदान करता हूँ। मैं उसे और उसके वंशजों को एक शाश्वत याजकत्व का अनुबंध प्रदान करता हूँ।'

[2384] मोआबियों का संबंध इस्राएलियों से जुड़ा एक मूर्तिपूजक जनजाति थी, जो मृत सागर के पूर्वी तट पर रहती थी। उनके पूर्वज मोआब थे, जो लूत की बड़ी बेटी का पुत्र था (उत्पत्ति 19:37)। मूआबियों का चरित्र, मृत सागर के पास रहने वाले कई अन्य लोगों की तरह, उनके इतिहास की शुरुआत से ही नैतिक पतन से ग्रस्त था।

[2385] बाअल-पेओर – एक देवता जिन्हें मोआबियों और अन्य मूर्तिपूजक लोगों द्वारा अत्यधिक पूजित किया जाता था, और जिनकी पूजा विशेष रूप से दुष्टता और व्यभिचार से भरी थी। इस देवता का वास्तविक नाम बाअल (हिब्रू में 'प्रभु') था, जबकि 'पेओर' शब्द मृत सागर के उत्तर-पूर्वी तट पर स्थित एक पहाड़ का नाम है। संभावना है कि इस पहाड़ पर बाअल की एक मूर्ति स्थापित थी।

[2386] एक महामारी ने 24,000 इस्राएलियों को नष्ट कर दिया (गिनती 25:9)।

कुछ समय बाद, ईश्वर की आज्ञा से, इस्राएलियों ने मोआबियों को उनके दुष्टता के लिए दंडति करने के लिए एक सेना इकट्ठा करना शुरू कर दिया। कुल बारह हजार इस्राएली इकट्ठा किए गए (प्रत्येक गोत्र से एक हजार)। फिनहास को सेना का कमांडर चुना गया, और इस अवसर पर भी उन्होंने खुद को ईश्वर की आज्ञा का एक वफादार पालनकर्ता साबति किया।

इसके अलावा, संत फिनहास ने अपने लोगों के बीच किसी भी असहमति के उत्पन्न होने पर खुद को एक बुद्धमिान नेता साबति किया। उन्होंने एक-दूसरे से असहमत लोगों में सुलह कराई, और कुशलता से पारस्परिक झगड़ों और संघर्षों को रोका और हल किया।

इन सभी योग्यताओं के लिए, अपने पति की मृत्यु पर, संत फिनहास को सर्वसम्मति से महायाजक चुना गया। ईश्वर के वचन (गिनती 25:13) के अनुसार, फिनहास का महायाजकत्व उनकी संतानों में जारी रहा और केवल अस्थायी रूप से इत्तमार के वंश को हस्तांतरति किया गया था।

संत फिनहास की बहुत वृद्धावस्था में मृत्यु हुई[2387] और उन्हें एफ्राइम के कुल के एक पहाड़ पर दफनाया गया (यहोशू 24:33)।

26 मार्च

13 मार्च (पुराना तरीका)

उसी दिन, पवित्र शहीद क्रिस्टीना की स्मृति, जिन्होंने चौथी शताब्दी में फारस में कष्ट सहे।

कॉन्स्टेंटिनोपल के पैट्रिआर्क निकिफोरस की पवित्र अवशेषों का स्थानांतरण

13 मार्च को स्मरण किया जाता है

ईश्वर के महान बिशप, संत निकिफोरस, कॉन्स्टेंटिनोपल के पैट्रिआर्क, को पवित्र प्रतिमाओं की उनकी धार्मिक श्रद्धा के कारण दुष्ट सम्राट लियो द आर्मेनियन द्वारा सिंहासन से हटा दिया गया और द्वीप पर निर्वासित कर दिया गया प्रोकॉन्नसिसस[2388] । वहाँ उन्होंने तेरह वर्ष बंदी और अपमान में बिताए और प्रभु के पास प्रस्थान करने के बाद, उन्हें स्वयं द्वारा स्थापित मठ में, शहीद संत थियोडोर के चर्च में दफनाया गया[2389] ।

कुछ वर्षों बाद, दुष्ट राजाओं – लियो द आर्मेनियन, माइकल वाल्वोस और उनके पुत्र थियोफिलस – की मृत्यु के बाद, यूनानी साम्राज्य का राजदंड धर्मपरायण रानी थियोडोरा को मिला, जिन्होंने अपने पुत्र माइकल के साथ मिलकर साम्राज्य पर शासन किया, जो उस समय बहुत छोटे थे[2390] ।

इसी समय, कॉन्स्टेंटिनोपल के झूठे पैट्रिआर्क भी निधन हो गए – थियोडोटस कैसिटिर, थियोडोर स्पसरोकैंडलिटोस, फिर एंथनी फासमिट और, अंत में, जॉन, जिन्हें एनीयस के नाम से जाना जाता था[2391] ; अपनी चालाकी

[2387] संत फिनहास का निधन लगभग 1500 ईसा पूर्व में हुआ था।

[2388] *प्रोकोन्नसिस* मार्मारा सागर के द्वीपों में से एक है; आज इस द्वीप को 'मार्मारा' कहा जाता है। आइकनोक्लास्टिक उथल-पुथल के दौरान यह द्वीप कई धर्मनिष्ठों के लिए निर्वासन का स्थान था।

[2389] *संत निकिफोरस* शुरू में सम्राज्ञी आइरीन के दरबार में एक प्रतिष्ठित व्यक्ति थे और, एक धर्मनिरपेक्ष पद धारण करते हुए, उन्होंने सातवें सार्वभौमिक परिषद में प्रतिमाओं की पूजा का उत्कृष्टता से बचाव किया; सम्राट निकिफोरस के शासनकाल में, 806 में, उन्हें पैट्रिआर्शल सिंहासन पर पदोन्नत किया गया और उन्होंने नौ वर्षों तक चर्च का नेतृत्व किया, जिसके बाद उन्हें प्रोकॉनसि द्वीप पर निर्वासित कर दिया गया। 2 जून 828 को उनका निधन हो गया, और उन्होंने अपनी अंतिम सांस तक अपने लेखन के माध्यम से प्रतिमा-भंजकों के खिलाफ सत्य की गवाही देना जारी रखा। उनका पर्व दिवस 2 जून को मनाया जाता है।

[2390] सम्राट लियो द आर्मेनियन ने 813 से 820 तक शासन किया, जबकि माइकल वाल्वोस *(द स्टैमरर)* ने 820 से 829 तक शासन किया; थियोफिलस ने 829 से 842 तक शासन किया। सम्राट माइकल तृतीय (842 से 867 तक) चार वर्ष की आयु में सिंहासन पर आरूढ़ हुए, और इसलिए राज्य पर 855 तक उनकी माता, पवित्र सम्राज्ञी थियोडोरा, का शासन रहा।

[2391] इन पैट्रिआर्कों ने 815 से 842 की अवधि के दौरान चर्च का नेतृत्व किया।

से वह एक जादूगर प्रतीत होता था, और अवैध रूप से स्थापति होने के बाद, धर्मपरायण लोगों द्वारा सहिासन से हटा दयिा गया। उनके बाद, संत मेथोडयिस ने कॉन्स्टेंटनिोपल का सहिासन संभाला, और उन्होंने ही पवत्रि चर्च में प्रतमिाओं की पूजा को बहाल कयिा[2392] । ठीक इसी समय मसीह के कन्फेशर, संत नकिफिोरस की सम्मानति अवशेषों को प्रोकॉननसिोस द्वीप से त्सारग्राद वापस लाया गया।

परम पावन पैट्रआिर्क मेथोडयिस ने धर्मपरायण महारानी थयिोडोरा को नम्निलखिति सलाह दी:

उन्होंने उनसे कहा, 'यह अनुचति है, कि सर्वश्रेष्ठ पैट्रआिर्क—संत नकिफिोरस, जन्हिें ऑर्थोडॉक्सी के लिए अपने पद से हटा दयिा गया था, भले ही अब उनका नधिन हो चुका है—को अभी भी नर्विासन में रहना चाहिए: उनके पवत्रि शरीर को उनके पद पर वापस लाया जाना चाहिए; क्योंकि यदि हम उनकी अवशेषों को बंदी में छोड़ देंगे तो हम पाप से नहीं बचेंगे – यह ऐसा होगा मानो हम उनके नर्विासन को स्वीकार कर रहे हों और इस बात से सहमत हों कि उन्हें सहिासन से हटाना उचति था। हम जानते हैं कि यूसुफ के कुल को चार सौ साल बाद मस्रि से कनान की भूमि तिक अपने पति की हड्डयिाँ ले जाने के लिए आशीर्वाद मलिा था; और हम, धर्मपरायणता के पुत्रों के रूप में, क्या अपने पति की अवशेषों की अनुपस्थतिि को और अधकि जारी रहने देंगे, जबकि हम उनकी दव्यि शक्षिा द्वारा ही सच्चे वशि्वास में पले-बढ़े हैं? यह शाही शहर, जो स्वर्ग के अधीन सबसे उत्कृष्ट शहरों में से एक है, अपने पवत्रि नेता और चरवाहे के सम्मानति अवशेषों के लिए तरस रहा है, और उन्हें यहाँ श्रद्धापूर्वक रखने के लिए तैयार है। कलीसयिा, दुल्हन, अपने वरा के लिए एक बार फरि से आनंदति हो। जब वह जीवति थे, तो राजा द्वारा कलीसयिा को उनसे अन्यायपूर्वक वंचति कर दयिा गया था; अब उसे, अपनी भेड़-बकरयिों से प्रेम करने वाली रानी की आज्ञा से, उनका शरीर प्राप्त करने दें, जो अब प्रभु के साथ वशि्राम कर रहा है। हे धर्मनष्ठि रानी, नशि्चय ही आप देखती हैं कि वे लोग, जन्हिें आपने ऑर्थोडॉक्सी (सही आस्था) तक पहुँचाया है, अपने दविंगत चरवाहे को, यहाँ तक कि आत्मा में भी, सुनने की इच्छा से जल रहे हैं। यदि वे उनके साये को भी अपने सामने आते देखें, तो वे उन्हें जीवति ही समझेंगे; और, उन्हें जीवति मानकर, वे उनके अवशेषों को एक अत्यंत कीमती खजाने के रूप में संरक्षति करेंगे।

उनकी पवत्रिता पैट्रआिर्क मेथोडयिस के ये वचन सुनते ही, मसीह-प्रेमी रानी थयिोडोरा तुरंत सहमत हो गईं, और कहा:

'यह हमारी आत्माओं के लिए लाभदायक होगा, और आने वाले समय में हमारे नाम का सम्मान होगा।'

तब, बनिा कसिी देरी के, परम पावन पैट्रआिर्क, पुरोहतिों और भक्षिुओं को साथ लेकर, लोगों की एक बड़ी भीड़ के साथ प्रोकोन्नसि द्वीप के लिए रवाना हो गए।

पवत्रि शहीद थयिोडोर के मठ में पहुँचने पर, पैट्रआिर्क ने संत नकिफिोरस की कब्र खोली, और सभी ने दफनाए जाने के उन्नीस साल बाद भी पवत्रि शरीर को पूरी तरह से सुरक्षति देखा; सड़न का कोई भी नशिान न दखिाते हुए, उससे एक मीठी सुगंध नकिल रही थी।

सारी रात की प्रार्थना सभा और दैवीय धर्मवधि का अनुष्ठान करने के बाद, संत मेथोडयिस कब्र में प्रवेश कयिा और संत नकिफिोरस की पवत्रि अवशेषों को गले लगाते हुए, उनसे इस प्रकार संबोधति हुए मानो वे जीवति हों:

'हे परम धन्य पुरुष, जो हर तरह से संत जॉन क्राइसोस्टोम के समान थे! क्योंकि आपने उसी प्रकार की कठनिाइयों को सहा और उसी प्रकार के दुख झेले हैं; संत जॉन की तरह, आपने साहसकि शब्दों में अन्याय की नदिा की, अन्यायपूर्ण नर्विासन को सहा, और अब तीस वर्षों से अधकि समय से – पहले जीवति रहते हुए, और फरि अपनी मृत्यु के बाद – आप कैद में रहे हैं। अब, अत; स्वयं को हमें, अपने प्रयि पुत्रों को, सौंप दें, और यहाँ से प्रस्थान कर अपने देश लौट जाएँ; आपके प्रेम करने वाले लोग आपको पहले की तरह ही आनंद के साथ स्वागत करेंगे। उस अधर्मी राजा को, जसिने आपको अवैध

[2392] प्रतमिाओं की पूजा के प्रति अपने उत्साह के कारण संत मेथोडयिस को माइकल वाल्वोस के अधीन जेल में डाल दयिा गया था। माइकल के उत्तराधकिारी, थयिोफलिस ने आदेश दयिा कि उसके गालों पर वार कयिा जाए: उसका जबड़ा इतना बुरी तरह टूट गया कि शहादत की मुहर जैसी एक कुरूप नशिान उसके चेहरे पर जीवन भर के लिए रह गई। इसे छपिाने के लिए, मेथोडयिस ने महाधर्माध्यक्ष के रूप में सेवा करते हुए, अपने काउल (कपड़े की टोपी) के सरिों में चीरे डाले और उन्हें अपने जबड़े के चारों ओर बाँध लयिा। कन्फैसर (धर्म-स्वीकारक) के सम्मान में, तब से सभी भक्षिु चीरे वाले काउल पहनते आ रहे हैं। फरि थयिोफलिस ने उन्हें एक द्वीप पर नर्विासति कर दयिा, जहाँ उन्हें दो डाकुओं के साथ एक घुटन भरी भूमगित गुफा में बंद कर दयिा गया। सम्राज्ञी थयिोडोरा ने उन्हें पैट्रआिर्क के सहिासन पर स्थापति कयिा और उनकी मदद से प्रतमिाओं की पूजा को बहाल कयिा। इस पवत्रि धर्मगुरु ने चार साल और तीन महीने से कुछ अधकि समय तक परमेश्वर की कलीसयिा का मार्गदर्शन कयिा; उनका नधिन 14 जून 847 को हुआ।

रूप से चर्च से निर्वासित किया था, अपने कर्मों का उचित दंड मिल चुका है, क्योंकि वह अपने राज्य और अपने प्राण दोनों से वंचित हो गया है। अब, तथापि, धर्मनिष्ठ राजा आपके चर्च को आपको वापस कर रहे हैं, मानो आप अभी भी जीवित हों; मेरे साथ, उन्होंने, मसीह-प्रेमी पुत्रों के रूप में, चर्च को विधर्मी अशुद्धियों से शुद्ध किया है और इसे आपके परिश्रम के बाद की पूर्व वैभवता में बहाल किया है। नीचे देखिए और अपने इकट्ठे हुए बच्चों को निहारिए; वे सभी पड़ोसी नगरों से आए हैं; जबकि बाकी, जो बहुत दूर रहते हैं, उत्सुकता से आपका इंतजार कर रहे हैं; उन्हें अनाथों की तरह दुख में न छोड़ें, और न ही उनसे मुंह मोड़ें, ताकि आपका शहर आपके अवशेषों को एक कीमती उपहार के रूप में प्राप्त कर सके; उनसे सुसज्जित होकर, यह एक शाही मुकुट से भी अधिक गौरवान्वित और सुशोभित होगा।

यह कहने के बाद, परम पावन पैट्रिआर्क मेथोडियस ने संत की अवशेषों को उठाया और उन्हें एक नए अवशेष-पात्र में रख दिया; फिर, पवित्र सिनिड के साथ, उन्हें अपने कंधों पर उठाकर, वे भजनों के गायन के बीच पवित्र अवशेषों को जहाज़ तक ले गए; पालें फहराने के बाद, वे जल्द ही कॉन्स्टेंटिनोपल पहुँच गए।

धर्मपरायण महारानी थियोडोरा, अपने पुत्र माइकल और संपूर्ण सिक्लाइट, पुरोहित वर्ग और लोगों की एक बड़ी भीड़ के साथ, मोमबत्तियाँ और धूपदान लेकर और गीत गाते हुए, अकथनीय आनंद और हर्ष से भरकर, अपने पवित्र पैट्रिआर्क निकिफोरस की सम्मानित अवशेषों का स्वागत करने के लिए घाट पर गईं। उनकी पवित्र अवशेषों को लेकर, वे सबसे पहले उन्हें सेंट सोफिया कैथेड्रल ले गए, जहाँ से सेंट निकिफोरस को निष्कासित किया गया था।

पवित्र अवशेषों का यह स्थानांतरण[2393] को, मार्च के तेरहवें दिन हुआ – ठीक उसी दिन जब संतों के विरोधी शासक द्वारा संत निकिफोरस को शाही शहर से निर्वासित किया गया था।

जैसे ही दिन समाप्त होने लगा, सेंट सोफिया चर्च में सम्मानित अवशेषों के ऊपर एक रात्रि-व्यापी जागरण आयोजित किया गया, और सुबह उन्हें सेंट सोफिया चर्च से पवित्र प्रेरितों के चर्च में ले जाया गया और वहां श्रद्धापूर्वक विराम दिया गया। उस समय से यह आदेश दिया गया कि हमारे ईश्वर मसीह के, जो पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के साथ महिमामय हैं, महिमा के लिए मसीह के स्वीकारकर्ता निकिफोरस की स्मृति का सम्मान किया जाए। आमीन।

- इसी दिन, हम पवित्र शहीद क्रिस्टीना का स्मरण करते हैं, जिन्होंने चौथी शताब्दी में फारस में यातनाएँ सहन कीं।

संत अलेक्ज़ेंडर शहीद की स्मृति

13 मार्च को स्मरण किया जाता है

[2394]संत अलेक्ज़ेंडर मूर्तिपूजकों द्वारा ईसाइयों पर किए गए उत्पीड़नों में से एक के दौरान एक गौरवशाली शहीद थे। मूर्तिपूजकों की दुष्टता के अंधकार के बीच, वह अपनी धार्मिकता के साथ एक चमकते हुए तारे की तरह दमक उठे। पडिना शहर में मूर्तिपूजकों की मूर्खता की निंदा करके[2395] और ईसाई धर्म का प्रचार करके, उन्होंने कई मूर्तिपूजकों को बपतिस्मा दिया और उन्हें मसीह के प्रति परिवर्तित किया; और इन्हीं कार्यों से उन्होंने मूर्तिपूजकों का क्रोध भड़काया। वे उसके साहस को सहन नहीं कर सके और न ही उसके दैवीय प्रेरित शब्दों की शक्ति को झेल सके; इसलिए, उन्होंने उस पर हमला किया, उसे पकड़कर बाँध दिया, और बाद में उसे क्रूर और निर्दयी यातनाएँ दीं। ऐसी यातनाओं के द्वारा उन्होंने उसे मूर्तियों को बलिदान चढ़ाने के लिए मजबूर करने का प्रयास किया, लेकिन चूँकि वे उसे ऐसा करने के लिए मना नहीं सके, इसलिए उन्होंने अंततः उसे तलवार से सिर कलम करने की सज़ा सुनाई। ईश्वर को धन्यवाद की प्रार्थना करते हुए, पवित्र शहीद ने तलवार की चोट के लिए अपना सिर झुकाया और इस प्रकार अपनी पवित्र आत्मा को प्रभु के हाथों में सौंप दिया।

[2393] 846 में।

[2394] यह उत्पीड़न सम्राट डायोक्लेटियन के दामाद और 305 से 311 तक उनके उत्तराधिकारी मैक्सिमियन गैलेरियस द्वारा भड़काया गया था। यह उत्पीड़न 303 में डायोक्लेटियन के अधीन शुरू हुआ था।

[2395] पडिना या पडिा का शहर, जो अब मौजूद नहीं है, मेसडोनिया में, थर्मई की खाड़ी से सटे प्रांत में स्थित था।

27 मार्च

14 मार्च (पुराना तरीका)

उसी दनि, कीव और सम्पूर्ण रूस के मेट्रोपॉलटिन, संत थयिोग्नोस्टस का नधिन हुआ।

हमारे पूजनीय पति बेनेडक्टि का जीवन

14 मार्च को स्मरण कयि जाता है

नाम से धन्य—[2396] —संत बेनेडक्टि परमेश्वर की कृपा से भी धन्य थे। अपनी बुद्धमिें, अपने शुरुआती वर्षों से ही, बेनेडक्टि पहले से ही, मानो, एक वरषि्ठ थे; और अपने नैतकि जीवन में, अपनी युवावस्था से ही, वे पूर्णता से परपिूर्ण व्यक्तकि समान थे। उन्होंने अपनी आत्मा को कामुक और सांसारकि इच्छाओं के अधीन नहीं कयि; बल्कअिपनी युवावस्था के चरम पर, जब वे स्वतंत्र रूप से दुनयि के सभी सुखों का आनंद ले सकते थे, उन्होंने इन सभी को उस घास के समान माना जो अपने फूलों के साथ मुरझा जाती है।

[2397]संत बेनेडक्टि नर्सयि नगर के मूल नविासी थे[2398] , और उन्होंने रोम में उस समय के सांसारकि वज्ञिानों का अध्ययन शुरू कयि। लेकनि इन मूर्तपिूजक वद्यिालयों में कई भ्रष्ट लोगों को—जो अपनी कामुक इच्छाओं के अनुसार जी रहे थे—देखकर, वह वहाँ से हट गया, इस डर से कथिोड़ी-सी पुस्तकीय शक्षिा उसकी आत्मा की महान बुद्धकिो बर्बाद कर सकती है और दुष्ट लोगों से भ्रष्ट होकर वह पाप की खाई में गरि सकता है। इस प्रकार, वह इन वद्यिालयों को न तो एक वद्विान ऋषकि रूप में और न ही एक बुद्धमिान अज्ञानी के रूप में छोड़कर गया, और उसने आंतरकि पवत्रिता को बनाए रखने के लएि बाहरी शक्षिा को ठुकरा दयि। इसके अलावा, उस समय उसने न केवल मूर्तपिूजक वद्यिालयों को, बल्कअिपने माता-पति की बड़ी संपत्तकिो भी त्याग दयि, जो तब तक गुजर चुके थे, और केवल साधु जीवन तथा एक तपस्वी के जीवन की ही खोज की। एक धार्मकि वृद्ध महलि, जो उनकी पूर्व दुधमाँ थीं, उनके पीछे रेगस्तिान में चली आईं; वह उनके सदाचारी जीवन के कारण उनसे बहुत प्रेम करती थीं। जब वे एफडिी नामक स्थान पर पहुँचे, तो उनके परचितिों ने बेनेडक्टि को वहाँ रहने के लएि मना लयि और वह सेंट पीटर के चर्च में रहे। उस क्षेत्र के धर्मनषि्ठ लोगों ने, उस धन्य युवक को पसंद कर, उसके साथ बहुत सम्मान से व्यवहार कयि। उसके साथ रहने वाली वृद्ध महलि ने एक बार पड़ोसयिों से गेहूं फटकने के लएि दो टब[2399] मांगे, और उन्हें अपनी मेज पर रखकर कहीं चली गईं। संयोग से, ये टब मेज से गरिकर दो टुकड़ों में टूट गए। जब वह लौटी, तो उसने उन्हें टूटा हुआ देखा; वह इस पर बहुत दुखी हुई और रो भी पड़ी, क्योंकवि कटोरयिाँ कसिी और की थीं। धन्य युवक ने, जब देखा कवि बूढ़ी महलि टूटी हुई कटोरयिों पर रो रही है, तो दोनों टुकड़ों को उठाया और एक सुनसान जगह पर जाकर ईश्वर के सामने जमीन पर लोट गया। उसने पूरे एक घंटे तक प्रार्थना की और जब वह अपनी प्रार्थना से उठा, तो उसने पात्र को पूरा पाया – इस पर पहले टूटने का कोई नशिान भी नहीं था; उसे उठाकर उसने अपने साथी को दे दयि। इस चमत्कार की खबर जल्द ही सभी स्थानीय नविासयिों में फैल गई। उन्होंने पानी के घड़े लेकर उन्हें चर्च के दरवाज़े के पास दीवार पर लटका दयि, ताकचिर्च में प्रवेश करने वाले उन्हें देख सकें – ईश्वर की महमिा के लएि, और ईश्वर-प्रसन्न युवक बेनेडक्टि की प्रशंसा में, जसिे ईश्वर की ओर से इतनी बड़ी कृपा प्राप्त हुई थी। लेकनि संत, मानवीय सम्मान और महमिा सहन न कर सके, इसलएि उन्होंने उस स्थान को गुप्त रूप से छोड़ दयि और अपनी पालक माँ को पीछे छोड़कर, रेगस्तिान में चले गए। जब वह रोम से चालीस स्टेडयिम दूर स्थति 'एलेफेसनि' नामक स्थान पर पहुँचा, तो ईश्वर की व्यवस्था से वहाँ उसे रोमन नाम का एक साधु मलि: वह पास के ही एक मठ से आ रहा था जसिका संचालन थयिोडोडस नामक मठाध्यक्ष करता था। इस साधु के साथ बैठकर, उन्होंने आत्मा के उद्धार के बारे में बातचीत शुरू कर दी। यहीं पर धन्य बेनेडक्टि ने उन्हें अपने वचिार और अपने हृदय की इच्छा

[2396] बेनेडक्टि (या, रोमन उच्चारण के अनुसार, बेनेडक्टिस) – जसिका अनुवाद 'धन्य' होता है।

[2397] डोल (यानी झील के कनिारे का स्थान); इस सुनसान इलाके में (आधुनकि सुबयिाको के आसपास) सम्राट क्लॉडयिस और नीरो के वलि स्थति थे।

[2398] नॉर्सयि इटली के उम्ब्रयि में एक छोटा सा शहर है।

[2399] एक 'नोश्वा' या 'नोचवा' (जसिे 'नोश्वट्सिा' भी कहा जाता है) एक खांचा या खांचे जैसी दखिने वाली पात्र है, जसिका उपयोग अनाज फटकने और अन्य कृषकिार्यों के लएि कयि जाता है।

प्रकट की, और उन्हें अपने इस प्रयास में एक साथी यात्री के रूप में पाया। रेगिस्तान में, रोमन ने धन्य बेनेडिक्ट को संन्यासी का वस्त्र पहनाया और, एक बहुत ही दुर्गम स्थान पर, एक घनी जंगली जगह में एक गुफा ढूंढकर, उन्हें वहाँ बसा दिया; वह स्वयं मठ से उनके लिए भोजन लाता था। तीन वर्षों तक, भिक्षु रोमन ने संत बेनेडिक्ट के बारे में किसी से कुछ नहीं कहा, लेकिन भोजन के दौरान चुपके से थोड़ी सी रोटी लेकर, वह उसे इस उद्देश्य के लिए निर्धारित विशिष्ट दिनों पर गुफा में ले जाता था। हालाँकि, पहाड़ से इस गुफा के प्रवेश द्वार तक पहुँचना मुश्किल था—और वहाँ पहुँचने के लिए पहाड़ के चारों ओर एक लंबा चक्कर लगाना पड़ता था—उसने इस ऊँचे पहाड़ से एक लंबी रस्सी नीचे लटकाई और उसका उपयोग धन्य बेनेडिक्ट के लिए रोटी नीचे उतारने के लिए किया; रस्सी के सिरे पर एक छोटी घंटी बाँध दी गई थी ताकि संत बेनेडिक्ट को पता चल सके कि उनके लिए रोटी नीचे लाई जा रही है। हालाँकि, शैतान, जो ईश्वर के सेवकों से नफरत करता है, ने रोमन के इस पुण्य कार्य को विफल करने का निश्चय किया, ताकि संत बेनेडिक्ट को भूख से पीड़ित करके, वह उन्हें निराशा में डूबने के लिए मजबूर कर सके। एक दिन, जब रोमन अपनी आदत के अनुसार पहाड़ से गुफा में रोटी उतार रहा था, तो शैतान ने घंटी पर एक पत्थर फेंका और उसे तोड़ दिया; फिर भी वह इससे कुछ हासिल नहीं कर सका: क्योंकि पुण्यशील भिक्षु रोमन ने तब तक संत बेनेडिक्ट की सेवा करना बंद नहीं किया जब तक कि प्रभु ने उन्हें इस दैवीय श्रम से मुक्त करने और धन्य बेनेडिक्ट—जो एक बोरी में छिपा हुआ दीपक था—को कई लोगों के आध्यात्मिक लाभ के लिए दुनिया के सामने प्रकट करने का निर्णय नहीं लिया।

तीन साल बाद, एक निश्चित पुरोहित, जो इस पहाड़ से बहुत दूर रहता था, ईस्टर के पर्व पर अपने लिए एक भव्य दावत तैयार कर रहा था, जब प्रभु उसे एक दर्शन में प्रकट हुए और कहा:

'देखो, तुम अपने लिए बहुत सारा भोजन तैयार कर रहे हो, जबकि मेरा सेवक बेनेडिक्ट, एक गुफा में'—और उसने उस स्थान का नाम लिया—'मेरे लिए भूख से मुरझा रहा है।'

तब उस पुरोहित ने तुरंत संभलकर अपने साथ भोजन लेकर परमेश्वर के उस जन को खोजने के लिए प्रस्थान किया। पहाड़ी दर्रों, घाटियों और खाइयों को पार करते हुए, वह अंततः उस गुफा तक पहुँचा जो उसे बताई गई थी, जहाँ उसे धन्य बेनेडिक्ट मिले। प्रभु में एक-दूसरे को चूमने के बाद, वे दोनों बैठ गए और आत्मा-उद्धारक वार्तालाप से अपनी आत्माओं को पोषित करने लगे। फिर पुरोहित ने संत से कहा:

'पिताजी, आइए हम इस भोजन का सेवन करें, परमेश्वर का धन्यवाद करते हुए, क्योंकि आज ईस्टर है।'

ईश्वर के पुरुष ने उत्तर दिया:

'हाँ, आज मेरे लिए ईस्टर है, क्योंकि मुझे आपको देखने की कृपा मिली है।'

उस पूजनीय को नहीं पता था कि ईस्टर का पर्व आ गया था, क्योंकि वह लोगों से दूर रहता था, और भिक्षु रोमन के अलावा कोई भी उसे नहीं जानता था।

'सचमुच, पिताजी,' पुरोहित ने उत्तर में कहा, 'आज प्रभु के पुनरुत्थान का पर्व है, और आपके लिए उपवास करना उचित नहीं है, क्योंकि मुझे स्वयं प्रभु ने इसी उद्देश्य से आपके पास भेजा है, ताकि हम दोनों अब उनके उपहारों से तृप्त हो सकें।'

और इस प्रकार, ईश्वर की कृपा से, दोनों ने भोजन ग्रहण किया, और पुरोहित, आध्यात्मिक आनंद से तृप्त होकर, अपने मठ लौट आए, और ईश्वर की स्तुति करने लगे कि उन्हें ईश्वर के सेवक को देखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। कुछ ही समय बाद, चरवाहों ने उस पूजनीय व्यक्ति की गुफा का पता लगाया, और तब बहुत से लोग उनके बारे में जानने लगे। लोग अपनी ज़रूरतों की शिकायतों के साथ उनके पास आने लगे, जबकि पवित्र पिता उन्हें आध्यात्मिक पोषण से सांत्वना देते थे।

बेनेडिक्ट द्वारा ऐसा पवित्र जीवन जिया जाता हुआ देखकर, ईर्ष्या से जलता हुआ शैतान, उस पूज्य की मुक्ति में बाधा डालने का संकल्प कर लिया। एक दिन उसने खुद को 'कोस' ([2400]) नामक एक लाल पक्षी में बदल लिया और उसके सामने निडर होकर उड़ने लगा, ताकि अगर संत बेनेडिक्ट चाहते तो उसे हाथ से पकड़ सकते थे; फिर भी उन्होंने उस पर कोई ध्यान नहीं दिया। यह समझते हुए कि यह दुश्मन की चाल थी, उन्होंने खुद को क्रॉस के चिह्न से सुरक्षित किया, और पक्षी गायब हो गया। जैसे ही वह गायब हुआ, उसी शैतान की करतूत से, संत पर कामुक वासना का ऐसा तूफान आया जैसा उन्होंने पहले कभी अनुभव नहीं किया था। कामवासना से ग्रस्त राक्षस, एक ऐसी महिला का रूप धारण करके

[2400] ब्लैकबर्ड – (लैटिन: मेरुला) – एक थ्रश।

जसिे पूजनीय संत ने एक बार अपनी युवावस्था में देखा था, उनकी आँखों के सामने प्रकट हुआ और उनके संयमी शरीर में इतनी कामवासना जगा दी कि वे लगभग निराशा में डूब ही गए। उसके मन में सांसारिक जीवन में लौटने का दुष्ट विचार आया, लेकिन ईश्वर की कृपा ने उसे मजबूत बनाया और उसे अपने जुनून पर विजय दिलाई। स्वयं को शांत करने के बाद, उन्होंने अपने पास ही बिच्छू घास और काँटों की झाड़ी उगती हुई देखी। अपने कपड़े उतारकर, बेनेडिक्ट ने नग्न होकर खुद को काँटों में फेंक दिया और वहाँ कई घंटों तक लेटे रहे, अपने पूरे शरीर पर सबसे भयंकर जलन सहते रहे; उन्होंने तब तक ऐसा करना जारी रखा जब तक उन्होंने देखा कि उनका शरीर खून से लथपथ हो गया है। इस प्रकार दुष्ट विचारों और अश्लील इच्छाओं से मुक्त होकर, उन्होंने प्रभु का हार्दिक धन्यवाद किया। उस समय से, ईश्वर की कृपा से सशक्त होकर, संत बेनेडिक्ट ने इतना पवित्र जीवन जिया कि वासना का दानव उनके शेष जीवन के लिए उन्हें लुभाने की हिम्मत नहीं कर सका, जैसा कि उन्होंने बाद में अपने शिष्यों को उनकी शिक्षा के लिए बताया।

जब पूजनीय संत की ख्याति दूर-दूर तक फैल गई, तो ऐसा हुआ कि उस देश के एक मठ के मठाधीश की मृत्यु हो गई। तब उस मठ के भिक्षु संत बेनेडिक्ट के पास गए और उन्हें अपना मार्गदर्शक और चरवाहा बनने के लिए विनम्रतापूर्वक निवेदन किया। लेकिन उन्होंने स्वयं को एक पापी और इस भूमिका के अयोग्य मानकर, उनका प्रभार संभालने से इनकार कर दिया; साथ ही, बेनेडिक्ट ने उनसे कहा:

'मेरे तरीके आपके अनुकूल नहीं होंगे।'

लेकिन, उनकी विनतियों से प्रभावित होकर, वह अंततः मान गए और, अनिच्छा के बावजूद, मठ के मठाधीश बन गए। संत बेनेडिक्ट ने उत्साह के साथ मठ का शासन किया। तपस्वी जीवन के नियम का सख्ती से पालन करते हुए, उन्होंने किसी को भी अपनी मनमर्जी से जीने की अनुमति नहीं दी, जिससे भिक्षुओं को अपने लिए ऐसे मठाधीश को चुनने का पछतावा होने लगा, जो उनके भ्रष्ट तरीकों के लिए पूरी तरह से अनुपयुक्त था। सबसे बुरे भिक्षुओं ने तो निम्नलिखित योजना भी बनाई: उन्होंने शराब में जहर मिलाया और उसे एक प्याले में डालकर, भोज के समय उस पूजनीय पिता को यह घातक पेय परोसने की हिम्मत की। हालाँकि, उन्होंने अपने पवित्र हाथ से प्याले पर क्रॉस का चिह्न बनाया, और वह पात्र, पवित्र क्रॉस की शक्ति से, तुरंत पत्थर से टकराने पर टूट गया। तब परमेश्वर के उस पुरुष को एहसास हुआ कि वह प्याला घातक था, क्योंकि वह जीवन-दायक क्रूस का सामना नहीं कर सकता था; उन्होंने तुरंत भाइयों को अपने पास बुलाया और बिना किसी द्वेष के, यहाँ तक कि अपने चेहरे पर मुस्कान के साथ, उनसे कहा:

'हे मेरे बच्चों! दयालु प्रभु तुम पर दया करें। तुमने मेरे साथ ऐसा करने का निश्चय क्यों किया? क्या मैंने तुम्हें पहले नहीं बताया था कि मेरे मार्ग तुम्हारे अनुकूल नहीं होंगे? इसलिए, अपने लिए कोई और पिता ढूंढ लो, क्योंकि मैं तुम्हारे साथ नहीं रह सकता।'

और उन्हें विदा कहकर, वे उस गुफा में चले गए जहाँ वे पहले रहते थे, और सर्व-द्रष्टा ईश्वर के सामने अकेले वहीं रहे। लेकिन सर्व-नियंता प्रभु की यह इच्छा नहीं थी कि संत बेनेडिक्ट अपने मोक्ष का मार्ग अकेले ही चलें: यह उनके लिए भी उचित था कि वे दूसरों को भी मोक्ष का मार्ग दिखाएँ। और इस प्रकार, शिष्यों के एक छोटे से झुंड के बजाय, प्रभु ने उन्हें एक बड़ा झुंड दिया; और एक अकेले परित्यक्त मठ के बजाय, उन्होंने उन्हें बारह मठ सौंपे। क्योंकि जब बेंजामिन के दैवीय जीवन की खबर फैली, तो श्रद्धालु हर ओर से उनके पास आने लगे: कुछ उनकी प्रार्थनाओं और आशीर्वादों में शामिल होना चाहते थे; अन्य अपनी आत्मा को उनके ईश्वर-प्रेरित प्रवचनों से पोषित करना चाहते थे; और कुछ उनकी उपस्थिति में बसना चाहते थे। और उस समय कई लोगों ने संसार और सभी सांसारिक चीजों का त्याग कर दिया; उन्होंने उसकी गुफा के पास छोटी-छोटी कुटिया बना लीं और अपने हाथों की मेहनत से अपना भोजन कमाकर रहने लगे। कुछ वर्षों के बाद, संत बेनेडिक्ट के भाइयों की संख्या इतनी बढ़ गई थी कि वह सुनसान निर्जन स्थान अब उन सभी के लिए पर्याप्त नहीं रहा। तब संत ने सभी भिक्षुओं को बारह समूहों में बाँट दिया, और प्रत्येक समूह एक अलग मठ में रहने चला गया; साथ ही, संत ने अपने एक अनुभवी शिष्य को प्रत्येक मठ का मठाधीश नियुक्त किया, जबकि नए भिक्षुओं को उनके निर्माण के लिए अपने पास रखा।

रोम के कुछ प्रतिष्ठित नागरिक भी परम पूज्य बेनेडिक्ट के पास आए और, अपने बेटों को ईश्वर की सेवा के लिए सौंपते हुए, उन्हें आध्यात्मिक पालन-पोषण और निर्माण के लिए परम पूज्य के हवाले कर दिया। उनमें यूटिकियस भी थे, जो एक प्रतिष्ठित वंश के व्यक्ति थे; उन्होंने अपने बेटे, युवक मॉरस को संत के पास लाया और उसे ईश्वर की सेवा के लिए परम पूज्य के हवाले कर दिया; इसी तरह कुलीन टर्टुलस ने भी अपने छोटे बेटे प्लासिडस को ईश्वर को समर्पित करते हुए, उसे बेंजामिन की पितृसुलभ देखभाल में सौंप दिया। मौरस संत की सेवा करते थे, और उनके कार्यों में सहायता

करते थे, जबकि लड़का प्लासिडस का पालन-पोषण इस प्रकार हुआ कि उसे शारीरिक पोषण की तुलना में आध्यात्मिक पोषण में अधिक आनंद आने लगा।

आदरणीय बेनेडिक्ट के एक मठ में एक लापरवाह भाई था; चर्च की सेवाओं के दौरान वह चर्च छोड़ने की आदत रखता था, और यद्यपि मठाधीश ने उसे इसके लिए अक्सर दंडित किया, उसने अपनी आदत नहीं सुधारी। यह जानने पर, पूजनीय बेनेडिक्ट ने इस भिक्षु को अपने पास बुलाया और, आत्मा-रक्षक प्रवचन से उपदेश देने के बाद, उसे घर भेज दिया; फिर भी उसने अपनी आदतें नहीं सुधारीं। तब पूज्य पिताजी स्वयं उस मठ में गए और, सेवा के दौरान चर्च में खड़े होकर, इस लापरवाह भाई को देखा और उसके बगल में एक काले युवक के रूप में एक राक्षस को देखा, जिसने भिक्षु के चोगा की किनारी पकड़कर उसे चर्च से बाहर खींच रहा था। पूज्य पिताजी ने अपने आसपास खड़े लोगों से कहा:

'क्या तुम देख रहे हो कि कौन उस भाई को चर्च से बाहर खींच रहा है?' उन्होंने उत्तर दिया:

'नहीं, फादर।'

इसके बाद, संत बेनेडिक्ट ने प्रभु से प्रार्थना की कि वे उनकी आध्यात्मिक आँखें खोल दें, और अगले दिन उनमें से कुछ ने एक छोटे इथियोपियाई को देखा जो उस भिक्षु को चर्च से बाहर खींच रहा था, और उन्होंने संत को वह बताया जो उन्होंने देखा था। चर्च सेवा के समापन पर, उस भाई की मुक्ति के लिए, रेवरेंड फादर ने अपने सौम्य व्यवहार को कठोर व्यवहार में बदल दिया, और आलसी भाई को न केवल शब्दों से बल्कि अपनी लाठी से भी दंड दिया; और इससे उन्होंने उस पर से राक्षस को भगा दिया, जो मानो खुद को ही पीटा गया हो, फिर कभी उस भिक्षु के पास वापस नहीं आया, और तब से वह पूरी तरह से सुधर गया है।

एक विशिष्ट मठ, जो एक ऊँचे पर्वत पर स्थित था, के पास पानी नहीं था, इसलिए भिक्षुओं को गहरी घाटी से पानी लाना पड़ता था; परिणामस्वरूप, मठ तक पानी पहाड़ पर ले जाने में बहुत मेहनत लगती थी। उस मठ के भिक्षुओं ने एक बार पूज्य पिता के पास आकर उनसे विनती की कि मठ को किसी ऐसे स्थान पर स्थानांतरित कर दें जहाँ पानी बिना कठिनाई के मिल सके। हालाँकि संत बेनेडिक्ट ने उनसे थोड़ी देर और इंतजार करने के लिए कहा, उसी रात खुद प्लाकिडा नाम के एक छोटे लड़के के साथ पहाड़ के लिए रवाना हो गए; और, घुटने टेककर ईश्वर से प्रार्थना करके, उन्होंने पहाड़ से पानी का एक सोता निकाला, ठीक वैसे ही जैसे मूसा ने एक बार मरुभूमि में इस्राएल के प्यासे लोगों के लिए किया था (निर्गमन 17:1–7)। और यह झरना न केवल मठ की जरूरतों के लिए पर्याप्त था, बल्कि यह पहाड़ से एक काफी बड़ी धारा में नीचे की ओर बहने लगा।

उनके एक अन्य मठ में, निम्नलिखित घटना घटी: जब एक भाई नदी के किनारे बगीचे में कुदाल से खोद रहा था[2401], तो कुदाल का लोहा पानी में गिर गया, और वह भाई बहुत दुखी हो गया: नदी गहरी और तेज बहाव वाली होने के कारण कुदाल के लोहे को पानी से निकालने का कोई तरीका नहीं था। उसी क्षण, आदरणीय बेनेडिक्ट उस बगीचे में आ गए और, उस परेशान भाई को देखकर, उन्होंने भविष्यवक्ता एलिशा (2 राजा 6:6) के समान एक चमत्कार किया: अर्थात्, उन्होंने कुदाल का लकड़ी का हत्था लिया और उसे नदी पर, ठीक उसी जगह पर रख दिया जहाँ लोहा गिरा था, और तुरंत वह अपने आप नदी के तल से ऊपर आ गया और हत्थे से जुड़ गया। और रेवरेंड ने कुदाल को एक ही टुकड़े में भाई को वापस दे दिया, यह कहते हुए:

'कड़ी मेहनत करो और दुखी मत होओ।'

एक दिन रेवरेंड फादर अपनी कोठरी में बैठे थे, जबकि छोटा लड़का प्लाकिडा एक घड़ा लेकर पानी लेने के लिए नदी पर गया; लेकिन, किनारे से पानी भरते समय, वह घड़े के साथ नदी में गिर गया, सीधे तेज बहाव वाले हिस्से में, और धारा उसे बहुत दूर तक बहा ले गई। रेवरेंड फादर ने इसे अपनी आध्यात्मिक आँखों से भांप लिया, और अपने शिष्य मावर को पुकारा, जो उनकी सेवा कर रहा था:

'भागो, भागो: प्लाकिडा नदी में गिर गया है और तेज बहाव उसे पहले ही बहकर ले गया है।'

तब मौरस नदी की ओर चल पड़ा और जब उसने प्लाकिदास को किनारे से दूर डूबते हुए देखा, तो वह नदी के किनारे इस तरह दौड़ा जैसे वह सूखी ज़मीन पर हो: उसे यह एहसास भी नहीं हुआ कि वह पानी पर दौड़ रहा था, बल्कि वह सोच रहा था कि वह सूखी ज़मीन पर है। भयभीत होकर, वह प्लैकिडा के साथ लौटा और पूजनीय पिता को सब कुछ बता दिया। हालाँकि, संत बेनेडिक्ट ने इस चमत्कार का श्रेय अपनी प्रार्थनाओं को नहीं, बल्कि मॉरस की निश्चित आज्ञाकारिता

[2401] मोटिका – एक कुदाल, एक फावड़ा।

की शक्ति को दिया; मॉरस, अपनी ओर से, यह मानते थे कि यह चमत्कार पूजनीय पिता की प्रार्थनाओं के माध्यम से हुआ था।

लेकिन प्लैकिडा ने कहा:

'मैंने अपने सिर के ऊपर रेवरेंड फादर का चोगा देखा, और मुझे ऐसा लगा कि आप स्वयं, फादर, मुझे मेरे बालों से पकड़कर किनारे पर खींच लाए हैं; और किनारे पर मैंने मॉरस को देखा।'

ठीक उसी समय, जब प्रभु आदरणीय बेनेडिक्ट को इतनी महान चमत्कारी शक्ति से गौरवान्वित कर रहे थे और लोग चारों ओर से उनके पास आ रहे थे, उस क्षेत्र में रहने वाले फ्लोरेंटियस नामक एक निश्चित पुरोहित, , एक राक्षस के उकसावे पर, पवित्र पिता से नफरत करने लगा और उन्हें अपमानजनक शब्दों से बदनाम करने तथा लोगों के सामने उनकी निंदा करने लगा, ताकि उन्हें वह सम्मान से वंचित कर सके जो सभी उन्हें देते थे। लेकिन इससे उसे कुछ भी हासिल नहीं हुआ: किसी ने भी इस अपमानजनक निंदा पर विश्वास नहीं किया, और किसी ने भी उस पुरोहित की बात पर ध्यान नहीं दिया। तब इस दुष्ट व्यक्ति ने संत को जहर देने का निश्चय किया; घातक जहर से लदी एक वेफर तैयार करके, उसने उसे पूजनीय बेनेडिक्ट को उपहार के रूप में भेज दिया। उस विवेकी व्यक्ति ने, यद्यपि देखा कि वेफर जहरीला था, उसे कृतज्ञतापूर्वक स्वीकार कर लिया। जिस समय पादरी आमतौर पर भोजन करते थे, उस समय पास के जंगल से एक काला कौवा उनकी कोठरी में उड़ आता था और वहाँ उसके लिए विशेष रूप से तैयार किए गए भोजन को खाता था। पादरी बेनेडिक्ट ने, पादरी फ्लोरेंटियस द्वारा भेजी गई जहरीली प्रॉस्फोरा लेकर, उसे कौवे के सामने रख दिया और कहा:

'जीवित ईश्वर के पुत्र, यीशु मसीह के नाम पर, यह रोटी ले जा और इसे ऐसी सुनसान जगहों पर ले जा जहाँ कोई भी—न तो मनुष्य और न ही कोई पक्षी—इसे ढूंढ सके।'

काग़ज़ ने अपना चोंच खोलकर और काँव-काँव करके, रोटी के चारों ओर उड़ना शुरू कर दिया, जिससे यह स्पष्ट हो गया कि वह रेवरेंड की आज्ञा मानना चाहता था लेकिन प्रोस्फोरा में मौजूद हानिकारक शैतानी ज़हर के कारण ऐसा नहीं कर सका। तब ईश्वर के उस पुरुष ने पक्षी से एक बार फिर कहा:

'इसे ले जाओ, इसे ले जाओ, डरो मत – इस रोटी से तुम्हें ज़हर नहीं लगेगा; इसलिए इसे अतिकिठिन निर्जन स्थान में ले जाओ।'

और कौए ने, उसे दिए गए आदेश का पालन करते हुए, बड़ी हिचकिचाहट से उस घातक प्रॉस्फोरा को अपने चोंच में उठाया और उड़ गया; तीन घंटे बाद लौटकर, उसने रेवरेंड के हाथों से अपना सामान्य भोजन खाना शुरू कर दिया। सज्जन स्वभाव के बेनेडिक्ट ने, फ्लोरेंटियस की अपनी प्रति द्वेष और शत्रुता को देखकर, अपने लिए कम और उसके लिए अधिक प्रार्थना की – कि प्रभु इसे उसके विरुद्ध पाप न मानें, बल्कि उसे सुधार दें। हालाँकि, वह द्वेषपूर्ण पुरोहित थोड़े भी नहीं सुधरा: उसने इससे भी बदतर कुछ रच डाला।

संत बेनेडिक्ट के शरीर को मारने में असमर्थ, उसने अपनी शैतानी चालाकी से, अपने शिष्यों की आत्माओं को नष्ट करने का संकल्प लिया। आदरणीय संत के शिष्य प्रतिदिन उनके बगीचे में काम करते थे; और इसलिए फ्लोरेंटियस ने सात सुंदर युवतियों को रिश्वत दी और उन्हें इस बगीचे में भेज दिया, ताकि वे गीत और नृत्य के साथ उन युवा भिक्षुओं के सामने अश्लील हरकतें करें और इस प्रकार उनके युवा हृदयों में दुष्ट वासना को जगा सकें। यह देखकर, पूजनीय बेनेडिक्ट को अपने युवा शिष्यों के आध्यात्मिक पतन का डर सताने लगा और उन्होंने उनके साथ उस स्थान को छोड़ने का संकल्प लिया। इस प्रकार, एक ओर तो वे फ्लोरेंटियस की दुर्भावना के कारण उस स्थान को छोड़ रहे थे, और दूसरी ओर, वे उन युवा पुरुषों को प्रलोभन से दूर ले जा रहे थे। अपनी मठों के भाइयों और महाधर्माध्यक्षों को बुलाकर, उन्होंने उनका प्रभार एक अनुभवी पिता को सौंप दिया और उन सभी को ईश्वर की इच्छा के हवाले कर दिया; जबकि वे स्वयं, मानव घृणा और शत्रुता से विनिम्रतापूर्वक बचते हुए, अपने सबसे छोटे शिष्यों के साथ वहाँ से प्रस्थान कर गए। जहाँ तक पुरोहित फ्लोरेंटियस का प्रश्न है, जब उसे उस क्षेत्र से आदरणीय बेनेडिक्ट के प्रस्थान की खबर मिली, तो वह बहुत प्रसन्न हुआ। लेकिन ईश्वर, जो प्रतिशोध लेने वाले प्रभु हैं, ने अपने सेवक का प्रतिशोध लेते हुए, उस दुष्ट पुरोहित को एक अप्रत्याशित मृत्यु से नष्ट कर दिया। एक दिन, जब वह घर पर बैठा विलासिता में डूबा हुआ था, तो जिस ऊपरी कमरे में वह ठहरा हुआ था, वह ढह गया, और वह घृणा करने वाला दीवारों के मलबे में दबकर मर गया। उसके घर वालों में से किसी को भी चोट नहीं लगी, और वह अकेला ही इस प्रकार मरा।

इसकी खबर तुरंत ही बेनेडक्टि के मठों में फैल गई, और संत के प्रयि शष्यि, धन्य मौरोस, जो मठ में ही रह गए थे, ने आदरणीय बेनेडक्टि को बुलाने में कोई समय बर्बाद नहीं कयिा। उन्होंने उन्हें लखिा: 'पतिाजी, वापस आइए: वह पादरी जो आपसे बनिा कारण के नाराज़ था, उसकी हसिक मृत्यु हो गई है।'

फ्लोरेन्टयिस की मृत्यु का समाचार सुनकर, आदरणीय संत बहुत दुखी हुए और उसके लिए देर तक रोए; लेकनि वे अपने शष्यि मॉरस पर फ्लोरेन्टयिस की मृत्यु पर प्रसन्न होने के कारण क्रोधति हो गए, और उस पर एक प्रायश्चति लगाया; जहाँ तक उनकी खुद की बात है, वे अपने पूर्व परश्रिम के स्थान पर लौटना नहीं चाहते थे, बल्कि किसी अन्य स्थान पर चले गए। हालाँकि, अपना नविास बदल लेने के बाद भी संत अपने पूर्व शत्रु से नहीं जुदा, क्योंकि सभी बुराइयों का प्रवर्तक, शैतान, ने उनके वरिुद्ध और भी भयंकर संग्राम आरंभ कर दयिा; परन्तु उन्होंने जतिना भी उससे संघर्ष कयिा, परमेश्वर का सेवक, परमेश्वर की सहायता से, अजेय बना रहा।

आदरणीय बेनेडक्टि, अपने पहले कारनामों के स्थल को छोड़कर, कैम्पेनयिा क्षेत्र के लिए रवाना हुए, एक शहर जो कैसनिो[2402] के नाम से जाना जाता था। वहाँ, एक ऊँचे पहाड़ पर, उन्हें अपोलो देवता को समर्पति एक मूर्तपिूजक मंदरि मलिा; और मंदरि के चारों ओर एक वनखंड था। संत बेनेडक्टि ने तुरंत मूर्ति को तोड़ दयिा, मंदरि को धूल-चटा कर दयिा, और वन-झुरमुट को काटकर जला दयिा। कुछ ही समय बाद, उसी स्थान पर, उन्होंने संत जॉन द बैपटस्टि को समर्पति एक चर्च का नरि्माण कयिा, एक मठ की स्थापना की, और संतों का एक और भी बड़ा समुदाय इकट्ठा कयिा[2403] । उस क्षेत्र में बहुत से मूर्तपिूजक थे, और सेंट बेनेडक्टि, जो कर्म और वचन में शक्तशिाली थे, ने अपने पवत्रि उपदेश को चमत्कारों से पुष्ट कयिा और कई लोगों को ईसा मसीह के धर्म में परविर्तति कयिा। दैत्य, उस क्षेत्र में बेनेडक्टि के आगमन को सहन न कर सके और अपनी पूजा स्थलों के वनिाश को बर्दाश्त करने के इच्छुक न थे, उन्होंने खुले तौर पर उस पर हमला करना शुरू कर दयिा। मानो क्रोध की लपटें उगलते हुए, उन्होंने रोमन भाषा में उस पर चल्लिाया:

'बेनेडक्टि, बेनेडक्टि!'

लेकनि जब संत ने उन्हें कोई जवाब नहीं दयिा, तो वे चल्लिाए:

'तुम बेनेडक्टि नहीं, बल्कि मैलेडक्टि, मैलेडक्टि हो!

'तुम शापति हो, शापति, धन्य नहीं! तुम्हारा इसमें क्या काम है? और तुम हमें भगा क्यों रहे हो?'

लेकनि धन्य बेनेडक्टि ने प्रार्थना और क्रॉस के चहि्न से, उन्हें हवा में उड़ते धूल की तरह अपने से दूर भगा दयिा। जब मठ का नरि्माण हो रहा था और नरि्माण पर लगे भाई घंटी का मीनार बना रहे थे, तो संत एक दनि अपनी एकांत कुटयिा में प्रार्थना करते हुए एक राक्षस को आते हुए देखे।

"तुम कहाँ जा रहे हो, शत्रु?" पूज्य बेनेडक्टि ने पूछा।

'मैं उन भक्षिुओं के पास जा रहा हूँ जो काम कर रहे हैं।'

संत ने तुरंत भाइयों को खबर भेजकर चेतावनी दी कि वे दुश्मन के किसी भी अप्रत्याशति हमले से सावधान रहें, क्योंकि शैतान अब उनकी ओर आ रहा था। संदेशवाहक भाइयों से बात ही कर रहा था कि अचानक नरि्माणाधीन एक दीवार ढह गई और एक छोटे लड़के की मौत हो गई, और सभी भक्षिु बहुत दुखी हुए: वे दीवार गरिने पर नहीं, बल्कि इसलिए शोक

[2402] कैसनि (कैसनिम) नगर नदी लरिसि के बाएँ कनिारे, माउंट कैसनिो के तल पर (प्राचीन कैंपानयिा में - नेपल्स शहर के उत्तर-पूर्व में) स्थति है।

[2403] आज, यह प्रसद्धि मोंटे कैसनिो एबी का घर है। लंबे समय तक, यह वद्विान और धर्मशास्त्रीय शक्षिा के केंद्र और संपूर्ण पश्चमिी ईसाई दुनयिा के लिए एक तीर्थस्थल के रूप में कार्य करता रहा। मठ को लोम्बार्डों ने नष्ट कर दयिा था; इसके अधकिांश भक्षिु रोम चले गए, जहाँ उन्होंने क्वरिनिल के पास एक नया मठ स्थापति कयिा। 720 में, पोप ग्रेगरी द्वतिीय ने मोंटे कैसनिो को फरि से स्थापति कयिा; उनके उत्तराधकिारी पोपों ने इसे कई वशिेषाधकिार प्रदान कए। सारासेनों ने 884 में इसे फरि से नष्ट कर दयिा, लेकनि बाद में इसका पुनर्नरि्माण कयिा गया; 1340 में, एक भूकंप से मठ एक बार फरि नष्ट हो गया और पोप जूलयिस द्वतिीय द्वारा इसका पुनर्स्थापन कयिा गया, जन्होंने इसे सेंट जस्टीना की कांग्रेगेशन को सौंपा। मठ में एक वशिाल पुस्तकालय और कुछ उत्कृष्ट चत्रि हैं। सेंट बेनेडक्टि और उनकी बहन स्कोलास्टकिा के अवशेष भी यहाँ स्थापति हैं। सेंट बेनेडक्टि ने इस मठ के लिए एक नयिम लखिा था, जसिे बाद में पश्चमि के कई मठों ने अपना लयिा। भक्षिु जीवन के नयिम बनाते समय, वे रोम के कैसयिन (जनिका पर्व 29 फरवरी को मनाया जाता है) द्वारा नरि्धारति पूर्वी मठों के नयिमों से नरि्देशति थे, लेकनि उन्होंने पश्चमि में भक्षिुवाद के सीमति वकिास को ध्यान में रखते हुए उनकी कठोरता को कम कर दयिा। फरि भी, बेनेडक्टि के नयिम में संपत्ति का त्याग, बनिा शर्त आज्ञाकारति और नरिंतर श्रम का प्रावधान था। वरषि्ठ भक्षिुओं को बच्चों को पढ़ाने और पांडुलपियिों की नकल करने की भी आवश्यकता होती थी। यह बाद वाला प्रावधान बाद के समय में अत्यधकि लाभकारी साबति हुआ, क्योंकि इसने अज्ञानता के दौर में कई प्राचीन स्मारकों को वनिाश से बचाने में मदद की। और आने वाले वर्षों में, बेनेडक्टिाइन (एक नाम जो उन सभी भक्षिुओं को दयिा गया था जन्होंने संत बेनेडक्टि के नयिम, या, रोमन शब्दों में, बेनेडक्टि को अपनाया था) ने प्रारंभकि ईसाई धर्म के लेखों पर अपने काम के माध्यम से चर्च को बहुत लाभ पहुँचाया।

मना रहे थे क्योंकि उनका भाई मर गया था। जब वे संत के पास आए, तो उन्होंने आँसुओं से भरी आँखों से उन्हें यह बात बताई। उन्होंने आदेश दिया कि मृत युवक को उनके पास लाया जाए, लेकिन उसे अपनी बाहों में उठाना असंभव था, क्योंकि पत्थर की दीवार ने न केवल उसके शरीर को बल्कि उसकी हड्डियों को भी कुचल दिया था। भाइयों ने उसे एक चटाई पर लिटाया और अपने पूजनीय पिता की कोठरी तक ले गए। संत बेनेडिक्ट ने आदेश दिया कि उसे उसी चटाई पर लिटा दिया जाए जिस पर वह प्रार्थना करने का आदी था, और सभी लोग कोठरी छोड़ दें। वे अकेले रह गए और, ईश्वर से अपनी प्रार्थना की तीव्रता से, उस मृत युवक को जीवित कर दिया; और उसी दिन, पूरी तरह से स्वस्थ, मानो वह अभी-अभी नींद से जागा हो, उन्होंने उसे भिक्षुओं के बीच उसके पूर्व कार्य पर वापस भेज दिया। बेनेडिक्ट के मठ में, आदरणीय स्वयं यह आदेश दे चुके थे कि काम पर भेजे गए भाइयों को मठ में लौटने तक कुछ भी नहीं खाना या पीना चाहिए, और इस नियम का सख्ती से पालन किया जाता था। एक अवसर पर, काम पर भेजे गए कुछ भाई थोड़ा देर हो गए, क्योंकि यात्रा बहुत लंबी थी। भूखे होने के कारण, वे रास्ते में एक धर्मपरायण और सदाचारी युवती के घर रुके, जहाँ उन्होंने भोजन और पेय से अपना तन-मन तरोताजा किया; जब तक वे अपने पूजनीय पिता का आशीर्वाद लेने पहुँचे, तब तक काफी देर हो चुकी थी। उन्होंने उनसे पूछा:

'तुमने कहाँ खाना खाया?'

'हमने कहीं भी भोजन नहीं किया, पिताजी!' उन्होंने उत्तर दिया। तब संत ने उनसे कहा:

'तुम झूठ क्यों बोल रहे हो? क्या तुमने किसी धार्मिक युवती के घर भोजन करके आराम नहीं किया? क्या तुमने यह-वह नहीं खाया? और क्या तुमने इतने कप नहीं पिए?'

यह सुनकर, भाइयों को यह भय सताने लगा कि उनके सूक्ष्मदर्शी पिता को अब तक की गई हर बात का पता चल गया है; वे उनके पैरों में गिर पड़े और सारी सच्चाई बताकर उनसे क्षमा याचना करने लगे। संत बेनेडिक्ट ने एक और भाई को भी बेनकाब किया जिसने यात्रा के दौरान चोरी-छिपे कुछ खा लिया था। अपनी सूक्ष्मदर्शी आँखों से, उन्होंने कई अन्य बातें भी देख लीं जो गुप्त रूप से की गई थीं, और इसलिए हर कोई कहीं भी कुछ भी मूर्खतापूर्ण करने या कहने से डरता था: हर कोई जानता था कि उनके पिता आत्मा में हर जगह उनके साथ थे, कि वह उनके सभी शब्दों और कर्मों को सुनते और देखते थे, और जो पाप करते थे उन्हें वह बेनकाब कर देते थे।

गोथों के राजा टोटेला, जो उस समय कैंपेनिया क्षेत्र पर शासन करते थे, ने परम पूज्य बेनेडिक्ट की दूरदर्शिता के बारे में जानकर, उनसे मिलने का निश्चय किया। लेकिन वह पहले व्यक्तिगत रूप से नहीं गए; इसके बजाय, उन्होंने अपने एक सम्मानित व्यक्ति, जिसका नाम रिगा था, को खुद के रूप में पेश होकर भेजा। इससे वह पूजनीय की विवेक-बुद्धि की परीक्षा लेना चाहता था: क्या वह पहचान पाएँगे कि उनके पास स्वयं राजा नहीं आया है? और जैसे ही रिगा, मानो वह वास्तव में राजा हो, कुलीनों और सैनिकों से घिरा, संत बेनेडिक्ट के पास पहुँचा, पूजनीय ने उन्हें दूर से ही देखकर पुकारा:

'उतार दो, मेरे बच्चे, ये शाही वस्त्र जो तुमने पहने हैं: क्योंकि ये तुम्हारे नहीं हैं, बल्कि उस व्यक्ति के हैं जिसने तुम्हें मेरे पास भेजा है।'

रिगा, इस फटकार से भयभीत होकर, संत के सामने झुक गया और तुरंत वापस लौट गया। इसके बाद, राजा टोटेला स्वयं आए, ईश्वर के पुरुष के सामने नम्रतापूर्वक झुकते हुए; पूजनीय बेनेडिक्ट ने उनकी क्रूरता और दुष्ट कर्मों के लिए उन्हें फटकारना और दोष देना शुरू किया, और उनसे भविष्यवाणी के शब्द कहे। पूजनीय ने राजा से कहा:

'ईश्वर की अनुमति से, तुम रोम पर विजय प्राप्त करोगे और समुद्र पार करोगे, परन्तु अपने राज्य के दसवें वर्ष में तुम मर जाओगे।'

और पूजनीय पिता की यह भविष्यवाणी समय आने पर सच हुई। भविष्यवाणी के वरदान के अलावा, संत बेनेडिक्ट के पास राक्षसों पर अधिकार करने की शक्ति भी थी, जो उन्हें ईश्वर द्वारा प्रदान की गई थी। एक्विलिया की कलीसिया का एक पुरोहित[2404] , जो एक राक्षस से पीड़ित था, अपने बिशप, कॉन्स्टेंटियस की सलाह पर पवित्र स्थानों और शहीदों के अवशेषों का दर्शन करने के लिए निकल पड़ा; लेकिन पवित्र शहीदों ने उसे अयोग्य समझकर उसे चंगा नहीं किया। तब उसे परमेश्वर के पुरुष, बेनेडिक्ट के पास लाया गया, और उनकी प्रार्थनाओं के द्वारा, वह तुरंत चंगा हो गया; उस पुरोहित से दानव को भगाने के बाद, संत ने उसे यह आज्ञा दी:

[2404] अक्विनो (रोमन अक्विनम से) इटली के कैसरटा प्रांत के सोरो जिले में एक छोटा सा शहर है; इसी जिले में सबसे प्रसिद्ध स्कूलास्टिक धर्मशास्त्रियों में से एक, थॉमस अक्विनास का जन्म हुआ था।

'मांस मत खाओ, और पुरोहति बनने का साहस मत करना: क्योंकि जिसि दिनि तुम पुरोहति का पद स्वीकार करने का निश्चय करोगे, तुम फिरि से दानव की निर्दयी यातना के अधीन हो जाओगे।'

ठीक हो चुका वह पुरोहति, घर लौटकर, लंबे समय तक पवित्र पिता की इन दो आज्ञाओं का पालन करता रहा: उसने न तो मांस खाया और न ही पुरोहति बनने की हिम्मत की। लेकिन कई साल बाद, जब इस पुरोहति ने देखा कि उससे भी कम उम्र के लोग दिवंगत पुरोहितों की जगह ले रहे थे, तो उसने इसे अपने लिए एक अपमान समझा और पुरोहति बनने की राह पर चल पड़ा। और जब वह पुरोहति नियुक्त हुआ, उसी दिनि, ईश्वर की अनुमति से, एक प्रचंड राक्षस ने उस पर हमला किया और इस पुरोहति को निर्दयता से पीड़ति कर, उसकी जान ले ली। इस प्रकार आदरणीय पिता बेनेडिक्ट की भविष्यवाणी पूरी हुई।

थेओप्रोव नाम का एक कुलीन व्यक्ति, जो कैसिनो नगर का नागरिक था और सभी के बीच बहुत सम्मानित था, संत बेनेडिक्ट के ईश्वर-प्रेरित उपदेश द्वारा मूर्तिपूजा से सच्चे धर्म में परिवर्तित हो गया और अपने पुण्य जीवन के कारण, अपने आध्यात्मिक पिता और शिक्षक से बहुत अनुग्रह और प्रेम प्राप्त किया। एक दिनि, थियोप्रोव आदरणीय बेनेडिक्ट की कोठरी में गए और उन्होंने अपने आध्यात्मिक पिता को जोर-जोर से रोते और सिसकते हुए पाया। वहाँ लंबे समय तक खड़े रहकर, उनके अनियंत्रित आँसुओं को देखकर, वह हैरान रह गया, क्योंकि उसने उन्हें प्रार्थना के समय को छोड़कर (और ऐसे समय में आदरणीय हमेशा रोते थे) कभी रोते हुए नहीं देखा था; लेकिन उस क्षण, बेनेडिक्ट न केवल आँसू बहा रहे थे, बल्कि बड़े दुख के साथ, हृदय विदारक सिसकियों और कराहों को भी उगल रहे थे।

आश्चर्यचकित होकर थियोप्रोव ने उनसे रोने का कारण पूछा, और संत, बड़ी मुश्किल से अपने आँसू और सिसकियों को रोकते हुए, बोले:

'क्या तुम यह मठ देख रहे हो, जिसे मैंने ईश्वर की मदद से बनाया है, और वह सब कुछ जो मैंने यहाँ भाइयों के लिए व्यवस्थित किया है? यह सब, सर्वशक्तिमान प्रभु के निर्णय से, विध्वस्त करने के लिए विधर्मी लोगों के हवाले कर दिया जाएगा। और मैंने ईश्वर से केवल यही प्रार्थना की है कि वह इस मठ में रहने वाले अपने भाइयों के जीवन की रक्षा करें।'

आदरणीय बेनेडिक्ट की यह भविष्यवाणी उनके निधन के बाद पूरी हुई। एक रात, जब पूरा समुदाय सो रहा था, तो लोम्बार्ड्स[2405] ने अचानक मठ पर हमला कर दिया। लेकिन वे समुदाय के एक भी सदस्य को बंदी नहीं बना सके: अपने आदरणीय पिता की प्रार्थनाओं की सुरक्षा में, सभी भिक्षु सुरक्षित बच निकले। हालाँकि, लोम्बार्डों ने मठ को लूट लिया और उसे बर्बाद कर दिया; संत बेनेडिक्ट के जीवनकाल में, यह मठ, प्रभु की सुरक्षा में, पूर्ण समृद्धि का आनंद ले रहा था। एक धर्मनिष्ठ व्यक्ति ने परम पूज्य बेनेडिक्ट को शराब के दो पात्र भेजे। भेजे गए सेवक ने उनमें से एक पात्र अपने लिए रख लिया और उसे रास्ते में कहीं छिपा दिया, जबकि दूसरे को उसने परम पूज्य पिता के पास ले गया। लेकिन विवेकी व्यक्ति ने, जब वह सेवक को विदा कर रहा था, उससे कहा:

'सावधान रहो, मेरे पुत्र, उस पात्र से मत पीना जिसे तुमने रास्ते में छिपाया है, बल्कि उसे उलटकर देखो, तब तुम्हें पता चल जाएगा कि उसमें क्या है।'

संत की फटकार से शर्मिंदा होकर, नौकर ने पूजनीय पिताजी को प्रणाम किया और चल दिया। छिपी हुई मशक तक पहुँचने पर, उसने यह परखने का फैसला किया कि क्या संत ने सच कहा था, और मशक को झुकाकर शराब डालने लगा; और देखो, शराब के साथ-साथ उसमें से साँप रेंगकर बाहर निकले। यह देखकर सेवक अपने किए पाप पर पछता गया।

आदरणीय संत के मठ से बहुत दूर नहीं एक गाँव बसा था; वहाँ के निवासी पहले मूर्तिपूजा करते थे, लेकिन उस भूमि में संत बेनेडिक्ट के आगमन के साथ, वे सभी उनके प्रयासों से ईसाई धर्म में परिवर्तित हो गए। इस गाँव में एक मठ की स्थापना की गई। पूजनीय बेनेडिक्ट की यह प्रथा थी कि वे वहाँ कुशल और अनुभवी भाइयों को भेजते थे ताकि वे ननों को ईश्वर के वचन का उपदेश दें। एक अवसर पर, इसी उद्देश्य के लिए भाइयों में से एक को ननों के पास भेजा गया। अपना कर्तव्य पूरा करके, जब वह अपने मठ लौट रहा था, तो रास्ते में कुछ भिक्षुणियों ने उससे कुछ तौलिये ले जाने का आग्रह

[2405] लॉम्बार्ड एक जर्मनिक जनजाति से संबंधित एक युद्धप्रिय लोग थे। मूल रूप से, लॉम्बार्ड एल्बे नदी के किनारे रहते थे, फिर डेन्यूब नदी में प्रवास कर गए, जहाँ उन्होंने 6वीं शताब्दी की शुरुआत में ही एकजुट होकर एक राज्य का गठन किया। 568 में, राजा अल्बोनसि के नेतृत्व में, वे इटली में घुस आए और वहाँ बस गए। क्रूर लोम्बार्ड्स (जिनके साथ उतने ही क्रूर सैक्सन्स, सूएबी और अन्य भी थे) द्वारा इटली पर विजय के साथ बड़े पैमाने पर लूटपाट, आबादी का संहार, शहरों का विनाश और ज़मीन पर जबरन कब्ज़ा भी हुआ। 774 में, चार्लेमेन ने लोम्बार्ड साम्राज्य का अंत कर दिया। शुरुआत में, लोम्बार्ड एरियिन थे; 7वीं शताब्दी में, वे कैथोलिक चर्च में परिवर्तित हो गए।

कयिा। भकि्षु ने तौलयि ले लिए और उन्हें अपनी छाती में छुपा लयिा। लौटने पर, वह पूजनीय बेनेडकि्ट के पास गया; संत ने उसे सख्त नज़रों से देखा और फरि गुस्से में कहा:

'भाई, तुम्हारे हृदय में अवज्ञा क्यों प्रवेश कर गई है?'

हालाँकि, भकि्षु भयभीत हो गया और अपने डर में, वह छाती में छपिाए हुए तौलयिों के बारे में भूल गया; वह यह नहीं समझ पाया कि आदरणीय पतिा कसि बारे में बात कर रहे थे।

लेकनि संत ने फरि कहा:

'क्या मैं तुम्हारे साथ वहाँ नहीं था जब तुमने ननयिों से तौलयि लिए और उन्हें अपनी छाती में छपिाया था?'

यह सुनकर, भकि्षु संत के पैरों पर गरि पड़ा और अपने अपराध के लिए क्षमा याचना करने लगा।

एक दनि, जब माननीय फादर अपनी शाम का भोजन कर रहे थे, जैसा कि उनकी आदत थी, और काफी देर हो चुकी थी, एक युवा भकि्षु उनके सामने मेज पर खड़ा था, जो उनका रास्ता रोशन करने के लिए एक मोमबत्ती पकड़े हुए था; यह भकि्षु एक अमीर सरदार का बेटा था - और इसलिए, अपने दलि में गर्व के साथ, वह अपने आप से सोचने लगा:

'और ये कौन हैं जनिके सामने मैं अब खड़ा हूँ, मोमबत्ती थामे हुए और उनकी सेवा एक दास की तरह कर रहा हूँ? और मैं इस अज्ञात बूढ़े आदमी के लिए काम क्यों कर रहा हूँ?'

जैसे ही वह युवा भकि्षु अपने मन में ऐसा तर्क कर रहा था, उसका यह घमंडी वचिार सूक्ष्मदर्शी पतिा से छपि नहीं पाया; उन्होंने तुरंत ही उसे पतिा समान ढंग से फटकारते हुए, सौम्य स्वर में कहा:

'मेरे बच्चे, अपने हृदय पर क्रॉस का चहि्न बनाओ; इतने अहंकारी वचिार तुममें क्यों पनप रहे हैं? अपना ध्यान रखो।'

तब उन्होंने एक और नवसखिुआ को बुलाया और उसे उस भकि्षु के हाथों से मोमबत्ती लेने का आदेश दयिा। जो भकि्षु पाप कर चुका था, वह आँसुओं से भरी आँखों के साथ अपनी कोठरी से नकिल गया। और जब भाइयों ने उस भकि्षु से पूछना शुरू कयिा कि सम्माननीय पतिाजी ने उसे क्यों भगा दयिा, तो उसने अपने घमंडी वचिारों का उनसे इकबालयि बयान कर दयिा। और सभी संत बेनेडकि्ट की सूझबूझ पर चकति रह गए, जनिसे मन की गहरी से गहरी बातें भी छपिी नहीं रह सकतीं।

एक बार, कैम्पेनयिा क्षेत्र में[2406] , अकाल पड़ा, और पूजनीय पतिा के मठ में पाँच से अधकि रोटी नहीं बची थीं, ताकि वहाँ के बड़ी संख्या में भाइयों के लिए एक ही भोजन के लिए भी पर्याप्त न हो। जब मठ के सभी भाई दुखी थे और सोच रहे थे कि वे अकाल के दौरान अपना जीवन यापन करने के लिए रोटी कहाँ से प्राप्त कर सकते हैं, तो संत ने उनसे कहा:

'हे अल्पवशि्वासी, तुम रोटी की कमी से इतने व्यथति क्यों हो? क्या तुम उस परमेश्वर में अपनी आशा नहीं रखते, जो अपनी नष्ठिापूर्वक सेवा करने वाले को कभी नहीं छोड़ता? और क्या तुम्हें सुसमाचार में हमारे उद्धारकर्ता के वचन याद नहीं हैं: *'पहले परमेश्वर के राज्य और उसकी धार्मकिता की खोज करो, और ये सब बातें भी तुम्हें मलि जाएँगी; क्योंकि तुम्हारा स्वर्गीय पतिा जानता है कि तुम्हें इन सब की आवश्यकता है'* (मत्ती 6:8, 33)। इसलिए हयिाव न खोओ। आज तुम्हें अभाव है, परन्तु कल तुम्हें आवश्यकता की सभी चीज़ें प्रचुर मात्रा में मलिेंगी।

और इस प्रकार अगली ही सुबह, ईश्वर की व्यवस्था से, मठ के द्वार पर बोरी में दो सौ माप आटा मलि, और कोई यह नहीं कह सका कि यह कहाँ से आया था या इतनी बड़ी मात्रा में रोटी कसिने लाई थी। तब सभी ने यह नष्किर्ष नकिाला कि यह स्वयं प्रभु थे, जनि्होंने उनके पूजनीय पतिा की प्रार्थनाओं के माध्यम से, अदृश्य रूप से उन्हें यह आटा भेजा था।

एक ईश्वर-भयभीत व्यक्ति ने माननीय पतिा से अपने गाँव में एक मठ बनाने का आशीर्वाद देने के लिए कहा; यह गाँव टेराकनिी शहर से बहुत दूर नहीं स्थति था[2407] । सम्मानति पतिा ने अपने कुछ शष्यिों को, जो काफी कुशल नरि्माणकर्ता थे, इस गाँव में भेजा, और उन्हें साइट को साफ करने और मठ के नरि्माण के लिए आवश्यक सब कुछ तैयार करने का नरि्देश दयिा।

[2406] कैम्पानयिा इटली का एक दक्षणिी क्षेत्र है जो नेपल्स की खाड़ी के आसपास स्थति है, और इसकी राजधानी नेपल्स है।

[2407] टेरासनिा शहर तथाकथति चर्च प्रांत में, समुद्र से बहुत दूर नहीं स्थति है।

संत ने उनसे कहा, 'जहाँ तक मेरी बात है, मैं आप लोगों के पास कसिी-न-कसिी दनि आऊँगा' – (और उन्होंने वह दनि बताया) – 'और मैं आपको बलि्कुल दखिाऊँगा कि हर इमारत कहाँ बनानी है।'

मजदूर नकिल पड़े और सभी तैयारयिाँ करने के बाद, अपने पूज्य पतिाजी के आगमन की प्रतीक्षा करने लगे। जब नरि्धारति दनि आया, तो सुबह-सुबह, जब नरि्माणकर्ता अभी भी सो रहे थे, संत बेनेडकि्ट उन्हें एक सपने में दखिाई दिए और उन्होंने उन्हें ठीक वही स्थान दखिाए जहाँ उन्हें चर्च, भोजन कक्ष, औषधालय, कोठरयिाँ और अन्य सभी मठवासी इमारतें बनानी थीं। जागने पर, उन्होंने एक-दूसरे को अपने सपनों के बारे में बताया और यह देखकर आश्चर्यचकति हुए कि उन्होंने सभी ने अपनी नींद में एक ही चीज देखी थी, और वे रेवरेंड बेनेडकि्ट का इंतजार करने लगे। लेकनि संत उस दनि नहीं आए, न ही अगले दनि, और नरि्माणकर्ता, दुखी होकर उनके सामने उपस्थति हुए, और कहा:

'आदरणीय पतिाजी! हम आपका इंतजार कर रहे थे, जैसा कि आपने वादा कयिा था, कि आप हमें मठ की इमारतों के लिए जगह दखिाने आएँगे; तो फरि आप क्यों नहीं आए?'

बेनेडकि्ट ने उत्तर दयिा:

'आप क्या कह रहे हैं, भाइयो? क्या मैं आप लोगों के पास नहीं आया?'

लेकनि नरि्माणकर्ताओं ने इसका खंडन कयिा और कहा:

'नहीं, पतिाजी, आप नहीं आए।' तब आदरणीय पतिाजी ने कहा:

'क्या तुम भूल गए कि मैं तब आया था जब तुम सो रहे थे, और मैंने अपने हाथ से वे सभी स्थान दखिाए थे जहाँ तुम्हें प्रत्येक इमारत बनानी है? तो जाओ, और उन स्थानों पर इमारतें बनाओ जहाँ मैंने तुम्हें सपने में बनाने का आदेश दयिा था।'

और वे, संत के सामने झुककर, अपने रास्ते चले गए और जो कुछ भी उन्हें आज्ञा दी गई थी, उसे पूरा कयिा।

उसी देश में कुलीन वंश की दो युवतयिाँ रहती थीं। उन्होंने अपनी कुँवारी अवस्था बनाए रखने का संकल्प लयिा था और अपना समय उपवास में बतिाती थीं; लेकनि, पवत्रि जीवन जीने के बावजूद, उनकी जीभ अनयिंत्रति थी और वे अक्सर दूसरों की आलोचना, बदनामी और नदिा करती थीं। यह जानकर, पूजनीय बेनेडकि्ट ने उन्हें संदेश भेजा:

'अपनी जीभ को काबू में रखो, नहीं तो मैं तुम्हें पवत्रि सहभागति से वंचति कर दूँगा।'

लेकनि उन्होंने अपनी मूर्खता नहीं छोड़ी और पादरी की पतिृवत् चेतावनी का भी कोई उत्तर नहीं दयिा; कुछ ही दनिों बाद, दोनों कन्याएँ अपनी पवत्रि कुँवारी अवस्था में मर गईं और चर्च में एक साथ दफनाई गईं। अब, जब दैवीय अनुष्ठान मनाया जा रहा था और डकिन, कैटेकुमेन—जन्हिें पवत्रि संस्कार प्राप्त करने की अनुमति नहीं थी—से चर्च छोड़ने का आदेश दे रहे थे, कुछ लोगों ने इन दोनों कन्याओं को उनके ताबूतों से नकिलकर चर्च से बाहर जाते हुए देखा[2408], क्योंकि वे पवत्रि अनुष्ठान के दौरान वहाँ नहीं ठहर सकती थीं; और यह हर दैवीय अनुष्ठान में हुआ। जब संत बेनेडकि्ट को इस बात का पता चला, तो उन्होंने उन पर दया की; एक प्रोस्फोरा लेकर, उन्होंने उसे चर्च ले जाकर उन कन्याओं की आत्माओं के लिए एक पवत्रि बलदिान के रूप में चढ़ाने का आदेश दयिा। और इस पवत्रि बलदिान के अर्पति होने के बाद, कसिी ने भी उन्हें फरि कभी चर्च से बाहर जाते हुए नहीं देखा, और सभी यह मानने लगे कि इस पवत्रि संस्कार और पूजनीय के प्रार्थनाओं के द्वारा, इन कन्याओं को प्रभु से क्षमा मलि गई थी।

संत बेनेडकि्ट के मठ में एक युवा भकि्षु अपने माता-पतिा के प्रति अत्यधकि प्रेम के लिए प्रसदि्ध था और अक्सर, रेवरेंड फादर की अनुमति के बनिा, उनसे घर पर मलिने जाता था। एक दनि वह अपनी आदत के अनुसार, चोरी-छपिे मठ से नकिल गया, और जैसे ही वह अपने माता-पतिा के घर में दाखलि हुआ, वह मृत पड़ा गया। यह खबर मलिते ही, भकि्षुओं ने उसका शव उठाया और उसे ठीक से दफना दयिा। लेकनि सुबह उन्होंने उसका शव ताबूत से बाहर पड़ा हुआ पाया; तो उन्होंने उसे फरि से दफनाया, लेकनि अगली सुबह भी उसे जमीन से बाहर पड़ा हुआ पाया। इसके बाद, मृतक भकि्षु के माता-पतिा वनिम्र बेनेडकि्ट के चरणों में रोते हुए गरि पड़े और उनसे वनिती की, कि उनमें वरिाजमान ईश्वर की कृपा से, अपने पुत्र पर दया करें, जो इतने बड़े पाप के साथ मरा था, और पृथ्वी को आज्ञा दें कि वह उसके शरीर को थामे रहे। आदरणीय फादर ने, उनके दुखी हृदयों को देखकर, परम पवत्रि रहस्यों का एक छोटा सा अंश लयिा और नरि्देश दयिा

[2408] यह अनुष्ठान के दूसरे भाग - 'वशि्वासयिों की अनुष्ठान' - की शुरुआत में होता है। इस बदिु पर, डकिन घोषणा करता है: 'जो कैटेकुमेन हैं, वे चले जाएँ... जो वशि्वासी हैं, आदि।' कैटेकुमेन वे लोग हैं जो पवत्रि बपतस्मि प्राप्त करने की तैयारी कर रहे हैं।

कि उसे दफनाए जाने से पहले मृतक की छाती पर श्रद्धापूर्वक रखा जाए। इसके बाद, शरीर ताबूत में ही रहा और पृथ्वी ने उसे फिर से बाहर नहीं फेंका।

रेवरेंड फादर गरीबों के प्रति अत्यंत कृपालु, दयालु और सहानुभूतिपूर्ण, तथा सभी के प्रति उदार थे। ईश्वर जो कुछ भी उनके मठ में भेजते थे, वह सब वे गरीबों और आम तौर पर ज़रूरतमंदों में बाँट देते थे, जबकि वे और उनके भाई-बंधु स्वयं गरीबी में रहते थे। एक बार, एक व्यक्ति जो वास्तव में गरीबी में पड़ गया था, उसका साहूकार उसका पीछा कर रहा था, जिसे वह बारह ज़्लाटकि[2409] का कर्जदार था। तब वह संत बेनेडिक्ट के पास आया और आँसू भरी आँखों से उनसे अपने कर्ज को चुकाने के लिए बीस ज़्लाटकि देने की भीख माँगने लगा, क्योंकि साहूकार धमकी देकर उनसे यह राशि माँग रहा था। उस समय रेवरेंड के पास एक पैसा भी नहीं था[2410] , उन्होंने उस आदमी से कहा:

'भाई, हमें माफ करो: मेरे पास अभी वह नहीं है जिसकी आप मांग कर रहे हैं, लेकिन दो दिन बाद वापस आना।'

संत बेनेडिक्ट ने उन दो दिनों को अपनी नियमित प्रार्थनाओं में बिताया, ईश्वर से उस ऋणी को उसके कर्ज से मुक्त करने के लिए प्रार्थना करते हुए। तीसरे दिन, वह गरीब व्यक्ति लौटा और संत के सामने झुककर, उनसे वादा की गई राशि मांगी। उस समय, मठ में अंगूर के रस से भरा एक पात्र था; और अचानक, संत की प्रार्थना के बाद, रस के ऊपर तेरह सोने के सिक्के प्रकट हुए[2411] । उन्हें लेकर, दयालु संत ने वे सभी सिक्के उस ज़रूरतमंद व्यक्ति को दे दिए, यह कहते हुए:

'जाओ, मेरे बच्चे, और उनमें से बारह साहूकार को दे दो, और बची हुई एक को अपनी ज़रूरतों के लिए रख लो।'

एक दिन, ईश्वर के उस पुरुष ने भाइयों के साथ मिलकर बगीचे में काम करने के लिए गाँव की ओर प्रस्थान किया; रास्ते में उनकी मुलाकात एक किसान से हुई जो अपने मृत छोटे बेटे को अपनी बाहों में उठाए हुए था; वह जोर-जोर से रोता हुआ मठ में आया और वहाँ उसने पूजनीय पिता बेनेडिक्ट को खोजना शुरू कर दिया; उसे बताया गया कि संत भाइयों के साथ गाँव में काम कर रहे थे और वहाँ देर हो जाएगी। तो उस व्यक्ति ने अपने मृत पुत्र को मठ के द्वार पर छोड़ दिया और स्वयं सम्माननीय पिता के पास गया, और उनसे ठीक उसी समय मिला जब वे मठ लौट रहे थे। ऐसा करते ही, उसने उनसे पुकारा:

'मुझे मेरा बेटा दे दो, फादर, मुझे मेरा बेटा दे दो!' ईश्वर के उस पुरुष ने, चकित होकर, उससे कहा:

'क्या मैंने तुम्हारे बेटे को लिया?'

दुखी पिता ने कहा:

'मेरा पुत्र मर चुका है, लेकिन जाओ और उसे मृतकों में से जीवित कर दो।' यह सुनकर, सम्मानित पिता गहरे दुख में डूब गए और भाइयों से कहा:

'भाइयो, जल्दी करो, जल्दी करो, क्योंकि मृतकों को जीवित करना हमारा काम नहीं है, बल्कि पवित्र प्रेरितों का काम है।'

हालाँकि, उस आदमी ने, अवर्णनीय दुख से अभिभूत होकर, संत से कसम खाई कि वह तब तक उन्हें नहीं छोड़ेगा जब तक कि वे उसके बेटे को मृतकों में से जीवित नहीं कर देते। फिर पूजनीय पिता, भाइयों के साथ मृतक लड़के के शव के पास गए, घुटने के बल झुक गए और ईश्वर से प्रार्थना में पुकार उठे:

'हे प्रभु! मुझ पापी पर नहीं, बल्कि इस मनुष्य के विश्वास पर दृष्टि डालो जो अपने पुत्र के पुनरुत्थान के लिए आपसे प्रार्थना कर रहा है, और इस शरीर में आत्मा को वापस लाओ।'

संत के प्रार्थना समाप्त करते ही मृतक के शरीर में जीवन के लक्षण दिखाई देने लगे, उसने अपने हाथों से छुआ और अपने पूरे शरीर को हिलाया। संत ने लड़के का हाथ पकड़कर उसे जीवित और स्वस्थ उठाया, और उसे उसके पिता के हवाले कर दिया। और सभी ने इस अत्यंत शानदार चमत्कार को देखकर परमेश्वर की स्तुति की। आदरणीय बेनेडिक्ट ने और भी कई चमत्कार किए, जैसा कि रोम के पोप, संत ग्रेगरी द डायलॉजिस्ट द्वारा अपनी रचना '[2412] ' के दूसरे खंड में विस्तार से वर्णन किया गया है; हालाँकि, हमारी शिक्षा के लिए, उसी पुस्तक से लिया गया यह संक्षिप्त विवरण पर्याप्त है। आइए अब आदरणीय बेनेडिक्ट के जीवन के निम्नलिखित वृत्तांत पर चलते हैं।

[2409] ज़्लाटित्सा – सोना, एक चेरवोनेत्स।

[2410] पेनियाज़ – एक छोटा सिक्का।

[2411] सोचिवो – मटर, सेम और सब्जियों से बना एक स्टू।

[2412] यह, बेशक, संत ग्रेगरी द डायलॉजिस्ट के कार्य *इटालियन फादर्स के जीवन और चमत्कारों पर संवाद* को संदर्भित करता है।

आदरणीय बेनेडिक्ट की स्कलास्टिका नाम की एक बहन थी। बचपन से ही अपने माता-पिता द्वारा ईश्वर को समर्पित, उसने कुँवारीपन और तपस्या का जीवन जिया और इस प्रकार वह प्रभु को प्रिय थी। वह साल में एक बार अपने भाई, इस ईश्वर के पुरुष, से मिलने आती थी। बेनेडिक्ट ने उन्हें मठ के भीतर नहीं, बल्कि उससे कुछ दूर स्थित एक भवन में आमंत्रित किया; वहाँ उनसे मिलने जाकर, आदरणीय संत उनके साथ धर्मोपदेशात्मक बातचीत करते थे। धन्य स्कोलास्टिका के जीवन के अंतिम वर्ष में, जब वह अपनी प्रथा के अनुसार अपने पवित्र भाई से मिलने आईं, तो बेनेडिक्ट अपने कुछ शिष्यों के साथ उनके पास आए और उन्होंने उनके साथ पवित्र संवाद और ईश्वर-प्रेरित शिक्षाओं में पूरा दिन बिताया। शाम को, जब रात का अँधेरा छा चुका था, भोजन तैयार किया गया, लेकिन खाने के दौरान भी, उन्होंने अपनी दैवीय प्रेरित बातचीत बंद नहीं की, और इस प्रकार रात का एक बड़ा हिस्सा बिताया। पवित्र कन्या ने माननीय से कहा:

'मैं आपसे विनती करती हूँ, मेरे भाई, इस पूरी रात मुझे अकेला न छोड़ें, ताकि हम सुबह तक स्वर्गीय आनंद और अनंत जीवन के बारे में बात कर सकें।'

इस पर संत ने उत्तर दिया:

'तुम क्या कह रही हो? क्या मुझे सारी रात अपनी कोठरी के बाहर रहना है?'

उस समय, हवा इतनी साफ और शुद्ध थी कि बारिश के बादल का एक निशान भी दिखाई नहीं दे रहा था। संत ने, यह देखकर कि उसका भाई उसकी बात नहीं मान रहा था, अपने हाथ जोड़ लिए और अपना सिर उन पर टिका लिया; अपने दिल के कोने में, आँसुओं के साथ, उसने सर्वशक्तिमान ईश्वर से प्रार्थना की। और जैसे ही उसने अपनी प्रार्थना के बाद सिर उठाया, वैसे ही बिजली की चमक के साथ गरज की एक अचानक, भयानक गड़गड़ाहट हुई और इतनी भारी बौछार शुरू हो गई कि न तो संत बेनेडिक्ट और न ही उनके साथ आए भाई न तो घर चल सकते थे, बल्कि दरवाज़ा एक दरार के बराबर भी नहीं खोल पाए। (परमेश्वर के सामने उस पवित्र कन्या की प्रार्थना इतनी शक्तिशाली थी।) यह देखकर कि स्कॉलास्टिका ने अपनी प्रार्थना से धरती पर इतना अचानक मूसलाधार बारिश माँगा ली थी, पूजनीय ने उनसे कहा:

'बहन, तुमने मेरे साथ यह क्या किया?'

उसने जवाब दिया, 'भाई, मैंने आपसे रुकने को कहा था, लेकिन आप मेरी नहीं सुने, इसलिए मैंने अपने प्रभु से प्रार्थना की, और उन्होंने मेरी प्रार्थना तुरंत सुन ली; अब, यदि आप चाहें, तो आप मुझे छोड़कर मठ जा सकते हैं।'

और इस प्रकार, संत बेनेडिक्ट, यद्यपि वे नहीं चाहते थे, फिर भी उन्होंने अपनी बहन के साथ पूरी रात जागते हुए बिताई और शाश्वत जीवन के बारे में उनसे बात की। सुबह, एक-दूसरे को विदा कहने के बाद, वे अलग हो गए। तीन दिन बाद, जब रेवरेंड प्रार्थना में खड़े थे, तो उन्होंने अपनी आँखें स्वर्ग की ओर उठाईं और अपनी पवित्र बहन की आत्मा को बड़ी चमक के साथ स्वर्ग की ओर बढ़ते और स्वर्गीय निवासों में महिमा के साथ स्वागत किए जाते हुए देखा। अपनी बहन के निधन के इस दर्शन से अवगत होकर, बेनेडिक्ट महान आनंद से भर गए, यह देखकर प्रसन्न हुए कि उनकी आत्मा को इतना गौरव प्राप्त हुआ था; और, प्रभु का धन्यवाद करने के बाद, उन्होंने भाइयों को उनके निधन की सूचना दी। उन्होंने उसके शरीर को सम्मानपूर्वक अपने मठ में ले जाने का आदेश दिया, मानो वह एक अनमोल खजाना हो, और उसे उस ताबूत में रख दिया जो उन्होंने अपने लिए तैयार किया था।

शीघ्र ही डिकिन सर्वंद उस पूजनीय व्यक्ति से मिलने आए; वे स्वर्गीय अनुग्रह से परिपूर्ण एक व्यक्ति थे, और कैंपेनिया में एक मठ के मठाधीश थे, जिसे कुलीन लिबेरियस ने बनवाया था; उन्होंने स्वर्ग के राज्य के सबसे मीठे भोजन के बारे में आत्मा-उद्धारक वार्तालाप में अपना समय बिताया; यद्यपि वे पृथ्वी पर अभी इसका पूरी तरह से स्वाद नहीं चख सकते थे, फिर भी उन्होंने ईश्वर की ओर मुड़े अपने मन के द्वारा इसका आंशिक रूप से स्वाद चख लिया था; जब शारीरिक भोजन का समय आया, तो उन्होंने अमर भोजन को ध्यान में रखते हुए, आहें भरते हुए भोजन किया। रात के विश्राम के दौरान, आदरणीय पिता अपनी कोठरी में गए, जबकि उनके अतिथि, पवित्र डिकिन सर्वंद को आदरणीय पिता की कोठरी के बगल वाली कोठरी दिखाई गई। संत बेनेडिक्ट, शाम को थोड़ी देर आराम करने के बाद, आधी रात को प्रार्थना करने उठे और, खिड़की के पास प्रार्थना करते हुए, अचानक स्वर्ग से एक महान प्रकाश निकलते देखा, जिससे रात स्वयं दिन से भी अधिक उज्ज्वल हो गई; लेकिन सबसे अद्भुत बात यह थी कि धन्य बेनेडिक्ट को - जैसा कि उन्होंने बाद में स्वयं बताया - ऐसा लगा कि वे संपूर्ण ब्रह्मांड को देख सकते थे, मानो वह सब सूर्य की एक ही किरण में नहाया हुआ हो। इस प्रकाश को ध्यान से देखते हुए, पूज्य पिताजी ने कापुआ के बिशप, धन्य हरमन की आत्मा को आग के एक वृत्त के भीतर स्वर्ग की ओर ले जाते हुए देखा। फिर पूज्य पिताजी बेनेडिक्ट ने, अपने अतिथि सिर्वंद को यह भयानक दृश्य दिखाने की इच्छा से, उन्हें ऊँचे स्वर में दो-तीन बार नाम लेकर पुकारा। सर्वंद, इस बात पर हैरान कि संत उसे इतनी

असामान्य घड़ी पर बुला रहे थे, डर गया और जल्दी से बेनेडिक्ट की कोठरी में गया, जहाँ उसने यह दिव्य प्रकाश देखा—हालांकि इसका पूरा नहीं, बल्कि केवल एक छोटा सा हिस्सा; और बाकी बातें पवित्र पिता ने स्वयं उसे बताईं। तब संत बेनेडिक्ट ने तुरंत कैसिनि नगर में अपने प्रिय शिष्य, नागरिक थियोप्रवस को एक संदेश भेजा, जिसमें उन्होंने तुरंत कैपुआ में एक ई[2413] भेजने और बिशप संत हरमन के बारे में पूछताछ करने का अनुरोध किया। और इस प्रकार वहाँ से खबर आई कि उनका निधन हो गया था। जब बेनेडिक्ट को संत हरमन की मृत्यु का सटीक समय पता चला, तो यह सामने आया कि उनकी मृत्यु ठीक उसी घड़ी हुई थी जब बेनेडिक्ट ने उनकी आत्मा को स्वर्ग में ले जाया जाता हुआ देखा था, जिसे स्वर्गदूत आग के एक घेरे के भीतर ले जा रहे थे।

इसके तुरंत बाद, परम पूजनीय बेनेडिक्ट के लिए अपने शरीर से विदा लेकर प्रभु के पास जाने का समय आ गया। अपनी मृत्यु के समय के बारे में छह दिन पहले ही जानकर, उन्होंने अपने लिए तैयार कफ़न को खोलने का आदेश दिया और, बीमार पड़कर, अपने बिस्तर पर लेट गए। फिर भी, तब भी उन्होंने भाइयों को उपदेश देना बंद नहीं किया और उनके लिए मठवासी आदेश के नियम भी लिखे। अपने निधन के दिन ही, उन्होंने आदेश दिया कि उन्हें सेंट जॉन द बैपटिस्ट के चर्च में ले जाया जाए, जिसे, जैसा कि ऊपर उल्लेख किया गया है, उन्होंने अपोलो के खंडहर हो चुके मंदिर की जगह पर बनवाया था। वहाँ दिव्य रहस्यों को ग्रहण करने के बाद, संत बेनेडिक्ट ने अपने हाथ परमेश्वर की ओर उठाए और, होंठों पर एक प्रार्थना के साथ, अपने शरीर से अलग हो गए और प्रभु के पास सबसे तेजस्वी स्वर्गीय निवासों में प्रस्थान कर गए, जिन्हें उन्हें पृथ्वी पर रहते हुए ही देखने का सौभाग्य मिला था।

ठीक उसी क्षण जब संत बेनेडिक्ट को उनके सांसारिक बंधनों से मुक्त किया जा रहा था, दो भिक्षुओं—एक जो किसी काम से भेजे गए रास्ते पर थे, और दूसरे जो अपनी मठ में अपनी कोठरी में प्रार्थना कर रहे थे—को एक ही दर्शन मिला: उन्होंने पृथ्वी से स्वर्ग तक जाने वाला एक मार्ग देखा; यह पूरी तरह से सबसे कीमती वस्त्रों से बिछा हुआ था, जबकि रास्ते के दोनों ओर अनगिनत दमकती मोमबत्तियाँ खड़ी थीं। इस रास्ते के ऊपर उन्होंने एक दिव्य आकृति देखी, जिसकी सुंदरता शब्दों से परे थी, और उन्होंने उसकी आवाज़ सुनी जो घोषणा कर रही थी कि यह मार्ग ईश्वर के प्रिय बेनेडिक्ट के लिए तैयार किया गया है, और उसी घड़ी उसे इसी मार्ग से स्वर्ग आरोहण करना था। दोनों भाइयों को यह दर्शन तब मिला जब वे एक-दूसरे से बहुत दूर थे, फिर भी उस क्षण उन्होंने खुद को एक साथ खड़ा हुआ देखा। अपने पवित्र पिता के अंतिम संस्कार में पहुँचने पर, उन्होंने यह सब बात पूरी जमा हुई समुदाय को सुनाई। फिर वहाँ पर आदरणीय बेनेडिक्ट के सभी मठों के भिक्षु इकट्ठा हो गए, और आँसुओं से भरी आँखों के साथ उन्होंने उनका सम्मानपूर्वक अंतिम संस्कार किया।

आदरणीय बेनेडिक्ट का पवित्र शरीर सेंट जॉन द बैपटिस्ट के चर्च में, जिसे उन्होंने स्थापित किया था, अंतिम संस्कार के लिए रखा गया, जो त्रिमूर्ति में एक ईश्वर, पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा का महिमामंडन करता है, जिसे सारी सृष्टि द्वारा सदा के लिए महिमा दी जाती है। आमीन[2414] .

कॉन्टाकियन, स्वर 6:

तू परमेश्वर की कृपा से धनी हुआ; अपने कर्मों द्वारा तूने अपनी पुकार को प्रकट किया; और तू प्रकट हुआ, बेनेडिक्ट, हमारे परमेश्वर मसीह का सेवक, प्रार्थना और उपवास के द्वारा पवित्र आत्मा के वरदानों से परिपूर्ण; और तू रोगियों का उपचार करने वाला, शत्रु का विजेता, और हमारी आत्माओं के लिए एक शीघ्र मध्यस्थ था।

कन्फेशर संत यूस्कमिोन की स्मृति

14 मार्च को स्मरणोत्सव

[2413] कैपुआ (सaruआ) – दक्षिणी इटली में वोल्टर्नो नदी के बाएं किनारे पर एक शहर और किला। प्राचीन काल में, यह कैम्पेनिया का प्रमुख शहर था।

[2414] सम्माननीय बेनेडिक्ट की मृत्यु 543 में हुई।

हमारे पवत्रि पति यूस्कमिोन, लैम्प्सैक्स के बशिप[2415] , जो एक ईसाई शक्षिक और मसीह के स्वीकारकर्ता थे, ने अपने युवा काल से ही एक सदाचारी जीवन जयि, ईश्वर के मत्रि बने और, पूर्णता के पुरुष होकर, स्वयं को पवत्रि आत्मा का मंदरि बना लयि। संन्यास की शपथ लेकर और स्वयं को पूर्णतःऑर्थोडॉक्स धर्म को समर्पति कर, उन्होंने बशिप का उच्च पद प्राप्त कयि और ईश्वर की कृपा से परपिूर्ण हो गए। वे दैवीय उत्साह से परपिूर्ण थे और उन्होंने प्रतमिा-भंजकों के संप्रदाय को पराजति कयि। ऐसा करते हुए, उन्होंने महान चमत्कार भी कए। उदाहरण के लए, प्रार्थना के माध्यम से उन्होंने अपनी वलिाप करती माँ द्वारा लाए गए एक मृत शशिु को जीवति कर दयि। इसके अलावा, उन्होंने जंगली जानवरों में भय पैदा कयि, और जब भी वे झुंड को नुकसान पहुँचाने की कोशशि करते, तो उन्हें एक ही शब्द से भगा देते थे। सम्राट थयिोफलिस, जो मूर्तभिंजकों के पक्षधर थे, ने पहले तो उन्हें पवत्रि प्रतमिाओं के पूजक, ईसाई धर्म के प्रचारक और रक्षक होने के कारण कैद करने का आदेश दयि, और फरि उन्हें नर्विासन की सजा दी, जहाँ उनकी मृत्यु हो गई[2416] ।

28 मार्च

15 मार्च (पुराना तरीका)

पवत्रि शहीदों अगपयिस, पुल्पयिस, टमिोलाउस, रोमलि्स, अलेक्जेंडर, अलेक्जेंडर, डायोनसियिस और डायोनसियिस की स्मृति

15 मार्च को स्मरणोत्सव

पवत्रि शहीद डायोक्लेटयिन के शासनकाल में रहते थे[2417] । अगपयिस गाजा के थे[2418] , टमिोलाउस पोंटस यूक्सनिस के थे[2419] , दोनों डायोनसियिस फोएनशियिा के त्रपिोली के थे, पब्लयिस और दोनों अलेक्जेंडर मस्रि के थे, जबकि रोमलि्स डायस्पोरा में चर्च का उप-डीकन था[2420] । वे सभी फलिस्तिीन के केसरयि में राज्यपाल उरवान के हाथों उस समय शुरू हुए ईसाइयों के उत्पीड़न के दूसरे वर्ष में पीड़ति हुए[2421] ।

उस समय, सभी प्रांतों और शहरों में एक फरमान जारी कयि गया था - ईसाइयों को मूर्तयिों की पूजा करने और उन्हें बलदिान चढ़ाने के लए मजबूर करने का। उस समय हो रहे एक मूर्तपिूजक त्योहार के अवसर पर, केसरयि में हर तरफ से इकट्ठा हुई भीड़ के लए एक तमाशा तैयार कयि जा रहा था; वशिेष रूप से, वहाँ बंदी बनाए गए ईसाइयों को यातना देने के लए तैयार कयि जा रहा था। वहाँ मौजूद सभी यूनानी इस तमाशे को देखने के लए इकट्ठा हुए।

सबसे पहले, बहुत यातनाओं के बाद, पवत्रि शहीद तीमथयिुस (जनिका स्मरण 19 अगस्त को कयि जाता है) को खंभे पर जला दयि गया; जसिके बाद पवत्रि शहीद अगपयिस और पवत्रि शहीद थयिोक्ला को जानवरों के सामने फेंक दयि गया (आज स्मरण कए जाने वाले अगपयिस नहीं, बल्कि उसी नाम के एक अन्य, जन्होंने सेंट थयिोक्ला के साथ पहले कष्ट सहे थे और अगस्त महीने में शहीद टमिोथी के साथ उनकी स्मृति मनाई जाती है)।

[2415] लैम्प्सैक्स शहर फ्राइजयि में स्थति था, जो एशयि माइनर का एक उत्तर-पश्चमिी प्रांत था, और यह हेलेस्पोंट के तट पर था, जसिे अब डार्डानेल्स के नाम से जाना जाता है।

[2416] संत यूस्कमिोन की मृत्यु 9वीं शताब्दी में हुई।

[2417] रोमन सम्राट डायोक्लेटयिन ने 284 से 305 तक शासन कयि और रोमन साम्राज्य के पूर्वी हस्सि पर शासन कयि। पश्चमिी हस्सि पर उनके मत्रि, मैक्समियिन का शासन था।

[2418] गाज़ा एशयि माइनर का एक प्रमुख तटीय शहर है, जो कभी फ़लिस्तिीनयिों का था।

[2419] पोंटस यूक्सनिस, यानी काला सागर। 'पोंटस यूक्सनिस' का शाब्दकि अर्थ है 'मेहमाननवाज़ सागर'। यह नाम रोमन उपनविेशवादयिों ने दयि था, जन्होंने इसके पास अपना बसेरा बनाया था।

[2420] डयिोस्पोल फलिस्तिीन में, यरूशलेम के उत्तर-पश्चमि में स्थति था।

[2421] अर्थात्, वर्ष 303 में।

जब यह खूनी तमाशा चल रहा था, छह बहादुर ईसाई युवक: पब्लियस, टमिोलाउस, रोमल्सि, दोनों अलेक्जेंडर और डायोनसियिस—जनिकी स्मृति आज मनाई जाती है—वे मसीह के प्रति उत्साह से इतने अधकि उत्साहति थे कि उन्होंने अपने हाथ खुद बांध लिए, यह संकेत देने के लिए कि वे मसीह के लिए पीड़ा सहना चाहते थे और, उनके प्रति प्रेम से, आग का सामना करने और जंगली जानवरों द्वारा खाए जाने के लिए तैयार थे। अखाड़े के ठीक केंद्र की ओर बढ़ते हुए, वे गवर्नर उर्वान के सामने रुके और ऊँचे स्वर में चल्लिाए:

'हम मसीही हैं!'

इगेमोन ने, यह देखकर कि वे अभी भी युवा थे, और उन्हें नष्ट नहीं करना चाहते थे, उन्हें मूर्तयिों की पूजा करने और अपनी युवावस्था के चरम पर खुद को नष्ट न करने के लिए धीरे से समझाना शुरू कयिा। जब वह उन्हें मनाने में वफिल रहा, तो उसने उन्हें जेल भेजने का आदेश दयिा।

कुछ दनिों बाद, संत अगपयिस को मसीह के कैदयिों की संख्या में शामलि कर लयिा गया; वह ईसाइयों के बीच सत्यनष्ठिा और प्रसद्धि वाले व्यक्ति थे, क्योंकि उन्होंने पहले भी बड़ी बहादुरी से यीशु मसीह के नाम की गवाही दी थी और इसके लिए पहले ही कई और तरह-तरह की यातनाएं सहन कर चुके थे। उस समय, अगपयिस को अपने सेवक, मस्रि के डायोनसियिस के साथ गरिफ्तार कयिा गया और उपरोक्त छह पवत्रि पुरुषों के साथ कैद कर दयिा गया, जसिसे उनकी कुल संख्या आठ हो गई।

इन पवत्रि शहीदों को लंबे समय तक जेल में रखा गया; उन्हें कई बार वभिन्नि तरीकों से यातना दी गई, फरि भी उन्होंने मसीह का त्याग नहीं कयिा।

अंत में, उन्हें सरि कलम करने की सज़ा सुनाई गई, और उसी दनि उन्होंने सभी ने चर्च के प्रमुख, यीशु मसीह के लिए अपने सम्मानति सरि बलदिान कर दिए, जनिके प्रति उन्होंने अपनी आत्माओं को सौंपा था और जनिसे उन्हें स्वर्ग में आनंदति होने वाली कलीसयिा में वजिय का मुकुट प्राप्त हुआ।

पवत्रि शहीद नकिान्डर का स्मरणोत्सव

१५ मार्च को स्मरण

संत नकिंदर डायोक्लेटयिन के शासनकाल के दौरान मस्रि में रहते थे। यह धर्मपरायण व्यक्ति पेशे से एक चकित्सिक थे। वह लगातार तहखानों में कैद पवत्रि शहीदों से मलिने जाते थे, जो मसीह के लिए पीड़ा सह रहे थे; वह उनके घावों का इलाज करते थे, उन्हें आवश्यक भोजन प्रदान करते थे, और उनके शवों को दफनाते थे।

एक अवसर पर, उन्होंने शहीदों के शवों को जंगली जानवरों द्वारा खाए जाने के लिए एक खेत में फेंका हुआ देखा, लेकनि वह दनि के समय उनके पास जाने की हम्मित नहीं कर सके, इस डर से कि कहीं उन्हें खुद को सताने वालों द्वारा पकड़ न लयिा जाए, क्योंकि वह एक कमजोर व्यक्ति थे और ईश्वर की कृपा से बलवान होने तक वे कठोर यातनाओं से डरते थे।

जब रात हुई, तो वह पवत्रि शहीदों के शवों के पास गया और उन्हें एक-एक करके अपने कंधों पर उठाकर, साफ-सुथरे कफ़न में लपेटकर, एक सुनसान जगह पर दफ़ना दयिा।

एक मूर्तपिूजक ने उसे यह करते हुए देखा और राज्यपाल को उसकी सूचना दे दी।

इसके बाद, संत नकिंडर को उसके यातना देने वालों ने पकड़ लयिा और उसे भयंकर यातनाएँ दीं, लेकनि उसने मसीह का त्याग नहीं कयिा; इसके बजाय, उसने उन सभी यातनाओं को साहस और आनंद के साथ सहन कयिा जनिसे वह पहले डरता था।

यातना देने वाले ने, उसे अपने बयानों में एक अटूट स्तंभ या एक अचल पहाड़ की तरह अडगि देखकर, आदेश दयिा कि उसके जीवति रहते हुए ही उसकी खाल उड़ा दी जाए और उसका सरि कलम कर दयिा जाए; इस प्रकार पवत्रि शहीद ने पुराने, सांसारकि मनुष्य को त्याग दयिा और नए, स्वर्गीय मनुष्य को धारण कयिा। उनका सम्मानति सरि कट जाने के बाद, वह एक सम्मानति अंग के रूप में, उनके स्वामी मसीह, सबसे सम्मानति सरि के साथ एक हो गया, और अन्य पवत्रि शहीदों के समूह के साथ परम पवत्रि त्रमिूर्ति की महमिा करते हुए, उनके साथ हमेशा के लिए राज्य करता है।

पुरोहति और शहीद संत अलेक्जेंडर की स्मृति

15 मार्च को स्मरण कयि जाता है

ऑरेलयिन के शासनकाल में ईसाइयों पर हो रहे उत्पीड़न के दौरान[2422] , पम्फलिया में[2423] , अंटोननिस गवर्नर था। पम्फलियिाई शहर सडिस में पहुँचने पर, उसने आदेश दयि कि उस शहर के पुरोहति अलेक्जेंडर को उसके सामने न्याय के लिए लाया जाए।

राज्यपाल ने मसीह के सेवक को अनेक यातनाओं और कष्टों से पीड़ति कयि। लेकनि पहले उसने उससे पूछा:

'तुम कौन हो?'

संत ने उत्तर दयि:

'मैं एक ईसाई हूँ, पद से एक पुरोहति, वचन के मसीह के झुंड का एक चरवाहा।'

गवर्नर ने उससे पूछा:

'मसीह का यह झुंड कहाँ है?'

संत ने उत्तर दयि:

मसीह ईश्वर ने संपूर्ण ब्रह्मांड में रहने वाले सभी लोगों को बनाया; जो उन पर वश्विास करते हैं, वे उनकी भेड़ें हैं। लेकनि जो अपने सृष्टकिर्ता से मुंह मोड़ गए हैं, जो सृष्टि और मानव हाथों के कामों की सेवा करते हैं – नर्जिीव मूर्तयिाँ, जैसे तुम – वे उनकी पवत्रि झुंड के नहीं हो सकते। न्याय के दनि, उन्हें बकरयिों के साथ बाईं ओर रखा जाएगा।

हेगेमोन ने उससे कहा:

'अब मैं तुम्हें दो कारणों से यातना दूँगा: पहला, ताकि तुम मुझे वे लोग बता दो जो मसीह में वश्विास रखते हैं, और दूसरा, ताकि तुम हमारे देवताओं को बलदिान अर्पति करो।'

तब राज्यपाल एंटोननिस ने संत अलेक्जेंडर से फरि पूछा:

'मसीह कौन था?'

संत ने उत्तर दयि:

'मसीह संसार का उद्धारकर्ता, जीवन और प्रकाश हैं, उन लोगों के लिए जो उन पर वश्विास करते हैं।'

गवर्नर ने कहा:

'क्रूस पर मरने वाला मनुष्य कैसे उद्धारकर्ता हो सकता है?'

अलेक्जेंडर ने उत्तर दयि:

'वास्तव में, यह अद्भुत और सचमुच आश्चर्यजनक है कि उन्होंने, अपनी स्वैच्छकि इच्छा से अपने ही शरीर में क्रूस और मृत्यु को स्वीकार कर, अपनी दव्यिता के द्वारा अधोलोक की शक्ति को नष्ट कयि, अधोलोक में बंधे और बंद कए गए लोगों को मुक्त कयि, मृत्यु को मृत्यु पर वजिय दी, और कब्र से जी उठे। और न केवल वह स्वयं मृतकों में से जी उठे, बल्कि उन्होंने अपने साथ कई मृतकों को भी जलिाया: *'और कब्रें खुल गईं; और सो गए हुए कई संतों के शरीर जी उठे, और उसकी पुनरुत्थान के बाद कब्रों से नकिलकर पवत्रि नगर में गए'* (मत्ती 27:52–53) – यरूशलेम। मसीह ने संपूर्ण मानव जाति को अपने साथ जीवति कर दयि।

गवर्नर ने उससे कहा:

'तुम होश में नहीं हो, क्योंकि जो यहूदयिों द्वारा यातना दए जाने पर स्वयं की भी मदद नहीं कर सके, वह दूसरों की मदद कैसे कर सकता था?'

संत ने उत्तर दयि:

'मैं पागल नहीं हूँ, बल्कि तुम हो, जो आध्यात्मकि रूप से अंधे हो और इसीलिए हमारे उद्धार के रहस्य को नहीं समझ पा रहे हो, जो प्रभु मसीह द्वारा साकार हुआ है।'

तब राज्यपाल ने संत अलेक्जेंडर को यातनाएँ देने का आदेश दयि। उन्हें चाबुक से पीटा गया, पहयि पर यातना दी गई, उबलते हुए गोंद और तेल के कड़ाही में फेंका गया, और जलती हुई भट्टी में जलाया गया। लेकनि इन सभी यातनाओं के दौरान, प्रभु यीशु की कृपा से, संत सुरक्षति रहे। जब उन्हें बहुत अधकि ताप वाली भट्टी में फेंका गया, तो दुष्ट यातना

[2422] *ऑरेलयिन*, रोमन सम्राट, ने 270 से 276 तक शासन कयि।

[2423] पम्फलिया एशयि माइनर का एक क्षेत्र है।

देने वालों ने लपटों के भीतर दो युवा पुरुषों को देखा, जनिका रूप अद्भुत था, जो पवत्रि शहीद के साथ मलिकर ईश्वर की स्तुति कर रहे थे। ये पवत्रि स्वर्गदूत थे, जो संत के लिए भट्टी की लपटों को ठंडा कर रहे थे। लोग यह देखकर चकति रह गए कि भट्टी में एक व्यक्ति को फेंका गया था, फरि भी उसमें तीन थे।

हालाँकि, राज्यपाल और उसके साथियों ने इन सभी शानदार चमत्कारों को जादू-टोना माना, क्योंकि वे मसीह ईश्वर की सर्वशक्तमिान शक्ति में वश्विास नहीं करते थे।

हालाँकि, राज्यपाल के एक सेवक ने मसीह में वश्विास कर लयिा और, जमीन पर गरिकर, संत के सामने झुक गया और उनसे मसीह के साथ रहने की कृपा देने का आग्रह कयिा। राज्यपाल ने तुरंत इस सेवक को अपनी तलवार से मार डाला।

जब संत अलेक्जेंडर भट्टी से बनिा कसिी चोट के बाहर नकिले, तो राज्यपाल ने उन्हें फाँसी देने और तेज लोहे से यातना देने का आदेश दयिा। और उन्होंने संत को तब तक यातना दी जब तक कि उनका शरीर सरि से पैर तक घावों से ढक नहीं गया।

जो संत को यातना दे रहे थे, वे उनकी दृढ़ता देखकर चकति रह गए और कहने लगे:

'यह आदमी इतनी यातना कैसे सहन कर सकता है?! उसकी हड्डयिाँ पहले से ही दखि रही हैं।'

इसके बाद, संत को दूसरी बार आग से यातना दी गई, लेकनि उन्हें उससे कोई चोट नहीं लगी।

फरि उन्होंने संत के शरीर में लोहे की कीलें ठोंक दीं और उसके सभी आंतों को बाहर नकिाल लयिा। इसके बाद, संत को जंगली जानवरों के सामने फेंक दयिा गया, लेकनि जानवरों ने उसे छुआ भी नहीं।

मसीह के इस शहीद को कई अन्य क्रूर यातनाएँ दी गईं, लेकनि इन सबके दौरान वह दृढ़ और साहसी बना रहा, ताकि जो भी उसके कष्टों को देखता था, वह उसकी सहनशक्ति की ताकत से चकति रह जाता था, जो मानवीय समझ से परे थी।

अंत में, पवत्रि शहीद अलेक्जेंडर का सरि तलवार से काट दयिा गया।

जहाँ तक राज्यपाल एंटोननिस का सवाल है, जो उस समय अपने न्यायाधीश की कुर्सी पर बैठे थे, उन्हें ईश्वर ने भूत-प्रेत बाधा की सजा दी; उन्हें उन राक्षसी देवताओं द्वारा प्रताड़ति कयिा जाने लगा जनिकी उन्होंने सेवा की थी। उनके नौकर उन्हें घर ले गए, रास्ते में वे जोर-जोर से रोते और वलिाप करते हुए जा रहे थे, लेकनि इससे पहले कि वे उन्हें घर ला पाते, उन्होंने अपनी दयनीय आखरिी साँस ले ली।

हालाँकि, संत अलेक्जेंडर ने प्रभु मसीह और उनके पवत्रि स्वर्गदूतों के साथ स्वर्गीय क्षेत्रों में अपनी जगह ले ली। जहाँ तक राज्यपाल का सवाल है, उसे शैतान और उसके सेवकों के साथ अनंतकालकि यातना में डाल दयिा गया।

संत अलेक्जेंडर के सरि कलम कए जाने के बाद, एक ईस्टाथयिस नामक धर्मी और ईसाई व्यक्ति ने उस पवत्रि शहीद के कष्ट-सहष्णिु शरीर को सम्मानपूर्वक दफनाया और मसीह ईश्वर की महमिा और स्तुति की।

29 मार्च

16 मार्च (पुराना तरीका)

उसी दनि, अनाज़ार्बस के पवत्रि शहीद जूलयिन का स्मरणोत्सव, जन्होंने तीसरी शताब्दी में मैक्समियिन के शासनकाल के दौरान अंतीयक में यातनाएँ झेलीं।

उसी दनि, पुरोहति-शहीद और रोम के पोप, संत अलेक्जेंडर की स्मृति है, जन्हिें 119 ईस्वी में सम्राट हेड्रयिन के आदेश पर एक भट्टी में जला दयिा गया था।

इसी दनि, नोवगोरोड के आर्चबशिप संत सेरापयिन का नधिन हुआ, जनिका नधिन 1516 में हुआ था।

प्रेरति सेंट अरस्टिोबुलस की स्मृति

16 मार्च को स्मरण कयिा जाता है

संत अरस्तिोबुलस सत्तर प्रेरतिों में से एक थे, जो साइप्रस के मूल नविासी थे[2424] । वह संत प्रेरति बरनबास के भाई थे, जो स्वयं भी सत्तर प्रेरतिों में से एक थे।

प्रभु के स्वर्गारोहण के बाद, उन्होंने संसार के शकि्षक, प्रेरति पौलुस के साथ वभिन्नि देशों की यात्रा करते हुए प्रचार कयिा। प्रेरति पौलुस ने रोमयिों के नाम अपनी पत्री में उनका उल्लेख कयिा है, जहाँ वे कहते हैं: *'अरस्तिोबुलुस के घराने के वशि्वासयिों को नमस्कार कहना'* (रोमयिों 16:10), अर्थात् अरस्तिोबुलुस के घराने या परविार से, क्योंकि उस समय अरस्तिोबुलुस और बरनबास के कुछ रशि्तेदार रोम में रह रहे थे। जब पौलुस रोमयिों को पत्र लखि रहे थे, तब अरस्तिोबुलुस उनके साथ थे; इसीलिए पौलुस ने पत्र में अपने और अरस्तिोबुलुस दोनों की ओर से अरस्तिोबुलुस के रशि्तेदारों को नमस्कार शामलि कयिा।

जब संत पौलुस ने कई बशिपों का अभषिेक कयिा, और उन्हें सभी शहरों और देशों में सत्य के वचन का प्रचार करने के लिए भेजा, तो उन्होंने अरस्तिोबुलुस का भी बशिप के रूप में अभषिेक कयिा और उसे ब्रटिेन में प्रचार करने के लिए भेजा[2425] , उन लोगों के पास जो अवशि्वासी और क्रूर थे[2426] ।

वहाँ, अरस्तिोबुलुस ने मसीह के सुसमाचार के प्रचार में कड़ी मेहनत की और इन क्रूर लोगों के हाथों बहुत कष्ट सहे: कभी-कभी वे उसे नर्दियता से पीटते थे; तो कभी-कभी वे उसे गाली-गलौज करते हुए सड़कों पर घसीटते थे। संक्षेप में, उसने इन लोगों से बहुत अपमान और यातनाएँ झेलीं, जब तक कि उसने उन्हें मसीह की कृपा से प्रबुद्ध नहीं कर दयिा और मसीह में वशि्वास सखिाया। तब संत ने उनका बपतस्मिा दयिा, उनके लिए एक चर्च का नर्मिाण कयिा, पुरोहतिों और डकिनों की नयिुक्ति की, और वहीं देहांत हो गया[2427] ।

पवत्रि शहीद सावनि की स्मृति

16 मार्च को स्मरणोत्सव

मस्रि में हर्मोपोलीस शहर, पवत्रि शहीद सावनि का पैतृक नगर था, जो उस पूरे प्रदेश में एक प्रसद्धि व्यक्ति और अपने शहर में एक नेता थे।

डायोक्लेटयिन के शासनकाल में ईसाइयों के खलिाफ शुरू कए गए उत्पीड़न के कारण, जब कई ईसाइयों को यातनाएँ दी गईं और मौत की सज़ा दी गई, संत सावनि ने अपना घर, अपना अधकिार, अपना धन-संपत्ति और अपने सभी रशि्तेदारों को छोड़ दयिा, और अन्य ईसाइयों के साथ एक दूर-दराज के गाँव में शरण लेने के लिए गुप्त रूप से हर्मोपोलीस शहर छोड़ दयिा।

एक छोटे से घर में बस जाने के बाद, उन्होंने अपने सभी दनि-रात उपवास और प्रार्थना में बतिाए।

मूर्तपिूजकों ने हर्मोपोलीस के राजकुमार सवनि को यातना देने के लिए बहुत लगन से खोजा, लेकनि वे उसे कहीं नहीं ढूंढ पाए, जसिसे उन्हें बहुत दुख हुआ।

एक भखिारी, जो आशीषति सावनि के पास भीख माँगने आता था और उनके हाथों से भोजन तथा अपनी सभी आवश्यक वस्तुएँ प्राप्त करता था, ने वशि्वासघाती यहूदा के उदाहरण का अनुसरण करते हुए, वधिर्मयिों के पास जाकर कहा:

'अगर मैं तुम्हें वह दखिा दूँ जसिे तुम ढूँढ़ रहे हो—सावनिस—तो तुम मुझे क्या दोगे?'

उन्होंने उसे दो सोने के सक्कि दे दए[2428] । फरि वे उसके पीछे हो लिए, उस घर तक पहुँचे जहाँ संत रहते थे, उसे घेर लयिा और दरवाज़ा खटखटाया।

[2424] साइप्रस भूमध्य सागर के उत्तर-पूर्वी भाग में एक द्वीप है।

[2425] 'ब्रटिेन' से हमारा तात्पर्य ससिलिियिन द्वीपसमूह और कॉर्नवाल से है।

[2426] ब्रटिेन में केल्ट्स – एक कठोर और युद्धप्रयि लोग – रहते थे।

[2427] कुछ लोगों का मानना है कि यह संत अरस्टिोबुलस पवत्रि प्रेरतिों जेम्स और जॉन के पति थे और उन्हें 'जेबेदी' उपनाम से जाना जाता था; लेकनि यह बलि्कुल सही नहीं है। यह अधकि संभावति है कि यह संत अरस्टिोबुलस साइप्रस से आए थे, उनके भाई बार्नबास थे; और वे जेम्स और जॉन के पति से अलग व्यक्ति थे, जन्हिें ज़ेबेदी कहा जाता था (यह कोई उपनाम नहीं था, बल्कि उनका असली नाम था)।

[2428] *'ज़ूलाटनकिा* आम तौर पर अनशि्चति मूल्य का एक सोने का सक्कि होता है।

उस समय, संत सावनि के साथ छह ईसाई थे। यह सोचकर कि भाइयों में से कोई एक आया है, उन्होंने घर का दरवाज़ा खोल दिया।

तब मूर्तिपूजक जल्दी से घर में घुस आए, सभी को पकड़ लिया और बाँध दिया। हालाँकि, संत सावनि को विशेष रूप से कसकर बाँधा गया था - दो भारी ज़ंजीरों से - और फिर मुकदमे के लिए उस देश के राज्यपाल, एरियनस नामक व्यक्ति के सामने पेश किया गया।

संत सावनि से उनके मुकदमे के दौरान लंबी पूछताछ की गई और उन्हें कई बार मूर्तियों को बलिदान चढ़ाने के लिए मजबूर किया गया। लेकिन उन्होंने मसीह का त्याग नहीं किया। परिणामस्वरूप, उन्हें और भी क्रूरतापूर्वक यातना दी गई, तेज लोहे से पीड़ा दी गई और आग से झुलसाया गया।

अंततः संत को नदी में डुबो दिया गया[2429] ।

[2430]इस प्रकार संत ने अपना पराक्रम पूरा किया और पराक्रम प्रदान करने वाले मसीह के पास चले गए, ताकि उनसे विजय का मुकुट प्राप्त कर सकें।

उसके साथ ही, उसके साथ पकड़े गए अन्य छह ईसाइयों को भी यातनाएँ दी गईं; और उन्हें प्रभु ने स्वर्ग में सावनि के समान ही महिमा से पुरस्कृत किया।

पवित्र शहीदों ट्रॉफिमि और फाल की शहादत

16 मार्च को स्मरण किया जाता है

एशिया माइनर में लिकोस और मेन्डर नदियों के बीच, लाओडिकिया शहर (सीरिया वाला नहीं, बल्कि कैरिया वाला[2431]) में, दो पुरोहित थे - जो रक्त से भाई थे - जिनका नाम ट्रॉफिमिस और फालस था।

वे कैरिया के मूल निवासी थे, स्ट्रैटोनिकिया नगर के रहने वाले। दोनों ही विश्वास में दृढ़ और परमेश्वर के वचन के प्रचारक थे। भटक गए लोगों की आत्माओं को उद्धार के मार्ग पर ले जाने की इच्छा से, उन्होंने यूनानियों के साथ बहस की और उनकी अधार्मिकता के लिए उन्हें अथक रूप से फटकारा।

एक दिन, धर्महीन मूर्तिपूजकों ने, संतों की फटकार सहन न कर सके, दोनों को पकड़ लिया और उन्हें बेड़ियों में जकड़ दिया।

उस समय, डायोक्लेटियन और मैक्सिमियिन के शासनकाल के दौरान, हेगेमोन एस्क्लेपियोडोتس कैरिया पहुँचे और लाओडिकिया से बहुत दूर नहीं, वोफोर नामक एक शहर में बस गए।

लाओदिकिया में सैन्य छावनी के कमांडर ने हिरासत में लिए गए दो ईसाई पुरोहितों के बारे में हेगेमोन को खबर भेजी और पूछा कि उनके साथ क्या किया जाए। उसे जवाब मिला: दोनों को पत्थर मार-मार कर मौत के घाट उतार दिया जाए।

जब पवित्र शहीदों ट्रॉफिमिस और फालस को मृत्युदंड देने के लिए बाहर ले जाया गया, तो उन्हें ईसाइयों ने घेर लिया जिन्होंने उन्हें पत्थरों से बचाया, ताकि उन पर फेंका गया एक भी पत्थर उन्हें कोई नुकसान न पहुँचा सके; इसके विपरीत, पत्थर फेंकने वाले, अपनी इच्छा के विरुद्ध, उन पत्थरों से खुद को ही चोट पहुँचा बैठे। लंबा समय व्यर्थ में परिश्रम करने और थक जाने के बाद, यातना देने वालों ने पत्थर फेंकना बंद कर दिया।

यह जानकर, सैन्य गार्ड के कमांडर ने दोनों संतों को रिहा कर दिया। हालाँकि, उन्होंने निडर होकर सभी को ईसाई धर्म के बारे में सिखाना और यूनानियों के अविश्वास की निंदा करना जारी रखा।

कुछ समय बाद, शहर के मजिस्ट्रेटों ने उन्हें फिर से हिरासत में ले लिया और वॉफ़ोर शहर के हेगेमोन के पास भेज दिया, यह कहते हुए: 'हमने इन लोगों पर पत्थर फेंके, जैसा आपने आदेश दिया था, लेकिन पत्थर उन पर लगे ही नहीं; इसलिए, हम उन्हें आपके पास भेज रहे हैं।'

राज्यपाल ने संतों को फांसी देने और उनके शरीरों को तेज लोहे के औजारों से निर्दयतापूर्वक यातना देने का आदेश दिया।

[2429] बेशक, नील नदी।

[2430] संत की मृत्यु वर्ष 287 में हुई।

[2431] *कैरिया* – एशिया माइनर का एक प्रांत, जो उत्तर में लिडिया और पूर्व में फ्रीजिया से सटा हुआ था।

यातना दिए जाने के दौरान, उन्होंने ऊँचे स्वर में पुकारा:

'हम मसीही हैं! हम मूर्तियों की पूजा नहीं करेंगे और न ही सांसारिक राजाओं के अधर्मी आदेशों का पालन करेंगे!'

इस सारी यातना के बाद, राज्यपाल ने उन्हें सूली पर चढ़ाने की सज़ा सुनाई, यह कहते हुए:

'उन्हें भी उसी धोखेबाज़ की तरह सूली पर चढ़ा दो, जिस पर वे विश्वास करते हैं।'

फिर संतों को शहर से बाहर उस स्थान पर ले जाया गया जहाँ उनके लिए सूलीयाँ तैयार की गई थीं। वे आनंद से चले, धन्यवाद देते हुए और परमेश्वर की स्तुति करते हुए कि उन्होंने उन्हें ऐसी मृत्यु के लिए योग्य समझा और, इसके माध्यम से, उनके दुख को प्रभु यीशु के सबसे पवित्र कष्ट और क्रूस पर चढ़ाए जाने के समान बना दिया।

उनके पीछे लोगों का एक बड़ा हुजूम - पुरुष और महिलाएँ - चल रहा था, जो उनकी मृत्यु का साक्षी बनना चाहते थे।

जब उन्हें सूली पर चढ़ाने के लिए ले जाया गया, तो कुछ ईसाइयों ने उनके लिए थोड़ा भोजन लाया और उन्हें उसे चखने के लिए आग्रह किया।

जो लोग पूछ चुके थे उन्हें निराश नहीं करना चाहकर, उन्होंने लाई गई चीज़ों में से थोड़ा चखा; बाकी उन्होंने अपने आसपास खड़े लोगों में बाँट दी।

फिर उन्हें लोहे के कीलों से सूली पर चढ़ाया गया और प्रभु यीशु की भाँति क्रूस पर चढ़ाया गया।

क्रूस पर लटके हुए, उन्होंने लोगों से लंबी बातें कीं, उन्हें परमेश्वर के ज्ञान और पवित्र विश्वास की शिक्षा दी।

इसके बाद लोगों में रोना-धोना मच गया: कुछ लोगों ने राज्यपाल की क्रूरता के लिए उसे डांटा, कि उसने किसी भी गलत काम से बेगुनाह लोगों को इतनी भयानक मृत्यु की सजा दी। हालांकि, अन्य लोग चिल्ला उठे:

'महिमा तेरी हो, हे ईश्वर, क्योंकि यीशु की शक्ति हमारे समय में प्रकट हुई है!'

एक यहूदी महिला ने, जो वहाँ खड़ी थी, क्रूस पर लटके संतों के सामने झुककर कहा:

'धन्य हैं वे माताएँ जिन्होंने इन पुरुषों को जन्म दिया!'

उनकी माँ भी वहाँ खड़ी थीं, अपने दोनों बेटों के दुख को दृढ़ता से निहार रही थीं।

उपस्थित कई लोगों ने संतों से टपकते पवित्र रक्त को इकट्ठा किया; कुछ ने इस रक्त में अपनी रूमाल डुबोई, जबकि अन्य ने अपनी अंगूठियाँ डुबोईं, अपने रोगों—आध्यात्मिक और शारीरिक दोनों—के उपचार की कामना में।

मसीह के शहीदों, ट्रॉफिमिस और फाल ने, ईश्वर से प्रार्थना करने के बाद, 16 मार्च को अपनी पवित्र आत्मा को ईश्वर के सुपुर्द कर दिया; उनके अंतिम संस्कार के लिए, विश्वासियों ने स्वच्छ कफ़न और सुगंधित धूप तैयार की।

कारागारपाल भी उनके बलिदान स्थल पर आया और मसीह के शहीदों के सामने सिर झुकाकर, पूरे लोगों के सामने इस बात का इकरार किया कि उसने उन दो पवित्र शहीदों को स्वर्ग की ओर बढ़ते हुए देखा था, जिनके साथ तीन स्वर्गदूत थे जो उनसे बात कर रहे थे।

बाद में, लोग राज्यपाल के पास गए और उनसे अनुरोध किया कि वे शहीदों के पवित्र शरीरों को सूली से उतारने और उन्हें दफनाने की अनुमति देने का आदेश दें।

यह अनुरोध सुनकर, राज्यपाल पहले तो क्रोधित हो गया और उसने अपने सैनिकों को आए हुए लोगों को पीटने का आदेश दिया। लेकिन कुछ देर बाद वह शांत हो गया और कहा कि जो कोई भी चाहे, वह मृतकों के शव ले जा सकता है।

इसके बाद, संतों को सूली से उतारकर एक नई ताबूत में रखा गया। इस समय, ईसाइयों के बीच इस बात पर विवाद छिड़ गया कि इन पवित्र शरीरों को कहाँ उचित दफन दिया जाए – कुछ उन्हें यहाँ रखना चाहते थे, तो कुछ वहाँ।

शाम हो गई। लोग पवित्र शहीदों के शवों को नहीं छोड़ रहे थे, बल्कि वे सारी रात जलती मोमबत्तियों और भजन-कीर्तन के साथ उनके पास ही रहे।

जब सुबह हुई, तो राज्यपाल की पत्नी ने धूप और सुगंधित तेल लाए और उन्हें पवित्र शहीदों के शरीरों पर डाल दिया। फिर उन्होंने ताबूत पर एक कीमती कफ़न ओढ़ाया और ज़ोर से कहा:

'कल रात, एक सपने में, मैंने इन लोगों को देखा, जो ईश्वर द्वारा स्वर्गदूतों के साथ मेरे पति को इन शहीदों के अन्यायपूर्ण हत्या के लिए दंडित करने के लिए भेजे गए थे।'

उसने विस्तार से बात की, अपने पति की क्रूरता और दया की कमी के लिए उन्हें फटकारते हुए।

पवत्रि शहीदों की माता और दो सम्मानति पुरुष, जोसमि और आर्टेमयिस, जो पवत्रि शहीदों के साथी नागरकि थे, ने उनके पवत्रि शरीरों वाले सम्मानति ताबूत को उठाया और इसे स्ट्रैटोनकिा शहर ले गए, जहाँ उन्होंने संतों को सम्मान के साथ दफनाया।

इस बीच, वह दनि नज़दीक आ रहा था जसि दनि दुष्ट मूर्तपिूजक डायोक्लेटयिन का जन्मदनि मनाते थे।

हेगेमोन, लाओडकियिा पहुँचने पर, ने अपने दुष्ट राजा के सम्मान में वहाँ एक बड़ा उत्सव आयोजति कयिा।

लेकनि पवत्रि शहीदों के बहाए गए नर्दिोष रक्त के लिए ईश्वर की सजा अचानक उस पर आ पड़ी: वह अचानक जमीन पर गरि पड़ा और एक भूतहा व्यक्तकिी तरह तड़पने लगा, उसके शरीर का हर अंग कांप रहा था।

जो भी उपस्थति थे और इस दृश्य को देख रहे थे, वे भयभीत हो गए।

हालाँकहिेगेमोन चल्लिाया:

'देव ज्यूस कहाँ हैं?[2432]

'देव हरक्यूलसि कहाँ है![2433]

'देवता हर्मीस कहाँ हैं?[2434]

'अन्य देवता और देवयिाँ कहाँ हैं? वे आकर मेरी मदद करें!'

तब शासक ने कहा:

– मैंने उनकी व्यर्थ पूजा की! अब मैं स्वर्ग में रहने वाले ईश्वर और उनके सेवकों, ट्रॉफमिस और फालस द्वारा भेजी गई शाश्वत अग्नकिे सामने आत्मसमर्पण करता हूँ।

जैसे ही उसने यह कहा, वह ज़ोर से चल्लिाया, ताकउिसकी कराह हर जगह सुनी जा सके। अपने यातनाओं के बोझ तले, वह अपने दाँतों से अपना ही मांस नोचने और अपनी जीभ काटने लगा; और इस तरह पीड़ति होकर, उसने अपनी दुर्भाग्यपूर्ण आत्मा को त्याग दयिा।

यातना देने वाला, कड़वाहट से रोते हुए, अपने अधर्मी देवताओं के पास हाडीस में दुख सहने के लिए चला गया; परन्तु पवत्रि शहीदों ट्रोफमिस और फालस आनंदपूर्वक प्रभु और अपने परमेश्वर के पास चले गए, ताकवि स्वर्ग में पति, पुत्र और पवत्रि आत्मा के अतमिहमिामय सहिासन के सामने खड़े होकर, हमेशा राज्य करें। परमेश्वर की महमिा हमेशा और हमेशा के लिए हो। आमीन[2435] .

पवत्रि शहीद पोप की स्मृत।

16 मार्च को स्मरणोत्सव

पवत्रि पोप लायकोनयिा के लारांडा नगर के मूल नविासी थे और सम्राट मैक्समियिन के शासनकाल में जीवति थे। ईसाई धर्म की स्वीकारोक्तकि कारण उन्हें उनके मूल नगर में शहीद कयिा गया, फरि में डायोक्लेटयिन के अधीन, और अंततःइसौरयिा की सेल्यूकयिा में। उन्हें कोड़ों से पीटा गया, लोहे की पंजाओं से यातना दी गई, लोहे के कीलों से जड़े जूतों में लंबी दूरी तक चलने के लिए मजबूर कयिा गया, और अंततःएक पेड़ से बाँधकर उनकी जान ले ली गई।

30 मार्च

17 मार्च (पुराने कैलेंडर के अनुसार)

[2432] *ज्यूस* (या जुपटिर) को यूनानयिों और रोमनों द्वारा प्रमुख देवता के रूप में पूजा जाता था – देवताओं और मनुष्यों के पति, स्वर्ग और पृथ्वी, गरज और बजिली, हवाओं और बारशि के शासक।

[2433] *हेराक्लेस* (या हरक्यूलसि) – एक देवता जो, वधिर्मी लोगों के अनुसार, महान शारीरकि शक्तकि धनी थे और जन्हिोंने, जैसा कग्रिीक पौराणकि कथाओं में वर्णति है, वभिन्नि प्रकार के अनेक पराक्रम कए, जैसे कसिथिरोन सहि पर उनकी वजिय, और इसी तरह।

[2434] *हेर्मसि* (या मर्करी) – एक पगान देवता जो, ग्रीक पौराणकि कथाओं के अनुसार, ज्यूस और एटलस की बेटी माया के पुत्र थे, जनिका जन्म आर्कैडयिा के माउंट साइलेन पर हुआ था। ग्रीक पौराणकि कथाओं में उनके चरत्रि की एक वशिष्टि वशिषता उनकी चालाकी और सूझबूझ है।

[2435] पवत्रि शहीदों ट्रॉफमिस और फाल्स का नधिन लगभग 300 ईस्वी में हुआ।

परमेश्वर के पुरुष, पूजनीय अलेक्सयिस का जीवन

17 मार्च को स्मरण कयि जाता है

रोम में[2436] , आर्कैडयिस और होनोरयिस के शासनकाल के दौरान, यूथमियिन नाम का एक धर्मपरायण व्यक्ति रहता था: वह एक बहुत ही प्रतष्ठिति और अमीर कुलीन व्यक्ति था, इतना कि उसके तीन हजार तक नौकर भी रेशमी वस्त्र पहनते थे; फरि भी, इन सब के बावजूद, वह पूरी तरह से खुश नहीं था, क्योंकि उसकी पत्नी की बाँझपन के कारण, उसके कोई संतान नहीं थी। यूथमियन ईश्वर की आज्ञाओं का कड़ाई से पालन करते थे और अपनी दयालुता के लिए प्रसद्धि थे: वे अपने घर में हर दनि वधिवाओं, अनाथों, गरीबों, यात्रयिों और बीमारों के लिए तीन भोजन तैयार करते थे; वे

[2436] रोम, रोमन साम्राज्य की राजधानी, मध्य इटली में स्थति है, जो समुद्र के संगम पर टबिर नदी के दोनों कनिारों पर फैला हुआ है। प्राचीन कविदंती के अनुसार, इसकी स्थापना 753 ईसा पूर्व में रोमुलस (मृत्यु 707 ईसा पूर्व) द्वारा पलाटनि हलि पर की गई थी, और बाद में यह छह पड़ोसी पहाड़यिों तक फैल गई, इसीलिए इसे 'सात पहाड़यिों का शहर' कहा जाता है; रोम की इन सात पहाड़यिों का उल्लेख प्रकाशतिवाक्य की पुस्तक (प्रकाशतिवाक्य 17:9) में भी मलिता है। अपने इतहिास की शुरुआत में, रोम केवल मट्टिी से बने और खपच्चयिों से ढके झोपड़यिों के समूहों से बना था, लेकनि बाद में यह पड़ोसी लोगों - सैबन्सि, वोल्सी, लैटनि, गॉल और इट्रस्केन - के खलिाफ सफल युद्धों के परणिामस्वरूप समृद्ध हो गया, जन्हिें सभी को 273 ईसा पूर्व में रोमन शासन के अधीन लाया गया था। तभी रोमनों ने इटली के बाहर रहने वाले लोगों को वश में करना शुरू कयि, और जल्द ही कार्थेज, मैसडिोनयिा, ग्रीस, इलरियिा और एशयिा - जो 132 ईसा पूर्व में पेरगामोन के राजा अटालस तृतीय की वसीयत के तहत शांतपिूर्वक रोमनों के पास आ गए थे - रोमन प्रांत बन गए। 63 ईसा पूर्व में, तीन महीने के अभयिान के बाद, रोमन जनरल पोम्पे ने यहूदयिा में प्रवेश कयि और यरूशलेम पर कब्जा कर लयि; उस समय से यहूदी रोम के प्रजा बन गए और हमेशा के लिए अपनी स्वतंत्रता और आजादी से वंचति हो गए। पहले रोमन सम्राट अगस्टस के अधीन—जसिके शासन के 30वें वर्ष में प्रभु यीशु मसीह का जन्म हुआ था—मस्रि भी रोमन शासन के अधीन आ गया। इस प्रकार, उद्धारकर्ता मसीह के आगमन से पहले, रोम ने शक्ति और महमिा प्राप्त कर ली थी, और उस समय ज्ञात लगभग सभी राष्ट्रों को अपने साम्राज्य में शामलि कर लयि था; दुनयिा के हर कोने से धन-संपत्ति इसमें बहाया जाता था; सभी राष्ट्रों के मामलों का फैसला रोमन सीनेट में कयि जाता था। लेकनि रोम की शक्ति का चरम उसके पतन की शुरुआत का प्रतीक था। अनवरत युद्धों ने रोमन नागरकिों के समृद्ध वर्ग को तबाह और कमजोर कर दयि, जबकि अमीर और कुलीन परविार, बर्बाद हो चुके परविारों की जमीनें कौड़यिों के दाम खरीदकर, और भी अमीर हो गए; परणिामस्वरूप, रोम की आबादी दो वर्गों में वभिाजति हो गई: अमीर और गरीब। जहाँ पहले वालों की वलिासति लगभग अवश्वसनीय स्तर पर पहुँच गई, वहीं दूसरे गरीबी और उत्पीड़न में जीते थे; पूरी-पूरी दौलत एक ही भोजन पर खर्च हो जाती थी, जबकि गरीबों के पास रोटी का एक टुकड़ा भी नहीं था। ग्रीस के वजिय के समय से, रोम में दार्शनकि शकि्षाएँ फैलने लगीं, जसिसे लोकप्रयि धर्म कमजोर पड़ा, और अवश्वास एक वशिाल लहर की तरह फैल गया, पहले उच्च वर्गों में और फरि नम्नि वर्गों में: नाट्य प्रदर्शनों में धार्मकि वश्वास के सद्धिांतों का खुलेआम मज़ाक उड़ाया जाता था। अवश्वास के साथ-साथ अनैतकिता भी फैलने लगी; व्यभचिार, जो अस्वाभावकि वकि्रतयिों (रोमयिों 1:26-27) तक पहुँच गया, ने नैतकिता की पूर्व शुद्धता और कठोरता की जगह ले ली। और केवल ईसाई धर्म की पुनरुज्जीवति करने वाली शक्ति ही रोम को पूर्ण वनिाश से बचा सकी। रोम में ईसाई धर्म बहुत जल्दी ही जड़ें जमाने लगा। परंपरा के अनुसार, सम्राट टबिेरयिस (14–37 ईस्वी) ने पहले ही मसीह के बारे में एक उपदेश सुन लयि था; उनके उत्तराधकिारी, क्लॉडयिस (41–54 ईस्वी) के शासनकाल के दौरान, रोम में ईसाई यहूदयिों और यहूदयिों के बीच गंभीर ववािद हुए। नीरो (54–68) के अधीन, प्रेरति पौलुस के उपदेश के कारण, जो पूरे दो साल तक चला (प्रेरतिों के काम 28:30), ईसाइयों की संख्या बढ़ गई; दूसरे सम्राट के शासनकाल में ईसाइयों का पहला उत्पीड़न हुआ, जनि पर रोम में आग लगाने का अन्यायपूर्ण आरोप लगाया गया था: इस उत्पीड़न के दौरान, संत पतरस और पवत्रि पौलुस, प्रेरतिों ने शहादत प्रापत की। लेकनि इस उत्पीड़न ने ईसाई धर्म को नष्ट नहीं कयि: डोमशियिन (81–91 ईस्वी) के अधीन, यह सम्राट के अपने परविार तक भी पहुँच गया: डोमशियिन के भाई, फ्लावयिस क्लेमेंट को ईसाई होने के कारण मृत्युदंड दयि गया; इस सम्राट के शासनकाल में, संत जॉन द थयिोलोजयिन को पतमोस द्वीप पर नर्विासति कर दयि गया था, जहाँ उन्हें दुनयिा और चर्च के भवष्यि के भाग्य के बारे में एक प्रकटवाक्य मलिा (प्रकाशतिवाक्य 1:9)। नीरो और डोमशियिन के समय से, ईसाइयों पर अत्याचार 313 तक जारी रहे। सम्राट डायोक्लेटयिन (285–306) के अधीन ये वशिेष रूप से कठोर थे, जन्होंने रोमन साम्राज्य के वभिाजन की शुरुआत की; उन्होंने मैक्समियिन को अपना सह-शासक चुना और राज्य को अपने और मैक्समियिन के बीच वभिाजति कर दयि, जसिके बाद प्रत्येक सह-शासक ने एक सहायक चुना, जसिसे साम्राज्य चार भागों में वभिाजति हो गया। डायोक्लेटयिन और मैक्समियिन के त्यागपत्र के बाद, सत्ता कॉन्स्टेंटयिस क्लोरस और गैलेरयिस के पास चली गई; पहले के उत्तराधकिारी उनके बेटे कॉन्स्टेंटनि (306) हुए, जन्होंने 313 का फरमान जारी कयि जसिमें कसिी को भी ईसाई धर्म अपनाने की अनुमति दी गई। एकमात्र शासक (324) बनने के बाद, उन्होंने अपनी राजधानी पूर्व की ओर बज़िेन्टयिम ले गए, जसि बाद में कॉन्स्टेंटनिोपल के नाम से जाना गया। वहाँ उन्होंने अपने चारों ओर ईसाइयों को इकट्ठा कयि, जन्हिें उन्होंने उच्चतम सरकारी पदों पर नयिुक्त कयि; उन्होंने कानून द्वारा रवविार का पालन अनविार्य कर दयि, और कई चर्च बनवाए; और उनके समर्थन से ही प्रथम सार्वभौमकि परषिद (325) का आयोजन कयि गया था। सम्राट थयिोडोसयिस महान के अधीन, जन्हिोंने 392 में एक फरमान द्वारा मूर्तपिूजा पर प्रतबिंध लगा दयि था, रोमन साम्राज्य अंततःपूर्वी और पश्चमिी दो भागों में वभिाजति हो गया (395)। पहला 1453 में मेहमद द्वतिीय के अधीन तुर्कों के हाथों गरि गया, जबकि दूसरा, जसिमें इटली, अफ्रीका, ब्रटिेन और स्पेन शामलि थे, 476 में गरि गया; 476 में, अंतमि रोमन सम्राट रोमूलस ऑगस्टस के पदत्याग के बाद, हेरुली के नेता ओडोएकर ने इटली का सहिासन संभाला।

स्वयं केवल नवें घंटे[2437] के बाद ही भोजन करते थे, अपना भोजन भटकते संतों के साथ साझा करते थे, और उस समय तक हमेशा उपवास रखते थे। यदि कभी ऐसा होता कि किसी विशेष दिन उसके द्वार पर कुछ ही भिखारी इकट्ठा हो जाते, और इसलिए उसे सामान्य से कम दान देना पड़ता, तो यूथिमियन दुख से जमीन पर गिर पड़ता और कहता:

'मैं अपने ईश्वर की धरती पर जीवित रहने के अयोग्य हूँ।'

उनकी पत्नी, अग्लाइडा, ईश्वर-भयभीत महिला थीं, अपने पति से प्रेम करने वाली और दान देने में उदार थीं। अपनी बांझपन पर दुखी होकर, वह अक्सर इस प्रार्थना के साथ ईश्वर की ओर मुड़ती थीं:

'हे प्रभु, मुझ पर, अपनी इस अयोग्य दासी पर, दया करें और मुझे मेरी बाँझपन से मुक्ति दें, ताकि मैं माँ बन सकूँ। हमें एक पुत्र दें जो हमारे जीवन में आनंद का कारण बने और हमारी वृद्धावस्था में सहारा दे।'

प्रभु ने अपनी दया में उसकी प्रार्थना सुनी: उसके पति की बड़ी प्रसन्नता के लिए, उसने एक पुत्र को जन्म दिया, जिसका पवित्र बपतिस्मा पर एलेक्सियस नाम रखा गया।

छह वर्ष की आयु से, संत अलेक्सियस ने अपनी पढ़ाई शुरू की और उस समय के लिए प्रचलित सांसारिक विषयों में शीघ्रता से पारंगत होने के बाद, उन्होंने पवित्र धर्मग्रंथों और चर्च से संबंधित पुस्तकों का विशेष लगन से अध्ययन किया। वह लड़का एक बुद्धिमान और धार्मिक युवक के रूप में बड़ा हुआ; क्षणिक सांसारिक सुखों की व्यर्थता को समझकर, उसने शाश्वत आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए उनका त्याग करने का संकल्प लिया; इसी कारण, उसने अपने शरीर को कष्ट देने के लिए एक खुरदरी बाल वाली कमीज़ पहनना भी शुरू कर दिया। जब अलेक्सियस वयस्क हो गया, तो यूथिमियन ने अपनी पत्नी से कहा:

'आओ हम अपने बेटे का विवाह कर दें।'

ये शब्द अग्लाइडा को बहुत भाए, और वह अपने पति के पैरों पर गिर पड़ी, और बोली:

'भगवान आपके इस इरादे को आशीर्वाद दें, कि मैं अपने बेटे की शादी और पोते-पोतियों को देखने तक जीवित रहूँ; यह महान आनंद मुझे गरीबों और ज़रूरतमंदों के प्रति और भी उदार बनने के लिए प्रेरित करेगा।'

इसके बाद, उन्होंने एलेक्सियस की सगाई एक राजसी वंश की युवती से कर दी, और फिर उनके लिए सेंट बोनिफेस के चर्च में विवाह संस्कार संपन्न हुआ; और पूरा दिन, रात ढलने तक, हर्षोल्लास और आनंद में बीता। उत्सव के अंत में, संत एलेक्सियस, अपने पिता की अनुमति से, दुल्हन के कक्ष में गए और उसे एक आराम कुर्सी पर बैठी हुई पाया। उन्होंने अपनी सोने की अंगूठी ली, उसे एक कीमती कमरबंद के साथ बैंगनी रंग के[2438] के कपड़े के एक टुकड़े में लपेटा और उसे दुल्हन को देते हुए कहा:

'इसे रखो, और प्रभु हम सब के साथ रहें, और अपनी कृपा से हम में एक नया, सच्चा ईसाई जीवन लाने में मदद करें।'

यह कहकर, वह अपने कमरे में चला गया; वहाँ, संत एलेक्सियस ने अपने भव्य वस्त्रों को साधारण वस्त्रों से बदल लिया और अपने साथ अपने निजी सामान से थोड़ी सी सोने और कीमती पत्थर लेकर घर और शहर से गुप्त रूप से निकल गया। समुद्र पहुँचने पर, उन्होंने लाओदिकिया[2439] के लिए रवाना होने वाली एक नाव पाई, जिसमें उन्होंने पहले सहमत किराया चुकाकर सवारी की। यात्रा के दौरान, संत अलेक्सियस ने ईश्वर से इस प्रकार प्रार्थना की:

[2437] रोमनों के लिए, दिन भी रात की तरह ही चार भागों में विभाजित था, जिन्हें पहला, तीसरा, छठा और नौवां घंटा कहा जाता था। पहला घंटा हमारे सुबह के सातवें, आठवें और नौवें घंटे के अनुरूप था; तीसरा, सुबह के दसवें, ग्यारहवें और बारहवें घंटे के अनुरूप था; छठा, दोपहर के पहले, दूसरे और तीसरे घंटे के अनुरूप था; और नौवां, दोपहर के चौथे, पांचवें और छठे घंटे के अनुरूप था।

[2438] पोर्फ़िरी कपड़ों को दूसरों से जो बात अलग करती थी, वह उनका लाल रंग था; उनके लिए रंग एक विशेष प्रकार की समुद्री शैवाल से निकाला जाता था।

[2439] लिकिया और गलफिया नदियों के संगम पर स्थित, एशिया माइनर के फ्रिजिया क्षेत्र का एक प्राचीन शहर लाओदिकिया, जिसकी स्थापना उसकी पत्नी लाओडिस के सम्मान में एंटिओकस द्वितीय (261–246 ईसा पूर्व) ने की थी। मसीह के समय में, यह संभवतःएशिया माइनर का सबसे प्रमुख शहर था, क्योंकि यह पूर्व और पश्चिम को जोड़ने वाले व्यापार मार्ग पर स्थित था। वहाँ ईसाई धर्म की शुरुआत संभवतःस्वयं प्रेरित पौलुस (कुलु. 2:1) द्वारा नहीं, बल्कि कोलोसा की कलीसिया में एक शिक्षक एपाफ्रास (कुलु. 1:7) द्वारा हुई थी। प्रेरित पौलुस ने लाओदिकिया की कलीसिया को एक विशेष पत्र लिखा; इसका उल्लेख प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में एशिया माइनर की सबसे उल्लेखनीय कलीसियाओं में से एक के रूप में भी किया गया है (प्रकाशितवाक्य 3:14–22)। वर्ष 360 में, लाओदिकिया में एक स्थानीय परिषद आयोजित की गई थी; इसके कैनन (60), जो पूजा के क्रम और पुरोहितों तथा सामान्य विश्वासियों के आचरण से संबंधित थे, को चर्च संबंधी कैनन में शामिल कर दिया गया। 1255 में, यह शहर

'हे ईश्वर,' उन्होंने कहा, 'जिसने मुझे मेरे जन्म के दिन से बचाया है, अब मुझे इस संसार के व्यर्थ जीवन से बचाओ और यह अनुग्रह करो कि आपके अंतिम न्याय के दिन मैं उन सभी के साथ आपके दाहिने हाथ पर खड़ा हो सकूँ जो आपको प्रसन्न कर चुके हैं।'

जब जहाज़ अपनी मंज़िल पर पहुँचा, तो संत अलेक्सियस किनारे पर उतर गए, जहाँ उनकी मुलाकात मेसोपोटामिया[2440] जा रहे यात्रियों से हुई, वह उनसे मिल गया और उनके साथ एदेसा गया[2441] , जहाँ प्रभु यीशु मसीह की अ-हस्तनिर्मित प्रतिमा[2442] रखी गई थी, जिसे उन्होंने अपने पृथ्वी पर जीवन के दौरान एदेसा के राजकुमार अबगर को भेजा था। मसीह की प्रतिमा को देखकर संत अलेक्सियस अत्यंत प्रसन्न हुए; उन्होंने अपने घर से लाई गई सारी कीमती चीजें बेच दीं, बिक्री से प्राप्त धन को गरीबों में बाँट दिया, और फटे-पुराने कपड़े पहनकर भीख पर जीवन यापन करने लगे। संत ने अपना घर परमेश्वर की परम पवित्र माता के चर्च के बरामदे में बना लिया, और उनका जीवन कठोर तपस्या का था: वे लगातार उपवास करते थे, और केवल थोड़ी सी रोटी ही खाते थे। वह अत्यंत संयमित मात्रा में पानी भी पीता था; हर रविवार, संत अलेक्सियस मसीह के परम पवित्र रहस्यों को ग्रहण करता था और हमेशा अपना सारा दान वृद्ध गरीबों को बाँट देता था। वे अपना सिर हमेशा झुकाए चलते थे, उनका मन ईश्वर में लगा रहता था, और वे निरंतर उनका ध्यान करते थे। इतने कठोर जीवन के कारण संत का सारा शरीर क्षीण हो गया; उनके चेहरे की सुंदरता फीकी पड़ गई, उनकी आँखें गड्ढे में धँस गईं, और उनकी दृष्टि धुंधली हो गई।

भोर में, जब संत अलेक्सियस पहले ही घर से जा चुके थे, उनके माता-पिता दुल्हन के कमरे में गए और, उन्हें यह देखकर आश्चर्य हुआ कि वह अकेली, उदास चेहरे से दुख में बैठी हुई थी। वे अपने बेटे को हर जगह खोजने लगे और, उसे कहीं न पाकर, जोर-जोर से रोने लगे; इस प्रकार उनकी खुशी दुख में बदल गई। संत की माँ, अपने कमरे में प्रवेश करने पर, खिड़कियाँ बंद कर दीं, एक पुआल का तख्त बिछाया और उस पर राख छिड़ककर, उस पर गिरकर रोने लगीं, और प्रार्थना करते हुए कहने लगीं:

'जब तक मुझे यह पता नहीं चल जाता कि मेरे इकलौते बेटे का क्या हुआ, वह क्यों गया, और कहाँ गया, तब तक मैं न उठूँगी और न ही अपनी कोठरी छोड़ूँगी।'

तुर्कों द्वारा कब्जा कर लिया गया, और 1402 में इसे तैमूरलंग द्वारा नष्ट कर दिया गया। अब केवल सुनसान गाँव एस्की-गिस्सर के पास एक छोटी पहाड़ी पर खंडर ही उस प्राचीन शहर की गवाही देते हैं जो कभी यहाँ स्थित था।

[2440] मेसोपोटामिया, अर्थात् नदियों के बीच की भूमि, प्राचीन शिनार (उत्पत्ति 10:10), अब्राहम का जन्मस्थान और घर, इससे पहले कि वह हरान की भूमि के लिए रवाना हुए (उत्पत्ति 11:28; प्रेरितों के काम 7:2); यह नाम टिग्रिस और यूफ्रेटिस नदियों के बीच स्थित क्षेत्र को दिया गया है, जो दक्षिण में फारसी खाड़ी और उत्तर में आर्मेनिया के पहाड़ों से घिरा हुआ है। संकीर्ण अर्थ में, मेसोपोटामिया इस क्षेत्र के उत्तरी भाग को संदर्भित करता है, जिसे अल-जज़ीरा के नाम से जाना जाता है, जबकि दक्षिणी भाग को बेबीलोनिया के नाम से जाना जाता है, जो वर्तमान इराक-अरबी है, अर्थात् प्राचीन बेबीलोनिया। रोमन युग के दौरान, देश को दो भागों में विभाजित किया गया था: पश्चिम में ओस्रोने, जो 217 ईस्वी में एडसा की राजधानी के साथ रोमन शासन के अधीन आ गया, और पूर्व में मिग्डोनिया, जिसकी राजधानी निसिबिस थी, जिसे 115 ईस्वी में रोमन सम्राट ट्राजन ने जीता था। मेसोपोटामिया में ईसाई धर्म की शुरुआत का श्रेय जुदास या थैडियस को दिया जाता है, जो प्रेरित हरमास के एक साथी थे – परंपरा के अनुसार, वे प्रभु यीशु मसीह के सत्तर शिष्यों में से एक थे; जुदास ने एडसा में एक चर्च की स्थापना की। संत एफ्रेम सीरियाई (3-4वीं शताब्दी) का जन्म निसीबिस के आसपास हुआ था; निसीबिस के बिशप, बर्सुमा के थॉमस, नेस्टोरियन विधर्म के एक उत्साही समर्थक थे, जिसने यह सिखाया कि परमेश्वर का वचन, जो पिता से शाश्वत रूप से उत्पन्न हुआ है, केवल मनुष्य यीशु के भीतर वास करता था, और एक विशेष, नैतिक संघ में उनके साथ बना रहा। 11वीं शताब्दी में, सेल्जूक्s और तुर्कों के आक्रमणों के बाद, मेसोपोटामिया पतन की ओर चला गया और अब यह तुर्की का एक हिस्सा है; इसके निवासी तुर्क, कुर्द, अरब, अर्मेनियाई और सीरियाई हैं। असीरियाई और बेबीलोनियाई साम्राज्यों के दौरान मेसोपोटामिया का महान ऐतिहासिक महत्व था।

[2441] एडेसा, जो अब उर्फ़ा है, उत्तरी मेसोपोटामिया में फरात नदी पर बसा एक शहर था, जो 137 ईसा पूर्व से ओज्रोएन या एडेसा की नवगठित राज्य की राजधानी था; 217 ईस्वी में रोमनों ने इसे एक पूर्वी कॉलोनी में बदल दिया। एडेसा में ईसाई धर्म जल्दी फैल गया; चौथी शताब्दी में, सेंट एफ्रेम द सीरियन ने वहाँ एक धर्मशास्त्र विद्यालय की स्थापना की, जो पाँचवीं शताब्दी में नेस्टोरियनवाद की ओर झुक गया, जिसके लिए एडेसन स्कूल के शिक्षक, पादरी इवा, एक विशेष रूप से सक्रिय समर्थक थे। 641 में, अरब खलीफ़ों ने एडेसा पर विजय प्राप्त की; 1098 में इसे काउंट बाल्डविन ने जीत लिया, जिसने इसे एडसा की रियासत की राजधानी बना दिया; 1144 में इसे तुर्कों ने जीत लिया और उस समय से यह हाथों-हाथ बदलती रही, जब तक कि 1637 में यह अंततः तुर्की के शासन में नहीं आ गई।

[2442] यीशु मसीह की 'हस्तनिर्मित-न-बनी' छवि, या 'उब्रस', जिसमें उद्धारकर्ता के चेहरे की छाप थी, जिसे उन्होंने एडसा के राजकुमार अबगर को आँखों की बीमारी से ठीक करने के लिए भेजा था। पवित्र प्रतिमा 994 तक एडेसा में रखी गई, जब इसे सम्राट कॉन्स्टेंटिन पोर्फिरोजेनिटिस ने खरीद लिया और 16 अगस्त को कॉन्स्टेंटिनोपल ले जाया गया; वहां से इसे वेनेशियनों ने चुरा लिया और यह मरमरा सागर में डूब गई। पर्व दिवस: 16 अगस्त।

उसकी मंगेतर, उसके बगल में खड़ी, भी आँसुओं के बीच बोली:

'और मैं तुम्हें भी नहीं छोड़ूँगी, बल्कि एक मरुस्थल-प्रेमी और वफादार कबूतर की तरह, जो अपने खोए हुए पति के लिए पहाड़ों और घाटियों में एक शोक गीत के साथ खोजती है, मैं अपने पति की खबर का धैर्यपूर्वक इंतजार करूँगी—कि वह कहाँ है और उसने अपने लिए किस जीवन का चुनाव किया है।'

पिता भी बहुत दुखी थे; उन्होंने अपने नौकरों को अपने बेटे की तलाश में दूर-दूर तक भेजा। उनमें से कुछ एडेसा तक पहुँचे; संत अलेक्सियस को देखकर, उन्होंने उसे नहीं पहचाना, बल्कि उसे एक भिखारी समझकर उसे दान दे दिया। हालाँकि, संत अलेक्सियस ने उन्हें पहचान लिया और अपने ही नौकरों से भीख पाने का अवसर देने के लिए ईश्वर का धन्यवाद किया। लौटने पर, नौकरों ने अपने मालिक से कहा कि वे अपने बेटे को नहीं ढूंढ पाए, भले ही उन्होंने हर जगह खोज की थी।

संत अलेक्सियस सत्रह वर्षों तक एडेसा में 'भगवान की परम पवित्र माता' के चर्च में रहे और अपने जीवन के माध्यम से उन्होंने ईश्वर का प्रेम अर्जित किया। उस समय, 'भगवान की परम पवित्र माता' के चर्च के सेxton को उनके बारे में एक दर्शन हुआ: उन्होंने उसकी एक पवित्र प्रतिमा को उससे बात करते हुए देखा:

'मेरे चर्च में परमेश्वर का एक ऐसे पुरुष को लाओ, जो स्वर्ग के राज्य के योग्य हो; उसकी प्रार्थना सुगंधित धूप की तरह परमेश्वर तक पहुँचती है, और पवित्र आत्मा उस पर एक राजा के सिर पर मुकुट की तरह विराजमान होता है।'

दिव्यदृष्टि के बाद, चर्च के सेवक ने ऐसे धर्मात्मा जीवन वाले व्यक्ति की तलाश की और कोई न मिलने पर, उसे दिए गए आदेश को पूरा करने में मदद के लिए सबसे पवित्र परमेश्वर की माता से प्रार्थना की। और फिर से, एक दिव्यदृष्टि में, उसने सबसे पवित्र परमेश्वर की माता की प्रतिमा से एक आवाज सुनी, जो उसे बता रही थी कि परमेश्वर का वह व्यक्ति चर्च के बरामदे के द्वार पर बैठे भिखारी के रूप में था। सेक्सटन ने संत अलेक्सियस को खोज निकाला और उन्हें वहाँ रहने के लिए चर्च में ले आए, और बहुत से लोगों ने इस ईश्वर के पुरुष के धार्मिक जीवन के बारे में जानकर, उनका सम्मान करना शुरू कर दिया। हालाँकि, उन्होंने मानवीय महिमा से बचते हुए, गुप्त रूप से शहर छोड़ दिया। बंदरगाह पर पहुँचकर, वे सिलिसिया[2443] के लिए जाने वाली एक नाव पर चढ़ गए, और मन ही मन सोचने लगे: 'मैं सिलिसिया जाऊँगा, जहाँ कोई मुझे नहीं जानता, और संत पौलुस प्रेरित के चर्च में रहूँगा।' यात्रा के दौरान, अचानक, ईश्वर की इच्छा से, समुद्र में तूफान आ गया, और जहाज, कई दिनों तक लहरों से उछाला गया, अप्रत्याशित रूप से रोम पहुँच गया। जहाज से उतरते हुए, संत अलेक्सियस ने अपने आप से कहा:

'जिस प्रभु ईश्वर जीवित है, उसकी कसम! मैं किसी के लिए बोझ नहीं बनूँगा, बल्कि एक अजनबी की तरह अपने पिता के घर जाऊँगा।'

वहाँ जाते समय, उनकी मुलाकात अपने पिता से हुई, जो कई नौकरों के साथ महल से घर लौट रहे थे। उनके सामने ज़मीन पर सिर झुकाते हुए, संत अलेक्सियस ने कहा:

'हे ईश्वर के सेवक, एक भिखारी और गरीब पर दया करें: मुझे अपने आँगन के किसी कोने में बसने दें और आपकी मेज़ से गिरने वाले टुकड़ों को खाने दें; प्रभु आपके दिनों को आशीष दें और आपको स्वर्ग का राज्य प्रदान करें; और यदि आपके कोई परिजन घर से दूर भटक रहे हों, तो वह उन्हें सुरक्षित और सलामत आपके पास वापस लाएंगे।

भिखारी द्वारा भटकने का उल्लेख करते ही, यूथिमियन को तुरंत अपने प्रिय पुत्र एलेक्सियस की याद आ गई; वह भावुक हो गए और कृपापूर्वक उसकी प्रार्थना स्वीकार कर ली, और उसे अपने घर के आंगन में रहने की अनुमति दे दी। उन्होंने अपने सेवकों से कहा:

तुम में से कौन इस भिखारी की सेवा करना चाहता है? यदि वह उसे प्रसन्न कर दे, तो मैं कसम खाता हूँ कि उसे मुझसे पूर्ण स्वतंत्रता और एक इनाम मिलेगा। घर के दरवाजे के पास उसके लिए एक छोटा कमरा तैयार करो, ताकि मैं उसे अधिक बार देख सकूँ; उसका भोजन मेरी मेज़ से परोसा जाए, और तुम में से कोई भी उसका अपमान न करे।'

[2443] एशिया माइनर का एक दक्षिण-पूर्वी क्षेत्र, सिलिसिया, सबसे पहले मैसेडोनिया के शासन में आया, फिर यह पार्थियन और अर्मेनियाई राज्यों का हिस्सा रहा; 68 ईसा पूर्व में, इसका सबसे उपजाऊ पूर्वी भाग एक रोमन प्रांत बन गया; अंततः इसे वेस्पासियन (69–79 ईस्वी) के अधीन कर लिया गया। प्रेरित पौलुस सिलिसिया की राजधानी तारस के मूल निवासी थे (प्रेरितों के काम 9:11); वे अपने धर्म परिवर्तन के बाद वहाँ चले गए (प्रेरितों के काम 9:30) और, बेशक, वहाँ सुसमाचार का प्रचार किया; अपने दूसरे प्रवास के दौरान, प्रेरित ने किलिकिया से होकर यात्रा की, और विश्वासियों को दृढ़ किया (प्रेरितों के काम 15:41)। किलिकिया अब तुर्की का हिस्सा है।

उसके बाद, संत अलेक्सियिस अपने पिता के घर के दरवाज़े पर रहने लगे। यूथमिीयन हर दिन उन्हें अपनी मेज़ से खाना भेजते थे, लेकिन वह उसे गरीबों को दे देते थे, जबकि खुद केवल रोटी खाते और केवल पानी पीते थे—और वह भी केवल इतना कि भूख या प्यास से न मर जाएँ; वह हर रात प्रार्थना में जागते हुए बिताता था, और हर रविवार को चर्च में पवित्र Communion ग्रहण करता था। और इस ईश्वर-पुरुष का धैर्य कितना अद्भुत था! उसे बहुत सी परेशानी और कष्ट सहने पड़े, खासकर देर शाम को, उसके पिता के दासों के हाथों, जिनमें से कुछ उसे बालों से खींचते, कुछ उसे थप्पड़ मारते, और कुछ उसके सिर पर गंदा पानी डालते, और आम तौर पर उसे सबसे क्रूर तरीके से ताना मारते थे। फिर भी उन्होंने यह सब मौन रूप से सहन किया, यह जानते हुए कि वे शैतान के उकसावे पर उनके साथ ऐसा व्यवहार कर रहे थे, और उन्होंने प्रार्थना के माध्यम से अपने आपको उसकी चालाकियों से लैस किया, और धैर्य से उन पर विजय प्राप्त की। एक और परिस्थिति थी जिसने उन्हें महान धैर्य के लिए प्रेरित किया: उनके कमरे के सामने उनकी मंगेतर के कमरे की खिड़की थी। वह, रूथ[2444] की तरह, अपने पिता के घर लौटना नहीं चाहती थी, बल्कि अपनी सास के साथ शोक मनाती रही; और संत अक्सर अपनी माँ और अपनी मंगेतर के सिसकियों और विलाप को सुनते थे: एक अपने बेटे को खोने के लिए, दूसरी अपने पति के लिए। उनके आँसुओं ने उसके हृदय में करुणा भर दी, लेकिन ईश्वर के प्रति अपने प्रेम के कारण उसने अपनी मंगेतर और माता-पिता के प्रति अपने सांसारिक प्रेम पर विजय प्राप्त की; ईश्वर के लिए लगभग असहनीय दुःखों को सहना भी उसे सांत्वना देने लगा। इस प्रकार संत अलेक्सियिस सत्रह वर्षों तक अपने माता-पिता के घर में रहे, और किसी ने उन्हें नहीं पहचाना; इसके बजाय, हर कोई उन्हें एक बेघर भिखारी समझता था; नौकरों ने उनका मज़ाक उड़ाया—घर का मालिक, बेटा और वारिस—जैसे कि वह कोई अजनबी और बाहरी व्यक्ति हो। जब प्रभु उसे इस क्षणिक जीवन से, जिसमें उसने इतनी गरीबी और वंचना सहन की थी, शाश्वत जीवन में बुलाने के लिए तैयार थे, तो उन्होंने उसे उसके निधन का दिन और घड़ी बता दी। तब संत अलेक्सियिस ने अपनी सेवा कर रहे दास से स्याही, कागज और एक खुरपे की मांग की; उन्होंने अपने जीवन की पूरी कहानी लिखी और अपने माता-पिता को यह विश्वास दिलाने के लिए कि वह वास्तव में उनका ही पुत्र है, अपने जीवन के कुछ ऐसे विवरण बताए जो केवल वे ही जानते थे; उन्होंने इस बारे में भी लिखा कि घर छोड़ने वाली रात उन्होंने अपनी मंगेतर से क्या कहा था, और कैसे उन्होंने उसे अंगूठी और कमरबंद दिया था। उन्होंने अपने पत्र का समापन निम्नलिखित शब्दों के साथ किया:

'मैं आपसे विनती करता हूँ, मेरे प्रिय माता-पिता और मेरी सम्मानित मंगेतर, मुझे छोड़कर जाने से आपको इतनी बड़ी दुःख देने के लिए मुझ पर क्रोध न करें; मैं स्वयं आपके दुःख से अपने हृदय में दुःखी हूँ; मैंने कई बार प्रभु से प्रार्थना की है कि वे आपको धैर्य प्रदान करें और आपको स्वर्ग के राज्य के योग्य बनाएं। मुझे आशा है कि, अपनी कृपा से, वह मेरी प्रार्थना स्वीकार करेगा, क्योंकि उसी के प्रति प्रेम के कारण मैंने ऐसी कठिनाइयों भरी ज़िंदगी चुनी है, और आपके आँसुओं के लिए भी इससे पीछे नहीं हटा; क्योंकि हर ईसाई के लिए अपने माता-पिता के बजाय अपने सृष्टिकर्ता और निर्माता की आज्ञा मानना बेहतर है। मुझे विश्वास है कि, जिस प्रकार मैंने आपको महान दुःख पहुँचाया है, उसी प्रकार आपको स्वर्ग के राज्य में महान आनंद प्राप्त होगा।

यह लिखने के बाद, उन्होंने अपने जीवन के अंत तक प्रार्थना की।

एक बार, जब पोप[2445] पवित्र प्रेरितों के कैथेड्रल चर्च में दैवीय पूजा का अनुष्ठान कर रहे थे, तो सेवा के समापन पर वेदी से एक अद्भुत आवाज सभी के सुनने के लिए गूँजी:

'मेरे पास आओ, हे सब मेहनत करने वालों और बोझ से दबे लोगों, और मैं तुम्हें विश्राम दूँगा' (मत्ती 11:28)। चर्च में उपस्थित लोग, बड़े भय से ग्रस्त होकर, जमीन पर गिर पड़े, और चिल्ला उठे:

'प्रभु, दया करें!'

तब वह आवाज़ दूसरी बार सुनी गई:

[2444] रूथ, जो जन्म से एक मोआबी थी, को दाऊद के पूर्वज के रूप में उसकी वंशावली में (रूथ 4:17) और इस प्रकार स्वयं यीशु मसीह की वंशावली में (मत्ती 1:5) शामिल होने का सम्मान मिला; उसकी कहानी उसके नाम पर रखे गए पवित्र ग्रंथ में दर्ज है।

[2445] ये पोप इनोसेंट प्रथम (402–417) थे। उन्होंने सम्राट होनोरियस को उनके विरुद्ध एक सख्त कानून बनाने के लिए मनाकर डोनाटिस्ट संप्रदायवाद का मुकाबला किया; उन्होंने पेलैजियन विधर्मीयों के विरुद्ध परिषद के फरमान (416) की पुष्टि की, जो उद्धार के लिए अनुग्रह की आवश्यकता से इनकार करते थे; और वह पहले व्यक्ति थे जिन्होंने पोप की सर्वोच्चता के सिद्धांत की नींव रखी, यह तर्क देते हुए कि पोप प्रेरित पतरस के उत्तराधिकारी हैं।

'ईश्वर के उस पुरुष को खोजो, जो पहले ही परलोक में जा चुका है; उसे नगर के लिए प्रार्थना करने दो: उसकी प्रार्थना तुम्हारे लिए बहुत लाभदायक होगी।'

उन्होंने पूरे रोम में ऐसे व्यक्ति की तलाश की और उन्हें नहीं पता था कि क्या करें, क्योंकि वे उसे ढूंढ नहीं पाए। इसलिए, गुरुवार शाम से शुक्रवार तक कैथेड्रल में पोप और राजा के साथ फिर से इकट्ठा होकर, उन्होंने वहाँ पूरी रात जागरण किया, मसीह से प्रार्थना करते हुए कि वह उन्हें अपना संत दिखाएँ। शुक्रवार की सुबह, संत अलेक्सियस प्रभु के पास चले गए। इस बीच, चर्च में, ठीक पहले वाले अवसर की तरह, सेवा के दौरान वेदी से एक आवाज़ सुनाई दी:

'ईउथमियन के घर में ईश्वर के पुरुष को खोजो।'

इसके बाद, राजा[2446] ने बाद वाले की ओर मुड़कर कहा:

'जब आपके घर में इतना खजाना था, तो आपने हमें इसके बारे में क्यों नहीं बताया?'

यूथमियन ने उत्तर दिया:

'प्रभु मेरी गवाही हैं कि मुझे इस बारे में कुछ भी नहीं पता।'

और, अपने मुख्य सेवक को बुलाकर, उसने उससे पूछा:

'क्या तुम्हें अपने साथियों में कोई ऐसा ज्ञात है जो सदाचारी और ईश्वर को प्रसन्न करने वाला हो?'

उसने कहा, 'मैं नहीं जानता, एक भी सदाचारी नहीं है; वे सभी ईश्वर को अप्रसन्न करने वाले ढंग से रहते हैं।'

ज़ार और पोप ने स्वयं यूथमियिन के घर जाकर ईश्वर के एक पुरुष को खोजने का निर्णय लिया। यूथमियिन, उनसे पहले जाकर, पोप और ज़ार को उनके कुलीनों के साथ स्वागत करने की तैयारी करने लगा और उनके लिए एक भव्य स्वागत का आयोजन किया। यूथमियिन की शोकाकुल पत्नी, अपने कमरे से आँगन और पूरे घर में हो रहे हंगामे और शोर को सुनकर, ने पूछा:

'यह सब क्या है?'

और जब उसे ज़ार और पोप के आगमन और उनकी यात्रा के कारण का पता चला तो वह बहुत हैरान रह गई। दुल्हन भी, जब उसने अपने कमरे से ज़ार और पोप को लोगों की एक बड़ी भीड़ के साथ चलते हुए देखा, तो वह भी हैरान रह गई और इस दृश्य का अर्थ समझने की कोशिश करने लगी।

[2446] यह, बेशक, आर्कैडियस को संदर्भित करता है, जो पूर्वी रोमन सम्राट और थियोडोसियस महान का पुत्र था, जिसे अपने पिता की मृत्यु (395) पर तथाकथित पूर्वी साम्राज्य विरासत में मिला, जबकि उसके भाई होनोरियस को पश्चिमी साम्राज्य मिला; उसका जन्म 377 में हुआ था और 408 में उसकी मृत्यु हो गई। अपने शासनकाल के दौरान, राज्य उन लोगों द्वारा शासित था जो कमजोर इच्छाशक्ति वाले सम्राट को अपने प्रभाव में लाने में सक्षम थे। इस प्रकार, अपने शासनकाल की शुरुआत में, राज्य रुफिनस द्वारा शासित था, जिसने पहले से ही भारी कर बोझ को बढ़ा दिया, मौद्रिक जुर्माने की संख्या में वृद्धि की, और इस प्रकार साम्राज्य में आतंक फैला दिया। रूफिनस की मृत्यु के बाद, उनके उत्तराधिकारी एक ख़ासमाई यूट्रोपियस बने, जिन्होंने अपने निजी लाभ के लिए सम्राट को एक कठोर कानून (397 ईस्वी) लागू करने के लिए मना लिया, जिसके तहत न केवल सम्राट बल्कि उच्च-पदस्थ अधिकारियों के खिलाफ किसी भी दुर्भावनापूर्ण इरादे के लिए भी मृत्युदंड और संपत्ति ज़ब्त करने की सज़ा दी जाती थी। अंतत; महारानी यूडोक्सिया ने यूट्रोपियस को (399 में) मृत्युदंड दिलाया, और आर्कैडियस अपनी पत्नी के पूरी तरह से अधीन हो गया, जो उस समय कॉन्स्टेंटिनोपल के पैट्रिआर्क सेंट जॉन क्रिसोस्टोम के प्रति अपनी शत्रुता के लिए जानी जाती थीं। उसकी ज़िद पर, सम्राट ने 'ओक के नीचे की परिषद' (403) के जॉन क्रिसोस्टॉम को पदच्युत करने और उन्हें निर्वासित करने के फैसले को मंजूरी दे दी, लेकिन बाद में लोकप्रिय अशांति के डर से उन्हें वापस बुला लिया। 404 में, उन्होंने उसे एक बार फिर निर्वासन में भेजने का आदेश दिया, और ऐसा उन्होंने पहली बार की तरह ही यूडोक्सिया के प्रभाव में किया, जो जॉन क्राइसोस्टोम के उन उपदेशों से नाराज़ हो गई थीं जिनमें उन्होंने दरबार की विलासी और अनैतिक जीवन शैली की निंदा की थी। आर्काडियस के शासनकाल के दौरान, उसके प्राधिकरण पत्रों से लैस मिशिनरियों ने उन मूर्तिपूजकों को प्रांतों में ईसाई धर्म का प्रचार किया, जो अभी तक मसीह धर्म नहीं अपनाए थे।

होनोरियस, पश्चिमी रोमन सम्राट और सम्राट आर्कैडियस के भाई। अपने शासन की शुरुआत में, प्रशासन का नेतृत्व चतुर राजनेता और प्रसिद्ध सैन्य कमांडर स्टिलिको कर रहे थे, जिन्होंने बार-बार विसिगोथ्स, वैंडल, सूएबी और बर्गुंडी लोगों द्वारा साम्राज्य पर किए गए हमलों को विफल कर दिया था। उनके पतन और निष्पादन के बाद, साम्राज्य की किस्मत और भी खराब हो गई। 408 में, विसिगोथिक नेता अलेरिक ने रोम की घेराबंदी की और शहर को भारी कर देने के लिए मजबूर किया; 410 में, उसने शहर पर कब्जा कर लिया और अपनी सेना को इसे लूटने की अनुमति दी। अलेरिक की मृत्यु के बाद, उसके साले अताउल्फ ने होनोरियस के साथ एक शांति संधि की, जिसके बाद विसिगोथ अल्प्स के पार चले गए। होनोरियस के शासनकाल के दौरान, 411 में डोनाटिस्ट संप्रदायवादियों के खिलाफ एक परिषद आयोजित की गई, जो उत्पीड़न के दौरान पश्चाताप करने वाले धर्मत्यागियों को स्वीकार करने के कारण चर्च से अलग हो गए थे; उनके दृष्टिकोण में, यदि इसके सदस्यों में पापी हों तो चर्च पवित्र नहीं रहती। होनोरियस के आदेश पर, शेष सभी मूर्तिपूजक मंदिरों को ध्वस्त कर दिया गया, और मूर्तिपूजकों को स्वयं सार्वजनिक पद से हटा दिया गया।

जब पोप, राजा और कुलीनों ने अपनी-अपनी जगह ले लीं और सन्नाटा छा गया, तो संत एलेक्सियिस की सेवा करने वाले नौकर ने यूथमियिन से कहा:

'हे स्वामी, क्या वह भखिारी जसिे आपने मुझे सौंपा है, ईश्वर का पुरुष नहीं है? मैंने उसके महान और अद्भुत कार्यों को देखा है: वह लगातार उपवास करता है, दनि के अंत में केवल थोड़ी सी रोटी और पानी ही लेता है; वह अपनी सारी रातें प्रार्थना में बताता है और हर रविवार को मसीह के पवत्रि रहस्यों में भाग लेता है; वह मुझ पर लगे कुछ सेवकों द्वारा दी जाने वाली पटिाई और अपमान को नम्रता और आनंद के साथ सहन करता है।

यह सुनकर, यूथमियिन तुरंत भखिारी के घर की ओर भागा और खड़िकी से तीन बार पुकारने पर भी कोई उत्तर नहीं मलिा। तब वह घर के अंदर गया, जहाँ उसने परमेश्वर के उस पुरुष को मृत पाया, उसका सरि ढका हुआ था और उसके दाहनि हाथ में एक मोड़ी हुई पांडुलपिि थी। यूथमियिन ने उसका चेहरा ढकने से हटाया और देखा कि वह एक स्वर्गदूत के चेहरे की तरह दमक रहा था; लेकनि जब उसने वह पांडुलपिि लेकर पढ़ने की कोशशि की, तो वह ऐसा नहीं कर सका, क्योंकि हाथ उसे छोड़ ही नहीं रहा था। राजा और पोप के पास तेजी से लौटकर, उसने कहा:

'हमें वह व्यक्ति मलि गया जसिकी हम तलाश कर रहे थे, वह पहले ही मृत पाया गया; उसके हाथ में एक पांडुलपिि है और वह हमें दे नहीं रहा है।'

राजा और धर्मगुरु ने एक कीमती ताबूत तैयार करवाया और उसे कीमती कपड़ों से ढँकवाया, और ईश्वर के उस पुरुष के पवत्रि शरीर को बाहर नकिालकर श्रद्धापूर्वक उस ताबूत पर रखा। फरि, घुटने टेककर, उन्होंने पवत्रि अवशेषों को चूमा और उससे ऐसे बात की मानो वह जीवति हो:

'हे मसीह के सेवक, हम आपसे वनिती करते हैं, हमें यह दस्तावेज़ दें, ताकि इसमें लखिे से हम जान सकें कि आप कौन हैं।'

इसके बाद, पोप और ज़ार ने संत के हाथ से बनिा कसिी बाधा के वह दस्तावेज़ ले लयिा और उसे महान church[2447] के चांसलर, एटयिस को पढ़ने के लिए दे दयिा; उपस्थति लोगों की गहरी खामोशी के बीच, उन्होंने इसे पढ़ना शुरू कर दयिा। जब वह माता-पति और वधू, और उसे दिए गए अंगूठे और कमरबंद के बारे में लखिे अंश पर पहुँचा, तो यूथमियिन ने अपने दविंगत पुत्र एलेक्सियिस को पहचान लयिा। वह उसकी छाती पर लोट गया और, उसे गले लगाते और चूमते हुए, अपने आँसुओं के बीच कहा:

हाय मेरे प्रयि पुत्र! तुमने हमारे साथ यह क्या कयिा? तुमने हमें इतना दुख क्यों दयिा? धक्किार है मुझ पर, मेरे पुत्र! इतने वर्षों तक हमारे साथ रहकर और अपने माता-पति का वलिाप सुनकर भी, तुमने अपना रूप नहीं बताया, न ही हमारी वृद्धावस्था में हमें सांत्वना दी, इस महान दुख में जो तुमने हमें दयिा है। हाय मेरे लिए! मेरे बेटे, मेरे प्यार, मेरी आत्मा के सहारे, मुझे नहीं पता कि अब क्या करूँ: क्या तेरी मृत्यु पर शोक मनाऊँ या तेरे लौटने पर आनंदति होऊँ।

इस प्रकार यूथमियिन अपने सफेद बालों को नोचते हुए, बनिा सांत्वना के रोया।

अगलाइडा, अपने पति का वलिाप सुनकर और यह समझकर कि मृत भखिारी उसका पुत्र था, ने अपनी कोठरी के दरवाज़े खोल दिए; फटे-पुराने कपड़ों में, आँसुओं से भरी आँखें आसमान की ओर टकटकी लगाए और सरि से बखिरे हुए बाल नोचते हुए, वह लोगों की भीड़ के बीच से गुज़री, यह कहते हुए:

'मेरे लिए रास्ता दो, ताकि मैं अपनी आशा को देख सकूँ, ताकि मैं अपने प्रयि पुत्र को गले लगा सकूँ।'

शव-पेटकिा के पास पहुँचकर, वह अपने बेटे के शरीर पर झुक गई, उसे गले लगाकर चूमने लगी और बोली:

'हाय मेरे स्वामी! मेरे प्यारे बच्चे, तुमने यह क्या कयिा? तुम हमें इतना बड़ा दुख क्यों लेकर आए? हाय मेरे लिए, मेरी आँखों की रोशनी! इतने सालों तक हमारे साथ रहते हुए, तुमने खुद को क्यों नहीं बताया? तुम हम पर दया क्यों नहीं करते थे, हमारे लिए तुम्हारी कड़वी वलिाप सुनते-सुनते?'

वह वधू, जो चौंतीस वर्ष बनिा पति के रही थी और शोक के चनि्ह स्वरूप काले वस्त्र धारण करती थी, वह भी उसके पवत्रि शरीर पर गरि पड़ी; उसे आँसुओं की धाराओं से भीगते हुए और कोमलता से चूमते हुए; वह कड़वी और अशान्त होकर रोई, कहती हुई:

'हाय मेरी कस्मित, हाय मेरे भाग्य!'

[2447] 'चार्टुलारी' पैट्रआर्क से संबद्ध चान्सलेरी के प्रभारी अधकिारी थे।

उसके वलिाप और दुख भरे रुदन ने उपस्थति लोगों को रुला दयिा, और वे सभी दुल्हन और उसकी माँ के साथ मलिकर रो पड़े।

राजा और पोप ने आदेश दयिा कि ईश्वर के उस पुरुष के पवत्रि शरीर को ले जाने वाला ताबूत शहर के केंद्र में ले जाया जाए और रखा जाए, ताकि सभी उसे देख सकें और छू सकें; और जब यह कयिा गया, तो उन्होंने लोगों से कहा:

'देखो, हमने उसी को पाया है जसिे तुम्हारा वशि्वास खोज रहा था।'

[2448]और सारा रोम एकत्र हो गया; सभी ने संत को छुआ, उन्हें चूमते हुए। सभी बीमार ठीक हो गए: अंधों को दृष्टि प्राप्त हुई, कोढ़ियों को शुद्ध कयिा गया, राक्षसों ने उन लोगों को छोड़ दयिा जनि पर उन्होंने अधकिार कर लयिा था; संक्षेप में, कसिी को भी जो भी बीमारी थी, सभी ने ईश्वर के संत की अवशेषों से पूर्ण उपचार प्राप्त कयिा। ऐसे चमत्कारों को देखकर, राजा और धर्मगुरु स्वयं ताबूत को चर्च में ले जाना चाहते थे, ताकि वे संत के शरीर को छूकर कृपा प्राप्त कर सकें। उनके माता-पति और उनकी मंगेतर रोते हुए उनके साथ चल रहे थे; जबकि पवत्रि शरीर को छूने के लिए उत्सुक लोगों की इतनी वशिाल भीड़ इकट्ठा हो गई थी कि भीड़ के दबाव के कारण ताबूत को ले जाना असंभव हो गया था। भीड़ को पीछे हटने और चर्च के लिए रास्ता बनाने के लिए मजबूर करने हेतु, राजा ने भीड़ में चांदी और सोना फेंकने का आदेश दयिा, लेकनि कसिी ने इस पर कोई ध्यान नहीं दयिा; सभी केवल ईश्वर के उस पुरुष को देखने और उसे छूने के लिए उत्सुक थे। तब पोप ने भीड़ से एक अपील की, उनसे पीछे हटने का आग्रह करते हुए और यह वादा करते हुए कि जब तक हर कोई उसे चूमकर और उसे छूकर कृपा प्राप्त नहीं कर लेता, तब तक वे पूजनीय शरीर को वदिा नहीं करेंगे। लोग, जन्हिें कुछ मुश्कलि से मनाया गया था, थोड़ा पीछे हट गए और पवत्रि शरीर को कैथेड्रल में ले जाने दयिा, जहाँ यह पूरे एक सप्ताह तक रहा, ताकि जो कोई भी चाहता हो वह अपनी श्रद्धांजलि अर्पति कर सके; उस पूरे सप्ताह, रोते हुए माता-पति और दुल्हन संत एलेक्सयिस की शवपेटकिा के पास रहे। अपने हसि्से के लिए, ज़ार ने सोने और पन्नों से सुसज्जति एक संगमरमर का मकबरा बनाने का आदेश दयिा, जसिमें ईश्वर के उस पुरुष को रखा गया; तुरंत ही, पवत्रि शरीर से एक सुगंधति मूरा (मश्रि के तेल) का प्रवाह हुआ, जसिने अवशेष-पात्र को भर दयिा; सभी ने हर तरह की बीमारयिों के इलाज के लिए उस मूरा से स्वयं को अभषिक कयिा, और ईश्वर की महमिा करते हुए, संत एलेक्सयिस के पवत्रि अवशेषों को सम्मान के साथ दफनाया।

संत एलेक्सयिस का नधिन दुनयिा की सृष्टि के 5919वें वर्ष में, और परमेश्वर वचन के अवतार के 411वें वर्ष में, मार्च के सत्रहवें दनि हुआ, जब पोप इनोसेंट के अधीन रोम में हॉनोरयिस का शासन था, और कॉन्स्टेंटनिोपल में थयिोडोसयिस युवा का शासन था; और उन सभी पर हमारे प्रभु यीशु मसीह का शासन था, जो पति और पवत्रि आत्मा के साथ युगानुयुग राज्य करते हैं; उन्हें युगानुयुग महमिा हो। आमीन।

ट्रोपारयिन, स्वर 4:

सद्गुणों को प्राप्त कर और अपने मन को शुद्ध कर, तुमने वांछति और परम लक्ष्य को प्राप्त कयिा: अपने जीवन को वैराग्य से सुशोभति कर और नरि्मल अंतकरण के साथ उचति उपवास को अपनाकर, प्रार्थना में जैसे अदेह होकर नविास करते हुए, तुम संसार में सूर्य के समान प्रकाशति हुए, हे परम धन्य अलेक्सयिस।

कॉन्टाकयिन, स्वर 2:

अपने माता-पति के घर को एक अजनबी का घर मानकर, आप वहाँ गरीबी में रहे; और अपने नधिन पर, महमिा का मुकुट प्राप्त करके, आप पृथ्वी पर अद्भुत रूप से प्रकट हुए, हे अलेक्सयिस, हे ईश्वर के मनुष्य, हे स्वर्गदूतों और मनुष्यों के आनन्द।

[2448] उनके शरीर को 1216 में सेंट बोनफिस के चर्च में दफनाया गया था, और उनकी कब्र के ऊपर एक भव्य चर्च बनाया गया था।

पवत्रि शहीद मारनिस का कष्टकथा

१७ मार्च को स्मरणोत्सव

मसीह के शहीद संत मरीना, एक ईसाई होने के नाते, यह देखकर कि कैसे मूर्तपिूजक अपनी मूर्तयिों को न केवल बेजान जानवरों और पक्षयिों की, बल्कि मनुष्यों की भी बलि चढ़ाते थे, दविय उत्साह से भर गए; और जब नर्जिीव मूर्तयिों के सम्मान में एक त्योहार मनाया जा रहा था, तो वे उस स्थान पर गए जहाँ बलदिान चढ़ाया जा रहा था, और वेदयिों को नष्ट कर दयिा, तथा उन पर चढ़ाए गए बलदिानों को अपने पैरों तले कुचल दयिा। ऐसा करते हुए, उन्होंने दुष्ट पुरोहतिों की नदिा की और स्वयं को एक ईसाई घोषति करते हुए कहा:

'मैं मसीह, परमेश्वर के एकमात्र पुत्र, जो स्वर्ग और पृथ्वी, समुद्र और उनमें जो कुछ भी है, उन्हें बनाने वाले हैं, में वशि्वास करता हूँ।'

इसके लिए, मूर्तपिूजकों ने उसे पकड़ लयिा, पहले उसे लाठयिों से पीटा, फरि पत्थरों से उसके मुँह पर वार करके उसके दाँत तोड़ दिए, और उसके बालों से खींचकर उसे जमीन पर घसीटा। यह सब होने के बाद, पवत्रि शहीद को बाँधकर प्रांतीय राज्यपाल के सामने लाया गया, जसिके आदेश पर, वभिन्नि यातनाओं के बाद, उसकी तलवार से सरि कलम कर दयिा गया।

कोल्याज़निो के हमारे पूजनीय पतिा मकारयिस का जीवन[2449]

17 मार्च को स्मरणोत्सव

कोल्याज़निो के पूजनीय मकरयिुस[2450] ट्वेर के बोयार (कुलीनों) कोज़नि के परविार से थे। उनका जन्म काशनि[2451] शहर से लगभग आठ वर्स्ट दूर ग्रबिकोवो गाँव में हुआ था; इस गाँव को अब कोज़निो कहा जाता है। उनके माता-पतिा—उनके पतिा, वासलिी कोज्हा, जो ग्रैंड प्रंसि वासलिी वासलिीवचि टेम्नी[2452] के अधीन अपने सैन्य कारनामों के लिए प्रसद्धि हुए, और उनकी माँ, इरीना—अपनी धार्मकिता के लिए प्रसद्धि थे और उन्होंने अपने बच्चों को अच्छे चरत्रि का पालन करने के लिए पाला। संन्यास का व्रत लेने से पहले, मकरि को मतफिेई के नाम से जाना जाता था। सात वर्ष की आयु में, उनके माता-पतिा ने उन्हें पढ़ना और लखिना सीखने के लिए भेजा; युवा मतफिेई ने इसे जल्दी सीख लयिा और जल्द ही उन्हें पढ़ने का शौक हो गया। जब वह पवत्रि शास्त्र पढ़ते थे, तो वह उनके अर्थ में गहराई से उतर जाते थे और जो कुछ भी पढ़ते थे, उसे हृदय से ग्रहण करते थे। उनके माता-पतिा ने यह देखा और प्रसन्न हुए। मैथ्यू ने बचकाने मनोरंजन से दूरी बना ली और जैसे ही वह अधकि परपिक्व आयु में पहुँचा, उसने सांसारकि जीवन की व्यर्थता पर वचिार करना और उससे अलग होने पर मनन करना शुरू कर दयिा। वह लगातार उद्धारकर्ता के शब्दों को याद करता था: *'यदि तुम सद्धि होना चाहते हो, तो जाओ, अपनी संपत्ति बेच दो और गरीबों को दे दो, और तुम्हारे लिए स्वर्ग में खजाना होगा; और आओ, मेरा अनुसरण करो'* (मत्ती 19:21); वह इन शब्दों का पालन करना चाहता था। हालाँकि वे देख सकते थे कि उसकी इच्छा सच्ची

[2449] आदरणीय मकरयिस ऑफ कोल्याज़निो का जीवन, जो 1546-1547 में मठवासी स्मृतयिों और ववरिणों के आधार पर संकलति कयिा गया था—जसिका कुछ हस्सिा आदरणीय मकरयिस के जीवन के प्रत्यक्षदर्शयिों से भी लयिा गया था—साथ ही कुछ रकिॉर्ड्स भी शामलि थे, यह 16वीं शताब्दी और उसके बाद की कई पांडुलपियिों में पाया जाता है, लेकनि मूल रूप में इसे पूरी तरह से प्रकाशति नहीं कयिा गया है। यहाँ प्रस्तुत ववरिण संग्रह सनिड लाइब्रेरी LZ 555 के पाठ पर आधारति है। पांडुलपि संकलन ग्रंथसूची क्र. 927, जसिमें तथाकथति वोल्कोलांस्क पैट्रआिर्कन शामलि है, में वोसकॉव के परम पावन जोसेफ के शब्दों पर आधारति, डोसीफेई टोपोर्कोव द्वारा कोल्याज़निो के मकरयिुस का एक वृत्तांत है; इस वृत्तांत को यहाँ ध्यान में रखा गया है, जैसा कि रूसी तपस्वयिों पर वोसकॉव के जोसेफ के वर्णन में उनके मठ में मकरयिुस के संदर्भ को भी ध्यान में रखा गया है। – आदरणीय मकरि और उनके मठ के बारे में बहुत सारी जानकारी मठ में संरक्षति मूल दस्तावेजों में नहिति है। नम्निलखिति कृतयिाँ देखें: 'प्रथम-श्रेणी ट्रनिटिी कोल्याज़नि मठ के अभलिेखागार में संरक्षति प्राचीन पत्रों और अन्य दस्तावेजों की सूची। ट्वेर, 1891'; *आई. ए. इवानोव द्वारा* 'कोल्याज़नि मठ का व्यय खाता' / ट्वर, 1892; *अलेक्सी लेबेदेव* द्वारा संकलति 'ट्वर धर्मप्रांत के पुरुषों के लिए प्रथम-श्रेणी ट्रनिटिी कोल्याज़नि मठ का ववरिण' / यारोस्लावल, 1867।

[2450] 'मकाराई *कोल्याज़नि*' नाम मठ के ही नाम से लयिा गया है, जैसा कि नीचे समझाया गया है।

[2451] काशनि ट्वर गवर्नरेट का एक जलिा शहर है, जो वोल्गा नदी के बाएं कनिारे पर, नदी से 12 वर्स्ट दूर, काशनिका नदी पर स्थति है, और ट्वर गवर्नरेट में कोल्याज़नि जलिा शहर से 19 वर्स्ट दूर है।

[2452] वासलिी वासलिीवचि टेम्नी ने 1425 से 1462 तक शासन कयिा।

थी, फरि भी उसके माता-पिता नहीं चाहते थे कि वह संन्यास का संकल्प ले। उन्होंने उसे बताया कि संसार में रहते हुए भी कोई उद्धार पा सकता है; उन्होंने उसे संत जॉन क्राइसोस्टोम के 'विवाह निषेध करने वालों पर' उपदेश की याद दिलाई; और उन्होंने बाइबिल के उदाहरणों और नए नियम के संतों का हवाला दिया जो संसार में रहते हुए उद्धार पा गए थे और उन्होंने वैवाहिक जीवन जिया था। मैथ्यू दुनिया से दूर जाने की कितनी भी तीव्र इच्छा रखता हो, फिर भी वह अपने माता-पिता की दलीलों का भार समझता था और एक आज्ञाकारी पुत्र के रूप में, वह उन्हें दुखी नहीं करना चाहता था; उसने कहा: 'प्रभु की इच्छा पूरी हो; मैं आपकी इच्छाओं का विरोध नहीं करूँगा।'

उनके माता-पिता अपने बेटे के फैसले से बहुत खुश हुए; उन्होंने उसका विवाह कुलीन याखोंटोव परिवार की एलेना नामक एक युवती से कर दिया। हालाँकि, शादी के बाद भी मैथ्यू अंततः संसार से अलग होने के बारे में सोचना बंद नहीं किया। एक विवाहित पुरुष के रूप में एक धार्मिक और पवित्र जीवन जीते हुए, उसने अपनी पत्नी के साथ यह समझौता किया कि उनमें से जो भी दूसरे से अधिक जीवित रहेगा, वह दुनिया में नहीं रहेगा, दोबारा शादी नहीं करेगा, बल्कि संन्यास का संकल्प लेगा।

मैथ्यू की शादी के एक साल बाद, उसके माता-पिता का निधन हो गया, और फिर, दो साल बाद, ईश्वर की इच्छा से, उसकी पत्नी हेलेना का भी निधन हो गया।

अब मैथ्यू की अपनी लंबे समय से चली आ रही इच्छा को पूरा करने - दुनिया को छोड़ने और संन्यास की शपथ लेने - के अलावा और कोई इच्छा नहीं थी; अब उसकी इच्छा के मार्ग में कुछ भी बाधा नहीं थी। तुरंत, मसीह की आज्ञा के अनुसार, उन्होंने अपनी संपत्ति गरीबों में बाँट दी और काशिन शहर के पास, पास के क्लोबुकोव्स्की मठ[2453] में चले गए, जहाँ उन्हें मैकारियस नाम से भिक्षु दीक्षा दी गई।

उन्होंने परम उत्साह के साथ अपने मठ के कर्तव्यों का पालन करना शुरू कर दिया, और न केवल मठाधीश बल्कि भाईचारे के सबसे छोटे सदस्यों का भी परम विनम्रता और नम्रता से आज्ञापालन किया। ईश्वर के चर्च में बिना चूके उपस्थित होते हुए और विभिन्न मठ के कार्यों में अथक परिश्रम करते हुए, उन्होंने अपना शेष समय प्रार्थना और जागरण को समर्पित किया, संतों के जीवन और अन्य पवित्र ग्रंथों को लगन से पढ़ा, पुराने तपस्वियों के उदाहरणों का अनुकरण करने का प्रयास किया और पढ़ी गई किताबों से प्राप्त शिक्षाप्रद शब्दों को अपने हृदय में संजोया। उस युवा संन्यासी के कार्यों ने संपूर्ण मठवासी समुदाय की प्रशंसा अर्जित की।

कई वर्षों तक निकोलेव्स्की क्लोबुकोव्स्की मठ में रहने के बाद, मकरियस ने एकांत जीवन पर विचार करना शुरू कर दिया। मन बना लेने के बाद, उन्होंने मठाधीश से अपनी बात साझा की और उनका आशीर्वाद माँगा। मठाधीश ने मकरियस की इच्छा की ईमानदारी को देखकर, उन्हें पिता समान सलाह दी और उनके तपस्वी जीवन के नए रास्ते के लिए आशीर्वाद दिया।

मकरियस को काशिन से अठारह वर्स्ट दूर, नदी वोल्गा के पास, दो छोटी झीलों के बीच, एक घने जंगल में एक ऐसी जगह मिली जो उसकी इच्छाओं के अनुकूल थी। वहाँ उसने अपने लिए एक कुटिया बनाई और खुद को उपवास, प्रार्थना और जागरण में समर्पित कर दिया। कोई भी उसके एकांत तपस्या में बाधा नहीं डालता था। जंगली जानवर उस पर हमला नहीं करते थे, बल्कि उसकी संगत चाहते थे, और वह अपना मामूली भोजन उनके साथ बाँटता था।

लेकिन मकरियस ने लंबे समय तक अपने तप को पूर्ण एकांत में नहीं किया। जल्द ही अन्य तपस्वी उनके चारों ओर इकट्ठा होने लगे, और सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण, क्लोबुकोव्स्की मठ से सात बुजुर्ग आए। अन्य स्थानों से भी काफी संख्या में भिक्षु इकट्ठा हुए। मकरियस की कोठरी के चारों ओर नई कोठरियाँ बन गईं, और एक मठ समुदाय का गठन हुआ।

इस नए भाईचारे को सामूहिक प्रार्थना और पवित्र रहस्यों के स्वागत के लिए ईश्वर के घर की आवश्यकता थी। आदरणीय मकरियस ने अपने साथियों के साथ मिलकर, ट्वर के आर्चबिशप के आशीर्वाद से, जीवन-दायक त्रिमूर्ति को समर्पित एक छोटा सा लकड़ी का चर्च बनाया।

तपस्वी समुदाय बढ़ता गया, और अपने स्वयं के पुरोहित और साथ ही एक मठाधीश का होना आवश्यक हो गया। मकरियस स्वयं, विनम्रता के कारण, यह पद स्वीकार नहीं करना चाहते थे, लेकिन उन्होंने इसे दूसरों को प्रस्तावित किया,

---

[2453] काशिन शहर के पास क्लोबुकोव्स्की सेंट निकोलस मठ 1764 से एक निष्क्रिय मठ रहा है। वहाँ पर पूजनीय मकारियस की कोठरी आज भी संरक्षित है।

हालांकि उन्होंने स्वयं नए मठ के पूरे तपस्वी जीवन का निर्देशन किया। उन्होंने एक कठोर नियम के साथ मठवासी सामुदायिक जीवन का एक सख्त क्रम शुरू किया। उन्होंने यह नियम स्थापित किया कि मठ में कोई भी मादक पेय नहीं रखा जाएगा, और भिक्षुओं को अपनी कोठरियों में खाना या पीना नहीं चाहिए, बल्कि केवल सामूहिक भोजन पर ही खाना चाहिए।

उन्होंने स्वयं एक कठोर जीवन, परिश्रम और विनम्रता का उदाहरण स्थापित किया। वे सभी के साथ सरलता और दया से पेश आते थे। जब भी वे अपने भाईचारे के किसी सदस्य से मिलते, उम्र की परवाह किए बिना, वे कहते, 'मेरे प्यारे बूढ़े आदमी,' और उन्हें नाम से संबोधित करते थे।

आदरणीय मकरियस द्वारा शुरू किया गया मठवासी जीवन का नियम इतना सख्त था कि मठ के संस्थापक के इरादे के अनुसार हर कोई उसका पालन नहीं कर सका। एक के बाद एक, इस नियम का उल्लंघन करने के लिए दो मठाध्यक्षों को पदच्युत कर दिया गया।

अंततः भाइयों ने मकरियुस से पुरोहित पद की दीक्षा लेने और स्वयं मठाध्यक्ष का पद संभालने का आग्रह किया। बहुत हिचकिचाहट के बाद, मकारियस अंततः मान गए और कई भिक्षुओं के साथ ट्वर के लिए रवाना हो गए, जहाँ बिशप मूसा[2454] ने उन्हें मठाधीश के रूप में अभिषिक्त किया। जब भाइयों को पता चला कि आदरणीय मकारियस मठाधीश के रूप में मठ में लौट रहे हैं, तो वे अत्यंत प्रसन्न हुए और उन्होंने उनके लिए एक भव्य और आनंदमय स्वागत का आयोजन किया।

आबट के रूप में अभिषिक्त होने के बावजूद, मकरियस ने सबसे साधारण जीवन जीना जारी रखा, साधारण कपड़े पहने और सभी मठवासी श्रमों में एक उदाहरण प्रस्तुत किया।

हालाँकि मिकरि ने एक सुनसान जगह पर, एक जंगली जंगल में एक नया मठ स्थापित किया था, लेकिन हर कोई इससे खुश नहीं था। आसपास की ज़मीनों का मालिक, एक इवान कोल्यागा नामक व्यक्ति, जब से मकरियस वहाँ बसा था, तब से ही उससे नापसंद करता था; और जब चर्च बना, समुदाय बढ़ा, और मकरियस मठाधीश बना, तो यह नापसंद द्वेष और खुली शत्रुता में बदल गई। कोल्यागा को डर था कि मठ की स्थापना से, उसकी ज़मीनें किसी न किसी तरह उससे मठ के नाम हो जाएँगी, और उसने मकरिई से छुटकारा पाने का निश्चय किया, भले ही इसके लिए हत्या का सहारा ही क्यों न लेना पड़े। लेकिन ईश्वर की इच्छा से, यह दुष्ट योजना न केवल असफल रही, बल्कि इसने वास्तव में मठ को लाभ पहुँचाया और आदरणीय मकरिई को महिमा प्रदान की। पहले कोल्यागा के परिवार पर मृत्यु आई, और फिर वह स्वयं गंभीर रूप से बीमार पड़ गया। इस दुर्भाग्य में, उसने अंततः मकरियुस के खिलाफ अपने दुष्ट इरादे के लिए इस गंभीर पाप के लिए ईश्वर की सजा को पहचाना; उसने पश्चाताप किया और आदेश दिया कि उसे पूजनीय के पास ले जाया जाए। मकाराईस के चरणों में, उसने रोते हुए अपनी साज़िश बताई और क्षमा तथा प्रार्थनाओं का अनुरोध किया। मकाराईस ने, अपने शत्रु की सच्ची पश्चाताप देखकर, कहा, 'ईश्वर तुम्हें क्षमा कर देंगे,' और उसे पृथ्वी के खजाने की क्षणभंगुरता और संसार की व्यर्थता के बारे में विस्तार से समझाते हुए दीर्घ समय तक उपदेश दिया। मकारास के कोमल उपदेश का कोल्यागा पर इतना प्रभाव पड़ा कि उसने स्वयं संसार त्यागने का संकल्प लिया; उसने परम पूज्य मकारास के अधीन संन्यास की शपथ ली और अपनी सारी ज़मीनें मठ को दान कर दीं, जिसे मकारास ने स्वयं विनम्रता के कारण, आगे चलकर कोल्याज़िनो कहना शुरू कर दिया।

नए मठ में मकरियस के कठोर साधु जीवन की अफवाहें — जिसे उन्होंने सामुदायिक मठों के लिए एक सख्त नियम से संपन्न किया था — न केवल आसपास के क्षेत्र में बल्कि दूर-दूर तक फैलने लगीं। दूर-दूर से, सभी प्रकार के लोग, आम लोग और भिक्षु, मोक्ष की तलाश में मकरियस के पास आने लगे।

एक अवसर पर, बोयार वंश के दो युवक, जिन्हें वह लंबे समय से जानते थे, उनके पास आए। उन्होंने उन्हें एक साधारण यात्री के रूप में अपनी कोठरी में स्वागत किया और उनसे पूछना शुरू किया कि वे कहाँ जा रहे हैं और क्यों। यात्रियों ने जवाब दिया कि उन्होंने दुनिया को पीछे छोड़ने और किसी निर्जन स्थान पर बसने का संकल्प लिया है।

उन्होंने कहा, 'चूंकि हम आपको बचपन से जानते हैं, और पवित्र धर्मग्रंथों से आपके पूर्व प्रेम और शिक्षा को याद करते हुए, और अब आपके कठोर संन्यासी जीवन के बारे में सुनकर, हम आपसे नवसिखियों के रूप में हमें स्वीकार करने का अनुरोध करने आए हैं।'

[2454] बिशप मूसा ने 1453 से 1459 तक ट्वर धर्मप्रांत का शासन किया।

सम्माननीय फादर ने, उन्हें परखने के लिए कहा:

'मैं एक पापी आदमी हूँ, और इसीलिए मैं रेगिस्तान में बस गया हूँ, ताकि अपने पापों की क्षमा के लिए ईश्वर से प्रार्थना करूँ; तुम लोगों को, हालाँकि, अपने माता-पिता के पास लौट जाना चाहिए ताकि उन्हें दुख न हो।'

लेकिन वे युवक इस गौरवशाली, परन्तु विनम्र, तपस्वी के मार्गदर्शन में मठ में रहने के दृढ़ इरादे से आए थे; आँखों में आँसू लिए, उन्होंने समुदाय में उन्हें स्वीकार करने की विनती करनी शुरू कर दी।

युवकों में मठ जीवन के प्रति खुद को समर्पित करने की एक सच्ची और वास्तविक इच्छा देखकर, मकारियस ने उन्हें अपने मठ में स्वीकार कर लिया और, एक पर्याप्त परीक्षण अवधि के बाद, उन्हें शिरच्छेदन की दीक्षा दी।

हमेशा बढ़ते समुदाय का बुद्धिमानी से शासन करते हुए, मकरियस अपना समय उपवास, प्रार्थना, श्रम और जागरण में बिताते थे। वे लगन से पवित्र सुसमाचार और अन्य दिव्य धर्मग्रंथों का अध्ययन करते थे और अपने भाइयों तथा उनके पास आने वाले सभी लोगों को मोक्ष के मार्ग के बारे में अथक रूप से उपदेश देते थे।

मैकरियस के तपस्वी जीवन और उनके मठवासी सामुदायिक नियमों की कठोरता के एक प्रत्यक्षदर्शी और गवाह उस समय के प्रसिद्ध तपस्वी, वोलोकलामस्क के पवित्र आदरणीय जोसेफ थे। कठोर सामुदायिक जीवन के नियमों द्वारा शासित एक नया मठ स्थापित करने का संकल्प लेकर, उन्होंने मठ जीवन का अवलोकन करने और मठ के रीति-रिवाजों और नियमों का अध्ययन करने के लिए, बोरोव्स्क के पाफनुटिव मठ से उत्तरी रूसी मठों की यात्रा पर निकल पड़े। इस यात्रा के दौरान, उन्होंने मकरियेव कोल्याज़िन मठ का भी दौरा किया, परम पूजनीय मकरियस से मिले, उनसे बात की, और अपनी *पवित्र पिताओं की कथा* में निम्नलिखित विवरण दर्ज किया।

'मैंने देखा,' पूजनीय जोसेफ कहते हैं, 'धन्य वरिष्ठ मकाarii, कोल्याज़िन मठ के मठाध्यक्ष और संस्थापक। उन्होंने मुझे निम्नलिखित बताया: 'जब मैं इस स्थान पर आया,' उन्होंने कहा, 'तो क्लोबुकोव्स्की मठ के सात वृद्ध मेरे साथ आए थे; वे सदाचार और अपने तपस्वी तथा मठवासी जीवन में इतने परिपूर्ण थे कि पूरा भाईचारा शिक्षा और लाभ प्राप्त करने के लिए उनके पास आता था; और उन्होंने, सभी को ज्ञान प्रदान करते हुए, जो उपयोगी था वह सिखाया; जो सदाचार का जीवन जीते थे, वे उन्हें मजबूत करते थे; लेकिन जो अव्यवस्था में भटक गए थे, उन्हें फटकारते और मना करते थे, और उन्हें अपनी इच्छा के अनुसार कार्य करने की अनुमति नहीं देते थे।'

मकायस के अनुसार (आदरणीय जोसेफ कहते हैं), उस समय मठ में ऐसी ही धार्मिकता और व्यवस्था थी; सब कुछ संतों और मठवासी समुदाय की परंपराओं के अनुसार किया जाता था, इतना कि महान वरिष्ठ मित्रोफान बायवल्टसेव भी इस पर चकित हो गए। वे तब माउंट अथोस से आए थे, जहाँ उन्होंने नौ साल तक पवित्र पर्वत पर जीवन व्यतीत किया था। उन्होंने भाइयों से कहा:

'मैंने व्यर्थ में परिश्रम किया और कोल्याज़स्की मठ से होकर पवित्र पर्वत तक इतना लंबा सफर तय किया, लेकिन कोई सफलता नहीं मिली; क्योंकि कोई व्यक्ति वहाँ रहने से भी उद्धार पा सकता है; यहाँ सब कुछ पवित्र पर्वत पर कैनोवाइट्स की तरह ही किया जाता है।'

इतनी धार्मिक जीवन शैली के लिए प्रसिद्ध कोल्याज़स्की मठ से, आदरणीय मकारियस के जीवनकाल में ही कई नए मठों के संस्थापक निकले। ऐसी ही एक हस्ती थे पेरकोम्स्क के आदरणीय एफ्रेम[2455] , जो काशिन के मूल निवासी थे और इल्मेन झील पर नोवगोरोड क्षेत्र में एक मठ के संस्थापक थे; उन्होंने अपना तपस्वी जीवन मकारियस के आश्रम में शुरू किया था। उग्लिच के परम पूज्य पैसियस, परम पूज्य मकरियस के भतीजे थे, जो उनकी सगी बहन जेनिया के पुत्र थे, जिनका विवाह इवान गाव्रेनेयेव से हुआ था, जो उग्लिच के अपानगेज राजकुमार आंद्रेई वासिलीयेविच द ग्रेट[2456] के एक सेवक थे, जो ग्रैंड प्रिंसि इयान वासिलीयेविच[2457] के भाई थे। वे अपने चाचा, परम पूजनीय मकारी द्वारा संचालित

[2455] परेकोम के परम पूज्य एफ्रेम, जो काशिन के मूल निवासी थे, ने कल्याज़िन में मकरिय मठ में अपना संन्यासी जीवन शुरू किया, और वशिरस्की के परम पूज्य सव्वा के मठ में उनका मुंडन संस्कार किया गया। इल्मेन झील के पश्चिमी तट पर एक सुनसान जगह पर जाकर, उन्होंने नोवगोरोड से 25 वर्स्ट दूर एक मठ की स्थापना की। आज, पेरकोम्स्की सेंट निकोलस मठ बंद हो चुका है। परम पूजनीय एफ्रेम का पर्व 10 मई को मनाया जाता है।

[2456] राजकुमार आंद्रेई वासिलीविच महान, मॉस्को के ग्रैंड प्रिंसि वासिली वासिलीविच द ब्लाइंड के चौथे पुत्र और मॉस्को के ग्रैंड प्रिंसि जॉन वासिलीविच III के सगे भाई थे। उन्हें 1462 में निधन हो चुके अपने पिता की आध्यात्मिक इच्छा के अनुसार उग्लिच शहर अपने अपानज (appanage) के रूप में मिला था। 1492 में, राजकुमार आंद्रेई को पेरियास्लाव-ज़ालेस्की में कैद कर दिया गया था और 1494 में उनकी मृत्यु हो गई।

[2457] महा राजकुमार इवान वासिलीविच तृतीय, वासिली वासिलीविच 'अंधा' के पुत्र, ने 1462 से 1505 तक रूसी राज्य पर शासन किया।

कोल्याज़स्कि मठ में एक भकि्षु के रूप में रहते थे, और वहीं से उन्हें उग्लचि के राजकुमार आंद्रेई वासलिीवचि ने बुलाया; राजकुमार के अनुरोध पर, उन्होंने पोक्रोव्स्की मठ[2458] की स्थापना की, उग्लचि से तीन वर्स्ट दूर, उन्होंने संतों का एक बड़ा समुदाय इकट्ठा कयिा और एक सख्त मठवासी जीवन स्थापति कयिा, जसिसे श्रम, उपवास, प्रार्थना और जागरण में अपने भाइयों के लिए एक उदाहरण प्रस्तुत कयिा।

मकाराई का धार्मकि जीवन लोगों के बीच प्रसद्धि और ईश्वर को प्रयि था। उनकी प्रार्थना चमत्कारी थी। इस प्रार्थना की शक्तसि, ईश्वर ने कई लोगों को उनके दुखों में सांत्वना और बीमारियों से स्वास्थ्य लाभ प्रदान कयिा।

काशनि जलि में केसोवो, या केसोवा गोरा नामक एक गाँव था, और आज भी है। वहाँ ज़कारयिास नाम का एक व्यक्तरि हता था; वह लंबे समय से बीमार था और लकवाग्रस्त था। उसने पहले भी मकरयिस की प्रार्थनाओं की शक्तकि े बारे में बहुत कुछ सुना था और उसने अपने रश्तिेदारों से उसे कोल्याज़निो के पूजनीय हेग्यूमेन के पास ले जाने के लिए कहना शुरू कर दयिा। जब वे उसे वहाँ ले आए, तो वह हेग्यूमेन के सामने फूट-फूट कर रोया और वनिती करने लगा:

'आदरणीय फादर मकरयिस! मेरी मदद करें, जो मैं लकवाग्रस्त पड़ा हूँ।'

सम्माननीय ने उत्तर दयिा:

'भाई, तुम्हें यहाँ मेरी कमज़ोरी की परीक्षा लेने के लिए लाया गया है: तुम एक ऐसे पापी से मदद कैसे माँग सकते हो जसिने अपने स्वयं के सुधार के लिए भी मुश्कलि से ही कुछ हासलि कयिा है!'

लेकनि लकवाग्रस्त व्यक्तरि चल्लिाता रहा:

'मैं जानता हूँ, हे ईश्वर के सेवक, मैं जानता हूँ कमिेरे जैसे पापी और नीच के लिए ईश्वर के समक्ष आपकी प्रार्थना व्यर्थ नहीं जाएगी!'

बीमार आदमी के सच्चे और गहरे वशि्वास को देखकर, मकरयिस ने कहा:

'मेरे बच्चे! परम कृपालु ईश्वर कसिी पापी की मृत्यु नहीं चाहता, बल्कि उसका जीवन और मोक्ष की ओर मुड़ना चाहता है; और जो भी साधन वह उचति समझे, वह उसे पश्चाताप के माध्यम से मोक्ष की ओर ले जाएगा। ईश्वर का प्रकोप तुम पर पड़ा है, और यदि तुम पश्चाताप करोगे और अपने पुराने रास्तों को छोड़ दोगे, तो ईश्वर तुम्हें चंगा कर देगा; लेकनि यदि नहीं, तो तुम इससे भी अधकि कष्ट सहोगे।'

तब उस बीमार व्यक्तरि ने, आँखों में आँसू लिए, अपने जवानी के दनिों से चले आ रहे पापों का मकरयिस के सामने इकबालयिा बयान कयिा; और रेवरेंड फादर ने प्रार्थना करने के बाद, उस पर अपना आशीर्वाद दयिा, और उसी समय उस बीमार व्यक्तकि े स्वास्थ्य को भी बहाल कर दयिा। बाद में, वह अपने गाँव में एक पादरी बन गया और अपने शेष जीवन में रेवरेंड फादर मकरयिस की शकि्षाओं को कभी नहीं भूला।

कुछ समय बाद, बोयार वंश का एक युवक, वासलिी रयिासनि, जो दैवीय आत्मा के वशीभूत होने से पीड़ति था, को पूजनीय के पास लाया गया। पूजनीय ने, उस बीमार व्यक्तकि े दुख और उसे लाने वालों के शोक को देखकर, करुणा से भरकर उसके ठीक होने के लिए एक प्रार्थना सेवा आयोजति की। जब प्रार्थना के बाद, रेवरेंड फादर ने उस बीमार व्यक्तपि र क्रॉस का चहि्न बनाया, तो वह तुरंत ठीक हो गया; ईश्वर की दया से अति-आनंदति होकर, वह अब अपने माता-पति के घर लौटना नहीं चाहता था, बल्कि मठ में ही रहने का संकल्प लेकर उसने मकरयिस से संन्यासी tonsure (केश-छेदन) ग्रहण कयिा।

एक अवसर पर, चोरों ने मठ के बैलों पर कब्जा कर लयिा, जनिका उपयोग भाई खेतों में काम के लिए करते थे। जैसे ही चोरों ने अपना माल लेकर भागने की कोशशि की, वे अचानक अंधे हो गए और लंबे समय तक मठ के प्रांगण में भटकते रहे। अंतत; वे अपने चोरी के सामान के साथ वापस मठ में आ गए। आदरणीय मकारयिस ने मठ के खेतों का नरीक्षण करते समय चोरों को देखा और, जैसे कि उन्हें पता ही न हो कि क्या हुआ है, उन्होंने पूछा कि वे वहाँ क्यों हैं और बैल उनके कब्जे में कैसे आए। अपराधयिों ने अपने बुरे इरादे की कबूलयित की और, उनके चरणों में गरिकर, क्षमा याचना की। माननीय पादरी ने उनके पाप को क्षमा कर दयिा, प्रार्थना के माध्यम से उनकी अंधापन को ठीक कर दयिा, और उन्हें फरि कभी ऐसे बुरे कर्म करने का प्रयास न करने की मनाही की।

[2458] आदरणीय पैइसयिस द्वारा स्थापति पोक्रोव्स्की मठ, उग्लचि शहर (यारोस्लाव प्रांत में) से तीन वर्स्ट दूर, वोल्गा नदी के बाएं कनिारे पर स्थति है; यह वर्तमान में एक तीसरे दर्जे का मठ है। पाइसयिस ने उग्लचि के राजकुमार आंद्रेई वासलिीवचि के अनुरोध पर मठ की स्थापना की, जो जॉन और दमित्रिी के बच्चों के गॉडफादर थे। परम आदरणीय पाइसयिस का 6 जून 1606 को बहुत वृद्धावस्था में नधिन हो गया, और इसी दनि उनकी स्मृति मनाई जाती है।

एक सख्त मठवासी समुदाय स्थापित करने और अपने जीवन की पवित्रता तथा अथक परिश्रम से एक बड़ी भाईचारे को आकर्षित करने के बाद, पूजनीय मकरियस ने अपने जीवित रहते हुए ही भाईचारे के भौतिक जीवन-यापन को सुनिश्चित कर लिया। उन्होंने अपनी पैतृक संपत्ति नव-स्थापित मठ को विरासत में दे दी। पहले उल्लेख किए गए पड़ोसी ज़मींदार इवान कोल्यागा के अलावा, मकरियस द्वारा दीक्षा प्राप्त अन्य भिक्षु भी थे जिन्होंने अपनी ज़मींदारियाँ उनके मठ को हस्तांतरित कर दीं और सामान व धन का दान दिया। माकरी के कारनामों की प्रसिद्धि ने विभिन्न क्षेत्रों से मठ के लिए दान आकर्षित किया, जैसा कि आज तक बचे हुए दस्तावेजों से प्रमाणित होता है। लगभग 1461 में, टवर के राजकुमार बोरिस अलेक्जेंड्रोविच ने झाज़ना में स्थित सेंट निकोलस मठ को उसकी ज़मीनों के साथ कोल्याज़िन मठ को सौंप दिया; राजकुमारी फेदोसिया इवानोव्ना, प्रिंस इवान बोरिसोविच की बेटी, ने सेलिश्चे और स्पीरोव के बस्तियों के साथ वासिलीव्स्कोये गाँव दान किया; प्रिंस अलेक्जेंडर रोमानोविच ने सात बस्तियों के साथ कॉन्स्टेंटिनोव्स्कोये गाँव दान किया। बंजर भूमि और बसी हुई भूमि के कई अन्य दान भी हुए।

लेकिन परम पूज्य मकरियस मठ की भौतिक भलाई से कम, अपनी आध्यात्मिक मुक्ति और अपने उदाहरण तथा उपदेशात्मक शब्दों के माध्यम से दूसरों को मुक्ति का मार्ग दिखाने के बारे में अधिक चिंतित थे; उन्होंने सुसमाचार के इस कथन के अनुसार कार्य किया: *'पहले परमेश्वर के राज्य और उसकी धार्मिकता की खोज करो,* और *ये सब बातें तुम्हें अतिरिक्त रूप से दी जाएँगी'* (मत्ती 6:33)। इस प्रकार जीवन यापन करते हुए, रेवरेंड फादर ने वृद्धावस्था में प्रवेश किया। यद्यपि उनकी शारीरिक शक्ति क्षीण हो रही थी, फिर भी वे जाग-प्रार्थना और प्रार्थना में स्वयं को समर्पित करते रहे; प्रार्थना में उनके पैर स्तंभों की भाँति अडिग रहे, दिन-रात। मार्च 1483 में, उन्हें एक गंभीर बीमारी हो गई। यह महसूस करते हुए कि उनका अंत निकट है, वे मौन हो गए। फिर उन्होंने भाइयों को अपने पास बुलाया और कहा:

'प्रिय पादरियों और बच्चों! मैं, पृथ्वी पर जन्मे सभी लोगों की तरह, अपने पूर्वजों के मार्ग पर चल पड़ा हूँ, और मैं आपको प्रभु परमेश्वर के हवाले करता हूँ, जो आपका मार्गदर्शन करने और आपको एक शाश्वत विरासत प्रदान करने में समर्थ हैं। अपनी मुक्ति सुनिश्चित करने के लिए हर संभव सावधानी बरतें; हमेशा परिश्रम, उपवास, प्रार्थना सभा और अखंड प्रार्थना में लगे रहें; आत्मा और शरीर की पवित्रता बनाए रखो; बुराई का बदला बुराई से या अपमान का बदला अपमान से न लो। हे भाइयों, यह समझो: यदि मुझे परमेश्वर के सामने साहस प्राप्त है, तो मेरी मृत्यु के बाद यह मठ नष्ट नहीं होगा, बल्कि फिल-फूलकर रहेगा।"

भाइयों को आशीर्वाद देकर और चूमकर, पूज्यनीय को पवित्र रहस्य प्रदान किए गए और 'सभी बातों के लिए परमेश्वर की महिमा, आमीन' कहकर उन्होंने अपनी आत्मा प्रभु को सौंप दी।

आदरणीय मकरियस का 17 मार्च 1483 को, अपने जीवन के अस्सी-पहले वर्ष में, निधन हो गया।

भाइयों द्वारा शोक व्यक्त किए जाने के बाद, पूजनीय मकरियस को उनके द्वारा निर्मित लकड़ी के चर्च के पास दफनाया गया। उनकी कब्र के ऊपर एक लकड़ी का चैपल बनाया गया और उसे पवित्र प्रतिमाओं से सजाया गया।

अपने जीवनकाल में पूज्य व्यक्ति के कार्यों ने उनके द्वारा स्थापित मठ में भक्तों को आकर्षित किया, और उनके परमधाम जाने के बाद भी यह सिलसिला जारी रहा। दान अखंड रूप से आते रहे। इस प्रकार, 1486 में, ट्वेर के राजकुमार मिखाइल बोरिसोविच ने मठ को बोर्शचिनी में एंड्रीव्स्कोये गाँव प्रदान किया। बाद में, 1511 में, दिमित्रोव के राजकुमार यूरी इवानोविच ने कई गाँवों और बस्तियों को काल्याज़िन मठ का हिस्सा बताया। अन्य, कम प्रसिद्ध व्यक्तियों से भी कई दान मिले।

आदरणीय मकरि द्वारा निर्मित पवित्र त्रिमूर्ति का लकड़ी का चर्च धीरे-धीरे जर्जर होने लगा। इस आवश्यकता के समय में मठ और इसके संस्थापक के भक्त तुरंत उसकी सहायता के लिए आगे आए।

1521 में, दिमित्रोव के एक व्यापारी, मिखाइल बोरोंकोव, ने पुरानी लकड़ी की चर्च की जगह एक पत्थर की चर्च बनाने की इच्छा व्यक्त की। बोरोंकोव ने बचपन में परम पूजनीय मकरियस को देखा था, अपने माता-पिता से उनके तपस्वी और धार्मिक जीवन के बारे में बहुत कुछ सुना था, और अपने पूरे जीवन में मठ के प्रति श्रद्धापूर्ण सम्मान बनाए रखा था। कोल्याज़िन मठ दिमित्रोव के राजकुमार यूरी इवानोविच के अपानगेज के भीतर स्थित था, जो मास्को के ग्रैंड प्रिंस वासिली इवानोविच के पूर्ण भाई थे। इस राजकुमार की अनुमति से—जो आदरणीय मकरि और उनके मठ की स्मृति के एक

समर्पति प्रशंसक भी थे—और ट्वेर और काशनि के बशिप नील के आशीर्वाद से[2459] , बोरोंकोव ने कोल्याज़स्कि मठ के मठाधीश इओआसाफ के मार्गदर्शन में अपनी योजना को साकार करना शुरू कयि।

नई पत्थर की चर्च के नर्मिाण के लिए स्थल का सावधानीपूर्वक सर्वेक्षण कयि गया ताकि यह सुनश्चिति हो सके कि झीलों के पानी से उसे कोई नुकसान न हो। उन्होंने पुरानी लकड़ी की चर्च से लगभग दस सैज़ेन (saazhens) की दूरी पर, मजबूत जमीन वाली एक ऊँची जगह तय की। जल का आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए एक प्रार्थना सभा के बाद, मठाधीश जोआसाफ ने वेदी के लिए नर्धिारति स्थान पर एक क्रॉस स्थापति कयि और चर्च की नींव की खाई खोदने का आशीर्वाद दयि। उन्होंने खोदना शुरू कर दयि। यह जगह उपयुक्त साबति हुई; पानी नहीं रसि रहा था। खुदाई करते समय, उन्हें उन भाइयों की हड्डयिाँ मलिीं जन्हिें पहले वहीं दफनाया गया था। लेकनि ठीक उसी जगह पर जहाँ मठ के पूजनीय संस्थापक को दफनाया गया था, उन्हें एक पूरी ताबूत मलि, जो पूरी तरह से अखंड और अपरविर्तति थी; उससे एक मीठी सुगंध आ रही थी। इसे छूने की हम्मित न करते हुए, मजदूरों ने तुरंत एबॉट जोसाफ को सूचति कयि, जन्होंने गहरी भावना और आँसुओं के साथ, खुदाई से नकिली ताबूत को चूमा, और एक पल के लिए भी यह संदेह नहीं कयि कि यह कीमती खोज मैकारयिस की ताबूत ही थी। उनके आदेश पर, घंटी बजाई गई; भाई-बंधु और आसपास के क्षेत्र के लोगों की एक बड़ी भीड़ इकट्ठा हो गई। तुरंत ही पुरानी चर्च के बगल में एक तंबू लगाया गया; उन्होंने श्रद्धापूर्वक ताबूत को जमीन से उठाया, उसे वहाँ ले गए, और उसके ऊपर एक स्मृतसिेवा आयोजति की। फरि उन्होंने ताबूत खोला: उसमें से और भी मधुर सुगंध फैली, और उस आदरणीय व्यक्तकिा शरीर, जो अड़तीस वर्षों से जमीन में पड़ा था, अपरविर्तति पाया गया; यहाँ तक कि उनके वस्त्र भी क्षतग्रिस्त नहीं थे, और उस वरष्ठि के सफेद बाल अभी भी चमकदार थे। यह घटना 26 मई 1521 को हुई। लोग, वस्मिय से भरकर, प्रभु की महमिा करने लगे, जो अद्भुत ढंग से अपने चुने हुओं की महमिा करते हैं। कई बीमार और दुर्बल लोग, जो वश्विास के साथ नव-खोजी गई अवशेषों के पास आए थे, चंगे हो गए।

मठाधीश और भ्रातागण, इस आशीर्वाद से अतआिनंदति होकर, इस बात की सूचना देने के लिए दमत्रिोव के राजकुमार यूरी इवानोवचि के पास दौड़े। राजकुमार को मौखकि रूप से सब कुछ सूचति करने के लिए एक ह्यरोमोंक (पुरोहति-भक्षिु) भेजा गया। प्रसन्न होकर, राजकुमार मठाधीश से अवशेषों के माध्यम से हुई चमत्कारी चंगाइयों के बारे में एक लखिति रपिोर्ट का इंतजार करने लगे। मठाधीश जोआसाफ ने यह सुनश्चिति कयि कि अवशेषों द्वारा कए गए सबसे महत्वपूर्ण चमत्कारों को, ठीक हुए लोगों के नामों के साथ, दर्ज कयि जाए, और इन रकिॉर्ड्स को राजकुमार के पास भेज दयि। यूरी इवानोवचि तुरंत मास्को के लिए रवाना हो गए और उन्होंने कोल्याज़नि में हुई सभी घटनाओं की जानकारी अपने भाई, ग्रैंड प्रसि वासलिी इवानोवचि, और साथ ही मेट्रोपॉलटिन डेनयिल ([2460]) को दी।

महान राजकुमार और मेट्रोपॉलटिन ने राजकुमार यूरी इवानोवचि को नर्दिेश दयि कि वे पूज्य व्यक्तकिी अवशेषों से चंगा हुए लोगों में से कम से कम कुछ लोगों को व्यक्तगित रूप से मास्को लाएं। कई लोगों को प्रस्तुत कयि गया और उन्होंने सत्य की गवाही दी। इसके बाद ग्रैंड ड्यूक और मेट्रोपॉलटिन ने मॉस्को के चुदोव मठ के आर्चमिैंड्राइट आयोन को खोए हुए अवशेषों से संबंधति सभी मामलों की मौके पर जांच करने के लिए कोल्याज़नि मठ भेजा। आर्चमिंड्राइट आयोन कोल्याज़नि मठ पहुँचे, उन्होंने मकरयिस की अवशेषों की अक्षुण्णता और उनकी चमत्कारकि शक्तकिी पुष्टकिी, और इस बात की गवाही मॉस्को में महाप्रसि और मेट्रोपॉलटिन के समक्ष दी।

इसके पश्चात्, महा राजकुमार और मेट्रोपॉलटिन ने मॉस्को में बशिपों, आर्चमिैंड्राइट्स, मठाधीशों और अन्य पुरोहतिों की एक परषिद बुलाई। सम्माननीय मकारयिस की अवशेषों के प्रकट होने से जुड़ी सभी परस्थितियिों की रपिोर्ट परषिद को दी गई; उनके पवत्रि जीवन और उनके अवशेषों के माध्यम से, उनके जीवनकाल में और मृत्यु के बाद उन्होंने जो चमत्कार कए, उनकी जांच की गई। परषिद ने कोल्याज़नि के सम्माननीय मकारयिस को संत घोषति करने का नर्णिय लयि और उनके सम्मान में उनकी मृत्यु के दनि, 17 मार्च, और अवशेषों के मलिने के दनि, 26 मई को स्थानीय पर्व स्थापति कए।

आदरणीय मकारयिस की अक्षय अवशेषों को जल्द ही एक अस्थायी तंबू से एक पुरानी लकड़ी की चर्च में स्थानांतरति कर दयि गया, और फरि एक नए ओक के अवशेष-पात्र में रखकर व्यापारी बोरोंकोव द्वारा नर्मिति नई पत्थर की चर्च के दाईं ओर भव्यता से प्रदर्शति कयि गया।

[2459] एक ग्रीक, बशिप नील ने लगभग 1509 से 1521 तक ट्वर धर्मप्रांत का प्रशासन संभाला।

[2460] मेट्रोपॉलटिन डेनयिल, जो वोल्कोलांस्क के जोसेफ के शष्यि थे, को 1522 में जोसेफ मठ के महाधर्माध्यक्षों में से चुना गया था; उन्होंने 1539 में अपने पद से इस्तीफा दे दयि।

कोल्याज़स्कि मठ में, अवशेषों की खोज के अवसर पर, ट्वेर के थियोडोसियस द्वारा रचित एक प्रार्थना-गीत गाया जाने लगा। मकारी के जीवन की सादगी ने उनके जीवनकाल में ही कुछ लोगों को परेशान किया, और उनके अवशेषों की खोज के बाद भी उन्हें उनकी पवित्रता पर संदेह करने के लिए प्रेरित किया। इस प्रकार, मकारी के अवशेषों की खोज के दस साल बाद ही, एक प्रतिष्ठित भिक्षु, वृद्ध वासियन पत्रीकीव ने मकारी के जीवन की सादगी पर ताना मारते हुए बात की और उन्हें 'एक देहाती किसान' कहा। लेकिन परिषद में मेट्रोपॉलिटन डैनियल ने वासियन से टिप्पणी की कि यदि किसी को संतों का न्याय करना हो, तो वह कई लोगों को दोषी ठहराएगा, जिनमें नबी, प्रेरित, बिशप, धर्मी और पूजनीय शामिल हैं; क्योंकि ईश्वर की दृष्टि में, पवित्रता के मामलों में, जो बात मायने रखती है वह शारीरिक, बाहरी कुलीनता नहीं, बल्कि आध्यात्मिक, आंतरिक कुलीनता है[2461] । 1647 के मॉस्को इक्यूमेनिकल काउंसिल में यह आदेश दिया गया कि अन्य लोगों के साथ-साथ कोल्याज़िन के परम पूजनीय मकारियस के सम्मान में 'भजन गाए जाएं और उत्सव मनाए जाएं', जिन्हें 'महान चमत्कार करने वालों' में शामिल किया गया था[2462] ।

जब पूज्य मकरियस की अवशेषों को खोला गया, तो कोल्याज़िनो मठ के भिक्षुओं ने चौदह चमत्कारों का दस्तावेजीकरण किया। उनमें से कुछ इस प्रकार हैं।

जॉन नाम का एक गरीब आदमी मठ के भिक्षागृह में रहता था: उसकी टाँगें लकड़ी की तरह सूख गई थीं और विकृत हो गई थीं; पूरे बारह साल तक वह अपने हाथों और एक छोटी छड़ी के सहारे रेंगने के सिवा कुछ नहीं कर सकता था। एक दिन, जब उसने देखा कि पुरोहित पूज्यनीय की कफ़न पर प्रार्थना सभा कर रहे थे, तो वह बड़ी कठिनाई से रेंगता हुआ उनकी ओर गया और उनसे प्रभु और उनके संत से अपने लिए प्रार्थना करने का अनुरोध किया। पुरोहितों ने उस पर पवित्र जल छिड़ककर और अवशेष-पेटिका खोलकर उस पीड़ित को उठाने ही वाले थे ताकि वह पवित्र अवशेषों को नमन कर सके, लेकिन उसी क्षण उसकी टाँगें सीधी हो गईं, वह अपने आप खड़ा हो गया और सभी को चकित और स्तब्ध कर देने वाले अंदाज में पवित्र अवशेषों को नमन कर सका। उस समय से, वह पूरी तरह से स्वस्थ हो गया।

कोल्याज़स्कि मठ का एक डीकन, जिसका नाम एंड्रेई था, जो लंबे समय से अपनी हड्डियों में तीव्र दर्द से पीड़ित था, उसे आदरणीय संत की अवशेषों के सामने लाया गया, और जब उसने श्रद्धापूर्वक उन्हें छुआ, तो वह तुरंत ठीक हो गया।

अन्य लोग भी विभिन्न बीमारियों से ठीक हुए: मठ के दो किसान मानसिक विक्षिप्तता से मुक्त हुए; एक यात्री, जिसकी दाहिने हाथ की तीन उंगलियां मुड़ी हुई थीं और हथेली से जुड़ गई थीं, उसकी टेढ़ी उंगली तब सीधी हो गई जब उसने प्रार्थना करते हुए चमत्कार करने वाले की कब्र को छुआ। एक महिला पूरे शरीर में ट्यूमर और सूजन से पीड़ित थी, जबकि दूसरी लंबे समय से बहरी थी; ईश्वर के संत से भक्तिपूर्वक प्रार्थना करने के बाद दोनों को ठीक कर दिया गया। ग्रेगरी नाम का एक युवक, जो दस वर्षों से लकवाग्रस्त पड़ा था, उसे एक बिस्तर पर लाया गया और संत की कब्र के पास लिटा दिया गया; उसने गहरी भावना के साथ अवशेष-पात्र को निहारा, रोया और चंगा होने के लिए प्रार्थना की। धीरे-धीरे, उसे अपने पैरों और बाहों में हलचल महसूस होने लगी; अपनी ताकत जुटाकर, वह बिस्तर से उठा और पवित्र अवशेषों के सामने साष्टांग प्रणाम करने लगा। जो लोग उस बीमार व्यक्ति को लाए थे, वे और जो व्यक्ति चंगा हुआ था, उन्होंने ईश्वर और उनके संत की स्तुति की।

एक दिन, लॉरेंस नाम का एक व्यक्ति मठ में आया और उसने बताया कि वह दो साल से अपने पैर की बीमारी से पीड़ित था, लेकिन जब उसने कोल्याज़िन मठ में मठवासी संन्यास ग्रहण करने का संकल्प लिया, तो वह ठीक हो गया। मठ जाते समय, उस पर डाकुओं ने हमला कर दिया; घायल होकर, वह मॉस्को की ओर वापस मुड़ गया। वहाँ उसे अंधापन हो गया। हैरानी और निराशा में, उसे मकरियस के मठ में मठीय संन्यास ग्रहण करने का अपना व्रत याद आया - और उसकी दृष्टि वापस आ गई। अब वह अपना व्रत पूरा करने के लिए मठ में आया था।

[2461] भिक्षु राजकुमार वासियन पत्रीकेव पर 1531 में परिषद में मुकदमा चलाया गया और उन्होंने मेट्रोपॉलिटन डेनियल के साथ एक बहस में नए रूसी चमत्कार-कर्मियों पर अपने विचार व्यक्त किए। स्वयं 'बहस' के लिए, वर्ष 1847 के *रीडिंग्स ऑफ द सोसाइटी फॉर द हिस्ट्री एंड एंटीक्विटीज ऑफ रूस एट मॉस्को यूनिवर्सिटी* को देखें; इसका एक सारांश उनकी उत्कृष्टता मकरियस की *हिस्ट्री ऑफ द रशियन चर्च*, खंड 6, पृष्ठ 200 पर दिया गया है।

[2462] 1521 में अवशेषों की खोज के बाद, सेंट मकरिई के सम्मान में एक स्थानीय पर्व दिवस स्थापित किया गया, और 1547 की परिषद में, एक सर्व-चर्च पर्व दिवस स्थापित किया गया, और उन्हें 'महान चमत्कार-कर्ता' नाम दिया गया। ई.ई. गोलुबिंस्की, *रूसी चर्च में संतों के कैनोनाइज़ेशन का इतिहास*, पृष्ठ 83 और 100 देखें।

बोयार वंश का एक कुलीन व्यक्ति, जिसका नाम जॉन था, कोल्याज़िन मठ में आया और मठाध्यक्ष ने उसे उचित सम्मान के साथ स्वागत किया। घर लौटने पर, मठाध्यक्ष ने तीर्थयात्री को पूजनीय मकरियस की एक प्रतिमा का आशीर्वाद दिया। घर वापस आकर, उस कुलीन व्यक्ति ने पूजनीय मकरियस के चमत्कारों के बारे में विस्तार से बताया। उनके नौकरों में थियोडोर नाम का एक पक्षाघात से पीड़ित व्यक्ति था, जो छह साल से बिस्तर पर पड़ा और हिल-डुल नहीं सकता था। उसके धार्मिक स्वामी ने पूज्यनीय की प्रतिमा उसके पास लाई और पवित्र जल के आशीर्वाद से एक प्रार्थना सेवा करने का आदेश दिया। जब उस बीमार व्यक्ति पर पवित्र जल छिड़का गया, तो वह अपने बिस्तर से उठ खड़ा हुआ, स्वस्थ हो गया, जिससे उपस्थित सभी लोग चकित और सांत्वना महसूस करने लगे।

एक ओनुप्रियस नामक व्यक्ति, जो राक्षसों द्वारा ग्रस्त था और जिसे बड़ी कठिनाई से नोवगोरोड से लाया गया था, ने चमत्कार करने वाले की अवशेष-पेटी के पास आने से इनकार कर दिया और उसने अपमानजनक शब्द बोले, इसलिए उसके रिश्तेदार उसे वापस ले जाने की तैयारी कर रहे थे, और कुछ ने तो उस आदरणीय व्यक्ति को उस बीमार व्यक्ति को ठीक न कर पाने के लिए फटकारने की हिम्मत भी की। अंतत; तथापि, उन्होंने उसे जबरदस्ती चमत्कार करने वाले अवशेष-स्थल तक घसीट कर ले जाने का निश्चय किया। जैसे ही भूतग्रस्त व्यक्ति ने अवशेष-स्थल को छुआ, वह एक चीख के साथ जमीन पर गिर पड़ा, उसके मुंह से झाग निकल रहा था; वहां मौजूद लोगों ने सोचा कि वह पहले ही मर चुका है और उन्होंने उस पर पवित्र जल छिड़क दिया। लेकिन पीड़ित अचानक होश में आ गया और, पूरी तरह से होश में आकर, उसने पूछना शुरू कर दिया कि वह कहाँ था। जवाब मिलने पर, उसने पूजनीय संत के अवशेषों को श्रद्धापूर्वक चूमा, कृतज्ञता की एक भावपूर्ण प्रार्थना की और, मठ को दान देने के बाद, अच्छे स्वास्थ्य के साथ अपने देश लौट आया।

विशेष रूप से पड़ोसी शहरों के बीमारों पर कई चमत्कारिक उपचार हुए, जहाँ मकरिई की प्रसिद्धि उनके जीवनकाल में और उनकी मृत्यु के बाद भी फैली। इस प्रकार, काशिन के निम्नलिखित निवासी ठीक हुए: मठाधीश वरसनोफियस, जो पहले दिमित्रीव्स्की मठ के आर्चिमंड्राइट थे[2463] , जो बाद में अपने जीवन के बाकी दिनों के लिए कोल्याज़्स्की मठ में रहे; काशिन की मारिया नामक एक नन, जो लंबे समय से अपने पैरों की बीमारियों से पीड़ित थी; मकरियस के मठ का सेक्सटन, तिमोफेई नामक व्यक्ति, जो दिमित्रोव शहर में पक्षाघात से बीमार पड़ गया था; और, अंत में, सिमोन नामक एक और भिक्षु, जो वोल्गा पर अचानक गंभीर रूप से बीमार पड़ गया था।

रेवरेंड मकरि के अंतिम शब्द सच साबित हुए: जिस मठ को उन्होंने पीछे छोड़ा था, वह कमजोर नहीं पड़ा, बल्कि फल-फूल गया; मॉस्को के ज़ारों ने इसका दौरा किया, जिन्होंने इसमें उदार दान दिया। इस प्रकार, 1553 में, ज़ार इवान वासिलीविच द टेरिबिल ने मठ का दौरा किया और इसे गोरोदिश्चे गाँव, साथ ही इसकी सभी बंजर भूमि और 28 गाँवों के साथ प्रदान किया। 1599 में, ज़ार बोरिस फेडोरोविच गोडुनोव अपनी पत्नी और बच्चों के साथ कोल्याज़िन मठ आए ताकि वे प्रार्थना कर सकें और राजकुमारी क्सेनिया के डेनिश राजकुमार जॉन के साथ प्रस्तावित विवाह के लिए ईश्वर-प्रसन्न संत का आशीर्वाद प्राप्त कर सकें। आगंतुकों ने पूज्य मकरियुस को एक भव्य चाँदी का अवशेष-पात्र भेंट किया, जिसमें संतों के अवशेष उनकी उपस्थिति में स्थानांतरित किए गए।

छद्म शासकों और ज़ार वासिली इवानोविच शुइस्की के अशांत काल में, कोल्याज़िन मठ महत्वपूर्ण घटनाओं का केंद्र बिंदु बन गया और इसने बड़ी विपत्तियों का सामना किया। 1609 में, मठ रूसी सेनाओं के प्रसिद्ध कमांडर प्रिंस मिखाइल वासिलीयेविच स्कोपिन-शुयस्की का मुख्यालय बना, जिन्होंने 14 अगस्त को यहाँ जान सापिएहा और अन्य पोलिश कमांडरों के साथ-साथ रूसी डाकुओं और देशद्रोहियों को करारी हार दी। लेकिन 1610 में, मठ पर एक भयंकर विपत्ति आई; राजकुमार स्कोपिन-शुयस्की अब वहाँ नहीं थे, हालांकि सेना का एक हिस्सा अभी भी मौजूद था। पोलिश कमांडरों में से एक, साहसी और लालची लूटपाट करने वाले लिसोव्स्की ने, सभी तरफ से घेर लेने के बाद, सुज़्डल से पोलिश सीमा तक अपना रास्ता जबरदस्ती बनाने का संकल्प लिया। वोल्गा पार करने के बाद, उसने कोल्याज़िन मठ पर एक आश्चर्यजनक हमला किया। वॉयवोड ज़ेबत्सोव, जो वहाँ तैनात थे, ने बेताबी से अपनी रक्षा की और मठ से बाहर निकलकर हमले किए, लेकिन दुश्मन मठ की लकड़ी की दीवारों में आग लगाने में सफल हो गया, जिससे अन्य इमारतें भी आग की चपेट में आ गईं। ज़ेबत्सोव को आत्मसमर्पण करने के लिए मजबूर होना पड़ा। दुश्मन ने मठ में मौजूद संतों और अन्य लोगों का कत्लेआम कर दिया, जिसमें वोइवोड ज़ेबत्सोव भी शामिल थे; मठ को लूट लिया गया; पूजनीय मकरि के

[2463] काशिनका नदी के किनारे, काशिन शहर में स्थित दिमित्रीव्स्की या दिमित्रोव्स्की मठ की स्थापना पंद्रहवीं शताब्दी में हुई थी; यह 1764 से बंद पड़ा है।

अवशेषों को उनके ताबूत से फाड़ दिया गया, और ताबूत को स्वयं—जो गोडुनोव का उपहार था—तीन टुकड़ों में काटकर दुश्मन ले गया।

मठ के लिए ऐसी भयंकर तबाही से उबरना कोई आसान काम नहीं था। हालाँकि, भक्तों की भक्ति—जो स्कोपिन-शुइस्की के समय में मठ की महत्वपूर्ण सेवाओं और मठ पर आई विपत्ति पर उनके शोक के कारण बढ़ गई थी—साथ ही मठाधीशों की लगन ने, कम समय में व्यवस्था बहाल करना, क्षतिग्रस्त चीजों की मरम्मत करना, और यहाँ तक कि नए चर्चों और अन्य भवनों का निर्माण शुरू करना भी संभव बना दिया।

1619 में, ज़ार मिखाइल फेदोरोविच ने कोल्याज़्स्की मठ का दौरा किया और, भक्तिपूर्ण प्रार्थना और श्रद्धा के साथ, पूजनीय मकारियोस के चमत्कारी अवशेषों की पूजा की। तब ज़ार ने मठ को एक घंटी दान की, और बाद में, 1635 में, उसी ज़ार ने अपने पिता, पैट्रिआर्क फिलारेट निकितिच की स्मृति में एक और बड़ी घंटी दान की। 1648 में, पूरे मठ के चारों ओर एक पत्थर की दीवार बनाई गई। 1654 में, जब मास्को में प्लेग फैली हुई थी, तो ज़ार अलेक्सी मिखाइलोविच की पत्नी, मारिया इलिनिचिना, अपने बच्चों और पूरे दरबार के साथ कोल्याज़िन मठ में शरण लेने आईं; पैट्रिआर्क निकोन भी उनके साथ वहाँ थे; ज़ारिना और उनके दरबार को 1641 में बने भिक्षुओं के क्वार्टर में ठहराया गया था, जो उस समय से 'ज़ार के क्वार्टर' के नाम से जाने जाने लगे, जबकि पैट्रिआर्क निकोन मठाधीश के क्वार्टर में रहे, जो तब से 'पैट्रिआर्क के क्वार्टर' के नाम से जाने गए। अगले वर्ष, 1655 में, कोल्याज़िन मठ में अपने प्रवास की स्मृति में, ज़ारिना मारिया ने इसे एक आर्चिमैंड्राइट मठ का दर्जा देने के लिए याचिका दायर की।

सत्रहवीं शताब्दी में और बाद में भी, मठ में नए चर्च बनाए गए, जबकि पुराने चर्चों का पुनर्निर्माण किया गया; अन्य भवनों का भी पुनर्निर्माण और मरम्मत की गई। जैसा कि आज है, मठ में हमेशा से तीर्थयात्रियों का आगमन होता रहा है और आज भी होता रहता है, विशेष रूप से टवर और यारोस्लाव प्रांतों के पड़ोसी जिलों के साथ-साथ व्लादिमीर और मास्को प्रांतों से भी। विशेष रूप से बड़ी संख्या में तीर्थयात्री 17 मार्च और 26 मई को मठ में आते हैं - यह संत की अवशेषों की खोज का दिन है; इस दिन, आदरणीय मकरि के पवित्र अवशेषों से युक्त अवशेष-पात्र को मठ के मुख्य चर्च, पवित्र त्रिमूर्ति चिर्च[2464] , के चारों ओर जुलूस में ले जाया जाता है, जहाँ इसे हमेशा, उद्धारकर्ता की अकल्पित छवि के पार्श्व चैपल के एक कोष्ठक में रखा जाता है।

1764 में, जब मठ संपत्तियों की स्थापना हुई, तो कोल्याज़िन मठ की संपत्तियों की सूची में 2,803 किसान परिवार थे, जिनमें 12,000 पुरुष शामिल थे। मठ को प्रथम श्रेणी का वर्गीकृत किया गया था।

ट्रोपारियन, स्वर 8:

फादर मकरियस, आपने संयम और जागरण द्वारा सांसारिक बुद्धि को समाप्त कर दिया; क्योंकि वह स्थान जहाँ आपने अपना पसीना बहाया, तुरही की तरह ईश्वर को पुकारता है, आपके धार्मिक कार्यों की घोषणा करते हुए, और आपके निधन के बाद आपके पवित्र अवशेष चंगाई प्रदान करते हैं। इसलिए हम आपसे पुकारते हैं: हमारे प्रभु परमेश्वर मसीह से प्रार्थना करें कि वे हमारी आत्माओं को बचाएँ।

कॉन्टाकियन, स्वर 2:

स्वर्गीय वस्तुओं के लिए तरसते हुए, संयम, परिश्रम और पसीने में आनंद लेते हुए, और अपने शरीर की इच्छाओं को वश में कर, आपने हमारे प्रभु मसीह से चमत्कारों का वरदान प्राप्त किया और एक अत्यंत दीप्तिमान दीपक बन गए। अत; मसीह की कलीसिया आपको स्तुतियों से महिमामंडित करती है, हे पूजनीय मकरियुस, हमारे पिता।

[2464] संत मकारियस की अवशेषें 1700 में बनी एक चांदी की सुवर्ण-plaated कलश में सार्वजनिक रूप से रखी गई हैं, जिसमें उन्हें 18 सितंबर 1700 को ट्वेर के आर्चबिशप सर्जियस ने चार आर्चिमांड्राइट्स के साथ स्थानांतरित किया था।

31 मार्च

18 मार्च (पुराना कैलेंडर)

हमारे पिता सिरीपियम, यरूशलेम के आर्चबिशप की स्मृति, जो संतों में गिने जाते हैं

18 मार्च को स्मरणोत्सव

यरूशलेम के संत सिरील, जो धर्मपरायण माता-पिता के घर पैदा हुए थे, ने एक सख्त रूढ़िवादी पालन-पोषण प्राप्त किया; कॉन्स्टेंटाइन महान के शासनकाल में उन्होंने संन्यासी की शपथ ली, और उनके पुत्र कॉन्स्टेंटियस[2465] के अधीन, आर्चबिशप मैक्सिमिस की मृत्यु के बाद उन्हें यरूशलेम के सिंहासन के लिए चुना गया। ईसाई धर्म-सिद्धांत की शुद्धता को बनाए रखने के लिए उत्सुक, संत सिरिल ने आर्चबिशप के रूप में कार्य करते हुए, एरियस[2466] और मेसेडोनियस[2467] के संप्रदायों के खिलाफ सक्रिय और अथक रूप से संघर्ष किया।

ऐसा करने पर, उन्होंने एरियन विधर्म में पड़े बिशपों से अपने खिलाफ प्रबल शत्रुता को भड़काया; उनमें से एक थे फिलिस्तीन के केसरिया के मेट्रोपॉलिटन अकाकियस[2468] , जो बाद में संत सिरिल के पहले निर्वासन के मुख्य उकसाने वाले बने।

[2465] कांस्टेंटिन महान के पुत्र कांस्टैंटियस को उनके पिता की मृत्यु पर पूर्व, एशिया और मिस्र का उत्तराधिकार मिला; 361 में, अपने भाई कांस्टेंस के हत्यारे मैग्नेंटियस को हराने के बाद, उन्होंने पूरे रोमन साम्राज्य को अपने शासन के अधीन कर लिया। उसने या तो मूर्तिपूजक मंदिरों को नष्ट कर दिया या उन्हें चर्चों में बदलने के लिए ईसाइयों को सौंप दिया; कई मौकों पर उसने मृत्युदंड की सजा के साथ मूर्तिपूजक पूजा पर प्रतिबंध लगाने वाले कानून जारी किए। हालाँकि, एरियन विधर्म के प्रति अपनी सहानुभूति के कारण, कॉन्स्टेंटियस ने उस समय के धार्मिक संघर्ष को बहुत बढ़ा दिया; उसने उन रूढ़िवादी बिशपों को सताया जो एरियन की गलतियों में विश्वास नहीं करते थे, उन्हें उनके पदों से हटा दिया और यहाँ तक कि उन्हें कैद भी कर दिया; उसके शासन के तहत, एरियनों ने राज्य में उच्चतम पदों पर कब्जा कर लिया था। कांस्टेंटियस की मृत्यु 361 में अपने चचेरे भाई जूलियन के खिलाफ एक अभियान के दौरान हुई, जिसे गॉल की सेनाओं द्वारा सम्राट घोषित किया गया था, जहाँ कांस्टेंटियस ने स्वयं उसे मुख्य सेनापति नियुक्त किया था। नाज़ियान्ज़स के ग्रेगरी के अनुसार, अपनी मृत्यु से पहले, कांस्टेंटियस ने ऑर्थोडॉक्स (सही आस्था वाले) लोगों पर अत्याचार करने के लिए पश्चाताप किया।

[2466] एरियन विधर्म के संस्थापक अलेक्जेंड्रिया के एक पादरी एरियस थे। उन्होंने इस बात से इनकार किया कि परमेश्वर का पुत्र पिता के समान सार का है, यीशु मसीह को एक सृजित प्राणी माना, और उनमें दिव्य गुणों - सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ, आदि - को नहीं माना। एरियस के धर्मद्रोह को पहले (326) और दूसरे (381) सार्वभौमिक परिषदों में निर्णायक रूप से खारिज कर दिया गया था, जिसमें परमेश्वर के पुत्र की पिता के साथ समानता स्थापित की गई थी—यह एक ऐसा विश्वास है जिसे पहले सार्वभौमिक परिषद के धर्मपिता द्वारा रचित धर्म-विश्वास के दूसरे अनुच्छेद में हर ईसाई स्वीकार करता है। 5वीं शताब्दी में, रोमन साम्राज्य से एरियनवाद गायब हो गया, लेकिन जर्मनी में गोथ, बरगंडियन, वैंडल और लोम्बार्ड लोगों के बीच इसका पुनरुत्थान हुआ।

[2467] मेसेडोनियस, कॉन्स्टैंटियस के शासनकाल के दौरान कॉन्स्टेंटिनोपल के बिशप थे और उन्होंने एरियस के विधर्म को स्वीकार किया। बाद में एरियनों के प्रति भी अपनी क्रूरता के कारण पदच्युत कर दिया गया, वह एक नए सिद्धांत का मुखिया बनना चाहता था, और उसने एरियस की भावना में पवित्र आत्मा के बारे में एक सिद्धांत विकसित किया: मेसेडोनियस पवित्र आत्मा को पवित्र त्रिमूर्ति के पहले दो व्यक्तियों से मौलिक रूप से अलग मानता था, जिसे पिता और पुत्र की दिव्यता और महिमा में कोई हिस्सा नहीं था। मैसेडोनियन विधर्म को दूसरे सार्वभौमिक परिषद (381 ईस्वी) में निंदा किया गया था, और पवित्र आत्मा के संबंध में चर्च की सच्ची शिक्षा धर्म-स्वीकृति के आठवें अनुच्छेद में हमेशा के लिए स्थापित हो गई। चर्च फादर्स—बेसिल द ग्रेट, ग्रेगरी ऑफ निस्सा और ग्रेगरी द थियोलॉजिस्ट—मैसेडोनियन विधर्म का मुकाबला करने में विशेष रूप से सक्रिय थे।

[2468] केसरिया, भूमध्य सागर के पूर्वी तट पर, जाफ़ा (प्राचीन जोपा) के उत्तर में स्थित एक शहर था। इसका निर्माण हेरोद ने सीज़र अगस्टस के सम्मान में, प्राचीन कनानी शहर स्ट्रैटन के खंडहरों पर किया था। सम्राट वेस्पासियन (69–79) के अधीन, इसे एक रोमन कॉलोनी बना दिया गया। यरूशलेम के विनाश से पहले ही, केसरिया रोमन प्रोकोरेटर्स (प्रशासनिक अधिकारियों) का केंद्र बन गया था (प्रेरितों के काम 23:23-24)। प्रेरितों के समय में, यह शहर इस तथ्य के लिए उल्लेखनीय था कि यहीं पर प्रेरित पतरस ने पहले गैर-यहूदी, शतानीक कर्नेलियुस को ईसाई धर्म में परिवर्तित किया था (प्रेरितों के काम 10:1-48); पहले डिकनों में से एक, प्रेरित फिलिप, यहाँ रहते थे (प्रेरितों के काम 8:40; प्रेरितों के काम 21:8); प्रेरित पौलुस यहाँ आए और दो साल तक बेड़ियों में रहे (प्रेरितों के काम 9:30; प्रेरितों के काम 18:22; प्रेरितों के काम 21:8; प्रेरितों के काम 23:23; प्रेरितों के काम 24:1–27; प्रेरितों के काम 25:1–27; प्रेरितों के काम 26:1–32)। यरूशलेम के विनाश के बाद, केसरिया फिलिस्तीन का प्रमुख शहर और बिशप का आसन बन गया। 638 में, इस्लाम के प्रसार के साथ, केसरिया तुर्की शासन के अधीन आ गया; इसे 1102 में क्रूसेड

एक बार, यरूशलेम में पेंटेकोस्ट के पर्व पर दोपहर के लगभग तीन बजे,[2469] पर निम्नलिखित चमत्कारिक संकेत देखा गया: स्वर्ग में पवित्र क्रूस की प्रतिमा एक चकाचौंध कर देने वाली रोशनी से दमकती हुई दिखाई दी; गोलगोथा[2470] से शुरू होकर यह जैतून के पहाड़[2471] तक फैला हुआ था। चूंकि सम्राट कॉन्स्टैंटियस, जो एरियन विधर्म का अनुयायी था, ऑर्थोडॉक्स का उत्पीड़न कर रहा था और विधर्मियों की हर तरह से सहायता कर रहा था, संत सिरिल ने उसे इस चमत्कारिक संकेत के बारे में सूचित किया और उससे भूल के मार्ग को त्यागने तथा ऑर्थोडॉक्सी में परिवर्तित होने का आग्रह किया।

इस बीच, मेट्रोपॉलिटन अकाकियस ने सम्राट के समर्थन का फायदा उठाते हुए, जिसके वह करीब थे, संत सिरील के खिलाफ विद्रोह कर दिया क्योंकि उन्होंने उन्हें एक विधर्मी बताया था और उनके आदेशों का पालन करने से इनकार कर दिया था, भले ही उस समय यरूशलेम केसेरिया के मेट्रोपॉलिटन के अधिकार क्षेत्र में था; यह रोमनों द्वारा इसकी तबाही के बाद यरूशलेम के पतन के परिणामस्वरूप हुआ था[2472] । हालाँकि, संत किरिल न केवल एक विधर्मी मेट्रोपॉलिटन के अधीन होने से इनकार कर दिया—जिसे, इसके अलावा, सार्डीका की स्थानीय परिषद द्वारा पदच्युत कर दिया गया था[2473] —बल्कि उन्होंने उसे चर्च के नियमों के अनुसार उस अधिकार का दुरुपयोग करने के लिए भी निंदा की जो उसका नहीं था; उक्त कारणों से, उन्होंने मेट्रोपॉलिटन अक्काकियस के अधीन होने को अपने लिए संभव नहीं समझा। इसके अलावा, संत किरिल का मानना था कि, इसके विपरीत, फिलिस्तीन का केसरिया यरूशलेम के अधीन होना चाहिए, क्योंकि यरूशलेम की कलीसिया सभी कलीसियाओं की माता है[2474] ; यह और भी अधिक इसलिए था क्योंकि सार्डिका की परिषद, जिसने अक्काकियस को पदच्युत किया था, ने उस अधिकार को जो अक्काकियस का था, संत सिरिल के पूर्ववर्ती, यरूशलेम के आर्चबिशप मैक्सिमिस को हस्तांतरित कर दिया था।

के दौरान बाल्डविन द्वारा उनसे मुक्त कराया गया, लेकिन 1265 में तुर्कों ने इसे फिर से जीत लिया और पूरी तरह से नष्ट कर दिया, जिससे शहर के खंडहर के अलावा कुछ भी नहीं बचा।

[2469] यह वर्ष 351 में हुआ था।

[2470] गोलगोथा, वह पहाड़ी जिस पर प्रभु यीशु मसीह को सूली पर चढ़ाया गया था: यह पहले यरूशलेम के बाहर स्थित थी (मत्ती 27:32–33; यूहन्ना 19:17–41; इब्रानियों 13:12), और उत्तर-पश्चिम में स्थित है। गोलगोथा, जो हिब्रू शब्द 'खोपड़ी' से लिया गया है, खोपड़ी का स्थान (लूका 23:33), संभवतःखोपड़ी से समानता के कारण इसका नाम पड़ा। परंपरा के अनुसार, आदम को यहीं दफनाया गया था।

[2471] जैतून का पर्वत, या जैतून के पेड़ों का पर्वत, यहूदिया के पहाड़ों में से एक है, जो यरूशलेम के पूर्व में स्थित है (यहे. 11:23); इसे 'जैतून के पेड़ों का पर्वत' नाम वहाँ उगने वाले जैतून के पेड़ों की बहुतायत के कारण मिला। अपने पृथ्वी पर जीवन के दौरान, प्रभु यीशु मसीह अक्सर अपने शिष्यों के साथ इस पहाड़ पर चढ़ा करते थे (यूहन्ना 8:1; यूहन्ना 18:2)। जैतून के पहाड़ की पश्चिमी ढलान पर गेथ्सेमनी का बगीचा है, जहाँ प्रभु ने अपने दुख-संकट से एक रात पहले प्रार्थना की थी और जहाँ यहूदा ने उनका विश्वासघात किया था (मत्ती 26:30–60; मरकुस 14:26–46; लूका 22:39)। पहाड़ी की दक्षिण-पूर्वी ढलान पर बेथनी गाँव बसा था, जहाँ से प्रभु ने यरूशलेम में अपनी विजयी प्रवेश किया (मत्ती 21:21; लूका 19:29)। परंपरा के अनुसार, प्रभु जैतून के पहाड़ से स्वर्ग में आरोहण हुए (प्रेरितों के काम 1:12)। चौथी शताब्दी में, कॉन्स्टेंटाइन महान की माँ ने जैतून के पहाड़ पर एक ईसाई चर्च बनवाया था, जिसे बाद में तुर्कों ने मस्जिद में बदल दिया।

[2472] यह विनाश उद्धारकर्ता मसीह की मृत्यु के कई दशकों बाद हुआ, जिन्होंने अक्सर उस दुखद भाग्य की भविष्यवाणी की थी जिसका यरूशलेम को सामना करना था (मत्ती 24:1–51; मरकुस 13:1–37; लूका 19:41–44)। नीरो के शासनकाल (54–68) के दौरान, यहूदियों ने रोमनों के खिलाफ विद्रोह कर दिया। नीरो ने विद्रोहियों के खिलाफ वेस्पासियन के नेतृत्व में एक सेना भेजी; वेस्पासियन ने जल्द ही गलील पर नियंत्रण कर लिया और यरूशलेम की घेराबंदी करने की तैयारी कर रहा था, लेकिन, दिवंगत नीरो के उत्तराधिकारी के रूप में सम्राट चुने जाने के बाद, उसने युद्ध समाप्त करने का कार्य अपने बेटे टाइटस को सौंप दिया। एक साल की घेराबंदी के बाद, टाइटस ने यरूशलेम पर कब्जा कर लिया। शहर को भयंकर तबाही का सामना करना पड़ा, जिसमें केवल कुछ ही मीनारें और इमारतें बची थीं। घेराबंदी के दौरान 1,100,000 (एक मिलियन एक सौ हजार) तक यहूदी भूख से मर गए; लगभग 97,000 को कैदी बना लिया गया। बाद में, सम्राट हैड्रियन (117-138) के अधीन, शहर को पूरी तरह से नष्ट कर दिया गया। हालाँकि, कॉन्स्टेंटाइन द ग्रेट के समय से, ईसाई धर्म ने मूर्तिपूजा पर विजय प्राप्त की, और यरूशलेम का विकास और समृद्धि शुरू हो गई।

[2473] *सार्डिस* – एशिया माइनर के लिडिया क्षेत्र में एक प्राचीन और समृद्ध शहर, जो लिडियन राज्य की राजधानी थी; 545 ईसा पूर्व में यह पेरगामोन के अधीन आ गया, और उनसे यूनानियों, महान सिकंदर और अंत में रोमनों के अधीन चला गया। सम्राट टिबेरियस (14–36) के शासनकाल के दौरान, शहर में भूकंप आया; टिबेरियस ने इसे फिर से बसाया। प्रेरितों के समय में, सार्डिस अभी भी एक महत्वपूर्ण शहर था। ईसाई धर्म यहाँ बहुत जल्दी ही जड़ें जमा चुका था: सार्डिस के चर्च का उल्लेख यशायाह की पुस्तक (प्रकाशितवाक्य 3:1–5) में पहले ही मिल जाता है। सम्राट आर्केडियस (395–408) के शासनकाल में, गॉथों द्वारा इस शहर को नष्ट कर दिया गया था; 10वीं शताब्दी में, तैमूर ने इसे पूरी तरह से ध्वस्त कर दिया। आज, एक समय के समृद्ध और गौरवशाली शहर के अवशेषों पर ओआर्ट नामक एक छोटा सा गाँव बसा हुआ है।

[2474] यरूशलेम के चर्च को सभी चर्चों की जननी कहा जाता है क्योंकि यहीं से प्रेरितों ने प्रभु की आज्ञा पर सुसमाचार का प्रचार करने के लिए, *पृथ्वी के छोर तक* मसीह की शिक्षाओं को फैलाते हुए, प्रस्थान किया था (प्रेरितों के काम 18:1–28)

संत सरिलि के प्रतशित्रुता से भरे अक्काकयिस को, नम्निलखिति परस्थितिि के कारण, उन पर आरोप लगाने का एक बहाना मलि गया। यरूशलेम में एक भीषण अकाल पड़ा। लोग, अपना जीवन यापन करने का साधन न पाकर, मदद के लिए अपने आर्चबशिप के पास गए। संत सरिलि ने, अपनी दया के कारण, अपनी मंडली की वनितयिों को गंभीरता से लयिा और अपनी सारी संपत्तत िउन पर खर्च कर दी। लेकनि जब अकाल बना रहा और मदद के लिए कुछ भी नहीं बचा, तो संत सरिलि ने चर्च की संपत्तत ि- सोना, चांदी और कीमती वस्त्र - बेचना शुरू कर दयिा और उससे प्राप्त आय को भूखे लोगों के लिए गेहूं खरीदने में खर्च कर दयिा। इस समय, एक अफवाह फैली कि एक महलिा को कथति तौर पर शहर में पवत्रि वस्त्र पहनकर सड़क पर नाचते हुए देखा गया था। जब उससे पूछा गया कि उसने ये पवत्रि वस्त्र कहाँ से प्राप्त कए, तो उस महलिा ने जवाब दयिा कि उसने उन्हें एक नश्चिति व्यापारी से खरीदे थे, और उसने उसका नाम भी बताया। जब उससे पूछताछ की गई, तो व्यापारी ने कहा कि खुद आर्चबशिप ने ही उसे ये वस्त्र बेचने के लिए दए थे। यह ज्ञात नहीं है कि इनमें से कुछ भी वास्तव में हुआ था या नहीं, लेकनि केवल यह अफवाह मेट्रोपॉलटिन अकाकयिोस तक पहुँच गई, जन्हिोंने इसे सेंट सरिलि के खलिाफ आरोप लगाने के लिए पर्याप्त कारण समझा। उन्होंने एक परषिद बुलाई, जसिमें उन्होंने प्रस्ताव रखा कि सेंट सरिलि को एक पवत्रि वस्तु को बेचकर उसका अपमान करने के लिए पदच्युत कयिा जाए, जसिे परषिद ने अपनी सहमतति दे दी। इस प्रकार, वधिर्मी बशिपों की सहायता से, पदच्युत वधिर्मी मेट्रोपॉलटिन ने यरूशलेम के ऑर्थोडॉक्स आर्चबशिप को उनके पद से हटा दयिा और उन्हें जबरदस्ती यरूशलेम शहर छोड़ने के लिए मजबूर कयिा। संत करिलि पहले तारसस[2475] में चले गए, जहाँ वे बशिप सलिवानस के साथ रहे। यह देखकर कि बाद वाले धर्म के कुछ सद्धिांतों को पूरी तरह से नहीं समझते थे, संत करिलि ने उनकी भ्रांतति को बताया और उन्हें ऑर्थोडॉक्सी (सही आस्था) में दृढ़ कयिा। यह सुनकर, अकाकयिोस ने सलिवानस को एक पत्र लखिा, जसिमें उसने सेंट सरिलि को पदच्युत कए जाने की सूचना दी और उसे या तो सेंट सरिलि के साथ सभी संबंध समाप्त करने या, कम से कम, उसे अपने अधकिार क्षेत्र वाले धार्मकि जलि के भीतर दव्यि लटिर्जी (ईश्वर-भोज) का अनुष्ठान करने से रोकने की सलाह दी। लेकनि सलिवानस ने अकाकयिोस की बात नहीं सुनी: वह संत करिलि को एक धार्मकि व्यक्तति के रूप में बहुत सम्मान देते थे, जनिकी शक्षिाओं ने कई ऑर्थोडॉक्स वश्विासयिों का समर्थन और मार्गदर्शन कयिा था; जहाँ तक नष्कासन की बात है, सलिवानस जानते थे कि यह संत करिलि की कसिी गलती के कारण नहीं हुआ था, बल्कि पूरी तरह से अकाकयिोस की ईर्ष्या और घृणा के कारण हुआ था।

इसके बाद, सेलेउकयिा में एक स्थानीय परषिद[2476] का आयोजन कयिा गया, जसिमें 150 तक बशिप शामलि हुए; संत करिलि उनमें से एक थे। परषिद की कार्यवाही शुरू होने से पहले, अक्काकयिोस ने संत करिलि को हटाने पर जोर दयिा, जन्हिें उसने चर्च से बहष्कृत कर दयिा था। कई बशिपों ने इस तरह की कार्रवाई के लिए सहमत होने से इनकार कर दयिा। तब अकाकयिोस ने परषिद छोड़ दी और कॉन्स्टेंटनिोपल के लिए रवाना हो गया। वहाँ, सम्राट और पैट्रआर्क यूडॉक्सयिस—जो एक एरयिन भी थे—की उपस्थतिि में, उसने उस परषिद पर बदनामी की जसिे वह छोड़कर गया था, और उसे दुष्ट लोगों का एक ऐसा जमावड़ा बताया जो चर्च के भले के लिए नहीं, बल्कि उसके नुकसान के लिए इकट्ठा हुआ था। अकाकयिस सम्राट में सेंट सरिलि के खलिाफ वशिेष रूप से तीव्र आक्रोश जगाने में सफल रहा। उसने सम्राट को बताया कि संत सरिलि ने वे कीमती पवत्रि वस्त्र बेच दए थे, जो कॉन्स्टेंटनि महान ने यरूशलेम के आर्चबशिप मकारयिस को बपतस्मिा का संस्कार ( ) देते समय पहनने के लिए दए थे, और ये वस्त्र बाद में सार्वजनकि मनोरंजन समारोहों में नाच रहे एक व्यक्तति पर देखे गए थे। इस बात से सम्राट इतना क्रोधति हो गए कि उन्होंने संत सरिलि को कैद कर दयिा।

कॉन्स्टैंटयिस की मृत्यु के बाद, जूलयिन अपोस्टेट[2477] सहिासन पर आरूढ़ हुआ। अपने शासन के शुरुआती वर्षों में, धार्मकिता के आवरण में, उसने ऑर्थोडॉक्स के वरिुद्ध कॉन्स्टैंटयिस के सभी आदेशों को रद्द कर दयिा; जूलयिन के

[2475] टारस, एशयिा माइनर के सलिसिियिा क्षेत्र का एक शहर, संत पौलुस प्रेरति (प्रेरतिों के काम 22:3) के जन्मस्थान के रूप में उल्लेखनीय है; तर्cyc में, प्रेरति ने मसीह के सुसमाचार का प्रचार करने की तैयारी की और वहीं से बरनबास द्वारा सुसमाचार प्रचार के लिए बुलाए गए (प्रेरतिों के काम 9:11–30; प्रेरतिों के काम 11:25)। परणिामस्वरूप, तर्cyc में ईसाई धर्म ने जल्दी ही जड़ें जमा लीं (प्रेरतिों के काम 15:23–41)।

[2476] सेलेउकयिा, भूमध्य सागर के तट पर सीरयिा का एक शहर; इसे सबसे अधकि संभावना है कि सीरयिाई राजा सेल्यूकस नकिेटर ने लगभग 300 ईसा पूर्व में बसाया था; यहीं पर प्रेरति पौलुस अपनी पहली यात्रा के दौरान उपदेश देने के लिए रुके थे, और यहीं से वे साइप्रस के लिए रवाना हुए (प्रेरतिों के काम 13:4)। ईस्वी 6वीं शताब्दी में, यह शहर नष्ट हो गया था।

[2477] जूलयिन द एपोस्टेट, कॉन्स्टेंटाइन द ग्रेट का भतीजा और उनके भाई जूलयिस कॉन्स्टेंटयिस का पुत्र, का जन्म 331 में हुआ था। 345 में, अपने भाई गैलस के साथ, उन्हें कॉन्स्टेंटयिस द्वारा कैपाडोसयिा में नर्विासति कर दयिा गया, जहाँ उन्होंने छह साल कड़ी नगिरानी में बतिाए। 351 में, उन्होंने अपने नर्विासन स्थल को छोड़ दयिा और नकिोमेडयिा में कई साल बतिाए, जहाँ उन्होंने खुद को दर्शनशास्त्र के अध्ययन के लिए

आदेश पर, कॉन्स्टैंटियस द्वारा पहले निर्वासित किए गए सभी ऑर्थोडॉक्स बिशपों को कैद से रिहा कर दिया गया। इस समय, संत सिरील को भी उनके पद पर बहाल कर दिया गया था। सिंहासन पर अपनी स्थिति को मजबूत करने के बाद, जूलियन ने खुले तौर पर मसीह का परित्याग कर दिया। उन्होंने यहूदियों को काफी स्वतंत्रता प्रदान की, जो मसीहियों के प्रति शत्रुतापूर्ण थे; अन्य बातों के अलावा, उन्होंने न केवल उन्हें रोमनों द्वारा नष्ट किए गए मंदिर की जगह पर एक नया मंदिर बनाने की अनुमति दी[2478] , बल्कि इसके निर्माण के लिए राज्य करों का एक हिस्सा भी आवंटित किया। यद्यपि यह उपक्रम, जो अपने उद्देश्य में ईश्वर-निंदापूर्ण था[2479] , अभी शुरू ही हो रहा था, संत सिरिल ने अपने निकटस्थ लोगों से भविष्यवाणी की कि मंदिर की एक-एक ईंट के विनाश के संबंध में मसीह के *वचन—'वे दिन आएँगे जब यहाँ जो कुछ तुम देखते हो, उसमें एक पत्थर दूसरे पर नहीं रहेगा; सब कुछ नष्ट हो जाएगा'* (लूका 21:6)—निस्संदेह पूरे होंगे। संत सिरिल ने प्रभु मसीह से प्रार्थना की कि वह इस आरंभ हुए कार्य को पूरा न होने दें, बल्कि इसे बनाने वालों की योजनाओं सहित नष्ट कर दें। प्रभु ने अपने सेवक की प्रार्थना सुनी और अपने वचनों के निश्चित रूप से पूरा होने के बारे में जो उन्होंने भविष्यवाणी की थी, उसे पूरा किया। एक रात एक भयंकर भूकंप आया, जिससे सुलैमान के प्राचीन मंदिर की बची हुई नींव भी अपनी जगह से हिल गई, यह तो और बात है कि यहूदियों द्वारा अभी-अभी रखे गए पत्थर भी हिल गए; और यह सब—प्राचीन मंदिर के अवशेष और नई संरचनाएँ—ईश्वर की अदृश्य शक्ति की क्रिया से धूल-धूसरित हो गया। जब दिन चढ़ा, तो सभी ने घटित चमत्कार को देखकर आश्चर्य किया। जब यहूदियों ने एक बार फिर से अपना काम फिर से शुरू करने का प्रयास किया, तो तुरंत आकाश से आग बरस पड़ी और उनके औजार नष्ट हो गए; उन पर एक बड़ा भय छा गया। अगली रात, यहूदियों के वस्त्रों पर सूली का चिह्न प्रकट हुआ, जिसे वे किसी भी तरह से हटा नहीं सके।

इसके बाद, संत सिरिल, जिनकी मसीह के वचनों के पूर्ण होने के संबंध में भविष्यवाणी को इतनी गंभीरता से सत्यापित किया गया था, को एक बार फिर निर्वासन का सामना करना पड़ा। जहाँ तक उचित रूप से अनुमान लगाया जा सकता है, उनके उत्तराधिकारी संत सिरिकियस थे। वह एक यहूदी था और उसका नाम यहूदा था; रानी हेलेना द्वारा प्रभु के सच्चे क्रूस की खोज के दौरान, उसका छिपने का स्थान उनके सामने प्रकट हो गया; तब उसे बपतिस्मा दिया गया और सिरिकियस नाम दिया गया।

हालाँकि, संत सिरिल के निर्वासन के बाद, संत सिरियाकस ने अपना पद लंबे समय तक नहीं संभाला: उन्होंने जल्द ही मसीह की स्वीकारोक्ति के लिए जूलियन के हाथों शहादत प्राप्त की।

जूलियन की मृत्यु के बाद, संत सिरिल एक बार फिर यरूशलेम के बिशप बने, लेकिन वैलेंस के शासनकाल के दौरान एरियनों के उदय के कारण, उन्हें उनकी धार्मिकता और विधर्मियों के खिलाफ दृढ़ संघर्ष के कारण तीसरी बार निर्वासित कर दिया गया। अंततः थियोडोसियस महान के शासनकाल में[2480] , संत सिरिल को सम्मानपूर्वक यरूशलेम में बहाल किया

समर्पित कर दिया; 355 में, उन्हें कॉन्स्टैंटियस द्वारा गॉल में सैनिकों का कमांडर नियुक्त किया गया; वहाँ उन्होंने सैनिकों का स्नेह जीतने में कामयाबी हासिल की, जिन्होंने 361 में उन्हें सम्राट घोषित कर दिया। एक पैगन शिक्षक के अधीन दर्शनशास्त्र का अध्ययन, एरियन उथल-पुथल से उत्पन्न ईसाइयों के बीच असहमति, और कॉन्स्टैंटियस के प्रति उसकी घृणा ने जूलियन के भीतर अपने उत्पीड़क - ईसाई धर्म - के प्रति घृणा भर दी। उसने पैगन धर्म को बहाल करने और ईसाई धर्म को नष्ट करने का लक्ष्य खुद के लिए निर्धारित किया। लेकिन उसके सभी प्रयास पूरी तरह से विफल रहे। जूलियन की 363 में फारसियों के खिलाफ अभियान के दौरान मृत्यु हो गई।

[2478] यह मंदिर मूल रूप से सोलोमन द्वारा मिस्र से यहूदियों के प्रस्थान के बाद 488 ईसा पूर्व में मउंट मोरियाह पर बनाया गया था (1 राजा 6:37–38; 2 इतिहास अध्याय 6–7); 689 ईसा पूर्व में, इसे बेबीलोन के राजा नेबुचadnezzar द्वारा नष्ट कर दिया गया था। 70 वर्षों की बंधुत्व के बाद, 531 ईसा पूर्व में साइरस से यरूशलेम लौटने और मंदिर का पुनर्निर्माण करने की अनुमति मिलने पर, यहूदियों ने फिलिस्तीन लौटने पर दूसरे वर्ष में मंदिर की नींव रखी और 616 ईसा पूर्व में इसका निर्माण पूरा किया। महान हेरोद निर्वासनोत्तर मंदिर की सजावट में विशेष रूप से महत्वपूर्ण भूमिका निभाए थे। टिटिस द्वारा यरूशलेम पर कब्जा किए जाने के दौरान, एक सैनिक ने खिड़की से एक जलती हुई अंगीठी फेंक दी, और मंदिर आग की लपटों में जलकर नष्ट हो गया।

[2479] जूलियन ने यहूदियों को मंदिर का पुनर्निर्माण करने की अनुमति दी, और इस प्रकार मसीहा उद्धारकर्ता की इसके विनाश संबंधी भविष्यवाणी (लूका 21:6) का मज़ाक उड़ाया।

[2480] थेओडोसियस महान ने मूर्तिपूजक धर्म को अंतिम आघात पहुँचाया: 392 में एकमात्र शासक बनने के बाद, उन्होंने एक कानून जारी किया जिसके तहत देवताओं की पूजा को राजद्रोह के समान एक अपराध माना गया।

गया। उन्होंने आठ वर्षों तक सच्चे पास्टोरल उत्साह के साथ चर्च का शासन किया और प्रभु में शांतिपूर्वक निधन कर गए, और अपने अत्यधिक लाभकारी लेखन[2481] को पीछे छोड़ गए।

कॉन्टाकियन, स्वर 1:

हे प्राज्ञ, दिव्य प्रेरित, अपनी जीभ से आपने अपने लोगों को एक पवित्र त्रिमूर्ति के बारे में ज्ञान दिया, जो स्वभाव में अविभाज्य, फिर भी व्यक्तियों में भिन्न है। इसलिए, हर्षित होकर, हम आपकी सर्व-पवित्र स्मृति का उत्सव मनाते हैं, और आपको परमेश्वर के समक्ष एक मध्यस्थ के रूप में प्रस्तुत करते हैं।

हमारे पूजनीय पिता अनीन चमत्कारिक के जीवन

१८ मार्च को स्मरणोत्सव

आदरणीय अनिन कालेडोन के मूल निवासी थे[2482] । उनके माता-पिता ईसाई थे। सुसमाचार में जक्कियस की तरह[2483] , वे कद में छोटे, लेकिन आत्मा में महान थे। अपने शुरुआती वर्षों से ही, वे एक सौम्य, अच्छे स्वभाव के लिए जाने जाते थे और लगातार अच्छा करने का प्रयास करते थे।

जब पूजनीय पिताजी पंद्रह वर्ष के हुए, तो उनके माता-पिता का निधन हो गया। इसके तुरंत बाद, संत ने व्यर्थ, सांसारिक जीवन को पीछे छोड़ने का संकल्प लिया, और इस उद्देश्य के लिए वे एक मठ में बस गए, जहाँ उन्होंने मठवासी संस्कार ग्रहण किया।

निर्विकिल्प तपस्या का जीवन जीने के इच्छुक, संत अनिन जल्द ही मठ छोड़कर नदी फरात के मार्ग के पास स्थित एक दूरस्थ रेगिस्तान में चले गए[2484] , जो सीरिया[2485] को फारस[2486] से अलग करती है। वहाँ, अनिन की मुलाकात मायूमा नामक एक तपस्वी से हुई, जो एक गुफा में रह रहे थे। संत उनके साथ बस गए और उपवास तथा प्रार्थना के उनके कारनामों का अनुकरण करने लगे। दोनों ने इतना कठोर उपवास रखा कि पूरे लेंट (Lent) के मौसम में उन्होंने कुछ भी नहीं खाया; फिर भी, उनके चेहरे हमेशा प्रसन्न रहते थे, मानो वे किसी शाही दावत में शामिल हों। संत अनिन अपने तपस्या के प्रयासों में इतने अधिक निपुण थे कि वे अपने गुरु, एल्डर से भी आगे निकल गए। उन्होंने कई दिन बिना किसी भोजन के, दिन-रात प्रार्थना करते हुए बिताए, इतना कि एल्डर भी उनके कारनामों पर चकित हो गए।

[2481] उनके द्वारा छोड़ी गई रचनाओं में, 23 धर्मोपदेश विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं; इनमें से 18 बपतिस्मा की तैयारी करने वालों और नव-बपतिस्मित लोगों को संबोधित हैं, और उनमें धर्म-विश्वास के अनुच्छेदों की एक स्पष्ट और सरल व्याख्या है। इसके अलावा 'लकवाग्रस्त मनुष्य पर प्रवचन' और 'काना में पानी का शराब में बदलने पर प्रवचन' से अंश भी संरक्षित हैं।

[2482] काल्सेडोन एशिया माइनर में एक शहर है, जो प्रोपोंटिस (मार्मारा सागर) के दक्षिणी तट पर स्थित है। प्राचीन काल में, काल्सेडोन रोमन प्रांत बिथिनिया की राजधानी थी। चर्च के इतिहास में, यह शहर चौथे सार्वभौमिक परिषद (जो 451 ईस्वी में मोनोफिज़िट संप्रदाय के बारे में आयोजित की गई थी, जिसने यह सिखाया कि यीशु मसीह में एक ही स्वभाव था - दैवी स्वभाव - जिसने कथित तौर पर मानवीय स्वभाव को आत्मसात कर लिया था) के स्थल के रूप में उल्लेखनीय है।

[2483] *ज़क्कैयस* – यरीहो नगर का मुख्य महसूल अधिकारी, जो प्रभु की पृथ्वी पर की सेवा के समय में रहता था और प्रभु की उपदेश सुनने की उसकी उत्सुकता के कारण प्रभु द्वारा उसे विशेष ध्यान देकर सम्मानित किया गया। कद में छोटा होने के कारण, ज़क्कैयस एक बार एक अंजीर के पेड़ पर चढ़ गया ताकि प्रभु के चारों ओर खड़ी भीड़ के बीच से उनकी एक झलक देख सके (लूका 19:1–10)।

[2484] फरात एशिया की सबसे बड़ी नदियों में से एक है।

[2485] *सीरिया* एशिया माइनर में एक क्षेत्र है, जिसकी सीमाएँ हैं: पूर्व में फरात नदी; दक्षिण में अरब; पश्चिम में फिलिस्तीन, फिनिसिया और भूमध्य सागर; और उत्तर में सिलिसिया और कैपडोसिया। सीरिया का उत्तरी भाग दक्षिणी भाग की तुलना में अधिक उपजाऊ है और इसमें अधिक वनस्पति है, जो कुछ स्थानों पर रेगिस्तान में बदल जाता है।

[2486] पर्सिया – दक्षिणी एशिया का एक क्षेत्र, जो कैस्पियन सागर और फारस की खाड़ी के बीच स्थित था।

[2487]जिस स्थान पर संत अनिम तपस्वी के साथ रहते थे, वहाँ पानी नहीं था, क्योंकि यूफ्रेटिस नदी उनकी गुफा से पाँच स्टेडियम (लगभग 9 किलोमीटर) दूर थी। संत अनिम इस नदी से एक छोटे पात्र में पानी लाते थे, जानबूझकर बड़े पात्र का उपयोग नहीं करते थे ताकि वे पानी लाने के लिए बार-बार जाकर अधिक परिश्रम कर सकें।

एक अवसर पर, संत अनिम पानी लाने के लिए नदी की ओर रवाना हुए, लेकिन वे अपनी गुफा से एक भी स्टेडियम नहीं गए थे कि एक देवदूत अचानक उनके सामने प्रकट हुआ और उसने उनके पात्र को पानी से भर दिया। यह देखकर कि अनिम असामान्य रूप से जल्दी लौट आए थे, बड़े संत को एहसास हुआ कि ईश्वर ने उनके माध्यम से एक चमत्कार किया था, और उन पर अपनी कृपा बरसाई थी। इसके बाद, उसने उनसे अपने शिक्षक और मार्गदर्शक बनने की विनती करनी शुरू कर दी; लेकिन, जब वह ऐसा करने के लिए उन्हें मना नहीं सका, तो उसने उन्हें अकेला छोड़ देने का फैसला किया, ताकि वह किसी को अपनी सेवा करने के लिए मजबूर न करे, जिसकी वह स्वयं सेवा करना चाहता था और जिसके प्रति वह स्वयं सेवा करने के लिए बाध्य महसूस करता था। यूफ्रेटिस नदी के पास स्थित एक मठ में पहुँचने पर, वृद्ध ने भाइयों को संत अनिम के बारे में बताया। उस समय से, संत अनिम की ख्याति दूर-दूर तक फैल गई, और तपस्वी जीवन की तलाश में कई लोग अनिम के पास आने लगे।

वरिष्ठ मायूम के गुफा छोड़ने के बाद, संत अनिम ने अपने आप से कहा: 'मैंने अपना तपस्वी जीवन यहाँ शुरू किया है, और मैं अपने जीवन के अंत तक यहीं रहूँगा' – और वह गुफा में ही रहे। हालाँकि, संत अनिम अक्सर गुफा से निकलकर रेगिस्तान में गहराई तक चले जाते थे; वहाँ बीस या तीस दिन बिताने के बाद, वे अपनी गुफा की कोठरी में वापस आ जाते थे। अपने निरंतर तपस्वी प्रयासों के माध्यम से, संत अपने भीतर के सभी शारीरिक वासनाओं को वश में करने और शरीर को आत्मा के अधीन करने में सफल रहे।

प्रभु ने संत को अपनी कृपा से इतना परिपूर्ण कर दिया कि उन्होंने मरुभूमि में रहने वाले जंगली जानवरों को भी संत के अधीन कर दिया। संत जहाँ भी जाते, दो सिंह उनके पीछे-पीछे चलते; उन्होंने उनमें से एक के पैर के घाव को ठीक कर दिया।

संत अनिम एक चिकित्सक थे जो न केवल जानवरों बल्कि लोगों का भी निशुल्क इलाज करते थे, क्योंकि ईश्वर ने उन्हें लोगों की हर बीमारी और हर अस्वस्थता को ठीक करने की शक्ति और सामर्थ्य दी थी। संत की ख्याति पूरे देश में फैल गई। कई बीमार लोग उनके पास लाए गए, और उन्होंने सभी को ईश्वर की कृपा से ठीक कर दिया। परिणामस्वरूप, संत अब रेगिस्तान में नहीं जाते थे, बल्कि अपने पास आने वालों के लिए लगातार अपनी कुटिया में ही रहते थे; इसी कारण से ईश्वर ने उन्हें उस भूमि पर भेजा था, ताकि जो लोग उनके पास उपचार के स्रोत के रूप में आते थे, वे सांत्वना के बिना न लौटें, बल्कि प्रत्येक को अपनी बीमारी के अनुसार उनसे उचित उपचार प्राप्त हो: एक को शारीरिक रोगों से मुक्ति मिली, जबकि दूसरे ने उनके उपदेश और शिक्षा को सुनकर आध्यात्मिक दुर्बलताओं का इलाज पाया।

चूंकि संत जहाँ रहते थे वह स्थान पानी से वंचित था, और उनके पास आने वाले लोगों की बड़ी संख्या के कारण पानी की बहुत आवश्यकता थी, इसलिए संत ने एक छोटा सा कुआँ खोदा जिसमें वर्षा का पानी जमा हो जाता था।

एक अवसर पर, कई लोग संत के पास आए और उनसे अपनी प्यास बुझाने के लिए पानी देने को कहा। संत ने अपने एक शिष्य (उनके पास पहले से ही छह शिष्य थे) को कुएँ से पानी निकालने का निर्देश दिया। लेकिन शिष्य ने उन्हें बताया कि कुआँ पूरी तरह से सूख गया था, और उसमें एक भी बूँद नहीं बची थी। तब पूज्य ने उससे कहा:

'मैं ईश्वर की अद्भुत शक्ति पर अपना भरोसा रखता हूँ। जाओ, और तुम्हें उन लोगों की प्यास बुझाने के लिए पानी मिलेगा जो आए हैं।'

शिष्य चल पड़ा और, उसे आश्चर्य हुआ कि कुआँ पानी से लबालब भरा हुआ था। ईश्वर की स्तुति करने के बाद, उसने कुएँ से पानी निकाला और उसे अपने गुरु के पास ले जाकर ईश्वर की शक्ति से घटित चमत्कार के बारे में बताया। यह पानी कई दिनों तक चला। यह सब संत के तपस्वी जीवन के सत्रहवें वर्ष में हुआ। जब सारा पानी खत्म हो गया, और अभी भी बारिश नहीं हुई थी, तो संत परमेश्वर से एक और चमत्कार मांगना नहीं चाहते थे, बल्कि, स्वयं को नम्र करते हुए, रात में स्वयं फरात नदी से पानी लाने लगे। पूरी रात सुबह तक, संत ने कड़ी मेहनत की, लगातार ईश्वर की स्तुति करते हुए और प्रभु के उनके पवित्र सुसमाचार में कहे गए शब्दों को याद करते हुए: *'और जो कोई इन छोटे लोगों में से किसी एक*

[2487] स्टेडियम – मूल रूप से दौड़ प्रतियोगिताओं के लिए यूनानियों द्वारा निर्धारित एक आयताकार क्षेत्र। चूँकि यह शब्द हमेशा एक विशिष्ट लंबाई (आमतौर पर 600 फीट) वाले क्षेत्र को दर्शाता था, इसलिए स्टेडियम को लंबाई की एक इकाई के रूप में अपनाया जाने लगा। यह लगभग 88 रूसी साज़ेन या 190 मीटर के बराबर था।

को शष्यि के नाम पर ठंडा पानी का एक प्याला भी देगा, मैं तुम से सच कहता हूँ, वह अपना प्रतफिल कसिी भी तरह से नहीं खोएगा' (मत्ती 10:42)।

एक बार ऐसा हुआ कि पिड़ोस के एक मठ के कुछ भाई अपनी लंबी यात्रा से प्यास से तड़पते हुए पूजनीय पतिाजी के पास आए; इस बीच, कुआं पूरी तरह से सूख गया था। तब पूजनीय पतिाजी ने चुपके से पानी के घड़े उठाए और स्वयं पानी लाने के लिए नदी की ओर चल पड़े। जल्द ही वह वापस आ भी गए। जब भाइयों ने देखा कि माननीय पतिा बहुत जल्दी लौट रहे थे, तो उन्होंने सोचा कि संत बहुत थके हुए होंगे और नदी तक पहुँचने से पहले ही वापस मुड़ गए होंगे। भाइयों ने खुद पानी लाने के इरादे से उनका स्वागत करने के लिए बाहर कदम बढ़ाया। लेकनि जब भाइयों ने संत के कंधों से पानी के घड़े उठाने की कोशशि की, तो उन्होंने देखा कि घड़े पानी से लबरेज़ थे। भाई लोग इन सब बातों से बहुत चकति हुए, क्योंकि प्रभु के स्वर्गदूत ने पात्रों को पानी से भर दयिा था, ठीक वैसे ही जैसे पहले वृद्ध मायूम के समय हुआ था। तब भाई लोग चल्लिा उठे:

'प्रभु की स्तुति हो! हमारे पवत्रि पतिा के पुण्य के कारण, पानी के घड़े पानी से भर गए हैं!'

लेकनि संत, जो हमेशा वनिम्रता का ध्यान रखते थे, ने भाइयों से कहा:

'भाइयो, मुझे क्षमा करें; मैं एक पापी मनुष्य हूँ। यह पानी तुम्हें परमेश्वर ने दयिा है, मेरे लिए नहीं, बल्कि तुम्हारी तीव्र प्यास के कारण, कहीं कि तुम नदी से मेरे लौटने की प्रतीक्षा करते-करते पूरी तरह से थक न जाओ।'

नेओकेसरेआ के बशिप[2488] , जनिका नाम पैट्रसियिस था, संत के प्रति अत्यंत श्रद्धा रखते थे क्योंकि ईश्वर ने संत की पुण्य-शक्ति से चमत्कार कए थे; उन्होंने कई बार उनसे भेंट की और उनकी इच्छा के वरिुद्ध उन्हें एक पुरोहति (presbyter) के रूप में अभषिक्ति कयिा।

जब बशिप को पता चला कि संत स्वयं उन लोगों की प्यास बुझाने के लिए यूफ्रेटसि नदी से पानी लाते थे जो उनके पास आते थे, तो उन्होंने संत को उपहार के रूप में एक गधा भेजा, जसिका उपयोग नदी से पानी लाने के लिए कयिा जा सकता था।

कुछ दनिों बाद, एक गरीब आदमी संत के पास आया, जसिके पास सूदखोर को अपना कर्ज चुकाने के लिए कुछ भी नहीं था। उस आदमी ने संत से अपने कर्ज को चुकाने में मदद करने के लिए कहा। हालाँकि, संत, जो आत्मा से गरीब थे और उनके पास देने के लिए कुछ भी नहीं था, उन्होंने उस आदमी से कहा:

'भाई, इस गधे को ले लो; इसे बेच दो और उससे मलिे पैसों से अपना कर्ज़ चुका लो।'

उस आदमी ने गधा ले लयिा और संत के पास से चला गया, और संत खुद नदी से पानी लाने लगे।

जब बशिप को यह पता चला, तो उन्होंने संत के पास एक और गधा भेजा और नर्दिेश दयिा कि यह कहा जाए:

'मैं तुम्हें यह गधा रखने के लिए नहीं दे रहा हूँ, लेकनि तुम इसका पानी ढोने के लिए इस्तेमाल कर सकते हो; जब मुझे इसकी ज़रूरत होगी, तो मैं इसे वापस ले लूँगा।'

कुछ समय बाद, एक गरीब आदमी संत के पास आया और उनसे भीख माँगी। चूँकि उनके पास गधे के सवि देने के लिए कुछ भी नहीं था, संत ने वह भखिारी को दे दयिा।

जब बाद में बशिप संत के नविास पर पहुँचे और गधा न पाया, तो उन्होंने कई जानवरों का उपयोग करके नदी के पानी से एक बड़े कुएँ को खोदने और भरने का आदेश दयिा (शुष्क और सूखे क्षेत्रों में कुएँ खोदना और उन्हें बारशि या पघिलने वाली बर्फ से प्राप्त पानी, या नदी से लाए गए पानी से भरना एक प्रथा थी)।कुएँ को कनिारे तक भरने के बाद, बशिप अपने जानवरों को अपने साथ ले गए; और जब कुएँ का पानी सूख गया, तो बशिप ने फरि से अपने गधों को कुएँ में पानी लाने के लिए भेजा और फरि उन्हें अपने साथ ले गए।

अपामेआ में[2489] , पयिोन नाम का एक स्तंभ-तपस्वी रहता था, जो अत्यंत कठोर तपस्वी जीवन जीता था। स्थानीय नविासयिों के बीच रहने वाले चोर रात में उसके मठ में आए, यह सोचकर कि उन्हें वहाँ बहुत सारी संपत्ति मलिेगी। दीवार के नीचे सुरंग बनाकर चोर मठ में घुसे, लेकनि, पूरी तरह से तलाशी लेने पर, उन्हें कहीं कुछ नहीं मलिा और वे खाली हाथ लौट गए। जैसे ही चोरों में से एक जा रहा था, उसने एक पत्थर उठाया और उसे पवत्रि स्तंभवासी पर फेंका। पत्थर संत के सरि पर लगा और उन्हें गंभीर रूप से घायल कर दयिा।

[2488] *न्यूकेसरयिा* – एशयिा माइनर के एक क्षेत्र, कैपाडोसयिा, के प्रमुख शहरों में से एक। 316 में, चर्च प्रशासन के मामलों को संबोधति करने के लिए यहाँ एक स्थानीय परषिद आयोजति की गई थी। अब नक्सिार शहर प्राचीन न्यूकेसरयिा की जगह पर स्थति है।

[2489] अपामेआ दक्षणि-पश्चमिी सीरयिा में एक क्षेत्र है, जो ओरोंटेस नदी के तट पर स्थति है।

जैसे ही दुष्ट लोग घटनास्थल से चले गए, स्तंभवासी पहले से ही स्तंभ से उतरकर न्यायाधीशों के सामने जाने और डकैतों के खलिाफ शकिायत दर्ज कराने का इरादा रख रहे थे।

यह जानकर संत अननि ने अपने सेवा करने वाले शेर को बुलाया, उसके सामने भोजन रखा और कहा:

'तू मन भर खा, क्योंकि तेरे आगे लंबा सफर है।'

तब, एक कागज़ का टुकड़ा लेकर, पूजनीय ने उस पर लखिा:

'हे पवत्रि पति! मैं जानता हूँ कि दुष्टों के अत्याचार को सहने के बाद, आप अपने शत्रुओं से बदला लेने के लिए स्तंभ से उतरने का इरादा रखते हैं; इस इरादे को त्याग दें, कहीं ऐसा न हो कि आप अपने श्रम के लिए स्वर्ग के राज्य में अपने शाश्वत पुरस्कार से वंचति हो जाएँ।'

पुरोहति ने कागज़ का यह टुकड़ा शेर के गले में बाँध दयिा और, मानो वह कोई इंसान हो, उससे संबोधति करते हुए, उसे उपर्युक्त स्तंभवासी के पास जाने का आदेश दयिा, और रास्ते में कसिी को नुकसान न पहुँचाने को कहा।

शेर तेज़ी से भागा और जल्द ही उस मठ में पहुँच गया जहाँ स्तंभवासी रहता था। मठ के द्वार पर रुककर, शेर ने अपने पंजों से उन पर ठोकरें मारनी शुरू कर दीं। द्वारपाल ने छोटी खड़िकी से झाँककर शेर को देखा और जल्दी से स्तंभवासी के पास गया और उसे बताया कि एक बड़ा जानवर मठ के द्वार पर खड़ा है।

स्तंभवासी ने ईश्वर से प्रार्थना करने के बाद, द्वारपाल को बनिा कसिी भय के मठ के द्वार खोलने का नर्दिेश दयिा। इसके बाद, सहि मठ में प्रवेश कयिा, स्तंभ के पास गया और उसके सामने कागज का एक टुकड़ा रख दयिा।

पत्र पढ़ने के बाद, स्तंभवासी संत अननि की सूझबूझ से चकति हुआ, जन्हिोंने उससे इतनी दूर होते हुए भी उसके वचिारों को जान लयिा था; वह इस बात पर भी चकति हुआ कि कैसे ईश्वर जानवरों को अपने संतों की सेवा करने का आदेश देता है। इसके बाद, स्तंभवासी ने अपना मूल इरादा त्याग दयिा और अपनी सारी आशा प्रभु में रख दी।

एक धार्मकि महलिा, बीमार पड़ने पर, संत अननि के पास उपचार पाने की आशा में चल पड़ी। रास्ते में, उसकी मुलाकात हाथ में भाला लिए एक डाकू से हुई, जसिका इरादा उससे उसकी सारी संपत्ति छीनने का था; हालाँकि, सच तो यह था कि उसे उसके पास यात्रा के लिए पर्याप्त, थोड़ी सी रोटी के अलावा कुछ नहीं मलिा। वासना से ग्रस्त, डाकू ने उस पर बलात्कार करने की कोशशि की। अपनी भाला जमीन में गाड़कर, उसने उसे पाप करने के लिए मजबूर करना शुरू कर दयिा। लेकनि उस महलिा ने, उसकी पकड़ से छूटने की कोशशि करते हुए, मदद के लिए संत को पुकारा और चल्लिाई:

'संत अननि, मेरी मदद करो!'

उसी क्षण, डाकू वश में आ गया; उसके मन में भय समा गया, और वह पहले ही भागने ही वाला था; लेकनि, अपनी भाला पकड़ने के लिए हाथ बढ़ाने पर, वह उसे जमीन से बाहर नहीं खींच सका, क्योंकि वह वहाँ मजबूती से जड़ पकड़ चुका था। डकैत पर और भी ज़्यादा डर सवार हो गया; महलिा, उसकी चंगुल से बचकर, संत के पास पहुँची। उनके पास पहुँचकर, उसने उन्हें वह सब कुछ बताया जो हुआ था और, अपनी बीमारी से ठीक होकर, अपने घर लौट गई।

डाकू, अपने सभी बुरे कर्मों से पश्चाताप करके, उस पूजनीय संत के पास भी आया। इसके बाद, संत अननि ने उसे ठीक कयिा, पवत्रि ईसाई धर्म में उसका उपदेश दयिा और उसे पवत्रि बपतस्मिा दयिा; बाद में, उन्होंने उसे एक भक्षिु के रूप में दीक्षा दी। जहाँ तक उसकी भाले की बात है, जो जमीन में रह गई थी, ईश्वर की इच्छा से वह एक बड़े ओक के पेड़ में बदल गई।

ईश्वर के इस महान सेवक ने कई अन्य चमत्कार भी कए: उन्होंने लकवाग्रस्त लोगों को ठीक कयिा, लोगों से भूत-प्रेत नकिाले, और कई बीमारों को स्वस्थ कयिा, क्योंकि वे न केवल लोगों बल्कि जानवरों के भी उपचारक थे।

एक अवसर पर, एक बड़ी भीड़ पादरी के पास आई। दनि बहुत गर्म था; हर कोई प्यास से तड़प रहा था, और सारा पानी खत्म हो गया था। लेकनि जब संत ने प्रार्थना की, तो अचानक एक बादल आ गया और धरती पर मूसलाधार बारशि हुई।

रेवरेंड फादर ने भवषि्य में होने वाली कई बातों की भवषि्यवाणी की; उदाहरण के लिए, उन्होंने बर्बरों के आक्रमण[2490] , कई भाइयों के नधिन की भवषि्यवाणी की, और एक ऐसे भाई को, जो मरने वाला था, नजिी तौर पर बुलाकर उससे बात करते थे:

'मेरे बच्चे! अपनी आत्मा का ध्यान रखना, क्योंकि तेरा समय नज़दीक है!'

[2490] एक 'बर्बर' सामान्यतःएक वदिेशी या कसिी अलग जातीयता का व्यक्ति होता है।

अंतत; संत स्वयं अपने निधन के दिन के करीब आ गए, उन्होंने अपने जन्म के दिन से कुल एक सौ दस वर्ष जिए थे। अपने निधन के दिन को जानते हुए, संत ने अपने आध्यात्मिक झुंड (उनके पास काफी संख्या में भाई थे) को बुलाया और उन्हें विस्तार से निर्देश और उपदेश दिया। फिर संत ने अपने हाथ से वेरोनिकियन नामक एक अत्यंत सदाचारी पुरोहित की ओर इशारा किया और कहा:

'यह व्यक्ति मेरी जगह आपका मठाधीश होगा।' इसके बाद, सात दिन तक बीमार रहने के बाद, संत अपने जीवन के अंतिम क्षणों के और भी करीब पहुँच रहे थे। अपने प्राण त्यागने के ठीक उसी घड़ी, उन्हें भय सताने लगा और वे अपने बिस्तर से उठना चाहते थे, लेकिन सिर झुकाकर उन्होंने कहा:

'आपको शांति मिले, मेरे गुरुजन!' थोड़ी देर रुककर, उन्होंने फिर कहा:

'आप मेरे मार्गदर्शक कौन हैं?' थोड़ी देर रुककर, उन्होंने फिर कहा:

'मेरे प्रभु की इच्छा पूरी हो; मैं यहाँ हूँ, प्रभु की आज्ञा से आपके साथ जा रहा हूँ।'

उसके चारों ओर मौजूद सभी लोग विस्मय से भर गए और साष्टांग दंडवत कर पड़े। ईश्वर-भयभीत प्रेसीबायरीयन वेरोनिकियन, जिन्हें मठाधीश नियुक्त किया गया था, ने पूजनीय से कहा:

'हे स्वामी! किस आशा के लिए, किस उद्देश्य के लिए आपने अपने जीवन के सभी दिन परिश्रम किया है? हमें बताइए, आपने क्या देखा है?'

संत ने उत्तर दिया:

मैंने स्वर्गीय यरूशलेम को खुलते देखा, उससे एक उज्ज्वल बादल निकल रहा था, और उस बादल पर तीन तेजस्वी पुरुष थे, जो मेरे पास आकर मुझसे बोले: "अनीन! प्रभु तुम्हें बुला रहे हैं; उठो और हमारे साथ चलो।" मैंने उनसे पूछा, 'आप मेरे शिक्षक कौन हैं?' और उन्होंने उत्तर दिया, 'हम मूसा, हारून और ओर हैं।'

यह सुनकर, भाइयों में और भी अधिक भय और आतंक छा गया। लेकिन संत ने उनसे कहा:

'मेरे भाइयो, मेरे लिए प्रार्थना करो, कि जब मैं भयानक न्यायाधीश के सामने लाया जाऊँ तो मैं न डरूँ।'

तब संत ने कहा:

'हे प्रभु, मेरी आत्मा ग्रहण कर,' और थोड़ी ही देर बाद (मार्च की अठारह तारीख को) उनका निधन हो गया।

भाइयों ने उन्हें सम्मान के साथ दफ़नाया, और पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा, एक ही परमेश्वर की महिमा और स्तुति की, जो सर्वदा सर्व के द्वारा महिमा प्राप्त करते हैं। आमीन।

पवित्र शहीदों ट्रॉफिमि और इवकार्पियोस का स्मरणोत्सव

18 मार्च को स्मरणोत्सव

जब निकोमेडिया में ईसाइयों के खिलाफ उत्पीड़न शुरू हुआ, तो मसीह के सभी स्वीकार करने वालों को पकड़कर कालकोठरियों में बंद कर दिया गया; फिर उन्हें मुकदमे के लिए लाया गया, उन्हें अनेक यातनाओं और विभिन्न प्रकार की पीड़ाओं से गुज़ारा गया, और जो मसीह, हमारे परमेश्वर, की स्वीकारोक्ति में दृढ़ रहे, उन्हें मृत्युदंड दिया गया। उस समय, पवित्र शहीदों ट्रॉफिमिस और यूकार्पियस को सेना में सबसे पराक्रमी और साहसी योद्धा के रूप में जाना जाता था; परिणामस्वरूप, वे मसीह के सबसे प्रबल शत्रु साबित हुए। वे ईसाइयों को पकड़ लेते, उन्हें कालकोठरियों में बंद कर देते और उन पर पूरा अधिकार पाने के बाद, अपनी मर्जी से कुछ को यातनाएं देते और दूसरों को उनकी कोठरियों में सड़ने के लिए छोड़ देते। एक दिन, जब वे कुछ ईसाइयों को पकड़ने जा रहे थे, तो उन्होंने स्वर्ग से उतरता हुआ एक बड़ा आग का बादल देखा, जो उनके पास आते-आते और भी घना हो गया। बादल से एक आवाज़ गूँजी, जिसमें कहा गया:

'तुम मेरे सेवकों को धमकाने में इतने उत्सुक क्यों हो? धोखा न खाओ: कोई भी उन्हें, जो मुझ पर विश्वास करते हैं, अपनी शक्ति के अधीन नहीं कर सकता, बल्कि तुम्हारे लिए बेहतर होगा कि तुम स्वयं उनमें शामिल हो जाओ, और तब तुम स्वर्ग के राज्य को प्राप्त करोगे।'

यह दर्शन देखकर और ये वचन सुनकर, ट्रॉफिमिस और यूकार्पियस—जो मसीह के सेवकों के क्रूर और निर्दयी उत्पीड़क थे—ज़मीन पर गिर पड़े, क्योंकि वे न तो उस दर्शन को देख सकते थे और न ही बादल से निकलने वाली गरजती आवाज़ सहन कर सकते थे; और, ज़मीन पर पड़े हुए, वे केवल एक-दूसरे से कह सके:

'निश्चय ही महान है वह ईश्वर, जो आज हम पर प्रकट हुए हैं। यदि हम उनके सेवक बनें तो हम धन्य होंगे।'

और जब वे भयभीत होकर ये बातें कह ही रहे थे, तो बादल फट गया और उनके दोनों ओर खड़ा हो गया – और उसमें से फरि एक आवाज सुनाई दी, जो उनसे कह रही थी:

'उठो और पश्चाताप करो, और तुम्हारे पाप क्षमा कएि जाएँगे।' जब वे उठे, तो उन्होंने एक तेजस्वी रूप वाला मनुष्य देखा, जो अत्यंत सुंदर था, और जो बादल के बीचों-बीच बैठा था, और एक बड़ी भीड़ उसके सामने खड़ी थी। उसकी असाधारण आकृति से प्रभावति होकर, ट्रॉफमिस और यूकार्पयिस ने एक स्वर में उससे कहा:

'हमें स्वीकार कर लो, क्योंकि हमारे पाप दुष्ट और अकथनीय हैं। रचयति और एकमात्र सच्चे ईश्वर, आपके सवि कोई अन्य ईश्वर नहीं है, और हम अभी तक आपके सेवकों में शामलि नहीं हुए हैं!'

जैसे ही उन्होंने ये शब्द कहे, वह बादल तुरंत एक साथ हो गया और स्वर्ग में चढ़ गया। इसके बाद, ट्रॉफमिस और यूकार्पयिस वहाँ लंबे समय तक रोते रहे; फरि, ईश्वर से प्रार्थना करने के बाद, वे लौटे और कांपते हुए, उन सभी को जो उनके काल-कोठरयिों में बंद थे, मुक्त कर दयिा। उन्होंने भाइयों की तरह उन्हें चूमा, उनके सामने झुके और उनकी बेड़यिाँ खोल दीं, और उन्हें वदिा कयिा, और इस प्रकार सभी कैदी अपने-अपने घर लौट गए। नकिोमेडयिा के राज्यपाल को जब यह पता चला, तो वह ट्रॉफमिस और यूकार्पयिस पर बहुत क्रोधति हुआ और उन्हें अपने पास बुलाकर पूछताछ करने लगा, क्योंकि वह उनके व्यवहार में आए इस बदलाव का कारण जानना चाहता था। उन्होंने उसे वसि्तार से वह सब कुछ बताया जो उन्होंने अपने दर्शन में देखा था। तब उसने आदेश दयिा कि उन्हें एक पेड़ से लटका दयिा जाए और उनकी पसलयिों को खुरच दयिा जाए, और बाद में उनके घावों पर बाल से बनी रस्सयिों से रगड़ा जाए। पवत्रि शहीदों ने साहसपूर्वक यातना को सहन कयिा और प्रार्थना करते हुए, आनंदति होकर परमेश्वर का धन्यवाद कयिा। इससे नगर के राज्यपाल का क्रोध और भी बढ़ गया, और उसने एक बड़ी चति जलाने और उन्हें उसमें फेंकने का आदेश दयिा। जब चति जला दी गई, तो संत अपनी इच्छा से आग में कूद गए और ईश्वर की महमिा करते हुए, अपनी धर्मी आत्माओं को ईश्वर के हाथों में सौंप दयिा। इस प्रकार पवत्रि शहीदों ट्रॉफमिस और यूकार्पयिस ने शहीद होकर अपनी मृत्यु प्राप्त की[2491] ।

अप्रैल

1 अप्रैल

19 मार्च (पुराना तरीका)

पवत्रि शहीदों क्रसिान्थस और दारयिस का कष्टकथा

19 मार्च को स्मरणोत्सव

एक कुलीन वंश का व्यक्ति पोलमियिस, अपने पुत्र क्रसिैंथस के साथ अलेक्जेंड्रयिा[2492] से रोम[2493] चला गया। वहाँ उन्हें सम्मानपूर्वक स्वागत मलिा और सम्राट ने उन्हें सेनेटर का पद प्रदान कयिा। क्रसिैंथस को शक्षिा दलिाने की इच्छा से, पोलमियिस ने उसे दर्शनशास्त्र के एक वद्यिालय में भेजा। क्रसिैंथस, एक जज्ञिासु और अत्यधकि

[2491] संत ट्रोफमिस और यूकार्पयिस की मृत्यु लगभग 300 ईस्वी में हुई।

[2492] *अलेक्जेंड्रयिा* – एक प्रसद्धि शहर जो 4वीं शताब्दी ईसा पूर्व में महान अलेक्जेंडर द्वारा भूमध्य सागर के तट पर, नील नदी के मुहाने पर बसाया गया था। रोम के बाद, अलेक्जेंड्रयिा दुनयिा का सबसे प्रमुख शहर था और यह व्यापार, उद्योग और वशिष रूप से, मूर्तपिूजक शक्षिा का केंद्र था; जबकि ईसाई धर्म की शुरुआती शताब्दयिों में, यह ईसाई प्रबोधन का गढ़ था। परंपरा के अनुसार, लगभग 60 ईस्वी वर्ष में संत मार्क सुसमाचार प्रचारक द्वारा यहाँ ईसाई धर्म लाया गया था।

[2493] *रोम* – रोमन साम्राज्य की राजधानी – मध्य इटली में, टायबर नदी के दोनों कनिारों पर स्थति है, जहाँ यह समुद्र में मलिती है। पवत्रि प्रेरति पतरस और पॉल ने नीरो के शासनकाल के दौरान रोम में शहादत प्राप्त की।

बुद्धमिान युवक, जब बड़ी लगन से वभिन्नि वज्ञिानों का अध्ययन कर रहा था, तो उसे नए नयिम की पुस्तकें मलि गईं; उन्हें ध्यान से पढ़कर और उनके अर्थ में गहराई से उतरकर, क्रसिैंथस ने इस प्रकार मनन कयिा:

'क्रसिैंथस, तुम्हारे लयि यह उचति था कि तुम अंधकार से भरी मूर्तपिूजक लेखन का अध्ययन करो, जब तक कि तुम सच्चे प्रकाश को न जान लो; केवल इसी को थामे रहो। क्योंकि प्रकाश से अंधकार में वापस जाना मूर्खता होगी। यदि तुम इन प्रयासों के फलों को अस्वीकार करोगे तो तुम अपने ज्ञान के फलों को नष्ट कर दोगे। फरि भी, इन प्रयासों के फल परमेश्वर द्वारा उन लोगों को दयि जाते हैं जो उन्हें खोजते हैं। क्योंकि परमेश्वर स्वयं यही आज्ञा देते हैं, जैसा कि आपने नए नयिम की पुस्तकों में पढ़ा है: *'माँगो, तो तुम्हें दयि जाएगा; खोजो, तो तुम पाओगे; खटखटाओ, तो तुम्हारे लयि खोला जाएगा'* (लूका 11:9)। लेकनि यदि आप उस चीज़ को छोड़ना चाहते हैं जसिे आपने खोजा और पाया है, तो आप मूर्ख और बेवकूफ लोगों की तरह होंगे। इसलयि, उस पर दृढ़ता से टकि रहो जसिे दृढ़ता से थामे रखना चाहयि, कहीं ऐसा न हो कि तुम उस भलाई को स्वेच्छा से खो दो जसिे तुमने इतनी मेहनत से प्राप्त कयि है: तुमने सोना और चाँदी पाया है; तुमने एक कीमती रत्न पाया है। क्योंकि तुमने पाने के लयि खोजा, और तुमने प्राप्त करने के लयि पाया: इसलयि, सावधान रहो कि जो खजाना तुमने प्राप्त कयि है वह तुमसे न छीन लयि जाए।

इस प्रकार मनन करते हुए, क्रसिैंथस ने कसिी ऐसे व्यक्ति की तलाश की जो उसे दव्यि धर्मग्रंथों में शक्षिति कर सके। और जैसे वह शुरू में वाक्पटुता और दार्शनकि ज्ञान का छात्र और सबसे बुद्धमिान शक्षिकों का शष्यि रहा था, वैसे ही अब वह अनपढ़ शक्षिकों को खोजना चाहता था, जैसे कि मसीह के प्रेरति कभी थे—अनपढ़ मछुआरे जन्हिोंने फरि भी पूरी दुनयि को मसीह के ज्ञान तक पहुँचाया था। *'जब उन्होंने पतरस और यूहन्ना की नर्भिीकता देखी, और यह जान लयि कि वे अनपढ़ और साधारण मनुष्य थे, तो वे चकति हुए; तथापि उन्होंने यह मान लयि कि वे यीशु के साथ रहे थे'* (प्रेरतिों के काम 4:13); सबसे बुद्धमिान युवक क्रसिैंथस ने ऐसे ही शक्षिकों को लगन से खोजा, क्योंकि उसने उस प्रेरति के वचन पढ़े थे जो कहता है: *'ज्ञानी कहाँ है? लखिारी कहाँ है? इस युग का वाद-ववािद करने वाला कहाँ है? क्या परमेश्वर ने इस संसार के ज्ञान को मूर्खता में नहीं बदल दयि? क्योंकि, चूंकि संसार अपनी बुद्धि से परमेश्वर को नहीं जान पाया, इसलयि परमेश्वर को यह भाया कि जो वश्विास करते हैं, उन्हें संदेश की मूर्खता के द्वारा बचाए'* (1 कुरन्थियिों 1:20–21; तुलना करें यशायाह 33:18)।

इस प्रकार, इन बातों पर मनन करते और एक ईसाई शक्षिक की तलाश करते हुए, क्रसिैंथस को कार्पोफोरस नामक एक ईसाई के बारे में पता चला, जो पवत्रि शास्त्रों में बहुत वद्विान था; यह कार्पोफोरस कसिी गुफा में, कसिी अज्ञात स्थान पर रहता था—या यूँ कहें कि उत्पीड़न के कारण छपिकर रहता था। इस ईसाई के बारे में सुनकर, वह धर्मपरायण युवक अत्यंत प्रसन्न हुआ और जसिे व्यक्ति ने उसे इस ईसाई के बारे में बताया था, उससे वनिम्रतापूर्वक आग्रह कयि कि वह उसे वह स्थान दखिाए जहाँ वह ईश्वर का पुरुष रहता था।

उसका ठकिाना जानने के बाद, क्रसिैंथस उस कारपोफोर के पास गया, जो एक पुरोहति था, और उसने उसे पवत्रि शास्त्रों और ईसाई धर्म की शक्षिा दी; अक्सर उससे मलिने जाकर, उसने उससे मोक्ष के मार्ग पर मार्गदर्शन प्राप्त कयि। प्रेस्बटिर कार्पोफ़ोर के मार्गदर्शन में, क्रसिैंथस ने कुछ ही महीनों में पवत्रि धर्मग्रंथों के रहस्यों को समझ लयि और बाद में उनसे पवत्रि बपतस्मिा ग्रहण कयि। क्रसिैंथस ईसाई वश्विास में इतना दृढ़ और मसीह के प्रति प्रेम में इतना गहराई से जड़ें जमा चुका था कि, बपतस्मिा के सात दनि बाद, उसने खुलेआम ई होकर लोगों को परमेश्वर के पुत्र मसीह का उपदेश देना शुरू कर दयि। यह सुनकर, क्रसिैंथस के कुछ कुलीन रश्तिेदारों ने उसके पति से कहा:

'चेतावनी है: दोष तुम्हारे ऊपर लगेगा, और तुम्हारे बेटे द्वारा की गई हम्मित के लयि तुम्हें जवाबदेह ठहराया जाएगा, क्योंकि वह देवताओं का अपमान करता है और एक नश्चिति मसीह को सच्चा ईश्वर मानता है; और यदि इसकी खबर राजा तक पहुँच गई, तो न तो आपको और न ही हमें—उसके रश्तिेदारों को—इसके लयि माफ़ कयि जाएगा, और हम सभी राजा की कृपा खो देंगे। क्योंकि जो कोई भी देवताओं के खलिाफ ऐसे अपमानजनक शब्द बोलने की हम्मित करता है, वह राजा के कानूनों का दुश्मन है।

क्रसिान्थस से क्रोधति होकर, पोलेमयिस ने अपने बेटे को एक अंधेरी और बदबूदार कालकोठरी में बंद कर दयि और उसे भूखा रखा, उसे शाम को केवल थोड़ा सा भोजन दयि। हालाँकि, धन्य क्रसिैंथस ने उस काल-कोठरी और भूख को सज़ा नहीं, बल्कि उपवास, मौन और ईसाई जीवन की वनिम्रता का एक पाठ माना, और वह अपने अंधेरे और तंग नविास में वशिाल और उज्ज्वल महलों से भी अधकि आनंदति हुआ।

यह जानने पर, उसके घर वालों और रश्तिेदारों ने पोलेमयिस को नम्निलखिति सलाह दी:

'यदि आप अपने बेटे को ईसाई धर्म से दूर करना चाहती हैं, तो सुनिश्चित करें कि वह स्वतंत्र रहे और जीवन के सुखों का आनंद ले। उसके लिए एक सुंदर और बुद्धिमान युवती ढूंढो और उसका विवाह उससे करा दो, और फिर वह ईसाई धर्म के बारे में सब कुछ भूल जाएगा। जहाँ तक उस कालकोठरी, बेड़ियों और भूख का सवाल है, जिससे तुम क्रिसैंथस को पीड़ा देते हो, ईसाई इन्हें यातना के बजाय गौरव और सम्मान का स्रोत मानते हैं।"

यह सुनकर, पोलेमियस ने एक शानदार कक्ष तैयार करने का आदेश दिया, जिसकी दीवारों को महंगे वॉलपेपर से सजाया गया, उसमें एक कीमती बिस्तर लगाया गया, और हर चीज़ का आनंद और मनोरंजन के लिए प्रबंध किया गया। फिर अपने बेटे को उसकी अँधेरी कोठरी से बाहर निकालकर महंगे कपड़े पहनाने के बाद, पोलेमियस उसे उस कक्ष में ले आया। तब पोलेमियस ने अपनी दासी-कन्याओं में से सबसे सुंदर कन्याओं को चुनकर उन्हें भव्य वस्त्र पहनाए, और उन्हें अपने पुत्र के साथ उस कक्ष में बंद कर दिया, साथ ही कन्याओं को सख्त आदेश दिया कि वे हर संभव प्रयास करें कि क्रिसैंथस को कामुक, वासनापूर्ण प्रेम में फंसा सकें, और उसे मसीह से दूर कर सकें। और उस कक्ष में हर तरह के भोजन और उत्तम शराब की भरमार थी – जबकि वे कन्याएँ संत क्रिसैंथस के सामने प्रेम गीत गाती थीं, उनके सामने नृत्य करती थीं, निर्लज्ज शब्द बोलती थीं, और हर संभव तरीके से उस धन्य युवक की आत्मा को प्रेमपूर्ण मलिन और कामुक सुखों में फँसाने की कोशिश करती थीं।

फिर भी, युवक क्रिसैंथस ने उन कन्याओं के खेल और प्रलोभनों को एक युवक की तरह नहीं, बल्कि एक अनुभवी पुरुष की तरह देखा, और, उनके जालों में फँसने के बावजूद, वह फँसा नहीं रहा। इस संघर्ष में, उसने स्वयं को मसीह का एक अजेय योद्धा साबित किया, स्वादिष्ट भोजन और मीठी पेय पदार्थों से पूरी तरह परहेज़ किया; उसने उन युवतियों को विषैली साँपों के रूप में देखा, उनसे वैसा ही बचना, जैसा कोई साँपों से बचता है, और निरंतर प्रार्थना में लगा रहा। जब भी उसे आराम की आवश्यकता होती, तो वह बिना बिस्तर के जमीन पर लेट जाता था, और उन युवतियों के मोहक और निर्लज्ज शब्दों को तीरों के रूप में मानता था, जिन्हें वह विश्वास की ढाल से रोकता था, और ईश्वर से पुकार कर कहता था:

'मेरी ढाल और हथियार उठाओ, और मेरी सहायता करो; अपनी तलवार खींचो और मेरे पीछे आने वालों का मार्ग रोक दो; अपनी आत्मा से कहो, "मैं तेरा उद्धार हूँ।" (भजन संहिता 34:2–3). इस संघर्ष को कौन पार कर सकता है जो शैतान ने मुझ पर छेड़ा है, जब तक कि आपका दाहिना हाथ विजयी न हो? वह मूर्ख है जो सोचता है कि वह अपनी शक्ति से कामुक वासना पर काबू पा सकता है और पवित्रता बनाए रख सकता है, जब तक कि मांस की ज्वाला आपके दया की वर्षा से बुझ न जाए। आत्मा तब तक आपके निवास स्थान तक नहीं पहुँच सकती जब तक आप स्वयं उसे वहाँ न ले जाएँ; क्योंकि सांसारिक वासना एक चालाक जानवर की तरह है, जो सांसारिक व्यर्थता के रेगिस्तान में मानव आत्माओं को विनाश की ओर ले जाने के लिए घात लगाए रहता है; और यदि कोई उसके पंजे से बच निकलता है, तो उसे अपने उद्धारकर्ता परमेश्वर को पूरे हृदय से धन्यवाद देना चाहिए, क्योंकि ऐसी विनाश से हम केवल तेरी ही कृपा से ही उद्धार पाते हैं। इसी प्रकार पवित्र यूसुफ भी, तेरी सहायता से, वेश्या के हाथों से बच निकला, जैसे किसी जंगली जानवर के जबड़ों से बचता है – वही यूसुफ जिसके विषय में उसके पिता ने अपने शोक में कहा था: *'एक दरिंदे ने मेरे पुत्र को खा लिया है'* (उत्पत्ति 37:33)। क्योंकि सचमुच, पुतफ़िर की पत्नी, एक क्रूर जानवर की तरह, उस पर झपट पड़ी और, एक सिंहनी की तरह, अपने पंजों से कोमल मेमने यूसुफ को नोच-नोच कर, उसे दुष्टता में खींच लिया (उत्पत्ति 39:12)। और शैतान और एक स्त्री से अधिक क्रूर कौन सा जानवर हो सकता है? स्वाभाविक कामुक इच्छा ने युवा यूसुफ को उत्तेजित किया, जबकि उस स्त्री ने अपनी आँखों के मोह, अपने कीमती वस्त्रों, अपने मुख की सुंदरता, अपने धन, अपनी शक्ति और अपनी चापलूसी भरी बातों के आकर्षण से उसे और भी अधिक लुभाया, जिससे वह पवित्र युवक विनाश और मृत्यु की ओर बढ़ गया। और यह आश्चर्यजनक है कि वह उस जानवर के धूर्त जाल से बच निकला! उनके पिता का यह कहना व्यर्थ नहीं था: *'मेरे लिए अच्छा है कि मेरा पुत्र जीवित है'* (उत्पत्ति 45:28), क्योंकि वह एक बड़ी और निश्चित मृत्यु से बच गया, जो उसके भाइयों द्वारा मारने के प्रयास से भी अधिक क्रूर थी; और हे सर्वशक्तिमान परमेश्वर, वह आपकी सर्वशक्तिमान सहायता से इस मृत्यु से बच निकला! क्योंकि तब आप उनके साथ थे। और अब, हे प्रभु, मैं विनम्रतापूर्वक आपसे प्रार्थना करता हूँ: मुझे इन दरिंदों और साँपों से छुटकारा दें, जिनके साथ मेरे पिता ने मुझे एक ही स्थान पर बंद कर रखा है। और जैसे जादू से सुलाए गए साँप सोते हैं, वैसे ही ये दुष्ट कन्याएँ सो जाएँ जब मैं प्रार्थना करूँ, ताकि वे म र मेरी युवा देह में कामुक वासना को न जगाएँ। मेरी सहायता करो, हे मेरे उद्धारकर्ता, क्योंकि मैं जानता हूँ कि केवल तुम ही सच्चे ईश्वर हो, जो उन पर विश्वास करते हैं उन्हें बचाते हो और उन्हें अपनी अजेय सहायता प्रदान करते हो।'

इस प्रार्थना के बाद, क्रसिंथस के साथ बंद की गई युवतयिाँ इतनी गहरी नींद में सो गईं कि वे न तो खुद जाग सकीं और न ही जब तक उन्हें उस कक्ष से बाहर नहीं ले जाया गया, तब तक कोई उन्हें जगा सका। जब उन्हें वहां से ले जाया गया, तो वे तुरंत जाग गईं; तब कुछ भोजन खाकर, वे उस कक्ष में वापस आ गए जहाँ संत क्रसिंथस लेटे थे, और फरि से उसी गहरी नींद में पड़ गए। और इस प्रकार यह हर दनि होता रहा। जब यह बात क्रसिंथस के पति पोलेमयिस को बताई गई, तो वह उसके लिए इस तरह रोने लगा मानो वह मर गया हो। फरि उसके कुछ दोस्तों ने पोलेमयिस से कहा:

'आपके बेटे ने ईसाइयों से जादू-टोना सीखा है और उसने उन कन्याओं को आसानी से सुला दयिा। लेकनि उसकी सगाई एक शक्षिति और बुद्धमिान कन्या से कराओ और उसकी शादी कराओ; और वह, भले ही वह शादी नहीं करना चाहे, उसके साथ लगातार रहने से, उसे अपने साथ शारीरकि संबंध बनाने पर मजबूर कर देगी और उसे ईसाई धर्म से दूर कर देगी।'

पोलमियिस ने उत्तर दयिा:

'तो फरि, हम ऐसी बुद्धमिान युवती कहाँ से ढूंढें जो कठोर हृदय वाले क्रसिंथस के दलि को नरम कर सके, उसे अपनी बातों से प्रभावति कर सके, और उसे हमारे कानूनों की ओर मोड़ सके?'

इस पर, उसके रश्तिेदारों ने उत्तर दयिा:

[2494]देवी एथेना के मंदरि में सेवा करने वाली कन्याओं में, डारयिा नाम की एक युवती है; वह बहुत सुंदर, बुद्धमिान है, और उसने सभी पुस्तकें तथा वाक्पटुता का सारा ज्ञान अध्ययन कयिा है; वह पहले से ही ववािह योग्य आयु की है। इसलिए, कसिी और के उससे ववािह करने से पहले ही उसे अपने बेटे के लिए सगाई कर लो।

इस सलाह पर अमल करते हुए, पोलमियिस ने अपने रश्तिेदारों से उस युवती के पास जाने के लिए कहा और उसे क्रसिंथस नामक युवक तथा उसके ईसाई धर्म में परविर्तति होने के बारे में बताकर, उससे आग्रह करने को कहा कि वह उसे अपने साथ वैवाहकि संबंध बनाने के लिए फुसलाए और उसे ईसाई धर्म से दूर कर दे। युवती क्रसिंथस से शादी करने के लिए राजी हो गई और उसने अपने मंगेतर को कामुक शब्दों से लुभाने और उसे रोमन देवताओं की पूजा करने के लिए तैयार करने की तैयारी की।

[2495]इसके बाद, उस युवती को सम्मानपूर्वक पोलमियिस के घर ले जाया गया और कीमती वस्त्रों और आभूषणों से उसकी प्राकृतकि सुंदरता और भी नखिरी हुई थी, और उसे संत के शयनकक्ष में ले जाया गया। वहाँ उसके साथ अकेला छोड़ दिए जाने पर, उसने हर तरह के मीठे शब्दों और वभिन्नि प्रलोभनों से उस पवत्रि युवक को व्यभचिार के लिए लुभाने की कोशशि की। लेकनि मसीह के योद्धा क्रसिंथस, एक अटल चट्टान की तरह दृढ़, एक स्तंभ की तरह अडगि और एक पहाड़ की तरह अचल रहे, उन्होंने ईश्वर के प्रतपि्रेम से सांसारकि प्रेम पर वजिय प्राप्त की और, क्रूस के चहि्न द्वारा, अपने पर लक्षति शैतान के तीरों को दूर भगाया। ईश्वर के लिए हृदय से गहरी आह भरते हुए और सहायता के लिए पवत्रि आत्मा को पुकारते हुए, क्रसिंथस ने युवती से कहा:

'हे सुन्दर कन्या! यदि तुमने इस प्रकार वस्त्र धारण कयि हैं और स्वयं को सजाया-संवारा है, और इतने मीठे शब्द केवल मुझसे—एक नश्वर मनुष्य से—क्षणकि मलिन के लिए बोल रही हो—ताकि मुझे उस जीवन से हटा सको जसिे मैंने स्वेच्छा से चुना है, मेरी आत्मा को भ्रष्ट करने और मेरे सभी वचिारों को भटकाने के लिए एक ऐसे प्रेम के साथ जो अन्यथा सर्व-भक्षी है, तो तुम्हें अमर राजा, परमेश्वर के पुत्र का प्रेम जीतने के लिए कतिनी अधकि कोशशि करनी चाहिए; और यह तुम्हारी शक्ति के भीतर आसानी से है, यदि तुम चाहो। यदि आप अपने शरीर के साथ-साथ अपनी आत्मा को भी पवत्रिता में सुरक्षति रखें, और जैसे आपने अब अपने शरीर को कीमती वस्त्रों से सजाया है, वैसे ही आप अपने हृदय को सद्गुणों से सजाएँ, तो स्वर्गदूत आपके मत्रि, प्रेरति आपके साथी, और शहीद आपके पड़ोसी होंगे; उनकी मध्यस्थता से,

---

[2494] *एथेना* (जनि्हें पल्लास या मनिर्वा के नाम से भी जाना जाता है) एक ग्रीक देवी हैं, जो सर्वोच्च देव ज्यूस की पुत्री हैं, जनिका जन्म उनकी माता के बनिा उनके सरि से हुआ था। ग्रीकों के लिए, एथेना ज्यूस की बुद्धमित्ता का साक्षात स्वरूप थीं: ज्ञान और शक्ति इस देवी के प्रमुख गुण हैं। शहर की रक्षक के रूप में, एथेना नागरकिों, कृषि और शल्पिों के कल्याण को बढ़ावा देने वाली हर चीज़ को प्रोत्साहति करती है; उसकी बुद्धि ने कई उपयोगी चीज़ें रची हैं; वह सभी महलिा शल्पिों का अभ्यास करती है और सखिाती है; वह सभी कलाओं और शल्पिों, सभी ज्ञान और शक्षिा की देवी है। वह कानून और न्याय के प्रवर्तन, न्यायालयों और सार्वजनकि सभाओं की देखरेख करती हैं। साथ ही, वह युद्ध की देवी हैं और कभी-कभी उन्हें सैन्य कवच में चत्रिति कयिा जाता था।

[2495] *एडामांट* (हीरा) – एक ऐसा पत्थर जो इतना कठोर होता है कि वह बनिा कसिी नुकसान के अन्य पत्थरों को खरोंच सकता है और काट सकता है। धार्मकि साहत्यि में, यह नाम कई संतों (वशिेषकर चर्च के पति और शक्षिकों) को दयिा गया है जो अपने वश्विास और चरत्रि की दृढ़ता के लिए प्रसद्धि हुए।

स्वयं मसीह आपके वधूवर होंगे, और वे स्वर्ग में आपके लिए एक अमर महल तैयार करेंगे जो पृथ्वी पर किसी भी चीज़ से अतुलनीय रूप से अधिक सुंदर और उज्ज्वल होगा, और आपको स्वर्ग का शाश्वत आनंद प्रदान करेंगे, आपकी जवानी को अमर बना देंगे, और आपके लिए जीवन के शाश्वत पुस्तकों में एक स्थान सुनिश्चित करेंगे।

पवित्र युवक से ये वचन सुनकर, डारिया भावुक हो गई और बोली:

'मुझे इस भव्य परिधान में आपके पास लाने वाली कोई कामुक इच्छा नहीं थी, बल्कि आपके प्रति प्रेम और आपके पिता के आँसू और विनती थी, ताकि मैं आपको हमारे देवताओं की सेवा के लिए ले जा सकूँ।'

संत क्रिसैंथस ने उत्तर दिया:

'यदि आपके पास कोई तर्क या स्पष्ट प्रमाण है जिससे आप देवताओं को अर्पित की जाने वाली अपनी पूजा की सच्चाई को साबित कर सकें, तो मैं आपकी बात सुनूँगा और अपना मन बदल लूँगा। हमारे पारस्परिक लाभ के लिए, आइए इस पर चर्चा करें।'

डारिया ने कहा, 'लोगों के लिए देवताओं का सम्मान करने और उनके क्रोध को भड़काने से बचने से अधिक लाभकारी या आवश्यक कुछ भी नहीं है, बल्कि उन्हें बलिदानों से प्रसन्न करना है, ताकि वे हमारे रक्षक बनें।'

'हे विद्वान कन्या!' संत ने उत्तर दिया। 'वे देवता हमारे रक्षक कैसे हो सकते हैं, जिन्हें स्वयं सुरक्षा की आवश्यकता है, और जिनकी रात में कुत्तों द्वारा रखवाली की जाती है, ताकि वे चोरों द्वारा चुराए न जाएँ? इसी कारण से, उन्हें लोहे के कीलों से कसा जाता है और टिन से सोल्डर किया जाता है, ताकि, यदि कोई उन्हें गिरा दे, तो वे ज़मीन पर गिरकर टूट न जाएँ।'

'यदि एक अज्ञानी लोग बिना मूर्तियों के देवताओं की पूजा कर सकते थे,' दारिया ने कहा, 'तो उन्हें तराशने और स्थापित करने की कोई आवश्यकता नहीं होती। उन्हें सोने, चांदी और तांबे से ढाला जाता है, और संगमरमर और लकड़ी से बनाया जाता है, ताकि लोग, उन्हें अपनी आँखों से देखकर, जान सकें कि उन्हें अपने मन में किसकी कल्पना करनी चाहिए, जिसकी पूजा करनी चाहिए और जिसका भय मानना चाहिए।'

'आओ, हम जांच करें और निर्णय करें,' संत क्रिसैंथस ने उत्तर दिया, 'कि ये मूर्तियाँ किसका प्रतिनिधित्व करती हैं, और क्या जिनकी ये मूर्तियाँ स्थापित हैं, वे दैवीय सम्मान के योग्य हैं। जो सभी पवित्रता, धार्मिकता और दैवीय महिमा का स्वामी नहीं है, उसे देवता नहीं कहा जा सकता।' तो फिर, आपकी हँसिया-धारी क्रोनस की पवित्रता, धार्मिकता और दिव्य महिमा क्या है, जिसने अपने ही बच्चों को निगल लिया था, जैसा कि उसके अपने पूजकों ने भी लिखा है[2496] ? या ज्यूस स्वयं में[2497] , आप प्रशंसा के योग्य क्या पाएँगे, जिसने, जितने दिन वह जीवित रहा, उतने ही दिन अत्याचार, व्यभिचार और हत्या के कृत्य किए: अपने पिता का उत्पीड़क, अपने ही बच्चों का विनाशक, दूसरों की पत्नियों के साथ व्यभिचारी, अपनी ही बहन का पूर्व पति, राज्य का यातनाकर्ता, जादू-टोने का आविष्कारक, मृत्यु लाने वाला, और इतने सारे अन्याय और घृणित कृत्यों का कर्ता कि उन्हें सुनना भी असंभव है - इतने निर्लज्ज और अशुद्ध थे उसके कर्म। क्या आप सचमुच मानते हैं कि ऐसा दुष्ट व्यक्ति देवता हो सकता है? और यह कि वह वास्तव में ऐसा ही व्यक्ति था, इसका प्रमाण आपके अपने लेखक देते हैं, जिन्होंने युद्ध में पराक्रमी और अपने समय में मृत हो चुके दुष्ट पुरुषों को 'देवता' कहा। मुझे बताइए, आपके देवता ज्यूस में क्या सद्गुण था, जो अपनी मृत्यु तक सभी पवित्रता और सम्मान का शत्रु था, क्योंकि उसने स्वयं युवा गॅनमिीड[2498] का अपहरण करके हवा को अपवित्र किया, और इसी प्रकार अपनी ही बहनों के साथ बलात्कार करके पृथ्वी को अपवित्र किया। और आप अपने हर्मीस[2499] में कौन सी दिव्य गुणधर्म पाते हैं, जिसका सिर एक विशिष्ट पंखों वाले राक्षस जैसा दिखता है? जादू के द्वारा उसने पृथ्वी में छिपा हुआ सोना पाया, और तंत्र-मंत्र तथा

[2496] क्रोनस (या *क्रोनोस* - समय) – समय के देवता, यूरेनस (आकाश) के पुत्र; उसने अपने ही बच्चों को खा लिया था, लेकिन उसकी पत्नी *रेया* ने ज्यूस को बचाया और उसे डेलोस द्वीप पर खरपतवार में छिपा दिया, जहाँ एक बकरी ने उसे दूध पिलाया।

[2497] *ज्यूस* (या जुपिटर) – एक ग्रीक-रोमन देवता, जिन्हें मूर्तिपूजकों द्वारा स्वर्ग और पृथ्वी के शासक, सभी देवताओं और मनुष्यों के पिता के रूप में पूजा जाता है।

[2498] *गैनिमीड* (या गैनिमेड) – ट्रॉय के राजा का बेटा, नश्वर प्राणियों में सबसे सुंदर, जिसे देवताओं ने स्वर्ग में अपहरण कर लिया ताकि वह वहाँ अनंत काल तक रह सके और ज्यूस का प्याला भर सके। (पुराणों के अनुसार, ज्यूस उसे या तो अपने गरुड़ के माध्यम से ले गए या खुद को एक गरुड़ में बदल लिया)। बाद में गनीमीड देवताओं का, और विशेष रूप से ज्यूस का प्याला उठाने वाला बन गया, और ज्यूस का प्रिय बन गया।

[2499] *हेर्मिसि* (या *बुध*) को देवताओं का संदेशवाहक, व्यापार और वक्ताओं का संरक्षक माना जाता था, और वह सबसे लोकप्रिय पगन देवताओं में से एक था। (इसलिए लूस्त्र और लिकोनिया के नगरों के अज्ञानी निवासी प्रेरित पौलुस और बर्नबास के चमत्कारों से इतने चकित हो गए कि उन्होंने बर्नबास को 'ज्यूस' और पौलुस को 'हर्मेस' कह दिया, *क्योंकि वह मुख्य वक्ता था।* – प्रेरितों के काम 14:12)।

अपनी जादुई छड़ी से उसने एक सर्प के वषि को नष्किर्यि कर दयिा; फरि भी उसने यह सब राक्षसों की सहायता से कयिा, जनि्हें वह प्रतदिनि एक जंगली सूअर या एक मुर्गी की बलि चढ़ाता था। तो फरि हरक्यूलसि[2500] में क्या पवत्रिता थी, जो अपने पड़ोसयिों को मार-मार कर थक गया था और जसिने—भगवान के आदेश पर—खुद को आग में झोंक दयिा और जल गया, वह बेचारा आदमी, अपने दंड और अपनी खाल के साथ? एपोलो[2501] , , या बाकस[2502] के गुप्त बलदिानों में, मद्यपान और अनुशासनहीनता में क्या अच्छा पाया जा सकता है? आइए हम इरा देवी को भी याद करें, जो ज्यूस की बहन और पत्नी थीं; पागल पल्लस[2503] ; नर्लिज्ज वीनस[2504] ; ये सभी आपस में लड़ती, एक-दूसरे से ईर्ष्या करती, एक-दूसरे पर क्रोधति, प्रत्येक अपनी सुंदरता पर ववािद करती और एक चरवाहे से नर्णिय की मांग करती थीं। इन सभी में से, जनिमें न तो दव्यिता थी, न पवत्रिता और न ही धार्मकिता, उन्हें दव्यि सम्मान का पात्र कौन समझेगा? जहाँ तक अन्य छोटे देवताओं का सवाल है, उनके बारे में बात करना भी उचति नहीं है, क्योंकि प्रमुख देवता सरि के समान हैं, जनिका अन्य अंगों को अनुसरण करना चाहए। और उनमें से कसिका देवता या देवी के रूप में सम्मान कयिा जाना चाहए, जबकि क्रोनस, ज्यूस और वीनस—जनि्हें अधर्मी लोग देवताओं में सबसे महान मानते हैं—वास्तव में देवता ही नहीं हैं? अत; यदि आपके देवता तुच्छ और व्यर्थ हैं, तो उनसे भी अधकि तुच्छ वे हैं जो उन्हें देवताओं के रूप में सम्मान देते हैं।

डारयिा ने क्रसिान्थस की बातों को ध्यान से सुनकर कहा:

'यदि हमारे कवयिों की कथाएँ मूर्खतापूर्ण हैं, तो आइए हम दार्शनकिों की ओर मुड़ें, जो हमें सभी दुर्गुणों का त्याग करने और सद्गुणों का पालन करने का उपदेश देते हैं। दुनयिा की रचना पर अपने लेखों में, वे देवताओं के नामों की व्याख्या इस प्रकार करते हैं। क्रोनस से उनका तात्पर्य समय से है, जो सब कुछ खा जाता है और हर चीज़ को शून्य में बदल देता है; ज्यूस से, सूर्य की गर्मी से; ईरा से, वायु से; एफ्रोडाइट से, अग्नि से; पोसीडॉन से, समुद्र से; सीरेस से, पृथ्वी से; और अन्य दव्यि नामों से, शेष तत्वों से।

इस पर क्रसिैंथस ने उत्तर दयिा:

लोग आमतौर पर ऐसी चीज़ों की प्रतमिाएँ बनाते हैं जो हमेशा मौजूद नहीं रहतीं, बल्कि समय के साथ मटि जाती हैं; पर पृथ्वी हमेशा मौजूद रहती है, और इसी तरह समुद्र और आग भी हमेशा मौजूद रहते हैं और सभी द्वारा देखे जाते हैं, जैसे कि वायु। और यह कि मूर्तयिों में इन तत्वों की पूजा करना, जो मनुष्यों के समान हैं और मानव हाथों द्वारा नर्मिति हैं, वैध क्यों है – यह मैं न तो जानता हूँ और न ही समझता हूँ। और आप तत्वों के प्रतीकों की पूजा मानव-सदृश मूर्तयिों में क्यों करते हैं, बजाय स्वयं तत्वों की पूजा करने के? आप पृथ्वी, वायु और समुद्र की पूजा क्यों नहीं करते? क्या कोई ऐसा राजकुमार या राजा है जो यह आदेश दे कि उससे स्वयं ही घृणा की जाए, जबकि किसी और द्वारा बनाई गई उसकी एक मूर्ति की पूजा की जाए? और चूँकि ऐसा कोई राजा या राजकुमार नहीं है, इसलिए यह सचमुच कहा जाना चाहए कि उन मूर्तयिों में आप न तो तत्वों का चत्रिण कर रहे हैं और न ही देवताओं का, बल्कि नश्वर मनुष्यों का कर रहे हैं।

डारयिा ने कहा:

क्रसिान्थस, तुम्हारी दलीलें मेरे इस मत की पुष्टि करती हैं: नक्काशीदार मूर्तयिों की पूजा सरल और अज्ञानी लोग करते हैं, जबकि हम उन वस्तुओं की ही पूजा करते हैं जनिकी मूर्तयिाँ स्थापति की जाती हैं।

'यदि आप अपने सद्धिांत को हमारी ही दलीलों से स्थापति करना चाहते हैं,' – क्रसिैंथस ने जवाब में कहा, – तो चलए उन सभी को उदाहरण के रूप में लें जो तत्वों की पूजा करते हैं: यदि वे पृथ्वी की पूजा करते हैं, तो उन्हें इसे उचति सम्मान के साथ, अपनी देवी के रूप में पूजना चाहए, और इसे अपमानति नहीं करना चाहए; उन्हें इसे जोतना, खोदना या कसिी अन्य तरीके से इसकी खेती नहीं करनी चाहए; भूमि को खेती-बाड़ी और जुताई से मुक्त रहने दें। जहाँ तक उन लोगों का सवाल है जो पृथ्वी को देवी नहीं मानते, यदि वे कसिान हैं, तो वे इसे हल और फावड़े से जोतें, बनिा इसे कोई दव्यि सम्मान

[2500] *हरक्यूलसि* (हेराक्लेस या इराक्लयिोस) रानी अल्केमेनी और देवता ज्यूस का पुत्र था। वह ग्रीक वीरतापूर्ण शक्ति के सर्वोच्च आदर्श का प्रतीक था और ग्रीकों का एक राष्ट्रीय नायक था।

[2501] *एपोलो* (*या फीबस*) – ज्यूस और लेटो का पुत्र, सबसे सम्मानति ग्रीक-रोमन मूर्तपिूजक देवताओं में से एक। उसकी पूजा सूर्य और बौद्धकि प्रबोधन के देवता के रूप में, साथ ही सार्वजनकि कल्याण और व्यवस्था, कानून के संरक्षक और भवषि्यवाणी के देवता के रूप में की जाती थी।

[2502] बैकस (डायोनसिस) – ज्यूस और सेमेले का पुत्र, अंगूर की बेल और शराब बनाने का देवता, जो शराब के उपहार के माध्यम से लोगों के दलिों को प्रसन्न करता है और दुख तथा चंताओं को दूर करता है। बैकस के सम्मान में मनाए जाने वाले त्योहारों में बड़ी अश्लीलता होती थी।

[2503] *पल्लाडा: एथेना* के प्रवषि्ट के अंतर्गत ऊपर देखें /

[2504] *वीनस* – प्रेम, सौंदर्य, कामुकता और अशुद्ध इच्छाओं की ग्रीक-रोमन देवी।

दिए। और विचार करें: किसके खेत और बगीचे अधिक उपजाऊ हैं? वह कौन है जो पृथ्वी को न तो जोतता है और न ही खोदता है, फिर भी उसे देवी के रूप में सम्मान देता है? या कौन है जो बिना किसी श्रद्धा के इसकी खेती और काज करता है? यदि, जैसा आप कहते हैं, पृथ्वी वास्तव में एक देवी है, तो उसे आपको, अपने भक्तों को, आपकी मेहनत के बिना, बिना जोते, बिना हल जोते या बिना बोए, सभी प्रकार के फल प्रदान करने चाहिए। इसी तरह, यदि समुद्र एक देवता है, तो उस पर चप्पू के बिना नौका चलाओ; उसे तुम्हें जहाँ चाहो वहाँ ले जाने दो; इसी प्रकार, यदि तुम मछलियाँ चाहते हो, तो उन्हें मत पकड़ो या परिश्रम मत करो, बल्कि समुद्र की एक देवता के रूप में पूजा करो और प्रार्थना द्वारा उससे मछलियाँ माँगो। और जहाँ तक अन्य तत्वों का सवाल है, आपको यह समझना चाहिए कि वे अपने पूजकों को नहीं पहचानते, क्योंकि उनमें न तो आत्मा है और न ही बुद्धि, बल्कि वे ईश्वर की आज्ञा से मानव जाति की आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं; और पृथ्वी, अपने स्रष्टा की आज्ञा से, सूर्य की किरणों से सिंचित और गर्म होकर, बीजों को पोषित करती है, फसलें उगाती है और, उचित समय पर, फल देती है। इसलिए एकमात्र सृष्टिकर्ता ईश्वर का सम्मान करना उचित है, जिसने यह सब बनाया, व्यवस्थित किया और हमारे जीवन के लिए प्रदान किया, न कि उन तत्त्वों का जिन्हें उसने बनाया। आखिरकार, स्कूल में बच्चे किताबों, स्लेट या कागज़ का सम्मान नहीं करते, बल्कि अपने शिक्षकों का करते हैं; उसी तरह, एक बीमार व्यक्ति, जिसे ठीक करके स्वस्थ कर दिया गया हो, अपनी बीमारी से उबरने के लिए धन्यवाद दवा को नहीं देता, बल्कि उस डॉक्टर को देता है जिसने उसे स्वस्थ किया।

क्रिसैंथस के यह और भी बहुत कुछ कहने के बाद, डारिया एक सच्चे परमेश्वर, हमारे प्रभु यीशु मसीह में विश्वास करने लगी, और फिर वे दोनों क्रिसैंथस के साथ विवाह के बहाने ब्रह्मचर्य का पालन करने, अपनी कुँवारी अवस्था को पवित्रता में बनाए रखने और प्रभु के भय में रहने के लिए सहमत हुए। उस समय से, पोलमियिस, क्रिसैंथस के पिता, ने उसके तथाकथित विवाह के कारण उसे पूरी स्वतंत्रता दे दी, क्योंकि वह अपने बेटे के विवाह से बहुत खुश था, यह जाने बिना कि नवविवाहितों के बीच क्या रहस्य था। इसी तरह, उसने अपनी सारी संपत्ति अपने बेटे के नाम कर दी, जो उसका एकमात्र उत्तराधिकारी था। कुछ ही समय बाद, पोलेमियिस की मृत्यु हो गई, क्योंकि ईश्वर ने ऐसा प्रबंध किया था ताकि पवित्र जोड़ा—क्रिसैंथस और डारिया, जो पवित्रता में अपना वैवाहिक जीवन बिता रहे थे—उनकी अधिक स्वतंत्र रूप से सेवा कर सकें।

जब क्रिसैंथस इस प्रकार अपने जीवन में पूरी तरह से स्वतंत्र हो गया, तो उसने अपनी पत्नी, कन्या दारिया को बपतिस्मा दिया, और उसने जल्द ही संपूर्ण पवित्र शास्त्र और सभी ईसाई लेखों में महारत हासिल कर ली - और वह अपने जीवन में पवित्र और मसीह की एक परिपूर्ण सेविका और वधू बन गई। क्रिसैंथस और डारिया केवल अपनी ही मुक्ति के लिए ही नहीं, बल्कि दूसरों की मुक्ति के लिए भी चिंतित थे; क्योंकि उन्होंने कई पुरुषों को मसीह के पास लाया और युवकों को पवित्र जीवन जीने के लिए प्रोत्साहित किया, जबकि उन्होंने कई पत्नियों और कुंवारी लड़कियों को मसीह के साथ व्रतबद्ध किया। वे दोनों मठों के नमूने पर विशेष रूप से बनाए गए घरों में रहते थे, और दोनों के पास कुंवारी कन्याओं की अपनी-अपनी मंडली थी: क्रिसैंथस के पास ऐसे युवा पुरुष थे जिन्होंने इस दुनिया के सभी सुखों को त्याग दिया था और ईश्वर के प्रति पवित्र जीवन का व्रत लिया था, जबकि डारिया के पास ऐसी युवा महिलाएं थीं जिन्होंने स्वयं को मसीह के लिए व्रतबद्ध किया था।

कई वर्षों बीत जाने के बाद, जब रोम में क्रिसैंथस और डारिया के समुदाय काफी बढ़ गए थे, तो शहर में अचानक एक विद्रोह और अशांति फैल गई। लोगों ने एपार्क[2505] केलरिनिस के पास जाकर संतों क्रिसैंथस और डारिया पर बदनामी की। पत्नियों ने पुकारा:

'हम अपनी पत्नियाँ खो चुके हैं!'

और युवकों ने पुकारा:

'डारिया के कारण, हमने अपनी सगाई की हुई दुल्हनों को खो दिया है!'

पत्नियों ने भी पुकारा:

'हमने अपने पति खो दिए हैं!'

युवा कन्याएँ भी चिल्लाईं:

'क्रिसांथस के कारण हमने हमें मंगनी किए गए दूल्हे खो दिए हैं!'

[2505] *एपार्क* – किसी शहर या प्रांत का शासक।

सभी लोगों ने पुकार लगाई, कहते हुए:

'अगर ववािह को अस्वीकार कर दयिा गया तो बच्चे कैसे पैदा होंगे? क्रसिैंथस और दारयिा की शक्षिाओं और उनकी जादुई चालाकी का पालन करते हुए अगर पुरुष महलिाओं से मुंह मोड़ लेंगे तो मानव जाति का अंत हो जाएगा।'

तब राज्यपाल ने क्रसिैंथस और डेरयिस को पकड़ने और उन्हें वभिन्नि प्रकार की यातनाएँ देने का आदेश दयिा, जब तक कि वे देवताओं को बलदिान न चढ़ाएँ। उसने क्रसिैंथस को एक नश्चिति ट्राइब्यून[2506] क्लाउडयिस के हवाले कर दयिा, और ट्राइब्यून ने उसे अपने सैनकिों के हवाले कर दयिा, उनसे कहते हुए:

'उसे शहर के बाहर ज्यूस के मंदरि ले जाओ, और अगर वह वहाँ अजेय हरक्यूलसि की पूजा करने से इनकार करता है, तो उसे वभिन्नि यातनाएँ दो जब तक कि वह झुककर बलदिान न चढ़ा दे।'

सैनकिों ने क्रसिैंथस को पकड़ लयिा और उसे मज़बूत बैल की नसों से नर्दियतापूर्वक बाँध दयिा, इतनी ज़ोर से कसकर कि वे शहीद की हड्डयिों से चपिक गईं; फरि भी ये बंधन इतनी अचानक टूट गए कि कोई उनकी एक झलक भी नहीं देख सका; यह सब एक शब्द बोलने से भी तेज़ी से हो गया। सैनकिों ने क्रसिैंथस को बांधने के लिए बहुत समय तक कड़ी मेहनत की; जब उन्हें कुछ भी हासलि नहीं हुआ, तो वे क्रोध से भर गए और उसे एक अंधेरी और बदबूदार गुफा में फेंक दयिा; उस पर बेड़यिाँ डालकर और उसे लोहे की जंजीरों से बाँधकर, उन्होंने उसका अपमान कयिा और उसे तरह-तरह की ताने सुनाईं; लेकनि वे बेड़यिाँ धूल की तरह बखिर गईं। इसके अलावा, उन्होंने उस पर हर तरह की गंदगी भी उड़ा दी, और कहा:

'तुम्हारा जादू-टोना यहाँ तुम्हारे कसिी काम नहीं आएगा!'

लेकनि अचानक इस गंदगी की बदबू एक मीठी खुशबू में बदल गई। इसके बाद, सैनकिों ने एक बछड़े की बलि दी, उसका चमड़ा उधेड़ लयिा, और शहीद के नग्न शरीर को इस अभी भी गीले चमड़े में लपेट दयिा, फरि उसे तपती धूप में रख दयिा; लेकनि इस यातना से भी संत को कोई नुकसान नहीं हुआ। इसके बाद, उन्होंने उसे फरि से लोहे की ज़ंजीरों से बाँधा और उसे एक कालकोठरी में डाल दयिा, लेकनि वे ज़ंजीरें भी अचानक टूट गईं, और कालकोठरी प्रकाश से भर गई, मानो कई जलती हुई मोमबत्तयिों से। सैनकिों ने जो कुछ भी हुआ था, वह सब अपने ट्राइब्यून, क्लॉडयिस को बताया। क्लॉडयिस, तहखाने में आकर वहाँ की रोशनी देख, ने पवत्रि शहीद क्रसिैंथस को अपने सामने लाने का आदेश दयिा और उससे कहा:

'तुम ऐसी चमत्कारकि शक्ति से ऐसे चमत्कार करते हो? मैंने कई जादूगरों और जादू-टोना करने वालों को वश में कयिा है और उनमें ऐसी कोई शक्ति नहीं पाई। और चूँकि मैं देखता हूँ कि आप एक कुलीन और बुद्धमिान व्यक्ति हैं, मैं आपसे और कुछ नहीं चाहता, सवािय इसके कि आप उस दुस्साहसी ईसाई सद्धिांत का त्याग करें, जो रोमन लोगों के बीच अशांति और उथल-पुथल मचा रहा है; इसलिए, अपने जन्म के अनुरूप आचरण करें और सर्वशक्तमिान देवताओं को योग्य बलदिान अर्पति करें।"

संत क्रसिांथस ने उनसे उत्तर दयिा:

'यदि तुममें ज्ञान की एक भी छोटी सी चगिारी होती, तो तुम आसानी से समझ जाते कि यह जादुई चालाकी नहीं, बल्कि दैवीय शक्ति है जो मेरी मदद करती है और मुझे मजबूत बनाती है। लेकनि तुम मुझ पर उसी तरह देखते हो जैसे तुम अपने देवताओं पर देखते हो – मूर्खता से धुंधली आँखों से। क्योंकि अगर तुम्हारी आँखें सही से देख पातीं, तो तुम देख पाते कि तुम्हारे देवता नहीं देखते; और यदि आपके कानों ने सत्य सुन लयिा होता, तो आप यह जान गए होते कि आपके देवता उन लोगों की आवाज़ नहीं सुनते जो उन्हें पुकारते हैं; और यदि आपमें ववेक होता, तो आप समझ गए होते कि आपके देवताओं के भीतर धूल, मट्टिी और टनि के सवि और कुछ नहीं है।

तब ट्राइब्यून क्लॉडयिस ने शहीद को एक पेड़ से बांधकर गाँठदार लाठी से पीटने का आदेश दयिा; लेकनि शहीद को पीटने वालों के हाथों में लाठयिाँ कठोर और भारी थीं, जबकि संत के शरीर पर वे टहनयिों की तरह नरम थीं; यह देखकर, ट्रबि्यून ने क्रसिैंथस की पटिाई बंद करने का आदेश दयिा; और, उसे पेड़ से खोलकर, उसने उसे अपने स्वयं के वस्त्र पहनाए और, सैनकिों की ओर मुड़कर कहा:

'वास्तव में, यह कोई मानवीय जादू-टोना नहीं है, बल्कि दविय शक्ति स्वयं कार्य कर रही है। क्योंकि बैल की अस्थयिों से बने मजबूत बंधन भी अपने आप टूट गए हैं, और बेड़यिाँ टूट गई हैं, जबकि उसके पैरों तले का पेड़ राख में बदल

[2506] *ट्रबि्यून* – एक पद जो कर्नल या कंपनी कमांडर के पद के बराबर होता है।

गया है; और जिस कच्चे चमड़े से वह ढका हुआ था, दिन भर धूप में रहने के बाद भी वह सूखा नहीं; और भारी बेड़ियाँ एक अदृश्य शक्ति से ढीली हो गईं और टूट गईं; और अंधेरी कोठरी एक बड़ी रोशनी से प्रकाशित हो उठी; और भारी लाठी, उसके शरीर को छूते ही, एक टहनी की तरह नरम हो गई। इसलिए, उसमें स्पष्ट रूप से दिव्य शक्ति को कार्य करते हुए देखकर, हम सभी इस ईश्वर के पुरुष के चरणों में गिरें और उस सारी द्वेष और पीड़ा के लिए क्षमा याचना करें जो हमने उस पर डाली है। आइए हम उससे विनती करें कि वह हमें अपने सर्वशक्तिमान ईश्वर से मिला दे, जो ऐसे चमत्कार करते हैं, जो अपने सेवकों को सभी विपरीत परिस्थितियों में इतना शक्तिशाली और अजेय बनाते हैं - जैसा कि हम स्वयं देख सकते हैं: क्योंकि इस पीड़ित, उनके सेवक ने, जैसे हमें हराया है, वैसे ही हमारे राजकुमारों और राजाओं को भी हराएगा, और अपने भीतर के स्वर्गीय ईश्वर की अजेय शक्ति से उन्हें लज्जित करेगा।

यह कहकर, क्लॉडियस, सभी सैनिकों के साथ, संत क्रिसैंथस के चरणों में गिर पड़ा और कहा:

'सत्य में, हम यह जान गए हैं कि आपका ईश्वर ही सच्चा ईश्वर है; अत; हम आपसे विनती करते हैं कि हमें उसकी ओर मोड़ें और हमें अपना दास बना लें।'

इस पर संत ने उत्तर दिया:

'यदि आप मेरे ईश्वर के पास आना चाहते हैं, तो घुटनों के बल न आएं, बल्कि अपने हृदय से आएं; क्योंकि ईश्वर उनके निकट है जो हृदय और विश्वास से उसकी खोज करते हैं।'

और इसके बाद लंबे समय तक, संत क्रिसैंथस ने उनसे सच्चे ईश्वर के बारे में बात की; इस बातचीत के बाद, ट्राइब्यून क्लॉडियस, उनकी पत्नी हिलारिया, और उनके दो बेटे – जेसन और मॉरस – ईश्वर में विश्वास करने लगे; उनके सभी रिश्तेदार, मित्र और उनका पूरा परिवार भी ऐसा ही करने लगा; सभी सैनिक भी अपने परिवारों सहित विश्वास करने लगे - और उन सभी ने मिलकर पवित्र बपतिस्मा ग्रहण किया। और वे सभी क्रिसान्थस से शिक्षा प्राप्त करते रहे, प्रभु यीशु मसीह के बारे में उनके शब्दों को ध्यान से सुनते रहे, और वे सभी उनके लिए कष्ट सहने की इच्छा रखते थे।

उस समय रोम में नुमेरियन[2507] का शासन था। जब उसे यह खबर मिली कि ट्रिब्यून क्लॉडियस ने अपने पूरे परिवार और सैनिकों सहित मसीही धर्म अपना लिया है और बपतिस्मा ग्रहण कर लिया है, तो उसने क्लॉडियस को गर्दन में पत्थर बाँधकर समुद्र में डुबो देने का आदेश दिया; और उसने सभी सैनिकों तथा क्लॉडियस के दो बेटों को तलवार से सिर कलम करने का आदेश दिया। जहाँ इन पवित्र मसीही शहीदों ने अपनी मृत्यु पाई, वहाँ एक सुनसान गुफा थी, जहाँ पहले मृतकों को दफनाया जाता था; इस गुफा को साफ करने के बाद, ईसाइयों ने रात में पवित्र शहीदों के शवों को निकालकर वहीं दफना दिया। क्लोडियस की पत्नी, हिलारिया, अक्सर इस गुफा में, पवित्र शहीदों के अवशेषों के पास आती थी, और प्रार्थना करती थी ठीक उसी स्थान पर जहाँ उसके बेटों का सिर कलम किया गया था। एक बार, जब वह उस स्थान पर प्रार्थना कर रही थी, तो उसे मूर्तिपूजकों ने पकड़ लिया, जो उसे यातना देने के लिए घसीट कर ले गए। उसने उनसे विनती करते हुए कहा:

'मुझे अपनी प्रार्थना पूरी करने दो, और फिर मुझे जहाँ चाहो ले जाओ।'

जब सैनिकों ने तब हिलारिया के बंधन थोड़े ढीले कर दिए, तो वह जमीन पर घुटनों के बल बैठ गई, दुख के साथ अपने हाथ उठाए[2508] , अपनी आँखें स्वर्ग की ओर उठाईं और कहा:

'हे प्रभु यीशु मसीह, जिनकी मैं पूरे हृदय से गवाही देती हूँ! यह अनुग्रह करो कि मैं अपने बेटों से मिल सकूँ, जिन्हें आपने अपने लिए दुख सहने के लिए बुलाया है, और जिन्होंने अपने प्रभु, आपके लिए अपना जीवन बलिदान कर दिया है।'

इस प्रकार प्रार्थना करने के बाद, उसने अपना प्राण ईश्वर को सौंप दिया। हिलारिया को पकड़ने वाले सैनिकों ने, यह देखकर कि उसकी मृत्यु हो गई है, दया से भर गए; और, उसके साथ रहने वाली दो दासियों को वहीं छोड़कर, वे चले गए। दासियों ने अपनी मालकिन का शरीर लेकर, उसे उस जर्जर गुफा के पास सम्मानपूर्वक दफनाया जिसमें पवित्र शहीदों को सुलाया गया था।

जहाँ तक संत क्रिसैंथस और डैरियस का सवाल है, राजा नुमेरियन ने आदेश दिया कि उन्हें विभिन्न यातनाएँ दी जाएँ। और इस प्रकार क्रिसैंथस को बेड़ियों में जकड़कर एक गहरे, बदबूदार गड्ढे में फेंक दिया गया, जिसमें शहर की सारी गंदगी बहती थी, जबकि डैरियस को एक वेश्यालय ले जाया गया। लेकिन ईश्वर ने दोनों शहीदों की मदद की, और

[2507] सम्राट *नुमेरियन* ने 283 से 284 तक शासन किया।

[2508] *ऊपर* – आकाश की ओर।

उनके माध्यम से अपनी सर्वशक्तिमान शक्ति का प्रदर्शन किया; क्योंकि संत क्रिसैंथस के अंधेरे और बदबूदार कालकोठरी में स्वर्गीय प्रकाश चमक उठा, और बदबू के बजाय एक सुगंध फैल गई; और संत दारिया के पास एक शेर भेजा गया; अपने पिंजरे से निकलकर वह उनके कक्ष में आ गया, जहाँ संत, जमीन पर लोटकर[2509] प्रार्थना कर रही थीं – और उनकी रक्षा करने लगा। नागरिकों ने, इस बात से अनजान, एक निर्लज्ज युवक को दारिया के पास भेजा ताकि वह उनका अपमान कर सके। लेकिन जब वह संत के कक्ष में प्रवेश किया, तो शेर ने तुरंत उसे पकड़ लिया, उसे जमीन पर पटक दिया और उसके पैरों तले कुचलने लगा; और, संत दारिया की ओर ऐसे देखा मानो वह एक समझदार सेवक हो, और वह अपनी मालकिन के आदेश का इंतजार करने लगा कि वह उस निर्लज्ज युवक के साथ क्या करे: उसे मार डाले या जिंदा छोड़ दे। यह समझते हुए संत दारिया ने सिंह से कहा:

'मैं तुझसे ईश्वर के पुत्र की कसम देती हूँ, इस युवक को क्षमा कर दे, ताकि वह मुझसे ईश्वर का वचन सुन सके।'

सिंह ने उस युवक को छोड़कर बाहर जाकर द्वार के पास लेट गया, और किसी को भी संत दारिया के कक्ष में प्रवेश नहीं करने दिया। और दारिया ने उस युवक से कहा:

देखो, मसीह के नाम का मात्र उल्लेख होते ही सिंह का क्रोध शांत हो गया, और वह जानवर, एक विवेकशील मनुष्य की तरह, सच्चे परमेश्वर को जानता है, उसका भय मानता है और उसका सम्मान करता है। परन्तु तुम, हे दुष्ट मनुष्य, यद्यपि एक विवेकशील प्राणी हो, परमेश्वर का भय नहीं मानते, ऐसी द्वेष और दुष्टता में निवास करते हो। और जिस बात पर तुम्हें लज्जित होकर पश्चाताप करना चाहिए, तुम उसी पर घमण्ड करते हो।

युवक दारिया के सामने गिर पड़ा और चिल्लाने लगा, कहने लगा:

'हे मसीह के सेवक, मुझे आज्ञा दे कि मैं इस स्थान से सुरक्षित चला जाऊँ, और मैं सभी को बताऊँगा कि मिसीह, जिसकी तुम सेवा करते हो, सच्चा परमेश्वर है, और उसके सिवा कोई और नहीं है।'

और दारियस ने सिंह को आज्ञा दी कि वह युवक को उसके कक्ष से बिना चोट के जाने दे। और वह युवक पूरे नगर में यह पुकारता हुआ घूमने लगा:

'जान लो, सभी रोमनों, कि दारियस एक देवी है!'

और इस प्रकार सर्कस के पहलवान[2510] दारियस के घर दौड़े और अपनी विशिष्ट निर्भीकता के साथ, दारियस के कक्ष से शेर को बाहर निकालने का प्रयास किया। लेकिन सिंह, जो ईश्वर से शक्ति प्राप्त कर चुका था, ने उनमें से प्रत्येक को पकड़ लिया, उन्हें जमीन पर फेंक दिया और सभी को संत दारिया के पास लिटाकर, उनके पैरों तले पहरा देने लगा; न तो उन्हें मारता और न ही उन्हें कोई हानि पहुँचाता, बल्कि दारिया की आज्ञा की प्रतीक्षा कर रहा था। और संत ने उन लोगों से कहा:

'यदि तुम मसीह में विश्वास करते हो, तो तुम इस स्थान से सुरक्षित जा सकते हो; परन्तु यदि तुम विश्वास नहीं करते, तो तुम्हारे देवता तुम्हें मृत्यु से बचाएँ।'

लेकिन वे सब एक स्वर में चिल्लाए:

'जो कोई यह विश्वास नहीं करता कि मिसीह सच्चे ईश्वर हैं, वह इस जगह से जीवित नहीं निकलेगा!'

जब उन्होंने ऐसा पुकारा, तो दारियस ने सिंह को छोड़ने का आदेश दिया, और उन लोगों को बचा लिया गया। और जब वे जा रहे थे, तो उन्होंने ऊँचे स्वर में पुकारा:

'रोम के लोगों, विश्वास करो कि दारिया द्वारा प्रचारित, मसीह के सिवा कोई दूसरा ईश्वर नहीं है!'

जब केलरिन के राज्यपाल को इस बात की जानकारी मिली, तो उसने उस घर के दरवाजे पर एक भयंकर आग जलाने का आदेश दिया जहाँ दारिया सिंह के साथ था, और उन्हें जला देने का आदेश दिया। यह देखकर, सिंह ने डर के मारे एक ज़ोरदार दहाड़ मारी। लेकिन संत ने उससे कहा:

'डरो मत: तुम्हें न तो जलाया जाएगा, न कोई पकड़ पाएगा, न ही मारा जाएगा, बल्कि तुम नियत समय पर अपनी प्राकृतिक मृत्यु मरोगे; अतः बिना किसी भय के इस स्थान को छोड़ो और मरुभूमि में चले जाओ। जिसने तुम्हें मुझमें सम्मानित किया है, वह तुम्हारी रक्षा करेगा।'

[2509] *चेहरा* नीचे – किसी का चेहरा नीचे की ओर, चेहरे पर।

[2510] रोमन सर्कसों में ये *योद्धा ग्लैडिएटर* के नाम से जाने जाते हैं।

और सहि ने सरि झुकाकर बाहर नकिल गया और पूरे शहर से बनिा कसिी को नुकसान पहुँचाए नकिल गया, और मरुभूमि में भाग गया; फरि भी, जो सभी सहि द्वारा बख्शे गए थे, उन्होंने पवत्रि बपतस्मिा ग्रहण कयि।

जब यह सब राजा नुमेरयिन को बताया गया, तो उसने क्रसिैंथस और डेरयिस को क्रूर यातनाएँ देने का आदेश दयि। क्रसिैंथस को एक पेड़ से लटका दयि गया, और उसके शरीर को झुलसाने के लिए जलती हुई मोमबत्तयिाँ लाई गईं; लेकनि तुरंत ही पेड़ टूट गया, रस्सयिाँ टूट गईं, और मोमबत्तयिाँ बुझ गईं। जहाँ तक उन लोगों का सवाल है जन्हिोंने संत दारयिस को छूने की कोशशि की, उनके हाथ तुरंत ऐंठने लगे, उनके पूरे शरीर दर्द से ऐंठने लगे, और वे पीड़ा से कराह उठे। यह देखकर, राज्यपाल भय से भर गया और इस सब की सूचना देने के लिए जल्दी से राजा के पास गया। राजा ने, इन चमत्कारों को ईश्वर की शक्तकिा नहीं बल्कजिादू-टोने की चाल का परणिाम मानते हुए, आदेश दयि कदिोनों शहीदों—क्रसिैंथस और डेरयिस—को शहर से बाहर ले जाया जाए और 'सैलारयि' के नाम से जाने जाने वाले रास्ते पर[2511] , एक गहरी खाई खोदी जाए, उन्हें उसमें फेंका जाए, और उन्हें पत्थरों और मट्टिी के नीचे जीवति दफनाया जाए। वहाँ पवत्रि शहीदों क्रसिैंथस और डारयि को ले जाया गया; और, गाते और प्रार्थना करते हुए, वे खाई में उतर गए और यातनाकर्ता के आदेश पर, मट्टिी और पत्थरों के नीचे जीवति दफ़न होकर, एक साथ शहीद हो गए। और इस प्रकार, जैसे उन्होंने जीवन में एक आध्यात्मकि मलिन साझा कयि था, वैसे ही वे दोनों एक साथ मरे, जन्हिें परमेश्वर ने एक जीवति और प्रसन्न करने वाले बलदिान के रूप में स्वीकार कयि, और उन्हें अमर पुरस्कार के मुकुट प्राप्त हुए[2512] ।

पवत्रि शहीदों क्रसिैंथस और दारयि के शहादत स्थल पर, जब वहाँ कई चमत्कार और चंगाईयाँ हुईं, तो पुरुषों, महलिाओं और बच्चों सहति ईसाइयों की भीड़ पास की एक गुफा में इकट्ठा हुई, जो अपने शहादत के दनि का आनंदपूर्वक उत्सव मना रहे थे और दव्यि रहस्यों में भाग ले रहे थे। अत्याचारी को इस बात की जानकारी मलिी और उसने उस गुफा के मुहाने को मट्टिी से भर देने का आदेश दयि—जहाँ कई ईसाइयों ने शहादत प्राप्त की थी, जनिमें पादरी डायोडोरस, डकिन मैरयिन और कई पुरोहति शामलि थे। वास्तव में, वहाँ मारे गए सभी लोगों के नाम गनिाना असंभव है, क्योंकवि बहुत बड़ी संख्या में थे।

मेरे भाइयों, उआरनि और आर्मेनयिस – भाई – ने परम पावन पोप स्टीफन ऑफ रोम की आज्ञा से लखिा है और इसे सभी शहरों में भेजा है, ताकसिभी जान सकें कसिंतों क्रसिैंथस और डारयि ने स्वर्ग के राज्य में हमारे प्रभु यीशु मसीह से अपने शहीद होने का मुकुट प्राप्त कयि है; महमिा और सामर्थ्य उसी की हो, अब और हमेशा और युगों-युगों तक। आमीन।

शहीद संत पंचारयिस का पर्व दविस

19 मार्च को स्मरणोत्सव

डायोक्लेटयिन और मैक्समियिन के शासनकाल में[2513] – जनिमें से बाद वाले प्राचीन रोम में रहते थे – रोमन साम्राज्य में वभिन्नि देवताओं की पूजा व्यापक रूप से फैली हुई थी, जबकमिसीह के स्वीकारयिों से न केवल उनकी संपत्तछिीन ली गई थी, बल्कउिन्हें वभिन्नि प्रकार की यातनाओं का भी सामना करना पड़ा। उस समय, पंचारयिस नाम का एक व्यक्तरिोम में रहता था। वह उज़[2514] देश के वलिपता नगर का मूल नविासी था; वह ईसाई पूर्वजों से आया था और अपनी लंबी कद-काठी और सुंदर रूप से वशिष्टि था। रोम आकर, उसने मॅक्समियिन की कृपा प्राप्त की और सम्राट के वशिेष स्नेह का आनंद लेते हुए, अपने दरबारयिों में सर्वोच्च पद प्राप्त कयि। इस कृपा को बनाए रखने के लिए, उसने मसीह में अपने वश्विास का त्याग कर दयि। उसके प्रतप्रिेम के कारण, मैक्समियिन ने उसे कर के रूप में लाए गए भेंट-उपहारों और अन्य प्रकार के तोहफों को स्वीकार करने का काम सौंपा—कुछ स्थापति रीत-रविाज के अनुसार, और कुछ अपने

[2511] इस स्थल पर एक प्राचीन जलवाहकिा थी, जसिे ईसाइयों ने मृतकों के दफ़न के लिए अनुकूलति कर लयि।

[2512] पवत्रि शहीदों क्रसिैंथस और डेरयिस का 283 में नधिन हो गया। (हालांकि, कुछ स्रोत पवत्रि शहीदों की मृत्यु का वर्ष 256, सम्राट वैलेरयिन के शासनकाल के दौरान, बताते हैं)।

[2513] 284 में, रोमन साम्राज्य को पूर्वी और पश्चमिी भागों में वभिाजति कयि गया था। पूर्व पर डायोक्लेटयिन का शासन था, जो नकिोमेडयि में रहते थे, जबकपिश्चमि पर मैक्समियिन का शासन था, जनिका नविास रोम में था। दोनों ने 284 से 305 तक शासन कयि।

[2514] उज़ी या उज़पिेट्स पश्चमिी जर्मनी में राइन नदी के दाहनिे कनिारे, इसकी एक सहायक नदी के उत्तर और दक्षणि में रहते थे। वलिपेट शहर मानचत्रिों पर अंकति नहीं है, लेकनि ऐसा माना जाता है कइिसे वलिा कहा जाता था।

अधकिार का प्रयोग करके—और इस प्रकार उसने अपनी आँखों को आनंदति करने और भवष्यि में एक आरामदायक जीवन सुनश्चिति करने के लिए एक बड़ी संपत्ति इकट्ठी कर ली। पंचारयिस ने ठीक वैसा ही कयिा और हर मामले में सम्राट की राय से सहमत रहा। इस बीच, उसकी माँ और बहन को जब यह सब पता चला, तो उन्होंने उसे एक पत्र भेजा जसिमें उन्होंने सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण रूप से उससे ईश्वर के भय को याद करने का आग्रह कयिा, और फरि मसीह के भयानक भवष्यि के न्याय को याद करने के लिए, क्योंकि कई लोगों ने इसके बारे में सुनकर, राजाओं और शासकों के सामने साहसपूर्वक उस वादे को वरिासत में पाने की अपनी इच्छा की घोषणा की, जसिके बारे में उन्होंने सुसमाचार के वृत्तांत से सुना था। इसके अलावा, उन्होंने उसे उस भयानक नन्दिा पर वचिार करने की सलाह दी जो उस न्याय में मसीह की दव्यिता में वश्वास से इनकार करने वाले कसिी भी व्यक्ति पर पड़ेगी (मत्ती 10:33; मरकुस 8:38; लूका 9:26) उस न्याय में, और, अंत में, उसे मसीह के उन वचनों की याद दलिाई कि यदि कोई मनुष्य सारी दुनिया प्राप्त कर ले, परन्तु अपनी आत्मा खो दे, तो वह उससे क्या लाभ उठाएगा? क्योंकि यदि कोई अपनी आत्मा खो देता है, तो वह उसे कैसे छुड़ा सकता है (मरकुस 8:36–37)? यह पत्र प्राप्त करके और पढ़कर, पंचारयिस होश में आया, और बहुत रोया और, जमीन पर गरिकर, हृदय से दुःखति होकर पुकारा:

'हे सर्वशक्तमिान प्रभु! मुझ पर दया करें और अपने न्याय के दनि स्वर्गदूतों और मनुष्यों के सामने अपने सेवक को लज्जति न करें, बल्कि अपनी महान दया से मुझे बचा लें।'

कुछ दरबारयिों ने, पन्खारयिस को रोते और ऐसे शब्द कहते हुए देखा, तो उन्होंने यह बात मैक्समियिन को बताई; और जब पन्खारयिस उसके पास आया, तो उसने उससे पूछा:

'मेरे प्रयि पन्चरउिस, मुझे बताओ, क्या तुम भी एक नासरी हो[2515] ?'

पंचारयिस ने उत्तर दयिा, 'हाँ, हे राजा, मैं एक नासरी हूँ, और मैं आपका सहयोगी बनने से पहले भी एक नासरी ही था।'

'त्याग दो,' मैक्समियिन ने उससे कहा, 'मेरे तुमसे कएि गए प्रेम की खातरि ऐसा कबूलनामा; वरना, मैं तुम पर कोई दया नहीं दखिाऊँगा—यह तुम्हें पता हो—और मैं तुम्हें तुरंत मौत नहीं दूँगा, बल्कि तब ही तुम मरोगे जब मैं तुम्हें तरह-तरह की यातनाओं से थका-हारा कर दूँगा।'

इस पर, पंचारयिस ने उत्तर दयिा:

'हे राजा! जब मैं अपने अतीत को याद करता हूँ तो मैं भय से भर जाता हूँ, और मुझे डर है कि अब तक आपका सहयोगी रहने के कारण स्वर्ग से आग गरिकर मुझे भस्म कर देगी। लेकनि इस क्षण से, मैं अपने प्रभु यीशु मसीह का कभी त्याग नहीं करूँगा, न तो अब और न ही उस लंबे समय के दौरान, जब आप मेरे शरीर को कई और वभिन्नि प्रकार की यातनाएँ देंगे, जैसा आपने मुझे बताया है।

पंचारयिस का यह उत्तर सुनकर, मैक्समिलियिन ने आदेश दयिा कि उसके कपड़े उतार दएि जाएँ और उपस्थति सभी लोगों तथा राजसी गणमान्यों के सामने, उसके नंगे शरीर पर बैल की खाल की रस्सयिों से कोड़ा मारा जाए। इसके बाद, उपस्थति लोगों की ओर मुड़कर, उन्होंने उनसे कहा:

'अब तुमने जान लयिा है कि पन्खारयिस, मेरे दरबार का सैकेलारयिस[2516] और मेरा घनष्ठि मत्रि, गलीलयिाई[2517] धर्म में पड़ गया है; तो मुझे बताओ, मैं उसके साथ कैसा व्यवहार करूँ।'

इस पर, शाही गणमान्यों ने सम्राट को उत्तर दयिा:

'हे राजा! आज्ञा दीजए कि उसे सार्वजनकि अखाड़े[2518] में ले जाया जाए और वहाँ उसके कपड़े उतारकर सार्वजनकि रूप से कोड़े लगाए जाएँ, और फरि नकिोमेडयिा के राज्यपाल के पास भेज दयिा जाए। उसे यातनाएँ देने दीजए, ताकि हिम भी उसकी मृत्यु के लिए जम्मिेदार न माने जाएँ, क्योंकि वह आपकी बहुत कृपा का पात्र है।'

[2515] यहाँ 'नाज़री' शब्द का उपयोग एक ईसाई, मसीह के अनुयायी के अर्थ में कयिा गया है, जसिे यहूदयिों ने इस नाम से बुलाया क्योंकि उन्होंने अपना अधकिांश सांसारकि जीवन नाज़रथ में बतिाया था।

[2516] सैकेलारयिस रोमन सम्राटों के दरबार में मुख्य व्यवस्थापक होता था।

[2517] अर्थात्, ईसाई। मसीहयिों को उपहासपूर्वक गलीलयिाई कहा जाता था।

[2518] रोम में सार्वजनकि तमाशों का स्थल सर्कस था। यहाँ, ग्लैडएिटर एक-दूसरे और जंगली जानवरों से लड़ते थे। उत्पीड़न के दौरान यहीं ईसाइयों को जंगली जानवरों के सामने टुकड़े-टुकड़े होने के लिए फेंका जाता था।

यह सलाह मैक्समियिन को भाई, क्योंकि वह वास्तव में पंचाऱयिस से बहुत गहराई से प्रेम करता था और उसे मृत्युदंड देने का साहस नहीं कर सकता था। इसलिए उन्होंने आदेश दिया कि उसे एम्फीथिएटर ले जाया जाए और लोगों के सामने बेरहमी से पीटा जाए; फिर उन्होंने उसे सैनिकों के हवाले कर दिया कि उसे निकोमेडिया ले जाया जाए और उनके साथ निकोमेडिया के राज्यपाल को एक पत्र भेजा, जिसमें उन्होंने आदेश दिया कि, बहुत यातनाओं के बाद, पंचरियस को मौत की सज़ा दी जाए। जब पवित्र शहीद निकोमेडिया पहुँचे और पूछताछ के लिए शहर के राज्यपाल के सामने लाए गए, तो उन्होंने उनसे कहा:

'सम्राट ने मेरे बारे में जो आज्ञा दी है, उसे ठीक वैसे ही पूरा करो।'

तब नगर के राज्यपाल ने उससे पूछा:

'मेरा नाम,' पवित्र शहीद ने उत्तर दिया, 'पंचारियस है। मैं जन्म से ईसाई था, लेकिन अपनी दुष्ट इच्छा से मैं सम्राट के अधर्मी धर्म की ओर मुड़ गया और हर बात में उससे

पवित्र शहीद ने उत्तर दिया, 'मेरा नाम पंचाऱ्यूस है। मैं जन्म से ईसाई था, लेकिन अपनी ही दुष्ट इच्छा से मैं सम्राट के अधर्मी धर्म की ओर भटक गया और हर बात में उससे पूरी तरह सहमत था। लेकिन ईश्वर ने, मेरी माँ और बहन के साथ मिलकर, मुझे वापस सच्चे मार्ग पर ला दिया, और मैं अपने मसीह के धर्म में लौट आया; और अब मैं उनके लिए मरने की लालसा करता हूँ, ताकि अपनी मृत्यु से मैं अपनी धर्मत्याग की प्रायश्चित कर सकूँ, जो मैंने इतनी आपराधिक रूप से किया था।

इस पर, शहर के राज्यपाल ने पंचारियस से कहा:

'इन शब्दों को त्याग दो जो तुम इतनी जल्दबाज़ी में बोल रहे हो, और इस तरह खुद को भयानक विपत्तियों में डाल रहे हो; बल्कि, सम्राट की इच्छा करो और, एक इतने प्रतिष्ठित और सुंदर व्यक्ति होकर, पृथ्वी पर अपनी गौरवशाली प्रतिष्ठा को नष्ट मत करो।'

'जिस महिमा की आप बात कर रहे हैं,' संत ने उत्तर दिया, 'वह अस्थायी है, लेकिन यह उन लोगों के लिए शाश्वत जीवन प्राप्त करने का एक साधन है जो मसीह के लिए इसे त्याग देते हैं।'

इसके बाद, शहर के राज्यपाल ने संत की दृढ़ता को देखकर सम्राट द्वारा मांगी गई सज़ा सुनाई। मसीह के पवित्र शहीद, पंचारियस ने प्रार्थना की, जिसके बाद उनका सिर कलम कर दिया गया और उन्होंने शहीद की मृत्यु पाई। यह घटना निकोमेडिया शहर में मार्च के उन्नीसवें दिन हुई थी[2519] ।

2 अप्रैल

20 मार्च (पुराने कैलेंडर के अनुसार)

हमारे पूजनीय पिताओं जॉन, सेरजियस और पैट्रिसियस का कष्ट-सहन; स्मरणोत्सव।

20 मार्च को स्मरणोत्सव

यरूशलेम के पैट्रिआर्क, महामहिम इलियाह के शासनकाल के दौरान—जो पवित्र नगर यरूशलेम में उस नाम के दूसरे पैट्रिआर्क थे, जो उस समय पहले से ही अगारियन के शासन में था (जबकि कॉन्स्टेंटिनोपल में कॉन्स्टेंटिन और आइरीन का शासन था)—अगारियनों के बीच एक गृहयुद्ध छिड़ गया, जिसने देश को बुरी तरह तबाह कर दिया: वे बर्बर, आपस में लड़ते हुए, न केवल गांवों को बल्कि एलेउथेरोपोलिस, अशकलॉन, गाजा, स्केरफिया और अन्य जैसे शहरों को भी तबाह कर गए। वे अचानक हमला करने के लिए घात लगाकर बैठते थे, और भले ही वे सभी को न मारते, वे उनकी सारी संपत्ति लूट लेते और उनका विरोध करने वालों को मौत के घाट उतार देते; वे रास्तों पर घात लगाते, राहगीरों को पकड़ते, उन्हें पीटते और घायल करते, और उनकी आखिरी कमीज़ तक सब कुछ लूट लेते; यदि वे किसी यात्री को नग्न, पीटा हुआ

[2519] संत पैंक्रेशियस की शहादत लगभग 302 ईस्वी में हुई थी।

और घायल करके जीवित छोड़ देते तो उसे एक आशीर्वाद माना जाता था। उस समय, पवित्र शहर यरूशलेम भी बहुत भयभीत था; आसपास के शहरों और गांवों के निवासी वहाँ उमड़ पड़े; उन्होंने दीवारों की रक्षा की और बर्बर आक्रमणों को पीछे हटाने की तैयारी की।

उस समय, संत चैरटिन का गौरवशाली मठ इतना बुरी तरह से तबाह हो गया कि वह कभी भी उबर नहीं सका, बल्कि पूरी तरह से सुनसान हो गया; और आदरणीय सावा की लावरा को भी बहुत क्षति पहुँची; विभिन्न स्थानों से वहाँ पवित्र पिता एकत्रित हुए और आदरणीय एबॉट बेसलि के मार्गदर्शन में, तपस्या के जीवन द्वारा ईश्वर को प्रसन्न किया।

अगारीय गृहयुद्ध और डाकुओं के हमलों के दौरान, वे अपने मठ से बिल्कुल भी बाहर नहीं निकले। हालाँकि वे मठ छोड़कर बर्बरों से बचने के लिए यरूशलेम भाग सकते थे, परन्तु वे उस पवित्र स्थान को छोड़ना नहीं चाहते थे जहाँ उन्होंने पहली बार मसीह का जुआ अपने ऊपर उठाया था; संसार के लिए मर चुके होने के कारण, वे मृत्यु से नहीं डरते थे, बल्कि मसीह पर भरोसा करके उन्होंने कहा:

'हमारे प्रभु, यदि वे चाहें, तो हमें बर्बरों के हाथों से बचा सकते हैं; लेकिन यदि उनकी धर्मी इच्छा हमें बर्बरों के हाथों मारे जाने के लिए सौंपना पसंद करती है, तो प्रभु हमें शीघ्र ही आत्मा के लिए लाभदायक परीक्षा भेजें।' वे एक-दूसरे से कहने लगे, 'आओ, हम अपने प्रभु के हाथ से जो लाभदायक है, उसे स्वीकार करें; डर के मारे हम मौन निर्जन स्थान से लौटकर संसार की व्यर्थता में वापस न चलें, कहीं ऐसा न हो कि सब हमें कायर कहकर निंदा करें, जो हमारे प्रभु की आज्ञाओं का पालन नहीं करते, जो कहते हैं: *"उनसे मत डरो जो शरीर को मार सकते हैं पर आत्मा को नहीं मार सकते; बल्कि उस से डरना चाहिए जो आत्मा और शरीर दोनों को गेहन्ना में नाश कर सकता है"* (मत्ती 10:28)। यह देखना अच्छा है कि जो लोग संसार से अलग होकर रेगिस्तान में चले जाते हैं और मसीह के पदचिह्नों पर चलते हैं; लेकिन यह देखकर कितनी दुख होती है कि वे थोड़ी देर रेगिस्तान में रहने के बाद, मनुष्यों के भय से वहाँ से भागकर संसार में लौट आते हैं; आओ, शैतान, जो सभी का सामान्य शत्रु है, हमें बर्बर लोगों के भय से मौन मरुभूमि से शहर में भगाकर हम पर उपहास न करे; उसे हमारे राजा मसीह की सहायता से कई बार हम पर पराजित किया गया है, और वह एक कुत्ते की तरह हमसे शर्मनाक ढंग से भाग गया है। हमारे पास रक्षा के लिए पत्थर की दीवारों की कोई आवश्यकता नहीं है: एक अभेद्य दीवार के बजाय, हमारा रक्षक मसीह हैं, जिनके बारे में हमने संत दाऊद से यह गाना सीखा है: *'मेरे लिए शरण का चट्टान बनो, एक सुरक्षित घर, मुझे बचाने के लिए'* (भजन संहिता 30:3)।

हमारे पास दुश्मनों से बचाव के लिए कोई सैन्य रेजमिंट नहीं है, लेकिन 'प्रभु का दूत उनके चारों ओर डेरा डालता है *जो उससे डरते हैं, और उन्हें बचाता है* (भजन संहिता 33:8); '...क्योंकि हमारे लिए, "जीवित हमारे पास अपने दुश्मनों से हमारी रक्षा करने के लिए कोई सैन्य रेजमिंट नहीं है, लेकिन *'प्रभु का दूत उनके चारों ओर डेरा डाले रहता है जो उससे डरते हैं और* उन्हें *बचाता है'* (भजन संहिता 33:8); *'...क्योंकि* मेरे *लिए जीवन मसीह है, और मृत्यु लाभ है'* (फिलिप्पियों 1:21)। आखिरकार, यह अस्थायी जीवन के प्रति प्रेम या लगाव नहीं था जिसने हमें इस रेगिस्तान में आने के लिए प्रेरित किया! हम इस सुनसान जगह पर क्यों बसे? क्या यह मसीह के प्रेम के लिए नहीं था? यदि हमें यहाँ मारा जाता है, तो हमें मसीह के लिए मारा जाएगा, जिसके लिए हम यहाँ रहते हैं।

ऐसे शब्दों से उन्होंने एक-दूसरे को सांत्वना और प्रोत्साहन दिया और अपने शरीरों और आत्माओं को ईश्वर के सुपुर्द करके, मठ में बने रहे। उन्हें रोकने का एक और भी बहुत मज़बूत कारण था: आसपास के क्षेत्र में रहने वाले उनके पड़ोसी उस पवित्र स्थान के प्रति शत्रुता रखते थे और वे संत सावा की लावरा को बर्बाद होते, उस स्थान को खाली और संन्यासियों से रहित देखना चाहते थे; यदि भ्रातियाँ थोड़ी देर के लिए भी मठ छोड़ देते, तो दुश्मन तुरंत आकर चर्च और कोठरियों को जला देते और पूरे मठ को धूल-चटा कर देते। ऐसा होने से रोकने के लिए, पवित्र संतों ने मठ में ही रहना जारी रखा। और वे हवा से झूमने वाली सरकंड की तरह नहीं, बल्कि चट्टान पर स्थापित स्तंभों की तरह थे, जो अपने सामने आई परीक्षाओं की हवाओं और तूफानों से अडिग रहे; उन्होंने मठ केवल उसकी दीवारों की रक्षा के लिए नहीं छोड़ा, बल्कि उससे भी बढ़कर, प्रभु मसीह की महिमा के लिए, जिनकी महिमा एक बार उसी स्थान पर उनके दिनों में हुई थी और हो रही थी।

इस प्रकार वे पवित्र पिता मठ में रहते रहे, और सर्वोच्च रक्षक, हमारे पूजनीय पिता सव्वा की प्रार्थनाओं के द्वारा, उन्हें बर्बरों से तब तक सुरक्षित रखे रहे जब तक कि उनकी पवित्र इच्छा का समय नहीं आ गया। वास्तव में, यद्यपि अरब या अन्यत्र से मार्च करते हुए उस सुनसान स्थान के पास से अपने शिविर की ओर जाते हुए बर्बरों के झुंड कई बार मठ की ओर मुड़े, उन्होंने कोई नुकसान नहीं किया, बल्कि केवल भोजन की मांग की; वे भिक्षुओं को घूरते, दाँत

पीसते, फरि भी ईश्वर की इच्छा के वरिुद्ध वे उनके सेवकों को कोई हानि नहीं पहुँचा सके; और, मठ में जतिना भोजन मलि सकता था, उतना लेकर वे अपने ठकिाने पर लौट जाते, और धन्यवाद देने के बजाय, वे एक दनि मठ को लूटने और पूरे क्षेत्र को उजाड़ देने का घमंड करते थे।

एक अवसर पर, बर्बरों का एक झुंड, अपनी योजना बनाई गई बुरी करतूत को अंजाम देने की इच्छा से, मठ को लूटने और बर्बाद करने के लिए नकिल पड़ा; लेकनि संयोग से, पवत्रि बेथलहम के पास, उनकी टक्कर एक सेना से हुई जो बर्बरों के आक्रमण की आशंका में वहां तैनात की गई थी; एक युद्ध छड़ि गया, बर्बरयिों को परास्त कर भागने पर मजबूर कर दयिा गया, और बाद में पता चला कि उनमें से शायद ही कोई जीवति बचा। एक अन्य अवसर पर, एक अलग समूह, उसी दुष्ट इरादे के साथ, अपने शविरि से मठ की ओर नकिल पड़ा; लेकनि मठ के पास एक गाँव में पहुँचने पर, बर्बरों को झाड़यिों के नीचे छपिा हुआ बहुत सारा शराब मलिा; वे शराब के नशे में धुत हो गए, आपस में झगड़ने लगे, और कई लोग एक-दूसरे को मार डाला; इस प्रकार उनकी योजना वफिल हो गई, और वह भीड़ ततिर-बतिर हो गई।

इसके पश्चात्, ईश्वर ने अपने सेवकों पर एक परीक्षा भेजने की कृपा की, जैसा उसने एक बार धर्मी अय्यूब पर कयिा था, ताकि वे भट्टी में तपे सोने की तरह स्वयं को ईश्वर के योग्य साबति कर सकें; और उसने बर्बर लोगों को अपने संतों को छूने की अनुमति दी, जनिके लिए उसने शहादत के मुकुट तैयार कए थे।

सम्माननीय पादरयिों ने, यह सुनकर कि मठ पर हमला करने के लिए आई दो टोलयिों में से एक यरूशलेम की सेना द्वारा पराजति कर दी गई थी, जबकि दूसरी अपने आप ही बखिर गई थी, नडिर होकर अपनी-अपनी कोठरयिों में बैठे रहे, और अपने सामान्य उपवास तथा परश्रिम के साथ पवत्रि लेंट का पालन कर रहे थे।

उस समय, शैतान के उकसावे पर, तीर, धनुष और तलवारों से लैस लगभग साठ इथयिोपयिाई बर्बरों का एक समूह इकट्ठा हुआ; उन्होंने मठ पर डकैती करने की योजना बनाई, इस उम्मीद में कि उन्हें भक्षिुओं के बीच अमीर खजाने मलिेंगे। महान लेंट के अंत में, पाम संडे से पहले वाले सप्ताह में, 13 मार्च को, दनि के दूसरे घंटे पर, बर्बरों ने उस सुनसान स्थान पर हमला कयिा; भक्षिु अपनी सुनसान कोठरयिों से नकिलकर मठ और चर्च के ई र की ओर भागे, जबकि बर्बर लोग, खींची हुई तलवारों और ताने हुए धनुषों के साथ, जैसे युद्ध में हों, एक चीख के साथ मठ की ओर बढ़े। कुछ भक्षिु, उनके क्रोध को शांत करने की इच्छा से, उनका सामना करने के लिए बाहर गए और दयालु शब्दों से उन्हें धीरे से समझाने लगे:

'तुम हमारे पास नहित्थे और शांतपिूर्ण तरीके से क्यों आए हो, जैसे कोई दुश्मन से लड़ने आ रहे हो जसिने तुम्हारा कुछ बुरा कयिा हो? हम सभी के साथ शांति से रहते हैं और हमने तुम्हें या कसिी और को कभी नुकसान नहीं पहुँचाया; यही कारण है कि हम इस रेगस्तिान में रहते हैं, अपने सभी सांसारकि सामान को पीछे छोड़कर, ताकि शत्रुता, कलह और लड़ाइयों से दूर रह सकें, ताकि हम शांति से अपने पापों का शोक मना सकें और ईश्वर को प्रसन्न कर सकें; और न केवल हमने आप में से कसिी को भी कभी कोई नुकसान नहीं पहुँचाया है, बल्कि, जहाँ तक हम कर सकते हैं, हम आपका भला करने का प्रयास करते हैं: हमने यहाँ आए आप में से कई लोगों को भोजन खलिाया है, वश्रिाम दयिा है और यात्रा के लिए भोजन-पानी मुहैया कराया है। भलाई का बदला बुराई से न चुकाओ; बल्कि, हमने जो दया तुम पर दखिाई है, उसके लिए तुम्हें हमारा आभारी होना चाहिए; और अब हम यात्रयिों के रूप में तुम्हें भोजन और आश्रय देने के लिए तैयार हैं।

लेकनि बर्बर लोग क्रोध से चल्लिाए:

'हम भोजन के लिए नहीं, बल्कि चाँदी और सोने के लिए आए हैं। दो में से एक चुनो: या तो हमें चाँदी और सोना दो (और उन्होंने यह भी बताया कि कितिने लीटर), और तुम जीवति रहोगे; या, यदि तुम इसे देने से इनकार करते हो, तो तुम हमारे हाथों मारे जाओगे।'

'हम पर वश्विास करें,' पादरयिों ने उत्तर दयिा, 'हम गरीब और बेसहारा हैं, इतने गरीब कि हमारे पास पर्याप्त रोटी या कपड़े भी नहीं हैं; जहाँ तक आप जो सोना और चाँदी चाहते हैं, हमने ऐसी चीजों का सपना भी नहीं देखा है; हम केवल अपनी दैनकि आजीवकि के लिए आवश्यक चीजों का ही उपयोग करते हैं।'

संतों के इन शब्दों से बर्बर क्रोधति हो गए और संतों पर तीरों की बौछार कर दी, बनिा रुके तब तक तीर चलाते रहे जब तक कि उनके तरकश खाली नहीं हो गए; इस प्रकार उन्होंने तुरंत तेरह सम्मानति संतों को मार गरिाया, जबकि कुछ अन्य को घायल कर दयिा। कोठरयिों पर धावा बोलते हुए, उन्होंने बड़े-बड़े पत्थरों से दरवाज़े तोड़ दिए और भक्षिुओं की मामूली संपत्ति में से जो कुछ भी उठा सके, ले भागे; फरि उन्होंने कोठरयिों में आग लगा दी और चर्च को भी आग लगाने का इरादा कयिा, लेकनि ईश्वर की कृपा से, इससे पहले कि वे लकड़ी इकट्ठा करके आग लगा पाते, उन्होंने दूर से कुछ

लोगों को आते हुए देखा; यह सोचकर कि यह यरूशलेम की सेना भिक्षुओं की रक्षा के लिए आ रही है, बर्बर तुरंत भाग खड़े हुए, और अपने साथ भिक्षुओं का लूटा हुआ सामान भी ले गए। फादर थॉमस, जो एक कुशल चिकित्सक थे, ने घायल भाइयों से तीर निकालना, उनके घाव धोना और प्रत्येक को आवश्यक सहायता प्रदान करना शुरू कर दिया। घाव भयानक थे: कुछ छाती में, कुछ कंधों पर, कुछ चेहरे और माथे पर थे, जबकि अन्य के सिर पत्थरों से कुचल दिए गए थे - और सभी खून से लथपथ थे; यह दूसरों के लिए देखने के लिए एक भयानक और दयनीय दृश्य था।

जैसे-जैसे वैशाख के पर्व के करीब आया, जब पूरी रात जागरण चल रहा था, तो किसी ने पूजनीय पादरियों को सूचित किया कि बर्बर लोग मठ पर एक बार फिर से हमला करने के लिए लुटेरों का एक और भी बड़ा दल इकट्ठा कर रहे थे। और धन्य पादरी बड़े भय और कांपन से भर गए, फिर भी वे भागे नहीं; इसके बजाय, उन्होंने मृत्यु के लिए तैयारी की और ईश्वर में अपना विश्वास रखकर, अंत की प्रतीक्षा करने लगे। जैसे-जैसे प्रभु के कष्ट के दिन के समीप आया, वैसे-वैसे उनके अपने कष्ट का दिन भी आ गया: 20 मार्च को, महावारी गुरुवार के दिन, इथियोपियाई लोगों ने एक बार फिर से और भी बड़ी संख्या में मठ पर हमला किया और सम्माननीय पादरियों को विभिन्न तरीकों से क्रूरतापूर्वक पीटा: कुछ को तीरों से मारा गया, कुछ के सिर तलवार से काट दिए गए, कुछ को आधा-आधा काट दिया गया, कुछ के हाथ-पैर काट दिए गए, जबकि अन्य को पत्थरों से मार डाला गया। जो जीवित बचे थे, उन्हें उन्होंने चर्च में इकट्ठा किया और चर्च के खजाने तथा मठ की संपत्ति का खुलासा कराने के लिए उन्हें यातनाएँ देने की कोशिश की; उन्होंने मठ को घेर लिया और यह सुनिश्चित करने के लिए पहाड़ों और टीलों की तलाशी ली कि कोई भी भिक्षु उनकी पकड़ से न बच सके: कई लोगों ने भागने की कोशिश की, लेकिन वे बर्बर लोगों के हाथों में पड़ गए, और मुश्किल से ही कोई उनसे बच पाया। उन्होंने तीर्थयात्रियों के नेता, भाग्यशाली जॉन को पकड़ लिया, जो अभी भी एक युवा व्यक्ति था, और पहाड़ पर उसका निर्दयता से अत्याचार किया: उन्होंने उसकी बाहों और पैरों की नसें काट दीं और उसे पहाड़ की चोटी से चर्च तक चट्टानों पर उसके पैरों से खींचकर ले गए, जिससे उसकी पीठ की सारी खाल तेज चट्टानों से छिल गई। चर्च के बर्तनों के रक्षक, पूजनीय सेरजियस ने, जब संतों को सहनी पड़ रही यातनाएँ देखीं और इस बात का भय हुआ कि दर्द न सह पाने के कारण वह चर्च के बर्तनों को छिपाने की जगह बता सकता है, तो वह चुपके से मठ से भाग गया; वह कुछ दूरी तय कर चुका था जब उसे बर्बर पहरेदारों ने पकड़ लिया और जबरदस्ती वापस मठ में खींच लिया; और जब उसने विरोध करना शुरू किया, तो उन्होंने उसका पवित्र सिर काट दिया। कई अन्य पादरियों ने मठ के बाहर एक गुफा में हत्यारों से शरण ली, लेकिन पहाड़ी पर खड़े एक बर्बर पहरेदार ने उन्हें देख लिया और हाथ से इशारा करते हुए अपने साथियों से चिल्लाया कि भिक्षु गुफा में भाग गए हैं; और तुरंत एक भयानक इथियोपियाई, अपनी तलवार खींचे हुए, गुफा के मुहाने पर आ खड़ा हुआ और ऊँचे स्वर में चिल्लाने लगा, छिपकर बैठे लोगों को बाहर आने का आदेश देते हुए। भिक्षु भय से कांपने लगे, जबकि उनमें से एक, आदरणीय पैट्रसियस, ने भाइयों से फुसफुसाकर कहा:

'डरो मत; मैं अकेले तुम्हारे लिए बाहर जाऊँगा और मर जाऊँगा; जहाँ तक तुम्हारा सवाल है, चुपचाप बैठे रहो और मौन रहो!'

वे अपने भाइयों के लिए अपना जीवन बलिदान करने को तैयार होकर उस इथियोपियाई से मिलने बाहर गए। जब इथियोपियाई ने सख्त लहजे में पूछा कि क्या वहाँ कोई और भिक्षु है, तो माननीय ने उत्तर दिया कि वह अकेले ही वहाँ हैं; जिस पर इथियोपियाई उन्हें चर्च में ले गया। सभी जगहों से पवित्र संतों को चर्च में इकट्ठा करने के बाद, बर्बरों ने उनसे कहा:

'अपना और अपने चर्च का फिरौती चार हजार सोने के सिक्कों में चुकाओ; नहीं तो हम तुरंत तुम सबको तलवार से मार डालेंगे और तुम्हारे चर्च को जलाकर राख कर देंगे।'

लेकिन पवित्र पिताओं ने नम्रता से उत्तर दिया:

'ईश्वर के लिए, हमारा निर्दोष रक्त व्यर्थ में न बहाओ; हमारे पास उतना सोना नहीं है जितना तुम माँग रहे हो, न ही हमारे पास कभी रहा है; हमारे पूरे मठ में अब एक भी सोने का सिक्का नहीं है; अगर तुम चाहो, तो हम जो कपड़े पहने हुए हैं, वे ले लो, जो कुछ भी तुम देखो और पाओ, सब ले लो, हमें नग्न छोड़ दो, लेकिन केवल हमारी जान बख्श दो।'

हालाँकि, क्रोध से भरे बर्बरों ने और भी ज़ोर से चिल्लाते हुए, अपने तलवारों को संतों की गर्दन पर रख दिया, मानो वे पहले से ही उनके सिर काट देने पर तुले हों, और कहा:

'हमें चर्च के बर्तन, सोने और चांदी के बर्तन दे दो, और मठ के अन्य खजाने दिखाओ।'

लेकिन पवित्र संतों ने उत्तर दिया कि उनके पास कोई खजाना नहीं है। और बर्बरों ने कहा:

'हमें अपने नेताओं को दखिाओ—तुम्हारा मठाधीश कौन है और अन्य नरि्माता कौन हैं?'

सम्माननीय पतिाओं ने उत्तर दयिा:

'हमारे मठाध्यक्ष मठ में नहीं हैं; वे सभी की चति के एक मामले पर पवत्रि नगर गए हैं, जबकि हम सभी बराबर हैं।'

मठ में हमारे पूजनीय पति सावा की एक गुफा थी; सभी पवत्रि संतों को पकड़कर, बर्बरों ने उन्हें उस गुफा में ले गए, और प्रवेश द्वार पर आग जलाकर उस पर झाड़-झंखाड़ और गोबर का ढेर लगा दयिा; धुआं और बदबू उठने लगी, और उसी धुएं से उन्होंने गुफा में मौजूद पूजनीय पादरयिों को दम घुटने पर मजबूर कर दयिा, ताकि वे उन्हें चर्च का खजाना दखिा दें और अपने नेताओं को सौंप दें। फरि उन्होंने उन्हें यातना देने के लिए ले जाया और क्रूर मृत्यु की धमकी देकर उनसे खजाने का पता लगाने के लिए मजबूर कयिा, लेकनि उन्होंने ईश्वर से प्रार्थना करने के अलावा उनसे कुछ भी नहीं सुना। एक ने पुकारा:

'हे प्रभु, मेरी आत्मा ग्रहण करो!'

और एक ने कहा:

'हे प्रभु, मुझे याद रखना, जब आप अपने राज्य में आएँगे!'

फरि, जब उन्होंने सभी को एक ही गुफा में इकट्ठा कर लयिा, तो बर्बर लोगों ने एक बार फरि से उन्हें तीव्र धुएँ से दम घुटने पर मजबूर करना शुरू कर दयिा; और अठारह सम्मानति पादरयिों की धुएँ से मृत्यु हो गई, जनिमें उपरोक्त जॉन और धन्य पैट्रसियिस भी शामलि थे; जहाँ तक धुएँ, तलवार या यातना से मारे गए अन्य लोगों के नामों का सवाल है, उन्हें केवल ईश्वर ही जानता है, जन्हिोंने उन्हें जीवन की पुस्तक में दर्ज कयिा है। जो लोग इस धुएँ की यातना से बच गए, उन्हें क्रूर और अमानवीय बर्बरों ने बुरी तरह घायल और पीटा, जन्हिोंने उन्हें जमीन पर फेंक दयिा और पैरों तले कुचल दयिा। कुछ भी हासलि कएि बनिा, लेकनि केवल अपने ही अत्याचार से थककर, उन्होंने चर्च और मठ का जो कुछ भी सामान मलिा, उसे उठाया और मठ के ऊंटों पर लादकर चल दएि।

तब भाई, जो कसिी तरह बच गए थे, और अन्य जो पहाड़ों की दरारों और गुफाओं में शरण ले चुके थे, देर से मठ में इकट्ठा हुए, और पूजनीय पतिाओं के शवों को—जन्हिें वभिन्नि तरीकों से मारा गया था और धुएं से दम घुटने से मर गए थे—चर्च में इकट्ठा कयिा (जसिे ईश्वर ने जलने से बचाया था), और उन्होंने उस पूरी रात बचाए गए कष्टों[2520] की अवर्णनीय वलिाप में बतिाई, जसिके बाद उन्होंने शवों को सम्मानपूर्वक दफनाया। जहाँ तक उन लोगों का सवाल है जो आधे-मरे और घायल पाए गए थे, भाइयों ने उपर्युक्त चकित्सिक थॉमस के साथ उनका इलाज करने का प्रयास कयिा, जो बच गए थे और बाद में तथाकथति ओल्ड लावरा के मठाधीश बने।

इस प्रकार संत साव्वा के मठ के पूजनीय फादरों ने अपने कष्टदायक अंत का सामना कयिा; जबकि वे बर्बर, मठ छोड़ते ही, ईश्वर द्वारा अचानक मृत्यु से मार डाले गए और बनिा कसिी तलवार के, रेगस्तिानों और खेतों में मृत पड़े रह गए, ताकि कुत्ते, जंगली जानवर और पक्षी उन्हें नोच-नोच कर खा सकें; जबकि उनकी शापति आत्माएँ नरक में चली गईं, जहाँ आग बुझने वाली नहीं है और कीड़ा कभी नहीं मरता; परन्तु मारे गए पूजनीय पतिाओं की आत्माएँ परमेश्वर के हाथ में थीं और उन्हें हमारे परमेश्वर और उद्धारकर्ता मसीह द्वारा शहादत की महमिा के योग्य समझा गया, जनिके लिए, पति और पवत्रि आत्मा के साथ, युगानुयुग सम्मान और महमिा हो, आमीन।

पवत्रि शहीद फोतनिा का कष्टकथा[2521]

20 मार्च को स्मरण कयिा जाता है

[2520] यह गुड फ्राइडे से एक रात पहले की रात थी।

[2521] संत फोतनिा वही सामरी महलिा हैं जनिसे प्रभु ने कुएँ पर बात की थी। उद्धारकर्ता और सामरी महलिा के बीच बातचीत का वृत्तांत सुसमाचार (यूहन्ना 4:5) और उसके बाद की आयतों में मलिता है।

रोमन सम्राट नीरो[2522] के शासनकाल में, ईसाइयों के खलिाफ एक भयंकर उत्पीड़न शुरू कयिा गया था, और पवत्रि प्रमुख प्रेरतिों पतरस और पौलुस की शहादत के बाद, उन लोगों को खोजा गया जनि्हें उन्होंने मसीह में वशि्वास करना सखिाया था। उस समय, संत फोतनि, अफ्रीकी शहर कार्थेज[2523] में अपने पुत्र योशयिाह के साथ, नडिर होकर मसीह के सुसमाचार का प्रचार करती थीं। इस बीच, फोटनि का सबसे बड़ा बेटा, वकि्टर नाम का, उस समय बर्बर लोगों द्वारा रोमनों के खलिाफ लड़ी जा रही लड़ाई में बहादुरी से लड़ा; और युद्ध की समाप्त पिर, सम्राट के आदेश से, उसे अत्तालयि शहर[2524] में सैनकिों का कमांडर नयिुक्त कयिा गया, जसिका काम वहाँ के ईसाइयों को यातनाएँ देना था। जब शहर के राज्यपाल, सेबेस्टयिन, को इस बात की जानकारी मलिी, तो उन्होंने वकि्टर से कहा:

'गवर्नर, मुझे नशि्चति रूप से पता है कि आप एक ईसाई हैं और आपकी माँ और आपका भाई जोशयिा पतरस के अनुयायी हैं; इसलिए, आप अपनी आत्मा को खोने के डर से सम्राट की आज्ञा का पालन नहीं करेंगे।'

'मैं स्वर्गीय और अमर राजा, मसीह, हमारे ईश्वर की इच्छा को पूरा करने के लिए उत्सुक हूँ,' वकि्टर ने उत्तर दयिा, 'लेकनि मैं ईसाइयों को यातना देने के लिए नीरो के फरमान को खारजि करता हूँ।'

तब सेबेस्टयिन ने वकि्टर से कहा:

'एक सच्चे मत्रि के रूप में, मैं तुम्हें सलाह देता हूँ: सम्राट की इच्छा के आगे झुक जाओ। क्योंकि यदि तुम शाही फरमान को उचति उत्साह के साथ पूरा करते हो और जनि ईसाइयों को तुम ढूंढ पाते हो, उन्हें न्यायकि पूछताछ और यातना के अधीन करते हो, तो तुम सम्राट पर एक एहसान कर रहे हो, और तुम उनके लिए जो संपत्ति है, उसे अपने लिए प्राप्त कर लोगे; और अपनी माँ और भाई को स्वयं एक पत्र भेजो, जसिमें उन्हें बताओ कि वे इतनी खुलेआम न घूमें और इस प्रकार मूर्तपिूजकों को अपने पूर्वजों के वशि्वास को त्यागने के लिए प्रेरति न करें, बल्कि उन्हें गुप्त रूप से तुम्हारे ईश्वर मसीह में अपने वशि्वास का इकरार करने दो, यदि वे चाहें, ताकि तुम भी उनके कारण उन्हीं यातनाओं से न गुज़रो।

'मैं ऐसा कभी नहीं करूँगा,' – वकि्टर ने उत्तर दयिा, – और न केवल मैं ऐसा नहीं करूँगा, बल्कि मैं ईसाइयों को यातनाएँ देने, या उनसे जबरदस्ती कुछ लेने, या अपनी माँ और भाई को यह सलाह देने पर भी वचिार नहीं करना चाहता कि वे यह प्रचार न करें कि मसीह सच्चे ईश्वर हैं; बल्कि मैं स्वयं, पूरे दलि से, मसीह का प्रचारक बनना चाहता हूँ, और मैं वैसा ही प्रचारक बनूँगा जैसा वे हैं।

इस पर सेबस्टयिन ने उससे कहा:

'हे वकि्टर! हम सभी अच्छी तरह जानते हैं कि तुम्हारे, तुम्हारी माँ और तुम्हारे भाई के लिए कौन-सी वपित्तयिाँ इंतज़ार कर रही हैं।'

इन शब्दों के बाद, सेबेस्टयिन का चेहरा अचानक लाल हो गया, और वह अपनी आँखों में एक तीव्र और असहनीय दर्द से जमीन पर गरि पड़ा, और बोलने की क्षमता पूरी तरह से खो बैठा। वहाँ मौजूद नौकरों ने उसे पकड़ा और एक बस्तिर पर लटिा दयिा, और वह तीन दनिों तक बनिा एक भी शब्द बोले पड़ा रहा। लेकनि तीन दनि बीत जाने के बाद, वह ज़ोर से चल्लिाया और कहा:

'एक ही ईसाई ईश्वर है, जो सच्चा ईश्वर है; एक ही ईसाई धर्म है, जो सच्चा धर्म है; और एक ही बपतस्मिा है—पति, पुत्र और पवत्रि आत्मा के नाम पर बपतस्मिा। ईसाई धर्म के अलावा कोई अन्य सच्चा धर्म नहीं है।'

सेबस्टयिन के पास पहुँचते ही वकि्टर ने उससे पूछा:

'तुममें इतनी अचानक यह बदलाव क्यों आया है?'

सेबस्टयिन ने उत्तर दयिा, 'मेरे प्रयि वकि्टर, तुम्हारा मसीह मुझे अपने पास बुला रहा है।'

[2522] सम्राट नीरो ने 64 से 68 ईस्वी तक रोम पर शासन कयिा। उनके शासन के तहत ईसाइयों पर अत्याचार 65 ईस्वी में शुरू हुआ और 68 ईस्वी तक जारी रहा, जब सम्राट ने आत्महत्या करके इस रक्तपात को समाप्त कर दयिा। इस अत्याचार के दौरान, पवत्रि प्रेरति पतरस और पॉल ने रोम में कष्ट सहे।

[2523] कार्थेज – उत्तरी अफ्रीका का एक प्राचीन तटीय शहर, जसि फ़निशियिाई लोगों ने बसाया था और जो प्राचीन काल में उनकी प्रसद्धि उपनविेश था। ईसा पूर्व 146 में नष्ट कए जाने के बाद, इसे पहले रोमन सम्राटों के अधीन पुनर्नरि्मति कयिा गया, इसने उच्च स्तर की समृद्धि हासलि की और ईसाई धर्म की प्रारंभकि शताब्दयिों के दौरान, यह मूर्तपिूजक ग्रीक-रोमन पंथ के मजबूत वकिास के लिए जाना जाता था, जसिके कारण अंधवशि्वास, जादू-टोना और तथाकथति जादुई कलाएँ वहाँ लंबे समय तक बनी रहीं। आज इस स्थल पर ट्यूनसि शहर बसा हुआ है।

[2524] *अटालयि* एशयिा माइनर के दक्षणिी तट पर स्थति, पंफलियिा प्रांत का एक शहर है। इस शहर की स्थापना 1.5 शताब्दी ईसा पूर्व में अटालस द्वतिीय फलिडेल्फस ने की थी, जनि्होंने इसका नाम अपने नाम पर रखा।

विक्टर ने तुरंत उन्हें विश्वास में शिक्षित किया, और उन्होंने पवित्र बपतिस्मा ग्रहण किया। जब वे बपतिस्मा के कुंड से बाहर निकले, तो उनकी दृष्टि अचानक वापस आ गई और उन्होंने परमेश्वर की महिमा की। वहाँ मौजूद सेवकों ने, यह अद्भुत चमत्कार देखकर, यह डर महसूस किया कि सेबस्टियन की तरह, वे भी अपने अविश्वास के कारण उसी कष्ट को झेल सकते हैं, और इसलिए वे भी बपतिस्मा ले लिया।

कुछ ही समय बाद, नीरो को खबर मिली कि अटालिया में सैनिकों का कमांडर और उस शहर का गवर्नर विक्टर, सेबेस्टियन, पतरस और पौलुस के धर्म का प्रचार कर रहे थे और सभी को अपनी ओर आकर्षित कर रहे थे, उन्हें अपने उपदेश का अनुसरण करने के लिए मना रहे थे; और यह कि विक्टर की माँ, फोतिनि, और उसका बेटा, जोशिया—जिन्हें प्रेरितों द्वारा कार्थेज भेजा गया था—भी ऐसा ही कर रहे थे। यह जानकर, सम्राट क्रोध से भर गया और उसने अटालिया में सैनिक भेजे ताकि उस शहर के पुरुष और महिलाएँ, सभी ईसाइयों को न्याय के लिए उसके सामने लाया जाएँ। उस समय, मसीह अत्तalia के मसीहियों के पास प्रकट हुए और उनसे कहा: *'मेरे पास आओ, हे सब जो परिश्रमित और बोझिल हैं, और मैं तुम्हें विश्राम दूँगा'* (मत्ती 11:28)। 'मैं तुम्हारे साथ रहूँगा, और नीरो पराजित होगा, और जो उसके साथ हैं वे भी पराजित होंगे।'

हालाँकि, विक्टर से उन्होंने कहा:

– 'आज से, फोतिनिस[2525] तुम्हारा नाम होगा, क्योंकि तुमने जिन्हें ज्ञान दिया है, उनमें से कई मेरी ओर मुड़ेंगे।' मसीह ने इन शब्दों से सेबस्टियन को आने वाले कष्टों के लिए मजबूत किया:

'धन्य है वह जो अपने कार्य को अंत तक पूरा करता है[2526] ।' प्रभु ने ये वचन कहे और स्वर्ग में आरोहण कर गए।

संत फोतिनि को भी मसीह द्वारा उनके आने वाले दुखों के बारे में सूचित किया गया था, और तुरंत ही, कई मसीहियों के साथ, वह कार्थेज से रोम के लिए रवाना हो गईं। जब वह रोम में प्रवेश कीं, तो पूरा शहर हलचल में आ गया, और हर कोई पूछ रहा था, 'वह कौन है?' उन्होंने, हालांकि, निडर होकर मसीह के सुसमाचार का प्रचार किया। इस बीच, उसका बेटा फोटिनिस—जिसे पहले विक्टर कहा जाता था—सेबेस्टियन और उनके साथ पकड़े गए सैनिकों के साथ रोम लाया गया; लेकिन संत फोटिनि ने पहले ही विक्टर को चेतावनी दे दी थी, जब वह अपने बेटे जोशिया और कारथेज से उसके साथ आए ईसाइयों के साथ नीरो के सामने प्रकट हुई थीं। नीरो ने संत से पूछा:

'तुम हमारे पास क्यों आई हो?'

'आपको सिखाने,' फोटिनि ने उत्तर दिया, 'मसीह का सम्मान करने।'

उस क्षण, सम्राट के साथ उपस्थित लोगों ने उससे कहा:

'शहर के राज्यपाल सेबस्टियन और सैन्य कमांडर विक्टर, जो देवताओं में विश्वास नहीं करते, अटालिया से आए हैं।'

'उन्हें मेरे सामने लाया जाए,' नीरो ने आदेश दिया। और जब उन्हें उसके सामने लाया गया, तो उसने उनसे पूछा:

'क्या जो मैंने तुम्हारे बारे में सुना है, वह सच है?'

'हे राजा, आपने हमारे बारे में जो कुछ भी सुना है, वह पूर्ण सत्य है,' उन्होंने उत्तर दिया।

तब नेरो ने पवित्र स्त्रियों की ओर मुड़कर उनसे पूछा:

'क्या तुम अपना मसीह त्यागने को तैयार हो, या उसके लिए मरना चाहती हो?'

'हे राजा!' पवित्र स्त्रियों ने स्वर्ग की ओर अपनी दृष्टि उठाकर उत्तर दिया, 'हम मसीह में अपनी आस्था और उनके प्रति अपने प्रेम को कभी नहीं त्यागेंगे।'

'और आपके नाम क्या हैं?' सम्राट ने पूछा।

'मुझे,' संत फोतिनि ने उत्तर दिया, 'यह नाम फोतिनि मेरे ईश्वर, मसीह से मिला; जहाँ तक मेरी बहनों का सवाल है, उन्हें बुलाया जाता है: मेरे बाद सबसे पहले जन्मी है अनास्तासिया, दूसरी है फोटो, तीसरी है फोटोइडा, चौथी है परास्केवा, और पाँचवीं है किरियाके; और मेरे बेटों के नाम इस प्रकार हैं: सबसे बड़े, जिसे मेरे प्रभु ने फोटोइन नाम दिया है, उसे विक्टर कहा जाता है, जबकि सबसे छोटे का नाम जोशिया है।

'तो,' नीरो ने उत्तर दिया, 'क्या तुम सब नासरी मसीह के लिए यातना सहने और मरने को तैयार हो?'

[2525] फोटिनिस नाम का अर्थ 'दीप्तिमान' है और यह ग्रीक शब्दों 'फोस' और 'फोटोस' से लिया गया है, जिनका अर्थ प्रकाश, विशेष रूप से दिन का प्रकाश या सूर्य का प्रकाश है।

[2526] यह अभिव्यक्ति सुसमाचार के शब्दों से ली गई है: 'परन्तु जो अन्त तक सहिष्णु रहेगा, वह उद्धार पाएगा' (मत्ती 24:13)।

संत फोतिनि ने उत्तर दिया, 'हम में से सभी, आनंद और प्रसन्नता के साथ, उनके लिए मरने को तैयार हैं, और हम सभी यही चाहते हैं।'

तब नेरो ने आदेश दिया कि उनके हाथ लोहे के हथौड़ों से कुचल दिए जाएँ। एक हथौड़ा लाया गया, और दुष्ट यातना देने वालों ने संतों के हाथों को उस पर रखकर उन पर वार करना शुरू कर दिया। उन्होंने तीसरे घंटे से छठे घंटे तक उन पर वार किया[2527] , यातना देने वालों को तीन बार बदला गया, फिर भी संतों को बिल्कुल भी दर्द महसूस नहीं हुआ। यह जानकर कि यातना देने वालों ने तीन बार बदलने के बाद भी कोई सफलता नहीं मिली, नीरो भ्रमित हो गया और उसने उनके हाथों को पूरी तरह से काट देने का आदेश दिया। तब यातना देने वालों ने क्रोधित होकर पवित्र शहीदों को पकड़ लिया, उनके हाथ बांध दिए और उन्हें फिर से हथौड़े की नोक पर रख दिया। संत फोतिनि को सबसे पहले यातना दी गई, लेकिन कुल्हाड़ियों से उनके हाथ काट रहे यातना देने वालों को कई बार बदला गया; कोई सफलता न मिलने पर, वे थककर ऐसे गिर पड़े मानो मृत हों, जबकि पवित्र शहीद, मसीह की कृपा से अछूती रहकर, प्रार्थना करती रहीं और कहा: *'प्रभु मेरे साथ हैं; मैं डरूँगा नहीं: मनुष्य मेरे क्या कर सकता है?'* (भजन संहिता 117:6)।

इसके बाद, नीरो यह सोचकर असमंजस में पड़ गया कि संतों पर और कौन से यातनाएँ दी जाएँ, और अंततः उसने आदेश दिया कि सेबेस्टियन, फोटोनी और जोशिया को अंधा कर दिया जाए और कालकोठरी की एक भीतरी कोठड़ी में बंद कर दिया जाए, जबकि संत फोटोनी और उनकी पांच बहनों को उनके सुनहरे कक्ष[2528] में ले जाया जाए, और उन्होंने अपनी बेटी डोमनिन को आदेश दिया कि वह हर समय उनके साथ रहे। शाही कक्ष में रहते हुए, संत फोतिनि ने डोमनिन और उसकी सौ दासियों को ईसाई धर्म की शिक्षा दी, और उन्होंने सभी ने पवित्र बपतिस्मा ग्रहण किया; उसने एक जादूगर को भी ईसाई धर्म में परिवर्तित किया जिसने एक बार उसके और उसकी बहनों के लिए जहरीले जड़ी-बूटियों से बना एक पेय लाया था, जिसे पीने के बाद उसने बहुत यातनाएं झेलीं।

तीन साल बाद, नीरो ने अपने एक नौकर को रिहा करने का आदेश दिया जो उसके दरबारियों में से था लेकिन जिसे उसके आदेश पर कैद किया गया था; और इस उद्देश्य के लिए भेजे गए लोग, जब उन्होंने तहखाने में पवित्र शहीदों सेबेस्टियन, फोटिनि और जोशिया को अच्छे स्वास्थ्य में देखा, उन्होंने सम्राट को बताया कि अंधा किए गए गलीलियाई देख सकते थे और वे पूर्ण स्वास्थ्य में थे; कि कालकोठरी स्वयं उज्ज्वल थी, एक सुगंध से भरी थी, और उसे बंदी गृह से ईश्वर की महिमा के स्थान और एक पवित्र गृह में बदल दिया गया था; कि संतों के पास जेल में रहते हुए भी अपार धन-संपत्ति थी; और कि लोग उनके चारों ओर इकट्ठा हो रहे थे और, उनके ईश्वर में विश्वास करने लगने के कारण, उनसे बपतिस्मा ग्रहण कर रहे थे। यह सुनकर नीरो भयभीत हो गया और पवित्र शहीदों को अपने सामने लाने का आदेश देकर उनसे कहा:

'क्या मैंने अपने शाही फरमान से तुम्हें रोम नगर में मसीह के बारे में उपदेश देने से मना नहीं किया था? तो फिर, जेल में रहते हुए, तुमने ऐसा करने की हिम्मत कैसे की? इसके लिए मैं तुम्हें अनेक और भयानक यातनाएँ दूँगा।'

पवित्र शहीदों ने उत्तर दिया, 'तुम हमारे साथ जो चाहो करो, पर हम मसीह, जो सच्चे परमेश्वर और सभी चीज़ों के सृष्टिकर्ता हैं, के बारे में प्रचार करना बंद नहीं करेंगे।'

यह शब्द सुनते ही नीरो को भयंकर क्रोध आ गया और उसने संतों को उल्टा सूली पर चढ़ाने का आदेश दिया; फिर, तीन दिनों तक, उसने आज्ञा दी कि उनकी नग्न देहों पर कोड़ों की बरसात की जाए, जब तक कि, उसके अनुसार, उनके अंग-प्रत्यंग अलग न हो जाएँ—जो कि किया भी गया। इसके बाद, उसने पहरेदारों को तैनात करने का आदेश दिया ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि वे तीन दिनों तक लटके रहें। चौथे दिन, उसके द्वारा भेजे गए दास यह देखने आए कि क्या पवित्र शहीद अभी भी जीवित हैं, और जब उन्होंने देखा कि वे वहां लटके हुए थे और अभी भी जीवित थे, तो वे तुरंत अंधे हो गए। उसी क्षण, स्वर्ग से उतरकर परमेश्वर का एक स्वर्गदूत आया, उसने संतों को खोल दिया और उन्हें चूमकर उन्हें पूर्ण स्वास्थ्य प्रदान किया। तब संतों ने, अंधा किए गए शाही नौकरों पर दया करके, प्रार्थना की, और वे तुरंत अपनी दृष्टि वापस पा गए। विश्वास में आने के बाद, उन्हें हमारे परमेश्वर मसीह के नाम पर बपतिस्मा दिया गया, और वे संतों के अनुयायी बन गए। दुष्ट नीरो ने यह सुनकर बहुत क्रोधित होकर आदेश दिया कि संत फोतिनि की खाल उधेड़ दी जाए। और

[2527] रोमनों के लिए, हमारी गणना के अनुसार, दिन की शुरुआत सुबह 6 बजे मानी जाती थी। इसलिए, दोपहर के 3 बजे हमारे सुबह के 9 बजे के अनुरूप थे, और दोपहर के 6–12 बजे।

[2528] यहाँ 'कुवुकली' का अर्थ एक घर, सम्राट का महल है। नीरो का 'गोल्डन हाउस' अपने असाधारण आकार, ऊँचाई और सजावट की भव्यता के लिए प्रसिद्ध था। इस घर के कुछ कमरे और बरामदे सोने और कीमती पत्थरों से सजे हुए थे।

जब यातना देने वाले इस शाही आदेश को पूरा कर रहे थे, तो पवित्र शहीद ने गाया: *'हे प्रभु! तू ने मुझे परखा है और तू मुझे जानता है। तू जानता है कि मैं कब बैठता हूँ और कब उठता हूँ; तू दूर से मेरे विचारों को जान लेता है'* (भजन संहिता 138:1, 2)।

संत फोटोइना की खाल उधेड़ने के बाद, उसे एक कुएँ में फेंक दिया गया। इसके बाद, सेबस्टियन, फोटोइना और जोशिया को पकड़कर, उन्होंने उनके घुटनों की हड्डियाँ काट डालीं और घुटनों सहित उन्हें कुत्तों को फेंक दिया; फिर उन्होंने उनकी खाल उधेड़ी और सम्राट के आदेश पर उन्हें एक जीर्ण-शीर्ण पत्थर की इमारत में फेंक दिया। तब नीरो ने फोटिनि की पाँच बहनों को अपने सामने लाने का आदेश दिया और हुक्म दिया कि उनके स्तन के निप्पल काट दिए जाएँ तथा उनकी खाल भी उधेड़ दी जाए। जब यातना देने वाले फिर संत फोटोइडा के पास आए, तो वह नहीं चाहती थीं कि उनमें से कोई भी उनके साथ वैसा ही अत्याचार करे जैसा उन्होंने अन्य पवित्र महिलाओं के साथ किया था; लेकिन, यातना स्थल पर खड़ी होकर, उन्होंने खुद बहादुरी से अपनी ही त्वचा को उधेड़ दिया और उसे नीरो के चेहरे पर फेंक दिया, जिससे वह स्वयं उनकी बहादुरी और सहनशक्ति से चकित रह गया। तब यातना देने वाले ने संत फोटोइडा के लिए यातना का एक नया, अत्यंत क्रूर और घातक रूप निकाला। उसके आदेश पर, उसके बगीचे में दो पेड़ों को एक-दूसरे की ओर झुकाया गया, और फोटोइडा को उसके पैरों से उनके ऊपरी सिरे पर बांध दिया गया; जिसके बाद पेड़ों को छोड़ दिया गया, और पवित्र शहीद उनके द्वारा चीर-फाड़ कर अलग-अलग हो गई। इस प्रकार उन्होंने अपना धार्मिक और पवित्र आत्मा ईश्वर को अर्पित कर दिया। इसके बाद, दुष्ट नीरो ने आदेश दिया कि अन्य सभी पवित्र शहीदों के सिर तलवार से काट दिए जाएँ, जबकि संत फोटिनि को कुएँ से बाहर निकालकर एक कालकोठरी में कैद कर दिया गया, जहाँ वह बीस दिनों तक रहीं। तब उसे अपने सामने लाने का आदेश देकर, नेरो ने उससे पूछा कि क्या वह अब उसके सामने समर्पण कर देगी और अपनी हठधर्मिता पर पश्चाताप करके मूर्तियों को बलिदान चढ़ाएगी। तब संत फोटोइना ने उसके मुँह पर थूक दिया और उसके पागलपन और मूर्खता का मज़ाक उड़ाते हुए कहा:

'हे अत्यंत दुष्ट अंधा मनुष्य, जो भ्रमित और पागल है! क्या तुम्हें सच में लगता है कि मैं इतनी मूर्ख हूँ कि मैं अपने प्रभु मसीह का त्याग करने और तुम्हारे जैसे अंधे मूर्तियों को बलिदान चढ़ाने के लिए सहमत हो जाऊँ!?'

ये शब्द सुनकर, नीरो ने आदेश दिया कि संत फोटोइना को वापस कुएँ में फेंक दिया जाए। और जब ऐसा किया गया, तो पवित्र शहीद ने अपना प्राण ईश्वर को सौंप दिया और शहीद के मुकुट से सुशोभित होकर, स्वर्ग के राज्य में उन सभी के साथ अनंतकाल तक आनंदित होती हैं, जिन्होंने उनके साथ कष्ट सहे[2529] ।

पवित्र शहीदों अलेक्जेंड्रा और क्लॉडिया की शहादत

20 मार्च को स्मरणोत्सव

इन पवित्र शहीदों ने दुष्ट मैक्सिमियिन[2530] के शासनकाल में यातनाएँ भोगीं, जिसने ईसाइयों पर इतना क्रूर उत्पीड़न शुरू किया कि मसीह में विश्वास करने वालों को, उम्र की परवाह किए बिना, विभिन्न प्रकार की यातनाओं का सामना करना पड़ा। चूँकि अमीसस[2531] शहर के राज्यपाल, जहाँ ये पवित्र कुँवारियाँ रहती थीं, ने भी उसी तरह का व्यवहार किया, इसलिए उन्हें पकड़कर उसके सामने लाया गया। पड़ताल के दौरान, उन्होंने खुद को ईसाई घोषित किया और राज्यपाल को स्वयं क्रूर और अमानवीय कहा। इसलिए, उसके आदेश पर, उन्हें पहले नग्न कर दिया गया और लाठियों से पीटा गया; फिर उनके स्तन काट दिए गए; जिसके बाद, उन्हें लटका कर, उनके शरीर को तब तक खुरच दिया गया जब तक कि उनके आंतरिक अंग नग्न नहीं हो गए; और अंत में, उन्हें एक तपती हुई भट्टी में फेंक दिया गया, जहाँ उन्होंने अपना प्राण प्रभु के हाथों में सौंप दिया[2532] ।

[2529] संत फोटिनि की मृत्यु लगभग 66 ईस्वी में हुई। उनकी चर्च और अवशेष ब्लाचेर्ना गेट्स के पार, कॉन्स्टेंटिनोपल में थे।

[2530] यह, बेशक, मैक्सिमियिन गैलेरियस को संदर्भित करता है, जिन्होंने डायोक्लेटियिन के त्यागपत्र के बाद, 305 से 311 तक साम्राज्य के पूर्वी भाग पर स्वतंत्र रूप से शासन किया।

[2531] अमीस शहर, जो अब साम्सुन है, एशिया माइनर में रोमन प्रांत पोंटस में, उसी नाम की खाड़ी के किनारे पोंटस यूक्सिनिस (ब्लैक सी) के तट पर स्थित था।

[2532] पवित्र शहीदों की मृत्यु वर्ष 310 में हुई।

संत नकिति द कन्फेशनर की स्मृति।

20 मार्च को स्मरणोत्सव

संत नकिति अपोलोनयि शहर के आर्चबशिप थे। वे अपनी धार्मकिता, दया और पवत्रि धर्मग्रंथ के गहरे ज्ञान के लिए प्रसद्धि थे। प्रतमिा-भंजकों के उत्पीड़न के दौरान, उन्हें पवत्रि प्रतमिाओं की पूजा बंद करने के लिए मजबूर करने के प्रयास व्यर्थ रहे। उन्हें नर्विासति कर दयि गया, जहाँ उन्होंने लयिो द आर्मेनयिन के शासनकाल के दौरान अपना जीवन समाप्त कयि।

3 अप्रैल

21 मार्च (पुराना कैलेंडर)

हमारे पूजनीय पति जेम्स, बशिप और कन्फेशनर की स्मृति

21 मार्च को स्मरणोत्सव

संत जेम्स द कन्फेशर के बारे में हमारे पास जानकारी बहुत संक्षप्ति और अपूर्ण है।

हम केवल इतना जानते हैं कि, बहुत कम उम्र से ही तपस्या के जीवन की आकांक्षा रखते हुए, उन्होंने मठवासी संन्यास की शपथ ली और नरिंतर उपवास और प्रार्थना के माध्यम से शरीर को वश में कयि।

संत जेम्स को पवत्रि शास्त्र पढ़ने का बहुत शौक था, और पढ़ने से पहले वे प्रार्थना के माध्यम से अपने मन को शुद्ध करते थे। बाद में उन्हें बशिप के पद पर पदोन्नत कयि गया।

मूर्तभिंजन सम्राट कॉन्स्टेंटाइन कोप्रोन्यमस[2533] के शासनकाल के दौरान, संत जेम्स को प्रतमिाओं की पूजा त्यागने के लिए मजबूर कयि गया था। लेकनि वह अधर्मी लोगों के आगे नहीं झुका, जसिके लिए उसे कई यातनाओं का सामना करना पड़ा – उसे नर्विासति कयि गया, कैद कयि गया, भूखा रखा गया और प्यास से तड़पाया गया – और उसने अपने यातनादाताओं द्वारा रची गई कई अन्य वभिन्नि यातनाओं को भी सहन कयि। अपने दुखों के बीच, उन्होंने अपनी पवत्रि आत्मा को उस ईश्वर के हवाले कयि, जसिके लिए उन्होंने प्रयास कयि था; और उसी से उन्हें स्वर्ग का राज्य प्राप्त हुआ, जहाँ वे स्वर्ग में अनंतकाल तक आनंदति हैं।

हमारे पवत्रि पति कैटानयि के बशिप सरिोइल की स्मृति

21 मार्च को स्मरणोत्सव

संत सरिलि अंकोन के मूल नविासी थे; वे प्रेरति पतरस के शष्यि थे और उन्हें ससिीली में कैटानयि का बशिप नयिुक्त कयि गया था। उन्होंने अपनी भेड़ों का अच्छी तरह से पालन-पोषण कयि और ईश्वर को प्रसन्न करने वाले तरीके से उनका मार्गदर्शन कयि, अवश्वािसयिों को मसीह के धर्म की ओर ले गए, और कई चमत्कार कए, जनिमें से हम एक का उल्लेख करेंगे। उस क्षेत्र में कड़वे पानी का एक झरना था; लेकनि ईश्वर के पवत्रि पुरुष संत सरिलि ने ईश्वर से प्रार्थना करने के बाद, इस झरने की कड़वाहट को मठिास में बदल दयि। यह देखकर, एक यूनानी सरदार, जो मूर्तपिूजक था, मसीह में वश्वािस करने लगा, और उसके साथ कई अन्य लोग भी वश्वािस करने लगे। परपिक्व आयु प्राप्त करने के बाद, संत सरिलि प्रभु में नद्रिति हुए और उस द्वीप (ससिलिी) पर सम्मान के साथ दफनाए गए, और जो भी वश्वािस के साथ उनका सहारा लेने आए, उन्हें उन्होंने चंगा कयि।

[2533] कांस्टेंटनि कोप्रोन्यमस, बीजान्टनि सम्राट, ने 741 से 776 तक शासन कयि। वह एक उत्साही प्रतमिा-भंजक था। उसका शासनकाल वह समय था जब प्रतमिा-भंजन अपने चरम पर पहुँच गया था।

हमारे पिता थॉमस, कॉन्स्टेंटिनोपल के पैट्रआर्क की स्मृति

21 मार्च को स्मरण किया जाता है

हमारे पवित्र पिता थॉमस, अपने अनेक सद्गुणों, ज्ञान और धार्मिकता के कारण, आदरणीय जॉन द फास्टर द्वारा कॉन्स्टेंटिनोपल के महान चर्च के डीकन नियुक्त किए गए, और मॉरिस के शासनकाल में[2534] उन्हें सैकेलारियस[2535] नियुक्त किया गया। परम पावन जॉन और उनके उत्तराधिकारी, धन्य पैट्रआर्क सिरियिकस[2536] के निधन के बाद, शहीद फोकास[2537] के शासनकाल में, संत थॉमस[2538] को पैट्रआर्क नियुक्त किया गया और उन्होंने अपने धर्मप्रांत का उत्कृष्ट रूप से शासन किया, तथा मसीह के झुंड की लगन से देखभाल की। उनके पैट्रआर्क के कार्यकाल के दौरान, गालाटिया की भूमि में[2539] निम्नलिखित चमत्कार हुआ। वहाँ, कुछ कस्बों में, एक जुलूस और पूजा के दौरान, बड़े-बड़े क्रॉस उठाए गए थे; ये क्रॉस, अपने आप और एक अद्भुत तथा अजेय शक्ति से, झूलने लगे, एक-दूसरे से टकराए और टूटकर बिखर गए। जब इस चमत्कार की खबर दूर-दूर तक फैल गई, तो कॉन्स्टेंटिनोपल के पैट्रआर्क, परम पावन थॉमस ने उस क्षेत्र से महान अंतर्दृष्टि वाले और चमत्कार करने वाले संत थियोडोर साइकोट को बुलाया, और उनसे इस चमत्कार और इसके संकेत के बारे में पूछताछ की। संत थियोडोर ने पुष्टि की कि चमत्कार वास्तव में हुआ था, लेकिन उन्होंने इसके अर्थ की व्याख्या करने से इनकार कर दिया, यह कहते हुए कि वह इस अज्ञात रहस्य को नहीं जानते थे। तब परम पावन पैट्रआर्क थॉमस विनती करते हुए उनके पैरों में गिर पड़े, और अपनी विनम्रता से उन्होंने उस वृद्ध को भविष्य बताने के लिए मना लिया। इसके बाद, बुजुर्ग ने कहा कि ईश्वर की कलीसिया और यूनानी राज्य पर बाहरी और आंतरिक दोनों तरह के दुश्मनों से आने वाली कई विपत्तियों और विनाश के संकेत के रूप में क्रॉस अपने आप झूल गए, टकराए और टूट गए: बाहर से बर्बर लोगों द्वारा एक भयंकर आक्रमण होगा, जबकि राज्य के भीतर ईसाइयों के बीच विश्वास में एक फूट उत्पन्न होगी, और वे एक-दूसरे को सताने और नष्ट करने लगेंगे, और यह सब जल्द ही होगा। यह सुनकर, पैट्रआर्क भयभीत हो गए और उन्होंने रेवरेंड से अपने लिए ईश्वर से प्रार्थना करने का आग्रह किया, कि भविष्यवाणी की गई तबाही के घटित होने से पहले ईश्वर उनकी आत्मा को उनके शरीर से ले लें, ताकि उन्हें चर्च पर ऐसी विपत्तियाँ आते हुए देखने को न पड़े। कुछ ही समय बाद, जब रेवरेंड थियोडोर अभी भी कॉन्स्टेंटिनोपल में सेंट स्टीफन चर्च में थे, तो पैट्रआर्क बीमार पड़ गए और उन्होंने अपनी बीमारी की खबर रेवरेंड को भेजी, जो अपनी कोठरी में अकेले रहकर उपवास कर रहे थे – और उनसे विनती की कि वे ईश्वर से शीघ्र मृत्यु की प्रार्थना करें। संत ने ऐसा करने से इनकार कर दिया, लेकिन धन्य पैट्रआर्क थॉमस ने एक गंभीर विनती के साथ उन्हें फिर से बुलाया, और चर्च पर विपत्तियाँ आने से पहले अपने शरीर से मुक्त होना चाहते थे। तब आदरणीय थियोडोर ने अपनी इच्छा के विरुद्ध, परम पावन पैट्रआर्क थॉमस की इच्छा का पालन किया, उनके लिए मृत्यु की प्रार्थना की, और उन्हें संदेश भेजा:

'क्या आप मुझे अपने पास आने का आदेश देते हैं, या हम ईश्वर के सामने वहाँ मिलेंगे?'

संत थॉमस ने दूत के माध्यम से उन्हें उत्तर दिया: 'पिताजी, अपनी मौन साधना न तोड़ें; यह मेरे लिए काफी है कि आपने कहा, "हम ईश्वर के सामने वहाँ मिलेंगे"।'

और उसी दिन, संध्या से पहले, परम पावन पैट्रआर्क थॉमस ने हर्षोल्लास के साथ अपना शरीर त्याग दिया और उसी फोकास के शासनकाल में प्रभु के पास प्रस्थान किया। संत थॉमस की मृत्यु के बाद, उसी महान चर्च के एक डिकन, सेरजियस, पैट्रआर्क के सिंहासन पर आसीन हुए; वे शुरू में ऑर्थोडॉक्स थे, लेकिन बाद में विधर्म में पड़ गए और मोनोथेलिटिक विधर्म के नेता बन गए—अर्थात् एक इच्छा का सिद्धांत, जो अन्यायपूर्वक प्रभु मसीह में एक ही इच्छा को मान्यता देता है[2540] ; तब कलीसिया पर विपत्तियाँ आईं: विधर्मीयों द्वारा ऑर्थोडॉक्स (सही आस्था वाले) लोगों का

[2534] *मौरीसियस,* बिज़ान्टियम के सम्राट, ने 582 से 602 तक शासन किया।

[2535] *साकेलारियोस* – पवित्र पात्रों का गिरिजाघर संरक्षक, सैक्रिस्टन।

[2536] *सिरियिकस ने* 595 से 606 तक पैट्रआर्क के रूप में कार्य किया।

[2537] सम्राट *फोकास* ने 602 से 610 तक शासन किया।

[2538] सेंट *थॉमस* ने 607 से 610 तक पैट्रआर्क के रूप में कार्य किया।

[2539] गलातिया – एशिया माइनर का एक क्षेत्र।

[2540] *मोनोथेलाइट्स* ने यीशु मसीह में केवल एक इच्छा – दिव्य इच्छा – को स्वीकार किया। इस विधर्म की निंदा छठे सार्वभौमिक परिषद में की गई, जो 680 में कॉन्स्टेंटिनोपल में आयोजित हुई।

फूट, वनिाश, यातना और उत्पीड़न; उसी समय, ईश्वर की अनुमति से, वधिर्मों के प्रसार के कारण, फारसियों के साथ एक कड़वी लड़ाई शुरू हुई, साथ ही यूनानी प्रांतों पर कब्ज़ा हुआ और उन्हें आग और तलवार से उजाड़ दयिा गया; यरूशलेम पर फ़ारसियिों का कब्ज़ा हो गया, और पवत्रि क्रूस की कीमती लकड़ी को पकड़कर फ़ारसि ले जाया गया; इस प्रकार, क्रूसों के उपरोक्त चमत्कार द्वारा पूर्वानुमानति और संत थयिोडोर साइकोट्स की भवष्यिवाणी द्वारा बताई गई सभी वपित्तयिाँ घटति हुईं; ताकि वे अपनी आँखों से इन वपित्तयिों को न देखें, परम पावन पैट्रआर्क थॉमस ने जीवति रहने के बजाय मरना चुना, और, अपने ही अनुरोध पर, उस भयानक समय के आने से पहले उन्होंने परम वश्राम प्राप्त कयिा। उन्होंने तीन साल और दो महीने तक मसीह की कलीसयिा का मार्गदर्शन कयिा, वधिर्मयिों के वरिुद्ध एक महान संघर्ष कयिा, ऑर्थोडॉक्स वश्वास को बनाए रखा और हमारे परमेश्वर मसीह का सच्चे अर्थ में सम्मान कयिा, जनिके लिए, पति और पवत्रि आत्मा के साथ, युगानुयुग महमिा हो। आमीन।

4 अप्रैल

२२ मार्च (पुराना संस्करण)

पवत्रि शहीद, एन्क्रा के पुरोहति, संत बेसलि का कष्टकथा।

22 मार्च को स्मरणोत्सव

गालाटयिा के एक नगर, एंकीरा में चर्च के पुरोहति संत बेसलि ने लोगों को ईसाई सत्य सखिाने और उन्हें शैतान के मार्ग तथा उसके सभी दुष्ट कर्मों से दूर करने के लिए लगन से प्रयास कयिा; वे लगातार उपदेश देते थे कि एक भयानक समय आ गया है, और यह कि नरिक की सेनाओं के राजकुमार प्रकट हो गए हैं; क्योंकि शैतान के भेड़ के भेष में सेवक हैं, परन्तु भीतर से वे क्रूर भेड़यि हैं; वे इस क्षणभंगुर जीवन के मार्ग पर लोगों को उनके आत्माओं को वनिाश में फँसाने के लिए प्रकट होते हैं, और उनकी चालाक योजनाएँ अब प्रकट हो रही हैं।

'इसलिए,' संत ने कहा, 'मैं सभी को मसीह परमेश्वर के द्वारा उद्धार का मार्ग दखिाता हूँ, और मैं अधर्मी लोगों के भ्रम की नदिा करता हूँ: यदि कोई, जीवति और शाश्वत परमेश्वर को त्यागकर, मूर्तयिों की ओर मुड़ता है—जो अंधी, बहरी और गूंगी हैं—तो वह व्यक्ति अपने देवताओं से नकिलने वाली अवनिाशी आग की ज्वाला का वारसि होगा; इसलिए, हम में से सभी जो मसीह से प्रेम करते हैं और उन्हें हमारे वश्वास के नेता के रूप में भक्तपिूर्वक सम्मान देते हैं, यह इच्छा रखते हुए कि हम अपने , अपनी नर्दिोष आध्यात्मकि कोषालयों में, अछूत खजाने को सुरक्षति रखें, हम शैतान के भ्रम और मूर्तयिों के आनंदोत्सव को पैरों तले कुचल देंगे, और हमारे सहायक, मसीह, जो अनंत दंड प्रदान करते हैं, द्वारा दृढ़ कए गए घृणति शत्रुओं से दूर रहें।

संत यही करते थे, वे पूरे शहर में घूमते थे और सभी को सच्चे धर्म को बनाए रखने और भवष्यि के अनंत यातनाओं से बचने के लिए मनाते थे। संत बेसलि द प्रेस्बटिर, कॉन्स्टेंटनिोपल के एरयिन पैट्रआर्क यूडोक्सयिस के समय में रहते थे, और उनकी धार्मकिता के कारण, कॉन्स्टेंटनिोपल में एरयिन परषिद के दौरान उन्हें संस्कारों का अनुष्ठान करने से मना कर दयिा गया था; लेकनि बाद में, फलिस्तिीन में दो सौ तीस बशिपों की एक परषिद ने उन्हें पवत्रि संस्कार प्रदान करने का आदेश दयिा। सच्चे धर्म की घोषणा करते हुए और ईश्वर को प्रसन्न करने वाला जीवन जीते हुए, उन्होंने धर्म के सत्यों की व्याख्या की और कई लोगों को भ्रांति से दूर कयिा। इसलिए, उन दनिों में जब हर धर्मपरायण ईसाई को उत्पीड़न का सामना करना पड़ता था, उन पर महान कॉन्स्टेंटाइन के पुत्र, सम्राट कॉन्स्टेंटयिस के सामने इस तरह की बदनामी की गई, जैसे कि वे लोगों के बीच अशांति फैला रहे हों; सत्य के लिए यातना सहते हुए, उन्होंने कई लोगों को सही आस्था रखने की शक्षिा दी, क्योंकि वे स्वयं आस्था और पति-परंपरा में दृढ़ और अटल थे, और आस्था के पवत्रि स्वीकारोक्ति से थोड़े से भी कभी वचिलति नहीं हुए। जब जूलयिन अपोस्टेट[2541] सहिासन पर बैठा और घृणति मूर्तपिूजक बलदिानों से संबंधति पागलपन भरे कानून बनाकर मानव आत्माओं को नष्ट करने लगा, तो गैलैटयिा प्रांत में भी, उसकी

[2541] जुलीयन द एपोस्टेट ने 361 से 363 तक शासन कयिा।

आज्ञा से, लोगों ने पूरे एक साल और तीन महीने तक मूर्तियों की पूजा की। हालाँकि, संत बेसलि ने मानव आत्माओं के विनाश को देखकर, अपने शहर एन्कयिा के लिए ईश्वर से प्रार्थना की, यह कहते हुए:

'हे संसार के उद्धारकर्ता, हे मसीह, अक्षय प्रकाश, अनंत कोषों के भंडार, जो पिता की इच्छा से अंधकार को दूर करते हो और अपनी आत्मा से सभी वस्तुओं को सृजित करते हो!' अपनी पवित्र और भयानक दृष्टि से नीचे देखो और उन दुष्ट जादू-टोनों का नाश करो जो आपकी पवित्र इच्छा का विरोध करते हैं; उनकी दुर्बल योजना बिखर जाए और वह आत्मा बाधित न हो जो सदा आपके में निवास करती है – हे ईश्वर!

हालाँकि मूर्तिपूजकों ने, जब यह सुना कि संत बेसलि इतनी ऊँची आवाज़ में प्रार्थना कर रहे थे, तो वे उन पर बहुत क्रोधित हो गए, और उनमें से एक, जिसका नाम मकरियिस था, दौड़कर आया और उन्हें पकड़ लिया, और कहा:

'तुम पूरे शहर में क्यों घूम रहे हो, लोगों को परेशान कर रहे हो और राजा द्वारा निर्धारित पूजा के कानून को समाप्त क्यों कर रहे हो?'

संत ने उत्तर दिया:

'हे शैतान के कैदी, ईश्वर तेरा मुँह बंद करे! मैं तुम्हारा विधान रद्द नहीं कर रहा हूँ, बल्कि वह कर रहा है जो स्वर्ग में है, जो अपनी अदृश्य शक्ति से इसे चूर-चूर कर रहा है और तुम सबको नष्ट और विनिष्ट कर देगा, जब तक कि तुम पूरी तरह से थक नहीं जाते और तुम्हारे लिए तैयार की गई अनंत मृत्यु को प्राप्त नहीं कर लेते।'

दुष्ट लोग, क्रोध से भरकर, उसे राज्यपाल सैटरननिस के पास ले गए, यह कहते हुए:

'यह आदमी हमारे शहर में अशांति फैला रहा है और कई लोगों को बहका रहा है और गुमराह कर रहा है; अब वह इतना आगे बढ़ गया है कि उसने वेदियों को नष्ट करने का आदेश दिया है और राजा का अपमान करने से भी नहीं हिचकिचाता।'

गवर्नर सैटरननिस ने संत से पूछा:

'तुम्हारे अंदर ऐसी हरकत करने की हिम्मत कैसे हुई?'

संत बेसलि ने उत्तर दिया:

'मैं एक ईसाई हूँ; यह नाम मेरे लिए सबसे सम्मानित है।'

सैटर्ननिस ने कहा:

'तुम वह क्यों नहीं करते जो एक ईसाई को करना चाहिए?'

संत ने उत्तर दिया:

सैटरननि ने कहा: 'हे हेगेमोन, आप मुझे उत्तम सलाह देते हैं। वास्तव में, एक ईसाई के अच्छे कर्म सभी के लिए स्पष्ट होने चाहिए, जैसा कि पवित्र सुसमाचार सिखाता *है: "अपना प्रकाश मनुष्यों के सामने ऐसा चमके, कि वे तुम्हारे भले काम देखकर तुम्हारे स्वर्गीय पिता की महिमा करें"* (मत्ती 5:16)।'

सैटरननिस ने कहा:

'तो फिर, आप हमारे शहर में अशांति क्यों मचा रहे हैं और हर जगह राजा की बदनामी क्यों कर रहे हैं, मानो उसने न्यायसंगत कानूनों का उल्लंघन किया हो?'

संत ने उत्तर दिया:

'मैं तुम्हारे राजा की निंदा नहीं करता; परन्तु मैं परम राजा को जानता हूँ: वह परमेश्वर है, जो स्वर्ग में वास करता है; उसके योग्य सेवक—हमारे पूर्वज—सब जगह शुद्ध हृदय से उसकी उपासना करते हैं; वह थोड़े ही समय में उस दुष्टता को नष्ट कर सकता है जिसे तुमने इतनी लापरवाही से स्थापित किया है।'

सैटरननिस ने कहा:

'क्या तुम हमारे राजा द्वारा निर्धारित कानून को न्यायसंगत नहीं मानते?'

संत ने उत्तर दिया:

'एक ऐसा कानून कैसे न्यायसंगत हो सकता है जो आज्ञा देता है—जैसे एक पागल कुत्ता जो वेदी के चारों ओर का मांस खाता है और उसके सामने भौंकता है—कि एक मानव शरीर को वेदी पर रखा जाए, कि खून बहाया जाए, और कि निर्दोषों को राक्षसों की बलि के रूप में काटा जाए? ऐसे कानून को न्यायसंगत कैसे कहा जा सकता है?'

सैटरननिस ने कहा:

'झूठ बोलना बंद करो, हे घमंडी मनुष्य, और राजा के अधीन हो जाओ!'

संत बेसलि ने उत्तर दयिा:

'मैंने अब तक स्वर्गीय राजा की आज्ञा मानी है और मैं आज भी उनका पालन करता हूँ, और मैं उन पर अपने पवत्रि वश्विास को कभी नहीं त्यागूँगा।'

सैटरननिस ने कहा, 'आप कसि राजा की बात कर रहे हैं, यह स्वर्ग का राजा जसिे आप मानते हैं?'

संत ने उत्तर दयिा, 'मैं उस की बात कर रहा हूँ जो स्वर्ग में बैठता है और सब कुछ देखता है; लेकनि वह राजा जसिकी तुम प्रशंसा करते हो, एक सांसारकि राजा है, और जल्द ही, कसिी भी मनुष्य की तरह, वह गरि जाएगा और महान राजा के हाथों में होगा।'

यह सुनकर सैटरननिस क्रोध से आग-बबूला हो गया और उसने आदेश दयिा कि संत के कपड़े उतार दएि जाएँ, उसे फांसी दी जाए और उसके शरीर को लोहे के औजारों से खुरच दयिा जाए। जब वह वहां अपने कष्टों को सहते हुए लटका हुआ था, तो उसने ईश्वर से इस प्रकार प्रार्थना की:

'मैं आपको धन्यवाद देता हूँ, हे युगों के प्रभु परमेश्वर, कि आपने मुझे आपके लिए दुख सहने और जीवन का मार्ग खोजने के योग्य समझा, जसिका अनुसरण करके मैं आपके वचनों के वारसिों को देख सकूँ।'

जब संत की खाल उतारी जा रही थी, तो राज्यपाल ने कहा:

'बेसलि, अब जब तुमने इतनी भयानक यातनाएँ सह ली हैं, तो राजा के आगे समर्पण कर दो।'

संत ने उत्तर दयिा:

'हे पागल, ईसाई आशा से अपरचिति! मैंने पहले ही कह दयिा है कि मैं अपने ईश्वर को सच्चे राजा के रूप में मानता हूँ; मैं उन पर वश्विास करता हूँ, और मैं उनसे मुँह नहीं मोड़ सकता।'

जब संत की खाल उधेड़ने वाले नौकर थक गए, तो सैटरननिस ने उन्हें रुकने का आदेश दयिा और संत से एक बार फरि कहा:

'हमसे सहमत हो जाओ और हमारे देवताओं को बलदिान चढ़ाओ।'

संत ने उत्तर दयिा:

'मैं व्यर्थ देवताओं की पूजा नहीं करूँगा, और न ही मैं उन बलदिानों में भाग लूँगा जो आत्माओं का वध करते हैं।'

तब राज्यपाल ने शहीद को जेल ले जाने का आदेश दयिा; रास्ते में, संत की मुलाकात फेलक्सि नामक एक यूनानी से हुई, जसिने उनसे कहा:

'बेसलि, ऐसा कैसे है कि तुम अपनी मर्जी से अपनी मौत की ओर जा रहे हो? क्या तुम्हारे लिए देवताओं का मत्रि बनना और राजा द्वारा वादा कएि गए उपहार प्राप्त करना बेहतर नहीं होगा? क्योंकि तुम क्रूरता से और लंबे समय तक पीड़ति होगे, और यह सही भी है: यह तुमने खुद चुना है।'

संत ने उसे उत्तर दयिा:

'एक तरफ हटो, हे भ्रष्ट और अधर्मी पुरुष; तुम स्वर्ग के शाश्वत राजा मसीह के सच्चे वादों को नहीं जानते, और उन्हें जानने के योग्य भी नहीं हो: अंधकार में तुम सत्य के प्रकाश को कैसे देख सकते हो और अपने चारों ओर छाए नरिाशा के अंधकार को कैसे पहचान सकते हो?'

इन शब्दों के साथ, संत बेसलि ने कालकोठरी में प्रवेश कयिा।

इस बीच, राज्यपाल सैटरननिस ने राजा जूलयिन को एक पत्र भेजा, जसिमें उसने पुरोहति बेसलि से जुड़ी घटना की जानकारी दी। राजा ने तुरंत एन्सीरा को एक एलपडिास नामक अवश्विास का शकि्षक भेजा, जो पहले एक ईसाई था लेकनि बाद में धर्मत्यागी बन गया था; और उसके साथ उसने पगिासयिस नाम का एक और दुष्ट व्यक्ति भेजा, जो भी पहले एक ईसाई था और बाद में स्वर्गीय खजाने से मुंह मोड़ गया था। एनकरियिा जाते समय, नकिोमेडयिा में, वे मूर्तकिारी एस्क्लेपयिस से मलि, और उसे अपने साथ लेकर, वे तीनों—शैतान की सेना के तीन सेनापतयिों की तरह—एनकरियिा शहर पहुँचे; जबकि संत बेसलि, अपनी कोठरी में बैठे, दनि-रात ईश्वर की स्तुति और महमिा करना बंद नहीं करते थे। अगले दनि, पगिासयिस संत बेसलि के कालकोठरी में आया और उन्हें नमस्कार करते हुए कहा:

'खुश हो जाओ, बेसलि।'

संत ने उत्तर दयिा:

'तुम्हारे लिए कोई आनंद नहीं है, हे अपराधी और धोखेबाज़; तुम्हारे लिए कोई उद्धार नहीं है, जसिे तुमने कभी मसीह के फव्वारे से पयिा था; अब तुम एक सड़ी हुई दलदल हो, जो बलि का मांस खा रही है; एक समय आप दव्यि रहस्यों

के सहभागी थे, अब आप शैतान की मेज पर सम्मान के स्थान पर बैठे हैं; एक समय आप सत्य के शिक्षक थे, अब आप विनाश के नेता हैं; एक समय आपने संतों के साथ उत्सव मनाया, अब आप शैतान के सेवकों के साथ मस्ती करते हैं; एक समय आपने खोए हुए लोगों को अंधकार से प्रकाश में लाया, अब आप स्वयं पूरी तरह से अंधकार में लिपटे हुए हैं । तुमने अपनी आशा को कैसे बर्बाद कर दिया और अपना आध्यात्मिक खजाना कैसे खो दिया? जब तुम मर रहे होगे तो क्या करोगे?

यह कहने के बाद, संत बेसिल ने प्रभु से निम्नलिखित प्रार्थना की:

– महिमामय हो, हे परमेश्वर, जो अपने सेवकों द्वारा जाना जाता है और जो उन लोगों को प्रकाश की ओर ले जाता है जो आपको, अपने परमेश्वर को, देखना चाहते हैं; आप जो उन लोगों को महिमामय बनाते हैं जो आप में आशा रखते हैं, जो आपके विधान से घृणा करने वालों को लज्जित करते हैं, स्वर्गवासियों द्वारा प्रशंसित और पृथ्वी पर लोगों द्वारा सम्मानित हैं। हे सर्वोच्च ईश्वर, यह अनुग्रह करो कि तेरे सेवक की आत्मा से शैतान के सभी बंधन दूर हो जाएँ, ताकि मैं उन लोगों से बच सकूँ जो सत्य से घृणा करते हैं और मुझे पकड़ने तथा मुझ पर विजय पाने का घमंड करते हैं!

पिगासियोस, यह सुनकर, भ्रम में उससे पीछे हट गया, अपने मित्रों के पास लौट आया और उन्हें बेसिल के सभी वचन सुनाए; तब वे पिगासियोस को भ्रम की स्थिति में देखकर क्रोधित हो गए, और जाकर इस बात की सूचना राज्यपाल को दी। राज्यपाल ने तुरंत संत को यातना देने के लिए लाने का आदेश दिया; पवित्र शहीद, अदालत के सामने खड़े होकर, राज्यपाल से कहा:

'जो करना है कर लो।'

एल्पिडियस ने बेसिल को इतनी निर्भीकता से बोलते हुए सुनकर न्यायाधीश से कहा:

'यह कानून तोड़ने वाला पागल हो गया है! यदि, अपनी यातनाओं के बाद, वह देवताओं की पूजा करने के लिए सहमत हो जाता है, तो उसे क्षमा कर दिया जाएगा; लेकिन यदि वह मना कर दे, तो उसे यातना देने के लिए स्वयं राजा के हवाले कर दिया जाए।'

क्रोधित राज्यपाल ने संत को एक बार फिर नग्न करके लटकाने और उनकी पसलियों को लंबे समय तक लोहे से खुरचने का आदेश दिया, और फिर उन्हें भारी बेड़ियों में जकड़कर फिर से कालकोठरी में बंद कर दिया।

कुछ दिनों बाद, पूर्वी प्रदेशों के लिए रवाना होकर राजा जूलियन एन्सीरा पहुँचे; वहाँ उनका स्वागत शैतान के सेवकों ने किया, जो हेकेट नामक एक मूर्ति[2542] लेकर आए थे; अपने कक्ष में प्रवेश करने पर, उन्होंने मूर्तिपूजक पुरोहितों को बुलाया और उन्हें सोने का इनाम दिया। अगले दिन, सार्वजनिक प्रदर्शनों के दौरान, एल्पिडियस ने सम्राट को बेसिल की याद दिलाई, और सम्राट ने प्रदर्शन स्थल छोड़ते हुए बेसिल को अपने कक्ष में अपने सामने लाने का आदेश दिया। और संत बेसिल एक तेजस्वी मुखमंडल और अद्भुत सुंदरता के साथ सम्राट के सामने आए और खड़े हो गए। और जूलियन ने उनसे कहा:

'तुम्हारा नाम क्या है?'

संत ने उत्तर दिया:

'मैं तुम्हें क्रम से बताऊँगा कि मैं कौन हूँ। सबसे पहले, मुझे ईसाई कहा जाता है, और मसीह का नाम शाश्वत है और मानवीय समझ से परे है; दूसरे, लोग मुझे बेसिल कहते हैं; यदि मैं मसीह के नाम को, जो मुझे दिया गया है, निर्दोष रखूँ, तो मैं न्याय के दिन मसीह से एक अमर पुरस्कार प्राप्त करूँगा।'

राजा जूलियन ने कहा:

'बेसिल, कोई भूल मत करना, क्योंकि मैं तुम्हारे रहस्यों से अच्छी तरह वाकिफ हूँ: तुम उस पर विश्वास करते हो जिसने पोंटियस पिलातुस के अधीन एक शर्मनाक मृत्यु भोगी।'

संत ने उत्तर दिया:

'भूल तो मैं नहीं कर रहा हूँ: हे राजा, भूल तो आप कर रहे हैं, जो धर्मत्यागी बन गए हैं और स्वर्ग के राज्य को खो चुके हैं। मैं अपने मसीह में विश्वास करता हूँ, जिसे आपने अस्वीकार कर दिया है, जिसने आपको यह सांसारिक राज्य दिया है; लेकिन यह जल्द ही आपसे छीन लिया जाएगा, ताकि आप जान सकें कि आपने किस ईश्वर को क्रोधित किया है।'

जूलियन ने कहा, 'तुम पागल हो गए हो, यह तुम्हारी इच्छानुसार नहीं होगा!'

[2542] हेकेट – चंद्रप्रकाश की देवी।

संत ने जारी रखा:

'तुमने मसीह के सेवकों के लिए तैयार किए गए पुरस्कारों को भूल गए हो; तुमने उस वेदी के प्रति कोई सम्मान नहीं दिखाया जिसने तुम्हें आठ साल की उम्र में मारने से बचाया था, जब वे तुम्हें मारना चाहते थे और तुम्हें उस पवित्र स्थान में छिपा दिया गया था; तुमने उस कानून को पूरा नहीं किया जिसे तुम स्वयं एक पुरोहित के रूप में अपने ही होठों से अक्सर प्रचार करते थे! इसी कारण, मसीह, महान राजा, अपने शाश्वत राज्य में आपको याद नहीं करेंगे, बल्कि वह जल्द ही यह अस्थायी राज्य भी आपसे छीन लेंगे; जब आप एक भयानक बीमारी में अपनी अंतिम सांस लेंगे तो आपके शरीर को उचित दफन भी नहीं मिलेगा। (यह जूलियन की निकट मृत्यु के बारे में संत की भविष्यवाणी थी, जिसका शव, दफनाने के बाद, पृथ्वी की गहराइयों से बाहर फेंक दिया गया था।)

तब जूलियन ने कहा:

'दुष्ट मनुष्य! मैं तुम्हें जाने देना चाहता था, लेकिन क्योंकि तुम निर्लज्जतापूर्वक अपने पागल शब्द दोहराते हो और मेरी सलाह को ठुकराते हो, और इसके अलावा मुझे विभिन्न अपमानजनक बातों से अपमानित करते हो, अतः मेरी महिमा आज्ञा देती है कि हर दिन तुम्हारी खाल से चमड़े की सात पट्टियाँ काटी जाएँ।'

उन्होंने ढाल-धारियों के सेनापति फ्रूमेंटिनस को आदेश दिया कि वह बेसिल को ले जाए और हर दिन उसकी त्वचा का एक हिस्सा फाड़कर सात पट्टियाँ काट डाले। फ्रूमेंटिनस ने इस आदेश का निष्ठापूर्वक पालन किया, जबकि संत ने मसीह के लिए बहादुरी से ऐसी यातनाओं को सहन किया। जब कुछ दिनों बाद उसकी सारी खाल उधेड़ दी गई और पट्टियाँ उसके कंधों पर, सामने और पीछे, लटका दी गईं, तो शहीद ने सेनापति से कहा:

'अब मैं राजा के पास जाकर उससे बात करना चाहता हूँ।'

उसकी बातों से सेनापति अत्यंत प्रसन्न हुआ, यह सोचकर कि वह मूर्तियों की पूजा करना चाहता है; वह राजा के पास गया और उसे इस प्रकार बताया:

'हे राजा! बेसिल यातनाओं को सहन नहीं कर सका और आपकी महिमा के आगे समर्पण करना चाहता है।'

राजा एस्कलेपियस के मंदिर में गया और शहीद को वहाँ उसके सामने लाने का आदेश दिया। राजा के सामने उपस्थित होकर, संत बेसिल ने उससे कहा:

'तुम्हारे पुरोहित और भविष्यवक्ता, जो आमतौर पर तुम्हारे साथ रहते हैं, वे कहाँ हैं? क्या उन्होंने तुम्हें बताया है कि मैं तुम्हारे पास क्यों आया हूँ?'

जूलियन ने उत्तर दिया:

'मुझे लगता है कि आप एक बुद्धिमान व्यक्ति हैं; आपने अपनी स्थिति को समझ लिया है, आप हमसे जुड़ना चाहते हैं, और अब से आप देवताओं को बलिदान चढ़ाएंगे।'

संत ने कहा:

'हे राजा, यह जान ले: जिन्हें तुम देवता कहते हो, वे कुछ भी नहीं हैं; वे बहरे और अंधे मूर्तियाँ हैं, और जो लोग उन पर विश्वास करते हैं, उन्हें वे नरक में खींच ले जाती हैं।'

यह कहकर, उसने अपने शरीर से लटकी एक पट्टियाँ फाड़ लीं और उन्हें राजा के चेहरे पर फेंकते हुए कहा:

'इसे ले लो, जूलियन, और इसे खा लो, अगर तुम्हें ऐसा भोजन पसंद है; परन्तु मेरा जीवन मसीह है, और उनके लिए मरना मेरे लिए लाभ है: वह मेरा सहायक है, मैं उन पर विश्वास करता हूँ, और उनके लिए मैं इन यातनाओं को सहता हूँ!'

संत बेसिल के इस साहसी कार्य की खबर तुरंत ही ईसाइयों में फैल गई, और सभी ने मसीह की ऐसी शानदार गवाही और उस साहसी कार्य के लिए उनकी प्रशंसा की, जिससे उन्होंने अपने यातनाकर्ता को शर्मिंदा कर दिया था।

ढाल-धारियों की रेजिमेंट के कमांडर फ्रुमेंटिनस, जिसने पवित्र शहीद बेसिल को सम्राट के सामने लाया था, बेसिल ने जो किया था—कि कैसे उसने अपने शरीर से कमरबंद फाड़कर विरोधपूर्ण शब्दों के साथ जूलियन के चेहरे पर फेंक दिया था—यह देखकर वह लज्जित हुआ और सम्राट के क्रोध से डर गया: उसने देखा कि कैसे राजा का चेहरा क्रोध से बदल गया; और राजा इतना क्रोधित नहीं था कि वह संत पर था, जितना कि उस पर था, क्योंकि उसने बंदी को राजा की उपस्थिति में ऐसी अपमान सहने के लिए लाया था। तुरंत शहीद को पकड़कर और उसे राजा की नज़रों से छिपाकर, वह उसे प्राटोरियम ले गया और, प्रचंड क्रोध से आग-बबूला होकर, उसे इन सभी दिनों में जितनी यातनाएँ दी गई थीं, उससे भी अधिक यातना देने का आदेश दिया; और उसने न केवल शहीद के पूरे शरीर की खाल उधेड़ी, बल्कि उसके पूरे शरीर को इतनी बुरी तरह

से फाड़ दिया कि उसकी अंतड़ियाँ बाहर आ गईं। संत बेसिल, ऐसी यातनाओं के बीच, ईश्वर से इस प्रकार प्रार्थना करने लगे:

हे प्रभु परमेश्वर, जो मसीहियों की आशा हैं, धन्य हैं आप, जो गिरे हुए को उठाते हैं, टूटे हुए को संभालते हैं, आप में आशा रखने वालों को क्षय से बचाते हैं, और हमारे दुखों को जानते हैं, हे दयालु और उदार, दयालु और धीरजवान प्रभु, अपनी महिमा के ऊँचे सिंहासन से मेरी ओर देखें, कृपा करें कि मैं अपने जीवन को निष्ठापूर्वक समाप्त कर सकूँ, और कृपा करके मुझे अपना शाश्वत और अमर राज्य प्रदान करें!

तब, जब शाम हो गई, तो फ्रुमेंटिनस ने संत को कैद करने का आदेश दिया, जबकि जूलियन ने उन्हें मिलने का समय दिए बिना, सुबह-सुबह ही शहर छोड़ दिया और अंतीयक के लिए रवाना हो गया। जहाँ तक फ्रुमेंटिनस का सवाल है, यह देखकर कि राजा बेसिल के कारण उससे नाराज़ था, वह संत बेसिल पर और भी अधिक क्रोधित हो गया; और, उसे कालकोठरी से बाहर निकालकर, उसने उससे कहा:

'तो फिर, हे सभी मनुष्यों में सबसे मूर्ख! क्या तुम देवताओं को बलिदान चढ़ाओगे, जैसा राजा ने आज्ञा दी है, या नहीं? तुमने क्या निर्णय लिया है: राजा की आज्ञा का पालन करोगे या यातनाओं में मरोगे?'

पवित्र शहीद बेसिल ने उत्तर दिया:

'हे पागल और अधर्मी मनुष्य! क्या तू भूल गया है कि तूने कल और इससे पहले के दिनों में मेरे शरीर पर कितनी कोड़ों की वर्षा की थी, जबकि जो कोई भी मुझे देखता था, वह दया से भर जाता था और तेरी अत्याचारों को देखकर रो पड़ता था, हे ईश्वर-निंदक! और देखो: मैं फिर से, अपने मसीह की कृपा से, अच्छे स्वास्थ्य में तुम्हारे सामने खड़ा हूँ। शैतानों के सेवक, क्रूर और अमानवीय! जाओ और अपने यातना देने वाले, राजा जूलियन को, मसीह परमेश्वर की उस शक्ति के बारे में बताओ, जिसे उसने त्याग दिया है; वह, शैतान के धोखे में आकर, अपनी ही आत्मा को नष्ट कर चुका है; मैं अब इस बात पर और अधिक नहीं रुकूँगा कि कैसे मसीह ईश्वर ने उसे मृत्यु से बचाया, और पवित्र चर्च की दिव्य वेदी के नीचे अपने पवित्र पुरोहितों के माध्यम से उसकी रक्षा की; उसने , उसकी कृपा को भुला दिया, स्वयं को त्याग दिया और उससे भाग गया। जहाँ तक मेरी बात है, मैं अपनी आशा अपने मसीह में रखता हूँ, जो शीघ्र ही उसे उसके कर्मों के अनुसार प्रतिफल देगा, और वह दुष्ट धर्मत्यागी यातनाओं में नष्ट हो जाएगा!

फ्रुमेंटिनस ने उससे कहा:

तुम बकवास कर रहे हो, तुम पागल! अजेय प्रभु जूलियन ने मानवता के प्रति अपने प्रेम और तुम पर अपनी दया के कारण, तुम्हें आज्ञा दी कि तुम हमारे साथ उत्सव मनाओ, बलिदान चढ़ाओ और धूप जलाओ; फिर भी तुमने आज्ञा मानने से इनकार कर दिया; इसके विपरीत, तुमने पहले तो अनादरपूर्वक राजा का अपमान किया, और फिर मुझे मुसीबत में डाल दिया; मैं तुम्हें तुम्हारे कर्मों के अनुसार ऐसी यातनाएँ दूँगा कि तुम शीघ्र ही अपनी जान गंवा दोगे।

ये शब्द सुनते ही फ्रुमेंटिनस ने लोहे की सलाखों को आग में तपाकर संत के कंधों और पेट में घुसाने का आदेश दिया। ऐसे यातनाओं के बीच, संत बेसिल जमीन पर गिर पड़े, और ईश्वर से प्रार्थना करते हुए जोर से कहने लगे:

'हे मसीह! मेरी रोशनी! हे यीशु! मेरी आशा! लहरों से उछाले गए लोगों के लिए एक सुरक्षित बंदरगाह! मैं तुझे धन्यवाद देता हूँ, हे मेरे पूर्वजों के प्रभु परमेश्वर, कि तूने मेरी आत्मा को नरक की गहराइयों से छीन लिया और मुझमें अपने नाम को निर्दोष रखा!' मैं अपना जीवन एक विजेता के रूप में समाप्त करूँ और शाश्वत विश्राम का वारिस बनूँ, जैसा कि आपने, हमारे प्रभु, महा पुरोहित यीशु मसीह, हमारे पूर्वजों से वादा किया था! अतः अब, मेरी आत्मा को शांतिपूर्वक ग्रहण करें, क्योंकि यह इस स्वीकारोक्ति में दृढ़ बनी हुई है! आप दयालु हैं, और आपकी दया महान है, आप जो युगानुयुग जीवते और राज्य करते हैं, आमीन।

यह प्रार्थना करने के बाद, जब शहीद के शरीर को पहले ही लाल-गरम सलाखों से पूरी तरह भेद दिया गया था, तो ऐसा प्रतीत हुआ कि वह एक मीठी नींद में सो गया, और अपनी आत्मा को ईश्वर के हाथों में सौंप दिया। इस प्रकार संत बेसिल 28 जनवरी को एक शहीद के रूप में मर गए। थोड़ी ही देर बाद, 22 मार्च को जूलियन द एपोस्टेट की हत्या और पतन के बाद, ईसाइयों ने खुले तौर पर शहीद के दीर्घकालीन कष्टों से ग्रस्त शरीर को श्रद्धांजलि दी, और उसी दिन उनके सम्मान में एक स्मरणोत्सव स्थापित किया। उनकी वीरतापूर्ण पीड़ा ने सभी ईसाइयों को हमारे प्रभु यीशु मसीह में उनके विश्वास को मजबूत किया; उनकी महिमा और राज्य अनंत काल तक अनंत हैं। आमेन।

कॉन्टाकयिन, स्वर 8:

हे पवत्रि शहीद बेसलि, एक धर्मी जीवन जीने और वशि्वास बनाए रखने के कारण, आप शहादत के मुकुट के योग्य माने गए और कलीसयिा के एक अटूट स्तंभ के रूप में सद्धि हुए, पुत्र, जो पति के सह-शाश्वत हैं, और पवत्रि आत्मा, अवभिाज्य त्रमिूर्त कि गवाही देने के बाद, प्रार्थना करें कि जो लोग आपका सम्मान करते हैं वे दुर्भाग्य से मुक्त हों, और आइए हम आपको पुकारें: हे ईश्वर-ज्ञानी बेसलि, आनन्दति हो।

पवत्रि शहीद ड्रोसडिा की स्मृति।

22 मार्च को स्मरणोत्सव

सम्राट ट्राजन[2543] के आदेश से, मसीह के स्वीकारयिों को प्रतदिनि मृत्युदंड दयिा जाता था, और उनके शरीर अपवत्रि और अशुद्ध स्थानों में फेंक दयि जाते थे। उस समय, ईश्वर की आज्ञाओं का पालन करते हुए और वनिम्रतापूर्वक अपने कर्म करते हुए, कुछ ईसाई कुंवारी संयम का जीवन जीती थीं; और उनके मार्गदर्शक, हर बार, पवत्रि शहीदों के शरीरों को इकट्ठा करते, उन्हें सुगंधति तेलों से अभषिेक करते, उन्हें साफ लनिन में लपेटते, और उन्हें अपने ही घरों में दफना देते थे। सम्राट ट्राजन की बेटी, ड्रॉसडिा, को जब यह बात पता चली, तो वह एक रात इन कुंवारी कन्याओं के पास आई—जबकि उसकी सभी दासयिाँ गहरी नींद में सो रही थीं—अपने साथ कीमती वस्त्र लेकर आई और उनसे अनुरोध कयिा कि उसे भी उनके साथ जाने दयिा जाए ताकि वह भी एक शहीद का पवत्रि शरीर ले सके। इस बीच, ड्रॉसडिा के मंगेतर और सम्राट के एक करीबी दोस्त, एक एंड्रयिन नामक व्यक्ति ने उन्हें नम्निलखिति सलाह दी:

'हे सर्वशक्तमिान शासक! मृत्युदंडति ईसाइयों की रखवाली के लिए सैनकि तैनात करने का आदेश दें, ताकि आपको पता चल सके कि उनके शवों को कौन चुरा रहा है।'

ट्राजन ने इस सलाह पर अमल करने का आदेश दयिा, और पहरे पर तैनात सैनकिों ने, पूरी रात पहरा देने के बाद, उपर्युक्त पाँच ईसाई शकि्षकों को और उनके साथ ट्राजन की बेटी, ड्रॉसडिा को पकड़ लयिा; और जब सवेरा हुआ, तो वे उन्हें सभी को सम्राट के सामने ले आए। ड्रोसडिा को देखकर, ट्राजन भयभीत हो गया और उसने पहरेदारों को उसे एक बंद कमरे में कड़ी नगिरानी में रखने का आदेश दयिा, इस उम्मीद में कि पश्चाताप करने के बाद, वह शायद सुधर जाए। जहाँ तक उन कन्याओं का सवाल है जो उनकी शकि्षकिाएँ थीं, उसने एक बड़ा कड़ाहा गलाने और उसमें मश्रि धातु के लिए बड़ी मात्रा में तांबा डालकर उन्हें उसमें फेंक देने का आदेश दयिा, ताकि तांबा उनके शरीरों के साथ पघिल जाए और वे आग में भस्म हो जाएँ। उन्होंने आगे आदेश दयिा कि इस तांबे से बलदिान के त्रपिाद बनाए जाएं और उन्हें हाल ही में बनाए गए स्नानागार में रखा जाए, जसिे अपोलो के पर्व[2544] पर पहली बार गर्म कयिा जाना था और उन लोगों के लिए बीमारयिों से उपचार और श्रम से वशि्राम के लिए खोला जाना था, जो उनकी तरह ही मूर्तपिूजा के प्रति समर्पति थे। जब सम्राट की आज्ञा का पालन हो चुका था—मसीह के पवत्रि शहीदों को जला दयिा गया था और बलदिान के त्रपिाद गढ़ दिए गए थे—तो स्नानागार को गर्म कयिा गया और लोगों को दूर-दूर से बुलाया गया, इस घोषणा के साथ:

'जो भाग्यशाली हैं, जन्हिें दुर्भाग्य से बचाने वाले देवताओं का आशीर्वाद प्राप्त है, और जो सम्राट के प्रति वफादार हैं, वे सभी इस स्नानागार में प्रवेश करें, जो अपनी उद्घाटन के अवसर पर कौतूहल के योग्य है।'

इस पुकार पर, लोग तुरंत स्नानागार में इकट्ठा होने लगे, और सबसे पहले पहुँचे हुए व्यक्ति, जो प्रवेश द्वार की दहलीज़ पार करने के लिए दौड़ रहे थे, ज़मीन पर गरि पड़े और उनकी अंतमि साँस टूट गई। उनके साथ दहलीज़ तक पहुँचने वाले सभी लोगों के साथ भी यही हुआ, इसलिए कोई भी स्नानागार के पहले दरवाज़ों से अंदर नहीं जा सका। जब ट्राजन को इस बात का पता चला, तो उसने अपने मूर्तपिूजक देवताओं के पुरोहतिों को बुलाया और उनसे कहा:

'आखरि हुआ क्या है? क्या यह वाकई ईसाई जादू-टोने का काम हो सकता है?'

[2543] रोमन सम्राट ट्राजन ने 98 से 117 तक शासन कयिा। 99 में, उन्होंने गुप्त समाजों पर प्रतबिंध लगाने वाले पहले से मौजूद एक कानून को फरि से लागू कयिा, जसिने अप्रत्यक्ष रूप से ईसाइयों को प्रभावति कयिा, और 104 में उन्होंने उनके खलिाफ एक वशिेष कानून जारी कयिा। उस वर्ष से लेकर उनके शासन के अंत तक, उत्पीड़न जारी रहा।

[2544] अपोल्लो, या फीबस, ज्यूस और लेटो का पुत्र, सबसे अधकि पूजे जाने वाले ग्रीक-रोमन मूर्तपिूजक देवताओं में से एक था। उसकी पूजा सूर्य और बौद्धकि प्रबोधन के देवता के साथ-साथ व्यवस्था और सामाजकि कल्याण के देवता के रूप में भी की जाती थी।

पुरोहतिों ने उत्तर दयिा, 'नहीं, हे राजा, यह आपके आदेश पर पघिलाए गए तांबे से बने त्रपिाद के कारण हुआ, जनिमें ईसाई कुंवारी जलाई गई थीं। आदेश दें कि उन्हें हटा दयिा जाए और नए त्रपिाद स्थापति कयि जाएं, और फरि आपकी बनाई गई योजना बनि कसिी बाधा के पूरी हो जाएगी।'

जब पुरोहतिों की सलाह पर अमल हो गया, तो एंड्रयिन ने सम्राट से कहा:

'हे राजा, मुझे हटाए गए त्रपिाद को फरि से पघिलाने की अनुमति दें, ताकि उनसे नग्न कन्याओं की पाँच मूर्तयिाँ बनाई जा सकें, जो उन ईसाई शक्षिकों जैसी हों जन्हिें आपने फाँसी दी थी, और उनका उपहास करने तथा उनकी नदिा करने के लिए, इन मूर्तयिों को आपके शाही स्नानागार के प्रवेश द्वार पर स्थापति कयि जा सके।'

ट्राजन ने तुरंत अपनी सहमति दे दी, और मूर्तयिाँ बना दी गईं। जब उन्हें उनके नर्धिारति स्थानों पर रख दयिा गया, तो ट्राजन ने सपने में स्वर्ग में चरते हुए पाँच शुद्ध मेमनों को देखा, और उन्हें चराते हुए उस भयानक चरवाहे को देखा, जसिने उससे कहा:

'हे अत्यंत अधर्मी और दुष्ट राजा! जनिकी मूर्तयिों को तुम उपहास के लिए प्रदर्शति करना चाहते थे, उन अच्छी और दयालु भेड़यिे ने उन्हें तुमसे छीन लयिा है और इस स्थान पर बसा दयिा है, जहाँ समय आने पर पवत्रि मेमनी ड्रोसडिा, तुम्हारी बेटी, भी आ जाएगी।'

जागने पर, दुष्ट और अधर्मी ट्राजन क्रोध से भर गया, क्योंकि मृत्यु के बाद भी पवत्रि कुंवारी शहीदों ने उसकी योजनाओं को शर्मदिा कर दयिा था; और उसने शहर के दोनों सरिों पर दो भट्टयिाँ बनवाने और उन्हें रोज़ाना आग में गर्म रखने का आदेश दयिा, और उन पर एक शलिालेख लगवाने का आदेश दयिा जसिमें उसकी शाही आज्ञा व्यक्त हो और नम्निलखिति बातें लखिी हों:

'गालील के पुरुषो[2545] , जो क्रूस पर चढ़ाए गए की पूजा करते हो, स्वयं को अनेक यातनाओं से बचाओ, और हमें अपनी मेहनत से बचाओ; देवताओं को बलदिान चढ़ाओ। लेकनि यदि तुम ऐसा नहीं करना चाहते, तो तुम में से प्रत्येक अपनी इच्छा से, जसि भी तरीके से वह चाहे, स्वयं को इस भट्टी में डाल दे।'

जब सम्राट द्वारा यह आदेश जारी हो गया और सेंट ड्रॉसडिा को यह खबर मलिी कि ईसाई, मसीह में अपने वश्विास और उनके प्रति प्रेम के कारण, खुद को भट्टयिों में फेंक रहे थे, तो उन्होंने स्वर्ग की ओर अपनी आँखें उठाईं और कहा:

'हे प्रभु यीशु मसीह, हे ईश्वर के पुत्र, यदि आपकी इच्छा है कि मैं बच जाऊँ और अपने दुष्ट पति ट्राजन की पागल मूर्तपिूजा से बच नकिलूँ, तो स्वयं मेरी सहायता करें कि मैं इस कानून-वहिीन एंड्रयिन से अपने ववािह से मुक्त हो जाऊँ और स्वर्ग में चढ़ जाऊँ, जहाँ वे पाँच गुरु जो मुझे आपके भय में मजबूत करते थे, पहले से ही वास करते हैं। मेरी रखवाली करने वालों को गहरी नींद में डाल दो, ताकि मैं यहाँ से भाग सकूँ।

ये शब्द कहने के बाद, संत ड्रोसडिा ने अपने राजसी सम्मान के प्रतीकों को हटा दयिा और चुपचाप अपने बंदी-स्थान से नकिल गईं, ताकि किसी भी पहरेदार को उसका पता न चले। जब वह खुद को एक भट्टी में फेंकने जा रही थीं, तो उन्होंने मन ही मन वचिार कयि, और कहा:

'ववािह का वस्त्र (अर्थात् बपतस्मिा लिए बनि) पहने बनि मैं परमेश्वर के पास कैसे जाऊँ? क्योंकि मैं अशुद्ध हूँ।' लेकनि, हे राजाओं के राजा, प्रभु यीशु मसीह, आपके लिए मैंने अपना राजसी पद त्याग दयिा है, ताकि आप कृपा करके मुझे अपने राज्य में एक द्वारपाल भी बना लें; तो फरि, स्वयं मुझे अपनी पवत्रि आत्मा से बपतस्मिा दें।

और यह कहकर, संत ड्रॉसडिा ने अपने सभी खजाने में से अपने साथ लाई हुई मूर्रा नकिाल ली, और उससे अपने सभी अंगों पर अभषिेक कयि; फरि वह अपने रास्ते में बहती हुई धारा के पानी में प्रवेश कीं और इन शब्दों का उच्चारण करते हुए स्वयं को बपतस्मिा दयिा:

'परमेश्वर की दासी, द्रोसदिा, को पति, पुत्र और पवत्रि आत्मा के नाम पर बपतस्मिा दयिा जाता है।'

इसके बाद, कठोर उपवास का पालन करते हुए, वह सात दनिों तक छपिकर रही। इस दौरान, कुछ ईसाइयों ने उसे ढूंढ लयिा और उसके अपने बयानों से, उपरोक्त सभी बातें जान लीं। बपतस्मिा के आठवें दनि, पवत्रि शहीद ने प्रार्थना करने के बाद, वह कयि जो करने का उसने पहले संकल्प लयिा था और इस प्रकार प्रभु के पास चली गई।

[2545] ईसाइयों को उपहासपूर्वक 'गलीलयिाई' कहा जाता था।

5 अप्रैल

23 मार्च (पुराना तरीका)

पुरोहति-शहीद संत नकिोन का जीवन और शहादत

23 मार्च को स्मरणोत्सव

नेपल्स शहर में, कैम्पेनयिा क्षेत्र में[2546] , नकिॉन नाम का एक असाधारण सुंदर, कुलीन और पराक्रमी योद्धा रहता था। उसके पति, एक ग्रीक मूर्तपिूजक, ने अपने बेटे को मूर्तपिूजा में पाला; लेकनि नकिॉन की माँ एक ईसाई थी और हमेशा उसे मसीह के बारे में सखिाती थी। प्रभु के क्रूस की शक्तकिी ओर इशारा करते हुए, वह कहती थीं:

'मेरे प्रयि पुत्र! यदतिुम कभी युद्ध के दौरान खतरे में पड़ो, तो बार-बार क्रॉस का चहि्न बनाओ – तुम न केवल कैद से बचोगे, बल्कसिभी घावों से भी बचे रहोगे; न कोई तीर, न कोई भाला, न कोई तलवार तुम्हें लगेगी, और तुम युद्ध के सबसे खतरनाक क्षणों में भी सुरक्षति रहोगे।'

ऐसा हुआ कएिक बार रोमन सैनकि युद्ध के लएि नकिले। नकिोन को भी अपनी टुकड़ी के साथ जाना था। सबसे खूनी लड़ाइयों में से एक के दौरान, नकिोन खुद को अत्यधकि खतरे में, मौत के कगार पर पाया। अपने कई सैनकिों को मारा हुआ देखकर, वह स्वयं भी दुश्मन के हाथों मरने की उम्मीद कर रहा था; लेकनि, अपनी माँ के शब्दों और शकि्षाओं को याद करते हुए, नकिोन ने अपनी आँखें आकाश की ओर उठाईं, क्रॉस का चहि्न बनाया, और, दलि से एक गहरी आह भरते हुए, कहा:

हे मसीह, सर्वशक्तमिान ईश्वर! अब मुझ पर अपने क्रूस की शक्तप्रिकट कर; आज से मैं तेरा सेवक रहूँगा और तेरी तथा तेरी माता की, जनि्होंने तुझे जन्म दयिा, आराधना करूँगा।

इन शब्दों के बाद, उसने अपने भीतर एक असाधारण साहस महसूस कयिा और, दाहनिे हाथ में भाला लेकर हमला करते हुए, जल्द ही 180 तक बहादुर दुश्मन योद्धाओं को मार गरिाया, जबकबिाकी को भागने पर मजबूर कर दयिा, ताकि कोई भी उसका वरिोध न कर सके। इस प्रकार मसीह के क्रूस की शक्तचिमत्कारकि रूप से उसमें प्रकट हुई!

तब नकिोन ने परमेश्वर की स्तुतकिरते हुए कहा:

'महान है ईसाई ईश्वर, जो अपने क्रूस के चहि्न से शत्रुओं को पराजति करता और भगाता है!'

पूरा रोमन सैन्य दल नकिोन को देखकर चकति रह गया और कहा:

'ईश्वर की दव्यि-लोक की एक महान चमत्कार! हमने कभी नहीं देखा, न ही सुना है, कोई योद्धा जो युद्ध में नकिोन की तरह इतनी बहादुरी से लड़ा हो।'

जब युद्ध समाप्त हो गया और सभी को घर भेज दयिा गया, तो संत नकिोन भी अपने घर लौट आए; ईश्वर की स्तुतिकरते हुए, उन्होंने अपनी माँ को बताया कप्रिभु मसीह ने अपनी क्रूस की शक्तसि युद्ध में उनके लएि क्या कयिा था।

खुशी से अभभिूत होकर, उसकी माँ ने कहा:

'हे प्रभु, मैं तेरे परम पवत्रि नाम का धन्यवाद करती हूँ, क्योंकतिू चाहता है कसिब मनुष्य बच जाएँ और सत्य के ज्ञान में आ जाएँ! अब अपनी दासी की प्रार्थना सुनो और मेरे पुत्र को पवत्रि बपतस्मिा प्रदान करो, जो पापों की क्षमा के लएि हमें दयिा गया है, और उसे अपनी इच्छा पूरी करना सखिाओ, ताकि वह तुम्हें प्रसन्न कर सके और वादा की गई शाश्वत आशीर्वादों का पात्र बन सके।

नकिोन ने अपनी माँ से पूछना शुरू कयिा कि वह कैसे एक ईसाई बन सकता है। उसकी माँ ने उत्तर दयिा:

'तुम्हें चालीस दनि का उपवास करना होगा और एक ईसाई पुरोहति से ईसाई धर्म की शकि्षा लेनी होगी; फरि, शैतान और उसके सभी कामों को त्यागकर, और हमारे ईश्वर मसीह में वशि्वास करके, तुम्हें पवत्रि बपतस्मिा प्रदान कयिा जाएगा और तुम एक सच्चे ईसाई और मसीह के सेवक बन जाओगे।'

[2546] कैम्पानयिा मध्य इटली का एक क्षेत्र है। इसके सबसे उल्लेखनीय शहरों में से एक, नेपल्स, नेपल्स की खाड़ी के उत्तरी तट पर स्थति है। इसी क्षेत्र में सबसे पहले घंटयिाँ आवष्किृत की गई थीं; धार्मकि ग्रंथों में, उन्हें उनके मूल स्थान के नाम पर 'कैम्पानास' कहा जाता है।

नकिोन ने उत्तर दयिा, 'जसि प्रकार प्रभु जीवति हैं!' 'मैं एक मूर्तपिूजक, एक मूर्त-िपूजक और एक योद्धा बने रहने की बजाय उनका सेवक बनना पसंद करूँगा; मैं अब एक पत्थर या कसिी अन्य प्राणी की पूजा नहीं करना चाहता, बल्कि एकमात्र ईश्वर, स्वर्ग और पृथ्वी, समुद्र और उनमें जो कुछ भी है, उसके सृष्टकिर्ता की पूजा करना चाहता हूँ।'

अपनी माँ के सामने ज़मीन पर झुकते हुए, नकिोन ने कहा:

'माँ! मेरे लिए, अपने सेवक के लिए, ईश्वर से प्रार्थना करो, कि वह मुझे एक देवदूत, मेरे आत्मा और शरीर का एक अच्छा मार्गदर्शक और रक्षक प्रदान करें, ताकि उसकी मार्गदर्शना में मैं ईश्वर का एक सेवक ढूंढ सकूँ जो मुझे पवत्रि बपतस्मिा दे और मुझे हमारे सच्चे ईश्वर, मसीह की इच्छा को पूरा करना सखिाए, और ताकि मैं मसीह के झुंड में गनिती में शामलि हो सकूँ।' हे मेरी आदरणीय माता! यदि आपकी शक्षिा ने मुझे मूर्तपिूजक भ्रांति से न हटाया होता और सच्चे ईश्वर के ज्ञान की ओर न ले जाया होता, तो मैं गेहेना से न बच पाता और उन सभी के साथ पाताल में यातनाएँ सहता जो ईश्वर को नहीं जानते।

और 'मेरी माँ, मेरे लिए प्रार्थना करना!' कहकर, वह घर से नकिलने ही वाला था। उसकी माँ ने, अपने बेटे का हाथ पकड़कर, उससे वनिती की कि वह पवत्रि बपतस्मिा ग्रहण करने के बाद उसके पास लौटे और उसे दफनाए, क्योंकि वह पहले ही मृत्यु के नकिट आने का अनुभव कर रही थी। फरि, उसके लिए प्रार्थना करने के बाद, उसने उसे कुछ पैसे दिए और, सबसे महत्वपूर्ण बात, उसे अपनी मातृ आशीर्वाद के साथ वदिा कयिा और उसे एक ईसाई पुरोहति की तलाश में जाने दयिा; लेकनि उस समय, ईसाइयों के उत्पीड़न के कारण, एक ईसाई पादरी को खोजना मुश्कलि था, क्योंकि सभी ईसाई पादरी और शक्षिक रेगस्तिानों और पहाड़ों में छपि रहे थे।

अपने घर से नकिलकर, नकिोन बंदरगाह गया और एक जहाज पर सवार होकर कॉन्स्टेंटनिोपल के लिए रवाना हो गया।

नकिॉन के प्रस्थान के बाद, नेपल्स शहर के सैनकिों और कमांडरों ने उस बहादुर योद्धा की लंबी तलाशी ली और, उसकी माँ के घर पहुँचकर, उससे पूछा: 'तुम्हारा बेटा कहाँ है?' उन्होंने जवाब दयिा: 'मुझे नहीं पता कि वह कहाँ गया है!'

इस बीच, ईश्वर की कृपा से नर्दिेशति होकर, नकिोन कओिस नामक एक द्वीप पर पहुँचे[2547] , वहाँ एक ऊँचे पहाड़ पर चढ़े और आठ दनि प्रार्थना में बतिाए, ईश्वर से प्रार्थना करते हुए कि वह उन्हें दखिाएँ कि उन्हें प्रभु का ऐसा सेवक कहाँ मलिेगा जो उन्हें लंबे समय से वांछति पवत्रि बपतस्मिा देगा और पवत्रि वश्विास के संस्कारों में उनका नर्दिेश करेगा। और देखो, एक सपने में, ईश्वर का एक स्वर्गदूत एक संत के रूप में नकिोन के सामने प्रकट हुआ; उसने उसे एक लाठी दी, जसिके शीर्ष पर एक क्रॉस की छवि थी, और उसे समुद्र तट पर जाने की आज्ञा दी। वहाँ से प्रस्थान करने के बाद, अगली सुबह उसे एक जहाज मलिा जो उसके लिए प्रतीक्षा कर रहा था; क्योंकि परमेश्वर का वही स्वर्गदूत नावकिों के सामने प्रकट हुआ था और उन्हें आज्ञा दी थी कि वे नकिोन का इंतजार करें, जो पहाड़ से एक क्रॉस की छवि वाले लाठी के साथ उतरकर आएगा।

एक अनुकूल हवा की बदौलत, नकिोन और नावकि दो दनि बाद गानोस नामक एक पहाड़ पर पहुँचे[2548] , जहाँ साइज़किस के बशिप थयिोडोसयिस[2549] , बड़ी संख्या में भक्षिुओं के साथ उत्पीड़न से शरण ले रहे थे; वह उनके मठाधीश और पति के रूप में सेवा करते थे। ईश्वर ने उसे नकिोन के बारे में सत्य प्रकट कर दयिा था, और वह अपने भक्षिुओं के साथ उसे उतरने की जगह पर मलिने गया। फरि वह उसे अपनी गुफा में ले गया और, घोषणा के बाद, उसने उसे पवत्रि त्रमिूर्ति के नाम पर बपतस्मिा दयिा और मसीह के परम पवत्रि रहस्यों का प्रशासन कयिा।

पवत्रि बपतस्मिा प्राप्त करने के बाद, धन्य नकिोन उस गुफा चर्च में रहे, पवत्रि धर्मग्रंथों का अध्ययन करते हुए और मठवासी जीवन जीते हुए, और अपनी नम्रता के कारण उन्हें भक्षिु बनाया गया।

कुछ भाइयों ने, नकिोन की वनिम्रता और नम्रता, उसके उपवास, संयम और प्रार्थना और भजन-गायन में बनिा सोए बतिाई गई सारी रात की जाग-रातों को देखकर, उसे परमेश्वर के एक स्वर्गदूत के समान मान लयिा; क्योंकि वह अपने कार्यों में धैर्यवान, प्रेम में महान, उपवास में अद्वतिीय, अध्ययन और पठन में अतृप्त, अपनी रात्रि की प्रार्थनाओं में कभी न थकने वाला, और सभी प्रकार के संन्यासी तप में परश्रिमी और उत्साही था; उसने न केवल भाइयों के बीच, बल्कि स्वयं बशिप थयिोडोसयिस में भी प्रशंसा जगाई।

[2547] चयिोस एजयिन सागर या द्वीपसमूह के द्वीपों में से एक है, जो एशयिा माइनर के पश्चमिी तटों के पास स्थति है।

[2548] गानोस या गान, मरमरा सागर के उत्तर-पश्चमिी तट पर स्थति है – थ्रेस में यह कलिेबंदी वाले स्थलों में से एक है।

[2549] साइज़किस का क्षेत्र, साइज़किस शहर के साथ, एशयिा माइनर के उत्तर-पश्चमिी भाग में, मरमरा सागर के दक्षणिी तट पर स्थति है।

जब धन्य निकोन ने उस पहाड़ पर तीन वर्ष व्यतीत कर लिए, तो बिशप को ईश्वर से एक दर्शन हुआ – प्रभु का स्वर्गदूत उन्हें एक सपने में प्रकट हुआ और कहा:

'अपने मरने से पहले, निकोन को—जिसे तुमने बपतिस्मा दिया और संन्यासी वस्त्र पहनाए—अपने स्थान पर बिशप नियुक्त करो, और अपनी मंडली को उसके हवाले कर दो; लेकिन उसे यह निर्देश दो कि वह सभी के साथ सिसिली क्षेत्र के दक्षिणी भाग[2550] में चला जाए, कहीं ऐसा न हो कि संन्यासी बर्बरों की तलवार से मारे जाएँ, जो जल्द ही इस स्थान पर हमला करेंगे।'

इस दर्शन के बाद, बिशप थियोडोसियस ने सबसे पहले धन्य निकॉन को डीकन, फिर प्रेस्बिटर, और अंत में बिशप के रूप में अभिषिक्त किया; और 190 भिक्षुओं को उनकी देखभाल में सौंपने के बाद, वे प्रभु में निद्रित हुए।

बिशप को दफ़नाने के बाद, निकोन सभी भिक्षुओं के साथ एक जहाज पर सवार होकर लेसबोस द्वीप[2551] के लिए रवाना हुए, जहाँ, माइटिलिनि शहर[2552] में उतरने के बाद, वे दो दिन रुके और फिर नाक्सोस द्वीप[2553] के लिए रवाना हो गए। वहाँ से, ईश्वर की कृपा से, वह बाईस दिन बाद इटली पहुँचा; अपने देश, नेपल्स शहर में पहुँचने पर, उसने अपनी धन्य माता को जीवित पाया, जिन्होंने उसे देखकर आनंद के आँसुओं के साथ अपनी बाहों में लिपटा लिया और उसे चूमा। प्रभु की उपासना में जमीन पर झुकते हुए, उन्होंने कहा:

'हे प्रभु, मैं तेरे परम पवित्र नाम का धन्यवाद करती हूँ, कि तूने मुझे अपने पुत्र को एक स्वर्गदूत के समान और एक बिशप की गरिमा में देखने के लिए लाया है; और अब, हे मेरे प्रभु, मेरी, अपनी दासी, की सुन और मेरी आत्मा को अपने हाथों में ग्रहण कर।'

यह प्रार्थना कहने के बाद, धन्य महिला ने तुरंत अपना प्राण प्रभु को सौंप दिया; वहाँ उपस्थित सभी लोगों ने परमेश्वर की स्तुति की और भजनों के गायन के साथ सम्मानपूर्वक उनका अंतिम संस्कार किया।

निकॉन के आगमन की खबर पूरे शहर में फैल गई; रेजिमेंट में उसके मित्र रहे कुछ सैनिकों को भी इसकी जानकारी हुई; वे उसके पास आए, उसके मुखमंडल की सुंदरता को देखकर चकित रह गए और उससे अकेले में पूछा:

'हम सर्वोच्च की शक्ति की शपथ देकर आपसे निवेदन करते हैं: हमें बताएं, आपने युद्ध में इतनी शक्ति और वीरता क्यों दिखाई—क्या यह जादू-टोने से या किसी अन्य साधन से था? हमें भी वैसा ही बनना सिखाएं।'

संत ने उत्तर दिया, 'हे भाइयों! मेरा विश्वास करो, यह न तो जादू-टोना था और न ही कोई और चीज़ थी जिसने मुझे युद्ध में बहादुर बनाया, बल्कि केवल मसीह के पवित्र क्रूस की सहायता थी। जब मैंने इसे धारण किया, तो कोई भी मेरे सामने नहीं टिक सका, क्योंकि क्रूस के चिह्न के माध्यम से काम करने वाली ईश्वर की शक्ति ने सभी शत्रुओं को परास्त कर दिया।'

ये शब्द सुनकर, सैनिक संत निकोन, बिशप के चरणों में गिर पड़े और कहने लगे:

'हे परमेश्वर के पवित्र जन! हम पर दया करें और हमें अपने साथ ले जाएँ, ताकि जैसे युद्ध में हम आपके द्वारा अपने शत्रुओं से छुड़ाए गए, वैसे ही अब हम भी, आपके साथ, स्वर्ग के राज्य के सहभागी बनें।'

और तुरंत, अपनी पत्नियाँ, बच्चे, भाई और अपने घर पीछे छोड़कर, वे सैनिक संत निकोन के पीछे हो लिए; उनमें से नौ थे।

एक जहाज पर चढ़कर, पूजनीय निकोन, उनके साथ और अपने शिष्यों के साथ, सिसिली द्वीप के लिए रवाना हुए और वहाँ टौरोमेनियम के सबसे ऊँचे पहाड़ पर उतरे[2554] ; नाव से उतरकर और काफी दूरी तय करने के बाद, वे असिनोस नदी पर पहुँचे, जिसके पास उन्हें गिगिया नामक एक सुनसान जगह पर एक बड़ा, जर्जर पत्थर का स्नानागार मिला, जहाँ वे बस गए। वह जगह बहुत सुंदर और एकांत थी, और वह भूमि खेती के लिए उपयुक्त साबित हुई। अंगूर के बाग और फलों के पेड़ लगाने के बाद, वे वहाँ रहने लगे । पूजनीय निकोन ने उन नौ लोगों, जो उनके सैन्य सेवा के मित्र थे, का बपतिस्मा दिया और उन्हें भिक्षु के रूप में दीक्षा दी।

[2550] सिसिली का क्षेत्र, या स्वयं सिसिली, भूमध्य सागर के सबसे बड़े द्वीपों में से एक है, जो एपेनाइन प्रायद्वीप के दक्षिण में स्थित है और मेसिना जलडमरूमध्य द्वारा इससे अलग होता है। यह दुनिया के सबसे बड़े ज्वालामुखी (आग उगलने वाले पहाड़), माउंट एटना का घर है।

[2551] लेसबोस एजियन सागर, या एजियन द्वीपसमूह में एक द्वीप है, जो एशिया माइनर के पश्चिमी तट से दूर, मीडिया के पास स्थित है।

[2552] मिटिलिनि लेसबोस द्वीप पर सबसे बड़ा किलेबंद शहर है, जो इसके पूर्वी हिस्से में स्थित है।

[2553] नाक्सोस – दक्षिणी एजियन सागर या द्वीपसमूह में एक द्वीप – साइक्लाइड्स में सबसे बड़ा।

[2554] माउंट टौरोमेनियम सिसिली द्वीप के पूर्वी तट पर स्थित है।

कई साल बीत गए, लेकिन ईसाइयों पर अत्याचार जारी रहा। सीसली के इगेमोन क्वेंटियिनस को pagans ने सूचित किया कि असिनोस नदी के किनारे कुछ पुरुष रहते थे जो स्वर्ग के ईश्वर की पूजा करते थे, जिनके शिक्षक बिशप निकॉन थे; वे हमारे कानूनों का पालन नहीं करते थे और हमारे देवताओं की पूजा करने से इनकार करते थे।

यह सुनकर, राज्यपाल क्रोध और गुस्से से भर गया और उसने तुरंत सैनिकों का एक दल उन्हें सभी को पकड़ने और पूछताछ के लिए उसके सामने लाने के लिए भेजा।

उस स्थान पर पहुँचने पर, सैनिकों ने पूछा:

'निकॉन अपने साथियों के साथ कहाँ है, जो राजा के कानूनों की अवज्ञा करते हैं और देवताओं की पूजा नहीं करते!'

संत निकोन ने उनसे उत्तर दिया:

'मेरे बच्चों! तुमने यहाँ आकर बहुत अच्छा, वास्तव में बहुत अच्छा काम किया है, क्योंकि मसीह, मेरे प्रभु, मुझे और मेरे मित्रों को अपने पास बुला रहे हैं।'

तब भाइयों ने प्रार्थना करना शुरू किया, ईश्वर से इस कार्य के लिए अपनी कृपा से उन्हें बलवान बनाने का आग्रह करते हुए; लेकिन, सैनिकों द्वारा विवश होकर, उन्हें अपनी प्रार्थना बीच में ही छोड़नी पड़ी और, उनके साथ, वे राज्यपाल के पास गए, जैसे वध के लिए ले जाई गई भेड़ें।

रास्ते में, हमारे धन्य पिता निकॉन ने उन्हें इन शब्दों से प्रोत्साहित किया:

'हौसला रखो, हे मेरे भाइयो, और यातना देने वाले से मत डरो, क्योंकि हमारा संघर्ष समाप्त होने को है, और स्वर्ग के द्वार हमारे लिए खुल गए हैं। कठोर यातना देने वाले के सामने मसीह के विश्वास पर दृढ़ रहें; हमारे भले चरवाहे के वचनों को याद करते हुए उसके सामने निडर होकर बोलें: *'उनसे मत डरो जो शरीर को मारते हैं पर आत्मा को नहीं मार सकते'* (मत्ती 10:28)।

जब संतों को निर्णय के लिए राज्यपाल के सामने लाया गया, तो उसने उन पर एक धमकी भरी नज़र डाली और बोलना शुरू किया:

'क्या तुम सब जादूगर निकॉन द्वारा इस हद तक गुमराह हो गए हो कि तुम एक व्यर्थ और भ्रामक आशा पालते हो, और अमर देवताओं का सम्मान नहीं करते और उनके नियमों का पालन नहीं करते?'

संतों ने एक स्वर में उत्तर दिया:

'हम मसीही हैं और कभी भी अपने धर्म को नहीं त्यागेंगे; हम अपनी आशा इस संसार की व्यर्थताओं में नहीं, बल्कि प्रभु परमेश्वर में रखते हैं, जिसने स्वर्ग और पृथ्वी, समुद्र और उनमें जो कुछ भी है, उसे बनाया; परन्तु तुम्हारे देवता मौन, बहरे और मूर्ख देवता हैं, जो मनुष्यों के हाथों के बनाए हुए हैं, और जो कोई भी उनमें अपनी आशा रखता है, वह भी उनके समान होगा।'

संतों के दृढ़ और अटूट विश्वास को देखकर, राज्यपाल ने कहा:

'यदि मैंने उन्हें तुरंत मृत्युदंड देने का आदेश नहीं दिया, तो वे अपनी भ्रांति में और भी बहुत से लोगों को भटका सकते हैं।'

इसलिए, उसने पहले आदेश दिया कि संतों को नग्न करके जमीन पर लिटा दिया जाए, और बैलों की खाल से लंबी और निर्दयतापूर्वक पिटाई की जाए; फिर कि सेंट निकोन को छोड़कर, उन सभी का सिर नदी के किनारे, उस स्नानागार में तलवार से काट दिया जाए जहाँ वे रहते थे। फिर उन्हें उनके मृत्युदंड के लिए ले जाया गया।

अपना सम्मानित सिर तलवार के नीचे झुकाते हुए, पवित्र शहीदों ने कहा:

'हे प्रभु! हम अपनी आत्माओं को तेरे हाथों में सौंपते हैं, *"क्योंकि तेरे ही निमित्त हम दिन भर मार डाले जाते हैं; हमें वध के लिए भेड़ों की तरह गिना जाता है"* (भजन संहिता 43:23)।'

इस प्रकार संत निकोन के 199 सम्मानित शिष्यों का सिर कलम कर दिया गया। यातना देने वाले के आदेश पर, उनके शरीर जलाने के लिए उस भयंकर आग से जल रहे स्नानागार में फेंक दिए गए, जहाँ उन्होंने निवास किया था।

पूजनीय निकोन को बेड़ियों में जकड़ने के बाद, यातना देने वाले ने उन पर सबसे क्रूर यातनाएँ करने की योजना बनाई।

उस रात, एक स्वर्गदूत संत को उनके कालकोठरी में एक सपने में प्रकट हुआ और कहा:

'हे निकोन, मसीह के योद्धा, ईश्वर में हर्षित रहो और आनंद मनाओ, क्योंकि मसीह हमारे ईश्वर ने तुम्हारे 199 शिष्यों की बलिदान को एक सुगंधित भेंट के रूप में स्वीकार कर लिया है: वे उस महल में प्रवेश कर गए हैं जहाँ स्वर्गीय वधू-वर विश्राम करते हैं।'

दूत के इन शब्दों के बाद, संत निकोन ने अपने सामने एक कन्या को देखा, जो सूर्य की किरणों से भी अधिक तेजस्वी थी, जिसके वस्त्र सोने और नीलम के थे[2555] ; उसके हाथों में बर्फ की तरह सफेद एक सिर था। वह कन्या नदी सिमिफि के पूर्वी तट पर खड़ी थी, जबकि पश्चिमी तट पर असाधारण कद के दो पुरुष खड़े थे, जिनके सिर आकाश को छू रहे थे; उनके हाथों में अग्नि-भाले थे और उन्होंने प्रकट हुई कन्या के साथ निम्नलिखित बातचीत की:

'हम अब यहाँ निष्क्रिय क्यों खड़े हैं, जबकि हमें स्वर्गीय राजा ने क्वेंटियिन के खिलाफ़ युद्ध के लिए भेजा था? हम यहाँ उसकी प्रतीक्षा कर रहे हैं, फिर भी वह नहीं आता।'

उस तेजस्वी कन्या ने उनसे कहा:

'कल, क्वेंटियिन ने मसीह के 199 सेवकों को मार डाला; इसके अलावा, वह उनके शिक्षक, निकॉन के लिए सबसे कठोर यातनाएँ रच रहा है, जिसने शैतान की सभी चालाकियों पर विजय प्राप्त की है; जल्द ही वह उस स्थान पर पहुँच जाएगा जहाँ तुम उससे लड़ने के लिए भेजे गए हो।'

यह कहकर, उसने अपने हाथों से उनकी ओर एक सिर छोड़ दिया, और कहा, 'इसे ले लो; यह तुम्हारी यातना देने वाले के विरुद्ध तुम्हारी मदद करेगा।'

दृष्टि से जागने पर, बिशप निकोन बहुत प्रसन्न हुए; ईश्वर का धन्यवाद करते और उनकी महिमा करते हुए, उन्होंने यह दृष्टि अपने सेवक, हेरोमेनस नामक व्यक्ति को सुनाई, जिसने बाद में उनके जीवन और कष्टों को दर्ज किया।

जैसे ही उन्होंने अपने युवा परिचारक को यह दृष्टि सुनाई, संत ने भविष्यवाणी की कि क्वेंटियिनुस जल्द ही एक हिंसक मृत्यु से मिलेंगे।

अगली सुबह, गवर्नर क्वेंटियिन ने संत निकोन को मुकदमे के लिए अपने सामने लाने का आदेश दिया और उनसे पूछा:

'तुम कौन हो, कहाँ से आए हो, और किस धर्म का प्रचार करते हो, कि तुमने अपनी जादू-टोने से इतने सारे लोगों की मौत का कारण बने हो? तुम्हारे पागलपन के कारण, वे अब सूर्य का प्रकाश या चंद्रमा की रोशनी नहीं देख पाएंगे।'

संत निकोन ने उत्तर दिया:

'दुष्ट मनुष्य! मैंने न केवल पहले ही तुम्हें बता दिया है कि मैं कौन हूँ और मैं किस आस्था का पालन करता हूँ, बल्कि दूसरों ने भी तुम्हें बताया है; तुमने यह बार-बार उन कई संतों से सुना है जिन्हें तुमने कल अपनी दुष्टता की अंधाधुंध में मार डाला था। अब मैं तुम्हें संक्षेप में बताऊँगा: मैं एक ईसाई हूँ, और मेरी दृढ़ और अटूट आशा उस ईश्वर में है, जिसने स्वर्ग और पृथ्वी की रचना की है, और जो तुम्हारी अमानवीय क्रूरता और महान दुष्टता के लिए तुम्हें असहनीय यातनाओं में डाल देगा।

ये शब्द सुनते ही, यातना देने वाले ने, शेर की तरह दहाड़ते हुए, संत को नग्न करने का आदेश दिया और उसे चार पहियों से हाथ-पैरों में बाँधने का हुक्म दिया, जबकि उसके नीचे आग जला दी गई।

संत निकोन लाल-गरम कोयलों पर इस प्रकार लेटे मानो वे फूलों पर हों, और ईश्वर को इस प्रकार गा रहे थे:

'हे प्रभु, तू ही मेरा बल और मेरा शरणस्थान है, जो मुझे मेरे उन शत्रुओं से बचाता है जो मुझ पर प्रचंड हैं' (भजन संहिता 17:3)।

सेवकों ने यातना देने वाले से कहा:

'प्रभु, राज्यपाल! हम थक गए हैं: चाहे हम आग में जितना भी इंधन डालें या निकोन को जितना भी झुलसाएँ, उसे कुछ भी नुकसान नहीं पहुँचता।'

इस यातना को समाप्त करते हुए, राज्यपाल ने संत को तेज घोड़ों से बांधने का आदेश दिया ताकि उन्हें ज़मीन पर घसीटा जा सके और टुकड़े-टुकड़े कर दिया जा सके; लेकिन संत, घोड़ों से बँधे हुए, उनके प्रति अपना दाहिना हाथ फैलाया

[2555] नीलम एक कीमती पत्थर है; यह विभिन्न रंगों में पाया जाता है, लेकिन आमतौर पर यह आकाश नीला, हल्का नीला, नीला और कॉर्नफ्लावर नीले रंगों में पाया जाता है।

और उन पर क्रॉस का चह्न बनाया, और घोड़े तुरंत भेड़ों की तरह शांत हो गए और वहीं जड़ें जमाकर खड़े हो गए, चाहे नौकरों ने उन्हें कतिना भी मारा-पीटा या लगाम और लगाम के डंडों से उन्हें आगे बढ़ाने की कोशशि की।

यह देखकर, यातना देने वाला क्रोधति हो गया और उसने घोड़ों के पैरों की नसें काट देने का आदेश दयिा; लेकनि, ईश्वर की आज्ञा से, वे अचानक मानव आवाज़ों में बोलने लगे, ठीक वैसे ही जैसे बलिाम के गधे ने एक बार कयिा था: *'हमारा ईश्वर स्वर्ग में है; वह वही करता है जो उसे भाता है' (भजन संहति 113:11)। संत नकिॉन की खातरि, हम भी मौत का सामना करेंगे।'*

तब राज्यपाल ने शहीद को लोहे की जंजीरों में बाँधकर एक ऊँचे पहाड़ से गहरी खाई में फेंकने का आदेश दयिा। लेकनि इसके बाद भी, शहीद को कोई चोट नहीं लगी। गरिते समय परमेश्वर के एक स्वर्गदूत ने उसकी रक्षा की और उसे उसकी जंजीरों से मुक्त करके खाई से बाहर नकिाल लयिा। संत एक बार फरि अपने अत्याचारी के सामने स्वस्थ और अक्षुण्ण होकर प्रकट हुए। उसे देखकर अत्याचारी भयभीत हो गया और फरि उससे कहा:

'नकिॉन! हमारे देवता तुम्हारी कतिनी परवाह करते हैं! क्या तुम नहीं देखते कि वे तुम्हारी देखभाल कैसे करते हैं और तुम्हारे शरीर को नष्ट नहीं करना चाहते? तो उनकी दया को पहचानो: उन्हें बलदिान चढ़ाओ और उनका मत्रि बन जाओ।'

संत ने उत्तर दयिा:

'तेरे ऊपर, तेरे देवताओं पर और उन सभी पर जो उन पर भरोसा करते हैं, शाप हो।'

तब राज्यपाल ने आदेश दयिा कि संत के चेहरे पर पत्थर मारे जाएँ, उसकी जीभ चमिटे से नकिालकर काट दी जाए; फरि उसे गगियिा नामक स्थान पर ले जाया जाए, जहाँ वह अपने शष्यिों के साथ रहता था, और वहाँ उसका सरि कलम कर दयिा जाए। इस प्रकार पवत्रि शहीद नकिोन का सरि काटा गया। यह घटना डकियिस[2556] के शासनकाल के दौरान असनिोस नदी के कनिारे एक पगिस वृक्ष[2557] के नीचे हुई। उनके शरीर को बनिा दफनाए जंगली जानवरों और पक्षयिों के खाने के लिए छोड़ दयिा गया था।

[2558]ठीक उसी दनि जब राज्यपाल क्वंटियिानस ने संत नकिोन को सरि कलम करने की सज़ा सुनाई, वह स्वयं संत अगथयिा की संपत्ति पर कब्ज़ा करने के लिए पैनोर्मस शहर के लिए रवाना हो गया, जसिे उसने कुछ समय पहले ही यातना देकर मार डाला था। और जब वह उपरोक्त नदी समिफि को पार कर रहा था, तो नाव पर उसके साथ चल रहे घोड़े अचानक बेकाबू हो गए। उन पर झपटते हुए, एक ने अपने दाँतों से उसका चेहरा नोचकर उसे वकिृत कर दयिा; दूसरे ने उस पर इतनी बुरी तरह से पैर पटक दयिा कि वह नदी में जा गरि। और वह दुर्भाग्यशाली व्यक्ति डूब गया, और उसकी दुष्ट जीवन का अंत यातनाओं में हो गया, ठीक वैसे ही जैसे संत नकिॉन ने भवष्यिवाणी की थी।

जब शहीद का पवत्रि शरीर सरि कलम कएि जाने की जगह पर बनिा दफनाए पड़ा था, तो एक बुरे आत्मा से ग्रस्त चरवाहा वहाँ भटक रहा था; संत का शरीर पाकर, वह तुरंत मुँह के बल जमीन पर गरि पड़ा, क्योंकि अशुद्ध आत्मा, जो संत की शक्ति से भगा दयिा गया था, उसे जमीन पर पटक कर एक ज़ोर की चीख के साथ उससे नकिल गया: 'हाय मेरे लिए, हाय मेरे लिए, मैं नकिोन के मुख से कहाँ भागूँ?!'

चंगा हुआ गड़रयिा गया और उस भूमि के नविासयिों को इस चमत्कार के बारे में बताया। मेस्सनिा के बशिप, ए[2559], ने यह जानकर, अपने पुरोहतिों के साथ मलिकर उस पवत्रि शहीद के दीर्घ-पीड़ति शरीर को वापस लाने के लिए प्रस्थान कयिा; और, उसे खोजकर, उसे उठा लयिा। उसे स्नानागार में अपने पवत्रि शष्यिों के शरीर भी मलि, जो आग से पूरी तरह सुरक्षति और अक्षुण्ण थे, और उसने उन्हें हमारे ईश्वर मसीह की महमिा के लिए, जो पति और पवत्रि आत्मा के साथ सदा महमिामय हैं, अपने गुरु नकिोन के साथ एक प्रसद्धि स्थान पर सम्मानपूर्वक दफनाया। आमीन।

[2556] डेसयिस – एक रोमन सम्राट और ईसाइयों का क्रूर उत्पीड़क; उसने 249 से 251 तक शासन कयिा।

[2557] पेवग वृक्ष, या पेवग, एक शंकुधारी प्रजाति है, जो हमारी चीड़ या देवदार की तरह है।

[2558] Panorumus – अब पलेर्मो शहर, जो ससिलिी द्वीप के उत्तर-पश्चमिी तट पर स्थति है।

[2559] मेसनिा – ससिलिी द्वीप पर एक बहुत ही महत्वपूर्ण शहर, जो द्वीप को इटली से अलग करने वाली जलडमरूमध्य पर स्थति है, और संतरे व नींबू के पेड़ों से भरपूर एक खूबसूरत वातावरण में बसा है।

हमारे पूजनीय पिता निकोन, गुफाओं के प्रधान, का जीवन

23 मार्च को स्मरणोत्सव

जब प्रभु ने रूस में मठवासी जीवन की एक फलदायी शाखा स्थापित करने की इच्छा की, तो उन्होंने सबसे पहले रूस के मठवासी जीवन के कुशल और परिश्रमी संस्थापक, संत एंथनी, जो एक गुफा में तपस्या कर रहे थे, के पास आदरणीय निकोन को भेजा, जो तपस्या में उनके विश्वसनीय साथी थे। भिक्षु जीवन के गुणों के चरणों में उत्सुकता से प्रगति करते हुए, हर बात में अपने गुरु और शिक्षक का अनुकरण करते हुए, आदरणीय निकोन ने स्वयं को भिक्षुओं का एक योग्य नेता और तपस्वी जीवन के आध्यात्मिक बगीचे में उनके लिए एक विश्वसनीय मार्गदर्शक साबित किया। जब लोग स्वर्गदूतों जैसा जीवन जीने की इच्छा से एंथनी के पास आते थे, तो वे स्वयं उन्हें सदाचार का उपदेश देते थे, जबकि उन्होंने आदरणीय निकोन को उनका मुंडन करने का आदेश दिया। इन दो तपस्वियों के कार्यों में मूसा और हारून से एक निश्चित समानता देखी जा सकती है, क्योंकि आदरणीय एंथनी ने माउंट अथोस[2560] से व्यवस्था लाई, ठीक वैसे ही जैसे मूसा ने माउंट सिनाई से लाई थी, जबकि आदरणीय निकोन ने हारून की तरह, पुरोहित के पद से सम्मानित होकर, एंथनी के आदेश पर कार्य किया। निकोन ने अपने सभी कर्तव्यों को नम्रता से निभाया, उन्होंने न केवल खुशियों का अनुभव किया बल्कि दुखों को भी धैर्य से सहन किया, और हर चीज़ के लिए ईश्वर का धन्यवाद किया। जब उन्होंने हमारे पूजनीय पिता थियोडोसियस का मुंडन संस्कार किया, तो उन्हें महान आध्यात्मिक आनंद मिला, जो जल्द ही रूस में मठवासी जीवन के एक महान मार्गदर्शक साबित हुए। वे प्रतिष्ठित बोयार, धन्य वरलाम, के साथ-साथ राजकुमार के प्रबंधक और प्रिय, धन्य ख़ासरत एफ्रेम, का मुंडन करने पर भी अत्यंत प्रसन्न हुए। लेकिन इन नवोदितों के कारण, उन्हें काफी दुख भी झेलना पड़ा। क्योंकि उनके मुंडन के बारे में जानकर, राजकुमार इज़्यास्लाव[2561] बहुत क्रोधित हो गए और उन्होंने आदेश दिया कि उनमें से एक—अर्थात् जिसने मुंडन किया था—को तुरंत उनके सामने लाया जाए। नौकर तुरंत निकल पड़े और धन्य निकोन को उनके पास ले आए।

संन्यासी को गुस्से से घूरते हुए राजकुमार ने पूछा:

'क्या तुमने मेरी आज्ञा के बिना बोयार और ख़ास आदमी का सिर मुंडवाया था?'

आदरणीय निकोन ने साहसपूर्वक उत्तर दिया:

'मैंने उन्हें ईश्वर की कृपा से, स्वर्गीय राजा, यीशु मसीह के आदेश पर मुंडन किया, जिन्होंने उन्हें इस कार्य के लिए बुलाया था।'

राजकुमार और भी अधिक क्रोधित हो गया और बोला:

'या तो उन्हें अपने घर लौटने के लिए मना लो, या मैं तुम्हें और तुम्हारे साथ वालों को निर्वासित कर दूँगा, और मैं तुम्हारी गुफा को खोदने का आदेश दूँगा।'

धन्य निकोन ने उत्तर दिया:

'हे स्वामी! आप जो चाहें करें! स्वर्गीय राजा से सैनिकों को हटाना मेरा काम नहीं है।'

[2560] माउंट अथोस (अथोस), जिसे ग्रीक में एजियोस ओरोस – पवित्र पर्वत – के नाम से जाना जाता है, एक संकीर्ण, पहाड़ी प्रायद्वीप है जो द्वीपसमूह (एजियन सागर) में निकला हुआ है, और यह पूर्वी ग्रीक मठवासी जीवन के केंद्र के रूप में प्रसिद्ध है। प्राचीन काल में यहाँ मठवासी जीवन शुरू हुआ था, हालांकि यह सीरिया और फिलिस्तीन की तुलना में कुछ बाद की बात है। रूसी चर्च के लिए, 17वीं सदी तक अथोस का बहुत महत्व था: यहीं पर रूसी मठवाद के जनक, परम आदरणीय एंथनी ने अपने संन्यास की शपथ ली थी; यहीं से परम आदरणीय थियोडोसियस ने अपने (पेचेरस्क) मठ के लिए स्टुडाइट नियम अपनाया था, जो फिर, वंशावलीकार के अनुसार, अन्य मठों में फैल गया; यहीं, समृद्ध मठों की पुस्तकालयों में, अथोस की यात्रा करने वाले हमारे संतों (जैसे कि सोरा के पूजनीय नीलस) ने उस समय उपलब्ध सबसे व्यापक धार्मिक शिक्षा प्राप्त की। ऑर्थोडॉक्स पूर्व के सबसे पूजनीय पवित्र स्थलों में से एक के रूप में, माउंट अथोस पर रूस, बाल्कन प्रायद्वीप और तुर्की के एशियाई क्षेत्रों से हजारों पुरुष तीर्थयात्रियों द्वारा वार्षिक रूप से यात्रा की जाती है। (महिलाओं को इस प्रायद्वीप में प्रवेश की मनाही है)। गहरी घाटियों और चट्टानी उभारों को छोड़कर, लगभग पूरा पहाड़ हरी-भरी वनस्पतियों से ढका हुआ है: यहाँ सुंदर पेड़ उगते हैं, जिनमें से कुछ पर फल लगते हैं – नींबू, संतरे और नाशपाती; पूरे खेतों में अंगूर की विभिन्न किस्मों की खेती की जाती है, जो एथोनाइट मठवासी समुदाय को अच्छी वाइन की पर्याप्त आपूर्ति प्रदान करती है, जबकि अखरोट, शाहबलूत और जैतून के पेड़ पूरे पहाड़ में प्रचुर मात्रा में बिखरे हुए हैं। वर्तमान में, माउंट अथोस पर 20 बड़े मठ, कई स्केट और 700 तक की संख्या में व्यक्तिगत कोशिकाओं की एक बड़ी संख्या है, जिनमें ग्रीक, रूसी, मोल्डोवन, बुल्गारियाई और अन्य रहते हैं।

[2561] इज़्यास्लाव यारोस्लावच, जो महान राजकुमार यारोस्लाव द वाइज़ के पुत्र और संत व्लादिमीर, प्रिसि इक्वल-टू-द-अपोस्टल्स के पोते थे, ने 1054 से 1068 तक कीव पर शासन किया।

इसके बाद, संत एंथनी और उनके साथी गुफा से निकल गए, और राजकुमार के क्रोध और धन्य निकोन के प्रति उसकी निंदा के कारण, वे एक अन्य क्षेत्र के लिए निकल पड़े।

लेकिन फिर युवकों में से एक ने राजकुमारी को इस बारे में बताया। उसने, बदले में, राजकुमार को उस ईश्वरीय क्रोध की याद दिलाई जो उसके स्वदेश, लायक्स की भूमि[2562] पर पड़ा था, क्योंकि उसके पिता, बोलेस्लाव द ब्रेव[2563] ने उन भिक्षुओं को निर्वासित कर दिया था जिन्होंने मूसा उग्रिन का मुंडन किया था, और उससे कहा:

'मेरी बात सुनिए, मेरे स्वामी, और क्रोधित न हों। आपके अपने देश में भी, इसी तरह के भिक्षुओं को निर्वासित किया गया था, और आपको उनके कारण बहुत कष्ट उठाना पड़ा था। सावधान रहें, मेरे स्वामी, कि आपके राज्य में ऐसा ही न हो।'

यह सुनकर, राजकुमार को ईश्वर के प्रकोप का भय हुआ और उसने उस धन्य व्यक्ति को रिहा कर दिया, और उसे गुफा में लौटने का आदेश दिया; साथ ही, उसने गुफा से चले गए लोगों को गुफा में लौटने की विनती भेजी। और केवल तीन दिन बीत जाने के बाद, राजकुमार के अनुरोध को मानते हुए, वे गुफा में लौट आए, जैसा कि आदरणीय एंथनी के जीवनचरित में वर्णित है।

ऐसी परीक्षा के बाद, हमारे पूजनीय पिता निकोन ने गुफा में एक कठोर जीवन व्यतीत किया; उपवास और प्रार्थना के माध्यम से उन्होंने दुष्ट आत्माओं पर कई विजयें प्राप्त कीं, और स्वयं को पूजनीय पिता एंथनी और थियोडोसियस के समकक्ष साबित किया; वे तीन दीपस्तंभ थे, जो अंधकार में चमक रहे थे और राक्षसों के अंधकार को दूर कर रहे थे।

गुफा में समुदाय काफी बढ़ जाने के बाद, धन्य निकोन एकांत में जाकर मौन का पालन करना चाहते थे। पूजनीय एंथनी से परामर्श करने और सेंट मीना के मठ के स्व्यातोगोर्स्क के एक अन्य भिक्षु,[2564] , जो बुल्गारियाई थे, से बात करने के बाद, वे उनके साथ चल पड़े। समुद्र तक पहुँचने पर, वे अलग हो गए। बुल्गेरियाई भिक्षु कॉन्स्टेंटिनोपल के लिए रवाना हुआ, और उसे समुद्र के बीच में एक द्वीप मिला, जहाँ वह बस गया। कई वर्षों तक वहाँ भूख और ठंड सहते हुए रहने के बाद, वह शांतिपूर्वक निधन कर गया; उस द्वीप को आज भी बोलगारोव कहा जाता है। जहाँ तक महान निकोन का सवाल है, वह त्मुटाराकान द्वीप[2565] गए और शहर के पास एक निर्जन स्थान पाकर, वहाँ बस गए, मौन में रहते हुए और ईश्वर की अथक सेवा करते हुए, निरंतर परिश्रम करते हुए और अपने असाधारण जीवन शैली से लोगों को चकित करते हुए। उनकी ख्याति दूर-दूर तक फैल गई; शहर और अन्य स्थानों से कई लोग परम पूजनीय के पास आने लगे; वे उनके जीवन-शैली से चकित थे, क्योंकि वे अभी तक विश्वास में दृढ़ नहीं थे और उन्होंने संन्यासी जीवन के बारे में कुछ भी नहीं सुना था। लेकिन बाद में, ईश्वर के मार्गदर्शन में और संन्यासी सद्गुणों का अनुकरण करने की इच्छा से, उन्होंने परम पूजनीय निकोन से अपने सिर मुंडवाने का आग्रह किया। संत ने उन्हें उपदेश दिया, उनका मुंडन किया, और वहाँ परमेश्वर की अति पवित्र माता को समर्पित एक चर्च का निर्माण किया। और इस प्रकार, परमेश्वर की कृपा और पूजनीय निकोन की प्रार्थनाओं से, वह स्थान फल-फूल उठा – कीव केव्स मठ के समान एक शानदार मठ का उदय हुआ।

[2566][2567]तमूतारकान के राजकुमार रोस्टिस्लाव व्लादिमीरोविच के निधन के बाद, हमारे पूजनीय पिता निकोन से उस भूमि के निवासियों ने विनती की कि वे चेर्निगोव के राजकुमार स्वयातोस्लाव यारोस्लाविच के पास जाएँ और उनसे अपने पुत्र ग्लेब को तमूतारकान के सिंहासन पर बैठने की अनुमति देने के लिए कहें। चेर्निगोव नगर पहुँचकर और सौंपी गई जिम्मेदारी को सफलतापूर्वक पूरा करने के बाद, आदरणीय पिता कीव नगर के लिए रवाना हुए और धन्य मठाध्यक्ष थियोडोसियस से मिलने के लिए पेचेरस्क मठ गए। एक-दूसरे को देखते ही, वे दोनों जमीन पर गिर पड़े और एक-दूसरे को प्रणाम किया; फिर उन्होंने एक-दूसरे को गले लगा लिया और खुशी के मारे बहुत रोए, क्योंकि वे एक-दूसरे को बहुत लंबे समय से नहीं देखे थे। इसके बाद, पूजनीय थियोडोसियस ने धन्य निकॉन से विनती की कि जब तक वे जीवित हों, तब तक उन्हें न छोड़ें।

[2562] ल्यख्स की भूमि, यानी पोलिश लोगों की भूमि।

[2563] बोलेस्लाव प्रथम द ब्रेव, पोलैंड का राजा; उसने 992 से 1025 तक शासन किया।

[2564] स्वयातोगोर्स्क, अर्थात् माउंट अथोस से।

[2565] यह द्वीप केर्च जलडमरूमध्य के पूर्वी तट पर स्थित है।

[2566] रॉस्टिस्लाव व्लादिमीरोविच, व्लादिमीर यारोस्लाविच के पुत्र, त्मूताराकान के राजकुमार थे; उन्होंने 11वीं शताब्दी के दूसरे भाग में शासन किया।

[2567] स्वेतोस्लाव यारोस्लाविच, यारोस्लाव व्लादिमीरोविच के पुत्र, चेर्निगोव के राजकुमार; उन्होंने 1054 से 1076 तक शासन किया।

नकिोन ने उनसे वादा करते हुए कहा:

'मैं जाऊँगा और बस अपने मठ का प्रबंधन करूँगा, और फरि, अगर ईश्वर को उचति लगे, तो मैं वापस आऊँगा।'

और उन्होंने वैसा ही कयिा।

सहिासनारूढ़ राजकुमार ग्लेब स्वयितोस्लावचि[2568] के साथ त्मूतारकान द्वीप पर पहुँचकर, आदरणीय संत ने अपने वादे के अनुसार मठ का संचालन कयिा और थयिोडोसयिस के पास लौट आए। पेचेरस्क मठ पहुँचने पर, उन्होंने स्वयं को पूरी तरह से आदरणीय थयिोडोसयिस को समर्पति कर दयिा और पूरी खुशी के साथ उनका आज्ञापालन कयिा। आदरणीय थयिोडोसयिस ने, अपनी ओर से, उनसे बहुत स्नेह कयिा और उन्हें अपने ही पति के समान माना; इसलएि, जब भी वे स्वयं मठ से दूर होते थे, तो वे भाइयों को उनमें सबसे बड़े, धन्य नकिोन के हवाले कर देते थे, ताकि वे उन्हें नर्देश दें और उनकी देखभाल करें। अक्सर, जब आदरणीय थयिोडोसयिस स्वयं भाइयों को आध्यात्मकि उपदेश देते थे, तो वे धन्य नकिॉन—जो शास्त्रों में पारंगत थे—को भी ऐसा ही करने का नर्देश देते थे। कई मौकों पर, जब धन्य नकिोन पुस्तकें बाँधने और बनाने में लगे होते थे (क्योंकि वे इस शलि्प में नपिुण थे), तो आदरणीय थयिोडोसयिस स्वयं उनके बगल में बैठ जाते थे और इस कार्य के लिए आवश्यक पुस्तकें तैयार करते थे। लेकनि जल्द ही, मौन धनी, आदरणीय नकिोन, एक बार फरि से अपने द्वीप पर लौटना चाहते थे। स्वयितोस्लाव द्वारा अपने भाई इज्यास्लाव को कीव से भगाकर सहिासन पर कब्ज़ा करने के बाद रूस के राजकुमारों के बीच ववािद खड़ा हो गया। वह इस घटना से उत्पन्न उथल-पुथल को सहन नहीं कर सका, जसिके बीच आत्मा की मौनता बनाए रखना अकल्पनीय था। हालाँकि, आदरणीय थयिोडोसयिस ने उनसे, जैसा कि उन्होंने पहले भी कयिा था, वनिती की कि जब तक वह जीवति हैं, उन्हें न छोड़ें; लेकनि धन्य नकिोन, क्षमा याचना करके (क्योंकि वह इस उथल-पुथल को सहन नहीं कर सकते थे और एकांत के आदी थे), दो संतों के साथ प्रस्थान कर गए और वहाँ कई वर्षों तक रहे, और अपने सामान्य तपस्या अभ्यास को जारी रखा।

आदरणीय थयिोडोसयिस के नधिन के बाद और धन्य स्टीफन के मठाधीश का पद संभालने के पश्चात्, आदरणीय नकिोन, भाईचारे के प्रेम से प्रेरति होकर, एक बार फरि आदरणीय थयिोडोसयिस से मलिने आए; उन्होंने इस बात पर दुख व्यक्त कयिा कि उन्हें अपना प्रयि मत्रि जीवति नहीं मलिा और उन्होंने अपना शेष जीवन उनके मठ में बतिाने का संकल्प लयिा। वे अक्सर संत की कब्र पर आते थे, और दुख और आनंद दोनों के आँसू बहाते थे: एक ओर अपने प्रयि भाई से बछिड़ने का शोक मनाते हुए, और दूसरी ओर ईश्वर का धन्यवाद करते हुए कि प्रकाश का ऐसा दीपक—जसिे उन्होंने, नकिोन ने, अपने ही हाथों से दव्यि आदेश की पवत्रि मठवासी वेशभूषा प्रदान की थी—रूस में स्वर्गदूतों के समान जीवन के द्वारा प्रकट हुआ था। संत स्टीफन के मठाध्यक्ष पद के बाद, भाइयों ने, नकिोन को उन सभी में सबसे बड़े मानकर—क्योंकि आदरणीय थयिोडोसयिस ने स्वयं उनसे ही मठीय कपालमोचन ग्रहण कयिा था—ईश्वर की इच्छा से और सर्वसम्मति से, उन्हें अपना मठाध्यक्ष चुना, एक ऐसे व्यक्ति के रूप में जसिका जीवन का तरीका हर तरह से फादर्स एंथनी और थयिोडोसयिस के समान था। वे सभी बातों में आज्ञापूर्वक उनका अनुसरण करते थे और उन्हें एक पति और मार्गदर्शक के रूप में सम्मानति करते थे, क्योंकि केवल उन्हीं में उन्हें उन दोनों की समानता दखिाई देती थी। कई बार बुराई का शत्रु, शैतान, ने इस आदरणीय संत के मार्ग में बाधाएँ डालने का प्रयास कयिा, ठीक वैसे ही जैसे उसने धन्य मठाधीश स्टीफन के साथ कयिा था, जो ईश्वर द्वारा उन्हें सौंपी गई भेड़ों की आत्माओं की देखभाल का कार्य था, और वह भाइयों के बीच उनके प्रति घृणा भड़काना चाहता था; लेकनि वह इसमें कभी सफल नहीं हुआ, और उसे शर्मदिगी उठानी पड़ी, और उसके अंधकार ने रेवरेंड नकिोन के पुण्य कार्यों के प्रकाश को मुरझाया नहीं।

धन्य एबॉट नकिोन ने अपने अनुयायियों के लिए सद्गुण का आदर्श बनकर ईश्वर को इतना प्रसन्न कयिा कि उनके एबॉट के पद पर रहते हुए, ईश्वर द्वारा नर्मति गुफाओं की पवत्रि चर्च चमत्कारकि रूप से पवत्रि प्रतमिाओं से सुशोभति हो गई; क्योंकि इस धन्य नर्माता की सांसारकि प्रार्थनाओं में उनके मत्रिों, पूजनीय पतृिगण एंथनी और थयिोडोसयिस की दव्यि मध्यस्थता भी शामलि थी, जन्होंने कॉन्स्टेंटनिोपल से प्रतमिा-चत्रिकार भेजे और उन्हें सोने से भुगतान कयिा। आदरणीय एबॉट नकिोन ने उन प्रतमिा-चत्रिकारों को अपने प्रयि मत्रिों, आदरणीय पति एंथनी और थयिोडोसयिस, जो दस साल पहले नधिन हो चुके थे, की आकृति दखिाई, और उन्होंने तुरंत उनमें वही प्रतमिा-चत्रिकार पहचाने ज , जो उनके सामने प्रकट हुए थे; उन्होंने उन्हें काम पर रखकर उनके पास भेज दयिा। साथ ही, उन्होंने अन्य अद्भुत चमत्कारों का भी वर्णन कयिा: उदाहरण के लिए, जब वे वापस लौटना चाहते थे, तो गुफाओं की पवत्रि चर्च और

[2568] स्वेतोस्लाव यारोस्लावचि का सबसे बड़ा बेटा ग्लेब नोवगोरोड का राजकुमार था; उसने 1067 से 1077 तक शासन कयिा।

परमेश्वर की परम पवित्र माता की प्रतिमा उन्हें दिखाई दी, जिससे उन्होंने पीछे न मुड़ने का आदेश सुना, ठीक वैसे ही जैसे उन्होंने चमत्कारिक रूप से धारा के विपरीत नौका चलाई थी, भले ही वे स्वयं धारा के साथ बहने का प्रयास कर रहे थे। प्रतिमा-चित्रकार, इस प्रकार चमत्कारिक ढंग से पहुँचने के बाद, पूजनीय निकोन की भक्ति और प्रार्थनाओं से प्रेरित होकर, बड़ी लगन से गुफाओं के पवित्र चर्च को सजाने लगे; और एक बार फिर कई चमत्कार हुए, क्योंकि वेदी में परमेश्वर की अति पवित्र माता का प्रतिमाचित्र दिव्य प्रेरणा से चमत्कारिक रूप से प्रकट हुआ[2569] और एक कबूतर उनके मुख से उड़ गया, जैसा कि गुफाओं के चर्च के विस्तृत विवरण में दर्ज है[2570] । यह सब परम पूज्य पिता एंथनी और थियोडोसियस की स्वर्गीय प्रार्थनाओं और धन्य हेग्यूमेन निकोन की सांसारिक प्रार्थनाओं के द्वारा हुआ। तब स्वयं सर्वदा स्मरणीय मठाध्यक्ष, हमारे पूजनीय पिता निकोन, जिन्होंने कीव गुफाओं के मठ को अपने दैवी जीवन के अनेक पराक्रमों से सुशोभित किया, लंबे समय की सेवा के बाद, संसार की सृष्टि के 6596वें वर्ष में, और मसीह के जन्म के 1088वें वर्ष में, प्रभु में निद्रित हुए, कीव के महा राजकुमार व्सेवोलोड यारोस्लाविच के शासनकाल के दौरान[2571] । और उनके शरीर को उसी कीव के गुफाओं वाले मठ में, उनकी अपनी गुफा में, विश्राम के लिए रखा गया, जहाँ आज भी, उनकी अविकल अवशेषों के माध्यम से, वह अपनी पवित्रता की गवाही देते हैं, जिससे वह मृत्यु के बाद भी चमत्कारिक रूप से अपने पवित्र मठ को सुशोभित करते हैं; जबकि उनकी आत्मा, उनके समान विचारधारा वाले मित्रों, परम पूजनीय एंथनी और थियोडोरस के साथ, अकथनीय के लिए स्वर्गीय निवासों में आरोहण कर गई, – ईश्वर को देखने के लिए – अब छवियों में नहीं, बल्कि आमने-सामने (1 कुरिन्थियों 13:12), और वहाँ, सच्चे तेज से दीप्तिमान, वे तीन दीपक-सा त्रैक्यिमय ईश्वर के सिंहासन के सामने खड़े हैं और, एक पिता के रूप में, हम अपने बच्चों के लिए प्रार्थना करते हैं, कि हम ईश्वर के लिए एक धर्मी जीवन के द्वारा उनकी कृपा और महिमा के वारिस बनें, जिसकी महिमा, सम्मान और आराधना अब और हमेशा और युगों-युगों तक हो। आमीन।

पवित्र शहीदों फलिटिस और लडिया की स्मृति

23 मार्च को स्मरण किया जाता है

इन पवित्र शहीदों ने सम्राट हैड्रियन के शासनकाल में[2572] कष्ट सहे। उनमें संत फलिटिस द सिनिक्लिटिकि[2573] , उनकी पत्नी लडिया, और उनके पुत्र मैसडिोन और थियोप्रेपियोस थे, जो ईसाई थे और हमेशा सच्चे परमेश्वर की सेवा में रहे। इसी कारण, उन्हें गिरफ्तार कर हैड्रियन के सामने लाया गया। पड़ताल के दौरान, सम्राट पवित्र शहीदों के बुद्धिमानी भरे उत्तरों का जवाब नहीं दे सके और उन्हें सैन्य कमांडर एम्फिलोचियस के समक्ष सुनवाई के लिए इलिरिया[2574] भेज दिया। उसने तुरंत आदेश दिया कि उन्हें सभी को एक पेड़ से लटका दिया जाए और उनके शरीर चाकुओं से काटे जाएं; फिर उन्हें टिप्पणीकार[2575] क्रोनाइड्स के साथ कैद कर दिया गया, जो मसीह में भी विश्वास करता था। उस रात, जब पवित्र शहीद प्रार्थना कर रहे थे और पवित्र भजन गा रहे थे, तो एक स्वर्गदूत उन्हें दिखाई दिया और आने वाली यातना के लिए उन्हें बल दिया। अगले सुबह, संतों को फिर से यातना देने वाले के सामने लाया गया, और उसने उनसे कहा:

[2569] मौसिया (ग्रीक: μουσιου) – मोज़ेक। यह रंग-बिरिंगे, मुख्य रूप से संगमरमर के कंकड़ को पैटर्न में व्यवस्थित करके वांछित डिज़ाइन बनाने की कुशल कला को दिया गया नाम है। मोज़ेक का उपयोग, उदाहरण के लिए, चर्चों के फर्श को पक्का करने और दीवारों को सजाने के लिए किया जाता है; यहां तक कि आइकन भी इसी तरह बनाए जाते हैं।

[2570] 16 अगस्त के मेनायोन देखें।

[2571] व्लादिमीर यारोस्लाविच, कीव के महान राजकुमार, यारोस्लाव प्रथम के पुत्र; उन्होंने 1030 से 1093 तक शासन किया; वह 1077 से महान राजकुमार थे।

[2572] रोमन सम्राट हैड्रियन 117 से 138 तक शासन किया। वह ईसाइयों का उत्पीड़क था, लेकिन, उसके द्वारा जारी एक फरमान के कारण, ईसाइयों को केवल औपचारिक आरोपों के आधार पर और उनके खिलाफ कानूनी कार्यवाही के बाद ही दंडित किया जाता था।

[2573] एक सिक्लिटिकोस महत्वपूर्ण शाही सलाहकारों और गणमान्य व्यक्तियों में से एक था जो सिक्लिटोस, यानी शाही परिषद, का हिस्सा थे।

[2574] इल्यिरिया एड्रियाटिक सागर के पूर्वी तट पर स्थित था। उत्तर-पश्चिम में, इसकी सीमा सावा नदी से और दक्षिण-पूर्व में ड्रावा से मिलती थी। आज, इस क्षेत्र में डलमेशिया और बोस्निया और हर्जेगोविना, साथ ही अल्बानिया का एक छोटा सा हिस्सा शामिल है।

[2575] कोमेंटारसियोस जेलों का प्रमुख और न्यायालयीन कार्यवाहियों का प्रभारी लिपिक था, जो आरोपियों, विशेष रूप से ईसाई शहीदों की प्रारंभिक जांच करता था।

'तुम्हें कई यातनाओं और अत्याचारों का सामना करना होगा!'

इसके बाद, उसने गंधक के साथ तांबे के एक बर्तन में तेल उबालने और पवित्र शहीदों को उसमें फेंकने का आदेश दिया। लेकिन जब उन्हें उसमें फेंका गया, तो बर्तन तुरंत ठंडा हो गया। इस चमत्कार से प्रभावित होकर, एम्फिलोचियस स्वयं मसीह में विश्वास करने लगा और, बर्तन में जाने का संकल्प लेकर, कहा:

'हे प्रभु यीशु मसीह, मेरी सहायता करो।'

तब एक आवाज़ सुनाई दी, जो उससे कह रही थी:

'तुम्हारी प्रार्थना सुनी गई है; अंदर आओ।'

यह सब जानकर, हैड्रियन, क्रोध और धमकियों से आग-बबूला होकर, रोम से इलरिया गया और आदेश दिया कि तेल से भरा एक बर्तन सात दिनों तक गर्म किया जाए और फिर सभी पवित्र शहीदों को उसमें फेंक दिया जाए। लेकिन जब संतों को बर्तन में फेंका गया, तो वे सुरक्षित और सही-सलामत रहे। इसके बाद, अपमानित सम्राट रोम लौट गया, जबकि पवित्र शहीदों ने प्रार्थना करना और ईश्वर का धन्यवाद करना शुरू कर दिया; और प्रार्थना करते हुए, उन्होंने अपना प्राण प्रभु को सौंप दिया, और उनसे शहादत के मुकुट प्राप्त किए।

6 अप्रैल

२४ मार्च (पुराना संस्करण)

हमारे पवित्र पिता सेल्यूकिया के बिशप, आर्टेमिओन की स्मृति

24 मार्च को स्मरणोत्सव

धन्य आर्टेमिओन पिसिडिया के सेलेउकिया शहर के मूल निवासी थे[2576], जहाँ उनका पालन-पोषण भी हुआ। उन्होंने पवित्र प्रेरितों के समय में एक धार्मिक जीवन व्यतीत किया, जो मसीह की शिक्षाओं से दुनिया को ज्ञान दे रहे थे। जब पवित्र प्रेरित पौलुस इस शहर में आए, तब आर्टेमिओन अपने अच्छे कर्मों के कारण सभी नागरिकों में इस प्रकार अलग दिखे, जैसे कोई दीपक छिपा न रह सके। यही थे, जो मसीह के विश्वास में दृढ़ और दैवी ज्ञान से परिपूर्ण थे, जिन्हें प्रेरित संत पौलुस ने लोगों के लिए एक चरवाहे और शिक्षक के रूप में नियुक्त किया, और उन्हें पिसिदिया के सेलेउकिया का पहला बिशप बनाया। धन्य आर्टेमिओन ने अपने सुपुर्द किए गए झुंड का अच्छी तरह से और ईश्वर को प्रसन्न करने वाले तरीके से शासन किया; वह सभी के लिए उद्धार का आश्रय, विधवाओं, अनाथों और गरीबों के लिए एक उत्कृष्ट रक्षक, और आत्मा तथा शरीर दोनों का चमत्कार करने वाला उपचारक थे; और, अपना पूरा जीवन धार्मिक रूप से और ईश्वर को प्रसन्न करने वाले तरीके से जीने के बाद, उन्होंने बहुत वृद्धावस्था में देह त्याग दिया।

हमारे पूजनीय पिता जेम्स द कन्फैसर की स्मृति।

24 मार्च को स्मरणोत्सव

[2576] *पिसीडिया*– एशिया माइनर के दक्षिण में एक प्रांत, जो मूल रूप से पम्फिलिया के साथ एक ही इकाई बनाता था और केवल महान कॉन्स्टेंटाइन (306–337) के अधीन ही उससे अलग हुआ। पिसीडिया एक कठोर, पहाड़ी क्षेत्र था, हालांकि कुछ जगहों पर उपजाऊ था। पिसीडिया के निवासी समुद्री डाकू थे और लूटपाट में लगे रहते थे। अब पिसीडिया में जंगली और डाकू जैसी प्रवृत्ति वाले करमन जनजाति के लोग रहते हैं। पिसीडिया के शहरों में, एंटिओक धार्मिक इतिहास में विशेष रूप से उल्लेखनीय है, क्योंकि यहीं पर संत पॉल द एपोस्टल ने सुसमाचार का प्रचार किया था (प्रेरितों के काम 13:14-50)।

जब अधर्मी यूनानी राजा लियो द आर्मनियिन[2577] ने सप्तम सार्वभौमकि परषिद में पवत्रि पतिाओं द्वारा नदिति, प्रतमिा-भंग की वधिर्म[2578] को पुनर्जीवति कयिा, और पवत्रि प्रतमिाओं के प्रत उिनकी श्रद्धापूर्ण भक्त के लिए कई लोगों को यातनाएँ दीं, – तब इस आदरणीय जेम्स द कन्फैसर ने भी कष्ट सहे; हमें उनके बारे में आदरणीय थयिोडोर द स्टुडाइट[2579] से जानकारी मलिती है। धन्य जेम्स उनके शष्यिों में से एक थे। पवत्रि प्रतमिाओं के लिए पूजनीय थयिोडोर के नर्विासन के बाद, उनके कई शष्यिों को यातनाएँ दी गईं; धन्य जेम्स को भी पकड़ लयिा गया और हर तरह की यातनाएँ दी गईं। जब दुष्ट लयिो द आर्मेनयिन मारा गया, तो संत जेम्स को, मसीह के अन्य कन्फेशर्स की तरह, कैद से रहिा कर दयिा गया; और, कॉन्स्टेंटनिोपल में अपने स्टूडयिो मठ में मुश्कलि से जीवति पहुँचने के बाद, वह जल्द ही नधिन कर गए और उन्हें उचति सम्मान के साथ दफनाया गया। धन्य हाइपैटयिस, जो अपने गुरु संत थयिोडोर की जगह मठाध्यक्ष के रूप में कार्यरत थे, ने उन्हें पत्र द्वारा उनके नधिन की सूचना दी; उस समय, संत थयिोडोर पहले से ही बंदीवास से लौट रहे थे और अस्थायी रूप से क्रसि्केंट के मठ में ठहरे हुए थे।

जवाब में, पूजनीय थयिोडोर ने नम्निलखिति लखिा: 'मेरे पुत्र, हमने आपसे हमारे प्रयि भाई, मसीह के स्वीकारकर्ता जेम्स के नधिन की खबर इस दुख के साथ प्राप्त की है कि हमारे हृदय में दुख है, फरि भी इस आनंद के साथ कि हमारी आत्मा में आनंद है। हम उनके लिए एक पुत्र की तरह शोक मनाते हैं, और उससे भी बढ़कर, एक ऐसा पुत्र जसिे मैं स्वयं, अपने पापों के कारण, पुत्र कहने के अयोग्य समझता हूँ। हम इस बात पर प्रसन्न हैं कि उिन्होंने वह अनंत जीवन प्राप्त कर लयिा है, जो प्रभु ने उनके लिए तैयार कयिा था। न केवल हम प्रसन्न हैं—क्योंकि वह, एक पवत्रि सदस्य के रूप में, एक उत्कृष्ट आभूषण के समान हैं—बल्कि संपूर्ण चर्च भी उनमें प्रसन्न है। वचिार कीजिए, आप उन्हें कसि प्रकार के व्यक्ति समझते थे? क्या वे एक कन्फेशर, एक शहीद, एक संत नहीं थे? उन्होंने कामुक प्रवृत्तयिों के वरिुद्ध बहादुरी से लड़ाई लड़ी, शुद्धता के द्वारा अपने शरीर को कामुकता से बचाया, और, सबसे साधारण भोजन खाने के बावजूद, उन्होंने अपने शरीर को अपनी तर्कशील आत्मा के अधीन कर दयिा। संत जेम्स इतनी कम नींद लेते थे कि उिन्हें देखने वालों को यह आश्चर्य लगता था कि वह फरि भी अच्छे स्वास्थ्य में कैसे बने रहते थे। उन्हें समय की अनुमति के अनुसार, लंबे समय तक अपने वचिारों को ईश्वर की ओर मोड़ना पसंद था, और ईश्वर के इस चंतिन में वह इतनी गहराई तक उतर जाते थे कि उिनका मन आनंद से भर जाता था। जब वह होश में आते, तो यह सब उनके भीतर एक दव्यि प्रेम को जगा देता था। कोई यह न सोचे कि मैं अपने श्रोताओं को खुश करने के लिए झूठ बोल रहा हूँ - मेरे पास गवाह हैं: ईश्वर और संत जेम्स के गुरु, जॉन, जन्हिोंने मुझे उनके बारे में ऐसी बातें बताईं जो मैं स्वयं भी हमेशा नहीं जानता था। यह सब तपस्या के जीवन का आदी होने का एक साधारण सा साधन था; जहाँ तक इस बात का सवाल है कि उिन्होंने शहादत के कार्यों में कतिना समय बतिाया, और वे कर्म कतिने महान थे - यह स्वर्गदूतों और मनुष्यों दोनों के लिए स्पष्ट था। हे दृढ़ और कीमती हृदय! उन्होंने ईश्वर के एक योद्धा की तरह, बनिा कसिी भय के अपना कारनामा पूरा कयिा। यातना देने वालों के नौकरों ने उसकी पूरी त्वचा को घावों से भर दयिा, उसके कंधों और छाती को चीर दयिा, उसका खून नकिाला, उसके शरीर को चूर-चूर कर दयिा, और उसे जमीन पर लावारसि छोड़ दयिा। उसने अधीरता की एक भी चीख नहीं नकिाली, बल्कि हमारे ईश्वर, हमारे मसीह, पुत्र के नाम पर परमेश्वर को प्रसन्न करने वाले दुखों को अंत तक सहन कयिा; क्योंकि उिसकी पवत्रि प्रतमिा के लिए दुख सहना स्वयं उसके लिए दुख सहना है। हे नम्र लोगों, यह सुनो और आनंदति होओ; हे शहीदों के प्रेमयिों, आनंदति होओ; और शैतान लज्जति हो, तथा प्रतमिा-भंजकों का समूह ततिर-बतिर हो जाए! क्योंकि, इस पवत्रि याकूब के अलावा, उन्होंने मसीह के कई अन्य स्वीकारकर्ताओं पर, हमारे अपने और हमारे नहीं, दोनों पर यातनाएँ दी हैं, उन्हें मार डाला है, भूख से मार डाला है, और इस तरह की अन्य यातनाएँ दी हैं (वशिषकर हमारे अपने पर, क्योंकि हम यीशु मसीह के संबंध में एक शरीर हैं, जो सभी के सरि हैं)।

[2577] लेओ पंचम अर्मेनयिाई, एक यूनानी सम्राट, ने 813 से 820 तक शासन कयिा।

[2578] प्रतमिा-भंजन – 8वीं सदी का एक धर्मद्रोह था जसिकी वशिषता पवत्रि प्रतमिाओं का अस्वीकार, अनादर और उत्पीड़न था। प्रतमिा-भंजन के सबसे उत्साही रक्षक सम्राट लियो द इसाउरयिन (717–741) और कॉन्स्टेंटनि कॉप्रोनमिस (741–775) थे। इस वधिर्म की नदिा सातवें सार्वभौमकि परषिद में की गई थी, जो 787 में पैट्रआर्क तारासयिस और महारानी आइरीन के अधीन नकिया शहर में आयोजति की गई थी।

[2579] संत थयिोडोर द स्टुडाइट कॉन्स्टेंटनिोपल में स्टुडाइट मठ के मठाध्यक्ष थे। प्रतमिा पूजा के बचाव के लिए संत थयिोडोर ने बहुत कष्ट सहे। संत थयिोडोर ने अपने पीछे कई लेख, पत्र, कैनन और पूजा संबंधी स्टचिैरा छोड़कर गए। इसके अलावा, संत थयिोडोर ने मठवासी नयिम में महत्वपूर्ण संशोधन कयि, जसिे स्टुडाइट मठ के नाम पर 'स्टुडाइट नयिम' के रूप में जाना जाता है (यह 'यरूशलेम नयिम' से अलग है, जसिे संत सवास द सैंक्चुडाइड ने संकलति कयिा था)।

चूंकि संत जेम्स का पूरा शरीर इन असहनीय घावों से लकवाग्रस्त हो गया था, इसलिए सबसे भयानक बीमारियों से ग्रस्त उनके शरीर को चिकित्सा देखभाल के हवाले कर दिया गया। हर दिन मृत्यु के लिए तैयारी करते हुए, उन्होंने कृतज्ञता और विनम्रता के साथ अपने जीवन का समापन किया। आप लिखते हैं कि उन्होंने अपनी मृत्यु की भविष्यवाणी की थी – यह उनके दुख सहने के कार्यों के कारण था। आपने यह भी जोड़ा कि उनके अंतिम संस्कार में बहुत से लोग उपस्थित थे, जिनमें बहुत कुलीन जन्म के लोग भी शामिल थे – यह सब ईश्वर की अज्ञात इच्छा से हुआ, क्योंकि यदि यह प्रभु की इच्छा न होती तो एक विनम्र पदवी (हालांकि आत्मा में नहीं) वाले व्यक्ति के लिए इतनी बड़ी भीड़ इकट्ठा न होती। संत जेम्स स्वर्ग में आरोहण कर चुके हैं और अपने साथी पीड़ितों में शामिल हो गए हैं; इस प्रकार, स्वीकार करने वालों और शहीदों की संख्या बढ़ गई है; अत; स्वर्ग जेम्स की आत्मा पर आनंदित और हर्षित है, जिनकी प्रार्थनाओं के द्वारा हम, भाइयों, उद्धार पाएँगे। उन्होंने अपने श्रम के योग्य पुरस्कार प्राप्त किया है।

धन्य और सच्चे धर्मात्मा वे हैं जो उनके सम्मानजनक अंतिम संस्कार के लिए एकत्रित हुए; वे शहीदों के सच्चे प्रशंसक हैं, और उनकी नियति भी उसी की तरह हो जिसकी उन्होंने सम्मान किया। जहाँ तक उनकी पवित्र अवशेषों का प्रश्न है, यदि ईश्वर को प्रसन्न हो, तो मैं उनका प्रबंध करूँगा, जैसा कि मैंने नियमों में लिखा है। एक-दूसरे को पवित्र चुम्बन से चूमो; और यह पत्र सभी भाइयों को पढ़कर सुनाओ। आपको उनकी कृपा से आर्चबिशप और पैट्रिआर्क निकिफोरस, प्रोटोप्रेज़बिटर, ओइकोनोमोस और अन्य भाइयों ने चूमा है। प्रभु आप सबके साथ रहें। आमीन।

यहाँ संत थियोडोर द स्टुडाइट का एक पत्र है, जिसमें मसीह के इस सम्मानित कन्फेशर, जेम्स, के जीवन और कष्टों का स्पष्ट पता चलता है; प्रभु उनकी प्रार्थनाओं के द्वारा हमें भी अपने संतों के भाग में अनंतकाल तक हिस्सा प्रदान करें। आमीन।

कीव-पेचेरस्क लाव्रा में घटित एक चमत्कार की स्मृति।

24 मार्च को स्मरणोत्सव

कीव के दो कुलीन व्यक्ति, जॉन और सर्गियस, गहरी दोस्ती से बँधे हुए थे। एक दिन वे गुफाओं के ईश्वर-निर्मित चर्च[2580] आए और उन्होंने देखा कि परमेश्वर की परम पवित्र माता की चमत्कारी प्रतिमा सूर्य की रोशनी से भी अधिक तेज प्रकाश से चमक रही थी। इस पवित्र अवशेष के सामने, उन्होंने एक भाईचारे का बंधन बनाया। कई साल बीत गए। जॉन घातक रूप से बीमार पड़ गया। उसने गुफाओं के मठाधीश, धन्य निकोन को बुलाया, और उनकी उपस्थिति में, अपने सामान को गरीबों में बाँट दिया; जो हिस्सा उसने अपने पाँच वर्षीय पुत्र ज़कारियास के लिए अलग रखा था - एक हज़ार रजत ह्रिवनिया[2581] और सौ सोने के ह्रिवनिया - वह उसने संरक्षण के लिए सर्गियस को सौंप दिया; एक दोस्त और वफादार भाई के रूप में, जॉन ने अपने बेटे ज़कारियास की देखभाल का जिम्मा सर्गियस को सौंपा, और उससे कहा कि जब उसका बेटा वयस्क हो जाए तो वह उसे चाँदी और सोना सौंप दे। इन व्यवस्थाओं को करने के बाद, जॉन का जल्द ही निधन हो गया। जब ज़कारिया पंद्रह वर्ष का हुआ, तो वह सर्जियस से अपना चाँदी और सोना वापस लेना चाहता था। शैतान के प्रलोभन में आकर, सर्जियस, अमीर बनने के विचार से, उसकी आत्मा और शरीर दोनों को बर्बाद करने की साजिश रचने लगा। उसने उस युवक से कहा:

'तुम्हारे पिता ने अपनी सारी संपत्ति ईश्वर को दे दी; चाँदी और सोना उनसे माँगो; यदि वह दया दिखाएँ तो वह तुम्हें दे देंगे। जहाँ तक मेरी बात है, मैं न तो तुम्हारे पिता का और न ही तुम्हारा एक भी सिक्का उधार हूँ। यह सब तुम्हारे पिता का किया हुआ था—अपनी मूर्खता में, उन्होंने अपनी संपत्ति दान में दे दी, और तुम्हें बेसहारा और दुखी छोड़ दिया।'

यह सुनकर, वह युवक अपने खोए हुए धन पर रोने लगा। इसके बाद, वह सर्जियस के पास इस अनुरोध के साथ गया:

[2580] स्वाभाविक रूप से, यह चर्च कीव गुफाओं के मठ (कीव में) के पहले संतों द्वारा परमेश्वर की परम पवित्र माता के निद्रारोहण की स्मृति में बनाया गया था।

[2581] शब्द 'hryvnia' आमतौर पर संस्कृत शब्द 'sheya' से व्युत्पन्न माना जाता है, क्योंकि hryvnia मूल रूप से गर्दन में आभूषण के रूप में पहनी जाने वाली सोने या चांदी की एक चेन को दर्शाता था (देखें उत्पत्ति 41:42; नीतिवचन 1:9; सिरिख 6:25)। हालाँकि, बाद में इस शब्द का अर्थ सोने और चांदी के सिक्कों को बताने लगा, जिनका विभिन्न समयों पर अलग-अलग मूल्य होता था।

'अगर आप मुझे मेरी विरासत का आधा हिस्सा दे दें, तो आधा हिस्सा आपके पास रहेगा।'

हालाँकि, सेरजियस ने उसके पिता और स्वयं उस युवक दोनों को कड़ी फटकार लगाई। फिर ज़कारियास ने एक तिहाई, फिर एक दसवाँ हिस्सा माँगा, और जब उसे एहसास हुआ कि उससे सब कुछ छीन लिया गया है, तो उसने सेरजियस से कहा:

'अगर आपने अपने लिए कुछ नहीं लिया है, तो पेचेर्स्क चर्च में आकर परम पवित्र ईश्वर की माता की चमत्कारी प्रतिमा के सामने, जिसके सामने आपने मेरे पिता के साथ भाईचारे की प्रतिज्ञा की थी, मुझसे शपथ लीजिए।'

सर्गेयस ने मना नहीं किया; वह चर्च गया और परम पवित्र माता ईश्वर की प्रतिमा के सामने खड़ा होकर शपथ ली कि उसने न तो चाँदी के एक हजार हिर्विनिया और न ही सोने के सौ हिर्विनिया लिए हैं। लेकिन जब वह प्रतिमा को चूमना चाहता था, तो वह उसके पास नहीं जा सका। फिर, जब वह दरवाजे से बाहर जा रहा था, तो वह अचानक चिल्लाया:

'हे पूजनीय एंथनी और थियोडोरस! इस दुष्ट दूत को मुझे नष्ट करने न दें, बल्कि परमेश्वर की परम पवित्र माता से विनती करें कि वे मुझ पर हावी अनेक राक्षसों को दूर भगा दें। उन्हें मेरे कमरे से पात्र में सीलबंद चाँदी और सोना ले जाने दें!'

सभी पर भय छा गया, और तब से किसी को भी परम पवित्र ईश्वर की माता की प्रतिमा के सामने शपथ लेने की अनुमति नहीं दी गई। संदेशवाहकों ने सीलबंद पात्र लिया और उसमें दो हज़ार हिव्रिया चाँदी और दो सौ हिव्रिया सोना पाया: इस प्रकार प्रभु, दया के दाता, ने धन को दोगुना कर दिया। ज़कारियास ने सारा पैसा एबॉट जॉन के पूर्ण प्रबंध में रख दिया; उन्होंने स्वयं मठवासी संन्यास ग्रहण किया और पवित्र पेचेरस्क मठ में अपना जीवन समाप्त किया।

इस पैसे से, गुफाओं के मुख्य चर्च के पास जॉन द फॉररनर को समर्पित एक चर्च का निर्माण किया गया। यह चर्च कुलीन जॉन और उनके पुत्र जकरियाह की स्मृति में, जिनके पैसे थे, और मसीह परमेश्वर और सर्व पवित्र कन्या मरियम की महिमा के लिए बनाया गया था, जिनकी इस स्थान पर और भी अधिक महिमा होती है, जिससे उनकी अद्भुत कृपा कभी दूर न हो। आमीन।

7 अप्रैल

२५ मार्च (पुराना संस्करण)

परमेश्वर की अति पवित्र माता की घोषणा पर उपदेश

25 मार्च को स्मरणोत्सव

जब समय परिपूर्ण हो गया और दिव्य अवतार के माध्यम से मानव जाति के उद्धार का समय निकट आ रहा था, तो यह आवश्यक था कि एक ऐसी शुद्ध, निर्दोष और पवित्र कुँवारी मिलनी चाहिए जो अदेह ईश्वर को धारण करने और हमारे उद्धार के कार्य में सेवा करने के योग्य हो। और ऐसी एक कुँवारी मिली: एक कुँवारी—जो सभी पवित्रता से अधिक पवित्र, किसी भी तर्कशील प्राणी से परे अतुलनीय रूप से निर्मल, सभी पवित्र चीजों से अधिक पवित्र, अत्यंत पवित्र और परम धन्य कुँवारी मरियम, पवित्र और धर्मी ईश्वर-वाहक माता-पिता योआकिम और अन्ना की संतान, अपने माता-पिता की प्रार्थनाओं और भक्ति का फल, एक राजसी और पादरिया वंश की बेटी। उसे एक पवित्र स्थान पर, सोलोमन के मंदिर में पाया गया—वह जिसे स्वयं ईश्वर की जीवित कलीसिया बनने का भाग्य प्राप्त था। मंदिर के भीतर, 'पवित्रतम पवित्र' के रूप में जाने जाने वाले पवित्र स्थल में, वह मिलीं जिन्हें सभी संतों के परम पवित्र वचन को जन्म देना था (परम पवित्र थिओटोकोस को समर्पित अकथिस्ट स्तोत्र से)। वहाँ, अपने राज्य की महिमा की ऊँचाइयों से, प्रभु ने अपनी दासी की विनम्रता पर दृष्टि डाली और उन्हें—जो सभी पीढ़ियों से पूर्व-चुनी हुई थीं—अपने शाश्वत वचन की माता बनने के लिए चुना।

संतों के विश्वसनीय वृत्तांतों से हमें पता चलता है कि महादूत द्वारा घोषणा से पहले ही, उसे रहस्यमय रूप से यह पूर्वसूचना दे दी गई थी कि ईश्वर—वचन—उसके माध्यम से अवतार लेंगे। लगभग बारह वर्ष तक मंदिर में रहते हुए, परम पवित्र कुँवारी ने न केवल अखंड, भक्तिपूर्ण प्रार्थना और दैनिक सिलाई के कार्य को, बल्कि पवित्र धर्मग्रंथों के

अध्ययन और दनि-रात प्रभु की व्यवस्था का ज्ञान प्राप्त करने को भी समर्पति कयिा। संत एपफिानयिस और एम्ब्रोस लखिते हैं कि वह एक असाधारण बुद्धि से संपन्न थीं, उन्हें सीखना पसंद था, और वह पवत्रि धर्मग्रंथों को पढ़ने में लगनशील थीं। चर्च के इतहिासकार जॉर्जी केड्रनि[2582] बताते हैं कि, अपने माता-पतिा के जीवति रहते हुए ही, उन्होंने यहूदी धर्मग्रंथों का गहन अध्ययन कर लयिा था। वे अक्सर यशायाह की भवष्यिवाणी के वचनों को पढ़ती थीं: *'देखो, एक कुँवारी गर्भधारण करेगी और एक पुत्र को जन्म देगी, और वे उसका नाम इम्मानुएल रखेंगे'* (यशायाह 7:14), जसिका अर्थ है 'परमेश्वर हमारे साथ है'[2583] , वह न केवल आने वाले लंबे समय से प्रतीक्षति मसीहा के लिए, बल्कि उस कुँवारी के लिए भी जो उसे गर्भ में धारण करने और जन्म देने के लिए नयित थी, तीव्र प्रेम से परपिूर्ण थी। साथ ही, उन्होंने इस बात पर भी मनन कयिा कि परमेश्वर के पुत्र, इम्मानुएल[2584] की माँ बनना कतिना बड़ा सम्मान था, और यह रहस्य कतिना अगोचर था—कि एक कुँवारी माँ बने। भवष्यिवाणयिों से यह जानकर कि मसीहा के आगमन का समय नजदीक आ रहा था, कि राजदंड पहले ही यहूदा से ले लयिा गया था और दानयिेल के सप्ताह समाप्त होने वाले थे, वह वश्विास करती थीं कि यिशायाह द्वारा बताई गई कुँवारी का जन्म पहले ही हो चुका होगा, और वह अक्सर अपने हृदय की गहराई से आहें भरती थीं और मन ही मन प्रार्थना करती थीं कि ईश्वर उन्हें इस कुँवारी को देखने का सौभाग्य दें और, यदि संभव हो, तो कम से कम उनकी सबसे नीचली दासी बनने का अवसर दें।

एक दनि, जब वह अपनी प्रथा के अनुसार मध्यरात्रि की प्रार्थना में खड़ी थीं और ईश्वर से ऐसी प्रबल इच्छाएँ व्यक्त कर रही थीं, तो अचानक ऊपर से एक असाधारण प्रकाश उन पर चमका और उन्हें घेरे लयिा। इस प्रकाश के बीच से एक आवाज़ ने उनसे कहा:

'तू मेरे पुत्र को जन्म देगी!'

अत्यंत पवत्रि कन्या के हृदय में जो आनंद भर गया था, उसे शब्दों में बयां करना असंभव है, और न ही उस भाव को जसिे वह अपने सृष्टकिर्ता, ईश्वर, का धन्यवाद करते हुए धरती पर झुकी थी। इस प्रकार प्रभु ने *'अपनी दासी की नम्रता पर अनुग्रह की दृष्टि डाली'* (लूका 1:48)। वह, जो ईश्वर के प्रति प्रेम से प्रेरति होकर मसीहा की पवत्रि माता के रूप में सेवा करना चाहती थीं, स्वयं को उनके माता और सारी सृष्टि की अधष्ठिात्री बनने के योग्य पाईं। यह रहस्योद्घाटन उन्हें उनके जीवन के बारहवें वर्ष में, सगाई से दो साल पहले हुआ था, और उन्होंने यह रहस्य प्रभु के स्वर्गारोहण तक कसिी को नहीं बताया। इस रहस्योद्घाटन के बाद, उन्हें पता चला कि गर्भाधान का रहस्य उनके कुँवारी गर्भ में होने वाला था, और उन्होंने उस समय का इंतजार कयिा जब यह रहस्य पूरा होना था।

जब, संत इवोड[2585] की गवाही के अनुसार, अति पवत्रि कुँवारी ने सुलैमान के मंदरि में ग्यारह वर्ष बति लिए थे और बारहवाँ वर्ष शुरू हो गया था, और जॉर्ज केड्रनि की गवाही के अनुसार, वह चौदह वर्ष की आयु में पहुँच चुकी थीं, तो बशिप और पुरोहतिों ने उन्हें यह नर्दिेश देना शुरू कर दयिा कि, वैध रीति-रिवाज के अनुसार , उन्हें मंदरि से एक घर में चले जाना चाहिए और अपनी उम्र की अन्य कन्याओं की तरह ववािह कर लेना चाहिए। लेकनि उन्होंने उन्हें उत्तर दयिा कि, जन्म से ही, उन्हें उनके माता-पतिा द्वारा केवल ईश्वर को समर्पति कयिा गया था, और उन्होंने उनसे हमेशा के लिए अपनी कुँवारी अवस्था बनाए रखने का वादा कयिा था; इसलिए, उनके लिए कसिी नश्वर पुरुष के साथ मलिना असंभव था, और दुनयिा में कोई भी चीज़ उन्हें ववािह करने के लिए मजबूर नहीं कर सकती थी, क्योंकि उन्होंने अपनी कुँवारी अवस्था को अपने अमर ईश्वर को समर्पति कर दयिा था।

मुख्य पुरोहति इस व्रत की खबर से चकति थे, क्योंकि पृथ्वी पर पहले कभी कोई ऐसी कन्या नहीं हुई थी जसिने ईश्वर से अपनी कुँवारी अवस्था को हमेशा के लिए बनाए रखने का वादा कयिा हो, और वह इस मामले में दुनयिा में पहली थीं। वे आपस में परामर्श करने लगे कि उन्हें क्या करना चाहिए। वे नहीं चाहते थे कि वह मंदरि में रहना जारी रखे; वे तो

[2582] जॉर्जयिोस केद्रनिोस 11वीं शताब्दी के अंत और 12वीं शताब्दी की शुरुआत के एक बीजान्टनि लेखक थे। उनके कार्यों में, 'सनिोपसि इस्टोरयिन' वशिष रूप से प्रसदि्ध है। यह कृति यहूदी और रोमन लोगों तथा बाइजेंशयिम के इतहिास को कवर करती है, लेकनि यह वशिष योग्यता की नहीं है, क्योंकि यह कई जगहों पर अन्य ऐतहिासकि कृतयिों, वशिष रूप से जॉन स्क्लाइत्ज़ेस और जॉर्ज सन्सिेलस के वृत्तांतों का पुनर्कथन है।

[2583] यह भवष्यिवाणी संत मत्ती के सुसमाचार (मत्ती 1:23) में दर्ज है।

[2584] इमैनुएल वह नाम है जो भवष्यिवक्ता यशायाह (यशायाह 7:14) द्वारा यीशु मसीह को दयिा गया था। हब्रिू से अनुवादति, इसका अर्थ है 'ईश्वर हमारे साथ है'।

[2585] संत इवोद – सत्तर प्रेरतिों में से एक।

उसे भीतरी परदे के पार प्रभु के मंदिर में और अधिक प्रवेश करने की अनुमति भी नहीं देना चाहते थे; फिर भी, साथ ही, वे ईश्वर को अपना जीवन समर्पित कर चुकी एक कुंवारी को पति के लिए सगाई करने की हिम्मत नहीं कर सके, और वे इस बात को लेकर असमंजस में थे कि ईश्वर को प्रसन्न करने वाले तरीके से उसकी ब्रह्मचारी, कुंवारी जीवन की व्यवस्था कैसे करें, ताकि उनका क्रोध न भड़के। वे दोनों को एक बड़ा पाप मानते थे: एक ओर तो एक ऐसी कन्या को, जिसने ईश्वर से शाश्वत कुँवारी रहने का व्रत लिया था, विवाह के लिए मजबूर करना, और दूसरी ओर एक परिपक्व कन्या को 'पवित्रतम कक्ष' में रखना। नाइसा के संत ग्रेगरी इस बारे में निम्नलिखित कहते हैं: 'जब वह अभी भी अपनी युवावस्था में थी, तो पुरोहितों ने उसकी देखभाल की, ठीक वैसे ही जैसे उन्होंने मंदिर में शमूएल की देखभाल की थी; लेकिन जब वह परिपक्व हो गई, तो उन्होंने आपस में सलाह-मशविरा किया कि अब उसके साथ क्या किया जाए ताकि ईश्वर के क्रोध को न भड़काया जाए।' चर्च के इतिहासकार निकिफ़ोरस कैलिस्टोस[2586] इसी घटना का वर्णन इस प्रकार करते हैं:

जब पवित्र कुँवारी वयस्क हुईं, तो पुरोहितों ने उनके मामलों को सबसे अच्छी तरह से व्यवस्थित करने के लिए आपस में एक परिषद की, ताकि वे उनके पवित्र शरीर का अपमान करने के दोषी न पाए जाएँ, इस डर से कि यदि वे उन्हें शादी कर दें और उन्हें—जो सर्वदा के लिए केवल ईश्वर की ही थीं—विवाह के कानून के अधीन कर दें, तो वे पवित्रता का अपमान करने का पाप कर देंगे; साथ ही, उन्होंने यह तर्क दिया कि इतनी उम्र की कन्या का पवित्र स्थल में रहना उचित नहीं था, कि कानून इसकी अनुमति नहीं देता था, और यह एक पवित्र स्थान के लिए अनुचित और अयोग्य था। और इस प्रकार, वाचा के सन्दूक के पास जाकर और एक उत्कट प्रार्थना अर्पित करके, उन्होंने, जैसा कि धन्य जेरोम बताते हैं, प्रभु से उत्तर प्राप्त किया कि एक योग्य पति की तलाश की जाए, जिस पर उस कन्या को विवाह के बहाने और रूप में भरोसा किया जा सके, ताकि वह अपनी निर्मल कुँवारीपन को बनाए रख सके। ऐसे व्यक्ति को खोजने के संबंध में, प्रभु की सलाह इस प्रकार थी: दाऊद के घर और कुल के अविवाहित पुरुषों को चुनना और उनके डंडों को वेदी पर रखना—जिसका डंडा लहलहा उठेगा, उसी व्यक्ति को पवित्र कुँवारी का भरोसा सौंपा जाना था। उसी समय, मक्काबीयों द्वारा स्थापित मंदिर के समर्पण का पर्व मनाया गया; यह पर्व 25 नवंबर को शुरू हुआ और 3 दिसंबर को समाप्त हुआ। आसपास के शहरों से लोगों की एक बड़ी भीड़ मंदिर में जमा हुई; दाऊद के वंश के पुरुष, कुँवारी मरियम के रिश्तेदार भी इस पर्व के लिए आए। जॉर्जी केड्रिन बताते हैं कि पवित्र पुरुष, प्रभु के अग्रदूत के पिता, महान जकरियाह ने दाऊद के वंश के बारह अविवाहित पुरुषों को इकट्ठा किया—जिनमें संत जोसेफ, जो पहले से ही वृद्ध और धर्मी पुरुष थे—उन्होंने उनकी लाठियाँ लीं और रात के लिए उन्हें पवित्र वेदी में रख दिया, यह कहते हुए: 'हे प्रभु परमेश्वर, कन्या के वर के रूप में योग्य पुरुष को प्रकट करो!' अगले दिन सुबह, जब पुरोहित उन बारह पुरुषों के साथ मंदिर में प्रवेश किए, तो जोसेफ की लाठी पर फूल खिले हुए पाए गए, और उस पर, जैसा कि जेरोम गवाही देते हैं, एक कबूतर बैठा था जो ऊपर से उतरा आया था। तब सभी ने यह परमेश्वर की इच्छा मान ली कि कन्या को जोसेफ की देखभाल में सौंपा जाए। कुछ लोगों का मानना है कि परम पवित्र कुँवारी, जिन्होंने हर तरह से सगाई से बचा था और अपनी कुँवारीपन की पवित्रता के प्रति गहरी चिंता रखती थीं—ताकि उन्हें कोई ठेस न पहुँचे—उन्हें भी एक विशेष प्रकटकिरण मिला, ताकि वह अपने चचेरे भाई और मंगेतर, यूसुफ, के पास जाने में संकोच न करें, एक धर्मी, ईश्वर-भयभीत और पवित्र पुरुष, न कि कामुक वैवाहिक संबंध के लिए, बल्कि दैवीय विधान द्वारा निर्धारित उनकी कुँवारीपन की रक्षा और पालन के लिए। सगाई पूरी होने पर, संत जोसेफ ने परम पवित्र कुंवारी को मंदिर के महापुजारी के हाथों से एक शुद्ध और निर्दोष मिलन के लिए प्रभु के मंदिर से बाहर ले लिया, जो उनकी कुँवारीपन की शोभा को बिगाड़ने वाला नहीं था। और संत जोसेफ केवल उनके नाममात्र के पति थे, बल्कि वास्तव में उनकी कुँवारीपन के पवित्र रक्षक और उनके पवित्र जीवन के सेवक थे, जो महान पवित्रता से परिपूर्ण था।"

अपने मंगेतर के घर में रहते हुए, परम पवित्र कुँवारी ने उस जीवन-शैली को नहीं बदला जो उन्होंने पहले परम पवित्र स्थान में बिताई थी। उन्होंने स्वयं को केवल भक्तिपूर्ण प्रार्थना, पवित्र धर्मग्रंथों के पाठ, और स्त्रियों के पारंपरिक कढ़ाई-काम के लिए समर्पित किया। जोसेफ का घर उनके लिए, एक प्रकार से, ' ' (प्रार्थना का घर) था, जहाँ से वह कभी बाहर नहीं गईं, बल्कि हमेशा एकांत में, उपवास और मौन में रहीं, और केवल अपने परिवार, यानी जोसेफ की बेटियों से ही बात करती थीं।

[2586] निकिफोरस कैलिस्टोस, कॉन्स्टेंटिनोपल के हागिया सोफिया मठ के 14वीं सदी के एक चर्च इतिहासकार और भिक्षु थे। उनका उल्लेखनीय कार्य, *चर्च हिस्ट्री* (18 पुस्तकों में), बीजान्टिन सम्राट फोकास (611) की मृत्यु तक की अवधि को कवर करता है। कैलिस्टोस की मृत्यु 1350 में हुई।

जॉर्जी केड्रनि उनके बारे में बताते हैं: 'मरयिम अपने मंगेतर के घर में उपवास करते हुए और लोगों के बीच बाहर जाने से बचते हुए रहीं, अपना समय यूसुफ की दो बेटियों के साथ बिताती थीं; वह उनसे केवल कभी-कभार, जब आवश्यक होता था, बात करती थीं, और तब भी केवल संक्षेप में।'

संत इवोद की गवाही के अनुसार, यूसुफ के घर में उनके चार महीने के प्रवास के बाद, परमेश्वर के वचन के अवतार का समय आ गया—वह समय जिसका संपूर्ण जगत ने सनातन काल से प्रतीक्षा किया था, जिसमें हमारा उद्धार शुरू हुआ। और परमेश्वर ने स्वर्गीय आत्माओं में से एक, जो उनके सिंहासन के सबसे निकट है, महादूत गब्रियिल को भेजा, जो उस रहस्य की खबर लेकर आया था, जो युगों-युगों से छिपा हुआ था और स्वयं स्वर्गदूतों के लिए भी अज्ञात था – ताकि वह परम पवित्र कुँवारी को परमेश्वर के पुत्र की अद्भुत गर्भधारण की घोषणा करे, जो सभी मानवीय समझ और प्रकृति से परे है। संत लूकस सुसमाचार में इस घोषणा के बारे में इस प्रकार लिखते हैं: *'छठे महीने में, स्वर्गदूत गब्रियिल परमेश्वर के पास से भेजा गया'* (लूका 1:26)। यह यूहन्ना बपतिस्मादाता की गर्भधारण के छठे महीने के बाद का समय था, और वही स्वर्गदूत जिसे ज़कार्याह को यूहन्ना की गर्भधारण की सूचना देने के लिए भेजा गया था, उसे सबसे पवित्र कुँवारी को मसीह की गर्भधारण की सूचना देने के लिए भेजा गया; और उसे छठे महीने में इसलिए भेजा गया ताकि छह महीने का अग्रदूत, अपनी माँ के गर्भ में, प्रभु की माता के आगमन को भांपकर आनंद से उछल पड़े। *'दूत गाब्रियिल को गलील के नासरत नामक एक नगर में भेजा गया'* (लूका 1:26)। उस समय गलील एक मूर्तिपूजक प्रदेश था, यद्यपि वहाँ आंशिक रूप से इस्राएलियों का निवास था, इसीलिए पवित्रशास्त्र इसे *'मूर्तिपूजक गलील'* कहता है (यशायाह 9:1)। हालाँकि, इस्राएलियों के बीच इसे सबसे नीचले क्षेत्र के रूप में माना जाता था और इससे घृणा की जाती थी, क्योंकि इसमें पापी और अविश्वासी लोग रहते थे; इसीलिए यहूदियों ने, इसके प्रति अपनी घृणा में, कहा: *'क्या मसीह गलील से आ सकता है?'* (यूहन्ना 7:41); *'जाँच-पड़ताल करो और तुम देखोगे कि गलील से कोई भविष्यवक्ता नहीं उठता'* (यूहन्ना 7:52)। इसी कारण से, गलील का एक नगर नासरत, उनके द्वारा सबसे तुच्छ, सबसे दयनीय और सबसे कम महत्वपूर्ण नगर माना जाता था, यहाँ तक कि उन्होंने कहा: *'क्या नासरत से कोई अच्छा कुछ निकल सकता है?'* (यूहन्ना 1:46)।

लेकिन आइए हम अपना ध्यान परमेश्वर की प्रसन्नता पर केंद्रित करें। उन्होंने अपनी परम पवित्र माता को कहाँ रहने के लिए चुना? न तो यहूदिया के देश में, न ही पवित्र और महान शहर यरूशलेम में, बल्कि गलील में, जिसे पापी माना जाता था, नासरत के गरीब कस्बे में, ताकि, एक ओर, वह यह दिखा सके कि वह पापियों के लिए पृथ्वी पर आया था: *'मैं धर्मी को नहीं, बल्कि पापियों को पश्चाताप के लिए बुलाने आया हूँ' उन्होंने कहा* (लूका 5:32), और अविश्वासी अन्यजातियों में से अपने लिए एक विश्वासयोग्य कलीसिया का निर्माण करे; और, दूसरी ओर, ताकि यह स्पष्ट हो जाए कि वह नम्र, बहिष्कृत और दीनों पर दया की दृष्टि से देखता है, न कि घमंडी और कुलीन लोगों पर। क्योंकि जब परमेश्वर वचन को पापियों के पास स्वर्ग से उतरने की प्रसन्नता हुई, तो उसने अपनी महिमा की ऊँचाई से यह देखने के लिए नीचे देखा कि अधिक पापी कहाँ थे; और यहूदिया में उसने यरूशलेम के लोगों को देखा, जो स्वयं को धर्मी समझते थे और मनुष्यों के सामने स्वयं को धर्मी ठहराते थे, जबकि गलीलियों को सभी तुच्छ समझते थे और किसी से भी अधिक पापी मानते थे। इस प्रकार, कथित पवित्र यहूदिया से होते हुए, प्रभु कथित पापी गलील में उतर आए, और यरूशलेम, उस महान, सम्मानित और गौरवशाली नगर से भी होते हुए; वे नासरत, एक गरीब और तुच्छ समझे जाने वाले छोटे से कस्बे में उतर आए, और इस संसार में अपने लिए सबसे नीची जगह चुनी और स्वयं को एक दास और एक पापी के समान भी बना लिया।

नज़रेथ विनम्र था, फिर भी उस पर कितनी महान कृपा प्रदान की गई! इज़राइल के अन्य सभी महान शहर, जो स्वर्ग तक पहुँचते थे, उन्हें भी इसके योग्य नहीं ठहराया जा सकता था। विनम्र नज़रेथ में – कन्या, सभी पवित्र स्वर्गदूतों में सर्वोच्च, जिनके गर्भ में असीम मसीह-ईश्वर, जो स्वर्ग से भी विशाल हैं, का निर्माण हुआ। यहीं पर महादूत गब्रियिल भेजे गए; यहीं पर पवित्र आत्मा अवतरित हुआ; यहीं पर वचन परमेश्वर देहधारी हुए; क्योंकि जहाँ नम्रता है, वहाँ परमेश्वर की महिमा प्रकाशित होती है। घमंडी नगर मसीह को भाते नहीं थे, परन्तु नम्र नगर उन्हें भाते हैं। अज्ञात नगर नासरत में मसीह का गर्भाधान हुआ, जबकि महिमामय नगर यरूशलेम में उन्हें सूली पर चढ़ाया गया। छोटे बेतलहम में उनका जन्म हुआ; महान यरूशलेम में, उन्हें मृत्युदंड सुनाया गया। प्रभु स्वयं को विनम्र लोगों के सामने प्रकट करते हैं, जबकि अहंकारी उन्हें स्वयं से दूर भगा देते हैं।

क्रीट के संत एंड्रयू महादूत के परम पवित्र कुँवारी के पास भेजे जाने के बारे में इस प्रकार कहते हैं: 'ईश्वर अपने प्रमुख स्वर्गदूतों में से एक को रहस्य की घोषणा करने का आदेश देते हैं और, अपनी महिमा के एक इशारे से, इस प्रकार कहते हैं: "गैब्रियिल! 'गालील के एक नगर नासरत जाओ: वहाँ मरयिम नाम की एक कुँवारी रहती है, जो यूसुफ नामक एक

पुरुष से सगाईशुदा है।' 'जाओ,' प्रभु कहते हैं, 'नासरत।' क्यों? क्योंकि सर्वोच्च, काँटों की भूमि से मिली सबसे मीठी गुलाब की तरह, कुँवारीपन की सबसे वांछनीय सुंदरता को स्वीकार करते हैं। 'नसरत जाओ', ताकि भविष्यवाणी पूरी हो सके: *'उसे नसरनी कहा जाएगा'* (मत्ती 2:23)। तो, नसरनी किसे कहा जाएगा? उसी को जिसे बाद में नथनाएल 'परमेश्वर का पुत्र' और 'इस्राएल का राजा' कहेंगे। गैब्रियल को भेजा जाता है, जिन्हें पहले दिव्य रहस्यों को घोषित करने की आज्ञा दी गई थी, जैसा कि दानियेल भविष्यवक्ता की पुस्तक में स्पष्ट रूप से लिखा है । ईश्वर गैब्रियल से कहते हैं, 'गलील के एक नगर नासरत जाओ'; और वहाँ पहुँचकर, वह कुँवारी को वह आनंद घोषित करता है जो कभी हव्वा ने खो दिया था। सावधान रहो कि उसे कष्ट न पहुँचाओ; क्योंकि तुम्हारा यह अभिवादन दुख का नहीं, बल्कि आनंद का, संकट का नहीं, बल्कि सांत्वना का संकेत है। और मानव जाति के लिए इससे बड़ी खुशी और क्या हो सकती है कि मानव स्वभाव ईश्वर के स्वभाव के साथ एक हो जाए और इस एकीकरण के द्वारा एक ही व्यक्ति में ईश्वर के साथ एक हो जाए! क्या कुछ भी इससे अधिक आश्चर्यजनक हो सकता है कि हम उस ईश्वर को देखें, जिसने स्वयं को इतना नम्र किया कि वह एक स्त्री के गर्भ में धारण किया गया? ओह, क्या अद्भुत चमत्कार है! ईश्वर, जिनके लिए स्वर्ग सिंहासन और पृथ्वी पादपीठ है[2587] , ईश्वर, जिन्हें स्वर्ग भी समाहित नहीं कर सकता, जो केवल पिता के साथ अनंतकाल के सिंहासन पर विराजमान हैं—वे एक कुँवारी के गर्भ में समाहित हैं! क्या कुछ और अधिक आश्चर्यजनक हो सकता है, यह देखने से कि ईश्वर मानव रूप में हैं, फिर भी एक ही समय में अपनी दिव्यता से अलग नहीं हैं, और मानव स्वभाव को अपने सृष्टा के स्वभाव के साथ एकीकृत देखना, ताकि ईश्वर एक पूर्ण और संपूर्ण मानव के रूप में प्रकट हो सकें?'

क्रीट के संत एंड्रयू आगे कहते हैं, 'गैब्रियल ने, दिव्य संदेश सुनने और आज्ञा प्राप्त करने के बाद, जो ईश्वर के एक संकेत से पुष्टि हुई थी लेकिन उसकी शक्ति से परे थी, खुद को भय और आनंद के बीच फंसा हुआ पाया। अपने आपको दिव्य आज्ञा को पूरा करने के योग्य न समझते हुए, फिर भी उसकी अवज्ञा करने का साहस न करते हुए, उसने ईश्वर की वाणी का पालन करते हुए, कन्या के पास उड़ान भरी और नासरत पहुँचकर, यूसुफ के घर के द्वार पर रुक गया। परेशान और अपने मन में विचार करते हुए, वह इस प्रकार तर्क करने लगा: 'मैं ईश्वर की आज्ञा को पूरा करने के लिए कैसे आगे बढ़ूँ! क्या मुझे तुरंत, जल्दबाजी में प्रवेश करना चाहिए? लेकिन तब मैं कुंवारी की शांति भंग कर सकता हूँ। क्या मुझे और धीरे से प्रवेश करना चाहिए?

लेकिन फिर कुँवारी मेरी उपस्थिति को भांपकर छिपना चाह सकती हैं। क्या मैं दरवाज़ा खटखटाऊँ? लेकिन यह स्वर्गदूतों के लिए असामान्य है: क्योंकि अदेह प्राणियों के लिए कुछ भी बंद या प्रवेश से वंचित नहीं होता। क्या मैं दरवाज़ा खोलूँ? लेकिन मैं बंद दरवाज़ों से भी गुज़र सकता हूँ। क्या मैं कुँवारी को नाम से पुकारूँ? लेकिन इससे वह डर सकती हैं। मैं इसके बजाय चुपचाप प्रवेश करूँगा और कोमलता से उनका अभिवादन करूँगा, ठीक वैसे ही जैसे जिसने मुझे भेजा है, उसने आज्ञा दी है। लेकिन मैं कन्या से क्या कहूँगा? क्या मैं पहले उन्हें शुभ समाचार सुनाऊँ, या उन्हें बताऊँ कि स्वयं परमेश्वर उनके भीतर वास करेंगे, कि पवित्र आत्मा उन पर आएँगे, और सर्वोच्च की शक्ति उन पर छा जाएगी! मैं सबसे पहले उसे आनंद का संदेश सुनाऊँगा, और फिर मैं उसे उस अद्भुत रहस्य के बारे में बताऊँगा। मैं उसके पास जाऊँगा और आनंदपूर्वक अपना अभिवादन गाऊँगा: 'खुश हो जाओ! प्रसन्न हो जाओ! हौसला रखो!' ये शब्द कुँवारी से मेरी बातचीत की सबसे उपयुक्त शुरुआत होंगे। तब वह न तो डरेगी, और न ही उसके विचार उसे परेशान करेंगे। इसलिए, मैं अपनी घोषणा इस प्रकार शुरू करूँगा: सबसे पहले, मैं उसे आनंद और प्रसन्नता की खबर दूँगा; एक रानी के रूप में उसका अभिवादन ऐसे शब्दों से किया जाना चाहिए: क्योंकि यह आनंद का अवसर है, प्रसन्नता का समय है, शांति का राज्य है, उद्धार के लिए ईश्वर की योजना है, सांत्वना की शुरुआत है।"

देखो कि महादूत कितनी श्रद्धा के साथ परमेश्वर की माता के समीप आता है; कितनी गहरी और विस्मय-भरी श्रद्धा के साथ वह संपूर्ण संसार की स्वामिनी के समीप आने की तैयारी करता है, जबकि वह पहले उन घोषणा के शब्दों पर मनन करता है, जो आनंद से परिपूर्ण हैं, जिनके साथ उसे उनकी ओर संबोधित करना है। इस संदर्भ में यह भी उचित है कि हम अपनी श्रद्धापूर्ण दृष्टि इस तथ्य पर केंद्रित करें कि उन्हें वह न तो उनके घर या ऊपरी कमरे के बाहर मिलीं, न ही शहर की सड़कों पर भीड़ और सांसारिक बातचीत के बीच, न ही घर में दैनिक जीवन की चिंताओं में व्यस्त मिलीं, बल्कि मौन में लीन मिलीं, प्रार्थना और पुस्तकों के अध्ययन में, जैसा कि घोषणा के दृश्य को दर्शाने वाली प्रतिमा स्पष्ट रूप से दिखाती है, जिसमें पवित्र कन्या मरियम के सामने एक खुली किताब रखी गई है, जो पवित्र धर्मग्रंथों को पढ़ने और

[2587] तुलना करें मत्ती 5:34–35।

ईश्वर की बातों पर मनन करने के प्रति उनकी अटूट भक्ति का प्रमाण है। ठीक उसी क्षण जब स्वर्गीय दूत पवित्र कन्या के सामने प्रकट हुआ, चर्च के ईश्वर-ज्ञानी पिताओं के अनुसार, उनके मन में भविष्यवक्ता यशायाह के वचन थे: *'देखो, एक कुँवारी गर्भ धारण करेगी'* (यशायाह 7:14), और वह इस बात पर विचार कर रही थीं कि कुँवारी की प्रकृति के लिए इतना अजीब और असामान्य यह गर्भधारण और जन्म कैसे और कब होगा। जैसा कि जॉर्जी केड्रिन के अनुसार पहले ही उल्लेख किया जा चुका है, इस समय से पहले ही, उसे दिव्य प्रकटकिरण द्वारा सूचित कर दिया गया था कि वह स्वयं ही उस रहस्य की पूर्ति के लिए पात्र बनेगी और लंबे समय से प्रतीक्षित मसीहा को जन्म देगी। इस प्रकटीकरण के क्षण से ही, वह ईश्वर और अपने स्रष्टा के प्रति सेराफिक प्रेम से भर गईं और उनकी दया के लिए विनती करने लगीं, कि वह अपने दिव्य वादे और यशायाह की भविष्यवाणी की पूर्ति में शीघ्रता करें; और तीव्र लालसा के साथ उन्होंने स्वयं से कहा: 'तो फिर वह प्रतीक्षित समय मेरे लिए कब आएगा, जब मेरे स्रष्टा, मुझसे मानव देह धारण करने की कृपा करके, स्वर्ग से उतरकर मुझमें वास करेंगे? मैं अपने ईश्वर की माता बनने की उस धन्य परमानंद को कब प्राप्त करूँगी! लेकिन जब तक वह समय नहीं आ जाता, मेरे आँसू ही दिन-रात मेरा भोजन होंगे। क्योंकि जो लोग ऐसे प्रतीक्षित क्षण की प्रतीक्षा करते हैं, उनके लिए थोड़ा समय भी बहुत लंबा लगता है।"

जब सर्व-शुद्ध कुँवारी इसी प्रकार मनन कर रही थीं और अपने हृदय की गहराई में प्रभु के प्रति उत्कट प्रेम से भरी प्रार्थना अर्पित कर रही थीं, तभी अचानक दूत, महादूत गब्रियिल, चुपचाप उनके सामने प्रकट हुए। वही पवित्र शिक्षक, क्रीट के एंड्रयू, इस बारे में निम्नलिखित लिखते हैं:

'महादूत गब्रियिल घर में प्रवेश किया और, उस भीतरी कक्ष के पास पहुँचे जहाँ कुँवारी रहती थीं, चुपचाप दरवाजों के पास आ गए; और, अंदर प्रवेश करने के बाद, उन्होंने कोमल स्वर में उनसे बात करना शुरू किया। "नमन हो," उन्होंने कहा, "हे अनुग्रह से परिपूर्ण, प्रभु तुझ में हैं! जो तुम्हारे पहले से अस्तित्व में था, वह अब तुम्हारे साथ है, और जल्द ही तुमसे जन्म लेगा; जो सर्वकाल से पहले अस्तित्व में था, वह अब समय के अधीन होगा।' हे मानवजाति के प्रति असीम प्रेम (संत एंड्रयू ने पुकारा)! हे अगम्य दया! महादूत न केवल आनंद की घोषणा करते हैं, बल्कि कुँवारी के भीतर सृष्टिकर्ता के वास के आनंद की घोषणा करते हैं। उनके शब्द, 'प्रभु तुम्हारे साथ हैं!', स्पष्ट रूप से राजा की उपस्थिति को प्रकट करते हैं, जिन्होंने, यद्यपि उन्होंने उनसे मानवीय देह धारण किया, फिर भी अपनी स्वभाविक महिमा से तनिक भी विमुख नहीं हुए! हे आनंदित, हर्षित हो, प्रभु तेरे संग हैं! हे शांति के अति सम्मानित साधन, हर्षित हो, जिनके द्वारा संसार को शाप के लिए दण्डित करने वाला दुखद न्याय आनंद में बदल दिया गया है! आनंद का आह्वान! हे वास्तव में धन्य, हर्षित हो! हे अति उत्कृष्ट कुँवारी, हर्षित हो! हे स्वर्गीय महिमा के सुंदर मंदिर, हर्षित हो! हे राजा के पवित्र कक्ष, आनंद मनाओ! हे उस महल, जिसमें मसीह ने मानवता से सगाई की और एक हुए, आनंद मनाओ! स्त्रियों में धन्य हैं आप, जिन्हें यशायाह ने भविष्यद्रष्टा की आँखों से देखा और 'नबी-नारी', 'कुँवारी', 'सीलबंद पुस्तक' कहा! सत्य में धन्य हैं आप, जिन्हें यहेज़केल ने भोर और बंद द्वार कहा, जिससे एकमात्र ईश्वर गुज़रे! वास्तव में धन्य हैं आप, जिन्हें दानियेल, इच्छाओं के पुरुष ने एक पर्वत के रूप में देखा, और जिन्हें अद्भुत हबक्कूक ने वर्षा से ढके पर्वत कहा, और जिन्हें आपके राजसी पूर्वज, दाऊद, जिन्हें भविष्यवाणी के रूप में परमेश्वर का पर्वत, प्रचुरता का पर्वत, अभिषिक्त पर्वत, वह पर्वत कहा गया जिसमें परमेश्वर को निवास करना प्रसन्न था। स्त्रियों में धन्य हैं आप, जिन्हें दिव्य रहस्यों के द्रष्टा जकरियाह ने एक भव्य सुनहरे दीपक-स्तंभ के रूप में देखा, जो पवित्र आत्मा के सात उपहारों का प्रतीक सात दीपों से सुसज्जित था। सत्य में, आप परम श्रद्धेय हैं, जिनमें स्वर्ग और एडेन का बगीचा, जैसे कि समाहित है – मसीह, जिन्होंने अपनी अगोचर सर्वशक्तिमान शक्ति से, आपके गर्भ से जीवित जल के झरने के समान निकलकर, सुसमाचारों की चार धाराओं से पृथ्वी के सम्पूर्ण मुख को तृप्त किया है?'

देवदूत का अभिवादन सुनकर, कुँवारी मरीयाम उसके शब्दों से विस्मित हो गईं और सोचने लगीं: 'यह किस प्रकार का अभिवादन हो सकता है?' वह चकित तो हुईं, लेकिन डरी नहीं, क्योंकि ऐसा आगमन पूरी तरह से नया, अप्रत्याशित या अचानक नहीं था। स्वर्गदूत का प्रकट होना उन्हें डरा नहीं सकता था, क्योंकि वह पवित्रतम स्थान में निवास करते हुए भी स्वर्गदूतों के साथ मैत्रीपूर्ण संगति की आदी थीं, जहाँ, संत हरमन की गवाही के अनुसार, उन्हें एक स्वर्गदूत के हाथों से अपना दैनिक आहार प्राप्त होता था। फिर भी वह आश्चर्य से स्तब्ध रह गईं क्योंकि देवदूत पहले कभी उनके पास इतनी महान स्वर्गीय महिमा के साथ, इतने आनंदित मुखमंडल और इतने आनंद से परिपूर्ण शब्दों के साथ नहीं आए थे। वह इन सबकी नवीनता से स्तब्ध रह गईं, विशेषकर देवदूत के शब्दों से, क्योंकि वह एक असामान्य अभिवादन के साथ आए, यह कहते हुए: *'स्त्रियों में धन्य है तू!'* (लूका 1:28), इस प्रकार उसे, कन्या को, स्त्रियों में गिनते हुए। वह चकित

रह गई, जैसा कि एक पवित्र स्त्री होती, लेकिन वह डरी नहीं, जैसा कि एक साहसी स्त्री होती, और, विवेक और ज्ञान की आत्मा से युक्त होकर, उसने अपने मन में सोचा: 'यह किस प्रकार का अभिवादन हो सकता है? इस अभिवादन से स्वर्गदूत मुझसे क्या कहना चाहता है? क्या वह मुझे प्रभु के मंदिर में वापस ले जाएगा, या क्या वह स्वर्ग से मेरे लिए कोई नया भोजन लाया है? या क्या वह परमेश्वर का कोई नया रहस्य प्रकट करेगा? क्या वह मुझे सिखाएगा, जो इतनी अधिक मनन करती हूँ और यह नहीं समझ पाती कि *'एक कुँवारी गर्भधारण करेगी और एक पुत्र को जन्म देगी'* (यशायाह 7:14) कैसे हो सकता है? 'तो, इस अभिवादन का क्या परिणाम होगा?' तब स्वर्गदूत ने उससे कहा:

[2588]'मरियम, डरो मत! यशायाह द्वारा बताई गई कुँवारी के विषय में अब और संदेह मत करो। तुम ही वह कुँवारी हो जिसे इम्मानुएल को बिना बीज के गर्भ में धारण करने और उसे शब्दों से परे तरीके से जन्म देने की ऐसी कृपा प्राप्त हुई है, जैसा कि वह स्वयं जानता है। आपने अपने अनेक सद्गुणों, विशेषकर तीन उच्चतम सद्गुणों के माध्यम से ईश्वर की कृपा प्राप्त की है: आपने अपनी गहरी विनम्रता के द्वारा कृपा प्राप्त की है, क्योंकि ईश्वर विनम्र लोगों पर अपनी कृपा प्रदान करते हैं, यह कहते हुए: *'मैं किस पर दृष्टि डालूँगा? विनम्र और शांत व्यक्ति पर'* (यशायाह 66:2)। आपने अपनी कुंवारी पवित्रता के माध्यम से अनुग्रह प्राप्त किया है; क्योंकि ईश्वर, स्वभाव से ही परम पवित्र होने के कारण, परम शुद्ध और निर्मल कुंवारी से जन्म लेना चाहते हैं; आपने परमेश्वर के प्रति अपने प्रगाढ़ प्रेम के द्वारा परमेश्वर की कृपा प्राप्त की है, क्योंकि प्रभु ने कहा है: *'मैं उनसे प्रेम करता हूँ जो मुझसे प्रेम करते हैं, और जो मुझे खोजते हैं वे कृपा पाएँगे'* (नीतिवचन 8:17)। और चूँकि आपने उसे अपने पूरे हृदय से प्रेम किया और खोजा है, इसलिये आपने उसकी अनुकम्पा प्राप्त की है, और आप एक पुत्र को जन्म देंगी, जो केवल एक नश्वर नहीं, बल्कि दिव्य पुत्र, परम-उच्चतम का पुत्र, परमेश्वर से परमेश्वर है, जो पिता से सभी युगों से पहले बिना माँ के उत्पन्न हुआ, परन्तु आप से, कुँवारी-माता से, बिना पिता के जन्म लेगा। उनका नाम अद्भुत और अकथनीय होगा: आप उन्हें ' '—यीशु मसीह—कहेंगी, जिसका अर्थ है 'उद्धारकर्ता', क्योंकि वे सारी दुनिया को बचाएंगे और राज्य करेंगे, और वे पूर्वज दाऊद और याकूब के घर से आए उन सभी राजाओं से अतुलनीय रूप से अधिक महिमामय होंगे। लेकिन उसका राज्य अस्थायी नहीं, बल्कि शाश्वत होगा, जो युगों-युगों तक रहेगा। मरियम ने स्वर्गदूत से पूछा, 'यह कैसे हो सकता है, जबकि मैं किसी पुरुष को नहीं जानती?'

सबसे पवित्र कुँवारी ने स्वर्गदूत के शब्दों पर विश्वास किया, क्योंकि परमेश्वर की कृपा से, जिससे वह परिपूर्ण थी, वह जानती थी कि वह उसी को जन्म देगी जिसकी सुसमाचार में घोषणा की गई थी, एक तथ्य जिसके बारे में उसे स्वयं परमेश्वर ने मंदिर में रहते हुए सूचित किया था; लेकिन एक बात जो वह नहीं जानती थी वह थी: यह कैसे होगा, एक कुँवारी जो किसी पुरुष को कभी नहीं जानती थी, वह कैसे जन्म दे सकती है? इसीलिए उन्होंने देवदूत से पूछा: 'यह कैसे होगा?'

इस पर चिंतन करते हुए, निसा के संत ग्रेगरी, उनकी ओर से बोलते हुए, देवदूत से कहते हैं: 'हे देवदूत! मुझे बताओ कि यह जन्म स्वयं कैसे होगा - और आप पाएंगे कि मेरा हृदय ईश्वर की दैवी इच्छा को पूरा करने के लिए तैयार है: क्योंकि मैं अपने लिए ऐसे बच्चे की कामना करती हूँ, लेकिन अपनी कुँवारी अवस्था को भंग किए बिना।'

संत अम्ब्रोज़ इसी विषय पर इस प्रकार विचार करते हैं: 'उसने स्वर्गदूत से ठीक ही पूछा: *"यह कैसे होगा?"* (लूका 1:34)। क्योंकि यद्यपि उन्होंने पहले यह पढ़ा था कि एक कुँवारी गर्भधारण करेगी, परन्तु उन्हें यह नहीं पता था कि यह कैसे होगा। उन्होंने वास्तव में यह भविष्यवाणी का वचन पढ़ा था: *'देख, एक कुँवारी गर्भधारण करेगी'*, परन्तु यह कि वह कैसे गर्भधारण करेगी – यह वही है जो स्वर्गदूत अब घोषणा के समय उन्हें बता रहा है।

और इस प्रकार स्वर्गदूत ने कुँवारी को गर्भधारण के वास्तविक तरीके के बारे में बताया, कि यह गर्भधारण मानवीय स्वभाव और सामान्य व्यवस्था के अनुसार नहीं, बल्कि अलौकिक रूप से होगा, 'क्योंकि जिहाँ परमेश्वर की इच्छा होती है, वहाँ प्रकृति की व्यवस्था पर विजय प्राप्त हो जाती है'[2589] , कि यह गर्भधारण पवित्र आत्मा के कार्य द्वारा होगा: *'पवित्र आत्मा तुझ पर आएगा, और परमप्रभु की सामर्थ्य तुझ पर छा जाएगी'* (लूका 1:35)।

उससे तुम अपने गर्भ में संतान धारण करोगी, और वह तुम्हारे भीतर एक ऐसी संकल्पना उत्पन्न करेगा जो मानव समझ से परे है। वह जिसने निर्जीव मिट्टी से आदम को बनाने में सक्षम था—क्या उसके लिए एक जीवित कुँवारी से एक जीवित शिशु को जन्म देना और भी अधिक संभव नहीं है? यदि परमेश्वर के लिए आदम की पसली से एक पत्नी बनाना संभव था, तो क्या उनके लिए एक कुंवारी के गर्भ में एक मानव का निर्माण करना और भी अधिक संभव नहीं है?

[2588] यीशु (ग्रीक: Ἰησους – उपचारकर्ता, ιηαω – मैं चंगा करता हूँ से) हिब्रू शब्द इयोचुआ से – यहोवा की सहायता, उद्धारकर्ता।

[2589] टोन 7 के धर्मशास्त्रीय ग्रंथ से।

सर्वशक्तिमान पवित्र आत्मा यह साकार करेगा कि आपके परम पवित्र कुंवारी के निर्मल गर्भ में, आपके शरीर से, परमेश्वर के अदेह पुत्र का शरीर रहस्यमय रूप से निर्मित हो। तुम्हारे द्वारा, पवित्रता से सीलबंद और कुँवारीपन द्वारा संरक्षित द्वार से, प्रभु गुजरेंगे, ठीक वैसे ही जैसे सूर्य की किरण काँच और स्फटिक से होकर गुजरती है, और अपनी दिव्य महिमा से तुम्हें पवित्र और प्रकाशित करती है; ताकि तू परमेश्वर की सच्ची माता बनेगी, क्योंकि तूने पूर्ण ईश्वर और पूर्ण मनुष्य को जन्म दिया, और जन्म से पहले और बाद में एक अमर कुँवारी बनी रहेगी: यह सब पवित्र आत्मा की प्रेरणा से, सर्वोच्च की शक्ति द्वारा, तुझ में संपन्न होगा। और यह कि यह सत्य है, इसका प्रमाण आपके लिए यह है: देखिए, आपकी नातेदार एलिजाबेथ, जो अपनी जवानी से बाँझ थी और अब वृद्धा हो चुकी है, ने एक पुत्र को गर्भ में धारण किया है; क्योंकि ऐसा परमेश्वर की इच्छा है, जो असंभव को संभव कर देता है। क्योंकि मनुष्यों के बीच यह दोनों बातें असंभव सी लगती हैं, कि एक अक्षुण्ण कुँवारी पति के बिना गर्भ धारण करे और प्रसव करे, और यह कि एक बाँझ और वृद्ध स्त्री गर्भ धारण करे और प्रसव करे; पर सर्वशक्तिमान सृष्टिकर्ता के पास सब कुछ संभव है, क्योंकि *'ईश्वर के लिए कुछ भी असंभव नहीं है'* (लूका 1:37); उसकी आज्ञा से, एक बाँझ बूढ़ी स्त्री भी गर्भ धारण कर सकती है, और हे कुँवारी, तुम भी गर्भ धारण करोगी।

देवदूत से यह शुभ समाचार सुनकर, परम पवित्र कन्या ने अपने प्रभु की इच्छा के प्रति समर्पण किया और परमेश्वर के प्रति प्रेम से भरे अपने हृदय से अत्यंत विनम्रता के साथ उत्तर दिया: *'देख, मैं प्रभु की दासी हूँ; तेरा वचन मुझ में पूरा हो'* (लूका 1:38)। और उसी क्षण, पवित्र आत्मा के कार्य द्वारा, उनकी पवित्र गर्भ में अकथनीय गर्भधारण हुआ, बिना शारीरिक आनंद के, फिर भी आध्यात्मिक आनंद के बिना नहीं। तब उसकी कुँवारी हृदय दिव्य लालसा से विशेष रूप से गहराई से पिघल गया, और उसकी आत्मा सेराफिक प्रेम की ज्वाला से जल उठी, जबकि उसका पूरा मन, जैसे कि अपने आप में न रहकर, ईश्वर में डूब गया, और उनकी भलाई में अनुपम आनंद पा रहा था। अपने आत्मा की इस आनंद में, ईश्वर के परम प्रेम के द्वारा, और अपने मन के द्वारा—ईश्वर के दर्शन के माध्यम से—ईश्वर का पुत्र गर्भ में धारण हुआ, और *'वचन देहधारी हुआ और हमारे बीच में वास किया'* (यूहन्ना 1:14) अवतार के द्वारा।

देवदूत ने, ईश्वर की आज्ञा से अपने घोषणा के मिशन को पूरा कर, और आदरपूर्वक भय-सहित आराधना के साथ कन्या के गर्भ में अवतार ले रहे एकमात्र को और स्वयं ईश्वर को अपने भीतर अवतार दे रही कन्या को सम्मानित कर, उनके पास से प्रभु के सिंहासन के लिए प्रस्थान किया। – सबओथ, स्वर्गदूतों की सारी सेनाओं के साथ मिलकर, परमेश्वर के अवतार के रहस्य की महिमा करते हुए, अनंत काल तक अथाह आनंद के साथ। आमीन।

ट्रोपारियन, स्वर 4:

आज हमारे उद्धार की शुरुआत है, और पुरातन रहस्य का प्रकटन है: ईश्वर का पुत्र कुंवारी का पुत्र बन जाता है, और गब्रियल अनुग्रह का शुभ समाचार घोषित करता है। अतःहम भी उसके साथ ईश्वर की माता से पुकारें: आनंदित हो, अनुग्रह से परिपूर्ण, प्रभु तेरे साथ है।

कॉन्टाकियन, स्वर 8:

हे चुने हुओं की विजयी नेता, बुराई से मुक्त होकर, हम, तेरे सेवक, हे परमेश्वर की माता, तुझे धन्यवाद देते हैं; परन्तु चूंकि तेरे पास अजेय शक्ति है, हमें हमारी सभी पीड़ाओं से बचा, ताकि हम तुझे पुकार सकें: हे अविवाहिता वधू, आनन्दित हो।

8 अप्रैल

26 मार्च (पुराना संस्करण)

महादूत सेंट गेब्रयिल का पर्व[2590]

26 मार्च को स्मरणोत्सव

परम पवत्रि कुँवारी, परमेश्वर की माता के घोषणा के अगले दनि, कलीसयिा ने आदकिाल से, यरूशलेम के वधिान और संत सावस के महान मठ के वधिान के अनुसार, यह आदेश दयिा है कि महादूत संत गैब्रयिल का पर्व इस आनंददायक दूत का सम्मान करते हुए, अपने स्वयं के भजनों के साथ एक वशिेष दनि के रूप में मनाया जाए। और वास्तव में, जो हमारे उद्धार के रहस्य की सेवा में लगे रहे, जन्हिोंने असीम पवत्रि कुँवारी को उनके अत्यंत शुद्ध गर्भ में परमेश्वर के वचन के अवतार की खबर दी, वे वशिेष सम्मान के योग्य हैं। यदि एक सांसारकि राजा का एक योग्य दूत, जो कसिी नगर में राजा का अनुग्रहपूर्ण वचन लाता है, उस नगर के सभी नागरकिों द्वारा वशिेष सम्मान के साथ प्राप्त कयिा जाता है, तो हमें स्वर्गीय राजा के सबसे पूजनीय दूत का एक वशिेष उत्सव के साथ कतिना अधकि सम्मान करना चाहएि, देवदूतों के महानतम राजकुमार, जो हमारे शाश्वत उद्धार की घोषणा करते हुए अत्यंत अनुग्रहकारी संदेश के साथ सम्पूर्ण मानव जाति के पास आए। और यह दूत कतिना महान है, जसिने सबसे पहले संत जकरयिाह को अपनी ही गरमिा का खुलासा कयिा: *'मैं गब्रयिल हूँ जो परमेश्वर के सामने खड़ा रहता हूँ* (लूका 1:19), अर्थात्, अन्य स्वर्गदूतों की तुलना में परमेश्वर के सहिासन के अधकि नकिट खड़ा हूँ। जैसे कि, एक सांसारकि राज्य में, राजा के सबसे नकिट का गणमान्य व्यक्ति—जो राजा के रहस्यों से अधकि परचिति होता है—उन अन्य गणमान्य व्यक्तयिों से अतुलनीय रूप से उच्च होता है जो राजा से अधकि दूर होते हैं, – उसी प्रकार स्वर्ग के राज्य में भी पवत्रि स्वर्गदूत, जो परमेश्वर के समीप खड़े रहते हैं और परमेश्वर के रहस्यों पर अधकि स्पष्ट रूप से मनन करते हैं, नम्नि पद के अन्य स्वर्गदूतों की तुलना में अधकि सम्मान और महमिा से प्रकाशमान होते हैं।

पवत्रि शास्त्र हमें बताता है कि परमेश्वर की अगम्य महमिा के सामने हमेशा उच्चतम क्रम के सात स्वर्गदूत, जो स्वर्गदूतों के शासक राजकुमार हैं, खड़े रहते हैं। तोबति की पुस्तक में लखिा है कि युवा तोबति के साथी ने स्वयं को उन सात पवत्रि स्वर्गदूतों में से एक के रूप में प्रकट कयिा जो परमेश्वर के सामने खड़े हैं। और संत जॉन द थयिोलोजयिन, अपनी प्रकाशतिवाक्य की पुस्तक में, इन सात शासक स्वर्गदूतों का उल्लेख करते हुए कहते हैं: *'उससे तुम्हें अनुग्रह और शान्ति मिले, जो है, और जो था, और जो आने वाला है, और उन सात आत्माओं से जो उसके सहिासन के सामने खड़ी हैं'* (प्रकाशतिवाक्य 1:4)। गैब्रयिल इन सात में गनि जाते हैं, संख्या में दूसरे और माइकल के बाद पहले स्थान पर। उनके नाम इस प्रकार सूचीबद्ध हैं: माइकल, गैब्रयिल, राफेल, उरीएल, सेलाफएिल, येहुदएिल और बराकएिल।

यदि, हालाँकि, कोई पूछे: ईश्वर ने सर्वपवत्रि कुँवारी को अपने स्वर्गदूतों में पद में सबसे प्रमुख—माइकल—को नहीं भेजा, बल्कि उनसे दूसरे, गब्रयिल को क्यों भेजा?—तो यह जान लें कि ये सात उच्चतम स्वर्गदूत सभी प्रतष्ठिा में बराबर हैं, और माइकल उनमें केवल क्रमांक में ही पहला है। उनमें से प्रत्येक की अपनी वशिेष सेवा है। माइकल वरिोधयिों पर वजिय प्राप्त करने वाले हैं; गैब्रयिल ईश्वर के रहस्यों के सूचक हैं; राफेल मानव दुर्बलताओं के उपचारक हैं; उरीएल, दव्यि अग्नि का तेज होने के कारण, अंधकार में पड़े लोगों को ज्ञान प्रदान करते हैं ; सेलाफएिल मध्यस्थ हैं, जो हमेशा मानव जाति के लएि ईश्वर से प्रार्थना करते हैं और लोगों को प्रार्थना करने के लएि प्रेरति करते हैं; जेहुदएिल – ईश्वर की महमिा करते हैं: उनकी सेवा ईश्वर की महमिा के लएि कसिी भी प्रयास में लगे लोगों को मजबूत करना और उनके कर्मों के लएि उचति पुरस्कार की मध्यस्थता करना है; बराकएिल – ईश्वर के आशीर्वादों के प्रदाता और मध्यस्थ हैं जो हमारे लएि ईश्वर की कृपा मांगते हैं।

इस प्रकार, माइकल को परम पवत्रि कुँवारी के पास शुभ समाचार के साथ नहीं भेजा गया था, क्योंकि उसकी सेवा एक अलग प्रकार की है: अपनी तलवार को हमेशा म्यान से बाहर रखना, शत्रुओं के वरिुद्ध हथयिार उठाना और उन्हें भगा देना। हालाँकि, गब्रयिल को भेजा गया था क्योंकि यह उसकी सेवा का स्वभाव है - ईश्वर के रहस्यों को प्रकट करना। उन्होंने पवत्रि नबी दानयिेल को बेबीलोन की कैद से ईश्वर के लोगों की मुक्ति और मसीहा के आगमन के समय की घोषणा की; उन्होंने संत जकरयिाह को एक बाँझ माँ से यूहन्ना अग्रदूत के जन्म की भी घोषणा की। उन्होंने जंगल में पवत्रि भवष्यिवक्ता मूसा को उत्पत्ति की पुस्तक लखिते समय भी नर्दिेश दयिा, और उन्हें संसार की सृष्टि से शुरू होकर पहली पीढ़यिों और युगों के बारे में ईश्वर के प्रकाशनों से अवगत कराया। पवत्रि परंपरा गवाही देती है कि उन्होंने

[2590] महादूत गब्रयिल के सम्मान में पर्व का दनि 'सनिोड' कहा जाता है क्योंकि इस दनि ईसाई पवत्रि भजनों के साथ पवत्रि महादूत गब्रयिल की महमिा करने के लएि एकत्रति होते हैं।

पवत्रि और धर्मी योआकमि और अन्ना को परमेश्वर की परम पवत्रि माता के गर्भधारण की घोषणा की, और उनके गर्भधारण और जन्म के क्षण से ही असीम पवत्रि कुँवारी के संरक्षक देवदूत के रूप में सेवा की, और उन्हें परम पवत्रि स्थान में भोजन लाकर दयिा; इसलएि, उन्होंने उसे परमेश्वर के पुत्र के गर्भधारण की भी घोषणा की। इसके अलावा, जibril को शुभ समाचार के साथ भेजा गया था क्योंकि उनके नाम का अर्थ ही घोषणा के वषिय को समाहति करता है। जibril नाम का अर्थ है 'परमेश्वर की शक्ति', और 'ईश्वर-मानव' भी। इस प्रकार, अपने नाम से ही, यह दूत यह सूचति करता है कि ईश्वर सर्वशक्तमिान है, और यह कि प्रभु, कुंवारी के गर्भ में रहते हुए, एक पूर्ण पुरुष के रूप में आकार ले रहे हैं, अर्थात्, वह पूर्ण ईश्वर और पूर्ण पुरुष दोनों हैं - पूर्ण शारीरकि आयु के संदर्भ में नहीं, बल्कि शक्ति और बुद्धि के संदर्भ में। अन्य शशिु, जो अपनी माताओं के गर्भ में गर्भधारण करते हैं, कुछ भी नहीं समझते, और उनमें कोई शक्ति नहीं होती; इसके वपिरीत, परम धन्य मरयिम की कुँवारी गर्भ में गर्भति शशिु के पास, उनके गर्भधारण के क्षण से ही, एक अथाह बुद्धि और अजेय शक्ति थी, और इसलएि, अपने छोटे शरीर में भी, वह एक पूर्ण मानव थे। इसे पूर्वानुमानति करते हुए, भवषि्यवक्ता कहते हैं: *'और मैं भवषि्यवक्ता के पास गया, और उसने गर्भधारण कयिा और एक पुत्र को जन्म दयिा। और यहोवा ने मुझसे कहा: 'उसका नाम माहेर-शालल-अश्-बाज़ रख। क्योंकि इससे पहले कि बच्चा "मेरे पति" या "मेरी माता" कहना सीखे, दमश्कि की संपत्ति और सामरयिा का लूट-खसोट ले लयिा जाएगा'"* (यशायाह 8:3–4)। इसका मतलब यह है कि शशिु, भले ही बोलने में सक्षम न हो, उसके पास अपने दुश्मनों पर काबू पाने के लएि पहले से ही महान शक्ति और सामर्थ्य होगी। गब्रयिल का नाम ही इस बात का संकेत देता है, क्योंकि इसका अर्थ है: 'मानव-ईश्वर', 'शक्तमिान ईश्वर'। और यह ईश्वर, अपने घोषणा के क्षण में ही, पवत्रि आत्मा की प्रेरणा से, कुँवारी के अक्षय गर्भ में गर्भधारी हुए। कॉन्स्टेंटनिोपल के पैट्रआर्क, संत प्रोक्लस, इस पर इस प्रकार वचिार करते हैं: 'देवदूत का नाम ही अपने अर्थ में अद्भुत है, क्योंकि जिसिने कुँवारी मरयिम को सुसमाचार दयिा, उसे गब्रयिल कहा जाता है। इस नाम से उसने उस ईश्वर-मानव की पूर्वछाया प्रस्तुत की और उसे प्रकट कयिा जो संसार में आने वाला था। गब्रयिल का अर्थ है: 'शक्तमिान मनुष्य', या 'मनुष्य-ईश्वर'; यह शब्द 'गैवर' से लयिा गया है, जसिका अर्थ है 'शक्तमिान' या 'ईश्वर', और जब दोनों अर्थों को जोड़ा जाता है, तो यह शब्द 'मनुष्य-ईश्वर' को दर्शाता है। यर्मियाह ने बहुत समय पहले इसकी भवषि्यवाणी की थी, कहते हुए: *'यहोवा पृथ्वी पर एक नई बात करेगा: एक पत्नी अपने पति को बचाएगी'* (यर्मि. 31:22)। इस प्रकार, ईश्वर का यह दूत अपने नाम के महत्व और अपनी सेवा की प्रकृति, और भी अधकि उस रहस्य द्वारा, जो युगों से छपिा हुआ था और स्वर्गदूतों को भी ज्ञात नहीं था, अत्यंत गौरवान्वति है, जसिे ईश्वर ने सबसे पहले उसे प्रकट कयिा और जसिे उसने परम पवत्रि कुँवारी के पास लाया। और परमेश्वर के अवतार का यह रहस्य जतिना अधकि भव्य था, वह उतना ही अधकि ऊँचा था, उतने ही अधकि रहस्यों से जो पहले गब्रयिल द्वारा पवत्रि भवषि्यवक्ताओं को प्रकट कए गए थे, और स्वर्गदूतों के समूह में भी उन्हें उतना ही अधकि सम्मान प्राप्त हुआ है, जो उन्हें परमेश्वर के सबसे भीतरी और सबसे छपिे हुए रहस्यों के सबसे करीबी गवाह के रूप में पूजते हैं।"

चर्च फादर्स, वशिेष रूप से डायोनसियिस द एरोपाजयिन[2591] , सर्वसम्मति से उन सात उच्चतम स्वर्गदूतों के बारे में बात करते हैं, यह कहते हुए कि वे बनिा रुके हमेशा परमेश्वर की उपस्थति में खड़े रहते हैं। अन्य स्वर्गदूत वभिन्नि मशिनों पर भेजे जाते हैं, लेकनि ये, परमेश्वर के सबसे करीबी होने के नाते, हमेशा परमेश्वर के सहिासन पर रहते हैं। ईश्वर के सर्वोच्च रहस्यों को प्रकट करने और ईश्वर की महान शक्ति को प्रकट करने के लएि, उन्हें भी भेजा जाता है, जैसा कि पवत्रि प्रेरति पौलुस कहते हैं: *'क्या वे सभी सेवा करने वाली आत्माएँ नहीं हैं, जिन्हें सेवा करने के लिए भेजा गया है?'* (इब्रानयिों 1:14)। लेकनि मसीह के अवतार के रहस्य से बड़ी ईश्वर की शक्ति की क्या अभवि्यक्ति है, और इससे ऊँचा कोई रहस्य क्या हो सकता है—जो अथाह, अकल्पनीय और अभवि्यक्ति से परे है? इस प्रकार, इतने महान रहस्य की घोषणा करने के लएि यह उचति था कि महान स्वर्गदूत , जो परमेश्वर के सहिासन के सामने अटूट सेवक और परमेश्वर के रहस्यों का सबसे करीबी साक्षी थे—अर्थात् संत गैब्रयिल—को भेजा जाए।

यह ध्यान देने योग्य भी है कि संत गैब्रयिल तीन पदानुक्रमों के भीतर नौ दैवीय आदेशों में से कसिमें शामलि हैं। कुछ का मानना है कि वह तीसरे, सबसे नचिले पदानुक्रम में हैं, और प्रमुखताओं और स्वर्गदूतों के बीच के मध्य क्रम—अर्थात, महादूतों का क्रम—के प्रमुख हैं, जन्हिें ईश्वर के महान कार्यों की घोषणा करने के लएि नयिुक्त कयिा गया है।

[2591] डयिोनसियिस द एरोपागटि – एक प्रतषि्ठति एथेनयिन, एथेनयिन एरोपागस का सदस्य, जो संत पौलुस प्रेरति के उपदेश द्वारा ईसाई धर्म में परविर्तति हुआ था। डायोनसियिस द एरोपागटि की कृतयिों में, नम्निलखिति वशिेष रूप से उल्लेखनीय हैं: 'Περι της ουρανιας ιεραρχιας' ('स्वर्गीय पदानुक्रम पर') और 'Περι της εκκλησιατικης ιεραρχιας...' ('चर्च पदानुक्रम पर')।

वे ऐसा आंशकि रूप से इसलए सोचते हैं क्योंकि उन्हें एक महादूत कहा जाता है, और आंशकि रूप से इसलए क्योंकि, जैसा कि संत डायोनसियिस कहते हैं, मशिन पर भेजे जाने वाले देवदूत वे उच्चतम देवदूत नहीं हैं जो परमेश्वर के सहिासन के सामने खड़े होते हैं, बल्कि केवल नचिले देवदूत हैं, जन्हिें इस उद्देश्य के लए नयिुक्त कयिा जाता है। लेकनि अधकि वश्विसनीय दृष्टकिोण यह है कि संत गैब्रयिल सेराफमि के सर्वोच्च क्रम से संबंधति हैं और उन्हें ईश्वर की इच्छा के कम महत्वपूर्ण मशिनों पर नहीं भेजा जाता है, बल्कि उन्हें केवल ईश्वर के सबसे बड़े रहस्यों की घोषणा करने के लए भेजा जाता है, जैसे कि ईश्वर के अवतार का रहस्य, और उन्हें एक महादूत कहा जाता है, उस आनंददायक समाचार के कारण जो उन्होंने परम पवत्रि कुँवारी को दयिा था, और जसिसे उन्होंने न केवल उन्हें, बल्कि सारी सृष्टि को, न केवल सांसारकि, बल्कि स्वर्गीय को भी आनंद से भर दयिा, जैसा कि संत दमास्कस इसके बारे में गाते हैं: 'क्योंकि एक ही उत्सव दोनों पर चमका, जब अदेह ने आपको आनंद दयिा'[2592] । जहाँ तक इस बात का सवाल है कि संत गैब्रयिल को सेराफमि में क्यों गनिा जाता है, हम यह तथ्य से सीखते हैं कि संत डायोनसियिस की अचूक गवाही के अनुसार, सेराफमि से अधकि कोई अन्य आदेश ईश्वर की अगम्य महमिा के सहिासन के करीब नहीं जाता है। ईश्वर के वशिेष आदेश से, स्वर्गदूतों के प्रत्येक वर्ग का अपना स्थान है: कुछ वर्ग नकिट हैं, अन्य दूर, जबकि सेराफमि का वर्ग ईश्वर के सबसे नकिट है, जैसा कि यिशायाह कहते हैं: *'मैंने प्रभु को एक ऊँचे और उत्कृष्ट सहिासन पर वरिाजमान देखा, और सेराफमि उसके चारों ओर खड़े थे, जनिमें से प्रत्येक के छह पंख थे'* (यशायाह 6:1–2)।

और चूँकि संत गैब्रयिल परमेश्वर के सामने खड़े सात सबसे करीबी स्वर्गदूतों में से एक हैं, इसलए उन्हें नश्चिति रूप से सेराफमि के क्रम से संबंधति होना चाहए, जो सेराफमि में दूसरे स्थान पर हैं। इसके अनुरूप, क्रीट के संत एंड्रयू उन्हें प्रमुख स्वर्गदूतों में से एक कहते हैं, और कहते हैं: 'परमेश्वर एक प्रमुख स्वर्गदूत को रहस्य की घोषणा करने का आदेश देते हैं। तो, यदि वह प्रमुखों में से एक था, तो वह नश्चिति रूप से उन सात आत्माओं में से एक होना चाहए जो हमेशा परमेश्वर के सामने खड़ी रहती हैं; और यदि उन सात आत्माओं में से एक है, तो वह एक सेराफमि होना चाहए। क्योंकि कौन सा स्वर्गदूत सेराफमि से उच्चतर है? परमेश्वर के सहिासन के करीब वे से अधकि कौन है? इसलए, गब्रयिल एक सेराफमि है, इस क्रम में सबसे उच्च।"

यह इस तथ्य से और भी स्पष्ट होता है कि ईश्वर के महान कार्य के लए, एक महान देवदूत को भेजना उचति था। और चूँकि वचन का अवतार ईश्वर के कार्यों में सबसे महान था, इसलए स्वर्गदूतों में सबसे उच्च, संत गैब्रयिल को इसकी घोषणा करने के लए भेजा गया था, जैसा कि संत ग्रेगरी द डायलॉजसि्ट लखिते हैं[2593] : 'इस महान मंत्रालय को पूरा करने के लए, यह उचति था कि स्वर्गदूतों में सबसे उच्च प्रकट हो, क्योंकि वह उस बात की घोषणा करता है जो सभी से अतुलनीय रूप से उच्च है। जसि प्रकार अंधकार का प्रधान राजकुमार एक बार ईव को धोखा देने आया था, उसी प्रकार यह भी उचति था कि स्वर्गीय प्रकाश का सर्वोच्च राजकुमार शुभ समाचार लाने के लए परम पवत्रि कुँवारी के सामने प्रकट हो; और यह भी उचति था कि मरियिम के पास एक सेराफमि भेजा जाए, जो ईश्वर के प्रति सेराफकि प्रेम से दहक रही थीं।"

तो आइए, हम गब्रयिल को फरश्तिों की सेनाओं में प्रधान राजकुमार, परमेश्वर के सबसे नकिट सात सेराफमि में से एक, और संपूर्ण वश्विव के महादूत के रूप में भक्तपिूर्वक सम्मान करें, जन्हिोंने संपूर्ण वश्विव के लए मोक्ष की घोषणा की; आओ हम उसे श्रद्धापूर्ण उपासना और प्रार्थनात्मक भजनों के साथ सम्मानति करें, उसके पर्व के दनि का आनंदपूर्वक उत्सव मनाएँ और मानव जाति को ऐसी महान आशीर्वादों के लए धन्यवाद दें, जो उन्होंने अतीत में प्रदान की हैं और अब भी प्रदान करते रहते हैं, मसीही रूप धारण कए परमेश्वर के समक्ष हमारे लए अनवरत मध्यस्थता करते हुए। पवत्रि महादूत गब्रयिल की प्रार्थनाओं के द्वारा, हम सभी को हमारे पापों की क्षमा प्राप्त हो!

यहाँ उल्लेख कए गए सात उच्चतम स्वर्गदूतों के संबंध में, यह ध्यान दयिा जाना चाहए कि उनमें से केवल चार के नाम पवत्रि धर्मग्रंथ में दर्ज हैं। इस प्रकार, दानयिेल की पुस्तक में लखिा है कि संत माइकल यहूदयिों की मदद करते हैं, जो तब भी ईश्वर के भक्तपिूर्वक उपासक थे (दानयिेल 10:13); यहूदा के पत्र में कहा गया है कि, जब वह मूसा के शरीर को लेकर शैतान से ववािद कर रहा था, *तो* उसने उससे कहा: *'प्रभु तुम्हें डांटे'* (यहूदा 1:9); यूहन्ना दैवज्ञ, अपने

[2592] सेडेलन टोन 3 में है। (15 दसिंबर को पहले कैथस्मिा और पक्षाघातग्रस्त के रविवार को। – *'अज़बुका वेरी' द्वारा संपादति*)

[2593] संत ग्रेगरी द डायलॉजसि्ट, रोम के पोप, 6वीं शताब्दी में रहते थे। उनके कार्यों में सबसे उल्लेखनीय *रेगुला पास्टोरलसि* ('पादरी का नयिम') है, जसिमें इस बात पर चर्चा की गई है कि एक चरवाहे को कैसा होना चाहए और उसे अपने कर्तव्यों को कैसे पूरा करना चाहए। उन्हें उनके ग्रंथ *Dialogue on the Life of the Italian Fathers* के कारण 'डायलॉगस' नाम मलिा, जसिमें कथा, मानो, दो पात्रों द्वारा सुनाई जाती है।

प्रकाशन में लिखते हैं कि वह अजगर (अर्थात् शैतान) से लड़ा (प्रकाशितवाक्य 12:7); संत गैब्रियल को दानियेल की पुस्तक से यह भी पता चलता है कि उन्होंने भविष्य में भविष्यवक्ता को परमेश्वर के सबसे छिपे हुए रहस्यों (दानियेल 8:16) का खुलासा किया, और संत लूका की सुसमाचार में कहा गया है कि गैब्रियल ने जकरियाह को अग्रदूत (प्रभु के) के गर्भधारण के बारे में सूचित किया, और परम पवित्र कुँवारी मरियम को—ईश्वर के वचन के अवतार (लूका 1) के बारे में। संत राफाएल का उल्लेख तोबित की पुस्तक में मिलता है, जहाँ कहा गया है कि उन्होंने युवा तोबित को उसकी यात्रा पर अप्रत्याशित दुर्भाग्यों से बचाया, कन्या सारा से दानव को भगाया, और तोबित की दृष्टि वापस कर दी (तोबित 12:15)। संत उरीएल के संबंध में, एज्रा की तीसरी पुस्तक में कहा गया है कि उन्होंने एज्रा से 'आग की गंभीरता' को तौलने का सुझाव दिया (3 एज्रा 4:5)।

जहाँ तक अन्य तीन स्वर्गदूतों का सवाल है, यद्यपि पवित्र धर्मग्रंथों में उनका नाम से उल्लेख नहीं है, तथापि, दिव्य धर्मग्रंथों के कुछ धर्मनिष्ठ व्याख्याकारों की समझ के अनुसार, यह माना जा सकता है कि सलाफिएल वह स्वर्गदूत है जो हागर के सामने रेगिस्तान में प्रकट हुआ था जब वह गहरे दुख में प्रार्थना कर रही थी; उसने उससे कहा: 'परमेश्वर ने लड़के की आवाज़ (उत्पत्ति 21:17) और तुम्हारी विनम्र प्रार्थना सुनी है'। जेहुदिएल नाम उस स्वर्गदूत से संबंधित है, जिसे प्रभु ने मरुभूमि में इस्राएलियों के पास भेजने का वादा किया था, ताकि वह उन्हें प्रतिज्ञात देश में ले जा सके, और इस प्रकार प्रभु की महिमा के लिए परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करने वालों को पुरस्कृत कर सके (निर्ग. 23:22-23)। माना जाता है कि बिराकिएल उन तीन स्वर्गदूतों में से एक थे जो ममरे की ओक पर अब्राहम के पास प्रकट हुए थे, जिन्होंने उनकी बाँझपन को दूर करके सारा को आशीर्वाद दिया और उन्हें एक पुत्र, इसहाक, का वरदान दिया, और पवित्र त्रिमूर्ति: पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा की पूर्व-छाया प्रस्तुत की (उत्पत्ति 18)।

इन संतों, सात उच्चतम स्वर्गदूतों—जिनमें माइकल पहले और गब्रियल दूसरे हैं—को पवित्र चर्च की धर्मपरायण समझ के अनुसार, आदिकाल से ही आइकन (चित्रों) में चित्रित किया गया है और उनके नाम पर समर्पित चर्चों के निर्माण के माध्यम से उनकी पूजा की गई है। चर्च का इतिहास इस संबंध में निम्नलिखित का वर्णन करता है:

ईश्वर-विरोधी सम्राट डायोक्लेटियन[2594] , जो ईसाई धर्म का एक क्रूर उत्पीड़क था, ने प्राचीन रोम[2595] में अपने लिए पत्थर के स्नानघर बनवाते समय आदेश दिया कि बहुत सारे ईसाइयों को पकड़कर सख्त और निर्दयी पहरे के तहत उस परियोजना पर काम करने के लिए भेजा जाए, जिन्होंने संतों को प्रताड़ित और उत्पीड़ित किया। वहाँ कई हजार पवित्र शहीदों को पसीने और खून में लथपथ परिश्रम करते देखा जा सकता था, और उनमें से कई को मसीह के लिए तलवार और विभिन्न प्रकार की फांसी से वहाँ मार डाला गया। इस प्रकार, इस कठिन परिश्रम के माध्यम से, शाही महलों जितनी विशाल और भव्य एक इमारत का निर्माण किया गया। जब, कई वर्षों बाद, यूनानी अधर्मी अपने राजाओं के साथ विनष्ट हो गए, और ईसाई धर्म, ईसाई राजाओं के सिंहासनारोहण के साथ, संपूर्ण ब्रह्मांड में विजयी हुआ – तब रोम में रहने वाले विश्वासियों ने, डियोक्लेटियन के भव्य स्नानागारों को निहारते हुए, उन्हें याद आया कि यह इमारत ईसाइयों द्वारा बनाई गई थी; और, इसे मूर्तिपूजक अशुद्धता से शुद्ध करने के बाद, उन्होंने इसे सात प्रमुख स्वर्गीय आत्माओं, स्वदूतों के सेनापतियों और आर्चिस्ट्रेटिगोई को समर्पित एक ईसाई चर्च में बदल दिया: माइकल, गैब्रियल, राफेल, युरियल, सेलाफिएल, येहुदिएल और बराचिएल।

अन्य शहरों ने भी रोम का अनुसरण करना शुरू कर दिया, जैसे कि कैंपेनिया में नेपल्स[2596] और सिसिली में पालेर्मो[2597] , जहाँ इन सात शासक स्वर्गदूतों के सम्मान में पत्थर के चर्च भी बनाए गए थे। उनके चेहरों को चर्च की दीवारों पर पैनलों में प्रतिमा-विज्ञान के माध्यम से और मोज़ेक में दर्शाया गया था, और प्रत्येक को विशिष्ट विशेषताओं द्वारा दूसरों से अलग किया गया था जो रहस्यमय रूप से उनकी अदृश्य सेवा का प्रतीक थीं। वहाँ स्वर्गदूतों का चित्रण इस प्रकार था: संत माइकल को लूसिफर को पैरों तले कुचलते हुए दर्शाया गया था[2598] और उनके बाएँ हाथ में खजूर की

[2594] रोमन सम्राट डायोक्लेटियन ने 284 से 305 तक शासन किया और रोमन साम्राज्य के पूर्वी हिस्से पर शासन किया, जबकि उनके दोस्त मैक्सिमियन ने पश्चिमी हिस्से पर शासन किया।

[2595] थर्मा सार्वजनिक स्नानागार थे, जिन्हें रोम में विशेष भव्यता के साथ बनाया गया था। इन स्नानागारों में व्यायाम के लिए भी क्षेत्र शामिल थे।

[2596] कैम्पानिया दक्षिणी इटली का एक प्रांत है। यह प्रांत इसलिए उल्लेखनीय है क्योंकि यह पहला स्थान था जहाँ चर्चों में उपयोग के लिए घंटियाँ ढली थीं, और इसी कारण चर्च विधानों में इन्हें 'कैम्पानास' (प्रांत के नाम पर) कहा जाता है।

[2597] सिसिली – भूमध्य सागर के सबसे बड़े द्वीपों में से एक।

[2598] लुसिफिर – 'प्रकाश लाने वाला', भोर का तारा। लाक्षणिक रूप से, यह नाम पहले पतित देवदूत – शैतान – पर लगाया जाता है।

हरी टहनी तथा दाहिने हाथ में एक भाला था, जिसके शीर्ष पर एक सफेद झंडा लगा था जिसमें लाल क्रॉस बुना हुआ था[2599] ; संत गैब्रियल को अपने दाहिने हाथ में एक लालटेन पकड़े हुए दिखाया गया था, जिसमें एक जलती हुई मोमबत्ती थी, और अपने बाएं हाथ में हरे जैस्पर का एक पत्थर का दर्पण था, जो जगह-जगह से लाल रंग के धब्बों से सना हुआ था[2600] । संत राफेल को अपने बाएँ हाथ में, थोड़ी ऊँची उठाई हुई पात्र में औषधीय उपचारों के साथ दिखाया गया है, जबकि अपने दाहिने हाथ से वह युवा टोबियास का मार्गदर्शन कर रहे हैं, जो नदी टायग्रिस में पकड़ी गई एक मछली ले जा रहा है[2601] . संत उरियल को अपने दाहिने हाथ में छाती के पास एक खींची हुई तलवार पकड़े हुए दिखाया गया है, जबकि उनके बाएं हाथ में, नीचे की ओर, एक ज्वलंत लौ है[2602] । संत सेलाफिएल को अपना चेहरा और आँखें नीचे की ओर किए हुए, और अपने हाथ छाती पर टिकाए हुए दिखाया गया है, जैसा कि कोई व्यक्ति गहरी भक्ति से प्रार्थना करते समय करता है। संत जेहुदिएल को अपने दाहिने हाथ में एक सुनहरा ताज और अपने बाएं हाथ में तीन काले रस्सियों से बनी, तीन सिरों वाली एक कोड़ा पकड़े हुए दिखाया गया है[2603] । संत बराचिएल को अपने वस्त्र पर, अपनी छाती पर सफेद गुलाब धारण किए हुए दिखाया गया है[2604] ।

ट्रोपारियन, स्वर 4:

स्वर्गीय सेनाओं के सेनापति, हम जो अयोग्य हैं, निरंतर आपसे विनती करते हैं, कि आपकी प्रार्थनाओं द्वारा आप हमें अपनी महिमा के अदेह पंखों की छतरी से ढकें, हमें संरक्षित करते हुए जब हम नम्रतापूर्वक प्रणाम करते हैं और पुकारते हैं: हमें विपत्ति से बचाएँ, हे स्वर्गीय सेनाओं के सेनापति।

कॉन्टाकियन, स्वर 8:

हे परम तेजस्वी, परम सम्माननीय, और सर्वशक्तिमान, असीम और भयानक त्रिमूर्ति, आप, हे महासेनापति, एक गौरवशाली सेवक और मध्यस्थ हैं; अब अनवरत प्रार्थना करें कि हम सभी विपत्तियों और यातनाओं से मुक्त हो सकें, ताकि हम आपसे पुकार सकें: हे अपने सेवकों के रक्षक, आनन्दित हो।

संत आइरेनियस, सिरमियम के पवित्र शहीद और बिशप का कष्टकथा

26 मार्च को स्मरणोत्सव

[2605][2606]निष्ठावानों ने, मसीह के लिए, विभिन्न वीरतापूर्ण कारनामे करते हुए, उत्सुकता से उन कष्टों को सहा जो उनके यातनादाताओं ने उन पर डाले थे, और अपने अनंत पुरस्कार की आशा में रहे। उस समय, पन्नोनिया के एक शहर सिर्मियम[2607] में, बिशप एक युवा व्यक्ति थे, फिर भी वे ऑर्थोडॉक्स धर्म और प्रभु के कानून में सिद्ध थे। उनका नाम

[2599] संत महादूत माइकल के भाले पर लगा सफेद ध्वज उनकी पवित्रता और शुद्धता का प्रतीक है, जबकि क्रॉस इस बात का प्रतीक है कि अमूर्त शक्तियाँ क्रॉस के नाम पर और मसीह के नाम पर अंधकार और निराशा के राज्य के खिलाफ संघर्ष कर रही हैं।

[2600] दर्पण इस बात का प्रतीक है कि महादूत सेंट गेब्रियल मानव जाति के उद्धार के संबंध में ईश्वर के आदेशों के सूचक हैं, जबकि मोमबत्ती वाली लालटेन यह दर्शाती है कि ईश्वर के आदेश उनकी पूर्ति के समय तक छिपे रहते हैं, और पूर्ति के बाद भी केवल वे ही उन्हें समझ पाते हैं जो ईश्वर के वचन और अपने अंतरात्मा के दर्पण में दृढ़ता से झांकते हैं।

[2601] चर्च की आस्था के अनुसार, संत राफेल सभी पीड़ितों की सहायता और उपचार के लिए ईश्वर से प्रार्थना करते हैं।

[2602] यह उस महादूत के परमेश्वर के प्रति विशेष रूप से प्रबल उत्साह का प्रतीक है।

[2603] यह धार्मिक और पवित्र लोगों के लिए ईश्वर से मिलने वाले पुरस्कार, और पापियों के लिए दंड का प्रतीक है।

[2604] संत बराखिएल, मानो, स्वर्ग के राज्य में आनंद और अनंत शांति के अग्रदूत हैं।

[2605] वर्ष 284 में, रोमन साम्राज्य को पूर्वी और पश्चिमी भागों में विभाजित किया गया था: पूर्व पर डायोक्लेटियन और पश्चिमी पर उनके मित्र मैक्सिमियन का शासन था; उन्होंने 284 से 305 तक शासन किया।

[2606] पैनोनिया – डैन्यूब नदी के दक्षिण में रोमन साम्राज्य के प्रमुख क्षेत्रों में से एक।

[2607] सिरमियम लोअर पैनोनिया में, सावा नदी के किनारे एक प्राचीन शहर है। आज, इसके विशाल खंडहर मित्रोविца के पास पाए जा सकते हैं।

आइरेनयिस था। मसीह के प्रति अपने प्रेम के लिए कई उत्पीड़न सहते हुए, उन्हें मसीह की अपनी स्वीकारोक्ति के लिए विजय का सुयोग्य मुकुट प्राप्त करने के योग्य माना गया।

सिरिफ़ियम में सैनिकों द्वारा पकड़े जाने के बाद, आइरेनयिस को हेगेमोन[2608] प्रोबस के समक्ष पन्नोनिया लाया गया। उसकी ओर मुड़कर, प्रोबस ने कहा:

'राजा के कानूनों का पालन करते हुए, हमारे देवताओं को बलिदान चढ़ाओ।'

महाधर्माध्यक्ष संत आइरेनयिस ने उत्तर दिया:

'जो झूठे देवताओं को बलिदान चढ़ाता है, एकमात्र सच्चे ईश्वर के बजाय, उसे अपने लोगों से अलग कर दिया जाएगा।'

गवर्नर ने फिर कहा:

'अत्यंत कृपालु राजाओं ने सभी को आज्ञा दी है: या तो देवताओं को बलिदान चढ़ाओ, या यातनाओं को सहो।'

'मुझे आज्ञा दी गई है,' संत ने उत्तर दिया, 'कि मैं सच्चे ईश्वर का त्याग करके राक्षसों को बलिदान चढ़ाने के बजाय सबसे भयानक यातनाएँ सहूँ।'

इगेमोन ने एक बार फिर दोहराया:

'या तो देवताओं को बलिदान चढ़ाओ, या मैं तुरंत आदेश दे दूँगा कि तुम्हें यातनाएँ दी जाएँ।'

'मैं प्रसन्न होऊँगा,' संत ने उत्तर दिया, 'यदि तुम मेरे साथ ऐसा करोगे, क्योंकि तब मैं भी अपने प्रभु के दुखों में सहभागी होऊँगा।'

तब राज्यपाल ने तुरंत सैनिकों को संत को यातना देने का आदेश दिया। क्रूर यातनाओं के दौरान, राज्यपाल ने उससे पूछा:

'इरनेयस, तुम क्या कहते हो – क्या अब तुम देवताओं को बलिदान दोगे?'

संत ने उत्तर दिया:

'मैं अपने ईश्वर के प्रति अपने विश्वासपूर्ण स्वीकारोक्ति के माध्यम से बलिदान अर्पित करता हूँ, जिन्हें मैं हमेशा से बलिदान अर्पित करता आया हूँ।'

संत के माता-पिता और उनका सारा परिवार आ गया, और जब उन्होंने देखा कि उनके साथ निर्दयता से यातना दी जा रही है, तो वे उनके पैरों से लिपट गए और उनसे अपनी जवानी की दया करने तथा राजा की आज्ञा मानने की विनती करने लगे। एक ओर, उनके माता-पिता रो रहे थे; दूसरी ओर, उनके सभी पड़ोसी, दोस्त और रिश्तेदार उनके लिए जोर-जोर से रो रहे थे, और एक स्वर में वे चिल्लाए:

'इरनेयस, अपनी युवावस्था की खिलती हुई सुंदरता पर दया करो।'

लेकिन संत, जो ईश्वर के प्रति परम आकांक्षा से परिपूर्ण थे और अपनी आध्यात्मिक दृष्टि में ईश्वर की आज्ञा को बनाए हुए थे, उन्होंने सभी को उत्तर दिया:

– मेरे प्रभु यीशु मसीह के वचन इस प्रकार हैं: *'जो कोई मनुष्यों के सामने मुझ से इनकार करेगा, मैं भी अपने स्वर्गीय पिता के सामने उससे इनकार करूँगा'* (मत्ती 10:33)। इसलिए, हे प्रिय, यह जान लो: न तो तुम्हारी विनतियों से, न राजा की धमकियों से, और न ही किसी अन्य साधन से तुम मुझे परमेश्वर और उसकी व्यवस्था से हटा सकोगे; क्योंकि मैं पूरे हृदय से स्वर्गीय बुलावे की आशा की लालसा करता हूँ[2609] ।

प्रोबस ने धन्य इरेनयिस को एक बार फिर अपने पास बुलाकर, उन्हें यह कहते हुए मनाने का प्रयास किया:

'कम से कम उन लोगों के आँसुओं के लिए ही दया दिखाओ जो तुम्हारे लिए शोक मना रहे हैं, और अपनी मूर्खता छोड़ दो; अपनी जवानी की रक्षा करो और देवताओं को बलिदान चढ़ाओ।'

इस पर संत ने उत्तर दिया:

'यदि मैं ऐसा बलिदान नहीं चढ़ाता तो मैं स्वयं को हमेशा के लिए बचा लूंगा।'

तब राज्यपाल ने इरेनायस को जेल भेजने का आदेश दिया, जब तक कि वह यह तय कर लेता कि उसके साथ क्या करना है।

[2608] हेगेमोन – ἡγεμων: एक प्रांतीय गवर्नर या प्रमुख।

[2609] ऊपरी – ऊँचा, दिव्य (यहे. 41:7; कुल. 3:3)।

इस बीच, जब संत कई दिनों से जेल में थे, तो वे अपनी कैद की कठिनाइयों के कारण विभिन्न बीमारियों से पीड़ित हो गए थे। लेकिन एक रात आधी रात को, प्रांतीय गवर्नर प्रोब ने उन्हें एक बार फिर अपने सामने लाने का आदेश दिया और उनसे कहा:

'इन यातनाओं का अब बस बहुत हुआ, जिनसे तुम इतने लंबे समय से गुज़र रहे हो। तुम्हारे लिए बेहतर होगा कि तुम होश में आओ और हमारे देवताओं को बलिदान चढ़ाओ।'

'यदि आपने मेरे साथ क्या करना है, यह तय कर लिया है,' संत आइरेनियस ने उत्तर दिया, 'तो इसे बिना देरी के जल्दी करें। जान लें कि मैं मसीह के नाम की उसी स्वीकारोक्ति के प्रति सच्चा बना हुआ हूँ, जिस पर मैं अब तक अडिग रहा हूँ; मैं अंत तक दृढ़ और अपरिवर्तनीय रहूँगा।'

तब राज्यपाल ने क्रोध में आकर आदेश दिया कि उसे लंबे समय तक लाठियों से पीटा जाए। अपने कष्टों के बीच, वह चिल्लाया:

'मेरा एक ईश्वर है, जिसे मैं बचपन से ही सम्मान देना सीख गया हूँ; मैं उसी की पूजा करता हूँ, और उसी को बलिदान अर्पित करता हूँ; परन्तु मैं मानव हाथों से बने देवताओं की पूजा नहीं कर सकता।'

प्रोब ने उससे कहा, 'तो फिर उन यातनाओं से संतुष्ट रहो, जो तुमने खुद पर लाई हैं; मृत्यु की कामना मत करो।'

संत ने उत्तर दिया:

प्रोब ने पूछा, 'क्या तुम्हारी कोई पत्नी है?' 'मैं मरूँगा नहीं, क्योंकि जीवन मेरा है, और मेरे प्रभु यीशु मसीह के नाम के लिए तुम जो यातनाएँ मुझे देते हो, उनसे मुझे कोई पीड़ा नहीं होती। मैं तुम्हें और भी बताऊँगा: इनके द्वारा मुझे मृत्यु नहीं, बल्कि अनंत जीवन की आशा है।'

'क्या तुम्हारी पत्नी है?' प्रोब ने पूछा।

संत ने उत्तर दिया कि उसे कोई नहीं है। फिर प्रोब ने फिर पूछा:

'क्या तुम्हारे माता-पिता हैं?'

'मेरे कोई नहीं हैं,' संत ने उत्तर दिया। प्रोब ने फिर पूछा:

'क्या तुम्हारे कोई बेटे या बेटियाँ हैं?'

संत ने उत्तर दिया कि उसके पास इनमें से कोई भी नहीं था।

'तो फिर,' प्रोब ने पूछा, 'वे कौन थे जिन्होंने मुकदमे में तुम्हारे लिए रोया और शोक मनाया?'

संत आइरेनियस ने उत्तर दिया:

'मैं अपने प्रभु यीशु मसीह की आज्ञाओं का पालन करता हूँ, जिन्होंने कहा: "यदि कोई अपने पिता और माता से इनकार नहीं करता और अपनी सारी संपत्ति को त्याग नहीं देता, *तो वह मेरा चेला नहीं हो सकता*" (लूका 14:26), *"और जो कोई पिता या माता, पुत्र या बेटी को मुझसे अधिक प्रेम करता है, वह मुझ योग्य नहीं है"* (मत्ती 10:37)। अत; जो कोई परमेश्वर से सच्चा प्रेम करता है और केवल उसी पर भरोसा रखता है, वह सांसारिक व्यर्थता को तुच्छ समझता है और परमेश्वर के सिवा किसी को भी अपना पिता नहीं मानता।

प्रोब ने कहा, 'लेकिन मैंने सुना है कि तुम्हारे पुत्र हैं: तो, केवल उनके प्रति प्रेम के लिए, देवताओं को बलिदान चढ़ाओ, कहीं ऐसा न हो कि वे तुम्हारे पिता को तुम्हारी ही आँखों के सामने नष्ट कर दें।'

संत आइरेनियस ने उत्तर दिया:

'मेरे बेटों का पिता परमेश्वर है, जो मेरा भी पिता है और जिसकी मैं आराधना करता हूँ, क्योंकि वह उन्हें और मुझे दोनों को बचाने में समर्थ है। इसलिए, हम सचमुच और पूरी तरह से उस पर अपना भरोसा रखते हैं, और हमने अपनी आत्माओं को उसी के हवाले कर दिया है ताकि हम नाश न हो जाएँ। तो, जो तुम्हारे राजाओं ने तुम्हें आज्ञा दी है, वही करो।'

'अपने आप को और अपने माता-पिता को बचाओ,' प्रोब ने आग्रह किया, 'देवताओं को बलिदान चढ़ाओ और राजा की आज्ञाओं का पालन करो; अन्यथा, मैं तुम्हें विभिन्न यातनाओं से गुज़राऊँगा और तुम्हारा विनाश कर दूँगा।'

आइरनेयस ने कहा, 'मैं तुम्हें पहले ही बता चुका हूँ कि तुम मेरे साथ जो चाहो कर सकते हो, क्योंकि तुम अच्छी तरह जानते हो कि मैं कभी भी तुम्हारे घृणित देवताओं को बलिदान नहीं दूँगा।' और अब देखो कि मेरे प्रभु यीशु मसीह ने मुझे तुम्हारी और शैतान की युक्तियों के विरुद्ध कितनी बड़ी सहनशीलता दी है, जिनके द्वारा उसने परमेश्वर के संतों के लिए यातनाएँ तैयार की हैं।

प्रोब. ने कहा, 'यदि तुम देवताओं को बलिदान नहीं चढ़ाओगे तो मैं तुम्हें मृत्युदंड की घोषणा करता हूँ।'

संत आइरेनियस ने उत्तर दिया:

'ऐसा करके आप मुझे प्रसन्न करेंगे, क्योंकि मृत्युदंड मुझे शाश्वत आनंद की ओर ले जाएगा।'

तब प्रोब ने संत पर निम्नलिखित मृत्युदंड सुनाया:

'मैं आदेश देता हूँ कि इरेनायस, जो राजा के फरमानों की अवज्ञा करता है, को नदी में फेंक दिया जाए।'

संत आइरेनियस ने उत्तर में कहा:

'मुझे आपसे अनेक और अत्यंत क्रूर यातनाओं की अपेक्षा थी, ताकि आप जान सकें कि ईसाई, परमेश्वर में अपने विश्वास के लिए, मृत्यु को तुच्छ समझने के आदी हैं। लेकिन चूँकि आपने मुझे ऐसी यातनाओं की सजा नहीं दी है, मैं इस बात से प्रसन्न हूँ कि आपने कम से कम यह सजा तो मुझे सुनाई है।'

पालक, उस धन्य पुरुष की ऐसी धृष्टता से क्रोधित होकर, ने आदेश दिया कि उसकी तलवार से गर्दन काट दी जाए, और फिर उसके शरीर को नदी में फेंक दिया जाए। हालाँकि, संत ने, जैसे कोई और विजय-माला ग्रहण करते हुए, यह उत्तर सुनकर परमेश्वर का धन्यवाद किया, यह कहते हुए:

'हे प्रभु यीशु, मैं तेरा धन्यवाद करता हूँ कि तूने मुझे तेरे पवित्र नाम का प्रचार करने में ऐसा अटूट धैर्य दिया है, कि मैं तेरी अनंत महिमा में सहभागी होने के योग्य ठहराया जाऊँ।'

जब वह अभी भी ये शब्द बोल ही रहा था, तो उसे 'आर्टेमिसि' नामक पुल पर ले जाया गया, जो उनकी दुष्ट देवी आर्टेमिसि[2610] के सम्मान में बनाया गया था, जहाँ से उसे फेंका जाना था। वहाँ, अपने कपड़े उतारकर और स्वर्ग की ओर अपने हाथ उठाकर, संत आइरेनियस ने गहरी भक्ति के साथ प्रार्थना की, और कहा:

हे प्रभु यीशु मसीह, जिन्होंने संसार के उद्धार के लिए दुःख सहने की कृपा की! हे प्रभु, अपने विश्वासयोग्य सेवक आइरेनियस की आत्मा को ग्रहण करने के लिए अपनी स्वर्गद्वार खोलें, जिसे आपके पवित्र नाम के लिए सिरमियम की ऑर्थोडॉक्स चर्च से दुःख सहने के लिए ले जाया गया है। मैं मृत्यु को स्वीकार करने का परित्याग नहीं करता। परन्तु हे प्रभु, मैं तेरी अगणित दया के द्वारा विनती करता हूँ, कि तू अपनी सर्मियुम की कलीसिया के लोगों को आने वाली सभी विपत्तियों और बुराइयों से, और दृश्य तथा अदृश्य शत्रुओं से बचा और संरक्षित कर, और उन पर अपनी पवित्र आस्था में दृढ़ होने की कृपा कर।

यह प्रार्थना करने के बाद, संत के सिर पर तलवार से वार किया गया और उन्हें सावा नामक नदी में फेंक दिया गया। सिरमियम के बिशप, संत आइरेनियस को, हमारे प्रभु यीशु मसीह के राज्यकाल में, पन्नोनिया पर प्रोबस के शासन के दौरान, 26 मार्च को शहीद कर दिया गया था, जिनका महिमा युगानुयुग हो। आमीन।

हमारे पूजनीय पिता मल्खुस का जीवन

26 मार्च को स्मरणोत्सव

अपनी युवावस्था में, आदरणीय मल्खुस सीरिया के एंटिओक[2611] से तीस स्टेडियम दूर स्थित मारोनियन गाँव में एक किसान थे[2612] । वह अपने माता-पिता का एकमात्र पुत्र था, और इसलिए वे, अपने वंश के उत्तराधिकारी के रूप में, उसे

[2610] आर्टेमिसि – जिसे डायना के नाम से भी जाना जाता है – एक देवी जो चंद्रमा का प्रतीक थी और जिसे जंगलों तथा शिकार की संरक्षक माना जाता था।

[2611] स्टेडियन – दूरी की एक इकाई जो 73 से 88 फर्लांग तक होती है।

[2612] सीरिया में अंफ़िलोपोलिस – सीरिया के प्राचीन और सबसे अमीर शहरों में से एक, इसकी राजधानी, जो ओरोंटेस नदी पर स्थित है, उस स्थान से लगभग 10 वर्स्ट दूर जहाँ यह भूमध्य सागर में मिलती है, लेबनान और टॉरस की पर्वत श्रृंखलाओं के बीच; इसकी स्थापना ईसा मसीह से 300 साल पहले सेल्यूकस निकिटर द्वारा की गई थी और इसका नाम उनके पिता, एंटिओकस के नाम पर रखा गया था। एंटिओक ईसाई चर्च के लिए यरूशलेम के बाद ईसाई धर्म के दूसरे महान केंद्र के रूप में और गैर-यहूदियों (Gentiles) के बीच स्थापित ईसाई चर्चों की जननी के रूप में विशेष महत्व रखता है। प्रसिद्ध अंतियक की कलीसिया की स्थापना मूल रूप से संत पौलुस प्रेरित और बरनबास द्वारा की गई थी, और बाद में प्रेरित पतरस द्वारा इसकी पुष्टि की गई। अंतियक में विधर्मी (एरियन और नेस्टोरियन) विवादों के दौरान कलीसिया के नेताओं की कई उल्लेखनीय परिषदों की मेजबानी हुई। अनादि काल से, अंकोई की कलीसिया को अलेक्जेंड्रिया, यरूशलेम, कॉन्स्टेंटिनोपल और रोम की कलीसियाओं के समकक्ष विशेष विशेषाधिकार प्राप्त थे; इसके बिशपों के पास एक पैट्रिआर्क का पद और विशेषाधिकार थे। वर्तमान में, अंत्योख तुर्की के शासन के अधीन है और यह 10,000 तक की आबादी वाला एक छोटा, गरीब शहर है।

अपना वारसि बनाना चाहते थे, इसलिए उन्होंने उसे शादी करने के लिए कहा। लेकिन उनकी सारी बातों का जवाब उन्होंने एक ही उत्तर दिया:

'मैं गृहस्थ होने की बजाय भिक्षु बनना पसंद करूँगा।'

चाहे उनके पिता ने कितनी भी धमकियाँ दीं और उनकी माँ ने कितनी भी नरमी से समझाया, मल्च ने अपने माता-पिता की अवज्ञा की और अंत में, ईश्वर के लिए अपना घर, अपने माता-पिता और विवाह छोड़कर चुपके से भाग गया। वह इम्मा और विरिया के बीच स्थित एक सुनसान क्षेत्र की ओर चल पड़ा। वहाँ उसे एक मठ मिला जिसके संन्यासी ईश्वर को समर्पित जीवन जीते थे। स्वयं को उनके मार्गदर्शन के हवाले कर, मलच वहीं ठहर गया और श्रम तथा उपवास के माध्यम से अपने सांसारिक वासनाओं को दमन करते हुए, मठ के तप-त्याग में स्वयं को निपुण बनाने लगा।

कई वर्षों बाद, उसके मन में यह विचार आया कि वह अपनी मातृभूमि लौट जाए और अपनी माँ को सांत्वना दे, जो तब तक विधवा हो चुकी थीं; क्योंकि उसने सुना था कि उसके पिता का निधन हो गया है, और उसका इरादा अपनी विरासत में मिली संपत्ति को बेचकर उसकी आय का एक हिस्सा गरीबों को, एक हिस्सा मठों को देने का था, और अपनी जरूरतों के लिए थोड़ी सी राशि रख लेना था।

मलचा के इरादे के बारे में जानने पर, मठाध्यक्ष ने उसे फटकारना शुरू कर दिया, और उसे यह विश्वास दिलाया कि यह एक शैतानी प्रलोभन था और मानव जाति के प्राचीन शत्रु की चालाकी थी, जो एक अच्छे काम प्रतीत होने वाले भेष में कुशलता से छिपी हुई थी।

उसने कहा, 'यह ठीक वैसा ही होगा जैसा धर्मग्रंथ कहता है: *"एक कुत्ता अपनी उल्टी में लौटता है"* (2 पतरस 2:22)। इस तरह, कई भिक्षु भटक गए हैं, क्योंकि शैतान कभी भी किसी पर खुले तौर पर युद्ध नहीं छेड़ता।'

अपना तर्क साबित करने के लिए, मठाधीश ने मल्चु को धर्मग्रंथों से विभिन्न कथाएँ सुनाईं, शुरुआत आदम और हव्वा से करते हुए, जिन्हें दिव्य गरिमा प्राप्त करने की आशा में शैतान ने प्रलोभित किया था और परिणामस्वरूप उन्हें स्वर्ग से निकाल दिया गया। जब मठाध्यक्ष उसे मनाने में असमर्थ रहे, तो वे घुटनों के बल गिर पड़े और उससे विनती करने लगे कि वह अपने आध्यात्मिक परिवार को न छोड़ें, अन्यथा वह स्वयं को नष्ट कर देंगे, और हल में हाथ डालने के बाद पीछे मुड़कर न देखें (लूका 9:62)। हालाँकि, मल्च ने मठाध्यक्ष की बात पर कोई ध्यान नहीं दिया और मठ छोड़ दिया।

मालच को विदा करते हुए, मठाध्यक्ष ने उसे आँसुओं से विदा किया, मानो वह कोई मृतक हो जिसे दफनाने ले जाया जा रहा हो।

'मैं देखता हूँ, मेरे बच्चे,'—ये थे मठपति के मल्च के लिए अंतिम शब्द—'कि तुम शैतान की शक्ति के अधीन हो गए हो। मैं हमसे तुम्हारे अलग होने के कारण के बारे में और कोई सवाल नहीं पूछूँगा, और न ही मैं तुम्हारे बहाने स्वीकार करूँगा। एक भेड़ जो बाड़ के बाहर भटक जाती है, वह तुरंत भेड़ियों का शिकार हो जाती है[2613] ।'

इस प्रकार वे अलग हो गए, और माल्च अपनी यात्रा पर निकल पड़ा।

उस रेगिस्तान से बहुत दूर नहीं, विरिया से एडेसा तक एक प्रमुख सार्वजनिक सड़क थी[2614] ; उस सड़क पर, यात्रियों पर अक्सर सारासेनियों द्वारा हमला किया जाता था[2615] । इसलिए, यात्रा पर निकलते समय, यात्री सारासेनी हमले की स्थिति में एक साथ एक ही समूह में इकट्ठा हो जाते थे, ताकि वे उनका विरोध कर सकें और पकड़े जाने से बच सकें; मलख़ भी ऐसे ही यात्रियों के एक समूह में शामिल हो गया, जिसमें लगभग सत्तर लोग थे, जिनमें कई महिलाएँ भी थीं। जब वे उस सड़क पर साथ-साथ चल रहे थे, तो अचानक, उन्हें भयभीत कर देने वाली घटना घटी, जब युद्ध के लिए सजे-धजे अर्धनग्न इसमाइलियों की एक भीड़ प्रकट हुई। यात्रियों को घेरकर, उन्होंने मलख सहित उन सभी को पकड़ लिया और बंदी बना लिया। तभी मल्च को अपने पूर्व इरादे की व्यर्थता और दुश्मन की धोखाधड़ी का एहसास हुआ, और उसे मठाधीश की सलाह की अवज्ञा करने, खुद को मठ समुदाय से अलग करने और सांसारिक दुनिया में शामिल होने, और दूसरों के साथ विदेशी के हाथों में पड़ने पर पछतावा हुआ। लेकिन उसका पश्चाताप बहुत देर से हुआ था: पहले वह अपने पिता की संपत्ति का वारिस बनना चाहता था, अब वह स्वयं सारासेनों की संपत्ति बन गया था। जब बंदियों को बर्बर लोगों में बाँटा गया, तो भिक्षु माल्च, एक महिला के साथ, एक अरब के हिस्से में आया, जिसने उन दोनों को एक ऊँट पर बिठाकर

[2613] प्रभु की 'नेक चरवाहे' की दृष्टान्त देखें: यूहन्ना 10:1–5।

[2614] एडेसा मेसोपोटामिया में एक शहर है, जो यूफ्रेटिस नदी के बाएं किनारे से 10 मील दूर है।

[2615] सारासेन – अरब के निवासी। मूल रूप से, यह नाम एक खानाबदोश डाकू जनजाति को संदर्भित करता था, लेकिन बाद में ईसाई लेखकों ने इस शब्द को सामान्य रूप से सभी अरबों और मुसलमानों पर लागू कर दिया।

उनके साथ तेजी से रवाना हो गया। चूंकि ऊंट बहुत तेज़ी से चल रहा था, मल्ख और वह महिला उस पर सवार होकर गिरने से बचने के लिए एक-दूसरे से कसकर चिपके रहे, और इस तरह उन्होंने अपनी यात्रा जारी रखी; रास्ते में उनका भोजन अधपका मांस और ऊंट का दूध था।

अरब मरुभूमि पार करने और एक बड़ी नदी पार करने के बाद, सारासेन अपने देश लौट आए। मलख के स्वामी ने अपने बंदियों को अपनी पत्नी के पास लाया और सारसेन की प्रथा के अनुसार, उन्हें अपनी पत्नी और बच्चों के सामने झुकने का आदेश दिया। मलख को उस बंदी महिला के साथ अपना सिर झुकाने के लिए मजबूर होना पड़ा और उसने अपनी स्वामिनी को श्रद्धांजलि अर्पित की, जिसने फिर मलख को घरेलू कामों में लगा दिया: पानी लाना, कूड़ा-करकट साफ करना और अन्य सबसे कठिन कार्य करना। इस प्रकार माल्च ने अपने पिता, मठाधीश की अवज्ञा करने, एक भिक्षु का भेष पूरी तरह त्याग देने, उस देश की प्रथा के अनुसार नग्न चलने, और, भयानक गर्मी के कारण, शरीर के केवल उन हिस्सों को कपड़ों से ढकने के कारण ही इतना श्रम किया जिन्हें ढकने की आवश्यकता थी। फिर उसे रेगिस्तान में भेड़ों की देखभाल करने का आदेश दिया गया, और यहाँ मलख को अपनी बदकिस्मती में एकमात्र सांत्वना और आराम इस बात में मिला कि वह शायद ही कभी अपने मालकिों और साथी कामगारों को देख पाता था; और, भेड़ों के साथ एकांत में रहते हुए, उसे संत जेम्स याद आते थे (उत्पत्ति 30:36) और मूसा (निर्गमन 3:1), जिन्होंने एक बार रेगिस्तान में झुंडों की रखवाली की थी। वह पनीर और दूध पर गुज़ारा करता था, और भेड़ों की देखभाल करते समय, वह मठ में सीखे हुए भजन गाते हुए भक्तिपूर्वक प्रार्थना करता था; और इसमें उसे अपनी कैद में सांत्वना मिली, और वह ईश्वर का धन्यवाद करता था कि जिस मठवासी जीवन को उसने अपने देश में त्याग दिया था, उसे अब उसने रेगिस्तान में फिर से खोज लिया था। लेकिन शैतान की चालाकी हर जगह इतनी सूक्ष्म है कि कोई उसकी कल्पना भी नहीं कर सकता: क्योंकि वहाँ भी, ऐसा जीवन जीते हुए, मल्ख अपने विश्वासघाती दुश्मन के हाथों पकड़ा गया।

सारासेन ने, यह देखकर कि उसका दास मल्च हर काम में लगन और निष्ठा से उसकी सेवा करता था और उसका पशु-धन लगातार बढ़ रहा था, सोचा कि वह उसकी निष्ठापूर्ण सेवा के लिए उसे क्या इनाम दे सकता है, और उसने उसी बंदी महिला का विवाह मल्च से करने का निश्चय किया जिसे उसके साथ उसी ऊँट पर लाया गया था। उसने मलख को बुलाया और उससे उसकी बात की, उसे अपनी पत्नी बनाने के लिए आग्रह किया। लेकिन मलख ने आपत्ति जताई, यह कहते हुए कि वह एक ईसाई है, और ईसाई कानून के अनुसार कोई भी ऐसी महिला से विवाह नहीं कर सकता जिसकी मृत्यु नहीं हुई है, क्योंकि उस महिला के पति को किसी दूसरे सारासेन ने बंदी बना लिया था। तब सारासेन क्रोध से आग-बबूला हो गया और अपनी तलवार खींचकर मलख को मारने की कोशिश करने लगा; और अगर मलख ने अपनी सहमति के संकेत के रूप में उस महिला की गर्दन में जल्दी से बाहें न डाल दी होतीं, तो उसके मालिक ने उसी समय उसका खून वहीं पर कर दिया होता।

जब रात हुई, तो भिक्षु उस महिला को अपने साथ अपनी गुफा में ले गया। जहाँ तक उनके बीच वहाँ क्या हुआ, इस बात का वर्णन स्वयं धन्य माल्च ने बाद में इस प्रकार किया:

'खुशी के बजाय, दुख ने मुझ पर हावी कर लिया, और सांत्वना के बजाय, पीड़ा ने। हम एक-दूसरे से घृणा करते थे और एक-दूसरे से एक शब्द कहने की हिम्मत नहीं कर सके। तब मुझे अपनी कैद का पूरा बोझ पूरी तरह से महसूस हुआ और मैं अपने संन्यासी जीवन पर शोक करने लगा, जो इतना अप्रत्याशित रूप से बर्बाद हो गया था। क्या मैं, एक दुर्भाग्यपूर्ण आदमी, इस हालत तक आ पहुँचा हूँ! 'मैंने रोते हुए कहा। 'क्या मेरे पापों ने मुझे उस मुकाम पर पहुँचा दिया है, जहाँ मुझे अपनी वृद्धावस्था में अपनी पवित्रता त्यागनी पड़ेगी और किसी दूसरे आदमी की पत्नी का पति बनना पड़ेगा? मेरे घर, मेरे माता-पिता और मेरी शादी को पीछे छोड़ने का—सब कुछ अपने युवा दिनों में ईश्वर के लिए—क्या फायदा हुआ, अगर अब मुझे वह करना है जिससे मैं शुरू से ही घृणा करता था? क्या यह इसलिए नहीं है कि मैं अब यह सब भुगत रहा हूँ—क्योंकि एक बार मठ में रहने के बाद, मैं अपने स्वदेश लौटना चाहता था? हे मेरी आत्मा, हम क्या करें? क्या हम नष्ट हो जाएँगे या हम विजयी होंगे? क्या हम ईश्वर के कृपापूर्ण हाथ की प्रतीक्षा करें, या हम अपनी ही तलवार से अपनी जान ले लें? हे आत्मा, अपनी तलवार को खुद में ही खींच ले! हमें देह की मृत्यु से अधिक तुम्हारी मृत्यु से डरना चाहिए; क्योंकि पवित्र कुँवारीपन की भी अपनी शहादत होती है। अत; मुझे इस निर्जन स्थान में एक शहीद की तरह यहाँ लेटना चाहिए, मृत और बिना दफ़नाए, और स्वयं अपना यातनाकर्ता और शहीद दोनों बनना चाहिए!

इन शब्दों के साथ मैं ज़मीन से उठा, म्यान से तलवार खींची—जो अँधेरे में चमक रही थी—और उसकी तीखी नोक अपने सीने की ओर करते हुए, उस महिला से कहा:

'जीती रहो, मेरी पत्नी! और मुझे एक जीवित पति होने के बजाय एक मृत शहीद बनने दो।' फिर वह मेरे पैरों पर गिर पड़ी, मुझसे विनती करते हुए:

'हमारे प्रभु यीशु मसीह की कसम और इस दुखद घड़ी की कसम, मैं आपसे विनती और निवेदन करती हूँ कि आप अपने जीवन के लिए अपना ही खून न बहाएँ। यदि आप मरना चाहती हैं, तो पहले अपनी तलवार मुझ पर चलाएँ और मुझे घोंप दें; और, पहले मुझे मारने के बाद, बाद में खुद को मार लें, ताकि इस तरह हम एक-दूसरे के साथ मिल सकें; क्योंकि मैंने अपने हृदय में पहले ही संकल्प कर लिया है, भले ही मेरा पति मुझे वापस मिल जाए, कि मैं इस बंदी-जीवन में सीखी गई अपनी पवित्रता को अपनी मृत्यु तक बनाए रखूँगी, और मैं इसे भंग करने से बेहतर मृत्यु को चुनूँगी। क्या यह इसलिए नहीं है कि आप मेरे साथ शारीरिक संबंध बनाने से बचने के लिए मरना चाहते हैं? फिर भी, यदि आप ऐसा चाहें तो मैं भी मरना चाहूँगी। तो मुझे तुम्हारी एक पवित्र पत्नी बनने दो, और हमारे बीच आध्यात्मिक मेल-जोल हो, शारीरिक नहीं, ताकि हमारे स्वामी तुम्हें मेरा पति मानें, जबकि मसीह जान जाएँ कि तुम मेरे आध्यात्मिक भाई हो। तब हमारे स्वामी हम पर भरोसा करेंगे, यह सोचकर कि हमारा विवाह शारीरिक है, यदि वे हमारे बीच प्रेम देखें।

– मैं चकित रह गया (संत मालखस ने कहा) और इस महिला की पवित्रता पर अचंभित हुआ, और मैं उससे प्रेम करने लगा, और हमने पवित्रता में एक साथ रहने की प्रतिज्ञा की। लेकिन मैंने एक बार भी उसके शरीर की ओर नहीं देखा, और न ही मैंने अपने हाथ से उसे छुआ, इस डर से कि उसके साथ सामंजस्य में रहते हुए, मैं अपनी कुँवारी अवस्था खो दूँ, जिसे मैंने शरीर द्वारा मुझ पर छेड़ी गई भीषण लड़ाई की शुरुआत से ही संरक्षित रखा था (यहाँ तक धन्य माल्च के शब्द हैं)।

इस प्रकार के आध्यात्मिक विवाह में, पूजनीय माल्च उस पवित्र स्त्री के साथ बहुत समय तक रहे। उन्होंने अपने स्वामियों की कृपा प्राप्त कर ली, इसलिए उनके मन में भागने का विचार भी नहीं आया। कभी-कभी माल्च अपने स्वामी के घर से पूरे एक महीने तक दूर रहते थे, जैसे एक वफादार और परिश्रमी चरवाहा जो रेगिस्तान में अपनी भेड़ों का झुंड चराता हो।

एक दिन, अपनी कैद के बहुत समय बाद, आदरणीय माल्च खुद को रेगिस्तान में अकेला पाया और, आसमान और धरती के अलावा किसी को न देखते हुए, उन्होंने अपने एकांत में मठ में भिक्षुओं के साथ अपने पूर्व जीवन, और विशेष रूप से अपने मठाध्यक्ष को याद करना शुरू कर दिया, जिन्होंने उन्हें पवित्र धर्मग्रंथ और मठवासी जीवन का तरीका सिखाया था। और उसने उन शब्दों पर विचार करना शुरू कर दिया, जिनसे उसे मठ नहीं छोड़ने के लिए कहा गया था। जब वह इस बात को याद कर रहा था और उस पर विचार कर रहा था, तो माल्च ने अपने सामने चींटियों की एक भीड़ देखी। वे एक छोटे, सीमित स्थान में इधर-उधर घूम रहे थे, और वे अपने से भी भारी बोझ उठाए हुए थे: कुछ बीज ले जा रहे थे; कुछ अपनी चींटियों की पहाड़ियों के अंदर से मिट्टी ले जा रहे थे, जिससे वे बारिश से बचने के लिए अपना कुछ आश्रय बना सकें; कुछ अन्य, सर्दियों के लिए भोजन इकट्ठा करते हुए, अपने जबड़ों से अनाज कुचल रहे थे, जबकि कुछ और अपने मृतकों के शव ले जा रहे थे। और सबसे आश्चर्यजनक बात यह थी कि - चींटियों की इतनी विशाल भीड़ होने के बावजूद, जब वे चींटियों के ढेरों से बाहर रेंगती और वापस अंदर जाती थीं, तो वे एक-दूसरे के रास्ते में नहीं आती थीं, न ही वे एक-दूसरे को रोकती थीं या एक-दूसरे को धक्का देती थीं; इसके विपरीत, यदि वे देखती थीं कि उनमें से कोई एक बहुत भारी बोझ उठा रहा है, तो अन्य तुरंत उसकी मदद के लिए आ जाती थीं। यह देखकर, माल्च को सुलैमान के वचन याद आए: *'हे आलसी, चींटी के पास जा; उसकी चाल-ढाल पर ध्यान दे... वह कटनी के समय अपना भोजन इकट्ठा करती है'* (नीतिवचन 6:6–8)। इसके अलावा, उसे यह भी ख्याल आया कि मठ में उसका जीवन एक चींटियों के ढेर जैसा था, जहाँ सभी मिलकर काम करते थे और किसी के पास अपना कुछ भी नहीं था, बल्कि सब कुछ साझा किया जाता था, और वह अपनी कैद पर गहराई से दुखी होने लगा, हृदय से आहें भरते हुए, अपने मठ को देखने और अपनी पुरानी कोठरी में रहने की लालसा करने लगा। जब वह अपने गुरु के यहाँ लौटा और अपनी झोपड़ी की ओर जा रहा था, तो उसकी पत्नी उससे मिली और उसे उदास और परेशान चेहरे के साथ देखकर पूछा:

'तुम इतने उदास क्यों हो?'

मलख ने उसे अपने विचार बताए। तब उसने उससे भागने का आग्रह करना शुरू कर दिया, और साथ ही यह भी कहा कि उसे पीछे न छोड़ें, बल्कि अपने साथ ले जाएं और बाद में किसी मठ में छोड़ दें। इस मामले पर लंबी बातचीत के बाद, वे अपनी भागने की तैयारी करने लगे, एक-दूसरे से फुसफुसाते हुए और आशा और भय की भावनाओं के बीच झूलते हुए।

जसि झुंड की देखभाल मलख करता था, उसमें दो बड़ी बकरयिाँ थीं। उन्हें ज़बिाह करके, उसने उनकी खाल से दो चमड़े के टुकड़े बनाए और यात्रा के लएि कुछ सूखा मांस तैयार कयिा; और एक देर शाम, अपनी बहन के साथ, ईश्वर पर भरोसा करके, वे घर से नकिल पड़े और तेज़ी से चल दएि। सारासेन के घर से नौ स्टेडयिम दूर एक बड़ी नदी पर पहुँचकर, उन्होंने चमड़ों में हवा भरकर उन्हें अच्छी तरह बाँधा, उन पर बैठकर पैरों से चप्पू की तरह काम करते हुए नदी के बहाव के साथ चल पड़े और तैरकर दूसरी तरफ पहुँच गए; जहाँ तक उनके साथ लाए गए मांस की बात है, वह पानी में भीगकर डूब गया था, और केवल बहुत ही थोड़ी मात्रा बची थी, जो मुश्कलि से तीन दनिों तक चल सकती थी। आगामी पलायन के दौरान प्यास से बचने के लएि नदी के पानी से अपनी प्यास बुझाने के बाद, वे तीव्र गतसिे चल पड़े, दनि की तुलना में रात में अधकि यात्रा करते हुए, आंशकि रूप से सरैसेनों के डर से, और आंशकि रूप से सूर्य की प्रचंड गर्मी के कारण, जो वहाँ बहुत ज़ोर से पड़ती थी; लेकनि कभी-कभी वे दनि में भी चलते थे, भले ही वे गर्मी से झुलस रहे होते, और अक्सर पीछे मुड़कर देखते थे, इस डर से कि उनका मालकि उनका पीछा कर रहा होगा।

तीसरे दनि, जब माल्च और उसकी पत्नी रास्ते में ही वापस मुड़े, तो उन्होंने दूर से दो सरासनों को देखा जो दो ऊँटों पर सवार होकर तेजी से उनका पीछा कर रहे थे, और उन्हें तुरंत एहसास हो गया कि रेत में उनके पैरों के नशिान पर उनका मालकि उनका पीछा कर रहा था; और वे बहुत डर गए और वहीं जम गए, यह सोचकर कि सिरासेन उन्हें मार डालेंगे। उसी क्षण, ईश्वर की कृपा से, उन्होंने अपने दाईं ओर एक गहरी गुफा देखी और उसमें भाग गए, प्रवेश द्वार के बाईं ओर अपनी जगह बना ली, लेकनि गुफा के और अंदर जाने का साहस नहीं कयिा, क्योंकि उन्हें डर था कि मौत से बचने के बाद, उन्हें एक बार फरि उसका सामना करना पड़ सकता है; क्योंकि ऐसी गुफाओं में आमतौर पर जंगली जानवर या साँप, बचि्छू और अन्य वषिैले जीव रहते थे। और इस प्रकार, दोनों ओर से मृत्यु का भय—पीछा कर रहे स्वामी से भी और गुफा में छपिे लोगों से भी—वे आतंकति खड़े रहे, मानो वे पहले ही मर चुके हों; फरि भी उसी समय उन्होंने मन में सोचा: 'अगर ईश्वर हम जैसे बेचारों की मदद करे, तो हम मौत से बच जाएँगे; लेकनि अगर ईश्वर हम पापयिों पर दया न करे, तो यही गुफा हमारी कब्र होगी।'

इस बीच, सारसेन और उसका दास गुफा तक पहुँचे। ऊँटों को एक साथ बाँधने के बाद, वह अपनी तलवार खींचे हुए गुफा के मुहाने पर रुका, और उसने अपने दास को मल्खा और उसके साथी को गुफा से बाहर लाने के लएि भेजा, क्योंकि वह स्वयं उन्हें मारना चाहता था। जब दास गुफा में तीन या चार कोहनी (लगभग 1.5-2 मीटर) की दूरी तक अंदर गया[2616] , तो वह उनके पास से नकिल गया, क्योंकि धूप की छाया में खड़ा कोई भी पास में खड़े लोगों को नहीं देख सकता था, और उन्होंने केवल दास की पीठ देखी। हालाँकि, दास ने ज़ोर से भयानक धमकयिाँ देते हुए पुकारा:

'नकिलो, तुम दुष्टों, मरने के लएि बाहर आओ! तुम देरी क्यों कर रहे हो? बाहर आओ; तुम्हारा मालकि तुम्हारा इंतज़ार कर रहा है।'

जैसे ही वह यह चल्लिा रहा था, गुफा की गहराई से अचानक एक मादा शेर नकिली, उसने उसकी गर्दन पकड़ ली, उसे मार डाला, और उसे अपने बलि में घसीट ले गई। हे परम दयालु प्रभु! आपकी प्रजा के प्रति आपकी कृपा कतिनी महान है, और संकट के समय आपकी सहायता कतिनी तीव्र है! मल्ख और उसकी पत्नी ने यह देखा, और वे अपने एक शत्रु के वनिाश को देखकर भय के बजाय महान आनंद से भर गए, क्योंकि वे उस दूसरे के बारे में कुछ नहीं जानते थे जो गुफा के मुहाने पर उन्हें धमका रहा था। सारासेन ने जब देखा कि नौकर गुफा में अपना समय ले रहा था और उसकी आवाज़ अब सुनाई नहीं दे रही थी, तो उसने सोचा कि दो लोग अकेले उसका वरिोध कर रहे हैं; और, अपने क्रोध में और अधकि इंतज़ार न कर पाकर, वह ठीक वैसे ही जैसे वह खड़ा था, अपनी तलवार खींचे हुए, एक जंगली जानवर की तरह क्रोध से दहाड़ता हुआ गुफा में घुस पड़ा। लेकनि सहिनी, उसकी आवाज़ सुनकर, उससे मलिने के लएि बाहर दौड़ी और जब वह भगोड़ों तक पहुँचा, तो उस पर झपट पड़ी और उसे मार डाला, और उसे उनके पास से खींचकर अपने बलि में ले गई।

ईश्वर की सहायता और सुरक्षा के इतने अद्भुत और अप्रत्याशति कार्य को देखकर, पूजनीय माल्च और उस धन्य महलि ने ईश्वर की महान दया के लएि धन्यवाद दयिा। लेकनि इस सुखद मोड़ के बाद भी, उनका डर नहीं गया, क्योंकि उन्हें लगा कि सहिनी उन्हें भी मार डालेगी; फरि भी, वे अमानवीय लोगों के हाथों पड़ने से बेहतर जानवर के हाथों मरना चाहते थे। हालांकि, सहिनी अपने शावक को जबड़े में दबाकर गुफा से नकिल गई। मालच और उसकी पत्नी काफी

[2616] एक कोहनी से मध्यमा उंगली की नोक तक की माप की एक इकाई है। बाइबलि में वर्णति कोहनी की लंबाई 10.5 से 13 वर्शोक्स के बीच होती है।

देर तक चुपचाप खड़े रहे, लेकिन, यह देखकर कि शेरनी वापस नहीं आ रही थी, वे गुफा से बाहर निकले क्योंकि दिन ढल रहा था। गुफा के पास खड़े, राशन और पानी से लदे ऊंटों को देखकर, वे खाने और पीने लगे; फिर, तृप्त होकर और अपनी ताकत वापस पाकर, वे ऊंटों पर सवार हो गए और खुशी-खुशी ईश्वर का धन्यवाद करते हुए अपनी यात्रा पर निकल पड़े। दस दिन बीत जाने के बाद, वे उस रेगिस्तान को पार करके ग्रीको-रोमन रेजिमेंटों के पास पहुँचे। उन्होंने रेजिमेंट कमांडर को अपने बारे में सब कुछ बताया, और उसने उन्हें मेसोपोटामिया के गवर्नर सविनस के पास भेज दिया। गवर्नर ने उनके ऊँट खरीद लिए, उन्हें गर्मजोशी से विदाई दी, और उन्हें उनके स्वदेश वापस भेज दिया।

अपने देश लौटने पर, माल्च ने उस धन्य महिला और अपनी आध्यात्मिक बहन को एक कन्वेंट (ननघर) के हवाले कर दिया, जबकि वह स्वयं उस मठ में लौट गया जहाँ से वह कभी निकला था। उसे पता चला कि न तो उसके मठाध्यक्ष जीवित थे और न ही उसके आध्यात्मिक गुरु। तब उसने भाइयों के समुदाय को वह सब कुछ बताया जो उसके साथ हुआ था और अपने शेष जीवन के लिए मठ में बस गया, और अन्य भिक्षुओं को हमेशा मठाध्यक्ष की अवज्ञा न करने और मठ न छोड़ने की हिदायत दी। ईश्वर को प्रसन्न करने वाले ढंग से अपना शेष जीवन जीने के बाद, मलख प्रभु के पास चले गए, और शुद्धता का एक उदाहरण पीछे छोड़ गए, ताकि आने वाली पीढ़ियाँ जान सकें कि कुँवारी पवित्रता पर न तो तलवार, न निर्जन स्थान, और न ही जंगली जानवर विजय प्राप्त कर सकते हैं; क्योंकि जिसने स्वयं को मसीह के हवाले कर दिया है, वह देह में मर सकता है, परन्तु आत्मा में जीता नहीं जा सकता, क्योंकि उसे स्वयं मसीह परमेश्वर द्वारा बल मिलता है, जिसकी महिमा युगानुयुग होती रहे। आमीन।

26 गोथिक शहीदों का स्मरणोत्सव[2617]

26 मार्च को स्मरण

इन पवित्र शहीदों ने रोमन सम्राट जूलियन, वैलेंटाइनियन और ग्राटियन के शासनकाल के दौरान गोथिक राजा उंगेरिच के अधीन यातनाएँ झेलीं[2618] । उस समय, जब वे, ईसाई होने के नाते, अपनी चर्चों में दैवीय पूजा (Divine Liturgy) का आयोजन कर रहे थे और ईश्वर की महिमा कर रहे थे, तो उनगेरिच ने अपने सेवकों को भेजा, जिन्होंने उसके आदेश पर चर्चों में आग लगा दी और अंदर मौजूद सभी 308 लोगों को जला दिया। उसके बाद, यदि उनका सामना चर्च में बलिदान ले जाने वाले किसी ईसाई से होता, तो वे उसे पकड़ लेते, उससे पूछताछ करते, और यदि वह मसीह में अपने विश्वास का इकरार करता, तो उसे सीधे आग में फेंक दिया जाता; और इस प्रकार, बलिदानों के बजाय, मसीहियों के शरीर मसीह को अर्पित किए जाते थे। इन पवित्र शहीदों के शवों को अल्ला नामक एक अन्य गोथिक राजा की पत्नी द्वारा एकत्र किया गया था, जो जन्म से गोथ और एक धर्मनिष्ठ ईसाई थी[2619] । अपने पुत्र[2620] को शासन सौंपने और अपने साथ पुरोहितों को लेकर, वह एक स्थान से दूसरे स्थान तक यात्रा करती रही, जब तक कि वह अपनी बेटी डुकलिदा के साथ सीरिया की भूमि में नहीं बस गई[2621] । फिर उसने अपने बेटे को बुलाया, और जब वह आया, तो वह उसके साथ गोथिया लौट आई, और संतों के अवशेष अपनी बेटी को सौंप दिए, जो वैलेंटाइनियन और थियोडोसियस के शासनकाल के दौरान साइज़िकस[2622] गई और चर्च के अभिषेक के लिए उस शहर को अवशेषों का एक हिस्सा दान कर दिया। गोथिया लौटने पर, संत अला को अगथोन के साथ पत्थर मारकर मार डाला गया और इस प्रकार उन्होंने शहादत प्राप्त की, जबकि डुकलिदा अपनी माँ की मृत्यु के कई वर्षों बाद शांतिपूर्वक निधन कर गईं।

[2617] गोथिक साम्राज्य निचली वोल्गा से लेकर काला सागर तक फैला हुआ था। गोथ मुख्य रूप से आज के रोमानिया में डैन्यूब नदी के किनारे रहते थे। बाद में, वे लगभग पूरे यूरोप में बस गए।

[2618] जूलियन ने 361 से 363 तक, वैलेंटाइनियन ने 364 से 375 तक, और ग्राटियन ने 375 से 383 तक शासन किया, इसलिए इन तीन सम्राटों का शासन लगभग 20 वर्षों की अवधि तक चला।

[2619] गोथों में एरियन संप्रदाय व्यापक रूप से फैला हुआ था।

[2620] सेंट अल्ला का पुत्र अरीमेरस था।

[2621] सीरिया का प्रदेश एशिया में, फिलिस्तीन के उत्तर में स्थित था। ऐसा माना जाता है कि यहाँ 'सीरिया का प्रदेश' से तात्पर्य रोमन प्रांत से है, जो संभवतः आज का रोमानिया है।

[2622] एशिया माइनर में, उत्तरी मिसिया में एक शहर इसी नाम से जाना जाता है, लेकिन यही नाम वर्तमान क्रीमिया के एक क्षेत्र को भी दिया गया था, जहाँ एक गोथिक रियासत थी।

हमारे पूजनीय पिता बेसिल द न्यू का जीवन

26 मार्च को स्मरण किया जाता है

धर्मपरायण ग्रीक राजाओं, लियो द वाइज़[2623] और उनके भाई अलेक्ज़ेंडर[2624] , जो सम्राट बेसिल द मेसेडोनियन[2625] के पुत्र थे, के शासन के दसवें वर्ष में, कुछ मजिस्ट्रेट[2626] , जो एशिया[2627] से लौट रहे थे, जहाँ उन्हें शाही आदेश से भेजा गया था, और एक सुनसान पहाड़ के पास से गुजरते हुए, उन्होंने उस पर एक आदमी को चलते हुए देखा, जो फटे-पुराने कपड़े पहने हुए था और उसका रूप-रंग अत्यंत असाधारण और यहाँ तक कि भयानक था, क्योंकि वह मानव जाति से दूर, जंगली इलाके में बड़ा हुआ था। उसके अजीब रूप को देखकर, न्यायाधीशों ने उसका पीछा किया और उसे पकड़ लिया; फिर, उसे एक जासूस समझकर (जबकि, वास्तव में, वह धन्य बेसिल थे, जिनके जीवन का हम वर्णन कर रहे हैं), उन्होंने इस अद्भुत व्यक्ति को बाँध दिया और उसे अपने साथ शाही शहर - कॉन्स्टेंटिनोपल ले गए।

26282629जब वे सम्राटों के सामने पेश हुए, तो मजिस्ट्रेटों ने उन्हें उस व्यक्ति के बारे में बताया जिसे उन्होंने रास्ते में पकड़ा था। फिर संत को देखकर सम्राट लियो ने आदेश दिया कि उससे पूछताछ की जाए और इस काम को एक निश्चित पैट्रिसियन, एगारियन वंश के सॅमन नामक व्यक्ति को सौंप दिया, कि वह यह पता लगाए कि वह कौन था, कहाँ से आया था, और उसका नाम क्या था।

सामोन ने उस ईश्वर-पुरुष को अपने घर में लाया। फिर, न्यायपीठ पर बैठकर, अपने सलाहकारों से घिरे और अपने पद की गरिमा के अनुरूप, उसने आदेश दिया कि धन्य बेसिल को उसके सामने लाया जाए। जब वह उस कुलीन के सामने उपस्थित हुआ, तो संत ने उसे कोई सम्मान या आदर नहीं दिया। तब कुलीन ने उससे पूछा:

'तुम कौन हो, कहाँ से आए हो, और तुम्हारा नाम क्या है?'

लेकिन धन्य व्यक्ति *ने उन्हें कोई उत्तर नहीं दिया'* (यूहन्ना 19:9)[2630] और चुपचाप खड़े रहे, अपनी कोमल आँखों से अपने न्यायाधीश को निहारते हुए।

तब सामन ने उससे फिर पूछा:

'हमें बताओ, तुम कहाँ से हो?'

इस पर संत ने उत्तर दिया:

– तुम्हें खुद ही बताना चाहिए कि तुम कौन हो और कहाँ से आए हो।

और सामन ने उससे कहा:

'हम आपसे पूछ रहे हैं, और आपको हमें जवाब देना होगा। जहाँ तक मेरी बात है, यह पूछना आपका काम नहीं है। हालाँकि, अगर आप यह जानने के लिए इतने उत्सुक हैं कि मैं कौन हूँ, तो मैं आपको बता दूँगा। मैं सामन हूँ, कुवकिुलारियनों का एक कुलीन और बुजुर्ग[2631] , जो आज के तानाशाह शासक हैं। अब मुझे बताओ: तुम कौन हो, तुम कहाँ से आए हो, और तुम क्या करते हो?'

धन्य ने उत्तर दिया:

[2623] सम्राट लियो VI वद्विान ने 886 से 911 तक बाइज़ेंटाइन सिंहासन पर शासन किया।

[2624] सम्राट अलेक्ज़ेंडर, लियो द वाइज़ के सह-शासक थे और 866 से 912 तक शासन किया।

[2625] बेसिल प्रथम मैसेडोनियाई 867 से 886 तक बाइज़ेंटाइन सम्राट थे।

[2626] मैजिस्ट्रियानी दरबारी अधिकारी थे जो शाही दरबार में सबसे महत्वपूर्ण पदों पर थे। पदक्रम के अनुसार, वे पैट्रिशियनों से ऊपर थे।

[2627] एशिया या एशिया माइनर के नाम से जाना जाने वाला क्षेत्र आज के एशिया माइनर प्रायद्वीप था।

[2628] पैट्रिसियन की उपाधि मूल रूप से केवल सीनेटरों के बच्चों को ही दी जाती थी, जिन्हें 'फादर्स' (लैटिन में पॅट्रेस) कहा जाता था। बाद में, यह उपाधि सभी कुलीन रोमन वंशज लोगों पर लागू होने लगी। हालाँकि, सम्राट कॉन्स्टेंटाइन द ग्रेट ने 'पैट्रिसियन' की उपाधि को एक व्यक्तिगत सम्मान बना दिया, जो उच्च-पदस्थ अधिकारियों को प्रदान की जाती थी लेकिन यह वंशानुगत नहीं थी।

[2629] हागारी अरब के बेदुइनों का एक कबीला था, जो लुटेरों का एक गिरोह था जो अरब में घूमता था। उन्हें यह नाम इसलिए दिया गया क्योंकि, यहूदी परंपरा के अनुसार, वे हागर, अब्राहम की दासी की संतान इसमाइल के वंशज थे।

[2630] यह अभिव्यक्ति यूहन्ना के सुसमाचार (यूहन्ना 19:9) से ली गई है, जहाँ यह प्रभु यीशु को संदर्भित करती है, जिन्होंने पिलातुस के प्रश्न: 'आप कहाँ से हैं?' का कोई उत्तर नहीं दिया।

[2631] एक 'कुवकिुलर' शाही दरबार में शयनकक्ष का परिचारक और दरबारी रैंकों में से एक महत्वपूर्ण पद होता है।

'मैं इस पृथ्वी पर रहने वाले अजनबियों और यात्रियों में से एक हूँ।'

'तो, क्या वह सच है जो वे आपके बारे में कहते हैं—कि आप एक जासूस हैं जो यूनानी भूमि का सर्वेक्षण करने आए हैं?' संत सामोन ने पूछा।

इस पर पूजनीय ने उन्हें कोई उत्तर नहीं दिया। और पूछताछ में उपस्थिति कई लोगों ने उन्हें उत्तर देने के लिए आग्रह किया, कहते हुए:

'तुम कौन हो?'

लेकिन संत ने उन्हें कोई उत्तर नहीं दिया।

तब सामन ने लोहे की छड़ियाँ, सूखे बैल के टेंडन और यातना के अन्य भयानक उपकरण लाने का आदेश दिया; और संत को डराने के लिए ये सभी उसके सामने रख दिए गए, इस उम्मीद में कि वह यातनाओं से डर जाएगा और अपनी पहचान बता देगा। लेकिन पादरी, इन सभी भयानक यंत्रों को देखकर, एक भी शब्द नहीं बोले। तब कुलीन ने आज्ञा दी कि धन्य बेसलि को जमीन पर लिटाया जाए और बैल की अस्थियों से पीटा जाए, और पूछते हुए:

'तुम कौन हो?'

क्रूर प्रहारों को सहते हुए, पूज्य पिता ने अपनी मौनता नहीं तोड़ी और धैर्यपूर्वक सभी यातनाओं को सह लिया। और यातना देने वालों ने तब तक उन्हें पीटा जब तक उन्हें ऐसा नहीं लगा कि वे मरने वाले हैं; इसलिए, संत को जैसे कोई हिल न सकने वाली लकड़ी का टुकड़ा हो, उठाकर वे उन्हें ले गए और एक कालकोठरी में फेंक दिया।

अगले दिन, कुलीन सामोन—वह अदम्य दानव—न्यायालय की पीठ पर विराजमान हुआ और कैदी को एक बार फिर उसके समक्ष लाने का आदेश दिया। धन्य बेसलि को लाने भेजे गए लोग उसे पूरी तरह स्वस्थ और अक्षुण्ण पाए, , जेल के बाहर उनका इंतजार कर रहे थे, यद्यपि जेल के द्वार बंद ही रहे। चकित होकर, उन्होंने संत से पूछा:

'बताओ, तुम उस कालकोठरी से कैसे बाहर निकले, जिसके दरवाज़े मजबूती से बंद थे?'

लेकिन धन्य संत ने कोई जवाब नहीं दिया और चुपचाप उनका अनुसरण करते हुए कुलीन के सामने उपस्थिति हो गए।

तब संत बेसलि को बुलाने भेजे गए कुछ लोग आगे आए और उन्होंने सामन को वह सब कुछ बताया जो हुआ था: कि उन्होंने धन्य व्यक्ति को जेल के बाहर पाया था, जबकि उसके ताले अछूते थे। यह सुनकर सामोन और उसके साथी सभी चकित रह गए, और उन्होंने उनकी बात पर विश्वास नहीं किया। हालाँकि, कुछ लोगों ने संत के बारे में कहा कि वह एक जादूगर था और उसने जादू की शक्ति से ऐसा चमत्कार किया था। इस बीच, वह धन्य व्यक्ति कुलीन सामोन के सामने प्रकट हुआ, और सामोन ने एक बार फिर से लगातार और विस्तार से उससे पूछताछ करनी शुरू कर दी, हर तरह से उस पर दबाव डालते हुए कि वह कौन था और कहाँ से आया था। लेकिन आदरणीय मौन ही रहे और कुलीन को कोई जवाब नहीं दिया। सामन संत पर बहुत क्रोधित हो गया और उसने आदेश दिया कि उन्हें फिर से जमीन पर बिछा दिया जाए और डंडों से बेरहमी से पीटा जाए, जब तक कि वे यह न बता दें कि वे कौन थे और कहाँ से आए थे। और उन्होंने संत को इतनी देर तक पीटा कि छह लाठियाँ टूट गईं, फिर भी वे उनसे कोई कबूलनामा नहीं ले सके: धन्य बेसलि ने बहादुरी से सभी यातनाओं को सहन किया और एक भी शब्द बोलकर अपनी मौनता नहीं तोड़ी, जिससे हर कोई उनके अकथनीय धैर्य और मौनता पर चकित रह गया। तब कुलीन सामोन ने घोषणा की:

'मैं जानता हूँ कि यह जासूस बाद में घमंड करना चाहेगा और कहेगा: "मैंने अपनी चुप्पी से उन्हें हराया।" लेकिन मैं हमारे शासकों की जान की कसम खाने को तैयार हूँ कि मैं उसे हम पर घमंड करने और हमारा मज़ाक उड़ाने नहीं दूँगा।' यह कहने के बाद, सामोन ने रेवरेंड को वापस कालकोठरी में ले जाने और पूरे अगले सप्ताह, हर दिन तीन सौ कोड़े और तीन सौ लाठी के प्रहार देने का आदेश दिया। हालाँकि, धन्य बेसलि ने सभी यातनाओं को धैर्यपूर्वक सहन किया, अपने वीर कर्मों को गुप्त रखा और अपने तपस्वी जीवन के बारे में दूसरों को बताने से इनकार कर दिया। क्योंकि वह अपनी जवानी से ही एक भिक्षु बन गया था और रेगिस्तान में बस गया था, जहाँ वह कई वर्षों तक भटकता रहा, अपना जीवन कठोर तपस्या में बिताते हुए, केवल अनाज और जड़ों पर जीवित रहा, लगातार नंगे पैर चला और एक पतले से कपड़े को पहनकर रहा। संत नहीं चाहते थे कि कोई भी उनके ऐसे सदाचारी और वीर जीवन के बारे में जाने, और इसीलिए उन्होंने अपने जीवन-यापन के तरीके के बारे में कुलीन सैमोन के सभी सवालों का जवाब मौन से दिया, स्वर्गीय प्रभु की आज्ञा को ध्यान में रखते हुए, जिन्होंने कहा था: *'तुम्हारा दाहिना हाथ जो कुछ करता है, वह तुम्हारा बायाँ हाथ न जाने'* (मत्ती 6:3)। क्योंकि जो कोई भी अपने अच्छे कर्मों को दूसरों के सामने दिखाता है, उसे लोगों की प्रशंसा के रूप में पृथ्वी पर अपना इनाम मिल जाता है,

और वह शाश्वत और स्वर्गीय महिमा से वंचित रह जाता है; लेकिन जो कोई भी शाश्वत पुरस्कार प्राप्त करना चाहता है, उसे अपने पुण्य को लोगों से छिपाना चाहिए; और यदि लोगों द्वारा अनदेखा किया जाकर, वह उनके अपमान और यहाँ तक कि यातनाओं का शिकार होता है, तो भी ऐसे मामले में भी उसे चुपचाप और धैर्यपूर्वक मानवीय द्वेष को सहना चाहिए; तब वह वास्तव में शहीद की उपाधि का हकदार होगा। आदरणीय बेसिल इन सब बातों से पूरी तरह अवगत थे, और मनुष्यों से नहीं बल्कि ईश्वर से महिमा प्राप्त करने की इच्छा रखते हुए, उन्होंने अपने रहस्य को प्रकट करने से इनकार करते हुए, अपने ऊपर थोपी गई क्रूर पीड़ाओं को धैर्यपूर्वक सहन किया। एक सप्ताह बीत जाने के बाद, जब तक संत को प्रतिदिन पीटा जाता रहा, कुलीन सामोन ने, यह देखकर कि धन्य व्यक्ति अडिग रहा और अपना नाम या उत्पत्ति नहीं बताएगा, एक बार फिर न्यायपीठ पर बैठ गया और माननीय संत को अपने सामने लाने का आदेश दिया। और जब वह उसके सामने उपस्थित हुआ, तो सामोन ने क्रोध से उसकी ओर देखा और कहा:

'हे मनुष्यों में सबसे दुष्ट, तुम हमसे कितनी देर तक छिपोगे? क्या तुम मुझे बताओगे कि तुम कौन हो और कहाँ से आए हो?' जवाब में, संत ने कहा:

'उन लोगों को सबसे दुष्ट कहना उचित है जो, तुम्हारे जैसे, गुप्त रूप से सोडॉम के कर्म करते हैं[2632] ।'

ऐसे आरोप का सामना करते हुए, रेवरेंड सामन भ्रमित हो गए, और उपस्थित सभी लोगों के सामने उन्हें बहुत शर्म और अपमान महसूस हुआ; तब, संत के प्रति असीम क्रोध और रोष से जलते हुए, उसने आदेश दिया कि पिट्टियाँ लाई जाएँ, रेवरेंड के हाथ उसकी पीठ के पीछे बाँधे जाएँ, उसकी पसलियों को रस्सियों से कसकर बाँधा जाए, संत का दाहिना पैर उन रस्सियों से बाँधा जाए, और उसे एक ढके हुए कमरे में एक क्रॉसबार से उल्टा लटका दिया जाए। फिर उसने उस कमरे के दरवाज़े बंद कर दिए और अपनी अंगूठी से उन्हें सील कर दिया, और रेवरेंड को तब तक वहीं लटका छोड़ दिया जब तक कि उसने अपना नाम और मूल नहीं बता दिया। वहाँ मौजूद सभी लोगों को अपने दिल में धन्य बेसिल पर तरस आया और उन्होंने सामोन के खिलाफ बड़बड़ाया, उसे शापित कहा और ईश्वर के एक निर्दोष सेवक पर अत्याचार करने के लिए उसकी निंदा की।

संत बेसिल तीन दिन और तीन रातों तक क्रॉसबार पर लटके रहे। चौथे दिन, दुष्ट यातना देने वाले सामन ने उस मंदिर के दरवाज़े खोले जहाँ शहीद को रखा गया था और उसके पास जाकर देखा कि उसका चेहरा शांत और प्रसन्न था, मानो वह किसी भी यातना का अनुभव नहीं कर रहा हो। आश्चर्यचकित होकर, उस कुलीन व्यक्ति ने धन्य संत से पूछा:

'तुम मुझे यह क्यों नहीं बताते कि तुम कौन हो और कहाँ से आए हो? क्या तुम्हारे दुश्मनों ने तुम्हें होश में नहीं लाया?'

एक बार फिर, संत ने उसे कोई जवाब नहीं दिया। तब यातना देने वाले ने आदेश दिया कि उसे उन पट्टियों और रस्सियों से खोल दिया जाए और मुक्त कर दिया जाए जिनसे वह बंधा हुआ था। अपनी सभी बंधनों से मुक्त होने के बाद, संत, मसीह की कृपा से, तुरंत अपने सभी घावों और चोटों से ठीक हो गया और पूरी तरह से स्वस्थ हो गया। जो भी इस शानदार चमत्कार के साक्षी बने, वे आश्चर्यचकित और हैरान रह गए। दुष्ट सामोन, जो घटी घटना से उतना ही स्तब्ध था, हैरानी से चिल्लाया:

'क्या मैंने नहीं कहा था कि यह आदमी एक जादूगर और जादू-टोना करने वाला है? क्योंकि, हमारे हाथों से सम्मान झेली गई सभी यातनाओं के बावजूद, वह सही-सलामत और अछूता रहा है। लेकिन मैं जल्द ही उसकी जादुई शक्ति को नष्ट कर दूँगा: मुझे जानवरों के रखवाले को बुलाओ।' और जब रखवाला आया, तो सामोन ने उससे कहा:

'सबसे ज़ोरदार शेर चुनो और आज उसे उसका रोज़ाना का खाना मत दो, ताकि वह कल सुबह भूखा रहे; फिर हम देखेंगे कि क्या यह जादूगर इस ज़ोरदार जानवर पर काबू पा सकता है।'

अगली सुबह, निर्धारित तमाशे के लिए एक बड़ी भीड़ इकट्ठा हुई। और इस प्रकार उन्होंने भूख के मारे ज़ोर-ज़ोर से दहाड़ते हुए एक विशाल और क्रूर शेर को छोड़ दिया; उन्होंने धन्य बेसिल को भी वहाँ लाया और उसे शेर के खाने के लिए फेंक दिया। लेकिन जंगली जानवर, संत को देखकर कांप उठा; फिर, उसके पास आकर, वह विनम्रता से उसके पैरों तले लेट गया और एक कोमल मेमने की तरह वहीं रहा, जिससे सभी चकित हो गए और भय से चिल्ला उठे:

'हे प्रभु, दया करो!'

[2632] सोडोमाइट प्रथाएँ – विभिन्न अस्वाभाविक दुराचार। उन्हें प्रसिद्ध शहर सदोम (जिसे स्वर्गीय अग्नि से जलाकर नष्ट कर दिया गया था) के नाम पर 'सोडोमाइट' कहा जाता है, क्योंकि ये दुराचार उस शहर में विशेष रूप से व्यापक थे।

हालाँकि, रेवरेंड ने अपने पैरों में पड़े शेर की ओर झुककर, उसे अपने दाहिने हाथ से सहलाया, और फिर, उसके कान पकड़कर, उसे बाहर ले गए, और जोर से चिल्लाए:

'लो, तुम्हारा मेमना आ गया, मेमना आ गया!'

हालाँकि, दुष्ट विदेशी सामन इस अद्भुत चमत्कार से भी होश में नहीं आया और उसने यह स्वीकार करने से इनकार कर दिया कि जिस आदमी को वह सता रहा था, वह ईश्वर का एक पवित्र सेवक था। धन्य व्यक्ति के प्रति अपने क्रोध पर अडिग रहते हुए और उससे जुबानी बयान लेने के लिए हर संभव प्रयास कर चुकने के बाद, सामन ने अपने नौकरों को उसी रात उसे समुद्र में डुबा देने का आदेश दिया। और उन्होंने वैसा ही किया। रात की तीसरी पहर में, उन्होंने शहीद को एक नाव में बिठाया और किनारे से नाव चलाकर उसे समुद्र में फेंक दिया, जबकि वे स्वयं वापस चले गए। लेकिन ईश्वर, जो अपने संतों की रक्षा करते हैं, ने उस धन्य व्यक्ति को समुद्र की गहराई में डूबने नहीं दिया। जैसे ही उसे समुद्र में फेंका गया, ईश्वर की इच्छा से, दो समुद्री डॉल्फ़िन[2633] ने तुरंत उस पूजनीय संत को अपनी पीठ पर उठा लिया और उसे एवडॉम नामक तट पर ले गईं, जो कॉन्स्टेंटिनोपल का एक उपनगर है, जहाँ उन्होंने उन्हें सूखी ज़मीन पर उतार दिया। उसी क्षण, संत के हाथ और पैर उन बंधनों से मुक्त हो गए जिनसे उन्हें बांधा गया था, और वह बिना किसी कठिनाई के अपने पैरों पर खड़ा हो गया और शहर की ओर चल पड़ा। लेकिन चूँकि शहर का स्वर्ण द्वार[2634] , जिसके पास संत पहुँचा था, अभी तक नहीं खुला था, वह कुछ देर आराम करने के इरादे से उसके पास बैठ गया।

उसी क्षण, जॉन नाम का एक व्यक्ति, जो बुखार से पीड़ित था, स्वर्ण द्वारों के पास आया; अपनी बीमारी से कराहते और कांपते हुए, वह संत बेसिल के पास बैठ गया। धन्य संत ने उस पर दया की, उस पर अपना हाथ रखा और प्रभु से प्रार्थना करने के बाद, उसे ठीक कर दिया। स्वयं को ठीक हुआ महसूस करते ही, वह व्यक्ति सिंत के पैरों पर गिर पड़ा और उनसे अपने घर चलने की विनती करने लगा। संत बेसिल ने खुशी-खुशी उसकी प्रार्थना स्वीकार कर ली, भले ही वह ठीक हुआ व्यक्ति कॉन्स्टेंटिनोपल के सबसे गरीब और सबसे विनम्र नागरिकों में से एक था।

जॉन की हेलेना नाम की एक पत्नी थी। उन्होंने उसकी साथ मिलकर प्रेमपूर्वक उस पूजनीय संत का अपने घर में स्वागत किया; और जब रात के खाने का समय हुआ, तो उन्होंने उनके लिए भोजन परोसा, और सभी ने उत्साहपूर्वक भोजन किया। भोजन के दौरान, जॉन ने अपनी पत्नी को बताया कि कैसे उस धन्य व्यक्ति ने मसीह के नाम का उच्चारण करके उन्हें चंगा किया था, और वह इतने महान अतिथि को पाकर बहुत प्रसन्न हुई। क्योंकि वह धर्मपरायण और अतिथि-सत्कार करने वाली थी, और वह ईश्वर के भय में अपना जीवन जीती थी; इसीलिए वह प्रसन्न हुई कि उसे अपने घर में ईश्वर के सेवक का स्वागत करने का योग्य समझा गया था।

जॉन और हेलेना ने संत से विनती करनी शुरू कर दी कि वह उन्हें बताएं कि वह कौन थे और कहाँ से आए थे। लेकिन संत ने उत्तर दिया:

'मैं कौन हूँ और कहाँ से आया हूँ, यह अभी बताने योग्य नहीं है। आप समय आने पर जान जाएँगे, लेकिन अभी के लिए, कृपया मुझे सबसे पवित्र परमेश्वर की माता की अनादि-निर्मित प्रतिमा के मठ में प्रार्थना करने जाने दें, जो अपने आप प्रकट हुई थी।'

यह कहकर, वह उठा और जॉन के साथ, सबसे पवित्र परमेश्वर की माता के आत्म-चित्रित आइकन के मठ में प्रार्थना करने के लिए चल पड़ा; और जब उसकी प्रार्थना समाप्त हो गई, तो जॉन की लगातार विनतियों के आगे झुकते हुए, संत अपने घर लौट आए। वहाँ, जॉन और उसके मित्र ने फिर से धन्य संत से विनती करनी शुरू कर दी, लगातार उन पर खुद के बारे में बताने के लिए आग्रह करते रहे। तब संत बेसिल ने कहा:

'मैं ही वह हूँ जिसे कुलीन सामन ने समुद्र की गहराइयों में फेंक दिया था। मेरे प्रभु यीशु मसीह, जिनकी मैंने अपनी जवानी से सेवा की है, ने मुझे केवल उन्हीं के ज्ञात तरीके से गहराइयों से ऊपर उठाया और मुझे सुरक्षित रखा।'

यह सुनकर, उस धन्य व्यक्ति ने बताया कि उसका नाम बेसिल है, और उसने दुष्ट और क्रूर यातना देने वाले, सामन के हाथों जो कुछ भी सहा था, उसका विस्तार से वर्णन किया।

[2633] डॉल्फ़िन समुद्री स्तनधारी हैं। वे आमतौर पर झुंड (पॉड) में यात्रा करती हैं और अक्सर जहाजों का अनुसरण करती हैं। प्राचीन काल में, डॉल्फ़िन सबसे प्रिय जानवरों में से एक थी; इसके बारे में कई काव्यात्मक किंवदंतियाँ और अंधविश्वास उत्पन्न हुए, और इसे अक्सर मूर्तिकला में दर्शाया जाता था।

[2634] गोल्डन गेट शहर के मुख्य द्वार को दिया गया नाम था।

जब उन्होंने धन्य बेसलि का वृत्तांत सुना, तो जॉन और हेलेना चकति रह गए और, साथ ही, उन्हें संत के बारे में पहले से जो कुछ भी ज्ञात था, वह सब याद आ गया; क्योंकि यह अफवाह पूरे शहर में फैल गई थी कि कैसे सामन ने पूजनीय संत को यातना दी थी और कैसे वह उन्हें कोई नुकसान पहुँचाने में असमर्थ रहा था। तब उन्होंने उस आदरणीय पादरी से उनके घर में ठहरने और रहने का आग्रह करना शुरू कर दिया – और यह अनुरोध धन्य बेसलि को भाया। जॉन और हेलेना ने उनके लिए प्रार्थना करने हेतु एक विशेष कोठरी तैयार की और वहाँ एक दीपक रख दिया; और यहीं पर उस संत ने ईश्वर को अपनी नियमित प्रार्थनाएँ अर्पित करनी शुरू कर दीं।

कौन हमें आदरणीय की प्रार्थना के कारनामों के बारे में बता सकता है, कि उन्होंने स्वर्गीय प्रभु से प्रार्थना करते हुए कितने आँसू बहाए? कौन उनकी सभी प्रणामों को गिन सकता है? कौन हमें उनकी पूरी रात की जाग-तपस्या के बारे में बताएगा, क्योंकि वह लगातार अपनी रातें बिना सोए बिताते थे? कौन हमारे लिए उनके सदाचारी और वीर जीवन का वर्णन करेगा? एक अटूट स्तंभ की तरह, आदरणीय पिता सदाचार में दृढ़ थे; वे कभी क्रोधित नहीं हुए, बल्कि मूसा या दाऊद की तरह विनम्र, याकूब की तरह सौम्य और नम्र थे[2635] , और अब्राहम से भी अधिक दयालु थे। क्योंकि जहाँ अब्राहम अपनी महान संपत्ति से दान देते थे, वहीं धन्य बेसलि ने अपनी ही गरीबी से गरीबों पर दया दिखाई, जिसे उन्होंने प्रभु परमेश्वर के लिए सहन किया, और जो कुछ भी मसीह के प्रेमी उन्हें लाते थे, वह तुरंत ज़रूरतमंदों में बाँट देते थे।

जब पूज्य बेसलि उपर्युक्त ईश्वर-प्रेमी जॉन के साथ ठहरे हुए थे, कुछ ही समय बाद लोग उनके पास आने लगे: कुछ आध्यात्मिक लाभ की चाह में, जबकि अन्य बीमारों को उनके पास लाए ताकि वे उन्हें चंगा कर सकें। आदरणीय संत ने बीमारों पर अपने हाथ रखकर और प्रार्थना करके उन्हें मसीह की कृपा से चंगा किया। जैसे-जैसे समय बीतता गया, संत का नाम राजधानी भर में प्रसिद्ध हो गया, और उनके पास न केवल आम लोग, बल्कि प्रतिष्ठित नागरिक और कुलीन भी आने लगे। चमत्कार करने के वरदान के साथ-साथ, संत के पास विवेक का वरदान भी था और वह उनके पास आने वाले सभी लोगों, चाहे वे अच्छे हों या बुरे, के गुप्त कर्मों को देख सकते थे। पापियों को निजी तौर पर फटकार लगाकर, उन्होंने कई लोगों को पश्चाताप की राह दिखाई। पूजनीय पिता ने भविष्य की भी भविष्यवाणी की और उसके बारे में भविष्यसूचक पूर्वानुमान लगाए, जैसा कि आगे के वृत्तांत से स्पष्ट होगा।

911 में, बीजान्टिन सम्राट लियो द वाइज़ का निधन हो गया, और कुछ ही समय बाद, 912 में, उनके भाई, सम्राट अलेक्ज़ेंडर की भी मृत्यु हो गई; उनकी मृत्यु पर, साम्राज्य का उत्तराधिकारी लियो के बेटे, कॉन्स्टेंटिन, जो पोर्फ्योरजेनिटस ([2636]) के नाम से जाने जाते थे, और उनकी माँ, ज़ोई बने। चूंकि नया सम्राट सिंहासन पर बैठने के समय अभी भी एक छोटा लड़का था, इसलिए साम्राज्य की सुरक्षा और प्रशासन का जिम्मा कॉन्स्टेंटिनोपल के पैट्रिआर्क, निकोलस[2637] , और कुरपालटस[2638] जॉन, जिन्हें गोरीडास के नाम से जाना जाता था, को सौंपा गया था। जब तक युवा सम्राट वयस्क नहीं हो गया, तब तक वे साम्राज्य के वास्तविक शासक थे।

इस बीच, बर्बरों ने ग्रीक भूमि पर हमला कर दिया; एक के बाद एक क्षेत्र पर कब्ज़ा करते हुए, वे पहले ही कॉन्स्टेंटिनोपल के करीब आ गए थे और उसके आसपास के इलाकों को लूट रहे थे। और कोई भी ऐसा नहीं था जो सेना खड़ी कर सके, राजधानी को खतरे में डालने वाले बर्बरों से लड़ सके, और उनके विनाशकारी आक्रमण को रोक सके। पूरा यूनानी साम्राज्य बड़े उथल-पुथल में पड़ गया; इस बीच, लोगों ने पैट्रिआर्क निकोलस के खिलाफ ज़ोर-ज़ोर से आलोचना करना शुरू कर दिया, उन पर यह आरोप लगाते हुए कि उन्होंने अपने सुपुर्द किए गए राज्य की भलाई का पर्याप्त ध्यान नहीं रखा। तब पैट्रिआर्क ने सभी कुलीनों से परामर्श करने के बाद, पूर्वी कमांडर कॉन्स्टेंटिन डौकास को एक पत्र लिखा, जिसमें उन्होंने उनसे कॉन्स्टेंटिनोपल आने और युवा सम्राट के साथ राजदंड साझा करने का आग्रह किया, ताकि जब तक कॉन्स्टेंटिन पोर्फ्योजेनिटस, एक नाबालिग होने के कारण, शाही महलों में पाला जा रहा था, कॉन्स्टेंटिन डौकास,

---

[2635] याकूब इस्राएली लोगों के एक कुलपिता थे। उनकी विनम्रता विशेष रूप से लाबान के प्रति उनके रवैये में स्पष्ट थी, जिसके द्वारा वे बार-बार धोखा खाकर भी तरह-तरह के अन्याय सहन करते रहे - और आंशिक रूप से अपने भाई एसाव के साथ उनके संबंध में, जिसे वे लाबान से लौटने पर अपने बड़े भाई के रूप में सम्मानपूर्वक नमस्ते करते थे।

[2636] सम्राट कॉन्स्टेंटिन सप्तम पोर्फयिोगेनिटस (जिन्हें पर्पल-बॉर्न के नाम से भी जाना जाता है) ने 912 से 959 तक बाइज़ेन्टाइन सिंहासन पर शासन किया।

[2637] पैट्रिआर्क निकोलस प्रथम ने दो बार कॉन्स्टेंटिनोपल के पैट्रिआर्क के पद पर कार्य किया: पहली बार 895 से 906 तक, और दूसरी बार 911 से 925 तक।

[2638] कुरोपोलात महल रक्षक का कमांडर था। वह बीजान्टिन सम्राटों के दरबार में एक काफी प्रमुख गणमान्य व्यक्ति था।

जो युद्ध में एक शक्तिशाली और पराक्रमी व्यक्ति था, साम्राज्य के दुश्मनों के खिलाफ हथियार उठा सकता था। क्योंकि वह व्यक्ति वास्तव में एक अत्यंत पराक्रमी और अजेय योद्धा था, जिससे उसके खिलाफ लड़ने वाले सभी विदेशी बहुत डरते थे। उनके बार-बार दिए गए बयानों के अनुसार, उन्होंने अक्सर डौकास के हथियारों से और उसके घोड़े की नथनों से आग निकलते देखा - एक आग जो उनकी ओर बढ़ते हुए उन्हें झुलसा देती और पीछे धकेल देती, इसलिए इस कमांडर के खिलाफ खड़ा होना असंभव था, जिसे स्वयं ईश्वर ने अनुग्रहित किया था। कांस्टेंटाइन डौकास ने स्वयं अपने ऊपर ईश्वर की कृपा का कोई रहस्य नहीं बनाया, और अपने बारे में निम्नलिखित बातें बताईं:

उन्होंने कहा, 'एक बार, अपनी जवानी में, जब मैं सो रहा था, तो मेरे सामने एक अत्यंत तेजस्वी महिला प्रकट हुईं, जो एक शाही बैंगनी रंग की पोशाक पहने हुए थीं; उनके साथ एक अग्निमय घोड़ा था, और घोड़े पर एक अग्निमय हथियार भी था। और उस महिला ने मुझे उस अग्निमय हथियार से लैस होने और घोड़े पर सवार होने के लिए प्रेरित किया। पहले तो मैं डर गया और उसकी विनती मानना नहीं चाहता था, लेकिन फिर मैंने आज्ञा मान ली। और जब मैंने वह कर लिया जो उसने मुझसे करने को कहा, तो उसने कहा: 'हे प्रभु, तेरे सामने ईश्वर के सभी शत्रु भय और कांपन अनुभव करें, और मेरे पुत्र के निन्दक तेरे मुख के सामने मोम की तरह पिघल जाएँ।' यह कहकर, वह तेजस्वी महिला मुझसे चली गईं।

इस प्रकार उस व्यक्ति ने, जिसे पैट्रिआर्क ने सिंहासन पर बुलाने के लिए संदेश भेजा था, अपने बारे में बताया। जब यह पैट्रिआर्क का संदेश उसे मिला, तो उसने अपने ऊपर दिए गए सम्मान को अस्वीकार करने की पूरी कोशिश की, क्योंकि वह खुद को इतनी ऊँची पदवी के लिए अयोग्य समझता था। लेकिन उससे पैट्रिआर्क और सिक्लाइट[2639] का एक और संदेश आया, जिसमें उसे सिंहासन पर बुलाया गया था। तब कांस्टेंटिन डौकास ने उन्हें जवाब लिखा: 'मेरे लिए अपने स्वामी और ईश्वर के अभिषिक्त, राजा के बराबर होना उचित नहीं है, भले ही वह उम्र में छोटा हो। इसके अलावा, मुझे डर है कि आपके प्रस्ताव में कोई विश्वासघात हो सकता है और आप मुझे नष्ट करना चाहते हैं।"

उससे यह पत्र प्राप्त करने पर, पितृपिता और सभी कुलीनों ने उन्हें एक तीसरा संदेश भेजा, जिसमें उनमें से प्रत्येक ने अपनी मर्जी से एक अलग शपथ लिखी, प्रभु के सम्मानित जीवन-दायक क्रूस के वृक्ष की कसम खाकर शपथ ली कि, बिना किसी चापलूसी या धोखे के, बल्कि ईमानदारी से और दिल से, वे उन्हें युवा सम्राट के साथ संयुक्त रूप से शासन करने के लिए बुला रहे थे। तब, उनके शपथ पर भरोसा करके, कोंस्टैंटिन डुकास अपने पूरे परिवार के साथ कॉन्स्टेंटिनोपल के लिए रवाना हो गए, और शहर के कुलीनों तथा सभी निवासियों द्वारा सम्मानपूर्वक उनका स्वागत किया गया। जब गवर्नर शहर में प्रवेश किया तो सुबह का समय था - सूरज अभी-अभी उगा था और चमकना शुरू ही कर रहा था - तभी अचानक एक अशुभ संकेत दिखाई दिया, जो एक हत्यारे के हाथों कांस्टेंटिन डौकास की मृत्यु का पूर्वाभास दे रहा था: सूर्य की पूरी चमक में, हल्की बारिश होने लगी, और जमीन पर गिरते हुए पानी की बूँदें खून जैसी लाल दिखाई दीं।

इस बीच, पैट्रिआर्क निकोलस और उनके सलाहकारों ने, जब उन्हें कॉन्स्टेंटिनोपल की संपूर्ण आबादी द्वारा प्रतिष्ठित गवर्नर कॉन्स्टेंटिन डौकास के लिए आयोजित भव्य स्वागत के बारे में पता चला, तो उन्होंने अपना मूल इरादा बदल दिया और शाही महल के द्वार उनके लिए बंद कर दिए, क्योंकि वे उन्हें सम्राट और उनकी माँ तक पहुँचने की अनुमति नहीं देना चाहते थे। तब कांस्टेंटिन डौकास ने हिप्पोड्रोम[2640] के सामने चौक में अपना तंबू लगाया, और कई कुलीनों और नागरिकों ने वहाँ रोज़ आना शुरू कर दिया, और अपने सम्राट और शासक के रूप में उस प्रसिद्ध कमांडर को श्रद्धांजलि देने लगे।

इसी समय, नए सम्राट के प्रति विफादार कुछ कुलीनों, जो धन्य बेसिल को जानते थे और उनके प्रति बहुत स्नेह रखते थे, एक-एक करके उनके पास आए और पूछा:

'यह मामला कैसे समाप्त होगा?'

रोते हुए, संत ने उनसे कहा कि तीन महीने के भीतर, हाल ही में सिंहासन पर चुने गए सम्राट कॉन्स्टेंटाइन डुकास और उनके सभी अनुयायियों को एक खूनी मौत आएगी। जब उन्होंने इस परिणाम की भविष्यवाणी की, तो धन्य व्यक्ति तब तक कड़वे और अवर्णनीय आँसू बहाते रहे जब तक कि वे थक नहीं गए। संत के इस उत्तर के बाद, जिन कुलीनों ने

[2639] सिक्लाइट पूरे शासन को दिया गया नाम था, जिसमें नागरिक और सैन्य अधिकारी दोनों शामिल थे।

[2640] हिप्पोड्रोम एक घुड़दौड़ अखाड़ा था; एक ऐसी जगह जहाँ घोड़ों की दौड़ और रथ दौड़ आयोजित की जाती थीं।

उनसे पूछा था, वे अपने-अपने घरों में बंद हो गए और वहाँ बिना किसी रास्ते के, भयभीत होकर बताई गई घटना के अंत की प्रतीक्षा करते रहे।

तब दो कुलीनों ने भविष्य जानने के इरादे से संत बेसलि के पास एक बार फिर से आकर उनसे पूछा। वे एक ही गर्भ से जन्मे दो भाई थे, दोनों प्रोटोस्पैथारियो[2641] का पद धारण करते थे। धन्य संत के समक्ष पहुँचने पर, उन्होंने उनसे पूछा:

'यदि हम नव-निर्वाचित राजा के समर्थक बन जाएँ और हिप्पोड्रोम में उसके आयोजनों में भाग लेने लगें तो हमारा क्या होगा?'

'वहाँ मत जाओ, मेरे बच्चों!' संत ने उनकी आँखों में आँसू लिए हुए उत्तर दिया, 'यदि तुम उससे मिल जाओगे, तो तुम में से एक तलवार से मारा जाएगा, जबकि दूसरे की नाक और कान काट दिए जाएँगे, और अपनी बाकी ज़िंदगी वह उसे देखने वाले सभी लोगों के लिए उपहास का पात्र बना रहेगा।'

लेकिन भाइयों ने संत की चेतावनी पर ध्यान नहीं दिया: वे हिप्पोड्रोम गए और नव-नियुक्त सम्राट में शामिल हो गए।

दो महीने बाद, कॉन्स्टेंटाइन डुकास को जब यह एहसास हुआ कि पादरी और पूरे धर्मसभा ने उसके साथ धोखा किया है और उसे अपमानित किया है, तो उसने उस शाही सिंहासन को सुरक्षित करने के लिए अपने समर्थकों से परामर्श करना शुरू कर दिया, जिसके लिए उसे बुलाया गया था। फिर भी, इस सदाचारी कमांडर हिंसा का सहारा नहीं लेना चाहता था। एक वीर कमांडर के रूप में, जिसके प्रति पूरी सेना और बहुत से लोग वफादार थे, वह बलपूर्वक सभी द्वार तोड़कर शाही सिंहासन पर चढ़ सकता था, या वह अपनी सेना के साथ शहर की दीवारों की घेराबंदी कर सकता था और किसी भी खाद्य आपूर्ति को प्रवेश करने से रोक सकता था, जिससे पैट्रिआर्क और पूरे सिनिड को अपनी इच्छा के विरुद्ध उसे राजा के रूप में स्वीकार करने और उसे शाही सिंहासन तक पहुँच प्रदान करने के लिए मजबूर होना पड़ता। लेकिन, एक धार्मिक और ईश्वर-भयभीत व्यक्ति होने के नाते, कॉन्स्टेंटाइन नहीं चाहते थे कि उनके कारण किसी को अकाल की दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति का सामना करना पड़े, और न ही वे खूनी तरीकों से सिंहासन प्राप्त करना चाहते थे। इसलिए, अपनी सारी आशा ईश्वर में रखकर और धर्मगुरु तथा कुलीनों की शपथों पर भरोसा बनाए रखते हुए, उसने अपने अनुयायियों को, केवल एक ही द्वार तोड़ने के बाद, यह आदेश दिया कि वे उसके साथ शांतिपूर्वक और निहत्थे शाही कक्षों की ओर बढ़ें। उस पवित्र कमांडर ने उस क्षण कहा:

'यदि हमें सौम्य रूप से स्वीकार किया जाता है, तो हम सही कर रहे हैं, बिना खून-खराबे या हिंसा के अपने उद्देश्य को प्राप्त कर रहे हैं। लेकिन यदि वे हम पर हमला करते हैं और हमें मार डालते हैं, तो वे हमारे लिए ईश्वर के समक्ष उत्तरदायी होंगे, क्योंकि उन्होंने स्वयं हमें अपनी गंभीर विनतियों और शपथों से लुभाया था, भले ही हमने मुझे प्रदान किया गया सम्मान नहीं माँगा था।'

यह कहने के बाद, कॉन्स्टेंटाइन डुकास ने अपने अनुयायियों से यह शपथ करवाई कि उनमें से कोई भी उन पर हमला करने वालों के खिलाफ अपनी तलवार म्यान से बाहर निकालने या धनुष पर तीर चढ़ाने की हिम्मत नहीं करेगा, उन्होंने आगे कहा, 'ताकि मेरी वजह से ईसाई रक्त की एक बूंद भी न बहे।' कांस्टेंटिन के अनुयायियों ने अपने नेता की इस आज्ञा का पालन करने की गंभीरता से शपथ ली और, शाही महल के कांस्य के द्वार तोड़कर (क्योंकि आंगने में प्रवेश करने का कोई और रास्ता नहीं था), वे इस धर्मनिष्ठ व्यक्ति, कॉन्स्टेंटिन डौकास, जो स्वयं भी निहत्थे थे, के नेतृत्व में बिना किसी हथियार के शांतिपूर्वक शाही कक्षों की ओर बढ़े।

जब वे बिना हथियार के शाही कक्षों की ओर जा रहे थे, तो पादरी द्वारा जानबूझकर वहाँ तैनात धनुर्धारियों ने अचानक उन पर हमला कर दिया और ढेर सारे तीर चलाकर उनमें से कई को घायल कर दिया। सबसे पहले निशाना बनाए जाने वालों में से एक स्वयं वीर कमांडर कांस्टेंटिन डौकास थे, जो जुलूस के सबसे आगे चल रहे थे: उन्हें उनके दाहिने हाथ के ठीक नीचे, उनकी बगल में एक गंभीर घाव लगा। अपने घाव के दर्द से रुककर, डुकास ज़मीन पर गिर पड़ा। यह देखकर, बड़ी संख्या में इकट्ठा हुए महल के पहरेदार, खींची हुई तलवारों के साथ शांतिपूर्वक प्रवेश करने वालों पर टूट पड़े और उन्हें घास की जड़ों की तरह काट डालने लगे। इस तरह, उन्होंने कांस्टेंटिन डुकास, उसके बेटे और कई अन्य लोगों को मार डाला। जो भाग गए थे, उन्हें जल्दी पकड़ लिया गया और तुरंत विभिन्न तरीकों से मार डाला गया: कुछ को आधा काट दिया गया, दूसरों को शहर के द्वार के बाहर पेड़ों से लटका दिया गया, जबकि कुछ के नाक और कान काट दिए गए और

[2641] प्रोटोस्पैथारियोस – एक महत्वपूर्ण दरबारी पदवी। वह स्पैथारी, अर्थात् दरबारी तलवारबाजों का कमांडर भी था।

उनकी नसें काट दी गईं। इस प्रकार, कांस्टेंटिन डौकास के साथ, उस समय तीन हज़ार तक पुरुष जो किसी भी गलत काम के दोषी नहीं थे, मारे गए। अन्य लोगों के साथ-साथ, प्रोटोस्पैथारियोस के दो भाइयों को भी, जो परम पावन बेसिल से सलाह लेने आए थे, यातनाएँ दी गईं; और वास्तव में, ठीक वैसे ही जैसे आदरणीय ने भविष्यवाणी की थी: उनमें से एक का सिर तलवार से काट दिया गया, जबकि दूसरे की नाक और कान काट दिए गए।

खून-खराबा खत्म करने के बाद, सैनिकों ने मारे गए डुकास और उसके बेटे के सिर काट दिए और उन्हें पैट्रिआर्क निकोलस और उनके सलाहकारों के पास ले गए। पितृप्रधान ने उदारतापूर्वक उन लोगों को पुरस्कृत किया जिन्होंने कॉन्स्टेंटिन को मारा था और आदेश दिया कि मारे गए व्यक्ति के सिर को एक भाले पर टांगकर पूरे शहर में घुमाया जाए, ताकि उसका मज़ाक उड़ाया जा सके, जबकि उसके साथ पीड़ित हुए बाकी सभी के शवों को समुद्र में फेंक दिया जाए।

उस समय कॉन्स्टेंटिनोपल में ऐसा कानूनहीन रक्तपात हुआ था। और वह शहर निर्दोष रूप से मारे गए पुरुषों के रक्त से अपवित्र हो गया था, जो हबिल के रक्त की तरह[2642] पृथ्वी से ईश्वर के पास पुकार रहा था। क्योंकि वह विदेशी दुश्मनों की तलवार से नहीं, बल्कि अपने ही देशवासियों, एक ही आस्था और विचारधारा के पूर्व मित्रों और भाइयों के हाथों मारा गया था, वह शक्तिशाली कमांडर कॉन्स्टेंटिन डौकास, जिसे राजा घोषित किया गया था—यह योद्धा जो अपनी वीरता के लिए प्रसिद्ध था, ईश्वर को प्रिय और लोगों का प्रिय था—धोखे का शिकार होकर मारा गया।

फिर भी, इस संसार के शक्तिशाली लोगों द्वारा निंदा और उपहास किए जाने के बावजूद, कांस्टेंटिन डुकास को ईश्वर द्वारा महिमामंडित किया गया है: उसकी धर्मी आत्मा, साथ ही उन सभी की आत्माओं को जिन्होंने उसके साथ दुख उठाया, स्वर्गदूतों द्वारा स्वर्गीय निवासों में ले जाया गया और अब्राहम की गोद में स्वीकार किया गया। इस बात की स्पष्ट गवाही निम्नलिखित चमत्कारी संकेत से मिलती है: जब कॉन्स्टेंटिन के फांसी पर चढ़ाए गए साथियों के शव पेड़ों से लटके हुए थे, तो रात में तारे उन पर उतरते हुए दिखाई दिए और सूर्योदय तक उनके सिरों के ऊपर चमकते रहे। इस चिह्न से यह स्पष्ट रूप से प्रकट हुआ कि वे सभी अन्यायपूर्ण रूप से पीड़ित हुए थे और उनकी आत्माएँ, उनके शहीद होने के पुरस्कार के रूप में, संतों के निवासों में बसा दी गई थीं।

हमने यह सब हमारे पूजनीय पिता, धन्य बेसिल की भविष्यवाणी की दूरदृष्टि का एक उदाहरण प्रस्तुत करने के लिए वर्णित किया है; क्योंकि उन्होंने जो कुछ भी भविष्यवाणी की थी, वह सब सच हुआ। हम अन्य घटनाओं का भी वर्णन करेंगे जिनमें इस दूरदृष्टि का वरदान, जो हमारे पूजनीय पिता की विशेषता था, प्रकट हुआ।

पैट्रिसियिन रोमन, रोमूलस अ[2643] , को युवा सम्राट कॉन्स्टेंटाइन पोर्फिरोजेनिटस के सह-शासक के रूप में चुना गया था, और बाद में उन्हें सम्राट के रूप में ताज पहनाया गया। जब सम्राट कॉन्स्टेंटाइन वयस्क हुए, तो रोमन ने अपनी बेटी हेलेना का विवाह उनसे कर दिया। कॉन्स्टेंटाइन के अलावा, रोमन का एक और दामाद था, एक सरोनाइट्स नामक व्यक्ति, जो पद में एक कुलीन, एक घमंडी और सत्ता के भूखा व्यक्ति था जो अपनी संपत्ति और अपनी वंशावली की कुलीनता का घमंड करता था। उसने अपने दिल में एक दुष्ट इरादा पाला था - राजा कॉन्स्टेंटाइन को नष्ट करना और शाही राजदंड पर कब्जा करना।

सरोनटिस के महलों के पास उपर्युक्त ईश्वर-प्रेमी जॉन का घर था, जहाँ पूजनीय बेसिल ठहरे हुए थे। सरोनटिस के दुष्ट विचारों को अपनी सूक्ष्म दृष्टि से भांपते हुए, पूजनीय बेसिल ने जैसे स्वयं से ही कहा:

'बेसिल! इस नीच, अधर्मी आदमी से सावधान रहो, जो अपने दिल में अधर्मी योजनाएँ पालता है। लेकिन मैं जाकर उसका सामना करूँगा: शायद वह पश्चाताप कर ले और अपनी पागल योजना को छोड़ दे।'

और इस प्रकार, जब एक दिन सारोनतिस अपने घर से घोड़े पर सवार होकर अपने आमतौर पर दिखावे के साथ शाही महल की ओर जा रहा था, तो संत सड़क पर खड़े हो गए और उस कुलीन व्यक्ति को संबोधित करते हुए ज़ोर से घोषणा करने लगे:

'तुम्हारे हृदय में परमेश्वर के अभिषिक्त के विरुद्ध बुराई का विचार क्यों उत्पन्न हुआ है? राजसी उत्तराधिकार में तुम्हारा कोई हिस्सा नहीं है। इसलिए, व्यर्थ में परिश्रम मत करो, कहीं ऐसा न हो कि प्रभु तुम पर क्रोधित हो जाएँ और तुमसे वह कुलीन पद भी छीन लें जो तुम्हारे पास है।'

[2642] एबेल – आदम का दूसरा पुत्र, जिसे काइन ने विश्वासघात से मार डाला।

[2643] यह, बेशक, रोमानुस प्रथम को संदर्भित करता है, जिसने 919 से 944 तक कॉन्स्टेंटिन सप्तम के साथ संयुक्त रूप से शासन किया।

संत से ऐसा डाँट-फटकार सुनकर, सारोनाइट्स उसके प्रति अत्यधिक क्रोधित हो गया। उसने स्वयं को धन्य व्यक्ति पर झोंक दिया और अपने हाथ में पकड़ी चाबुक से उसके सिर पर वार करने लगा, साथ ही उसे हर तरह की गालियों से नवाज रहा था। फिर, उस पर कई घाव करने और उसका मज़ाक उड़ाने के बाद, वह आदरणीय व्यक्ति को छोड़कर अपने रास्ते पर चल पड़ा।

धन्य बेसिल ने सभी अपमान और घावों को धैर्यपूर्वक सहन किया, और अगले दिन जब सरोनतिस महल जा रहा था तो वह उससे फिर मिला, और उसे पहले की ही तरह डांटा। अपने गुस्से में, सरोनाइट्स ने अपने नौकरों को संत को पकड़ने, उसे अपने घर ले जाने और जब तक वह खुद महल से वापस न आ जाए, तब तक उसे वहीं रखने का आदेश दिया। फिर, अपनी वापसी पर, उसने काँटों वाले झाड़ियों की टहनियाँ लाने और परम पूजनीय बेसिल को उसके सामने लाने का आदेश दिया।

जब उस धन्य व्यक्ति को उसके सामने लाया गया, तो सारोनटिस ने कहा:

'मुझे जवाब दो, तुम पागल बूढ़े: किस दानव ने तुम्हें इतनी अभद्रता से मेरा अभिवादन करना और मुझसे ऐसे अनुचित, धर्मनिंदापूर्ण शब्द कहना सिखाया है? या क्या तुम नहीं जानते कि मैं राजा का दामाद और सभी राजकुमारों में सबसे प्रमुख हूँ? या क्या तुम्हें पता नहीं कि मेरी संपत्ति समुद्र तट की रेत जितनी अनगिनत है? क्योंकि मेरे पास दासों, जमीनों, गांवों और विभिन्न प्रकार के पशुओं के झुंड की एक विशाल संख्या है, साथ ही सोने और चांदी की अगणित मात्रा है। इसके अलावा, मुझे ईश्वर और हमारे राजाओं द्वारा प्रदान की गई महान महिमा और सम्मान प्राप्त है। तुम नीच कुल में जन्मे और दरिद्र होते हुए, पूरे जनसमूह के सामने, ऐसी निंदाओं और आरोपों के साथ मेरे सामने आने की हिम्मत कैसे करते हो? मुझे उत्तर दो, इससे पहले कि मैं तुम्हें मौत की सजा दे दूँ।

उस धन्य पुरुष ने इन शब्दों के उत्तर में कहा:

क्या तुम सच में सोचते हो कि तुम्हारा धूर्त और दुष्ट इरादा, जो तुम अपने दिल में पाल रहे हो, वह गुप्त रहेगा? नहीं—खुद भगवान ने मुझे बताया है कि तुमने राजा की जान लेने और राजसी अधिकार हड़पने की साजिश रची है। इस दुष्ट योजना को त्याग दो और प्रभु के अभिषिक्त के विरुद्ध षड्यंत्र रचना बंद करो। मैं तुम्हें ईश्वर के नाम पर कहता हूँ: यदि तुम अपनी दुष्ट योजना का परित्याग नहीं करते, तो प्रभु तुम पर बहुत क्रुद्ध होंगे और शीघ्र ही पृथ्वी के मुख से तुम्हारी स्मृति को मिटा देंगे।

सरोन का पागल इन शब्दों से इतना क्रोधित हुआ कि उसका चेहरा रंग बदल गया और पीला पड़ गया। क्रोध से आग-बबूला होकर, उसने अपने नौकरों को आज्ञा दी कि वे उस पूजनीय व्यक्ति को जमीन पर पटक दें और काँटों वाली टहनियों से निर्दयता से पीटें।

उसने कहा, 'उसे और ज़ोर से मारो, तब तक मारो जब तक कि झूठी भविष्यवाणी का दानव उससे बाहर न निकल जाए।'

और उन्होंने उसे पीटा। हालाँकि, संत एक बधिर और असंवेदनशील पेड़ की तरह थे: क्रूर प्रहारों को सहते हुए, उन्होंने न तो कराह निकाली, न ही एक शब्द कहा, और न ही उन्होंने एक भी मांसपेशी हिलाई, ताकि उनकी देह पर छड़ियों के पड़ने की आवाज़ के अलावा कुछ और सुनाई न दे।

जब संत को यातना दी जा रही थी, तब सारोनति के घर का द्वार खुला हुआ था। उसी क्षण, जॉन की धर्मपरायण पत्नी हेलेना, द्वार के पास से गुजर रही थी। द्वार से झाँककर, उसने देखा कि कैसे धन्य बेसिल को यातना दी जा रही थी। जल्दी से घर में प्रवेश करते हुए, उसने अपने शरीर से संत के शरीर की ढाल की और, कड़वी आँसुओं के साथ, जोर से चिल्लाने लगी:

'मुझ पर वार करो, जो एक पापी हूँ, लेकिन इस ईश्वर के दीपक, मेरे चरवाहे और आध्यात्मिक पिता को क्षमा करो; इसके बदले मुझे मार डालो, और इन्हें जाने दो।'

तब सरोनाइट्स, जिसकी क्रूर प्रकृति एक उग्र जानवर जैसी थी, ने अपने सेवकों से क्रोधित होकर कहा:

'उसे भी पीटो, क्योंकि वह खुद यही चाहती है; मुझे शक है कि वह इस दुष्ट आदमी की अपमानजनक और व्यभिचारिणी साथी है।'

आदेश का पालन करते हुए, नौकरों ने उस धर्मपरायण पत्नी को पीटना शुरू कर दिया, और वे उसे तब तक पीटते रहे जब तक उन्हें ऐसा नहीं लगा कि वह साँस लेना बंद कर चुकी है। फिर उस अधर्मी सरोनाइट ने नौकरों को आदेश दिया कि वे उसके पैरों से पकड़कर उसे एक मृत कुत्ते की तरह सड़क पर फेंक दें। जहाँ तक धन्य बेसिल का सवाल है, उसने

आदेश दिया कि उसे बाँधा जाए, फाँसी दी जाए, और बैल की खाल की रस्सियों से पाँच सौ कोड़े मारे जाएँ। इन क्रूर प्रहारों को सहते हुए, धन्य बेसिल ने ईश्वर की सहायता से, उन्हें बहादुरी से सहन किया। नौकरों ने, यातना पूरी करने के बाद, उसे बेड़ियों में जकड़ लिया।

रात हो गई, और जब सरोनाइट सो रहा था, तो उसे अपनी नींद में एक दर्शन हुआ जिसमें इस क्रूर और दुर्भावनापूर्ण कुलीन व्यक्ति की निकट मृत्यु की भविष्यवाणी की गई थी। अपने सपने में, उसने एक ऊँचे, शाखाओं वाले ओक का पेड़ देखा, जिसके शीर्ष पर एक काग ने अपना घोंसला बनाया था। वह शिकारी पक्षी अपने घोंसले में बैठा था, अपने पंखों से अपने बच्चों की रक्षा कर रहा था। लेकिन फिर दो आदमी कुल्हाड़ियों के साथ ओक के पेड़ के पास आए, उसका पेड़ काटने का इरादा लेकर। जैसे ही वे ऐसा कर रहे थे, उनमें से एक ने दूसरे से पेड़ की चोटी की ओर इशारा करते हुए कहा:

'वहाँ एक कागा बैठा है जिसकी चीखों से ज़ार की नींद में खलल पड़ता है।' दूसरे ने उत्तर दिया:

'इसके अलावा, इसने परमेश्वर के प्रिय संत, धन्य बेसिल को भी बहुत हानि पहुँचाई है।'

यह कहकर, उन्होंने पेड़ को काटना शुरू कर दिया। जब वह ज़मीन पर गिर गया, तो फटे-पुराने कपड़े पहने कुछ लोग आए और उन्होंने पेड़ की टहनियाँ काटकर आग में फेंकना शुरू कर दिया। उनके बीच, सारोनाइट ने पूजनीय बेसिल को देखा: गिरे हुए पेड़ के पास खड़े होकर, उन्होंने कहा:

'हर वह पेड़ जो अच्छा फल नहीं देता, उसे काटकर आग में फेंक दिया जाता है' (मत्ती 3:10)।

तब, सरोनति की ओर मुड़कर, रेवरेंड ने कहा:

'क्या मैंने तुम्हें अपने बुरे इरादे को त्यागने के लिए नहीं कहा, वरना तुम उस ऊँचाई से भी गिर जाओगे जिस पर तुम अभी खड़े हो?'

जागने पर, सरोनतिस को अस्वस्थ महसूस हुआ; लेकिन जब उसने अपने सपने में देखे गए दर्शन पर विचार किया, तो उस पर एक बड़ा भय छा गया। भयभीत होकर, वह उठा और तुरंत अपने नौकरों को सेंट बेसिल के बंधन खोलकर उन्हें मुक्त करने का आदेश देकर भेज दिया। कारावास से मुक्त होकर, वह धन्य व्यक्ति अपने निवास, जॉन के घर लौट आए। पादरी को देखकर जॉन प्रसन्न हुआ; लेकिन जब उस धर्मपरायण व्यक्ति ने क्रूर यातनाओं से संत पर किए गए घाव देखे, तो वह रो पड़ा। इसी तरह, धन्य बासिल से प्रेम करने वाले सभी लोग, उनके लौटने की खबर सुनकर, जॉन के घर उमड़ पड़े, उनके आगमन पर प्रसन्न हुए और उनके शरीर पर घाव देखकर रो पड़े। जॉन की पत्नी, धन्य हेलेना, को पिटाई से लगे घावों के कारण जल्द ही मृत्यु हो गई। लेकिन अधर्मी सरोनाइट भी अपने बिस्तर से नहीं उठ सका: कुछ ही दिनों बाद उसकी मृत्यु हो गई, और इस प्रकार धन्य बेसिल की भविष्यवाणी उस पर पूरी हुई, और सरोनाइट द्वारा देखा गया सपना भी सच हो गया।

कुछ समय बीत जाने के बाद, धर्मनिष्ठ जॉन, जिसने पूजनीय बेसिल की सेवा की थी, प्रभु के पास शांतिपूर्वक चला गया, और पूजनीय बेसिल मृतक के घर में अकेला रहने लगा। हर दिन, सभी प्रकार के बड़ी संख्या में लोग उनके पास आते थे, अपने साथ अपने बीमारों को लाते या ले जाते थे। परम पुण्यशाली उन्हें ईश्वर के समक्ष अपनी प्रार्थना के द्वारा चंगा करते थे। भिखारियों की भीड़ भी उनके पास इकट्ठा होती थी, क्योंकि आदरणीय उन्हें मसीह के भक्तों द्वारा लाई गई हर चीज़ बाँट देते थे, और अगले दिन तक अपने लिए कुछ भी नहीं रखते थे।

उस समय, कॉन्स्टेंटाइन नामक एक धार्मिक और ईश्वर-प्रेमी नागरिक, जो बारबरस[2644] के नाम से जाना जाता था, ने आदरणीय से अपने साथ रहने और अपने घर में निवास करने का आग्रह किया, और उसने उनके लिए एक एकांत कोठरी तैयार की। उसमें, उसने धन्य व्यक्ति के लिए एक बिस्तर, एक मेज, एक सीट और एक दीपक तैयार किया, ठीक वैसे ही जैसे शुनेमी स्त्री[2645] ने एक बार भविष्यवक्ता एलिशा (2 राजा 4:10) के लिए किया था[2646] । फिर उन्होंने ईश्वर के पुरुष की सेवा का कार्य एक धर्मनिष्ठ वृद्ध महिला थियोडोरा को सौंप दिया—जो लंबे समय से विधवा थीं और कई वर्षों तक ईश्वरीय पवित्रता का जीवन जी चुकी थीं। उस धन्य वृद्ध महिला ने, जो आदरणीय की कोठरी से बहुत दूर नहीं रहती थीं, उनकी सेवा पूरी लगन से की, मानो वह ईश्वर का कोई स्वर्गदूत हों। यदि कोई संत बेसिल से मिलने और उनसे बात

[2644] 'बर्बर' का अर्थ विदेशी है।

[2645] सोनाम की एक महिला – इसाखार कुल के सोनाम नगर की निवासी, जो नासरत और माउंट टाबोर के दक्षिण-पश्चिम में स्थित था। आज इस स्थान को सोलाम या सुलेम कहा जाता है।

[2646] एलिशा – इस्राएल के राज्य का एक नबी, नबी एलिया का प्रिय शिष्य और उनकी भविष्यवाणी की प्रतिभा का उत्तराधिकारी।

करने की इच्छा से आता, तो थियोडोरा रेवरेंड को उनके आगमन की सूचना देती, और वह अपनी कोठरी से निकलकर उसके ऊपरी कमरे में आकर आगंतुक का स्वागत करते। इस प्रकार, वह इसी कमरे में सभी को स्वीकार करते थे, बीमारों को ठीक करते थे, दुखी लोगों को सांत्वना देते थे और ज़रूरतमंदों को दान देते थे - और इस प्रकार आदरणीय पिताजी अपना दिन व्यतीत करते थे। शाम के समय, वह अपनी कोठरी में चले जाते थे और वहाँ ईश्वर से अपनी नियमित प्रार्थनाएँ करते थे।

धन्य बेसिल के दैवी जीवन और उनके अद्भुत कार्यों की ख्याति दूर-दूर तक फैल गई, और उनका सम्मान न केवल सामान्य लोगों द्वारा बल्कि पादरी वर्ग के कई सदस्यों द्वारा भी किया जाता था: भिक्षु, पुरोहित और बिशप अक्सर संत से मिलने आते थे और उनसे आत्मा और शरीर दोनों के लिए सहायता प्राप्त करते थे। राजकुमार और कुलीनों ने, अपनी ओर से, उन्हें अपने घरों में बुलाया, उनसे बीमारों से मिलने और उनके लिए प्रार्थना करने का अनुरोध किया। और जब भी धन्य व्यक्ति बीमारों से मिलने आते, तो वे तुरंत प्रार्थना में उन पर अपने हाथ रखते और उन्हें चंगा कर देते; वे एक ही शब्द से दुष्ट आत्माओं को भगा देते थे। उन्होंने नैतिकता में सुधार करने का भी ध्यान रखा, और कई लोगों को सद्गुणों का उपदेश दिया; और उन्होंने लोगों को केवल शहद जैसी मीठी बातों से नहीं सिखाया, बल्कि कभी-कभी उन्होंने पापियों को सख्त लहजे में फटकार भी लगाई; क्योंकि सर्व-द्रष्टा ईश्वर द्वारा उन्हें सभी बातें प्रकट कर दी गई थीं।

एक अवसर पर, शाही कक्षों में बुलाए जाने पर, पूजनीय बेसिल ने राजा रोमन के साथ निजी बातचीत में, उसकी लालच और कई महिलाओं के साथ उसके अवैध संबंधों के लिए उसे फटकारा – और राजा न केवल उनसे नाराज़ नहीं हुआ, बल्कि विनम्रता से इस फटकार को स्वीकार कर लिया और अपने जीवन में सुधार करने का वादा किया।

इसी तरह, उस धन्य व्यक्ति ने एक बहुत ही प्रतिष्ठित कुलीन महिला, अनास्तासिया को पश्चाताप के मार्ग पर लाया, और उसे उसके कुछ गुप्त पापों के लिए फटकार लगाई, तथा उसकी मृत्यु की भविष्यवाणी की।

उन्होंने रानी हेलेना, जो राजा कॉन्स्टेंटाइन पोर्फ्योजेनिटिस की पत्नी थीं, को यह भी बताया कि वह पहले एक बेटी को जन्म देंगी और फिर एक पुत्र को, जो वयस्क होने पर सिंहासन पर आरूढ़ होगा – जैसा कि वास्तव में हुआ। रानी ने आदेश दिया कि उन्हें सोना दिया जाए, लेकिन रेवरेन्ड फादर ने उसे छूना भी स्वीकार नहीं किया। तब रानी ने पवित्र त्रिमूर्ति के नाम पर उनसे विनती की कि वे जितना चाहें ले लें। उनकी लगातार प्रार्थनाओं के आगे झुकते हुए, पादरी ने तीन सोने के सिक्के[2647] लिए और उन्हें वृद्ध महिला थियोडोरा को दे दिए, जो उनकी सेवा करती थीं और वहाँ मौजूद थीं।

यह देखकर, रानी के पास खड़े कुछ लोगों ने संत से कहा:

'फादर, उस वृद्ध महिला को और सोने के सिक्के दीजिए।' संत ने उनसे उत्तर दिया:

'मेरे बच्चों, हम बड़ी संख्या में काँटे नहीं चाहते, क्योंकि वे हमारे हाथों को चुभते हैं।' तब रानी ने पूजनीय पिता से कहा:

'सच्चाई से कहूँ तो, आदरणीय पिता, आपने एकमात्र ईश्वर से अपने पूरे हृदय से प्रेम किया है, और आप इस संसार की व्यर्थ की संपत्तियों से परे हैं। लेकिन हमें भूलना नहीं, और ईश्वर से अपनी प्रार्थनाओं में हमारा स्मरण करना।'

यह कहकर, उसने उस धन्य व्यक्ति को शांति से विदा कर दिया।

उस समय, ग्रेगरी नामक एक गृहस्थ परम पूज्य बेसिल के पास आए; वे संत के शिष्य बन गए और उनके कई चमत्कारों के साक्षी बने, और बाद में उन्होंने उनके जीवन का एक विस्तृत वृत्तांत लिखा। जब यह ग्रेगरी पहली बार धन्य व्यक्ति के पास आए, तो वे रेवरेंड फादर के पास मौजूद दूरदर्शिता के अद्भुत वरदान से बहुत हैरान और चकित हुए; क्योंकि, यद्यपि उन्होंने ग्रेगरी को पहले कभी नहीं देखा था, उस पवित्र व्यक्ति ने, जैसे ही वे पहुँचे, उन्हें नाम से बुलाया और फिर उन्हें वह सब कुछ बता दिया जो वे मन में सोच रहे थे। आम तौर पर, पूजनीय संत के पास दूरदर्शिता का एक अत्यधिक वरदान था और वे न केवल लोगों के गुप्त कर्मों को, बल्कि मानव हृदय के सबसे छिपे हुए विचारों को भी जान सकते थे। संत के जीवन में कई ऐसे उदाहरण थे जब उनका यह वरदान सभी के सामने प्रकट हुआ; लेकिन इन सभी उदाहरणों को बताने के लिए हमारे पास न तो समय है और न ही जगह, और इसलिए हम केवल कुछ उदाहरणों तक ही सीमित रहेंगे।

[2647] एक सोने का सिक्का – एक सोने का सिक्का, एक चेरवोनेट्स।

एक पादरी, संत के पास आकर, उपहार में सेब लाया और रात के खाने के दौरान यह याद करने की कोशशि करने लगा कि उसने सेबों पर कतिने मेड्नट्सि[2648] खर्च कएि थे। लेकनि संत ने उससे कहा:

'भाई, तुम इतनी गहरी सोच में क्यों हो, यह याद करने की कोशशि क्यों कर रहे हो कि तुमने फलों पर कतिना खर्च कयिा था? व्यर्थ में अपना मन परेशान मत करो; बस मुझसे पूछ लो: तुमने सेबों के लएि दस मेडनट्सि दएि थे।'

यह सुनकर, पादरी चकति रह गया, वृद्ध की सूझ-बूझ पर हैरान हुआ और उस ईश्वर की स्तुति करने लगा, जसिने मानव जाति के लएि ऐसे महान संत को भेजा था।

एक शराब व्यापारी, जो संत का परचिति था, जब उसका व्यवसाय मंदा पड़ने लगा तो वह पूजनीय संत के पास आया और उनसे अपने घर आने का अनुरोध कयिा, ताकि वे वहां साथ में प्रार्थना कर सकें और उनकी प्रार्थना से उसके घर पर ईश्वर का आशीर्वाद आ सके। जब आशीर्वादति संत पहुंचे, तो शराब व्यापारी ने बहुत सारे भखिारयिों को खाने के लएि बुलाया। भोजन के अंत में, वह संत को शराब के तहखाने में ले गया ताकि वह शराब वाली कलशों को आशीर्वाद दे सकें। जब वह कलशों को आशीर्वाद दे रहे थे, तो पूजनीय संत उनमें से एक के पास गए, जसिमें लगभग पंद्रह माप की शराब थी, और शराब के व्यापारी से कहा:

'मैंने मसीह के नाम पर सभी बर्तन आशीर्वाद दे दएि हैं, सवािय इस एक के – इसे तोड़ दयिा जाना चाहएि।'

लेकनि शराब व्यापारी ने पादरी से ऐसा न करने की वनिती करनी शुरू कर दी।

'पतिाजी, इसे मत तोड़एि,' उसने कहा, 'बल्कि इस पात्र को भी आशीर्वाद दीजएि; क्योंकि यदि आप इसे तोड़ देंगे, तो मेरा माल खत्म हो जाएगा, और मैं कंगाल हो जाऊँगा, क्योंकि मैं वभिन्नि साहूकारों का बहुत बड़ा कर्जदार हूँ।'

संत ने उत्तर दयिा:

'मैं इन सब बातों से वाकफि हूँ; फरि भी मैं तुम्हें बड़ी वपित्ति से बचाने के लएि इस पात्र को तोड़ने का इरादा रखता हूँ। मैं यहीं इसलएि आया हूँ।' तब शराब के व्यापारी ने संत से कहा:

'तुम मेरे सरि पर वार कर दो, पर यह पात्र नहीं तोड़ो।'

लेकनि संत ने पास पड़े एक लट्ठे को उठाकर पात्र को तोड़ना शुरू कर दयिा। जब वह टूट गया, तो बहुत सारी शराब फर्श पर गरि गई। यह देखकर शराब व्यापारी बहुत दुखी हुआ, जबकि उसके साथ खड़े लोग संत से नाराज़ होने लगे और मन ही मन उसकी नदिा करने लगे।

आदरणीय संत ने, पवत्रि आत्मा द्वारा उनके वचिारों और ईश्वर-नदिा को भांपते हुए, पास पड़े एक डंडे को उठाया, उसे टूटे हुए पात्र में—जसिके तल में थोड़ी सी शराब बची थी—घुसा दयिा और उसमें से एक मरा हुआ साँप नकिाला, जो तीन कोहनी लंबा था और शराब से नशे में धुत था[2649] । फरि, उपस्थति लोगों की ओर मुड़कर, उन्होंने कहा:

'बच्चों, तुम मन ही मन मुझ पर क्यों ईश्वरनदिा कर रहे हो? मानो मैंने कुछ गलत कयिा हो! क्या तुम यह साँप देख रहे हो: इसके वषि से कतिने लोग वषिाक्त हो सकते थे, और तब मालकि कतिनी बड़ी मुसीबत में पड़ जाता? क्या तुम यही चाहते हो? और क्या मैंने इस पात्र को तोड़कर सही काम नहीं कयिा?'

यह कहने के बाद, संत ने साँप को ज़मीन पर फेंक दयिा; शराब व्यापारी, अपनी ओर से, धन्य संत के पैरों में गरि पड़ा और उनसे क्षमा याचना करने लगा। धन्य संत ने उसे क्षमा कर दयिा और उस पर अपना आशीर्वाद प्रदान कयिा। और संत बेसलि की प्रार्थनाओं के माध्यम से, शराब व्यापारी के घर पर प्रभु का आशीर्वाद बना रहा और उन्हें हर चीज़ में प्रचुरता मलिी।

थयिोडोशयिा नाम की एक महलिा अपना चार वर्षीय बीमार बेटा लेकर आदरणीय के पास आई और संत से उसके ठीक होने के लएि प्रार्थना करने लगी। उसके चार वर्ष की आयु से पहले ही उसके सभी बच्चे मर चुके थे; इसलएि, उसे डर था कि उसका यह बच्चा, जो पहले से ही बीमार था, वह भी मर जाएगा। जब वह इस प्रकार अपने दुख को पूजनीय पतिाजी को सुना रही थी, तो उसके साथ लाया हुआ लड़का रोने लगा और रोटी माँगने लगा। पूजनीय पतिाजी ने एक रोटी ली, उसे लड़के को दे दी और स्नेहपूर्वक मुस्कुराते हुए कहा:

'तुम्हारा नाम क्या है? क्या यह लेव है?'

फरि, माँ की ओर मुड़कर, उन्होंने कहा:

[2648] एक तांबे का सक्कि – एक छोटा तांबे का सक्कि।

[2649] एक 'लोकोट' या 'लाकोट' लंबाई की एक इकाई है जो 10.5 वर्शोक्स के बराबर होती है। तीन लोकोट लगभग दो अर्शनि के बराबर थे।

'आपकी धार्मिकता के लिए, और विशेष रूप से परमेश्वर की परम पवित्र माता के प्रति आपके प्रेम के पुरस्कार के रूप में, जो आपने उनकी प्रतिमा—ओडिगिट्रिया[2650] —के सामने अपनी बार-बार की गई प्रार्थनाओं के माध्यम से दिखाया है, प्रभु आपके इस पुत्र को अच्छे स्वास्थ्य के साथ और सुरक्षित रखेंगे। जब वह वयस्क हो जाएगा, तो वह आपको बहुत खुशी देगा, क्योंकि वह अच्छे चरित्र वाला, बुद्धिमान, ईमानदार और लोगों के बीच प्रसिद्ध भी होगा। एक अच्छी परवरिश पाकर और धर्मग्रंथों की बुद्धिमत्ता में शिक्षित होकर, वह एक भिक्षु बनेगा, और फिर एक पुरोहित, और प्रभु उसकी रक्षा करेंगे। जहाँ तक आपके अन्य बच्चों का सवाल है, जिन्हें आप जन्म देंगी, वे भी मर जाएँगे, ठीक वैसे ही जैसे पहले वाले मरे थे।

तब वह स्त्री, संत के सामने सिर झुकाकर चली गई, और संत ने जो कुछ भी उसकी भविष्यवाणी की थी, वह सब सच हो गया।

एक व्यक्ति, जो रेवरेंड फादर को अच्छी तरह से जानता था, अपने स्वामी के एक मिशन पर पूर्व[2651] की ओर रवाना होते समय उनका आशीर्वाद लेने आया। रेवरेंड फादर ने, उसके चेहरे को ध्यान से देखते हुए और उसकी यात्रा में उसके साथ होने वाली घटनाओं का पूर्वाभास करते हुए, कहा:

'हेलडिॉन नदी भयानक और खतरनाक है, फिर भी यह ईश्वर के एक पापी सेवक, बेसिल की प्रार्थनाओं से वश में हो जाएगी।'

किसी को भी धन्य व्यक्ति के शब्द समझ नहीं आए। वह आदमी, तथापि, अपनी यात्रा पर चल पड़ा। और इस प्रकार, जब वह पूर्वी देशों में था, तो उसका रास्ता एक ऐसी नदी ने रोक लिया जिसे वह पहचानता नहीं था, क्योंकि वह पहले कभी उन देशों में नहीं गया था। यह नदी लगभग बीस फथम चौड़ी थी, फिर भी उसका बहाव इतना तेज था कि केवल एक पक्षी ही इतनी तेज़ी से उड़ सकता था। वह आदमी किनारे पर रुका और नदी में उथले पानी की जगह तलाशने लगा ताकि वह अपने घोड़े पर सवार होकर दूसरी तरफ़ जा सके। अचानक, एक लहर उस पर से होकर गुज़री और उसे तथा उसके घोड़े को उठाकर नदी के बीचों-बीच खींच ले गई; धारा उन्हें समुद्र की ओर ले जा रही थी, और वह आदमी अब निश्चित मृत्यु का सामना कर रहा था। अपने डर में, उसने प्रभु से पुकारा:

'हे प्रभु ईश्वर! हमारे पूजनीय पिता बेसिल की प्रार्थनाओं के द्वारा, हे पापी, मेरी सहायता करो।'

जैसे ही उसने यह कहा, उसने तुरंत संत बेसिल को देखा, जिन्होंने उफनते पानी को शांत कर दिया, घोड़े की लगाम पकड़कर उसे दूसरी किनारे ले गए, और दृष्टि से ओझल हो गए।

डूबने से बचने के बाद, उस आदमी ने ईश्वर और उनके संत, बेसिल का धन्यवाद किया; फिर, पास के एक गाँव में पहुँचकर और रात के लिए रुककर, उसने पूछा कि इस नदी का नाम क्या है। और उन्होंने उसे बताया कि इसका नाम हेलीडॉन है, जिसका अर्थ है 'गिलहरी', क्योंकि इसकी धारा की तेज़ी गिलहरी की उड़ान के बराबर है। यह नदी बहुत खतरनाक है और इसने पहले ही उन कई लोगों की जान ले ली है जो इसे पार करना नहीं जानते थे। तब उस आदमी को पूजनीय बेसिल के शब्द याद आए, जो उन्होंने तब कहे थे जब वह आशीर्वाद लेने उनके पास आया था, और ईश्वर से प्रार्थना करते हुए, वह चिल्लाया:

'तेरा ही महिमा हो, हे प्रभु, तेरा ही महिमा हो! मैं आपसे केवल एक ही बात मांगता हूँ, हे मेरे प्रभु: कृपा करें कि मैं एक बार फिर आपके संत को देख सकूँ और उनके पवित्र सफेद बालों के आगे सिर झुका सकूँ।'

अपनी यात्रा से लौटकर, वह रेवरेंड फादर के पास गया और उनके चरणों में गिरकर उन्हें उचित धन्यवाद अर्पित किया; फिर उसने धन्यवर को बताया कि कैसे ईश्वर ने उनकी पवित्र प्रार्थनाओं के माध्यम से उस पर अपनी कृपा दिखाई थी।

उपरोक्त गृहस्थ ग्रेगरी अपने सद्गुणों के कारण संत बेसिल को बहुत प्रिय थे, क्योंकि उन्होंने ब्रह्मचर्य, संयम और उपवास का जीवन जिया। वह अक्सर पूजनीय पिता के पास जाते थे और उनके ईश्वर-प्रेरित प्रवचनों से सीखकर, उन्हें अपना शिष्य कहने के योग्य माने गए। साथ ही, उनकी संत स्टीफन प्रथम शहीद के प्रति विशेष प्रेम और श्रद्धा थी; वे अक्सर उनके चर्च में जाते थे और उसे हर प्रकार की भव्यता से सजाते थे। अपने दिवंगत माता-पिता से, उन्हें

[2650] ओडिगिट्रिया का अर्थ है 'मार्गदर्शक'। यह नाम ब्लाचेर्ने के चर्च में रखी गई परमेश्वर की परम पवित्र माता की चमत्कारी प्रतिमा को दिया गया था। बाद में (1046 में), इस प्रतिमा को रूस ले जाया गया और स्मोलेंस्क शहर में रखा गया। तब से, यह परमेश्वर की माता की स्मोलेंस्क प्रतिमा के नाम से जानी जाने लगी।

[2651] पूर्व, या पूर्वी भूमि, से आमतौर पर यूरोपीय पश्चिम के विपरीत सीरिया, फिलिस्तीन, अरब और फारस का उल्लेख होता था।

कॉन्स्टेंटनिोपल में एक घर और कई संपत्तयिाँ वरिासत में मलिीं। इन संपत्तयिों में थ्रेस में एक अंगूर का बाग़ था[2652] , जो रंडीस्टा शहर के पास था। फसल काटने के समय वहाँ यात्रा करने का इरादा लेकर, वह अपने पूजनीय गुरु के पास गए और उनका आशीर्वाद प्राप्त कयिा; फरि वह प्रथम शहीद स्टीफन के चर्च में गए और घुटने टेककर उनकी प्रतमिा के सामने प्रार्थना करते हुए कहा:

'देखो, मेरे सामने भूमि और समुद्र दोनों मार्गों से एक लंबा सफर है। अतः मैं आपसे, प्रथम शहीद संत स्टीफन, प्रार्थना करता हूँ: इस यात्रा में, मुझे हर बुराई से बचाएँ; और जैसे मैंने अपनी पूरी क्षमता से आपकी पवत्रि चर्च की सेवा की है, वैसे ही आप भी, ईश्वर द्वारा आपको दए गए अनुग्रह से, हर ज़रूरत के समय में मेरे रक्षक, सहायक और पालनहार बने रहें।'

प्रथम शहीद स्टीफन से इस प्रकार प्रार्थना करने के बाद, ग्रेगरी अपनी यात्रा पर नकिल पड़ा। एक सराय में रात के लए रुकने पर, उन्हें दो ज्लैटनट्सि की कीमत का एक बेल्ट मलिा, जसिे सरायकी़ की बेटी खो चुकी थी। जब सरायकी़ और उसके घर वालों ने बेल्ट की तलाश शुरू की और मेहमानों से इसके बारे में पूछा, तो ग्रेगरी ने, शैतान के प्रभाव में, बेल्ट को छपिा लयिा, यह तर्क देते हुए:

– जनि लोगों ने अपनी बेल्ट खो दी है, वे अमीर हैं; इसलए बेहतर होगा कि मैं इसे बेचकर पैसे गरीबों को दे दूँ।

एक बार फरि चल पड़ने पर, ग्रगिोरी ने अपनी कमरबंद खो दी, जसिकी कीमत दो ज्लॉटी थी, और अपना यात्रा बैग भी, जसिमें चार ज्लॉटी और काफी मात्रा में छोटे सक्के थे[2653] ; अपनी हानि पर दुखी होकर, वह सो गया और एक सपने में उसने पूजनीय बेसलि को देखा, जन्होंने एक टूटे हुए बर्तन की ओर इशारा करते हुए कहा:

'क्या तुम यह टूटा हुआ बर्तन देख रहे हो, जो अब कसिी भी काम का नहीं है?'

'मैं देखता हूँ, प्रभु,' ग्रेगरी ने उत्तर दयिा।

धन्य व्यक्ति ने कहा, 'यदि कोई इसे भी चुरा ले, तो उसे चार गुना दंड दयिा जाएगा, और इस वर्तमान युग या आने वाले युग के लाभ चोर से छीन लए जाएंगे। यदि चोर अमीर हो, तो चोरी की गई वस्तु से चार गुना अधकि उसकी संपत्ति से ले लयिा जाएगा; और यदि वह गरीब हो, तो उसे आने वाले जीवन में चार गुना अधकि दंड मलिेगा।'

ग्रेगरी ने उत्तर दयिा:

'पताजी, मैंने कभी कुछ नहीं चुराया है।' संत ने उत्तर दयिा:

'तुमने सरायकसिान की बेटी की कमरबंद अपने पास रख ली जो तुम्हें मलिी थी, फरि भी तुम कहते हो कि तुमने कभी कुछ नहीं चुराया।' ग्रेगरी ने आपत्ति जताई:

'फादर, मैंने कमरबंद नहीं चुराया; मुझे वह मलिा था।'

लेकनि संत ने कहा:

'यह जान लो, मेरे बच्चे: यदि कोई कसिी और की खोई हुई चीज़ पाता है और उसे वापस नहीं करता, भले ही मालकि उसे ढूंढ रहा हो और उसके बारे में पूछ रहा हो, तो उस व्यक्ति को चोर घोषति कर दयिा जाएगा। इसलए, तुम्हें खोई हुई चीज़ वापस कर देनी चाहए थी। लेकनि चूँकि तुमने कसिी और की चीज़ रखी, तुम्हारे पास से तुम्हारी रखी हुई चीज़ के मूल्य से चार गुना से अधकि मूल्य की चीज़ ले ली गई है।' इतना ही नहीं, बल्कि तुम्हें सतर्क रहना चाहए, कहीं तुम्हें और भी अधकि दंड न भुगतना पड़े।

जागने पर, ग्रेगरी अत्यंत दुख से अभभिूत हो गया, आंशकि रूप से अपने पाप के पश्चाताप से, और आंशकि रूप से एक नई और अज्ञात वपित्ति की आशंका से, जसिके बारे में रेवरेंड ने उसे चेतावनी दी थी। वह दुख की अवस्था में अपनी थ्रेसयिन संपत्ति पर पहुँचा। वहाँ, जब फसल की कटाई जोरों पर थी, तो उसे अपनी यात्रा में पहले सामना कए गए प्रलोभन से भी अधकि प्रबल प्रलोभन का सामना करना पड़ा।

ग्रगिोरी के दाख की बारी में काम करने वाले मजदूरों में से एक, अलेक्जेंडर नामक व्यक्ति, का ववािह मेलेटनियिा नामक एक युवती से वैध रूप से हुआ था, जो अपनी दुष्टता के लए कुख्यात थी और इसके अलावा एक वेश्या और जादूगरनी भी थी। व्यभचिार के प्रति उसकी इतनी अनयिंत्रति लालसा थी कि, अलेक्जेंडर से ववािह के तुरंत बाद, उसने पड़ोसी गांवों के लगभग सभी पुरुषों को अपने साथ अवैध संबंध बनाने के लए बहका दयिा। फरि भी कोई भी उसके पापों का खुलासा नहीं

[2652] थ्रेस - बाल्कन प्रायद्वीप के उत्तर-पूर्वी भाग में स्थति, बाइजेंटाइन साम्राज्य का एक क्षेत्र। आज, थ्रेस, जसिे रोमानयिा या रुमेलयिा के नाम से जाना जाता है, यूरोपीय तुर्की का एक प्रांत है।

[2653] पेनयिाज़ – एक चाँदी का सक्का।

कर सकता था; क्योंकि अगर वह किसी को अपने बारे में बुरा कहते सुन लेती, तो वह तुरंत अपनी जादू-टोने से उन्हें एक भयानक बीमारी से ग्रस्त कर देती। उसने यह सब, अन्य बातों के अलावा, अपने ही पति के साथ किया, जो शुरू में, उसकी दुष्टता को देखकर, अक्सर उसे पीटता था: अपनी जादुई शक्ति से उत्पन्न बीमारियों के कारण, उसने उसे इतना थका और कमजोर कर दिया कि वह अपने ऊपर से मक्खी भी नहीं भगा पाता था। परिणामस्वरूप, वह उसके गुस्से में, जब वह उसे लाठी या रस्सी से पीटकर घर से भगा देती थी, तो उसका विरोध नहीं कर पाता था; मेलेटिनिया के जादू से उत्पन्न बीमारियों से वह इतना कमजोर हो गया था। इस जादूगरनी की माँ के बारे में कहा जाता है कि वह अपनी जादू-टोने से पक्षियों की उड़ान को रोक देती थी, नदी के बहाव को थाम लेती थी, और कई अन्य ऐसे दुष्ट कर्म करती थी जिन्हें कोई इंसान बयान नहीं कर सकता। मेलेंटिनिया इस दुष्ट जादूगरनी की बेटी थी; वह हर तरह से अपनी माँ जैसी थी और अपने दुष्टपन में तो उससे भी आगे थी, क्योंकि वह अनियंत्रित व्यभिचार में लिप्त थी। उसने कई पुरुषों को अपने साथ पापपूर्ण संबंधों में फँसाया; यदि कोई उसके खिलाफ एक भी शब्द की निंदा करता, तो वह दो या तीन महीने के लिए लकवाग्रस्त हो जाता; और यदि कोई उस पर हाथ उठाता, तो वह मर जाता, और मुश्किल से दो दिन जीवित रह पाता।

ग्रेगरी को देखकर, जो जवान और अपनी सुंदरता से विशिष्ट था, वह दुष्ट जादूगरनी उससे मोहित हो गई और उसे अपने साथ एक नीच संबंध में फँसाने का संकल्प लिया। हर दिन, वह जहाँ भी जाता, बिना किसी शर्म के उसका पीछा करती और उसकी उपस्थिति में उत्तेजक व्यवहार करती, वह, दैवीय शक्ति की सहायता से, उसके मन में अपने बारे में अशुद्ध विचार डालती; और रात में वह उसे सपने भेजती, उसकी नींद में एक निर्लज्ज रूप में उसके सामने प्रकट होकर, उसके भीतर अशुद्ध कामवासना को जगाती। ग्रेगरी बहुत दुख में था, वह कामुक इच्छा की बेचैनी से लगातार पीड़ित था; क्योंकि जहाँ एक ओर वेश्या अपने अश्लील व्यवहार से उसे स्पष्ट रूप से पाप की ओर लुभा रही थी, वहीं दूसरी ओर राक्षस अदृश्य रूप से उसके भीतर कामुकता की आग को भड़का रहा था। और यदि पवित्र प्रथम शहीद स्तेफानो और धन्य बेसिल, जिन्होंने अपनी प्रार्थनाओं द्वारा उसकी सहायता की, न होते, तो थोड़ा और समय बीत जाने पर वह पाप की शक्ति के आगे झुक जाता, और उसकी आत्मा नरक में भेज दी जाती। इस प्रकार, उसके लिए प्रार्थना करने वाले ईश्वर के पवित्र संतों की मदद से, उसने दिन-रात अपने कामुक विचारों से संघर्ष किया; कभी-कभी वह इस संघर्ष में थक जाता था, लेकिन फिर वह अपनी ताकत वापस पा लेता और दृढ़ता से अशुद्ध इच्छा का विरोध करता, और अपने कुंवारे शरीर को कलंकित करने से इनकार कर देता, जिसे उसके शुरुआती वर्षों के बाद से किसी महिला ने नहीं देखा था। बार-बार सम्मान की भावना से वह उस निर्लज्ज वेश्या को अपने से दूर भगा देता था, लेकिन उसके जादुई शक्ति का शिकार होने के डर—जिसके द्वारा वह लोगों पर बीमारियाँ भेजती थी—ने उसे रोक दिया। और फिर वह सम्माननीय बेसिल के उन शब्दों को याद करता था, जो उन्होंने एक सपने में उससे कहे थे:

'सावधान रहना, कहीं तुझे और कष्ट न हो।'

यह चेतावनी अब पूरी तरह से सही साबित हुई थी। क्योंकि एक ब्रह्मचारी पुरुष के लिए अपनी कुँवारी अवस्था खोने के खतरे से अधिक दुखद और क्या हो सकता है? अपनी पवित्रता बनाए रखने की इच्छा और अपनी कुँवारी अवस्था खोने से बेहतर हजार बार मरने का संकल्प लेकर, ग्रेगरी ने अंततःसाहसिक कदम उठाने का निश्चय किया: वह मेलेटिनिया पर क्रोधित होकर टूट पड़ा और एक लाठी से तथा कटु शब्दों से, उस निर्लज्ज वेश्या को अपने से दूर भगा दिया, और चिल्लाया:

'हे बेलेज़ेबूब की लज्जाहीन बेटी![2654] अगर तू मुझसे दोबारा पास आने की हिम्मत करेगी, तो मैं तेरे घिनौने शरीर को टुकड़े-टुकड़े कर दूँगा।'

उस समय से, वह वेश्या ग्रेगरी को छोड़ गई, और उसके जाने के साथ ही, उसके कामुक विचारों ने उसे परेशान करना बंद कर दिया। फिर भी, वह तब एक और दुर्भाग्य में पड़ गया। अपमानित जादूगरनी मेलेटिनिया, ग्रेगरी से अपनी अपमान का बदला लेने के लिए, उस पर एक क्रूर बीमारी लाई, जिससे वह निश्चित रूप से मर जाता अगर पवित्र प्रथम शहीद स्टीफन और पूजनीय बेसिल उसके सामने प्रकट होकर उसे ठीक नहीं करते। ग्रेगरी स्वयं इस बारे में निम्नलिखित बताता है:

[2654] बीलज़ेबूब – शैतान या राक्षसों के राजकुमार के समान (देखें मत्ती 10:25; मत्ती 12:24; मत्ती 12:27; मरकुस 3:22; लूका 2:15, 18–19)। यहूदियों ने यह नाम बीलज़ेबूब, एक फोनीशियन देवता से उधार लिया था।

'एक रविवार, वर्णित घटनाओं के कुछ ही समय बाद, मैं (ग्रेगरी ने कहा) महान शहीद सेंट जॉर्ज को समर्पित चैपल में गया, जो एक अंगूर के बाग के बीच में स्थित था। यह एक गर्म सुबह थी, और प्रार्थना करने के बाद, मैं चैपल के पास कुछ देर के लिए आराम करने लगा। और फिर, एक सपने में, मैंने एक काले, बदबूदार बादल को आते हुए देखा; वह मुझ पर गिर पड़ा और बहुत भारी और अत्यंत ठंडा लगा; बादल से एक आवाज़ सुनाई दी: 'जो मेलेटिनिया ने तुम्हारे लिए तैयार किया है, उसे स्वीकार करो।' फिर यह बादल मुझमें प्रवेश कर गया। जागने पर, मैंने पाया कि मैं एक भयानक बीमारी से ग्रस्त था, और मुझे एहसास हुआ कि यह मुझे उपरोक्त जादूगरनी मेलेटिनिया ने दी थी, क्योंकि मैंने उसकी अशुद्ध इच्छा का विरोध किया था। बड़ी मुश्किल से, मैं खड़ा हुआ, घर पहुँचा—अपने कराहने से खुद को रोक न पाते हुए—और अपने बिस्तर पर लेट गया। दिन-ब-दिन मेरी बीमारी बढ़ती गई, और मेरी मृत्यु नज़दीक आ रही थी। मेरे अंदर एक प्रचंड आग लग गई थी, जो सूखी खपच्चियों की तरह मेरे शरीर को खा रही थी। इस गर्मी को सहन न कर पाकर, मैं ठंडक के लिए पेड़ों की छाया की तलाश में उठकर दौड़ता, और अपनी भीतर की आग को उसकी ठंडी धाराओं से बुझाने के लिए नदी की ओर दौड़ता। मैंने एक से अधिक बार खुद को डुबोने के बारे में सोचा, और अक्सर चिल्लाया:

'हाय, हाय! यदि यही गेहेना की आग है, तो किसी के लिए जन्म ही न लेना बेहतर था।'

मैं किसी को पहचान नहीं पाता था और न ही किसी से बात कर पाता था, और मुझे लगता था कि रात चालीस साल से भी ज़्यादा लंबी चल रही है।

जब मैं अपनी बीमारी से पूरी तरह थक गया था, तो मुझे ऐसा लगा कि मैं एक दलदल में लेटा हुआ हूँ, जिसका केंद्र बहुत गहरा था, जबकि किनारे - पूर्व और पश्चिम की ओर - ऊपर उठे हुए थे। दलदल के पश्चिमी हिस्से में खुद को पाकर, मैं धीरे-धीरे एक अंतहीन गर्त में उतरने लगा। अपने डर में, मुझे प्रथम शहीद स्टीफन से की गई अपनी प्रार्थनाएँ याद आईं और, एक भारी आह भरते हुए, मैंने कहा:

'हे पवित्र प्रथम शहीद! क्या आपने मुझे सुना था जब मैं कॉन्स्टेंटिनोपल छोड़ते समय आपके चर्च में आपसे प्रार्थना कर रहा था? देखिए, मैं गर्त में उतर रहा हूँ, और आप मुझे फिर कभी नहीं देखेंगे - और मैं अब तक की तरह आपकी सेवा भी नहीं कर सकता, क्योंकि मैं मृत्यु के द्वार के पास आ गया हूँ।'

तब मैंने दलदल के पूर्वी छोर की ओर देखा और वहाँ मैंने, मानो, एक दूसरी दुनिया देखी, जिसका वर्णन मानव शब्दों में नहीं किया जा सकता; वहाँ से, प्रथम शहीद संत स्टीफन एक गाढ़े लाल रंग का स्टिचेरियन पहनकर मेरी ओर आ रहे थे और उन्होंने मुझसे स्नेहपूर्वक कहा:

'मेरे प्रिय, तुम्हें क्या चाहिए, और तुम क्यों दुखी हो? तुम मुझसे शिकायत कर रहे हो; लेकिन मैं यहाँ नहीं था, क्योंकि मैं ब्रह्मांड में मेरे सम्मान में बने चर्चों का दौरा कर रहा था; अब, हालाँकि, मैं यहाँ आ गया हूँ और तुम्हारी मदद करूँगा। लेकिन अब से याद रखना कि ईश्वर की अनुमति से, अधर्मी जादूगर कैसे लोगों को नुकसान पहुँचा सकते हैं।'

तब मैंने संत से पूछा:

'मेरे सामने पड़ा खाई और इसके उठते किनारे क्या दर्शाते हैं?' संत ने उत्तर दिया:

'खाई का पश्चिमी छोर, जहाँ आप अभी खड़े हैं, मृत्यु की निकटता का संकेत देता है; यह खाई जो आप अपने सामने देख रहे हैं, मृत्यु का क्षेत्र है, जिससे होकर मरने वाले बड़ी कठिनाई से गुजरते हैं जब तक वे पूर्वी भूमि तक नहीं पहुँच जाते; वहाँ पहुँचने के बाद, उन्हें एक रास्ता मिलता है जो एक अन्य, परलोकिक क्षेत्र की ओर जाता है।'

यह सुनकर, मैंने संत से एक बार फिर पूछा:

'तो, मेरे स्वामी, क्या मैं पहले से ही मर रहा हूँ?'

'यहाँ लाए जाने के बाद तुम और क्या उम्मीद कर सकते हो?' उन्होंने जवाब दिया।

तब, अपने हृदय की गहराई से एक आह भरते हुए, मैं रोते हुए बोला:

'नहीं, मेरे स्वामी, ऐसा न हो, क्योंकि मैं अभी मृत्यु के लिए तैयार नहीं हूँ।'

मैंने ये शब्द कहने के बाद, संत ने मेरा हाथ पकड़ा, मुझे खाई के पार ले गए, दलदल के पूर्वी किनारे, ऊँची ज़मीन पर बिठाया, और कहा:

'देखो, तुम्हें मृत्यु की खाई से बचा लिया गया है।'

तुरंत ही मैंने खुद को अद्भुत सुंदरता वाले एक आँगन में चलते हुए पाया।

लेकिन चूंकि मैं अपनी गंभीर बीमारी के कारण मुश्किल से चल पा रहा था, पवित्र प्रथम शहीद, जिनसे एक अत्यंत सुखद सुगंध निकल रही थी, ने मुझे अपने कंधे दिए और कहा:

'अपनी दोनों बाहें पीछे से मेरी कमर पर डालो; मैं तुम्हारा सहारा बनूँगा, और हम साथ-साथ चलेंगे।'

जब हम इस तरह आँगन पार कर रहे थे, मैंने बर्फ़ जैसे सफ़ेद बड़े पत्थर के पात्र देखे, जिनमें से प्रत्येक में सौ, दो सौ, और तीन सौ माप थे; वे भरे और सीलबंद थे। मैंने संत से पूछा:

– यह आँगन कसिका है? इन पात्रों का मालकि कौन है, और इनमें क्या है? संत ने उत्तर दयिा:

– यह सब रेवरेंड बेसलि, आपके आध्यात्मकि पति का है। जहाँ तक पात्रों का सवाल है, उनमें ईश्वर द्वारा उन्हें दयिा गया पवत्रि तेल है। इससे उनके पास आने वाले पापयिों का अभषिेक करके, वह उन्हें उनके अपवत्रिता से शुद्ध करते हैं और उन्हें ईश्वर की संतान बनाते हैं, क्योंकि उन्होंने प्रेरतित्व का कार्य संभाला है और कई आत्माओं को शैतान की शक्ति से मुक्त कयिा है।

और मैंने संत से फरि पूछा:

'हम कहाँ जा रहे हैं, मेरे प्रभु?'

'सम्माननीय बेसलि के पास,' उन्होंने उत्तर दयिा।

हमारी बातचीत खत्म भी नहीं हुई थी कि मेरे पूजनीय पति बेसलि एक अद्भुत हॉल से हमारे पास आए। पवत्रि प्रथम शहीद ने उन्हें संबोधति करते हुए कहा:

'फादर बेसलि, आप ग्रेगरी, अपने प्रयि बच्चे को, उसके लिए सबसे कठनि समय में कैसे छोड़ सकते थे? और अगर मैं उसकी मदद के लिए नहीं आता, तो वह मर जाता।' रेवरेंड फादर ने उत्तर दयिा:

'मैंने देखा कि आप, धन्य प्रथम शहीद, उसके साथ थे, और इसलिए मैं उसके पास नहीं गया। अब, हालाँकि, यदि प्रभु को प्रसन्न हो, तो आइए हम उस पर उससे भी बड़ी दया करें जो पहले उसे दखिाई गई थी।'

इन शब्दों के बाद, संत एक साथ चल पड़े, और मैं उनके पीछे-पीछे चल दयिा। इस प्रकार हम एक अत्यंत अँधेरी जगह पर पहुँचे और वहाँ एक बहुत बड़ा और भयानक साँप देखा। और रेवरेंड बेसलि ने कहा:

'इस साँप ने मेरे पुत्र ग्रेगरी को लगभग मार ही डाला था।'

यह कहकर, उन्होंने एक बड़ा पत्थर उठाया, उसे सांप पर फेंका और उसे मार गरिाया। उसके बाद, हम खुद को कॉन्स्टेंटनिोपल में पवत्रि प्रथम शहीद के चर्च के पास पाए और चर्च के अंदर से प्रभु की महमिा करते हुए युवकों की सबसे मधुर आवाजें सुनीं। फरि प्रथम शहीद स्टीफन ने मुझसे कहा:

– 'अब जब कि मसीह की कृपा से, तुम्हें स्वास्थ्य लाभ हो गया है, तो चर्च में प्रवेश करो और सभी के प्रभु – ईश्वर, जिन्होंने तुम पर महान दया दखिाई है, की स्तुति में एक धन्यवाद गीत गाओ।'

अपने रक्षकों, प्रथम शहीद संत स्तेफान और परम पूजनीय बेसलि को प्रणाम करके, मैं गरिजाघर में प्रवेश कयिा, यह गाते हुए:

'यहोवा मेरा प्रकाश और मेरा उद्धार है; मैं कसि से डरूँगा?' (भजन संहति 26:1)।

और फरि पूरा भजन अंत तक।

तब वे अति सुन्दर युवक, मुझे देखकर, आनन्दति हुए और मुझसे कहने लगे:

'आओ, हे हमारे प्रयितम, हमारे आनंद में सहभागी बनो।'

इन शब्दों के बाद, वह दर्शन समाप्त हो गया, और जब मुझे होश आया, तो मैं यह देखकर चकति था कि मैं फरि से स्वस्थ हो गया था। थोड़ा भोजन करने के बाद, मैं थोड़ी देर के लिए सोया, फरि उठा और चलने लगा। कुछ ही समय बाद, पूरी तरह से ठीक हो जाने पर, मैं एक जहाज पर चढ़ा और कॉन्स्टेंटनिोपल के लिए रवाना हो गया, और सभी को यह बता रहा था कि मेरे साथ क्या हुआ था—कि कैसे, संत स्टीफन और बेसलि की प्रार्थनाओं के माध्यम से, मुझे मृत्यु से बचाया गया था।

इस प्रकार ग्रेगरी का अपने जीवन का वृत्तांत समाप्त होता है।

वर्णति घटनाओं के लगभग उसी समय, धन्य थयिोडोरा, जिन्होंने परम पूज्य बेसलि की सेवा की थी और संन्यासी जीवन के संकल्प लिए थे, प्रभु के पास चली गईं। यह जानकर सभी पूजनीय की भक्तगण दुखी हो गए, क्योंकि वह धन्य महलि उनके पास आने वाले सभी लोगों के लिए पवत्रि वृद्ध के समक्ष एक मध्यस्थ थीं। उन्होंने सभी का प्रेम से स्वागत कयिा, अपने कोमल शब्दों से सभी को सांत्वना दी, दयालु, मसीह-प्रेमी और पवत्रि थीं, और आध्यात्मकि ज्ञान से भी परपिूर्ण थीं। ग्रेगरी को यह जानने की तीव्र इच्छा हुई कि थयिोडोरा के नधिन के बाद वह कहाँ थीं, दाहनि या बाएँ हाथ की

ओर[2655] , धर्मी लोगों के साथ या पापियों के साथ, और क्या उन्हें ईश्वर की दया मिली थी या बूढ़े के प्रति उनकी भक्तिपूर्ण सेवा के लिए कोई सांत्वना दी गई थी। इस पर मनन करते हुए, वह अक्सर पूजनीय बेसिल से प्रार्थना करते थे, उनसे दिवंगत थियोडोरा की आत्मा के भाग्य को प्रकट करने का आग्रह करते थे, क्योंकि ग्रेगरी का मानना था कि दिवंगत लोगों से संबंधित सभी मामले इस ईश्वर के पवित्र पुरुष को ज्ञात हो जाते थे। बार-बार अनुरोधों से परेशान होकर, पवित्र वृद्ध ने, अपने आध्यात्मिक पुत्र को मना करके दुखी नहीं करना चाहकर, प्रभु से प्रार्थना की, उनसे अनुरोध करते हुए कि वे ग्रेगरी को एक दर्शन में यह प्रकट करें कि थियोडोरा की मृत्यु के बाद उसकी आत्मा का क्या हुआ।

अगली रात, ग्रेगरी को अपनी नींद में एक दर्शन हुआ जिसमें उन्होंने धन्य थियोडोरा को एक दिव्य निवास में देखा, जिसे परमेश्वर ने आदरणीय बेसिल के लिए तैयार किया था। यही वह निवास था, जो स्वर्गीय महिमा से प्रकाशमान और अनुपम आशीर्वादों से परिपूर्ण था, जहाँ परमेश्वर की दासी की प्रार्थनाओं के द्वारा धन्य थियोडोरा को बसाया गया था। इस प्रकार, जिसने इस संसार में उसकी निष्ठा और भक्ति से सेवा की थी, उसे उसकी पवित्र प्रार्थनाओं के द्वारा अनंत काल तक उसी निवास में रहने का वरदान मिला। उसे देखकर ग्रेगरी आनंदित हुआ और उसके साथ एक लंबी बातचीत में मग्न हो गया, मानो वह उसके साथ देह में ही बात कर रहा हो।

ग्रेगरी ने थियोडोरा से पूछा कि वह अपने शरीर से कैसे अलग हुई, उसने मृत्यु के वेदनाओं को कैसे सहन किया, उसने अपने प्रस्थान पर क्या देखा, और वह वायु के आत्माओं के पास से कैसे गुज़री[2656] ।

तब उसने उसे यह कहना शुरू किया: 'मेरे बच्चे, ग्रेगरी! तुम मुझसे एक भयानक चीज़ के बारे में पूछ रहे हो, जिसे याद करना भी बहुत भयानक है। मैंने ऐसे चेहरे देखे जो मैंने पहले कभी नहीं देखे थे और न ही बाद में देखे हैं, और ऐसे शब्द सुने जो मैंने पहले कभी नहीं सुने थे। और मैं तुम्हें क्या बताऊँ? उस समय, मेरे सभी दुष्ट और पापी कर्म मेरे सामने उजागर हो गए—ऐसी बातें जिन्हें मैं लंबे समय से भूल चुकी थी—लेकिन, हमारे पिता, परम पूजनीय बेसिल की प्रार्थनाओं और मध्यस्थता के माध्यम से, इनमें से कोई भी बात मेरे खिलाफ नहीं रखी गई, और न ही इसने मुझे इस मठ में प्रवेश करने से रोका। और मैं तुम्हें क्या बताऊँ, मेरे बच्चे, शारीरिक बीमारी, और मरते हुए लोगों द्वारा सहन किए गए अत्यंत कष्टदायक दुखों के बारे में? जैसे कोई प्रचंड आग में फेंका गया व्यक्ति, जलते-जलते, पिघलकर राख हो जाता प्रतीत होता है, वैसे ही एक घातक बीमारी भी एक व्यक्ति को नष्ट कर देती है। सचमुच, मृत्यु मेरे जैसे पापियों के लिए क्रूर है; क्योंकि मैं आपको सच बताता हूँ, मैं भी पापपूर्ण कर्मों का कर्ता था, जबकि मुझे अपने किसी भी धार्मिक कर्म की कोई स्मृति नहीं है।

जब मैं अपने जीवन के अंत के करीब पहुँचा और मेरी आत्मा के शरीर से निकलने का समय आया, तो मैंने अपने बिस्तर के चारों ओर एथियोपियाई लोगों की एक भीड़[2657] को खड़ा देखा; उनके चेहरे कोयले और पिघले हुए तारकोल की तरह काले थे, उनकी आँखें जलते हुए अंगारों की तरह दहक रही थीं, और उनका पूरा रूप आग से जलने वाले गेहन्ना के दृश्य जितना भयानक था। और वे एक बड़ा शोर मचाने और अफरा-तफरी मचाने लगे: कुछ मवेशियों और जानवरों की तरह गरज रहे थे, कुछ कुत्तों की तरह भौंक रहे थे, और कुछ भेड़ियों की तरह दहाड़ रहे थे; जबकि वे सभी, मुझ पर क्रोध से घूरते हुए, मुझे धमका रहे थे, मुझ पर झपट रहे थे, अपने दाँत पीस रहे थे, और मुझे उसी क्षण निगलने की कोशिश कर रहे थे। वे दस्तावेज़ भी तैयार कर रहे थे[2658] जैसे कि वे किसी न्यायाधीश का इंतज़ार कर रहे हों जो वहाँ आने वाला था, और पांडुलिपियाँ[2659] फैला रहे थे जिन पर मेरे सभी बुरे कर्म लिखे थे। और मेरी दुखी आत्मा बहुत डर और कांपन में थी। उस समय, मैंने न केवल अपनी आत्मा का शरीर से अलग होने से उत्पन्न होने वाले घातक कष्टों को सहा, बल्कि उन भयानक इथियोपियाई लोगों और उनके भयानक क्रोध को देखने से होने वाले अत्यंत पीड़ादायक दुख को भी सहा; और यह मेरे लिए, मानो एक और मृत्यु थी, जो अधिक दुखद और उग्र थी। मैंने उस दृश्य से अपनी नज़रें हटाने की कोशिश की, पहले एक

[2655] दाहिना हाथ आम तौर पर सम्मान की स्थिति को दर्शाता था। सुसमाचार (मत्ती 25:32–46) में, शाश्वत न्यायाधीश के दाहिनी ओर की स्थिति धर्मी लोगों के लिए आरक्षित है, जबकि बाईं ओर की स्थिति पापियों के लिए है। इस प्रकार, दाहिनी या बाईं ओर की स्थिति का अर्थ या तो धर्मी ठहराया जाना या दोषी ठहराया जाना है।

[2656] यह, बेशक, हवा में 'टोल-हाउस' पर खड़े अशुद्ध आत्माओं को संदर्भित करता है। 'टोल-हाउस' के बारे में अधिक जानकारी के लिए नीचे देखें।

[2657] 'इथियोपियाई' शब्द मूल रूप से मिस्र के दक्षिण-पूर्व में रहने वाले एक लोगों को संदर्भित करता था, जो आज के अबासिनिया के अनुरूप एक देश में रहते थे और अपनी गहरी त्वचा के लिए जाने जाते थे। बाद में, ईसाई लेखकों ने 'इथियोपियाई' शब्द का उपयोग द्वेष की अंधेरी आत्माओं को संदर्भित करने के लिए करना शुरू कर दिया, जिन्हें अक्सर धार्मिक कलाकृतियों में काले आंकड़ों के रूप में दर्शाया जाता था।

[2658] चार्टर – कागज़ की एक शीट।

[2659] एक स्क्रॉल आमतौर पर पार्चमेंट की एक लंबी शीट का पतला रोल होता था, जिस पर दोनों तरफ लिखा होता था; जब इसे पढ़ा जाता था, तो इसे धीरे-धीरे खोला जाता था और फिर पहले की तरह वापस लपेट दिया जाता था।

तरफ, फरि दूसरी तरफ, ताकि मैं उन भयानक इथयिोपयिाई लोगों को न देख सकूँ या उनकी आवाज़ें न सुन सकूँ - लेकनि मैं उनसे कसिी भी तरह छुटकारा नहीं पा सका - क्योंकि वे हर जगह अनगनित संख्या में थे, और मेरी मदद करने वाला कोई नहीं था।

इस तरह के दुख से पहले ही पूरी तरह थक चुके, मैंने अचानक परमेश्वर के दो तेजस्वी स्वर्गदूतों को देखा, जो मुझे सुंदर युवकों के रूप में दखिाई दिए, जनिकी सुंदरता का वर्णन करना असंभव है। उनके चेहरे सूरज से भी ज़्यादा चमकीले थे, उनकी आँखें मुझे दयालुता से देख रही थीं, उनके सरि के बाल बर्फ़ की तरह सफ़ेद थे, उनके सरि के चारों ओर एक सुनहरा प्रकाश चमक रहा था, उनके वस्त्र बजिली की तरह चमक रहे थे और उनके सीने पर क्रूस के आकार की सुनहरी पट्टयिाँ बँधी हुई थीं। मेरे बस्तिर के पास आकर, वे मेरे दाईं ओर खड़े हो गए और आपस में धीरे-धीरे बातें करने लगे। उन्हें देखकर, मैं आनंदति हुआ और हार्दकि स्नेह से उन्हें नहिारने लगा। लेकनि, उन्हें देखकर काले इथयिोपयिाई काँप उठे और और भी पीछे हट गए। और फरि उन तेजस्वी युवकों में से एक ने उनसे क्रोधति होकर कहा:

'हे मानव जाति के नर्लिज्ज, शापति, उदास और दुर्भावनापूर्ण शत्रुओ! तुम हमेशा मरते हुए प्राणयिों के पास समय से पहले क्यों दौड़ पड़ते हो, और अपनी नर्लिज्ज चीख-पुकार से शरीर छोड़ने वाले हर प्राण को क्यों भयभीत और परेशान करते हो? लेकनि अब अपनी प्रसन्नता समाप्त करो, क्योंकि यहाँ तुम्हें कुछ भी प्राप्त नहीं होगा। इस आत्मा में तुम्हारा कोई हस्सिा नहीं है, क्योंकि ईश्वर की दया इसके साथ है।"

उस तेजस्वी युवक के इन शब्दों पर, इथयिोपयिाई तुरंत उत्तेजति हो गए और चल्लिाते हुए, मेरे युवावस्था से कएि गए दुष्ट कर्मों के अभलिेखों की ओर इशारा करने लगे।

'ऐसा कैसे हो सकता है कि हिमें इसमें कोई हस्सिा न मलि? और ये पाप कसिके हैं? क्या यह वही नहीं थी जसिने यह और वह कयिा था?'

इस प्रकार कहकर, वे मृत्यु की प्रतीक्षा में खड़े रहे।

और फरि मृत्यु एक सहि की तरह दहाड़ती हुई आई; उसका रूप अत्यंत भयानक था; वह कुछ-कुछ मनुष्य जैसी थी, पर उसका कोई शरीर नहीं था और वह केवल नंगे मानव हड्डयिों से बनी थी। उसके साथ यातना के वभिन्नि उपकरण थे: तलवारें, तीर, भाले, दराँत, हँसयिा, लोहे के सींग, आरी, कुल्हाड़ी, कुल्हाड़ी[2660] और अन्य अज्ञात उपकरण। यह सब देखकर मेरी वनिम्र आत्मा भय से कांप उठी; लेकनि पवत्रि स्वर्गदूतों ने मृत्यु से कहा:

'तुम देर क्यों कर रहे हो? इस आत्मा को देह के बंधनों से मुक्त करो, इसे शीघ्रता और कोमलता से मुक्त करो, क्योंकि इस पर पाप का बोझ कम है।'

तुरंत मृत्यु मेरे पास आई; एक कुल्हाड़ी लेकर, उसने पहले मेरे पैर काट दिए, फरि मेरी बाहें, और फरि, एक अन्य औजार से, मेरे शरीर के शेष सभी अंगों को नष्ट कर दयिा और अंगों को उनके जोड़ों से अलग कर दयिा। और मेरे न तो हाथ थे न ही पैर, और मेरा पूरा शरीर नर्जिीव हो गया था। तब मृत्यु ने मेरा सरि काट दयिा, ताकि मैं उसे घुमा न सकूँ, और ऐसा लगा मानो वह मेरा अपना ही न हो। यह सब होने के बाद, मृत्यु ने एक प्याले में एक औषधि तैयार की और, उसे मेरे होठों तक उठाकर, मुझे पलिा दयिा। और वह मश्रिण इतना कड़वा था कि मेरी आत्मा, उस कड़वाहट को सहने की शक्ति न रखते हुए, काँप उठी और मेरे शरीर से नकिल गई, मानो जबरदस्ती उससे फाड़ दी गई हो। पवत्रि स्वर्गदूतों ने तुरंत उसे अपनी बाहों में ले लयिा। पीछे मुड़कर मैंने अपना शरीर नर्जिीव, बेसुध और अचल पड़ा हुआ देखा। इसे वैसे ही उतार दयिा, जैसे कोई कपड़े उतारता है, और मैंने इसे असीम आश्चर्य के साथ देखा[2661] । उसी क्षण, इथयिोपयिाई के रूप में प्रकट हुए राक्षसों ने मुझे पकड़े हुए स्वर्गदूतों को घेर लयिा और मेरे पापों के अभलिेख दखिाते हुए चल्लिाने लगे:

'इस आत्मा ने बहुत पाप कएि हैं – इसलिए इसे हमारे सामने उत्तर देना चाहिए।'

तब पवत्रि स्वर्गदूतों ने मेरे जीवन में कएि गए शुभ कर्मों की खोज शुरू की और प्रभु ईश्वर की सहायता से—जनिकी कृपा से मैंने ये कर्म कएि थे—उन्होंने उन्हें ढूंढ नकिाला। उन्होंने उन सभी अच्छे कार्यों को याद कयिा जो मैंने कभी कएि थे – जब मैंने गरीबों को दान दयिा, जब मैंने भूखों को भोजन कराया, या प्यासे को पानी पलिाया, या नंगों को वस्त्र पहनाए, या कसिी अजनबी को अपने घर में आश्रय दयिा और उसे वश्रिाम दयिा, या संतों की सेवा की – जब मैंने बीमारों या कैदयिों से मुलाकात की और उनकी मदद की; उन्होंने याद दलिाया कि मैं कैसे उत्साह के साथ चर्च आता था और वहाँ

[2660] छेनी बढ़ई का एक औजार है, जो कुल्हाड़ी और रंदा का एक प्रकार है।

[2661] यहाँ प्रस्तुत मृत्यु का वर्णन अत्यधकि रूपकात्मक और मार्मकि है और, नश्चिति रूप से, इसे शाब्दकि रूप से नहीं लेना चाहिए। यहाँ, मार्मकि और अपरष्किृत रूपकात्मक तत्वों को, जहाँ तक हमारा मन सक्षम है, एक रहस्यमय और आध्यात्मकि अर्थ में समझना चाहिए।

भक्ति और पश्चातापी हृदय से प्रार्थना करता था, चर्च की प्रार्थनाओं और भजनों के गायन और पाठ को ध्यान से सुनता था; जब मैं चर्च में धूप, मोमबत्तियाँ या कोई अन्य भेंट लाता था, या दीयों में तेल डाला ताकि वे प्रतिमाओं के सामने जल सकें, और सबसे पवित्र प्रतिमाओं को श्रद्धापूर्वक चूमा: उन्होंने याद किया कि मैं संयम के साथ अपना समय कैसे बिताती थी और कैसे मैं बुधवार और शुक्रवार को और सभी पवित्र उपवासों के दौरान उपवास करती थी, और मैंने कितनी प्रणामियाँ कीं और रात की प्रार्थना सभाओं के दौरान कितनी देर तक खड़ी रही; उन्होंने इस ओर इशारा किया कि कैसे मैं अपने पापों पर पश्चाताप से कराहता था और कभी-कभी पूरी रात उन पर रोता था, कैसे मैं अपने पापों का ईश्वर के सामने इकरार करता था और अपने आध्यात्मिक पिता के सामने पश्चाताप के साथ उनका प्रायश्चित करता था, अपनी पश्चाताप और हार्दिक प्रायश्चित से ईश्वर की सच्चाई को संतुष्ट करते हुए; उन्होंने उन सभी अच्छाइयों को याद किया जो मैंने अपने पड़ोसियों के लिए की थीं, कि कैसे मैंने उन लोगों के प्रति कोई क्रोध नहीं रखा जो मेरे प्रति शत्रुतापूर्ण थे, कैसे मैंने अपने प्रति निर्देशित हर कष्ट और अपमान को धैर्यपूर्वक सहन किया, कोई रंजिश नहीं रखी और बुराई का बदला भलाई से चुकाया, कि कैसे जब लोग मुझ पर हमला करते थे तो मैं स्वयं को नम्र करता था, कि कैसे मेरा दिल दूसरों की बदकिस्मती से दुखता था और मैं शोक मनाता था, कैसे मैंने किसी को मदद का हाथ दिया या किसी को किसी अच्छे काम में सहायता की, या उन्हें बुराई से दूर किया; उन्होंने याद किया कि मैंने व्यर्थता से अपनी आँखें फेर ली थीं, और अपनी जीभ को कसमों, झूठ, बदनामी और सभी व्यर्थ शब्दों से रोका था; मेरे इन सभी और हर दूसरे, चाहे वह कितना भी छोटा क्यों न हो, अच्छे कर्मों को मेरे पवित्र स्वर्गदूतों ने इकट्ठा किया, जब वे उन्हें मेरे बुरे कर्मों के विरुद्ध तुला पर रखने की तैयारी कर रहे थे। यह देखकर, इथियोपियाई लोग मुझ पर दाँत पीसे, और वे मुझे स्वर्गदूतों के हाथों से छीनकर नरक की गहराइयों में फेंकना चाहते थे।

उसी क्षण, हमारे पूजनीय पिता बेसिल अचानक वहाँ प्रकट हुए और उन्होंने पवित्र स्वर्गदूतों से कहा:

'हे स्वामिनी, इस आत्मा ने मेरी अच्छी सेवा की है, वृद्धावस्था में मेरी सेवा की है: मैंने ईश्वर से प्रार्थना की कि वह इसे मुझे दे, और प्रभु ने यह आत्मा मुझे भेज दी।'

यह कहकर, उन्होंने अपने वस्त्रों के नीचे से कुछ भरा हुआ एक थैला निकाला (मुझे लगता है कि उसमें शुद्ध सोना था) और उसे पवित्र स्वर्गदूतों को देते हुए कहा:

'जब तुम वायु के परीक्षणों[2662] से गुज़रोगे और दुष्ट आत्माएँ इस आत्मा को पीड़ित करना शुरू करेंगी, तो तुम इसे इसके कर्ज़ों से इस (थैले) से मुक्त करोगे। ईश्वर की कृपा से, मैं धनी हूँ और मैंने अपनी मेहनत और पसीने से कई खजाने इकट्ठे किए हैं – और इसलिए मैं यह थैला इस आत्मा पर प्रदान करता हूँ जिसने मेरी सेवा की है।'

[2662] 'टोल-हाउस' कुछ ऐसे हैं जैसे चौकी या सीमा शुल्क के ठिकाने, जिनका सामना मृतकों की आत्माओं को स्वर्गीय न्यायाधीश के सिंहासन की ओर बढ़ते समय रास्ते में होता है। वहाँ दुष्टात्माएँ खड़ी होती हैं जो किसी विशेष पाप में दोषी हर आत्मा से एक तरह का शुल्क या फिरौती वसूलती हैं, जिसमें आत्मा को उन्हें उस पाप के विपरीत एक पुण्य कार्य प्रस्तुत करना होता है। 'मायतारस्त्विया' और 'मायटैरस' के नाम यहूदी इतिहास से लिए गए हैं। यहूदियों में, 'मायटैरस' वे व्यक्ति थे जिन्हें रोमनों ने कर वसूलने के लिए नियुक्त किया था। वे आमतौर पर इन शुल्कों को वसूलने के लिए पट्टा लेते थे और अपने लिए अधिकतम लाभ निकालने के लिए हर संभव साधन अपनाते थे, यहाँ तक कि यातना देने से भी नहीं हिचकिचाते थे। कर वसूलने वाले विशेष सीमा शुल्क चौकियों या जांच चौकियों पर खड़े रहते थे, और परिवहन किए जा रहे माल पर शुल्क लगाते थे। इन चौकियों को 'मिथ्निति्सी' या 'मिथारस्त्विया' कहा जाता था। ईसाई लेखकों ने इस नाम का विस्तार आध्यात्मिक यातना के स्थानों के लिए किया, जहाँ स्वर्गीय न्यायाधीश के सिंहासन पर आरोहण कर रही आत्माओं को दुष्ट आत्माओं द्वारा रोका जाता था, जो उन्हें हर तरह के पापों का दोषी ठहराकर उन्हें नरक में धकेलना चाहती थीं। 'मिटारस्त्वा' के सिद्धांत का सार, आत्मा के प्रस्थान पर सेंट सिरिल ऑफ अलेक्जेंड्रिया († 444) के शब्दों में निहित है, जो आमतौर पर चर्च के भजन संहिता में पाए जाते हैं। यहाँ कहा गया है, 'जब हमारी आत्मा शरीर से अलग हो जाती है, तो हम एक ओर स्वर्गीय सेनाओं और शक्तियों को, और दूसरी ओर अंधकार की शक्तियों, हवाई प्रमुख कर-संग्राहकों, हमारे कर्मों के अभियोजकों को देखेंगे।' उन्हें देखकर आत्मा काँप उठेगी और थर्रा जाएगी, और भ्रम और आतंक में परमेश्वर के स्वर्गदूतों की शरण लेगी; लेकिन जैसे ही उसे स्वर्गदूतों द्वारा स्वीकार किया जाता है और उनकी सुरक्षा में, वह वायुमंडल में यात्रा करती है और ऊँचाइयों पर चढ़ती है, तो उसे विभिन्न परीक्षणों का सामना करना पड़ेगा जो राज्य की ओर उसके रास्ते में बाधा डालेंगे, और उसकी उस ओर की प्रयासरत को रोकेंगे और बाधित करेंगे। इन प्रत्येक परीक्षणों पर, विशिष्ट पापों का हिसाब माँगा जाएगा... प्रत्येक वासना, प्रत्येक पाप के अपने-अपने कर वसूलने वाले और यातना देने वाले होंगे। इन परीक्षणों में दिव्य शक्तियाँ और अशुद्ध आत्माओं का एक समूह दोनों उपस्थित रहेंगे; और जैसे पहले वाले आत्मा के सद्गुणों को प्रस्तुत करेंगे, वैसे ही दुष्टात्माएँ उन्हें अदृश्य न्यायाधीश के न्याय के समक्ष अपने उदास निवासों में प्रस्तुत करेंगी। इस प्रकार, ये यातनाएँ एक निजी न्याय के अलावा और कुछ नहीं हैं जिसे प्रभु स्वयं, अदृश्य रूप से, स्वर्गदूतों के माध्यम से मानव आत्माओं पर करते हैं, जिसमें हमारे भाइयों के बदनाम करने वालों को भी प्रवेश दिया जाता है (प्रकाशितवाक्य 12:10), – दुष्ट आत्माएँ – एक ऐसा न्याय जिसमें आत्मा को उसके सभी कर्मों की याद दिलाई जाती है और निष्पक्ष रूप से उनका मूल्यांकन किया जाता है, और जिसके बाद उसकी नियति निर्धारित की जाती है। इस न्याय को 'विशिष्ट' न्याय कहा जाता है, जो 'सामान्य' न्याय के विपरीत है, जो दुनिया के अंत में सभी लोगों पर तब आयोजित किया जाएगा, जब मनुष्य का

इन शब्दों के बाद, वह चला गया। दुष्ट राक्षस, यह देखकर, हैरान रह गए; और फिर, अपनी कराहों से हवा को भरते हुए, वे गायब हो गए।

इस बीच, संत बेसिल लौट आए, अपने साथ शुद्ध तेल और कीमती मूर के कई पात्र लाए; एक-एक करके पात्र खोलकर, उन्होंने तेल और मूर मुझ पर डाल दिया, जिससे मैं एक आध्यात्मिक सुगंध से भर गया और, साथ ही, रूपांतरित हो गया और एक तेजस्वी प्राणी बन गया।

तब पूजनीय बेसिल ने पवित्र स्वर्गदूतों से एक बार फिर कहा:

'हे स्वामिनी, जब आप इस आत्मा के लिए आवश्यक सब कुछ कर लें, तो उसे प्रभु द्वारा मेरे लिए तैयार की गई वासस्थान में ले जाएँ, और उसे वहाँ रहने दें।'

यह कहने के बाद, संत अदृश्य हो गए; हालाँकि, स्वर्गदूतों ने मुझे उठाया और मुझे हवा में पूर्व की ओर ले गए[2663]।

जैसे ही हम पृथ्वी से स्वर्ग की ऊँचाइयों की ओर उठे, सबसे पहले हमारा सामना पहले टोल-हाउस की आत्माओं से हुआ, जहाँ जीभ के पापों पर—हर व्यर्थ, अपमानजनक, अव्यवस्थित और घृणित शब्द पर—न्याय किया जाता है। वहाँ हम रुके, और राक्षसों ने ऐसे पन्ने निकाले जिन पर मेरे यौवन से बोले गए सभी तुच्छ शब्द लिखे थे – हर वह बात जो मैंने मूर्खतापूर्ण और नीच कही थी, विशेषकर वे अपमानजनक और हास्यास्पद टिप्पणियाँ जो मैंने अपने यौवन में कही थीं, जैसा कि कई लोगों के साथ होता है। वहाँ, मेरे सामने, वे सभी सांसारिक, शर्मनाक गीत प्रकट हुए जो मैंने कभी गाए थे, मेरी सभी कामुक उच्चारणें, मेरी सभी तुच्छ टिप्पणियाँ, और राक्षसों ने मुझे इन सबका दोषी ठहराया, समय, स्थान और लोगों का उल्लेख करते हुए—कि मैंने कब, कहाँ और किसके साथ व्यर्थ की बातों में लिप्त होकर अपने शब्दों से ईश्वर के क्रोध को भड़काया, यह महसूस किए बिना कि यह एक पाप था और इसे अपने आध्यात्मिक पिता के सामने कबूल किए बिना। यह सब देखकर, मैं चुप रहा, मानो आवाज़ ही न हो, क्योंकि मेरे पास उन कपटी आत्माओं से कहने के लिए कुछ भी नहीं था: वे मुझे पूरी तरह से सही ठहरा रही थीं, और मैं यह देखकर चकित था कि उन्होंने कुछ भी नहीं भूला था; क्योंकि इन सभी पापों को किए हुए मुझे कई साल बीत चुके थे, और मैं उन्हें बहुत पहले ही भूल चुका था और अपने मन में कभी भी इस पर विचार नहीं किया था कि मैंने क्या किया था; फिर भी उन्होंने मेरे सभी शब्दों को ऐसे गिना जैसे मैंने अभी-अभी वे बोले हों, हर बात को विस्तार से और बारीक से बारीक अंतर तक याद करते हुए, ठीक वैसे ही जैसे वह वास्तव में हुआ था। और जब मैं शर्म से चुप रहा, और साथ ही डर से कांप रहा था, पवित्र स्वर्गदूतों ने मेरे पापों का संतुलन करने के लिए, मेरे जीवन के अंतिम वर्षों में किए गए मेरे कुछ अच्छे कर्म प्रस्तुत किए; और चूँकि ये मेरे पापों के बोझ से भारी नहीं पड़ सके, उन्होंने मेरे पूजनीय पिता बेसिल द्वारा प्रदान किए गए पुण्यों से उस कमी को पूरा किया। इस प्रकार उन्होंने मुझे छुड़ाया और मुझे ऊपर की ओर ले गए।

वहाँ हम एक और शुल्क-घर के पास पहुँचे, जिसे झूठ का शुल्क-घर कहा जाता है, जहाँ हर झूठे शब्द की परीक्षा होती है, विशेष रूप से शपथ-भंग, ईश्वर का नाम व्यर्थ लेना, झूठी गवाही, ईश्वर से किए गए व्रतों का उल्लंघन, पापों का अधूरा स्वीकारोक्ति, और इसी तरह की अन्य बातें। इस यातना के दैत्य अत्यंत क्रूर और उग्र हैं - उन्होंने मुझे बहुत ही लगातार परखा, एक भी बात की अनदेखी नहीं की। और वे मुझे दो पापों का दोषी पाए: अर्थात्, कि कभी-कभी, कुछ मामूली मामलों में, मैंने इसे पाप न मानते हुए झूठ बोलने की अनुमति दी, और यह भी कि कई मौकों पर, अपने पापों से शर्मिंदा होकर, मैंने अपने आध्यात्मिक पिता से अधूरा पाप-स्वीकार किया। जहाँ तक शपथ-उल्लंघन और झूठी गवाही का सवाल

पुत्र अपनी महिमा में पृथ्वी पर लौटेगा। महान संत बेसिल द न्यू के जीवन में टोल-घरों के दौरान इस विशेष न्याय का विस्तार से वर्णन किया गया है। हालाँकि, इन सभी विवरणों को पढ़ते समय, यह ध्यान में रखना चाहिए कि जिस प्रकार, सामान्य रूप से, हमारे लिए जो देहधारी हैं, आध्यात्मिक जगत से संबंधित मामलों का चित्रण अनिवार्य रूप से अधिक या कम इंद्रिय तत्वों को समाहित करता है, उसी प्रकार, विशेष रूप से, ऐसे तत्व अनिवार्य रूप से टोल-घरों पर विस्तृत शिक्षा में शामिल होते हैं, जिनसे मानव आत्मा शरीर से अलग होने के बाद गुजरती है। इसलिए हमें पूज्य अलेक्जेंड्रिया के मकारियुस († 391) को स्वर्ग-यात्रा के पड़ावों के बारे में बताना शुरू करते समय स्वर्गदूत द्वारा दी गई इस शिक्षा को दृढ़ता से ध्यान में रखना चाहिए: 'यहाँ पृथ्वी की चीज़ों को स्वर्गीय चीज़ों का सबसे म्लान रूप मानो।' हमें यातनाओं की कल्पना किसी भौतिक, इंद्रियवादी अर्थ में नहीं, बल्कि, जहाँ तक हमारे लिए संभव है, एक आध्यात्मिक अर्थ में करनी चाहिए, और उन विशेष विवरणों से आसक्त नहीं हो जाना चाहिए जो, यद्यपि यातनाओं का मूल विचार समान रहता है, विभिन्न लेखकों और स्वयं चर्च की विभिन्न परंपराओं द्वारा अलग-अलग ढंग से प्रस्तुत किए जाते हैं।

[2663] पवित्र धर्मग्रंथ में, पूर्व को प्रकाश की भूमि के रूप में प्रस्तुत किया गया है, जो मसीह के राज्य का प्रतीक है, जिसे स्वर्ग से 'पूर्व' कहा जाता है, जबकि पश्चिम अंधकार और निराशा के राज्य, यानी शैतान के राज्य का पर्याय है।

है, मसीह की कृपा से, ये पाप मुझमें नहीं पाए गए। फरि भी, राक्षस मेरे भीतर पाए गए झूठ के पापों पर प्रसन्न हुए और मुझे मार्गदर्शन कर रहे स्वर्गदूतों के हाथों से छीनने की कोशशि कर रहे थे; लेकनि उन्होंने उन पापों के वरिुद्ध मेरे कुछ अच्छे कर्मों को रखकर और जो कमी थी उसे परम पूजनीय बेसलि द्वारा प्रदान की गई चीज़ों से पूरा करके, मुझे छुड़ा लयिा और बनिा कसिी बाधा के ऊपर ले गए।

उसके बाद, हम तीसरे शुल्क-घर पर पहुँचे, जसिे ननि्दा और बदनामी का शुल्क-घर कहा जाता है। वहाँ ठहरने पर, मैंने देखा कि किसिी की ननि्दा करना, उन्हें बदनाम करना, उन पर अपमानजनक शब्द कहना, और अपने दोषों को भूलकर दूसरों की कमयिों का मज़ाक उड़ाना कतिना बड़ा पाप है। जो भी इस पाप की शक्ति के आगे झुक जाते हैं, उन्हें दुष्ट आत्माओं द्वारा क्रूरता से पीड़ा दी जाती है, मानो वे एक प्रकार के मसीह-वरिोधी हों, जनि्होंने मानवता का न्याय करने वाले मसीह के अधकिार को पहले ही छीन लयिा हो, और अपने पड़ोसयिों के न्यायाधीश बन बैठे हों, जबकि वे स्वयं अधकि दंड के पात्र हैं। लेकनि मुझमें, मसीह की कृपा से, उन्हें ऐसे पाप बहुत कम मलिते थे, क्योंकि मैंने अपने पूरे जीवन में स्वयं पर कड़ी नगिरानी रखी, इस बात का ध्यान रखते हुए कि नि तो कसिी को दोषी ठहराऊँ, न कसिी की बदनामी करूँ, न क करूँ, और न ही कसिी की नदिा करूँ; और यदि कभी मैं कसिी को दूसरे की नदिा करते सुन लेता, तो मैं अभयिोग लगाने वाले की ओर कम ही ध्यान देता था; और यदि मैं उस बातचीत में अपनी ओर से कुछ जोड़ता भी, तो केवल ऐसी बात जो मेरे पड़ोसी को और अधकि ठेस न पहुँचाए, और तब भी मैं तुरंत रुक जाता था, और उस छोटी सी बात के लिए खुद को कोसता था। हालाँकि, मेरे यातनादाताओं ने मेरे ऐसे अपराधों को भी पाप माना। लेकनि पवत्रि स्वर्गदूतों ने संत बेसलि द्वारा प्रदान की गई कृपा से मेरे पापों का प्रायश्चति कयिा और मेरे साथ उच्च लोकों में आरोहण करना शुरू कर दयिा।

और हम चौथे स्टेशन पर पहुँचे, जसिे लालच का स्टेशन कहा जाता है। इस स्टेशन की दुष्ट आत्माएँ तुरंत हमसे मलिने के लिए दौड़ पड़ीं, इस तरह खुशी मनाते हुए जैसे उन्होंने कुछ हासलि कर लयिा हो। वे देखने में बहुत घृणति थीं, जो लालच और नशे की सभी घृणतिताओं का प्रतीक थीं; उनमें से कुछ के हाथों में खाने से भरे थालयिाँ और कड़ाहयिाँ थीं, जबकि अन्य के हाथों में पीने की कटोरी और मग थे – और मैंने देखा कि वह खाना और पीना बदबूदार खाद और गंदे मल जैसा था। जहाँ तक इन चीज़ों को पकड़े राक्षसों का सवाल है, वे तृप्त और नशे में धुत दखि रहे थे; वे तरह-तरह की चीख-पुकार के साथ उछल रहे थे और वह सब कुछ कर रहे थे जो नशे में धुत और हुड़दंग करने वाले आमतौर पर करते हैं, और उनके सामने लाए गए पापयिों की आत्माओं का अपमान कर रहे थे। हमारे रास्ते को रोकते और कुत्तों की तरह हमारे चारों ओर घूमते हुए, उन्होंने तुरंत मेरे अतीत के सभी लालच के पापों को उजागर कर दयिा, जब मैं भोजन और पेय में अत्यधकि लप्ति रहता था और अपनी क्षमता से अधकि और बनिा कसिी आवश्यकता के खाता था, जब, एक सूअर की तरह, बनिा प्रार्थना या क्रॉस के चनि्ह के नाश्ते के लिए बैठ जाती थी, या जब, उपवास के दौरान, मैं चर्च के नयिमों की अनुमति से पहले खाने के लिए बैठ जाती थी। उन्होंने उन प्यालों और बर्तनो को भी पेश कयिा जनिसे मैंने शराब पीकर अत्यधकि पयिा था, और यहाँ तक कि यह भी बताया कि मैंने कतिने प्याले पिए थे, यह कहते हुए:

'उसने कसिी-कसिी भोज में कसिी-कसिी व्यक्ति के साथ इतने प्याले पिए; कसिी अन्य अवसर पर और कसिी अन्य स्थान पर, उसने इतने प्याले पिए कि वह बेहोश हो गई; 'इसके अलावा, उसने बांसुरी और अन्य वाद्य यंत्रों की धुन पर कई बार भव्य दावतें कीं, खुद को नृत्य और गायन में खो दयिा, और ऐसी दावतों के बाद उसे बड़ी मुश्कलि से घर लाया जाता था; अपनी असीम शराबखोरी से वह इतनी थक जाती थी।'

जब उन्होंने इन सभी और इसी तरह के लालच के कृत्यों को प्रस्तुत कयिा, तो राक्षस प्रसन्न हुए और हर्षति हुए, मानो वे मुझे पहले ही अपनी पकड़ में ले चुके हों, और मुझे पकड़कर नरक की गहराइयों में फेंकने की तैयारी कर रहे हों। जहाँ तक मेरी बात है, मैं काँप उठा, क्योंकि मैंने देखा कि वे मुझे नग्न कर रहे थे और मेरे पास अपनी रक्षा के लिए कहने को कुछ भी नहीं था। लेकनि पवत्रि स्वर्गदूतों ने, आदरणीय बेसलि द्वारा प्रदान की गई बहुत सी चीज़ों को लेकर, मेरे लिए फरिौती का भुगतान कयिा। राक्षसों ने यह देखकर, भ्रम में पड़ गए और चलि्ला उठे:

'हाय हमारा नाश हो, क्योंकि हमारी मेहनत व्यर्थ गई, हमारी आशा टूट गई।'

ये शब्द सुनते ही, उन्होंने उन पांडुलपियिों को हवा में फेंकना शुरू कर दयिा जनि पर मेरे पाप लखिे थे। यह देखकर, मैं प्रसन्न हुआ और बनिा कसिी बाधा के वहाँ से चल दयिा। जब वे मेरे साथ ऊपर जा रहे थे, तो स्वर्गदूतों ने एक-दूसरे से इस प्रकार बातचीत शुरू कर दी:

'सचमुच, इस आत्मा को परमेश्वर के संत, बेसलि से बहुत मदद मलिी है: यदि उनके प्रयास और प्रार्थनाएँ न होतीं, तो यह आत्मा वायु के परीक्षणों से गुज़रते समय बहुत कष्ट सहती।'

तब, हिम्मत करके, मैंने पवित्र स्वर्गदूतों से कहा:

'हे स्वामिनी, मुझे लगता है कि पृथ्वी पर कोई भी जीवित व्यक्ति नहीं जानता कि यहाँ क्या होता है और मृत्यु के बाद एक पापी आत्मा का क्या इंतज़ार करता है।'

पवित्र स्वर्गदूतों ने मुझसे उत्तर दिया:

क्या दिव्य शास्त्र, जिन्हें पादरियों द्वारा पवित्र चर्चों में निरंतर पढ़ा जाता है, यहाँ जो कुछ भी होता है, उसकी गवाही नहीं देते? परन्तु जो सांसारिक व्यर्थता के आदी हैं, वे इन सब बातों की परवाह नहीं करते, क्योंकि वे जीवन की सारी मिठास दैनिक भोज और मद्यपान में पाते हैं: वे हर दिन बिना माप के खाते और शराब पीते हैं, परमेश्वर के भय को त्यागकर; और परमेश्वर के स्थान पर अपने पेट को प्रधानता देकर, वे आने वाले जीवन के विषय में बिलकुल भी नहीं सोचते और परमेश्वर के वचन को याद नहीं करते, जो कहता है: 'हाय तुम जो अब तृप्त हो, क्योंकि तुम भूखे होओगे। *हाय तुम जो अब हँसते हो, क्योंकि तुम शोक और विलाप करोगे*' (लूका 6:25)। वे मूर्खतापूर्वक यह मानते हैं कि पवित्र धर्मग्रंथों में वर्णित सब कुछ केवल एक कल्पना है, और वे इस बात को अनदेखा करते हैं जो लिखा है, *'ढोलकियों की धुन पर भोज करना'*[2664] , ठीक वैसे ही जैसे सुसमाचार में वर्णित धनी व्यक्ति, *'जो प्रतिदिन ऐश्वर्य से भोज करता था'* (लूका 16:19)। हालाँकि, उनमें से जो गरीबों पर दया दिखाते हैं, बेसहारा और ज़रूरतमंदों का भला करते हैं, और ज़रूरतमंदों की मदद करते हैं—वे अपनी दया के कारण परमेश्वर से अपने पापों की क्षमा प्राप्त करते हैं और परीक्षाओं से बिना किसी बाधा के गुज़रते हैं; क्योंकि पवित्र शास्त्र कहता है: *'दान मृत्यु से बचाता है'* (तोबित 4:10)। इस प्रकार, जो दान-पुण्य करते हैं वे अनंत जीवन प्राप्त करते हैं; लेकिन जो दया के माध्यम से अपने पापों को शुद्ध करने का प्रयास नहीं करते वे इन परीक्षणों से बच नहीं सकते, और उन्हें उन उदास कर-संग्रहकर्ताओं द्वारा छीन लिया जाता है जिन्हें आपने देखा था; ये आत्माओं को क्रूर यातनाओं के अधीन करते हैं, उन्हें नरक की गहराइयों में फेंक देते हैं और उन्हें मसीह के अंतिम न्याय तक वहाँ जंजीरों में बंद रखते हैं। आप भी इस भाग्य से बच पाना मुश्किल समझते, यदि आपको परम पूज्य बेसिल द्वारा प्रदान किए गए प्रायश्चित के माध्यम से मुक्ति न मिली होती।

जैसे ही हम बात कर रहे थे, हम सुस्ती के टोल-हाउस के रूप में जाने जाने वाले पाँचवें टोल-हाउस पर पहुँचे, जहाँ आलस्य में बिताए गए सभी दिनों और घंटों की परीक्षा ली जाती है, और जहाँ आलसी लोग—जो स्वयं कुछ भी किए बिना दूसरों की मेहनत पर जीते हैं—को यातना दी जाती है, और साथ ही उन मजदूरों को भी जो अपने काम को ठीक से नहीं करने के लिए भुगतान प्राप्त करते हैं। इसी कष्ट-गृह में, जो लोग ईश्वर की स्तुति नहीं करते हैं और उत्सव के दिनों तथा रविवार को प्रातःप्रार्थना, धर्मविधि और अन्य दैवीय सेवाओं में शामिल होने के लिए बहुत आलसी होते हैं, उन्हें भी यातना दी जाती है। वहाँ निराशा और अपनी आत्मा की उपेक्षा को भी कसौटी पर परखा जाता है, और इनमें से किसी भी रूप को भीषण दंड दिया जाता है, जिससे बहुत से लोग, धर्मिक और सामान्य दोनों, इस शुल्क-गृह से गर्त में फेंक दिए जाते हैं। इस कर-द्वार पर, मुझे भी कई परीक्षणों से गुजरना पड़ा, और यदि मेरी गरीबी का उपचार पूजनीय बेसिल के उपहार से न हुआ होता, तो मैं इसके कर्ज से कभी मुक्त नहीं हो पाता, जिसके द्वारा मैं छुड़ाया गया और इस प्रकार मुझे मेरी स्वतंत्रता मिली।

उसके बाद, हम चोरी के शुल्क-गृह से गुज़रे। वहाँ भी हमें रोका गया, लेकिन थोड़ी सी रकम चुकाने के बाद, हम जल्द ही उससे आगे निकल गए, क्योंकि यह पाया गया कि मैंने चोरी का कोई पाप नहीं किया था, सिवाय एक छोटे से अपराध के जो मैंने बचपन में मूर्खतावश किया था।

वहाँ से हम लालच और कंजूसी के शुल्क-घर पर पहुँचे, लेकिन हम उससे भी जल्द ही निकल गए। क्योंकि, प्रभु परमेश्वर की मदद से, मैंने बड़ी संपत्ति इकट्ठा करने का प्रयास नहीं किया और लालची नहीं था, बल्कि प्रभु ने मुझे जो कुछ भी दिया, उससे मैं संतुष्ट था; और न ही मैं कंजूस था, बल्कि जो कुछ भी मेरे पास था, वह मैंने ज़रूरतमंदों को उदारतापूर्वक दिया।

जैसे-जैसे हम और ऊपर चढ़े, हमें ब्याजखोरी के टोल-हाउस का सामना हुआ, जहाँ हर तरह के ब्याजखोरों और लुटेरों की परीक्षा ली जाती है, साथ ही उन सभी की भी जो ब्याज पर पैसा उधार देते हैं और अवैध साधनों से धन प्राप्त

[2664] अर्थात्, टिम्पेनी और कोरल गायन की धुन के साथ। टिम्पेनी एक वाद्य यंत्र है जिसे छड़ी से बजाया जाता है, जो कुछ-कुछ केटलबैग या हाथ में पकड़ने वाले तबले जैसा होता है।

करते हैं। इस शुल्क-घर की दुष्ट आत्माओं ने, मेरी पूरी तरह से जाँच-पड़ताल करने के बाद, मुझमें कोई दोष नहीं पाया, और अपने क्रोध में उन्होंने मुझ पर दाँत पीसे। हालाँकि, हम प्रभु परमेश्वर का धन्यवाद करते हुए और ऊपर चढ़ गए।

उसके बाद, हम अन्याय के टोल-घर पर पहुँचे, जहाँ सभी अन्यायपूर्ण न्यायाधीशों को यातनाएँ दी जाती हैं—वे जो रिश्वत लेते हैं और दोषियों को बरी कर देते हैं जबकि निर्दोषों को दोषी ठहराते हैं। वहाँ, मजदूरों की मजदूरी रोकने, व्यापारियों के तराजू में हर अनियमितता, और अन्याय के हर कृत्य का हिसाब लिया जाता है। लेकिन हम, मसीह की कृपा से, उस कर-घर से बिना किसी विशेष बाधा के गुज़र गए, क्योंकि हमने कर-संग्राहकों को बहुत कम दिया था।

हम आगे आने वाले ईर्ष्या के अगले शुल्क-घर से भी सुरक्षित रूप से गुज़रे, वहाँ कुछ भी नहीं दिया, क्योंकि मैंने किसी से ईर्ष्या नहीं की थी। इस शुल्क-चौकी पर, शत्रुता और घृणा के पापों की भी परीक्षा हुई, लेकिन मैं, मसीह की कृपा से, इन पापों में भी निर्दोष पाया गया। यह देखकर, राक्षस क्रोध से भर गए और मुझ पर अपने दाँत पीसे, लेकिन मैं उनसे नहीं डरा और आनंदपूर्वक और ऊँचा उठ गया।

इसी तरह, मैं घमंड के परीक्षण से गुज़रा, जहाँ घमंडी आत्माएँ घमंड, दंभ और आत्म-बड़प्पन के पापों के लिए दंड देती हैं। वहाँ भी, यह देखने के लिए पूरी तरह से जांच की जाती है कि क्या किसी ने अपने माता-पिता का, या ईश्वर से अधिकार प्राप्त बुजुर्गों का अनादर या अवज्ञा की है, साथ ही घमंड और दंभ के अन्य पापों की भी। वहाँ हमने परम पूज्य बेसिल द्वारा हमें प्रदान की गई चीज़ों में से बहुत कम ही अर्पित किया, और मुझे मुक्त कर दिया गया।

फिर हम क्रोध और उग्रता के शुल्क-गृह पर पहुँचे, लेकिन वहाँ भी, यद्यपि वायुमंडलीय यातना देने वाले क्रूर थे, उन्हें हमसे कुछ खास हासिल नहीं हुआ, और हम प्रभु परमेश्वर में आनंदित होते हुए आगे बढ़े, जो मेरे पापी आत्मा को मेरे पवित्र और पूजनीय पिता, संत बेसिल की प्रार्थनाओं के द्वारा बचाता है।

उसके बाद, हम द्वेष के टोल-हाउस में पहुँचे, जहाँ जो लोग अपने पड़ोसी के प्रति द्वेष रखते हैं और बुराई का बदला बुराई से लेते हैं, उन्हें निर्दयता से यातना दी जाती है, और फिर द्वेषपूर्ण आत्माओं द्वारा टार्टरस में फेंक दिया जाता है[2665] । लेकिन वहाँ भी ईश्वर की दया ने मेरी मदद की; क्योंकि मैंने किसी के प्रति कोई द्वेष नहीं पाला, मुझ पर किए गए अन्याय पर रंजिश नहीं रखी, बल्कि मेरे प्रति शत्रुता रखने वालों के साथ दया से पेश आया और, अपनी पूरी क्षमता से, उन्हें प्रेम दिखाया, और भलाई से बुराई पर विजय प्राप्त की। इस प्रकार, इस परीक्षण में मुझमें द्वेष का कोई पाप नहीं पाया गया, इसलिए राक्षस क्रोध से रो पड़े, यह देखकर कि मेरी आत्मा मुक्त रूप से उनसे दूर जा रही थी; जबकि हम प्रभु में आनंदित होकर और ऊपर चढ़ने लगे।

जैसे-जैसे हम और ऊँचाई पर चढ़ते गए, मैंने मेरा मार्गदर्शन कर रहे पवित्र स्वर्गदूतों से पूछा:

'हे स्वामिनो, मैं आपसे विनती करता हूँ, मुझे बताइए: वायु की भयानक शक्तियों को संसार में रहने वाले सभी लोगों द्वारा किए गए प्रत्येक दुष्ट कर्म—जैसे मेरे अपने दुष्ट कर्म—के बारे में कैसे पता चलता है, और वह भी केवल खुलेआम किए गए ही नहीं, बल्कि गुप्त रूप से किए गए कर्मों के बारे में भी!'

और पवित्र स्वर्गदूतों ने मुझसे कहा:

'हर ईसाई, पवित्र बपतिस्मा के क्षण से, ईश्वर से एक रक्षक देवदूत प्राप्त करता है, जो, अदृश्य रूप से उस व्यक्ति पर नजर रखते हुए, दिन-रात, उनके पूरे जीवन भर मृत्यु के क्षण तक हर अच्छे कर्म की ओर उनका मार्गदर्शन करता है, और उनके पूरे जीवन में किए गए सभी अच्छे कर्मों को दर्ज करता है, ताकि, उनके पुरस्कार के रूप में, एक व्यक्ति ईश्वर से स्वर्ग के राज्य में अनुग्रह और अनंत पुरस्कार प्राप्त कर सके। इसी तरह, अंधकार का राजकुमार, मानव जाति को विनाश की ओर ले जाने की इच्छा से, एक व्यक्ति को दुष्ट आत्माओं में से एक नियुक्त करता है, जो उस व्यक्ति का लगातार पीछा करते हुए, उसके युवा दिनों से किए गए सभी बुरे कर्मों पर नजर रखता है, अपनी चालाकी से उसे अपराध करने के लिए प्रलोभित करता है, और उस व्यक्ति द्वारा किए गए सभी बुरे कर्मों का लेखा-जोखा रखता है। तब, टोल-घरों की ओर बढ़ते हुए, यह दुष्ट आत्मा प्रत्येक पाप को संबंधित टोल-घर में दर्ज करता है; यही कारण है कि स्वर्गीय टोल-संग्रहकर्ता लोगों द्वारा किए गए सभी पापों से अवगत होते हैं। और इस प्रकार, जब किसी व्यक्ति की आत्मा शरीर से अलग हो जाती है और स्वर्गीय निवासों में अपने स्रष्टा की ओर यात्रा शुरू करती है, तो टोल-घरों के पास खड़े दुष्ट आत्माएँ उसका रास्ता रोक देती हैं, और उसे उसके सभी दर्ज किए गए पाप दिखाती हैं। और यदि उसमें पापों

[2665] टार्टारस एक अगणनीय गर्त है, एक नरकीय खाई। यह शब्द ग्रीक लेखों से लिया गया है, जिसमें टार्टारस एक भूमिगत गर्त को संदर्भित करता है जिसे सूर्य द्वारा कभी प्रकाशित या गर्म नहीं किया जाता, जहाँ कड़ाके की ठंड का राज है। ईसाई लेखक इस शब्द का उपयोग असहनीय ठंड वाली जगह को दर्शाने के लिए करते हैं, जहाँ पापियों की आत्माओं को भेजा जाएगा।

की तुलना में अधिक पुण्य कर्म होते हैं, तो राक्षस उसे रोकने में असमर्थ हो जाते हैं। हालाँकि, यदि अच्छे कर्मों की तुलना में पाप अधिक पाए जाते हैं, तो राक्षस उसे कुछ समय के लिए रोक लेंगे और उसे, मानो, एक कालकोठरी में बंद कर देंगे, जहाँ, ईश्वर की अनुमति से, वे तब तक उसे यातनाएँ देंगे जब तक कि वह आत्मा चर्च की प्रार्थनाओं और उसके पड़ोसियों द्वारा उसकी स्मृति में दिए गए दान के माध्यम से अपनी यातनाओं से मुक्ति प्राप्त नहीं कर लेती। लेकिन यदि कोई आत्मा परमेश्वर के सामने इतनी पापी और घृणित सिद्ध होती है कि उसकी मुक्ति की कोई आशा नहीं रहती और उसकी अनंतकालिक विनाश की प्रतीक्षा कर रही होती है, तो दानव तुरंत ऐसी आत्मा को गर्त में फेंक देते हैं, जहाँ उनके लिए भी अनंतकालिक यातना का स्थान तैयार किया गया है, और इस गर्ता में वे उसे प्रभु के दूसरे आगमन तक रखते हैं, जिसके बाद उसे अपने शरीर के साथ आग की गेहन्ना[2666] में अनंतकाल तक पीड़ा सहनी होगी।

यह भी ध्यान दिया जाना चाहिए कि केवल वे ही जो विश्वास और पवित्र बपतिस्मा से प्रबुद्ध हुए हैं, इस मार्ग पर आरोहण करते हैं और ऐसी यातनाओं को झेलते हैं। अविश्वासी मूर्तिपूजक, सारासेन[2667] और सामान्य रूप से अन्य सभी अविश्वासी इस मार्ग का अनुसरण नहीं करते हैं। जबकि उनके शरीर अभी भी जीवित हैं, उनकी आत्माएँ पहले से ही मृत हैं, नरक में दफ़न हैं; इसलिए, जब वे मरते हैं, तो राक्षस तुरंत, बिना किसी बड़ी परीक्षा के, उनकी आत्माओं को, जो वास्तव में उनका ही अधिकार है, ले लेते हैं और उन्हें नरक की खाई में फेंक देते हैं।

जब स्वर्गदूतों ने मुझे यह सब प्रकट कर दिया, तो हम हत्या के पड़ाव में प्रवेश किए, जहाँ न केवल डकैती की परीक्षा होती है, बल्कि हर घाव, कहीं भी दिया गया हर वार—चाहे कंधे पर हो या सिर पर—साथ ही क्रोध में दी गई हर थप्पड़ या धक्का भी तौला जाता है। यह सब उस पurgatory में पूरी तरह से परखा और तुला जाता है; लेकिन हम एक छोटी सी फिरौती देकर सुरक्षित रूप से इससे गुज़र गए।

हम जादू-टोने के कर-घर, जादू की जड़ी-बूटियों से जहर देने, और जादू-टोने के उद्देश्य से राक्षसों को बुलाने से भी गुज़रे। इस कर-घर की आत्माएँ चार-पैर वाले सरीसृप, बिच्छू[2668] , साँप, इचिडना[2669] और मेंढकों जैसी थीं, और उनका रूप अत्यंत भयानक और घृणित था। लेकिन वहाँ, मसीह की कृपा से, मुझमें कोई पाप नहीं पाया गया, और हम तुरंत टोल-हाउस से गुज़र गए, और बुरे टोल-कलेक्टरों को कुछ भी नहीं दिया। अपने क्रोध में, उन्होंने मुझ पर चिल्लाया और कहा:

'यहाँ तुम व्यभिचार के टोल-घर पर आते हो। देखते हैं कि तुम इससे कैसे बचोगे!'

जैसे-जैसे हम ऊपर चढ़ते गए, मैंने मुझे मार्गदर्शन कर रहे पवित्र स्वर्गदूतों से पूछा:

'हे स्वामिनो, क्या सभी ईसाई इन टोल-घरों से गुजरते हैं, और क्या कोई व्यक्ति बिना किसी यातना या भयानक पीड़ा के इनसे नहीं गुजर सकता?'

पवित्र स्वर्गदूतों ने उत्तर दिया:

'विश्वासियों की आत्माओं के लिए स्वर्ग का कोई दूसरा मार्ग नहीं है, और सभी को इसी मार्ग का अनुसरण करना चाहिए; फिर भी, सभी को उन यातनाओं का सामना नहीं करना पड़ता जैसा आपने सहा है, बल्कि केवल आपके जैसे पापी ही उन यातनाओं के अधीन होते हैं, जिन्होंने अपने आध्यात्मिक पिता के सामने अपने पापों का अपूर्ण रूप से इकबालिया बयान दिया, अपने अधर्म के कर्मों से लज्जित होकर और उनमें से कई को छिपाकर। लेकिन यदि कोई, सच्चे मन से और ईमानदारी से, कुछ भी छिपाए बिना, अपने सभी कर्मों का इकरार करता है और, एक पश्चात्तापी हृदय के साथ, अपने द्वारा किए गए सभी अपराधों से पश्चात्ताप करता है, तो ऐसे व्यक्ति के पाप, ईश्वर की दया से, अदृश्य रूप

[2666] आग की गेहेना – अनंत यातना का स्थान (मत्ती 10:28; यूहन्ना 8:6)। यह नाम हिब्रू शब्दों से लिया गया है जिसका अर्थ है यरूशलेम के पास हिन्नोम की घाटी, जहाँ मोलक की पूजा में बच्चों को जलाया जाता था (2 राजा 16:3-4)। जब योशिय्याह ने इस भयानक बलिदान को समाप्त कर दिया (2 राजा 23:10), तो फांसी दिए गए दुष्टों के शव, सड़ी-गली लाशें और हर तरह की गंदगी हिन्नोम की घाटी में फेंक दी जाती थीं, और यह सब आग के हवाले कर दिया जाता था। यही कारण है कि 'आग का गेहन्ना' अभिव्यक्ति का प्रयोग हुआ (देखें मत्ती 5:22, 29, 30; मत्ती 18:9; मरकुस 9:47)।

[2667] 'सारासेन' शब्द मूल रूप से अरब के बेदुइनों के एक खानाबदोश, डाकू कबीले को संदर्भित करता था; बाद में, ईसाई लेखकों ने इस नाम का प्रयोग सामान्य रूप से सभी अरबों और मुसलमानों के लिए किया।

[2668] बिच्छू अरैनिडि परिवार के हानिकारक, विषैले जीव हैं; वे अफ्रीका, भारत, फारस और अन्य गर्म क्षेत्रों में पाए जाते हैं। उनके डंक से होने वाले घाव अत्यंत दर्दनाक होते हैं और अक्सर घातक साबित होते हैं।

[2669] एचिडना एक विषैला साँप है। इसका एक डंक अत्यंत खतरनाक होता है और, अधिकांश मामलों में, इससे त्वरित और अपरिहार्य मृत्यु हो जाती है। पवित्र शास्त्रों और अन्य पवित्र ग्रंथों में, साँप आम तौर पर उस चीज़ के प्रतीक के रूप में काम करते हैं जो अपने स्वभाव से ही हानि और विनाश का कारण बनती है (उपदेशक 10:11; नीतिवचन 23:31–33; मत्ती 7:10)।

से मटि जाते हैं; और जब उसकी आत्मा यातनाओं से होकर गुजरती है, आकाशीय यातना देने वाले, अपनी पुस्तकें खोलकर, उसमें उसके पापों का कोई रकिॉर्ड नहीं पाते और उसे कोई हानि पहुँचाने में असमर्थ रहते हैं, ताकि आत्मा बिना किसी बाधा के और आनंदपूर्वक अनुग्रह के सिंहासन पर चढ़ जाती है। और आप, यदि आपने पूर्ण रूप से पाप-स्वीकृति की होती और अपने सभी पापों से पश्चाताप किया होता, तो आप पवित्र-स्थान में इतनी भयानक यातनाएँ नहीं झेलते। लेकिन अब आपको इस बात से मदद मिली है कि आपने बहुत पहले ही घातक पाप करना बंद कर दिया था और अपने जीवन के अंतिम वर्षों को सदाचार से जिया है; विशेष रूप से, आपको आपके पूज्य पिता बेसिल की प्रार्थनाओं से मदद मिली है, जिनकी आपने लंबा समय तक निष्ठापूर्वक सेवा की।

जब हम इस प्रकार वार्तालाप कर रहे थे, हम व्यभिचार के शुल्क-गृह पर पहुँचे, जहाँ प्रत्येक अश्लील कृत्य, प्रत्येक कामुक विचार और कल्पना, साथ ही उत्तेजक स्पर्श और कामुक लाड़-प्यार की परीक्षा ली जाती है। इस टोल-घर का राजकुमार अपने सिंहासन पर बैठा था, गंदे और बदबूदार वस्त्रों में लिपटा हुआ, खूनी झाग से लथपथ, और उसके सामने राक्षसों की भीड़ खड़ी थी। जब उन्होंने मुझे अपनी ओर आते देखा, तो वे बहुत हैरान हो गए; फिर, मेरे व्यभिचार के कर्मों का रकिॉर्ड निकालकर, उन्होंने मुझ पर आरोप लगाया, यह बताते हुए कि मैंने अपनी जवानी में किसके साथ, कब और कहाँ पाप किया था। और मेरे पास उन्हें खंडन करने के लिए कुछ भी नहीं था, और मैं डर से कांप उठा, लज्जा से भर गया। फिर स्वर्गदूतों ने राक्षसों से कहा:

'लेकिन उसने कई वर्षों से व्यभिचार नहीं किया है, और अपने जीवन के पिछले सभी वर्षों को उपवास, पवित्रता और संयम में बिताया है।'

दैत्यों ने उत्तर दिया:

'हम जानते हैं कि वह बहुत पहले ही व्यभिचार के पाप से मुंह मोड़ चुकी है, लेकिन वह अभी भी हमारी है, क्योंकि उसने अपने आध्यात्मिक पिता के सामने अपने पिछले पापों के लिए पूरी तरह से या पूरे दिल से पश्चाताप नहीं किया, और उससे बहुत कुछ छिपाया; और इसलिए, या तो उसे हमें सौंप दो, या अच्छे कर्मों के माध्यम से उसे छुड़ा लो।'

देवदूतों ने उन्हें मेरे कई पुण्य कर्म और पूजनीय बेसिल के उपहारों में से और भी अधिक उपहार दिखाए, और उस भयानक विपत्ति से किसी तरह बचकर, मुझे वहाँ से उठा लिया गया।

उसके बाद, हम व्यभिचार के शुल्क-गृह पर पहुँचे, जहाँ विवाह में रहते हुए भी वैवाहिक निष्ठा का पालन करने में विफल रहने वालों—लेकिन जो अपने वैवाहिक शयनकक्ष को कलंकित करते हैं—उनके पापों को दंडित किया जाता है, साथ ही कुंवारी कन्याओं को भ्रष्ट करने के उद्देश्य से उनका हर तरह का अपहरण और सभी प्रकार की कामुक हिंसा को भी दंडित किया जाता है। यहाँ उन लोगों की चूकों को भी दंडित किया जाता है जिन्होंने स्वयं को ईश्वर को समर्पित किया है और अपना जीवन शुद्ध और पवित्र रखने की शपथ ली है, लेकिन जो बाद में उस शपथ का पालन करने में विफल रहे। इस यातना पर, मुझ पर भी व्यभिचार का आरोप लगाया गया और मेरे बचाव में कहने के लिए मेरे पास कुछ भी नहीं था, इसलिए निर्दयी यातना देने वाले—वे घृणित और अशुद्ध आत्माएँ—पहले ही मुझे स्वर्गदूतों के हाथों से छीनकर नरक की गहराइयों में फेंकने पर तुले हुए थे। लेकिन पवित्र स्वर्गदूतों ने उनसे विवाद किया और मेरे बाद के सभी श्रम और कर्मों को प्रस्तुत किया; और इस प्रकार उन्होंने मेरे शेष सभी अच्छे कर्मों के माध्यम से मेरा प्रायश्चित किया, जिन्हें उन्होंने वहाँ संपूर्ण रूप से, आखिरी तक, रखा, जबकि साथ ही उन्होंने परम पूजनीय बेसिल द्वारा प्रदान की गई बहुत सी चीज़ों को छोड़ दिया। उन्होंने यह सब मेरे अपराधों के पलड़े के एक ओर रखा और मुझे उठाकर आगे ले चले।

वहाँ हम सदोम के पापों के शुल्क-गृह के पास पहुँचे, जहाँ पुरुषों और महिलाओं के अस्वाभाविक पाप—सडोमी और पशु-संभोग, व्यभिचार और अन्य गुप्त पाप, जिनका उल्लेख करना भी अत्यंत शर्मनाक है—की सजा दी जाती है। इस शुल्क-घर के राजकुमार का रूप अत्यंत घृणित और भयानक था और वह पूरी तरह से बदबूदार पीप से ढका हुआ था; उसके सेवक हर तरह से उसके जैसे ही थे: उनकी बदबू बिल्कुल असहनीय थी, उनका रूप घृणित और भयानक था, उनका क्रोध और उग्रता अत्यधिक थी। हमें देखकर, वे हमसे मिलने के लिए दौड़ पड़े और हमें घेर लिया; लेकिन ईश्वर की कृपा से, मुझमें ऐसा कुछ भी न पाकर, जिसके लिए वे मुझे अपने न्याय के लिए ले जा सकते थे, वे शर्म के मारे भाग गए; जबकि हम आनंदपूर्वक अपने रास्ते पर आगे बढ़ गए।

जैसे ही हम ऊपर चढ़े, स्वर्गदूतों ने मुझसे कहा:

'देखो, थियोडोरा, तुमने व्यभचिार के भयानक और घृणति यातनाएँ देखी हैं। जान लो कि बहुत कम आत्माएँ इन यातनाओं से बनिा किसी बाधा के गुज़रती हैं, क्योंकि संसार दुष्टता में पड़ा है[2670] , जबकि लोग अत्यंत कमज़ोर हैं और अपने युवा काल से ही व्यभचिार के पापों की ओर झुकाव रखते हैं। बहुत ही कम लोग हैं जो अपनी कामुक वासनाओं पर काबू पाते हैं, और इसलिए शायद ही कोई इन यातनाओं से स्वतंत्र और बनिा किसी बाधा के गुजरता है; इसके वपिरीत, ऐसे बहुत से लोग हैं जो इस क्लेश तक पहुँचकर यहीं नष्ट हो जाते हैं, क्योंकि अश्लील कृत्यों के यातनादाता व्यभचिार के आदी लोगों को पकड़ लेते हैं और उन्हें नरक में डाल देते हैं, और उन्हें अत्यंत कष्टदायक यातनाएँ देते हैं। व्यभचिार की इन परीक्षाओं के अधपिति तो यह कहते हुए घमंड भी करते हैं: 'हम, स्वर्गीय कर-संग्राहकों में से किसी और से भी अधकि, नरक की गहराइयों में डाले गए लोगों की संख्या बढ़ाते हैं, जो इस प्रकार, मानो हमारे संबंधी बन जाते हैं, और हमारी ही तरह उसी नयिति को भुगतते हैं।' इसलिए, थियोडोरा, परमेश्वर का धन्यवाद करो कि, तुम्हारे पूजनीय पति बेसलि की प्रार्थनाओं के द्वारा, तुम इन यातनाओं से गुज़र गई हो और अब न तो किसी बुराई को सहोगी और न ही भय जानोगी।

इस बीच, हम वधिर्मों के परीक्षण पर पहुँचे हैं, जहाँ वश्विास के बारे में झूठी कल्पनाएँ, ऑर्थोडॉक्स धर्म-स्वीकृति से वचिलन, अवश्विास, दव्यि रूप से प्रकट कए गए सद्धिांतों की सच्चाइयों के बारे में संदेह, पवत्रिों के वरिुद्ध अपमान, और इसी तरह के पापों को यातना दी जाती है। मैं बनिा किसी परीक्षा के इस यातना से गुज़र गया और स्वर्ग के राज्य के द्वारों से बहुत दूर नहीं था।

अंत में, हमारा सामना अंतमि टोल-हाउस के दुष्ट आत्माओं से हुआ, जसिे क्रूरता का टोल-हाउस कहा जाता है। इस टोल-हाउस के यातना देने वाले अत्यंत क्रूर और उग्र हैं, लेकनि उनका राजकुमार वशिेष रूप से उग्र है; उसका चेहरा अत्यंत उदास और दुखी है, जो क्रोध और नर्दियता की आग उगलता है। उस यातना में, नर्दियी आत्माओं को बनिा किसी दया के कसौटी पर परखा जाता है। और यदि कोई, चाहे वे कई वीरता के कार्य करें, लगातार उपवास करें और भक्तपिूर्वक प्रार्थना करें, और अपनी पवत्रिता को भी अछूत रखें, फरि भी नर्दियी साबति हों और अपने पड़ोसी के प्रति अपना हृदय कठोर कर लें, तो उन्हें वहाँ से नरक में फेंक दयिा जाता है और गर्त में बंद कर दयिा जाता है, और इस प्रकार वे स्वयं दया से वंचति रह जाते हैं[2671] । लेकनि हम भी, मसीह की कृपा से, इस कष्ट से बनिा किसी वशिेष बाधा के गुज़र गए, यह सब आदरणीय बेसलि की प्रार्थनाओं के कारण संभव हुआ, जन्होंने मेरे उद्धार के लिए अपने पुण्य कर्मों से हमें बहुत कुछ प्रदान कयिा।

इस प्रकार सभी भयानक यातनाओं से गुजरने के बाद, हम बड़ी प्रसन्नता के साथ स्वर्ग के राज्य के द्वारों के पास पहुँचे। ये द्वार चमकीले क्रस्टिल जैसे थे, और उनसे एक अकथनीय तेज नकिल रहा था; द्वार पर तेजस्वी युवक खड़े थे, जन्होंने मुझे स्वदूतों के हाथों ऊपर उठाए हुए देखकर आनंद से भर गए, इस बात का उत्सव मनाते हुए कि मुझे वायुमंडलीय परीक्षाओं से मुक्ति मिली थी; और, प्रेम से हमारा स्वागत करते हुए, उन्होंने हमें द्वारों से होते हुए स्वर्ग के राज्य में ले गए। 'और जो मैंने वहाँ देखा और सुना, मेरे बच्चे ग्रेगरी,' धन्य थियोडोरा ने कहना जारी रखा, 'उसे वस्तिार से बयां करना असंभव है! मैंने देखा कि *'न किसी ने आँखों से देखा है, न किसी ने कानों से सुना है, और न ही किसी मन में यह सोचा है कि परमेश्वर ने अपने प्रेम करने वालों के लिए क्या तैयार कयिा है*' (1 कुरन्थियिों 2:9)। अंत में, मैं दव्यि महमिा के सहिासन के सामने खड़ा था, मेरे चारों ओर सेराफमि, करूब और स्वर्गीय योद्धाओं की भीड़ थी, जो अनंतकाल तक अकथनीय गीतों से प्रभु की स्तुति कर रहे थे। वहाँ, मैं घुटनों के बल गरि पड़ी और अदृश्य तथा अगम्य ईश्वर के सामने नमन कयिा। और स्वर्ग के दूतों ने एक मधुर भजन गाया, जसिमें दव्यि दया की महमिा की गई, जसिे कोई भी मानवीय पाप परास्त नहीं कर सकता। उस क्षण, परमेश्वर की महमिा के सहिासन से एक आवाज़ गूँजी, जो मेरे मार्गदर्शन कर रहे पवत्रि स्वर्गदूतों को आज्ञा दे रही थी कि वे मुझे संतों के सभी स्वर्गीय नविास और पापयिों के सभी कष्ट दखिाएँ, और फरि मुझे पूजनीय बेसलि के नविास में बसा दें। और पवत्रि स्वर्गदूत मुझे सर्वत्र ले गए, जसिसे मैंने महमिा और अनुग्रह से परपिूर्ण, अनेक सुन्दर बस्तयिाँ और आवास देखे – ऐसे आवास जो परमेश्वर से प्रेम करने वालों के लिए तैयार कए गए थे। वहाँ मैंने प्रेरतिों, भवष्यिद्वक्ताओं, शहीदों, पूज्य व्यक्तयिों और अन्य लोगों के धाम देखे, जो संतों के संबंधति क्रम के अनुसार वशिष्टि थे। प्रत्येक धाम अकथनीय सुंदरता का था; मैं कहूँगा कि वस्तिार और लंबाई में, यह कॉन्स्टेंटनिोपल के बराबर था, फरि भी यह अतुलनीय रूप से अधकि सुंदरता से वशिष्टि था, जसिमें मानव हाथों से न बने

[2670] यह अभव्यिक्ति यूहन्ना के प्रथम पत्र (1 यूहन्ना 5:19) से ली गई है।

[2671] प्रेरति याकूब के शब्दों का संदर्भ: *'जो दया नहीं दखिाते, उनके लिए बनिा दया के न्याय'* (याकूब 2:13)।

कई प्रकाशमान कक्ष थे। उन निवासों में सर्वत्र आनंद और आध्यात्मिक प्रसन्नता की ध्वनि गूँज रही थी, और आनंदित धर्मी लोगों के चेहरे दिखाई दे रहे थे; जिन्होंने मुझे देखकर, मेरे उद्धार पर प्रसन्न हुए, प्रेम से मेरा स्वागत किया और मुझे चूमा, और उस प्रभु की स्तुति की जिसने मुझे शत्रु के फंदों से छुड़ाया था। स्वर्गीय निवासों की अपनी यात्रा ( ) पूरी करने के बाद, मुझे पृथ्वी की गहराइयों में ([2672]) ले जाया गया और मैंने नरक में पापियों के लिए तैयार की गई भयानक और असहनीय यातनाएँ देखीं। जब वे मुझे वे दिखा रहे थे, तो पवित्र स्वर्गदूतों ने मुझसे कहा:

'देखो, थियोडोरा, प्रभु ने अपने पवित्र सेवक बेसिल की प्रार्थनाओं के द्वारा तुम्हें कितनी क्रूर यातनाओं से बचाया है।'

जब मैं नरक की खाइयों में घूम रही थी, तो मैंने उन लोगों का रोना, चीखना और कड़वी विलाप सुन और देखा जो उन यातनाओं को झेल रहे थे। उनमें से कुछ चिल्ला रहे थे: 'हाय, हम पर विनाश आ गया'; कुछ और आहें भर रहे थे: 'अरे, यह हमारे लिए कितना कठिन है!'; और कुछ तो उस दिन को कोस रहे थे जिस दिन वे पैदा हुए थे।

इस सब के बाद, मुझे मार्गदर्शन करने वाले स्वर्गदूत मुझे पूजनीय बेसिल के मठ में ले आए, जो आप यहाँ देखते हैं, और मुझे यहाँ बसा दिया, यह कहते हुए:

'अब पूज्य बेसिल आपकी स्मृति में प्रार्थना कर रहे हैं।'

और मुझे एहसास हुआ कि मैं शरीर से अलग होने के चालीसवें दिन इस विश्राम स्थल पर आ गया था[2673] ।

आदरणीय थियोडोरा ने यह सब ग्रेगरी को एक स्वप्न-दृश्य में सुनाया और उन्हें उस मठ की सुंदरता दिखाई जहाँ वह ठहरी हुई थीं, और उसकी सभी आध्यात्मिक संपदाएँ, जो बहुत परिश्रम से एकत्र की गई थीं, और फिर धन्य पिता बेसिल को भी।

यहाँ यह दर्शन समाप्त हो गया। जब यह समाप्त हुआ, तो ग्रेगरी अपनी नींद से जागा और उसने जो कुछ भी धन्य थियोडोरा से देखा और सुना था, उस पर देर तक विचार किया और आश्चर्यचकित हुआ। सुबह, वह अपना प्रथागत आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए पूजनीय बेसिल के पास गया। पूजनीय ने उससे पूछा:

'मेरे पुत्र ग्रेगरी, तुम कल रात कहाँ थे?'

उसने, जैसे कुछ भी न जानता हो, उत्तर दिया:

'मैं सो रहा था, पिताजी, अपने बिस्तर पर।'

वरिष्ठ ने उत्तर दिया:

'मुझे पता है कि तुम्हारा शरीर तुम्हारे बिस्तर पर आराम कर रहा था, लेकिन तुम्हारा आत्मा कहीं और था। या क्या तुम भूल गए हो कि ईश्वर ने कल रात सपने में तुम्हें क्या बताया था?' यहाँ तुम्हें वह मिला जिसकी तुमने इतनी प्रबल इच्छा की थी: तुमने थियोडोरा को देखा, उसके अपने ही होठों से उसके परलोक में जाने के बारे में सुना, और मेरे मठ में थे, जिसे मसीह की कृपा से, मेरे विनम्र श्रमों के कारण मेरे लिए तैयार किया गया है। इस प्रकार, तुमने वह सब कुछ देख लिया है जिसे तुम जानना चाहते थे।

ये शब्द सुनकर, ग्रेगरी को एहसास हुआ कि उसका सपना कोई झूठी कल्पना नहीं, बल्कि आदरणीय संत की प्रार्थनाओं के माध्यम से प्राप्त ईश्वर का एक सच्चा प्रकटीकरण था; तब, ईश्वर का धन्यवाद करने के बाद, वह अपने आध्यात्मिक पिता के सामने झुक गया, जिसके बाद उसने उनसे उस अवसर के अनुरूप उपदेश प्राप्त किया।

[2674]एक अन्य अवसर पर, ईश्वर की अनुमति से, ग्रेगरी विश्वास के संबंध में एक संदेह में पड़ गया। पुराने नियम की पुस्तकों को लगन से पढ़ते समय, उसके मन में यह विचार आया कि यहूदी अपने विश्वासों में सही थे, और वह काफी समय तक इसी मानसिक स्थिति में रहा। यह भांपते हुए कि ग्रेगरी परीक्षा में पड़ गया था, उस विवेकी वृद्ध ने उसे फटकार

[2672] अंतर्जगत – अधः नीच, भूमिगत। 'अंतर्जगत' से तात्पर्य नरक की गहराइयों से है, जिन्हें स्वर्ग के दिव्य निवासों के विपरीत भूमिगत माना जाता है।

[2673] चर्च की शिक्षा के अनुसार, शरीर से आत्मा के अलग होने के 40वें दिन, आत्मा की शुद्धि-स्थान के पड़ावों से होकर यात्रा समाप्त हो जाती है और उस पर एक अस्थायी निर्णय सुनाया जाता है, जिसके बाद उसे या तो आनंद के स्थान पर या यातना के स्थान पर भेज दिया जाता है, जहाँ वह पृथ्वी पर प्रभु के दूसरे आगमन और मानवजाति पर परमेश्वर के पुत्र के अंतिम न्याय के समय तक रहती है।

[2674] यह, बेशक, सर्व-रूसी मेट्रोपॉलिटन मकरिय (1543–1564) के मेनिया-चेतिया को संदर्भित करता है। उन्हें 'महान' कहा जाता है क्योंकि वे ऐतिहासिक और नैतिक विषय-वस्तु वाली सभी प्रकार की वस्तुओं का एक संपूर्ण संग्रह हैं, जो पर्व के दिनों और संतों की स्मृति के लिए तैयार किए गए हैं। रॉस्टॉव के संत डेमेट्रियस की चेती-मेनिया कई स्थानों पर, मकरियस की ग्रेट चेती-मेनिया में पाए जाने वाले वृत्तांत के संक्षिप्त संस्करण से बनी है।

लगाई और, बहुत समझाने-बुझाने के बाद, एक बार फरि उसके लिए ईश्वर से एक प्रकटवाणी माँगी। और इस प्रकार ग्रेगरी ने एक बार फरि एक अद्भुत दर्शन देखा, जसिमें परमेश्वर के अंतमि न्याय की पूर्तता की प्रतमिा उनकी आध्यात्मकि आँखों के सामने प्रकट हुई। उन्होंने शाश्वत न्यायाधीश को उनके सहिासन पर वरिाजमान देखा, धर्मी लोग न्यायाधीश के दाहनि हाथ खड़े थे, और पापी बाईं ओर खड़े थे, जन्हिें उनके कर्मों के अनुसार न्याय दयिा जा रहा था। वहाँ यहूदी और मूर्तपिूजक भी मौजूद थे; वास्तव में, ग्रेगरी ने यहूदयिों को मूर्तपिूजकों के साथ दंडति होते और गेहेन्ना में फेंके जाते देखा। पापयिों की नदिा के साथ-साथ, ग्रेगरी ने धर्मी लोगों की महमिा को भी देखा, और उन्होंने बाद में इस सब का वस्तिार से वर्णन कयिा। यह वृत्तांत 'ग्रेट चेटी-मेने' में पाया जा सकता है, जसिमें हमारे धन्य पतिा बेसलि के जीवन और उनके शष्यि ग्रेगरी के सभी दर्शनों का वस्तिार से वर्णन है; हमारी ओर से, अब हमें अपनी कथा समाप्त करनी चाहए, जसिे यहाँ संक्षप्ति रूप में प्रस्तुत कयिा गया है।

चमत्कारों और भवष्यिवाणयिों से परपिूर्ण एक दीर्घ जीवन के कार्यों और कृत्यों के बीच, हमारे पूजनीय पतिा बेसलि स्वर्ग गमन के समय के समीप आ गए। वे अत्यंत वृद्धावस्था में दविंगत हुए। क्योंकि जब वे काफी वृद्ध हो चुके थे, तब उन्हें पहले ही कॉन्स्टेंटनिोपल लाया जा चुका था, और वे कॉन्स्टेंटनिोपल में लगभग पचास वर्ष रहे – इस प्रकार कुल मलिाकर वे लगभग सौ वर्ष जीवति रहे, जसिके अंत में वे अनंत जीवन में प्रवेश कर गए, और 'तेरे वर्षों का कोई अंत नहीं होगा' (इब्रानयिों 1:12)[2675] । परम पूज्य बेसलि को अपने नधिन का पूर्वज्ञान प्राप्त करने की कृपा मलिी और उन्होंने इसकी भवष्यिवाणी अपने प्रयि शष्यि ग्रेगरी से की। यह नम्निलखिति परस्थितियिों में हुआ।

ग्रेगरी की आदत थी कि वह पूरे पवत्रि लेंट (महाप्रायश्चत्ति) के लिए अपने घर में एकांतवास करता था, बाहर नकिले बनिा वहीं रहता था, उपवास और प्रार्थना में लगा रहता था, अनेक प्रणाम करता था और अपनी सारी रातें जागकर बतिाता था। और इस प्रकार, एक दनि, जब लेंट (पवत्रि उपवास) का समय नजदीक आया, तो ग्रेगरी अपने रीवाज़ के अनुसार, एकांत में उपवास के आगामी काल के लिए आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए आदरणीय पतिा के पास आया। आदरणीय पतिा ने, आत्मा के मामलों पर उसे वस्तिार से उपदेश देकर और उसे अपना आशीर्वाद देकर, अंत में कहा:

'जाओ, मेरे बच्चे, शांतपिूर्वक अपने घर; क्योंकि इस जीवन में तुम मुझे अपनी शारीरकि आँखों से फरि कभी नहीं देखोगे।'

और ग्रेगरी को गले लगाते हुए, रेवरेंड फादर ने स्नेहपूर्वक उसे चूमा।

ग्रेगरी, संत के चरणों में गरि पड़ा, और उन्हें अपने आँसुओं से भगिो दयिा, उनसे बछिड़ने के वचिार से रोता और वलिाप करता रहा; फरि वह अपनी कोठरी में गया और, अपनी आदत के अनुसार, पूरे उपवास के लिए खुद को अलग-थलग कर लयिा। जहाँ तक पूजनीय बेसलि का प्रश्न है, मध्य-लेंट के बुधवार,[2676] , 25 मार्च को, ठीक परमेश्वर की परम पवत्रि माता के सुसमाचार के दनि, उन्होंने अपनी पवत्रि आत्मा को परमेश्वर के हाथों में सौंप दयिा[2677] ; और उनके पूजनीय शरीर को पवत्रि शहीदों फ्लोरा और लावरा के मठ में दफनाया गया।

बाद में, कॉन्स्टेंटनिोपल में रहने वाले एक धर्मपरायण व्यक्ति को एक दर्शन हुआ। उन्होंने एक बड़ा और सुंदर घर देखा, जसिके द्वार सोने और कीमती पत्थरों से सजे हुए थे, और उनके ऊपर एक शलिालेख था जसि पर लखिा था: 'धन्य बेसलि द न्यू का नवािस और शाश्वत वशि्राम'। यह शलिालेख पढ़कर, वह व्यक्ति उस भवन की सुंदरता से चकति हो गया। फरि उसमें से एक सुंदर युवक नकिला और उसने कॉन्स्टेंटनिोपल के धर्मपरायण व्यक्ति से कहा:

'तुम इतने हैरान क्यों हो? तुम कुछ और भी अद्भुत देखने वाले हो।'

यह कहकर, उसने भवन के द्वार खोल दिए, और उस चकति व्यक्ति की आँखों के सामने अत्यधकि ऊँचाई और सुंदरता वाले कक्ष प्रकट हुए, जनिकी भव्यता कसिी की भी कल्पना से परे थी। उन कक्षों में से एक में उसने पूजनीय बेसलि को एक शाही सहिासन पर महान महमिा के बीच बैठे देखा और उनके चारों ओर कई तेजस्वी पुरुष और युवक खड़े थे। वहाँ सुंदर बगीचे भी थे, जो मानव हृदय को प्रसन्न और आनंदति करने वाली हर चीज़ से भरे हुए थे। उसी क्षण, भीतर

[2675] यह अभव्यिक्ति संत पौलुस की यहूदयिों के नाम पत्र से ली गई है, यद्यपि वहाँ ये शब्द ईश्वर का उल्लेख करते हैं और उनकी अनंतता के बारे में बात करते हैं।

[2676] चर्च वधिान में, 'मध्य सप्ताह' का अर्थ है महा उपवास का चौथा सप्ताह; इसी सप्ताह को 'क्रूस की आराधना का सप्ताह' के रूप में भी जाना जाता है।

[2677] संत बेसलि द न्यू का नधिन 10वीं शताब्दी के मध्य में, कॉन्स्टेंटनि पोर्फयिोगेनटिस के शासनकाल के दौरान हुआ।

से एक आवाज़ सुनाई दी: 'ऐसा पुरस्कार मृत्यु के बाद उन सभी को दिया जाता है जिन्होंने ईश्वर से प्रेम किया है और उत्साहपूर्वक उनकी सेवा की है।'

उस व्यक्ति ने यह दर्शन कई लोगों को सुनाया, और जो भी इसे सुनते, वे ईश्वर की स्तुति करते हुए, ईश्वर-प्रसन्न, हमारे पूजनीय पिता बेसिल द न्यू की स्मृति का सम्मान करते थे।

हम भी, संत बेसिल की प्रार्थनाओं के द्वारा, हमारे प्रभु यीशु मसीह की कृपा से, परमेश्वर से प्रेम करने वालों के भाग के योग्य ठहरें, जिनके साथ पिता और पवित्र आत्मा के साथ, युगानुयुग सम्मान और महिमा हो। आमीन।

9 अप्रैल

27 मार्च (पुराना संस्करण)

हमारे पूजनीय पिता जॉन द क्लियिर-साइटिड, मिस्र के तपस्वी और एकांतवासी का जीवन

27 मार्च को स्मरणोत्सव

मिस्र के शहर लाइकोपोलिस[2678] में जॉन नाम का एक व्यक्ति रहता था, जो बचपन से ही बढ़ई था। जब जॉन पच्चीस वर्ष का हुआ, तो उसने संसार त्यागने का संकल्प लिया; अगले पंद्रह वर्षों तक उन्होंने विभिन्न मठों में मठवासी परिश्रमों को समर्पित किया; फिर, तपस्या जीवन के लिए एक एकांत स्थान की तलाश में, वे लाइकोपोलिस के पास स्थित वोल्चा नामक पहाड़ पर चले गए। वहाँ उसने एक ही छत के नीचे, एक के बगल में एक, तीन कोठरियाँ बनाईं, और उपवास व प्रार्थना का अभ्यास करने के लिए उनमें खुद को बंद कर लिया; एक कोठरी में वह प्रार्थना करता था, दूसरी में शिल्पकार्य में लगा रहता था, जबकि तीसरी उसका खाने और सोने की जगह थी। संत पचास वर्षों तक, अपने जीवन के अंत तक, इसी तरह एकांत में रहे, वे अपनी कोठरी से कभी बाहर नहीं निकले, बल्कि एक छोटी सी खिड़की के माध्यम से आने वालों से भोजन प्राप्त करते और उनसे बातचीत करते थे।

जब संत जॉन का इस तपस्या स्थल में तीस वर्ष का निवास पूरा हो गया, तो प्रभु ने उन्हें भविष्यवाणी का वरदान प्रदान किया। संत ने सम्राट थियोडोसियस को कई बातों की भविष्यवाणी की – अर्थात्, कि वह ईसाइयों के उत्पीड़क मैक्सिमिस को हराएगा और गॉल (2679) पर कब्ज़ा कर लेगा, कि वह ईसाइयों के उत्पीड़क यूजिनियस को भी हराएगा, और फिर अपनी जीवन लीला समाप्त कर शासन अपने बेटों को सौंप देगा। संत की दूरदर्शिता के कारण, एक पवित्र व्यक्ति के रूप में उनकी ख्याति दूर-दूर तक फैल गई, और सम्राट थियोडोसियस ने स्वयं उन्हें एक भविष्यवक्ता के रूप में सम्मानित किया।

जॉन के तपस्या के प्रयासों की शुरुआत में, एक सैन्य कमांडर उनके पास आया और संत से पूछा कि क्या वे सिएना शहर में आए इथियोपियाई लोगों को हरा देंगे[2680] । पूजनीय जॉन ने उन्हें निडर होकर इथियोपियाई लोगों के खिलाफ मार्च करने का निर्देश दिया और उनसे कहा कि वे उन्हें हरा देंगे और इसके लिए उन्हें राजा से सम्मान के रूप में पुरस्कृत किया जाएगा। सब कुछ ठीक वैसा ही हुआ जैसा कि संत जॉन ने भविष्यवाणी की थी। इस घटना के बाद, राजा को संत के बारे में

[2678] लाइकोपोलिस मध्य मिस्र के सबसे पुराने शहरों में से एक है। प्राचीन काल में, जैसा कि अब है, लाइकोपोलिस का वास्तविक नाम सियुत था। सियुत प्राचीन मिस्रियों का एक पवित्र शहर था। मिस्र के देवता अनुबिस और वेपुआट - जो इस शहर के संरक्षक देवता थे - को यहाँ सियार के सिर के साथ चित्रित किया गया था; इसी कारण से यूनानियों ने इस शहर को लाइकोपोलिस (ग्रीक में 'भेड़िया' या 'सियार' के लिए) कहना शुरू कर दिया। प्राचीन काल में, सियुत एक महत्वपूर्ण राजनीतिक और वाणिज्यिक केंद्र था (यह शहर नील नदी के बाएं किनारे पर स्थित था)। तीसरी शताब्दी में इस क्षेत्र में ईसाई धर्म पहुँचा। आज, सियुत मिस्र के सबसे जीवंत शहरों में से एक है, जिसकी आबादी 30,000 तक है।

[2679] गाल - आज का फ्रांस - एक ऐसा देश है जिसकी सीमा भूमध्य सागर, पिरेनेज़, अटलांटिक महासागर, राइन नदी और आल्प्स से मिलती है।

[2680] सिएना शहर लाइकोपोलिस से बहुत दूर नहीं स्थित था और यह नील नदी के पूर्वी तट पर स्थित था। प्राचीन काल में, यह शहर विशाल ग्रेनाइट जमा के स्थल के रूप में उल्लेखनीय था। आज, सिएना को असवान के नाम से जाना जाता है और इसकी जनसंख्या 4,000 है।

पता चला और जब भी वह अपने दुश्मनों के खलिाफ अभयिान पर नकिलता, तो वह संत से अपनी प्रार्थनाओं और अभयिान की सफलता के बारे में भवषि्यवाणी के लएि कहता था।

संत जॉन के पास भवषि्यवाणी का महान वरदान था, जैसा कि उनके साथ काम करने वाले संतों ने बताया है (जैसा कि संत के जीवन के इतहिासकार पल्लाडयिस[2681] ने उल्लेख कयिा है); इन संतों का पवत्रि, सद्गुणों से भरा जीवन हमें उनके शब्दों की सच्चाई का आश्वासन देता है। यहाँ संत की अद्भुत दूरदर्शता के कुछ उदाहरण दएि गए हैं।

एक नश्चिति ट्रबि्यून[2682] , संत के पास आकर, अपनी पत्नी को उनसे मलिने की अनुमति मांगने लगा, क्योंकि वह उन्हें देखने के लएि बहुत उत्सुक थी। हालाँकि संत जॉन ने उसे अनुमति नहीं दी, क्योंकि वे न तो महलिाओं को देखना चाहते थे और न ही उनसे देखे जाना चाहते थे, ठीक वैसे ही जैसे वे पुरुषों से भी केवल एक छोटी सी खड़िकी के माध्यम से बात करते थे। लेकनि जब ट्रबि्यून ने संत से बहुत देर तक और लगातार वनिती की, तो संत ने उसकी पत्नी की आस्था को देखकर और उसे सपने में प्रकट होने का वादा करके, ट्रबि्यून से कहा:

'मैं आज ही रात उसके सामने प्रकट होऊँगा, ताकि उसे अब मुझसे अपनी भौतकि आँखों से दखिने की भीख न माँगनी पड़े।'

ट्रबि्यून ने संत के शब्द अपनी पत्नी तक पहुँचाए।

वास्तव में, उसी रात ट्रबि्यून की पत्नी ने संत को सपने में देखा; वह उसके पास आए और कहा:

'"*औरत, मेरा तुझसे क्या काम?*" (यूहन्ना 2:4)। तू मेरा चेहरा क्यों देखना चाहती थी? क्या मैं कोई भवषि्यवक्ता हूँ? क्या मैं कोई संत-महात्मा हूँ? मैं एक पापी आदमी हूँ, जो बाकी सभी लोगों की तरह ही कमजोरयिों का शकिार है। लेकनि मैंने ईश्वर से वनिती की है कि यह तेरे और तेरे पति के वश्विास के अनुसार हो।'

यह कहकर, संत उस महलिा से दूर चले गए।

जब ट्रबि्यून की पत्नी जागी, तो उसने अपने पति को संत द्वारा सपने में कहे गए शब्द बता दएि और संत के चेहरे और उनके कपड़ों का वर्णन कयिा; फरि उसने अपने पति से संत को उन पर दखिाई गई दया के लएि धन्यवाद देने को कहा। जब उस महलिा का पति संत की कुटयिा पर आया, तो वह संत से एक भी शब्द कहने से पहले ही संत ने उससे कहा:

'देखो, मैंने तुम्हारी प्रार्थना स्वीकार कर ली है और मैं तुम्हारी पत्नी के स्वप्न में प्रकट हुआ हूँ, ताकि वह अब मुझसे अपनी भौतकि आँखों के सामने प्रकट होने का आग्रह न करे।'

एक अन्य अवसर पर, एक सैन्य कमांडर, जसिकी पत्नी गर्भवती थी और प्रसव का समय नजदीक था, संत जॉन के पास आया और उससे अपने और अपनी पत्नी के लएि प्रार्थना करने को कहा। ऐसा हुआ कि जिसि क्षण कमांडर संत के सेल में पहुँचा, उसकी पत्नी प्रसव की पीड़ा से बहुत अधकि पीड़ा में थी और पहले ही मौत के करीब थी। लेकनि पूजनीय जॉन ने उस व्यक्ति से कहा:

'यदि तुम ईश्वर की उस दया को जानते, जो तुम्हें एक पुत्र दे रहा है, तो तुम ईश्वर की स्तुति करते; परन्तु बच्चे की माँ मृत्यु के समीप है। जब तुम मुझे छोड़कर जाओगे, तो तुम बच्चे को पहले से ही सात दनि का पाओगे[2683] । उसका नाम जॉन रखना, और जब वह सात वर्ष का हो जाए, तो उसे तपस्या करने के लएि मठों में रेगस्तिान में भेज देना।'

संत जॉन ने दूर-दराज के स्थानों से आने वाले कई लोगों को इस प्रकार और इसी तरह की भवषि्यवाणयिाँ कीं। इसी तरह, आदरणीय फादर ने अपने साथी नागरकिों, लाइकॉपोलसि शहर के नविासयिों के लएि, जो अपनी आत्मा के लाभ के लएि लगातार उनसे मलिने आते थे, भवषि्य में होने वाली कई बातों की भवषि्यवाणी की। उन्होंने उन्हें यह भी बताया कि भवषि्य में क्या होने वाला था और कसिी ने दूसरों से गुप्त रूप से क्या कयिा था। उदाहरण के लएि, पूजनीय जॉन ने नील नदी में बाढ़[2684] और समृद्धि के वर्षों की भवषि्यवाणी की; इसी तरह, संत ने ईश्वर के आने वाले न्याय की भवषि्यवाणी की और उन लोगों की नदिा की जो अपने पापों के माध्यम से धरती पर ईश्वर का क्रोध ला रहे थे।

[2681] पैलाडयिस, जो जॉन द क्लयिर-साइटडि के समकालीन थे, ने अपनी कृति: 'προς Λαυσον Ιστορια' (लवसाइक) में कई तपस्वयिों के जीवन का वर्णन कयिा है।

[2682] ट्राइब्यून – एक सैन्य कमांडर, वशिेष रूप से एक ट्राइब्यून (ट्राइबस) का प्रमुख – रोमन सेना का एक समूह या टुकड़ी।

[2683] यह स्पष्ट रूप से कमांडर के आवास से आदरणीय जॉन के तपोवन तक का सात दविसीय सफर था।

[2684] नदी नील समय-समय पर मस्रि में बाढ़ लाती थी, जो कृषि करने वाले मस्रिवासयिों के लएि अत्यंत महत्वपूर्ण थी, क्योंकि नदी की बाढ़ मट्टिी के लएि सचिाई का मुख्य, यदि एकमात्र नहीं, तो स्रोत थी।

यद्यपि संत जॉन व्यक्तिगत रूप से उपचार नहीं करते थे, वे बीमारों को पवित्र तेल देते थे; इससे स्वयं का अभिषेक करके वे अपनी बीमारियों से ठीक हो जाते थे। उदाहरण के लिए, एक रोमन सेनेटर की पत्नी, जिसकी दृष्टि चली गई थी और उसकी आँखों में मोतियाबिंद था, ने अपने पति से उपचार के लिए उसे रेवरेंड के पास ले जाने के लिए कहा। लेकिन उसके पति ने उससे कहा कि कोई भी महिला कभी संत जॉन के पास नहीं आई थी और महिलाओं को उन्हें देखने की बिल्कुल भी अनुमति नहीं थी। हालाँकि, उस महिला ने अपने पति से विनती की कि वह कम से कम संत तक उसकी प्रार्थना पहुँचाए और उसके लिए ईश्वर से प्रार्थना करे। उसके पति ने अपनी पत्नी की बात मानी। इसके बाद, संत जॉन ने उस महिला को कुछ पवित्र तेल भेजा, जिससे उसने दिन में तीन बार अपनी आँखों पर लेप लगाया। इसके तीसरे दिन, उस महिला की दृष्टि वापस आ गई और उसने ईश्वर की स्तुति की।

नाइट्रियन मरुभूमि में[2685] सात तपस्वी थे: मैं स्वयं (जैसा कि संत जॉन के जीवन के इतिहासकार पल्लैडियस ने वर्णन किया है) और इवाग्रियस के शिष्य अल्वियनस और अम्मोन। वे सभी संत जॉन के पुण्य जीवन के बारे में और अधिक जानना चाहते थे, और इवाग्रियस ने कहा:

'मैं पहले जाऊँगा और किसी से संत जॉन के जीवन के बारे में पता लगाऊँगा। लेकिन अगर मुझे उनके बारे में कुछ भी पता नहीं चला, तो मैं माउंट लाइकोपोलिस से आगे नहीं जाऊँगा।'

पैलाडियस बताते हैं, 'यह सुनकर, मैं एक दिन के लिए रुका, और अगले दिन, किसी को कुछ बताए बिना, ईश्वर पर भरोसा करके, मैं थेबाइड[2686] के लिए निकल पड़ा। जब मैं पहाड़ और संत जॉन की कुटिया पर पहुँचा, तो उनके शिष्यों ने मुझे बताया कि रविवार से शनिवार तक माननीय पिता अपने से बात करने आए किसी भी व्यक्ति से नहीं मिलते। इसलिए मुझे शनिवार तक इंतजार करना पड़ा। शनिवार को, दिन के दूसरे घंटे में, मैं संत की कोठरी की ओर बढ़ा और उन्हें खिड़की के पास बैठे पाया, वे उनसे मिलने आए लोगों से बातचीत कर रहे थे। मुझे नमस्ते करने के बाद, माननीय पिता ने मुझसे अपने एक शिष्य के माध्यम से पूछा:

'आप कहाँ से हैं, और क्यों आए हैं? मुझे लगता है कि आप इवाग्रियस के मठ से हैं।'

हमारी बातचीत के दौरान, उस देश का कमांडर, अलिम्पियस नामक एक व्यक्ति, महात्मा से मिलने आया; जॉन ने मुझसे अपनी बातचीत रोक दी, और मैं थोड़ा पीछे हट गया ताकि मैं कमांडर के साथ उनकी चर्चा में बाधा न डालूँ। जब रेवरेंड काफी देर तक कमांडर से बात कर रहे थे, तो मुझे बुरा लगा और मैं मन ही मन उस सम्माननीय वरिष्ठ की निंदा करने लगा, जो मुझे अनदेखा करके कमांडर का सम्मान कर रहे थे। अधीरता की चरम सीमा पर पहुँचकर, मैं बिना विदा लिए ही रेवरेंड के पास से जाने ही वाला था। लेकिन संत जॉन ने मेरे विचारों को भाँपते हुए, अपने शिष्य, जिसका नाम थियोडोर था, को बुलाया और उससे कहा:

'जाकर उस भाई से कहो कि वह क्रोध न करे, क्योंकि मैं अभी राज्यपाल को विदा कर रहा हूँ और उससे बात करूँगा।'

जब ये शब्द मुझे सुनाए गए, तो मैं यह देखकर बहुत आश्चर्यचकित हुआ कि आदरणीय जॉन ने मेरे विचारों को जान लिया था, और मुझे यकीन हो गया कि वह एक पवित्र और दूरदर्शी व्यक्ति थे।

जब सेनापति जॉन से थोड़ी दूर हट गया, तो संत ने मुझे बुलाया और मुझसे कहा:

'तुम मुझसे क्यों नाराज़ हुए? क्या तुम्हें मुझमें कुछ ऐसा मिला जो तुम्हें आपत्तिजनक लगा? तुमने मेरे बारे में ऐसा क्यों सोचा जो न तो मुझे और न ही तुम्हें अपने विचारों में भी लाना चाहिए? क्या तुमने पवित्र धर्मग्रंथ में यह नहीं पढ़ा कि लिखा है: *"चिकित्सक की आवश्यकता स्वस्थ लोगों को नहीं, बल्कि बीमारों को होती है"* (मत्ती 9:12)? मैं तुम्हें जब चाहूँ तब पा सकता हूँ; और तुम मुझे जब चाहो तब पाओगे; और यदि मैं तुम्हें सांत्वना न भी दूँ, तो अन्य भाइयों और पिताओं द्वारा तुम्हें सांत्वना दी जाएगी: हालाँकि, सेनापति सांसारिक चिंताओं में डूबकर और शैतान की शक्ति में आकर, केवल थोड़े समय के लिए सत्य के ज्ञान को प्राप्त हुआ और, एक क्रूर स्वामी से भागने वाले दास की तरह, शैतान से भागकर मेरे पास आया, ताकि वह अपनी आत्मा के लिए मुझसे लाभ प्राप्त कर सके। मेरी ओर से यह अन्यायपूर्ण होता कि मैं उसे अनदेखा कर आपके साथ बातचीत जारी रखता, क्योंकि आप हमेशा अपनी मुक्ति का ध्यान रखते हैं।

[2685] यह मरुभूमि निचले मिस्र में स्थित थी।

[2686] थेबाइड मध्य मिस्र में स्थित था।

यह सुनकर, मैं (जैसा कि पिल्लैडियिस वर्णन करते हैं) पूरी तरह से आश्वस्त हो गया कि वह एक पवित्र व्यक्ति थे, और मैंने उनसे मेरे लिए प्रार्थना करने का अनुरोध किया। उन्होंने, मुझसे स्नेहपूर्वक बात करते हुए और अपने दाहिने हाथ से मेरी बाईं गाल को हल्के से छूते हुए, मुझसे कहा:

'तुम्हारे आगे बहुत दुख हैं, और तुमने पहले ही मरुभूमि छोड़ने की अपनी इच्छा से लड़ते हुए एक कठिन संघर्ष सहन किया है; तुम उस इच्छा के आगे नहीं झुके, भले ही शैतान ने तुम्हें मरुभूमि छोड़ने का एक विश्वसनीय बहाना दिया, तुम्हें तुम्हारे पिता और भाई के तुमसे प्रेम की याद दिलाते हुए। मैं तुम्हें एक शुभ समाचार देता हूँ: तुम्हारे पिता और तुम्हारा भाई दोनों कुशल हैं और उन्होंने संसार का त्याग कर दिया है; तुम्हारे पिता सात वर्ष और जीवित रहेंगे। और तुम, साहस से लैस होकर, रेगिस्तान में परिश्रम करते रहो और यहाँ से अपने स्वदेश लौटने के बारे में मत सोचो, क्योंकि लिखा है: *'जो कोई हल चलाने में अपना हाथ रखकर पीछे मुड़कर देखता है, वह परमेश्वर के राज्य के योग्य नहीं है'* (लूका 9:62)।

संत के वचन सुनकर और उनसे अपने श्रम के लिए बल पाकर, मैंने (पैलाडियिस कहते हैं) ईश्वर का धन्यवाद किया कि इस पवित्र पुरुष के माध्यम से, उन्होंने मुझे शैतान की युक्तियाँ प्रकट कीं और उन्हें पार पाने में मेरी मदद की। एक अन्य अवसर पर, पूजनीय पिता ने मुझसे स्नेहपूर्वक कहा:

'क्या तुम बिशप बनना चाहते हो?'

जिसका मैंने उत्तर दिया:

'नहीं, क्योंकि मैं पहले से ही एक बिशप हूँ।'

तब संत ने मुझसे पूछा:

'आप किस नगर में बिशप हैं?'

मैंने उत्तर दिया:

[2687]मैं रसोई, भोजन, तंबुओं और पात्रों की देखरेख करता हूँ; मैं, उदाहरण के लिए, शराब का स्वाद चखता हूँ, और अगर वह खट्टी हो, तो मैं उसे छोड़ देता हूँ, लेकिन अगर वह मीठी हो, तो मैं उसे पी लेता हूँ; मैं भोजन के बर्तन भी देखता हूँ, और अगर उसमें नमक या अन्य मसालों की कमी हो, तो मैं उन मसालों को भोजन में डालता हूँ और फिर उस भोजन को खाता हूँ, जो मसाले की वजह से स्वादिष्ट हो गया होता है। मैं अन्य मामलों में भी यही करता हूँ, हमेशा अपने लिए सबसे अच्छा चुनता हूँ। यही मेरा बिशप का पद है, जिसके लिए मुझे सुख-भोग के प्रति मेरे प्रेम ने नियुक्त किया है।

रेवरेंड मुस्कुराते हुए मुझसे बोले:

'मज़ाक करना बंद करो, क्योंकि तुम सचमुच एक बिशप बनोगे और तुम्हें बहुत सी कठिनाइयों और दुखों को सहना होगा; अगर तुम इन कठिनाइयों और दुखों से बचना चाहते हो, तो रेगिस्तान मत छोड़ना, क्योंकि यहाँ, रेगिस्तान में, कोई तुम्हें बिशप नहीं बना सकता।'

उस आदरणीय व्यक्ति को छोड़कर, मैं (जैसा कि पिल्लैडियिस वर्णन करते हैं) अपने रेगिस्तान, अपने स्थायी घर के लिए निकल पड़ा, और मैंने पूरे समुदाय को उस सम्मानित और पवित्र व्यक्ति, आदरणीय जॉन के बारे में बताया। लेकिन मैं, एक पापी, बाद में संत जॉन द्वारा मेरे बारे में कहे गए शब्दों को भूल गया: तीन साल बाद, मुझे पेट की बीमारी हो गई और, भाइयों की सलाह पर, मैं डॉक्टरों से मिलने के लिए अलेक्जेंड्रिया[2688] के लिए रवाना हो गया। लेकिन जब मेरी बीमारी ठीक नहीं हुई बल्कि और बिगड़ गई, तो अलेक्जेंड्रिया के डॉक्टरों ने मुझे फिलिस्तीन जाने की सलाह दी, क्योंकि वहाँ का मौसम गर्म और स्वास्थ्यप्रद है। पैलेस्टाइन के लिए रवाना होकर, मैं कुछ समय के लिए वहाँ रहा और अपनी बीमारी से कुछ ठीक होने पर, वहाँ से बिथिनिया[2689] गया और वहाँ, हालाँकि मुझे अब याद नहीं कि कैसे – चाहे मानव इच्छा से या ईश्वर की कृपा से – ईश्वर जाने कैसे, मुझे बिशप के पद के लिए योग्य समझा गया। इसके बाद, मैं दुख में पड़ गया, क्योंकि यह पद मेरी शक्ति से परे था। तब मुझे मेरे बारे में परम पूजनीय जॉन की भविष्यवाणी याद आई, हालांकि उस समय तक परम पूजनीय का निधन हो चुका था। फिर मुझे याद आया कि परम पूजनीय ने मुझे क्या कहा था, मुझे रेगिस्तान में रहने के लिए प्रोत्साहित करते हुए:

[2687] 'निरीक्षण करना' – ग्रीक शब्द επισκοπεω से, जिससे 'बिशप' (επισκοπος) शब्द बना है, जिसका अर्थ 'निरीक्षक' या 'संरक्षक' होता है।

[2688] अलेक्जेंड्रिया – व्यापार और शिक्षा के मामले में प्राचीन काल का सबसे प्रसिद्ध मिस्र का शहर, जो भूमध्य सागर के तट पर स्थित था। ईसाई चर्च के इतिहास में, अलेक्जेंड्रिया को धार्मिक विवादों के स्थान और कई विधर्मियों के जन्मस्थान के रूप में जाना जाता है। आज, अलेक्जेंड्रिया तुर्की नाम 'इस्केन्डेरुन' से जाना जाता है और यह एक काफी बड़ा वाणिज्यिक और प्रशासनिक केंद्र है।

[2689] बिथिनिया – एशिया माइनर का एक क्षेत्र।

'मैं इस कोठरी में चालीस साल से रहता हूँ, और इस पूरे समय में मैंने न तो कसिी महलिा का चेहरा देखा है, न ही एक भी सक्कि, और न ही कसिी को खाते-पीते देखा है; इसी तरह, कसिी ने मुझे खाते-पीते भी नहीं देखा है।'

संत जॉन के साथ उस बातचीत के बाद, जब मैं (जैसा कि पल्लैडियस वर्णन करते हैं) अपनी सामान्य जगह पर लौटा और भाइयों और पतिाओं को वह सब कुछ बताया जो मैंने संत से देखा और सुना था, तो हम सभी सात लोग दो महीने बाद परम आदरणीय पति के पास चल पड़े।

जब हम पूजनीय जॉन के मठ में पहुँचे, तो उन्होंने हमारा गर्मजोशी से स्वागत कयिा, और अपने चेहरे पर मुस्कान के साथ हम में से प्रत्येक को व्यक्तगित रूप से अभविादन कयिा। जैसे ही हम पहुँचे, हमने संत से हमारे लिए प्रार्थना करने का आग्रह करना शुरू कर दयिा, जैसा कि मिस्रि के तपस्वयिों के बीच रविाज है। लेकनि उन्होंने हमसे पूछा:

'क्या तुममें से कोई पुरोहति नहीं है?'

हम सभी ने उत्तर दयिा:

'कोई नहीं है।'

हम सभी को ध्यान से देखते हुए, संत ने उस एक पुरोहति को पहचान लयिा जसिने अपना पद छपिा रखा था, क्योंकि हम में से एक डीकन था, और हम में से कसिी को भी यह नहीं पता था कि वह डीकन था, सविाय एक भाई के; लेकनि उस पुरोहति ने, वनिम्रता के कारण, अपना पद छपिा रखा था, और उस भाई को, जो यह जानता था, उसे डीकन कहने से मना कर दयिा था, क्योंकि पवत्रि तपस्वयिों की नकल करने की अपनी इच्छा में, वह भाई खुद को एक ईसाई का नाम धारण करने के भी अयोग्य समझता था। पूजनीय जॉन ने, अपने हाथ से उस भाई की ओर इशारा करते हुए, कहा:

'यह डीकन है।'

लेकनि जब उस भाई ने यह इनकार कयिा कि वह डकिन का पद धारण करता है, तो संत जॉन ने, उस छोटी सी खड़िकी से अपना हाथ बढ़ाकर जसिसे वह हमसे बात कर रहे थे, डकिन का दाहनिा हाथ पकड़ा, उसे चूमा, और उससे कहा:

'ईश्वर की कृपा को अस्वीकार मत करो। 'भाई, ईश्वर की देन को छपिाकर झूठ मत बोलो, क्योंकि झूठ तो ईसाइयों के लिए अजनबी होना चाहिए; यह तुममें चाहे बड़ा हो या छोटा, इसकी प्रशंसा नहीं की जा सकती – क्योंकि, जैसा कि उद्धारकर्ता कहते हैं, झूठ शैतान का है: शैतान झूठा है और झूठ का पति है (यूहन्ना 8:44)।'

सम्माननीय पति द्वारा फटकारे जाने पर डकिन चुप रहा, संत की शक्षिा को ध्यान से सुनता रहा।

जब हमने सभी अपनी प्रार्थना समाप्त कर ली (जैसा कि पल्लाडियस वर्णन करते हैं), तो बुखार से पीड़ति भाइयों में से एक ने पूजनीय जॉन से उसे ठीक करने के लिए कहा। रेवरेंड फादर ने उस भाई से कहा कि यह बीमारी उसकी आत्मा के लिए लाभदायक थी, लेकनि फरि भी उन्होंने उस भाई को पवत्रि तेल से अभषिेक करने का आदेश दयिा, क्योंकि वे उसकी बीमारी से कम, बल्कि उसके अवश्विास को ठीक करना चाहते थे। कुछ ही समय बाद, वह भाई पूरी तरह से ठीक हो गया।

हम भाग्यशाली थे कि हमने पवत्रि जॉन को (जैसा कि पल्लैडियस बताता है) नब्बे वर्ष की आयु में भी देखा; उनका शरीर उपवास की कठोरता से इतना दुबला-पतला हो गया था कि उनकी दाढ़ी तक नहीं उगती थी; व वे केवल पेड़ों का फल खाते थे, और वह भी केवल सूर्यास्त के बाद; कम उम्र से ही उपवास के आदी होने के कारण, अपनी वृद्धावस्था में वे कभी ब्रेड या आग पर पकाया गया कोई अन्य भोजन नहीं खाते थे।

जब उन्होंने हमें बैठने के लिए आमंत्रति कयिा, तो हमने ईश्वर का धन्यवाद कयिा, जन्हिोंने हमें पूजनीय पति को देखने और उनसे बातचीत करने का सौभाग्य प्रदान कयिा था। उन्होंने भी, हमें अपने प्रयि बच्चों के रूप में स्वागत करते हुए, अपने चेहरे पर मुस्कान के साथ हमसे कहा:

'मेरे बच्चों, तुम कहाँ से आए हो? तुम कसि देश से मेरे पास आए हो, जो एक पापी और नम्र व्यक्त हूँ?'

क्योंकि हमने अपनी मातृभूमि का नाम बताकर और यह संकेत देकर कि हम स्थायी रूप से नाइट्रयिन मरुभूमि में नविास करते हैं, कहा कि हम वशिेष रूप से यरूशलेम से आए थे ताकि अपनी आत्माओं के हति के लिए उस संत को देख सकें, जसिके बारे में हमने दूसरों से बहुत कुछ सुना था।

तब धन्य योहन ने हमसे कहा:

'मेरे प्रयि बच्चों! जब तुमने इतना कठनि सफर तय कयिा, तो तुमने क्या अद्भुत चीजें देखने की उम्मीद की थी! एक पापी, वनिम्र आदमी को देखकर तुम्हें क्या लाभ होगा जसिके पास आश्चर्य करने लायक कुछ भी नहीं है? ऐसे पवत्रि भवष्यिवक्ता और प्रेरति हैं, जो आश्चर्य और प्रशंसा के योग्य हैं, जनिकी रचनाएँ चर्चों में पढ़ी जाती हैं; आपको उन्हीं

पर आश्चर्य करना चाहिए और उनका अनुकरण करना चाहिए, मुझ पर नहीं। मैं आपके उत्साह को देखकर बहुत चकित हुआ, जिसने आपको आध्यात्मिक लाभ के लिए इतनी दूर से हमारे पास आने के लिए प्रेरित किया, और इस कठिन यात्रा के खतरों की परवाह नहीं की। हम, हालांकि, अपनी ही आलस्य के कारण, अपनी कोठरियों से भी बाहर नहीं निकलते। हालाँकि, यह ध्यान में रखें कि, भले ही आपका प्रयास प्रशंसा और अनुमोदन के योग्य हो, आप स्वयं को ऐसा व्यक्ति न मानें जिन्होंने कुछ अच्छा या प्रशंसनीय किया है; अपनी पूरी क्षमता से संतों के सदाचारी जीवन का अनुकरण करें, और यदि आप यह सब पूरा करते हैं (जो, वैसे, बहुत कम ही होता है), तो स्वयं पर भरोसा न करें या अपनी बड़ाई न करें। ऐसे बहुत से लोग हैं जो सद्गुणों में पूर्णता प्राप्त करके और घमंडी हो जाने के कारण, ऊँचाइयों से गिरकर खाई में जा गिरे हैं। ध्यान से देखो: क्या तुम्हारी प्रार्थनाएँ भक्तिपूर्ण हैं? क्या तुम्हारा हृदय निर्मल है? क्या प्रार्थना करते समय तुम्हारा मन अन्य विचारों में व्यस्त नहीं रहता? यह देखें कि क्या आप अपनी पूरी आत्मा से संसार से मुंह मोड़ चुके हैं; क्या आप दूसरों के गुणों का अनुसरण करते हुए साथ ही अपने गुणों का बड़बोलापन करते हैं; क्या आप दूसरे लोगों के लिए एक अच्छा उदाहरण प्रस्तुत करने का ध्यान रखते हैं; सावधान रहें कि खुद को धर्मी न समझें, और न ही अपने किसी अच्छे काम पर घमंड करें; ध्यान रखें कि, प्रार्थना करते समय सांसारिक मामलों के विचार आपके मन में न आएँ, क्योंकि इससे अधिक मूर्खतापूर्ण कुछ भी नहीं है कि आप अपने होठों से ईश्वर से बात करें जबकि आपके विचार उनसे दूर हों। यह अक्सर उन लोगों के साथ होता है जो दुनिया को त्यागने के बजाय, दुनिया को खुश करने में व्यस्त रहते हैं। जो व्यक्ति अनेक बातों में उलझा रहता है, वह स्वयं को सांसारिक और क्षणिक चीजों की चिंता में दे देता है; लेकिन, ऐसी चिंताओं में स्वयं को देने के कारण, वह अपनी आध्यात्मिक आँखों से ईश्वर को और नहीं देख पाता। जो व्यक्ति हमेशा ईश्वर के बारे में सोचता है, उसे सांसारिक और व्यर्थ के सभी विचारों से मुक्त होना चाहिए, जैसा कि पवित्र शास्त्र में लिखा है: *'स्थिर हो जाओ, और जानो कि मैं परमेश्वर हूँ'* (भजन संहिता 45:11)। जिस व्यक्ति को ईश्वर का कुछ ज्ञान प्राप्त हो गया है (क्योंकि कोई भी ईश्वर का पूर्ण ज्ञान प्राप्त नहीं कर सकता), उसके लिए ईश्वर के रहस्य प्रकट हो जाते हैं, और वह भविष्य को जैसे वर्तमान ही देखता है; और, संतों की तरह, वह चमत्कार करता है और अपनी प्रार्थना के माध्यम से, जो कुछ भी वह ईश्वर से माँगता है, प्राप्त करता है।

आदरणीय जॉन ने अपने पास आए भाइयों से इस और इससे भी बहुत कुछ बात की, और एक पिता की तरह अपने बच्चों को सांत्वना और शिक्षा देते हुए उनका मार्गदर्शन किया। फिर उन्होंने उन लोगों के बारे में कई कहानियाँ सुनाई जो घमंडी हो गए थे और जिनकी अपने आप से बड़ी उम्मीदें थीं; अन्य बातों के अलावा, उन्होंने निम्नलिखित कथा सुनाई:

एक साधु बाहरी रेगिस्तान की एक गुफा में रहता था[2690] , जो अपने हाथों की मेहनत से अपना जीवन यापन करता था, निरंतर ईश्वर से प्रार्थना करता था और सदाचार में उत्कृष्ट था। यह जानकर कि वह एक शुद्ध और सदाचारी जीवन जी रहा था, भिक्षु घमंडी हो गया; उसने खुद को धार्मिक और पवित्र मानना शुरू कर दिया, और मन ही मन सोचा कि वह फिर कभी पाप में नहीं पड़ेगा। ईश्वर की अनुमति से, एक शाम देर से एक राक्षस एक सुंदर महिला का रूप धारण करके भिक्षु के पास आया, जो ऐसा प्रतीत हो रहा था कि वह रेगिस्तान में रास्ता भटक गई है; गुफा का दरवाज़ा खुला देखकर, वह कथित महिला अंदर आ गई और भिक्षु के पैरों पर गिरकर उससे गुफा में आश्रय देने की विनती करने लगी, यह बताते हुए कि रात हो चुकी थी। भिक्षु ने उस महिला पर दया करके उसे अपनी गुफा में आश्रय दे दिया, क्योंकि उसे किसी प्रलोभन का डर नहीं था, क्योंकि उसे अपनी शक्ति पर बहुत भरोसा था। संन्यासी ने उस महिला से पूछा कि वह कहाँ से आई है और वह रेगिस्तान में कैसे खो गई। राक्षस ने अपनी पत्नी का रूप धारण कर लिया था और उसने संन्यासी के साथ लंबी बातचीत की, उसे पाप करने के लिए लुभाया। संन्यासी, ध्यान से सुनते हुए, पहले ही पाप की ओर आकर्षित होने लगा था; कई कामुक बातचीत और पारस्परिक हँसी-मज़ाक के बाद, संन्यासी अपने विचारों से दिन-ब-दिन अधिक परेशान होने लगा; उसके भीतर वासना की ज्वाला और अधिक प्रज्वलित हो उठी, और वह पाप करने ही वाला था, तभी अचानक वह पत्नी, जोर से चिल्लाते हुए, उसकी पकड़ से एक छाया की तरह गायब हो गई और अदृश्य हो गई; तुरंत बाद, हवा में कई राक्षसों की आवाजें सुनाई दीं, जो भिक्षु का मज़ाक उड़ा रहे थे और उसे इन शब्दों से फटकार रहे थे:

'जो अपना गौरव बढ़ाता है, उसे नीचा दिखाया जाएगा; तुमने अपना गौरव स्वर्ग तक बढ़ाया है, और इसलिए अब तुम्हें नरक में फेंक दिया गया है।'

[2690] मिस्र के संन्यासियों का मरुभूमि दो भागों में विभाजित था: आंतरिक और बाहरी। पहला भाग अधिक अंतर्देशीय था, जबकि दूसरा भाग नील नदी के निकट स्थित था।

अपना मज़ाक उड़ता देखकर, भिक्षु निराश हो गया और अपनी कुटिया और मरुभूमि को छोड़कर संसार में लौट आया: अपनी ही बारे में उसकी ऊँची राय उसे ऐसी गिरावट तक ले आई थी।

पश्चाताप सिखाते हुए और यह समझाते हुए कि जैसे राक्षस हमें निराशा और विनाश की ओर ले जाते हैं, वैसे ही हम उन पर विजय प्राप्त कर सकते हैं, ताकि वे अब हमारे खिलाफ हावी न हो सकें, आदरणीय जॉन ने निम्नलिखित कहानी सुनाई:

'एक नगर में एक युवक रहता था जिसने कई घोर पाप किए थे, लेकिन फिर, ईश्वर के भय से प्रेरित होकर, उसने पश्चाताप किया। अपने पूर्व पापी जीवन का शोक मनाने के लिए, वह कब्रिस्तान गया और वहाँ अपने पापों की अधिकता के कारण न तो ईश्वर का नाम लेने और न ही प्रार्थना करने की हिम्मत करते हुए, जमीन पर गिर पड़ा। तब वह युवक एक ताबूत में चढ़ा और अपने पापों पर रोते और विलाप करते हुए उसमें बंद हो गया। जब उसने ताबूत में सात दिन बिता लिए, तो वे राक्षस जो पहले उसे पाप की ओर ले गए थे, उसके पास आए और ज़ोर से चिल्लाए:

'हाय तेरे लिए, हे घृणित, अधर्मी मनुष्य, जो व्यभिचार से तृप्त है, जो इतनी अप्रत्याशित रूप से एक सदाचारी और हमारा शत्रु बन गया है! अब जब तुम हमारी गंदगी से भर गए हो तो तुम अपने लिए किसी भलाई की उम्मीद कैसे कर सकते हो? तुम ताबूत से उठकर हमारे साथ अपनी रोज़मर्रा की हरकतों में क्यों नहीं चले आते, क्योंकि व्यभिचारी और शराबी तुम्हारा बेसब्री से इंतज़ार कर रहे हैं! तुम अपनी वासना की पूर्ति के लिए क्यों नहीं जाते, जबकि तुम्हें अब मोक्ष की कोई आशा नहीं है? तुम अब हमारे हो, क्योंकि तुमने हर तरह के पाप किए हैं, और हमसे बचने की तुम्हारी कोशिश व्यर्थ है: तुम अब हमारी पकड़ से नहीं बचोगे!

उस युवक ने पिशाचों के उत्तर में कुछ नहीं कहा, वह उनकी बात सुनना भी नहीं चाहता था, बल्कि अपने पापों पर लगातार रोता रहा। बहुत समय तक दुष्टात्माओं ने उस युवक से ये और इसी तरह के शब्द कहे, उसे पाप करने के लिए प्रलोभित करते हुए; लेकिन जब उन्होंने देखा कि वह उनसे नहीं डरता और कब्रिस्तान से भागने का उसका कोई इरादा नहीं था, तो उन्होंने उसे बुरी तरह पीटना शुरू कर दिया और अगर ईश्वर ने अनुमति दी होती, तो वे उसे तुरंत मार ही डालते। तब दुष्टात्मा उस युवक से चले गए, और उसे मुश्किल से जीवित छोड़ गए। वह, जो बहुत देर तक मृतक की तरह जमीन पर पड़ा रहा, जैसे ही उसे होश आया, उसने एक बार फिर अपने पापों पर रोना और विलाप करना शुरू कर दिया। जब उसके रिश्तेदार, जो उसे हर जगह ढूंढ रहे थे, उसे कब्रिस्तान में पाए, तो उन्होंने उससे घर लौटने की विनती की; लेकिन वह उनकी बात सुनने तक को तैयार नहीं था, और कहने लगा कि वह अपनी पुरानी ज़िंदगी में लौटने के बजाय मर जाना पसंद करेगा।

अगली रात, राक्षसों ने उस युवक पर एक बार फिर से हमला किया, पहली बार की ही तरह बातें कहते हुए और उसे फिर से सताया; फिर राक्षस उससे पीछे हट गए। और तीसरी रात, राक्षसों ने अजेय व्यक्ति को हराने का प्रयास किया, लेकिन सफलता की उम्मीद छोड़कर, वे उसके धैर्य से भयभीत होकर उससे भाग गए; और भागते समय, राक्षसों ने पुकारा:

'तुमने हमें हरा दिया, तुमने हमें हरा दिया, तुमने हमें हरा दिया!'

इस प्रकार, विनम्रता के साथ संयोजन में पश्चाताप, और धैर्य के साथ संयोजन में साहस ने, राक्षसों को निराशा की ओर धकेल दिया, और वे अब उस युवक को कोई नुकसान नहीं पहुँचा सकते थे।

उस युवक ने अपना बाकी जीवन पुण्य कार्यों में बिताया और उन कई पापियों के लिए सच्ची पश्चाताप का एक आदर्श बना, जो अपनी मुक्ति से निराश हो चुके थे।

किसी व्यक्ति को विनाश की खाई में धकेलने और उसे ईश्वर की कृपा से वंचित करने वाले अहंकार पर, और किसी व्यक्ति को ईश्वर तक उठाने वाले विनम्रता पर चिंतन करते हुए, पूजनीय जॉन ने निम्नलिखित कहानी सुनाई:

एक बार एक भिक्षु था जो भीतरी रेगिस्तान में रहता था, जिसने अपने जीवन के कई वर्ष सदाचार में बिताए थे, लेकिन जो अपनी वृद्धावस्था में, राक्षसों की चालाकी से प्रलोभन का शिकार हो गया और अपने अहंकार के कारण लगभग नष्ट हो गया। उस संन्यासी ने गहरी मौन में अपना तपस्वी जीवन व्यतीत किया, और अपने सभी दिन-रात प्रार्थना, भजन-कीर्तन और ईश्वर के ध्यान में बिताए। अपने पुण्य जीवन के कारण, उन्हें दिव्य दर्शन भी प्राप्त हुए, जिनमें से कुछ उन्होंने जागते हुए अनुभव किए और कुछ अपनी नींद में (हालांकि उनकी नींद इतनी संक्षिप्त और हल्की थी कि उसे मुश्किल से ही नींद कहा जा सकता था)। यह भिक्षु देह-रहित जीवन के लिए इतनी लगन से प्रयास करता था कि वह शरीर के भोजन की बिल्कुल भी परवाह नहीं करता था; इस प्रकार, वह न तो ज़मीन जोतता था और न ही फलों के पेड़ों की देखभाल

करता था; ईश्वर पर अपना पूरा भरोसा रखकर, रेगिस्तान में बसने के बाद से उसने कभी इस बात की चिंता नहीं की कि वह अपने शरीर का पोषण कैसे या किससे करे। सभी सांसारिक लगावों को त्यागकर, वह ईश्वर के और करीब आने की तीव्र इच्छा में लीन था, और इस नश्वर दुनिया से अपने प्रस्थान का बेसब्री से इंतजार कर रहा था।

अदृश्य और स्वर्गीय चीजों पर लगातार ध्यान लगाते हुए, उस भिक्षु ने अपना अधिकांश समय एक सदाचारी जीवन जीते हुए बिताया, जबकि उसका शरीर अपने तपस्वी जीवन से कभी थका नहीं और उसकी आत्मा अपने श्रम की कठिनाई से कभी परेशान नहीं हुई। उसका जीवन, मानो, भौतिक और अलौकिक के बीच एक तरह के आरामदायक मध्य-मार्ग पर स्थित था; वह भिक्षु, मानो, न तो पूरी तरह से अलौकिक था और न ही पूरी तरह से भौतिक।

अपने पुण्य जीवन के लिए, इस भिक्षु को ईश्वर द्वारा एक अदृश्य हाथ से लाई गई रोटी का पुरस्कार मिला: अपनी गुफा में प्रवेश करने पर, उसे अपनी मेज पर दो-तीन दिनों तक चलने के लिए पर्याप्त मात्रा में ताज़ी रोटी मिलती थी। जब भी भिक्षु को भोजन से तरोताज़ा होने की आवश्यकता महसूस होती, तो वह ईश्वर से प्रार्थना करता, उस रोटी का सेवन करता, और फिर भजनों से अपनी आत्मा को पोषित करता, निरंतर ईश्वर की प्रार्थना और चिंतन में लगा रहता, दिन-प्रतिदिन खुद को निखारता और भविष्य की आशीर्वादों की आशा को पूरी तरह से समर्पित रहता। और उसने पहले ही अपने पुण्य जीवन के लिए ईश्वर से मिलने वाले अपने पुरस्कार और प्रतिफल के बारे में सोचना शुरू कर दिया था, और वह इस पुरस्कार की कल्पना इस तरह करता था मानो वह पहले से ही उसके हाथों में हो; लेकिन यही विचार उसके पतन का कारण बना।

उसे ऐसा लगा कि वह दूसरों की तुलना में परमेश्वर के सामने अधिक योग्य था और, किसी भी अन्य व्यक्ति से अधिक, परमेश्वर की अनुग्रह और स्वर्गीय आशीर्वाद प्राप्त करने का हकदार था; साथ ही, उसने अपने मन में सोचा कि वह किसी भी परिस्थिति में पाप में नहीं पड़ सकता और इतनी ऊँची और सदाचारी जीवन को नहीं छोड़ सकता।

जैसे ही भिक्षु ने अपने बारे में ऐसे विचार पाल लिए, उसके भीतर जल्द ही थोड़ी निराशा घर करने लगी; फिर आलस्य पनपने लगा, और जल्द ही निराशा और आलस्य ने उस पर पूरी तरह से कब्ज़ा कर लिया। वह सोकर उठने और भजन गाने में दिन-ब-दिन देर करने लगा, और उसकी प्रार्थनाएँ हर गुजरते दिन के साथ छोटी होती गईं। उसके विचारों ने उससे कहा: 'मुझे थोड़ी आराम की ज़रूरत है,' और वह अपने विचारों के आगे झुक गया और उसके हृदय में बेचैनी होने लगी; प्रयास करके, उसने अपनी आलस्य और परेशान करने वाले विचारों पर काबू पा लिया, लेकिन फिर से वह अपनी पुरानी पीड़ा और आलस्य के आगे झुक गया।

अपनी रोज़ की प्रार्थनाओं के बाद, एक दिन गुफा में प्रवेश करते ही, उसे मेज़ पर पहले की तरह रोटी मिली—जो ईश्वर ने अदृश्य रूप से भेजी थी—लेकिन अब वह पहले जैसी शुद्ध नहीं थी। रोटी से अपने शरीर को पोषण देने के बाद, भिक्षु ने अपने अशुद्ध विचारों को त्याग नहीं दिया; उसे यह एहसास नहीं हुआ कि वह उनसे अपनी आत्मा को नुकसान पहुँचा रहा था, और न ही उसने अपने इस पहले घाव का इलाज खोजने का प्रयास किया, क्योंकि पापपूर्ण विचारों को पालना और उनमें आनंद लेना उसके लिए एक तुच्छ बात थी।

अगले दिन, शाम को, सामान्य प्रार्थना और भजन-गायन के बाद, जब वह भोजन करने के लिए अपनी गुफा में गया, तो उसने पहले की तरह रोटी पाई, लेकिन अब वह गंदी और अपवित्र थी, जिससे वह बहुत हैरान और दुखी हुआ; हालाँकि, रोटी लेकर, उसने उसका स्वाद चखा और अपनी ताकत वापस पा ली।

जब तीसरी रात आई, तो पहली पीड़ा में एक और पीड़ा जुड़ गई: अशुद्ध विचार उसे और अधिक परेशान करने लगे, और वासना से वह इतना परेशान हो गया कि उसने कल्पना की कि वह एक महिला के बगल में लेटा हुआ है।

जब रात खत्म हुई, तो उस भिक्षु ने सुबह अपनी नियमित प्रार्थना की, लेकिन वह पहले से ही अशुद्ध विचारों से गहराई से परेशान था। उस शाम, हालांकि, वह कुछ रोटी खाने के लिए अपनी कोठरी में गया, लेकिन पाया कि वह न केवल अपवित्र थी, बल्कि ऐसा लग रहा था जैसे चूहों और कुत्तों ने उसे चबाया हो, क्योंकि फर्श पर केवल रोटी के टुकड़े बिखरे पड़े थे। तब उस भिक्षु ने आह भरकर एक आँसू बहाया, परन्तु अपने अशुद्ध विचारों और व्यभिचार की वासना पर विजय पाने के लिए वह हृदय से उतना पश्चात्तापी नहीं था, जितना उसे होना चाहिए था। फर्श पर पड़े रोटी के टुकड़ों को उठाकर उसने उनका एक छोटा सा हिस्सा खा लिया; इससे तृप्त न होकर वह सोने चला गया। तुरंत ही उसके मन में अनेक अशुद्ध और व्यर्थ विचारों ने घर कर लिया, जो उसे रेगिस्तान से दूर सांसारिक जीवन की ओर खींच रहे थे; उसी समय, उसके भीतर कामाग्नि प्रबल रूप से भड़क उठी, और वह अब अपने आप से संघर्ष नहीं कर सकता था।

ईश्वर की अनुमति से (जिन्होंने एक समय के लिए संन्यासी को अहंकार से दूर करने के लिए ऐसा चाहा था), संन्यासी अपने बिस्तर से उठा और उसी रात रेगिस्तान की ओर चल पड़ा, इस उम्मीद में कि कहीं कोई सांसारिक बस्ती मिल जाए।

जब दिन चढ़ने लगा और सूरज की तपिश असह्य हो गई, तो साधु अपनी यात्रा से थक गया, क्योंकि वह अब जवान नहीं रहा था, जबकि जिस रास्ते पर वह निकला था, उसका अंत अभी भी बहुत दूर था। इसलिए उसने इधर-उधर देखा कि क्या कहीं कोई मठ है जहाँ वह आराम कर सके। ऐसा हुआ कि, ईश्वर की कृपा से, उसे अपने रास्ते में एक मठ मिला। जब वरिष्ठ उसमें प्रवेश किए, तो मठ के भाइयों ने उनका बहुत ही स्नेहपूर्वक और सम्मानपूर्वक स्वागत किया, मानो वे कोई महान तपस्वी हों; उन्होंने उनका चेहरा और पैर धोए, और एक प्रार्थना करने के बाद, प्रेम से उन्हें खाने के लिए कुछ दिया। जब साधु की कुछ ताकत वापस आ गई, तो भाइयों ने उनसे शैतान की चालों से खुद को कैसे बचाएं और अशुद्ध विचारों पर कैसे काबू पाएं, इस पर कुछ उपदेश देने के लिए कहा।

महात्मा ने उन्हें सिखाना शुरू किया, एक पिता की तरह अपने बच्चों को समझाते हुए, और उन्हें अपने तपस्या के प्रयासों में दृढ़ और साहसी रहने के लिए प्रोत्साहित किया, क्योंकि जल्द ही उन्हें मसीह के मठों में अपने श्रम से विश्राम मिलेगा; महात्मा ने भिक्षुओं से और भी बहुत कुछ कहा, उन्हें अपने तपस्या के प्रयासों में दृढ़ रहने की शिक्षा दी।

जब वृद्ध ने अपना प्रवचन समाप्त कर लिया और एक एकांत स्थान पर कुछ समय के लिए विश्राम करने लेटे, तो वे इस बात पर मनन करने लगे कि उन्होंने दूसरों को तो उपदेश दिया, पर स्वयं पर बिल्कुल भी ध्यान क्यों नहीं दिया, दूसरों को उनकी आत्माओं के लाभ के लिए उपदेश देते हुए, जबकि स्वयं को बहका रहे थे; दूसरों को मोक्ष के मार्ग पर ले जा रहे थे, जबकि वे स्वयं मोक्ष से और दूर भटक रहे थे और विनाश की ओर खिंचे रहे थे।

इस प्रकार मनन करते हुए, वृद्ध को एहसास हुआ कि अशुद्ध विचारों ने उस पर हावी हो गए थे, जिस पर वह एक बार फिर से मरुभूमि में लौट आया, अब वह चुपचाप नहीं चल रहा था, बल्कि जैसे अपनी पूर्व निवास-स्थल की ओर भाग रहा हो, अपने पतन पर रोते हुए और कह रहा था: *'यदि प्रभु मेरे सहायक न होते, तो मेरी आत्मा शीघ्र ही नरक में निवास कर चुकी होती'* (भजन संहिता 93:17)। और जो कुछ बुद्धिमान ने कहा था, वह उस भिक्षु के लिए सच हुआ: *'भाई भाई की सहायता करता है, जैसे एक दृढ़ और ऊँचा नगर; वैसे ही एक राज्य भी तब दृढ़ होता है जब उसकी नींव अच्छी हो'* (नीतिवचन 18:20)।

उस समय से, वह भिक्षु पूरी तरह से सुधर गया और अपने पाप से शुद्ध हो गया; उसने खुद को अपनी गुफा में बंद कर लिया, वह जमीन पर गिर पड़ा, अपने सिर पर धूल छिड़कते हुए, कई दिनों तक रोता और विलाप करता रहा, और वह तब तक नहीं उठा जब तक कि एक देवदूत ने उसे यह सूचना नहीं दी कि ईश्वर ने उसका पश्चाताप स्वीकार कर लिया है। लेकिन यद्यपि बड़े भाई का पश्चाताप स्वीकार हो गया था, फिर भी उसे अब वह रोटी नहीं मिलती थी जो परमेश्वर पहले उसे भेजते थे, और उसे अपने हाथों की मेहनत से अपना जीवन यापन करना पड़ा। अहंकार इसी प्रकार मनुष्य को नम्र बनाता है!

जब आदरणीय जॉन ने यह कथा समाप्त की, तो उन्होंने अपने पास आए भाइयों से कहा:

'मेरे बच्चों, बड़े और छोटे, सभी मामलों में हमेशा विनिम्र रहो, क्योंकि यह उद्धारकर्ता की पहली आज्ञा है, जो कहते हैं: "*आत्मा से दीन लोग धन्य हैं, क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है*" (मत्ती 5:3); 'आत्मिक रूप से दीन' होने का अर्थ है विनिम्र होना; उन दुष्टात्माओं से धोखा न खाएं जो विचारों और दर्शनों के माध्यम से आपको पाप में फंसाने के लिए लुभाती हैं। जो कोई भी आपके पास आता है—चाहे वह भाई हो, दोस्त हो, महिला हो, पति हो, शिक्षक हो, माँ हो या बहन—सबसे पहले, प्रार्थना में अपने हाथ उठाएँ; यदि यह दुष्टात्माओं का कोई भ्रम था, तो यह आपकी दृष्टि से ओझल हो जाएगा। यदि कोई आपको सराहे, चाहे वह दानव हो या मनुष्य, तो उनकी न सुनें और अपने मन को घमंडी न होने दें, क्योंकि मैं भी अक्सर रात में दानवों द्वारा प्रलोभित किया जाता था, जो मुझे शांति से प्रार्थना करने या सोने से रोकते थे, और पूरी रात मेरी आँखों के सामने तरह-तरह के दृश्य प्रस्तुत करते थे; लेकिन जब सुबह होती थी, तो राक्षस मेरे सामने ज़मीन पर झुककर शाप देते हुए कहते थे:

'हमारे पाप क्षमा करो, अब्बा[2691] , क्योंकि हमने सारी रात आपको परेशान किया!'

लेकिन मैंने उनसे कहा:

'दुष्टो, मुझसे दूर हो जाओ! परमेश्वर के दास को परीक्षा में न डालो!'

[2691] अब्बा – शिक्षक, मार्गदर्शक।

इसलिए, मेरे बच्चों, मौन से प्रेम करो, हमेशा ईश्वर के चिंतन में रहो और हमेशा उनसे प्रार्थना करो कि वे तुम्हें पापपूर्ण विचारों से मुक्त एक शुद्ध मन प्रदान करें। निश्चित रूप से, वह तपस्वी भी प्रशंसा के योग्य है जो संसार में रहते हुए सदाचार का अभ्यास करता है—चाहे मेहमाननवाज़ी करके, दान देकर, दूसरों के कामों में मदद करके, या लगातार क्रोध से मुक्त रहकर; ऐसा व्यक्ति प्रशंसा का पात्र है, क्योंकि वे सदाचार में निवास करते हैं, प्रभु की आज्ञाओं का पालन करते हैं, और साथ ही सांसारिक कार्यों की उपेक्षा नहीं करते। लेकिन उससे भी बेहतर, और अधिक प्रशंसा का पात्र, वह है जो निरंतर ईश्वर के चिंतन में स्थित रहता है, भौतिक से परे अतित्व की ओर बढ़ता है, सांसारिक मामलों को दूसरों की देखभाल और चिंता पर छोड़ देता है, जबकि वह स्वयं दिव्य की प्राप्ति के लिए प्रयास करता है, सभी सांसारिक चीजों का त्याग कर ईश्वर के समक्ष निरंतर स्थित रहता है और सांसारिक मामलों की चिंता से अब और संसार से जुड़ाव नहीं करता: ऐसा व्यक्ति ईश्वर के समीप होता है, जिसकी वह अपनी प्रार्थनाओं और भजन-गायन में अनवरत रूप से महिमा करता है। मैं एक ऐसे व्यक्ति को जानता हूँ जो रेगिस्तान में एक तपस्वी के रूप में रहता था, जिसने दस वर्षों तक किसी भी सांसारिक भोजन का स्वाद नहीं चखा, लेकिन ईश्वर का स्वर्गदूत हर तीसरे दिन उसके लिए स्वर्गीय भोजन लाता था, और यह उसके भोजन और पेय दोनों का काम करता था (ऐसा लगता है कि सेंट जॉन किसी अन्य तपस्वी के बारे में बात कर रहे थे, लेकिन वास्तव में वह स्वयं ही थे)। 'मैं यह भी जानता हूँ,' उन्होंने कहा, 'कि शैतानों ने एक बार उस आदमी को एक दर्शन में फरिश्तों की कतारें, आग का रथ और कई परिचारक दिखाए, मानो वे किसी राजा के हों, जिसने उससे कहा:

'हे मनुष्य! तूने अपना जीवन धार्मिकता और सदाचार से जिया है: अब मेरी पूजा कर, और मैं तुझे उठा लूंगा, जैसे मैंने एलियाह को उठाया था।'

लेकिन भिक्षु ने अपने आप से कहा:

'मैंने अपने जीवन के सभी दिनों में अपने राजा, यीशु मसीह की उपासना की है। अगर वह होते, तो वे यह मांग नहीं करते कि मैं उनकी उपासना करूँ।'

तब भिक्षु ने शैतान से कहा:

'मेरा स्वामी और राजा, मेरा ईश्वर है, जिसकी मैं हमेशा आराधना करता हूँ; तुम, हालाँकि, मेरे राजा नहीं हो।'

तुरंत बाद, राक्षस गायब हो गए।

इस तरह और इसी प्रकार की शिक्षाओं और कहानियों के माध्यम से, पूजनीय जॉन ने सभी को उपदेश दिया, और अपने आचरण से स्वर्गदूतों के समान जीवन का उदाहरण प्रस्तुत किया। इसलिए, जॉन ने कई लोगों की आध्यात्मिक मोक्ष में बहुत योगदान दिया।

अपने पवित्र जीवन से ईश्वर को प्रसन्न कर, आदरणीय जॉन अपने अंत के करीब आ गए। अपने जीवन के नब्बेवें वर्ष में, उन्होंने अपने शिष्यों को तीन दिनों तक उनके पास न आने का निर्देश दिया। जब तीन दिन बीत जाने के बाद भ्रातृयों ने आदरणीय के पास आकर देखा, तो उन्होंने उन्हें घुटने टेके हुए पाया, जैसे वे प्रार्थना में लीन हों, जबकि उनकी आत्मा प्रभु के पास जा चुकी थी[2692] ताकि वे अन्य संतों के साथ, त्रिमूर्ति में महिमामय परमपिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के सिंहासन के सामने प्रकट हो सकें, जिनकी महिमा युगानुयुग होती रहे। आमेन।

थेस्सालोनिकी की शहीद संत मत्रोना की स्मृति

27 मार्च को स्मरणोत्सव

संत मत्रोना थिस्सलोनिका के राज्यपाल[2693] की पत्नी, पावतिला नामक एक यहूदी महिला की दासी थीं। अपनी युवावस्था से ही उन्हें ईसाई धर्म की शिक्षा दी गई थी। उनकी मालकिन ने उन्हें अपने धर्म को त्यागने और अपनी ही मूर्तिपूजक अंधविश्वासों को अपनाने के लिए मजबूर किया, और चूँकि उन्होंने आज्ञा नहीं मानी, तो उनकी मालकिन ने

[2692] माननीय जॉन का 4वीं शताब्दी के अंत में निधन हो गया।

[2693] सोलून (जिसे थ्रेसलॉनिका भी कहा जाता है) – मैसेडोनिया के क्षेत्रों में से एक की राजधानी। अब इसे थ्रेसलॉनीकी कहा जाता है और यह यूरोपीय तुर्की में थ्रेसलॉनिका की खाड़ी के उत्तरी तट पर स्थित है। सोलुन में, प्रेरित सेंट पॉल ने सुसमाचार का प्रचार किया; उसी पवित्र प्रेरित द्वारा उस क्षेत्र और शहर के निवासियों के लिए दो पत्र लिखे गए थे।

उन्हें बुरी तरह से प्रताड़ित किया। संत को अक्सर उनके हाथों कई घाव सहने पड़े; लेकिन उन्होंने सब कुछ मसीह के लिए उत्साह के साथ सहन किया और अपनी मालकिन को बताए बिना गुप्त रूप से चर्च जाती थीं।

एक दिन, पावटिला ने जब यह जाना कि मित्रोना एक ईसाई चर्च में गई थी, तो उसने उससे कहा:

'तुम हमारी सिनागॉग में क्यों नहीं गईं, बल्कि ईसाई चर्च क्यों चली गईं?'

धन्य मत्रोना ने साहसपूर्वक उत्तर दिया:

'क्योंकि ईसाई चर्च में ईश्वर उपस्थित हैं, जबकि वे यहूदी सिनेगॉग से अलग हो गए हैं। इसीलिए मैं सिनेगॉग नहीं जाती, बल्कि चिर्च जाती हूँ।'

तब पावतिला और भी अधिक क्रोधित हो गई; उसने संत मत्रोना को निर्दयता से पीटा और, उसे बांधकर, एक अंधेरे छोटे से कमरे में बंद कर दिया। लेकिन अगली सुबह संत को पाया गया, जो ईश्वर की शक्ति से अपने बंधनों से मुक्त हो गई थीं और मसीह की महिमा कर रही थीं। एक बार फिर, मालकिन ने उसे मोटी रस्सियों से तब तक पीटा जब तक वह लगभग मर नहीं गई; फिर उसने उसे और भी कसकर बांधा, उसे एक बार फिर उसी छोटे से कमरे में बंद कर दिया, और दरवाज़े सील कर दिए ताकि कोई भी अंदर न आ सके और उसे कोई राहत न दे सके।

इस कैद में, संत, ईश्वर की शक्ति से, चार दिनों तक बिना भोजन या पानी के रहीं। इसके बाद, पावटिला ने मुहरें हटाकर दरवाज़े खोले, तो उन्होंने मत्रोना को एक बार फिर अपने बंधनों से मुक्त और प्रार्थना में खड़ी पाया। तब, भयानक क्रोध से उग्र होकर, उसने मत्रोना को मोटी लाठियों से निर्दयता से पीटना शुरू कर दिया और जब संत मुश्किल से सांस ले रही थीं, तो उसे उसी कमरे में बंद कर दिया, जहाँ संत ने अपनी आत्मा ईश्वर को सौंपते हुए प्राण त्याग दिए। उस क्रूर महिला ने संत मत्रोना का शरीर ऊँचाई से नीचे फेंक दिया; क्योंकि उसका निवास ऊँचाई पर था।

ईसाइयों ने पवित्र शहीद मत्रोना के दीर्घ-पीड़ित शरीर को इकट्ठा किया और उसे सम्मान के साथ दफनाया। बाद में, थिस्सलुनीके के बिशप अलेक्जेंडर ने संत के नाम पर एक चर्च की स्थापना की, जहाँ उन्होंने उनके पवित्र अवशेषों को रखा [2694] । जहाँ तक यातना देने वाली, पावतिला का सवाल है, उसे जल्द ही उस दैवीय न्याय का सामना करना पड़ा जिसके वह हकदार थी। ठीक उसी स्थान पर जहाँ उसने संत मत्रोना का शरीर ऊँची दीवार से फेंका था, वह स्वयं बाद में एक दुर्घटना में फिसलकर गिर पड़ी और हड्डियाँ टूटने के कारण दुखद रूप से अपनी शापित आत्मा को शरीर से बाहर निकाल दिया[2695] ।

पवित्र शहीदों मैनुएल और थियोडोसियस का स्मरणोत्सव

27 मार्च को स्मरण किया जाता है

पवित्र शहीदों मैनुएल और थियोडोसियस पूर्वी देशों के मूल निवासी थे। यह देखकर कि कैसे मूर्तिपूजक हर दिन ईसाइयों को मार डालते थे, उन्होंने आपस में मसीह के लिए मरने का संकल्प लिया, ताकि वे स्वर्ग के राज्य के वारिस बन सकें। यह निर्णय लेने के बाद, वे अपने देश के शासक के पास गए और रास्ते में, उन्होंने कई लोगों से पूछा कि वह मसीहियों को क्यों मार रहा है; और जब वे शासक के सामने उपस्थित हुए, तो उन्होंने निडर होकर मसीह की गवाही दी, और खुद को मसीही घोषित किया। अपनी निडरता और साहस से, उन्होंने न केवल शासक के साथ उपस्थित लोगों को, बल्कि स्वयं शासक को भी चकित कर दिया। शासक ने उन्हें ले जाकर कैद करने का आदेश दिया, और जेलर को उन्हें कड़ी निगरानी में रखने का निर्देश दिया। कुछ दिनों के बीत जाने के बाद, राज्यपाल ने संतों को कालकोठरी से अपने पास लाने का आदेश दिया और उनसे मसीह का इनकार करने और मूर्तियों को बलिदान चढ़ाने के लिए आग्रह करने लगा; लेकिन उन्होंने उसकी बात सुनी भी नहीं; इसके विपरीत, उन्होंने स्वयं उसे मूर्तियों की पूजा करने से रोकने की कोशिश की। तब उसने आदेश दिया कि उन्हें पहले एक पेड़ से लटकाया जाए और उनकी पसलियों पर कोड़े मारे जाएँ; बाद में, उसने आज्ञा दी कि उन्हें पेड़ से उतारकर तेज त्रिशूलों पर लिटाया जाए; और अंत में, इन सभी यातनाओं के बाद, उसने उनका सिर कलम करने का आदेश दिया। इस प्रकार पवित्र शहीदों ने अपनी धर्मी आत्माओं को प्रभु के हाथों में सौंपते हुए प्राण त्याग दिए।

[2694] संत मत्रोना के अवशेष छठी और सातवीं शताब्दी में सम्राट मॉरिस के शासनकाल के दौरान जाने जाते थे, और उनके माध्यम से चमत्कार किए गए थे।

[2695] संत मैट्रोन ने तीसरी या चौथी शताब्दी में शहादत प्राप्त की।

10 अप्रैल

28 मार्च (पुराना तरीका)

गुफाओं के हमारे पूजनीय पिता यूस्ट्रैटियस का जीवन और शहादत

28 मार्च को स्मरणोत्सव

संत यूस्ट्रैटियस ने स्वयं को मसीह का एक पराक्रमी योद्धा साबित किया, जिन्होंने अपने नाम और अपने जीवन दोनों से क्रूस के झंडे तले लड़ाई लड़ी। उन्होंने अपने सबसे चुने हुए सर्वोच्च कमांडर – यीशु मसीह – के उदाहरण का अनुसरण किया, और उन्हीं लोगों के हाथों और उसी समय उसी प्रकार का दुख सहने के बाद, सचमुच गर्व से कह सके: *'मैं अपने शरीर पर प्रभु यीशु के घावों के चिन्ह लिए फिरता हूँ'* (गलातियों 6:17)।

मसीह के इस पराक्रमी योद्धा, यूस्ट्रैटियस, का जन्म कीव में हुआ था। वह *'परमेश्वर का पूरा कवच पहनना'* (इफसियों 6:11) चाहता था, जो मठवासी जीवन शैली की विशेषता है। यह जानते हुए कि *'कोई सैनिक जो युद्ध में तैनात है, वह इस जीवन के मामलों में स्वयं को उलझाता नहीं है, ताकि वह अपने सेनानायक को प्रसन्न कर सके'* (2 तीमु. 2:4), उसने अपनी संपत्ति गरीबों में बाँट दी, जबकि अपने रिश्तेदारों के लिए एक हिस्सा अपनी मृत्यु के बाद बाँटने के लिए छोड़ दिया। इस प्रकार, धनी होने के बाद दरिद्र होकर, वह कीव केव्स मठ में एक भिक्षु बन गया। और वह हमारे लिए स्वयं को नम्र करने वाले सेनापति—मसीह—के झंडे तले, परमेश्वर को प्रसन्न करने वाले तरीके से परिश्रम करने लगा—न केवल अपने शरीर को, बल्कि आध्यात्मिक तलवार से अदृश्य शत्रुओं को भी जीतते हुए, अर्थात् प्रार्थना की शक्ति और महान संयम के उपवास के द्वारा, उन्हें वश में करते हुए और अपनी नम्रता और आज्ञाकारिता के द्वारा उन्हें अधीन करते हुए। संत यूस्ट्रैटियस ने इस पर मनन किया कि कैसे उनके तपस्या के आदर्श, स्वयं यीशु मसीह, ने प्रार्थना में लगन दिखाई, चालीस दिन तक उपवास किया, और आज्ञाकारिता के द्वारा स्वयं को नम्र बनाया; इसलिए, उन्होंने भी स्वयं को इन्हीं गुणों से सुसज्जित किया। लेकिन यह जानते हुए कि मनुष्य पहली पाप के कारण अनुशासनहीनता से पराजित हुआ था, संत ने संयम और बड़े उपवास में उत्कृष्टता हासिल की, और इसलिए उन्हें 'उपवासी' कहा गया।

जब, ईश्वर की अनुमति से, दुष्ट बोन्याक[2696] ने पोलोवत्सियों के एक दल के साथ रूसी भूमि पर आक्रमण किया और उन्हें बंदी बना लिया, तो धन्य यूस्ट्राटियस, पेचेरस्क मठ में मूर्तिपूजकों के आक्रमण के दौरान—जहाँ कई लोग उनकी तलवारों से मारे गए थे—अन्य लोगों के साथ बंदी बना लिया गया और ग्रीक भूमि में बेच दिया गया, कोर्सुन शहर[2697] के एक यहूदी को, अन्य ईसाइयों के साथ – तीस मठ के श्रमिक और कीव के बीस पुरुष।

उस अधर्मी यहूदी ने अपने बंदियों को मसीह का त्याग करने के लिए मजबूर करना शुरू कर दिया और जो विरोध करते थे उन्हें बेड़ियों में जकड़े हुए भूख से मार डालने की धमकी दी। लेकिन साहसी भिक्षु यूस्ट्राटियस ने प्रार्थना करते हुए, सभी को बल दिया और उपदेश दिया, और उन्हें इन शब्दों से समझाया:

'हे भाइयो! तुम में से जिसने भी बपतिस्मा लिया है और मसीह पर विश्वास किया है, वह बपतिस्मा के समय की गई प्रतिज्ञा को न तोड़े। मसीह ने हमें जल और आत्मा के द्वारा नया जन्म दिया है, ने अपनी रक्त से हमें व्यवस्था की शपथ से छुड़ाया है, और हमें अपने राज्य का वारिस बनाया है। यदि हम जीवित रहे, तो हम प्रभु के लिए जिएंगे; यदि हम मरे, तो हम प्रभु में मरेंगे, और क्षणिक मृत्यु के द्वारा हम अनंत जीवन प्राप्त करेंगे। आइए हम उस व्यक्ति का अनुकरण करें जिसने कहा: *'मेरे लिए जीना मसीह है, और मरना लाभ है'* (फिलिप्पियों 1:21)।

रेवरेंड के शब्दों से बल प्राप्त करके, बंदियों ने मसीह का परित्याग करने के बजाय, जो अनंत जीवन का भोजन और पेय है, क्षणिक भोजन और पेय की कमी से मरना पसंद किया।

[2696] बोनीक – पोलोवत्सियानों का एक खान (या राजकुमार), जो 11वीं शताब्दी के अंत और 12वीं शताब्दी की शुरुआत में रहता था, जिसे कीवन रस पर अपनी बार-बार होने वाली छापों के लिए हमारे वृत्तांतों में एक 'शिकारी' कहा गया था। पोलोवत्सियानी कीव के दक्षिण में रहने वाली एक शिकारी जनजाति थी जो लूट-पाट और डकैती से अपनी आजीविका चलाती थी।

[2697] कोर्सुन – जिसे अब चेरसोनेसोस टाउरिका के नाम से जाना जाता है।

इस प्रकार, कुछ समय बाद, भूख और प्यास से थककर, सभी पचास पुरुष मर गए: कुछ तीन दिनों के बाद, अन्य चार के बाद, कुछ सात के बाद, और अधिक मजबूत वाले दस के बाद। केवल यूस्ट्रैटियस जीवित बचा; हालाँकि वह चौदह दिनों तक भूख से त्रस्त रहा, फिर भी वह जीवित और सुरक्षित रहा, क्योंकि वह अपने युवा दिनों से ही उपवास का आदी था। दुष्ट यहूदी ने, यह देखकर कि साधु ही उसके पैसे खोने का कारण था—जो उसने उन बंदियों के लिए चुकाए थे जिन्हें वह अपनी मूर्तिपूजा में परिवर्तित करने की उम्मीद कर रहा था—उस पर बदला लेने का संकल्प लिया।

तब मसीह के पुनरुत्थान का दिन नज़दीक आ रहा था। यहूदी ने अपना पासका उत्सव मनाना शुरू कर दिया और उसने संत यूस्ट्राटियस की निंदा की, ठीक वैसे ही जैसे उसके पूर्वजों ने हमारे प्रभु यीशु मसीह की निंदा की थी। और जैसे यहूदियों ने प्राचीन काल में मसीह को सूली पर चढ़ाया था, वैसे ही इस धर्मी व्यक्ति को उस शापित यहूदी और उसके दोस्तों ने क्रूस पर ठोक दिया।

क्रूस पर चढ़ाए जाने के दौरान, यूस्ट्रैटियस ने ईश्वर का धन्यवाद किया कि उन्होंने उसे पंद्रह दिनों से बिना भोजन या पानी के जीने की कृपा प्रदान की थी।

उस यहूदी और उसके अन्य मित्रों ने सूली पर चढ़ाए गए व्यक्ति का उपहास उड़ाया और उससे कहा:

'अरे मूर्ख! अब इस वैध पासओवर का स्वाद चख, ताकि तू जीवित रह सके और शाप से बच सके। क्योंकि मूसा ने हमें वह व्यवस्था दी जो उन्होंने परमेश्वर से प्राप्त की थी, और अपनी पुस्तकों में कहा: *"जो कोई वृक्ष पर लटकाया जाए, वह श्रापित है"* (व्यवस्थाविवरण 21:23)।'

रेवरेंड ने उत्तर दिया:

'प्रभु ने अब मुझ पर महान अनुग्रह किया है। उन्होंने मुझे अपने नाम के लिए क्रूस पर, उनके दुखों के सदृश, दुख सहने का सौभाग्य प्रदान किया है।' मुझे आशा है कि वह मुझसे भी वही कहेगा जो उसने एक बार चोर से कहा था: *'आज ही तुम मेरे साथ स्वर्ग में होओगे'* (लूका 23:43)। मुझे तुम्हारे पासोवर की कोई आवश्यकता नहीं है; मैं श्राप से नहीं डरता, क्योंकि *'हमारा पासोवर, मसीह, हमारे लिए बलिदान कर दिया गया है'* (1 कुरिन्थियों 5:7), जिन्होंने व्यवस्था का उल्लंघन करने के कारण हम पर लगाई गई शाप को नष्ट कर दिया है और हमें उस क्रूस के द्वारा अनंत जीवन प्रदान किया है, जिस पर उन्हें सभी का जीवन होने के नाते ठोक दिया गया था, जैसा कि मूसा ने भी भविष्यवाणी की थी: *'और तुम्हारा जीवन तुम्हारे सामने तराजू पर लटका रहेगा'* (व्यवस्थाविवरण 28:66)। जहाँ तक पासोवर के पर्व की बात है, दाऊद कहते हैं: *'यह वह दिन है जिसे यहोवा ने बनाया है; हम इसमें आनंद मनाएँ और हर्षित हों!'* (भजन संहिता 117:24)। परन्तु तुम, जिन्होंने मुझे सूली पर चढ़ाया है, और तुम्हारे सभी साथी षड्यंत्रकारी, रोओ और विलाप करो, क्योंकि मेरे लहू और उन अन्य ईसाइयों के लहू के लिए प्रतिशोध तुम पर पड़ेगा जिन्हें तुमने खरीदा है। प्रभु तुम्हारे सब्बाथों से घृणा करते हैं और तुम्हारे पर्वों को शोक में बदल देंगे, और तुम्हारी अधार्मिकता के मुखिया की हत्या का समय पहले ही आ चुका है।

यह सुनकर यहूदी क्रोध से आग-बबूला हो गया, उसने एक भाला पकड़ा और क्रूस पर ठोक दिए गए व्यक्ति को भेद दिया[2698] । और फिर एक अग्निमय रथ और अग्निमय घोड़े दिखाई दिए, जिन्होंने उस आनंदित शहीद की आत्मा को स्वर्ग तक ले गए, और एक आवाज सुनाई दी जो कह रही थी: 'देखो, स्वर्गीय नगर का एक वीर नागरिक!'

यहूदियों ने पवित्र शहीद के शरीर को सूली से उतारकर समुद्र में फेंक दिया, जहाँ बाद में कई चमत्कार हुए। विश्वासियों ने वहाँ पवित्र अवशेषों की लगन से खोज की, लेकिन उन्हें नहीं मिला। ईश्वर की कृपा से, वे एक गुफा में मिले, जहाँ वे आज भी अपरिवर्तित अवस्था में विश्राम कर रहे हैं।

जहाँ तक पवित्र शहीद की भविष्यवाणी का सवाल है कि उनके रक्त का बदला लिया जाएगा, वह उनके दुख सहने के तुरंत बाद पूरी हुई। क्योंकि उसी दिन यूनानी राजा की ओर से एक फरमान आया कि सभी यहूदियों को उसके राज्य से निकाल दिया जाए, उनकी संपत्ति जब्त कर ली जाए, और ईसाइयों पर अत्याचार करने के लिए उनके बुजुर्गों को मौत की सज़ा दी जाए। धन्य यूस्ट्रैटियस की भविष्यवाणी के अनुसार, सबसे पहले मारे जाने वालों में से एक एपार्क[2699] थे, जिन्होंने यहूदियों को ईसाइयों के खिलाफ भड़काया था। और यह इस प्रकार हुआ। एक धनी और प्रतिष्ठित यहूदी का बपतिस्मा हुआ, और इसलिए राजा ने, उसका सम्मान करने की इच्छा से, कुछ दिनों बाद उसे एक एपार्क बना दिया; लेकिन यह पद प्राप्त करने पर, उसने गुप्त रूप से मसीह और उनके धर्म का परित्याग कर दिया और पूरे यूनानी साम्राज्य में यहूदियों

[2698] पवित्र शहीद की मृत्यु 1097 में हुई।

[2699] एपार्क – एक प्रांत का प्रमुख।

को मसीहयिों को खरीदने और उन्हें दास बनाने की अनुमतदि दी। जब इस दुष्ट ईपार्क की दुष्ट चालाकी का भंडाफोड़ हो गया, तो राजा ने उसे ग्रीक भूमभिें रहने वाले सभी यहूदयिों के साथ मृत्युदंड देने का आदेश दयिा। और जब ग्रीक शहर कोर्सुन् में रहने वाले यहूदयिों को मार डाला जा रहा था, तो वह दुष्ट यहूदी, जसिके हाथ से पूजनीय यूस्ट्रैटयिस को मारा गया था, को एक पेड़ पर लटका दयिा गया; और इस प्रकार *'उसकी दुष्टता उसी के सरि पर* गरिी' (भजन संहति 7:17), और उसका भी वही हश्र हुआ जो यहूदा का हुआ था।

हालाँकि, अन्य यहूदयिों ने, आदरणीय संत के नधिन के बाद हुए अद्भुत चमत्कारों को देखकर, मसीह में वशि्वास कयिा और बपतस्मिा लयिा। और संत यूस्ट्राटयिस, जन्हिोंने उन्हें मसीह के पास लाया था और, अपनी मृत्यु के बाद भी, उनके पराक्रमी योद्धा और वजिेता बने रहे, उन्हें अमर स्वर्गीय सेना के साथ वजिय का गीत गाने और स्वयं मसीह, जो मृत्यु पर वजिय प्राप्त करने वाले हैं, के साथ राज्य करने के योग्य समझा गया, जनिके साथ उन्होंने लड़ते हुए, उनकी महमिा की और उनके तथा उनके अनन्त पति और जीवन-दायक आत्मा के साथ, मृत्यु के वजिेता, स्वयं मसीह के साथ, सदा और सदा के लिए धन्यवाद अर्पति कयिा। आमीन।

पवत्रि शहीदों योना और बराखयिास का स्मरणोत्सव

28 मार्च को स्मरण कयिा जाता है

ये पवत्रि शहीद फारस के मूल नविासी थे और फारसी राजा सापोर् के शासनकाल में[2700] यासी नामक एक गाँव में रहते थे। एक दनि, अपने घर से नकिलकर, वे वारावोह शहर के लिए रवाना हुए और वहाँ उन्हें पवत्रि शहीद ज़ापफ़िान, लाज़रस, मारुफ़ान, नर्सनि, एलयिाह, मारनि, मलि। अववि, सविनफनि और सव्वा, जो वहाँ कैद थे, ने उनका मनोबल बढ़ाया, उन्हें ईसाई धर्म में दृढ़ रहने और उसकी गवाही देने के लिए प्रोत्साहति कयिा, और कहा कि भले ही इसके लिए उन्हें मृत्यु का सामना करना पड़े, वे इसे त्यागें नहीं। परणिामस्वरूप, उन्हें पकड़ लयिा गया और तीन राजकुमारों - मसदराफ, सरिॉफ और मार्मसियस - के सामने लाया गया - और सूर्य, अग्नि और जल की पूजा करने से इनकार करने के लिए उन्होंने उनके हाथों अनगनित यातनाएं और अत्याचार सहन कए[2701] ।

संत योना को सबसे पहले यातनाएँ दी गईं। उन्हें उस वशिेष तरीके से बांधा गया जो फारसयिों में प्रचलति था। आमतौर पर, फारसी लोग जसि यातना देनी होती थी, उसे जमीन पर लटिा देते और उसके हाथ-पैरों को एक ही लकड़ी के टुकड़े से बाँध देते थे, ताकि वह पत्थर की तरह स्थरि पड़ा रहे और दोनों तरफ से पीटा जा सके, क्योंकि लकड़ी से मजबूती से बँधे होने के कारण वह प्रहारों से बच नहीं सकता था। संत योना को इस तरह बाँधने के बाद, उनके यातना देने वालों ने मोटी लाठयिों से बहुत देर तक दोनों तरफ से उनकी पटिाई की; फरि, उनके शरीर पर रस्सी बाँधकर, उन्हें एक जमी हुई झील की बर्फ पर घसीटा, जसिसे उन्हें ठंड में बहुत कष्ट हुआ, और अंत में पूरी रात के लिए उन्हें यातना स्थल पर बँधा हुआ छोड़ दयिा। इसके बाद, उन्होंने उसकी उंगलयिाँ और पैरों की उंगलयिाँ काट दीं, उसके सरि की खाल उधेड़ दी, उसकी जीभ काट दी और उसे उबलते हुए पचि से भरे एक बड़े बर्तन में फेंक दयिा। लेकनि जब पवत्रि शहीद उस बर्तन से बनिा कसिी चोट के बाहर नकिले, तो उन्होंने उसे एक वसि में दबाकर उसकी हड्डयिाँ तोड़ डालीं। इन सब के बाद, उन्होंने उसे आधा रेत कर एक गहरे गड्ढे में फेंक दयिा, जहाँ ऊँ की मृत्यु हो गई। जहाँ तक वराचसियिस की बात है, राजकुमारों के आदेश पर, उसकी कलाई पर लाल-गरम बेड़यिाँ डाल दी गईं, और तुरंत बाद उन्होंने उसकी पलकों, नाक के छदि्रों, कानों और मुँह में पघिला हुआ टनि डालना शुरू कर दयिा; अंत में, उसके पैरों में रस्सी बाँधकर उसे कालकोठरी में लटका दयिा। ऐसी यातनाओं के बाद, उन्होंने संत वराचसियिस के कपड़े उतार दिए और, उसे बाँधकर, काँटों की झाड़यिों से घसीटा; फरि उन्होंने उसे तेज कीलों से छेदा, उसे एक घूमने वाले चक्के में डाल दयिा, जसिसे उसका सारा शरीर टुकड़े-टुकड़े हो गया, और, अंत में, उसके मुँह में उबलता हुआ पचि डाल दयिा, जसिके बाद पवत्रि शहीद ने अपनी आत्मा ईश्वर को सौंप दी।

[2700] फ़ारसी राजा शपूर द्वतिीय, जन्हिें 'महान' के नाम से जाना जाता है, 310 से 331 तक शासन कयिा और वह ईसाइयों का क्रूर उत्पीड़क था।

[2701] अपने सर्वोच्च देव मीथ्रा की प्रतमिा के रूप में सूर्य की पूजा करते हुए, फारसी लोग अग्नि और जल को भी शुद्ध तत्वों के रूप में पूजते थे जो सभी जीवति चीजों को लाभ पहुँचाते थे।

संत योना और बराकयिास के शरीरों को, उपर्युक्त पवत्रि शहीदों के साथ, अवदcoт नामक एक धर्मपरायण व्यक्तनि दफनाया। पवत्रि शहीदों योना और बराचसियिस की मृत्यु March[2702] के 28वें दनि, और अन्य की 27वें दनि हुई।

हमारे पूजनीय पतिा हलिारयिन नव के स्मरणोत्सव[2703]

28 मार्च को स्मरणोत्सव

अपने युवा काल से ही, पूजनीय हलिारयिन ने मठवासी जीवन का भार स्वयं पर उठा लयिा: सूली पर चढ़ाए गए मसीह का अनुसरण करते हुए, उन्होंने संयम के माध्यम से शारीरकि वासनाओं पर वजिय प्राप्त करते हुए, अपना क्रूस उठाया; एक तपस्थली में चले गए और कई वर्ष मौन में बतिाए, वे नर्लिप्तिता से प्रकाशति होकर सदाचारी जीवन में सभी संतों से श्रेष्ठ हो गए, जसिके लएि उन्हें पुरोहति पद के योग्य माना गया और बाद में वे एशयिा में, हेलस्पोंट के पास स्थति पेलकिटि नामक मठ के मठाधीश बने[2704] । आदरणीय हलिारयिन ने कई अद्भुत चमत्कार कएि। अपने वचन से, उन्होंने खेतों और अंगूर के बागों से उन जानवरों को भगा दयिा जो फसलों को नुकसान पहुँचाते थे; प्रार्थना के माध्यम से, उन्होंने एक भारी ओलावृष्टकिो रोका और सूखे के दौरान पृथ्वी पर वर्षा कराई; नबी एलशिा की तरह, उन्होंने एक नदी को चीर दयिा, एक सूखे हाथ वाले व्यक्तकिो चंगा कयिा, अंधों की दृष्टलिौटाई, लंगड़ों को उनकी वकिलांगताओं से मुक्त कयिा, दुष्ट आत्माओं को भगाया, और जब मछलयिाँ कम पकड़ी थीं तो मछुआरों के जालों को मछलयिों से भर दयिा।

सम्माननीय जोसेफ द हाइमनोग्राफर, संत के सम्मान में रचति अपने कैनन की आठवीं ओड के ट्रॉपारयिन में, यह बताते हैं कसिंत हलिारयिन ने उद्धारकर्ता के पवत्रि प्रतमिा की पूजा करने के कारण अपने उत्पीड़क के हाथों उत्पीड़न और अपमान सहन कयिा, जसिके कारण उन्हें शहीद कहा जाता है। कुछ ववरिणों के अनुसार, परमपूज्य हलिारयिन का जीवन लयिो द आर्मेनयिन के शासनकाल में बीता, जो पवत्रि प्रतमिाओं का अपमान करता था; हालाँकि, अन्य लोग उनके जीवन को लयिो द इसाउरयिन और उसके पुत्र कोप्रोन्यमस[2705] के शासनकाल का मानते हैं, जो लयिो द आर्मेनयिन से बहुत पहले शासन में थे, जो अधकि संभावति लगता है। उन्होंने पवत्रि प्रतमिाओं के लएि तब तक कष्ट सहे जब, पवत्रि गुरुवार को, कोप्रोन्यमस के गवर्नर, लाकोंड्राकॉन ने अपने सैनकिों के साथ अचानक पेलकिटि मठ पर हमला कयिा: दव्यि लटिर्जी के दौरान, वह अनादरपूर्वक चर्च और फरि पवत्रि स्थल में घुसा, गायन बंद करने का आदेश दयिा, और मसीह के पवत्रि और जीवन-दायक रहस्यों को जमीन पर फेंक दयिा; फरि, उन्हें जब्त करके, उसने बयालीस चुने हुए संतों को लोहे की जंजीरों में बांध दयिा; जहाँ तक शेष मठवासी समुदाय का सवाल है, उसने कुछ को घायल कयिा, उनके शरीरों को यातनाएँ दीं; दूसरों को जलाया, पहले उनकी दाढ़यिों और चेहरों पर कोयला मलकर; तीसरे समूह की नाक काट दी; और अंत में, उसने मठ और चर्च में आग लगा दी। चुने हुए पतिाओं को, जनिकी संख्या बयालीस थी, उन्होंने एफ़सिुस प्रांत के बाहरी इलाके में नर्विासन में भेज दयिा, और वहाँ, उन्हें एक पुराने स्नानागार में बंद करके, उनका क्रूरतापूर्वक वध कर दयिा। ऐसा माना जाता है कइिस समय पूजनीय हलिारयिन ने भी कष्ट सहे, जो उपर्युक्त पतिाओं में वरष्ठि मठाधीश थे[2706] .

हमारे पूजनीय पतिा स्टीफन द कन्फैसर की स्मृतिा

28 मार्च को स्मरणोत्सव

[2702] पवत्रि शहीदों योना और बराखयिास का धन्य नधिन 327 और 331 के बीच कभी हुआ था।

[2703] मसीह के स्वीकारकर्ता, हलिारयिन, जनिकी स्मृतअिब मनाई जाती है, उन्हें 'नए' के रूप में संबोधति कयिा जाता है ताकउिन्हें डल्माटयिा के हलिारयिन से अलग कयिा जा सके, जो भी एक स्वीकारकर्ता थे और जन्हिोंने बाइज़ेंटाइन सम्राट लयिो पंचम द आर्मनियिन (812–820) के अधीन पीड़ा सहन की। बाद वाले हलिारयिन की स्मृत6 जून को मनाई जाती है।

[2704] हेलेस्पोंट डार्डानेल्स जलडमरूमध्य का प्राचीन नाम है, जो मार्मारा सागर और एजयिन सागर को जोड़ता है।

[2705] लयिो तृतीय इसाउरयिन ने 717 से 741 तक और उनके पुत्र कांस्टेंटनि पंचम कोप्रोन्यमस ने 741 से 775 तक शासन कयिा।

[2706] संत हलिारयिन की मृत्यु लगभग 754 में हुई।

मसीह के स्वीकारकर्ता, आदरणीय स्टीफन, तसर लियो द आर्मेनियन[2707] के शासनकाल में रहते थे। बचपन से ही तपस्वी जीवन से प्रेम करने और सदाचारी जीवन द्वारा स्वयं को वशिष्ट बनाने के बाद, उन्होंने बाद में भाइयों के आग्रहपूर्ण अनुरोधों के बाद मठाध्यक्ष का पद स्वीकार किया और त्रिगिलिया मठ[2708] के मठाध्यक्ष बने; अपने उपदेशों के माध्यम से, उन्होंने कई लोगों को ईश्वर को प्रसन्न करने वाला और पवित्र जीवन जीने के लिए प्रोत्साहित किया। लेकिन फिर अधर्मी राजा लियो द आर्मेनियन ने ईसाइयों के खिलाफ एक भयंकर उत्पीड़न शुरू किया, और पवित्र प्रतिमाओं को नष्ट कर दिया। फिर उसने परम पूजनीय स्टीफन को बुलाया और उन पर ऑर्थोडॉक्स धर्म को त्यागने, पवित्र प्रतिमाओं की पूजा छोड़ने, और अपने ही हाथ से ऑर्थोडॉक्सी का परित्याग करने वाले दस्तावेज़ पर हस्ताक्षर करने के लिए दबाव डालना शुरू कर दिया।

हालाँकि, माननीय ने न केवल ऐसा करने से इनकार कर दिया, बल्कि उन्होंने राजा की दुष्टता के लिए उसे फटकार भी लगाई। ऑर्थोडॉक्स धर्म में अपनी दृढ़ता के लिए, आदरणीय स्टीफन ने कई यातनाओं और कारावास के बंधनों को सहन किया; बाद में उन्हें एक निर्वासन स्थल पर भेज दिया गया, और वहाँ, पीड़ा और बीमारी से पूरी तरह थक जाने के बाद, आदरणीय स्टीफन मसीह ईश्वर के पास चले गए[2709] , जिनके लिए उन्होंने कई यातनाएँ सहन कीं और मृत्यु को स्वीकार किया।

योद्धा टैक्सियोट्स की कथा

28 मार्च को स्मरणोत्सव

कार्थेज में[2710] एक टैक्सियो नाम का व्यक्ति रहता था, जो एक योद्धा था और उसने गंभीर पापों का जीवन जिया था। एक दिन, कार्थेज शहर में एक संक्रामक रोग फैल गया, जिससे कई लोग मर गए; टैक्सियो भयभीत हो गया, उसने ईश्वर की ओर रुख किया और अपने पापों के लिए पश्चाताप किया। शहर छोड़कर, वह अपनी पत्नी के साथ एक गाँव में चला गया, जहाँ वह ईश्वर के ध्यान में अपना समय बिताता रहा।

कुछ समय बाद, शैतान के प्रभाव में, वह पास में रहने वाले एक किसान की पत्नी के साथ व्यभिचार के पाप में पड़ गया; लेकिन उस पाप को करने के कुछ ही दिनों बाद, उसे एक सांप ने काट लिया और उसकी मृत्यु हो गई।

उस स्थान से एक 'पोप्रश्चि' (एक प्रकार का माप)[2711] दूर एक मठ था; टैक्सियो की पत्नी इस मठ में गई और भिक्षुओं से आकर मृतक के शव को चर्च में दफनाने के लिए लेने का आग्रह किया: और उन्होंने उसे दिन के तीसरे घंटे पर दफनाया। जब नौवां घंटा आया, तो कब्र से एक जोर की चीख सुनाई दी: 'मुझ पर दया करो, मुझ पर दया करो!' कब्र के पास आकर और दफ़न किए गए आदमी की पुकार सुनकर, भिक्षुओं ने तुरंत उसे खोदा और टैक्सियो को जीवित पाया; वे भयभीत होकर चकित रह गए और उससे पूछताछ करने लगे, यह जानने की इच्छा से कि उसके साथ क्या हुआ था और वह कैसे वापस जीवित हो गया था। लेकिन वह, तीव्र रोने और सिसकियों से अभिभूत, उन्हें कुछ भी नहीं बता सका और केवल बिशप तारासियस के पास ले जाए जाने का अनुरोध किया; और इस प्रकार उसे उनके पास ले जाया गया।

तीन दिनों तक बिशप ने उससे विनती की कि वह उन्हें बताएं कि उसने वहां क्या देखा था, लेकिन चौथे दिन जाकर दफ़न किए गए व्यक्ति ने बोलना शुरू किया।

बड़े आँसुओं के साथ, उसने निम्नलिखित का वर्णन किया:

'जब मैं मर रहा था, मैंने अपने सामने कुछ इथियोपियाई खड़े देखे; उनका रूप बहुत भयानक था, और मेरी आत्मा भय से भर गई। फिर मैंने दो बहुत सुंदर जवान पुरुष देखे; मेरी आत्मा उन की ओर खिंची चली गई, और तुरंत, जैसे धरती से

[2707] लियो पंचम अर्मेनियाई – बीजान्टिन सम्राट, 813 से 820 तक शासन किया।

[2708] ट्रिग्लिया मठ कॉन्स्टेंटिनोपल के उपनगर में स्थित था।

[2709] संत स्टीफन की मृत्यु 815 के बाद हुई (उस वर्ष उन्हें निर्वासित किया गया था)।

[2710] कार्थेज – प्राचीन काल में प्रसिद्ध एक फ़िनिशियाई उपनिवेश, जो उत्तरी अफ्रीका में स्थित था। प्राचीन कार्थेज ने ईसा पूर्व दूसरी शताब्दी में अपने शिखर को छुआ, लेकिन प्रारंभिक रोमन सम्राटों के शासनकाल के दौरान, प्राचीन कार्थेज के खंडहरों पर एक नया कार्थेज उभरा, जो काफी लंबे समय तक मौजूद रहा।

[2711] एक 'पॉपलथि' लंबाई की एक इकाई है जो 1,000 कदमों के बराबर होती है।

उड़ते हुए, हम स्वर्ग की ओर बढ़ने लगे, और रास्ते में हमें परीक्षणों का सामना करना पड़ा[2712] , जो हर व्यक्ति की आत्मा को बंदी बनाकर रखते हैं और प्रत्येक एक विशेष पाप के लिए उसे यातना देता है: एक झूठ के लिए, दूसरा ईर्ष्या के लिए, तीसरा घमंड के लिए; इस प्रकार हर पाप के अपने परीक्षक हवा में होते हैं। और फिर मैंने स्वर्गदूतों द्वारा रखी गई एक संदूक में अपने सभी पुण्य कर्म देखे, जिन्हें स्वर्गदूतों ने मेरे पाप कर्मों के विरुद्ध तौला। इस प्रकार हम इन परीक्षणों से गुज़रे। लेकिन जब हम स्वर्ग के द्वारों के पास पहुँचे, तो हम व्यभिचार के परीक्षण पर आए, रक्षकों ने मुझे वहाँ रोक लिया और मेरे बचपन से लेकर मेरी मृत्यु तक मेरे द्वारा किए गए व्यभिचार के सभी कामुक कृत्यों को दिखाना शुरू कर दिया, और मुझे ले जा रहे स्वर्गदूतों ने मुझसे कहा: 'शहर में रहते हुए तुमने जो भी कामुक पाप किए थे, उन्हें ईश्वर ने क्षमा कर दिया है, क्योंकि तुमने उनका पश्चाताप किया था।' लेकिन दुष्ट आत्माओं ने मुझसे कहा: 'फिर भी जब तुम शहर से निकले, तो तुमने खेतों में अपने किसान की पत्नी के साथ व्यभिचार किया।' यह सुनकर, स्वर्गदूतों को उस पाप का मुकाबला करने के लिए कोई अच्छा काम नहीं मिला, और, मुझे पीछे छोड़कर, वे चले गए। फिर दुष्ट आत्माओं ने, मुझे पकड़ लिया, मुझे पीटना शुरू कर दिया और फिर मुझे नीचे खींच लिया; पृथ्वी फट गई, और मैं, संकरे मार्गों और तंग, बदबूदार दरारों से होकर, नरक की कोठरियों की गहराइयों तक उतर गया, जहाँ पापियों की आत्माएँ शाश्वत अंधकार में कैद हैं, जहाँ लोगों के लिए कोई जीवन नहीं है, बल्कि केवल शाश्वत यातना, अवर्णनीय विलाप और दांत पीसने की क्रिया है। वहाँ, एक हताश पुकार हमेशा सुनी जाती है: 'हाय, हाय हम पर! अहो, अहो!' और वहाँ के सभी दुखों का वर्णन करना असंभव है; मैंने जो सभी यातनाएँ और कष्ट देखे, उन्हें कोई बयान नहीं कर सकता। वे अपनी आत्मा की गहराइयों से कराहते हैं, और कोई भी उन पर दया नहीं दिखाता; वे रोते हैं, और उन्हें सांत्वना देने वाला कोई नहीं है; वे विनती करते हैं, और उन्हें सुनने या उनकी मुक्ति करने वाला कोई नहीं है। और मैं उन उदास स्थानों में बंद था, जो भयानक दुख से भरे थे, और मैं तीसरे घंटे से लेकर नौवें घंटे तक कड़वे आँसू बहाता रहा। फिर मैंने एक मद्धिम रोशनी देखी और वहाँ दो स्वर्गदूत आए; मैंने उनसे विनम्रतापूर्वक प्रार्थना करनी शुरू कर दी कि वे मुझे उस दुखद स्थान से मुक्त करें ताकि मैं परमेश्वर के सामने पश्चाताप कर सकूँ।

देवदूतों ने मुझसे कहा:

'तुम व्यर्थ प्रार्थना करते हो: जब तक सर्वसाधारण पुनरुत्थान का समय नहीं आ जाता, तब तक कोई भी इस स्थान से नहीं निकलता।'

लेकिन जैसे-जैसे मैं उनसे विनती और गिड़गिड़ाता रहा, और अपने पापों से पश्चातावा करने का वादा किया, एक स्वर्गदूत ने दूसरे से कहा:

क्या आप उसकी गारंटी देते हैं कि वह जैसा वादा किया है, वैसे ही पूरे दिल से पश्चाताप करेगा?

एक और ने कहा:

– मैं करता हूँ!

तब उसने उसकी ओर अपना हाथ बढ़ाया। उस पर, उन्होंने मुझे वहाँ से बाहर जमीन पर ले जाया और मुझे ताबूत तक ले आए जहाँ मेरा शरीर पड़ा था, और मुझसे कहा:

– 'उसमें प्रवेश कर जाओ जिससे तुम्हें अलग किया गया है।'

और इस प्रकार मैंने देखा कि मेरी आत्मा एक मोती की तरह चमक रही थी, जबकि मेरा मृत शरीर कीचड़ की तरह काला था और उससे एक भयानक बदबू आ रही थी; और इसलिए मैं उसमें प्रवेश नहीं करना चाहता था। फरिश्तों ने मुझसे कहा:

'उस शरीर के बिना तुम्हारे लिए पश्चाताप करना असंभव है, जिससे तुमने पाप किए हैं।'

लेकिन मैंने उनसे विनती की कि मुझे उस शरीर में प्रवेश न करने दें।

'अंदर जाओ,' फ़रिश्तों ने कहा, 'अन्यथा हम तुम्हें वहीं वापस ले जाएँगे जहाँ हमने तुम्हें पाया था।'

तब मैं उसमें प्रवेश किया, जीवित हो उठा और पुकारने लगा: 'मुझ पर दया करो!'

तब संत तारासियस ने उससे कहा:

– 'कुछ भोजन लो।'

[2712] उनके परीक्षणों के विवरण के लिए, संत बेसिल द न्यू के जीवन में, 26 मार्च को ऊपर देखें।

लेकनि वह खाना नहीं चाहता था; इसके बजाय, चर्च से चर्च तक चलते हुए, वह प्रणाम करने के लिए गरि पड़ता और, आँसुओं और गहरी आहों के साथ, अपने पापों का इल्ज़ाम स्वीकार करता और सभी से कहता:

'पापयिों के लिए वनिाश है: उनके लिए अनंत यातनाएँ प्रतीक्षा कर रही हैं; उन लोगों के लिए वनिाश है जो समय रहते पश्चाताप नहीं करते; उन लोगों के लिए वनिाश है जो अपने शरीर को अपवत्रि करते हैं!'

उनके पुनरुत्थान के बाद, टैक्सयिोट चालीस दनि तक जीवति रहे और पश्चाताप के द्वारा स्वयं को शुद्ध कयिा; अपनी मृत्यु से तीन दनि पहले, उन्होंने अपने नधिन की पूर्व सूचना पाई और दयालु तथा परोपकारी ईश्वर के पास चले गए, जो नरक में उतरते हैं और सभी को मोक्ष प्रदान करते हैं, जनिका यश सदा के लिए हो। आमीन।

11 अप्रैल

29 मार्च (पुराना संस्करण)

हमारे पूजनीय पति अरेफूसयिा के बशिप मार्क का कष्टकथा।

29 मार्च को स्मरणोत्सव

आरेफूसयिा के आदरणीय मार्क, बशिप की शहादत के संबंध में[2713] , नाइसा के संत ग्रेगरी, अपने धर्मद्रोही नास्तकि जूलयिन के खलिाफ अपने पहले प्रवचन[2714] में, नम्निलखिति लखिते हैं:

'कौन नहीं जानता कि अरेफूस के अद्भुत मार्क के साथ क्या हुआ? और उनकी स्मृति को समर्पति वृत्तांत के माध्यम से उन्हें कौन याद नहीं करेगा? कॉन्स्टेंटनि महान के शासनकाल के दौरान, उस समय ईसाइयों को प्रदान कएि गए अधकिारों का उपयोग करते हुए, उन्होंने एक मूर्तपिूजक मंदरि को नष्ट कयिा और कई लोगों को मूर्तपिूजक भ्रम से नकिालकर उद्धार के सच्चे मार्ग पर लाया, जो उन्होंने शकि्षाप्रद उपदेशों और अपने नष्कलंक जीवन के उदाहरण, दोनों के माध्यम से कयिा। पैगन अरेफुसयिों ने लंबे समय से उससे नफरत की थी; और जब ईसाई शासन समाप्त हो गया और पैगन अधर्मीता बढ़ने और भड़कने लगी, तो वह उन कठनि समयों में अपने अत्याचारयिों के हाथों से नहीं बच सका। जसि प्रकार एक भीड़, यद्यपि वह कुछ समय के लिए अपने क्रोध और इच्छाओं को रोक सकती है—जैसे भट्टी में आग दम तोड़ती है या बांध से नदी को रोका जाता है—फरि भी, एक नश्चिति समय पर, वह अपने अनयिंत्रति क्रोध को बाहर नकिाल ही देती है, उसी प्रकार आग का भड़कना और नदी का बांध को बड़ी ताकत से तोड़ना उसकी प्रकृति में है।

संत मार्क ने, यह देखकर कि लोग उनके खलिाफ उठ खड़े हुए थे और कुछ बुरा करने की साजशि रच रहे थे, तुरंत भाग जाने का नश्चिय कयिा—डर के कारण नहीं, बल्कि प्रभु की आज्ञा के पालन के कारण, जो आज्ञा देती है कि व्यक्ति अपने उत्पीड़कों को रास्ता देते हुए एक नगर से दूसरे नगर जाए। जहाँ तक ईसाइयों का सवाल है, भले ही वे धैर्य में साहसी और दृढ़ हों, उन्हें न केवल अपनी मुक्ति की चंति करनी चाहिए, बल्कि अपने उत्पीड़कوں पर दया भी करनी चाहिए, कहीं ऐसा न हो कि वे अपने भीतर भरी शत्रुतापूर्ण दुर्भावना के कारण अपने ऊपर और भी बड़ी तबाही ला दें। लेकनि जब सदाचारी मार्क ने देखा कि उसके कारण, दुष्ट अत्याचारयिों ने कई लोगों को पकड़ लयिा था, उन्हें यातना और वभिन्नि प्रकार की प्रताड़नाओं का शकिार बना रहे थे, जबकि अन्य, यह सब देखकर, अपने दलिों में दुखी थे, तो वह यह सहन नहीं कर सका कि उसकी भागने और आत्म-रक्षा के कारण दूसरों को पीड़ा सहनी पड़े; एक महान और बुद्धमिानी भरे कार्य का संकल्प लेकर, वह अपनी भगोड़ापन से लौट आया, स्वेच्छा से लोगों के सामने आत्मसमर्पण कर दयिा, और अपने अत्याचारयिों के क्रोध के खलिाफ लड़ाई छेड़ दी। वहाँ क्या-क्या अत्याचार नहीं कएि गए! क्या-क्या यातनाएँ नहीं दी गईं! जबकि प्रत्येक यातना देने वाला वभिन्नि प्रकार की यातनाओं के समूह में अपनी, वशिष रूप से रची गई यातना जोड़ने का प्रयास कर रहा था, उन्हें संत के साहसी सहनशीलता से अधकि कुछ भी परेशान नहीं कर रहा था; वे वशिष रूप

[2713] अरेफुसयिा या अरेथुसा – सीरयिा में एक शहर।

[2714] सम्राट जूलयिन अपोस्टेट ने 361 से 363 तक रोमन साम्राज्य पर शासन कयिा।

से कड़वे थे, क्योंकि वे उसकी वापसी को यातना के सामने साहस के प्रदर्शन के रूप में नहीं, बल्कि उनके प्रति तिरिस्कार और अपमान के रूप में देख रहे थे।

पवित्र संत, जिन्होंने स्वेच्छा से शहादत का यह कृत्य किया था, को शहर में ले जाया गया, जहाँ उनके बुढ़ापे और सबसे बढ़कर, उनके पुण्य जीवन के कारण, उनके उत्पीड़क और यातना देने वालों को छोड़कर हर कोई उन्हें विशेष सम्मान देता था। उनके साथ उम्र या पद की परवाह किए बिना कई लोग थे; सभी ने बराबर के अपमान किया: वहाँ पुरुष और महिलाएँ, जवान और बूढ़े, साथ ही शहर के अधिकारी और प्रतिष्ठित लोग थे; उन सभी की एक ही इच्छा थी: क्रोध और क्रूरता में एक-दूसरे से आगे निकलना; बिना किसी अपवाद के, वे सभी उसे संभवतःसबसे बड़े यातनाओं को देने और पूरे शहर के विरोध में खड़े अडिग वृद्ध तपस्वी को हराने को एक बड़ी उपलब्धि मानते थे।

संत को सड़कों पर घसीटने के बाद एक दलदल में फेंक दिया गया; वहाँ, अपनी यातनाओं के अलावा, उन्हें शर्मनाक अपमान भी सहना पड़ा: बच्चे बारी-बारी से उनके बाल और शरीर के अन्य अंग खींचकर उन्हें सताते थे; फिर उसे सार्वजनिक अपमान के स्थान पर लटका दिया गया, जबकि बिहादुर शहीद के झूलते हुए शरीर को छुरी से काटा गया और तीखे बेंत से भेदा गया; और जब यह दयनीय तमाशा चल रहा था, वे जोर-जोर से हँस रहे थे और खेल रहे थे। कुछ विशेष औजारों का उपयोग करके, उसकी पिंडलियाँ हड्डी तक निचोड़ दी गईं; उसके कान बहुत बारीक और अत्यंत मजबूत सन के धागों से काट दिए गए। फिर, उसे शहद और चर्बी से लथपथ कर, उन्होंने उसे एक टोकरी में रखा और दोपहर के समय सूरज की भीषण गर्मी में, उसे एक ऐसी ऊँचाई पर उठा दिया जहाँ मधुमक्खियों और ततैयाँ उसे डंक मारती रहीं। और सूरज की गर्मी से संत के पवित्र (मैं इसे जुनूनी नहीं कह सकता) शरीर पर जितना अधिक वसा और शहद पिघलता गया, उतना ही अधिक वह ततैया और मधुमक्खियों के डंक से पीड़ित हुआ।

संत मार्क, यद्यपि वृद्ध थे, ने अपने शहादत के कार्य में स्वयं को शक्ति से परिपूर्ण साबित किया; उन्होंने अपने चेहरे की शांति नहीं खोई, बल्कि उन यातनाओं से कुछ आनंद भी प्राप्त किया और अपने यातनाकारों को फटकारा।

उनके बारे में यह यादगार वृत्तांत भी बताया जाता है: जब उन्होंने खुद को एक ऊँचाई पर उठा हुआ देखा, जबकि उनके यातना देने वाले उनके नीचे खड़े थे, तो संत मार्क ने उस क्षण खुद को उनसे इतना अलग महसूस किया कि उन्होंने दर्द पर कोई ध्यान नहीं दिया, मानो कोई और हो, न कि वे खुद, जो उन कष्टों को सह रहे हों, जिन्हें उन्होंने अपमान के बजाय गौरव माना। क्या ऐसी दृश्य देखकर कोई भी व्यक्ति, जिसके भीतर दया और मानवता की एक बूंद भी हो, दयालुता से प्रेरित नहीं होता?! लेकिन यातना की धमकी और राजा के क्रोध के कारण यह असंभव था, जिसने शहरों और राज्यपालों के लिए ईसाइयों को यातना देना अनिवार्य कर दिया था; फिर भी, कई लोग, जो राजा के भीतर छिपी दुर्भावना और विश्वासघात से अनजान थे, उसके बारे में कुछ और ही सोचते थे।

संत मार्क ने एक मूर्तिपूजक मंदिर को नष्ट करने के कारण अपनी सभी यातनाएँ सहन कीं, जिसके लिए उन्होंने अपने यातना देने वालों को एक भी सोने का सिक्का नहीं दिया; यह स्पष्ट है कि उन्होंने अपनी भक्ति के लिए कष्ट उठाया। जब अरेफुसिया के लोगों ने मांग की कि वह या तो खंडित मंदिर के लिए निर्धारित की गई काफी बड़ी राशि का पूरा भुगतान करे, या उसे फिर से बनाए, तो संत मार्क ने मूर्तिपूजकों को संतुष्ट करने में असमर्थ होने के कारण नहीं, बल्कि अपनी धार्मिक निष्ठा के कारण विरोध किया। अपने धैर्य से उन पर विजय प्राप्त करते हुए और उन्होंने जो कीमत तय की थी उसे धीरे-धीरे कम करते हुए, उन्होंने उन्हें उस स्थिति में ला दिया जहाँ उन्होंने उससे केवल थोड़ी सी राशि की मांग की, जो आसानी से चुकाई जा सकती थी। इस प्रकार, दोनों पक्षों के बीच विवाद छिड़ गया: यातना देने वालों ने संत को जबरदस्ती करने की कोशिश की, जबकि वह अडिग रहे, अर्थात्, वे चाहते थे कि संत आखिरकार कुछ तो पैसे चुकाएँ, जबकि वह उन्हें एक पैसा भी नहीं देना चाहता था[2715] (हालाँकि ऐसे कई लोग थे, जिनमें से कुछ अपनी दया से, और अन्य, उसके दृढ़ और अजेय धैर्य से प्रेरित होकर, उसकी ओर से एक बड़ी राशि का भुगतान करने के लिए तैयार थे); इससे यह स्पष्ट है कि उन्होंने अपना बलिदान लालच से नहीं, बल्कि आस्था के लिए दिया। संत मार्क उन लोगों में से थे जिन्होंने राजा जूलियन - जो उस समय एक छोटे लड़के थे - को छिपाया था, जब इस सम्राट के अनैतिक और नास्तिक परिवार का संहार किया जा रहा था। और ऐसा माना जाता है कि संत मार्क ने अपने इस कर्म के लिए ऐसे क्रूर कष्टों को न्यायसंगत रूप से सहन किया; वह और भी बड़े यातनाओं के योग्य थे, क्योंकि, यद्यपि अज्ञानता के कारण, उन्होंने संपूर्ण ब्रह्मांड के लिए इतनी बड़ी बुराई को मृत्यु से बचाया।

[2715] पैनी एक छोटा तांबे का सिक्का है।

यह भी वर्णित है कि अरेफुसियि के एपार्क[2716] , यद्यपि वह एक अधर्मी मूर्तिपूजक था, संत मार्क के विभिन्न कष्टों का दृश्य सहन नहीं कर सका और उसने साहसपूर्वक राजा से कहा:

'हे राजा! क्या यह हम सभी ईसाइयों के सामने हमारे लिए शर्म की बात नहीं है कि हम एक बुज़ुर्ग व्यक्ति को भी हरा नहीं सके? हालाँकि उस पर विजय प्राप्त करना गौरवशाली या सम्मानजनक नहीं होता, पर उससे स्वयं पराजित होना वास्तव में एक बड़ी अपमान की बात है!'

इस प्रकार ईसाइयों के साहस ने व्यर्थ के राज्यपालों और राजाओं को शर्मिंदा कर दिया।

और एरेफुसियों द्वारा दी गई यातना इतनी भयंकर थी कि तुलना में एचेट[2717] और फेलारिस[2718] की क्रूरता भी सौम्य लगती; अपनी दुष्टता में, वे दुष्टता के आविष्कारक और उनके उकसाने वाले, शैतान से भी आगे निकल गए।"

यहाँ सेंट मार्क के बारे में सेंट ग्रेगरी ऑफ़ निस्सा का विवरण है।

तो अपने हिस्से के लिए थियोडोरेट[2719] , यह बताता है कि अरेफुसियों ने, अद्भुत वृद्ध, संत मार्क के अटूट धैर्य को देखकर, उनके महान धैर्य पर आश्चर्यचकित होकर नम्र हो गए; उन्होंने उन्हें मुक्त कर दिया। फिर, उनकी शिक्षाओं को सुनने के बाद, वे पवित्र विश्वास की ओर मुड़ गए और सभी ईसाई बन गए।

जहाँ तक संत सिरिल डीकन का प्रश्न है, वही थियोडोरेट निम्नलिखित का वर्णन करते हैं:

– कौन बिना आँसू बहाए फिनिसिया में मूर्तिपूजकों द्वारा की गई अत्याचारों को याद कर सकता है? क्योंकि लेबनान से सटे हुए हेलीओपोलिस नगर में, उन अधर्मी मूर्तिपूजकों ने, डिकिन सिरिल को याद करके, जिन्होंने कॉन्स्टेंटाइन के शासनकाल में उत्साह से भरकर नगर की कई पूजनीय मूर्तियों को नष्ट कर दिया था, न केवल उनकी हत्या कर दी, बल्कि, उसका पेट चीरकर, अपने क्रोध में उसके आंतों को अपने दांतों से कुतरने लगे। लेकिन यह सर्वज्ञ ईश्वर की दृष्टि से नहीं छूटा, और उन्हें उनके दुष्टता का उचित दंड मिला। जिन लोगों ने ऊपर वर्णित कृत्य करने की हिम्मत की, वे सबसे पहले अपने दाँत खो बैठे: उनमें से एक-एक करके सब गिर पड़े; फिर उन्होंने अपनी जीभें खो दीं: वे सड़ने लगीं, गल गईं और उनके मुँह से गिर गईं। अंत में, वे अंधे हो गए; ऐसी सज़ाओं ने सच्ची भक्ति की शक्ति की एक स्पष्ट पुष्टि का काम किया।

फिलिस्तीन के शहरों अस्कलॉन और गाज़ा में, पहले पुरोहित पद पर नियुक्त पुरुषों, और फिर ईश्वर को समर्पित महिलाओं और कुंवारी लड़कियों के पेट को यातना देने वालों ने चीर दिया, जिन्होंने उनमें जौ भर दिया और उन्हें सूअरों द्वारा खाए जाने के लिए फेंक दिया; यातना देने वालों द्वारा यह अमानवीय उपहास किया गया। इसके लिए, पवित्र शहीदों के लिए मसीह के राज्य, में विजयी मुकुट तैयार किए गए, जबकि यातना देने वालों को नरक में शाश्वत यातना का सामना करना पड़ रहा है, जो हमारे सच्चे ईश्वर, यीशु मसीह से एक न्यायसंगत प्रतिशोध के रूप में उनकी प्रतीक्षा कर रहा है, जिनका महिमा युगानुयुग हो। आमीन[2720] ।

हमारे पूजनीय पिता जॉन द हरमिट की स्मृति

29 मार्च को स्मरणोत्सव

एक समय जुलियाना नाम की एक धनी, अत्यंत सुंदर और ईश्वर-भयभीत महिला रहती थी[2721] । अपनी युवावस्था में उसने अपने पति को खो दिया और दो छोटे बच्चों, जॉन और थेमिस्टिया के साथ विधवा रह गई। जब ईसाइयों को मृत्युदंड देने का आदेश जारी किया गया[2722] , तो वह जॉन को, जो कि किशोरावस्था में पहुँच चुका था, अपने साथ ले गई और उसके

[2716] एपार्क – एक प्रांतीय गवर्नर।

[2717] अचेट – एपिरस का एक प्राचीन राजा, जो अपनी विशेष क्रूरता के लिए प्रसिद्ध था, जिसने अपनी एकमात्र बेटी मेटोपे की आँखें फोड़ दीं।

[2718] फैलेरिस – एग्रीजेंटम (सिसिली द्वीप के दक्षिण में स्थित एक डोरियन उपनिवेश) का एक तानाशाह, जो छठी शताब्दी ईसा पूर्व में रहता था। वह अपनी असाधारण क्रूरता के लिए जाना जाता था और अपने प्रजा के साथ अत्यंत कठोरता से पेश आता था।

[2719] धन्य थियोडोरेट – एक चर्च फादर जो 5वीं शताब्दी में रहते थे।

[2720] संत मार्क और सिरिल चौथी शताब्दी के मध्य में निधन हो गए।

[2721] जुलियाना अफ्रीका में और, संभवत; मिस्र में रहती थीं।

[2722] यह ध्यान में रखते हुए कि परमपूज्य जॉन चौथी शताब्दी में रहते थे, यह मानना चाहिए कि यह फरमान डायोक्लेटियन द्वारा जारी किया गया था, जिसने 303 में पूरे साम्राज्य में ईसाइयों पर बड़े पैमाने पर अत्याचार शुरू किया था।

साथ एक नरि्जन इमारत में छपि गई, और उसे प्रभु की शकि्षा (एफ 6:4) में पाला, उसे लगातार कतिाबें पढ़ना और प्रार्थना करना सखिाती रही। वह लड़का अपनी माँ को छोड़कर कभी-कभी पास के एक मठ में चला जाता था और वहाँ गुप्त रूप से प्रार्थना करने के बाद लौट आता था, क्योंकि उस समय सभी ईसाई मूर्तपिूजकों के डर से छपि रहे थे। जब वह एक दनि, अपनी आदत के अनुसार, मठ गया, तो वहाँ उसे एक धार्मकि व्यक्ति मलिा जसिने उसे सलाह दी कि अपनी आराधना के लिए, मठ में अभ्यास करने के बजाय सुनसान जगहों पर जाना बेहतर होगा, जहाँ वह हमेशा अपने उत्पीड़क के हाथों में पड़ने के खतरे में रहता। इस सलाह को दलि पर लेते हुए, लड़के ने अपनी माँ से कहा:

'मेरी प्यारी माँ, एक धर्मनष्ठि व्यक्ति ने मुझे अपने पास आने का नमिंत्रण दयिा है, और मुझे वशि्वास है कि यह मुख्य रूप से आपकी प्रार्थनाओं के कारण ही संभव हुआ है।'

जुलयिाना ने यह सोचकर अपने बेटे को जाने दयिा कि वह जल्द ही वापस आ जाएगा। लेकनि जॉन, अपनी माँ और बहन को अलवदिा कहकर, रेगस्तिान में फार्मुफयिस नामक एक मस्रि के तपस्वी के पास गया, और प्रार्थना के लिए उनका आशीर्वाद लेकर, रेगस्तिान की गहराई में नकिल पड़ा। वहाँ उसे साँपों, बचि्छुओं और अन्य सरीसृपों से भरा एक सूखा कुआँ मलिा, और प्रार्थना करने के बाद, वह उसमें कूद गया। कुआँ बीस कोहनी गहरा था[2723] , लेकनि प्रभु का स्वर्गदूत जॉन को सहारा देता रहा, और वह सुरक्षति रहा। कुएँ के तल पर खड़े होकर, अपने फैले हुए बाजुओं को क्रूस के आकार में फैलाए हुए, उन्होंने बनिा सोए, खाए-पिए चालीस दनि प्रार्थना में बतिाए, और सभी सरपट जीव कुएँ से चले गए। इसके बाद, जसि स्वर्गदूत ने हमेशा फार्मूफयिस के लिए भोजन लाया था, उसने जॉन के लिए भी रोटी लाई, और उस पूजनीय व्यक्ति से कहा:

'प्रभु ने यह रोटी तुम्हारे लिए भेजी है, ताकि तुम इसे अब्बा[2724] जॉन के कुएँ तक ले जा सको।'

देवदूत स्वयं उसके पास रोटी ले जाना नहीं चाहते थे, कहीं कि वह, इतना छोटा होने के कारण, इससे घमंडी न हो जाए। फार्मूफयिस जॉन के पास गए और उन्हें रोटी दे दी। रेवरेंड ने रोटी स्वीकार कर ईश्वर का धन्यवाद कयिा और उसे खाने लगे। उस समय से लेकर लंबे समय तक, उन्हें फार्मूफयिस से प्रतदिनि भोजन मलिता रहा और वे इसके लिए प्रभु की स्तुति करते रहे। इस बीच, शैतान, पादरी जॉन के धार्मकि कार्यों को सहन न कर सका, एक बार उसने अपने एक पूर्व सेवक का रूप धारण कयिा और फार्मुफयिस के पास आकर उसे धोखा दयिा; और फार्मुफयिस उसे उस कुएँ तक ले गया जहाँ पादरी जॉन तपस्या कर रहे थे। लेकनि जब राक्षस ने जॉन से कुछ अनुचति कहा, तो जॉन ने फार्मुफयिस को सही राह दखिाई, और राक्षस को शर्मदिा करके खुद से दूर भगा दयिा। इसके बाद, शैतान ने राक्षसों का एक समूह इकट्ठा कयिा और उन्हें जॉन की माँ और बहन, उसके रशि्तेदारों और पड़ोसयिों, उसके नौकरों, नौकरानयिों और परचितिों का रूप धारण करने का आदेश दयिा, और वे सभी कुएँ पर आए, और आँसू बहाते हुए उससे वनिती करने लगे कि वह उन्हें अपना रूप दखिाए, क्योंकि वे कथति तौर पर उसे देखना चाहते थे; लेकनि उस समय कुएँ के तल पर अपनी नयिमति प्रार्थना कर रहे परम पावन ने उनसे कहा: 'मेरे पास से चले जाओ', और सभी राक्षस अदृश्य हो गए।

कुएँ में दस साल रहने, सभी प्रकार के संन्यासी चमत्कार करने और साहसपूर्वक प्रभु को प्रसन्न करने के बाद, पूजनीय जॉन अपने शाश्वत नविास के लिए प्रस्थान कर गए। उनके अंतमि संस्कार के लिए, एक स्वर्गदूत के नरि्देश पर, क्रसिचियिस नाम का एक संन्यासी आया, जो तीस साल से रेगस्तिान में सेवा कर रहा था। तीन दनिों तक उन्होंने पूजनीय पति से कुएँ से बाहर नकिलने का आग्रह कयिा, और ईश्वर की शक्ति से उन्होंने उनसे अपने जीवन का कुछ भी छपिाने के लिए नहीं कहा, बल्कि सब कुछ क्रम से बताने के लिए कहा, क्योंकि यह ईश्वर को प्रसन्न करता है। और एक अद्भुत चमत्कार हुआ, जसि सुनने या देखने वाले सभी लोग चकति रह गए: कुएँ के तल की जमीन अपने आप बीस कोहनों तक ऊपर उठ गई, और पूजनीय पुरुष एक साथ आ गए। भकि्षु क्रसिचियिस की वनिती के कारण, जॉन ने कुछ भी नहीं छपिाया, बल्कि क्रसिचियिस को अपने बारे में सब कुछ बता दयिा, और बाद वाले ने एक भाईचारे के चुंबन से इसके लिए उनका धन्यवाद कयिा। इसके बाद, पूजनीय जॉन ने दफन के लिए खुद को तैयार कयिा और एक बार फरि प्रभु के पास प्रस्थान कर गए। तब क्रसिचियिस ने उनके शरीर को अपनी चादर से ढक दयिा, ताकि उसकी दोनों छोर कुएँ के मुँह पर आ जाएँ, और, प्रथागत भजन गाने के बाद, दफन स्थल पर एक खजूर का पेड़ लगाया। तुरंत खजूर का पेड़ जड़ पकड़ गया,

---

[2723] एक क्यूबटि 10.5 वर्शोक के बराबर था। (एक वर्शोक लगभग 4.45 सेमी था। एक क्यूबटि की लंबाई को फैली हुई बीच की उंगली की नोक से कोहनी के जोड़ तक की दूरी के रूप में परभिाषति कयिा गया था, और यह 46 सेमी तक भन्नि हो सकती थी। – **द एबीसी ऑफ़ फ़ेथ* के संपादक।*)

[2724] 'अब्बा' का अर्थ 'पति' है।

एक बड़े ओक की ऊँचाई तक बढ़ गया, उसमें फूल खिले और भरपूर फल लगे। यह देखकर, भिक्षु क्रिसिसियिस ने ईश्वर का धन्यवाद किया, और मन ही मन कहा:

'तेरा ही महिमा हो, हे प्रभु, क्योंकि तू स्वयं अपने प्रेमियों को प्रकट करता है और उन्हें अपने राज्य का वारिस बनाता है।'

और जब वह इस पर प्रार्थना और मनन कर रहा था, तो एक स्वर्गदूत ने तुरंत उसे उठा लिया और उसे उस स्थान पर ले गया जहाँ वह ठहरा हुआ था। बाद में, एक धार्मिक व्यक्ति को बुलाकर, क्रिसिचियिस ने उससे वह सब कुछ लिखने के लिए कहा जो उसने देखा और सुना था[2725] ।

हमारे पूजनीय पिता यूस्टैथियिस कन्फेशर, बिथिनिया के बिशप की स्मृति[2726]

29 मार्च को स्मरणोत्सव

हमारे पवित्र पिता और कन्फैसर यूस्टाथियिस ने इस संसार के सुख-साधनों को एक भारी बोझ मानकर त्याग दिया और परमेश्वर की आज्ञाओं का उत्साहपूर्वक पालन करते हुए, स्वयं को संन्यासी जीवन के लिए समर्पित कर दिया। उचित समय पर, मसीह का यह जुआ अपने कंधों पर उठाते हुए और अपनी आत्मा के उद्धार का ध्यान रखते हुए, वे एक पुरोहित बने। इस पद पर रहते हुए उन्होंने कई आध्यात्मिक आनंद का अनुभव किया, जिसके लिए वे निरंतर प्रभु का धन्यवाद करते थे। ईश्वर में महान आस्था और सभी के प्रति सच्चा प्रेम रखने वाले, वे एक विनम्र, नम्र और दयालु मार्गदर्शक तथा सत्कर्मों के उत्साही कर्ता थे। बाद में ईश्वर की इच्छा से बिथुनिया के बिशप के रूप में चुने गए, उन्होंने दिव्य प्रेरितों की शिक्षा और परंपरा के अनुसार कई वर्षों तक चर्च का शासन किया। जब मूर्ति-विरोधी विधर्म के संबंध में ईश्वर के सभी चर्चों में उथल-पुथल मच गई, तो उन्होंने, पवित्र धर्मग्रंथों में स्वयं को स्थापित करके, उन सभी को परास्त कर दिया जिन्होंने ईश्वर के चर्चों को अपने वचन की तलवार से धमकाया था। परिणामस्वरूप, उस विधर्म के कुछ समर्थकों ने उस समय के अधर्मी सम्राट के पास उनकी निंदा की; और उस पवित्र और सर्व-सम्मानित प्रतिमाओं की उनकी श्रद्धा और पूजा के लिए उस पूजनीय व्यक्ति ने जो कुछ भी सहन किया, उसका वर्णन कैसे किया जा सकता है? उन्हें धमकियों, थूकने, पिटाई, कारावास, चिंता, उथल-पुथल और लाठी से पीटे जाने का सामना करना पड़ा। अंत में, तेज लाठियों से छेदन-भेदन किए जाने के बाद, उन्हें उनके पद से हटा दिया गया और निर्वासित कर दिया गया। कई वर्षों तक निर्वासन में रहने के बाद, पूजनीय यूस्टैथियिस ने अपमान, शत्रुता, वंचितता, भूख, प्यास और नग्नता के बीच, ईश्वर की कृपा से, अपने शाश्वत निवास के लिए प्रस्थान किया।

12 अप्रैल

30 मार्च (पुराना संस्करण)

उसी दिन, हम सिरिक्यूज़ के बिशप, हमारे पूजनीय पिता ज़ोसिमास का स्मरण करते हैं।

उसी दिन, संत पैंटेलिमोन की माता, संत यूबाला की स्मृति मनाई जाती है, जो तीसरी शताब्दी में रहती थीं और अपने पुत्र की शहादत से पहले (वर्ष 305 से पहले) निधन हो गया था।

[2725] सम्माननीय जॉन चौथी शताब्दी में रहे और उन्होंने अपने तपस्वीय कार्य किए।

[2726] बिथिनिया एशिया माइनर के उत्तर-पश्चिमी भाग में एक रोमन प्रांत था। पूजनीय यूस्टेथियिस ने मरमरा सागर की एक खाड़ी के अंदर गहरे स्थित की (अब त्सोंप्लेक) शहर में बिशप का पद संभाला।

हमारे पूजनीय पिता जॉन क्लाइमैकस का जीवन[2727]

30 मार्च को स्मरण किया जाता है

आदरणीय जॉन क्लाइमैकस ने माउंट सिनाई पर परिश्रम किया, जो पुराने नियम के वृत्तांतों (निर्ग. 19:20, 24, 34; लेवी. 7; गिनती. 10:33; भजन संहिता 67:8)। तीसरी शताब्दी के मध्य से, पवित्र सिनाई पर्वत ने ईसाई तपस्वियों के लिए एक शरणस्थली के रूप में काम किया, जो उत्पीड़न से बचने के लिए यहाँ शरण लेने आए थे; अन्य लोगों को सारसेन्स द्वारा बंदी बनाकर यहाँ लाया गया था। चौथी शताब्दी में, जब ईसाइयों का उत्पीड़न समाप्त हो गया, तो यहाँ मठवाद दृढ़ता से स्थापित हो गया। संन्यासी यहाँ होने वाली पुराने नियम की महान घटनाओं की पवित्र स्मृतियों और सिनाई के सुनसानपन से भी यहाँ आकर्षित हुए। यात्री कहते हैं कि उन्हें सिनाई प्रायद्वीप से अधिक सुनसान कोई जगह नहीं मिली। यहाँ जंगली जानवर भी ज्यादा देर तक नहीं ठहरते; अरब के रेगिस्तान से संयोगवश यहाँ भटक कर आने के बाद, वे अन्य जानवरों से भरे स्थानों पर वापस लौटने के लिए जल्दी करते हैं। सिनई पर्वत के आसपास विशेष रूप से सुनसान स्थान थे, जो एकांत तपस्या के लिए अत्यधिक उपयुक्त थे, और उनमें से एक (फोला) में जॉन क्लाइमक्स ने कई वर्षों तक अपनी तपस्या की। जस्टिनियन प्रथम के सिंहासनारोहण से पहले, सिनाई के तपस्वियों के पास कोई मठ नहीं था – उनके पास केवल एक मजबूत मीनार और उसके पास संत हेलेना, एपोस्टल्स के समकक्ष द्वारा निर्मित एक छोटा चर्च था। 557 में, सम्राट जस्टिनियन के शासनकाल के दौरान, भिक्षुओं के अनुरोध पर यहाँ एक मठ का निर्माण किया गया।

संत जॉन 16 वर्ष की आयु में माउंट सिनाई आए, सिनाई के हर्मिट्स द्वारा अपनाए जाने वाले मठवासी जीवन की ख्याति से आकर्षित होकर। उनके समकालीन जीवनीकारों को भी यह नहीं पता था कि जॉन कहाँ से आए थे[2728] । भिक्षु डैनियल स्पष्ट रूप से कहते हैं: 'मैं निश्चितता या सटीकता के साथ नहीं कह सकता कि इस वीर तपस्वी को किस शहर और देश ने उसके तपस्वी जीवन शुरू करने से पहले पाला-पोसा था।' और वे आगे कहते हैं: 'लेकिन जिस शहर में अब यह अद्भुत व्यक्ति अमर भोजन से पोषित होता है—वह मेरे लिए पूरी तरह से अज्ञात नहीं है। क्योंकि वह अब उस शहर में रहता है जिसके बारे में प्रसिद्ध गायक—पवित्र प्रेरित पौलुस—कहते हैं: *"हमारी नागरिकता स्वर्ग में है"* (फिलिप्पियों 3:20)। वहाँ वह वास करता है, अक्षय आशीर्वादों के अमूर्त आनंद का भोग करते हुए, अपने कर्मों का उचित प्रतिफल और अपनी मेहनत का पुरस्कार प्राप्त कर चुका है, और उन लोगों के साथ स्वर्ग के राज्य का वारिस बना है जिनके पाँव पहले से ही सीधे मार्ग पर खड़े हैं (भजन संहिता 25:12)। 'और जहाँ तक इस बात का प्रश्न है कि जॉन ने, इस असीम आनंद के लिए, अपने नश्वर शरीर में रहते हुए कैसे परिश्रम किया,' दानियेल आगे कहते हैं, 'मैं इसे पूरी स्पष्टता के साथ बताऊँगा।'

'यह धन्य यूहन्ना, जब वह देह में सोलह वर्ष का हुआ—यद्यपि अपने मन की पूर्णता में वह पहले ही ऐसे था जैसे हजार वर्ष जी चुका हो—ने स्वयं को महान महायाजक, परमेश्वर, के पास एक निर्दोष और स्वेच्छा से दी गई बलि के रूप

[2727] परम पूज्य जॉन क्लाइमैकस का जीवन, उनके निधन के तुरंत बाद, उनके एक समकालीन और मित्र – रैफ मठ के भिक्षु डैनियल द्वारा दर्ज किया गया था। रैफ मठ सूएज़ की खाड़ी के तट पर स्थित था, जो सिनाई से दो दिन की यात्रा पर था। डैनियल के विवरण में एक अन्य भिक्षु ने भी योगदान दिया है, जिसका नाम अज्ञात है, जो स्वयं जॉन क्लाइमैकस के शिष्य थे और जिन्होंने अपने आध्यात्मिक गुरु के जीवन के कई खंडित विवरण छोड़े हैं।

[2728] ऐसा माना जाता है कि जॉन क्लाइमक्स ज़ेनोफ़ोन और मैरी के पुत्र थे, जिनकी स्मृति में पवित्र चर्च 26 जनवरी को स्मरणोत्सव मनाता है। चेती-माइनी (26 जनवरी) में वर्णित है कि कॉन्स्टेंटिनोपल के धनी और कुलीन व्यक्तियों, ज़ेनोफ़ोन और मैरी के दो पुत्र थे: जॉन और आर्काडियस। उनके माता-पिता उन्हें शिक्षा देना चाहते थे। उस समय, सीरियाई शहर बेरिते (अब बेरूत) में एक स्कूल प्रसिद्ध था, इसलिए उन्होंने अपने बच्चों को वहाँ भेज दिया। एक दिन, उनके माता-पिता ने अपने बेटों को घर बुलाया क्योंकि उनके पिता गंभीर रूप से बीमार पड़ गए थे। जब वे स्कूल वापस जा रहे थे - उनकी यात्रा भूमध्य सागर के पार हो रही थी - तो अचानक समुद्र में एक भयंकर तूफान आ गया और जिस जहाज में वे सवार थे, वह टूट गया। फिर भी कोई भाई मरा नहीं - वे जहाज के तख्तों से चिपककर डूबने से बच गए और लहरों द्वारा फिलिस्तीन में किनारे पर लाए गए। हालाँकि, ऐसा हुआ कि उनमें से प्रत्येक को तट के एक अलग हिस्से पर लाया गया, इसलिए वे एक-दूसरे की तकदीर से अनजान थे। अपने चमत्कारी उद्धार के बाद, दोनों भाइयों ने, उन पर आई इस विपत्ति को मठवासी जीवन के लिए एक दैवीय आह्वान मानकर, फिलिस्तीन में अलग-अलग मठों में प्रवेश कर लिया, और आर्काडियस ने अपना नाम बदलकर जॉर्ज रख लिया। काफी समय बाद, दोनों भाई फिर से मिले, और वास्तव में अपने माता-पिता की उपस्थिति में, जिसके बाद उनके माता-पिता ने भी संन्यास का संकल्प लिया। ज़ेनोफ़ोन और मैरी के बेटों में से एक - जॉन - को ही जॉन क्लाइमैकस माना जाता है। इस दृष्टिकोण का समर्थन, सबसे पहले, इस तथ्य से होता है कि उनके एक जीवनीकार के अनुसार, जॉन क्लाइमैकस का वास्तव में जॉर्ज नाम का एक भाई था; दूसरा, उस आदरणीय की उच्च शिक्षा का स्तर, जो कुलीन मूल का सुझाव देता है, और सबसे बढ़कर, उनकी *सीढ़ी*, जो जॉन में पवित्र धर्मग्रंथ, पवित्र पिताओं के कार्यों और यहां तक कि संप्रदाय-विरोधी लेखन का गहरा ज्ञान प्रकट करती है।

में अर्पति कर दयिा। वह अपने शरीर को सनिाई पर्वत पर, और अपनी आत्मा को स्वर्गीय पर्वत पर ले गया; ऐसा प्रतीत होता है कि पिहाड़ पर चढ़कर, वह अपने मन से अदृश्य ईश्वर का चतिन करते हुए स्वर्गीय ऊँचाइयों के नकिट पहुँचा। संसार से अलग होकर, उसने, शुरू से ही , नम्रता से सुसज्जति वनिम्रता को, 'मन की कुंवारी कन्याओं'[2729] के नेता के रूप में, सद्गुणों के शकि्षक के रूप में प्रयि माना। उसने आत्म-इच्छा और अहंकार को त्याग दयिा और, महमिामय वनिम्रता ग्रहण कर, मठ-जीवन में प्रवेश करते ही—सतर्क जांच के माध्यम से—उस धोखेबाज, आत्म-संतुष्टि और आत्म-वशि्वास को अपने से दूर भगा दयिा। अपना सरि झुकाकर, उन्होंने स्वयं को एक कुशल आध्यात्मकि मार्गदर्शक[2730] के हवाले कर दयिा, यह इच्छा करते हुए कि उनके मार्गदर्शन में वे भावों की खतरनाक खाई को सुरक्षति रूप से पार कर सकें। लौककि जीवन का त्याग करने के बाद, जॉन ने संतों के बीच एक छोटे बच्चे, एक बोलने में असमर्थ लड़के की तरह आचरण करना शुरू कर दयिा, मानो उसकी आत्मा में न तो अपना कोई तर्क हो और न ही अपनी कोई इच्छा, बल्कि वह अपनी प्राकृतकि शक्तयिों से पूरी तरह रहति हो। और सबसे आश्चर्यजनक बात यह है कि, अपने वशिाल ज्ञान के बावजूद, जॉन एक वनिम्र भकि्षु बने रहे, क्योंकि वे स्वर्गीय सादगी से प्रेम करने लगे थे, और उन्होंने अपनी बुद्धि का घमंड नहीं कयिा, बल्कि परमेश्वर के सामने स्वयं को नम्र कयिा।

आदरणीय जॉन के गुरु और मार्गदर्शक – जैसा कि सकि्रोनस[2731] बताता है – अबा मार्टरियिस थे। जब, अपने जीवन के 20वें वर्ष में, मार्टरियिस ने जॉन का मुंडन करके उन्हें संन्यासी जीवन में प्रवेश कराया, तो अबा स्ट्रैटगियिस[2732] ने उसी दनि भवष्यिवाणी की कि वह ब्रह्मांड का एक महान प्रकाश स्तंभ बनेगा – एक भवष्यिवाणी जो बाद में सच साबति हुई।

एक दनि, अबा मार्टरियिस अपने शष्यि जॉन के साथ सनिाई के महान अनास्तासयिस के पास गए; उन्हें देखकर अनास्तासयिस ने अबा मार्टरियिस से कहा:

'मुझे बताइए, मार्टरियिस, आपने अपने इस शष्यि को कहाँ पाया, और कसिने उसे भकि्षु के रूप में दीक्षा दी?'

'वह आपका सेवक है, पतिाजी, और मैंने ही उसे भकि्षु बनाया है,' मार्टरियिस ने उत्तर दयिा।

और अनास्तासयिस ने आश्चर्य से कहा:

'हे अबा मार्टरियिस! आपने माउंट सनिाई के मठाध्यक्ष का मुंडन कयिा है।'

एक अन्य अवसर पर, अपने गुरु अबा मार्टरियिस ने इस जॉन को भी अपने साथ लेकर, महान वृद्ध जॉन द सवाइट के पास गए, जो उस समय गुडयिन रेगस्तिान में रहते थे। जैसे ही बड़े संत ने उन्हें देखा, वे उठे, पानी डाला, जॉन के पैर धोए और उनका हाथ चूमा; लेकनि उन्होंने बाबा मार्टरियिस के पैर नहीं धोए। फरि, इसके बाद, सवाइट संत के एक शष्यि, स्टीफन ने बड़े संत से पूछा:

'पतिाजी, आपने ऐसा क्यों कयिा? आपने शष्यि के पैर धोए, गुरु के नहीं, और उसके हाथ को चूमा?'

इस पर वृद्ध ने उत्तर दयिा:

'मेरे बच्चे, मुझ पर वशि्वास करो, मुझे नहीं पता था कि यह युवा भकि्षु कौन था; मैं तो सनिाई के मठाधीश का स्वागत कर रहा था, और मैंने मठाधीश के ही पैर धोए थे।'

जब आदरणीय जॉन अभी एक युवा भकि्षु थे, तब सनिाई के पवत्रि पतिाओं की उनके बारे में ऐसी भवष्यिवाणयिाँ थीं, और वे समय आने पर क्रमशःसत्य साबति हुईं।

अगले 19 वर्षों तक, आदरणीय जॉन ने अपने आध्यात्मकि पतिा की आज्ञाकारतिा में अपने मोक्ष के मार्ग का अनुसरण कयिा, जसिके बाद उन्हें इस मोक्ष के मार्ग को छोड़ने के लिए मजबूर होना पड़ा, क्योंकि उनके आध्यात्मकि पतिा का नधिन हो गया था। जैसा कि भकि्षु डैनयिल लखिते हैं, उसे स्वर्गीय राजा के पास अपनी ओर से एक मध्यस्थ और वकील के रूप में भेजने के बाद - जॉन मौन के पथ पर चल पड़े, और उन्होंने अपने गुरु की प्रार्थनाओं को कलिबंदी को ध्वस्त करने के लिए एक शक्तशिाली हथयिार के रूप में अपना लयिा (2 कुरन्थियिों 10:4)। अपने एकांत तपस्वी जीवन के लिए, जॉन ने फोला नामक एक बहुत ही सुनसान जगह चुनी, जो चर्च से आठ वर्स्ट (लगभग 8 कलिोमीटर) दूर थी। वह केवल पर्व के दनिों में ही अपने एकांत से बाहर नकिलते थे, जब वे दैवीय सेवा के लिए चर्च जाते थे। अपने मरुस्थल के

[2729] अर्थात्, अच्छे झुकाव – क्रीट के एलयिाह की व्याख्या के अनुसार।

[2730] अर्थात्, बाबा शहीद, जैसा कि सनिाई के एक अज्ञात भकि्षु द्वारा लखि गए नम्निलखिति वृत्तांत से स्पष्ट है।

[2731] सकि्रोन – सनिाई मठ के एक भकि्षु और जॉन क्लाइमक्स के समकालीन; उन्होंने 'सनिाई के पवत्रि पुरुषों की कथाएँ' लखिीं।

[2732] वह मुंडन समारोह में उपस्थति थे।

एकांतवास में, आदरणीय ने चालीस वर्ष व्यतीत क[2733] , दिव्य प्रेम से जलते हुए, जिसकी अग्नि से वे निरंतर प्रज्वलित रहते थे। लेकिन आदरणीय जॉन के उन कारनामों को, जो उन्होंने वहाँ गुप्त रूप से किए, शब्दों में बयां करने या विस्तार से वर्णन करने में कौन सक्षम है? फिर भी, जैसे छोटी चीज़ों से बड़ी चीज़ों का पता चलता है, वैसे ही, उनके कार्यों की कुछ झलकियों से, हम इस पूजनीय की सद्गुणों से परिपूर्ण जीवन को जान पाते हैं।

उन्होंने अपने मठ के संकल्पों द्वारा निषिद्ध हर चीज़ का सेवन किया, लेकिन उन्होंने इसे अत्यंत संयमित मात्रा में ग्रहण किया। और इतनी कम मात्रा में खाने से, उन्होंने बुद्धिमानी से अहंकार को कुचल दिया, क्योंकि वे सब कुछ इस तरह खाते थे कि उनके उपवास से उनका मन गर्व से न भर जाए; और जो कुछ वे खाते थे, उसकी तुच्छता से, उन्होंने कामुक जुनून की स्वामिनी और जननी—अर्थात लालच—को नम्र किया, और अपने भोजन की अत्यंत मामूली प्रकृति के माध्यम से उसे पुकार कर कहा: *'शांत हो जा, रुक जा'* (मार्क 4:39)। मरुभूमि में अपने जीवन और लोगों की संगति से दूर रहने के द्वारा, आदरणीय ने कामवासना की अग्नि को बुझा दिया, ताकि अंततः वे राख से ढक गए और अी पूरी तरह से बुझ गई। इस पराक्रमी तपस्वी ने दान देकर और स्वयं से बुनियादी ज़रूरतें भी छीनकर, धन के प्रेम से बहादुरी से परहेज़ किया, जिसे पवित्र प्रेरित पौलुस मूर्तिपूजा कहते हैं (इफिसियों 5:5)। आत्मा को दुर्बल करने वाली और मार डालने वाली आलस्य और सुस्ती का उन्होंने जोश और परिश्रम से मुकाबला किया, मानो क्षणभंगुरता की स्मृति से डँक मारते हुए। उन्होंने स्वयं को दुख और आँसुओं के अमूर्त बंधनों में बाँधकर, हर जुनून और हर कामुक इच्छा के जाल और बंधनों से मुक्त कर लिया; जबकि आज्ञाकारिता के माध्यम से उनके भीतर की चिड़चिड़ाहट पहले ही मर चुकी थी। बहुत कम लोगों से मिलने और उससे भी कम बोलने के कारण, उन्होंने मकड़ी के जाले की तरह अहंकार की चिपचिपाहट को मार डाला। 'तो फिर, मैं उनके घमंड पर विजय के बारे में क्या कहूँ,' भिक्षु डैनियल कहते हैं, '? मैं उस महान हृदय की पवित्रता के बारे में क्या कहूँ, जिसकी नींव आज्ञाकारिता द्वारा इस नए बेसेलेल[2734] ने रखी थी, और जिसे स्वर्गीय यरूशलेम के राजा, प्रभु ने, अपनी उपस्थिति से मिलकर पूर्ण किया था; क्योंकि उनकी उपस्थिति के बिना, शैतान और उसकी सेना को नीचे नहीं गिराया जा सकता। लेकिन इस माला में कहाँ, "दानियेल ने कहना जारी रखा, "जो हम पूजनीय जॉन के लिए प्रशंसा के शब्दों से बुन रहे हैं, मैं उनकी आँसुओं के स्रोत को रखूँगा, जैसा हम बहुत कम लोगों में देखते हैं? और आज भी वह गुप्त स्थान जहाँ ये आँसू बहे थे, जाना जाता है: यह एक बहुत तंग गुफा है, जो कुछ हद तक एकांत में और पहाड़ी की ढलान पर स्थित है, जो जॉन की कोठरी और अन्य कोठरियों से पर्याप्त दूरी पर है ताकि लोग उसे सुन न सकें और व्यर्थता के मार्ग को रोका जा सके। यह कोठरी, जहाँ जॉन अक्सर जाते थे, उनकी पुकारों, सिसकियों और ईश्वर से प्रार्थनाओं के कारण स्वर्ग के जितना संभव हो उतना करीब हो गई थी—इस तरह की आवाज़ें केवल उन्हीं से सुनी जा सकती थीं जिन्हें चाकुओं से काटा जा रहा हो, लाल-गरम लोहे से जलाया जा रहा हो, या जिनकी आँखें फोड़ी जा रही हों[2735] । वे केवल इतना ही सोते थे, जितना कि अत्यधिक जागने से उनका मन नष्ट न हो जाए। सोने से पहले, वह लंबी प्रार्थना करते और कितिबें लिखते थे – उदाहरण के लिए, उन्होंने *द लैडर* (सीढ़ी) नामक एक कृति रची, जिसके कारण बाद में वे स्वयं 'सीढ़ी-निर्माता' के नाम से जाने गए। जॉन के लिए, कितिबें लिखना निराशा को दूर करने का एक साधन था। वास्तव में, उनका पूरा जीवन अखंड प्रार्थना और ईश्वर के प्रति अद्वितीय प्रेम से भरा था; क्योंकि, दिन-रात एक दर्पण में की तरह, पवित्रता और निर्मलता में उन्हें निहारते हुए, वह इस मनन से तृप्त होना न तो चाहते थे—या, अधिक सटीक रूप से कहें तो, वे ऐसा कर ही नहीं सकते थे।

मूसा नामक एक भिक्षु, आदरणीय जॉन के पुण्य जीवन से ईर्ष्या करके, उनसे अपने शिष्य बनाने का आग्रह करने लगा, ताकि वह उनसे सच्चा ज्ञान सीख सके। अपने अनुरोध का समर्थन करने के लिए, मूसा ने कई सम्मानित बुजुर्गों से अपने पक्ष में मध्यस्थता करने का आग्रह किया; और उन्होंने आदरणीय जॉन से मूसा को अपना शिष्य

[2733] उनके मठवासी जीवन की शुरुआत से ही।

[2734] बेज़लेल – हूर के पुत्र उरियाह का पुत्र, यहूदा के कुल और वंश का – मूसा के दिनों का एक कलाकार, जो परमेश्वर की आत्मा, बुद्धि, समझ, ज्ञान और हर प्रकार की कारीगरी से परिपूर्ण था (निर्गमन 31:1–5; निर्गमन 30:30–35)। उसे, दान गोत्र के ओहोलियाब के साथ, परमेश्वर की आज्ञा से, मंडप और उसकी सारी साज-सज्जा के निर्माण का कार्य सौंपा गया था (निर्गमन 31:2; निर्गमन 35:30)। इस प्रकार, जैसे पुराने नियम के बेजलेल ने कुशलता से तम्बू बनाया था, वैसे ही 'यह नया बेजलेल', अर्थात् संत जॉन क्लाइमक्स ने, कुशलता से अपनी आत्मा का तम्बू बनाया।

[2735] इन पवित्र आँसुओं ने जॉन की आत्मा में अद्भुत प्रभाव डाले, जैसा कि उनके अपने शब्दों से स्पष्ट है; अपनी *सीढ़ी* के एक अंश में वे कहते हैं: 'जैसे आग झाड़ियों को जलाकर नष्ट कर देती है, वैसे ही एक शुद्ध आँसू सभी बाहरी और आंतरिक अशुद्धियों को धोकर साफ कर देता है'।

स्वीकार करने का निवेदन किया। एक दिन, आदरणीय जॉन ने मूसा को सब्जी के बेडों को उर्वरित करने के लिए एक स्थान से मिट्टी लाने का निर्देश दिया। मोसेस, निर्दिष्ट स्थान पर पहुँचकर, लगन से काम कर रहा था। हालाँकि, दोपहर में जब गर्मी तेज हो गई, तो मोसेस, थककर, एक विशाल चट्टान के नीचे आराम करने के लिए लेट गया और सो गया। लेकिन प्रभु, जो नहीं चाहते कि उनके सेवक किसी भी कष्ट को सहें, ने अपनी कृपा से मूसा को अचानक मृत्यु से बचाया और संत जॉन को दुख से बचाया। उस समय, आदरणीय जॉन अपनी कोठरी में थे, जब उन पर एक हल्की नींद छा गई: अपनी नींद में उन्होंने एक भव्य पुरुष को देखा, जिसने जॉन को डाँटते हुए कहा:

'देखो, जॉन, तुम यहाँ चैन से सो रहे हो, जबकि मूसा खतरे में है।'

रेवरेंड तुरंत उठे और अपने शिष्य के लिए भक्तिपूर्वक प्रार्थना करने लगे। जब शाम हुई और शिष्य अपने काम से लौटा, तो जॉन ने उससे पूछा:

'क्या तुम्हारे साथ कुछ भी प्रतिकूल या अप्रत्याशित हुआ है?'

उसने उत्तर दिया:

'जब मैं दोपहर को एक बड़े पत्थर के नीचे सो रहा था, तो वह अचानक गिर पड़ा और अगर मैं उस जगह से जल्दी से भाग नहीं जाता तो वह मुझे कुचल देता, क्योंकि उसी क्षण मुझे लगा कि आप, पितीजी, मुझे बुला रहे थे।'

नम्र जॉन ने अपने शिष्य की मृत्यु से इस चमत्कारी रूप से मुक्ति के लिए परमपिता को महिमा दी, लेकिन उसने मूसा को अपने दर्शन के बारे में कुछ नहीं बताया।

आदरणीय जॉन सभी के लिए सदाचार के एक आदर्श और अदृश्य बीमारियों के उपचारक थे। एक बार, इसाक नामक एक भाई वेश्यावृत्ति के एक दानव द्वारा बुरी तरह पीड़ित था। गहरे दुख में, वह भाई इस महान जॉन से मदद मांगने के लिए दौड़ा और, कड़वाहट से रोते और सिसकते हुए, उसे अपने संघर्ष के बारे में बताया।

तब जॉन ने इसहाक से कहा:

'आओ, हम दोनों प्रार्थना में खड़े हों, मेरे मित्र!'

और वे अपनी प्रार्थना समाप्त भी नहीं कर पाए थे, जबकि पीड़ित भाई अभी भी अपने मुख को जमीन पर झुकाए पड़ा था, कि परमेश्वर ने अपने विश्वासयोग्य सेवक की विनती पहले ही स्वीकार कर ली थी; क्योंकि भटकता हुआ दानव सेंट जॉन की प्रार्थनाओं के द्वारा, मानो एक कोड़े से भगाया गया, इसहाक से भाग गया। इस प्रकार दाऊद की भजन-संग्रह के वचन पूरे हुए: *'वह अपने भक्तों की इच्छाएँ पूरी करता है, और उनकी प्रार्थना सुनता है'* (भजन संहिता 144:19)। और वह बीमार व्यक्ति, जब उसने स्वयं को स्वस्थ और अपनी पीड़ा से पूरी तरह मुक्त पाया, तो वह अत्यंत चकित हो गया; उसने परमेश्वर का धन्यवाद किया, जिसने अपने सेवक योहन को महिमामय बनाया, जिसने बदले में अपने चमत्कारों के द्वारा प्रभु की महिमा की।

जॉन के कुछ विरोधी, ईर्ष्या से प्रेरित होकर, उसे एक बकवास करने वाला और झूठा कहने लगे। हालाँकि, उन्होंने उन्हें सही साबित किया और अपने कर्मों से ही सभी को यह साबित कर दिया कि *'मेरे सामर्थ्य देने वाले* मसीह *में* मैं सब कुछ कर सकता हूँ (न केवल वचन से, बल्कि मौन से भी)' (फिलि. 4:13)और उसने पूरे एक साल तक मौन का पालन किया, और उनमें से एक भी शब्द नहीं बोला, जिससे उसके निकट याचना करने वाले बन गए: क्योंकि उन्हें एहसास हुआ कि किसी को भी लाभ के अनवरत स्रोत को नहीं रोकना चाहिए, और वे उसके पास आकर उससे विनती करने लगे कि वह एक बार फिर अपने ईश्वर-वचन बोलने वाले होंठ खोलें। यूहन्ना, बहस करने वाले न होने के कारण, उनकी आज्ञा मानकर एक बार फिर अपने पूर्व नियम का पालन करने लगे।

तब, सभी बातों में उसकी सफलता देखकर, मानो वह कोई नव-प्रकट हुआ मूसा हो, उन्होंने जॉन को जबरदस्ती मठ के मठाधीश के पद पर पदोन्नत कर दिया, इस प्रकार इस दीपक को मुख्य दीवान पर रख दिया। मौत सिनाई का मठाध्यक्ष पद, यद्यपि अपनी इच्छा के विरुद्ध, स्वीकार करने के बाद, यूहन्ना आत्मा में परमेश्वर के पर्वत के समीप आया, उसने परमेश्वर की अगम्यता को समझा, और मन के आरोहण द्वारा परमेश्वर के समीप आया, और परमेश्वर द्वारा स्थापित व्यवस्था को ग्रहण किया; उसने परमेश्वर का वचन ग्रहण करने के लिए अपना मुँह खोला; उसने आत्मा को अपनी ओर आकर्षित किया (भजन संहिता 118:131) और, अपने हृदय के भले भंडार से (मत्ती 12:35), उद्धार के भले वचन बहाए।

इस प्रकार, साठ वर्ष की मठवासी तपस्या के बाद, 75 वर्ष की आयु में जॉन को माउंट सीनाई का मठाधीश चुना गया। भिक्षु डैनियल टिप्पणी करते हैं, 'और इस दीपक को मुख्य दीपकदान पर रखकर विवेकी लोग गलत नहीं थे।' यह

नियुक्ति प्रभु को प्रसन्न लगी, जैसा कि एक विशेष और चमत्कारिक घटना से प्रकट हुआ। उनके एक जीवनीकार, जिनका नाम अज्ञात है, बताते हैं कि जॉन के महाधर्माध्यक्ष के रूप में पदभार संभालने के तुरंत बाद, लगभग 600 तीर्थयात्री उनके मठ में आए। जब सभी यात्री सिनाई के भाइयों के साथ मेज पर बैठ गए, तो एक अज्ञात व्यवस्थापक प्रकट हुआ, जो यहूदियों जैसी सफेद चोगा पहने हुए था, और उसने मेज पर नौकरों को हुक्म चलाया। लेकिन जब मेहमान चले गए और नौकर अपना भोजन करने बैठे, तो वह अद्भुत व्यवस्थापक फिर दिखाई नहीं दिया। विस्मित भिक्षुओं से, पूज्य जॉन ने कहा:

'खोज बंद करो: यह पवित्र नबी और विधि-दाता मूसा थे जिन्होंने इस स्थान पर सेवा की थी, जो उनका ही है।'

एक गर्मी में, फिलिस्तीन की भूमि में बारिश की कमी और एक बड़ी सूखा पड़ गई। स्थानीय निवासी माननीय जॉन के पास आए, और उनसे बारिश के लिए ईश्वर से प्रार्थना करने का अनुरोध किया। और जैसे ही माननीय जॉन ने प्रार्थना की, तुरंत ही भारी बारिश हुई और सूखी धरती को पानी देकर उसे उपजाऊ बना दिया।

जब संत जॉन के निधन का समय निकट आया, तो उन्होंने भक्तिपूर्वक सिनाई मठ के पूरे ब्रदरहुड – अपने आध्यात्मिक इस्राएलियों – को उपदेश दिया। केवल एक ही मामले में जॉन मूसा जैसे नहीं हुए, क्योंकि आदरणीय जॉन आत्मा में स्वर्गीय यरूशलेम में प्रवेश कर गए, जबकि मूसा देह में पृथ्वी पर यरूशलेम तक नहीं पहुँचे[2736] ।

और जब यह नए मूसा, परम पूजनीय एबॉट जॉन, प्रभु के पास जा रहे थे, तो उनके भाई, अबा जॉर्ज[2737] , उनके सामने आकर आँसू बहाते हुए कहने लगे:

'देखो, तुम मुझे छोड़कर जा रहे हो। फिर भी मैंने प्रार्थना की थी कि तुम मुझसे पहले जाओ; क्योंकि तुम्हारे बिना, हे स्वामी, मुझमें तुम्हारे पवित्र समुदाय का चरवाहा करने की शक्ति नहीं होगी: और फिर भी, इसके विपरीत, मैं ही तुम्हारे पहले जा रहा हूँ।'

इस पर संत अबा जॉन ने उत्तर दिया:

'शोक मत करो और उदास मत हो: यदि मुझे प्रभु की कृपा प्राप्त हुई, तो मैं तुम्हें मेरे पीछे एक वर्ष भी व्यतीत होने न दूँगा।'

और ऐसा ही हुआ। क्योंकि धन्य जॉन के निधन के दसवें महीने में, उनके भाई बाबा जॉर्ज प्रभु के पास चले गए, ताकि वे अपने भाई, आदरणीय जॉन के साथ संतों की महिमा में उनके सामने खड़े हो सकें, और हमेशा के लिए पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा की महिमा करते रहें। आमीन[2738] .

आदरणीय जॉन ने सिनाई के पवित्र मठ का नेतृत्व लंबे समय तक नहीं किया—चार साल से अधिक नहीं। फिर भी, सिनाई में उनका संक्षिप्त कार्यकाल एक अत्यंत महत्वपूर्ण घटना से चिह्नित था: यह ठीक इसी समय था जब उन्होंने 'सीढ़ी' (The Ladder) के नाम से जाना जाने वाला वह प्रसिद्ध और उल्लेखनीय ग्रंथ लिखा,[2739] , जिसके कारण जॉन स्वयं 'सीढ़ी-निर्माता' के नाम से जाने जाने लगे।

द लैडर लिखने का कारण इस प्रकार था[2740] । सिनाई से दो दिन की यात्रा पर रेइफ़ मठ था, जो लाल सागर की एक अत्यंत मनोरम खाड़ी में स्थित था। जब सिनाई मठ का नेतृत्व आदरणीय जॉन क्लाइमैकस कर रहे थे, तब रेइफ़ मठ के मठाध्यक्ष भी संत जॉन थे[2741] । सिने के मठाधीश की आध्यात्मिक प्रतिभाओं और उन आत्माओं के उद्धार के मार्गदर्शन में उनकी गहरी बुद्धिमत्ता के बारे में बहुत कुछ सुनने के बाद, राइफ़ के मठाधीश ने क्लाइम्बर[2742] को एक पत्र लिखा, जिसमें उन्होंने अपनी ओर से और अपने मठ के सभी भिक्षुओं की ओर से उनसे आध्यात्मिक और नैतिक

[2736] अर्थात्, प्रभु ने मूसा को 'प्रतिज्ञात देश' में प्रवेश करने की अनुमति नहीं दी; अपनी मृत्यु से पहले, उन्होंने केवल माउंट नेबो से ही उस पर दृष्टि डाली (व्यवस्थाविवरण 34:4–5)।

[2737] जबकि वे स्वयं मौन से प्रेम करने लगे थे, उन्होंने उन्हें जीवित रहते हुए ही सिनाई के मठ का मठाधीश नियुक्त किया।

[2738] आदरणीय जॉन का 6वीं शताब्दी के अंत या 7वीं शताब्दी की शुरुआत में, 80 वर्ष की आयु में निधन हो गया।

[2739] रूसी में 'सीढ़ी' शब्द का अर्थ 'सीढ़ियाँ' होता है।

[2740] *सीढ़ी* लिखने का उद्देश्य यह सिखाना है कि मोक्ष प्राप्त करने के लिए व्यक्तिगत प्रयास, आत्म-बलिदान और कठोर तपस्या की आवश्यकता होती है। सीढ़ी में तीस सीढ़ियाँ या तपस्या के प्रयास शामिल हैं: प्रथम, 'पुराने मनुष्य' में पापी अशुद्धि से शुद्धिकरण और दुर्गुणों तथा वासनाओं का उन्मूलन; द्वितीय, एक व्यक्ति के भीतर ईश्वर की प्रतिमा की पुनर्स्थापना। इनके अतिरिक्त कई अन्य प्रारंभिक या तैयारी संबंधी चरण जोड़े गए हैं।

[2741] संत जॉन, रैफ के मठाधीश, जो जॉन क्लाइमक्स के समकालीन थे, का चर्च में चीज़ शनिवार को स्मरण किया जाता है।

[2742] इसे *द लैडर* के संस्करण के साथ संलग्न किया गया है।

तपस्या जीवन पर एक मार्गदर्शिका लिखने का अनुरोध किया। 'प्रभु के प्रति आपकी आज्ञाकारिता को जानते हुए, जो सभी बातों में निर्विवाद है और हर सद्गुण से सुशोभित है, – राइफ़ के संत जॉन ने जॉन क्लाइमक्स को लिखा – हम, दुर्बल, सभी के सामान्य पिता के रूप में, तपस्या और मन की दृढ़ता में सभी से बड़े, और एक उत्कृष्ट शिक्षक के रूप में, अपनी इस चिट्ठी के माध्यम से आपके गुणों की पराकाष्ठा से विनती करते हैं... प्रभु के लिए और हमारे उद्धार के लिए, संन्यास जीवन के लिए जो आवश्यक और उचित है, उसे आलस्य के बिना स्पष्ट रूप से बताने से इनकार न करें, एक सच्चे महान नेता के रूप में, जिन्होंने स्वर्गदूतों के समान जीवन चुना है, और हमारे द्वारा कही गई बातों को चापलूसी या चाटुकारिता का कोई रूप न समझें। क्योंकि आप जानते हैं, हे वास्तव में पवित्र प्रमुख, कि चापलूसी हमसे परे है और हम केवल वही दोहराते हैं जिसे सभी स्वीकार करते हैं। अत; हम प्रभु में स्वयं को आश्वस्त करते हैं कि हिम शीघ्र ही उन सम्माननीय शिलालेखों को प्राप्त कर उन्हें चूमेंगे जिनकी हम प्रतीक्षा कर रहे हैं, जो अनुयायियों के लिए एक सच्चे मार्गदर्शक के रूप में, अडिग, और जैसे कि धरती पर खड़ी एक सीढ़ी हों (उत्पत्ति 28:12), जो इसे चाहने वालों को स्वर्ग के द्वार तक, पूर्ण और सुरक्षित रूप से उठाती है, ताकि वे इस संसार के अंधकार के अधिपतियों और वायुमंडल के प्रधानताओं, दुष्ट आत्माओं द्वारा बिना किसी बाधा के गुजर सकें। क्योंकि यदि मूक भेड़ों के चरवाहे याकूब ने सीढ़ी का ऐसा अद्भुत दर्शन देखा (उत्पत्ति 28:12), तो क्या बोलने वाली भेड़ों का चरवाहा सभी को न केवल एक दर्शन ही दिखाएगा, बल्कि वास्तव में और सच्चाई में, परमेश्वर तक एक अचूक आरोहण भी नहीं दिखाएगा? हे प्रभु, अति सम्माननीय पिता, उत्साहित रहिए!

सम्माननीय जॉन स्वयं को इतना नीच समझते थे कि रैफ़ के मठाधीश का यह पत्र उन्हें लज्जित कर गया। सम्माननीय ने उन्हें भी एक पत्र से उत्तर दिया[2743] :

सीढ़ी के लेखक ने लिखा, 'मुझे आपका माननीय पत्र प्राप्त हुआ है—या यूँ कहें कि आपका निर्देश और आदेश, जो मेरी शक्ति से परे है—जो मुझे, एक गरीब और गुणों से वंचित व्यक्ति को, भेजा गया है; और मुझे कहना चाहिए कि यदि आज्ञाकारिता के जुए को उतार फेंकने के भय और महान खतरे का डर न होता – जो सभी सद्गुणों की जननी है – तो मैं लापरवाही से अपनी शक्ति से परे किसी कार्य का साहस नहीं करता। आप पर यह दायित्व था, हे अद्भुत पिता, कि आप इस बारे में पूछताछ करें और इस विषय में पारंगत लोगों से इसके बारे में जानें; जबकि मैं अभी भी एक छात्र की श्रेणी में हूँ । लेकिन चूँकि हमारे धर्मपरायण पूर्वज और सच्चे ज्ञान के संरक्षक आज्ञाकारिता को हमारी शक्ति से परे के मामलों में आज्ञा देने वालों के प्रति बिना सवाल के समर्पण के रूप में परिभाषित करते हैं, मैं विनम्रतापूर्वक अपने सामर्थ्य से परे का कार्य करने का संकल्प लेता हूँ; भय और उत्साह के साथ मैं आपके पवित्र आदेश को पूरा करने में जुट जाता हूँ; और आपसे, शिक्षकों के आदेश के नेता और प्रमुख, मैं इसे सुशोभित करने, इसकी रूपरेखा स्पष्ट करने, और आध्यात्मिक कानून की पट्टिकाओं के कार्यकारी के रूप में, किसी भी कमी को पूरा करने का कार्य सौंपता हूँ। आपके लिए ही मैंने यह कार्य आरंभ किया है, और मैं सभी पाठकों से विनती करता हूँ कि यदि किसी को मेरे कार्य में कुछ भी उपयोगी लगे, तो वे कृतज्ञतापूर्वक इसके फल को हमारे उत्कृष्ट नेता को अर्पित करें, और ईश्वर से प्रार्थना करें कि वह मुझे इस श्रम के केवल पूर्ण होने के लिए पुरस्कृत करे; क्योंकि ईश्वर उपहारों और श्रमों की बहुतायत के लिए नहीं, बल्कि महान उत्साह के लिए पुरस्कृत करता है।

ठीक इसी कारण से आदरणीय जॉन की कृति, जिसका शीर्षक 'सीढ़ी' है, का निर्माण हुआ।

आदरणीय जॉन के कार्य का नाम 'द लैडर' (सीढ़ी) है क्योंकि रैफ के संत जॉन आध्यात्मिक जीवन के लिए ठीक ऐसी ही मार्गदर्शिका प्राप्त करना चाहते थे, जो एक तरह से पुष्टि की सीढ़ी का प्रतिनिधित्व करे जो चाहने वालों को उनके लेखक के वास्तविक इरादे के अनुसार सुरक्षित रूप से स्वर्ग के द्वार तक ले जाए। संत जॉन लिखते हैं, 'मेरी मामूली समझ के अनुसार, मैंने आरोहण की एक सीढ़ी बनाई है। इसके बाद, प्रत्येक व्यक्ति स्वयं देखे कि वह किस सीढ़ी पर पहुँचा है'[2744] । *द लैडर* की प्रस्तावना में, इस शीर्षक के अर्थ को इस प्रकार समझाया गया है: 'जो लोग जीवन की पुस्तक में अपना नाम लिखवाने की आकांक्षा रखते हैं, उनके लिए यह पुस्तक उनकी यात्रा के लिए सर्वोत्तम मार्ग दिखाती है। क्योंकि, जब हम इस मार्ग पर चलते हैं, तो हम पाएँगे कि यह पुस्तक इसका अनुसरण करने वालों का अचूक रूप से मार्गदर्शन करती है, मानो हाथ पकड़कर चल रही हो, और निस्संदेह पृथ्वी से स्वर्ग तक एक निश्चित सीढ़ी प्रस्तुत करती है, जो परमेश्वर को प्रकट करती है, जो इसके शिखर पर स्थापित हैं।.. सचमुच, जिन्होंने हमारे लिए प्रभु

[2743] इसे *द लैडर* के संस्करण के परिशिष्ट के रूप में भी संलग्न किया गया है।

[2744] *द लैडर*, 27, 30।

की देह में आयु के अनुरूप आरोहण की व्यवस्था की है, उन्होंने अत्युत्तम निर्णय लिया है; क्योंकि प्रभु के तीस वर्ष की आयु के प्रतिमा में, उन्होंने 30 सीढ़ियों की एक सीढ़ी महत्वपूर्ण रूप से निर्मिति की है, जिसके द्वारा, प्रभु की आयु[2745] तक पहुँचकर, हम खुद को धर्मी और गिरने से सुरक्षित पाएँगे'। इस प्रकार, आदरणीय जॉन के इस ग्रंथ को *द लैडर* (सीढ़ी) कहा जाता है क्योंकि इसका उद्देश्य नैतिक पूर्णता की ओर क्रमिक आरोहण के मार्ग को प्रस्तुत करना है, और यह धार्मिकता और अपनी आत्मा के मोक्ष के लिए उत्सुक लोगों के लिए आध्यात्मिक जीवन में एक वफादार और विश्वसनीय मार्गदर्शक के रूप में कार्य करता है।

यद्यपि *द लैडर* विशेष रूप से संन्यासियों के लिए लिखा गया था और इसलिए यह एक समुदाय में रहने वाले संन्यासियों के लिए हमेशा एक बिस्तर के पास रखने वाली पुस्तक रही है, संन्यास जीवन के प्रवर्तक—जिनमें अन्य के अलावा, थियोडोर द स्टुडाइट, जोसेफ ऑफ वोल्कोलामस्क और अन्य लोगों ने अपनी शिक्षाओं में *द लैडर* को सर्वश्रेष्ठ पुस्तक के रूप में संदर्भित किया है - फिर भी, दुनिया में रहने वाला एक ईसाई भी इसमें उद्धारकारी मार्गदर्शन पा सकता है। सीढ़ी पर पहला कदम सांसारिक वासनाओं का त्याग है, जबकि इसके शिखर पर तीन गुणों – विश्वास, आशा और प्रेम – का मिलन दर्शाया गया है।

जॉन क्लाइमैकस की शिक्षाओं से परिचित होने के लिए, आइए हम व्यर्थता पर उनके निर्देश को सुनें:[2746] .

– हर सद्गुण में अहंकार सिर उठाता है। उदाहरण के लिए, जब मैं उपवास करता हूँ, तो मैं अहंकारी होता हूँ; और जब, अपने उपवास को दूसरों से छिपाते हुए, मैं खुद को खाने की अनुमति देता हूँ, तो मैं फिर से अहंकारी होता हूँ—इस बार समझदारी के नाम पर। जब मैं अच्छे कपड़े पहनता हूँ, तो अहंकार मुझे प्रेरित करता है; और जब मैं फटे-पुराने कपड़े पहनता हूँ, तो भी मैं अहंकारी ही हूँ। क्या मैं बोलूँ? मैं घमंड की शक्ति के अधीन हो जाता हूँ। क्या मैं चुप रहूँ? मैं एक बार फिर इसके आगे झुक जाता हूँ। आप इस काँटे को किसी भी दिशा में घुमाएँ, इसकी चुभन हमेशा ऊपर की ओर ही होगी। घमंडी व्यक्ति एक ईसाई मूर्तिपूजक है। बाहरी रूप से, वह ईश्वर का सम्मान करता है, लेकिन वास्तव में वह ईश्वर की तुलना में लोगों को खुश करने का अधिक प्रयास करता है... *'जो हमें खुशामद करता है, वह हमें धोखा* देता है,' नबी (यशायाह 3:12) कहते हैं। महान आत्मा वाले लोग अपमान को सौहार्दपूर्वक और स्वेच्छा से सहन करते हैं; और केवल पवित्र और निर्दोष ही बिना किसी आनंद के प्रशंसा सुन सकते हैं... जब आप सुनें कि आपका कोई पड़ोसी या दोस्त आपकी पीठ पीछे या आपके सामने आपकी आलोचना कर रहा है, तो उसकी प्रशंसा करके प्रेम दिखाएँ... जो व्यक्ति स्वयं की आलोचना करता है, वह विनम्रता नहीं दिखाता (कोई व्यक्ति स्वयं के प्रति असहनीय कैसे हो सकता है?), बल्कि वह व्यक्ति विनम्रता दिखाता है, जो दूसरे द्वारा अपमानित होने पर भी उसके प्रति अपना प्रेम कम नहीं करता... जो कोई भी स्वाभाविक उपहारों – तीव्र बुद्धि, उच्च स्तर की शिक्षा, उनका पढ़ना, बोलने का सुखद तरीका, और अन्य ऐसी गुणों जो आसानी से प्राप्त हो जाते हैं – का घमंड करता है, वह कभी भी अलौकिक आशीर्वाद प्राप्त नहीं कर पाएगा। क्योंकि जो छोटे मामलों में अविश्वासी है, वह बड़े मामलों में भी अविश्वासी और व्यर्थ होगा (लूका 16:10)। अक्सर ऐसा होता है कि ईश्वर स्वयं व्यर्थ लोगों को अप्रत्याशित अपमान भेजकर नम्र करते हैं... यदि प्रार्थना व्यर्थ विचारों को जड़ से न उखाड़ पाए, तो हमें उन्हें इस जीवन से आत्मा के प्रस्थान की याद दिलानी चाहिए। यदि इससे भी मदद न मिले, तो हमें उन्हें अंतिम न्याय की लज्जा से भयभीत करना चाहिए। *'जो अपना आप बड़ा करता है, वह नीचा किया जाएगा'* (लूका 14:11) यहाँ भी, आने वाले युग से पहले। जब हमारे चापलूस—या, यूँ कहें, हमारे धोखेबाज—हमारी प्रशंसा करना शुरू करते हैं, तो हमें तुरंत अपने कई पापों को याद करना चाहिए और यह महसूस करना चाहिए कि हम उसके लायक नहीं हैं जो हमारे बारे में कहा जाता है या हमारे लिए किया जाता है[2747] ।

[2745] अर्थात्, संत जॉन क्लाइमक्स आत्म-परिपूर्णता के 30 सीढ़ियों की पहचान करते हैं, जो उद्धारकर्ता के सार्वजनिक मंत्रालय से पहले के 30 वर्षों के जीवन के अनुरूप हैं।

[2746] *सीढ़ी*, 22.

[2747] 'सीढ़ी' के अनुसार, ईसाई पूर्णता 'संसार' के अस्वीकार और वासनाओं के विरुद्ध संघर्ष से शुरू होती है। विचलित करने वाले सुखों और कामुक आनंद से मुंह मोड़कर, 'आत्मा' दुख में पश्चाताप की ओर मुड़ती है, और साथ ही मृत्यु का निरंतर स्मरण बनाए रखती है। मोक्षदायक शोक आँसुओं की शक्ति के द्वारा तपस्वी के हृदय को कोमल बनाता है, उसे आत्म-स्नेह से मुक्त करता है और उससे पाप के संचय को दूर करता है। इस प्रकार, पश्चातापी 'मौन' की अवस्था को प्राप्त करता है, जिसमें उसे केवल प्रार्थना, भजन और 'प्रेम' की अभिव्यक्ति के लिए ही शब्द मिलते हैं। आत्मा और प्राण स्थूल कामुकता के बंधनों से मुक्त हो जाते हैं; वे परिष्कृत हो जाते हैं, और आध्यात्मिक, स्वर्गीय और दिव्य दुनिया के साथ मेलजोल की एक सच्ची क्षमता प्राप्त करते हैं। धन्य 'विनम्रता' मसीह का अनुसरण करने के मार्गों पर ले जाती है और स्वर्ग के राज्य का द्वार खोलती है। 'वासनाओं' पर विजय प्राप्त करने के बाद, कोई व्यक्ति 'विवेक' की सर्वोच्च क्षमता प्राप्त करता है, जो एक व्यक्ति को

आम तौर पर, संत जॉन की *सीढ़ी* की वशिषता गहरा आध्यात्मकि अनुभव है, जो पवत्रि शास्त्र के गहरे ज्ञान के साथ संयुक्त है। *सीढ़ी* के लेखक शायद ही कभी कोई वचिार व्यक्त करते हैं, जसिे पवत्रि शास्त्र के प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष संदर्भ द्वारा प्रबुद्ध न कयिा गया हो। जॉन का कार्य सरल फरि भी शुद्ध और जीवंत भाषा में लखिा गया है – यह कुछ ही शब्दों में बहुत कुछ व्यक्त करता है, और इसलएि यह शक्तसि भरपूर है[2748] । इसीलएि संत जॉन की *सीढ़ी* समुदाय में रहने वाले भक्षिुओं के लएि हमेशा एक बगल में रखने वाली पुस्तक रही है[2749] ।

ट्रोपारयिन, स्वर 8:

आपने अपने आँसुओं की धाराओं से उजाड़ रेगस्तिान को उपजाया, और अपने आहों की गहराइयों से सौ परश्रिम उत्पन्न कएि; और आप संसार के लएि एक दीपक थे, जो चमत्कारों को प्रकाशति करता था। हे यूहन्ना, हमारे पति, हमारे परमेश्वर मसीह से प्रार्थना करें कि हमारी आत्माओं का उद्धार हो।

पैगंबर सेंट जोआद की स्मृति

30 मार्च को स्मरणोत्सव

[2750]पवत्रि भवष्यिवक्ता यहोआद सामरयिा के नविासी थे। जब उन्होंने इस्राएल के राज्य में बछड़ों की स्थापना करने के लएि यरोबाम की नदिा की, जनिकी वे स्वयं बलि चढ़ाते थे, तो उन्हें एक शेर ने फाड़ डाला, और इस प्रकार उनकी मृत्यु हो गई। यह इस प्रकार हुआ। प्रभु ने यहोआद को आज्ञा दी कि वह यरोबाम के पास जाकर उसे डांटे, और उसे नर्दिेश दयिा कि वह वहाँ न तो कोई रोटी खाए और न कोई दाखरस पिए, और तुरंत लौट आए। नबी ने यरोबाम को मूर्तयिों को बलदिान देते हुए पाया और, उसकी ओर मुड़कर, कहा:

'यहोवा इस प्रकार कहता है: यहूदा के घराने में एक पुत्र उत्पन्न होगा, जसिका नाम यर्मियाह होगा, और वह इन ऊँचे स्थानों के याजकों को वेदी पर वध करेगा[2751] ।'

जेरोबोअम ने भवष्यिवक्ता को पकड़ने के लएि अपना हाथ बढ़ाया, लेकनि उसका हाथ सूख गया। तब राजा ने भवष्यिवक्ता से अपने हाथ को पहले की तरह ठीक करने के लएि वनिती की। इसके बाद, वापस आते समय, यहोआद को एमवे नामक एक झूठे नबी ने बहका दयिा और वह उसके साथ खाने लगा। इस अवज्ञा के कारण, प्रभु ने एक सहि को उसे मार डालने की अनुमति दी , लेकनि उसका शरीर खाने नहीं दयिा। यहोआद को मार डाला गया और उसे उस नबी के नविास के पास दफनाया गया जसिने उसे बहकाया था[2752] ।

उस संन्यासी की कहानी जसिने कसिी को भी नदिा नहीं की।

30 मार्च को स्मरणोत्सव

स्वयं और दूसरों के भीतर बुराई और अच्छाई दोनों प्रवृत्तयिों को देखने और पहचानने में मदद करती है, ताकि वह बुराई को दबा सके और अच्छाई को बढ़ावा दे सके। ईश्वर-सदृश वैराग्य और शांति की उच्चतम अवस्था में, तपस्वी पृथ्वी पर रहते हुए ही एक महमिामय अवस्था में प्रवेश करता है और स्वर्ग के आशीर्वादों पर, मानो एक दर्पण में, मनन करता है।

[2748] *सीढ़ी* की यह अंतमि वशिषता, इसकी गहन अंतर्दृष्टि के साथ, ही कारण था कि इसके पर टप्पिणयिाँ जॉन द रैफाइट, एक मठाधीश; क्रीट के एलयिाह, एक आठवीं सदी के मेट्रोपॉलटिन; और अन्य लोगों द्वारा लखिी गईं।

[2749] *द लैडर* के पूरक के रूप में, आदरणीय जॉन ने एक और संक्षप्ति ग्रंथ लखिा, *टू द शेफर्ड*; यहाँ वे एक मठ के मठाधीश के आदर्श रूपरेखा प्रस्तुत करते हैं, जो जॉन के वर्णन के अनुसार, एक चरवाहा, एक नावकि, एक चकित्सिक, एक शक्षिक और अपने अधीनस्थों के लएि एक आदर्श होना चाहएि।

[2750] यरूबोआम इस्राएल के राज्य के वभिाजन के बाद इस्राएल का पहला राजा था। उसने अपने राज्य में मूर्तपिूजा शुरू की और अपने प्रजा को इसका पालन करने के लएि मजबूर कयिा।

[2751] पूर्व के लोगों में, मूर्तयिों को बलदिान चढ़ाने के लएि वेदयिाँ आमतौर पर ऊँची जगहों पर स्थापति की जाती थीं।

[2752] नबी यहोआद की कथा 3 राजा 13:1–34 में वर्णति है।

उसी दिन, एक भिक्षु जो किसी की निंदा नहीं करता था, प्रभु के पास चला गया। सिनाई के आदरणीय अनास्तासियस उनके बारे में निम्नलिखित का वर्णन करते हैं।

एक मठ में रहने वाले एक भिक्षु ने अपने दिन लापरवाही से बिताए, अपनी मुक्ति की ओर कोई ध्यान नहीं दिया, बल्कि अपना पूरा जीवन आलस्य में व्यतीत किया। दीर्घायु प्राप्त कर, वह अब मृत्यु के समीप था। जब वह एक गंभीर बीमारी से ग्रस्त हो गया और मृत्युशय्या पर था, तो वह मृत्यु से बिल्कुल भी नहीं डरता था, बल्कि परमेश्वर की स्तुति और महिमा करते हुए आनंदपूर्वक अपने शरीर से अलग होने के लिए तैयार था। उसके चारों ओर के भाइयों और उस मठ के मठाध्यक्ष ने उससे कहा:

'भाई, हमने देखा है कि तुमने अपना जीवन आलस्य में बिताया है। तो फिर, मृत्यु के इस भयानक घड़ी में, तुम इतने बेफिक्र और प्रसन्न क्यों हो? ईश्वर की शक्ति से दृढ़ होकर, उठो और हमें इसका कारण समझाओ, ताकि हम भी ईश्वर की स्तुति कर सकें।'

उस भाई ने अपने बिस्तर से थोड़ा उठते हुए उनसे कहा:

'यह सच है, आदरणीय पिताओं, कि मैंने एक निश्चिंत जीवन जिया है। अभी-अभी, परमेश्वर के स्वर्गदूत मेरे पास आए और मेरे सामने एक पांडुलिपि लाए जिसमें मेरे सभी बुरे कर्म दर्ज थे। पांडुलिपि पिढ़ने के बाद, स्वर्गदूतों ने मुझसे पूछा: "क्या तुम इसे जानते हो?" मैंने उत्तर दिया: 'हाँ, मैं पहचानता हूँ।' लेकिन चूँकि मैंने संसार का त्याग किया है, संन्यासी की कसमें ली हैं, किसी को कभी निंदा नहीं की और न ही किसी पर कभी क्रोध किया है, मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि मसीह के वचन मुझमें पूरे हों, जिन्होंने कहा: *'न्याय मत करो, और तुम पर न्याय नहीं किया जाएगा; यदि तुम दूसरों के अपराध क्षमा करोगे, तो तुम्हारा स्वर्गीय पिता भी तुम्हें क्षमा करेगा* (मत्ती 7:1, 6:14)। और जैसे ही मैंने यह कहा, पवित्र स्वर्गदूतों ने तुरंत मेरे पापों की पांडुलिपि फाड़ दी। इसीलिए मैं आनंद और प्रसन्नता के साथ ईश्वर के पास जाता हूँ।'

यह कहने के बाद, उस भाई ने शांतिपूर्वक अपना प्राण प्रभु को सौंप दिया।

13 अप्रैल

31 मार्च (पुराने कैलेंडर के अनुसार)

अप्रैल

गंग्रा के बिशप, संत हिपाटियस शहीद और चमत्कार कार्यकर्ता की स्मृति

31 मार्च को स्मरणोत्सव

संत हाइपैटियस, ईश्वर के महान सेवक और पाफ्लागोनिया के गैंग्रा के बिशप[2753] , उन तीन सौ अठारह पवित्र पिताओं में से एक थे, जिन्होंने प्रथम सार्वभौमिक परिषद में भाग लिया था, जिसे महान कॉन्स्टेंटिन के शासनकाल के दौरान बुलाया गया था। वहाँ, अन्य पवित्र पिताओं के साथ, पवित्र आत्मा से परिपूर्ण और ऑर्थोडॉक्सी के प्रति उत्साह से प्रेरित होकर, उन्होंने एरियस को एक विधर्मी के रूप में निंदा की और उसे चर्च से बहिष्कृत कर दिया।

[2754]संत हाइपैटियस को ईश्वर से चमत्कार करने का महान वरदान प्राप्त था; उन्होंने विभिन्न रोगों को ठीक किया और दुष्ट आत्माओं को भगाया। एक गाँव में, उन्होंने पहाड़ों से बहने वाले कड़वे पानी के एक झरने को मीठे पानी के झरने में बदल दिया; और दूसरी जगह, उनकी प्रार्थना के माध्यम से, जमीन से उपचारात्मक गुणों वाला गर्म पानी का एक झरना बहने लगा। एक बार, एक अँधेरी रात में, वह नदी के किनारे चल रहे थे, और देखो, पानी से रोशनी निकली, जो उन्हें रास्ता दिखा रही थी ताकि वे से भटककर नदी में न गिर जाएँ। उन्होंने एक भयानक सर्प को भी मार डाला। अपने भाई

[2753] पाफ्लागोनिया – एशिया माइनर का एक क्षेत्र

[2754] सम्राट कॉन्स्टैंटियस ने 337 से 361 तक शासन किया।

कॉन्स्टेंटनि[2755] की मृत्यु के बाद सहिासन पर बैठे कॉन्स्टैंटयिस के शासनकाल में, एक बहुत बड़ा साँप कसिी अज्ञात स्रोत से रेंगता हुआ शाही महल तक आ गया। शाही खजाने को घेरे हुए, जहाँ बहुत सारा सोना और अन्य धन-संपत्ति रखी थी, उसने उस कक्ष के प्रवेश द्वार पर अपना सरि रख दयिा और कसिी को भी अंदर जाने नहीं दे रहा था। इस पर राजा कॉन्स्टैंटयिस भयभीत हो गए और उन्होंने पवत्रि व्यक्ति हाइपैटयिस को संदेश भेजकर कॉन्स्टेंटनिोपल आने के लिए कहा, क्योंकि संत का नाम मसीह की कृपा से कए गए चमत्कारों के लिए प्रसद्धि था। राजा ने संत का सम्मानपूर्वक स्वागत कयिा, उनके सामने जमीन पर सरि झुकाया, और उनसे प्रार्थना करके उस सर्प को शाही खजाने से भगाने के लिए कहा—एक ऐसा सर्प जसिे कोई भी मानवीय शक्ति बाहर नहीं नकिाल सकी थी, क्योंकि प्रार्थना से लैस कई पुरोहतिों ने भी इसे भगाने की कोशशि की थी, लेकनि वे सफल नहीं हो सके; वास्तव में, उनमें से कुछ को तो इस प्रक्रयिा में चोट भी लगी थी। इस पर संत ने राजा से उत्तर दयिा:

'हे राजा! भले ही हमारी प्रार्थना नष्फिल सद्धि हो जाए, परन्तु परमेश्वर के सामने आपका वश्विास व्यर्थ नहीं होगा।'

तब, वे ज़मीन पर गरि पड़े और काफी देर तक प्रार्थना करने लगे। बाद में, खड़े होकर, हाइपैटयिस ने राजा से कहा:

'घोड़ों की दौड़ के अखाड़े के केंद्र में[2756] , जहाँ आपके पति की मूर्ति खड़ी है, एक भट्टी लगवाएँ और उसे यथासंभव गर्म करवाएँ, जब तक कि आप वहाँ मेरे आने की प्रतीक्षा करें।'

तुरंत भट्टी तैयार कर दी गई और उसमें आग लगा दी गई; फरि संत हाइपैटयिस ने अपना बशिप का दंड उठाया, शाही महल के पास गए, खजाने के द्वार खोले और अपनी दंड से साँप पर बार-बार वार कयिा। लोग और राजा, भय और कांपते हुए, दूर से देखते रहे; और जब उन्होंने देखा कि साँप सरककर भाग नहीं रहा था (और दनि भी ढलने को था), तो वे सभी सोचने लगे कि साँप ने संत को मार डाला है, जैसा कि पिहले कुछ पुरोहतिों के साथ हुआ था। लेकनि संत हाइपैटयिस ने स्वर्ग की ओर अपनी आँखें उठाकर और प्रभु से सहायता की प्रार्थना करते हुए, अपनी छड़ी साँप के मुँह में डाल दी, और कहा:

'मेरे प्रभु यीशु मसीह के नाम पर, मेरा अनुसरण करो।'

साँप ने डंडे को अपने दाँतों में ऐसे कस लयिा मानो वह एक बँधा हुआ कैदी हो, और संत का अनुसरण करने लगा। और वास्तव में, महान चमत्कार-कर्ता ने उसे ईश्वर की शक्ति से बाँध रखा था।

तब संत हाइपैटयिस शाही कोष से दूर चले गए, पूरे घुड़दौड़ अखाड़े और बाजार चौक का चक्कर लगाते हुए उस सर्प को साथ लिए हुए। लोग, साँप को डंडे के सरि से लपिटे और संत के पीछे-पीछे चलते देख, भयभीत और चकति हो गए। और वह साँप अत्यंत भयानक था; उसकी लंबाई साठ कोह (लगभग 180 फीट) थी[2757] । बड़ी लपटों से धधकती आग की भट्टी के पास पहुँचकर, संत ने साँप से कहा:

'मसीह के नाम पर, जनिका मैं, यद्यपि अयोग्य हूँ, उपदेश देता हूँ, मैं तुम्हें आज्ञा देता हूँ कि तुम उस आग के बीच में प्रवेश करो!'

तब वह भयंकर साँप, अपनी पीठ को धनुषाकार करके, सरि के बल आग के भट्टी में कूद पड़ा, जहाँ वह बलिकुल बीच में भस्म हो गया। जो भी लोग इस भयानक दृश्य को देखकर स्तब्ध रह गए, उन्होंने ईश्वर की स्तुति की कि उन्होंने उनके जीवनकाल में ही संसार को संत हाइपैटयिस के रूप में प्रकाश का ऐसा दीपक और चमत्कार करने वाले का वरदान दयिा।

तब राजा ने परमेश्वर और उनके सेवक, संत हाइपैटयिस, जनिका उसने अपने ही पति के समान सम्मान कयिा, का बहुत धन्यवाद कयिा। उसने अपने चेहरे की एक प्रतमिा एक पैनल पर उकेरने का आदेश दयिा और इस प्रतमिा को भूतों को भगाने के लिए अपने शाही खजाने में रख दयिा; और, संत को उपहार देकर और स्नेहपूर्वक चूमकर, उसे उसके घर वापस भेज दयिा।

[2755] कांस्टैंटनि महान के सबसे बड़े पुत्र कांस्टैंटनि द्वतिीय ने 337 से 340 तक शासन कयिा।

[2756] घोड़ों की दौड़ के लिए एक स्थल।

[2757] एक कुबटि लंबाई की एक इकाई है; यह हमारे वर्शकी के 10–12 के बराबर था।

जैसे ही संत अपने धर्माध्यक्षीय आवास पर लौट रहे थे, दुष्ट लोग—नोवाटस की शिक्षाओं के अनुयायी[2758] — जो ईश्वर के इस पवित्र व्यक्ति से अत्यधिक ईर्ष्या करते थे, तलवारों और भालों से लैस होकर, एक संकरे मार्ग, एक पहाड़ी की चट्टान के किनारे और एक दलदल के किनारे उनकी प्रतीक्षा में घात लगाकर बैठे। जैसे ही वह उस स्थान पर पहुँचा, उन्होंने अचानक उस पर हमला कर दिया, जंगली जानवरों की तरह उस पर टूट पड़े, और उसे बुरी तरह घायल करने के बाद, उसे ऊँचे किनारे से दलदली कीचड़ में फेंक दिया। संत, जिनकी जान मुश्किल से बची थी, ने अपने हाथों को थोड़ा ऊपर की ओर उठाया और, अपनी आँखें स्वर्ग की ओर उठाकर, ठीक वैसे ही जैसे पवित्र प्रथम शहीद स्तेफन ने एक बार किया था, अपने हत्यारों के लिए प्रार्थना की, कहते हुए: *'हे प्रभु! इस पाप को उनके खिलाफ न गिनो'* (प्रेरितों के काम 7:60)। और जब वह इस प्रकार प्रार्थना कर रहे थे, तो एक दुष्ट महिला, जो एरियन विधर्म की अनुयायी थी, ने एक भारी पत्थर उठाया, उससे संत के सिर पर जोर से वार किया, और उनकी हत्या कर दी। हाइपैटियस की पवित्र आत्मा, तुरंत ही उनके शरीर से अलग होकर, प्रभु के पास चली गई[2759] । हत्यारों ने संत के शरीर को उठाकर, उस स्थान के पास एक गुफा में छिपा दिया और भाग गए।

लेकिन निर्दोष रक्तपात के लिए ईश्वर की सजा देर से नहीं आई। सबसे पहले, एक अशुद्ध आत्मा ने उसी जगह उस महिला पर हमला किया और उसे पीड़ा दी। वह उसी पत्थर से लगातार अपनी छाती पर वार करती रही; फिर उसके सभी सताने वाले आत्मा के वश में हो गए और बहुत कष्ट सहने लगे।

बाद में, एक किसान, जिसके पास वह गुफा (जहाँ वह अपना भूसा रखता था) थी, और जिसे उस अन्यायपूर्ण हत्या के बारे में कुछ भी पता नहीं था, अपने पशुओं के लिए वहाँ से भूसा लेने आया; और स्वर्गदूतों के गाने की आवाज़ें सुनकर, वह चकित और भय से भर गया। और जब उसने पुआल इकट्ठा करना शुरू किया और घावों से ढाया हुआ मृत शरीर पाया, तो वह और भी अधिक भयभीत हो गया; लेकिन मृतक में अपने पवित्र बिशप हाइपैटियस को पहचान लेने पर, वह अपने साथियों के पास भागा, और उन्होंने जल्द ही पूरी कहानी नगर में बता दी। गांग्रा नगर के निवासी तुरंत इकट्ठा हो गए और कड़वा रोते हुए उस स्थान पर आए; और अपने पवित्र पिता और चरवाहे के सम्मानित शरीर को लेकर, उन्होंने उसे बड़े सम्मान के साथ दफनाया। जहाँ तक उस महिला का सवाल है जिसने हत्या की थी, वह संत के शव के पीछे-पीछे चली गई जब उसे दफनाने के लिए ले जाया जा रहा था, और रास्ते में उसने उसी पत्थर से अपने आप को मारा जिससे उसने ईश्वर के बिशप को मारा था, और वहाँ मौजूद सभी लोगों के सामने अपने पाप को स्वीकार किया।

जब संत के शरीर को दफना दिया गया, तो वह महिला राक्षस के वशमुक्त हो गई; इसी प्रकार, पहले से राक्षस के वश में रहे अन्य सभी—जो संत की हत्या में सहभागी थे—संत के मकबरे पर ठीक हो गए, क्योंकि मृत्यु के बाद भी उन्होंने अपने द्वेषहीन स्वभाव के कारण अपने शत्रुओं पर आशीर्वाद बरसाया। उन लोगों के बीच, जो संत हाइपैटियस की कब्र पर उनके ईश्वर से प्रार्थनाओं के द्वारा विश्वास के साथ आए थे, वहाँ कई अन्य चमत्कार और चंगाईयाँ हुईं।

रुफिना में हमारे पूजनीय पिता हाइपियस की स्मृति[2760]

31 मार्च को स्मरणोत्सव

ये पूज्यनीय संत फ्रीजिया के[2761] में पैदा हुए थे। जब वे अठारह वर्ष के थे, तो एक बार उनके पिता ने उन्हें पीटा और उनसे भागकर थ्रेस[2762] आ गए। एक पुराने मठ में प्रवेश करने के बाद, उन्होंने खुद को तपस्वी जीवन के लिए समर्पित

[2758] नोवाटस – कार्थेज के चर्च का एक पुरोहित जो तीसरी शताब्दी में रहता था और चर्च के भीतर एक फूट का संस्थापक के रूप में जाना जाता है। इस फूट का स्वरूप इस प्रकार है: जब 248 में कार्थेज में संत साइप्रियन को बिशप चुना गया, तो इस चुनाव से असंतुष्ट पाँच प्रेस्बिटिर—जिनमें नोवाटस विशेष रूप से प्रमुख थे—साइप्रियन से अलग हो गए; इसके अलावा, नोवाटस ने बिशप की जानकारी या सहमति के बिना, फेलिसिसिमिस नामक एक अमीर और प्रभावशाली व्यक्ति को डीकन के रूप में अभिषिक्त कर दिया। चर्च के इतिहास में इस विभाजन को 'नोवाटस और फेलिसिसिमिस का विभाजन' के नाम से जाना जाता है। 251 में कार्थेज की परिषद में चर्च से अलग हुए विभाजनवादियों को निंदित किया गया था।

[2759] पवित्र शहीद की मृत्यु लगभग 326 में हुई।

[2760] रूफिनस का मठ बोस्फोरस के तट पर, एशिया माइनर के रोमन प्रांत में स्थित कालसेडोन के उपनगर में था।

[2761] फ्रासिया – एशिया माइनर में एक रोमन प्रांत।

[2762] थ्रेस – बाल्कन प्रायद्वीप पर एक क्षेत्र, जिसे अब रुमेलिया के नाम से जाना जाता है।

कर दिया और जल्द ही अपने गुणों के लिए प्रसिद्ध हो गए। वह कभी शराब नहीं पीता था और एक बार कामुक इच्छा के खिलाफ संघर्ष करने के बाद, उसने न तो भोजन और न ही पानी को छुए बिना पचास दिनों तक उपवास किया। जब मठ के मठाधीश को इस बात का पता चला, तो उन्होंने भाइयों की उपस्थिति में रात्रिभोज के दौरान स्वयं अपने हाथ से हिपिटिया को शराब का एक प्याला और कुछ रोटी दी; जिसके बाद वह तुरंत उस वासना से मुक्त हो गया जो उसे सता रही थी और उसने प्रभु और अपने आध्यात्मिक पिता का धन्यवाद किया। कुछ समय बाद, अपने आध्यात्मिक पिता की सलाह पर, वह कांस्टेंटिनोपल के लिए रवाना हुआ ताकि एक ऐसे व्यक्ति की सहायता कर सके जो कामुक प्रलोभन से पीड़ित था; ऐसा करते हुए, उसने अपने पिता की भी मदद की, जो वहाँ आए थे। तब अपने पिता को उनके देश वापस भेजने के बाद, हिपिटियस दो भिक्षुओं के साथ काल्सेडोन गया और रुफिनस के मठ में बस गया, जो उस समय एक अजीब और अप्रिय दृश्य प्रस्तुत कर रहा था: यह पूरी तरह से सुनसान था और सभी को डरा देता था। यह रूफिनस, जो एक गृहस्थ था[2763] , ने एक बार एक शानदार मठ बनवाया था और वहाँ मिस्र के भिक्षुओं को बसाया था, जो उसमें ईश्वर की महिमा करते हुए परिश्रम करते थे। लेकिन जब रूफिनस की मृत्यु हो गई, तो उसके मठ में रहने वाले भिक्षु बिखर गए, प्रत्येक अपने-अपने देश लौट गया, और मठ बाद में निर्जन हो गया। यह कांटेदार पौधों से भर गया, जो घने झाड़ियों में उलझ गए और इसे भद्दा बना दिया; बाद में, अशुद्ध आत्माएं प्रवेश कर गईं और वहाँ रहने लगीं, जिसने इसे एक ऐसी जगह में बदल दिया जो हर किसी के दिल में डर पैदा करती थी, इसलिए कोई भी इसके पास से गुजरने की हिम्मत नहीं करता था। मठ को इस हालत में पाकर, पूजनीय इपैटियस ने उसमें से राक्षसों को भगा दिया और उसे बदसूरत बनाने वाली झाड़ियों को हटाकर, उसे उसकी पूर्व भव्यता में बहाल कर दिया, जिसके बाद उन्होंने वहाँ अपने साथ आए दो भिक्षुओं के साथ मिलकर की स्थापना की। उन्होंने स्वयं बाल-कपड़े बनाना शुरू कर दिया[2764] , जबकि उनके साथ मौजूद भिक्षुओं में से एक ने सिलाई का काम और दूसरे ने बगीचे की खेती का काम संभाल लिया। कुछ वर्षों बाद, हाइपैटियस थ्रेस के लिए रवाना हुए और उस मठ में बस गए जहाँ वे पहले एक भिक्षु के रूप में रहते थे; लेकिन रूफिनस के मठ के भिक्षु जल्द ही इस मठ में आए और उनसे अपने मठ के प्रमुख बनने का अनुरोध किया। रेवरेंड ने सहमति दे दी, और उस समय से उन्होंने महान कार्य करना शुरू कर दिया। उनके उदाहरण का अनुसरण करते हुए, कई संतों ने ईश्वर को समर्पित जीवन में महान पूर्णता प्राप्त की। अपने कार्यों के लिए, दिव्य हाइपैटियस को ईश्वर द्वारा चमत्कार करने का वरदान मिला और उन्होंने कई चमत्कारी उपचार किए। इस प्रकार, उन्होंने भूत-प्रेत ग्रस्त, अंधों, बीमारी से क्षीण हो गए लोगों, व्रणरोग से पीड़ित लोगों और रक्तस्राव से पीड़ित महिलाओं को ठीक किया। उन्होंने काफी संख्या में बांझ महिलाओं को संतान प्रदान की, जबकि उन महिलाओं के स्तनों में दूध वापस ला दिया जिनके स्तन सूख गए थे और वे स्तनपान कराने में असमर्थ थीं। कई मौकों पर, प्रार्थना के माध्यम से, उन्होंने पानी, रोटी और अन्य खाद्य पदार्थों की आपूर्ति को फिर से भर दिया, उन्हें सही समय पर बढ़ाया, और लोगों तथा पशुओं से हर तरह की बीमारियों को दूर किया। उस पूजनीय की भोजन में उबला हुआ अनाज, सब्जियां और थोड़ी सी रोटी शामिल थी; वास्तव में, वह यह मामूली भोजन केवल देर शाम को ही करते थे, और अपनी वृद्धावस्था में ताकत बनाए रखने के लिए थोड़ी सी शराब पीते थे। रेवरेंड अस्सी वर्ष की आयु तक जीवित रहे, जिससे उनके सिर और दाढ़ी के बाल बर्फ की तरह सफेद हो गए थे; फिर भी, इतनी अधिक वृद्धावस्था में भी, वे अपने रूप और अपने कार्यों दोनों में हमेशा की तरह ही सम्माननीय बने रहे। उन्होंने चालीस वर्ष संन्यासियों के आध्यात्मिक नेता के रूप में बिताए, पुरोहित वर्ग को गौरवान्वित किया, और, पहले अपने अस्सी शिष्यों को प्रभु के पास भेजने के बाद, स्वयं भी कुछ ही समय बाद शांतिपूर्वक देहांत कर गए, प्रभु की महिमा करते हुए[2765] ।

परम पूजनीय अपोलोनियस की स्मृति

31 मार्च को स्मरणोत्सव

[2763] माना जाता है कि रुफिनस, कॉन्स्टेंटाइन महान के दरबार के कुलीनों में से एक थे।

[2764] एक बाल-कपड़ा (hair shirt) किसी जानवर के मोटे बालों से बना एक वस्त्र है, जो पूर्वी संन्यासियों का प्रथागत परिधान था, और जिसे वे सीधे त्वचा से लगाकर पहनते थे।

[2765] प्रतिष्ठित हाइपैटियस की मृत्यु लगभग 446 में हुई।

हमारे पवत्रि पति अपोलोनयिस ने पंद्रह वर्ष की आयु में संसार का त्याग कर दयिा और, मठवासी जीवन को समर्पति होकर, आंतरकि रेगस्तिान[2766] में बस गए, जहाँ वे चालीस वर्षों तक एक ही पहाड़ पर एकांत में रहे। बाल्यकाल से ही सदाचार की आदत डालने के कारण, उन्होंने महान कार्य कए और इसके लए उन्हें इतना अनुग्रह मला कि एक दनि उन्होंने ईश्वर की यह वाणी सुनी:

'अपोल्लोनयिस, अब बसे हुए प्रदेशों में जाओ, क्योंकि मेरा लए चुने हुए लोगों को लाना तुम्हारा कर्तव्य है।'

इसके बाद, वह तुरंत पास के रेगस्तिान के लए नकिल पड़ा और वहाँ पहाड़ की तलहटी में एक छोटी गुफा पाकर उसमें रहने लगा। वहाँ उसने दनिों तक घुटने टेककर ईश्वर से प्रार्थना करते हुए अपना समय बतिाया। वह उसी भोजन से अपना जीवन यापन करता था जो ईश्वर उसे भेजते थे और जो उसे उस देवदूत से मलिता था जो रेगस्तिान में उसके पास आता था। यह रेगस्तिान बसे हुए क्षेत्रों के पास स्थति था, और पवत्रि आत्मा से प्रेरति होकर इन स्थानों का दौरा करते हुए, रेवरेंड फादर ने अपने चारों ओर लगभग पाँच सौ की संख्या में भक्षिुओं का एक बड़ा समुदाय इकट्ठा कयिा, और उन्हें मठवासी जीवन की वभिन्नि प्रथाओं में प्रशक्षिति कयिा। इस प्रकार, वे उनके साथ केवल रवविार को ही भोजन करते थे, जबकि अन्य सभी दनिों में वे कुछ भी नहीं खाते थे: न रोटी, न सोचवि[2767] , न ही आग पर पकाई गई कोई अन्य चीज़, बल्कि केवल जंगली अनाज पर ही जीवति रहते थे। आदरणीय अपोलोनयिस ने अपने मठ में एक नयिम बनाया जसिके अनुसार उनके साथ रहने वाले भक्षिु तब तक भोजन नहीं करते थे जब तक कि वे पहले मसीह के पवत्रि रहस्यों को प्राप्त नहीं कर लेते थे। यह आमतौर पर सुबह नौ बजे रोजाना होता था, जसिके बाद भक्षिु भोजन के लए बैठते थे, और इस दौरान वे हर दनि उपदेश सुनते थे। वे दनि का बाकी समय सत्कर्मों में व्यस्त रहते थे, और इस प्रकार शैतान के दुष्ट वचिारों को अपने मन से दूर रखते थे। इस प्रकार के जीवन में कई भक्षिुओं का मार्गदर्शन करने और दीर्घायु प्राप्त करने के बाद, संत अपोलोनयिस परम जीवन के लए ईश्वर के पास चले गए।

पवत्रि शहीदों अवदा और बेंजामनि का स्मरणोत्सव

31 मार्च को स्मरणोत्सव

पवत्रि शहीद अवदा सम्राट थयिोडोसयिस द्वतिीय ([2768]) के शासनकाल में रहते थे और फारस में एक बशिप थे। उन्होंने अग्नपिूजकों के एक मंदरि को नष्ट कर दयिा[2769] और इसके लए उन्हें गरिफ्तार कर सम्राट के सामने लाया गया[2770] । सम्राट ने पहले उन्हें वनिम्रतापूर्वक आदेश दयिा कि वे नष्ट हुए मंदरि का पुनर्नरि्माण करें, लेकनि जब उन्होंने उत्तर दयिा कि वे ऐसा नहीं कर सकते, तो सम्राट ने सभी ईसाई चर्चों को नष्ट करने के लए सैनकि भेज दए। इसके बाद, उत्पीड़क ईसाइयों का शकिार करने लगे और, उम्र की परवाह कए बनि, उन्हें वभिन्नि तरीकों से मौत के घाट उतारने लगे। उनमें से पहले, वभिन्नि यातनाएं सहने के बाद, एक तलवार से सरि कलम कर दयिा गया: पवत्रि शहीद अवदा; और तीस दनि बाद, अन्य पवत्रि शहीदों को भी मौत की सजा दी गई, जनिमें पवत्रि डीकन बेंजामनि[2771] भी शामलि थे। उसके यातनाकारों ने पहले उसकी उंगलयिों और पैरों की उंगलयिों के नाखूनों के नीचे तेज कांटे ठूंसे, और फरि उसे एक खंभे पर ठोक दयिा, जसिके बाद उसने अपनी आत्मा प्रभु के हाथों में सौंप दी[2772] ।

[2766] 'आंतरकि मरुभूमि' से तात्पर्य, बेशक, फविाईड मरुभूमि से है, जो अफ्रीका में, मस्रि के नचिले भाग में, नील नदी के पूर्वी तट पर स्थति है।

[2767] सोचवि – गेहूँ, चावल और अन्य अनाजों के उबले हुए दाने।

[2768] थयिोडोसयिस द्वतिीय युवा ने 408 से 450 तक रोमन साम्राज्य के पूर्वी भाग पर शासन कयिा।

[2769] फ़ारसी लोग मथि्रा, या सूर्य, को अपना सर्वोच्च देवता मानते थे। वे अग्नि की भी पूजा करते थे और अपने देवताओं के लए मंदरि बनाते थे, जनिमें वे अग्नि और सूर्य दोनों की पूजा करते थे।

[2770] यहाँ उल्लेखति राजा इज्देगर्ड प्रथम था, जसिने 401 से 420 तक शासन कयिा। उसके द्वारा शुरू की गई उत्पीड़न नीति उसके उत्तराधकिारी, वरण पंचम (420–438) के अधीन वशिेष रूप से कठोर थी।

[2771] बेसलि के कैलेंडर के अनुसार, पवत्रि शहीद बेंजामनि की मृत्यु सेंट अवदा के तीन महीने बाद नहीं, बल्कि तीन साल बाद हुई।

[2772] पवत्रि शहीद अवदा की मृत्यु 418 या 421 में हुई, जबकि संत बेंजामनि की मृत्यु तीन साल बाद, यानी 421 या 424 में हुई; दोनों की मृत्यु सुसा शहर में हुई, जो सबसे प्राचीन फारसी शहर, सुसयिाना की पूर्व राजधानी और पहले एलामाइट और बाद में फारसी राजाओं का सहिासन था।

हमारे पवत्रि पति‍ा योना, कीव और सम्पूर्ण रूस के मेट्रोपॉलटिन का नद्रिामरण

31 मार्च को स्मरणोत्सव

संत योना गालचि शहर के मूल नविासी थे, जो काज़ान क्षेत्र के पास स्थति है[2773] । उनका जन्म थयिोडोर नामक एक धर्मपरायण पति‍ा के घर हुआ था, और बारह वर्ष की आयु में उन्होंने गालचि क्षेत्र के एक मठ में संन्यासी की शपथ ली; फरि वह मॉस्को शहर के साइमनोव मठ[2774] गए, जहाँ उन्होंने लंबे समय तक मठवासी आज्ञाकार्यों में परश्रिम कयिा।

उस समय, फोटयिस[2775] मास्को के मेट्रोपॉलटिन थे। एक अवसर पर, साइमनोव मठ में आने पर, फोटयिस ने वहाँ 'चर्च ऑफ द मोस्ट होली मदर ऑफ गॉड' में एक प्रार्थना सभा का आयोजन कयिा और आर्चमैंड्राइट और भाइयों पर अपना आशीर्वाद देने के बाद, उन्होंने मठ के नवोदतिों को भी देखने और उन्हें आशीर्वाद देने की इच्छा व्यक्त की। वह बेकरी में गए और वहाँ उन्होंने धन्य योना को देखा, जो कठनि परश्रिम के बाद सो गए थे; उनका दाहनिा हाथ इस तरह मुड़ा हुआ था मानो वे उससे आशीर्वाद दे रहे हों; फ़ोतयिस ने उसे जगाने का आदेश नहीं दयिा, बल्कि, सोए हुए को आशीर्वाद देकर, उन्होंने उपस्थति लोगों से भवष्यिवाणी की कि यह भक्षिु रूस की भूमि में एक संत बनेगा और कई लोगों को मोक्ष के मार्ग पर ले जाएगा।

ईश्वर के पवत्रि जन की भवष्यिवाणी बाद में पूरी हुई। कुछ वर्षों बाद, ईश्वर की इच्छा से, पवत्रि धर्मसभा के चुनाव और ज़ार के अनुरोध पर, धन्य योना को रयिाज़ान और मुरोम का बशिप नयिुक्त कयिा गया, जहाँ उन्होंने कई अवश्वािसयिों को ईश्वर के धर्म में परविर्तति कयिा और उन्हें बपतस्मिा दयिा[2776] ।

जब धन्य मेट्रोपॉलटिन फोतउिस प्रभु के पास चले गए, तो ग्रैंड प्रंसि वासलिी वासलिीवचि[2777] ने रूसी भूमि के आर्चबशिपों और बशिपों तथा संपूर्ण पवत्रि सनिड को बुलाया, और उन्हें आदेश दयिा कि वे रूसी मेट्रोपोलसि के महान पद के लिए एक योग्य व्यक्ति का चुनाव करें; सभी की सहमति और इच्छा से, रयिाज़ान के बशिप योना[2778] को तब चुना गया: सभी जानते थे कि वह एक सदाचारी और पवत्रि व्यक्ति थे।

वह महान राजकुमार के संदेश के साथ कॉन्स्टेंटनिोपल के लिए रवाना हुआ, जो राजा जॉन पलाइओलोगोस[2779] और परम पावन पैट्रआर्क जोसेफ[2780] को दयिा गया था, ताकि वह मेट्रोपॉलटिन के रूप में अपना अभषिेक प्राप्त कर सके।

[2773] संत योना का जन्म प्राचीन गालचि क्षेत्र में, अब के कोस्त्रोमा गवर्नरेट में स्थति सोलगिालचि शहर के पास हुआ था।

[2774] मस्क्वा नदी के बाएं कनिारे पर स्थति साइमनोव मठ की स्थापना 1370 में महान राजकुमार दमित्रिी डोंस्कोय के शासनकाल में, रैडोनेज़ के संत सेरगयिस के शष्यि और भतीजे थयिोडोर द्वारा, मेट्रोपॉलटिन अलेक्सयिस के आशीर्वाद से की गई थी। मठ का नाम उस स्थान के नाम पर पड़ा, जो अपने मालकि के नाम पर साइमनोवो के नाम से जाना जाता था।

[2775] उन्होंने 1408 से 1431 तक मेट्रोपॉलटिन के रूप में कार्य कयिा।

[2776] संत जोना के वशिाल धर्मप्रांत में, जसिमें वर्तमान टाम्बोव और वोरोनेज़ धर्मप्रांतों के कुछ हस्सिे शामलि थे, डॉन जनजातयिों के पूरे बस्तयिाँ थीं: मॉर्डवन्सि, मेश्चेरयिन्स और मुरोमयिन्स, जो मूर्तपिूजा का अभ्यास करते थे; इन अवश्वािसयिों में से, संत जोना ने कई लोगों को सच्चे ईश्वर की ओर ले आए।

[2777] 1425 से 1434 तक

[2778] संत जोनाह को, संभवतः1432 के अंत तक, चुना गया था; जोनाह का एक ज्ञात पत्र है, 'रूस के परम पवत्रि मेट्रोपॉलटिन नयिुक्त', दनिांक 11 मार्च 1433।

[2779] जॉन VI पलाइओलोगोस ने 1425 से 1448 तक शासन कयिा। अपने शासन के ठीक शुरुआत में, उन्होंने खुद को सुल्तान मुराद द्वतिीय का जागीरदार स्वीकार कर लयिा और काला सागर तट पर कई शहर तुर्कों को सौंप दए; हालाँकि, इससे तुर्कों द्वारा कॉन्स्टेंटनिोपल पर कब्ज़ा करने के प्रयास (1433 में) को रोक नहीं सका, जो वफिल रहा। पश्चमि में तुर्कों से सुरक्षा की उम्मीद में, जॉन VI ने पश्चमि के साथ सुलह की दशिा में एक नर्णिायक कदम उठाया; इस उद्देश्य के लिए, वह इटली की यात्रा करने पर सहमत हुए, जहाँ पोप यूजीन चौथे ने चर्चों के संघ के प्रश्न पर एक परषिद बुलाने का नर्णिय लयिा था। पहले फेरारा में, फरि फ्लोरेंस में, संघ की शर्तें (1439) तैयार की गईं, जन्हिें परषिद में उपस्थति लोगों ने स्वीकार कर लयिा, कुछ ग्रीक बशिपों को छोड़कर; बाद वालों ने पुत्र से पवत्रि आत्मा के प्रवाह (फलियिोक्वे) के संबंध में कैथोलकि चर्च के सद्धिांत को वैध माना, पोप की सर्वोच्चता, और बनिा खमीर वाले रोटी के साथ यूखरस्ति का अनुष्ठान। हालाँकि, कॉन्स्टेंटनिोपल के नविासयिों के असंतोष ने इटली में संपन्न हुए संघ को शून्य और अमान्य कर दयिा।

[2780] जोसेफ द्वतिीय - जो पहले एफसिस के मेट्रोपॉलटिन थे - को 1416 में कॉन्स्टेंटनिोपल का पैट्रआर्क चुना गया था; उन्होंने सम्राट के साथ मलिकर चर्चों को एकजुट करने का प्रयास कयिा, फ्लोरेंस की परषिद (पछिली टप्पिणी देखें) में भाग लयिा और 1439 में इटली में उनकी मृत्यु हो गई।

लेकिन कॉन्स्टेंटिनोपल में उनके आगमन से पहले ही, थ्रेसलॉनिकी[2781] का मूल निवासी दुष्ट इसिडोर को पहले ही रूस के मेट्रोपॉलिटन के रूप में अभिषिक्त कर दिया गया था और कॉन्स्टेंटिनोपल से रूस भेज दिया गया था।

उनके प्रस्थान के बाद, संत योना कॉन्स्टेंटिनोपल पहुँचे और ग्रैंड प्रिंस के पत्र सम्राट और पैट्रिआर्क को प्रस्तुत किए। उन्हें पढ़ने के बाद, उन्होंने इस बात पर गहरा खेद व्यक्त किया कि उन्होंने इसिडोर को नियुक्त करने में जल्दबाजी की थी, जिसे पहले ही रूस भेज दिया गया था, और संत योना से कहा:

'अब हम आपके लिए क्या कर सकते हैं? आप बहुत देर से आए हैं; हमने पहले ही इसिडोर को रूस के मेट्रोपोलिस में नियुक्त कर दिया है और इसे बदल नहीं सकते: इसिडोर अब रूस के मेट्रोपॉलिटन हैं। अपने धर्मप्रांत लौट जाओ और प्रतीक्षा करो कि ईश्वर इसिडोर के संबंध में क्या विधान करते हैं। जब वह मर जाएगा या किसी भी कारण से उसकी जगह कोई और आ जाएगा, तब, कॉन्स्टेंटिनोपल के पैट्रिआर्कल धर्मप्रांत के आशीर्वाद से, तुम्हें कीव और सम्पूर्ण रूस का मेट्रोपॉलिटन नियुक्त किया जाएगा।

और इस प्रकार, उन्होंने संत योना को घर भेज दिया।

इसिडोर, अपनी ओर से, पहले कीव पहुँचे; फिर, वसंत में, वे मॉस्को के लिए रवाना हुए, और वहाँ पतझड़ तक पूरे कामकाजी मौसम को बिताने के बाद, वे फ्लोरेंस की परिषद के लिए पश्चिम की ओर यात्रा कर गए, औपचारिक तौर पर ऑर्थोडॉक्स धर्म की पुष्टि करने के लिए। वहाँ तीन साल रहने के बाद, वह पूर्वी चर्च से धर्मत्यागी बनकर कीव लौटा, लेकिन वहाँ उसे स्वीकार नहीं किया गया; फिर वह अपनी विधर्मी शिक्षाओं का प्रसार करने के लिए मास्को चला गया।

ग्रैंड प्रिंस वासिली वासिलीविच ने, उनके धर्मत्याग के बारे में जानकर, इस मामले पर विचार करने के लिए रूसी मेट्रोपोलिस के बिशपों और संपूर्ण पुरोहित वर्ग को बुलाया। पवित्र कैनन को इकट्ठा करने और जांचने के बाद, उन्होंने देखा कि इसिडोर फ्लोरेंस की परिषद से ऑर्थोडॉक्सी से अपरिचित और उसके विपरीत शिक्षाएँ वापस लाया था, और रूसी मेट्रोपोलिस के बिशप और संपूर्ण पुरोहित वर्ग उसे अपना मेट्रोपॉलिटन नहीं चाहते थे। महाप्रिंस ने उसे तब तक एक मठ में रहने का आदेश दिया जब तक कि वह कॉन्स्टेंटिनोपल में परम पवित्र पैट्रिआर्क को इस मामले की सूचना नहीं दे देता।

इज़िडोर, यह समझकर कि उसकी धर्मत्यागी का भंडाफोड़ हो गया है, शर्मसार हो गया और, आगे के निर्देशों की प्रतीक्षा किए बिना, गुप्त रूप से रोम भाग गया, जहाँ पोप ने उसका स्वागत किया और उस पर कृपा की।

[2781] इसिडोर – ग्रीक मूल के अंतिम रूसी मेट्रोपॉलिटन; वह थ्रेसैलॉनीकी के मूल निवासी थे। कॉन्स्टेंटिनोपल के पैट्रिआर्क द्वारा कीव के मेट्रोपॉलिटन के रूप में अभिषिक्त होने के बाद (उन पर पिछली टिप्पणी देखें), इसिडोर 1437 की वसंत में मास्को पहुँचे। वहाँ उन्होंने ग्रैंड प्रिंस वासिली वासिलीविच द ब्लाइंड को फेरारा-फ्लोरेंस परिषद (नोट 7 देखें) के लिए इटली की यात्रा करने की अनुमति देने के लिए मना लिया। 8 सितंबर 1437 को, इसिडोर सुज़दल के बिशप अवरामी और लगभग सौ पादरियों और आम लोगों के साथ मास्को से रवाना हुए। 1438 में, इसिडोर इटली के फेरारा पहुँचे, जहाँ परिषद का आयोजन हो रहा था; इसे जल्द ही फ्लोरेंस स्थानांतरित कर दिया गया। परिषद में, इसिडोर ने खुद को संघ का एक उत्साही समर्थक घोषित किया, जिसके लिए पोप ने उन्हें कार्डिनल बना दिया और सभी उत्तरी भूमि के लिए अपोस्टोलिक लेगेट नियुक्त किया। रूस की यात्रा करते समय, जब वह अभी भी हंगरी में थे, उन्होंने लिथुआनिया, रूस और लिवोनिया के धर्मप्रांतों को पत्र भेजे, जिसमें चर्चों के संघ की घोषणा की गई। वोल्हिनिया में, इसिडोर ने बिशप डैनियल को स्थापित किया, जो संघ के लिए सहमत हो गए थे; कीव में, राजकुमार अलेक्जेंडर ने इसिडोर को, उनके 'पिता, मेट्रोपॉलिटन' के रूप में, उनकी पूरी संपत्ति को कवर करने वाला एक चार्टर प्रदान किया, हालांकि कीव क्रॉनिकल का दावा है कि इसिडोर को कीव से निकाल दिया गया था। 1441 के वसंत में, इसिडोर मास्को पहुँचे, और अपने साथ पोप का एक मैत्रीपूर्ण संदेश लेकर ग्रैंड प्रिंस वासिली के पास गए। डोर्मिशन कैथेड्रल में पहली ही लिटिर्जी में, इसिडोर ने कॉन्स्टेंटिनोपल के पैट्रिआर्क के बजाय पोप यूजीन का स्मरण किया, और सेवा के अंत में एक डीकन ने एम्बो से फ्लोरेंस परिषद के फरमान पढ़े। ग्रैंड प्रिंस वासिली ने तुरंत वहीं कैथेड्रल में इसिडोर की निंदा करना शुरू कर दिया; फिर उसे चुदोव मठ में हिरासत में रखवा दिया और एक परिषद बुलाई, जिसने फ्लोरेंस परिषद के फरमानों को प्राचीन ऑर्थोडॉक्स सिद्धांत के विपरीत घोषित कर दिया। उसी वर्ष, 1441 की पतझड़ में, इसिडोर ट्वेर भाग गया, लेकिन ट्वेर के ग्रैंड प्रिंस ने उसे हिरासत में रखवा दिया। ट्वेर से, इसिडोर लिथुआनियाई नोवगोरोड भाग गया, और वहां से रोम चला गया। कॉन्स्टेंटिनोपल की तुर्की घेराबंदी के दौरान, इसिडोर शहर की दीवारों के भीतर था, और सम्राट कॉन्स्टेंटिन को पोप की सहायता की पेशकश कर रहा था, इस शर्त पर कि ग्रीक पुरोहित फ्लोरेंस परिषद के फरमानों को स्वीकार कर लें। कॉन्स्टेंटिनोपल के पतन के बाद, इसिडोर को तुर्कों ने कैद कर लिया, लेकिन वह कैद से भागकर रोम चला गया; वहाँ 1462 में उसकी मृत्यु हो गई, और वह कॉन्स्टेंटिनोपल के पैट्रिआर्क के पदवीधारी के रूप में जाना जाता था।

और संत योना[2782] को एक बार फरि से रूसी मेट्रोपोलसि के लिए चुना गया। कॉन्स्टेंटनिोपल के पैट्रआर्क[2783] , उनकी पवत्रिता ग्रेगरी मेलसिनिा के आशीर्वाद से, उन्हें मास्को के कैथेड्रल चर्च में उनके अपने बशिपों द्वारा अभषिक्ति कयिा गया। इस प्रकार, वह कॉन्स्टेंटनिोपल के प्रेरतिकि सहिासन के आशीर्वाद से रूसी बशिपों द्वारा अभषिक्ति होने वाले पहले मेट्रोपॉलटिन थे।

रूसी मेट्रोपोलसि के सहिासन पर आरोहण करने पर, संत योना ने अपने प्रयासों को दोगुना कर दयिा, अथक परश्रिम कयिा और, सबसे बढ़कर, हर जगह धर्मपरायणता स्थापति करने का प्रयास कयिा; इस उद्देश्य से प्रेरति होकर, उन्होंने पत्र भेजकर अपने अनुयायियों को नरिंतर उपदेश दयिा; एक सच्चे चरवाहे के रूप में, उन्होंने ऑर्थोडॉक्स धर्म की रक्षा की, जैसा कि उनके पत्रों से वशिेष रूप से स्पष्ट है[2784] ; सामान्य रूप से, उन्होंने ईश्वर द्वारा उन्हें सौंपे गए झुंड को सुरक्षति रखने का पूरा ध्यान रखा।

संत योना को ईश्वर द्वारा चमत्कार करने का वरदान प्राप्त था: वे बीमारयिों को ठीक करते थे और भवषि्य की भवषि्यवाणी करते थे।

इस प्रकार, अपनी प्रार्थना के द्वारा, उन्होंने महा राजकुमार की बेटी को, जो मृत्यु के कगार पर थी, उसके बस्तिर से ठीक कर दयिा। इस चमत्कार को देखकर, शैतान द्वारा उकसाया गया एक अवश्विासी, संत से कहने लगा कि महा राजकुमारी का इलाज उनकी प्रार्थना से नहीं हुआ था, बल्कि बीमारी अपने आप ठीक हो गई थी। तब धन्य योना ने उस आदमी को बुलाकर उसे पवत्रि आत्मा की कृपा का अपमान न करने की चेतावनी दी और उससे कहा:

'मेरे बेटे! कसिी बात पर संदेह मत करो, क्योंकि *"जो मनुष्यों के लिए असंभव है, वह परमेश्वर के लिए संभव है"* (लूका 18:27); परमेश्वर ने उस युवती को वश्विास के द्वारा और सबसे बढ़कर, उसके कुलीन माता-पति की आशा के द्वारा जीवन दयिा है।'

लेकनि उस आदमी ने संत पर वश्विास नहीं कयिा और और भी अधकि अपमानजनक शब्द कहने लगा।

तब संत योना ने उससे कहा:

'तू बाध जाए, तेरे नन्दिा करने वाले होंठ चुप हो जाएँ; उस कन्या के बदले जो मृत्यु के कगार पर थी, तू मरेगा!'

और तुरंत ही उस ईश्वर-नन्दिक के मुँह पर ताला पड़ गया, वह बोल नहीं पाया: उसकी जीभ लकवाग्रस्त हो गई; वह केवल अपनी आँखें ही हलिा सकता था, और थोड़ी ही देर बाद उस महान संत में वास करने वाले पवत्रि आत्मा के वरदान का अपमान करने की हम्मिति करने के कारण उसने अपनी अंतमि साँस ली।

पवत्रि मेट्रोपॉलटिन के पास पमिेन नाम का एक भक्षिु था, जो तहखाने का प्रभारी था और उसे आने वाले दुर्बल भखिारयिों को पेय देने का काम सौंपा गया था।

एक दनि, एक गरीब वधिवा उसके पास आई और उसने अपनी बीमारी के कारण उससे थोड़ा सा शहद देने के लिए कहा। लेकनि भक्षिु ने गुस्से में उससे कहा:

'हट जाओ; तुम्हें अभी कुछ पीने देने का समय नहीं हुआ है।'

वधिवा दुखति होकर चली गई।

यह जानने पर, उस पवत्रि व्यक्ति ने पमिेन को बुलाया और उससे कहा:

'भाई! तुम्हें एहसास नहीं है कि तुमने उस वधिवा का कतिना अपमान कयिा है; वह ईश्वर की सेवकिा है; इस कारण, ईश्वर तुम्हें मृत्यु की सजा दे रहे हैं; जाओ और अपने पापों का प्रायश्चति करो, क्योंकि तुम्हारे मरने का समय आ गया है।'

और संत योना ने अपने आध्यात्मकि पति को पमिेन को एक स्कीमा-भक्षिु के रूप में मुंडन करने का आदेश दयिा, और ईश्वर के पवत्रि पुरुष के वचन के अनुसार, ठीक उसी दनि मुंडन के दनि उनकी मृत्यु हो गई।

[2782] संत योना की रूसी मेट्रोपोलसि के सहिासन पर नयिुक्ति बशिपों, आर्कमिंड्राइट्स, एबॉट्स और संपूर्ण पुरोहति वर्ग से मलिकर बनी एक महान परषिद द्वारा घोषति की गई थी। यह नयिुक्ति स्वयं 15 दसिंबर 1448 को हुई, जैसा कि दूसरे सोफयिा क्रॉनकिल में दर्ज है: 'दव्यि लटिर्जी का अनुष्ठान कयिा गया, और माननीय ओमोफोरीयन (यानी, सेंट जोनाह का) उनके कंधे पर रखा गया, और महान मेट्रोपॉलटिन का दंड उनके हाथों में दयिा गया; और इस प्रकार, श्रद्धा और भक्ति के साथ, उन्होंने सेवा संपन्न की और लोगों को आशीर्वाद दयिा।'

[2783] उन्होंने 1445 से 1450 तक कॉन्स्टेंटनिोपल में पैट्रआर्क का पद संभाला।

[2784] अब तक, संत योना द्वारा लखि गए नम्निलखिति नर्दिेशात्मक पत्र ज्ञात हैं: व्याटका को दो, नोवगोरोड को दो और स्कोव को एक।

एक अन्य अवसर पर, संत ने अपने एक नवोदित को गरीबों में बांटने के लिए बड़ी रकम दी; लेकिन नवोदित ने पैसे का एक हिस्सा बाँट दिया और बाकी अपने पास रख लिया।

ऐसा हुआ कि एक दिन एक गरीब विधवा संत के पास नवशिखिया की शिकायत करने आई, यह कहते हुए:

'हे ईश्वर के पवित्र पुरुष! आपके शिष्य ने मुझे उस धन में से कुछ भी नहीं दिया जो आपने मुझे विरासत में दिया था।'

संत ने नवशिखिया को बुलाया और उससे पूछा:

'तुमने इस विधवा को क्यों ठेस पहुँचाई और उसे कुछ भी क्यों नहीं दिया?'

उसने उत्तर दिया:

'मैंने उसे बहुत कुछ दिया, लेकिन वह बेशर्मी से और माँग रही है।'

हालाँकि विधवा ने इसका खंडन किया और जोर देकर कहा कि उसे उससे कुछ भी नहीं मिला।

नवशिखिया ने गुस्से में कहा:

'दूर हो जाओ! तुम झूठ बोल रहे हो, इसलिए मर जाओगे!'

तब संत ने उससे कहा:

– ऐसा नहीं होगा: यह विधवा सत्य बोलती है, जबकि तुम चोरी करते हो और झूठ बोलते हो; वह जीवित रहेगी, जबकि तुम मरोगे।

तुरंत ही वह नवशिखिया बुखार से बीमार पड़ गया और मर गया।

वासिली नामक एक बोयार, जिसे कुतुज़ उपनाम से जाना जाता था, संत योना की चमत्कारी शक्ति में विश्वास नहीं करता था; वह कभी भी उनसे मिलने नहीं गया और उनका आशीर्वाद लेने से इनकार कर दिया। एक दिन उसे दाँत में बहुत तेज दर्द हुआ, जिससे वह बहुत परेशान था और उसका कोई इलाज नहीं मिल पा रहा था। ऐसा हुआ कि जिस बोयार के दाँत दर्द कर रहे थे, वह उस समय कैथेड्रल चर्च में था, जबकि ईश्वर के पवित्र संत योना वहाँ दिव्य लिटिर्जी का अनुष्ठान कर रहे थे; लिटिरजी के अंत में, संत ने उस बोयार को अपने पास बुलाया, उस पर आशीर्वाद दिया, उसे प्रॉस्फोरा का एक टुकड़ा दिया और पवित्र धर्मग्रंथों से एक शिक्षा देने के बाद, अचानक अपने हाथ से उसकी गाल पर इतनी जोर से थप्पड़ मारा कि कई लोगों ने उस थप्पड़ की आवाज़ सुनी।

वासिली ने ज़ोर से चिल्लाया:

'अरे, यह तो बहुत दर्द कर रहा है: तुमने मेरे आखिरी दाँत भी तोड़ दिया!'

और तुरंत उस बीमार व्यक्ति को राहत महसूस हुई, और उसका दाँत दर्द शांत हो गया। वह आनंदित होकर घर चला गया, ईश्वर का धन्यवाद करते हुए और उनके पवित्र सेवक, संत योना की स्तुति करते हुए।

वर्ष 1451 में, हमारे पूर्वजों के पापों के कारण और ईश्वर की अनुमति से, अधर्मी आगारियों ने रूसी भूमि पर आक्रमण कर दिया। एक हॉर्ड का राजकुमार, तातारों की एक बड़ी भीड़ के साथ, अचानक मास्को पहुँचा, उसके उपनगरों में आग लगा दी और शहर को चारों ओर से घेरने लगा। धन्य मेट्रोपॉलिटिन जोनाह, अपने संपूर्ण पुरोहित वर्ग के साथ, क्रूस के साथ एक जुलूस में निकल पड़े, और शहर की दीवारों के किनारे चलते हुए विनती के भजन गाते हुए, शहर और उसके लोगों के लिए ईश्वर से बहुत आँसू बहाकर भक्तिपूर्वक प्रार्थना करने लगे।

चुडोव मठ के एंथनी नामक एक वृद्ध भिक्षु को देखकर, जो अपने सदाचारी जीवन के लिए प्रसिद्ध थे और जिन्हें वह पहचानते थे, संत जोनाह ने उनसे इन शब्दों में कहा:

'मेरे पुत्र और भाई एंथनी! इस नगर और सभी ऑर्थोडॉक्स ईसाइयों को अधर्मी अगारियों से मुक्ति के लिए दयालु परमेश्वर और परमेश्वर की अति पवित्र माता से प्रार्थना करो।'

एंथनी ने उत्तर दिया:

'महान संत! हम ईश्वर और उनकी परम पवित्र माता, हमारी दृढ़ और शीघ्र सहायिका, का धन्यवाद करते हैं: उन्होंने आपकी प्रार्थनाएँ सुनी हैं और अपने पुत्र, हमारे प्रभु यीशु मसीह से विनती की है, कि यह शहर और सभी ऑर्थोडॉक्स ईसाई आपके कारण बच जाएँ। अगारीय शत्रु जल्द ही एक अदृश्य शक्ति द्वारा पराजित और भगा दिए जाएँगे; केवल मैं ही हूँ जिसे प्रभु ने शत्रुओं द्वारा मृत्युदंडित होने के लिए नियत किया है।

जैसे ही वृद्ध ने ये शब्द कहे, तातारों द्वारा छोड़े गए एक तीर ने उन्हें भेद दिया, जिससे उनकी जल्द ही मृत्यु हो गई; जिसके पश्चात् उन्हें पूरे सिनिड के साथ मेट्रोपॉलिटिन जोनाह द्वारा सम्मानपूर्वक दफनाया गया।

जब 2 जुलाई को परमेश्वर की अतिपवित्र माता के वस्त्र उतारने का पर्व आया, तो टाटारों में भगदड़ मच गई: उन पर अचानक भय और आतंक छा गया, और वे एक अदृश्य शक्ति द्वारा शहर से खदेड़े जाकर भाग खड़े हुए।

संत मेट्रोपॉलिटिन जोनाह ने आदेश दिया कि उनकी प्रार्थनाओं के माध्यम से अगारियों से मुक्ति की स्मृति में, उनके प्रांगण में जल्द से जल्द परम पवित्र माता परमेश्वर की वस्त्र त्याग के लिए एक चर्च का निर्माण किया जाए, क्योंकि उसी दिन उन्होंने शहर की घेराबंदी उठा ली थी।

बाद में, कई साल बीत गए, और एक परिपक्व उम्र में पहुँचने के बाद, संत जोनाह को, अपने सम्मानजनक निधन से ठीक पहले, ईश्वर से उनकी बारे में निम्नलिखित रहस्योद्घाटन प्राप्त हुआ।

कैथेड्रल चर्च का सेक्सटन, मैक्सिमि नाम का एक व्यक्ति, एक रात अपने कर्तव्यों के निर्वहन के लिए चर्च के चारों ओर घूमते हुए, उसे अनलॉक पाया और देखा कि अंदर मोमबत्तियाँ जल रही थीं और पुरोहित भजन गा रहे थे। वह बहुत डर गया और चर्चवार्डन, पुरोहित जैकब को बताने के लिए दौड़ा।

वह जल्दी से वहाँ गया, लेकिन उसने चर्च को पहले की तरह ही बंद पाया, हालाँकि अंदर से रोशनी दिखाई दे रही थी। उसने दरवाज़े खोले, चर्च में प्रवेश किया और वहाँ कोई नहीं मिला, लेकिन मोमबत्तियाँ अभी भी जल रही थीं। वह भय से भर गया और वेदी से एक आवाज़ सुनाई दी:

'जेम्स! जाओ और मेरे सेवक, मेट्रोपॉलिटिन जोनाह से कहो कि चूँकि उसने अपनी आत्मिक मुक्ति के लिए मुझसे देहिक कष्ट माँगा है, मैंने उसकी विनती सुनी है: मैं उसकी टाँग पर एक फोड़ा भेजूँगा, जिससे वह मर जाएगा; उसके निकटवर्ती निधन को ध्यान में रखते हुए, उसे महा-धर्मगुरु के रूप में अपने कर्तव्यों को पूरा करने में देरी न करनी चाहिए। उस आवाज को सुनकर, याकूब भय और आतंक से भर गया; वह चकरा गया और उसने अपनी इस दिव्यदृष्टि के बारे में किसी को नहीं बताया, यहाँ तक कि स्वयं संत जोनाह को भी नहीं।

सुबह, भोर के समय, संत योना ने जेम्स को बुलाया और उससे पूछा:

'जेम्स, तुम कल रात कहाँ थे? तुमने क्या देखा और सुना? मुझे अपने बारे में जो प्रकट हुआ था, वह तुमने मुझे क्यों नहीं बताया?'

याकूब बहुत डरा हुआ था; वह संत के पैरों पर गिर पड़ा और बोला:

'हे प्रभु, मुझे क्षमा करें! मैंने आपको यह बताने की हिम्मत नहीं की, लेकिन मैं देखता हूँ कि पवित्र आत्मा ने यह आपको प्रकट कर दिया है।'

संत ने कहा:

'भगवान तुम्हें माफ करें, मेरे बेटे; लेकिन मैं तुम्हें बताता हूँ कि भगवान तुम्हारी पत्नी को तुमसे छीन लेंगे। तो जाओ, और बिना देरी के उसकी आत्मा का ध्यान रखो, ताकि वह पश्चाताप में मर सके।'

उस समय तक, द्वारपाल की पत्नी पूरी तरह से स्वस्थ थी। हालाँकि, जब वह घर लौटा, तो उसने उसे पहले से ही बीमार पाया, और तीन दिन बाद ही उसकी मृत्यु हो गई, उसने पश्चाताप और मसीह के पवित्र रहस्यों को ग्रहण करके अपने ईसाई कर्तव्य का ठीक से पालन किया था।

महान संत योना स्वयं भी इसके बाद अधिक समय तक जीवित नहीं रहे। पवित्र आत्मा की कृपा और पुण्य कर्मों से परिपूर्ण होकर, और *'परमेश्वर के भय में पवित्र स्थान को पवित्र करने'* (2 कुरिन्थियों 7:1) के बाद, उन्हें अपने वृद्धावस्था में एक धन्य निधन की कृपा प्राप्त हुई। संत को अपनी टांग में अल्सर हो गया; यद्यपि उनका शरीर कमजोर हो गया, उनका साहस नहीं डगमगाया, और वे बीमार होने पर भी ईश्वर के गिरिजाघर में जाना जारी रखे रहे।

जब उन्होंने अपनी पवित्र आत्मा को ईश्वर के हाथों में सौंपने की तैयारी की, तो उन्होंने महा राजकुमार, उनके वंशजों और सभी लोगों को आशीर्वाद दिया; और, होंठों पर एक प्रार्थना के साथ, वे 31 मार्च 1464 को प्रभु के पास चले गए[2785] ; उन्होंने डेढ़ साल तक ईश्वर की कलीसिया का मार्गदर्शन किया था।

[2785] पहला सोफिया क्रॉनिकिल संत योना के निधन को इस प्रकार दर्ज करता है: 'वर्ष 6969 में, 31 मार्च को, कीव और सर्व रूस के मेट्रोपॉलिटिन, परम पावन योना का निधन हो गया; क्योंकि उस समय उनका चेहरा मृतकों की तरह नहीं दिख रहा था, बल्कि ऐसा लग रहा था मानो वे सो रहे हों, जो उनके महान और गौरवशाली जीवन का संकेत था, जैसा कि हमने उनके बारे में उनके युवा दिनों से सुना था, ठीक वैसे ही जैसे प्राचीन पवित्र पिता हुआ करते थे।'

संत जोनाह की मृत्यु के कुछ वर्षों बाद, ग्रैंड प्रंसि वासलिी वासलिीवचि का भी नधिन हो गया; उनके उत्तराधकिारी उनके पुत्र, ग्रैंड प्रंसि जॉन वासलिीवचि, रूसी भूमि के नरिंकुश शासक थे[2786] । ईश्वर की इच्छा से और उनकी उत्कृष्टता मेट्रोपॉलटिन गेरोन्टयिस[2787] के आशीर्वाद से, उन्होंने पुराने, जर्जर गरिजाघर की जगह एक नया कैथेड्रल (जो आज भी खड़ा है) बनाने की इच्छा व्यक्त की।

संत पीटर मेट्रोपॉलटिन, चमत्कारकर्ता के पवत्रि अवशेषों को लेकर, उन्हें अस्थायी रूप से एक अन्य चर्च में स्थानांतरति कर दयिा गया।

और इस प्रकार, जब पुरानी चर्च[2788] को ध्वस्त कर दयिा गया और उन्होंने नए महान चर्च की नींव के लिए खाई खोदना शुरू कयिा, तो अन्य मेट्रोपॉलटिनों के अवशेष मलि: थयिोग्नोस्टस[2789] , साइप्रयिन, फोतउिस, और साथ ही पवत्रि चमत्कारी योना के अवशेष भी।

जब इन पवत्रि अवशेषों की खोज के बाद कैथेड्रल में स्मरणोत्सव सेवाएं आयोजति की जाने लगीं, तो समियिन नामक एक सात वर्षीय लड़के को वहाँ लाया गया; वह अपने जन्म के दनि से ही लकवाग्रस्त था। वह पुजारी पीटर का पुत्र था, जो घंटी मीनार में स्थति सेंट जॉन क्लाइमस के चर्च में सेवा करता था। कैथेड्रल के प्रज़िबाइटर एलेक्सयिस ने लकवाग्रस्त लड़के को अपनी बाहों में उठाया, उसे संत योना के अवशेष-पात्र के पास ले जाकर रखा और उसे गोद में लिए प्रार्थना करने का नरि्देश दयिा।

पुजारी के सहारे, लड़के ने प्रार्थना करते हुए ज़ोर से पुकारा:

'बारशि हो रही है!'

यह एक साफ़ दनि था, आसमान में एक भी बादल नहीं था: तुरंत ही लड़का स्वस्थ हो गया और बनिा कसिी सहायता के, अकेले ही घर चला गया।

यह चमत्कार देखकर सभी चकति रह गए और उन्होंने ईश्वर तथा उनके संत, संत योना की स्तुति की।

जब 1479 में परम पवत्रि ईश्वर की माता के सुप्त होने के कैथेड्रल चर्च का नरि्माण पूरा हुआ, तो इसे वधिवित रूप से पवत्रि कयिा गया और पवत्रि मेट्रोपॉलटिन्स की पूजनीय अवशेषों को वहाँ स्थानांतरति कयिा गया: पहले, संत पीटर द वंडरवर्कर के, फरि थयिोग्नोस्टस, साइप्रयिन, फोटयिस और मसीह के इस सेवक, योना के। और चूँकि उनकी अवशेषें अखंड और अपरविर्तति पाई गईं, उन्हें एक अवशेष-पात्र में रखा गया और कैथेड्रल में प्रदर्शन के लिए रखा गया, जहाँ वे आज भी वशि्राम करते हैं, और प्रार्थना करने के लिए आने वाले कई वशि्वासयिों को प्रेरति करते हैं, जो अनुग्रह[2790] की तलाश में आते हैं।

जॉन नाम का एक व्यक्ति, जो गूंगा था और बोल नहीं सकता था, एक बार संत के अवशेष-पात्र के पास आया और उसने उनके पवत्रि अवशेषों की पूजा की, और उनके पवत्रि हाथ को चूमा। यह ज्ञात नहीं है कि कैसे, लेकनि ईश्वर की कृपा से, उसे ऐसा लगा कि संत ने अपना हाथ बढ़ाया, उसकी जीभ को पकड़ा और उसे मजबूती से थाम लयिा। वह ज़ोर से चलि्लाने लगा। उस समय चर्च में मौजूद पादरयिों और लोगों ने उसकी चीख सुनकर उसकी ओर दौड़ लगाई और हैरानी से सोचा कि वह गूंगा आदमी क्यों चलि्ला रहा है। जब उसने देखा कि संत ने उसकी पकड़ से उसकी जीभ छोड़ दी है, तो जॉन ने चलि्लाना बंद कर दयिा और तुरंत स्पष्ट रूप से बोलने लगा, और सभी को बताया कि कैसे उसकी बधरिता से उसकी जीभ चमत्कारकि रूप से ठीक हो गई थी। वहाँ मौजूद सभी लोग इस अद्भुत चमत्कार से वस्मिति हो गए और ईश्वर के कार्यों की स्तुति करते हुए, महान चमत्कार-कर्ता, संत योना की प्रशंसा करने लगे।

[2786] 1462 से 1505 तक

[2787] 1473 से 1489 तक

[2788] यह 1472 में था।

[2789] 1328 से 1353 तक

[2790] अवशेषों की खोज के बाद, ग्रैंड प्रंसि इवान वासलिीवhे ने मेट्रोपॉलटिन फलिपि के साथ मलिकर कैनन और संतों के जीवनचरति के प्रसद्धि लेखक पाखोमयिस सेरबनि को अवशेषों की खोज के उपलक्ष्य में एक कैनन रचने का आदेश दयिा और उनके सम्मान में कैथेड्रल में मनाए जाने वाले एक स्थानीय पर्व दविस की स्थापना की। मेट्रोपॉलटिन मकरि के अधीन 1547 में संत योना की स्मृति का एक गंभीर, चर्च-व्यापी उत्सव स्थापति कयिा गया था।

मॉस्को के मेट्रोपॉलिटन, संत योना के पवित्र अवशेषों के माध्यम से, उन सभी के लिए जो विश्वास के साथ इनके पास आते हैं, कई अन्य चमत्कार हुए हैं और होते रहते हैं, हमारे ईश्वर, मसीह की महिमा के लिए, जो पिता और पवित्र आत्मा के साथ महिमामय हैं, अब और हमेशा और युगों-युगों तक। आमीन।

संत जोसेफ धर्मी, सुन्दर का जीवन

31 मार्च को स्मरणोत्सव

[2791][2792]सुंदर यूसुफ[2793] , जो आत्मा और शरीर दोनों से धन्य थे, पुराने नियम के कुलपिता याकूब के पुत्र, इसहाक के पोते और अब्राहम के परपोते थे। उनका जन्म याकूब की दूसरी पत्नी, राहेल से हुआ था, जो तब तक बाँझ थीं जब तक कि ईश्वर ने उनकी प्रार्थना नहीं सुनी और उन्हें संतानोत्पत्ति के लिए गर्भ प्रदान नहीं किया। राहेल का पहला पुत्र यूसुफ था, जो याकूब का ग्यारहवाँ पुत्र था। राहेल का दूसरा पुत्र बेन्यामीन था, जो इज़राइल का बारहवाँ पुत्र था। बेन्यामीन के जन्म के बाद, राहेल की मृत्यु हो गई और उसे एप्रथ में दफनाया गया, यानी बेतलहम में। राहेल के पुत्र, यूसुफ और बेन्यामीन, याकूब को बहुत प्रिय थे, क्योंकि परमेश्वर ने उन्हें उनकी वृद्धावस्था में उनके पास भेजा था, और इसके अलावा वे उन्हें उनकी प्रिय पत्नी राहेल की याद दिलाते थे, जिसकी मृत्यु से वह बहुत दुखी था। याकूब उसे इतना प्यार करता था कि, उसके लिए, उसने अपने ससुर लावन के लिए चौदह साल तक काम किया। इसके अलावा, राहेल के दोनों पुत्र अच्छे चरित्र वाले, पवित्र और प्रेम के योग्य थे, विशेष रूप से धन्य यूसुफ, जिस पर उसके यौवन से ही पवित्र आत्मा की कृपा निवास करती थी। जब यूसुफ सत्रह वर्ष का हुआ, तो वह अपने पिता के झुंडों की देखभाल करने लगा, जो उसकी अन्य माताओं से उत्पन्न भाइयों के साथ थे। अपने भाइयों के पापी कर्मों को देखकर, यूसुफ ने उनमें भाग लेने से इनकार कर दिया। इसके विपरीत, अपने भाइयों से प्रेम करते हुए और उनकी आत्माओं को बचाने की इच्छा से, यूसुफ ने उनके कुछ अपराधों की सूचना अपने पिता याकूब को दी, ताकि वे एक पिता के रूप में उन्हें दंडित कर सकें और इस प्रकार अपने घर से परमेश्वर के क्रोध को टाल सकें। याकूब, जोसेफ में ऐसी बुद्धिमत्ता, संयम और ईश्वर भय को देखकर, उससे और भी अधिक प्रेम करने लगे और उसे कई रंगों वाला एक चोगा पहनाया। हालाँकि, उसके भाई जोसेफ से बहुत नफरत करने

[2791] याकूब ने राहेल को एप्रथ, यानी बेतलेहेम के रास्ते में दफनाया, और उसकी कब्र पर एक स्मारक खड़ा किया (उत्पत्ति 35:19)। कई सदियों बाद भी राहेल की कब्र अच्छी तरह से जानी जाती थी (1 शमूएल 10:2)। स्थानीय यहूदी और मुसलमान आज भी राहेल के मकबरे का बहुत सम्मान करते हैं। सूखे के समय अरब लोग यहाँ गंभीर प्रार्थनाओं के लिए इकट्ठा होते हैं। विवाहित महिलाएँ यहाँ से पत्थर के टुकड़े लेती हैं और गर्भावस्था के दौरान उन्हें अपने साथ रखती हैं। बाद के समय में रचेल की स्मृति को उसकी संतानों के माध्यम से संरक्षित रखा गया। बेतलहम के निवासियों और बुजुर्गों ने, रूथ के साथ बोअज़ के विवाह पर आशीर्वाद देते हुए, उसे परमेश्वर से वही खुशी दी जिसकी कामना की थी जो रचेल ने इज़राइल को दी थी (रूथ 4:11)। नबी यिर्मियाह, यहूदी बंधुत्व की विपत्तियों का वर्णन करते हुए, राहेल को इस्राएलियों की पूर्वज माता के रूप में चित्रित करते हैं, जो अपने बेटों के लिए शोकाकुल और अथाह रूप से विलाप कर रही है, क्योंकि वे अब नहीं रहे (यिर्म. 31:15)। मत्ती के सुसमाचार में, भविष्यवक्ता द्वारा वर्णित इस दुखद घटना में, एक और उससे भी अधिक दुखद घटना की पूर्वछाया देखी गई है – बेथलहम के शिशुओं का हेरोद द्वारा कत्लेआम: बेथलहम के बच्चे राहेल की संतानें थीं, और वह, उनकी माँ के रूप में, उनका अब न रहना जानकर अविराम रोती है (मत्ती 2:18)।

[2792] बेथलहम फिलिस्तीन का एक नगर है: पुराने नियम में इसे महान यहूदी राजा दाऊद के जन्मस्थान के रूप में जाना जाता है, और नए नियम में यीशु मसीह के जन्मस्थान के रूप में। यह यरूशलेम से दो घंटे की यात्रा दक्षिण में स्थित है और दो पहाड़ियों पर बसा है, जिनकी ढलानों पर अंगूर के बाग़ प्रचुर मात्रा में हैं, जबकि उनके तल पर अच्छी तरह से संवारा हुआ अनाज का खेत फैला हुआ है। 'बेथलहम' नाम स्वयं शायद इसी उर्वरता से लिया गया है (हिब्रू में 'रोटी का घर' के लिए)। प्राचीन काल में, इसे एप्रथ (मीका 5:2) कहा जाता था (हिब्रू में जिसका अर्थ है 'फल देना')। उद्धारकर्ता मसीह के जन्म के बाद से, बेथलहम सभी ईसाइयों के लिए एक पवित्र स्थान बन गया है। पलेस्टाइन पर ओटोमन विजय (15वीं शताब्दी) से पहले, बेथलहम कई मौकों पर पूरी तरह से नष्ट हो गया था, और उस समय तक यह पूरी तरह से खंडहर में बदल चुका था, जिससे यह केवल 19वीं शताब्दी की शुरुआत में ही उबरना शुरू हुआ। यह अब 6,000 तक अरब निवासियों की आबादी वाला एक छोटा सा शहर है, जिनमें से आधे ऑर्थोडॉक्स और आधे कैथोलिक हैं, जिसे बैट लहम ('रोटी का घर') के नाम से जाना जाता है। जहाँ प्रभु यीशु मसीह का जन्म हुआ था, उस तथाकथित या गुफा की जगह एक चर्च खड़ा है; गुफा इसके वेदी के नीचे स्थित है; इसके दीवारों और फर्श पर संगमरमर लगा है। जन्मस्थल को गुफा में एक खाई माना जाता है, जिसे पाँच चाँदी के दीयों से रोशन किया गया है। फर्श में एक चाँदी का तारा जड़ा है, जिस पर लैटिन में अंकित है: Hic de Virgine Maria Jesus Christus natus est – यहाँ कुँवारी मरियम से यीशु मसीह का जन्म हुआ था। इस स्थान से कुछ ही कदमों की दूरी पर एक खोह है जिसे उस अस्तबल के स्थान के रूप में पहचाना जाता है जिसमें मसीह को रखा गया था। गुफा के उत्तर-पश्चिम में एक संकरा भूमिगत मार्ग फैला है, जिसमें वेदी और चैपल हैं, साथ ही एक गुफा भी है जहाँ धन्य जेरोम (420 ईस्वी) को दफनाया गया है।

[2793] योसेफ – हिब्रू भाषा से, जिसका अर्थ है 'बढ़ना' या 'जोड़ना'।

लगे: कुछ इसलिए क्योंकि वह उनके पापपूर्ण कार्यों में भाग नहीं लेता था और उनके बारे में अपने पिता को बता देता था; कुछ अन्य इसलिए कि उनके पिता उन्हें उन पर अधिक प्रेम करते थे। वे यूसुफ से दयालुता से बात नहीं कर सकते थे; उन्होंने उसके खिलाफ दुर्भावनापूर्ण आरोप लगाए और अपने पिता के पास उसकी बदनामी की। हालाँकि, याकूब, जो यूसुफ की मासूमियत को अच्छी तरह जानते थे, उन पर विश्वास नहीं करते थे।

उस समय, पवित्र आत्मा, जो यूसुफ में वास करता था, ने एक भविष्यवक्ता के समान, स्वप्नों में उसे उसके भविष्य के जीवन के बारे में सब कुछ प्रकट करना शुरू कर दिया। कुछ भी छिपाए बिना, यूसुफ ने अपने पिता और भाइयों को इसके बारे में बताया:

एक दिन उसने कहा, 'सुनो, मुझे जो स्वप्न आया है। मैंने स्वप्न में देखा कि हम खेत के बीच में बंडलों को बाँध रहे थे; मेरा बंडल सीधा खड़ा था, जबकि तुम्हारे बंडल, उसके चारों ओर खड़े होकर, मेरे बंडल के सामने झुक गए।'

इस पर उसके भाइयों ने उससे कहा:

'क्या तुम्हारा सचमुच इरादा है कि तुम हम पर राज्य करो और हम पर शासन करो?'

और इस सपने के कारण वे उससे और भी अधिक नफरत करने लगे। बाद में, यूसुफ ने एक और सपना देखा और वह भी अपने पिता और भाइयों को बताया:

उसने कहा, 'मैंने देखा कि सूर्य, चंद्रमा और ग्यारह तारे मुझे प्रणाम कर रहे थे।'

जब उसके पिता ने यह सुना, तो उन्होंने यूसुफ़ को डाँटते हुए कहा:

'इस सपने का क्या मतलब है? क्या तुम्हारे पिता और माता (तुम्हारी सौतेली माँ लियिah) और तुम्हारे भाई सचमुच आकर तुम्हारे सामने जमीन पर सिर झुकाएँगे?'

उसके पिता ने उसे केवल दिखावे के लिए डांटा। ऐसा करते हुए, वह अपने बेटे को उसके भाइयों के और भी बड़े गुस्से से बचाना चाहते थे। हालाँकि, वास्तव में, इस सपने ने याकूब की आत्मा पर गहरा प्रभाव डाला था। उन्होंने मन ही मन सोचा: 'इसका क्या मतलब हो सकता है? मुझे लगता है कि प्रभु इस पुण्यवान युवक के माध्यम से अपनी दया से सभी को चकित करना चाहते हैं।'

और अपने मन में वह इस पर प्रसन्न हुआ। परन्तु उसके भाई यूसुफ से और भी अधिक द्वेष करने लगे और उसे हानि पहुँचाने का निश्चय किया।

एक दिन, जब भाई शेchem में अपने झुंडों की रखवाली कर रहे थे[2794] , तो यूसुफ अपने पिता के साथ हेब्रोन की घाटी में था। अपने शेchem में रहने वाले बेटों की चिंता में, उस स्नेही पिता ने अपने प्रिय पुत्र यूसुफ से कहा:

'जा, मेरे बेटे, अपने भाइयों के पास, देख कि वे कुशल हैं और भेड़ें सुरक्षित हैं, और जितनी जल्दी हो सके मेरे पास लौट आ।'

अपने पिता की आज्ञा का पालन करते हुए, यूसुफ अपने भाइयों के पास अपने पिता का प्रणाम पहुँचाने के लिए निकल पड़ा; लेकिन बिन्यामीन, जो अभी भी एक छोटा लड़का था, अपने पिता के पास ही रहा। यूसुफ शेकेम के जंगल में भटकता रहा और वह किसी भी तरह अपने भाइयों को ढूंढ नहीं सका। वह पहले से ही उनकी तकदीर को लेकर चिंतित होने लगा था जब उसे एक आदमी मिला जिसने उससे पूछा:

'तुम क्या ढूंढ रहे हो, युवक?'

उसने उत्तर दिया:

'मैं अपने भाइयों की तलाश कर रहा हूँ; मुझे बताओ, अगर तुम जानते हो, कि वे अपनी भेड़ों का चरागाह कहाँ कर रहे हैं?'

[2794] शेchem प्रतिज्ञात भूमि का एक प्राचीन शहर है; यह सामरिया में, माउंट एफ्राइम पर, यरूशलेम से 18 घंटे और नासरत से 16 घंटे की यात्रा पर, गेरीज़िम और गेबाल की घाटी में स्थित है, जो खुबानी, आड़ू, अनार, आलूबुखारा, गुलाब और मर्टल से भरपूर थी। जब इब्राहीम पहली बार यहाँ आए, तो यहाँ केवल मोरे का ओक का पेड़ था (उत्पत्ति 12:6); लेकिन जब तक याकूब मेसोपोटामिया से लौटे, यह जगह पहले से ही शेकेम शहर के नाम से जानी जाती थी (उत्पत्ति 33:18-19)। शेchem के पिता हमोर से याकूब ने एक भूखंड खरीदा, वहाँ अपना तम्बू गाड़ा, एक वेदी बनाई और इस्राएल के प्रभु परमेश्वर का नाम पुकारा (उत्पत्ति 33:19-20)। प्रतिज्ञात देश में यह याकूब की एकमात्र संपत्ति थी। नज़दीक ही शायद याकूब का कुआँ था, जिसका उल्लेख नए नियम में (यूहन्ना 4:5-6) मिलता है। यहीं याकूब ने यूसुफ को उसके भाइयों के पास भेजा था, और यहीं के आसपास उन्होंने उसे इस्माएलियों को बेच दिया था। अपनी मृत्यु से पहले, याकूब ने शेchem के पास की जमीन का टुकड़ा यूसुफ को दिया, जिन्हें वहाँ दफनाया गया था (यहोशू 24:32)। वर्तमान में, शेchem, या नाब्लस, सामरी लोगों का केंद्र है।

तब उस आदमी ने उससे कहा:

'वे इस जगह से चले गए हैं, क्योंकि मैंने उन्हें कहते सुना, "आओ, हम डोफाइम चलते हैं!"'[2795]

और उसने यूसुफ को रास्ता दिखा दिया। यूसुफ अपने भाइयों के पीछे चल पड़ा और उन्हें डोफिम में पाया। जब उसने उन्हें दूर से देखा, तो उन्हें देखकर बहुत प्रसन्न हुआ, क्योंकि वह उनसे प्रेम करता था। वे भी उसे दूर से ही देख लिए, और वह उनके पास पहुँचने से पहले ही वे जंगली जानवरों की तरह उस पर झपट पड़े और उसे मारने की साजिश रचने लगे। उन्होंने एक-दूसरे से कहा:

'वह सपना देखने वाला आ रहा है। आओ, हम उसे मार डालें और उसे कुएँ में फेंक दें। फिर हम कहेंगे कि किसी जंगली जानवर ने उसे खा लिया। तब देखेंगे कि उसके सपने सच होते हैं या नहीं।'

सबसे बड़े भाई रूबेन ने यह सुना और यूसुफ़ को अपने भाइयों के हत्यारे हाथों से बचाने की इच्छा से, उनसे कहा:

'उसे मत मारो; अपने भाई का खून मत बहाओ: इसके बजाय, उसे उस जंगल की खाई में फेंक दो। उसे अकेले वहीं मरने दो, लेकिन उस पर हाथ मत उठाना!'

इस तरह, रूबेन ने उस निर्दोष युवक को मौत से बचाने की उम्मीद की। वह उसे चुपके से कुएँ से बाहर निकालकर उसके पिता के पास वापस भेजना चाहता था।

मेमने की तरह शांत स्वभाव वाले यूसुफ को अपने भाइयों की दुर्भावना के बारे में कुछ भी पता नहीं था। वह उनके पास गया और अपने पिता की ओर से अभिवादन करते हुए उन्हें स्नेहपूर्वक चूमा। हालाँकि, उसके भाई जंगली जानवरों की तरह उस पर टूट पड़े और उसका रंग-बिरंगा चोगा उतार लिया। वे उसके प्रति अपने दाँत पीसे, मानो उसे जिंदा निगल जाना चाहते हों। उन्होंने यूसुफ को अपनी मुट्ठियों से मारा और उसके साथ हर तरह का दुर्व्यवहार किया। अपने क्रोध में, उसके भाई उसे क्रूर और निर्दयी लग रहे थे। अब यूसुफ़ को इस बात की कोई उम्मीद नहीं थी कि कोई उसकी मदद के लिए आएगा। इसलिए उसने अपनी आवाज़ बुलंद की और आँसुओं और सिसकियों के साथ, अपने भाइयों से दया की भीख माँगने लगा:

'तुम इतने क्रोधित क्यों हो? मैं तुमसे विनती करता हूँ, मुझे एक पल के लिए जाने दो और मेरी विनती सुनो। भाइयो! तुम स्वयं जानते हो कि हमारी माँ की मृत्यु पर हमारे पिता हर दिन रोते हैं। क्या तुम सच में अपने मन को इतना कठोर बना सकते हो कि जब पुराना घाव अभी तक भरा नहीं है, तब उन पर एक नया घाव लगा दो? मैं आपसे विनती करता हूँ, मुझे मेरे पिता से अलग न करें; नहीं तो वे शोक से अपनी कब्र में चले जाएँगे। मैं आपसे हमारे पूर्वजों, अब्राहम, इसहाक और याकूब के परमेश्वर (मरकुस 12:26) के नाम पर विनती करता हूँ – वही परमेश्वर जिसने अब्राहम को अपने पिता की भूमि और घर को छोड़कर प्रतिज्ञात देश में बसने की आज्ञा दी थी (उत्पत्ति 12:1–3), – वही ईश्वर जिसने वादा किया था कि वह अब्राहम की संतान को आकाश के तारों (उत्पत्ति 15:5) या समुद्र तट की रेत (उत्पत्ति 28:14) के समान अधिक बना देगा। मैं आपको सर्वोच्च परमेश्वर के नाम की शपथ दिलाता हूँ, जिसने अब्राहम को अपने पुत्र इसहाक को बलिदान करने की इच्छाशक्ति दी और जो अपने पुत्र के बदले में बलिदान के लिए एक मेमना भेजा (उत्पत्ति 23:1–19)। मैं आपको सर्वशक्तिमान परमेश्वर के नाम पर विनती करता हूँ, जिन्होंने हमारे पिता इसहाक (उत्पत्ति 27:27-29), उनके पिता, के मुख से हमारे पिता याकूब को आशीष दी, और जिन्होंने मेसोपोटामिया के हران में (उत्पत्ति 28:10-19)[2796] , जहाँ से

[2795] दोतान माउंट टैबर और जज़्रील घाटी के पास एक शहर है; गिलाद से मिस्र जाने वाली सड़क यहीं से होकर जाती थी, जिस पर विभिन्न सामान ले जाने वाले कारवां यात्रा करते थे (उत्पत्ति 37:25)। आज, यह नाम महान मैदान के दक्षिण-पूर्वी किनारे पर एक हरे-भरे पहाड़ी के लिए प्रयुक्त होता है, जिसके पैर में सामरिया के उत्तर में एक झरना है।

[2796] मेसोपोटामिया – अर्थात् नदियों के बीच की भूमि, प्राचीन शिनार (उत्पत्ति 10:10), अब्राहम का जन्मस्थान और निवास-स्थान, इससे पहले कि वह हران की भूमि के लिए रवाना हुआ (उत्पत्ति 11:28, प्रेरितों के काम 7:2)—यह नाम tigris और यूफ्रेटिस नदियों के बीच स्थित क्षेत्र को दिया गया है, जो दक्षिण में फारसी की खाड़ी और उत्तर में आर्मेनिया के पहाड़ों से घिरा हुआ है। संकीर्ण अर्थ में, मेसोपोटामिया इस क्षेत्र के उत्तरी भाग को संदर्भित करता है, जिसे अल-जज़ीरा के नाम से जाना जाता है, जबकि दक्षिणी भाग को बेबीलोनिया, वर्तमान इराक-अरबी, यानी प्राचीन बेबीलोनिया के नाम से जाना जाता है। रोमन युग के दौरान, देश को दो भागों में विभाजित किया गया था: पश्चिम में ओस्रोने, जो 217 ईस्वी में रोमन शासन के अधीन आ गया, जिसकी राजधानी एडसा थी; और पूर्व में मिग्डोनिया, जिसकी राजधानी निसिबिसि थी, जिसे 115 ईस्वी में रोमन सम्राट ट्राजन ने जीता था। मेसोपोटामिया में ईसाई धर्म की शुरुआत का श्रेय जुडास या थैडियस को दिया जाता है, जो प्रेरित थॉमस के साथी थे और, परंपरा के अनुसार, प्रभु यीशु मसीह के 70 शिष्यों में से एक थे। संत एफ्रेम सीरियाई (3-4वीं शताब्दी) का जन्म निसिबिसि के आसपास हुआ था; निसीबिस के बिशप थॉमस वरसुमा, नेस्टोरियन विधर्म के एक उत्साही समर्थक थे, जो यह सिखाता था कि परमेश्वर का वचन, जो पिता से शाश्वत रूप से उत्पन्न हुआ है, केवल मनुष्य यीशु के भीतर वास करता था, और उसके साथ एक विशेष, नैतिक संघ में बना रहा। 11वीं शताब्दी

अब्राहम आए थे, वहाँ भी याकूब को नहीं छोड़ा: यहीं पर परमेश्वर ने याकूब को वपित्त से छुड़ाया था! इन सब के लिए मैं आपसे वनिती और नविेदन करता हूँ कि मुझे याकूब से न अलग करें, जैसे मृत्यु ने उन्हें राहेल से अलग कर दयिा। अन्यथा, याकूब मेरे लिए रोएँगे जैसे वे राहेल के लिए रोते हैं, और उनकी आँखें मेरी वापसी देखे बनिा ही बंद हो जाएँगी। मुझ पर दया करें और मुझे अपने पिता के पास जाने दें!

इस प्रकार यूसुफ़ ने अपने भाइयों से उनके पितरों के परमेश्वर के नाम पर वनिती की। लेकनि उसके नर्दियी भाइयों ने उस पर बलिकुल भी दया नहीं दखिाई और परमेश्वर का भय न मानते हुए, यूसुफ़ को कुएँ में घसीट लयिा। वह उनके पैरों से लपिट गया, रोया और कहा:

'भाइयो! मुझे माफ कर दो!'

लेकनि उन्होंने उसे कुएँ में डाल दयिा। यह कुआँ कभी एक गहरा, अँधेरा कुआँ था, जो बाद में सूख गया था। इस कुएँ में बैठकर, यूसुफ ने कड़वे आँसू बहाए और अपने पिता को पुकारा:

'पिताजी, देखिए आपके पुत्र के साथ क्या हुआ है! मुझे ऐसे कुएँ में फेंक दयिा गया है जैसे मैं मर ही गया होऊँ। आप मेरे लौटने का इंतज़ार कर रहे हैं, फरि भी मैं यहाँ एक अपराधी की तरह कुएँ में पड़ा हूँ। पिताजी, आपने स्वयं मुझसे कहा था: "जाकर अपने भाइयों और भेड़ों के झुंड को देखो, और तुरंत मेरे पास लौट आओ।"' लेकनि मेरे भाइयों ने मेरे साथ क्रूर भेड़यिों जैसा व्यवहार कयिा और अपने गुस्से में, मुझे आपसे दूर कर दयिा। दयालु पिता! आप अब मुझे देख भी नहीं सकते और न ही मेरी आवाज़ सुन सकते हैं, और मैं अब आपकी वृद्धावस्था में आपको सांत्वना नहीं दे सकता। मैं फरि कभी आपके सफेद बाल नहीं देख पाऊँगा, क्योंकि मुझे दफ़ना दयिा गया है—और इससे भी बदतर, एक मृत व्यक्ति से भी बदतर व्यवहार कयिा गया है। पिता जी, अपने बच्चे के लिए रोइए, जैसे आपका बच्चा आप पर, अपने पिता पर, रोता है! क्योंकि मैं इतनी कम उम्र में ही आपसे अलग कर दयिा गया हूँ! कौन मुझे एक कबूतर देगा जो मानव भाषा बोल सके, ताकि वह उड़कर आपको मेरे दुख के बारे में बता सके? मेरे पास अब आँसू नहीं बचे हैं, और मेरी कराहों से मेरी आवाज़ पहले ही जा चुकी है। मेरे शोक को कम करने के लिए कुछ भी नहीं है! हे पृथ्वी, पृथ्वी, जिसने धर्मी हेबेल के लिए, जो अन्याय से मारा गया था, पवित्र परमेश्वर से पुकारा था, जैसा कि हमारे पूर्वजों ने आरंभ से बताया है, कि पृथ्वी ने भी धर्मी के लहू के लिए पुकारा था (उत्पत्ति 4:10)! अब, मेरी ओर से मेरे पिता याकूब के पास जाओ और उन्हें वह सब कुछ बताओ जो मेरे भाइयों ने मेरे साथ कयिा है!

और इस प्रकार यूसुफ़ खाई में तब तक रोता रहा जब तक कि वह थक नहीं गया, और उसे सांत्वना देने वाला कोई नहीं था।

लेकनि उसके नर्दियी भाइयों ने, यूसुफ को कुएँ में फेंकने के बाद, खुशी से खाने-पीने लगे। उन्होंने इतनी प्रसन्नता और धूमधाम से दावत की, मानो उन्होंने कसिी दुश्मन को हरा दयिा हो या कोई शहर जीत लयिा हो। उनके हुल्लड़-धमाल के बीच, उन्होंने गलिाद से मस्रि की ओर जा रहे इस्माएली व्यापारी[2797] को अपनी ओर आते देखा। व्यापारी अपने साथ लोबान, जावत्रिी और अन्य मसालों से लदे ऊँटों को लेकर आ रहे थे। तब याकूब के चौथे पुत्र यहूदा ने अपने भाइयों से कहा:

'अगर हम अपने भाई को मारकर उसका खून छपिा दें तो उससे क्या फायदा होगा? इससे तो अच्छा है कि हम उसे इन इस्माइलयिों को बेच दें; उन्हें उसे दूर ले जाने दें। यूसुफ एक परदेस में मर जाएगा, और हम अपने ही भाई के कातलि नहीं बनेंगे।'

अन्य भाइयों ने यहूदा से सहमति जताई। वे गए और यूसुफ को कुएँ से बाहर नकिाला। कुछ इस्माएलयिों ने, जो वहाँ से गुजर रहे थे, यूसुफ के लिए तीस सोने के सक्कि दिए। रूबेन इस बक्री के समय मौजूद नहीं था: वह कहीं और गया हुआ था। वापस आने पर, रूबेन खाई के पास गया, लेकनि उसे यूसुफ वहाँ नहीं मलिा। तब उसने अपने कपड़े फाड़े, अपने भाइयों के पास लौट आया और कहा:

'लड़का कुएँ में नहीं है! मैं कहाँ जाऊँगा? मैं हमारे पिता के लिए उसके लिए रोना कैसे सहूँगा?'

रूबेन को यूसुफ पर तरस आया।

में, सेलजुक आक्रमण के बाद, मेसोपोटामयिा पतन की ओर चला गया और अब यह तुर्की का हस्सिा है। इसके नविासी अरब, कुर्द, अर्मेनयिाई और सीरयिाई हैं।

[2797] इश्माएलयिों का वंश इश्माएल से चलता है, जो हागर से अब्राहम का पुत्र था (उत्पत्ति 16:2)।

जोसेफ़ को ले जाने वाले व्यापारी एप्रैथ के उस स्थान पर पहुँचे जहाँ राहेल की कब्र थी: वह तब मर गई थी जब याकूब अश्शूर से लौट रहे थे। जैसे ही जोसेफ़ ने अपनी माँ राहेल की कब्र देखी, वह तुरंत दौड़ा और उस पर गिर पड़ा। तब, ऊँचे स्वर में और कड़वी आँसुओं के साथ, वह पुकार उठा:

'रूबेन, मेरे भाई! पृथ्वी से उठो और उस यूसुफ को देखो, जिससे तुम प्रेम करती थीं! देखो मुझ पर क्या बीती है: यहाँ पराये लोग मुझे मिस्र ले जा रहे हैं। मेरे भाइयों ने मुझे उन लोगों को दासता में बेच दिया है, और तो और, उन्होंने मुझे नग्न ही बेच दिया है, मानो मैं कोई अपराधी हूँ। याकूब को नहीं पता कि मुझे बेच दिया गया है। मेरी माँ, अपनी कफ़न मुझे खोलकर दिखाओ और मुझे अपने पास ले लो! तुम्हारी कफ़न हम दोनों के लिए एक ही मृत्यु-शय्या बने! हे राहेल! अपने बेटे को ले लो, ताकि उसे अब किसी परदेस में मौत का इंतज़ार न करना पड़े। राहेल, मुझे अपने पास ले लो! याकूब से मेरी विदाई वैसी ही अप्रत्याशित थी, जैसी माँ, आपसे मेरी विदाई। काश मेरी विलाप-पुकार और मेरे हृदय का कष्ट आपके कानों तक पहुँच जाए, ताकि आप मुझे अपनी कब्र में ले लें। अब मैं और रो नहीं सकता: मेरे आँसू खत्म हो गए हैं, और मेरा प्राण रो-रोकर और विलाप कर-कर के थक गया है। हे राहेल, राहेल! क्या तुम अपने पुत्र यूसुफ की विनती नहीं सुनोगी? तुम्हारे पुत्र को जबरदस्ती तुमसे छीना जा रहा है, फिर भी तुम उसे रोकती नहीं हो। मैंने याकूब को पुकारा – उसने मेरी आवाज़ नहीं सुनी। अब मैं तुम्हें पुकारता हूँ, और तुम मुझे नहीं सुनती हो। मुझे यहीं तुम्हारी कब्र के पास मर जाने दो, पर मैं एक दुष्ट की तरह परदेस नहीं जाऊँगा!

जब जोसेफ़ को खरीदने वाले इसमाइलियों ने उसे कब्र से चिपका हुआ देखा, तो उन्होंने एक-दूसरे से कहा:

'यह युवक जादू-टोने के ज़रिए हमसे भागने की कोशिश कर रहा है। चलो इसे कसकर बाँध देते हैं, कहीं यह हमें कोई परेशानी न खड़ी कर दे!'

उसके पास आकर उन्होंने दुष्टता से कहा:

'उठो! अपनी जादू-टोना बंद करो, नहीं तो हम तुम्हें यहीं इस कब्र पर मार डालेंगे। हम तुम्हारे लिए दिए गए पैसे खोना नहीं चाहते!'

जब यूसुफ खड़ा हुआ, तो इस्माएलियों ने देखा कि उसके पूरे चेहरे पर कड़वी आँसुओं की सूजन थी। और उनमें से प्रत्येक ने सहानुभूतिपूर्वक उससे पूछना शुरू कर दिया:

'जब तुमने यह कब्र देखी तो तुम इतनी कड़वी रोईं क्यों? मत डरना; हमें बताओ तुम कौन हो और तुम्हें क्यों बेचा गया। तुम्हें बेचने वाले चरवाहों ने हमसे कहा था: "उस पर नज़र रखना, कहीं रास्ते में वह तुमसे भाग न जाए; लेकिन अगर वह भाग भी गया, तो यह हमारी गलती नहीं होगी: हमने तुम्हें चेतावनी दे दी है।"' तो हमें सच बताओ: तुम किसके गुलाम हो? उन चरवाहों के या किसी और के? और यह भी बताओ कि तुम उस कब्र से इतनी ममता से क्यों लिपटे थे? हम तुम्हारे मालिक हैं, क्योंकि हमने तुम्हें खरीदा है। एक गुलाम के तौर पर, हमें सब कुछ बताओ। अगर तुम हमसे कुछ भी छिपाओगे, तो अपना दुख किससे बाँटोगे? आखिरकार, तुम हमारे गुलाम हो, है ना? उन चरवाहों ने हमें बताया कि तुम हमसे भाग सकते हो – यह हमें चिंतित करता है। तो शांत हो जाओ और हमें स्पष्ट रूप से बताओ कि तुम वास्तव में कौन हो! तुम हमें एक सज्जन व्यक्ति लगते हो, और हम तुममें एक गुलाम नहीं, बल्कि अपना प्रिय भाई देखना चाहते हैं। तुम्हारी सुंदर आकृति और तुम्हारी बुद्धि हमें दिखाती है कि तुम राजा के सामने खड़े होने और अन्य कुलीनों के साथ सम्मान का आनंद लेने के योग्य हो। तुम्हारे सभी सद्गुण बताते हैं कि तुम महान शक्ति प्राप्त करोगे। इसलिए, हम तुम्हें जहाँ भी ले जाएँ, हमारे मित्र बनो। ऐसा चतुर, कुलीन और सुंदर युवक से कौन प्यार नहीं करेगा?!

आह भरते हुए, यूसुफ़ ने उनसे उत्तर दिया:

'हालाँकि मुझे तुम लोगों को बेच दिया गया था, मैं न तो दास था, न चोर, न जादूगर, और न ही मैंने कोई अपराध किया है। मैं अपने पिता का प्रिय पुत्र हूँ, और जब मेरी माता जीवित थीं, तब मैं उनका भी प्रिय पुत्र था। ये चरवाहे मेरे भाई हैं। मेरे पिता ने मुझे उनकी कुशलता पूछने के लिए उनके पास भेजा था। वे पहाड़ों से लौटने में बहुत देर कर रहे थे, इसलिए मेरे प्यारे पिता ने चिंता के कारण मुझे उनकी खबर लेने के लिए भेजा। लेकिन उन्होंने मुझे पकड़ लिया और दासता में बेच दिया। मेरे भाइयों ने ईर्ष्या के कारण मेरे प्रति मेरे पिता के प्रेम को सहन नहीं कर सके, और यही कारण था कि उन्होंने मुझे उनसे अलग कर दिया। जहाँ तक यहाँ रखे ताबूत की बात है, वह मेरी माँ का है। जब मेरे पिता याकूब हरान से उस स्थान पर गए जहाँ वे पहले रहते थे, तब मेरी माँ की मृत्यु यहीं हुई और उन्हें इसी कब्र में दफनाया गया।

यह सुनकर, इसमाइलियों ने सहानुभूतिपूर्वक कहा:

'डरो मत, जवान! मिस्र में तुम्हारा बड़ा सम्मान इंतज़ार कर रहा है। तुम्हारा रूप-रंग तुम्हारी कुलीनता का प्रमाण है। दुखी मत हो; बल्कि इस बात की खुशी मनाओ कि अब तुम अपने ईर्ष्यालु भाइयों से दूर हो, जो तुमसे बिना किसी कारण के नफरत करते थे।'

जहाँ तक यूसुफ के भाइयों का सवाल है, जब उन्होंने उसे बेच दिया, तो उन्होंने एक बकरी लाई, उसे ज़बिह किया, और यूसुफ की चोगा को उसके खून से रंग दिया; फिर उन्होंने इसे इन शब्दों के साथ अपने पिता याकूब के पास भेजा:

'हमें यह चोगा पहाड़ों में पड़ा मिला और हमने इसे अपने भाई यूसुफ के चोगे के रूप में पहचान लिया, जिसने हम सबको दुखी कर दिया है। हमें यूसुफ स्वयं नहीं मिला, इसलिए हम उसकी रंग-बिरिंगी चोगा तुम्हारे पास भेज रहे हैं। देखो कि यह तुम्हारे बेटे का है या नहीं। हम सबने पहचान लिया है कि यह यूसुफ का चोगा है।'

अपने पुत्र की पोशाक को पहचानकर, याकूब फूट-फूट कर रोए और विलाप करने लगे, और कहने लगे:

'ये मेरे बेटे के कपड़े हैं; किसी जंगली जानवर ने उसे खा लिया है!'

और याकूब ने अपने कपड़े फाड़े। बोरी का वस्त्र पहनकर, वह चिल्लाया:

'मेरे बेटे, तेरे बदले में मुझे क्यों नहीं खा लिया गया?! उस जानवर ने मुझे क्यों नहीं मार डाला, ताकि वह मुझ पर ही अपना पेट भर लेता और तुझे चोट न पहुँचाता? उस जानवर ने मुझे क्यों नहीं फाड़ डाला? ओह, काश मैं ही उसका भोजन बन जाता! हाय मेरी किस्मत, हाय मेरी किस्मत! मेरा दिल यूसुफ के लिए गहराई से विलाप कर रहा है! हाय मेरी किस्मत, हाय मेरी किस्मत! मेरा बेटा कहाँ मारा गया है, ताकि मैं जाकर उसकी सुंदरता के लिए अपने सफेद बाल पीट सकूँ? मैं अब यूसुफ के बिना जीना नहीं चाहता! मेरे बच्चे! तेरी मौत का दोषी मैं ही हूँ! मैंने ही तुम्हें अपने भाइयों और झुंडों का हाल जानने के लिए जंगल में भेजा था! ओ मेरे बच्चे! मैं तब तक रोऊँगी और शोक मनाऊँगी जब तक मैं पाताल लोक में नहीं उतर जाती! आपके मृत शरीर के बजाय, मैं अपने सामने आँसुओं के साथ आपके कपड़े बिछाती हूँ। लेकिन वे मुझे एक और कारण से निराशा से भर देते हैं। वे सभी , अक्षुण्ण हैं, और मुझे लगता है कि आपके शरीर को किसी जानवर ने नहीं खाया, बल्कि मानव हाथों ने आपको पकड़कर मार डाला। अगर सचमुच तुम्हें किसी जंगली जानवर ने खा लिया होता, जैसा कि तुम्हारे भाइयों ने दावा किया, तो तुम्हारे कपड़े चीर-फाड़ दिए होते, क्योंकि कोई जानवर पहले तुम्हारे कपड़े उतारकर फिर तुम्हारा शरीर नहीं खाता। दूसरी ओर, अगर पहले तुम्हारे कपड़े उतारकर बाद में तुम्हें खाया होता, तो कपड़े खून से सने नहीं होते। इस चोगा पर नाखूनों या दाँतों के कोई निशान नहीं हैं – तो फिर, इस पर लगा खून कहाँ से आया? अगर रेगिस्तान में केवल जंगली जानवर होते और कोई डाकू नहीं, तो मैं इस बात पर शोक करता कि तुम्हें जानवरों ने खा लिया है, और यह कल्पना भी नहीं कर सकता था कि डाकुओं ने तुम्हें मार डाला। मैं यूसुफ के लिए शोक मनाती हूँ, और उसका वस्त्र मुझे एक और, उससे कम गहरे नहीं, दुख में डुबो देता है। इस प्रकार, मेरी दो विपत्तियाँ हैं: मैं रोते हुए इस बात पर विचार करूँगी कि उसका वस्त्र उससे कैसे छीना गया, और उसका शरीर कैसे मारा गया या खाया गया? मैं मर जाऊँगा, हे यूसुफ, मेरी रौशनी और मेरा सहारा, और काश तेरे वस्त्र मेरे साथ पाताल लोक में उतर जाते। तेरे बिना, हे यूसुफ, मैं यह रौशनी देखना नहीं चाहता!

और कई दिनों तक याकूब ने यूसुफ के लिए शोक मनाया। याकूब के सभी पुत्र और पुत्रियाँ उसे सांत्वना देने के लिए इकट्ठा हुए, परन्तु वह सांत्वना ग्रहण नहीं करता था और कहता था:

'मैं दुख के साथ अपने पुत्र के पास पाताल लोक जाऊँगा!'

इस बीच, इसमाइली लोग यूसुफ को उसकी सुंदरता के बदले में किसी कुलीन व्यक्ति से बहुत सोना प्राप्त करने की उम्मीद में जल्दी से मिस्र ले गए[2798] । जब वे मिस्र के शहर से गुज़र रहे थे, तो उन्हें फिरौन के दरबारी[2799] , पेंटेफ्रीयस ने रोक लिया। उसने यूसुफ को देखा और इसमाइली लोगों से इन शब्दों में कहा:

'व्यापारियों, मुझे बताओ, यह युवक तुम्हें कहाँ से मिला? यह तुमसे बिलकुल भी मिलता-जुलता नहीं है, क्योंकि तुम इसमाइलियों में ऐसा सुन्दर युवक नहीं मिलता।'

उन्होंने उत्तर दिया:

'यह लड़का बहुत चतुर है और एक कुलीन परिवार से आता है।'

[2798] मिस्र दुनिया के सबसे पुराने राज्यों में से एक है, जिसने प्राचीन काल से ही अपेक्षाकृत उच्च स्तर की संस्कृति और नागरिक विकास प्राप्त किया था। यह नील नदी के दोनों किनारों पर अफ्रीका की एक संकीर्ण तटीय पट्टी पर स्थित है; पहले के समय में, मिस्र सीधे अरब प्रायद्वीप के उत्तर-पश्चिमी कोने से जुड़ा हुआ था, जिससे एशिया और अफ्रीका के निवासियों के बीच सबसे जीवंत संपर्क बने रहे। सीरिया और फिलिस्तीन के साथ मिस्र की भौगोलिक निकटता, साथ ही इसकी उल्लेखनीय उर्वरता, प्राचीन पूर्व के इतिहास में इसके महत्वपूर्ण महत्व को दर्शाती है।

[2799] 'फराओ' मिस्र के प्राचीन राजाओं के लिए सामूहिक नाम है और, मिस्र की भाषा से अनुवादित होने पर, इसका अर्थ 'राजा' होता है।

पेनटेफ्रीउस ने खुशी-खुशी उनसे यूसुफ को खरीद लिया और उन्होंने जो भी कीमत माँगी, वह दे दी। दरबारी उसे अपने घर ले आया और उसके अतीत के बारे में जानने की भरसक कोशिश की। धर्मी इब्राहीम, इसहाक और याकूब के वंशज ने पेनटेफ्रीउस के साथ सदाचार और महान नम्रता से जीवन व्यतीत किया, और प्रभु उसके साथ थे। यूसुफ ने एक ईमानदार और निष्पाप जीवन जिया। उसके चेहरे और उसके शब्दों से यह स्पष्ट था कि वह पवित्र और ईश्वर-भयभीत था: वह अपने पूर्वजों के सर्व-द्रष्टा ईश्वर को कभी नहीं भूला, जिसने उसे कुएँ में मृत्यु से और उसके घृणित भाइयों से बचाया था। यूसुफ केवल अपने पिता याकूब के लिए ही शोक मनाता था। पेंटेफ्र के साथ रहते हुए, यूसुफ़ ने उसकी कृपा प्राप्त की और उसकी दृष्टि में अनुग्रह पाया। पेंटेफ्र, यह देखकर कि प्रभु यूसुफ़ के साथ था, जो उसके हाथ में सब कुछ सफलतापूर्वक संभालता था, उसे पूरे घर का अधीक्षक नियुक्त कर दिया और अपनी सारी संपत्ति - जागीरों, गांवों, दासों और घर - उसे सौंप दी। जहाँ तक पेंटेफ्रीस की बात है, जब यूसुफ़ वहाँ था, उसे अपने खाने की मेज़ पर मिलने वाले भोजन के अलावा किसी और चीज़ का पता नहीं था: वह साफ़ तौर पर देख सकता था कि यूसुफ़ ईमानदार था और उसके हाथों में धन-संपत्ति लगातार बढ़ रही थी। यूसुफ़ की खातिर, परमेश्वर ने उस मिस्री के घर को आशीष दी। सभी दास-दासियाँ जोसेफ से बहुत प्रसन्न थीं, क्योंकि उसकी देखरेख में वे अच्छी और पूर्ण आराम की ज़िंदगी जीते थे, और हर तरह की भरमार का आनंद लेते थे।

यूसुफ सुंदर था और उसका चेहरा सुन्दर था। पोतीफर की पत्नी उसकी सुंदरता से मोहित हो गई, और उसका हृदय उसके प्रति एक शैतानी प्रेम से जल उठा। उसने हर तरह से मासूम यूसुफ को बहकाने की कोशिश की और उसके साथ रहने के लिए तीव्र इच्छा की। योसेफ को बहकाने के लिए, पेंटेफ्री की पत्नी ने कई चालाकियाँ अपनाईं: वह हर घंटे अपने कपड़े बदलती थी, अपना चेहरा धोती और सजाती थी, और अपनी गर्दन में हार पहनती थी। इसके अलावा, उसने विभिन्न इशारों, अश्लील हँसी और व्यभिचारपूर्ण शब्दों से योसेफ की धार्मिक आत्मा को लुभाया। लेकिन इन सभी चालाकियों से, उसने केवल अपने ही विनाश को आमंत्रित किया। यूसुफ ने उसकी सजावट पर कोई ध्यान नहीं दिया और उसके साथ पाप करने का उसने कोई विचार भी नहीं किया। ईश्वर के प्रति उनके विचार और उनसे भय ने उन्हें सभी प्रलोभनों से बचाया। जब पेंटेफ्र की पत्नी ने देखा कि उसकी सभी अलंकरणों का कोई असर नहीं हो रहा है, तो वह व्यभिचार की आग में और भी अधिक जल उठी और उसे समझ नहीं आया कि वह उस पवित्र युवक को प्रभावित करने के लिए और क्या कर सकती है। तब उसने एक बार फिर अपने निर्लज्ज शब्दों से उसे पाप में ले जाने का निश्चय किया; उसके भीतर सांप का विष उसके होठों को खोल गया, और उसने यूसुफ से कहा:

'मेरे साथ रहो और किसी से मत डरो; इसके विपरीत, मेरे साथ और साहसी बनो, ताकि मैं तुम्हारी सुंदरता का आनंद ले सकूँ, और तुम मेरी दयालुता का। 'किसी से मत डरना, क्योंकि सभी नौकर हमारी आज्ञा में हैं और तुम पूरे घर के प्रभारी हो; कोई भी हमारे पास नहीं आएगा और न तो हमारी बातचीत के बारे में और न ही हमारे संबंध के बारे में जानेगा। अगर तुम मेरे प्रस्तावों को अपने पति से डरने के कारण ठुकराते हो, तो मैं उसे जहर दे सकती हूँ।'

हालाँकि, उस निर्दोष युवक ने खुद को दुराचार से बचाना जारी रखा। उसका शरीर और आत्मा अजेय थे। यूसुफ इस तूफान में नष्ट नहीं हुआ। ईश्वर का भय मानते हुए, उसने अपनी मालकिन की सभी प्रलोभनों को ठुकरा दिया। पवित्र रहते हुए, उसने उसे इस प्रकार उत्तर दिया:

– मेरी मालकिन, मैं आपके साथ पाप नहीं कर सकता, क्योंकि मैं परमेश्वर से डरता हूँ। मेरे स्वामी ने मुझे घरेलू और कृषि संबंधी सभी मामलों का प्रभार सौंपा है, और आप के सिवा ऐसा कोई भी क्षेत्र नहीं है जिस पर मेरा अधिकार न हो। मेरे स्वामी से प्राप्त ऐसे प्रेम को अस्वीकार करना और उनके घर में ऐसे अयोग्य कृत्यों में संलग्न होना मेरे लिए पाप होगा; ऐसा करके मैं उस ईश्वर का क्रोध भड़काऊँगा, जो सभी मानवीय रहस्यों को जानता है।

इन और इसी प्रकार के शब्दों से, यूसुफ़ ने अपनी स्वामिनी को समझाया। लेकिन यह साँप कुछ भी सुनने को तैयार नहीं था और वासना से और भी अधिक भड़क उठा। यूसुफ को पाप करने के लिए मजबूर करने की इच्छा से, वह इसके लिए केवल एक अनुकूल समय और अवसर की तलाश कर रही थी। यूसुफ, यह देखकर कि उसकी मालकिन उसे बहकाने की कोशिश कर रही थी, अक्सर अपने पूर्वजों के परमेश्वर से प्रार्थना करने लगा, यह कहते हुए:

'हे मेरे पूर्वजों के परमेश्वर, अब्राहम, इसहाक और याकूब, मुझे इस विपत्ति से बचाओ! 'हे प्रभु, आप स्वयं देखिए, कि यह पागल स्त्री अपनी दुष्टता से मुझे गुप्त रूप से नष्ट करने का प्रयास कर रही है। हे प्रभु, आपने मुझे मेरे भाइयों के हत्यारे हाथों से बचाया। अब मुझे इस क्रूर जानवर से बचाइए, कहीं ऐसा न हो कि मैं अपने पतियों से वंचित हो जाऊँ, जिन्होंने हे प्रभु, आपसे अत्यंत प्रेम किया था।'

अपनी प्रार्थना में, यूसुफ़ ने याकूब की ओर भी मुड़कर कहा:

– मेरे पिता याकूब, मेरे लिए परमेश्वर से विनती करें! मेरे लिए प्रार्थना करें, क्योंकि शत्रु मुझे परमेश्वर से अलग करना चाहता है। एक स्त्री के हाथों पापपूर्ण मृत्यु, मेरे भाइयों के हाथों मृत्यु से भी अधिक भयानक है। वह मृत्यु मेरे शरीर को नष्ट करना चाहती थी, जबकि यह मेरी आत्मा को परमेश्वर से अलग करना चाहती है। पिता! आपकी ईश्वर से प्रार्थनाओं की बदौलत, मैं गड्ढे में मृत्यु से बच गया। अब सर्वोच्च से एक बार फिर प्रार्थना करें कि मुझे पाप के उस गड्ढे से बचा लें, जिसमें यह महिला, जिसे न तो शर्म है और न ही ईश्वर का भय, मुझे धकेल रही है। जब मैं अपने भाइयों के पास गया, तो उन्होंने मेरे साथ क्रूरता से व्यवहार किया और, क्रूर भेड़ियों की तरह, मुझे आपसे अलग कर दिया। यहाँ भी, मेरा सामना एक और भी क्रूर जानवर से हुआ। अत; पूजनीय पिता, मेरे लिए, आपके पुत्र यूसुफ के लिए प्रार्थना करें, कि मैं हमारे ईश्वर के समक्ष अपनी आत्मा में मृत न हो जाऊँ।

यूसुफ डटा रहा, जबकि उसकी मालकिन उसे बहकाने के लिए अनुकूल अवसर की तलाश करती रही। एक दिन ऐसा हुआ कि यूसुफ किसी काम से घर में गया। घर में कोई भी मौजूद नहीं था। अचानक, मालकिन ने यूसुफ को पकड़ लिया और उसे बिस्तर पर खींच लिया। कपड़े उतारकर, उसने उसे व्यभिचार करने के लिए मजबूर करना शुरू कर दिया। उस पवित्र और धर्मात्मा युवक ने, उसकी इस निर्लज्जता को देखकर, उसकी नग्नता से मुँह मोड़ लिया और अपनी पूरी ताकत से छूटकर बाहर भाग गया। उसका बाहरी वस्त्र मालकिन के हाथ में रह गया। इस प्रकार यूसुफ ने शैतान के सभी जाल तोड़ दिए। जब एक चील शिकारी को देखता है, तो वह और भी ऊँचा उड़ता है।

जोसेफ ने भी ऐसा ही किया। वह उस महिला से इसलिए भागा क्योंकि वह नहीं चाहता था कि उसकी फंदियाँ उसे पाप में फँसाएँ। पेंटेफ्र की पत्नी, यह देखकर कि यूसुफ़ उसके चंगुल से बच निकिला है, बहुत डर गई; उस पर बहुत बड़ा भय छा गया। इसके अलावा, उसे शर्म भी आई। उसने उस युवक पर यथासंभव प्रभावी रूप से बदनामी करने का एक तरीका सोचना शुरू कर दिया, ताकि उसका पति उससे नाराज़ हो जाए और ईर्ष्या के कारण उसे मार डाले। उसने सोचा:

'जोसेफ का मर जाना ही बेहतर होगा। उसकी मौत से मुझे राहत मिलेगी। मैं ऐसी सुंदरता को देखकर बिना आनंद लिए नहीं रह सकती। फिर भी वह मुझसे घृणा करता है।'

उसके बाद, उसने दास-दासियों को ऊँचे स्वर में पुकारा और उनसे कहा:

'देखो इस यहूदी दास ने मेरे साथ क्या किया है! मेरे पति ने उसे पूरे घर का अधिकार दे रखा है, फिर भी उसने मुझे सबसे निर्लज्ज तरीके से बलात्कार करने की कोशिश की है। उसके लिए सिर्फ घर पर शासन करना ही काफी नहीं था; वह मुझे मेरे पति से भी दूर ले जाना चाहता था। वह मेरे पास आया और कहा, 'मेरे साथ लेट जाओ'—जिस पर, जैसा कि तुमने खुद सुना है, मैं ज़ोर से चिल्लाई। इस चीख से जोसेफ डर गया और भाग गया, और अपना कपड़ा मेरे पास ही छोड़ गया।

जो कोई भी सुन रहा था, वे इस घटना से स्तब्ध थे, क्योंकि उनमें से किसी ने भी यह उम्मीद नहीं की थी कि जोसेफ इतना निर्लज्ज होगा। जब पेंटेफ्र राजसी कक्षों से आए, तो उनकी पत्नी ने जोसेफ का वस्त्र लाकर उन्हें दिखाया। फिर, एक सच्ची महिला की तरह अभिनय करते हुए, उसने जोसेफ के बारे में शिकायत करना शुरू किया और कहा:

'तुम इस यहूदी को यहाँ इसलिए लाए कि वह हम पर अत्याचार करे। क्या तुमने सचमुच उसे मुझे इस तरह अपमानित करने और ठेस पहुँचाने की शिक्षा दी? उसने मुझे घर में अकेली पाया और मुझ पर बलात्कार करना चाहा। अगर मैं चिल्लाती नहीं, और अगर सेवक मेरी चीख सुनकर दौड़कर नहीं आते, तो वह मेरा बलात्कार कर देता, क्योंकि मैं कमजोर होने के कारण खुद को उसकी पकड़ से छुड़ा नहीं सकती थी, जबकि वह मुझसे ज़्यादा ताकतवर था। जब उसने सुना कि मैं चिल्लाई हूँ और सेवक मेरी चीख की ओर दौड़ रहे हैं, तो वह अपना कपड़ा मेरे पास छोड़कर घर से भाग गया।

पेनटेफ्र ने तुरंत इन झूठे शब्दों पर विश्वास कर लिया और यूसुफ़ पर बहुत क्रोधित हो गया। उसने यूसुफ़ को बाँधकर जेल भेजने का आदेश दिया। पेनटेफ्र उस समृद्धि को भूल गया जो परमेश्वर ने यूसुफ़ की खातिर उसके घर में और उसके खेती-बाड़ी में भेजी थी। अपनी पत्नी की बातों की पुष्टि किए बिना, पेंटेफ्रीस ने निर्दोष यूसुफ को दोषी ठहरा दिया। लेकिन अब्राहम, इसहाक और याकूब का परमेश्वर, जो मनुष्यों के दिलों की परीक्षा करता है, ने यूसुफ को नहीं छोड़ा और न ही उससे अपनी दया वापस ली: यूसुफ को जेल के अधीक्षक की कृपा प्राप्त हुई और वह ऐसे रहता था जैसे वह आज़ाद हो। प्रभु परमेश्वर अपने भक्तों को नहीं छोड़ता। और यूसुफ़ जेलर के साथ वैसे ही रहा जैसे वह पेंटेफ्रसि के साथ रहता था। जब जेलर ने देखा कि यूसुफ़ हर बात में उसके प्रति विफादार है, तो उसने उसे पूरी जेल का अधीक्षक बना दिया।

इसके कुछ समय बाद, फरिौन के दो दरबारी—मुख्य रसोइया और मुख्य प्याला उठानेवाला—अपने स्वामी को नाराज़ कर बैठे। फरिौन को क्रोध आया और उसने उन्हें उसी जेल में बंद करवा दयिा जहाँ यूसुफ़ बंद था।

जब वे जेल में थे तो कई दनि बीत गए। यूसुफ ने हर तरह से उनकी मदद की, क्योंकि वे ईमानदार आदमी थे। फरि एक रात, उनमें से प्रत्येक ने एक सपना देखा जो नकिट भवष्यि का संकेत दे रहा था। यूसुफ, अपनी आदत के अनुसार, सुबह उनके पास आया और उन्हें परेशान और उदास पाया। उसने उनसे पूछा:

'आज तुम इतने उदास क्यों दखि रहे हो?'

उन्होंने उत्तर दयिा:

'कल रात, हम में से प्रत्येक ने एक सपना देखा, और हम इस लिए दुखी हैं क्योंकि उनका अर्थ बताने वाला कोई नहीं है।'

तब यूसुफ़ ने उनसे कहा:

मुख्य प्याला उठाने वाले ने उसे एक सपने के बारे में बताया जो उसे आया था:

मुख्य प्याला उठाने वाले ने उसे यह सपना सुनाया:

'मैंने अपने सामने एक दाख का बगान देखा, और उसमें एक अंजीर की लता थी। उस लता पर तीन कलयिाँ नकिलीं, जनि पर पके अंगूर लगे थे। मैंने अपने हाथों में फरिौन का प्याला लयिा और उसे फरिौन के सामने पेश कयिा।'

इस पर यूसुफ़ ने उत्तर दयिा:

'आपके सपने का अर्थ यह है: ये तीन टहनयिाँ तीन दनिों का प्रतीक हैं। तीन दनिों में, फरिौन आपको याद करेगा, आप पर तरस खाएगा, आपको यहाँ से रहिा कर देगा, और आपको आपके पूर्व पद पर बहाल कर देगा। फरि, पहले की तरह, आप फरिौन को उसका प्याला पेश करेंगे। कृपया जब आपके काम बन जाएँ तो मुझे याद कीजिए और मुझ पर एक एहसान कीजिए। मैं आपसे नविेदन करता हूँ कि आप मेरे बारे में फरिौन से कहें और मुझे यहाँ से आज़ाद करा दें। आखरिकार, मुझे यहूदयिों के देश से चोरी करके लाया गया था। और मैंने आपके देश में कोई अपराध भी नहीं कयिा है; मुझे केवल द्वेष के कारण ही जेल में डाला गया है।

जब मुख्य रसोइये ने देखा कि यूसुफ ने अपने मत्रि का स्वप्न इतना अच्छी तरह से व्याख्यायति कयिा है, तो उसने यूसुफ से कहा:

'मेरा भी एक सपना आया है: मैंने सपना देखा कि मेरे सरि पर तीन टोकरी हैं, जो तरह-तरह के खाने से भरी हैं। पक्षी आकर मेरे सरि से वह खाना चोंच से चुग गए।'

यूसुफ़ ने उससे उत्तर दयिा:

'इसका यही अर्थ है: ये तीन टोकरी तीन दनि हैं। तीन दनिों में फरिौन तुम्हारा सरि काट देगा और तुम्हें एक पेड़ पर लटका देगा; और पक्षी तुम्हारे शरीर को चोंच से चोंचेंगे।'

तीसरे दनि, जो उनका जन्मदनि था, फरिौन ने अपने सभी कुलीनों और अधकिारयिों के लिए एक भोज का आयोजन कयिा। इस भोज में, उन्हें मुख्य पयिाक और मुख्य रसोइए का स्मरण हुआ, और उन्होंने आज्ञा दी कि दोनों को उनके सामने लाया जाए। उनके मामले की जाँच करने के बाद, फरिौन ने मुख्य रसोइए को फाँसी देने का आदेश दयिा, जबकि मुख्य प्याला उठाने वाले को उसके सम्मान के पूर्व पद पर बहाल कर दयिा गया। हालाँकि, इस same प्याला उठाने वाले ने यूसुफ को पूरी तरह से भूल गया था और फरिौन के सामने उसका कोई उल्लेख नहीं कयिा।

दो साल बाद, फरिौन ने एक अद्भुत सपना देखा। उसने खुद को नदी के कनिारे खड़ा देखा, और उसमें से सात अच्छी-खासी मोटी गायें नकिलीं, जो देखने में सुंदर और शरीर से तंदरुस्त थीं। ये गायें नदी के कनिारे चरने लगीं। उनके बाद, नदी से सात और गायें नकिलीं, जो देखने में दुबली-पतली और शरीर से पतली-पतली थीं। वे पहली वालों के साथ चरने लगीं। अचानक, इन सात दुबली गायों ने उन सात मोटी गायों को खा लयिा। ऐसा करने के बाद भी, वे संतुष्ट नहीं हुईं और वैसी ही दुबली रहीं जैसी वे थीं। तब फरिौन जाग उठा। फरि से सोते समय, उन्होंने एक और सपना देखा: एक ही डंठल पर मकई के सात मोटे और सुंदर भुट्टे उगे; उनके बाद, मकई के सात अन्य भुट्टे उगे, जो दुबले-पतले और हवा से सूखे हुए थे। इन दुबले-पतले भुट्टों ने उन सात मोटे भुट्टों को खा लयिा।

जब वह जागा तो उस सपने ने फरिौन को बहुत परेशान कर दयिा। उसने मस्रि के सभी जादूगरों और बुद्धमिानों को बुलाया और उन्हें वह सपना सुनाया। उनमें से कोई भी इस सपने की व्याख्या नहीं कर सका: राक्षसों की सेवा में रहने वाले

जादूगर स्वर्गीय ईश्वर के अगम्य रहस्यों को कैसे समझ सकते थे? इससे फरौन बहुत परेशान हो गया। तब मुख्य पयिाक़ जोसेफ को याद आया, जसिने जेल में रहते हुए उसके सपने की व्याख्या की थी, और उसने फरौन से कहा:

'अब जाकर, हे स्वामी, मुझे अपने अपराध का स्मरण हुआ है। जब आप हम दासों पर क्रुद्ध हुए और मुझे तथा मुख्य रसोइये को कारागार में डाल दयिा, तो एक ही रात में हम दोनों ने अपने-अपने भवष्यि के वषिय में एक-एक स्वप्न देखा था। हमारे साथ एक जवान यहूदी, जो पेंटेफ्रीस का दास था, भी कैद था। हमने उसे अपने-अपने सपने बताए, और उसने उनका अर्थ बताया। जैसा उसने कहा था, वैसा ही हुआ: हे राजा, आपने मुझ पर दया की और मुझे मेरे पूर्व पद पर पुनर्स्थापति कयिा, जबकि आपने उसे मृत्युदंड देने का आदेश दयिा।

यह सुनकर फरौन बहुत प्रसन्न हुआ और उसने यूसुफ को तुरन्त जेल से लाने का आदेश दयिा। उसके बाल कटाए गए और उसके कपड़े बदले गए, क्योंकि कैदी होने के कारण उसके बाल बहुत लंबे हो गए थे और वह फटे-पुराने कपड़े पहने हुए था। यूसुफ फरौन और उसके हाकमिों के सामने उपस्थति हुआ। फरौन ने उससे कहा:

'मैंने सुना है कि आप बहुत बुद्धमिान और दूरदर्शी व्यक्ति हैं, और आप सपनों की व्याख्या कर सकते हैं। मैंने एक सपना देखा है जसिे कोई भी मुझे समझा नहीं सकता। कृपया इसकी व्याख्या करें।'

यूसुफ़ ने उत्तर दयिा:

'परम प्रभु, यदि वे चाहें, तो लोगों को अगम्य रहस्यों का ज्ञान दे सकते हैं। परमेश्वर के बनिा, कसिी भी शुभ संकेत को जानना असंभव है।'

तब, सभी कुलीनों की उपस्थतिि में, फरौन ने जोसेफ को अपना सपना सुनाना शुरू कयिा, जसिमें मोटी और दुबली गायों का, भरे और खाली अनाज के कोलहटों का, और कैसे दुबली गायों ने मोटी गायों को और खाली कोलहटों ने भरे कोलहटों को खा लयिा था, जैसा कि ऊपर पहले ही बताया जा चुका है। भवष्यिवाणी की आत्मा से परपिूर्ण यूसुफ ने स्वप्न की व्याख्या करना और भवष्यि बताना शुरू कयिा: कि सात वर्षों तक मस्रि की सारी भूमि में धन-संपत्ति और फसल की भरमार रहेगी, जैसा कि सात मोटी गायों और अनाज के सात भरे भुट्टों से संकेत मलिता है।

इन वर्षों के अंत में एक भीषण अकाल पड़ेगा, जैसा कि दुबली गायों द्वारा मोटी गायों को खा जाने और सात दुबले भुट्टों द्वारा भरपूर भुट्टों को खा लेने और भी तृप्त न होने से स्पष्ट है। पूर्व की समृद्धि हर जगह भुला दी जाएगी, और अकाल सारी भूमि को तबाह कर देगा। सात वर्षों में आने वाली अकाल के कारण भूमि की उर्वरता का कोई नशिान नहीं रहेगा – और यह अकाल बहुत भयंकर होगी। और यह कि यह नश्चिति रूप से घटति होगा, यह इस तथ्य से स्पष्ट है कि ईश्वर ने हे राजा, आपको दो स्वप्नों में – गायों के स्वप्न और अनाज के कलों के स्वप्न – एक ही बात प्रकट की है। अब अपने इस दीन बन्दे की बात मानिए: एक समझदार और सूझबूझ वाला आदमी चुनिए और उसे मस्रि देश का सारा प्रबंधक नयिुक्त कीजिए। इन आने वाले सात वर्षों की समृद्धि के दौरान, मस्रि देश के सभी उत्पादन का एक-पाँचवाँ हस्सिा इकट्ठा कयिा जाए। गेहूँ और सभी अनाज को शाही अनाज भंडारों में संग्रहीत कयिा जाए। इसी प्रकार, हर नगर में, वे अनाज इकट्ठा करें और संग्रहीत करें, ताकि सात वर्षों के अकाल के लिए भोजन उपलब्ध हो सके; अन्यथा, मस्रि का पूरा देश इसके कारण नष्ट हो जाएगा।

फराओह और उसके अधकिारी यूसुफ की भवष्यिद्वाणी के वचन और उसकी बुद्धमिानी से चकति हो गए। और फराओह ने अपने अधकिारयिों से कहा:

'क्या हम उसके जैसा कोई और पा सकते हैं, जसिके भीतर परमेश्वर का आत्मा वास करता हो?'

तब फरौन यूसुफ की ओर मुड़ा:

'चूंकि परमेश्वर ने यह सब तुम्हें प्रकट कयिा है, इसलिए तुमसे अधकि समझदार और बुद्धमिान कोई नहीं है। मेरे महल में और मेरे पूरे राज्य में, तुम मेरे बाद दूसरे नंबर पर रहोगे। मस्रि का सारा देश तुम्हारे आदेशों का पालन करेगा। सहिासन के मामले में ही मैं तुमसे बड़ा रहूँगा।'

फरौन ने अपनी उँगली से मुहर की अंगूठी उतारकर यूसुफ की उँगली में पहना दी। फरि उसने यूसुफ को सुर्ख रंग का चोगा पहनाया और उसके गले में सोने की जंजीर डाल दी। ऐसा करते हुए उसने कहा:

'आज मैं तुम्हें पूरे मस्रि में दूसरे नंबर पर नयिुक्त करता हूँ। मैं तुम्हारे बनिा हाथ भी नहीं उठाऊँगा, और मस्रि की सारी भूमि में कोई भी तुम्हारी आज्ञा के बनिा कुछ करने की हम्मित नहीं करेगा।'

फरौन ने यूसुफ को मस्रि का नाम 'पोस्मोफ्मानी' दयिा, जसिका अर्थ है 'वशि्व का उद्धारकर्ता'। फरौन के आदेश पर, यूसुफ को शाही रथों में से दूसरे रथ पर बठिाया गया और शहर में घुमाया गया, जबकि उद्घोषक यह उद्घोषणा

कर रहे थे कि मिस्र पर एक दूसरा राजा नियुक्त किया गया है। सभी राजसी कुलीनों ने रथ के साथ-साथ चलकर दूसरे राजा को वही सम्मान दिया जो वे स्वयं फरौन को देते थे।

हे परमेश्वर, यह कितना अद्भुत परिवर्तन था जो इस धर्मी युवक के लिए एक ही घंटे में हुआ, यह सब परमेश्वर की सुरक्षा के कारण था, जो जानते हैं कि कैसे महिमा और कीर्ति प्रदान करनी है, ताकि उसे राजाओं और कुलीनों के बीच बिठाया जा सके! हे परमेश्वर, तेरा न्याय कितना धर्मी है! इस प्रकार, हे प्रभु, तूने निर्दोष यूसुफ को बदनामी से मुक्त किया। इस प्रकार तूने इस अन्याय सहने वाले धर्मी मनुष्य को सांत्वना दी और, इसी जीवन में भी, उसकी पवित्रता और धैर्य के लिए उसे इतना गौरवशाली पुरस्कार प्रदान किया! आने वाले जीवन में तू अपने पवित्र सेवकों को कितना अधिक पुरस्कृत करेगा!

जब कुलीन पेंटेफ्री, वही व्यक्ति जिसने यूसुफ को जेल में डाला था, को इस अद्भुत घटना का पता चला—कि कैसे यूसुफ को बड़े सम्मान के साथ फरौन की रथ पर बिठाया गया था—तो वह बहुत डर गया। भय और कांपते हुए, वह घर लौटा और अपनी पत्नी से कहा:

'हे पत्नी, क्या तुम जानती हो कि मिस्र में एक अद्भुत घटना घटी है! यह हमारे लिए बहुत डरावनी है! हमारे सेवक यूसुफ अब न केवल हम पर, बल्कि पूरे मिस्र देश पर प्रभु बन गया है। सभी द्वारा प्रशंसित, वह अब फरौन की रथ पर विराजमान है। डर और कांपते हुए, मैं उसकी आँखों में देखने की हिम्मत भी नहीं कर सकी और रईसों के बीच से चुपके से निकल आई।

यह सुनकर, पेंतेफ्री की पत्नी ने अपने पति से कहा:

'डरो मत। अब मैं तुम्हें अपना पाप बताऊँगी। मैं यूसुफ के लिए पागलों की तरह प्यार में थी। मैं हर समय सज-धज कर उसे बहकाती थी, ताकि मैं उसके साथ रह सकूँ और उसकी सुंदरता का आनंद ले सकूँ। लेकिन मैं ऐसा नहीं कर सकी। चूँकि वह मेरी इच्छाओं के लिए राज़ी नहीं हुआ, इसलिए मैंने उसे मेरे साथ लेटने के लिए मजबूर किया। लेकिन पवित्र यूसुफ मुझसे भाग गया और अपना वस्त्र पीछे छोड़ गया, जिसे मैंने तुम्हें दिखाया था। मैंने उस पर झूठा आरोप लगाया कि उसने मुझसे बलात्कार करने की कोशिश की। इस प्रकार, यह स्पष्ट होता है कि मेरे ही कारण उसे राजसी शक्ति और इतनी बड़ी महिमा प्राप्त हुई। क्योंकि अगर मैं यूसुफ से प्यार नहीं करती और वह जेल में नहीं बल्कि हमारे घर में रहता, तो उसका सद्गुण और बुद्धिमत्ता छिपी रह जाती और उसकी महिमा नहीं होती। उसे मेरी प्रसिद्धि और सम्मान का कारण बनने के लिए मुझसे प्रसन्न होना चाहिए। तो फिर, हम इस धर्मी और धर्मपरायण यूसुफ से न डरें। उसने किसी को नहीं बताया कि हमारे बीच क्या हुआ और, निस्संदेह, अपनी दयालुता से, वह हमें क्षमा कर देगा। आइए हम जाएँ और अन्य कुलीनों के साथ मिलकर उसे सम्मान दें।

वे गए और शर्मिंदगी महसूस करते हुए, यूसुफ को श्रद्धांजलि अर्पित की। वह उन पर बिल्कुल भी क्रोधित नहीं हुआ और किसी को भी यह नहीं बताया कि उनके बीच क्या हुआ था।

फ़रौन ने यूसुफ़ की शादी पेंटेफ्रीस की बेटी असनेफ़ से कर दी, लेकिन वह पेंटेफ्रीस नहीं जिसके यहाँ यूसुफ़ ने काम किया था, बल्कि कोई और था: पहला एक दरबारी था, जबकि दूसरा हेलीओपोलिस[2800] शहर में एक पुरोहित था, यानी सूर्य का नगर। जब यूसुफ़ ने मिस्र में शासन करना शुरू किया तब उसकी उम्र तीस साल थी। उसकी भविष्यवाणी के अनुसार, उस भूमि ने वास्तव में सात वर्षों तक भरपूर फसलें दीं। इस दौरान, यूसुफ मिस्र भर में घूमा, गेहूँ और हर प्रकार की उपज इकट्ठी की और उसे शहरों में संग्रहीत किया। उसने समुद्र तट पर रेत जितना गेहूँ इकट्ठा कर लिया, ताकि बाद में वह उसे माप भी न सके, क्योंकि वह गिनती से परे था। सात वर्षों के अकाल शुरू होने से पहले ही, योसेफ के असानाथ से दो पुत्र हुए: पहले का नाम मनश्शे और दूसरे का नाम एप्रैम रखा गया। लेकिन फिर समृद्धि के सात वर्ष बीत गए, और अकाल के सात वर्ष शुरू हो गए। दिन-प्रतिदिन, पूरे देश में अकाल और भी भयंकर होता गया। पूरे मिस्र देश में कहीं भी कोई रोटी नहीं बची थी, सिवाय शाही अनाज भंडारों के। पूरा मिस्र अकाल की चपेट में आ गया। लोगों ने फरौन से रोटी माँगनी शुरू कर दी। फरौन ने उन्हें यूसुफ के पास भेज दिया। यूसुफ ने शाही अनाज भंडार खोले और सभी मिस्रवासियों को रोटी बेचना शुरू कर दिया। और लोग सभी देशों से यूसुफ से रोटी खरीदने के लिए मिस्र आने लगे, क्योंकि अकाल ने पूरे देश को अपनी चपेट में ले लिया था।

[2800] हेलिओपोलिस निचले मिस्र के दक्षिण में सबसे प्राचीन और प्रसिद्ध शहरों में से एक है। यहाँ एक पुरोहित स्कूल था, और यहीं पर मिस्र के सबसे महत्वपूर्ण पवित्र ग्रंथों में से एक, 'बुक ऑफ द डेड' (मृतकों की पुस्तक), और अन्य पवित्र ग्रंथों की उत्पत्ति हुई। यहाँ स्थित सूर्य का मंदिर, सभी फरौन के लिए चिंता का विषय था। हेलिओपोलिस के खंडहर मतारिया गाँव (काहिरा के उत्तर में) के पास स्थित हैं।

उस बड़े अकाल ने याकूब के रहने के देश कनान में भी दस्तक दी। वह बूढ़ा और उसके पुत्र भूख से कमजोर पड़ रहे थे। यह जानकर कि मिस्र में बहुत रोटी है, याकूब ने अपने पुत्रों से कहा:

'तुम इस बारे में कुछ क्यों नहीं करते? मैंने सुना है कि मिस्र में गेहूँ बहुत अधिक बिक्री के लिए है। वहाँ जाओ और कुछ अनाज खरीद लो, ताकि तुम भूख से न मर जाओ।'

यूसुफ़ के दस भाई मिस्र के लिए रवाना हो गए। सबसे छोटा भाई, बिन्यामीन, अपने पिता के पास ही रह गया, क्योंकि याकूब उसे अपने भाइयों के साथ यात्रा पर नहीं जाने देना चाहता था; याकूब ने कहा:

'उसके भाई यूसुफ के साथ जो दुर्भाग्य हुआ था, वही दुर्भाग्य इस यात्रा में उसके साथ भी हो सकता है!'

इज़राइल के पुत्र मिस्र पहुँचे। उनके साथ कई अन्य यात्री भी उसी उद्देश्य से आए थे – गेहूँ खरीदने के लिए, जिसे मिस्र के देश का शासक, यूसुफ, सभी को बेच रहा था। भाई यूसुफ़ के पास आए और उसके सामने ज़मीन पर झुक गए। जब यूसुफ़ ने अपने भाइयों को देखा, तो वह उन्हें तुरंत पहचान गया। उसने उनसे कठोर स्वर में, जैसे गुस्से में हो, बात की और पूछा:

'तुम कहाँ से आए हो?'

उन्होंने उत्तर दिया:

[2801]'हम कनान की भूमि से अनाज खरीदने आए हैं।'

यूसुफ़ को अपने सपनों का स्मरण आया और उसे एहसास हुआ कि वे सच होने लगे थे। इसलिए उसने मन ही मन परमेश्वर का धन्यवाद किया। फिर, जैसे कि वह अभी भी गुस्से में हो, उसने उनसे फिर कहा:

'तुम जासूस हो, मुखबिरे। क्या तुम इस देश के रास्तों की जासूसी करने आए हो?'

लेकिन उन्होंने उत्तर दिया:

'नहीं, मेरे प्रभु। हम, आपके दास, ईमानदार लोग हैं और भोजन खरीदने आए हैं। हम सभी एक ही व्यक्ति के पुत्र हैं; हम किसी भी तरह के जासूस या मुखबिर नहीं हैं।'

यूसुफ़ ने क्रोधित स्वर में उनसे उत्तर दिया:

'नहीं, तुम इस देश की चाल-ढाल की जासूसी करने आए हो।' भाई बहुत डर गए और अपनी बेगुनाही साबित करने के लिए, उन्होंने अपने घर और अपने पिता के बारे में बात करना शुरू कर दिया।

'कनान की भूमि में हमारा एक धर्मी पिता है। हम बारह भाई हुआ करते थे, लेकिन अब हम ग्यारह ही बचे हैं। हम यहाँ दस हैं। हमारे एक भाई को जंगली जानवरों ने खा लिया और वह मर गया। हमारा पिता अभी भी उसके लिए रो रहा है, क्योंकि वह उसे बहुत प्यार करता था। एक और भाई, सबसे छोटा, हमारे पिता को सांत्वना देने के लिए घर पर ही रह गया।

यूसुफ ने उनसे उत्तर दिया:

'मेरा यह कहना सही था कि तुम जासूस और मुखबिर हो, क्योंकि तुमने खुद ही अपना भेद खोल दिया है। मैं फिरौन की जान की कसम खाकर कहता हूँ कि जब तक तुम्हारा सबसे छोटा भाई यहाँ नहीं आ जाता, तुम इस जगह से नहीं जाओगे। तुममें से एक को अपने भाई को बुलाने भेजो; बाकी तुम यहाँ बंद रहोगे। तब यह देखा जाएगा कि तुम सच कह रहे हो या नहीं। यदि तुम अपने सबसे छोटे भाई को यहाँ नहीं लाए, तो तुम वास्तव में जासूस और मुखबिर हो।

तो यूसुफ ने उनसे बात की और उन्हें तीन दिन के लिए पहरे में रखवा दिया। तीसरे दिन, उसने उन्हें बुलाया और कहा:

'केवल ईश्वर के भय के कारण ही मैं क्रूर यातनाओं का सहारा नहीं ले रहा हूँ। यदि आप सचमुच ईमानदार लोग हैं, और जासूस या मुखबिर नहीं हैं, और जीवित रहना चाहते हैं, तो आपको निम्नलिखित करना होगा। तुम में से एक यहाँ जेल में ही रहे। बाकी तुम सब घर जाओ और जो गेहूँ तुमने खरीदा है, उसे अपने पिता के पास ले जाओ; और अपने सबसे छोटे भाई को, जिसके बारे में तुम बात कर रहे हो, वहाँ से मेरे पास ले आओ। तब तुम्हारी बात सच साबित होगी। अगर तुम इस पर राज़ी नहीं हो, तो तुम्हें मौत की सज़ा दी जाएगी।"

वे इस बात पर राज़ी हो गए और एक-दूसरे से हिब्रू में कहा:

[2801] 'कनान की भूमि' से तात्पर्य भूमध्य सागर के पूर्वी तट के साथ पश्चिमी एशिया में स्थित विशाल क्षेत्रों से है – विशेष रूप से, यॉर्डन के दूसरी ओर की भूमि, यानी फिनिशिया और फिलिस्तीनियों की भूमि; हालाँकि, ट्रांसजॉर्डन क्षेत्र को कनान की भूमि से अलग माना जाता है। आधुनिक समय में, कनान की भूमि से तात्पर्य आमतौर पर संपूर्ण प्रतिज्ञात भूमि से है – यॉर्डन के दोनों किनारों पर इस्राएलियों द्वारा बसाई गई सभी भूमि।

'हम इस विपत्ति के भागी हैं। हम अपने भाई के विरुद्ध अपने पाप के दण्ड भोग रहे हैं, क्योंकि जब वह हमसे विनती कर रहा था तब हमने उसकी आत्मा के कष्ट पर कोई ध्यान नहीं दिया। हमने उसकी नहीं सुनी। इसीलिए यह विपत्ति हम पर आई है।'

सबसे बड़े भाई, रूबेन ने उनसे कहा:

'क्या मैंने उस समय तुमसे नहीं कहा था: "इस लड़के को कोई नुकसान मत पहुँचाओ"? तुमने मेरी नहीं सुनी। अब उसके खून का बदला हमसे माँगा जा रहा है।'

जैसे ही वे आपस में बात कर रहे थे, भाइयों को यह एहसास नहीं हुआ कि यूसुफ उनकी बातें समझ रहा था। यूसुफ ने, हालांकि, उनसे अलग हो कर रो पड़ा। तब, उनके पास आकर, उसने आज्ञा दी कि शिमोन को उनके बीच से उठाकर उनकी आँखों के सामने बाँध दिया जाए। यह शिमोन यूसुफ से बाकी सभी से भी अधिक नफरत करता था और जब यूसुफ को कुएँ में फेंका गया और इस्माएलियों को बेच दिया गया था, तब उसने सबसे अधिक द्वेष दिखाया था। यूसुफ ने आज्ञा दी कि बँधे हुए शिमोन को जेल में डाल दिया जाए। जहाँ तक उसके बाकी भाइयों का सवाल है, उसने आदेश दिया कि उनके बोझों में रोटी भर दी जाए, हर आदमी के बोझ में चाँदी चुपके से वापस रख दी जाए, और उन्हें यात्रा के लिए राशन दिया जाए।

इसके बाद, यूसुफ ने अपने भाइयों को विदा किया। वे अपने गधों पर रोटी लादकर कनान देश की ओर चल पड़े। एक बार, वे आराम करने के लिए रुके। भाइयों में से एक, अपने गधे को खिलाना चाहकर, अपनी बोरी खोलकर उसमें से चाँदी देखी। उसने अपने भाइयों से कहा:

'मेरा चाँदी मुझे वापस मिल गई है; वह मेरी बोरी में मिली है।' भाइयों को इस पर बहुत आश्चर्य हुआ और उन्होंने एक-दूसरे से कहा:

'ईश्वर ने हमारे साथ क्या किया है?!'

जब वे अपने पिता के घर पहुँचे, तो उन्होंने उन्हें मिस्र में उनके साथ जो कुछ भी हुआ था, सब कुछ बता दिया। जैसे ही प्रत्येक भाई ने अपनी बोरी से गेहूँ निकाला, उसे उसमें अपना-अपना चाँदी का टुकड़ा मिला। इससे वे और भी अधिक डर गए।

अपने बेटों की बात सुनने के बाद, उनके पिता ने उदास होकर उनसे कहा:

– तुमने मुझे मेरे बच्चों से वंचित कर दिया है। यूसुफ़ चला गया, शिमोन चला गया; क्या तुम सचमुच मेरी जान भी मुझसे छीनना चाहते हो?

रूबेन ने अपने पिता से कहा:

'अगर मैं उसे तुम्हारे पास वापस नहीं लाया तो मेरे दोनों बेटों को मार डालना। उसे मेरी हिरासत में जाने दो।'

याकूब ने उत्तर दिया:

'मेरा बेटा तुम्हारे साथ नहीं जाएगा, क्योंकि उसका भाई मर गया है और वह ही मेरे पास बचा है। मुझे डर है कि यात्रा में, जब वह मुझसे अलग होगा, तो उसके साथ भी वही दुर्भाग्य होगा जो उसके भाई यूसुफ के साथ हुआ था। तब तुम मेरी बुढ़ापे को दुख में कब्र तक ले जाओगे।'

कनान की भूमि में अकाल जारी था। जब मिस्र से खरीदा हुआ सारा अनाज खा लिया गया, तो याकूब ने अपने बेटों से कहा:

'मिस्र वापस जाओ और वहाँ से कुछ और अनाज खरीद लो, ताकि हम भूख से न मर जाएँ।'

इस पर यहूदा ने उत्तर दिया:

'उस देश के शासक ने हमसे स्पष्ट शब्दों में कहा है: "जब तक तुम्हारा सबसे छोटा भाई तुम्हारे साथ नहीं है, तब तक मुझसे अपना चेहरा मत दिखाना।"' यदि तुम बेन्यामीन को हमारे साथ जाने दो, तो हम मिस्र जाकर तुम्हारे लिए कुछ अनाज खरीदेंगे। लेकिन यदि तुम उसे जाने नहीं दोगे, तो हम नहीं जाएँगे। उस हाकिम ने हमसे कहा, 'जब तक तुम्हारा सबसे छोटा भाई तुम्हारे साथ नहीं आता, तब तक तुम मेरा मुँह नहीं देखोगे।'

याकूब ने कहा:

'मिस्र के अधिकारी से यह कहकर तुमने मेरे साथ धोखा क्यों किया कि तुम्हारा एक और भाई है?'

उसके बेटों ने उत्तर दिया:

उस हाकमि ने हमसे हमारे परविार के बारे में पूछा: "क्या तुम्हारा पता अभी जीवति है? क्या तुम्हारा कोई भाई है?" हमने उसके सभी सवालों का जवाब दयिा। हमें कैसे पता था कि वह कहेगा, "अपने भाई को यहाँ ले आओ!'"

तब यहूदा ने अपने पति से फरि कहा:

लड़के को मेरे साथ भेज; उसे हमारे साथ जाने दे। तब न तो तुम मरोगे, न हम, और न ही हमारा सारा कुल, बल्कि हम जीवति रहेंगे। मैं उस लड़के को अपनी हरिासत में ले लूंगा, और तुम मुझे उसके लिए जम्मिेदार ठहरा सकते हो। अगर मैं उसे तुम्हारे पास वापस नहीं लाया और तुम्हारे सामने नहीं खड़ा कयिा, तो मैं हमेशा के लिए तुम्हारे सामने दोषी रहूँगा। अगर हम बेंजामनि के कारण देर से न रुके होते, तो हम मस्रि से दो बार रोटी ला सकते थे।

याकूब ने अपने बेटों से कहा:

'अगर ऐसा ही है, तो अपनी मर्जी से करो। हमारे देश का कुछ सामान अपने साथ ले जाओ—जैसे कि बाम, शहद, मूर, लबान, पस्ति और अन्य मेवे—और उन्हें मस्रि के हाकमि को तोहफ़े के तौर पर भेंट करो। इसके अलावा, अपने साथ दोगुनी चाँदी ले जाओ, ताकि तुम उस पैसे का हसिाब चुकता कर सको जो तुम्हें अपनी बोरी में मलि थे।' अपने साथ बेंजामनि को ले जाओ और अपनी यात्रा पर नकिल पड़ो। ईश्वर करे कि सर्वशक्तमिान परमेश्वर उस व्यक्ति पर तुम्हारा अनुग्रह कराए, ताकि वह शमिोन और बेंजामनि दोनों को तुम्हारे साथ जाने दे। जहाँ तक मेरी बात है, जब तक तुम वापस नहीं आते, मैं खुद को नस्रिंतान मानूँगा।

याकूब के पुत्र उपहार, दोगुनी चाँदी और बेंजामनि को साथ लेकर मस्रि की ओर रवाना हुए। वे यूसुफ के सामने आए। जब यूसुफ ने उनके साथ बेंजामनि को देखा, तो उसने अपने व्यवस्थापक से कहा:

'इन लोगों को घर के अंदर ले जाओ। फरि एक पशु का वध करो और भोजन तैयार करो। दोपहर को मैं उनके साथ भोजन करूँगा।'

चाबुक ने यूसुफ के आज्ञानुसार कयिा और अपने भाइयों को घर में ले गया। जब उन्हें यूसुफ के घर में ले जाया गया, तो उन्होंने एक-दूसरे से कहा:

'हमें यहाँ उस चाँदी के कारण लाया गया है जो हमारी बोरी में वापस मलि गई थी, ताकि वे हम पर इल्ज़ाम लगाकर हमें गुलामी में ले जा सकें।'

और उन्होंने व्यवस्थापक से कहा:

'प्रभु, कृपया हमारी सुनें; हम आपसे वनिती करते हैं। हम अनाज खरीदने यहाँ आए हैं। ऐसा हुआ कि जब हम अपने डेरे पर पहुँचे और अपनी बोरी खोलने लगे, तो हर एक के चाँदी का पैसा उसकी ही बोरी में मलिा। हमें नहीं पता कि वहाँ पैसा कसिने रखा। अब हम चाँदी की दोगुनी रकम लाए हैं: आधी रकम वापस करने के लिए, जैसी बोरी में मलिी थी, और बाकी आधी से अनाज का भुगतान करने के लिए।"

घर के व्यवस्थापक ने उनसे कहा:

'सुख से रहो; न डरो। यह खज़ाना तुम्हारे परमेश्वर और तुम्हारे पति के परमेश्वर की ओर से तुम्हारे पास भेजा गया है।'

तब व्यवस्थापक ने सम्मिओन को उनके पास लाया और उनके पैर धोने के लिए पानी लाया; उसने उनके गधों को भी कुछ चारा दयिा। भाइयों ने अपने उपहार तैयार कए और यूसुफ के आने का इंतजार कयिा, क्योंकि उन्होंने सुना था कि उनके लिए भोजन तैयार कयिा गया था। जब यूसुफ़ घर में आया, तो उसके भाई उसके सामने ज़मीन पर झुक गए और जो उपहार वे घर से लाए थे, वे भेंट कए। यूसुफ़ ने उनसे पूछा:

'तुम कुशल हो, और तुम्हारा वृद्ध पति, जसिके वषिय में तुमने बताया था, वह कुशल है? क्या वह अभी भी जीवति है?'

उन्होंने उत्तर दयिा:

'आपका सेवक, हमारा पति, कुशल है; वह अभी भी जीवति है।'

इस पर यूसुफ़ ने कहा:

'उस पुरुष पर ईश्वर का आशीर्वाद है।'

भाइयों ने एक बार फरि उसके सामने सरि झुकाया। अपनी आँखें उठाकर, यूसुफ़ ने अपने पूरे भाई बेंजामनि को देखा और पूछा:

'क्या यही वह भाई है जसिके बारे में आपने मुझे बताया था?'

उन्होंने उत्तर दिया:

'हाँ, मेरे स्वामी।'

यूसुफ़ ने बिन्यामीन से कहा:

'ईश्वर की कृपा तुम पर बनी रहे, मेरे पुत्र!'

यह सुनकर वह भावनाओं में बह गया। उसकी आँखों में आँसू भर आए। इसलिए वह एक अन्दर के कमरे में गया और वहाँ रोया; अपने पिता याकूब को याद करते हुए, यूसुफ ने कहा:

'प्रिय पिताजी, धन्य हैं वे जो सदैव आपके साथ निवास करते हैं! मेरा पूरा राज्य भी आपके योग्य नहीं है, जो परमेश्वर के इतने प्रिय हैं! मैं बेंजामिन से पूछना चाहता था कि क्या उसे मुझसे मिलने की याद है और क्या वह मुझसे उतना ही प्रेम करता है जितना मैं उससे करता हूँ। इसीलिए मैंने अपने भाइयों से बेंजामिन को अपने साथ लाने को कहा था। मुझे उनके उन शब्दों पर विश्वास नहीं हुआ कि मेरे पिताजी कुशल हैं और मेरा भाई जीवित है। मैंने सोचा कि उन्होंने ईर्ष्या के कारण आपके इस (सबसे छोटे) पुत्र, आपके प्रिय बेंजामिन को भी मार डाला होगा। चूँकि वह मेरा पूरा भाई है, मेरे भाइयों ने उससे उतनी ही नफ़रत की जितनी उन्होंने मुझसे की। मैं जानता हूँ, पिताजी, कि आप हमारे लिए गहरा शोक मनाते हैं। मैंने आपके दुःख को और बढ़ा दिया है। मैं इस दुःख को समझता हूँ; हम में से कोई भी आपके साथ नहीं है। हे पिताजी! क्या मेरे बारे में एक ही दुःख आपके लिए काफी नहीं था? अब उसमें एक और जुड़ गया है। मैं ही आपके सारे दुखों का कारण हूँ, क्योंकि मैंने ही बेंजामिन को यहाँ लाने का आदेश दिया था। मेरा यह काम निर्दयी था। यह आपकी खबर ही थी जिसने मुझे ऐसा करने के लिए मजबूर किया। मैं यह जानना चाहता था कि, हे मेरे दयालु पिता, आप सचमुच जीवित हैं या नहीं। ओह, काश कोई मुझे एक बार फिर आपका दिव्य मुख दर्शन करने का अवसर दे!

और इस प्रकार यूसुफ़ अपने कमरे में चुपचाप रोया। फिर उसने अपना चेहरा धो लिया ताकि यह स्पष्ट न हो कि वह रोया था, और अपने आँसू रोकते हुए, अपने भाइयों के पास गया। उसने आदेश दिया कि उसके लिए, यहूदियों के लिए और मिस्रियों के लिए, प्रत्येक के लिए अलग-अलग भोजन परोसा जाए, क्योंकि मिस्री यहूदियों के साथ भोजन नहीं कर सकते थे: कोई भी भेड़-पालक मिस्रियों में घृणा की भावना जगा देता था। रात्रि के भोजन से ठीक पहले, यूसुफ ने अपने भाइयों को वरिष्ठता के क्रम में, यानी किसकी पहले उत्पत्ति हुई थी, के अनुसार बैठने का निर्देश दिया। ऐसा करते हुए, उसने उन्हें नाम से पुकारना शुरू कर दिया, मानो वह अपने हाथ में पकड़े चाँदी के प्याले से कुछ जान रहा हो। उसने प्याला अपने बाएँ हाथ में लिया और अपने दाहिने हाथ की उंगली से उसे टकराकर एक आवाज निकाली। पहली बार टकराने के बाद, उसने अपने सामने खड़े लोगों से ज़ोर से कहा:

'बड़े भाई का नाम रूबेन है; वह पहले बैठ जाए!'

दूसरी बार टकराने पर, यूसुफ ने कहा:

'उसके बाद, शिमोन का जन्म हुआ।'

और उसने उसे भी बैठने का आदेश दिया। उसे फिर से टकराकर, उसने तीसरे को बैठने का आदेश दिया, और, एक-एक करके सभी को नाम से बुलाकर, उसने उन्हें उनकी उम्र के अनुसार बैठने का आदेश दिया। इस चमत्कार से यूसुफ ने उन सभी में इतना डर पैदा कर दिया कि वे सभी सोचने लगे: 'यह आदमी सचमुच सब कुछ जानता है।'

उनका भय दूर करने के लिए, यूसुफ ने जल्दी से उन्हें अपनी मेज़ से भोजन भेजने का आदेश दिया, और बिन्यामीन को दूसरों से पाँच गुना अधिक भेजा। वे सभी खाए, पिए और पूरी तरह से संतुष्ट हुए।

योसेफ ने अपने घर के व्यवस्थापक को आदेश दिया कि वह प्रत्येक भाई की बोरी मुफ्त में गेहूं से भर दे, और बेन्यामीन की बोरी में चुपके से वह प्याला रख दे जिससे उसने, योसेफ ने, भविष्यवाणी की थी; इन सब के बाद, उसे उन्हें जाने देना था।

सुबह, भाई उत्साहित होकर शहर से निकल पड़े। वे बहुत दूर नहीं गए थे कि यूसुफ का व्यवस्थापक उनके पास पहुँच गया। उसने धमकाते हुए उन्हें फटकारना शुरू कर दिया, उन्हें चोर और मिले सम्मान के लायक नहीं कहा, उन पर दया का बदला बुराई से चुकाने और अपने मिस्री स्वामी का प्याला चुराने का आरोप लगाया, जिससे वह पीता है और जिससे वह भविष्य बताता है। भाइयों ने कहा:

'अगर हमने अपनी बोरी में मिली चाँदी दूसरी बार लौटा दी है, तो क्या हम संभवतः आपके स्वामी का प्याला चुरा सकते हैं? आपके नौकरों में से जिस किसी के पास भी प्याला मिला, वह मर जाएगा, और हम अपने स्वामी के दास बन जाएँगे।'

अधकिारी सहमत हो गया:

'जैसा आप कहते हैं, वैसा ही हो। अपनी बोरी ज़मीन पर रखो – मैं उनकी तलाशी लूंगा।'

वे जल्दी से गधों से अपनी बोरी उतारने लगे। व्यवस्थापक ने सबसे बड़े से शुरू करके सबसे छोटे तक खोजबीन की, और सभी को आश्चर्यचकति करते हुए, प्याला बन्यिामीन की बोरी में मलिा। यह देखकर भाइयों ने शोक में अपने कपड़े फाड़ दएि। उनमें से प्रत्येक ने गुस्से में बन्यिामीन और राहेल दोनों की नदिा की:

'योसेफ हम पर शासन करना चाहता था और, जैसा कि वह इसके हक़दार था, जंगली जानवरों ने उसे खा लयिा। दूसरी ओर, तुमने राजा का प्याला चुराने की साज़शि रची और उसे अंजाम दयिा। क्या तुम रचल के बेटे नहीं हो, जसिने हमारे पतिा की मूर्तयिाँ चुराई थीं और यह स्वीकार नहीं कयिा था, यह कहते हुए, "मैंने कुछ भी नहीं चुराया है"?'

बेनजामनि फूट-फूट कर रो पड़ा और रोते हुए कहा:

'मेरे पतिा का वही ईश्वर, जसिने राहेल को जीवतिों से अपनी इच्छा से उठा लयिा और मेरे भाई की मृत्यु का कारण जानता था, वह ईश्वर जो राहेल और उसके बच्चों के लिए शोक मनाते हुए याकूब को सांत्वना देता है, और जो अब हम सभी को देखता है और हमारे हृदयों को जानता है, – वह स्वयं जानता है कि मैंने वह प्याला नहीं चुराया, जैसा तुम कह रहे हो, और मैंने ऐसा करने का सोचा भी नहीं। मैं कसम खाता हूँ कि मैं फरि कभी याकूब के सफेद बाल नहीं देखूँगा और न ही उसकी आवाज़ सुनूँगा; मैं इन सब की कसम खाता हूँ कि मैंने वह प्याला नहीं चुराया! हाय मेरी कस्मित! हाय मेरी कस्मित, राहेल! तुम्हारे बच्चों का क्या हुआ! कहते हैं कि यूसुफ़ को जंगली जानवरों ने खा लयिा है, जबकि मुझे एक परदेस में चोर ठहराया गया है, और वे मुझे यहाँ गुलामी में छोड़ देंगे; जब जानवर उसे खा रहे थे तो यूसुफ़ को रेगस्तिान में कोई मदद नहीं मलिी; इसी तरह, माँ, मैं भी अपने भाइयों की ओर व्यर्थ ही मुड़ता हूँ, और कोई भी मुझ पर, आपके बेटे पर, वश्विास नहीं करता!

अपने स्वामी से क्या कहें, यह न जानते हुए, भाइयों ने बेंजामनि को लेकर शहर लौट आए। वे यूसुफ के पास आए और उसके सामने साष्टांग दंडवत प्रणाम करने लगे।

यूसुफ़ ने उनसे क्रोध में कहा:

'क्या इसी तरह तुम मेरे उपकार का बदला चुकाते हो? क्या मैंने तुम्हारा इतना सम्मान कयिा कि तुम मेरा वह प्याला चुरा लो, जसिसे मैं भवष्यि जानता हूँ? क्या मैं सही नहीं था जब मैंने कहा था कि तुम ईमानदार आदमी नहीं, बल्कि जासूस और मुखबरि हो?'

यहूदा ने उत्तर दयिा:

'हम नहीं जानते कि अपने स्वामी से क्या कहें, क्या बोलें, या अपनी सफाई कैसे दें। परमेश्वर ने हमारे पापों को प्रकट कर दयिा है और हमें उनके लिए दंडति कर रहा है। इसलिए, हे स्वामी, हम सब आपके दास होंगे - हम भी और वह भी जसिके पास प्याला पाया गया है।'

यूसुफ़ ने उत्तर दयिा:

'नहीं, मैं वैसा नहीं करूँगा जैसा आप कह रहे हैं, क्योंकि मैं परमेश्वर से डरता हूँ। जसि युवक के पास प्याला मलिा है, वह दास बना रहेगा, परन्तु आप अपने पतिा के पास कुशलता से जा सकते हैं।'

तब यहूदा उसके पास आकर उसके चरणों में गरि पड़ा और वनिती करने लगा:

'हे स्वामी, यदि मैं आपसे कुछ कहूँ तो मुझ पर क्रोध न करें। हे स्वामी, आपने अपने दासों से पूछा था, "क्या तुम्हारा कोई पतिा या भाई है?" हमने उत्तर दयिा, "हमारे पतिा के दो पुत्र थे जन्हिें वह हमसे अधकि प्रेम करते थे। उनमें से एक को पहाड़ों में एक जंगली जानवर ने फाड़ डाला था, और हमारा पतिा आज भी उसके लिए शोक मनाता है; और दूसरे बेटे के वषिय में, हमारा पतिा उसे हर समय अपने पास रखता है, और यह बेटा उसकी वृद्धावस्था में उसका सहारा है।' जैसा आपने आज्ञा दी थी, मेरे प्रभु, हम अपने सबसे छोटे भाई को आपके पास ले आए हैं। अब, अचानक, हमने आपके वरिुद्ध पाप कयिा है। हे स्वामी, मैं आपसे वनिती करता हूँ कि मुझे उस लड़के के बदले दास बना लें, ताकि वह अकेला हमारे पतिा के पास लौट जाए। क्योंकि मैंने उसकी ज़मानत ली है। इसलिए, मैं घर नहीं लौट सकता। मैं अपने पतिा की कड़वी मृत्यु का साक्षी नहीं बनना चाहता, जो हमारे बीच अपने सबसे छोटे बेटे को न देखकर तुरंत असीम दुख से मर जाएँगे।

योसेफ ने ये दयनीय शब्द सुने और देखा कि सभी उसके सामने भ्रम और भय में खड़े थे। उसने यह भी देखा कि कैसे बन्यिामीन, फटे कपड़ों में और रोते हुए, वहाँ खड़े अपने भाइयों के पैरों पर गरि पड़ा, और उनसे वनिती करने लगा कि वे योसेफ से प्रार्थना करें कि वह उसे उनके साथ जाने दे। यह सब देखकर, यूसुफ़ बहुत भावुक हो गया और खुद को संभाल

न सका। उसने सभी मिस्रिवासियों को जाने का आदेश दिया। जब सभी चले गए और केवल भाई ही बचे, तो यूसुफ़ ने हिब्रू में उनसे कहा:

'मैं यूसुफ हूँ, तुम्हारा भाई। क्या मेरा पिता अभी भी जीवित है?'

लेकिन उसके भाई यूसुफ की बातों का उत्तर नहीं दे सके, क्योंकि वे उससे डर गए थे। तब यूसुफ ने उनसे कहा:

'मैं यूसुफ, तुम्हारा भाई हूँ, जिसे तुमने मिस्र में बेचा था। मुझे जंगली जानवरों ने नहीं खाया, जैसा तुमने हमारे पिता से कहा था, बल्कि तुमने ही मुझे इसमाइलियों को बेच दिया था। उस समय मैं तुम सबके पैरों से लिपटकर तुमसे विनती करता रहा, लेकिन किसी ने मुझ पर दया नहीं की। अब, मेरे भाइयो, उदास मत हो, मत डरना, और शोक मत करना; इसके विपरीत, तुम्हें इस बात की खुशी मनानी चाहिए कि मैं राजा हूँ। जैसे तुमने एक बार हमारे पिता से कहा था कि मुझे पहाड़ों में जंगली जानवरों ने खा लिया है, वैसे ही अब जाकर खुशी-खुशी उनसे कहो: 'आपका पुत्र यूसुफ जीवित है। वह राजसी सिंहासन पर विराजमान है और मिस्र के राज्य का राजदंड उसके हाथों में है।'

जब यूसुफ़ ने ये बातें कहीं, तो उसके भाई उसके सामने ऐसे खड़े रहे मानो मरे हुए हों, भय और कांप से ग्रस्त, और वे उन सब बुराइयों के बारे में सोचने लगे जो उन्होंने उसके साथ की थीं। यूसुफ़ ने उनसे फिर से कहा:

'यह मत डरना कि तुमने मुझे यहाँ बेचा था। परमेश्वर ने तुम्हारे जीवन की रक्षा के लिए मुझे तुमसे पहले भेजा है, ताकि मैं अकाल के समय तुम्हारा भरण-पोषण कर सकूँ। अब इस देश में अकाल का दूसरा वर्ष आ गया है। अभी पाँच वर्ष और आने वाले हैं जिनमें न हल जोता जाएगा, न बीज बोया जाएगा और न कटनी होगी। मुझे यहाँ भेजा न तो तुमने है, बल्कि परमेश्वर ने है, जिसने मुझे फिरौन का पिता, उसके पूरे घर का स्वामी और सारे मिस्र देश का शासक बनाया है। मेरे पिता के पास जल्दी जाओ, उन्हें मेरे बारे में सब कुछ बताना। उन्हें मेरी महिमा के बारे में भी बताना, और उन्हें उनके पूरे घर-परिवार के साथ तुरंत यहाँ ले आना। यहाँ तुम सबको भोजन मिलेगा।

इन बातों के बाद, यूसुफ़ ने बिन्यामीन की गर्दन पर बाँहें डाल दीं और आनंद से रो पड़ा। बिन्यामीन भी यूसुफ़ की गर्दन से लिपटकर रोया। फिर यूसुफ़ अपने भाइयों के पास गया और उन्हें भी चूमा। वह उन पर क्रोधित नहीं था; एक अच्छे स्वभाव का व्यक्ति होने के नाते, वह अभी भी उनसे प्रेम करता था। फ़िरौन और उसके दरबारियों तक यह खबर पहुँची कि यूसुफ़ के भाई उसके पास आ गए हैं। फ़िरौन ने यूसुफ़ को आदेश दिया कि वह अपने पूरे परिवार को मिस्र ले आए, और उन्हें सबसे अच्छी भूमि देने का वादा किया। यूसुफ़ ने अपने भाइयों को कीमती उपहार दिए—सोना, चाँदी और बढ़िया वस्त्र—और उन्हें रथ, घोड़े और गधे दिए, जिन पर वे अपने पूरे घर-बार के साथ मिस्र की यात्रा कर सकें; और इसके अतिरिक्त उसने उन्हें यात्रा के लिए भोजन-सामान भी दिया। इसके अलावा, यूसुफ़ ने अपने पिता के लिए कीमती उपहार भेजे और अपने भाइयों को उनके पास भेजते हुए खुशी-खुशी उनसे कहा:

'रास्ते में झगड़ा मत करना, बल्कि शांति से जाओ और अपने पिता के पास जल्दी पहुँचो, और उनसे कहना: "तुम्हारे पुत्र यूसुफ़ ने हमसे यह संदेश पहुँचाने को कहा है: ईश्वर ने मुझे मिस्र के इस देश का स्वामी बना दिया है; इसलिए, हे पिता, प्रसन्न हो, और यहाँ आओ, ताकि मैं तुम्हारा दैवीय मुख देख सकूँ।"'

वे शीघ्रता से चल पड़े, कनान देश पहुँचे, अपने पिता को यूसुफ के बारे में बताया, और उसके वचन उन्हें सुनाए। यूसुफ का नाम सुनते ही याकूब ने आह भरकर रोया और दुखित होकर कहा:

'तुम मेरे प्राणों को क्यों क्लेश देते हो? क्या मैं अपने प्रिय पुत्र यूसुफ की सुन्दरता को फिर से याद न करूँ? तुम उस दुख को फिर से क्यों जगाना चाहते हो जो मेरे प्राणों में बुझ गया था?'

याकूब ने उनकी बातों पर विश्वास नहीं किया। तब बेंजामिन उसके पास आया, उसके घुटनों पर सिर रखा और कहा:

'ये शब्द पूर्ण सत्य हैं।'

तब उसने अपने पिता को यूसुफ द्वारा भेजे गए उपहार और पत्र दिखाए। याकूब ने इस पर विश्वास किया और चकित रह गया। उसकी आत्मा को नया जीवन मिल गया। उसने कहा:

'मैं खुश हूँ कि मेरा बेटा यूसुफ अभी भी जीवित है, और मरने से पहले मैं जाकर उसे देखूँगा।'

याकूब अपने पुत्र यूसुफ से मिलने के लिए आनंद और शीघ्रता से मिस्र के लिए रवाना हो गए। जब यूसुफ को पता चला कि याकूब आ रहे हैं, तो उसने शाही रथ तैयार किया और अपने पिता से मिलने के लिए निकल पड़ा। याकूब ने यूसुफ को आते देखा और अपनी वृद्धावस्था के बावजूद, रथ से उतरकर उससे मिलने के लिए चले गए। योसेफ भी रथ से उतर गया और अपने सभी कुलीनों के साथ पैदल चल पड़ा। जब योसेफ अपने पिता के पास पहुँचा, तो उसने जो राजदंड पकड़े हुए था, उसे जमीन पर नीचे कर दिया, मानो वह उसे पकड़ना नहीं चाहता था। फिर, राजदंड के सामने झुकने का नाटक करते

हुए, वह इसी तरह अपने पिता याकूब के सामने झुका और उन्हें राजदंड दे दिया। उसने ऐसा इसलिए किया ताकि मिस्रियों को यह बुरा न लगे कि राजसी बैंगनी वस्त्र पहनने के बावजूद, वह इस्राएल के सामने झुक गया था। याकूब सबसे पहले यूसुफ़ के पास गए; उन्होंने अपनी बाहें उसकी गर्दन के चारों ओर डाल दीं और बहुत देर तक उस पर जोर-जोर से रोए। यूसुफ़ भी अपने पिता के सफेद बालों को गले लगाते और चूमते हुए रोया। और याकूब ने यूसुफ़ से कहा:

'अब मैं मर सकता हूँ, क्योंकि मैंने तुम्हें, मेरे पुत्र, देख लिया है।' सभी सम्मान के साथ, यूसुफ़ याकूब को मिस्र के शाही नगर में ले गया और उसे फिरौन के सामने प्रस्तुत किया। याकूब ने फिरौन को आशीर्वाद दिया। फिरौन ने उससे पूछा:

'आपकी आयु क्या है?'

याकूब ने उत्तर दिया:

'मेरी आयु एक सौ तीस वर्ष की है। मेरे जीवन के वर्ष थोड़े और दुखद रहे हैं, और वे मेरे पूर्वजों द्वारा जिए गए वर्षों की संख्या तक नहीं पहुँचे हैं।'

फिरौन ने यूसुफ को आज्ञा दी कि वह अपने पिता और अपने भाइयों को सबसे अच्छी भूमि पर बसा दे। मिस्र देश में सत्रह वर्ष रहने के बाद, याकूब की मृत्यु हो गई और वह अपने पूर्वजों के पास चला गया। यूसुफ अपने पिता के मुख पर गिर पड़ा, उन पर बहुत रोया और उन्हें चूमा।

जब वह मरणासन्न थे, तो याकूब ने यूसुफ से आग्रह किया कि उसे मिस्र में न दफनाया जाए, बल्कि उसकी अस्थियों को कनान देश में ले जाकर उनके पूर्वजों की कब्र में रख दिया जाए। इसलिए, यूसुफ ने फिरौन के अधिकारियों से कहा:

'यदि मैं तुम्हारी दृष्टि में अनुग्रह प्राप्त कर गया हूँ, तो कृपया जाकर फिरौन से कहो कि मेरे पिता ने मुझसे शपथ करवाई थी कि मैं उन्हें कनान देश में उनके द्वारा तैयार की गई कब्र में दफ़नाऊँगा। अब मैं चाहता हूँ कि मैं जाकर अपने पिता को दफ़ना आऊँ, और फिर लौट आऊँ।'

फ़िरौन ने उसकी विनती मान ली। यहोशू अपनी यात्रा पर निकल पड़ा। उसके साथ फ़िरौन के सभी जवान, उसके घर के बुज़ुर्ग, मिस्र देश के सभी बुज़ुर्ग, यहोशू का सारा घर, उसके भाई और उसके पिता का सारा घर चल पड़ा, और इसलिए काफ़िला बहुत बड़ा हो गया। वे अताद नामक स्थान पर पहुँचे, जो यरदन नदी के उस पार स्थित है। वहाँ उन्होंने याकूब के लिए सात दिन तक जोर-जोर से रोया और उसे उस दोहरी गुफा में दफनाया जिसे इब्राहीम ने दफनाने की जगह के लिए खरीदा था। अपने पिता का अंतिम संस्कार करने के बाद, यूसुफ ने अपने भाइयों और उसके साथ आए सभी लोगों के साथ मिस्र लौट आए।

अपने पिता के अंतिम संस्कार के बाद, भाइयों ने एक-दूसरे से कहा:

'क्या होगा अगर यूसुफ़ को हमारे द्वारा किए गए बुरे काम याद आ जाएँ और वह हमसे उस सारे नुकसान का बदला ले ले जो हमने उसे पहुँचाया था?'

वे यूसुफ़ के पास गए और कहा:

'मरने से पहले, आपके पिता ने आपसे एक वाचा की थी, यह कहते हुए, "अपने भाइयों के अपराध और पाप को क्षमा करो; तुम्हारे साथ की गई विश्वासघात के लिए उन्हें क्षमा करो।" अब हम स्वयं आपसे क्षमा मांगते हैं कि आपने हमारे साथ जो अन्याय किया है, उसे क्षमा करें।'

जब उन्होंने ये बातें उससे कहीं तो यूसुफ़ रो पड़ा। फिर उसके भाइयों ने उससे फिर कहा:

'हम आपके दास हैं, हे स्वामी।'

यूसुफ ने उनसे उत्तर दिया:

'डरो मत, मेरे भाइयो, क्योंकि मैं भी परमेश्वर से डरता हूँ। तुमने मेरे विरुद्ध बुराई की मंशा रखी थी, परन्तु परमेश्वर ने इसे भलाई में बदल दिया। इसलिए डरो मत। मैं तुम्हारा और तुम्हारे परिवारों का पालन-पोषण करूँगा।'

योसेफ के वचन उसके भाइयों के हृदय को बहुत भाए, और वे आश्वस्त हुए। इस प्रकार योसेफ, उसके भाई और उसके पिता का सारा कुल मिस्र में बस गए। योसेफ एक सौ दस वर्ष का हुआ। उसने न केवल एफ्राइम के वंशजों को, बल्कि मनश्शे के पुत्र माकीर के वंशजों को भी देखा। अपनी मृत्यु से पहले, योसेफ ने अपने भाइयों से कहा:

'मैं मरने ही वाला हूँ। लेकिन जब परमेश्वर तुम्हें देखने आएँ और तुम्हें इस देश से उस देश में ले जाएँ जिसका उन्होंने हमारे पितरों—अब्राहाम, इसहाक और याकूब—से वादा किया था, तो मेरी हड्डियाँ यहाँ से अपने साथ ले जाना।'

जोसेफ की ग्यारह वर्ष की आयु में मृत्यु हो गई। उन्हें मिस्र में एक ताबूत में दफनाया गया।

निष्कर्षत; हम अपने प्रभु यीशु मसीह की महिमा करते हैं, जैसा कि जोसेफ[2802] द्वारा चित्रित किया गया है, जो पिता और पवित्र आत्मा के साथ महिमा प्राप्त करते हैं, अब और सदा के लिए और युगों-युगों तक। आमीन।

14 अप्रैल

1 अप्रैल (पुराना कैलेंडर)

इस दिन हम अपने पूजनीय पिता मकरियुस कन्फैसर का स्मरण करते हैं, जिन्होंने पवित्र प्रतिमाओं की पूजा करने के लिए कारावास और यातनाएं सहन कीं, और जो लगभग 830 ईस्वी में कॉन्स्टेंटिनोपल के पास अफ्युसिया में निधन कर गए।

इस दिन हम पवित्र शहीदों जेरोंटियस और बेसलिडिस का स्मरण करते हैं, जिन्हें तलवार से मार डाला गया था, और धर्मी अहाज का भी।

उसी दिन, वर्ष 1299 में, बुल्गारिया के संत अव्रामियस की शहादत।

हमारी पूज्य माता मरियम मिस्रवासी का जीवन

1 अप्रैल को स्मरण किया जाता है

'राजा का रहस्य रखना अच्छा है, परन्तु परमेश्वर के कामों को प्रकट करना और प्रचार करना महिमामय है' (तोबित 12:7) – यह बात महादूत राफाएल ने तोबित से तब कही जब उनकी अंधापन का अद्भुत उपचार हुआ। वास्तव में, राजा के रहस्य को न रखना भयानक और विनाशकारी है, जबकि ईश्वर के महिमामय कार्यों के बारे में चुप रहना आत्मा के लिए एक बड़ा नुकसान है। 'और मैं,' संत सोफ्रोनीयस कहते हैं, जिन्होंने मिस्र की पूजनीय मैरी का जीवन लिखा था, 'अपनी चुप्पी के माध्यम से दैवीय कार्यों को छिपाने से डरता हूँ; और, दास की आने वाली दुर्भाग्य (मत्ती 25:18, 25), जिसने ईश्वर द्वारा दिया गया प्रतिभा (talent) जमीन में गाड़ दिया था, मैं उस पवित्र कथा को बताने से खुद को रोक नहीं सकता जो मुझ तक पहुँची है। और कोई यह न सोचे," संत सोफ्रोनीयस आगे कहते हैं, "कि मैंने इस अद्भुत घटना के बारे में कोई संदेह रखने की हिम्मत की है: मेरे लिए पवित्र मामलों में झूठ बोलना उचित नहीं है। यदि, तथापि, कोई ऐसे हैं जो

[2802] चर्च और पवित्र पिताओं की शिक्षा के अनुसार, धर्मी यूसुफ के जीवन के कुछ पहलुओं का एक प्रकारात्मक महत्व है; अर्थात्, वे यीशु मसीह के जीवन के कुछ क्षणों का पूर्वाभास देते हैं, उनकी अपमानित अवस्था और उनकी महिमा दोनों में। जिस प्रकार यूसुफ़ रचल का पहलौठा था, जिसे याकूब अपने सभी बेटों से अधिक प्रेम करता था (उत्पत्ति 37:3), उसी प्रकार प्रभु यीशु मसीह भी कुँवारी मरियम के पहलौठे (मत्ती 1:25) और परमेश्वर के प्रिय पुत्र थे। जैसे कि संत एफ्रेम सीरियाई कहते हैं, प्रभु हमें सभी को बचाने के लिए भेजे गए थे, वैसे ही युवा यूसुफ को उनके पिता याकूब की गोद से उनके भाइयों के पास भेजा गया था; और जैसे ही यूसुफ के निर्दयी भाइयों ने, जब यूसुफ को आते देखा, तो उन्होंने उसके विरुद्ध कपट की साजिश रचनी शुरू कर दी, भले ही वह उनके पिता से उनके लिए शांति लाया था, वैसे ही कठोर-हृदय यहूदियों ने भी उद्धारकर्ता को देखकर कहा: 'सचमुच, यह वारिस है; आओ, हम इसे मार डालें, और सब कुछ हमारा हो जाएगा' (मरकुस 12:7)। जोसेफ को उसके भाइयों की ईर्ष्या के कारण विदेशियों को बेच दिया जाता है, और मसीह को यहूदा द्वारा चाँदी के तीस टुकड़ों के लिए बेचा जाता है (मत्ती 28:15) और फिर, ईर्ष्या के कारण (मत्ती 27:18), गैर-यहूदियों के हवाले कर दिया जाता है (मत्ती 20:19)। अपनी पत्नी पेंटेफ्र की पापपूर्ण प्रवृत्तियों पर काबू पाने के बाद, यूसुफ को जेल में डाल दिया गया; और प्रभु, संसार के सभी पापों को स्वयं पर उठा लेने के बाद, कब्र में रखे गए। कारावास में, यूसुफ कैदियों से घोषणा करता है—एक को दया; दूसरे को दण्ड; और प्रभु, क्रूस पर लटके हुए, ने अपने साथ क्रूस पर चढ़ाए गए दो चोरों में से एक को उद्धार की घोषणा की, और फिर, आत्मा में कैदियों के पास उतरकर, उन्होंने उन्हें उपदेश दिया (1 पतरस 3:19); कारावास से रिहा होने पर, यूसुफ़ को मिस्र के पूरे राज्य पर नियुक्त किया गया, उसे एक नया नाम और बड़े सम्मान मिले, और उसने न केवल मिस्र बल्कि पड़ोसी देशों को भी अकाल से बचाया; और प्रभु यीशु मसीह को, कब्र से पुनरुत्थान के समय, स्वर्ग और पृथ्वी पर सब अधिकार दे दिया गया (मत्ती 28:18) और उसके नाम पर आकाश में और पृथ्वी पर और पृथ्वी के नीचे हर घुटना दण्डवत् करेगा, और हर जी यह स्वीकार करेगा कि प्रभु यीशु मसीह परमप्रभु है, परमेश्वर पिता की महिमा के लिए (फिलि. 2:10–11)। इसलिए, धर्मी यूसुफ को 'मसीह का सच्चा प्रतिरूप' ('पाम संडे' की सेवा, स्मॉल कम्प्लाइन) के रूप में सम्मानित करते हुए, पवित्र चर्च ने यह विधान बनाया है कि उनकी स्मृति पवित्र सप्ताह की शुरुआत में - महा सोमवार को मनाई जाए।

इस वृत्तांत को पढ़कर और इस अति महिमामय घटना से प्रभावित होकर भी विश्वास नहीं करते, तो प्रभु उन पर दया करें, क्योंकि वे मानव स्वभाव की दुर्बलता पर विचार करके उन अद्भुत कार्यों को असंभव मानते हैं जो पवित्र पुरुषों द्वारा किए जाते हैं। हालाँकि, अब मुझे हमारे परिवार में घटित उस गौरवशाली घटना का वृत्तांत शुरू करना चाहिए।

फिलिस्तीन के एक मठ में एक वृद्ध रहते थे, जो अपने जीवन की धार्मिकता और अपने वचन की बुद्धिमत्ता के लिए विख्यात थे, जिन्होंने अपनी युवावस्था से ही साहसपूर्वक मठवासी जीवन को समर्पित कर दिया था। उस वृद्ध का नाम जोसिमा था। (कोई यह न सोचे कि यह विधर्मी जोसिमा है, भले ही उनके नाम एक ही हों: एक ने बदनामी अर्जित की और चर्च से अलग हो गया, जबकि दूसरे ने धार्मिकता का जीवन जिया और महिमा प्राप्त की।) जोसिमा ने तपस्या के सभी चरणों से गुज़रकर महानतम संतों द्वारा सिखाए गए सभी नियमों का पालन किया था। यह सब करते हुए भी, वह दिव्य वचन का अध्ययन करना कभी बंद नहीं करता था: चाहे लेटे हुए हो, उठते समय, काम करते समय, या भोजन लेते समय (यदि वास्तव में इतनी कम मात्रा में जो वह ग्रहण करता था उसे 'भोजन' कहा जा सकता है), वह अथक और लगातार एक ही कार्य में लगा रहा – वह दिव्य भजन गाता था और दिव्य शास्त्रों में शिक्षा प्राप्त करता था। जन्म से ही, उसे एक मठ में सौंप दिया गया था, जहाँ उसने 53 वर्ष की आयु तक बहादुरी से तपस्या की। लेकिन फिर उसे यह विचार सताने लगा कि उसने पूर्ण परफेक्शन प्राप्त कर लिया है और उसे अब किसी मार्गदर्शन की आवश्यकता नहीं है।

'क्या पृथ्वी पर कोई ऐसा संन्यासी है जो मुझे ऐसी तपस्या का उपदेश दे सके और उसका उदाहरण प्रस्तुत कर सके, जो मैंने अभी तक नहीं की है? क्या रेगिस्तान में कोई ऐसा व्यक्ति है जो मुझसे श्रेष्ठ है?'

जब वृद्ध इस पर विचार कर रहे थे, तो एक देवदूत उनके सामने प्रकट हुआ और कहा:

'जोसिमा! तुमने मनुष्य की शक्ति के अनुसार पूरी लगन से प्रयास किया है, और दृढ़ता से तपस्या का मार्ग अपनाया है। हालाँकि, ऐसा कोई मनुष्य नहीं है जो यह कह सके कि उसने पूर्णता प्राप्त कर ली है। तुम्हारे लिए अज्ञात और तुमने जो उपलब्धियाँ हासिल की हैं, उनसे भी अधिक कठिन अभी कृत्य हैं। यह जानने के लिए कि मोक्ष के और कितने मार्ग हैं, अपने देश को, सबसे गौरवशाली पुरखों में से अब्राहम की तरह (उत्पत्ति 12:1) छोड़ दो, और यॉर्डन नदी के किनारे स्थित मठ में जाओ।"

इस आज्ञा का पालन करते हुए, जोसिमा उस मठ से निकल गए जहाँ वे बचपन से रहे थे, जॉर्डन के लिए रवाना हुए और उस मठ में पहुँचे जहाँ ईश्वर की वाणी ने उन्हें निर्देशित किया था।

अपने हाथ से मठ के द्वार को धकेलकर खोलते हुए, ज़ोसिमा को द्वार पर ड्यूटी पर तैनात भिक्षु मिला और उसने उसे अपने मिशन के बारे में बताया। भिक्षु ने मठाधीश को सूचित किया, जिन्होंने आगंतुक वरिष्ठ को अपने पास बुलाने का आदेश दिया। ज़ोसिमा मठाधीश के पास गए और उन्होंने पारंपरिक मठवासी प्रणाम और प्रार्थना की।

मठाध्यक्ष ने पूछा, 'भैया, आप कहाँ से हैं, और आप हम जैसे गरीब बूढ़ों के पास क्यों आए हैं?'

ज़ोसिमा ने उत्तर दिया:

'यह बताने की कोई आवश्यकता नहीं है कि मैं कहाँ से आया हूँ; मैं, पिताजी, अपने लिए आध्यात्मिक लाभ की तलाश में आया हूँ, क्योंकि मैंने आपके बारे में कई महान और प्रशंसनीय बातें सुनी हैं, ऐसी बातें जो आत्मा को ईश्वर तक ले जा सकती हैं।'

'भाई,' मठाधीश ने उत्तर दिया, 'केवल ईश्वर ही आत्मा की दुर्बलताओं को दूर कर सकते हैं; ईश्वर आपको और हम सभी को आत्मा के हित के लिए अपने मार्ग पर चलाएँ, क्योंकि एक व्यक्ति दूसरे को तब तक सुधार नहीं सकता जब तक वह लगातार अपने हृदय की जाँच न करे और ईश्वर की सहायता से, अथक रूप से भक्ति के कार्य न करे। लेकिन चूँकि मसीह के प्रेम ने आपको हमें, इन गरीब बूढ़े लोगों को, मिलने के लिए प्रेरित किया है, तो हमारे साथ ही ठहरिए, यदि आप इसी लिए आए हैं। काश कि वह शुभ-पालक, जिसने हमारे उद्धार के लिए अपनी आत्मा अर्पित की, हम सभी पर पवित्र आत्मा की कृपा भेजता।

ये शब्द कहने के बाद, ज़ोसिमा ने मठाधीश को प्रणाम किया, उनसे प्रार्थना और आशीर्वाद माँगा, और मठ में ही ठहर गए। वहाँ उन्होंने बुजुर्गों को देखा, जो पुण्य कर्मों और धार्मिकता से प्रकाशमान थे, जो उत्कट हृदय से निरंतर भजन, रात भर की प्रार्थना और निरंतर परिश्रम के द्वारा प्रभु की सेवा कर रहे थे। उनके होठों पर सदैव भजन-संग्रह की वाणी रहती थी; उनसे कभी कोई व्यर्थ वचन नहीं सुना गया; वे सांसारिक वस्तुओं की चाह या इस जीवन की चिंताओं को कुछ नहीं जानते थे। उनकी एक ही स्थिर आकांक्षा थी: अपने शरीर को वश में रखना। उनका मुख्य और निरंतर पोषण ईश्वर का वचन था, जबकि वे अपने शरीर को रोटी और पानी से जीवित रखते थे, जितना कि ईश्वर के प्रति प्रत्येक के

प्रेम की अनुमतथिी। यह देखकर, जोसमिा ने उनसे सीखा और आगे आने वाली कठनि परीक्षा के लिए खुद को तैयार कयिा।

बहुत समय बीत गया; पवत्रि महा-उपवास के दनि आ गए, और मठ के द्वार बंद कर दयि गए, जो केवल तभी खुलते थे जब कसिी को मठ के काम से बाहर भेजा जाता था। वह क्षेत्र सुनसान था; न केवल आम लोग वहाँ नहीं आते थे, बल्कि वे इस मठ के अस्तत्वि से भी अनजान थे।

उस मठ में एक ऐसा रविाज़ था जसिके लिए ईश्वर ज़ोसमिा को वहाँ लाए थे। महान लेंट के पहले सप्ताह के दौरान, धर्मवधिमिें, सभी ने प्रभु का परम पवत्रि शरीर और रक्त ग्रहण कयिा और थोड़ा लेंट का भोजन ग्रहण कयिा; फरि सभी चर्च में इकट्ठा हुए, और एक उत्कट, घुटने टेककर की गई प्रार्थना के बाद, बुजुर्गों ने एक-दूसरे से वदिा ली; और प्रत्येक व्यक्तनि, झुककर, आगे की यात्रा के लिए मठाधीश से आशीर्वाद माँगा। इसके बाद, मठ के द्वार खोले जाते थे, और भजन *'प्रभु मेरा प्रकाश और मेरा उद्धार है; मैं कसिसे डरूँगा? प्रभु मेरे जीवन का दृढ़ कलि है; मैं कसिसे भयभीत होऊँगा?' का* गायन करते हुए, (भजन संहति 26:1), भक्षिु रेगस्तिान में नकिल पड़ते और यॉर्डन नदी पार कर जाते। मठ में केवल एक या दो वरषि्ठ ही रह जाते थे, संपत्तकी रक्षा के लिए नहीं – क्योंकि वहाँ चोरी करने के लिए कुछ भी नहीं था – बल्कि इसलिए कि चर्च में दैवीय सेवा जारी रहे। प्रत्येक अपने साथ थोड़ा भोजन ले जाता था, जतिना वे ले सकते थे और चाहते थे, अपनी शारीरकि ज़रूरतों के अनुसार: कोई थोड़ी रोटी, कोई अंजीर, कोई खजूर या पानी में भीगे हुए गेहूं। कुछ लोग अपने शरीर पर पहने फटे-पुराने कपड़ों के सविा कुछ नहीं लेते थे, और जब भूख उन्हें मजबूर करती थी तो वे रेगस्तिान में उगने वाली जंगली जड़ी-बूटयिों पर गुज़ारा करते थे।

यॉर्डन पार करने के बाद, वे सभी अपने-अपने अलग रास्ते चले गए, बहुत दूर, और एक-दूसरे के बारे में कुछ नहीं जानते थे—कि हर कोई कैसे उपवास कर रहा था और तपस्या कर रहा था। अगर कोई कसिी दूसरे को अपनी ओर आते हुए देखता, तो वे दूसरी दशिा में मुड़ जाते और एकांत में, नरिंतर प्रार्थना में अपना जीवन जारी रखते, और नरि्धारति समय पर बहुत कम भोजन लेते थे। इस प्रकार संन्यासयिों ने ग्रेट लेन्ट (महान उपवास) का पूरा समय बतिाया और मसीह के पुनरुत्थान से एक सप्ताह पहले मठ लौट आए, जब चर्च, खजूर की टहनयिों के साथ[2803] , पाम संडे (खजूर रविवार) का पर्व भव्यता से मनाती है। मठ में पहुँचने पर, भाइयों में से कसिी ने भी एक-दूसरे से यह नहीं पूछा कि उन्होंने रेगस्तिान में अपना समय कैसे बतिाया या वे क्या कर रहे थे, क्योंकि उनके पास गवाह के रूप में केवल उनका अपना वविेक था। यॉर्डन पर स्थति मठ का यही मठीय नयिम था।

जोसमिा ने भी, उस मठ की प्रथा के अनुसार, यॉर्डन नदी पार की, और अपने नाजुक शरीर के लिए अपने साथ थोड़ा भोजन और वे कपड़े ले गए जो वह हर समय पहनते थे। रेगस्तिान में भटकते हुए, उन्होंने प्रार्थना का अपना तपस्वीय करतब ( ) कयिा और यथासंभव भोजन से परहेज़ कयिा। वह बहुत कम सोता था; जहाँ भी रात उसे पाती, वह ज़मीन पर बैठकर थोड़ी देर सो जाता, और सुबह-सुबह उठकर अपने तपस्या के प्रयास को जारी रखता। वह और भी अधकि रेगस्तिान में गहराई तक जाने और वहाँ कोई तपस्वी खोजने के लिए लालायति था जो उसे उपदेश दे सके।

बीस दनि की यात्रा के बाद, वह एक बार रुका और, पूर्व की ओर मुड़कर, छठे घंटे का[2804] गाने लगा, अपनी सामान्य प्रार्थनाएँ करते हुए: अपने तपस्या प्रयास के दौरान, वह हर घंटे गाने और प्रार्थना करने के लिए रुकता था। जैसे ही वह गा रहा था, उसने अपने दाईं ओर एक मानव शरीर की छाया जैसी चीज देखी। डरा हुआ, और यह सोचकर कि यह एक दैवीय प्रकटकिरण है, उसने खुद पर क्रॉस का चहि्न बनाना शुरू कर दयि। जब उसका डर खत्म हो गया और उसकी प्रार्थना समाप्त हो गई, तो वह दक्षणि की ओर मुड़ा और उसने एक नग्न आदमी को देखा, जो धूप से हड्डी तक झुलसा हुआ था, जसिके बाल ऊन की तरह सफेद थे और जो केवल उसकी गर्दन तक ही थे। ज़ोसमिा बड़ी प्रसन्नता से उसी दशिा में भागा: हाल के दनिों में उसने न तो कोई इंसान देखा था और न ही कोई जानवर। जब उस आदमी ने दूर से देखा कि ज़ोसमिा उसकी ओर आ रहा है, तो वह जल्दी से रेगस्तिान में और गहराई में भाग गया। लेकनि ऐसा प्रतीत हुआ कि जोसमिा अपनी वृद्धावस्था और यात्रा की थकान दोनों भूल गए थे, और वे भगोड़े को पकड़ने के लिए दौड़े। वह आदमी तेजी से भाग रहा

[2803] वैई – खजूर की टहनयिाँ (यूहन्ना 12:13, मरकुस 11:8)। वैई सप्ताह – जसिे फूलों का सप्ताह या पाम संडे के नाम से भी जाना जाता है।

[2804] घंटे – यह उन सेवाओं का नाम है जनिमें तीन भजन, कई छंद और प्रार्थनाएँ शामलि होती हैं, जनि्हें दनि के प्रत्येक चौथाई भाग और उद्धारकर्ता के दुखों की वशिषि्ट परस्थितियिों के अनुसार अनुकूलति कयिा गया है। – छठे घंटे पर, कोड़ों से पटिाई के लिए उद्धारकर्ता का जुलूस, कोड़ों से पटिाई स्वयं और क्रूस पर उनके दुखों का स्मरण कयिा जाता है।

था, लेकनि जोसमिा और तेज दौड़े, और जब वे इतनी नजदीक आ गए कि एक-दूसरे की आवाज़ सुन सकें, तो उन्होंने आँसुओं के साथ पुकार लगाई:

'हे सच्चे परमेश्वर के सेवक, जसिके लिए तुमने इस मरुस्थल में नविास कयिा है, तुम मुझ जैसे पापी बूढ़े आदमी से क्यों भाग रहे हो? मुझ जैसे अयोग्य और कमजोर का, अपने इस पराक्रम के पुरस्कार की आशा में, मेरे लिए प्रतीक्षा करो! रुक जाओ, मेरे लिए प्रार्थना करो, और प्रभु परमेश्वर के लिए, जो कसिी से घृणा नहीं करते, मुझ पर अपना आशीर्वाद प्रदान करो।'

इस प्रकार जोसमिा ने आँसुओं के साथ पुकारा। इस बीच, वे एक खोखले स्थान पर पहुँच गए, जो सूखे नदी के बहाव जैसा था। भगोड़ा दूसरी तरफ़ भागा, जबकि जोसमिा, जो थका हुआ था और अब और दौड़ने की ताकत नहीं रखता था, ने अपनी आँसुओं भरी वनितयिों को तीव्र कर दयिा और रुक गया। फरि जोसमिा से भाग रहा वह व्यक्ति अंततः रुका और बोला:

'Abba[2805] , ज़ोसमिा! भगवान के लिए, मुझे क्षमा करें कि मैं आपके सामने नहीं आ सकी: मैं एक महलिा हूँ, जैसा कि आप देख सकते हैं, नग्न, और मेरे पास अपनी नग्नता ढकने के लिए कुछ भी नहीं है। लेकनि अगर आप मुझ पापी पर अपनी प्रार्थना और आशीर्वाद देना चाहते हैं, तो कृपया अपने कपड़ों में से कुछ फेंक दें जसिसे मैं खुद को ढक सकूँ, और फरि मैं प्रार्थना के लिए आपसे मुड़ूँगी।'

जोसमि को भय और भयभीतता सताने लगी जब उसने अपना नाम उस व्यक्ति से सुना जसिने उसे कभी नहीं देखा था और न ही उसके बारे में कुछ सुना था।

'अगर वह इतनी सूक्ष्मदर्शी न होती,' उसने सोचा, 'तो उसने मुझे नाम से नहीं पुकारा होता।'

उसने तुरंत उसकी वनिती मान ली, अपने फटे-पुराने कपड़े उतार दिए, मुड़ गया और उन्हें उसकी ओर फेंक दयिा। कपड़े लेकर उसने कमर कस ली और अपनी नग्नता को यथासंभव ढक लयिा। फरि उसने जोसमिा से ये शब्द कहे:

'अब्बा ज़ोसमिा, आपने मुझे, एक पापी स्त्री को, क्यों देखना चाहा? क्या आप मुझसे कुछ सुनना या जानना चाहते हैं, और क्या इसी कारण आप इस कठनि यात्रा से नहीं हचिकचिाए?'

लेकनि ज़ोसमिा ज़मीन पर लोट गए और उससे आशीर्वाद माँगा। वह भी ज़मीन पर लोट गई, और इस प्रकार वे दोनों वहाँ एक-दूसरे से आशीर्वाद माँगते हुए लेटे रहे; केवल एक ही शब्द सुनाई दे रहा था: 'मुझे आशीर्वाद दीजिए!' बहुत समय बाद, उसने उस वृद्ध से कहा:

'अब्बा ज़ोसमिा! आपको मुझे आशीर्वाद देना होगा और एक प्रार्थना करनी होगी, क्योंकि आप एक पुरोहति के रूप में नयिुक्त हैं और कई वर्षों से पवत्रि वेदी के सामने खड़े होकर दैवीय रहस्यों का अनुष्ठान करते आए हैं।'

ये शब्द उस वृद्ध में और भी अधकि भय भर गए। जोर-जोर से रोते हुए, वह अपनी काँपती साँसें संभालते हुए उससे बोला:

'हे आध्यात्मकि माता! आपने शरीर की दुर्बलताओं को वश में कर ईश्वर के समीप आकर प्रवेश कयिा है। ईश्वर का वरदान आप में अन्य लोगों की अपेक्षा अधकि स्पष्ट है: आपने मुझे कभी देखा नहीं, फरि भी आप मुझे नाम से पुकारती हैं और एक पुरोहति के रूप में मेरे पद को जानती हैं। अत; ईश्वर के लिए, मुझे आशीर्वाद दें और अपनी पवत्रि प्रार्थना मुझ पर अर्पति करें।'

वरषि्ठ की दृढ़ता से प्रभावति होकर, उसने इन शब्दों से उसे आशीर्वाद दयिा:

– मानव आत्माओं के मोक्ष की कामना करने वाले ईश्वर धन्य हैं!

ज़ोसमिा ने उत्तर दयिा, 'आमेन,' और दोनों ज़मीन से उठ खड़े हुए। फरि उसने वृद्ध से पूछा:

'हे ईश्वर के पुरुष! आप मुझसे मलिने क्यों आना चाहते थे, जबकि मैं नग्न और कसिी भी सद्गुण से रहति हूँ? परन्तु पवत्रि आत्मा की कृपा आपको यहाँ ले आई है, ताकि जब समय आए, तो आप भी मुझे पृथ्वी पर जीवन के बारे में बता सकें। मुझे बताइए, पतिाजी, ईसाई, ज़ार और कलीसयिा के संत अब कैसे जीवन यापन कर रहे हैं?'

[2805] अब्बा – पति, मार्गदर्शक।

ज़ोसमिा ने उत्तर दयिा, 'आपकी पवत्रि प्रार्थनाओं के द्वारा, ईश्वर ने कलीसयिा को स्थायी शांति प्रदान की है[2806] । लेकनि इस अयोग्य वृद्ध की वनितयिों पर ध्यान दें और संपूर्ण संसार तथा मुझ पापी के लिए प्रभु से प्रार्थना करें, ताकि मरुभूमि में मेरी भटकन व्यर्थ न जाए।'

उसने कहा, 'अब्बा ज़ोसमिा, वास्तव में आपको ही, जो एक पवत्रि पद धारण करते हैं, मेरे और सभी के लिए प्रार्थना करनी चाहिए; क्योंकि यही आपका दायत्वि है। लेकनि आज्ञाकारिता के कर्तव्य से, मैं वही करूँगी जो आप चाहते हैं।'

यह कहकर वह पूर्व की ओर मुड़ी; अपनी आँखें ऊपर उठाकर और अपने हाथ उठाकर, वह प्रार्थना करने लगी, लेकनि इतनी धीमी आवाज़ में कि जोसमिा उसकी प्रार्थना के शब्द न सुन सके और न समझ सके। काँपता हुआ, वह चुपचाप, सरि झुकाए खड़ा रहा।

उन्होंने बताया, 'मैं ईश्वर को गवाह मानता हूँ कि कुछ देर बाद मैंने अपनी आँखें उठाईं और उसे ज़मीन से अपनी कोहनी पर उठाए हुए[2807] देखा; इस प्रकार वह हवा में खड़ी होकर प्रार्थना कर रही थी।' यह देखकर जोसमिा भय से काँप उठे, आँसुओं से जमीन पर गरि पड़े, और केवल इतना ही कह सके:

'हे प्रभु, दया करो!'

लेकनि फरि उसे यह वचिार सताने लगा कि शायद यह कोई आत्मा या भूत है, जो ईश्वर से प्रार्थना कर रही हो। लेकनि संत ने, एल्डर को जमीन से उठाते हुए, कहा:

'जोसमिा, तुम भूत के वचिार से क्यों परेशान हो? तुम्हें ऐसा क्यों लगता है कि मैं प्रार्थना करने वाली कोई आत्मा हूँ?' मैं आपसे वनिती करती हूँ, धन्य पति, नश्चिति हो जाइए कि मैं एक पापी स्त्री हूँ, जो केवल पवत्रि बपतस्मिा से शुद्ध हुई है; नहीं, मैं कोई आत्मा नहीं हूँ, बल्कि मिट्टी, धूल और राख हूँ; मैं मांस हूँ जो आत्मा होने का दंभ नहीं करता।

ये शब्द कहते ही, उसने अपने माथे, आँखों, होंठों और छाती पर क्रॉस का चहि्न बनाया, और आगे कहा:

[2808]'ईश्वर हमें दुष्ट से और उसकी फंदों से बचाए, क्योंकि उसकी लड़ाई हमसे बड़ी है।'

ये शब्द सुनकर, वृद्ध उसके पैरों पर गरि पड़ा और आँसुओं के साथ बोला:

'हमारे प्रभु यीशु मसीह के नाम पर, जो कुँवारी से जन्मे सच्चे परमेश्वर हैं, जनिके लिए तुमने, नग्न होकर, अपने शरीर को इस प्रकार तपाया है, मैं तुमसे वनिती करता हूँ: मुझसे कुछ भी न छपिाओ, बल्कि मुझे अपने जीवन के बारे में सब कुछ बताओ, और मैं परमेश्वर की महानता की महमिा करूँगा।' ईश्वर के लिए, मुझे सब कुछ बताइए—घमंड करने के लिए नहीं, बल्कि मुझे, जो एक पापी और अयोग्य हूँ, शकि्षा देने के लिए। मैं अपने ईश्वर पर वशि्वास करती हूँ, जनिके लिए आप जीते हैं, कि मैं इस मरुभूमि में वशिेष रूप से इसलिए आई हूँ ताकि ईश्वर आपके कर्मों को महमिामय कर सकें: हम ईश्वर के मार्गों का वरिोध करने में शक्तहिीन हैं। यदि ईश्वर की इच्छा न होती कि आप और आपके पराक्रम प्रसद्धि हों, तो उन्होंने न तो मुझे आपका दर्शन कराया होता, और न ही मुझे मरुभूमि के इतने लंबे सफर के लिए बल दयिा होता।

ज़ोसमिा ने उसे दूसरे तरीकों से भी मनाने की बहुत कोशशि की, लेकनि उसने, उसे उठाते हुए, कहा:

'मुझे क्षमा करें, हे पवत्रि पति, मुझे अपने कलंकति जीवन के बारे में बात करने में शर्म आती है। लेकनि चूँकि आपने मेरा नग्न शरीर देखा है, मैं अपनी आत्मा को भी उजागर करूँगी, और आप जान जाएँगे कि इसमें कतिनी लज्जा और कलंक भरा है। मैं अपने दलि को आपके सामने खोलूँगी, बनिा घमंड कए, जैसा आपने कहा: मेरे पास घमंड करने के लिए क्या है, मैं तो शैतान का चुना हुआ पात्र हूँ! लेकनि अगर मैं अपने जीवन की कहानी सुनाना शुरू करूँ, तो आप साँप की तरह मुझसे दूर भाग जाएँगे; आपके कान मेरी अय्याशी की कथा सहन नहीं कर पाएँगे। फरि भी, मैं कुछ भी छुपाए बनिा यह कहानी सुनाऊँगी; मैं आपसे बस इतना नविेदन करती हूँ कि जब आप मेरे जीवन के बारे में जानें, तो मेरे लिए प्रार्थना करना न भूलें, ताकि मुझे न्याय के दनि कुछ दया मलि सके।

वरषि्ठ, अनायास बहते आँसुओं के साथ, उससे अपनी जीवन-कथा सुनाने का आग्रह करने लगे, और उसने अपने बारे में इस प्रकार कहना शुरू कयिा:

[2806] यह छठी शताब्दी की शुरुआत में था, जब उत्पीड़न पहले ही समाप्त हो चुके थे और वधिर्म शांत हो चुके थे, और ईसाई चर्च को शांति और सुकून का आनंद मलि रहा था।

[2807] *एक 'लोकोट'* या *'लाकोट'* कोहनी से मध्यमा उँगली की नोक तक की लंबाई की एक इकाई है, जो 10½ वर्शोक के बराबर होती है।

[2808] 'ब्रान' – एक हमला, एक साज़शि।

'मैं, हे पवत्रि पिता, मिस्र में पैदा हुई थी, लेकिन जब मैं बारह साल की थी, जबकि मेरे माता-पिता जीवित थे, मैंने उनके प्यार को ठुकरा दिया और अलेक्ज़ेंड्रिया के लिए निकल पड़ी[2809] । जहाँ तक इस बात का सवाल है कि मैंने अपनी कुँवारी पवत्रिता कैसे खोई और अनियंत्रित तथा अतृप्त रूप से व्यभिचार में कैसे लिप्त हो गई – मैं शर्म के मारे इसके बारे में सोच भी नहीं सकती, और तो और, इसके बारे में विस्तार से बात करना तो दूर की बात है; मैं केवल संक्षेप में कहूँगी, ताकि आप मेरी अनियंत्रित कामुकता को जान सकें। सत्रह वर्षों तक, और उससे भी अधिक समय तक, मैंने हर किसी के साथ व्यभिचार किया, किसी उपहार या भुगतान के लिए नहीं, क्योंकि मैं किसी से कुछ भी लेना नहीं चाहती थी, बल्कि मैंने सोचा कि अधिक पुरुष मुफ्त में मेरे पास आएंगे और मेरी कामवासना को तृप्त करेंगे। यह मत सोचिए कि मैं अमीर थी और इसलिए कुछ लेने से इनकार करती थी – नहीं, मैं गरीबी में रहती थी, अक्सर भूखी रहती थी, भूसी कातने का काम करती थी, फिर भी मैं हमेशा व्यभिचार की कीचड़ में और भी गहरे डूबने की इच्छा से ग्रस्त रहती थी: मैंने जीवन को अपमान की एक निरंतर अवस्था के रूप में देखा। एक दिन, फसल काटने के दौरान, मैंने बहुत सारे पुरुषों को – मिस्र और लीबिया के लोगों को[2810] – समुद्र की ओर जाते देखा। मैंने एक राहगीर से पूछा कि ये लोग कहाँ इतनी जल्दी जा रहे हैं। उसने जवाब दिया कि वे पवत्रि और जीवन-दायक क्रूस के उत्थान के आगामी पर्व के लिए यरूशलेम जा रहे हैं। जब मैंने पूछा कि क्या वे मुझे भी अपने साथ ले जाएँगे, तो उसने कहा कि अगर मेरे पास पैसे और भोजन हैं, तो कोई भी मेरे रास्ते में नहीं आएगा। मैंने उससे कहा: 'नहीं, भाई, मेरे पास न तो पैसे हैं और न ही भोजन, लेकिन मैं फिर भी जाऊँगा और उसी जहाज पर चढ़ जाऊँगा, और वे मेरी व्यवस्था कर देंगे: मैं भुगतान के बदले में अपना शरीर उन्हें अर्पित करूँगा।' 'मैं इसलिए जाना चाहता था ताकि - मुझे क्षमा करें, पिताजी - मेरे चारों ओर ऐसे कई लोग हों जो कामवासना के लिए तैयार हों। मैंने आपसे कहा था, पिता ज़ोसिमा, कि मुझे अपनी लज्जा के बारे में बोलने के लिए मजबूर न करें। ईश्वर मेरी गवाही हैं, मुझे डर है कि अपने शब्दों से मैं स्वयं हवा को भी अपवत्रि कर रहा हूँ।'

अपने आँसुओं से धरती को सींचते हुए, जोसिमा ने उद्घोष किया:

'बोलो, मेरी माँ, बोलो! अपनी शिक्षाप्रद कथा जारी रखो!'

'जिस युवक से मैं मिली,' उसने अपनी बात जारी रखी, 'मेरे निर्लज्ज शब्द सुनकर हँसा और चला गया। जहाँ तक मेरी बात है, मैंने जो चरखा इस्तेमाल कर रही थी, वह छोड़ दिया और समुद्र की ओर भागी। यात्रियों पर नज़र डालते हुए, मैंने उनके बीच किनारे पर खड़े दस या उससे अधिक पुरुषों को देखा; वे जवान थे और ठीक वैसे ही लग रहे थे जैसी मैं चाहती थी। अन्य लोग पहले ही जहाज पर चढ़ चुके थे।

निर्मलता से, जैसा कि मेरा रिवाज था, मैं वहाँ खड़े लोगों के पास भागी और कहा: 'मुझे अपने साथ ले चलो; मैं तुम्हें खुश करूँगी।' वे इन और इसी तरह की बातों पर हँसे, और मेरी निर्लज्जता को देखकर, मुझे जहाज पर चढ़ा लिया, और हम समुद्र में निकल पड़े। मैं तुम्हें कैसे बताऊँ, हे ईश्वर के बंदे, कि आगे क्या हुआ? यात्रा के दौरान जहाज पर मैंने जो लज्जास्पद कृत्य किए, उनकी कथा कौन सी जीभ, कौन सा कान सहन कर सकता है: मैंने लोगों को उनकी इच्छा के विरुद्ध पाप की ओर ले जाया, और ऐसा कोई लज्जास्पद कार्य नहीं था जिसे मैंने उन्हें करना न सिखाया हो। मुझ पर विश्वास करें, पिताजी, मुझे इस बात पर भय लगता है कि समुद्र ने ऐसी दुराचार को सहन किया, कि जब मैंने इतने सारे लोगों को भटका दिया, तो धरती फटकर मुझे जीवित ही नर्क में नहीं ले गई! लेकिन मुझे लगता है कि ईश्वर मेरे पश्चाताप का इंतजार कर रहे थे, वे एक पापी की मृत्यु नहीं चाहते थे, बल्कि धैर्यपूर्वक मेरे धर्म-परिवर्तन का इंतजार कर रहे थे।

मैं इन्हीं भावनाओं के साथ यरूशलेम पहुँचा, और त्योहार तक के सभी दिनों में मैंने पहले की तरह—और उससे भी बुरा—आचरण किया। मैं जहाज़ पर मेरे साथ रहे युवकों से ही संतुष्ट नहीं था, बल्कि मैंने अपनी दुराचार के लिए स्थानीय निवासियों और यात्रियों को भी खोजा। अंतत; पवत्रि क्रूस की उन्नति का पर्व आ गया, और मैं, पहले की तरह, युवकों को बहकाने के लिए निकल पड़ा। सुबह-सुबह जब एक के बाद एक सब लोग चर्च जा रहे थे, तो मैं भी निकल पड़ा; मैं भीड़ के साथ प्रवेश-कक्ष में घुसा और जब प्रभु के पवत्रि क्रूस की महोत्सव की वेला आई, तो मैंने भी लोगों के साथ चर्च में जाने की कोशिश की। चाहे मैं जितना भी धक्का-मुक्की करके आगे बढ़ने की कोशिश करूँ, भीड़ मुझे एक तरफ धकेल देती

[2809] अलेक्ज़ेंड्रिया – भूमध्य सागर के तट पर, नील नदी के मुहाने पर, महान सिकंदर द्वारा स्थापित एक प्रसिद्ध शहर। रोम के बाद, अलेक्ज़ेंड्रिया दुनिया का सबसे प्रमुख शहर था और यह व्यापार, उद्योग और विशेष रूप से, मूर्तिपूजक शिक्षा का केंद्र था; जबकि ईसाई धर्म की शुरुआती शताब्दियों में, यह ईसाई प्रबोधन का पालना था। आज, अलेक्ज़ेंड्रिया भूमध्यसागर के सबसे कलिबंद बंदरगाह शहरों और सबसे महत्वपूर्ण व्यापारिक केंद्रों में से एक है।

[2810] लिबियाई उत्तरी अफ्रीका के एक प्रांत, लिबिया के निवासी हैं।

थी। आखरिकार, बड़ी मुश्कलि से, मैं, एक दुर्भाग्यपूर्ण महलिा, चर्च के दरवाजों के पास पहुँची। लेकनि बाकी सब बनिा कसिी रोक-टोक के चर्च में प्रवेश कर गए, जबकि कसिी दव्यि शक्ति ने मुझे प्रवेश करने से रोक दयिा। मैंने फरि से प्रवेश करने की कोशशि की, और फरि से मुझे एक तरफ धकेल दयिा गया, और बरामदे में अकेला छोड़ दयिा गया। यह सोचकर कि यह मेरी नारी कमजोरी के कारण है, मैं फरि से भीड़ में शामलि हो गया, लेकनि मेरी सारी कोशशिें व्यर्थ साबति हुईं; मेरा पापी पैर तो पहले ही दहलीज को छू चुका था; चर्च बनिा कसिी रोक-टोक के सभी का स्वागत कर रहा था, फरि भी वह मुझे, जो कतिनी दुर्भाग्यपूर्ण थी, प्रवेश नहीं करने दे रहा था; मानो जानबूझकर वहाँ तैनात, एक बड़ी सैन्य टुकड़ी—एक अज्ञात शक्ति—ने मुझे रोक लयिा—और इस तरह मैं खुद को एक बार फरि बरामदे में पाया। तीन-चार बार मैंने अपनी ताकत जुटाई, लेकनि सब व्यर्थ गया। थक-हार कर, मैं अब प्रवेश करने वालों की भीड़ में से अपना रास्ता नहीं बना पा रही थी; तंग जगह और धक्का-मुक्की से मेरा पूरा शरीर दुख रहा था। नराश होकर, मैं शर्म के मारे पीछे हट गई और बरामदे के एक कोने में खड़ी हो गई। होश में आकर, मैं सोचने लगी कि कौन सा पाप मुझे प्रभु के क्रूस के जीवन-दायक वृक्ष को देखने से रोक रहा था। उद्धार करने वाली बुद्धि का प्रकाश, परमेश्वर का वह सत्य जो आत्मा की आँखों को प्रकाशति करता है, मेरे हृदय को छू गया और उसने यह प्रकट कयिा कि मेरे कर्मों की घृणतिता ही मुझे चर्च में प्रवेश करने से रोक रही थी। तब मैं कड़वाहट से रोने लगा, ससिकयिों से अपनी छाती पीटते हुए और अपने हृदय की गहराई से आहें भरते हुए।

इसलिए मैं प्रवेश-कक्ष में खड़ी होकर रोई। अपनी आँखें उठाकर मैंने दीवार पर परमेश्वर की अति पवित्र माता का एक आइकन देखा, और अपनी शारीरकि तथा आध्यात्मकि दोनों दृष्टियाँ उसकी ओर मोड़कर, मैं चल्लिाई:

– हे देवी, हे कुँवारी जो देह में ईश्वर को जन्म देने वाली हो! मैं जानती हूँ, मैं गहराई से जानती हूँ कि जब मैं, जो अशुद्ध और नीच हूँ, आपके मुखमंडल को नहिारती हूँ, हे सदा-कुँवारी, शरीर और आत्मा से पवत्रि, तो आपके लिए कोई सम्मान या प्रशंसा नहीं है। यह उचति ही है कि आपकी कुँवारी पवत्रिता मुझ वेश्या से घृणा करे और मुझे घनि आए। पर मैंने सुना है कि आपसे जन्मे ईश्वर ने वशिेष रूप से पापयिों को पश्चाताप के लिए बुलाने हेतु ही अवतार लयिा। तो फरि मेरी सहायता के लिए आओ, हे तुम जनि्हें सभी ने त्याग दयिा है! आज्ञा करें कि मुझे चर्च में प्रवेश से न रोका जाए; कृपा करें कि मैं उस सम्माननीय वृक्ष को देख सकूँ, जसि पर वह, जसिे आपने जन्म दयिा, शरीर में सूली पर चढ़ाया गया था, और उसने पापयिों और मेरे उद्धार के लिए अपना पवत्रि रक्त बहाया। हे माता, आज्ञा दीजिए कि गिरिजाघर के द्वार मेरे लिए भी खोल दिए जाएँ, यद्यपि मैं इसके लायक नहीं हूँ, ताकि मैं दैवीय क्रूस की पूजा कर सकूँ! अपने पुत्र के समक्ष मेरी वश्विसनीय मध्यस्थता करें, ताकि मैं अब व्यभचिार की अशुद्धता से अपने शरीर को कलंकति न करूँ, बल्कि क्रूस को नहिारते हुए, मैं संसार और उसकी प्रलोभनों का त्याग करूँ और वहाँ जाऊँ जहाँ आप मुझे ले जाती हैं, हे मेरे उद्धार की मध्यस्थ।

तो मैंने कहा। वश्विास से प्रोत्साहति और परमेश्वर की माता की दया में आश्वस्त होकर, मैं, मानो कसिी के कहने पर, उस जगह से हट गई जहाँ मैं प्रार्थना कर रही थी और चर्च में प्रवेश करने वाली भीड़ में मलि गई। अब कसिी ने मुझे दूर नहीं धकेला और न ही मुझे चर्च के दरवाजों तक पहुँचने से रोका। मुझे भय और आतंक सताने लगा; मैं पूरे शरीर से काँपने लगा। दरवाज़ों तक पहुँचकर, जो पहले मेरे लिए बंद थे, मैं बनिा कसिी कठनिाई के पवत्रि चर्च में प्रवेश कर गया और मुझे जीवन-दायक वृक्ष की एक झलक देखने का सौभाग्य मलिा; मैंने ईश्वर के रहस्यों को समझा और यह महसूस कयिा कि ईश्वर पश्चातापी लोगों को अस्वीकार नहीं करते। मैं ज़मीन पर गरि पड़ा, पवत्रि क्रूस के सामने झुक गया और काँपते हुए श्रद्धा से उसे चूमा। फरि मैं चर्च से बाहर अपने मध्यस्थ की प्रतमिा - परमेश्वर की माता - के पास गया और उनके पवत्रि चत्रि के सामने घुटने टेककर इस प्रकार प्रार्थना की:

'हे सर्वदा धन्य कुँवारी, हमारी माता, मेरी प्रार्थना को तुच्छ न समझते हुए, आपने मुझे मानवता के प्रति अपना महान प्रेम दखिाया है। मैंने प्रभु की महमिा देखी है, यद्यपि मैं उसे देखने के लिए एक भटका और अयोग्य आत्मा हूँ! परमेश्वर की महमिा हो, जो आपके लिए, पापयिों का पश्चाताप स्वीकार करते हैं!' एक पापी होने के नाते, मैं बस इतना ही सोच और शब्दों में कह सकता हूँ। अब, हे माता, वह समय आ गया है जब मुझे अपना वचन पूरा करना है, और मैं आपको अपनी मध्यस्थ के रूप में पुकारता हूँ: अपनी इच्छा के अनुसार मेरा मार्गदर्शन करें, और मुझे सखिाएँ कि पश्चाताप के मार्ग पर मोक्ष कैसे प्राप्त कयिा जाए।

इन शब्दों के बाद, मैंने एक आवाज़ सुनी, मानो दूर से आ रही हो:

'यदि तुम यॉर्डन पार करोगे, तो तुम्हें पूर्ण शांति मलिेगी।'

इन शब्दों को यह वशि्वास लेकर सुना कि वे मुझसे ही कहा गया था, मैं आँसू भरी आँखों से '[2811] ' नामक मसीह की माता की प्रतमिा को नहिारते हुए पुकार उठा:

'हे देवी, हे परमेश्वर की माता, मुझे न छोड़िए!'

ये शब्द कहकर, मैं चर्च के बरामदे से बाहर नकिली और अपने रास्ते पर तेज़ी से चल पड़ी। रास्ते में, कसिी ने मुझे तीन सक्कि देते हुए कहा:

'माँ, इसे लो।'

मैंने सक्कि ले लिए, तीन रोटी खरीदीं और वक्रिेता से जॉर्डन का रास्ता पूछा। जब मुझे पता चल गया कि कौन सा द्वार उस दशिा में जाता है, तो मैं रोते हुए जल्दी से चल पड़ा। इस प्रकार मैंने पूरा दनि रास्ते में ही बतिाया, राहगीरों से रास्ता पूछते हुए, और उस दनि के तीसरे पहर तक, जब मुझे सूर्यास्त के समय मसीह के पवत्रि क्रूस का दर्शन करने का सौभाग्य मलिा, मैं यॉर्डन नदी के कनिारे स्थति संत जॉन द बैपटस्टि के चर्च पहुँच गई। चर्च में प्रार्थना करने के बाद, मैं यॉर्डन नदी के कनिारे गया और उस पवत्रि नदी के पानी से अपने हाथ और चेहरे धोए। चर्च में लौटकर, मैंने मसीह के परम शुद्ध और जीवन-दायक रहस्यों को ग्रहण कयिा। फरि मैंने आधी रोटी खाई, यॉर्डन का पानी पयिा, और जमीन पर सो गया। सुबह-सुबह, एक छोटी नाव पाकर, मैं दूसरी कनिारे पहुँचा और एक बार फरि प्रार्थना में अपने मार्गदर्शक, परमेश्वर की माता, की ओर मुड़ा, और उनसे प्रार्थना की कि वे मुझे अपनी इच्छा के अनुसार नर्दिेश दें। इस प्रकार मैं रेगस्तिान में चला गया, जहाँ मैं आज तक भटक रहा हूँ, उस मोक्ष की प्रतीक्षा में जो परमेश्वर मुझे मेरे आध्यात्मकि और शारीरकि दुखों से प्रदान करेंगे।'

ज़ोसमिा ने पूछा:

'माताजी, इस रेगस्तिान में आपके बसने को कतिने वर्ष हो गए हैं?'

उसने उत्तर दयिा, 'मुझे लगता है, जब से मैंने पवत्रि नगर छोड़ा है, 47 वर्ष हो गए हैं।'

'और,' ज़ोसमिा ने पूछा, 'आपको खाने के लिए क्या मलिता है?'

संत ने कहा, 'यॉर्डन पार करने के बाद, मेरे पास ढाई रोटी थीं; वे धीरे-धीरे सूख गईं, मानो पत्थर की हो गई हों, और मैंने उन्हें कई वर्षों तक थोड़ा-थोड़ा करके खाया।'

'आप इतने लंबे समय तक बनिा कसिी प्रलोभन के परेशान हुए, शांत सि कैसे रह पाए?'

'मुझे आपके प्रश्न का उत्तर देने में डर लगता है, फादर ज़ोसमिा: जब मैं उन सताने वाले वचिारों से हुई कठनाइयों को याद करती हूँ जो मुझे परेशान करते थे, तो मुझे डर है कि वे फरि से मुझ पर हावी हो जाएँगे।'

जोसमि ने कहा, 'कोई बात नहीं, महोदया, अपनी कथा में कुछ भी न छोड़ें; मैंने आपसे पूछा ही इसलिए था ताकि मैं आपके जीवन का पूरा ववरिण जान सकूँ।'

फरि उसने कहा:

'मुझ पर वशि्वास कीजिए, फादर ज़ोसमिा, मैं इस रेगस्तिान में सत्रह साल से रह रही हूँ, अपने पागल जुनूनों से ऐसे जूझती रही हूँ जैसे वे क्रूर जानवर हों। जब मैं खाने के लिए बैठती थी, तो मुझे मस्रि में खाए जाने वाले मांस और शराब की तलब होती थी; मुझे अपनी पसंदीदा शराब पीने की तलब होती थी। जब मैं संसार में थी, तो मैं बहुत शराब पीती थी, लेकनि यहाँ मेरे पास पानी भी नहीं था; मैं प्यास से तड़प रही थी और बहुत कष्ट सह रही थी। कभी-कभी मुझ पर एक ऐसी इच्छा हावी हो जाती थी, जो मुझे बहुत परेशान करती थी, कि मैं वे अश्लील गीत गाऊँ जनिकी मैं आदी हो गई थी। तब मैं आँसू बहाती, अपनी छाती पीटती और उन संकल्पों को याद करती जो मैंने रेगस्तिान में आने पर लिए थे। तब, मैं अपने मन की आँखों से, परमेश्वर की परम पवत्रि माता, मेरी मध्यस्थ की प्रतमिा के सामने खड़ी हो जाती थी, और रोते हुए उनसे वनिती करती थी कि वे मेरी आत्मा को परेशान करने वाले वचिारों को मुझसे दूर भगा दें। मैं लंबे समय तक इस तरह रोती रही, जोर-जोर से अपना सीना पीटते हुए, और अंत में ऐसा लगा जैसे मेरे चारों ओर प्रकाश फैल रहा हो, और मैं अपनी बेचैनी से शांत हो गई। पतिाजी, मुझे उन कामुक इच्छाओं का आपसे कबूलनामा कैसे करूँ जो मुझ पर हावी हो गईं? मुझे माफ करें, पतिाजी। मेरे भीतर वासना की आग भड़क उठी और उसने मुझे झुलसा दयिा, और मुझे कामवासना की ओर धकेल दयिा। जब भी मुझ पर ऐसा प्रलोभन आता, मैं ज़मीन पर गरि पड़ता और कड़वाहट से रोता, यह कल्पना करते हुए कि मेरी मध्यस्थ स्वयं मेरे सामने खड़ी हैं, मेरे पाप की नदिा कर रही हैं और इसके लिए मुझे कठोर यातनाओं की धमकी दे रही हैं। ज़मीन पर लोट-पोट

[2811] रूसी वृत्तांतों के अनुसार, इस प्रतमिा को बाद में कॉन्स्टेंटनिोपल में सेंट सोफयिा चर्च में स्थानांतरति कर दयिा गया।

कर लेटे हुए, मैं दनिों-रातों तक नहीं उठता था, जब तक कि वह प्रकाश मुझ पर न चमक उठे और परेशान करने वाले वचिारों को दूर न कर दे। तब मैं अपनी आँखें अपनी मध्यस्थ की ओर उठाता और रेगस्तिान में अपने दुख्खों से उबरने के लिए उससे वनिम्रतापूर्वक मदद की भीख माँगता – और वास्तव में, वह मुझे पश्चाताप में सहायता और मार्गदर्शन प्रदान करती थी। इस प्रकार मैंने 17 वर्ष नरिंतर यातना में बतिाए। और तब से लेकर आज तक, ईश्वर की माता हर बात में मेरी सहायक और मार्गदर्शक रही हैं।

तब ज़ोसमिा ने पूछा:

'क्या तुम्हें भोजन या वस्त्रों की आवश्यकता नहीं थी?'

संत ने उत्तर दयिा:

'जब सत्रह वर्षों के बाद मेरी रोटी खत्म हो गई, तो मैं पौधों पर गुज़ारा करती थी; जॉर्डन पार करते समय जो कपड़े मैंने पहने थे, वे घसि चुके थे, और मैं बहुत कष्ट सहता था, गर्मयिों की तपशि में मुरझा जाता था और सर्दयिों की ठंड में कांपता था; इतना कि कई बार मैं नर्जिीव की तरह जमीन पर गरि पड़ता था और वहाँ लंबे समय तक पड़ा रहता था, अनगनित शारीरकि और मानसकि कठनिाइयों को सहते हुए। लेकनि उस समय से लेकर आज तक, ईश्वर की शक्तनि मेरे पापी आत्मा और मेरे वनिम्र शरीर को हर तरह से बदल दयिा है, और मैं केवल अपनी पूर्व कठनिाइयों को याद करता हूँ, मोक्ष की आशा में अपने लिए अक्षय पोषण पाता हूँ: मैं परमेश्वर के सर्वशक्तमिान वचन से पोषति और वस्त्र-युक्त हूँ, क्योंकि जनिके पास कोई आश्रय नहीं है, उन्होंने पाप के वस्त्र को उतारकर स्वयं को पत्थरों से ढक लयिा है (देखें यॉब 24:8; इब्रानयिों 11:38)।

यह सुनकर कि सिंन्यासनिी पवत्रि धर्मग्रंथों—मोशे, भवष्यिद्वक्ताओं और भजन संहति—के वचन उच्चारण कर रही थी, जोसमिा ने पूछा कि क्या उसने भजन संहति और अन्य पुस्तकों का अध्ययन कयिा था।

उसने मुस्कुराकर उत्तर दयिा, 'ऐसा मत सोचिए कि जिबसे मैं यॉर्डन पार आई हूँ, मैंने आप के सविाय कसिी मनुष्य को देखा है: मैंने तो एक भी जानवर या पशु तक नहीं देखा है।' न मैंने कभी कतिाबों से अध्ययन कयिा है, और न ही मैंने कभी कसिी को उन्हें पढ़ते या गाते हुए सुना है, लेकनि परमेश्वर का वचन हर जगह और हमेशा मन को प्रबुद्ध करता है, और मुझ तक भी प्रवेश करता है, जो संसार के लिए अज्ञात हूँ। लेकनि मैं आपसे वनिती करती हूँ, परमेश्वर के वचन के अवतार के रूप में: मेरे लिए, एक वेश्या के लिए, प्रार्थना करें।

तो उसने कहा। वृद्ध ने आँसुओं से उसके पैरों पर सरि रख दयिा और पुकार कर कहा:

'धन्य है परमेश्वर, जो महान और अद्भुत, अद्भुत और महमिामय कार्य करता है, जो अनगनित हैं! धन्य है परमेश्वर, जसिने मुझे दखिाया है कि वह अपने भयभीत करने वालों को कैसे पुरस्कृत करता है! सचमुच, हे प्रभु, आप उनका साथ नहीं छोड़ते जो आपको खोजते हैं!'

संत ने उस वृद्ध को अपने सामने झुकने नहीं दयिा और कहा:

'हे पवत्रि पति, मैं आपसे हमारे उद्धारकर्ता परमेश्वर, यीशु मसीह की शपथ देती हूँ, कि जो कुछ आपने मुझसे सुना है, वह तब तक कसिी को न बताना जब तक परमेश्वर मुझे इस धरती से न ले जाए; परन्तु अब शांतिसे जाओ; एक वर्ष में आप मुझे फरि देखेंगे, यदि परमेश्वर का अनुग्रह हम पर बना रहे।' लेकनि ईश्वर के लिए, मेरी एक वनिती मानिए: अगले वर्ष के उपवास के दौरान, यॉर्डन नदी को पार मत करना, जैसा कि आप आमतौर पर मठ में करते हैं।"

ज़ोसमिा यह देखकर चकति थे कि वह मठ के नयिम के बारे में बात कर रही थी, और वे बस इतना ही कह सके:

'महमिा परमेश्वर की हो, जो अपने प्रेम करने वालों को पुरस्कृत करता है!'

'तो, हे पवत्रि पति,' उसने कहना जारी रखा, 'जैसा मैं आपको बता रही हूँ, मठ में ही रहें, क्योंकि आपके लिए जाना असंभव होगा, भले ही आप चाहें भी; पवत्रि और महा गुरुवार को, जो मसीह के अंतमि भोज का दनि है, इस अवसर के लिए उपयुक्त पवत्रि पात्र लें, जसिमें जीवन-दायक देह और रक्त हो, उसे यॉर्डन के दूसरी कनिारे के गाँव में लाएँ, और मेरा इंतज़ार करें ताकि मैं जीवन-दायक उपहार प्राप्त कर सकूँ: क्योंकि जिब से मैंने जॉर्डन पार करने से पहले संत जॉन द फॉरेरनर के चर्च में कम्युनयिन ग्रहण कयिा था, आज तक मैंने पवत्रि उपहारों का स्वाद नहीं चखा है। अब मैं यह पूरे हृदय से चाहता हूँ, और मेरी वनिती को अनसुनी न करना, बल्कि उसी घड़ी मुझे जीवन-दायक और दव्यि रहस्य अवश्य लाना जब प्रभु ने अपने शष्यिों को अपने दव्यि भोज में सहभागी बनाया था। जहाँ तुम रहते हो, उस मठ के मठाधीश जॉन से कहना: अपना और अपने भाइयों का ध्यान रखना; ऐसी बहुत सी बातें हैं जनिमें तुम्हें अपने आचरण को सुधारने की आवश्यकता है – पर यह बात अभी नहीं कहना, बल्कि तब कहना जब ईश्वर तुम्हें प्रेरति करें।

इन शब्दों के बाद, उसने फिर से साधु से अपने लिए प्रार्थना करने को कहा और रेगिस्तान में और भी गहराई में चली गई। ज़ोसिमा, ज़मीन पर सिर झुकाकर और ईश्वर की महिमा के लिए उस स्थान को चूमकर जहाँ उसके पैर रखे थे, हमारे ईश्वर मसीह की स्तुति और आशीर्वाद करते हुए अपनी वापसी की यात्रा पर निकल पड़े।

मरुभूमि पार करके, वह ठीक उसी दिन मठ पहुँचा जब वहाँ रहने वाले भाई आमतौर पर लौटते थे। उसने जो देखा था, उसके बारे में चुप्पी साध ली, और बोलने की हिम्मत नहीं की, लेकिन मन ही मन उसने ईश्वर से प्रार्थना की कि उसे उस तपस्वी का प्रिय चेहरा फिर से देखने का अवसर दे। वह दुख के साथ सोच रहा था कि यह साल कितनी धीमी गति से बीत रहा था और कामना करता था कि यह समय एक ही दिन की तरह जल्दी बीत जाए।

जब महा उपवास का पहला सप्ताह शुरू हुआ, तो सभी भ्रातृजन, रीति-रिवाज और मठ के नियम के अनुसार, प्रार्थना और भजन गाने के बाद मरुभूमि में चले गए। केवल जोसिमा, जो एक गंभीर बीमारी से पीड़ित था, मठ में ही रहने के लिए मजबूर था। फिर उसने संत के शब्द याद किए: 'तुम्हारे लिए निकलना असंभव होगा, भले ही तुम चाहो!' जल्द ही अपनी बीमारी से ठीक होकर, जोसिमा मठ में ही रहा। जब भाई लौटे और अंतिम भोज का दिन नज़दीक आया, तो वृद्ध ने जैसा उसे निर्देश दिया गया था, वैसा ही सब कुछ किया: उन्होंने हमारे ईश्वर मसीह के परम पवित्र शरीर और रक्त को एक छोटे प्याले में रखा, और फिर, कुछ सूखे अंजीर और खजूर और पानी में भिगोए हुए थोड़े से गेहूँ वाली एक टोकरी लेकर, वे देर शाम मठ से निकल गए और जॉर्डन नदी के किनारे बैठ गए, उस पूजनीय महिला के आगमन की प्रतीक्षा में। संत के आने में देर हो रही थी, लेकिन जोसिमा अपनी आँखें बंद किए बिना, रेगिस्तान की ओर ध्यान से देखते रहे, इस उम्मीद में कि उन्हें वह दिखाई दे जिसकी वे इतनी लालसा कर रहे थे। बूढ़े ने सोचा, 'शायद मैं उसके मेरे पास आने के लायक नहीं हूँ, या शायद वह पहले आ चुकी है और मुझे न पाकर वापस चली गई है।' ऐसे विचारों से उनकी आँखों में आँसू आ गए; उन्होंने एक आह भरी और, अपनी आँखें उठाकर स्वर्ग की ओर देखते हुए, प्रार्थना करना शुरू कर दिया: 'हे प्रभु, मुझे उस चेहरे को फिर से देखने से वंचित न करें, जिसे आपने मुझे देखने का सौभाग्य दिया है! मुझे इस जगह से शांति पाए बिना, मेरे पापों के बोझ तले दबे हुए, जाने न दें!'

तब उसके मन में एक और विचार आया: 'भले ही वह यॉर्डन नदी तक आ जाए, और नाव न हो, तो वह कैसे पार करके मेरे पास आएगी, जबकि मैं इतना अयोग्य हूँ? हाय मुझ पापी के लिए, हाय मुझ पापी के लिए! किसने मुझसे उसे देखने की खुशी छीन ली है?'

इस प्रकार वृद्ध संत सोच ही रहे थे, जबकि पवित्र महिला नदी तक पहले ही पहुँच चुकी थी। उसे देखते ही जोसिमा आनंद से उठ खड़ा हुआ और उसने ईश्वर का धन्यवाद किया। वह अभी भी इस विचार से पीड़ित था कि वह यॉर्डन पार नहीं कर पाएगी, तभी उसने देखा कि चन्द्रप्रकाश में नहाए हुए संत ने नदी पर क्रॉस का चिह्न बनाया, किनारे से उतरकर पानी में आ गए, और पानी पर ऐसे चले जैसे वह ठोस जमीन हो, और उसकी ओर बढ़े। यह देखकर, चकित जोसिमा ने उसके सामने झुकना चाहा, लेकिन संत, जो अभी भी पानी पर चल रही थी, ने उसे ऐसा करने से रोक दिया और कहा: 'तुम क्या कर रहे हो? तुम एक पुरोहित हो और दिव्य रहस्यों को धारण करते हो!'

वरिष्ठ ने उनके शब्दों का पालन किया, और संत, किनारे पर आकर, उनसे आशीर्वाद माँगा। उस अद्भुत दृश्य से विस्मित होकर, उन्होंने कहा: 'सचमुच, ईश्वर उन लोगों को उनकी क्षमताओं के अनुसार अपने समान बनाने का अपना वादा पूरा करते हैं, जिन्हें बचाया जा रहा है!' महिमा तेरी हो, हे मसीह हमारे ईश्वर, जिन्होंने अपनी दासी के द्वारा मुझे दिखाया है कि मैं अभी भी पूर्णता से कितना दूर हूँ!"

तब संत ने उनसे प्रतीक-विश्वास (Creed) और प्रभु की प्रार्थना (Lord's Prayer) का पाठ करने के लिए कहा। प्रार्थना के अंत में, उन्होंने मसीह के परम शुद्ध और जीवन-दायक रहस्यों को ग्रहण किया और मठवासी रीति के अनुसार, उन्होंने वृद्ध संत को चूम लिया, जिसके बाद उन्होंने आह भरते हुए आँसुओं के साथ कहा:

'हे प्रभु, अब अपने दास को अपनी बात के अनुसार शान्ति में जाने दे, क्योंकि मेरी आँखों ने तेरा उद्धार देख लिया है' (लूका 2:29–30)।

तब, ज़ोसिमा की ओर मुड़कर, संत ने कहा:

'मैं आपसे विनती करती हूँ, पिताजी, मेरी एक और इच्छा पूरी करें: अब अपने मठ चले जाएँ, और अगले साल उसी धारा पर आएँ जहाँ आप मुझसे पहले बात कर चुके हैं; ईश्वर के लिए आएँ, और आप मुझे फिर से देखेंगे: ईश्वर की यही इच्छा है।'

'यदि संभव होता,' पवित्र वृद्ध ने उत्तर दिया, 'तो मैं हमेशा आपको अनुसरण करना और आपका तेजस्वी मुख देखने की कामना करता। लेकिन मैं आपसे इस बूढ़े की इच्छा पूरी करने का अनुरोध करता हूँ: मैंने जो भोजन लाया है, उसमें से थोड़ा चखिए।'

इतना कहकर, उन्होंने उसे अपनी टोकरी में लाया हुआ सामान दिखाया। संत ने अपनी उंगलियों से गेहूं को छुआ, तीन दाने उठाए और उन्हें अपने होठों तक ले जाकर कहा:

'यह काफी है: आध्यात्मिक भोजन की कृपा, जो आत्मा को निर्मल रखती है, मुझे तृप्त कर देगी। एक बार फिर मैं आपसे विनती करता हूँ, हे पवित्र पिता, मेरे लिए प्रभु से प्रार्थना करें, मेरी दीनता को याद करते हुए।'

वरिष्ठ ने उनके सामने ज़मीन पर सिर झुकाया और चर्च, राजाओं, और अपने लिए उनकी प्रार्थनाओं का अनुरोध किया। इस आँसुओं भरी विनती के बाद, वह रोते हुए उनसे विदा हो गए, और उन्हें और अधिक रोकने की हिम्मत नहीं की। भले ही वह चाहते भी, तो उनमें उन्हें रोकने की ताकत नहीं होती। संत ने एक बार फिर जॉर्डन नदी पर क्रॉस का चिह्न बनाया और, पहले की तरह, नदी को सूखी ज़मीन की तरह पार कर गए। वरिष्ठ मठ लौट आए, वे आनंद और भय दोनों से भर गए थे; उन्होंने संत का नाम न जानने के लिए खुद को कोसा, लेकिन उम्मीद की कि अगले साल यह पता लगा लेंगे।

एक और साल बीत गया। ज़ोसिमा मठ की परंपरा के अनुसार एक बार फिर से रेगिस्तान में चले गए और उस स्थान की ओर बढ़े जहाँ उन्हें अपना अद्भुत दर्शन हुआ था। उन्होंने पूरे रेगिस्तान को पार किया, कुछ निशानों से उस स्थान को पहचान लिया जिसकी वे तलाश कर रहे थे, और एक अनुभवी शिकारी की तरह अपने आसपास को ध्यान से देखने लगे, जो कोई बड़ा शिकार ढूंढ रहा हो। हालाँकि, उसे कोई भी अपनी ओर आते हुए दिखाई नहीं दिया। चेहरे पर आँसू बहते हुए, उन्होंने अपनी आँखें आकाश की ओर उठाईं और प्रार्थना करने लगे: 'हे प्रभु, मुझे अपना वह खजाना दिखाओ, जिसे कोई चुरा नहीं सकता, जिसे आपने इस रेगिस्तान में छिपाया है; मुझे वह पवित्र धर्मी महिला दिखाओ, यह देहधारी देवदूत, जिसकी तुलना संपूर्ण विश्व भी नहीं कर सकता!'

जब उसने यह प्रार्थना कही, तो वह वृद्ध उस स्थान पर पहुँचा जहाँ एक नदी बहती थी और किनारे पर खड़े होकर, उसने पूजनीय महिला को पूर्व की ओर मृत पड़ा देखा; उसके हाथ ताबूत में लेटे लोगों की तरह जुड़े हुए थे, उसका चेहरा पूर्व की ओर मुड़ा हुआ था। वह उनकी ओर दौड़े और उनके चरणों में गिरकर, उन्हें श्रद्धापूर्वक चूमने लगे और उन्हें अपने आँसुओं से भिगो दिया। वे बहुत देर तक रोते रहे; फिर, दफ़नाने के लिए निर्धारित भजन और प्रार्थनाएँ पढ़ने के बाद, वे यह सोचने लगे कि क्या उस पूजनीय महिला के शरीर को दफ़नाना संभव होगा, और क्या यह उनके लिए सुखद होगा। तब उसने धन्य महिला के सिर के पास, जमीन पर लिखा एक शिलालेख देखा: 'अब्बा ज़ोसिमा, यहाँ विनम्र मरियम के शरीर को दफनाओ; मिट्टी को मिट्टी में लौटाओ।' मेरे लिए ईश्वर से प्रार्थना करो, जो मिस्र के कैलेंडर के अनुसार फार्मुफिया के महीने में, या रोमन कैलेंडर के अनुसार अप्रैल में, पहले दिन, मसीह के उद्धारक कष्ट की रात को, दिव्य रहस्यों[2812] को प्राप्त करने के बाद परलोक सिधार गई।

लेख पढ़ने के बाद, वृद्ध ने सबसे पहले यह सोचा कि इसे किसने लिखवाया होगा: संत, जैसा कि उसने स्वयं कहा था, लिख नहीं सकती थी। लेकिन वह उस पूजनीय की नाम जानकर बहुत प्रसन्न हुआ। इसके अलावा, उसे पता चला कि संत, यॉर्डन नदी के तट पर पवित्र भोज ग्रहण करने के बाद, एक ही घंटे में अपनी मृत्यु के स्थान पर पहुँच गई थीं—एक ऐसा स्थान जहाँ ज़ोसिमा केवल बीस दिनों की कठिन यात्रा के बाद ही पहुँच पाए थे—और उन्होंने तुरंत ही अपना प्राण ईश्वर को सौंप दिया था।

ज़ोसिमा ने सोचा, 'अब, मुझे संत की आज्ञा का पालन करना चाहिए, लेकिन मैं, एक दीन पापी, हाथ में कोई औज़ार लिए बिना कब्र कैसे खोद सकता हूँ?'

तब उसने अपने पास रेगिस्तान में एक पेड़ की टहनी पड़ी हुई देखी; उसने उसे उठाया और खोदना शुरू कर दिया। हालाँकि, सूखी मिट्टी बूढ़े के प्रयासों के आगे नहीं झुकी; वह पसीने से लथपथ हो गया, फिर भी कुछ हासिल नहीं कर सका। उसने अपनी आत्मा की गहराई से कड़वी आह भरी। अचानक, ऊपर देखने पर, उसने देखा कि एक विशाल सिंह संत के शरीर के पास खड़ा है और उसके पैरों को चाट रहा है। उस वृद्ध संत को उस जानवर को देखकर बहुत डर लगा, और यह डर और भी बढ़ गया क्योंकि उसे संत की कही बात याद आई कि उसने कभी कोई जानवर नहीं देखा था। उन्होंने क्रॉस का चिह्न बनाया, इस बात पर आश्वस्त थे कि दिवंगत संत की शक्ति उनकी रक्षा करेगी। शेर धीरे-धीरे साधु के पास

[2812] संत मेरी का 522 में निधन हो गया।

आने लगा, और उसे प्यार से, कोमल दृष्टि से घूरने लगा। तब ज़ोसिमा ने उस जानवर से कहा: 'महान तपस्वी ने मुझे उनका शरीर दफ़नाने का आदेश दिया था, लेकिन मैं बूढ़ा हूँ और कब्र नहीं खोद सकता; मेरे पास खोदने का कोई औज़ार नहीं है, और मठ बहुत दूर है—मैं वहाँ से उन्हें जल्दी नहीं ला सकता। तो अपने पंजों से एक कब्र खोदो, और मैं इस पूजनीय की देह को दफ़ना दूँगा।"

ऐसा लगा कि शेर ने इन शब्दों को समझ लिया और अपने अगले पंजों से दफ़नाने के लिए पर्याप्त एक गड्ढा खोद दिया। एल्डर ने एक बार फिर उस पूजनीय महिला के पैरों को अपने आँसुओं से भीगा दिया, और पूरी दुनिया के लिए उनकी प्रार्थनाओं का अनुरोध किया, और उसकी लाश को मिट्टी से ढक दिया। संत लगभग नग्न थीं – ज़ोसीमा ने उनकी पहली मुलाकात में जो फटे-पुराने कपड़े उन्हें दिए थे, वे मुश्किल से उनके शरीर को ढक पा रहे थे। फिर दोनों चल दिए: शेर, एक मेमने की तरह शांत, रेगिस्तान की गहराई में, और ज़ोसीमा अपने मठ की ओर, हमारे ईश्वर मसीह का आशीर्वाद लेते और उनकी महिमा करते हुए।

मठ में पहुँचने पर, उन्होंने सभी भिक्षुओं को पूजनीय मैरी के बारे में बताया, और जो कुछ उन्होंने देखा और सुना था, उसमें से कुछ भी छिपाया नहीं। सभी ईश्वर की महानता पर चकित हुए और श्रद्धा, विश्वास और प्रेम के साथ, पूजनीय मैरी की स्मृति का सम्मान करने और उनके निधन के दिन का उत्सव मनाने का संकल्प लिया।

जैसा कि आदरणीय मैरी ने पहले ही आबट ज़ोसिमा को बताया था, आबट जॉन ने मठ में कुछ कमियाँ पाईं और ईश्वर की मदद से उन्हें सुधार दिया। और संत जोसिमा ने, लगभग सौ वर्षों के दीर्घ जीवन के बाद, अपना सांसारिक जीवन समाप्त किया और परमात्मा में विलीन हो गए[2813] । उस मठ के भिक्षुओं ने पारस्परिक शिक्षा के लिए संत मेरी के बारे में उनका वृत्तांत मौखिक रूप से एक-दूसरे को सुनाया, लेकिन उन्होंने संत के कार्यों को लिखित रूप में नहीं उतारा।

'और मैं,' संत सोफ्रोनीयस जोड़ते हैं, 'कहानी सुनकर इसे लिख लिया। मुझे नहीं पता कि शायद कोई और, जो अधिक जानकार हो, पहले ही पूज्यनीय संत के जीवन को लिख चुका है, लेकिन मैंने भी, जहाँ तक मैं कर सका, सब कुछ लिख दिया है, एक ही सत्य को प्रस्तुत करते हुए।' ईश्वर, जो अद्भुत चमत्कार करता है और विश्वास के साथ उसकी ओर मुड़ने वालों पर उदारतापूर्वक अपने उपहारों की वर्षा करता है, उन लोगों को पुरस्कृत करे जो इस वृत्तांत में शिक्षा की खोज करते हैं—जो इसे सुनते हैं, पढ़ते हैं, और इसे दर्ज करने का कष्ट उठाते हैं—और वह उन्हें धन्य मरियम का भाग प्रदान करे, साथ ही उन सभी का भी जो कभी भी अपने धार्मिक विचारों और परिश्रमों के द्वारा ईश्वर को प्रसन्न कर चुके हैं।'

हम भी परमेश्वर, शाश्वत राजा, की महिमा करें, और ईश्वर हमारे प्रभु यीशु मसीह के लिए हमें न्याय के दिन अपनी दया प्रदान करें, जिनके लिए सारी महिमा, सम्मान, शक्ति और आराधना पिता और परम पवित्र तथा जीवन-दायक आत्मा के साथ, अब और हमेशा और युगों-युगों तक है। आमीन[2814] .

ट्रोपारियन, स्वर 8:

हे माता, आप में ही मोक्ष का मार्ग ज्ञात हुआ; क्योंकि मसीह के उदाहरण का अनुसरण करते हुए, आपने क्रूस उठाया और अपने कर्मों द्वारा हमें क्षणभंगुर शरीर की तुच्छता को तिरिस्कार करना और आत्मा की अमर वस्तुओं की परवाह करना सिखाया। अत; हे पूजनीय मरियम, आपकी आत्मा स्वर्गदूतों के साथ आनंदित होती है।

कॉन्टाकियन, स्वर 4:

पाप के कुहासे से बचकर और पश्चाताप के प्रकाश से अपने गौरवशाली हृदय को प्रबुद्ध करके, आप मसीह के पास आए; उनके पास आप सर्व-पवित्र और पवित्र माता, दयालु मध्यस्थ को लाए। इसलिए, आपको अपने अपराधों से क्षमा प्राप्त हुई है, और आप सदैव स्वर्गदूतों के साथ आनंदित होते हैं।

[2813] सम्माननीय जोसिमा का 6वीं शताब्दी के प्रथम भाग में निधन हो गया। उनका पर्व दिवस 4 अप्रैल को मनाया जाता है।

[2814] पवित्र ऑर्थोडॉक्स चर्च ने महा-उपवास के दौरान मिस्र की पूज्य मैरी के जीवन का स्मरण करने की प्रथा स्थापित की है। महा-उपवास के पांचवें सप्ताह के गुरुवार को, मैटिन्स के दौरान, क्रीट के संत एंड्रयू का संपूर्ण प्रायश्चित्तात्मक महा-कैनन पढ़ा जाता है, और इस कैनन से 18 ट्रॉपारिया पूज्य मैरी (मैरी का स्टैंडिंग) को समर्पित किए जाते हैं।

सुज़दाल के हमारे पूजनीय पिता यूथमियस की स्मृति।

1 अप्रैल को स्मरणोत्सव

[2815]आदरणीय यूथमियस का जन्म धर्मनिष्ठ माता-पिता के घर हुआ था। उनका जन्म और पालन-पोषण निज़्नी नोवगोरोड में हुआ था। जब वे वयस्क हुए, तो उनके माता-पिता ने उन्हें पवित्र शास्त्रों का अध्ययन करने के लिए भेजा, और उस धन्य युवक ने अपने साथियों के साथ मिलकर बड़ी लगन से उनका अध्ययन किया, तथा बच्चों के खेलों से पूरी तरह परहेज़ किया। स्वाभाविक रूप से शांत और हर बात में अपने माता-पिता की आज्ञाकारी होने के कारण, वह अक्सर ईश्वर के गिरजाघरों में जाता था, जहाँ उसे एक अँधेरे कोने में एकांत में खड़ा रहना पसंद था, ताकि कोई भी इस संसार की क्षणभंगुर चीजों की बातों से उसका ध्यान न भटका सके, और वह गिरजाघर के गायन और पाठ को पूर्ण एकाग्रता से सुन सके। एक बार, वह एक पवित्र चर्च में गया और सुसमाचार में ये शब्द सुने: 'यदि कोई मेरा अनुसरण करना चाहता है, तो वह अपना त्याग करे, अपना क्रूस उठाए, और मेरा अनुसरण करे' और इसी तरह (लूका 9 और बाद के)। ये शब्द सुनते ही, धन्य यूथमियस ने इस संसार के सुख-साधनों को त्यागने का संकल्प लिया और निज़्नी नोवगोरोड के पास स्थित प्रभु के आरोहण के पेचेरस्की मठ, ' ' गए, जहाँ उन्होंने उस मठ के मठाध्यक्ष, डायोनिसियस नामक व्यक्ति से संन्यास की दीक्षा ग्रहण की। मठ में प्रवेश करने पर, यूथमियस ने स्वयं को महान तपस्या के कार्यों में समर्पित कर दिया। जब दाऊद के भजन लगातार गाए जा रहे होते थे, तो वह आमतौर पर अपने दिन श्रम में बिताता, विभिन्न मठ संबंधी कार्यों को लगन से करता, और रात में वह एक गुफा में चला जाता और वहाँ, आँसुओं के साथ, पूरी रात ईश्वर से प्रार्थना करता। उस धन्य संन्यासी ने ये तपस्या के कार्य अपने गुरु, आदरणीय डायोनिसियिस, की हर बात का पालन करते हुए किए। अपने जीवन में बाद में, वह तपस्या के उस स्तर पर पहुँच गया कि वह कभी-कभी पूरी रात प्रार्थना में बिना सोए बिता देता था, और वह अक्सर ऐसे कठिन कार्यों को करता था। साथ ही, वह अपने आहार में इतना कठोर था कि वह केवल उतना ही खाता था जितना भूख से बेहोश होने से बचने के लिए आवश्यक था, और पानी के अलावा कुछ नहीं पीता था, और वह भी केवल तभी जब उसे बहुत प्यास लगती थी। इसके बाद, उन्हें बेकरी में सेवा का काम सौंपा गया। यहाँ उन्होंने अपने तपस्या के प्रयासों को और भी बढ़ा दिया, क्योंकि वे लगातार पानी ढोते और लकड़ी काटते रहते थे। जल्द ही उन्हें बेकरी में ही सेवा करने का निर्देश दिया गया। वहाँ काम करते समय, रेवरेंड फादर स्वयं को लगातार अविनाशी आग और चबाने वाले कीड़े की शाश्वत यातनाओं की याद दिलाते रहते थे। अक्सर, आग को निहारते हुए, वह अपने आप से कहते थे: 'सहन कर, यूथमियस, ताकि इस आग के माध्यम से तुम शाश्वत आग से बच सको।'

ऐसे कारनामों और आदरणीय यूथमियस के धैर्य को देखकर, हर कोई उन्हें एक इंसान नहीं बल्कि उनके बीच रहने वाले ईश्वर के एक देवदूत के रूप में मानता था।

उस समय, सुज़दाल और निज़्नी नोवगोरोड के प्रमुख राज्यों पर महा राजकुमार बोरिस कॉन्स्टेंटिनोविच[2816] का शासन था। उन्होंने कीव केव्स मठ के मठाधीश, आदरणीय डायोनिसियिस से यह अनुरोध किया कि वे धन्य यूथमियस को सुज़दाल में उनके पास भेजें ताकि वे उनके द्वारा बनाए जाने वाले मठ के निर्माण में सहायता कर सकें। धन्य डायोनिसियिस ने खुशी-खुशी महा राजकुमार से वादा किया कि वह उनके अनुरोध को पूरा करेंगे, और, कुछ ही समय बाद, आदरणीय यूथमियस, अपने गुरु से विदाई की प्रार्थना और आशीर्वाद प्राप्त करने के बाद, अपनी यात्रा पर निकल पड़े। जब वह गोरखोवेट्स शहर पहुँचे, तो उन्होंने पास में, लगभग आठ वर्स्ट दूर, एक चर्च का निर्माण किया, जो कैपाडोसिया में सेसरिया के आर्चबिशप सेंट बेसिल को समर्पित था, और उसके बगल में एक सामुदायिक संन्यास आश्रम ([2817]) की

[2815] पेचेरस्की एसेन्शन मठ की स्थापना लगभग 1330 में निज़्नी नोवगोरोड के बाहरी इलाके में सेंट के एक मित्र द्वारा की गई थी। सेंट डियोनिसियिस द्वारा, जो वोल्गा नदी के किनारे शहर से पाँच वर्स्ट दूर अपने लिए एक गुफा खोदकर एक तपस्वी के रूप में वहाँ रहते थे; वे बाद में अपने मठ के आर्चमांड्राइट और फिर सुज़दल के आर्चबिशप बने। 1384 में कीव के मेट्रोपॉलिटन के पद पर रहते हुए उनकी मृत्यु हो गई। उनका पर्व दिवस 26 जून है।

[2816] यह ज्ञात नहीं है कि बोरिस कॉन्स्टेंटिनोविच को यहाँ ग्रैंड प्रिंस क्यों कहा गया है। यद्यपि सुज़दाल के राजकुमारों ने 1353 में सिमियन द प्राउड की मृत्यु के बाद ग्रैंड ड्यूकल सिंहासन की मांग की, लेकिन वे इस प्रयास में असफल रहे; 1359 में जॉन II द मीक की मृत्यु के बाद ही यह ग्रैंड ड्यूकी सुज़दाल के राजकुमार दिमित्री कॉन्स्टेंटिनोविच को मिली। हालांकि, बाद वाले केवल कुछ वर्षों के लिए महान राजकुमार थे। 1363 में, उन्हें जॉन द मीक के बेटे, दिमित्री इवानोविच डॉन्स्कोय को महान राजकुमारी का सिंहासन सौंपने के लिए मजबूर होना पड़ा।

[2817] यह आश्रम हमेशा से स्पसो-यूथमियान मठ से संबद्ध रहा था।

स्थापना की, जिसके बाद वह ग्रैंड प्रिंसि बोरिसि कॉन्स्टेंटिनोविच से मिलने के लिए सुज़दल की यात्रा पर चले गए। राजकुमार आदरणीय संत के आगमन से अत्यंत प्रसन्न हुआ और उनके साथ कुछ समय बातचीत करने के बाद, सुज़दाल के बिशप जॉन से मिलने के लिए उनके साथ चल पड़ा। बिशप के आवास पर पहुँचने पर, महाप्रिंसि ने उन्हें अपना इरादा बताया, और धन्य डायोनिसियिस के जीवन का विस्तार से वर्णन किया – कि कैसे प्रभु ने उन्हें भविष्यवाणी का वरदान दिया था और कैसे उन्होंने उन्हें एक मठ स्थापित करने का आशीर्वाद दिया था – और उन्होंने आदरणीय यूथमियस के बारे में भी बताया। इसके बाद, राजकुमार ने बिशप से मठ के लिए एक स्थल की तलाश में साथ चलने का अनुरोध किया, और बिशप, पूजनीय यूथमियस के साथ, महा राजकुमार के साथ चल पड़े। जल्द ही उन्हें शहर के पास एक पहाड़ी पर, कामेंनट्सा नामक नदी के किनारे एक जगह मिली, जिसके किनारे सुज़दाल शहर बसा था, और वे इस जगह से प्रसन्न हुए। फिर उन्होंने ईश्वर का धन्यवाद करते हुए एक प्रार्थना की।

इसके बाद, इस स्थान पर एक बड़ी भीड़ इकट्ठा हुई: सभी रियासतों के शासक, बोयार, राजकुमार और उसके दरबार के गणमान्य व्यक्ति, पुरोहित वर्ग, मठवासी भाईचारा, साथ ही सभी उम्र के पुरुष और महिलाएं। इतनी बड़ी सभा की उपस्थिति में, बिशप जॉन ने मठ के लिए स्थल का आशीर्वाद दिया और उसे पवित्र किया, और एक विशेष प्रार्थना के बाद, उस स्थान पर एक क्रॉस स्थापित किया जहाँ पहली चर्च का वेदीस्थल बनना था। फिर राजकुमार ने आदेश दिया कि चर्च के निर्माण के लिए पत्थर और आवश्यक सभी चीजें तैयार की जाएँ। और जब राजकुमार का आदेश पूरा हो गया, तो वह स्वयं सबसे पहले फावड़ा लेकर अपने हाथों से नींव की खाई खोदने लगा, और देश के गवर्नरों और बोयारों ने भी उनका अनुसरण किया।

इसके बाद, चर्च की नींव रखने के उपलक्ष्य में एक सेवा आयोजित की गई, और हमारे प्रभु यीशु मसीह के रूपांतरण के सम्मान में चर्च की स्थापना की गई; इसके बाद, इमारत की दीवारें खड़ी करने का काम शुरू हुआ। आदरणीय यूथमियिस ने बिशप का आशीर्वाद लेकर, एक कुल्हाड़ी उठाई और अपने हाथों से पवित्र वेदी के पास वेदी के उत्तरी द्वार के पास तीन पत्थर तोड़े, और अपने लिए एक कब्र बनाई, जहाँ बाद में उनके पवित्र शरीर को आराम के लिए रखा गया।

चर्च का निर्माण 1352 में पूरा हुआ[2818] और उसी वर्ष इसे समर्पित किया गया। बिशप जॉन ने धन्य यूथमियिस को आर्चमैंड्राइट के पद पर पदोन्नत किया और उन्हें मसीही झुंड, यानी मसीह के आध्यात्मिक भेड़ों के मार्गदर्शन का कार्य सौंपा, जबकि राजकुमार ने उन्हें मठ की स्थापना के लिए सोने और चांदी की एक बड़ी मात्रा दी। उस समय से, परम पूज्य यूथमियस ने पश्चाताप के आँसुओं के साथ, स्वयं को महान तपस्या के कठोर कार्यों के लिए समर्पित कर दिया। दिन में वे मठ की स्थापना के लिए लगन से परिश्रम करते थे, और रात में वे ईश्वर से अखंड और उत्कट प्रार्थनाएँ करते थे; और इस प्रकार उन्होंने मठ की स्थापना की और उसमें भविष्य के मठवासी समुदाय के लिए कोठरियाँ बनाईं। मौजूदा चर्च के अलावा, उन्होंने आदरणीय पिता जॉन क्लाइमैकस को समर्पित एक और चर्च बनाया और उससे एक पत्थर का भोजनशाला जोड़ दिया, जहाँ भिक्षु सर्दियों के दिनों में प्रार्थना करने और भोजन करने के लिए इकट्ठा हो सकते थे। जब भाईचारे के लगभग 300 सदस्य मठ में इकट्ठा हो गए और भोजनशाला में और समा नहीं पा रहे थे, तो उन्होंने संत निकोलस के सम्मान में एक नया चर्च बनाने का आदेश दिया, माइरा के चमत्कार करने वाले संत, जिसे 'हॉस्पिटिल चर्च' के नाम से जाना जाता है, के सम्मान में एक नया चर्च बनाने और इसके बगल में एक बड़ा लकड़ी का भोजनशाला खड़ा करने का आदेश दिया, ताकि भाईचारे के वे सदस्य जिन्हें पत्थर की भोजनशाला में दूसरों के साथ समायोजित नहीं किया जा सकता था, वे वहाँ इकट्ठा हो सकें। इसके बाद, मठ के लिए आवश्यक अन्य भवन आवश्यकतानुसार खड़े किए गए।

इस प्रकार, पूजनीय यूथमियस के परिश्रम और प्रार्थनाओं से, ईश्वर की कृपा की सहायता से, उनका मठ इस तरह स्थापित हुआ कि वह अपनी सभी आवश्यकताओं को पूरी तरह से पूरा कर सके। और उन्होंने अपने सुपुर्द किए गए झुंड का नेतृत्व दृढ़ता से और ईश्वर को प्रसन्न करने वाले तरीके से करना शुरू कर दिया। उन्होंने एक नियम बनाया कि सभी भिक्षुओं को बिना शिकायत के आज्ञाकारी रहना चाहिए, एक-दूसरे के प्रति सच्चे प्रेम में, ब्रह्मचर्य और अलोभ में रहना चाहिए, ताकि उनमें से किसी के पास भी अपनी कोई व्यक्तिगत संपत्ति न हो, बल्कि सब कुछ साझा हो; और यदि उन्हें पता चलता कि भाईचारे का कोई सदस्य व्यक्तिगत संपत्ति रखता है, तो वह उस व्यक्ति पर प्रायश्चित लगा देता

[2818] इसी वर्ष को मठ की स्थापना का वर्ष भी माना जाता है, जिसे बाद में स्पासो-यूथमियन मठ के नाम से जाना जाने लगा। यह सुज़दल के मठों में सामुदायिक जीवन शुरू करने वाला पहला मठ होने के लिए उल्लेखनीय है।

था। उन्होंने भाइयों को चर्च में एक-दूसरे से बातचीत करने की अनुमति नहीं दी, और न ही उन्होंने भोजन के दौरान बोलने दिया। भोजन के बाद, उन्होंने सभी को एक-दूसरे से बातचीत किए बिना, चुपचाप अपनी-अपनी कोठरियों में लौटने का आदेश दिया, और उन्होंने अत्यधिक आवश्यकता के मामलों को छोड़कर अन्य भिक्षुओं की कोठरियों में जाने की अनुमति नहीं दी। इसके अलावा, उन्होंने एक सामान्य नियम के रूप में यह आदेश दिया कि किसी भी भिक्षु में कोई स्वच्छंद विचार नहीं होना चाहिए, बल्कि प्रत्येक को किसी भी आज्ञा का पालन करने के लिए तैयार रहना चाहिए। अपनी ओर से, भाइयों ने हर बात में उनकी आज्ञा मानी, मानो वह ईश्वर का कोई देवदूत हो।

आध्यात्मिक चर्चाओं के लिए, आदरणीय यूथमियिस अपने समकालीन, राडोनेज़ के चमत्कार करने वाले आदरणीय सर्जियस के मठ में जाते थे[2819] । ऐसी चर्चाओं के बाद, वे एक-दूसरे पर स्नेहपूर्वक आशीर्वाद देते थे, और फिर आदरणीय यूथमियिस अपने मठ लौट आते थे।

धन्य यूथमियिस ने अपना पूरा जीवन ऐसे तपस्वी कार्यों में लगाकर बिताया। वह अपनी प्रार्थना की नियमावली से कभी नहीं भटका और उपवास को दान-पुण्य के साथ मिलाते हुए, राहगीरों का स्वागत करते हुए और जिनके पास भोजन नहीं था उन्हें भोजन प्रदान करते हुए, उन्होंने अपने पिछले कार्यों में नए कार्य जोड़े। वे नंगों के लिए वस्त्र और दुखी लोगों के लिए सांत्वना थे, क्योंकि उन्होंने सभी गरीबों की मदद की, दुर्भाग्य में पड़े लोगों को उनकी कठिनाइयों से मुक्ति दिलाई, प्रार्थना के माध्यम से बीमारों को ठीक किया, कर्जदारों के कर्ज चुकाए, स्वयं सभी के कर्ज माफ कर दिए, और एक ही शब्द से दुर्भाग्य से पीड़ित लोगों को अन्यायपूर्ण न्यायाधीशों के अत्याचार से बचाया। वे अपने वस्त्रों में गरीबी से इतना प्रेम करते थे कि ऐसा प्रतीत होता था मानो उनके पास कुछ भी नहीं है। वे हमेशा केवल एक ही वस्त्र पहनते थे, जो मोटे भेड़ के चमड़े से बना होता था, और सर्दियों में ठंड से तथा गर्मियों में अपने कपड़ों के बोझ के कारण गर्मी से त्रस्त रहते थे।

इस प्रकार, हर तरह के दुखद और कठिन परीक्षणों के बीच, आदरणीय यूथमियस ने अपने जीवन की यात्रा पूरी की और शरीर की कमजोरियों को तब महसूस करना शुरू किया जब वह पहले ही एक परिपक्व बुढ़ापे में पहुँच चुके थे। जब उन्हें लगा कि उनका अंत निकट है, तो उन्होंने मठ के सभी संतों को अपने पास बुलाया। जब उन्होंने देखा कि उनके मठाध्यक्ष बहुत कमजोर हो गए हैं और प्रभु के पास जाने का समय निकट आ गया है, तो वे सभी उनसे बिछड़ने के विचार से दुखी होने लगे और कहा:

'पिताजी! आप हमें अनाथ छोड़कर जा रहे हैं, और जब आप हमारे बीच नहीं रहेंगे, तो हमारा मठ सूना हो जाएगा।'

लेकिन रेवरेंड फादर ने उन्हें सांत्वना देते हुए उत्तर दिया:

'मेरे से बिछड़ने पर शोक मत करो, और जान लो कि यदि मुझे ईश्वर से प्रार्थना करने का साहस प्राप्त हो और मेरा कार्य उन्हें प्रसन्न करे, तो न केवल हमारा मठ सुनसान नहीं रहेगा, बल्कि मेरे निधन के बाद इसमें भिक्षुओं की संख्या और भी बढ़ जाएगी, बशर्ते कि तुम भी एक-दूसरे से प्रेम करो।'

आदरणीय पिता ने भाइयों को सांत्वना देने के लिए और भी बहुत कुछ कहा। इसके बाद, जब प्रभु के पास जाने का समय निकट आ गया, तो सभी भिक्षु उनके पास आए, आँसुओं से उनका चुंबन किया, और अंतिम आशीर्वाद माँगा। और, एक प्यार करने वाले पिता की तरह, माननीय फादर ने सभी को अपना आशीर्वाद दिया, सभी को क्षमा किया, और स्वयं सभी से क्षमा मांगी। जब अंततः उनकी आत्मा को उनके शरीर से विदा होने का समय आया, तो उन्होंने पवित्र Communion ग्रहण की और, 52 वर्षों तक मठ का नेतृत्व करने के बाद,[2820] , उन्होंने अप्रैल के पहले दिन अपनी पवित्र आत्मा को प्रभु के हाथों में सौंप दिया। भिक्षुओं ने उनके पवित्र शरीर को उपरोक्त ताबूत में दफनाया, जिसे रेवरेंड फादर ने मठ के पहले चर्च के निर्माण की शुरुआत में अपने हाथों से बनाया था। आज भी, धन्य यूथमियिस कई चमत्कार करते रहते हैं और जो लोग आस्था के साथ उनके पूजनीय ताबूत के पास आते हैं, उन्हें स्वास्थ्य लाभ प्रदान करते हैं[2821] ।

[2819] चर्च के भजनों में, आदरणीय यूथमियस को आदरणीय सर्जियस के 'साथी और विश्वासपात्र' के रूप में संदर्भित किया गया है (अप्रैल 1625 के मेनाइऑन)।

[2820] आदरणीय यूथमियिस का 1 अप्रैल 1405 को, लगभग 90 वर्ष की आयु में निधन हो गया।

[2821] उस पवित्र व्यक्ति के निधन के एक सदी बाद, 7 जून 1507 को, 1491 में जलकर नष्ट हो चुके रूपांतरण चर्च के स्थान पर एक नया चर्च बनाने के लिए खाई खोदते समय, उनके अवशेष पाए गए और वे अपरिवर्तित पाए गए: 'उनका चेहरा दमक रहा था और उनके वस्त्र ऐसे थे मानो उन्होंने कल ही पहने हों'।

ट्रोपारयिन, स्वर 3:

एक दीप्तमिान तारे की तरह, तुम पूर्व से पश्चमि आए, अपनी मातृभूमि को छोड़कर, नज़िनी नोवगोरोड, और, ईश्वर-रक्षति सुज़दल शहर में पहुँचकर, वहाँ आपने एक मठ की स्थापना की और भक्षिुओं की एक बड़ी संख्या को एकत्रति कयिा; और, ईश्वर से चमत्कारों का वरदान प्राप्त करके, पतिा यूथमिीयस, आप परम पूज्य सर्गयिस के साथ मसीह में एक साथी और सह-यत्नशील थे। उनके साथ मलिकर, हमारे ईश्वर मसीह से प्रार्थना करें कि वे हमारे श्रद्धेय सम्राट नकिोलस अलेक्जेंड्रोवचि को स्वास्थ्य और मोक्ष, तथा हमारी आत्माओं को महान दया प्रदान करें।

कॉन्टाकयिन, स्वर 2:

हे ईश्वर-ज्ञानी और पूजनीय यूथमियिस, आपने अटूट दृढ़ता से अनगनित परीक्षाओं को पार कयिा, और अपने अश्रुओं की धारा से अमूर्त शत्रुओं को परास्त कयिा; इस प्रकार आपको चमत्कारों का वरदान मलिा; हम सभी के लिए अनवरत प्रार्थना करें।

१५ अप्रैल

2 अप्रैल (पुराने कैलेंडर के अनुसार)

पवत्रि शहीदों एम्फयिन और एडेसयिस का कष्टकथा।

2 अप्रैल को स्मरणोत्सव

पवत्रि शहीद अम्फयिन और एदेइसयिुस जन्म से भाई थे और एक यूनानी मूर्तपिूजक परविार से थे। उनका गृहनगर लसियिा के पतारा शहर में था[2822] । वहाँ से, उनके माता-पतिा ने उन्हें मूर्तपिूजक वज्ञिान का अध्ययन करने के लिए बरिीट शहर[2823] भेजा। वहाँ, एम्फयिन और ईडयिस ने अपने युवा के दनि पवत्रिता में बतिाए, और अपने सदाचारी जीवन से अपने सभी समकालीनों को चकति कर दयिा। सभी तुच्छ व्यवहारों से मुक्त, संत एम्फयिन और ईडयिस के पास, शास्त्रों के अनुसार, ज्ञान के सफेद बाल और वृद्धावस्था की आयु थी—एक नष्किलंक जीवन (तुलना करें ज्ञान 4:9), जसिके लिए उन्हें ईश्वर की कृपा से पुरस्कृत कयिा गया; क्योंकि सत्य की समझ का प्रकाश उनके हृदयों पर चमका : मूर्तपिूजा की व्यर्थता को समझते हुए, उन्होंने यथासंभव पूरी तरह से ईसाई धर्मपरायणता के मार्ग को जानने की इच्छा की, ताकि वे हमारे प्रभु यीशु मसीह के सेवक बन सकें।

जब अम्फयिन और एदेउस बरिति से अपने गृहनगर लौटे, तो उन्होंने पाया कि उनके पतिा को शहर का मजस्ट्रिेट नयिुक्त कयिा गया था और वे अपने सभी रश्तिेदारों के साथ एक अधर्मी, मूर्तपिूजक जीवन जी रहे थे। अधर्मी और पापयिों के बीच नहीं रहना चाहकर, संत अम्फयिन और एडीउस ने गुप्त रूप से अपने माता-पतिा का घर छोड़ दयिा और परमेश्वर की आत्मा के मार्गदर्शन में, फलिस्तिीन के शहर केसरयिा[2824] आए। वहाँ वे पंफलिस नामक एक धार्मकि ईसाई पुरोहति से मलिे, जन्हिें बाद में मसीह के लिए शहीद का मुकुट प्राप्त हुआ। इस पवत्रि पुरोहति द्वारा ईसाई धर्म के रहस्यों में

[2822] लसियिा – एशयिा माइनर का एक क्षेत्र।

[2823] बरिटि – एक फ़निशियिाई शहर, जो प्राचीन काल में ज्ञान और शक्षिा के केंद्र के रूप में प्रसद्धि था। आज, बरिटि, जसिे बेरूत के नाम से जाना जाता है, सीरयिा के एशयिाई-तुर्की वलियत का प्रमुख शहर है और एक महत्वपूर्ण वाणज्यिकि केंद्र के रूप में कार्य करता है।

[2824] पैलेस्टाइन में केसरयिा – भूमध्य सागर के तट पर, पैलेस्टाइन में स्थति एक शहर। प्राचीन काल में, केसरयिा रोमन प्रोकोरेटर्स का केंद्र और देश के सामाजकि और राजनीतकि जीवन का केंद्र था। ईसाई चर्च के इतहिास में, फलिस्तिीन का केसरयिा इस स्थान के लिए उल्लेखनीय है जहाँ प्रेरति पतरस ने शतनरीक्षक कोर्नेलयिस को बपतस्मिा देकर (प्रेरतिों के काम 10:1–48) पहली बार मूर्तपिूजकों के लिए मसीह के चर्च के द्वार खोले थे। यहीं पर प्रेरति पौलुस का अंतमि मुकदमा भी हुआ, जसिके बाद उन्हें रोम भेज दयिा गया (प्रेरतिों के काम 25:1–27:44)। फलिस्तिीन में एक और सेज़रयिा था, जसिे ऊपर वर्णति सेज़रयिा के वपिरीत, सेज़रयिा फलिपिी कहा जाता था। यह यॉर्डन नदी के उद्गम स्थल पर स्थति था

शक्षिति होकर, संत अम्फयिन और एडीयस ने उसी पुरोहति से बपतस्मिा ग्रहण कयि। इसके बाद, संत धन्य पंफलिस की संगतमिें लगातार बने रहे, ईश्वर की महमिा और स्तुतकिरते हुए तथा स्वयं को पवत्रि ग्रंथों और प्रभु के वधिान के अध्ययन के लिए समर्पति कर दयि।

उस समय, सम्राट मैक्समियिन[2825] था, जसिने अपने चाचा मैक्समियिन गैलेरयिस[2826] से रोमन साम्राज्य के पूर्वी हस्सि का नयिंत्रण संभाल लयि था। इस सम्राट ने क्रूरतापूर्वक ईसाइयों का उत्पीड़न कयि, क्योंकवि ह मूर्तपिूजक दुष्टता से भरा था और सच्चे ईश्वर से घृणा करता था। वह उससे पहले के कसिी भी मूर्तपिूजक रोमन सम्राट से अधकि क्रूर था। मैक्समियिन के शासनकाल में, ईसाई बड़ी भ्रम की स्थतिमिें पड़ गए, क्योंकउिस दुष्ट उत्पीड़क ने उन सभी को मृत्युदंड दे दयि जो मसीह के नाम का अंगीकार करते थे। उनमें से कई, यातना और मृत्यु से बचने के लिए, अपने क्रूर उत्पीड़क से भाग गए, अपने घरों और कस्बों को पीछे छोड़ दयि, और गुप्त स्थानों पर छपि गए। हालाँकि, कुछ ऐसे ईसाई भी थे जन्हिोंने खुले तौर पर अपने अत्याचारयिों के हाथों में आत्मसमर्पण कर दयि और बहादुरी से शहादत को सहन कयि। उनमें से एक पराक्रमी एम्फयिन थे, जो यद्यपदिेह से जवान थे (क्योंकउिनकी आयु अभी बीस वर्ष भी नहीं हुई थी), पर मन और साहस से शताब्दी-पुरुष थे।

उस समय, जब दुष्ट मूर्तपिूजक सम्राट के आदेश पर, उस उद्देश्य के लिए भेजे गए लोग कैसरयि पहुँचे और शहर के हर नागरकि को वहाँ की मूर्तयिों को बलदिान चढ़ाने के लिए मूर्तपिूजक मंदरिों में बुलाने लगे, तो साहसी एम्फयिन, जो ईसाइयों के साथ एक छपिे हुए स्थान पर रह रहा था, चुपके से उस स्थान से नकिलकर वे मूर्तपिूजक मंदरि की ओर चल दए, जहाँ उसी क्षण हेगेमोन उर्वान मूर्तयिों को बलदिान दे रहा था। नडिर होकर उसके पास पहुँचे संत एम्फयिन ने उसके दाहनिे हाथ को पकड़ लयि, जसिमें वह भेंट पकड़े हुए था, और सभी के सामने नडिरता से उसे अपनी भूल त्यागने और मानव हाथों से बनी राक्षसों और मूर्तयिों की पूजा न करने के लिए समझाने लगे। साहसी एम्फयिन के इस बहादुरी भरे कार्य ने कई ईसाइयों के वश्विास को और भी मज़बूत कर दयि; लेकनि इसने वधिर्मी लोगों को, और वशिेष रूप से राज्यपाल को, अत्यधकि क्रोध से भर दयि। तुरंत, संत एम्फयिन को राज्यपाल के सैनकिों ने भेड़यिों के बीच एक भेड़ की तरह पकड़ लयि, और जमीन पर पटककर पैरों तले कुचलते हुए उसके मुंह, चेहरे और पूरे शरीर पर अनगनित प्रहार कए; इसके बाद, संत को एक कालकोठरी में ले जाकर बेड़यिों में जकड़ दयि गया।

अगली सुबह, संत एम्फयिन को मुकदमे के लिए राज्यपाल के सामने लाया गया, जसिने उसे मूर्तयिों को बलदिान चढ़ाने के लिए कहा। लेकनि संत एम्फयिन ईसाई धर्म की अपनी स्वीकारोक्तमिें अडगि रहे। इसके बाद, मसीह के पवत्रि शहीद को कठोर यातनाएँ दी गईं: सैनकिों ने उन्हें एक पेड़ से लटका दयि और तेज लोहे के औजारों से उनके पूरे शरीर को नोचना शुरू कर दयि और लोहे की छड़ों से उनके चेहरे, गर्दन और बगल में वार कयि। पवत्रि शहीद का चेहरा और पूरा शरीर उसके यातना देने वालों द्वारा इतनी क्रूरता से वक्षित कर दयि गया था कि उसे जानने वाले भी उसे पहचान नहीं सके; उसकी सभी पसलयिाँ टूट गई थीं। फरि भी इन भयानक यातनाओं के बीच भी, मसीह के पवत्रि शहीद ने ऊँचे स्वर में यीशु मसीह की घोषणा करना बंद नहीं कयि, मानो वह अपनी यातनाओं और कष्टों को न सुन रहा हो और न ही महसूस कर रहा हो।

इस बीच, उसके यातनादाताओं ने उसकी पीड़ा को और बढ़ा दयि: उन्होंने संत के पैरों को तेल में भगिोए हुए सन से बांधा और उसमें आग लगा दी। पीड़ति आग की लपटों में घरि गया, मोम की तरह पघिलने लगा। फरि भी इस यातना ने भी पवत्रि शहीद को नहीं डराया; इसके वपिरीत, लगातार बढ़ती बहादुरी से भरकर, उन्होंने और भी ऊँचे स्वर में यीशु मसीह की महमिा करना शुरू कर दयि, और साथ ही साथ मूर्तपिूजकों की दुष्टता और अधर्मीपन की नदिा और फटकार भी की। इसके बाद, पवत्रि शहीद को फरि से जेल में डाल दयि गया।

इसके बाद, संत एम्फयिन की कैद के तीसरे दनि, उनके यातनादाताओं ने एक बार फरि से नए-नए यातनाओं से उनके वश्विास की दृढ़ता को परखना शुरू कर दयि। लेकनि चूँकि इस अवसर पर भी संत ईसाई धर्म के अपने बयानों पर अडगि रहे, तो राज्यपाल ने उन्हें समुद्र की गहराई में फेंककर मार डालने का आदेश दयि। सैनकिों ने शहीद के शरीर से एक पत्थर बांधा और उसे तट से कुछ दूरी पर ले जाकर समुद्र में फेंक दयि। तुरंत समुद्र उफन उठा, धरती हलि गई, नगर

[2825] सम्राट मैक्समियिन ने 305 से 313 तक शासन कयि।

[2826] सम्राट मैक्समियिन गैलेरयिस ने 306 से 311 तक रोमन साम्राज्य पर शासन कयि।

काँप उठा, और वहाँ मौजूद सभी वधिर्मी बड़े भय और आतंक से भर गए। फरि लहरों ने पवत्रि शहीद अम्फयिन के शरीर को समुद्र की गहराइयों से नकिालकर कनिारे पर ला दयिा।

इस प्रकार पवत्रि शहीद अम्फयिन के कष्टों का अंत हुआ, ईApril[2827] के दूसरे दनि।

इसके बाद, कई अन्य ईसाइयों को यातनाएँ दी गईं, जनिमें अम्फयिन का भाई, एडीसयिस भी शामलि था। कुछ ईसाइयों को वभिन्नि प्रकार की यातनाओं और कष्टों से गुज़रना पड़ा, जबकि अन्य को pagans द्वारा तांबे की खदानों में काम करने के लिए फ़लिस्तीन भेज दयिा गया; सेंट एडीसयिस बाद वालों में से थे।

एक साल बाद, संत एदेउस को फलिस्तीन से मस्रि के शहर अलेक्जेंड्रयिा ले जाया गया। एक दनि वहाँ पागन राजकुमार हरिोक्लेस को न्यायाधीश की कुर्सी पर बैठा और ईसाइयों के प्रति अत्यधकि क्रोधति देखकर (वह पवत्रि ईसाई कुंवारी लड़कयिों और पत्नयिों को पागनों द्वारा अपमानति कए जाने के लिए सौंप रहा था), संत एडेसयिस साहस और नरि्भीकता से भर गए; राजकुमार की ओर बढ़ते हुए, संत एदेसयिस ने सभी के सामने उसके चेहरे पर वार कयिा, फरि उसे जमीन पर पटक दयिा और उसे पीटते हुए सार्वजनकि रूप से उसके अन्यायपूर्ण न्याय के लिए फटकार लगाने लगे। तुरंत, संत एदेसयिस को वहाँ मौजूद सैनकिों ने पकड़ लयिा और उसके भाई, संत एम्फयिनस की तरह ही उसे भी यातनाएँ दी गईं। दीर्घकालीन यातनाओं के बाद, संत एडेसयिस ने अपने भाई की ही तरह समुद्र में डुबोकर प्राण गंवाए। इस प्रकार संत एडेसयिस ने अम्फयिानुस के साथ शहादत का पवत्रि मुकुट प्राप्त कयिा, जो उन्हें हमारे उद्धारकर्ता मसीह द्वारा प्रदान कयिा गया, जनिका महमिा हो, पता और पवत्रि आत्मा के साथ, युगानुयुग। आमीन।

हमारे पूजनीय पता चमत्कारकि ततिस की स्मृति

2 अप्रैल को स्मरणोत्सव

हमारे धन्य पता टाइटस, जो अपने युवा काल से ही मसीह से प्रेम करते थे और संसार से घृणा करते थे, ने मठ[2828] में परश्रिम कयिा। संन्यासी जीवन अपनाने के बाद, उन्होंने यहाँ संन्यासी जीवन के दुखद और काँटों भरे मार्ग पर महान धैर्य के साथ चलना जारी रखा। उनके वनिम्रता और आज्ञाकारता के महान गुणों के लिए, जनिमें आदरणीय टाइटस उस सामुदायकि मठ में अपने सभी भाइयों से आगे थे, उन्हें एक पुरोहति – वचन के झुंड का एक चरवाहा – के रूप में अभषिक्ति कयिा गया।

आदरणीय टाइटस अपने पड़ोसयिों के प्रति महान प्रेम से परपिूर्ण थे। बहुत कम उम्र से ही आत्मा और शरीर दोनों को शुद्ध रखकर, संत टाइटस पृथ्वी पर, मानो, परमेश्वर के एक स्वर्गदूत के रूप में प्रकट हुए। अपने सदाचारी जीवन के लिए, आदरणीय टाइटस को परमेश्वर द्वारा चमत्कार करने का वरदान प्राप्त हुआ। संन्यासी जीवन के सद्गुणों से प्रकाशमान, संत टाइटस एक ही समय में ऑर्थोडॉक्सी (सही आस्था) के एक अटूट स्तंभ थे, क्योंकि उन्होंने प्रतमिा-भंजक वधिर्मयिों[2829] के हमलों से पवत्रि चर्च की उत्साहपूर्वक रक्षा की। एक पूर्ण जीवन जीने और के बाद अपने अनुयाययिों के लिए तपस्यापूर्ण जीवन का एक अनुकरणीय आदर्श स्थापति करते हुए, परम पूजनीय टाइटस ने शांतपिूर्वक प्रभु के पास प्रस्थान कयिा[2830] ।

[2827] पवत्रि शहीद की मृत्यु 306 में हुई।

[2828] कनिोवयिा ('कनिोवयिन', 'कओिस' - सामान्य और 'वयिोस' - जीवन से) का अर्थ सामुदायकि मठों से है, जनिमें भाइयों को मठ से पूरी व्यवस्था मलिती है, लेकनि बदले में, उनकी अपनी कोई संपत्ति नहीं होती, और वे अपनी मेहनत और उसके फलों को मठ की सामान्य जरूरतों के लिए समर्पति करते हैं।

[2829] मूर्तभिंजनवाद की वधिर्मता 8वीं शताब्दी में उभरी और इसकी स्थापना फ्राइजयिा में नाकोलेया के बशिप कॉन्स्टेंटनि ने की थी। मूर्तयिों की पूजा को मूर्तपिूजा के साथ अवचिारपूर्वक मलिाते हुए, मूर्तभिंजकों ने नरिंतर और क्रूर उत्पीड़न के माध्यम से ऑर्थोडॉक्स चर्च से मूर्तयिों की पूजा को समाप्त करने का प्रयास कयिा। मूर्तभिंजनवाद के सबसे कट्टर रक्षक सम्राट लयिो द इसाउरयिन (717–741) और कॉन्स्टेंटनि कॉप्रोन्यमस (741–775) थे। इस वधिर्म की नदिा 787 में नकिेया में आयोजति सप्तम सार्वभौमकि परषिद में की गई थी।

[2830] सम्माननीय टाइटस की 9वीं शताब्दी में मृत्यु हो गई।

शहीद संत पॉलीकार्प की स्मृति, जिन्होंने सम्राट मैक्समियिन के शासनकाल में अलेक्जेंड्रिया में[2831] कष्ट सहे।

2 अप्रैल को स्मरण किया जाता है

संत पॉलीकार्प ने अलेक्जेंड्रिया के राज्यपाल की ईसाइयों के निर्दोष रक्त के अन्यायपूर्ण प्रवाह के लिए निंदा की, जिसके लिए उन्हें विभिन्न यातनाओं से गुज़रना पड़ा। लेकिन चूँकि संत पॉलीकार्प अपनी यातनाओं के बीच भी मसीह के नाम के एक दृढ़ और साहसी स्वीकारकर्ता बने रहे, इसलिए उन्हें राज्यपाल के आदेश पर तलवार से सिर कलम कर दिया गया[2832] ।

16 अप्रैल

3 अप्रैल (पुराने कैलेंडर के अनुसार)

इसी दिन, आदरणीय इलरिकिस चमत्कारकर्ता और पवित्र शहीदों: एल्पडिफोरस, डाय, वसोनियस और गैलकिस की स्मृति।

हमारे पूज्य पिता निकिता कन्फैसर का जीवन।

3 अप्रैल को स्मरण किया जाता है

आदरणीय निकिता का जन्म बिथिनिया के सेज़ारिया में[2833] में धर्मनिष्ठ माता-पिता के यहाँ हुआ था। उनके पिता, जिनका नाम फिलारेट था, अपनी पत्नी को खोने के बाद—जो युवा निकिता के जन्म के आठवें दिन निधन हो गई थीं—संन्यास के व्रत ले लिए; इस बीच, उस समय जीवित अपनी पिता की माँ ने उस लड़के का पालन-पोषण किया। जब वे समझ-बूझ की आयु को प्राप्त कर चुके और विद्वितापूर्ण शिक्षा ग्रहण कर चुके, तो आदरणीय निकिता ने स्वयं को ईश्वर की सेवा के लिए समर्पित कर दिया। पहले, उन्होंने चर्च[2834] में एक उप-पुजारी के रूप में सेवा की, और पवित्र धर्मग्रंथों के पाठ का अभ्यास किया; फिर वे एक सदाचारी व्यक्ति, स्टेफन नामक एक तपस्वी के पास चले गए; उससे पर्याप्त शिक्षा प्राप्त करने के बाद, आदरणीय निकिता ने उसकी सलाह पर, फिर मिदिकी मठ के लिए प्रस्थान किया, जिसकी स्थापना आदरणीय निकिफोर ने की थी, जो इसके मठाधीश भी थे। बाद वाले ने निकिता को खुशी-खुशी स्वीकार कर लिया, उसमें ईश्वर की कृपा को पहचानते हुए, और उसे मठवासी क्रम में दीक्षा दी। वहाँ, उपवास, विनम्रता और आज्ञाकारिता के अपने तपस्वी कारनामों, और वास्तव में अपने सामान्य पुण्य जीवन के माध्यम से, आदरणीय निकिता जल्द ही सभी अन्य भिक्षुओं से आगे निकल गए। मठ में उनके आगमन को सात वर्ष भी नहीं हुए थे कि मठाधीश के आग्रह पर, उन्होंने पुरोहित का पद स्वीकार कर लिया, जिसकी दीक्षा उन्हें कॉन्स्टेंटिनोपल के पैट्रिआर्क, परम पावन तारासियस द्वारा दी गई। उस समय, आदरणीय निकिफोर ने अपनी उन्नत आयु को देखते हुए, आदरणीय निकिता को—उनकी अनिच्छा के बावजूद—वरिष्ठ भिक्षु के पद के साथ-साथ मठ के प्रशासन का कार्य सौंप दिया। और आदरणीय निकिता ने अपने पिता निकिफोर की जगह सामान्य भलाई के लिए मठ का शासन किया, वचन के झुंड की चौकस देखभाल करते हुए और अपने सदाचारी जीवन के उदाहरण से उसे बढ़ाते हुए: कई लोगों ने उनके दैवीय जीवन के बारे में सुनकर संसार का त्याग कर दिया,

---

[2831] अलेक्जेंड्रिया – मिस्र का एक शहर, जो प्राचीन काल में अपने व्यापार और शिक्षा के लिए प्रसिद्ध था।

[2832] पवित्र शहीद का निधन चौथी शताब्दी की शुरुआत में हुआ।

[2833] बिथिनिया एशिया माइनर का एक उत्तर-पश्चिमी क्षेत्र है, जो ब्लैक सी, बोस्फोरस और कॉन्स्टेंटिनोपल की जलडमरूमध्य के तटों पर स्थित है। माइडिक मठ प्रूसा शहर से बहुत दूर नहीं स्थित था, जो माउंट ओलंपस के पास था; माइडिक मठ की स्थापना संत निकिफोरस ने की थी, जो इसके मठाध्यक्ष के रूप में सातवें सार्वभौमिक परिषद (787) में शामिल हुए थे। बिथिनिया में केसरिया रेडिकोस और अपामिया नदियों के बीच स्थित था।

[2834] पोनोमारी, या पैरामोनारी, जिन्हें इसी नाम से भी जाना जाता है, हमारे चर्च के परिचारकों के समकक्ष हैं।

मोक्ष के मार्ग पर आदरणीय निकिता के मार्गदर्शन की खोज में मठ आए और वहीं रह गए। मसीह की कृपा से, कुछ ही वर्षों में, भाइयों की संख्या सौ हो गई।

उनमें धन्य अथानासियस थे, जो एक अद्भुत व्यक्ति और वास्तव में पूजनीय थे। कुछ ही शब्दों में उनके सद्गुण और ईश्वर के प्रति उनके महान प्रेम का वर्णन करना असंभव है, जिसे उन्होंने संसार का त्याग करके प्रदर्शित किया। उनमें स्वर्गदूतों के लिए भी आश्चर्य की बहुत सी बातें थीं। ईश्वर के लिए इस संसार और इसकी कामनाओं को तुच्छ समझते हुए, धन्य अथानासियस ने अपने संन्यासी जीवन की शुरुआत करने की इच्छा से, गुप्त रूप से अपने पिता का घर छोड़कर एक मठ में प्रवेश किया; लेकिन जब उनके पिता को यह पता चला, तो वे क्रोधित होकर मठ पहुँचे, उन्होंने अपने पुत्र—जिसे वे बहुत प्यार करते थे—को ले लिया, नवोदितों द्वारा पहनी जाने वाली मठीय वेशभूषा उतार दी, उसे सुंदर, कीमती कपड़े पहनाए, और फिर जबरदस्ती उसे घर ले आए।

लड़के ने उससे कहा, 'पिताजी, क्या आपको सच में लगता है कि इन महँगे कपड़ों से आप मेरा मन बदल सकते हैं, जबकि मैं पूरी दुनिया से घृणा करता हूँ? *"एक मनुष्य को सारी दुनिया प्राप्त करके भी अपनी आत्मा खो दे, तो उसे क्या लाभ होगा?"* (मत्ती 16:26)।'

उसके पिता ने उसे एक अलग कमरे में बंद कर दिया और हर तरह से उसके दिल में दुनिया के लिए प्रेम जगाने की कोशिश की। लेकिन उस लड़के ने ईश्वर के प्रति अपने प्रेम को अपने पारिवारिक प्रेम और व्यर्थ की दुनिया से अपने लगाव पर हावी होने दिया, और उसने जो सांसारिक वस्त्र पहने हुए थे, उन्हें उतारकर फाड़ डाला। यह देखकर, उसके पिता ने उसे और भी अधिक मूल्यवान वस्त्र पहना दिए, क्योंकि वह अमीर, कुलीन और प्रसिद्ध था। उस लड़के ने नए वस्त्रों के साथ भी वैसा ही व्यवहार किया जैसा उसने पहले वालों के साथ किया था। धन्य अथेनासियस के इस कार्य से उसके पिता को बहुत क्रोध आया; उन्होंने नग्न अथेनासियस को निर्दयता से पीटा – और उसका शरीर अनगिनत घावों से भर गया; क्रूर प्रहारों से उसके कंधे और रीढ़ की हड्डी में कीड़े पड़ने लगे, इसलिए डॉक्टरों को उसका इलाज करना पड़ा और उसके शरीर के सड़ते हुए हिस्सों को काटना पड़ा। हालाँकि, उस युवक ने कहा:

'भले ही मेरा पिता मुझे टुकड़े-टुकड़े कर दे, फिर भी वह मुझे परमेश्वर के प्रेम से नहीं अलग कर सकता (देखें रोमियों 8:35) और न ही मेरे संकल्प से मुझे हटा सकता है।'

तब उसके पिता दया से भर गए और, काफी देर तक रोने के बाद, उन्होंने अथेनासियस से कहा:

'जाओ, मेरे बच्चे, उस अच्छे मार्ग पर आगे बढ़ो जिसे तुमने चुना है, और मसीह तुम्हारा सहायक और शत्रु के हर फंदे से मुक्तिदाता हो।'

अथेनासियस अपने पूर्व मठ में लौट आए, उन्होंने पूर्ण संन्यासी संस्कार ग्रहण किए, और स्वयं को इतना नम्र कर लिया कि उनमें न तो सांसारिक बातें, न सांसारिक रीति-रिवाज, और न ही कोई संपत्ति प्राप्त करने की प्रवृत्ति दिखाई देती थी। अथेनासियस अपने सौम्य और विनम्र व्यवहार, अपने शांत और दयालु शब्दों, और उन सबसे फटे-पुराने वस्त्रों के लिए विशिष्ट थे जिनसे वह अपना शरीर ढकते थे; एक ऐसे व्यक्ति का जीवन, जिसने धनी माता-पिता के पुत्र के रूप में लाड़-प्यार भरी सांसारिक परवरिश प्राप्त की थी, असीम तपस्या से परिपूर्ण था। ऐसे पुण्यशील व्यक्ति, जिन्होंने कई वर्ष साधु जीवन के श्रम में बिताए थे, हमारे पूजनीय पिता निकिता के प्रति अपने प्रेम और उनके दैवीय जीवन की ख्याति से आकर्षित होकर मिदिकी मठ आए; और पूजनीय निकिफोर तथा निकिता दोनों के लिए, परम पावन अथानासियस एक अति प्रिय साथी और सहवासी थे। कुछ समय बाद, उनके अनुरोध पर, अथेनासियस ने मठ में कोषाध्यक्ष का पद संभाला। जैसे कि वे दो शरीरों में एक आत्मा और एक मन हों, परम पुण्य आत्मा अथानासियस और आदरणीय निकिता ने मठ का शासन किया, भाइयों को प्रत्येक सद्गुण में वचन और उदाहरण द्वारा परमेश्वर की पूर्ण प्रसन्नता के लिए शिक्षित किया: उन्होंने भाइयों के बीच प्रेम का संचार किया, विनम्रता सिखाई, उनकी पवित्रता के सतर्क रक्षक थे, आध्यात्मिक और शारीरिक दोनों; उन्होंने कमजोर और हतोत्साहित लोगों को मजबूत किया, दृढ़ खड़े रहने वालों का समर्थन किया, और विभिन्न उपदेशों और उत्साहवर्धन के माध्यम से गिर गए लोगों को पुनर्स्थापित किया; और जब उनमें से एक कठोर शिक्षक प्रतीत होता था, तो दूसरा सबसे कोमल और दयालु सलाहकार साबित होता था। दोनों से सभी प्रेम करते थे, और भाइयों ने उनके शब्दों को ऐसा माना मानो वे ईश्वर के मुख से निकले हों।

लेकिन ये दोनों सदाचारी मार्गदर्शक लंबे समय तक एक साथ नहीं रहे। कई साल बीत गए, और 26 अक्टूबर को, पूजनीय अथानासियस प्रभु के पास चले गए, और उन्होंने भाइयों को ये अंतिम शब्द कहे:

'मेरी मृत्यु के बाद, आपको निश्चित रूप से पता चल जाएगा कि क्या मुझे, थोड़े से भी, ईश्वर की कृपा प्राप्त हुई है।'

जब आदरणीय अथानासियस को दफनाया गया, तो ईश्वर की आज्ञा से उनकी कब्र से ही एक सरू का पेड़ उग आया, जिसके पत्तों ने सभी प्रकार की बीमारियों को पूरी तरह से ठीक कर दिया। तब मिदिकी मठ के संस्थापक और पहले मठाधीश, आदरणीय निकिफोर, ने कई परिश्रमों और शारीरिक बीमारियों के बाद, 4 मई को प्रभु के पास प्रस्थान किया।

इस प्रकार आदरणीय निकिता अपने आध्यात्मिक पिता, संत निकिफोरस, और अपने प्रिय मित्र, आदरणीय अथानासियस को खोकर अनाथ हो गए; वे दोनों के लिए गहराई से दुखी थे, क्योंकि वे उनसे बहुत प्यार करते थे। उनकी दृढ़ आशा कि दिवंगत आत्माओं को प्रभु मसीह के साथ अनुग्रह और एक धन्य जीवन प्राप्त हुआ है, जिन्हें उन्होंने अपने युवा काल से अपनी निष्ठापूर्ण सेवा द्वारा प्रसन्न किया था, ने उनके शोक में सांत्वना का काम किया।

धन्य पिता निकिफोर के निधन के बाद, पूरे समुदाय ने परम पूज्य निकिता से यह पद स्वीकार करने और आबट बनने का आग्रह किया: क्योंकि, जब तक पूजनीय निकिफोरस जीवित थे, संत निकिता ने मठाध्यक्ष का पद या पदवी स्वीकार नहीं की थी, भले ही वह अपने पिता, पवित्र निकिफोरस, जो कई वर्षों से वृद्धावस्था के कारण अस्वस्थ थे, की जगह मठ का पूरी तरह से प्रबंधन कर रहे थे। भाइयों के आग्रहपूर्ण अनुरोधों पर, और विशेष रूप से अन्य मठों के कई मठाध्यक्षों के आग्रह पर, उन्होंने यह पद स्वीकार किया और कॉन्स्टेंटिनोपल के पैट्रिआर्क, परम पावन निकिफोरस, जो तारासियस के उत्तराधिकारी थे, का आशीर्वाद प्राप्त किया। अपने पिछले कार्यों के अलावा, पूजनीय निकिता ने नए कार्य जोड़े जब, ईश्वर की मदद से, उन्होंने एक मठाधीश के रूप में मठ का शासन करना शुरू किया, और उन आत्माओं के मोक्ष की देखभाल की जो उन पर सौंपी गई थीं। अपने सेवक का सम्मान करते हुए, ईश्वर ने उन्हें रोगों को ठीक करने और दुष्टात्माओं को भगाने की कृपा प्रदान की। जन्म से मूक एक छोटे लड़के पर क्रॉस का चिह्न लगाकर, पूजनीय निकिता ने उसकी बोलने की क्षमता वापस कर दी; उन्होंने पवित्र तेल से अभिषेक करके एक ऐसे भिक्षु को ठीक किया था जिसने अपना चित्त खो दिया था; उन्होंने प्रार्थना के माध्यम से, नवदीक्षितों में से एक, जो प beset था, को दैवीय यातना से मुक्त कराया, और उस राक्षस को भगा दिया, जिसने साँप का रूप धारण कर लिया था; उन्होंने एक और भूतग्रस्त व्यक्ति को दुष्ट आत्मा से मुक्त कराया – और अपने भीतर विद्यमान मसीह की कृपा से बुखार, गर्मी से होने वाली बीमारियों और अन्य कई प्रकार की बीमारियों से पीड़ित कई लोगों को चमत्कारिक रूप से ठीक किया। इस प्रकार वह परमेश्वर को प्रसन्न करते हुए जिए और वृद्धावस्था तक पहुँचे; लेकिन अपने जीवन के अंत में उन्होंने स्वयं को एक साहसी धर्म-घोषक साबित किया और पवित्र प्रतिमाओं की उनकी श्रद्धा के लिए दुख सहन किया।

उन दिनों, मूर्तिभंजन की कुविचारधारा अभी समाप्त नहीं हुई थी। सातवें सार्वभौमिक परिषद[2835] के पवित्र पिताओं द्वारा निंदा किए जाने के बाद भी, यह एक तरह से पुनर्जीवित हो गई थी, क्योंकि इसे फिर से शाही अधिकारियों का समर्थन प्राप्त हो गया था, जिनसे इसका मूल उद्गम हुआ था। ग्रीक मूर्तिभंजन सम्राटों में पहले थे लियो, तीसरे जो इस नाम को धारण करते थे, जिन्हें इसौरीय के नाम से जाना जाता था[2836] ; यह उनके माध्यम से ही था कि मूर्तिभंजन की विधर्म ने बल प्राप्त किया और एक हानिकारक बीमारी की तरह फैल गई। वह पहला व्यक्ति था जिसने प्रतिमाओं को अस्वीकार करने का एक फरमान जारी किया, और अपने शाही अधिकार का उपयोग करके, उसने कई लोगों को गलत तर्क की ओर ले गया; ऑर्थोडॉक्स पैट्रिआर्क, सेंट जर्मनस को निकालने के बाद, उसने अपने विचारों से सहमत संप्रदाय-विरोधी अनास्तासियस[2837] को सिंहासन पर बिठाया। इस दुष्ट सम्राट की मृत्यु पर, उसका पुत्र, कॉन्स्टेंटिन कॉप्रोन्यमस[2838] , सिंहासन पर बैठा; वह परमेश्वर की कलीसिया का और भी क्रूर उत्पीड़क था: उसने न केवल पवित्र प्रतिमाओं को अस्वीकार किया, बल्कि परमेश्वर के संतों को संत कहने पर भी रोक लगा दी, और उनकी पवित्र वस्तुओं को बेकार समझा।

[2835] सातवीं सार्वभौमिक परिषद का आयोजन 787 में निकिया में सम्राज्ञी आइरीन, जो लियो चौथे की विधवा थीं, द्वारा किया गया था। यह परिषद, जिसमें 367 पादरी शामिल थे और जिसकी अध्यक्षता संत तारासियस ने की, ने मूर्तिभंजन की निंदा की और प्रतिमाओं की पूजा को बहाल किया।

[2836] लियो तृतीय इसाउरियन – *'द एबीसी ऑफ द फेथ' द्वारा संपादित*

[2837] लियो तृतीय इसौरियन 716–741, संत जर्मैनस 730, अनास्तासियस 753। इस प्रकार, प्रतिमाओं की पूजा की बहाली से पहले, कॉन्स्टेंटिनोपल के सिंहासन पर दस पैट्रिआर्क एक के बाद एक सत्ता में आए, जिनमें से छह प्रतिमा-विरोधी थे।

[2838] कॉन्स्टेंटिन पंचम कोप्रोन्यमस, 741 से 775 तक शासन किया।

संक्षेप में कहें तो: यह सम्राट केवल दिखावे का ईसाई था, जबकि अपने हृदय में वह पूरी तरह से एक अविश्वासी यहूदी था। उस नीच ने सर्वश्रेष्ठ सृष्टि से परे, संपूर्ण विश्व की रक्षक और शरणस्थली, परमेश्वर की अति पवित्र माता का अपमान करने की हिम्मत की, उनके पवित्र नाम और सम्मानित प्रतिमाओं को अस्वीकार कर दिया; और उसने परमेश्वर के सामने उनकी मध्यस्थता का उल्लेख करने पर भी प्रतिबंध लगा दिया, जिनके द्वारा संपूर्ण विश्व का अस्तित्व है। ईश्वर की माता का उपहास उड़ाने के लिए, उसने सोने के सिक्कों से भरा एक थैला उठाया और उपस्थित लोगों से पूछा:

'क्या यह थैला कीमती है?'

उपस्थित लोगों ने उत्तर दिया:

'यह उस में मौजूद सोने की मात्रा जितना ही कीमती है।'

बोरी से सोना निकालने के बाद, कोप्रोनियम ने फिर पूछा:

'क्या अब बिना सोने के यह थैला अभी भी मूल्यवान है?'

उन्होंने उत्तर दिया:

'जब इसमें कोई सिक्का नहीं है तो इसका क्या उपयोग? एक खाली बोरा किसी काम का नहीं है।'

तब कोप्रोन्यमस ने कहा:

मरियम का भी यही हाल है: जब तक वह अपने गर्भ में मसीह को धारण किए हुए थीं, वह सम्मान की पात्र थीं; लेकिन उन्हें जन्म देने के बाद, उन्होंने वह सम्मान खो दिया और वह अन्य महिलाओं से अलग नहीं हैं।

हे सबसे नीच मुख और सबसे दुष्ट जीभ! उसने सभी स्वर्गीय शक्तियों में सबसे सम्मानित और सभी संतों में सबसे पवित्र, सृष्टिकर्ता की माता के विरुद्ध कैसी निन्दा कहने की हिम्मत की! क्या एक रानी, जिसने एक राजसी पुत्र को जन्म दिया हो, राजसी सम्मानों की पात्र नहीं रहती? क्या एक राजा की माँ का सम्मान केवल तब तक किया जाता है जब तक वह अपने गर्भ में राजा को धारण करती है? धिक्कार है उस पर, उस शापित ईश्वर-निन्दक पर, जो उन ईश्वर-निन्दकों—उन ईश्वर-घृणित यहूदियों—से कोई अलग नहीं था! और न केवल वह स्वयं ऐसा था, बल्कि उसने चापलूसी भरे वादों और धमकी भरी चेतावनियों से दूसरों को भी उसी अधर्मी ईश्वर-निन्दा के लिए उकसाया; जबकि जो आज्ञाकारी नहीं थे और उसका विरोध करते थे, उन्हें विभिन्न यातनाओं का शिकार बनाया गया, उन्हें ज़ंजीरों में बांधकर और लंबे समय तक भूखा रखकर, भयानक घावों से उनके शरीर को पीड़ा देकर, तलवार से उनका सिर कलम करके, आग में जलाकर, समुद्र की गहराई में डुबोकर – संक्षेप में, हर संभव तरीके से उन्होंने मसीह के वफादार और सच्चे सेवकों पर असहनीय यातनाएँ और एक कड़वी मृत्यु थोपी। इसके लिए, उसने स्वयं अपनी शापित आत्मा को एक भयानक मृत्यु में डाल दिया और, जब उसने अपनी अंतिम सांस ली, तो एक दुखद चीख निकाली:

'मुझे जीवित ही न बुझने वाली आग में डाला जा रहा है!'

और जिसने पहले परमेश्वर की अति पवित्र माता का अपमान किया था, उसने अब आज्ञा दी कि उनकी स्तुति भजनों से की जाए – फिर भी, परमेश्वर की दया से पूर्णतःपरित्यक्त होकर, उसे कोई सांत्वना नहीं मिली।

जब यह उत्पीड़क (अपमानित होकर) नष्ट हो गया, तब उसका पुत्र लियो, चौथा ऐसा नामधारी, सिंहासन पर बैठा; वह भी अपने पिता की तरह मूर्तिभंजक विधर्मी था, पर वह भी शीघ्र ही मर गया। उसके बाद उसकी पत्नी आइरीन[2839] ने अपने छोटे पुत्र कॉन्स्टेंटिन के साथ सिंहासन संभाला। उन्होंने मूर्तिभंजन की विधर्मिता की निंदा करने के लिए सप्तम सार्वभौमिक परिषद बुलाकर पवित्र चर्च में शांति बहाल की। मसीह का संपूर्ण चर्च आइकनों के साथ अपनी मूल भव्यता को फिर से प्राप्त करके और ऑर्थोडॉक्स सम्राटों और बिशपों को उनके सिंहासनों पर देखकर आनंद से भर गया। आइरीन के बाद, निकिफ़ोरस ने शासन किया, जिसके बाद माइकल ने शासन किया, ये दोनों ही ऑर्थोडॉक्स थे। फिर लियो, जिन्हें 'आर्मेनियाई' ([2840]) के नाम से जाना जाता था, जो इस नाम वाले पाँचवें व्यक्ति थे, सिंहासन पर बैठे। अपने नाम वाले, अधर्मी लियो द इसॉरियन के उदाहरण का अनुसरण करते हुए, उन्होंने भी ऑर्थोडॉक्स और संतों पर उत्पीड़न शुरू किया, और इस प्रकार पहले से ही निंदा किए जा चुके मूर्तिभंजन के पाखंड को पुनर्जीवित और बहाल किया। उसने सहायकों – समान विचारधारा वाले दुष्टों – की तलाश की और कई कुलीनों को पाया, जिनमें से प्रतिमा-भंग की कुसंप्रदाय में सबसे

[2839] लियो चौथे – 775–785, आइरीन – 797–802

[2840] निकिफोरस प्रथम – 802–811, माइकल प्रथम – 811–818, लियो पंचम अर्मेनियाई – 813–820

अधिक समर्पित दो जॉन, जिन्हें स्पेक्ट के नाम से जाना जाता था, और यूटकियिन थे; पुरोहित वर्ग में से, उसने जॉन, जिन्हें व्याकरणकार (ग्रामरयिन) के नाम से जाना जाता था, नए टर्टुलस[2841] , जो शैतान द्वारा चुना गया एक पात्र था, और एक निश्चित एंथनी साइलयिस को अपने पक्ष में कर लिया; भिक्षु संघ से – लियोन्टियस और ज़ोसमिस, जिन्हें कुछ समय बाद व्यभिचार का दोषी पाया गया, जिसकी सज़ा के रूप में उनकी नाक काट दी गई, और वे अपमान में मर गए, जिससे उनकी कुख्याति पीछे रह गई। उनके साथ, सम्राट अपनी अंधविश्वास में और अधिक गहरा गया, जबकि उन्होंने, अपनी सलाह के माध्यम से, उसे उस युद्ध में प्रोत्साहित किया जो उसने पहले ही चर्च के खिलाफ छेड़ दिया था।

अपने पूरे साम्राज्य से बिशपों और अन्य पुरोहितों को कॉन्स्टेंटिनोपल में इकट्ठा करने के बाद, लियो ने महामहिम पैट्रिआर्क निकिफोरस को पूरे पवित्र सिनेड के साथ अपने कक्ष में बुलाया, यह चाहकर कि उनकी उपस्थिति में और सभी कुलीनों के सामने, वे राजा के उपर्युक्त समान विचारधारा वाले सहयोगियों—जो अभी तक गुप्त विधर्मी थे—के साथ बहस करें। पहले तो, ज़ार स्वयं ऑर्थोडॉक्स से बातचीत में जुट गया; ऑर्थोडॉक्स होने का ढोंग करते हुए, उसने अपनी छाती से क्रूस पर चढ़ाए गए मसीह की प्रतिमा निकाली जो वह पहने रहता था, पाखंडपूर्वक उसके सामने सिर झुकाया, और पवित्र पिताओं से कहा:

'मेरी बात तो यह है कि मैं आपसे किसी बात में अलग नहीं हूँ, क्योंकि मैं स्वयं इस पवित्र प्रतिमा की पूजा करता हूँ, जैसा कि आप स्वयं देख सकते हैं; लेकिन कुछ अन्य लोग भी आ गए हैं जो अलग-अलग सिखाते हैं और दावा करते हैं कि उनका तरीका सही है। उन्हें यहाँ आपके सामने आने दो, और प्रश्नों और उत्तरों के माध्यम से प्रतिमाओं के संबंध में सही सिद्धांत प्रकट हो। यदि बिहस में, वे अधिक सही साबित होते हैं, और स्पष्ट तर्कों से आपको यह विश्वास दिलाते हैं कि उनका दृष्टिकोण सत्य के अनुरूप है, तो आपको न केवल इस अच्छे कारण का विरोध करने से बचना चाहिए, बल्कि इसका समर्थन भी करना चाहिए; लेकिन यदि वे आपसे पराजित हो जाते हैं और उनकी गलती उजागर हो जाती है, तो उन्हें इस हानिकारक शिक्षा को फैलाना बंद कर देना चाहिए। और फिर, पहले की तरह, आइकनों पर पूर्व शिक्षण बना रहे। और मैं आपके पारस्परिक वाद-विवाद में श्रोता और न्यायाधीश दोनों बनूँगा; क्योंकि यदि छोटे मामलों पर निर्णय लेना मेरे लिए उचित है, तो मुझे चर्च के शासन के मामलों में और भी अधिक ध्यान क्यों नहीं देना चाहिए? मैं आपकी बात सुनूँगा, और मुझे दूसरी पक्ष की बात भी सुननी होगी - और जिस पक्ष में, मेरी मान्यता में, सत्य निहित है, मैं उसी का अनुसरण करूँगा।

लेकिन परम पावन पैट्रिआर्क, सभी बिशपों के साथ, किसी भी तरह से इस पर सहमत नहीं हुए; वे न केवल इन दुष्ट विधर्मीयों के साथ बहस में शामिल नहीं होना चाहते थे, बल्कि उन्हें देखना भी नहीं चाहते थे, और उन्होंने उन्हें अपने सामने पेश होने की अनुमति देने से इनकार कर दिया।

'इस विधर्म की पहले ही सातवें सार्वभौमिक परिषद के पवित्र पिताओं द्वारा जांच हो चुकी है और उस पर निन्दा-शाप लगाया जा चुका है; इसे और जांचने की कोई आवश्यकता नहीं है, न ही उस चीज़ को चर्च में बहाल करने की जो चर्च द्वारा पूरी तरह से अस्वीकार कर दी गई है।'

हालाँकि, यह देखकर कि राजा विधर्म की ओर बहुत झुका हुआ था और विधर्मियों की सहायता कर रहा था, पवित्र पिताओं ने उससे निडर होकर बात की। साइज़िकस के बिशप संत एमलियिन[2842] ने कहा:

'हे राजा! यदि वह मामला जिसके लिए आपने हमें बुलाया है—सच्चे धर्म की परीक्षा—चर्च का मामला है, तो यह उचित है कि इसकी चर्चा, जैसा कि प्रथा है, पवित्र चर्च में की जाए, न कि शाही कक्ष में।'

राजा ने उत्तर दिया:

'लेकिन मैं भी चर्च का पुत्र हूँ, और मैं एक मध्यस्थ और सुलह कराने वाले के रूप में आपकी बात सुनूँगा, ताकि दोनों पक्षों के तर्कों पर विचार करने के बाद, मैं स्वयं सत्य का पता लगा सकूँ।'

इस पर, सिनेड के बिशप, संत माइकल ने उत्तर दिया:

'यदि आप एक मध्यस्थ और शांतिदूत हैं, तो आप एक मध्यस्थ और शांतिदूत के रूप में क्यों नहीं कार्य करते? आप चर्च की शिक्षाओं का विरोध करने वालों को इकट्ठा करते हैं, उन्हें अपने कक्ष में रखते हैं, और उन्हें निडर होकर

[2841] अलंकारशास्त्री (भाषण कला के शिक्षक) टर्टुलस ने रोमन राज्यपाल फेलिक्स के समक्ष यहूदियों द्वारा प्रेरित पौलुस पर लगाए गए आरोपों का समर्थन किया, और अपनी वाद-विवाद में सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण रूप से फेलिक्स की चापलूसी करने का ध्यान रखा – जो कथित तौर पर यहूदियों की आवश्यकताओं का हिमायती था (प्रेरितों के काम 24:1–27)।

[2842] साइज़िकस – प्रोपोंटिस के द्वीपों में से एक पर स्थित एक शहर, जिसकी स्थापना 5वीं शताब्दी ईसा पूर्व में माइलशियिनों द्वारा की गई थी

सभी को उपदेश देने के लिए प्रोत्साहित करते हैं, उन्हें दुष्ट सिद्धांतों का पालन करने के लिए उकसाते हैं! और ऑर्थोडॉक्स, आपके भयंकर प्रतिबंधों से डरकर, कोनों में ऑर्थोडॉक्सी के बचाव में एक शब्द भी बोलने की हिम्मत नहीं करते। यह मध्यस्थता और सुलह का संकेत नहीं, बल्कि उत्पीड़न और यातना का संकेत है।

'मेरी ओर से,' ज़ार ने उत्तर दिया, 'मैंने जैसा कहा है, मैं भी उसी तरह तर्क करता हूँ; लेकिन चूँकि मेरे ध्यान में यह आया है कि प्रतिमाओं की पूजा के संबंध में संदेह है, तो यह मेरा कर्तव्य है कि मैं इस मामले में चुप न रहूँ, बल्कि सत्य का पता लगाने का प्रयास करूँ। तो फिर, आप अपने विरोधियों से बातचीत क्यों नहीं करना चाहते? जाहिर है, इसका कारण यह है कि आप अज्ञानी हैं और आपके पास दिव्य धर्मग्रंथों से उन प्रमाणों का अभाव है जिनसे आप अपने तर्क की रक्षा कर सकें।

तब निकोमेडिया के बिशप, संत थियोफिलैक्ट ने कहा:

'मसीह, जिसकी प्रतिमा अब आपकी आँखों के सामने है, इस बात की गवाही देते हैं कि हमारे पास अपने ऑर्थोडॉक्स विश्वास के अनगिनत प्रमाण हैं, जो पवित्र प्रतिमाओं की धार्मिक भक्ति की पुष्टि करते हैं; लेकिन कोई हमारी नहीं सुनता, और हमारे लिए सत्ता के हाथ, उस शक्ति के खिलाफ हमारे संघर्ष में कोई प्रगति करना मुश्किल है जो हम पर यह प्रतिबंध लगाती है।'

तब निकिया के बिशप, संत पीटर ने सम्राट से कहा:

'आप हमें उन लोगों के साथ बहस के लिए कैसे आमंत्रित कर सकते हैं जिनकी आप मदद करते हैं और जिनके साथ आप स्वयं मिलकर हम पर हमला करते हैं? या क्या आप इस बात से अनजान हैं कि यदि आप यहाँ मनीकियों[2843] को भी लाएँ और उनकी मदद करना चाहें, तो वे भी, आपकी सुरक्षा में, आसानी से हम पर हावी हो जाएँगे?'

सार्डिस के बिशप संत यूथिमियस ने एक और भी साहसी भाषण दिया।

'हे राजा, सुनो! अब आठ सौ वर्षों से अधिक समय हो गया है, जब से हमारे प्रभु मसीह, जो पृथ्वी पर आए थे, को हर जगह चर्चों में प्रतिमा-कला में चित्रित किया जाता रहा है और उनकी प्रतिमा की पूजा की जाती रही है। तो फिर, कौन इतना अहंकारी है कि वह उस परंपरा को बदलने या समाप्त करने की हिम्मत करे जिसे इतने वर्षों से चर्चों में संरक्षित रखा गया है और जो पवित्र प्रेरितों, शहीदों और दैवीय रूप से प्रेरित पिताओं के माध्यम से हमारे समय तक पहुँची है? प्रेरित कहते हैं: *'इसलिये, भाइयो, दृढ़ हो जाओ और उन परम्पराओं को दृढ़ता से थामे रहो, जो तुम्हें मुंह से या हमारे पत्र द्वारा सिखाई गई हैं'* (2 थिस्स. 2:15)। और फिर: *'यदि हम या स्वर्ग से कोई दूत तुमको उस सुसमाचार के सिवाय कोई और सुसमाचार सिखाए, तो वह शापित हो'* (गला. 1:8)। इसीलिए, आइरीन और कॉन्स्टेंटिन के धर्मपरायण शासन के दौरान, पहले प्रतिमा-विरोधी विधर्मियों के खिलाफ सार्वभौमिक परिषद बुलाई गई थी, और स्वयं परमेश्वर के पुत्र ने अपने हाथ से उस परिषद का समर्थन किया; जो कोई भी उस परिषद के किसी भी आदेश का उल्लंघन करने या उसे नष्ट करने की हिम्मत करता है, वह धिक्कारित हो।

यद्यपि इन शब्दों ने सम्राट में भयंकर क्रोध उत्पन्न किया, फिर भी उसने धैर्यपूर्वक सुना, और ढोंगी ढंग से नम्रता का दिखावा किया। चर्च के एक उत्साही शिक्षक और स्टुडियन मठ के मठाधीश, संत थियोडोर ने भी निडर होकर बोलने की हिम्मत की:

'हे राजा! सामान्य भलाई के लिए स्थापित धार्मिक व्यवस्था को नष्ट न करें। पवित्र प्रेरित पौलुस कहते हैं: परमेश्वर ने मंडली को *"कुछ प्रेरित, कुछ भविष्यद्वक्ता, कुछ सुसमाचार प्रचारक, कुछ रखवाले और शिक्षक दिए हैं, ताकि पवित्र लोगों को सिद्ध किया जाए"* (इफिसियों 4:11-12); फिर भी प्रेरित ने इनके बीच राजाओं को शामिल नहीं किया। हे राजा, आपको सांसारिक मामलों, राज्य और सशस्त्र बलों के शासन का प्रभार सौंपा गया है; इनका ध्यान रखें, लेकिन प्रेरितों की शिक्षा के अनुसार, चर्च के प्रशासन को पादरियों और शिक्षकों पर छोड़ दें। यदि, तथापि, आप ऐसा करने में विफल रहते हैं, तो यह जान लें: भले ही स्वर्ग का कोई स्वर्गदूत हमारे सच्चे विश्वास के विपरीत कोई शिक्षा लेकर आए, हम उसकी भी नहीं सुनेंगे, आप जैसे नश्वर मनुष्य की तो दूर की बात है।

यह देखकर राजा बहुत क्रोधित हो गया और पवित्र पिताओं के शब्दों को अपनी निंदा और अपमान समझकर, उसने वह भीतरी क्रोध प्रकट किया जिसे वह अब तक दिखावे की नम्रता के नीचे छिपाए हुए था। सम्पूर्ण पवित्र धर्मसभा

[2843] मनीकियों ने यह शिक्षा दी कि संसार में दो राज्य हैं – एक अच्छा और एक बुरा – जो एक-दूसरे के साथ निरंतर संघर्ष में हैं, और एक व्यक्ति के भीतर दो आत्माएँ होती हैं, एक अच्छी और एक बुरी; उनका मानना था कि मसीह का कोई शरीर नहीं था और उन्होंने केवल दिखावे के लिए ही कष्ट सहे; वे आत्मा के पुनर्जन्म में भी विश्वास करते थे।

को अपमान और तरिस्कार के साथ कक्ष से बाहर नकिालने के बाद, उसने अन्यायपूर्वक धर्मनष्ठि चरवाहे, परम पावन पैट्रआर्क नकिेफ़ोरस को उनके सहिासन से हटा दयिा; उसने अन्य ऑर्थोडॉक्स बशिपों के साथ भी ऐसा ही कयिा, और उन्हें सभी को वभिन्नि देशों और स्थानों में नर्विासन में भेज दयिा, जसिमें आदरणीय थयिोडोर द स्टुडाइट भी शामलि थे। उन्होंने अपने एक सलाहकार, धर्मनरिपेक्ष थयिोडोटस, जन्हिें कैसटिर के नाम से जाना जाता था, जो वशि्वास से एक वधिर्मी थे, को पदोन्नत कयिा, एक पापी जीवन वाला व्यक्त,ि जो दखिावटी तौर पर अपनी बीमारी (वह पेट की बीमारी से पीड़ति होने का दावा करता था) को ठीक करने के लिए, लेकनि वास्तव में पाप के लिए, अपनी सेवा में एक दासी को रखता था जो चकित्सिा का काम करती थी। इसी तरह, ऑर्थोडॉक्स को बाहर नकिालने के बाद, राजा ने अन्य धर्मप्रांतों में अपने ही वधिर्मी और झूठे बशिपों को स्थापति कयिा और पवत्रि चर्चों से पवत्रि प्रतमिाओं को बाहर फेंक दयिा। और एक बार फरि, प्रतमिाओं की पूजा के लिए ऑर्थोडॉक्स का वही उत्पीड़न शुरू हो गया जो पहले लयिो द इसाउरयिन और उसके बेटे कोप्रोनमिस के अधीन हुआ था।

संप्रदायकि सम्राट लयिो द आर्मेनयिन और झूठे पैट्रआर्क थयिोडोटस, जो उनके वचिारों से सहमत थे, ने कॉन्स्टेंटनिोपल में अपनी गैरकानूनी सभा बुलाई और, जबकि वे स्वयं एक शपथ से बंधे थे, उन्होंने ऑर्थोडॉक्स को शाप दयिा, दव्यि और धन्य पवत्रि पतिाओं को शाप दयिा; जबकि जो लोग इस अधर्मी सभा से असहमत थे, उन्हें वभिन्नि यातनाएँ दी गईं और मार डाला गया। जब वधिर्मी सभा समाप्त हो गई, तो ज़ार ने सबसे प्रमुख मठों के मठाध्यक्षों को अपने पास बुलाया, और उनमें हमारे दव्यि पतिा नकिति भी थे, जनिकी कथा हम अब सुनाते हैं। पहले तो, चापलूसी भरे शब्दों से, उसने उन्हें अपनी वधिर्म को अपनाने के लिए मनाने की कोशशि की; लेकनि जब उसने देखा कि वे उसकी इच्छा के आगे नहीं झुकेंगे, तो उसने उन्हें अलग-अलग वभिन्नि काल-कोठरयिों में कैद कर दयिा, और यह सोचने लगा कि उनके साथ आगे क्या कार्रवाई की जाए।

और आदरणीय नकिति कई दनिों तक एक बदबूदार कालकोठरी में रहे। यह बदबूदार कैद ही संत के लिए कोई छोटी यातना नहीं थी; इसके अलावा, हर दनि अनुशासनहीन और लज्जाहीन चरत्रि और वाणी वाले वभिन्नि लोग उनके पास आते थे, जो 'मानव' नाम के भी लायक नहीं थे। अपमानजनक और शर्मनाक शब्दों से, उन्होंने पवत्रि एल्डर का अपमान कयिा और उन्हें ताने कसे, जसिसे उन्हें बहुत आघात पहुँचा। इन लोगों को जानबूझकर वधिर्मयिों द्वारा भेजा गया था; उनमें से, सबसे दुष्ट नकिोलस नाम का एक आदमी था: उसने पूजनीय संत को वशिेष रूप से दुख पहुँचाया, पागल और अभद्र भाषा से उनका अपमान कयिा, जब तक कि उनके बहुत पहले मर चुके पतिा उन्हें एक सपने में प्रकट नहीं हुए, और कहा: 'ईश्वर के सेवक को अकेला छोड़ दो।' उस समय से, नकिोलस ने अपनी बकवास बंद कर दी, और न केवल उसने स्वयं संत को परेशान करना बंद कर दयिा, बल्कि उसने दूसरों को भी ऐसा करने से मना कर दयिा। रेवरेंड ने जेल में कई दनि कष्ट सहते हुए बतिाए; फरि ज़ार ने उन्हें पूर्वी क्षेत्रों में, मासालेओन शहर में, नर्विासन पर भेजने का आदेश दयिा। यह एक कड़ाके की सर्दी थी, और उस संत ने अपनी कमज़ोर कपड़ों में ठंड, बर्फ और हवा से कई कठनिाइयों को सहा। इसके अलावा, जसि अधकिारी ने उसे नर्विासन पर साथ ले जाया, वह एक नर्दियी और नष्ठिुर व्यक्त निकिला: उसने यात्रा के दौरान उस वृद्ध को थका दयिा, और उसे इतनी जल्दी करने के लिए मजबूर कयिा कि एक बहुत लंबी यात्रा कम समय में पूरी हो सके।

ज़ार ने अन्य सम्माननीय मठाधीशों के साथ भी यही कयिा, और उनमें से प्रत्येक को अलग-अलग नर्विासन में भेज दयिा। तब, यह सोचकर कि जो लोग सर्वदुख से परे हैं, उन्हें बंदी बनाकर न केवल वह अपना उद्देश्य पूरा नहीं कर पाएगा, बल्कि उन्हें अपनी शकि्षाओं का और भी अधकि उत्साह के साथ पालन करने के लिए प्रेरति भी करेगा, राजा, जो चंचलचत्ति था, ने अपना मन बदल लयिा। आदरणीय नकिति ने मासालयिोन में नर्विासन के रूप में मुश्कलि से पाँच दनि ही बतिाए थे कि सम्राट ने उन्हें अन्य मठाध्यक्षों के साथ तुरंत बज़िान्टयिम लौटाने का आदेश दयिा। वापसी की यात्रा जाने वाली यात्रा से भी अधकि जल्दबाजी में की गई, जसिसे संत उस तेज यात्रा और कड़क ठंड में मुश्कलि से ही बच पाए। जब सभी मठाधीशों को बज़िान्टयिम लाया गया, तो सम्राट ने उन्हें तब तक पहरे में रखने का आदेश दयिा जब तक कि वह यह तय नहीं कर लेता कि उन्हें अपनी सोच पर कैसे लाया जाए। सर्दयिाँ बीत गईं, साथ ही पवत्रि महा-उपवास और पवत्रि ईस्टर का सबसे गौरवशाली पर्व भी बीत गया; फरि सम्राट ने कैदयिों को उपर्युक्त जॉन द ग्रामरयिन के हवाले कर दयिा, जसिने वाक्पटुता की कला जैसे शैतान के मुँह से सीखी हो, ताकि वह उन्हें अपनी इच्छानुसार यातना दे सके। उसने उनमें से प्रत्येक को अलग-अलग वभिन्नि काल-कोठरयिों में बंद कर दयिा, और उन्हें उतना ही यातना दी जतिनी कि वधिर्मी संतों को देते थे। काल-कोठरयिाँ तंग, अंधेरी और बदबूदार थीं, और कैदयिों को अत्यधकि पीड़ा पहुँचाती थीं, जन्हिें कसिी

भी प्रकार की सुवधिा नहीं मलिती थी, यहाँ तक कि बस्तिर भी नहीं था। एक छोटी सी खड़िकी से, उन्हें कुत्तों की तरह गंदी और फफूंदी लगी रोटी खलिाई जाती थी—दनि में आठ ज़ोलोटनकि से अधकि नहीं, बस इतना कि वे भूखे न मरें—और साथ में दयिा जाता था धुंधला, बदबूदार पानी। पादरयिों को ऐसी दयनीय स्थतिि में रखकर, यातना देने वाले जॉन को उम्मीद थी कि वह उन्हें तोड़ देगा, या तो उन्हें अपने साथ सहमत होने के लिए मजबूर करने के लिए या उन्हें थका-थका कर मार डालने के लिए। आदरणीय नकिति के और भी बड़े दुख के लिए, दुर्भावनापूर्ण जॉन ने अपने पूर्व शष्यि, , जसिे थयिोक्टस्टि नामक एक युवक था और जो अभी-अभी वयस्क हुआ था, को पकड़ लयिा; उसने उसे एक भयानक कालकोठरी में बंद कर दयिा, और उसे भूख और प्यास से पीड़ति कयिा। धर्मद्रोहयिों ने, यह देखकर कि धर्मगुरु अपने रूढ़विादी धर्म को त्यागने के बजाय मरने को तैयार थे, उनके खलिाफ नम्निलखिति चाल चली। उन्होंने कहा:

'हम आपसे और कुछ नहीं चाहते, सविाय इसके कि आप एक बार चर्च में पैट्रआर्क थयिोडोडस के साथ पवत्रि संस्कार ग्रहण करें; आप इसके अलावा और कुछ नहीं करेंगे, और आप में से प्रत्येक अपनी आस्था और शक्षिाओं के साथ स्वतंत्र रूप से अपने मठ में चला जाएगा।'

संप्रदायियों की इस चालाकी भरी युक्ति से गुमराह होकर, पादरयिों ने उनकी मांग को कुछ हद तक मान लयिा। बाद में, जब उन्हें एहसास हुआ कि उनके साथ धोखा हुआ है, तो उन्होंने पूरे मन से पश्चाताप कयिा और सही रास्ते पर लौट आए। उनमें से प्रत्येक को उनकी अलग-अलग कोठरयिों और कैद से रहिा कए जाने के बाद, वे पूजनीय पति नकिति के पास गए और उन्हें थयिोडोटस के साथ संप्रदाय में शामलि होने और कोठरी छोड़ने के लिए राजी करने और वनिती करने लगे। संत नकिति ने उस कालकोठरी को छोड़ने से इनकार कर दयिा, जसिे वह मसीह के लिए सहन कर रहे थे, और उन्हें पादरयिों की वनिती मानने की कोई इच्छा नहीं थी; लेकनि पादरयिों ने जोर देकर कहा:

'हमारे लिए आपके पीछे छोड़कर यहाँ से जाना असंभव है: वे हमसे बस एक छोटी सी बात की माँग कर रहे हैं - केवल थयिोडोटस के साथ पवत्रि सहभागति प्राप्त करना; हमारा वश्विास हमारे साथ ही रहेगा। सोचने पर, इन वर्तमान कठनि परस्थितियिों में, सब कुछ बर्बाद करने की तुलना में अपने लिए एक छोटी सी रयिायत स्वीकार करना बेहतर है।'

इस प्रकार उन्होंने नकिति पर लंबे समय तक और लगातार दबाव डाला और आग्रह कयिा; पूजनीय व्यक्ति ने, पीड़ा से बचने की इच्छा से या यातना के डर से नहीं, बल्कि बुजुर्गों की वनिम्र प्रार्थनाओं के जवाब में और उनके सफेद बालों के सम्मान के कारण, अपनी इच्छा के वरिुद्ध उनकी बात मान ली और बाहर नकिल आए। उन्हें जीवन और मृत्यु के बीच चयन करना पड़ा; और यद्यपि वे ऑर्थोडॉक्सी (सही आस्था) के लिए जीवन से मृत्यु को अधकि पसंद करते, फरि भी उन्होंने उस समय अपने सम्मानति साथयिों की अवज्ञा नहीं की, जनिकी सच्ची आस्था और सदाचारी जीवन उन्हें अच्छी तरह से ज्ञात था।

वे सभी एक साथ झूठे पादरी के पास गए; उसने, उन्हें अपने साथ संप्रदाय में और अधकि आसानी से लुभाने के लिए, उन्हें आइकनों से जानबूझकर सुसज्जति एक प्रार्थना स्थल पर ले जाया, ताकि संत, पवत्रि आइकनों को देखकर, यह नष्किर्ष नकिाल सकें कि पादरी सच्चा धर्म रखता था। वहाँ, थयिोडोतस ने लटिर्जी का अनुष्ठान कयिा; उन्होंने उनके हाथों से पवत्रि कम्युनयिन ग्रहण की और उनके मुख से ये शब्द सुने: 'जो कोई भी मसीह की प्रतमिाओं का सम्मान नहीं करता, वह अनथमा हो।' महाधर्माध्यक्ष ने यह इसलिए नहीं कहा कि वह स्वयं उद्धारकर्ता की प्रतमिा का सम्मान करते थे, बल्कि पाखंड के कारण - संतों के सामने - ताकि उन्हें उनके साथ संप्रदायकि होने में कोई संदेह न हो। बाद में, जब सभी अपने-अपने मठों में लौट आए, तो आदरणीय नकिति इस बात पर गहराई से शोक करने लगे कि उन्होंने झूठे पैट्रआर्क थयिोडोडस, उस पाखंडी धोखेबाज़ के साथ संप्रभुता ग्रहण की थी: वह धार्मकि मार्ग से थोड़ी सी भी वचिलता को भी पूरी तरह से भूल मानते थे। उन्होंने एक दूसरे देश में चले जाने और वहाँ अपने अपराध के लिए प्रायश्चति करने का नश्चिय कयिा। एक जहाज पर सवार होकर, वे प्रोकोनस्सि नामक एक द्वीप (मार्मारा सागर में, जसिे अब मार्मारा सागर के नाम से जाना जाता है) पर पहुँचे। लेकनि फरि उन्होंने मन ही मन तर्क कयिा: जहाँ अपराध था, वहाँ पश्चाताप भी होना चाहिए – और वे बज़िान्टयिम लौट आए।

शहर में खुलेआम घूमते हुए, आदरणीय नकिति ने नडिर होकर लोगों को सातवें सार्वभौमकि परषिद के पवत्रि पतिाओं द्वारा स्थापति रूढ़विादी सद्धिांतों का पालन करने की शक्षिा दी। सम्राट को इस बात की जानकारी मलिी, उसने संत को अपने पास बुलाया और पूछा:

'आप अन्य मठाधीशों की तरह अपने मठ क्यों नहीं लौटे? आप अपनी मर्जी से अकेले यहाँ क्यों रुके हुए हैं, हमारे आदेश की अवज्ञा करते हुए, जैसा कि मुझे सुनाई देता है? या क्या आप हमारे अधिकार को कुछ नहीं समझते? हमारे आदेश का पालन करें और अपने मठ लौट जाएँ; यदि आप नहीं गए, तो मैं आपको यातना देने का आदेश दूँगा।'

संत ने नम्रता से उत्तर दिया:

– हे राजा! मैं अपने मठ नहीं जाऊँगा; मैं अपने विश्वास को नहीं त्यागूँगा; मैं अपने धर्म-स्वीकार पर दृढ़ रहता हूँ और ऐसा ही करता रहूँगा; मेरे पूर्वज, पवित्र ऑर्थोडॉक्स बिशप, इस पर दृढ़ रहते हैं, और अपनी किसी गलती के बिना वे आपके हाथों निर्वासन, बेड़ियाँ और कई विपत्तियाँ सहन कर रहे हैं, ऑर्थोडॉक्स चर्च की रक्षा करते हुए, जिसमें हम रहते हैं और परमेश्वर की महिमा की आशा में सांत्वना पाते हैं। मेरे बारे में यह निश्चित रूप से जान लो: मैंने वह काम मृत्यु के भय से या इस सांसारिक जीवन के प्रेम से नहीं किया, जो मुझे नहीं करना चाहिए था, बल्कि आज्ञाकारिता के कारण मैं अपनी इच्छा के विरुद्ध बड़ों के अधीन हो गया: केवल उनकी इच्छा का पालन करके ही मैं झूठे पैट्रिआर्क थियोडोटस के साथ संप्रदाय में शामिल हुआ, जिस बात का मुझे अब पछतावा है और जिसके लिए मैं पश्चाताप करता हूँ। इस बात का पूरा भरोसा रखो कि अब से मेरा तुमसे कोई भी मेल-जोल नहीं है: मैं पवित्र पुरखों की परंपरा पर दृढ़ता से कायम हूँ, जिसे मैंने शुरू से ही स्वीकार किया है। मेरे साथ जो चाहो सो करो, और मुझसे कुछ और सुनने की उम्मीद मत रखना।

राजा ने, उसकी दृढ़ आस्था को देखकर, उसे मंगन के नाम से जाने जाने वाले शाही कक्षों के प्रमुख, ज़करियास नामक एक व्यक्ति के हवाले कर दिया, ताकि वह निर्णय आने तक उसे हिरासत में रख सके। ज़करियास एक दयालु और धार्मिक व्यक्ति था; उसने न केवल उस वृद्ध को कोई कष्ट नहीं दिया, बल्कि उसे बहुत सम्मान भी दिया। तब राजा ने आदरणीय निकिता को पवित्र शहीद ग्लसिरिया के द्वीप पर निर्वासित कर दिया: इस छोटे से ' ' द्वीप का नाम पवित्र शहीद के नाम पर रखा गया था क्योंकि उनके पवित्र अवशेष वहाँ रखे थे और उनके नाम पर एक बड़ा चर्च और मठ बनाया गया था, जिसे विधर्मी अधिकारियों ने एंफिमिस नामक एक खसरा आदमी को सौंपा था। यह आदमी किसी भी तरह से दयालु व्यक्ति नहीं था – वह एक जादूगर, ईश्वर-निंदा करने वाला, बुराई करने में सक्षम, शत्रुतापूर्ण, चालाक, अहंकारी और निर्दयी था; स्थानीय निवासी उसकी क्रूरता और दुष्ट स्वभाव के कारण उसे कैफास कहते थे। उस समय मठों के प्रशासन के लिए ऐसे ही लोगों को नियुक्त किया जाता था ताकि वे धर्मनिरपेक्ष अधिकारियों के समर्थन से, अपनी मर्जी से सब कुछ बदल सकें। एंफिमि ने उस संत को स्वीकार किया जिसे उसके पास भेजा गया था और, उसे भेजने वालों द्वारा दिए गए अधिकार का उपयोग करते हुए, उसे बेरहमी से यातना दी। ईश्वर के संत को सबसे तंग कालकोठरी में बंद करने के बाद, उसने उन्हें अथक यातनाएँ दीं, यहाँ तक कि उन्हें कालकोठरी से बाहर झाँकने भी नहीं दिया; उसने स्वयं उसकी चाबी रख ली और एक बहुत ही संकरी दरार से उन्हें मामूली भोजन पहुँचाने का आदेश दिया। विधर्मी नेताओं ने अंफिमिस से महान पुरस्कारों का वादा किया था यदि वह आदरणीय निकिता को उनके साथ सहमत होने के लिए मजबूर कर सके, और इसी कारण उस नीच व्यक्ति ने संत को विशेष रूप से बुरी तरह से यातना दी, इस उम्मीद में कि वह उन्हें विधर्मी सिद्धांतों को अपनाने के लिए मजबूर कर दे; लेकिन आदरणीय संत ने अपने धर्मपरायणता के लिए दी गई पीड़ा को प्रेम से सहन किया; हालाँकि, ईश्वर ने उनमें अपना अद्भुत अनुग्रह प्रकट किया और दिखाया कि वे संकट में लोगों के लिए एक धर्मी, पवित्र और चमत्कार करने वाले सहायक थे। उपरोक्त ज़कारियास, जब उन्हें राजा द्वारा थ्रेस के प्रदेशों में लोगों के मामलों से संबंधित एक मिशन पर भेजा गया था, तो वे बर्बर लोगों के हाथ लग गए, जिन्होंने उन्हें बंदी बना लिया। सिनाडा के बिशप, संत माइकल, जो भी अपने ऑर्थोडॉक्स विश्वास के लिए जेल में बंद थे, को यह खबर मिली और उन्होंने आदरणीय निकिता को संदेश भेजा:

'हमारे पारस्परिक मित्र ज़कारियास को बाँधकर एक बर्बर भूमि में ले जाया गया है; मैं आपसे विनती करता हूँ कि आप ईश्वर के समक्ष उनके लिए मध्यस्थता करें, क्योंकि आप ऐसा करने में सक्षम हैं।'

यह समाचार पाकर संत बहुत दुखी हुए और उस पूरे दिन उन्होंने कुछ भी नहीं खाया; शाम को, उन्होंने अपने सेवादार भाई फिलिप से एक मोमबत्ती ली, उसे जलाया, और पूरी रात प्रार्थना में खड़े रहे, बंदी ज़करियास की ओर से दयालु ईश्वर से विनती करते रहे कि वह उसे बर्बर लोगों के हाथों से छुड़ा दें। और उसे ईश्वर से यह संदेश मिला कि ज़कारियास को जल्द ही रिहा कर दिया जाएगा। सुबह, फिलिप आया और उसने देखा कि उसके पिता का चेहरा प्रसन्न और उनका मन आनंदित था, और उसने उनसे कहा:

'पिताजी! कल मैं आपको गहरे दुख और उदासी में छोड़कर गया था, फिर भी अब मैं आपको प्रसन्न देख रहा हूँ। मैं आपसे विनती करता हूँ, मुझे इस दुख से आनंद में आए इस परिवर्तन का कारण बताइए।'

संत ने उत्तर दिया:

'मुझे आनंद है कि हम जल्द ही अपने मित्र ज़कारियास को यहाँ देखेंगे।'

और ऐसा ही हुआ। कुछ दिनों बीत गए; यूनानी राजा ने बर्बर लोगों के साथ शांति स्थापित कर ली, और दोनों पक्षों ने कैदियों का आदान-प्रदान शुरू कर दिया। जब कैदियों को आदान-प्रदान के लिए भेजा गया, तो राजा ने ज़कारियास के बारे में नहीं सोचा, क्योंकि उसे पहले ही पता चल चुका था कि वह सप्तम सार्वभौमिक परिषद के सिद्धांतों का पालन करता था और ऑर्थोडॉक्स की सहायता करता था; और इस प्रकार उसने उसे बर्बरों के हाथों में छोड़ दिया, ताकि वह वहीं मर जाए। जब बर्बरों ने कई ग्रीक बंदियों को रिहा कर दिया, लेकिन ज़कारियास वहीं रह गया, तो बर्बरों के नेता ने उससे कहा:

'क्या तुम अपनी मातृभूमि लौटना चाहते हो?'

ज़कारियास ने उत्तर दिया, 'मैं तो बहुत चाहता हूँ, लेकिन मुझे इस कैद से मुक्त करना हमारे राजा की इच्छा नहीं थी।'

नेता ने कहा:

'मैं तुम्हें आज़ाद करता हूँ; जहाँ चाहो वहाँ जाओ।'

जब ज़कारियाह ने देखा कि बर्बर सरदार उसके प्रति इतने अप्रत्याशित रूप से दयालु थे, तो उसे एहसास हुआ कि स्वयं ईश्वर ही पवित्र पुरखों की प्रार्थनाओं के माध्यम से यह सब कर रहे थे, जिनके प्रति उन्होंने कभी दया दिखाई थी। साहस से भरकर, उन्होंने सरदार से कहा:

'यदि आपको मुझे आज़ाद करना उचित लगता है, तो मुझे एक और बंदी, मेरे ही नाम का एक देशवासी, जिसे मेरे साथ बेड़ियाँ पहनाई गई थीं, दे दें।'

कमांडर ने उत्तर दिया:

'उसे भी ले जाओ, और तुम दोनों शांतिपूर्वक अपने देश लौट जाओ।'

इस प्रकार ज़कारियास को मुक्त कर दिया गया। अपने मित्र के साथ द्वीप पर पूजनीय फादर निकिता के पास पहुँचने पर, उन्होंने उनकी पवित्र प्रार्थनाओं के लिए धन्यवाद दिया, जिनके द्वारा ईश्वर ने उन्हें बर्बर कैद से मुक्त कर दिया था। इन पवित्र पिता ने एक और अद्भुत चमत्कार भी किया: ईश्वर से अपनी प्रार्थना के माध्यम से, उन्होंने तीन भाइयों को डूबने से बचाया और उन्हें सुरक्षित किनारे पर लाया, जब वे आधी रात को एक नाव में समुद्र पार करते समय अचानक तूफान में फंस गए थे। इस प्रकार, स्वयं बेड़ियों में जकड़े और कठिनाइयों को सहते हुए, उन्होंने चमत्कारिक रूप से दूसरों को दासता और संकट से मुक्त कराया।

सम्माननीय पिता ने छह वर्षों तक जेल में कष्ट सहे, जब तक कि अधर्मी राजा लियो द आर्मेनियन की मृत्यु नहीं हो गई। जब बाद वाले को उसके ही सैनिकों द्वारा अप्रत्याशित रूप से मार दिया गया और माइकल ऑफ अमोरिया, जिन्हें ट्रावलियस या वाल्वोस के नाम से जाना जाता है, सिंहासन पर आसीन हुआ, तो पवित्र पिताओं को उनके बंधनों और कारावास से मुक्त किया जाने लगा; तभी पूजनीय पिता निकिता, मिदिकी मठ के मठाध्यक्ष, बिना रक्तपात के एक शहीद, ऑर्थोडॉक्स धर्म के एक वीर स्वीकारकर्ता, और मसीह के एक अजेय योद्धा, को मुक्त किया गया। वे अपने मठ में वापस नहीं गए, बल्कि विज़िटियम के उत्तर में बहुत दूर नहीं, एक एकांत स्थान पर बस गए, क्योंकि वे मौन में रहना चाहते थे। वहाँ, अपनी लंबी पीड़ाओं के बाद, वे केवल थोड़े समय के लिए ही रहे, फिर भी उन्होंने अपनी सर्व-चंगा करने वाली कृपा की शक्ति से कई चमत्कारिक आशीर्वाद प्रदान किए। अपनी मृत्यु से पहले, निर्वासन में सहन की गई सभी पीड़ादायक यातनाओं के बाद, वह अंतिम बार बीमार पड़ गए; उन्होंने शनिवार को पवित्र परमप्रसाद ग्रहण किया, और रविवार की भोर में 3 अप्रैल[2844] को प्रभु के पास प्रस्थान कर गए।

उनके पवित्र निधन की खबर तुरंत राजधानी और आसपास के क्षेत्र में फैल गई। जल्द ही, दोनों लिंगों के और सभी वर्गों के लोगों की एक बड़ी भीड़—पुरोहित और आम लोग दोनों—शहर और दूर-दूर से इकट्ठा हो गई, जिसमें मिदिकी मठ और अन्य मठों के भिक्षु भी शामिल थे; दो बिशप भी आए: एफिसस के संत थियोफिलिस और थ्रेसलोनिका के संत जोसेफ; परंपरा के अनुसार पवित्र पिता के पूजनीय शरीर को तैयार करने के बाद, उन्होंने इसे एक अवशेष-पात्र में रखा, एक जहाज पर लादकर मिदिकी मठ ले गए। प्लुसियाड के बिशप, धन्य पॉल, भिक्षुओं और धर्मनिष्ठ लोगों की भीड़ के साथ, तट पर शरीर से मिले, इसे अपने कंधों पर उठाया और मठ तक ले गए। रास्ते में अद्भुत चमत्कार हुए: बीमार लोग

[2844] वर्ष 824 में।

ठीक हो गए और दुष्ट आत्माओं से ग्रस्त लोग मुक्त हो गए; एक महिला, जो लंबे समय से रक्तस्राव से पीड़ित थी, उसने बस पूजनीय के पवित्र अवशेषों को छू लिया और तुरंत ठीक हो गई। भजन-संगीत और उपयुक्त भजनों के गायन के साथ, परम पूज्यनीय को बरामदे के बाईं ओर, उस मठ के पहले मठाधीश, दिवंगत संत निकिफोरस की कब्र में लिटाया गया। और दफनाने के बाद, विश्वास के साथ आने वालों पर कई चमत्कार भी किए गए और उन्हें आरोग्य प्रदान किया गया, हमारे ईश्वर मसीह की महिमा के लिए, जो अपने संतों में महिमा पाते हैं; उसी को, पिता और पवित्र आत्मा के साथ, सभी से सम्मान, महिमा और आराधना मिले, अब और हमेशा और युगानुयुग, आमीन।

17 अप्रैल

4 अप्रैल (पुराने कैलेंडर के अनुसार)

उसी दिन, परम पूजनीय जॉर्ज मौन का स्मरणोत्सव।

हमारे पूजनीय पिता जोसेफ, भजन-रचयिता और कैनन-रचयिता की स्मृति

4 अप्रैल को स्मरणोत्सव

संत जोसेफ का मूल स्थान सिसिली था[2845] । उनके माता-पिता, प्लोटिनस और अगथिया, धार्मिक और सदाचारी लोग थे; उनके ईश्वर-भक्त जीवन के लिए, प्रभु ने उन्हें ऐसा पुत्र दिया जिसने, एक उत्कृष्ट कैनन-रचयिता के रूप में, चर्च को इसके लाभ के लिए पवित्र भजनों से सुशोभित किया। उस लड़के का पालन-पोषण ठोस विद्वतापूर्ण शिक्षा और अच्छे चरित्र में हुआ, और उसके बचपन की आदतों में ही यह संकेत मिलते थे कि जब वह वयस्क होगा, तो वह सद्गुणों में पूर्णता प्राप्त करेगा: वह सौम्य, शांत और विनम्र था, और वह युवाओं के खेलों से दूर रहता था; बचपन से ही उपवास और संयम के प्रति प्रेम विकसित करने के कारण, उसने स्वादिष्ट भोजन की तलाश नहीं की, वह केवल रोटी और पानी पर ही जीवित रहा, और वह भी केवल शाम को; उसने पवित्र धर्मग्रंथों का बहुत सफलतापूर्वक अध्ययन किया। इस प्रकार, जब बर्बरों ने सिसिली पर आक्रमण किया, तो जोसेफ शरीर और आत्मा से विकसित हुआ, और उसके माता-पिता को अपनी मातृभूमि से अन्य भूमि पर भागने के लिए मजबूर होना पड़ा। पहले, जोसेफ उनके साथ पेलोपोनेस के लिए रवाना हुआ, लेकिन बाद में, अपने माता-पिता को पीछे छोड़कर, वह मैसेडोनिया की राजधानी थ्रेसलॉनिका में चला गया; वहाँ उन्होंने एक मठ में प्रवेश किया, संन्यासी की शपथ ली और तपस्या के अनुशासन का अभ्यास किया, उन्होंने सभी प्रकार की तपस्या , मठ जीवन और सद्गुणों का लगन से पालन किया; और वे पूर्णता के पुरुष और एक अनुभवी भिक्षु बन गए। एक खाल से ढकी ज़मीन उसका बिस्तर थी; फटा-पुराना कपड़ा उसका वस्त्र था; उसका उपवास कठोर था; उसका भोजन रोटी का एक छोटा सा टुकड़ा और थोड़ा सा पानी था; वह पूरी रात प्रार्थना में खड़ा रहता था; उसका घुटने टेकना अविराम था; उसके होठों पर हमेशा भजन और उसके हाथों में हमेशा काम रहता था। वे पवित्र शास्त्रों का अध्ययन लगन से करते थे, ज्ञान और आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि से परिपूर्ण थे, और ईश्वर के एक स्वर्गदूत की तरह, अपने भाइयों के बीच एक शुद्ध और पवित्र जीवन के उदाहरण के रूप में चमकते थे। उनके अच्छे कार्यों और कई कारनामों को विस्तार से बयां करना असंभव है।

इस प्रकार वह दूसरों से अधिक ईश्वर के लिए परिश्रम करता था, जिससे उन्हें महान प्रसन्नता हुई। मठाधीश और भाइयों के आग्रह पर, उसने पादरीत्व स्वीकार कर लिया, और उसे थिस्सलोनिकी के बिशप द्वारा एक पादरी के रूप में अभिषिक्त किया गया। एक पादरी के रूप में, उसने अपने परिश्रम और कार्यों को दोगुना कर दिया, और अक्सर दैवीय पूजा का अनुष्ठान किया, जिसमें वह अपने और पूरी दुनिया के लिए आँसुओं के साथ प्रार्थना करता था। डेकापोलिस के पूजनीय ग्रेगरी[2846] मठ में आए; पूजनीय जोसेफ को देखकर, उन्होंने एक पवित्र व्यक्ति के रूप में उन्हें बहुत पसंद किया

[2845] सिसिली भूमध्य सागर के सबसे बड़े द्वीपों में से एक है, जो एपेनाइन प्रायद्वीप के दक्षिण में स्थित है और मेसिना जलडमरूमध्य द्वारा इससे अलग होता है।

[2846] उनका पर्व दिवस 20 नवंबर है

और उनमें एक मित्र और साथी भिक्षु पाया। कुछ समय बीत गया, और ग्रेगरी, विधर्मीयों द्वारा परेशान किए जा रहे विश्वासियों को मजबूत करने के लिए बिज़ान्टियम के लिए रवाना हुए, उन्होंने मठाधीश और भाइयों से जोसेफ को अपने सहायक के रूप में साथ चलने की अनुमति देने का अनुरोध किया: क्योंकि वह उससे अलग नहीं होना चाहते थे। लेकिन न तो भाई और न ही मठाधीश ऐसे साथी भिक्षु, ईश्वर के एक सच्चे सेवक, से वंचित होना चाहते थे। हालाँकि, महान वृद्ध की विनती का सम्मान करते हुए और धर्म-विरोध के तूफान से झुलस रही कलीसिया की आवश्यकताओं पर ध्यान देते हुए, उन्होंने धन्य जोसेफ को संत ग्रेगरी द डेकापोलिटि के साथ बिज़ान्टियम भेज दिया।

वहाँ पहुँचने पर, जोसेफ और ग्रेगरी पवित्र शहीदों सर्जियस और बक्कस के चर्च में बस गए और, एक-दूसरे से प्रतिस्पर्धा करते हुए, एक कठोर और कष्टप्रद जीवन व्यतीत किया - विशेष रूप से धन्य जोसेफ ने, जिन्होंने सबसे वरिष्ठ तपस्वी, महान पिता ग्रेगरी की नकल की; उसे अपना आदर्श मानकर, उसने अपने हृदय में सद्गुणों में पूर्णता के लिए अनवरत प्रयास करने का संकल्प लिया। दोनों ने लगन से परिश्रम किया, और धर्मात्माओं को हानिकारक विधर्म से सावधान रहने, सच्चे धर्म के सिद्धांतों के बारे में भ्रमित या संदेहपूर्ण न होने, और सत्य की अपनी स्वीकारोक्ति में दृढ़ रहने की शिक्षा दी। उस समय, अधर्मी त्ज़ार लियो द आर्मेनियन ने प्रतिमा-विरोधी विधर्म को पुनर्जीवित किया, जिसे पहले ही[2847] द्वारा निंदा किया जा चुका था, और चर्च के खिलाफ एक बड़ा उत्पीड़न शुरू किया; उसने ईश्वर के गिरिजाघरों से पवित्र प्रतिमाओं को हटा दिया, और उन्हें अपमानपूर्वक पैरों तले रौंदा; उसने उन ऑर्थोडॉक्स पादरियों के सिंहासनों पर, जिन्हें उसने पदच्युत कर दिया था, अपने विचारों वाले विधर्मीयों को स्थापित किया, और इस प्रक्रिया में उनमें से कुछ को विभिन्न तरीकों से यातना दी और नष्ट कर दिया।

तब संत ग्रेगरी ने, संत जोसेफ के साथ, विश्वास के कवच को धारण करके, शहर की सड़कों, चौराहों और विश्वासियों के घरों में घूमना शुरू किया, और उन्हें परामर्श, उपदेश और विनती दी – कि वे विधर्मी छल से धोखा न खाएँ। और उनके शब्द भोर की ओस के समान थे, जो दिन की गर्मी से मुरझाए हुए खेत के फूलों और घास को पुनर्जीवित करती है: उन्होंने उन मानव हृदयों को पुनर्जीवित किया जो हतोत्साहित, संदेहपूर्ण और, मानो, विधर्मी शिक्षाओं की गर्मी से मुरझा रहे थे। इसके बाद, कई संन्यासियों ने पूजनीय ग्रेगरी से अपील की, उनसे आग्रह किया कि वे धन्य जोसेफ को—जो वचन में निपुण और अपनी शारीरिक शक्ति के कारण कठिन यात्रा करने में सक्षम थे—प्राचीन रोम में भेजें, ऑर्थोडॉक्स पोप लियो तृतीय[2848] और वहाँ के सभी ऑर्थोडॉक्स लोगों के पास, ताकि कॉन्स्टेंटिनोपल में पवित्र चर्च के खिलाफ फैलाई गई उत्पीड़न की रिपोर्ट दी जा सके। उन्हें उम्मीद थी कि रोम में ऑर्थोडॉक्स लोग उत्पीड़ितों की सहायता के लिए आएँगे, झूठी सिद्धांतों का खंडन करेंगे और विधर्मियों के अपमानजनक मुँह को बंद कर देंगे। धन्य जोसेफ के साथ एक बातचीत में, पूजनीय ग्रेगरी ने उन्हें निम्नलिखित सलाह दी:

– मेरे बेटे, अब समय आ गया है कि तुम ईश्वर के प्रति अपना हार्दिक प्रेम और धर्मपरायणता के प्रति अपना उत्साह दिखाओ; प्राचीन रोम जाओ और वहाँ के ईसाइयों के प्रमुख और पश्चिम के सभी ऑर्थोडॉक्स को यह घोषणा करो कि दुष्ट राजा—जिसे 'जानवर' के नाम से जाना जाता है—ने पवित्र पूर्वी चर्च पर क्या विपत्ति लाई है, कैसे उसने मसीह और उनकी परम पवित्र माता की प्रतिमा का अपमान किया और उसे रौंदा है, चर्च को उसके आभूषणों से वंचित किया है, निर्दोष और अच्छे चरवाहों को भगा दिया है, और मसीह के झुंड को झूठे चरवाहों, भाड़े के सैनिकों और दरिंदों के हवाले कर दिया है, ताकि अब भेड़ें लूटी जा रही हैं और बिखर रही हैं। घोषित करो कि कैसे, दिन-प्रतिदिन, शासक द्वारा भड़काया गया एक प्रचंड तूफान मसीह की कलीसिया को हिला रहा है, और कैसे आर्मेनिया से आया हुआ वह उग्र सिंह, अपनी विधर्मी चालाकी से धमकियाँ उगल रहा है और कई लोगों को निगल रहा है। घोषित करो, मनाओ और विनती करो, कि ऑर्थोडॉक्स ईसाई परमेश्वर के वचन की तलवार म्यान से निकालें और हमारे उत्पीड़कों के विरुद्ध दृढ़ खड़े रहें।

इस प्रकार, और इसी तरह के शब्दों में, संत ग्रेगरी ने कहा। धन्य जोसेफ, जो अपने युवा काल से ही आज्ञाकारिता के आदी थे, ने बिल्कुल भी आपत्ति नहीं की; विनम्रता से अपना सिर झुकाते हुए, उन्होंने ग्रेगरी से उनकी पितृत्वपूर्ण प्रार्थनाओं और अपनी यात्रा के लिए आशीर्वाद माँगा, जहाज पर सवार हुए और रोम के लिए रवाना हो गए।

लेकिन ईश्वर की दिव्य योजना की अकल्पनीय योजनाएँ कुछ और ही थीं। ईश्वर सभी चीजों को भलाई के लिए व्यवस्थित करता है, और अक्सर, हमारे लिए प्रतिकूल और क्रूर प्रतीत होने वाली परिस्थितियों के माध्यम से, वह अपने

[2847] सातवें सार्वभौमिक परिषद में

[2848] लियो तृतीय 816

पवित्र नाम की महिमा के लिए अद्भुत और शानदार कार्य करता है। इस प्रकार, ईश्वर की व्यवस्था से, जोसेफ की रोम यात्रा में एक बाधा उत्पन्न हुई। अर्मेनिया के राजा लियो के समान विचारधारा वाले अनुयायी, जो उनके उत्पीड़न में सेवक और सहयोगी थे, जब यह जान गए कि प्रतिमा-भंजन से तंग आकर कई लोग राजधानी छोड़कर अन्य देशों में भाग रहे थे, तो उन्होंने भगोड़ों को पकड़कर प्रतिमा-भंजकों के हाथों में लौटाने के लिए जलमार्गों और थल मार्गों पर गुप्त रूप से घात लगाना शुरू कर दिया। यह उनके लिए कोई रहस्य नहीं था कि परम पूज्य जोसेफ को ऑर्थोडॉक्स संतों द्वारा पश्चिम, रोम भेजा जा रहा था; उन्होंने समुद्री डाकुओं को उन पर हमला करने के लिए उकसाया, और परम पूज्य जोसेफ अपने दुश्मनों के हाथों में पड़ गए। उन्होंने जहाज को तोड़-फोड़ दिया, पूजनीय जोसेफ के सभी साथियों को भी पकड़ लिया, और उन्हें क्रीट ले गए, प्रतिमा-भंजकों के पास, जहाँ पूजनीय व्यक्ति को भारी बेड़ियों में जकड़कर एक कालकोठरी में डाल दिया गया। वहाँ, दिन-रात, उन्होंने अपने साथी कैदियों को—जो सच्चे धर्म के लिए उनके साथ बहुत कष्ट सह रहे थे—दैवीय प्रेरित शब्दों से सांत्वना दी; प्रभु के लिए अपनी बेड़ियों में आनंदित होकर, उन्होंने दूसरों से कहा:

'इन बेड़ियों से मीठी या अधिक आनंददायक और क्या हो सकता है, जिनसे हमें मसीह और उनकी पवित्र प्रतिमा के प्रति अपने प्रेम के लिए बाँधा गया है?' भले ही यह अस्थायी कारावास हमें कुछ दुख पहुँचाए, हमें इस पीड़ा के लिए ईश्वर का धन्यवाद करना चाहिए, और संत पौलुस को अपना चमकता उदाहरण मानना चाहिए, जो इस बात पर शब्दों से परे आनन्दित हुए कि उन्हें यीशु मसीह के नाम के लिए बेड़ियों में पीड़ित होने का योग्य समझा गया, और उन्होंने उन्हें ऐसे संजोया मानो वे कीमती पत्थर और सोने के आभूषण हों। इसके अलावा, हमें *'इसके लिए बुलाया गया है, क्योंकि मसीह ने भी हमारे लिए दुख उठाया, और हमें एक नमूना छोड़ गए, ताकि हम उनके पदचिह्नों पर चलें। उन्होंने कोई पाप नहीं किया, और न ही उनके मुँह में कोई छल पाया गया। जब उन्हें गाली दी गई, तो उन्होंने बदले में गाली नहीं दी; जब उन्हें दुख दिया गया, तो उन्होंने धमकी नहीं दी, बल्कि स्वयं को धर्मी न्यायी के सुपुर्द कर दिया'* (1 पतरस 2:21–23), मुख्य प्रेरित, संत पतरस के शब्दों में। यह सच है कि शारीरिक पीड़ा कुछ दुख का कारण बनती है, लेकिन किसी को मसीह के जुए का वहनकर्ता नहीं कहा जा सकता यदि वह उनके पदचिह्नों पर न चले और उन कष्टों को, जो उन्होंने हमारे लिए सहे, आंशिक रूप से भी सहन न करे। सर्वशक्तिमान ईश्वर होने के नाते, वह मानव जाति को किसी अन्य तरीके से बचा सकते थे; फिर भी उन्होंने उचित समझा कि परिश्रम और पीड़ा से ही वह सद्गुण की शक्ति उत्पन्न हो, जो लंबे समय से बंद स्वर्ग के द्वार खोलने में सक्षम हो। और उन्होंने हमें उद्धार का कोई अन्य मार्ग नहीं दिखाया, सिवाय परिश्रम और दुख के मार्ग के। तो फिर, हमें उद्धारकर्ता और उनकी परम पवित्र माता की पवित्र प्रतिमा के लिए दुख सहते हुए निराश क्यों होना चाहिए? राजा की दुष्ट आज्ञा का विरोध करके, हमें ईश्वर की कृपा और समय पर सहायता प्राप्त होगी।

इसी तरह के शब्दों से पूजनीय जोसेफ ने अपने साथियों को सांत्वना दी और उन्हें मजबूत किया, जो प्रतिमाओं की पूजा करने के कारण उनके साथ कैद थे। उनके साथ एक ऑर्थोडॉक्स बिशप भी कैद थे, जिन्हें पवित्र प्रतिमाओं की पूजा करने के लिए भी यातनाएँ दी गई थीं। कारावास की कठिनाइयों को सहने के लिए शक्तिहीन महसूस करते हुए, वह, मानवीय रूप से कहें तो, ऐसे विचारों से परेशान था: अपनी बेड़ियों और कष्टों से मुक्त होने की इच्छा से, वह पहले ही प्रतिमा-विरोधी विधर्म की ओर झुकना शुरू कर चुका था और एक प्रचंड तूफान में जहाज की तरह, डूबने से बहुत दूर नहीं था। जब उन्हें उसके भ्रम का एहसास हुआ तो पूजनीय जोसेफ ने उसे कितनी ही उपदेश नहीं दिए! उन्होंने कितने आँसू नहीं बहाए, उसे मसीह की प्रतिमा के लिए, जैसे स्वयं मसीह के लिए, बिना हिचकिचाहट मरने की विनती करते हुए! और उनके दैवीय प्रेरित शब्द व्यर्थ नहीं गए: बिशप इतनी दृढ़ता से भर गए कि सबसे भयानक यातनाओं में भी उन्होंने अपनी भक्ति का त्याग नहीं किया और अपनी आत्मा की साहसी भव्यता से, अंत तक सब कुछ सहन किया। जब उसे यातना देने के लिए बाहर ले जाया गया, तो अपने यातना देने वालों और यातना के उपकरणों को देखकर, उसने ज़रा भी डर नहीं दिखाया, बल्कि अपने कपड़े उतार लिए और यातनाओं के सामने आत्मसमर्पण कर दिया, और वह ईसा मसीह के लिए, जिन्हें आइकन-चित्रकार ने मांस में चित्रित किया था, हजारों बार मरने की इच्छा करने लगा – यदि यह संभव होता। अपने यातना स्थल पर नग्न अवस्था में फांसी पर लटकाए जाने, तीरों से सर्वत्र भेदे जाने, और अंत में बड़े पत्थरों से सिर पर प्रहार किए जाने पर, बिशप ने अपनी आत्मा प्रभु को सौंप दी। बिशप की शहादत के बारे में जानकर, धन्य जोसेफ ने उनकी अटूट हिम्मत पर बहुत प्रसन्नता व्यक्त की और मसीह का धन्यवाद किया, जिन्होंने अपने चुने हुए योद्धा को ऐसी वीरता के लिए मजबूत किया था; यद्यपि शुरू में उन्होंने कुछ कमजोरी दिखाई थी, लेकिन बाद में उन्होंने अपने तरीकों को पूरी तरह से सुधार लिया और दुश्मन को हरा दिया। इसी तरह, संत जोसेफ ने दूसरों को आध्यात्मिक विनाश से बचाया और उन्हें मसीह के पास

लाया, और सभी को मुक्ति के मार्ग पर अथक रूप से शिक्षित करते रहे; जबकि ईश्वर स्वयं ने उन्हें मृत्यु से बचाया, और बहुत से लोगों के लाभ के लिए उनके जीवन को संरक्षित रखा।

आदरणीय जोसेफ ने छह वर्ष जेल में बिताए; और फिर दुष्ट राजा लियो द आर्मेनियन का हिंसक अंत हुआ: मसीह के जन्मोत्सव से एक रात पहले, चर्च में मातिन्स में भाग लेते समय उसे अपने ही सैनिकों ने मार डाला। उसी क्षण, क्रीट में अपनी जेल में, आदरणीय जोसेफ को उनके यातनाकर्ता की मृत्यु की सूचना मिली और संत निकोलस, जो उनके सामने प्रकट हुए, ने उन्हें चमत्कारिक रूप से उनके बंधनों से मुक्त कर दिया। संत जोसेफ ने पूरी रात बिना सोए, लगातार उत्सव के भजन गाते और प्रार्थना करते हुए बिताई; भोर होने से ठीक पहले, एक तेज प्रकाश ने कालकोठरी को रोशन कर दिया, और एक पवित्र तथा सम्मानित व्यक्ति, जो बिशप के परिधान में, सफेद बालों और तेजस्वी चेहरे वाला था, उनके सामने प्रकट हुआ और कहा:

'मैं तेरे पास सिसिया के मयरा से, ईश्वर द्वारा भेजा गया हूँ, ताकि तुझे बिना विलंब के शुभ समाचार दूँ: जिस शत्रु ने कलीसिया को कष्ट दिया और मसीह के झुंड को बिखेर दिया, वह अपना राज्य और अपना जीवन दोनों खो चुका है, क्योंकि उसे ईश्वर के न्याय के लिए बुलाया गया है। अब तुम्हें कॉन्स्टेंटिनोपल लौटना होगा और अपने भीतर वास करने वाली पवित्र आत्मा की कृपा से बहुतों को बल देना होगा।

तब संत ने उसे एक लट्ठी दी और कहा:

'यह लपेटा लो और इसे खा लो।'

और उस लपेटे पर लिखा था: 'हे उदार, शीघ्रता करो, और एक दयालु व्यक्ति की तरह, हमारी सहायता के लिए हर संभव प्रयास करो, जैसा कि तुम सक्षम और इच्छुक हो।' यूसुफ ने यह लपेटा लिया, उसे पढ़ा, और उसे खाकर, आनंदपूर्वक कहा: *'तेरे वचन मेरे गले के लिए कितने मीठे हैं! मेरे मुँह के लिए मधु से भी अधिक मीठे'* (भजन संहिता 118:103)।

तब जो व्यक्ति उसे दिखाई दिया था, उसने उसे उन्हीं शब्दों को गाने का आदेश दिया। संत जोसेफ ने उन्हें खुशी से गाया, और तुरंत उसकी जंजीरें और बेड़ियाँ ढीली हो गईं और उसके गले, हाथों और पैरों से गिर पड़ीं, और उसने उस संत के शब्द सुने जो उसे दिखाई दिया था:

'उठो और मेरा अनुसरण करो।'

वह उठा; जेल के दरवाज़े अपने आप खुल गए, और वह जेल के रक्षकों के पता चलने से पहले बाहर निकल गया। और उसने खुद को एक अदृश्य शक्ति द्वारा हवा में ले जाते हुए पाया। कुछ ही देर में, वह खुद को कॉन्स्टेंटिनोपल के पास, शहर में जाने वाले मुख्य मार्ग पर पाया, और उसने ऐसे अद्भुत चमत्कार के लिए परमेश्वर की महिमा की।

शहर में प्रवेश करने पर, जोसेफ ने पाया कि उनके प्रिय पिता, ग्रेगरी द डेकापोलिट, अब जीवित नहीं थे - वे प्रभु के पास चले गए थे - लेकिन उन्होंने केवल अपने शिष्य, धन्य जॉन को देखा, और उनके साथ मिलकर ग्रेगरी की कफ़न पर गहरा शोक मनाया, इस बात का विलाप करते हुए कि उन्हें अपने पवित्र पिता को जीवित पाए जाने की कृपा नहीं मिली थी। कुछ ही समय बाद, जॉन का भी निधन हो गया और उन्हें संत ग्रेगरी के पास दफनाया गया। इसके बाद, पूजनीय जोसेफ शहर के बाहर, संत जॉन क्राइसोस्टोम के चर्च से बहुत दूर नहीं, एक अलग और शांत स्थान पर चले गए। वहाँ बस जाने के बाद, उन्होंने संत निकोलस चमत्कारकर्ता को समर्पित एक चर्च की स्थापना की, दोनों संतों, ग्रेगरी और जॉन के अवशेषों को उसमें स्थानांतरित किया, एक मठ स्थापित किया और भिक्षुओं का एक समुदाय इकट्ठा किया। धर्मगुरु और सामान्य लोग, दोनों ही वर्ग के कई लोग, उनकी दैवीय प्रेरित शिक्षाओं को सुनने के लिए लगातार पूजनीय जोसेफ के पास आते थे, क्योंकि उनके होठों से पवित्र आत्मा की कृपा मधुर शब्दों में नदी की तरह बहती थी। एक अवसर पर, जब वे थेस्सालोनिकी में थे, तो परम पूजनीय जोसेफ को अपने एक परिचित पुण्यशील व्यक्ति से संत प्रेरित बार्थोलोम्यू के अवशेषों का एक महत्वपूर्ण हिस्सा प्राप्त हुआ; वे उन्हें अपने मठ में ले आए और संत प्रेरित बार्थोलोम्यू को समर्पित एक विशेष चर्च स्थापित करके, उनके पवित्र अवशेषों का एक हिस्सा सम्मानपूर्वक उसमें स्थापित किया। पवित्र प्रेरित के प्रति महान प्रेम और विश्वास को पोषित करते हुए, उन्हें अक्सर अपने सपनों में उन्हें देखने की कृपा प्राप्त होती थी। वे पवित्र प्रेरित के पर्व को स्तुति-गीतों से सजाना चाहते थे, लेकिन इस बात पर संदेह करते हुए हिचकिचाए कि क्या यह पवित्र प्रेरित को पसंद आएगा; और उन्होंने ईश्वर और ईश्वर के प्रेरित से विनम्रतापूर्वक प्रार्थना की कि वह उन्हें यह प्रकट करें और उन्हें संत बार्थोलोम्यू के योग्य स्तुति के छंद रचने के लिए दिव्य ज्ञान प्रदान करें। आदरणीय जोसेफ ने चालीस दिनों तक उपवास और आँसुओं के साथ प्रार्थना की, और जैसे ही प्रेरित के स्मरणोत्सव का दिन

नज़दीक आया, उत्सव की पूर्व संध्या पर उन्होंने देखा कि संत बार्थोलोम्यू सफेद वस्त्रों में सजे हुए, पूजा स्थल में प्रकट हुए थे; उन्होंने वेदी का पर्दा हटाया, और उन्हें आगे आने का इशारा किया। जब आदरणीय जोसेफ और करीब आए, तो पवित्र प्रेरित ने सिंहासन से पवित्र सुसमाचार उठाया, उसे जोसेफ की छाती पर रखा, और कहा:

'सर्वशक्तिमान ईश्वर का दाहिना हाथ तुम्हें आशीर्वाद दे, और स्वर्गीय ज्ञान का जल तुम्हारी जीभ पर बरसे: तुम्हारा हृदय पवित्र आत्मा का मंदिर बने, और तुम्हारे भजन ब्रह्मांड को मधुर बना दें।'

इस प्रकार पवित्र प्रेरित बऽൾതोलोमियुस ने कहा, और वे अदृश्य हो गए; जबकि आदरणीय जोसेफ, अपने भीतर ज्ञान की कृपा को महसूस करते हुए, अकथनीय आनंद और कृतज्ञता से भर गए। उस समय से उन्होंने धार्मिक भजन और कैनन लिखना शुरू कर दिया, जिसे उन्होंने न केवल पवित्र प्रेरित बार्थोलोम्यू के पर्व को, बल्कि कई संतों के पर्व को भी सजाया; हालाँकि, सबसे बढ़कर, उन्होंने परमेश्वर की अति पवित्र माता और संत निकोलस को कई कैननों से सम्मानित किया। उन्होंने पवित्र चर्च को भजनों से भरपूर सजाया और उन्हें 'हिम्नोग्राफर' (भजनकार) की उपाधि दी गई।

[2849]थेओफिलुस के सिंहासनारोहण पर, प्रतिमा-भंजन का तूफ़ान एक बार फिर चर्च पर छा गया, और एक बार फिर कई लोगों को उत्पीड़न और यातना सहनी पड़ी। तभी हमारे पूजनीय पिता जोसेफ द हाइमोग्राफर को, धर्मद्रोह की उनकी निडर और खुली निंदा के लिए, चेरसन में निर्वासित कर दिया गया, जहाँ वे थेओफिलुस की मृत्यु तक बेड़ियों में जकड़े और कष्ट सहते रहे। सम्राज्ञी थियोडोरा ने अपने पुत्र माइकल के साथ, जिसने थियोफिलिस की मृत्यु के बाद शासन संभाला था और परम पावन पैट्रिआर्क मेथोडियस के साथ मिलकर ऑर्थोडॉक्सी[2850] को बहाल किया था, जोसेफ को कॉन्स्टेंटिनोपल वापस लाया। संत मेथोडियस के निधन के बाद सिंहासन पर आसीन हुए संत इग्नेशियस ने, परम पूज्य जोसेफ को कॉन्स्टेंटिनोपल में महान ईश्वर की कलीसिया के संरक्षक के रूप में नियुक्त किया। अपने पुण्य जीवन और उनके मुख से निकले बुद्धिमान और आत्मा-उद्धारक शब्दों के लिए, जिन्होंने कई लोगों को मोक्ष के मार्ग पर ला खड़ा किया, परम पूज्य जोसेफ सर्वपवित्र पैट्रिआर्क और सभी पुरोहितों तथा सामान्य लोगों के बीच अत्यंत प्रिय थे। कुछ वर्ष बीत गए, और अराजकता की निंदा करने के लिए, पूजनीय जोसेफ को फिर से वर्दा, जो रानी का भाई और राजा के बाद सबसे अधिक अधिकार रखने वाला था, द्वारा निर्वासित कर दिया गया। ईश्वर और मनुष्य दोनों से न डरते हुए, वर्दा ने चर्च के कानूनों का गंभीर रूप से उल्लंघन किया, उसने उसकी कानूनी और निर्दोष पत्नी को निर्वासित कर दिया और उसकी एक रिश्तेदार को अपनी पत्नी बना लिया। परम पूजनीय जोसेफ ने उनका खुलेआम विरोध किया, ठीक वैसे ही जैसे संत जॉन द बैपटिस्ट ने एक बार हेरोद का विरोध किया था, और इसके लिए वर्दा ने उनका उत्पीड़न किया और उन्हें नुकसान पहुँचाया। परम पवित्र पैट्रिआर्क इग्नेशियस को भी यही भाग्य मिला, और उन्हें वर्दा के हाथों निर्वासन और कई दुर्भाग्यों का सामना करना पड़ा। जब वर्दा को राजा के नौकरों ने मार डाला (और उसका दुखद अंत हुआ), और बाद में राजा माइकल ने अपने ही दरबारियों के हाथों अपनी जान गंवा दी, और बेसिल द मेसेडोनियन[2851] सिंहासन पर बैठे, तो संत इग्नेशियस और परम आदरणीय जोसेफ को कॉन्स्टेंटिनोपल वापस लाया गया, और इग्नाशियस ने एक बार फिर अपना पदभार संभाला, जबकि जोसेफ ने पवित्र पात्रों के संरक्षक के रूप में अपना पूर्व पद फिर से संभाला। केवल परम पावन इग्नाशियस ही नहीं, बल्कि उनके उत्तराधिकारी, पैट्रिआर्क फोतिउस[2852] ने भी संत जोसेफ द हिमोग्राफर से प्रेम किया और उनका सम्मान किया। फोटियस ने संपूर्ण धार्मिक प्रशासन का भार पूजनीय व्यक्ति को सौंप दिया, उन्हें ईश्वर का पुरुष, देह में एक देवदूत और पिताओं के पिता कहकर संबोधित किया, और अपने सभी पुरोहितों को आदेश दिया कि वे पूजनीय जोसेफ को अपना आध्यात्मिक पिता मानें, अपने हृदय उनके प्रति खोलें और अपने पापों का प्रायश्चित करें। पारखी होने का वरदान प्राप्त, आदरणीय पिता छिपे हुए पापों को देख सकते थे, फिर भी उन्होंने पापी का भंडाफोड़ नहीं किया, बल्कि उसे प्रोत्साहन के शब्दों से तब तक समझाते रहे जब तक कि पश्चातापी, पश्चाताप से प्रेरित होकर, अपने गुप्त अपराधों का खुलासा नहीं कर देता: क्योंकि जोसेफ अपने दैवीय रूप से प्रेरित शब्दों में शक्तिशाली थे और वे आसानी से पापियों को पश्चाताप की ओर ले जा सकते थे।

[2849] 829 से 842 तक

[2850] 840 में प्रतिमा पूजन बहाल किया गया। संत मेथोडियस, 846; उनका पर्व दिवस 14 जून है।

[2851] बेसिल द मेसेडोनियन ने 867 से 886 तक शासन किया।

[2852] फोटियस ने पहली बार 857 से 867 तक सिंहासन संभाला; और दूसरी बार 877 से 886 तक।

कई वर्षों तक जीवति रहने और वृद्धावस्था तक पहुँचने के बाद, जोसेफ अपने युवा दनिों से कए गए कई कार्यों के कारण शारीरकि दुर्बलताओं से ग्रस्त हो गए – उपवास, धार्मकिता के लए उत्पीड़न, बंधन और कारावास, चर्च के संगठन की चंता, भजनों के साथ उत्सवों और संतों की स्मृतयिों की सजावट, और मानव आत्माओं के उद्धार के लए उनका महान उत्साह। इस संसार से प्रस्थान करने से पहले, पवत्रि लेंट के अंत में, वह बीमार पड़ गए और एक सपने में, उन्हें अपने नकिटवर्ती नधिन के बारे में ईश्वर से एक संदेश मला। पवत्रि महाशुक्रवार को, मसीह के स्वैच्छकि दुःखों के स्मरणोत्सव पर, उन्होंने अपने सुपुर्द कए गए सभी चर्च-सम्बंधी मामलों और कार्यों की एक सूची तैयार की और उसे परम पावन पैट्रआर्क फोतउिस को भेज दया। फरि, जब वे अपने नधिन की तैयारी कर रहे थे, तो उन्होंने ईश्वर से इस प्रकार प्रार्थना करना शुरू कर दया:

'हे प्रभु मेरे परमेश्वर, मैं आपको धन्यवाद देता हूँ कि आपने मेरे जीवन के सभी दनिों में मुझे अपने पंखों की छाया में सुरक्षति रखा है! और अब, मेरे अंत तक मेरी आत्मा को सुरक्षति रखें, और यह अनुग्रह करें कि मैं अंधकार के राजकुमार और वायुमंडल की शक्तयिों से बनिा कसिी हानि के बच नकिलूँ, ताकि मेरे जीवन के पाप, जो मेरी अज्ञानता के कारण हुए हैं, मेरे शत्रु के लए आनंद का कारण न बनें। पता के वचन, अपनी भेड़-बकरयिों की रक्षा करें और अपने दहनि हाथ से सृजति सभी को समय के अंत तक सुरक्षति रखें। अपनी कलीसयिा के प्रयि पुत्रों के सहायक बनें; पवत्रि कलीसयिा, अपनी वधू, को शाश्वत शांति और नर्विघ्नि शांति प्रदान करें; अपने उपहारों से राजसी पुरोहति वर्ग[2853] को प्रबुद्ध करें; गर्वति अजगर[2854] को ऑर्थोडॉक्स धर्म के रक्षकों के पैरों तले कुचलें, और चर्च से आत्मा के लए हानकिारक सभी वधिर्मों को दूर करें। मेरे प्राण को शरीर से एक शांतपिूर्ण और सौम्य वदिाई प्रदान करें। भले ही मैं तेरे पवत्रि सेवकों में गनि जाने के योग्य न हूँ, जनिमें पवत्रि आत्मा वास करता था – क्योंकि मैं तेरे सामने अपने आपको पापी मानता हूँ – फरि भी हे तू, जो अनंत रूप से दयालु है, मेरे पापों पर नज़र न कर, बल्कि मुझे अपने बच्चों के भाग में सहभागी होने का योग्य बना।

एक प्रार्थना अर्पति करने और दव्यि रहस्यों को ग्रहण करने के बाद, पूजनीय जोसेफ ने उपस्थति सभी को आशीर्वाद दया, स्वर्ग की ओर अपने हाथ उठाए, और एक तेजस्वी तथा आनंदति मुखमंडल के साथ अपनी पवत्रि आत्मा को ईश्वर के सुपुर्द कर दया।

तुरंत ही, सभी दशिाओं से भक्षिुओं और गृहस्थों की भीड़ उमड़ पड़ी; उनमें से कई रो पड़े, कुछ ने दविंगत को 'पता', कुछ ने 'शक्षिक', कुछ ने 'कल्याणकर्ता', कुछ ने 'संतोषदाता', और कुछ ने 'शक्षिक', 'मार्गदर्शक' और 'मोक्ष का मार्गदर्शन करने वाले' कहा। उन्हें स्तुति के साथ ताबूत तक ले जाया गया और सम्मान के साथ दफनाया गया; फरि भी उनकी पवत्रि आत्मा को अमर आत्माओं द्वारा स्वर्गीय नविासों तक और भी अधकि सम्मान और महमिा के साथ ले जाया गया। यह उनके एक प्रयि मत्रि, एक धर्मी और ईश्वर-भयभीत व्यक्ति ने अपनी आँखों से देखा, जो परम पूजनीय की नधिन स्थल से काफी दूरी पर था। ठीक उसी क्षण जब जोसेफ की आत्मा, जो ईश्वर की प्रयि थी, अपने शरीर से अलग होकर स्वर्ग की ओर बढ़ रही थी, उपर्युक्त व्यक्ति ने ऊपर से एक आवाज सुनी जो उससे कह रही थी:

'वह प्रस्थान कर गया है,' और, ऊपर देखकर, उसने स्वर्ग का गुंबद खुला हुआ देखा और उसमें से संतों के चेहरे नकिलते हुए देखे: पहले एक प्रेरति का चेहरा, फरि एक शहीद का, एक नबी का और एक संत का। वह आदमी उस अद्भुत दर्शन से चकति और वस्मिति हो गया, और इसके अर्थ को लेकर हैरान था। और एक बार फरि उसने एक आवाज़ सुनी: 'देखो और सुनो, और जो कुछ भी तुम देखते हो उसका अर्थ तुम जान जाओगे।' और तुरंत ही उसने चार युवक देखे, जो सभी से अधकि तेजस्वी थे, और उनके बीच में अकथ शुद्धता और महमिा वाली एक कुँवारी: वह परम पवत्रि और परम धन्य कुँवारी मरयिम, हमारे ईश्वर मसीह की माता थीं। जैसे ही वह आगे बढ़ी, उसने पवत्रि पुरुषों के समूह को आज्ञा दी कि वे उस पवत्रि आत्मा को स्वीकार करें जसिने भजनों में उनके कार्यों और स्मृति को गौरवान्वति कयिा था और उनके जीवन-पथ का अनुकरण कयिा था। और सभी ने, अकथनीय आनंद के साथ, उत्साह और प्रेम से स्वर्ग में उठाए जा रहे एक सम्माननीय आकृति का स्वागत और स्वागत कयिा। इसका साक्षी, उपर्युक्त पुरुष, ने मन ही मन अपने आप से पूछा:

'तब, स्वर्गीय सेनाएँ इतनी बड़ी सम्मान कसिे प्रदान करती हैं?'

[2853] 1 पतरस 2:9 में ईसाइयों का इसी प्रकार उल्लेख है।

[2854] हब्रिू शब्द – 'अपवत्रि' – शैतान के लए एक नाम (2 कुरन्थियिों 6:15)।

और उसने स्वर्गदूतों की गूँजती आवाज़ें सुनीं जब वे उस पवित्र आत्मा को उठा रहे थे: 'यह हैं जोसेफ कवरि, संपूर्ण कलीसयिा के भूषण, जनि्हें पवित्र आत्मा का अनुग्रह प्राप्त हुआ, जनि्होंने प्रेरतिों और शहीदों के जीवन का अनुकरण कयिा और उनके कर्मों को दर्ज कयिा, जसिके लिए अब उन्हें उन्हीं संतों से सम्मान और प्रशंसा प्राप्त हो रही है।' इस प्रकार, पूजनीय जोसेफ कवरि के प्राण को भव्यतापूर्वक स्वर्गीय नविासों में प्रवेश कराया गया। यह गौरवशाली दर्शन प्रत्यक्षदर्शी को महान आनंद से भर गया, लेकनि साथ ही इस गहरे खेद के साथ भी कि उसे उस महमिा को देखने का सौभाग्य नहीं मलिा, जसिके साथ धन्य आत्मा ने स्वर्गीय नविासों में प्रवेश कयिा, परम-प्रकाशमान त्रमिूर्ति परमेश्वर के समक्ष प्रकट हुई, और उनकी आराधना की।

पूजनीय जोसेफ के स्वर्ग आरोहण का एक और वृत्तांत भी है। कॉन्स्टेंटनिोपल में पवित्र शहीद थयिोडोर फनेरोट्स को समर्पति एक चर्च थी, जसिका अर्थ है 'प्रकट करने वाला' (खोजने वाला), क्योंकि वह प्रार्थना करने आए लोगों को चोरी हुई, छपिी हुई या खोई हुई वस्तुओं का पता बताते थे। एक सेवक जो एक व्यक्ति की बहुत सेवा करता था, भाग गया था, और वह व्यक्ति, अपने दुख में, संत थयिोडोर द रविीलर के चर्च में आया, एक प्रार्थना सभा का आयोजन कयिा और मसीह के शहीद से अपने सेवक को दखिाने के लिए वनिती की। वह तीन दनि और तीन रात चर्च में रहा और, कोई प्रकटवाणी न मलिने पर, दुख के साथ जाने ही वाला था। मैटनि्स के दौरान, जब चर्च में एक आत्मा को झकझोर देने वाला प्रवचन पढ़ा जा रहा था, तो वह पढ़ाई हो रही होने के दौरान थोड़ी देर के लिए झपकी ले गया और उसने संत थयिोडोर को अपने सामने प्रकट होते देखा, जनि्होंने कहा:

'हे मनुष्य, तुम शोक क्यों कर रहे हो? पवित्र भजनों के रचयति जोसेफ इस जीवन से वदिा हो गए हैं, और हम उनके साथ थे। वे इसी रात्रि में परलोक सधिार गए, और हम सभी ने उन्हें कैनन और भजनों से सम्मानति कर उनके प्राणों को स्वर्ग तक साथ ले जाकर ईश्वर के साक्षात समक्ष प्रस्तुत कयिा। इसीलिए मैं तुम्हारे पास आने में वलिंबति हो गया। अब, हालाँकि, मैं यहाँ हूँ और मैं तुम्हारी प्रार्थना पूरी करूँगा: ऐसे-ऐसे स्थान पर जाओ' – और उसने उस स्थान का नाम लयिा – 'वहाँ तुम्हें वह सेवक मलिेगा जसिे तुम ढूंढ रहे हो।'

ये दोनों वृत्तांत हमें उस महान महमिा के बारे में आश्वस्त करते हैं जो परम पूजनीय जोसेफ को उनके श्रम के लिए ईश्वर से प्राप्त हुई, और उस सम्मान और प्रशंसा के बारे में जो उन्हें ईश्वर के संतों से प्राप्त हुई। अब स्वर्गीय महलों में परमेश्वर के सहिासन के सामने खड़े होकर, वे स्वर्गदूतों के गीत गाते हैं, और पति, पुत्र और पवित्र आत्मा, त्रमिूर्ति परमेश्वर की महमिा और स्तुति करते हैं, युगानुयुग, आमीन।

कॉन्टाकयिन, स्वर 4:

हे जोसेफ, तुम पश्चाताप का अक्षय स्रोत, अनंत सांत्वना का स्रोत, और कोमलता का गर्भ हो: हमें दैवीय पश्चाताप के आँसू प्रदान करो, जनिके द्वारा हम जो यहाँ रोते हैं, परमेश्वर से सांत्वना पा सकें, हे पवित्र एक, हम आपकी सहायता की वनिती करते हैं।

पवित्र शहीद फेरवुफा का कष्टकथा।

4 अप्रैल को स्मरणोत्सव

पर्शयिा के बशिप संत समियिन की राजा शपुर के हाथों शहादत के बाद[2855] , उनकी दो बहनें जीवति बचीं: एक कुंवारी जसिका नाम फर्वुफा था, दूसरी वधिवा थी, और एक दासी भी थी।

[2855] सापर द्वतीय 309 से 379 तक फारस का राजा था। ईसाई धर्म फारस में इससे पहले भी मौजूद था। सम्राट कॉन्स्टेंटनि महान ने अपने धर्म परविर्तन के तुरंत बाद ईसाइयों के समर्थन में सापर को पत्र लखिा था। हालाँकि, मगों ने ईर्ष्या और चति के साथ नए धर्म की सफलता को देखा, और जब शपूर और कॉन्स्टैंटयिस के बीच युद्ध छड़ि गया, तो उन्होंने राजा को सूचति कयिा कि धर्मांतरति रोमन हतिों के प्रति वफादार थे। परणिामस्वरूप, शपूर ने एक उत्पीड़न शुरू कयिा, जसिमें उसने ईसाइयों पर वशिेष रूप से भारी कर लगाए। उनके नेता, सेलेउकयिा और क्तेसफिोन के बशिप समियिन को तब गरिफ्तार कर राजा के सामने लाया गया, जसिने उससे राष्ट्रीय धर्म को त्यागने की मांग की। जब उसने ऐसा करने से इनकार कर दयिा, तो राजा ने उसे कैद और बाद में मृत्युदंड की सजा सुनाई। शापूर के शासन के अंतमि वर्षों में यह उत्पीड़न और भी तेज हो गया।

पवत्रि कन्या फर्वूफा अभी भी बहुत युवा थीं और अपनी असाधारण सुंदरता के लिए वशिष्टि थीं। उनकी सुंदरता के बारे में सुनकर, शपूर की पत्नी, फारसी रानी ने आदेश दयिा कि उन्हें उसके सामने लाया जाए। इस प्रकार, बशिप सेंट समियिन की हत्या के एक साल बाद, राजा के नौकरों ने पवत्रि कन्या फर्वुफा को उसकी बहन और दासी के साथ रानी के सामने लाया। फर्वुफा की अद्भुत सुंदरता को अपनी आँखों से देखकर, रानी ने उससे इन शब्दों में कहा:

'ऐसी सुंदरता के साथ, कन्या, तुम्हें तो बहुत से लोगों की स्वामनिी होना चाहए।'

लेकनि संत फर्वुफा ने उत्तर दयिा:

'मेरा वरा है—मसीह, जसिके लिए मेरे भाई ने कष्ट सहे; जहाँ तक कसिी दूसरे वरा की बात है, मैं उसके बारे में सोच भी नहीं सकती!'

फर्वुफा से और कोई सवाल कए बनिा, रानी ने उसे, उसकी बहन और उसकी दासी के साथ, फलिहाल अपने शाही महल में रहने का आदेश दयिा।

अगली सुबह, रानी अचानक बीमार पड़ गई। उसे ठीक करने के लिए, फारसी ज्योतषिी[2856] महल आए। इन ज्योतषियिों में से एक, रानी के कक्षों में सबसे खूबसूरत फर्वुफा को देखकर, उसकी सुंदरता से मोहति हो गया; कुछ ही समय बाद, रानी की उपस्थति छिोड़ने के बाद, उस ज्योतषिी ने पवत्रि कन्या को संदेश भेजा, यह कहते हुए:

'यदि तुम मेरी पत्नी बनना चाहती हो, तो मैं रानी से तुम्हें आज़ाद करने के लिए कहूँगा, और तुम महान धन की स्वामनिी बनोगी।'

लेकनि संत फर्वुफा ने उनसे उत्तर दयिा:

'एक ईसाई के रूप में, मैं एक मूर्तपिूजक से ववािह नहीं कर सकती।'

जादूगर, फर्वुफा की सुंदरता से मोहति, इस जवाब से बहुत अपमानति और क्रोधति हो गया। राजा सावर के सामने उपस्थति होकर, उसने उससे कहा:

'रानी की बीमारी कोई आकस्मकि घटना नहीं है: उन्हें कसिी प्रकार का वषि दयिा गया है। रानी के कक्षों में दो ईसाई बहनें हैं, जनिके भाई—ईसाई बशिप समियिन—को आपके आदेश पर मार दयिा गया था। इसमें कोई संदेह नहीं है कि महल में रहने वाली मारे गए बशिप की बहनों ने, आपके प्रतदि्वेष के कारण, आपकी रानी को जहर दयिा है।"

राजा ने तुरंत बहनों को पूछताछ के लिए लाने का आदेश दयिा।

जब तीनों महलिाएँ—संत फेरवुफा, उसकी बहन और दासी—शाही कक्ष में लाई गईं, तो राजा के आदेशानुसार, मागी (ज्योतषियिों) के प्रमुख माउफ्टसि, दो अन्य गणमान्य व्यक्तयिों के साथ, उनसे पूछताछ करने के लिए बाहर आए। जब ये तीनों न्यायाधीश आ गए और अपनी-अपनी जगह पर बैठ गए, तो तीनों महलिाओं को पूछताछ के लिए उनके सामने लाया गया। जैसे ही न्यायाधीशों ने सेंट फेरवुफा की असाधारण सुंदरता देखी, वे सभी उसके प्रति कामवासना से भर गए, और साथ ही वे एक-दूसरे से अपने दुष्ट वचिारों को छपिाते भी रहे। फरि न्यायाधीशों ने उनके सामने लाई गई महलिाओं से पूछा:

'तुमने रानी, जो संसार की शासक हैं, को जहर क्यों दयिा? इस कृत्य के लिए, तुम मृत्यु की पात्र हो!'

सभी महलिाओं की ओर से सेंट फेरवुफा ने उत्तर दयिा, 'शैतान ने आपके हृदयों में ऐसा अन्यायपूर्ण वचिार क्यों बोया है, और कसि कारण से आप हमें अन्यायपूर्वक अपमानति करना चाहते हैं? यदि आप हमारे शुद्ध रक्त की प्यास रखते हैं, तो कोई भी आपको इसे पीने से नहीं रोक सकता। यदि आप हमें मारना चाहते हैं, तो आपके रास्ते में कुछ भी नहीं है: आखरिकार, आप हर दनि ऐसे कार्यों से अपने हाथ मैले करते हैं। ईसाइयों के रूप में, हम मसीह—हमारे ईश्वर—का परत्यिाग कए बनिा उनके लिए मरते हैं, क्योंकि वह हमारा जीवन हैं; जैसे हमें एक ईश्वर की उपासना और सेवा करने की आज्ञा दी गई है, वैसे ही हम करेंगे। हमारी पुस्तकों में यह भी लखिा है कि एक जादूगर और एक जादूगरनी जीवति नहीं रहेगी, बल्कि अपने ही लोगों के हाथों मरनी होगी (नरि्ग. 22:18; लूका 20:6)। तो फरि, हम कसिी के लिए भी जहर कैसे तैयार कर सकते हैं, यह जानते हुए कि ऐसा कृत्य हमारे ईश्वर का परत्यिाग करने से कम अपराध नहीं है, क्योंकि इन दोनों ही पापों की मृत्युदंड से समान रूप से सजा है?

[2856] प्राचीन काल में, 'मागी' शब्द उन बुद्धमिान पुरुषों के लिए प्रयोग कयिा जाता था, जनिहें प्रकृति की गुप्त शक्तयिों, खगोलीय पंडिों की गति और पवत्रि ग्रंथों का ज्ञान था; वे सपनों की व्याख्या करते थे और भवषि्य बताने वाले थे।

जब संत फेरवुफा बोल रही थीं, तो न्यायाधीशों ने उनकी सुंदरता और बुद्धमिानी से चकति होकर, आनंदपूर्वक उनकी बात सुनी, और उन्होंने पाया कि वे उनके द्वारा कही गई एक भी बात का खंडन करने में असमर्थ थे। उनमें से प्रत्येक ने मन ही मन सोचा: 'मैं राजा से इन महलिाओं को मृत्युदंड से बचाने की वनिती करूँगा, और मैं इस युवती को अपनी पत्नी बना लूँगा।' और ठीक उसी समय माउफ्टसि के मुँह से शब्द नकिले:

'भले ही कानून तुम्हें जादू-टोना करने से रोकता हो, फरि भी तुम अपने भाई की मौत का बदला लेने के लिए ऐसा कर सकते थे।'

संत फेरवुफा ने उत्तर दयिा:

'यह सच है कि हमारे भाई ने आपके हाथों कष्ट सहे; लेकनि यदि हम उसकी मृत्यु का बदला लेने के लिए आपकी मृत्यु चाहते, तो हम अपने ईश्वर के समक्ष अपनी जान गँवा देते; भले ही आपने, अपने क्रोध में, हमारे भाई को मार डाला, फरि भी वह जीवति है और मसीह के साथ उनके स्वर्गीय राज्य में आनंदति है; और उस राज्य की तुलना में, तुम्हारा कुछ भी नहीं है!

जब संत ने ये शब्द कहे, तो राजकुमारों ने सभी महलिाओं को जेल भेजने का आदेश दयिा।

अगले दनि सुबह-सुबह, ज्योतषियिों के मुखयिा, मावप्टसि ने, सेंट फेरवुफा से मलिने के लिए अपने दास को गुप्त रूप से कालकोठरी में भेजा, और उसे यह कहने का नर्दिेश दयिा:

'देखो, मैं राजा से वनिती करने को तैयार हूँ कि तुम्हें और तुम्हारे साथ वालों को क्षमा मलि जाए, बशर्ते तुम मेरी पत्नी बनने के लिए राज़ी हो जाओ।'

लेकनि पवत्रि कन्या ने साहसपूर्वक उत्तर दयिा:

'हे ईश्वर और समस्त धार्मकिता के शत्रु! अपना मुँह बंद कर और फरि कभी मुझसे ऐसे अधर्मी शब्द बोलने की हम्मित मत करना! मैं अब और उन्हें सुनना सहन नहीं कर सकती! जो तू चाहता है, वह कभी पूरा नहीं होगा!' एक बार और हमेशा के लिए, मैंने अपने प्रभु यीशु मसीह के साथ अपना मलिन कर लयिा है, जनिके लिए मैं अपनी कुँवारी अवस्था की रक्षा करती हूँ और जनिके लिए मैं अपने वश्विास को शुद्ध रखने का प्रयास करती हूँ। केवल वही, पाप से मुक्त होकर, मुझे आपके दुष्ट हाथों से बचाने के लिए पर्याप्त शक्तशिाली हैं और मुझे उन साज़शिों से बचा सकते हैं जो आप मेरे खलिाफ रच रहे हैं। मैं मृत्यु से नहीं डरती, और न ही रक्तपात से पीछे हटती हूँ। वह रास्ता जसि पर आप मुझे ले जाना चाहते हैं, मुझे मेरे प्रयि भाई, पवत्रि बशिप समियिन के पास ले जाएगा। वहाँ मुझे अपने दुख और शोक में सांत्वना मलिेगी, जसिे मैंने उनके नधिन के बाद से वशिेष रूप से तीव्रता से महसूस कयिा है।

इस प्रकार मसीह की वधू, संत फर्भुफा ने, मौफ्टसि द्वारा भेजे गए व्यक्तकिो साहसपूर्वक ठुकरा दयिा, और मौफ्टसि को स्वयं शर्मदिा कयिा। इसी तरह, संत फर्भुफा ने दो अन्य न्यायाधीशों से भी नपिटा, जो उसकी सुंदरता से मोहति हो गए थे। उनमें से प्रत्येक ने भी गुप्त रूप से उसके कालकोठरी में संदेशवाहक भेजे, जो संत फर्वाफा को उनसे ववािह करने के लिए लुभा रहे थे; लेकनि कोई भी सफल नहीं हुआ और सभी संत द्वारा लज्जति हुए।

जब तीनों न्यायाधीशों को यह एहसास हुआ कि वे सभी उस पवत्रि कन्या के प्रतआिकर्षति थे, और यह देखकर कि उन्हें मनाने का उनका हर प्रयास वफिल हो गया था, तो उन्होंने कसिी भी कीमत पर उस पवत्रि कन्या और उसके साथ मौजूद महलिाओं को नष्ट करने का संकल्प लयिा। इस उद्देश्य के लिए, वे राजा के पास गए और उसे बताया कि ये तीन ईसाई महलिाएँ जादूगरनी और चुड़ैल थीं, और इसलिए वे मृत्यु की पात्र थीं। राजा ने कहा कि यदि वे जीवति रहना चाहती हैं, तो उन्हें सूर्य की पूजा करनी होगी।

जब उन्हें एक बार फरि से उपरोक्त तीन न्यायाधीशों के सामने लाया गया, तो पवत्रि शहीदों ने, सूर्य की पूजा करने की राजा की आज्ञा सुनकर, उत्तर दयिा:

'हम स्वर्ग और पृथ्वी के सृष्टकिर्ता, परमेश्वर की आराधना करते हैं; लेकनि सूर्य को - जो हमारे परमेश्वर की ही एक रचना है - हम वही सम्मान नहीं दे सकते जो हम परमेश्वर को देते हैं। आपकी कोई भी धमकी हमें प्रभु और हमारे परमेश्वर, यीशु मसीह के प्रतअिपने प्रेम से नहीं डगिा सकती।'

जब पवत्रि महलिाएँ ये शब्द कह रही थीं, तो माउफ्टसि और उसके साथ मौजूद दो अन्य न्यायाधीशों ने ऊँचे स्वर में पुकारा:

'ये तीन महलिाएँ, जन्होंने रानी को जहर दयिा और उसे गंभीर बीमारी से पीड़ति कयिा, पृथ्वी के मुख से नष्ट हो जाएँ!'

तत्काल बाद, राजा ने पवित्र शहीदों के खिलाफ मृत्युदंड की सजा सुनाई, जिसके अनुसार उन तीन ईसाई महिलाओं को फारसी मगों द्वारा उनके लिए रचे गए किसी भी तरीके से मार दिया जाना था। इन्हीं दुष्ट मगों ने कहा:

'जब तक इन महिलाओं को दो भागों में नहीं काटा जाता और रानी उनके कटे हुए शरीरों के बीच से नहीं गुजरती, तब तक वह ठीक नहीं हो सकती।'

बाद में, जब पवित्र शहीदों को दो भागों में काटने के लिए ले जाया गया, तो मौप्टसि ने फिर से अपनी दासी को पवित्र कन्या फेरवुफा के पास भेजा, जिसने उसकी ओर से उससे बात की:

'यदि तुम मेरी आज्ञा मानने को तैयार हो, तो तुम नहीं मरोगी; और न ही तुम्हारे साथ वाली महिलाएँ।'

'हे दुष्ट मनुष्य,' पवित्र कन्या ने क्रोधित और ऊँचे स्वर में मौफ्टसि को डाँटा, 'तुम ऐसी बातें क्यों कहते हो जो मैं सुनना भी नहीं सह सकती? मैंने अपने ईश्वर, मसीह के लिए मरने का निश्चय कर लिया है, ताकि मैं उनसे अनंत जीवन प्राप्त कर सकूँ। क्या मैं इस क्षणिक जीवन से सचमुच प्रेम करूँ, केवल इसलिए कि मैं मरकर अनंत जीवन से वंचित हो जाऊँ?'

इसके बाद, दुष्ट यातना देने वालों ने पवित्र शहीदों को शहर से बाहर ले गए और वहाँ उनके लिए प्रत्येक के लिए दो खंभे जमीन में गाड़ दिए।

तब पवित्र कन्या फेरवुफा को गर्दन से एक स्तंभ से और पैरों से दूसरे स्तंभ से बाँध दिया गया। अन्य पवित्र शहीदों को भी शेष स्तंभों से इसी प्रकार बाँध दिया गया। बाद में, पवित्र शहीदों को एक बड़ी बढ़ई की आरी से आधा-आधा काट दिया गया। इस प्रकार पवित्र शहीद, मसीह की वधूएँ, अपनी पवित्र आत्माएँ अपने अमर वर के हाथों में सौंप दीं।

जहाँ तक यातना देने वालों का सवाल है, उन्होंने सड़क के दोनों ओर तीन-तीन, कुल छह बड़े खंभे खड़े किए और उन पर पवित्र शहीदों के शरीरों के कटे हुए अंग लटका दिए। ये अंग, मानो, रक्त से लथपथ, पेड़ों से लटके सबसे सुंदर फल थे। यह एक भयानक और आँसुओं के योग्य दृश्य था। फिर, उसी सड़क पर, फारस की दुष्ट रानी को पवित्र शहीदों के फांसी पर लटके शरीरों के पास से होकर जुलूस के रूप में ले जाया गया, जिसके पीछे लोगों की एक बड़ी भीड़ चल रही थी। यह सब होने के बाद, पवित्र शहीदों के सम्मानित शरीरों को एक खाई में फेंक दिया गया।

इस प्रकार, पवित्र शहीद फेरवूफा ने अपनी बहन और अपने सेवक के साथ, हमारे प्रभु यीशु मसीह के लिए अपनी पीड़ाओं को[2857] के अप्रैल के चौथे दिन समाप्त किया, जिनका महिमा, सम्मान और आराधना युगानुयुग हो। आमीन।

परम पूज्य जोसिमा की स्मृति

4 अप्रैल को स्मरण किया जाता है

हमारे पूजनीय पिता जोसिमा को बचपन से ही ईश्वर की सेवा करने की इच्छा हुई। बहुत कम उम्र में ही, वे एक मठ में प्रवेश कर गए और फिलिस्तीन की भूमि में,[2858] में, टायर में भिक्षु दीक्षा ग्रहण की। सदाचारी संन्यासी जीवन जीने के बाद, वह एक अनुभवी भिक्षु बन गए और उन्हें ईश्वर से कई प्रकटवाणियाँ प्राप्त हुईं। उन्होंने अपना समय प्रार्थना में बिताया, और आँसुओं के साथ लगातार शारीरिक श्रम में लगे रहे। और एक बार उनके मन में यह विचार आया कि क्या रेगिस्तान में रहने वालों में कोई ऐसा व्यक्ति होगा जिसके कर्म उनके कर्मों से श्रेष्ठ हों। तब एक अज्ञात व्यक्ति उनके सामने प्रकट हुआ और कहा:

'ज़ोसिमा, एक मनुष्य के रूप में तुमने तपस्या का उच्चतम स्तर प्राप्त कर लिया है, लेकिन कोई भी मानव पूर्ण नहीं हो सकता; और इसलिए कि तुम जान सको कि मोक्ष के कितने विभिन्न मार्ग हैं, उस स्थान को छोड़ दो जहाँ तुम अभी अपनी तपस्या कर रहे हो और यॉर्डन के पास के मठ में जाओ।'

ज़ोसिमा ने जैसा कहा गया था वैसा ही किया और उक्त मठ के लिए रवाना हो गय[2859] । इस मठ में एक रिवाज़ था कि महा-व्रत के दौरान, सभी भिक्षु प्रार्थना करने के लिए मठ छोड़कर मरुभूमि चले जाते थे, केवल द्वारपाल को पीछे

[2857] पवित्र महिलाओं की शहादत लगभग 341–343 के आसपास हुई।

[2858] टायर एक शहर है जो मृत सागर के उत्तर-पूर्वी तटों के पास, बाएं-किनारे वाले फिलिस्तीन में गलिद पर्वत श्रृंखला की दक्षिण-पश्चिमी ढलान पर स्थित है, जिसे प्राचीन काल में पेरेया या ट्रांसजॉर्डन क्षेत्र के नाम से जाना जाता था।

[2859] यह जॉर्डन का संत जॉन द फोररनर का मठ था, जो 1651 तक बर्बाद हो चुका था और 723 में ही खस्ताहाल हो गया था।

छोड़कर, और फरि पवत्रि भोज के लिए महा-पवत्रि गुरुवार को मठ में लौट आते थे। जब समय आया, तो ज़ोसमिा अन्य भक्षिुओं के साथ रेगस्तिान में चले गए। वहाँ उन्होंने संत मरयिम को देखा और उनके पीछे दौड़े, लेकनि उन्होंने उनसे कहा:

'जोसमिा! यदि तुम मुझे देखना चाहते हो, तो मुझे अपने कपड़े दे दो।'

ज़ोसमिा ने मरयिम की बात मानी, और उसने, वस्त्र पहनकर, उसे वस्तिार से बताया कि उसने अपनी जवानी से अब तक क्या-क्या कयिा था – कैसे उसने पहले व्यभचिार का जीवन जयिा था और बाद में कैसे वह रेगस्तिान में आ गई थी। इसके बाद, उसने ज़ोसमिा से कहा कि वह अगले साल पवत्रि उपहारों के साथ यॉर्डन नदी पर आएँ। जब एक साल बीत गया, तो जोसमिा मसीह के शरीर और रक्त के साथ आए। वहाँ उन्होंने उस पूजनीय महलिा को यॉर्डन नदी पार करके अपनी ओर आते देखा, मानो वह सूखी ज़मीन पर हो, और उन्होंने उन्हें पवत्रि Communion दी। तीसरे वर्ष, वह रेगस्तिान में लौटे और उन्होंने पूजनीय मैरी को पहले ही मृत पाया[2860] । अपनी वृद्धावस्था के कारण, उनमें उन्हें दफ़नाने की ताकत नहीं थी और, एक शेर को देखकर, उन्होंने उससे कहा:

'हे पशु! पूज्य मेरी को दफनाओ, क्योंकि मैं बूढ़ा हूँ और खोद नहीं सकता।'

तुरंत ही सहि ने एक कब्र खोद दी, और ज़ोसमिा ने पूज्य मैरी के पवत्रि शरीर को दफ़ना दयिा। मठ में लौटने पर, उन्होंने मठाधीश जॉन और पूरे समुदाय को आदरणीय मैरी के बारे में और यह बताया कि प्रभु ने उन्हें कैसे महमिामय बनाया। इसके बाद, हमारे आदरणीय पति जोसमिा ने प्रार्थना, आँसुओं और वभिन्नि तपस्वी कार्यों में लगे रहकर बहुत वृद्धावस्था में देहांत कयिा[2861] । मठ के भक्षिुओं ने उन्हें सम्मान के साथ दफनाया।

- उसी दनि, आदरणीय जॉर्ज मौन का स्मरणोत्सव।

18 अप्रैल

5 अप्रैल (पुराने कैलेंडर के अनुसार)

उसी दनि, पूजनीय पतिाओं थयिोना, समियिन और फोर्वनिस की स्मृति।

पवत्रि शहीदों अगाथोपॉड और थयिोडुलस का कष्टकथा

5 अप्रैल को स्मरण कयिा जाता है

नष्ठिाहीन रोमन सम्राटों डायोक्लेटयिन और मैक्समियिन के शासनकाल के दौरान[2862] , परमेश्वर की कलीसयिा के दो धर्मपरायण सेवक, अगथोपॉड और थयिोडुलस, थस्सिलोनकिा में रहते थे[2863] । अगथोपॉड एक डकिन थे; वे पहले से ही वृद्ध थे और एक पवत्रि जीवन व्यतीत करते थे। थयिोडुलस, अपने हस्से, एक रीडर थे। धार्मकि ईसाई माता-पति का पुत्र, वह जवान और सुंदर था, और उसने नष्कलंक जीवन जयिा। थयिोडुलस के तीन रक्त संबंधी भाई थे: कैपटिोन, मथ्रिोडोरस और फलिोस्टॉर्जयिस, जन्होंने उसका ही जैसा धार्मकि जीवन जयिा।

अपने शहीद होने से पहले ही, धन्य थयिोडुलस को ईश्वर से शहीद के मुकुट का एक वचन मलि चुका था जो उन पर प्रदान कयिा जाना था। एक रात, आराम करते समय, थयिोडुलस ने एक दर्शन देखा जसिमें उन्हें एक सम्मानति

[2860] सम्माननीय नन का नधिन गुड फ्राइडे, 1 अप्रैल 521 को हुआ।

[2861] पूजनीय जोसमिा का 523 में लगभग 100 वर्ष की आयु में नधिन हो गया।

[2862] डायोक्लेटयिन, जसिका नाम मूर्तपिूजकों द्वारा ईसाइयों के अंतमि क्रूर उत्पीड़न से जुड़ा है, 284 में रोमन सहिासन पर चढ़ा और 305 तक शासन कयिा। 285 में, अकेले इतने वशिाल साम्राज्य पर शासन करने की कठनिाई को समझते हुए, उन्होंने अपने एक जनरल, पराक्रमी मैक्समियिन (हरक्यूलसि) को अपने सह-शासक के रूप में चुना, और उन्हें अगस्टस की उपाधि के तहत साम्राज्य के पश्चमिी आधे हस्से का प्रभार सौंपा। 292 में, उन्होंने सीज़र की उपाधि से दो और सह-शासकों की नयिुक्ति की – ब्रटिेन, गॉल और स्पेन के लिए कॉन्स्टैंटयिस क्लोरस, और इलरियिा के लिए गैलेरयिस। डायोक्लेटयिन ने अपनी अदालत रोम से नकिोमेडयिा ले गया (यह शहर प्रोपोंटसि - मरमरा सागर के एशयिाई तट पर स्थति था), जसिके परणिामस्वरूप पुराने रोम ने धीरे-धीरे अपना महत्व खो दयिा। सीज़र गैलेरयिस के प्रभाव में, डायोक्लेटयिन ने ईसाइयों के खलिाफ चार फरमान या आदेश जारी कए और वह उनके सबसे क्रूर उत्पीड़क में से एक था।

[2863] थेस्सालोनकिी, या सोलुन – स्लावों के प्रबोधक, संत सरिलि और मेथोडयिस का जन्मस्थान – मेसडिोनयिा में, एजयिन सागर पर एक शहर है।

व्यक्ति से अपने हाथ में एक निश्चित वस्तु प्राप्त करनी थी। जागने पर, थियोडुलस ने वास्तव में अपने हाथ में एक अद्भुत सुंदर मुहरदार अंगूठी पाई, जो एक अज्ञात पदार्थ से बनी थी, और उस पर पवित्र क्रॉस की छवि वाली एक मुहर लगी हुई थी। यह हमारे ईश्वर के लिए संत थियोडुलस के दुखों का संकेत था, जिन्होंने हमारे लिए क्रॉस पर पीड़ा सहन की। बाद में, पवित्र युवक थियोडुलस ने इस अंगूठी का उपयोग लोगों में हर तरह की बीमारियों को ठीक करने के लिए किया। जब वह अपने साथ यह अंगूठी लेकर किसी बीमार व्यक्ति से मिलता, तो उस व्यक्ति की बीमारी तुरंत दूर हो जाती और वह स्वस्थ हो जाता, यहाँ तक कि कई ग्रीक भी, यह देखकर, मसीह की ओर मुड़ गए।

जब उपर्युक्त मूर्तिपूजक राजाओं ने ईसाइयों के खिलाफ उत्पीड़न शुरू किया, तो उन्होंने अपने फरमान दूर-दूर तक भेजे – जिसमें सभी लोगों को एकमात्र ईश्वर, सभी का सृष्टिकर्ता[2864] की पूजा करने के बजाय मानव हाथों की कृतियों - मूर्तियों - की पूजा करने के लिए मजबूर किया गया। इस प्रकार का एक शाही फरमान थिस्सलुनीके तक भी पहुँचा, जहाँ शाही आज्ञा की अवज्ञा करने वालों के लिए तैयार यातना के उपकरण सार्वजनिक रूप से प्रदर्शित किए गए थे[2865] । कई विश्वासी वहाँ से भाग गए, और जहाँ भी उन्हें जगह मिली, वहाँ छिपने की कोशिश करने लगे; अन्य लोगों ने बहादुरी से यातनाओं को स्वीकार किया; और अंत में, एक तीसरा समूह, जो कायर और कमजोर था, यातना और मृत्यु के डर से, विधर्मी लोगों के पक्ष में चला गया और उनके मूर्तिपूजक बलिदानों में भाग लिया, इस प्रकार इस क्षणिक, व्यर्थ जीवन को शाश्वत जीवन पर तरजीह दी। लेकिन अस्थायी यातनाओं से बचकर, उन्होंने अपने ऊपर शाश्वत मृत्यु और विनाश ला लिया। ऐसे लोगों पर शैतान प्रसन्न हुआ, लेकिन मसीह के उदार और साहसी योद्धाओं, जैसे कि ये दो संत, अगथोपोड और थियोडुलस, द्वारा वह हमेशा पराजित और लज्जित किया गया। उसके बाद हुई भयंकर उत्पीड़न के दौरान, ये दोनों न तो भागे और न ही छिपे गए, बल्कि ईश्वर के घर में लगातार रहे, अपनी पवित्र कलीसिया के लिए दिन-रात ईश्वर से प्रार्थना करते रहे, जो ऐसी विपत्तियों का सामना कर रही थी, और दिन-रात अपने स्वयं के दुखों की शुरुआत का इंतजार करते रहे। वास्तव में, जब मूर्तिपूजक सैनिकों को संतों के बारे में पता चला, तो उन्होंने तुरंत उन्हें पकड़ लिया और जेल में डाल दिया। उस समय, फाउस्टिनिस थेस्सालोनिका का राज्यपाल था। न्यायाधीश की कुर्सी पर बैठकर, उसने मसीह के स्वीकारियों – अगाथोपॉड और थियोडुलस – को पूछताछ के लिए अपने सामने लाने का आदेश दिया। जैसे किसी दावत के लिए बुलाए गए हों, वे एक-दूसरे का हाथ पकड़कर और निडर होकर यह कहते हुए प्रसन्नता से चल पड़े:

'हम मसीही हैं!'

जब संत यातनाकर्ता की अदालत में उपस्थित हुए, तो उसने—सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण रूप से दोनों में से छोटे को अपनी छल-कपट से फँसाने की इच्छा से—सभी को पीछे हटने का आदेश दिया और अगाथोपॉडस को एक दूसरे स्थान पर ले जाया गया। फिर, थियोडुलस को अपने पास बुलाकर, उसने उससे सौम्य स्वर में कहा:

'समर्पण कर दो, युवक, मैं तुझसे विनती करता हूँ; इस नई, झूठी ईसाई शिक्षा को त्याग दो और प्राचीन काल से स्थापित कानूनों और रीति-रिवाजों का पालन करने को लौट आओ, जब तक कि तुम अपने जीवन को यातना में समाप्त नहीं करना चाहते।'

लेकिन संत थियोडुलस ने उत्तर दिया:

'मैंने तो बहुत पहले ही भूल और धोखे को त्याग दिया है, और मैं तुम्हारे लिए डरता हूँ, जो व्यर्थता में इतना डूबा हुआ है, कि कहीं तुम शाश्वत मृत्यु की सजा न भुगतो।'

न्यायाधीश को संत के शब्दों से कोई आपत्ति नहीं हुई, लेकिन उसने एक बार फिर उपहार और सम्मान का वादा करते हुए, हर तरह से उसे मूर्तियों को बलिदान चढ़ाने के लिए लुभाना शुरू कर दिया। पास में खड़े 'Zeus[2866] ' के एक पुजारी, जिनका नाम ज़ेनोस था, ने संत से कहा:

'यदि सम्मान और उपहार तुम्हें बलिदान करने के लिए राज़ी नहीं कर सकते, तो यातनाएँ तुम्हें राजा की आज्ञा मानने के लिए राज़ी कर लें!'

[2864] 304 में, डायोक्लेटियन ने अपना चौथा फरमान जारी किया, जिसके तहत सभी ईसाइयों को यातना और कष्ट देने की सज़ा दी गई, ताकि उन्हें ईसाई धर्म त्यागने और मूर्तियों को बलिदान चढ़ाने के लिए मजबूर किया जा सके।

[2865] इस उत्पीड़न के समकालीन, केसरिया के बिशप यूसेबियस, ने अपनी *चर्च हिस्ट्री* में साम्राज्य के विभिन्न क्षेत्रों और शहरों में ईसाइयों के उत्पीड़न के साथ हुई सभी भयावहताओं का विस्तार से वर्णन किया है।

[2866] प्राचीन यूनानी स्वर्ग के देवता को 'ज्यूस' (क्रोनस और रिया का पुत्र) कहते थे। उनके कई उपनाम थे, जो या तो उन विभिन्न स्थानों के नामों से लिए गए थे जहाँ उनकी पूजा की जाती थी, या इस देवता के कई गुणों में से किसी एक को व्यक्त करने का काम करते थे।

'यातनाओं की भयावहता मुझे किसी भी तरह से डरा नहीं सकती,' शहीद ने पुजारी से जवाब दिया, 'और न ही वे मुझे कभी आपकी आज्ञा मानने के लिए मना सकेंगे।'

वक्ता के शब्दों के जवाब में, और बाद में फॉस्टिनो की इस टिप्पणी पर कि एक सम्मानजनक जीवन दर्दनाक मृत्यु से बेहतर है, संत थियोडुलस ने उत्तर दिया:

'वास्तव में, मुझे पता है कि जीवन मृत्यु से बेहतर है, और यही कारण है कि मैंने अपने हृदय में इस सांसारिक और क्षणिक जीवन को तुच्छ समझने का संकल्प लिया है, ताकि मैं अमर जीवन और स्वर्ग के शाश्वत आशीर्वादों में सहभागी हो सकूँ। तो, मुझे घावों और आग से यातना दो, और तुम देखोगे कि मेरा पीड़ित शरीर क्षय और विनाश के अधीन है, जबकि मेरा तर्कशील आत्मा, जो अक्षय है, यातनाओं के तुरंत बाद, शरीर के बंधनों से मुक्त होकर शाश्वत जीवन में आनंदित होगा।

'मैं आपसे विनती करता हूँ,' न्यायाधीश ने कहा, 'मुझे बताइए, वह कौन है जो आपको वे महान आशीर्वाद देगा, जिसके प्रेम के लिए आपने अब कष्ट और यहाँ तक कि मृत्यु को भी तुच्छ समझने का निश्चय किया है?'

– ईश्वर, – संत थियोडुलस ने उत्तर दिया, – जिसने प्रकृति के नियमों द्वारा सभी चीजों को निर्धारित किया है, और उनके पुत्र, मसीह, पिता के वचन (देखें यूहन्ना 1 आदि), जिनके क्रूस से मुझे मेरे जन्म से ही चिह्नित किया गया है; मैं अपने जीवन के अंत तक इस चिह्न को नहीं त्यागूँगा, और मैं मसीह के इस चिह्न का परित्याग करने के बजाय अपने शरीर की यातना सहना पसंद करूँगा। मैं अपने प्रभु का एक वफादार सेवक हूँ, और तुम मुझे आग से भी, लोहे से भी नहीं हरा पाओगे!

पवित्र युवक थियोडुलस के ऐसे साहस और धैर्य से चकित होकर, राज्यपाल फाउस्टिनिस ने उसे अपने पास से एक अलग स्थान पर ले जाने का आदेश दिया। फिर, संत अगथोपॉड को अपने पास बुलाकर, उन्होंने उनसे कहा:

'हमारे देवताओं की पूजा करो! देखो, थियोडुलस, जो धोखे के प्रभाव में था, ने अब हमसे पूजा करने और हमारे साथ बलिदान चढ़ाने का वादा किया है।'

राज्यपाल की चालाकी और धोखे को भांपते हुए, संत अगथोपॉड ने उससे कहा:

'और मैं भी खुशी-खुशी सच्चे ईश्वर और उनके पुत्र, यीशु मसीह को बलिदान चढ़ाऊँगा, क्योंकि थियोडुलस ने भी उन्हें एक अनुकूल बलिदान चढ़ाने का वादा किया है, और किसी अन्य देवता को नहीं।'

लेकिन फाउस्टिनिस ने आपत्ति जताई:

[2867]'नहीं, थियोडुलस ने अपना बलिदान इस ईश्वर को नहीं, बल्कि उन बारह देवताओं को अर्पित करने का वादा किया था जो संपूर्ण ब्रह्मांड को धारण करते हैं।'

हालाँकि, संत अगथोपॉड ने मुस्कुराते हुए उनसे उत्तर दिया:

'तुम उन चीज़ों को देवता क्यों कहते हो जिन्हें एक कारीगर ने नाशवान पदार्थ से बनाया है? क्या वे देवता हो सकते हैं जिन्हें मनुष्यों के हाथों ने बनाया है, जो अपनी ही रचना की पूजा इस तरह करते हैं जैसे कि वह सबसे उत्तम और सबसे परिपूर्ण प्राणी हो? क्या वे देवता हैं जो उन लोगों का विरोध नहीं कर सकते जो उन्हें उखाड़ फेंकना और तोड़ना चाहते हैं, और जो किसी भी तरह से अपना बचाव नहीं कर सकते – जो अपनी आँखों से नहीं देखते, अपने पैरों से नहीं चलते, और जिनमें एक भी इंद्रिय नहीं है? क्या वे वही देवता हैं जिनके बारे में यूनानी कहते हैं कि उनमें जीवित आत्मा है और वे हर तरह के सबसे घृणित कामुक कृत्यों में लिप्त रहते हैं; और फिर भी अब वही कारीगर जिन्होंने उनकी मूर्तियाँ बनाई हैं, उन्हें एक चाँदी के सिक्के या चार छोटे तांबे के सिक्कों में बेच देते हैं? इन सब के बाद, क्या मैं सर्वशक्तिमान ईश्वर को मिलने वाला सम्मान आपके अयोग्य और घृणित देवताओं पर अर्पित कर सकता हूँ? क्या मैं आपके बिरि मूर्तियों के सामने स्तुति और भजन गा सकता हूँ?

जब संत ने ये शब्द कहे, तो उनके चारों ओर खड़े मूर्तिपूजक अधिकारियों को डर लगा कि अगाथोपोड और पूछताछ के लिए लाए गए अन्य सभी ईसाइयों का विश्वास उनके शब्दों से और दृढ़ हो सकता है। इसलिए, उन्होंने अगाथोपोड और थियोडुलस को तुरंत जेल ले जाने का आदेश दिया।

[2867] ग्रीक विश्वास के अनुसार, बारह सर्वोच्च या प्रमुख देवता पृथ्वी और आकाश के बीच, हवा में रहते थे, और उनका निवास ओलंपस पर्वत की चोटी पर भव्य महलों में था। इसलिए, इन देवताओं को ओलंपियन देवता भी कहा जाता है। ये देवता थे: ज्यूस, हेरा, पोसीडॉन, डेमेटेर, अपोलो, आर्टेमिस, हेफ़ेस्टस, पैलस एथेना, एरेस, एफ्रोडाइट, हर्मीस और हेस्टिया।

जब संतों को जेल ले जाया जा रहा था, तो लोगों की एक वशिाल भीड़ उनके पीछे-पीछे चली। भीड़ में से कुछ लोगों ने, संत थयिोडुलस की जवानी पर तरस खाकर, कई चापलूसी भरे शब्दों से मसीह में उसके वशि्वास को हलिाने की कोशशि की। अन्य लोगों ने, अगथोपॉड के पवत्रि सफेद बालों को देखकर, उससे कहते हुए संबोधति कयिा:

'अगाथोपोड! नसि्संदेह तुम्हारा भी मन एक बच्चे जैसा है, और तुम यह नहीं समझते कि तुम्हारे जीवन के लिए क्या अच्छा है!'

लेकनि संत आगे बढ़ते रहे, उन पर कही गई सभी बातों का कोई उत्तर दिए बनिा।

जब वे कालकोठरी में पहुँचे, तो उन्होंने वहाँ वनिम्रता से ईश्वर से प्रार्थना की और वभिन्नि अपराधों के लिए वहाँ बंदी बनाए गए कैदयिों की कतार में शामलि हो गए।

आधी रात को, संतों को दैवीय दर्शनों से बल मलिा और वे प्रसन्नचत्ति थे, तथा वे आनंदपूर्वक यीशु मसीह की स्तुति कर रहे थे। इसके बाद, पानी से अपने चेहरे और हाथ धोकर और अपने घुटने तथा सरि जमीन पर झुकाकर, उन्होंने एक स्वर में पुकारते हुए ईश्वर से नम्निलखिति संयुक्त प्रार्थना की:

– हे ईश्वर! सभी चीज़ों के सृष्टकिर्ता और पालनहार, जसिने इस दृश्यमान संसार को बनाया, जसिने स्वर्गीय पंडिों की अनवरत गति स्थापति की ताकि उनके बीच स्थति सूर्य दनि भर सभी चीज़ों को प्रकाशति कर सके और पृथ्वी के फलों की वृद्धि को बढ़ावा दे, जबकि चंद्रमा अपनी करिणों से रात के अंधकार को दूर कर सके। – हे ईश्वर! आपने पृथ्वी को पशु उत्पन्न करने की क्षमता, समुद्र की गहराइयों को मछलयिों से, और पक्षयिों को आकाश में एक स्थान प्रदान कयिा है; – हे ईश्वर! आपने ही समुद्र को आज्ञा दी कि वह अपनी देनों से उस मनुष्य की सेवा करे जसिे आपने बनाया; आपने ही पक्षयिों को आज्ञा दी कि वे अपनी कलरव से आकाश को भर दें; आपने ही पृथ्वी को आज्ञा दी कि वह मनुष्य की आवश्यकताओं के लिए प्रचुर मात्रा में वभिन्नि फल उत्पन्न करे, ताकि मनुष्यों के ओठों द्वारा वह आपकी धन्यवाद और स्तुति कर सके – हे संपूर्ण जगत के स्वामी, आपको। हे ईश्वर! आप यह नहीं चाहते थे कि हमारी जाति—जो वधिर्मी थी, ने आपके आज्ञाओं से मुंह मोड़ लयिा था और स्वयं को हर पाप के हवाले कर दयिा था—वह सर्वथा नष्ट हो जाए; आपने शैतान को इस तर्कशील प्राणी को पूरी तरह से अंधा करने और उसे अपने पीछे अनंत वनिाश में खींचने नहीं दयिा, बल्कि मानव जाति के पापों को क्षमा करके, आपने, केवल अपनी दया से, स्वर्ग से मनुष्यों के लिए अपने एकमात्र पुत्र को भेजा, ताकि वह, मानव स्वभाव को धारण करके, अपनी अमरता को हमारे नश्वर स्वभाव के साथ जोड़ सके; और ताकि, सदैव आपके साथ रहते हुए, तेरा वचन, जसिके द्वारा सब कुछ हुआ, एक बार फरि उन लोगों को जो मथि्या में भटक गए थे, सत्य के मार्ग पर वापस ला सके। तू, अपने पुत्र और अपने पवत्रि आत्मा के साथ, अपनी महमिामय अद्भुतताओं के द्वारा ब्रह्मांड का पालन करते हुए, उन लोगों को जो पहले अधर्मी थे, अपनी पवत्रि आस्था में लाया है। आप, परमेश्वर के पुत्र, ने पति और पवत्रि आत्मा के साथ मलिकर, प्रकृति और मृत्यु के नयिमों को जीते हुए, चार दनि से मरे हुए लाजरुस को अपने वचन से जलिा उठाया (यूहन्ना 11:1-44)। आपने, उसकी आँखों पर मट्टिी लगाकर, जन्म से अंधे व्यक्ति को दृष्टि प्रदान की (यूहन्ना 9:1-38), ठीक उसी प्रकार जैसे आपने रक्तस्राव से पीड़ति उस स्त्री को तत्काल चंगा कयिा जसिने आपके वस्त्र को छुआ था (मत्ती 9:20-22), – ठीक वैसे ही जैसे आपने लकवाग्रस्त व्यक्ति को चंगा कयिा, और उसे अपना बस्तिर उठाने की आज्ञा दी (मत्ती 9:2-8)। इसलिए, हे ईश्वर, अभी हमें दया दखिाओ, और हमें स्वर्ग से अपनी सामर्थ्य से बलवान करो, ताकि हम, आपकी सहायता से, दुष्टों द्वारा हमें दी जाने वाली सभी यातनाओं को साहसपूर्वक सहन करके, स्वर्ग के राज्य को प्राप्त कर सकें।

जब संतों ने ये शब्द प्रार्थना में कहे, तब उनके साथी कैदी, जन्हिें हत्या या व्यभचिार के आरोप में उनके साथ कालकोठरी में बंद कयिा गया था, उन्होंने शारीरकि मृत्यु के भय पर वजिय प्राप्त कर, संतों के चरणों में गरि पड़े और उनसे अपने पापों की क्षमा तथा अपनी आत्माओं को अनंत मृत्यु से बचाने के लिए वनिती करने लगे। इस बीच, कालकोठरी के बाहर इकट्ठा हुई भीड़ ने जेल के दरवाजे तोड़ दिए, कालकोठरी में घुस आई, और परमेश्वर के सेवकों द्वारा बोले गए शब्दों को गहरी भावना के साथ सुना। यह शैतान के एक उत्साही सेवक, थस्सिलोनकिा के मुख्य न्यायाधीश यूप्सचियिस ने देखा, जो कमांडर के पास दौड़ा और उससे कहा कि यदि कालकोठरी में बंद दो ईसाइयों को तुरंत नहीं मार डाला गया, तो बहुत से लोग मूर्तयिों की पूजा छोड़ देंगे। कमांडर क्रोध से आग-बबूला हो गया और तुरंत सैनकिों को उस युवक और बुजुर्ग को अपने सामने लाने के लिए भेजा। और मसीह के सेवक तुरंत उस अन्यायपूर्ण न्यायाधीश के सामने लाए गए। सेंट थयिोडुलस पर अपनी नज़र डालते हुए, कमांडर ने उससे पूछा:

'क्या तुम्हें नहीं पता कि तुम्हें उस ब्रह्मांड पर शासन करने वाले राजाओं के आदेशों का पालन करना चाहिए?'

'जो स्वर्ग और पृथ्वी का प्रभु आज्ञा देता है,' संत थियोडुलस ने उत्तर दिया, 'वह वास्तव में न्यायसंगत है और सावधानीपूर्वक ध्यान और तत्काल आज्ञाकारिता के योग्य है। जहाँ तक आपके सांसारिक राजाओं के आदेशों की बात है, उनके आदेशों में से केवल उन्हीं का पालन करना चाहिए जो न्यायसंगत हों और स्वर्ग के सृष्टिकर्ता के विरुद्ध न हों; लेकिन अन्यायपूर्ण आदेशों का किसी भी परिस्थिति में पालन नहीं किया जाना चाहिए।

इसके बाद, सैन्य कमांडर फाउस्टिनि ने संत से पूछा:

'मुझे बताइए, स्वर्ग का सृजन किसने किया?'

संत थियोडुलस ने उत्तर दिया:

'उसकी रचना सर्वशक्तिमान ईश्वर और ईश्वर के पुत्र, यीशु मसीह ने की है, जो परमपिता के वचन हैं।'

'क्या वह वही नहीं है,' फाउस्टिनिस ने पूछा, 'जिसे यहूदियों ने सूली पर चढ़ाया था, और उसे अत्यंत क्रूर यातनाएँ दी थीं?'

'हाँ, वही है जिसे यहूदियों ने सूली पर चढ़ाया था,' शहीद ने उत्तर दिया। 'उन्होंने स्वेच्छा से हमारे लिए पीड़ा सहने का चुनाव किया; फिर, अपनी दिव्यता की शक्ति से, वे मृतकों में से जी उठे और उन्हें मृत्यु के विजेता के रूप में स्वर्ग की ओर जाते हुए देखा गया, जहाँ से वे अविश्वासियों को दोषी ठहराने और न्याय करने के लिए फिर से आएँगे।'

'तो फिर, आप हमारे देवताओं को बलिदान क्यों नहीं चढ़ाना चाहते?' फाउस्टिनि ने एक बार फिर पूछा।

'क्या यह बेहतर नहीं है,' संत ने उत्तर दिया, 'उनके लिए बलिदान करना जिनके द्वारा मूर्तिकार बनाए गए थे, इन मूर्तियों को बलिदान करने की तुलना में? सचमुच, सृष्टिकर्ता सृष्टि से बेहतर है!'

तब कमांडर फाउस्टिनि ने आदेश दिया कि पवित्र युवक थियोडुलस के कपड़े उतार दिए जाएँ और उसे यातना देने के लिए नग्न कर दिया जाए। उसी समय, उद्घोषक ने ज़ोर से घोषणा की:

'देवताओं को बलिदान चढ़ाओ, और तुम्हें आज़ाद कर दिया जाएगा!'

लेकिन शहीद ने अपने यातनाकर्ता से कहा:

'तुम मेरे शरीर के कपड़े तो उतार सकते हो, लेकिन तुम मेरे ईश्वर में मेरे विश्वास को कभी नहीं छीन सकते।'

जब संत ने इतनी निडरता से बात की, यातनाओं का तिरस्कार किया और अपने यातनाकारों को बार-बार फटकारा, तो सेनापति ने आदेश दिया कि थियोडुलस की आँखों के सामने ही उन लोगों द्वारा मूर्तियों की बलि चढ़ाई जाए जो मूल रूप से ईसाई थे, लेकिन यातनाओं के आगे झुककर मूर्तियों की पूजा करने लगे थे। यह दृश्य देखकर, संत थियोडुलस का हृदय उन लोगों के लिए व्यथित हो उठा जो मूर्तिपूजकों के प्रभाव में आ गए थे और सत्य से भटक गए थे, और उन्होंने कमांडर से कहा:

'तुमने कमज़ोरों को हराया है, लेकिन तुम किसी भी तरह से मसीह के मज़बूत योद्धाओं को नहीं हरा सकते, भले ही तुम और भी बड़े यातनाएँ रचो! यह जान लो, कमांडर: आज तुमने हमारे लिए जो यातनाएँ तैयार की हैं, वे तुच्छ और उपहास योग्य हैं। और भी ज़्यादा क्रूर यातनाएँ रचो, ताकि तुम हमारे विश्वास और परमेश्वर के प्रति हमारे प्रेम की प्रकृति को जान सको।'

इसके बाद, कमांडर ने थियोडुलस को दरबार में ईसाई पुस्तकें लाने का आदेश दिया। लेकिन संत ने उनसे उत्तर दिया:

'यदि मुझे यह पता होता कि मूर्तिपूजा की व्यर्थता को पहचानकर, आप उसे त्याग देंगे और सच्ची भक्ति में स्थापित होना चाहेंगे, तो मैं आपके लिए भविष्यवाणी और प्रेरितों की पुस्तकें लाता। लेकिन चूँकि मैं देखता हूँ कि आपके मन में दुष्ट इरादे हैं, इसीलिए मैं ईश्वर का उपहार आपके हाथों में नहीं दूँगा।'

'अगर तुमने तुरंत मेरे आदेश का पालन नहीं किया,' फाउस्टिनि ने जवाब दिया, 'तो मैं तुम्हारे साथ कोई दया नहीं दिखाऊँगा; मैं तुम्हारे शरीर को टुकड़े-टुकड़े करके जानवरों को नोचने के लिए फेंक दूँगा।'

'यहाँ, मेरा शरीर यातनाओं के लिए अर्पित है,' संत ने कहना जारी रखा, 'इसके साथ जो चाहो करो; मुझे सबसे क्रूर तरीके से यातना दो, लेकिन फिर भी मैं पवित्र पुस्तकें अधर्मी लोगों द्वारा अपमानित किए जाने के लिए नहीं सौंपूंगा!'

तब शहीद को डराने के लिए, कमांडर ने उसे सिर कलम करने की जगह ले जाने का आदेश दिया, यह मानते हुए कि निकट मृत्यु को देखकर संत डर जाएगा और उसकी इच्छा के आगे झुक जाएगा।

और इस प्रकार, जब संत को सिर कलम करने के लिए निर्धारित स्थान पर लाया गया और उन्होंने अपने खिलाफ उठाई गई नंगी तलवार को देखा, तो उन्होंने निम्नलिखित शब्दों में ईश्वर से पुकारा:

'महमिा तेरी हो, हे ईश्वर, मेरे प्रभु के पति, जन्हिोंने हमारे लिए दुख सहने की कृपा की! उसी की कृपा से मैं अब तेरे पास जाता हूँ, तेरे लिए मरने की प्रसन्नता के साथ!'

यह कहकर, उसने तलवार के नीचे अपना सरि झुकाया, लेकनि उसका सरि नहीं काटा गया। सेनापतनि देखा कि संत थयिोडुलस तलवार से सरि कटवाने की तैयारी करते समय अपने लिए कसिी प्रकार का गंभीर मुकुट चाह रहे थे, तो उसने आदेश दयिा कि उसे बनिा चोट के वापस कर दयिा जाए, जबकि वह स्वयं संत अगथोपॉड से पूछताछ करने लगा। उसने उससे पूछा:

'तुम कसि प्रकार का जीवन जीते हो?'

'एक ही,' संत ने उत्तर दयिा, 'जो थयिोडुलस का है।'

'तुम्हारा थयिोडुलस से क्या संबंध है,' कमांडर ने पूछा, 'क्या तुम रश्तिेदार नहीं हो?'

संत अगथोपॉड ने उत्तर दयिा, 'हम रक्त से नहीं जुड़े हैं, लेकनि हम वश्वास और आस्था से एकजुट हैं; और जहाँ तक हम रश्तिेदारी में अलग हैं, वहाँ तक हम आत्मा में एकजुट हैं।'

तब कमांडर ने कहा:

'मैं देखता हूँ कि आप दोनों एक ही पीड़ा की ओर बढ़ रहे हैं – आपके शब्दों से यह पता चलता है,' संत के शब्दों के जवाब में कमांडर ने कहा।

संत अगथोपॉड ने उत्तर दयिा:

'यदि शहादत के इसी रूप से, हम इस वर्तमान जीवन से मुक्त हो जाते हैं, तो हमें हमारे ईश्वर से वही पुरस्कार भी प्राप्त होगा!'

फाउस्टनि ने कहा, "क्या यह शर्म की बात नहीं है कि आपके जैसे उम्र के व्यक्ति को एक युवक की तरह धोखा देकर जानबूझकर नश्चिति मृत्यु में दे दयिा जाए?"

'मैं स्वयं को बलि्कुल भी धोखा नहीं दे रहा हूँ,' संत अगथोपॉड ने उत्तर दयिा, 'और न ही मुझे अपने मसीह में अपनी आशा से कोई हानि होती है; इसके वपिरीत, यदि मैं उम्र में बड़ा हूँ, तो मुझे अपने ईश्वर की सेवा में और भी अधकि उत्साह दखिाना चाहए; और मैं थयिोडुलस की प्रशंसा करता हूँ, जो अपनी जवानी में इतनी बहादुरी से हमारे एक सच्चे ईश्वर की उपासना का समर्थन करता है।

उस क्षण थयिोडुलस पर नज़र डालते हुए, सैन्य कमांडर फाउस्टनि ने उससे संबोधति होकर कहा:

'युवा! इस बूढ़े के शब्दों से बहक मत – लापरवाही से अपनी जान जोखमि में मत डाल। आखरिकार, वह तो पहले से ही बूढ़ा है: इसलिए इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि वह मृत्यु की कामना करता है; लेकनि तुम, जो जवान और इतने कम उम्र के हो, कसि कारण से इस मीठे जीवन से बेवजह वंचति होना चाहते हो?'

संत थयिोडुलस ने उत्तर दयिा:

'यह मत समझो कि मैं उस बूढ़े से कमजोर हूँ, या यह कि मैं उसी प्रकार की यातनाएँ नहीं सह सकता। यद्यपि मैं आयु में युवा हूँ, फरि भी मैं, उस बूढ़े की तरह, एक ही ईश्वर, जो सर्व-सृष्टि का स्रष्टा है, को मानता हूँ, और उस बूढ़े के साथ मलिकर, उसके लिए दुख सहने को तैयार हूँ।'

संतों के बोलने के बाद, उन्हें यातना देने वाले के आदेश पर बाँध दयिा गया और वापस कालकोठरी में ले जाया गया। इस बीच, संतों ने उस ईश्वर की महमिा की, जसिके द्वारा उन्होंने शैतान को परास्त कयिा था।

उनके मत्रि, उनके चारों ओर इकट्ठा होकर, उन्हें घेरकर रोने लगे।

'तुम यहाँ इकट्ठा क्यों हुए हो?' संत थयिोडुलस ने पूछा, 'और तुम क्यों रो रहे हो?'

'हम तुम्हारी दुर्भाग्य पर रो रहे हैं,' उन्होंने उत्तर दयिा।

'क्यों,' संत मुस्कुराते हुए बोले, 'अपनी दुर्भाग्य पर रोने के बजाय, आप हमारी दुर्भाग्य पर रो रहे हैं, जो हमें कुछ बेहतर की ओर ले जा रही है?'

जब संत बोल ही रहे थे, तो सेनापति द्वारा भेजा गया एक सैनकि कालकोठरी में घुसा; उसने दोनों संतों को लोहे की जंजीरों से बांध दयिा, उन्हें कालकोठरी के एक भीतरी कमरे में बंद कर दयिा, और उन्हें वहाँ इस तरह बंद कर दयिा कि कोई भी उनके पास न आ सके।

इस बीच, जैसे ही देर शाम हुई, पवत्रि शहीदों ने ईश्वर से प्रार्थना की कि वह उनके इस कार्य में अंत तक उन्हें बल प्रदान करें, और फरि वे वश्राम करने लगे। लेकनि हमारे प्रभु यीशु मसीह, जो अपने संतों की परवाह करते हैं, ने उन्हें

उनकी नींद में वही दर्शन भेजा (क्योंकि वे एक ही हृदय और मन के थे) उस मृत्यु के बारे में जो उन पर आने वाली थी। यह दर्शन इस प्रकार था: संतों को ऐसा प्रतीत हुआ मानो वे दोनों एक ही जहाज पर सवार हो गए हों, जो कई लोगों से भरा हुआ था, और वे खुद को जहाज के साथ समुद्र के बीच में पाया; नाव एक ओर से दूसरी ओर हिल रही थी, क्योंकि एक भयंकर तूफान से समुद्र उथला-पुथला हो गया था; लहरों से टकराकर और टूटकर, नाव पहले ही पानी में डूब रही थी, जबकि उसमें सवार कुछ लोग डूब रहे थे, कुछ तैर रहे थे, और कुछ चट्टानों की ओर बहकर मर रहे थे। इस बीच, संतों ने देखा कि नाविक के मार्गदर्शन में वे चमकीले वस्त्रों को पहने हुए डूबने से बच गए और एक ऊँचे पहाड़ पर पहुँचे, जिस पर चढ़कर वे स्वर्ग में गए। अपनी नींद से जागने पर, संतों ने एक-दूसरे को यह दर्शन सुनाया और इस बात पर आश्चर्यचकित हुए कि उन्होंने दोनों ने एक ही दर्शन देखा था। इससे उन्होंने समझा कि दोनों को मसीह से एक ही अनुग्रह प्राप्त होगा, अर्थात् वे शहादत के समुद्र को सुरक्षित रूप से पार करेंगे—जिसमें कई डूब गए थे—और स्वर्ग में अपने शाश्वत पुरस्कार को प्राप्त करने के लिए आरोहण करेंगे। इस दर्शन के बाद, संतों की आशा और विश्वास और भी दृढ़ हो गया, और, अपने अच्छे नाविक—ईश्वर—के प्रति गहरी कृतज्ञता में, वे साष्टांग दंडवत होकर पुकार उठे: 'कौन कभी ऐसी कृपा की आशा कर सकता था जैसी आपने, हे ईश्वर, अपने अवतारधारी पुत्र, हमारे प्रभु यीशु मसीह के लिए हम पर की है?! मानव जाति पर आपकी महान कृपा पर मनन करते हुए, कौन इतना मूर्ख है जो व्यर्थ जीवन के गुणों को प्राथमिकता दे? आपके पुत्र से अधिक पुण्य कर्म करने के लिए उत्सुक और कौन हो सकता है, जिन्होंने हमें एक दर्शन में वह अनुग्रह दिखाया जो हम पर बरसाया जाना है, और हमें उन मुकुटों को भी दिखाया जिनसे हमें विभूषित किया जाएगा, और इस प्रकार हमें हमारे सामने आने वाले संघर्ष के लिए मजबूत बनाया!'

जब वे सुबह तक इस प्रकार प्रार्थना करते हुए परमेश्वर का धन्यवाद करते रहे, तो भोर होते ही एक जेलर अंदर आया और उन्हें सूचित किया कि कमांडर थियोडुलस और अगथोपॉड को बुला रहा है। क्रॉस का चिन्ह बनाकर, वे बेड़ियों में जकड़े हुए कालकोठरी से बाहर निकले और सैनिकों के पीछे हो लिए। वहाँ इकट्ठा हुए उनके परिचितों की एक बड़ी भीड़ यह जानकर कि अब उनकी मृत्यु निश्चित है, उनके लिए रोने लगी। लेकिन संत थियोडुलस, जिनका चेहरा प्रसन्नता से दमक रहा था, रो रहे लोगों की ओर मुड़े और कहा:

'यदि आप हमसे प्रेम के कारण रो रहे हैं, तो आपको हमारे लिए आनन्दित होना चाहिए, कि हम सच्चे ईश्वर का सम्मान करने के लिए यह पराक्रम कर रहे हैं। लेकिन यदि आप शैतानी ईर्ष्या से रो रहे हैं, तो हमारे लिए कम और अपने लिए अधिक रोएँ, क्योंकि आप धार्मिकता के मार्ग से भटक गए हैं और विनाश की ओर बढ़ रहे हैं।'

इसके बाद, जब संतों को तीसरी बार पूछताछ के लिए कमांडर फाउस्टिनि के सामने लाया गया, तो उन्होंने केवल इन शब्दों में उत्तर दिया:

'हम मसीही हैं और मसीह के नाम के लिए हर प्रकार का दुख सहने को तैयार हैं।'

तब सेनापति ने, अपने चेहरे पर दुख के बादल छाए हुए, उन पर मृत्युदंड की घोषणा की, जो इस प्रकार था:

'थियोडुलस और अगथोपॉड, जिन्होंने देवताओं को बलिदान चढ़ाने से इनकार कर दिया, उन्हें समुद्र में डुबो दिया जाएगा।'

इसके बाद, सैनिकों ने उन्हें समुद्र तक ले जाया; उनके हाथ पीठ पीछे बाँधने और गले में भारी पत्थर लटकाने के बाद, सैनिकों ने उन्हें एक जहाज पर चढ़ा दिया। उस समय, पवित्र शहीदों के दोस्तों, पड़ोसियों और परिचितों की एक विशेष रूप से बड़ी भीड़ समुद्र तट पर इकट्ठी हो गई थी; कुछ संतजनों की आसन्न मृत्यु के विचार से रो रहे थे, जबकि अन्य शैतान को हराने और धार्मिकता के लिए आनंदपूर्वक मरने के लिए मसीह के वीर योद्धाओं की प्रशंसा कर रहे थे।

इस बीच, कमांडर ने संतों पर दया करके, उनके पास एक विशेष दूत, फुल्वियस, भेजा, यह कहते हुए कि यदि वे देवताओं को केवल एक धूप की सुगंध भी अर्पित कर दें, तो उन्हें मृत्यु से बचा लिया जाएगा। लेकिन संत मसीह का आह्वान करना और व्यर्थ के मूर्तिपूजक देवताओं को अस्वीकार करना बंद नहीं हुए। अंत में, बहुत मनाने के बाद, दुष्ट लोगों ने, यह देखकर कि मसीह के सेवक किसी भी परिस्थिति में मूर्ति पूजा के लिए नहीं झुकेंगे, संत अगथोपॉड को समुद्र में फेंकने की तैयारी की। संत ने स्वर्ग की ओर अपनी आँखें उठाकर, ऊँचे स्वर में पुकारा:

'देखो! इस दूसरे बपतिस्मा से हमारे सभी पाप धुल जाते हैं, और हम पवित्र होकर मसीह यीशु के पास जाते हैं!'

इन शब्दों के साथ, संत को समुद्र में फेंक दिया गया, और उनके बाद संत थियोडुलस को समुद्र में फेंका गया।

इस प्रकार पवत्रि शहीदों ने अपनी शहादत को पूर्ण कयि और प्रभु के हाथ से वजिय का मुकुट प्राप्त कयि। समुद्र ने संतों के शरीरों को ग्रहण करने के बाद, उन्हें तुरंत बेड़यिों और पत्थरों से मुक्त कर कनिारे पर फेंक दयि। रश्तिेदारों और परचितिों ने पवत्रि शहीदों के शरीरों को लेकर, उन्हें सम्मान के साथ दफनाया।

कुछ समय बाद, संत थयिोडुलस उनके सामने एक तेजस्वी मुखमंडल के साथ, सफेद वस्त्र पहने हुए प्रकट हुए, और उन्होंने उन्हें आज्ञा दी कि वे उनकी सारी संपत्ति गिरीबों, अनाथों और वधिवाओं में बाँट दें।

पवत्रि शहीदों का नधिन अप्रैल के पांचवें दनि हुआ, और वे स्वर्ग में पति, पुत्र और पवत्रि आत्मा, अर्थात त्रमिूर्ति में महमिामय एक परमेश्वर की महमिा करते हुए परलोक सधिार गए। आमीन।

हमारे पूजनीय पति मार्क ऑफ एथेन्स का जीवन

5 अप्रैल को स्मरण कयि जाता है

एक बार, आबा[2868] सेरापयिन ने नम्निलखिति बातें बताईं।

जब मैं मस्रि के भीतरी रेगस्तिान[2869] में ठहरा था, तो एक दनि मैं महान वृद्ध जॉन के पास गया और उनका आशीर्वाद प्राप्त कर यात्रा से थका हुआ वश्राम करने के लिए बैठ गया। जैसे ही मैं झपकी लेने लगा, मुझे अपने सपने में एक दर्शन हुआ: मैंने दो संन्यासयिों को देखा जो वृद्ध के पास आए थे और उनका आशीर्वाद प्राप्त कर रहे थे। उन्होंने एक-दूसरे से कहा:

'अबबा सेरापयिन हैं; आइए हम उनका आशीर्वाद लें।' अबबा जॉन ने उनसे उत्तर दयि:

'वह आज ही रेगस्तिान से आए हैं और बहुत थके हुए हैं: उन्हें थोड़ा आराम करने दें।'

तब संन्यासयिों ने बूढ़े से मेरे बारे में कहा:

– सेरापयिन इतने लंबे समय से रेगस्तिान में एक तपस्वी के रूप में रह रहे हैं, फरि भी वह इथयिोपयिा के माउंट फ्राचसि पर तपस्वी के रूप में रहने वाले फादर मार्क से मलिने नहीं गए हैं[2870] । सभी तपस्वयिों और संन्यासयिों में, इस मार्क के बराबर कोई नहीं है। वह एक सौ तीस वर्ष के हैं, और उन्होंने रेगस्तिान में अपनी तपस्या जीवन शुरू कए पचानबे वर्ष हो गए हैं। इस पूरे समय में, उन्होंने एक भी व्यक्ति को नहीं देखा है। कुछ समय पहले, उन्हें कुछ ऐसे संतों ने दर्शन दयि जो शाश्वत जीवन के प्रकाश में सहभागी हैं, और उन्होंने उन्हें अपने साथ ले जाने का वादा कयि।

जब वे फादर जॉन से ये शब्द कह रहे थे, तब मैं अपनी नींद से जागा और वृद्ध के साथ कसिी को न देखकर, मैंने उन्हें अपने दर्शन के बारे में बताया।

'यह दर्शन,' बुजुर्ग ने मुझसे कहा, 'दव्यि स्वभाव का है; लेकनि फरि, थ्रेसयिन पर्वत कहाँ है?'

मैंने बुजुर्ग से कहा, 'मेरे लिए प्रार्थना करें, फादर!'

प्रार्थना कहने के बाद, मैं बूढ़े से वदिा हुआ और अलेक्ज़ेंड्रयिा के लिए रवाना हो गया[2871] , जो यहाँ से बीस दनि की यात्रा पर था; मैंने यह दूरी पाँच दनिों में पूरी की, दनि-रात लगभग बनिा रुके, सूरज की गर्मी से झुलसते हुए, जो जमीन पर धूल को भी झुलसा रही थी।

अलेक्ज़ेंड्रयिा में प्रवेश करते ही मैंने एक व्यापारी से पूछा कि इथयिोपयिा में स्थति फ्रेशयिा के पर्वत तक अभी कतिनी दूरी बाकी है। व्यापारी ने उत्तर दयि:

[2868] अब्बा – पति, मठ का मठाधीश।

[2869] भीतरी रेगस्तिान, या स्कैटकि रेगस्तिान, मस्रि के लबियि में, सेल्स के रेगस्तिान से एक दनि की यात्रा के बाद स्थति था। यह एक जंगली, रेतीला रेगस्तिान था जहाँ पानी के झरने बहुत कम मलिते थे; यहाँ एक पक्का रास्ता भी नहीं था - यात्री तारों के मार्ग का अनुसरण करके अपना रास्ता खोजते थे।

[2870] माउंट फ्राचयिन लीबयि में, आज के तुकरा में है। इथयिोपयिा मस्रि के दक्षणि में स्थति देश है – नूबयि और अबसिनियि।

[2871] अलेक्ज़ेंड्रयिा – प्राचीन काल में एक प्रसद्धि शहर, जो मस्रि में नील नदी के मुहाने पर स्थति था और जसिकी स्थापना महान अलेक्ज़ेंडर (336–323 ईसा पूर्व) ने की थी, जो अपने समय में वश्वि ज्ञान और व्यापार का केंद्र था।

'हाँ, पतिाजी, उस जगह तक अभी भी बहुत लंबा रास्ता है। इथयिोपयिाई लोगों की सीमा तक पहुँचने में बीस दनि लगते हैं, जो हत्ती मूल के लोग हैं[2872] ; लेकनि जसि पहाड़ के बारे में आप पूछ रहे हैं, वह यहाँ से और भी दूर है।'

मैंने उससे फरि पूछा:

'इस यात्रा के लिए, मोटे तौर पर, कतिना भोजन और पानी साथ ले जाना चाहिए?'—क्योंकि मैं उस स्थान के लिए नकिलना चाहता हूँ।

'अगर आपकी यात्रा,' व्यापारी ने उत्तर दयिा, 'समुद्र मार्ग से है, तो आप ज़्यादा समय तक रास्ते में नहीं रहेंगे; लेकनि अगर आप ज़मीन मार्ग से नकिलते हैं, तो आप तीस दनि रास्ते में रहेंगे।'

यह सुनकर, मैंने अपनी कलंगी में पानी भरा और कुछ खजूर उठा लिए; ईश्वर पर भरोसा करके, मैं चल पड़ा और इस रेगस्तिान में बीस दनि तक यात्रा करता रहा। अपनी यात्रा के दौरान मुझे कोई नहीं मलिा, न कोई जानवर और न ही कोई पक्षी। क्योंकि यह रेगस्तिान लगभग पूरी तरह से वनस्पति रहति है, क्योंकि वहाँ कभी बारशि या ओस नहीं होती, इसीलिए इस रेगस्तिान में खाने के लिए कुछ भी नहीं मलिता। बीस दनि की यात्रा के बाद, मेरे कलश का पानी और खजूर दोनों खत्म हो गए; मैं बहुत थक गया और आगे नहीं चल सकता था, फरि भी मैं वापस भी नहीं जा सकता था, इसलिए मैं थककर जमीन पर लेट गया। और फरि वे दो तपस्वी मेरे सामने प्रकट हुए, जन्हिें मैंने पहली बार महान वृद्ध जॉन के यहाँ एक दर्शन में देखा था। मेरे सामने खड़े होकर, उन्होंने मुझसे कहा:

'उठो और हमारे साथ चलो!'

जब मैं खड़ा हुआ, तो मैंने उनमें से एक को ज़मीन की ओर झुकते हुए, मेरी ओर मुड़कर पूछते हुए देखा:

'क्या आप कुछ खाना चाहेंगे?'

मैंने कहा, 'जैसा आप चाहें, पतिाजी।'

तब उसने मुझे एक मरुस्थलीय पौधे की जड़ दखिाई और कहा:

– इस जड़ को चखो और, प्रभु की शक्ति से, अपनी यात्रा जारी रखो!

मैंने थोड़ा सा खाया, और तुरंत ही मुझे अपनी ताकत वापस मलिती हुई महसूस हुई, और मेरी आत्मा प्रसन्न हो गई। मैं इतना तरोताज़ा महसूस कर रहा था कि मुझे ऐसा लगा मानो मैं बलि्कुल भी थका ही नहीं था। फरि उन्होंने मुझे सेंट मार्क तक का रास्ता दखिाया, और वे अपने रास्ते चले गए।

जैसे ही मैं अपनी राह पर आगे बढ़ा, मैं एक ऊँचे पहाड़ के पास पहुँचा जो आसमान तक पहुँचता हुआ प्रतीत होता था। उस पर धूल और पत्थरों के सवि और कुछ भी नहीं था। जब मैं पहाड़ के पास पहुँचा, तो मैंने उसके कनिारे समुद्र देखा। मुझे पहाड़ चढ़ने में सात दनि लगे।

जब सातवीं रात आई, तो मैंने स्वर्ग से संत मार्क की ओर उतरते हुए परमेश्वर के एक स्वर्गदूत को देखा, जो उनसे कह रहा था:

'धन्य हैं आप, अबा मार्क, और आपका भला हो! देखो, हम तुम्हारे पास पति सेरापयिन को ले आए हैं, जसिे तुम्हारी आत्मा देखने के लिए तरस रही थी, क्योंकि तुम उसे छोड़कर कसिी और मनुष्य को देखना नहीं चाहते थे!'

जब मेरी दृष्टि समाप्त हुई, तो मैं बनिा कसिी डर के चल पड़ा और तब तक चलता रहा जब तक मैं उस गुफा तक नहीं पहुँच गया जहाँ संत मार्क रहते थे। जब मैं गुफा के प्रवेश द्वार के पास पहुँचा, *तो* मैंने संत को दाऊद के भजन गाते और कहते हुए सुना: *'तेरी दृष्टि में एक हजार वर्ष कल के समान हैं'* (भजन संहति 89:5), और उसी भजन संहति से आगे पढ़ते हुए। तब, उस पर छा गई आध्यात्मकि आनंद की प्रचुरता से अभभिूत होकर, संत ने इन शब्दों के साथ स्वयं से बात करना शुरू कर दयिा:

– धन्य है तेरी आत्मा, मार्क, कि ईश्वर की सहायता से तूने इस संसार की अशुद्धियों से स्वयं को कलंकति नहीं कयिा, कि तेरा मन दुष्ट वचिारों से मोहति नहीं हुआ! धन्य है तेरा शरीर, क्योंकि वह कामुकताओं और पापी वासनाओं में फँसा नहीं है! धन्य हैं तुम्हारी आँखें, जन्हिें शैतान कसिी और की सुंदरता दखिाकर प्रलोभति नहीं कर सका! धन्य हैं तुम्हारे कान, क्योंकि उन्होंने इस व्यर्थ संसार में कसिी स्त्री की आवाज़ नहीं सुनी! धन्य हैं तुम्हारे नाक के छदि्र, क्योंकि उन्होंने पाप की बदबू नहीं सूंघी! धन्य हैं तुम्हारे हाथ, क्योंकि उन्होंने मनुष्यों की कसिी भी वस्तु को नहीं छुआ है। धन्य

[2872] हत्ति – कनान (नूह का पुत्र) के पुत्र हेथ के वंशज – पहाड़ों में (गनिती 13:30), फलिस्तीन के दक्षणि भाग में, हेब्रोन के पास (उत्पत्ति 23) और बेतेल के पास (न्यायियों 1:26) रहते थे।

हैं तुम्हारे पैर – जिन्होंने मृत्यु की ओर ले जाने वाले मार्ग पर कदम नहीं रखा, न ही पाप की ओर तेजी से बढ़े हैं! तुम्हारी आत्मा आध्यात्मिक जीवन और दैवीय आनंद से भरपूर है!

और फिर उसने अपनी आत्मा को संबोधित करते हुए फिर से बोलना शुरू किया: *'हे मेरी आत्मा, यहोवा का धन्यवाद कर, और जो कुछ मुझ में है, वह भी उसके पवित्र नाम का धन्यवाद करे। हे मेरी आत्मा, यहोवा का धन्यवाद कर, और उसके सब उपकारों को न भूल'* (भजन संहिता 102:1–2)। हे मेरी आत्मा, तू उदास क्यों है? मत डर! तुम्हें नरक के कालकोठरी में बंदी नहीं बनाया जाएगा; राक्षस किसी भी तरह से तुम्हारी निंदा नहीं कर पाएंगे। ईश्वर की कृपा से, तुम्हारे भीतर कोई विशेष पापी बुराई नहीं है: *'प्रभु का दूत उनके चारों ओर डेरा डालता है जो उससे डरते हैं, और उन्हें बचाता है'* (भजन संहिता 33:8)। 'प्रभु, धन्य है वह दास जिसने अपने स्वामी की इच्छा पूरी की है।'

अपनी आत्मा को सांत्वना देने और परमेश्वर में अपनी अटूट आशा को मजबूत करने के लिए पवित्र धर्मग्रंथों से ये और अन्य कई वचन कहने के बाद, पूजनीय मार्क अपनी गुफा के मुहाने पर गए और भावनाओं से भरकर रोते हुए, मुझे पुकारकर कहा:

'ओह, मेरे आध्यात्मिक पुत्र सेरापियन का यह कार्य कितना महान है, जिसने मेरे निवास पर आने का श्रम उठाया है!'

तब, मुझे आशीर्वाद देने के बाद, उन्होंने मुझे अपनी बाहों में गले लगा लिया और, मुझे चूमते हुए, कहा:

'पचास-नौ वर्ष से मैं इस मरुभूमि में रहता हूँ और मैंने किसी मनुष्य को नहीं देखा है। अब, आखिरकार, मैं आपका मुख दर्शन कर रहा हूँ, जिसे देखने की मैंने कई वर्षों से लालसा की थी। आप मेरे पास आने के लिए इतना लंबा सफर तय करने में आलसी नहीं रहे। अत; मेरे प्रभु, यीशु मसीह, आपको उस दिन पुरस्कृत करेंगे जब वे मनुष्यों के गुप्त विचारों का न्याय करेंगे।'

यह कहकर, पूजनीय मार्क ने मुझे बैठने के लिए आमंत्रित किया।

मैंने रेवरेंड से उनके प्रशंसनीय जीवन के बारे में पूछना शुरू किया। और उन्होंने मुझे निम्नलिखित बताया:

'जैसा कि मैंने कहा, मैं पचानबे वर्षों से इस गुफा में रह रहा हूँ। इस दौरान, मैंने न तो कोई मानव देखा है और न ही कोई जानवर या पक्षी; मैंने न तो मानव हाथों से बनी रोटी का स्वाद चखा है, और न ही कोई कपड़ा पहना है। तीस वर्षों तक मैंने भूख, प्यास और नग्नता से, लेकिन सबसे बढ़कर शैतान के प्रलोभनों से, भयंकर कठिनाइयों और पीड़ाओं को सहन किया। भूख से तड़पते हुए, मैं धरती की धूल खाता था, और प्यास से तड़पते हुए, मैं समुद्र का पानी पीता था। दैत्यों ने आपस में हजारों बार कसम खाई कि मुझे समुद्र में डुबो देंगे, और मुझे पकड़कर, पीटते हुए, इस पहाड़ के निचले हिस्सों में घसीट ले गए। लेकिन मैं वापस पहाड़ की चोटी पर चढ़ गया। उन्होंने, बदले में, मुझे वहाँ से फिर से घसीट लिया, जब तक कि मेरे शरीर से त्वचा उधड़ नहीं गई। मुझे घसीटते और पीटते हुए, वे पागलों की तरह चिल्लाए:

'हमारी भूमि से निकल जाओ! दुनिया की शुरुआत से, कोई भी इंसान यहाँ कभी नहीं आया है – तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई यहाँ आने की?'

तीस वर्षों तक ऐसी पीड़ा, ऐसी भूख, प्यास, नग्नता और राक्षसों के हाथों उत्पीड़न के बाद, ईश्वर की कृपा और उनकी दया मुझ पर बरसी। उनकी कृपा से, मेरा प्राकृतिक शरीर बदल गया; मेरे शरीर पर बाल उगे; उचित समय पर, मेरे पास भोजन लाया जाता है और प्रभु के स्वर्गदूत मुझसे मिलने आते हैं। मैंने, मानो, स्वर्ग के राज्य और संतों की आत्माओं को वादा किए गए आनंद के धामों का एक प्रतिरूप देखा, जो भले काम करने वालों के लिए तैयार किए गए हैं। मैंने दिव्य स्वर्ग और ज्ञान के वृक्ष का एक सादृश्य देखा, जिससे हमारे पूर्वजों ने स्वाद चखा था। मैंने स्वर्ग में एलिया और हनोक को भी देखा, और ऐसा कुछ भी नहीं है जो प्रभु ने मुझे नहीं दिखाया हो, जो मैंने उनसे माँगा था।

सरापियन कहते हैं, 'मैंने उनसे पूछा, "बताइए, पिताजी, आप यहाँ कैसे और क्यों आए?"'

और संत ने अपने वृत्तांत की शुरुआत इन शब्दों से की:

'मैं एथेन्स में जन्मा था[2873] , जहाँ मैंने दार्शनिक विज्ञानों का अध्ययन किया। मेरे माता-पिता की मृत्यु के बाद, मैंने अपने आप से कहा: "जैसे मेरे माता-पिता मरे, वैसे ही मैं भी मरूँगा। 'इसलिए, इससे पहले कि मैं इसके मोह में पड़ जाऊँ, मेरे लिए बेहतर है कि मैं स्वेच्छा से इस संसार का त्याग कर दूँ।' और तुरंत, अपने कपड़े उतारकर, मैं एक तख्ते पर खड़ा

[2873] एथेंस – प्राचीन यूनानी राज्य की राजधानी, जो अपने ज्ञान और व्यापार के लिए प्राचीन काल में प्रसिद्ध थी। यह प्रसिद्ध दार्शनिक विद्यालयों का घर था, जहाँ कुछ चर्च फादर्स और शिक्षकों ने शिक्षा प्राप्त की थी।

हो गया और उस पर सवार होकर समुद्र पार करने निकिल पड़ा। तरंगों द्वारा बहकर, दैवीय कृपा से, मैं इस पहाड़ पर आकर ठहरा।

सरापयिन आगे कहते हैं, 'जब हम इस तरह बातें कर रहे थे, तब दनि चढ़ आया, और मैंने पूजनीय मार्क को एक जानवर की तरह घने बालों से ढका हुआ देखा, और मैं भयभीत हो गया, क्योंकि उनकी आवाज़ और उनके मुँह से नकिलने वाले शब्दों के अलावा उन्हें कसिी भी चीज़ से एक इंसान के रूप में नहीं पहचाना जा सकता था।' मेरी उलझन को देखकर, संत मार्क ने मुझसे कहा:

'मेरे शरीर के दर्शन से डरो नहीं, क्योंकि नश्वर पृथ्वी से लयिा गया मांस नश्वर ही है।'

फरि उन्होंने मुझसे पूछा:

'क्या संसार अब भी मसीह के कानून का पालन करता है, जैसा कि पिहले करता था?'

'आजकल,' मैंने उत्तर दयिा, 'मसीह की कृपा से, चीजें पहले से भी बेहतर हैं।'

'क्या मूर्तपिूजा और ईसाइयों का उत्पीड़न,' उसने फरि पूछा, 'आज भी जारी है?'

'आपकी पवत्रि प्रार्थनाओं की सहायता से,' मैंने उत्तर दयिा, 'उत्पीड़न समाप्त हो गया है और मूर्तपिूजा नहीं है।'

यह सुनकर, वृद्ध बहुत प्रसन्न हुए। फरि उन्होंने मुझसे फरि पूछा:

'क्या अब दुनयिा में कोई ऐसे संत हैं जो चमत्कार करते हैं, जैसा कि प्रिभु ने अपनी सुसमाचार में कहा है: *"यदि तुममें सरसों के दाने के बराबर भी वशि्वास हो, तो तुम इस पहाड़ से कहोगे, 'यहाँ से उठकर वहाँ गरि जा,' तो वह उठ जाएगा; और तुम्हारे लिए कुछ भी असंभव नहीं होगा"* (मत्ती 17:20)?'

जब संत ये शब्द कह रहे थे, तो पहाड़ अपनी जगह से लगभग पाँच हज़ार कोहनों[2874] तक खसिक गया और समुद्र के करीब आ गया। संत मार्क, खड़े होकर और यह देखकर कि पहाड़ हलि रहा था, उससे कहते हुए बोले:

'मैंने तुम्हें अपनी जगह से हटने का आदेश नहीं दयिा, बल्कि मैं अपने भाई से बात कर रहा था; इसलिए, अपनी जगह पर लौट जाओ!'

जैसे ही उन्होंने यह कहा, पहाड़ सचमुच अपनी जगह पर लौट आया। यह देखकर, मैं डर के मारे जमीन पर लोट गया। इस बीच, संत ने मेरा हाथ पकड़ा, मुझे खड़ा होने में मदद की, और मुझसे कहा:

'क्या आपने अपने जीवन में ऐसे चमत्कार नहीं देखे हैं?'

'नहीं, पतिाजी,' मैंने उत्तर दयिा।

तब संत ने आह भरते हुए, फूट-फूट कर रोते हुए कहा:

'इस भूमि पर वनिाश आए, क्योंकि यहाँ के ईसाई केवल नाम के लिए ईसाई हैं, परन्तु वास्तव में वे नहीं हैं!'

और फरि उन्होंने कहा:

'ईश्वर धन्य हो, जसिने मुझे इस पवत्रि स्थान पर लाया, ताकि मैं न तो अपनी मातृभूमि में मरूँ और न ही पापों से कलंकति भूमि में दफ़नाया जाऊँ!'

'हमने पूरा दनि,' सेरापयिन बताते हैं, 'भजन गाने और आध्यात्मकि वार्तालाप में बतिाया, और जैसे ही शाम हुई, रेवरेंड ने मुझसे कहा:

'भाई सेरापयिन! क्या हमारी प्रार्थनाओं के बाद, कृतज्ञतापूर्वक भोजन ग्रहण करने का समय नहीं हो गया है?'

मैंने इन शब्दों का कोई उत्तर नहीं दयिा। इसके बाद, उन्होंने स्वर्ग की ओर अपने हाथ उठाकर नम्निलखिति भजन का पाठ करना शुरू कयिा: *'यहोवा मेरा रखवाला है; मुझे कुछ भी कमी न होगी'* (भजन संहति 22:1)।

यह भजन गाना समाप्त करते ही, वह गुफा की ओर मुड़ा और बोला:

'भाई, भोजन परोसो।'

तब उसने मुझसे फरि कहा:

'आओ, हम उस भोजन का सेवन करें जो ईश्वर ने हमें भेजा है।'

[2874] कोहनी-एक लंबाई की इकाई जो प्राचीन काल में आम तौर पर उपयोग की जाती थी, जो कोहनी से मध्य उंगली की नोक तक की दूरी के बराबर होती थी (लगभग 10 वर्शोक)। (एक वर्शोक लगभग 4.45 सेमी था। क्यूबटि की लंबाई को फैली हुई बीच की उंगली की नोक से कोहनी के जोड़ तक की दूरी के रूप में परभिाषति कयिा गया था, और यह 46 सेमी तक भन्नि हो सकती थी। – *अज़बुका ऑफ़ फ़ेथ के संपादक*)

मैं मन ही मन हैरान था, यह सोच रहा था कि संत मार्क भोजन तैयार करने का आदेश किसको दे रहे थे, क्योंकि पूरे दिन मैंने उनकी गुफा में किसी और को नहीं देखा था।

जब हम गुफा में दाखिल हुए, तो मैंने दो मेज़ सजी हुई देखीं, जिन पर बर्फ़ की तरह चमकते हुए दो नरम, सफ़ेद रोटी के फाहे रखे थे। वहाँ आँखों को भाने वाली सब्जियाँ, दो पकी हुई मछलियाँ, गुठली निकाले हुए जैतून, खजूर, नमक और शहद से भी मीठा पानी भरा एक पूरा घड़ा भी था। जब हम बैठ गए, तो संत मार्क ने मुझसे कहा:

'मेरे पुत्र सेरापियन, भोजन की प्रार्थना करो!'

'मुझे क्षमा करें, फादर,' मैंने उत्तर दिया।

तब संत ने कहा:

'हे प्रभु, इस भोजन को आशीर्वाद दें!'

और मैंने देखा, भोजन के पास, स्वर्ग से एक हाथ बढ़ा हुआ, जो हमारे सामने परोसे गए भोजन पर क्रॉस का चिह्न बना रहा था। जब भोजन समाप्त हो गया, तो मार्क ने कहा:

– भाई, इसे यहाँ से हटा दो!

और तुरंत ही एक अदृश्य हाथ द्वारा भोजन हटा दिया गया। मैं उन सब बातों पर चकित था जो हुई थीं: अदृश्य सेवक पर भी (क्योंकि प्रभु का स्वर्गदूत, जो देहहीन था, परमेश्वर की आज्ञा से देह में स्वर्गदूत बने आदरणीय मार्क की सेवा कर रहा था), और इस बात पर भी कि मैंने अपने पूरे जीवन में कभी भी इतना स्वादिष्ट भोजन नहीं खाया था और न ही इतना मीठा पानी पिया था जितना उस भोजन में था। मेरी हैरानी देखकर, संत ने मुझसे कहा:

'भाई सेरापियन! क्या आपने देखा है कि ईश्वर अपने सेवकों को कितनी आशीर्वादें भेजते हैं!' हर दिन ईश्वर मुझे एक रोटी और एक मछली भेजते थे, लेकिन अब, आपके कारण, उन्होंने भोजन दोगुना कर दिया है – उन्होंने हमें दो रोटियाँ और दो मछलियाँ भेजी हैं। ऐसे ही भोजन से प्रभु ईश्वर ने मुझे मेरे शुरुआती कष्टों की पूरी अवधि के दौरान जीवित रखा है। जैसा कि मैंने हमारी बातचीत की शुरुआत में आपको बताया था, इस जगह पर बिताए तीस वर्षों में, मुझे एक भी ऐसा पौधा नहीं मिला जिसके मूल से मैं पोषण ले सकूँ। भूख और प्यास से पीड़ित, अत्यंत आवश्यकता के कारण, मैंने धूल खाई और खारा समुद्री जल पिया, और नग्न तथा नंगे पैर चला। ठंड और भयानक गर्मी से मेरे पैरों की उंगलियाँ गिर गईं; सूरज ने मेरे शरीर को झुलसा दिया, और मैं एक मृतक की तरह जमीन पर लोट गया। इस बीच, राक्षसों ने मुझ पर, जैसे किसी परमेश्वर द्वारा त्यागे हुए व्यक्ति पर, अपना युद्ध छेड़ा। लेकिन मैंने, परमेश्वर की मदद से, यह सब प्रभु के प्रति प्रेम के कारण सह लिया। मेरे तीस वर्षों के कष्टों के अंत में, ईश्वर की आज्ञा से, मेरे शरीर पर बाल उगने लगे, यहाँ तक कि वे मुझे पूरी तरह से कपड़ों की तरह ढक दिए। और इस प्रकार, उस समय से अब तक, दुष्टात्माएँ मेरे पास नहीं आ सकतीं; न तो मुझे भूख लगती है और न ही प्यास; न ही गर्मी मुझे सताती है और न ही ठंड। इन सब के बावजूद, मैं कभी किसी बीमारी से पीड़ित नहीं हुआ। लेकिन अब मेरे जीवन का अंत निकट आ गया है, और ईश्वर ने आपको यहाँ इसलिए भेजा है ताकि आप मेरे इस विनम्र शरीर को अपने पवित्र हाथों से दफनाएँ।

फिर, कुछ समय बीत जाने के बाद, संत ने मुझसे फिर कहा:

'भाई सेरापियन! आज ही रात जागते रहना, क्योंकि मेरी मृत्यु निकट आ रही है।'

इसके बाद, हम दोनों ने दाऊद के भजन गाते हुए प्रार्थना करना शुरू कर दिया। उसी समय, संत ने मुझसे कहा:

'भाई सेरापियन! मेरे देहांत के बाद, मेरे शरीर को इस गुफा में रख देना, प्रवेश द्वार को एक पत्थर से बंद कर देना, और इस गुफा को छोड़ देना।'

तब मैं पूजनीय पिता के सामने झुक गया और, आँसुओं के साथ, उनसे क्षमा माँगने लगा, उनसे कहते हुए:

'पिताजी, प्रार्थना कीजिए कि ईश्वर मुझे भी आपके साथ ले जाएँ, ताकि मैं भी वहाँ जा सकूँ जहाँ आप जा रहे हैं।'

मेरे शब्दों के जवाब में, संत ने मुझसे कहा:

'मेरी प्रसन्नता के इस दिन पर विलाप मत करो, बल्कि और भी अधिक आनन्दित होओ। तुम्हें अपनी जगह पर लौटना होगा। प्रभु, जिसने तुम्हें ईश्वर की सेवा और श्रम के लिए यहाँ लाया है, तुम्हें मोक्ष दे। इसके अलावा, जान लो कि तुम्हारा यहाँ से लौटना उसी मार्ग से नहीं होगा जिससे तुम आए हो, बल्कि तुम किसी दूसरे - एक असामान्य - मार्ग से अपनी मंज़िल पर पहुँचोगे।

एक संक्षिप्त विराम के बाद, पूज्य मार्क ने फिर कहा:

'भाई सेरापयिन! यह दनि मेरे लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है: मेरे जीवन के कसिी भी अन्य दनि से भी अधकि। आज मेरी आत्मा शारीरकि कष्टों से मुक्त होकर स्वर्गीय नविासों में वशि्राम करने जाती है। आज मेरा शरीर कई परशि्रमों और बीमारयिों से वशि्राम पाता है; आज ईश्वर मुझे अपनी उपस्थतिमिें स्वीकार करेंगे।'

जैसे ही संत ने ये शब्द कहे, उनकी गुफा सूर्य से भी अधकि तेज प्रकाश से भर गई, और पहाड़ मीठी सुगंधों की खुशबू से भर उठा।

सरापयिन जारी रखते हैं, 'उसी क्षण मेरे हाथ को पकड़कर, पूजनीय मार्क ने मुझसे इस प्रकार कहना शुरू कयिा:

'जसि गुफा में मैं अपने शरीर के साथ रहा, जीवन भर ईश्वर के लिए परशि्रम करते हुए, वह सामान्य पुनरुत्थान तक बनी रहे, और मेरा मृत शरीर—जो बीमारी, परशि्रम और अभाव का नविास स्थान था—यहीं बना रहे। लेकनि हे प्रभु, मेरी आत्मा को इस शरीर से मुक्त कर दो! तेरे ही लिए मैंने भूख, प्यास, नग्नता, पाला और गर्मी, और हर तरह की अन्य तकलीफें सहन कीं। हे प्रभु! तेरे आने के भयानक दनि पर स्वयं मुझे महमिा के वस्त्र से आच्छादति कर! मेरी आँखें, जो मेरी रात की प्रार्थनाओं के दौरान कभी नहीं झपकीं, अंततः बंद हो जाएँ! वशि्राम करो, मेरे पैरों, जन्हिोंने सारी रात की प्रहरयिों में परशि्रम कयिा है! मैं इस सांसारकि जीवन से वदिा हो रहा हूँ, और मैं पृथ्वी पर रहने वालों सभी के लिए मोक्ष की कामना करता हूँ। हे प्रभु के लिए उपवास करने वालों, हे , जो पहाड़ों और गुफाओं में भटकते हो, तुम बच जाओ! हे तपस्वयिों, जो स्वर्ग के राज्य को प्राप्त करने के लिए हर प्रकार की कठनिाइयों को सहते हो, तुम बच जाओ! उद्धार पाएँ, हे मसीह के बंदयिों, जो सत्य के लिए बंदी और नर्विासति हैं, और जनिका एकमात्र परमेश्वर के सविाय कसिी भी चीज़ में कोई सांत्वना नहीं है! उद्धार पाएँ, हे मठों, जो दनि-रात परमेश्वर के लिए परशि्रम करते हैं! उद्धार पाएँ, हे पवत्रि गरिजाघरों, जो पापयिों के शुद्धकिरण के साधन के रूप में सेवा करते हैं! उद्धार पाएँ, हे प्रभु के याजकों, जो लोगों और परमेश्वर के बीच मध्यस्थ हैं! उद्धार पाएँ, हे मसीह के राज्य के बच्चों, जो पवत्रि बपतस्मिा के द्वारा मसीह के पुत्र और पुत्रयिाँ बनाए गए हैं! उद्धार पाएँ, हे मसीह के प्रेमयिों, जो यात्रयिों का स्वागत स्वयं मसीह के रूप में करते हैं! हे दया के योग्य, हे अनुग्रहकारी, तुम उद्धार पाओ! हे धनी, जो प्रभु के लिए धनी हो रहे हो, और अपना जीवन परमेश्वर को भाने वाले कार्यों में व्यतीत कर रहे हो, तुम उद्धार पाओ! हे प्रभु के लिए गरीब हो गए, तुम उद्धार पाओ! हे वशि्वासयोग्य राजाओं और राजकुमारों, जो सत्य और दया के साथ न्याय का प्रशास करते हो, तुम उद्धार पाओ! उद्धार पाएँ, हे वनिम्र और बुद्धमिान उपवासयिों और परशि्रमी तपस्वयिों! उद्धार पाएँ, हे सभी जो मसीह के लिए एक-दूसरे से प्रेम करते हैं! सारी पृथ्वी उद्धार पाए, और जो कोई भी उस पर मसीह के शांतिऔर प्रेम में वास करता है!"

तब,' सेरापयिन कहते हैं, 'ये शब्द कहने के बाद, पूजनीय मार्क मेरी ओर मुड़े, मुझे चूमा, और कहा: 'तुम भी उद्धार पाओ, भाई सेरापयिन! मैं आपसे हमारे प्रभु यीशु मसीह, परमेश्वर के पुत्र की शपथ देता हूँ, कि आप मेरे इस दीन शरीर से कुछ भी न लें, यहाँ तक कि एक भी बाल न उखाड़ें। न कोई वस्त्र इसे छूए, बल्कि केवल वही बाल, जनिसे परमेश्वर ने मुझे सजाया है, मेरी मृत्यु पर मेरे शरीर के साथ बने रहें। इसी प्रकार, यहाँ न ठहरें।"

जब संत ये शब्द कह रहे थे, और मैं रो रहा था, तो स्वर्ग से एक आवाज सुनाई दी, जो कह रही थी: 'मरुभूमसि मेरे चुने हुए पात्र को मेरे पास लाओ; मेरे पास धर्म के कर्ता, सबसे उत्तम ईसाई और वशि्वासयोग्य सेवक को लाओ! आओ, मार्क, आओ! आनंद और आध्यात्मकि जीवन के प्रकाश में वशि्राम करो!'

तब संत मार्क ने मुझसे कहा:

– भाई, हम घुटने टेकें! और हम घुटने टेक दिए।

उसके बाद, मैंने एक स्वर्गदूत जैसी आवाज़ को रेवरेन्ड से बात करते हुए सुना:

– अपने हाथ फैलाओ!

सरापयिन कहते हैं, 'यह आवाज़ सुनते ही मैं तुरंत खड़ा हो गया और ऊपर देखकर देखा कि संत की आत्मा पहले ही देह के बंधनों से मुक्त हो चुकी थी - यह स्वर्गदूतों के हाथों द्वारा एक चमकीले सफेद वस्त्र से परधिानति की गई थी और उन्हें स्वर्ग में ऊपर ले जाया जा रहा था[2875] ।' मैंने हवा में स्वर्ग की ओर जाने वाला मार्ग देखा और स्वर्ग के द्वार अब चौड़े होकर खुल गए थे। इसके अलावा, मैंने उस मार्ग में राक्षसों की भीड़ खड़ी देखी और राक्षसों को संबोधति करते हुए स्वर्गदूतों की आवाज़ सुनी:

– हे अंधकार के पुत्रो, सत्य के प्रकाश के मुख से भागो और छपि जाओ!

[2875] संत मार्क की मृत्यु लगभग 400 ईस्वी के आसपास हुई।

मार्क की पवत्रि आत्मा को लगभग एक घंटे तक हवा में ऊपर उठाए रखा गया। फरि स्वर्ग से एक आवाज़ सुनाई दी, जो स्वर्गदूतों से कह रही थी:

'उसको ले आओ और यहाँ लाओ जसिने राक्षसों को लज्जति कयिा है।'

जब उस पूजनीय की आत्मा राक्षसों की भीड़ से बनिा कसिी नुकसान के गुज़र चुकी थी और पहले से ही खुले स्वर्ग के करीब पहुँच रही थी, तो मैंने, मानो, स्वर्ग से फैला हुआ एक दाहनिा हाथ देखा, जो उस नरि्दोष आत्मा को ग्रहण कर रहा था। फरि यह दृश्य मेरी आँखों से ओझल हो गया,' सेरापयिन कहते हैं, 'और मैंने कुछ भी नहीं देखा।

सुबह के लगभग छह बजे थे; संत के पवत्रि शरीर को दफ़नाने के लिए तैयार करने के बाद, मैं पूरी रात प्रार्थना में लगा रहा। भोर होते ही, मैंने शरीर पर आँसुओं से भरे आँखों से प्रथागत भजन गाए, उसे चूमा, और गुफा में रख दयिा, तथा गुफा के मुँह पर एक पत्थर रखकर उसे बंद कर दयिा। तब, एक लंबी प्रार्थना के बाद, मैं पहाड़ से उतर आया, ईश्वर की स्तुति करते हुए और इस अतकिठनि और भयानक रेगस्तिान से मेरी वापसी की यात्रा में मार्गदर्शन के लिए संत को पुकारते हुए। जब, सूर्यास्त के बाद, मैं आराम करने के लिए बैठ गया, तो अचानक वे दो तपस्वी जो पहले मुझ पर प्रकट हुए थे, मेरे सामने प्रकट हुए और मुझसे कहा:

'तुम, भाई सेरापयिन, उस धन्य तपस्वी के शरीर को दफ़ना चुके हो, जसिके योग्य यह संपूर्ण संसार वास्तव में नहीं है। अतःउठो और रात में अपनी यात्रा जारी रखो, क्योंकि भयानक गर्मी के कारण दनि में यात्रा करना कठनि है।'

तब मैं उठा और उन लोगों के पीछे चल पड़ा जो मुझ पर प्रकट हुए थे, और सुबह के तड़के तक उनके पीछे-पीछे चलता रहा। जब दनि का उजाला होने लगा, तो उन्होंने मुझसे कहा:

'शांति से जाओ, भाई सेरापयिन, अपनी जगह पर, और प्रभु परमेश्वर का धन्यवाद करो।'

जब मैं उनसे थोड़ी दूरी पर चला गया, तो मुझे एहसास हुआ कि मैं पहले से ही महान वृद्ध जॉन के मठ में स्थति चर्च के दरवाजों के पास पहुँच रहा था। इस पर अत्यंत आश्चर्यचकति होकर, मैंने ऊँचे स्वर में ईश्वर की स्तुति की और आदरणीय मार्क द्वारा मुझसे कहे गए शब्दों को याद कयिा, कि मेरे पास लौटने का मार्ग वही नहीं होगा जसिसे मैं यहाँ आया था। और मैंने वश्विास कयिा कि, संत की प्रार्थनाओं के द्वारा, मुझे अदृश्य रूप से वहाँ पहुँचा दयिा गया था। मैंने हमारे परम कृपालु ईश्वर का धन्यवाद कयिा, जन्हिोंने मेरे भले के लिए सब कुछ व्यवस्थति कयिा था, यद्यपि मैं अयोग्य हूँ, उनके भक्त सेवक, हमारे पूजनीय पति मार्क की प्रार्थनाओं और मध्यस्थता के माध्यम से।

मेरी आवाज़ सुनकर, बाबा जॉन मुझे मलिने के लिए मठ से बाहर दौड़ आए और मुझे प्रणाम करते हुए कहा:

'अब्बा सेरापयिन ईश्वर की कृपा से सुरक्षति वापस आ गए हैं।'

फरि हम चर्च गए, और मैंने उस वृद्ध को और उनके शष्यिों को वह सब कुछ बताया जो मेरे साथ हुआ था, और हम सभी ने ईश्वर की स्तुति की। फरि उस वृद्ध ने मुझसे कहा:

'सत्य कहता हूँ, भाई, यहाँ संत मार्क हैं, जो ईसाइयों में सबसे सद्धि थे; हम, हालाँकि, केवल नाम के लिए ही ईसाई हैं, जबकि वास्तव में हम सच्चे ईसाई धर्म से बहुत दूर हैं। काश कि हमारा प्रेममय और दयालु ईश्वर, पवत्रि सेवक मार्क को अपने स्वर्गीय राज्य के शाश्वत धामों में स्वीकार करके, – ईश्वर हमें और अपनी संपूर्ण पवत्रि, कैथोलकि और प्रेरतिकि कलीसयिा को शैतान की सभी चालाकयिों से बचाए, और वह हमेशा हम, उसके वनिम्र सेवकों के साथ रहे, और हमें उसकी पवत्रि और दव्यि इच्छा को पूरा करने के लिए मार्गदर्शन करे, ताकि हम उसके महान संतों, हमारे पूजनीय पतिाओं के पदचन्हिों पर चल सकें, – ताकि न्याय के भयानक दनि पर हम भी, अपने पति मार्क के साथ, हमारी परम पवत्रि माता, परमेश्वर की माता, और उन सभी संतों की प्रार्थनाओं के द्वारा दया प्राप्त करें, जन्हिोंने हमारे प्रभु, यीशु मसीह को प्रसन्न कयिा है, जनिका महमिा, सम्मान और आराधना, पति और परम पवत्रि, शुभ और जीवन-दायक आत्मा के साथ, अब और हमेशा-हमेशा के लिए हो। आमेन।

आदरणीय पब्लयिस की स्मृति

5 अप्रैल को स्मरण कयिा जाता है

[2876]आदरणीय पब्लियस ने एक भिक्षु के रूप में, सम्राट जूलियन द एपोस्टेट[2877] के शासनकाल के दौरान मिस्र में परिश्रम किया। जब इस अधर्मी सम्राट ने फ़ारिसियों के विरुद्ध युद्ध करने की तैयारी की, तो उसने शैतान को पूर्व की ओर एक जासूस की तरह भेजा, और उसे उस मार्ग की जाँच करने का आदेश दिया जिस पर जूलियन की सेना को मार्च करना था। रवाना होकर, शैतान उस स्थान पर पहुँचा जहाँ पूजनीय पब्लियस रहते थे, लेकिन वहाँ वह रुक गया और दस दिनों तक उसी जगह पर अटका रहा; इसका कारण यह था कि आदरणीय पब्लियस ने दिव्य प्रेरणा से शैतान के अपने क्षेत्र में आगमन के बारे में जानकर, दिन-रात बिना आराम के अपने हाथ ऊपर उठाकर प्रार्थना करना शुरू कर दिया, जब तक कि शैतान उस क्षेत्र से वापस नहीं चला गया[2878] । इस प्रकार, कुछ भी हासिल किए बिना, शैतान जूलियन के पास लौट आया। जूलियन ने तब उससे पूछा:

'तुम्हारी यात्रा में इतना समय क्यों लगा?'

शैतान ने उत्तर दिया:

'हालाँकि मैं बहुत समय तक दूर रहा, मैं कुछ भी खोजे और कुछ भी सीखे बिना तुम्हारे पास वापस आया हूँ; मैं दस दिनों तक उस संन्यासी पब्लियस के प्रार्थना समाप्त करने का इंतजार करता रहा, ताकि मैं उस जगह से गुजर सकूँ जहाँ यह संन्यासी ठहरा था, लेकिन व्यर्थ इंतजार करने के बाद, मैं वापस आ गया।'

तब धर्महीन सम्राट जूलियन ने क्रोध में शैतान से कहा:

– जब मैं युद्ध से लौटूँगा, तो मैं उस भिक्षु से बदला लूँगा।

लेकिन जूलियन अपनी दुष्ट योजना को अंजाम नहीं दे सका, क्योंकि ये शब्द कहने के तुरंत बाद, उसे परमेश्वर की अदृश्य शक्ति द्वारा मार डाला गया।

इसके बाद, जूलियन के एक सैन्य कमांडर ने अपनी सारी संपत्ति बेचकर उसकी आय गरीबों में बाँट दी और आदरणीय पब्लियस के पास आया, तथा भिक्षु जीवन की शपथ लेकर उनके साथ तपस्या करने लगा। यह भिक्षु सदाचार में बहुत आगे था और कठोर तपस्या का जीवन यापन करता था।

आदरणीय पब्लियस ने, अपनी ओर से, इसके बाद भी काफी समय तक अपना तपस्वी जीवन जारी रखा और, अंततः अपने सदाचारी जीवन के द्वारा ईश्वर को प्रसन्न कर, इस जीवन से परम दिव्य निवासों के लिए प्रस्थान किया[2879] ।

हमारे पूजनीय पिता प्लेटो द कन्फैसर की स्मृति

5 अप्रैल को स्मरणोत्सव

आदरणीय प्लेटो, सेरजियस और यूफेमिया नामक प्रतिष्ठित और साथ ही धर्मपरायण ईसाई माता-पिता के पुत्र थे। अपने प्रारंभिक वर्षों से ही, उनके माता-पिता ने उनका पालन-पोषण धर्मपरायणता से किया और उन्हें ईसाई सद्गुण सिखाए; हालाँकि, इससे पहले कि वे उनके पालन-पोषण का कार्य पूरा कर पाते, वे इस क्षणिक जीवन से अनंतकाल के लिए, एक अंतहीन जीवन में प्रस्थान कर निधन हो गए।

अनाथ हो जाने पर, आदरणीय पिता को उनके रिश्तेदारों ने अपने पास रख लिया, और उनके साथ रहते हुए उन्होंने सीखने के प्रति बड़ी प्रवृत्ति दिखाई, साथ ही साथ ईसाई सद्गुणों में भी उत्कृष्टता हासिल की।

वयस्क होने पर, रेवरेंड ने अपने रिश्तेदारों का घर छोड़ दिया और अपनी मेहनत से अपनी आजीविका कमाने लगे। वह इतने मेहनती और साथ ही इतने मितव्ययी थे कि उन्होंने जल्द ही अपने हाथों की मेहनत से काफी संपत्ति जमा कर ली। हालाँकि, रेवरेंड का हृदय इस दुनिया की चीजों के प्रति आसक्ति से मुक्त था। इसलिए, अपनी पूरी संपत्ति गरीबों में

[2876] मिस्र कई तपस्वियों का सामान्य निवास स्थान था। मठवासी बस्तियाँ निचले और मध्य मिस्र दोनों में पाई गईं। नील नदी के पार देश के अंदर गहरे स्थित, निचले मिस्र में स्थित नाइट्रियन मरुभूमि, मिस्र में विशेष रूप से प्रसिद्ध थी।

[2877] रोमन सम्राट जूलियन द एपोस्टेट ने 361 से 363 तक शासन किया।

[2878] इसी तरह मूसा ने इस्राएलियों और अमालेकियों के बीच युद्ध के दौरान प्रार्थना की थी (निर्गमन 17:8–13)।

[2879] संत पब्लियस की मृत्यु चौथी शताब्दी में हुई।

बाँटकर और अपने दासों को मुक्त करके, वे माउंट ओलंपस[2880] पर चले गए, जहाँ उन्होंने एक स्थानीय मठ में संन्यास की शपथ ली।

मठ में रहते हुए, रेवरेंड ने एक बहुत ही कठोर तपस्वी जीवन जयि, और प्रार्थना में न बतिाया गया समय उन्होंने कतिाबों की नकल करने और चर्च के पुरखों की रचनाओं से उपयोगी संग्रह संकलति करने में लगाया। मठ के मठाधीश थयिोक्टस्टिस की मृत्यु के बाद, आदरणीय प्लेटो को सर्वसम्मतसि मठ का मठाधीश चुना गया। यह संत के जीवन के 35वें वर्ष में हुआ[2881] । मठाधीश के रूप में, आदरणीय ने अपने तपस्वी श्रम के लिए और भी अधकि उत्साह के साथ खुद को समर्पति कर दयिा, और मठ के सभी भाइयों के लिए एक सच्चे ईसाई जीवन शैली का उदाहरण स्थापति कयिा। उस समय, संत तारासयिस कॉन्स्टेंटनिोपल के पैट्रआिर्क थे। श्रद्धेय प्लेटो के कार्यों के बारे में सुनकर, उन्होंने उन्हें नकिोमेडयिा के मेट्रोपॉलटिन का पद प्रस्तावति कयिा[2882] । लेकनि आदरणीय व्यक्ति, एकांत तपस्या का जीवन चाहकर, अपनी वनिम्रता के कारण मेट्रोपोलटिन पद का प्रशासन अस्वीकार कर दयिा और सकोडयिन नामक एक एकांत स्थान पर चले गए[2883] , जहाँ उन्होंने बाद में एक मठ की स्थापना की।

प्रतमिा-वरिोधी उथल-पुथल के बाद, उस समय की सम्राज्ञी आइरीन ([2884]) ने परम पावन पैट्रआिर्क तारासयिस के साथ मलिकर नकियि ([2885]) में सप्तम सार्वभौमकि परषिद[2886] का आयोजन कयिा, जसिमें प्रतमिा-वरिोधी वधिर्मयिों की अधर्मी शकि्षाओं की नदिा की गई और साथ ही पवत्रि प्रतमिाओं के प्रतश्रिद्धा और उनकी पूजा को पुनर्स्थापति और पुनःपुष्टकि की गई। तीन सौ से अधकि पादरी परषिद में एकत्रति हुए; उनमें आदरणीय प्लेटो भी थे। दव्यि शास्त्रों में सुवज्ञि और वद्विान व्यक्तकि रूप में, उन्होंने परषिद में महान योगदान दयिा, क्योंकउिन्होंने धैर्यपूर्वक ऑर्थोडॉक्सी की शकि्षाओं का बचाव कयिा और साहसपूर्वक वधिर्मीयों की शकि्षाओं की नदिा की।

जब परषिद के सत्र समाप्त हो गए, तो परमपूज्य प्लेटो अपने तपस्या के कार्यों के स्थान, सकोडयिन में, चले गए। यह इलाका जतिना सुंदर था, उतना ही एकांत जीवन के लिए उपयुक्त भी था। एक पहाड़ पर स्थति, यह सभी ओर से सुंदर, ऊँपेड़ों से घरिा हुआ था; यहाँ तक पहुँचने का एकमात्र रास्ता जंगल की झाड़यिों के बीच मुश्कलि से दखिाई देने वाले एक छोटे से पगडंडी से था।

प्लेटो के भतीजे थयिोडोर ने भी उनके साथ यहाँ तपस्या की। जल्द ही उन्होंने यहाँ संत जॉन द थयिोलोजयिन को समर्पति एक चर्च का नर्मिाण कयिा।

इस बीच, संत के कार्यों की खबर दूर-दूर तक फैल गई, और कई लोग ईसाई जीवन में उनके नर्दिेश और मार्गदर्शन की तलाश में उनके पास आने लगे। जैसे-जैसे आदरणीय के शष्यिों की संख्या बढ़ी, उन्होंने वहाँ एक मठ की स्थापना की[2887] , और उन्होंने स्वयं मठाधीश के कर्तव्यों का पालन कयिा।

अपने तपस्वी जीवन के माध्यम से, आदरणीय प्लेटो ने सभी भाइयों के लिए अनुकरण करने हेतु एक उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत कयिा। उनके भतीजे, धन्य थयिोडोर ने, वशिेष उत्साह के साथ आदरणीय प्लेटो का अनुकरण कयिा, और अपने दनि-रात प्रार्थना के अथक कार्यों और ईश्वर के चंतिन में बतिाए।

[2880] ओलंपस एशयिा माइनर में मसियिा क्षेत्र का एक पहाड़ है, जो फ्रीजयिा और बथिनियिा की सीमा पर स्थति है। यहाँ एक मठ था, जो अपने नवािसयिों के तपस्या के लिए प्रसद्धि था, जसिे 'प्रतीकों का मठ' कहा जाता था, जहाँ आदरणीय प्लेटो एक भक्षिु के रूप में रहते थे।

[2881] यह वर्ष 770 का था।

[2882] नकिोमेडयिा एशयिा माइनर के बथिनियिा क्षेत्र में एक शहर है, जो मरमरा सागर द्वारा नर्मिति खाड़ी के उत्तर-पूर्वी कोने में स्थति है। नकिोमेडयिा की स्थापना 264 ईसा पूर्व में बथिनियिा के राजा नकिोमेड्स प्रथम द्वारा की गई थी, जनिके नाम पर इसका नाम पड़ा। जब रोमन सम्राट और जनरल पूर्व की ओर अभयिान पर जाते थे, तो नकिोमेडयिा उनका पसंदीदा आवास था। आज, प्राचीन नकिोमेडयिा के स्थल पर इस्मडि शहर स्थति है।

[2883] यह स्थल माउंट ओलंपस से बहुत दूर नहीं स्थति था।

[2884] सम्राट लयिो द खज़ार की पत्नी, संत आइरीन ने, जब उनके बेटे कॉन्स्टेंटनि (छठे) पोर्फ्योजेनटिस नाबालगि थे, 780 से 790 तक और फरि 797 से 802 तक स्वतंत्र रूप से साम्राज्य पर शासन कयिा। उनका पर्व दविस 7 अगस्त को मनाया जाता है।

[2885] चर्च के इतहिास में, नकियि को दो सार्वभौमकि परषिदों के स्थल के रूप में जाना जाता है: पहली, जो 325 में आयोजति की गई थी और अलेक्जेंड्रयिा के पादरी एरयिस (जो परमेश्वर पुत्र की परमेश्वर पति के साथ समानता से इनकार करता था) के वधिर्म की नदिा करने के लिए बुलाई गई थी, और दूसरी सातवीं, जो इस चर्चा का वषिय है। प्राचीन काल में, नकियि एशयिा माइनर के बथिनियिा क्षेत्र में एक समृद्ध और फलता-फूलता शहर था। आज, प्राचीन नकियि के स्थल पर इज्नकि नामक बहुत गरीब और कम आबादी वाला शहर बसा हुआ है।

[2886] इस परषिद की बैठक 787 में बुलाई गई थी।

[2887] यह मठ सन् 782 में परम पूज्य प्लेटो द्वारा स्थापति कयिा गया था।

थेओडोर का इतना सदाचारी जीवन देखकर, आदरणीय प्लेटो उनके लिए अत्यंत हर्षित हुए। धन्य थियोडोर को पवित्र पद से सम्मानित करने का निर्णय लेने के बाद, रेवरेंड उनके साथ उनकी पवित्रता पैट्रिआर्क तारासियस से मिलने के लिए बाइजेंटीयम के लिए रवाना हुए, जिन्होंने थियोडोर को एक प्रेस्बिटिर के रूप में नियुक्त किया—हालांकि यह उनके स्वेच्छा से नहीं बल्कि आज्ञाकारिता से किया गया था, क्योंकि धन्य व्यक्ति, खुद को ऐसे पद के लिए अयोग्य समझते हुए, इस पद को स्वीकार नहीं करना चाहते थे और कहा कि यह पद उनकी क्षमताओं से परे था। लेकिन अपने आध्यात्मिक पिता और पैट्रिआर्क दोनों की इच्छा के विरुद्ध नहीं जा सकने के कारण, उन्होंने आज्ञा मानी और पुरोहित पद स्वीकार कर लिया। जब आदरणीय थियोडोर एक पुरोहित के रूप में अपने नए पद पर अपने मठ में लौटे, तो उन्होंने वहाँ और भी अधिक उत्साह और भक्ति के साथ परिश्रम करना जारी रखा।

कई वर्षों के बाद, अपने अनेक कार्यों और वृद्धावस्था के कारण दुर्बल हो जाने पर, आदरणीय प्लेटो ने मठ का नेतृत्व त्यागने का निर्णय लिया और चाहा कि धन्य थियोडोर उनके उत्तराधिकारी बनें। वे अक्सर उनसे इस बारे में बात करते थे, उनसे विनती करते हुए कि वे मठ के नेतृत्व के भारी बोझ से उन्हें मुक्त कर दें। लेकिन धन्य थियोडोर लगातार मठाध्यक्ष पद को अस्वीकार करते रहे, क्योंकि वे किसी पर शासन करने के बजाय स्वयं दूसरों के अधीन रहना पसंद करते थे, और उनका मानना था कि आत्मा की मुक्ति के लिए, स्वयं किसी को निर्देश देने की तुलना में दूसरों से मार्गदर्शन प्राप्त करना अधिक आसान और लाभकारी है।

आदरणीय प्लेटो ने, यह देखकर कि धन्य थियोडोर की विनम्रता को जीतना कठिन था, निम्नलिखित करने का निर्णय लिया: वह बीमार होने का नाटक करते हुए अपने बिस्तर पर लेट गए – क्योंकि वास्तव में वह कमजोर थे – और सभी भाइयों को बुलाकर, उन्हें बताया कि उन्हें अपना अंत निकट महसूस हो रहा है, और फिर उनसे पूछा:

'मेरे बाद आप किसको मठाध्यक्ष बनाना चाहते हैं? आपके विचार में, इस पद के लिए सबसे उपयुक्त कौन है?'

आदरणीय को पता था कि भ्रातागण स्वयं थियोडोर को ही अपना मठाधीश बनाना चाहेंगे, क्योंकि हर कोई उनके महान गुणों के लिए उनसे प्रेम और सम्मान करता था। और ऐसा ही हुआ। सभी ने एकमत होकर प्रश्न का उत्तर दिया:

'आपके बाद थियोडोर हमारे मठाध्यक्ष हों!'

तब पूजनीय प्लेटो ने अपना अधिकार धन्य थियोडोर को सौंप दिया, क्योंकि वे पूरे भाईचारे की इच्छा के विरुद्ध नहीं जा सकते थे। मठाध्यक्ष का पद संभालने के बाद, धन्य थियोडोर ने अपने प्रयासों को दोगुना कर दिया, सभी के लिए एक आदर्श बनकर और सभी को न केवल शब्दों से बल्कि कर्मों से भी एक सदाचारी जीवन सिखाया।

उस समय, धर्मपरायण ज़ारिना इरिना के पुत्र ज़ार कॉन्स्टेंटिन वयस्क हुए, उन्होंने अपनी माँ को शाही सिंहासन से हटा दिया, और सरकार की बागडोर अपने हाथों में ले ली[2888] ; युवा और भ्रष्ट होने के कारण, वह हर प्रकार के पापों में लिप्त हो गए। इस प्रकार, उसने अपनी पत्नी मारिया को निकालने का निश्चय किया; इस उद्देश्य के लिए, ने जबरदस्ती उसका मुंडन कराकर उसे एक नन बना दिया, और उसकी जगह एक और पत्नी, थियोडोटा नाम की, को ले लिया, जो उसके पिता की रिश्तेदार थी[2889] । परम पावन पैट्रिआर्क तारासियस ने राजा के इस गैर-कानूनी कार्य को मंजूरी नहीं दी और उसके विवाह पर आशीर्वाद देने से इनकार कर दिया। लेकिन जोसेफ नामक एक निश्चित पुरोहित, जो कॉन्स्टेंटिनोपल के चर्च का कोषाध्यक्ष रह चुका था[2890] , ने दैवीय कानूनों का उल्लंघन किया और पैट्रिआर्क की अवज्ञा करते हुए, राजा के लिए विवाह संस्कार करने पर सहमत हो गया।

यह सुनकर, धन्य थियोडोर, सम्माननीय प्लेटो के साथ, अपने हृदय में गहराई से दुखी हुए। ईश्वर के विधान के प्रति उत्साह से भरकर, थियोडोर ने संत प्लेटो के साथ मिलकर सभी भिक्षुओं को एक संदेश भेजा, जिसमें उन्होंने राजा के अन्याय की सूचना दी और सभी को राजा को मसीह की कलीसिया से बहिष्कृत मानने के लिए प्रोत्साहित किया, क्योंकि वह ईश्वर के विधान का विनाशक था।

[2888] यह 790 में हुआ था, जब कॉन्स्टेंटिन बीस वर्ष का हो गया था।

[2889] सम्राट कॉन्स्टेंटिन VI पोर्फ्योजेनिटस की पहली पत्नी मारिया थीं – जो संत फिलारेटस द मर्सीफुल (जिनकी स्मृति 1 दिसंबर को मनाई जाती है) की पोती थीं – जिनसे उन्होंने अपनी माँ के कहने पर विवाह किया था। सम्राट का दूसरा विवाह थियोडोटा से, जो पहले एक दासी थीं, 795 में हुआ।

[2890] कॉन्स्टेंटिनोपल के चर्च का ओइकोनोमोस का पद कॉन्स्टेंटिनोपल के पैट्रिआर्क के अधीन सबसे महत्वपूर्ण पदों में से एक था: ओइकोनोमोस न केवल पैट्रिआर्क के घर का प्रबंधन करता था (ओइकोनोमोस, ग्रीक शब्द ओइकोनोमेओ से, जिसका अर्थ है 'घर का प्रबंधन करना') और उसके कोषागार की देखरेख करता था, बल्कि पैट्रिआर्केट के प्रशासन से संबंधित मामलों को हल करने में भी भाग लेता था।

धन्य थियोडोर और प्लेटो के इस उत्साह और साहस की खबर दूर-दूर तक फैल गई, यहाँ तक कि स्वयं सम्राट, जिसकी उन्होंने निंदा की थी, को भी इसकी जानकारी हो गई। पवित्र पुरुषों से क्रोधित होकर, उसने क्रूर यातनाओं के बाद, आदरणीय थियोडोर को थ्रेसलॉनीकिया[2891] में निर्वासित करने का आदेश दिया, जबकि प्लेटो को कैद करने का आदेश दिया।

धर्मद्रोही सम्राट की मृत्यु के बाद, आदरणीय प्लेटो को जेल से रिहा कर दिया गया, जबकि संत थियोडोर को निर्वासन से वापस लाया गया। इस बीच, अगारियों[2892] के लगातार हमलों के कारण, जो बाइज़ेंटाइन साम्राज्य के विभिन्न क्षेत्रों में तबाही मचा रहे थे और उन्हें कब्ज़ा कर रहे थे, संत थियोडोर ने मठ के भाइयों के जीवन को खतरे में नहीं डालना चाहकर सकोडियन छोड़ दिया, और भाइयों के साथ कॉन्स्टेंटिनोपल आए, जहाँ उन्होंने प्रसिद्ध स्टुडियन मठ[2893] का प्रभार संभाला।

आदरणीय प्लेटो, जिन्होंने कभी मठाधीश का पद संभाला था, अब एक विनम्र भिक्षु के रूप में धन्य थियोडोर के पास आए और अपने मठ में तपस्या में स्वयं को समर्पित करने लगे। ऐसा करते हुए, आदरणीय प्लेटो ने स्वयं को इतना विनम्र बना लिया कि उन्होंने स्वेच्छा से अपने पैरों में बेड़ियाँ डाल लीं, और उपवास तथा प्रार्थना की तपस्या में निरंतर लगे रहे।

इसके तुरंत बाद, सम्राट निकिफ़ोरस[2894] ने अवैध रूप से बीजान्टिन सिंहासन पर कब्ज़ा कर लिया, और अपने अधिकार का उपयोग करके उपर्युक्त पुरोहित जोसेफ को चर्च में बहाल कर दिया, जिन्हें उनके अवैध आचरण के लिए पैट्रिआर्क तारासियस द्वारा चर्च से बहिष्कृत कर दिया गया था। इसके बाद, जब संत थियोडोर ने अपने भाइयों के साथ मिलकर धार्मिक नियमों के विरुद्ध कार्य करने के लिए सम्राट की निंदा की, तो सम्राट उन पर और स्टुडियो मठ के सभी भाइयों पर बहुत क्रोधित हो गया, और उसने उन्हें सभी को, सबसे धन्य एल्डर प्लेटो के साथ, शहर के पास एक द्वीप[2895] पर निर्वासित कर दिया।

निर्वासन में चार साल बिताने के बाद, अब अपने संध्याकाल में, आदरणीय प्लेटो कॉन्स्टेंटिनोपल लौट आए, जहाँ वे एक बार फिर स्टूडियो मठ में बस गए।

उस मठ में परिश्रम करते हुए, आदरणीय प्लेटो वहाँ और तीन वर्ष तक रहे और अंततः प्रभु के पास चले गए, ताकि वे अन्य संतों के साथ, उनके सिंहासन के सामने खड़े होकर स्वर्ग में हमेशा के लिए उनकी महिमा कर सकें[2896] । आमीन।

थेस्सालोनिकी की पूज्यनीय थियोडोरा की स्मृति।

5 अप्रैल को स्मरणोत्सव

[2891] थेस्सालोनिकी, प्राचीन काल में महान महत्व वाला मेसिडोनिया का एक शहर, एजियन सागर (द्वीपसमूह) में थेस्सालोनिकी की खाड़ी या फर्मे की खाड़ी के तट पर स्थित था। रूसी चर्च के इतिहास में, इस शहर को स्लावों के पवित्र प्रथम शिक्षकों – सिरील और मेथोडियस – का जन्मस्थान माना जाता है, और इसे यूरोपीय तुर्की के (कॉन्स्टेंटिनोपल के बाद) प्रथम व्यापारिक शहरों में गिना जा सकता है।

[2892] अगारी – मुसलमान – अरब थे, जिनका नाम हागर के नाम पर रखा गया था, जो अब्राहम की उपपत्नी और इस्माइल की माँ थीं, जिनकी संतान से अरब कबीला उत्पन्न हुआ। बाइज़ेन्टाइन दरबार में निरंतर उथल-पुथल और आंतरिक संघर्ष का लाभ उठाते हुए, अगारियों ने उस समय बाइज़ेन्टाइन साम्राज्य की सीमाओं पर विनाशकारी छापे मारे।

[2893] प्रतिष्ठित थियोडोर द स्टुडाइट को 798 में स्टुडाइट मठ का मठाधीश नियुक्त किया गया था – स्टुडाइट मठ का नाम इसके संस्थापक, रोमन पैट्रिसियन (हमारे कुलीनों के समकक्ष, उच्चतम सामाजिक वर्ग का सदस्य) स्टुडियस के नाम पर पड़ा। स्टूडियस ने कॉन्स्टेंटिनोपल में संत जॉन द बैपटिस्ट को समर्पित एक बड़ा और सुंदर चर्च बनवाया और उससे जुड़ा एक मठ स्थापित किया, जिसमें उन्होंने 'ऑल-नाइट विजिल' (पांचवीं शताब्दी में स्थापित) के कॉन्स्टेंटिनोपल मठ के भिक्षुओं को वहाँ रहने के लिए आमंत्रित किया। इस प्रकार, स्टुडाइट मठ का अस्तित्व में आया।

[2894] सम्राट निकिफ़ोरस प्रथम ने 802 से 811 तक शासन किया।

[2895] यह 807 में हुआ था।

[2896] आदरणीय प्लेटो का 814 में, लाजर सप्ताहांत पर, संत के जीवन के 79वें वर्ष में निधन हो गया।

आदरणीय थियोडोरा का जन्म भक्तपूर्ण ईसाई माता-पिता, एंथनी और क्रसिानोफा के यहाँ हुआ था, जो एजियाना द्वीप पर रहते थे[2897] । यह भक्तपूर्ण जोड़ा उस समय रहता था जब सम्राट माइकल के शासनकाल के दौरान पवित्र चर्च प्रतिमा-विरोधी विधर्म से हिल गई थी[2898] । फिर भी, ये धर्मनिष्ठ पति-पत्नी प्रतिमा-विरोधी शिक्षाओं से प्रभावित नहीं हुए, बल्कि अपने रूढ़िवादी विश्वास के साथ दीपस्तंभ की तरह चमके। पूजनीय थियोडोरा ऐसे ही धर्मनिष्ठ माता-पिता की संतान थीं।

विवाह योग्य आयु में पहुँचने पर थियोडोरा ने विवाह कर लिया; जल्द ही उसने एक बेटी को जन्म दिया। दुश्मनों के आक्रमण के बाद, यह युवा जोड़ा थेस्सालोनिकी चला गया।

जब थियोडोरा की बेटी वयस्क हुई, तो पूजनीय थियोडोरा ने उसे थेस्सालोनिकी के एक मठ में ईश्वर की सेवा के लिए समर्पित कर दिया; और बाद में, अपने पति की मृत्यु के बाद, उन्होंने स्वयं भी उसी मठ में निवास कर लिया, और वहाँ मठवासी संन्यास की शपथ ली।

कन्वेंट में रहते हुए, पूज्य थियोडोरा ने कठोर तपस्या का जीवन जिया। ईश्वर की कृपा से सशक्त होकर, उन्होंने आज्ञाकारिता और विनम्रता, उपवास और प्रार्थना के अपने कार्यों के माध्यम से प्रभु को इतना प्रसन्न किया, कि उन्होंने न केवल अपने जीवनकाल में बल्कि अपनी मृत्यु के बाद भी चमत्कार किए[2899] । इस प्रकार, जब पूज्यनीया के निधन के बाद, उस मठ की अधिष्ठात्री भी मर गईं और उनका शरीर संत थियोडोरा की कफन के पास रखा गया, तो एक बड़ा चमत्कार हुआ: पूज्यनीया थियोडोरा, जैसे जीवित हों, अपनी कफन के साथ एक तरफ हट गईं, मानो अपनी अधिष्ठात्री के लिए रास्ता बना रही हों और मृत्यु के बाद भी अपनी नम्रता का प्रदर्शन कर रही हों। जो भी इस चमत्कार के साक्षी बने, वे विस्मय से भर गए और उन्होंने ऊँचे स्वर में पुकारा:

'हे प्रभु, दया करें!'

आदरणीय थियोडोरा के पवित्र अवशेषों से एक सुगंधित मूर्रा बही, जिससे अनेक चमत्कार हुए: राक्षसों को बाहर निकाला गया, अंधों को दृष्टि प्राप्त हुई, और अनेक रोगी अपने रोगों से चंगे हो गए, हमारे ईश्वर मसीह की महिमा के लिए।

- उसी दिन हम पूज्यनीय पितरों थियोना, सिमोन और फोर्वनि का स्मरण करते हैं।

19 अप्रैल

6 अप्रैल (पुराने कैलेंडर के अनुसार)

उसी दिन, फारस के 120 शहीदों का स्मरण, जिन्हें चौथी शताब्दी में राजा शापूर द्वारा खंभे पर जला दिया गया था।

इस दिन, हम संत मेथोडियस, प्रेरितों के समकक्ष, का स्मरण करते हैं।

हमारे पिता यूटकियिस, कॉन्स्टेंटिनोपल के आर्चबिशप का जीवन, जैसा कि संतों के जीवन में दर्ज है

6 अप्रैल को स्मरण किया जाता है

संत यूटकियिस का जन्म फ्राइजिया के 'डिविइन' नामक एक गाँव में हुआ था। बाद में, संत यूटकियिस ने इस गाँव को पत्थर की दीवारों से मजबूत किया, वहाँ चालीस शहीदों को समर्पित एक विशाल चर्च का निर्माण किया, और वहाँ सदाचारी पुरुषों—और मुख्य रूप से, भिक्षुओं— को बसाया, जिन्होंने स्वर्गदूतों के समान जीवन जिया; वह चाहता था कि गाँव न केवल नाम में बल्कि वास्तविकता में भी 'दिव्य' हो। इस प्रकार, संत के प्रयासों से, सब कुछ एक मजबूत शहर में बदल गया। संत यूटकियिस के माता-पिता एक सैनिक अलेक्जेंडर और सिनिशिया थीं, जो आगुस्टोपोलिस के चर्च में सेवा करने वाले सम्मानित और धर्मात्मा पुरोहित इसकियिस की बेटी थीं। एक दिन, जब सिनिशिया अपने गर्भ में इस धन्य बच्चे

[2897] एजियाना द्वीपसमूह के सारोनिक खाड़ी में, आर्गोलीस और एटिका के बीच एक द्वीप है।

[2898] बाइज़ेंटाइन सम्राट माइकल प्रथम रंगबास ने 811 से 813 तक शासन किया।

[2899] आदरणीय थियोडोरा का 879 में निधन हो गया।

को लेकर अपने बस्तिर पर वश्राम कर रही थी, तो उसने खुद को एक अकथनीय प्रकाश में नहाया हुआ देखा; वह डर गई और सोचने लगी कि इसका क्या मतलब हो सकता है। हालाँकि, इस दृष्टि ने उस आध्यात्मिक प्रकाश का पूर्वाभास दिया जो उससे जन्म लेने वाला था - जो भूल के अंधकार में डूबे कई लोगों का प्रबोधक था।

प्रभु ने अपने सेवक को पवित्र किया, ठीक वैसे ही जैसे उन्होंने एक बार भविष्यवक्ता यिर्मयाह को पवित्र किया था, और उन्हें जन्म से पहले ही संसार के लिए एक प्रकाश और एक महान संत बनने के लिए नियत किया था। उस लड़के का बपतिस्मा उसके दादा, उपरोक्त याजक इसकियस ने दिया था, और उसी से उसने धर्मग्रंथों में अपनी प्रारंभिक शिक्षा प्राप्त की। अपने बचपन में भी, यूटकियस के भविष्य के पुरोहित होने के संकेत मिल रहे थे। कई बच्चे, यूटकियस के साथी, प्रेस्बटिर इसचियस के अधीन अध्ययन कर रहे थे, और खेलते समय, उन्होंने दीवार पर अपने नाम लिखना शुरू कर दिया, कुछ ने खुद को प्रेस्बटिर कहा, तो कुछ ने विभिन्न अन्य उपाधियाँ अपनाईं; धन्य यूटकियस ने अपना नाम 'पैट्रिआर्क यूटकियस' उपाधि के साथ लिखा; ऐसा करते हुए वह भविष्यवाणी के रूप में उस पैट्रिआर्क के सम्मान का संकेत दे रहा था जो ईश्वर भविष्य में उस पर प्रदान करेंगे। जब संत यूटकियस बारह वर्ष के हुए, तो उन्हें उनके माता-पिता और दादा द्वारा उच्च शिक्षा के लिए कॉन्स्टेंटिनोपल भेजा गया। धर्मनिरपेक्ष ज्ञान के अध्ययन में अपनी सफलता से स्वयं को दूसरों से अलग करते हुए, वह स्पष्ट रूप से समझ गया था कि बाहरी बुद्धि स्वयं में, संत जेम्स प्रेरित के शब्दों में, वह नहीं है जो ऊपर से आती है, परन्तु वह सांसारिक, कामुक, दानवी है—अर्थात्, सांसारिक वस्तुओं की खोज करना, एक कामुक आत्मा की कामुक इच्छाओं की सेवा करना, और जो लोग इसे प्रेम करते हैं, उन्हें कोई आध्यात्मिक फल न देना—जबकि *'ऊपर से आने वाली बुद्धि सबसे पहले पवित्र, फिर शांतिपूर्ण, सौम्य, विवेकशील, दया और उत्तम फल से परिपूर्ण'* (याकूब 3:17), जिससे वे लोग भर जाते हैं जो इस बुद्धिमत्ता को आत्मसात करते हैं। इस प्रकार समझदार युवक यूटकियस ने, एक विवेकशील व्यक्ति के रूप में, ऊपर से आने वाली बुद्धिमत्ता को लगन से खोजा; उसे पाकर, उसने अपने हृदय में संकल्प लिया कि वह संसार के लिए नहीं, बल्कि मठवासी समुदाय के बीच ईश्वर के लिए परिश्रम करेगा। जब वह परिपक्वता की आयु में पहुँचा और मठवासी जीवन को एक अटूट संकल्प के रूप में अपनाने पर विचार कर रहा था, तो दैवीय व्यवस्था से एक छोटी सी बाधा उत्पन्न हुई, जिसने उसे कुछ समय के लिए मठवासी संस्कार ग्रहण करने से रोक दिया। यह इस प्रकार था: अमासिया के मेट्रोपॉलिटिन[2900] और उस शहर के कुछ अन्य प्रतिष्ठित व्यक्तियों ने धन्य व्यक्ति से आग्रह किया कि वे संन्यास जीवन में प्रवेश किए बिना, लाज़िका शहर[2901] के बिशप का पद स्वीकार करें। मेट्रोपॉलिटिन और अन्य लोगों की इच्छा को स्वयं प्रभु का निर्णय मानकर, धन्य यूटकियस ने खुद को, एक भेड़ के बच्चे की तरह भेड़-कटने वाले के सामने, अमासिया के बिशप के हवाले कर दिया, जो उस समय धार्मिक कार्यों के सिलसिले में कॉन्स्टेंटिनोपल में ठहरे हुए थे। यूतखियस को लेकर, वह उसे सर्व पवित्र कन्या मरियम के चर्च में ले गया, जिसे इसके संस्थापक, पूर्वी राज्यपाल उर्बसियस के नाम पर उर्बसियस का चर्च कहा जाता था, और वहाँ, एक अलग स्थान पर, बपतिस्मा गृह में, उसने उसे एक पुरोहित के रूप में मुंडन किया। संयोग से, जब यूतखियस का मुंडन हो रहा था, उसके कटे हुए बाल बपतिस्मा-कुंड के पवित्र जल में गिर गए, और उपस्थित लोगों ने आश्चर्य से टिप्पणी की कि जिसे माँ (पवित्र जल-कुंड) ने उसे आध्यात्मिक जन्म दिया था (अर्थात् बपतिस्मा के माध्यम से), उसने अपने बाल अपने भीतर ग्रहण करके, इस प्रकार एक धर्मकर्मी के रूप में उसकी नियुक्ति पर उसकी धर्ममाता बन गई। इसके बाद, धन्य यूटकियस को डीकन नियुक्त किया गया, और फिर, अपने जीवन के तीसरे वर्ष में, उन्हें प्रेस्बटिर (पादरी) के रूप में अभिषिक्त किया गया। और जब धन्य यूटकियस के पास केवल बिशप का पद ग्रहण करना शेष था, तो ईश्वर की दिव्य व्यवस्था ने, अपने सेवक के लिए सर्वोत्तम भविष्य की व्यवस्था करते हुए, परिस्थितियों को बदल दिया, और लाज़िका का बिशप पद किसी अन्य व्यक्ति को दे दिया गया। तदनन्तर, संत यूटकियस, अपने मूल इरादे पर एक बार फिर लौटकर, अमासिया के एक मठ में चले गए और वहाँ मठवासी संन्यास की शपथ ली। इस मठ की स्थापना पवित्र पुरुष मेलेटियस, यूरेनस और सेल्यूकस ने की थी, जिनमें से पहले और आखिरी, दोनों ने अपने-अपने समय में, एक बार अमासिया के चर्च के बिशप के रूप में कार्य किया था और इस बिशप पद को धारण करते हुए प्रभु के पास चले गए, और अपने कब्रों से चमत्कारिक रूप से बीमारों को स्वास्थ्य प्रदान करते थे। महान सेल्वकियस के बारे में कहा जाता है कि वह अपने

[2900] आसिया, एशियाई तुर्की में एक शहर, जो सिविस विलियत में स्थित है और जिसकी आबादी 15,000 है, में 18 मदरसे (उच्च शिक्षा संस्थान) हैं, जिनमें 2,000 छात्र नामांकित हैं। आसिया पहले पोंटस के राजाओं की राजधानी थी; इसमें कई प्राचीन वस्तुएँ हैं; यह इतिहासकार स्ट्राबोन का जन्मस्थान है।

[2901] अमासिया के दक्षिण-पश्चिम में, गैलाटियन के भीतर

जीवनकाल में ही चमत्कार करने वाले थे। एक बार, अमासिया के क्षेत्र में एक भीषण अकाल पड़ा, और अनगनित भखिारी और बेसहारा लोग संत सेल्वकयिस के पास आए, जसिके कारण अंत में, उनके पास ब्रेड का सारा भंडार समाप्त हो गया। , जो रोटी बांटने का प्रभारी था, भीख मांगने वालों की मदद करने का कोई तरीका न होने और उनकी वनितयिों को सहन न कर पाने के कारण, संत के पास गया और उसे अनाज भंडारों की चाबयिाँ सौंप दीं। चाबयिाँ लेकर, संत ने उन्हें अपने बस्तिर पर रख दयिा और पूरी रात ईश्वर से प्रार्थना की, कि वे उन लोगों पर दया करें जो भूख से मरने के कगार पर थे, और अपने सर्वशक्तमिान हाथ से उन्हें उन स्रोतों से भोजन भेजें जो केवल उन्हें ही ज्ञात थे। अगली सुबह, उन्होंने अनाज भंडार को गेहूं से इतना भरा हुआ पाया कि दरवाजे खोलना भी असंभव था। तब सभी ने स्वतंत्र रूप से गेहूँ लेना शुरू कर दयिा, हर कोई अपनी ज़रूरत और जतिना उठा सकता था उतना ले रहा था, फरि भी लयिा गया गेहूँ कम नहीं हो रहा था। कुछ लोग अनाज को नाप-तौल कर ले गए, और रकिॉर्ड से पता चला कि सेलेवकयिस के अनाज भंडार से लएि गए मापों की संख्या—जसिे ईश्वर ने संत की प्रार्थनाओं के उत्तर में गुणा कर दयिा था—दस टेम (यानी, एक लाख माप) थी; यही है संत सेलेवकयिस का वृत्तांत। इसी तरह, संत यूरेनस के मकबरे पर हर तरह की बीमारयिों से चंगाई का वरदान मलिा, जो कभी इबेरयिा के बशिप के पद पर रहे थे और वहीं दफन थे। ऐसे महान पुरुषों द्वारा अमासिया का मठ स्थापति कयिा गया था, जसिमें बाद में परम आदरणीय यूटकियिस ने, भक्षिु का वेश धारण करने के बाद, एक देवदूत का स्वरूप धारण कयिा, नेकता के कमरबंद से कमर कसी और परमेश्वर के पूरे हथयिार को धारण कर, अमासिया के महानगर के भीतर सभी मठों का आर्चमिैंड्राइट नयिुक्त कयिा गया, और उन्होंने मठाधीशों के लएि खुद को एक वश्विसनीय मार्गदर्शक साबति कयिा।

उस समय महान जस्टनियिन ई[2902] में शासन कर रहे थे, और जब पवत्रि पतिाओं को पाँचवें सार्वत्रकि परषिद[2903] के लएि बुलाया गया, तब अमासिया के मेट्रोपोलटिन बीमार पड़ गए और उन्होंने सम्माननीय आर्चमिांड्राइट यूटकियिस से कहा कि वह उनकी जगह कॉन्स्टेंटनिोपल में परषिद में जाएँ। जब धन्य यूटकियिस अपनी यात्रा की तैयारी कर रहे थे, तब उन्हें एक स्वप्न में नम्निलखिति दर्शन हुआ। उन्होंने देखा कि स्वर्गमंडल से ईश्वर की उंगली फैली हुई थी, जो मठ के ऊपर एक बहुत ऊँचे पर्वत की ओर इशारा कर रही थी, जसि पर पवत्रि शहीद फलालेयस का चर्च स्थति था; उसी समय, ऊपर से एक आवाज यूटकियिस को संबोधति कर रही थी: 'वहाँ तुम एक बशिप बनोगे।' जागने पर, संत उस दर्शन से चकति हो गए और सोचने लगे कि इसका क्या अर्थ हो सकता है। फरि भी, यह उनके लएि कॉन्स्टेंटनिोपल के पैट्रआिर्क के उच्च पद का पूर्वाभास था, जसि पर, ईश्वर की कृपा से, उन्हें जल्द ही पदोन्नत कयिा जाना था। जब आदरणीय यूटकियिस कॉन्स्टेंटनिोपल पहुँचे, तो वृद्ध और परम पवत्रि पैट्रआिर्क मीना, जो पहले से ही मृत्यु के करीब थे, ने उस धन्य व्यक्ति को देखकर अपने पुरोहतिों से भवष्यिवाणी की तरह कहा कि वह पैट्रआिर्क के रूप में उनका उत्तराधकिारी होगा; उन्होंने संत यूटकियिस को अपने पैट्रआिर्कल आवास में रहने का नर्दिेश दयिा, जहाँ उन्होंने उनके ईश्वर-प्रेरति शब्दों में आनंद लेते हुए, उनके साथ हार्दकि बातचीत की। सम्राट को संत यूटकियिस की सूझबूझ और सदाचारी चरत्रि के बारे में सूचति करने के बाद, मीना ने उन्हें सम्राट के पास भेज दयिा। संयोग से, उसी घड़ी कुछ वधिर्मी राजा की उपस्थति में थे; उन्होंने धर्म के सद्धिांतों के मामलों पर संत के साथ बहस शुरू कर दी, लेकनि वे उस बुद्धमित्ता और आत्मा का सामना नहीं कर सके, जसिके साथ आदरणीय यूटकियिस ने बात की। ववािद इस बात पर था कि क्या वधिर्मयिों को मृत्यु के बाद भी शापति कयिा जाना चाहएि। कुछ का तर्क था कि उन वधिर्मयिों पर शाप नहीं लगाया जाना चाहएि जनिके वधिर्म का पता उनकी मृत्यु के बाद ही चला हो। दूसरी ओर, संत यूटकियिस का तर्क था कि वधिर्मयिों को हर तरह से, मृत्यु के बाद भी शापति कयिा जाना चाहएि। उन्होंने धर्मग्रंथ से यरूशलेम के राजा योशयि्याह का उदाहरण दयिा, जन्हिोंने अपनी मृत्यु के कई वर्षों बाद, मृत मूर्तपिूजकों की हड्डयिों को उनके ताबूतों से नकिलवाकर आग में जला दयिा था; उसी तरह, संत ने कहा कि वधिर्मयिों को उनकी मृत्यु के बाद भी दंडति कयिा जाना चाहएि। उस समय से, पूजनीय

[2902] सम्राट जस्टनियिन ने 527 से 565 तक शासन कयिा। 482 या 483 में जन्मे, वे एक इल्यूरयिन कसिान के पुत्र थे। उनके चाचा – जो बाद में सम्राट जस्टनियिन प्रथम बने – उन्हें सम्राट अनास्तासयिस के दरबार में कॉन्स्टेंटनिोपल ले गए। जस्टनियिन ने अच्छी शकि्षा प्राप्त की, और अपने चाचा की मृत्यु के बाद, जन्हिें उन्होंने पहले गोद लयिा था, सहिासन पर चढ़े। उन्होंने वंडल और ओस्ट्रोगोथकि राज्यों को वश में करके अपने शासन को वशिष्टि बनाया।

[2903] पाँचवाँ सार्वभौमकि परषिद मई 553 में कॉन्स्टेंटनिोपल में बुलाया गया था। इसमें 165 बशिपों ने भाग लयिा था। उनमें सभी पूर्वी पैट्रआिर्क शामलि थे, लेकनि पश्चमि से केवल पाँच अफ्रीकी बशिप थे। अध्यक्ष कॉन्स्टेंटनिोपल के पैट्रआिर्क यूटकियिस थे; परषिद का आयोजन थयिोडोर ऑफ़ मॉप्सuestia, द ब्लेस्ड, थयिोडोरेट, और एडसा के इवास के मामलों पर अंतमि नर्णिय लेने के लएि कयिा गया था। साथ ही, परषिद ने काल्सेडन परषिद सहति सभी पछिली सार्वभौमकि परषिदों की धार्मकि परभिाषाओं की पुनःपुष्टि की।

यूटकियिस को राजा का अनुग्रह प्राप्त हुआ, और सभी ने उनकी प्रशंसा और सम्मान कयिा। उस समय (परषिद शुरू होने से पहले ही), परम पावन पैट्रआर्क मीना बीमार पड़ गए और बहुत बुढ़ापे में प्रभु के पास चले गए। और इस प्रकार, जो लोग पुरोहति नयिुक्त कएि गए थे, उनमें से कई ने उपहारों और मध्यस्थता के माध्यम से राजा से यह सम्मान मांगा; राजा, जसिका हृदय ईश्वर के हाथ में था, ने धन्य यूटकियिस के बारे में सोचा; उन्होंने अपने एक सलाहकार, पीटर नामक एक प्रसद्धि व्यक्त कि को आदेश दयिा कि वह अमासयिा के आर्चमैंड्राइट पर चुपचाप नजर रखे – कहीं ऐसा न हो कि वह मानवीय महमिा से बचते हुए, गुप्त रूप से कन्स्टेंटनिोपल से भाग जाए। फरि संत को अपनी नींद में एक और दर्शन हुआ, जसिे उन्होंने बाद में अपने परविार को सुनाया। उन्होंने कहा, 'मुझे ऐसा लगा, मानो मैं एक बड़ा और बहुत चमकदार घर देख रहा हूँ, और उसमें कीमती अलंकरणों से ढटा एक पलंग है। इस पलंग पर सोफयिा नाम की एक सम्माननति महलिा बैठी थीं, जन्हिोंने मुझे अपनी ओर इशारा करके बुलाया और मुझे अपने आभूषण दखिाने लगीं। तुरंत बाद, मैंने देखा कि घर की छत बर्फ से ढकी हुई थी, और बर्फ में सोतेरकि नाम का एक छोटा लड़का खड़ा था, जो छत से फसिलकर गरिने ही वाला था; लेकनि, यह पूर्वानुमान लगाते हुए, मैंने उसे छत से नीचे और बर्फ से बाहर ले आया, इस प्रकार उसे गरिने से बचा लयिा।" उसे यह दृष्ट पैट्रआर्क के रूप में चुने जाने से एक रात पहले आई थी, और यह हर तरह से सच हुई। क्योंकि उसने जो महलिा देखी, जसिका नाम सोफयिा था, वह कॉन्स्टेंटनिोपल में सेंट सोफयिा कैथेड्रल के अलावा और कुछ नहीं थी, और उसके आभूषण चर्च के मामलों का प्रतनिधित्वि करते थे। छत से गरिने की कगार पर मौजूद लड़का सोतेरकिोस, उस सद्धिांतवादी स्वीकारोक्त का प्रतीक था जो वधिर्म में भटकने और गरिने के कगार पर थी और जसिे एक योग्य रक्षक की तत्काल सहायता की आवश्यकता थी। ज़ार को सम्माननीय यूटकियिस के बारे में ठीक उसी तरह एक दैवीय प्रकटीकरण प्राप्त हुआ था, जैसा कि उन्होंने स्वयं अपनी पूरी सरकार और महान चर्च के पुरोहतिों को शपथपूर्वक बताया था। राजा ने सुनाया, 'एक बार, मैं अथरि में सेंट पीटर द एपोस्टल के चर्च में प्रार्थना कर रहा था[2904] , जहाँ मुझे झपकी आ गई और मैंने इस प्रमुख प्रेरति को अपने हाथ से यूटकियिस की ओर इशारा करते हुए और मुझसे कहते हुए देखा: "इस आदमी को तुम्हारे लएि बशिप नयिुक्त कयिा जाए।"' यह सुनकर, सभी एक स्वर में चल्लिा उठे: 'योग्य, योग्य!' और इस प्रकार, दैवी इच्छा और प्रकटवाणी से, संत यूटकियिस को अपने जीवन के चालीसवें वर्ष में कॉन्स्टेंटनिोपल के पैट्रआर्क के रूप में सहिासन पर बठिाया गया। अपने पैट्रआर्कात् के बल्किुल आरंभ में, जब पवत्रि फादर लोग कॉन्स्टेंटनिोपल में एकत्रति हो गए, तब पाँचवाँ सार्वत्रकि परषिद बुलाया गया। उस परषिद में प्राचीन रोम के पोप वजिलियिस, अलेक्जेंड्रयिा के पैट्रआर्क अपोलनिारसि, और एंटओिक के डोमन्स उपस्थति थे, जन्हिोंने परम पावन यूटकियिस, नए रोम के पैट्रआर्क, और अन्य पवत्रि पतिाओं के साथ मलिकर, ईश्वरवाद का समर्थन कयिा, और वधिर्मयिों तथा उनके दुष्ट वचिारों को चर्च से बहष्कृत कर दयिा। जब संत यूटकिस मसीह के चर्च पर सफलतापूर्वक शासन कर रहे थे, तो शैतान ने अपने सेवकों वधिर्मीयों के साथ मलिकर उन पर उत्पीड़न शुरू कर दयिा। कई वर्षों बाद, सम्राट जस्टनियिन, वधिर्मीयों द्वारा अनजाने में बहकावे में आकर, उनके पक्ष में हो गए और धार्मकिता का दखिावा करते हुए, ऑटार्कोडोकेट्स[2905] के वधिर्म को फैलाना शुरू कर दयिा, अर्थात्, 'अक्षय', जन्हिोंने यह दावा कयिा कि मसीह का शरीर, दव्यिता के साथ अपने मलिन के कारण, उनके मृत्यु और पुनरुत्थान से पहले भी अक्षय रहा और मानवीय पीड़ा के अधीन नहीं था। इस वधिर्मी शक्षिा का प्रचार करके, सम्राट ने चर्च के भीतर अशांति पैदा की, और सभी को उसी तरह वश्विास करने और स्वीकार करने के लएि मजबूर कयिा जैसा वह स्वयं करता था। उनकी पवत्रिता पैट्रआर्क यूटकियिस ने इसका वरिोध कयिा, यह बताते हुए कि ऐसी शक्षिा ऑर्थोडॉक्स चर्च की नहीं, बल्कि वधिर्मयिों की थी। पवत्रि शास्त्र और पवत्रि पतिाओं के लेखन के आधार पर, उन्होंने समझाया कि पाप को छोड़कर हर मामले में मसीह का शरीर हमारे नश्वर शरीर के समान था और पीड़ा के अधीन था। क्योंकि, परम पवत्रि कुँवारी से जन्म लेने के बाद, उन्हें लपेटने के कपड़ों में लपेटा गया था, दूध से पोषति कयिा गया था, उनका खतना कयिा गया था, और अपने संपूर्ण सांसारकि जीवन के दौरान उन्हें भोजन और पेय की आवश्यकता होती थी। और फरि, एक ऐसा शरीर जो अक्षय और पीड़ा से अछूता

[2904] अफरि मार्मारा सागर के तट पर स्थति एक शहर है।

[2905] मोनोफसिाइट ववािद से उत्पन्न वभिन्नि वचिारों में से, एक वचिार सबसे अलग था, जसिे हेलकिार्नसस के जूलयिन का समर्थन प्राप्त था। उन्होंने यह स्वीकार कयिा कि उद्धारकर्ता का शरीर अक्षय था, कि वह मृत्यु से मुक्त था, ठीक वैसे ही जैसे आदम का शरीर अपनी नर्दिोषता में रहने पर मृत्यु से मुक्त रहता; कि वह पुनरुत्थान से पहले और बाद में बल्किुल वही था; और कि उनकी भूख, प्यास, और थकान कसिी भी तरह से उनके मानवीय स्वभाव की प्रकृति से उत्पन्न नहीं हुई, बल्कि ये वे अनुभूतयिाँ थीं जनिके लएि उन्होंने स्वेच्छा से स्वयं को अधीन कयिा। ऑटो-ऑर्थोडॉक्स अपने वरिोधयिों को 'फथार्टोलैट्रसि्ट' (अर्थात् नश्वर की पूजा करने वाले) कहते थे।

था, हमारे लिए कीलों और भाले को कैसे सहन कर सकता था? जब तक कि 'अक्षयता' से हमारा तात्पर्य केवल यह न हो कि वह पाप के क्षय से मुक्त था और कब्र में सड़ नहीं गया। लेकिन सम्राट ने न केवल पैट्रआर्क की रूढ़िवादी शिक्षा को सुनने से इनकार कर दिया, बल्कि हर संभव तरीके से उन्हें अपने हस्ताक्षर से अपने विधर्मी सिद्धांत की वैधता की पुष्टि करने के लिए मनाने का प्रयास किया। और चूँकि पैट्रआर्क ने सम्राट के गैर-रूढ़िवादी विचारों पर हस्ताक्षर करने से इनकार कर दिया, इसलिए सम्राट उन पर बहुत क्रोधित हुआ। दोनों पक्षों में काफी विवाद के बाद, सम्राट जस्टिनियन ने विधर्मियों—विशेष रूप से प्रांतीय गवर्नरों एफेरियस और अद्दाईस—के उकसावे पर, अपने विचारों से सहमत बिशपों की एक गैरकानूनी सभा बुलाई (यह यूटिकियस के पैट्रआर्कात के बारहवें वर्ष में हुआ था); सम्राट ने इस सभा के समक्ष निर्दोष और पवित्र पैट्रआर्क पर झूठे आरोप लगाए और, झूठे गवाहों द्वारा इन आरोपों की पुष्टि के साथ, एक अनुचित दोषसिद्धि हासिल की, जिससे उन्होंने अच्छे चरवाहे, पवित्र व्यक्ति, और ऑर्थोडॉक्स बिशप यूटिकियस को उनके पद से वंचित कर दिया, और उसकी जगह उसने एक झूठे चरवाहे, जॉन, जिसे स्कॉलैस्टिकिस के नाम से जाना जाता था, एक दुष्ट और चापलूस व्यक्ति को नियुक्त किया। जहाँ तक संत यूटिकियस की बात है, 22 जनवरी को, संत प्रेरित टिमोथी के पर्व के दिन, उसे सैनिकों द्वारा चर्च से बाहर घसीट लिया गया: प्रांतीय राज्यपाल एफ्राइम, एक भाला लेकर और एक क्रूर जानवर की तरह दहाड़ते हुए, पहुँचे और संत को जबरदस्ती बाहर खींचने का आदेश दिया; उन्होंने संत को उनके धर्माध्यक्षीय वस्त्रों से वंचित कर दिया और उन्हें अमासिया क्षेत्र में निर्वासित कर दिया। हालाँकि, एफेरियस स्वयं भी समय आने पर अपने घनिष्ठ मित्र अद्दाई के साथ ईश्वर के प्रकोप से नहीं बच सका; एफेरियस को उसका पद, उसकी संपत्ति और उसका जीवन खोना पड़ा; उसी दिन, 3 अक्टूबर को, दोनों को उनकी दुष्टता के लिए न्यायसंगत रूप से मृत्युदंड दिया गया: उनके सिर कुल्हाड़ी से काट दिए गए। [2906]

इस बीच, मसीह के संत यूटिकियस को अमासिया क्षेत्र में निर्वासित कर दिया गया था, और उन्होंने अपने मठ में उपवास और प्रार्थना में स्वयं को समर्पित कर दिया। वहाँ उन्होंने मसीह की कृपा से लोगों की बीमारियों को ठीक करते हुए अनेक चमत्कार किए। हम यहाँ संत यूटिकियस के कुछ चमत्कारों का वर्णन करेंगे। अमासिया नगर में एंड्रोज़िन नामक एक व्यक्ति अपनी पत्नी के साथ रहता था; पति-पत्नी बहुत दुखी थे, क्योंकि उनके बच्चे मृत पैदा हो रहे थे; बच्चा दुनिया में आने से पहले ही मर जाता था; शुनम की स्त्री ने एक बार एलीशा के सामने प्रार्थना की थी, ठीक उसी तरह, विनिती और आँसुओं के साथ, यह दंपति परमेश्वर के पवित्र पुरुष के पास आए, और उनसे अपने लिए परमेश्वर से प्रार्थना करने का आग्रह किया, कि वह उन्हें अपने बच्चों को जीवित देखने का सौभाग्य दें। संत ने, सोज़ोपोल में जीवन-दायक क्रूस और परमेश्वर की परम पवित्र माता की प्रतिमा से बहे पवित्र तेल से दोनों जीवनसाथियों को अभिषेक करके, उनसे कहा: 'गर्भ में पल रहे शिशु (पत्नी गर्भवती थी) का नाम पीटर रखो, और वह जीवित रहेगा।' उस समय संत के साथ मौजूद पुरोहित यूस्टैथियस (जो इस संत-चरित्र के लेखक थे), ने पूछा: 'लेकिन अगर एक लड़की पैदा होती है, तो उसका क्या नाम रखा जाए?' संत ने, हालांकि, भविष्यवाणी करते हुए पुष्टि की कि एक लड़का पैदा होगा, जिसका नाम पीटर रखा जाना था। समय आने पर, उनकी पत्नी ने एक पुत्र को जन्म दिया; उन्होंने उसका नाम पीटर रखा, और बच्चा जीवित रहा और बड़ा हुआ। बाद में, उसने दूसरे बेटे को जन्म दिया, और उसे अपनी बाहों में लेकर ईश्वर के बिशप के पास ले जाकर पूछा कि वह नवजात का क्या नाम रखे। 'उसका नाम जॉन रखा जाए,' संत ने उत्तर दिया, 'क्योंकि प्रभु ने संत जॉन के चर्च में आपकी प्रार्थना सुनी है।' दोनों लड़के बड़े होकर युवक बने और अपने माता-पिता के वारिस बने। चर्च बस्ती का एक पादरी अपने चौदह वर्षीय बधिर-मूक बेटे, जिसका नाम नुनेचियास था, को ईश्वर-प्रसन्न यूटिकियस के पास लाया। उसे पवित्र तेल से अभिषेक करने के बाद, संत ने उसके कान खोल दिए और उसकी जीभ को सुन्न कर दिया, जिससे वह बधिर-मूक सुन और बोल सका। चर्च के पुरोहित वर्ग का एक और सदस्य, जिसका नाम सिरिल था, का एक पाँच वर्षीय पुत्र था जो भी मूक था और बीमारी के कारण जीवन और मृत्यु के बीच झूल रहा था; अपनी प्रार्थनाओं के माध्यम से, उस संत ने उसे स्वस्थ कर दिया और उसे बोलने की क्षमता प्रदान की। एक अवसर पर, ज़ेला शहर के एक चार वर्षीय बच्चे[2907] को संत के पास लाया गया; बच्चा पूरी तरह से दुबला-पतला था, उसके शरीर पर लगभग कोई मांस नहीं था, केवल त्वचा से ढकी हुई हड्डियाँ ही बची थीं। वह अपनी माँ के स्तन से पिए जाने वाले थोड़े से दूध के अलावा कुछ भी नहीं खा पाता था।

[2906] जॉन तृतीय स्कॉलैस्टिकिस ने 565 से 577 तक कॉन्स्टेंटिनोपल के बिशप के रूप में कार्य किया।

[2907] ज़ेला, जो पोंटस के राज्य में अमासिया के दक्षिण में इरिस नदी के किनारे स्थित था, एक पहाड़ी पर बना था। ईसा पूर्व 67 में रोमनों और पोंटियनों के बीच युद्ध के दौरान, रोमन प्रेटोर ट्रायरियस को यहाँ मिथ्रिडेट्स ने हराया था। आज, ज़ेलेह गाँव एशिया माइनर में, तुर्की के सिवस विलायत में स्थित है।

उसे भी संत के हाथों से उपचार मिला, जब उसे पवित्र तेल से अभिषेक किया गया। मसीह के सेवक, संत यूटकियिस की प्रार्थनाओं और पवित्र तेल से अभिषेक करने के द्वारा, अमासिया के एक कलाकार के बेटे, जो अचानक बीमार पड़ गया था और मृत्यु के कगार पर था, को मृत्यु के दरवाज़ों से ही छीन लिया गया। एक महिला अपने सात वर्षीय बेटे और अन्य लोगों के एक समूह के साथ काम के सिलसिले में शहर जा रही थी। उनके रास्ते में आए एक दुष्ट राक्षस ने उस मासूम बच्चे के पैरों पर वार कर दिया और वह जमीन पर गिर पड़ा, और वह उठने में पूरी तरह से असमर्थ था। माँ ने अपने साथ यात्रा कर रहे लोगों के साथ मिलकर बच्चे को उठाया और उसे मठ में धन्य पैट्रिआर्क के पास ले गईं, और आँसू भरी आँखों से उनसे दया दिखाने और बच्चे को ठीक करने की विनती की। अपने पारंपरिक उपचार के तरीकों - प्रार्थना और पवित्र तेल - से संत ने बच्चे के स्वास्थ्य को बहाल कर दिया, और बच्चा दुर्घटना से पहले की तरह ही चलने-फिरने में सक्षम हो गया। अमासिया शहर के पास फ्लाविया नामक एक मठ था। इस मठ से, एक युवती को संत के पास लाया गया; वह दिव्य रहस्यों को ग्रहण करने में असमर्थ थी। संप्रदाय ग्रहण करने से पहले, वह अचानक डर और कांपने लगती थी, और एक भयानक चीख के साथ पवित्र रहस्यों से मुंह मोड़ लेती थी। जब भी वे पवित्र रहस्यों को जबरदस्ती उसके मुँह में डालने की कोशिश करते, तो वह उन्हें तुरंत थूक देती, मानो वे असहनीय रूप से कड़वे हों, क्योंकि उसमें एक दुष्ट आत्मा वास करती थी। उसके लिए परमेश्वर से प्रार्थना करने के बाद, परमेश्वर के बिशप ने उस दुष्ट दानव को उससे बाहर निकाल दिया। उस कन्या, चंगा हो जाने पर, ने बिशप के हाथों से शांतचित्त होकर दैवीय रहस्यों को ग्रहण किया । अमासिया का एक नागरिक क्रिसाफियस के घर में, एक युवक था जो मोज़ेक से चर्चों को सजाने में निपुण था; वह दीवारों से पुराने मोज़ेक को उधेड़ते हुए, उसकी जगह पर संतों की नई प्रतिमाएँ बना रहा था। अन्य चीजों के अलावा, वहाँ नग्न वीनस की एक प्राचीन प्रतिमा थी[2908] । जब उस युवक ने इस प्रतिमा को दीवारों से हटाना शुरू किया, तो वहाँ मौजूद शैतान ने उसके हाथ पर 'कैंसर' नामक अत्यंत पीड़ादायक रोग लगा दिया[2909] । उसका हाथ सूज गया, भयंकर रूप से सड़ने लगा, और इसका परिणाम एक असाध्य घाव के रूप में हुआ। उस पीड़ित हाथ को देखने वाले सभी लोगों ने कहा कि इसे काट देना चाहिए, नहीं तो उसका बाकी शरीर सड़ जाएगा। इस भयानक बीमारी से गहराई से परेशान, वह युवक कड़वी रोते हुए ईश्वर-प्रसन्न यूटकियिस के पास गया, और उससे अपनी अक्षुण्ण खोई हुई सेहत को बहाल करने की विनती करने लगा। उसकी ओर से ईश्वर से प्रार्थना करने और पीड़ित हाथ पर पवित्र तेल का अभिषेक करने के बाद, संत ने तीसरे दिन उस युवक को ठीक कर दिया और उसे स्वस्थ होकर विदा कर दिया। अपने ठीक हुए हाथ से निर्लज्ज वीनस की मूर्ति को नष्ट करने के बाद, उस युवक ने ठीक उसी जगह पर अपने निस्वार्थ उपचारक, परम पवित्र पैट्रिआर्क यूटकियिस का एक चित्र बनाया, जहाँ उसे यह बीमारी लगी थी। इसी तरह, संत ने एक अन्य युवक के हाथ को भी ठीक किया, जो एक لاعلاج बीमारी से ग्रस्त था और जिसके बारे में डॉक्टरों ने सलाह दी थी कि उसे काट देना चाहिए। एक अवसर पर, एक दानव-ग्रस्त युवक, जो लगातार अत्यंत कष्टदायक यातनाओं से पीड़ित था, को संत के पास लाया गया। जब आदरणीय संत ने प्रार्थना के साथ उस पर क्रॉस का चिह्न बनाया और उसके माथे पर पवित्र तेल का अभिषेक किया, तो शैतानी शक्ति, मानो किसी अग्नि-भाले से भेदी गई हो, एक भयानक आवाज़ में चिल्लाने लगी, उसके मुँह से झाग निकलने लगा और वह दाँत पीसने लगी। तब यह स्पष्ट हो गया कि उस युवक को एक नहीं, बल्कि कई राक्षसों द्वारा पीड़ा दी जा रही थी। इसके बाद, वह युवक मृतक की भाँति जमीन पर पड़ा रहा, और थोड़ी ही देर में उसने फिर से कई दिनों तक वही, और वास्तव में उससे भी अधिक तीव्र यातनाएँ सहना शुरू कर दिया। संत यह देखकर चकित थे कि भूत-प्रेत ने इतने लंबे समय तक उस युवक को क्यों नहीं छोड़ा था, और संत ने अपने पुरोहित यूस्टैथियस (इस संतों के जीवनचरित के संकलक) को उस युवक से पूछने का निर्देश दिया कि वह कौन है, कहाँ से आया है, कहाँ रहता है, जीविकोपार्जन कैसे करता है, और भूत-प्रेत का कब्ज़ा कैसे शुरू हुआ। इन सवालों के जवाब में, उस युवक ने अपने बारे में सब कुछ विस्तार से बयां किया। 'मैं,' उसने कहा, 'एक्रोपोलिस में स्थित संत जॉन के मठ में एक भिक्षु था। तब मैंने संन्यास त्याग दिया, संसार में आ गया, विवाह कर लिया, बहुत पाप किए, और अब, जैसा आप देख सकते हैं, मैं इन सबके लिए ईश्वर द्वारा दंडित किया जा रहा हूँ और कष्ट भोग रहा हूँ—लेकिन यदि आपके पास कोई उपाय है, तो कृपया मेरी मदद करें।" यह सुनकर, संत ने, जैसा कि उनका रिवाज था, ईश्वर से एक भक्तिपूर्ण प्रार्थना की, और साथ ही उस युवक को अपने पुराने मठ में लौटने और फिर से एक भिक्षु बनने के लिए प्रोत्साहित किया। जब उस युवक ने ईश्वर के बिशप, यूटकियिस की प्रार्थनाओं के माध्यम से ऐसा करने का सच्ची तत्परता से वादा

[2908] रोमनों के लिए वीनस, यूनानियों के लिए एफ्रोडाइट – प्रेम और सौंदर्य की देवी – हेफ़ेस्टस की पत्नी, जो समुद्र के झाग से उत्पन्न हुई थी। उन्हें नग्न रूप में चित्रित किया जाता था।

[2909] कर्क – राशि चिह्न।

कयिा, तो वह तुरंत राक्षसों के कष्ट से मुक्त हो गया। एक बार, एक कोढ़ी उपचार की वनिती लेकर पूजनीय पतिा के पास आया, और संत के यह आदेश देने पर कि वह कभी शराब न पिए, वह स्वस्थ हो गया।

एक अन्य व्यक्ति, अपने पड़ोसी के साथ ववािद के दौरान, अदालत में झूठी गवाही दे चुका था और, धर्मी न्यायाधीश – ईश्वर – से दंड स्वरूप, उसने अपनी दृष्टि खो दी, और पूरे एक साल तक उसे कोई रोशनी दखिाई नहीं दी। दूसरों के नेतृत्व में, वह पश्चाताप करते हुए इस चमत्कार करने वाले के पास आया, अपने पाप का उसके सामने स्वीकार करते हुए और अपनी आध्यात्मकि पीड़ा तथा साथ ही अपनी शारीरकि बीमारी के लिए उपचार की मांग करते हुए। ईश्वरीय दया, बशिप के अधकिार, और मसीह के इस पवत्रि पुरुष की प्रार्थनाओं के द्वारा, जो प्रभु को प्रसन्न करने वाली थीं, उसे दोनों ही चीज़ें प्राप्त हुईं और वह पहले की तरह अपनी आँखों से देखते हुए घर लौट आया।

अनगनित पुरुष, महलिाएँ और बच्चे जो वभिन्नि प्रकार की बीमारयिों से पीड़ति थे, उस दयालु चकित्सिक, संत यूटकियिस के पास उमड़ पड़े, और उनकी प्रार्थनाओं के माध्यम से, सभी को शीघ्र स्वास्थ्य लाभ मलिा। फ़ारसी आक्रमण के दौरान, आस-पास के क्षेत्रों और कस्बों से, जन्हिें दुश्मन ने जीतकर बर्बाद कर दयिा था, लोगों की एक बड़ी भीड़ अमासयिा में इकट्ठी हो गई; वहाँ उनकी भीड़ के कारण भीषण अकाल पड़ा; जसि पर इस ईश्वर के पुरुष ने यह सुनश्चिति कयिा कि उसके मठ में भोजन की कोई कमी न हो। हर दनि, अनगनित लोग भोजन प्राप्त करने के लिए उनके मठ में आते थे, और अंततःएक दनि मठ के व्यवस्थापकों ने संत को सूचति कयिा कि अनाज और आटे की कमी के कारण, न केवल आने वालों को देने के लिए कुछ भी नहीं बचा था, बल्कि उनके पास खुद के खाने के लिए भी कुछ नहीं था। तब पूजनीय पतिा अनाजघर और भंडारगृह में गए और वहाँ वास्तव में कुछ भी न देखकर, उन्होंने ईश्वर से प्रार्थना की और भाइयों को सांत्वना देते हुए कहा: 'ईश्वर पर अपना वश्विास रखो और वश्विास करो कि जो कुछ भी तुम ज़रूरतमंदों को दोगे, ईश्वर तुम्हें उसका दोगुना लौटाएंगे। मैं ईश्वर की दया में दृढ़ता से आशा करता हूँ – जैसे सदिोन के ज़रेफ़ाथ में भवष्यिवक्ता एलयिाह के दनिों में वधिवा का घड़ा सूखा नहीं था (देखें 3 राजा 17:16), वैसे ही ई , नश्चिय ही इस समय हम भी आवश्यक वस्तुओं की कमी नहीं झेलेंगे, बल्कि सभी खाएँगे और तृप्त होंगे और हमारे प्रभु परमेश्वर की स्तुति करेंगे।' संत के वश्विास और वचनों के अनुसार, वास्तव में ऐसा ही हुआ; क्योंकि न केवल जो रोटी लगातार बांटी जा रही थी वह खत्म नहीं हुई, बल्कि उसकी मात्रा बार-बार बढ़ती गई: जतिनी अधकि रोटी आने वालों को दी जाती थी, अनाज की कोठरी और गोदाम में कुल मात्रा उतनी ही अधकि बढ़ जाती थी, ताकि अकाल के दनिों में सभी यात्रयिों, आगंतुकों और उनके अपने घर के सदस्यों को भरपूर भोजन मलिा।

ईश्वर के सेवक यूटकियिस के पास भवष्यिवाणी का वरदान भी था। सम्राट जस्टनियिन की मृत्यु से तीन साल पहले, सम्राट के भतीजे जस्टनि अमासयिा में थे; उस समय वे दरबारी पद पर थे और कसिी शाही मशिन पर जा रहे थे। उन्हें एक ओर ले जाकर, धन्य यूटकियिस ने उनसे कहा: 'मेरी बात सुनो, प्रभु कुरोपालैट्स!* यद्यपि मैं एक पापी हूँ, फरि भी मैं अपने परमेश्वर का सेवक और याजक हूँ, जन्होंने मुझे यह प्रकट कयिा है कि आपके चाचा की मृत्यु के बाद, आप राज्य करेंगे। इसलिए, सावधान रहना कि कई कार्यों में व्यस्त रहते हुए, तुम वलिंब न करना, बल्कि अपनी रखवाली करना, ताकि तुम प्रभु की इच्छा से जल्द ही सौंपी जाने वाली सेवा को पूरा करने के योग्य सद्धि हो सको।" यह सुनकर, जस्टनि ने ईश्वर का धन्यवाद कयिा और पवत्रि भवष्यिवक्ता से उनकी मध्यस्थता का अनुरोध कयिा। ठीक इसी तरह, उन्होंने बाद में टबिेरयिस को लखिे एक पत्र में भी यही भवष्यिवाणी की, जो जस्टनि के बाद सहिासन पर चढ़ने वाला राज्यपाल था। संत यूटकियिस ने सीरयिा में उन्हें नम्निलखिति लखिा: 'ईश्वर ने अभी तक आपको लोगों के शासन का केवल एक हस्सिा ही प्रदान कयिा है, लेकनि बहुत जल्द वह आपको राजसी अधकिार की पूरी बागडोर सौंपेंगे,' जो थोड़ी ही देर बाद सच साबति हुआ।

सम्राट जस्टनियिन की मृत्यु के बाद, उनके भतीजे जस्टनि ने शाही सहिासन संभाला; और जब उपर्युक्त कॉन्स्टेंटनिोपल के पैट्रआिर्क जॉन स्कॉलैस्टकिस की मृत्यु हो गई, तो परम पावन पैट्रआिर्क यूटकियिस को बारह वर्ष और आठ महीने के नर्विासन के बाद, संपूर्ण लोगों के अकथनीय आनंद के लिए, पैट्रआिर्क के पद पर बहाल कयिा गया; उनका स्वागत भूमि पिर और समुद्र में दोनों जगह कयिा गया, और लोग यह उद्घोषणा कर रहे थे, *'धन्य है वह जो प्रभु के नाम पर आता है!'* उन्होंने रवविार, 3 अक्टूबर को अपना सहिासन ग्रहण कयिा, और इसी दनि, कुछ ही समय पहले, नए राजा के आदेश से, संत यूटकियिस के दुश्मन—प्रांतीय गवर्नर एफ्रेम और एडयिस—को दोषी ठहराकर मृत्युदंड दे दयिा गया था।

परम पावन पैट्रआिर्क यूटकियिस ने अपने शेष जीवन को शांतसि व्यतीत कयिा, और चर्च को ऑर्थोडॉक्स शक्षिा और चमत्कारों से समृद्ध कयिा: अपनी प्रार्थनाओं के द्वारा, उन्होंने प्लेग के एक अचानक प्रकोप को रोका और बीमारों को ठीक कयिा। इसके बाद, वे स्वयं भी प्रकृतकि नयिमों के अधीन होकर, मसीह के परम पवत्रि पुनरुत्थान के पर्व पर बीमार पड़ गए। धर्मपरायण सम्राट टबिेरयिस उनसे मलिने आए, और संत ने सम्राट को भवष्यिवाणी की कि संत की मृत्यु के तुरंत बाद उनकी भी मृत्यु हो जाएगी, जो वास्तव में सच साबति हुई। पवत्रि सप्ताह भर बीमार रहने के बाद, परम पावन यूटकियिस ने थॉमस संडे को अपने सभी पुरोहतिों को बुलाया और सभी को शांतकि आशीर्वाद और अंतमि चुंबन देने के बाद, रात होते ही प्रभु में साधारण मृत्यु की नद्रिा में लीन हो गए; जबकि उनकी पवत्रि आत्मा पवत्रि धर्मगुरुओं के साथ शामलि होने के लिए अक्षय शाश्वत दनि में प्रस्थान कर गई। संत यूटकियिस ने नर्विासन से लौटने के बाद चार साल और छह महीने तक पैट्रआिर्क का पद संभाला; अपने नधिन के समय उनकी आयु सत्तर वर्ष थी। संत यूटकियिस को अपोस्टोलकि चर्च में वेदी की सीढ़ियों के नीचे सम्मानपूर्वक दफनाया गया, जहाँ पवत्रि प्रेरतिों एंड्रयू, टमिोथी और ल्यूक की अवशेषें रखी गई थीं[2910] ।

उनकी पवत्रिता पैट्रआिर्क यूटकियिस के नधिन के बाद, धर्मपरायण सम्राट टबिेरयिस केवल चार महीने और आठ दनि ही जीवति रहे और, संत की भवष्यिवाणी के अनुसार, शांतपिूर्वक नधिन कर गए। इन सब के लिए, आइए हम पतिा और पुत्र और पवत्रि आत्मा, त्रमिूर्तमिें एक ईश्वर की महमिा करें। आमीन।

कॉन्टाकयिन, स्वर 8:

हे लोगों, हम सभी दव्यि यूटकियिस के बारे में वश्विास के साथ गाएँ, और प्रेम से उनका सम्मान करें, क्योंकि एक महान चरवाहे और सेवक, एक अतबिुद्धमिान शक्षिक, और वधिर्मों के खंडनकर्ता के रूप में, वह हम सभी के लिए प्रभु से प्रार्थना करते हैं।

---

* कुरोपलातेस – एक बीजान्टनि दरबारी पद, जो शुरू में शाही महल के उच्चतम रक्षक (φυλακή της αύλής) से जुड़ा था, जो बाद में पूरी तरह से मानद बन गया।

पूजनीय प्लाटोनडिा की स्मृति

6 अप्रैल को स्मरणोत्सव

संत प्लेटोनडिा मूलतःएक डीकोनेस थीं[2911] । बाद में, एकांत जीवन में समर्पति होने की चाह में, उन्होंने संसार त्याग दयिा और नसिबियिन मरुभूमि[2912] में चली गईं, जहाँ उन्होंने कुंवारी कन्याओं के लिए एक मठ की स्थापना की।

[2910] पैट्रआिर्क यूटकियिस की मृत्यु 582 में हुई। 1246 में, संत यूटकियिस का शरीर कॉन्स्टेंटनिोपल में चर्च ऑफ द अपोस्टल्स से वेनसि में स्थानांतरति कर दयिा गया था। उन्होंने पहली बार 562 से 565 तक, और दूसरी बार 577 से 582 तक कॉन्स्टेंटनिोपल के पैट्रआिर्केट का शासन कयिा।

[2911] प्रारंभकि ईसाई चर्च में, 'डीकोनेस' शब्द (जसिका अर्थ है 'मैं सेवा करती हूँ', 'मैं सहायता करती हूँ') उन महलिाओं के लिए प्रयुक्त होता था जो धार्मकि सेवाओं के दौरान चर्च में व्यवस्था बनाए रखती थीं और महलिाओं को बपतस्मिा संस्कार देने में बशिप की सहायता करती थीं। डीकॉनेस के कर्तव्य इस प्रकार थे: वे महलिाओं को बपतस्मिा के लिए तैयार करती थीं, उन्हें यह सखिाती थीं कि बपतस्मिा देने वाले द्वारा पूछे जाने पर उन्हें कैसे और क्या जवाब देना चाहिए, और बपतस्मिा के बाद उन्हें अपना आचरण कैसे रखना चाहिए; वे महलिाओं का बपतस्मिा कराने में बशिप की सहायता करती थीं; चर्च के महलि अनुभाग में व्यवस्था बनाए रखती थीं (प्राचीन चर्च दो भागों में वभिाजति थे जो एक-दूसरे से अलग थे, एक पुरुषों के लिए और दूसरा महलिाओं के लिए), और उस दरवाजे पर भी पहरा देती थीं जसिसे महलिाएं चर्च में प्रवेश करती थीं, तथा अयोग्य व्यक्तयिों को प्रवेश करने से रोकती थीं; बशिप या प्रेस्बटिरों की महलिाओं के साथ होने वाली बातचीत के दौरान उपस्थति रहती थीं, और इसी तरह। डीकोनेस को पुरोहति वर्ग में गनिा जाता था और इसलिए उन्हें अभषिेक की एक वशिेष रस्म के माध्यम से उनके पद पर नयिुक्त कयिा जाता था। सम्मानति और पवत्रि जीवन वाली महलिाओं को आमतौर पर डीकोनेस के रूप में चुना जाता था - आम तौर पर कुंवारी या वधिवाएं, और इसके अलावा चालीस वर्ष से कम आयु की नहीं।

[2912] नसिीबसि मेसोपोटामयिा में, मगिडोनयिा नदी के तट पर स्थति था।

अपने धर्मपरायण और वास्तव में तपस्वी जीवन के माध्यम से, पूजनीय प्लेटोनडिा ने मठ की बहनों के लिए अनुसरण करने हेतु एक उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत कयिा।

प्लैटोनडिा द्वारा स्थापति मठ के नयिमों में वशिष कठोरता थी: बहनें दनि में केवल एक बार ही भोजन करती थीं और प्रार्थना के अलावा अपना सारा समय वभिन्नि प्रकार के कामों और गतविधियिों, वशिष रूप से सलिाई-कढ़ाई में लगाती थीं। लेकनि शुक्रवार को, जो हमारे लिए प्रभु के उद्धारकारी दुख और क्रूस पर चढ़ाए जाने की याद का दनि है, कन्वेंट में सभी गतविधियिाँ बंद हो जाती थीं और पूरा दनि केवल प्रार्थना और ईश्वर के चतिन के लिए समर्पति होता था। इस दनि, बहनें सुबह से शाम तक चर्च में रहती थीं, जहाँ वे प्रार्थनाओं के बीच के अंतराल में पवत्रि धर्मग्रंथ के पाठ और व्याख्या को सुनती थीं।

सभी को न केवल वचन से बल्कि कर्म से भी सखिाते हुए, और अपने सदाचारी जीवन द्वारा परमेश्वर को प्रसन्न करके, पूजनीय प्लाटोनडिा का नधिन हो गया और वह इस क्षणकि जीवन से प्रभु के पास चली गईं, ताकि वह स्वर्गीय नविासों में अनंतकाल तक आनंदति हो सकें[2913] ।

- इसी दनि, हम मोरावयिा के महाधर्माध्यक्ष, प्रेरतिों के तुल्य संत मेथोडयिस का स्मरण करते हैं (उनके जीवन के बारे में 1 मई को देखें)।
- उसी दनि, फारस के एक सौ बीस शहीदों का स्मरण, जनि्हें चौथी शताब्दी में राजा शापूर द्वारा खंभे पर जला दयिा गया था।
- इस दनि, हम पवत्रि शहीदों यर्मियाह और याजक आर्चलियिस का स्मरण करते हैं।

20 अप्रैल

7 अप्रैल (पुराने कैलेंडर के अनुसार)

आज के दनि, संत रूफनिस डकिन, संत अक्वलिनिा शहीद, और उनके साथ 200 कुंवारी कन्याओं का स्मरणोत्सव है, जो लगभग 310 ईस्वी में सनिोप में नधिन हो गए थे।

उसी दनि, हमारे पूजनीय पति पेरयिास्लाव के दानयिल की स्मृति।

हमारे पूजनीय पति जॉर्ज कन्फैसर, मटिीलेन के मेट्रोपॉलटिन की स्मृति

7 अप्रैल को स्मरणोत्सव

[291429152916]अपने युवा काल से ही मसीह से प्रेम करने वाले, हमारे पूजनीय पति जॉर्ज एक भक्षिु बन गए, उन्होंने एक तपस्वी और सदाचारी जीवन जयिा, और वनिम्रता में बेजोड़ उत्कृष्टता हासलि की। वर्ष में, लयिो द इसाउरयिन[2917]

[2913] प्रतष्ठिति प्लेटोनडिा का लगभग 308 ईस्वी में नधिन हो गया।

[2914] सम्राट कॉन्स्टेंटनि पंचम कोप्रोन्यमस (741–775) ने अपने पति, लयिो द इसाउरयिन, से भी अधकि कठोरता से प्रतमिा पूजा का उत्पीड़न कयिा। वह प्रतमिा पूजा को वधिर्म के रूप में औपचारकि रूप से समाप्त करना चाहता था और, इस उद्देश्य के लिए, उसने 754 में कॉन्स्टेंटनिोपल में एक परषिद बुलाई, जसिे एक सार्वभौमकि परषिद के रूप में नामति कयिा गया था। इसमें 338 बशिप शामलि हुए, लेकनि एक भी पैट्रआर्क नहीं। वहाँ यह आदेश दयिा गया कि प्रतमिा पूजा मूर्तपिूजा है, और यूखरस्टि उद्धारकर्ता मसीह की एकमात्र छवि है। परषिद ने प्रतमिा पूजा के सभी रक्षकों और प्रतमिाओं की पूजा करने वालों, वशिष रूप से सेंट जॉन ऑफ़ डेमास्कस को चर्च से बहष्कृत कर दयिा। सेंट आइरीन ने 780 से 790 और 797 से 802 तक शासन कयिा, जब तक कि उनका बेटा कॉन्स्टेंटनि पोर्फयिोगेनटिस नाबालगि था। उन्होंने प्रतमिा पूजन के पक्ष में घोषणा की। 787 में, आइरीन ने नकिेया में दूसरे नकिेया परषिद और सातवें सार्वभौमकि परषिद का आयोजन कयिा, जसिकी अध्यक्षता कॉन्स्टेंटनिोपल के पैट्रआर्क तारासयिस ने की। 367 पादरयिों से मलिकर बनी इस परषिद में, प्रतमिा पूजा को फरि से बहाल कयिा गया।

[2915] लेसबोस द्वीप पर स्थति मतिलिनिी - (एजयिन सागर में सबसे बड़ा), प्राचीन ट्रॉय और मसियिा (एशयिा माइनर) के पास - की आबादी 36,000 तक है; यह द्वीप पहाड़ी, उपजाऊ और वन, अनाज और शराब से समृद्ध है। इसे 1462 में मेहमद के अधीन तुर्की में मलिा लयिा गया था

[2916] प्राचीन काल में, इस द्वीप के शहर—क्रोइसस, परि्रा और मटिलिनि—वशिष रूप से खूब फलते-फूलते थे

[2917] लयिो द इसाउरयिन 717 से 741 तक राज करता था। वह एक संपन्न कसिान परविार से आया था और जस्टनियिन द्वतिीय के अधीन अपनी सैन्य सेवा के माध्यम से उसने खुद को इतना प्रतष्ठिति कयिा कि, 717 में, उसे सार्वभौमकि स्वीकृति के साथ शाही सहिासन पर पदोन्नत कयिा

के शासनकाल के दौरान, वह मसीह के लिए एक कन्फेशर बने, और उन्होंने आइकनोकलास्ट्स के हाथों उत्पीड़न और अत्याचार को सहन किया। बाद में, ऑर्थोडॉक्स सम्राटों कॉन्स्टेंटिन और आइरीन के शासनकाल में, उन्हें लेसबोस द्वीप के मेट्रोपॉलिटन सिंहासन, माइटिलिनि शहर में बिशप के पद पर पदोन्नत किया गया। संत जॉर्ज अत्यंत दयालु थे, वे उदार दान से भूखों को भोजन कराते थे। अपने महान आत्म-संयम के द्वारा, वह स्वर्गदूतों का मित्र बन गया और अशुद्ध आत्माओं को भगाकर तथा असाध्य रोगों को ठीक करके, उसने स्वयं को एक चमत्कार-कर्ता साबित किया। सम्राट लियो द आर्मेनियन के शासनकाल को देखने के बाद, जिसने प्रतिमा-भंग को पुनर्जीवित किया था[2918] , वह एक बार फिर, अब एक वृद्ध व्यक्ति के रूप में, पवित्र प्रतिमाओं के लिए उत्पीड़न सहने लगा। सम्राट लियो द आर्मेनियन के शासनकाल, प्रतिमा-भंजन की पुनरावृत्ति और संत जॉर्ज के निर्वासन से भी पहले, माइटिलिनि में कुछ ऐसे संकेत थे जो मसीह के चर्च के भीतर उथल-पुथल और आपदाओं के निकट आगमन का पूर्वाभास दे रहे थे। एक दिन, बंदरगाह के पास, पवित्र महान शहीद थियोडोरा के चर्च में, संध्या के समय जब मंडली 'किरी, एलेइसन' गा रही थी – हे प्रभु, दया करो – वेदी पर रखा पवित्र क्रूस अचानक और एक बड़े शोर के साथ किसी अदृश्य शक्ति द्वारा अपनी जगह से उठा लिया गया और छत की ओर ऊपर उठ गया; फिर, अपने ऊपरी सिरे को नीचे की ओर झुकाते हुए, वह जमीन पर गिर पड़ा। इस दृश्य को देखने वाले लोग भय और आतंक से ग्रस्त हो गए; उन्होंने अपनी आँखें और हाथ उठाकर, सभी ने लंबे समय तक जोर-जोर से 'किरी, एलेइसन' की पुकार लगाई, और चर्च छोड़ने से इनकार कर दिया, क्योंकि उन्हें उम्मीद थी कि लेसबोस द्वीप पर कोई अचानक आपदा आने वाली है। उस समय, पूजनीय सिमोन अपने छोटे भाई जॉर्ज के साथ चर्च में थे, जो बाद में पहले जॉर्ज के उत्तराधिकारी बने[2919] । सिमोन, जो दैवीय अंतर्दृष्टि वाले व्यक्ति थे, ने लोगों से आँसू भरी आँखों से कहा:

'हे भाइयों, बातें वैसी नहीं होंगी जैसी आप उम्मीद कर रहे हैं। ईश्वर इस भूमि को पूरी तरह से नष्ट नहीं करेंगे, लेकिन कुछ ही दिनों में एक ऐसा राजा सिंहासन पर आरूढ़ होगा जो ईश्वर से घृणा करता है और उसका विरोध करता है; वह पवित्र प्रतिमाओं को ज़मीन पर फेंक देगा और चर्च को उसकी सुंदरता से वंचित कर देगा।'

कुछ दिनों बाद, एक विशाल और भयंकर जंगली सूअर—जिसके कान और पूंछ काट दी गई थीं—चर्च और पवित्र स्थल में घुस आया—चर्च का दरवाज़ा, संयोग से, खुला रह गया था—और वहाँ ऊँची जगह पर लेट गया। यह देखकर, चर्च के चौकीदार तुरंत सूअर को भगाने लगे, लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ, क्योंकि वह बहुत उग्र था और जो भी उसे पवित्र स्थल से बाहर निकालने की कोशिश करता, उस पर झपट पड़ता, जिससे वे भाग खड़े होते थे। इसके बाद, एक विशाल खंभा लाकर, उन्होंने उस जानवर को तब तक पीटा जब तक कि वह लंबे समय तक खून नहीं बहाने लगा और, थककर, बड़ी मुश्किल से उसे भगाने में कामयाब रहे। यह जानकर, उन्हीं धन्य सिमियोन ने कहा:

'मेरे बच्चों, विश्वास करो कि यह जंगली सूअर उस व्यक्ति का संकेत है जो—ईश्वर की अनुमति से—यहाँ एक बिशप बनेगा, जिसका जीवन और चरित्र एक सूअर के समान होगा।'

[2920]यह सब जल्द ही घटित हुआ। उपर्युक्त सम्राट लियो द आर्मेनियन ने, सिंहासनारोहण करने पर, ईश्वर की कलीसिया के विरुद्ध एक उत्पीड़न शुरू किया और, साथ ही, कई बिशपों को कॉन्स्टेंटिनोपल बुलाया, और उन्हें

गया। उन्होंने अपना ध्यान धार्मिक मामलों की ओर मोड़ा और अन्य बातों के अलावा, प्रतिमाओं की पूजा के संबंध में फैली अंधश्रद्धा को पुलिसि उपायों द्वारा समाप्त करने का संकल्प लिया। शुरुआत में (726 में), उन्होंने केवल प्रतिमाओं की पूजा के खिलाफ एक फरमान जारी किया, जिसमें आदेश दिया गया कि उन्हें चर्चों में और ऊँचाई पर रखा जाए ताकि लोग उन्हें चूम न सकें। 730 में एक फरमान जारी किया गया जिसमें चर्चों से प्रतिमाओं को हटाने का आदेश दिया गया। लियो द इसौरीयन यह सुनिश्चित करने में सफल रहा कि प्रतिमाओं को अस्थायी रूप से धार्मिक उपयोग से हटा दिया जाए।

[2918] लेव द आर्मेनियन ने 813 से 820 तक शासन किया।

[2919] लेसबोस द्वीप पर, मितिलिन शहर में, जॉर्ज नाम के दो मेट्रोपॉलिटन थे। उनमें से पहला, जिसके बारे में यह संजीवनी लिखी गई है, 816 में लियो द आर्मेनियन के शासनकाल में निर्वासित कर दिया गया था, जबकि दूसरे जॉर्ज, सिमियन द क्लैरवॉयंट के भाई थे। उन्हें पहले जॉर्ज ने कॉन्स्टेंटिन और आइरीन के शासनकाल (762 में) के दौरान एक प्रेस्बिटर के रूप में नियुक्त किया था, और वे सम्राट माइकल द स्टैमिर (820–829) के शासनकाल में पदभार संभालने के लिए उभरे, जिन्होंने सिंहासनारोहण पर ऑर्थोडॉक्स को स्वतंत्रता प्रदान की। इस दूसरे जॉर्ज को प्रतिमा-विरोधी सम्राट थियोफिलस (829–848) द्वारा ऑर्थोडॉक्सी के प्रति अपनी निष्ठा के कारण निर्वासित कर दिया गया था; थियोफिलस की मृत्यु के बाद, धन्य सम्राज्ञी थियोडोरा (842–865) ने कॉन्स्टेंटिनोपल के पैट्रिआर्क, परम पावन मेथोडियस के साथ मिलकर ऑर्थोडॉक्सी को फिर से स्थापित किया और 842 में दूसरे जॉर्ज को निर्वासन से वापस बुलाया; ईश्वर को समर्पित जीवन जीने के बाद, वे सिंहासन पर रहते हुए ही शांतिपूर्वक निधन कर गए।

[2920] थेओडोटस प्रथम कैसिटेर ने 815 से 821 तक पैट्रिआर्केट पर शासन किया।

मूर्तभिंजनवादी वधिर्म को अपनाने के लिए मनाया। हमारे पूजनीय पिता जॉर्ज, मिटिलिनि के मेट्रोपॉलिटिन, को भी अन्य बशिपों के साथ बुलाए जाने पर, उन्होंने स्वयं को मसीह का एक नडिर योद्धा साबति कयि। हालाँकि कई लोग सम्राट के वधिर्म को मानते थे, परन्तु उन्होंने अपनी सच्ची बुद्धि से सम्राट, झूठे पादरी थियोडोटस (जो कैसटिरेस के नाम से जाना जाता था) और उनके वचिारों से सहमत अन्य वधिर्मयिों को लज्जति कर दयिा, और उनमें से कुछ को अपनी गलती का एहसास कराया।

राजा और पैट्रआर्क, उसकी फटकार को सहन न कर सके, उसे खेरसन[2921] में नर्विासति कर दयिा, और उसकी जगह माइटलिनि का मेट्रोपोलटिन एक ऐसे वधिर्मी को नयिुक्त कयि, जसिने एक जंगली सूअर की तरह मसीह की दाख की बारी को उजाड़ा और अपवत्रि कयि: उसने पवत्रि प्रतमिाओं को रौंदा, और मूर्खतापूर्ण ढंग से वचन के झुंड को भ्रमति कयि। हालाँकि, संत जॉर्ज ने नर्विासन में अपने शेष दनि बतिाए, और मसीह की कृपा से कई चमत्कार कए। जब उनके नधिन का समय नकिट आया, तो स्वर्ग में एक अत्यंत तेजस्वी तारा चमका - जो उनके धन्य प्रस्थान का अग्रदूत था - जो लेसबोस पर भी दखिाई दयिा। इस तारे से, माइटलिनि में मंडली ने अपने चरवाहे, संत जॉर्ज, के प्रभु के पास प्रस्थान को पहचाना।

अपने पुण्य कर्मों के साथ संत का जीवन संसार के लिए एक प्रकाश था। ईश्वर ने एक तेजस्वी तारे से उनके धन्य नधिन को गौरवान्वति कयि, और उनके नधिन के बाद, अपने प्रयि सेवक को गौरवान्वति करने के लिए, उन्होंने उनके अवशेषों से चमत्कारी उपचारात्मक झरने बहाए।

संत कैलओिपयिस की शहादत

7 अप्रैल को स्मरण कयि जाता है

पम्फलियि के पेरगा में[2922] एक धर्मपरायण और ईश्वर-भयभीत महलि थयिोक्लयि रहती थीं; वह और उनका परविार दोनों ईश्वर के भय से परपिूर्ण थे; एक सदाचारी जीवन जीते हुए, थयिोक्लयि गरीबों को उदारतापूर्वक दान देती थीं। सम्मानति व्यक्ति से ववािहति, जो एक सेनेटोरयिल और पैट्रसियिन परविार से संबंधति था[2923] , थयिोक्लयि कई वर्षों तक नस्संितान रहीं। ईमानदारी से प्रार्थना करके ईश्वर से एक संतान की याचना करने के बाद, उन्होंने अपने ववािह के बहुत समय बाद गर्भधारण कयि। उस समय, उनके पति का नधिन हो गया, और वह एक वशिाल संपत्ति की उत्तराधकिारी बन गईं। एक पुत्र को जन्म देने पर, उन्होंने उसका नाम कैलओिपे रखा।[2924] उसे वज्ञिान की शक्षिा देते हुए, थयिोक्लयि ने सबसे बढ़कर उसमें ईश्वर का भय जगाने और उसे पवत्रि धर्मग्रंथों की बुद्धि सखिाने का प्रयास कयि। उन दनिों मूर्तपिूजा व्यापक रूप से प्रचलति थी; सत्य झूठ में ढँका हुआ था, और अधकिांश लोग घृणति मूर्तयिों की पूजा करते थे और उन्हें बलदिान चढ़ाते थे। हालाँकि, प्रार्थना और उपवास संत कैलओिपयिस के जीवन के स्थायी साथी थे। जब न्यायाधीश को पता चला कि वह पवत्रि युवक एक ईसाई था, तो उसकी माँ, धन्य थयिोक्लयि ने, अपने बेटे को पर्याप्त मात्रा में पैसा और कपड़े दए, और कुछ नौकरों को उसके साथ भेजकर, उसे अन्यायपूर्ण दोषसद्धि से बचने के लिए जहाज द्वारा दूसरे देश भेज दयिा। इस प्रकार, धन्य कैलओिपयिस सलिसिियि के पोंपयिोपेल के लिए रवाना हुए[2925] । वहाँ

[2921] चेरसन या कुर्सुन – एक यूनानी उपनविेश, चेरसोनेसोस टौरकिा के शहरों में सबसे महत्वपूर्ण, जो वर्तमान सेवस्तोपोल के पास स्थति है – यह स्थल जहाँ ग्रैंड प्रसि व्लादमिीर का बपतस्मिा हुआ था।

[2922] *पम्फलियि* – प्राचीन काल में एशयि माइनर के तट का एक हस्सिा, जो लसियि और सलिसियि से घरि हुआ था और पम्फलियिन सागर (अब अदाला की खाड़ी) के साथ फैला हुआ था। एशयि माइनर के पूरे क्षेत्र की ऐतहिासकि कस्मित को साझा करते हुए, पम्फलियि क्रमशः फारसी, मैसडिोनयिाई और सीरयिाई शासन के अधीन आया, फरि फारसी साम्राज्य का हस्सिा बन गया और, 120 ईसा पूर्व में, एक रोमन प्रांत बन गया। जनसंख्या, जसिमें स्वदेशी लोगों और सलिसियि तथा ग्रीस के आप्रवासयिों का मश्रिण था, अपनी रीति-रिवाजों और परंपराओं में सलिसियिनों के समान थी और समुद्री डकैती में बड़े पैमाने पर संलप्ति थी। टॉरस पर्वत श्रृंखला से पार-पार होकर गुज़रने वाले इस मुख्य रूप से पहाड़ी क्षेत्र के सबसे महत्वपूर्ण शहर थे: अतालयि (अदालयि), साइड (एस्की-अदालयि), कबिरि, एस्पएिड, पेरगा और सोलयिन।

[2923] रोम में, पैट्रशियिन कुलीन वंश के व्यक्ति थे; एक सीनेटर वह अधकिारी था जो राज्य में सर्वोच्च पद धारण करता था।

[2924] 'कैलयिोपयिस' एक ग्रीक शब्द है जसिका रूसी में अनुवाद 'सुंदर, आकर्षक दृष्टि वाला' होता है।

[2925] सलिसियि एशयि माइनर का एक प्रांत था।

यह देखकर कि दुष्ट नेता मैक्सिमिस में घृणित मूर्तियों के सम्मान में बलिदान, गायन और नृत्य का आयोजन कर रहा था, पवित्र युवक चकित हो गया और किसी से पूछा: 'तुम्हारे आनंद का कारण क्या है?'

उन्होंने उत्तर दिया, 'आज हमारे देवताओं के सम्मान में एक त्योहार है, आओ और हमारे भोज में शामिल हो जाओ।'

संत ने कहा, 'मैं एक ईसाई हूँ, और लेंट के दौरान मैं अपने मसीह के सम्मान में पर्व मनाता हूँ; मसीह की स्तुति करने वाले होंठों के लिए अधर्मी देवताओं की अपवित्र बलिदानों में भाग लेना अनुचित है।'

संत के ये शब्द कमांडर मैक्सिमिस के कानों में पड़े, और क्रोध से आग-बबूला होकर उसने उस पवित्र युवक को पकड़कर पूछताछ के लिए अपने सामने लाने का आदेश दिया।

"तुम्हारा नाम क्या है?" सेंट कैलिओपियस के सेनापति ने जब उसे अदालत के सामने लाया गया तो पूछा।

'मैं एक ईसाई हूँ,' संत ने उत्तर दिया, 'और मेरा नाम कैलिओपियस है।'

'अब, जब सारा ब्रह्मांड,' कमांडर ने कहा, 'देवताओं के सम्मान में एक भोज मना रहा है, तो तुम अकेले क्यों हो, हमारे उत्सव में शामिल होने से अनिच्छुक, किसी तरह के भ्रम में खोए हुए?'

'यह आप ही हैं,' संत कैलियोपियस ने उत्तर दिया, 'जो स्वयं अंधकार और भ्रम में चल रहे हैं, क्योंकि आपने जीवित ईश्वर, स्वर्ग और पृथ्वी के स्रष्टा, जिन्होंने अपने वचन से सभी चीज़ों की रचना की, को त्याग दिया है, और मानव हाथों के काम – एक निर्जीव पेड़ और एक दरार वाले पत्थर – की पूजा करते हैं।'

'तुम्हारी जवानी तुम्हें साहसी बनाती है,' कमांडर ने आपत्ति जताई, 'जो तुम्हें स्वयं अनगिनत यातनाओं को सहने के खतरे में डाल रही है! हमें बताओ, तुम किस देश के हो, और किस वंश से हो?'

'मैं पम्फुलीया के पेरगा से हूँ,' संत ने उत्तर दिया, 'सेनेटोरियल और पैट्रिशियन वंश से, लेकिन मेरे लिए सबसे महत्वपूर्ण, और जिसे मैं सर्वोच्च सम्मान में रखता हूँ, वह यह है कि मैं एक ईसाई हूँ।'

'क्या तुम्हारे माता-पिता हैं?' कमांडर ने पूछा।

'हाँ, मेरी एक माँ है,' संत ने उत्तर दिया, 'लेकिन मेरे पिता बहुत पहले मर गए थे।'

'मैं महान सूर्य और सभी देवताओं की शपथ खाकर कहता हूँ,' कमांडर ने उत्तर दिया, 'कि यदि तुम देवताओं की पूजा करोगे, तो मैं अपनी एकमात्र बेटी का विवाह तुमसे कर दूँगा।'

'अगर मैं शादी करना चाहता,' संत ने उत्तर दिया, 'तो मैं तुम्हारी बेटी को अपनी पत्नी बना सकता था और उसे अपनी माँ के घर ले जा सकता था। लेकिन यह जान लो: मैंने अपने ईश्वर, मसीह, जिन्होंने मुझे अपनी ही छवि में बनाया है, से यह व्रत लिया है कि मैं इस नश्वर शरीर को पवित्र कुँवारी अवस्था में रखूँगा और इसे उनके धर्मी न्याय के सामने निर्दोष प्रस्तुत करूँगा।' तुम अपनी मर्जी से करो, लेकिन मैं एक ईसाई हूँ।

'दुष्ट और कपटी,' कमांडर चिल्लाया, 'क्या तुम इन शब्दों से मेरे भीतर क्रोध भड़काने की सोचते हो, ताकि मैं तुम्हें और जल्दी मार सकूँ? तो जान लो कि मैं तुम्हें लंबे समय तक यातना दूँगा, तुम्हारे शरीर को टुकड़े-टुकड़े करूँगा, और जो बचेगा उसे आग में जला दूँगा।'

'मेरी यातनाएँ जितनी लंबी चलेंगी,' संत ने उत्तर दिया, 'उतना ही अधिक तेजस्वी मुकुट मसीह मेरे दुखों के बदले में मेरे लिए बुनेगा। क्योंकि पवित्रशास्त्र स्वयं कहता है कि नियम के अनुसार परखे जाने के बिना कोई भी मुकुट का अधिकारी नहीं होता (2 तीमु. 2:5)।'

'इसे बाँध दो,' कमांडर ने जल्लादों को आदेश दिया, 'और सीसे की छड़ों से इसके शरीर की हर हड्डी तोड़ दो!'

जब उन्हें कोड़ों से पीटा जा रहा था, तो संत कैलिओपियस ने कहा: 'मैं तुझे धन्यवाद देता हूँ, हे मसीह, कि तूने मुझे अपने नाम की महिमा के लिए इन यातनाओं को सहने के योग्य समझा।'

'देवताओं को बलिदान चढ़ाओ,' कमांडर ने कहना जारी रखा, 'ताकि तुम अपना वतन फिर से देख सको और अपनी संपत्ति खो दो। क्या तुम नहीं देखते कि तुम्हें कितनी क्रूरता से यातना दी जा रही है?'

'मैं मसीह द्वारा मुझे वादा किए गए भविष्य के विश्राम की मिठास का चिंतन करता हूँ, और मुझे कोई यातना महसूस नहीं होती,' संत ने कहा। 'और यद्यपि मैं वर्तमान में एक विदेशी भूमि में हूँ, फिर भी मैं जानता हूँ कि "*पृथ्वी यहोवा की है, और जो कुछ उस में भरपूर है*" (भजन संहिता 23:1)। और यहाँ मैं अपनी माँ और अपनी मातृभूमि को देखता हूँ। मेरी माँ मसीह की ऑर्थोडॉक्स चर्च है, और मेरी मातृभूमि स्वर्गीय यरूशलेम है, प्रेरितों के वचनों के अनुसार। '*हमारी नागरिकता स्वर्ग में है*' (फिलि. 3:20)। यदि, तथापि, आप मुझे मेरी सांसारिक माता की याद दिलाते हैं, तो यह दैवीय स्वर है जो पुष्टि

करता है: *'जो पिता या माता से मुझसे अधिक प्रेम करता है, वह मुझ योग्य नहीं है'* (मत्ती 10:37)। मैं धन-दौलत की प्रचुरता को कोई महत्व नहीं देता और पाप के द्वारा इस मूर्ख संसार की क्षणिक संतुष्टि पाने की बजाय, क्रूस पर चढ़ाए गए मसीह के साथ पीड़ा सहना बेहतर समझता हूँ।

'चूंकि वह पहले से ही बंधा हुआ है,' सेनापति ने अपने सेवकों से कहा, 'उसे घुमा दो और कच्ची नसों से उसके पेट पर मारो, और चिल्लाते रहो: "दुष्ट मनुष्य, इस या उस का उत्तर मत देना, बल्कि प्रश्न का उत्तर देना!"'

पवित्र शहीद ने सेनापति से कहा, 'हे पागल! तू स्वर्गीय आशीषों से वंचित और एक जानवर से भी अधिक क्रूर है! मैं तुझसे सत्य के वचन बोलता हूँ, फिर भी तू, अपनी आत्मा की आँखों को अंधा और अपने कानों को बंद करके प्रभु के वचन न सुनने के लिए, अन्याय से मुझे यातनाएँ देता है, और मुझे ऐसे मार डालता है जैसे मैं कोई चोर हूँ!'

तब सेनापति ने जल्लादों को आदेश दिया, 'तैयार करो यातना-चक्का, उसकी तीखी धारों वाला, और उसके नीचे भयंकर आग जलाओ; और कैलियोपियस को चक्के पर इस तरह कसकर बाँधो—यहाँ तक कि उसके जोड़ अलग हो जाएँ—इस अवस्था में, उसे पहिये से बाँध दो और उसे तब तक घुमाओ जब तक वह लोहे से कटकर और आग से झुलसकर नष्ट न हो जाए।

जब उन्होंने इस तरह उस पवित्र युवक को यातनाएँ देना शुरू किया, तो उसने अपनी भयानक पीड़ा के बीच प्रभु से पुकार लगाई और कहा: 'हे मेरे मसीह, अपने सेवक की सहायता के लिए आओ—ताकि अंत से पहले तेरा पवित्र नाम मेरे द्वारा महिमामय हो, और सब जान जाएँ कि जो तेरे पर भरोसा करते हैं, वे कभी भी सदा के लिए लज्जित नहीं होंगे।' और तुरंत प्रभु का स्वर्गदूत प्रकट हुआ, आग को बुझा दिया, पहिये को रोक दिया और उसे अचल बना दिया, जिससे जल्लाद उसे घुमा न सके। पहिये पर युवा शहीद का शरीर खून से लथपथ हो गया, और गहरे घावों से उसकी हड्डियाँ दिखाई दे रही थीं, क्योंकि पहिये पर दोधारी, आरी जैसी धारियाँ लगी हुई थीं। कमांडर ने आदेश दिया कि शहीद को खोलकर पहिये से उतार दिया जाए। उसके कष्ट को देखकर सभी दर्शक भावुक हो गए, और लोग चिल्ला उठे, कहने लगे: 'हे अन्यायपूर्ण न्यायाधीश! और क्या शानदार युवक है जो इतनी क्रूरता से प्राण गंवा रहा है!'

कमांडर ने संत से कहा, "क्या मैंने तुम्हें नहीं बताया था कि तुम्हारी जवानी तुम्हें अवज्ञाकारी बनाती है, और इसी कारण तुम इन क्रूर यातनाओं को झेल रहे हो?"

'हे नरिलज्ज कुत्ते,' संत ने उत्तर दिया, 'क्या तुम्हें सच में लगता है कि मैं तुम्हारे यातनाओं से डरता हूँ?'

'अभागे,' कमांडर ने कहा, 'तू मुझे इसलिए अपमानित कर रहा है ताकि मैं तुझे और जल्दी नष्ट कर दूँ, लेकिन ऐसा नहीं होगा! तो फिर आ, और और भी क्रूर यातनाओं से बचने के लिए देवताओं को बलिदान चढ़ा!'

पवित्र शहीद ने उत्तर दिया, 'मेरा भरोसा मेरे मसीह में है, और तुम मेरे ईश्वर के प्रति मेरे विश्वास को कलंकित करने में असमर्थ हो।' मेरा शरीर आपके हवाले है: इसे आप जैसी चाहें यातना दें, *लेकिन* न्याय के दिन आपको इसके लिए ईश्वर से दंड मिलेगा, *'क्योंकि... जिस नाप से तुम नापोगे, उसी से तुम्हारे लिए भी नापा जाएगा'* (मत्ती 7:2)।

कमांडर ने जल्लादों को संत कैलिओपियस के बारे में आदेश दिया, 'उसे लोहे की ज़ंजीरों से बाँध दो, और उसे भीतरी कालकोठरी में रख दो; उसकी किसी भी तरह की देखभाल मत करना, और उसके किसी भी साथी ईसाई को उसकी कोठरी में प्रवेश करने की अनुमति मत देना, कहीं कोई उसके धैर्य की प्रशंसा न करे।' तुरंत जल्लादों ने पवित्र शहीद को बाँध दिया और उसे भीतरी कालकोठरी में डाल दिया।

धन्य थियोक्लिया ने, अपने एकमात्र पुत्र संत कैलिओपियस द्वारा मसीह के लिए सहन किए गए ऐसे कष्टों के बारे में जानकर, अपने घर और अपनी सभी संपत्तियों के संबंध में एक वसीयत बनाई: उन्होंने अपने दो सौ पचास पुरुष और महिला दासों को मुक्त कर दिया, और अपने पास मौजूद सारा सोना, चांदी और कीमती वस्त्र गरीबों में बाँट दिए। अपनी शेष सारी संपत्ति और अचल संपत्ति—गाँव, खेत और अंगूर के बाग—उसने पवित्र चर्च को विरासत में दी; और, अपना देश छोड़कर, वह अपने पुत्र के पास सिलिसिया के लिए रवाना हो गई, जो मसीह के लिए कष्ट सह रहा था। कारागार के रक्षकों को भुगतान करने के बाद, वह भीतरी कालकोठरी में प्रवेश कीं और अपने पुत्र को देखकर, घुटनों के बल गिर पड़ीं, उसके सामने झुक गईं और उसके घावों से पीप पोंछ दी। हालाँकि, संत कैलिओपियस, जो लोहे के बंधनों में जकड़ा हुआ था और अनगिनत घावों से सूजा हुआ था, अपनी माँ से मिलने के लिए उठ नहीं सका, और केवल इतना कहा:

'तुम आकर बहुत अच्छा किया, मेरी माँ और मसीह के लिए मेरी पीड़ा की गवाह!'

थियोक्लिया ने अपने बेटे का घावों से जर्जर शरीर देखकर उससे कहा:

'धन्य और पवत्रि है मेरे गर्भ का फल, क्योंकि मैंने तुम्हें, जैसे हन्ना ने सामूएल को अर्पति कयिा था, वैसे ही ईश्वर को एक पवत्रि पात्र के रूप में समर्पति कयिा है, और जैसे सारा ने इसहाक को अर्पति कयिा था, वैसे ही मैंने तुम्हें मसीह को एक प्रसन्न करने वाले बलदिान के रूप में अर्पति कयिा है!'

उस पूरी रात माँ तहखाने में अपने बेटे के पैरों में बैठी रहीं, उसके साथ मलिकर गाती और ईश्वर की महमिा करती रहीं। आधी रात को, तहखाने में एक तेज रोशनी चमकी और एक आवाज़ सुनाई दी जो उद्घोषणा कर रही थी:

'तुम मसीह के पवत्रि स्वीकारकर्ता, मूर्तयिों के वनिाशक हो, जन्हिोंने मसीह के साथ दुख सहने के लिए अपना स्वदेश और संपत्ति त्याग दी!'

प्रातकाल, सैन्य कमांडर मैक्समिस, न्यायपीठ पर अपनी सीट पर बैठकर, पवत्रि शहीद कैलयिोपयिस को पूछताछ के लिए कालकोठरी से बाहर ले आया। उसे अपने सामने बठिाकर, उसने पूछा:

'क्या तुमने अपनी मूर्खता त्याग दी है, और क्या तुम अपना जीवन बचाने के लिए, राजा की आज्ञा का पालन कर देवताओं की पूजा करोगे? या, इसके वपिरीत, क्या तुम आज्ञाकारी होकर मरना चाहते हो, ठीक वैसे ही जैसे तुम्हारे स्वामी मसीह ने कयिा था?'

'मैं तुम्हारी नर्लिज्जता पर हैरान हूँ,' संत ने उत्तर दयिा! तुमने मुझसे कई बार यही उत्तर सुना है: मैं एक ईसाई हूँ और मसीह के लिए मरूँगा; फरि भी अब तुम मुझसे वही सवाल फरि से पूछ रहे हो और सत्य का वरिोध करने में तुम्हें शर्म नहीं आती। मैं अपने स्वामी मसीह की तरह दुख सहने की तीव्र इच्छा रखता हूँ और उनके लिए नस्वि्वार्थ रूप से मरने के लिए लालायति हूँ!

यह सुनकर और शहीद के अटूट संकल्प को भांपकर, और उसकी अडगि आध्यात्मकि दृढता से आश्वस्त होकर, कमांडर ने उसे क्रूस पर मसीह की तरह सूली पर चढ़ाने का आदेश दयिा। यह माउंडी गुरुवार था, वह दनि जब प्रभु भोज के पवत्रि रहस्य का स्मरण कयिा जाता है। संत थयिोक्लयिा ने, अपने बेटे को ले जाया जाता देख, सैनकिों को पाँच सोने के सक्कि दिए, और उनसे वनिती की कि वे कैलओिपयिस को मसीह की तरह नहीं, बल्कि उल्टा सूली पर चढ़ाएँ। उन्होंने यह वनिम्रता के कारण कयिा, क्योंकि उनके लिए यह अयोग्य था कि उनका बेटा अपनी सूली पर चढ़ने के तरीके में अपने प्रभु मसीह जैसा हो। इस प्रकार, संत कैलओिपयिस को प्रभु भोज के गुरुवार को, सरि नीचे करके, मसीह के लिए सूली पर चढ़ाया गया। गुड फ्राइडे को, दनि के तीसरे घंटे पर, उन्होंने अपनी आत्मा ईश्वर के हाथों में सौंप दी, जब स्वर्ग से एक दैवीय आवाज उनके पास उतरी, जसिमें कहा गया: 'प्रवेश करो, मसीह के सह-नागरकि और संतों के सह-वारसि'[2926] ।

जब संत कैलओिपयिस के शरीर को क्रूस से उतारा गया, तो उनकी धन्य माता ने मसीह की महमिा करते हुए अपने पुत्र की गर्दन पर आलगिन कयिा, और फरि तुरंत ही अपनी आत्मा त्याग दी। ईसाई भाइयों के आने पर, उन्होंने दोनों के शवों को उतारकर उन्हें एक ही कब्र में सम्मानपूर्वक दफनाया, और परमपति, पुत्र और पवत्रि आत्मा की स्तुति की। आमीन।

- उसी दनि, हम डीकन संत रुफनिस, पवत्रि शहीद अक्वलिनिा, और उनके साथ दो सौ सैनकिों का स्मरण करते हैं, जो लगभग 310 ईस्वी में सनिोप में मर गए थे।
- उसी दनि, हम पेरयिास्लाव के हमारे पूजनीय पति डैनयिल का स्मरण करते हैं।

21 अप्रैल

8 अप्रैल (पुराने कैलेंडर के अनुसार)

हमारे पूजनीय पति नफिोन, नोवगोरोड के बशिप का जीवन

8 अप्रैल को स्मरण कयिा जाता है

[2926] पवत्रि शहीद कैलओिपयिस का नधिन शुक्रवार, 7 अप्रैल 304 को एशयिा माइनर के सलिशियिन शहर पोंपेओज़ोल में हुआ।

धन्य नफिॉन पवत्रि गुफाओं के मठ में एक भक्षिु थे, जब मठाध्यक्ष टमिोथी (2927) मठ के प्रभारी थे। मठ में रहते हुए, संत नफिॉन प्रार्थना, उपवास और अन्य सभी सद्गुणों में उत्कृष्ट थे, और ईश्वर के महान संतों के जीवन का हर तरह से अनुकरण करने का प्रयास करते थे।

2928जब नोवगोरोड के बशिप धन्य जॉन, अपनी झुंड की देखभाल में बीस वर्षों की सेवा के बाद दुर्बल हो गए, तो उन्होंने बशिप का पद त्याग दयिा और मठ में चले गए2929 , – तब यह धन्य नफिॉन, जनिके गुण पहले ही सभी देशों में प्रकाशति हो चुके थे, ईश्वर की इच्छा से, सभी द्वारा नोवगोरोड के बशिप पद के लिए चुने गए और कीव में मेट्रोपॉलटिन माइकल2930 द्वारा बशिप के रूप में अभषिक्ति हुए।

सहिासन पर आरूढ़ होकर, एक दीपकदान पर रखे दीपक के समान, संत नफिॉन ने ऑर्थोडॉक्स चर्च की भलाई के लिए अपने उत्साही देखभाल के माध्यम से और भी अधकि चमक बखिेरी; उन्होंने ईश्वर की महमिा को बढ़ाने का प्रयास कयिा और अपने आध्यात्मकि झुंड की भलाई के लिए, इस जीवन और आने वाले जीवन दोनों में, उत्साही थे। ईश्वर की महमिा को बढ़ाने के लिए, आदरणीय पति ने अपने उत्साह के द्वारा, नोवगोरोड के केंद्र में परमेश्वर की अतपिवत्रि माता के सम्मान में एक पत्थर के चर्च की नींव रखी, जसिे उन्होंने ईश्वर की मदद से जल्द ही पूरा कर लयिा; इसके अलावा, उन्होंने नोवगोरोड के कैथेड्रल चर्च, जो संत सोफयिा को समर्पति है, को आइकनोग्राफी से सजाया, और इसकी छत को टनि2931 से ढक दयिा। इस संसार में अपने आध्यात्मकि झुंड की भलाई का ध्यान रखते हुए, यह महाधर्माध्यक्ष उदाहरण के लिए, इस प्रकार के सद्गुणों से वशिषि्ट थे: यदि ऑर्थोडॉक्स लोगों के बीच कोई ववािद उत्पन्न होता था, तो वे उन्हें सुलझाने का भरसक प्रयास करते थे। इस प्रकार, जब एक बार माननीय को पता चला कि कीव और चेर्नगिोव के लोगों ने योद्धाओं की एक बड़ी सेना इकट्ठा करके नोवगोरोड पहुँचकर उस पर युद्ध छेड़ने का इरादा कयिा था, तो वह तुरंत नोवगोरोड के कुलीनों को साथ लेकर उन लोगों के पास गए जनि्होंने हथयिार उठा रखे थे और ईश्वर की मदद से, उन्हें अपने हथयिार डालने के लिए मजबूर कयिा2932 । अन्य मामलों में भी, रेवरेंड फादर ने ईश्वर के लोगों के शांतपिूर्ण अस्तत्वि को सुनश्चिति करने का ध्यान रखा, और इस वर्तमान जीवन में उनकी भलाई के लिए उत्सुक रहे।

लेकनि आदरणीय अपने आध्यात्मकि झुंड के अनंत जीवन के लिए और भी अधकि चतिति थे। प्रभु के उन वचनों को ध्यान में रखते हुए, जो उन्होंने परमेश्वर पति के वषिय में कहे थे, कि उनकी आज्ञा *'शाश्वत जीवन'* है (यूहन्ना 17:2), रेवरेंड नफिॉन ने हमेशा ऑर्थोडॉक्स को परमेश्वर की व्यवस्था और कलीसयिा की परंपरा से भटकने से मना कयिा, ताकि वे शाश्वत जीवन न खो दें; जहाँ तक उन लोगों का सवाल है जो ईश्वर के वधिान से भटक गए और पाप कर बैठे, तो आदरणीय ने उन्हें डाँटा, उनके पापों के लिए उनके वनिाश की भवषि्यवाणी की, और प्रेरति के आज्ञानुसार *'समय और असमय में* प्रचार कयिा*, उलाहना दयिा, फटकारा और सब धीरज से समझाया'* (2 तीमुथयिुस 4:2)।

2933अपने झुंड की आत्माओं के उद्धार के लिए इस महाधर्माध्यक्ष के महान उत्साह का प्रमाण नम्निलखिति परस्थितिि से मलिता है। नोवगोरोड के लोगों द्वारा अपने राजकुमार व्लादमिीर मोनोमाख को पदच्युत करने के बाद, उन्होंने स्वयिातोस्लाव ओल्गोवचि को बुलाया था, जो चर्च के नयिमों का उल्लंघन करते हुए ववािह करने के कारण उनके ऊपर शासन करने आए। उस समय, इस धन्य महा-पशुपालक ने न केवल इस राजकुमार का अभषिेक करने से इनकार कर दयिा, बल्कि अपने सभी पुरोहतिों को उस अवैध अभषिेक का साक्षी बनने से भी रोक दयिा (राजकुमार का अभषिेक उसके साथ आए पुरोहतिों द्वारा कयिा गया था)। आदरणीय नफिॉन2934 ने उस राजकुमार को उसके उल्लंघन के लिए नडिर होकर

2927 टमिोथेउस 1124 से पेचेर्स्क मठ के मठाध्यक्ष थे; उनकी मृत्यु 1131 में हुई।

2928 नफिोंट का अभषिेक उसी वर्ष, 1130 में हुआ था।

2929 जॉन ने 1110 से 1130 तक नोवगोरोड के धर्मप्रांत का शासन कयिा।

2930 मेट्रोपॉलटिन माइकल, जो एक ग्रीक थे, ने 1130 से 1145 तक कीव मेट्रोपोलसि का शासन कयिा।

2931 नोवगोरोड के लोगों ने बशिप नफिोंट की ईश्वर के चर्चों के प्रति देखभाल को बहुत सम्मान दयिा। नोवगोरोड के इतहिासकार कहते हैं, 'हम में से प्रत्येक यह जानता है,': 'कसि बशिप ने सेंट सोफयिा को इतना सुसज्जति कयिा है? उसने नारथेक्स को चत्रिति कयिा, आइकनोस्टेस का नरि्माण कयिा, और बाहर से उसे चूने से सफेद कयिा और सीसे की परत चढ़ाई। प्सकोव में उसने ज़ावेलशि्ये में पवत्रि उद्धारकर्ता का एक पत्थर का चर्च बनाया, और लादोगा में सेंट क्लेमेंट का चर्च बनाया।' IV नोवगोरोड क्रॉनकिल।

2932 यह घटना 1135 में हुई।

2933 1132 में।

2934 संत नफिॉन कैननकिल या चर्च संबंधी नयिमों के वशिेषज्ञ थे और उन नयिमों के उत्साही, आत्म-बलदिान करने वाले रक्षक थे। चर्च संबंधी नयिमों के पालन के प्रति यह उत्साह न केवल स्वआितोस्लाव ओल्गोवचि के गैर-कानूनी ववािह के प्रति संत नफिॉन के रवैये से, बल्कि कीव के

फटकारा, और भजनकार का अनुकरण कयिा जसिने कहा था: *'मैं राजाओं के सामने तेरे वचनों का प्रचार करूँगा और लज्जति नहीं होऊँगा'* (भजन संहति 118:46)।

जब उन्होंने रूसी चर्च को ही उल्लंघन से बचाने का प्रयास कयिा, तो इस महा-गवैया के उत्साह भी महान था, जैसा कि निम्निलखिति परस्थितियिों में हुआ।

जब कीव के मेट्रोपॉलटिन माइकल द्वतिीय, जनिसे संत नफिॉन ने अपना बशिप का पद ग्रहण कयिा था, का नधिन हो गया, तो कीव के ग्रैंड प्रसि, इज्यास्लाव म्स्टस्लावचि[2935] ने, उनके उत्तराधकिारी के रूप में क्लेमेंट द फलिॉसफर को चुना—जो उस समय एक भक्षिु थे और जन्हिोंने स्कीमा ग्रहण कर लयिा था। कलीमेंट को बशिप के रूप में अभषिेक के लएि पूरे रास्ते कॉन्स्टेंटनिोपल भेजने के बजाय, राजकुमार ने इस उद्देश्य के लएि रूसी बशिपों की एक परषिद बुलाई। इस परषिद में ये उपस्थति थे: चेरनगिोव के ओनुपhrius, बेलगोरोद के थयिोडोर, पेरयिास्लाव के यूथमिीयस, युर्येव के डेमयिन, व्लादमिीर के थयिोडोर, नोवगोरोद के संत नफिॉन, स्मोलेंस्क के मैनुअल, टुरोव के जोआचमि, और पोलोत्स्क के कॉसमस। जब परषिद ने अपनी कार्यवाही शुरू की, तो धन्य नफिॉन ने इस तथ्य पर वस्तिार से बात की कि रूसी बशिप स्वयं भी कसिी भी परस्थतिि में कॉन्स्टेंटनिोपल के पैट्रआर्क के आशीर्वाद के बनिा एक मेट्रोपॉलटिन का चुनाव नहीं कर सकते; उन्होंने पूरे परषिद के सामने साहसपूर्वक घोषणा की कि यह पवत्रि ऑर्थोडॉक्स पूर्वी चर्च की परंपरा के वपिरीत था, जो कॉन्स्टेंटनिोपल की सी से पवत्रि बपतस्मिा द्वारा प्रबुद्ध हुई है, जसिने इस प्रकार हमें परमेश्वर की संतान, पूर्व की संतान, स्वर्ग से परमेश्वर द्वारा भेजा हुआ बनाया है; और कीव के पहले मेट्रोपॉलटिन, माइकल, वहीं (कॉन्स्टेंटनिोपल से) नयिुक्त हुए थे; उस समय से, कीव के मेट्रोपॉलटिन के लएि अपनी नयिुक्तपि पर कॉन्स्टेंटनिोपल के पैट्रआर्क का आशीर्वाद प्राप्त करना एक स्थायी नयिम बन गया था।

यह कहते हुए, पूजनीय नफिॉन ने रूस के पुत्रों को साहसपूर्वक प्रोत्साहति कयिा कि वे अपने वरिोध के कारण, पूर्व द्वारा और साथ ही साथ ईश्वर द्वारा दत्तक ग्रहण कएि जाने से वमिुख न हों, क्योंकि, जैसा कि उन्होंने कहा: *'अवज्ञा के पुत्रों पर ईश्वर का क्रोध आता है'* (एफ. 5:6)।

पाँच अन्य बशिपों ने माननीय नफिॉन की बात से सहमतव्यिक्त की: पोलोत्स्क के कोस्मास, तुरोव के जोआचमि, स्मोलेंस्क के मैनुअल, पेरयिास्लाव के यूथमिीयस, और बेलगोरोद के थयिोडोर। लेकनि राजकुमार ने, अपने अहंकार के कारण और अपनी योजना को त्यागने के लएि तैयार न होते हुए, धन्य नफिॉन की बात पर ध्यान नहीं दयिा; बल्कि, उसने अन्य बशिपों के समर्थन से वही कयिा था जो करने का संकल्प लयिा था। इस प्रकार, राजकुमार की आज्ञा से और चेर्नगिोव के बशिप ओनुप्रयिस की सलाह पर, clement, कॉन्स्टेंटनिोपल के पैट्रआर्क का आशीर्वाद प्राप्त करने के बजाय, रोम के पोप संत clement की खोपड़ी से बशिप के रूप में अभषिक्ति हुए (यह खोपड़ी संत व्लादमिीर द्वारा खेरसन से लाई गई थी, जन्हिें यह उनके पवत्रि बपतस्मिा के बाद खेरसन के बशिप से उपहार में मलिी थी); इसके बाद, क्लेमेंट ने अवैध रूप से कीव के मेट्रोपोलसि के बशिप के सहिासन पर आसीन हो गए।

क्लेमेंट ने मांग की कि धन्य नफिॉन उनके साथ दव्यि लटिर्जी का अनुष्ठान करें, लेकनि ऑर्थोडॉक्सी के इस उत्साही रक्षक ने उत्तर दयिा:

'चूँकि आपको कॉन्स्टेंटनिोपल के पैट्रआर्क का आशीर्वाद प्राप्त नहीं है, मैं, पहले की तरह ही, अब भी आपके पद ग्रहण को स्वीकार नहीं करता और इस कारण से, आपके साथ सेवा नहीं कर सकता।'

इस पर संत नफिोंट से क्रोधति होकर, क्लेमेंट ने राजकुमार इज्यास्लाव और अपने प्रतविफादार बशिपों को उस पूजनीय को नर्विासन में भेजने के लएि मना लयिा। इसी कारण, राजकुमार इज्यास्लाव ने धन्य नफिोन को नोवगोरोड में

मेट्रोपॉलटिन क्लेमेंट स्मोल्याटचि के प्रतनिफिॉन के रवैये के बाद के ववरिण से भी स्पष्ट होता है, जन्हिोंने कॉन्स्टेंटनिोपल के पैट्रआर्क के आशीर्वाद के बनिा मेट्रोपॉलटिन पद ग्रहण कर लयिा था। अन्य बशिप और वभिन्नि व्यक्तउिलझन भरे कैननकिल मुद्दों और चर्च जीवन के वभिन्नि मामलों पर स्पष्टीकरण के लएि संत नफिॉन के पास जाते थे। 'करीक की पूछताछ' से, या नोवगोरोड के एंटोनएिव मठ में एक हायरोमोंक और डोमेस्टकिोस (भजन गायकों के प्रमुख) करीक को वभिन्नि व्यक्तयिों से प्राप्त उत्तरों के संग्रह से, जनिसे उसने अपने प्रश्न पूछे थे—मुख्य रूप से नोवगोरोड के तीन बशिपों से: संत नफिॉन और एलयिाह (1165 से 1185 तक) और एक अज्ञात धर्मप्रांत के सावा से हमें पता चलता है कि पोलोत्स्क के बशिप के नर्दिेशों पर एक नश्चिति क्लमि नफिॉन के पास गया था। करीक के प्रश्न मुख्य रूप से नोवगोरोड के बशिप, नफिोंट को संबोधति थे, जन्हिोंने संदेहों को दूर करने के लएि ठोस और व्यावहारकि उत्तर दएि। 'करीक की पूछताछ?' पवलोव द्वारा *रूसी ऐतहिासकि पुस्तकालय*, पुरालेख आयोग द्वारा संपादति, खंड 6, पृष्ठ 21 और बाद में कालायदोवचि द्वारा *12वीं सदी के रूसी साहत्यि के स्मारक*, पृष्ठ 173 और बाद में प्रकाशति।

[2935] इज्यास्लाव म्स्तस्लिावचि 1146 से 1154 तक कीव के महा राजकुमार थे।

बशिप का पद ग्रहण करने की अनुमति नहीं दी, बल्कि उन्हें हमेशा पेचेरस्क मठ में रहने का आदेश दिया, मानो वे कैद में हों। तथापि, परम पूज्यनीय वहाँ महान आनंद के साथ रहे, और उन्होंने संतों के साथ अपने पूर्व मौन जीवन में लौटने की कृपा प्रदान करने के लिए ईश्वर की स्तुति और धन्यवाद किया।

जब मसीह-प्रेमी ज़ार जॉर्ज मोनोमाख[2936] ने इज़्यास्लाव म्स्तस्लावचि को हराया और कीव के राजसी क्षेत्र को अपने हाथ में ले लिया, तो उन्होंने नोवगोरोड के बशिप का पद धन्य नफिॉन को बड़े सम्मान के साथ बहाल किया। नोवगोरोड के लोगों ने, जो तब तक एक तरह से, भेड़िये के बिना भेड़ों की तरह, भ्रम और परित्याग की स्थिति में थे, धन्य नफिॉन का बड़ी खुशी से स्वागत किया। इसी समय, कॉन्स्टेंटिनोपल के पैट्रिआर्क ने, धर्मपरायण व्यक्ति द्वारा धर्मपिता की परंपराओं की रक्षा में दिखाई गई महान साहस के बारे में सुनकर, संत नफिॉन को एक पत्र भेजा, जिसमें उन्होंने उनकी बुद्धि और साहस की प्रशंसा की और उन्हें उन प्राचीन पवित्र धर्मपिता के समकक्ष बताया जो ऑर्थोडॉक्सी के लिए दृढ़ रहे थे[2937] । रेवरेंड ने, पैट्रिआर्क का पत्र पढ़ने के बाद, ऑर्थोडॉक्सी के लिए और भी अधिक उत्साह से भर गए। इसके अलावा, रेवरेंड को मुख्य चरवाहों के प्रमुख - यीशु मसीह - से अपने श्रम के लिए एक योग्य पुरस्कार से वंचित नहीं किया गया था, जैसा कि उनके धन्य निधन की कहानी से स्पष्ट है, जिसे हम अब सुनाने जा रहे हैं।

संत नफिॉन के अपने बशिप के पद पर लौटने के कुछ समय बाद, उन्होंने सुना कि कांस्टेंटिनोपल के मेट्रोपॉलिटिन कोंस्टेंटिन[2938] कांस्टेंटिनोपल के पैट्रिआर्क द्वारा कीव के मेट्रोपॉलिटिन क्लेमेंट को पदच्युत करने और उनकी जगह लेने के उद्देश्य से भेजे गए थे और वे कांस्टेंटिनोपल से रूस की यात्रा कर रहे थे। यह जानकर, परम पूजनीय पिताजी दो कारणों से बहुत प्रसन्न हुए: पहला, उन्हें पवित्र पिता से आशीर्वाद प्राप्त करने की आशा थी, और दूसरा, वे कीव-पेचेरस्क लाव्रा में परमेश्वर की अति पवित्र माता और अन्य संतों को श्रद्धांजलि अर्पित करना चाहते थे। इस उद्देश्य से, वह कीव के लिए रवाना हो गए और वहां मेट्रोपॉलिटिन कॉन्स्टेंटिन के आगमन की प्रतीक्षा करने लगे, जो पहले ही कॉन्स्टेंटिनोपल से रवाना हो चुके थे। कीव-पेचेरस्क लाव्रा में रहते हुए, आदरणीय पिताजी ने परम पवित्र माताजी और अन्य संतों के प्रति गहरी भक्ति दिखाई। इसके कुछ ही समय बाद, वे गंभीर रूप से बीमार पड़ गए, जिसके बाद उनका सम्मानजनक निधन हो गया। बीमार पड़ने से तीन दिन पहले, आदरणीय पिताजी को एक अद्भुत दर्शन हुआ, जिसे उन्होंने मठवासी समुदाय को सुनाया।

उन्होंने कहा, 'जब मैं सुबह की प्रार्थना के बाद अपनी कोठरी में लौटा, तो मुझे थोड़ी देर के लिए सोने की आवश्यकता महसूस हुई। जल्द ही मैं हल्की नींद में चला गया: और देखो, मुझे ऐसा लगा कि मैं इस गुफाओं वाले पवित्र मठ में, संत निकिोलस के स्थान पर था; वहाँ मैंने परमेश्वर की अति पवित्र माता से लंबी और भक्तिपूर्वक प्रार्थना की, उनसे अनुरोध करते हुए कि वे मुझे पूजनीय थियोडोसियस, अच्छे निर्माता, को दिखाएँ, जो अपने निधन के बाद भी अपने मठ में सद्गुणों के विकास पर नजर रखते थे। इस बीच, भाई चर्च में इकट्ठा हो रहे थे; उनमें से एक, मेरे पास आकर, बोला:

'क्या आप हमारे पूजनीय पिता थियोडोसियस को देखना चाहेंगे?'

जिस पर मैंने उत्तर दिया:

'हाँ, मैं चाहता हूँ, और यदि संभव हो, तो मुझे उसे दिखाइए।'

तब, मेरा हाथ पकड़कर, वह मुझे वेदी तक ले गया और वहाँ उसने मुझे संत थियोडोसियस को दिखाया। संत को देखकर, मैं खुशी से उनके पास गया, उनके पैरों पर गिर पड़ा और जमीन पर झुक गया। उन्होंने, बदले में, मुझे उठाया, मुझे आशीर्वाद दिया और कहा:

'तुमने अच्छा किया, भाई और पुत्र नफिॉन, यहाँ आकर; अब से तुम हमेशा हमारे साथ रहोगे।'

संत थियोडोसियस के हाथ में वह पांडुलिपि थी जो मैंने उनसे माँगी थी; मैंने वह पांडुलिपि लेकर खोली और पढ़ी। पांडुलिपि इन शब्दों से शुरू होती थी: *'यहाँ मैं हूँ और वे बच्चे जिन्हें प्रभु ने मुझे दिए हैं'* (यशायाह 8:18)। 'दिव्यदृष्टि समाप्त होने के बाद,' धन्य नफिॉन ने सुनाया, 'मैं होश में आया और मुझे एहसास हुआ कि मेरी बीमारी ईश्वर की ओर से एक परीक्षा थी।'

[2936] यानी यूरी व्लादिमिरोविच डोलगोरुकी, व्लादिमीर मोनोमाख के पुत्र। यह 1150 में था।

[2937] निफोंट को लिखे गए पादरियाना पत्रों में से एक कुशेलेव-बेलबोरोडको की *रूसी साहित्य के स्मारक*, खंड IV, पृ. 5 में, और उनकी उत्कृष्टता ज़ामारी द्वारा लिखित *रूसी चर्च का इतिहास*, खंड 3, द्वितीय संस्करण, पृ. 297 में निफोंट के जीवन-चरित्र में मुद्रित है।

[2938] मेट्रोपॉलिटिन कॉन्स्टेंटिन, जो एक ग्रीक थे, रूस में अधिक समय तक नहीं रहे; उन्होंने 1156 से 1158 तक मेट्रोपॉलिटिन पद का प्रभार संभाला और 1159 में चेरनिहिव में उनकी मृत्यु हो गई।

तेरह दिन तक बीमार रहने के बाद, रेवरेंड फादर का ब्राइटॅ वीक के दौरान शनिवार, 20 अप्रैल को प्रभु में शांतिपूर्वक निधन हो गया। उनके शरीर को सम्मानपूर्वक पूजनीय थियोडोसियस की गुफा में वरिम दिया गया, जबकि आत्मा में वह इस प्रतिष्ठित संत के साथ मसीह प्रभु के सिंहासन के सामने खड़े हैं, और स्वर्ग के अनुपम आशीर्वादों का आनंद ले रहे हैं। इन संतों का आशीर्वाद हम पर भी हो, जो उनके बच्चे हैं। परमेश्वर, जो अविभाज्य त्रिमूर्ति—पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा—में महिमामय है, उसे ही सारी महिमा, सम्मान और आराधना मिले, अब और हमेशा और युगों-युगों तक। आमीन।

संतों के बीच हमारे पिता सेलेस्टाइन, रोम के पोप की स्मृति

8 अप्रैल को स्मरण किया जाता है

ये आदरणीय पुरुष सम्राट थियोडोसियस द यंगर[2939] के शासनकाल में रोम के बिशप थे। वे अपने जीवन और वाणी के उच्च स्तर के लिए विशिष्ट थे, इसीलिए उन्हें पोप ज़ोsimus की मृत्यु के बाद और उनके बाद, इनोसेंट द ग्रेट[2940] के उत्तराधिकारी धन्य बोनिफेस के बाद, रोम के बिशप पद के लिए चुने जाने के योग्य माना गया। सभी बातों में प्रेरितिक परंपरा के अनुसार बोलते और कार्य करते हुए, सेलेस्टीन ने अपने पत्रों के माध्यम से अधर्मी नेस्टोरियस को पदच्युत कर दिया, जिसमें उन्हें धन्य सिरिल ने सहायता की[2941] । अन्य कई स्मरणीय लिखित उपदेश रचने के बाद, उन्होंने शांतिपूर्वक परलोक गमन किया और शाश्वत धन्य जीवन में प्रवेश किया, तथा अब प्रेरितों और धर्मपितामहों के समूह में आनंदित हैं[2942] .

पवित्र शहीद पाव्सलिपि का कष्टकथा।

8 अप्रैल को स्मरण किया जाता है

पवित्र शहीद पावसलिपि ने सम्राट हैड्रियन के शासनकाल में[2943] कष्ट सहे, उस समय जब यूट्रोपिया प्रांत का शासन प्रीफेक्ट लूसियस के हाथ में था[2944] । प्रारंभ में, संत को सम्राट के समक्ष लाया गया और उसने स्वयं को ईसाई घोषित किया, जिसके लिए उसे लोहे की छड़ों से पीटा गया। तब उसे प्रीटियस नामक प्रांतपाल के हवाले कर दिया गया, जिसने उसे मूर्तियों को बलिदान चढ़ाने के लिए मनाने की भरसक कोशिश की; इसमें असफल होने पर, उसने उसे हथकड़ी में जकड़ने और तलवार से सिर कलम करने का आदेश दिया। जब पवित्र शहीद को फांसी के लिए ले जाया जा रहा था, तो उसने अपनी हथकड़ियाँ तोड़ दीं और अपने पहरेदारों से भाग गया। उनके पीछा करने पर, उन्होंने प्रार्थना की कि प्रभु उनकी आत्मा को स्वीकार करें। और जैसा कि संत ने प्रार्थना की थी, ऐसा हुआ कि भागते समय उन्होंने अपनी अंतिम सांस ली। तब ईसाई आए और सम्मान के साथ, भजन और पवित्र गीत गाते हुए, उनका पवित्र शरीर विधिवत दफनाया।

[2939] थियोडोसियस द्वितीय युवा ने 408 से 450 तक शासन किया।

[2940] यहाँ स्पष्ट रूप से एक त्रुटि है। पोप इनोसेंट प्रथम ने 402 से 417 तक रोम की धर्मपीठ संभाली, और उनके उत्तराधिकारी थे: ज़ोsimus, 417 से 418 तक; बोनिफेस प्रथम, 418 से 422 तक; और सेलेस्टीन, 422 से 432 तक।

[2941] 430 में, नेस्टोरियस की निंदा करने वाले रोमन सिनिड के बाद, सेलेस्टाइन ने अलेक्जेंड्रिया के आर्चबिशप सिरिल को एक पत्र लिखा, जिसमें कहा गया था कि यदि नेस्टोरियस इस पत्र को प्राप्त करने के दस दिनों के भीतर रोम और अलेक्जेंड्रिया में प्रचलित आस्था की स्वीकारोक्ति नहीं करता है, तो उसे पदच्युत और बहिष्कृत कर दिया जाएगा। साथ ही, सेलेस्टाइन ने कॉन्स्टेंटिनोपल के चर्च और एंटिओक के आर्चबिशप जॉन को पत्र भेजे, जिसमें उन्होंने नेस्टोरियस के धर्मद्रोह की निंदा की और यह सूचना दी कि यदि नेस्टोरियस अपनी गलतियों पर कायम रहा तो उस पर क्या निंदा की जाएगी। सेलेस्टाइन ने रोम के बिशप के प्रतिनिधि के रूप में, इस निर्णय को लागू करने का कार्य सिरिल को सौंपा।

[2942] सम्माननीय सेलेस्टाइन का 432 में निधन हो गया।

[2943] सम्राट हैड्रियन ने 117 से 138 तक शासन किया।

[2944] यहाँ, यूट्रोपिया के प्रीफेक्ट का नाम यूरोपा के प्रीफेक्ट के बजाय गलत तरीके से लिखा गया है। यूरोपा का प्रांत बाल्कन प्रायद्वीप के उत्तर-पूर्वी भाग में, थ्रेस में स्थित था।

पवत्रि प्रेरति हेरोडयिन, अगाबस, रूफस, असन्क्रिटिस, फ्लेगन और हेर्मास की स्मृति।

8 अप्रैल को स्मरणोत्सव

प्रेरति सेंट हेरोडयिन[2945] , जो प्रेरति सेंट पॉल के रक्त संबंधी थे, सलिसिया के शहर तारस[2946] से आए थे। वे प्रेरति सेंट पीटर और पॉल के साथी और सहकर्मी थे और उन्हें उनके द्वारा पतारा[2947] शहर का बशिप नयिुक्त कयिा गया था। बशिप के रूप में सेवा करते हुए, संत हेरोदयिन ने मूर्तपिूजक यूनानयिों के बीच ईसाई शकि्षाओं का सक्रयि रूप से प्रचार कयिा। चूँकि संत हेरोदयिन ने कई मूर्तपिूजकों को ईसाई धर्म अपनाने के लिए प्रेरति कयिा था, इसलिए यहूदयिों ने ईश्वर के इस सेवक से ईर्ष्या करके, मूर्तपिूजक यूनानयिों के साथ मलिकर साजशि रची, संत को जबरदस्ती पकड़ लयिा और उन्हें वभिन्नि प्रकार की यातनाएँ दीं; जब कुछ यातना देने वाले नर्दियता से संत को पीट रहे थे, तो अन्य लोग उन पर पत्थर बरसा रहे थे, और कुछ और लोग उन्हें डंडों से सरि पर मार रहे थे। एक यातना देने वाले ने संत को चाकू से इतनी जोर से गोदा कि वह मृतप्राय होकर गरि पड़े; यह सोचकर कि संत की मृत्यु हो गई है, यातना देने वालों ने उन्हें छोड़ दयिा। लेकनि पवत्रि प्रेरति, ईश्वर की कृपा से, जीवति रहे और बाद में पवत्रि प्रधान प्रेरति पतरस के साथ मलिकर ईश्वर का वचन प्रचार करते हुए रोम में बहुत परशि्रम कयिा। पवत्रि प्रेरति पौलुस ने कोरथि से भेजी गई रोमयिों के नाम अपनी पत्रकिा में[2948] , हेरोदयिन को भी नमस्कार कयिा, जो उस समय पवत्रि प्रेरति पतरस के साथ रोम में थे: *'मेरे कुलजन हेरोदयिन को नमस्कार करना'* (रोमयिों 16:11)। जब पवत्रि प्रेरति पतरस को सूली पर चढ़ाया गया, तो मेटाफ्रास्टस की गवाही के अनुसार, संत हेरोडयिन को संत ओलंपस[2949] और कई अन्य वशि्वासयिों के साथ तलवार से सरि कलम कर दयिा गया[2950] ।

प्रेरति सेंट अगबस को भवषि्यवाणी का वरदान प्राप्त था। उनका उल्लेख प्रेरतिों के काम की पुस्तक में मलिता है। वहाँ उनके बारे में कहा गया है कि जब यरूशलेम से भवषि्यद्वक्ता अंताकयिा में इकट्ठा हुए, *'उनमें से एक, जसिका नाम अगबस था, उठ खड़ा हुआ और आत्मा द्वारा यह भवषि्यवाणी की कि सारी दुनयिा में एक बड़ी अकाल पड़ेगी, जो वास्तव में सम्राट क्लॉडयिस के शासनकाल में हुई'* (प्रेरतिों के काम 11:27–28)। केसरयिा में[2951] , संत अगबस ने प्रेरति पौलुस को यरूशलेम में होने वाली उनकी पीड़ाओं की भवषि्यवाणी की: *'... उसने पौलुस की कमरबंद लेकर, उससे अपने हाथ और पैर बाँधकर कहा: "पवत्रि आत्मा इस प्रकार कहते हैं: जसि मनुष्य की यह कमरबंद है, उसे यहूदयिों द्वारा यरूशलेम में इसी प्रकार बाँधा जाएगा और अन्यजातयिों के हाथ सौंप दयिा जाएगा"'* (प्रेरतिों के काम 21:11)। प्रेरति अगबस ने वभिन्नि देशों में मसीह का प्रचार कयिा और कई गैर-यहूदयिों को ईसाई धर्म में परविर्तति कयिा।

प्रेरति सेंट रूफस, जनिका अभविादन प्रेरति पौलुस ने रोमयिों के नाम अपनी पत्री में इन शब्दों के साथ कयिा है: *'प्रभु में चुने हुए रूफस को नमस्कार करना'* (रोमयिों 16:13), यूनान में थेब्स शहर[2952] के बशिप थे।

पवत्रि प्रेरति असक्रिटिस, जनिका उल्लेख प्रेरति पौलुस के रोमयिों के नाम पत्र में (रोमयिों 16:14) कयिा गया है, हर्कानयिा में एक बशिप थे – जो एशयिा माइनर का एक क्षेत्र था।

[2945] संत हेरोडयिन प्रेरति, आज स्मरण कए गए अन्य पाँच प्रेरतिों की तरह, 70 प्रेरतिों में गनि जाते हैं। सभी 70 प्रेरतिों का स्मरणोत्सव पवत्रि चर्च द्वारा 4 जनवरी को मनाया जाता है।

[2946] टारस प्राचीन काल में एशयिा माइनर के सलिसिया क्षेत्र में स्थति एक प्रमुख शहर था। इस शहर के अवशेष आज भी संरक्षति हैं।

[2947] पतारा – जो अब पत्रास है – गल्फ ऑफ़ पतारा के तट पर यूनान के साम्राज्य का एक प्रमुख वाणज्यिकि शहर है।

[2948] कोरथि – प्राचीन काल में प्रसद्धि प्राचीन ग्रीस का एक शहर, जो आयोनयिन और एजयिन सागरों के बीच कोरथि की खाड़ी के दक्षणि-पूर्वी कोने में स्थति है। आज, प्राचीन कोरथि का स्थल 5,000 की आबादी वाले कोरोन्टो गाँव द्वारा बसा हुआ है। – रोमयिों के नाम पत्र प्रेरति पौलुस द्वारा 58 ईस्वी में कोरथि से लखिा गया था।

[2949] संत ओलंपस या ओलंपकि 70 प्रेरतिों में से एक थे। उनका पर्व दविस 4 जनवरी है।

[2950] पवत्रि प्रेरति हेरोडयिन की मृत्यु लगभग 67 ईस्वी वर्ष में हुई।

[2951] फलिस्तीन में केसरयिा भूमध्य सागर के पूर्वी तट पर एक शहर है, जसि यहूदी राजा हेरोद ने स्ट्रैटन के प्राचीन शहर के स्थान पर बनवाया था और इसका नाम सीज़र अगस्टस के सम्मान में रखा गया था।

[2952] थेब्स – बोएशयिा के ग्रीक क्षेत्र की राजधानी।

पवत्रि प्रेरति फ्लेगन और हेर्मास[2953] , जनिका उल्लेख उसी पत्र में कयिा गया है, बशिप थे: पहला थ्रेसयिाई शहर माराफोन में, और दूसरा डल्माटयिा[2954] में।

ये सभी प्रेरति, जो सत्तर में से गनि गए हैं, ने बहुत परश्रिम कयिा, संसार भर में मसीह के सुसमाचार का प्रचार कयिा और कई मूर्तपिूजकों को मसीह के पास लाए। वभिन्नि समयों पर, उनमें से लगभग सभी यहूदयिों और यूनानयिों दोनों के हाथों वभिन्नि यातनाओं के अधीन हुए, और शहीद का मुकुट प्राप्त करके, महमिा में प्रभु के पास चले गए।

कॉन्टाकयिन, स्वर 2:

आप मसीह के शष्यि और अतसिम्माननीय प्रेरति, महमिामय हेरोदयिन, अगाव और रूफा, असनि्क्रटिस, फ्लेगोन और हेर्मास के रूप में प्रकट हुए: जब हम आपकी स्तुतकिरते हैं, तो प्रभु से हमारे पापों की क्षमा प्रदान करने के लिए सदा प्रार्थना करें।

22 अप्रैल

9 अप्रैल (पुराने कैलेंडर के अनुसार)

इसी दनि, पवत्रि शहीदों: बशिप डसिावास, प्रेस्बटिर मारयिावास, अवदयिास और अन्य 270 लोगों की स्मृतजि, जन्हिोंने 362–364 में फारसी राजा शपूर के हाथों यातनाएँ सहीं।

संत यूप्सकियिस की शहादत

9 अप्रैल को स्मरण कयिा जाता है

पवत्रि शहीद यूप्सकियिस कुलीन माता-पति के पुत्र थे; उनका जन्म और पालन-पोषण कैपडोसयिा के सेसरयिा में हुआ था[2955] और उन्होंने अपना यौवन ईसाई पवत्रिता में नर्दिोष रूप से बतिाया, अपने सफेद बालों में ज्ञान और अपने वृद्धावस्था में एक नर्दिोष जीवन के धनी थे (देखें बुद्धमिान 4:9)।

धर्मद्रोही जूलयिन के शासनकाल में[2956] , उन्होंने एक वैध ववािह कयिा और जब ववािह समारोह अभी भी पूरे जोरों पर था, तो उन्होंने मसीह यीशु के प्रतमिहान उत्साह और प्रेम का प्रदर्शन कयिा।

कैसरयिा नगर में टाइची नामक एक अपवत्रि मूर्तजि को समर्पति एक मंदरि था, जसिका अर्थ 'भाग्य' या 'सुख' होता है। यह मंदरि बहुत सम्मानति था, और सम्राट जूलयिन जब भी कैसरयिा में होते, वहाँ प्रतदिनि अपने अधार्मकि बलदिान अर्पति करते थे। ऐसा हुआ कि यूप्सकियिस के ववािह के उत्सव एक मूर्तपिूजक त्योहार के साथ मेल खा गए। जब संत यूप्साइशयिस ने ग्रीकों को बलदिान चढ़ाने के लिए मंदरि की ओर जाते देखा, तो वे प्रभु के प्रतउित्साह से भर गए: उन्होंने अपने साथ बड़ी संख्या में ईसाइयों को लेकर गए, मूर्तयिों को तोड़ डाला और मूर्तपिूजक मंदरि को धूल चटा दयिा। ग्रीक लोगों ने तुरंत इसकी सूचना सम्राट जूलयिन को दे दी, जबकि संत यूप्साइशयिस ने, इस कार्य के लिए अपने सामने आने वाली पीड़ाओं की पूर्वानुमान लगाते हुए, अपने सामान को गरीबों में बाँट दयिा और उपवास तथा प्रार्थना में स्वयं को समर्पति कर शहादत के लिए खुद को तैयार कर लयिा। अपने देवताओं के मंदरि के वनिाश के बारे में सुनकर राजा जूलयिन क्रोध से भर गया, और वह न केवल यूप्साइशयिस पर बल्कि पूरे शहर पर भी आग-बबूला हो गया। उसने तुरंत शहर के सभी सम्मानति नागरकिों को गरिफ्तार करने का आदेश दयिा; उनमें से कुछ को उसने मौत की सज़ा दी, जबकि अन्य को नर्वासति कर दयिा और उनकी संपत्तजिब्त कर ली; उन्होंने केसरयिा के सभी चर्चों की संपत्तभिी जब्त कर

[2953] सत्तर में से पवत्रि प्रेरति, हरमास, जन्हिोंने थ्रेसयिाई शहर फलिपिोपोलसि में बशिप के रूप में सेवा की, का आज स्मरण कयिा जाता है। उनकी पर्व तथिपिवत्रि चर्च द्वारा 4 जनवरी को मनाई जाती है।

[2954] डल्मेशयिा – इलरियिा का दक्षणिी भाग, जो उत्तर में पैनोनयिा और पश्चमि में इटली तथा एड्रयिाटकि सागर से सटा हुआ है।

[2955] कई शहरों का नाम केसरयिा था। कैपाडोसयिा में केसरयिा – कैपाडोसयिा के रोमन प्रांत की राजधानी – एशयिा माइनर में स्थति था।

[2956] जुलीयन द एपोकेटेट ने 361 से 363 तक शाही सहिासन पर शासन कयिा।

ली, और पुरोहतिों को सैन्य सेवा में नामांकति करने और जबरन रेजमिेंटों में भर्ती करने का आदेश दयिा। शहर से उसका सम्मानजनक नाम 'केसरयिा'[2957] छीन लयिा गया, जो उसे क्लॉडयिस[2958] के शासनकाल के दौरान मलिा था, और इसे उसके पुराने नाम, 'माज़ा' से बुलाने का आदेश दयिा गया; इसे शहरों की सूची से बाहर कर दयिा गया और एक गाँव का दर्जा दे दयिा गया, जबकि इसके नविासी, जो धर्मनष्ठि ईसाई थे, उन पर एक भारी कर लगाया गया, और साथ ही यह सख्त आदेश दयिा गया कि वे तबाह हुए मंदरि को बनिा चूके बहाल करें। जूलयिन ने कसम खाई कि वह शहर पर प्रतबिंध बनाए रखना बंद नहीं करेगा और गैलीलयिनों (जैसा कि वह ईसाइयों को कहता था) को नहीं बख्शेगा, जब तक वे हेलेनकि देवताओं के नष्ट कएि गए मंदरि का पुनर्नरि्माण नहीं कर देते – और यह धमकी तब पूरी हो जाती अगर ईश्वर-द्वेषी राजा की शीघ्र मृत्यु न हुई होती[2959] ।

जहाँ तक संत यूप्सकियिस का सवाल है, जसिे जूलयिन मंदरि के वनिाश का मुख्य उत्प्रेरक मानता था, उसने आदेश दयिा कि उसे यातना दी जाए और मूर्तयिों को बलदिान चढ़ाने के लिए मजबूर कयिा जाए। और इस प्रकार पवत्रि शहीद को बेड़यिों में जकड़कर रखा गया, उसे अक्सर यातना देने के लिए बाहर लाया जाता और मूर्तयिों की पूजा करने के लिए मजबूर कयिा जाता: उसे मंदरि को नष्ट करने की हम्मित करने के लिए क्षमा का वादा कयिा गया था, बशर्ते कि वह मूर्तयिों के सामने सरि झुकाए। लेकनि मसीह के इस सपिाही ने हार नहीं मानी और मसीह के नाम की गवाही में दृढ़ रहा। उसे फांसी पर लटकाया गया और लोहे की कंघयिों से तब तक खुरच दयिा गया जब तक कि उसकी आंतें बाहर नहीं आ गईं, लेकनि एक स्वर्गदूत ने उसे बल दयिा जो उसके कष्टों के बीच उसके सामने प्रकट हुआ। अंत में, लंबे और भयानक यातनाओं के बाद, उसे तलवार से सरि कलम कर दयिा गया[2960] , और घाव से खून के बजाय चमत्कारकि रूप से दूध और पानी बहने लगा। वशि्वासयिों ने उसके पवत्रि शरीर को उठाया और सम्मान के साथ दफनाया।

उस समय, जूलयिन, फ़ारसियिों के वरिुद्ध एक अभयिान पर नकिलते हुए, कैपाडोसयिा से होकर सेज़रयिा के पास पहुँच रहा था; शहर बहुत ख़तरे में था, क्योंकि उस दुष्ट उत्पीड़क ने पहले ही खुले तौर पर शहर को ज़मीन-दोस्त करने का अपना इरादा घोषति कर दयिा था। तब संत बेसलि द ग्रेट ने, जूलयिन को एक राजा के रूप में उचति सम्मान देते हुए, उससे मलिने के लिए बाहर गए और उसे जौ की रोटी के तीन पाव प्रस्तुत कएि, जसि पर वह स्वयं जीवन यापन कर रहे थे, आशीर्वाद के लिए।

राजा ने अपने नौकरों को आदेश दयिा कि वे ये रोटी ले लें और संत बेसलि को एक मुट्ठी भूसा दे दें, यह कहते हुए:

'तुमने हमें जौ दयिा है, जो पशुओं का भोजन है; बदले में हमसे भूसा लो।'

संत बेसलि महान ने उत्तर दयिा:

'हे राजा, हमने तुम्हारे लिए वही लाए हैं जो हम स्वयं खाते हैं, फरि भी तुमने हमें मवेशयिों का चारा दे दयिा है; तुम हमारा मज़ाक उड़ा रहे हो, क्योंकि तुम अपनी शक्ति से चारे को मानव का स्वाभावकि भोजन, यानी रोटी, में नहीं बदल सकते।'

हालांकि, जूलयिन ने उससे गुस्से में कहा:

'यह जान लो: जब मैं फारस से यहाँ लौटूँगा तो मैं तुम्हें इसी भूसे से खलिाऊँगा। मैं इस शहर को मट्टिी में मलिा दूँगा, इसकी जगह हल जोतूँगा, और इसे एक खेत में बदल दूँगा। क्योंकि यह मेरे लिए कोई रहस्य नहीं है कि तुम्हारी सलाह पर, लोगों ने फोर्चूना की मूर्ति और मंदरि को नष्ट करने की हम्मित की।'

यह कहने के बाद, सम्राट अपनी यात्रा पर नकिल पड़ा और जल्द ही उसकी मृत्यु हो गई: उसे पवत्रि महान शहीद मर्करी द्वारा मार डाला गया था, जैसा कि संत बेसलि द ग्रेट के जीवन में वर्णति है। जूलयिन की मृत्यु के बाद, केसरयिा के लोगों ने पवत्रि शहीद यूप्सकियिस की कब्र पर एक भव्य चर्च का नरि्माण कयिा, और उनके पवत्रि अवशेषों से हमारे ईश्वर मसीह की महमिा के लिए चंगाई की धाराएँ बहीं, जो पति और पवत्रि आत्मा के साथ युगों-युगों तक महमिामय हैं। आमीन।

[2957] 'सीज़रयिा' नाम शब्द 'सीज़र' से लयिा गया है – जो रोमन सम्राटों का उपाधि नाम था।

[2958] बेशक, रोमन सम्राट क्लॉडयिस प्रथम, जनि्होंने 41 से 54 तक शासन कयिा।

[2959] जूलयिन द एपोस्टेट की मृत्यु फारस में एक अभयिान के दौरान एक तीर लगने से हुई। अपनी मृत्यु से पहले, उन्होंने कहा: 'तुमने मुझे हरा दयिा, हे गलीलयिाई' – 'गलीलयिाई' से तात्पर्य हमारे प्रभु यीशु मसीह से है।

[2960] यह वर्ष 362 की बात है।

परम पूजनीय शहीद और आर्चमिांड्राइट, संत वादमि का कष्टकथा।

9 अप्रैल को स्मरण कयिा जाता है

चालीस पवत्रि फ़ारसी शहीदों के नरसंहार के दौरान, राजा शपूर[2961] के आदेश पर, संत वादमि आर्चमिांड्राइट को अपने सात शष्यिों के साथ गरिफ्तार कर कैद कर लयिा गया। यह संत फ़ारस के वफिलपाता शहर के मूल नविासी थे, जो एक बहुत अमीर परविार में पैदा हुए थे; लेकनि जब उन्होंने एक भक्षिु बनने का नरि्णय लयिा, तो उन्होंने अपनी सारी संपत्तगिरीबों में बाँट दी और शहर के बाहर एक मठ बनाकर वहाँ सदाचार से रहे, हर काम में ईश्वर को प्रसन्न करने और उनकी पवत्रि इच्छा को पूरा करने का प्रयास करते रहे। क्योंकवि अनुग्रह और सत्य से परपिूर्ण एक मनुष्य था, और परमेश्वर का चुना हुआ पात्र था । यह आदरणीय पति, दवि्य और पूर्ण ज्ञान से नरि्देशति होकर, एक सुनसान पहाड़ पर चढ़ा और वहाँ नविास करते हुए, अपने उद्धारकर्ता परमेश्वर से आशीर्वाद प्राप्त कयिा और *याकूब के परमेश्वर का मुख* देखा[2962] । वे उस समय फारस के लिए, एक प्रकार से, खमीर थे – शहादत और मसीह की अटूट स्वीकारोक्तकिा वह खमीर, जसिने वशि्वास में कमजोर लोगों को मजबूत कयिा। वे वास्तव में प्रारंभकि ईसाइयों की तरह, वशि्वास की एक चट्टान थे – परमेश्वर के एक योग्य याजक जन्हिोंने कई लोगों को उद्धार के मार्ग पर मार्गदर्शन दयिा, जन्हिोंने मसीह के लिए शहीद होने का साहस और दृढ़ संकल्प दखिाया, और जन्हिोंने परमेश्वर के प्रतमिहान उत्साह प्रदर्शति कयिा। वह हर तरह की अशुद्धसिे शुद्ध थे, और उनमें कसिी भी दुष्ट काम के लिए कोई जगह नहीं थी: लालच उनसे कोसों दूर था; उनकी इच्छाएँ मुरझा चुकी थीं और उन्हें कोई नुकसान नहीं पहुँचा सकती थीं। वे लाभ की कसिी भी लालसा से परे थे और सोने से प्रलोभति नहीं हो सकते थे। उसके सामने घमंड लाचार हो गया; उसके पैरों तले अहंकार इस प्रकार कुचल गया मानो वह धूल हो, जबकगिरीबी और नम्रता में उसे आनंद मलिा। धार्मकिता उससे चपिकी रही, और सत्य उसमें चमक उठा; प्रेम ने उसकी इच्छा को गले लगा लयिा, और शांतनि े उसे चूमा और उस पर प्रसन्न हुई (देखें भजन संहति 84:11-12)। उसके हृदय में सामंजस्य और एकता नविास करती थी, और यह मनुष्य हर धर्मपरायण फल से परपिूर्ण था, और सभी उसके आध्यात्मकि फलों से आनंदपूर्वक तृप्त हुए।

वह अपने शष्यिों के साथ चार महीने तक बेड़यिों में जकड़ा जेल में रहा, और हर दनि उसे बुरी तरह पीटा जाता था, लेकनि उसने परमेश्वर में आशा और सच्चे वशि्वास से बल पाकर उन्हें धैर्यपूर्वक सहन कयिा।

उस समय वडिगरमी प्रांत में आरयिा शहर का एक गवर्नर, नरिसान नामक एक व्यक्तथिा। यह नरिसान एक ईसाई था, और जब राजा ने उसे सूर्य की पूजा करने के लिए मजबूर कयिा, तो उसने मसीह के पवत्रि वशि्वास को त्यागने से इनकार कर दयिा और उसे बेड़यिों में जकड़ दयिा गया। लेकनि फरि उसकी आत्मा डगमगा गई; वह अपने सामने आने वाली यातनाओं से भयभीत हो गया और अंत तक मसीह के प्रतविफादार नहीं रहा; इसके बजाय, इस क्षणभंगुर जीवन और राजा द्वारा प्रदान कए गए व्यर्थ सम्मानों से प्रेम करने लगने के कारण, उसने परमेश्वर का जीवन और शाश्वत महमिा खो दी। हालाँकि, जैसा कि कहानी दखिाएगी, उसे इस दुनयिा के सुखों का आनंद लेने का मौका नहीं मलिा: शहादत से बचकर, वह यातना में पड़ गया, और सांसारकि महमिा की तलाश में, उसने स्वर्गीय और शाश्वत राजा के बजाय एक अस्थायी और नश्वर राजा को प्राथमकिता देने के लिए अपमान सहन कयिा, यह वादा करने के बाद कि वह राजा सापोअर के हर आदेश का पालन करेगा। उसका नरि्णय सुनकर राजा बहुत प्रसन्न हुआ और संत वादमि को याद करते हुए, उसने तुरंत आदेश दयिा कि उसे उसकी बेड़यिों से मुक्त कर दयिा जाए और कालकोठरी से उसके पास लाया जाए, और अपने सामने खड़े कुलीनों से कहा:

'यदनिरिसान वादमि को अपने हाथों से मारता है, तो वह अपनी बेड़यिों से मुक्त हो जाएगा और उसे वादमि की सारी संपत्तमिलि जाएगी।'

राजा के शब्द तुरंत नरिसान तक पहुँचाए गए, और वह राजा की आज्ञा का अक्षरशःपालन करने के लिए सहमत हो गया। संत वादमि को नरिसान के सामने लाया गया, और दुष्ट नरिसान, अपनी म्यान से बाहर तलवार खींचकर, मसीह के शहीद को मारने की तैयारी करने लगा; लेकनि, डर के मारे, वह पत्थर की तरह अचल खड़ा रह गया।

तब मसीह के सेवक ने उसे देखकर कहा:

[2961] बेशक, फारस का राजा शापूर द्वतिीय, जसिे महान के नाम से जाना जाता है। उन्होंने 310 से 381 तक शासन कयिा।

[2962] भजन संहति 23:3–6 का संदर्भ।

'नरि्सन, क्या तुम्हारी दुष्टता इस हद तक पहुँच गई है कि तुमने न केवल अपने ईश्वर का त्याग कर दिया है, बल्कि अब उनके सेवकों को भी मारना शुरू कर दिया है? धिक्कार है तुम पर, हे नीच! तुम क्या करोगे जब तुम अंतिम न्याय के दिन शाश्वत ईश्वर के सामने हिसाब देने के लिए खड़े होगे? मैं अपने मसीह के लिए मरने को तैयार हूँ, लेकिन मैं नहीं चाहूँगा कि मेरी मृत्यु तुम्हारे हाथों से हो।'

इन शब्दों से नरिसान को शर्म नहीं आई, लेकिन वह राजा की आज्ञा का पालन करने में असमर्थ था और डर के मारे वहीं खड़ा रहा। आखिरकार, पत्थर का चेहरा बनाकर और लोहे जैसा दिल कठोर करके, उसने अपनी तलवार से शहीद की गर्दन पर वार किया। लेकिन हत्यारे के हाथ कांप रहे थे, इसलिए वह संत को एक ही वार में नहीं मार सका; कई वारों के बाद ही वह बड़ी मुश्किल से संत का सिर काट सका।

ऐसे कष्ट में, पूजनीय वादिम ने अपनी पवित्र आत्मा को ईश्वर के सुपुर्द कर दिया, और उनके मृत्यु के समय उपस्थित सभी अविश्वासियों ने शहीद के धैर्य को देखकर आश्चर्य व्यक्त किया, क्योंकि तलवार के बार-बार वार झेलते हुए, वह पत्थर के स्तंभ की तरह अचल खड़े रहे। जहाँ तक हत्यारे का सवाल है, सभी ने उसे कायर समझकर उसका उपहास किया और उससे तिरस्कारपूर्ण व्यवहार किया।

कुछ ही समय बाद, नरिसान को अपने कर्मों का उचित दंड मिला: कई और विभिन्न मानसिक यातनाओं से निराश होकर, उसने आत्महत्या कर ली!

संत वादिम ने आठ अप्रैल को यीशु मसीह के लिए शहादत प्राप्त की। उनके शरीर को, जिसे शहर के बाहर फेंक दिया गया था, भक्त लोगों ने गुप्त रूप से ले जाकर सम्मान के साथ दफना दिया।

जहाँ तक उनके सात शिष्यों का सवाल है, वे जेल में ही रहे और वहाँ चार साल तक रहे, जब तक कि राजा सावर की मृत्यु नहीं हो गई।

जब उन्हें शांतिपूर्वक रिहा किया गया, तो उन्हें हमारे प्रभु यीशु मसीह की कृपा से ईसाई धर्म का प्रचार करने की अनुमति दी गई, जिनका महिमा युगानुयुग हो। आमीन।

- इस दिन हम पवित्र शहीदों का स्मरण करते हैं: बिशप डिसान, प्रेस्बिटिर मारियाव, अवदियिस और अन्य दो सौ सत्तर, जिन्होंने 362–364 के वर्षों में फारसी राजा सावर के हाथों यातनाएँ सहीं।

23 अप्रैल

10 अप्रैल (पुराना तरीका)

इस दिन हम पवित्र शहीदों जेम्स прес्बिटिर, अज़ादान और अवदकीयस डिकिन्स का स्मरण करते हैं, जिन्होंने लगभग 380 ईस्वी में फारस में शपूर के अधीन पीड़ा सहन की।

पवित्र शहीद टेरेन्टियिस और उनके साथियों की शहादत

10 अप्रैल को स्मरणोत्सव

धर्महीन रोमन सम्राट डेसियिस[2963] ने, सभी को अपनी हानिकारक मूर्तिपूजक आस्था में परिवर्तित करने की इच्छा से, अपने साम्राज्य के सभी प्रांतों में एक आदेश जारी किया – कि सभी ईसाइयों को मूर्तियों की पूजा करने और उन पर बलिदान किया गया भोजन ग्रहण करने के लिए बाध्य किया जाए, और जो आज्ञा का उल्लंघन करेंगे उन्हें मुकदमे में लाया जाए और मृत्युदंड दिया जाए। जब यह आदेश अफ्रीका के राज्यपाल फॉर्चुनेशियिन तक पहुँचा, तो उन्होंने न्यायाधीश की कुर्सी पर बैठकर सभी लोगों को अपने सामने बुलाया और घोषणा की:

'देवताओं को बलिदान चढ़ाओ; अन्यथा, तुम्हें क्रूरता से यातना दी जाएगी और एक भयानक मृत्यु होगी।'

[2963] सम्राट डेसियिस – ईसाइयों का एक कुख्यात उत्पीड़क; उसने 249 से 261 तक शासन किया।

जैसे ही उसने ये शब्द कहे, राज्यपाल ने यातना के उपकरण दिखाए, और उन्हें देखकर कई लोग भयभीत हो गए और मसीह के धर्म से मुँह मोड़ लिया। लेकिन चालीस विश्वासी दृढ़ निश्चय कर चुके थे कि वे मसीह के लिए मरेंगे और उन्होंने एक-दूसरे से साहसपूर्वक कहा:

'भाइयो, हम दृढ़ रहें; हम मसीह, हमारे परमेश्वर, का परित्याग नहीं करेंगे, कहीं ऐसा न हो कि वह भी हमें अपने स्वर्गीय पिता और अपने पवित्र स्वर्गदूतों के सामने त्याग दें।' आओ हम याद करें कि प्रभु ने क्या कहा: *'और जो देह को तो मार डालते हैं, पर आत्मा को नहीं मार सकते, उनसे मत डर; बल्कि उसी से डर, जो आत्मा और देह दोनों को गेहन्ना में नाश कर सकता है'* (मत्ती 10:28)। जब मसीह के सेवक इन शब्दों से एक-दूसरे को प्रोत्साहित कर रहे थे, तो फॉर्चुनेशियन ने उनसे कहा:

'मैं हैरान हूँ कि तुम, परिपक्व उम्र और सही दिमाग वाले लोग, इतने पागलपन पर कैसे पहुँच गए कि तुम उसी को एकमात्र ईश्वर और राजा मानो जिसे यहूदियों ने एक अपराधी की तरह सूली पर चढ़ाया था।'

संत टेरेन्टियस ने उन सभी की ओर से उत्तर दिया:

'यदि आप, हे राज्यपाल, अपने मूर्तिपूजक भ्रम को त्याग दें और क्रूस पर चढ़ाए गए मसीह की शक्ति को जान जाएँ, तो आप उसकी उपासना और सेवा करेंगे; क्योंकि वह परमेश्वर का पुत्र, दयालु, कृपालु और अनुग्रहकारी है; अपने पिता, परमेश्वर की इच्छा से, वह पृथ्वी पर उतरे, अपनी दिव्यता को मानवता के साथ एकीकृत किया, और हमारे उद्धार के लिए स्वेच्छा से क्रूस का भार उठाया।

शासक ने कहा:

'देवताओं को बलिदान चढ़ाओ, नहीं तो मैं तुम्हारे शरीर को जलाकर तुम्हारा नाश कर दूँगा।'

संत टेरेन्टियस ने उत्तर दिया, 'क्या तुम्हें लगता है कि तुम हमें धमकियों से डरा सकते हो? नहीं, हम इतने कमजोर नहीं हैं कि हम अमर जीवन और उसके दाता को त्याग दें और मूर्तियों की पूजा करें। जो करना है, जल्दी करो; हमारे लिए यातनाएं रचो, क्योंकि हम, मसीह के सेवक, दृढ़ और अटूट हैं।'

तब राज्यपाल ने क्रोध में आकर उन्हें नग्न करके मूर्तियों के मंदिर में ले जाने का आदेश दिया। मूर्तियों को सोने-चांदी और कीमती वस्त्रों से सजाया गया था। मंदिर में प्रवेश करने पर, राज्यपाल ने संतों से कहा:

'महान देवता हरक्यूलिस को बलिदान अर्पित करो, क्योंकि उसकी शक्ति महान है और उसकी महिमा गौरवमय है।'

संत टेरेन्टियस ने कहा, 'आप भूल रहे हैं, आपके देवता पत्थर और लकड़ी, तांबे और लोहे के हैं, और सोने से सजाए गए हैं ताकि लोगों को धोखा देकर उन्हें अनंत जीवन से दूर ले जा सकें; क्योंकि वे न देखते हैं, न बोलते हैं, न सुनते हैं, न चलते हैं, क्योंकि वे मानव हाथों द्वारा ढाले और बनाए गए हैं: *'जो उन्हें बनाते हैं, और जो उन पर भरोसा करते हैं, वे भी उनके समान हों'* (भजन संहिता 113:16)।

ये वचन सुनकर, राज्यपाल ने टेरेंटियस, अफ्रीकनस, मैक्सिमिस और पोम्पेयस को कालकोठरी के भीतरी कक्षों में बंद करके कड़ी निगरानी रखने का आदेश दिया, और कहा:

'कल मैं उन्हें परीक्षा में डालूँगा।'

जहाँ तक धन्य ज़ेनो, अलेक्जेंडर, थियोडोर और अन्य लोगों का सवाल है—कुल मिलाकर छत्तीस—उन्होंने उन्हें मूर्तिपूजक मंदिर के पास के न्यायालय में लाने का आदेश दिया और उनसे कहा:

'तुम्हारे वाद-विवाद के पहले प्रयास में न तो कोई सफलता मिली और न ही कोई लाभ; अतःअब मेरी बात सुनो और महान देवता हरक्यूलिस को बलिदान चढ़ाओ।'

संतों ने उत्तर दिया:

'हम कई बार कह चुके हैं कि हम ईसाई हैं; आप यह अपने पहले ही सवाल से जानते थे, और आप हमें कभी भी अशुद्ध मूर्तियों की पूजा करने के लिए मना नहीं सकते।'

गवर्नर ने कहा:

'यदि तुम अपनी इच्छा से मेरी बात नहीं मानते हो, तो मैं तुम्हें जबरदस्ती अजेय राजाओं के आदेश का पालन करने के लिए मजबूर करूँगा,' और उसने आदेश दिया कि उन्हें गाँठदार टहनियों और सूखे स्नायुओं से निर्दयता से पीटा जाए।

लेकिन पवित्र शहीदों ने, स्वर्ग की ओर अपने हाथ उठाकर, एक स्वर में पुकारा:

'हे हमारे प्रभु परमेश्वर, हमारी ओर देख; अपने दासों की सहायता कर और हमें इस विपत्ति से छुड़ा।'

यह सुनकर, राज्यपाल ने उन्हें और भी बुरी तरह कोड़े मारने का आदेश दिया, इतना कि कई बार कोड़े बदलने पड़े और लटों और नसों की कमी हो गई। फिर राज्यपाल ने उन्हें डंडों से पीटने का आदेश दिया, और यद्यपि शहीदों के आंतड़े तक अब बाहर आ गए थे, उनके चेहरे इतने तेजस्वी और प्रसन्न थे कि हर कोई संतों के अजेय धैर्य और साहस को देखकर चकित रह गया। कोड़ों की पिटाई के बाद, राज्यपाल ने उनसे कहा:

'देवताओं को बलिदान चढ़ाओ, और मैं तुम्हें आज़ाद कर दूँगा।'

संत चुप रहे, और अपने क्रोध में उसने आदेश दिया कि लोहे की छड़ों को लाल-गरम किया जाए और उनके कंधों को झुलसाया जाए, और उनके घावों पर नमक मिलाकर सिरका डाला जाए और ऊनी फटे कपड़ों से रगड़ा जाए। फिर मसीह के पवित्र शहीदों ने, स्वर्ग की ओर देखते हुए, कहा:

'हे प्रभु हमारे परमेश्वर, जिन्होंने तीन युवकों को आग की भट्टी से बचाया: अनन्या, अजर्या और मिसैल, और जिन्होंने दानियेल को सिंहों के मुँह से बचाया, जिन्होंने मूसा को फिरौन के हाथों से बचाया और संत थेक्ला को आग और जंगली जानवरों से सुरक्षित रखा, जो अपने प्रियजनों को उनके शत्रुओं पर पूर्ण विजय प्रदान करते हैं, जिन्होंने भेड़ों के चरवाहे, हमारे महान प्रभु यीशु मसीह को मरे हुओं में से जिलाया (देखें इब्रानियों 13:20), जिन्होंने हम पर कई और विविध आशीर्वादों की वर्षा की है, जिन्होंने प्रकाश की रचना की और आकाश को एक तम्बू की तरह फैलाया, जो तारों की गिनती करते हैं और उन सभी को नाम से बुलाते हैं (देखें भजन संहिता 146:4), जिन्होंने विश्वास की सच्ची शिक्षा पृथ्वी के छोर तक फैलाई है, – जब हम आपसे प्रार्थना करें तो हमारी सुनिए और हमें हमारी परेशानियों से बचा लीजिए, क्योंकि युगानुयुग महिमा आपकी ही है। आमीन।

वे अपनी प्रार्थना अभी समाप्त भी नहीं कर पाए थे कि राज्यपाल, क्रोध से भरकर, फिर से उन्हें फाँसी देने और लोहे की पंजों से खुरचने का आदेश दे दिया, और उनकी पसलियों से रक्त की धाराएँ बहने लगीं; परन्तु यातनाओं की क्रूरता के बावजूद, वे जरा भी नहीं डगमगाए, क्योंकि परमेश्वर ने उन्हें सहारा दिया और उन्हें शक्ति और सामर्थ्य प्रदान की। और राज्यपाल ने उनसे कहा:

'क्या इन यातनाओं ने तुम्हें होश में ला दिया है, और क्या तुम अपनी मूर्खता को त्यागने के लिए तैयार हो? या क्या तुम अपनी दुष्टता पर अड़े रहोगे?'

संतों ने कोई उत्तर नहीं दिया, और राज्यपाल ने क्रोध से कहा:

'मैं तुम दुष्टों से कहता हूँ!'

तब संतों ने स्वर्ग की ओर देखकर कहा:

'हे सर्वशक्तिमान ईश्वर, जिन्होंने एक बार सोदोम नगर पर उसकी दुष्टता के कारण आग बरसाई थी, अब अपने सत्य के लिए इन झूठे देवताओं के इस दुष्ट मंदिर को नष्ट कर दें।'

ये शब्द कहकर, उन्होंने अपने माथे पर क्रॉस का चिह्न बनाया और मंदिर की दिशा में फूँका; और तुरंत ही उसमें रखी मूर्तियाँ एक बड़ी गड़गड़ाहट के साथ गिर पड़ीं और धूल में मिल गईं। फिर पवित्र शहीदों ने राज्यपाल से कहा:

'क्या तुम देख सकते हो कि ये किस तरह के देवता हैं? अब उनकी शक्ति और सामर्थ्य कहाँ है? क्या वे अपनी रक्षा कर सकते थे?'

शीघ्र ही मंदिर स्वयं ढह गया और धूल-मिट्टी में मिल गया। तब राज्यपाल ने, मंदिर और मूर्तियों के विनाश पर भयानक क्रोध में, पवित्र शहीदों का सिर कलम करने का आदेश दिया। वे, हालाँकि, इस सज़ा पर प्रसन्न हुए, परमेश्वर की महिमा की, और खुशी-खुशी फाँसी के स्थान पर चले गए; वहाँ, घुटने टेककर, उन्होंने स्वेच्छा से मसीह के लिए अपनी गर्दनें तलवार के हवाले कर दीं, और तलवार से मारे गए। विश्वासियों ने उनके पवित्र शरीरों को उठाया और उन्हें एक पवित्र स्थान पर दफना दिया।

इन पवित्र शहीदों की हत्या के बाद, राज्यपाल ने संत टेरेन्टियस, अफ्रीकनस, मैक्सिमिस और पोम्पेयस को अपने सामने लाने का आदेश दिया और उनसे कहा:

'देवताओं को बलिदान चढ़ाओ, नहीं तो तुम्हें एक भयानक मृत्यु का सामना करना पड़ेगा, और कोई भी तुम्हें मेरे हाथों से नहीं बचा सकता।'

संतों ने उत्तर दिया:

'हम मसीही हैं, और हमने अपनी आशा मसीह में रखी है; हम राक्षसों की पूजा नहीं करेंगे और न ही आपके देवताओं की सेवा करेंगे, और हम आपके यातनाओं से नहीं डरते। हमें जो भी यातनाएँ आप देना चाहें दें; हम अपने ईश्वर में विश्वास

करते हैं कि आप हमसे पराजित होंगे, जैसे शैतान मसीह से पराजित हुआ था, जो हमें आपके दुष्ट इरादों पर विजय प्राप्त करने की शक्ति देंगे।'

अधिकारियों ने पवित्र शहीदों को वापस कालकोठरी में ले जाने, उनके टखनों पर भारी लोहे की बेड़ियाँ डालने, और उनके हाथों-पैरों को लोहे की जंजीरों से बाँधने का आदेश दिया; इस हालत में, उन्हें फर्श पर बिछाए गए लोहे के त्रिशूलों पर लिटाया जाना था, और किसी को भी कालकोठरी में प्रवेश की अनुमति नहीं थी ताकि कोई उन्हें भोजन न पहुँचा सके। जब संत ऐसे कष्ट सह रहे थे और ईश्वर से प्रार्थना कर रहे थे, आधी रात को कालकोठरी में एक प्रकाश हुआ, और प्रभु का स्वर्गदूत उनके पास प्रकट हुआ और कहा:

'टेरेन्टियस, अफ्रीकनस, मैक्समिस और पोम्पेयस, सर्वोच्च ईश्वर के सेवको, उठो और अपने शरीरों को बलवान करो।'

यह कहकर, स्वर्गदूत ने उनकी बेड़ियाँ छूईं, और वे तुरंत ही गिर गईं, और उनके सामने तरह-तरह के स्वादिष्ट व्यंजनों से भरी एक मेज प्रकट हो गई।

और स्वर्गदूत ने कहा:

'विश्राम करो और उस भोजन का सेवन करो जो मसीह ने तुम्हारे लिए भेजा है।'

संतों ने मसीह ईश्वर का धन्यवाद करते हुए भोजन और पेय से तरोताज़ा हुए और अपने प्रभु का धन्यवाद किया। रक्षकों ने कालकोठरी में रोशनी देखी, तो वे अंदर गए और उन्होंने पवित्र शहीदों को आनंद मनाते और उत्सव करते देखा, और इस बात की सूचना उन्होंने राज्यपाल को दी। राज्यपाल ने सुबह शहीदों को अदालत के सामने लाकर उनसे कहा:

'क्या तुम्हारे यातनाओं ने तुम्हें होश में नहीं लाया है, और क्या तुम अपनी मूर्खता को त्यागने के लिए तैयार नहीं हो? बाहर जाओ और देवताओं की पूजा करो।'

संत टेरेन्टियस ने उत्तर दिया:

'ईश्वर हमें इस मूर्खता से बचाए—हमें और उन सभी को जो ईश्वर से प्रेम करते हैं—क्योंकि *"ईश्वर की मूर्खता मनुष्यों से अधिक बुद्धिमानी है"* (1 कुरिन्थियों 1:25), और मानव बुद्धिमानी ईश्वर के सामने मूर्खता है। हम मूर्ख होंगे यदि हम ईश्वर को त्यागकर राक्षसों की पूजा करें, जैसा कि आप करते हैं।'

शासक, इन शब्दों से क्रोधित होकर, ने उन्हें फांसी पर लटकाने और लोहे की पंजाओं से यातना देने का आदेश दिया। ऐसी यातना सहते हुए, संतों ने ईश्वर से प्रार्थना की और कहा:

'हे ईश्वर के पुत्र यीशु मसीह, जो सदा जीवित हैं, ईसाइयों के प्रकाश, हमारी दृढ़ आशा, हमारे साथ रहो और हमारी सहायता करो, और हमें लज्जित मत करो, हम जो आपके पवित्र नाम के लिए कष्ट सह रहे हैं।'

जब उन्होंने इस प्रकार प्रार्थना की, तो उन्हें कोई पीड़ा महसूस नहीं हुई, क्योंकि मसीह ने उनके दर्द को कम कर दिया।

तब राज्यपाल ने उन्हें फिर से कालकोठरी में डालने का आदेश दिया और जानवरों तथा सरीसृपों को वश में करने में निपुण जादूगरों और जादू-टोना करने वालों को बुलाकर, उन्हें सबसे क्रूर जानवरों - साँप, बिच्छू और सर्प - को इकट्ठा करने और उन्हें शहीदों के साथ कालकोठरी में बंद करने के लिए मंत्रों का उपयोग करने का आदेश दिया। लेकिन सरप, पवित्र शहीदों के पैरों तले रेंगते हुए, न तो उन्हें छूए और न ही उन्हें कोई नुकसान पहुँचाया; जबकि संतों ने गाया और ईश्वर की महिमा की। इस प्रकार उन्होंने सरपों के साथ कालकोठरी में तीन दिन और तीन रातें बिताईं, और चौथी रात को राज्यपाल ने यह पता लगाने के लिए लोगों को भेजा कि क्या सरपों ने शहीदों को मार डाला था। संदेशवाहक, कालकोठरी के दरवाजों के पास पहुँचने पर, उन्होंने पवित्र कैदियों को ईश्वर की स्तुति और भजन करते हुए सुना। क्या हो रहा था, यह और सटीक रूप से जानने की इच्छा से, वे छत पर चढ़े और उसे खोलकर देखा, तो देखा कि संत वहाँ बैठे थे, जबकि परमेश्वर का स्वर्गदूत उन सरीसृपों को शहीदों के पास आने से रोक रहा था। यह देखकर, वे भय से भर गए और तुरंत उन्होंने जो देखा था, उसकी सूचना राज्यपाल को दे दी।

सुबह-सुबह, राज्यपाल ने जादूगरों को आदेश दिया कि वे साँपों, विषैले साँपों, इचिडना और अपनी अन्य सभी सरीसृपों को कालकोठरी से निकाल दें, और शहीदों को अदालत के सामने पेश करें। जब जादूगर कालकोठरी में पहुँचे और अपने सामान्य मंत्रों का जाप करने लगे, तो सरीसृपों ने उनकी कोई परवाह नहीं की, बल्कि वे सभी बड़ी क्रोध से अपने जादूगरों पर खुले दरवाजों से टूट पड़े और उन्हें तथा वहाँ मौजूद सभी लोगों को मार गिराया। इसके बाद, संतों को अदालत

में लाया गया, और राज्यपाल ने जब देखा कि वे सुरक्षित हैं, तो वह क्रोध से आग-बबूला हो गया और उन्हें तलवार से सिर कलम करने की सज़ा सुना दी। तब शहीदों के हृदय अपार आनंद से भर गए और वे प्रसन्नचित्त होकर अपनी मृत्यु की ओर बढ़े, और गाने लगे:

'हे प्रभु, तूने हमें हमारे उत्पीड़कों से छुड़ाया है, और हमें घृणा करने वालों को लज्जित किया है।'

सेवकों ने उन्हें फांसी के स्थान पर ले जाकर, जैसा उन्हें आदेश दिया गया था वैसा ही किया, और मसीह के स्वीकारियों ने शहीद का मुकुट प्राप्त किया। धर्मनिष्ठ पुरुषों ने उनके पवित्र शरीरों को इकट्ठा किया और उन्हें शहर से दो स्टेडियम दूर सम्मान के साथ दफनाया, हमारे उद्धारकर्ता यीशु मसीह की महिमा के लिए, जो सदा और सदा जीवते और राज्य करते हैं। आमीन।

कॉन्टाकियन, स्वर 2:

आज हम परम बुद्धिमान शहीद टेरेन्टियस और उनके साथियों की सम्मानित और आनंदमय स्मृति का उत्सव मनाते हैं। आइए हम भक्तिपूर्वक निकट आएँ, ताकि हमें चंगाई प्राप्त हो: क्योंकि उन्होंने परमेश्वर से हमारे आत्माओं की दुर्बलताओं को चंगा करने के लिए पवित्र आत्मा की कृपा प्राप्त की।

- इसी दिन हम पवित्र शहीदों, जेम्स पुजारी, अज़ादान और अवदकियोस, डिकन, का स्मरण करते हैं, जिन्होंने लगभग 380 ईस्वी में फारस में शपुर के अधीन पीड़ा सहन की।

24 अप्रैल

11 अप्रैल (पुराने कैलेंडर के अनुसार)

इस दिन हम पूजनीय फार्मुफियस का स्मरण करते हैं, जो चौथी शताब्दी में उसी रेगिस्तान में रहते थे जहाँ पूजनीय जॉन एक कुएँ पर सेवा करते थे; फार्मुफियस ने उनकी सेवा की और उनकी देखभाल की।

पर्गामोन के बिशप संत एंटिपास की शहादत

11 अप्रैल को स्मरण किया जाता है

सम्राट डोमिशियन[2964] के शासनकाल में, ईसाइयों पर एक बड़ा उत्पीड़न शुरू हुआ, और सभी राजकुमारों और शासकों को आदेश भेजे गए कि ईसाइयों को बिना सवाल के शाही आज्ञाओं का पालन करना चाहिए, मूर्तिपूजक धर्म को स्वीकार करना चाहिए और मूर्तियों की पूजा करनी चाहिए। उस समय, विश्वासियों की एक भीड़ प्रकट हुई, जो निडर होकर परमेश्वर के वचन का प्रचार कर रहे थे, और उद्धारकर्ता मसीह के लिए प्रयास करने वाले शहीदों का महान साहस प्रकट हुआ। उस समय, महान प्रेरित, संत जॉन द थियोलोजियन—[2965] —को पतमोस द्वीप पर निर्वासित कर दिया गया था; वह कलीसिया का एक स्तंभ, ईसाई सत्य की नींव और परमेश्वर के एकलौते पुत्र की शाश्वत दिव्यता के प्रचारक थे। पैटमॉस में, सात दीवानों के बीच एक दर्शन में, प्रभु उसे दिखाई दिए और उसे सात स्वर्गदूतों—अर्थात् एशिया माइनर के सात चर्चों के बिशपों—को लिखने और शहीदों के दल को मजबूत करने की आज्ञा दी। ऐसा करते हुए, प्रभु ने संत एंटिपास का भी उल्लेख किया, जिनके बारे में यह विवरण बाद में दिया जाएगा। प्रभु ने अपने शिष्य से कहा: *'मैं तेरे कामों को जानता हूँ और यह भी कि तू उस जगह रहता है जहाँ शैतान का सिंहासन है, और तू मेरे नाम पर दृढ़ बना रहता है, और मेरे विश्वास को नकार नहीं दिया, यहाँ तक कि उन दिनों में भी जब मेरा विश्वासयोग्य गवाह अंतिपास तुम्हारे बीच मार डाला गया था, जहाँ शैतान रहता है'* (प्रकाशितवाक्य 2:13)।

[2964] रोमन सम्राट डोमिशियन ने 81 से 96 तक शासन किया।

[2965] पैटमॉस, एजियन सागर में एक बंजर, चट्टानी द्वीप, एफ़िसुस के दक्षिण-पश्चिम में, सानोप और नैक्सोस के बीच

क्योंकि संत एंटपिास पेरगामम की कलीसिया के बशिप थे[2966] । यूहन्ना की प्रकटवाणी के इन शब्दों से यह स्पष्ट है कि एंटपिास मसीह के कतिने वफादार गवाह थे, और पेरगामम शहर के नविासी—जो शैतान का नविास स्थान था—कैसे थे। उनके बीच, संत अंतपिास अंधकार में प्रकाश के समान, काँटों में गुलाब के समान, कीचड़ में सोने के समान थे—या, यूँ कहें, एक अग्नि-भट्टी में—जैसा लखिा है: *'उसने उन्हें भट्टी में सोने की तरह परखा'* (ज्ञान 3:6)।

वहाँ, प्रकृति के नयिमों का पालन नहीं कयिा जाता था और तर्क की कोई भावना नहीं थी; बल्कि हर कोई कानून को अपने हाथ में ले लेता था, मजबूत कमजोरों पर अत्याचार करते थे, और जो ईसाइयों को पीटते या करकर मौत के घाट उतारते थे, उन्हें बहादुर, अच्छे और धर्मी माना जाता था। और जब अवशि्वासी इस प्रकार ईसाई समुदाय पर अत्याचार और उत्पीड़न कर रहे थे, धन्य एंटपिास, जो वशि्वास में अटूट और सदाचार में दृढ़ थे, थोड़े से भी वचिलति नहीं हुए; बल्कि मानो उन्होंने अपनी मानव प्रकृति को एक स्वर्गदूत की प्रकृति में बदल लयिा हो, वे अपने शत्रुओं के वरिुद्ध दृढ़ता से और नडिर होकर खड़े रहे।

अपने यातना देने वालों की धमकयिों की परवाह कएि बनिा, वह अक्सर लोगों के बीच जाता था, और वहाँ वह भोर की तरह चमकता था, शुद्ध और सच्चे वशि्वास के प्रकाश से मूर्तपिूजा के भ्रम के अंधकार को दूर करता था। इसलएि, राक्षस (जनि्हें यूनानी देवता मानते थे) सभी वहां से भाग गए, और उनमें से एक ने भी पेरगेमोन शहर में रहने की हमि्मत नहीं की, जहाँ संत एंटपिास रहते थे। दैत्य अपने पुरोहतिों के सपनों में प्रकट हुए और उन्हें बताया कि वे अब उनके बलदिानों में भाग नहीं लेते और न ही वे भेंटों की धूप की सुगंध लेते हैं, क्योंकि उन्हें ईसाइयों के नेता द्वारा भगा दयिा जा रहा था। तब यूनानी क्रोधति हो गए और अंतपिास पर टूट पड़े; उसे पकड़कर वे उस स्थान पर ले गए जहाँ वे आमतौर पर अपने दुष्ट बलदिान देते थे। और राज्यपाल ने उससे कहा:

'क्या तुम वही अंतपिास हो जो न केवल स्वयं राजा की आज्ञाओं का पालन करने में वफिल रहता है, बल्कि दूसरों को भी ऐसा करने की शकि्षा देता है, और इस प्रकार हमारी बलदिानों में इतनी बाधा डालता है कि देवताओं में से कोई भी बलदिान की चर्बी से तृप्त नहीं हो पाता?' तुम्हारे कारण, देवताओं ने हमारे शहर को त्याग दयिा है, और इस बात का खतरा है कि कोई वपित्ति उस पर आ पड़े, क्योंकि वे अब इसकी रक्षा नहीं करना चाहेंगे। तुम्हारी ईसाई जादू-टोने की मनमानी अब काफी है; अब पश्चाताप करो और हमारे कानूनों के आगे समर्पण करो, ताकि इस शानदार शहर पर शासन करने वाले देवता, हमारी परवाह करना और हमारी रक्षा करना बंद न कर दें। और यदि आप ऐसा करने से इनकार करते हैं, और अपने धर्म को नहीं त्यागते और हमारी पूजा का तरिस्कार करते रहते हैं, तो, रोमन कानून के तहत, आपको एक उपयुक्त दंड दयिा जाएगा।

संत एंटपिास ने उत्तर दयिा:

'यह जान लो, राज्यपाल: मैं एक ईसाई हूँ, और राजा की मूर्खतापूर्ण और अधर्मी आज्ञा का पालन करने की मेरी कोई इच्छा नहीं है। लेकनि चूँकि आपके प्रश्नों का एक उचति उत्तर मलिना चाहएि, तो मेरी बात सुनें। यदि आपके देवता, जनि्हें आप पूरे ब्रह्मांड के स्वामी कहते हैं, एक नश्वर मनुष्य द्वारा—जैसा कि वे स्वयं कहते हैं—भगा दएि गए हैं, और यदि जनि्हें आप अपने रक्षक और मध्यस्थ मानते हैं, वे स्वयं आपकी मदद मांग रहे हैं, तो इससे आप आसानी से अपनी गलती को पहचान सकते हैं। यदि वे उन लोगों को दंडति करने में असमर्थ हैं जनि्होंने उनका अपमान कयिा है और यह स्वीकार करते हैं कि वे एक ही व्यक्ति से पराजति हुए हैं, तो वे संपूर्ण मानव जाति—या यहाँ तक कि एक भी शहर—को वपित्ति से कैसे बचा सकते हैं? इसे ध्यान में रखते हुए, आपको कम से कम अब तो अपने हानकिारक भ्रम से मुँह मोड़कर मसीह पर वशि्वास करना चाहएि, जो मानव जाति को बचाने के लएि स्वर्ग से उतरे थे। यही मसीह युगों के अंत में सभी का न्याय करने और प्रत्येक व्यक्ति को उनके कर्मों के अनुसार, चाहे यातना देकर हो या सम्मान देकर, पुरस्कृत करने के लएि वास्तव में आएँगे।

इस समझदारी भरे जवाब के बाद, राज्यपाल ने फरि से संत एंटपिास से बात करना शुरू कयिा:

तुम अपनी ही रची-रचानी नई वधियिों और कानूनों का पालन करते हो, और परमेश्वर की प्राचीन उपासना की उपेक्षा कर बैठे हो, जसिे हमने सबसे पहले अपने पूर्वजों से प्राप्त कयिा था और जो हमें उनसे वरिासत में मलिी है। हमारे पूर्वजों की प्रथाओं से वमिुख होना उचति नहीं है, क्योंकि पुराना नए से बेहतर है, और जो समय के साथ स्थापति हुआ है,

---

[2966] पर्गामोन – ग्रेटर मसिया (एशयिा माइनर के उत्तर-पश्चमिी भाग में) का एक शहर – पर्गामोन के राज्य की राजधानी थी। प्राचीन काल में, यह अपनी संपत्ति, वलिासति और वशिाल पुस्तकालय के साथ-साथ पार्चमेंट (लखिने के लएि चमड़ा) के आवष्किार—या, अधकि सटीक रूप से, परष्किरण—के लएि प्रसद्धि था। बाद में, इस शहर को रोमन साम्राज्य में शामलि कर लयिा गया।

वह अधकि वशि्वसनीय और अधकि प्रशंसनीय है। इसलए, तुम्हें भी अपना वशि्वास बदलना चाहए और उस मनुष्य का अनुसरण नहीं करना चाहए जो कुछ समय पहले प्रकट हुआ था और, कुछ जादू-टोनों के द्वारा, मानव जीवन को भ्रम में डाल दयिा था, और जसिे पोंटयिस पलिातुस के अधीन सूली पर चढ़ाया गया था। इसलए, राजा की आज्ञाओं का पालन करो, और तुम हमारे साथ आराम से रहोगे; और हम हर तरह से तुम्हारी मदद करेंगे और तुम्हें पतिृवत् प्रेम से प्रेम करेंगे; क्योंकि तुम्हारी उन्नत आयु तुम्हें एक पता के रूप में हमारे प्रेम और सम्मान के योग्य बनाती है।

इस पर, संत एंटपिास ने उत्तर दयिा:

'भले ही तुम मेरे सामने अनगनित तर्क पेश करो, मैं इतना मूर्ख और बेवकूफ़ नहीं हूँ कि परपिक्व बुढ़ापे में पहुँचकर और मृत्यु के करीब आकर, अपना वशि्वास बदल लूँ और इस दयनीय और अपमानजनक जीवन के लए, अपने स्थापति वशि्वास-स्वीकृति का त्याग कर दूँ। इसलए, मेरे मन को धोखा न दो, जो नरिंतर दैवीय धर्मग्रंथों के अध्ययन में लगा रहता है। क्योंकि आरंभ में, आपके कोई भी देवता मौजूद नहीं थे; वे बाद में प्रकट हुए और उन्होंने कोई अच्छा काम नहीं कयिा, और न ही उनसे हमें कोई लाभ मलिा; बल्कि जैसे वे स्वयं घृणति और नरिर्थक थे, वैसे ही वे दूसरों के लए एक दुष्ट और कामुक जीवन का कारण बने। और यदि प्राचीन, दुष्ट रीति-रिवाजों को बनाए रखना आवश्यक है, तो मनुष्यहत्यारे काइन का अनुकरण करना चाहए। आप उन लोगों का अनुसरण क्यों नहीं करते जो स्वर्ग में आरोहण करना चाहते थे और अपनी बहनों के साथ व्यभचिार करने में लज्जति नहीं थे, जसिके कारण वे जलप्रलय में नष्ट हो गए थे? यदि आप भी उनकी प्राचीनता के कारण उनके दुष्टाचार का अनुकरण करते हैं, तो आपको पानी से नहीं, बल्कि शाश्वत अग्नि और उस कीड़ा से दंडति कयिा जाएगा जो कभी नहीं मरता, जब तक कि आप पश्चाताप न करें।

इन शब्दों के बाद, दुष्टों ने उस पवत्रि पुरुष को पकड़ लयिा और उसे आर्टेमसि के मंदरि[2967] में घसीट कर ले गए, जहाँ एक काँसे का बैल खड़ा था: उन्होंने इस बैल को आग से तपाकर लाल-गरम कर दयिा, और पवत्रि शहीद को उसमें फेंक दयिा। हालाँकि, उन्होंने क्रूस का चह्न बनाया और ईश्वर से प्रार्थना करते हुए पुकार लगाई:

हे परमेश्वर, जसिने हमें हमारे प्रभु यीशु मसीह का वह रहस्य प्रकट कयिा है जो युगों से छपिा हुआ था, जसिके द्वारा आपने हमें अपनी योजना की अथाह गहराइयों को जानने दयिा है, मैं आपकी सभी आशीर्वादों के लए धन्यवाद करता हूँ, – क्योंकि आपने हम पर, जो आप में अपनी आशा रखते हैं, कृपा की है, और इस घड़ी मुझे अपने पवत्रि नाम के लए पीड़ा सहने वाले पवत्रि शहीदों में गनि जाने का सम्मान दयिा है। मेरी आत्मा को ग्रहण करो, जो अब इस जीवन से वदिा हो रही है, और यह अनुग्रह प्रदान करो कि मैं तेरी और तेरे एकलौते पुत्र की दृष्टि में अनुग्रह प्राप्त करूँ – और केवल मुझे ही नहीं, बल्कि मुझसे बाद में जीने वालों को भी, उन्हें अपनी दया का भागीदार बना, ताकि तेरा पवत्रि नाम सर्वदा और युगानुयुग सभी द्वारा महमिामय माना जाए। आमीन।

इन और इसी प्रकार के शब्दों के साथ, संत एंटपिास ने एक लाल-गरम भट्टी में यातनाएँ सहते हुए लंबी प्रार्थना की। फरि, पूरी दुनिया के लए प्रार्थना करने के बाद, उन्होंने अपनी आत्मा ईश्वर के हाथों में सौंप दी, जैसे कोई मीठी नींद में सो गया हो, और शहादत के गौरवमय मुकुट से सुसज्जति होकर स्वर्ग में आरोहण कयिा[2968] । धर्मनष्ठि लोगों ने उनके पवत्रि अवशेषों को लेकर पर्गामोन नगर में ही सम्मानपूर्वक दफनाया, और उनसे मूर्रा बही, जसिने हमारे ईश्वर मसीह की महमिा के लए सभी मानवीय दुर्बलताओं को चंगा कयिा, जो सदा पता और पवत्रि आत्मा के साथ महमिामय हैं। आमीन।

ट्रोपारयिन, स्वर 4:

हे संत शहीद एंटपिास, आपने मूर्तयिों की चापलूसी का अंत कयिा, और शैतान की शक्ति पर वजिय प्राप्त कर, परमेश्वर के शत्रुओं के सामने साहसपूर्वक मसीह की गवाही दी। इसलए, स्वर्ग में स्वर्गदूतों के साथ नवास करते हुए, सर्व के प्रभु की स्तुति करते हुए, और हमारी ओर से वनितीपूर्ण धन्यवाद अर्पति करते हुए, आप चंगाई का अनुग्रह

[2967] आर्टमिसि – जन्हिें डायना के नाम से भी जाना जाता है – यूनानयिों के बीच एक प्रसद्धि वधिर्मी देवी थीं; वह चंद्रमा का प्रतीक थीं और उन्हें जंगलों तथा शकिार की संरक्षक माना जाता था। इस देवी की पूजा भव्यता और वैभव के साथ की जाती थी।

[2968] एशयिा में पेरगेमोन के बशिप, पवत्रि शहीद एंटपिास, का 95 ईस्वी में नधिन हो गया; उनके पर्व दविस (11 अप्रैल) को कॉन्स्टेंटनिोपल में वशिेष रूप से सम्मानति कयिा जाता था, जहाँ थयिोडोसयिस महान (379–395) के शासनकाल के दौरान, पेरगेमोन से वह बैल लाया गया था जसिमें सेंट एंटपिास को जलाया गया था।

प्रदान करते हैं। इसी कारण हम आपको, हे पवत्रि शहीद एंटपिास, सम्मान देते हैं; हमारे परमेश्वर मसीह से प्रार्थना करें कि वे हमारी आत्माओं को बचाएँ।

कॉन्टाकयिन, स्वर 4:

हे धन्य, आप प्रेरतिों के सहकर्मी और पवत्रि महाधर्माध्यक्षों के भूषण थे; शहादत द्वारा महमिामय होकर, आप सूर्य के समान प्रकाशति हुए, हे अतपिवत्रि एंटपिास, सभी को प्रकाशति करते हुए और अधर्मीपन की गहरी रात को दूर करते हुए। इसी कारण हम आपको एक दव्यि पवत्रि शहीद और चंगा करने वाले के रूप में सम्मानति करते हैं।

पवत्रि शहीदों प्रोकेसस और मार्टनियिानुस का स्मरणोत्सव

11 अप्रैल को स्मरण कयिा जाता है

पवत्रि शहीद प्रोसेसस और मार्टनियिानुस मूल रूप से मूर्तपिूजक थे और रोम में स्थति मामर्टनि जेल[2969] में अधीक्षक के रूप में कार्य करते थे।

पवत्रि प्रेरति पतरस और पौलुस को ईसाई धर्म का प्रचार करने के लिए वहाँ कैद कयिा गया था। कारागार में प्रेरतिों द्वारा कए गए चमत्कारों को देखने के बाद, प्रोकुलस और मार्टनियिन मसीह में वश्विास करने लगे; और जब प्रेरति पतरस, प्रार्थना करने और टार्पयिन चट्टान[2970] पर क्रूस का चह्नि बनाने के बाद, पहाड़ से पानी नकिाला, तो न केवल प्रोकुलस और मार्टनियिन बल्कि कुल 47 अन्य कैदी भी बपतस्मिा ग्रहण कर लिए।

प्रोसेसस और मार्टनियिनस, मसीह में वश्विास करने और बपतस्मिा लेने के बाद, प्रेरतिों को कालकोठरी से मुक्त कर दयिा; लेकनि प्रभु स्वयं रोम से आते समय प्रेरति पतरस के पास प्रकट हुए, और उनसे कहा कि उन्हें एक बार फरि से सूली पर चढ़ाया जाने वाला है, और इन शब्दों से उन्हें रोम लौटने के लिए मजबूर कर दयिा, जहाँ उन्हें फरि से सैनकिों द्वारा बंदी बना लयिा गया।

इस बीच, प्रोसेसस और मार्टनियिनस के कमांडर पॉलनिस को सूचना मलिी कि वे ईसाई बन गए हैं। संतों को अपने सामने बुलाकर, पॉलनिस ने उन्हें ईसाई धर्म त्यागने के लिए समझाना शुरू कयिा; लेकनि जब उन्होंने उसका वरिोध करना और मूर्तयिों की नदिा करना शुरू कर दयिा, तो उसने आदेश दयिा कि उनके होंठों पर वार कयिा जाए। बाद में, जब—और भी अधकि प्रोत्साहन, जो लगातार नरिर्थक और व्यर्थ थे, के बाद भी—संत अपने धर्म-त्याग पर अडगि रहे, तो उन्हें यातना वृक्ष पर लटका दयिा गया, तेज औजारों से क्रूरतापूर्वक पटिवाया गया और उनकी पसलयिों पर आग से जलाया गया। लेकनि संतों ने इन सभी कष्टों को धैर्यपूर्वक सहन कयिा, जबकि लुसीना नाम की एक रोमन महलिा ने उनका उत्साह बढ़ाया और उन्हें सांत्वना दी।

इस बीच, दुष्ट यातना देने वाले पर ईश्वर का दंड आने में देर नहीं हुई। पॉलनिस, जसिने संतों को यातना देने का आदेश दयिा था, उसे तुरंत ईश्वर द्वारा अपनी बाईं आँख खोने की सजा मलिी और एक दुष्ट आत्मा द्वारा पीड़ति होकर, तीन दनि बाद उसकी मृत्यु हो गई।

[2969] ममर्टनि जेल रोम शहर के उत्तरी भाग में स्थति थी। इसका उद्देश्य मुख्य रूप से राजकीय अपराधयिों के लिए था, एक ऐसी श्रेणी में जसिमें ईसाई भी शामलि थे। यह जेल आज भी अपने पुनर्स्थापति रूप में मौजूद है, और जनि कोठरयिों में प्रेरति पतरस और पॉल को कैद कयिा गया था, उनकी कैथोलकिों द्वारा एक पवत्रि स्थल के रूप में वशिेष देखभाल से रक्षा की जाती है।

[2970] टार्पयिन चट्टान रोम में कैपटिोलनि पहाड़ी के पश्चमिी हस्सि पर स्थति थी। प्राचीन रोम में, यह चट्टान उस स्थान के रूप में काम करती थी जहाँ से मृत्युदंड पाए अपराधयिों को फेंका जाता था। रोमन कविदंती के अनुसार, इस चट्टान का नाम नम्निलखिति घटना से पड़ा: रोमूलस और सैबनि राजा टाइटस टाटयिस के बीच युद्ध के दौरान, टार्पयिा, एक वेस्टल वर्जनि (एक कुंवारी जो एक मूर्तपिूजक वेदी पर सेवा करती थी), ने सोने के वादे से लुभाकर सैबन्सि को कैपटिोलनि हलि में प्रवेश करने दयिा। चूंकि समझौते की शर्तों के अनुसार सैबन्सि को टार्पयिा को वह सब कुछ देना था जो वे अपनी बाईं बांह पर पहने हुए थे, कैपटिोलनि हलि पर पहुंचने पर उन्होंने उस देशद्रोही पर, उसकी उम्मीद के मुताबकि कंगनों के बजाय, ढालों से हमला कयिा, जनिके वजन के नीचे उसकी मृत्यु हो गई। तब से, इस चट्टान को टार्पयिन रॉक के नाम से जाना जाता है।

पव्लनि के बेटे ने रोम के प्रीफेक्ट[2971] से पवत्रि शहीदों को बनिा कसिी देरी के फांसी देने का आग्रह कयिा, जसिके बाद उन्हें रोम की दीवारों के बाहर[2972] सरि कलम कर दयिा गया। उनके पवत्रि शरीर को उपरोक्त लुसीना द्वारा ले जाया गया और पवत्रि शहीदों के लिए उचति सम्मान के साथ दफनाया गया।

- इसी दनि, हम पूजनीय फार्मुफयिस का स्मरण करते हैं, जो चौथी शताब्दी में उसी रेगस्तिान में रहते थे जहाँ पूजनीय जॉन, जनिका स्मरण 29 मार्च को कयिा जाता है, ने एक कुएँ में तपस्या की थी; फार्मुफयिस ने उन्हें भोजन प्रदान करके उनकी सेवा की।

25 अप्रैल

12 अप्रैल (पुराने कैलेंडर के अनुसार)

उसी दनि, पवत्रि शहीदों मीना, डेवडि और जॉन का स्मरणोत्सव मनाया जाता है, जन्हिें फलिस्तीन में सरासीनों द्वारा छोड़े गए तीरों से भेदा गया था।

हमारी पूज्य माता अतानासयिा का जीवन

12 अप्रैल को स्मरण कयिा जाता है

पवत्रिजनों के जीवन और कर्मों का वर्णन, जो उन्हें पढ़ते या सुनते हैं, उनके नर्मिाण के लिए, न केवल एक प्रशंसनीय और उद्धारकारी प्रयास है, बल्कि उन्हें याद करने की प्रेरतिों की आज्ञा की पूर्ति भी है। यही हमें प्रेरति करता है कि हम धन्य अथानासयिा के जीवन का, भले ही संक्षप्ति, ववरिण प्रस्तुत करें, और यह भी कि उनके जीवन के सद्गुणों के उदाहरण, जो बहुत पुरानी बातें हैं, भूल जाएँ नहीं जाएँ, और इस प्रकार कई लोग अपने आत्माओं के लिए अत्यधकि आध्यात्मकि शक्षिाओं से वंचति न रह जाएँ।

यह प्रशंसनीय महलिा, जसिका नाम अमरत्व का पर्याय है[2973] , जसिने अपने सदाचारी जीवन में स्वयं को स्वर्गीय प्रभु की एक वफादार और अच्छी सेवकिा साबति कयिा, धार्मकि और कुलीन माता-पतिा - नकितिा और मारयिा - के घर जन्मीं; वे एजयिाना द्वीप[2974] पर रहते थे, जहाँ वह कन्या का जन्म हुआ, जो बाद में पवत्रि आत्मा का एक चुना हुआ पात्र बनी। सात वर्ष की आयु में ही, उसने शीघ्रता से भजन संहति पढ़ना सीख लयिा और, पुस्तकों के प्रति अपने प्रेम के कारण, उसने वशिेष रूप से लगन से पवत्रि धर्मग्रंथों को पढ़ने के लिए खुद को समर्पति कर दयिा। एक दनि, जब अपने करघे पर काम कर रही थीं, तो उन्होंने ऊपर से एक चमकता हुआ तारा अपनी ओर उतरते हुए देखा; जब वह उनकी छाती तक पहुँचा और उन्हें पूरी तरह से प्रकाशति कर दयिा, तो वह गायब हो गया। उस क्षण से, उस युवती की आत्मा प्रबुद्ध हो गई: दुनयिा की व्यर्थता से घृणा करने लगी, उसने एक मठ में प्रवेश करने का संकल्प लयिा। लेकनि उसके माता-पतिा ने अपनी बेटी के इस नेक इरादे का कड़ा वरिोध कयिा और उसकी मर्जी के खलिाफ उसे शादी के लिए मजबूर कयिा। वह केवल सोलह दनि ही ववविाहति रहीं, जसिके बाद वह अप्रत्याशति रूप से वधिवा हो गईं: देश पर अचानक बर्बर मूरों ने हमला कर दयिा, इसलिए अथानासयिा के पति को युद्ध में जाना पड़ा, जहाँ, ईश्वर की अज्ञात लीला से, उनकी मृत्यु हो गई। वधिवा होने पर, अथानासयिा ने एक बार फरि से एक मठ में जाने का संकल्प लयिा, लेकनि इससे पहले कि वह अपनी इच्छा पूरी कर पाती, राजा का एक फरमान आया, जसिमें कुंवारी लड़कयिों और युवा वधिवाओं को उसके सैनकिों से शादी करने के लिए कहा गया था। अपने माता-पतिा के मनाने पर, अथानासयिा ने दूसरी बार शादी कर ली। और अपनी नई शादी में, उसने अपनी मोक्ष की चति की उपेक्षा नहीं की: न तो वह सुख-भोगों के बहकावे में आई और न ही सांसारकि चीजों की अत्यधकि चति में लपिटी, उसने अपना लगभग सारा समय या तो पवत्रि धर्मग्रंथ पढ़ने में या भजन गाने में बतिाया।

[2971] प्रीफेक्ट – शहर का प्रमुख।

[2972] पवत्रि शहीदों का नधिन पहली शताब्दी के उत्तरार्ध में हुआ। अब उनके अवशेष वेटकिन में सेंट पीटर्स बेसलिकिा में, उनके नाम समर्पति चैपल में वरिाजमान हैं।

[2973] अफानसी नाम, जब ग्रीक से रूसी में अनुवादति कयिा जाता है, तो इसका अर्थ 'अमरत्व' होता है।

[2974] यह द्वीप ग्रीस के पास स्थति है।

नम्रता और सच्ची वनिम्रता उसकी मुख्य शोभा थीं; इसलिए, उसका परविार उसे प्यार से ही देख सकता था, जबकि उसके पड़ोसी, जो उसके सदाचारी जीवन को जानते थे, उसकी प्रशंसा कि बनिा नहीं रह सकते थे। उन्हें गरीबों की मदद करना इतना पसंद था कि कभी-कभी उनके धनी घर में दान करने के लिए कुछ भी नहीं बचता था: वे अपने पास आने वाले संतों और यात्रियों का सम्मानपूर्वक स्वागत करती थीं, और उन्हें प्यार से आश्रय देती थीं; वधिवाओं, अनाथों और सभी जरूरतमंदों को उन्होंने उदारतापूर्वक जीवन की आवश्यक वस्तुएँ वतिरति कीं। एक समय, जब उस देश में एक भीषण अकाल पड़ा, जसिसे कई लोग दरदि्रता में पड़ गए, तो अथानासयिा ने न केवल अपने साथी वशि्वासयिों को बल्कि वहाँ रहने वाले मूर्तपिूजकों को भी खलिाया: जब वे भूख से मर रहे थे, तो वे धन्य अथानासयिा के पास आए, और उन्होंने उन्हें न केवल भोजन और कपड़े बल्कि उनकी ज़रूरत की हर दूसरी चीज़ भी दी, इस प्रकार प्रभु के वचन को पूरा कयिा: *'जसि प्रकार तुम्हारा पति दयालु है, वैसे ही तुम भी दयालु बनो'* (लूका 6:36), *'ताकि तुम स्वर्ग में अपने पति की संतान बनो, क्योंकि वह अपने सूर्य को दुष्टों और भलों पर उदय करता है, और धर्मी और अधर्मी दोनों पर वर्षा भेजता है'* (मत्ती 5:45)।

रवविार और पर्व के दनिों में, अथानासयिा अपने पड़ोसयिों को स्नेहपूर्वक अपने घर आमंत्रति करती थीं और उनके लिए पवत्रि धर्मग्रंथ पढ़ती थीं, जसिसे उनमें ईश्वर के प्रति प्रेम जागृत होता था और उन्हें सदाचारी जीवन जीने की शकि्षा मलिती थी। इस प्रकार, ईश्वर को प्रसन्न करने वाले जीवन में नरिंतर वृद्धि करते हुए, अथानासयिा सद्गुणों से सुशोभति थीं, ठीक वैसे ही जैसे वसंत में एक खेत फूलों से सुशोभति होता है। ववािह के कई वर्षों के बाद, उन्होंने अपने पति को दुनयिा और उसके प्रलोभनों को त्यागकर एक मठ में प्रवेश करने के लिए मना लयिा: उन्होंने अपनी पत्नी की सलाह मानी और, एक सच्चे भकि्षु बनकर जनि्होंने अपने ध्येय के अनुरूप जीवन जयिा, अपने सरि मुंडवाने के कुछ समय बाद शांतपिूर्वक नधिन कर गए।

वधिवा होने के बाद, धन्य अथानासयिा ने अपना पूरा जीवन केवल ईश्वर की सेवा के लिए समर्पति कर दयिा। उन्होंने अन्य धर्मपरायण महलिाओं को ढूंढा जो ईश्वर से उनके समान प्रेम करती थीं और जनिका उद्देश्य भी वही था, और वे खुशी-खुशी उनमें शामलि हो गईं। इसके तुरंत बाद, गरीबों में अपना सामान बाँटने और एक धार्मकि वृद्ध से संन्यास की शपथ लेने के बाद, उन महलिाओं ने दुनयिा से अलग होकर, मौन जीवन के लिए एक एकांत स्थान चुना। तीन या चार साल बाद, धन्य अथानासयिा के मना करने के बावजूद, उन महलिाओं ने उन्हें अपना मार्गदर्शक बनने के लिए मना लयिा।

लेकनि यद्यपि वह एबेस (सन्यासनिी प्रमुख) का पद धारण करती थीं, वह स्वयं को उनमें सबसे छोटा मानती थीं, प्रभु की आज्ञा के अनुसार: *'तुम में जो बड़ा होना चाहता है, वह तुम्हारा सेवक बने'* (मत्ती 20:26)।

और उसकी वनिम्रता की पूरी सीमा को व्यक्त करने के लिए शब्द खोजना मुश्कलि है: वह स्वयं को अन्य महलिाओं की संगति में रहने के लिए भी अयोग्य समझती थी, इसलिए वह उनकी सेवाएँ स्वीकार करने को स्वयं को और भी अधकि अयोग्य समझती थी; इसलिए उसने उनमें से कसिी को भी उसकी सेवा करने की अनुमति नहीं दी, यहाँ तक कि उसके हाथों में पानी डालने की भी नहीं। उनका उपवास अत्यंत कठोर था: वे केवल शाम को ही थोड़ी सी रोटी खाती थीं और अपनी प्यास बुझाने के लिए आवश्यक से अधकि पानी नहीं पीती थीं; वे तेल, शराब, पनीर और मछली का सेवन केवल मसीह के जन्म और मसीह के गौरवमय पुनरुत्थान के पर्वों पर ही करती थीं, और ईश्वर का धन्यवाद करती थीं; पवत्रि लेंट और उपवास के अन्य अवधयिों के दौरान, उसका एकमात्र भोजन कच्ची हरी सब्जयिां थीं, जनि्हें वह हर दो दनि में केवल एक बार ही खाती थी; पानी के लिए, वह उन दनिों में जतिना संभव हो उतना कम पीती थी। ज़मीन पर रखे और मोटे बालों वाली खुरदरी कमीज़ से ढके पत्थर उसके बस्तिर का काम करते थे, जसिे वह हर रात अपने आँसुओं से भीग जाती थी, ठीक दाऊद की तरह (देखें भजन संहति 6:7); और ये आँसू, जो ईश्वर के प्रति उनके प्रेम और अपनी पापी प्रकृति के बोध से उत्पन्न होते थे, प्रार्थना करते और भजन गाते समय उनकी आँखों से धारा की तरह बहते थे। अथानासयिा का बाहरी वस्त्र भेड़ के ऊन का बना था; उसके नीचे, वह एक मोटे बालों की चोगा पहनती थीं। वह बहुत कम सोती थी, लेकनि रात का अधकिांश समय ईश्वर से प्रार्थना में और धार्मकि चंतिन में बतिाती थी; जबकि दनि के दौरान, अकेले या अन्य महलिाओं के साथ मलिकर, वह भजन गाने में स्वयं को समर्पति कर देती थी। वह इस बात का ध्यान रखती थीं कि एक भी घंटा प्रार्थना के बनिा न बीते; वह दाऊद के उदाहरण का अनुसरण करते हुए, नरिंतर प्रभु की स्तुति करती थीं, जो कहते हैं: *'मैं हर समय प्रभु का धन्यवाद करूंगा; उसकी स्तुति सदा मेरे मुख में रहेगी'* (भजन संहति 33:2)।

कन्वेंट में प्रवेश करने के दनि से लेकर अपनी मृत्यु तक, उसने एक बार भी बगीचे का कोई फल नहीं चखा। अथानासयिा ने बहनों का शासन करने और उनकी देखभाल करने के दौरान बहुत दुख सहन कयिा; फरि भी, अपनी नम्रता और वनिम्रता के कारण, उसने उनमें से कसिी के प्रति एक भी अपमानजनक या ताना मारने वाला शब्द नहीं कहा; चाहे

कोई छोटा हो या बड़ा, दास हो या स्वतंत्र, किसी ने भी उससे कभी कोई अपमानजनक बात नहीं सुनी; उसने आने वाले जीवन में अपने पुरस्कार पर भरोसा रखते हुए, बहनों की बार-बार की अवज्ञा को नम्रता और शांति से सहन किया। बहनों का नेतृत्व करने के चार वर्षों के बाद, धन्य अथानासिया ने इस स्थान से कहीं और जाने का निर्णय लिया, जहाँ चुपचाप ईश्वर की सेवा करना अधिक सुविधाजनक हो। ईश्वर की कृपा से, उन्हें मैथ्यू नाम का एक भिक्षु मिला—एक वरिष्ठ जो पहले पुरोहित और मठाधीश रह चुके थे—जो सद्गुण और पवित्रता वाले व्यक्ति थे। जब उन्हें इन महिलाओं के उत्तम इरादे के बारे में पता चला, तो उन्होंने उन्हें उसी ईजिया द्वीप पर वांछित स्थान दिखाया: यह एक एकांत पहाड़ था, जिस पर संत स्टीफन प्रथम शहीद को समर्पित एक प्राचीन चर्च स्थित थी। इस स्थान को देखकर, पूज्य अथानासिया ने कहा: 'मैं इसे लंबे समय से अपनी आत्मा में जानती थी, और मुझे विश्वास है कि हम अपनी मृत्यु तक यहाँ रहेंगे।' पूज्य मैथ्यू ने उस भूमि के बिशप के आशीर्वाद से, सेंट स्टीफन के चर्च के पास, धन्य अथानासिया और उनकी बहनों के लिए एक मठ स्थापित किया।

आदरणीय मैथ्यू का जीवन, भले ही कुछ ही शब्दों में, उल्लेखनीय है। इस आदरणीय पिता ने एक महान तपस्या का प्रयास किया: वह हर रात भजन-संग्रह पढ़ते थे, और अपने पाठ के साथ प्रार्थनाएँ करते थे; और जब आराम करने की आवश्यकता होती थी, तो वह लेटकर नहीं बल्कि बैठकर, और वह भी केवल बहुत ही थोड़ी देर के लिए सोते थे। जब वे भजन-पाठ करते, प्रार्थनाएँ पढ़ते या निर्मल बलिदान अर्पित करते थे, तो वे इतने गहरे रूप से भावुक हो जाते थे कि अपने आँसू नहीं रोक पाते थे, और उपस्थित लोग भी ऐसी मार्मिक दृश्य से अपने लिए लाभ प्राप्त किए बिना नहीं रह पाते थे। आदरणीय मत्ती केवल एक मोटे बालों का वस्त्र पहनते थे और उन्होंने महान संयम और तपस्या के कार्यों के माध्यम से अपने शरीर को पूरी तरह से वश में कर लिया था। उनकी प्रभु यीशु मसीह के प्रति शिष्य, संत जॉन द थियोलोजियन के प्रति विशेष भक्ति थी। एक गर्मियों के दिन, पवित्र प्रेरित के पर्व के दिन, जब आदरणीय मैथ्यू दिव्य अनुष्ठान करने वाले थे, तो उन्होंने उनके साथ सेवा कर रहे एक पुरोहित से कहा: 'अब एफेसस में होने और वहाँ पवित्र सुसमाचार प्रचारक योहन द थियोलोजियन को देखने के लिए कौन योग्य है?' इन शब्दों के बाद, उन्होंने अपने हृदय की गहराई से एक आह भरी और जोर-जोर से रो पड़े। और एक चमत्कारिक घटना घटी: पूज्य पिताजी और उनके दो साथी पुरोहितों ने संत जॉन द थियोलोजियन को वेदी के पास खड़ा देखा; यह दृश्य लिटिर्जी के अंत तक बना रहा। यह देखकर संत मत्ती इतने गहरे रूप से प्रभावित हुए और इतनी आध्यात्मिक खुशी से भर गए कि वे अगले तीन दिनों तक कुछ भी नहीं खा सके। एक अवसर पर, पूर्ण रूप से लकवाग्रस्त एक व्यक्ति को आदरणीय के पास लाया गया; उस पर दया करके, उन्होंने अपना अपना ओढ़ना उतारकर लकवाग्रस्त व्यक्ति पर ओढ़ा दिया, जो तुरंत ही ठीक हो गया। एक और व्यक्ति उसके पास आया जिसका चेहरा शैतान के काम से विकृत हो गया था, और जब पूजनीय ने अपने हाथ से उसके चेहरे पर क्रॉस का चिह्न बनाया, तो वह तुरंत अपने सामान्य स्वरूप में लौट आया। इसी तरह, एक वृद्ध महिला, जो एक अशुद्ध आत्मा से पीड़ित थी, संत के पास आई और उनकी प्रार्थनाओं के माध्यम से, वह अपने उत्पीड़क से मुक्त हो गई। इसी प्रकार, एक और नन, जो भी एक अशुद्ध आत्मा से पीड़ित थी, को चंगा कर दिया गया।

फिर भी, ईश्वर के इस महान सेवक का, जैसा कि अभी वर्णित घटना से स्पष्ट है, जिसने प्रभु से चंगा करने का वरदान प्राप्त किया था, ईश्वर की अथाह योजनाओं के अनुसार पानी में एक हिंसक मृत्यु हुई। जिस जहाज पर रेवरेंड फादर यात्रा कर रहे थे, जो कॉन्स्टेंटिनोपल जा रहा था, वह उसमें सवार सभी लोगों के साथ डूब गया। इस प्रकार ईजिया द्वीप रेवरेंड फादर के अवशेषों से वंचित रह गया, जो कई लोगों के लिए चंगाई का स्रोत होते। उनके बाद, इग्नाशियस नाम का एक व्यक्ति, जिसे जन्म से ही नपुंसक बनाया गया था, ने पुरोहित और मठाधीश के रूप में सेवा की; अपने पुण्य जीवन और प्रभु से प्राप्त वरदानों में, वह आदरणीय मत्ती के समान थे; अपनी मृत्यु तक ईश्वर भक्ति के मार्ग से विचलित हुए बिना, वह सम्मानपूर्वक प्रभु के पास चले गए; उनके ताबूत पर, दुष्टात्माओं को निकाला गया और बीमारियों से चंगाई हुई। अब आइए एक बार फिर आदरणीय अथानासिया के जीवन के वृत्तांत पर लौटते हैं।

कहा जाता है कि परम पूज्य अथानासिया में महान नम्रता और विनम्रता थी: वह लगभग लगातार ईश्वर से प्रार्थना करती रहती थीं, और कभी-कभी, आकाश की ओर देखते हुए, एक अद्भुत दृश्य देखती थीं जो उन्हें विस्मित कर देता था: उसने एक उज्ज्वल बादल को देखा जो सूर्य की किरणों को बिखेर रहा था, और उसके बीच एक पुरुष को अकथनीय सुंदरता से चमकते हुए देखा। यह बार-बार होने वाला दृश्य उसे आश्चर्य से भर देता था और उसे ई य करने पर मजबूर कर देता था: 'इस पुरुष को ऐसी सुंदरता किसने प्रदान की है? किन गुणों के कारण उसे ऐसी महान महिमा का योग्य समझा गया है?' जब वह इस पर विचार कर रही थी, तो उसे ऐसा लगा मानो एक आवाज़ ने उससे ये शब्द कहे: 'जिस पुरुष पर तुम चकित हो,

उसे विनम्रता और सौम्यता के संयोजन से इस प्रकार सुसज्जित किया गया है; जान लो कि इन गुणों के माध्यम से तुम भी वही प्राप्त करोगी।'

दिन-प्रतिदिन, जब वह इस अद्भुत दृश्य पर मनन करती रही, तो वह आदरणीय महिला विनम्रता और नम्रता के माध्यम से इतनी लगन से स्वयं को सँवारती रही कि इस मामले में उसकी बराबरी करने वाला कोई मिलना मुश्किल था: उसमें क्रोध या अहंकार का तनिक भी अंश नहीं देखा जाता था; वह अन्य गुणों में भी निपुण थी, और यही कारण था कि उसकी आत्मा की दृष्टि, जो पाप से कलंकित नहीं थी, स्वर्ग में अद्भुत दृश्यों को देख सकी। साथ ही, प्रभु ने उसे चमत्कार करने का वरदान भी प्रदान किया। एक दिन, जब वह अकेली थी, धर्म-चिंतन में मग्न, तो आँखों में बहुत दर्द से पीड़ित एक व्यक्ति उसके पास आया और उससे अपने लिए ईश्वर से प्रार्थना करने को कहा। उसने विनम्रता से और उसे सांत्वना देते हुए कहा:

'मुझे भी आँखों की बीमारी है; धैर्य रखो, और ईश्वर तुम्हारी मदद करेंगे।'

लेकिन वह विश्वास से चंगा होने की प्रार्थना करते हुए, उसे छोड़कर नहीं गया। तब धन्य अथानासिया ने अपने हाथ को उसकी आँखों पर रखकर कहा:

'हे प्रभु यीशु मसीह, जिन्होंने जन्म से अंधे व्यक्ति को चंगा किया, वे आपको भी, हे भाई, पूर्ण स्वास्थ्य प्रदान करें।'

और तुरंत ही वह व्यक्ति अपनी पीड़ा से मुक्त हो गया। धन्य अथानासिया की ख्याति पूरे देश में फैल गई: बीमारों की भीड़ मठ में आने लगी, और वहाँ उन्होंने पूजनीय की प्रार्थनाओं के द्वारा आरोग्य प्राप्त किया। संत स्टीफन के चर्च के बगल में, पूजनीय अथानासिया ने तीन और चर्चों की स्थापना की: एक परम पवित्र परमेश्वर की माता को, दूसरा संत जॉन द फोरेरनर को, और तीसरा संत निकोलस द वंडरवर्कर को समर्पित; उन्होंने परमेश्वर की अति पवित्र माता के चर्च को सजाने-संवारने में विशेष ध्यान दिया, और इसके अलंकरण के लिए आवश्यक सभी चीजें उन भक्तिपूर्ण लोगों से प्राप्त की जो पूजनीय अथानासिया का अत्यधिक सम्मान करते थे।

लेकिन लोगों द्वारा उन्हें प्रदान की गई प्रसिद्धि और सम्मान, और मिलने आने वालों द्वारा लगाए गए प्रतिबंधों ने उनके भीतर असंतोष और किसी अन्य स्थान पर एकांत की तलाश की इच्छा को जन्म दिया। अपनी दो बहनों, मरीना और यूप्रैक्सिया को साथ लेकर, वह गुप्त रूप से कॉन्स्टेंटिनोपल चली गईं, जहाँ वह सात वर्षों तक एक मठ में रहीं। परमेश्वर की अति पवित्र माता के अपने प्रिय चर्च के लिए, जिसे उन्होंने अपनी ही हाथों से बनाया था, गहरी तड़प में, वह अक्सर अपने आँसुओं के बीच कहती थीं:

'अत्याचार और व्यर्थ मानवीय प्रशंसा ने मुझे मेरी मालकिन, ईश्वर की माता के चर्च से अलग होने पर मजबूर कर दिया; व्यर्थ महिमा से बचते हुए, मैंने उनके भव्य मंदिर को छोड़ दिया और अब एक अजनबी की तरह यहाँ बैठी हूँ।'

हालाँकि, वहाँ भी वह आदरणीय व्यक्ति अज्ञात नहीं रह सकीं, और यहाँ भी ईश्वर ने अपनी सेविका को महिमामय बनाया: उन्होंने दुष्टात्माओं को भगाना और बीमारों को चंगा करना शुरू कर दिया। उनकी ख़बर उनके एजिया मठ में रहने वाली बहनों तक पहुँची: वे धन्य अथानासिया के पास आईं और उन्होंने उनसे अपने मठ में उनके साथ वापस चलने की विनती की, यह एक ऐसा निर्णय था जिसके लिए उन्हें एक विशेष दर्शन द्वारा भी प्रेरित किया गया था। उस पूज्य ने अपनी बहनों यूप्रैक्सिया और मरीना से कहा: 'अब हमारे लिए घर लौटने का समय आ गया है: एक दर्शन में मैंने परमेश्वर की परम पवित्र माता का खुला हुआ चर्च देखा, जिसमें हमें प्रवेश करने का आदेश दिया गया था।'

और, कॉन्स्टेंटिनोपल छोड़ने के बाद, वह अपनी बहनों के साथ एजियाना द्वीप पर अपने कॉन्वेंट लौट आईं। वहाँ, उनके लौटने के कुछ ही समय बाद, वह गंभीर रूप से बीमार पड़ गईं और बारह दिनों के भीतर, उन्हें अपनी निकट मृत्यु का पता चल गया: उन्होंने दो सफेद वस्त्र पहने हुए पुरुषों को देखा जो उनके पास आए, उन्हें एक लिखा हुआ लपेटा हुआ कागज़ दिया और कहा: 'यह तुम्हारी स्वतंत्रता है; इसे लो और आनंदित होओ।' जब वह उस दर्शन के बाद होश में आई, तो उसे एहसास हुआ कि उसे जल्द ही प्रभु के पास जाना होगा और, इसलिए, उसने बारह दिनों तक न तो भोजन किया और न ही पानी पिया; और अपने आसपास की बहनों से कहा:

'गाओ, मेरी बहनों, और परमेश्वर की अनवरत स्तुति करो, ताकि वह हमारे पापों पर दया करे।'

जब बारहवाँ दिन आया, तो उस सम्माननीय महिला ने उनसे कहा:

'मेरी मदद करो, क्योंकि मैं बहुत कमज़ोर हो गई हूँ– चर्च जाओ और भजन संहिता का पाठ पूरा करो, क्योंकि मैं अब ऐसा नहीं कर सकती, क्योंकि मैंने अपनी ताकत लगभग पूरी तरह से खो दी है।'

वे रोते हुए उससे पूछने लगीं:

'आपने कौन सा भजन पढ़ा है? हमें कहाँ से पढ़ना शुरू करना चाहिए?'

उसने धीरे से उत्तर दिया:

'मैं अब नब्बेवाँ भजन पढ़ रही हूँ और अब और पढ़ नहीं सकती।'

बहनें गईं और भजन संहिता का पाठ पूरा किया। फिर वे आईं और पूजनीय के बिस्तर के सामने साष्टांग दंडवत हो गईं, उनसे अपने लिए अंतिम प्रार्थना करने का आग्रह किया। उन्होंने सभी के लिए प्रार्थना की और मरीना और यूप्रैक्सिया को गले लगाते हुए कहा:

'मेरी प्रिय बहनों, आज हम बिछड़ रहे हैं, लेकिन आने वाले युग में ईश्वर हमें फिर मिलाएंगे; प्रभु आपको प्रेम की शांति, हृदय की एकता प्रदान करें और आप पर अपनी कृपा बनाए रखें।'

जब उन्होंने ये और अन्य विदाई के शब्द कहे, तो उनका चेहरा प्रकाश की तरह चमक उठा, जिससे उपस्थित लोग आश्चर्य और भक्ति से भर गए। इस बीच, परमेश्वर की अति पवित्र माता के निद्रारोहण का पर्व नजदीक आ रहा था, और आदरणीया ने अपनी बहनों से कहा:

'ध्यान रखना कि उत्सव के लिए आवश्यक कुछ भी न भूलें; सेवा ठीक से संपन्न हो, और अनाथों, गरीबों और विधवाओं के लिए एक उत्सव का भोजन तैयार करें; और दैवीय अनुष्ठान के बाद, मेरे इस नश्वर शरीर को मिट्टी में सौंप देना।'

यह कहकर और जिन बहनों का उसने उल्लेख किया था, उन्हें गले लगाकर, वह प्रभु में सो गईं, मानो किसी सामान्य, प्राकृतिक नींद में हो। वह बिल्कुल वैसे ही दिख रही थीं जैसे जीवित हों: उन्होंने अपनी आँखें बंद की थीं और अपने होंठ स्वयं सी लिए थे, इसलिए पारंपरिक अंतिम संस्कार की रस्मों की कोई आवश्यकता नहीं थी। बहनें, उनके शरीर से चिपकी हुई, अपनी अनाथता पर इस प्रकार विलाप करने लगीं:

'कहाँ,' उन्होंने कहा, 'तुम चली गईं, हमारी पवित्र माता, जिनका नाम अमरत्व है? क्या तुमने सचमुच हमें त्याग दिया, हमें अनाथ छोड़ दिया, हमारी दृष्टि से दूर हो कर?' हम फिर कभी आपका दिव्य चेहरा कहाँ देखेंगे? हम फिर कभी आपकी वह आवाज़ कहाँ सुनेंगे, जो हमारे दुखों में हमें सांत्वना देती है और हमें सद्कर्मों की ओर मार्गदर्शन करती है? वह दीपक, जिसने हममें उत्साह और आशा जगाई थी, बुझ गया है! अब आप सो रही हैं, जबकि हम आपकी याद में मृत्यु के कगार पर हैं; हम आपको अब हमारे साथ दिव्य सेवा में भाग लेते और अपने शब्दों तथा अपने उदाहरण से हमें निर्देश देते हुए नहीं देख पाएँगे। प्रभु ने आपको अपने अमर धाम में बसा लिया है।

इस प्रकार वे विलाप करते हुए उस पूजनीय की पवित्र देह को अंतिम संस्कार के लिए ले गए।

धन्य अथानासिया का 14 अगस्त को, परम पवित्र ईश्वर की माता के स्वर्गारोहण के पर्व की पूर्व संध्या पर निधन हो गया; स्वयं पर्व के दिन, दैवीय धर्मविधि संपन्न होने के बाद, उन्हें अपनी बहनों के अवर्णनीय विलाप के बीच सम्मान के साथ दफनाया गया। जो बहन उस पूज्य बहन के बाद अधिष्ठात्री बनीं, वे दिन-रात उनकी कब्र के पास रहती थीं, और संत अथानासिया उन्हें सपने में दिखाई दीं, और कहा: 'निश्चिंत विश्वास करो कि मेरे निधन के चालीसवें दिन मुझे वह प्राप्त होगा जो प्रभु ने मेरे लिए तैयार किया है।' जब मठाधिपति जागीं, तो वे उस दर्शन और पूज्य नन के शब्दों के अर्थ को लेकर चिंतित हो गईं। चालीसवें दिन, बहनें, जैसा कि कभी-कभी होता है, पारंपरिक स्मरणोत्सव आयोजित करना भूल गईं, यह सोचकर कि यह दो दिन बाद होगा। उस शाम, पवित्र मठाधिपति प्रकट हुईं और कहा:

'तुमने चालीसवें दिन को क्यों भूल गईं और मेरी स्मृति के लिए कुछ भी क्यों नहीं किया – न तो गरीबों को दान दिया और न ही, जैसा कि उचित था, उन लोगों का स्वागत किया जो मेरी स्मृति मनाना चाहते थे?'

एब्बेस उठीं, उन्होंने ध्यान से दिनों की गिनती की, और उन्हें एहसास हुआ कि वास्तव में यह चालीसवें दिन की शाम ही थी, जिस दिन स्मरणोत्सव किया जाना था। अगली सुबह, जब दिव्य लिटिर्जी के दौरान स्मरणोत्सव आयोजित किया जा रहा था, तो दो नन, जो गायन मंडली की अगुआ थीं, जिनकी हृदय की आँखें ईश्वर ने खोल दी थीं, ने चर्च में एक अद्भुत दृश्य देखा: दो भव्य पुरुष, जो सफेद वस्त्र पहने हुए थे, चर्च में प्रवेश किए, और वे पूजनीय अथानासिया का नेतृत्व कर रहे थे; उसे पवित्र वेदी के सामने रखकर, उन्होंने उसे कीमती रत्नों से जड़ा एक शाही बैंगनी चोगा पहनाया और उसके सिर पर एक शाही मुकुट रखा, जिसके सामने और पीछे एक-एक क्रॉस था, और उसके हाथ में कीमती रत्नों से जड़ा एक सुनहरा राजदंड भी थमा दिया, फिर, उसकी बाहों से पकड़कर, वे उसे शाही द्वारों से होते हुए पवित्र वेदी में ले गए।

प्रस्तावना में धन्य अथानासिया के बारे में यह भी वर्णन है। जब वह प्रभु के पास जा रही थीं, तो उन्होंने अपनी बहनों को आज्ञा दी कि वे पूरे चालीस दिनों तक हर दिन गरीबों के लिए एक स्मारक भोजन का आयोजन करें। लेकिन उन्होंने उनकी आज्ञा केवल नौवें दिन तक ही निभाई, और फिर बंद कर दिया। तब संत दो स्वर्गदूतों के साथ उनके सामने प्रकट हुईं और कहा:

'तुमने मेरी अंतिम इच्छा क्यों भूल गईं? जान लो कि चालीस दिनों के दौरान आत्मा के लिए दी गई दान-पुण्य और पुरोहित की प्रार्थनाएँ ईश्वर को प्रसन्न करती हैं: यदि दिवंगत आत्माएँ पापी थीं, तो प्रभु उन्हें पापों से क्षमा प्रदान करते हैं; लेकिन यदि वे धर्मी थीं, तो जो लोग उनके लिए प्रार्थना करते हैं उन्हें आशीर्वादों से पुरस्कृत किया जाएगा।'

यह कहकर, वह पूजनीय व्यक्ति अपनी लाठी जमीन में ठोककर अदृश्य हो गईं; बहनों ने सुबह उठकर उनकी लाठी को पूरी तरह से खिले हुए देखा और सभी चीजों के स्रष्टा, ईश्वर की स्तुति की। इस प्रकार प्रोलॉग में वर्णित है।

पूज्य अथानासिया के निधन के एक वर्ष बाद, उनकी स्मृति के दिन, जैसा कि मेटाफ्रैस्टस वर्णन करते हैं, दो पवित्र पुरुष मठ में आए, जिनके साथ दुष्ट आत्माओं द्वारा पीड़ित एक महिला थी। कब्र पर से आवरण हटाकर, उन्होंने मिट्टी खोदकर उस पुनीत महिला के शरीर वाले ताबूत को बाहर निकाला, और जैसे ही उन्होंने ईश्वर की स्तुति की, अशुद्ध आत्माएँ तुरंत चली गईं, और वह महिला चंगी हो गई। ताबूत से एक सुगंधित खुशबू निकल रही थी, और वहाँ मौजूद लोगों ने उसमें से मिरिा टपकते हुए देखा। फिर उन्होंने ताबूत खोला, और वहाँ मौजूद लोगों की आँखों के सामने वह पूजनीय महिला इस प्रकार दिखाई दी मानो वह अभी-अभी सोई हो: उसका चेहरा तेज से दमक रहा था; उसका शरीर, जिससे मिरिा निकल रहा था, लचीला था, इसलिए उसकी बाहें मोड़ी जा सकती थीं; उसमें क्षय का कोई भी लक्षण नहीं था। यह दृश्य देखकर सभी की आँखों से खुशी के आँसू अपने आप छलक पड़े। पवित्र पुरुषों ने ताबूत बंद कर दिया और अवशेषों को जमीन में दफनाने के बजाय, उन्हें चर्च में सार्वजनिक प्रदर्शन के लिए रखने का निर्णय लिया, और उन्होंने वैसा ही किया; बाद में, एक नया मकबरा तैयार करने के बाद, उन्होंने धन्य अथानासिया के पवित्र अवशेषों को उसमें स्थानांतरित कर दिया। ननियों ने अवशेषों से जटाओं वाले कपड़े हटाकर रेशम के नए कपड़े तैयार किए; लेकिन जब उन्होंने पवित्र अवशेषों को उनमें लपेटने की कोशिश की, तो वे ऐसा नहीं कर सकीं क्योंकि संत अतानासिया ने इसकी अनुमति नहीं दी। जैसे कि वह अभी भी जीवित हों, उन्होंने अपनी छाती के पास अपने हाथ मजबूती से रख लिए, बहनों के इरादे का विरोध करते हुए: वह रेशमी वस्त्र नहीं चाहती थीं, और मृत्यु में भी गरीबी से प्रेम करती रहीं। ननों में से एक, जो अपने सदाचारी जीवन के कारण पवित्र आत्मा का एक चुना हुआ पात्र बन गई थी, घुटनों के बल बैठ गई और प्रार्थना करने लगी, उस पूजनीय को संबोधित करते हुए जैसे कि वह अभी भी जीवित हों:

'हे माता, जैसे आप हमारे साथ रहते हुए हमें सदैव निश्चित आज्ञाकारिता दिखाती थीं, वैसे ही अब कृपा करके हमारी बात सुनें और इस विनम्र वस्त्र को धारण करें जो हम आपको अर्पित करते हैं।'

जब उसने प्रार्थना करना समाप्त कर लिया, तो पूज्य अथानासिया ने उसकी बात सुनी, और—क्या चमत्कार!—वह उठ खड़ी हुईं, बैठ गईं, और वस्त्र ग्रहण करने के लिए अपने हाथ फैला दिए; वस्त्र धारण करने के बाद, वह फिर से अपनी कफ़न में लेट गईं। और उनके पवित्र अवशेषों पर कई चमत्कार हुए: हर तरह की बीमारियों से लोग ठीक हुए, और उनकी पवित्र प्रार्थनाओं से दुष्टात्माएं लोगों को छोड़ गईं; उनके सभी चमत्कारों का विस्तार से वर्णन करने के लिए पर्याप्त समय भी नहीं होगा, और जो कोई भी उनकी जीवन कथा को पढ़े या सुने, उसे पछतावा न हो: आइए हम पूजनीय की एक संक्षिप्त, फिर भी शिक्षाप्रद, कथा पर ही संतुष्ट रहें।

और आप, धन्य अथानासिया, अमरत्व के नाम से सम्मानित, दिव्य स्वर्गदूतों की संगिनी और जो मसीह के लिए सुसमाचार के अनुसार दरिद्र हो गईं, फिर भी दिव्य उपहारों से समृद्ध हुईं; सदैव रोती रहीं, फिर भी अटूट सांत्वना पाती रहीं; अपनी सांसारिक जीवन को प्यास और भूख में बिताया, फिर भी शाश्वत आनंद प्राप्त किया; हे गरीबों के प्रति दयालु और ईश्वर की कृपा प्राप्त, आप जिन्होंने अपने हृदय की पवित्रता के द्वारा पवित्र आत्मा का प्रकाश और अपनी आत्मा में शांति प्राप्त की, और पवित्र आत्मा का मंदिर तथा पृथ्वी पर सद्गुणों का भांडार बन गईं, जिसके लिए आपको स्वर्ग में अनुपम महिमा का पात्र समझा गया, आप, जिन्होंने संतों के समूह में अपनी जगह बनाई है और उनके आनंद में सहभागी हैं, हम पर भी ध्यान दें, जो आपके सदाचारी जीवन की प्रशंसा करते हैं और आध्यात्मिक आनंद के साथ आपकी स्मृति का सम्मान करते हैं। इस संसार की उथल-पुथल भरी लहरों के बीच जिए गए हमारे जीवन को देखें, ताकि, आपकी प्रार्थनाओं के माध्यम से धार्मिकता से जीवन जीकर, ताकि हम शैतान के जालों से बच सकें और, आपके साथ, हमारे प्रभु

यीशु मसीह की कृपा से अनंत आनंद प्राप्त कर सकें, जिन्हें पिता और पवित्र आत्मा के साथ, महिमा, सम्मान और आराधना हो, अब और हमेशा और युगों-युगों तक। आमीन।

हमारे पूजनीय पिता इसाक सीरियाई का जीवन।

12 अप्रैल को स्मरणोत्सव

रोम के पोप, संत ग्रेगरी द डायलॉजिस्ट, डीकन पीटर के साथ अपने संवाद[2975] में, संत इसाक के बारे में निम्नलिखित बातें कहते हैं। प्राचीन गोथों के दिनों में, स्पोलेटो शहर के पास, इसाक नाम का एक अत्यंत धर्मी व्यक्ति रहता था; वह गोथिक शासन के अंत तक वहीं रहा[2976] , और रोम के कई निवासियों को वह जाना-पहचाना था। उनमें से, ग्रेगरी नाम की एक युवती, जो रोम में परमेश्वर की परम पवित्र माता के चर्च में रहती थी, संत इसाक का विशेष सम्मान करती थी। अपनी युवावस्था में, ग्रेगोरिया की सगाई हो गई थी, लेकिन जब उसकी शादी का समय आया, तो वह मठ के संन्यास की शपथ लेने की इच्छा से चर्च की ओर दौड़ी; पूजनीय इसाक ने ग्रेगोरिया को उसके रिश्तेदारों से बचाया, जो उसे जबरदस्ती चर्च से बाहर खींचने की कोशिश कर रहे थे, और ईश्वर की मदद से, उन्होंने उसे एक नन के रूप में मुंडन कर दिया; इस प्रकार ग्रेगरी ने अपने सांसारिक वधूवर को ठुकराकर, स्वर्गीय वधूवर के साथ सगाई के योग्य मानी गईं। संत ग्रेगरी द डायलॉजिस्ट ( ) ने संत आइज़ैक के बारे में परम पूजनीय फादर एलेउथेरीयस से बहुत कुछ जाना, जो उस रेवरेंड फादर के घनिष्ठ मित्र थे, और संत आइज़ैक के बारे में उन्होंने जो कुछ भी वर्णन किया, वह उनके जीवन के अन्य विवरणों से पूरी तरह से प्रमाणित हुआ।

संत इसाक मूल रूप से इटली के नहीं थे, लेकिन हम यहाँ केवल उन चमत्कारों का वर्णन करेंगे जो उन्होंने उस देश में किए थे। जब आदरणीय इसाक सीरिया से स्पोलेटो पहुँचे, तो वे सबसे पहले चर्च में गए; वहाँ उन्होंने सैक्रेस्टनों से अनुमति माँगी कि वे उन्हें अपनी इच्छानुसार चर्च में प्रार्थना करने दें, भले ही चर्च के दरवाज़े बंद हो जाने के बाद भी वे रात में वहीं रुकना चाहें। और, प्रार्थना शुरू करने के बाद, उन्होंने बिना आराम के वहाँ ढाई दिन बिताए। यह देखकर, सेक्सटन (चर्च के परिचारक) में से एक, जो घमंड से ग्रस्त था – एक ऐसा गुण जिसने अंततः उसे पाप करने के लिए प्रेरित किया और उसमें रेवरेंड के प्रति अनुचित आक्रोश जगाया – ने संत इसाक का अपमानजनक शब्दों में अपमान करना शुरू कर दिया, और उन्हें एक पाखंडी कहा कि जो लगभग तीन दिनों से प्रसिद्धि पाने के लिए प्रार्थना का नाटक कर रहे थे; फिर, रेवरेंड फादर के पास आकर, उसने उनकी गाल पर थप्पड़ मारा, यह मांग करते हुए कि वह, एक पाखंडी के रूप में, अपमानित होकर चर्च छोड़ दे। तुरंत, इस सेक्सटन पर दंड आ पड़ा: ईश्वर की अनुमति से, एक अशुद्ध आत्मा अचानक उस पर कब्ज़ा कर गई और उसे अत्यधिक पीड़ा देते हुए, एक चीख के साथ उसे ईश्वर के पुरुष के पैरों तले गिरा दिया: 'इज़ेक मुझे बाहर निकाल देगा!'

अशुद्ध आत्मा द्वारा यह नाम उच्चारित किए जाने से पहले, कोई भी उस यात्री का नाम नहीं जानता था। पादरी उस पीड़ित व्यक्ति की ओर झुके, और अशुद्ध आत्मा तुरंत उससे निकल गया। चर्च में जो हुआ था उसकी खबर पूरे शहर में तेजी से फैल गई, और तुरंत ही पुरुष और महिलाएं, अमीर और गरीब सभी, परमेश्वर के उस पुरुष को अपने घरों में आमंत्रित करने के लिए चर्च की ओर भागे; कुछ ने उसके लिए गांवों और जमीनों सहित एक मठ स्थापित करने का वादा किया, जबकि अन्य उसे भोजन और जीवन की सभी आवश्यक चीजें प्रदान करना चाहते थे।

लेकिन सर्वशक्तिमान परमेश्वर के सेवक ने उससे किए गए सभी वादों को ठुकरा दिया: शहर छोड़कर, उसे पास ही एक सुनसान जगह मिली, जहाँ उसने अपने लिए एक छोटी सी कुटिया बना ली। वहाँ बहुत से लोग उनके पास आने लगे: उनके सदाचारी जीवन को देखकर, आने वालों में से कुछ में अनंत जीवन के प्रति प्रेम जागृत हुआ और, पूजनीय पिता के मार्गदर्शन में, उन्होंने स्वयं को पूरी तरह से ईश्वर की सेवा के लिए समर्पित कर दिया; इस प्रकार एक मठ की स्थापना

[2975] यह संवाद संत ग्रेगरी महान की प्रसिद्ध कृति *इटालियन पादरियों के जीवन और चमत्कारों पर संवाद* में संकलित है, जिसके लिए उन्हें 'संवादकार' के नाम से जाना जाने लगा। यह कृति चार पुस्तकों से मिलकर बनी है और इसमें ईश्वर की कृपा से किए गए धर्मपरायण लोगों के कर्मों का वर्णन है; संत ग्रेगरी ने इन विवरणों के लिए जानकारी आंशिक रूप से इतालवी पादरियों के साथ अपनी बातचीत से, और आंशिक रूप से सीरैक्यूज़ के बिशप मैक्सिमिलियन द्वारा प्रदान की गई जानकारी से प्राप्त की।

[2976] यह लगभग छठी शताब्दी के दूसरे भाग की शुरुआत तक था, जब इटली में गोथिक शासन अंततः समाप्त हो गया।

हुई। जब संत इसाक के शष्यिों ने उनसे मठ की जरूरतों के लिए लाए गए उपहार स्वीकार करने के लिए कहा, तो उन्होंने, गरीबी के प्रति अपने प्रेम को दृढ़ता से बनाए रखते हुए, उत्तर दिया: 'जो भिक्षु संपत्ति अर्जित करता है, वह अब भिक्षु नहीं रहता; वह अपनी गरीबी खोने से उतना ही डरता था जितना कि अमीर संचयी अपने खजाने को खोने से डरते हैं।'

संत इसाक को भविष्यवाणी की आत्मा से संपन्न किया गया था; अपने चमत्कारों और पुण्यमय जीवन के कारण, जो प्रकाश की तरह चमका, वह उस भूमि के सभी निवासियों के बीच प्रसिद्ध हो गए। एक दिन, जब शाम ढल रही थी, उन्होंने भ्राताओं को आदेश दिया कि वे मठ में उपलब्ध सभी कुदालें उठाकर सब्जी के बगीचे में फेंक दें; और जब भ्राता अगले सुबह अपनी प्रातःप्रार्थना के लिए उठे, तो पूज्य पिता ने कहा: 'सूर्योदय पर हमारे मजदूरों के लिए भोजन तैयार करो।' निर्धारित समय पर भोजन तैयार होने के बाद, संत इसाक ने उसे बाहर ले जाने का आदेश दिया और भाइयों के साथ सब्जी के बगीचे की ओर चल पड़े; वहाँ उन्होंने उतने ही मजदूर पाए जितनी कुदालें पछिली शाम बगीचे में फेंकी गई थीं। ये लोग चोर थे जो सब्जी के बगीचे में लूटपाट करने के इरादे से घुसे थे; लेकिन अंदर जाने पर, उन्होंने अपना बुरा इरादा त्याग दिया और वहाँ मिली कुदालें लेकर, बगीचे में प्रवेश करने के पहले ही घंटे से लेकर रेवरेंड फादर के आने तक काम करना शुरू कर दिया; इस दौरान, उन्होंने सब्जी के बगीचे की सारी बंजर ज़मीन जोत डाली। उनके पास आकर, संत इसाक ने कहा: 'भाइयो, आनंदित हो! काम करना बंद करो, क्योंकि तुमने पूरी रात कड़ी मेहनत की है।' अपने साथ लाया हुआ भोजन उन्हें देकर, उन्होंने उनसे खाने और अपनी मेहनत से आराम करने के लिए कहा। जब उन्होंने मन भरकर खा लिया, तो रेवरेंड ने उनसे इन शब्दों में कहा: 'अब से, बुराई करने की सभी प्रवृत्ति को त्याग दो; यदि तुम्हें सब्जी के बगीचे से कुछ चाहिए, तो खुलेआम आओ, जो तुम्हें चाहिए वह मांगो और आशीर्वाद से लो; चोरी छोड़ दो।' तब पूजनीय पिता ने आदेश दिया कि उनके लिए जितना वसंत का अनाज वे चाहें, इकट्ठा किया जाए। इस प्रकार, जो लोग बुरे इरादे से सब्जी के बगीचे में घुसे थे, जिनकी आत्मा पाप के बोझ से दबी हुई थी, वे पापमुक्त होकर, आशीर्वाद लेकर और अपने श्रम का पुरस्कार लेकर वहाँ से चले गए। एक अन्य अवसर पर, फटे-पुराने कपड़े पहने कुछ यात्री संत इसाक के पास आए और उनसे कपड़े मांगे। उन्हें थोड़ी देर रुकने के लिए कहकर, पूज्य पिता ने अपने एक शिष्य को बुलाया और उससे गुप्त रूप से कहा: 'मठ के पीछे के बगीचे में जाओ; वहाँ, एक ही जगह पर, खोखले तने वाला एक पेड़ है; उसमें जो कपड़े मिलें उन्हें निकालकर यहाँ ले आओ।' वह भाई वहाँ गया जहाँ उसे भेजा गया था और खोजने पर, उसे वास्तव में खोखले तने में छिपाए हुए कपड़े मिले; उन्हें लेकर, उसने निजी तौर पर अपने गुरु को दे दिया। कपड़े मिलते ही, ईश्वर के उस पुरुष ने उन्हें यात्रियों को देते हुए कहा: 'चूँकि तुम नग्न हो, लो, इन्हें पहन लो।' उन्होंने उन्हें ले लिया और उन्हें अपने ही कपड़े के रूप में पहचान लिया, जिन्हें उन्होंने जानबूझकर छिपाया था; उन्हें बहुत शर्मिंदगी हुई, क्योंकि धोखे से दूसरे के कपड़े प्राप्त करने की कोशिश करने के बाद, वे अपने ही कपड़े स्वीकार करने के लिए मजबूर हो गए। ऐसा भी हुआ कि एक धार्मिक व्यक्ति ने एक सेवक के माध्यम से रेवरेंड फादर को भोजन की दो टोकरी भेजीं, और संत से अपने लिए प्रार्थना करने का अनुरोध किया। सेवक ने रास्ते में एक टोकरी छिपा दी, लेकिन दूसरी टोकरी ईश्वर के पुरुष के पास ले गया और भेजने वाले का अनुरोध पहुँचाया। टोकरी को चुपचाप स्वीकार करते हुए, संत इसाक ने फिर सेवक को यह सलाह दी: 'मैं ये उपहार स्वीकार करता हूँ, लेकिन तुम्हें उस टोकरी को संभालने में सावधान रहना होगा जिसे तुमने रास्ते में छिपाया था: उसमें एक साँप घुस गया है, और अगर तुम बिना सावधानी के उसमें हाथ डालोगे, तो वह तुम्हें डस लेगा।' इन शब्दों ने सेवक को गहराई से लज्जित कर दिया और उसमें एक ओर भय और दूसरी ओर इस विचार से आनंद जगा कि उसे उस सांप के बारे में पता चल गया था, जिससे वह मर भी सकता था।

इस प्रकार संत ग्रेगरी द डायलॉजिस्ट ने पूजनीय इसाक द सीरियन की कहानी सुनाई। उनसे 'तपस्वी वचनों' की एक पुस्तक संरक्षित है, जिसमें संतों के लिए बहुत उपयोगी निर्देश हैं; अपने जीवनकाल में वह स्वयं परमेश्वर द्वारा अनंत जीवन की पुस्तक में अंकित होने के योग्य समझा गया, और अब संतों के समूह के साथ पिता के जीवित वचन, परमेश्वर के पुत्र मसीह के सामने खड़ा है; उन्हें, पिता और पवित्र आत्मा के साथ, युगानुयुग महिमा हो। आमीन।

संत ज़िनोन, पवित्र शहीद और वेरोना के बिशप की स्मृति

12 अप्रैल को स्मरण किया जाता है

संत ज़ेनो यूनानी मूल के थे और सीरिया से आए थे। ईसाई शिक्षा प्राप्त करने के इरादे से विभिन्न देशों की यात्रा करते हुए, वे इटली आए और वेरोना शहर में बस गए[2977] । इस शहर के निवासियों ने, संत के सदाचारी जीवन को देखकर, उन्हें अपना बिशप चुना।

यद्यपि इस समय तक ईसाइयों का उत्पीड़न समाप्त हो चुका था, फिर भी हर जगह बहुत से मूर्तिपूजक थे, जिन्हें ज़ेनो ने ईसाई शिक्षा के प्रकाश से ज्ञान दिया। इसके अलावा, उन्हें एरियनों से भी निपटना पड़ा[2978] । इस संघर्ष में, उन्होंने ऑर्थोडॉक्सी के सत्यों के एक दृढ़ रक्षक के रूप में खुद को साबित किया, और एरियनवाद का समर्थन करने वाले सम्राटों, कॉन्स्टैंटियस[2979] और वैलेंस[2980] द्वारा ऑर्थोडॉक्स पर किए गए अत्याचारों के बावजूद वे कभी भी उनसे विचलित नहीं हुए।

ईश्वर की कलीसिया के लाभ के लिए महान परिश्रम करने और अपनी भेड़ों का काफी समय तक नेतृत्व करने के बाद, संत ज़ेनो प्रभु के पास शांतिपूर्वक चले गए[2981] ।

उनके महान कार्यों के लिए, संत ज़ेनो को ईश्वर द्वारा चमत्कार करने का वरदान प्राप्त हुआ। संत ग्रेगरी महान निम्नलिखित चमत्कार का वर्णन करते हैं, जो 558 में संत के पर्व के दिन हुआ था।

उस वर्ष, इटली में एक असाधारण बाढ़ आई थी। इटली की मुख्य नदी, टिबर, अपने तट से बाहर निकल आई, जिससे रोम के आसपास का पूरा क्षेत्र जलमग्न हो गया। एटिस नदी, जो वेरोना शहर के पास बहती है, ने भी अपना तट तोड़ दिया; इसके पानी ने संत ज़ेनो के सम्मान में बनी चर्च को चारों ओर से घेर लिया और लगातार बढ़ते हुए, अंततः चर्च की खिड़कियों तक पहुँच गए। चर्च के दरवाज़े खुले थे, लेकिन पानी चर्च के अंदर नहीं गया; इसके बजाय, यह दरवाज़ों पर एक तरह की दीवार बन गया, इसलिए चर्च के अंदर मौजूद कई लोग दरवाज़ों तक पहुँचे और अपने हाथों से पानी लेकर अपनी प्यास बुझाई।

ईश्वर-प्रसन्न ज़िनोन की प्रार्थनाओं से कई अन्य चमत्कार भी हुए।

हमारे पूजनीय पिता बेसिल द कन्फैसर, पारोस के बिशप की स्मृति

12 अप्रैल को स्मरणोत्सव

लघु मिसिया के एक प्राचीन शहर पेरिया में, साइज़िकस के मेट्रोपॉलिटिन के अधीन एक बिशप की सीट स्थापित की गई थी, जो वहां ईसाई धर्म के प्रसार के समय से मौजूद थी। पेरिया के बिशपों में परम पूजनीय बेसिल थे, जिन्हें उनके सदाचारी और ईश्वर-प्रसन्न जीवन के कारण बिशप चुना गया था। जब प्रतिमा-भंग की विधर्मता उठी, तो आदरणीय बेसिल ने स्वयं को मसीह का एक सच्चा कन्फेशर (विश्वास का साक्षी) साबित किया: उन्होंने विधर्मियों के साथ सभी संबंधों से परहेज किया, उन्हें अपने धर्मप्रांत के भीतर काम करने की अनुमति नहीं दी और हर तरह के दबाव के बावजूद, प्रतिमाओं को नष्ट करने का आदेश देने वाले लिखित फरमान पर हस्ताक्षर करने से इनकार कर दिया। विश्वास के प्रति इस उत्साह के कारण, उन्हें विधर्मियों के हाथों उत्पीड़न और दुर्व्यवहार सहने के लिए मजबूर होना पड़ा, जिससे वे प्रेरित पौलुस की तरह, एक स्थान से दूसरे स्थान पर लगातार घूमते हुए, दुख, कठिनाई और क्लेश का जीवन जीने लगे। अपनी धार्मिकता और चर्च की शिक्षा की पवित्रता को बनाए रखने की इच्छा के कारण, परम पूजनीय बेसिल को विधर्मियों की अधार्मिक परिषदों से घृणा करने के लिए विवश होना पड़ा, और इसी कारण से उनका उनसे कोई संबंध नहीं था। अपने जीवन के द्वारा प्रभु को प्रसन्न करके, परम पूजनीय बेसिल शांतिपूर्वक प्रभु के पास चले गए।

[2977] वेरोना इटली के सबसे पुराने शहरों में से एक है, जिसकी स्थापना ईसा पूर्व पहली शताब्दी में हुई थी। आज, वेरोना एक प्रथम श्रेणी का इतालवी किला है।

[2978] एरियन यह सिखाते थे कि परमेश्वर का पुत्र परमपिता परमेश्वर के बराबर नहीं था और वह उनकी रचना थी। इस विधर्म का संस्थापक अलेक्ज़ेंड्रिया का एक पुरोहित एरियस था। उसकी शिक्षाओं को 325 में नीकिया में आयोजित पहले सार्वभौमिक धर्मसभा में निंदा किया गया था।

[2979] रोमन सम्राट कॉन्स्टैंटियस ने 353 से 361 तक शासन किया।

[2980] वैलेन्स ने 364 से 378 तक रोमन साम्राज्य पर शासन किया।

[2981] शहीद ज़ेनो की मृत्यु लगभग 380 में हुई। संत ज़ेनो ने कई रचनाएँ पीछे छोड़ीं – अर्थात्, विभिन्न धार्मिक और नैतिक मुद्दों से संबंधित 16 लंबी और 77 संक्षिप्त उपदेश या प्रवचन।

पूज्य अंफुसा की स्मृति

12 अप्रैल को स्मरणोत्सव

संत अंफुसा के पति लंबे समय से उन्हें शादी करने के लिए कह रहे थे, लेकिन उन्होंने मना कर दिया; और जब, उनके निधन के बाद[2982] , वह अविवाहित हो गईं, तो उन्होंने अपनी सारी संपत्ति गरीबों के साथ-साथ चर्चों और मठों में बाँट दी। वह कई अनाथों की माँ और विधवाओं की रक्षक थीं। धर्मपरायण सम्राज्ञी आइरीन[2983] ने बार-बार और गंभीरता से उनसे अपने साथ रहने और साम्राज्य के शासन में भाग लेने का आग्रह किया, लेकिन उन्होंने दृढ़ता से इनकार कर दिया। दरबार में अपने समय के दौरान, वह बाहर से एक शाही बेटी के भव्य वस्त्र पहनती थी, लेकिन उसके नीचे एक बाल-कपड़ा[2984] पहनती थी; वह थोड़ा-सा भोजन करती थी और केवल पानी पीती थी, जबकि उसकी आँखें हमेशा आँसुओं से भरी रहती थीं और उसके होंठ चर्च के भजन गाते थे। बाद में सेंट तारासियस के हाथों ओमोनिया कॉन्वेंट[2985] में अपनी प्रतिज्ञाएँ लेने के बाद, वह एक नन बन गईं और उस समय से उन्होंने न तो स्वयं कॉन्वेंट छोड़ा और न ही अन्य बहनों को ऐसा करने की अनुमति दी[2986] । वे कभी भी एक भी चर्च सेवा नहीं छोड़ती थीं और स्वयं को आराम से वंचित रखती थीं, प्रार्थना में उनकी ऊर्जा कभी कम नहीं हुई और वे अपनी प्रार्थना की पहरेदारी में कभी ढीली नहीं पड़ती थीं, जबकि पश्चाताप के आँसू हमेशा उनकी आँखों से बहते रहते थे। उसकी विनम्रता अतुलनीय थी, क्योंकि वह सभी बहनों की सेवा करती थी, चर्च की सफाई करती थी, पानी लाती थी, भोजन के दौरान कभी मेज पर नहीं बैठती थी, और दूसरों की आवश्यकताओं का ध्यान रखती थी।

इस प्रकार अपना संपूर्ण जीवन व्यतीत करने के बाद, सद्गुणों से परिपूर्ण वह आदरणीय संत 52[2987] वर्ष की आयु में प्रभु के पास चल बसीं।

- उसी दिन, हम पवित्र शहीदों मीना, डेविड और जॉन का स्मरण करते हैं, जिन्हें फिलिस्तीन में सरासेंस द्वारा छोड़े गए तीरों से भेदा गया था।

26 अप्रैल

13 अप्रैल (पुराने कैलेंडर के अनुसार)

पवित्र हयेरोमार्टायर आर्टेमोन का कष्टकथा

13 अप्रैल को स्मरण किया जाता है

डायोक्लेटियन के शासनकाल में ईसाइयों पर एक बड़ा उत्पीड़न शुरू हुआ[2988] : यातना देने वालों को रोमन साम्राज्य के सभी शहरों और प्रांतों में भेजा गया ताकि वे ईसाइयों को बलिदान चढ़ाने और मूर्तियों की पूजा करने के लिए मजबूर कर सकें, और जो विरोध करते थे उन्हें यातना और मृत्यु का सामना करना पड़ता था।

[2982] सम्राट कॉन्स्टेंटिन कॉप्रोन्यमस का 775 में निधन हो गया, वह 743 में अपने दामाद आर्टबाज्डेस के बाद सिंहासन पर चढ़ा था।

[2983] सम्राज्ञी आइरीन, जो लियो द खज़ार की पत्नी थीं, ने 780 से 802 तक अपने बेटे कॉन्स्टेंटिन पोरफायेजेनिटस की ओर से, जो उस समय नाबालिग था, साम्राज्य पर शासन किया। पवित्र प्रतिमाओं की एक उत्साही भक्त होने के नाते, उन्होंने सप्तम सार्वभौमिक परिषद बुलाने में मदद की, जिसने चर्च के भीतर प्रतिमा पूजा के सिद्धांत को स्थापित किया।

[2984] व्लासेनट्सा घोड़े के बालों से बुना गया एक अंतर्वस्त्र है जिसे संन्यासी सीधे त्वचा से सटाकर पहनते हैं।

[2985] ओमोनिया मठ कॉन्स्टेंटिनोपल में स्थित था। यह अपने चर्च में दूसरे सार्वभौमिक परिषद के सत्रों की मेजबानी करने के लिए जाना जाता है।

[2986] आदरणीय अंफुसा ने कॉन्स्टेंटिनोपल में सेंट यूफेमिया मठ में अपने मठवासी संकल्प लिए, और बाद में ओमोनिया मठ में चली गईं, जहाँ उन्होंने अधिष्ठात्री के रूप में सेवा की।

[2987] आदरणीय अंफुसा का 12 अप्रैल 811 को निधन हो गया।

[2988] डायोक्लेटियन (284–305) के शासनकाल के दौरान, ईसाइयों के खिलाफ चार फरमान जारी किए गए थे। पहला फरवरी 303 में घोषित किया गया था। इस फरमान में चर्चों को नष्ट करने और पवित्र पुस्तकों को जलाने का आदेश दिया गया था; साथ ही, ईसाइयों से उनके नागरिक अधिकार,

अन्य लोगों के अलावा, पैट्रसियिस नामक एक दूत भी लाओदकिया क्षेत्र में पहुँचा[2989] , जहाँ उसने बिना किसी देरी के राजा की आज्ञा का पालन करना शुरू कर दिया। पैट्रसियिस के आगमन से पहले ही, उसके आगमन की सूचना पाकर, लाओदकिया के बिशप, धन्य सिसीनियस, पवित्र पुरोहित आर्टमिोन और कई ईसाइयों के साथ, रात के समय देवी आर्टेमिस के मंदिर[2990] में प्रवेश किए और सबसे पहले उन्हें टुकड़े-टुकड़े कर के भीतर की सभी मूर्तियों को जला दिया। तब, शहर से पाँच स्टेडियम दूर स्थित अपने ईसाई चर्च में लौटकर, उन्होंने सामान्य प्रार्थना सभा की और विश्वासियों को निम्नलिखित उपदेश दिया:

'मेरे बच्चों, अफवाहें फैल रही हैं कि विरोधी मसीह ईसाइयों पर अत्याचार करने के लिए शहर की ओर आ रहा है: डरो मत, कहीं ऐसा न हो कि आग, तलवार, जंगली जानवर या मृत्युदंड के कोई अन्य क्रूर रूप भी तुम्हें मसीह के प्रेम से अलग कर दें।'

जब पैट्रसियिस शहर पहुँचे, तो उन्होंने सबसे पहले अपोलो के मंदिर में बलिदान चढ़ाया; उसी दिन, उन्होंने लोगों के लिए सार्वजनिक मनोरंजन का आयोजन किया और ईसाई धर्म के अभ्यास पर रोक लगाने वाला एक शाही फरमान जारी किया। मनोरंजन के पाँच दिनों के बाद, जिसमें तमाशे और शिकार शामिल थे, पैट्रसियिस आर्टेमिस को बलिदान देना चाहता था; लेकिन, उसके मंदिर में प्रवेश करने पर, वह यह देखकर हैरान रह गया कि वहाँ कोई मूर्ति नहीं थी।

'वे कहाँ हैं?' उसने पूछा।

उसके आसपास के कुछ यूनानियों ने जवाब दिया कि आर्टेमिस की मूर्ति और अन्य मूर्तियों को बिशप सिसीनियस ने अपने पुरोहित आर्टेमोन और अन्य ईसाइयों की सहायता से नष्ट कर दिया था। जब पैट्रसियिस ने पूछा कि बिशप और ईसाई अब कहाँ हैं, तो उसे बताया गया कि सभी ईसाई अपने चर्च में इकट्ठा हो गए थे। पैट्रसियिस तुरंत अपने घोड़े पर सवार हो गया और सशस्त्र सैनिकों के साथ, ईसाइयों को मौत के घाट उतारने और सिसीनियस और आर्टेमोन को टुकड़ों में काटकर मार डालने के इरादे से ईसाई चर्च के लिए रवाना हो गया। लेकिन जब पैट्रसियिस अपने गंतव्य के बहुत करीब पहुँच गया था, और चर्च से केवल एक स्टेडियम की दूरी रह गई थी, तो अचानक उसे इतना ज़ोर का झटका लगा कि वह अपने घोड़े से गिर पड़ा; इस झटके के बाद उसे तेज बुखार चढ़ गया, और पैट्रसियिस को एक तख्ते पर लिटाकर रास्ते में आने वाले पहले घर में ले जाया गया। उस रात, मोमबत्तियाँ लेकर बैठे और अपने कमांडर की मृत्यु का इंतज़ार कर रहे सैनिकों से घिर, उन्होंने अपने सबसे करीबी नौकरों से कहा:

'ईसाइयों ने मुझे शाप दिया है, और उनका ईश्वर मुझे पीड़ा दे रहा है।'

उन्होंने उत्तर दिया:

'महान देवता और तेजस्वी देवी आर्टेमिस आपकी सेहत बहाल कर देंगे।'

अत्यधिक पीड़ा में और अब जीवित बचने की कोई उम्मीद न रखते हुए, पैट्रसियिस ने सैनिकों से कहा:

'ईसाई चर्च जाओ और बिशप सिसीनियस से कहो: राजदूत पेट्रसियिस इस प्रकार कहते हैं: महान है ईसाई ईश्वर! उससे प्रार्थना करो कि मुझे मेरी इस गंभीर बीमारी से मुक्ति मिले; तब मैं तुम्हारी एक सोने की मूर्ति बनवाकर शहर के केंद्र में स्थापित करूँगा।'

सैनिक गए और उन्होंने पैट्रसियिस के शब्द बिशप तक पहुँचाए। बिशप ने उन्हें यह उत्तर भेजने का आदेश दिया:

'तुम्हारा सोना तुम्हारे पास ही रहे; यदि तुम हमारे प्रभु यीशु मसीह में विश्वास करते हो, तो तुम चंगे हो जाओगे।'

सम्मान, कानून का संरक्षण और उनके पद छीन लिए गए; ईसाई दासों ने अपनी स्वतंत्रता का अधिकार खो दिया, यदि वे किसी भी तरह से स्वतंत्र हो गए थे और फिर भी ईसाई बने रहे। इसके तुरंत बाद, एक दूसरा फरमान जारी किया गया जिसमें सभी चर्च नेताओं और अन्य पुरोहितों को कैद करने का आदेश दिया गया; इस प्रकार, यह फरमान केवल पुरोहितों पर ही लागू हुआ; उन पर सम्राट के सामने सीरिया और आर्मेनिया में विद्रोह भड़काने का आरोप लगाया गया, जो ईसाइयों के दुर्भाग्य से, पहले फरमान के जारी होने के बाद शुरू हो गया था। उसी वर्ष, 303 में, एक तीसरा फरमान जारी किया गया: दूसरे फरमान के तहत कैद किए गए सभी लोगों को प्रतिरोध करने पर यातना की धमकी देकर बलिदान करने के लिए मजबूर किया जाना था। अंत में, 304 में, चौथा और अंतिम फरमान जारी किया गया, जिसमें ईसाइयों के बड़े पैमाने पर उत्पीड़न की घोषणा की गई; इस जीवनी में संदर्भित 'महान उत्पीड़न' स्पष्ट रूप से चौथे फरमान के बाद हुए उत्पीड़न से संबंधित है। इस आदेश के परिणामस्वरूप ईसाइयों के जीवन का सबसे बड़ा नुकसान हुआ: यह पूरे आठ साल, 311 तक लागू रहा, जब सम्राट गैलेरियस ने एक विशेष आदेश जारी किया जिसमें ईसाई धर्म को एक अनुमत धर्म घोषित किया गया। डायोक्लेटियन का उत्पीड़न अंतिम था; इसमें, लगभग तीन शताब्दियों के संघर्ष के बाद, ईसाई धर्म ने मूर्तिपूजा पर एक निर्णायक विजय प्राप्त की।

[2989] यह क्षेत्र एशिया माइनर में स्थित है।

[2990] आर्टमिस – शिकार की यूनानी देवी, मूल रूप से, शायद, चंद्रमा की देवी।

पैट्रसियिस ने दूसरी बार बशिप के पास दूत भेजे, यह कहते हुए:

'मैं आपके ईश्वर में वशि्वास करता हूँ, बशर्ते कि मैं ठीक हो जाऊँ।'

बशिप ने उनके लिए प्रार्थना की, और तुरंत पैट्रसियिस ठीक हो गया, वह अपनी बीमारी से पूरी तरह मुक्त हो गया।

स्वस्थ होने के कुछ दनिों बाद, पैट्रसियिस फलिस्तीनी शहर केसरयिा के लिए रवाना हो गया। जब वह लाओदकियिा से लगभग तीन स्टेडयिम दूर यात्रा कर चुका था, तो उसे रास्ते में पवत्रि पुरोहति आर्टमिोन मलिा, जो प्रार्थना से लौट रहा था: वह मसीह के वचन से जंगली जानवरों को वश में कर रहा था, और दो हरिण और छह जंगली गधे उसके पीछे-पीछे आ रहे थे। संत आर्टमिोन उन्हें बशिप ससिीनयिस के पास ले जा रहे थे, जो अपने बगीचे में जंगली जानवर रखना बहुत चाहते थे। रथ को रोकने का आदेश देकर, पैट्रसियिस ने ईश्वर के सेवक, आर्टमिोन से पूछा:

'तुमने इन जानवरों को कैसे पकड़ा?'

उसने उत्तर दयिा, 'मैंने उन्हें अपने मसीह के वचन से पकड़ा है।'

पैट्रसियिस ने फरि पूछा, 'मुझे तो ऐसा लगता है, बूढ़े आदमी, कि तुम एक ईसाई हो?'

इस पर, संत आर्टेमोन ने कहा:

'मैं अपनी जवानी से ही ईसाई हूँ।'

तब पैट्रसियिस ने संत को दो ज़ंजीरों से बांधने का आदेश दयिा और उन्हें दो सैनकिों के हवाले कर दयिा, ताकि वे संत आर्टमिोन को अपने पीछे-पीछे केसरयिा ले जा सकें। अपनी राह पर आगे न बढ़ पाने के कारण, संत आर्टमिोन ने अपने पीछे आ रहे जानवरों की ओर मुड़कर उन्हें बशिप ससिीनयिस के पास जाने का आदेश दयिा। वे गए और चर्च के प्रांगण के द्वार पर रुक गए। बशिप ने द्वारपाल से पूछा:

'ये जानवर कहाँ से आए हैं?'

हरिणों में से एक ने, ईश्वर से वाणी का वरदान प्राप्त कर, कहा:

'ईश्वर के सेवक, आर्टमिोन को दुष्ट शाही दूत ने पकड़ लयिा है, और अब उसे बँधी हुई अवस्था में केसरयिा ले जाया जा रहा है; लेकनि उसने हमें आपके पास भेजा है।'

एक हरिण से मानव भाषा सुनकर बशिप स्तब्ध रह गए, और साथ ही संत आर्टमिोन के पकड़े जाने की खबर से वे दुखी भी हुए। उन्होंने डकिन फलिास को बुलाया और उससे कहा:

'एक नया चमत्कार हुआ है! इन जानवरों में से, जो आप मेरे सामने देख रहे हैं, एक हरिण ने मुझसे मानव भाषा में कहा है कि ईश्वर के सेवक, आर्टमिोन को दुष्ट पैट्रसियिस ने पकड़ लयिा है और, बँधा हुआ, उसे केसरयिा भेजा जा रहा है; एक हरिण को बोलते हुए देखकर मैं भय से भर गया हूँ, और इस वचिार से दुखी हूँ कि आर्टमिोन के साथ क्या हुआ है। यह प्रॉस्फोरा लो और एक सेवक के साथ केसरयिा जाओ; पता लगाओ कि क्या वह बात सच है जो हरिण ने मुझसे कही है।"

डीकन ने प्रोस्फोरा लयिा और प्रार्थना करने के बाद, अपने सेवक के साथ चल पड़ा। सीज़रयिा पहुँचने पर, उसे वास्तव में संत आर्टमिोन वहाँ एक कालकोठरी में बंद मलिा। उसे गर्मजोशी से अभविादन करते हुए, उसने उससे कहा:

'हे परमप्रभु परमेश्वर के सेवक और वचन के झुंड के चरवाहे, यदि हरिण ने इस बात की सूचना बशिप को न दी होती, तो हमें अब तक यह पता न चलता कि आप हमसे कैसे अलग हो गए और यातना देने वाले के हाथों में पड़ गए; इसी कारण, उन्होंने मुझे यहाँ यह जानने के लिए भेजा है कि जो कुछ उसने कहा है वह सत्य है या नहीं; बशिप आपके लिए बहुत दुखी हैं।'

संत आर्टमिोन ने उत्तर दयिा:

– जाओ, हे ईश्वर के सेवक, और मेरे स्वामी, पवत्रि बशिप से कहो कि मुझे मसीह के लिए दुख सहने के लिए ले जाया गया है और मैं जेल में बंद हूँ; वह मेरे लिए प्रार्थना करें, ताकि मैं मसीह-द्वेषी यातनाकर्ता की चालाकयिों पर वजिय प्राप्त कर सकूँ और इस प्रकार मसीह में सहभागी होने के योग्य ठहरूँ।

एक-दूसरे को चूमने के बाद, वे अलग हो गए: डीकन अपने घर लौट गया, जबकि संत आर्टमिोन कालकोठरी में ही रह गए। जब डीकन लौटा और संत आर्टमिोन के शब्द बशिप को सुनाए, तो उन्होंने आँसुओं के साथ प्रार्थना करते हुए कहा:

'हे प्रभु यीशु मसीह, जिन्होंने दानियेल को सिंहों के मुँह से और नबूकदनेसर की जलती भट्टी से तीन जवानों को बचाया, उसी प्रकार अपने दास आर्टेमोन को भी शत्रु पैट्रिसियस से बचाओ; उसे यातना देने वाले की चालाकियों पर विजय पाने की शक्ति प्रदान करो और उसे पवित्र शहीदों की पंक्ति में गिनो।'

एक दिन, जब पैट्रिसियस कैसरिया में सार्वजनिक प्रदर्शनों का आयोजन कर रहा था, तो उसने संत आर्टेमोन को अपने सामने लाने का आदेश दिया और उससे पूछा:

'बताओ, बूढ़े आदमी, तुम्हारा नाम क्या है?'

उसने उत्तर दिया:

'मुझे अपने ईश्वर मसीह का सेवक कहा जाता है, और मेरा नाम आर्टेमोन है।'

'क्या तुमने महान देवी की मूर्ति तोड़ी थी?' पैट्रिसियस ने कहा।

'हाँ, वह मैं ही था,' संत ने उत्तर दिया।

पैट्रिसियस ने फिर पूछा, 'मुझे बताओ, तुमने देवी की शक्ति पर कैसे विजय प्राप्त की और उसकी मूर्ति पर कोई दया नहीं दिखाई? तुम दंड से कैसे नहीं डरे: निस्संदेह, उसकी कोमलता के कारण ही उसने अभी तक तुम्हारी जान नहीं ली है?'

संत आर्टेमोन ने उत्तर दिया, 'अपने ईश्वर से प्रार्थना करके, मैं तुम पर और तुम्हारे यातनाओं पर भी विजय प्राप्त करूँगा; तो एक मृत और मूक मूर्ति पर तो मैं और भी आसानी से विजय पा सकता हूँ।'

पैट्रिसियस ने कहा:

'आपका नाम—आर्टेमोन—सुनकर, मैंने सोचा था कि आप देवी आर्टेमिस के सेवक हैं; मुझे लगता है कि उन्होंने आपकी जान इसलिए बख्शी है क्योंकि आपका नाम उनके नाम के समान है।'

संत आर्टेमोन ने उत्तर में कहा:

'हे अधर्मी, अधर्मी और अंधकारमय शैतान के पुत्र, यदि तू मेरा नाम जानना चाहता है, तो तुझे पता हो कि यह नाम मुझे ईश्वर ने मेरी माँ के गर्भ में रहते हुए ही प्रदान किया था।'

पैट्रिसियस ने विनती करते हुए कहा:

'अपने वृद्धावस्था और अपने सफेद बालों पर दया करो; इस शहर के महान देवता एस्क्लेपियस को बलिदान चढ़ाओ[2991] ।'

'सोलह वर्षों तक,' संत ने उत्तर दिया, 'मैं अपने ईश्वर के चर्च में एक पाठक था; अठ्ठाइस वर्षों तक मैं एक डिकन था, पवित्र सुसमाचार पढ़ता था; तेईस वर्षों तक मैंने प्रेस्बिटर का पद संभाला, लोगों को मसीह की सहायता से मोक्ष के मार्ग पर सिखाया और मार्गदर्शन किया; और अब आप चाहते हैं कि मैं, आपके उदाहरण का अनुसरण करते हुए, एक निर्जीव मूर्ति में रहने वाले राक्षस को बलिदान अर्पित करूँ; फिर भी मैं अभी भी आपके देवता को देखना और उसकी शक्ति का परीक्षण करना चाहता हूँ।

पैट्रिसियस ने कहा:

'देव एस्क्लेपियस के पास महान शक्ति और महिमा है: जो कोई भी उसके मंदिर के द्वार पर प्रार्थना के साथ धूप नहीं चढ़ाता, वह भीतर प्रवेश नहीं कर सकता।

अस्क्लेपियस के पवित्र स्थल में साँप रहते थे, जिन्हें पुजारी साल में एक बार मीठा भोजन लाकर देते थे।

'आओ हम एस्क्लेपियस के मंदिर में चलें,' संत आर्टेमोन ने कहा, 'और अगर वह मुझे प्रवेश नहीं करने देगा, तो मैं उसे धूप जलाऊँगा।'

और इस प्रकार, जब संत पैट्रिसियस और लोगों के साथ अस्क्लेपियस के मंदिर के पास पहुँचे, तो साँपों ने—या, अधिक सटीक रूप से, उनमें रहने वाली दुष्ट आत्माओं ने—मसीह की शक्ति से संपन्न शहीद के आगमन को सहन न कर पाकर, एक भयानक फुफकार मचाई और मंदिर में इतना कोलाहल खड़ा कर दिया कि वह हवा में पेड़ की तरह डोलने लगा; यह देखकर पैट्रिसियस और भीड़ डरकर भाग गए। पैट्रिसियस ने संत से कहा:

'देखो, एस्क्लेपियस की शक्ति कितनी महान है, जो किसी को भी पहले उसे धूप न चढ़ाए बिना अपनी उपस्थिति में प्रवेश करने की अनुमति नहीं देता।'

[2991] एस्कलेपियस – उपचार के देवता।

'पुजारी से कहो कि मंदिर खोल दे ताकि मैं प्रवेश कर सकूँ,' संत आर्टेमोन ने पैट्रसियिस से कहा।

उसने पुरोहितों में से एक को ऐसा करने का आदेश दिया। वटिलियिस नामक पुरोहित ने पॅट्रसियिस को संबोधित करते हुए कहा:

'मैं आपके परम प्रतिष्ठित अधिकार को सूचित करता हूँ कि मैं प्रार्थना के साथ धूप अर्पित किए बिना मंदिर नहीं खोल सकता, क्योंकि देवता एस्क्लेपियिस का क्रोध महान है।'

धूपदान लेकर और प्रथागत धूप जलाकर, उसने मंदिर के दरवाज़े खोले, फिर तुरंत भाग गया। फिर पैट्रसियिस, थोड़ी दूरी पर खड़े होकर, संत से बोले:

'हे बृद्ध, यदि आप प्रवेश कर सकते हैं, तो प्रवेश करें!'

संत आर्टेमोन दरवाजों के पास गए और, क्रॉस का चिह्न बनाकर, निडर होकर अंदर गए, और साँप निष्क्रिय हो गए। फिर संत ने सच्चे ईश्वर से यह प्रार्थना की:

'हे प्रभु मेरे परमेश्वर, आपने अपने सेवक दानियेल के द्वारा बेबीलोन के बेल को कुचल दिया और साँप को मार डाला, अब अपनी शक्ति से, मुझ पापी के द्वारा, इन साँपों के सिर कुचल दीजिए, ताकि आपका पवित्र नाम महिमा पाए!'

इसके बाद, उन्होंने साँपों को किसी को नुकसान न पहुँचाने की आज्ञा दी और उन्हें अपने पीछे-पीछे चलने का आदेश देकर, उनके साथ बाहर निकल गए। मंदिर से साँपों को निकलते देख, लोग और पैट्रसियिस भय से ग्रस्त हो गए और घबराकर भाग गए। हालाँकि, संत आर्टमिोन ने उनके पीछे पुकार लगाई:

'तुम भाग क्यों रहे हो? डरना मत; रुक जाओ और अब देखो कि कैसे, उस सच्चे परमेश्वर की शक्ति से जिस पर मैं विश्वास करता हूँ, ये साँप तुम्हारी आँखों के सामने मर जाएँगे।'

तब उसने उन पर फूँक मारी, और वे तुरंत मरकर उसके पैरों तले गिर पड़े, मानो बिजली गिरने से मारे गए हों। और संत आर्टमिोन ने पैट्रसियिस से कहा:

'क्या तुम देखते हो कि जिन देवताओं की तुम पूजा करते हो, वे हमारे प्रभु यीशु मसीह के परमेश्वर और पिता की शक्ति से कैसे नष्ट हो गए?'

लोग और पैट्रसियिस बिना किसी हथियार के साँपों को मरा हुआ देखकर दंग रह गए; उनमें से एक इतना बड़ा था कि वह पाँच कोहनी चौड़ा और पच्चीस लंबा था। फिर पुजारी वटिलियिस ने ऊँचे स्वर में पुकारा:

'महान है ईसाई ईश्वर, और महान है इस मनुष्य की शक्ति, जिसने एक ही साँस में इन साँपों को मार डाला है!'

तब, संत के चरणों में गिरकर, उसने कहा:

'हे स्वर्गीय प्रभु के सेवक, मैं आपसे मुँह नहीं मोड़ूँगा; मैं आपसे विनती करता हूँ; मुझे भी अपने ईश्वर की शक्ति से चिह्नित करें, ताकि मैं आपके झुंड का एक पूर्ण भेड़ बन सकूँ; अब तक मैं मूर्तियों और इन साँपों में विश्वास करके भ्रांति में था, लेकिन अब मैं सच्चे ईश्वर को पहचानता हूँ।'

हालाँकि दुष्ट पैट्रसियिस, आत्मा से अंधा होने के कारण, इतने बड़े चमत्कार का साक्षी होने पर भी, सच्चे ईश्वर को मानने से इनकार कर दिया: उसका विश्वास था कि संत आर्टमिोन ने साँपों को ईश्वर की शक्ति से नहीं, बल्कि जादू-टोने की शक्ति से मारा था। अपनी लज्जा को सहन न कर पाकर और अपनी अपमानित होने तथा साँपों के मारे जाने के क्रोध से भरकर, उसने पवित्र शहीद को फिर से पकड़ने और यातना के लिए अपनी अन्यायपूर्ण अदालत में लाने का आदेश दिया। वहाँ, उसने क्रोध में संत से कहा:

'यदि तुम यह नहीं बताते कि तुमने महान देवी आर्टेमिस और तेजस्वी अपोलो के साँपों को किस शक्ति से मारा था[2992] , तो मैं तुम्हारे टुकड़े-टुकड़े कर दूँगा।'

'मसीह की शक्ति से, ईश्वर द्वारा भेजे गए महादूत राफेल की सहायता से, मैंने तुम्हारे साँपों को मारा,' संत आर्टमिोन ने उत्तर दिया।

'क्या यहूदियों द्वारा सूली पर चढ़ाए गए उस एक के पास इतनी शक्ति हो सकती है?' पैट्रकिस ने संदेह किया।

तब संत ने उद्घोष किया:

'हे द्वेष से पागल, नरक के वारिस और प्राचीन सर्प, तुमने यह पहले भी सुना है, तो फिर से सुन लो: मेरे ईश्वर की शक्ति से, तुम्हारे साँप नष्ट हो गए हैं।'

[2992] एपोलो – सूर्य का देवता और कलाओं का संरक्षक।

इन शब्दों के बाद, पैट्रसिियस क्रोध से भर गया और उसने एक लोहे की कड़ाही को आग से तपाने का आदेश दिया; फिर उसने आज्ञा दी कि निग्न शहीद को उस पर लिटाया जाए और उसे तपे हुए लोहे की छड़ों से भेदा जाए, और उसके अंगों को एक तेज धार वाले ब्लेड से काट दिया जाए; ऐसा करते हुए, उसने संत आर्टमिोन से कहा:

'क्या तुम देखते हो, विद्रोही बूढ़े, कि तुम्हारा शरीर इन यातनाओं से कैसे पीड़ित है?'

लेकिन पीड़ित ने स्वर्ग की ओर अपनी आँखें उठाकर प्रार्थना की:

'हे प्रभु यीशु मसीह, इन विधर्मी लोगों को मुझे, अपने दास का, मज़ाक उड़ाने न दें; आप जानते हैं कि मैं आपके लिए कष्ट सह रहा हूँ; मुझे इन यातनाओं को सहने का धैर्य दें, ताकि शत्रु लज्जित हो जाए।' हे परमेश्वर, मेरी प्रार्थना सुनें, और हे सबाओथ के परमेश्वर, मेरी विनती स्वीकार करें! आपने स्वर्ग और पृथ्वी की रचना की और पूरे ब्रह्मांड को आश्चर्यों से भर दिया है; आप सभी के प्रभु हैं, और कोई भी आपके विरुद्ध नहीं टिक सकता; अपनी दया से, हे प्रभु, मुझे बचाएँ। आपने बेलेहल के निर्दोषता को सिद्ध किया, जो एक कोमल युवक था जिसे अन्यायपूर्वक मार डाला गया था; आपने अपने सेवक हनोक को स्वर्ग में उठाकर पुरस्कृत किया; आपने नूह को जहाज़ में सुरक्षित रखा और, अपनी आशीष से, याजक मेल्कीजेदक को गौरवान्वित किया[2993] , आपने अपने बलिदान के लिए अब्राहम को महिमामय किया, याकूब के बच्चों को बढ़ाया, सदोम की आग से लूत को बचाया , और अपने धैर्य के लिए अय्यूब को गौरवान्वित किया। आपकी मदद से, यूसुफ सांसारिक वासनाओं पर काबू पा गए और अपने दुश्मनों पर विजय प्राप्त की। मूसा, तेरा सेवक, और सभी धर्मी, जिन पर तूने अपनी शक्ति प्रिकट की, उनकी भक्ति को प्रकट करते हुए, तेरी स्तुति करते हैं, हे महिमामय परमेश्वर। और मैं, हे प्रभु, तेरा सेवक, तुझ से विनती करता हूँ: अपनी दया के अनुसार मुझ पर दया कर और अपनी शक्ति से मेरी सहायता कर।

जब संत प्रार्थना कर रहे थे, तो एक हिरण दौड़ता हुआ केसरिया में आया; यह वही हिरण था जिसने लाओडिसिया में बिशप से मानव आवाज़ में बात की थी। चौक में आकर, जो लोगों से खचाखच भरा था, वह शहीद के सम्मानित चरणों में गिर पड़ा और उन्हें चाटने लगा। तब, एक बार फिर ईश्वर की आज्ञा से, उस दुष्ट व्यक्ति को बेनकाब करने और उसे लज्जित करने के लिए वाक्-शक्ति का वरदान प्राप्त कर, वह पॅट्रसिियस के सामने खड़ा हुआ और बोलने लगा:

'जान रख, हे दुष्ट मनुष्य, कि परमेश्वर के लिए कुछ भी असंभव नहीं है: अपनी शक्ति दिखाने के लिए, वह मूक को भी वाणी प्रदान कर सकता है। जान लो कि ईश्वर का सेवक, आर्टमिोन, जल्द ही अपने कष्टों से मुक्त हो जाएगा, जबकि तुम दो पक्षियों द्वारा पकड़े जाओगे और एक धर्मात्मा को क्रूरता से यातना देने तथा उस ईश्वर से मुंह मोड़ने के कारण, जिसे तुम सच्चा मानते थे और जिस पर तुमने विश्वास किया था, एक उबलते हुए कड़ाही में डाल दिए जाओगे।

जंगली जानवरों के रूप में जादू के सिवा कुछ भी न देखकर, दुष्ट पैट्रसिियस क्रोधित हो गया और सैनिकों को हिरण को मार डालने का आदेश दिया; उनमें से एक ने एक भाला उठाया और उसे पूरी ताकत से शहीद पर फेंका, लेकिन हिरण एक तरफ कूद गया, और भाला पैट्रसिियस के एक परिचारक को लगा, जिससे उसकी पेट में छेद हो गया और वह तुरंत मर गया। पैट्रसिियस को उसकी मौत का अफ़सोस हुआ और वह दरबार से अपने घर चला गया, और शहीद को वापस जेल ले जाने का आदेश दिया।

अगली सुबह, उसने एक बड़े कड़ाही में पिघला हुआ सीसा भरकर उसे गर्म करने का आदेश दिया, ताकि शहीद को उसमें गिर के बल फेंका जा सके। जब आदेश का पालन हो गया, तो पैट्रसिियस को सूचित किया गया कि सब कुछ तैयार है; वह स्वयं संत आर्टमिोन की फांसी का साक्षी बनने की इच्छा से, अपने घोड़े पर सवार होकर कलश की ओर बढ़ा; लेकिन जैसे ही वह उसके पास पहुंचा, दो स्वर्गदूत, गरुड़ के रूप में स्वर्ग से उतरकर, पैट्रकियिस को पकड़कर उबलते हुए पिघले हुए सीसे में फेंक दिया, जिसमें उसकी हड्डियाँ तक गल गईं। यह देखकर, सैनिक और भीड़ भयभीत होकर भाग गए; संत, हालांकि, कड़ाही तक ले जाए जाने के बाद, अकेले रहकर ईश्वर की स्तुति करते रहे; घुटने टेककर, उन्होंने प्रार्थना की और जहाँ वे खड़े थे, वहाँ से एक झरना फूट पड़ा। वहाँ पुरोहित विटालियस और कई अन्य मूर्तिपूजक उनके पास आए; ईसाई धर्म की शिक्षा प्राप्त करने के बाद, वे सभी संत आर्टमिोन द्वारा बपतिस्मा ग्रहण कर लिए।

[2993] यहाँ सेंट आर्टमिोन पुराने नियम के इतिहास की निम्नलिखित घटना को संदर्भित करता है। जब अब्राहम अपने चचेरे भाई लूत को बंदी बनाने वाले राजाओं पर विजय प्राप्त करके लौट रहा था, तब शलिम का राजा और सर्वोच्च ईश्वर का याजक मेल्कीजेदक रोटी और दाखरस लेकर उससे मिलने आया और अब्राहम को आशीर्वाद दिया (उत्पत्ति 14:1–20; इब्रानियों 7:1); इस आशीर्वाद ने अब्राहम के संबंध में मेल्कीजेदक की श्रेष्ठ गरिमा को व्यक्त किया, क्योंकि, जैसा कि प्रेरित संत पौलुस कहते हैं: *'निस्संदेह, छोटा बड़े से आशीष प्राप्त करता है'* (इब्रानियों 7:7)।

उसी रात, स्वर्ग से एक आवाज़ पवित्र शहीद से बोली:

'शहर छोड़कर एशिया में एक स्थान वुली पर जाओ, जो समुद्र तट पर स्थित है; वहाँ तुम्हें अलेक्ज़ेंडर और उसकी माँ परिनिया मिलेंगे: उनके साथ मिलकर तुम कई लोगों को भूतों से मुक्त दिलाओगे और उन्हें उनकी बीमारियों से ठीक करोगे, और कई लोग, तुम्हारे द्वारा मसीह की शिक्षा की रोशनी से प्रबुद्ध होकर, परमेश्वर की महिमा करेंगे।'

प्रातःहोते ही, सभी नव-धर्मपरिवर्तित संत के चारों ओर इकट्ठा हो गए; और उन्होंने, दिव्य रहस्यों को लेकर, उन्हें मसीह का अनमोल शरीर और रक्त ग्रहण कराया, यह कहते हुए:

'यह रोटी मसीह की देह है, और यह प्याला मसीह का लहू है, जो तुम्हारे प्राणों के लिए बहाया गया है; सावधान रहो, मेरे बच्चों, कहीं ऐसा न हो कि तुम में से कोई मसीह के प्रेम से भटक जाए; विश्वास में दृढ़ रहो; क्योंकि मुझे एशिया जाने की आज्ञा मिली है।'

सेसरेया के बिशप ने, जब संत आर्टमिोन के साथ जो कुछ भी हुआ था, वह सब सुना और यह जाना कि उन्होंने कई लोगों को बपतिस्मा दिया था और सुसमाचार का प्रचार करते हुए उपदेश दे रहे थे, तो वे ईसाइयों के साथ उनके पास आए और उन्हें चुंबन देकर अभिवादन किया; फिर, एक प्रार्थना करने के बाद, उन्होंने उस स्थान को चिह्नित किया जहाँ शहीद ने यातनाएँ झेली थीं, और बाद में वहाँ एक चर्च बनवाया; सेंट आर्टमिोन द्वारा बपतिस्मा प्राप्त लोगों में से, उन्होंने कुछ को पुरोहित और अन्य को डिकन नियुक्त किया, जबकि उन्होंने विटालियस को बिशप नियुक्त किया और फिलिस्तीन के क्षेत्र को उनके अधिकार क्षेत्र में रखा। संत आर्टेमोन, बिशप और लोगों से विदा लेकर, अपने लिए बताए गए एशियाई क्षेत्र की ओर रवाना हुए; रास्ते में, एक देवदूत उन्हें उठा ले गया और उन्हें उस स्थान पर रख दिया जो उन्हें एक दर्शन में दिखाया गया था; वहाँ, ईश्वर की सहायता से, उन्होंने कई महान चमत्कार किए और कई लोगों को प्रभु के प्रति परिवर्तित किया, उन्हें सुसमाचार की सच्चाई सिखाते हुए। धर्मप्रचार करते समय, संत आर्टमिोन को मूर्तिवादियों ने पकड़ लिया और तलवार से उनका सिर कलम कर दिया, और वे हमारे ईश्वर मसीह से अपना मुकुट ग्रहण करने के लिए शाश्वत निवासों में चले गए; उन्हें, पिता और पवित्र आत्मा के साथ, युगानुयुग महिमा और आराधना हो। आमीन।

पवित्र शहीद थॉमेइस की स्मृति

१३ अप्रैल को स्मरणोत्सव

पवित्र शहीद थॉमिस का जन्म अलेक्ज़ेंड्रिया शहर में धर्मनिष्ठ माता-पिता के यहाँ हुआ था, जिन्होंने अपनी बेटी को सच्ची ईसाई परवरिश दी और उसे किताबें पढ़ना सिखाया। जब वह पंद्रह वर्ष की हुई, तो उन्होंने उसकी शादी एक युवा ईसाई युवक से कर दी। अपने पति के घर में, संत थोमाइस ने सदाचार के साथ जीवन व्यतीत किया, और अपनी पवित्रता, नम्रता, दयालुता और अन्य सद्गुणों के लिए सभी का सम्मान प्राप्त किया। उनके साथ एक ही छत के नीचे संत थोमाइस के पति के पिता, यानी उनके ससुर, रहते थे। अपनी बहू की सुंदरता से मोहित और कामुक इच्छाओं से भरा हुआ, वह शैतान के प्रभाव में आकर उसके प्रति बुरा इरादा रखने लगा: उसने उसके साथ पाप में समय बिताने का एक उपयुक्त अवसर तलाशा और जब ऐसा कोई अवसर नहीं मिला, तो वह पिता के स्नेह के बहाने प्रतिदिन उसे गले लगाकर और चूमकर ही संतुष्ट रहता था। हालाँकि, संत थोमेस अपनी पवित्रता में, यह संदेह नहीं करती थीं कि उनके ससुर के मन में अशुद्ध विचार थे और इसलिए उन्होंने उनके प्रति उनके व्यवहार में कुछ भी आपत्तिजनक नहीं देखा: वह इस बात से आश्वस्त थी कि यह एक बेटी के लिए उसके प्यार से उत्पन्न हो रहा है, और, अपने ससुर को एक पिता के रूप में सम्मान देते हुए, उसने उसके प्रति विशेष रूप से सख्त पवित्रता के साथ अपना आचरण किया।

संत थोमाइस के पति एक मछुआरे थे, और एक रात उनके साथी मछुआरे आए और उन्हें मछली पकड़ने ले गए। अपने बेटे की अनुपस्थिति का फायदा उठाते हुए, उनके पिता संत थोमाइस के पास आए और उन्हें पाप करने के लिए प्रलोभित करने लगे। इस अप्रत्याशित खतरे ने उन्हें आतंकित कर दिया, और उन्होंने उस पागल बूढ़े आदमी का विरोध करते हुए कहा:

'पिताजी, आप क्या कर रहे हैं? क्रॉस का चिह्न बनाइए और चले जाइए: आपकी यह योजना शैतान द्वारा प्रेरित है।'

लेकिन उस बूढ़े ने उसकी विनतियों पर कोई ध्यान नहीं दिया और उसने शर्मनाक शब्दों और कर्मों का सहारा लेकर उसे बहकाने की कोशिश की। हालाँकि, ईश्वर के भय और पवित्रता से परिपूर्ण संत थोमाइस ने अपने ससुर का दृढ़

विरोध किया: उसने प्रार्थना की और उसे अपनी गैर-कानूनी और अधार्मिक इच्छा को त्यागने के लिए कहा। लेकिन जितना ज़ोरदार विरोध उसने किया, उतना ही ज़्यादा ज़िद्दी होकर उसने उसे जबरदस्ती करनी चाही, जो अपनी अशुद्ध वासना की आग में जल रहा था। बिस्तर के ऊपर दीवार पर एक तलवार लटकी थी; उसे उतारकर और उसकी म्यान से निकालकर, उस बूढ़े ने संत थोमाइस को डराना शुरू कर दिया, और उसे इस तरह की धमकियाँ देने लगा:

'अगर तुम मेरी आज्ञा नहीं मानोगी, तो मैं इसी तलवार से तुम्हारा सिर काट दूँगा।'

जिस पर उसने उत्तर दिया:

'भले ही तुम मुझे टुकड़े-टुकड़े कर दो, मैं फिर भी ऐसे अवैध कृत्य के लिए कभी सहमति नहीं दूँगी।'

इन शब्दों से क्रोधित होकर, बूढ़े ने अपनी बहू पर तलवार से इतनी ज़ोर से वार किया कि वह दो टुकड़ों में कटकर मर गई। धन्य थोमाइस ने अपनी आत्मा ईश्वर के हाथों में सौंप दी और अपनी पवित्रता और शुद्धता के लिए शहादत का गौरवशाली मुकुट प्राप्त किया: उन्होंने अपने ही रक्त का बहाव होने तक पाप के विरुद्ध संघर्ष किया और ईश्वर के विधान के लिए अपना जीवन त्याग दिया, ईश्वर का अपमान करने और अपने शरीर तथा अपने पति के बिस्तर को कलंकित करने के बजाय मरना पसंद किया।

जहाँ तक हत्यारे का सवाल है, ईश्वर का दंड उस पर तुरंत ही आ पड़ा: आत्मा में अंधा हो गया, उसने अपनी दृष्टि खो दी और अपनी तलवार फेंककर, घर से निकलकर बिना किसी सुराग के भागने की उम्मीद में दरवाज़े की तलाश करने लगा; लेकिन, दीवारों का सहारा लेकर रास्ता टटोलते हुए, वह निकास नहीं ढूंढ सका और इसलिए कमरे में ही रहने के लिए मजबूर हो गया। इसी बीच, अन्य मछुआरे आ गए और दरवाज़ा खटखटाकर उन्होंने उसके बेटे को मछली पकड़ने के लिए बुलाया। उसके पिता ने जवाब दिया:

'मेरा बेटा तो मछली पकड़ने जा चुका है; मुझे दरवाज़ा दिखा दो, क्योंकि मुझे रास्ता नहीं मिल रहा है।'

उन्होंने दरवाज़ा खोला, अंदर गए और देखा कि बूढ़ा आदमी, जिसके हाथ और कपड़े खून से लथपथ थे, अंधेरे में टटोलता हुआ बाहर निकलने की राह खोज रहा था, और उसकी पत्नी खून के एक तालाब में फर्श पर दो टुकड़ों में कटी पड़ी थी। यह दृश्य देखकर, वे दंग रह गए और उन्होंने पूछा:

'इसका क्या मतलब है? ऐसा जघन्य अपराध किसने किया, और क्यों?'

तब बूढ़े आदमी ने उन्हें अपने पाप के बारे में बताया और उनसे न्यायाधीश के पास ले जाने को कहा ताकि उसे अपने अपराधों के अनुरूप सज़ा मिल सके। जब सेंट थोमेस के पति काम से लौटे और उन्हें जो हुआ था, उसके बारे में पता चला, तो उन्हें अपार दुख और शर्म महसूस हुई: उन्होंने अपनी पवित्र पत्नी के लिए शोक मनाया और अपने अधर्मी पिता पर शर्मिंदगी महसूस की, जिसने ईश्वर के भय के बिना, एक घृणित अपराध किया था और अपने सफेद बालों पर कलंक लगा दिया था। बुजुर्ग को मुकदमे में पेश किया गया और तलवार से सिर कलम करके सज़ा दी गई। अलेक्ज़ेंड्रिया के लोगों की एक बड़ी भीड़ मारी गई महिला के शव के चारों ओर इकट्ठा हो गई; वे सभी इस अविश्वसनीय और भयानक घटना पर हैरान रह गए और उन्होंने संत थोमिस की पवित्रता की प्रशंसा की।

संयोग से, उस समय स्केट के पूजनीय डेनियल अलेक्ज़ेंड्रिया में थे; उन्होंने अपने शिष्य से कहा:

'मेरे पुत्र, चलो हम उस पवित्र कन्या को देखने चलते हैं।'

उनकी इच्छा का पालन करते हुए, वे ऑक्टोडेकटोन, यानी अस्सीवें मठ के लिए रवाना हो गए। इस मठ के भिक्षुओं ने सम्मानपूर्वक पवित्र पिता का स्वागत किया और उन्हें गर्मजोशी से बधाई दी। संत थोमाइस के कष्टों के बारे में बताने के बाद, उन्होंने उन्हें यह आज्ञा दी:

'जाओ और उसका पवित्र शरीर यहाँ ले आओ, क्योंकि उसे सांसारिक लोगों के बीच नहीं, बल्कि पवित्र पिताओं के बीच होना चाहिए।'

कुछ भाई एक महिला के शव को संतों के साथ रखने के आदेश पर नाराज़ थे। जवाब में रेवरेंड फादर ने उनसे कहा:

'वह कन्या जिसे आप यहाँ लाने के लिए अनिच्छुक हैं, वह मेरे और आपके लिए एक माँ है: क्योंकि वह अपनी पवित्रता की खातिर मरी।'

तब भिक्षुओं ने पवित्र पिता का विरोध करने की हिम्मत नहीं की; वे गए और संत थोमाइस के शरीर को लाकर मठ की गुफा में सम्मानपूर्वक दफना दिया। सभी संतों को विदा कहने के बाद, आदरणीय पिता अपने शिष्य के साथ अपनी कुटिया में चले गए।

उनके मठ में एक भाई कामाग्नि के प्रबल प्रलोभनों से पीड़ित था; वह आदरणीय दानियल के पास गया और उसने उन्हें अपने कामवासना के विरुद्ध अपने तीव्र संघर्ष के बारे में बताया। आदरणीय ने उससे कहा:

'ऑक्टोडेकटोन मठ जाओ और वहाँ मठ की क्रिप्ट में इस प्रकार प्रार्थना करो: "हे ईश्वर, शहीद थॉमसि की प्रार्थनाओं के द्वारा, मेरी सहायता करो और मुझे कामुक इच्छाओं से मुक्ति दो!" ईश्वर पर अपना विश्वास रखो, और तुम प्रलोभन से मुक्त हो जाओगे,' पूजनीय पिता ने कहा।

वह भाई गया और ठीक वैसा ही किया जैसा कि परम पूज्य डेनियल ने उसे निर्देश दिया था, और वास्तव में वह कामुक प्रलोभनों से पूरी तरह मुक्त हो गया। स्केटे में लौटकर, वह परम पूज्य डेनियल के पैरों पर गिर पड़ा और उनसे कहा:

'पवित्र शहीद थोमाइस और आपकी प्रार्थनाओं के माध्यम से, पिताजी, ईश्वर ने मुझे कामुक इच्छाओं से मुक्त कर दिया है।'

वरिष्ठ ने पूछा:

'आप उनसे कैसे मुक्त हुए?'

भाई ने उत्तर दिया:

'पवित्र शहीद की कब्र के पास दीपक के तेल से बारह प्रार्थनाएँ करके और स्वयं को अभिषेक करके, मैंने अपना सिर उनकी कब्र पर रख दिया और सो गया; और देखो, एक तेजस्वी कन्या, संत थोमेस, मेरे सामने प्रकट हुईं और कहा: 'पिताजी, यह आशीर्वाद ग्रहण कीजिए और शांति से अपनी कोठरी में जाइए'; मैंने आशीर्वाद ग्रहण किया और जाग उठा, और मैं कामुक वासना से पूरी तरह मुक्त महसूस कर रहा था; मुझे नहीं पता कि मेरे सपने में पवित्र आशीर्वाद ने मुझे जो आशीर्वाद दिया, उसका वास्तव में क्या अर्थ है, लेकिन मैं अपनी वासनाओं से मुक्ति के बारे में अच्छी तरह से अवगत हूँ।

भाई का वृत्तांत समाप्त होने के बाद, पूजनीय दानियल ने कहा:

'पवित्रता के लिए प्रयासरत लोग ईश्वर के समक्ष ऐसी महान निर्भीकता रखते हैं।'

अपने बाकी जीवन में, उस भाई ने फिर कभी देह के प्रलोभनों का अनुभव नहीं किया और उसने परमेश्वर और पवित्र शहीद थोमाइस, अपनी उपचारक की महिमा की। अन्य लोग, जो समान जुनून से परेशान थे, ने भी ऐसा ही किया: पवित्र शहीद थॉमसि के मकबरे पर आकर, उन्होंने उनकी पवित्र प्रार्थनाओं के माध्यम से कामुक जुनून से राहत और मुक्ति प्राप्त की; उन्होंने पवित्र शहीद की महिमा की, और साथ ही प्रभु मसीह की भी महिमा की, जिन्हें पिता और पवित्र आत्मा के साथ, सदा के लिए सम्मान और आराधना प्राप्त हो। आमेन।

संत क्रिसेन्ट की शहादत।

13 अप्रैल को स्मरण किया जाता है

यह पवित्र शहीद लिसिया के म्यरा नगर में जन्मे थे[2994] ; वे एक कुलीन परिवार से थे और एक महान प्रतिष्ठित व्यक्ति थे। यह देखकर कि कितने लोग मूर्तियों की पूजा करते थे, वे एक बार मूर्तिपूजकों की भीड़ में गए और उन्हें अपने विधर्मी भ्रम को त्यागने, मसीह की ओर मुड़ने और उद्धार पाने के लिए मनाने लगे। जब प्रांतीय राज्यपाल को इस बात की जानकारी मिली, तो उन्होंने उसे गिरफ्तार करके मुकदमे के लिए अपने सामने पेश करने का आदेश दिया। मुकदमे में, उन्होंने संत से उनके पिता का नाम और उनका अपना नाम पूछना शुरू किया, लेकिन क्रिसिपिन ने केवल खुद को एक ईसाई बताया और कोई अन्य उत्तर नहीं दिया। तब राज्यपाल ने उनसे कहा:

'मूर्तिपूजकों के सामने दिखावे के लिए बलिदान चढ़ाओ, लेकिन अपने दिल में अपने ईश्वर का उपासक बने रहो।'

लेकिन पवित्र शहीद ने इस प्रस्ताव को क्रोधपूर्वक अस्वीकार कर दिया और सभी के सामने सत्य की घोषणा करते हुए, राज्यपाल को उत्तर दिया:

[2994] मायरा, जिसे अब मीरी या तुर्कों के लिए डेम्ब्रे के नाम से जाना जाता है, प्राचीन लिसिया का प्रमुख शहर था और यह समुद्र के पास, एंड्रैकस नदी के किनारे स्थित था।

'शरीर के लिए वह करना असंभव है जो आत्मा नहीं सोचती, क्योंकि आत्मा ही शरीर को नियंत्रित करती है और चलाती है।'

इसके बाद, संत क्रिसैन्ट को फांसी दी गई और उनके शरीर की खाल उधेड़ दी गई; फिर उन्होंने भट्टी में आग भड़काई और, जब वह लाल-गरम हो गई, तो उन्हें उसमें डाल दिया। इस प्रकार उन्होंने अपना प्राण प्रभु को सौंप दिया।

27 अप्रैल

14 अप्रैल (पुराना संस्करण)

हमारे पवित्र पिता मार्टिन द कन्फैसर, रोम के पोप की शहादत।

14 अप्रैल को स्मरण किया जाता है

649 में पोप थियोडोर की मृत्यु के बाद, धन्य मार्टिन[2995] को सर्वसम्मति से उनका उत्तराधिकारी चुना गया। उस समय, पूर्व में ग्रीस पर राजा कॉन्स्टेंटिन के पुत्र और हेराक्लियस के पोते कॉन्स्टेंस[2996] का शासन था; उन वर्षों में, ग्रीक सम्राटों का प्राचीन रोम पर अभी भी प्रभुत्व था और इसलिए साम्राज्य के पश्चिमी भाग में उनके अपने राज्यपाल थे। पूर्व में, उस समय मोनोथेलिटिक विधर्म तेजी से फैल रहा था; अर्थात्, मोनोथेलिट्स, जो हमारे प्रभु यीशु मसीह में एक ही इच्छा और एक ही इरादे को मानते थे[2997] । यह विधर्म यूटिकस के पूर्ववर्ती विधर्म से उत्पन्न हुआ, जिसने

[2995] यह वर्ष 649 का था।

[2996] 642 से 668 तक

[2997] मोनोफिसाइट्स – जो एकल दिव्य स्वभाव के सिद्धांत पर अड़े थे – विधर्मी थे जो यह सिखाते थे कि प्रभु यीशु मसीह में एक ही दिव्य स्वभाव था, अर्थात् यीशु मसीह में दिव्य और मानवीय स्वभाव का पूर्ण विलय, जिसमें बाद वाला पहले में समाहित हो गया; वैकल्पिक रूप से, इस विधर्म को यूटिकियनिज़्म के नाम से भी जाना जाता है, जिसका नाम कॉन्स्टेंटिनोपल के आर्चमिंड्राइट यूटिकिस के नाम पर रखा गया है, जिन्होंने इस सिद्धांत की घोषणा सबसे पहले की और इस प्रकार मोनोफिसाइट विवादों की शुरुआत की। इस विधर्म की पहली बार निंदा कॉन्स्टेंटिनोपल की स्थानीय परिषद (448) में की गई थी, जिसमें यूटिकिस को पदच्युत कर दिया गया था; कॉन्स्टेंटिनोपल के पैट्रिआर्क फ्लावियन, जिन्होंने परिषद की अध्यक्षता की थी, ने इसके फरमानों की सूचना रोम में पोप संत लियो महान को दी। बाद वाले ने यूटिकस की निंदा से सहमति व्यक्त की और एक पत्र लिखा जिसमें उन्होंने यीशु मसीह में दो स्वभावों के मिलन के बारे में ऑर्थोडॉक्स सिद्धांत को प्रस्तुत किया। इस बीच, यूटिकस को सम्राट थियोडोसियस द्वितीय और अलेक्ज़ेंड्रिया के पैट्रिआर्क डियोस्कोरस का समर्थन मिला। एफिसस परिषद (449), जिसे सम्राट ने बुलाया था और जो अपने गैर-कानूनी कार्यों के लिए इतिहास में 'डकैत परिषद' के नाम से जानी जाती है, ने पैट्रिआर्क फ्लावियन को दोषी ठहराया और यूटिकस को बरी कर दिया। परिषद में मौजूद पोप के दूत, डिकिन हिलारी ने, परिषद के फरमान से असहमति व्यक्त की और रोम भाग गए, जहाँ पोप ने तुरंत डियोस्कोरस को चर्च से बहिष्कृत कर दिया और एफ़िसुस परिषद के फरमानों को शून्य और अमान्य घोषित कर दिया; डियोस्कोरस ने भी बदले में अलेक्ज़ेंड्रिया में पोप लियो को चर्च से बहिष्कृत कर दिया। प्रभु यीशु मसीह में दो स्वभावों के मिलन का प्रश्न अंततः सम्राट थियोडोसियस द्वितीय (450) की मृत्यु के बाद हल हो गया। महारानी पल्केरिया और सह-शासक मार्शियन ने विधर्मियों के खिलाफ रुख अपनाया; 451 में, चौथे (काल्सेडोनियन) सार्वभौमिक परिषद बुलाई गई, जिसने पैट्रिआर्क डियोस्कोरस को पदच्युत कर दिया और इस प्रकार प्रभु यीशु मसीह के व्यक्तित्व में दो स्वभावों के मिलन के तरीके के संबंध में धर्मसिद्धान्त को परिभाषित किया: 'दिव्य पिताओं का अनुसरण करते हुए, हम सभी सर्वसम्मति से सिखाते और स्वीकार करते हैं... एक ही मसीह, पुत्र, एकमात्र प्रिय पुत्र प्रभु, दो स्वभावों में, बिना मिश्रण, बिना परिवर्तन, बिना विभाजन, और बिना अलगाव के... दो व्यक्तियों में विभाजित नहीं, बल्कि एक ही पुत्र और परमेश्वर का एकमात्र प्रिय वचन'। – काल्सेडन परिषद के निर्णय को मिस्र, आर्मेनिया, या कुछ हद तक सीरिया और फिलिस्तीन में स्वीकार नहीं किया गया था। इन देशों में, मोनोफिसाइट विधर्मी आज भी मौजूद हैं; उनकी कुल संख्या 5,000,000 है: 600,000 सीरियाई मोनोफिसाइट या जैकोबाइट, 280,000 अर्मेनियाई ग्रेगरीयन, लगभग 300,000 कॉप्ट और 2,000,000 से अधिक अबिसिनियाई।
मोनोथेलिटिज़्म, या एकल इच्छा की विधर्म, 7वीं शताब्दी की शुरुआत में बाइज़ेंटाइन शासकों की व्यापक मोनोफिज़िटिज़्म को चर्च में शामिल करने की इच्छा के प्रभाव में उत्पन्न हुई: ऑर्थोडॉक्स और मोनोफिज़िट्स के बीच संघर्ष न केवल एक धार्मिक बल्कि एक राजनीतिक आपदा भी थी। मोनोफिसाइट बिशपों, मुख्य रूप से कोल्चिस के फासिस के बिशप साइरस ने, सम्राट हेराक्लियस (611–641) को सुझाव दिया कि उनके और ऑर्थोडॉक्स के बीच एकता तब हासिल की जा सकती है जब ऑर्थोडॉक्स चर्च मसीह यीशु में एक ही इच्छा और एक ही क्रिया को मान्यता दे। 633 में, सम्राट और साइरस, जिन्हें अलेक्ज़ेंड्रिया का पैट्रिआर्क बनाया गया था, के प्रयासों से मिस्र के मोनोफिसाइट्स और ऑर्थोडॉक्स के बीच एकता सफलतापूर्वक स्थापित हुई; कॉन्स्टेंटिनोपल के पैट्रिआर्क सेरजियस के नेतृत्व में लगभग सभी पूर्वी और ग्रीक बिशप इस संघ में शामिल हो गए। अलेक्ज़ेंड्रिया के पैट्रिआर्क, जॉन द मर्सीफुल के प्रिय शिष्य, सोफ्रोनीस नामक एक भिक्षु ने इस गैरकानूनी समझौते का

अपमानजनक रूप से मसीह यीशु में केवल एक स्वभाव के अस्तित्व का दावा किया, जो कि ऑर्थोडॉक्स शिक्षा के विपरीत है, जो यह मानती है कि हमारे प्रभु यीशु मसीह में, जो देहधारी हुए, दो स्वभाव और दो इच्छाएँ, दो इच्छाएँ और दो क्रियाएँ हैं; प्रत्येक स्वभाव की अपनी इच्छा, अपना इरादा और मसीह के एक ही व्यक्तित्व के भीतर अपना कार्य होता है: प्रभु यीशु मसीह को दो व्यक्तियों में विभाजित नहीं किया जा सकता, बल्कि उन्हें दो स्वभावों में जाना जाता है, बिना उनके मिश्रित हुए।

इस विधर्म के संस्थापक पैट्रिआर्क थे: अलेक्जेंड्रिया के साइरस और कॉन्स्टेंटिनोपल के सेरजियस; उन्हें इस विधर्म को फैलाने में राजा कॉन्स्टेंस के दादा हेराक्लियस ने सहायता की। सेरजियस की मृत्यु के बाद, पिर्रस को कॉन्स्टेंटिनोपल का पैट्रिआर्क नियुक्त किया गया, जिसके बाद पॉल आए – ये दोनों ही मोनोफिजिटाइट विधर्मी थे। पॉल की सलाह पर, राजा कॉन्स्टेंस ने मोनोफिसाइट्स की विधर्मी शिक्षाओं को प्रस्तुत करते हुए एक किताब लिखी, जिसका शीर्षक उन्होंने 'टाइपोस' रखा; उन्होंने इसे दूर-दूर तक वितरित किया, और आज्ञा दी कि हमारे प्रभु यीशु मसीह के व्यक्तित्व से संबंधित सिद्धांत उसी के अनुसार माना जाए। कई ऑर्थोडॉक्स जो इस विधर्म को स्वीकार नहीं करते थे, उन्हें राजा की अधर्मी आज्ञा का विरोध करने के लिए निर्वासित किया गया, पीटा गया, या यहां तक कि मार भी डाला गया; उनमें परम पूजनीय मैक्सिमिस द कन्फेसर थे, जैसा कि उनकी जीवनी *[2998] * में विस्तार से बताया गया है, और संत पोप मार्टिन, जिनके बारे में हम अभी बात कर रहे हैं। पोप के पद पर उनका कार्यभार संभालते ही, सम्राट ने उन्हें विधर्मी शिक्षाओं से भरी एक किताब भेजी, यह चाहकर कि नव-नियुक्त पोप उनके विधर्म से सहमत हों और परिषद में इसकी पुष्टि करें। लेकिन धन्य मार्टिन ने इसे यह कहते हुए अस्वीकार कर दिया:

'भले ही सारी दुनिया इस शिक्षा को स्वीकार कर ले, जो ऑर्थोडॉक्स सिद्धांत के विपरीत है, मैं फिर भी इसे स्वीकार नहीं करूँगा; और भले ही मुझे मृत्यु का सामना करना पड़े, मैं सुसमाचार और प्रेरितों की शिक्षाओं और पवित्र पिताओं की परंपरा से विचलित नहीं होऊँगा।'

फिर उन्होंने कन्स्टेंटिनोपल के पैट्रिआर्क पॉल को चर्च के कुछ सम्मानित पुरोहितों के साथ एक पत्र भेजा, जिसमें उन्होंने प्रेमपूर्वक उनसे आग्रह किया कि वे चर्च की एकता के भीतर विभाजन न करें, भक्तिपूर्ण विश्वास के गेहूं के बीच विधर्मी खरपतवार न बोएं, बल्कि सम्राट को चर्च के विपरीत शिक्षण को छोड़ने के लिए मनाएं। हालांकि, पैट्रिआर्क पॉल ने न केवल धन्य मार्टिन की अवज्ञा की, बल्कि अपने दूतों को अपमानजनक पिटाई का शिकार बनाया और उन्हें साम्राज्य की सीमाओं पर निर्वासित कर दिया। इसके पश्चात्, संत मार्टिन ने उस समय रोम में मौजूद क्राइसोपोलिस के पूजनीय मैक्सिमिस ([2999]) की सलाह पर, एक स्थानीय परिषद बुलाई जिसमें एक सौ पाँच पश्चिमी बिशप

खुले तौर पर विरोध किया, यह तर्क देते हुए कि एकल इच्छा का सिद्धांत स्वयं मोनोफिजिटाइज़्म था—अर्थात् प्रभु यीशु मसीह में एक ही दिव्य स्वभाव की मान्यता—क्योंकि यदि स्वभाव एक है, तो स्वाभाविक रूप से इच्छा भी एक ही होगी। 634 में यरूशलेम के पैट्रिआर्क बनने के बाद, उन्होंने और भी अधिक उत्साह के साथ ऑर्थोडॉक्सी की रक्षा की: उन्होंने यरूशलेम में एक परिषद बुलाई जिसमें उन्होंने मोनोथेलिटिज़्म की निंदा की। विवाद को समाप्त करने की इच्छा से, सम्राट हेराक्लियस ने 638 में 'विश्वास की व्याख्या' (एक्टेसिस) जारी की, जिसमें यीशु मसीह में दो स्वभावों के ऑर्थोडॉक्स सिद्धांत को प्रस्तुत किया गया और उनकी इच्छाओं का कोई उल्लेख करने पर प्रतिबंध लगाया गया, जबकि साथ ही यह भी जोड़ा गया कि ऑर्थोडॉक्स विश्वास एक ही इच्छा की मान्यता की मांग करता है। (एक्टिसिस), जिसमें यीशु मसीह में दो स्वभावों के ऑर्थोडॉक्स सिद्धांत को निर्धारित किया गया था और उनकी इच्छाओं का कोई उल्लेख करने से मना किया गया था, जबकि साथ ही यह भी जोड़ा गया था कि ऑर्थोडॉक्स विश्वास एक ही इच्छा की मान्यता की मांग करता है। 'विश्वास की व्याख्या' के प्रकाशन के बाद, कॉन्स्टेंटिनोपल के भिक्षु मैक्सिमिस द कन्फेसर ऑर्थोडॉक्सी के एक उत्साही रक्षक के रूप में उभरे, जिन्होंने उत्तरी अफ्रीका और रोम में मोनोफिसाइट्स का सफलतापूर्वक विरोध किया। हेराक्लियस के उत्तराधिकारी, कॉन्स्टेंस द्वितीय, एकथेसिस या 'विश्वास की व्याख्या' को समाप्त करना चाहते थे—जिन्होंने और भी अधिक असहमति पैदा कर दी थी—ने 648 में 'टाइपस' जारी किया: विश्वास का एक मॉडल जिसमें उन्होंने एक या दो इच्छाओं के बारे में बात करने से मना कर दिया, और लोगों को पिछले पाँच सार्वभौमिक परिषदों के अनुसार विश्वास करने के लिए मजबूर किया। लेकिन 'टाइपोस' ने विवादों को समाप्त नहीं किया, जैसा कि हम इस संजीवनी से देख सकते हैं। अंत में, सम्राट कॉन्स्टेंटिन पैगोनैटस (668–685) ने छठे का आयोजन किया (ट्रुलियन) सार्वभौमिक परिषद का आयोजन कॉन्स्टेंटिनोपल में किया गया, जिसमें मोनोथेलीटिज़्म को विधर्म घोषित किया गया और यह आदेश दिया गया कि मसीह यीशु में दो क्रियाओं और दो इच्छाओं को स्वीकार किया जाना चाहिए, जिसमें मानवीय इच्छा सभी बातों में दैवीय इच्छा का अनुसरण करती है और उसके अधीन होती है, बिना इसके कि वह नष्ट हो जाए। – मोनोफिज़िट्स के अवशेष आज भी मारोनाइट संप्रदाय के रूप में मौजूद हैं। उन्होंने (680 से) पहली बार लेबनानी पहाड़ों में शरण ली; क्रूसेड्स (1182) के दौरान, मोनोफिसाइट सिद्धांत पश्चिम में, यूरोप तक फैल गया, लेकिन पोपों के प्रयासों के कारण, इसे बहुत सारे अनुयायी नहीं मिले, हालांकि यह 1736 तक बना रहा, जब यहूदी मोनोफिसाइट्स कैथोलिक चर्च में शामिल हो गए। पूर्व में, सीरिया में (केसरावान जिले में), वे आज भी मौजूद हैं।

[2998] उनका पर्व दिवस 21 जनवरी है।

[2999] फादर, एक हिब्रू शब्द।

शामलि थे और उन्होंने साइरस, सेरजयिस, परिस और पॉल की त्रुटयिों के साथ-साथ सम्राट की पुस्तक *टाइपस* को भी वचिारार्थ प्रस्तुत कयि; परषिद् ने इस वधिर्म को शाप (अनाथेमा) दयि और सभी ऑर्थोडॉक्स लोगों के लिए एक पत्र जारी कयि, जसिमें उन्हें ऑर्थोडॉक्स धर्म में पुष्ट कयि गया, वधिर्म की पूरी हानकिारकता को समझाया गया और उनसे इसे अत्यंत सावधानी से रोकने का आदेश दयि गया[3000] । संत मार्टनि की ओर से इस कार्रवाई के बारे में सुनकर, राजा को भयंकर क्रोध आ गया: उसने ओलंपयिास नामक एक सैन्य कमांडर को अपने प्रतनिधि के रूप में रोम भेजा, ताकि वह पोप मार्टनि को पकड़ सके। लेकनि रोम पहुँचने पर, ओलंपियिा को खुलेआम पोप को गरिफ्तार करने का वचिार त्यागने के लिए मजबूर होना पड़ा , क्योंकि उसे उपरोक्त परषिद अभी भी चलती हुई मलि, जसिमें बशिपों और लोगों की एक बड़ी भीड़ इकट्ठा हो गई थी, इसलिए शहर पादरयिों और सामान्य लोगों से भर गया था; अत; ओलंपियिा ने एक सैनकि को चर्च में रहते हुए संत मार्टनि की, मानो, आकस्मकि रूप से हत्या करने का नर्देश दयि। लेकनि जब एक सैनकि, अपने कपड़ों के नीचे छड़िी तीखी तलवार के साथ, उसे मारने के इरादे से चर्च में पोप के पास पहुँचा, तो वह अचानक और अप्रत्याशति रूप से अंधा हो गया: क्योंकि प्रभु, जो *'दुष्टों की लाठी धर्मी की भाग में* नहीं पड़ने *देते*[3001] (भजन संहति 124:3), ने हत्यारे को अपने वफादार सेवक के वरिुद्ध अपना यातना देने वाला हाथ उठाने की अनुमति नहीं दी। यह देखकर कि प्रभु स्वयं अपने सेवक की रक्षा कर रहे थे, ओलंपयिस ने पोप को चैन से छोड़ दयि और ससिलिी लौट गया, जहाँ वह सरासेनों के खलिाफ लड़ाई में मारा गया। हालाँकि राजा ने पैट्रआर्क पॉल की सलाह पर रोम में एक और गवर्नर—जो एक सैन्य कमांडर भी था—नाम थयिोडोर, जनि्हें कैलओिपे के नाम से जाना जाता था, भेजा। उसे सेंट मार्टनि को गरिफ्तार करने का नर्देश दयि गया था, और इसके लिए उसने पहले पोप पर झूठे आरोप लगाए कि उन्होंने कथति तौर पर राजा के खलिाफ युद्ध छेड़ने के उद्देश्य से सराकनिों को वद्रिोह करने के लिए उकसाने की साजशि रची थी, और यह भी कि उन्होंने कथति तौर पर संतों द्वारा दिए गए धर्म की रक्षा नहीं की और परमेश्वर की परम पवत्रि माता का अपमान कयि।

रोम पहुँचने पर, राज्यपाल ने सभी के सामने खुलेआम पोप पर इन अपराधों का आरोप लगाया। संत मार्टनि, जो पूरी तरह से नर्दोष थे, ने अपने खलिाफ लगाए गए इन अपमानजनक आरोपों के खलिाफ अपना बचाव करना शुरू कर दयि:

उन्होंने कहा, 'मैंने कभी भी सरासनों के साथ कोई लेन-देन नहीं कयि है, सवािय उन अवसरों के जब मैंने उनके बीच रहने वाले गरीब और बेसहारा धर्म-भाइयों को दान भेजा था; 'जो कोई भी परमेश्वर की अति पवत्रि माता का सम्मान नहीं करता, उसे ईश्वर की माता के रूप में स्वीकार नहीं करता, और उसकी पूजा नहीं करता, वह इस जीवन और अगले जीवन में शापति हो। जहाँ तक पवत्रि वश्विास का प्रश्न है,' उन्होंने अपनी रक्षा में नष्किर्ष नकिाला, 'हम गलत नहीं हैं, बल्कि वे लोग गलत हैं जो अनुचति रूप से हमसे असहमत हैं।'

हालांकि, राजा के गवर्नर ने पोप की दलीलों पर कोई ध्यान नहीं दयि, और उनके खलिाफ लगाए गए आरोपों की वैधता पर जोर देते रहे और यहाँ तक कि एक नया आरोप भी लगाया—अर्थात्, कि संत मार्टनि ने कथति तौर पर पोप के सहिासन पर अनुचति रूप से कब्जा कर लयि था। और एक रात, गुप्त रूप से और सैनकिों की सहायता से, उसने पोप को पकड़ लयि, उसे बंदरगाह ले गया और वहां से नाव द्वारा साइक्लेड्स के रूप में जाने जाने वाले दूर के द्वीपों के बीच स्थति नैक्सोस द्वीप पर भेज दयि।[3002] इस द्वीप पर, संत मार्टनि पूरे एक साल तक रहे, उन्होंने भूख और जीवन की अन्य बुनयिादी आवश्यकताओं की अन्य कठनिाइयों को सहन कयि। हालाँकि, यदि द्वीप के कसिी धर्मपरायण नवािसी ने नर्वासति पोप पर दया करके उसकी कठनिाइयों को कम करने के लिए कुछ लाया, तो रक्षक उन लोगों को कैदी के पास आने की अनुमति नहीं देते थे और जो उपहार लाए होते, उनसे जबरदस्ती छीन लेते थे; साथ ही, वे बाद वालों को फटकारते हुए कहते:

'यदि तुम में से कोई भी उससे प्रेम करता है और उस पर तरस खाता है, तो तुम देश के दुश्मन हो, क्योंकि यह नर्वासति व्यक्ति एक वधिर्मी, ईश्वर का वरिोधी और ग्रीक-रोमन राज्य का वध्विंसक है।'

और रक्षकों ने संत मार्टनि का बहुत अपमान कयि, उसे गाली-गलौज और उपहास का शकिार बनाया। लेकनि भले ही दैनकि अपमान, अभावों और उस पर आई बीमारी के कारण उसकी शारीरकि शक्ति क्षीण हो रही थी, फरि भी

[3000] यह परषिद उसी वर्ष आयोजति हुई जब संत मार्टनि पोप के सहिासन पर आसीन हुए, अर्थात् 649 में।

[3001] अर्थात्, जब प्रभु दुष्टों को धार्मकिों पर अस्थायी रूप से वजिय प्राप्त करने की अनुमति देते हैं, तब भी वह हमेशा धार्मकिों को अंतमि वजिय प्रदान करते हैं।

[3002] ये द्वीप, जनिकी संख्या 60 है, एजयिन सागर में स्थति हैं।

उसने अपनी आध्यात्मकि दृढ़ता नहीं खोई, और ईश्वर के लिए कृतज्ञतापूर्वक सब कुछ सहन कयि। द्वीप पर उनके आगमन के एक साल बाद, संत मार्टनि को बज़िान्टयिम ले जाया गया[3003] ।

जहाज पतझड़ में बज़िान्टयिम पहुँचा और, सुबह-सुबह, आर्चैंडयि के पास यूथमियिस के बंदरगाह पर लंगर डाल दयि। तुरंत ही, संत, जो पहले से ही गंभीर रूप से बीमार थे, को सम्राट और पैट्रआर्क द्वारा भेजे गए दूतों द्वारा परेशान कयि गया; सभी दया से रहति, उन्होंने सुबह से रात तक इस परमेश्वर के सबसे सम्मानति बशिप का अपमान कयि, हर संभव तरीके से उनकी बदनामी और नदिा की। जैसे ही शाम हुई, पैट्रआर्कल नोटरी[3004] सागोलीवा सैनकिों के एक समूह के साथ पहुँचे; संत मार्टनि को जहाज से उतारने के बाद, उन्होंने उन्हें एक स्ट्रेचर पर लटिा दयि (क्योंकि वह बीमारी के कारण चलने में असमर्थ थे) और उन्हें प्रान्डयिारयिा नामक एक आंगन में ले गए; वहाँ उन्होंने संत मार्टनि को एक अंधेरी और तंग कमरे में बंद कर दयि और उनकी कड़ी नगिरानी रखी, ताकि शहर के कसिी भी व्यक्ति को उनके ठकिाने का पता न चल सके। संत इस कालकोठरी में तरिानबे दनिों तक रहे, और कसिी से बात नहीं कर सके। फरि संत मार्टनि को सेकेलारयिस[3005] के घर ले जाया गया, जहाँ सेनेटर्स इकट्ठा हुए थे[3006] ; जब वह लाया गया, तो सबसे वरष्ठि सेनेटर्स में से एक ने चल्लिाकर आदेश दयि कि संत मार्टनि उस स्ट्रेचर से उठें जसि पर उन्हें सभा में लाया गया था; उसे ले जा रहे सेवकों में से एक ने कहा कि पोप खड़े नहीं हो सकते, क्योंकि वे बहुत बीमार थे; लेकनि सेनेटर ने संत मार्टनि की बीमारी की परवाह कए बनिा, गुस्से में उन्हें एक बार फरि खड़े होने का आदेश दयि, यह कहते हुए कि उन्हें उनकी कमजोरी को देखते हुए सहारा दयि जाए। तब संत मार्टनि उठे और दोनों ओर से सहारा लेकर बीच में खड़े हो गए; झूठे गवाह—जन्हिें जानबूझकर पहले से बुलाया और तैयार कयि गया था—वे भी खड़े हो गए, उन्होंने संत मार्टनि पर उपरोक्त अन्यायपूर्ण आरोप लगाए और उनमें अन्य आरोप भी जोड़े; अपने शब्दों की सच्चाई साबति करने के लिए, उन्होंने पवत्रि सुसमाचार पर शपथ ली। जब सेंट मार्टनि, जन्हिें ग्रीक बोलना नहीं आता था, एक दुभाषए के माध्यम से अपना बचाव करने लगे, तो सभा ने न केवल उनकी बात सुनने से इनकार कर दयि, बल्कि उन्हें स्पष्ट रूप से बोलने से भी रोक दयि; इस बीच, दुभाषए का अपमान करते हुए उसे गाली-गलौज से नवाजा गया। यह देखकर, सेंट मार्टनि ने कहा:

'प्रभु जानते हैं कि यदि आप मुझे कसिी प्रकार की सज़ा देकर शीघ्र ही मार डालें तो आप मुझ पर कतिना बड़ा उपकार करेंगे।'

इसके बाद, संत को बाहर ले जाया गया और, चूँकि वह खड़ा नहीं हो सकते थे, उन्हें एक मंच पर बठिाया गया जो वशिेष रूप से ऐसे अवसरों के लिए बनाया गया था, और वह उस चौक में स्थति था जहाँ आम तौर पर बड़ी भीड़ इकट्ठा होती थी। राजा ने उन्हें अपने महल के ऊपरी कक्ष से गुप्त रूप से देखा और उनके पास सैकेलारयिस को भेजा; बाद वाला, संत मार्टनि के पास आकर, धमकी देते हुए उनसे बोला:

'देखो, तुमने ईश्वर को त्याग दयि है, और ईश्वर ने तुम्हें त्याग दयि है।' यह कहकर, वह लोगों की ओर मुड़ा, और उन्हें संत मार्टनि को शाप देने का आदेश दयि, और आसपास की भीड़ ज़ोर-ज़ोर से चल्लिाने लगी:

'पोप मार्टनि पर शाप।'

मौजूद लोग जो पोप की पूर्ण नर्दिोषति को जानते थे, वे दुखी चेहरों और आँसुओं से भरी आँखों के साथ इस तमाशे से मुँह मोड़ लिए। इसके बाद, सैकेलारयिस ने प्रेटोरयिन के कमांडर Guard[3007] को कहा:

'उसे पकड़ो और उसके टुकड़े-टुकड़े कर दो, क्योंकि वह जीवन का अयोग्य है।'

तुरंत, स्पेकुला[3008] ने संत को पकड़ लयि, उनके बाहरी वस्त्र उतार दए, और उनके अंडरगारमेंट्स को दो भागों में फाड़ दयि; संत मार्टनि के गले और पूरे शरीर पर भारी लोहे की जंजीरों को डालकर, वे उन्हें पूरे शहर से होते हुए

[3003] वर्तमान कॉन्स्टेंटनिोपल।

[3004] पतिृसत्ता के सचवि।

[3005] साकेलारयिोस एक उच्च-पदस्थ धार्मकि अधकिारी था जो एक वशिेष परषिद का अध्यक्ष था, जो कॉन्स्टेंटनिोपल के मठों का प्रशासन करती थी, उनकी संपत्तयिों का प्रबंधन करती थी और संतों के जीवन की देखरेख करती थी।

[3006] सेनेटर – एक उच्च-पदस्थ राज्य अधकिारी।

[3007] प्रेटोरीयम – एक न्यायालय जहाँ कानूनी मामलों का मुख्य रूप से नर्णिय कयि जाता था और नर्णिय लागू कए जाते थे। एक प्रेटर – प्राचीन रोम में सर्वोच्च न्यायाधीश; बाद में, उनके दायत्वि का वस्तिार कयि गया।

[3008] स्पेकुलेटर – प्रेटोर का एक सहायक, जो उसके आदेशों को पूरा करने के लिए जम्मिेदार था।

प्रेटोरीयम तक घसीटते हुए ले गए, और उनके सामने एक खींची हुई तलवार ले जा रहे थे जिससे वे उन्हें मारने का इरादा रखते थे। भीड़ में से कुछ लोगों ने संत का अपमान किया और मज़ाक उड़ाते हुए, सिर हिलाते हुए कहा:

'उसका ईश्वर कहाँ है? वह सिद्धांत कहाँ है जिसका वह प्रचार करता है?'

हालाँकि, अन्य लोग ईश्वर के इस पवित्र व्यक्ति पर की गई ऐसी अपमान और यातना को देखकर रोए और विलाप किए बिना नहीं रह सके। और उस पूजनीय ने दोहरा कष्ट सहा: एक ओर उन्हें बीमारी, भारी बेड़ियों और अपने यातना देने वालों की प्रहारों से शारीरिक कष्ट हुआ, वहीं दूसरी ओर उनकी आत्मा को निर्वस्त्र किए जाने और अपमानजनक तानों का सामना करना पड़ा, जिससे उन्हें शर्म और हृदय की पीड़ा हुई। प्रेटोरीयम पहुँचने पर, पहरेदारों ने बँधे हुए संत को सीढ़ियों से होते हुए तहखाने में घसीट लिया: अंतिम सीढ़ी पर ठोकर खाने से, संत मार्टिन गिर पड़े और उनके शरीर पर चोटें और खरोंचें आ गईं; वहाँ उन्हें दुष्टों और चोरों के साथ डाल दिया गया। कुछ समय बाद, उन्हें वहाँ से एक दूसरे कालकोठरी - डायोमेड्स की कालकोठरी - में स्थानांतरित कर दिया गया, जहाँ वे बीमारी और कड़की ठंड से लगभग मर ही गए (यह जनवरी का महीना था)। एक जेलर की पत्नी को संत मार्टिन पर दया आ गई: वह चुपके से पवित्र कैदी के पास आई, उसे अपने घर ले गई और उसके घावों पर पट्टी बांधकर, उसे अपनी ही खाट पर लिटा दिया, और एक गर्म कंबल से ढक दिया; संत मार्टिन शाम तक वहीं पड़े रहे, एक भी आवाज़ नहीं निकाली, मानो वे मृत हों। शाम के देर से, शाही नपुंसकों के प्रमुख ग्रेगरी ([3009]) ने अपने घर के व्यवस्थापक को थोड़ी सी भोजन के साथ भेजा और उसे सेंट मार्टिन को यह देने का निर्देश देते हुए कहा:

'अपने दुख में हतोत्साहित न हो; हमें आशा है कि ईश्वर तुम्हें मरने नहीं देंगे।'

यह सुनकर, पूजनीय मार्टिन ने अपने हृदय की गहराई से एक आह भरी: यह संदेश उनकी आशाओं के अनुरूप नहीं था, क्योंकि संत मार्टिन, जो अपने ऑर्थोडॉक्स धर्म के लिए कष्ट झेल रहे थे, मरना ही चाहते थे; तुरंत ही, पूजनीय की बेड़ियाँ खोल दी गईं।

उस सुबह, ज़ार घातक रूप से बीमार पैट्रिआर्क पॉल से मिलने गए और उन्हें पोप मार्टिन के साथ हुई सारी बातें बताईं। पॉल ने दीवार की ओर मुंह फेर लिया और भारी आह भरकर कहा:

'हाय मेरे लिए, और मेरी निंदा में जोड़ने के लिए एक और कर्म।'

ज़ार ने पूछा:

'इसका क्या मतलब है?'

पॉल ने उत्तर दिया, 'क्या यह एक बड़ा बुराई नहीं है, महाराज, कि पोप को इतना कष्ट सहने के लिए मजबूर किया जाए?'

और उन्होंने ज़ार से विनती की, कि वे पोप के साथ किसी भी तरह के और दुर्व्यवहार को समाप्त करें। आठ दिन बाद, पॉल की मृत्यु के बाद, ज़ार ने नोटरी डेमोस्थेनेस को, इस कार्य के लिए विशेष रूप से नियुक्त अन्य लोगों के साथ, डायोमिडि के कालकोठरी में सेंट मार्टिन के पास भेजा। कालकोठरी में प्रवेश करने पर, उन्होंने कहा:

'हमारे राजा आपसे कहते हैं: इतनी महिमा के बाद, आप अब इतनी बदनामी में हैं, फिर भी इसके लिए दोषी आप स्वयं हैं।'

संत मार्टिन ने उन्हें कोई जवाब नहीं दिया; स्वर्ग की ओर अपनी दृष्टि उठाकर, उन्होंने कहा: 'सभी चीजों के लिए एकमात्र अमर राजा को धन्यवाद और महिमा।'

तब दूतों ने पॉल के पूर्ववर्ती, पैट्रिआर्क पायरस के बारे में सेंट मार्टिन से पूछना शुरू किया – कि क्या पॉल अपनी मर्जी से रोम आए थे और वहाँ मोनोथेलिटिकि संप्रदाय का त्याग किया था, और कैसे पोप थियोडोर, जिनके बाद सेंट मार्टिन सिंहासन पर बैठे थे, ने उन्हें चर्च की संगति में स्वीकार किया था। संत मार्टिन ने उन्हें पैट्रिआर्क पायरस के बारे में विस्तार से बताया, कि वह अपनी मर्जी से रोम आए थे और उन्होंने अपनी कुसंप्रदाय का लिखित रूप में त्याग किया था—हालांकि बाद में वे उस पर वापस आ गए—और कैसे पोप थियोडोर ने उन्हें उनके बिशप के पद के अनुरूप सम्मान के साथ

[3009] हिजड़ा – एक ख़ासला नौकर जिसे पत्नियों की देखरेख का काम सौंपा जाता था; इस उद्देश्य के लिए ऐसे नौकरों को रखने की प्रथा मूल रूप से एशिया माइनर में शुरू हुई थी; प्राचीन रोम में भी हिजड़ों का उल्लेख मिलता है। बाइज़ेन्टियम में, जहाँ पूर्वी प्रभाव के अधीन दरबारी जीवन विकसित हुआ था, वहाँ भी खसासे थे; अपनी पत्नियों के माध्यम से शासकों पर प्रभाव डालने में सक्षम, खसासों ने कभी-कभी राज्य के मामलों के संचालन पर काफी प्रभाव प्राप्त कर लिया, यही कारण है कि मुख्य खसासे का पद एक प्रतिष्ठित पद था।

स्वीकार किया था, और उन्हें अपना जीवन यापन करने के लिए साधन दिए थे। संत मार्टिन ने राजा द्वारा भेजे गए दूतों को निम्नलिखित संबोधन के साथ अपना भाषण समाप्त किया:

'मैं आपके हवाले हूँ – आप मेरे साथ जैसा चाहें और जैसा ईश्वर आपको अनुमति दें, वैसा करें, लेकिन यह सुनिश्चित हो जाइए कि यदि आप मुझे टुकड़े-टुकड़े भी कर दें, तब भी मैं कॉन्स्टेंटिनोपल की चर्च के साथ तब तक संप्रदाय में नहीं रहूँगा जब तक कि वह अपनी विधर्मी भूल से इनकार नहीं कर लेती; मेरे शब्दों की सच्चाई को परखो, और तुम देखोगे कि प्रभु की कृपा अपने सेवकों के प्रति कितनी महान है।

संत मार्टिन की प्रतिक्रिया सुनकर, राजदूत राजा के पास लौट आए, और उस संत की महानता और आत्मा की ताकत से चकित थे, जो न तो यातनाओं से और न ही स्वयं मृत्यु से डरते थे। पचासी दिन बाद, नोटरी सागोलीवा संत मार्टिन के जेल के कमरे में आए और उनसे कहा: 'मुझे आदेश दिया गया है कि मैं आपको यहाँ से अपने घर ले जाऊँ, जहाँ से आपको किसी निश्चित स्थान पर भेजा जाएगा।'

संत मार्टिन ने पूछा:

'तो मुझे कहाँ भेजा जाएगा? ठीक किस स्थान पर?'

लेकिन सागोलीवा ने इस सवाल का जवाब नहीं दिया। फिर संत मार्टिन ने कहा:

'मुझे कालकोठरी में छोड़ दो जब तक कि मुझे भेजने का समय न आ जाए।'

नोटरी चला गया। जैसे ही सूर्य अस्त हो रहा था, पोप ने अपने साथ मौजूद कैदियों से कहा:

'भाइयो, यहाँ आओ और हम एक अंतिम चुंबन का आदान-प्रदान करें: जल्द ही मेरे लिए एक दूत आएगा जो मुझे यहाँ से ले जाएगा।'

उन्होंने सभी ने आँसुओं के साथ उसे विदाई दी, लेकिन सेंट मार्टिन, जिनका चेहरा आनंद से दमक रहा था, ने उनसे कहा:

'रोओ मत, बल्कि आनंद मनाओ – देखो, मैं आनंदित हूँ कि मैं ऑर्थोडॉक्स धर्म के लिए कष्ट सहने जा रहा हूँ।'

इसके बाद, उपरोक्त नोटरी वापस आया और संत को कालकोठरी से बाहर ले आया; उपस्थित सभी लोग संन्यासी से बिछिड़ने का शोक मनाते हुए, बिना सांत्वना के रो पड़े। संत मार्टिन को एक जहाज पर बिठाकर खेरसन में निर्वासन के लिए भेज दिया गया[3010] ; वहाँ उन्हें भूखा रखा गया और सभी आवश्यक वस्तुओं से वंचित कर दिया गया, इसलिए दो साल बाद उन्होंने प्रभु में निवास प्राप्त किया[3011] । उनके पवित्र शरीर को खेरसन शहर के बाहर परमेश्वर की अति पवित्र माता के चर्च में दफनाया गया, जिसे ब्लाचेर्ना का चर्च के नाम से जाना जाता है। शीघ्र ही उनकी कब्र पर भीड़ इकट्ठा होने लगी : बीमारों को संत की प्रार्थनाओं और हमारे प्रभु यीशु मसीह की कृपा से अनेक प्रकार के चमत्कारिक उपचार प्राप्त हुए, जिनके साथ-साथ परमपिता और पवित्र आत्मा के साथ, युगानुयुग महिमा हो। आमीन।

लिथुआनिया के पवित्र शहीदों: एंथनी, जॉन और यूस्टेस का कष्टकथा

14 अप्रैल को स्मरण किया जाता है

ये पवित्र शहीद लिथुआनिया के विल्नियस शहर के मूल निवासी थे[3012] और, उस समय की अधर्मी प्रथा के अनुसार, उस भूमि के अन्य निवासियों की तरह ही अग्नि-पूजक थे[3013] । जन्म से भाई एंथनी और जॉन ने पूरे दिल से ईसाई धर्म से प्रेम किया और जब एक दिन नेस्टर नामक एक पादरी लिथुआनिया आया, तो उन्होंने उससे दिव्य बपतिस्मा ग्रहण किया।

[3010] क्रिमिया के पश्चिमी तट पर एक प्रायद्वीप; यहाँ, ईसा पूर्व 5वीं शताब्दी में, चेरसोनेसॉस स्थित था; इस शहर के खंडहर सेवास्टोपोल से कुछ वर्स्ट दूर दिखाई देते हैं।

[3011] 655 में

[3012] विलनियस शहर की स्थापना 12वीं शताब्दी में हुई थी, हालांकि अन्य स्रोतों के अनुसार, यह 10वीं शताब्दी में ही अस्तित्व में आ गया था। हालाँकि, यह 14वीं शताब्दी (लगभग 1323) की शुरुआत में लिथुआनिया और रूस के ग्रैंड ड्यूक गेडिमिनस की राजधानी बनने पर ही ऐतिहासिक रूप से महत्वपूर्ण बना। वर्तमान में, विलनियस एक लाख की आबादी वाला एक बड़ा प्रांतीय शहर है, जो रूस का हिस्सा है।

[3013] आग की पूजा, जो प्राचीन काल में व्यापक रूप से प्रचलित थी, मूर्तिपूजक लिथुआनिया में भी होती थी। यह मूल रूप से आग, गर्जना और बिजली के देवता पेरुन की पूजा थी, जिसके सम्मान में 1285 में विल्नियस में एक काफी बड़ा मंदिर बनाया गया था।

उनके बपतस्मिा के समय, दोनों में से बड़े का नाम जॉन और छोटे का नाम एंथनी रखा गया[3014] । दोनों भाइयों ने सच्चे ईसाइयों के अनुरूप जीवन व्यतीत कयिा।

लथिुआनयिाई राजकुमार ओल्गर्ड[3015] की सेवा में रहते हुए, एंथनी और जॉन ने उनसे अपना ईसाई धर्म छपिाने की कोशशि की, लेकनि वे ऐसा नहीं कर सके, क्योंकि वे अपनी ईसाई रीत-रिवाजों और आचरण में मूर्तपिूजकों से बहुत अलग थे। इस प्रकार, दूसरों के वपिरीत, उन्होंने मूर्तपिूजकों की तरह अपने बाल और दाढ़ी काटने से इनकार कर दयिा, या उपवास के दनिों में मांस खाने से इनकार कर दयिा; न ही उन्होंने ईसाई धर्म के वपिरीत अन्य अधार्मकि रीत-रिवाजों का पालन कयिा। और जब एक बार राजकुमार ने उनसे पूछा कि वे प्राचीन लथिुआनयिाई रीत-रिवाजों का पालन क्यों नहीं करते, तो संतों ने नडिर होकर खुद को ईसाई होने का स्वीकारोक्ति की।

राजकुमार ने उन्हें ईसाई धर्म त्यागने और भोजन में परोसे गए मांस के व्यंजनों का स्वाद चखने के लिए मजबूर करना शुरू कर दयिा। लेकनि उन्होंने, ईसाई धर्म पर दृढ़ता से अडगि रहते हुए, मांस का स्वाद चखने से इनकार कर दयिा, क्योंकि यह उपवास का दनि था। तब राजकुमार ने उन्हें एक अंधेरी कोठरी में फेंकने का आदेश दयिा, जहाँ संत खुशी से गए, मानो वे कसिी कोठरी की ओर नहीं बल्कि शाही सहिासन की ओर जा रहे हों, और ईश्वर की स्तुति और धन्यवाद करते रहे कि उन्होंने उन्हें अपने पवत्रि नाम के लिए पीड़ा सहने योग्य समझा।

जब संतों ने एक पूरा साल कालकोठरी में बति लयिा, तो जॉन, जो अपनी कैद से थक गया था और और अधकि यातनाओं से डर रहा था, ने राजकुमार से उसे कैद से रहिा करने की वनिती की, और वादा कयिा कि वह राजकुमार की सभी आज्ञाओं का पालन करेगा। प्रसन्न होकर, राजकुमार ने दोनों भाइयों को रहिा करने का आदेश दयिा और उन्हें अपने दरबार के प्रमुख व्यक्तयिों में शामलि कर लयिा।

बाहरी रूप से, जॉन धर्मनरिपेक्ष लोगों जैसा प्रतीत होता था, वह उनकी सभी रीतयिों का पालन करता था और अपने राजकुमार की इच्छानुसार कार्य करता था; फरि भी अपने दलि में उसने ईसाई आस्था को बनाए रखा, और यातनाओं के डर से, उस मसीह ईश्वर से गुप्त रूप से प्रार्थना करता था, जसिकी वह खुले तौर पर घोषणा करने की हमि्मत नहीं करता था। हालाँकि, एंथनी ने अपनी ईसाई प्रथाओं में जरा भी बदलाव नहीं कयिा, बल्कि खुले तौर पर एक सच्चे ईसाई के अनुरूप व्यवहार कयिा। उसने अपने भाई जॉन की कायरता और डर के लिए फटकार लगाई, और हर तरह से उसे पश्चाताप करने और यातनाओं के डर के बनिा, एक बार फरि से खुले तौर पर मसीह की घोषणा करने के लिए प्रोत्साहति कयिा। पगानों ने, यह देखकर कि बड़ा भाई, जॉन, हर बात में राजकुमार की आज्ञा मानता था, छोटे भाई, एंथनी पर कोई ध्यान नहीं दयिा।

एक दनि, जब, जैसा कि उनका रवािज था, दोनों भाई, जॉन और एंथनी, राजकुमार के साथ थे, तो जॉन ने अपने लिए परोसे गए मांस के व्यंजनों का स्वाद चखा - भले ही वह उपवास का दनि था - जबकि धन्य एंथनी ने इस भोजन का स्वाद चखने से इनकार कर दयिा, और खुले तौर पर खुद को एक ईसाई घोषति कयिा। तब, राजकुमार के आदेश पर, एंथनी को फरि से कैद कर दयिा गया ; जहाँ तक जॉन की बात है, सभी उसे तुच्छ समझते थे – ईसाई उसे धर्मत्यागी समझकर नापसंद करते थे, जबकि वधिर्मी उसे एक ऐसा चंचल व्यक्ति कहकर ताना मारते थे जो न तो पुराने वधिर्मी धर्म को बनाए रख सका और न ही उस नए ईसाई धर्म को, जसिमें उसने वधिर्म को छोड़कर धर्म परविर्तन कयिा था।

अपने पाप की गंभीरता को समझते हुए, जॉन ने अपने पतन के लिए आँसू भरी पश्चाताप करना शुरू कर दयिा और, उपर्युक्त पुरोहति नेस्टर के पास जाकर, उससे अपने भाई के सामने अपनी ओर से मध्यस्थता करने का आग्रह करने लगा, ताकि वह उसका पाप क्षमा कर दे और उसे फरि से संगति में बहाल कर दे। अपने भाई का अनुरोध पुरोहति से सुनने के बाद, एंथनी ने नम्निलखिति उत्तर दयिा:

'मैं अपने भाई के साथ तब ही संगति कर सकता हूँ जब वह खुले तौर पर मसीह और ईसाई धर्म की घोषणा करे। जब वह ऐसा करेगा, तो हम सब कुछ साझा करेंगे।'

जॉन ने पश्चाताप कयिा और प्रेमपूर्वक अपने भाई की बातों को स्वीकार कर लयिा। अब उसने एक उपयुक्त समय की तलाश शुरू कर दी जब वह खुले तौर पर अपना ईसाई धर्म स्वीकार कर सके।

[3014] ईसाई धर्म अपनाने से पहले, एंथनी और जॉन के पैगन नाम थे: नेझलि और कुमेज़।

[3015] लथिुआनयिा के ग्रैंड ड्यूक ओल्गेर्ड ने 1341 से 1377 तक शासन कयिा। राजकुमार पद पर आसीन होने से ठीक पहले, ओल्गेर्ड ने व्यावहारकि कारणों से ईसाई धर्म अपना लयिा था, क्योंकि वह वटिेब्स्क के राजकुमार पद पर कब्जा करना चाहता था, जो रूसी राजकुमारी मारयिा यारोस्लावना का था, जसिसे ओल्गेर्ड ने इसी उद्देश्य से ववािह कयिा था। जब उनकी पत्नी, जो एक ईसाई थी, की मृत्यु हो गई (यह लगभग 1346 का समय था), तो ओल्गेर्ड ने ईसाई धर्म का त्याग कर दयिा और पुनःमूर्तपिूजक धर्म अपना लयिा।

एक दिन ऐसा हुआ कि राजकुमार स्नानागार में स्नान कर रहा था, जबकि जॉन उसकी सेवा कर रहा था। यह देखकर कि समय सही है, जॉन ने साहसपूर्वक और निडर होकर राजकुमार से कहा कि वह एक ईसाई है। लेकिन राजकुमार ने अभी तक जॉन पर अपना गुस्सा नहीं दिखाया और न ही उसके साथ कुछ किया, क्योंकि स्नानागार में उनके अलावा और कोई नहीं था।

कुछ समय बाद, राजकुमार के कई कुलीनों की उपस्थिति में, जॉन ने ज़ोर से घोषणा की कि वह एक ईसाई है। तुरंत, राजकुमार के आदेश पर, उसे पकड़ लिया गया और उपस्थित सभी लोगों द्वारा विभिन्न उपकरणों और हाथों से निर्दयता से पीटा गया; और यह पिटाई काफी समय तक जारी रही; बाद में, संत को कैद कर दिया गया।

यह जानकर कि क्या हुआ था, धन्य एंथनी परम आनंद से भर गए। दोनों भाई फिर से जेल में एक साथ थे, ईश्वर की महिमा कर रहे थे; वहाँ भी, उन्हें उपर्युक्त पुरोहित से मसीह के परम पवित्र और जीवन-दायक रहस्यों में भाग लेने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

कुछ वर्षों बाद, पवित्र शहीद एंथनी को एक अपराधी की तरह, एक अपमानजनक मृत्यु की सज़ा दी गई: उसे एक पेड़ पर लटकाने की सज़ा सुनाई गई। जब उसे उसकी फाँसी की पूर्व संध्या पर यह बताया गया, तो उसने अपनी मृत्यु से पहले पूरी रात बिना सोए प्रार्थना में ईश्वर की स्तुति करते हुए और अपने भाई को बिना डर के मसीह के लिए अपने दुखों को सहने के लिए प्रोत्साहित करते हुए बिताई। एंथनी ने अपने भाई को फिर से विश्वास से न भटकने के लिए प्रोत्साहित किया, और भविष्यवाणी करते हुए अपने निकट मृत्यु की भविष्यवाणी की।

उन्होंने कहा, 'मेरी मृत्यु के बाद, हे भाई, तुम भी जल्द ही इसी प्रकार की मृत्यु के द्वारा मसीह के पास मेरे पीछे आओगे।'

जब सुबह हुई, तो दोनों भाइयों ने मसीह के दिव्य, जीवन-दायक शरीर और रक्त को ग्रहण किया; और दोपहर के आसपास, मसीह के पवित्र शहीद, एंथनी को कालकोठरी से बाहर ले जाया गया और राजकुमार के आदेश पर, जनवरी के चौदहवें दिन एक पेड़ पर लटका दिया गया। इस प्रकार, मसीह के इस अजेय योद्धा ने अपनी पवित्र और निर्मल आत्मा को मसीह अपने ईश्वर के हाथों में सौंप दिया, जिसे वह अपने पूरे हृदय से प्रेम करता था।

पवित्र शहीद जॉन को हालांकि जेल में ही छोड़ दिया गया, क्योंकि दुष्टों ने एक बार फिर उसे लुभाने और ईसाई धर्म की घोषणा से भटकाने की आशा की। किन्तु जब उन्होंने देखा कि वह पवित्र विश्वास पर दृढ़ रहा और जेल में भी निडर होकर मसीह की गवाही दी, तो उन्होंने उसे उसी मृत्युदण्ड की सजा दी जो उसके भाई को दी गई थी। कुछ समय बाद, मूर्तिपूजकों ने उसे (घुटन से) मार डाला और उसका शरीर उसी वृक्ष पर लटका दिया जिस पर उसका भाई लटकाया गया था। यह घटना अप्रैल के चौबीसवें दिन हुई। इस प्रकार, इस कष्ट-सहिष्णु ने अपना शहीदी कारनामा पूरा कर, कारनामों के दाता मसीह के पास प्रस्थान किया, जिसके लिए उसने शहीद होने की मृत्यु स्वीकार की थी। एंथनी और जॉन के पवित्र शरीरों को विश्वासियों द्वारा सम्मानपूर्वक दफनाया गया और एक ही स्थान पर सुलाया गया।

पवित्र शहीदों एंथनी और जॉन की मृत्यु के कुछ समय बाद, धन्य यूस्टैथियस ने भी शहादत प्राप्त की। यद्यपि वह आयु में युवा था, वह साहस और वीरता में कई लोगों से आगे था। रूप में सुंदर, वह आत्मा और मन में और भी अधिक सुंदर था। सच्चे ईश्वर को जानने के बाद, यूस्टाथियस ने मूर्तिपूजक नास्तिकता को अस्वीकार कर दिया और मसीह से प्रेम करने के बाद, उपर्युक्त पुरोहित नेस्टर के पास गया। उनसे पवित्र विश्वास में शिक्षा प्राप्त करने के बाद, यूस्टाथियस ने उनसे दिव्य बपतिस्मा प्राप्त किया[3016] ।

ईसाई बनने के बाद, यूस्टेथियस ने एक सच्चे ईसाई के अनुरूप ईश्वरवादी जीवन जिया: उन्होंने अपना सारा समय उपवास, प्रार्थना और अच्छे कर्मों में बिताया।

यह यूस्टैथियस राजकुमार ओल्गेर्ड की सेवा में भी था। एक दिन, ओल्गेर्ड अपनी रियाया के मामलों की समीक्षा कर रहा था और उनका निर्णय ले रहा था, जबकि यूस्टैथियस, अपनी पदवी के अनुरूप, उसके सामने खड़ा था। युवा राजकुमार ने यूस्टैथियस की ओर देखा और देखा कि उसके सिर पर लंबे बाल थे (यह ध्यान देने योग्य है कि उन विधर्मी लोगों के बीच जो अग्नि की पूजा एक देवी के रूप में करते थे, यह प्रथा थी कि वे एक विशेष तरीके से बार-बार अपने सिर और दाढ़ी मुंडवाते थे; जबकि धन्य यूस्टैथियस, उनके अधर्मी और मूर्खतापूर्ण धर्म को त्यागकर बपतिस्मा लेने के बाद, अपने बाल लंबे रखता था)। राजकुमार ने उससे पूछा कि क्या वह ईसाई है। जब यूस्टैथियस ने उत्तर में खुले तौर पर खुद

[3016] पवित्र शहीद यूस्टैथियस, संत एंथनी और जॉन के रिश्तेदार थे और ईसाई धर्म अपनाने से पहले, उनका पैगन नाम क्रुवलेट्स था।

को ईसाई बताया, तो राजकुमार बहुत क्रोधित हो गया और यूस्टैथियस को ईसाई धर्म से दूर करने की इच्छा से, उसे मांस खाने के लिए मजबूर करने लगा। हालाँकि, संत ने न केवल दिया गया भोजन खाने से इनकार कर दिया, बल्कि मांस की ओर देखा भी नहीं, क्योंकि यह मसीह के जन्म के पर्व से पहले का उपवास था और, इसके अलावा, शुक्रवार था[3017]।

तब राजकुमार और भी अधिक क्रोधित हो गया और उस युवा संत को लोहे की छड़ों से बेरहमी से पीटने का आदेश दिया। संत ने इन यातनाओं को इतनी बहादुरी से सहन किया कि न केवल उन्होंने कोई चीख नहीं मारी, बल्कि एक भी कराह तक नहीं निकाली, और न ही उनकी आँखों से एक भी आँसू गिरा; उन्होंने बस ईश्वर का धन्यवाद किया कि उन्होंने उन्हें अपने पवित्र नाम के लिए पीड़ित होने योग्य समझा।

संत द्वारा पीड़ा को इतनी बहादुरी और धैर्य से सहन करना एक बार फिर राजकुमार को तीव्र क्रोध से भर गया, और उसने आदेश दिया कि शहीद के मुँह में सबसे ठंडा पानी डाला जाए (उस समय कड़ाके की सर्दियाँ थीं), ताकि उसकी देह कड़ाके की ठंड से नीली पड़ गई। फिर भी, संत ने राजकुमार के आदेश का पालन नहीं किया और मांस का स्वाद तक नहीं चखा। तब राजकुमार ने आदेश दिया कि शहीद को और भी कठोर यातनाएँ दी जाएँ: उन्होंने उसके पैरों की हड्डियाँ तोड़ डालीं और कुचल डालीं – उसके टखनों और पिंडलियों में; उन्होंने उसके सिर से त्वचा सहित बाल उखाड़ दिए; और उन्होंने उसका नाक और कान काट दिए।

इस प्रकार संत को तीन दिनों तक यातना दी गई; फिर भी वह दर्द से मुक्त प्रतीत हुआ, न तो कराहा और न ही उसके चेहरे पर पीड़ा का कोई लक्षण दिखा; इस पूरे समय वह उन ईसाइयों से प्रेमपूर्वक बात करता रहा जो उसकी पीड़ा देखकर रो रहे थे, और उनसे कहा:

'भाइयो, मेरे लिए मत रोना, जब तुम मेरे इस सांसारिक शरीर को इन यातनाओं में टूटते हुए देख रहे हो, क्योंकि मुझे आशा है कि मैं हमारे प्रभु और परमेश्वर मसीह से, ऐसा शरीर प्राप्त करूँगा जो मनुष्य के हाथों से नहीं बना है, जो स्वर्ग में अनंतकाल तक रहेगा।'

इस बीच, राजकुमार ने जब देखा कि वह यातनाओं से कुछ भी हासिल नहीं कर सकता, तो उसने संत को मृत्युदंड सुना दिया और आदेश दिया कि उसे उसी पेड़ से लटकाया जाए जिस पर उसी वर्ष दो पूर्वोक्त पवित्र शहीदों—एंथनी और जॉन—को लटकाया गया था। नौकरों ने मुश्किल से जीवित संत यूस्टैथियस को लिया और उसे मृत्युदंड देने के लिए ले गए। फिर भी, शहीद संत यूस्टेथियस, इस तथ्य के बावजूद कि उनकी जांघें, पैर और घुटने चकनाचूर हो गए थे, ईश्वर की सहायता से इतने बलवान हो गए कि वे पूरी तरह से स्वस्थ व्यक्ति की तरह, फुर्ती से और तेजी से चले, न केवल उनका साथ-साथ चले बल्कि उनसे आगे भी निकल गए।

जब वे सभी उपर्युक्त वृक्ष के पास पहुँचे, तो यातना देने वाले के सेवकों ने संत के गले में रस्सी बाँधकर उन्हें फाँसी दे दी। और इस प्रकार मसीह के इस शहीद ने[3018] को दिसंबर के तेरहवें दिन अपना पवित्र आत्मा ईश्वर के हाथों में सौंप दिया। उनके सम्मानित शरीर को जमीन के पास ही पेड़ से लटका दिया गया था, ताकि जंगली जानवर और शिकारी पक्षी उसे नोच-नोच कर खा जाएँ; लेकिन एक भी जानवर या पक्षी शरीर के पास नहीं आया, क्योंकि ईश्वर उसकी रक्षा कर रहे थे। तीन दिन बाद, विश्वासियों द्वारा इसे अक्षुण्ण रूप में बरामद किया गया और सम्मानपूर्वक उसी स्थान के पास दफनाया गया, जहाँ पहले कष्ट सहने वाले, ऊपर उल्लेखित दो पवित्र शहीदों को दफनाया गया था।

यह ध्यान देने योग्य है कि, संतों के निधन के बाद, मृत्युदंड पाए किसी भी अपराधी को उस पेड़ पर फांसी नहीं दी गई, और न ही उन्हें उसके पास दफनाया गया (क्योंकि ईश्वर हमेशा अपने शहीदों का गौरव बढ़ाता है)। यद्यपि यह स्थान फांसी देने के लिए था और मृत्युदंड पाए सभी लोग वहीं मरे, संतों के कष्ट और मृत्यु के बाद वहाँ एक भी अपराधी को फांसी नहीं दी गई।

कई वर्षों बाद, जब उस शहर में ईसाइयों की संख्या बढ़ गई थी और पवित्र विश्वास दिन-ब-दिन बढ़ और मजबूत हो रहा था, तो विश्वासियों ने एकत्रित होकर राजकुमार के पास गए और उससे पर वह स्थान देने का अनुरोध किया, जहाँ उपर्युक्त तीनों पवित्र शहीदों ने अपना परम सौभाग्यपूर्ण अंत किया था। ईश्वर की कृपा से, राजकुमार ने ईसाइयों की मांगों को स्वीकार कर लिया और उन्हें वह मांगा हुआ स्थान दे दिया। ईसाइयों ने पेड़ को काटकर, उसकी जगह पर परम

[3017] शुक्रवार (और बुधवार), चूंकि ये दिन पवित्र चर्च द्वारा प्रभु के दुख-क्लेश की स्मृति को समर्पित हैं, इसलिए चर्च के नियमों के अनुसार, इन दिनों में उपवास करना अनिवार्य है।

[3018] संत यूस्टाथियस और उपर्युक्त संतों एंथनी और जॉन की मृत्यु 1347 में हुई।

पवित्र त्रमिूर्त कि नाम पर एक चर्च बनाया, जो पति, पुत्र और पवित्र आत्मा[3019] के सम्मान और महमि के लिए था, और उन्होंने पवित्र वेदी को ठीक उसी स्थान पर स्थापति कयि जहाँ कभी वह पेड़ खड़ा था। यही वह चर्च था जसिमें मसीह के पवित्र शहीदों – एंथनी, जॉन और यूस्टैथयिस – के अवशेष लाए गए थे, परमेश्वर की महमि के लिए, जो पवित्र त्रमिूर्त में महमिामय है, जसिे सभी महमि, सम्मान और पूजा मलिनी चाहिए, अब और हमेशा के लिए। आमीन।

पवित्र शहीद अर्दालयिन का कष्टकथा

14 अप्रैल को स्मरण कयि जाता है

पवित्र शहीद अर्दालयिन ने सम्राट मैक्समियिन के शासनकाल में[3020] कष्ट सहे। एक माइम कलाकार के रूप में, वह सार्वजनकि प्रदर्शनों और अन्य स्थानों पर लोगों के दुःखों और वभिन्नि कर्मों का चत्रिण करते थे। एक दनि ऐसा हुआ कि उसने ईसाइयों के कष्टों को बल्कि्ुल वैसे ही चत्रिति कयि जैसे वे वास्तव में होते थे। उसे फांसी दी गई, और मूर्तयिों को बलदिान चढ़ाने से इनकार करने के कारण उन्होंने उसके शरीर को, मानो, नोचना शुरू कर दयि। जब तमाशे में मौजूद लोगों के बीच से प्रशंसा के नारे गूँजे और उसकी कला की तारीफें सुनने को मलिीं, तो वह दर्शकों की ओर मुड़ा और ऊँचे स्वर में उन्हें चुप रहने और अपनी सहमति व्यक्त करने से रुकने का आदेश दयि; फरि, जब सभी चुप हो गए, तो उसने खुले तौर पर स्वीकार कयि कि वह वास्तव में एक ईसाई था। शहर का राज्यपाल, जो उस तमाशे में मौजूद था, ने उसकी कला की लंबी-चौड़ी प्रशंसा की, इस उम्मीद में कि वह उसे अपना मन बदलने के लिए मना सके। लेकनि संत ने ऐसा करने से इनकार कर दयि और अपने धर्म के प्रति सच्चे रहने का संकल्प लयि। तब राज्यपाल ने एक लोहे की कड़ाही को आग से तपाकर लाल कर दयि और संत अर्दालयिन को उस पर फेंकने का आदेश दयि। इस प्रकार उस पवित्र शहीद ने अपनी जान गंवाई।

हजार पवित्र शहीदों और अज़त की शहादत

14 अप्रैल को स्मरण कयि जाता है

पवित्र और महान शुक्रवार का उद्धारकारी दनि आ गया, जब ईसाई, उत्सव मनाते हुए, मसीह की महमि करते और धन्यवाद देते थे, जन्हिोंने हमारे लिए प्रायश्चित्त के दुखों को सहा था। इस दनि, बशिप समियिन को गरिफ्तार कर मौत की सज़ा दी गई। इसके बाद, गुड फ्राइडे से शुरू होकर दस दनिों तक, सभी ईसाइयों को गरिफ्तार कर मौत की सज़ा दी गई[3021] । इसी समय, इन पवित्र शहीदों को, जनिकी संख्या एक हज़ार थी, नपुंसक[3022] अज़त के साथ गरिफ्तार कयि गया, जो शाही दरबार में उच्च पद पर थे और राजा सावर के वशिेष स्नेह और सम्मान का आनंद लेते थे। पड़ताल के दौरान, उन्होंने सभी ने साहसपूर्वक मसीह में अपने वश्विास की स्वीकारोक्ति की और इसके लिए तुरंत उन्हें मृत्युदंड दे दयि गया[3023] । शपूर संत अज़त की मृत्यु से गहराई से दुखी हुआ। उनकी मृत्यु के बाद, उसने ईसाइयों को मृत्युदंड देने पर प्रतबिंध लगाने का एक फरमान जारी कयि, और यह फरमान कुछ समय तक लागू रहा[3024] ।

[3019] पवित्र शहीदों के अवशेष वर्तमान में वल्नियिस में पवित्र आत्मा मठ में रखे गए हैं, जहाँ उन्हें 1826 में स्थानांतरति कयि गया था।

[3020] यह मैक्समियिन गैलेरयिस को संदर्भति करता है, जसिने शुरू में डयिोक्लेशयिन के साथ शासन कयि और फरि 305 से 311 तक उसका स्थान लयि। डयिोक्लेशयिन के फरमान के तहत ईसाइयों पर अत्याचार 303 में शुरू हुआ था।

[3021] 343 में, फारस के राजा शपुर द्वतीय ने एक वशिेष फरमान जारी कयि जसिमें ज़रातोष्ट्र के प्राचीन धर्म का पालन करने से इनकार करने के लिए अपने राज्य के ईसाइयों पर भारी कर लगाए गए—जो पहले की तुलना में अधकि थे; और जब उन्होंने इन करों का भुगतान करने से इनकार कर दयि, उन्होंने इसे एक वद्रिोह माना और एक क्रूर उत्पीड़न शुरू कयि, जो शुरू में ईसाई पादरयिों के खलिाफ और बाद में सभी ईसाइयों के खलिाफ था।

[3022] 'यूनाक' शब्द ग्रीक से आया है और इसका अर्थ है 'बस्तिर का रक्षक'। यह उन वशिेष दरबारी अधकिारयिों को दयि गया खतिाब था जो राजा के शयनकक्ष के प्रभारी होते थे। वे आमतौर पर राजा के सबसे करीबी भरोसेमंद होते थे।

[3023] पवित्र शहीदों की शहादत 13–23 अप्रैल 344 के बीच हुई थी।

[3024] यह ज्ञात है कि फारस में ईसाइयों का उत्पीड़न 381 में शपूर के शासन के अंत तक जारी रहा।

28 अप्रैल

15 अप्रैल (पुराने कैलेंडर के अनुसार)

गोथिया के संत साव्वा का कष्टकथा

15 अप्रैल को स्मरणोत्सव

'गोथिया में परमेश्वर की कलीसिया[3025] , कैपाडोसिया में परमेश्वर की कलीसिया[3026] , और संसार के सभी लोगों के बीच रहने वाले ऑर्थोडॉक्स चर्च के सभी मसीहियों पर परमेश्वर पिता और हमारे प्रभु यीशु मसीह की कृपा, शान्ति और प्रेम बढ़ता रहे।' इस प्रकार गोथिया की कलीसिया से कैपाडोसिया की कलीसिया[3027] को लिखी गई पत्रिका का आरंभ होता है, जिसमें संत के जीवन का निम्नलिखित वृत्तांत प्रस्तुत किया गया है। पवित्र प्रेरित पतरस द्वारा एक बार कहे गए शब्द, *'हर जाति में जो कोई उस से डरता है और धार्मिकता करता है, वह उसकी दृष्टि में ग्रहणयोग्य है'* (प्रेरितों के काम 10:35), हमारे परमेश्वर और उद्धारकर्ता यीशु मसीह के शहीद संत सव्वा में पूरी तरह से पूरे हुए। संत सावस, गोथिया के मूल निवासी और गोथिया के अधर्मी तथा भ्रष्ट निवासियों के बीच रहते हुए, ने पवित्र पुरुषों का इतनी बारीकी से अनुकरण किया और उन जैसे ही सद्गुणों से इतने सुसज्जित थे, कि वे संसार में एक उज्ज्वल तारे की तरह चमके। क्योंकि, अपने यौवन के दिनों से प्रभु की व्यवस्था से प्रेम करने के कारण, उसने अपने जीवन के कार्य का लक्ष्य सद्गुणों में पूर्णता प्राप्त करना और परमेश्वर के पुत्र के ज्ञान के द्वारा, एक सिद्ध मनुष्य बनना निर्धारित किया (देखें इफिसियों 4:13)। परन्तु जो परमेश्वर से प्रेम करते हैं, उनके लिए सब बातें मिलकर भलाई करती हैं (देखें रोमियों 8:28)। और वास्तव में, शैतान का बहादुरी से विरोध करके और सांसारिक व्यर्थता को त्यागकर, संत सव्वा ने सभी लोगों के साथ शांति बिनाए रखते हुए, स्वर्गीय राज्य को प्राप्त किया और परमेश्वर द्वारा उन्हें अनंत आनंद का पुरस्कार मिला। इस पवित्र शहीद की स्मृति में और धर्मनिष्ठ ईसाइयों के निर्माण के लिए, हमने इस पवित्र शहीद के गौरवशाली कार्यों के बारे में चुप न रहने, बल्कि उनके दुखों के इतिहास को लिखित रूप में दर्ज करने का संकल्प लिया है।

संत सावस ने पवित्र ईसाई धर्म की दृढ़ता से घोषणा की; वह भलाई करने के लिए उत्सुक थे, और धार्मिकता, नम्रता और वाणी की सादगी से विशिष्ट थे—हालांकि मिन से नहीं; वह सभी के साथ शांति से रहते थे, निडर होकर सत्य की रक्षा करते थे, इस प्रकार मूर्तिपूजक मूर्ति-पूजकों को मौन कर दिया; वह अभिमानी नहीं था, बल्कि, जैसा कि विनिम्रों के लिए उचित है, वह सभी के अधीन थे; वह मौनप्रिय थे, हमेशा बिना गुस्से, शांतिपूर्वक सवालों का जवाब देते थे; वह चर्च के गायन में भाग लेते थे और चर्च के रखरखाव की देखभाल करते थे; उन्होंने संपत्ति या धन प्राप्त करने पर अपना दिल नहीं लगाया, और अपनी दैनिक जरूरतों के लिए आवश्यक चीजों से ही संतुष्ट रहे - वह संयमी थे, हर चीज़ में मितभाषी थे, और महिलाओं से उनका कोई लेना-देना नहीं था। उन्होंने अपना सारा समय भक्तिपूर्ण प्रार्थना और उपवास में बिताया; वह घमंड से मुक्त थे और अपने उदाहरण से सभी को ईश्वर-भरा जीवन जीने के लिए प्रेरित करते थे, क्योंकि उन्होंने स्वयं केवल अच्छा किया और सद्गुण के विपरीत किसी भी चीज़ से बचे रहे। अपने जीवन के अंत तक, उन्होंने उस विश्वास को बनाए रखा, *'जो प्रेम में सक्रिय है'* (गलातियों 5:6), और निडर होकर मसीह के नाम का प्रचार करना कभी बंद नहीं किया। पवित्र ईसाई धर्म की अपनी गवाही के लिए शहीद होने से पहले, संत सव्वा ने अपने कर्मों के माध्यम से बार-बार खुद को सच्ची भक्ति के एक दृढ़ समर्थक के रूप में साबित किया था।

[3025] गोथ एक जर्मनिक जनजाति थी जो मूल रूप से विस्तुला नदी के किनारे रहती थी और बाद में डेन्यूब नदी के किनारे बस गई। चौथी शताब्दी की शुरुआत में, गोथों के बीच ईसाई धर्म का प्रसार शुरू हो गया। वहाँ विश्वास के पहले प्रचारक और प्रसारक वुल्फिला या उल्फिलास थे - जो गोथों के बिशप थे।

[3026] कैपाडोसिया एशिया माइनर का एक क्षेत्र है।

[3027] यह पत्र लगभग 374 ईस्वी में, थेस्सालोनिका के बिशप एशोलियस और स्किथिया के एक सैन्य कमांडर, कैपैडोसिया के मूल निवासी, सारन द्वारा लिखा गया था, जो पवित्र शहीद सावस के अवशेषों को गोथिया से कैपैडोसिया में स्थानांतरित करने के संबंध में था। उस समय कैपाडोसिया के चर्च के प्रमुख संत बेसिल द ग्रेट थे, जिन्होंने पवित्र अवशेष और पत्र प्राप्त करने के बाद, भेजने वालों को उनके लिए उन पत्रों में धन्यवाद दिया जो उनके लेखन में हमें प्राप्त हुए हैं।

जब गोथकि राजकुमारों और न्यायाधीशों ने ईसाइयों पर अत्याचार करना शुरू कर दयिा और उन्हें मूर्तयिों को बलदिान कएि गए मांस को खाने के लएि मजबूर कयिा, तो कुछ वधिर्मयिों ने आपस में मलिकर साज़शि रची – उन्होंने अपने रश्तिेदारों और परचितिों को, जो ईसाई धर्म का पालन करते थे, मूर्तयिों को बलदिान कएि गए मांस के बजाय ऐसा मांस खलिाया जो मूर्तयिों को बलदिान नहीं कयिा गया था, ताकि ईसाइयों को मूर्तपिूजक मांस खाने से बचाया जा सके और साथ ही उनके pagan उत्पीड़क भी संतुष्ट हो सकें। संत सावस, जब यह जान गए, तो न केवल स्वयं उस मांस को खाने से इनकार कर दयिा—जो यद्यपि वास्तव में मूर्तयिों को नहीं चढ़ाया गया था, फरि भी ऐसा प्रस्तुत कयिा जा रहा *था—बल्कि,* प्रेरति के शब्दों को ध्यान में रखते हुए: *', यदि कोई तुमसे कहे, "यह मूर्तयिों को चढ़ाया गया है," तो उसे मत खाओ'* (1 कुरन्थियिों 10:28), लेकनि, लोगों के बीच खड़े होकर, उन्होंने नडिर होकर सभी को सुनने के लएि घोषणा की:

'यदि किसी ने इस मांस का स्वाद चखा है, तो वह ईसाई नहीं रह सकता।'

इस उपदेश से, संत ने सभी को शैतान के जाल में पड़ने से बचा लयिा। इसलएि, जन्होंने यह धोखा रचा था, उन्होंने संत साव्वा को अपने गाँव से नकिाल दयिा, लेकनि जल्द ही उन्हें वापस आने के लएि कहा। जब फरि से उत्पीड़न शुरू हुआ, तो उसी गाँव के कुछ मूर्तपिूजक, जो मूर्तयिों को बलदिान चढ़ा रहे थे, राजकुमार को यह बताना चाहते थे कि उनके गाँव में एक भी ईसाई नहीं है, और उन्होंने अपनी बात की पुष्टि शपथ के साथ करने का इरादा कयिा। तब एक बार फरि से संत सावvas, लोगों के बीच नडिर होकर खड़े हुए, और ऊँचे स्वर में चल्लिाए:

'मेरे लएि कोई शपथ न खाए, क्योंकि मैं एक ईसाई हूँ!'

उक्त मूर्तपिूजकों ने, जन्होंने ईसाई धर्म अपनाने वाले अपने रश्तिेदारों को छपिा रखा था, राजकुमार के पास गए और उसके सामने शपथ ली कि उनके गाँव में एक को छोड़कर कोई और ईसाई नहीं है।

यह सुनकर, उस अधर्मी राजकुमार ने आदेश दयिा कि इस ईसाई (जो संत सावस थे) को उसके सामने लाया जाए। जब उन्हें उसके सामने लाया गया, तो राजकुमार ने उपस्थति लोगों से पूछा:

'क्या इस ईसाई के पास कोई संपत्ति है?'

उन्होंने उत्तर दयिा:

'उसके पास पीठ पर चढ़े कपड़ों के सवि कुछ नहीं है।'

संन्यासी को तरिस्कार से देखते हुए, राजकुमार ने कहा:

'यह आदमी मुश्कलि से ही कसिी की मदद करने या कसिी को नुकसान पहुँचाने की स्थति में है।' यह कहकर, राजकुमार ने संत को ले जाने का आदेश दयिा।

कुछ समय बाद, गोथयिा में मूर्तपिूजकों ने एक बार फरि ईसाइयों के खलिाफ एक बड़ा उत्पीड़न शुरू कयिा। पवत्रि ईस्टर के उत्सव का दनि नज़दीक आ रहा था, और धन्य सावा गुफनि नामक एक ईसाई पुरोहति से मलिने के लएि दूसरे गाँव जाना चाहते थे, ताकि वे उनके साथ पवत्रि ईस्टर मना सकें। जब वे वहाँ जा रहे थे, तो रास्ते में एक वशिालकाय और तेजस्वी चेहरे वाला व्यक्ति उनके सामने प्रकट हुआ और उनसे कहा:

'वापस मुड़ो और अपने गाँव में पादरी साप्साल के पास जाओ।'

साव्वा ने उत्तर दयिा:

'वह घर पर नहीं हैं, क्योंकि उत्पीड़न के कारण वह गाँव छोड़कर चले गए हैं और ग्रीस में रह रहे हैं' (संत सावा को यह नहीं पता था कि उस समय पादरी ईस्टर मनाने के लएि घर लौट आए थे)।

तब, प्रकट हुए व्यक्ति के पास से गुज़रते हुए, सव्वा पुरोहति गुफनि से मलिने के लएि रवाना हो गए।

यह बहुत तेज़ हवा वाला दनि था; अचानक एक बड़ा बादल छा गया और इतनी भारी बर्फबारी हुई कि सव्वा आगे नहीं जा सके। इसके बाद, सव्वा ने यह महसूस कयिा कि ईश्वर की इच्छा से उन्हें अपनी यात्रा पर रोका गया था, और वे ईश्वर की स्तुति करते हुए वापस लौट आए।

पुजारी साप्सल के घर पहुँचने पर, वह उसे देखकर बहुत प्रसन्न हुआ और उसने उसे और दूसरों को रास्ते में अपने साथ हुई सारी घटनाएँ बताईं। और उन्होंने सभी ने मलिकर ईस्टर का पर्व मनाया।

उत्सव की तीसरी रात, अफ़ारदि, जो दुष्ट शासकों में से एक और राजकुमार रोटेस्ट का पुत्र था, ने अचानक मूर्तपिूजक योद्धाओं की एक बड़ी सेना के साथ गाँव पर हमला कर दयिा। पुजारी को उसके घर में शांति से सोते हुए पाकर, उसने उसे और सव्वा को पकड़ लयिा, उन्हें उनके बस्तिर से सीधे नग्न अवस्था में घसीटकर ले गया, और दोनों को बाँध दयिा। पादरी को एक गाड़ी पर बठिाकर ले जाया गया, जबकि सव्वा को एक नवजात शशिु की तरह नग्न अवस्था में, झाड़यिों

में घसीटा गया, डंडों और कोड़ों से नर्दियता से पीटा गया, और इस प्रकार पूरे रास्ते शहर तक खींचकर ले जाया गया। मसीह के सेवकों के प्रति यातना देने वाले इतने नर्दियी और क्रूर थे! लेकिन यातना देने वालों की यही क्रूरता उस धर्मी पुरुष के धैर्य और विश्वास को उसकी पूरी शक्ति में प्रकट करने का और अधिक कारण बनी।

जैसे ही दिन चढ़ा, संत सवा ने सबके सुनने के लिए अपने प्रभु की महिमा की और अपने यातना देने वालों से कहा: 'क्या तुमने मुझे नग्न और नंगे पैर, झाड़ियों से नहीं भगाया और खींचा? तो अब देखो: क्या मेरे पैरों पर घाव हैं? या तुम्हारे प्रहारों के कोई निशान मेरे शरीर पर हैं?'

संत के शरीर पर पिटाई का एक भी निशान न देखकर, वे बहुत हैरान हो गए। फिर उन्होंने एक गाड़ी के धुरा निकाले और उनमें से एक को उसके कंधों पर रख दिया, उसकी बाहों को धुरा के सिरों तक फैलाकर उसे उससे बाँध दिया; दूसरे धुरा को यातना देने वालों ने उसी तरह संत के पैरों से बाँध दिया। इसके बाद, यातना देने वालों ने संत को ज़मीन पर फेंक दिया और दिन भर से लेकर देर रात तक उसे बुरी तरह से पीड़ा दी। जब यातना देने वाले सो गए, तो एक महिला आई जो अपने घर के लिए भोजन बनाने के लिए रात में उठी थी; उसने संत को मुक्त कर दिया, और वह उठकर उसके काम में मदद करने लगा।

भोर होते ही, अफ्रिदि ने फिर से संत के हाथ बाँधने और उसे घर की एक अड़ी से लटकाने का आदेश दिया। कुछ समय बाद, अफ्रिदि द्वारा भेजे गए दूत मूर्तियों को बलिदान किए गए मांस के साथ आए, उसे पादरी और सवा के पास लाए, और कहा:

'महान अफारिदि कहते हैं: इस मांस का स्वाद चखो, और तुम्हें मृत्यु से बचा लिया जाएगा।'

पुरोहित ने दूतों से उत्तर दिया:

'हम इसे नहीं चखेंगे, क्योंकि राक्षसों द्वारा अपवित्र की गई वस्तु को खाना हमारे लिए उचित नहीं है। हम तो अफरिदि द्वारा हमें सूली पर चढ़ाए जाने या किसी अन्य तरीके से मार डाले जाने को ही स्वीकार कर लेंगे।'

और धन्य सव्वा ने आए हुए लोगों से पूछा:

'इसे किसने भेजा?'

उन्होंने उत्तर दिया:

'हमारे स्वामी, अफ्रिदि।'

इस पर संत ने उनसे कहा:

'केवल एक ही प्रभु है – ईश्वर, जो स्वर्ग में वास करते हैं। तुम्हारा शापित शरीर अशुद्ध और घृणित है, ठीक उसी अफारिदि की तरह, जिसने तुम्हें भेजा है।'

संत के ये शब्द कहते ही अफ़रिदि के एक सेवक, जो प्रचंड क्रोध से भर गया था, ने अपने हाथों में भाले से इतनी ज़ोर से संत के सीने पर वार किया कि वहाँ खड़े सभी लोग समझ गए कि शहीद मर जाएगा। लेकिन शहीद, जो दैवीय कृपा से संरक्षित थे, उनके शरीर पर प्रहार का कोई निशान नहीं पड़ा और न ही उन्हें कोई दर्द हुआ, और उन्होंने उस व्यक्ति से कहा जिसने उन पर वार किया था:

'तुम्हें लगता है कि तुमने मुझे अपनी भाला से बुरी तरह घायल कर दिया है; परन्तु मुझे तुम्हारा वार वैसा ही लगा जैसे कोई मुझे नरम ऊन से मारे।'

यह सब जानने के बाद, अपरिदि ने पवित्र शहीद सव्वा को मार डाले जाने का आदेश दिया। फिर दुष्ट सेवकों ने पुरोहित साप्साल को बंधा हुआ छोड़ दिया, सव्वा को ले गए, और उसे 'मुस्सोवा' नामक नदी पर ले गए[3028] , ताकि उसे वहाँ डुबो दिया जाए। पवित्र शहीद ने, प्रभु की आज्ञा को ध्यान में रखते हुए कि अपने पड़ोसी से वैसा ही प्रेम करो जैसा अपने आप से करते हो (देखें मत्ती 22:39), उससे ले जा रहे सेवकों से पूछा:

'तो फिर, पुरोहित मेरे साथ मृत्यु का सामना क्यों नहीं कर रहे हैं?'

उन्होंने संत से उत्तर दिया:

'यह तुम्हारा मामला नहीं है।'

आनंद से भरकर, उसने उद्घोष किया:

[3028] मुसोवा नदी वलाचिया में स्थित थी।

'धन्य हैं आप, हे ईश्वर, और आपके पुत्र का नाम युगानुयुग महिमान्वित हो, आमीन। क्योंकि अफ़रिदि ने स्वयं को मृत्यु और अनंतकालिक विनाश के लिए दोषी ठहराया है, जबकि मुझे अनंत, अंतहीन जीवन में भेजा गया है। इस प्रकार यह आपको, हे हमारे प्रभु ईश्वर, प्रसन्न करता है कि आपके सेवकों के साथ ऐसा ही हो।'

इस प्रकार, जब उसे मृत्युदंड के लिए ले जाया जा रहा था, तब भी संत ने ईश्वर की स्तुति और धन्यवाद करना बंद नहीं किया, और *'इस समय की कठिनाइयों को तुच्छ समझा, इस बात की तुलना में कि हमारे भीतर जो महिमा प्रकट होने वाली है'* (रोमियों 8:18)।

इस बीच, सेवकों ने एक-दूसरे से कहा:

'हम इस निर्दोष आदमी को क्यों नहीं जाने देते? आखिरकार, अगर हम उसे जाने देंगे तो अफारदि को इस बारे में पता नहीं चलेगा।'

लेकिन संत साव्वा ने उनसे कहा:

'तुम ऐसी मूर्खतापूर्ण बातें क्यों कर रहे हो? तुम्हारे लिए बेहतर है कि तुम वही करो जो तुमसे कहा गया है। क्योंकि मैं वह देखता हूँ जो तुम नहीं देख सकते: देखो, पवित्र स्वर्गदूत यहाँ खड़े हैं, जो महिमा में मेरी आत्मा को लेने आए हैं।'

तब उन्होंने पवित्र शहीद को नदी तक ले गए और उसके गले में एक बड़ा लकड़ी का टुकड़ा बाँधकर, उसे नदी की गहराई में फेंक दिया और डुबो दिया। इस प्रकार संत सावस का निधन हुआ, जिन्होंने अपने जीवन के अंत तक पवित्र विश्वास को शुद्धता के साथ संरक्षित रखा। वे अड़तीस वर्ष तक जीवित रहे, और ईस्टर के पर्व के पाँचवें दिन शहीद का ताज पहनाया गया (यानी 12 अप्रैल[3029] , पश्चिम में वैलेंटाइनियन और पूर्व में वैलेंटाइन के शासनकाल के दौरान[3030] , और एम्फीपेट्स[3031] मोडेस्टस और अरथियिस के अधीन)।

कुछ समय बाद, जल्लादों ने शहीद का शरीर पानी से निकालकर बिना दफनाए किनारे पर फेंक दिया। हालाँकि, न तो किसी जानवर ने और न ही किसी पक्षी ने इस सम्मानित शरीर को छुआ, क्योंकि इसे धर्मनिष्ठ ईसाइयों के हाथों छिपा दिया गया था।

[3032]स्कैथिया के एक सैन्य कमांडर, जूनियस सारन, जो सच्चे ईश्वर की पूजा करते थे, ने गोथों के देश से शहीद के सम्मानित शरीर को वापस लाने और इसे ग्रीस ले जाने के लिए भरोसेमंद लोगों को भेजा। अपने स्वदेश को सुशोभित करने की इच्छा से, उन्होंने वरिष्ठों की सलाह पर, इस अद्भुत उपहार और विश्वास के गौरवशाली फल को, आपकी विनम्रता के पास कापाडोसिया भेजा,' पत्र का निष्कर्ष है, 'प्रभु की इच्छा के अनुसार, जो उनका भय मानने वालों पर अपनी कृपा प्रदान करते हैं। जिस दिन शहीद को शहीद का मुकुट पहनाया गया था, उस दिन आप शहीद को याद करते हैं, इस बात को अन्य भाइयों को भी बताएं, ताकि संपूर्ण ऑर्थोडॉक्स प्रेरितिक चर्च, आध्यात्मिक रूप से आनंदित होकर, उस प्रभु की महिमा करे, जिसने अपने लिए ऐसे सेवकों को चुना है। सभी संतों को नमस्कार कहिए; हमारे साथ उत्पीड़न सहने वाले सभी भाइयों ने आपको एक पवित्र चुम्बन भेजा है। उसी को, जो अपनी कृपा और मानवजाति के प्रति प्रेम से हमें स्वर्ग के राज्य में लाने में समर्थ है, महिमा, सम्मान और आराधना हो, उसके एकलौते पुत्र और परम पवित्र आत्मा के साथ, युगानुयुग, आमीन।"

पवित्र प्रेरितों अरिस्तार्कोस, पुदेन्स और त्रोफिमोस का स्मरणोत्सव[3033]

15 अप्रैल को स्मरणोत्सव

[3029] पवित्र शहीद की मृत्यु वर्ष 372 में हुई थी।

[3030] सम्राट वैलेन्टिनियन ने 364 से 375 तक और उनके भाई वैलेंस ने 364 से 378 तक शासन किया।

[3031] एन्फिपेटस एक प्रोकॉन्सल थे, जो एक अधिक या कम विस्तृत प्रशासनिक क्षेत्र (प्रांत) के राज्यपाल थे।

[3032] रोस्तोव के संत डेमेट्रियस, संत सावस के जीवन के उपसंहार में, यह देखते हैं कि इस शहीद का स्मरण 12 अप्रैल को करना अधिक उपयुक्त होगा; हालाँकि, चूँकि प्रस्तावना उनकी स्मृति को 15 तारीख को रखती है, इसलिए उन्होंने मेनायोन-चेती में संत सावस के दुखों का वृत्तांत उसी तारीख को रखा।

[3033] संत अरिस्तार्खुस, पुडेन्स और ट्रॉफिमुस – सत्तर में से प्रेरित

संत अरस्तिार्खुस, जनिका उल्लेख प्रेरतिों के काम (प्रेरतिों के काम 19:29) और संत पौलुस प्रेरति के कुलुस्सयिों (कुलुस्सयिों 19:29) और फलिमिोन (फलिमिोन 1:24) के पत्रों में है, सीरयिाई शहर अपामयिा में एक बशिप थे[3034] ।

संत पुद, जनिका उल्लेख प्रेरति पौलुस ने तमिोथी को अपनी दूसरी पत्री में *('यूबुलस और पुद को प्रणाम करना'* (2 तमिो. 4:21)) कयिा है, रोमन सीनेट के सदस्य थे[3035] । एक धार्मकि और सदाचारी व्यक्ति होने के कारण, उन्होंने पवत्रि प्रेरतिों पतरस और पौलुस का अपने घर में स्वागत कयिा; अन्य वशि्वासी भी प्रार्थना के लिए वहाँ इकट्ठा होते थे, इसलिए उसका घर बाद में एक चर्च बन गया, जसिे 'पास्टोरल चर्च' के नाम से जाना जाने लगा। परंपरा यह मानती है कि स्वयं प्रेरति पतरस ने इस चर्च में दैवीय अनुष्ठान संपन्न कयिा था।

संत ट्रॉफमिस, जनिका उल्लेख प्रेरतिों के काम की पुस्तक (प्रेरतिों के काम 20:4) में और प्रेरति पौलुस द्वारा तीमुथयिुस को उनकी दूसरी पत्री में इन शब्दों में कयिा गया है: *'मैंने त्रोफमिस को बीमार ही मलितिोस में छोड़ दयिा'* (2 तीमु. 4:20), प्रेरति पुदेन्स और अरस्तिार्खुस के साथ, उन्होंने प्रेरति पौलुस द्वारा सहन कए गए सभी उत्पीड़नों के दौरान उनके दुखों में भाग लयिा।

इन तीनों प्रेरतिों की मृत्यु प्रेरति पौलुस के साथ रोम में हुई थी[3036] , जनि्हें सम्राट नीरो के आदेश पर तलवार से सरि कलम करके शहीद कर दयिा गया था[3037] ।

पवत्रि शहीदों वासलिसिा और अनास्तासयिा का स्मरणोत्सव

15 अप्रैल को स्मरण कयिा जाता है

पवत्रि प्रेरति पतरस और पॉल के माध्यम से ईसाई वशि्वास से प्रकाशति होकर, संत वासलिसिा और अनास्तासयिा ने प्रभु की सेवा में स्वयं को समर्पति कर दयिा, और मसीह के लिए मार डाले गए पवत्रि शहीदों के शवों को दफनाया। जब सम्राट नीरो[3038] को उनके बारे में पता चला, तो उन्हें सैनकिों ने पकड़ लयिा और उनके आदेश पर कैद कर दयिा। इसके बाद, उन्होंने मसीह के लिए कई यातनाएँ सहन कीं: उन्हें बेरहमी से पीटा गया, लोहे से खुरच दयिा गया, और मोमबत्तयिों से झुलसाया गया, फरि भी वे मसीही वशि्वास में दृढ़ और अडगि रहीं। अंत में, उनके सरि काट दए गए[3039] , जसिके बाद वे प्रभु के पास चले गए, ताकि स्वर्ग में अन्य पवत्रि शहीदों, पुरुषों और महलिाओं, की भीड़ के बीच उनके सामने खड़े हो सकें।

29 अप्रैल

16 अप्रैल (पुराने कैलेंडर के अनुसार)

इसी दनि, पवत्रि शहीद लयिोनडिास और उनके साथ पवत्रि महलिाओं: कैरसिा, नुन्हयिा, वासलिसिा और थयिोडोरा की स्मृति है, जनि्होंने कोरंथि में कष्ट सहे और वर्ष 251 में समुद्र में डूब गईं।

पवत्रि शहीदों अगपयिा, खयिोनयिा और इरीना की शहादत

16 अप्रैल को स्मरण कयिा जाता है

[3034] अपामेया दक्षणि-पश्चमिी सीरयिा में, ओरोंटेस नदी के तट पर स्थति थी।

[3035] रोम में सीनेट सर्वोच्च सरकारी नकिाय था, जो सभी राज्य मामलों के लिए जम्मिेदार था।

[3036] पवत्रि प्रेरतिों का नधिन लगभग 65 ईस्वी के आसपास हुआ।

[3037] नीरो – रोमन सम्राट, जसिने 54 से 68 ईस्वी तक शासन कयिा और जसिे ईसाई धर्म के सबसे क्रूर उत्पीड़क में से एक के रूप में याद कयिा जाता है।

[3038] रोमन सम्राट नीरो, ईसाई धर्म का एक क्रूर उत्पीड़क, 54 से 68 ईस्वी तक शासन कयिा।

[3039] पवत्रि शहीदों का नधिन पहली शताब्दी के उत्तरार्ध में हुआ। उनके अवशेष रोम में, ईश्वर की माता, शांतदि-स्थापक की सम्मान में नर्मिति एक चर्च में वरिाजमान हैं।

जब सम्राट डायोक्लेटियन[3040] इतालवी शहर एक्वलियि[3041] में थे, उन्हें रोम से खबर मलिी कि सभी रोमन जेलें उन ईसाइयों से भरी पड़ी थीं, जन्हिोंने हर तरह की यातनाओं को झेलने के बावजूद अपने मसीह का त्याग नहीं कयिा। वे सभी क्रसिोगोनस को अपना शक्षिक मानते थे और उसकी बात मानते हुए, उसकी शक्षिाओं पर दृढ़ता से अड़े रहे। इस खबर के जवाब में, डायोक्लेटियन ने क्रसिोगोनस को छोड़कर सभी ईसाइयों को मौत की सजा देने का आदेश दयिा, जसिे उसने यातना देने के लिए अपने सामने लाने का हुक्म दयिा।

जब मसीह के पवत्रि स्वीकारकर्ता क्रसिोगोनस को सम्राट डायोक्लेटियन के सामने पेश करने के लिए रोम से बेड़ियों में जकड़कर एक्वलिया ले जाया गया, तो संत अनास्तासयिा मुक्तदिाता, अपने शक्षिक की तरह ही, दूर से उनका पीछा करती रहीं।

डायोक्लेटियन के समक्ष पहुँचने पर, मसीह के इस शहीद को अधर्मी शाही फरमान की अवज्ञा करने के लिए क्रूर यातनाओं का शकिार होना पड़ा; फरि उसे मौत की सज़ा सुनाई गई और शहर के बाहर एक दूर-दराज, सुनसान जगह पर[3042] पर सरि से अलग कर दयिा गया। उसका पवत्रि शरीर समुद्र तट पर पड़ा रहा, जसिे जानवरों और पक्षयिों द्वारा खा जाने के लिए छोड़ दयिा गया था।

उस स्थान से बहुत दूर नहीं ज़ोइलस नामक एक पुजारी रहता था, जो एक धार्मकि वृद्ध था। उसके पास तीन कुंवारी बहनें रहती थीं, जो देह और आत्मा दोनों में बहनें थीं: अगपयिा, खयिोनयिा और इरनिा। इस पुरोहति ने, ईश्वर से प्राप्त एक प्रकटवाणी द्वारा पवत्रि शहीद क्रसिोगोनस के शरीर का पता लगाकर, उसे उसके सरि के साथ ले लयिा, उसे एक लकड़ी के ताबूत में रख दयिा, और उसे अपने घर में छपिा दयिा। उसके बाद तीसरे दनि, संत क्रसिोगोनस एक दर्शन में उसके सामने प्रकट हुए और कहा: 'जान लो कि नौ दनिों के भीतर, मसीह की वे तीन कुंवारी जो तुम्हारे पास रहती हैं, शहादत के लिए ले जाई जाएँगी। इसलिए, प्रभु की दासी, अनास्तासयिा से कहो कि वह उनकी देखभाल करे, और उन्हें धैर्य के साथ अपनी परीक्षा सहने के लिए प्रोत्साहति करे, जब तक कि उन्हें शहीद के मुकुट से नहीं सजाया जाता। तुम्हें भी उस आशा पर दृढ़ रहना चाहिए कि तुम अपने श्रम के मीठे फल प्राप्त करोगे, क्योंकि शीघ्र ही तुम सांसारकि बंधनों से मुक्त हो जाओगे, आनंदपूर्वक मसीह के पास जाओगे, और संतों के साथ वशि्राम करोगे।"

संत अनास्तासयिा को भी वही प्रकटवाणी हुई। पवत्रि आत्मा से प्रेरति होकर, वह एक ऐसे पुरोहति के घर गईं जनिसे वह पहले कभी नहीं मलिी थीं और उनसे पूछा:

'वे कुंवारी कहाँ हैं जनिके बलदिान का दर्शन तुम्हें हुआ था?'

यह जानने के बाद कि वे कहाँ रहती थीं, वह उनके पास गईं, उन्हें प्रेम से अभविादन कयिा, और एक रात उनके साथ रहीं, दव्यि प्रेम से परपिूर्ण एक आत्मा-रक्षक वार्तालाप में संलग्न रहीं, जसिमें उन्होंने उन्हें अपने वधूवर – मसीह – के लिए साहसपूर्वक, यहाँ तक कि रक्तपात तक, खड़े रहने के लिए प्रोत्साहति कयिा। पुरोहति के घर में, मसीह के पवत्रि शहीद, क्रसिोगोनस—जो उनके प्रयि शक्षिक थे—की अवशेष देखकर, अनास्तासयिा ने लंबे समय तक उन पर रोया, उन्हें अपने आँसुओं से नहलाया और इस संत की प्रार्थनाओं को अपना सहारा बनाया। इसके बाद, वह एक बार फरि एक्वलिया शहर लौट आई, जहाँ उसने तहखानों में बंद मसीह के कैदयिों की अपनी सामान्य सेवा जारी रखी, और अपनी ही संपत्ति से उनका भरण-पोषण कयिा।

वास्तव में, जैसा कि संत क्रसिोगोनस ने अपनी दृष्टि में पुजारी ज़ोइलस को बताया था, सब कुछ ठीक वैसा ही हुआ: दस दनि बाद, यह पवत्रि पुरोहति प्रभु के पास चला गया, जबकि तीन पवत्रि कुंवारी—अगापयिा, खयिोनयिा और इरीना—को पकड़कर यातना देने के लिए सम्राट डायोक्लेटियन के सामने ले जाया गया।

उन्हें देखकर सम्राट ने पूछा:

'कसि पागलपन ने तुम्हें इस घृणति और नीच भ्रम का अनुसरण करने, हमारे न्यायपूर्ण कानून को पैरों तले रौंदने और हमारे देवताओं को अशुद्ध मानकर उनकी अवहेलना करने के लिए प्रेरति कयिा है? लेकनि चूँकि मैं देखता हूँ कि तुम कुलीन जन्म की, युवा और सुंदर हो, मुझे तुम पर दया आती है और मैं तुम्हें सलाह देता हूँ कि अपने आप को बचाओ। अपने

[3040] रोमन सम्राट डायोक्लेटियन ने 284 से 305 तक शासन कयिा।

[3041] अक्वलियि – प्राचीन काल में उत्तरी इटली का एक बड़ा और प्रसद्धि शहर, जसिकी स्थापना ईसा मसीह से दो शताब्दयिाँ पहले रोमनों द्वारा की गई थी। ईसाई चर्च के इतहिास में, अक्वलियि शहर कई स्थानीय परषिदों के आयोजन स्थल और वशि्वास के एक वशिेष प्रतीक (तथाकथति 'अक्वलियिन' प्रतीक) के पालने के रूप में उल्लेखनीय है।

[3042] चर्च 22 दसिंबर को पवत्रि शहीद क्रसिोगोनस की मृत्यु का स्मरण करता है।

मसीह का त्याग करो और देवताओं को बलदिान चढ़ाओ, और मैं तुम्हें अपनी सेना में से तीन कुलीन वंश के युवक दूँगा, जो तुम्हारी सुंदरता के पूरी तरह योग्य हों, ताकि तुम्हारे गौरवशाली पति हों, जिनके कारण तुम्हें स्वयं सम्मान मिलेगा।"

इन शाही प्रलोभनों पर, बड़ी बहन, संत अगपिया ने उत्तर दिया:

'हे राजा, यह आपका कर्तव्य है कि आप लोगों, विदेशियों और सेनाओं के मामलों का ध्यान रखें; फिर भी आप जीवित ईश्वर की निंदा करते हुए, कई अन्यायपूर्ण शब्द बोलते हैं, जिनकी सहायता की आपको सख्त जरूरत है और जिनकी दया आपके प्रति धैर्यवान है; फिर भी आप उनकी निंदा करते हैं।'

तब डियोक्लेशियन ने कहा:

'यह कन्या पागल है; मेरे पास कोई और लाओ।'

उसके बाद, उसकी बहन, संत खियोनिया, को उसके सामने लाया गया, और उसने सम्राट से निम्नलिखित कहा:

'महामहिम, मेरी बहन पागल नहीं है। इसके विपरीत, विवेकपूर्ण ढंग से बोलते हुए, उसने मूर्तियों की पूजा करने के आपके उपदेश की भूल को दिखाया है।'

हालाँकि राजा, इस बहन की भी और अधिक बात सुनने को तैयार नहीं था, उसने तीसरी बहन, संत इरिना को, अपने पास लाने का आदेश दिया, और उससे कहा:

'चूंकि आपकी बहनें अपना होश खो चुकी हैं, आप, जो उनमें सबसे छोटी हैं, देवताओं के सामने अपना सिर झुकाएं, ताकि आपकी बहनें आपको देखकर ऐसा ही करें।'

लेकिन संत आइरीन ने भी दृढ़ता से उत्तर दिया:

'जो लोग सच्चे ईश्वर के विरुद्ध अपनी दुष्टता में अपना मन खो चुके हैं, उन्हें मूर्तियों के सामने सिर झुकाना चाहिए। इससे अधिक व्यर्थ और मूर्खतापूर्ण और क्या हो सकता है, कि किसी कलाकार की बनाई हुई रचना की पूजा की जाए, जिसे उसने एक निश्चित शुल्क के लिए बनाया है? क्योंकि पहले आप मूर्तिकार से मूर्ति की कीमत और डिजाइन के बारे में सलाह करते हैं: कि वह खड़ी हो या बैठी, लेटी हो या दौड़ती हुई, हँसती हो या रोती हुई; और वह किस सामग्री से बनी होनी चाहिए—लकड़ी, पत्थर, कांस्य, या किसी अन्य सामग्री से। और अगर वह खराब काम करता है, तो आप समझौता तोड़ देते हैं; लेकिन अगर वह अच्छा काम करता है, तो आप वादा की गई कीमत का भुगतान करते हैं। और फिर आप इस खरीदे और बनाए गए मूर्ति की पूजा करते हैं, इस मूर्ति को अपना देवता कहते हैं, जबकि इसे देवता कहने के बजाय खरीदा हुआ दास कहना अधिक उपयुक्त होगा।

पवित्र कुंवारीयों के इन शब्दों के जवाब में, डायोक्लेटियन ने कहा:

'ऐसे शब्दों का जवाब यातनाओं से देना चाहिए,' और उसने उन पवित्र कुंवारी कन्याओं को जेल में डालने का आदेश दिया। इस बीच, संत अनास्तासिया (जो, अपनी आदत के अनुसार, काल-कोठरियों में बंद लोगों से मिलने जाती थीं) इन पवित्र कुंवारी कन्याओं के पास आईं और उन्हें ईश्वर की मदद की आशा तथा अपने दुश्मनों पर एक शानदार जीत और विजय की संभावना से सांत्वना दी।

कुछ समय बीत जाने के बाद, राजा को सार्वजनिक हित के कुछ मामलों को निपटाने के लिए मैसेडोनिया[3043] के लिए रवाना होना पड़ा। अक्विलिया में कैद सभी ईसाइयों को उसके साथ वहाँ ले जाया गया, जिनमें तीन पवित्र कुँवारियाँ—अगापिया, खियोनिया और इरीना भी थीं; संत अनास्तासिया भी उनके पीछे-पीछे चली गईं। जब वे मैसेडोनिया पहुँचे, तो राजा ने डुल्सिटीया के हेगेमोन[3044] को ईसाइयों को मूर्तियों की बलि चढ़ाने के लिए मजबूर करने हेतु यातनाएँ देने का आदेश दिया; उसने यह भी आदेश दिया कि जो लोग मना कर दें, उन्हें विभिन्न यातनाओं के बाद मृत्युदंड दिया जाए। चूंकि उस समय वहाँ विभिन्न प्रकार की यातनाओं को झेलने वाले अनगिनत पवित्र शहीदों के दुखों का वर्णन करना असंभव है, हम केवल ऊपर वर्णित तीन पवित्र कुंवारी कन्याओं की शहादत के बारे में ही बात करेंगे।

जब मसीह की इन वधूओं को उनके यातनाओं का सामना करने के लिए राज्यपाल डल्सिटीयस के सामने लाया गया, तो उनकी असाधारण सुंदरता को देखकर वह तुरंत एक अशुद्ध इच्छा से ग्रस्त हो गया। उसने उन्हें हिरासत में लेने का आदेश दिया और एक रक्षक को यह बताने का निर्देश दिया कि यदि वे राजकुमार की अधार्मिक इच्छा को पूरा करने के लिए सहमत हो जातीं तो उन्हें उनकी स्वतंत्रता और कई उपहार प्रदान किए जाएँगे। लेकिन पवित्र कुंवारी एक बार भी

[3043] मेसेडोनिया बाल्कन प्रायद्वीप पर स्थित एक देश है, जो एजियन सागर के उत्तर-पश्चिमी कोने (थेस्सालोनिकी की खाड़ी) से सटा हुआ है।

[3044] हेगेमोन – एक क्षेत्रीय राज्यपाल।

अपवित्र होने से तो हजारों बार मरना बेहतर समझती थीं, इसलिए न तो चापलूसी, न धमकियाँ, न उपहार और न ही यातनाएँ उन्हें उसकी अधर्मी इच्छा पूरी करने के लिए राज़ी कर सकीं। अपने भीतर जल रही वासना की प्रबल अग्नि पर काबू न पाकर, राज्यपाल ने उन्हें कलंकित करने के लिए रात के समय उनके कक्ष में घुसने का निश्चय किया, जहाँ उन्हें बंद करके रखा गया था।

जैसे ही रात हुई, पवित्र कुंवारी देवियों ने प्रार्थना करना शुरू कर दिया, उन्होंने ईश्वर के लिए 'ऑल-नाइट विजिल' और भजन गाए। राज्यपाल, उनके कमरे में प्रवेश करने की इच्छा से, जैसे ही उसने दहलीज को छुआ, वह तुरंत पागल हो गया और आगे नहीं बढ़ सका। जिस कमरे में तीनों बहनें ठहरी हुई थीं, उसके पास एक रसोई थी, जहाँ कई बर्तन—पॉट, कड़ाही और तवे—रखे थे, जो कालिख से काले पड़ गए थे। पवित्र कुंवारी लड़कियों के कमरे में प्रवेश करने में असमर्थ, राक्षसों द्वारा मोहित राज्यपाल रसोई में चला गया, जहाँ वह कालिख से लथपथ हो गया, जिससे उसका चेहरा, हाथ और उसके सारे कपड़े काले पड़ गए, और इसी हालत में वह अपने नौकरों के पास गया जो उस कमरे के पास अपने हाथों में जलते दीपक लिए उसकी प्रतीक्षा कर रहे थे। सेवकों ने राज्यपाल को पूरा काला और एक इथियोपियाई की तरह भयानक देखकर बहुत डर गए और अपने दीपक गिराकर वहाँ से भाग गए। हालाँकि, राज्यपाल यह सोचकर हैरान था कि सेवक उसे देखकर क्यों भाग गए, उसने सोचा कि वे उसका मज़ाक उड़ा रहे थे और उसका उपहास कर रहे थे, और वह बहुत क्रोधित हो गया। इस समय तक भोर हो रही थी, और जहाँ भी राजकुमार जाता, वहाँ सभी लोग—चाहे नौकर हों, पहरेदार हों या सैनिक—उसे देखते ही इधर-उधर बिखर जाते और उससे ऐसे भागते मानो वह कोई राक्षस हो। तब राज्यपाल शाही महल की ओर रवाना हुआ, ताकि वह राजा से अपने अधीन सैनिकों की अवज्ञा और यहाँ तक कि उनका मज़ाक उड़ाने की शिकायत कर सके। लेकिन जैसे ही वह शाही आवास के पास पहुँचा, उसे अंदर से जोरदार और लंबे समय तक चलने वाली हँसी सुनाई दी; वहाँ मौजूद कुछ लोग उससे डरकर भाग गए, जबकि अन्य लोग उसे मारने लगे, और उसे शाही आवास के दरवाजों से दूर भगा दिया, क्योंकि किसी ने भी यह कल्पना नहीं की थी कि यह डुल्सितिया का हेगेमोन था; वे सभी सोचते थे कि वह किसी तरह का पवित्र मूर्ख था। हालाँकि, हेगेमोन को यह एहसास भी नहीं हो सका कि वह कालिख से लथपथ था, क्योंकि शैतान के काम के कारण उसकी आँखें धुंधली हो गई थीं। उसे ऐसा लग रहा था कि उसका चेहरा पीला पड़ा हुआ है और उसके कपड़े और हाथ साफ थे। लेकिन जब, आखिरकार, उसके नौकरों को एहसास हुआ कि उनके मालिक का दिमाग़ खराब हो गया है, तो वे तुरंत उसके पीछे भागे और उसे घर ले गए, कहते हुए, 'खुद को देखो, तुम्हारी क्या हालत हो गई है!'

जब वह घर में दाखिल हुआ, तो उसकी पत्नी और सभी नौकर-नौकरानियाँ यह सोचकर जोर-जोर से रोने लगे कि वह पागल हो गया है, जबकि अन्य उससे दूर भाग गए और उससे बात करने से इनकार कर दिया। हालाँकि, वह खुद अभी भी हैरान था और सोच रहा था कि कुछ लोग उसके लिए क्यों रो रहे थे जबकि दूसरे उससे किनारा कर रहे थे। फिर उसकी दुष्ट आँखें खुल गईं, और उसने देखा कि वह अपवित्र हो गया था; आईने में यह देखकर कि उसका चेहरा एक इथियोपियाई की तरह काला हो गया था, उसे एहसास हुआ कि एक राक्षस ने उसका अपमान किया था। तब वह पवित्र कुँवारियों पर बहुत क्रोधित हुआ, यह सोचकर कि उन्होंने अपनी जादू-टोने से यह सब उस पर लाया है, और उसने उनसे बदला लेने की साजिश रची। अपने शरीर को धोकर और कपड़े बदलकर, वह पूरे लोगों के सामने न्यायाधीश की कुर्सी पर बैठ गया। फिर राज्यपाल ने आदेश दिया कि यातना के उपकरण तैयार किए जाएँ और पवित्र कुंवारी लड़कियों को एक बार फिर उसके सामने लाया जाए। जब पवित्र कुंवारी लड़कियों को लाया गया, तो राज्यपाल ने आदेश दिया कि उन्हें नग्न किया जाए ताकि वह उनके शरीर देख सके। लेकिन जैसे ही उन्होंने उनके कपड़े उतारने शुरू किए, वे ऐसा करने में असमर्थ रहे, क्योंकि, ईश्वर की इच्छा से, संतों के कपड़े उनके शरीर से इतनी कसकर चिपक गए, जैसे वे चमड़ी से मांस में मिले हों, कि हर कोई इस चमत्कार को देखकर चकित रह गया। नौकरों ने, हालांकि वे लंबे समय तक संतों के कपड़े उतारने की कोशिश करते रहे, ऐसा कर सके।

जहाँ तक राज्यपाल की बात है, बेंच पर बैठे-बैठे वह अचानक झपकी ले गया और इतनी गहरी नींद में सो गया कि वे उसे किसी भी तरह जगा नहीं सके: उन्होंने उसे धक्का दिया और उसके चारों ओर ज़ोर से चिल्लाया, लेकिन वह मृतक की तरह सोता रहा। फिर, सोते हुए ही उसे उठाकर वे उसे उसके घर ले गए। लेकिन जैसे ही उसे घर के अंदर ले जाया गया, वह तुरंत जाग उठा।

हेगेमोन डुलकतियिस के साथ जो कुछ भी हुआ था, वह सब जानकर राजा उस पर बहुत क्रोधति हो गया और आदेश दयिा कि पवत्रि कन्याओं को यातना के लएि न्यायाधीश ससिीनयिस के हवाले कर दयिा जाए। इस न्यायाधीश ने अपनी पूछताछ सबसे छोटी बहन, इरीना से शुरू की। उसने पूछा:

'क्या तुम राजा की आज्ञा का पालन करती हो?'

संत ने उत्तर दयिा:

'नहीं, मैं नहीं मानती, क्योंकि मैं एक ईसाई हूँ, सर्वशक्तमिान ईश्वर की सेविका हूँ।'

तब न्यायाधीश ने उसे जेल ले जाने का आदेश दयिा। इसके बाद, अगापयिा और खयिोनयिा को अदालत में पेश करने का आदेश देकर, उन्होंने उनसे कहा:

'तुम्हारी छोटी बहन को तुमने ही गुमराह कयिा है और दव्यि कानूनों का तरिस्कार करना सखिाया है; इसलएि, मैंने फलिहाल उसके यातना देने के काम को टालने का फैसला कयिा है, ताकि तुम्हारा दुख देखकर वह डर जाए और हमारी आज्ञा माने। यदि, हालांकि, तुम इस यातना से बचना चाहती हो, तो देवताओं को बलदिान चढ़ाओ, जैसा कि हम राजा की आज्ञा का पालन करते हुए करते हैं।'

संत अगपयिा ने न्यायाधीश से उत्तर दयिा:

– हमारा वशि्वास अटूट है।

तब न्यायाधीश ने खयिोनयिा से कहा:

'और तुम्हारा क्या कहना है?'

चयिोनयिा ने उत्तर दयिा:

'हमारा वशि्वास अडगि रहेगा।'

तब न्यायाधीश ने पूछा:

'क्या आपके पास कोई ईसाई पुस्तकें हैं?'

पवत्रि कुंवारी कन्याओं ने उत्तर दयिा:

'हमारे पास कतिाबें तो हैं, लेकनि वे हमारे मन में छपिी हुई हैं, जहाँ से मसीह के शत्रु उन्हें नहीं ले सकते।'

न्यायाधीश ने पूछा:

'ऐसी यातनाओं को स्वेच्छा से सहने की शक्षिा तुम्हें कसिने दी?'

पवत्रि कुंवारी कन्याओं ने उत्तर दयिा:

'ये यातनाएँ अस्थायी हैं और महान लाभ लाती हैं, क्योंकि इनके माध्यम से कोई अनंत महमिा प्राप्त कर सकता है।'

न्यायाधीश ने कठोरता से कहा:

'राजा की आज्ञा का पालन करो और देवताओं को बलदिान चढ़ाओ।'

परंतु पवत्रि कुंवारी कन्याओं ने कहा:

'हम परमेश्वर को स्तुति का बलदिान चढ़ाते हैं, परन्तु हम शैतान को कभी बलदिान नहीं चढ़ाएंगे। यह मत सोचो कि तुम हमें हमारे प्रभु यीशु मसीह, जो परमेश्वर हैं, से हटा सकोगे, परन्तु अपने सांसारकि राजा द्वारा दएि गए आदेश का पालन करो, जैसे हम अपने स्वर्गीय राजा के आदेशों का पालन करते हैं।'

तब न्यायाधीश ससिीनस ने क्रोध के आवेग में संतों के संबंध में नम्निलखिति आदेश जारी कयिा:

'मैं आदेश देता हूँ कि अगपयिा और खयिोनयिा, जन्हिें अदालत में चेतावनी देने के बाद भी राजा के आदेश का पालन करने से इनकार कर दयिा, उन्हें जदिा जला दयिा जाए।'

यह दंड सुनकर पवत्रि कुंवारी कन्याएं आनंदति हो गईं और उन्होंने जोर से पुकारा:

'हे प्रभु यीशु मसीह, हम आपकी धन्यवाद करते हैं कि आपने हमें अपने परम पवत्रि नाम के स्वीकार करने वालों के रूप में योग्य समझा। हे प्रभु, हमारी आत्माओं को अपनी हाथों में ग्रहण करें!'

आग में फेंके जाने पर, पवत्रि कुंवारीयों ने वहाँ प्रार्थना की और प्रार्थना के साथ, अपने आत्मा को अपने प्रभु[3045] के हाथों में सौंप दयिा। इस बीच, भयानक लपटों ने पवत्रि कुंवारीयों के शरीरों को बलि्कुल भी नुकसान नहीं पहुँचाया, और

[3045] पवत्रि कुंवारी शहीद अगपयिा और खयिोनयिा का 304 में नधिन हो गया।

न ही वे उनके वस्त्रों को छू सकीं, ताकि उन पर आग का कोई निशान न बचे। यह घटना विधर्मियों के लिए एक संकेत के रूप में हुई कि पवित्र कुंवारी आग से नहीं मरी थीं, बल्कि अपनी प्रार्थनाओं के द्वारा, ईश्वर से एक धन्य निधन प्राप्त कर चुकी थीं। उनकी सम्मानित देहें, जो आग से अछूती थीं, को संकटमोचक संत अनास्तासिया के सेवकों ने रात के समय उठा लिया और अपनी स्वामिनी के पास ले आए। संत अनास्तासिया ने उनके पवित्र शरीरों पर सुगंधित तेल लगाकर, उन्हें सम्मानपूर्वक एक नई ताबूत में रख दिया, और आत्मा में आनंदित होकर प्रभु से प्रार्थना की कि वह उन्हें भी उन पवित्र कुंवारी कन्याओं के आनंद में भागीदार होने का वरदान दें।

अगले दिन, न्यायाधीश सिसिनस ने एक बार फिर न्यायपीठ पर अपनी सीट संभाली और संत आइरीन को अपने सामने लाने का आदेश दिया। जब उसे लाया गया, तो उन्होंने उससे कहा:

'देवताओं को बलिदान चढ़ाओ, नहीं तो तुम भी अपनी बहनों की तरह आग में जलकर मर जाओगी।'

लेकिन संत ने साहसपूर्वक उत्तर दिया:

'मैं बलिदान नहीं चढ़ाऊँगी, क्योंकि मैं अपनी बहनों के आनंद में भागीदार बनने की बहुत इच्छा रखती हूँ, ताकि जब वे परमेश्वर के सामने खड़ी हों तो मैं उनसे अलग न हो जाऊँ।'

न्यायाधीश ने कहा, 'हमारी सलाह मानो, अन्यथा तुम्हें अपनी बहनों से भी अधिक क्रूर यातनाएँ दी जाएँगी।'

'मैं हर तरह की यातनाओं के लिए तैयार हूँ,' संत ने उत्तर दिया, 'क्योंकि मैं सत्य के लिए मरना चाहती हूँ और मृत्यु के माध्यम से, शाश्वत जीवन प्राप्त करना चाहती हूँ; मैं आग से होकर अपने इनाम तक पहुँचना चाहती हूँ।'

तब न्यायाधीश ने उससे कहा:

'मैं तुम्हें नग्न करके वेश्यालय ले जाने का आदेश दूँगा, ताकि वहाँ तुम्हें मरते दम तक अपमान सहना पड़े।'

संत ने उत्तर दिया:

'मेरा शरीर एक व्यभिचारी के हाथों उतना ही कष्ट सहन करेगा जितना एक काटते हुए कुत्ते, या भेड़िये, या भालू, या साँप के नख से सहन करेगा। और मेरे लिए यह कहीं बेहतर है कि मेरा अपवित्र शरीर पीड़ा सहन करे, बजाय इसके कि मैं मूर्तिपूजा के द्वारा अपनी आत्मा को अपवित्र करूँ; क्योंकि अपनी इच्छा के विरुद्ध किया गया पाप, जब आत्मा उस पर सहमति नहीं देती, तो वह परमेश्वर के सामने व्यक्ति के विरुद्ध नहीं गिना जाता। क्या वे संत अपवित्र हुए थे जिन्होंने पहले यीशु मसीह के नाम का प्रचार करने के लिए दुख उठाया, जिनके मुँह में उनके यातनादाताओं ने जबरदस्ती मूर्ति पूजा की बलि का रक्त डाला था?

'निश्चय ही जो हमारे बलिदानों का स्वाद चखते थे, वे अपवित्र हो गए,' न्यायाधीश ने पूछा।

'वे न केवल अपवित्र नहीं हुए,' संत ने उत्तर दिया, 'बल्कि ईश्वर ने उन्हें इसके लिए मुकुट पहनाया, क्योंकि, उनके हाथ बँधे होने पर, उनके मुँह जबरदस्ती खोले गए और मूर्तिपूजा की बलि का रक्त जबरदस्ती उनमें डाल दिया गया। स्वेच्छा से किया गया पाप दंड का पात्र होता है, लेकिन अनिच्छा से किया गया पाप गिना नहीं जाता। इसी प्रकार, जहाँ तक मेरी बात है, अपना शरीर मसीह को अर्पित कर देने के बाद, यदि तुम मुझ पर जबरदस्ती कुछ भी करते हो—तो मुझे आशा है कि मैं अपने अमर वर के सामने लज्जित नहीं होऊँगा, बल्कि मुझे उसका इनाम मिलेगा, क्योंकि यह सब उसके ही लिए है कि मैं तुम्हारे हाथों यह अत्याचार सहता हूँ। मैं इस बात की परवाह नहीं करूँगी कि तुम मेरे शरीर के साथ क्या करना चाहते हो: चाहे तुम उसे अपवित्र करो, या घाव दो, या आग में जला दो, मैं अपने प्रभु परमेश्वर के नाम के लिए यह सब सहने को तैयार हूँ। पर मेरे परमेश्वर में सामर्थ्य और शक्ति है, और वह तुम्हें वह करने की अनुमति नहीं देगा जो तुमने मेरे साथ करने की योजना बनाई है।

तब न्यायाधीश ने सैनिकों को उस युवती को वेश्यालय ले जाने का आदेश दिया और आज्ञा दी कि उसे वहाँ तब तक छोड़ दिया जाए जब तक वह मर न जाए। रास्ते में, जब सैनिक उस संत को ले जा रहे थे, तो दो अन्य सैनिक उन पर आ पहुँचे, जो रूप में भव्य और मुखमंडल से सुंदर थे, और उन्होंने संत को ले जा रहे सैनिकों से कहा:

'न्यायाधीश ने हमें तुम्हें यह बताने के लिए भेजा है कि इस कन्या को उस स्थान पर ले जाओ जो हम तुम्हें दिखाएंगे।'

तो उन्होंने उन्हें शहर से बाहर ले जाकर, एक बहुत ऊँची पहाड़ी पर चढ़ाने के बाद, सैनिकों से कहा:

'जाओ और न्यायाधीश सिसिनियस से कहो कि तुमने उस युवती को पहाड़ी पर रख दिया है, जैसा तुम्हें आदेश दिया गया था।'

सैनिक न्यायाधीश के पास चले गए, जबकि वे दो गोरे रंग वाले पुरुष दृष्टि से ओझल हो गए, क्योंकि वे परमेश्वर के स्वर्गदूत थे।

इस बीच, पवित्र कन्या इरीना पहाड़ी पर खड़ी थी, और मसीह ईश्वर की स्तुति और धन्यवाद कर रही थी, जिन्होंने उसे व्यभिचारियों के हाथों से छुड़ाया था।

जब न्यायाधीश को यह पता चला कि क्या हुआ था, तो वह इस बात पर बहुत क्रोधित हुआ कि उसके आदेश का पालन नहीं किया गया था, और अपने घोड़े पर सवार होकर वह उस पहाड़ी की ओर चल पड़ा।

पहुँचने पर, न्यायाधीश ने पवित्र कन्या को पहाड़ी पर खड़ा देखा, लेकिन वह उस पर चढ़ नहीं सका, क्योंकि उसे ऐसा लगा कि पहाड़ी मानो एक ऊँची दीवार से घिरी हुई थी जिसे पार करना असंभव था। पहाड़ी के चारों ओर घूमते हुए, पवित्र कन्या के पास न जा पाने के कारण वह क्रोध से भर गया, और इस प्रकार वह सुबह से शाम तक घोड़े पर सवार रहा, पर उसे कुछ भी हासिल नहीं हुआ। हालाँकि, उसके साथ मौजूद कुछ योद्धाओं ने अपने धनुष तानकर संत पर तीर चलाए और उसे घायल कर दिया। तब उसने न्यायाधीश को संबोधित करते हुए पुकारा:

'मैं तुम पर हँसती हूँ, हे नीच, कि तुम हथियारों के साथ एक कमज़ोर महिला के विरुद्ध आए हो, मानो मैं कोई शक्तिशाली पुरुष हूँ। लेकिन मैं यहाँ हूँ, तुमसे पवित्र और निर्मल, अपने प्रभु यीशु मसीह के पास जा रही हूँ, जो अब मुझे अपनी बहनों में गिनेंगे।'

यह कहने और ईश्वर का धन्यवाद करने के बाद, संत जमीन पर लेट गईं और उन्होंने अपना प्राण प्रभु को सौंप दिया। यह घटना पवित्र ईस्टर के पर्व से एक दिन पहले हुई थी[3046] ।

जब रात हुई, तो संत अनास्तासिया ने अपने सेवकों को पहाड़ी से पवित्र शहीद आइरीन का सम्मानित शरीर लाने के लिए भेजा और उसे सुगंधित तेलों से अभिषेक करके, उसे अपनी बहनों के शवों के बगल में रख दिया।

इस प्रकार पवित्र शहीदों, तीन बहनों, कुंवारी – अगपिया, खियोनिया और इरिना – ने अपना बलिदान पूरा किया और परम पवित्र त्रिमूर्ति – पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा, एकमात्र ईश्वर – के सिंहासन के सामने महिमा में प्रकट हुईं, जिनकी महिमा युगानुयुग होती रहे। आमीन।

- इसी दिन, हम पवित्र शहीद लियोनिदास और उनके साथ पवित्र स्त्रियों: कैरसिा, नुनेचिया, वासिलिसा और थियोडोरा का स्मरण करते हैं, जिन्होंने कोरिंथ में कष्ट सहे और वर्ष 251 में समुद्र में डूब गईं।

संत इरीना की शहादत।

16 अप्रैल को स्मरण किया जाता है

पवित्र शहीद आइरीन ने ग्रीस में पवित्र पास्का के पर्व के दौरान कष्ट सहे[3047] । कई अन्य ईसाइयों के साथ, वह एक गुफा में रहती थीं, और वे सभी अपना समय निरंतर प्रार्थना में व्यतीत करते थे। मूर्तिपूजकों के दुष्ट सेवकों ने उन्हें शासक के पास रिपोर्ट किया, और सेंट आइरीन को, उसके आदेश पर, पकड़ लिया गया, बेड़ियों में जकड़कर लाया गया और कैद कर दिया गया। जब उसे राज्यपाल के सामने लाया गया, तो उसने अपनी पूछताछ के दौरान साहसपूर्वक स्वीकार किया कि यीशु ही सच्चे ईश्वर, सभी चीजों के सृष्टिकर्ता और उद्धारकर्ता, मानवता के मुक्तिदाता और मूर्तियों के विनाशक हैं। इसके लिए उसे पीटा गया और वापस जेल में डाल दिया गया। इसके बाद, राज्यपाल ने नगरवासियों द्वारा उसके सामने लाए गए मामलों को निपटाना शुरू किया; और जब उसने उनसे निपटना समाप्त कर लिया, तो उसने संत को एक बार फिर से कालकोठरी से बाहर लाने का आदेश दिया। जब उसे उसके सामने लाया गया, तो उसने उसे मसीह का त्याग करने के लिए मजबूर करना शुरू कर दिया, लेकिन वह ऐसी मांगों को सुनने तक को तैयार नहीं थी। फिर, यातना देने वाले के आदेश पर, उसे क्रूर यातनाएँ दी गईं: उसकी जीभ काट दी गई, उसके दांत तोड़ दिए गए और अंत में, उसकी गर्दन तलवार से काट दी गई।

[3046] संत इरीना की शहादत 304 में हुई।

[3047] प्रोलॉग के अनुसार, पवित्र शहीद कोरिंथ शहर में कष्ट सहने पड़ीं, जबकि चेती-मिनेई के अनुसार, उन्होंने मैसेडोनिया में कष्ट सहे। उनकी शहादत का समय या तो वर्ष 205 (डेसियस के उत्पीड़न के दौरान) या वर्ष 304, डायोक्लेटियन के उत्पीड़न के दौरान माना जाता है।

30 अप्रैल

17 अप्रैल (पुराने कैलेंडर के अनुसार)

फ़ारस के बशिप, संत समियिन की शहादत

17 अप्रैल को स्मरणोत्सव

जब फारस में ईसाइयों की संख्या[3048] बहुत बढ़ गई और उनके अपने चर्च, बशिप, पुरोहति और डकिन[3049] थे, तो मूर्तपिूजक मगों ने यह देखकर ईसाइयों के प्रतमिहान क्रोध और रोष से भर गए। ये मग, जो अपनी वंशावली सबसे प्राचीन मगों से जोड़ते थे, अधर्मी फारसी मथि्या धर्म के रक्षक और संरक्षक थे। उनके साथ-साथ यहूदी—जो ईसाई धर्म के शाश्वत शत्रु थे—भी ईसाइयों के खलिाफ उठ खड़े हुए। मगयिों के साथ साज़शि रचकर, उन्होंने फारसी राजा सापोअर[3050] को ईसाइयों के खलिाफ उत्पीड़न शुरू करने के लिए मना लयिा[3051] । इससे पहले भी, उन्होंने सेल्यूकयिा-कटसीफोन[3052] के शहर के बशिप संत समियिन पर उसके सामने इस बात का झूठा आरोप लगाया था कयिह ईसाई बशिप फारसी साम्राज्य का शत्रु था और यूनानी राजा के साथ मलिकर काम कर रहा था, जसिे कथति तौर पर वह फारस में हो रही हर घटना की जानकारी देता था।

तब राजा शपूर ने सबसे पहले ईसाइयों पर एक भारी और बहुत बोझलि कर लगाया और कर के भुगतान की देखरेख के लिए सख्त लोगों को नयिुक्त कयिा। फरि उसने खुले तौर पर ईश्वर के पुरोहतिों और सेवकों को मारना शुरू कर दयिा, चर्च की संपत्तलिूटने और चर्चों को ही तबाह करने का आदेश दयिा, उन्हें उनकी नींव तक ध्वस्त कर दयिा; जहाँ तक बशिप समियिन का सवाल है, जसिे वह फारसी साम्राज्य का कथति दुश्मन और फारसयिों की अधर्मी अंधवशि्वास का वरिोधी मानता था, उसने उसे पकड़कर मुकदमे के लिए अपने सामने पेश करने का आदेश दयिा।

राजा के आदेशानुसार, संत समियिन को दो पुरोहतिों, अब्देला और अनानयिास के साथ राजा के समक्ष लाया गया। बशिप, जनि्हें सैनकिों ने पकड़कर लोहे की जंजीरों में जकड़ा हुआ था, न केवल राजा के क्रोध से अछूते थे, बल्कउिन्होंने राजा के सामने झुकना भी उचति नहीं समझा। इसलिए, अत्यंत क्रोधति राजा ने संत से पूछा:

'तुम पहले की तरह मेरी ओर सरि क्यों नहीं झुकाते?'

संत ने उत्तर दयिा:

'पहले मुझे उस तरह आपके सामने नहीं लाया गया था जैसे मुझे अब लाया गया है - और मैं आपके सामने झुक गया था, आपके पद का उचति सम्मान करते हुए। लेकनि अब, जब मुझे यहाँ मेरे ईश्वर का त्याग करने और अपने धर्म से भटकने के लिए लाया गया है, तो मेरे लिए आपके सामने झुकना उचति नहीं है, जो मेरे ईश्वर के दुश्मन हैं।'

राजा ने उसे सूर्य की पूजा करने के लिए मनाना शुरू कर दयिा[3053] और बदले में उसे कई उपहार और सम्मान देने का वादा कयिा, और अगर वह मना कर देता तो अपने राज्य में ईसाई धर्म को पूरी तरह से नष्ट करने की धमकी दी। जब राजा ने देखा कसिंत दृढ़ था और न तो चापलूसी और न ही धमकयिों से अपनी दुष्टता के लिए राजी होगा, तो उसने उसे जेल में डालने का आदेश दयिा।

[3048] ईरानी पठार का पश्चमिी भाग फारस में आता है। इसकी आधुनकि सीमाएँ हैं: पश्चमि में तुर्की; पूर्व में अफगानस्तिान और बलूचस्तिान; दक्षणि में हदि महासागर; और उत्तर में ट्रांसकस्पयिन क्षेत्र। फारसी राजशाही के संस्थापक साइरस थे, जनि्होंने 558 से 529 ईसा पूर्व तक शासन कयिा और अपनी वजियों के लिए प्रसद्धि थे (उन्होंने पश्चमिी एशयिा के लगभग पूरे भाग पर वजिय प्राप्त की)।

[3049] यह ईस्वी की चौथी शताब्दी में था।

[3050] सापor II, 310 से 381 तक फारस का राजा।

[3051] ईसाइयों पर अत्याचार शपुर द्वतिीय द्वारा अपने शासन के 32वें या 33वें वर्ष में, यानी 343–344 में शुरू कयिा गया था।

[3052] सेल्यूकयिा-कटसीफॉन – फारस के एक शहर का नाम जो टायग्रसि नदी द्वारा दो वपिरीत भागों में वभिाजति था। इस शहर की स्थापना सेल्यूकस प्रथम नकिेटर ने की थी, जनिका शासन 353 से 281 ईसा पूर्व तक रहा।

[3053] सूर्य पूजा लगभग सभी मूर्तपिूजक धर्मों की एक वशिषता थी।

[3054]जब संत को शाही महलों से कालकोठरी ले जाया जा रहा था, तब उन्हें उसफाज़ान नामक एक ख़ास[3055] ने देखा, जो पहले से ही वृद्ध था, ने राजा सापोर् को उसके बचपन से पाला था, और सभी के बीच बहुत सम्मानति था, क्योंकि वह राजा का सबसे करीबी वशि्वासपात्र था। यह ख़ास उस समय शाही कक्षों के पास बैठा था, और जब उसने देखा कि बशिप संत समियिन को ले जाया जा रहा है, तो वह तुरंत अपनी सीट से उठ खड़ा हुआ और ईश्वर के बशिप के सामने नमन करने लगा। लेकनि संत समियिन ने उससे अपना चेहरा मोड़ लयिा और उसकी धर्मत्याग के लिए जोरदार फटकार लगाई, क्योंकि वह मूल रूप से एक ईसाई था, लेकनि बाद में राजा के डर से सूर्य की पूजा करने लगा था। इसके बाद, उस्फाज़ान गहराई से शोक करने लगा; वह रोया और वलिाप कयिा, अपने कीमती वस्त्र उतार दिए, साधारण, मोटे कपड़े पहन लिए, और शाही महल के द्वार पर बैठकर, अपने आँसुओं के बीच खुद से कहा: 'हाय मुझ दुखी को! मैं अपने उस ईश्वर के सामने कैसे खड़ा होऊँगा, जसिे मैंने त्याग दयिा है? यहाँ शमिोन है, और उसने भी मेरे धर्मत्याग के कारण मुझसे मुंह मोड़ लयिा है; तो फरि मेरा स्रष्टा मुझ पर कैसे दृष्टि डालेगा?'

जैसे ही उसने यह कहा, वह बेसुध होकर रोने लगा। यह जानकर, राजा सावर ने तुरंत उसे बुलाया और रोते हुए देखकर उससे पूछा:

'तुम्हारे दुख का कारण क्या है? शाही महल में तुम्हारे साथ क्या दुखद घटना घटी है?'

उस्फाज़ान ने उत्तर दयिा:

'नहीं, आपके महल में मेरे साथ कुछ भी बुरा या दुखद नहीं हुआ है, हालाँकि मैं दुनयिा की सभी दुर्भाग्य, दुख और वपित्तयिों को सहन करना बेहतर समझूँगा, उस एक बात के बजाय जसिे पर मैं अब अपने दलि में शोक मना रहा हूँ और रो रहा हूँ—अर्थात्, यह कि मैं अभी भी इस धरती पर जीवति हूँ; मैं उम्र में इतना बूढ़ा हो गया हूँ कि मुझे तो बहुत पहले ही मर जाना चाहिए था, फरि भी मैं आज भी सूर्य को नहिारता हूँ, जसिकी मैं एक देवता के रूप में पूजा करता हूँ। मैं ईश्वर, जो सभी प्राणयिों का स्रष्टा है, की बजाय कसिी प्राणी की पूजा करके उससे मुंह मोड़ने के बजाय मरना पसंद करूँगा। लेकनि मैंने यह अपनी सच्ची इच्छा से नहीं, बल्कि पाखंड करते हुए, आपको खुश करने की चाहत में कयिा; और इसलिए मैं दो कारणों से मृत्युदंड का पात्र हूँ: पहला, मैंने अपने ईश्वर, मसीह का त्याग कयिा है; और दूसरा, अपने वृद्धावस्था में मैं आप पर अवशि्वासी साबति हुआ हूँ। लेकनि मैं स्वर्ग और पृथ्वी के सृष्टकिर्ता परमेश्वर की कसम खाता हूँ कि मैं फरि कभी ऐसा पाप नहीं करूँगा। मैं अब कसिी नश्वर राजा के लिए प्रभु और अपने परमेश्वर, अमर राजा, यीशु मसीह का अपमान नहीं करूँगा; मैं अब सूर्य, जो परमेश्वर की रचना है, के सामने अपने घुटने नहीं टेकूँगा, बल्कि आज से लेकर अंत तक स्वयं सृष्टकिर्ता की आराधना करूँगा।

उस्फाज़ान को सुनकर, राजा साpor उसके अंदर आए इस अप्रत्याशति बदलाव से बहुत हैरान हो गया और ईसाइयों पर और भी अधकि क्रोधति होने लगा, यह सोचकर कि उन्होंने कसिी प्रकार की जादू-टोने से उस्फाज़ान को धोखा दयिा था। हालाँकि, बूढ़े पर दया करके, उसने एक पति से जैसे नविेदन कयिा जाता है, वैसे ही उससे वनिती करना शुरू कर दयिा कि वह अपने देवताओं पर ऐसी अपमानजनक स्थति, अपने ऊपर अपमान और शाही परविार पर दुख न लाए, और इस उद्देश्य के लिए उसने कभी दयालु शब्दों से, तो कभी धमकयिों से उसे समझाया। लेकनि उस्फज़ान ने राजा से उत्तर दयिा:

'मैंने पहले की गई मूर्खता से बहुत कुछ सीख लयिा है; अब मैं ऐसा दोबारा नहीं करूँगा, और न ही मैं सृष्टकिर्ता के बजाय सृष्टि की पूजा करूँगा।'

लंबी और ववििधि प्रकार के मनाने के प्रयासों के बाद, राजा ने जब देखा कि उस्फाज़ान अडगि था, तो उसने उसे तलवार से सरि कलम करने की सज़ा सुनाई।

जब उन्हें मृत्युदंड के लिए ले जाया जा रहा था, तो धन्य उस्फाज़ान ने अपने एक वफादार मत्रि, जो एक ख़ास और राजा के chamberlain[3056] थे, को बुलाया और उससे कहा कि वह राजा के पास जाकर उनके अंतमि शब्द पहुँचा दे। उन्होंने इस प्रकार कहा:

[3054] उस्फाज़ाना का मूर्तपिूजक नाम गुगस्ट्सयिाताज़ाद था।

[3055] एक नपुंसक एक ख़ासला नौकर होता था, जसिे आमतौर पर पूर्व के हरमों में सेवा के लिए रखा जाता था। पूर्वी शासकों को सीधे तौर पर और उनकी पसंदीदा पत्नयिों और रखेलयिों के माध्यम से प्रभावति करने का अवसर मलिने के कारण, नपुंसकों ने अक्सर राज्य के मामलों पर काफी प्रभाव जमा लयिा।

[3056] क्यूबकिुलारयिस (लैटनि *क्यूबकिुलम* – शयनककक्ष से) – एक चेंबरलेन, शाही शयनककक्ष का प्रभारी परचिारक।

उस्फाज़ान ने कहा, 'हे राजा, मेरी सेवा को याद करो; याद करो कि कैसे, मेरे युवा दिनों से, मैंने पहले आपके पिता और फिर आपके लिए, अंत तक, परम भक्ति के साथ सेवा की है। इसे प्रमाणित करने के लिए किसी गवाह की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि आप स्वयं इसे अच्छी तरह जानते हैं। इन सभी सेवाओं के लिए, मैं आपसे एक ही पुरस्कार चाहता हूँ: सभी को यह बताएं कि मैं क्यों मर रहा हूँ। घोषक को आज्ञा दें कि वह इसे ज़ोर से घोषणा करे, ताकि सभी राजकुमारों, कुलीनों और सभी लोगों को पता चल जाए कि उस्फाज़ान राजा के खिलाफ किसी अपराध या गलती के लिए नहीं मर रहा है, बल्कि वह एक ईसाई होने और अपने ईश्वर को त्यागने से इनकार करने के कारण मर रहा है।

जब यह अनुरोध राजा शापूर तक पहुँचा, तो वह इसे मान गया, क्योंकि उसे उम्मीद थी कि अगर सभी ईसाइयों को यह पता चल गया कि राजा ने एक ईमानदार और विनम्र व्यक्ति, जो राजा का शिक्षक भी था, उसफज़ान बुज़ुर्ग पर भी कोई दया नहीं दिखाई और उसे मसीह के नाम का प्रचार करने के लिए निर्दयता से मौत के घाट उतार दिया, तो उनके दिलों में बहुत बड़ा डर पैदा हो जाएगा। हालांकि, संत उस्फाज़ान का मानना कुछ और था: उनका विश्वास था कि ईसाई, जिन्हें उन्होंने ईसाई धर्म से अपने धर्मत्याग से डराया और दुखी किया था, मसीह के लिए उनके धर्मांतरण और शहादत के बारे में जानकर प्रसन्न होंगे और दृढ़ता से समान पीड़ा सहने के लिए बलवान होंगे।

इस प्रकार पवित्र शहीद का सिर कलम कर दिया गया, जबकि उद्घोषक जोर से घोषणा कर रहा था कि उस्फाज़ान को केवल इस अपराध के लिए मृत्युदंड दिया गया कि उसने मसीह की गवाही दी थी।

पुरोहितों और अन्य ईसाइयों के साथ जेल में बंद, बिशप संत समियिन को उसफाज़ान की मृत्यु का पता चला। वे अकथनीय आनंद से भर गए और उस ईश्वर की स्तुति करने लगे, जिसने उसफाज़ान को भ्रांति से दूर कर उसे शहीद का मुकुट पहनाया था।

कुछ समय बाद, राजा के सामने दूसरी बार बुलाए जाने पर, संत समियिन ने उसके सामने ईसाई धर्म के बारे में निडरता से बात की और सूर्य की पूजा करने या राजा के सामने झुकने से इनकार कर दिया।

तब, अपने क्रोध में, राजा ने आदेश दिया कि जो भी ईसाई तहखानों और बेड़ियों में बंद थे, उन्हें हमारे प्रभु यीशु मसीह के उद्धारकारी दुख के दिन मृत्युदंड देने के लिए बाहर लाया जाए। सौ लोगों को फांसी के लिए बाहर ले जाया गया, जिनमें कई पुरोहित, डिकिन और धर्मकर्मी शामिल थे। राजा ने उन सभी को समियिोन की आँखों के सामने तलवार से सिर कलम करने की सज़ा सुनाई, और उन सभी के बाद, समियिोन को भी मौत की सज़ा दी जानी थी। जब बंधे हुए ईसाइयों को मृत्युदंड के लिए ले जाया जा रहा था, तो ज्योतिषियों में सबसे बड़े ने ऊँचे स्वर में पुकारा: 'यदि तुम में से कोई जीवित रहना चाहता है, तो वह राजा के साथ सूर्य की पूजा करे, और उसे तुरंत मुक्त कर दिया जाएगा।'

लेकिन एक भी ईसाई ने उसकी बात नहीं मानी - किसी ने भी उसे जवाब नहीं दिया, क्योंकि कोई भी अस्थायी जीवन को शाश्वत जीवन पर तरजीह नहीं देना चाहता था, बल्कि प्रत्येक व्यक्ति जीवन दाता मसीह के लिए आनंदपूर्वक मरना चाहता था। अपने हिस्से से, पवित्र बिशप ने सभी को बिना डर के यातना और मृत्यु को सहन करने के लिए मजबूत किया, उन्हें पवित्र धर्मग्रंथ के वचनों से शिक्षित किया और स्वर्ग के राज्य में शाश्वत जीवन की आशा के माध्यम से अपने दुखों को सहन करने के लिए उन्हें सबको मजबूत किया। और सभी का सिर तलवार से कलम कर दिया गया। तब संत समियिन, जो वचन में अपनी भेड़-बकरियों के चरवाहे थे, जिन्होंने अपनी भेड़-बकरियों को अपने से पहले मुख्य चरवाहों, मसीह के पास भेज दिया था, उन्होंने भी सभी के बाद अपनी गर्दन तलवार के नीचे रख दी और प्रभु के पास चले गए[3057] । उनके साथ ही दो वरिष्ठ पादरी, अब्देलई और अनानियास, जिन्हें उनके साथ पकड़ा गया था, जिन्हें मार डाला गया, दोनों ही बुढ़ापे में थे।

जब अनानियास की बारी तलवार के सामने सिर झुकाने की आई, तो वह भय और आतंक से कांपने लगा। उसके पास खड़ा एक कुलीन व्यक्ति, जिसका नाम फुसिकि था, जो महल के सभी , निम्नतम सेवकों का प्रमुख था और जो गुप्त रूप से ईसाई धर्म का अनुयायी था, ने जब देखा कि पुरोहित अनानियास तलवार से सिर कटवाने से डर रहे थे, तो वह उन्हें संबोधित करते हुए चिल्लाया:

'डरो मत, बूढ़े! अपनी आँखें बंद करो और दृढ़ रहो, क्योंकि तुम तुरंत दिव्य प्रकाश को देखोगे।'

[3057] संत समियिन और उनके साथ अन्य शहीदों की शहादत 343 या 344 में हुई थी।

जैसे ही उस व्यक्ति ने ये शब्द कहे, उसे तुरंत एक ईसाई के रूप में पहचान लिया गया; उसे पकड़कर राजा के सामने लाया गया। उसने निडर होकर राजा के सामने स्वीकार किया कि वह एक ईसाई है और उसने अधर्मी फ़ारसी धर्म का त्याग कर दिया।

उसकी बातें सुनकर राजा क्रोध से आग-बबूला हो गया और उसे तलवार से सिर कलम करके नहीं, बल्कि किसी अन्य अत्यंत पीड़ादायक तरीके से मार डालने का आदेश दिया। उन्होंने पीछे से उसकी गला रेत दिया, उसकी जीभ खींचकर काट दी, फिर संत के पूरे शरीर की खाल उधेड़ दी; ऐसे ही यातनाओं के बीच संत का वध कर दिया गया।

उसी समय, यातना देने वालों ने उसकी बेटी, अस्किट्रिया नामक एक युवती को पकड़ लिया, और उसे भीषण यातना देने के बाद उसकी भी हत्या कर दी। उनके साथ-साथ, प्रभु यीशु में विश्वास की गवाही देने वाले कई अन्य लोगों को भी मार डाला गया। इस घटना के एक साल बाद, गुड फ्राइडे पर ही, संत अज़त, जो एक नपुंसक और राजा के सबसे प्रिय सेवक थे, को एक हजार पवित्र शहीदों के साथ मार डाला गया। पवित्र चर्च इस पूरे काल में मसीह के लिए शहीद हुए लोगों की संख्या एक हजार एक सौ पचास आँकती है। चर्च के इतिहासकार सोजोमेन[3058] और निकिफोरोस कैलिस्टोस[3059] अपने लेखों में वर्णन करते हैं कि उस समय मसीहियों की एक अनगिनत भीड़ को मसीह के दुख-क्लेश के दिन और पवित्र पास्का के दिन मृत्युदंड दिया गया था। क्योंकि जैसे ही अधर्मी राजा सावर का फरमान जारी हुआ – कि उसके राज्य के सभी ईसाइयों को मौत की सज़ा दी जाए – दोनों लिंगों, बूढ़े और जवान, सभी विश्वासियों ने तुरंत और जल्दबाजी में अपने घर छोड़ दिए और निडर होकर मृत्यु के लिए आत्मसमर्पण कर दिया, अपने प्रभु के लिए आनंदपूर्वक मरते हुए।

जब नपुंसक संत अज़त को मृत्युदंड दिया गया, तो राजा को उनके खोने का गहरा खेद हुआ, क्योंकि वह उनसे बहुत प्यार करता था; और इसलिए उसने हत्याएं बंद करने का आदेश दिया; उसने केवल अपने मगियों को यह निर्देश दिया कि वे ईसाई शिक्षकों और मार्गदर्शकों, बिशपों और पुरोहितों को ढूंढकर उन्हें यातनाएं दें, जबकि यह आदेश देते हुए कि शेष ईसाइयों को बख्श दिया जाए। हम, तथापि, सभी पवित्र शहीदों की स्मृति का सम्मान करते हुए, पराक्रम प्रदान करने वाले और मुकुट देने वाले, हमारे उद्धारकर्ता मसीह की महिमा करते हैं, जो पिता और पवित्र आत्मा के साथ सदा-सर्वदा महिमामय हैं। आमीन।

पवित्रजनों में, मेलटिनि के बिशप, हमारे पिता अक्काकियस का जीवन

17 अप्रैल को स्मरण किया जाता है

संत अक्काकियोस, ईश्वर के सेवक, आर्मेनियाई शहर मेलटिनि के मूल निवासी थे[3060] और उनका जन्म धर्मपरायण तथा ईश्वर-भयभीत माता-पिता के घर हुआ था, जिन्हें संतान न होने के कारण प्रार्थना और उपवास के माध्यम से इस धन्य संतान की प्राप्ति के लिए ईश्वर से विनती करनी पड़ी। अपने पुत्र को धर्मग्रंथों के अध्ययन में शिक्षित करने के बाद, उसके माता-पिता उसे उस नगर के बिशप के पास ले गए और उसे ईश्वर की सेवा के लिए सौंप दिया, क्योंकि जब उन्होंने ईश्वर से एक संतान माँगी थी तो उन्होंने ऐसा ही वादा किया था।

[3061][3062]उस समय मेलटिनि के बिशप धन्य ओट्रे थे। यह वही ओट्रे थे, जो विधर्मी मेसेडोनियस के खिलाफ, थियोडोसियस महान के शासनकाल में बुलाए गए पवित्र पिताओं के दूसरे सार्वभौमिक परिषद में, एक सौ पचास पिताओं

[3058] चर्च के इतिहासकार सोजोमेन 5वीं शताब्दी में रहते थे और उन्होंने कॉन्स्टेंटिनोपल में वकील के रूप में काम किया। उन्होंने (इतिहासकार यूसेबियस द्वारा शुरू की गई) *क्रिश्चियन चर्च का इतिहास* को 323 से 439 तक जारी रखा।

[3059] निकिफ़ोरस कैलिस्टोस 14वीं सदी के एक चर्च इतिहासकार और कॉन्स्टेंटिनोपल के हागिया सोफिया मठ में एक भिक्षु थे। उनकी *चर्च इतिहास* (18 पुस्तकों में) बीजान्टिन सम्राट फोकास (लगभग 611) की मृत्यु तक की अवधि को कवर करती है।

[3060] मेलटिनि का शहर लघु आर्मेनिया के उत्तरी भाग में स्थित था।

[3061] रोमन सम्राट थियोडोसियस प्रथम महान ने 379 से 395 तक शासन किया।

[3062] संप्रदायिक मैकेडोनियस, जिसने परिषद द्वारा पदच्युक्त किए जाने से पहले कॉन्स्टेंटिनोपल के बिशप का पद संभाला था, ने यह संप्रदायिक सिद्धांत सिखाया कि पवित्र त्रिमूर्ति का तीसरा व्यक्ति पहले दो व्यक्तियों के बराबर नहीं था, यह दावा करते हुए कि पवित्र आत्मा परमपिता ईश्वर की एक रचना थी। मैसेडोनियन विधर्म की निंदा दूसरी सार्वभौमिक परिषद में की गई थी, जो 381 में कॉन्स्टेंटिनोपल में आयोजित की गई थी।

में से भक्ति के एक विशेष दृढ़ पैरोकार के रूप में उभरे थे। संत ग्रेगरी द थियोलोजियन[3063] और अन्य उत्साही तथा ऑर्थोडॉक्सी के रक्षकों के साथ मिलकर, उन्होंने दृढ़ता से इसकी रक्षा की और विधर्म के खिलाफ लड़ाई लड़ी। ऐसे ही एक धर्मनिष्ठ व्यक्ति, संत ओट्रेई, के पास ही उनके माता-पिता ने धन्य युवक अक्काकियोस को सौंपा था।

महाधर्माध्यक्ष ओट्रियोस ने उस युवक में दैवीय कृपा को देखकर उसे चर्च के पुरोहित वर्ग में नियुक्त कर दिया। अपनी ओर से, अक्काकियोस दिन-प्रतिदिन शक्तिशाली होता गया, सद्गुणों में उत्कृष्टता प्राप्त करता गया, अपने धार्मिक कर्तव्यों का उत्साहपूर्वक पालन करता गया, सद्गुण और पवित्रता में स्वयं को परिपूर्ण करता गया, और सभी की सेवा करने का प्रयास करता गया। आदरणीय यूथिमियस महान ने, युवावस्था में ही, उनके अधीन विज्ञान का अध्ययन किया। लेकिन संत अकाकियोस न केवल बच्चों के बल्कि वयस्कों के भी शिक्षक थे, जो अपने शब्दों और अपने सदाचारी जीवन के उदाहरण से सभी का निर्माण करते थे, विशेष रूप से जब उन्होंने पुरोहित का पद प्राप्त किया और उन पर सौंपी गई मानव आत्माओं के उद्धार की देखभाल का कार्यभार सौंपा गया। पवित्र आत्मा के एक चुने हुए पात्र के रूप में, उन्हें उचित समय पर बिशप के पद पर पदोन्नत किया गया, क्योंकि वे इसके पूरी तरह से योग्य थे। जब मेलिटिनि के बिशप, संत ओट्रियोस, इस जीवन से प्रभु के पास चले गए, तो धन्य अकाकियोस को सर्वसम्मति से उनका उत्तराधिकारी चुना गया और उन्हें पूरे ब्रह्मांड को प्रकाशित करने के लिए सोने के दीवदान में रखी गई जलती हुई मोमबत्ती की तरह (देखें मत्ती 5:15-16) बिशप के सिंहासन पर स्थापित किया गया। यह बिशप परमेश्वर को इतना प्रसन्न हुआ और अपनी पवित्रता में इतना महान था कि उसे चमत्कार करने का वरदान प्राप्त हुआ। हम यहाँ संक्षेप में उनके कई चमत्कारों में से कुछ का वर्णन करेंगे।

एक बार एक बड़ी सूखा पड़ गई, जिसके परिणामस्वरूप एक भीषण अकाल की आशंका थी। सारा जनसमूह बड़े संकट में था। पवित्र बिशप, भूखे लोगों के साथ, शहर के बाहर स्थित पवित्र महान शहीद यूस्टैथियस के चर्च में गए, और वहाँ मसीह के शहीद से विनती की कि वे उनके साथ प्रभु से प्रार्थना करें और सूखी धरती को पोषित करने के लिए वर्षा मांगें। तब, चर्च से कुछ दूर, एक ऊँची और खुली जगह पर, उन्होंने एक वेदी और दिव्य सिंहासन स्थापित किया, और वहाँ रक्तहीन बलिदान चढ़ाना शुरू किया, तथा प्रभु से आँसुओं के साथ प्रार्थना करने लगे। इस अवसर पर, पूजनीय पिताजी ने पवित्र प्याले में शराब को पानी से नहीं पतला किया, जैसा कि आमतौर पर किया जाता है, बल्कि, उन्होंने अपना मन ईश्वर पर केंद्रित करके, इस दृढ़ विश्वास के साथ प्रार्थना की कि ईश्वर स्वयं ऊपर से पानी भेजें और इस वर्षा-जल से, प्याले में शराब को पतला करें, और साथ ही सूखी धरती को भी सींचें। और संत की प्रार्थना इतनी शक्तिशाली और प्रभावी थी कि तुरंत ही मूसलाधार बारिश हुई, जिसने न केवल प्याले में रखी शराब को पतला कर दिया, बल्कि धरती को भी पर्याप्त रूप से पानी से सिक्त कर दिया। वहाँ उपस्थित सभी लोगों का दुख आनंद में बदल गया, और सभी ने परमेश्वर की स्तुति की और धन्यवाद दिया। परमेश्वर के सेवक अकाकियोस की प्रार्थनाओं के द्वारा, उस वर्ष फलों की भरपूर फसल हुई।

उसी क्षेत्र में एक नदी थी जिसमें बहुत अधिक पानी होता था, जो अक्सर अपने तटों को तोड़ देती थी और आसपास के गांवों में बाढ़ आ जाती थी। एक अवसर पर, यह नदी इतनी असामान्य रूप से बढ़ गई कि उससे कुछ दूर स्थित बड़ी इमारतें भी पूरी तरह से डूब गईं, और कुछ तो नष्ट भी हो गईं; घंटे-दर-घंटे ऊँचाई बढ़ते हुए, नदी आसपास के कई आवासों में बाढ़ लाने की धमकी देने लगी। तब मसीह के संत अकाकियोस, यह देखकर कि लोग इस बाढ़ से बहुत कष्ट झेल रहे थे, नदी के पास गए और ईश्वर से प्रार्थना करने के बाद, किनारे के पास एक पत्थर रख दिया, और नदी को उस सीमा को पार न करने का आदेश दिया जो उन्होंने निर्धारित की थी। तत्काल पानी अपने किनारों पर लौट आया; इस तथ्य के बावजूद कि पानी का स्तर काफी बढ़ गया था, क्योंकि उसका मार्ग संकरा हो गया था, नदी उस पत्थर से आगे अपने किनारों से नहीं उफनी, जिसके द्वारा, ऐसा कह सकते हैं, संत ने नदी को उसके किनारों के भीतर सीमित कर दिया था।

उपरोक्त शहर से अठारह स्टेडियम[3064] दूर यूनानियों का एक स्थान था जिसे मियासिना कहा जाता था – एक अत्यंत सुंदर और समतल मैदान। इस क्षेत्र के बीच में एक विशाल मैदान था, जिसके माध्यम से अज़ोर या अज़ुर नामक एक तेज़ और साफ़ नदी पूर्व की ओर बहती थी; यह नदी कई झीलों से होकर गुज़रती थी। सबसे सुंदर और ऊँचे स्थान पर एक मूर्तिपूजक मंदिर था, जो फलों के पेड़ों के बगीचे से घिरा हुआ था, और जिसे अज़ूर नदी से पोषित एक झील के पानी से सिंचाई

[3063] संत ग्रेगरी द थियोलोजियन – चौथी शताब्दी के चर्च के सबसे प्रसिद्ध फादर और शिक्षक, जो 328 से 390 तक जीवित थे। उन्होंने 243 पत्र, 507 कविताएँ (छंदों में प्रवचन) और 45 भाषण लिखे, जिनमें से आरियन संप्रदाय की विधर्मी शिक्षाओं के विरुद्ध निर्देशित पाँच धर्मशास्त्रीय ग्रंथ विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। उनकी पर्व तिथि 25 जनवरी को मनाई जाती है।

[3064] एक 'स्टेडियो' लंबाई की एक इकाई थी जो हमारे 'साज़ेन' के लगभग 88 के बराबर थी।

की जाती थी। इस स्थान को दैवीय घृणास्पद कृत्यों द्वारा अपवित्र कर दिया गया था, क्योंकि मूर्तियों की पूजा करने वाले यूनानी अक्सर वहाँ इकट्ठा होते थे और अपने देवताओं को अधर्मी बलिदान चढ़ाते थे।

मसीह के प्रति उत्साही संत अकाकियोस इस स्थान को शुद्ध करके सच्चे ईश्वर की महिमा के लिए इसे पवित्र करना चाहते थे। ऐसा करने के लिए उन्हें बहुत परिश्रम करना पड़ा, क्योंकि मूर्तिपूजक पुरोहितों ने उनके इरादे का पुरज़ोर विरोध किया और मूर्तिपूजक बलिदान के अपने स्थान को सौंपने से इनकार कर दिया। और जब संत ने परमेश्वर की अति पवित्र माता के नाम पर वहाँ एक चर्च बनाना शुरू किया, तो उन दुष्ट लोगों ने हर संभव तरीके से उन्हें रोकने की कोशिश की: जो कुछ भी विश्वासियों ने दिन में बनाया था, उसे रात में अधर्मी मूर्तिपूजकों द्वारा नष्ट कर दिया जाता था। लेकिन मसीह के सेवक, संत अकाकियोस ने, प्रार्थना के साथ खुद को उनका सामना करने के लिए तैयार किया और अपने शत्रुओं को परास्त कर दिया। ईश्वर की मदद से, उन्होंने मूर्तिपूजक मंदिर को ध्वस्त कर दिया और ईश्वर की माता के सम्मान में एक चर्च का निर्माण किया। इस चर्च को समर्पित करने के बाद, उन्होंने उस स्थान को—जो पहले राक्षसों का निवास था—पवित्र स्वर्गदूतों का निवास स्थान बना दिया, और सदाचारी भिक्षुओं के जीवन के लिए ईश्वर की परम पवित्र माता के चर्च से संलग्न एक मठ, '' की स्थापना की। इस प्रकार, ठीक उसी स्थान पर जहाँ पहले शैतान को खूनी, अधर्मी बलिदान चढ़ाए जाते थे, वहाँ अब दैनिक स्तुतियों और प्रार्थनाओं के साथ, सच्चे ईश्वर को एक निर्मल, रक्तहीन बलिदान चढ़ाया जाने लगा। परमेश्वर की अति-शुद्ध माता की कृपा और चमत्कार करने वाले अक्काकियोस की प्रार्थनाओं से, इस स्थल पर चमत्कार हुए; इन्हें देखकर, यूनानियों ने अपनी दुष्टता को त्याग दिया और मसीह ईश्वर में विश्वास की ओर मुड़ गए। आइए हम वहाँ हुए सबसे गौरवशाली चमत्कारों में से एक को याद करें।

ऐसा हुआ कि उपरोक्त चर्च के निर्माताओं ने अपनी ही लापरवाही के कारण चर्च की गुंबद को अस्थिर तरीके से बनाया था; और जब मसीह के संत अकाकियोस वेदी पर दैवीय लिटिर्जी का अनुष्ठान कर रहे थे, तो यह गुंबद चर्च की ओर झुक गई और उसमें गिरने की कगार पर थी। यह देखकर, चर्च में मौजूद सभी लोग घबराहट में भागने लगे; लेकिन संत ने पुकारा:

'यहोवा मेरा जीवन का बल है; मैं किस से डरूँगा?' (भजन संहिता 26:1)।

और तुरंत ही गिरिजाघर की गुंबद का ढहना रुक गया, और वह, संत की प्रार्थना के द्वारा, हवा में लटकी हुई प्रतीत हुई, मानो किसी ठोस नींव पर टिकी हो। और ऐसा ही तब तक रहा जब तक संत ने पूरी प्रार्थना सभा समाप्त नहीं कर ली और अपने पुरोहितों के साथ चर्च से नहीं चले गए। उनके जाने के तुरंत बाद ही, गुंबद एक ज़ोरदार गर्जना के साथ ज़मीन पर गिर पड़ा, और किसी को भी कोई नुकसान नहीं हुआ।

एक अवसर पर, समुरीया नामक एक गाँव की एक अन्य चर्च में, वचन के झुंड का वही अच्छा चरवाहा परमेश्वर के वचन का प्रचार करके अपने झुंड को आध्यात्मिक पोषण दे रहा था। जब वह लोगों से बात कर रहे थे, तो वहाँ मौजूद गौरैयों की भीड़ ने अपनी तेज चहचहाहट से संत की आवाज़ को दबा दिया और लोगों को उनके शब्द सुनने से रोक दिया, ताकि कभी-कभी बिशप के ईश्वर-वचन बोलने वाले होठों से निकलने वाले शब्द मुश्किल से ही सुनाई देते थे। तब, लोगों को संबोधित करते हुए थोड़ी देर के लिए रुककर, संत ने गौरैयों की ओर मुड़कर उन्हें सृष्टिकर्ता के नाम पर चुप रहने और अपनी चहचहाहट बंद करने का आदेश दिया। और तुरंत ही गौरैया चुप हो गईं, वे एक भी आवाज नहीं निकाल सकीं, और अपने घोंसलों को छोड़कर वहाँ से पूरी तरह उड़ गईं। उस समय से, गौरैयों ने वहाँ अपने घोंसले नहीं बनाए, और यदि उनमें से कोई उस चर्च में आ भी जाता, तो वह चहचहा नहीं सकता था, बल्कि, जैसे गूंगा हो, थोड़ी देर के लिए चर्च के चारों ओर उड़ता और फिर उड़ जाता, मानो किसी ने उसे भगा ही दिया हो।

शहर से बहुत दूर नहीं, संत अक्काकियोस का एक घर था जिसमें वह बिशप नियुक्त होने से पहले भी रहते थे। जब वह बिशप के पद पर आसीन हुए, तो उन्होंने अपने घर को एक अस्पताल और गरीबों तथा बेसहारों के लिए आश्रय में बदल दिया। संत अक्सर अपने अस्पताल का दौरा करते थे, बीमारों के लिए उनकी ज़रूरत की हर चीज़ लाते और स्वयं उनकी देखभाल करते थे। एक बार, फसल काटने के समय बीमारों से मिलने गए, तो उन्होंने उनसे पूछा कि क्या वे सब कुछ लेकर संतुष्ट हैं और क्या उन्हें किसी चीज़ की कमी है। उन्होंने जवाब दिया कि उनके पास सब कुछ प्रचुर मात्रा में है, और केवल एक ही चीज़ उन्हें परेशान करती है: मक्खियों की भीड़, जो उनके घावों और पपड़ियों पर बैठकर और उनके शरीर को दर्दनाक रूप से काटकर उन्हें बहुत कष्ट देती थी। संत ने तुरंत ईश्वर से प्रार्थना की, अपनी प्रार्थना से मक्खियों को वहाँ से भगा दिया, और उन्हें फिर कभी न लौटने का आदेश दिया। और ऐसा ही इस ईश्वर के पुरुष के जीवन के अंत

तक बना रहा: उस समय के बाद से, उस घर में एक भी मक्खी नहीं देखी गई। ईश्वर की कृपा से इस अद्भुत पुरुष ने ऐसा चमत्कार किया था।

इसी तरह, उन्होंने तालाब में ज़ोर-ज़ोर से टर्रा रहे मेंढकों को, जो बीमारों के कानों को परेशान कर रहे थे, चुप रहने का आदेश दिया। कुछ समय बाद, उन्होंने मेंढकों पर दया की और उन्हें एक बार फिर उनकी चुप्पी से मुक्त कर दिया, हालांकि पूरी तरह से नहीं। क्योंकि उन्होंने उन्हें धीरे-धीरे टर्राने की अनुमति दी, न कि उतनी ज़ोर से जितना वे पहले कर रहे थे। एक निर्जल स्थान पर, संत ने एक सूखी चट्टान से ठंडे पानी का एक झरना निकाला और प्यासे लोगों की प्यास बुझाई; कई अन्य चमत्कारिक कृत्यों के माध्यम से, इस महान चमत्कार-कर्ता ने दुनिया को चकित कर दिया।

संत अक्काकियस तृतीय सार्वभौमिक परिषद में उपस्थित थे, जो सम्राट थियोडोसियस द यंगर के शासनकाल के दौरान एफिसुस शहर में आयोजित की गई थी[3065] । वहाँ, अलेक्ज़ेंड्रिया के पैट्रिआर्क संत सिरिल और अन्य पवित्र पिताओं के साथ मिलकर, अकाकियस ने कॉन्स्टेंटिनोपल के पैट्रिआर्क, धर्मद्रोही नेस्टोरियस[3066] को पदच्युत कर दिया, जो परम पवित्र कुँवारी मरियम का अपमान करने वाला था, और उसे चर्च से बहिष्कृत कर दिया। संत अकाकियस सभी पवित्र पिताओं के प्रिय थे और उनकी प्रशंसा की जाती थी, तथा उन्हें स्वयं सम्राट का सम्मान प्राप्त था।

दीर्घकाल तक मसीह की कलीसिया का बुद्धिमानी से शासन करने और अनेक चमत्कार करने के पश्चात्, संत अकाकियोस प्रभु के पास शांतिपूर्वक प्रस्थान कर गए। उनके पवित्र शरीर को पवित्र शहीद पोल्येक्टस के साथ दफनाया गया था। उनके साथ, वह अब प्रभु के सामने खड़े हैं और अन्य कई संतों के साथ, पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा, एक ईश्वर की महिमा करते हैं, जिसकी सृष्टि सभी द्वारा अनंत काल तक स्तुति किरती है। आमीन।

संत एड्रियिन का शहीदत्व

17 अप्रैल को स्मरणोत्सव

मसीह के पवित्र शहीद, एड्रियिन, उन ईसाइयों में से एक थे, जिन्हें उनके मुकदमे से बहुत पहले ही पकड़कर विभिन्न काल-कोठरियों में कैद कर दिया गया था। उन्हें अपनी काल-कोठरी से तब बाहर लाया गया जब मूर्तिपूजक देवताओं को बलिदान चढ़ाया जा रहा था और मूर्तियों के भक्त सभी मूर्तिपूजक उस बलिदान में भाग ले रहे थे[3067] । पवित्र शहीद को वेदी के पास जाकर उस पर अपना हाथ रखने के लिए भी मजबूर किया गया, लेकिन उन्होंने न केवल ऐसा करने से इनकार कर दिया, बल्कि उन्होंने साहस और बहादुरी से वेदी के पास जाकर उसे नष्ट कर दिया, उस पर रखे बलिदानों को गिरा दिया, और आग को बिखेर दिया। इस कृत्य से शासक का क्रोध भड़क उठा, और मूर्तिपूजक इतने क्रोधित हो गए कि उन्होंने संत को पकड़ लिया और निर्दयता से पीटना शुरू कर दिया। कुछ ने उसे डंडों से पीटा, कुछ ने लोहे की छड़ों से, जबकि कुछ ने पत्थर उठाकर उसके दाँत तोड़ दिए; और अंत में, उन्होंने एक विशाल भट्टी गर्म की और पवित्र शहीद को उसमें फेंक दिया। उसके यातना देने वालों ने उसके शरीर को जला दिया; लेकिन उसकी आत्मा स्वर्ग में परमेश्वर के पास चली गई[3068] ।

हमारे पूजनीय पिता जोसिमा, सोलोव्की के मठाधीश का जीवन

17 अप्रैल को स्मरणोत्सव

[3065] रोमन सम्राट, थियोडोसियस द्वितीय युवा, ने 408 से 450 तक शासन किया। उनके शासनकाल के दौरान 431 में तीसरी सार्वभौमिक परिषद बुलाई गई थी।

[3066] नेस्टोरियस ने गलत रूप से यह सिखाया कि यीशु मसीह में दो स्वभाव – दिव्य और मानवीय – एकजुट हुए थे। उसने दावा किया कि यीशु मसीह कुँवारी मरियम से एक साधारण इंसान के रूप में पैदा हुए थे, और इसलिए उनमें केवल मानवीय स्वभाव था; उसने दावा किया कि दिव्य स्वभाव कथित तौर पर बाद में उनमें प्रवेश किया था और कभी-कभी उनसे अलग भी हो जाता था।

[3067] संभावना है कि जब पवित्र शहीद को जेल से बाहर ले जाया गया, तब कोई मूर्तिपूजक त्योहार चल रहा था और मूर्तिपूजक देवताओं को सार्वजनिक बलिदान अर्पित किया जा रहा था।

[3068] संत बेसिल के कैलेंडर के अनुसार, पवित्र शहीद एड्रियिन ने नियोनिडि और इरीना के साथ उसी समय कष्ट सहे, जिनकी स्मृति 16 अप्रैल को मनाई जाती है।

आदरणीय साव्वतीय के नधिन के एक वर्ष बाद, प्रभु को उस स्थान को महमिामय बनाना उचति लगा जहाँ इस पवत्रि व्यक्तनि े परशि्रम कयिा था, और उन्होंने सोलोवेत्स्की द्वीप पर एक शानदार और महान मठ की स्थापना की। इस कार्य के लिए, प्रभु ने एक ऐसे व्यक्तकिो चुना जो अपने कार्यों में आदरणीय साव्वतीय के समान थे – आदरणीय जोसमिा, जनिके बारे में हम अब बात करेंगे।

आदरणीय जोसमिा नोवगोरोड क्षेत्र से थे; उनका जन्मस्थान ओनेगा झील के तट पर स्थति टोल्वुया गाँव था। उनके माता-पतिा, गैब्रयिल और बारबरा, जो एक अत्यंत धार्मकि जीवन जीते थे, ने लड़के को छोटी उम्र से ही ईसाई सद्गुणों में पाला और उसे पढ़ना-लखिना भी सखिाया। युवा जोसमिा स्वभाव से सौम्य, हृदय से नम्र और वनिम्र थे, और उन्होंने युवावस्था की सभी बुरी आदतों से परहेज कयिा। जैसे-जैसे वे शरीर और आत्मा से बढ़े, जोसमिा ने पवत्रि ग्रंथों का लगन से अध्ययन कयिा, और उनसे ईश्वर की कृपा की समृद्धकिो सीखा।

आत्मा और शरीर की पवत्रिता बनाए रखने की इच्छा से, उस पवत्रि युवक ने ववािह न करने का संकल्प लयिा; यद्यपवि ववािह को स्वयं में कुछ बुरा नहीं मानता था, उसने ईश्वर की सेवा में एक बाधा के रूप में इससे बचने का वकिल्प चुना, प्रेरति के शब्दों के अनुसार, जो कहते हैं: *'अववािहति मनुष्य प्रभु के कामों में लगा रहता है, कवि ह प्रभु को प्रसन्न कैसे कर सके; परन्तु ववािहति मनुष्य संसार के कामों में लगा रहता है, कवि ह अपनी पत्नी को प्रसन्न कैसे कर सके'* (1 कुरनि्थियों 7:32-33)। इस प्रकार, एक सच्चे परमेश्वर को प्रसन्न करने के लिए, उसने अपने शरीर की तुष्टकिा परत्यिाग करने का नश्चिय कयिा। जब उनके माता-पतिा ने उन्हें शादी करने के लिए आग्रह करना शुरू कयिा, तो रेवरेंड फादर, इस बात से गहराई से दुखी होकर, अपने पतिा का घर छोड़ गए, उन्होंने संसार का त्याग कर दयिा और, संन्यासी जीवन अपनाकर, अपने पतिा के घर से बहुत दूर नहीं, एक एकांत स्थान पर एक तपस्वी के रूप में बस गए, जहाँ उन्होंने प्रार्थना और उपवास में खुद को समर्पति करना शुरू कर दयिा।

रेवरेंड एक गुरु चाहते थे, क्योंकि उन्होंने स्वयं अभी तक पवत्रि धर्मग्रंथों का पर्याप्त अध्ययन नहीं कयिा था और उन्हें अभी तक कठोर तपस्वी जीवन का तरीका नहीं सखिाया गया था; इसलिए उन्हें एक कुशल गुरु की आवश्यकता थी जो उदाहरण द्वारा उन्हें दखिाए कि सदाचार के लिए उत्सुक एक युवक को क्या सीखना चाहिए। इसके अलावा, रेवरेंड को डर था कि जनि रश्तिेदारों के साथ वह रहता था, वे उसके तपस्या के प्रयासों में बाधा डाल सकते हैं। इसलिए उन्होंने इस जगह को छोड़कर कहीं अधकि एकांत स्थान पर जाने का नर्णिय लयिा, जहाँ वे पूरी तरह से कठोर तपस्या के जीवन को समर्पति कर सकें, और यह भी इसलिए क्योंकि, उनके हृदय में दैवी प्रेम की अग्नि और भी प्रचंड रूप से जल रही थी, जो उन्हें सद्गुणों में और अधकि पूर्णता की ओर प्रेरति कर रही थी।

लेकनि शुरुआत में पूज्यनीय को यह नहीं पता था कि मठ कहाँ और कैसे स्थापति करें, और उन्होंने ईश्वर से मठ के लिए एक स्थान दखिाने के साथ-साथ अपने इरादे को पूरा करने के लिए सभी साधन प्रदान करने हेतु भक्तपिूर्वक प्रार्थना की।

ईश्वर की कृपा से, आदरणीय जोसमिा की मुलाकात हरमन नामक एक सदाचारी भक्षिु से हुई, जो पहले आदरणीय सव्वती के साथ सोलोवेत्स्की द्वीप पर रहा था। उस साधु ने परम पूज्य जोसमिा को परम पूज्य साव्वती के जीवन और कर्मों की कथा सुनाई, और यह भी बताया कि सोलोवेत्स्की द्वीप सांसारकि दुनयिा के बस्तयिों से दूर और एक मठ समुदाय के लिए उपयुक्त था, क्योंकि यह जंगलों और मछलयिों से भरे झीलों से भरपूर था।

यह सुनकर, आदरणीय जोसमिा की आत्मा में बहुत आनंद हुआ और वे उस द्वीप के नविासी और आदरणीय सव्वाती के उत्तराधकिारी बनने की इच्छा रखने लगे; अतःउन्होंने हरमन से वनिम्रतापूर्वक प्रार्थना करनी शुरू कर दी कि वह उन्हें उस नर्जिन द्वीप पर ले जाए और वहाँ उन्हें संन्यासी जीवन की रीति सखिाए।

लगभग इसी समय, आदरणीय जोसमिा के माता-पतिा का नधिन हो गया। उनके शरीरों को दफनाने और अपनी संपत्ति गरीबों में बाँटने के बाद, धन्य जोसमिा हरमन के साथ सोलोवेत्स्की द्वीप के लिए रवाना हो गए। ईश्वर की मदद से, वे सुरक्षति रूप से द्वीप पर पहुँचे और उस स्थान पर उतरे जहाँ नावकि आमतौर पर रुकते थे; वहाँ पानी शांत था और जल मीठा था। कनिारे से बहुत दूर नहीं, संतों ने एक तंबू लगाया[3069] और वहाँ पूरी रात जागरण कयिा, दाऊद के भजन गाते

[3069] आदरणीय जोसमिा पहली बार 1429 में सोलोवेत्स्की द्वीप पर पहुँचे। आदरणीय जोसमिा, हरमन के साथ, आज के मठ के स्थान से दस वर्स्ट दूर माउंट सेकर्निाया के पास उतरे, जहाँ उन्होंने एक लकड़ी का क्रॉस खड़ा कयिा।

हुए और मसीह ईश्वर तथा परमेश्वर की परम पवित्र माता से प्रार्थना करते हुए कि वे उस सुनसान द्वीप पर उनकी बस्ती के लिए स्वर्ग से सहायता और आशीर्वाद भेजें।

अगली सुबह, पूजनीय जोसमि ने तंबू से बाहर निकलते ही एक तेज चमकती हुई प्रकाश किरण देखी जो उन्हें और पूरे स्थान को रोशन कर रही थी; और जब उन्होंने अपनी आँखें पूर्व की ओर उठाईं, तो उन्होंने एक बड़ा और सुंदर चर्च देखा, जो बादलों के बीच खड़ा था; चूँकि रेवरेंड फादर अभी तक ईश्वर से ऐसे प्रकटनों के आदी नहीं थे, वे इस चर्च को अधिक देर तक नहीं देख सके, और जल्द ही तंबू में वापस भाग गए। जर्मन ने, उसके चेहरे पर उलझन देखकर, सोचा कि उसने कुछ असाधारण देखा है और उससे पूछा: 'अरे मेरे प्रिय मित्र, तुम्हारा चेहरा क्यों बदल गया है? तुम्हें किस बात ने डरा दिया है? क्या तुमने कुछ नया और असामान्य देखा है?'

हरमन के शब्दों के जवाब में, ज़ोसमि ने उसे बताया कि कैसे उसने ऊपर से उतरती हुई रोशनी की एक किरण देखी थी जो उस स्थान को और साथ ही बादलों पर टिका चर्च को भी रोशन कर रही थी। इस दृष्टि पर विचार करते हुए, हरमन को द्वीप से सामान्य लोगों के निष्कासन (जो अब्बॉट सावती के अधीन हुआ था) और द्वीप पर एक मठवासी समुदाय की स्थापना के संबंध में सावती की भविष्यवाणी याद आई, और उसने जोसमि से कहा:

'डरो मत और निराश मत होओ, मेरे प्रिय, बल्कि ध्यान दो, क्योंकि मुझे लगता है कि यह प्रभु की इच्छा है कि तुम यहाँ भिक्षुओं की एक बड़ी संख्या इकट्ठा करो।'

तब हरमन ने उसे मछुआरे की पत्नी और कोरेल तट के उस आदमी की घटना के बारे में बताया, जो ईर्ष्या के कारण इस द्वीप पर अपना कब्ज़ा जमाने आए थे – अर्थात्, उसने बताया कि कैसे उस महिला को दो सुनहरे बालों वाले युवकों ने पीटा था, जिन्होंने कहा था:

'इस द्वीप पर तुम्हारे लिए कोई जगह नहीं है; इस जगह को छोड़ दो, क्योंकि इसे ईश्वर ने यहाँ भिक्षुओं के बसने के लिए तैयार किया है।'

संत जोसमि, हरमन से ये शब्द सुनकर, आध्यात्मिक आनंद से भर गए और यहाँ एक मठ स्थापित करने के अपने इरादे में और भी दृढ़ हो गए।

ईश्वर से प्रार्थना करने के बाद कि वे उनके इस प्रयास को सफल करें और इसे अंत तक पूरा करने में उनकी मदद करें, तपस्वियों ने काम शुरू कर दिया: सबसे पहले, उन्होंने कोठरियों के निर्माण के लिए आवश्यक पेड़ों को काटना शुरू किया; फिर उन्होंने कोठरियों का निर्माण किया और आंगन को एक बाड़ से घेर लिया, एक साथ शारीरिक और आध्यात्मिक दोनों कार्यों में परिश्रम करते हुए – अर्थात्, शारीरिक रूप से मठ के निर्माण पर परिश्रम करते हुए, जबकि आत्मा में वे उपवास और प्रार्थना से पूरी तरह सुसज्जित होकर राक्षसों के खिलाफ युद्ध छेड़ रहे थे। सम्मानित पादरियों ने अपने माथे के पसीने से अपनी जीविका चलाई, उन्होंने ज़मीन जोती और उसमें बीज बोए। ईश्वर ने, अपनी ओर से, अपने सेवकों को शक्ति प्रदान की, उन्होंने स्वर्ग से दया की दृष्टि से उन पर दृष्टि डाली और उनके सभी प्रयासों में उनकी सहायता की।

कुछ समय बाद, हरमन जीवन की आवश्यक वस्तुएँ प्राप्त करने के लिए समुद्र के दूसरी ओर[3070] के लिए रवाना हुए; वहाँ कई दिनों तक रहने के बाद, वह पहले ही लौटने की तैयारी कर रहे थे, लेकिन ऐसा कर सके, क्योंकि पतझड़ आ गया था, हवा ठंडी हो गई थी, बर्फ पड़ने लगी थी, तूफ़ान उठे थे, समुद्र उफन रहा था और बर्फ से भर गया था; इस प्रकार सोलोवेत्स्की द्वीप पर वापस नौकायन करना अब संभव नहीं था। इसलिए, धन्य हरमन पूरी सर्दियों तक उस तट पर रहे, जबकि पूजनीय जोसमि द्वीप पर अकेले रहे।

शुरुआत में, आदरणीय, अकेले होने के कारण, वृद्ध हरमन के लिए गहराई से दुखी हुए, लेकिन फिर उन्होंने अपनी सारी आशा ईश्वर में रख दी, और दाऊद के साथ कहा: *'मैं गर्भ से ही आप पर ही छोड़ दिया गया हूँ; मेरी माँ के गर्भ से ही आप मेरे ईश्वर रहे हैं। मुझे न छोड़िए'* (भजन संहिता 21:11-12)। और फिर: *'मैंने गर्भ से ही आप में शरण ली है; आपने मुझे मेरी माँ के गर्भ से ही बाहर निकाला है'* (भजन संहिता 70:6)। पूज्य पिता और भी अधिक लगन से परिश्रम करने लगे, एक परिश्रम पर दूसरा परिश्रम जोड़ते हुए, और उपवास तथा प्रार्थना के तपस्वी अभ्यासों में स्वयं को अविराम रूप से समर्पित कर दिया। हालाँकि, दुष्टात्माएँ, अपनी द्वेष और ईर्ष्या के कारण उस तपस्वी के पवित्र जीवन को सहन न कर सकीं, और उन्होंने उससे युद्ध किया; कभी-कभी वे उसे निराशा से भर देतीं, तो कभी विभिन्न भूत-प्रेत और जंगली

[3070] यह 1435 में हुआ था।

चीखों से उसे डराती थीं, ताकि मसीह के वीर योद्धा को डरा सकें और अटूट को हिला सकें; अन्य समयों में, जंगली जानवरों और साँपों का रूप धारण करके, वे क्रोध से उस पर टूट पड़ते, मानो उसे चीर-फाड़ डालना उनका इरादा हो। लेकिन परमेश्वर के सेवक ने क्रूस के चिह्न और प्रार्थना से उन पर युद्ध छेड़ा, और उनका मज़ाक उड़ाते हुए कहा:

'हे शत्रु की तुच्छ शक्ति! यदि तुझे परमेश्वर से अधिकार मिला है, तो मुझ पर जो चाहे कर; परन्तु यदि नहीं, तो तू व्यर्थ ही परिश्रम करती है,' और उसने दाऊद की भजन-पुस्तक से एक पद गाया: *'वे मुझ पर चढ़ आए, उन्होंने मुझे घेरा; परन्तु मैं यहोवा के नाम से उन्हें नीचे गिरा दिया'* (भजन संहिता 117:11); और फिर: *'परमेश्वर उठे, और उसके शत्रु बिखर जाएँ'* (भजन संहिता 67:2)।

तब संत ने भक्ति से परिपूर्ण हृदय से पुकारते हुए परमेश्वर से एक प्रार्थना की:

– हे शाश्वत ईश्वर, आरंभ रहित राजा, सभी सृष्टि के स्रष्टा और प्रभु! आप राजाओं के राजा और प्रभुओं के प्रभु हैं; आप आत्माओं के उद्धारकर्ता और उन लोगों के मुक्तिदाता हैं जो आप पर विश्वास करते हैं; आप परिश्रमी लोगों की आशा और समुद्र में नौकायन करने वालों का आश्रय हैं; आप अपने सेवकों के मार्गदर्शक हैं; आप हर अच्छी चीज़ के रक्षक, रोने वालों के सांत्वनादाता, संतों की खुशी हैं; आप अनंत जीवन हैं और वह प्रकाश हैं जो कभी अस्त नहीं होता; आप पवित्रता का स्रोत हैं; आप परमपिता परमेश्वर की महिमा हैं, पवित्र आत्मा की पूरणता हैं; आप पिता के साथ विराजमान हैं और सदैव राज्य करते हैं। मैं, आपका सेवक, विनम्रतापूर्वक आपके समक्ष प्रणाम करते हुए आपसे प्रार्थना करता हूँ: हे परम पवित्र राजा, मेरी विनिती सुनें, हे परम कृपालु प्रभु, और अपनी कृपा दृष्टि मेरी प्रार्थना से न हटाइए, बल्कि मुझे सर्व-विनाशकारी सर्प के मुँह से बचा लीजिए, जो मुझे निगलने के लिए तैयार है; मुझे शैतान के अपमानजनक आरोपों से अक्षुण्ण बनाए रखिए, ताकि मैं, तेरे पवित्र स्वर्गदूतों द्वारा संरक्षित और संरक्षित रहकर, उसके क्रोध से बचाया जाऊँ और तुझसे, हे मेरे प्रभु और स्वामी, मुक्ति प्राप्त करूँ, जिस पर मैं विश्वास करता हूँ, जिस पर मैं भरोसा करता हूँ, और जिसकी मैं पिता और पवित्र आत्मा के साथ सदा के लिए महिमा करता हूँ।

इस प्रकार प्रार्थना करते हुए, पूजनीय पिता ने साहसपूर्वक शत्रु के सभी हमलों को दूर भगा दिया; उनकी प्रार्थना और क्रॉस के चिह्न पर, दुष्टात्माएँ हवा के सामने धूल की तरह भाग गईं; जबकि वे उनसे अछूते रहे, ईश्वर की स्तुति और महिमा करते रहे।

तब पूजनीय ने एक और प्रलोभन का सामना किया। उस समय जो कठोर सर्दी का मौसम चल रहा था, उसमें गर्मियों में इकट्ठा किया गया भोजन का भंडार समाप्त हो रहा था, और आदरणीय महोदय अपने विचारों में परेशान होने लगे, यह न जानते हुए कि वे गर्मियों तक क्या खाएंगे (यह उनके अदृश्य शत्रु थे जिन्होंने उनकी आत्मा में दुख भर दिया, उन्हें आने वाली अकाल की आशंका और समय से पहले मृत्यु के भूत से परेशान कर रहे थे)। हालाँकि, पादरी पिता ने, जब अपने मन में चिंतन किया, तो उन्हें प्रभु के अपने पवित्र सुसमाचार में कहे गए वचन याद आए: *'चिंता मत करो और न कहो: "हम क्या खाएँगे?" या "हम क्या पिएँगे?" परन्तु पहले परमेश्वर के राज्य और उसकी धार्मिकता की खोज करो, और ये सब बातें तुम्हें इनके साथ मिलेंगी: क्योंकि तुम्हारा स्वर्गीय पिता जानता है कि तुम्हें इन सब बातों की आवश्यकता है'* (मत्ती 6:31, 34, 33, 32)। प्रदाता परमेश्वर में अपनी सारी आशा रखते हुए, रेवरेंड ने भजनकार के वचनों से स्वयं को सांत्वना दी: *'अपनी चिंता परमेश्वर पर डाल दो, और वह तुम्हें सहारा देगा'* (भजन संहिता 54:23)। इस प्रकार स्वयं को सांत्वना देते हुए, रेवरेंड ने हमारे उद्धार के शत्रु द्वारा उनके हृदय में डाली गई सारी निराशा को दूर भगा दिया।

और वास्तव में, ईश्वर ने अपने उस सेवक को नहीं छोड़ा जिसने उस पर भरोसा किया था। उसने उसके पास दो पुरुष भेजे, जो रोटी, आटे और तेल की एक टोकरी लेकर आए (समुद्र के किनारे रहने वालों की यह प्रथा थी कि यदि वे सर्दियों में अंतर्देशीय यात्रा कर रहे हों तो अपने साथ भोजन का भंडार ले जाते थे)। भोजन की टोकरी सम्माननीय पिता को प्रस्तुत करते हुए, इन दो अज्ञात पुरुषों ने उनसे कहा:

'माननीय पिताजी, इस टोकरी से जितना चाहें, खाइए; जब ईश्वर हमें आज्ञा देंगे, हम आपके पास आएँगे।'

यह कहकर, वे अज्ञात पुरुष तुरंत ही गायब हो गए, इसलिए पादरी को यह पूछने का भी समय नहीं मिला कि वे कौन थे या कहाँ से आए थे।

बहुत समय बीत गया, लेकिन वे अज्ञात पुरुष पुरोहित के पास वापस नहीं आए। तब पुरोहित ज़ोसिमा को एहसास हुआ कि यह ईश्वर की ओर से एक मुलाकात थी, और उन्होंने अपने प्रति उनकी दिव्य कृपा और इस स्वर्ग से मिले अप्रत्याशित उपहार के लिए प्रभु का पूरे दिल से धन्यवाद किया।

जब सर्दी खत्म हुई, तो बूढ़े हरमन आए, अपने साथ मार्क नाम का एक गृहस्थ लाए, जो पेशे से मछुआरा था; उसी समय, हरमन पर्याप्त भोजन और मछली पकड़ने के लिए आवश्यक जाल भी लाए।

कुछ समय बाद, मार्क ने संन्यास की शपथ ली; इसके बाद, कई सामान्य लोग तपस्वियों के पास आने लगे और वहाँ अपने लिए कोठरियाँ बनाकर अपने हाथों की मेहनत से अपना जीवन यापन करने लगे।

कुछ ही समय बाद, पूजनीय जोसिमा ने हमारे प्रभु यीशु मसीह के गौरवमय रूपांतरण की स्मृति में, हमारे प्रभु यीशु मसीह को समर्पित एक छोटा सा चर्च बनाया। यह चर्च ठीक उसी स्थान पर बनाया गया था जहाँ रेवरेंड फादर ने हवा में एक प्रकाश की किरण से जगमगाती हुई चर्च देखी थी। फिर रेवरेंड फादर ने चर्च में एक छोटा भोजनशाला जोड़ा और इस प्रकार द्वीप पर एक सामुदायिक संन्यासी जीवन की स्थापना की।

इसके बाद, रेवरेंड फादर ने भाइयों में से एक को चर्च के अभिषेक और नव-स्थापित मठ के मठाधीश के लिए आशीर्वाद मांगने हेतु नॉवगोरोड के आर्चबिशप आयोन के पास भेजा। आर्चबिशप ने जल्द ही रेवरेंड फादर को अपना आशीर्वाद भेजा, साथ ही मठाधीश - हिरोमोंक पॉल को भी भेजा। आर्चपास्टोरल आशीर्वाद और मठाधीश, हेयरोमोंक पॉल को प्राप्त करने पर, पूजनीय ज़ोसिमा, धन्य जर्मन और संपूर्ण ब्रदरहुड ने बड़ी प्रसन्नता से हर्षित उत्सव मनाया। इसके तुरंत बाद, चर्च का समर्पण ईश्वर की महिमा के लिए किया गया, और इस प्रकार सम्मानित और गौरवशाली सोलोवेत्स्की मठ का अस्तित्व में आना हुआ।

हालाँकि, कुछ समय बाद, मठाध्यक्ष पॉल, रेगिस्तानी जीवन की कठिनाइयों को सहन न कर पाने के कारण, मठ छोड़कर नोवगोरोड लौट गए। उनके बाद थियोडोसियस आबट बने, लेकिन वह भी कुछ समय बाद इस मठ को छोड़कर चले गए। तब भाइयों ने यह सहमति व्यक्त की कि वे किसी अन्य मठ से आबट नियुक्त नहीं करेंगे, बल्कि अपने ही बीच से एक को चुनेंगे। उन्होंने आदरणीय जोसिमा को अपना आबट चुनने का निर्णय लिया।

इस बीच, कुछ भाइयों ने नोवगोरोड की यात्रा की और नोवगोरोड के आर्चबिशप से उन भिक्षु-प्रमुख को बुलाने और उन्हें इस पवित्र पद पर नियुक्त करने के लिए कहा, भले ही वह स्वयं इस सम्मानजनक कर्तव्य को स्वीकार करने के लिए अनिच्छुक हों।

आर्चबिशप ने भाइयों की इच्छा पूरी करते हुए, पूजनीय को अपने समक्ष बुलाने का संदेश भेजा; फिर, जब जोसिमा आए, तो उन्होंने उन्हें मठाध्यक्ष का पद स्वीकार करने के लिए मना लिया, जिसके बाद, विदाई की सलाह के शब्द कहने के बाद, उन्होंने उन्हें सम्मान के साथ विदा किया।

जब आदरणीय पिता नोवगोरोड से अपने मठ के लिए रवाना हो रहे थे, तो नोवगोरोड के कई नागरिकों ने उन्हें सामुदायिक मठ जीवन के लिए आवश्यक सभी चीजें प्रदान कीं: बर्तन, कपड़े, पैसा और भोजन। मठ में महाधर्माध्यक्ष के पद पर पहुँचने पर, आदरणीय पिता का भाइयों ने बड़ी खुशी से स्वागत किया।

जब माननीय पिताजी मठ में अपनी पहली लिटिर्जी का अनुष्ठान कर रहे थे, तो एक चमत्कार हुआ, जो सभी को दिखाई दिया: उनका चेहरा पवित्र आत्मा की कृपा से चमक उठा और एक देवदूत के चेहरे की तरह तेजस्वी हो गया; उसी समय, चर्च एक मीठी सुगंध से भर गया। यह, मानो, एक गवाही थी कि माननीय पिताजी ने पुरोहित और मठाधीश के पदों को यथोचित रूप से ग्रहण किया था। और ईश्वर की कृपा से परिपूर्ण ऐसे चरवाहे को पाकर संपूर्ण समुदाय हर्षित हुआ।

उस समय, कुछ व्यापारी संयोग से चर्च में थे। आदरणीय पिता ने उन्हें अपनी दिव्य लिटिर्जी से एक प्रॉस्फोरा दिया; लेकिन, लापरवाही से, वे उसे जमीन पर गिरा बैठे। भाई मकरियस, गुजरते हुए, ने जमीन पर पड़ा प्रॉस्फोरा देखा और एक कुत्ते को उसके पास खड़ा देखा, जो उसे निगलने का इरादा रखता था, लेकिन आग से झुलस गया। उस भाई ने प्रॉस्फोरा लेकर उसे रेवरेंड फादर के पास लाया और जो कुछ भी उसने देखा था, वह सब भाइयों को सुनाया, जिन्होंने इस घटना पर आश्चर्य किया और ईश्वर की महिमा की।

जब उन्होंने देखा कि भाइयों की संख्या लगातार बढ़ रही थी, यहाँ तक कि चर्च में भी प्रार्थना के लिए इकट्ठा होने वाले सभी लोगों के लिए जगह कम पड़ने लगी थी, तो पूजनीय पिताजी ने एक बड़ा चर्च बनवाया, जिसमें अब सभी के लिए जगह थी, और साथ ही कई नए कोठरी भी बनवाईं।

कुछ वर्षों बाद, आदरणीय पिता ने धन्य सावती को याद किया, जिन्होंने उसी द्वीप पर बहुत परिश्रम किया था, और इस बात पर अफसोस व्यक्त किया कि उनके पवित्र अवशेष कहीं और थे, नदी व्यागा के किनारे, जहाँ उनका निधन हुआ था, बजाय उस स्थान के जहाँ आदरणीय जोसिमा ने भाइयों के साथ तपस्या में पहले ही कई साल बिताए थे; और इसलिए उन्होंने आदरणीय साव्वातियस के अवशेषों को इस स्थान पर स्थानांतरित करने के लिए भाइयों से परामर्श करना शुरू कर

दयि। जब आदरणीय पति इस मामले पर भाइयों से परामर्श कर ही रहे थे, तब व्हाइट लेक में स्थति परमेश्वर की अति पवत्रि माता के मठ से एक संदेश आया, जसिे आदरणीय सरिलि के मठ के एक भक्षिु ने लाया था, और जो मठाध्यक्ष सरिलि और भाइयों की ओर से लखिा गया था। संदेश इस प्रकार था:

– परमपति परमेश्वर और हमारे प्रभु यीशु मसीह की कृपा और दया मसीह में प्रयि चरवाहे, ईश्वर-प्रेमी मठाधीश ज़ोसमिा और भाइयों पर हो, आप सदा आनन्दति रहें। हमने आपके बीच से हमारे पास आए लोगों से सुना है कि सोलोवेत्स्की द्वीप, जहाँ सूर्य के स्वर्ग में पहली बार चमकने के बाद से नौकायन की कठनिाई के कारण कभी भी लोगों का वास नहीं था, अब ईश्वर की व्यवस्था और परम पवत्रि माता ईश्वर की मध्यस्थता से संन्यासयिों द्वारा आबाद है; हमने सुना है कि, आपकी कड़ी मेहनत से, प्रभु परमेश्वर और हमारे उद्धारकर्ता यीशु मसीह के रूपांतरण के सम्मान में उस द्वीप पर एक मठ स्थापति कयिा गया है, जसिमें कई भाई पहले से ही मठवासी जीवन में परश्रिम कर रहे हैं; हमने सुना है कि, परमेश्वर की अति पवत्रि माता की प्रार्थनाओं से, आप सभी कुशल-मंगल हैं; आपके लिए बस एक ही चीज़ कमी है – पूज्य सव्वती के अवशेष आपके पास नहीं हैं; उन्होंने, जो आपसे बहुत पहले उस द्वीप पर कई मठवासी प्रयासों में परश्रिम कयिा और प्राचीन तपस्वी पतिाओं की तरह महान पुण्य का जीवन जयिा; अपने पूरे प्राणों से मसीह से प्रेम करने के बाद, वे संसार से अलग हो गए और प्रभु में धन्य वश्रिाम प्राप्त कयिा। हमारे मठ के कुछ भाइयों ने नोवगोरोड में रहते हुए, जॉन नामक एक धर्मपरायण व्यक्ति से सुना कि जब वह व्यापार के सलिसलिे में समुद्रों में नाव चला रहा था और व्यागा नदी पर था, तो उसे परम पूज्य साव्वातयिस को साक्षात देखने और उनसे आध्यात्मकि शक्षिा सुनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। जॉन ने कहा कि जब आदरणीय साव्वती की आत्मा ईश्वर के पास प्रस्थान कर गई, तो उनके पवत्रि शरीर को एबॉट नाथनेल ने उचति सम्मान के साथ दफनाया। जॉन ने भाइयों को समुद्र में हुई एक चमत्कार के बारे में भी बताया, जब परमेश्वर ने, आदरणीय सावती की प्रार्थनाओं के द्वारा, उन्हें और उनके भाई थयिोडोर को डूबने से बचाया; यूहन्ना ने कई अन्य बातों के बारे में भी बताया, जसिमें यह तथ्य भी शामलि था कि आदरणीय संत की कब्र पर वभिन्नि प्रकार के चमत्कार और उपचार होते हैं, क्योंकि आदरणीय साव्वाटयिस को ईश्वर की कृपा प्राप्त हुई थी, और हम स्वयं उनके पुण्य जीवन के साक्षी हैं, क्योंकि यह धन्य पति करिलिोव मठ में परमेश्वर की अति पवत्रि माता के मठ में कई वर्षों तक हमारे साथ रहे। इसलिए हम अब आपकी पवत्रिता को लखि रहे हैं और आपको सलाह देते हैं कि आप स्वयं को ऐसे उपहार से वंचति न करें, बल्कि पूज्य साव्वती के पवत्रि अवशेषों को श्रद्धापूर्वक अपने मठ में स्थानांतरति करें, ताकि उन्हें उसी स्थान पर स्थापति कयिा जा सके जहाँ उन्होंने स्वयं कई वर्षों तक सेवा की। प्रभु यीशु मसीह में आनन्दति हों और हमारे लिए प्रार्थना करें, कि परमेश्वर, आदरणीय संत के मध्यस्थता से, हमें उन सभी कष्टों से छुटकारा दलिाएँ जो हम पर आए हैं।

जब धन्य जोसमिा, सोलोवेत्स्की के मठाध्यक्ष, ने यह संदेश पूरे समुदाय को ज़ोर से पढ़कर सुनाया, तो वह और पूरा समुदाय आनंद से भर गए, और सभी ने एक साथ, एक स्वर में कहा:

'यह मनुष्यों से नहीं, बल्कि स्वयं परमेश्वर से है!'

और तुरंत ही, यात्रा के लिए एक जहाज तैयार करके, वे दूसरी कनिारी की ओर रवाना हो गए, जहाँ वे अनुकूल हवा के साथ जल्द ही पहुँच गए। व्यागा नदी के कनिारे बने चर्च में पहुँचने पर, भाइयों ने पूजनीय सावती का मकबरा खोदा, और तुरंत ही हवा एक मीठी सुगंध से भर गई। जब उन्होंने ताबूत खोला, तो उन्होंने देखा कि न तो संत का शरीर और न ही उनके वस्त्र क्षय से प्रभावति हुए थे। आश्चर्यचकति होकर, भाइयों ने ईश्वर की स्तुति की और पवत्रि अवशेषों को पवत्रि भजन गाते हुए जहाज पर ले गए। तब, अनुकूल हवा चलने पर, भक्षिुओं ने नौकायन कयिा और जल्द ही अपने मठ पहुँच गए, और वे परमेश्वर का आनंद मनाते और धन्यवाद देते रहे, जन्हिोंने उन्हें इतना आध्यात्मकि खजाना - आदरणीय सव्वती के अवशेष - प्रदान कयिा था। इन्हें 'चर्च ऑफ द डॉर्मशिन ऑफ द मोस्ट होली मदर ऑफ गॉड' के वेदी के पीछे एक वशिेष रूप से नर्मिति चैपल में रखा गया[3071] । और जो भी पीड़ति लोग श्रद्धेय की कब्र के पास आस्था के साथ आए, वे अपनी बीमारयिों से मुक्त हो गए। धन्य जोसमिा हर रात श्रद्धेय सावती की कब्र पर आते और सुबह तक वहां उत्कट प्रार्थना करते हुए कई बार प्रणाम करते थे। उपरोक्त व्यापारी जॉन, जसिने एक बार संत सावत के अंतमि संस्कार में सहायता की थी और समुद्र में डूबने से खुद और अपने भाई थयिोडोर को बचाने के लिए उनके प्रति बहुत प्रेम रखता था, ने पूज्य संत की एक प्रतमिा बनाई और उसे मठाधीश जोसमिा के पास लाया, साथ ही मठ को मठीय समुदाय के लिए बहुत

[3071] परम पूज्य सावती के पवत्रि अवशेष 1465 में स्थानांतरति कए गए थे।

आवश्यक कई वस्तुएँ भी दान कीं। मठाध्यक्ष ज़ोसमिा ने संत साव्वतयि की पवत्रि प्रतमिा प्राप्त कर, उसे चूमा और संत की अवशेषों के ऊपर रख दयिा। फरि, उस प्रतमिा को संबोधति करते हुए मानो वह स्वयं संत हों, उन्होंने कहा:

हे ईश्वर के सेवक! यद्यपि आपने इस सांसारकि जीवन को समाप्त कर दयिा है और आपका शरीर देहांत को प्राप्त हो गया है, परन्तु आत्मा में हमसे दूर न जाइए! हमें हमारे ईश्वर मसीह तक मार्गदर्शन कीजिए, हमें प्रभु की आज्ञाओं के मार्ग पर चलना और हमारे स्वामी और प्रभु के पदचन्हिों पर अपना क्रूस धैर्यपूर्वक उठाना सखिाइए। हे पूजनीय, प्रभु यीशु मसीह और उनकी अतपिवत्रि माता के समक्ष साहस रखते हुए, हमारे लिए मध्यस्थ और वकील बनें, हम अयोग्यों के लिए जो इस पवत्रि मठ में रहते हैं, जसिकी आप स्थापना थे। ईश्वर के समक्ष हमारे सहायक और मध्यस्थ बनें, ताकि हम, इस स्थान पर रहते हुए, आपकी प्रार्थनाओं द्वारा दुष्टात्माओं और दुष्ट मनुष्यों से सुरक्षति रह सकें, और पवत्रि त्रमिूर्ति—पति, पुत्र और पवत्रि आत्मा—की महमिा करते रहें।

सोलोवेत्स्की मठ की समृद्धि को देखकर, जो नए आगमन से दनि-प्रतदिनि बढ़ रहा था और नए सदाचारी संतों से सुशोभति था, साथ ही पूजनीय जोसमिा के पराक्रमों को भी देखकर, सभी भलाई का शत्रु, शैतान, संतों के प्रति ईर्ष्या से भर गया; लेकनि चूंकि वह स्वयं मठ के खलिाफ कुछ नहीं कर सकता था—क्योंकि उसे धन्य जोसमिा और अन्य पराक्रमी तपस्वयिों द्वारा हमेशा भगा दयिा जाता था और वह लज्जति होता था—वह दुष्ट लोगों की सहायता का सहारा लेने लगा, और उनमें बुराई करने और पवत्रि मठ को नुकसान पहुँचाने की इच्छा जगाने लगा। शैतान के उकसावे पर, कई बोयारों के नौकर और कैरेलयिन भूमि के नविासी सोलोवेत्स्की द्वीप पर आने लगे; वे झीलों में मछली पकड़ते थे और साथ ही मठ की ज़रूरतों के लिए मछली पकड़ने पर भक्षिुओं को रोकते थे। इन लोगों ने खुद को द्वीप का स्वामी घोषति कर लयिा; उन्होंने आदरणीय जोसमिा और अन्य भक्षिुओं का तरिस्कारपूर्ण शब्दों से अपमान कयिा और उन्हें बहुत परेशानी दी, तथा मठ को बर्बाद करने और भक्षिुओं को वहाँ से पूरी तरह से भगा देने का वादा कयिा। इसलिए, पूजनीय जोसमिा को उनके उत्पीड़क से मदद और सुरक्षा मांगने के लिए आर्चबशिप थयिोफलिस से मलिने नोवगोरोड की यात्रा करनी पड़ी। अपने कुछ शष्यिों को साथ लेकर, वे नोवगोरोड के लिए रवाना हुए और आर्चबशिप के आवास पर पहुंचने पर, उन्होंने उनके सामने नमन कयिा और दुष्ट लोगों के हाथों पीड़ति मठ की ओर से अपनी वनिती व्यक्त की। आर्चबशिप ने उनसे कहा: 'ईश्वर की कृपा से, आदरणीय पति, मैं हर तरह से आपके मठ की सहायता करने के लिए हमेशा तैयार हूँ; लेकनि सबसे पहले, आपको हमारे शहर पर शासन करने वाले बोयारों और कुलीनों से मदद लेनी होगी।'

आदरणीय जोसमिा बोयारों के पास गए और उनके घरों में जाकर, उन्होंने उनसे वनिम्रतापूर्वक नविेदन कयिा कि वे मठ की रक्षा करें और दुष्ट लोगों को इसे बर्बाद न करने दें। शहर पर शासन करने वाले सभी बोयारों ने आदरणीय संत को अपनी सहायता का वादा कयिा।

रेवरेंड जोसमिा को एक नश्चिति बोयार की पत्नी - मार्था नाम की एक वधिवा - से भी मलिने जाना पड़ा, क्योंकि उसके नौकर और उसकी ज़मीन पर रहने वाले कसिान भक्षिुओं पर बुरी तरह अत्याचार कर रहे थे। जब उसके नौकरों ने उसे बताया कि रेवरेंड उससे मलिने आए हैं, तो उसने उन्हें अपमानपूर्वक अपने घर से नकिाल देने का आदेश दयिा। ईश्वर के वनिम्र सेवक ने इस अपमान को धैर्यपूर्वक सहन कयिा और अपने शष्यिों से कहा: 'वह दनि आएगा जब इस घर के नविासी अपने आँगन में फरि नहीं चलेंगे: इस घर के दरवाज़े बंद हो जाएँगे और फरि कभी नहीं खोले जाएँगे, और यह घर सुनसान पड़ा रहेगा।'

समय आने पर, जैसा कि आदरणीय ने पूर्वानुमान लगाया था, वैसा ही हुआ।

इस बीच, आर्चबशिप ने बोयारों को अपने समक्ष बुलाया और उन्हें बोयारों के नौकरों और नविासयिों द्वारा आदरणीय जोसमिा के मठ पर कए गए सभी अन्याय और शकिायतों के बारे में सूचति कयिा। बोयारों ने, रेवरेन्ड को अपनी सहायता और समर्थन देने का सर्वसम्मति से नर्णिय लेकर, उन्हें पूरे द्वीप का पूर्ण स्वामित्व प्रदान कयिा; उन्होंने एक चार्टर द्वारा द्वीप के स्वामित्व के उनके अधकिार की पुष्टि की, जसि पर उन्होंने आठ मुहरें लगाईं: पहली आर्चबशिप की, दूसरी पोसाड्नकि की, तीसरी हजार के कमांडर की, और शहर के पाँच जलिों की पाँच अन्य मुहरें। इसके अलावा, बोयारों ने पूजनीय पताजी को मठ के लिए आवश्यक सभी चीजें भेंट कीं: धार्मकि अनुष्ठान के लिए बर्तन, पवत्रि वस्त्र, सोना और चांदी, साथ ही भोजन की एक बड़ी आपूर्ति, और उन्होंने हर संभव तरीके से मठ की सहायता करना जारी रखने का वादा कयिा।

यह सब सुनकर, और उपरोक्त बोयार की पत्नी मार्था को रेवरेंड जोसमिा के पुण्य जीवन के बारे में पता चलने पर, उसे एहसास हुआ कि वह ईश्वर के एक सच्चे सेवक से ही मलि रही थी; और, पश्चाताप करने के बाद, उसने अपने नौकर

को रेवरेंड जोसमिा के पास भेजा, और उन्हें अपने घर पर एक भोज के लिए आमंत्रति कयिा। जैसे ही आदरणीय महोदय उनके घर में प्रवेश हुए, उन्होंने और उनके बच्चों ने उनका आशीर्वाद लयिा और उन्हें सम्मान के स्थान पर बठिाया। जहाँ एक ओर दावत में बुलाए गए सभी लोग तृप्त होकर खाते-पीते और आनंद लेते रहे, वहीं आदरणीय महोदय ने अपनी आदत के अनुसार बहुत कम खाया और पूरा समय चुपचाप और नम्रता से बैठे रहे। लेकनि जब उन्होंने मेज पर बैठे बोयारों पर नज़र डाली, तो वह बहुत हैरान रह गए, क्योंकि उन्होंने एक भयानक दृश्य देखा; जसिके बाद उन्होंने अपनी नज़रें झुका लीं और कसिी से कुछ नहीं कहा। फरि से देखने पर, पादरी ने वही दृश्य देखा और एक बार फरि अपना सरि झुका लयिा; और अंत में, तीसरी बार, उन्होंने वही भयानक दृश्य देखा, अर्थात्: उन्होंने छह सबसे महत्वपूर्ण बोयारों को, जो उनके साथ मेज पर बैठे थे, उनके सरि के बनिा देखा। पादरी जो उन्होंने देखा था उससे स्तब्ध थे, यह सोचकर हैरान थे कि वे लोग बनिा सरि के भोज कैसे कर सकते थे। लेकनि , उन्होंने तुरंत समझ लयिा कि इस दृष्टि का क्या मतलब था; सरि झुकाकर, उन्होंने आह भरी, आँसू बहाए, और उस क्षण से उन्होंने अपने मेज़बानों की लगातार वनितयिों के बावजूद, जो कुछ भी उन्हें परोसा गया, उसमें से और कुछ नहीं खाया।

भोज के बाद, मार्था ने रेवरेंड से अपने द्वारा पहुँचाई गई ठेस के लिए माफी मांगी और मठ को सुमा नदी के कनिारे एक भूखंड भेंट कयिा; फरि उसने उन्हें शांतपिूर्वक वदिा कयिा। जब रेवरेंड उसके घर से चले गए, तो उनके एक शष्यि, जसिका नाम डैनयिल था और जसिसे रेवरेंड को वशिेष स्नेह था, ने उनसे जदि करके पूछा:

'भोज के दौरान, मेज़ पर बैठे बोयारों पर तीन बार नज़र डालने के बाद, आपने अपना सरि क्यों झुकाया, आह क्यों भरी, आँसू क्यों बहाए, और फरि आपको जो कुछ भी परोसा गया, उसे खाने से क्यों इनकार कर दयिा?'

रेवरेंड ने उत्तर दयिा:

'मेरे बच्चे! तुम बहुत ज़दि कर रहे हो, ठीक वैसे ही जैसे नबी एलीशा ने नबी एलयिा से पूछा था[3072] ; इसलिए, मैं तुमसे भवष्यि में पूरा होने वाले ईश्वर के अकथनीय वधिानों को नहीं छपिाऊँगा; हालाँकि, जो मैं तुम्हें बताने वाला हूँ, उसे तब तक गुप्त रखना जब तक ईश्वर के वधिान पूरे नहीं हो जाते। मैंने छह सबसे महत्वपूर्ण बोयारों को एक भोज में उनके सरि के बनिा बैठे देखा; और जब मैंने यह देखा, तो मैं स्तब्ध रह गया और न तो खा सका और न ही पी सका। मुझे लगता है कि इन लोगों के सरि जल्द ही काट दिए जाएँगे। लेकनि सावधान रहना, मेरे बच्चे, जो कुछ तुमने मुझसे सुना है, वह कसिी को मत बताना।

तब रेवरेंड सुरक्षति मार्ग की एक चट्ठिी और नोवगोरोड में उन्हें दिए गए कई उपहारों के साथ अपने मठ लौट आए।

कुछ समय बाद, पादरी को पता चला कि मॉस्को के महान राजकुमार, इवान वासलिीवचि[3073] , एक बड़ी सेना के साथ नोवगोरोड पहुँचकर, बाकी बोयारों में डर पैदा करने के लिए कुछ को मौत की सज़ा दे दी थी; वशिेष रूप से, उन छह बोयारों को जन्हिें पादरी ने बोयारनिा मार्था के भोज में बनिा सरि के बैठे देखा था, तलवार से सरि कलम कर दयिा गया था। बोयारनिा मार्था को स्वयं, महा राजकुमार के आदेश पर, अपने बच्चों के साथ नज़िनी नोवगोरोड नर्विासति कर दयिा गया; उसकी संपत्ति लूट ली गई। इस प्रकार, उसका घर सुनसान पड़ा था, ठीक उसी तरह जैसे कि आदरणीय जोसमिा ने उस क्षण भवष्यिवाणी की थी जब उन्हें अपमानति होकर उसके घर से बाहर नकिाल दयिा गया था।

जब आदरणीय पति पृथ्वी पर पर्याप्त समय तक रहे, कड़ी मेहनत कर चुके थे और हर सद्गुण में नपिुण हो चुके थे, तो उनके परमधाम जाने का समय नज़दीक आ गया। आदरणीय पति ने पहले से ही अपनी कफ़न तैयार कर रखी थी और उसे अक्सर नहिारते हुए रोते थे, हमेशा मृत्यु पर ध्यान लगाते और उसकी तैयारी में लगे रहते थे। यह महसूस करते हुए कि उनका अंत नकिट है, श्रम और वृद्धावस्था से थक चुके, आदरणीय पति ने भाइयों को अपने पास बुलाया और उनसे कहा:

'हे मेरे बच्चों और भाइयों, मैं इस क्षणभंगुर जीवन से वदिा ले रहा हूँ, और मैं तुम्हें सर्व-दयालु ईश्वर और ईश्वर की अति-पवित्र माता के सुपुर्द करता हूँ। मुझे बताओ: तुम मेरे बाद कसिको अपना मठाधीश बनाना चाहते हो?'

लेकनि भाइयों ने, ऊँचे स्वर से रोते हुए, एक स्वर में कहा:

'हम तो, हमारे पति और चरवाहे, आपके साथ ही मरना चाहेंगे। परन्तु यह हमारे वश में नहीं है, क्योंकि परमेश्वर का न्याय मनुष्यों के न्याय के समान नहीं है।' जसिने आपको स्वर्गीय नविासों में आपके प्रस्थान की सूचना दी है, हमारे

[3072] उसे एलयिा (2 राजा 2:9–13) की तुलना में अधकि मात्रा में भवष्यिवाणी की आत्मा प्रदान कएि जाने पर।

[3073] इवान वासलिीवचि चौथे (भयानक) ने 1533 से 1584 तक शासन कयिा।

प्रभु मसीह, हमारे ईश्वर, वही हमें एक ऐसा मार्गदर्शक भी प्रदान कर सकते हैं जो हमें मोक्ष तक ले जाएगा। परन्तु आपकी प्रार्थनाएँ हमारी रक्षा करें, और आपका आशीर्वाद हम पर बना रहे, क्योंकि आप प्रभु में हमारे पिता हैं। और जैसे आपने इस जीवन में हमारी देखभाल की, वैसे ही, हम आपसे विनती करते हैं, परमेश्वर के पास अपने प्रस्थान के बाद हमारे लिए मध्यस्थता करें। हमें अनाथ न छोड़ें।

यह कहने के बाद, भाइयों ने चुप्पी साँस ली, परन्तु वे रोना और विलाप करना बंद नहीं हुए। तब आदरणीय पिता ने उनसे फिर कहा:

'मेरे बच्चों! मैं एक बार फिर से कहता हूँ कि मैं तुम्हें प्रभु और उनकी परम पवित्र माता के हवाले करता हूँ; आर्सेनियस तुम्हारा मठाध्यक्ष रहे, क्योंकि वह एक अति योग्य पुरुष है और मठ तथा भाइयों का शासन करने में सबसे सक्षम है।'

यह कहकर, रेवरेंड फादर ने मठाध्यक्ष का पद आर्सेनियस को सौंप दिया और उससे कहा:

'देखो, भाई, मैं तुम्हें इस पवित्र मठ और यहाँ इकट्ठी हुई संपूर्ण बंधुत्व के निर्माता और नेता के रूप में नियुक्त करता हूँ। बड़ी सावधानी बरतें कि प्रेरितों की शिक्षा और पितरों की परंपरा पर आधारित मठ के किसी भी नियम को न भुलाया जाए—जैसे कि चर्च में सामूहिक गायन, भोजन के समय खाने-पीने, और वह संपूर्ण मठ नियम जो मैंने आपको सिखाया है। ध्यान रखना कि मिठ में सब कुछ यथावत् बना रहे। हे प्रभु, सर्वपवित्र कन्या और हमारी माता, परमेश्वर की माता, तथा सभी संतों की प्रार्थनाओं के द्वारा, और साथ ही उनके प्रिय सेवक, आदरणीय सव्वातियस की प्रार्थनाओं के द्वारा, आप सभी का मार्गदर्शन करें कि आप उनके आज्ञाओं का पालन करें। हमारे प्रभु यीशु मसीह आपको शत्रु की सभी बदनामियों से सुरक्षित रखें और अपने दिव्य प्रेम में आपको दृढ़ करें। जहाँ तक मेरी बात है, यद्यपि मैं शरीर से आपसे विदा हो रहा हूँ, मृत्यु के स्वाभाविक कर्तव्य को पूरा करते हुए, मैं आत्मा में निरंतर आपके साथ रहूँगा। और मैं बहुत चाहूँगा, यदि मुझे परमेश्वर की कृपा प्राप्त हुई है, कि मुझसे आपके अलग होने के बाद यह मठ और भी महान हो जाए, कि मसीह के प्रति प्रेम में एकजुट भाइयों की भीड़ यहाँ इकट्ठा हो, ताकि यहाँ आध्यात्मिक वरदानों की प्रचुरता हो और जीवन की आवश्यकताओं की भी भरमार हो।

यह कहने के बाद, आदरणीय पिता ने भाइयों को सदाचारी जीवन के बारे में समझाने में काफी समय बिताया। फिर, प्रत्येक भाई को चूमकर और आशीर्वाद देकर, आशीषित ने स्वर्ग की ओर अपने हाथ उठाए और मठ तथा अपने पूरे झुंड के साथ-साथ अपने लिए भी प्रार्थना करना शुरू कर दिया। फिर, क्रॉस का चिह्न बनाकर, आदरणीय पिता ने भाइयों की ओर मुड़कर कहा:

'तुम्हें शान्ति मिले!'

तब, स्वर्ग की ओर अपनी दृष्टि उठाकर, संत ने कहा:

'हे प्रभु, मानव जाति के प्रेमी, यह अनुग्रह कर कि जब तू जीवितों और मरे हुओं का न्याय करने तथा प्रत्येक को उसके कर्मों के अनुसार पुरस्कृत करने के लिए अपनी महिमा में आवे, तब मैं तेरे दाहिने हाथ पर खड़ा होऊँ।'

ये शब्द कहने के बाद, संत अपने बिस्तर पर लेट गए और अपनी पवित्र आत्मा को अपने प्रभु के हाथों में सौंप दिया, जिनसे उन्होंने अपनी पूरी आत्मा और पूरे हृदय से प्रेम किया था, और जिनके प्रति उन्होंने अपने शुरुआती वर्षों से ही स्वयं को समर्पित कर दिया था, और सद्गुणों के कार्यों में परिश्रम किया[3074] ।

परम पूज्य के निधन पर उनके मठ के भाइयों ने गहरा शोक मनाया; अंत में, अंतिम संस्कार के उपयुक्त भजन गाने के बाद, भाइयों ने परम पूज्य के सम्मानित शरीर को उस कब्र में सुला दिया जिसे उन्होंने जीवित रहते हुए अपने हाथों से खोदा था, प्रभु के रूपांतरण के चर्च के वेदी के पीछे। वहाँ, भाइयों ने बाद में पूज्यनीय की अवशेषों के ऊपर एक चैपल का निर्माण किया, वहाँ प्रतिमाएँ और दीपक स्थापित किए, और इस स्थान पर आकर पूज्यनीय से प्रार्थना की। परम पूज्यनीय की कब्र पर बार-बार चिह्न और चमत्कार होते थे, क्योंकि परम पूज्यनीय ने स्वयं, जब उनकी आत्मा प्रभु के पास प्रस्थान कर रही थी, भाइयों से कहा था कि वह उस स्थान को नहीं छोड़ेंगे जहाँ उन्होंने परिश्रम किया था, बल्कि आत्मा में अपने शिष्यों के साथ रहने का वादा किया था; और वास्तव में, पूज्य ने अपना वादा पूरा किया, वे अपने स्वर्गीय निवासों से अपने सांसारिक निवास पर आते थे और अदृश्य रूप से उसके पास मौजूद रहते थे; हालाँकि, कभी-कभी संत भूमि

[3074] आदरणीय जोसिमा का 1478 में निधन हो गया। 8 अगस्त 1566 को, उनके अवशेषों को भव्यतापूर्वक जोसिमा और सव्वाती को समर्पित कैथेड्रल चर्च की पार्श्व-गिरिजाघर में स्थानांतरित किया गया, जहाँ वे आज भी एक चाँदी के अवशेष-पात्र में विराजमान हैं।

पर और समुद्र में दोनों जगह दृश्य रूप में प्रकट होते थे, और सभी जरूरतमंदों की मदद करते थे। कई मौकों पर, जब वे खतरे में होते थे, तो पूज्य पताजी समुद्र पार नाव चलाते हुए दखिाई दएि, तूफान को शांत कयिा और जहाजों को डूबने से बचाया; अन्य समयों में वे चर्च में प्रकट हुए, अन्य भाइयों की कतारों के बीच प्रार्थना करते हुए। उनके नधिन के तुरंत बाद, उनकी मृत्यु के नौवें दनि, आदरणीय संत दानयिल नामक एक भक्षिु के सामने प्रकट हुए और उन्होंने उसे बताया कि कैसे ईश्वर की कृपा से, वह नरि्भय होकर वायु के आत्माओं से गुज़र गए, उनकी चालाकयिों से बच नकिले, और संतों में गनि गए।

तब आदरणीय संत, मानो, वृद्ध तारासयिस को उनकी अपनी ताबूत पर, और उसी प्रकार अपने शषि्य गेराسيم को भी प्रकट हुए। बाद वाले को, आदरणीय संत एक रवविार को, प्रातःप्रार्थना के बाद प्रकट हुए, और उन्होंने स्वयं को इस प्रकार प्रस्तुत कयिा मानो वे आदरणीय साव्वातयिस की कब्र से अपनी कब्र की ओर जा रहे हों; जसि पर संत ने गेराسيم की ओर एक नज़र डालते हुए, उससे कहा:

'मेरे बच्चे, यत्न करो, और तुम्हें भी अपने श्रम का फल मलिेगा।'

पवत्रि व्यक्ति उसी गेराسيم के पास दूसरी बार महान गुरुवार को दव्यि लटिर्जी के दौरान प्रकट हुए; इस अवसर पर, पवत्रि व्यक्ति चर्च में प्रार्थना कर रहे लोगों के बीच थे। जब भाइयों ने पवत्रि कम्युनयिन ग्रहण करना शुरू कयिा, तो पवत्रि जोसमिा ने गेराسيم से कहा:

'जाओ और स्वयं पवत्रि सहभाग ग्रहण करो।'

तब आदरणीय उस कलजि के पास पूरे समय खड़े रहे, जसिसे भ्राते परमप्रसाद ग्रहण कर रहे थे; और जब उन्होंने सभी ने इसे ग्रहण कर लयिा, तो वे अचानक अदृश्य हो गए।

एक अवसर पर, जब भक्षिु दोसफिेउस चर्च के नार्टेक्स में संध्या के समय एक ऐसे भाई के लिए प्रार्थना कर रहे थे जो एक राक्षस के वश में था, तो आदरणीय उन्हें दखिाई दएि और कहा:

'जसि भाई के लिए आप प्रार्थना कर रहे हैं, उसका चंगा होना उसके आध्यात्मकि भले के लिए नहीं होगा; उस भाई को थोड़ी और देर के लिए उसी पीड़ा में रहना चाहिए।'

एक वृद्ध, थयिोडुलस, गलती से फसिलकर ज़मीन पर गरि गए और बुरी तरह चोटलि हो गए, जसिसे वे अपनी नयिमति प्रार्थना सभा में शामलि नहीं हो पाते थे और हर समय बस्तिर पर पड़े रहने के लिए मजबूर थे। एक बार पूजनीय ज़ोसमिा देर रात उनके सेल में आए और अंदर प्रवेश करने के बाद, प्रार्थना करके उन्हें ठीक कर दयिा।

इन और कई समान उदाहरणों से, भाइयों को अपनी आँखों से वश्विास हो गया कि परम पूज्य पता ने उस स्थान को नहीं भूले थे जहाँ उन्होंने अपने सांसारकि जीवन के दौरान सेवा की थी, क्योंकि उन्होंने अपने कसिी भी भाई को संकट में मदद के बनिा नहीं छोड़ा, बल्कि हर उस व्यक्ति को शीघ्र सहायता प्रदान की जसिने वश्विास के साथ उनसे प्रार्थना की।

मठ के संतों में से एक, मट्रिोफान नामक संत ने अपने भाइयों से कहा कि जब वह संसार में था और एक व्यापारी के रूप में समुद्रों में जहाज चला रहा था, तो एक बार ऐसा प्रचंड तूफान आया कि लहरों ने उसके जहाज को लगभग पूरी तरह से घेर लयिा, और जहाज पर सवार सभी लोग, जो पहले ही अपनी जान से मायूस हो चुके थे, मदद के लिए प्रभु और उनकी परम पवत्रि माता से आँसू भरी प्रार्थना करने लगे। जहाज तीस दनिों तक लहरों में उछाला जाता रहा। यात्रयिों को सोलोव्की के चमत्कार करने वाले आदरणीय जोसमिा की याद आई, और उन्होंने मदद के लिए उनकी पुकार लगाई। कुछ ही समय बाद, उन्होंने माननीय पता को जहाज के पछिले हस्सि में बैठे देखा, जो अपनी चोगे से लहरों को मार रहे थे; जसिके परणिामस्वरूप, उथल-पुथल शांत हो गई। और माननीय पता ने जहाज को तब तक चलाया जब तक वह कनिारे पर नहीं पहुँच गया। इसके बाद, वह अद्भुत नावकि जहाज से गायब हो गया।

ऐसा हुआ कि समुद्र पार करते समय भक्षिु एलशिा गंभीर रूप से बीमार पड़ गए और उन्होंने स्कीमा ग्रहण करने की इच्छा व्यक्त की, लेकनि जहाज के तट पर पहुँचने से पहले ही उनका नधिन हो गया। आदरणीय जोसमिा ने उसे मृतकों में से जीवति कर दयिा, और वह भक्षिु तब तक जीवति रहा जब तक उसने स्कीमा ग्रहण नहीं कर ली और पवत्रि सहभागति प्राप्त नहीं कर ली; इसके बाद, वह भक्षिु एक बार फरि प्रभु में वश्विराम कर गया।

नकिॉन नामक एक गृहस्थ राक्षसों द्वारा बुरी तरह से पीड़ति था। जब उसे आदरणीय संत की अवशेषों के सामने लाया गया, तो वे उसे दखिाई दएि और उसे उसकी पीड़ा से मुक्त कर, उसे अच्छे स्वास्थ्य के साथ घर भेज दयिा।

एक कसिान, जो अंधा हो गया था, आदरणीय संत के मकबरे पर आया, चंगा हो गया, और अपनी दृष्टि वापस पा ली। हालाँकि, अपने अवशि्वास के कारण, वह कसिान दूसरी बार अंधा हो गया। एक बार फरि आदरणीय संत के मकबरे पर लौटकर और पश्चाताप के साथ प्रार्थना करके, वह कसिान दूसरी बार चंगा हो गया। सम्माननीय पति ने कई अन्य बीमार लोगों को भी ठीक कयि, क्योंकि उन्होंने कभी भी वशि्वास के साथ उनकी ओर मुड़ने वाले कसिी की मदद करने से इनकार नहीं कयि।

कई लोगों को पूजनीय जोसमि न केवल अकेले बल्कि पूजनीय सव्वती के साथ भी दखिाई दएि; उदाहरण के लएि, एक अवसर पर भाई जोसेफ, कुज़ोवे द्वीप (सोलोवेत्स्की द्वीप से तीस वर्स्ट दूर) पर रहते हुए, प्रार्थना करने के लएि रात में एक पहाड़ पर चढ़े; सोलोवेत्स्की मठ की ओर देखते हुए, उसने मठ के ठीक केंद्र में, दो अग्नि के स्तंभ देखे जो पृथ्वी से उठकर स्वर्ग तक जा रहे थे; जब इस भाई ने अन्य भक्षिुओं को जो देखा था वह बताया, तो उन्होंने कहा: 'ये सोलोवेत्स्की मठ के संस्थापक और मठाधीश, जोसमि और सव्वाती हैं, जो अपनी कब्रों से प्रकाशमान हो रहे हैं, क्योंकि वे ईश्वर की कृपा की प्रातःसे प्रबुद्ध, आध्यात्मकि स्तंभ हैं।'

महान लेंट के बाद, दो भाइयों, सव्वाती और फेरापोंट को मठ के लएि सामान प्राप्त करने के लएि वरि्मू भेजा गया, क्योंकि वहाँ एक मठ का फार्मस्टेड था जहाँ वभिन्नि सामान संग्रहीत थे। जैसे ही वे नाव से आगे बढ़े, यात्रयिों ने शूज्मूई द्वीप के पास पहुँचकर उसे पार कयि, जो सोलोवेत्स्की द्वीप से साठ वर्स्ट की दूरी पर स्थति है; उस क्षण, यात्रयिों में से एक, सावतीय ने उस द्वीप पर आग के दो स्तंभ देखे, जो वशिेष रूप से बड़े नहीं थे। जैसे ही वे द्वीप के करीब पहुँचे, यात्रयिों ने एक छोटी झोपड़ी देखी और, उसके अंदर, दो नग्न और भूखे आदमी थे, जो अपने पैरों की बीमारयिों से बुरी तरह पीड़ति थे, और मुश्कलि से जीवति थे। सर्दयिों की शुरुआत में, ये दोनों आदमी समुद्र पार कर रहे थे, लेकनि जब एक तूफान आया, तो लहरों ने उनका जहाज तोड़ दयि; कनिारे तक बहकर आने के बाद, वे कनिारे पर उतर गए और वहीं सर्दयिाँ बतिाईं, क्योंकि उन्हें कोई ऐसा नहीं मलिा जो उन्हें वहाँ से ले जाए। जब इन दुर्भाग्यशाली आदमयिों ने भक्षिुओं को देखा, तो उन्होंने उनसे पूछा:

'तुम कौन हो? क्या हो सकता है कि सोलोव्की के बुजुर्गों ने तुम्हें हमारे पास भेजा हो?'

तब सव्वतीय और फेरपोंट ने उनसे पूछा:

'आप कनि सोलोवेत्स्की बुजुर्गों की बात कर रहे हैं?'

बीमार लोगों ने उत्तर दयि:

'दो सम्माननीय संन्यासी हमसे मलिने आए; एक का नाम सव्वती और दूसरे का जोसमि था। जब भी वे हमसे मलिने आते, हमारी पीड़ा कम हो जाती; हमें न तो भूख लगती थी और न ही ठंड लगती थी। आप के आने से पहले आज वे हमारे साथ थे और उन्होंने हमसे कहा: "दुखी मत हो; हम जल्द ही तुम्हें बुलाएंगे।""

यह सुनकर भक्षिु चकति हो गए; उन्होंने बीमारों को भोजन दयि, उन्हें अपनी नाव पर चढ़ाया और फरि उन्हें अपने मठ ले गए।

आदरणीय जोसमि और सव्वती ने मारयि नामक एक राक्षस-ग्रस्त महलि को ठीक कयि, जसिके पति ओनसिीमस थे। इसी तरह, आदरणीय संतों ने जोसमि की एक पूर्व दासी, यरि्मयाह की बेटी को भी मृतकों में से जीवति कर दयि, जसिने राक्षसों के प्रभाव में आकर अपनी जान ले ली थी। यहाँ तक कि उसके घाव भी पूरी तरह से भर गए, क्योंकि पूजनीय पतिाजी उसे मृतकों में से जलिाने के बाद एक सपने में दखिाई दएि; उन्होंने उसके हाथों में एक पात्र रखा जसिमें एक वशिेष मरहम था और कहा:

'अपने घावों पर लेप लगाओ, क्योंकि तुम्हारे पति और माता के आँसुओं के कारण ही हम तुम्हें चंगा करने आए हैं।'

उस कन्या ने, संतों के आदेश को (जैसा कि वह अपने सपने में हुआ था) पूरा करने के बाद, तीन दनिों के बाद पूरी तरह से स्वास्थ्य प्राप्त कर लयि।

बेसलि नाम का एक व्यक्ति, जो पहले एक डाकू था, पश्चाताप करके सोलोवेत्स्की मठ में आया और वहाँ मठीय संन्यास ग्रहण कर लयि। लेकनि, कुछ समय बाद, शैतान के प्रलोभन में आकर, उसने मठ से भागने का नश्चिय कयि। एक नाव तैयार करके, उसने उसमें मठ का कुछ सामान - कतिाबें, कपड़े और बर्तन - गुप्त रूप से रख दयि और रात में मठ से भागने का इरादा कयि। फरि वह मठ से पंद्रह वर्स्ट की दूरी पर स्थति अंज़ेर्स्की द्वीप की ओर चल पड़ा; वहाँ उसे एक अदम्य नींद ने घेर लयि; नाव को कनिारे पर बाँधने के बाद, भक्षिु जमीन पर लेट गया और सो गया। सपने में, दोनों पूजनीय पति उसके सामने प्रकट हुए; उनमें से एक – जोसमि – ने गुस्से से उसे देखा और कहा:

'अभागे! तुम मुझसे चोरी कर रहे हो! मैं बनाता हूँ, और तुम नष्ट करते हो!'

उस दर्शन में, बेसलि ने आदरणीय से क्षमा याचना की, जसि पर आदरणीय ने उत्तर दयिा:

'तुम्हें क्षमा कर दयिा जाएगा, लेकनि तुम्हें तीन दनि तक इसी जगह रहना होगा।'

जब वह जागा, तो बेसलि ने न तो कसिी को देखा और न ही कनिारे बँधी नाव मलिी; फरि, जमीन पर बैठकर, वह जोर-जोर से रोने लगा, और उसने तीन दनि बीत जाने तक इस जगह को छोड़ने का कोई इरादा नहीं कयिा।

इस बीच, उस द्वीप के पास से गुज़र रहे कुछ व्यापारयिों ने उस भक्षिु को वहाँ से उठा लयिा और उसे मठ में ले आए, जहाँ, पश्चाताप करने के बाद, उसने अपने पापों को भाइयों के सामने स्वीकार कयिा और उन्हें अपने सामने आदरणीय पतिाओं के प्रकट होने की घटना सुनाई।

इस समय के आसपास, मठ के मछुआरे उस द्वीप से लगभग पाँच सौ वर्स्ट दूर उंबा नदी में मछली पकड़ रहे थे। उनके नेता एल्डर फोटयिस थे। एक सपने में उन पवत्रि पुरुषों ने उनसे कहा:

'देखो, हम तुम्हारे लिए मछली पकड़ने की एक नाव लाए हैं, क्योंकि हम जानते हैं कि तुम्हें मछली पकड़ने के लिए एक और नाव की ज़रूरत है; बस इसका ध्यान रखना कि इसमें जो कुछ भी है वह खो न जाए, बल्कि सब कुछ सुरक्षति मठ में पहुँचा देना।'

जागने पर, फोटयिस ने अन्य मछुआरों को अपने दर्शन के बारे में बताया। जब वे कनिारे पर गए, तो मछुआरों ने वास्तव में वहाँ एक नाव देखी, जसिमें मठ की कई वस्तुएँ थीं। बाद में मछुआरों ने इन वस्तुओं को मठ में लाया और उन पवत्रि पुरुषों के प्रकट होने की कथा सुनाई।

सुमी नदी के पास समुद्र के कनिारे रहने वाले थयिोडोर नामक एक व्यक्ति ने नम्निलखिति बातें बताईं:

उसने कहा, 'ऐसा हुआ कि मैं माल के साथ समुद्र पार कर रहा था। अचानक एक भयंकर तूफ़ान उठ खड़ा हुआ; लंगर डालकर रुक जाने के बाद, हम बहुत परेशान हो गए और ईश्वर से प्रार्थना करने लगे, साथ ही मदद के लिए संत ज़ोसमिस और साव्वैटयिस को भी पुकारने लगे। जहाँ तक मेरी बात है, मैं जहाज के अंदर चला गया, और झपकी ले ली, और अचानक मैंने दो वृद्ध पुरुषों को देखा, जो जहाज पर खड़े थे और नावकि से कह रहे थे: 'जहाज की नोक को हवा की दशिा में मोड़ दो।' तुरंत जागकर, मैं उन लोगों के पास गया जो जहाज से पानी नकिाल रहे थे। उनमें से एक, जो बहुत थका हुआ था, झपकी ले गया था, लेकनि जब वह जागा, तो उसने मुझसे कहा: 'मैंने अभी-अभी जहाज पर दो वृद्ध पुरुषों को एक-दूसरे से बात करते देखा है, और उनमें से एक ने दूसरे से कहा: "भाई, इस जहाज की देखभाल करना, जब तक मैं दव्यि प्रार्थना सभा के लिए सोलोव्की की ओर जल्दी नहीं चला जाता।"' यह सुनकर हम बहुत चकति और प्रसन्न हुए, क्योंकि अब हमें वनिाश से उद्धार की आशा होने लगी। और वास्तव में, जल्द ही तूफान थम गया, शांति लौट आई, और हम ईश्वर और उनके पवत्रि संतों की स्तुति और धन्यवाद करते हुए अपनी यात्रा पर चल पड़े।"

वरषि्ठ फलिमिोन ने नम्निलखिति सुनाया:

'जब मैं एक तपस्वी के रूप में रेगस्तिान में रहता था, तो कभी-कभी शैतान के काम से, मैं गहरे नरिाशामय भाव से ग्रस्त हो जाता था; इस नरिाशा का कारण यह था: भाइयों में से एक ने अपना पैसा—बारह सक्कि—मेरे पास सुरक्षति रखने के लिए सौंपा था; कुछ समय बाद, वह पैसा कसिी अज्ञात तरीके से गायब हो गया। जब उस भाई को यह पता चला, तो वह बहुत दुखी हुआ; मैं भी कई दनिों तक दुखी और व्यथति रहा। एक दनि, जब मैंने अपना नयिम पूरा कर लयिा और बैठकर थोड़ी देर के लिए झपकी ले ली, तो दो वृद्ध मेरे कोठरी में आए। मैंने उनसे कहा: 'तुम बनिा प्रार्थना कएि यहाँ क्यों आए?' उन्होंने मुझसे उत्तर दयिा: 'नहीं, हमने अपनी प्रार्थना कर ली है; शायद आपने उसे नहीं सुना होगा।' तब मैंने उनसे कहा: 'बैठएि, महाशयगण।' फरि मैंने कहा: 'आप कौन हैं? क्या आप हमारे ही मठ के वरषि्ठ नहीं हैं? मैं आपको नहीं जानता।' उनमें से एक ने मुझसे कहा, 'मेरा नाम ज़ोसमिा है, और यह सावतीय है। भाई, उस चीज़ के लिए दुखी मत हो जसिे तुमने खोया है, क्योंकि वह मलि जाएगी।' इन पूजनीय पतिाओं ने मुझे सांत्वना देते हुए और भी बहुत कुछ कहा, और फरि वे मेरी नज़रों से ओझल हो गए। जब मैं जागा, तो मैंने कसिी को नहीं देखा, लेकनि मेरा दुख दूर हो गया था, और मेरे दलि में खुशी थी। गायब हुआ पैसा ठीक उसी जगह मलिा जहाँ रखा गया था। मैं और मेरा भाई दोनों सांत्वना पा गए, और हमने मलिकर ईश्वर और पूजनीय संतों जोसमिा और साव्वती की स्तुति और धन्यवाद कयिा।"

इन पूजनीय पतिाओं, सोलोवेत्स्की मठ के मठाध्यक्षों द्वारा, कई अन्य चमत्कार भी कएि गए; यहाँ वर्णति चमत्कार हमारी आत्मा के नरि्माण के लिए, ईश्वर के संतों के गौरव के लिए, और हमारे प्रभु यीशु मसीह के गौरव के लिए हों, जो पति और पवत्रि आत्मा के साथ सदा-सर्वदा महमिामय हैं। आमीन।

ट्रोपारयिन, स्वर 4:

दव्यि मन की इच्छा से, तुम ने मरुस्थल में नविास कयिा; और वहाँ, अपना मन स्वर्गीय नविासों पर केंद्रति करके, और पृथ्वी पर एक स्वर्गदूत के समान जीवन यापन करते हुए, तुम प्रार्थना, परश्रिम और उपवास में अपने शष्यिों के लएि एक आदर्श थे। इसलएि, हे परमेश्वर, आपकी सद्भावना देखकर, आपने मरुभूमि में आपके बच्चों को बढ़ाया है, जो आपके आँसुओं की धाराओं से पोषति होते हैं। परन्तु, हे प्राज्ञ, हे पूजनीय पति ज़ोसीमस, हमारे पति, परमेश्वर के सामने साहस रखते हुए, अपनी चराई को याद करें, और जैसा आपने वादा कयिा था, अपने बच्चों से मलिने आना न भूलें।

कॉन्टाकयिन, स्वर 8:

हे पूज्यवर, आप मसीह के प्रेम से भेदे गए, और अपने कंधे पर उनका महमिामय क्रूस उठाकर, आपने उसे वहन कयिा, तथा दव्यि और अनवरत प्रार्थनाओं से स्वयं को सशस्त्र कर, मानो हाथ में भाला पकड़े हुए, आपने शक्ति से दैवीय सेना को परास्त कयिा। इसलएि हम आपसे प्रार्थना करते हैं: आनंदति हो, आदरणीय पति ज़ोसमिस, संन्यासयिों के सांत्वनादाता।

संतों के बीच हमारे पति अगापटिस, रोम के पोप की स्मृति

17 अप्रैल को स्मरणोत्सव

संत अगपटिस, रोम के पोप[3075] , को उस समय इटली पर शासन करने वाले गोथकि राजा थयिोडोरकि महान[3076] ने सम्राट जस्टनियिन[3077] से शांतवािर्ता के लएि कॉन्स्टेंटनिोपल भेजा था। अपनी यात्रा के दौरान, उनकी मुलाकात एक ऐसे व्यक्ति से हुई जो दो बीमारयिों से पीड़ति था – वह गूंगा और लंगड़ा था। उसका हाथ पकड़कर, संत अगपयिस ने उसे उसके लंगड़ेपन से चंगा कर दयिा; और मसीह के शरीर और रक्त के पवत्रि रहस्यों का प्रशासन करने के बाद, उन्होंने उसकी वाणी लौटा दी।

कॉन्स्टेंटनिोपल में रहते हुए, संत अगपीटस ने तथाकथति गोल्डन गेट के पास एक अंधे आदमी को भीख मांगते हुए देखा। उस पर दया करके, संत अगपीटस ने अपने दाहनिे हाथ को उस आदमी की आँखों पर रखा, जसिके बाद अंधे आदमी की दृष्टि वापस आ गई।

कॉन्स्टेंटनिोपल में संत अगपयिस के प्रवास के दौरान, सम्राट जस्टनियिन के आदेश पर वहाँ एक स्थानीय परषिद[3078] का आयोजन कयिा गया, जसिमें पैट्रआिर्क अम्फमिस[3079] को पदच्युत कर दयिा गया; उन्हें चर्च के नयिमों[3080] के वपिरीत, अवैध रूप से पैट्रआिर्कल सनिडस पर पदोन्नत कयिा गया था। पदच्युत अंफमिस की जगह, मीना नामक एक

[3075] संत अगपटिस 535 से 536 तक पोप रहे।

[3076] ओस्ट्रोगोथों के राजा थयिोडोरकि महान ने 485 से 536 तक शासन कयिा। ओस्ट्रोगोथ द्नीपर और डॉन नदयिों के बीच रहते थे और गोथकि लोगों की पूर्वी शाखा थे, जो चौथी शताब्दी में ओस्ट्रोगोथ और वसिगिोथ में वभिाजति हो गए थे।

[3077] रोमन सम्राट जस्टनियिन प्रथम ने 527 से 565 तक शासन कयिा।

[3078] यह 536 में था।

[3079] अनफमिस प्रथम ने 535 से 536 तक पैट्रआिर्क के रूप में कार्य कयिा।

[3080] अम्फमिस एक कट्टर मोनोफसिाइट था और उसने केवल कॉन्स्टेंटनिोपल के पैट्रआिर्कल पद को सुरक्षति करने के लएि पाखंडपूर्वक ऑर्थोडॉक्सी धर्म अपना लयिा। मोनोफसिाइट्स ने यीशु मसीह में दो स्वभावों के मलिन के बारे में गलत शक्षिा दी; वशिेष रूप से, उन्होंने दावा कयिा कि यीशु मसीह में दव्यि स्वभाव ने मानवीय स्वभाव को आत्मसात कर लयिा था। मोनोफसिाइट संप्रदाय को यूटकियिनज़िम भी कहा जाता है, जसिका नाम इसके संस्थापक - कॉन्स्टेंटनिोपल के आर्चमिैंड्राइट यूटकिस के नाम पर रखा गया है। इस संप्रदाय की नदिा चौथे सार्वभौमकि परषिद में की गई थी, जो 451 में कैलसीडोन में आयोजति की गई थी।

पादरी को स्थापति कयि गया, जन्हिोंने एक पवत्रि और अत्यंत तपस्वी जीवन व्यतीत कयि। इसी समय, इसी परषिद में, सेवेरस के धर्मद्रोह की नदिा की गई[3081] ।

थोड़ी ही देर बाद, संत अगपटिस प्रभु के पास चले गए[3082] और उन्हें कॉन्स्टेंटनिोपल में दफनाया गया।

मई

1 मई

18 अप्रैल (पुराना संस्करण)

हमारे पूजनीय पति जॉन, सेंट ग्रेगरी द डेकापोलटि के शष्यि की स्मृति।

18 अप्रैल को स्मरणोत्सव

हम डेकापोलसि नामक दो क्षेत्रों के बारे में जानते हैं[3083] । उनमें से एक फलिस्तीन में, गलील के पास स्थति था[3084] ; इसका उल्लेख पवत्रि सुसमाचार लेखक मत्ती ने कयि है, जो कहते हैं: *'और बड़ी भीड़ उसके पीछे-पीछे चली, जो गलील और दक्कपोलसि और यरूशलेम और यहूदयि और यरदन के पार से आई थी'* (मत्ती 4:25)।

'डेकापोलसि' नाम एक अन्य छोटे क्षेत्र को भी दयि गया था जो इसौरयि में स्थति था[3085] । इसी बाद वाले इसौरयिाई डेकापोलसि से ही पूजनीय जॉन के गुरु, पूजनीय ग्रेगरी का संबंध था—जनिकी स्मृति इसी दनि मनाई जाती है। अपने युवा काल से ही इस संसार को त्यागकर और मसीह से प्रेम करके, आदरणीय जॉन अपने उपर्युक्त गुरु, ग्रेगरी द डेकापोलटि के पास चले गए, और उनसे मठवासी मुंडन ग्रहण करने के बाद, अपने सदाचारी जीवन द्वारा परमेश्वर को प्रसन्न करते हुए, उनके साथ मलिकर सेवा की। उन्होंने इतनी नम्रता, आज्ञाकारति और वास्तव में, आध्यात्मकि पूर्णता प्राप्त की कि उनके अपने गुरु, संत ग्रेगरी, भी उन पर प्रसन्न हुए और ईश्वर की महमिा की।

जब धर्महीन सम्राट लयिो द आर्मेनयिन[3086] ने मूर्तभिंजन की कुसंप्रदाय को पुनर्जीवति करके मसीह की कलीसयि पर उत्पीड़न शुरू कयि, तब ये आदरणीय जॉन अपने गुरु ग्रेगरी और संत जोसेफ द हाइमोग्राफर के साथ उस समय वहाँ पहुँचे। शहर में घूमते हुए, उन्होंने ऑर्थोडॉक्स श्रद्धालुओं को मजबूत कयि, और उन्हें पवत्रि ईसाई धर्म को दृढ़ता से बनाए रखने और साहसपूर्वक स्वीकार करने के लिए प्रोत्साहति कयि। कुछ ही समय बाद, जोसेफ रोम[3087] के लिए रवाना हुए, लेकनि रास्ते में उन्हें संप्रदायियों ने पकड़ लयि और क्रीट[3088] में कैद कर दयि। हालाँकि, सम्माननीय ग्रेगरी द डेकापोलटि, जोसेफ के नर्विासन के बाद रोम में नधिन हो गए[3089] ।

[3081] सेवरस, अंकोई के पैट्रआर्क (512 से 519 तक), को 'मध्यम' मोनोफज़िटिों में गनिा जाता था; जो बात उनके शक्षिण को अन्य मोनोफज़िटिों से अलग करती थी, वह यह थी कि उन्होंने यीशु मसीह के शरीर को हमारे अपने शरीर के 'समसारग' (consubstantial) और क्षय के अधीन माना।

[3082] संत अगपटिस का 536 में नधिन हो गया।

[3083] डेकापोलसि – दस शहरों की एक लीग, कई शहरों का एक संघ।

[3084] गलील (क्षेत्र, जलि) – फलिस्तीन के उत्तर में स्थति एक क्षेत्र। इसके सीमाएँ थीं: उत्तर में – सीरयि और लेबनान के पहाड़; पश्चमि में – फनिसियि; पूर्व में – जॉर्डन नदी; और दक्षणि में – सामरयि। गलील को ऊपरी (या उत्तरी) और नचिली (या दक्षणिी) गलील में वभिाजति कयि गया था।

[3085] इसौरयि – एशयि माइनर के एक क्षेत्र, लाइकोनयि का दक्षणिी पहाड़ी भाग।

[3086] सम्राट लयिो पंचम अर्मेनयिाई ने 813 से 820 तक बाइजेंटाइन साम्राज्य पर शासन कयि।

[3087] रोम – इतालवी राज्य की राजधानी, जो टबिर नदी पर स्थति है।

[3088] क्रीट भूमध्य सागर के सबसे बड़े द्वीपों में से एक है।

[3089] संत ग्रेगरी द डेकापोलीट लगभग 820 में नधिन हो गए।

बाइज़ेन्टियम में रहते हुए, पूजनीय जॉन ने पहले की तरह अपना तपस्वी जीवन जारी रखा, जो न केवल अपनी मुक्ति बल्कि दूसरों की मुक्ति के प्रति भी चिंतित था।

कई वर्षों बाद, जब धन्य जोसेफ को कैद से रिहा होकर बिज़ान्टियम लौटे, तब तक पूजनीय जॉन पहले ही प्रभु के पास जा चुके थे[3090] , ताकि वे उनसे अपने श्रम का प्रतिफल प्राप्त कर सकें, और उन्हें जोसेफ के अपने हाथों द्वारा उनके पिता, जिनका नाम भी जोसेफ था, की कब्र के पास दफनाया गया। बाद में उनके शरीर को एक अन्य स्थान पर स्थानांतरित कर दिया गया, जैसा कि संत जोसेफ द हाइमनोग्राफर के जीवन में वर्णित है:

यहाँ लिखा है, 'शहर में प्रवेश करने पर, जोसेफ को अपने प्रिय गुरु, सेंट ग्रेगरी द डेकापोलिट नहीं मिले, जो जीवित थे। वे पहले ही प्रभु के पास जा चुके थे। उन्होंने केवल ग्रेगरी के शिष्य, धन्य जॉन को देखा, और ग्रेगरी के लिए लंबे समय तक रोए, क्योंकि उन्हें उन्हें एक बार फिर से देखने का अवसर नहीं मिला था। वे संत जॉन के साथ उनकी कब्र के पास रहे; लेकिन कुछ समय बीत जाने के बाद, जॉन भी प्रभु के पास चले गए, और जोसेफ ने उन्हें संत ग्रेगरी की कब्र के पास दफनाया। इसके बाद, परम पूजनीय जोसेफ एक अन्य एकांत और शांत स्थान पर चले गए, जो शहर के बाहर सेंट जॉन क्राइसोस्टोम के चर्च से बहुत दूर नहीं था। वहाँ बस जाने के बाद, परम पूजनीय जोसेफ ने संत निकोलस चमत्कारकर्ता को समर्पित एक चर्च की स्थापना की और उसमें संत ग्रेगरी और जॉन के अवशेष स्थानांतरित कर दिए।

कुछ लोगों का मानना है कि ये सम्माननीय जॉन, जो सेंट ग्रेगरी द डेकापोलिट के शिष्य थे, अपने गुरु के निधन के बाद, फिलिस्तीन चले गए और सेंट चैरिटिन के मठ में तपस्या का जीवन जिए, जहाँ उन्होंने प्रभु में निवास भी किया। हालांकि, यह जॉन नामक एक अन्य संत को संदर्भित करता है, जो वास्तव में संत चैरिटिन के मठ में एक भिक्षु के रूप में तब रहते थे जब वह मठ अपने चरम पर था[3091] । हालांकि, जिस संत जॉन की हम आज बात कर रहे हैं, वह उस जॉन के कई साल बाद, प्रतिमा-विरोधी सम्राट लियो द आर्मेनियन के शासनकाल के दौरान रहते थे, जब पलेस्टाइन में सेंट चैरिटिन का मठ अब मौजूद नहीं था। बाद वाले मठ को कॉन्स्टेंटाइन और आइरीन के शासनकाल में मुसलमानों द्वारा पूरी तरह से तबाह कर दिया गया था[3092] , जो लियो द आर्मेनियन से कई साल पहले थे; इस विनाश का उल्लेख सम्मानित पिताओं की पीड़ा के वृत्तांत में मिलता है, जिन्हें सेंट चैरिटिन के सुक्की मठ, 'ओल्ड लावरा' में स्थित सम्मानित सव्वास के मठ में पीटा गया था। यहाँ यह बताया गया है कि सेंट सावा के मठ में संतों के कत्लेआम के समय, सेंट चैरिटिन का मठ भी पूरी तरह से तबाह हो गया था; इसके बाद इसे कभी बहाल नहीं किया गया, बल्कि यह पूरी तरह से सुनसान हो गया; इससे यह स्पष्ट है कि आदरणीय जॉन, जिनके बारे में हम अब बात कर रहे हैं, कैसे सेंट चैरिटिन के उस पूरी तरह से बर्बाद और सुनसान मठ में रह सकते थे और वहीं मर सकते थे; इसके अलावा, पूजनीय जोसेफ द हाइमनोग्राफर के जीवन में बताया गया है कि इस धन्य जोसेफ ने अपने हाथों से संत जॉन के शरीर को, जिनकी हम अब स्मृति मनाते हैं, बिज़ेन्टियम में दफनाया और बाद में इसे पहले स्थान से बहुत दूर नहीं, एक अन्य स्थान पर स्थानांतरित कर दिया।

संत जॉन द ओल्ड केवर का पर्व 19 अप्रैल को मनाया जाता है।

पवित्र शहीदों विक्टर, ज़ोटीकस, ज़ेनो, अकिंडिस और सेवेरियन का स्मरणोत्सव।

18 अप्रैल को स्मरण किया जाता है

जब धर्मद्रोही सम्राट डायोक्लेटियन[3093] ने ईसाइयों के खिलाफ एक क्रूर उत्पीड़न शुरू किया, तब संत जॉर्ज को पकड़ लिया गया और निर्दयी यातनाएँ दी गईं। अपनी यातनाओं के दौरान, ईश्वर की शक्ति से, संत जॉर्ज ने अद्भुत चमत्कार किए; इन्हें देखकर कई विधर्मी मसीह में विश्वास करने लगे। लेकिन जो लोग विश्वास लाए थे, उन्हें दुष्टों ने तुरंत यातनाएँ दीं; उनमें से कुछ को के कालकोठरियों में भेजा गया, दूसरों को खंभे से बाँधकर जला दिया गया, और कुछ अन्य के सिर तलवार से काट दिए गए। इन्हीं लोगों में से ये पवित्र शहीद थे: विक्टर, ज़ोटिकस, ज़ेनो, अकिंडिस और

[3090] संत जॉन का निधन लगभग 820 में हुआ।

[3091] यह, बेशक, जॉन द ओल्ड केवर को संदर्भित करता है

[3092] सम्राट कॉन्स्टेंटिन ने 780 से 797 तक बिज़ान्टियम पर शासन किया, और सेंट आइरीन (उनकी माँ) ने 797 से 802 तक।

[3093] सम्राट डायोक्लेटियन ने 284 से 305 तक रोमन साम्राज्य पर शासन किया।

सेवेरयिन। जब उन्होंने संत जॉर्ज को पहयि से बँधा हुआ देखा (जसिका उद्देश्य उनके शरीर को फाड़ना था), फरि भी वह उससे कोई चोट नहीं पहुँच रहे थे, तो वे हमारे प्रभु यीशु मसीह में वशि्वास करने लगे, जसिके लिए उनके यातना देने वालों ने तुरंत उनका सरि काट दयिा[3094] ।

संत जॉन द न्यू की शहादत

18 अप्रैल को स्मरण कयिा जाता है

धन्य योहन का जन्मस्थान इओआननिा शहर था[3095] , जो एपरिस नामक ग्रीक क्षेत्र में स्थति है[3096] । यह शहर कभी ग्रीक राजा पायररस का स्थायी नविास था[3097] । संत योहन के माता-पति धर्मनष्ठि ईसाई थे। उनके माता-पति की मृत्यु के बाद कम उम्र में अनाथ हो गए, जॉन जीवकिा कमाने के इरादे से कॉन्स्टेंटनिोपल आए, ताकि वे अपने हाथों की मेहनत से अपना गुज़ारा कर सकें। वहाँ, अन्य कारीगरों और व्यापारयिों की तरह, सार्वजनकि चौक में उनका एक ठेला था और इस तरह वे अपने शल्पि के माध्यम से अपना जीवन यापन करते थे, जसिके पास प्रचुर मात्रा में आवश्यक सभी चीजें थीं। ईश्वर ने उनके सभी कार्यों में उनकी मदद की, क्योंकि वे एक सदाचारी जीवन जीते थे और ईश्वर के कानून का सख्ती से पालन करते थे। कॉन्स्टेंटनिोपल के नविासी उन्हें 'एपरिोटे' कहते थे, क्योंकि वे एपरिस के मूल नविासी थे।

उस समय, कॉन्स्टेंटनिोपल पहले से ही मुसलमानों के शासन के अधीन था[3098] , जो मुस्लमि धर्म का पालन करते थे। कई ईसाई भी, मुसलमानों की दुष्टता के बहकावे में आकर, इस्लाम में परविर्तति हो गए; वशिेष रूप से, कई कारीगर और व्यापारी थे जन्हिोंने पहले ईसाई धर्म अपनाया था लेकनि बाद में इस्लाम धर्म स्वीकार कर लयिा था।

सच्चे ईसाई, धन्य जॉन पर यह दायत्वि पड़ा कि उन्हें ऐसे लोगों के बीच रहना पड़े। हर तरफ, उनके व्यापारकि पड़ोसी धर्मत्यागी थे जो मसीह से मुंह मोड़कर इस्लाम धर्म में शामलि हो गए थे; जॉन अक्सर उनसे खुलकर बहस करता था, उनकी धर्मत्यागी होने को उजागर करता था, क्योंकि वह एक समझदार युवक था, जो अपनी वाणी में नडिर था और बनिा कसिी डर के सत्य बोलता था। इन सब कारणों से, जॉन के पड़ोसी उससे नफरत करने लगे। वे संत की वाणज्यिकि प्रयासों में सफलता देखकर भी नाखुश थे। जैसे-जैसे जॉन अपने व्यापारकि मामलों में और भी अधकि सफलता प्राप्त करने लगा, अन्य व्यापारी और कारीगर उससे ईर्ष्या करने लगे और उसे नष्ट करने के लिए उसके खलिाफ क्या आरोप लगाया जाए, इसकी साजशि रचने लगे। कन्तिु धन्य योहन, अपने वरिुद्ध रची जा रही साजशिों को देखकर, उनसे वचिलति नहीं हुए, बल्कि उन्होंने अपनी पूरी आत्मा से मसीह की सच्चाई के लिए और अधकि दुख सहने की इच्छा की।

और इस प्रकार, एक गुड फ्राइडे क[3099] को अपने आध्यात्मकि पति - कॉन्स्टेंटनिोपल के प्रोटोप्रेस्बटिर - से मलिने के लिए नकिल पड़े। उन्होंने अपने पापों का उनसे इक़रार कयिा, और अपने पड़ोसयिों की शत्रुता के बारे में भी बताया जो उनसे द्वेष रखते थे और उनका नाश चाहते थे; उन्होंने मसीह के लिए दुख सहने की अपनी इच्छा के बारे में भी बताया और अपने आध्यात्मकि पति से उचति सलाह और सांत्वना मांगी। संत की कम उम्र को देखते हुए, प्रोटोप्रेस्बटिर ने उन्हें शहादत देने की सलाह नहीं दी, और उनसे कहा:

'मेरे बेटे, पहले ध्यान से जांच करो कि क्या यह वचिार तुम्हारे मन में शैतान ने डाला है: क्योंकि शैतान ने कई लोगों को शहादत के लिए उकसाया है, इस इरादे से कि जब वे यातनाओं को सहन न कर सकें और वशि्वास से भटक जाएं तो उन्हें सारी दुनयिा की उपेक्षा का शकिार बना दे।'

इस पर संत जॉन ने उत्तर दयिा:

'मैं अपनी आशा अपने मसीह में रखता हूँ और दृढ़ता से वशि्वास करता हूँ कि वह मुझे अपने शत्रुओं के उपहास के लिए नहीं सौंपेंगे, बल्कि अपनी शक्ति से मुझे बल देंगे, ताकि मैं शत्रु की शक्ति पर वजिय प्राप्त कर सकूँ।'

[3094] पवत्रि शहीदों का 303 में नधिन हुआ।

[3095] इओआननिा, या याननिा शहर, एपरिस में स्थति था, जो दक्षणि में थ्रेसैलॉनीकी के त्रक्कि और एपरिस के एम्ब्रासयिा के बीच था।

[3096] एपरिस उत्तरी ग्रीस का पूर्वी भाग है, जो एक्रोकेरेन पर्वतों से लेकर आयोनयिन सागर की अंब्रासयिन खाड़ी तक फैला हुआ है।

[3097] पर्रिस 295 से 272 ईसा पूर्व तक एपरिस का राजा था। यह राजा रोम और स्पार्टा के खलिाफ अपनी युद्धों के लिए जाना जाता है।

[3098] कॉन्स्टेंटनिोपल पर मुसलमानों ने 1453 में कब्ज़ा कर लयिा था।

[3099] यह 1500 में हुआ था।

प्रत्युत्तर में प्रोटोप्रेज़बटिर ने कहा, 'मेरे पुत्र, परमेश्वर के वचन में लिखा है: *"आत्मा तो इच्छुक है, पर शरीर दुर्बल है"* (मत्ती 26:41)। आप जिस कार्य को करने जा रहे हैं, उसके लिए महान तैयारी की आवश्यकता है; यह अनवरत उपवास और प्रार्थना की मांग करता है; जब आप उपवास और प्रार्थना के श्रम के माध्यम से स्वयं को सभी पापों से शुद्ध कर लेंगे, तो ईश्वर स्वयं आपको बताएंगे कि क्या करना है, क्योंकि ईश्वर आमतौर पर शुद्ध आत्माओं में वास करते हैं। इसलिए, मेरे प्रिय, अपना ध्यान रखना और शांति से जाना, और मैं परमेश्वर से प्रार्थना करूँगा कि वह तुम्हें तुम्हारे सभी दृश्य और अदृश्य शत्रुओं – मनुष्यों और दुष्टात्माओं – से बचाए और उन पर तुम्हें विजय दे।

यह कहने के बाद, प्रोटोप्रेज़बटिर ने उस युवक को शांति से विदा किया।

अगले ही भोर, धन्य योहन एक बार फिर से दीप्तिमान मुख और आनंदित आत्मा के साथ अपने आध्यात्मिक पिता के सामने प्रकट हुए, और उनसे कहा:

'आदरणीय पिताजी! कल रात मैंने सपने में खुद को आग की लपटों के बीच खड़ा देखा, फिर भी मैं सुरक्षित था, और मैं आनंदित और हर्षित था, ठीक वैसे ही जैसे बेबीलोन की भट्टी में तीन युवक थे (देखें दानियेल 3)। इसलिए, मुझे आशा है कि मेरे मन में जो कार्य है, वह सर्वोच्च की सहायता से सफल परिणाम देगा। मैं आपसे भी विनती करता हूँ, माननीय पिता: अपनी प्रार्थनाओं से मुझे बल प्रदान करें!

इस पर, उनके आध्यात्मिक पिता ने उत्तर दिया:

'ईश्वर तुम्हें बल दे, मेरे बच्चे, उस नरकीय भेड़िये पर विजय पाने के लिए—जिससे मेरा तात्पर्य उस अदृश्य सर्प से है—और वह तुम्हें शहीद का मुकुट प्रदान करे।'

प्रोटोप्रेज़बटिर ने उस युवक को और भी कई दयालु शब्दों से उसके प्रयास के लिए प्रोत्साहित करने के बाद, उसे विदा किया, और उसके लिए ईश्वर से प्रार्थना करने का वादा किया।

जब धन्य जॉन बाज़ार में अपनी दुकान पर पहुँचे, तो उनके दुश्मनों ने, जो पहले ही उनके विनाश की एक योजना बना चुके थे, एक-दूसरे से कहना शुरू कर दिया:

'क्या यह वही व्यक्ति नहीं है जिसने ट्रिकि में खुलेआम मसीह का इनकार किया था[3100] ; तो फिर वह यहाँ एक सच्चे ईसाई की तरह व्यवहार क्यों कर रहा है?'

ये शब्द सुनकर, उस युवक ने बोलने वालों को घूरकर देखा और उनसे पूछा:

'क्या आप मेरी बात कर रहे हैं, या शायद किसी और की?'

'तुम्हारे बारे में,' उन्होंने उत्तर दिया, 'और किसी के बारे में नहीं; और क्या हम सच नहीं कह रहे हैं?'

संत ने उत्तर दिया, 'मेरे साथ ऐसा कभी नहीं हुआ है, और न ही कभी होगा, कि मैं मसीह अपने ईश्वर का त्याग करूँ, चाहे त्रिकि्का में हो या कहीं और। मैं मसीह, अपने ईश्वर, के लिए जीता हूँ और हमेशा जीता रहूँगा, और उनके लिए मरने को हमेशा तैयार हूँ।'

संत के शब्दों से क्रोधित होकर, उनके दुश्मन उन पर टूट पड़े, मानो उन्हें तुरंत मौत के घाट उतारने को तैयार हों, और उन्हें तुरंत अदालत के सामने घसीट ले गए। पवित्र युवक तेज़ी से चल रहा था, उसका चेहरा ऐसे खिल रहा था मानो वह किसी दावत में जा रहा हो। जब संत को अदालत के सामने लाया गया, तो उसके दुश्मन वहाँ उसके खिलाफ बदनामी करने वाले, गवाह और न्यायाधीश के रूप में उपस्थित हुए। उन्होंने उस पर केवल इतना आरोप लगाया कि उसने थेस्सालोनी के शहर त्रिकि्का में कथित तौर पर खुले तौर पर मसीह का त्याग कर दिया और मुस्लिम धर्म अपना लिया, और कॉन्स्टेंटिनोपल आकर, एक बार फिर से ईसाई होने का दिखावा किया और मुसलमानों के खिलाफ ईश्वर निंदा की। पड़ताल की शुरुआत में, संत के दुश्मनों ने सबसे पहले उसके लिए सहानुभूति दिखाने का नाटक किया, मानो वे उस पर तरस खा रहे हों, और उसे धीरे से मसीह का त्याग करने के लिए कहा। तब, यह देखकर कि वह ईसाई धर्म पर दृढ़ रहा, उन्होंने उसे धमकियों से ईसाई धर्म त्यागने के लिए डराना शुरू कर दिया; लेकिन इस तरीके से कुछ हासिल न होने पर, उन्होंने उसे बेरहमी से पीटना शुरू कर दिया, जिसके बाद उन्होंने उसे एक कालकोठरी में डाल दिया, यह सोचकर कि उसे तब तक वहीं रखा जाएगा जब तक वे यह तय नहीं कर लेते कि उसके साथ आगे क्या करना है।

अगली सुबह, संत को कालकोठरी से बाहर निकालने के बाद, दुष्ट न्यायाधीशों ने उनसे पूछना शुरू किया कि क्या उन्होंने मसीह का त्याग करने और उनके धर्म को स्वीकार करने का फैसला कर लिया है। लेकिन यह देखकर कि वह

[3100] ट्रिकि्का उत्तरी-पूर्वी ग्रीस के एक क्षेत्र थेस्सालोनी में एक शहर है।

अटूट रूप से ईसाई धर्म का प्रचार करता रहा, उन्होंने एक बार फिर मोटी लाठियों से बेरहमी से उसकी पिटाई करना शुरू कर दिया। हालाँकि संत, एक कठोर हीरे की तरह, चुपचाप उस पिटाई को सहते रहे, मानो वह कोई और हो जिसे पीटा जा रहा हो, न कि वे स्वयं। वे बस चुपचाप ईश्वर से प्रार्थना कर रहे थे, कह रहे थे:

'मैं दुनिया की किसी भी चीज़ के लिए अपना विश्वास नहीं छोड़ूँगा; ऐसा कभी नहीं होगा कि मैं एक ईसाई के लिए उपयुक्त किसी अन्य तरीके से विश्वास करूँ; मैं न तो चापलूसी से बहकूँगा और न ही यातनाओं से हार मानूँगा। मेरे साथ जो चाहो करो, ताकि मैं इस क्षणभंगुर जीवन से शाश्वत जीवन में जल्द से जल्द पहुँच सकूँ। मैं मसीह के सेवक के रूप में मसीह का अनुसरण करता हूँ और मसीह के लिए मरता हूँ, ताकि मैं हमेशा के लिए उनके साथ जी सकूँ।

अन्यायपूर्ण न्यायाधीशों ने आदेश दिया कि संत को फिर से जेल में डाल दिया जाए। शहीद को अब और नहीं ले जाया गया, बल्कि ज़मीन पर घसीटा गया; उन्होंने उसके बाल पकड़कर खींचा, उसके गालों पर मारा और उसे पैरों तले कुचला। अंत में, उसे फिर से बेड़ियों में जकड़ दिया गया।

अगले दिन, संत को एक बार फिर अदालत में लाया गया, लेकिन जब उन्होंने निडर होकर पहले की तरह ही वही शब्द कहना जारी रखा, तो उन्होंने बिना किसी दया के उन्हें फिर से पीटना शुरू कर दिया। जब वे उन्हें पीट रहे थे, तो शहीद ने खुशी से चर्च का भजन गाया, 'मसीह मरे हुओं में से जी उठे हैं!'[3101] आदि, क्योंकि यह ईस्टर का समय था। संत का पूरा शरीर घावों से ढक गया था, और उसके चारों ओर की ज़मीन खून से लथपथ थी। इस बीच, पवित्र शहीद उस पीड़ा को ऐसे सहन कर रहे थे मानो वह उनका अपना शरीर ही न हो; अपनी यातनाओं के दौरान, वे बारी-बारी से गाते और अपने यातना देने वालों से इन शब्दों में कहते थे:

'मुझे मारो, अपनी पूरी ताकत से मारो; मुझे मारो और जितना हो सके पिटाई बढ़ाओ: फिर भी तुम कभी भी मुझे मेरे मसीह से दूर नहीं कर सकते या मुझे अपना सहयोगी नहीं बना सकते।'

इसके बाद, शर्मिंदा होकर, यातना देने वालों ने शहीद को वापस कालकोठरी में डाल दिया और वहाँ कई दिनों तक उसे भूख और प्यास से पीड़ित किया; फिर उन्होंने उसे फिर से कालकोठरी से बाहर निकाला और यह देखकर कि सभी यातनाओं के बावजूद उसने मसीह के धर्म को नहीं त्यागा, उन्होंने उसे खंभे पर जलाने की सज़ा सुनाई।

जब संत को लोहे की ज़ंजीरों में जकड़कर मृत्यु के घाट पर ले जाया जा रहा था, *'जैसे वध के लिए भेड़ का बच्चा'* (यशायाह 53:7), तो उसके यातना देने वालों ने रास्ते में उसे पीटा, उसके चेहरे पर वार किया और उस पर अपमानजनक टिप्पणियाँ कीं; लेकिन वहाँ मौजूद कुछ लोगों ने उसके प्रति अपनी सहानुभूति व्यक्त की और उससे विनती की कि वह अपनी जवानी बरबाद न करे। फिर भी मसीह के शहीद ने बड़ी गंभीरता से अपनी मृत्यु की ओर कदम बढ़ाया, मानो कोई बड़ा सम्मान प्राप्त करने की तैयारी कर रहा हो।

आखिरकार, संत जॉन उस जगह पहुँचे जहाँ उनके अत्याचारियों ने एक बड़ी चिता बना रखी थी। उनके चिता पर फेंके जाने का इंतज़ार किए बिना, संत ने बहादुरी से खुद उस पर कदम रखा और आग की लपटों के बीच खड़े हो गए। फिर उनके अत्याचारियों ने, उस ज़ंजीर के सिरे को पकड़कर जिससे संत जॉन बँधे हुए थे, उन्हें आग से बाहर खींच लिया। तब पवित्र शहीद ने अपने अत्याचारियों से कहा:

'तुम मुझे आग की लपटों में जलने क्यों नहीं देते? तुम मुझे मसीह को भाता हुआ बलिदान बनने से क्यों रोकते हो?'

तब न्यायाधीशों ने, यद्यपि वे जानते थे कि जिलाकर मारना अत्यंत पीड़ादायक होता है, अपना निर्णय बदल दिया क्योंकि संत स्वयं ऐसी मृत्यु की इतनी प्रबल इच्छा रखते थे, और उन्होंने उन्हें जलाकर नहीं बल्कि तलवार से सिर कलम करके मृत्युदंड की सजा सुनाई। उन्होंने जल्लाद को उस अडिग युवक का सिर कलम करने और फिर उसके धड़ के साथ, उसके सिर को चिता में फेंकने का आदेश दिया। इस प्रकार,[3102] के अप्रैल के अठारहवें दिन, मसीह के पवित्र नवीन शहीद, एपिरस के जॉन ने शहीद का मुकुट प्राप्त किया।

यद्यपि संत का शरीर फांसी के तख्ते पर जला दिया गया था, फिर भी श्रद्धालुओं को आग से बची उसकी कुछ हड्डियाँ मिल गईं; उन्होंने उन्हें श्रद्धापूर्वक रख लिया और हमारे ईश्वर मसीह की महिमा की, जिसकी पिता और पवित्र आत्मा के साथ अनंतकाल तक स्तुति की जाती है। आमीन।

[3101] पवित्र पास्खा का ट्रोपारियन

[3102] पवित्र शहीद की मृत्यु 1526 में हुई।

हमारे पवत्रि पति कल्सडिोन के बशिप, कन्फैसर कोस्मास और पूजनीय ऑक्सेन्टयिस की स्मृति

18 अप्रैल को स्मरण कयिा जाता है

मसीह के स्वीकारकर्ता संत कोस्मास, कॉन्स्टेंटनिोपल शहर के मूल नविासी थे[3103] । कम उम्र से ही मसीह से प्रेम करने के बाद, उन्होंने इस व्यर्थ संसार को छोड़ दयिा और संन्यासी की शपथ ली। कठोर तपस्या का जीवन जीते हुए और कई सद्गुणों में पूर्णता प्राप्त करके, संत कोस्मास पवत्रि आत्मा का वासस्थान बन गए।

बाद में, संत कोस्मास को काल्सेडन का बशिप नयिुक्त कयिा गया[3104] । एक बशिप के रूप में, उन्होंने ऑर्थोडॉक्स सद्धिांत का उत्साहपूर्वक बचाव कयिा, जसिे उस समय प्रतमिा-वरिोधी वधिर्मयिों द्वारा सताया जा रहा था।

मूर्तभिंजनवादी वधिर्मयिों ने संत को बार-बार पवत्रि प्रतमिाओं की पूजा न करने के लिए मजबूर कयिा। लेकनि उन्होंने साहसपूर्वक ऑर्थोडॉक्स सद्धिांत का बचाव कयिा और वधिर्मयिों के आगे नहीं झुके।

ऑर्थोडॉक्स धर्म में अपनी दृढ़ता के लिए, संत ने अपने उत्पीड़क के हाथों बहुत कष्ट सहन कयिा और उन्हें नर्विासति कर दयिा गया। नर्विासन से बुलाए जाने और एक बार फरि प्रतमिाओं की पूजा को अस्वीकार करने के लिए मजबूर कए जाने पर, संत कोस्मास ने एक बार फरि ऑर्थोडॉक्स धर्म में अपनी दृढ़ता का प्रदर्शन कयिा। इसके लिए, उन्हें एक बार फरि कई यातनाओं और कष्टों का सामना करना पड़ा, जनिमें सम्माननीय ऑक्सेन्टयिस[3105] ने भी उनके साथ साझा कयिा। इन्हीं कष्टों के बीच संत कोस्मास का धन्य अंत हुआ[3106] ।

2 मई

19 अप्रैल (पुराने कैलेंडर के अनुसार)

हमारे पूजनीय पति जॉन द ओल्ड-केवर की स्मृति

19 अप्रैल को स्मरणोत्सव

परम पूज्य चारTOH का मठ, जो यरूशलेम के पास फलिस्तीनी मरुभूमि में स्थति था, 'ओल्ड लावरा' के नाम से जाना जाता था। इसे 'ओल्ड लाव्रा' कहा जाता था क्योंकि इसकी स्थापना कसिी भी अन्य लाव्रा से पहले संत चारटिोन ने की थी, जैसा कि उनकी जीवनी[3107] में वस्तिार से वर्णति है। इसी चारटिोन के ओल्ड लाव्रा में आदरणीय जॉन, जनिका हम अब स्मरण कर रहे हैं, ने स्वयं को तपस्या के लिए समर्पति कयिा था। अपने युवा काल से ही प्रभु के प्रेम से जलते हुए, संत जॉन ने अपनी पूरी आत्मा से ईश्वर से चपिका रहा, जैसा कि पवत्रि धर्मग्रंथ में लखिा है: *'परन्तु मुझको तो परमेश्वर के*

[3103] कॉन्स्टेंटनिोपल – प्राचीन काल में प्रसद्धि एक शहर – बीजान्टनि साम्राज्य की राजधानी, अब तुर्की में इस्तांबुल शहर। कॉन्स्टेंटनिोपल बोस्फोरस के तट पर स्थति है – जो भूमध्य सागर का एक जलडमरूमध्य है – और प्राचीन काल में अपनी शक्षिा और व्यापार के लिए प्रसद्धि था।

[3104] काल्सेडोन, या अधकि सही रूप से, काल्सेडोन – मूल रूप से मसीह से दो या तीन शताब्दी पहले बोस्फोरस के प्रवेश द्वार पर प्रोपोंटसि (मार्मारा सागर) के तटों पर एक मेगारीय उपनविेश था – बाद में एशयिा माइनर के एक क्षेत्र बथिनियिा का प्रमुख शहरों में से एक बन गया। ईसाई चर्च के इतहिास में, कैलसीडोन चौथे सार्वभौमकि परषिद के स्थल के रूप में उल्लेखनीय है, जसिे सम्राट मारयिनस के शासनकाल में 451 में मोनोफसिाइट वधिर्म (जो यीशु मसीह में केवल एक स्वभाव - दैवीय - को मान्यता देता था) की नदिा करने के लिए बुलाया गया था। – आज, प्राचीन कालसेडोन का स्थल तुर्की के छोटे से गाँव कोडकिोय द्वारा बसा हुआ है।

[3105] उनका पर्व भी इसी तारीख को मनाया जाता है। यहाँ उल्लेखति ऑक्सेन्टयिस को venerable ऑक्सेन्टयिस के साथ भ्रमति नहीं कयिा जाना चाहिए, जनिका पर्व 14 फरवरी को मनाया जाता है; बाद वाले ने कालसेडोन के पास माउंट ऑक्सयिा पर एक तपस्वी के रूप में जीवन व्यतीत कयिा और चौथे सार्वभौमकि परषिद में भाग लयिा। उनकी मृत्यु लगभग 470 में हुई।

[3106] संत कॉसमस की मृत्यु 9वीं शताब्दी की शुरुआत में (लगभग 816) प्रतमिा-भंजक सम्राट लयिो (V) द आर्मेनयिन के शासनकाल के दौरान हुई (जो 813 से 820 तक शासन करते थे)।

[3107] आदरणीय चारटिन तृतीय और चौथी शताब्दी की शुरुआत में फलिस्तीन में रहे और सेवा की, जहाँ उन्होंने तीन मठों की स्थापना की: सुक्की मठ ('ओल्ड लावरा'), फराना मठ और यरीहो मठ। – उनका पर्व 28 सतिंबर को मनाया जाता है।

समीप जाना ही भला है!' (भजन संहिता 72:28)। इस संसार के व्यर्थ जीवन को त्यागकर, संत जॉन ने अपना देश छोड़ दिया और, मठवासी जीवन का सूली का cruz उठाकर, प्रभु के नाम पर एक स्थान से दूसरे स्थान पर भटकते रहे, जिनके पास, उनके जन्म के दिन से लेकर उनकी मृत्यु तक, *'सिर रखने के लिए भी कोई स्थान नहीं था'* (मत्ती 8:20)।

यरूशलेम के पवित्र स्थलों पर पहुँचने पर, संत जॉन ने प्रभु के जीवन-दायक मकबरे को प्रणाम किया, फिर धन्य चारिटोन के उपर्युक्त मठ में आए, जहाँ, अपने सदाचारी जीवन के कारण, उन्हें पुरोहित नियुक्त किया गया। महान संयम के माध्यम से अपने कामुक भावों पर अंकुश लगाकर, संत जॉन ने यहाँ भी महान प्राचीन तपस्वियों का अनुकरण किया: पूरी रात जागने और मृत्यु के निरंतर स्मरण द्वारा, उन्होंने अपने शरीर पर पूर्ण संयम प्राप्त किया और, एक प्रकार से, शरीर में एक देवदूत थे।

कई वर्षों तक जीवन यापन कर, अपने पूरे जीवन में ईश्वर को प्रसन्न करते हुए, संत प्रभु के पास चले गए[3108] । उनकी आत्मा को पवित्र अदेह स्वर्गदूतों के हाथों द्वारा शाश्वत स्वर्गीय निवासों में ले जाया गया।

संत जॉन को 'पुराने लावरा-निवासी' के बजाय 'पुराने गुफा-निवासी' कहा जाता है क्योंकि आदरणीय चारिटन का पुराना लावरा मूल रूप से डाकुओं की एक गुफा में स्थित था। इसी गुफा में डाकुओं द्वारा आदरणीय चारिटन को कैद किया गया था । लेकिन जब डाकुओं ने साँप के जहर से युक्त शराब पीकर मर गए, तो आदरणीय चारिटोन उनकी कैद से मुक्त हो गए। गुफा में बहुत सारा सोना पाकर, जिसे डाकुओं ने लूटा था, आदरणीय चारिटोन ने गुफा के पास एक चर्च की स्थापना की; और जब उनके अनुयायी उनके चारों ओर इकट्ठा हो गए, तो उन्होंने गुफा के ऊपर एक मठ भी स्थापित किया। और चूँकि आदरणीय जॉन उस प्राचीन गुफा में रहते थे, और गुफा चर्च में दैवीय अनुष्ठान का अनुष्ठान करते थे, इसलिए वे 'पुराने गुफावासी' के नाम से जाने जाने लगे।

पवित्र शहीदों क्रिस्टोफर, थियोना और एंटोनिस की स्मृति

19 अप्रैल को स्मरण किया जाता है

पवित्र शहीदों क्रिस्टोफर, थियोना और एंटोनिस, जिनका हम आज स्मरण करते हैं, सम्राट डायोक्लेटियन की सेना में भालेबाज़ थे[3109] । एक दिन, जब वे पवित्र महान शहीद जॉर्ज की शहादत के साक्षी बन रहे थे और संत जॉर्ज द्वारा किए गए चमत्कारों को देख रहे थे, तो उन्होंने अपने हथियार और अपनी सैन्य पट्टियाँ त्याग दीं[3110] और, सम्राट के सामने खड़े होकर, उन्होंने साहसपूर्वक मसीह में अपने विश्वास की गवाही दी। इसके लिए, सम्राट के आदेश पर, उन्हें बेड़ियों में जकड़कर कैद कर दिया गया।

अगले दिन, उन्हें कालकोठरी से बाहर निकालकर अधर्मी सम्राट की अदालत में लाया गया, जिसने उन्हें मसीह का परित्याग करने के लिए मजबूर किया। जब पवित्र शहीदों ने अपने यातनाकर्ता की आज्ञा मानने से इनकार कर दिया और खुले तौर पर सच्चे परमेश्वर की महिमा की, तो यातनाकर्ता ने आदेश दिया कि उनके शरीरों को लटका दिया जाए, लोहे के औजारों से खुरच दिया जाए और आग से जला दिया जाए। लेकिन जब, इसके बाद भी, पवित्र शहीदों ने अडिग रहना जारी रखा, तो सम्राट ने उन्हें खंभे से बाँधकर जलाने का आदेश दिया।

इस प्रकार इन पवित्र शहीदों ने मसीह के लिए अपने कष्टों का end[3111] को पहुँचाया।

पिसीडिया में अंकोई के बिशप, हमारे पूजनीय पिता जॉर्ज कन्फेशर की स्मृति

19 अप्रैल को स्मरणोत्सव

[3108] गुफा-निवासी संत जॉन का निधन 8वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में हुआ।

[3109] सम्राट डायोक्लेटियन ने 284 से 305 तक शासन किया।

[3110] शाही कृपा के प्रतीक के रूप में, पट्टा आमतौर पर उन सैनिकों द्वारा पहना जाता था जो उच्च पद पर थे या सम्राट के विशेष रूप से करीब थे (जैसे कि अब स्मरण किए जा रहे पवित्र शहीद, जिन्होंने मूल रूप से सम्राट डायोक्लेटियन के भालेबाज़ या अंगरक्षक के रूप में सेवा की थी)।

[3111] पवित्र शहीदों का अंत 303 में हुआ।

मसीह के स्वीकारकर्ता, पूजनीय जॉर्ज, प्रतिमा-भंजन के युग में रहते थे। अपने युवा से ही मसीह से प्रेम करने के कारण, उन्होंने संन्यासी की शपथ ली और अपने धार्मिक जीवन तथा अनेक परिश्रमों और कार्यों के माध्यम से, पवित्र आत्मा का निवास स्थान और पात्र बन गए। उन्हें पिसीडिया के एंटिओक का बिशप नियुक्त किया गया[3112] , और इस पद पर रहते हुए, उन्होंने अपने सुपुर्द किए गए झुंड का उत्साहपूर्वक मार्गदर्शन किया। जब, शैतान के उकसावे से, प्रतिमा-भंग की विधिर्मता तेज हो गई और सम्राट के निमंत्रण पर, सभी बिशप कॉन्स्टेंटिनोपल में एकत्रित होने के लिए जल्दी से चले गए, तब यह पवित्र बिशप, स्वयं वहाँ पहुँचकर, धैर्यपूर्वक ऑर्थोडॉक्सी (सही विश्वास) के लिए खड़े हुए और सम्राट को पवित्र पिताओं, जो ऑर्थोडॉक्सी के शिक्षक थे, द्वारा हमें दिए गए परिषद के धार्मिक आदेशों का पालन करने की सलाह दी, और उन्हें उनके विश्वास का अनुकरण करने के लिए प्रोत्साहित किया, ताकि वे *'विभिन्न और विदेशी शिक्षाओं से भटक न जाएँ।* (इब्रानियों 13:9), पवित्र प्रेरित पौलुस की आज्ञा के अनुसार। उन्हें स्वयं पवित्र प्रतिमाओं की पूजा त्यागने के लिए मजबूर किया गया, लेकिन उन्होंने अधर्मी प्रतिमा-भंजकों की आज्ञा नहीं मानी, जिसके लिए उन्हें बिशप पद से हटा दिया गया और निर्वासित कर दिया गया, जहाँ उन्होंने अपना जीवन समाप्त किया[3113] ।

हमारे पूजनीय पिता त्रिफिोन, कॉन्स्टेंटिनोपल के पैट्रिआर्क की स्मृति

19 अप्रैल को स्मरण किया जाता है

बाइज़ेंटाइन सम्राट रोमानुस[3114] , जो सम्राट कॉन्स्टेंटिन पोर्फियोगेनिटिस[3115] के ससुर थे, के एक सबसे छोटे पुत्र थेओफिलैक्ट थे, जिसके बारे में उन्होंने जन्म लेते ही पादरी बनाने का वादा किया था, और वे तत्कालीन पैट्रिआर्क स्टीफन[3116] की मृत्यु के बाद उसे कॉन्स्टेंटिनोपल का पैट्रिआर्क बनाना चाहते थे। हालाँकि, चूँकि थियोफिलैक्ट उस समय केवल सोलह वर्ष के थे और चर्च के नियमों के अनुसार, वे ऐसा पद ग्रहण नहीं कर सकते थे, इसलिए मठवासी त्रिफिोन[3117] को अस्थायी रूप से लोकम टेनेन्स और पैट्रिआर्कल सिंहासन के प्रशासक के रूप में चुना गया था; उन्हें केवल तब तक पैट्रिआर्कल सिंहासन का प्रशासन करना था जब तक कि ज़ार का बेटा, थेओफिलैक्ट उस आयु तक पहुँच गए, जो उन्हें पैट्रिआर्की के सिंहासन का उत्तराधिकारी बनने का अधिकार देती थी।

श्रेणीक्रम में तेजी से उन्नति करते हुए, भिक्षु त्रिफिोन को बिशप के रूप में अभिषिक्त किया गया और उन्होंने पैट्रिआर्कल प्रशासन संभाला, क्योंकि वह वास्तव में इस पद के योग्य व्यक्ति थे, जैसा कि उन्होंने एक निष्कलंक जीवन जिया था। तीन वर्षों से कुछ अधिक समय तक पैट्रिआर्केट का प्रशासन करने के बाद, उन्हें निम्नलिखित परिस्थितियों में इस पद से हटा दिया गया।

जब थियोफिलैक्ट की उम्र मुश्किल से बीस वर्ष थी, सम्राट रोमन ने त्रिफिोन पर दबाव डालना शुरू कर दिया कि वह पादरी-सिंहासन अपने पुत्र को सौंप दे। किन्तु धन्य त्रिफिोन ने इतने युवा और अनुभवहीन युवक को इतना उच्च पद सौंपना संभव नहीं समझा, जो केवल अत्यंत परिपक्वता—वर्षों और ज्ञान दोनों में—वाले व्यक्ति को ही प्रदान किया जा सकता था, जो पवित्र शास्त्रों में पारंगत हो और सामान्यतः चर्च के मार्गदर्शन के लिए आवश्यक क्षमता रखता हो।

तब सम्राट रोमानुस बहुत दुखी हुआ, यह न जानकर कि क्या करे, क्योंकि उसके पास त्रिफिोन पर पाट्रिआर्की के पद से हटाने के लिए कोई आरोप लगाने का आधार नहीं था, विशेष रूप से चूंकि आदरणीय त्रिफिोन एक पवित्र और निर्दोष जीवन वाले व्यक्ति थे। इन परिस्थितियों में, सम्राट के एक मित्र, कैसरिया के बिशप थियोफेंस—जो एक कपटी स्वभाव का व्यक्ति था—ने सम्राट से कहा:

'हे राजा, यह मामला मुझे सौंप दो, और मैं इसे तुम्हारी शाही इच्छा के अनुसार पूरी तरह से निपटा दूँगा।'

[3112] पिसीडिया एशिया माइनर का एक क्षेत्र है।

[3113] संत जॉर्ज की शहादत प्रतिमा-भंजक सम्राट लियो (V) अर्मेनियाई (813–820) के शासनकाल के दौरान हुई।

[3114] सम्राट रोमानोस (लाकापेनोस) ने 917 से 944 तक बिज़ान्टियम पर शासन किया।

[3115] कॉन्स्टेंटिन (VII) पोर्फ्योजेनिटिस ने 912 से 959 तक शासन किया।

[3116] संत स्टीफन द्वितीय 925 से 928 तक कॉन्स्टेंटिनोपल के पैट्रिआर्क थे।

[3117] संत त्रिफ़िोन ने 928 से 931 तक कॉन्स्टेंटिनोपल के पैट्रिआर्केट पर शासन किया।

सम्राट थियोफेंस के प्रस्ताव से बहुत प्रसन्न हुआ और उसने उस मामले को, जिसे उसने हाथ में लिया था, शीघ्रता से निपटाने के लिए उस पर जोर देना शुरू कर दिया।

संत ट्रायफोन के पास जाकर, थियोफेनेस ने उनसे बातचीत की, और पाखंडपूर्वक खुद को उनका भक्त दिखाया। उसने उनसे निम्नलिखित कहा:

'महामहिम, सम्राट आपके खिलाफ बड़ी साजिशें रच रहे हैं: वह और उसके समान विचारधारा वाले सहयोगी आपको पैट्रिआर्कात्मक सिंहासन से हटाने का बहाना ढूंढ रहे हैं। हालांकि, उनकी सभी कोशिशों के बावजूद, वे कुछ भी हासिल नहीं कर पाएंगे, क्योंकि वे आपके खिलाफ एक ऐसा आरोप लगा रहे हैं जिसमें आप निर्दोष हैं। वे दावा करते हैं, कहते हैं, कि आप कथित तौर पर निरक्षर हैं और लिखने में पूरी तरह से असमर्थ हैं; और इसी कारण से वे आपको पैट्रिआर्केट के पद के अयोग्य मानते हैं। इसे ध्यान में रखते हुए, समय रहते ही उन्हें शर्मिंदा करें और उनका मुँह बंद कर दें, ताकि वे चुप हो जाएँ। यदि आप मेरी सलाह मानने को तैयार हैं, तो निम्नलिखित करें। सम्पूर्ण परिषद की उपस्थिति में, एक साफ़ कागज़ पर अपना नाम और अपना पाट्रिआर्कल पद लिखें और जो आपने लिखा है उसे सम्राट को भेज दें, ताकि आपके बदनाम करने वाले, जो दावा करते हैं कि आप लिख नहीं सकते, शर्मिंदा हों।

धन्य त्रिफिोन, दुर्भावना से मुक्त होने के कारण, थियोफेनेस की विश्वासघात को नहीं समझ सके और उसकी सलाह को सही मान लिया, इसीलिए उन्होंने उस पर अमल किया। जब परिषद की कार्यवाही शुरू हुई, तो पैट्रिआर्क ने सभी को निम्नलिखित भाषण दिया:

'ईश्वर के वेदी के पुरोहित व्यर्थ में मेरे खिलाफ आरोप ढूंढ रहे हैं, जो मुझे सिंहासन से हटाना चाहते हैं। मुझे अपने ईश्वर पर भरोसा है कि वे मेरे खिलाफ ऐसा कुछ भी नहीं पाएंगे जिसके कारण मुझे ईश्वर द्वारा सौंपा गया सिंहासन खोना पड़े, भले ही वे इसे प्राप्त करने के लिए कितनी भी कोशिश कर लें।' संयोग से, उन्होंने मुझ पर यह झूठा आरोप लगाया है कि मैं निरक्षर हूँ और लिखने में पूरी तरह से असमर्थ हूँ। यहाँ, आप सभी की उपस्थिति में, मैं ये पंक्तियाँ लिख रहा हूँ, ताकि मेरे बदनाम करने वाले शर्मिंदा हों और मेरे बारे में झूठ बोलना बंद कर दें।

यह कहने के बाद, धन्य त्रिफिोन ने एक खाली कागज़ का पन्ना लिया और सभी की दृष्टि के सामने उस पर निम्नलिखित लिखा:

– त्रिफिोन, ईश्वर की कृपा से कॉन्स्टेंटिनोपल, नई रोम के आर्चबिशप, सार्वभौमिक पैट्रिआर्क।

फिर वह कागज़ सम्राट को सौंप दिया गया। सम्राट ने, उपर्युक्त थियोफेंस, केसरिया के बिशप की सलाह पर, एक अलग हाथ से उन पर निम्नलिखित शब्द जोड़ने का आदेश दिया:

– मैं पैट्रिआर्का का पद किसी अन्य कारण से नहीं, बल्कि केवल इसलिए त्यागता हूँ क्योंकि मैं स्वयं को इस पद के लिए अयोग्य मानता हूँ।

ये शब्द जोड़ने के बाद, सम्राट ने राजकुमारों, बोयारों और सभी अधिकारियों की उपस्थिति में दस्तावेज़ को पढ़ने का आदेश दिया। इसके बाद, अपने समर्थकों की सहायता से, उन्होंने परम पावन पैट्रिआर्क त्रिफिोन को पैट्रिआर्क के महल से जबरदस्ती हटा दिया और आदेश दिया कि उनके पुत्र थियोफिलैक्ट को पैट्रिआर्क के सिंहासन पर नियुक्त किया जाए। परिणामस्वरूप, चर्च के भीतर बड़े उथल-पुथल और अव्यवस्था फैल गई, क्योंकि चर्च के कई मंत्री थियोफिलैक्ट के बजाय, त्रिफिोन को ही पैट्रिआर्क मानते रहे।

इस बीच, धन्य त्रिफ़िोन, इस अपमान को धैर्यपूर्वक सहते हुए, उस मठ में चले गए जहाँ वे पैट्रिआर्क के सिंहासन पर नियुक्त होने से पहले रहते थे, और वहाँ दो साल और पाँच महीने रहने के बाद, वे प्रभु के पास चले गए[3118] । उनके पवित्र शरीर को महान कैथेड्रल में स्थानांतरित किया गया, जहाँ उन्हें महाधर्माध्यक्षों की कब्र के बगल में सुलाया गया।

उनके निधन के बाद, चर्च के भीतर का कलह और अव्यवस्था समाप्त हो गई, क्योंकि संत त्रिफिोन के निधन के बाद, सभी पैट्रिआर्क के रूप में थियोफिलैक्ट के चुनाव पर सहमत हो गए और उनके साथ संप्रदायिक एकता में फिर से शामिल हो गए[3119] । उन्होंने संत त्रिफिोन की स्मृति का सम्मान किया, परमेश्वर की महिमा की और धन्यवाद दिया।

[3118] संत त्रिफ़िोन का 933 में निधन हो गया।

[3119] पितृपाद थियोफिलैक्ट ने 933 से 956 तक कॉन्स्टेंटिनोपल के चर्च का नेतृत्व किया।

परम पूजनीय निकिफिोरस का पर्व

19 अप्रैल को स्मरण किया जाता है

हमारे महान पिता, धन्य निकिफिोरस, कॉन्स्टेंटिनोपल शहर के मूल निवासी थे। उनके माता-पिता, एंड्रयू और थियोडोरा, कुलीन वंश और महान धन-संपत्ति वाले लोग थे। उन्होंने अपने पुत्र को ईश्वर का भय सिखाया। उनके निधन के बाद, निकिफिोरस, दुनिया की व्यर्थता को समझकर, अपने भीतर ईश्वर की सेवा के लिए खुद को समर्पित करने की इच्छा महसूस करने लगे। इसलिए, अपनी पूरी विरासत गरीबों में बाँटने के बाद, वे कॉन्स्टेंटिनोपल से निकलकर कालसेडोन[3120] चले गए। वहाँ उन्होंने सेंट एंड्रयू के मठ में प्रवेश किया और तपस्वियों के अनुकरणीय जीवन को देखकर, उनके बीच रहने और जीने का संकल्प लिया। थोड़ी ही देर बाद, मठ के मठाधीश ने उन्हें फिनिसिया के द्वीप पर भेज दिया, जहाँ परमेश्वर की अति पवित्र माता का मठ स्थित था, ताकि वह वहाँ मठाधीश के रूप में सेवा कर सकें और मसीह के झुंड के चरवाहे बन सकें। द्वीप पर पहुँचने पर, आदरणीय संत ने अनेक चमत्कारों के माध्यम से वहाँ रहने वाले मूर्तिपूजकों को ईसाई धर्म में परिवर्तित किया, उनके मूर्तिपूजक पूजा स्थलों को ध्वस्त कर दिया और उनकी जगह चर्च बनवाए। अपने तपस्वी जीवन के द्वारा, वह सभी से श्रेष्ठ थे। मठ में तेतीस वर्ष तक रहने के बाद और यह अनुभव करते हुए कि प्रभु के पास उनका प्रस्थान निकट है, उन्होंने भाइयों को इसकी सूचना दी और अपने स्थान पर एक धर्मनिष्ठ भिक्षु, जोसेफ को मठाध्यक्ष नियुक्त किया, जबकि वे स्वयं काल्सेडोन के लिए प्रस्थान करने में शीघ्रता करने लगे। जहाज पर चढ़ने के बाद, वे बीमार पड़ गए और नाविकों से कहा:

'साहसी और शांत रहो, क्योंकि मैं प्रभु के पास जा रहा हूँ। मेरे शरीर को काल्सेडोन ले जाओ।'

ये शब्द कहते ही संत का निधन हो गया। अनुकूल हवा मिलने से, जहाज जल्द ही कालcedon पहुँच गया, और नाविकों ने पूजनीय संत के शरीर को ताबूत में रखकर सम्मानपूर्वक दफना दिया।

3 मई

20 अप्रैल (पुराना संस्करण)

हमारे पूजनीय पिता अनास्तासियस, माउंट सीनाई के मठाधीश की स्मृति

20 अप्रैल को स्मरणोत्सव

संत अनास्तासियस का पालन-पोषण उनके बचपन से ही महान भक्ति में हुआ था, जैसा कि उनके द्वारा कहे गए निम्नलिखित शब्दों से स्पष्ट है:

'जिन्होंने मसीह को देह में देखा, उन्होंने उन्हें एक नबी माना; लेकिन हम, यद्यपि हमने उन्हें अपनी शारीरिक आँखों से नहीं देखा है, फिर भी, अपने शुरुआती वर्षों से, जब हम शिशु और युवक थे, हमेशा उन्हें परमेश्वर, सर्वशक्तिमान प्रभु, युगों के सृष्टिकर्ता के रूप में पहचाना है, और हमने उन्हें पिता की महिमा का तेज के रूप में स्वीकार करना सीखा है। जहाँ तक उसकी पवित्र सुसमाचार का प्रश्न है, हम उसे इतनी श्रद्धा से सुनते हैं मानो हम स्वयं मसीह को देख रहे हों, जो हमसे बात कर रहे हों, हमारे सामने खड़े हों; और जब हम उसके परम पवित्र शरीर के निर्दोष मोती को ग्रहण करते हैं, तो हम विश्वास करते हैं कि हम स्वयं मसीह को ग्रहण कर रहे हैं। और जब हम एक प्रतिमा पर केवल उसकी छवि देखते हैं, तो हम उसकी पूजा करते हैं, उसके सामने साष्टांग प्रणाम करते हैं और उसका सम्मान करते हैं, जैसे कि हम स्वयं उसे देख रहे हों, जो स्वर्ग से हम पर दृष्टि डाल रहा हो।

आदरणीय अनास्तासियस के इन शब्दों से यह स्पष्ट है कि उनके बचपन से ही उन्हें सच्चे ईश्वर, मसीह को जानना, उन पर विश्वास करना, सच्ची श्रद्धा से उनका भय मानना, पूरे हृदय से उनसे प्रेम करना, और उनकी उचित उपासना करके उनका सम्मान करना सिखाया गया था।

[3120] काल्सेडोन का शहर बोस्फोरस के एशियाई तट पर, कॉन्स्टेंटिनोपल के सामने स्थित है, जो रोमन प्रांत बिथिनिया का हिस्सा था और जिसकी यह राजधानी थी।

वयस्क होने पर, संत अनास्तासियस ने संसार त्याग दिया और सुसमाचार की आज्ञा (मत्ती 16:24) के अनुसार अपना क्रूस उठाकर निश्चिवार्थ रूप से मसीह का अनुसरण किया। एक मठ में रहने चले जाने के बाद, अनास्तासियस ने वहाँ मठवासी संकल्प लिए। लेकिन, सद्गुणों की उच्चतम उपलब्धियों को प्राप्त करने की इच्छा और सद्गुणों में सिद्ध पुरुषों का अनुकरण करने के प्रयास में, संत अनास्तासियस यरूशलेम के लिए रवाना हुए और सिनाई पर्वत पर बस गए, जहाँ उन्होंने कई पवित्र पुरुषों के साथ मिलकर तपस्या के जीवन में उत्कृष्टता हासिल की।

उस समय, माउंट सिनाई के मठाधीश आदरणीय जॉन क्लाइमैकस[3121] थे। अपनी विनम्रता और बुद्धिमत्ता के लिए, उन्हें ईश्वर से आध्यात्मिक समझ और बुद्धिमत्ता का वरदान मिला। उन्होंने कई शिक्षाप्रद प्रवचन रचे, कुछ पवित्र पिताओं के जीवन लिखे, और उन्हें पुरोहित पद के लिए योग्य माना गया।

संत जॉन क्लाइमक्स और उनके भाई जॉर्ज के बाद, संत अनास्तासियस ने माउंट सिनाई के मठाध्यक्ष के रूप में सेवा की। उन्होंने एसेफली[3122] — यानी, 'निर्जीव' — के रूप में जाने जाने वाले विधर्मियों का खंडन करने के लिए बहुत प्रयास किया, उनके खिलाफ विस्तार से लिखा और बहस में उन्हें बेनकाब करके शर्मिंदा किया। अकेफालिस्ट संप्रदाय की उत्पत्ति सम्राट ज़ेनो[3123] के शासनकाल के दौरान अलेक्जेंड्रिया[3124] में हुई; इसके संस्थापक वे व्यक्ति थे जो पवित्र पिताओं की चौथी सार्वभौमिक परिषद[3125] के शत्रु और विरोधी थे, जो कालसेडोन[3126] में हुई थी। जब यह संप्रदाय अलेक्जेंड्रिया में उभरा, तब पेत्रुस नाम का एक विधर्मी तथाकथित पैट्रिआर्क था, जिसे मोगोस उपनाम से जाना जाता था[3127]। बाद में, सेवरस, जिन्हें अकेफालिस्ट संप्रदाय से जुड़ाव के कारण 'निश्चिरीमुख' उपनाम दिया गया था, इसी संप्रदाय में शामिल हो गए; यही सेवरस हैं जिन्होंने सम्राट अनास्तासियस[3128] के शासनकाल में अंतीयक के पैट्रिआर्काट का सिंहासन जब्त कर लिया था[3129]।

संत अनास्तासियस ने इन सभी विधर्मीयों को पराजित किया; वास्तव में, उन्होंने न केवल सिनाई पर्वत पर इनका विरोध किया, बल्कि पूरे सीरिया, अरब और मिस्र में भी यात्रा की, जहाँ भी गए इस विधर्म को जड़ से उखाड़ फेंका और मसीह की कलीसिया को सुदृढ़ किया। इस प्रकार कई वर्षों तक प्रभु की सेवा करने के बाद, पूजनीय अनास्तासियस ने वृद्धावस्था में देहांत किया। उनकी मृत्यु सम्राट हेराक्लियस के शासनकाल में हुई थी[3130]।

यह ध्यान देने योग्य है कि 'सिनाइट' उपनाम वाले दो अनास्तासियस थे। पहला – उम्र और पद दोनों में बड़ा, अंताकिया का पैट्रिआर्क, जिसे सम्राट जस्टिन ने अन्यायपूर्वक निर्वासित किया था – और दूसरा – अभी-अभी उल्लेख किया गया, जो कुछ बाद का था और उसने माउंट सिनाई के मठाधीश के रूप में सेवा की।

संत अनास्तासियस द सिनैट, एंटिओक के पैट्रिआर्क का पर्व दिवस

20 अप्रैल को स्मरण किया जाता है

[3121] संत जॉन क्लाइमक्स, माउंट सीनाई के मठाधीश, एक महान तपस्वी और धर्मपरायण व्यक्ति, *द लैडर* (सीढ़ी) नामक कृति के लेखक थे, जिसमें उन्होंने नैतिक पूर्णता के पथ पर आरोहण के चरणों की रूपरेखा प्रस्तुत की है। संत जॉन छठी शताब्दी में रहते थे - उनकी जीवनी 30 मार्च के अंतर्गत देखें।

[3122] एसेफली (ग्रीक शब्द 'केफली' - सिर से), एक नाम जो कुछ चर्च-सम्बंधी गुटों पर लगाया गया था, जैसे कि वह गुट जिसने एफ़िसुस की परिषद (तीसरी सार्वभौमिक परिषद) में, या तो साइरिल या एंटिओक के जॉन के पक्ष में जाने से इनकार कर दिया था, साथ ही उस गुट पर भी जो अलेक्जेंड्रिया के पैट्रिआर्क से अलग हो गया था जब उन्होंने एनोटीकोन पर हस्ताक्षर किए, – और कुछ अन्य पर भी।

[3123] सम्राट ज़ेनो ने 474 से 491 तक शासन किया।

[3124] अलेक्जेंड्रिया – उत्तरी मिस्र का एक शहर, जो प्राचीन काल में अपनी विद्वता और व्यापार के लिए प्रसिद्ध था।

[3125] चौथा सार्वभौमिक परिषद 451 में कालसेडन में सम्राट मार्सियन (450–457) के आदेश पर बुलाया गया था। इस परिषद में, प्रभु यीशु मसीह के व्यक्तित्व में दो स्वभावों के मिलन के तरीके के बारे में धर्मशास्त्र को निर्णायक रूप से स्थापित किया गया था।

[3126] चालसेडॉन शहर बोस्फोरस जलडमरूमध्य पर, बिथिनिया (एशिया माइनर में) में स्थित है।

[3127] पीटर मोगोस, या मोंग – एक मोनोफिसाइट – 477 से 490 तक पैट्रिआर्क थे।

[3128] अनास्तासियस (डिकोर) ने 491 से 518 तक साम्राज्य पर शासन किया।

[3129] सेवरस – एक संप्रदाय-प्रवर्तक – 512 से 519 तक पैट्रिआर्क थे।

[3130] सम्राट हेराक्लियस ने 610 से 641 तक शासन किया।

सम्राट जस्टनियिन महान के शासन के पैंतीसवें वर्ष[3131] में, अंटाकयिा के पैट्रआिर्क, डोमनस द यंगर[3132] की मृत्यु के बाद, अनास्तासयिस, जन्हिें सनिाइट के नाम से जाना जाता था, पैट्रआिर्क के सहिासन पर आसीन हुए, क्योंकि उन्हें माउंट सनिाई से बशिप के पद के लिए बुलाया गया था।

उस समय, मसीह के दव्यि शरीर के संबंध में कुछ व्यक्तयिों की अधर्मी कल्पनाओं के कारण कलीसयिा में कलह शुरू हो गया, अर्थात् यह कि जब उद्धारकर्ता मनुष्यों के बीच थे, उनके स्वेच्छा से कष्ट सहने से पहले उनके शरीर को कोई पीड़ा नहीं हुई, वह प्राकृतकि आवश्यकताओं के अधीन नहीं था, और यह कि हमारे प्रभु यीशु मसीह ने अपने कष्टों और पुनरुत्थान से पहले भोजन और पेय लयिा, ठीक उसी तरह जैसे उन्होंने पुनरुत्थान के बाद अपने प्रेरतिों के सामने प्रकट होने पर कयिा था[3133] । यह अधर्मी कपटपूर्ण तर्क कॉन्स्टेंटनिोपल में उत्पन्न हुआ था। इसका वर्णन कॉन्स्टेंटनिोपल के पैट्रआिर्क, संत यूटकियिस के जीवन में वसि्तार से कयिा गया है[3134] । सम्राट जस्टनियिन, जो वधिर्मीयों द्वारा भटक गए थे, ने शुरू में इस वधिर्मी अनुमान का समर्थन कयिा (हालांकि उन्होंने बाद में इस वधिर्म का परत्यिाग कर दयिा), और इस वधिर्मी शकि्षा को वशि्वास के एक सद्धिांत (डॉगमा) का दर्जा देने का प्रयास कयिा। परणिामस्वरूप, चर्च के भीतर बड़ा उथल-पुथल मच गया, इतना कि इस वधिर्म का वरिोध करने वाले पैट्रआिर्क, संत यूटकियिस को उनके पद से हटा दयिा गया।

जो भी लोग अज्ञानता के कारण इस शकि्षा को स्वीकार करें या नहीं, इस बारे में अनशि्चति थे, वे अंटओिक के पैट्रआिर्क, सनिई के अनास्तासयिस से परामर्श और मार्गदर्शन की प्रतीक्षा कर रहे थे, क्योंकि संत अनास्तासयिस पवत्रि शास्त्रों में गहराई से पारंगत, ऑर्थोडॉक्स वशि्वास की स्वीकारोक्तमिें दृढ़, और अपने जीवन-यापन के तरीके में पवत्रि व्यक्त थि। वधिर्मयिों ने संत अनास्तासयिस को अपने पक्ष में करने के लिए हर संभव प्रयास कयिा, इस आशा में कि यदि वह उनकी शकि्षा को स्वीकार कर लेते, तो सभी ऑर्थोडॉक्स उनके अनुकरण करते। इस उद्देश्य के लिए, उन्होंने राजा की सहायता मांगी, लेकनि कोई फायदा नहीं हुआ, क्योंकि संत अनास्तासयिस ने राजा की गलती के लिए उन्हें लखिति रूप में नदिा की। उन्होंने पूरे सीरयिाई प्रांतों में पादरयिों और आम लोगों को अपने पादरयिों के पत्र भी भेजे, जसिमें सभी को उपरोक्त वधिर्म से सावधान रहने का नर्दिेश दयिा गया। इसके अलावा, उन्होंने अंतीयक में चर्च में प्रतदिनि उपदेश दयिा, और इस प्रेरतिकि चेतावनी को दोहराया: *'परन्तु यदि हम या स्वर्ग से कोई दूत तुमको उस सुसमाचार के सविाय कोई और सुसमाचार सखिाए, तो वह श्रापति हो'* (गलातयिों 1:8)।

यह सब जानने पर, सम्राट जस्टनियिन को परम पावन पैट्रआिर्क अनास्तासयिस पर बहुत क्रोध आया और उन्होंने उन्हें उनके पद से हटाने की कोशशि की, ठीक वैसे ही जैसे उन्होंने कॉन्स्टेंटनिोपल के पैट्रआिर्क, यूटकिीस के साथ कयिा था; लेकनि उन्हें अचानक एहसास हुआ कि उनकी मृत्यु नजदीक आ रही है और उन्होंने अपना इरादा छोड़ दयिा।

मृत्युशय्या पर, सम्राट ने अपनी वधिर्मति पर पश्चाताप कयिा और अपनी वसीयत में यह शर्त रखी कि पवत्रि पैट्रआिर्क यूटकिीस को नर्विासन से उनके पद पर बहाल कयिा जाए। इस प्रकार जस्टनियिन पश्चाताप में मरा और उसे धर्मपरायण सम्राटों में गनिा गया; और कलीसयिा में शांत बिहाल हुई।

जस्टनियिन की मृत्यु के बाद, उनके भतीजे, जस्टनि द्वतीय[3135] ने राज्य का नयिंत्रण संभाल लयिा। वधिर्मयिों के उकसावे पर, उन्होंने अंकोई के बशिप, अनास्तासयिस द सनिाइट को उनके पद से हटा दयिा और उन पर अनुचति आरोप लगाए। इस प्रकार, संत अनास्तासयिस पर सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण आरोप यह लगाया गया कि उन्होंने चर्च के धन की सुरक्षा नहीं की और उसे बर्बाद कर दयिा; और दूसरा, सम्राट की बदनामी करने का, क्योंकि उन्होंने उनसे पूछे गए एक प्रश्न—कि उन्होंने चर्च की संपत्त कि को क्यों नहीं बख्शा—का इस प्रकार उत्तर दयिा था: 'ताकि सार्वभौमकि वनिाशकारी जस्टनि बाद वाले को छीन न ले।' ऐसे भी लोग थे जन्होंने दावा कयिा कि जब अनास्तासयिस को अंकोई के बशिप पद पर पदोन्नत कयिा जा रहा था, तो जस्टनि—जो अपने चाचा जस्टनियिन के अधीन सेवा करते हुए शाही

[3131] सम्राट जस्टनियिन महान ने 527 से 565 तक शासन कयिा।

[3132] एंटीओक के पैट्रआिर्क डोमनस द्वतीय ने 546 से 560 तक पैट्रआिर्क का पद संभाला।

[3133] ऐसे वचिार तथाकथति ऑटोरटोडोक्सेट्स वधिर्मयिों (ग्रीक में 'अक्षय' का अर्थ) द्वारा रखे गए थे – जो मोनोफज़िाइट वधिर्म की एक शाखा थी।

[3134] 6 अप्रैल के अंतर्गत उनकी जीवनी देखें।

[3135] जस्टनि द्वतीय ने 565 से 578 तक शासन कयिा।

कक्षों का प्रभारी था—ने अनास्तासियस से सोने का उपहार की उम्मीद की थी, क्योंकि वह धन का लालची प्रेमी था। लेकिन संत अनास्तासियस ने उन्हें कुछ नहीं दिया, यह सही तर्क देते हुए कि एक आध्यात्मिक पद के बदले सोना देना गलत था, जिसे सोने से नहीं बल्कि पवित्र आत्मा की कृपा से प्राप्त किया जाता है। उस समय से, जस्टिन ने अनास्तासियस के प्रति द्वेष रखना शुरू कर दिया। जब उनके चाचा की मृत्यु के बाद, उन्होंने राज्य का नियंत्रण संभाल लिया, तो उन्होंने निर्दोष संत अनास्तासियस के खिलाफ आरोप ढूंढना शुरू कर दिया और, झूठे आरोपों का सहारा लेकर, उन्हें उनके पद से हटा दिया।

[3136]अनास्तासियस के पदच्युत होने के बाद, फारान मठ के मठाध्यक्ष ग्रेगरी[3137] को उनकी इच्छा के विरुद्ध अंतीयक के पैट्रिआर्कल सिंहासन पर नियुक्त किया गया—वे भी एक धर्मनिष्ठ व्यक्ति थे और यरूशलेम के पैट्रिआर्क, परम पावन सोफ्रोनीयस द्वारा 'लिमोनार' में उनकी प्रशंसा की गई थी। इस ग्रेगरी की मृत्यु पर, सिनाई के धन्य अनास्तासियस को सम्राट मॉरिस के शासनकाल के दौरान तेईस वर्षों के निर्वासन के बाद, एक बार फिर से एंटिओक के पैट्रिआर्कल सिंहासन पर बहाल किया गया[3138] । उस समय, रोम में पोप संत ग्रेगरी महान थे, जिन्हें 'द डायलॉजिस्ट' या 'द इंटरलोक्यूटर' उपनाम से जाना जाता था[3139] । इस संत ने धन्य अनास्तासियस के साथ अत्यंत सच्ची आध्यात्मिक सहभागिता बनाए रखी और पत्रों के माध्यम से उनसे संवाद किया। जब संत पोप ग्रेगरी को पता चला कि अनास्तासियस अपने पद पर लौट आए हैं, तो उन्होंने तुरंत, उनकी वापसी पर प्रसन्न होकर, उन्हें एक संदेश भेजा जिसमें उन्होंने निम्नलिखित लिखा:

'महानतम में ईश्वर की महिमा, और पृथ्वी पर शांति और आनंद, उस महान नदी के लिए, जिसने एक बार अंफ़ियालोपोलिस की पत्थरीली मिट्टी को सूखा छोड़ दिया था, अब अपने मार्ग पर लौट आई है और एक बार फिर उन घाटियों को सींचती है जिनसे होकर वह बहती है।'

एक अन्य पत्र में वे फिर कहते हैं:

'आप मुझे बताते हैं, हे पवित्र पिता, कि यदि संभव होता, तो आप कागज या कलम के बिना मुझसे बात करना चाहते, और आप इस बात पर शोक करते हैं कि पूर्व और पश्चिम के बीच अत्यधिक दूरी इसे रोकती है। लेकिन मैं सच कहता हूँ, जब मैं कहता हूँ कि कागज पर भी आपके विचार मुझसे बात करते हैं – मानो कागज के बिना ही। आपके प्रवचन के शब्दों से मैं आपके प्रति आपका प्रेम देखता हूँ, और हम, सर्वशक्तिमान ईश्वर की कृपा से प्रेम के बंधन में एकजुट, दूरी से अलग नहीं हैं। आप सुनहरे कबूतर के पंख क्यों चाहते हैं, जो आपके पास पहले से ही हैं? क्योंकि ये पंख ईश्वर और अपने पड़ोसी के प्रति प्रेम हैं। इन्हीं पंखों पर पवित्र चर्च ऊँची उड़ान भरती है; इनके द्वारा वह सभी सांसारिक चीजों से परे चली जाती है। यदि आप, हे पवित्र पिता, इन पंखों के स्वामी न होते, तो आप अपने पत्र में इतने प्रेम के साथ मेरी ओर न उड़कर आते। इसलिए, मैं आपसे विनती करता हूँ कि आप मेरी, एक कमज़ोर आत्मा, के लिए प्रार्थना करें, कि आपकी प्रार्थनाओं के द्वारा प्रभु मुझे ऐसी बड़ी विपत्तियों और उथल-पुथल (जो लोम्बार्ड्स द्वारा रोम पर डाली गई हैं[3140]) से शीघ्र मुक्ति दें और मुझे शाश्वत विश्राम के बंदरगाह तक ले जाएँ। मैंने कृतज्ञतापूर्वक आपके दयालु शुभकामनाओं का पत्र ( ) प्राप्त किया है, जो आपने, ईश्वर के पुरुष, अपनी आत्मा की विनम्रता में, मुझे व्यक्त की हैं और जिनके बारे

[3136] संत मॉरिसियस ने 582 से 602 तक बिज़ान्टियम पर शासन किया।

[3137] फारन मठ का नाम पास के फारन गाँव के नाम पर रखा गया है। इस मठ का स्थान आदरणीय यूथिमियस के जीवन में निम्नलिखित शब्दों में वर्णित है: 'यूथिमियस पवित्र नगर से छह मील दूर स्थित फारा नामक मठ में आए।' – ग्रेगरी द्वितीय ने 573 से 596 तक अंकोक के पैट्रिआर्काट पर शासन किया।

[3138] सिनाई के संत अनास्तासियस ने पहली बार 561 से 572 तक, और दूसरी बार 596 से 601 तक पैट्रिआर्की का पद संभाला।

[3139] संत ग्रेगरी द डायलॉजिस्ट 590 से 604 तक रोम के पोप थे। चर्च द्वारा उनका पर्व 12 मार्च को, संत पेत्रुस प्रेरित के पर्व के दिन, उनके नाम से समर्पित पार्श्व चैपल में मनाया जाता है। – सेंट ग्रेगरी की कृतियों में, निम्नलिखित विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं: 'इटालियन पिताओं के जीवन पर संवाद' (इसी कृति के कारण उन्हें 'द डायलॉजिस्ट' की उपाधि मिली) और 'द पास्टोरल रूल', जो एक पादरी के कर्तव्यों से संबंधित है।

[3140] लोम्बार्ड एक जर्मनिक जनजाति थी; प्राचीन काल में वे निचले एल्बे और एलर के बीच रहते थे; चौथी शताब्दी से उन्होंने धीरे-धीरे दक्षिण-पूर्व की ओर डैन्यूब की ओर बढ़ना शुरू कर दिया और छठी शताब्दी में पैनोनिया पर नियंत्रण कर लिया। वहाँ से, 568 में, वे इटली में मार्च किए और पूर्वी रोमनों के खिलाफ एक युद्ध में पूरे देश को जीत लिया, जिसमें लिगुरिया, एक्ज़ार्केट, पेंटापोलिस, रोमन डची, नेपल्स का क्षेत्र और दोनों दक्षिणी प्रायद्वीपों को छोड़कर। मध्य इटली के जीते हुए क्षेत्रों ने लोम्बार्ड्स का साम्राज्य बनाया, जिसे 774 में चार्लेमेन ने जीत लिया, जिन्होंने लोम्बार्ड्स के राजा का खिताब धारण किया। बाद के जर्मन राजा और सम्राट, इटली के शासक के रूप में, लोम्बार्ड्स के राजा का खिताब धारण करते थे।

में आप कहते हैं: 'एक भखिारी अपनी ही चीज़ों के अलावा और क्या दे सकता है?' लेकनि यदि आप आत्मा से स्वयं को दीन न बनाते, तो आपके आशीर्वाद इतने उदार न होते। परमेश्वर सर्वशक्तमिान आपको अपनी ढाल से सभी बुराइयों से बचाए। और चूँकि सभी भले लोगों के लिए आपका जीवन अत्यंत महत्वपूर्ण है, परमपिता आपको कई वर्षों के बीतने के बाद स्वर्गीय स्वदेश के शाश्वत नविासों में स्थानांतरति करें।"

रोम के पोप, संत ग्रेगरी का, एंटओिक के पैट्रआर्क, धन्य अनास्तासयिस को लखिा यह पत्र, उनके बीच पवत्रि आत्मा में साझा कए गए पारस्परकि प्रेम को स्पष्ट करता है; और साथ ही, यह पत्र अनास्तासयिस के जीवन की धार्मकिता और पवत्रिता का भी साक्ष्य है।

धन्य अनास्तासयिस, सहिासन पर लौटने के बाद छह वर्ष जीवति रहने के पश्चात्, सम्राट मॉरसि के शासन के चौदहवें वर्ष में प्रभु के पास चले गए।

संत अनास्तासयिस द सनिाइट के बाद, एक अन्य अनास्तासयिस ने उनके उत्तराधकिारी के रूप में पदभार संभाला, हालांकि उनके नाम के साथ 'सनिाइट' उपाधि नहीं थी[3141] । बाद वाले की हत्या यहूदयिों द्वारा सम्राट फोकास के शासनकाल में कर दी गई थी, जो ईसाइयों का उत्पीड़क था[3142] , और श्रद्धालुओं द्वारा उन्हें मसीह के एक शहीद के रूप में पूजति कयिा गया।

यह ध्यान देने योग्य है कि 'सनिाई के' उपाधि धारण करने वाले दो अनास्तासयिस थे। पहले वाले एंटओिक के पैट्रआर्क थे, जनिका नधिन सम्राट मॉरसि के शासनकाल में हुआ, जबकि दूसरे, जनिका पर्व हम अब मनाते हैं, सनिाई पर्वत के मठाधीश थे और सम्राट हेराक्लयिस के शासनकाल में उनकी मृत्यु हुई[3143] , जो मॉरसि को मारने वाले उत्पीड़क फोकास के उत्तराधकिारी थे। उन दनिों अनास्तासयिस नाम के अन्य सम्मानति संत भी थे जो अपने सदाचारी जीवन के लिए प्रसद्धि थे, लेकनि वे सनिाई के नहीं थे, जबकि यह अनास्तासयिस, जो सनिाई के अनास्तासयिस के बाद अंतीयक में पैट्रआर्क के सहिासन पर चढ़ा था, यहूदयिों द्वारा मारा गया था। इसके अलावा, *लमिोनार* में, अध्याय 48 और 49 में, बाबा अनास्तासयिस का उल्लेख है, जन्होंने यरूशलेम में जीवन-दायक कब्र और हमारे ईश्वर मसीह के पुनरुत्थान के चर्च के संरक्षक के रूप में सेवा की।

संत ग्रेगरी, एंटओिक के पैट्रआर्क की स्मृति

20 अप्रैल को स्मरण कयिा जाता है

आदरणीय ग्रेगरी, माउंट सनिाई और राइफ के बीच स्थति फारान नामक एक मठ के मठाध्यक्ष थे। ईश्वर की एक वशिेष व्यवस्था से, उन्हें ईश्वर द्वारा चमत्कारकि रूप से पैट्रआर्कल सहिासन के योग्य पुरुष के रूप में नयिुक्त कयिा गया। इसका वर्णन यरूशलेम के पैट्रआर्क, परम पावन सोफ्रोनीयस के *लमिोनार* में कयिा गया है।

अब्बा जॉर्ज अर्मेनयिाई, अब्बा सेरजयिस के एक शष्यि, ने हमें नम्निलखिति बताया: 'चूंकि फारान मठ के पूर्व मठाध्यक्ष अब्बा ग्रेगरी ने मुझसे बार-बार कहा था कि मैं उन्हें अब्बा सेरजयिस के पास ले जाऊँ, मैं उनके साथ उस वृद्ध के पास चल पड़ा, जो उस समय मृत सागर के पास मरुभूमि में रहते थे[3144] . वरष्ठि ने उन्हें देखकर अभविादन कयिा और बहुत ही स्नेहपूर्वक उनका स्वागत कयिा। उन्होंने पानी लाया, उनके पैर धोए, और पूरे दनि उनकी आत्मा के उद्धार के बारे में उनसे वार्ता की; और अगले दनि उन्होंने उन्हें वदिा कर दयिा। जब अब्बा ग्रेगरी ने अब्बा सेरजयिस से वदिा ली, तो मैंने वरष्ठि से पूछा:

[3141] अनास्तासयिस द्वतिीय ने 602 से 610 तक अंकोई के पैट्रआर्केट पर शासन कयिा।

[3142] सम्राट फोकास ने 602 से 610 तक शासन कयिा।

[3143] सम्राट हेराक्लयिस ने 610 से 641 तक शासन कयिा।

[3144] मृत सागर – फलिस्तीन के दक्षणि में एक खारा, तारकोल जैसा जल नकिाय है, जो सोडोम और गोमोरा के वनिाश के बाद सद्दिीम की घाटी में बना था। यह 70 वर्स्ट लंबा और 25 वर्स्ट चौड़ा है। यह उत्तर में गहरा और दक्षणि में उथला है। इसका स्तर भूमध्य सागर के स्तर से 1,200 फीट नीचे है। इस सागर के पानी में कड़वे-नमकीन कणों की प्रचुरता का मतलब है कि इसमें और इसके आसपास कहीं भी कोई जीवन नहीं है, न तो मछलयिाँ, न पक्षी, और न ही पौधे। झील के केंद्र तक पहुँचने के प्रयास असफल रहे हैं, और कई लोगों के लिए यह जानलेवा भी रहा है। मृत सागर का पानी अपनी असाधारण घनत्व के लिए जाना जाता है; इसमें डूबना मुश्कलि है; लहरें चट्टानी तटों से पत्थर के टुकड़ों की तरह टकराती हैं।

'क्या आप जानते हैं, पिता, कि मैं भटक गया था? क्योंकि मैंने आपके पास कई बिशप, पुरोहित और अन्य पादरियों को लाया है, और आपने उनमें से किसी के भी पैर नहीं धोए, सिवाय अब्बा ग्रेगरी के?'

इन शब्दों पर वृद्ध ने उत्तर दिया:

'मैं नहीं जानता कि ग्रेगरी कौन है, लेकिन मैं जानता हूँ कि मैंने उस पैट्रिआर्क को अपनी गुफा में स्वीकार किया, क्योंकि मैंने देखा कि उसने ओमोफोरीयॉन[3145] पहना था और अपने हाथों में सुसमाचार पकड़ा हुआ था।'

यह अबा सेरजियस ही थे जिन्होंने भविष्यसूचक आत्मा में अबा ग्रेगरी के बारे में कहा था, क्योंकि पाँच साल बाद, ईश्वर की कृपा से, अबा ग्रेगरी को अंफ़ियालोपोलिस शहर का पैट्रिआर्क नियुक्त किया गया था[3146] ।

अंतियोखिया के पैट्रिआर्क, अबा ग्रेगरी के संबंध में, कुछ वृद्धों ने बताया कि उनमें विशेष रूप से निम्नलिखित सद्गुण थे: दान, क्षमा, पश्चाताप और विनिम्रता। उनमें पापियों के प्रति महान करुणा भी थी और उन्होंने कई अन्य सद्गुण भी अर्जित किए। उनकी पवित्रता यरूशलेम के पैट्रिआर्क सोफ्रोनीयस, उनके बारे में निम्नलिखित गवाही देते हैं:

– एंटिओक के पैट्रिआर्क, धन्य ग्रेगरी जैसे व्यक्ति संत और पूजनीय लोगों में गिने जाने के योग्य हैं: उन्हें उनकी इच्छा के विरुद्ध पैट्रिआर्केट के लिए चुना गया था और उन्होंने हमारे प्रभु मसीह में एक पवित्र जीवन जिया, जिनका महिमा युगानुयुग हो। आमीन।

हमारे पूजनीय पिता थियोडोर ट्राइकिना की स्मृति

20 अप्रैल को स्मरण किया जाता है

आदरणीय थियोडोर त्रिखिना, अर्थात् जटाधारी भिक्षु[3147] , अमीर माता-पिता के पुत्र थे और कॉन्स्टेंटिनोपल शहर से थे। ईश्वर के लिए अपने माता-पिता, अपनी संपत्ति और अपनी कीर्ति को त्यागकर, उन्होंने अपना देश छोड़ दिया और किसी रेगिस्तानी मठ में भिक्षु का संन्यास ग्रहण किया।

वहाँ उन्होंने इतना कठोर जीवन जिया कि उन्होंने अपने शरीर को पूरी तरह से क्षीण कर लिया, जिससे उनका चेहरा एक लाश जैसा हो गया। वे पूरी रात प्रार्थना में खड़े रहते थे और ठंड व ओस के बावजूद, उन्होंने कभी अपना सिर नहीं ढका, वे केवल खुरदरे बालों का एक ही वस्त्र पहनते थे, जिसके कारण उन्हें, जैसा कि उल्लेख किया गया है, 'बाल-भेषधारी संन्यासी' या 'ट्रिचिनिोस' कहा जाता था। बाद में, जिस मठ में संत ने अपना कठोर जीवन व्यतीत किया, उसका नाम उनके नाम पर रखा गया। उनके पराक्रमो के लिए, संत थियोडोर को ईश्वर से राक्षसों पर अधिकार प्राप्त हुआ और कई चमत्कार करने के बाद, वे हमारे ईश्वर मसीह की महिमा के लिए, शांतिपूर्वक प्रभु के पास चले गए[3148] । उन्होंने न केवल अपने जीवनकाल में, बल्कि अपने निधन के बाद भी चमत्कार किए, क्योंकि उनके पवित्र अवशेषों से एक सुगंधित, उपचारात्मक मूरा (मिश्र का एक सुगंधित द्रव्य) बहती थी, जिससे हमारे ईश्वर मसीह की महिमा के लिए, कई बीमारियाँ ठीक हुईं और अशुद्ध आत्माएँ भगा दी गईं।

4 मई

21 अप्रैल (पुराने कैलेंडर के अनुसार)

[3145] ओमोफोरीयॉन (ग्रीक में 'कंधा' और 'भार' के लिए) एक कंधे का वस्त्र है, जो एक बिशप के परिधान का हिस्सा है। ओमोफोरीयॉन एक लंबा, चौड़ा वस्त्र है जिस पर एक क्रॉस की छवियाँ बनी होती हैं; इसे अन्य बिशप के परिधानों के ऊपर पहना जाता है, जिसका एक सिरा सामने और दूसरा पीछे की ओर लटकता रहता है। प्रतीकात्मक रूप से, ओमोफोरीयॉन उस खोए हुए भेड़ के बच्चे का प्रतिनिधित्व करता है जिसे सच्चे चरवाहे ने अपने कंधों पर उठा लिया है (लूका 15:4–7)।

[3146] संत ग्रेगरी प्रथम ने 573 से 596 तक अंकोई की धर्मपीठ पर कार्य किया।

[3147] ग्रीक 'ट्रिक्स' – बाल।

[3148] संत थियोडोर के जीवन की सटीक तारीखें अज्ञात हैं। यह केवल निश्चित है कि वह चौथी और नौवीं शताब्दी के बीच रहते थे।

उसी दनि, हम अपने पवत्रि पति कॉन्स्टेंटनिोपल के पैट्रआिर्क मैक्समियिन का स्मरण करते हैं, जन्हिोंने थयिोडोसयिस द यंगर के शासनकाल में ढाई साल तक चर्च का शासन कयिा और 12 अप्रैल 481 को शांतपिूर्वक नधिन कर गए।

पवत्रि पुरोहति-शहीद जैनुअरीउस की शहादत

21 अप्रैल को स्मरण कयिा जाता है

उस समय जब अधर्मी सम्राट डायोक्लेटयिन और मैक्समियिन[3149] ईसाइयों का क्रूरतापूर्वक उत्पीड़न कर रहे थे, बशिप जैनुअरीउस को गरिफ्तार कर पूछताछ के लिए कैंपेनयिा के राज्यपाल टमिोथी[3150] के सामने पेश कयिा गया। जब सैन्य कमांडर ने देखा कि इयानारयिस, मूर्तयिों की पूजा करने के लिए वभिन्नि तरीकों से मजबूर कए जाने के बावजूद - कभी चापलूसी से लुभाया गया, कभी धमकयिों से डराया गया - ईसाई वश्विास में अडगि रहा, तो उसने उसे जलाने के लिए एक लाल-गरम भट्टी में फेंकने का आदेश दयिा। लेकनि संत, बेबीलोन की भट्टी में तीन युवकों की तरह (देखें दानयिेल 3), आग से अप्रभावति रहे, क्योंकि परमेश्वर का एक स्वर्गदूत उन पर उतर आया, जसिने आग की शक्ति को नष्क्रयि कर दयिा, और संत लपटों के बीच आनंदति हुए, गाते हुए और परमेश्वर की महमिा करते हुए।

जब वह भट्टी से बाहर नकिला, तो सभी ने देखा कि आग ने उसके कपड़ों को छुआ भी नहीं था, और वे इस बात से बहुत हैरान रह गए। हालाँकि, कमांडर यह मानकर कि ईसाई बशिप कसिी जादुई शक्ति द्वारा संरक्षति होने के कारण आग से बनिा कसिी चोट के नकिल आया था, संत के प्रति अत्यंत क्रोध से भर गया और उसने उसे यंत्रणा पर इतना कसकर बाँधने का आदेश दयिा कि उसके शरीर के अंग भी जोड़ों से अलग हो गए, और फरि संत को नर्दियता से पीटने का आदेश दयिा, जब तक कि उनका पूरा शरीर टुकड़े-टुकड़े न हो जाए और उनकी हड्डयिाँ नज़र आने लगें, जबकि उनके चारों ओर की ज़मीन खून से लथपथ हो गई।

दो पुरोहति—डीकन फेस्टस और रीडर डज़िडिेरयिस—यह भयानक तमाशा देखने आए; भीड़ के बीच खड़े होकर, उन्होंने अपने बशिप के कष्टों को श्रद्धापूर्वक देखा। और जैसे ही वे शहीद द्वारा प्रदर्शति धैर्य पर अपने हृदय में प्रसन्न हुए, फरि भी उस पर थोपी गई क्रूर यातनाओं पर रो पड़े, तो मूर्तपिूजकों ने इन संकेतों से यह नष्किर्ष नकिाला कि वे ईसाई थे। तब दुष्टों ने उन दोनों को पकड़ लयिा और उन्हें बाँधकर—पवत्रि शहीद बशिप जैनारयिस के साथ—सैन्य कमांडर के पीछे-पीछे पुटेओली शहर ले गए[3151] , जहाँ उन्हें एक कालकोठरी में डाल दयिा गया।

उसी कालकोठरी में पुटेओली शहर के डकिन, प्रोकलस और सोसयिस थे, जन्हिें मसीह की गवाही देने के लिए वहाँ कैद कयिा गया था, और दो सामान्य वश्विासी, यूटकियिस और एक्यूटयिो, जन्हिें जंगली जानवरों द्वारा चीर-फाड़ कर मारने की सज़ा दी गई थी।

प्रातकाल, उन्हें सभी को बशिप के साथ चौक में ले जाया गया और जानवरों के सामने छोड़ दयिा गया। लेकनि ईश्वर, जो अपने संतों के बीच महमिामय हैं, ने जानवरों को शांत कर दयिा, ठीक वैसे ही जैसे उन्होंने एक बार उस गुफा में शेरों को शांत कयिा था जसिमें दानयिेल को फेंका गया था (दानयिेल 6)। उन जानवरों में से एक ने भी उन पवत्रि शहीदों को नहीं छुआ; बल्कि, अपनी स्वाभावकि क्रूरता को अस्थायी रूप से भेड़ों की नम्रता से बदलकर, वे सभी पवत्रि बशिप जैनारयिस के पास आए और उनके पैरों पर लोट गए। इस असाधारण घटना से उपस्थति सभी लोग आश्चर्य और भय से भर गए। इस बीच, सेनापति, इस घटना को भी ईसाइयों की कथति जादुई शक्ति का परणिाम मानकर, इस बात पर वचिार कर रहा था कि ईश्वर के उस पवत्रि पुरुष और उसके साथयिों को मृत्युदंड देने का सबसे अच्छा तरीका क्या है।

जब वह, अपनी आध्यात्मकि आँखों से अंधा, इस पर वचिार कर रहा था, तो उसने अचानक अपनी शारीरकि दृष्टि भी खो दी और खुद को एक मार्गदर्शक की आवश्यकता में पाया, और दीवारों का सहारा लेकर अपना रास्ता टटोलने लगा। हालाँकि, जब मसीह के पवत्रि शहीद, इयानवारऑन ने, अपनी दयालुता में, अपने अत्याचारी, सैन्य कमांडर टमिोथी के लिए प्रार्थना की, तो बाद वाले ने तुरंत अपनी शारीरकि दृष्टि वापस पा ली, हालाँकि उसकी आध्यात्मकि दृष्टि नहीं।

[3149] डायोक्लेटयिन ने 284 से 305 तक और मैक्समियिन गैलेरयिस ने 305 से 311 तक रोमन साम्राज्य पर शासन कयिा।

[3150] कैम्पेनयिा मध्य इटली के क्षेत्रों में सबसे दक्षणिी क्षेत्र है, जो माउंट मासकिा से सलिार नदी तक टायर्रेनीयन सागर के तट पर स्थति है।

[3151] पुटेओली कैंपानयिा में एक तटीय शहर है, जो नेपल्स से बहुत दूर नहीं है।

इन सभी चमत्कारों को देखने वाले लोग मसीह में वशि्वास करने लगे, जनिकी संख्या लगभग पाँच हज़ार थी। जहाँ तक उस सैन्य कमांडर का सवाल है, जसिे शहीद की प्रार्थनाओं से अचानक अंधापन से दृष्टि वापस मलिी थी, वह कृतघ्न और कठोर हृदय होने के कारण, न केवल सत्य को पहचानने में वफिल रहा, बल्कि वह और भी बड़े पागलपन में पड़ गया; और हमारे प्रभु मसीह की प्रशंसा करने के बजाय, उसने उनके खलिाफ अपमानजनक शब्द बोले; इतने सारे लोगों के मसीह के प्रति परिविर्ति होने के क्रोध से भरा हुआ, उसने पवत्रि शहीदों को तलवार से सरि कलम करने का आदेश दयिा। इस प्रकार, ईश्वर के पवत्रि शहीद, संत इयानारयिस ने अपने साथी पीड़तिों—डीकन फेस्टस, प्रोकल्स और सोसयिस, रीडर डज़िडिरयिस, और सामान्य लोग यूटकियिस और एकुटयिो—के साथ, पुटेओली शहर की दीवारों के बाहर तलवार से वध कएि जाने के बाद शहीद का मुकुट प्राप्त कयिा[3152] ।

इन पवत्रि शहीदों के शरीर पड़ोसी शहरों के नविासयिों द्वारा ले लिए गए, प्रत्येक शहर ने एक-एक शहीद को लयिा, क्योंकि प्रत्येक यह चाहता था कि ईश्वर के समक्ष उसका अपना मध्यस्थ हो। पवत्रि शहीद जैनारयिस का शरीर नेपल्स शहर के नविासयिों द्वारा ले जाया गया; सम्मानपूर्वक अपने शहर में लाने के बाद, उन्होंने इसे अपनी चर्च में सुला दयिा। जब संत का शरीर पुटेओली नगर से ले जाया जा रहा था, तो उन्होंने संत के उस रक्त को, जो वहाँ जमीन पर जम गया था, इकट्ठा कयिा, उसे एक काँच के पात्र में रखा और श्रद्धापूर्वक अपने साथ रख लयिा। जब इस रक्त से भरा पात्र शहीद के सरि पर रखा गया, तो यह तुरंत घुल गया और गर्म हो गया, मानो यह अभी-अभी ही बहाया गया हो। नेपल्स में भी, पवत्रि शहीद जैनारयिस की मध्यस्थता से कई चमत्कार हुए। वहाँ नम्निलखिति चमत्कार वशिेष रूप से प्रसद्धि था।

एक बार, माउंट वेसुवयिस[3153] ने इतनी बड़ी मात्रा में ज्वलंत लावा उगल दयिा कि न केवल नकिटवर्ती शहरों के बल्कि दूर-दूर तक के नविासयिों में भय और दहशत छा गई। लेकनि जब लोग संत के मकबरे पर आकर आँखों में आँसू लिए उनकी मदद के लिए पुकारने लगे, तो ज्वलंत लावा तुरंत पहाड़ के भीतर वापस चला गया, और लोगों को कोई नुकसान नहीं हुआ। मृत युवक के संबंध में एक और शानदार चमत्कार भी हुआ।

मैक्समिलि नाम की एक वधिवा की एकमात्र पुत्र था, और जब उसकी मृत्यु हो गई, तो वह उसके लिए अत्यंत वलिाप करने लगी। चर्च में प्रवेश करते समय, उसने चर्च के दरवाजों के ऊपर संत जैनारयिस की छवि वाली एक प्रतमिा देखी; पुरानी वाचा में एक बार हुए चमत्कार को याद करते हुए—अर्थात्, कैसे पवत्रि नबी एलशिा ने शुनेमी स्त्री के पुत्र को मृतकों में से जीवति कर दयिा था (देखें 2 राजा 4)—उसने परमेश्वर और परमेश्वर के संत में अपनी दृढ़ आशा रखी, और एलशिा के उदाहरण का अनुसरण कयिा: पवत्रि शहीद जैनारयिस की प्रतमिा लेकर, उन्होंने उसे अपने मृत पुत्र पर रख दयिा, अपनी आँखें उसकी आँखों से, अपने होंठ उसके होंठों से, और चत्रिति शरीर की बाकी समानता को मृत लड़के के शरीर से मलिाते हुए, और कराहों और उत्कट आँसुओं के साथ प्रार्थना की, यह कहते हुए:

'हे परमेश्वर के सेवक! मुझ पर दया करें और मेरे दुख को कम करें: मेरे एकमात्र पुत्र को मृतकों में से जलिा उठाएँ।'

जब वह इस प्रकार प्रार्थना कर रही थी, तो उसका पुत्र तुरंत जीवति हो उठा और स्वस्थ होकर खड़ा हो गया। उसके अंतमि संस्कार के लिए इकट्ठा हुए सभी लोग, ऐसा शानदार चमत्कार देखकर, चकति हो गए, उन्होंने परमेश्वर की महमिा की और धन्यवाद दयिा, जो अपने संतों के माध्यम से अद्भुत चमत्कार करते हैं, और उन्होंने पवत्रि शहीद जैनारयिस की उनकी त्वरति सहायक के रूप में प्रशंसा की, जनिकी पवत्रि प्रार्थनाओं के द्वारा प्रभु हम पर सदा के लिए अपनी दया बनाए रखें। आमीन।

शहीद संत थयिोडोर का कष्टकथा

21 अप्रैल को स्मरण कयिा जाता है

[3152] पवत्रि शहीदों की मृत्यु लगभग 305 में हुई।

[3153] वेसुवयिस इटली में नेपल्स शहर के पास एक ज्वालामुखी है। 79 ईस्वी में, वेसुवयिस पहली बार फटा, जसिसे हर्क्यूलानयिम, पोम्पेई और स्टाबयिाई के शहर दब गए। तब से, वेसुवयिस समय-समय पर फटता रहा है, कभी-कभी एक दशक में कई बार भी। संयोग से, 1906 में एक काफी शक्तशिाली वस्फिोट हुआ था जसिने कई शहरों को नष्ट कर दयिा था।

सम्राट एंटोननिस[3154] के शासनकाल में, जब सैन्य कमांडर थियोडोटोस पम्फलियिा[3155] में पर्गा पर शासन कर रहा था, वहाँ सुंदर और शारीरकि रूप से मजबूत युवकों को सैन्य सेवा के लिए भर्ती कयिा जाता था। अन्य कुलीन युवकों के साथ, धन्य थयिोडोर, जनिकी सुंदरता आज भी याद की जाती है, को ले जाया गया और सैन्य कमांडर थयिोडोटोस के सामने पेश कयिा गया। कमांडर ने उन पर एक सैन्य प्रतीक चन्हि लगाया, जैसा उसने अन्य युवकों पर कयिा था। लेकनि संत थयिोडोर ने तुरंत उसे फेंक दयिा, कहते हुए:

'मेरे स्वर्गीय राजा, प्रभु यीशु मसीह ने मुझे मेरी माँ के गर्भ से ही चहि्नति कयिा है, और मैं कसिी अन्य राजा का सैनकि नहीं बनना चाहता।'

तब सेनापतनि ने संत से पूछा:

'तुम कसि राजा के सपिाही हो?'

'मैं उस राजा का सपिाही हूँ जसिने स्वर्ग और पृथ्वी की रचना की!'

कमांडर ने यह समझते हुए कि थियोडोर एक ईसाई है, उससे पूछा:

'क्या तुम हमारे देवताओं को बलदिान नहीं चढ़ाओगे?'

'मैंने कभी अशुद्ध राक्षसों को बलदिान नहीं चढ़ाया है, और न ही कभी चढ़ाऊँगा,' संत ने उत्तर दयिा।

तब सेनापतनि ने उसे बुरी तरह कोड़े मारने का आदेश दयिा, जसिके बाद उसने उसे पूछताछ के लिए फरि से बुलाया और पूछा:

'क्या अब तुमने अपना मन बदल लयिा है? क्या तुम मेरी आज्ञा मानकर देवताओं की पूजा करोगे?'

'यदि तुम,' संत ने उत्तर दयिा, 'उस ईश्वर को जान लेते जसिने तुम्हें बनाया है, तो तुम स्वयं उसकी पूजा करना चाहोगे।'

तब सेनापतनि ने आग जलाने, एक वशिाल लोहे का तवा लाने, बड़ी मात्रा में पचि, गंधक और मोम पघिलाने, शहीद को नग्न करके तवे पर लटिाने और उस पर उबलता हुआ पचि डालने का आदेश दयिा। जब यह सब कुछ तैयार हो रहा था, तभी ईश्वर ने अचानक एक अद्भुत चमत्कार कयिा: एक कान फाड़ देने वाली गर्जना सुनाई दी और ठीक उसी स्थान पर जहाँ आग और कड़ाही थे, वहाँ भूकंप आ गया; फरि उस स्थान पर पृथ्वी फट गई ( ) और जमीन की दरार से प्रचुर मात्रा में पानी फूट पड़ा, जसिने आग और कड़ाही को बुझा दयिा। हालाँकि, पवत्रि शहीद पूरी तरह से सुरक्षति रहे और उन्होंने सेनापतसि कहा:

'देखो, तुम देखते हो कि यह मेरे द्वारा नहीं कयिा गया, बल्कि मसीह, मेरे परमेश्वर, जनिकी मैं सेवा करता हूँ, द्वारा कयिा गया है।' यदि, तथापि, तुम अपने देवताओं की शक्ति का परीक्षण करना चाहते हो, तो एक और चति तैयार करो, कड़ाही को फरि से आग लगाओ, और अपने देवताओं के नाम पर आज्ञा दो कि तुम्हारे एक सैनकि को उस पर रखा जाए; तब तुम अपने देवताओं की शक्तहिीनता देखोगे और मेरे ईश्वर की सर्वशक्तमिानता को पहचानोगे।

यह सुनकर, उपस्थति सैनकिों ने राज्यपाल से कहा:

'नहीं, महोदय, हमारे साथ ऐसा न करें, बल्कि हमारे देवताओं के पुरोहतिों के साथ ऐसा करें। तवा पुरोहति का भी वही पालन करेगा जैसा वह थयिोडोरा का करता है, और उसे वैसा ही जलाएगा जैसा उसने उसे जलाया था।'

पुजारी को तुरंत बुलाने का आदेश देकर, कमांडर ने उससे पूछा:

'तुम्हारा नाम क्या है?'

पुजारी ने उत्तर दयिा, 'डायोस्कोरस, यही मेरा नाम है।'

तब कमांडर ने पुजारी से पूछा:

'ईसाई कसि जादुई जड़ी-बूटयिों से स्वयं का अभषिेक करते हैं जब वे नडिर होकर आग में जाते हैं और वहाँ बनि कसिी नुकसान के रहते हैं, जैसा कि आज थयिोडोर के मामले में हुआ?'

'ईसाई जादूगर नहीं होते,' डयिोस्कोरस ने उत्तर दयिा, 'लेकनि मसीह का नाम इतना शक्तशिाली है कि जहाँ भी उसे वशि्वास के साथ पुकारा जाता है, सभी जादुई मंत्र टूट जाते हैं और दुष्टात्माएँ काँप उठती हैं।'

'नशि्चय ही,' कमांडर ने पूछा, 'क्या मसीह हमारे ज्यूस से अधकि शक्तशिाली है?'[3156]

[3154] एंटोननिस पयिस 138 से 161 तक सम्राट था।

[3155] पम्फलियिा – एशयिा माइनर के दक्षणि में एक संकीर्ण तटीय क्षेत्र, जो 78 ईसा पूर्व में एक रोमन प्रांत बन गया।

[3156] ज़ीउस – प्राचीन यूनानी धर्म का प्रमुख देवता, जसिे स्वर्ग और पृथ्वी का शासक माना जाता था।

'ज्यूस और बाकी सभी देवता असंवेदनशील और बहरे मूर्ति हैं,' डियोस्कोरस ने जवाब दिया, 'और मैं आपसे विनती करता हूँ कि मुझे गर्म लोहे पर लेटने के लिए मजबूर न करें; लेकिन अगर आप ज्यूस की शक्ति को जानना चाहते हैं, तो बेहतर होगा कि आप उसे खुद आग में फेंक दें।'

'लेकिन ऐसा कौन कर सकता है?' सेनापति ने अपनी बात जारी रखी। 'कौन एक देवता को चिता पर फेंकने की हिम्मत करेगा?'

'आज्ञा करो,' डायोस्कोरस ने उत्तर दिया, 'और मैं ऐसा करूँगा। यदि ज्यूस मेरा विरोध करता है, तो मैं मान लूँगा कि वह एक देवता है और आग से खुद को मुक्त करने में सक्षम है।'

'तुम सचमुच अब पुजारी नहीं रहे, क्योंकि तुम देवताओं के बारे में ऐसे शब्द बोल रहे हो,' कमांडर ने टिप्पणी की।

'मैं,' डायोस्कोरस ने उत्तर दिया, 'था, तुम्हारे जैसे, एक अधर्मी विश्वास का पुजारी, लेकिन अब, धन्य थियोडोर को तुम जो यातनाएँ देते हो उनसे अविजित, आग से अछूता देखकर, मैं मसीह की शक्ति को जान गया हूँ और झूठे देवताओं की शक्तिहीनता को समझ गया हूँ; मैं मसीह के विश्वास में दृढ़ हो गया हूँ और अब थियोडोर के उदाहरण का अनुसरण करना चाहता हूँ।'

कमांडर ने कहा, 'अगर तुम ऐसा कह रहे हो, डायोस्कोरस, तो थिओडोर की तरह कड़ाही पर चढ़ जाओ।'

तब डियोस्कोरस, मसीह के शहीद पर स्वयं को फेंकते हुए, उससे कहा:

'थियोडोर, मसीह, सच्चे ईश्वर के सेवक, मेरे लिए प्रार्थना करो।'

और संत ने दियोस्कोरस के लिए प्रार्थना की। जब दियोस्कोरस के कपड़े उतारकर उसे लाल-गरम तवे पर लिटा दिया गया, तो वह ऊँचे स्वर में चिल्लाया:

'मैं तुझ धन्यवाद करता हूँ, हे प्रभु यीशु मसीह, कि तूने मुझे अपने सेवकों में गिना है। अब, अत; मेरी आत्मा को शान्ति में ग्रहण कर।'

इतना कहकर उन्होंने प्राण त्याग दिए, और इतने कम समय में शहीद का मुकुट प्राप्त किया, ठीक वैसे ही जैसे सूली पर चढ़े चोर को स्वर्ग की प्राप्ति हुई थी।

धन्य डियोस्कोरस की मृत्यु के बाद, संत थियोडोर को कैद कर लिया गया। फिर उसे और यातनाएँ देने के लिए फिर से बाहर ले जाया गया: उसकी टाँगों को बाँधकर जंगली घोड़ों से बाँध दिया गया, जो शहीद को बहुत तेज़ी से दौड़ाते हुए शहर की सड़कों से खींचकर ले गए। घोड़े, पूरी रफ्तार से दौड़ते हुए, शहर की दीवार के पास एक जगह गिर गए और गिरकर अलग हो गए; इस बीच, शहीद को ईश्वर की अदृश्य शक्ति द्वारा बचा लिया गया और, बंधन मुक्त होकर, वह सुरक्षित और कुशल रहा, जो सभी के लिए आश्चर्य की बात थी। संत को घोड़ों से बांधने वाले दो सैनिकों, सॉक्रेटिस और डायोनिसियिस ने, फिर सभी को अपने बाद के अद्भुत दर्शन के बारे में बताया: जब घोड़ों को दौड़ाया जा रहा था, तो उन्होंने स्वर्ग से शहीद के पास एक अग्निमय रथ को उतरते हुए देखा, जिसने उन्हें उठा लिया और बिना किसी चोट के परीक्षण के स्थान पर उतार दिया। जब उन्होंने यह सब लोगों को सुनाया, तो सैनिकों ने पुकारा:

'महान है ईसाई ईश्वर!'

ये शब्द सुनते ही, कमांडर ने आदेश दिया कि इन सैनिकों को संत थियोडोर के साथ कैद कर दिया जाए, और उनके यातना के लिए एक भट्टी तैयार की, जिसे तीन दिनों तक प्रचंड आग से भड़काया गया। तब उसने इस भट्टी में शहीद और मसीह में विश्वास करने वाले दो सैनिकों – सोक्रेटिस और डायोनिसियिस – को डाल दिया। और तुरंत ही ऊपर से एक दिव्य ओस गिरी, जिसने शहीदों पर छींटा और लपटों को ठंडा कर दिया। संतगण भट्टी के बीच में ऐसे रहे, मानो किसी ठंडी जगह पर हों, और वे आपस में बातें कर रहे थे। उसी क्षण, संत थियोडोर को अपनी धन्य माता का स्मरण आया, जिन्हें तीन साल पहले विदेशियों ने बंदी बना लिया था और अन्य बंदियों के साथ इथियोपिया ले जाया गया था[3157] , और उन्होंने उनकी खातिर ईश्वर से प्रार्थना करते हुए कहा:

'हे प्रभु यीशु मसीह, हे चमत्कार करने वाले परमेश्वर! अपनी दिव्य शक्ति से, केवल अपने ही जाने हुए तरीकों से, मुझे मेरी माँ दिखा दो, क्योंकि मैं उसे देखने के लिए तरस रहा हूँ। क्योंकि आपके लिए सब कुछ संभव है। तो फिर उसे मुझे दिखा दो, ताकि अन्य लोग भी आपकी महानता को पहचान सकें।'

[3157] इथियोपिया या नूबिया – अफ्रीका में एक क्षेत्र, जो मिस्र के दक्षिण में स्थित है।

जब संत ये शब्द प्रार्थना कर रहे थे, तो आग की लपटें धीरे-धीरे बुझ गईं; इसके अलावा, शहीद की प्रार्थनाओं से, बारिश हुई और लाल-गरम भट्टी को पूरी तरह से ठंडा कर दिया, और संत उसमें सोने की तैयारी करने लगे, क्योंकि रात हो चुकी थी। फिर एक स्वर्गदूत संत थियोडोर को सपने में दिखाई दिया और उससे कहा:

'थेओडोर, अपनी माँ के लिए दुखी मत हो: तुम उसे देखोगे।' जागने पर, संत ने अपने दोस्तों को अपना सपना सुनाया; और जैसे ही वह यह बता रहा था, उसकी माँ, फिलिप्पा नाम की, भट्टी के बीच में प्रकट हुईं; और अपने प्रिय पुत्र को देखकर, वह प्रसन्न हुईं, उन्होंने प्यार से उसे और उसके साथ मौजूद सैनिकों को चूमा, और उन्हें बताया कि वह कहाँ से आई थीं और कैसे एक अदृश्य हाथ के मार्गदर्शन में वहाँ पहुँची थीं। उस क्षण, पवित्र शहीद थियोडोर ने स्वर्ग की ओर अपने हाथ उठाकर ईश्वर का उचित धन्यवाद किया।

सुबह, कमांडर की नींद खुलने पर, उसने अपने परिचारकों से कहा:

'मुझे नहीं लगता कि भट्टी में फेंके गए थियोडोर और उसके साथियों की एक भी हड्डी बची होगी।'

जब वह यह कह ही रहा था, तभी भट्टी की रखवाली कर रहे एक रक्षक ने कमांडर के पास यह खबर लाई कि भट्टी में फेंके गए शहीद जीवित थे और यह कि पिछली शाम से ही ऊपर से गिर रही बारिश से आग बुझ गई थी; फिर उसने यह भी जोड़ा कि थियोडोरा की माँ, जो अचानक कैद से आ गई थी, भट्टी में जैसे किसी महल में बैठी थी, अपने बेटे और सैनिकों के साथ ईसाई ईश्वर के बारे में बात कर रही थी। यह सुनकर, कमांडर भय और आतंक से भर गया; वह स्वयं भट्टी के पास गया और धन्य फिलिपिया को बुलाकर उससे पूछा:

'क्या तुम थियोडोरा की माँ हो?'

'हाँ, मैं हूँ,' उसने उत्तर दिया।

तब सेनापति ने कहा:

'मेरे बेटे को देवताओं की पूजा करने के लिए मना लो, कहीं ऐसा न हो कि वह मर जाए और तुम्हें निश्चिंतान छोड़ जाए।'

उसने उत्तर दिया, 'मेरे पुत्र के बारे में, जैसा कि मेरे प्रभु ने मुझे उसके गर्भ में आने से पहले बताया था, उसे तुम सलीब पर चढ़ाओगे और वह परमेश्वर को स्तुति का बलिदान चढ़ाएगा।'

'चूंकि तुमने स्वयं अपने पुत्र को सूली पर चढ़ाकर मृत्युदंड की सजा दी है,' कमांडर ने कहा, 'तो ऐसा ही हो।'

तब कमांडर ने आदेश दिया कि सेंट थियोडोर को तुरंत सूली पर चढ़ाया जाए, सेंट फिलिप्पा का सिर तलवार से काटा जाए, और दो सैनिक, सोक्रेटिस और डायोनिसियस, के सिर तलवार से काट दिए जाएँ।

इस प्रकार पवित्र शहीदों ने अपने मुकुट प्राप्त किए। इस बीच, संत थियोडोर तीन दिनों तक जीवित क्रूस पर लटके रहे, और फिर वे भी प्रभु के पास चले गए[3158] । तब कुछ धर्मनिष्ठ लोगों ने संतों के शरीरों को लेकर, उन्हें बारीक सूती कपड़े में लपेटा और सुगंधित तेलों से अभिषेक कर, उन्हें इस उद्देश्य के लिए तैयार की गई एक विशेष जगह पर सम्मानपूर्वक रख दिया, और पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा – त्रिमूर्ति में एक, सदा के लिए महिमामय एकमात्र परमेश्वर की महिमा की। आमीन।

पवित्र शहीदों इसाकियोस, अपोलोस और कोड्राटोस की स्मृति

21 अप्रैल को स्मरणोत्सव

[3159]मूल रूप से, ये संत सम्राट डायोक्लेटियन के दास थे। महान शहीद संत जॉर्ज के चमत्कारों को देखने के बाद, उन्होंने रानी अलेक्जेंड्रा के उदाहरण का अनुसरण किया, जिन्होंने सांसारिक महिमा को त्याग दिया था और मसीह की ओर मुड़ गई थीं, और वे स्वयं भी प्रभु की ओर मुड़ गए। पवित्र शहीदों ने साहसपूर्वक सम्राट की दुष्टता और क्रूरता की निंदा की, यह बताते हुए कि उसने अपनी पत्नी को भी नहीं बख्शा था, जिसने उसे एक संतान दी थी। धर्मनिरपेक्ष सम्राट के आदेश पर, इन पवित्र शहीदों को पहले कैद किया गया, जहाँ वे भूख और प्यास से तड़पते रहे, और बाद में मसीह की उनकी स्वीकारोक्ति के लिए तलवार से उनका सिर कलम कर दिया गया[3160] ।

[3158] पवित्र शहीदों का अंत दूसरी शताब्दी के मध्य में हुआ।

[3159] रोमन सम्राट डायोक्लेटियन, जो ईसाई धर्म का एक क्रूर उत्पीड़क था, ने 284 से 305 तक शासन किया।

[3160] पवित्र शहीदों का अंत 303 में हुआ।

- उसी दिन, हम अपने पवित्र पिता कॉन्स्टेंटिनोपल के पैट्रआर्क मैक्सिमियिन का स्मरण करते हैं, जिन्होंने थियोडोसियस द यंगर के शासनकाल में ढाई साल तक चर्च का नेतृत्व किया और 12 अप्रैल, 431 को शांतिपूर्वक निधन हो गया।

5 मई

22 अप्रैल (पुराने कैलेंडर के अनुसार)

हमारे पूजनीय पिता थियोडोर साइकोट, अनास्तासियोपोलिस के बिशप का जीवन

22 अप्रैल को स्मरण किया जाता है

गालाटिया प्रांत में[3161] एक गाँव है जिसका नाम साइकिया है, जो अनास्तासियोपोलिस से 12 स्टेडियम[3162] दूर है, जो एन्क्रा क्षेत्र (एशिया माइनर में) का प्रमुख शहर है। इस गाँव में साइकिया के पूजनीय थियोडोर का जन्म हुआ, जो अपनी माता मरियम और कोस्मास नामक एक प्रसिद्ध व्यक्ति के पुत्र थे, जो उस समय सम्राट जस्टिनियिन महान[3163] के यहाँ एक तेज धावक[3164] के रूप में सेवा कर रहे थे। जब थियोडोर का गर्भधारण हुआ, तो उसी रात उनकी माता मैरी को सोते समय एक अद्भुत संकेत दिखाई दिया: उन्होंने अपने गर्भ में उतरता हुआ एक बड़ा, चमकता हुआ तारा देखा। जागने पर, उसने अपनी माँ एल्पिडिया और अपनी बहन डिस्पेनिया, जो उसके साथ रहती थीं, को इस बारे में बताया; फिर वह उस गाँव से छह स्टेडियम दूर एकांत में मौन में रहने वाले एक बुद्धिमान वृद्ध के पास गई और उन्हें अपने अजीब दृष्टि-सपना के बारे में बताया। वरिष्ठ ने, ईश्वर को प्रसन्न करने वाले जीवन पर उसे आध्यात्मिक मार्गदर्शन देने के बाद, कहा:

'तुम्हारे गर्भ में जो संतान है वह वास्तव में एक महान पुरुष होगा, न केवल मनुष्यों में बल्कि परमेश्वर के सामने भी; और वह चमकता हुआ तारा राजसी महिमा का प्रतीक है, जैसा कि स्वप्नों की व्याख्या करने वाले बुद्धिमान लोग बताते हैं; लेकिन आपके लिए, जो आपने देखा है उसे पृथ्वी पर राजसी शक्ति का संकेत नहीं समझना चाहिए; बल्कि, वह तारा जो आपने देखा है, वह सद्गुण और ईश्वर की कृपा की महिमा का पूर्वसूचक है, जिससे ईश्वर आपके बच्चे को संपन्न करेंगे। क्योंकि प्रभु आमतौर पर अपने सेवकों को उनके जन्म से पहले ही उनकी माँ के गर्भ में पवित्र कर देते हैं।

इस प्रकार दूरदर्शी वृद्ध ने मरियम से भविष्यवाणी की, और उसे कुछ सलाह देने के बाद, उसे शांति से विदा कर दिया। यह सब अनास्तासियोपोलिस के बिशप थियोडोसियस के ध्यान में आया, और उन्होंने भी इस दर्शन का अर्थ यह समझा कि जिन्म लेने वाला बच्चा दुनिया के लिए एक प्रकाश होगा।

बुजुर्ग के पास से लौटने पर, मरियम ने उनकी सलाह मानी और अपनी माँ और बहन के साथ ब्रह्मचर्य में एक ईश्वरवादी जीवन जिया। जब प्रसव का समय आया, तो मरियम ने एक पुत्र को जन्म दिया, और ईसाई रीति-रिवाज के अनुसार उसका बपतिस्मा हुआ और उसका नाम थियोडोर रखा गया (जिसका ग्रीक में अर्थ है 'ईश्वर का उपहार'), एक ऐसा नाम जो यह दर्शाता था कि यह लड़का ईश्वर की ओर से दुनिया के लिए एक महान उपहार होगा।

जब वह छह साल का हो गया, तो उसकी माँ उसे पहले से ही सैन्य सेवा में भर्ती कराना चाहती थीं, और इस उद्देश्य के लिए उन्होंने उसके लिए कीमती वस्त्र, एक सुनहरी कमरबंद और ऐसी सेवा के लिए आवश्यक अन्य सामान तैयार किए, और वह उसे सेवा के लिए सम्राट के पास प्रस्तुत करने के लिए कॉन्स्टेंटिनोपल के लिए रवाना होने वाली थीं; लेकिन एक सपने में पवित्र महान शहीद जॉर्ज उनके सामने प्रकट हुए, और कहा:

[3161] गलातिया – एशिया माइनर का एक क्षेत्र।

[3162] स्टेडिया – लंबाई की एक इकाई जो लगभग 88 फथॉम के बराबर होती है।

[3163] रोमन सम्राट जस्टिनियिन महान ने 527 से 565 तक शासन किया।

[3164] 'स्कोरोखोदी' सम्राट के अंगरक्षक थे, जो आमतौर पर उनकी यात्राओं में साथ चलते थे।

'तुमने अपने बच्चे के लिए ऐसा इरादा क्यों किया है? हे पत्नी, व्यर्थ में परिश्रम मत करो – स्वर्ग के राजा को तुम्हारे बेटे की स्वयं आवश्यकता है।'

जागने पर, मरियम रोने लगीं और कहने लगीं कि उनके बेटे की मृत्यु निकट है, यह सोचकर कि वह जल्द ही मर जाएगा; लेकिन वह लड़का उम्र और बुद्धि में बढ़ता गया। जब वह आठ साल का हुआ, तो उसकी माँ ने उसे स्कूल भेजा, और ईश्वर की कृपा से, वह दूसरे बच्चों से बेहतर सीखता था और अपने अच्छे चरित्र के कारण सभी का प्रिय था। बच्चों के खेलों में भी थियोडोर की तीव्र बुद्धि स्पष्ट थी: वह गाली-गलौज और ईश्वर की निंदा से बचता था और दूसरे बच्चों को भी ऐसी चीजों के खिलाफ चेतावनी देता था, तथा उनके विवादों और झगड़ों को सुलझाता था।

इन महिलाओं के घर में स्टीफन नाम का एक वृद्ध व्यक्ति रहता था, जो ईश्वर-भयभीत और धार्मिक व्यक्ति था, जिसे वे उसके सदाचारी जीवन के लिए एक पिता के रूप में प्यार और सम्मान करती थीं। जब युवा थियोडोर ने देखा कि वह पवित्र लेंट (महाप्रायश्चित्त) के दौरान शाम तक उपवास करते थे और केवल पानी के साथ रोटी का एक छोटा सा टुकड़ा खाते थे, तो वह ईश्वर के प्रति प्रेम से भर गया और उसने भी उनका अनुकरण करते हुए शाम तक उपवास करना शुरू कर दिया। जब दोपहर के भोजन के समय वह स्कूल से घर आता, तो उसकी माँ उसे उनके साथ खाने के लिए कहतीं, लेकिन वह मना कर देता; और, ताकि उस पर जबरदस्ती न की जा सके, वह सामान्य समय पर घर आना बंद कर दिया, और इसके बजाय केवल शाम को ही घर आने का प्रयास करने लगा। और घर से सीधे ही वह स्टीफन के साथ नियमित प्रार्थना सभा के लिए चर्च जाता था; वहाँ वह हमारे ईश्वर मसीह के शरीर और रक्त के परम पवित्र रहस्यों में भाग लेता, देर से घर लौटता, और केवल एक टुकड़ा रोटी और पानी पर ही अपना जीवन-यापन करता था। उसकी माँ और पूरा घरवाला उसे पकाया हुआ भोजन और हर तरह की दूसरी चीजें खाने के लिए मनाने की कोशिश करते थे, लेकिन वह मानने से इनकार कर देता था। उसने शिक्षक से कहा कि वह लड़के को दोपहर के भोजन के समय स्कूल से घर जाने दे, ताकि कम से कम इस तरह से उसे कुछ खिलाया जा सके, क्योंकि वह अपने लगातार उपवास के कारण बहुत दुबला हो गया था। हालाँकि, थियोडोर जब स्कूल से छुट्टी पाकर घर नहीं गया, बल्कि उस जगह के पास की एक पहाड़ी पर चढ़ गया, जिसकी चोटी पर महान शहीद जॉर्ज को समर्पित एक चर्च था; वहाँ, महान शहीद, जाहिर तौर पर एक सुंदर युवक के रूप में उसके सामने प्रकट हुए, और उसे चर्च के अंदर ले गए। वहाँ, युवा थियोडोर अपना अधिकांश समय किताबें पढ़ने में बिताता था और अपना पूरा दोपहर का भोजन का समय वहीं बिताता था; चर्च को जैसे अपना घर मानकर, वह स्कूल वापस चला जाता था। शाम को, जब उसकी माँ ने पूछा कि वह रात के खाने के लिए घर क्यों नहीं आया, तो उसने जवाब दिया कि उसने अपना पाठ याद नहीं किया था और इसलिए उसे रोक लिया गया था। एक बार फिर, उसकी माँ शिक्षक के पास अपने बेटे को घर जाने देने के लिए गईं, जबकि शिक्षक ने उनसे कसम खाकर कहा कि उनकी पहली ही विनती पर, वह थियोडोर को दोपहर के भोजन के समय अन्य छात्रों के साथ घर जाने दे देंगे। एक बार, जब उन्होंने देखा कि वह घर नहीं आ रहा है बल्कि चर्च की ओर पहाड़ी पर चढ़ रहा है, तो उन्होंने एक नौकर को उसे जबरदस्ती लाने के लिए भेजा और, कई धमकियों के साथ, उसे रात के खाने के लिए घर आने के लिए मनाने की कोशिश की; लेकिन उसने उनकी कोई परवाह नहीं की और अपने सामान्य आत्म-संयम को बनाए रखा।

जब वह दस साल का था, तो उस गाँव में एक भयानक बीमारी फैल गई, जिससे कई लोगों की मौत हो गई; धन्य युवक थियोडोर को भी यह बीमारी हो गई। उसके सभी प्रियजन निराश थे, क्योंकि वह पहले ही मौत के कगार पर था: फिर, अर्ध-मृत अवस्था में, उसे सेंट जॉन द बैपटिस्ट के सबसे नजदीकी चर्च में ले जाया गया, जहाँ उसे वेदी के सामने लिटा दिया गया। चर्च के शीर्ष पर, क्रूस के नीचे, उद्धारकर्ता के चेहरे की एक प्रतिमा थी, जिससे दो ओस की बूँदें बीमार लड़के पर गिरीं और उसे ठीक कर दिया; वह उठ खड़ा हुआ और अच्छे स्वास्थ्य के साथ घर चला गया, ईश्वर की स्तुति करते हुए। रात में, जब वह और उसके पूरे घर वाले सो रहे होते थे, तो महान शहीद सेंट जॉर्ज उसके पास आते और उसे जगाते हुए कहते:

'उठो, थियोडोर, भोर हो गई है और सुबह की प्रार्थना का समय हो गया है; चलो हम सेंट जॉर्ज के चर्च चलते हैं।'

थियोडोर तुरंत, जल्दी से और खुशी-खुशी उठ जाता था। पहले, संत जॉर्ज उन्हें अपने घर में रहने वाले स्टीफन के रूप में दिखाई दिए; फिर वे उन्हें अपने असली रूप में दिखाई दिए, हर रात उन्हें जगाते और अपने चर्च में ले जाते थे। रास्ते में, राक्षस उस लड़के को डराने की कोशिश करते, वे भेड़ियों और विभिन्न जानवरों के रूप में प्रकट होते और सीधे उस पर झपटते; लेकिन पवित्र शहीद, थियोडोर के आगे चल रहे थे और अपने हाथों में एक भाला पकड़े हुए थे, उन्होंने उन भयानक आकृतियों को भगा दिया और उसे डराने के लिए नहीं कहा। यह हर रात होता था, और उसकी माँ और उसके साथ

की अन्य महिलाएँ, जागकर जब थियोडोर को उसके बिस्तर पर नहीं पातीं, तो हैरान रह जाती थीं; उन्हें पता चला कि वह रात में चर्च जाता था, और वे इस बात पर आश्चर्य करती थीं कि कोई भी उसे उठते हुए नहीं सुन पाता था, जबकि वह पिछली शाम उनके बीच ही सोने गया था। उसकी माँ को उसके लिए डर लगता था, कि कहीं वह जंगली जानवरों द्वारा टुकड़े-टुकड़े न कर दिया जाए, क्योंकि उस समय यह अफवाह फैली हुई थी कि एक भेड़िया न केवल मवेशियों बल्कि छोटे बच्चों को भी उठा ले जा रहा था; इसलिए, खतरे के कारण, उसने उसे सूर्योदय से पहले चर्च के लिए घर से निकलने से मना कर दिया, क्योंकि वह जगह सुनसान थी। धमकियों के बावजूद, वह धन्य युवक अपनी माँ की बात नहीं मानता था और, सेंट जॉर्ज के प्रेरित करने पर, अपनी प्रार्थना के लिए, अपनी माँ द्वारा बताई गई घड़ी पर, किसी के ध्यान में आए बिना चर्च चला जाता था। एक दिन भोर में, जागने पर, उसकी माँ थियोडोरा और अन्य महिलाओं को वह युवक उसके बिस्तर पर नहीं मिला और, बहुत क्रोधित होकर, वे चर्च की ओर दौड़ीं; वहाँ उसकी माँ ने उसके बाल पकड़कर उसे बाहर खींच लिया, रास्ते भर उसे पीटते हुए घर ले आईं, और उसे कहीं भी नहीं जाने दिया; रात में उन्होंने उसे उसके बिस्तर से मजबूती से बाँध दिया ताकि थियोडोर किसी भी तरह भाग न सके। उस रात, महान शहीद संत जॉर्ज अपनी माँ और अन्य महिलाओं के सपने में प्रकट हुए, जिन्होंने अपनी कमर पर एक तलवार लटका रखी थी; उसे लहराते हुए, उन्होंने धमकी भरे अंदाज़ में कहा:

'अगर तुम उस लड़के को पीटना और उसे मुझसे मिलने आने से रोकना जारी रखोगी तो मैं तुम्हारे सिर काट दूँगा।'

डर और भय से जागकर, उन महिलाओं ने एक-दूसरे को शहीद के भयानक साक्षात्कार और उसकी धमकियों के बारे में बताया, और वे इस बात पर विशेष रूप से आश्चर्यचकित थीं कि उन्होंने सभी ने एक ही दृश्य देखा था; और उन्होंने तुरंत उस पवित्र युवक को खोल दिया, उसे लाड़-प्यार किया, और विनम्रतापूर्वक उससे प्रार्थना की कि वह उन्हें पीटने के लिए उन पर क्रोधित न हो। उन्होंने उससे पूछा कि वह भोर से पहले घर से निकलते समय जंगली जानवरों से क्यों नहीं डरता था। उसने जवाब दिया कि हर रात एक तेजस्वी युवक उसे जगाता था और उसे चर्च ले जाता था, और रास्ते में भयानक प्रेतों से उसकी रक्षा करता था। तब महिलाओं को एहसास हुआ कि महा-शहीद सेंट जॉर्ज, जिन्हें उन्होंने अपनी दृष्टि में देखा था, वह उसके सामने प्रकट हुए और उसकी रक्षा की। उस समय से, उन्होंने थियोडोर पर कोई प्रतिबंध नहीं लगाया और उसे ईश्वर की इच्छा के भरोसे छोड़ दिया, यह कहते हुए:

'प्रभु की इच्छा पूरी हो।'

इस पवित्र युवा की एक छोटी बहन थी जिसका नाम व्लाटा था, जो थियोडोरा के दूसरे पति की बेटी थी; उसकी माँ ने अपने रिश्तेदारों के आग्रह पर कम उम्र में ही पुनर्विवाह कर लिया था। यह युवती अपनी भाई थियोडोर से बहुत प्रेम करती थी और अक्सर दिन में चर्च तक उसका पीछा करती थी, उसके साथ प्रार्थना करती और उसके जीवन-पथ का अनुकरण करने का प्रयास करती थी। परमेश्वर की आत्मा ने उसमें भी वही कार्य किया जो थियोडोर में किया था। उनके घर से ज़्यादा दूर नहीं, पवित्र शहीद एमिलियन का चर्च था, जिन्हें गालाटिया के देश, एन्क्रा शहर में, अन्यायपूर्ण शासक जूलियन द एपोकेट के शासनकाल में[3165] , लंबे समय तक यातनाएँ सहने के बाद सूली पर चढ़ाया गया था[3166] । धन्य थियोडोर इस शहीद के चर्च में गए और वहाँ प्रार्थना में रात बिताई। आधी रात को वह झपकी ले गया, और उसे एक दर्शन हुआ: थियोडोर को ऐसा प्रतीत हुआ कि वह एक सिंहासन पर विराजमान, महान महिमा वाले एक राजा के सामने खड़ा था, जो योद्धाओं की भीड़ से घिरा हुआ था, और राजा के बगल में बैंगनी वस्त्र धारण किए एक तेजस्वी रानी थी; और उसने राजा की आवाज़ सुनी जो उससे कह रही थी:

'थियोडोर, स्वर्ग के राज्य में पूर्ण पुरस्कार प्राप्त करने का प्रयास करो; मैं भी तुम्हें पृथ्वी पर सम्मान के योग्य बनाऊँगा और मनुष्यों के सामने तुम्हारा गौरव बढ़ाऊँगा।'

उसे यह दृष्टि तब मिली जब वह बारह वर्ष का था। उस समय से, वह ईश्वर के प्रति महान इच्छा और प्रेम से भर गया और उसने और भी अधिक लगन से परिश्रम करना शुरू कर दिया। अपने घर के एक कमरे में खुद को बंद कर के, वह एपिफिनी के पर्व से लेकर पाम संडे तक वहीं रहा, और उसने खुद को उपवास, प्रार्थना और अध्ययन में समर्पित कर दिया, तथा केवल ईश्वर से ही संवाद किया। महा-प्रायश्चित के पहले और दूसरे सप्ताह के दौरान, वह किसी से नहीं बोला और गहरी मौन में रहा, और उसने अपना पूरा मन ईश्वर के विचारों में डुबो दिया। इस प्रकार महा-प्रायश्चित्त के पवित्र

[3165] जुलीयन अपोस्टेट ने 361 से 363 तक शासन किया।

[3166] संत एमिलियन की शहादत 362 में हुई। उनकी पर्व तिथि पवित्र चर्च द्वारा 18 जुलाई को मनाई जाती है।

दिन समाप्त हुए और मसीह के पुनरुत्थान का पर्व आ गया; शैतान, जो अब ऐसे सदाचारी युवक को देखना सहन नहीं कर सकता था, ने उसे नष्ट करने की एक योजना बनाई और निम्नलिखित छल रचा: एक दिन, खुद को थियोडोर के साथ स्कूल में पढ़ने वाले एक युवक, जेरोंटियस, में बदलकर, वह उसके पास आया और उसे सैर के लिए आमंत्रित करते हुए, उसे 'त्ज़िद्रामा' नामक एक ऊँची पहाड़ी पर ले गया, और वह स्वयं, एक बड़ी चट्टान पर खड़ा होकर, उसे उसी प्रकार लुभाने लगा जैसे शैतान ने मरुभूमि में मसीह को लुभाया था (मत्ती 4:1–11), यह कहते हुए:

'यदि तुम चाहते हो, प्रिय थियोडोर, अपनी वीरता दिखाना, तो यहाँ से कूद जाओ।'

इस पर थियोडोर ने उत्तर दिया:

'मुझे डर लगता है, क्योंकि यह बहुत ऊँचा है।'

शैतान ने उससे कहा:

'स्कूल में तुम हम में से किसी से भी ज्यादा बहादुर थे, और अब तुम इससे डरते हो? मैं नहीं डरता; मैं अभी कूद जाता हूँ।'

थियोडोर ने उत्तर दिया:

'ऐसा मत करना, कहीं तुम गिरकर अपनी गर्दन न तोड़ लो।'

शैतान उसे यह यकीन दिलाने की कोशिश करता रहा कि इससे कोई नुकसान नहीं होगा; फिर थियोडोर ने उससे कहा:

'अगर तुम पहले ऐसा करते हो और मैं देखता हूँ कि तुम्हें कोई चोट नहीं लगी, तो मैं भी कूद जाऊँगा।'

शैतान ऊँचाई से भयानक खाई में कूद गया और वहाँ खड़े होकर थियोडोर को अपने पास आने के लिए पुकारने लगा। थियोडोर उसे बिना किसी चोट के देखकर दंग रह गया और सोचने लगा कि जेरोंटियस, जिसके पास कभी इतनी हिम्मत नहीं थी, अचानक इतनी ऊँची पहाड़ी से बिना किसी नुकसान के कैसे कूद सकता है। यह विचार मन में आते ही – जबकि नीचे शैतान थियोडोरा को पुकार रहा था – महान शहीद संत जॉर्ज तुरंत प्रकट हुए; उन्होंने थियोडोरा का हाथ पकड़कर कहा:

'इस जगह को छोड़ो और मेरा अनुसरण करो! उस प्रलोभक की न सुनो जो तुम्हारी आत्मा चाहता है; यह जेरोंटियस नहीं है, बल्कि हमारी जाति का शत्रु है।'

और वह उसे अपने चर्च ले गया, जहाँ थियोडोर लंबे समय तक रहा, यहाँ तक कि उसकी माँ और दादी उसके पास आईं और उस धन्य व्यक्ति से घर जाने का आग्रह करने लगीं, क्योंकि कई रिश्तेदार और पड़ोसी एक दावत के लिए इकट्ठा हुए थे और उसका इंतज़ार कर रहे थे। पवित्रशास्त्र *को जानते हुए, कि 'जगत से मित्रता परमेश्वर से वैर है... और जो कोई जगत का मित्र बनना चाहता है, वह परमेश्वर का वैरी बनता है'* (याकूब 4:4), उसने उनकी बात नहीं सुनी, बल्कि अपनी सुनहरी कमरबंद[3167] , अपना कीमती बाहरी वस्त्र और अपना हार[3168] उतार लिया, और कहा:

'मुझे पता है कि तुम्हें डर है कि मैं उन्हें सुरक्षित नहीं रख पाऊँगा; यह सब ले लो, पर मुझे पीछे छोड़ जाओ।'

और वह भोज में नहीं गया।

थेओडोर को ग्लाइसेरियस नामक एक पुण्यशील वृद्ध के बारे में पता चला, जो दस स्टेडियम दूर एक सुनसान जगह पर रहते थे, और वह उनसे मिलने निकल पड़े, ताकि उनसे सीख सकें और उनका आशीर्वाद प्राप्त कर सकें। ग्लाइकेरियोस एक विवेकी व्यक्ति थे; उन्होंने उस युवक में परमेश्वर की आत्मा की उपस्थिति को पहचाना और, उसे खुशी से स्वागत करते हुए, मुस्कुराकर पूछा:

'मेरे बच्चे, क्या तुम मठवासी जीवन से प्रेम करते हो?'

लड़के ने उत्तर दिया:

'मैं इसे बहुत पसंद करता हूँ, पिताजी, और मैं ईमानदारी से इसकी योग्यता प्राप्त करने की इच्छा रखता हूँ।'

उस समय, हालाँकि, उस भूमि में वर्षा की कमी थी और भीषण अकाल पड़ा हुआ था।

वे दोनों सेल से निकलकर चल पड़े, और संत जॉन द बैपटिस्ट के चर्च के सामने खड़े हो गए; और पूजनीय ग्लाइसेरियस ने, धन्य युवक थियोडोर की ओर मुड़कर कहा:

[3167] सोने की कढ़ाई वाली एक पट्टा आम तौर पर राजा के करीब सेवा करने वाले सैनिकों (बॉडीगार्ड) के साथ-साथ सेना के मुख्य कमांडरों द्वारा पहनी जाती थी। सेंट थियोडोर के माता-पिता ने उनके लिए कम उम्र से ही ऐसी पट्टा बनवाई थी (जैसा कि उनकी जीवनी में वर्णित है), क्योंकि वे उन्हें शाही दरबार में सैन्य सेवा के लिए तैयार कर रहे थे।

[3168] हरविनिया एक सोने की माला है।

'मेरे पुत्र, हम घुटने टेककर प्रभु से प्रार्थना करें कि वह दया करें और सूखी धरती को सींचने के लिए वर्षा भेजें, और इस प्रकार हमें पता चल जाएगा कि क्या हमें धर्मी लोगों में गिना जाता है।'

वरिष्ठ ने ऐसा इसलिए नहीं किया क्योंकि वह प्रभु को आज़माना चाहते थे, बल्कि इसलिए क्योंकि उन्हें उम्मीद थी कि थियोडोर की प्रार्थनाएँ ईश्वर की दृष्टि में विशेष रूप से अनुकूल होंगी। अपने घुटने टेककर, उन्होंने प्रार्थना करना शुरू किया, और तुरंत ही आकाश बादलों से ढक गया; और जब उन्होंने अपनी प्रार्थना समाप्त की, तो बहुत भारी बारिश हुई और सूखी हुई धरती को पर्याप्त रूप से पानी मिल गया। वरिष्ठ प्रभु की कृपा से आनंदित हो गए और उन्होंने थियोडोर से स्नेहपूर्वक कहा:

'अब से, मेरे बच्चे, तुम ईश्वर से जो कुछ भी माँगोगे, वह तुम्हें देगा, क्योंकि वह तुम्हारे साथ रहेगा, तुम्हें बल देगा, ताकि तुम शारीरिक रूप से और ईश्वर के साथ अपने आध्यात्मिक जीवन में, दोनों ही तरह से दिन-प्रतिदिन शक्तिशाली होते जाओ; और जब समय आएगा तो तुम अपनी इच्छा पूरी करोगे।'

थेओडोर, वृद्ध के आशीर्वाद से, अपने घर लौट आया।

चौदह वर्ष की आयु में, उसने हमेशा के लिए अपना घर छोड़ने, सेंट जॉर्ज चर्च के पास पहाड़ पर रहने का संकल्प लिया, और अपनी माँ तथा अपने पूरे परिवार से विनती की कि वे उसकी मंशा के आड़े न आएं या उसे परेशान करने न आएं। वे उसे मना करने की हिम्मत नहीं कर सके, क्योंकि वे जानते थे कि ईश्वर उसके साथ था। थियोडोर चल पड़ा, उसने वेदी के नीचे पहाड़ में अपने लिए एक गुफा खोदी और वहाँ रहने लगा, तथा वह लगातार प्रार्थना करने के लिए चर्च जाता था। उनकी माँ उन्हें बिना खमीर की रोटी और विभिन्न उबले और भुने हुए पक्षी भेजती थीं, लेकिन वह यह सब चर्च के रास्ते में पत्थरों पर रख देते थे, ताकि पिक्षी या जानवर इसे खा सकें, या राहगीर ले जा सकें; वह स्वयं चर्च में लाई गई प्रॉस्फोरा (prosphora) पर ही गुज़ारा करते थे, और हर शाम केवल एक ही खाते थे।

गुफा से आठ स्टेडियम दूर राक्षसों का एक आवास था, जिसे 'एरिया'[3169] कहा जाता था, जिसके बारे में कहा जाता था कि दुष्ट देवी डायना[3170] वहाँ राक्षसों की भीड़ के साथ निवास करती थीं, इसलिए कोई भी उस स्थान से बिना किसी दुर्भाग्य के नहीं गुज़र सकता था, विशेषकर दोपहर के समय, जुलाई और अगस्त में, और कई लोग उन राक्षसों द्वारा मृत्यु तक पीड़ित किए जाते थे। धन्य थियोडोर ने इस बारे में सुना और, उन महीनों के दौरान, वह हर दिन उस स्थान पर जाते और वहाँ पूरा दिन बिताते, शाम को राक्षसों से कोई हानि हुए बिना लौट आते, क्योंकि जब वे उन्हें देखते, तो ईश्वर की शक्ति से भयभीत होकर भाग जाते थे। जनवरी में, एपिफेनी के पर्व पर, वह अन्य लोगों और पुरोहितों के साथ जल का अभिषेक करने गया; वह नंगे पैर पानी में घुसा और गायन समाप्त होने तक वहीं अचल खड़ा रहा। पर्व के बाद, वह अपनी गुफा में अलग-थलग हो गया और पाम संडे तक बिना बाहर निकले, पूर्ण मौन में रहा। उनकी दादी, एल्पिडिया, जो उनसे अपनी दो बेटियों से भी ज़्यादा प्यार करती थीं, उनके जीवन-यापन के तरीके से सांत्वना पाती थीं और उन्हें खाने के लिए सब्जियां और स्प्रिंग ब्रेड लाती थीं, जिसे वह हर हफ़्ते शनिवार और रविवार को खाते थे। हर कोई इतने छोटे लड़के में ईश्वर की ऐसी कृपा देखकर चकित था और ईश्वर की स्तुति करते हुए कहने लगा:

'हे *बुद्धिमानों और विद्वानों, तुमने ये बातें छिपा रखी हैं और इन्हें* इस छोटे से बालक से *प्रकट कर दिया है*' (मत्ती 11:25)।

इसी तरह, अनास्तासियोपोलिस के बिशप थियोडोसियस, थियोडोर के बारे में यह सब सुनकर प्रसन्न हुए और सभी के सामने उनकी प्रशंसा करते हुए कहा:

– 'ईश्वर इस लड़के को जीवन का ऐसा मार्ग सिखा रहे हैं।'

एक बार, थियोडोर ठंड लगने से बीमार पड़ गया, और जब वह झपकी ले रहा था, तो महान शहीद संत जॉर्ज उसे दिखाई दिए और कहा:

'मेरे बच्चे, तेरी बीमारी का कारण क्या है?'

थियोडोर ने देखा और दूर एक अशुद्ध आत्मा को खड़ा हुआ पाया; उसने उसे शहीद की ओर इशारा करते हुए कहा:

[3169] यह नाम प्राचीन रोमनों द्वारा एक सूखी, अच्छी तरह से पैदल चली गई (और कभी-कभी पक्की) जगह को दिया गया था, जो आमतौर पर अनाज सुखाने और उसे साफ करने के लिए होती थी (लैटिन: एरिया, अरारे - 'सूखा होना' से)। यहाँ कभी-कभी सार्वजनिक खेल भी आयोजित किए जाते थे।

[3170] डायना (ग्रीक: आर्टेमिस) – प्रकाश और जीवन की ग्रीक-रोमन देवी। उन्हें प्रकृति के ताज़े, खिलते जीवन की दाता के रूप में पूजित किया जाता था। डायना को प्रसव की देवी और जानवरों की संरक्षक देवी भी माना जाता था।

'यही वह घृणति और घनिौना है जसिने मुझे यह बीमारी दी है।'

संत जॉर्ज ने राक्षस को पकड़ लयिा, उसे बुरी तरह पीड़ा दी और उसे भगा दयिा; फरि, थयिोडोर का हाथ पकड़कर, उन्होंने कहा:

'उठो और स्वस्थ हो जाओ; अब वह दुष्ट और वशि्वासघाती तुम्हारे सामने नहीं आएगा।'

तुरंत थयिोडोरस अपने पैरों पर खड़ा हो गया और वह पूरी तरह से स्वस्थ महसूस करने लगा।

प्रेम के ईश्वर, जनि्होंने अपने पवत्रि प्रेरतिों को अशुद्ध आत्माओं को भगाने और लोगों में हर तरह की बीमारयिों को ठीक करने का अधकिार दयिा था, उन्होंने वही अधकिार अपने प्रयि युवक थयिोडोर को भी प्रदान कयिा, और उसने ईश्वर की महमिा के लिए चमत्कार करना शुरू कर दयिा।

एक आदमी अपने दानव-ग्रस्त बेटे को चर्च में उसके पास लाया और उससे उसे ठीक करने की वनिती करने लगा। थयिोडोर, जो अभी बहुत छोटा था, इसलिए वह नहीं जानता था कि क्या करे और उसने मना कर दयिा; जसि पर वह आदमी रोने लगा और थयिोडोर के हाथों में एक कोड़ा थमाते हुए कहा:

'हे परमेश्वर के सेवक, यह कोड़ा ले और उसे डराते हुए मेरे पुत्र को मार, और कह: "हे अशुद्ध आत्मा, मेरे प्रभु के नाम पर इस लड़के में से नकिल जा।"'

धन्य थयिोडोर ने उस आदमी की सखिाई बात मानी, और लड़के पर चल्लिाने लगा:

'मैं चला जाऊँगा, मैं चला जाऊँगा, बस मुझे एक घंटे के लिए अकेला छोड़ दो।'

जब थयिोडोर वेदी की ओर बढ़ा, तो दानव चल्लिाया:

'हे यातना! हे नासरी की महान शक्ति! जब से यह पृथ्वी पर आई है, इसने मनुष्यों को हमारे वरिुद्ध सशस्त्र कर दयिा है, और अब इसने इस तुच्छ लड़के को हम पर शक्ति दे दी है। हाय मेरे लिए! मुझे एक ऐसे छोटे लड़के द्वारा बाहर नकिाला जा रहा है, जो उस पर स्वर्ग से प्रदान की गई कृपा को सहन नहीं कर पा रहा है। इस नन्हे के कारण हमारी जाति पर बड़ी वपित्ति आएगी, क्योंकि वह हम में से कई लोगों को मानव शरीरों से बाहर नकिाल देगा; और मेरे लिए सबसे कड़वी वपित्ति यह है कि वह मुझ पर उसे प्रदान की गई शक्ति का प्रयोग करना शुरू कर रहा है, और मैं इस नन्हे बच्चे द्वारा नकिाल दिए जाने के बाद अपने पति, शैतान, के पास लौटने की हम्मित नहीं करता। अगर यह कसिी बूढ़े आदमी के हाथों मुझ पर हुआ होता, तो मुझे इतना अपमान और शर्म नहीं होती। उस दनि को शाप मलि जसि दनि यह लड़का, जो हम सबके लिए इतना भयानक है, पैदा हुआ था!

जबकि राक्षस चल्लिा रहा था, संत थयिोडोर ने दीपक से कुछ तेल लयिा, उससे ग्रस्त लड़के के सरि पर लगा दयिा, उसके ऊपर क्रॉस का चह्नि बनाया, और राक्षस को फटकारते हुए कहा:

'अब नकिल आ, हे वशि्वासघाती आत्मा, और फरि कभी ऐसे शब्द न बोलना।'

राक्षस ने ऊँचे स्वर में चल्लिाया और लड़के को थयिोडोर के पैरों तले फेंककर चला गया; और लड़का, ईश्वर की कृपा से, स्वस्थ हो गया। उस देश में रहने वालों ने इस चमत्कार के बारे में सुना और ईश्वर की स्तुति की।

थयिोडोर संत जॉन द बैपटस्टि और संत एलयिाह द प्रोफेट के तपस्वी जीवन की नकल करना चाहता था, और इस बात पर वचिार कर रहा था कि वह लोगों से कहाँ छपि सकता है। इस उद्देश्य के लिए, वह पहाड़ के सबसे ऊँचे हस्सि पर चढ़ा और वहाँ एक एकांत स्थान पाया, जहाँ उसने एक बड़ी चट्टान देखी; उसके नीचे उसने अपने लिए एक गुफा खोदी और फरि एक पुरोहति, जो एक सदाचारी डकिन था, से अनुरोध कयिा कि वह एक नश्चिति समय पर उसके लिए थोड़ी ब्रेड और पानी लाया करे, और ईश्वर के नाम पर उससे वनिती की कि वह उसके बारे में कसिी से न बोले। उसने उस पुरोहति से कुछ मोटे बाल-कपड़े ले लिए—क्योंकि तब तक वह हमेशा अपनी माँ द्वारा दिए गए नरम कपड़े पहनता था—और इस गुफा में खुद को बंद कर लयिा। उसकी वनिती पर, पुरोहति ने प्रवेश द्वार को मट्टिी से भर दयिा, और केवल एक छोटा सा छेद छोड़ दयिा, जसिसे एक रोटी और एक घड़ा पानी पास कयिा जा सके। इस प्रकार संत थयिोडोर ने अपने जीवन के दो साल पूर्ण एकांत में बतिाए, मानो जीवति दफ़न हो गए हों, और पुरोहति के अलावा इस बात को कोई नहीं जानता था। उस गाँव के लोग चर्च आते और थयिोडोर को वहाँ न देखकर हैरान हो जाते और सोचते कि वह कहाँ चला गया। संयोग से उस समय सैन्य रेजमिेंट उस क्षेत्र से गुजर रही थीं, और कुछ लोगों ने सोचा कि सैनकिों ने थयिोडोर को अपने साथ ले गए हैं; उन्होंने अपने राजकुमार से अपने सेवक को खोजने के लिए रेजमिेंटों में लोगों को भेजने के लिए कहा, लेकनि, वहाँ ध्यान से खोज करने पर, उन्हें कुछ नहीं मलिा और उन्होंने सोचा कि उसे जंगली जानवरों ने खा लयिा होगा। उसकी माँ और उसका सारा घर उसके लिए इस तरह वलिाप कर रहे थे जैसे वह मर गया हो, और उस गाँव के सभी लोग उसके लिए शोक मना रहे थे। दो

साल बीत जाने के बाद, एक पुरोहति ने—आंशकि रूप से थयिोडोरस की माँ के अवरिल रोने और आंशकि रूप से इस डर से कि वह ऐसी कैद में मर सकता है—उसके बारे में बात की। तब सभी लोग उत्सुकता और खुशी के साथ वहाँ गए; गुफा खोलकर उन्होंने उसे लगभग मृत अवस्था में बाहर नकिाला। जैसे ही उसने दनि की रोशनी देखी, वह कई घंटों तक मौन रहा। उसके सरि पर पपड़ी और कीड़े लगे हुए थे, और उसे देखकर उसका परविार रो पड़ा, फरि वे उसे सेंट जॉर्ज के चर्च में ले गए। उसकी माँ उसे घर ले जाकर उसकी देखभाल करना चाहती थीं, लेकनि उसने साफ इनकार कर दयिा और पहले की तरह शहीद के चर्च में ही रहा; कुछ ही दनिों में, उसका सरि पूरी तरह से ठीक हो गया। अनास्तासयिोपोलसि के बशिप, थयिोडोसयिस, ने यह सुना और अपने पुरोहतिों के साथ ईश्वर के सेवक, थयिोडोर को देखने के लिए गाँव आए; और जब उन्होंने उसे देखा, तो वे उसके जीवन से चकति रह गए। पवत्रि आत्मा की प्रेरणा से, उन्होंने पहले थयिोडोर को पुरोहति वर्ग के नम्नि पदों पर आशीर्वाद दयिा, और फरि उसे एक प्रेस्बटिर नयिुक्त कयिा, भले ही वह केवल सत्रह वर्ष का था[3171] । बशिप ने उसके बारे में इस प्रकार कहा:

'ऐसा व्यक्ति, जसिमें परमेश्वर का अनुग्रह नविास करता है, समय पूरा करते हुए, उचति समय से पहले ही अभषिेक के योग्य होता है, क्योंकि पवत्रि प्रेरति पौलुस ने संत तीमथयिुस को तब भी प्रेस्बटिर का पद प्रदान कयिा था जब वह बहुत युवा था।'

फरि उन्होंने थयिोडोर से ये शब्द कहे:

'प्रभु, जनिहोंने आपको पुरोहति पद के लिए योग्य समझा है, आपको बशिप पद भी प्रदान करें, ताकि आप वचन के द्वारा उनकी भेड़-बकरयिों का चरवाहा बनें; लेकनि पहले, संन्यास की शपथ लें, वशि्वास और अच्छे कर्मों में बढ़ें, और मेरे लिए प्रार्थना करें।'

यह कहने और थयिोडोर को आशीर्वाद देने के बाद, बशिप अपने आवास पर लौट गए, जबकि धन्य थयिोडोर ने ईश्वर के सहिासन के सामने योग्य रूप से खड़े होकर नरि्रक्त बलदिानों का अनुष्ठान करना शुरू कर दयिा। यरूशलेम में पवत्रि स्थानों को देखने की इच्छा से और एक अच्छा यात्रा साथी मलिने पर, वह यरूशलेम के लिए रवाना हो गए और शहर पहुँच गए। वहाँ, उन्होंने बड़े उत्साह और श्रद्धा के साथ जीवन-दायक क्रूस और प्रभु के पवत्रि समाधस्थिल की पूजा की, और अन्य पवत्रि स्थानों का दर्शन करने के बाद, उन्होंने उनकी भी पूजा की और प्रार्थना की। उन्होंने वहाँ मठों और रेगस्तिानी एकांत में रहने वाले पवत्रि पुरखों से भेंट की, उनकी प्रार्थनाएँ और आशीर्वाद प्राप्त कए, और इसके बाद जॉर्डन नदी के कनिारे परमेश्वर की परम पवत्रि माता के चर्च के पास स्थति कोज़विटि मठ आए, जहाँ परमेश्वर ने पहले ही आर्चमैंड्राइट को थयिोडोरेट के आगमन के बारे में बता दयिा था। मठ में, ईश्वर की आज्ञा से, उन्हें मठीय वस्त्र पहनाए गए और आशीर्वाद के साथ वदिा कयिा गया।

अपने लौटने पर, वह संत जॉर्ज द ग्रेट मार्टायर के चर्च में रहने लगा, और ईश्वर की भक्तपिूर्वक सेवा करता रहा, प्रभु की कृपा से महमिामय भवषि्यवक्ता मूसा की तरह दमकता रहा, जो उस में प्रचुर मात्रा में थी। इस कृपा से, उसने लोगों को सताने वाली हर प्रकार की बीमारयिों को ठीक कयिा और, अधकिार रखने वाले की तरह, अशुद्ध आत्माओं को भगाया। उनकी दादी एल्पडियिा, उनकी चाची डस्पिेनयिा और उनकी छोटी बहन व्लाटा उनसे अलग नहीं होना चाहती थीं; लेकनि, उनके ईश्वरीय जीवन को देखकर, उन्होंने उपवास और प्रार्थना दोनों में उनकी नकल करने की पूरी कोशशि की, और अपने श्रम के फलों से गरीबों को दान दयिा।

कुछ ही समय बाद, उनकी चाची डस्पिेनयिा प्रभु के पास अनुग्रह की अवस्था में चल बसीं; उनके अंतमि संस्कार के बाद, उन्होंने अपनी बारह वर्षीय बहन व्लाटा को लेकर उसे एक मठ में छोड़ दयिा और उसे मसीह के लिए सर्मथ कर दयिा, साथ ही धन्य एल्पडियिा के लिए अस्थायी रूप से अपने पास एक घर में रहने की व्यवस्था की। एक पवत्रि और नष्किलंक जीवन जीते हुए, मसीह की कुँवारी, व्लाटा, तीन वर्षों के बाद अपने अमर वर के महल में प्रवेश कर गईं। उनकी मृत्यु की खबर पाकर, संत थयिोडोर ने खुशी से परमेश्वर का धन्यवाद कयिा। जहाँ तक एल्पडियिा का सवाल है, संत की सलाह पर, वह संत क्रस्टिोफर द मार्टयिर के चर्च से जुड़ी एक पास की कन्वेंट में चली गईं, जहाँ वह आदरणीय व्यक्ति उपचार के लिए लाई गई भूत-ग्रस्त और बीमार कुंवारी लड़कयिों को भेजते थे, ताकि एल्पडियिा उन्हें प्रार्थना और उपवास करना सखिा सकें, और उन्हें अच्छे आचरण की शक्षिा दे सकें। जब उनकी धन्य माता कॉन्वेंट में चली गईं, और उनकी

[3171] धार्मकि कैनन के अनुसार, 30 वर्ष की आयु तक पहुँच चुके पुरुषों को आमतौर पर प्रेस्बटिर (presbyters) के रूप में और 35 वर्ष की आयु वालों को बशिप (bishops) के रूप में नयिुक्त कयिा जाता था।

सेवा करने वाला कोई नहीं बचा, तो उन्होंने अपनी देखभाल के लिए एक नौकर रखा। ईश्वर की इच्छा थी कि थियोडोर मनुष्यों का मछुआरा बने (मत्ती 4:19) और उसने उसके साथ रहने के लिए कुछ लोगों को भेजना शुरू कर दिया। सबसे पहले, एपफिनियस नाम का एक व्यक्ति, जो उम्र में अभी जवान था और ईश्वर के प्रति प्रेम से प्रेरित था, उसके पास आया। धन्य थियोडोर प्रसन्न थे कि ईश्वर ने उन्हें अकेला नहीं छोड़ा था। एपफिनियस को आश्रय देने के बाद, उन्होंने उसे संन्यासी का वस्त्र पहनाया और उसे जीवन के इतने पवित्र तरीके से शिक्षित किया कि उसमें राक्षसों पर काबू पाने की शक्ति भी आ गई, और वह लोगों से उन्हें भगा देते थे। इसी तरह, एक धर्मनिष्ठ महिला, जिसे आदरणीय थियोडोर ने उसकी बीमारी से ठीक किया था, अपने छोटे बेटे फिलुमेनस को उसके पास ले आई, जो बुद्धिमान और पढ़ने-लिखने में निपुण था। और ये तीनों समकक्ष, मसीह के सेवक, प्राचीन काल के बेबीलोन के तीन जवानों (देखें दानिय्येल 3) के समान थे, जो परमेश्वर के प्रति एक ही प्रेम और उत्साह से एकजुट थे; और उनके बीच स्वयं प्रभु थे, जो कह रहे थे: *'क्योंकि जहाँ दो या तीन मेरे नाम पर इकट्ठे होते हैं, वहाँ मैं उनके बीच में होता हूँ'* (मत्ती 18:20)।

कुछ वर्षों बाद, जब धन्य एपफिनियस प्रभु में निद्रित हुए, तो उनके उत्तराधिकारी जॉन बने, जो सद्गुणों में अत्यधिक उत्साही व्यक्ति थे। उस समय, प्रोटोमरिया नामक एक गाँव के कुछ लोग आदरणीय के पास आए और उनसे आकर उनके पास रहने का आग्रह करने लगे, क्योंकि कुछ ही दूरी पर एक ऐसी जगह थी जहाँ अनेक अशुद्ध आत्माएँ वास करती थीं, और कोई भी—न तो लोग और न ही पशु—उसके पास से बिना नुकसान के नहीं गुज़र सकता था, विशेषकर दोपहर के समय और सूर्यास्त के बाद। ईश्वर के सेवक, थियोडोर, उस स्थान पर गए और वहाँ एक छोटी गुफा खोदने का आदेश दिया; वे पूरे सर्दियों में उसमें खुद को बंद कर लिया और वहाँ रहे, खुद को उपवास और प्रार्थना में समर्पित करते हुए, ईस्टर तक। दुष्टात्माएँ, वहाँ उसकी उपस्थिति सहन न कर सकीं, और संत की प्रार्थनाओं से किसी हथियार की तरह भगा दी गईं; और कई मौकों पर, कई लोगों ने दुष्टात्माओं की विलाप करती चीखें सुनीं, जो इस बात पर शोक मना रही थीं कि थियोडोर ने उन्हें भगा दिया था। उस गाँव के लोगों का उस पर इतना दृढ़ विश्वास था कि जब वे आते, तो वे उस गुफा से मिट्टी लेते जहाँ पूज्य रहते थे और उसे भोजन या पेय में मिलाकर, बीमार लोगों और पशुओं को एक निश्चित इलाज के रूप में देते; और, अपने विश्वास के कारण, उन्हें स्वास्थ्य लाभ मिलता था।

उस स्थान पर एक धर्मपरायण लोहार रहता था, जिसे पूज्य ने एक बिना छत वाला लोहे का पिंजरा बनाने का निर्देश दिया, जो इतना तंग हो कि उसमें केवल एक व्यक्ति ही खड़ा हो सके; और उसके भीतर उसने अपने शरीर के लिए आत्म-क्लेश का एक असाधारण रूप रचा। कई लोगों ने यह सुना और वे लोहार के पास लोहे के औजार लाने लगे, ताकि इस काम के लिए पर्याप्त लोहा हो सके; और जब पिंजरा तैयार हो गया, तो उसे क्रॉस के साथ साइकिया में रेवरेंड फादर के पास ले जाया गया। उन्होंने इसे अपनी गुफा के ऊपर रख दिया और अक्सर लंबे समय के लिए खुद को उसके अंदर बंद कर लेते थे, वहाँ एक अडिग स्तंभ की तरह खड़े होकर हर तरह के खराब मौसम को सहते थे। चूंकि पिंजरे की कोई छत नहीं थी, गर्मियों में तपती धूप उसे जलाती थी, जबकि सर्दियों में कड़ाके की ठंड से संत का शरीर जम जाता था और सुन्न हो जाता था। तूफ़ान और हवाएँ उसके विरुद्ध उग्र हो उठती थीं; बर्फ और बारिश उसे भीगने पर मजबूर कर देती थीं, फिर भी वह पत्थर की तरह असंवेदनशील और हीरे की तरह कठोर बना रहा। सर्वशक्तिमान ईश्वर ने उन्हें लोगों को चकित करने और ईश्वर के पवित्र नाम की महिमा के लिए, मानव समझ और प्रकृति से परे, इतना महान धैर्य प्रदान किया। थियोडोर ने न केवल उस लोहे के पिंजरे को अपनी स्वैच्छिक जेल के रूप में चुना, बल्कि अपने पूरे शरीर को लोहे की बेड़ियों में भी जकड़ लिया: उसने अपने पैरों में लोहे के जूते पहने और इसी तरह की बांह-रक्षा पहनी; उसने भारी लोहे का कवच धारण किया, खुद को मोटी ज़ंजीरों से बाँध लिया, और एक लोहे का डंडा लेता था जिसके शीर्ष पर एक क्रॉस अंकित था। उन्होंने अपने जीवन को इस प्रकार व्यवस्थित किया: मसीह के जन्म के पर्व के बाद और प्रकटोत्सव के पर्व तक, वह भारी लोहे की जंजीरों में बँधकर एक गुफा में प्रवेश करते थे, और ईस्टर तक बिना बाहर निकले वहीं रहते थे; ईस्टर के बाद, वह खुद को एक पिंजरे में बंद कर लेते थे। ऐसे लोहे के बंधनों और इस स्व-नियुक्त निर्वासन से, उसने अपने शरीर को पीड़ा दी, उसे एक दास और एक कैदी की तरह सताया और उत्पीड़ित किया, ताकि वह आंतरिक संघर्ष को भड़काए नहीं। लेंट के पवित्र उपवास के दौरान, वह सब्जियों और स्प्रिंग ब्रेड के अलावा कुछ भी नहीं खाता था, और वह भी केवल शनिवार और रविवार को। ईश्वर ने उनके लिए रेगिस्तान में रहने वाले जंगली जानवरों को वश में कर लिया; इस प्रकार, उदाहरण के लिए, एक भयानक भालू तीन साल तक उनके पास आता रहा और उनके हाथों से भोजन ग्रहण करता था, और एक भेड़िया भी उनसे भोजन करता था। संत के पास आने और जाने वाले जानवरों ने लोगों या जानवरों को कोई भी नुकसान नहीं

पहुँचाया, भले ही कोई उनसे मलि भी जाए। यह ईश्वर के चमत्कारकि कार्यों के कारण था, जन्हिोंने अपने सेवक को महमिामय बनाया, जसिने बदले में उन्हें महमिामय बनाया।

एक दनि, पूरे शरीर में कोढ़ से पीड़ति एक व्यक्ति थियोडोर के पास आया, जो अपने आप को एक कोठरी में बंद करके अपनी पवत्रि प्रार्थनाओं के माध्यम से ठीक होने की इच्छा रखता था। रेवरेंड फादर ने उस बीमार व्यक्ति को अपने कपड़े उतारने का नर्दिेश दयिा, कुछ पानी लयिा, और इस प्रकार ईश्वर से प्रार्थना की:

'हे प्रभु यीशु मसीह, हमारे परमेश्वर, जन्हिोंने अपने भवष्यिवक्ता एलशिा के द्वारा सीरयिाई नामान को कुष्ठ रोग से शुद्ध कयिा[3172] और जो अपनी दया में हम तक उतर आए और मनुष्य बने, अपने वचन से कुष्ठरोगयिों को चंगा करते हुए: अब हम पर और इस जल पर दृष्टि डालें, और इसे धन्य करने के बाद, इसमें चंगा करने की शक्ति प्रदान करें, ताकि यह हमारे सामने खड़े इस मनुष्य को कुष्ठ रोग से शुद्ध कर दे, तेरे पवत्रि नाम की महमिा के लिए।

प्रार्थना करने और पानी पर क्रॉस का चह्नि बनाने के बाद, उन्होंने उसे उस व्यक्ति के सरि और पूरे शरीर पर डाल दयिा, जसि पर वह बीमार व्यक्ति तुरंत कुष्ठ रोग से मुक्त हो गया और अच्छे स्वास्थ्य के साथ परमेश्वर की स्तुति करता हुआ चला गया। इसी प्रकार, कोलरियिोस नाम का एक कुष्ठरोगी पुजारी संत के पास आया, और जैसे ही उसने संत के वस्त्र पहने, वह उसी क्षण ठीक हो गया। थयिोडोर के जीवन और चमत्कारों को देखकर, धन्य एल्पडियिा आत्मा में आनंदति हुईं। उन्होंने कई महलिाओं को मठवासी जीवन में प्रवेश कराया और उन्हें ईश्वर को प्रसन्न करने वाले जीवन का उपदेश दयिा, क्योंकि वह स्वयं अत्यंत सदाचारी थीं और अपने पोते के आध्यात्मकि प्रयासों का अनुकरण करती थीं। एल्पडियिा को एक प्राप्त प्रकटवाणी से अपनी मृत्यु के नकिट आने की सूचना मलिी, और वह अपने पूजनीय पोते से अंतमि भेंट करने और उसे वदिाई देने आईं; उन्होंने उसे अपनी दृष्टि सुनाते हुए कहा:

'मेरे बच्चे और मेरी आँखों की रोशनी! मैंने एक दर्शन में एक अत्यंत सुंदर युवक देखा, जो उज्ज्वल वस्त्रों में लपिटा हुआ था, जसिके सुनहरे बाल थे, और जो महान शहीद संत जॉर्ज के समान था, जैसा कि हम उन्हें आइकन पर चत्रिति देखते हैं। वह मुझसे मलिने आया, और मुझसे तुम्हारे बारे में पूछा, यह जानना चाहता था कि तुम्हारा जीवन और तुम्हारा भजन-गायन कैसा है। मैंने उसे सब कुछ वस्तिार से बता दयिा। उसने मुझसे कहा:

– जब तुम भजन गाओ, तो यह कहो: *'हे पर्वतों और पहाड़यिों, प्रभु का धन्यवाद करो!'* (दानयिेल 3:75)।

और फरि उन्होंने कहा:

– 'हे पत्नी, तुमने परमेश्वर से महान अनुग्रह प्राप्त कयिा है, क्योंकि तुम्हें अपने पोते को ऐसी अवस्था में देखने के लिए योग्य ठहराया गया है; मुझ, उसके सहायक को, तुम बहुत का ऋणी हो; परन्तु सबसे बढ़कर, धन्यवाद हमारे सामान्य प्रभु और सह-स्रष्टा परमेश्वर को है, जसिने तुम्हारे पोते को अपने पवत्रि सेवकों में गनिे जाने के लिए योग्य ठहराया है। तब, सांत्वना लो, क्योंकि तुमने अब तक परश्रिम कयिा है।'

धन्य एल्पडियिा ने, आदरणीय थयिोडोर को अपने दर्शन के बारे में बताने और उन्हें अंतमि चूमन देने के बाद, अपनी कोठरी में वश्रिाम लयिा; वहाँ, थोड़ी देर बीमार रहने के बाद, वह प्रभु में नविास कर गईं और आदरणीय संत द्वारा सम्मान के साथ दफनाई गईं। उनके दफ़न के बाद, एन्सीरा शहर से एक आदमी आया और उसने रेवरेंड को यह खबर दी कि उनकी माँ, मैरी, का नधिन हो गया है; उसने उन्हें उनकी संपत्ति मंगवाने की सलाह दी, क्योंकि वह बनिा वारसि के गुजर गई थीं। संत ने उससे जवाब दयिा:

'तुम झूठ बोल रहे हो, क्योंकि मेरी माँ की मृत्यु नहीं हुई है।'

लेकनि संदेशवाहक ने ज़ोर देकर कहा कि उसने उसे अपनी आँखों से मृत देखा था, जसि पर संत ने एक बार फरि उत्तर दयिा:

'यह सच नहीं है; वह मेरे लिए मरी नहीं है, और न ही उसकी आत्मा मरेगी, बल्कि वह अभी भी जीवति है और हमेशा जीवति रहेगी।'

और उन्होंने बची हुई संपत्ति पर कोई ध्यान नहीं दयिा; इसके बजाय, पूरे सप्ताह का उपवास रखकर, उन्होंने उसकी आत्मा के लिए ईश्वर से भक्तपिूर्वक प्रार्थना की। जब रेवरेंड गुफा में ठहरे हुए थे, तब हेलीओपोलसि में गालातयिा के चर्च का कोषाध्यक्ष उनके पास आया और अपने नौकर के माध्यम से, अपनी आँसुओं भरी वनिती पहुँचाई, कहते हुए:

[3172] नीमन – सीरयिाई राजा बेन-हदद का एक सैन्य कमांडर। भवष्यिवक्ता एलशिा द्वारा कुष्ठ रोग से उसके ठीक होने के वृत्तांत के लिए, 2 राजा 6:1–19 देखें।

'हे परमेश्वर के सेवक, मुझ पर उस दुख में दया करो जो मुझ पर आया है: मैंने चर्च के लिए धन इकट्ठा करने के लिए एक सेवक भेजा था, लेकिन वह, धन इकट्ठा करने के बाद, भाग गया; मैंने उसका हर जगह पीछा किया, उसे ढूंढा और नहीं ढूंढ पाया; प्रभु से प्रार्थना करें कि वह उसे मुझे दिखा दें, क्योंकि मेरी सारी संपत्ति भी चर्च का वह ऋण चुकाने के लिए पर्याप्त नहीं होगी जो मेरा नौकर लेकर भागा है।"

संत ने उत्तर दिया:

'यदि आप वादा करते हैं कि आप अपने नौकर को बिना सज़ा दिए जाने देंगे और उससे वह नहीं लेंगे जो उसने पहले ही ले लिया है, तो प्रभु आपको सांत्वना देंगे और उसे आपके हाथों में सौंप देंगे। यदि आप यह वादा नहीं करते हैं, तो आप उसे नहीं पाएंगे।'

प्रबंधक ने न केवल उसे न पीटने और न ही उससे कुछ और लेने का वादा किया, बल्कि चर्च की संपत्ति लौटाए जाने तक अपनी संपत्ति से भी योगदान देने का वादा किया, और कहा:

'अगर मैं चर्च से चोरी की गई संपत्ति को वापस नहीं कर पाया, तो मेरे बच्चे और मैं नग्न रह जाएँगे।'

तब संत ने उससे उत्तर दिया:

'शांति से घर जाओ और निश्चिंत रहो; ईश्वर पर भरोसा रखो, क्योंकि वह शीघ्र ही तुम्हें सांत्वना देगा।'

आश्वासन मिलने पर, व्यवस्थापक ने पूजनीय के शब्दों पर पूरा भरोसा करके घर के लिए रवाना हो गया। चर्च की संपत्ति चुराने वाला भगोड़ा निकिया नामक गाँव के पास एक जगह पर, जैसे कि बँध गया हो, रुक गया और एक कदम भी आगे नहीं बढ़ सका; उसे लगा कि वह तेज़ी से दौड़ रहा है, जबकि वास्तव में वह बिल्कुल वहीं पर बना रहा। उस सड़क से गुजरने वाले लोगों ने अपराधी को पहचान लिया, उसे पकड़ लिया और उसे व्यवस्थापक के पास ले आए। इस प्रकार, उसने जो कुछ भी लिया था, वह सब चर्च को वापस मिल गया, और व्यवस्थापक ने कोई नुकसान न करने का अपना वादा निभाया; उसने उस व्यक्ति को रिहा कर दिया और अपना धन्यवाद अर्पित करने के लिए आदरणीय के पास लौट आया।

एक बार, पेंटेकोस्ट के पर्व के दौरान, एक आदमी अपनी पत्नी को लाया, जो एक राक्षस के वश में थी, और जब माननीय थियोडोर अशुद्ध आत्मा को भगा रहे थे, तो राक्षस ने चिल्लाकर कहा:

'हाय! तुम मुझ पर क्यों क्रोधित हो, हे लोहे तोड़ने वाले[3173] ? क्या मेरा दोष है, क्योंकि मैं अपनी इच्छा से उसमें प्रवेश नहीं किया था? मुझे करप्पोस के नाम से जाने जाने वाले जादूगर थियोडोर ने भेजा है, जो माज़ामिया में रहता है।'

लेकिन ईश्वर-प्रसन्नकर्ता ने यीशु मसीह के नाम पर दुष्ट आत्मा को आज्ञा देकर उसे उस स्त्री से बाहर निकाल दिया। और उसी गर्मी में, जून के महीने में, माज़ामिया गाँव के निवासी, पूजनीय थियोडोर द्वारा किए गए चमत्कारों के बारे में सुनकर, उनके पास आए, और आँसुओं के साथ उनसे विनती करने लगे कि वे उनके पास आकर उन टिड्डियों को भगा दें, जो उनके खेतों और बगीचों पर बादल की तरह छा गई थीं। संत उनके साथ गए, उनके चर्च में प्रवेश किया और वहाँ प्रार्थना में रात बिताई; और अगली सुबह वे खेतों में गए, वहाँ एक सामूहिक प्रार्थना का नेतृत्व किया, और तीन टिड्डियाँ अपने हाथों में लेकर लोगों के लिए ईश्वर से प्रार्थना की; और जब वे प्रार्थना कर रहे थे, तो उनके हाथ में ही टिड्डियाँ मर गईं। तब उन्होंने ईश्वर का धन्यवाद किया और लोगों से कहा:

'मेरे बच्चों, चर्च लौट जाओ, क्योंकि प्रभु जल्द ही हम पर अपनी दया दिखाएंगे।'

और चर्च लौटने पर, संत ने दैवीय पूजा का अनुष्ठान किया, और अगली सुबह लोगों ने देखा कि सभी टिड्डियाँ नष्ट हो चुकी थीं। थेओडोर करप्पॉस, जो उन इलाकों में रहता था, संत थियोडोर के प्रति ईर्ष्या से भर गया, क्योंकि वह पहले ही एक महिला से राक्षस को भगाने के लिए उससे नाराज़ था, वह राक्षस जिसे उस जादूगर ने उसके अंदर भेजा था। संत पर क्रोधित और उनके भीतर ईश्वर की चमत्कारी शक्ति से ईर्ष्या करते हुए, जादूगर ने अपने अधीन राक्षसों को बुलाया और उन्हें साइकेओस के संत थियोडोर पर हमला करने और उन्हें मृत्यु तक पीड़ा देने का आदेश दिया। लेकिन वे उसके पास नहीं आ सकते थे, क्योंकि पूजनीय संत के होठों पर हमेशा एक प्रार्थना रहती थी, और राक्षसों को तब तक इंतजार करना पड़ता था जब तक वह सो न जाएं; फिर भी जब संत सोते थे, तो ईश्वर की कृपा, उनसे निकलने वाली आग की तरह, राक्षसों को झुलसाकर भगा देती थी; वे एक बार फिर लौटते और उस पूजनीय संत पर टूट पड़ते, लेकिन फिर से झुलसकर भगा दिए जाते और अपमानित होकर उन्हें भेजने वाले के पास लौट जाते; और उसने, अपनी खीझ में, उन्हें डाँटते हुए कहा:

[3173] यह उपाधि संत थियोडोर को विभिन्न लोहे के उपकरणों से शरीर को कष्ट देकर संयम रखने के उनके कारनामों के कारण दी गई है, जैसा कि उनकी जीवनी में वर्णित है।

'सचमुच, तुम्हारी शक्ति तुच्छ है; यदि तुम उसके सोते समय उसके पास नहीं जा सके, तो जागते समय तुम उससे क्या कर सकते हो?'

और राक्षसों ने उत्तर दिया, कहकर:

'जैसे ही हम उसके पास आते हैं, उसके मुँह से एक आग की लपट निकलती है और हमें झुलसा देती है, जिसे हम सहन नहीं कर सकते।'

जादूगर, और भी अधिक द्वेष और ईर्ष्या से भरकर, एक मछली में घातक विष भरकर उसे पूजनीय व्यक्ति को उपहार के रूप में भेज दिया। मसीह की कृपा से संरक्षित संत ने अपने नियमित भोजन के दौरान मछली का स्वाद चखा और वह सुरक्षित रहा। जादूगर थियोडोर करप्पॉस इस बात से बहुत हैरान हुआ, और, ईश्वर की शक्ति और राक्षसों की दुर्बलता को समझकर, उसके हृदय में परिवर्तन आया; और, पवित्र पिता के पास आकर, वह उनके पवित्र चरणों में गिर पड़ा, आँसुओं के साथ अपने पापों का स्वीकार करते हुए, और, अपनी जादू-टोने की किताबें जलाकर, शैतान के कार्यों का त्याग कर दिया और पवित्र बपतिस्मा ग्रहण किया।

मठ में लौटने पर, आदरणीय पिता गंभीर रूप से बीमार पड़ गए और मृत्यु की प्रतीक्षा करने लगे, क्योंकि उन्होंने उन पवित्र स्वर्गदूतों को देखा जो उनके पास आए थे और सोचा कि वे उनकी आत्मा को ले जाने के लिए पहले से ही वहाँ आ चुके थे; वे रोए और विलाप करने लगे क्योंकि वे मृत्यु के लिए तैयार नहीं थे। उसके ऊपर पवित्र निश्चुल्क चिकित्सक कोस्मास और डैमियन की एक प्रतिमा लटकी हुई थी; वे एक दर्शन में उसे दिखाई दिए और, चिकित्सा की प्रथा के अनुसार, उन्होंने उसके हाथों की नसें टटोलीं और आपस में बातचीत की, जैसे कि उसके जीवित रहने की आशा छोड़ चुके हों, क्योंकि उसकी शक्ति पहले ही क्षीण हो चुकी थी। उन्होंने उससे कहा:

'भाई, तुम क्यों रो रहे हो और दुखी हो?'

बीमार व्यक्ति ने उत्तर दिया:

'क्योंकि मैंने ईश्वर और अपने पितरों के सामने पश्चाताप नहीं किया है, और क्योंकि मैं इस छोटे से झुंड को छोड़ रहा हूँ, जिसे अभी तक सही मार्ग पर पूरी तरह से नहीं लाया गया है और जिसे अभी भी बहुत शिक्षा की आवश्यकता है।'

संतों ने उससे कहा:

'यदि आप चाहें, तो क्या हम आपकी ओर से ईश्वर से प्रार्थना करें, कि वह आपका जीवन लंबा कर दे?'

बीमार व्यक्ति ने उत्तर दिया:

'यदि आप ऐसा करते हैं और मेरे लिए पश्चाताप का समय माँगते हैं, तो आप मेरे लिए कई आशीर्वादों का कारण बनेंगे और मेरे पश्चाताप का प्रतिफल प्राप्त करेंगे।'

संतों ने स्वर्गदूतों की ओर मुड़कर उनसे थोड़ी देर प्रतीक्षा करने के लिए कहा, जब तक कि वे राजा और ईश्वर के पास थियोडोर की ओर से विनती करने नहीं चले जाते। देवदूत सहमत हो गए, और पवित्र कष्ट-सहने वाले कोस्मास और डैमियन सर्वशक्तिमान राजा, हमारे ईश्वर मसीह के पास गए, जिन्होंने एक बार हिजिकियाह को पंद्रह वर्ष का जीवन प्रदान किया था[3174] , और, थियोडोरा को जीवन के और वर्ष प्रदान करने के लिए उससे विनती करने के बाद, वे थोड़ी ही देर बाद एक ऐसे युवक के साथ लौटे जो उन स्वर्गदूतों जैसा दिखता था, परन्तु जो अधिक महिमा से प्रकाशमान था। इस युवक ने स्वर्गदूतों से कहा:

'थियोडोर का जीवन बख्श दो; तुमने उसके लिए सर्व के प्रभु, महिमा के राजा के पास मध्यस्थता की है, और उन्होंने आज्ञा दी है कि वह देह में रहे।'

और तुरंत ही पवित्र स्वर्गदूत, उस अत्यंत तेजस्वी युवक के साथ, स्वर्ग में आरोहण कर गए। तत्पश्चात पवित्र कोस्मास और डामियन ने थियोडोर से कहा:

'उठो, भाई, और अपना तथा अपने झुंड का ध्यान रखो: दयालु और कृपालु प्रभु ने तुम्हारे लिए हमारी प्रार्थनाओं को स्वीकार कर लिया है और तुम्हें जीवन दिया है, ताकि तुम ऐसा भोजन तैयार कर सको जो नष्ट न हो, बल्कि अनंत जीवन के लिए स्थायी हो, और अनेक आत्माओं को उद्धार दे सको।'

[3174] हेजेकियह यहूदा का एक राजा था जो ईसा पूर्व 8वीं शताब्दी में रहता था। भविष्यवक्ता यशायाह द्वारा उसके चमत्कारी उपचार का वर्णन 2 राजाओं में किया गया है।

उसे यह कहने के बाद, पवित्र चिकित्सक अदृश्य हो गए। धन्य थियोडोर को होश आया और, पूरी तरह से स्वस्थ महसूस करते हुए, तुरंत उठ खड़े हुए, परमेश्वर की स्तुति की, और बड़ी लगन के साथ भजन-संगीत गाने और उपवास में स्वयं को समर्पित कर दिया।

उस पर ईश्वर की कृपा से, उन्होंने चमत्कार किए, विभिन्न बीमारियों को ठीक किया और अपने वचन से दुष्टात्माओं को भगाया। उनके चमत्कारों की ख्याति दूर-दूर तक फैल गई; कई लोग चकित और प्रभावित हुए, उन्होंने अपने घर छोड़कर उनके पास आकर संन्यासी तपस्या अपना ली। इसी प्रकार, जो कई लोग उनसे चंगा हुए थे, वे उनसे अलग नहीं हुए, बल्कि वहीं रुके और मठ की आवश्यकताओं की पूर्ति में लगे रहे; क्योंकि जब बड़ी संख्या में भाई इकट्ठा हो गए, तो एक बड़ा मठ स्थापित किया गया, और थियोडोर ने अपने मठ में आर्चिमैंड्राइट के रूप में सेवा की; लेकिन चूंकि नियमित सेवाओं के लिए आने वाले सभी लोगों को समायोजित करने के लिए संत जॉर्ज महान शहीद का चर्च बहुत छोटा था, इसलिए आदरणीय ने पहले वाले से बहुत दूर नहीं, संत माइकल महादूत को समर्पित एक और चर्च का निर्माण करने का कार्य अपने हाथ में ले लिया, जो अधिक विशाल था; और, वहाँ मठवासी समुदाय को बसाने के बाद, उन्होंने अपने शिष्य फिलुमेनस को अनास्तासियोपोलिस के बिशप के पास पादरी नियुक्त होने के लिए भेजा और उसे इस मठ का मठाधीश नियुक्त किया; जबकि उन्होंने स्वयं को पूरी तरह से मौन के प्रति समर्पित कर दिया।

दिव्य अनुष्ठान के अनुष्ठान के लिए एक चाँदी के पात्र की आवश्यकता थी, क्योंकि तब तक संस्कार एक पत्थर के संगमरमर के पात्र में मनाया जाता था। सम्माननीय ने दिव्य लिटिर्जी के लिए एक चांदी का पात्र खरीदने के लिए अपने डीकन को कॉन्स्टेंटिनोपल भेजा; जब वह पात्र—शुद्ध और उत्तम कारीगरी वाला—खरीदा गया और उनके पास लाया गया, तो संत ने उसे अस्वीकार कर दिया, क्योंकि वह उसमें दिव्य लिटिर्जी मनाने के इच्छुक नहीं थे, क्योंकि उन्होंने महसूस किया था कि वह पात्र अनुपयुक्त, काला और बदबूदार था। डीकन ने इसकी उत्कृष्ट कारीगरी और शुद्ध चांदी की प्रशंसा की, लेकिन रेवरेंड ने कहा:

'और मैं भी देख सकता हूँ, मेरे बच्चे, कि पात्र सुंदर ढंग से बना है और शुद्ध चाँदी का है, लेकिन यह एक अदृश्य अशुद्धि से अशुद्ध हो गया है; और यदि तुम मेरा विश्वास नहीं करते, तो चलो प्रार्थना करें कि प्रभु तुम्हारी आत्मा की आँखें खोल दें, और तुम देखोगे।'

जैसे ही वे घुटने टेककर प्रार्थना करने लगे, न केवल डिकन बल्कि उपस्थित सभी भाइयों ने तुरंत एक पात्र को कोयले की तरह काला देखा, मानो सीधे भट्टी से निकाला गया हो, और वे चकित रह गए। लेकिन जब डिकन ने उसे अपने हाथों में लिया, तो वह पात्र तुरंत पहले की तरह स्वच्छ और चमकदार हो गया। उसे लेकर वह कॉन्स्टेंटिनोपल ले गया और सोनार ई के पास गया, जिससे उसने इसे खरीदा था, और उसे बताया कि आदरणीय थियोडोर ने इसे क्यों स्वीकार नहीं किया था। सोने के कारीगर ने चाँदी की उत्पत्ति के बारे में विचार करना शुरू किया और उसे याद आया कि यह एक वेश्या और उसकी अवैध रूप से अर्जित संपत्ति से आई थी; वह पूजनीय पिता की सूझबूझ पर चकित हो गया और क्षमा माँगने लगा, उसने पात्र वापस ले लिया और उसे सबसे शुद्ध संभव दूसरे पात्र से बदल दिया, और साथ ही अपने लिए संतों से प्रार्थना करने का अनुरोध किया।

डीकन लौट आया, पात्र को मठ में ले आया, और मठाधीश तथा भाइयों को बताया कि पहला पात्र किससे बना था; और उन्होंने सभी ने ईश्वर की स्तुति की और संत की सूझबूझ पर आश्चर्य किया।

एक दिन, ग्रासियानोपोल के पास के वुज़्स्कोये गाँव से कुछ लोग निम्नलिखित कारण से परम पूज्य थियोडोर के पास आए: वे अपने गाँव में नदी पर एक पत्थर का पुल बना रहे थे, और जब वे पास की पहाड़ी से पत्थर खोद रहे थे और लकड़ी की तख्तियाँ काट रहे थे, तो उन्होंने गड्ढे से निकलते हुए राक्षसों की भीड़ देखी, जो लोगों और जानवरों पर हमला करते और उन्हें पीड़ा देते थे; अन्य, लुटेरों की तरह, रास्ते पर घात लगाकर बैठे रहते और गुजरने वालों को घायल कर देते थे। जो लोग आए थे उन्होंने आदरणीय से विनती की कि वे उनके गाँव आएँ और उन्हें राक्षसों के हमलों से मुक्ति दिलाएँ, और थियोडोर ईश्वर पर भरोसा करके उनके साथ चले गए। और जैसे ही वे उनके गाँव के पास पहुँचे, लोगों के भीतर रहने वाले राक्षसों ने, उनकी उपस्थिति का आभास पाकर, उनसे मिलने के लिए बाहर आकर चिल्लाने लगे:

'हाय, हम बर्बाद हो गए! गलातिया छोड़कर, तुम यहाँ क्यों आए हो, हे लोहे के तोड़ने वाले? हम जानते हैं कि तुम क्यों आए हो, लेकिन हम तुम्हारी आज्ञा नहीं मानेंगे, जैसे गलातिया में आत्माओं ने मानी थी; हम उनसे कहीं अधिक दुष्ट और शक्तिशाली हैं!'

रेवरेंड ने उन्हें डाँटा और चुप रहने का आदेश दिया; अगली सुबह उन्होंने लोगों को इकट्ठा किया, पूरे गाँव में एक जुलूस निकाला, और पहाड़ी की चोटी पर चढ़कर, लंबे समय तक परमेश्वर से भक्तिपूर्वक प्रार्थना की। और तुरंत ही वे राक्षस, जो वहाँ से भाग गए थे, परमेश्वर की शक्ति से मक्खियों, चूहों और खरगोशों के रूप में फिर से प्रकट हुए; और उसने उन सभी को एक गड्ढे में धकेल दिया, उस पर क्रॉस का चिह्न बनाया, और उसे मिट्टी और पत्थरों से भरने का आदेश दिया; और इस प्रकार उसने गाँव को राक्षसी विपत्ति से मुक्त कराया। इसी तरह, उन्होंने कई अन्य गांवों, क्षेत्रों और घरों को भूत-प्रेतों से मुक्त कराया, और अनगिनत लोगों से भी दुष्ट आत्माओं को निकाला, जो उनके नाम का जिक्र मात्र सुनकर कांप उठते थे।

उनके कई शिष्य अपने सद्गुणों के लिए प्रसिद्ध और प्रतिष्ठित थे। उदाहरण के लिए, धन्य तपस्वी अरसिनि, जो एक तंग कोठरी में रहते थे, मौन में रहते थे, और केवल तीसरे दिन भोजन लेते थे: थोड़ी सी रोटी और कच्ची हरी सब्जियां या उबली हुई सब्जियां, और पानी की मध्यम मात्रा; लेंट के पवित्र उपवास के दौरान, वे केवल शनिवार और रविवार को खाते थे, और तब भी केवल सूखा भोजन। अन्य दो पुरुष, इवाग्रियस और एंड्रयू, जिनके आरसिनि से बहुत दूर नहीं अपने-अपने आश्रम थे, उन्होंने भी इसी तरह का जीवन जिया। आदरणीय थियोडोर उनके सदाचारी जीवन से बहुत प्रसन्न हुए और उन्होंने ईश्वर का धन्यवाद किया। तीनों पवित्र स्थानों की पूजा करने के लिए यरूशलेम जाने पर सहमत हो गए और अपने पिता से उन्हें अपनी आशीर्वाद के साथ विदा करने के लिए कहा। उन्होंने अपनी अनुमति दे दी, और वे सभी आसपास के मठों और आश्रमों का दौरा करते हुए वहाँ की यात्रा पर निकल पड़े। एवाग्रियस वहीं रहना चाहता था, और, आदरणीय सावस के मठ में आकर, उसने एक पवित्र जीवन जिया, और अपने कर्मों से ही खुद को थियोडोर का शिष्य साबित किया। हालांकि, अर्सिनि और एंड्रयू गालाटिया में अपने पिता के पास लौट आए और उनसे मौन का अभ्यास करने के लिए अलग-अलग जगहों पर रहने की अनुमति मांगी। अपने पिता की आज्ञा से, एंड्रयू मठ से आठ स्टेडियम दूर व्रियिन की पहाड़ी पर बस गया। अर्सीन पोटामिया के पहाड़ी क्षेत्र में चला गया, जहाँ उसने मानव बस्तियों से दूर एक जगह चुनी, जो राक्षसों का निवास स्थान मानी जाती थी। वहाँ उसने प्रार्थना करते हुए कहा:

'हे ईश्वर, मेरे पिता थियोडोर की प्रार्थनाओं के द्वारा, मुझे, एक पापी को, बचाओ, और मुझे दुष्टात्माओं की युक्तियों से बचाओ, और इस स्थान पर आपको प्रसन्न करने में मेरी मदद करो।'

सबसे पहले, उन्होंने अपने लिए एक छोटी सी लकड़ी की कोठरी बनाई और वहाँ सर्दी बिताई; फिर उन्होंने एक ऊँचा स्तंभ खड़ा किया और उसमें चालीस वर्ष तक बड़ी धैर्यता से बिताने के बाद, प्रभु के पास चले गए। और एल्पिडियिस ने, परम पूजनीय थियोडोर के मार्गदर्शन में, सद्गुणों में काफी प्रगति की। अपने पिता के साथ कई साल बिताने के बाद, वह उनके आशीर्वाद से पूर्व की ओर रवाना हुआ, सिनाई पर्वत के पास बस गया और, लंबे समय तक मौन में रहने के बाद, एक धार्मिक मृत्यु प्राप्त की; उसके बाद, सिनाई के पवित्र पिताओं ने इस स्थान का नाम 'एल्पिडियिस' मौन रखा।

इसी तरह, हमारे पिता थियोडोर के शिष्य लियोन्टियिस, अपने एकांत जीवन में उल्लेखनीय थे; वे पर्माथिया के पास मौन में रहे और, भविष्यवाणी का वरदान प्राप्त करने के बाद, भविष्य की भविष्यवाणी की। इस प्रकार, उन्होंने फारसियों के आक्रमण और उनके हाथों अपने स्वयं के हत्या की भविष्यवाणी की, जो सच हुई; क्योंकि जब उन्होंने अपनी मौन की कोठरी छोड़ने से इनकार कर दिया, तो फारसियों ने उन्हें वहीं मार डाला। इसके बाद, थियोडोर, जो माउंट ड्रैकोनियिन पर उपवास करते थे, और स्टीफन नदी सिलिया के पास, और पूजनीय थियोडोर के कई अन्य शिष्य, अपने पुण्य कार्यों से चमक उठे; कुछ उनके साथ रहते थे, जबकि अन्य विभिन्न सुनसान स्थानों पर बस गए।

आदरणीय थियोडोर को एक बार फिर से यरूशलेम के पवित्र स्थानों की यात्रा करने की इच्छा हुई, और इस प्रकार, वे अपने दो शिष्यों को साथ लेकर चल पड़े। उस समय, फिलिस्तीन में, जहाँ यरूशलेम शहर स्थित है, वहाँ सूखा और बारिश की कमी थी, और पानी की कमी के कारण मनुष्यों और जानवरों दोनों को कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा था; पानी जमा होने वाली सभी खाइयाँ और जलाशय सूख गए थे। लोगों ने पूरी श्रद्धा से प्रार्थना की, ईश्वर से वर्षा की याचना की, लेकिन उन्हें कुछ भी नहीं मिला, क्योंकि प्रभु ने वह कृपा अपने संत थियोडोर के लिए आरक्षित रखी थी और इसलिए उन्हें फिलिस्तीन लाए थे। वहाँ गालातिया की भूमि से कुछ लोग थे जो पूजनीय थियोडोर को जानते थे और उनके चमत्कारों के बारे में सुना था; उन्होंने लोगों से कहा:

'हम अपनी भूमि में एक पवित्र पिता को जानते हैं जो एक ही प्रार्थना से पूरे ब्रह्मांड को बारिश से भर सकते हैं, ठीक वैसे ही जैसे नबी एलिया ने एक बार किया था।'

जब आदरणीय संत यरूशलेम पहुँचे और उन्होंने जीवन-दायक क्रूस और मसीह के जीवन-दायक समाधि का पूजन किया, तो गालातिया के आगंतुकों ने उन्हें पहचान लिया, और जल्द ही पूरे पवित्र शहर और आसपास के मठों और लावरा में उनकी खबर फैल गई। बहुत सारे भिक्षुओं की भीड़ जमा हो गई, और सभी पुरोहितों ने संत को घेर लिया, जो उनके बीच आकर बहुत प्रसन्न थे, और उन्होंने पितृप्रधान के नाम पर उनसे सूखी धरती पर वर्षा के लिए प्रभु से प्रार्थना करने का आग्रह किया। संत ने खुद को पापी और अयोग्य मानकर मना कर दिया, लेकिन उन्होंने उनसे विनती करते हुए कहा:

'हमें आशा है, पिताजी, कि जब आप अपनी प्रार्थनाएँ अन्य संतों की प्रार्थनाओं के साथ मिलाएँगे, तो ईश्वर हम पर दया करेंगे और पृथ्वी पर वर्षा भेजेंगे।'

और संत ने उनसे कहा:

'यदि तुम इसे मानते हो, तो तुम्हारे विश्वास के अनुसार हो।'

जब लिटिर्जी संपन्न हो गई, और लोग जुलूस में चल रहे थे, तो रेवरेंड ने उनसे संबोधित करते हुए कहा:

'अपने कपड़े बदल लो, मेरे बच्चों, क्योंकि तुम भीग जाओगे, क्योंकि तुम्हारे विश्वास के लिए प्रभु जल्द ही अपनी दया दिखाएंगे।'

जब वे शहर के बाहर थे, तो उन्होंने उन्हें एक निश्चित स्थान पर रुकने का आदेश दिया और, स्वर्ग की ओर अपने हाथ फैलाकर, उन्होंने भक्तिपूर्वक प्रार्थना करना शुरू कर दिया; और तुरंत ही पश्चिम से एक छोटा सा बादल आया और, बड़ा होकर, एक घंटे के भीतर पूरे आकाश को ढक लिया। संत ने अपनी प्रार्थना समाप्त करने के बाद, प्रार्थना कर रही भीड़ से बारिश से बचने के लिए जल्दी लौटने को कहा। अचानक, मूसलाधार बारिश शुरू हो गई, और सभी पूरी तरह से भीग जाने के कारण चर्च की ओर शहर में भाग गए। बारिश तब तक नहीं रुकी जब तक कि उसने पूरी धरती को भीग नहीं दिया और सभी खाइयों, जलाशयों और गड्ढों को भर नहीं दिया। पूजनीय थियोडोर, इस डर से कि लोग ऐसे चमत्कार के लिए उनकी प्रशंसा और पूजा करना शुरू कर सकते हैं, अपने दो शिष्यों के साथ शहर से निकल गए और गलातिया में साइकियोस स्थित अपने मठ चले गए। लेकिन अपने ही देश में, आसपास के कई क्षेत्रों में, लोगों के अनुरोध पर, उन्होंने इसी तरह के चमत्कार किए: उन्होंने बारिश कराई, हवा को शुद्ध किया, खेतों और बागों के फलों को बढ़ाया, बाढ़ और पानी के जमाव को रोका, और भविष्य की भविष्यवाणी की।

[3175]गवर्नर मॉरसियिस, जो फारसी युद्ध के बाद गैलैटिया होते हुए कॉन्स्टेंटिनोपल लौट रहे थे और प्रार्थना तथा आशीर्वाद के लिए पूजनीय के पास आए थे, उन्हें उन्होंने भविष्यवाणी की कि वह सम्राट बनेंगे। और जब यह हुआ, तो मॉरसि ने अपने भविष्यवक्ता, इस पवित्र पिता को लिखा, और अपने तथा अपने राज्य के लिए प्रार्थना करने का अनुरोध किया, और जोड़ा: 'जो कुछ भी आप चाहें, मुझसे माँगिए।' सम्माननीय थियोडोर ने धन्य फिलुमेनस को उनके पास भेजा और लिखा कि राजा को मठ के लिए रोटी प्रदान करनी चाहिए, ताकि हर दिन आने वाले गरीब लोगों की भीड़ का पेट भर सके। तब राजा ने गलातिया में अपने अधिकारियों को लिखा, और उन्हें निर्देश दिया कि वे थियोडोर के मठ को हर साल छह सौ चेत्वेरकिस गेहूं दें; इसके अलावा, उन्होंने चर्च को कीमती बर्तन भी दान किए।

अपनी मंडली को दिन-ब-दिन बढ़ता हुआ और प्रार्थना तथा उपचार के लिए अपने मठ में लोगों की भीड़ जमा होती देख, उन्होंने संत जॉर्ज द ग्रेट मार्टायर के बहुत छोटे चर्च को ध्वस्त कर दिया और एक चमत्कारिक तरीके से एक बड़ा चर्च बनवाया: उन्होंने एक विशाल, अचल पत्थर को अपनी जगह से हटकर दूसरी जगह जाने का आदेश दिया। और जब चर्च के निर्माण के लिए पास के एवार्सिया क्षेत्र से चूना ले जाया जा रहा था, तो अचानक एक बादल छा गया, और मजदूरों को डर था कि चूना आग पकड़ लेगा और गाड़ियों और जानवरों को जला देगा; तब पूजनीय थियोडोर ने अपनी प्रार्थना के द्वारा, बादल को दो भागों में विभाजित कर दिया, और सड़क के दोनों ओर भारी बारिश हुई, जबकि चूने या गाड़ियों पर एक भी बूंद नहीं गिरी, जब तक कि सब कुछ चर्च के स्थल पर लाकर गाड़ियों से उतार नहीं दिया गया।

जब चर्च का निर्माण समाप्त होने वाला था, तो अनास्तासियोपोलिस के बिशप थियोडोसियस के उत्तराधिकारी, बिशप टिमोथी का निधन हो गया, और नागरिक अंकीरा के मेट्रोपोलिस के आर्चबिशप पॉल के पास गए, और उनसे साइकेऑन लाव्रा के आर्चमैंड्राइट, परम पूजनीय थियोडोर को अपने शहर का बिशप नियुक्त करने का अनुरोध किया। आर्चबिशप बहुत प्रसन्न हुए और उन्होंने आदरणीय थियोडोसियस को अपने पास बुलाया, ताकि उन्हें सम्मानपूर्वक उनके पास लाया जा सके। उस समय, आदरणीय व्यक्ति एक गुफा में तपस्या कर रहे थे, मौन में रह रहे थे और भक्तिपूर्वक

[3175] मौरसियिस ने 582 से 602 तक शासन किया।

अपनी नियमित प्रार्थनाएँ कर रहे थे। जब अनास्तासियोपोलिस के पुरोहित और नागरिक उनसे अपने बिशप बनने के लिए राजी होने का अनुरोध करने आए, तो उन्होंने उनकी बात तक नहीं सुनी; लेकिन उन्होंने जबरदस्ती उनका कोठरी का दरवाज़ा खोल दिया, पूजनीय संत को बाहर ले आए, उन्हें बिशप की रथ पर बिठा दिया, और उन्हें आनंद और हर्ष के साथ एंकेरा ले आए। जब उनके भाई अपने पिता के लिए, जिन्हें उनसे दूर ले जाया जा रहा था, रो रहे थे और विलाप कर रहे थे, तो उन्होंने उन्हें संदेश भेजा:

'भाइयों, शोक मत करो, बल्कि मुझ पर विश्वास करो कि मैं तुम्हें कभी नहीं छोड़ूँगा। पृथ्वी पर ऐसा कुछ भी नहीं है जो मुझे तुमसे अलग कर सके।'

और इस प्रकार रेवरेंड फादर को एन्सीरा के मेट्रोपॉलिटिन, पॉल द्वारा अनास्तासियोपोलिस के बिशप के रूप में अभिषिक्त किया गया, यद्यपि वह ऐसा पद स्वीकार नहीं करना चाहते थे। जब उन्होंने इसे स्वीकार कर लिया, तो एक विशिष्ट व्यक्ति को एक दर्शन हुआ: एक अत्यंत तेजस्वी और भव्य तारा स्वर्ग से गिरकर चर्च पर आ गया और अपनी किरणों से न केवल शहर और देश को, बल्कि आसपास के सभी क्षेत्रों और कस्बों को भी प्रकाशित कर दिया। वास्तव में, यह सम्मानित फादर, बिशप के सिंहासन पर, एक मोमबत्ती की तरह, संसार के लिए एक प्रकाश के रूप में प्रकट हुए, जिन्होंने अनगिनत चमत्कारों और अपने अद्भुत जीवन के उदाहरण से ब्रह्मांड को प्रबुद्ध और चकित किया। वे अक्सर अपनी साइकोट लावरा जाते थे और भाइयों को सांत्वना देते थे, और उन्होंने सेंट जॉर्ज द ग्रेट मार्टायर के चर्च को समर्पित किया, जिसे उनके उत्साह से बनाया गया था। एक बिशप रहते हुए उन्होंने जो चमत्कार किए, उनके स्वरूप और संख्या को विस्तार से बताना असंभव है; उन्होंने अपनी सुपुर्द की गई भेड़ों का परिश्रमपूर्वक ध्यान रखते हुए, अथक परिश्रम किया। हालाँकि, परम पूजनीय ने इस बात पर भी बहुत दुःख व्यक्त किया कि उनकी मौनता भंग हो गई थी, और उन्होंने हमेशा अपने हृदय में बिशप पद त्यागने और मौन में जीने के लिए एक बार फिर मठ में लौटने की अटूट इच्छा पाल रखी थी।

कुछ वर्षों बाद, धन्य थियोडोर को एक बार फिर से यरूशलेम के पवित्र स्थलों की यात्रा करने की इच्छा हुई और वह अपने मठ से दो भाइयों—आर्चडीकन जॉन और मार्टिन—को साथ लेकर यात्रा पर निकल पड़े; पवित्र स्थलों का दौरा करते समय, उन्होंने अपना बिशप का पद नहीं बताया, बल्कि एक साधारण वृद्ध की तरह चलते थे।

उनके मन में घर न लौटने का विचार आया, बल्कि वहाँ किसी मठ में रहने का, क्योंकि उन्हें एहसास हुआ कि अपने बिशप के पद के कारण, उन्हें अपना मठ का तपस्या जीवन त्यागने के लिए मजबूर होना पड़ा था। और इस प्रकार वह संत सावा की लावरा गए, एक कोठरी माँगी, और वहाँ मसीह के जन्म के पर्व से लेकर ईस्टर तक मौन में रहे। ईस्टर के बाद, उनके साथ आए दो भाइयों, जॉन और मार्टिन, उन्हें घर लौटने के लिए बार-बार आग्रह करते रहे, लेकिन उन्होंने उनकी बात नहीं सुनी। और एक रात, सपने में, पवित्र महान शहीद जॉर्ज उसके सामने प्रकट हुए, उसके हाथों में एक लाठी रखी और कहा:

'जल्दी करो और इस जगह को छोड़ दो, और चलो हम अपने वतन लौट चलें; तुम्हें यहाँ ठहरने की कोई ज़रूरत नहीं है, जब तुम अपना वतन ही छोड़ चुके हो।'

थियोडोर ने कहा:

– मैं घर नहीं जा सकता, क्योंकि मैं बिशप नहीं बनना चाहता।

शहीद ने उनसे उत्तर दिया:

'मैं तुम्हें जल्द ही इस पद से मुक्त कर दूँगा; बस लौट जाओ, क्योंकि बहुत से लोग तुम्हारे लिए दुखी हैं।'

इस उपदेश के बाद, आदरणीय ने अपने दो शिष्यों को लिया और अपने देश के लिए रवाना हो गए। जब वे गलातिया पहुँचे, तो वे रास्ते में पड़ने वाले ड्रुइनी मठ में रुके और अपने साथियों को यह न बताने का निर्देश दिया कि वे कौन हैं। इस मठ के भिक्षुओं ने लंबे समय से रेवरेंड थियोडोर के एक असाधारण व्यक्ति होने के बारे में सुना था और वे उन्हें देखना चाहते थे। उन भिक्षुओं द्वारा अनजान, माननीय पिता ने मेजबान, अनीकिता द्वारा स्वागत किए जाने के बाद, मठ के अतिथि-गृह में चुपचाप ठहरे; और जब थियोडोर के शिष्यों से उस वृद्ध के बारे में और वह कौन था, इस बारे में पूछा गया, तो उन्होंने जवाब दिया कि वह किसी दूर की भूमि से आए एक यात्री थे। शाम के भोजन के दौरान, उन्होंने शिष्यों की ओर देखा, जो विशेष उत्साह के साथ खा रहे थे, क्योंकि वे भूखे थे, और उनसे कहा:

'सचमुच, मेरे बच्चों, हम गलातियों की तरह खा रहे हैं।'

और एक घंटे बाद उन्होंने वही शब्द दोहराए। यह सुनकर, अनीकीता ने मन ही मन सोचा कि क्या यह साधु गालातिया से होंगे। उस शाम, जब, जैसा कि उनका रिवाज था, साधु रात के लिए जमीन पर लेट गए, अनीकीता ने दोनों शिष्यों को एक तरफ ले जाकर उनसे इस साधु की पहचान बताने का आग्रह किया; तब उन्होंने उसे बताया कि वह थियोडोर थे, साइकियन के चमत्कार करने वाले, अनास्तासियोपोलिस के बिशप, और अनीकिता तुरंत यह घोषणा करने के लिए भागे कि अब्बॉट स्टीफन और भाइयों को यह बता दें। जिसे वे इतनी बेसब्री से देखना चाहते थे, उसे देखकर उनकी बहुत खुशी हुई। सुबह के भजन का समय हो गया, और जब वह बूढ़ा उठकर चर्च की ओर बढ़ा, तो मठाधीश और भ्राताओं ने उसे दरवाज़े पर मिलकर उसके पैरों पर गिर पड़े; उन्होंने एक चमत्कार करने वाले और बिशप के रूप में उसकी पूजा की और आशीर्वाद माँगा। उन्होंने संत से विनती की कि वे कुछ दिनों के लिए उनके साथ रहें, ताकि वे उनके दैवीय मुखमंडल के दर्शन का आनंद ले सकें और उनके मधुर संवाद से तृप्त हो सकें, और पूज्य पिता कुछ समय तक उनके साथ रहे। जल्द ही उनकी ख्याति पूरे देश में फैल गई, और बहुत से लोग मठ में आए, अपने बीमारों को संत के पास लाए, और उन्होंने सभी को मसीह की कृपा से चंगा कर दिया।

इसके बाद, पूजनीय अपने झुंड के पास लौट आए और, अपने सामान्य पादरीय कर्तव्यों का पालन करते हुए, इस बारे में सोचना कभी बंद नहीं किया कि वे बिशप का पद कैसे त्याग सकते हैं। इसके अलावा, धन्य तपस्वी एंटिओक, जो कॉन्स्टेंटिनोपल से अपने घर लौट रहे थे और संयोग से उनके साथ थे, ने भी उन्हें ऐसा ही करने की सलाह दी; क्योंकि इस एंटिओक को पूर्वी देशों से राजा मॉरिसियस के पास सिनोफ्रिनिस शहर के लिए उसके दुश्मनों से सुरक्षा मांगने के लिए भेजा गया था। अंतियोकस लगभग सौ वर्ष के वृद्ध व्यक्ति थे; उन्होंने साठ वर्षों तक न तो शराब पी थी और न ही तेल खाया था, और तीस वर्षों तक उन्होंने रोटी नहीं खाई थी, वे केवल नमक और सिरके के साथ कड़वी जड़ी-बूटियों पर जीवित रहते थे, और पानी पीते थे। रेवरेंड ने गलातिया और अनास्तासियोपोलिस से यात्रा कर रहे इस धन्य पिता का अपने घर में सम्मान और आनंद के साथ स्वागत किया; उन्होंने उन्हें सहज कर दिया और उनके साथ आध्यात्मिक बातचीत में बहुत सांत्वना पाई। धन्य अंटिओकस ने अपने शिष्यों से थियोडोर के बारे में कहा:

'मैंने पहले कभी ऐसा पवित्र पुरुष नहीं देखा है। प्रभु ने मुझे उसका जीवन प्रकट किया है।'

इसी प्रकार, थियोडोर ने अपने भाइयों से अंटिओकस के बारे में कहा:

'पूर्वी मरुभूमि में, मैंने न तो ऐसा ईश्वर का सेवक देखा है और न ही उसके बारे में सुना है।'

संत थियोडोर ने परम पूज्य एंटिओकस से बुद्धिमानी भरा परामर्श लिया, और उन्हें अपना धर्मप्राची पद छोड़ने के अपने इरादे के बारे में बताया; हालाँकि, एंटिओकस ने इस इरादे की प्रशंसा की और उन्हें बिना देरी के अपनी इच्छा को पूरा करने की सलाह दी।

जब अंटिओकस चला गया, तो आदरणीय थियोडोर चर्च की संपत्ति की लूट से दुखी हो गए; इसके अलावा, धर्मप्रांत के भीतर उनके कुछ गुप्त शत्रु थे जिन्हें अदृश्य शत्रु द्वारा ईर्ष्या और घृणा के लिए उकसाया गया था; एक अवसर पर, ईश्वर की अनुमति से, उन्होंने उसे जहर दे दिया, और परम पूजनीय तीन दिनों तक मृतक समान, बोलने और हिलने-डुलने में असमर्थ पड़े रहे, यहाँ तक कि संत के निधन की अफवाहें पूरे शहर में फैल चुकी थीं। तीन दिनों के बाद, हमारी परम पवित्र माता, परमेश्वर की माता, उसे दिखाई दीं और उन्होंने उसे उसकी बीमारी का कारण—उसे गुप्त रूप से दिया गया ज़हर—बताया और उन घृणा करने वालों को भी दिखाया जिन्होंने उसे ज़हर दिया था; फिर, अपने हाथ में पकड़े रूमाल से तीन दाने निकालकर, उन्होंने उन्हें उसे दे दिया और कहा:

'इसे खाओ, और अब से तुम्हें कोई भी हानि नहीं होगी।'

ये दाने खाने के बाद, आदरणीय पिता को होश आया, वे पूरी तरह से स्वस्थ महसूस करने लगे, और खड़े होकर उन्होंने मसीह ईश्वर और उनकी अति पवित्र माता का धन्यवाद किया। उन्होंने अपने दुर्भावनापूर्ण दुश्मनों की निंदा नहीं की और न ही किसी से उनके बारे में बात की, बल्कि उनके लिए ईश्वर से प्रार्थना की कि वह इसे उनके खिलाफ एक पाप न मानें। वे हमेशा महान शहीद सेंट जॉर्ज से प्रार्थना करते थे कि वह उन्हें बिशप के पद से मुक्त कर दें, जैसा कि उन्होंने एक दर्शन में वादा किया था जब आदरणीय पिता फ़िलिस्तीन से गलातिया वापस नहीं आना चाहते थे।

यह बात नज़रअंदाज़ नहीं की जानी चाहिए कि अनास्तासियोपोलिस में चर्च की संपत्तियों से बिशप के भोजन के लिए सालाना तीन सौ पैंसठ सोने के सिक्कों का एक कर लगाया गया था। इस कर में से, आदरणीय थियोडोर ने पूरे वर्ष के भोजन पर केवल चालीस सोने के सिक्के खर्च किए, जबकि बाकी वह पवित्र चर्च को दे दिए; और अन्य स्रोतों से आने वाले दान को उन्होंने गरीबों में बाँट दिया। अंततः एक बार और हमेशा के लिए बिशप का पद छोड़ने का निश्चय करके,

पूजनीय थियोडोर ने सबसे पहले कई दिनों तक उत्कट, लंबे समय तक चलने वाली प्रार्थना के साथ ईश्वर की ओर रुख किया, ताकि उनका इरादा पाप न माना जाए; और, ईश्वर से एक प्रकटवाणी में उन्होंने जो माँगा था उसकी अनुमति प्राप्त करने के बाद, उन्होंने सभी पुरोहितों और सभी नागरिकों को इकट्ठा किया और उनसे कहा:

'हे भाइयो, आप जानते हैं कि आपने मुझे जबरदस्ती मठ से निकाल लिया था और मुझे बिशप का भार उठाने के लिए मजबूर किया था, और मैंने तब आपसे कहा था कि मैं आपका शासन करने के योग्य नहीं हूँ, लेकिन आपने मेरी नहीं सुनी और अपनी इच्छा के अनुसार काम किया। और अब, लगातार ग्यारहवें वर्ष, मैं आपको दुख पहुँचाता रहा हूँ और स्वयं भी आपसे दुखित रहा हूँ। मैं आपसे विनती करता हूँ कि आप अपने लिए एक ऐसा चरवाहा खोजें जो आपको भाए; जहाँ तक मेरी बात है, मैं अब आपका बिशप नहीं रह सकता, और मैं एक विनम्र भिक्षु के रूप में अपने मठ में लौट रहा हूँ, जहाँ मैंने अपने शेष जीवन तक ईश्वर की सेवा करने का संकल्प लिया था।

इन शब्दों के बाद, उन्होंने अपने मठ से आर्चडीकन जॉन को लिया और अंकीरा के मेट्रोपॉलिटन पॉल के पास रवाना हो गए, उनसे अनास्तासियोपोलिस के लिए एक और बिशप नियुक्त करने का अनुरोध करते हुए। उनके बीच एक बड़ा विवाद छिड़ गया: मेट्रोपॉलिटन किसी भी हालत में आदरणीय थियोडोर को जाने नहीं देना चाहते थे, क्योंकि उनके अनुसार, इस पद के योग्य कोई दूसरा व्यक्ति मिलना असंभव था। थियोडोर ने, हालांकि, जोरदार इनकार कर दिया, यह कहते हुए कि यह बोझ उसकी क्षमता और शक्ति से परे था। इस मामले की सूचना कांस्टेंटिनोपल में परम पावन , पैट्रिआर्क सिरियाकस[3176] और धर्मपरायण सम्राट मॉरिस को देना आवश्यक था। ईश्वर की प्रेरणा से प्रेरित होकर, उन्होंने एन्क्रा के मेट्रोपॉलिटन को लिखा, और उनसे आग्रह किया कि वे इस ईश्वर के सेवक, जो मौन जीवन की खोज में था, को न रोकें और उसे उसकी इच्छानुसार जाने दें।

इस प्रकार, पूजनीय थियोडोर, बिशप के दायित्वों के बोझ से मुक्त होकर, कई चिंताओं से मुक्त होकर आनंदित हुए; और, अपने मठ में निवृत्त होकर, वे अपनी कोठरी में मौन में रहे और तपस्यापूर्ण जीवन जिए। वे अक्सर दिव्य लिटर्जी का अनुष्ठान करते थे, निर्मल बलि चढ़ाते थे, और लिटर्जी के दौरान उन्हें अपनी आँखों से पवित्र आत्मा को एक प्रकाशमान बैंगनी पोर्फ़िरी के रूप में ऊपर से उतरते और पवित्र उपहारों को ढकते हुए देखने की कृपा प्राप्त हुई: उन्होंने यह अपने एक साथी पुरोहित, सद्गुणी हयेरोमोंक जूलियन को, बाद वाले के बार-बार आग्रह पर सुनाया। यह देखकर वह अनुत्तरनीय आध्यात्मिक आनंद से भर गया, और उसका सुंदर चेहरा एक अद्भुत प्रकाश से प्रकाशित और रूपांतरित हो गया, इतना कि उसके साथ सेवा कर रहे पुरोहितों और डिकनों ने उस पूजनीय के चेहरे पर दिव्य तेज देखा और चकित रह गए।

एक अवसर पर, निम्नलिखित घटना घटी: 16 जुलाई को, पवित्र शहीद एंटिओकस के पर्व के दिन, जब पवित्र थियोडोरस चर्च में लिटर्जी का अनुष्ठान कर रहे थे और पवित्र उपहारों को उठाने का समय आ गया था, तो उन्होंने, अपनी प्रथा के अनुसार, पवित्र मेमने को धारण किए हुए पवित्र पट्टिका को ऊँचा उठाया और उद्घोषणा की: 'पवित्र को पवित्र'। दिव्य मेमना, अपनी इच्छा से, एक अदृश्य हाथ द्वारा उठाए गए डिस्कस पर हवा में और ऊँचा उठ गया, और फिर अपनी जगह पर डिस्कस पर वापस उतर आया। यह चमत्कार देखकर, उस समय दिव्य भोज में भाग लेने वाले सभी लोग महान भय और आश्चर्य से भर गए, जबकि परम पूजनीय थियोडोर जोर-जोर से रो पड़े और, शब्दों से परे आनंदित होकर, मसीह ईश्वर की महिमा करने लगे, जो वास्तव में अपने परम पवित्र रहस्यों में निवास करते हैं।

धार्मिक सम्राट मॉरिस और परम पवित्र पैट्रिआर्क साइरियाकस, जिनके बारे में उन्होंने बहुत कुछ सुना था, वे आदरणीय थियोडोर से मिलना चाहते थे, और उन्होंने उन्हें कांस्टेंटिनोपल में अपने पास आने के लिए लिखा, ताकि वे उनकी प्रार्थनाओं और आशीर्वाद से सम्मानित हो सकें। आदरणीय संत उनकी बात टाल नहीं सके और शहर के लिए रवाना हो गए, जहाँ सभी ने उनका बड़े सम्मान से स्वागत किया। वे कॉन्स्टेंटिनोपल में केवल थोड़े समय के लिए रहे, लेकिन उन्होंने ईश्वर की शक्ति से कई चमत्कार किए: उन्होंने एक अंधे युवक की दृष्टि वापस दी, एक लकवाग्रस्त महिला को उसके बिस्तर से उठाया, उन्होंने कई दैवीय आत्मा से ग्रस्त लोगों को शैतान के कष्ट से मुक्त किया, प्रार्थना द्वारा रक्तस्राव से पीड़ित एक महिला को ठीक किया, राजा के पुत्र को कोढ़ से मुक्त किया, अपने आशीर्वाद से एक बांझ दंपत्ति को संतान का वरदान दिया, और कई अन्य गौरवशाली कार्य किए, और सभी को प्रभु की कृपा से सांत्वना दी; जिसके बाद वे

[3176] सिरियिकस ने 595 से 606 तक पैट्रिआर्क के रूप में कार्य किया।

अपने मठ लौट आए। लेकिन कुछ समय बाद, सम्राट फोकास[3177] के शासनकाल में, उनकी पवित्रता पैट्रिआर्क थॉमस[3178] के कहने पर उन्हें दूसरी बार कॉन्स्टेंटिनोपल बुलाया गया - जो सिरीकियस के बाद सिंहासन पर आये थे। उनके बुलावे का कारण यह था: गालाटिया प्रांत में एक असाधारण घटना घटी थी: इसके एक शहर में, क्रॉस के साथ एक सार्वजनिक जुलूस के दौरान, बड़ी लकड़ी की क्रॉसें अचानक किसी अद्भुत शक्ति से अपने आप जोरदार झूलने लगीं, एक-दूसरे से टकराने लगीं और टूटने लगीं। इस चमत्कार की खबर दूर-दूर तक फैल गई, यहाँ तक कि कॉन्स्टेंटिनोपल तक भी पहुँच गई; जिस पर परम पावन पैट्रिआर्क थॉमस ने पूजनीय थियोडोर को तुरंत अपने पास बुलाया, और जब संत वहाँ पहुँचे, तो पैट्रिआर्क ने उनसे उस चमत्कार और उसके संकेत के बारे में पूछा। संत ने उत्तर दिया कि यह वास्तव में एक चमत्कार था, लेकिन उन्होंने यह बताने से इनकार कर दिया कि यह किस बात का संकेत था, यह कहते हुए कि वह ईश्वर के उस अगम्य रहस्य को नहीं जानते थे। तब परम पावन पैट्रिआर्क विनम्रतापूर्वक उनके चरणों में गिर पड़े और, अपनी विनम्रता से, माननीय पिता को भविष्य बताने के लिए मना लिया। वरिष्ठ ने कहा कि क्रॉस का एक-दूसरे से झूलना, उनका खड़खड़ाना और टकराना, ईश्वर की कलीसिया और यूनानी राज्य के लिए भविष्य में बड़ी विपत्तियों का संकेत देता था: एक ओर, बाहरी शत्रुओं से, और दूसरी ओर, आंतरिक शत्रुओं से। बाहर से, दुश्मनों द्वारा एक भयंकर आक्रमण होने वाला था; जबकि अंदर से, ईसाइयों के बीच विश्वास में फूट पड़ती, व्यापक उत्पीड़न होता, लोग एक-दूसरे की संपत्ति लूटेंगे और नष्ट करेंगे, कई चर्च बर्बाद हो जाएंगे और सुनसान छोड़ दिए जाएंगे, और यह सब बहुत जल्द होगा। यह सुनकर, पैट्रिआर्क भयभीत हो गए और उन्होंने उस आदरणीय से अपने लिए प्रभु से प्रार्थना करने का आग्रह किया, कि वह भविष्यवाणी की गई विनाश के घटित होने से पहले उनकी आत्मा को ले जाएँ, ताकि उन्हें चर्च पर आने वाली विपत्तियों का साक्षी न बनना पड़े।

कुछ ही समय बाद, जब आदरणीय थियोडोर अभी भी कॉन्स्टेंटिनोपल में सेंट स्टीफन के चर्च में थे, तो पैट्रिआर्क बीमार पड़ गए और उन्होंने आदरणीय संत को—जो उस समय एकांतवास और उपवास पर थे—अपनी बीमारी की सूचना भेजकर उनसे शीघ्र मृत्यु के लिए ईश्वर से प्रार्थना करने का आग्रह किया। लेकिन संत ने मना कर दिया और ऐसा नहीं किया; जिस पर पैट्रिआर्क ने उनसे दूसरी बार विनती की कि वे प्रार्थना करें कि चर्च पर संकट आने से पहले उनकी मृत्यु हो जाए। रेवरेंड ने संत की इच्छा पूरी की, उनके निधन के लिए ईश्वर से प्रार्थना की, और उन्हें संदेश भेजकर कहा:

'क्या आप मुझे आज्ञा देते हैं कि मैं आपके पास आऊँ, या क्या हम हमारे प्रभु के सामने एक साथ खड़े होंगे?'

पैट्रिआर्क ने अपने दूत के माध्यम से उत्तर दिया:

'अपनी मौनता न तोड़िए, पिताजी; मेरे लिए इतना ही काफी है कि आपने कहा है: "हम वहाँ हमारे प्रभु के सामने मिलेंगे।"'

उसी दिन, संध्या-प्रार्थना से पहले, परम पावन पैट्रिआर्क थॉमस आनंदित होकर इस जीवन से विदा लेकर प्रभु के पास चले गए। पैट्रिआर्क की मृत्यु के बाद, पूज्य थियोडोर अपने मठ लौट आए, और कुछ वर्षों बाद उनका भी अंत निकट आ गया; इससे पहले, उन्होंने कई महान और गौरवशाली चमत्कार किए और भविष्य की घटनाओं के बारे में बहुत भविष्यवाणी की। अपनी मृत्यु से पहले, उन्होंने महान शहीद संत जॉर्ज को दो बार सपने में देखा: पहली बार, वह उनके सामने प्रकट हुए, उन्हें एक यात्रा का डंडा देते हुए और एक लंबी यात्रा पर उनके साथ शामिल होने के लिए बुलाते हुए; फिर वह एक घोड़े पर सवार होकर, एक और घोड़े को ले जाते हुए प्रकट हुए और कहा:

'थेओडोर, इस घोड़े पर चढ़ो और मेरा अनुसरण करो।'

इससे, पूजनीय थियोडोर को समझ आ गया कि इस धरती से उनका प्रस्थान निकट है; उन्होंने यह बात खुशी से अपने शिष्यों को बताई और भविष्यवाणी की कि वे ईस्टर के बाद परलोक सिधार जाएँगे। और ऐसा ही हुआ। जब वे मरणासन्न थे, तो उन्होंने स्वर्गदूतों को अपनी आत्मा को लेने के लिए आते हुए देखा, और एक प्रसन्न मुख के साथ उन्होंने अपनी आत्मा को उनके हाथों में सौंप दिया।

उनकी मृत्यु हेराक्लियस के शासनकाल के तीसरे वर्ष में हुई[3179] ।

उनके जीवन और चमत्कारों को उनके शिष्य एलीसियस ने दर्ज किया था, जिन्हें आदरणीय थिओडोर से जॉर्ज का मठवासी नाम मिला था। वे बताते हैं कि उनके माता-पिता, लंबे समय तक विवाहित रहने के बाद भी, संतानहीन थे और

[3177] सम्राट फोकास ने 602 से 610 तक शासन किया।

[3178] थॉमस ने 607 से 610 तक पैट्रिआर्क के रूप में कार्य किया।

[3179] सम्राट हेराक्लियस लगभग 610 से 641 तक राज किया। सेंट थियोडोर साइकोट्स का 613 में निधन हुआ।

उन्होंने आदरणीय थओिडोर से प्रार्थना की कि उनकी प्रार्थनाओं और आशीर्वाद से वे माता-पिता बन सकें; आदरणीय संत ने उनकी पट्टियाँ लेकर उन्हें आशीर्वाद दिया और उन्हें वापस करते हुए भविष्यवाणी की कि उनकी बाँझपन दूर हो जाएगा; वास्तव में, एलेउसियस का जन्म हुआ, जिसे उन्होंने पाला-पोसा और फिर ईश्वर की सेवा के लिए आदरणीय संत के पास ले आए। पंद्रह वर्षों तक परम पावन पिता के साथ रहने के बाद, उन्होंने अकथनीय चमत्कारों को देखा, जिनके बारे में उन्होंने विस्तार से लिखा है; फिर भी हमने उनकी कथा से कुछ ही चमत्कारों का संक्षेप में वर्णन किया है, ताकि हमारी आत्मा का निर्माण हो सके। आओ, हम उस अद्भुत ईश्वर की महिमा करें, जो अपने चमत्कार करने वालों, पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा में महिमामय है, अब और सदा और युगानुयुग। आमीन।

ट्रोपारियन, स्वर 2:

शिशु अवस्था से ही पवित्र के रूप में जाने जाने और अनुग्रह से परिपूर्ण के रूप में प्रकट हुए, हे पवित्र बालक थियोडोर, आपने चमत्कारों से संसार को प्रकाशित किया और असंख्य राक्षसों को भगा दिया; अतः हमारे लिए प्रभु से प्रार्थना करें।

कॉन्टाकियन, स्वर 3:

क्योंकि हे ईश्वर-वाहक, सद्गुणों के एक अग्निमय रथ पर आरोहण करके, तुम स्वर्गीय निवासों तक उड़े; एक स्वर्गदूत के रूप में, तुम मनुष्यों के बीच रहे, और एक मनुष्य के रूप में, तुम स्वर्गदूतों के साथ आनंदित हो। इसी कारण, हे पूजनीय थियोडोर, तुम चमत्कारों के एक दिव्य आवास के रूप में प्रकट हुए हो।

हमारे पूजनीय पिता विटालियस तपस्वी का जीवन

22 अप्रैल को स्मरणोत्सव

उस समय जब परम पावन पैट्रिआर्क जॉन द मर्सीफुल अलेक्जेंड्रिया के पैट्रिआर्कल सिंहासन पर विराजमान थे, तब आदरणीय सिरिडिस के मठ से विटालियस नामक एक भिक्षु अलेक्जेंड्रिया आया। इस साठ वर्षीय भिक्षु ने अपने लिए एक ऐसा जीवन-मार्ग चुना था जो, उन लोगों को जो केवल बाहरी दिखावट ( ) को देखते हैं, अशुद्ध और पापी लगता था; लेकिन ईश्वर को, जो आंतरिक मनुष्य को देखता है और मनुष्यों के हृदयों की खोज करता है (भजन संहिता 7:10), वह प्रसन्न और स्वीकार्य था: क्योंकि वह वृद्ध, गुप्त रूप से पापियों और अधर्मी लोगों को पश्चाताप की ओर ले जाना चाहता था, इसलिए लोगों की नज़रों में वह स्वयं एक पापी और अधर्मी व्यक्ति प्रतीत होता था। उसने अलेक्जेंड्रिया में रहने वाली सभी वेश्याओं की एक सूची बनाई, और उनमें से प्रत्येक के लिए विशेष लगन के साथ परमेश्वर से प्रार्थना की, कि वह उन्हें उनके पापी जीवन से हटा दे। वह बूढ़ा सुबह से शाम तक शहर में काम करता था और अपनी मेहनत के लिए बारह तांबे के सिक्के प्राप्त करता था। एक सिक्के से वह अपने लिए एक चौड़ी फली खरीदता और सूर्यास्त के बाद उसे खाता, क्योंकि दिन भर काम करने के कारण वह उपवास कर रहा था; फिर, वेश्यालय पहुँचने पर, वह बाकी पैसे किसी वेश्या को दे देता और उससे कहता:

'मैं तुझसे विनती करता हूँ, इस पैसे के बदले में, पूरी रात खुद को पवित्र रख, किसी के साथ कोई पाप मत करना।'

यह कहकर, वह उसके साथ उसके कमरे में बंद हो जाता। वह अपने बिस्तर पर सोती, जबकि वह बूढ़ा, एक कोने में खड़ा, पूरी रात जागता रहता, चुपचाप दाऊद के भजन पढ़ता और सुबह तक उसके लिए ईश्वर से प्रार्थना करता। अगले सुबह, जब वह उससे विदा लेता, तो वह उससे यह कसम दिलाता कि वह किसी को भी उसके कामों के बारे में न बताए।

वह लंबे समय तक इसी तरह करता रहा, अपने दिन उपवास और मेहनत में बिताता, और रात को वेश्याओं के ठिकाने में जाकर प्रार्थना में जागता रहा। हर रात वह किसी दूसरी के यहाँ जाता, जब तक कि वह उन सभी के यहाँ जाकर पहले वाली के पास फिर से नहीं आ जाता।

प्रभु परमेश्वर ने, अपने सेवक का ऐसा पराक्रम देखकर, उसे सफलता प्रदान की; क्योंकि कुछ वेश्याएँ, विटालियस के पुण्यों से लज्जित होकर, अपनी इच्छा से प्रार्थना करने के लिए उठ खड़ी हुईं और, उसके बगल में घुटने

टेककर, उसके साथ मलिकर प्रार्थना करने लगीं। संत ने उन्हें पश्चाताप करने के लिए प्रेरति कयि, उन्हें परमेश्वर के न्याय के दनि और मृत्यु के बाद गेहेन्ना (नरक) की अनंत यातनाओं के बारे में चेतावनी दी, साथ ही परमेश्वर की दया और स्वर्ग में अनंत आशीर्वादों के वादे के माध्यम से उन्हें आशा भी दी। तब, परमेश्वर के भय से भरकर, उन्होंने स्वयं को नम्र कयि और अपने जीवन को सुधारने का वादा कयि। और उनमें से कई ने अपना पूर्व पापी जीवन त्याग दयि और वैध पतसि ववािह कर लयि। अन्य, पूर्ण पवत्रिता में जीने की इच्छा से, महलि मठों में प्रवेश कर गईं और अपना जीवन वहाँ उपवास और आँसुओं में बताया। कुछ अन्य बनि पतकि संसार में पवत्रिता से रहीं, और अपने हाथों की मेहनत से अपना जीवन यापन कयि। और वेश्याओं में से एक ने भी कसिी को संत वटिली के पवत्रि जीवन के बारे में नहीं बताया, क्योंकि जैसे ही उनमें से कसिी एक ने लोगों को यह बताना शुरू कयि कि वटिली उनके पास पाप के लिए नहीं, बल्कि उनके उद्धार के लिए आए थे, वटिली ने यह सुनकर गहरा दुख व्यक्त कयि कि उनका नर्दिोष जीवन उजागर हो रहा था, और वह ईश्वर से प्रार्थना करता कि वह उस महलि को दंड दे, ताकि बाकी सभी भयभीत हो जाएँ और लोगों को उसके कर्मों के बारे में बताने से बचें। तुरंत, दैवीय अनुमतसि, वह महलि उन्मत्त हो जाती, और यह देखकर, अन्य महलिाएँ भयभीत हो जातीं और वटिली के पवत्रि जीवन के बारे में लोगों को कुछ भी बताने की हम्मित नहीं करतीं। तथापि लोगों ने उस क्रोधति स्त्री से कहा:

'देखो, ईश्वर तुम्हें इसका फल दे रहा है कि तुमने पहले कहा था कि यह भक्षिु तुम्हारे पास व्यभचिार के लिए नहीं आता; अब यह स्पष्ट हो गया है कि वह एक व्यभचिारी है।'

और सब उसे उपहास उड़ाते और हर दनि डांटते हुए कहते थे:

'हट जा, नीच—वेश्याएँ तेरा इंतज़ार कर रही हैं,' और उन्होंने उस पर थूक दयि।

तथापि संत, सभी बातों को नम्रता से सहते हुए, लोगों के अपमान और ताने सुनकर प्रसन्न होते थे, इस वचिार में सांत्वना पाते हुए कि वे उन्हें एक महान पापी मानते थे। हालाँकि, कभी-कभी वे उनसे ताना मारने वालों से कहते थे:

'क्या मेरा शरीर नहीं है, जैसे बाकी सभी लोगों का होता है? क्या ईश्वर ने संन्यासयिों को बनि शरीर के बनाया है? सचमुच, संन्यासी भी बाकी लोगों की तरह ही इंसान हैं।'

कुछ लोगों ने उसे सलाह दी:

उन्होंने कहा, 'फादर, वेश्याओं में से कसिी एक को अपनी पत्नी बना लो और अपना संन्यासी वेश त्याग दो, कहीं तुम्हारी वजह से संन्यास की बदनामी न हो जाए।'

लेकनि उन्होंने, मानो क्रोध में, उनसे उत्तर दयि:

'मैं तुम्हारी बात सुनना नहीं चाहता; पत्नी लेकर, उसके, बच्चों और घर-बार की देखभाल करके, और अपने सारे दनि चंति और परश्रिम में बतिाकर मुझे क्या लाभ होगा? तुम मुझे दोष क्यों देते हो? आखरिकार, ईश्वर के सामने मेरे लिए जवाब तुम्हें नहीं देना है। तुम में से हर कोई अपना-अपना ध्यान रखो, और मुझे अकेला छोड़ दो।' सभी का एक ही न्यायाधीश है, परमेश्वर, जो प्रत्येक व्यक्ति को उनके कर्मों के अनुसार पुरस्कृत करेंगे।

इस प्रकार आदरणीय वटिलयिस ने अपना पुण्य लोगों से छपिाया।

कुछ पुरोहतिों ने अलेक्जेंड्रयिा के पैट्रआर्क, परम पावन जॉन द मर्सीफुल के सामने उनकी बदनामी की, यह दावा करते हुए कि एक नश्चिति एल्डर हर रात वेश्याओं के घरों में जाकर पूरे शहर को भ्रष्ट कर रहा था। लेकनि परम पावन पैट्रआर्क ने बदनाम करने वालों पर वश्विास नहीं कयि, क्योंकि इससे पहले उन्हें में बदनाम करने वालों ने गुमराह कयि था, जब उन्होंने एक ब्रह्मचारी और पवत्रि भक्षिु की पटिाई का आदेश दयि था—जो, इसके अलावा, एक नपुंसक[3180] था—एक नर्दिोष व्यक्ति जसिने उन पर बदनामी करने वालों पर वश्विास करके एक यहूदी महलि को बपतस्मिा दयि था। उस घटना को याद करते हुए, पैट्रआर्क ने वटिली पर बदनामी करने वालों की बातों पर ध्यान नहीं दयि और उनसे कहा:

'अपनी नंदिा बंद करो, और सबसे बढ़कर, संतों की नंदिा मत करो। क्या तुम नहीं जानते कि पहले सार्वभौमकि परषिद[3181] में क्या हुआ था, जब कुछ बशिपों और पुरोहतिों ने परम पावन सम्राट कॉन्स्टेंटनि महान के सामने अपने पापों के बारे में एक-दूसरे के खलिाफ लखिति आरोप प्रस्तुत कए थे?' सम्राट ने एक जलती हुई मोमबत्ती लाने का आदेश दयि,

---

[3180] अर्थात्, एक नपुंसक के रूप में।

[3181] पहला सार्वभौमकि परषिद 325 ईस्वी में नकियि में आयोजति कयि गया था, पादरी एरयिस की वधिर्मी शक्षिाओं के जवाब में, जसिने अपमानजनक रूप से दावा कयि था कि ईश्वर का पुत्र परमपति की एक सृष्टि है।

और उनके लेखों को पढ़े बिना ही जला दिया, और कहा: 'यदि मैं अपनी आँखों से किसी बिशप या भिक्षु को पाप करते देखूँ, तो मैं उसे अपने वस्त्र से ढक दूँगा, ताकि कोई भी उसे पाप करते हुए न देख सके।'

इस प्रकार सर्व-पवित्र पैट्रिआर्क ने सूचना देने वालों को शर्मिंदा किया। जहाँ तक ईश्वर के सेवक विटालियिस की बात है, उन्होंने पापी आत्माओं की मुक्ति के लिए चिंता करना कभी बंद नहीं किया, और उनके मरने के क्षण तक किसी को भी उनके सदाचारी जीवन के बारे में पता नहीं था।

एक बार, जब आदरणीय विटालियिस भोर के समय वेश्याओं के घर से बाहर निकल रहे थे, तो उनका सामना एक युवा व्यभिचारी से हुआ, जो वेश्याओं के साथ पाप करने के लिए उनके घर जा रहा था। विटालियिस को देखते ही, उस युवक ने उनकी गाल पर जोर से थप्पड़ मारा और कहा:

'हे नीच और अधर्मी मनुष्य, तू कब तक पश्चाताप करने से इनकार करेगा और अपने अशुद्ध जीवन से मुंह नहीं मोड़ेगा, ताकि मिसीह का नाम तेरे द्वारा और अधिक अपमानित न हो?'

संत ने उत्तर दिया:

'मान जाओ, मनुष्य, मुझे, एक विनम्र व्यक्ति को, मारने के लिए, तुम्हें भी गाल पर ऐसा ही एक प्रहार मिलेगा कि तुम्हारी चीख सुनकर पूरा अलेक्जेंड्रिया दौड़ पड़ जाएगा।'

कुछ ही समय बाद, परम पूजनीय विटालियिस अपने छोटे, तंग कोठरी में चले गए, जिसे उन्होंने 'सन गेट्स' नामक द्वार के पास बनाया था, और वहाँ उन्होंने प्रभु में शांतिपूर्वक प्राण त्याग दिए। शहर में किसी को भी इस बात की खबर नहीं थी। उस समय, एक राक्षस—एक भयानक इथियोपियाई के रूप में—उक्त युवा व्यभिचारी के सामने प्रकट हुआ जिसने सम्मानित वृद्ध को गाल पर मारा था; राक्षस ने उसे गाल पर जोर से मारा और कहा:

'भिक्षु विताली द्वारा भेजा गया प्रहार ग्रहण कर।'

तुरंत वह युवक भूत-प्रेत के कब्जे में आ गया और, जमीन पर गिरकर, उन्मत्त होकर तड़पने लगा, यहाँ तक कि उसके मुँह से झाग निकलने लगा; उसी समय, उसने अपने कपड़े फाड़ डाले और इतनी ज़ोर से चिल्लाया कि पूरे अलेक्जेंड्रिया के निवासी उसकी भयानक चीख की आवाज़ पर इकट्ठा हो गए। वह लंबे समय तक राक्षस द्वारा प्रताड़ित किया गया। कई घंटे बीत जाने के बाद, कुछ शांत हो जाने पर, वह युवक विताली की कोठरी की ओर दौड़ा, चिल्लाते हुए:

'हे ईश्वर के सेवक, मुझ पर दया करो, क्योंकि मैंने तुम्हारे गाल पर थप्पड़ मारकर तुम्हारा बुरी तरह अपमान करके तुमसे पाप किया है। अब, जैसा तुमने पूर्वानुमान लगाया था, मुझे मेरा उचित दंड मिल गया है।'

इस प्रकार पुकारते हुए, वह भीड़ के साथ तेजी से भागा। जब वह वृद्ध की कोठरी के पास पहुँचा, तो दानव, उस युवक को ज़मीन पर पटक कर, गायब हो गया।

उस युवक ने, पूरी तरह से अपने आप पर काबू पा लेने के बाद, भीड़ को बताना शुरू किया कि उसने बूढ़े के गाल पर कैसे थप्पड़ मारा था और बूढ़े ने कैसे भविष्यवाणी की थी कि उसे इसके लिए दंड भुगतना पड़ेगा। तब वृद्ध की कोठरी के दरवाज़े पर खटखटाहट हुई, लेकिन कोई उत्तर नहीं मिला। जब उन्होंने दरवाज़ा तोड़कर खोला, तो उन्होंने उसे कोठरी के बीच में घुटने टेके हुए पाया, जैसे वह प्रार्थना कर रहा हो; वृद्ध की पवित्र आत्मा प्रभु के पास चली गई थी। उसके हाथ में कागज़ का एक टुकड़ा था जिस पर लिखा था:

'अलेक्जेंड्रिया के पुरुषो! उचित समय आने से पहले निर्णय मत लगाओ, जब तक कि प्रभु, धर्मी न्यायाधीश, न आएं।'

उसी क्षण, एक राक्षस-ग्रस्त महिला वहाँ आई; वह पहले भी, जैसा कि ऊपर उल्लेख किया गया है, विटालियिस के पवित्र जीवन के बारे में लोगों को बताना चाहती थी। वह एक स्वर्गदूत द्वारा, जो उसे दिखाई दिया था, संत के निधन की सूचना पाकर आई, और संत के पवित्र अवशेषों को छूने पर, वह तुरंत अपने भूत-प्रेत से मुक्त हो गई। इसी प्रकार, कई अंधे और लंगड़े लोग उस पूजनीय के शरीर को छूने पर चंगा होने लगे।

रेवरेंड की मृत्यु की खबर सुनकर, वे सभी महिलाएँ जिन्हें उन्होंने अपनी उपदेशों के द्वारा अपने पापों के लिए पश्चाताप की राह दिखाई थी, जलती हुई मोमबत्तियाँ और दीपक लेकर उनके ताबूत के पास उमड़ पड़ीं, और अपने पति तथा शिक्षक, , के लिए विलाप करते हुए रोने लगीं। उसी समय, उन्होंने सारी भीड़ के सामने उस वृद्ध की सद्गुणों के बारे में जोर से कहा, जिसने उनमें से किसी को भी अपने हाथ से छुआ तक नहीं था, और जो उनके पास उन्हें पाप में ले जाने के लिए नहीं, बल्कि उन्हें बचाने के लिए आए थे। उनकी बात सुनकर लोग उन पर क्रोधित हो गए और कहा:

'तो फरि तुमने हमसे इस सम्मानति वृद्ध के जीवन की पवत्रिता को क्यों छपिाया, क्योंकि हम अज्ञानता में, उसे दोष देकर और नदिा करके उसके वरिुद्ध बहुत बड़ा पाप कर बैठे?'

स्त्रयिों ने लोगों की फटकार का इस प्रकार उत्तर दयिा:

'हम डर गईं, क्योंकि इस बूढ़े ने हमसे गंभीर शपथों के तहत यह मना कयिा था कि हम कसिी को भी उसके जीवन के बारे में न बताएं; और जैसे ही हमारी एक सहेली ने लोगों को उसका राज़ बताना शुरू कयिा, वह पागल हो गई। इसलिए, हम में से हर एक, ऐसी सज़ा के डर से, चुप रह गई।'

और सब लोग इस परमेश्वर के सेवक पर अचंभति हुए, जसिने इतनी नम्रता से अपने जीवन की पवत्रिता को दूसरों से छपिाया था। जबकि हर कोई उसे एक बड़ा पापी समझता था, वह परमेश्वर का मत्रि और पवत्रि आत्मा का एक शुद्ध पात्र था। लोग एक-दूसरे को कोसने लगे, उन्हें ईश्वर के ऐसे पुरुष को दोषी ठहराने और एक नरि्दोष तथा पवत्रि हृदय वाले व्यक्ति को आहत करने और अपमानति करने की अपनी मूर्खता पर शर्म आई।

जब जो कुछ भी हुआ था, उसका वसि्तृत ववरिण परम पावन पैट्रआर्क जॉन द मर्सीफुल तक पहुँचा, तो वे अपने सभी पुरोहतिों के साथ उस वरषि्ठ के कोठरी में आए और उपर्युक्त पत्र देखकर, जसिमें वरषि्ठ ने उनसे अपना न्याय न करने का आग्रह कयिा था, और घटति हो रहे चमत्कारों को भी देखने के बाद, उन्होंने उन पुरोहतिों से कहा जनि्होंने उस पूजनीय व्यक्ति की बदनामी की थी:

'देखो, अगर मैं तुम्हारी बातों पर वशि्वास करके उस नरि्दोष पवत्रि साधु का अपमान करता, तो मुझे भी चेहरे पर चोटें लगतीं, ठीक वैसे ही जैसे उस युवक को लगीं जसिने संत की नदिा की थी। लेकनि मैं, वनिम्रतापूर्वक, ईश्वर का धन्यवाद करता हूँ कि मैंने तुम्हारे आरोपों पर ध्यान नहीं दयिा और इस प्रकार पाप और दंड से बच गया।'

तथापि, जनि्होंने पूज्य वृद्ध पर नदिा और दोषारोपण कयिा था, वे अत्यंत लज्जति हुए।

इसके बाद, परम पवत्रि पैट्रआर्क ने, रेवरेंड वटिालयिस के पवत्रि अवशेषों को लेकर, उन्हें पूरे शहर में ले जाया और उन सभी महलिाओं की उपस्थति में, जनि्होंने अपने पापों से पश्चाताप कयिा था, रोते-बलिखते हुए, उन्हें सम्मान के साथ दफनाया, और उस ईश्वर की महमिा की, जसिके कई वफादार सेवक मनुष्यों के लिए अज्ञात हैं।

जसि व्यक्ति को राक्षस ने मारा था, उसने ही संसार त्याग दयिा और एक भकि्षु बन गया। और अलेक्जेंड्रयिा के कई नविासयिों ने, वटिालयिस के पुण्य जीवन से शकि्षा पाकर, अपने लिए यह नयिम बना लयिा कि वे कभी कसिी को दोष न लगाएँ। आइए हम भी हमारे पूजनीय पति वटिालयिस की प्रार्थनाओं और हमारे प्रभु यीशु मसीह की कृपा से उनकी आदर्श का अनुसरण करें, जनिका महमिा युगानुयुग होती रहे। आमीन।

6 मई

23 अप्रैल (पुराना तरीका)

उसी दनि, पवत्रि शहीद रानी अलेक्जेंड्रा और पवत्रि शहीदों अनातोलीयस और प्रोटेलयिन की स्मृति।

महान शहीद और वजियी संत जॉर्ज का कष्टकथा

23 अप्रैल को स्मरणोत्सव

रोमन साम्राज्य का अयोग्य शासक, अधर्मी डायोक्लेटयिन[3182] , मूर्तपिूजा का एक उत्साही अनुयायी और संरक्षक था। सभी देवताओं में, वह अपोलो[3183] का सम्मान करता था, जसिे भवषि्य का भवषि्यवक्ता माना जाता था। क्योंकि उसकी नरि्जीव मूर्ति के भीतर रहने वाले दानव भवषि्य के बारे में भवषि्यवाणी करते थे, लेकनि ये भवषि्यवाणयिाँ कभी सच नहीं हुईं।

[3182] सम्राट डायोक्लेटयिन, जो ईसाई धर्म का एक क्रूर उत्पीड़क था, ने 284 से 305 तक शासन कयिा।

[3183] अपोलो सबसे सम्मानति ग्रीक-रोमन मूर्तपिूजक देवताओं में से एक था। उसे सूर्य और बौद्धकि प्रबोधन के देवता, साथ ही लोक कल्याण के संरक्षक और भवषि्य के भवषि्यवक्ता के रूप में माना जाता था।

एक बार, डायोक्लेटियिन ने अपोलो से कसिी वशिष मामले के बारे में पूछा[3184] । दानव ने उत्तर दयिा:

'मैं वास्तव में भवषि्यवाणी नहीं कर सकता, क्योंकि धर्मनषि्ठ पुरुष मेरे रास्ते में खड़े हैं; इसीलिए मंदरिों में रखे जादुई त्रपिाद झूठ बोलते हैं[3185] : धर्मनषि्ठ हमारे सामर्थ्य को नष्ट कर देते हैं।'

डायोक्लेटियिन ने पुरोहतिों से पूछना शुरू कयिा कि ये धर्मी लोग कौन थे, जनिके लिए देवता अपोलो भवषि्यवाणी नहीं कर सके। पुरोहतिों ने उत्तर दयिा कि पृथ्वी पर, धर्मी लोग ईसाई थे। यह सुनकर, डायोक्लेटियिन ईसाइयों के प्रति क्रोध और रोष से भर गया और उसने उनका उत्पीड़न फरि से शुरू कर दयिा, जो पहले रुका हुआ था। उसने परमेश्वर के धर्मी, नरि्दोष और नषि्पाप लोगों के वरिुद्ध अपनी तलवार खींची और अपने राज्य के सभी प्रदेशों में उनके नषि्पादन का आदेश जारी कयिा। और इस प्रकार, व्यभचिारयिों, चोरों और नकिम्मा लोगों के बजाय, जेलें सच्चे ईश्वर की आराधना करने वालों से भर गईं। यातना के सामान्य तरीकों को असंतोषजनक मानकर त्याग दयिा गया, और सबसे क्रूर यातनाएं रची गईं, जनिका कई ईसाइयों को हर दनि और हर जगह सामना करना पड़ता था। हर तरफ से, वशिष रूप से पूर्व से, ईसाइयों के खलिाफ कई लखिति बदनामी पत्र राजा को दए गए। इन नदिा पत्रों में बताया गया कि इतने सारे लोग थे जो राजा की आज्ञाओं का पालन नहीं करते थे और खुद को ईसाई कहते थे कि यह आवश्यक था कि या तो उन्हें अपने धर्म पर बने रहने दयिा जाए या उनके खलिाफ युद्ध छेड़ा जाए। तब राजा ने सभी दशिाओं से अपने एम्फीपेट्स और हेगेमोनयिों को नकिोमेडयिा में एक परषिद के लिए बुलाया[3186] , राजकुमारों, बोयारों और अपनी पूरी सीनेट को इकट्ठा कयिा, और ईसाइयों के प्रति अपना क्रोध प्रकट करने के बाद, प्रत्येक को यह सलाह देने का आदेश दयिा कि वे वधिर्मी हो चुके लोगों से कैसे नपिटें। परषिद में उपस्थति लोगों के कई भाषणों के बाद, उत्पीड़क ने घोषणा की कि प्राचीन पूर्वजों के देवताओं की पूजा से अधकि सम्मानजनक या लाभकारी कुछ भी नहीं है। जब सभी राजा की बात से सहमत हो गए, तो उन्होंने आगे कहा:

'यदि आप सभी इसी तरह सोचते हैं और इसे उत्साहपूर्वक पूरा करना चाहते हैं, और यदि आप मेरे स्नेह को महत्व देते हैं, तो हर संभव तरीके से हमारे पूरे राज्य में ईसाई धर्म को — जो हमारे देवताओं के वरिुद्ध है — जड़ से उखाड़ फेंकने का प्रयास करें। ताकि आप इसे और अधकि सफलतापूर्वक पूरा कर सकें, मैं स्वयं अपनी पूरी ताकत से आपकी सहायता करूँगा।'

सभी ने राजा के शब्दों की प्रशंसा की। डायोक्लेटियिन और सीनेट ने ईसाई धर्म के उन्मूलन पर वचिार-वमिर्श करने के लिए दूसरी और तीसरी बार बैठक की। फरि उन्होंने यह नरि्णय लोगों को घोषति कयिा, ताकि यह एक नरि्वविाद फरमान बन जाए।

उस समय, रोमन सेना में मसीह का एक अद्भुत सैनकि था, संत जॉर्ज, जो कैपैडोसयिा का मूल नविासी था[3187] , ईसाई माता-पति का पुत्र, जसिे बचपन से ही धार्मकिता में पाला गया था। वह बचपन में ही अपने पति को खो बैठा; उनके पति मसीह में अपने वशि्वास की घोषणा करने के लिए यातना दए जाने के बाद मर गए थे। हालाँकि, जॉर्ज की माँ उसके साथ फलिसि्तीन चली गईं, क्योंकि वह उनकी मातृभूमि थी और वहाँ उनकी वशिाल संपत्तयिाँ थीं।

जब वह वयस्क हुआ, तो संत जॉर्ज अपनी सुंदर आकृति, साहस और शारीरकि शक्ति के लिए प्रसद्धि था, और इसी कारण उसे एक प्रसद्धि सैन्य रेजमिेंट में ट्रबि्यून[3188] नयिुक्त कयिा गया। इस पद पर, उसने युद्ध में इतनी बहादुरी दखिाई कि सम्राट डायोक्लेटियिन, जसिे तब तक उसकी ईसाई धर्म में आस्था का पता नहीं था, ने उसे कोमेएटस[3189] और सैन्य कमांडर का पद देकर सम्मानति कयिा। हालाँकि, उस समय तक जॉर्ज की माँ का नधिन हो चुका था।

[3184] जीवन की सभी कठनि परसि्थतियिों में, मूर्तपिूजक सम्राटों की आदत होती थी कि वे पुजारयिों - मूर्तयिों के मंत्रयिों - से सलाह लें, जनिके बारे में कहा जाता था कि वे उनके सामने देवताओं की इच्छा प्रकट करते थे। यह प्रथा प्राचीन ग्रीस में वशिष रूप से व्यापक थी। यहाँ, अन्य बातों के अलावा, डेल्फकि ओरैकल (भवषि्यवाणी का स्थान) प्रसद्धि था, जहाँ वशिष महलिाएँ - भवषि्यवक्ता (पाइथयिास) थीं।

[3185] पैगन पुरोहति अपने देवताओं से परामर्श करते समय त्रपिाद पर बैठते थे।

[3186] नकिोमेडयिा - प्राचीन एशयिा माइनर का एक प्रमुख शहर, जो मार्मारा सागर द्वारा नरि्मति खाड़ी के उत्तर-पूर्वी कोने में स्थति था। इस शहर का नाम इसके संस्थापक, बथिनियिा के राजा नकिोमेड्स प्रथम के नाम पर पड़ा, जो ईसा पूर्व तीसरी शताब्दी में रहते थे। आज, कभी गौरवशाली नकिोमेडयिा के स्थल पर इस्मडि नामक छोटा शहर बसा हुआ है।

[3187] कैपाडोसयिा – एशयिा माइनर का एक क्षेत्र।

[3188] ट्रबि्यून – एक सैन्य कमांडर।

[3189] कोमतिस – प्राचीन रोम में, एक वरषि्ठ सैन्य कमांडर जो सम्राट के साथ उनकी यात्राओं पर जाता था। चूँकि कोमतिस सम्राट के अनुचर दल का हसि्सा थे और उसके सलाहकार भी थे, इसलिए इस पद को अत्यंत सम्मानजनक माना जाता था।

जब डायोक्लेटियन ने ईसाइयों पर अत्याचार करने और उन्हें नष्ट करने की योजना बनाई, तब संत जॉर्ज सम्राट की सेवा में थे। पहले ही दिन से, जैसे ही संत जॉर्ज को एहसास हुआ कि इस अन्यायपूर्ण योजना को किसी भी तरह से रद्द नहीं किया जा सकता, और उन्होंने ईसाइयों के खिलाफ अधर्मी लोगों की क्रूरता के बारे में जाना, तो उन्होंने तय कर लिया कि वह समय आ गया है जो उनकी आत्मा के उद्धार के लिए होगा। तत्काल, संत जॉर्ज ने अपना सारा धन—सोना, चांदी और कीमती वस्त्र—गरीबों में बाँट दिया; उन्होंने अपनी सेवा में मौजूद दासों को आजादी दे दी; और जहाँ तक उनके फिलिस्तीनी एस्टेट्स में मौजूद दासों का सवाल है, उन्होंने आदेश दिया कि उनमें से कुछ को आज़ाद कर दिया जाए, जबकि अन्य को बेसहारा लोगों को दे दिया जाए। तीसरे दिन, जब निर्दोष ईसाइयों के अवैध वध के संबंध में राजा और उसके राजकुमारों की अंतिम परिषद होने वाली थी, मसीह के पराक्रमी योद्धा, संत जॉर्ज, सभी मानवीय भय को त्यागकर, और अपने भीतर केवल ईश्वर का भय धारण करके, वह उस दुष्ट और अधर्मी सभा के सामने एक तेजस्वी मुख और साहसी मन के साथ उपस्थित हुआ, और उनसे इन शब्दों में कहा:

'हे राजा, और हे राजकुमारों तथा परामर्शदाताओं! आपको अच्छे कानूनों और धर्मी न्याय को बनाए रखने के लिए नियुक्त किया गया है, फिर भी आप ईसाइयों पर क्रूरता से टूट पड़ते हैं, अत्याचार को बढ़ावा देते हैं और उन निर्दोष लोगों के मुकदमे के संबंध में अन्यायपूर्ण आदेश जारी करते हैं, जिन्होंने किसी का अहित नहीं किया है। तुम उनका उत्पीड़न करते हो और उन्हें पीड़ा देते हो, यहाँ तक कि जो धर्मपरायण हो गए हैं, उन्हें भी अपनी पागल अधर्मीता के आगे झुकने के लिए मजबूर करते हो। लेकिन नहीं, तुम्हारी मूर्तियाँ देवता नहीं हैं! इस झूठ से धोखा न खाओ। यीशु मसीह एकमात्र ईश्वर, एकमात्र प्रभु हैं, जो परमेश्वर पिता की महिमा में हैं, जिनके द्वारा सभी वस्तुएँ सृजित हुईं और सभी वस्तुएँ उनके पवित्र आत्मा के द्वारा विद्यमान हैं। या तो स्वयं सत्य को जानो और धार्मिकता सीखो, या उन लोगों को अपनी मूर्खता से परेशान मत करो जिन्होंने सच्ची धार्मिकता को जान लिया है।

संत जॉर्ज के शब्दों और उनके अप्रत्याशित साहस से चकित होकर, सभी ने संत के प्रति राजा की प्रतिक्रिया का बेसब्री से इंतजार करते हुए अपनी आँखें राजा पर टिका दीं। हालाँकि, राजा इतना स्तब्ध था कि वह संभल नहीं पाया; मानो किसी गरज की चपेट में आकर गूँगा हो गया हो, वह अपने गुस्से को रोकते हुए चुपचाप बैठा रहा। अंत में, राजा ने अपने मित्र मैग्नेन्टियस, जो एक अम्फिपिते और परिषद में उपस्थित थे, को जॉर्ज को उत्तर देने का इशारा किया।

मैग्नेन्टियस ने संत को अपने पास बुलाया और उनसे कहा:

'तुम्हें ऐसी धृष्टता और साहसी वाणी के लिए किसने उकसाया है?'

'सत्य,' संत ने उत्तर दिया।

'तो फिर यह सत्य क्या है?' मैग्नेन्टियस ने कहा। जॉर्ज ने कहा:

'सत्य स्वयं मसीह हैं, जिन्हें आप सता रहे हैं।'

"तो क्या तुम भी ईसाई हो?" मैग्नेन्टियस ने पूछा।

और संत जॉर्ज ने उत्तर दिया:

'मैं मसीह, अपने ईश्वर का सेवक हूँ, और उन पर भरोसा करके, मैं अपनी मर्जी से आपके बीच सत्य की गवाही देने आया हूँ।'

संत के इन शब्दों पर, पूरी सभा में हलचल मच गई; हर कोई एक के बाद एक बोलने लगा, और एक अव्यवस्थित शोर-शराबा और हंगामा मच गया, जैसा कि अक्सर एक बड़ी भीड़ में होता है।

तब डियोक्लेशियन ने चुप्पी बहाल करने का आदेश दिया और संत की ओर देखकर उन्हें पहचान लिया और कहा:

'हे जॉर्ज, मैं तेरी कुलीनता को देखकर लंबे समय से चकित हूँ! तेरे आचरण और तेरे साहस को सम्मान के योग्य मानकर, मैंने तुझे एक उच्च पद प्रदान किया। और आज, जब तुम अपने ही नुकसान के लिए चुनौतीपूर्ण शब्द बोल रहे हो, तो मैं, तुम्हारी बुद्धिमत्ता और बहादुरी के प्रति प्रेम से, एक पिता के रूप में तुम्हें सलाह देता हूँ और आग्रह करता हूँ कि तुम अपनी सैन्य महिमा और अपने पद के सम्मान को न खोओ, और न ही अपनी अवज्ञा के कारण अपने यौवन के फूल को कष्ट में डालो। देवताओं को बलिदान चढ़ाओ, और तुम हमसे और भी अधिक सम्मान प्राप्त करोगे।"

संत जॉर्ज ने उत्तर दिया:

'हे राजा, काश कि आप स्वयं मेरे द्वारा सच्चे ईश्वर को जान लेते और उसकी स्तुति का बलिदान चढ़ाते, जो उसे प्रिय है! वह आपको एक बेहतर राज्य—एक अमर राज्य—प्रदान करेगा—क्योंकि यह राज्य जिसका आप अब आनंद ले रहे हैं, क्षणभंगुर, व्यर्थ और शीघ्र नष्ट हो जाता है, और इसके साथ ही इसके क्षणिक सुख भी नष्ट हो जाते हैं। और

जो लोग उनसे मोहित हो जाते हैं, उन्हें कोई लाभ नहीं होता। इनमें से कुछ भी मेरी भक्ति को कमजोर नहीं कर सकता, न ही कोई यातना मेरी आत्मा को डरा सकती है या मेरे संकल्प को हिला सकती है।"

संत जॉर्ज के इन शब्दों ने राजा को क्रोधित कर दिया। संत को अपनी बात पूरी करने का मौका दिए बिना, राजा ने अपने पहरेदारों को आदेश दिया कि वे अपनी भालाओं से जॉर्ज को सभा से बाहर निकाल दें और उसे कैद कर दें।

जब सैनिकों ने राजा का आदेश पूरा करना शुरू किया और एक भाला पहले ही संत के शरीर को छू चुका था, तो उसकी नोक तुरंत टिन की तरह नरम हो गई और मुड़ गई। इस बीच, शहीद के होंठ ईश्वर की स्तुति से गूंज रहे थे।

शहीद को कालकोठरी में ले जाकर, सैनिकों ने उन्हें पेट के बल जमीन पर लिटा दिया, उनके पैरों को बेड़ियों में जकड़ दिया और उनकी छाती पर एक भारी पत्थर रख दिया। यातना देने वाले ने ऐसा ही आदेश दिया था। हालाँकि, संत ने यह सब सह लिया, और अगले दिन तक ईश्वर का अखंड धन्यवाद करते रहे।

जब दिन चढ़ा, तो राजा ने शहीद को एक बार फिर आज़माने के लिए बुलाया और जॉर्ज को पत्थर के बोझ तले दबा हुआ देखकर उससे पूछा:

'क्या तुमने पश्चाताप कर लिया, जॉर्ज, या क्या तुम अभी भी अपनी अवज्ञा पर अड़े हो?'

अपनी छाती पर रखे भारी पत्थर के बोझ तले संत जॉर्ज मुश्किल से कह पाए:

'हे राजा, क्या तुम्हें सच में लगता है कि मैं इतना थक गया हूँ कि इतनी सी यातना के बाद मैं अपने धर्म का त्याग कर दूँगा? तुम मुझे यातना देने से पहले ही थक जाओगे, मैं तुम्हारी यातना सहने से नहीं थकूंगा।'

तब डायोक्लेटियन ने एक बड़ा पहिया लाने का आदेश दिया, जिसके नीचे लकड़ी की तख्तियों पर तलवारों, छुरी और सुइयों जैसी लोहे की नुकीली कीलें ठूंसी हुई थीं; उनमें से कुछ सीधी थीं, और कुछ मछली पकड़ने की छड़ी की तरह घुमावदार थीं। सम्राट ने आदेश दिया कि निर्वस्त्र शहीद को उस पहिये से बाँधा जाए और जैसे ही पहिया घूमे, लकड़ी की तख्तियों पर लगे लोहे के नुकीले सिरे उसके पूरे शरीर को चीर-फाड़ दें। संत जॉर्ज ने, टुकड़े-टुकड़े होकर और एक सरकंडे की तरह कुचल दिए जाने पर, अपने यातनाओं को बहादुरी से सहन किया। पहले तो उन्होंने ऊँचे स्वर में ईश्वर से प्रार्थना की; फिर, चुपचाप और मन ही मन, उन्होंने ईश्वर का धन्यवाद किया, एक भी कराह नहीं निकाली, बल्कि ऐसे पड़े रहे मानो सोए या बेहोश हों।

संत को मृत समझकर, राजा ने खुशी से अपने देवताओं की स्तुति की और जॉर्ज से ये शब्द कहे:

'तो फिर, तुम्हारा ईश्वर कहाँ है, जॉर्ज? उसने तुम्हें इस यातना से क्यों नहीं बचाया?'

फिर उसने आदेश दिया कि जॉर्ज को, मानो वह पहले ही मर चुका हो, पहिये से खोल दिया जाए, जबकि वह स्वयं अपोलो के मंदिर में चला गया।

अचानक आकाश अँधेरा हो गया और गरज की एक भयंकर गड़गड़ाहट गूँजी, और कई लोगों ने ऊपर से एक आवाज़ सुनी:

'डरो मत, जॉर्ज; मैं तुम्हारे साथ हूँ।'

एक महान और अद्भुत प्रकाश प्रकट हुआ, और प्रभु का स्वर्गदूत, प्रकाश में नहाए एक सुंदर, गोरे चेहरे वाले युवक के रूप में, पहिये के पास खड़ा दिखाई दिया; शहीद पर अपना हाथ रखकर, उसने कहा:

'खुशी मनाओ!'

और जब तक वह दर्शन बना रहा, तब तक किसी ने भी पहिये या शहीद के पास जाने की हिम्मत नहीं की। जब देवदूत गायब हो गया, तो शहीद स्वयं पहिये से उतर आया, क्योंकि देवदूत ने उसे उससे मुक्त कर दिया था और उसके घावों को चंगा कर दिया था। और संत जॉर्ज वहां खड़े रहे, उनका शरीर अछूता था, और उन्होंने प्रभु का आह्वान किया।

यह चमत्कार देखकर सैनिकों में बहुत बड़ा भय और हड़कंप मच गया, और उन्होंने जो हुआ था उसकी सूचना राजा को दी, जो उस समय मंदिर में मूर्तियों की अशुद्ध पूजा कर रहा था। संत जॉर्ज सैनिकों के पीछे-पीछे गए और मंदिर में राजा के सामने प्रकट हुए।

पहले तो राजा को विश्वास नहीं हुआ कि उसके सामने सेंट जॉर्ज खड़ा था, बल्कि उसने सोचा कि यह उससे मिलता-जुलता कोई और व्यक्ति है। राजा के आसपास खड़े लोग जॉर्ज को ध्यान से देखने लगे और वे इस बात से आश्वस्त हो गए कि यह वास्तव में वही है; इसके अलावा, स्वयं शहीद ने ऊँचे स्वर में घोषणा की:

'मैं जॉर्ज हूँ।'

भय और हैरानी ने सभी को लंबे समय तक मौन कर दिया। लेकिन वहाँ मौजूद दो व्यक्ति, अनातोलीउस और प्रोटेलीऑन, जो प्राटोरियन के माननीय पद पर थे[3190] और जिन्हें पहले ही ईसाई धर्म की शिक्षा दी जा चुकी थी, इस अद्भुत चमत्कार को देखकर, मसीह की अपनी स्वीकारोक्ति में पूरी तरह से दृढ़ हो गए और चिल्ला उठे:

'केवल एक महान और सच्चा ईश्वर है, ईसाइयों का ईश्वर!'

राजा ने तुरंत उन्हें पकड़ने, बिना मुकदमे के शहर के बाहर ले जाने और तलवार से मार डालने का आदेश दिया।

रानी अलेक्जेंड्रा, जो मंदिर में भी मौजूद थीं, ने शहीद के चमत्कारी उपचार को देखकर और देवदूत के प्रकट होने के बारे में सुनकर, सत्य को पहचान लिया। लेकिन जब उन्होंने साहसपूर्वक मसीह की गवाही देना चाहा, तो उनके राज्यपाल ने उन्हें रोक दिया और राजा को यह पता चलने से पहले, उन्हें महल वापस ले जाने का आदेश दिया।

दुष्ट डायोक्लेटियन, जो कोई भी भलाई करने में असमर्थ था, ने आदेश दिया कि जॉर्ज को चूने से भरी पत्थरों की खाई में फेंक दिया जाए और शहीद को उसमें तीन दिनों तक दफनाया जाए।

जब उन्हें गड्ढे की ओर ले जाया जा रहा था, तो संत ने प्रभु से जोर से प्रार्थना की:

'हे पीड़ितों के उद्धारकर्ता, उत्पीड़ितों के आश्रय, निराशों की आशा, हे प्रभु मेरे परमेश्वर! अपने दास की प्रार्थना सुन, मेरी ओर देख और मुझ पर दया कर। मुझे विरोधी की युक्तियों से बचा और यह अनुग्रह कर कि मैं अपने जीवन के अंत तक तेरे पवित्र नाम की गवाही को थामे रहूँ। हे प्रभु, मेरे पापों के कारण मुझे न छोड़, कहीं ऐसा न हो कि मेरे शत्रु कहें: 'उसका परमेश्वर कहाँ है?' अपनी शक्ति दिखा और मुझ में, तेरे इस अयोग्य दास में, अपने नाम का महिमामंडन कर। मेरे लिए एक स्वर्गदूत भेजें, मेरे रक्षक के रूप में, यद्यपि मैं इसके लायक नहीं हूँ—आपने जो बेबीलोन की भट्टी को ओस में बदल दिया और अपने युवकों को बिना चोट के सुरक्षित रखा (दानिय्येल 3), क्योंकि आप सदा के लिए धन्य हैं। आमीन।

इस प्रकार प्रार्थना करने और अपने पूरे शरीर पर क्रॉस का चिह्न बनाने के बाद, जॉर्ज आनंदित होकर और परमेश्वर की महिमा करते हुए गड्ढे में उतर गए। शहीद को बांधने और आज्ञा के अनुसार, उसे गड्ढे में चूने से ढकने के बाद, राजा के सेवक पीछे हट गए।

तीसरे दिन, राजा ने शहीद की हड्डियों को चूने की खाई से निकालने का आदेश दिया, क्योंकि वह सोचता था कि जॉर्ज वहीं जल गया था। जब नौकर पहुँचे और चूना हटाया, तो उन्होंने सभी की उम्मीद के विपरीत संत को सुरक्षित, जीवित, कुशल और अपनी बेड़ियों से मुक्त पाया। वह एक तेजस्वी मुख के साथ खड़े थे, स्वर्ग की ओर अपने हाथ फैलाए हुए और ईश्वर की सभी कृपाओं के लिए धन्यवाद दे रहे थे।

सेवक और उपस्थित लोग विस्मय और आश्चर्य से भर गए और मानो एक ही स्वर में, उन्होंने जॉर्ज के ईश्वर की स्तुति की, और उन्हें महान कहा।

यह जानकर कि क्या हुआ था, डायोक्लेटियन ने तुरंत संत को अपने सामने लाने का आदेश दिया और आश्चर्य से कहा:

'जॉर्ज, तुम्हें ऐसी शक्ति कहाँ से मिलती है, और तुम कौन-सी जादू-टोना करते हो? हमें बताओ। मुझे लगता है कि तुमने जानबूझकर मसीह में विश्वास करने का दिखावा किया ताकि जादुई चालाकी दिखा सको, अपनी जादू-टोने से सभी को चकित कर सको, और इसके माध्यम से खुद को महान प्रस्तुत कर सको।'

'हे राजा,' संत ने उत्तर दिया, 'मैंने सोचा था कि आप सर्वशक्तिमान परमेश्वर के खिलाफ अपमानजनक शब्द बोलने की हिम्मत नहीं करेंगे, जिनके लिए सब कुछ संभव है और जो उन लोगों को विपत्ति से बचाते हैं जो उन पर अपना भरोसा रखते हैं। फिर भी तुम, शैतान के धोखे में आकर, भूल और विनाश की ऐसी गहराइयों में गिर गए हो कि तुम मेरे ईश्वर के चमत्कारों को—जो तुम्हारी आँखों के सामने हैं—जादू-टोना और तंत्र-मंत्र कहते हो। मैं तुम्हारी अंधापन पर रोता हूँ, मैं तुम्हें शापित कहता हूँ, और मैं तुम्हें अपना उत्तर देने के अयोग्य समझता हूँ।

तब डियोक्लेशियन ने आज्ञा दी कि लोहे के जूते लाए जाएँ, उनके तलों में ठोक दिए गए लंबे कीलें लाल-गरम की जाएँ, शहीद को ये जूते पहनाए जाएँ, और उसे प्रहारों की बौछार के बीच, तहखाने में ले जाया जाए। जब शहीद को इस प्रकार तैयार करके ले जाया जा रहा था, तो यातना देने वाले ने उसका मज़ाक उड़ाते हुए कहा:

'जॉर्ज, तुम कितने तेज़ चलते हो, कितनी तेज़ी से जा रहे हो!'

[3190] प्रेटर – एक नगर न्यायाधीश।

हालाँकि शहीद को अमानवीय रूप से घसीटा जा रहा था और क्रूर प्रहारों का शिकार बनाया जा रहा था, उसने अपने मन में कहा:

'चलते रहो, जॉर्ज, ताकि तुम अपने लक्ष्य तक पहुँच सको, क्योंकि तुम *"अज्ञात की ओर" नहीं* दौड़ रहे हो (तुलना करें 1 कुरिन्थियों 9:26 से, यानी शाश्वत उद्धार की ओर)।'

तब, ईश्वर को पुकारते हुए, उन्होंने कहा:

– हे प्रभु, स्वर्ग से नीचे देखो, मेरी मेहनत को देखो और अपने बेड़ी-बद्ध सेवक की कराह सुनो, क्योंकि मेरे शत्रु बढ़ गए हैं और वे मुझसे 'कठोर घृणा' करते हैं (भजन संहिता 24:19), परन्तु हे प्रभु, तू स्वयं मुझे चंगा कर, क्योंकि मेरी हड्डियाँ टूट गई हैं, और मुझे अन्त तक धीरज दे, कहीं ऐसा न हो कि मेरा शत्रु कहे: 'मैं उस पर प्रबल हूँ।'

इस प्रार्थना के साथ, संत जॉर्ज ने कालकोठरी की ओर अपना रास्ता बनाया। वहाँ कैद, उसका शरीर थका-हारा था, उसकी टाँगें चीर-फाड़ दी गई थीं, फिर भी उसकी आत्मा अडिग रही। दिन-रात वह ईश्वर का धन्यवाद और प्रार्थना करना बंद नहीं करता था। और उसी रात, ईश्वर की कृपा से, वह अपने घावों से मुक्त हो गया; उसकी टाँगें और पूरा शरीर फिर से स्वस्थ हो गए।

सुबह, संत जॉर्ज को सार्वजनिक प्रदर्शन के स्थान पर राजा के सामने लाया गया, जहाँ राजा अपनी पूरी दरबार के साथ बैठे थे। शहीद को सामान्य रूप से चलते और लंगड़ाते हुए न देखकर, मानो उसे कभी कोई घाव ही न हुआ हो, राजा ने आश्चर्य से उससे कहा:

'तो फिर, जॉर्ज, क्या तुम्हें अपने जूते पसंद हैं?'

'बहुत,' संत ने उत्तर दिया।

और राजा ने कहा:

'अपनी अभद्रता बंद करो; विनम्र और आज्ञाकारी बनो, और इस जादुई चाल को त्यागकर, दयालु देवताओं को बलिदान अर्पित करो, नहीं तो तुम कई यातनाओं से इस मीठे जीवन से वंचित हो जाओगे।'

संत जॉर्ज ने उत्तर दिया:

'तुम कितने मूर्ख हो, जो ईश्वर की शक्ति को जादू-टोना कह रहे हो और निर्लज्जता से शैतानी भ्रम पर गर्व कर रहे हो!'

क्रोधित आँखों से संत को घूरते हुए, डायोक्लेटियन ने एक तीखी चीख के साथ उसकी बात काट दी और उपस्थित लोगों को उसे मुँह पर मारने का आदेश दिया; यातना देने वाले ने कहा, उसे यह सिखा दो कि राजाओं को उकसाना नहीं चाहिए। फिर उसने आदेश दिया कि जॉर्ज को बैल की खाल से तब तक कोड़ा मारा जाए जब तक उसका खून-खराबे से सना हुआ मांस जमीन से चिपक न जाए।

क्रूर यातनाओं के बावजूद, संत जॉर्ज ने अपने चेहरे की शांति नहीं खोई। इससे बहुत आश्चर्यचकित होकर, राजा ने अपने आसपास खड़े लोगों से कहा:

'सचमुच, यह जॉर्ज के साहस और शक्ति के कारण नहीं है, बल्कि किसी जादुई चाल के कारण है।'

तब मैग्नेन्टियस ने राजा से कहा:

'यहाँ एक व्यक्ति है, जो जादू-टोने में माहिर है। यदि आप उसे अपने सामने लाने का आदेश देंगे, तो जॉर्ज जल्द ही पराजित हो जाएगा और आपके अधिकार के आगे झुक जाएगा।'

तुरंत जादूगर को राजा के सामने बुलाया गया, और डायोक्लेटियन ने उससे कहा:

'इस आदमी जॉर्ज ने यहाँ जो बुराई की है, उसे यहाँ मौजूद सभी ने देखा है; लेकिन उसने यह कैसे किया, यह केवल आप ही जानते हैं जो ऐसी कलाओं में निपुण हैं।' या तो उसकी जादूगरी को हराकर नष्ट कर दो और उसे हमारे अधीन कर लो, या तुरंत जादुई जड़ी-बूटियों से उसकी जान ले लो, ताकि वह अपनी सीखी हुई चालाकी के लिए उस मौत से मिल सके जिसके वह हकदार है। इसीलिए मैंने उसे अब तक जीवित रखा है।"

जादूगर, जिसका नाम अथानासियस था, ने अगले दिन दिए गए सभी आदेशों का पालन करने का वादा किया।

शहीद को कालकोठरी में पहरा देने का आदेश देकर, राजा अदालत से चला गया, जबकि संत ईश्वर को पुकारते हुए कालकोठरी में प्रवेश कर गया:

'हे प्रभु, मुझ पर अपनी दया दिखाओ; मेरे कदमों को अपने स्वीकारोक्ति की ओर मार्गदर्शन करो और मेरे मार्ग को अपने विश्वास में सुरक्षित रखो, ताकि आपका परम पवित्र नाम सर्वत्र महिमामय हो।'

सुबह, राजा फरि से अदालत में आया और सभी के सामने एक ऊँचे मंच पर अपनी सीट पर बैठ गया। जादूगर अथानासयिस भी अपनी बुद्धमित्ता का घमंड करते हुए, राजा और वहाँ मौजूद सभी लोगों को दखिाने के लिए वभिन्नि पात्रों में जादुई औषधयिाँ लेकर आया। और अथानासयिस ने कहा:

'अब उस दण्डति व्यक्ति को यहाँ लाया जाए, ताकि वह हमारे देवताओं की शक्ति और मेरी जादूगरी को देख सके।'

तब, एक पात्र उठाकर अथानासयिस ने राजा से कहा:

'यदि आप चाहते हैं कि वह पागल व्यक्ति आपके हर आदेश का पालन करे, तो उसे यह औषधि पिला दो।'

एक और पात्र लेकर, जादूगर ने कहना जारी रखा:

'लेकिन यदि आपकी अदालत उसकी कड़वी मौत का साक्षी बनना चाहती है, तो उसे यह पलिाइए।'

तुरंत, राजा के आदेश पर, संत जॉर्ज को दरबार के सामने लाया गया। और डायोक्लेटयिन ने उनसे कहा:

'अब, जॉर्ज, तुम्हारी जादू-टोना नष्ट हो जाएगी और समाप्त हो जाएगी।'

और उसने आदेश दयिा कि संत को जबरदस्ती जादुई औषधि पिलिवाई जाए। बनिा किसी हचिकचिाहट के उसे पी लेने पर, जॉर्ज सुरक्षति रहा, और शैतान की धोखाधड़ी पर हँसते हुए उसका मज़ाक उड़ाने लगा। क्रोध से उबलते हुए, सम्राट ने आदेश दयिा कि उसे जबरदस्ती एक और औषधि पिलिवाई जाए, जो घातक जहर से भरी थी। हालाँकि संत ने उनका जबरदस्ती करने का इंतज़ार नहीं कयिा, बल्कि उन्होंने स्वेच्छा से पात्र उठाया और घातक ज़हर पी लयिा; फरि भी वह अप्रभावति रहे, क्योंकि उन्हें ईश्वर की कृपा से मृत्यु से बचाया गया था।

राजा और उसका पूरा दरबार चकति रह गया; जादूगर अथानासयिस भी हैरान रह गया। कुछ समय बाद, राजा ने शहीद से कहा:

'जॉर्ज, तुम हमसे सच बताए बनिा कतिने दनि तक अपने कर्मों से हमें चकति करते रहोगे: तुमने किसी जादुई कला से तुम्हें दी गई यातनाओं को तुच्छ समझा और इस घातक विष से अप्रभावति रहे? हमें सब कुछ सच-सच बताओ, क्योंकि हम विनिम्रता से तुम्हें सुनना चाहते हैं।'

धन्य जॉर्ज ने उत्तर दयिा:

'ऐ राजा, यह मत सोचो कि मैं मानवीय तर्क के कारण यातनाओं की परवाह नहीं करता। नहीं, मैं मसीह और उनकी शक्ति का आह्वान करके बचा हूँ। उन पर भरोसा करके, और उनके रहस्यमय उपदेश का पालन करके, हम यातनाओं को कुछ नहीं समझते।'

और डायोक्लेटयिन ने कहा:

'तो फरि, आपके मसीह की रहस्यमयी शक्षिा किसमें नहिति है?'

जॉर्ज ने उत्तर दयिा:

'वह जानता है कि तुम्हारी दुष्टता कुछ भी हासलि नहीं करेगी, और उसने अपने सेवकों को उन लोगों से न डरने की शक्षिा दी है जो शरीर को मारते हैं, क्योंकि वे आत्मा को नहीं मार सकते। क्योंकि उसने कहा है: *'तुम्हारे सिर का एक बाल भी नाश नहीं होगा'* (लूका 21:18), *'वे साँप उठा लेंगे; और यदि वे कोई घातक वस्तु पीएँ, तो भी वह उन्हें हानि न पहुँचाएगी'* (मरकुस 16:18)। *'जो कोई मुझ पर विश्वास करता है, वह भी मेरे जैसे काम करेगा'* (यूहन्ना 14:12)। हे राजा, सुनो, यह हमारे लिए उनका सच्चा वादा है, जिसके बारे में मैं संक्षेप में तुम्हें बता रहा हूँ।

डायोक्लेटयिन ने पूछा, 'तो फरि, ये उसके कौन से काम हैं जिनके बारे में आप बात कर रहे हैं?'

संत ने उत्तर दयिा:

'अंधों को दृष्टि देना, कुष्ठरोगयिों को शुद्ध करना, लंगड़ों को चलने की शक्ति लौटाना, बधरिों को सुनने की शक्ति लौटाना, अशुद्ध आत्माओं को नकिालना, मृतकों को जीवति करना—ये और इसी प्रकार के कार्य मसीह के कार्य हैं।'

जादूगर अथानासयिस की ओर मुड़कर, सम्राट ने उससे पूछा:

'इस पर तुम्हारा क्या कहना है?'

'मैं हैरान हूँ,' अथेनासयिस ने उत्तर दयिा, 'कि वह आपकी नम्रता का कैसे मज़ाक उड़ाता है, और आपके शाही हाथ से बचने की उम्मीद में झूठ बोलता है। हम, जो प्रतदिनि अपने अमर देवताओं के अनेक आशीर्वादों का आनंद लेते हैं, हमने कभी भी उन्हें मृतकों को जीवति करते हुए नहीं देखा है। फरि भी यह आदमी, एक मृतक में अपनी आशा रखकर और एक सूली पर चढ़ाए गए ईश्वर में विश्वास करके, शर्म के बनिा बोलता है, यह दावा करते हुए कि उसने महान कार्य कयि हैं। चूँकि जॉर्ज ने हम सभी के सामने स्वीकार कयिा है कि उसका ईश्वर ऐसे चमत्कारों को करने वाला है, और जो लोग उस

पर वशि्वास करते हैं उन्हें उससे एक अटूट वादा मलिा है कि वे भी ऐसे ही कर्म करेंगे जैसे उसने कएि हैं, तो हे राजा, और हम सभी के सामने जॉर्ज उस मृतक को जीवति कर उठाए। तब हम भी सर्वशक्तमिान मानकर उसके ईश्वर के अधीन हो जाएँगे। देखो, यहाँ से दूर, वह कब्र दखिाई दे रही है जसिमें हाल ही में एक मृतक को, जसिे मैं जीवन में जानता था, दफ़नाया गया है। यदि जॉर्ज उसे मृतकों में से जीवति कर देता है, तो वह सचमुच हम पर वजिय प्राप्त कर लेगा।

राजा अथानासयिस की सलाह से चकति रह गया। जसि कब्र का उसने संकेत कयिा था, वह मुकदमे की जगह से आधा स्टेडयिम दूर थी[3191] । क्योंकि मुकदमा शहर के द्वार के पास, पुराने थएिटर की जगह पर चल रहा था। हालाँकि, वह कब्र शहर के बाहर थी, क्योंकि यूनानयिों की प्रथा के अनुसार, उनके मृतकों को शहर के बाहर दफनाया जाता था। और राजा ने शहीद से अपने ईश्वर की शक्ति का प्रदर्शन करने के लिए मृतक को जीवति करने का आदेश दयिा। तब एम्फीपेट्स मैग्नेन्टयिस ने राजा से जॉर्ज को उसकी बेड़यिों से मुक्त करने का आग्रह कयिा। जब जॉर्ज की बेड़यिाँ हटा दी गईं, तो मैग्नेन्टयिस ने उससे कहा:

'हे जॉर्ज, हमें अपने ईश्वर के चमत्कार दखिाओ, और तुम हम सभी को उन पर वशि्वास करने की ओर ले जाओगे।'

और संत ने उससे कहा:

'मेरे ईश्वर, जसिने शून्य से सभी चीज़ों की रचना की है, उसमें मेरे द्वारा उस मृतक को जीवति करने की शक्ति है; लेकनि तुम, जनिके मन धुंधले हैं, सत्य को समझ नहीं सकते। फरि भी मेरे प्रभु, यहाँ मौजूद लोगों के लिए, वह करेंगे जो तुम मुझे लुभाने के अपने प्रयास में मांग रहे हो—ताकि तुम इसे जादू-टोने का श्रेय न दें।' जसि जादूगर को तुम यहाँ लाए हो, उसके शब्द सत्य हैं: न तो जादू-टोना और न ही तुम्हारे देवताओं की शक्ति कभी कसिी मृतक को जीवति कर सकती है। लेकनि मैं, यहाँ खड़े सभी लोगों की उपस्थति में और सबके सुनने के लिए, अपने ईश्वर को पुकारूँगा।

यह कहकर, जॉर्ज घुटनों के बल बैठ गया और आँसुओं के साथ लंबे समय तक ईश्वर से प्रार्थना की; फरि, उठकर, उसने ऊँचे स्वर में प्रभु से पुकारा:

'हे शाश्वत ईश्वर, हे दयालु ईश्वर, हे सर्वशक्तमिान प्रभु, हे सर्वशक्तमिान, जनि लोगों ने अपनी आशा आप पर रखी है, उन्हें लज्जति न करें; हे प्रभु यीशु मसीह, इस घड़ी मुझे, अपने दीन दास को सुनें, आप जनि्होंने हर स्थान पर, हर चमत्कार और चहि्न के द्वारा अपने पवति्र प्रेरतिों को सुना है। इन दुष्ट लोगों को वह चहि्न प्रदान करें जसिकी वे खोज में हैं, और कब्र में पड़े मृतक को जीवति कर दें, ताकि वे जो तुझे नकारते हैं, लज्जति हों, और यह तेरी, तेरे पति की, और परम पवति्र आत्मा की महमिा के लिए हो। हे प्रभु, उपस्थति लोगों को दखिाइए कि आप ही सारी पृथ्वी के एकमात्र परमेश्वर हैं, ताकि वे आपको, सर्वशक्तमिान प्रभु को जान सकें, जनिके अधीन सभी वस्तुएँ हैं और जनिकी महमिा युगानुयुग बनी रहती है। आमीन।

जैसे ही उसने 'आमीन' कहा, गरज की एक गड़गड़ाहट गूँजी और धरती हलि गई, जसिसे सभी भयभीत हो गए। फरि कब्र की छत ढह गई, ताबूत खुल गया, और मृतक जीवति हो उठा तथा ताबूत से बाहर नकिल आया। जो भी इस दृश्य के साक्षी बने, वे भय से अकड़ गए। तुरंत ही जो कुछ हुआ था उसकी खबर लोगों में फैल गई, और कई लोग रो पड़े तथा मसीह की महान ईश्वर के रूप में महमिा करने लगे। हालाँकि, राजा और उसके साथ मौजूद सभी लोग, भय और अवशि्वास से भरकर, ने पहले तो यह दावा कयिा कि जॉर्ज, जो एक महान जादूगर था, ने ताबूत से कोई मृत व्यक्ति नहीं बल्कि कोई आत्मा या भूत प्रेत उभारा था, ताकि देखने वालों को धोखा दे सके। तब, यह महसूस करने के बाद कि उनके सामने जो खड़ा था वह कोई भूत-प्रेत नहीं बल्कि वास्तव में एक ऐसा आदमी था जो मृतकों में से जी उठा था और मसीह का नाम ले रहा था, राजा और कुलीनों पर बड़ी हैरानी और चकति होने की भावना छा गई, और वे यह समझ नहीं पा रहे थे कि क्या करें, इसलिए चुपचाप जॉर्ज को घेर लयिा। हालाँकि, अथेनासयिस संत के पैरों पर गरि पड़े, यह स्वीकार करते हुए कि मसीह सर्वशक्तमिान ईश्वर हैं, और शहीद से वनिती करने लगे कि वह अज्ञानता में कएि गए उनके पापों को क्षमा कर दें। बहुत समय बाद, डायोक्लेटयिन ने अंततः भीड़ को चुप रहने का आदेश दयिा और कहा:

'हे पुरुषों, क्या तुम यह धोखा देख रहे हो? क्या तुम इन जादूगरों की दुर्भावना और चालाकी देख रहे हो?' सबसे दुष्ट अथेनासयिस ने, अपने जैसे एक जादूगर की मदद करते हुए, जॉर्ज को पीने के लिए जहर नहीं दयिा, बल्कि एक जादू की औषधि दी जो हमें धोखा देने में उसकी मदद करती। उन्होंने एक जीवति आदमी को मृत दखिाया और हमारे सामने ही जादू-टोने से उसे ऐसे जीवति कर दयिा मानो वह मृतकों में से जी उठा हो।

[3191] स्टेडयिा लंबाई की एक इकाई है; यह हमारे लगभग 88 फathom के बराबर थी।

यह कहने के बाद, सम्राट ने आदेश दिया कि अथेनासियस और 'मृतकों में से जी उठे' व्यक्ति का सिर बिना पूछताछ या पूर्व यातना के काट दिया जाए; जहाँ तक मसीह के पवित्र शहीद, जॉर्ज का सवाल है, उसने आदेश दिया कि उसे एक कालकोठरी में और बेड़ियों में तब तक रखा जाए जब तक कि वह स्वयं राज्य के मामलों से मुक्त नहीं हो जाता और यह तय नहीं कर लेता कि शहीद के साथ क्या करना है। सम्राट अपने महल में चले गए, जबकि संत जॉर्ज को जेल ले जाया गया, जहाँ उन्होंने आनंद मनाया और ईश्वर का धन्यवाद किया:

'महिमा तेरी हो, हे प्रभु, जो उन पर लज्जित नहीं होने देते जो तुझ पर भरोसा करते हैं। मैं तुझे हर बात में मेरी सहायता करने, दिन-प्रतिदिन मुझ पर और भी अधिक आशीर्वादों की वर्षा करने, और मुझे, जो कि अयोग्य हूँ, अपनी कृपा से सजाने के लिए धन्यवाद देता हूँ। तब हे ईश्वर, हे मेरे ईश्वर, मुझ पर यह अनुग्रह करो कि मैं शीघ्र ही तेरा महिमा-दर्शन करूँ, और शैतान को एक बार फिर हमेशा के लिए लज्जित करूँ।

जब महान शहीद जॉर्ज जेल में थे, तो उनके चमत्कारों के द्वारा मसीह में विश्वास करने वाले लोग उनके पास आते थे; वे रक्षकों को सोना देते, संत के चरणों में गिर पड़ते, और उनसे पवित्र विश्वास के बारे में शिक्षा प्राप्त करते। मसीह का नाम लेकर और क्रॉस का चिह्न बनाकर, संत ने बीमारों को चंगा किया, जो बड़ी संख्या में उनकी जेल की कोठरी में आते थे। उनमें से एक ग्लाइसेरियस नाम का एक साधारण किसान था, जिसका बैल पहाड़ से गिरकर जंगल में कुचलकर मर गया था। संत के चमत्कारों के बारे में सुनकर, ग्लाइसेरियस अपने मरे हुए बैल के शोक में उनके पास गया। हालाँकि, संत मुस्कुराए और उससे कहा:

'जाओ, भाई, और शोक मत करो। मसीह, मेरे ईश्वर, तुम्हारे बैल को जीवित कर देंगे।'

किसान शहीद के शब्दों पर दृढ़ विश्वास के साथ चल पड़ा और वास्तव में उसने अपने बैल को जीवित देख लिया। वह तुरंत जॉर्ज के पास लौट आया और, शहर के केंद्र से गुज़रते हुए, ज़ोर से चिल्लाया:

'सचमुच, ईसाई ईश्वर महान है!'

इसके लिए, उसे सैनिकों ने पकड़ लिया और सम्राट को उसकी सूचना दी। डायोक्लेटियन क्रोध से भर गया; उसने उसे देखने से इनकार कर दिया और आदेश दिया कि उसका सिर तुरंत शहर के बाहर काट दिया जाए। ग्लाइसेरियस आनंदपूर्वक, जैसे किसी दावत पर जा रहा हो, सेनाओं के आगे-आगे चलता हुआ, ऊँचे स्वर में ईश्वर मसीह को पुकारता हुआ और प्रार्थना करता हुआ कि वह उसके रक्त का बहाव को बपतिस्मा के रूप में स्वीकार करे, मसीह के लिए अपनी मृत्यु को प्राप्त करने गया। इस प्रकार ग्लाइसेरियस की मृत्यु हुई।

तब सिक्लाइट के कुछ लोगों ने सम्राट को बताया कि जॉर्ज, जेल में रहते हुए, लोगों को भड़का रहा था, कई लोगों को देवताओं से हटाकर सूली पर चढ़ाए गए की ओर मोड़ रहा था, और जादू-टोने के द्वारा चमत्कार कर रहा था, जिससे हर कोई उसकी ओर उमड़ रहा था। उन्होंने सलाह दी कि जॉर्ज को एक बार फिर यातना दी जाए, और यदि वह पश्चाताप करके देवताओं की ओर न लौटा, तो उसे तुरंत मौत की सज़ा दे दी जाए। एम्फीपेट मैग्नेन्टियस को बुलाकर, राजा ने आदेश दिया कि अगले सुबह अपोलो के मंदिर में मुकदमे के लिए एक स्थान तैयार किया जाए, ताकि शहीद को लोगों की आंखों के सामने परीक्षा से गुज़रना पड़े। उस रात, जब संत जॉर्ज अपनी कोठरी में प्रार्थना कर रहे थे, तो वे झपकी में सो गए और एक सपने में उन्होंने प्रभु को प्रकट होते देखा, जिन्होंने उन्हें अपने हाथ से उठाया, गले लगाया, चूमा, और उनके सिर पर एक मुकुट रखा, और कहा:

'डरो मत, बल्कि हिम्मत रखो, और तुम मेरे साथ राज्य करोगे। हतोत्साहित न हो; तुम जल्द ही मेरे पास आओगे और वह प्राप्त करोगे जो तुम्हारे लिए तैयार किया गया है।'

जागने पर, संत ने प्रसन्नतापूर्वक प्रभु का धन्यवाद किया और जेलर को बुलाकर उससे कहा:

'भाई, मैं आपसे एक निवेदन करता हूँ; कृपया मेरे सेवक को यहाँ आने को कहिए। मुझे उसे कुछ बताना है।'

रक्षक ने उस दास को बुलाया, जो लगातार कालकोठरी के पास खड़ा रहता था, और संत के कर्मों और शब्दों को सावधानी से दर्ज कर रहा था। अंदर आते ही, दास ने अपने स्वामी के सामने, जो बेड़ियों में जकड़े हुए बैठे थे, जमीन पर सिर झुकाया और जोर-जोर से रोते हुए उनके पैरों पर गिर पड़ा। संत ने उसे जमीन से उठाया, उसे हिम्मत रखने के लिए कहा, और उसे अपना दर्शन सुनाते हुए कहा:

'मेरे बच्चे! जल्द ही प्रभु मुझे अपने पास बुला लेंगे; लेकिन जब मैं इस जीवन से चला जाऊँ, तो मेरे इस दीन शरीर को उठा लेना और, उस इच्छा के अनुसार जो मैंने अपने तपस्या-जीवन से पहले लिखी थी, उसे ईश्वर की सहायता से हमारे फिलिस्तीन के घर ले जाना, और ईश्वर के भय तथा मसीह में दृढ़ विश्वास के साथ मेरी इच्छानुसार सब कुछ पूरा करना।"

उस सेवक ने आँखों में आँसू लिए हुए, उनके निर्देशों का पालन करने का वादा किया। संत ने उसे स्नेह से गले लगाया, उसे अंतिम चूमन दिया और उसे शांति से विदा कर दिया।

अगली सुबह, जैसे ही सूरज निकला, राजा ने न्यायपीठ पर अपनी जगह ली और अपने गुस्से पर काबू पाकर, उसके सामने लाए गए जॉर्ज से नरमी से बात करनी शुरू की:

'हे जॉर्ज, क्या तुम्हें नहीं लगता कि मैं तुम्हारे प्रति करुणा और दया से भरा हूँ, और तुम्हारे अपराधों को दया से सहन कर रहा हूँ?' देवता मेरी गवाह हैं कि मैं तुम्हारी खिलती हुई सुंदरता, बुद्धिमत्ता और साहस के लिए तुम्हारी जवानी को क्षमा कर रहा हूँ। और मैं तुम्हें अपना सह-शासक, मेरे राज्य में सम्मान में दूसरा बनाना चाहूँगा, अगर तुम केवल देवताओं की ओर मुड़ जाओ। तो हमें बताओ, तुम इस बारे में क्या सोचते हो?"

संत जॉर्ज ने कहा:

'हे राजा, तुम्हें पहले मुझ पर ऐसी दया दिखानी चाहिए थी, बजाय इसके कि मुझे इतनी भयंकर यातनाओं से गुज़रने के लिए मजबूर करते।'

शहीद के इन शब्दों को प्रसन्नता से सुनकर, राजा ने कहा:

'यदि तुम स्वेच्छा से मेरी आज्ञा मानने को तैयार हो, जैसे एक पिता की आज्ञा मानते हो, तो मैं तुम्हें तुम्हारे द्वारा सहन किए गए सभी कष्टों के लिए कई सम्मानों से पुरस्कृत करूँगा।'

जॉर्ज ने उत्तर दिया:

'हे राजा, यदि आपको उचित लगे, तो हम मंदिर में प्रवेश करें और उन देवताओं को देखें जिनकी आप पूजा करते हैं।'

राजा प्रसन्नचित्त होकर पूरी परिषद और लोगों के साथ अपोलो के मंदिर में गया, और संत जॉर्ज को सम्मानपूर्वक अपने साथ ले गया। लोगों ने राजा का जयकारा करते हुए अपने देवताओं की शक्ति और विजय का गुणगान किया।

मंदिर में प्रवेश करते ही, जहाँ एक बलिदान तैयार किया गया था, सभी ने शहीद को चुपचाप देखा, निस्संदेह यह उम्मीद करते हुए कि वह देवताओं को बलिदान देगा। हालाँकि, संत अपोलो की मूर्ति के पास गए, उसकी ओर अपना हाथ बढ़ाया और निर्जीव मूर्ति से, जैसे कि वह जीवित हो, पूछा:

'क्या तुम एक देवता के रूप में मुझसे बलिदान स्वीकार करना चाहते हो?'

ये शब्द कहते ही, संत ने क्रॉस का चिह्न बनाया। तब मूर्ति के भीतर रहने वाले राक्षस ने पुकारा:

'मैं देवता नहीं हूँ, न ही मैं देवता हूँ, और न ही मेरे जैसा कोई है। एकमात्र ईश्वर वही है जिसकी तुम घोषणा करते हो। हम तो उन स्वर्गदूतों के धर्मत्यागी हैं जिन्होंने उसकी सेवा की; हम, ईर्ष्या से भरे हुए, लोगों को भटकाते हैं।'

तब संत ने राक्षस से कहा:

'जब मैं, सच्चे ईश्वर का सेवक, यहाँ आया हूँ, तो तुम यहाँ रहने की हिम्मत कैसे करते हो?'

संत के इन शब्दों पर, मूर्तियों से शोर और विलाप उठने लगा। फिर वे ज़मीन पर गिर पड़ीं और चकनाचूर हो गईं। तुरंत ही पुरोहित और बहुत से लोग, जैसे उन्माद में, संत पर क्रूरता से टूट पड़े, उसे पीटने और बांधने लगे, और राजा से चिल्ला उठे:

'हे राजा, इस जादूगर को मार डालो! हमें नष्ट करने से पहले इसे मार डालो।'

इस हलचल और शोर की खबर पूरे शहर में फैल गई और रानी अलेक्जेंड्रा के कानों तक पहुँच गई। अब तक मसीह में अपने विश्वास को छिपाए हुए रानी अब अपने धर्म-स्वीकार को और छिपाए न रह सकीं और तुरंत उस स्थान के लिए निकल पड़ीं जहाँ पवित्र महा-शहीद जॉर्ज को बंदी बनाकर रखा गया था।

भीड़ में मची हलचल को देखकर और दूर से उस शहीद को बंधे हुए देख कर, रानी ने भीड़ के बीच से होकर उसके पास जाने का व्यर्थ प्रयास किया और जोर-जोर से चिल्लाने लगी:

'हे जॉर्ज के ईश्वर, मेरी मदद करो, क्योंकि केवल आप ही सर्वशक्तिमान हैं।'

जब लोगों का शोर-शराबा शांत हुआ, तो डायोक्लेटियन ने शहीद को अपने सामने लाने का आदेश दिया और, एक भूतग्रस्त व्यक्ति की तरह क्रोधित होकर, संत से कहा:

'क्या इसी का आभार तुम चुकाते हो, हे नीच, मेरी दया का? क्या देवताओं को बलिदान चढ़ाने का यही तुम्हारा तरीका है?'

संत जॉर्ज ने उत्तर दिया:

'हाँ, मैं अपने देवताओं का सम्मान करने का आदी इसी तरह हूँ। हे पागल राजा, उन देवताओं को अपना उद्धारकर्ता मानकर शर्म करो जो न तो अपनी मदद कर सकते हैं और न ही मसीह के सेवकों की उपस्थिति को सहन कर सकते हैं।'

जब संत ये शब्द कह रहे थे, तब रानी आखिरकार भीड़ को चीरकर बीच में आ गईं और सबके सामने साहसपूर्वक यह घोषणा की कि मसीह ही सच्चे ईश्वर हैं। वह शहीद के चरणों में गिर पड़ी और अपने उत्पीड़क के पागलपन का मज़ाक उड़ाते हुए, देवताओं को डांटा और उनकी पूजा करने वालों को शाप दिया। अपनी पत्नी को देखकर, जो शहीद के चरणों में इतनी बहादुरी से मसीह की महिमा कर रही थी और मूर्तियों का अपमान कर रही थी, राजा बहुत हैरान हो गया और उससे कहा:

'एलेक्ज़ेंड्रा, तुझ पर क्या सवार हो गया है कि तू इस जादूगर और धोखेबाज़ का साथ दे रही है और इतनी निर्लज्जता से देवताओं का त्याग कर रही है?'

लेकिन वह मुड़ गई और राजा को कोई जवाब नहीं दिया। डायोक्लेटियन और भी अधिक क्रोधित हो गया और, जॉर्ज या रानी को और यातना दिए बिना, तुरंत उन दोनों को मृत्युदंड सुना दिया:

'मैं आदेश देता हूँ कि सबसे दुष्ट जॉर्ज, जिसने स्वयं को गलीलियाई[3192] का अनुयायी घोषित किया है और जिसने मेरा और देवताओं का बहुत अपमान किया है, को रानी अलेक्जेंड्रा के साथ, जो उसकी जादूगरी से भ्रष्ट हो गई है और जिसने भी उसके जैसे पागलपन में देवताओं का अपमान किया है, तलवार से सिर कलम कर दिया जाए।'

सैनिकों ने शहीद को, जिसे जंजीरों में जकड़ा गया था, पकड़ लिया और उसे शहर से बाहर ले गए। उन्होंने सबसे कुलीन रानी को भी ले गए, जो बिना किसी प्रतिरोध के जॉर्ज का अनुसरण कर रही थी, चुपचाप प्रार्थना करते हुए और बार-बार आकाश की ओर निहारते हुए। रास्ते में, रानी थक गई और बैठने की अनुमति मांगी। बैठने के बाद, उसने अपना सिर दीवार से टिका लिया और अपना प्राण प्रभु को सौंप दिया। यह देखकर, मसीह के शहीद जॉर्ज ने परमेश्वर की महिमा की और आगे बढ़ गया, प्रभु से प्रार्थना करते हुए कि उसकी अपनी यात्रा भी गरिमा के साथ समाप्त हो। जब जॉर्ज अपने फांसी के लिए निर्धारित स्थान पर पहुंचा, तो उसने ऊँचे स्वर में एक प्रार्थना की:

– धन्य हैं आप, हे मेरे प्रभु परमेश्वर, क्योंकि आपने मुझे मेरे खोजने वालों के हाथ में नहीं सौंपा, आपने मेरे शत्रुओं को आनंद नहीं दिया, और आपने मेरे प्राण को, एक पक्षी की तरह, फंदे से छुड़ाया है। हे प्रभु, अब मेरी सुन; इस अंतिम घड़ी में अपने दास के साथ रह, और मेरी आत्मा को वायु के राजकुमार की युक्तियों से और उसकी अशुद्ध आत्माओं से बचा। जिन लोगों ने अज्ञानतावश मुझसे पाप किया है, उन्हें उनके पापों के लिए उत्तरदायी न ठहराएँ, बल्कि उन्हें क्षमा और प्रेम प्रदान करें, ताकि वे भी, आपको जानकर, आपके चुने हुओं के साथ आपके राज्य में सहभागी हो सकें। मेरी आत्मा को भी उन लोगों के साथ ग्रहण करें जिन्होंने प्राचीन काल से आपको प्रसन्न किया है, और जानबूझकर तथा अनजाने में किए गए मेरे पापों को अनदेखा करें। हे प्रभु, उन लोगों को याद रखें जो आपके महिमामय नाम का स्मरण करते हैं, क्योंकि आप धन्य और सदा के लिए महिमामय हैं। आमीन।

प्रार्थना करने के बाद, संत जॉर्ज ने आनंदपूर्वक तलवार के नीचे अपना सिर झुकाया और इस प्रकार 23 अप्रैल के दिन देहांत को प्राप्त हुए, उन्होंने अपने पाप-स्वीकार को यथोचित रूप से पूरा किया और अपने विश्वास को अछूता बनाए रखा। अत; उन्हें धार्मिकता के चुने हुए मुकुट से विभूषित किया गया है[3193] ।

इस पराक्रमी योद्धा के महान कार्यों की यही विजय है, यही उसके शत्रुओं के विरुद्ध उसकी लड़ाई और उसकी महिमामय विजय है; इस प्रकार प्रयास करके, वह एक अक्षय और अनंत मुकुट का पात्र समझा गया। उनकी प्रार्थनाओं के द्वारा, हम भी धर्मी लोगों के भाग के योग्य तथा हमारे प्रभु यीशु मसीह के दूसरे आगमन के दिन उनके दाहिने हाथ पर खड़े होने के योग्य ठहरें, जिन्हें सदा और सदा के लिए सारी महिमा, सम्मान और आराधना अर्पित होती है। आमीन।

[3192] अर्थात्, यीशु मसीह।

[3193] महान शहीद सेंट जॉर्ज की मृत्यु 304 में हुई थी। चौथी शताब्दी में, रोम में सेंट जॉर्ज के सम्मान में एक चर्च बनाया गया था, जिसमें उनके अवशेषों का एक हिस्सा, उनकी भाला और उनका ध्वज रखा गया है।

महान शहीद संत जॉर्ज के चमत्कार

सीरिया के प्रदेशों में रामेल नामक एक नगर था, जिसमें महान शहीद संत जॉर्ज के नाम पर एक पत्थर का चर्च बनाया जा रहा था। हालाँकि, उस स्थान पर ऐसे उपयुक्त पत्थर नहीं थे जिनसे चर्च की इमारत को सहारा देने के लिए आवश्यक विशाल पत्थर के खंभे बनाए जा सकें। ऐसे खंभे आमतौर पर दूर-दराज के देशों से खरीदे जाते थे और समुद्र मार्ग से लाए जाते थे। रामेल के कई ईश्वर-भयभीत नागरिक निर्माणाधीन चर्च के लिए पत्थर के स्तंभ खरीदने के लिए विभिन्न देशों के लिए रवाना हुए। एक धार्मिक विधवा, जिसकी संत जॉर्ज महान शहीद में गहरी भक्ति और आस्था थी, ने भी इसी उद्देश्य से यात्रा की, वह अपनी मामूली साधनों से संत जॉर्ज के चर्च के लिए एक स्तंभ खरीदना चाहती थी। एक देश से एक सुंदर स्तंभ खरीदने के बाद, वह उसे समुद्र तट पर ले आई, जहाँ रामेल का राज्यपाल, कई स्तंभ प्राप्त कर चुका था, उन्हें एक जहाज पर लाद रहा था। और उस महिला ने उस अधिकारी से विनती करनी शुरू कर दी कि वह उसका स्तंभ अपने जहाज पर ले ले और उसे शहीद के चर्च तक पहुँचा दे। उस अमीर व्यक्ति ने उसकी विनती पर ध्यान नहीं दिया; उसने उसका स्तंभ नहीं लिया, बल्कि केवल अपने ही स्तंभों से जहाज लादकर रवाना हो गया। तब वह महिला निराशा में जमीन पर गिर पड़ी और, आँसू बहाते हुए, उसने महान शहीद से मदद की पुकार लगाई, उनसे यह सुनिश्चित करने का कोई तरीका खोजने के लिए कहा कि उसका स्तंभ रामेल में, उनकी चर्च तक पहुँच जाए। अपने दुख और आँसुओं में, वह सो गई, और पवित्र महा शहीद जॉर्ज एक सेनापति के वेश में घोड़े पर सवार होकर उसे सपने में दिखाई दिए; उन्होंने उसे जमीन से उठाया और कहा:

'हे स्त्री, मुझे बताओ, क्या बात है?'

उसने संत को अपने दुख का कारण बताया। वह अपने घोड़े से उतरा और उससे पूछा:

'आप स्तंभ कहाँ रखना चाहती हैं?'

उसने उत्तर दिया:

'चर्च के दाहिनी ओर।'

तुरंत, संत ने अपनी उंगली से स्तंभ पर निम्नलिखित लिख दिया:

'चर्च के दाहिने ओर स्तंभों की कतार में इस विधवा का स्तंभ दूसरे स्थान पर लगाया जाए।'

यह लिखने के बाद, जॉर्ज ने उस महिला से कहा:

'खुद मेरी मदद करो।'

और देखो, जब उन्होंने स्तंभ को पकड़ा, तो पत्थर हल्का हो गया, और उन्होंने स्तंभ को समुद्र में फेंक दिया। यह वही था जो उस महिला ने अपने सपने में देखा था।

जागने पर, उसने पाया कि स्तंभ अपनी जगह से गायब था और, ईश्वर और उनके सेवक, संत जॉर्ज में अपनी आशा रखकर, वह अपने स्वदेश के लिए रवाना हो गई। लेकिन उसके वहां पहुंचने से पहले और जहाज के रवाना होने से पहले, अपनी दृष्टि के अगले दिन, , उसका स्तंभ रामेल पियर पर तट पर पड़ा हुआ मिला। जब बेसिल नामक शहर के गवर्नर ने अपनी स्तंभ जहाज से लाकर किनारे पर उतारे, तो उसने विधवा के स्तंभ और उस पर संत की उंगली से लिखा गया शिलालेख देखा। वह व्यक्ति चकित रह गया और, पवित्र महान शहीद के चमत्कार को समझते हुए, उसने अपने पाप को स्वीकार किया और विधवा की विनती को अनसुनी करने पर पश्चाताप किया। उसने बहुत प्रार्थना करके जॉर्ज से क्षमा मांगी और संत से क्षमा प्राप्त की, जो उसे एक दर्शन में दिखाई दिए। विधवा के स्तंभ को उस स्थान पर स्थापित किया गया था जिसे उस पर लिखे शिलालेख द्वारा इंगित किया गया था, उस धर्मपरायण महिला की स्मृति में, पवित्र महान शहीद द्वारा किए गए चमत्कार के प्रमाण के रूप में, और हमारे ईश्वर मसीह की महिमा के लिए, जो चमत्कारों का स्रोत हैं।

कई साल बाद, जब सारासेनों ने सीरिया पर विजय प्राप्त की, तो रामला शहर में महान शहीद सेंट जॉर्ज के चर्च में एक चमत्कार हुआ:

एक कुलीन सारासेन, अपने कुछ रिश्तेदारों के साथ, सेवा के दौरान चर्च में घुसा और, संत जॉर्ज की प्रतिमा और प्रतिमा के सामने खड़े पुरोहित को उसकी पूजा करते और संत से प्रार्थना करते हुए देखकर, उसने अपने दोस्तों से सारासेन भाषा में कहा:

'क्या तुम देख रहे हो कि यह पागल क्या कर रहा है? वह लकड़ी के एक टुकड़े की पूजा कर रहा है। मुझे एक धनुष और एक तीर ला दो, और मैं इस लकड़ी के टुकड़े को भेद दूँगा।'

तुरंत एक धनुष लाया गया, और उस सारसेन ने, सभी के पीछे खड़े होकर, धनुष ताना और महा-शहीद की प्रतिमा पर एक तीर चलाया। हालाँकि, तीर प्रतिमा की ओर नहीं गया, बल्कि ऊपर की ओर उठ गया और वापस नीचे आकर सारसेन के हाथ को भेद दिया, जिससे वह बुरी तरह घायल हो गया। सारासेन तुरंत घर चला गया, उसकी बाँह में तीव्र दर्द हो रहा था। दर्द और भी बढ़ता गया; उसकी बाँह भट्टी की फूँकनी की तरह सूज गई, जिससे सारासेन दर्द से कराह उठा।

इस सारसेन के घर में कई ईसाई दासी थीं। उन्हें बुलाकर, उसने उनसे कहा:

'मैं तुम्हारे देवता जॉर्ज के चर्च में था और उसकी प्रतिमा को भेदना चाहता था। लेकिन मैंने अपनी धनुष से तीर इतना बुरी तरह मारा कि गिरते समय उसने मेरी बांह को बुरी तरह घायल कर दिया, और अब मैं असहनीय दर्द से मर रहा हूँ।'

दासी लड़कियों ने उत्तर दिया:

'तुम्हें क्या लगता है: क्या तुमने पवित्र शहीद की प्रतिमा का इतना अपमान करने की हिम्मत करके सही काम किया?'

सरैसेन ने उन्हें उत्तर दिया:

'क्या इस प्रतिमा में मुझे अब जैसी हालत है, वैसी बीमार करने की शक्ति थी?'

दासीयों ने उससे उत्तर दिया:

'हम शास्त्रों में पारंगत नहीं हैं और इसलिए हम नहीं जानते कि आपको कैसे उत्तर दें। लेकिन हमारे पुरोहित को बुलाओ, और वह आपको बताएगा कि आप किस बारे में पूछ रहे हैं।'

सरसीन ने अपनी दासियों की बात मानी और पुरोहित को बुलाकर उससे कहा:

'मैं जानना चाहता हूँ कि वह मूर्ति या आइकन, जिसकी आप पूजा करते थे, किस शक्ति का धारी है।'

पुजारी ने उत्तर दिया:

'मैंने उस तख्ते की नहीं, बल्कि अपने ईश्वर, ब्रह्मांड के स्रष्टा की पूजा की। जहाँ तक उस तख्ते पर अंकित महान शहीद संत जॉर्ज की प्रतिमा का प्रश्न है, मैंने प्रार्थना की कि वह ईश्वर के समक्ष मेरे लिए मध्यस्थता करें।'

सारासेन ने उससे पूछा:

'तो फिर जॉर्ज कौन है, अगर वह आपका ईश्वर नहीं है?'

पुजारी ने उत्तर दिया:

'संत जॉर्ज हमारे देवता नहीं, बल्कि केवल ईश्वर और हमारे प्रभु यीशु मसीह के सेवक हैं। वह हर तरह से हम जैसे एक इंसान थे। उन्होंने मूर्तिवादियों के हाथों बहुत यातनाएँ सहन कीं, जिन्होंने उन्हें मसीह का त्याग करने के लिए मजबूर किया; लेकिन, उनका साहसपूर्वक सामना करने और मसीह के नाम के लिए एक कन्फेशर बनने के बाद, उन्हें ईश्वर से चमत्कार करने का वरदान मिला। हम ईसाई, उनका सम्मान करते हुए, उनकी प्रतिमा का भी सम्मान करते हैं; और, उस पर ऐसे निहारते हैं जैसे स्वयं संत पर निहार रहे हों, हम उसकी पूजा करते हैं और उसे चूमते हैं। आप भी बिल्कुल यही करते हैं; क्योंकि जब आपके दिल के करीब माता-पिता या भाई-बहन मर जाते हैं, तो आप उनके कपड़ों को देखते हैं, उनके सामने रोते हैं, और उन्हें चूमते हैं, और उन कपड़ों में, मानो, उन्हीं लोगों की कल्पना करते हैं जो मर गए हैं। ठीक इसी तरह, हम संतों की प्रतिमाओं का सम्मान करते हैं – देवताओं के रूप में नहीं (भगवान न करे!), – बल्कि ईश्वर के सेवकों के प्रतिनिधित्व के रूप में, जो अपनी ही प्रतिमाओं के माध्यम से चमत्कार करते हैं; आपने स्वयं, पवित्र शहीद की प्रतिमा पर तीर चलाने की हिम्मत करने के बाद, दूसरों की शिक्षा और निर्माण के लिए उनकी शक्ति का अनुभव किया है।

यह सुनकर, सारसेन ने कहा:

'तो अब मुझे क्या करना चाहिए? आप देख सकते हैं कि मेरा हाथ भयानक रूप से सूज गया है; मैं असहनीय पीड़ा सह रहा हूँ और मृत्यु के कगार पर हूँ।'

पुरोहित ने उससे कहा:

'यदि तुम जीवित रहना और ठीक होना चाहते हो, तो महान शहीद संत जॉर्ज की प्रतिमा अपने पास मंगवाओ, उसे अपने बिस्तर के ऊपर रखो, प्रतिमा के सामने तेल का एक दीपक जलाओ और उसे सारी रात जलते रहने दो; और सुबह, अपने दुखी हाथ पर दीपक का तेल लगाओ, यह दृढ़ विश्वास रखते हुए कि तुम ठीक हो जाओगे – और तुम ठीक हो जाओगे।

उस सारसेन ने तुरंत पुरोहति से सेंट जॉर्ज की प्रतमिा लाने के लिए कहा और, उसे खुशी से प्राप्त कर, उसने वैसा ही कयिा जैसा पुरोहति ने उसे नरि्देश दयिा था। सुबह, उसने अपने हाथ पर दीपक के तेल से अभषिेक कयिा, और तुरंत ही उसके हाथ का दर्द खत्म हो गया, और उसका हाथ स्वस्थ हो गया।

इस चमत्कार से चकति और हैरान होकर, सारसेन ने पुरोहति से पूछा कि क्या उनकी कतिाबों में सेंट जॉर्ज के बारे में कुछ लखिा है।

पुरोहति ने उसे संत के जीवन और कष्टों का वृत्तांत लाकर दयिा और उसे उस सरासेन को पढ़कर सुनाने लगा। सरासेन, ध्यान से पढ़ी जा रही बातें सुनते हुए, पूरे समय शहीद की प्रतमिा को अपने हाथों में थामे रहा और प्रतमिा में चत्रिति संत को जैसे कोई जीवति व्यक्ति हो, संबोधति करते हुए आँसुओं के साथ बोला:

'हे संत जॉर्ज! आप जवान लेकनि बुद्धमिान थे, जबकि मैं बूढ़ा लेकनि मूर्ख हूँ! आपने अपनी जवानी में ही ईश्वर को प्रसन्न कयिा, जबकि मैं बुढ़ापे तक जीवति रहा और फरि भी सच्चे ईश्वर को नहीं जानता! अपने ईश्वर से मेरी भी प्रार्थना करें, कि वह मुझे भी अपना सेवक बनने का वरदान दे!'

तब, पुरोहति के पैरों पर गरिकर, उस सारसेन ने उससे पवत्रि बपतस्मिा का संस्कार प्रदान करने की वनिती करनी शुरू कर दी।

पहले तो पादरी ने इनकार कर दयिा, क्योंकि वह उस सरासेन से डरता था। लेकनि उसकी आस्था देखकर और उसकी वनितयिों का वरिोध न कर पाने के कारण, उसने उस रात उसे गुप्त रूप से, सरासेनों से छपिाकर बपतस्मिा दे दयिा।

जब सुबह हुई, तो नव-बपतस्मिा प्राप्त सरासेन अपने घर से नकिल गया और नगर के बीच में, सबके सामने खड़ा होकर, बड़े उत्साह और ऊँचे स्वर में सरासेन धर्म को कोसते हुए, सच्चे ईश्वर, मसीह का उपदेश देने लगा। तुरंत ही, एक बड़ी संख्या में सारासनिों ने उसे घेर लयिा: क्रोध और आक्रोश से भरकर, वे जंगली जानवरों की तरह उस पर टूट पड़े और उसे अपनी तलवारों से टुकड़े-टुकड़े कर दयिा।

इस प्रकार, इतने कम समय में, उस सरासेन ने मसीह के लिए गवाही का एक उत्कृष्ट कार्य कयिा और महान शहीद सेंट जॉर्ज की प्रार्थनाओं के माध्यम से शहीद का मुकुट प्राप्त कयिा।

मटिलिनि द्वीप पर[3194] एक महान और गौरवशाली चर्च था, जो महान शहीद संत जॉर्ज के सम्मान में बनाया गया था। इस द्वीप के नविासयिों की एक धार्मकि प्रथा थी: पवत्रि शहीद के पर्व के दनि, वे सेंट जॉर्ज के सामूहकि और गंभीर उत्सव के लिए इस चर्च में इकट्ठा होते थे। एगारयिनों[3195] , जो क्रीट द्वीप[3196] पर रहते थे, को इस बात की जानकारी मलिी और एक शाम उन्होंने उस स्थान पर हमला कर दयिा। जो ईसाई चर्च के बाहर थे, वे एगारयिों से बच नकिले; हालाँकि, जो अंदर थे, उन्हें एगारयिों ने पकड़ लयिा और बंदी बना लयिा। बाद वालों में एक युवा ईसाई युवक भी था जसिे बंदी बनाकर, क्रीट द्वीप ले जाया गया, और एगारयिों के सरदार की सेवा में रख दयिा गया।

हालाँकि उन्होंने अपने बेटे को खो दयिा था, फरि भी लड़के के माता-पति ने अपनी धार्मकि परंपरा नहीं छोड़ी: जब पवत्रि शहीद की स्मृति में वार्षकि उत्सव का दनि आया, तो वे पवत्रि शहीद से प्रार्थना करने के लिए चर्च गए, और बाद में सेंट जॉर्ज के सम्मान और स्मृति में अपने घर पर एक भोज का आयोजन कयिा। जैसे ही मेहमान दावत के लिए इकट्ठा होने लगे, बंदी युवक की माँ चर्च गईं (जो उनके घर से बहुत दूर नहीं था), वहाँ आँसुओं में घुटनों के बल गरि पड़ीं, और संत से वनिती की कि वे अपने बेटे को कसिी भी ऐसे तरीके से बंदी जीवन से मुक्त करा दें जो स्वयं संत को उचति लगे। उनकी प्रार्थना स्वीकार हो गई। जब उसने अपनी प्रार्थना समाप्त की और दावत के लिए मेहमानों के पास लौटी, ठीक उसी समय जब उसका पति, पवत्रि महान शहीद, संत जॉर्ज का प्रार्थनापूर्वक आह्वान करने और उन्हें एक सहायक तथा मध्यस्थ के रूप में प्रशंसा करने के बाद, मेहमानों का सम्मान करने ही वाला था और प्याला उठाने वाले पहले से ही

[3194] माइटलिनि द्वीप भूमध्य सागर के उत्तरी भाग में स्थति था।

[3195] अगारीय सरैसेनों के समान ही हैं। 'अगारीय' नाम मूल रूप से अरब के बेदुइनों के एक खानाबदोश जनजाति को संदर्भति करता था, जो परंपरा के अनुसार, अब्राहम की दासी हागर की संतान थे। हालाँकि, बाद में ईसाई लेखकों ने इस शब्द को सामान्य रूप से सभी अरबों, साथ ही मुसलमानों पर भी लागू कर दयिा।

[3196] क्रीट भूमध्य सागर के सबसे बड़े द्वीपों में से एक है; यह ग्रीस के दक्षणि में, भूमध्य सागर के पूर्वी भाग में स्थति है। ईसा पूर्व 1000 में, ग्रीस के बसने वालों ने वहाँ अपनी बस्ती बसाई। ईस्वी 70 के दशक में, क्रीट रोमन शासन के अधीन आ गया। ईस्वी 650 के बाद से, क्रीट को सारासेनों के हमलों से बहुत नुकसान हुआ, जनिहोंने 823 में द्वीप पर नयिंत्रण कर लयिा। वर्तमान में, क्रीट यूनानी शाही परविार के अस्थायी प्रशासन के अधीन है (यूरोपीय शक्तयिों की देखरेख में)।

तैयार खड़े थे, – अचानक, ठीक उसी क्षण, संत जॉर्ज ने उस युवक को उसके कैदखाने से निकाल लिया और उसके माता-पिता के घर ले आए; युवक के हाथ में शराब का एक पात्र था, जिसे उसने अपनी माँ को अर्पित किया। ऐसा हुआ कि ठीक उसी क्षण, क्रीट में रहते हुए, वह युवक अगारियों के मुखिया की सेवा कर रहा था जब वह भोजन कर रहा था, और उसने अभी-अभी उसके लिए कुछ शराब डालने की तैयारी की थी, जब अचानक, प्राचीन अबकूक की तरह, उसे हवा में उठा लिया गया और शराब से भरे एक पात्र के साथ माइटलिनि द्वीप पर ले जाया गया। मेज़ पर बैठे सभी लोग, उस युवक को देखकर बहुत हैरान हो गए, और उन्होंने एक स्वर में उससे पूछा:

'तुम कहाँ थे, कहाँ से आए हो, और तुम यहाँ कैसे पहुँचे?'

उसने उनसे उत्तर दिया:

मैंने यह पात्र अपने अधिकारी को भेंट करने के लिए शराब से भर दिया था। लेकिन उसी क्षण मुझे एक घोड़े पर बैठे एक कुलीन व्यक्ति ने अचानक उठा लिया, जिसने मुझे भी एक घोड़े पर बिठा दिया। मैंने एक हाथ से इस आदमी की कमर पकड़ रखी थी, और दूसरे हाथ में मैंने इसी शराब का पात्र पकड़ रखा था, और फिर मैं यहाँ आ गया, जैसा कि आप खुद देख सकते हैं।

यह सुनकर, सभी ऐसे शानदार चमत्कार पर चकित रह गए और, मेज़ से उठकर, ईश्वर और उनके सेवक, महान शहीद संत जॉर्ज को धन्यवाद दिया।

भिक्षु कोस्मा ने भी इसी प्रकार का एक चमत्कार सुनाया:

'ग्रीक ज़ार बेसिल[3197] के शासनकाल में (उस समय मैं अभी भी जवान था), मेरे वरिष्ठ, वोइवोड जिनकी सेवा में मैं था, उन्हें ज़ार द्वारा साइप्रस द्वीप[3198] भेजा गया था। यहाँ पहुँचने पर, हमने उनके नाम के सम्मान और महिमा में निर्मित चर्च में, उनके पर्व के दिन, महान शहीद संत जॉर्ज द्वारा किए गए एक चमत्कार की कथा सुनी, जो इस प्रकार है: उस चर्च में सेवा करने वाले पुरोहित का पुत्र सरासनों द्वारा बंदी बना लिया गया था, लेकिन अब – सेंट जॉर्ज के पर्व के दिन – वह अपने पिता के पास था, जब लिटिर्जी मनाई जा रही थी। वॉयवोड ने उपर्युक्त पुरोहित और उसके पुत्र को बुलाया, और बाद वाले से पूछा:

'तुम सरासनों से कैसे बचकर आए?'

फिर उस युवक ने निम्नलिखित बातें बताईं:

'ईश्वर को यह उचित लगा कि संत जॉर्ज मुझे मुक्त करें। मुझे स्वयं नहीं पता कि मैं यहाँ कैसे आया; मैं केवल इतना जानता हूँ कि मैं पहले ही तीन साल से कैद में था।' एक दिन मेरे पिता ने मुझे कुछ साथियों के साथ खरीदारी करने के लिए एक जहाज पर भेजा। लेकिन सराकनों ने हम पर हमला किया, हम सबको बंदी बना लिया, और मुझे फिलिस्तीन ले गए (उस समय यरूशलेम और पूरा फिलिस्तीन पहले से ही सराकनों के हाथ में था)। युवा ने अपनी बात जारी रखते हुए कहा, 'यहाँ मैंने तीन साल तक अपने मालिक की सेवा की; आज अठारहवाँ दिन है जब मेरे मालिक ने मुझे स्नानघर में अपना बिस्तर लाने का आदेश दिया था, ताकि वह वहाँ स्नान कर सके। जब उसने स्नान कर लिया, तो उसने मुझसे कहा:

'क्या तुमने मेरे लिए एक पेय नहीं लाया है जिसे मैं पी सकूँ?'

' जिस पर मैंने उत्तर दिया (युवक ने जारी रखा):

'नहीं, मैंने नहीं लाया, मेरे मालिक।'

वह मुझे मारने ही वाला था, लेकिन मैं उसके हाथों से बच निकला, अपनी मालकिन के घर गया, उसके पास से पीने का पात्र ले आया, और अपने मालिक के पास स्नानागार वापस आ ही रहा था। जिस सड़क पर मैं चल रहा था, वह एक ईसाई चर्च के पास से गुज़रती थी, जहाँ उसी समय दैवीय अनुष्ठान (Divine Liturgy) मनाया जा रहा था। मैंने संत जॉर्ज के लिए कोंटाकियन (kontakion) गाया जा रहा सुना: 'हे परमेश्वर द्वारा संवर्धित, तुम प्रकट हुए हो।' इस भजन ने मुझे रुला दिया, और मैंने अपने हृदय की गहराई से कहा:

'हे महान शहीद सेंट जॉर्ज! क्या मेरे पिता की आहें ईश्वर या आप तक नहीं पहुँचीं? क्या आप सचमुच उनके आँसुओं को ठुकरा देंगे, जो वे आपके नाम से समर्पित चर्च में मेरे लिए विनती करते हुए बहाते हैं, कि आप मुझे इस कैद से बचाएँ और इस बंधन से मुक्त करें?'

[3197] बेसिल प्रथम (मैसेडोनियाई) ने 867 से 886 तक शासन किया।

[3198] साइप्रस – भूमध्य सागर के उत्तर-पूर्वी कोने में स्थित है।

यह कहकर मैं स्नानागार गया। मेरे स्वामी ने मेरी आँखों में आँसू देखे और गुस्से में मुझे डाँटने लगे और कहा:

'मुझे भी उस शराब में से थोड़ी डाल दो।'

मैंने वह पेय एक पात्र में डाला। फिर मेरे स्वामी ने मुझसे कहा:

'थोड़ा और डालो।'

जब मैं उस पात्र से शराब ढालने के लिए उसे उठाया, तो मुझे ऐसा लगा कि मैं अपने मालकि को धुंधला-सा देखने लगा हूँ। मैं चिल्लाया:

'मेरे स्वामी, मैं देख नहीं पा रहा हूँ!'

उसी क्षण, किसी शक्ति ने मुझे ज़मीन से उठा लिया, और इसलिए मैं अब यह नहीं सुन सकता था कि मेरा स्वामी मुझसे क्या कह रहा था, लेकिन मैंने इन शब्दों को गाया हुआ सुना: 'एक पवित्र है, एक प्रभु यीशु मसीह है, परमपिता परमेश्वर की महिमा के लिए।' आमीन।' तुरंत ही मैं खुद को वेदी पर पाया; मैंने अपने पिता को भी देखा, जो अपने हाथों में पवित्र प्याला थामे हुए चर्च के सेवकों से कह रहे थे:

'उसे पीने का पात्र दो।'

अपने पिता के बगल में खड़े होकर, मैं अपने हाथों में पकड़े पेय को पवित्र प्याले में डालने ही वाला था, क्योंकि ठीक उसी क्षण जब मैं स्नानागार में था और सारसेन के बगल में खड़ा था, अपने हाथ में पेय का पात्र पकड़े हुए था - उसी क्षण मैं अचानक खुद को वेदी के पास अपने पिता के पास पाया, जो धर्मविधि का अनुष्ठान कर रहे थे। मेरे पिता ने मुझे देखकर अपने साथी पुरोहितों से पूछा:

'यह युवक कौन है?'

उन्होंने आश्चर्य से उत्तर दिया:

'हम नहीं जानते कि वह कौन है या कहाँ से आया है,' क्योंकि मैंने अपना सिर मुंडवा रखा था और मैं सरैसेन (Saracen) का कपड़ा पहने हुए था। फिर मैंने अपने पिता से कहा:

'पिताजी! क्या आप मुझे नहीं पहचानते? मैं फिलोथियस हूँ – आपका बेटा।'

तब मेरे पिता ने मुझसे कहा:

'और तुम्हारे हाथों में यह पात्र क्या है, और इसमें क्या है?'

मैंने उत्तर दिया:

'यह एक सारासेन का पेय है। अभी कुछ ही क्षण पहले मैं यरूशलेम के पास एक स्नानागार में अपने स्वामी के साथ था, और जैसे ही मैं उन्हें यह पेय देने वाला था, मैं अचानक खुद को यहाँ आपके बगल में इस मंदिर में पाया।'

यह सुनकर मेरे पिता बहुत घबरा गए और उनके हाथों से पवित्र प्याला लगभग गिर ही पड़ा। उसी क्षण, मैंने पेय से भरा पात्र छोड़ दिया और अपने पिता के हाथों को सहारा देते हुए उनसे कहा:

'पिताजी, परेशान न हों, बल्कि पूजा समाप्त करें।'

तब मेरे पिता ने पवित्र मेज़ पर प्याला रखकर, स्वर्ग की ओर अपने हाथ उठाए और ईश्वर तथा उनके पवित्र सेवक जॉर्ज का धन्यवाद किया। जहाँ तक उस पात्र का सवाल है जिसे मैं संगमरमर के फर्श पर गिरा बैठा था, वह टूटा नहीं।

सेवा समाप्त करने के बाद, मेरे पिता ने मुझे गले लगाया और आँसुओं से मेरी आँखों पर चुंबन किया; फिर हम घर चले गए।

हमारे सभी रिश्तेदार और दोस्त, मेरे साथ जो कुछ भी हुआ था वह सुनकर, हमारे घर इकट्ठा हुए और मुझे देखकर, उन्होंने खुशी मनाई और ईश्वर तथा उनके संत, संत जॉर्ज की महिमा की, जिन्होंने मुझे पलक झपकते ही सारासेनों से मुक्त कर दिया था।

गवर्नर और उसके साथ मौजूद सभी लोगों ने, पुजारी के बेटे से यह वृत्तांत सुनकर, ईश्वर और संत जॉर्ज की स्तुति की; फिर, उस युवक और उसके पिता को उदार उपहार देकर, उन्होंने उसे सम्मानपूर्वक विदा किया।

महान शहीद सेंट जॉर्ज के एक अन्य समान चमत्कार के बारे में भी यह वर्णित है।

[3199]पाफ्लागोनिया के एमास्ट्रिस नगर में, लेओन्टियस और थियोफाना नामक एक धर्मनिष्ठ दंपति रहते थे। दोनों को महा-शहीद संत जॉर्ज में अटूट श्रद्धा थी और वे अक्सर उनके नाम से समर्पित चर्च में जाते थे, जो उनके घर से अधिक दूर नहीं, पार्टेनियोस नामक नदी के पास स्थित था। (चर्च का उपनाम नदी के नाम पर 'पार्टेनी' रखा गया था)। संत के प्रति अपने प्रेम के कारण, इस भक्तिपूर्ण दंपति ने अपनी साधनों से उपहार देकर चर्च को सजाया, और इस पवित्र शहीद को अपनी सभी संपत्तियों के रक्षक और प्रदाता के रूप में मानते थे। हर साल, ये धर्मनिष्ठ ईसाई पवित्र शहीद की स्मृति को निष्ठा और श्रद्धा के साथ सम्मानित करते थे; इस दिन, वे गरीबों को उदारतापूर्वक दान देते थे और बेसहारा और ज़रूरतमंदों के साथ-साथ अपने रिश्तेदारों और दोस्तों के लिए एक दावत का आयोजन करते थे। उनका एक बेटा था जिसका नाम जॉर्ज था; हमेशा पवित्र शहीद को अपने विचारों में रखते हुए, उन्होंने अपने बेटे का नाम भी जॉर्ज रखा।

उस समय, सम्राट लियो द वाइज़ के पुत्र कांस्टेंटिन सप्तम[3200] – ग्रीकों पर शासन कर रहे थे। फिर बुल्गारियाई लोगों और ग्रीकों के बीच युद्ध छिड़ गया; बुल्गारियाई लोगों ने हंगरी और सीथियनों के साथ गठबंधन बनाकर, ग्रीक क्षेत्रों में घुस आए और उन्हें तबाह कर दिया, तथा निवासियों को बंदी बना लिया; इसी कारण, ग्रीकों को भी युद्ध और के लिए तैयारी करनी पड़ी। और चूंकि लियोन्टियस - पफ्लागोनिया के अमास्ट्रिस शहर का निवासी - एक सैनिक था, इसलिए उसे भी बुल्गारों के खिलाफ युद्ध में जाना पड़ा। लेकिन यह देखते हुए कि लियोन्टियस की उम्र पहले से ही अधिक थी, जबकि उनका बेटा, जॉर्ज, अभी भी एक जवान आदमी था, उन्होंने अपनी जगह पर अपने बेटे को सेना में भेजने का फैसला किया। उसे अपने साथ लेकर, लियोन्टियस और थियोफाना सबसे पहले उसके साथ उपर्युक्त चर्च में गए और वहाँ महान शहीद की प्रतिमा के सामने प्रार्थना करते हुए, इस प्रकार बोले:

'हे पवित्र महान शहीद जॉर्ज, हम अपने एकलौते पुत्र को आपके हवाले करते हैं, जिसे हमने आपके प्रति प्रेम के कारण आपका नाम दिया है!' उनकी यात्रा में उनका मार्गदर्शक, युद्ध में उनका रक्षक बनें, और उन्हें जीवित और कुशल होकर हमसे मिलाएँ, ताकि हम अपनी आस्था के माध्यम से आपका आशीर्वाद प्राप्त कर, अनेक पुण्य कार्यों द्वारा हम सदा आपके प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त कर सकें।

इस प्रकार प्रार्थना करने के बाद, उन्होंने अपने बेटे को यूनानी सेना में शामिल होने के लिए भेज दिया।

तब युद्ध शुरू हुआ। पहले तो यूनानी बुल्गारियाईयों पर हावी रहे, लेकिन बाद में बुल्गारियाईयों ने अपनी ताकत जुटाकर, ईश्वर की अनुमति से, यूनानियों को हराना शुरू कर दिया। दुश्मनों के बीच एक निर्णायक युद्ध हुआ, जिसमें बहुत सारे यूनानी अपने दुश्मनों की तलवार से मारे गए।

उस समय, लियोन्टियस के पुत्र जॉर्ज को एक बुल्गारियाई ने बंदी बना लिया और संत जॉर्ज की प्रार्थनाओं के कारण, उसे मृत्यु से बचा लिया गया; क्योंकि, उसकी जवानी और चेहरे की सुंदरता पर दया करके, उस बुल्गारियाई ने जॉर्ज को मौत से बचा लिया और उसे अपनी भूमि पर ले गया, जहाँ जॉर्ज ने अपने स्वामी की दास के रूप में सेवा की।

लियोन्टियस और थियोफाना ने, यह सुनकर कि ग्रीक सेना बुल्गारियाई लोगों से पराजित हो गई थी, और यह देखकर कि उनका बेटा वापस नहीं आ रहा था, इस सोच में कि उनका बेटा युद्ध के मैदान में मारा गया है, वे अत्यंत दुख के साथ रोए और विलाप करने लगे। उपर्युक्त चर्च में पहुँचने पर, उन्होंने पवित्र महान शहीद की प्रतिमा से इन शब्दों में संबोधित किया:

'हे मसीह के शहीद, क्या इसी लिए हमने अपने बेटे को तुम्हारे हवाले किया था—ताकि वह आकाश के पक्षियों और पृथ्वी के जानवरों का भोजन बन जाए? क्या इसी तरह तुम हमारी रोज़ की प्रार्थनाओं और आहों को सुनते हो? यदि तुमने हम पर, जो अब वृद्धावस्था में पहुँच चुके हैं, दया नहीं की है, तो कम से कम उस लड़के के खिलते हुए यौवन पर दया करो। तो फिर हे ईश्वर के पुरुष, आपने हमारी विनम्रता को क्यों ठुकरा दिया?

बुज़ुर्गों ने ये और इस तरह के अन्य शब्द बड़े विलाप और अनेक आँसुओं के साथ कहे, जिससे उस गिरिजाघर में मौजूद सभी लोग अपने आँसू नहीं रोक सके। विशेष रूप से लड़के की माँ, हर दिन बिना रुके रोती थी।

ग्रीकों पर बुल्गारियाई लोगों की उपर्युक्त विजय अगस्त महीने में हुई थी। जब पतझड़ और सर्दियाँ बीत गईं, तो अप्रैल का महीना आ गया और महान शहीद संत जॉर्ज का पर्व निकट आ गया। लियोन्टियस और उनकी पत्नी, यद्यपि वे पहले ही अपने बेटे की जान की निराशा कर चुके थे, यह सोचकर कि वह युद्ध के मैदान में मारा गया है, फिर भी उन्होंने

[3199] एशिया माइनर का क्षेत्र।

[3200] लियो VI द वाइज़ के पुत्र, कॉन्स्टेंटिन VII पोर्फ्योरोजेनिटिस ने 912 से 969 तक शासन किया।

पवत्रि शहीद के प्रतअिपनी भक्तनिहीं भूली और, अपनी परंपरा के अनुसार, उनके पर्व के दनि के लिए एक शानदार दावत तैयार की।

जब चर्च की प्रार्थना सभा समाप्त हो गई, तो लयिोन्टयिस और थयिोफ़ाना ने अपने घर पर कई मेहमानों को आमंत्रति कयिा - रश्तिेदार, परचिति, भखिारी और गरीब। भोजन के दौरान, मेहमान लगातार केवल लयिोन्टयिस और थयिोफ़ाना के बेटे जॉर्ज के बारे में ही बात कर रहे थे, जो युद्ध से वापस नहीं आया था। उस युवक के माता-पतिा लगातार रो रहे थे, जबकमिेहमान उन्हें सांत्वना देने की कोशशि कर रहे थे, और वे वशिेष रूप से उसकी अत्यंत शोकाकुल माँ का ध्यान रख रहे थे।

इस बीच, जयिोर्ज, बंदी होने के दौरान, अपने मालकि के लिए रसोइए के रूप में अपने कर्तव्यों का पालन कर रहा था। उस दनि, भोजन तैयार करते हुए, उसने अपने माता-पतिा के घर, वहाँ हो रहे भोज, और अपने रश्तिेदारों, दोस्तों और परचितिों के बारे में सोचा; और अपने वचिारों में उसने मनना शुरू कयिा:

'यह जानना अच्छा होगा: आज मेरे माता-पतिा के घर दोपहर का भोजन कैसा होगा? दोपहर के भोजन के लिए कसिे बुलाया गया है? वे मेरे बारे में क्या सोचते हैं: क्या मैं जीवति हूँ, या मैं मर गया हूँ?'

यह सब सोचकर जॉर्ज फूट-फूट कर रो पड़ा।

इस बीच, उसके मालकि के रात के खाने का समय हो गया था, और जॉर्ज को खुद एक बर्तन में व्यंजन लेकर अपने मालकि के पास जाना था। जॉर्ज ने अपने आँसू पोंछे और, ओवन से गर्म बर्तन नकिालकर, उसे उठा लयिा। अचानक, उसे लगा मानो वह अपने माता-पतिा के घर में सभी मेहमानों के बीच खड़ा हो। क्या बड़ा चमत्कार था! जॉर्ज, लयिोन्तवि के बेटे को, गर्म बर्तन के साथ देखते ही वहाँ मौजूद सभी लोग बड़े भय से ग्रस्त हो गए; हालाँकउिसके माता-पतिा ने सोचा कवि अपने सामने एक भूत देख रहे हैं; फरि, यह महसूस करते हुए कयिह कोई भूत नहीं बल्कहिकीकत है, वे बड़ी खुशी से अपने बेटे की ओर दौड़े और, उसकी छाती से चपिककर, उसे गले लगाया और चूमा, और इतनी अप्रत्याशति और बड़ी खुशी से रो पड़े। जब उन्होंने जॉर्ज से पूछना शुरू कयिा – कवि कैसे बच गया, वह कहाँ था और वह वहाँ कैसे आया – तो उसने अपनी बंदी और उससे मुक्ति, दोनों का पूरा ववरिण दयिा। वशिेष रूप से, उसने नम्निलखिति कहा:

'बस अभी कुछ देर पहले, मैं अपने मालकि की रसोई में काम कर रहा था। मुझे आदेश दयिा गया था कमिैं इस बर्तन में खाना अपने मालकि के पास ले जाऊँ। बर्तन लेकर, मैं अपने मालकि से मलिने चल पड़ा, लेकनि जैसे ही मैं सीढ़ियाँ चढ़कर उस ऊपरी कमरे की ओर बढ़ा जहाँ मेरा मालकि भोजन कर रहा था, मैंने अचानक एक योद्धा को घोड़े पर बैठे देखा जो एक अकथनीय प्रकाश से दमक रहा था; उसने मुझे, इस पात्र के साथ, उठा लयिा और मुझे यहाँ आपके सामने रख दयिा—मुझे अब पता नहीं कैसे।

यह सुनकर, वहाँ मौजूद सभी लोग, और वशिेष रूप से जॉर्ज के माता-पतिा, ने ईश्वर और उनके पवत्रि सेवक, महान शहीद जॉर्ज, का हार्दकि धन्यवाद कयिा।

बाद में, जब सभी ने उस पात्र से खाना शुरू कयिा, तो एक नया चमत्कार हुआ: वे पात्र से जतिना भी भोजन नकिालते, उतना ही भर जाता; हालाँकपिात्र इतना छोटा था कउिसमें मौजूद भोजन एक व्यक्तभिी खा सकता था, खाने वाले बहुत सारे थे, फरि भी सभी ने तृप्त होकर खाया, ईश्वर की स्तुतकिरते हुए और कहते हुए:

'देखो, महा-शहीद संत जॉर्ज ने हमें अपनी पर्व के दनि के लिए बुल्गारयिाई लोगों से स्वादष्टि भोजन भेजा है!'

इसके बाद, उस पात्र को कई उपहारों और चढ़ावों के साथ, पवत्रि महान शहीद के चर्च में ले जाया गया और पवत्रि महान शहीद जॉर्ज द्वारा कए गए गौरवशाली चमत्कार की स्मृतकि रूप में, पवत्रि बर्तनो के बीच रख दयिा गया।

उपरोक्त संत जॉर्ज का चर्च बहुत पुराना था और इतनी खस्ता हालत में था कवि कसिी भी पल ढह सकता था; फरि भी, एक नया चर्च बनाने या उस जर्जर चर्च की मरम्मत करने वाला कोई नहीं था: क्योंक, स्थानीय नविासयिों की गरीबी के कारण, चर्च की उपेक्षा की गई थी। एक दनि, वहाँ एक चमत्कार हुआ।

कुछ बच्चे, इस चर्च के पास इकट्ठा होकर, वहाँ एक साथ खेल रहे थे, और वे एक लड़के का मज़ाक उड़ा रहे थे जसिे वे हमेशा खेलों में हरा देते थे। लगातार उपहास के कारण अपना धैर्य खोकर, वह लड़का सेंट जॉर्ज के चर्च की ओर मुड़ा और कहा:

'सेंट जॉर्ज! मेरे वरिोधयिों पर वजिय पाने में मेरी मदद करो; इसके एहसान में, मैं आपके चर्च में एक बड़ी पाई लाऊँगा।'

और सचमुच, उस लड़के ने खेलों में अपने साथयिों को हराया—सर्फि एक बार नहीं, बल्कदिो बार, और कई बार।

अपनी माँ के पास लौटकर, लड़के ने उसे बताया कि उसने संत को उपहार के रूप में एक पाई देने का वादा किया था, और उसने संत के प्रति अपना व्रत पूरा करने के लिए उससे एक पाई माँगी।

अपने बच्चे से प्यार और शहीद के सम्मान के लिए, उसकी माँ ने अपने बेटे की इच्छानुसार एक पाई बनाई, और उसे ठंडा होने का समय दिए बिना, गर्म-गर्म ही उसे दे दिया। लड़का पाई को चर्च ले गया और उसे वेदी के सामने रखकर झुककर चला गया।

संयोग से ठीक उसी समय चार व्यापारी चर्च के पास से गुज़र रहे थे। वे संत जॉर्ज को श्रद्धांजलि देने के लिए चर्च में दाखिल हुए और फर्श पर एक स्वादिष्ट पाई देखी (वह अभी ठंडी नहीं हुई थी और उससे सुगंधित भाप निकल रही थी)। व्यापारियों ने एक-दूसरे से कहा:

'संत को इसकी ज़रूरत नहीं है। चलो पाई खा लेते हैं और उसकी जगह कुछ धूप रख देते हैं।'

जब उन्होंने पाई खा ली, तो वे चर्च के बाहर निकलने के रास्ते की ओर बढ़े; लेकिन उन्हें दरवाज़ा नहीं मिला, क्योंकि वह उन्हें दीवार के रूप में दिखाई दिया। फिर उनमें से प्रत्येक ने फर्श पर एक चाँदी का सिक्का रखा, फिर भी वे बाहर का रास्ता नहीं ढूंढ सके। फिर वे सभी ने मिलकर वहाँ एक सोने का सिक्का रखा, और संत से बाहर निकलने का रास्ता खोजने में मदद करने के लिए बहुत प्रार्थना की; लेकिन इस बार भी वे बाहर का रास्ता नहीं ढूंढ सके, मानो वे अंधे हो गए हों। अंत में, चारों ने एक-एक सोने का सिक्का रखा और और भी अधिक श्रद्धा से प्रार्थना की, और फिर उन्हें बाहर का रास्ता मिल गया, क्योंकि उन्होंने चर्च के दरवाज़े खुले पाए और उन से होकर निकल गए।

इन सोने और चांदी के सिक्कों ने उस चर्च की मरम्मत के लिए आवश्यक धन के संग्रह की शुरुआत की, क्योंकि उस चमत्कार की खबर पूरे देश में फैल गई, और कई भक्तिपूर्ण लोगों ने स्वेच्छा से वहाँ सोना और चांदी लाए; इस धन से एक नया पत्थर का चर्च बनाया गया, जो अधिक विशाल, उपयुक्त रूप से सुसज्जित और दैवीय सेवा के लिए सभी आवश्यक साज-सामान से लैस था। उस चर्च में मसीह ईश्वर की महिमा और महान शहीद सेंट जॉर्ज की स्तुति में कई चमत्कार हुए।

[3201]वे संत जॉर्ज महान शहीद द्वारा एक ऐसे युवक पर किए गए निम्नलिखित चमत्कार का भी वर्णन करते हैं, जिसे एक घातक सांप ने काट लिया था। इस चमत्कार का वृत्तांत एक धर्मनिष्ठ तपस्वी, बाबा जॉर्ज द्वारा सुनाया गया था, जिनके सहायक के रूप में उनके नाम के ही एक संत थे - संत जॉर्ज।

'एक बार, जब मैं अपने हाथों में एक क्रॉस पकड़े पहाड़ पर चढ़ रहा था, तो मैं एक वृद्ध भिक्षु से मिला; मुझसे क्रॉस लेकर, वह मेरे आगे चल पड़ा। थोड़ी दूरी चलने के बाद, वह एक रास्ते पर मुड़ गया। मैं उसका अनुसरण करने लगा। जैसे ही मैं आगे बढ़ा, मैंने भेड़ों का एक झुंड और एक युवा गड़रिये लड़के को जमीन पर पड़ा हुआ देखा, जो सांप के काटने से मर रहा था। उस जगह के पास एक झरना था। बुजुर्ग ने मुझसे कहा:

'क्रॉस पर डालने के लिए कुछ पानी लाओ।'

फिर, कुछ पानी निकालकर और उस लड़के का मुँह खोलकर, हमने वह पानी—जो क्रॉस पर डाला गया था—उसके मुँह में डाल दिया; ऐसा करते ही, बुजुर्ग ने कहा:

'परम पवित्र त्रिमूर्ति के नाम पर, महान शहीद संत जॉर्ज आपको चंगा करें!'

आगे झुककर, लड़के ने घातक विष उगल दिया और खड़ा हो गया।

तब बूढ़े ने उससे कहा:

'मुझे बताओ, क्या तुमने कल उस गरीब विधवा से शपथ नहीं ली थी, जिसकी भेड़ें तुम्हें संभालने के लिए सौंपी गई थीं, लेकिन जिन्हें तुमने तीन चांदी के टुकड़ों के लिए बेच दिया था? क्या तुमने उससे नहीं कहा था: "भेड़ को भेड़िये ने खा लिया"?

लड़के ने उत्तर दिया:

'हाँ, पिताजी, वास्तव में ऐसा ही हुआ था। लेकिन आपको यह कैसे पता चला?'

वरिष्ठ ने उससे कहा:

'जब मैं अपनी कोठरी में बैठा था, तो एक सफेद घोड़े पर सवार एक आदमी मेरे पास आया और कहा:

[3201] अर्थात्, एक ही नाम का, जो बिल्कुल वही नाम रखता है।

'सोफ्रोनीयस, उठो और जल्दी से अपने दाहिने हाथ की ओर, दक्षिण में, झरने पर जाओ। वहाँ तुम्हें एक साँप के काटे हुए लड़के को मिलेगा, और तुम एक संन्यासी को भी देखोगे जिसके हाथ में लकड़ी से तराशा हुआ क्रूस होगा। उस क्रॉस को उठाओ, उस पर पानी डालो, और उन शब्दों को कहते हुए उस लड़के को वह पानी पिला दो: 'पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम पर, ईश्वर के सेवक, शहीद जॉर्ज, तुम्हें चंगा करते हैं।' फिर उस लड़के से कहो: 'अब कभी ईश्वर या उनके संतों के नाम की कसम मत लेना; किसी के प्रति अन्याय मत करना; और उस गरीब विधवा को उसकी भेड़ दे दो, नहीं तो तुम्हें इससे भी बुरा कुछ हो जाएगा।'

जब उस युवक ने यह वृद्ध से सुना, तो वह उनके पैरों पर गिर पड़ा और कहा:

'पिताजी, मुझे क्षमा करें, क्योंकि वास्तव में सब कुछ वैसा ही हुआ जैसा आप कह रहे हैं: मैंने उस विधवा का भेड़ तीन चाँदी के टुकड़ों में बेच दिया था, और कल मैंने उससे यह कहकर धोखा किया कि एक भेड़िये ने उसकी भेड़ खा ली थी। उस महिला ने मुझसे कहा, "क्या यह सच है, या नहीं?" और मैंने जवाब दिया, 'हाँ, मैं सच्चे ईश्वर को अपना गवाह बना सकता हूँ।' उस औरत ने मुझसे कहा, 'क्या तुम्हें नहीं पता कि मैं एक गरीब विधवा हूँ? तो फिर, जैसा तुम्हें ठीक लगे वैसा करो। लेकिन मेरी बात याद रखना: ईश्वर और सेंट जॉर्ज तुम्हें इसका हिसाब पूछेंगे, क्योंकि मैंने सेंट जॉर्ज के दिन उस भेड़ को गरीबों को देने का वादा किया था।' 'और मैं,' उस युवक ने कहा, 'चूंकि मैं भटक गया और पाप में पड़ गया, मैं आपसे विनती करता हूँ, फादर, कि आप मेरी ओर से ईश्वर और सेंट जॉर्ज से प्रार्थना करें, ताकि मेरा पाप क्षमा हो जाए।' और अब मैं उस महिला को संत जॉर्ज के दिन तीन बकरियाँ दूँगा, और अपने बाकी जीवन में, पवित्र शहीद के पर्व के दिन हर साल, मैं अपनी कमाई का दसवां हिस्सा गरीबों को दूँगा।"

इस प्रकार, चंगा हो जाने पर, उस युवक ने धन्य सोफ्रोनीयस से प्रार्थना और क्षमा याचना की और ईश्वर तथा उनके संत, पवित्र महान शहीद जॉर्ज का धन्यवाद करते हुए अपने कार्य पर लौट गया।

संत जॉर्ज महान शहीद द्वारा उनके पैतृक फिलिस्तीन के पास, सीरिया और फिनिसिया की भूमि में, भूमध्य सागर के तट पर स्थित बेरूत शहर[3202] में, एक साँप को मारने का गौरवशाली चमत्कार उल्लेख किए बिना नहीं रह सकता, जो लिड्डा शहर से बहुत दूर नहीं है, जहाँ पवित्र महान शहीद का शरीर दफनाया गया था। जिस स्थान पर यह चमत्कार हुआ, वह पलेस्टाइन में यात्रियों को दिखाया जाता है। इस चमत्कार का वर्णन करने वालों के अनुसार, यह निम्नलिखित परिस्थितियों में हुआ।

उपरोक्त बेरूत शहर के पास, लेबनानी पहाड़ों के समीप, एक बड़ी झील थी जिसमें एक सर्प रहता था – एक विनाशक, महान और भयानक। इस झील से निकलकर, वह सर्प कई लोगों को उठा लेता, उन्हें झील में खींच ले जाता और वहाँ उन्हें खा जाता। कई बार लोग हथियार लेकर इसके खिलाफ निकले, लेकिन हर बार साँप लोगों को पीछे हटने पर मजबूर कर देता था, क्योंकि शहर की दीवारों के पास पहुँचते ही वह अपनी घातक साँस से हवा को भर देता था, जिससे अकेले इसी से कई लोग बीमार पड़ जाते और मर जाते थे। इस वजह से, उस शहर में लगातार दुख, शोक, विलाप और बड़ा रोना-धोना रहता था। इस शहर में अविश्वासी—मूर्तिपूजक—रहते थे, और उनका राजा स्वयं भी वहीं रहता था।

एक दिन, उस नगर के निवासी एकत्रित हुए, अपने राजा के पास गए और उससे कहा:

'अब हम क्या करें, क्योंकि हम उस साँप के कारण नाश हो रहे हैं?'

उसने उनसे उत्तर दिया:

'मैं तुम्हें वह बताऊँगा जो देवता मुझे बताते हैं।'

तब राजा ने, मूर्तियों में रहने वाले राक्षसों—जो मानव आत्माओं के विनाशक थे—के निर्देश पर, यह आदेश उन पर जारी किया: यदि वे पूरी तरह से नष्ट नहीं होना चाहते, तो उन्हें हर दिन लॉटरी द्वारा चुने गए अपने बच्चों—चाहे बेटा हो या बेटी—को उस साँप के भोजन के रूप में अर्पित करना होगा। राजा ने आगे कहा:

'जब मेरी बारी आएगी, तो मैं भी—हालाँकि मेरी केवल एक ही बेटी है—उसे दे दूँगा।'

उस नगर के निवासियों ने इस सलाह को मान लिया—जो राजा की, या यूँ कहें कि राक्षसों की थी—और हर दिन, बड़े और छोटे सभी नागरिक अपनी संतान में से किसी एक को उस सर्प के खाने के लिए अर्पित करते थे, यद्यपि वे उनके लिए गहरा शोक मनाते और रोते थे। जिनकी बारी साँप द्वारा खाए जाने की होती थी, उन्हें झील के किनारे उनके सबसे अच्छे कपड़े पहनाकर बिठाया जाता; साँप, झील से निकलकर, उन्हें उठा लेता और खा जाता।

[3202] बेरूत (या बेरटिस) – प्राचीन काल में एक प्रमुख फिनिशियाई शहर था।

जब उस नगर के सभी लोगों की बारी आ गई, तो वे स्वयं राजा के पास गए और उससे कहा:

'हे राजा, देखो, आपकी सलाह और आदेश के अनुसार, हमने अपने बच्चों को साँप को दे दिया है। अब सभी की बारी आ चुकी है। तो अब आप हमें क्या आज्ञा देते हैं?'

राजा ने उनसे उत्तर दिया:

'मैं भी अपनी बेटी को दे दूँगा, भले ही वह मेरी इकलौती संतान हो। तब मैं तुम्हें बताऊँगा कि देवता हमें क्या बताते हैं।'

राजा ने अपनी बेटी को अपने पास बुलाया और उसे यथासंभव खूबसूरती से सजने का आदेश दिया; उसे उस पर बहुत दया आई और वह अपने पूरे परिवार के साथ उसके लिए रोया, लेकिन वह राक्षसों द्वारा बताई गई उस दैवीय-सी आज्ञा को किसी भी तरह तोड़ नहीं सकता था। जब वह अपनी बेटी को साँप के खाने के लिए भेजने की तैयारी कर रहा था, तो राजा अपने महल की ऊँचाइयों से उस पर नज़र गड़ाए रहा और आँसुओं से भरी आँखों से उसे विदा होते हुए देखता रहा।

इस बीच, उस युवती को झील के किनारे, अपनी सामान्य जगह पर बिठा दिया गया। जैसे ही वह अपनी मृत्यु के समय का इंतजार कर रही थी, जब साँप झील से निकलकर उसे खा जाएगा, वह जोर-जोर से रोने लगी।

ईश्वर की दिव्य व्यवस्था से, जो सभी का मोक्ष चाहता है और जिसने उस शहर को आध्यात्मिक और भौतिक विनाश से बचाने की कृपा की, ठीक उसी क्षण स्वर्गीय राजा का योद्धा, महान शहीद संत जॉर्ज, हाथ में भाला लिए घोड़े पर सवार होकर उस स्थान पर आ पहुँचे।

झील के किनारे खड़ी और जोर-जोर से रोती हुई कन्या को देखकर, उन्होंने उससे पूछा:

'तुम यहाँ क्यों खड़ी हो, और तुम क्यों रो रही हो?'

उसने उत्तर दिया:

'दयालु युवक! अपनी घोड़ी पर सवार होकर यहाँ से जल्दी चले जाओ, कहीं तुम भी मेरे साथ नष्ट न हो जाओ।'

संत ने उससे कहा:

'डरो मत, कन्या, पर मुझे बताओ, इन सभी लोगों के सामने जो तुम्हें देख रहे हैं, तुम किसका इंतज़ार कर रही हो?'

युवती ने उससे उत्तर दिया:

'अच्छे युवक! मैं देख सकता हूँ कि तुम साहसी और बहादुर हो। लेकिन तुम मेरे साथ क्यों मरना चाहते हो? तुरंत इस जगह से भाग जाओ!'

संत ने उससे कहा:

'नहीं, मैं तब तक इस जगह से नहीं जाऊँगा जब तक तुम मुझे यह न बता दो कि तुम यहाँ क्यों खड़ी हो, तुम क्यों रो रही हो, और किसका इंतज़ार कर रही हो।'

इसके बाद, युवती ने उसे क्रम से सब कुछ बताया, साँप के बारे में भी और अपने बारे में भी।

संत जॉर्ज ने उससे कहा:

'डरो मत, कन्या, क्योंकि मेरे प्रभु, सच्चे ईश्वर के नाम पर, मैं तुम्हें साँप से बचा लूँगा।'

उसने उत्तर दिया:

'हे पराक्रमी योद्धा! तुम मेरे साथ क्यों मरना चाहोगे? भाग जाओ और खुद को एक भयानक मृत्यु से बचा लो। यहाँ अकेले मेरी ही मृत्यु काफी है, खासकर जब तुम मुझे साँप से नहीं बचा पाएगा, और तुम खुद भी मर जाओगे।'

जब कुंवारी संत से ये बातें कर रही थी, तभी अचानक एक भयानक साँप झील से निकला और अपनी सामान्य शिकार की ओर बढ़ने लगा।

उसे देखकर, युवती ने ऊँचे स्वर में चिल्लाया:

'भागो, आदमी, साँप आ रहा है!'

हालाँकि, संत जॉर्ज ने क्रॉस का चिह्न बनाया और प्रभु का स्मरण करते हुए, यह कहते हुए, 'पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम पर', अपने घोड़े पर सवार होकर अपनी भाला लहराते हुए साँप पर धावा बोल दिया; और, साँप के गले पर बड़ी ताकत से वार करके, उसे गिरा दिया और जमीन पर पटक दिया; जबकि संत का घोड़ा साँप को पैरों तले कुचल रहा था। फिर संत जॉर्ज ने युवती को आज्ञा दी कि वह साँप को अपनी पट्टी से बाँधकर एक कुत्ते की तरह वश में करके शहर में ले जाए; जबकि लोग, युवती द्वारा ले जाए जा रहे साँप को देखकर हैरानी से भर गए और डरकर भाग गए। फिर संत जॉर्ज ने लोगों से कहा:

'डरो मत; बस प्रभु यीशु मसीह पर अपना भरोसा रखो और उन पर वशि्वास करो, क्योंकि उन्होंने ही मुझे तुम्हें साँप से बचाने के लिए भेजा है।'

तब संत जॉर्ज ने शहर के ठीक बीच में अपनी तलवार से उस सर्प को मार डाला। उस शहर के नविासयिों ने सर्प की लाश को शहर की दीवारों के बाहर खींचकर जला दयिा।

इसके बाद, उस शहर में रहने वाले राजा और लोगों ने प्रभु यीशु मसीह में वशि्वास करना शुरू कर दयिा और पवत्रि बपतस्मिा ग्रहण कयिा: महलिाओं और बच्चों को छोड़कर 25,000 लोगों का बपतस्मिा हुआ। बाद में उसी स्थान पर एक बहुत बड़ा और सुंदर चर्च बनाया गया, जो परम पवत्रि कुँवारी मरयिम को समर्पति था, स्वर्गीय राजा, परमेश्वर पति की पुत्री, उनके पुत्र की माता और पवत्रि आत्मा की वधू – और साथ ही वजियी संत जॉर्ज के सम्मान में, जो मसीह की कलीसयिा और हर ऑर्थोडॉक्स आत्मा को अपनी सहायता से नरक की खाई में अदृश्य भक्षक से, तथा पाप से – एक घातक साँप की तरह, बचाते हैं, – ठीक उसी प्रकार जैसे उन्होंने उपरोक्त कन्या को दृश्यमान साँप से मुक्त कराया था[3203]।

यहाँ एक नया चमत्कार भी हुआ। जब इस चर्च को परमेश्वर की परम पवत्रि माता और महा शहीद संत जॉर्ज के सम्मान में समर्पति कयिा गया, तो यहाँ प्रवाहति हुए दैवीय अनुग्रह के एक संकेत के रूप में, इस चर्च के वेदी से जीवन-दायी जल का एक स्रोत फूटा, जो स्वयं महमिा के राजा (जनिमें अनंत जीवन का स्रोत है) की महमिा के लिए, वशि्वास के साथ आने वाले सभी लोगों के हर रोग को ठीक करता है। त्रमिूर्तमिें ईश्वर, पति, पुत्र और पवत्रि आत्मा, अपने संतों में सदा-सदा स्तुतपिाते हैं। आमीन।

ट्रोपारयिन, स्वर 4:

हे बंदयिों के मुक्तदिाता और नरि्धनों के रक्षक, दुर्बल लोगों के चकित्सिक, राजाओं के संरक्षक, वजियी महान शहीद जॉर्ज, हमारे परमेश्वर मसीह से प्रार्थना करो कि हमारी आत्माओं का उद्धार हो।

और ट्रोपारयिन, उसी स्वर में:

हे मसीह के कष्ट-सहने वाले, तूने सत्कर्मों में परशि्रम कयिा, और अपने वशि्वास से अपने यातना देने वालों की दुष्टता का पर्दाफाश कयिा; और तूने स्वयं को परमेश्वर को भाता हुआ बलदिान अर्पति कयिा: इसलयि तुझे वजिय का मुकुट प्राप्त हुआ, और तेरी प्रार्थनाओं के द्वारा, हे पवत्रि एक, तू सभी को पापों की क्षमा प्रदान करता है।

कॉन्टाकयिन, स्वर 4:

ईश्वर द्वारा उत्थति, आप धर्म के सबसे सम्मानति कार्यकर्ता के रूप में प्रकट हुए, जनि्होंने अपने लिए सद्गुणों के फल एकत्र कए; क्योंकि आँसुओं से बोने पर, आप आनंद के साथ काटते हैं; और अपने रक्त के द्वारा पीड़ा सहने पर, आपने मसीह को प्राप्त कयिा; और आपकी प्रार्थनाओं के द्वारा, हे पवत्रि एक, आप सभी को पापों की क्षमा प्रदान करते हैं।

- उसी दनि, हम पवत्रि शहीद रानी अलेक्जेंड्रा और पवत्रि शहीदों अनातोलीयस और प्रोटोलेऑन का स्मरण करते हैं।

[3203] इस वविरण के आधार पर, महान शहीद सेंट जॉर्ज को अक्सर आइकन (चत्रिों) में एक सफेद घोड़े पर सवार एक घुड़सवार के रूप में दर्शाया जाता है, जो अपनी भाला से एक भयानक साँप को मार रहा है। वजिय के प्रतीक के रूप में, घोड़े पर सवार सेंट जॉर्ज की छवि को हमारे राष्ट्रीय प्रतीक (कोट ऑफ आर्म्स) में, साथ ही ऑर्थोडॉक्स योद्धाओं को उनके सैन्य कारनामों के लिए प्रदान कए जाने वाले पदक में भी शामलि कयिा गया है। – हमारे देश में महान शहीद संत जॉर्ज को चरवाहों और झुंडों के प्रमुख रक्षक के रूप में माना जाता है, इस आधार पर कि अपनी मृत्यु के बाद, वे बार-बार घोड़े पर सवार होकर अपने पड़ोसयिों की सहायता के लिए आए। इसलिए, सेंट जॉर्ज दविस पर—या, जैसा कि इसे आम तौर पर 'येगोर्येव दविस' के नाम से जाना जाता है—रूस के गांवों और बस्तयिों के धर्मपरायण नविासी आमतौर पर सर्दयिों के बाद पहली बार अपने पशुओं को चरागाह में ले जाते हैं, और साथ ही पवत्रि महान शहीद के लिए एक प्रार्थना सभा आयोजति करते हैं, जसिमें चरवाहों और झुंड पर पवत्रि जल छड़िका जाता है।

7 मई

24 अप्रैल (पुराना तरीका)

इस दिन हम गुफाओं के पूजनीय सव्वा का स्मरण करते हैं, जो सम्भवतः 13वीं शताब्दी की शुरुआत में रहते थे। उनके अवशेष संत एंथनी की गुफाओं में हैं।

हमारे पूजनीय पिता थॉमस द फूल फॉर क्राइस्ट की स्मृति।

24 अप्रैल को स्मरणोत्सव

संत थॉमस केसरिया के एक मठ में एक भिक्षु थे[3204] । उन्हें अपने मठ की जरूरतों के लिए भीख इकट्ठा करने का काम सौंपा गया था। इस उद्देश्य के लिए, उन्हें अंतीयक[3205] भेजा गया, जिसके पास मठ का एक गाँव था। जब भी वह वृद्ध शहर आते, तो वे पागल होने का नाटक करते थे। एक अवसर पर, अनास्तासियस नामक एक व्यक्ति, जो एक चर्च का व्यवस्थापक (निर्माता) था, ने उस धन्य व्यक्ति के गाल पर थप्पड़ मारा क्योंकि उस बूढ़े ने अपने मठ के लिए भीख माँगकर उसे नाराज़ कर दिया था। वहाँ मौजूद लोग इस बात पर अनास्तासियस से नाराज़ हो गए। लेकिन धन्य थॉमस, उनकी ओर मुड़कर, भविष्यवाणी की तरह बोले:

'इस क्षण से, मुझे अब अनास्तासियस से कुछ भी स्वीकार नहीं करना पड़ेगा, और न ही अनास्तासियस मुझे कुछ दे पाएगा।'

दोनों भविष्यवाणियाँ जल्द ही सच हुईं: अनास्तासियस की मृत्यु ठीक अगले दिन हो गई, जबकि धन्य थॉमस, शहर से मठ जाते समय, बीमार पड़ गए और सेंट यूफेमिया चर्च के पास, डाफ्ने उपनगर के एक अस्पताल में रुक गए, जहाँ, गंभीर रूप से बीमार पड़ने के बाद, उन्होंने परम जीवन में प्रवेश किया और उन्हें उस स्थान पर दफनाया गया जहाँ यात्रियों को सुलाया जाता था।

एक अवसर पर, एक मृत तीर्थयात्री महिला को यहाँ लाया गया और इस धन्य संत की ताबूत के ऊपर दफनाया गया; उसे दिन के दूसरे घंटे में दफनाया गया था, लेकिन छठे घंटे पर धरती ने उसे बाहर निकाल दिया – और इस पर सभी बहुत आश्चर्यचकित हुए। उस शाम, उसे उसी कब्र में फिर से दफनाया गया, लेकिन अगले दिन उन्होंने देखा कि उसे दूसरी बार कब्र से बाहर फेंक दिया गया था; इसलिए उन्होंने उसे एक दूसरे स्थान पर दफनाया।

कुछ दिनों बाद, बाबा थॉमस के पास एक और महिला को बिल्कुल उसी तरह दफनाया गया, क्योंकि उस जगह के निवासियों को यह एहसास नहीं था कि प्रभु में निद्रित हुए वह संत नहीं चाहते थे कि कोई महिला उनके पास दफनाई जाए। जब धरती ने इस महिला को भी बाहर उगल दिया, तो उन्हें एहसास हुआ कि किसी के भी उनके अवशेषों के पास दफनाया जाना संत को पसंद नहीं था।

पितृपिता डोमनस को[3206] की हुई सभी घटनाओं की सूचना दी गई। पितृपिता की आज्ञा से, सभी नागरिक मोमबत्तियाँ और भजन-कीर्तन लेकर डाफ्नी गए, संत के अवशेष ले आए, उन्हें सम्मानपूर्वक शहर वापस लाए, और उन्हें उस समाधि में रख दिया जहाँ कई पवित्र शहीदों के अवशेष विराजमान थे। संत की अवशेषों के ऊपर एक छोटा चर्च बनाया गया, और उनके पवित्र अवशेषों के माध्यम से पीड़ितों का बहुत सा उपचार हुआ। उनकी प्रार्थनाओं से, अंतीयक में प्लेग समाप्त हो गई, जिसके कारण अंतीयक के निवासियों ने मसीह परमेश्वर की महिमा करते हुए, उनकी स्मृति में एक वार्षिक उत्सव स्थापित किया, जिसकी महिमा युगानुयुग हो। आमेन।

[3204] केसरिया – एशिया माइनर के पूर्व में स्थित, कैपाडोसिया का प्रमुख शहर।

[3205] यह, बेशक, सीरिया के अंत्ज़ाओक (Antioch) को संदर्भित करता है, जो कभी सीरियाई राज्य की शानदार राजधानी थी, लेकिन अब एशियाई तुर्की में एक गरीब छोटा शहर है।

[3206] पैट्रिआर्क डोमनस ने 546 से 560 तक अंकोई के चर्च का शासन किया।

पवत्रि शहीद सावस स्ट्रैटलिट्स और उनके साथ सत्तर सैनकिों का स्मरणोत्सव

24 अप्रैल को स्मरणोत्सव

पवत्रि शहीद सावस गोथकि मूल के थे[3207] और सम्राट ऑरेलयिन के शासनकाल में रोम में रहते थे[3208] । वे स्ट्रैटलिट्स के पद पर थे, अर्थात्, वे एक सैन्य कमांडर थे, और वे स्वर्गीय राजा, हमारे प्रभु यीशु मसीह के प्रतविफादार और प्रयि थे। वे अक्सर मसीह के नाम के लएि जेल में पीड़ति लोगों से मलिने जाते थे, अपनी साधना से उनकी सहायता करते थे, उन्हें धैर्य से अपने दुख सहने के लएि प्रोत्साहति करते थे, और उन्हें वीरतापूर्ण कार्य करने के लएि प्रेरति करते थे। उनका सदाचारी जीवन ईश्वर को इतना प्रसन्न हुआ कि संत की पवत्रिता और तपस्या के कारण, उन्होंने उन्हें राक्षसों पर अधकिार प्रदान कयिा, और वह लोगों से अशुद्ध आत्माओं को भगाते थे।

जल्द ही राजा को यह सूचना मलिी कि संत साव्वा एक ईसाई थे, और उन्हें पूछताछ के लएि राजा के सामने लाया गया।

वहाँ उन्होंने नडिर होकर मसीह की गवाही दी और अपनी सैन्य कमरबंद खोलकर एक ओर फेंक दी, जसिसे उन्होंने एक सैन्य कमांडर के पद से त्यागपत्र दे दयिा और साथ ही मसीह के नाम के लएि कसिी भी यातना को सहने की अपनी तत्परता का प्रदर्शन कयिा।

तब, यातना देने वाले के आदेश पर, संत को फांसी दी गई और बुरी तरह पीटा गया, फरि आग लगा दी गई, और अंत में उबलते हुए गोंद के एक बर्तन में फेंक दयिा गया। लेकनि संत, ईश्वर की अदृश्य शक्ति द्वारा संरक्षति, अछूते रहे और बनिा कसिी चोट के बर्तन से बाहर नकिले।

यह चमत्कार देखकर, वहाँ मौजूद सत्तर सैनकि मसीह में वशि्वास करने लगे और उन्होंने ज़ोर से खुद को ईसाई होने की घोषणा की। तुरंत, यातना देने वाले के आदेश पर, उन्हें तलवार से सरि कलम कर दयिा गया और इस प्रकार उन्होंने, मानो, स्वयं मसीह के हाथों से शहीद का मुकुट प्राप्त कयिा।

हालाँकि संत सावस को कैद कर दयिा गया और उन्हें एक दव्यि दर्शन और सहायता प्राप्त हुई: जब वे आधी रात को प्रार्थना कर रहे थे, तो मसीह उन्हें दखिाई दएि, जन्होंने उन्हें अपनी महमिा के प्रकाश से प्रकाशति कयिा और उन्हें उत्पीड़न से न डरने, बल्कि नडिर होकर अपने कार्य को पूरा करने के लएि प्रोत्साहति कयिा। और जब सव्वास को दूसरी बार न्यायाधीशों के सामने लाया गया और मूर्तयिों की पूजा करने के लएि मजबूर कयिा गया —कभी चापलूसी से, कभी समझाने से, कभी क्रूर यातनाओं से—उसने अपने यातना देने वालों का कहना नहीं माना; जसिके पश्चात् उसे नदी में फेंक दयिा गया, जहाँ डूबकर, उसने अपना शहादत का कारनामा पूरा कयिा[3209] , और मसीह के राज्य में एक शांतपिूर्ण आश्रय प्राप्त कयिा।

ट्रोपारयिन, स्वर 5:

हे शहीद, सांसारकि पद और सम्मान के आभूषणों को त्यागकर, अपने अत्याचारी कपटी राजा के सामने, आपने मसीह को परमेश्वर के रूप में स्वीकार कयिा, और उनके लएि आपने अनेक कष्ट सहे, हे महमिामय। इस प्रकार आप राजाओं के राजा द्वारा स्वर्गीय सेनाओं से सुशोभति, महमिामय वजिय की माला से वभिूषति हुए। हे सव्वस, उनके समक्ष खड़े होकर प्रार्थना करें कि वे हमारी आत्माओं को बचाएँ।

[3207] गोथ एक जर्मनकि जनजाति थी जो मूल रूप से वस्तिुला नदी के कनिारे रहती थी और बाद में डेन्यूब नदी के कनिारे बस गई।

[3208] *ऑरेलयिन*, रोमन सम्राट, ने 270 से 275 तक शासन कयिा।

[3209] संत सावस का 272 में नधिन हो गया।

कॉन्टाकयिन, स्वर 4:

हे सेनापति, आपने स्वयं को अजेय साबति कयिा; आपने बर्बरों की साज़शिों पर वजिय प्राप्त की और दृढ़ता से पीड़ा सहते हुए, हे महमिामय, आपने अदृश्य शत्रुओं की भीड़ को पराजति कयिा, और इस प्रकार वजिय का मुकुट बुना। हे सर्व-धन्य सवास, आप हमारे लएि मसीह से प्रार्थना करें, हम जो वशि्वास के द्वारा आपका सम्मान करते हैं।

हमारी पूजनीय माता एलजिाबेथ चमत्कार-कर्त्री की स्मृति।

24 अप्रैल को स्मरणोत्सव

आदरणीय एलजिाबेथ को उनकी माँ के गर्भ से ही ईश्वर की सेवा के लएि चुना गया था, क्योंकि उनकी माँ के गर्भधारण से पहले ही ईश्वर द्वारा उन्हें यह बताया गया था कि वह एक बेटी को जन्म देंगी जो पवति्र आत्मा की एक चुनी हुई पात्र होगी। अपने युवा काल से ही ईश्वर की सेवा के लएि समर्पति और अमर वर, मसीह के साथ सगाईशुदा, संत एलजिाबेथ ने अन्य कुंवारी और ननों के बीच[3210] , स्वर्गदूतों के क्रम में ईश्वर की सेवा की, और उपवास तथा परशि्रम से अपने शरीर को थका दयिा, और इस प्रकार उन्होंने परमेश्वर को इतना प्रसन्न कयिा कि उन्हें उनसे लोगों के रोगों, न केवल शारीरकि बल्कि आध्यात्मकि रोगों को भी ठीक करने का वरदान मलिा। अपनी प्रार्थनाओं के द्वारा उन्होंने हर शारीरकि बीमारी को ठीक कयिा, जबकि अपने शब्दों और परमेश्वर-प्रेरति शकि्षाओं के द्वारा उन्होंने मानव आत्माओं को ठीक कयिा, उन्हें पश्चाताप और सभी प्रकार के सद्गुणों की ओर मार्गदर्शन कयिा। उनका एकमात्र वस्त्र बालों से बुना हुआ एक मोटा-ढाटा चोगा था, और यद्यपि उनका शरीर ठंड से कांपता था, उनकी आत्मा हमेशा दवि्य प्रेम की ज्वाला से जलती रहती थी।

बहनों की अधषि्ठात्री नयिुक्त होने पर, संत ने उनके आत्माओं के मोक्ष का ध्यान रखते हुए, और भी बड़े चमत्कार कएि।

उनका संयम अत्यधकि था, क्योंकि उन्होंने कई साल बनिा रोटी चखे बतिाए, केवल फल और सब्जयिों पर जीवन यापन कयिा; और अपने पूरे जीवन में उन्होंने न तो तेल का स्वाद चखा और न ही शराब का। अक्सर वह महान मूसा की तरह चालीस दनिों तक उपवास करती थीं, उस समय कुछ भी नहीं चखती थीं[3211] । तीन वर्षों तक, सुसमाचार के कर-संग्रहकर्ता की नम्रता का अनुकरण करते हुए (देखें लूका 18:13), उसने अपनी शारीरकि आँखें स्वर्ग की ओर नहीं उठाईं, बल्कि अपनी आत्मा की आँखों से वह हमेशा स्वर्ग में रहने वाले ईश्वर को नहिारती थी; और, मन में उन्हें सेराफमि से घरिे हुए एक ऊँचे और तेजस्वी सहिासन पर वरिाजमान मानकर ध्यान लगाते हुए, उसने अपने वचिारों को सांसारकि चीजों की ओर नहीं मोड़ा। जब, अपनी प्रथा के अनुसार, वह रात में अकेले प्रार्थना करती थी, तो स्वर्गीय प्रकाश से वह ऊपर से प्रकाशति हो उठी।

इसके अलावा, संत एलजिाबेथ ने कई चमत्कार कएि: एक अवसर पर उन्होंने अपनी प्रार्थनाओं से एक भयंकर सर्प को मार डाला; एक अन्य अवसर पर, उन्होंने एक महलिा को ठीक कयिा जो लंबे समय से रक्तस्राव से पीड़ति थी; उन्होंने लोगों से अशुद्ध आत्माओं को भी भगाया और कई अन्य चमत्कार कएि। ये चमत्कार उन्होंने न केवल अपने जीवनकाल में, बल्कि अपने धन्य नधिन के बाद भी कएि। उनके मकबरे पर पीड़तिों को हर प्रकार के रोगों से मुक्ति मलिी; उदाहरण के लएि, कई अंधों ने उनके मकबरे पर अपनी दृष्टि पुनःप्राप्त की। मसीह ईश्वर, जो अपने संतों में अद्भुत हैं, उनकी महमिा उनके द्वारा हो!

[3210] संत एलजिाबेथ कॉन्स्टेंटनिोपल के मठ में एक नन थीं, जसिे सम्राट जस्टनि प्रथम (जनिका शासनकाल 518 से 527 तक था) द्वारा संत कोस्मास और डेमयिन, द अनमरसेनरीज़ के सम्मान में बनाया गया था। बाद में वह इस मठ की प्रमुख बनीं। ऐतहिासकि स्रोतों में इस बारे में जानकारी की कमी के कारण, उनके जीवन और मंत्रालय की सटीक तारीखों को नरि्दषि्ट करना संभव नहीं है। हालाँकि, इस तथ्य के आधार पर कि 9वीं शताब्दी के दूसरे भाग में संत जोसेफ द हाइमोग्राफर (जनिकी मृत्यु 883 में हुई) द्वारा उनके सम्मान में एक कैनन रचति कयिा गया था, यह नषि्कर्ष नकिाला गया है कि संत एलजिाबेथ 6वीं और 9वीं शताब्दी के बीच रहती थीं।

[3211] जब मूसा सनिाई पर्वत पर थे, तब उन्होंने चालीस दनि और चालीस रातें उपवास कयिा, जहाँ परमेश्वर ने उन्हें दस आज्ञाएँ दीं (नरि्गमन 24:12–18)।

पवित्र शहीदों पासक्रिरैट और वैलेंटाइन की शहादत

24 अप्रैल को स्मरण किया जाता है

मसीह के शहीदों, पासक्रिरैट और वैलेंटाइन, मसिया के एक शहर रोडोस्टोल के मूल नविासी थे, और सैनकि होने के नाते, उन्होंने उस क्षेत्र के राज्यपाल, ऑसोलान के अधीन सेवा की। उस भूमि में कई मूर्तपिूजक थे जो राक्षसों को बलदिान देते थे, क्योंकि उस भूमि के शासकों ने लोगों को यातना की धमकी देकर मूर्तपिूजा करने के लिए मजबूर किया था। उस देश के ईसाई, यातनाओं के डर से भागकर छपि गए। हालाँकि, इन दो पवित्र पुरुषों ने खुले तौर पर और बहादुरी से खुद को ईसाई घोषति कर दिया और एक सच्चे परमेश्वर की महमिा करते हुए, नर्जिीव मूर्तयिों को शाप दिया। इसीलिए, उन्हें मूर्तपिूजकों ने पकड़ लिया और अदालत में पेश किया, जहाँ उन्हें मूर्तयिों के सामने धूप जलाने के लिए मजबूर किया गया। वहाँ अपोलो की मूर्ति खड़ी थी। संत पासक्रिरैट, मूर्ति के पास जाकर, उसके मुँह पर थूक दिया और कहा:

'इस देवता के लिए यह सम्मान उपयुक्त है!'

तुरंत, पसक्रिरैट को भारी बेड़यिों में जकड़कर एक कालकोठरी में डाल दिया गया। हालाँकि, मसीह के इस योद्धा ने, मानो ये बेड़यिाँ कसिी राजा के सुनहरे राजसी आभूषण हों, इन्हें धारण कर लिया और इस बात पर प्रसन्न हुआ कि उसे मसीह के लिए इन बेड़यिों को पहनने का योग्य समझा गया। वैलेंटाइन को भी उसके साथ कालकोठरी में कैद कर दिया गया। जल्द ही उन्हें हेगेमोन के सामने पेश होने के लिए एक बार फरि बुलाया गया। जब वे अदालत में उपस्थति हुए, तो पासक्रिराता का भाई, पापयिन, भी वहाँ आ गया। वह एक ईसाई था, लेकनि यातनाओं के डर से उसने मूर्तयिों को बलदिान चढ़ाया था। पापयिन ने आँसू भरी आँखों से अपने भाई से वनिती करना शुरू किया कि वह उसके उदाहरण का अनुसरण करे और मूर्ति को धूप अर्पति करे, ताकि थोड़े समय के लिए मूर्तपिूजक बनकर वह भयानक यातनाओं से बच सके; लेकनि पासक्रिरैट ने अपने भाई की वनिती को ठुकरा दिया और उसे मसीह के धर्म को त्यागने के कारण अपने कुल में गनिने के लायक नहीं ठहराया। वह स्वयं वेदी के पास गया और आग पर अपना हाथ रखकर राज्यपाल से कहा:

'शरीर नश्वर है और, जैसा कि आप स्वयं देख सकते हैं, आग में भस्म हो जाता है; लेकनि आत्मा, अमर होने के कारण, इन सभी दृश्यमान यातनाओं का तरिस्कार करती है।'

गवर्नर द्वारा मौके पर ही पूछताछ किए जाने पर संत वैलेंटाइन ने भी वही शब्द कहे और मसीह के लिए सभी यातनाओं को सहने की अपनी पूर्ण तत्परता व्यक्त की। दोनों को तलवार से सरि कलम करने की सज़ा सुनाई गई। जब यातना देने वाले के नौकर उन्हें मृत्यु के लिए शहर से बाहर ले जा रहे थे, तो पासक्रिरैट की माँ उनके पीछे-पीछे चली आईं और उन्हें नडिर होकर मृत्यु का सामना करने के लिए प्रोत्साहति कर रही थीं, उन्हें इस बात का डर था कि वह डर न जाए, क्योंकि वह बहुत छोटा था। पवित्र शहीदों का सरि कलम कर दिया गया। संत पासक्रिरैट की उम्र बाईस साल थी, और वैलेंटाइन की तीस साल। हालाँकि उसकी माँ ने उनके शरीरों को आनंद और प्रसन्नता के साथ प्राप्त किया और हमारे ईश्वर मसीह की महमिा करते हुए, उन्हें सम्मान के साथ दफनाया।

संत यूसेबियस, नयिोन, लयिोन्टयिस, लोंगनिस और उनके साथयिों की शहादत

24 अप्रैल को स्मरण किया जाता है

महान शहीद जॉर्ज की मृत्यु के तुरंत बाद, सम्राट डायोक्लेटयिन ने एक फरमान जारी किया जसिमें आदेश दिया गया कि सभी ईसाइयों को, चाहे वे कहीं भी हों, और वशिेष रूप से जो जेल में थे, उन्हें मूर्तयिों की पूजा करने के लिए मजबूर किया जाए; उन्होंने आदेश दिया कि जो इस फरमान का पालन करते हैं उन्हें आज़ाद कर दिया जाए, जबकि जो अवज्ञा करते हैं उन्हें मौत की सज़ा दी जाए।

आज स्मरण किए जाने वाले पवित्र शहीदों—यूसेबयिस, नयिोन, लयिोन्टयिस और लोंगनिस—उस समय '[3212] ' में बंद थे; उनके साथ लगभग चालीस ईसाई थे। संत जॉर्ज द्वारा किए गए चमत्कारों को देखकर, वे मसीह में वश्विास करने लगे और सभी के सामने नडिर होकर उनकी गवाही दी, जसिके लिए उन्हें गरिफ्तार कर जंजीरों में बंद कर दिया गया।

[3212] संभव है कि अब स्मरण किए जाने वाले पवित्र शहीदों—यूसेबयिस, नयिोन, लयिोन्टयिस और लोंगनिस—ने उस जेल में रक्षक के रूप में सेवा की हो जहाँ ईसाइयों को रखा गया था। हालांकि, यह संभव है कि वे सहानुभूति, प्रोत्साहन और भौतकि सहायता प्रदान करके ईसाइयों के दुख को कम करने के उद्देश्य से जेल में आगंतुक के रूप में आए थे।

जब उन्हें न्यायाधीश के सामने मुकदमे के लिए कालकोठरी से बाहर लाया गया, तो उन्होंने मसीह का परित्याग नहीं किया, बल्कि मूर्तिपूजक देवताओं को शर्मिंदा कर दिया। मसीह के नाम की उनकी साहसी स्वीकारोक्ति के लिए, उन्हें कई यातनाओं से गुजारा गया; अर्थात्, उनके यातना देने वालों ने उन्हें लटका दिया, पीटा और विभिन्न लोहे के औजारों से उनके शरीर को तब तक खुरचते रहे जब तक कि उनकी आंतें बाहर नहीं आ गईं। अंत में, पवित्र शहीदों का सिर कलम कर दिया गया और इस प्रकार उन्होंने स्वर्ग के राज्य में अपने मुकुट प्राप्त किए[3213] ।

- इसी दिन, हम गुफाओं के पूजनीय सव्वा का स्मरण करते हैं, जो सम्भवतः13वीं शताब्दी की शुरुआत में रहते थे। उनके अवशेष संत एंथनी की गुफाओं में रखे गए हैं।

8 मई

25 अप्रैल (पुराना संस्करण)

संत मार्क प्रेरित और सुसमाचार लेखक का जीवन और कष्ट।

25 अप्रैल को स्मरणोत्सव

यहूदी वंश के संत मार्क, लेवी के कुल से, पुरोहित वंश के थे, और शुरू में यरूशलेम में रहते थे। हिब्रू में, मार्क को जॉन कहा जाता था; उनका नाम 'मार्क' लैटिन है। उन्होंने यह नाम बाद में, किसी विदेशी भूमि के लिए निकलने से पहले, अपने हिब्रू नाम[3214] के साथ जोड़ा, जब वह प्रेरित पतरस के साथ उस समय की जानी-मानी दुनिया - रोम की राजधानी में सुसमाचार का प्रचार करने गए थे। ऑर्थोडॉक्स चर्च द्वारा स्वीकृत परंपरा के अनुसार, जो कुछ प्राचीन लेखकों[3215] की गवाही के अनुरूप है, वह प्रभु के सत्तर शिष्यों में से एक थे और, परिणामस्वरूप, प्रभु यीशु मसीह के जीवन की कुछ घटनाओं के स्वयं प्रत्यक्षदर्शी थे। स्वयं सुसमाचार लेखक मरकुस द्वारा, गेथ्सेमनी के बगीचे में हमारे प्रभु यीशु मसीह के विश्वासघात और उनकी मृत्यु के विवरण में[3216] , एक ऐसे जवान आदमी का उल्लेख है, जिसने, जबकि प्रभु के सभी शिष्यों ने उन्हें छोड़ दिया था, अकेले ही दिव्य बंदी का अनुसरण किया, जिसने अपने नग्न शरीर पर एक वस्त्र लपेट रखा था, लेकिन, सैनिकों द्वारा पकड़े जाने पर, उसने उनके हाथों में कपड़ा छोड़ दिया और नग्न ही उनसे भाग गया (मरकुस 14:51–52)। उस युवक के परिधान[3217] से यह संकेत मिलता है कि वह अचानक रात के उस हंगामे में प्रकट हुआ था, निस्संदेह उस घर से जहाँ वह बगीचा था। प्राचीन काल में ही एक परंपरा उभर आई कि यह युवक स्वयं मार्क था और गेथ्सेमनी का बगीचा उसी परिवार का था जिससे मार्क आता था। प्रेरितों के काम की पुस्तक गवाही देती है कि सुसमाचार लेखक मार्क की माँ – मरियम – का यरूशलेम में अपना घर था[3218] , जिसमें प्रेरित पतरस ने एक स्वर्गदूत द्वारा जेल से चमत्कारिक रूप से छूटने के बाद शरण ली (प्रेरितों के काम 12:1–12)। प्रभु के स्वर्ग आरोहण के बाद, ईसाइयों के उत्पीड़न के दौरान, यह घर कई विश्वासी यरूशलेमवासियों के लिए प्रार्थना सभाओं के स्थान और कुछ प्रेरितों के लिए शरणस्थली के रूप में काम करता था। इस प्रकार, अपनी माँ के घर में, संत मार्क को ईसाइयों के साथ निरंतर संगति में रहने, उनकी प्रार्थना सभाओं में भाग लेने और स्वयं प्रेरितों के करीब आने का अवसर मिला। उनका प्रेरित पतरस के साथ एक विशेष रूप से घनिष्ठ संबंध विकसित हुआ, जिन्होंने उनके प्रति एक प्रकार का पितृत्वपूर्ण प्रेम और स्नेह दिखाया, जैसा कि स्वयं प्रेरित पतरस के शब्दों से स्पष्ट है, जो अपनी पत्रिका में मरकुस को अपना पुत्र कहकर संबोधित करते हैं, कहते हुए: *'बाबेल में चुनी हुई कलीसिया तुम्हें नमस्कार भेजती है, और मेरा पुत्र मार्क भी नमस्कार भेजता है'* (1 पतरस 5:13)। संत मार्क के चाचा पवित्र प्रेरित बरनबास थे, जो वंश से एक लेवी थे और मूल रूप से साइप्रस द्वीप के

[3213] पवित्र शहीदों का अंत 304 में हुआ – पवित्र शहीद लोंगिनस का सिर इटली में, कैपुआ शहर में (नेपल्स के पास) है।
[3214] उस समय के यहूदियों की प्रथाओं के अनुसार।
[3215] ओरिजिन, अलेक्जेंड्रिया के पुरोहित (3वीं सदी), सेंट एपिफेनीयस, साइप्रस के बिशप (4वीं सदी), और अन्य।
[3216] गेट्सेमनी – एक बगीचा।
[3217] नग्न शरीर पर लपेटा गया कपड़ा।
[3218] परंपरा के अनुसार प्रभु यीशु मसीह ने मार्क की माता मरियम के घर में पासका उत्सव मनाया।

रहने वाले थे। उनके माध्यम से, संत मार्क का परिचय दूसरे प्रमुख प्रेरित – संत पॉल – से हुआ, जब पॉल, मसीह में विश्वास की ओर अपने चमत्कारी परिवर्तन के बाद (देखें प्रेरितों के काम 9), पहली बार यरूशलेम पहुँचे[3219] । इन दो प्रमुख प्रेरितों - पतरस और पौलुस - के साथ घनिष्ठ संगति में प्रवेश करने के बाद, संत मार्क उनके सबसे करीबी सहयोगी बन गए और उन्होंने इन महान प्रेरितों में से किसी एक या दूसरे द्वारा उन पर सौंपी गई आज्ञाओं को पूरा किया।

लगभग ईस्वी सन् 44 या 45 में, यरूशलेम के ईसाइयों ने एक बड़ी विपत्ति झेली। यरूशलेम में ईसाइयों की संख्या बढ़ती देख, ईसाई धर्म के शत्रुओं – यहूदियों – की द्वेषपूर्ण भावना चरम पर पहुँच गई। ईसाइयों के प्रति घृणा से प्रेरित यहूदियों ने उनके घरों पर छापा मारा और निर्दयतापूर्वक उनकी सारी संपत्ति लूट ली, जिससे ईसाइयों को भीषण अकाल सहना पड़ा। मसीह में अपने भाइयों की इस गंभीर स्थिति के बारे में सुनकर, अंतीयक के मसीहियों ने तुरंत उनकी सहायता के लिए कदम उठाया; उन्होंने आपस में धन इकट्ठा किया और इस राहत को यरूशलेम के मसीहियों तक पहुँचाने का कार्य बार्नबास और पौलुस को सौंप दिया—जो उस समय अंतीयक में थे। यरूशलेम पहुँचकर और अंफ़ीकिया के मसीहियों का काम पूरा करने के बाद, बर्नबास और पौलुस अंफ़ीकिया लौट आए, इस बार मार्क को अपने साथ ले आए (प्रेरितों के काम 12:25)। उस समय से, बार्नबास और पौलुस के साथ एक सहकर्मी बनकर, मार्क ने यहूदियों और अन्यजातियों दोनों को मसीह के सुसमाचार का प्रचार करने के महान कार्य को अपने हाथ में लिया। पौलुस और बर्नबास के साथ, संत मार्क ने अंताकिया से उनकी पहली प्रेरित यात्रा में भाग लिया, और सुसमाचार का प्रचार करने में उनके सबसे करीबी सहायक के रूप में काम किया[3220] । पौलुस और बर्नबास के साथ, मार्क तटीय शहर सेलूकिया में था[3221] ; वहाँ से वह साइप्रस द्वीप के लिए रवाना हुआ और सालामिस से पाफोस तक, पूर्व से पश्चिम तक, पूरे द्वीप की यात्रा की। यहाँ पाफोस में, मार्क ने बार-येशु नामक एक यहूदी जादूगर, जिसे एलीमास भी कहा जाता था, के चमत्कारिक चंगा होने का साक्षात्कार किया, जो प्रोकन्सल सेर्गीयस को प्रभु में विश्वास से हटाने की कोशिश कर रहा था। सेर्गीयस ने बर्नबास और पौलुस को परमेश्वर का वचन सुनने के लिए बुलाया था (देखें प्रेरितों के काम 13:6–12). हालाँकि, पर्सगा शहर में पहुँचने पर[3222] , मरकुस प्रेरित पौलुस और बरनबास को छोड़कर अपनी माँ के घर यरूशलेम लौट आया। यरूशलेम पहुँचने पर, मरकुस प्रेरित पतरस के साथ मिल गया और जल्द ही उसके साथ रोम में सुसमाचार का प्रचार करने के लिए एक प्रेरितिक यात्रा पर निकल पड़ा। उस समय, रोम में पहले से ही मसीह में विश्वास करने वाले थे। प्रेरितों के काम की पुस्तक गवाही देती है कि प्रेरितों पर पवित्र आत्मा के उतरने के बाद उनमें जो असाधारण परिवर्तन हुआ, उसके प्रत्यक्षदर्शियों में और प्रेरित पतरस के मसीहा यीशु पर पहले उपदेश[3223] के श्रोताओं में, रोम से आए यहूदी और धर्मपरिवर्तित शामिल थे, अर्थात्, यहूदी धर्म अपनाने वाले अन्यजाति (देखें प्रेरितों के काम 2:10–41)। रोम लौटने पर, इन लोगों ने निस्संदेह मसीह में अपने विश्वास को अपने साथ लाया और वहाँ दूसरों के साथ साझा किया। इसमें कोई संदेह नहीं है कि, इसके बाद भी, कई यहूदी—जो बड़ी संख्या में रोम में रहते थे—त्योहारों के लिए सालाना यरूशलेम जाते थे; सुसमाचार की शिक्षाओं से पहले से ही प्रभावित और वहाँ मसीह के उपदेश सुनने के बाद, वे मसीही के रूप में रोम लौट आते थे। अंत में, दुनिया की राजधानी होने के कारण, कई ईसाई नागरिक और अन्य मामलों के लिए दूर-दूर से रोम आते थे, और वहाँ मसीह में विश्वास करने वालों की संख्या में वृद्धि में योगदान दिया। पवित्र प्रेरित पतरस ने, संत मार्क की सहायता से, अपने उपदेश और चमत्कारों के माध्यम से रोम में मसीह की कलीसिया का और अधिक प्रसार और स्थापना की, और बहुत से लोगों—यहूदियों और अन्यजातियों दोनों—को मसीह के प्रति परिवर्तित किया। प्रेरितों के मुख से सुसमाचार के उपदेश के पवित्र वचन सुनने और प्रभु यीशु मसीह में विश्वास से जलते हुए, रोम के मसीही केवल प्रेरितों द्वारा यीशु मसीह के बारे में मौखिक उपदेश से संतुष्ट नहीं थे, बल्कि वे उस शिक्षा का एक लिखित रिकॉर्ड चाहते थे जो उन्हें मौखिक रूप से दी गई थी। वे प्रेरित पतरस के साथी, संत मार्क के पास गए और उनसे विनती की कि वे उन सभी पवित्र वचनों को लिख दें जो उन्होंने पतरस के साथ मिलकर उनसे प्रभु मसीह के बारे में कहे थे, और उन्हें यह पवित्र लेख एक स्मारक के रूप में छोड़ दें। मार्क ने रोमन ईसाइयों की इस महान इच्छा को पूरा किया और उनके लिए अपना सुसमाचार लिखा, जिसमें[3224] ने, पृथ्वी पर अपने समय के दौरान प्रभु

[3219] लगभग 39 या 40 ईस्वी वर्ष में।

[3220] वर्ष 44 या 45 में।

[3221] भूमध्य सागर के पूर्वी तट पर।

[3222] एशिया माइनर में।

[3223] इनमें से लगभग 3,000 पुरुषों का बपतिस्मा हुआ।

[3224] जैसा कि पापियास गवाही देते हैं।

यीशु मसीह के जीवन की घटनाओं का वर्णन करते हुए, जितिना उन्हें याद था, उतना ही सटीक रूप से दर्ज कयि। जो प्रभु ने सखिाया और कयि, इस बात का बहुत ध्यान रखते हुए कि उन्होंने जो कुछ भी सुना था, उसे न तो छोड़ दें और न ही तोड़-मरोड़ कर पेश करें। मार्क ने जो लखि था उसे समीक्षा के लिए प्रेरति पतरस के पास प्रस्तुत कयि, और संत पतरस ने अपनी गवाही से मार्क द्वारा लखिी गई सुसमाचार की सच्चाई की पुष्टि की और इसे चर्चों में पढ़ने के लिए अनुमोदति कयि।[3225] इसलिए, मार्क का सुसमाचार सभी चर्चों द्वारा बनिा कसिी ववािद के, एक प्रेरतिकि लेखन, दैवीय रूप से प्रेरति[3226] के रूप में स्वीकार कयि गया।

रोम में अपनी सेवा के बाद, संत मार्क ने प्रेरति पतरस के आदेश पर एड्रयिाटकि सागर के उत्तरी तट पर स्थति अक्वलियि शहर में सुसमाचार का प्रचार करने के लिए प्रस्थान कयि। इस समृद्ध शहर में, जसिे 'द्वतिीय रोम' के नाम से जाना जाता है[3227] , मार्क ने एक चर्च की स्थापना की; उन्होंने एड्रयिाटकि तट पर अन्य स्थानों का भी दौरा कयि और सुसमाचार का प्रचार करते हुए सर्वत्र ईश्वर के चर्च स्थापति कए। इसके बाद, संत मार्क ने फरि से प्रेरति पतरस के आदेश पर मस्रि में सुसमाचार का प्रचार करने के लिए प्रस्थान कयि। यह घटना, जैसा कि अलेक्जेंड्रयिा के पैट्रआर्क यूटकियिस गवाह देते हैं, क्लॉडयिस के शासन के नौवें वर्ष में हुई थी[3228] । पलेस्टाइन से सटे एक मूर्तपिूजक देश मस्रि में, सकिंदर महान[3229] और मस्रि के राजा टॉलेमी लागस[3230] के समय से ही एक बहुत बड़ी यहूदी आबादी थी। वे यहाँ पूरे शहरों में बसे हुए थे, उनके अपने सनिेगॉग, अपना सनेड्रनि और यहाँ तक कि यरूशलेम के मंदरि के मॉडल पर बना एक मंदरि[3231] भी था, साथ ही मूसा की व्यवस्था के अनुसार पुजारी और लेवी भी थे। यहाँ मस्रि में, राजा पतोलमी फलिैडेलफस[3232] के आदेश पर, पुराने नयिम के पवत्रि धर्मग्रंथों की पुस्तकों का हब्रिू से ग्रीक में अनुवाद कयि गया, जसिसे मानव जाति के उद्धार के संबंध में दव्यि प्रकटीकरण स्वयं मूर्तपिूजकों के लिए भी सुलभ हो गया। यहाँ, लोगों की स्मृति में एक नश्चिति मस्रि के मंदरि में मूर्तयिों के उस महत्वपूर्ण क्षणकिरण को अभी भी ताज़ा था, जो चर्च फादर्स की गवाही, के अनुसार, क्रूर हेरोद के हाथ से भाग रहे शशिु यीशु के साथ पवत्रि परविार के आगमन के साथ हुआ था। अंत में, यह भी हो सकता है कि इस देश में प्रेरतिों पर पवत्रि आत्मा के चमत्कारकि अवतरण के गवाह मौजूद थे, जन्हिोंने मसीह की शक्षिा के बीज यहाँ भी लाए। यह सब मस्रि के नविासयिों को ईसाई शक्षिा को स्वीकार करने के लिए बहुत तैयार कर गया और संत मार्क के उपदेश के लिए बड़ी सफलता का वादा कयि। और वास्तव में, जब मस्रि में आने वाले प्रेरतिों में से पहले, मरकुस ने सुसमाचार का प्रचार करना शुरू कयि, और लोगों को शैतान से मुक्ति की घोषणा की[3233] , अपने प्रचार की शुरुआत में ही[3234] पुरुषों और महलिाओं की एक बड़ी भीड़ मसीह पर वश्विास करने लगी। मस्रि की राजधानी, अलेक्जेंड्रयिा में ही, संत मरकुस ने एक चर्च की स्थापना की और इसके पहले बशिप बने।

यहाँ, संत मार्क ने यहूदयिों और मूर्तपिूजकों—जो अब तक मूर्तपिूजा के अंधकार में रहे थे—को ईसाई धर्म के प्रकाश से ज्ञान प्रदान करने के लिए अथक प्रयास कयि। बाद में अलेक्जेंड्रयिा और पड़ोसी शहरों में उनके लिए बशिप और अन्य पुरोहतिों की नयिुक्ति करके चर्चों को संगठति करने के बाद, संत मार्क मस्रि से चले गए। वे वहां से कहां गए, और क्या वे प्रेरतिों की परषिद[3235] में यरूशलेम में थे, यह अज्ञात है। हालांकि, जब प्रेरति पौलुस, अपनी दूसरी प्रेरतिकि यात्रा[3236] पर नकिलने से पहले, बरनबास के साथ अंताकयि में थे, तो प्रेरतिों के काम की पुस्तक गवाही देती है कि संत मार्क भी उनसे वहाँ मलिे और, वहाँ से, अपने चाचा बरनबास के साथ अपने गृह देश, साइप्रस के लिए रवाना हो गए (देखें:

[3225] अपनी सुसमाचार में, सुसमाचार लेखक मरकुस मुख्य रूप से उद्धारकर्ता के कार्यों, वशिेष रूप से चमत्कारों पर ध्यान केंद्रति करते हैं, जनिका प्रभाव उनकी शक्षिाओं की तुलना में अवश्विासयिों के मन पर अधकि था।

[3226] यह लगभग 46 ईस्वी वर्ष में लखिा गया था।

[3227] यह रोमन सम्राटों द्वारा अनुकूलति काल था।

[3228] लगभग 49 ईस्वी वर्ष में

[3229] 334–324 ईसा पूर्व तक शासन कयि

[3230] 324–284 ईसा पूर्व

[3231] इलिओपोड नगर के पास।

[3232] लगभग 271 ईसा पूर्व।

[3233] जैसे मूसा ने एक बार फरिौन के भारी जुए के साथ कयि था।

[3234] जैसा कि इतहिासकार यूसेबयिस ने प्रमाणति कयि है।

[3235] लगभग ईस्वी 60 या 51 के आसपास।

[3236] 52 से 55 तक।

प्रेरितों के काम 15:36–40)। कुछ समय तक बर्नबास के साथ मसीह के सुसमाचार का प्रचार करने के कार्य में परिश्रम करने के बाद, मार्क बाद में मिस्र के लिए रवाना हो गए, जहाँ प्रेरित पतरस उसी समय या थोड़ी ही देर बाद पहुँचे। मिस्र के विभिन्न हिस्सों में उपदेश देते और वहाँ चर्चों की स्थापना करते हुए, प्रेरितों ने मिस्र के शहर बेबीलोन में मसीह की कलीसिया की नींव भी रखी, जहाँ से पतरस ने एशिया माइनर के मसीहियों को अपना पहला पत्र लिखा (देखें 1 पतरस 5:13)। संत मार्क नीरो के शासन के आठवें वर्ष तक मिस्र में रहे[3237] ।

बाद में, संत मार्क प्रेरित पौलुस के पास वापस आ गए और उनके सहकर्मियों में से एक बन गए। जब प्रेरित पौलुस रोम में बेड़ियों में जकड़े हुए थे[3238] , तब संत मार्क ने कई अन्य लोगों के साथ, प्रेरित के सुसमाचार प्रचार के कार्यों में भाग लिया। उस समय रोम से लिखी गई कुलुस्सियों के नाम अपनी पत्री में, प्रेरित पौलुस मार्क को परमेश्वर के राज्य के लिए अपने कुछ ही सहकर्मियों में से एक के रूप में संदर्भित करते हैं, जो उस समय उनके लिए सांत्वना का स्रोत थे (देखें कुलुस्सियों 4:10-11)। जैसा कि कोलॉसियों की उसी पत्रिका से स्पष्ट है, प्रेरित पौलुस के निर्देशों पर, मरकुस रोम से एशिया माइनर के लिए, फ्राइजियाई शहर कोलोसे (कोल. 2:8–18) के लिए रवाना हुए, ताकि उन झूठे शिक्षकों का मुकाबला कर सकें जो कोलॉसियों के ईसाइयों को गुमराह कर रहे थे[3239] । यह ज्ञात नहीं है कि संत मार्क ने अगले कुछ वर्षों को कहाँ बिताया। हालाँकि, जब अपोस्टल पॉल की मृत्यु का समय निकट आया, तब संत मार्क एशिया माइनर में, विशेष रूप से एफिसुस शहर में थे, जो एफिसुस की कलीसिया के बिशप, संत तिमोथी का गृह नगर था। उस समय, प्रेरित पौलुस, जो दूसरी बार बेड़ियों में जकड़े रोम में थे, ने तिमोथी को एक पत्र लिखा जिसमें उन्होंने तिमोथी को अपनी सहायता के लिए रोम बुलाते हुए, उसे अपने साथ मार्क को लाने का निर्देश दिया, क्योंकि उन्हें अपनी सेवकाई के लिए उसकी आवश्यकता थी (देखें 2 तिमोथी 4:11)[3240] । यहाँ रोम में, संत मार्क ने अपने दोनों गुरुओं, मसीह के महान और प्रमुख प्रेरितों, पतरस और पौलुस की मसीह के लिए शहादत देखी, जिन्होंने एक ही समय में रोम में मसीह के लिए कष्ट सहे; पौलुस को - एक रोमन नागरिक के रूप में - तलवार से सिर कलम कर दिया गया, जबकि पतरस को सूली पर चढ़ाया गया।

अपने महान गुरुओं – प्रेरित पतरस और पौलुस – की मृत्यु के बाद, सुसमाचारकार संत मरकुस मिस्र के लिए एक बार फिर रवाना हुए ताकि वहाँ उन्होंने जो चर्च स्थापित किया था, उसे मजबूत कर सकें। उन्होंने स्वयं अलेक्जेंड्रिया में ईसाई धर्म का प्रचार करने के कार्य में अथक परिश्रम किया। मिस्र की राजधानी अलेक्जेंड्रिया, यूनानी शिक्षा का एक केंद्र था। यह एक प्रसिद्ध पुस्तकालय का घर था, और यहाँ मूर्तिपूजक विद्वता फल-फूल रही थी; इसी कारण से लोग दूर-दूर से यहाँ आते थे, इसलिए यह शहर विद्वानों, दार्शनिकों, वक्ताओं और कवियों से भरा हुआ था। यहाँ बड़ी संख्या में रहने वाले यहूदी भी मूर्तिपूजक विद्वता से मोहित थे। ईसाई धर्म की स्थापना करने और मूर्तिपूजक विद्वानों तथा यहूदियों का मुकाबला करने के लिए, संत मार्क ने अलेक्जेंड्रिया में एक ईसाई धर्मशास्त्र विद्यालय की स्थापना की। आने वाले वर्षों में, यह स्कूल ईसाई शिक्षा का एक केंद्र बन गया और पैंटेनस और क्लेमेंट जैसे चर्च के प्रतिष्ठित शिक्षकों, साथ ही अलेक्जेंड्रिया के डायोनिसियस, ग्रेगरी द वंडरवर्कर और अन्य जैसे कुछ चर्च पिताओं को तैयार करने के लिए ख्याति प्राप्त हुई।

चर्च की उपासना के संगठन के प्रति अपनी चिंता में, संत मार्क ने पूजा-विधि का क्रम रचा और इसे अलेक्जेंड्रिया के चर्च के ईसाइयों को सौंप दिया। पूजा-विधि का यह क्रम उस चर्च में और बाद की शताब्दियों तक लंबे समय तक संरक्षित रहा। मिस्र के ईसाई (कॉप्टिक) की पूजा में, सुसमाचार लेखक मार्क से जुड़ी कुछ प्रार्थनाएँ आज भी संरक्षित हैं।

अलेक्जेंड्रिया की कलीसिया की स्थापना करने के बाद, सुसमाचार प्रचारक संत मार्क ने मसीह की शिक्षाओं को प्रचारित करने के अपने उत्साह में, मिस्र के अन्य शहरों और क्षेत्रों के निवासियों की ओर से अपना ध्यान और समर्पण नहीं हटाया; बल्कि एक दृढ़ और पराक्रमी तपस्वी के रूप में, मार्क, परमेश्वर की आत्मा द्वारा निर्देशित, मसीह की शिक्षाओं का प्रचार करने के लिए अपनी पूरी लगन और उत्साह के साथ सर्वत्र शीघ्रता से गए। उन्होंने अफ्रीका के कई भीतरी क्षेत्रों का दौरा किया, और लीबिया, मार्मोरिका, सिरिनिका और पेंटापोलिस की यात्रा की। ये सभी भूमि मूर्तिपूजा के अंधकार में डूबी हुई थीं। हर जगह, कस्बों और गांवों और चौराहों पर, पूजा स्थल बनाए गए थे, जिनमें

[3237] ईस्वी 54 से 68 तक शासन किया

[3238] 61 से 63 ईस्वी तक।

[3239] लगभग वर्ष 67 के आसपास।

[3240] पवित्र प्रेरितों का समकालीन।

मूर्तियाँ रखी गई थीं और जहाँ जादू-टोना, भविष्यवाणी और तंत्र-मंत्र का अभ्यास किया जाता था। जब वे इन कस्बों और गांवों में सुसमाचार का प्रचार करते हुए यात्रा कर रहे थे, संत मार्क ने मूर्तिपूजा के अंधकार और निराशा में डूबे लोगों के हृदयों को दिव्य शिक्षा के प्रकाश से प्रबुद्ध किया, और साथ ही उनके बीच महान चमत्कार भी किए। दिव्य अनुग्रह के एक ही शब्द से, उन्होंने बीमारों को चंगा किया, कोढ़ियों को शुद्ध किया, और अशुद्ध तथा उग्र आत्माओं को भगाया।

और उनके उपदेश को, जो महान और अद्भुत चमत्कारों से युक्त था, अपार सफलता मिली। मूर्तियों के मंदिर ढह गए; मूर्तियाँ उलट दी गईं और चकनाचूर हो गईं; लोगों को शुद्ध और प्रबुद्ध किया गया, और उन्हें पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम पर बपतिस्मा दिया गया। सर्वत्र, सुसमाचार प्रचारक मार्क के द्वारा परमेश्वर के चर्च स्थापित हुए, और मिस्र की सभी भूमि में मसीह की कलीसिया का प्रसार हुआ। सुसमाचार प्रचारक मार्क के उपदेश के पवित्र वचनों के प्रभाव में और उनके अपने सदाचारी जीवन की उच्च पवित्रता और पवित्रता से प्रेरित होकर, मिस्र के मसीही, दिव्य अनुग्रह के प्रभाव में, उन्होंने मोक्ष प्राप्त करने के अपने प्रयासों में इतनी पवित्रता और पूर्णता की ऊँचाई का प्रदर्शन किया कि उनका जीवन, जो ईसाई सद्गुण की पवित्रता से भरा था, मूर्तिपूजकों और अविश्वासी यहूदियों से भी बड़ी आश्चर्य और प्रशंसा का स्रोत था। पैलेस्टाइन में केसरिया के बिशप यूसेबियस, और नाइसफिोरस (जैंथोपोलोस) – चर्च के इतिहासकारों – ने अपनी रचनाओं में एक यहूदी दार्शनिक, फिलो की गवाही को संरक्षित किया है, जो मिस्र के ईसाइयों के सदाचारी जीवन की प्रशंसा करते हुए कहते हैं:

वे (अर्थात् ईसाई) सांसारिक धन-संपत्ति की सभी चिंताओं को त्याग देते हैं और अपनी संपत्ति को लेकर परेशान नहीं होते, पृथ्वी पर किसी भी चीज़ को अपना या अपने प्रिय का नहीं मानते। हालांकि उनमें से कुछ, सांसारिक मामलों की सभी चिंताओं को त्यागकर, शहरों को छोड़ देते हैं और एकांत स्थानों और बगीचों में बस जाते हैं, और उन लोगों की संगत से बचते हैं जो उनके जीवन-पथ का अनुसरण नहीं करते, ताकि वे सद्गुण की खोज में उनसे विचलित न हों। वे संयम और देह की कठोरता को उस नींव के रूप में मानते हैं जिस पर ही एक अच्छा जीवन बनाया जा सकता है। उनमें से कोई भी शाम होने से पहले न तो कुछ खाता है और न ही पीता है, जबकि कुछ चौथे दिन तक कुछ नहीं खाते। हालाँकि, अन्य जो पवित्र धर्मग्रंथों की व्याख्या और समझ में निपुण हैं, ज्ञान की प्यास से भरकर और ध्यान के आध्यात्मिक भोजन से पोषित होकर, अपना समय धर्मग्रंथों का अध्ययन करने में बिताते हैं और छठे दिन तक शारीरिक भोजन के बारे में भूल जाते हैं। उनमें से कोई भी शराब नहीं पीता, और कोई भी मांस नहीं खाता, वे अपनी रोटी और पानी में केवल नमक और हिस्सोप मिलाते हैं[3241] । उनके बीच ऐसी महिलाएँ भी रहती हैं जिन्होंने स्वयं को सदाचारी जीवन में प्रशिक्षित किया है और इस जीवन के इतने आदी हो गई हैं कि वे वृद्धावस्था तक कुंवारी रहती हैं। फिर भी वे अपनी कुँवारी अवस्था को मजबूरी से नहीं, बल्कि अपनी स्वैच्छिक इच्छा से बनाए रखते हैं, जो ज्ञान के प्रति उत्साह और प्रेम से प्रेरित होती है, जो उन्हें शारीरिक सुखों को त्यागने और नश्वर नहीं, बल्कि अमर फलों को प्राप्त करने के लिए प्रेरित करती है, जो केवल उस आत्मा से ही प्राप्त हो सकते हैं जो ईश्वर से प्रेम करती है और उसकी लालसा करती है। वे पवित्र शास्त्र की व्याख्या रूपक रूप में करती हैं, इसके निहित और छिपे हुए अर्थों और रहस्यों को पहचानकर; क्योंकि शास्त्र, उनकी दृष्टि में, एक जीवित प्राणी के समान है: मौखिक अभिव्यक्तियाँ इसका दृश्यमान शरीर हैं, जबकि इन अभिव्यक्तियों के नीचे छिपा विचार और रहस्य इसका अदृश्य आत्मा है। वे ईश्वर की महिमा करने, प्रार्थना करने, भजन गाने और ईश्वर के वचन को सुनने के लिए जल्दी उठते हैं – पुरुष और महिलाएं अलग-अलग। उनमें से कुछ सात सप्ताह तक लगातार उपवास करते हैं। सातवां दिन उनके बीच बहुत सम्मान से मनाया जाता है। इसकी और अन्य उत्सवों की तैयारी में, वे नंगे जमीन पर आराम करने के लिए लेट जाते हैं। दिव्य लिटिर्जी (Divine Liturgy) का अनुष्ठान पुरोहितों और डिकनों द्वारा किया जाता है, जिसकी अध्यक्षता बिशप करते हैं।

यह मसीह का ऐसा सुगंधित बगीचा था जिसे पवित्र सुसमाचार प्रचारक मार्क ने मिस्र की भूमि में अपनी अथक मेहनत से लगाया और संवारा; वहाँ वे पहले बिशप भी थे, और अलेक्जेंड्रिया में बिशप की पदवी धारण करते थे, जहाँ उन्होंने शहीद की मृत्यु पाई, और इस प्रकार वे अलेक्जेंड्रिया की कलीसिया के पहले शहीद बने।

धन्य सिमियन मेटाफ्रस्टेस[3242] संत मार्क के दुःख और शहादत का वर्णन इस प्रकार करते हैं। जबकि सिनैरे में – पेंटापोलिस क्षेत्र का एक शहर, जहाँ उन्होंने मसीह की शिक्षा का प्रचार करने और मसीह की कलीसिया स्थापित

[3241] एक कड़वी जड़ी-बूटी।

[3242] नवें शताब्दी का एक चर्च संबंधी लेखक।

करने के कार्य में परिश्रम किया – संत मार्क को पवित्र आत्मा से वहाँ से प्रस्थान करने और फारिस के अलेक्ज़ेंड्रिया में सुसमाचार का प्रचार करने की आज्ञा मिली[3243] । पवित्र आत्मा की आज्ञा का पालन करते हुए, मार्क ने पूरी लगन के साथ इस नए कार्य की ओर बढ़े। भाइयों को अलेक्ज़ेंड्रिया जाने की प्रभु की आज्ञा के बारे में सूचित करने के बाद, उन्होंने ईसाइयों के साथ विदाई भोज किया और उनका आशीर्वाद प्राप्त किया, और फिर सिरिनि से अलेक्ज़ेंड्रिया के लिए समुद्र यात्रा की। दूसरे दिन वह अलेक्ज़ेंड्रिया पहुँचा और जहाज से उतरकर मेन्डियन नामक स्थान पर आया। यहाँ, शहर के द्वार के प्रवेश द्वार पर, उसकी चप्पल का फीता दो भागों में टूट गया, जिसे संत ने एक शुभ संकेत माना। वहाँ एक जूता बनाने वाले को फटे जूते ठीक करते हुए देखकर, संत ने उसे अपना चप्पल ठीक करने के लिए दिया। चप्पल ठीक करते समय, जूता बनाने वाले ने गलती से अपने औजार से अपने बाएँ हाथ को चुभा लिया और दर्द से चीखते हुए, उसने ईश्वर का नाम पुकारा।

यह पुकार सुनकर, प्रेरित आत्मा में आनंदित हुए, क्योंकि उन्होंने इसमें एक संकेत देखा कि प्रभु उनकी यात्रा को सुरक्षित बनाएँगे। जूते मरम्मत करने वाले के हाथ का घाव बहुत दर्दनाक था, और उससे खूब खून बह रहा था। संत मार्क ने जमीन पर थूक दिया, क्रॉस का चिह्न बनाया, घाव पर अभिषेक किया, और कहा:

'सदैव जीवित रहने वाले यीशु मसीह के नाम पर, चंगा हो जा।'

और तुरंत जूते बनाने वाले का घाव भर गया और उसका हाथ ठीक हो गया। जूते बनाने वाले ने, अपने सामने खड़े व्यक्ति में ऐसी शक्ति और उसके शब्दों के प्रभाव को, तथा उसकी दृष्टि में झलकती जीवन की पवित्रता और पवित्रता को देखकर, उससे एक अनुरोध करते हुए कहा:

'मैं आपसे विनती करता हूँ, हे ईश्वर के मनुष्य, मेरे घर आइए और मेरे पास, आपके सेवक के पास, ठहरिए, कम से कम एक दिन के लिए, ताकि आप मेरे साथ भोजन कर सकें, क्योंकि आपने अब मुझ पर दया दिखाई है।'

प्रेरित ने, उसकी विनती से प्रसन्न होकर, कहा:

'प्रभु आपको जीवन की रोटी – स्वर्ग की रोटी प्रदान करें।'

और उस मनुष्य ने प्रेरित को तुरंत अपने घर ले जाकर बड़े आनन्द से ठहराया। घर में प्रवेश करते ही, संत मार्क ने कहा:

'प्रभु का आशीर्वाद इस स्थान पर हो! भाइयों, हम ईश्वर से प्रार्थना करें।'

और वे सभी एक साथ मिलकर ईश्वर से प्रार्थना करने लगे। प्रार्थना के बाद जब वे भोजन के लिए बैठे, तो जूता बनाने वाले ने एक दोस्ताना बातचीत शुरू करते हुए संत से पूछा:

'पिताजी! आप कौन हैं? और आपके शब्दों में इतनी शक्ति कहाँ से आती है?'

संत मार्क ने उत्तर दिया:

'मैं प्रभु यीशु मसीह, परमेश्वर के पुत्र का सेवक हूँ।'

उस आदमी ने कहा:

'मैं इस ईश्वर के पुत्र को देखना चाहूँगा।'

संत मार्क ने उत्तर दिया:

'मैं तुम्हें उसे दिखाऊँगा!'

और उसने यीशु मसीह की सुसमाचार का प्रचार करना और भविष्यद्वक्ताओं से यह समझाना शुरू किया कि उन्होंने हमारे प्रभु के विषय में क्या भविष्यवाणी की थी। उस आदमी ने, उसका उपदेश सुनकर, कहा:

'मैंने उन धर्मग्रंथों के बारे में कभी नहीं सुना है जिन्हें आप मुझे समझा रहे हैं; मैंने केवल इलियड, ओडिसी और वही सुना है जो मिस्र के युवक पढ़ते हैं।'

तब संत मार्क ने मसीह पर अपने उपदेश को जारी रखते हुए, उसे पूरी स्पष्टता से दिखाया कि इस युग की बुद्धि परमेश्वर के सामने 'मूर्खता' है[3244] । हालाँकि, उस आदमी ने संत मार्क की कही हर बात पर विश्वास किया और उनके चमत्कार देखकर स्वयं बपतिस्मा लिया; उसके पूरे घर वालों ने भी उसके साथ बपतिस्मा लिया, और उनके साथ उस क्षेत्र के बहुत से लोगों ने भी बपतिस्मा लिया। इस आदमी का नाम अनानियास था। वहाँ विश्वासियों की संख्या दिन-ब-

---

[3243] अलेक्ज़ेंड्रिया को फ़ैरिटि कहा जाता है क्योंकि यह फ़ैरॉस नामक छोटे से शहर से जुड़ा हुआ था, जहाँ एक बड़ा, ऊँचा स्तंभ खड़ा था, जिस पर रात में आग जलाई जाती थी ताकि समुद्र से आने वाले जहाजों को बंदरगाह तक मार्गदर्शन मिल सके।

[3244] मूर्खता – पागलपन, निरर्थकता (तुलना करें 1 कुरिन्थियों 1:18–22)।

दनि बढ़ती जा रही थी। तब शहर के अधकिारयिों ने, यह सुनकर कि उनके पास आए एक गलीलयिाई ने उनके देवताओं का अपमान कयिा और उन्हें उनके लिए बलदिान चढ़ाने से रोका, संत मार्क को मारने की कोशशि की और उसे पकड़ने की योजना बनाने के लिए इकट्ठा हुए। संत मार्क ने उनके नर्णिय के बारे में जानकर, वशि्वासयिों के लिए अनानयिास को बशिप नयिुक्त करने के लिए शीघ्रता की, साथ ही तीन पुरोहतिों—मेलयिन (या मल्चा), सावनि, और केर्डन—सात डकिन और ग्यारह क्लेरकिों को चर्च सेवा के लिए नयिुक्त कयिा; और, वहां से भागकर, वे एक बार फरि पेंटापोलसि लौट आए। वहाँ दो साल तक रहने, स्थानीय समुदाय को मजबूत करने और आसपास के क्षेत्रों और कस्बों में बशिप, पुरोहति और पादरयिों की नयिुक्ति करने के बाद, संत मार्क एक बार फरि अलेक्जेंड्रयिा लौट आए। वहाँ उन्होंने पाया कि समुदाय की संख्या बढ़ गई थी और यह प्रभु की कृपा और वशि्वास में फल-फूल रहा था। अलेक्जेंड्रयिा में पहले से ही एक ईसाई चर्च था, जो 'वुकुल'[3245] नामक स्थान पर समुद्र के पास बनाया गया था। चर्च को देखकर, संत मार्क प्रसन्न हुए और घुटनों के बल गरिकर, परमेश्वर की महमिा की। संत मार्क कुछ समय के लिए अलेक्जेंड्रयिा में रहे। उस चर्च के ईसाइयों की संख्या बढ़ गई और, अपने वशि्वास में मजबूत होकर, उन्होंने खुले तौर पर यूनानयिों को उनकी मूर्तपिूजा के लिए फटकारा। ग्रीक शहर के मजस्ट्रेटों ने, अपने शहर में संत मार्क की उपस्थति के बारे में जानकर और यह सुनकर कि वह बड़े चमत्कार कर रहे थे—बीमारों को ठीक करना, बधरिों को सुनने की शक्ति वापस देना, और अंधों को दृष्टि देना—उनके प्रति घृणा और ईर्ष्या से भर गए, और उन्हें खोजने नकिल पड़े। लंबे समय तक उसे न पाकर, वे अपने मूर्तपिूजक मंदरिों में इकट्ठा हुए और दाँत पीसते हुए क्रोध से चल्लिाए:

'अरे, यह जादूगर और जादू-टोना करने वाला हमें कतिनी परेशानी दे रहा है!'

ईस्टर का सबसे गौरवशाली पर्व नज़दीक आ रहा था। और इसलिए, 24 अप्रैल को, मसीह के गौरवशाली पुनरुत्थान के दनि—जो इस अवसर पर सेरापसि के सम्मान में होने वाले मूर्तपिूजक त्योहार के साथ मेल खा रहा था—मूर्तपिूजकों को संत मार्क को पकड़ने का अवसर मलि गया। उस दनि पवत्रि सुसमाचार प्रचारक दैवीय अनुष्ठान कर रहे थे। अधर्मी मूर्तपिूजकों ने इसे एक अनुकूल अवसर समझा और, अपने त्योहार को मनाने के लिए एक बड़ी भीड़ इकट्ठा करके, अचानक चर्च पर हमला कर दयिा। उन्होंने संत मार्क को पकड़ लयिा, उन्हें रस्सयिों से बाँध दयिा और, शहर की सड़कों और उपनगरों से होते हुए उन्हें घसीटते हुए चल्लिाए:

'आओ इस बैल को बैलखाने में ले चलें, यानी बैलशेड में।'

हालाँकि, संत मार्क ने अपने कष्ट सहते हुए, प्रभु का धन्यवाद करते हुए कहा:

'मैं तुझसे धन्यवाद करता हूँ, हे प्रभु यीशु मसीह, कि तूने मुझे अपने नाम के लिए इन यातनाओं को सहने के योग्य समझा।'

संत को तेज पत्थरों से बछिी हुई ज़मीन पर घसीटा गया, जसिसे पत्थरों से उनका शरीर छलि गया और घावों से ढक गया, और उनसे बहता हुआ खून पूरे रास्ते पर फैल गया। इस प्रकार संत को यातना देने के बाद, अधर्मी वधिर्मीयों ने उन्हें एक कालकोठरी में डाल दयिा, जबकि वे स्वयं, शाम होते ही, इस पर वचिार करने के लिए इकट्ठा हुए कि उन्हें कसि प्रकार की मृत्यु दी जाए। आधी रात को, प्रभु का एक स्वर्गदूत प्रेरति-शहीद के पास प्रकट हुआ और उन्हें स्वर्ग में उनकी प्रतीक्षा कर रहे आनंद का दर्शन कराकर उनके शहीदी बलदिान के लिए उन्हें मजबूत बनाया; तब प्रभु यीशु मसीह स्वयं उसके सामने प्रकट हुए, और अपनी उपस्थति से उसे सांत्वना दी। अगले ही सुबह, मूर्तपिूजकों की एक उग्र भीड़ ने प्रेरति को उसके कालकोठरी से खींच नकिाला और उसे शहर की सड़कों से घसीटते हुए ले गई। संत ऐसे यातनाओं को सहन नहीं कर सके और जल्द ही परमेश्वर का धन्यवाद करते हुए, उनसे प्रार्थना करते हुए और कहते हुए परलोक सधिार गए:

– हे प्रभु, मैं अपनी आत्मा तेरे हाथों में सौंपता हूँ![3246]

मूर्तपिूजकों की अतृप्त दुष्टता प्रेरति की मृत्यु से संतुष्ट नहीं हुई: उन्होंने उसके शरीर को जलाने का नश्चिय कयिा। अग्नि पिहले ही प्रज्वलति हो चुकी थी, तभी अचानक, एक घोर अंधकार, गरज की एक भयंकर गड़गड़ाहट, एक भूकंप, बारशि और ओले ने दुष्ट लोगों की भीड़ को ततिर-बतिर कर दयिा, और बारशि ने आग को बुझा दयिा। धर्मनष्ठि

[3245] वुकुल, अर्थात् बैलों को चारा खलिाने की जगह, ग्रीक शब्द 'बैला' से।

[3246] संत मार्क की मृत्यु नीरो के शासनकाल में, लगभग 68 ईस्वी वर्ष में हुई।

ईसाइयों ने, संत के शरीर को श्रद्धापूर्वक उठाकर, उसे अपनी प्रार्थना सभाओं के स्थान पर एक पत्थर की कब्र में दफना दिया।

वर्ष 310 में संत मार्क के अवशेषों पर एक चर्च बनाया गया था, और वे 9वीं शताब्दी तक अलेक्जेंड्रिया में रहे। उस शताब्दी के पहले भाग में[3247] , जब अरब-मुस्लिम शासन और मोनोफिसाइट विधर्म ने मिस्र में ऑर्थोडॉक्सी को पूरी तरह से कमजोर कर दिया था, तब पवित्र सुसमाचारकर्ता के अवशेषों को वेनिस में स्थानांतरित कर दिया गया, जिसके पास (एक्विलिया में) उन्होंने कुछ समय के लिए सुसमाचार का प्रचार करने का काम किया था: वहाँ वे आज भी उनके नाम समर्पित एक भव्य चर्च में रखे गए हैं। यहाँ मार्क के सुसमाचार की एक बहुत पुरानी पांडुलिपि संरक्षित है, जो उत्तम मिस्र के पापिरस पर लिखी गई है, और परंपरागत रूप से स्वयं सुसमाचार लेखक के हाथ की मानी जाती है[3248] ।

ट्रोपारियन, स्वर 3:

सर्वोच्च पितरस से शिक्षा प्राप्त कर, आप मसीह के प्रेरित थे; और, सूर्य की भाँति, आप राष्ट्रों पर चमके, अलेक्जेंड्रिया के लिए एक आशीर्वाद बनकर, हे धन्य: आपके द्वारा मिस्र भ्रम से मुक्त हुआ; अपनी सुसमाचार शिक्षा के माध्यम से सभी को प्रबुद्ध करें, प्रकाश की भाँति, कलीसिया के स्तंभ। इसी कारण, हम आपकी स्मृति का सम्मान करते हुए, इस पर्व को आनंद के साथ मनाते हैं, मार्क, हे ईश्वर की वाणी: उस ईश्वर से प्रार्थना करें जिसे आपने प्रचारित किया, कि वह हमारे आत्माओं को पापों की क्षमा प्रदान करे।

कॉन्टाकियन, स्वर 2:

आपने उच्च स्थान से पवित्र आत्मा का अनुग्रह प्राप्त किया; हे प्रेरित, आपने वाक्पटुता के जाल को चकनाचूर कर दिया, और, सभी भाषाओं को वश में कर, हे अति महिमामय मार्क, आपने उन्हें दिव्य सुसमाचार का प्रचार करते हुए अपने प्रभु के पास लाया।

– आइकन (चित्रों) में, सुसमाचार लेखक मार्क को एक सिंह के साथ चित्रित किया गया है। इस चित्रण के बारे में एक टिप्पणी मार्क के सुसमाचार की शुरुआत में पाई जाती है। उनका सुसमाचार यूहन्ना बपतिस्मादाता के प्रकट होने के वृत्तांत से शुरू होता है, जिन्होंने पश्चाताप और परमेश्वर के राज्य के आगमन का प्रचार करके यहूदिया के पूरे मरुभूमि में यह संदेश सुनाया; वह मरुस्थल में पुकारने वाली एक आवाज़ थे और, इस संबंध में, मरुस्थल में रहने और दहाड़ने वाले एक शेर के समान थे।

– अलेक्जेंड्रिया के पैट्रिआर्क, जो सेंट मार्क को सही मायने में अपने चर्च के संस्थापक और संरक्षक तथा अलेक्जेंड्रिया के पहले पैट्रिआर्क के रूप में पूजते हैं, अपनी पत्रिकाओं में इन शब्दों के साथ आशीर्वाद देते हैं: 'हमारे प्रभु मसीह, परमेश्वर की परम पवित्र माता और सुसमाचार प्रचारक संत मार्क का आशीर्वाद आप पर हो', और उनकी मुहर पर सुसमाचार पकड़े हुए एक पंखों वाले सिंह की छवि अंकित है।

हमारे पूजनीय पिता ओब्नोरस्क के सिल्वेस्टर की स्मृति।

25 अप्रैल को स्मरण किया जाता है

आदरणीय सिल्वेस्टर[3249] के मूल या जन्म स्थान के बारे में कुछ भी ज्ञात नहीं है। यह केवल इतना ज्ञात है कि उन्होंने राडोनेज़ के आदरणीय सर्जियस से अपना संन्यासी मुंडन प्राप्त किया और शुरू में उनके मठ में एक भिक्षु के रूप

[3247] वर्ष 828 में।

[3248] ऑर्थोडॉक्स चर्च के विधान के अनुसार, पवित्र सुसमाचार मार्क का पठन पेंटेकोस्ट के बाद 11वें से 17वें सप्ताह तक लिटर्जी में किया जाता है, फिर 29वें से 34वें सप्ताह तक, शनिवार और रविवार को छोड़कर, और ग्रेट लेन्ट के दौरान शनिवार और रविवार को, पहले सप्ताह के रविवार को छोड़कर।

[3249] पूजनीय सिल्वेस्टर का जीवन उपलब्ध नहीं है, और इस पर संदेह है कि इसे प्राचीन काल में कभी लिखा भी गया था। पांडुलिपियों से केवल उनके चमत्कारों का विवरण ही ज्ञात है। उनके जीवन के बारे में जानकारी केवल खंडित अभिलेखों और परंपरा से ही प्राप्त होती है।

में रहे। राडोनेज़ के प्रसद्धि तपस्वी के आशीर्वाद से, सल्विेस्टर, जो एकांत की लालसा रखते थे, दूर उत्तर-पूर्व की ओर नकिल पड़े और ओब्नोरा नदी के कनिारे बस गए[3250] । उस समय, यह क्षेत्र घने जंगलों से ढका हुआ था, और आस-पास कोई बस्तयिाँ नहीं थीं। अपने लिए एक साधारण, तंग कोठरी बनाकर, परम पूज्य सल्विेस्टर ने पूर्ण एकांत में तपस्या करना शुरू कर दयिा, और उन्होंने नरिंतर प्रार्थना और जागरण में खुद को समर्पति करते हुए हर तरह की कठनिाइयों को सहन कयिा।

लंबे समय तक, कसिी को नहीं पता था कि उस दूरस्थ जंगल में एक तपस्वी रहता था। लेकनि एक दनि, एक स्थानीय नविासी रास्ता भटक गया और जंगल के गहरे हस्सि में, अचानक तपस्वी की कुटयिा पर जा पहुँचा। टूटे-फूटे कपड़े पहने संन्यासी उस हैरान यात्री से मलिने बाहर आए , जो इतने सुनसान स्थान पर एक इंसान को देखकर चकति था, जहाँ उसने पहले कभी कसिी को देखा भी नहीं था और न ही कसिी को देखने की इच्छा की थी। यात्री ने पूजनीय व्यक्ति को बताया कि वह कौन था और वह वहाँ कैसे पहुँचा। उन्होंने यह भी बताया कि दूर से उन्होंने अक्सर उस स्थान के ऊपर, जहाँ तपस्वी रहते थे, या तो तेजस्वी प्रकाश की करिणें या बादल का एक स्तंभ देखा था। पूजनीय व्यक्ति इस बात पर दुख से रो पड़े कि उनकी एकांतवास की जगह अब सबको पता चल गई थी। यात्री ने तपस्वी से वनिती की कि वह अपना नाम और यह बताएँ कि वह वहाँ कैसे रहते थे। सल्विेस्टर ने समझाया कि वह काफी समय से वहीं रह रहा था, और पेड़ों की छाल और जड़ों पर गुज़ारा कर रहा था। पहले, बनिा रोटी के, वह भूख और थकान से कमजोर हो जाता था और ज़मीन पर गरि जाता था; लेकनि फरि एक अद्भुत व्यक्ति उसके सामने प्रकट हुए, उन्होंने उसे अपने हाथ से छुआ, और तब से उसे ऐसी कठनिाइयों का सामना नहीं करना पड़ा।

संयोग से तपस्वी से मलिने वाला यात्री जल्द ही जानबूझकर उसके पास लौट आया, और उसे रोटी और आटे का भंडार दे गया।

यह एक ही मुलाकात पर्याप्त थी कि संन्यासी के आश्रम और उसके तपस्या के कार्यों के बारे में पड़ोसी गांवों में, भले ही वे कुछ दूरी पर थे, पता चल गया। गांव वाले आत्मा-मोक्ष की बातों और आध्यात्मकि सलाह के लिए उस तपस्वी के पास आने लगे, और उसके लिए भोजन भी लाने लगे। कुछ ने उनके मार्गदर्शन में मोक्ष का मार्ग अपनाने के लिए उनके साथ रहने का संकल्प लयिा। उनके प्रति उनके सच्चे प्रेम और तपस्या की सच्ची इच्छा को देखकर, पूजनीय सल्विेस्टर ने उन्हें नए सेल (कोठरी) बनाने से नहीं रोका, जसिसे बड़ी संख्या में नए तपस्वी उनके चारों ओर इकट्ठा हो गए और ईश्वर का एक चर्च स्थापति करने की तत्काल आवश्यकता उत्पन्न हुई। तब सल्विेस्टर स्वयं मास्को के लिए रवाना हुए और चर्च के नर्मिाण के लिए मेट्रोपॉलटिन अलेक्सयिस का आशीर्वाद लयिा; उन्हें एंटमिंशन मलिा और ओब्नोरस्क क्षेत्र में स्थापति होने वाले पहले मठ का मठाधीश नयिुक्त कयिा गया।

रेवरेंड फादर और उनके चारों ओर एकत्रति भ्रातृत्व के परश्रिम से, उद्धारकर्ता मसीह के पुनरुत्थान के सम्मान में एक चर्च का नर्मिाण कयिा गया।

अब और भी अधकि लोग सल्विेस्टर के पास आने लगे—साधारण लोग और राजकुमार और बोयार दोनों। कुछ लोग आदरणीय फादर को देखना, उनका आशीर्वाद प्राप्त करना और उनके उपदेशों को सुनना चाहते थे; अन्य अपने पापों का प्रायश्चति करने और क्षमा तथा सांत्वना प्राप्त करने आए; और कुछ एक अनुभवी तपस्वी के मार्गदर्शन में जीवन भर के लिए मठवासी जीवन को समर्पति करने के इरादे से आए।

मठ की स्थापना के अथक श्रम में स्वयं को समर्पति करते हुए, पूजनीय सल्विेस्टर ने मठ से नकिलकर जंगल में एकांतवास, एकाकी प्रार्थना और जागरण के लिए हर खाली क्षण और अवसर का उपयोग कयिा, जो उनकी आत्मा के बहुत प्रयि थे और उनके लिए दूसरी प्रकृति बन गए थे। लेकनि जब वह ऐसे एकांत से लौटते थे, तो मठ के पास लोगों की भीड़ पहले से ही उनका इंतजार कर रही होती थी, जो उन्हें देखना और उनका आशीर्वाद तथा उपदेश प्राप्त करना चाहती थी[3251] । वे बच्चे और बीमारों को लाते थे, और उनके आशीर्वाद तथा चंगा करने वाली प्रार्थनाओं की भीख मांगते थे। और आज भी, पूर्व मठ के पास, एक बगीचा है, जो उस जंगल का हस्सि है जसिमें रेवरेंड फादर एकांत के लिए जाया करते थे; और ओब्नोरा नदी की ओर उतरने वाली ढलान पर एक कुआँ भी है, जसिे रेवरेंड सल्विेस्टर ने एक झरने के ऊपर खोदा था।

[3250] यह यारोस्लावल से 105 वर्स्ट और यारोस्लावल गवर्नरेट के वर्तमान जलिा शहर ल्यूबशिा से 16 वर्स्ट दूर, ओब्नोरा नदी के ऊपरी प्रवाह में स्थति है, जो कोस्त्रोमा नदी में मलिती है।

[3251] जहाँ वह लोगों से मलिता था, उस स्थल पर लंबे समय से एक चैपल बना हुआ था, लेकनि बाद में इसे गाँव के करीब स्थानांतरति कर दयिा गया, क्योंकि मूल स्थल पर सेंट सेरगयिस ऑफ़ राडोनेज़ को समर्पति एक चर्च बनाने की योजना थी।

इस प्रकार, इस जंगल के बसेरे में, एक जीवंत जीवन उभरा, जिसमें श्रम और जागरण, उपवास और प्रार्थना, शारीरिक कठिनाइयों और आध्यात्मिक आनंद का संयोजन था।

रेवरेंड फादर बूढ़े हो गए और एक लाइलाज बीमारी से ग्रस्त हो गए। भाई-बंधु उनकी कोठरी में बीमार व्यक्ति के बिस्तर के चारों ओर इकट्ठा हुए और, आँसुओं के साथ, अपने नेता और संरक्षक को खोने पर अपना दुख और मठ के भाग्य को लेकर अपना भय व्यक्त किया। 'मेरे प्रिय भाइयों, इस पर शोक न करें,' पूज्य सिल्वेस्टर ने उन्हें सांत्वना देते हुए कहा, 'क्योंकि सभी चीजें ईश्वर की इच्छा के अनुसार होती हैं; प्रभु की आज्ञाओं का पालन करो और इस जीवन में कष्ट सहने से न डरो, ताकि तुम स्वर्ग में अपना पुरस्कार प्राप्त कर सको। हालाँकि, यदि मुझे ईश्वर की कृपा प्राप्त हो और मेरा कार्य उन्हें प्रसन्न करे, तो मेरी मृत्यु के बाद भी यह पवित्र स्थान पतन की ओर नहीं जाएगा; केवल प्रभु ईश्वर और उनकी परम पवित्र माता से प्रार्थना करो, ताकि तुम दुष्ट की प्रलोभनों से मुक्त हो सको।"

परम पूज्यनीय 25 अप्रैल 1379 को, संत मरकुस प्रेरित और सुसमाचार प्रचारक के पर्व के दिन, परलोक सिधार गए। उनके शरीर को पुनरुत्थान के काष्ठ गिरिजाघर के बगल में, दाईं ओर दफनाया गया था।

आदरणीय सिल्वेस्टर द्वारा स्थापित मठ अपने संस्थापक की मृत्यु के साथ समाप्त नहीं हुआ: यहाँ चार सौ से अधिक वर्षों तक मठवासी जीवन जारी रहा, जिसमें एक पीढ़ी के बाद दूसरी पीढ़ी के भिक्षुओं ने इस दूरदराज के क्षेत्र के प्रबोधन के लिए सेवा की।

रेवरेंड फादर की मृत्यु के बाद, उनकी कब्र पर चमत्कार होने लगे, और समय के साथ, रेवरेंड फादर सिल्वेस्टर को पास और दूर दोनों जगहों पर एक चमत्कारी व्यक्ति के रूप में पूजित किया जाने लगा।

मठ में इस तरह के चमत्कारों के कोई निरंतर रिकॉर्ड नहीं रखे गए थे; हालाँकि, कुछ प्राचीन कलाकृतियों पर, जो आज भी चर्च ऑफ द रेज़रेक्शन में मौजूद हैं, इन वस्तुओं को पूजनीय सिल्वेस्टर, ओब्नोरस्की चमत्कारकर्ता के मठ को समर्पित करने के संबंध में शिलालेख (उकेरे हुए, कढ़ाई किए हुए और हस्तलिखित) हैं।[3252] बचे हुए पांडुलिपियों में 1645 से चमत्कारों के रिकॉर्ड शामिल हैं; कुल 23 चमत्कारों का वर्णन किया गया है। जिन पर राक्षसों का साया था, साथ ही जो मानसिक विक्षिप्तता, आंखों की बीमारियों या अंधापन, बहरापन, लकवा या गूंगेपन से पीड़ित थे, वे पूज्यनीय की अवशेषों पर ठीक हो गए। यहाँ ऐसा ही एक उदाहरण है। 1645 में, जॉब नामक एक हायरomonk, जो मठ में सेवा करता था, ने मठ के किसानों को इकट्ठा होने और मठ के पास एक वन-झुरमुट को जलाने के लिए लकड़ी के रूप में काटने का आदेश दिया। किसान काम में जुट गए। जोब के हिस्से से, यह आदेश पापपूर्ण था: उसने मनमाने तरीके से पूजनीय सिल्वेस्टर के जंगल पर अतिक्रमण कर लिया था। ईश्वर के क्रोध को भड़काने के बाद, जोब अंधा हो गया और अब वह देख नहीं सकता था। चार सप्ताह बाद, जोब को अपने पाप का एहसास हुआ और उसने प्रभु ईश्वर, उनकी परम पवित्र माता और पूजनीय सिल्वेस्टर के सामने पश्चाताप करना शुरू कर दिया, और संकल्प लिया कि वह अपनी इच्छा के अनुसार कार्य नहीं करेगा, बल्कि सब कुछ भाइयों की सलाह पर करेगा। वह चर्च गया, एक प्रार्थना सेवा आयोजित की, और अपने पापों की क्षमा और अपनी दृष्टि की बहाली के लिए आँसुओं के साथ प्रार्थना की। पवित्र प्रतिमाओं की पूजा करने के बाद, अंधा योब पूजनीय संत के अवशेषों के पास गया, उन्हें श्रद्धापूर्वक चूमा, और अपनी दृष्टि वापस पा ली। इस चमत्कारी उपचार के बाद, उसने प्रभु परमेश्वर और पूजनीय सिल्वेस्टर का धन्यवाद किया।

9 मई

26 अप्रैल (पुराना तरीका)

[3252] इनमें शामिल हैं: 1693 का एक चाँदी का वेदी क्रॉस; 1699 का रेशमी कढ़ाई वाला वेदी का कपड़ा; 1661 का, प्रत्येक पृष्ठ पर हस्ताक्षरित एक प्रस्तावना; और 1664 की आदरणीय सर्गियस की एक रेशमी कढ़ाई वाली प्रतिमा।

अमासयिा के बशिप, संत बेसलि का शहीदी बलदिान[3253]

26 अप्रैल को स्मरणोत्सव

दुष्ट तानाशाह, रोमन सम्राट मैक्सेंटयिस[3254] के नधिन के बाद, जो परमेश्वर का शत्रु था और प्रभु के क्रूस की शक्ति से वधति हो गया था—जो महान कॉन्स्टेंटाइन को स्वर्ग में दखिाई दयिा था—और पुरातन फरिौन की तरह समुद्र की गहराइयों में मर गया, पश्चमि की रोमन साम्राज्य ने क्रूर उत्पीड़न की एक अवधि के बाद अंततःराहत की सांस ली। पूर्व में, ईसाइयों पर एक अन्य ईश्वर के शत्रु, सम्राट मैक्समियिन[3255] के हाथों उत्पीड़न जारी रहा, जसिने सच्चे ईश्वर का अपमान कयिा और मसीह के वफादार सेवकों पर क्रूरतापूर्वक अत्याचार कयिा। धर्मपरायण सम्राट कॉन्स्टेंटनि ने अपनी बहन का ववािह उससे करके, लसिनियिस[3256] को पूर्व में उसके वरिुद्ध भेजा। उस समय लकिनियिस हमारे प्रभु यीशु मसीह में वश्विास करता था और उसने ईश्वर की मदद से मैक्समियिन को ऐसा प्रहार कयिा कि मैक्समियिन मुश्कलि से थोड़े से सैनकिों के साथ बच पाया; लेकनि लकिनियिस के हाथ से बचने के बाद भी, वह ईश्वर के हाथ से नहीं बच सका। जब वह सलिसियिा के शहर तारसस में छपिकर रह रह[3257] , तो उसका पूरा शरीर अचानक असाध्य घावों से भर गया, जसिसे वह आग जैसी असहनीय पीड़ा में खुद को ज़मीन पर पटक देता था; उसका मांस, पघिले हुए मोम की तरह, उसके हड्डयिों से टुकड़ों में गरि रहा था, और उसकी पापी आत्मा केवल मांस और खून रहति एक कंकाल से चपिकी हुई थी। अंत में, असहनीय पीड़ा से हड्डयिाँ भी एक-दूसरे से अलग होने लगीं, और वह, यह महसूस करते हुए कि उसने अपनी दुष्टता और क्रूरता में मसीह के नर्दिोष सेवकों को सताया और मारा था, अपने देवताओं को कोसते हुए मर गया।

पूरे पूर्व पर नयिंत्रण करने के बाद, लकिनियिस अपनी पत्नी के साथ नकिोमेडयिा में वजियी प्रवेश कयिा। शुरुआत में, हर जगह शांति और सुकून का राज था, जसिसे मक्समियिन के क्रूर अत्याचार के बाद राहत पाने वाले वश्विासयिों को बहुत प्रसन्नता हुई; लेकनि जो कुछ भी अच्छा है, उसका शत्रु—शैतान—ने एक बार फरि ईसाइयों को दुख के सागर में डुबो दयिा। पूर्व में अपनी शक्ति को सुदृढ़ करने के बाद, लकिनियिस ने मसीह परमेश्वर से मुंह मोड़ लयिा और उस घृणति मूर्तपिूजा पर लौट आया जसिमें उसका पालन-पोषण हुआ था। केवल कॉन्स्टेंटनि के साथ सहिासन साझा करने और उसकी ईसाई बहन से शादी करने के लिए, उसने ईसाई धर्म अपना लयिा और कॉन्स्टेंटनि से कसम खाई कि वह कभी भी ईसाई धर्म का त्याग नहीं करेगा, बल्कि हमेशा इसकी रक्षा करेगा। बाद में, पूर्व का सम्राट बनने के बाद, उसने मसीह परमेश्वर की दया को भूल गया, जसिने उसे मैक्समियिन को हराने और पूर्व पर नयिंत्रण पाने में मदद की थी; उसने सम्राट कॉन्स्टेंटनि की दया को भी भूल गया, उससे भी मुंह मोड़ लयिा, जैसे उसने मसीह से मुंह मोड़ा था, और उसका कट्टर दुश्मन बन गया। नकिोमेडयिा में, उसने खुले तौर पर ईसाई धर्म का त्याग कर दयिा, मूर्तयिों की पूजा करने लगा और हर जगह मूर्तपिूजक बलदिानों को बहाल करने का आदेश दयिा, साथ ही एक बार फरि से वश्विासयिों पर अत्याचार करने लगा। सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण, उसने शाही महलों से सभी ईसाइयों को—प्रतष्ठिति व्यक्तयिों, नौकरों और नौकरचालाओं को—नकिाल दयिा, मसीह की दया का मज़ाक उड़ाना शुरू कर दयिा, मूर्तपिूजक वश्विासों पर लौट आया और नर्लिज्जतापूर्वक कामुक पापों में लप्ति हो गया। वह व्यभचिार में डूबा रहा और संतों तथा स्वयं मसीह ईश्वर का मज़ाक उड़ाने के लिए, उसने जबरदस्ती सेनेटर्स की पत्नयिों और बेटयिों—वशिषकर ईसाई महलिाओं—को व्यभचिार के लिए फुसलाया। यह देखकर, उसकी पत्नी, कॉन्स्टेंस नाम की एक धर्मनष्ठि ईसाई, पूरे दलि से दुखी हुई और उसने गुप्त रूप से अपने भाई कॉन्स्टेंटनि को पत्रों में सब कुछ बयां कयिा।

महल में उसकी दासयिों में ग्लाफरिा नाम की एक युवती थी, जो सुंदर मुख वाली और पवत्रि थी, और एक कुलीन इतालवी परविार की ईसाई थी। लसिनियिस ने उसे देखा और अशुद्ध वासना से भरकर, अपने खसासों के मुखयिा, जसिका नाम वेनग्निस था, को आदेश दयिा कि वह अपनी कामना उसके सामने व्यक्त करे। वेनग्निस ने ग्लाफरिा से कहा कि सम्राट, उसे बहुत सम्मान देते हुए, उससे प्रेम करने लगे हैं, उसे देखना चाहते हैं, और उसे सम्राट का स्वागत करने की

[3253] अमासयिा एशयिा माइनर में, ब्लैक सी के तट पर बसा एक छोटा सा शहर है।

[3254] 306 से 312 तक रोमन सम्राट मैक्समियिन के पुत्र, उन्हें कॉन्स्टेंटाइन महान ने हराया और टबिर नदी में डुबो दयिा। वह अपनी क्रूरता के लिए जाना जाता है।

[3255] रोमन सम्राट जसिने 305 से 313 तक सीरयिा और मस्रि पर शासन कयिा।

[3256] 312 से 324 तक सम्राट।

[3257] एशयिा माइनर का एक प्राचीन शहर।

तैयारी करने का आदेश दिया है। लेकिन ईश्वर के भय से भरी वह धर्मनिष्ठ कन्या, इस तरह के प्रस्ताव से आहत हो गई और अपमानित होकर, उस नपुंसक को उसकी निर्लज्जता और गैर-कानूनी हरकत के लिए फटकार लगाते हुए भगा दिया। यह डरते हुए कि कहीं वह रानी के संदेह और ईर्ष्या को न जगा दे, ग्लाफिरा ने उन्हें सब कुछ बता दिया और इन शब्दों के साथ उनसे विनती की:

'प्रभु की खातिर, जिन्होंने स्वर्ग और पृथ्वी की रचना की, जिनका आप भय मानती हैं और जिनकी आपके भाई कॉन्स्टेंटाइन निष्ठापूर्वक सेवा करते हैं, मेरी कुँवारीपन को एक अधर्मी कामुक व्यक्ति द्वारा कलंकित न होने दें।'

ये शब्द सुनकर रानी ग्लाफिरा को उसकी पवित्रता और ईश्वर के भय के कारण बहुत प्रिय करने लगी, और यह विचार करने लगी कि वह उसकी रक्षा कैसे कर सकती है। जब राजा ने उसके बारे में पूछा, तो रानी ने पूरे महल में यह अफवाह फैलाने का आदेश दिया कि ग्लाफिरा पागल हो गई है और मृत्यु के कगार पर बीमार पड़ी है। यह अफवाह राजा तक पहुँची, और उसने ग्लाफिरा के बारे में सोचना बंद कर दिया। फिर रानी ने, समय का इंतज़ार करके, धार्मिक ग्लाफिरा को गुप्त रूप से महल से भेज दिया, और उसे सोने, चांदी, कीमती पत्थरों, शानदार साज-सज्जा, बेहतरीन कपड़ों और हर तरह की अन्य संपत्तियों से भरपूर दान दिया। रानी ने उसकी सेवा के लिए कई पुरुष और महिला दास नियुक्त किए, और उसे अपने कुछ ईमानदार और धर्मनिष्ठ सेवकों की देखभाल में सौंप दिया, और उन्हें आदेश दिया कि वे उस युवती को किसी को भी उसके बारे में एक शब्द बताए बिना आर्मेनिया ले जाएँ, और तब तक वहाँ रहें जब तक ईश्वर परिस्थितियों को बेहतर न कर दे। नौकरों ने रानी को भरोसा दिलाया कि वे उनके आदेशों का पालन अत्यंत सावधानी से करेंगे। उन्होंने ग्लाफिरा और उसकी दासियों को पुरुषों के कपड़े पहनाए और उन्हें सुरक्षित रूप से निकोमेडिया से बाहर ले गए। एक लंबी यात्रा के बाद, जब वे पहले ही आर्मेनिया के करीब पहुँच रहे थे, तो वे अमासिया शहर पहुँचे, जहाँ पोंटस का मेट्रोपॉलिटन रहता था।

ग्लाफिरा शहर की सुंदरता से मोहित हो गई; उसने अपने साथियों से सुझाव दिया कि यदि उन्हें कोई ईसाई मिल जाए तो वे वहीं रुकें, और उन्हें राहगीरों से पूछने का आदेश दिया। उन्हें एक युवक मिला जो अमासिया के एक सम्मानित नागरिक - क्वेंटिस - के घर में रहता था। इस युवक को एहसास हो गया कि यात्री अपने साथी विश्वासियों की तलाश में थे, और उसने अपने मालिक को यह बात बताई। क्वेंटिस तुरंत खुद यात्रियों से मिलने बाहर आया, उन्हें अपने घर आने और जब तक वे चाहें तब तक वहीं रहने के लिए आमंत्रित किया। उसने कहा कि वह स्वयं एक ईसाई था, शहर में कई ईसाई थे, और उनके पास प्रेरितों की तरह एक सम्मानित बिशप था। यात्रियों ने ये शब्द खुशी से सुने और क्वेंटिस के पास गए, जिन्होंने उन्हें रहने के लिए एक अलग, शांत कमरा प्रदान किया।

शहर के बिशप, बेसिल नामक व्यक्ति ने भी उनसे मुलाकात की, जिनके बारे में हम बाद में बात करेंगे—वह वाक्पटुता से परिपूर्ण और आध्यात्मिक गुणों से संपन्न व्यक्ति थे। उन्होंने यात्रियों से पूछा कि वे कौन थे और कहाँ से आए थे। पवित्र ग्लाफिरा ने पूरा सच बताया – कि वह मूल रूप से इटली की रहने वाली थी, ईसाई धर्म का पालन करती थी, सम्राट कॉन्स्टेंटाइन की बहन और सम्राट लिसिनियस की पत्नी की दासी रह चुकी थी, और अपनी यात्रा का कारण समझाया। उसकी बात सुनने के बाद, बिशप सेंट बेसिल और क्वेंटिस ने उसे और उसके सेवकों को घर से बाहर निकलने या किसी से बात करने से मना कर दिया, कहीं ऐसा न हो कि शहर का गवर्नर उसके बारे में जान जाए और अमासिया के सभी ईसाई उसके कारण मुसीबत में पड़ जाएँ।

उस समय, बिशप सेंट बेसिल शहर के भीतर एक चर्च का निर्माण कर रहे थे, क्योंकि ईसाइयों के पास शहर के बाहर केवल एक छोटा सा चर्च था। धन्य ग्लाफिरा ने बिशप को चर्च के निर्माण के लिए बहुत सारा सोना और चांदी दी—वह सब कुछ जो रानी ने उसे दिया था—और अपने लिए कुछ भी नहीं रखा। उसने रानी को पत्र लिखा, जिसमें उसे बताया कि वह कहाँ छिपी हुई थी और किसके घर में रह रही थी; उसने चर्च के निर्माण के बारे में भी लिखा, और काम पूरा करने तथा चर्च को सजाने के लिए और सोने को भेजने का अनुरोध किया। रानी ने खुशी-खुशी उसकी प्रार्थना स्वीकार कर ली, चर्च और बिशप को उदार उपहार भेजे, और अपने पत्र में पवित्र ग्लाफिरा को संत बेसिल की देखभाल में सौंप दिया। थोड़ी ही देर बाद, शैतान की साज़िशों के कारण, रानी को लिखी गई ग्लाफिरा का पत्र चेंबरलेन वेनगिनस के हाथ लग गया, जिससे उसे पता चला कि वह युवती, जिसे हर कोई मृत समझता था, जीवित थी और अमासिया में थी। वेनगिन ने यह सब लिसिनियस को बताया, जिसने क्रोध से आग-बबूला होकर, अमासिया के राज्यपाल को एक आदेश लिखा कि वह ईसाई बिशप बेसिल और रानी की दासी ग्लाफिरा को हथकड़ी पहनाकर तुरंत निकोमेडिया भेज दे। लेकिन ईश्वर की इच्छा से, धन्य और पवित्र कन्या ग्लाफिरा का निधन उस आदेश के अमासिया के राज्यपाल तक पहुँचने से पहले ही हो गया। तब

राज्यपाल ने केवल बेसलि को हथकड़ी पहनाकर नकिोमेडयिा भेज दयिा, और साथ ही यह रपिोर्ट भी भेज दी कि ग्लाफरिा की पहले ही मृत्यु हो चुकी थी। दो डकिन, पार्टेनयिस और थयिोटमिस, बशिप के साथ अमासयिा से रवाना हुए, और रास्ते में अधर्मी और क्रूर सैनकिों के हाथों बहुत कष्ट सहते हुए चले। नकिोमेडयिा में, परमेश्वर के सेवक बेसलि को कैद कर दयिा गया, जबकि पार्टेनयिस और थयिोटमिस ने एल्पडिफिोरस नामक एक मेहमाननवाज़ ईसाई के साथ कालकोठरी से कुछ दूर रहने की व्यवस्था की।

संत बेसलि के बारे में सब कुछ जानने के बाद, एल्पडिफिोर ने खुद और दो डकिनों के लिए बशिप से मलिने की अनुमति पाने के लिए एक सोने के सक्कि के से जेल के एक पहरेदार को रश्वित दी, जसिे वह जानता था। इस प्रकार वे अक्सर संत बेसलि से मलिने जाते थे, हर दनि पवत्रि भजन गाते और रात में भक्तपिूर्वक प्रार्थना करते थे।

जसि दनि उन्हें राजा के सामने पूछताछ के लिए पेश होना था, उसकी पूर्व संध्या पर, पवत्रि बशिप ने जेलर को बुलाया और उससे डकिनों और एल्पडिफ़िोर को बुलाने के लिए कहा। जेलर ने खुशी-खुशी यह अनुरोध पूरा कयिा। तब बेसलि ने, जैसा कि उनका रवािज था, दाऊद के भजन गाना शुरू कयिा, और उन्होंने *'हे यहोवा, दाऊद और उसकी सारी कष्ट-परेशानयिों को याद कर'* (भजन संहति 131:1) भजन से शुरुआत की। जब वह इन शब्दों पर पहुँचा: *'यदि मैं भोर के पंख ले लूँ और सबसे दूर के समुद्र में बसऊ, तब भी वहाँ तेरा हाथ मुझे मार्ग दखिाएगा, और तेरा दाहनिा हाथ मुझे दृढ़ता से थामेगा'* (भजन संहति 138:9-10), तो उसने अपने हाथ उठाकर इन्हें तीन बार दोहराया। प्रार्थना कर रहे उस व्यक्ति के दुख और आँसू देखकर, डकिनों ने सोचा कि क्या बशिप आगे आने वाले कष्टों से डर रहे थे। लेकनि वह इन शब्दों का अर्थ जानता था, जो यह पूर्वसूचना देते थे कि उसके सरि कट जाने के बाद, उसका शरीर समुद्र में फेंक दयिा जाएगा। भोर होते ही, भजन गाना समाप्त करने के बाद, बशिप ने डकिनों से कहा:

'मेरे भाइयो, शैतान के उकसावे पर, हम क्रूर परीक्षाओं का सामना करते हैं। लेकनि डरो मत, दुख से पराजति मत हो; वश्विास में दृढ़ और अटूट रहो, ताकि तुम प्रभु के आने के दनि लज्जति न हो जाओ। अपने आत्मा की आँखों से, उस पर प्रसन्नतापूर्वक दृष्टि टिकाओ जो अकेले ही हमें बचा सकता है, जो दुख को आनंद में, वलिाप को हर्ष में, आँसुओं को हँसी में, और परश्रिम को वश्राम में बदल सकता है। परमेश्वर के पुत्र, यीशु मसीह के नमित्ति जीवन के सभी आशीर्वादों और सुखों को कुछ भी न समझो, ताकि तुम सभी संतों के साथ, उसके राज्य के वारसि बन सको। जानो, मेरे बच्चों, कि आज ही रात प्रभु स्वयं मुझ पर प्रकट हुए और उन्होंने प्रकट कयिा कि इस जीवन में मेरा क्या अंत होगा और परमेश्वर के सेवक, मुझ में उनकी कतिनी महमिा प्रकट होगी। इसलिए, शोक न करो, बल्कि अपने समुदायों में लौट जाओ और ईसाई धर्म के आत्मा में भाइयों को मजबूत करो। मेरी जगह, कैलकिस्टस के पुत्र यूटकियिस को बशिप चुनों। इस प्रकार ईश्वर ने मुझसे कहा; वह मेरे पापी शरीर को तुम्हारे हाथों में सौंप देगा।

डीकनों ने जोर-जोर से रोना शुरू कर दयिा। बशिप ने अपना प्रथागत उपदेश देने के बाद, उन्हें अमासयिा लौटने के लिए कहा। उन्होंने एल्पडिफिोरस से ये शब्द कहे:

'मेरे भाइयो! परमेश्वर ने आपको यात्रयिों की सेवा करने के लिए चुना है, और आपके प्रेम के लिए आपको स्वर्ग में अनंत पुरस्कार मलिेगा। मैं अपने इन दो आध्यात्मकि बच्चों को आपके हवाले करता हूँ; इन्हें न छोड़िए, बल्कि उनके दुख में सहभागी बनिए। और जब परमेश्वर आपको अपनी सेवा के लिए बुलाए, तो परश्रिम से कार्य कीजिए।'

जब संत ने एल्पडिफिोरस और उसके दोनों शष्यिों को वदिा कर दयिा, तो राजा ने उसे पूछताछ के लिए बुलाया और सबसे पहले उस पर ग्लाफरिा को अपने यहाँ रखने, उसे छपिाने और राजा को उसकी सूचना न देने का आरोप लगाया। पवत्रि बशिप ने तुरंत इतनी नर्भिीकता से एक उपयुक्त उत्तर दयिा कि उसने राजा को क्रोधति कर दयिा और उसे एक बार फरि जेल वापस ले जाया गया। फरि लसिनियिस ने उसके पास एक ट्रब्यिून[3258] को इस वादे के साथ भेजा कि वह न केवल ग्लाफरिा की घटना को भूल जाएगा, बल्कि उसे सम्मानों से नवाजेगा, और यहां तक कि यदि बशिप देवताओं को बलदिान चढ़ाए तो उसे शहर के सभी पुरोहतिों का प्रमुख भी नयिुक्त कर देगा। सम्माननीय बेसलि ने ट्रब्यिून को उत्तर दयिा:

'मेरे शब्दों को राजा तक पहुँचा दो। भले ही तुम मुझे पूरा राज्य दे दो, वह भी उस चीज़ के बराबर नहीं होगा जो तुम मुझसे छीनना चाहते हो: तुम मुझे सच्चे ईश्वर से मुँह मोड़ने और राक्षसों - जो आत्मा के वनिाशक हैं - की सेवा करने के लिए लुभा रहे हो, ताकि मैं अमर महमिा का त्याग करूँ और क्षणकि तथा क्षणभंगुर सम्मानों का आनंद लूँ, जनिका वैभव

[3258] एक सैन्य टुकड़ी का कमांडर।

मुझे घृणति है, और जो प्रकाश की ओर नहीं, बल्कि घोर अंधकार की ओर ले जाते हैं। परन्तु यदि तुम मेरी अच्छी सलाह मानना चाहते हो, तो तुम्हारे लिए यही बेहतर होगा कि तुम मुझसे अपनी गलती स्वीकार करो और पहले की तरह मसीह के पास लौट आओ, जिनसे तुम मुँह मोड़ आए हो। विनम्र हो जाओ और हमारे धर्मी उद्धारकर्ता, दयालु ईश्वर के चरणों में गिर पड़ो। पश्चाताप करो और अपनी दुष्टता से मुंह मोड़ लो, कहीं ऐसा न हो कि धर्मी न्यायाधीश—जिसे तुमने कभी ईश्वर कहा था और जिससे तुमने मुंह मोड़ लिया है—तुम्हें तुम्हारी मूर्खता के लिए दंडित करे।

ट्रबि्यून से संत के ये वचन सुनकर, लिसिनियस ने आदेश दिया कि बिशप को एक बार फिर सम्राट की आज्ञा मानने के लिए समझाया जाए; और यदि वह मना कर दे, तो उसका सिर काटकर उसे समुद्र में फेंक दिया जाए। उसने कहा, 'तब हम देखेंगे कि क्या गलीलियाई[3259] उसे बचाएगा।'

ट्रबि्यून एक बार फिर संत के पास गया और उससे कहा:

'जीवन और मृत्यु में से चुनो; राजा की आज्ञा मानो और उसके देवताओं की पूजा करो, अन्यथा तुम्हारा सिर तुरंत काटकर समुद्र में फेंक दिया जाएगा।'

ऐसे धमकियाँ सुनकर, संत ने प्रसन्नतापूर्वक कहा:

'मैं केवल अपने अमर राजा और ईश्वर की सेवा करना चाहता हूँ, और मैं केवल उनके आज्ञाओं का पालन करता हूँ।' जहाँ तक उन लोगों का सवाल है जिन्हें आप देवता कहते हैं, वे राक्षस हैं जो अपने पूजकों सहित, धर्म के न्याय के दिन—मेरे सच्चे और एकमात्र ईश्वर, सभी के प्रभु—द्वारा नरक की न बुझने वाली आग में, घोर अंधकार में फेंक दिए जाएँगे, जहाँ वे रोएँगे और अपने दाँत पीसेंगे। मेरे साथ जो चाहो सो करो। मैं मसीह के लिए न केवल तलवार से सिर कलम करवाने और समुद्र में डुबोए जाने, बल्कि अनगिनत अन्य यातनाओं को सहने के लिए भी तैयार हूँ। अपनी अंतिम साँस तक, मैं अपने सृष्टिकर्ता, ईश्वर का त्याग नहीं करूँगा, और न ही मैं शाश्वत अग्नि में डाला जाऊँगा।

इन शब्दों से यह मानकर कि उसकी विनती व्यर्थ थी, ट्रबि्यून ने संत को कोड़े मारने, फिर सिर कलम करने और समुद्र में फेंकने का आदेश दिया। इसी तरह, बहुत से ईसाइयों, विशेषकर परमेश्वर के झुंड के चरवाहों को मृत्युदंड दिया गया और वे मछलियों का भोजन बन गए। मसीह के लिए शहीद बेसिल ने प्रसन्नता से प्रहार झेले और उद्घोष किया:

'कोई यातना—न दर्द, न जेल, न आग, न तलवार, न ही स्वयं मृत्यु—मुझे सर्वशक्तिमान ईश्वर से अलग नहीं कर सकती। वह मुझे सभी यातनाओं से मुक्त करने के लिए पर्याप्त शक्तिशाली है।'

फाँसी के स्थान पर जाते समय, पवित्र शहीद ने दाऊद के भजन गाए। एल्पडिफोर उनके पीछे-पीछे चले, उनके साथ डकिन और कुछ ईसाई भी थे। जब वे सभी निर्धारित स्थान पर पहुँचे, तो एल्पडिफोर ने सैनिकों को कुछ सिक्के दिए और उनसे बेसिल को अपने दोस्तों से थोड़ी देर बात करने की अनुमति देने का अनुरोध करने लगे। सैनिक मान गए। समुद्र तट पर घुटने टेककर और अपने हाथ उठाकर, मसीह के इस वफादार सेवक ने इन शब्दों के साथ प्रार्थना करना शुरू किया:

'हे प्रभु, मेरे परमेश्वर, जिसने स्वर्ग की अमूर्त शक्तियों की रचना की, जिसने आकाश को चमड़े की तरह फैलाया, जिसने पृथ्वी को जल पर स्थापित किया, जिसने समुद्र की रचना की, जो सर्वत्र और सदा उपस्थित हैं, जो उन पर दयालु हैं जो आपसे डरते हैं और आपके आज्ञाओं का पालन करते हैं, मेरी प्रार्थनाओं को सुनें और अपने विश्वासी झुंड की रक्षा करें, जिसके लिए आपने मुझे, अपने दीन सेवक को, चरवाहे के रूप में नियुक्त किया है, हर विपत्ति से, हेलेनिक अधर्म से, और उन लोगों की बदनामी से जो आप पर अपमानजनक बातें करते हैं। हे सर्वशक्तिमान, मूर्तिपूजा को नष्ट कर; शैतान की योजनाओं को विफल कर; और अपनी पवित्र कलीसिया को ऊँचा उठाकर बढ़ा। इस नगर और इसके आसपास के सभी लोगों को मन और हृदय की एकता में ला, ताकि सभी तुझे, सच्चे परमेश्वर, का अंगीकार कर सकें। सभी लोगों को भलाई के लिए और आपकी सेवा के लिए उत्साही बनाएं, ताकि सभी में पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा का नाम महिमामय हो, अब और हमेशा, युगानुयुग। आमीन।

प्रार्थना समाप्त करने के बाद, संत ने एल्पडिफोरस और दोनों डकिन को गले लगाया और चूमा, और उनसे उन्हीं शब्दों में संबोधित किया जिनसे महान प्रेरित पौलुस ने एक बार एफिसुस के याजकों को अभिवादन किया था (देखें प्रेरितों के काम 20:28–36):

[3259] अर्थात् यीशु मसीह।

'धन्य है परमेश्वर, जिसने हमें अदृश्य शत्रुओं के चंगुल में न पड़ने दिया, बल्कि उनकी योजनाओं को चूर-चूर कर हमें बचा लिया; अब शत्रु हमें परीक्षा में डालने की हिम्मत नहीं करेंगे। मेरे भाइयों और आध्यात्मिक बच्चों को मेरा प्रणाम कहियो। हमारे प्रभु यीशु मसीह की कृपा आप सभी पर बनी रहे। आमीन।'

तब पवित्र शहीद ने जल्लाद से कहा, 'मित्र! जैसा तुझे आज्ञा दी गई है, वैसा कर', और एक बार फिर घुटने के बल बैठकर आनंदपूर्वक अपनी गर्दन तलवार की चोट के लिए प्रस्तुत कर दी, और इस प्रकार अपने धर्मपरायण कार्य को पूरा किया।

जब संत का सिर कलम कर दिया गया, तो एल्पडिफिोर ने सैनिकों को सोना देकर उनसे विनती की कि वे शहीद के शरीर को समुद्र में न फेंकें, बल्कि उसे दफनाने के लिए उसे सौंप दें। लेकिन सैनिकों ने मना कर दिया, उन्होंने कहा कि वे राजा से डरते हैं, जो ऐसा करने पर उन्हें मौत की सजा देगा। तब एल्पडिफिोर ने केवल बिशप का सिर माँगा, लेकिन उसे फिर से मना कर दिया गया। और इस प्रकार सैनिकों ने शहीद का शरीर और सिर एक मछली पकड़ने वाली नाव में रखा, तट से दूर चले गए, और शरीर को एक जगह पानी में तथा सिर को दूसरी जगह फेंक दिया।

किनारे से, ईसाइयों ने देखा और जोर-जोर से रोए, उनमें निकोमेडिया के एक पुरोहित जॉन भी थे, जिन्होंने इस पूरी घटना को देखा था और बाद में पवित्र शहीद के इस पूरे पराक्रम का वर्णन किया था। एल्पडिफिोरस, जो मसीह के एक वफादार सेवक थे, दोनों डिकिन को अपने घर ले गए और उन्हें यथासंभव सांत्वना दी।

उसी रात, उन्हें अपनी नींद में एक दैवीय दर्शन हुआ; एक देवदूत उनके सामने प्रकट हुआ और कहा:

'बिशप बेसिल अब सिनोप में हैं और वहाँ आपका इंतजार कर रहे हैं। उनके डिकिनों को साथ लेकर उनके पास जाने के लिए समुद्र यात्रा करो।'

उस रात यह दिव्य दर्शन तीन बार दोहराया गया। एल्पडिफिोर ने डिकिनों को इसके बारे में बताया और उनसे पूछा कि क्या वे जानते हैं कि सिनोप किस तरह की जगह या शहर है। पार्टेनियस ने जवाब दिया:

'सिनोपे एक तटीय शहर है जहाँ संत एंड्रयू द अपोस्टल ने मसीह की शिक्षाओं का प्रचार किया था। और मैंने सपने में संत बेसिल को देखा। मुझे ऐसा लगा कि वह प्रेरित को अपना हाथ दे रहे थे, उनके साथ चर्च में प्रवेश कर रहे थे, और मुझसे कह रहे थे: "जो तुम देख रहे हो वह पूरा होगा।"'

तब एल्पडिफिोर, अपने साथ पर्याप्त सोना और यात्रा के लिए आवश्यक सभी चीजें लेकर, डिकिनों के साथ एक जहाज पर चढ़ा और सिनोपे शहर के लिए रवाना हो गया, और प्रार्थना कर रहा था कि ईश्वर उसके सपने में देखे गए दर्शन की व्याख्या करें।

जैसे ही जहाज़ सिनोप के पास पहुँचा, एल्पडिफिोर ने फिर से सपने में स्वर्गदूत को देखा, जिसने कहा:

'शहर के दाईं ओर समुद्र में अपना जाल डालो, और तुम्हें वह खजाना मिलेगा जिसकी तुम तलाश कर रहे हो।'

अपनी उंगली से उस स्थान की ओर इशारा करते हुए, देवदूत ने उन संकेतों का भी संकेत दिया जिनसे उसे ढूंढना था। एल्पडिोफोरस को ऐसा लगा कि वह वहाँ एक शानदार महल देख सकता है, और उसके भीतर बेसिल कई शानदार योद्धाओं के साथ था। 'क्या तुम उसे देखते हो,' देवदूत ने जारी रखा, 'जिसकी तुम तलाश कर रहे थे? सुबह उसे ले लो।' जागने पर, एल्पडिफिोर ने अपने साथियों को उस दिव्य दर्शन के बारे में बताया।

सुबह-सुबह वे शहर के दाहिने हिस्से की ओर रवाना हुए और, देवदूत द्वारा दिए गए सुरागों का पालन करते हुए, उस स्थान को ढूंढ लिया। वहाँ उन्होंने मछली पकड़ने के लिए अपने जाल तैयार करते मछली पकड़ने वालों को देखा। एल्पडिफिोरस ने इन मछली पकड़ने वालों से कहा:

'हम तुम्हें जो कुछ भी तुम माँगोगे, देंगे, बशर्ते कि तुम हम में से प्रत्येक की किस्मत के लिए अपनी जालें डालो और जो कुछ भी पकड़े, वह हमें दे दो।'

मछली पकड़ने वाले राज़ी हो गए और कीमत तय कर ली। एल्पडिफिोरस और डिकिन्स ने यह तय करने के लिए पासा फेंका कि पहला जाल फेंकने की बारी किसकी होगी। पासा थियोटिमस के हिस्से में आया। उन्होंने जाल फेंका, लेकिन कुछ भी नहीं पकड़ा। फिर उन्होंने पार्थेनियस की बारी आजमाई, और फिर भी कोई सफलता नहीं मिली। तब एल्पडिफिोरस ने कहा:

'मैं तुम्हें आज्ञा देता हूँ कि जाल मेरे नाम पर नहीं, बल्कि मेरे ईश्वर के नाम पर डालो, और मुझे उस पर भरोसा है कि पिकड़ व्यर्थ नहीं होगी।'

जब उन्होंने जाल खींचना शुरू कयिा, तो मछली पकड़ने वालों ने उसका वजन महसूस कयिा और एक-दूसरे से कहने लगे:

'इस आदमी का देवता अन्य देवताओं से अधकि भाग्यशाली है।'

जाल खींचने पर, मछुआरों ने एक मृत व्यक्तकिा शव देखा, और अब, इसके वपिरीत, यह कहने लगे कि एल्पडिफिोरस का पकड़ा हुआ माल सबसे दुर्भाग्यपूर्ण था। वे लाश को वापस पानी में फेंकना चाहते थे, लेकनि एल्पडिफिोरस और उनके साथयिों ने आपत्तजिताई और मछली पकड़ने वालों से शव को सही तरीके से दफनाने के लिए सौंपने की मांग की, और उन्होंने तयशुदा भुगतान ले लयिा। मछली पकड़ने वालों ने पैसे लेने से इनकार कर दयिा, यह कहते हुए कि उन्हें मछली नहीं, बल्कि एक लाश मलिी है, लेकनि अंत में, एल्पडिफिोरस के आग्रह पर, उन्होंने इसे स्वीकार कर लयिा। संत के शरीर को कनिारे पर लाया गया, जबकि डकिन्स और एल्पडिफिोर ने श्रद्धापूर्वक उसे छुआ, और आनंद के आँसू बहाए। वे इस चमत्कार को देखकर चकति रह गए, क्योंकि सिरि—जसिे जल्लाद ने धड़ से अलग कर अलग से समुद्र में फेंक दयिा था—अब अपनी सही जगह पर था, और तलवार का नशिान गर्दन पर केवल एक दाग के रूप में रह गया था। शहीद के शरीर से एक अद्भुत सुगंध नकिल रही थी। ईसाइयों ने संत के अवशेषों को साफ दफ़न वस्त्रों में लपेटा, एक रथ करिाए पर लयिा, उन्हें अमासयिा ले गए, और वहाँ, उनका शोक मनाने के बाद, उन्होंने उन्हें उनके द्वारा स्थापति चर्च में सम्मान के साथ दफ़नाया। अमासयिा के बशिप, संत बेसलि द्वारा कयिा गया शहीद का यह कारनामा था।

उनकी मृत्यु के तुरंत बाद, महान सम्राट कॉन्स्टेंटाइन, अपनी बहन के गुप्त पत्रों से लसिनियिस की वलिासति, धर्मत्याग और क्रूरता के बारे में जानकर, एक बड़ी सेना के साथ उसके खलिाफ़ march कयिा और ईश्वर की मदद से उसे हरा दयिा। लसिनियिस को जीवति पकड़ लयिा गया और गॉल में कैद कर दयिा गया, जहाँ उसका दुखद अंत हुआ। पूरा पूर्व उत्पीड़कों के अत्याचार से मुक्त हो गया और स्वतंत्र रूप से मसीह ईश्वर की उपासना करने लगा। संपूर्ण ब्रह्मांड में पति, पुत्र और पवत्रि आत्मा की महमिा, त्रमिूर्तमिें एक ईश्वर, जसिकी सर्वदा और सर्वदा के लिए सभी द्वारा सम्मान और उपासना हो, दूर-दूर तक फैल गई। आमीन।

कॉन्टाकयिन, स्वर 4:

राजा की आज्ञा को ठुकराकर, हे बेसलि, तुमने स्वर्ग का राज्य प्राप्त कयिा; उसमें आनंदति होकर, हे पवत्रि शहीद, हमारी भी याद करो जो तुम्हारी स्मृतकिा सम्मान करते हैं।

पवत्रि लोगों में, परम के बशिप, हमारे पति स्टीफन का जीवन

26 अप्रैल को स्मरणोत्सव

संत स्टीफन का जन्म यूस्ट्यूग शहर में[3260] को हुआ था। उनके धर्मपरायण पति, रूसी वंशज समिीओन, मदर ऑफ गॉड के कैथेड्रल में एक रीडर थे। उनकी पत्नी, मारयिा, भी एक आदर्श ईसाई थीं, जनिकी नसों में भी रूसी रक्त बहता था। इन अद्भुत माता-पति का एक अद्भुत पुत्र था, जसिने अपने शुरुआती बचपन से ही उन्हें आनंद और प्रसन्नता दी। अभी एक छोटा बच्चा ही था कि उसे पढ़ने के लिए भेजा गया, और अपनी तीव्र स्मृति, तेज बुद्धि और असाधारण लगन की बदौलत, उसने अपने पाठों में उल्लेखनीय गति और दुर्लभ दृढ़ता के साथ महारत हासलि कर ली। अपनी पढ़ाई शुरू करने के एक साल भी नहीं बीता था कि उसने उसी चर्च में, जहाँ उसके पति सेवा करते थे, कैनोनार्क और रीडर का पद सही मायने में हासलि कर लयिा था। पवत्रि धर्मग्रंथों के ज्ञान में अपने कई समकालीनों, रश्तिेदारों और अजनबयिों से आगे रहते हुए, उन्होंने अपने सदाचारी जीवन से उन पर और भी बढ़त बना ली। वह ब्रह्मचर्य, पवत्रिता, शुद्धता और परश्रिम में पले-बढ़े, और उन्होंने भ्रष्ट लोगों तथा उन लोगों की संगत से परहेज कयिा जो अपना समय तुच्छ खेलों और मनोरंजन में बतिाते थे। पुरानी और नई वाचा की कई पुस्तकें, जनि्हें उन्होंने पढ़ा, ने उनके मन में इस क्षणभंगुर जीवन की व्यर्थता का वचिार भर दयिा, जो एक नदी की तरह तेजी से बहता है और जल्द ही खेत के फूल की तरह मुरझा जाता है। साथ ही, पवत्रि धर्मग्रंथों ने उनके हृदय में परमेश्वर के प्रति अटूट प्रेम की भावना जगाई। इस प्रचलति वचिार के

[3260] वह, पूरी संभावना है, 1340 में पैदा हुआ था।

प्रभाव में, उन्होंने रोस्तोव में सेंट ग्रेगरी द थियोलोजियन के मठ में एबॉट मैक्सिमि से संन्यास की शपथ ली। मठ में पुस्तकों का एक समृद्ध संग्रह था। यहाँ, स्टीफन ने वास्तव में एक संन्यासी जीवन जिया, और साथ ही ज्ञान की अपनी प्यास भी बुझाई। उपवास, प्रार्थना, आँसू, पश्चाताप, विनम्रता, धैर्य, दया, आज्ञाकारिता, प्रेम और दिन-रात प्रभु के विधान का अध्ययन – ये वे सद्गुण थे जो उस नव-संन्यस्त भिक्षु को सुशोभित करते थे। इसके अलावा, उन्होंने स्वयं कई पुस्तकें लिखीं, जो आज भी उनकी धार्मिकता और लगन की गवाही देती हैं। अपने सदाचारी जीवन के लिए, उन्हें रोस्तोव के बिशप आर्सेनियस[3261] द्वारा एक डिकन के रूप में अभिषिक्त किया गया, जिनके मार्गदर्शन में उनका संन्यासी जीवन में उपनयन संस्कार भी हुआ था। कुछ वर्षों बाद, सर्व-रूसी मेट्रोपोलिस के शासक, मिकिल, जो मित्या के नाम से जाने जाते थे[3262] , के आदेश पर, उन्हें कोलोमना के बिशप गेरसम द्वारा एक प्रेस्बिटिर के रूप में अभिषिक्त किया गया।

नव-दीक्षित ह्येरोमोंक ने सुना कि पिरम क्षेत्र, जो लंबे समय से मस्कोवाइट राज्य के अधीन था, अभी तक पवित्र बपतिस्मा से प्रबुद्ध नहीं हुआ था और पूरी तरह मूर्तिपूजा में डूबा हुआ था। सच्चे ईश्वर की अज्ञानता के अंधकार में इतने सारे मानव आत्माओं के विनष्ट होने की कल्पना से, संत स्टीफन में पर्म लोगों के पास जाकर उन्हें शाश्वत नरक से बचाने की अटूट इच्छा जागृत हुई। लेकिन इस अंधकार पर दुनिया के स्रष्टा - ईश्वर - के ज्ञान की सच्ची रोशनी को ठीक से बिखेरने के लिए, नए प्रेरित को सबसे महत्वपूर्ण पवित्र ग्रंथों का पर्मियन भाषा में अनुवाद करने की आवश्यकता थी। स्टीफन ने इस ई भाषा का गहन अध्ययन किया और पर्मियन वर्णमाला[3263] का संकलन किया। पवित्र धर्मग्रंथों की बेहतर समझ और उन्हें पर्मियन भाषा में सबसे सटीक रूप से अनुवादित करने की चाह में, प्रेरित मिशन के उत्तराधिकारी ग्रीक भाषा में भी पारंगत हो गए। अब वे तीन भाषाओं: रूसी-स्लावोनिक, ग्रीक और पर्मियन में पूर्ण समझ के साथ पवित्र ग्रंथों को पढ़ सकते थे।

यह अच्छी तरह जानते हुए कि ईश्वर की कृपा के बिना कोई भी मनुष्य कोई भी पुण्य कार्य नहीं कर सकता, उन्होंने अपने मार्ग को आशीर्वाद देने के लिए ईश्वर से लंबे समय तक और भक्तिपूर्वक प्रार्थना की।

चर्च के एक आज्ञाकारी पुत्र के रूप में, जो इसके आध्यात्मिक अधिकारियों की अनुमति के बिना कभी भी कोई महत्वपूर्ण कार्य शुरू नहीं करता था, संत स्टीफन उस समय के रूसी मेट्रोपोलिस के विकर, कोलोम्ना के बिशप गेरसम से मिलने के लिए रवाना हुए। उसके सामने उपस्थित होकर, उसने अपनी प्रबल इच्छा व्यक्त की: या तो पर्म लोगों को मसीह के प्रति परिवर्तित करना[3264] , या उनके हाथों पीड़ा सहना और हमारे उद्धारकर्ता के लिए अपना जीवन त्याग देना, प्रेरितों के वचनों की पूर्ति के लिए: *'क्योंकि मसीह की ओर से तुम्हें न केवल उस पर विश्वास करने का, बल्कि उसके लिए दुख सहने का भी वरदान मिला है'* (फिलि. 1:29)। बिशप मसीह के प्रति उनके उत्साह और मानव आत्माओं के उद्धार की उनकी इच्छा देखकर चकित रह गए। उसमें ईश्वर की पुकार और पवित्र आत्मा के कार्य को पहचानते हुए, बिशप ने प्रभु मसीह की महिमा की और धन्य स्टीफन को उसके सामने आने वाले पराक्रम के लिए आशीर्वाद दिया। साथ ही, उन्होंने उसे पवित्र अवशेषों के अंश, एंटिमेंशन्स, पवित्र क्रिस्म और चर्च के अभिषेक के लिए आवश्यक सभी चीजें दीं।

धार्मिक अधिकारियों से अनुमति प्राप्त करने के बाद, स्टीफन ने एक आदर्श नागरिक के रूप में, नागरिक अधिकारियों के वैध समर्थन के माध्यम से अपने कार्य को सुरक्षित करने का ध्यान रखा और ग्रैंड प्रिंस से सुरक्षा पत्र प्राप्त किए।

पूरी तैयारी करने के बाद, स्टीफन अपनी यात्रा पर निकल पड़े। पर्म की अधर्मी भूमि में पहुँचने पर, उन्होंने प्रभु से भक्तिपूर्वक प्रार्थना की और भेड़ियों के बीच एक भेड़ की तरह, एक पथभ्रष्ट और भ्रष्ट लोगों के बीच घूमना और उन्हें ईसाई धर्म की शिक्षा देना शुरू कर दिया। कुछ लोग, उनका उपदेश सुनकर, पहले तो इस नई शिक्षा से चकित हो

[3261] आर्सेनियस प्रथम, जिन्होंने 1374 से 1380 तक रोस्तोव का पद संभाला।

[3262] मित्याई, ग्रैंड प्रिंस दिमित्री इओआनोविच के प्रिय पुरोहित और पापस्वीकारकर्त्ता, और बाद में मास्को के स्पास्स्की मठ के आर्चिमैंड्राइट, ने 1378 में संत एलेक्सियस की मृत्यु के बाद बिना अभिषिक्त हुए सर्व-रूसी मेट्रोपोलिस का प्रशासन किया, और 1379 में कॉन्स्टेंटिनोपल की यात्रा के दौरान उनकी मृत्यु हो गई, जहाँ वे अभिषिक्त होने के लिए गए थे।

[3263] इस वर्णमाला को संकलित करने के लिए, उन्होंने पर्मियन मुद्रा टोकन का उपयोग किया, जो पतली आयताकार छड़ियों पर उकेरे गए थे।

[3264] पर्मियन या ज़िरियन ट्यूरानियन परिवार की फिनिश या उरालिक शाखा के लोग हैं। ज़्यादातर, वे मध्यम कद के, मजबूत और सुडौल शरीर वाले, काले बालों और धूसर या गहरे भूरे रंग की आँखों वाले होते हैं। साहस, बुद्धिमत्ता, धैर्य, चालाकी, जिज्ञासा और चतुराई उनकी प्रमुख विशेषताएँ हैं। यह चतुराई, अन्य बातों के अलावा, पक्षियों, जानवरों और मछलियों को पकड़ने के लिए उनके द्वारा अपनाए गए कई और विविध तरीकों में स्पष्ट थी।

गए। हालाँकि, धीरे-धीरे, उन्होंने सत्य को पहचानना शुरू कर दिया, पवित्र विश्वास को अपना लिया, बपतिस्मा लिया, और उपदेशक के निर्देशों का पालन किया। हालाँकि, कई लोगों ने न केवल उनकी बात सुनने से इनकार कर दिया, बल्कि उन्हें बहुत परेशानी भी दी। कुछ ने उन्हें हर संभव तरीके से गाली-गलौज की। दूसरों ने उन्हें मारने की मंशा से डंडों से हमला किया। कुछ और ने उन्हें खंभे से बाँधकर जलाने की कोशिश की। लेकिन प्रभु का हाथ अपने सेवक को हत्यारे हाथों और मृत्यु से बचाता रहा, ताकि उनके पवित्र नाम की अधिक महिमा हो सके।

कई आत्माओं को ईसाई सच्चाइयों में बपतिस्मा देकर और शिक्षित करने के बाद, उन्होंने नदी वर्मी के मुहाने के पास मसीह के भेड़ों के अपने छोटे से झुंड के लिए एक भव्य चर्च का निर्माण किया, जो महान नदी वचिग्डा में मिलती है, जहाँ बाद में उनका मठ स्थापित किया गया था। उन्होंने नव-निर्मित चर्च को परमेश्वर की परम पवित्र माता के सम्मानित और गौरवशाली अवतार की स्मृति को समर्पित किया। इस समर्पण के माध्यम से, उन्होंने यह विचार व्यक्त किया कि जिस प्रकार अवतार ने हमारे उद्धार की शुरुआत को चिह्नित किया, उसी प्रकार परम में पहला चर्च परम क्षेत्र के प्रबोधन की शुरुआत को भी चिह्नित करता है।

इस चर्च में, दिन-रात, उन्होंने अविश्वासियों के धर्म परिवर्तन के लिए आँसुओं के साथ ईश्वर से प्रार्थना की, यह कहते हुए:

'हे प्रभु, अपने बिखरे हुए लोगों और भटकते भेड़ों को इकट्ठा करो; उन्हें अपनी पवित्र कलीसिया में लाओ और उन्हें अपनी चुनी हुई भेड़ों के झुंड में गिनो।'

वे स्वयं उन्हें प्रेरितों की भाँति अथक रूप से उपदेश देते थे, उन्हें सही मार्ग पर ले जाते थे और उनसे अपनी गलतियों से दूर होने का आग्रह करते थे। लेकिन जितना अधिक वे उनकी आत्माओं के लिए अच्छा करने का प्रयास करते, वे उतने ही अधिक उनसे नाराज़ होते जाते।

एक अवसर पर, प्रभु से प्रार्थना करने के बाद, स्तेफन एक ऐसे मंदिर में गए जिसे वे विशेष रूप से पूजते थे और उसे आग लगा दी। चूँकि उस समय मूर्तिपूजक वहाँ मौजूद नहीं थे, इसलिए वह सभी मूर्तियों के साथ जलकर राख हो गया। संत जली हुई इमारत के पास बैठ गए, यह देखने के लिए इंतजार कर रहे थे कि अविश्वासी उनके साथ क्या करेंगे।

वे यह देखकर कि उनका प्रिय मंदिर आग की लपटों में है, कुल्हाड़ियों और लोहे की छड़ों के साथ उसकी ओर दौड़े। जब वे वहाँ पहुँचे, तो उन्होंने संत स्टीफन को पास में बैठे देखा, और क्रोध से वे उस पर टूट पड़े; उन्होंने उसे चारों ओर से घेर लिया और उसे मारने की कोशिश की।

संत ने उत्तर में कुछ नहीं कहा, लेकिन प्रार्थना में अपने हाथ उठाए और, मरने की तैयारी करते हुए, आँसुओं के साथ ईश्वर से पुकार लगाई:

'हे प्रभु, मैं अपनी आत्मा तेरे हाथों में सौंपता हूँ; मुझे अपनी दया के पंखों से ढक ले।'

और अचानक अत्यधिक क्रोधित भीड़ का रोष एक मेमने की नम्रता में बदल गया। ईश्वर का पुरुष अक्षुण्ण रहा – किसी ने उसे घायल नहीं किया और न ही उस पर वार किया, क्योंकि लोग आंशिक रूप से संत की नम्रता से प्रभावित हो गए थे, और आंशिक रूप से, मॉस्को सरकार के डर से, एक ऐसे व्यक्ति को नुकसान पहुँचाने से डर रहे थे जो मॉस्को से पत्र लेकर उनके पास आया था; लेकिन, सबसे बढ़कर, पगनों को ईश्वर की शक्ति द्वारा रोका गया था, जो धर्मी पर दुष्टों की लाठी गिरने नहीं देता।

तब धन्य स्तेफन, एक विशेष रूप से प्रमुख स्थान पर खड़े होकर, अविश्वासी लोगों को संबोधित करते हुए चिल्लाए:

'हे लोगों, तुम शैतान के भ्रम से कब तक मुँह नहीं मोड़ोगे, ताकि तुम निन्दा और अनंत आग से बच सको? तुम मूर्तियों की पूजा क्यों करते हो और उन्हें अपना देवता क्यों कहते हो, जबकि वे तुम्हारे ही हाथों की रचना हैं, और यदि उनके मुँह भी हों, तो भी वे बोलते नहीं; उनके कान हैं और वे कुछ नहीं सुनते, उनकी आँखें हैं और वे कुछ नहीं देखते; उनकी नाक में गंध नहीं आती, उनके हाथ महसूस नहीं करते, उनके पैर नहीं चलते, और उनका गला पुकार नहीं लगाता; वे उनके लिए चढ़ाए गए बलिदानों को स्वीकार नहीं करते - वे न तो उन्हें खाते हैं और न ही पीते हैं; वे किसी की मदद नहीं करते, क्योंकि जब आग ने उन्हें जलाकर राख कर दिया, तो वे खुद की भी मदद नहीं कर सके। यदि वे सचमुच देवता हैं, तो उन्होंने आग क्यों नहीं बुझाई, वे लपटों से क्यों नहीं बचे, उन्होंने उन्हें जलाने वाले को चेतावनी का एक शब्द भी क्यों नहीं कहा, और उन्होंने उसे किसी भी तरह से दंड क्यों नहीं दिया? और वास्तव में, एक निर्जीव पेड़ आखिर कर भी क्या सकता है? फिर भी तुम उनके सामने झुकते हो - बहरे, अंधे और गूंगे - जो तुम्हारे अपने हाथों की रचना हैं। उस भ्रम को समझो जो आपको धोखा दे रहा है और इस विनाशकारी व्यर्थता को त्याग दो। उस एक सच्चे ईश्वर को जानो जिस पर ईसाई विश्वास

करते हैं। उसकी ओर मुड़ें और प्रबुद्ध हों। क्योंकि उसने स्वर्गों को स्थापित किया, पृथ्वी की नींव डाली, सारी सृष्टि को धारण करता है और पूरी दुनिया पर शासन करता है। वह हर व्यक्ति की जरूरतों को जानता है। वह सभी का पालनहार, सहायक और रक्षक है, और उसके सिवा कोई और ईश्वर नहीं है। इसलिए, परम के लोगों, भाइयों, पिताओं और बच्चों! मेरी बात सुनो, जो तुम्हारा भला चाहता है, और हमारे प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास करो, जिनका मैं प्रचार करता हूँ; मैं तुमसे सच कहता हूँ, कि यदि तुम विश्वास करोगे और बपतिस्मा पाओगे, तो तुम उद्धार पाओगे और परमेश्वर का राज्य प्राप्त करोगे। परन्तु यदि तुम विश्वास नहीं करोगे और बपतिस्मा नहीं पाओगे, तो तुम अनंतकाल की यातना के लिए दण्डित होगे।

जब संत स्टीफन इस प्रकार सिखा रहे थे, और अपने शब्दों में अन्य निर्देश जोड़ रहे थे, तो कई लोग विश्वास कर बैठे और बपतिस्मा ग्रहण किया; और दिन-प्रतिदिन विश्वासियों की संख्या बढ़ती गई, और परम में मसीह की कलीसिया का विस्तार हुआ।

जैसे ही पूजनीय स्टीफन को कहीं भी मूर्तिपूजकों की भीड़ दिखाई देती, वह तुरंत उनके पास जाता और भीड़ के बीच खड़े होकर मसीह के बारे में उपदेश देता। हालाँकि, कभी-कभी वे स्वयं—अपने बुजुर्गों, भविष्यवक्ताओं और परम के सभी सबसे प्रतिष्ठित लोगों के साथ—एकत्रित होते और विश्वास के मामलों पर बहस करने के लिए पूजनीय के पास आते, और वे हमेशा उपदेशक के ईश्वर-प्रेरित होठों से निकले धर्मपरायणता के शब्दों से अभिभूत हो जाते थे। विशेष रूप से अक्सर, अविश्वासी परम के लोग नव-निर्मित चर्च में उद्धार की प्रार्थना के लिए नहीं, बल्कि चर्च की इमारत और उसकी आंतरिक भव्यता की सुंदरता को निहारने की इच्छा से आते थे: पहले कभी ऐसा कुछ न देखने के कारण, वे पवित्र मंदिर की सजावट को देखकर चकित हो जाते थे और, जाते समय, एक-दूसरे से कहते थे:

'जैसा कि हम देख सकते हैं, ईसाई ईश्वर महान है – हमारे अपने देवताओं से कहीं अधिक महान।'

अन्य समयों में, जब वे एक साथ इकट्ठा होते, तो वे एक-दूसरे से सलाह-मशविरा करते हुए कहते:

'यदि हम स्टीफन को घायल नहीं करते और उसे हमसे दूर नहीं भगाते, तो वह अपने उपदेशों से हमारे पूरे देश को भर देगा और हमारे देवताओं के प्राचीन मंदिरों और पूजा स्थलों को नष्ट कर देगा; हम शब्दों में उससे बहस नहीं कर सकते, और एकमात्र विकल्प है कि उसे यहाँ से जबरदस्ती भगा दिया जाए।'

अन्य लोगों ने आपत्ति जताई:

'जब वह मॉस्को से आया है और उसके पास अधिकार के पत्र हैं, तो हम उसे कैसे हरा सकते हैं और भगा सकते हैं?'

कुछ ने और कहा:

काश वह पहले लड़ाई में उतरता, तो हमें लड़ाई के दौरान उसे घायल करना आसान हो जाता; लेकिन वह एक चालाक रणनीति अपनाता है - वह पहले हमला नहीं करता, बल्कि हमारे लड़ाई शुरू करने का इंतजार करता है ताकि उसे मॉस्को में हमारे खिलाफ शिकायत करने का बहाना मिल सके; अगर उसने हम में से किसी पर हमला करने की हिम्मत की, तो हम उसे तुरंत चीर-फाड़ डालते और अपने कार्यों को सही ठहरा सकते थे - क्योंकि उसने ही हम पर पहले हमला किया था। लेकिन चूँकि, हमारी अपमानजनक बातों के जवाब में, वह गुस्से या फटकार का एक भी शब्द नहीं बोलता, बल्कि सब कुछ धैर्य से सहन करता है, इसलिए हम नहीं जानते कि उसके साथ क्या करें।

इसलिए उन्होंने कई बार विचार-विमर्श किया, और, कोई समझौता न हो पाने पर, अपने-अपने रास्ते चले गए; इस में भविष्यवक्ता का वचन पूरा हुआ: *'तुम मिलकर योजना बनाओ, पर वह स्थिर न रहेगी; क्योंकि परमेश्वर हमारे साथ है'* (यशायाह 8:10)।

और इस प्रकार पूरा परम क्षेत्र विभाजित हो गया: इसके कुछ निवासी नव-प्रबुद्ध ईसाई थे, जबकि अन्य मूर्तिपूजा के अंधकार में बने रहे; इसके अलावा, मूर्तिपूजकों ने विश्वासियों से घृणा की: उन्होंने उन्हें अपमानजनक और निंदनीय शब्दों से गाली दी, उन्हें ठेस पहुँचाई, और इस प्रकार उनकी शांति भंग की। जब संत स्टीफन ने देखा कि अविश्वासियों के हाथों विश्वासियों पर अत्याचार हो रहे थे, तो वे गहराई से दुखी हुए और अक्सर दिन-रात मानवता से प्रेम करने वाले ईश्वर से आँसुओं के साथ प्रार्थना करते थे, कि वे अपने नव-संगठित झुंड की रक्षा अपने दिव्य आश्रय से करें, और अपने सर्वशक्तिमान दहिने हाथ से अधर्मी लोगों को शैतान के जालों से छीनकर उन्हें सत्य के ज्ञान की ओर ले जाएँ।

अपने सेवक की इन अनवरत, अशुरुपूरति प्रार्थनाओं को सुनकर और उसके परशि्रम तथा धैर्य को देखकर, मानवता से प्रेम करने वाले ईश्वर—जो यह इच्छा रखते थे कि सभी का उद्धार हो और वे सत्य के ज्ञान को प्राप्त करें—परम देश को पवत्रि वशि्वास के प्रकाश से प्रकाशति करने के लिए प्रसन्न हुए। उन्होंने परम के लोगों के हृदय में पश्चाताप की भावना जगाई, ठीक वैसे ही जैसे उन्होंने एक बार उन लोगों के हृदय में जगाई थी जन्हिोंने प्रेरति पतरस का उपदेश सुना था; जैसा कि प्रेरतिों के काम में लखिा है: *'यह सुनकर वे हृदय से कट गिए और पतरस और अन्य प्रेरतिों से कहा, "भाइयो, हम क्या करें?"'* (प्रेरतिों के काम 2:37)।

इस प्रकार, परम के बहुत से लोग—बुज़ुर्ग और जवान, बड़े और छोटे—एक साथ इकट्ठा हुए और एक-दूसरे से बात की।

भाइयों, क्या आप देखते हैं, यह आदमी जो रूस से आया है! क्या आपने उसके शब्द सुने हैं? क्या आप उसके धैर्य को देखते हैं? क्या आप उस महान प्रेम को समझते हैं जो वह हमसे रखता है? देखिए वह कतिनी कठनिाइयाँ सहता है, और फरि भी वह हमें नहीं छोड़ता! उसने हमसे कतिनी चढ़ि, अपमान और ठेस सहन की है, और फरि भी उसने इनमें से कसिी बात पर ठेस नहीं मानी, न ही कसिी से एक भी कठोर शब्द कहा, सब कुछ बनिा कसिी वरिोध के स्वीकार कर लयिा। हमारे प्रति कोई द्वेष न रखते हुए, उसने कसिी को मारा नहीं, बल्कि बनिा कसिी बड़े द्वेष के सब कुछ धैर्यपूर्वक सहन करता है; वास्तव में, इससे भी अधकि: जब हम उसे दुख पहुँचाते हैं तो वह प्रसन्न होता है, और साथ ही वह हमें स्वर्ग के राज्य, अनंत यातना, और प्रत्येक व्यक्ति को उनके कर्मों के अनुसार उचति प्रतफिल मलिने के बारे में बताना कभी बंद नहीं करता, और हमेशा हमें यह सखिाता है कि यातना से कैसे छुटकारा पाया जाए और राज्य को कैसे प्राप्त कयिा जाए। यदि वह जो कहता है वह सत्य नहीं होता, तो वह इतना सहन या परशि्रम नहीं करता! सचमुच, वह उस महान और जीवति परमेश्वर का सेवक है जसिकी वह प्रचार करता है, जसिने स्वर्ग और पृथ्वी को बनाया और धर्मी लोगों के लिए राज्य, और दुष्टों के लिए यातना तैयार की है, और उसके सभी वचन सत्य हैं!

इसलिए, हम उसके पास चलें और उससे हमें अपने वशि्वास की परपिूर्णता सखिाने तथा हमें ईसाई बनाने के लिए कहें।

और इस प्रकार पुरुषों, महलिाओं और बच्चों की एक बड़ी भीड़ उस पवत्रि प्रचारक को देखने के लिए चल पड़ी।

परम पूजनीय स्तेफन, मसीह ईश्वर के पास इतने सारे लोगों को आते हुए देखकर, शब्दों से परे आनंदति हुए: आनंद के आँसू बहाते हुए, उन्होंने दयालु प्रभु का अकथनीय धन्यवाद कयिा, जो पापयिों की मृत्यु नहीं चाहता। उन्होंने अपने बच्चों की तरह प्रेम से उनका स्वागत कयिा, और अपने दैवीय प्रेरति होठ खोलकर, उन्हें पवत्रि वशि्वास के सभी रहस्यों को वस्तिार से सखिाया। बदले में, ईश्वर ने उनके मन को खोल दयिा ताकि वे संत की शकि्षा को समझ सकें: उन्होंने खुशी-खुशी उनके शब्दों को स्वीकार कर लयिा और उनसे बपतस्मिा माँगा, और उन्होंने उन्हें पति, पुत्र और पवत्रि आत्मा के नाम पर बपतस्मिा दयिा।

इस प्रकार, ईश्वर की कृपा से और पूजनीय स्टीफन के परशि्रम और प्रार्थनाओं के द्वारा, परम की भूमि प्रबुद्ध हुई।

नव-प्रबुद्ध लोगों ने अपनी पूर्व मूर्तयिों को नष्ट कर दयिा, जो उनके घरों, गांवों, सड़कों के कनिारे, जंगलों और बगीचों में खड़ी थीं, और अपने मूर्तपिूजक पूजा स्थलों को तबाह कर दयिा। धन्य स्टीफन स्वयं इस कार्य में वशिेष रूप से कड़ी मेहनत कर रहे थे; वह हर जगह गए, कुल्हाड़ी से मूर्तयिों को काटकर गरिाते और अवशि्वासयिों की भेंटों के साथ उन्हें जला देते थे।

यह ध्यान देने योग्य है कि परम के मूर्तपिूजकों की एक प्रथा थी कि वे शकिार के दौरान पकड़े गए जानवरों की खाल अपने देवताओं को चढ़ाते थे—जैसे सैबल, मार्टेन, अर्माइन, नेवले, बीवर, लोमड़यिाँ, भालू, लकि्स और अन्य—और उन्हें मूर्तयिों पर लटका देते थे। इसके अलावा, वे मूर्तयिों को सबसे अच्छे कपड़ों से ढकते थे और उन्हें लपेटकर पालने में लपिटे कपड़ों में लपेट देते थे। कोई भी इन भेंटों में से कुछ भी लेने की हमि्मत नहीं करता था, क्योंकि अगर कोई भी उन्हें छूने की हमि्मत करता, तो वह एक गंभीर बीमारी में पड़ जाता: शैतान के काम से, उसे मरोड़ और झटके पड़ते थे। हालाँकि, संत स्टीफन, जो ईश्वर के प्रति उत्साही और शैतानी शक्ति से अछूते थे, ने मूर्तयिों को चढ़ाए गए उपहारों को एक ढेर में इकट्ठा कयिा, साथ ही उन मूर्तयिों को भी जो उन्होंने खुद टुकड़े-टुकड़े कर दयिा था, और उन्हें जलाकर राख कर दयिा; और जबकि उन्होंने स्वयं भेंटों में से कुछ भी नहीं लयिा, उन्होंने अन्य वशि्वासयिों को भी ऐसा करने की अनुमति नहीं दी,

क्योंकि वे भेंटों को राक्षसों की संपत्ति मानते थे। केवल अपने युवा शिष्य[3265] , जो परम का नव-धर्मांतरित मैथ्यू था, को ही उन्होंने आदेश दिया कि वह मूर्तिपूजक वस्त्रों और लपेटने के कपड़ों, , से[3266] के लिए पाद-चटाई बनाए, ताकि विधर्मी देवताओं का अपमान हो सके। परम के लोग इस बात से बहुत और दोहरा आश्चर्यचकित थे कि रेवरेंड ने अपने लिए कोई भी कीमती वस्तु नहीं रखी, बल्कि सब कुछ आग में फेंक दिया, और यह कि उन्हें राक्षसों से कोई भी हानि नहीं हुई। इसने मसीह की शक्ति में उनके विश्वास को और मजबूत किया, जो राक्षसों की शक्ति पर विजय प्राप्त करती है, और उन्हें उनकी धार्मिकता में दृढ़ किया। संत स्टीफन ने विभिन्न स्थानों पर अनगिनत मूर्तियों को तोड़ने के बाद, दो और चर्च स्थापित किए, क्योंकि प्रत्येक बीतते दिन मसीह में विश्वासियों की संख्या लगातार बढ़ती जा रही थी, जबकि अविश्वासियों की संख्या दिन-ब-दिन घटती जा रही थी। परम मिशनरी ने चर्चों से संलग्न स्कूल स्थापित किए, जहाँ उसने युवाओं, किशोरों और छोटे बच्चों को इकट्ठा किया; उसने उन्हें परम वर्णमाला और 'घंटों की पुस्तक' पढ़ना सिखाया, भजनसंग्रह और अन्य पुस्तकों का, जिन्हें उन्होंने परमियन भाषा में अनुवाद किया था, ताकि पुजारियों, डिकन्स और अन्य पुरोहितों के साथ-साथ शिक्षकों को भी परमियन लोगों के अपने ही कबीले और उनकी अपनी भाषा में तैयार किया जा सके। इस प्रकार पवित्र ईसाई धर्म परम में फलता-फूलता और चमकता रहा। जब संत स्टीफन नव-प्रबुद्ध लोगों के विश्वास को मजबूत करने के इस काम में लगे हुए थे, तो एक जादूगर, या 'एकेल' (magician[3267]), जो जादूगरों और जादू-टोने करने वालों का मुखिया था, उनके पास आया; बपतिस्मा से पहले, परम के लोग उसे सभी अन्य जादूगरों से अधिक सम्मान देते थे, और उसे एक पिता और शिक्षक के रूप में पूजते थे, जो अपनी जादुई शक्ति से परम की पूरी भूमि पर शासन करता था। उसने नव-बपतिस्मा प्राप्त लोगों को भ्रमित करना शुरू कर दिया, यह कहते हुए: 'परम के हे पुरुषो और भाइयो, आप अपने पूर्वजों के देवताओं और धर्म को क्यों त्याग रहे हैं? आप उनके लिए बलिदान क्यों चढ़ाना बंद कर दिए हैं, जैसा आपके पूर्वज करते थे? आप किसकी सुन रहे हैं? क्या वह वही आदमी नहीं है जो मास्को से आया है?' और क्या मॉस्को से हमारे लिए कुछ भी अच्छा आ सकता है? क्या वहीं से हमारे ऊपर भारी कर नहीं लगाए जाते, हमारे साथ हिंसा नहीं की जाती, और हमारे पास न्यायाधीश और अधिकारी नहीं भेजे जाते? इस आदमी की बात न सुनो—एक रूसी, और वह भी मॉस्को का, एक अजनबी। लेकिन मेरी सुनो, जो तुममें से एक है, जो तुम्हारा भला चाहता है। क्योंकि मैं तुम्हारी ही जाति का हूँ, उसी भूमि से हूँ, और तुम्हारी ही भाषा बोलता हूँ; और तुम्हारे लिए यह अधिक उचित है कि तुम मेरी, अपने बड़े और पिता की, बात सुनो, न कि इस जवान की, जो अपनी उम्र से मेरा बेटा या पोता हो सकता है।"

इसके जवाब में, नव-प्रबुद्ध लोगों ने कहा:

'जाओ, उससे बहस करो, हमसे नहीं।'

यह जादूगर रेवरेंड का सबसे कट्टर विरोधी साबित हुआ, और उनके बीच एक बड़ा संघर्ष छिड़ गया; जादूगर ने रेवरेंड को अपनी जादू-टोने से नष्ट करने की कोशिश की: उसने राक्षसों को बुलाया और जादू-टोना किया, लेकिन सब व्यर्थ गया: उसका जादू-टोना विफल हो गया, क्योंकि राक्षस ईश्वर के उस पुरुष के पास नहीं आ सके। हालाँकि, दुष्टता से भरा हुआ जादूगर नहीं रुका, और वह हर दिन पादरी पिता के लिए परेशानी खड़ी करता रहा: वह खुले तौर पर पवित्र ईसाई धर्म का अपमान करता था, जिससे वे लोग जो अभी तक अपने विश्वास में दृढ़ नहीं थे, भ्रमित हो जाते थे और अपनी पुरानी दुष्टता की ओर लौट आते थे; और उसने अपने शब्दों से कुछ को बहकाया, जबकि उपहारों से दूसरों को अपने पक्ष में कर लिया। वह अक्सर पादरी के पास उनसे बहस करने आता था, जिसके दौरान उसने अपमान और निंदा के साथ, हर संभव तरीके से मसीह के अजेय योद्धा को हराने की कोशिश की। एक बार उसने संत स्टीफन से कहा:

'हमारे देवता, जिनका तुमने अपमान किया है, ने केवल अपनी दया से तुम्हें बख्शा है। अन्यथा, वे तुम्हें बहुत पहले ही कुचल या अपंग कर देते। लेकिन वे अपनी कृपा से तुम्हें बख्शते हैं, ताकि, उनकी दया को जानकर, तुम उन्हें परेशान करना बंद कर दो। और जहाँ तक इस बात का सवाल है कि हमारा धर्म तुम्हारे ईसाई धर्म से बेहतर क्यों है, मैं इसे तुम्हें स्पष्ट रूप से साबित करूँगा: तुम्हारा एक ईश्वर है, जबकि हमारे कई देवता हैं, हमारे सहायक और रक्षक, और वे हमें पानी में मिलने वाली हर चीज़ – मछलियाँ; हवा में – पक्षी; जंगलों और घास के मैदानों में – साबर, मार्टेन, लिनिक्स और अन्य जानवर प्रदान करते हैं, जिन्हें हम पकड़कर तुम्हारे पास भी भेजते हैं। उनके द्वारा, आपके राजकुमार, बोयार और

[3265] अर्थात् एक नौकर।

[3266] 'ओनुच्की' या 'ओनुच्की' से आशय कैनवास या किसी अन्य कपड़े की उन पट्टियों से है, जिनका उपयोग मोज़ों के बजाय पैरों को लपेटने के लिए किया जाता है।

[3267] इस जादूगर का नाम पामो था।

कुलीन वर्ग धनी होते हैं; वे इन्हीं से वस्त्र पहनकर गर्वपूर्ण भव्यता के साथ घूमते हैं, एक-दूसरे के साथ उपहारों का आदान-प्रदान करते हैं और व्यापार करते हैं, पड़ोसी देशों और दूर-दराज के देशों—हॉर्ड, ग्रीस, जर्मनों और लिथुआनिया—को माल भेजते हैं—और यह सब हमारे शिकार से आता है, जो हमें हमारे कई देवताओं द्वारा प्रदान किया जाता है। हमारा धर्म आपके धर्म से कहीं बेहतर है, और इसका एक और कारण यह है। यहाँ, एक या दो आदमी भालू से लड़ने जाते हैं और देवताओं की मदद से उसे मार डालते हैं, जिनके बदले में वे उसकी खाल देने का वादा करते हैं। लेकिन तुम लोगों में, सौ या दो सौ आदमी—या उससे भी अधिक—एक ही भालू का शिकार करने निकलते हैं, और तब भी इतने सारे लोग मुश्किल से एक ही जानवर पर काबू पा पाते हैं, और कभी-कभी पूरी तरह से असफल हो जाते हैं; और, खुद उसके द्वारा घायल हो कर, वे शिकार से खाली हाथ लौट आते हैं। इसके अलावा, हमारा विश्वास आपसे बेहतर है क्योंकि हमारे यहाँ घटनाएँ—यहाँ तक कि दूर-दराज के देशों में होने वाली घटनाएँ भी—उसी दिन ज्ञात हो जाती हैं, जबकि आपके यहाँ ऐसा नहीं है; आपको कोई भी खबर मिलने में कई दिन लग जाते हैं। इन सभी कारणों से, हमारा विश्वास आपसे बेहतर है।

इसके जवाब में, संत स्टीफन ने कहा कि एक ईसाई ईश्वर कई मूर्तिपूजक देवताओं से बेहतर है, क्योंकि वे देवता नहीं बल्कि राक्षस हैं, जिन्हें स्वर्ग से पाताल में गिरा दिया गया है और वे बेजान मूर्तियों से मूर्ख लोगों को धोखा देते हैं। वे न केवल लोगों की मदद करने में असफल रहते हैं, बल्कि, इसके विपरीत, वे उन्हें नुकसान पहुँचाते हैं और हमेशा बुराई करने की कोशिश करते हैं; दुष्ट, निर्दयी, क्रोधी, प्रचंड और ईर्ष्यालु घृणा से भरे होने के कारण, वे मानव जाति को तुरंत नष्ट करने के लिए तैयार हो जाते, यदि ईश्वर की शक्ति उन्हें रोकने और पीछे रखने के लिए न होती। हालाँकि, हर तरह का शिकार लोगों को मूर्तियों से नहीं मिलता, जो एक ही जगह पर स्थिर खड़ी रहती हैं, न ही राक्षसों से, जिनका परमेश्वर की सृष्टि पर कोई शक्ति नहीं है, बल्कि सभी अच्छी चीजों के दाता - स्वयं परमेश्वर से मिलता है, जो प्रत्येक को उनके श्रम के अनुसार अपने उपहार बाँटता है। और जंगली जानवरों से संघर्ष न केवल परम में होता है, बल्कि सभी भूमि और देशों में होता है। जानवरों पर मनुष्य की विजय आपके देवताओं की सहायता से नहीं, बल्कि या तो शारीरिक शक्ति से या योद्धा की कुशलता से होती है; फिर भी यह मुख्य रूप से इस तथ्य पर आधारित है कि स्वर्गीय ईश्वर ने सभी जानवरों, सरीसृपों, पक्षियों और मछलियों को मनुष्य के अधीन कर दिया है। इसके अलावा, ऐसे कई ईसाई थे जिन्होंने मसीह के नाम पर क्रूर जानवरों को वश में किया, शेरों के मुँह बंद कर दिए, एक शब्द से भालू और तेंदुओं को बाँध दिया[3268] , और अजगर[3269] , बेसिलिस्क[3270] और हर तरह के साँपों को रौंद डाला।

देवताओं द्वारा मगियों को शीघ्रता से पहुँचाई गई खबर के संदर्भ के बारे में, संत ने इस प्रकार उत्तर दिया: ईसाई चर्च में ऐसे कई द्रष्टा थे जिन्होंने अपनी आध्यात्मिक आँखों से देखा, मानो उनके सामने न केवल दूर की घटनाएँ घटित हो रही हों, बल्कि उन घटनाओं की भी भविष्यवाणी की जो उनके निधन के कई साल बाद घटित होने वाली थीं। इसी प्रकार, पुराने नियम के पवित्र भविष्यवक्ताओं ने कई साल पहले ही उस बात की भविष्यवाणी की थी जो बाद में नए नियम की ईसाई कलीसिया में घटित हुई।

विश्वास के मामलों पर लंबे और बार-बार बहसों के बाद, संत स्टीफन और जादूगर इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि यह देखने के लिए मामले को परीक्षा में डालना सबसे अच्छा होगा कि किस पक्ष में सत्य है। जादूगर के सुझाव पर, वे निम्नलिखित बात पर सहमत हुए: आग और पानी से गुजरना, और जो आग में न जले या पानी में न डूबे, उसका विश्वास ही सच्चा होगा, और लोगों को उसका अनुसरण करना चाहिए। यह समझौता बहस सुनने के लिए इकट्ठा हुए परम के सभी लोगों को भाया।

संत स्टीफन ने जादूगर से कहा:

'आपने कुछ ऐसा मांगा है जो मेरी विनम्र शक्तियों से परे है, लेकिन मैं सर्वशक्तिमान ईश्वर की उदारता और दया में अपनी आशा रखता हूँ, जो सभी का मोक्ष चाहता है। उनके पवित्र नाम की महिमा के लिए, हो सकता है कि वह चमत्कारिक रूप से मुझे आग और पानी में जीवित और सुरक्षित रखे। यह चमत्कार यहाँ इकट्ठा हुए लोगों के विश्वास को मजबूत करे, जबकि तुम, उन राक्षसों के साथ जिन पर तुम भरोसा करते हो, लज्जित हो जाओगे।

जादूगर से यह कहने के बाद, संत स्टीफन ने लोगों की ओर मुड़कर कहा:

[3268] 'पार्ड' और 'पैंथर' एक ही हैं।

[3269] एस्प – अत्यधिक विषैले साँप की एक प्रजाति।

[3270] बेसिलिस्क सभी सांपों में सबसे विषैला होता है, जो प्राचीन किंवदंतियों के अनुसार अपनी साँस से जला सकता है।

'प्रभु धन्य हों। आग लाओ, इसे यहाँ लाओ और इस झोपड़ी को आग लगा दो, जो अलग खड़ी है, खाली है और जिसका द्वार खुला हुआ है; और मैं, जादूगर का हाथ पकड़कर, उसमें प्रवेश करूँगा।'

तब आग लाई गई, और उस ढाँचे में आग लगा दी गई। पूजनीय स्टीफन ने स्वर्ग की ओर अपने हाथ उठाकर ईश्वर से इन शब्दों में प्रार्थना की:

'हे परम दयालु प्रभु, "*हमारी संकट में हमें सहायता भेजो, क्योंकि मानवीय रक्षा व्यर्थ है*" (भजन संहिता 59:13), अपनी दया भेजिए, मनुष्य जाति के प्रति अपना प्रेम प्रकट कीजिए, अपनी शक्ति दिखाइए, ताकि यहाँ इकट्ठा हुए लोग सच्चे विश्वास को समझ सकें और यह पहचान सकें कि आप ही एकमात्र सच्चे ईश्वर हैं, और मैं आपका सेवक हूँ; *'क्योंकि देखो, आपके शत्रु हलचल मचा रहे हैं, और जो आप से बैर रखते हैं, उन्होंने अपने सिर उठा लिए हैं*' (भजन संहिता 82:3), *'वे अपना मुँह आकाश की ओर उठाते हैं, और उनकी जीभ पृथ्वी पर घूमती है*' (भजन संहिता 72:9)। इसलिए, *'मुझे अपने अनुग्रह का एक संकेत दिखाओ, ताकि जो मुझसे द्वेष रखते हैं वे उसे देखकर लज्जित हों, क्योंकि हे प्रभु, आपने मेरी सहायता की है और मुझे सांत्वना दी है*' (भजन संहिता 85:17)। आप वही परमेश्वर हैं जो अपने सांत्वनादाता, पवित्र आत्मा के द्वारा, हमारी सभी कष्टों में हमें सांत्वना देते हैं; उसी के साथ युगानुयुग महिमा हो। आमीन।

अपनी प्रार्थना समाप्त करके, उन्होंने लोगों से कहा:

'भाइयों, शांति आपके साथ हो; स्वयं को बचाओ, और मेरे लिए प्रार्थना करो। क्योंकि मैं पवित्र विश्वास के लिए मरने को तैयार हूँ। मैं मेरे सामने रखी गई दौड़ दौड़ रहा हूँ, यीशु पर भरोसा करके, जो मेरे विश्वास के रचयिता और परिपूर्णकर्ता हैं।'

फिर जादूगर की ओर मुड़कर, उसने उससे कहा:

'जैसा हमने वादा किया था, हाथ पकड़कर हम साथ चलें।'

लेकिन जादूगर, भयंकर, जलते हुए आग की यातना से डरकर, जाने से इनकार कर दिया। तब आदरणीय ने, उसके कपड़ों को मजबूती से पकड़कर, उसे जबरदस्ती आग में खींच लिया। जादूगर ने विरोध किया, पीछे लड़खड़ाया, और जमीन पर गिरते हुए चिल्लाया कि वह तुरंत आग में पुआल और सूखी टहनियों की तरह जलकर राख हो जाएगा। तब भीड़ ने, नाराज़ होकर, उस पर चिल्लाना शुरू कर दिया कि वह आग में प्रवेश करे जैसा उसने खुद सुझाया था। लेकिन उसने उनसे दया करने की विनती की।

उसकी विनतियों के जवाब में, पूजनीय स्टीफन ने उससे कहा:

'क्या यह तुमने स्वयं नहीं चुना था और जीवित ईश्वर को लुभाने की इच्छा नहीं की थी? तो फिर, अब तुम मना क्यों कर रहे हो?'

हालाँकि, जादूगर ने जमीन पर झुककर और संत के पैरों पर गिरकर, अपनी शक्तिहीनता के बारे में बताया और, अपने दोष को महसूस करते हुए, अपने धोखे की व्यर्थता को स्वीकार किया, और यह प्रकट किया कि, संत स्टीफन को डराने की इच्छा से, उसने विवाद को सुलझाने के लिए इस तरह की विधि बनाई थी, यह निश्चित जानते हुए कि जीवते परमेश्वर का सेवक डर जाएगा। लेकिन जादूगर की साजिशें उसी के खिलाफ हो गईं, और उसकी दुष्टता उसी के सिर पर आ पड़ी (देखें भजन संहिता 7:17)। इसी तरह, परम के जादूगरों के मुखिया ने पानी में प्रवेश नहीं किया, भले ही नदी में पहले ही दो छेद काट दिए गए थे: एक ऊपरी बहाव में और दूसरा निचले बहाव में; योजना यह थी कि वे दोनों हाथ पकड़कर एक छेद में प्रवेश करें और बर्फ के नीचे चलकर दूसरे छेद से बाहर निकलें; जब संत स्टीफन ने जादूगर से उसके साथ छेद में जाने के लिए कहा, तो उसने मना कर दिया। इस प्रकार उसकी सारी जादू-टोने की व्यर्थता और उसकी शिक्षाओं का झूठ उजागर हो गया, जिसने पहले लोगों को धोखा दिया था। इसके बाद, संत स्टीफन ने जादूगर से पूछा:

'क्या तुम अब जब पराजित हो गए हो, तो विश्वास करना और बपतिस्मा लेना चाहते हो?'

लेकिन उसने ईसाई धर्म और पवित्र बपतिस्मा स्वीकार करने से इनकार कर दिया। तब संत ने लोगों से कहा:

'तुम इस बात के गवाह हो कि इस नीच आदमी ने स्वयं आग और पानी से सच्चे धर्म का पता लगाने की एक विधि बनाई थी, फिर भी उसने अपना ही वचन निभाने से इनकार कर दिया, और न तो आग में और न ही पानी में जाने को तैयार हुआ। और अब, इसके बावजूद, वह न तो विश्वास करता है और न ही बपतिस्मा चाहता है। तुम उसके बारे में क्या सोचते हो? बोलो।'

लोगों ने पुकारा:

'वह मृत्युदंड का पात्र है!'

और, उसे पकड़कर, उन्होंने उसे संत स्टीफन के हवाले कर दिया, ताकि वह उसे अपनी पसंद के किसी भी तरीके से मार डाले। ऐसा करते हुए, उन्होंने कहा:

'अगर तुमने उसे ज़िंदा छोड़ा, तो वह तुम्हें और भी बड़ी मुसीबत में डाल देगा।'

लेकिन संत ने उनसे उत्तर दिया:

'नहीं, हमारा हाथ हमारे शत्रु पर न हो। मसीह ने मुझे मारने के लिए नहीं, बल्कि सुसमाचार का प्रचार करने के लिए भेजा है; उन्होंने मुझे पीड़ा देने की आज्ञा नहीं दी, बल्कि नम्रता से सिखाने और शांति से समझाने की आज्ञा दी है। इसी प्रकार, मेरे प्रभु ने मुझे मृत्युदंड देने की आज्ञा नहीं दी, बल्कि दिया से दंड देने की आज्ञा दी है, जैसा कि कहा गया है: *"धर्मी मुझे दंड दे: यही दया है; उसे डाँटे"* (भजन संहिता 140:5)। और चूँकि वह द्वेष से कटु और अंधा होकर विश्वास करने से इनकार करता है, इसलिए उसके लिए अनंत दंड होगा। क्योंकि हमारे प्रभु कहते हैं: *'जो विश्वास करता है और बपतिस्मा लेता है, वह उद्धार पाएगा; परन्तु जो विश्वास नहीं करता, वह दोषी ठहराया जाएगा'* (मरकुस 16:16)।

उसके झूठे उपदेश से परमेश्वर के लोगों को भ्रष्ट करने से उसे सख्त मना करना ही काफी है। उसे मसीह की भेड़ों के बीच न रहने दिया जाए। अंधकार प्रकाश के साथ न मिले, बल्कि दुष्ट को सभी के बीच से निकाल दिया जाए। इस सड़े हुए अंग को आध्यात्मिक तलवार से काट दिया जाए; इस भेड़िये को इन सीमाओं से भगा दिया जाए। यदि, तथापि, वह फिर से यहाँ आने और उपदेश देने की हिम्मत करता है, तो वह मृत्युदंड से नहीं बचेगा।

इस आदेश के साथ, जादूगर को परम की सीमाओं से निष्कासित कर दिया गया। और मसीह की कलीसिया शांति से रही, और परमेश्वर की कलीसियाएं हर जगह बनाई गईं, जबकि मूर्तिपूजक पूजा स्थलों को पूरी तरह से नष्ट कर दिया गया।

शीघ्र ही परम की भूमि में चर्च इतना बढ़ गया कि श्रद्धालुओं को अपने स्वयं के एक बिशप की आवश्यकता महसूस हुई – और भी इसलिए क्योंकि, बड़ी दूरी को देखते हुए, पुरोहित पद के उम्मीदवारों को मास्को के मेट्रोपॉलिटिन के पास भेजना बहुत असुविधाजनक था। दूरस्थ परम मास्को से उतना ही दूर है जितना मास्को कॉन्स्टेंटिनोपल से है।

अपने अनुयायियों से परामर्श करने के बाद, पूजनीय स्टीफन महान राजकुमार दिमित्री इवानोविच और मेट्रोपॉलिटिन पिमेन से मिलने के लिए मास्को के लिए रवाना हुए। उन्होंने उन्हें परम क्षेत्र में ईश्वर की कृपा से घटित हुई सभी बातों के बारे में बताया, और उनसे वहाँ के लिए एक बिशप नियुक्त करने का अनुरोध किया, क्योंकि 'कटनी तो बहुत है, पर मजदूर कम हैं' (मत्ती 9:37)।

महान राजकुमार, मेट्रोपॉलिटिन, बिशपों और पवित्र सिनिड के साथ मिलकर, संत स्टीफन के अनुरोध पर चर्चा की और उन्हें परम का बिशप नियुक्त करने का संकल्प लिया, क्योंकि वह वास्तव में इस सम्मान के योग्य व्यक्ति थे।

– परम की भूमि में बिशप के पद के लिए उससे अधिक योग्य और अपने गुणों से बेहतर कौन उपयुक्त है, जिसने इस भूमि को मसीह की कृपा से प्रकाशित किया और ऐसा करते हुए, महान कार्य और परिश्रम किए, परमियन भाषा में पवित्र पुस्तकों का अनुवाद किया, मूर्तियों को तोड़ा और चर्च बनाए, और इस प्रकार परम के प्रेरित बने?

और इस प्रकार संत स्टीफन को परम के बिशप के रूप में अभिषेक क[3271] या गया। इस अभिषेक से महाप्रसि को बहुत प्रसन्नता हुई, जो लंबे समय से संत स्टीफन को जानते थे और उन्हें बहुत मान-सम्मान देते थे। नव-अभिषिक्त बिशप को उपहार देने के बाद, महाप्रसि और मेट्रोपॉलिटिन ने उन्हें परम के लिए रवाना किया।

अपने नव-स्थापित धर्मप्रांत में लौटने पर, उन्होंने विश्वासियों को बहुत प्रसन्नता दी। अपने बिशप के पद पर, संत स्टीफन ने परम की चर्च के लिए उतनी ही लगन से परिश्रम किया जितना उन्होंने पहले किया था: उन्होंने उन लोगों को मजबूत किया जो ऑर्थोडॉक्स धर्म में मसीह की ओर मुड़े थे; उन्होंने जो अविश्वासी बने रहे उन्हें विश्वास की ओर ले गए और उनका बपतिस्मा दिया; उन्होंने ईश्वर के चर्च बनाए, पुरोहितों की नियुक्ति की, और संपूर्ण चर्च व्यवस्था को सर्वोत्तम संभव तरीके से संगठित किया। उन्होंने मठों की भी स्थापना की। उन्होंने उदारतापूर्वक दान दिया, गरीबों और ज़रूरतमंदों को भोजन कराया, नंगों को कपड़े पहनाए, दुखी लोगों को सांत्वना दी और यात्रियों को विश्राम प्रदान किया[3272] । सभी के लिए, वह एक दयालु पिता, एक महान परोपकारी और एक चौकस चरवाहा थे, जो अपने झुंड की आत्माओं

[3271] 1383 में

[3272] उन्होंने प्रमुख बोयारों से परम लोगों पर लगाए गए करों को कम करने की भी याचना की, और उन्हें ट्यून (न्यायाधीशों) और स्थानीय अधिकारियों द्वारा किए जा रहे अत्याचार और जबरन वसूली से मुक्त कर दिया।

के साथ-साथ उनकी शारीरकि जरूरतों का भी ध्यान रखते थे: इस प्रकार, परम में एक गंभीर अकाल के दौरान, संत स्टीफन अक्सर वोल्गोडा से नाव द्वारा बड़ी मात्रा में रोटी यहाँ लाते थे और इसे गरीबों में मुफ्त में बाँट देते थे।

इस प्रकार, ईश्वर के सेवक, परम के बशिप स्टीफन ने, परम की संपूर्ण भूमकिो ईश्वर की ओर ले गए। पवत्रि चर्च का ईमानदारी से शासन करते हुए, उन्होंने अपने झुंड के लिए आवश्यक सभी चीजें प्रदान कीं। इतने वर्षों के श्रम, जो इतने सारे आत्माओं के उद्धार के लिए कयिा गया था और जसिने उनके स्वास्थ्य पर बुरा असर डाला था, के बाद, संत स्टीफन, जो पहले ही एक सम्मानजनक वृद्धावस्था में पहुँच चुके थे, अपने अंत के करीब आ गए।

[3273][3274]संत स्टीफन का नधिन मेट्रोपॉलटिन साइप्रयिन के कार्यकाल के दौरान हुआ, जो ग्रैंड प्रंसि वासलिी के दनिों में थे। वासलिी, ग्रैंड प्रंसि दमित्रिी के पुत्र थे, जन्होंने मामई पर अपनी वजिय से खुद को प्रतष्ठिति कयिा था।

अपने जीवन के अंत के करीब, उन्हें चर्च के मामलों पर एक बार फरि मास्को की यात्रा करनी पड़ी। राजधानी के लिए प्रस्थान करने से पहले, स्टीफन ने अपने अनुयायियों को इकट्ठा कयिा और उन्हें पवत्रि धर्मग्रंथों का उपयोग करते हुए, वश्विास में दृढ़ रहने और एक-दूसरे के प्रतसिच्चा प्रेम करने के लिए प्रोत्साहति कयिा। यह महसूस करते हुए कउिनकी मृत्यु नकिट है, उन्होंने अपने महाधर्मोपदेश को इन शब्दों के साथ समाप्त कयिा:

'मेरे प्रस्थान का समय नकिट है, जैसा कहिमारे प्रभु यीशु मसीह ने मुझे प्रकट कयिा है; मैं तुम्हें उसी के हवाले करता हूँ।'

[3275]तब उन्होंने एक प्रार्थना अर्पति की और अपनी यात्रा पर नकिल पड़े। मास्को पहुँचने पर, संत बीमार पड़ गए और कई दनिों तक कष्ट सहने के बाद, वे प्रभु के पास चले गए, जनिसे उन्होंने अपने शुरुआती वर्षों से प्रेम कयिा था।

उनके अंतमि संस्कार में राजकुमार, बोयार, मेट्रोपॉलटिन सभी पुरोहतिों के साथ, और लोगों की एक बड़ी भीड़ शामलि हुई। सभी ने सम्मान के साथ उनके शरीर को होली सेवयिर मठ तक पहुँचाया, जहाँ अब ज़ार का महल स्थति है। इस ईश्वर-पुरुष की अवशेषों को मठ की पत्थर की चर्च के बाईं ओर रख दयिा गया।[3276]

परम के झुंड ने अपने बशिप की मृत्यु पर गहरा शोक मनाया, जन्होंने इतने सारे पापयिों की आत्माओं को प्रभु की ओर मोड़कर ईश्वर के स्वर्गदूतों को भी महान आनंद से भर दयिा था। इसलिए, उनकी पवत्रि आत्मा को स्वर्गदूतों के हाथों द्वारा आनंदपूर्वक स्वीकार कयिा गया और आनन्द-उल्लास के साथ अनुग्रह के सहिासन तक ले जाया गया। पवत्रि धर्मगुरुओं के समूह के साथ प्रभु के समक्ष खड़े होकर, संत स्टीफन न केवल परम की भूमकिे लिए, बल्कि संपूर्ण वश्विव के लिए भी उनसे प्रार्थना करते हैं।

ट्रोपारयिन, स्वर 4:

हे परम बुद्धमिान स्तेफान, अपने यौवन से ही दव्यि इच्छा से प्रज्वलति होकर, आपने मसीह का जुआ उठाया और अवश्विास से लंबे समय से कठोर हो चुके लोगों के हृदयों में दव्यि बीज बोकर, उन्हें सुसमाचार के माध्यम से आध्यात्मकि जीवन में लाया। इसलिए, जैसे हम आपकी महमिामय स्मृतकिा सम्मान करते हैं, हम आपसे प्रार्थना करते हैं: उस पर प्रार्थना करें जनिका आपने प्रचार कयिा, कवि ह हमारी आत्माओं को बचाए।

कॉन्टाकयिन, स्वर 8:

पदवी की चाह के बनिा, आप संत के रूप में पाए गए; आपने लोगों को मूर्तपिूजा के प्रलोभन से मुक्त कयिा, उन्हें मसीह के वश्विास की ओर ले गए, और जादूगर पानसोत्नकि को शर्मदिा कयिा; इस प्रकार आप परम के पहले बशिप और शकि्षक थे। इसी कारण, आपके आध्यात्मकि पुत्र, आपके द्वारा मूर्तयिों से मुक्त होकर, कृतज्ञतापूर्वक आपसे पुकारते हैं: हे सबसे बुद्धमिान शकि्षक स्तेफन, आनंदति हो।

[3273] उन्होंने 1375 से 1381 और 1383 से 1390 तक मेट्रोपॉलटिन के रूप में कार्य कयिा।

[3274] वासलिी दमित्रिीवचि ने 1380 से 1425 तक शासन कयिा।

[3275] उनकी मृत्यु 26 अप्रैल 1396 को हुई।

[3276] उनकी अवशेष क्रेमलनि में, बोर हलि पर स्थति स्पस्काया चर्च में दफ़न हैं।

पवत्रि धर्मी ग्लाफरिा की स्मृत

26 अप्रैल को स्मरण कयिा जाता है

पवत्रि और ईश्वर-भयभीत कन्या ग्लाफरिा सम्राट लसिनियिस की पत्नी कॉन्स्टेंस की सेवा में थी[3277] । दुष्ट लसिनियिस के अशुद्ध इरादों के बारे में जानकर, वह नकिोमेडयिा[3278] से अमासयिा[3279] चली गई, जहाँ वह बशिप बेसलि की सुरक्षा और देखभाल में रहती थी। दंड भुगतने के लिए लसिनियिस द्वारा बुलाए जाने पर, वह बशिप बेसलि के साथ उनसे मलिने के लिए रवाना हुईं, लेकनि रास्ते में ही उनकी मृत्यु हो गई[3280] और वे स्वर्गीय नविास को प्रस्थान कर गईं।

10 मई

27 अप्रैल (पुराने कैलेंडर के अनुसार)

प्रभु के एक संबंधी, संत समिोन प्रेरति और धर्म-शहीद की स्मृत

27 अप्रैल को स्मरणोत्सव

संत समिोन, जन्हिें देह के अनुसार हमारे प्रभु यीशु मसीह के चचेरे भाई के रूप में जाना जाता है, क्लेओपास के पुत्र थे, जो मंगेतर संत जोसेफ के भाई थे, जैसा कि यूसेबयिस[3281] , फलिस्तीन के केसरयिा के बशिप, जॉर्ज केड्रनि और नकिफिोरस, जो कैलस्टिस के पुत्र थे, जैसे ग्रीक धार्मकि इतहिासकारों ने सर्वसम्मत से गवाही दी है, जैंथोपोलोस। परमेश्वर की अत पवत्रि माता के मंगेतर जोसेफ और क्लेओपास एक ही पता और माता के पुत्र थे; पहला बड़ा भाई था, और दूसरा छोटा। जब यूसुफ मस्रि से लौटे, तो क्लोपास ने उनकी बेटी मरयिम से ववािह कर लयिा। इस ववािह से संत समिोन का जन्म हुआ, जो अपने परपिक्व वर्षों में, हमारे प्रभु यीशु मसीह के चमत्कारों को देखने के बाद, उन पर वश्विास करने लगे। स्वेच्छा से कष्ट सहने के बाद, यीशु मसीह के पुनरुत्थान और स्वर्ग में आरोहण के बाद, समिीओं को सत्तर पवत्रि प्रेरतिों में गनिा गया और, अन्य प्रेरतिों के साथ, उन्होंने नगर-नगर घूमकर मसीह की शक्षिाओं का प्रचार कयिा, लोगों को सखिाया और चमत्कार कएि, पवत्रि वश्विास के सच्चाइयों से लोगों को अवगत कराया और मूरतपिूजा की नदिा की। उस समय, यरूशलेम के पहले बशिप प्रभु के भाई, मंगनी में रहने वाले यूसुफ के पुत्र सेंट जेम्स थे। दुष्ट यहूदयिों ने, क्योंकि वह मसीह की महमिा करते थे, उन्हें मंदरि के बरामदे से फेंक दयिा और एक लाठी से सरि पर वार करके उन्हें मार डाला। इस हत्या के तुरंत बाद, वेस्पासयिन के पुत्र टाइटस ने यरूशलेम को तबाह कर दयिा, ठीक वैसे ही जैसे प्रभु ने स्वयं भवष्यिवाणी की थी। वनिाश के बाद एकत्रति होकर, जीवति बचे मसीह के शष्यिों और उनके रक्त संबंधयिों ने, क्लोपास के पुत्र समिीओन को—जो स्वयं मसीह के एक रश्तिेदार और मंगनीशुदा यूसुफ के पोते और भतीजे दोनों थे—ईश्वर के भाई याकूब के उत्तराधकिारी के रूप में यरूशलेम के दूसरे बशिप के रूप में चुना। यरूशलेम में एक बार फरि से बसाहट होने लगी। संत समिीओन ने सम्मान के साथ यरूशलेम के बशिप का पद संभाला, और भटक गए लोगों को मसीह के पास वापस लाए।

[3277] रोमन सम्राट लकिनियिस ने 311 से 324 तक शासन कयिा।

[3278] नकिोमेडयिा एशयिा माइनर के बथिनियिा क्षेत्र में स्थति एक शहर था, जो मरमरा सागर द्वारा नर्मिति खाड़ी के उत्तर-पूर्वी कोने में बसा था। नकिोमेडयिा की स्थापना 264 ईसा पूर्व में बथिनियिा के राजा नकिोमेड्स प्रथम द्वारा की गई थी, जनिके नाम पर इसका नाम रखा गया था। नकिोमेडयिा रोमन सम्राटों और उनके सेनापतयिों का पसंदीदा नविास स्थान था, जब वे पूर्व में अभयिान चलाते थे। आज, प्राचीन नकिोमेडयिा की जगह पर इस्मडि शहर स्थति है।

[3279] अमासयिा एशयिा माइनर के उत्तरी भाग में, ब्लैक सी के तट पर स्थति थी।

[3280] संत ग्लाफरिा की मृत्यु लगभग 322 में हुई।

[3281] पाम्फलियिा के यूसेबयिस (283–340), बशिप और प्रथम सार्वभौमकि परषिद में प्रतभिागी। जॉर्ज केड्रनि, 11वीं शताब्दी के अंत या 12वीं शताब्दी की शुरुआत के एक बीजान्टनि लेखक। नकिफिोरोस ज़ैंथोपोलोस, 1350 से 1362 तक कॉन्स्टेंटनिोपल के पैट्रआर्क।

कई साल बाद, ट्राजन के शासनकाल में, कुछ वधिर्मी, ईर्ष्या के कारण, रोमन गवर्नर एटकिस को समिोन के कथति अपराधों के बारे में सूचति कयिा: कि वह राजा दाऊद के वंश से था और वह ईसाई धर्म का अनुयायी था। उस समय, रोमन सम्राटों द्वारा इन दोनों अपराधों के लिए उत्पीड़न कयिा जाता था। दाऊद के वंशजों को हर जगह बड़े लगन से ढूंढ़कर मार डाला गया, ताकि यहूदी शाही वंश का कोई भी नशिान न बचे और रोमन सम्राट हमेशा के लिए यहूदयिों की भूमि पर शासन कर सकें। इसी तरह, जो मसीह में वशि्वास करते थे, उन्हें यातना दी गई और मार डाला गया, ताकि पूरी दुनयिा केवल मूर्तपिूजक देवताओं की पूजा करे। इसलिए, संत समिोन—जो राजा दाऊद के वंशज और मसीह के अनुयायी व संबंधी थे, तथा एक सौ वर्ष की आयु को प्राप्त कर चुके थे—को गवर्नर एटकिस के आदेश पर अधर्मी वधिर्मीयों ने पकड़ लयिा। लंबे समय तक यातना देने के बाद, संत को हमारे प्रभु यीशु मसीह की तरह, सूली पर चढ़ाया गया और उन्होंने अपनी आत्मा ईश्वर को सौंप दी।

ट्रोपारयिन, स्वर 1:

हम आपको भक्तपिूर्वक स्तुति करते हैं, समिीओन, महापुजारी और दृढ़ शहीद, जो मसीह के संबंधी थे, जन्हिोंने सांसारकि मोह-माया का त्याग कयिा और वशि्वास को अक्षुण्ण रखा। अत; आज जब हम आपकी सर्व-पवत्रि स्मृति का उत्सव मनाते हैं, तो हम आपकी प्रार्थनाओं द्वारा पापों की क्षमा प्राप्त करते हैं।

कॉन्टाकयिन, स्वर 4:

एक महान तारे के समान, कलीसयिा आज, ईश्वर-वक्ता समिीओन को पाकर, उसकी ज्योति से नर्दिेशति होती है, यह पुकारते हुए: हर्षति हो, हे शहीदों के सम्माननीय मुकुट।

हमारे पवत्रि पति स्टीफन, व्लादमिीर-वोल्नि के बशिप का जीवन

27 अप्रैल को स्मरण कयिा जाता है

'जो धैर्य का आदी है,' दव्यि प्रेरति एफ्रेम द सीरयिन कहते हैं[3282] , 'सद्गुण के लिए प्रयास करता है, दुखों में आनंदति होता है, वपित्ति में हतोत्साहति नहीं होता, और क्लेश के समय में भी प्रसन्न रहता है।' हमारे पूजनीय पति स्टीफन भी ऐसे ही थे, जन्हिें अपने मठवासी भाइयों के हाथों बहुत कष्ट झेलना पड़ा। फरि भी, जहाँ एक ओर दुख उनकी नयिति थि, वहीं ईश्वर ने उन्हें महान आनंद भी प्रदान कयिा। नबी राजा दाऊद के वचनों को ध्यान में रखते हुए, *'जब मेरे दलि में मेरे दुख बढ़ जाते हैं, तो आपकी सांत्वनाएं मेरी आत्मा को मीठी कर देती हैं'* (भजन संहति 93:19), उन्होंने सभी वपित्तयिों को ईश्वर द्वारा भेजा हुआ माना और उन्हें आनंद के साथ सहन कयिा। एक सदाचारी जीवन की लंबी परीक्षा से गुजरते हुए, वह बचपन से ही प्रशंसनीय मठाधीश, हमारे पति द्रोणागरि के थयिोडोसयिस के मार्गदर्शन में थे, और वे लगातार उनके शष्यि रहे, और अपने गुरु के मधुर वचनों से नकिलने वाले दैवीय प्रेरति शब्दों में आनंदति होते थे, ठीक वैसे ही जैसे एक बच्चा अपनी माँ के स्तन से दूध पीता है। एक योग्य पुत्र की तरह, उन्होंने अपने सदाचारी गुरु का अनुसरण कयिा। इसलिए, स्तेफन को संपूर्ण भ्रातृत्व से स्नेह कयिा जाता था; उन्हें चर्च के वधिानों का पालन सुनश्चिति करने के लिए एक व्यवस्थापक, या पर्यवेक्षक के रूप में चुना गया था, और स्वयं मठाधीश, आदरणीय थयिोडोसयिस के साथ मलिकर, उन्होंने अपने उपदेशों के माध्यम से चर्च में भ्रातृत्व को यथोचति रूप से नर्दिेशति कयिा।

जब आदरणीय थयिोडोसयिस अपने सांसारकि जीवन के अंत के करीब पहुँच रहे थे, तो सभी ने उनसे स्टीफन को मठाध्यक्ष नयिुक्त करने का आग्रह कयिा, क्योंकि वह भाइयों में सबसे योग्य थे। आदरणीय भ्राताओं की वनितियों पर

[3282] एफ्रेम सीरयिाई – चर्च के महान शक्षिकों में से एक, जो चौथी शताब्दी में रहते थे। उनकी रचनाओं में, उनके कई 'प्रवचन' – जो नैतकि, धर्मशास्त्रीय और व्याख्यात्मक प्रकृति के हैं – वशिेष रूप से उल्लेखनीय हैं। संत एफ्रेम सीरयिाई ने कई मार्मकि प्रार्थनाएँ और भजन भी लखि। वे मसीह के जन्म के लिए कई भजनों के साथ-साथ अंतमि संस्कार में गाए जाने वाले अत्यंत मार्मकि स्टचिैरा के लेखक भी हैं। उनके द्वारा रचति प्रार्थनाओं में, मार्मकि लेंट की प्रार्थना वशिेष रूप से उल्लेखनीय है: 'हे प्रभु, मेरे जीवन के स्वामी।' – चर्च 28 जनवरी को संत एफ्रेम का स्मरण करती है।

ध्यान दिया और अपने प्रिय शिष्य, धन्य स्टीफन को बुलाकर, उन्होंने उसे संन्यासियों की देखभाल का दायित्व सौंपा और उससे उस चर्च के निर्माण को पूरा करने का आग्रह किया, जिसकी स्थापना चमत्कारी संकेतों के बीच हुई थी। तब, उन्हें मठ के नियमों का पालन करने, शुद्ध हृदय से भाइयों से प्रेम करने, अपने विचारों को निरंतर ईश्वर की ओर मोड़ने, और यात्रियों को न भूलने की आज्ञा देकर, पूज्य पिता ने शाश्वत जीवन में प्रवेश किया, तथापि यह वचन देते हुए कि वे कीव गुफाओं के मठ से अपनी सहायता वापस नहीं लेंगे, जिसे उन्होंने स्तेफन को सौंपा था।

और इस प्रकार, आदरणीय थियोडोसियस के निधन के बाद, स्टीफन ने पवित्र गुफाओं लाव्रा में मठाधीश का पदभार संभाला और अपने तपस्वी प्रयासों को जारी रखते हुए, उन्होंने विशेष लगन के साथ चर्च के निर्माण—जिसे आदरणीय थियोडोसियस ने शुरू किया था और जो पहले से ही ईश्वर की कृपा से परिपूर्ण था—तथा अन्य मठवासी भवनों के निर्माण को समर्पित कर दिया।

ईश्वर की कृपा से, और हमारे पूजनीय पिता एंथनी और थियोडोसियस की प्रार्थनाओं के द्वारा, स्टीफन ने कुछ वर्षों बाद चर्च और नए मठ का निर्माण पूरा किया, जिसमें उन्होंने पुराने मठ से भाइयों को स्थानांतरित कर दिया। उन्होंने पुराने मठ में कुछ भिक्षुओं को छोड़ दिया, क्योंकि वहां दिवंगत भिक्षुओं को दफनाने की प्रथा थी। स्टीफन ने यह नियम बनाया कि दिवंगत भाइयों और धन्य संस्थापकों की स्मृति में मठ में प्रतिदिन धर्मविधि का अनुष्ठान किया जाए। मठ के प्रति ईश्वर की दया कम नहीं हुई, और इस पवित्र स्थान पर ईश्वर की कृपा और भी स्पष्ट रूप से प्रकट हुई। लेकिन जो कुछ भी अच्छा है और ईश्वर के सेवकों का शत्रु – शैतान – ने इस पवित्र मठ के प्रति उनकी देखभाल के कारण धन्य मठाध्यक्ष से नफरत करने लगा और अपनी दुष्ट साजिशों के द्वारा, कुछ भाइयों को परेशानी खड़ी करने के लिए उकसाया; उन्होंने न केवल स्टीफन को मठाध्यक्ष के पद से हटा दिया—एक ऐसा पद जिसके लिए उन्हें सर्वसम्मति से चुना गया था—बल्कि उन्हें उनकी किसी भी गलती के बिना मठ से भी निकाल दिया। आदरणीय स्टीफन ने इन सब को भाइयों से द्वेष के बिना सहन किया और, भिक्षुओं से अलग हो जाने के बावजूद, उन पर प्रेम बनाए रखा। उन्होंने उनके लिए भक्तिपूर्वक प्रार्थना की और, प्रथम शहीद स्टीफन, जिनके नाम पर उनका नाम रखा गया था, का अनुकरण करते हुए, उद्घोष किया:

'हे प्रभु, यह उनके खिलाफ गिनती में न लाओ!'

चुंबक की ओर खिंचे लोहे की तरह, वह अनायास ही पूज्य थियोडोसियस के विश्राम स्थल की ओर आकर्षित हो गए। कई बोयार और कुलीनों, जो पूज्य थियोडोसियस द्वारा उन्हें सौंपे गए उनके आध्यात्मिक पुत्र थे, अपने गुरु के गहरे दुख के बारे में जानकर, निर्दोष रूप से पीड़ित व्यक्ति के प्रति करुणा से भर गए और उत्साहपूर्वक उनके लिए आवश्यक सभी चीजें ले आए। तभी पूज्य स्टीफन को वे गौरवशाली चमत्कार याद आए जिनके वे स्वयं प्रत्यक्षदर्शी थे: कि कैसे कॉन्स्टेंटिनोपल के कारीगर पूज्य एंथनी और गुफाओं के थियोडोसियस के पास आए थे, परम पवित्र ईश्वर की माता का एक आइकन लाए थे, और ब्लाचेर्ना के चर्च में हुई सम्राज्ञी के दर्शन का वर्णन किया था। और इस प्रकार, ईश्वर की सहायता से और पूज्य पिता एंथनी और थियोडोसियस की प्रार्थनाओं के द्वारा, धन्य स्टीफन ने कीव केव्स लाव्रा के पास क्लोव्स्कोये भूखंड पर एक मठ का निर्माण किया और उसमें परमेश्वर की अति पवित्र माता को समर्पित एक पत्थर का चर्च बनाया, उनके पवित्र वस्त्र की खोज की स्मृति में, जिसे कॉन्स्टेंटिनोपल में ब्लाचेर्ना चर्च के मॉडल पर बनाया गया था। हर साल, पूजनीय फादर 2 जुलाई को भव्यता से पर्व मनाते थे और, भिक्षुओं के एक बड़े समुदाय को इकट्ठा करके, ईश्वर को समर्पित जीवन व्यतीत करते थे। उन्होंने चर्च के विधान और संपूर्ण मठवासी संगठन को अपनाया और उन्हें पेचेरस्क मठ में परम आदरणीय थियोडोसियस द्वारा स्थापित नियमों के अनुसार पालन करने का आदेश दिया।

अपने आध्यात्मिक पूर्णता के लिए लगन से प्रयास करते हुए, उन्होंने और भी अधिक ख्याति प्राप्त की, ताकि दूर-दराज के क्षेत्रों में भी वे अपने सदाचारी जीवन के लिए जाने और प्रशंसित किए जाते थे। इसलिए, जब के गौरवशाली शहर के बिशप

व्लादिमीर—एक शहर जिसे महा राजकुमार व्लादिमीर ने अपने ही नाम के सम्मान में स्थापित किया था—उस शहर के बिशप पद के लिए परम श्रद्धेय स्टीफन को चुना गया और कीव के मेट्रोपॉलिटिन, उनकी उत्कृष्टता जॉन द्वारा बिशप के रूप में अभिषिक्त किया गया। वे अपने सुपुर्द किए गए झुंड के एक अच्छे चरवाहे थे, और अपने शब्दों, अपने पुण्य जीवन, अपने प्रेम, अपने कुलीन आत्मा, अपने विश्वास और अपनी पवित्रता के माध्यम से अपने झुंड के लिए एक आदर्श स्थापित करते थे।

जब ईश्वर की इच्छा से और गुफ़ाओं के मठाधीश धन्य जॉन के सुझाव पर, हमारे पूजनीय पिता थियोडोसियस की पवित्र अवशेषों को गुफ़ा से ईश्वर की आज्ञा से बने चर्च में स्थानांतरित करने का इरादा किया गया, तो प्रशंसनीय बिशप स्टीफन व्लादिमीर से अपने क्लोव्स्क मठ में आए। रात में, गुफा के ऊपर खेत के पार एक तेज रोशनी देखकर, उन्होंने सोचा कि माननीय पिता थियोडोसियस के पवित्र अवशेष ( ) को स्थानांतरित किया जा रहा है (वे इस योजना से अवगत थे), और वे इस बात से दुखी हुए कि यह समारोह उनके बिना हो रहा था। वह तुरंत अपने घोड़े पर सवार हो गए और क्लेमेंट के साथ गुफा की ओर चल पड़े, जिन्हें उन्होंने क्लोव्स्क मठ के मठाधीश के रूप में अपना उत्तराधिकारी नियुक्त किया था। जब वे गुफा के पास पहुँचे, तो उन्होंने देखा कि वह तेज रोशनी जो उन्होंने दूर से देखी थी, जलती हुई मोमबत्तियों की भीड़ से आ रही थी; लेकिन जब वे और करीब गए, तो उन्हें कुछ भी नहीं दिखा और उन्हें एहसास हुआ कि उन्हें माननीय थियोडोसियस के पवित्र अवशेषों से निकलने वाली दैवीय महिमा की रोशनी का दर्शन मिला था: उन्होंने पहले ही अवशेषों के ऊपर से मिट्टी हटा दी थी और उन्हें गुफा के प्रवेश द्वार तक ले आए थे। इस दर्शन के अगले दिन, धन्य स्टीफन उन अन्य बिशपों में शामिल थे जो अपने पिता और शिक्षक, परम पूज्य थियोडोरस की पवित्र अवशेषों को ले जा रहे थे। व्लादिमीर के धर्मप्रांत में लौटने के बाद, उन्होंने अपने सद्गुणों के द्वारा अपने झुंड का सत्य के मार्ग पर उत्साहपूर्वक मार्गदर्शन किया, जिससे उन्होंने स्वयं के लिए महिमा का एक अक्षय मुकुट अर्जित किया। अपने नाम '[3283] ' (अनंत महिमा) की भविष्यवाणी के अनुसार और अपने पुण्य कार्यों से अर्जित इस मुकुट को प्राप्त करने के लिए, वह 1094 ईस्वी में सभी चरवाहों के मुखिया, मसीह के साथ रहने के लिए परलोक सिधार गए। आदरणीय मुकुटधारी संत स्टीफन की प्रार्थनाओं के द्वारा, हे हमारे प्रभु मसीह हमारे परमेश्वर, हमें भी महिमा का मुकुट प्रदान करें, स्वयं अपनी महिमा के लिए, अपने आदिहीन पिता और अपने एकसार आत्मा के साथ, अब और सदा के लिए और युगानुयुग। आमीन।

11 मई

28 अप्रैल (पुराने कैलेंडर के अनुसार)

संत जेसन और सोसपिटर, प्रेरितों, तथा संत कर्करा, कुंवारी और शहीद की स्मृति

28 अप्रैल को स्मरणोत्सव

पवित्र प्रेरित जेसन तार्सस नगर के मूल निवासी थे[3284] और उस नगर के पहले ईसाई थे, जबकि पवित्र प्रेरित सोसपितर अहाया के मूल निवासी थे[3285] । मसीह के पवित्र विश्वास को अपनाने के बाद, वे दोनों पवित्र प्रेरित पौलुस के शिष्य बन गए, जिन्होंने रोमियों को लिखे अपने पत्र में यहाँ तक कि उन्हें अपने संबंधी भी कहा है (रोमियों 16:21)। जेसन को उनके मूल शहर तारस में बिशप नियुक्त किया गया, जबकि सोसपितर ने इकोनियम की कलीसिया का प्रभार संभाला; दोनों ने बहादुरी से अपनी भेड़-बकरियों की देखभाल की और उन्हें बढ़ाया। पश्चिम की ओर बढ़ते हुए, वे कोर्फू द्वीप[3286] पहुँचे और वहाँ उन्होंने संत स्टीफन प्रथम शहीद को समर्पित एक सुंदर चर्च का निर्माण किया, जहाँ उन्होंने दैवीय पूजा का अनुष्ठान किया और कई लोगों को ईसाई धर्म में लाया। द्वीप के राजा केर्क्लनि के समक्ष उन पर बदनामी फैलाई गई, और उन्हें एक अंधाकुंड में बंद कर दिया गया जहाँ सात डाकू बंद थे: सैटरनियस, याकसिखोल, फाउस्टियन, इयानुआरस, मार्सालियस, यूफ्रेशियस और मैमयिन। पवित्र प्रेरितों ने, अपने दैवीय रूप से प्रेरित प्रवचनों के माध्यम से, उन्हें पवित्र विश्वास की ओर आकर्षित किया और भेड़ियों को भेड़ों में बदल दिया। तब राजा ने एक बर्तन में पिच, गंधक और मोम भरने का आदेश दिया, और इन सात नव-प्रबुद्ध कैदियों को उसमें फेंकने का आदेश दिया। इस प्रकार उन्होंने

[3283] ग्रीक में स्टीफन का अर्थ 'मुकुट' है।

[3284] एशिया माइनर में एक शहर, ठीक इकोनियम की तरह।

[3285] यह ग्रीस में, पेलोपोनेस के उत्तरी भाग में स्थित है।

[3286] ग्रीस के पास आयोनियन सागर में एक द्वीप।

शहादत प्राप्त की और प्रभु से अपने मुकुट प्राप्त कए। जेलर ने भी मसीह में वश्विास करना शुरू कर दया। इसके लए, उन्होंने पहले उसका बायाँ हाथ काट दया, फर दोनों पैर, और अंत में, जब वह मसीह के नाम का आह्वान करता रहा, तो उसका सर भी काट दया। और उसे पवत्र शहीदों में गना गया। जहाँ तक पवत्र प्रेरत जेसन और सोसपैटर का सवाल है, राजा ने उन्हें कालकोठरी से बाहर नकलवाया और यातना देने के लए राजकुमार साइप्रयन के हवाले कर दया। राजकुमार ने उन्हें कसकर बाँधा और उन्हें वापस जेल भेज दया।

अपने कक्ष से पवत्र शहीदों का ऐसा दुख सहन करते देख और यह जानकर क वे मसीह के लए पीड़ा झेल रहे थे, राजा की बेटी, जसका नाम केर्करा था, ने स्वयं को एक ईसाई घोषत कर दया, अपने कीमती वस्त्र और आभूषण उतार दए, और उन्हें गरीबों में बाँट दया।

यह जानकर, उसके पता गहरे दुख से भर गए और उन्होंने उसे ईसाई धर्म से दूर करने के लए हर संभव प्रयास कया। जब सब प्रयास व्यर्थ गए, तो राजा क्रोध के आवेश में आकर उसे एक अलग कालकोठरी में बंद कर दया और आदेश दया क उसे मुरन नामक एक कामुक व्यक्त के हवाले कर दया जाए ताक वह उसका अपमान करे। जब मुरीन जेल के दरवाजों के पास पहुँचा, तो अचानक एक भालू दौड़ता हुआ आया, उसे पकड़ लया और नोचना-खसोटना शुरू कर दया। यह हंगामा सुनकर और खड़की से यह देखकर क क्या हो रहा है, वहाँ कैद रानी ने मसीह के नाम पर उस जानवर को भगा दया, मुरीन के घावों को चंगा कया और पवत्र वश्विास के सत्य को प्रकट करके उसे ईसाई बना दया।

'महान है ईसाई ईश्वर!' मुरीन ने ज़ोर से कहा; और इसके लए, भयानक यातनाएँ सहने के बाद, वह अपने दुखों के बीच मर गया और शहीदों के साथ प्रभु के सामने प्रकट हुआ।

तब ज़ार ने अपने सैनकों को आदेश दया क वे कालकोठरी के चारों ओर लकड़याँ इकट्ठी करें और उसमें आग लगा दें, ताक उसकी बेटी कालकोठरी के साथ जल जाए। उन्होंने जैसा आज्ञा दी गई थी वैसा ही कया, और कालकोठरी जलकर राख हो गई। लेकन वह युवती जीवत और सुरक्षत पाई गई: आग ने उसे छुआ तक नहीं था। यह चमत्कार देखकर, बहुत से लोग मसीह में वश्विास करने लगे।

अंत में, उसके यातना देने वालों ने संत को एक पेड़ से लटका दया, तीखे धुएँ से दम घुटा दया, तीरों से भेदा और उसने अपनी आत्मा ईश्वर को सौंप दी। उसकी मृत्यु के बाद, राजा ने उन लोगों पर अत्याचार करना शुरू कर दया जो मसीह में वश्विास करते थे। यातनाओं के डर से, वे एक पड़ोसी द्वीप पर भाग गए और वहाँ शरण ली। यह जानकर, राजा स्वयं उस द्वीप पर जहाज़ से गया, उनका इरादा उन्हें भयानक यातनाओं से दंडत करने का था। लेकन जब वह समुद्र में था, तो ईश्वर के क्रोध के प्रकोप से, वह समुद्र की गहराई में डूब गया, ठीक वैसे ही जैसे एक बार फरौन डूबा था। ईसाइयों को इस उत्पीड़क से मुक्त मलने पर, उन्होंने प्रभु का धन्यवाद करते हुए भजन गाए। पवत्र प्रेरत जेसन और सोसपटर, जेल से रहा होने के बाद, बना कसी बाधा के लोगों को परमेश्वर का वचन सखाने लगे।

जब एक और राजा सहासन पर बैठा और उसे पवत्र प्रेरतों के बारे में पता चला, तो उसने उन्हें पकड़वा लया और आदेश दया क तारकोल, गंधक और मोम का एक बड़ा पात्र गर्म कया जाए, और संतों को उसमें फेंक दया जाए। लेकन मसीह की कृपा से, प्रेरत उस पात्र में बना कसी नुकसान के खड़े रहे, जबक चारों ओर खड़े कई अवश्विासयों को आग से झुलस गए। यह चमत्कार देखकर अन्य लोग मसीह पर वश्विास करने लगे। राजा स्वयं भी वश्विास करने लगा और अपने गले में एक पत्थर डालकर, आँसुओं के साथ पुकार उठा:

'हे जेसन और सोसपटर के ईश्वर, मुझ पर दया करो!'

तब पवत्र प्रेरतों ने, जो भी वश्विास लाए थे, उन्हें इकट्ठा करके परमेश्वर का वचन सखाया; और राजा को उपदेश देकर, उन्होंने उसे पता, पुत्र और पवत्र आत्मा के नाम पर बपतस्मा दया, और उसका नाम सेबेस्टयिन रखा। कुछ दनों बाद, राजा का पुत्र बीमार पड़ गया और मर गया। तब पवत्र प्रेरतों ने परमेश्वर से प्रार्थना करके, उसे मरे हुओं में से जला दया। उन्होंने और भी कई चमत्कार कए और राजा के साथ मलकर भव्य चर्चों का नर्माण कया। अपना पवत्र कार्य पूरा करके और मसीह के झुंड को बढ़ाकर, प्रेरतों ने अपने वृद्धावस्था में देह त्याग दया और आनंदपूर्वक मसीह परमेश्वर के पास चले गए।

कॉन्टाकयिन, स्वर 4:

हे दव्यि प्रेरति जेसन और सोसपिटर, आप दीप्तमिान तारों के समान प्रकट हुए हैं, जन्हिोंने अपने उपदेश की ज्योति से सम्पूर्ण ब्रह्मांड को प्रकाशति कयिा है; वश्विास के द्वारा आपका सम्मान करने वालों को बचाएँ।

पवत्रि शहीदों मैक्समिस, दादा और क्वटिलियिन का कष्टकथा

28 अप्रैल को स्मरणोत्सव

नष्ठिाहीन रोमन सम्राटों डायोक्लेटयिन और मैक्समियिन के शासन के दूसरे वर्ष में[3287] , गवर्नर टार्क्वनियिस और गैवयिस के अधीन, शैतान ने ईसाइयों पर अपना भयानक क्रोध उंडेल दयिा। इन सम्राटों और गवर्नरों द्वारा नम्निलखिति फरमान जारी कयिा गया था:

– यद्यपि हम जानते हैं कि हमारे सभी प्रजाजन भक्तपिूर्वक देवताओं की पूजा करते हैं, तथापि, राज्य के बेहतर शासन के हति में, हम रोम साम्राज्य की भूमि में वर्तमान में रहने वाले सभी से आग्रह करते हैं कि वे स्वयं हर तरह से देवताओं की पूजा करें और उनसे प्रेम करें, और दूसरों को भी ऐसा करने के लिए प्रेरति करें। यदि, तथापि, कोई भी कहीं भी मसीह का नाम लेते हुए पाया जाता है, तो उस पर हमारा प्रकोप पड़ेगा।

यह आदेश सुनकर, सभी लोग आज्ञा के अनुसार देवताओं को बलदिान चढ़ाने और इन शब्दों से अपने शासकों का अभविादन करने के लिए एकत्रति होने के लिए जल्दी से नकिल पड़े:

'देवताओं का सम्मान करने में इतनी सावधानी बरतने के लिए हमारे शासकों को आनंद और दीर्घायु मलि!'

गवर्नर टार्क्वनियिस ने इकट्ठा हुए लोगों से कहा:

'आपके इस उत्साह को देखकर, हम आपसे अनुरोध करते हैं कि आप कल इकट्ठा हों ताकि हम मलिकर देवताओं को बलदिान चढ़ा सकें; लेकनि अभी के लिए, हमारे साथ आनंद मनाएँ और अपनी लंबी यात्रा से वश्विराम करें; कल, बलदिान के बाद, हर कोई अपने-अपने शहर लौट जाए।' अगली सुबह, सभी इकट्ठा हुए और मूर्तयिों की बलि चढ़ाकर एक अधर्मी उत्सव मनाया, और टार्क्वनियिस ने उन्हें घर भेज दयिा। अगले दनि, दुष्ट मूर्तपिूजकों में से एक ने टार्क्वनियिस को बताया:

'शहर में तीन व्यक्ति हैं जन्हिोंने कल आपके आदेश की अवज्ञा की और बलदिान नहीं चढ़ाया; वे आपस में कहते हैं कि वे स्वर्ग में रहने वाले एकमात्र ईश्वर की पूजा करते हैं।'

टार्क्वनियिस ने तुरंत अपने नौकरों को उन अवज्ञाकारी पुरुषों को पकड़ने के लिए भेजा। जब नौकरों ने उन्हें ओज़ोवयिा गाँव में ईश्वर से प्रार्थना करते हुए पाया, तो उन्होंने उन्हें हथकड़ी पहना दी और जल्द ही उन्हें डोरोस्टोल शहर में ले आए, जहाँ उस समय दोनों राज्यपाल मौजूद थे। जब वे शहर पहुँचे और ईसाइयों को पकड़ने की सूचना दी, तो शाम हो चुकी थी। टार्क्वनियिस ने कैदयिों को सुबह तक पहरा देने का आदेश दयिा। संतों ने पूरी रात प्रार्थना की और पुकार लगाई:

'हे हमारे प्रभु, यीशु मसीह! स्वर्ग से हमें अपनी शक्ति भेजो कि हम अपने शत्रुओं पर वजिय प्राप्त कर सकें, और अपनी दया से हमें वजिय के मुकुट प्रदान कर।'

सुबह, टार्क्वनियिस और गैवयिस बेंच पर अपनी सीटों पर बैठ गए और कब्जा कए गए ईसाइयों को अपने सामने लाने का आदेश दयिा। उन्हें देखकर, टार्क्वनियिस ने पूछा:

'क्या ये वे लोग हैं जो हमारी आज्ञाओं की अवहेलना करते हैं और अपनी मर्जी से अपने धर्म का पालन करते हैं?'

फरि उसने संतों से उनके नाम पूछे। संत मैक्समिस ने उत्तर दयिा:

'वश्विास से मैं इन अपने भाइयों की तरह एक ईसाई हूँ, लेकनि जन्म से मेरा नाम मैक्समिस है।'

'तुमने घोषणा की है,' शासक ने कहा, 'कि तुम हमारे देवताओं की नहीं, बल्कि किसी और की सेवा करते हो। तुम्हारे साथी का नाम क्या है?'

उसने अपनी मर्जी से जवाब दयिा कि उसका नाम दादा था और वह अपने भाई की तरह ही एक ईसाई था। जब टार्क्वनियिस ने पूछा कि तीसरे आदमी का नाम क्या था, तो क्वटिलियिन ने अपना नाम बताया और घोषणा की कि वह भी

[3287] डायोक्लेटयिन ने 284 से 305 तक और मैक्समियिन (गेलेरयिस) ने 306 से 311 तक शासन कयिा।

एक ईसाई था। सचवि मैग्नलिीन ने प्रत्येक व्यक्ति की गवाही दर्ज की। गवर्नर, गावयिस ने उससे पूछा कि क्या उसने नाम लखि लिए हैं। मैग्नलिीयन ने कहा कि अगर उसे आदेश मलिा तो वह उन्हें पढ़कर सुना देगा।

'उन्हें पढ़ो,' गावयिस ने कहा। सचवि ने पढ़ा:

'उन ईसाइयों के नाम जो अपनी ही गवाही के अनुसार फांसी दिए जाने वाले हैं, इस प्रकार हैं: मैक्समिस, दादा, क्वंटिलियिन।'

तब टार्क्वनिीअस ने संतों से ये शब्द कहे:

'तुम्हारी जान तुम्हारे ही हाथ में है। अगर तुम जीना चाहते हो, तो देवताओं की माता को बलदिान चढ़ाओ और उसके पुरोहति बन जाओ, क्योंकि उसका पुरोहति मरकर महान स्वर्गीय राजा ज्यूस की सेवा करने के लिए वहाँ चला गया है।'

'हे दुष्ट और नरि्लज्ज मनुष्य!' मैक्समि ने उत्तर दयिा। 'या क्या तुम प्रभु से नहीं डरते, जो एक घृणति व्यभचिारी को देवता और राजा कहते हो? यह जान लो, हे मूर्खों: स्वर्ग का राजा मसीह है, जो सभी की परवाह करता है और सभी पर शासन करता है। यह भी जान लो कि हिम, सच्चे परमेश्वर की रचनाएँ, तुम्हारी हानकिारक आज्ञा कभी नहीं मानेंगे!'

गवर्नर गैवनियिस ने दादा और क्वंटिलियिन को बुलाया और उनसे बहुत देर तक बात की, लेकनि कोई फायदा नहीं हुआ, और वह उन्हें अपनी अधर्मी और हानकिारक शकि्षाओं को स्वीकार करने के लिए मनाने की कोशशि कर रहा था। संतों ने उत्तर दयिा:

– हम अपने भाई मैक्समिस की कही बात पर कायम हैं। वह हमारी कैथोलकि चर्च में एक रीडर हैं, पवत्रि शास्त्रों को अच्छी तरह समझते हैं, और जानते हैं कि हिमारे लिए क्या अच्छा है। लेकनि आप, दैवीय पागलपन से ग्रस्त, यह नहीं जानते कि आपके लिए क्या आवश्यक है। यदि आप हमारी बात सुनने को तैयार होते, तो आप सत्य को जान जाते।

तब गैवयिस और टार्क्वनियिस ने कहा:

'देखो, हम तुम्हें मनाने और जो सबसे अच्छा है उसकी सलाह देने की भरसक कोशशि कर रहे हैं, फरि भी तुम हमारी बात नहीं मानते और अपनी मूर्खता पर अड़े हुए हो।'

– नहीं,' संत मैक्समिस ने उत्तर दयिा, 'यह आप हैं जो दैवीय आत्मा से ग्रस्त हैं, जो सदाचारी जीवन जीने वाले और एकमात्र ईश्वर की सेवा करने वाले लोगों को एक दैवीय आस्था में परविर्तति करना चाहते हैं। हमारे साथ जो चाहें करें, लेकनि आप हमें कभी भी सच्ची आस्था से दूर नहीं कर सकते।

तब गावीयस और टार्क्वनिीअस ने वचिार करना शुरू कयिा कि संतों के साथ क्या कयिा जाए, और उन्हें जेल ले जाने का आदेश दयिा। संत स्वेच्छा से चले गए, और अपने उद्धार के बारे में बातें करते रहे। जेल में रहते हुए, वे आध्यात्मकि चर्चा में लगे रहे, और मैक्समिस ने दादा और क्वंटिलियिन को पवत्रि शास्त्रों से बहुत कुछ सखिाया। आधी रात को वे सो गए और एक सपने में उन्होंने देखा कि शैतान हथयिारों से उन पर हमला कर रहा है। जागने पर, उन्होंने एक देवदूत को उनसे बात करते हुए देखा:

'डरो मत: परमेश्वर, तुम्हारी आशा, तुम्हें अपनी उपस्थति में स्वीकार करेंगे। वह तुमसे दूर नहीं है और तुम्हारी मदद करेगा।'

स्वर्गदूत का दर्शन और उसके शब्दों ने शहीदों को बल दयिा; उन्होंने सुबह तक परमेश्वर की स्तुति करते हुए धन्यवाद दयिा।

न्यायाधीशों ने अदालत में अपनी सीटें संभालने के बाद, कैदयिों को एक बार फरि अपने सामने लाने का आदेश दयिा, और गैवयिस ने उनसे कहा:

'हमने तुम्हें बुलाया है; एक बार फरि हम तुमसे देवताओं को बलदिान चढ़ाने का आग्रह करते हैं, और तब तुम हमें से महान सम्मान प्राप्त करोगे। लेकनि अगर तुम हमारी आज्ञा का पालन नहीं करते हो, तो अपनी मौतों के लिए स्वयं दोषी ठहराए जाओगे। कल रात, हमारे देवताओं ने तुम्हारे बारे में अपनी इच्छा एक सपने में प्रकट की।'

पवत्रि शहीदों ने उत्तर दयिा कि ईश्वर ने भी उन्हें अपने पवत्रि नाम के लिए हर प्रकार की यातनाएँ सहने का आदेश दयिा था। टार्क्वनियिस ने गावयिस से ये शब्द कहे:

'जब तक हम उन्हें यातना नहीं देंगे, वे कभी हमारा आदेश नहीं मानेंगे।'

गावनियिस ने उत्तर दयिा:

'उन्होंने यह स्वयं चुना है; अब वे खुद को ही दोष दें।'

तब शासकों ने आदेश दिया कि शहीदों के कपड़े उतार दिए जाएँ। जब यह कर दिया गया, तो गैवियस ने आदेश दिया कि उन्हें बाँधा जाए, जमीन पर पेट के बल लिटाया जाए और पीटा जाए। जब यह भी कर दिया गया, तो टार्क्वीनियस ने अपने नौकरों से कहा:

'उनसे पूछो कि क्या वे हमारी आज्ञा मानने और देवताओं को बलिदान चढ़ाने के लिए तैयार हैं; यदि नहीं, तो हम उन पर और भी यातनाएँ देंगे और उन्हें क्रूर मृत्यु दंड देंगे।'

सेवकों के प्रश्नों के उत्तर में, पवित्र शहीदों ने एक स्वर में उत्तर दिया:

'हमारा ईश्वर हमें सहारा देता है; हम तुम्हारे यातनाओं का तिरस्कार करते हैं, हम तुम्हारी दुष्ट सलाह पर ध्यान नहीं देंगे, और हम राक्षसों को बलिदान नहीं चढ़ाएंगे।'

टार्क्वीनियस ने अपने सेवकों को संतों को वापस कालकोठरी में ले जाने का आदेश दिया, क्योंकि दोपहर के भोजन का समय हो गया था। जब सातवां घंटा बीत गया, तो न्यायाधीश फिर से अदालत में अपने-अपने स्थान पर बैठ गए, और पवित्र शहीदों को फिर से उनके सामने लाया गया।

गेविनस ने पूछा:

'मैक्सिमस! क्या तुमने अभी तक हमारी सलाह मानकर देवताओं को बलिदान चढ़ाने का निर्णय नहीं लिया है?'

संत मैक्सिमस ने उत्तर दिया:

'हम तुम्हारी सलाह स्वीकार नहीं करते; जैसा कि हमने पहले कहा है, वैसा ही हम अब दोहराते हैं, कि हम केवल अपने प्रभु यीशु मसीह की ही आराधना करेंगे, परमेश्वर पिता और पवित्र आत्मा के साथ।'

क्रोधित गैवियस चिल्लाया:

'यदि तुम होश में आने और देवताओं की पूजा करने से इनकार करते हो, तो हम तुम्हें नष्ट कर देंगे: हम आदेश देंगे कि तुम्हें एक सुनसान जगह पर ले जाया जाए और वहाँ सिर कलम कर दिया जाए।'

संतों ने शासकों से अपनी धमकी को अमल में लाने का आग्रह किया। फिर राज्यपालों ने शहीदों को उनके गाँव ले जाकर वहाँ सिर कलम करने का आदेश दिया। मृत्युदंड सुनकर, संतों ने परमेश्वर की स्तुति की और प्रार्थना की:

'हे प्रभु यीशु मसीह, जिन्होंने हमें इस सांसारिक, पापी जीवन से छुड़ाया है, हमें अपने महल में स्वीकार करें और हमें अपना स्वर्गीय राज्य प्रदान करें।'

प्रार्थना कर रहे पवित्र शहीदों को ओज़ोविया गाँव ले जाया गया, जहाँ उनके सिर काट दिए गए, और पवित्र शहीदों मैक्सिमिस, दादा और क्विंटिलियिन ने 28 अप्रैल को, डायोक्लेटियन और मैक्सिमियन के शासनकाल में, टार्क्वीनियस और गैवियस के अधीन, अपना प्राण ईश्वर के हाथों में सौंप दिया। हमारे प्रभु यीशु मसीह को, जो हम पर राज्य करते हैं, महिमा, सामर्थ्य और राज्य युगानुयुग हो। आमीन।

हमारे पवित्र पिता तुरोव के बिशप, सिरिल की स्मृति

28 अप्रैल को स्मरण किया जाता है

धन्य सिरिल अमीर माता-पिता के पुत्र थे; उनका जन्म और पालन-पोषण तुरोव नगर[3288] में हुआ था। इस क्षणिक संसार के धन और वैभव के प्रति कोई लगाव न रखते हुए, उन्होंने दिव्य पुस्तकों के अध्ययन के लिए विशेष उत्साह के साथ खुद को समर्पित कर दिया और पवित्र धर्मग्रंथों में पूर्ण महारत हासिल की। जब समय आया, तो वे मठ में प्रवेश कर गए[3289] । मठवासी व्रत ग्रहण करने के बाद, उन्होंने उपवास और जागरण द्वारा अपने शरीर को थकाकर अन्य सभी भिक्षुओं से अधिक ईश्वर की सेवा की, और इस प्रकार उन्होंने स्वयं को पवित्र आत्मा के लिए एक शुद्ध निवास स्थान बना लिया। इस समय के दौरान, उन्होंने के माध्यम से कई लोगों को लाभ पहुँचाया और अपने उदाहरण द्वारा भिक्षुओं

[3288] तुरोव नगर, जो अब मिन्स्क गवर्नरेट के मोज़िर जिले में एक छोटा सा शहर है, तिरिपिटी नदी पर, आज के मोज़िर और पिंस्क शहरों के बीच आधे रास्ते पर स्थित था। क्रॉनिकल के अनुसार, इसकी स्थापना वरांगियन टूर ने की थी, जो ओल्गा या स्वियातोस्लाव के शासनकाल के दौरान, दूसरे वरांगियन, रोगवोलोद के साथ समुद्र के पार से आया था, जिसने पोलोत्स्क की रियासत की स्थापना की थी।

[3289] धन्य किरिल तुरोव के पास स्थित बोरिसि और ग्लेब मठ में एक भिक्षु के रूप में रहते थे। इस मठ का उल्लेख धन्य मार्टिन की जीवनी में मिलता है। उनका पर्व 28 जून को मनाया जाता है।

को मठाध्यक्ष के अधीन और आज्ञाकारी बने रहने, उन्हें ईश्वर के रूप में सम्मान देने और हर बात में उनकी आज्ञा मानने के लिए प्रोत्साहित किया; और उन्होंने घोषणा की कि कोई भी भिक्षु जो अपने व्रत के अनुसार अपने मठाध्यक्ष की आज्ञा नहीं मानता है, वह उद्धार नहीं पा सकता। तब और भी बड़े भक्ति कार्य करने के लिए, धन्य सरिल ने स्वयं को एक स्तंभ में बंद कर लिया, जहाँ वे कुछ समय तक रहे और उपवास तथा प्रार्थना में लगे रहे। वहाँ उन्होंने कई धार्मिक ग्रंथ रचे, जिनके माध्यम से उन्होंने आसपास के पूरे क्षेत्र में ख्याति प्राप्त की। राजकुमार[3290] और शहर के नागरिकों के आग्रह पर, मेट्रोपॉलिटन ने उन्हें बिशप के पद पर पदोन्नत किया और उन्हें तुरोव शहर[3291] का बिशप नियुक्त किया, जो उस समय उस नाम से जाना जाता था और कीव के पास स्थित था।

[3292][3293]बिशप के पद पर, धन्य सरिल ने परमेश्वर की कलीसिया के शासन में बहादुरी से परिश्रम किया। पवित्र शास्त्र के आधार पर, उन्होंने थियोडोरेट्स के विधर्म की निंदा की — जिसे उपहास के लिए यह नाम दिया गया था — और उस पर शाप (अनाथेमा) लगाया। उन्होंने सुसमाचार और भविष्यसूचक पुस्तकों के वचनों पर आधारित कई पत्र राजकुमार एंड्रे बोगोल्युब्स्की[3294] को लिखे, और उन्हें प्रभु के पर्वों के लिए रचित अपने प्रवचन भी भेजे, साथ ही अपने कई अन्य धर्मोपयोगी कार्य भी। यह सब लिखने और कई अन्य कृतियाँ रचने के बाद, धन्य सरिल ने उन्हें अपने अनुयायियों में वितरित कर दिया। आज भी, रूढ़िवादी रूसी उनकी कृतियों का उपयोग करते हैं, और उनमें ज्ञान और सांत्वना पाते हैं[3295] । ऐसे धर्मपरायण कार्यों में अपना जीवन व्यतीत करने और अपने सुपुर्द किए गए झुंड का यथोचित रूप से पालन करने के बाद, धन्य सरिल परम जीवन की शाश्वत विश्रामस्थली के लिए प्रस्थान कर गए[3296] ।

तो आइए, भाइयों, अब हम इन शब्दों से इस पवित्र धर्मगुरु की महिमा करें: हर्षित हो, हे महिमामय पवित्र धर्मगुरु और शिक्षक, जिन्होंने किसी अन्य से अधिक रूस में स्वयं के लिए दूसरे क्रिसोस्टोम की ख्याति अर्जित की है। हर्षित हो, आप जिन्होंने अपने शानदार शब्दों के माध्यम से रूसी साम्राज्य के सभी क्षेत्रों को आध्यात्मिक ज्ञान में शिक्षित किया है। जैसे ही हम आपको यह विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं, हम आपसे प्रार्थना करते हैं: सर्वशक्तिमान के समक्ष, जिनके सामने आप अब निडर होकर खड़े हैं, हमारे लिए प्रार्थना करें, कि वह हमें उन विपत्तियों से और अधर्मी अगारियों से[3297] बचाए, जो हमें सदा उत्पीड़ित करते हैं, ताकि आपकी प्रार्थनाओं के द्वारा हमें प्रभु से दया प्राप्त हो, पापों की क्षमा और आने वाले जीवन में शाश्वत आनंद।

- इसी दिन हम पवित्र शहीदों: सटॉर्नियस, याकसिकोलस, फाउस्टियस, यान्नुआरस, मार्सालियस, यूफ्रेसियस, का स्मरण करते हैं, मैमियस (डकैत, जिन्हें प्रेरित जेसन और सोसिपेटर ने कालकोठरी में शिक्षित किया, और उबलते हुए पिच के कड़ाही में फेंक दिया गया), ज़िनोन, यूसेबियस, नियोन और विटालियस (उसी प्रेरितों द्वारा शिक्षित और खंभे पर जलाया गया); इन सभी शहीदों ने कोर्फू द्वीप पर यातनाएं सहन कीं।

[3290] यह, बेशक, राजकुमार यारोस्लाव जॉर्जीविच या यारोस्लावोविच को संदर्भित करता है, जिन्होंने 1146 से तुरोव पर शासन किया।

[3291] वह वर्ष जिसमें धन्य सरिल ने अपना पदभार संभाला, अज्ञात है।

[3292] यहाँ 'फ़ियोडोरेट्स' नाम प्रसि एंड्रे बोगोल्युबस्की के प्रिय फ़ियोडोर से संबंधित है, जो पहले सुज़दाल के मठाधीश और बाद में रोस्तोव के बिशप थे; उन्होंने कई अत्याचार किए और लगभग 1169 में उन्हें मार डाला गया था। नोवगोरोड क्रॉनिकल में, उन्हें काले काउल के बजाय सफेद काउल अनधिकृत रूप से पहनने के कारण 'सफेद काउल' कहा गया है।

[3293] संत सिरिल 1169 की परिषद में उपस्थित थे, जिसमें थियोडोरेट्स पर मुकदमा चलाया गया और उसे एक विधर्मी और दुष्ट घोषित किया गया, और उन्होंने अन्य बिशपों के साथ मिलकर उसकी निंदा में भाग लिया।

[3294] माना जाता है कि इन भाषणों में थियोडोरेट के मामले से संबंधित विषय भी थे, लेकिन इनमें से कोई भी भाषण हमें ज्ञात नहीं है।

[3295] धन्य सिरिल के लेखन में से, निम्नलिखित हमें प्राप्त हुए हैं: लोगों के सामने चर्च में बोले गए नौ शब्द, भिक्षुओं को पत्र या निर्देशों के रूप में लिखे गए तीन प्रबंध, और बीस से अधिक प्रार्थनाएँ और एक प्रार्थना कैनन। इन लेखों की प्रामाणिकता पर कोई संदेह नहीं है।

[3296] धन्य सिरिल का लगभग 1183 में निधन हो गया, उन्होंने एकांत जीवन के प्रति प्रेम के कारण उस वर्ष से पहले अपना धर्मप्रांत छोड़ दिया था।

[3297] 'तातारों' से, बेशक, हमारा तात्पर्य तातारों से ही है। धन्य सिरिल का 'प्रोलॉग' में दिया गया वृत्तांत निस्संदेह रूस पर तातार शासन की अवधि के दौरान संकलित किया गया था। यह वृत्तांत, जो 14वीं सदी के 'प्रोलॉग' पांडुलिपि से लिया गया है, पहली बार 1642 और 1643 में प्रकाशित 'प्रोलॉग' के मुद्रित संस्करण में सामने आया था।

12 मई

29 अप्रैल (पुराने संस्करण के अनुसार)

उसी दिन, पवित्र शहीदों डायोडोरस और डकिन रोडोपयिानुस की स्मृति, जिन्होंने कैरयिा के एफ्रोडसियिास में डायोक्लेटयिन के अधीन यातनाएँ सहीं।

साइज़िकस में कष्ट सहने वाले नौ पवित्र शहीदों की स्मृति

29 अप्रैल को स्मरणोत्सव

क्यज़िकि का शहर एशयिा माइनर में मसियिा के क्षेत्र में, डार्डानेल्स की तटरेखा पर स्थित है[3298] , जो एशयिा को यूरोप से अलग करती है। यह ट्रॉयस शहर के पास स्थित है, जहाँ संतों के प्रेरित पॉल, जो अन्यजातियों के शिक्षक थे[3299] , ने उपदेश दयिा और जहाँ लोगों को उसी प्रेरित के माध्यम से पवित्र ईसाई धर्म द्वारा प्रबुद्ध कयिा गया था। यद्यपि यह शहर ईसाई धर्म के प्रकाश से प्रबुद्ध हो चुका था, फिर भी मूर्तिपूजकों द्वारा ईसाई धर्म के उत्पीड़न के कारण, इसमें शुरू में बहुत कम ईसाई थे। जब महान कॉन्स्टेंटाइन से पहले शासन करने वाले अधर्मी रोमन सम्राटों ने सभी क्षेत्रों में भयानक फरमान जारी किए – जिनमें उन सभी को मसीह के नाम का प्रचार करने के लिए मजबूर कयिा गया मूर्तिपूजा करने के लिए मजबूर कयिा जाए, और इस उद्देश्य के लिए क्रूर राज्यपाल भेजे गए, जिन्हें विभिन्न तरीकों से उन सभी को मृत्युदंड देने का काम सौंपा गया था जो शाही फरमान की अवज्ञा करते थे – उस समय कई ईसाई शहर छोड़कर भाग गए, और पहाड़ों तथा रेगिस्तानों में भटकते रहे; जबकि अन्य लोग मूर्तिपूजकों के बीच रहते हुए भी अपने विश्वास को उनसे छिपाए हुए थे; जो अपने ईश्वर और प्रभु, यीशु मसीह से विशेष उत्साह के साथ प्रेम करते थे, उन्होंने विधर्मी लोगों के बीच खुलेआम और सभी के सामने मसीह के नाम का अंगीकार कयिा और मसीह के नाम के लिए स्वेच्छा से हर प्रकार के यातनाओं और मृत्यु को सहन कयिा। इनमें से उत्तरार्ध में वे नौ पवित्र शहीद शामिल हैं, जिनकी अब स्मृति मनाई जा रही है, ये पराक्रमी पुरुष थे, जो सियोन पर्वत की तरह[3300] पवित्र विश्वास में दृढ़ थे, और एलयिा की तरह ईश्वर के प्रति उत्साह से जलते थे। उनके नाम इस प्रकार हैं: थियोग्नस, रूफस, एंटपिाटर, थिओस्टचिस, आर्टेमस, मैग्नस, थियोडोटोस, फाउमासयिस और फलिमोन।

ये पवित्र शहीद विभिन्न शहरों से आए थे। साइज़िकस में एकत्रित होकर, उन्होंने न तो राजा के भयानक फरमानों से और न ही यातना और मृत्यु से डरते हुए, ऊँचे स्वर में मसीह की महिमा की, और साहसपूर्वक यह स्वीकार कयिा कि वह सच्चे ईश्वर, संपूर्ण जगत के सृष्टिकर्ता और सर्वशक्तिमान शासक हैं। साथ ही, उन्होंने मूर्तिपूजक विधर्मी लोगों की शिक्षाओं की निंदा और फटकार की, जो ईश्वर के बजाय राक्षसों का सम्मान करते थे; संपूर्ण विश्व के सृष्टिकर्ता की पूजा करने के बजाय, जो सृष्टि की पूजा करते थे; जीवित ईश्वर के बजाय, वे निर्जीव मूर्तियों की पूजा करते थे; सच्चे ईश्वर के बजाय, वे झूठे देवताओं का सम्मान करते थे; और दयालु ईश्वर से प्रेम करने के बजाय, जो लोगों पर हर अच्छाई प्रदान करता है, वे क्रूर राक्षसों - मानवता के यातनादाताओं - को बलिदान चढ़ाते थे। इसलिए, इन पवित्र शहीदों ने अविश्वास से अंधा हो चुके मूर्तिपूजकों को अपने भ्रम को त्यागकर सत्य को जानने के लिए प्रोत्साहित कयिा, ताकि वे ईसाई शिक्षाओं के प्रकाश से प्रबुद्ध होकर, स्वर्ग में वास करने वाले और संपूर्ण ब्रह्मांड को अपनी शक्ति में धारण करने वाले एकमात्र सच्चे परमेश्वर में विश्वास कर सकें।

संतों के साहसी उपदेश के बारे में जानकर, शैतान के दुष्ट सेवकों ने उन्हें भेड़ों पर भेड़ियों की तरह निर्दयता से पकड़ लिया, और उन्हें बांधकर पूछताछ के लिए शहर के मजिस्ट्रेट के सामने ले आए, मानो वे कोई अपराधी हों।

[3298] डार्डानेल्स (प्राचीन काल में हेलेस्पोंट के नाम से जाना जाता था) मार्मरा सागर और एजियन सागर को जोड़ता है।

[3299] 'अन्यजातियों के शिक्षक' (या 'मूर्तिपूजकों के शिक्षक') की उपाधि संत पौलुस प्रेरित को दी जाती है क्योंकि उन्होंने मुख्य रूप से अन्यजातियों को उपदेश दिया, जबकि संत पतरस प्रेरित ने मुख्य रूप से यहूदियों को उपदेश दिया। – पवित्र प्रमुख प्रेरित पतरस और पौलुस का उत्सव 29 जून को होता है।

[3300] ज़ियोन – यरूशलेम का दक्षिण-पश्चिमी, ऊँचा हिस्सा। यहाँ, पुराने नियम के समय, यरूशलेम की रक्षा के लिए एक किला बनाया गया था। पवित्र शास्त्र में, सियोन को अक्सर स्वयं परमेश्वर का निवास स्थान और, अधिक सामान्य रूप से, इस्राएल के एक दुर्ग और सुरक्षा कवच के रूप में प्रस्तुत किया गया है (भजन संहिता 73:2, 75:3, 98:2, 109:2, 145:10, आदि)।

मसीह के ये पवत्रि योद्धा दुष्ट न्यायाधीश के सामने साहसपूर्वक खड़े रहे। उनके हृदय परमेश्वर के प्रतपि्रेम और उसकी महमिा के उत्साह की अग्नि से जल उठे थे। अपने यातना देने वाले के सामने खड़े होकर, उन्होंने परमेश्वर का पूरा कवच पहन लयिा (देखें इफसियिों 6:11), ताकि वे दुष्ट न्यायाधीश का, और सबसे बढ़कर स्वयं अंधकार के राजकुमार का, जसिके वरिुद्ध वे अब लड़ रहे थे, साहसपूर्वक वरिोध कर सकें।

दुष्ट न्यायाधीश ने उन्हें वभिन्नि यातनाओं और अत्याचारों से पीड़ति कयिा; उसने कई बार उन्हें कैद कयिा, फरि उन्हें बाहर नकिालकर यातनाएँ दीं, और उनसे मसीह का परत्यिाग करने तथा मूर्तयिों को बलदिान चढ़ाने की माँग की। लेकनि मसीह के ये पराक्रमी योद्धा कसिी भी परस्थितिि में अपने ईश्वर और प्रभु मसीह का त्याग करने से इनकार कर गए; इसके वपिरीत, उन्होंने मूर्तपिूजा की व्यर्थता के बारे में बोलना शुरू कर दयिा और स्वयं न्यायाधीश को उसकी दुष्टता के लिए फटकारा। परणिामस्वरूप, कई अन्य प्रकार की यातनाएँ सहने के बाद, उनका सरि कलम कर दयिा गया। उनके शरीर ठीक उसी स्थान के पास दफनाए गए।

कुछ वर्षों बाद, महान कॉन्स्टेंटाइन सहिासन पर चढ़ा; पवत्रि बपतस्मिा ग्रहण करने के बाद, उसने ईसाइयों के उत्पीड़न को समाप्त कर दयिा। अब ईसाई धार्मकिता का प्रकाश पूरे ब्रह्मांड में फैल गया।

तब साइज़किस के ईसाइयों ने पवत्रि शहीदों के शरीरों को श्रद्धापूर्वक खोदा, जो अपरविर्तति पाए गए, उन्हें नए ताबूतों में रखा, पवत्रि शहीदों के सम्मान में एक चर्च बनाया, और श्रद्धापूर्वक उनका अनमोल खजाना उसमें स्थानांतरति कर दयिा।

इन पवत्रि अवशेषों के माध्यम से चमत्कारों और उपचारों की एक वस्तिृत श्रृंखला हुई: दुष्ट आत्माओं को बाहर नकिाला गया, पक्षाघात से पीड़ति लोग स्वस्थ हो गए, और बुखार से ग्रस्त लोग अपनी बीमारयिों से पूरी तरह से ठीक हो गए।

उदाहरण के लिए, शहर के एक प्रसद्धि व्यक्ति, जो व्रणरोग से पीड़ति था, उसकी बीमारी वश्विास के साथ पवत्रि अवशेषों वाले संदूक को छूने से ठीक हो गई। इसी तरह, कोई भी व्यक्ति, चाहे वह कसिी भी बीमारी से पीड़ति हो, जसिने वश्विास के साथ पवत्रि शहीदों के ताबूत को छुआ, वह तुरंत ठीक हो गया।

यह देखकर, कई अवश्विासयिों ने मसीह की ओर मुड़ गए, और जल्द ही पूरा शहर मसीह में वश्विास करने लगा; मूर्तयिों और मूर्तपिूजक मंदरिों को नष्ट कर दयिा गया, और उनकी जगह ईसाई चर्च बनाए गए; साइज़किस शहर में, वहाँ दफनाए गए नौ पवत्रि शहीदों की प्रार्थनाओं के द्वारा, धार्मकिता का प्रसार हुआ।

हालाँकि, धर्मनष्ठि राजा कॉन्स्टेंटाइन और उनके पुत्र कॉन्स्टेंटयिस[3301] , जो काफी समय तक शासन कर चुके थे, की मृत्यु के बाद, अधर्मी जूलयिन द एपोकेट[3302] सहिासन पर बैठा; जसि पर उस शहर में रहने वाले कुछ ग्रीक मूर्तपिूजकों ने इस सम्राट के पास जाकर उसे सूचति कयिा कि ईसाइयों ने उनके सभी मंदरिों को नष्ट कर दयिा था और उनके वेदयिों को तोड़ दयिा था।

यह सुनकर, सम्राट ने मूर्तपिूजक मंदरिों और मूर्तयिों की बहाली का आदेश तो दयिा, लेकनि शहर में रहने वाले ईसाइयों पर कसिी भी प्रकार का उत्पीड़न नहीं होने दयिा, क्योंकि उनकी संख्या बहुत अधकि थी (और उसे एक जन-आक्रोश का डर था)। फरि भी, इस अधर्मी सम्राट ने ईसाई बशिप एलेउसयिस को कैद करने का आदेश दयिा। जब वह फ़ारसियिों के वरिुद्ध एक अभयिान पर नकिला और वहीं मर गया, तो बशिप एलेयुसयिस को रहिा कर दयिा गया, और साइज़किस नगर में एक बार फरि से ईसाई धर्म का प्रकाश फैल गया; वह नगर उन पवत्रि शहीदों द्वारा परमेश्वर के सामने उत्साही मध्यस्थता से, एक मजबूत दीवार की तरह, मज़बूत और स्थरि हो गया। उनकी प्रार्थनाओं के द्वारा, हम भी अपनी आध्यात्मकि और शारीरकि दुर्बलताओं से चंगाई प्राप्त करें, और हम भी हमारे प्रभु यीशु मसीह की कृपा और दया के योग्य ठहरें। आमीन।

[3301] कॉन्स्टेंटयिस ने 337 से 363 तक रोमन साम्राज्य के पूर्वी हस्सि पर शासन कयिा। उस समय साम्राज्य के पश्चमिी हस्सि पर कॉन्स्टेंट (337 से 350 तक) और मैग्नेन्टयिस (350 से 353 तक) का शासन था। 353 से 361 तक, कॉन्स्टेंटयिस ने रोमन साम्राज्य के दोनों हस्सिों पर शासन कयिा।

[3302] जूलयिन द एपोस्टेट ने 361 से 363 तक रोमन साम्राज्य पर शासन कयिा।

कॉन्टाकयिन, स्वर 2:

त्रमिूर्त के स्वीकारकर्ता, नौ शहीदों का दृढ़ और सर्व-प्रकाशमान मुखमंडल, न्याय-पीठ पर आरंभ से ही उस पर पुकार उठा: 'हे प्रभु, हम तुझे अपना रक्त और आत्मा अपने शरीरों सहति एक नर्दिोष बलदिान के रूप में अर्पति करते हैं; हे दयालु ईश्वर, हमें अपनी स्वर्गीय सेना में गनि।'

हमारे पूजनीय पति मेमनोन चमत्कारकि की स्मृत

29 अप्रैल को स्मरण कयिा जाता है

हमारे पूजनीय पति मेमनोन ने अपने युवा काल से ही स्वयं को ईश्वर की सेवा के लिए समर्पति कर दयिा और पवत्रि आत्मा का एक शुद्ध नविास स्थान बन गए, क्योंक उन्होंने अपने शरीर को आत्मा के अधीन कर दयिा, और कई कठनि परश्रिमों के माध्यम से अपने शारीरकि वासनाओं को मृत्यु दे दी। संत मेमनोन को भक्षिुओं का प्रमुख (मठाधीश) नयिुक्त कयिा गया। अपने दैवीय जीवन शैली के कारण, उन्हें ईश्वर से चमत्कार करने का प्रचुर वरदान प्राप्त हुआ; उन्होंने असाध्य रोगयिों को ठीक कयिा और कई अन्य चमत्कार भी कए। इस प्रकार, उदाहरण के लिए, संत की प्रार्थना के बाद एक बंजर स्थान पर पानी का एक सोता प्रकट हुआ; वह अक्सर जहाजों को डूबने से बचाते थे, जब वे एक भयंकर तूफान में फंस जाते थे और उनमें पहले से ही पानी भर रहा होता था; उन्होंने टड्डियों को भगा दयिा जो उस भूम में बड़ी संख्या में आकर सभी फलों और घास को खा रही थीं; उन्होंने कई अन्य शानदार चमत्कार कए - जसिके लिए उन्हें 'चमत्कारकर्ता' का नाम मलिा।

इस प्रकार, कई वर्षों तक उपवास के लिए स्वयं को समर्पति करने और अपने पुण्य जीवन से ईश्वर को प्रसन्न करने के बाद, मेमनोन आनंदपूर्वक प्रभु के पास चले गए, जनिसे उन्होंने अपने पूरे हृदय से प्रेम कयिा था।

न केवल अपने जीवनकाल में, बल्क अपनी मृत्यु के बाद भी, संत ने वभिन्नि प्रकार के चमत्कार कए, क्योंक उनके मकबरे से बीमारों को चंगाई मलिती थी, और केवल संत के नाम का उच्चारण करने मात्र से, टड्डियाँ भगा दी जाती थीं और अशुद्ध आत्मा की सभी चालाकयिाँ नष्ट हो जाती थीं। इस प्रकार परमेश्वर ने अपने सेवक का गौरव कयिा, जसिका उनके संतों में युगों-युगों तक गौरव कयिा जाता है। आमीन।

- उसी दनि, हम पवत्रि शहीदों डायोडोरस और डकिन रोडोपयिानस का स्मरण करते हैं, जन्हिोंने कैरयिा के एफ्रोडसियिास में डायोक्लेटयिन के अधीन यातनाएँ सहन कीं।

13 मई

30 अप्रैल (पुराने कैलेंडर के अनुसार)

मई

संत जेम्स, ज़ेबेदी के पुत्र, प्रेरति की स्मृत

30 अप्रैल को स्मरणोत्सव

ज़ेबेदी के पुत्र संत जेम्स, जो सुसमाचार प्रचारक संत जॉन के भाई थे, सरल मछुआरों में से प्रभु द्वारा अपने शष्यिों के रूप में चुने गए बारह प्रेरतिों में से एक थे। यीशु मसीह द्वारा बुलाए जाने पर, याकूब ने अपने भाई के साथ अपनी नाव, अपने पति और अपने मछली पकड़ने के जाल छोड़ दए और मसीह का अनुसरण कयिा (मत्ती 4:21-22), हर जगह उनका साथ दयिा, उनके वचन सुने और उनके द्वारा कए गए चमत्कारों को देखा। और प्रभु दोनों भाइयों से इतना प्रेम करते थे क उन्होंने एक को अपनी छाती पर सरि रखने दयिा (यूहन्ना 13:23), जबक दूसरे (याकूब) से उन्होंने उस प्याले को देने का वादा कयिा जसिसे उन्हें स्वयं पीना था (मत्ती 20:22-23)। और प्रेरतिों ने स्वयं अपने प्रभु से इतनी गहरी प्रेमभक्त दिखाई क वे उन पर आग बुलाना चाहते थे जो उन पर वश्विास नहीं करते थे, ताक उन्हें नष्ट कर सकें (लूका

9:54); और वे ऐसा कर देते यदि दयालु प्रभु यीशु मसीह ने स्वयं उन्हें ऐसा करने से न रोका होता। इन दो प्रेरितों, ज़ेबेदी के पुत्र याकूब और यूहन्ना, के साथ-साथ प्रेरित पतरस को भी, प्रभु ने अपनी दिव्य गुणों और रहस्यों को अन्य सभी प्रेरितों की तुलना में अधिक पूर्ण रूप से प्रकट किया, जैसा कि उदाहरण के लिए, मामला था, परवत ताबोर पर, जब प्रभु अपनी दिव्यता की महिमा प्रकट करना चाहते थे, तो उन्होंने पतरस, याकूब और यूहन्ना को अपने साथ ले लिया (मत्ती 17 और बाद के श्लोक)।

हमारे प्रभु के स्वैच्छिक दुख-भोग, पुनरुत्थान और स्वर्गारोहण के बाद, और पवित्र आत्मा के अवतरण के पश्चात्, पवित्र प्रेरित याकूब ने स्पेन और अन्य देशों में परमेश्वर का वचन प्रचार करते हुए यात्रा की। फिर वे यरूशलेम लौट आए, जहाँ वे यहूदियों के लिए गरज की तरह भयानक थे (मरकुस 3:17), क्योंकि उन्होंने यीशु मसीह का प्रचार साहस और निर्भीकता के साथ किया, यह घोषित करते हुए कि वही सच्चे मसीहा, संसार के उद्धारकर्ता हैं। याकूब फरीसियों[3303] और शास्त्रियों[3304] के साथ अपनी बहसों में विजयी रहा, और उसने उनकी कठोरता और अविश्वास के लिए उन्हें उजागर किया और फटकार लगाई। वे, हालांकि, उसका सामना करने में असमर्थ थे, इसलिए उन्होंने जेम्स के साथ बहस करने और उसे शर्मिंदा करने के लिए हर्मोजेनेस नामक एक जादूगर को शुल्क पर काम पर रखा। लेकिन जादूगर, घमंडी होने के कारण, स्वयं जेम्स से बात नहीं करना चाहता था, बल्कि उसने अपने शिष्य, जिसका नाम फिलिटिस था, को यह कहते हुए भेजा:

'याकूब न तो मुझसे और न ही मेरे शिष्य से बहस में जीत पाएगा।'

फिलिटिस आया और संत जेम्स प्रेरित से बात की, लेकिन, प्रेरित में व्याप्त पवित्र आत्मा की बुद्धिमत्ता का विरोध न कर पाने के कारण, वह मूक की तरह चुप रहा, और प्रेरित का विरोध करने के लिए अपना मुँह खोलने का साहस नहीं कर सका। सत्य को पहचानकर, फिलिटिस ने स्वयं को नम्र किया और अपने गुरु, जादूगर के पास लौटकर, उससे कहा कि जेम्स को पराजित नहीं किया जा सकता, क्योंकि वह अपने शब्दों की पुष्टि चमत्कारों से भी करता था। यह सुनकर, फिलितुस ने अपने गुरु को दर्शन-शास्त्र और जादू-टोना छोड़ने और स्वयं जेम्स का शिष्य बनने की सलाह दी। लेकिन घमंडी हरमोजेनेस ने अपने जादू-टोने का उपयोग करके राक्षसों को बुलाया और उनसे फिलितुस को एक ही जगह पर बाँधकर रखने का आदेश दिया, ताकि वह हिल न सके, यह कहते हुए:

'देखते हैं कि तुम्हारा जेम्स तुम्हें कैसे छुड़ाता है।'

हालाँकि, फिलिटिस ने प्रेरित को एक गुप्त संदेश भेजा, जिसमें उन्हें सूचित किया गया कि वह हर्मोगेनेस की जादू-टोने से राक्षसों द्वारा बंधा हुआ था। यह जानने पर, प्रेरित ने उसे अपना रूमाल भेजा, यह निर्देश देते हुए कि वह भेजा गया रूमाल ले और ये शब्द बोले: *'प्रभु बंदियों को मुक्त करते हैं, प्रभु अंधों की आँखें खोलते हैं, प्रभु झुके हुए लोगों को सीधा करते हैं'* (भजन संहिता 145:7-8)।

जैसे ही फिलिटिस ने ये शब्द बोले, वह तुरंत अपनी अदृश्य बेड़ियों से मुक्त हो गया, क्योंकि दुष्टात्माएँ, प्रेरित के रूमाल और बोले गए शब्दों की शक्ति से भयभीत होकर, फिलिटिस को छोड़कर उससे भाग गईं। फिर फिलिटिस, हर्मोजेनेस का मज़ाक उड़ाते हुए, संत जेम्स के पास गया और उनसे पवित्र विश्वास की शिक्षा पाकर बपतिस्मा ग्रहण किया।

तथापि, हरमोजेनेस क्रूर क्रोध और रोष से भरकर, अपने अधीन राक्षसों को आज्ञा देने लगा कि वे याकूब और फिलितुस को बेड़ियों में जकड़कर उसके पास ले आएं। लेकिन जब दुष्टात्माएँ उस निवास के पास पहुँचीं जहाँ संत जेम्स और फिलिटिस ठहरे हुए थे, तो तुरंत प्रभु का स्वर्गदूत, परमेश्वर की आज्ञा से, उन दुष्टात्माओं को पकड़ लिया और उन्हें अदृश्य बेड़ियों से बाँधकर उन्हें यातना देने लगा। इस बीच, दुष्टात्माएँ परमेश्वर की शक्ति से यातना पाते हुए ऊँची आवाज़ में चिल्लाईं:

'हे मसीह के प्रेरित याकूब, हम पर दया करो, क्योंकि हम हर्मोजेनेस की आज्ञा से तुम्हें और फिलिटिस को बाँधने आए थे, परन्तु अब हम स्वयं दृढ़ता से बँधे हुए हैं और भयंकर पीड़ा सह रहे हैं।'

संत जेम्स ने राक्षसों से कहा:

'जिसने तुम्हें बाँधा है, परमेश्वर का दूत तुम्हें तुम्हारे बंधनों से मुक्त करे, और तुम जाकर हरमोगेनेस को बिना किसी हानि पहुँचाए मेरे पास ले आओ।'

[3303] फरीसी एक धार्मिक संप्रदाय थे जो मसीह से दो या तीन शताब्दियाँ पहले फिलिस्तीन में उभरा था। इस संप्रदाय का उद्देश्य मूसा की व्यवस्था के सभी अनुष्ठानिक निर्देशों का सटीक पालन करना था—अक्सर कापटीपन और अति-संवेदनशीलता की हद तक।

[3304] जनता का शिक्षक, एक रब्बी।

तुरन्त ही राक्षस, अपने बंधनों से मुक्त होकर, हरमोजेनेस के पास गए और उसे पकड़कर, पलक झपकते ही उसे बँधा हुआ प्रेरित के सामने ले आए और प्रेरित से विनती करने लगे कि उन्हें हरमोजेनेस से अपनी की गई बेइंसाफी का बदला लेने की अनुमति दे दें।

तब प्रेरित ने दानवों से पूछा कि उन्होंने फिलिटिस को क्यों नहीं बाँधा, जबकि हर्मोजेनेस ने उन्हें ऐसा करने का आदेश दिया था। दानवों ने उत्तर दिया:

'हम तो आपके घर में एक मक्खी को भी छू नहीं सकते।'

तब प्रेरित ने फिलितुस से कहा:

'हमारे प्रभु ने हमें बुराई का बदला भलाई से चुकाने की आज्ञा दी है; अत; तुम्हें भी हरमोगेनेस को मुक्त करना चाहिए और उसे राक्षसों से छुड़ाना चाहिए।'

इसके बाद, प्रेरित ने हर्मोजेनेस से कहा, जो राक्षसों के बंधनों से मुक्त हो चुका था:

'हमारे प्रभु जबरदस्ती से सेवक नहीं चाहते, बल्कि स्वेच्छा से सेवा करने वाले सेवक चाहते हैं; अत; जहाँ चाहो वहाँ जाओ।'

लेकिन हरमोगेनेस ने कहा:

'जैसे ही मैं तुम्हारे घर से निकलूँगा, राक्षस मुझे तुरंत मार डालेंगे, क्योंकि मैं जानता हूँ कि उनका क्रोध कितना भयंकर है; मैं यह भी जानता हूँ कि जब तक तुम मेरी रक्षा नहीं करोगे, तब तक मैं उनसे छुटकारा नहीं पा सकता।'

तब प्रेरित ने उसके हाथों में वह लाठी दे दी जो वह अपनी यात्राओं में इस्तेमाल करते थे। हरमोजेनेस उस लाठी के साथ घर चला गया और रास्ते में राक्षसों से उसे कोई हानि नहीं हुई। इस प्रकार मसीह की शक्ति को जानने और राक्षसों की कमजोरी को देखने के बाद, हरमोजेनेस ने अपने जादू-टोने की सभी किताबें इकट्ठी कीं, उन्हें संत जेम्स के पास ले गया और उनके पैरों पर गिरकर पुकार उठा:

'सच्चे परमेश्वर के सच्चे सेवक, जो लोगों की आत्माओं को विनाश से बचाते हैं। मुझ पर भी दया करें, और अपने शत्रु को अपने शिष्यों में से एक के रूप में स्वीकार करें!'

याकूब द्वारा पवित्र विश्वास में शिक्षित होकर, हरमोजेनेस का बपतिस्मा हुआ; प्रेरित की आज्ञा से, उसने अपनी जादू-टोने की किताबें जला दीं और मसीह का एक सच्चा सेवक बन गया, इतना कि वह यीशु मसीह के नाम पर चमत्कार करने लगा।

[3305]यहूदियों ने, जो कुछ हुआ था वह सब देखकर, बहुत क्रोधित हुए और राजा हेरोदेस को ईसा मसीह की कलीसिया पर अत्याचार करने और याकूब को मार डालने के लिए मना लिया: *'हेरोदेस ने कलीसिया के कुछ लोगों पर हाथ उठाया कि उन्हें हानि पहुँचाए, और यूहन्ना के भाई याकूब को तलवार से मार डाला। यह देखकर कि यह यहूदियों को भाया, उसने तब पतरस को भी गिरफ्तार कर लिया– क्योंकि यह अखमीरा रोटी का पर्व था– और उसे हिरासत में लेकर जेल में डाल दिया'* (प्रेरितों के काम 12:1–4)।

फिलिस्तीन के केसरिया के बिशप यूसेबियुस[3306] , संत जेम्स के बारे में अपने वृत्तांत में लिखते हैं कि जब उन्हें हेरोद द्वारा मृत्युदंड सुनाया गया, तो जोशिया नाम का एक व्यक्ति, जो उन लोगों में से एक था जिन्होंने प्रेरित की हेरोद के पास शिकायत की थी, उसने संत याकूब की धैर्यशीलता और निडरता को देखकर, और उसकी निर्दोषता और पवित्रता के साथ-साथ उसके द्वारा बोले गए शब्दों (मसीहा - मसीह के आगमन के बारे में) की सच्चाई को समझकर, मसीह में विश्वास करना आरंभ कर दिया और मसीह का एक स्वीकारकर्ता बन गया। तुरंत, उसे भी, प्रेरित संत जेम्स के साथ, मृत्युदंड की सजा दी गई। जब वे साथ में फाँसी के स्थान की ओर जा रहे थे, तो उन्हें सड़क के किनारे एक लकवाग्रस्त आदमी पड़ा हुआ मिला, और पवित्र प्रेरित ने उसे चंगा कर दिया। जब उन्होंने सिर कलम करवाने के लिए झुकाया, तो जोशिया ने संत जेम्स से प्रार्थना की कि वह उसे अज्ञानता में किए गए पाप के लिए क्षमा कर दे - यानी राजा के पास

[3305] यह, बेशक, हेरोद अग्रिप्पा प्रथम को संदर्भित करता है, जो अरिस्टोबुलस के पुत्र और हेरोद महान के पोते थे, जिन्होंने 40 से 44 ईस्वी तक यहूदिया पर शासन किया।

[3306] पम्फुली के यूसेबियस – सबसे प्रसिद्ध चर्च इतिहासकार, जो 268 से 340 तक जीवित थे। उनकी *चर्च हिस्ट्री* 324 तक की अवधि को कवर करती है।

उसकी शिकायत करने के लिए उसे क्षमा कर दे। प्रेरित ने उन्हें गले लगाकर चूमते हुए कहा: 'तुम्हें शांति मिले' – और दोनों ने सिर कटवाने के लिए अपने सिर झुकाए और साथ में ही मर गए[3307] ।

उनके सिर कलम किए जाने के बाद, संत जेम्स प्रेरित के शिष्यों ने उनके शरीर को लिया और दैवीय कृपा से, उसे स्पेन ले गए[3308] , जहाँ आज भी उनके मकबरे से बीमारों को चंगा किया जाता है और मसीह परमेश्वर की महिमा के लिए चमत्कार किए जाते हैं, जो सभी प्राणियों द्वारा पिता और पवित्र आत्मा के साथ सदा के लिए महिमामय हैं। आमीन।

ट्रोपारियन, स्वर 3:

तुम्हें मसीह का प्रेरित और धर्मवज्ञानी, सर्व-स्तुत्य याकूब का प्रिय भाई चुना गया था; हम जो तुम्हारा स्तुति-गान करते हैं, वे अपने प्राणों के पापों की क्षमा और महान दया के लिए प्रार्थना करते हैं।

कॉन्टाकियन, स्वर 2:

आपको बुलाने वाली दिव्य आवाज़ सुनकर, आपने अपने पिता के प्रेम को अनदेखा किया और मसीह के पास शीघ्रता से पहुँचे, याकूब, अपने कुल के गौरवशाली सदस्य के साथ, जिनके साथ आपको प्रभु के दिव्य रूपांतरण को देखने का सम्मान प्राप्त हुआ।

संतों में हमारे पिता डोनाटस, बिशप की स्मृति।

30 अप्रैल को स्मरणोत्सव

संत डोनाटस धर्मपरायण सम्राट थियोडोसियस महान के शासनकाल में रहते थे[3309] और वे प्राचीन एपिरस में स्थित एvria शहर के बिशप थे[3310] । इस शहर के पास सोरिया नामक एक स्थान था, जहाँ एक झरना था; यदि कोई इस झरने का पानी पीता, तो वह तुरंत भयानक पीड़ा में मर जाता। यह जानकर, बिशप सेंट डोनाटस अपने पुरोहितों के साथ उस झरने पर गए।

जैसे ही वह झरने के पास पहुँचे, आकाश में गरज की एक तेज गड़गड़ाहट हुई, और झरने से एक विशाल और भयानक साँप निकला। साँप ईश्वर के उस पुरुष की ओर बढ़ा और अपनी पूँछ से उस गधे को मारने की कोशिश करने लगा जिस पर संत सवार थे। तब बिशप डोनाटस ने उसी चाबुक से आते हुए साँप की पीठ पर वार किया जिसका उपयोग वह अपने गधे को हाँकने के लिए कर रहे थे, और साँप तुरंत मर गया। बिशप के साथ आए पुरोहितों और लोगों ने, ऐसा चमत्कार देखकर, लकड़ी इकट्ठी की और एक बड़ी आग जलाकर उस सांप को उसमें जला दिया, ताकि उसका शव सड़कर अपने विष से हवा को विषाक्त न कर दे, खासकर चूंकि वह सांप बहुत बड़ा था; फिर भी कोई भी उस कुएँ का पानी पीने की हिम्मत नहीं कर सका। तब संत डोनाटस ने प्रार्थना करके, उस झरने को आशीर्वाद दिया और पहले स्वयं कुछ पानी निकाला और पिया, और फिर सभी को बिना किसी डर के इसे पीने का आदेश दिया। इसके बाद, सभी लोगों ने बिना किसी हानि के पानी पिया और ईश्वर की स्तुति करके अपने-अपने घर लौट गए।

[3307] संत जेम्स प्रेरित की मृत्यु लगभग 42 ईस्वी में हुई थी।

[3308] संत जेम्स द अपोस्टल के अवशेष वर्तमान में कंपोस्टेला में रखे गए हैं – जो स्पेनिश राज्य गैलिसिया की राजधानी है; उन्हें 9वीं शताब्दी की शुरुआत में वहाँ लाया गया था।

[3309] रोमन सम्राट थियोडोसियस प्रथम महान ने 379 से 395 तक शासन किया।

[3310] ग्रीक मूल रूप से द्वीपों के विपरीत, मुख्यभूमि (भूमि) को सामान्य रूप से संदर्भित करने के लिए 'एपिरस' शब्द का उपयोग करते थे; विशेष रूप से, पश्चिमी ग्रीक द्वीपों (आयोनियन और एड्रियाटिक सागरों में) के निवासियों ने इस नाम का उपयोग हेलास के विपरीत तट को, कोरिंथ जलडमरूमध्य के प्रवेश द्वार तक संदर्भित करने के लिए किया। बाद में, एपिरस की सीमाएँ कम कर दी गईं, और एपिरस नाम से उत्तरी भाग में इलिरिया, पूर्वी भाग में थेस्साली, और दक्षिणी भाग में एटोला और अकारनानिया से सटे क्षेत्र को दर्शाना शुरू हो गया।

एक अवसर पर, संत डोनाटस एक चट्टानी और सूखी जगह पर थे, और जब उन्होंने देखा कि उनकी आस-पास के लोग तीव्र गर्मी के कारण प्यास से बेहोश हो रहे थे, तो उन्होंने अपने हाथों से एक छोटा सा गड्ढा खोदा और ईश्वर से पानी भेजने की प्रार्थना की। तुरंत एक झरना बहने लगा, और आज भी वहाँ से प्रचुर मात्रा में पानी निकलता रहता है।

एक अन्य अवसर पर, संत डोनाटस ने अपनी प्रार्थना के माध्यम से स्वर्ग से पानी उतारा। सूखे और उसके बाद आई भीषण सूखापन की अवधि के दौरान, उन्होंने प्रभु से प्रार्थना की, और तुरंत ही भारी बारिश हुई, जिसने पृथ्वी को संतृप्त कर दिया, ताकि उस वर्ष संत की प्रार्थनाओं के कारण फलों की भरपूर फसल हुई।

ऐसा हुआ कि सम्राट थियोडोसियस की बेटी एक अशुद्ध आत्मा द्वारा पीड़ित होकर बहुत गंभीर रूप से बीमार पड़ गई। सम्राट और सम्राज्ञी अपनी बेटी की बीमारी से बहुत दुखी थे, क्योंकि वह उनकी एकमात्र बेटी थी। उस समय, उन्हें पता चला कि बिशप डोनाटस चमत्कार कर रहे थे। तुरंत, सम्राट ने एपिरिस को एक फरमान भेजा, जिसमें उस क्षेत्र के सभी बिशपों को अपनी कृपा प्राप्त करने के लिए उसके पास आने का आदेश दिया गया। जब एपिरिस के बिशप कॉन्स्टेंटिनोपल[3311] पहुँचे, तो सम्राट ने उनका सम्मान और दया से स्वागत किया और पूछा:

'तुम में से बिशप डोनाटस कौन हैं, जिन्होंने अपनी चाबुक से एक साँप को मारा, पत्थर की जमीन से पानी निकाला, और स्वर्ग से बारिश के लिए ईश्वर से प्रार्थना की?'

उन्होंने सम्राट को संत डोनाटस की ओर इशारा किया। सम्राट ने उन्हें चूमकर महारानी के पास ले जाया, और दोनों ने संत के चरणों में गिरकर उनसे मदद की विनती की, कहते हुए:

– हे परमेश्वर के मनुष्य! हम पर दया करो: हमारी एक बेटी है, और वह एक दानव से पीड़ित है, बहुत दुख सह रही है। हम उसके लिए बहुत दुखी हैं; हम उसे कई डॉक्टरों और पुरोहितों के पास ले गए, और उनमें से कोई भी उसकी मदद नहीं कर सका। इसलिए, आपके भीतर वास करने वाले ईश्वर की महान कृपा के बारे में सुनकर, हमने यह निवेदन करने का साहस किया है कि आप यहाँ आएँ, ताकि आप अपनी प्रार्थनाओं के द्वारा, जो ईश्वर के समक्ष शक्तिशाली हैं, हमारी बेटी से राक्षस को भगा सकें। यदि आप हमारी बेटी को चंगा करते हैं, तो आपको उसकी संपत्ति का आधा हिस्सा मिलेगा।

संत ने राजा और रानी के अनुरोध का निम्नलिखित उत्तर दिया:

'युवती कहाँ है? उसे मुझे दिखाओ।'

डोनाटा को उस युवती के सामने लाया गया। तुरंत ही वह दानव, ईश्वर के संत की उपस्थिति सहन न कर सका, चीखा और, उस युवती को ज़मीन पर फेंककर, उससे बाहर निकल आया; उस क्षण से ही, वह युवती स्वस्थ हो गई। राजा और रानी अपनी बेटी के ठीक होने पर अत्यंत प्रसन्न हुए और संत को महान उपहार अर्पित किए, लेकिन उन्होंने उन्हें दिए गए किसी भी उपहार को स्वीकार करने से इनकार कर दिया। सम्राटीय जोड़े के सद्गुण और धार्मिकता को देखकर, उन्होंने उनसे अपने धर्मप्रांत के भीतर, ओम्फालिया नामक एक गाँव के पास, एक भूखंड देने का आग्रह किया, ताकि वह वहाँ एक चर्च बना सकें। राजा ने तुरंत संत की प्रार्थना मान ली और एक शाही फरमान से उनके इस उपहार की पुष्टि की।

जब संत कॉन्स्टेंटिनोपल में थे, तो ऐसा हुआ कि वहाँ एक व्यक्ति की मृत्यु हो गई, जिसका एक साहूकार था, जिसे उसने अपना कर्ज नहीं चुकाया था। जब उसे दफनाने के लिए ले जाया जा रहा था, तो उसके लेनदार ने, मृतक के वादा-पत्र को पकड़े हुए, ताबूत पर कब्जा कर लिया और तब तक मृतक को दफनाने की अनुमति देने से इनकार कर दिया जब तक कि कर्ज—जो दो सौ सोने के सिक्कों का था—चुका नहीं दिया गया। संत डोनाटस, जो उस समय मृतक के घर के पास थे, उन्होंने इकट्ठी हुई भीड़ के शोर और चीख-पुकार को सुनकर, अपने साथ आए बिशपों से कहा:

'आओ हम वसूलीकर्ता के पास जाएँ और उससे विनती करें कि वह अपने मृतक ऋणी का शव दफ़नाने दे।'

लेकिन बिशप जाने से इनकार कर दिए।

तो डोनाटस अकेले चले गए। जब मृतक की विधवा ने संत को देखा, तो वह उनके पैरों पर गिर पड़ी और आँसू भरी आँखों से उनसे विनती करने लगी:

[3311] कॉन्स्टेंटिनोपल - बीजान्टिन साम्राज्य की राजधानी। कॉन्स्टेंटिनोपल की स्थापना 658 ईसा पूर्व में मेगारी लोगों द्वारा बोस्फोरस जलडमरूमध्य के यूरोपीय किनारे पर 'बाइज़ेन्टियम' नाम से की गई थी, जो काला सागर को मार्मरा सागर से जोड़ता है। समुद्र पर इसकी प्रभुत्वशाली स्थिति और अनुकूल ऐतिहासिक परिस्थितियों ने बाइजेंशियम को प्राचीन काल में वाणिज्यिक और सांस्कृतिक दोनों जीवन का एक उल्लेखनीय केंद्र बना दिया। चर्च के इतिहास में, कॉन्स्टेंटिनोपल को कई सार्वभौमिक परिषदों और कई स्थानीय परिषदों के आयोजन स्थल के रूप में जाना जाता है।

'हे ईश्वर के पुरुष, मुझ पर दया करो, क्योंकि मैं दोहरी पीड़ा में हूँ: मैंने अपने पति को खो दिया है और मैं उनके शव को दफना भी नहीं सकती, क्योंकि साहूकार मुझे ऐसा करने से रोक रहा है। हे पवित्र पुरुष, उसे मनाओ कि वह मुझे मृतक के शव को धरती में सुलाने दे।'

संत ने उस महिला से पूछा:

'क्या यह सचमुच पक्का है कि आपके पति ने इस आदमी को कोई पैसा उधार लिया था?'

उस महिला ने उत्तर दिया:

'हे स्वामी! कुछ दिन पहले, मेरे पति ने मुझसे कहा था कि उन्होंने अपना कर्ज चुका दिया है, लेकिन रसीद अभी भी साहूकार के पास है।'

तब मसीह के संत ने साहूकार से कहा:

'मेरे बच्चे, मुझे मृतक को उचित अंतिम संस्कार करने दो; तुम्हारा कर्ज समय आने पर चुका दिया जाएगा।'

लेकिन सूदखोर, जो एक क्रूर और अन्यायपूर्ण व्यक्ति था, न केवल संत की अवज्ञा करने लगा, बल्कि उनका अपमान भी करने लगा।

तब पवित्र बिशप उस ताबूत के पास गए जिस पर मृतक लेटा था, उन्होंने मृतक को अपने हाथ से छुआ, और ऊँचे स्वर में उससे पुकार कर कहा:

'सुनो, आदमी!'

तुरन्त वह मृतक जीवित हो उठा और अपनी आँखें खोलकर बोला:

'मैं यहाँ हूँ, महाधर्माध्यक्ष!'

संत ने उससे कहा:

'उठो और हमें बताओ कि तुम्हारे साहूकार के बारे में हमें क्या करना है, जो तुम्हें दफ़नाने नहीं दे रहा है, यह दावा करते हुए कि तुमने उस कर्ज़ को चुकाया नहीं है जिसके लिए उसने तुम्हारा बांड-पत्र रखा है।'

मरा हुआ आदमी उठकर बैठ गया, और यह अद्भुत दृश्य देखने के लिए उपस्थित सभी लोग भयभीत हो गए। अपने साहूकार की ओर धमकी भरी नज़र डालते हुए, मृतक ने उसे उसके धोखे के लिए फटकारना शुरू कर दिया और उसके झूठ का पर्दाफाश किया, यह बताते हुए कि उसने अपने ऊपर बकाया दो सौ ज़लॉटी का भुगतान कब और कहाँ किया था। सौदागर, जवाब में क्या कहे, यह समझ न पाकर, वहाँ काँपता हुआ खड़ा रहा और मानो गूंगा हो गया हो, चुप रहा। वह आदमी जो वापस जीवित हो उठा था, उसने सौदागर से अपनी रसीद माँगी। उसे पाकर, वह अपने बिस्तर पर बैठे-बैठे उसे फाड़ने लगा। फिर, संत की ओर देखते हुए, उसने उनसे कहा:

'हे धर्मात्मा, आपने इस पापी को उजागर करने के लिए मुझे जगाकर अच्छा किया; अब मुझे फिर से सोने का आदेश दीजिए।'

संत डोनाटस ने उससे कहा:

'शांति से जाओ, मेरे बच्चे, क्योंकि तुम्हें अपनी रसीद वापस मिल जाएगी।'

और उसी क्षण वह आदमी एक बार फिर मृत्यु की नींद में चला गया। जिन्होंने भी इस अद्भुत चमत्कार को देखा और दूसरों से इसके बारे में सुना, उन्होंने ईश्वर की महिमा की और ईश्वर के सेवक के पुण्य की शक्ति पर आश्चर्य व्यक्त किया।

संत डोनाटस के कॉन्स्टेंटिनोपल में रहने के दौरान, बारिश की कमी थी, और परिणामस्वरूप, एक बड़ी सूखा पड़ गई। राजा के अनुरोध पर, संत शहर के बाहर गए और एक लिटिनी[3312] का आयोजन किया, ईश्वर से सूखी भूमि के लिए आवश्यक बारिश भेजने की विनती करते हुए। डोनाटस की प्रार्थना के तुरंत बाद, इतनी भारी बारिश हुई कि सभी लोगों ने कहा:

'यह एक दूसरा प्रलय है।'

सम्राट थियोडोसियस को पवित्र बिशप डोनाटस के लिए डर था, कि कहीं वह इतनी तेज बारिश में खड़े रहने के कारण पूरी तरह से भीग न जाएँ, क्योंकि उन्होंने केवल एक ट्यूनिक ही पहनी हुई थी। जब संत डोनाटस प्रार्थना-यात्रा

[3312] लिटिया – एक सार्वजनिक प्रार्थना सभा, जो आमतौर पर चर्च के नार्थेक्स (प्रवेश-मंडप) में या उसके बाहर (चौराहों या मैदानों में) आयोजित की जाती है।

करके शाही महल लौटे, तो सभी ने देखा कि उनके कपड़े पूरी तरह से सूखे थे और उन पर नमी का भी कोई निशान नहीं था, क्योंकि उन पर बारिश की एक भी बूंद नहीं पड़ी थी।

इस चमत्कार को देखकर सभी बहुत चकित हुए। सम्राट, अपनी ओर से, इस ईश्वर के पवित्र पुरुष के महिमामय कार्यों को देखकर बहुत प्रसन्न हुए, और उन्होंने अपने शासनकाल के दौरान दुनिया में ऐसे प्रकाश के स्तंभ—इस अद्भुत चमत्कार करने वाले—को भेजने के लिए ईश्वर का धन्यवाद किया।

संत से कई बार बातचीत करने और उनका आशीर्वाद प्राप्त करने के बाद, राजा ने उन्हें उनके अनुयायियों के पास वापस भेज दिया। इस अवसर पर, थियोडोसियस ने संत डोनाटस को एक नया चर्च बनाने और उसे सजाने के लिए बहुत सारा पैसा दिया, जिसे संत उस उपर्युक्त स्थान पर बनाना चाहते थे जो उन्होंने राजा से मांगा था।

अपने धर्मप्रांत में लौटने पर, धन्य डोनाटस ने राजा की भेंट का उपयोग एक सुंदर चर्च बनाने के लिए किया, जहाँ उन्होंने अपनी कब्र के लिए एक स्थान तैयार किया। दीर्घायु प्राप्त कर, वे प्रभु के पास चले गए[3313] , पवित्र धर्मगुरुओं की सभा में उनके समक्ष खड़े होने और सदा के लिए पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा – एक ईश्वर, जिसकी महिमा सभी संतों द्वारा त्रिमूर्ति में सदा-सदा की जाती है – की महिमा करने के लिए। आमीन।

14 मई

1 मई (पुराने कैलेंडर के अनुसार)

इसी दिन, कीव के मेट्रोपॉलिटिन, पवित्र शहीद मकारियस की स्मृति मनाई जाती है, जिन्हें 1497 में मस्क्विक गवर्नरेट के स्ट्रिगोलोवे गाँव में तातारों द्वारा मार डाला गया था।

पवित्र नबी यिर्मयाह का जीवन और कष्ट

1 मई को स्मरणोत्सव

पवित्र भविष्यवक्ता यिर्मयाह[3314] का जन्म यरूशलेम के पास, बिन्यामीन कुल के क्षेत्र में स्थित याजकों के नगर अनातोथ[3315] में हुआ था। याजक हिल्कियाह के पुत्र, उन्हें शमूएल (1 शमूएल 2) की तरह, उनके जन्म से पहले ही भविष्यवाणी की सेवा के लिए चुना और नियुक्त किया गया था, जैसा कि प्रभु स्वयं ने कहा: *'मैंने तुम्हें गर्भ में रचने से पहले ही तुम्हें जान लिया था, और तुम्हारे जन्म से पहले ही मैं तुम्हें अलग कर चुका था; मैंने तुम्हें राष्ट्रों का भविष्यवक्ता नियुक्त किया था'* (यिर्म. 1:4–5)।

संत यिर्मयाह, जो जन्म से याजक थे, लेकिन दिव्य आह्वान से एक शिक्षक और नबी थे, संत इग्नेशियस द गॉड-बेयरर की गवाही के अनुसार, अपने पूरे जीवन में एक कुंवारे रहे (यर. 16:2)। उन्होंने अपनी भविष्यवाणी की सेवा 630 ईसा पूर्व में शुरू की - जब वे अभी भी एक छोटे लड़के थे, जैसा कि उनकी पुस्तक के पहले अध्याय से स्पष्ट है, जहाँ यह वर्णित है कि, प्रभु के भविष्यवाणी करने के आह्वान पर, उन्होंने अपनी हैरानी इस प्रकार व्यक्त की:

'हे प्रभु परमेश्वर! मैं बोल नहीं सकता, क्योंकि मैं अभी जवान—एक लड़का ही हूँ।'

परन्तु प्रभु ने उसे प्रोत्साहित किया और एक परिपक्व और सिद्ध मनुष्य की बुद्धि प्रदान करके कहा:

[3313] संत डोनाटस की मृत्यु लगभग 387 ईस्वी में हुई।

[3314] यिर्मयाह, हिब्रू में जिसका अर्थ है 'ईश्वर द्वारा उत्थान किया गया'।

[3315] जब प्रतिज्ञात भूमि का विभाजन किया गया, तो लेवी गोत्र को कोई विशिष्ट आवंटन नहीं मिला; इसे अन्य गोत्रों के बीच बिखेर दिया गया और बसाया गया, जहाँ लेवियों को लॉटरी द्वारा नगर और उनके उपनगर आवंटित किए गए। अनाफ नगर बिन्यामीन गोत्र के क्षेत्र के भीतर स्थित था और यह हारून के वंशजों का था (यहोशू 21:18; 1 इति. 6:60)।

'यह न कह, "मैं जवान हूँ", क्योंकि जहाँ-जहाँ मैं तुझे भेजूँ, वहाँ जाना और जो कुछ मैं तुझे आज्ञा दूँ, वह कहना। उनसे डरना नहीं, क्योंकि मैं तुझे बचाने के लिए तेरे संग रहूँगा।'

यह कहने के बाद, प्रभु ने अपना हाथ बढ़ाया और यिर्मियाह के होठों को छूते हुए उससे कहा:

'देख, मैं ने अपने वचन तेरे मुँह में डाल दिए हैं। देख, मैं ने तुझे आज ही दिन जातियों और राज्यों पर नियुक्त किया है, कि तू उखाड़ फेंके और गिरा दे, और नाश कर दे और उलट दे (लोगों के पापी, अधर्मी जीवन को), और जो उखाड़ा और गिराया गया है, उसके स्थान पर फिर से बनाए और लगाए' [लोगों के बीच अच्छे आचरण और ईश्वरीय जीवन] (यिर्म. 1:7–10)।

प्रभु का यह वचन, जो यिर्मियाह को भविष्यद्वाणी के कार्य के लिए बुलाता है, यहूदा के राजा योशियाह के राज्य के तेरहवें वर्ष में आया[3316] ; उस समय पवित्र भविष्यवक्ता अपनी पंद्रहवीं वर्ष की आयु में थे: इतनी कम उम्र में ही वे परमेश्वर की सक्रिय कृपा के एक साधन बन गए!

उन दिनों, यद्यपि यहूदी लोग बाहरी रूप से अपने पूर्वजों के धर्म के प्रति विफादार बने रहे और उसी सच्चे ईश्वर की पूजा करते थे जिसने एक बार उन्हें मिस्र से मुक्त किया था, आंतरिक रूप से वे उसकी सच्ची उपासना से बहुत दूर थे। पड़ोसी जनजातियों के साथ घनिष्ठ संबंध स्थापित करने के बाद यहूदी नैतिक रूप से भ्रष्ट हो गए थे; विदेशी रीति-रिवाजों को अपनाकर उनमें से अधिकांश—विशेषकर अमीर और शक्तिशाली—मूर्तिपूजक घृणित कृत्यों में लिप्त हो गए थे। न केवल यरूशलेम के आसपास पहाड़ियों और घाटियों में, बल्कि स्वयं यरूशलेम में भी, सुलैमान द्वारा निर्मित प्रभु के मन्दिर के पास, मूर्तियाँ स्थापित की गईं, जिन पर ठीक वैसे ही बलिदान चढ़ाए जाते थे जैसे सच्चे परमेश्वर पर चढ़ाए जाते थे। यह नैतिक पतन, जो लोगों के जीवन में गहराई से व्याप्त हो गया था, ने परमेश्वर के धर्मी क्रोध को भड़काया और यहूदा देश पर विनाश और तबाही लाई, जैसा कि पवित्र यिर्मियाह को दो दर्शनों में बताया गया था: हेज़ल की छड़ी का दर्शन और उबलते हुए बर्तन का दर्शन। और यहोवा का वचन यिर्मियाह के पास आया:

'हे यिर्मियाह, तू क्या देखता है?'

उसने उत्तर दिया:

'मैं बादाम के पेड़ की एक टहनी देखता हूँ।'

प्रभु ने उससे कहा:

'तू ठीक देखता है; क्योंकि मैं अपन[3317] , अपनी बात की रक्षा कर रहा हूँ, ताकि वह शीघ्र ही पूरी हो।'

और यहोवा का वचन दूसरी बार उस पर आया:

'तुम क्या देखते हो?'

'मैं देखता हूँ,' यिर्मियाह ने उत्तर दिया, 'एक उबलता हुआ बर्तन जिसे हवा हिला रही है, और ऐसा लगता है कि वह उत्तर से आ रहा है।'

और यहोवा ने उससे कहा:

'महाविपत्ति[3318] , इस देश के सभी निवासियों पर उत्तर से टूटेगी। परन्तु तू कमर कसकर खड़ा हो, और जो कुछ मैं तुझे आज्ञा दूँ, वह सब उनसे कह; उनके सामने न डर, कहीं ऐसा न हो कि मैं तुझे उनके सामने ही मार डालूँ।' 'देख, मैं ने तुझे इस सारे देश में एक दृढ़ नगर, एक लोहे का खंभा और एक पीतल की दीवार ठहरा दिया है, यहूदा के राजाओं के विरुद्ध, उसके हाकिमों के विरुद्ध, उसके याजकों के विरुद्ध और इस देश के लोगों के विरुद्ध। वे तुझ से लड़ेंगे, परन्तु तुझ पर जय नहीं पाएंगे, क्योंकि मैं तुझे बचाने के लिए तेरे संग हूं' (यर. 1:17–19)।

परमेश्वर की आज्ञा का पालन करते हुए, पवित्र यिर्मियाह ने यहूदियों को सच्चे परमेश्वर से उनके धर्मत्याग और मूर्तिपूजक अंधविश्वास की ओर मुड़ने के लिए फटकारना शुरू कर दिया, उन्हें उस सर्वशक्तिमान के क्रोध के बारे में चेतावनी दी जो उन पर आने वाला था और प्रभु के क्रोध के भयानक परिणामों से बचने के लिए उन्हें पश्चाताप करने

[3316] योशियाह ने 642 से 611 ईसा पूर्व तक शासन किया।

[3317] बादाम का पेड़ अन्य पेड़ों से पहले अपनी शीतकालीन नींद से जागता है – यह जनवरी में खिलता है और मार्च में ही फल देता है; इस कारण से, यहूदियों ने इसे 'सतर्क' कहा।

[3318] पूर्व के लोगों के लिए, उबलता हुआ बर्तन उग्र युद्ध का प्रतीक था। यिर्मियाह ने यहूदा को खल्दीयियों द्वारा आक्रमण की चेतावनी दी; बबेल यहूदा के पूर्व में स्थित था, लेकिन खल्दीयियों ने अरब मरुभूमि को पार करने के लिए सीरिया से होते हुए, विशेष रूप से उत्तर की ओर से, एक चक्कर लगाकर उस पर आक्रमण किया।

के लिए प्रोत्साहित किया। जैसा कि पहले ही उल्लेख किया जा चुका है, यिर्मयाह की भविष्यद्वाणी की सेवकाई राजा योशियाह के दिनों से लेकर उनके पुत्र यहोआहाज़ और यहोयाकीम—जो यहोआहाज़ का भाई था—के दिनों तक, और यहोयाकीम के पुत्र यहोयाकीन के दिनों से होकर, और योशियाह के पुत्र सिदकियाह के दिनों तक जारी रही, जो यहोआहाज़ और यहोयाकीम का भाई था[3319] ।

ईश्वर के इस नबी ने अपने ही लोगों के हाथों बहुत कष्ट सहे, जिन्होंने ईश्वर में अपना सच्चा विश्वास और ईश्वर का भय खो दिया था! – उन्होंने सेनाओं के प्रभु की भयानक सज़ाओं की घोषणा बिना किसी हिचकिचाहट या शर्म के की; उन्होंने मंदिर के आँगन में, नगर के द्वारों पर, शाही महल में, जेल में और यरूशलेम के आसपास निडरता और बहादुरी से सत्य का वचन प्रचार किया। एक से अधिक अवसरों पर उन्हें राजाओं और कुलीनों के सामने लाया गया, और उन्होंने उन सभी से बिना किसी कपट या डरपोक संकोच के स्पष्ट रूप से बात की, और खुले तौर पर घोषणा की कि जब तक वे पश्चाताप नहीं करते और झूठ से मुंह नहीं मोड़ते, तब तक उन पर भयानक विपत्तियाँ आएँगी। क्योंकि प्रभु कहते हैं:

'मैं उत्तरी राज्यों के सभी कुल-कुलों को बुलाऊँगा, और वे आकर यरूशलेम के फाटकों के मुँह पर, और उसकी दीवारों के चारों ओर, और यहूदा के सभी नगरों में अपने सिंहासन लगाएँगे। और वे इस पापी प्रजा पर मेरे न्याय के अधिकारी होंगे, और अधर्म करने वालों के विधकर्ता होंगे। और मैं यह सब उन पर लाऊँगा क्योंकि उन्होंने मुझे त्याग दिया है और परदेश के देवताओं को धूप जलाई है और अपने ही हाथों की कारीगरी की पूजा की है (यर. 1:15–16)। हे याकूब के घराने, और हे इस्राएल के घराने के सब सेवको, यहोवा का वचन सुनो! यहोवा यों कहता है: 'तुम्हारे पूर्वजों ने मुझ में ऐसा कौन सा अन्याय पाया, कि वे मुझ से फिर गए और भटक गए, और यह न कहा: "वह यहोवा कहाँ है, जिस ने हमें मिस्र के देश से निकाला, जो हमें निर्जन जंगल से, सूखी भूमि से, मृत्यु की छाया वाली भूमि से ले गया, जहाँ से कोई नहीं गुज़रा और जहाँ कोई मनुष्य न रहता था?"' मैं तुम्हें एक फलदार देश में ले आया, ताकि तुम उसका फल और उसकी अच्छी-भली चीज़ें खाओ; पर तुम ने आकर मेरे देश को अपवित्र किया, और मेरी विरासत को घृणास्पद बना दिया। मैं तुम से न्याय करूंगा, और तुम्हारे वंश के वंशजों से भी न्याय करूंगा। क्योंकि हित्तियों के द्वीपों तक जाओ और देखो; केदार को भेजो और अच्छी-भाँति जाँच करो; और विचार करो: क्या वहाँ ऐसा कुछ भी देखा गया है? क्या किसी राष्ट्र ने कभी अपने देवताओं को—यद्यपि वे देवता नहीं हैं—बदला है? फिर भी मेरे लोगों ने अपनी महिमा को उस वस्तु के लिए बदल दिया है जो लाभ नहीं पहुँचाती। हे आकाशों, इस पर चकित हो जाओ, और हे पृथ्वी की बुनियादों, काँपो और स्तब्ध रह जाओ: मेरे लोगों ने मेरे भय को त्यागकर दो बुराइयाँ की हैं; उन्होंने मुझ, अपने प्रभु परमेश्वर—जीवित जल के सोते—को त्याग दिया है और अपने लिए व्यर्थ की मूर्तियाँ तराशी हैं जो पानी नहीं रख सकतीं। मैंने अपने लोगों को यॉर्डन की घाटियों पर एक उत्तम दाख की बारी की तरह लगाया—सबसे शुद्ध बीज—फिर भी यह एक विदेशी बेल की जंगली अंकुर में बदल गया है। इस्राएल, मेरा सेवक और मेरा घराना, एक चंचल मादा ऊँट की तरह, एक जंगली गधे की तरह जो मरुभूमि में भटकता है, और अपनी आत्मा की तपिश में हाँफता हुआ, ने कहा: 'आशा मत करो, नहीं! क्योंकि मैं परदेशियों से प्रेम करता हूँ और मैं उनके मार्गों में चलूँगा।' इज़राइल के घराने ने स्वयं पर लज्जा लाई है: इसके लोग, इसके राजा, इसके राजकुमार, इसके याजक और इसके नबी मुझसे मुँह मोड़ गए हैं बजाय मेरे सामने आने के, और कहने लगे, 'हम अपने ही मालिक हैं; हम अब तुम्हारे पास नहीं आएँगे'; परन्तु देखो, अपने क्लेश के समय वे कहेंगे, 'उठो और हमें बचाओ!' – हे मेरी प्रजा! प्रभु का वचन सुनो: क्या मैं एक मरुभूमि था, या इस्राएल का देश? – क्या कोई कुंवारी अपने आभूषणों को भूल जाती है, या कोई वधू अपना विवाह का वस्त्र? परन्तु मेरे लोगों ने मुझे भुला दिया है; उनके भूल जाने के दिन अनगिनत हैं! और तुम्हारी विश्वासघात के कारण, तुम चतुराई से अपने मार्गों को निर्देशित करते हो, अपनी लज्जा को धार्मिकता के आवरण से ढककर अनुग्रह प्राप्त करते हो! और इसी उद्देश्य के लिए तुम अपने मार्गों को अपराध के अनुकूल भी बनाते हो, ताकि तुम्हारे वस्त्रों के किनारों पर गरीबों और निर्दोषों का लहू लगा हो... (यर. 2:4–34)। और इसलिए, क्योंकि वे अपने दुष्ट हृदयों की हठीलापन से काम करते हैं, मैं उन पर उत्तर से विपत्ति और बड़ी तबाही लाऊँगा। और उस दिन, प्रभु का कहना है, राजा का हृदय और रईसों के हृदय हार मान जाएँगे; याजक भयभीत हो जाएँगे, और भविष्यद्वक्ता स्तब्ध रह जाएँगे! (यर. 43:17, 4:6–9)। जैसे वसंत में पानी फूटता है, वैसे ही यरूशलेम में बुराई फूटती है: उसमें हिंसा और लूटपाट की आवाज़ें सुनाई देती हैं; मेरी उपस्थिति में हमेशा शिकायतें और घाव होते हैं। 'हे यरूशलेम, होश में आ, कहीं ऐसा न हो कि मैं तुझ से अपना मन हटा लूँ, और तुझे उजाड़ देश, निर्जन भूमि बिना दूँ' (यिर्म. 6:7-8)।

[3319] उनका शासन 627 से 585 ईसा पूर्व तक, कुल 42 वर्ष तक चला।

इस प्रकार और इसी तरह के भावुक और प्रचंड शब्दों के साथ, पवित्र यिर्मियाह ने बार-बार अपने समकालीनों से बात की; ये उनके भविष्यवाणी की पुस्तक में विस्तार से दिए गए हैं, जैसे चट्टानों को चूर करने वाला हथौड़ा। और उन्होंने जो कुछ भी भविष्यवाणी की थी, वह सब पूरा हुआ।

यरूशलेम के लिए राजनीतिक संकट और विपत्तियाँ राजा योशियाह के अधीन इस प्रकार शुरू हुईं: उनके राज्य के एकतीसवें वर्ष में (2 राजा 22:1; 2 इतिहास 34:1), मिस्र के फिरौन नकोह ने असूर के राजा के विरुद्ध फरात नदी तक एक सैन्य अभियान शुरू किया। और चूँकि उसका मार्ग यहूदा के प्रदेश से होकर जाता था, यिर्मियाह ने मिस्र के आक्रमण से अपने राज्य की रक्षा के लिए अपनी सेना इकट्ठी की और उनका विरोध करने का निश्चय किया। फिरौन ने उसके पास दूत भेजे, यह कहते हुए: 'हे यहूदा के राजा, मेरा तुझसे क्या काम है? मैं अब तेरे विरुद्ध नहीं, बल्कि उस स्थान पर जा रहा हूँ जहाँ मैं युद्ध कर रहा हूँ। और परमेश्वर ने मुझे जल्दी करने की आज्ञा दी है; परमेश्वर का विरोध न करो, कहीं ऐसा न हो कि वह तुम्हें नाश कर दे।'

लेकिन योशियाह ने नेको की चेतावनी पर ध्यान नहीं दिया और अपनी सेना के साथ मेगिद्दो के मैदान के लिए रवाना हो गए, जो भूमध्यसागरीय तट से यॉर्डन तक के मार्ग पर स्थित था, जहाँ से नेको दमिश्क के रास्ते सबसे छोटे मार्ग से फरात नदी के किनारों तक पहुँचने का इरादा रखता था।

एक लड़ाई छिड़ गई; यहूदी सेना, दुश्मन की संख्यात्मक श्रेष्ठता से अभिभूत होकर, पूरी तरह पराजित हो गई; योशियाह स्वयं घातक रूप से घायल हो गए। उनके अंगरक्षकों ने जल्दबाजी में अपने प्रिय मरणासन्न राजा को उठाया और उसे यरूशलेम ले गए, जहाँ उन्होंने अपनी अंतिम सांस ली। योशियाह को उनके पूर्वजों की कब्र में دفनाया गया और यरूशलेम तथा पूरे यहूदा में लोगों ने उनके लिए बड़े शोक के साथ विलाप किया, क्योंकि वे अपनी भलाई और धर्मपरायणता के मामले में सबसे अच्छे और सबसे योग्य राजा थे (2 इतिहास 35:20-24; जकर्याह 12:11)। यिर्मियाह ने भी एक शोक-गीत में राजा योशियाह के लिए विलाप किया (2 इतिहास 35:25)।

[3320]तब फिरौन नको ने अस्सyria के विरुद्ध अपनी सैन्य अभियान जारी रखी, जबकि यरूशलेम में योशियाह के दूसरे पुत्र, यहोआहाज़[3321] को राजा अभिषिक्त किया गया; हालाँकि, नको के अस्सyria के विरुद्ध अभियान से लौटने से पहले ही वह केवल तीन महीने तक शासन कर पाया। मिस्र का राजा, जिसे मेगिद्दो की विजय के बाद यहूदा के देश पर सर्वोच्चता प्राप्त हो गई थी, और जिसने उस समय अपने मुख्य और शक्तिशाली प्रतिद्वंद्वी - असीरियो-बابل - पर अपनी निगाहें टिका रखी थीं, और यहूदा के कमजोर राज्य की ओर कोई ध्यान नहीं दिया, अपने वापसी के सफर में यरूशलेम और पूरे यहूदा पर कब्जा कर लिया और उन्हें अपने शासन के अधीन कर लिया; जब नव-निर्वाचित राजा यहोआहाज़ ने अपने शाही दर्जे की पुष्टि की मांग करने के लिए, हमाथ की भूमि में रिब्ला में उनके सैन्य शिविर में आकर उनसे मुलाकात की, उसने उसे पदच्युत कर दिया और उसे बेड़ियों में जकड़कर मिस्र भेज दिया, तथा उसके बड़े भाई एल्याकीम को यहूदा का राजा नियुक्त किया, जिसका नाम उसने यहोयाकीम रख दिया। इसी समय, नेको ने यहूदा पर एक सौ प्रतिभा चाँदी और एक प्रतिभा सोने का कर लगाया[3322] , जो इतनी छोटी राज्य के लिए एक असहनीय भारी बोझ था, और यह और भी अधिक था क्योंकि इसे निर्दयी कठोरता से वसूला गया था (2 राजा 23:35)।

इस प्रकार अब्राहम के वंशज, जो एक स्वतंत्र लोग थे और कभी एक गौरवशाली तथा शक्तिशाली साम्राज्य थे, ने अपनी पहचान खो दी और स्वयं को दासता में पाया। और यह यहूदियों के अव्यवस्था के एक अपरिहार्य परिणाम था, जिसके द्वारा उन्होंने भविष्यवक्ताओं के उपदेशों के जवाब में सच्ची पश्चाताप करने में विफल रहने और परमेश्वर के कानून के अनुसार अपने नैतिक जीवन को व्यवस्थित करने में विफल रहने से सर्वोच्च परमेश्वर के क्रोध को भड़काया!

यहूदियों के राजा यहोयाकीम के राज्य के आरंभ में, यहोवा का वचन पवित्र यिर्मियाह के पास आया: 'यहोवा के भवन के आँगन में खड़ा हो और यहोवा के भवन में आराधना करने आनेवाले सब यहूदियों से वे सब वचन कह जो मैं तुझे आज्ञा देता हूँ—एक भी वचन न छोड़ना। 'यहोवा यों कहता है: यदि तुम मेरी आज्ञा का पालन नहीं करते, जो मैं ने तुम्हें दी है, और मेरे सेवकों भविष्यद्वक्ताओं के वचन नहीं मानते, जिन्हें मैं भोर-भोर उठाकर तुम्हारे पास भेजता रहा—और जिन्हें तुमने तुच्छ जाना—तो इस घर पर, जिस पर मेरा नाम रखा गया है और जिस पर तुम अपनी आशा रखते हो (तुलना

[3320] एमाउ एंटी-लेबनान पर्वतमालाओं के तल पर स्थित था।

[3321] यहोआहाज़ योसियाह और उनकी प्रिय पत्नी हमुताल का दूसरा पुत्र था, और उसका नाम शल्लूम रखा गया था (2 राजा 23:31; तुलना करें 22:11)।

[3322] सोने का एक टैलेंट 125,000 रूबल के बराबर था। कुल श्रद्धांजलि 300,000 रूबल थी।

करें यरि्म. 7:14), मैं वही करूँगा जो मैंने शलिो के साथ कयिा था[3323] , और मैं इस नगर को पृथ्वी के सभी राष्ट्रों के लिए एक श्राप बना दूँगा' (यरि्म. 26:1–6)।

परमेश्वर की ओर से बोलने वाले भवषि्यवक्ता से ऐसी भयानक भवषि्यवाणयिाँ सुनकर, सार्वजनकि व्यवस्था और राष्ट्रीय सुरक्षा के तथाकथति रक्षकों—क्रोध से भरे याजकों और झूठे भवषि्यवक्ताओं ने—यरि्मयाह को पकड़ लयिा और उस पर मुकदमा चलाने की माँग की; उन्होंने माँग की कि राजकुमार और लोग दोनों उस पर मृत्युदंड की सज़ा सुनाएँ। इस प्रकार यरि्मयाह के वरिुद्ध भड़काए गए लोगों की भीड़ यहोवा के भवन में इकट्ठी हो गई; यहूदा के राजकुमार और राजसी परविार के कुछ सदस्य भी वहाँ आए और यहोवा के भवन के द्वार के पास प्रवेश द्वार पर बैठ गए। इस प्रकार भवषि्यवक्ता के वरिुद्ध एक औपचारकि मुकदमा बुलाया गया। दुष्ट याजकों और झूठे नबयिों ने लोगों और यहूदी राजकुमारों की सभा को संबोधति करते हुए कहा:

'इस मनुष्य को मार डाला जाना चाहिए, क्योंकि वह इस नगर के वरिुद्ध भवषि्यवाणी करता है, जैसा कि तुमने अपने कानों से सुना है।'

तथापि यरि्मयाह ने अपनी रक्षा में कहा:

'प्रभु ने मुझे इस घर और इस नगर के वरिुद्ध, जो कुछ तुमने सुना है, वह सब भवषि्यद्वाणी करने के लिए भेजा है। इसलयि अपने मार्गों और अपने कामों को सुधारो, और अपने प्रभु परमेश्वर की आज्ञा मानो, और प्रभु उस वपित्ति को, जो उसने तुम पर घोषति की है, टाल देगा। जहाँ तक मेरी बात है, मैं तुम्हारे हाथों में हूँ; मेरे साथ जो तुम्हें ठीक लगे, करो, और जो तुम्हारी दृष्टि में भला और सीधा है, वही करो। परन्तु यह नश्चिय जान लो कि यदि तुम मुझे मार डालोगे, तो तुम नरि्दोष रक्त अपने ऊपर, इस नगर और इसके नविासयिों पर लाओगे; क्योंकि सचिमुच यहोवा ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है कि मैं ये सब बातें तुम्हारे कानों में कहूँ।

तब यहूदी शासकों और सभा के अध्यक्षों ने उन्मादी याजकों और झूठे नबयिों से कहा:

'इस मनुष्य को मार डाला नहीं जा सकता, क्योंकि उसने हमारे परमेश्वर यहोवा के नाम में हम से बात की है।'

देश के कुछ बुज़ुर्ग भी यरि्मयाह के बचाव में आए और लोगों से ये बातें कहीं:

'याद करो, मोराशेथ का मकियाह यहूदा के राजा हेzekiah के दनिों में भवषि्यद्वाणी करता था, और उसने यहूदा के सभी लोगों से कहा था: "सेनाओं का यहोवा इस प्रकार कहता है: सयि्योन खेत की तरह जोता जाएगा, और यरूशलेम खंडहरों का ढेर बन जाएगा, और मंदरि का पहाड़ जंगली पहाड़ी बन जाएगा।"' क्या राजा हजिकयि्याह और यहूदा के लोगों ने उसे इसी कारण मार डाला था? क्या उन्होंने यहोवा से भय नहीं माना और उससे वनिती नहीं की? और यहोवा ने वह वपित्ति टाल दी जो उसने उन पर घोषति की थी; परन्तु हम—हम अपनी आत्मा पर बड़ी बुराई लाने के लिए उत्सुक हैं' (यर. 26:11–19)। इसलयि, हम पश्चाताप करें, बुराई से मुँह फेर लें, और एक नरि्दोष मनुष्य की मृत्यु न चाहें। क्या करीया-फयिारमि के शेमायाह के पुत्र उरयि्याह के हाल ही में बहाए गए रक्त से कोई लाभ हुआ, जसिने यरि्मयाह की ही भाँति बलि्कुल उन्हीं शब्दों में इस नगर और इस देश के वरिुद्ध यहोवा के नाम से भवषि्यद्वाणी की थी? – राजा और उसके कुलीनों ने इस उरयि्याह के वचन सुनकर उससे घृणा की और उसे मार डालना चाहा; परन्तु वह, जो मृत्युदण्ड का भागी हुआ था, डर के मारे मस्रि भाग गया; राजा यहोयाकीम ने अपने आदमयिों को मस्रि भेजा, और वे उसे वहाँ से वापस ले आए: उरयि्याह को तलवार से मार डाला गया; लेकनि उसका क्या परणिाम हुआ? – राजा और यहूदी राजकुमारों के वरिुद्ध जन आक्रोश: यदि तुम यरि्मयाह को भी मार डालोगे तो नश्चिति रूप से यही होगा।

इसके बाद, लोगों की सभा में एक वभिाजन हो गया: कुछ लोग पवत्रि नबी को मौत की सजा देने पर अड़े थे, जबकि अन्य उसकी बेगुनाही की रक्षा कर रहे थे। और यरि्मयाह के दुश्मन नश्चिति रूप से उसके रक्षकों पर हावी हो गए होते, यदि राजसी दरबार के एक प्रभावशाली कुलीनों में से एक, शापान के पुत्र अहीकाम, ने उसे अपनी सुरक्षा में न लयिा होता; उसने यरि्मयाह को उन दुर्भावनापूर्ण लोगों के हाथों से बचाया जो उसे मारने के लिए तैयार थे (यर. 26:20-24)।

इस बीच, मूर्तपिूजा—जो कई वर्षों से लोगों की अंतरात्मा को वषिाक्त कर रही थी और चरम नैतकि भ्रष्टाचार को जन्म दे रही थी—यहूदा में और भी प्रबल होती जा रही थी। यहूदयिों में कुछ ऐसे भी थे जनि्होंने, अपने रास्तों को सुधारने और परमेश्वर की व्यवस्था का पालन करने के लिए भवषि्यवक्ता के आह्वान के जवाब में, उपहास करते हुए कहा:

[3323] यह इस तथ्य को संदर्भति करता है कि जब, महापुजारी एली के अधीन, यहूदयिों को फलिश्तियिों के हाथों एक भयानक हार का सामना करना पड़ा और वाचा का सन्दूक पकड़ लयिा गया, तो इस्राएल से महमिा चली गई। 1 शमूएल 4:10–22।

'आशा मत करो; हम अपने ही वचिारों के अनुसार जएिंगे और हम में से प्रत्येक अपने दुष्ट हृदय की इच्छाओं के अनुसार काम करेगा' (यर. 18:12), 'हम वह सब कुछ करेंगे जो हमारे मुँह से नकिला है; हम स्वर्ग की देवी को धूप जलाएंगे और उसके लएि पेय-बलि चढ़ाएंगे, ठीक वैसे ही जैसे हम और हमारे पूर्वजों, हमारे राजाओं और हमारे राजकुमारों ने यहूदा के नगरों और यरूशलेम की सड़कों पर कयिा था, क्योंकि इससे हमें समृद्धि और खुशी मलिी' (यर. 44:17)।

सत्य उनके बीच से लुप्त हो गया है; यह उनके होठों से छीन लयिा गया है; सबसे छोटे से लेकर सबसे बड़े तक, उनमें से हर एक लालच में डूबा हुआ है; और [झूठे] नबी से लेकर याजक तक—सब कपट से काम करते हैं और घृणति कर्म करते हुए भी उन्हें बलिकुल भी शर्म या संकोच नहीं होता (यर. 6:13-15)। यहूदा के राजा योयाकीम ने भी, दुष्टता की आम धारा से बहकर, प्रभु की दृष्टि में बुराई की (2 राजा 23:37, 2 इतहिास 36:5)।

और इस प्रकार पवत्रि यर्मियाह ने फरि से प्रभु से आज्ञा पाई:

'जाकर यहूदा के राजा के महल में प्रवेश कर, और वहाँ यह वचन प्रचार कर, कहकर: "यहूदा के राजा, जो दाऊद के सहिासन पर बैठा है—तू, तेरे दास, और तेरे लोग जो इन फाटकों से प्रवेश करते हैं, यहोवा का वचन सुनो। यहोवा यों कहता है: 'न्याय और नष्पिक्षता का अभ्यास करो, और अत्याचारी के हाथ से उत्पीड़ति को छुड़ाओ; परदेशी, वधिवा या अनाथ पर अत्याचार न करो, न उनका शोषण करो; इस स्थान पर नर्दिोष रक्त न बहाओ।' क्योंकि यदि तुम ऐसा करोगे, तो दाऊद के वंश से सहिासन पर बैठे राजा—जो रथों और घोड़ों पर सवार होकर आते हैं—अपने सेवकों और अपने लोगों सहति इस भवन के द्वारों से प्रवेश करेंगे। परन्तु यदि तुम इन वचनों पर ध्यान न दोगे, तो मैं स्वयं शपथ खाता हूँ (प्रभु का कहना है) कि यह भवन उजाड़ दयिा जाएगा, ये नगर सुनसान हो जाएँगे, और यहूदा का सारा देश एक उजाड़ स्थान बन जाएगा; क्योंकि मैं उनके हथयिारों सहति वनिाशक तैयार करूँगा, जो अवश्विासयिों को वैसे ही मार डालेंगे जैसे कोई पेड़ काटता है। और बहुत से राष्ट्र इस उजाड़ नगर से होकर जाएँगे और एक-दूसरे से कहेंगे, 'प्रभु ने इस महान नगर के साथ ऐसा क्यों कयिा?' और वे उत्तर देंगे, 'क्योंकि उन्होंने अपने परमेश्वर यहोवा की वाचा को त्याग दयिा और दूसरे देवताओं की उपासना की और उनकी सेवा की।'

और यहूदी राजा यहोयाकीम के वषिय में, पवत्रि भवष्यिवक्ता ने यहोवा के नाम से कहा, कि चूँकि उसकी आँखें और उसका हृदय स्वार्थ और नर्दिोषों के लहू बहाने, अत्याचार और हसिा पर टकिा था, इसलएि उसकी मृत्यु के बाद इस प्रकार के शोक के साथ शोक नहीं मनाया जाएगा: 'हाय, मेरे स्वामी!' और 'हाय, उनकी महामहमि!' – उसे एक गधे की तरह दफनाया जाएगा: वे उसे बाहर घसीटेंगे और यरूशलेम के फाटकों से बहुत दूर फेंक देंगे (यर्मि. 22:1–19)।

परमेश्वर के भवष्यिवक्ता के ऐसे साहसी शब्द, जो लोगों के सामने सार्वजनकि रूप से बोले गए, ने राजा और उसके दरबारयिों का महान क्रोध भड़का दयिा: यदि परमेश्वर की व्यवस्था ने प्रभु की ओर से भवष्यि के रहस्यमय प्रकटीकरणों के लएि संत यर्मियाह को संरक्षति नहीं रखा होता, तो नस्सिंदेह उन्हें तब मार डाला गया होता। उसे जबरदस्ती पकड़कर अपमानति होकर बेड़यिों में जकड़कर जेल में डाल दयिा गया।

उस समय, परमेश्वर का न्याय उस पापी नगर पर आया, जो मूर्तपिूजक घृणा-कर्मों से अपवत्रि और नर्दिोषों के लहू से दाग़दार था। – नबूकदनेसर, बाबेल के राजा नाबोपोलसर के पुत्र और अस्सyrian राजशाही के प्रतनिधि, अपने पति की आज्ञा पर मस्रि के राजा नेको के वरिुद्ध नकिल पड़े; और कार्केमशि में फरिौन की सेना को हराने के बाद[3324] —जो अस्सyria पर कब्जा करना चाहती थी—उन्होंने तुरंत अपनी सेनाएं अपने अधीनस्थ, यहूदा के राजा के वरिुद्ध मोड़ दीं। एक संक्षपि्त घेराबंदी के बाद नबूकदनेज़र ने यरूशलेम पर कब्ज़ा कर लयिा; यहूदा का राजा यहोयाकीम, अपने शासन के तीसरे वर्ष में बंदी बना लयिा गया था और, शाही और कुलीन परविारों के चुने हुए युवकों के साथ (जसिमें भवष्यिवक्ता दानयिेल, जो तब भी एक युवा व्यक्ति थे, और तीन युवक अनान्याह, मशिाएल और अजर्याह शामलि थे) (दानयिेल 1:1–6), को बेबीलोन ले जाया गया। यरूशलेम के नागरकिों की एक बड़ी संख्या को भी वहाँ ले जाया गया, और परमेश्वर के भवन के कुछ पात्र भी ले जाए गए।

कुछ ही समय बाद, नबूकदनेस्सर, जो अपने पति की मृत्यु के बाद बेबीलोन का सहिासन पर बैठा था, ने बंदी यहोयाकीम को यरूशलेम वापस भेज दयिा, उसे यहूदा के राजा के पद पर बहाल कयिा, और उसे केवल अपना सामंत बना लयिा। इस प्रकार तीन वर्ष बीत गए: योआकीम ने बेबीलोन के राजा को कर दयिा, ठीक वैसे ही जैसे उसने पहले मस्रि के फरिौन को दयिा था। इस प्रकार यहूदा पर भारी पड़ने वाले मस्रि के प्रभुत्व के जुए से मुक्त होकर, और बेबीलोन से

[3324] कार्केमशि शहर होवर और फरात नदयिों के संगम पर स्थति था।

भविष्य में उत्पन्न होने वाले गंभीर खतरे की भविष्यवाणी करने में वफिल रहते हुए—एक राजशाही जो अभी अपने प्रारंभकि चरण में थी और उस समय अपने आंतरकि मामलों के संगठन में व्यस्त थी— योआकीम और उसके कुलीनों ने, घमंडपूर्वक खल्दीय जुए से मुक्त होने का संकल्प लेकर, खुद को कामुकता और हर तरह की मूर्खता में डुबो दयिा।

लेकनि यहूदा के राजा यहोयाकीम ने नेबूकदनेस्सर के प्रतअिपनी नष्ठिा को खुले तौर पर त्यागने और अपने राज्य की बबेल से स्वतंत्रता की सार्वजनकि घोषणा करने से पहले, प्रभु का वचन तब जेल में मौजूद भविष्यवक्ता यर्मियाह के पास आया, और कहा गया:

'एक लकड़ी का पटरा ले आ और उस पर वे सब वचन लखि, जो मैं ने यहूदा के राजा योशयिाह के दनिों से लेकर आज के दनि तक तुझ से इस्राएल और सब जातयिों के वषिय में कहे हैं; शायद यहूदा का घराना और यहूदा के लोग उन सारी वपित्तयिों के बारे में सुनें जो मैं उन पर लाने का इरादा रखता हूँ, ताकि वे में से हर एक अपने-अपने बुरे मार्गों से लौट जाएँ, और मैं उनकी अधर्म और उनके पापों को क्षमा कर दूँ।

यर्मियाह ने अपने लपिकि, नेरयिाह के पुत्र बरोक के द्वारा प्रभु की इस आज्ञा का पालन कयिा, जसिने भविष्यद्वक्ता के मुख से नकिले सभी वचनों को एक लट्ठी पर लखि लयिा। इसके बाद, यर्मियाह ने बरोक से कहा:

'मैं तो बंदी और पहरे में हूँ; मैं यह स्थान छोड़कर प्रभु के भवन में नहीं जा सकता। इसलिए, तू जाकर उपवास के दनि प्रभु के भवन में उन लोगों को और उन सब यहूदयिों को भी जो अपने नगरों से आए हैं, जो वचन तूने मेरे मुख से लखि हैं, उन्हें ज़ोर से पढ़ सुना। उन्हें यह पढ़कर सुनाओ; शायद वे प्रभु के सामने वनिती करें और हर कोई अपने-अपने बुरे मार्गों से लौट आए, क्योंकि यह प्रचंड क्रोध और प्रस्फोट है जो प्रभु ने इस प्रजा के वरिुद्ध घोषति कयिा है।"

बरोक ने लोगों की सभा के सामने, लपेटे में लखि हुए प्रभु के वचन पढ़े। यह यहोयाकीम के राज्य के पाँचवें वर्ष में हुआ (यर्मि. 36:9)।

सूलामाना के पठन ने सभी पर गहरा प्रभाव डाला; सभा गहरे रूप से प्रभावति हुई। जो हुआ उसकी खबर राजमहल भेजी गई, जहाँ उस समय सभी कुलीन सलाहकार इकट्ठा थे; उन्होंने बरोक को अपनी उपस्थतिि में बुलाया। बारूक द्वारा पढ़ी गई यर्मियाह की भविष्यवाणी ने उन बेपरवाह और दुष्ट कुलीनों को भी प्रभावति कयिा, जनिका अंतःकरण भ्रष्ट हो चुका था। वे एक-दूसरे को भयभीत होकर देखने लगे और उन्होंने बारूक से पूछा कि उसने यह भविष्यवाणी कैसे लखिी। बारूक ने उत्तर दयिा: 'यर्मियाह ने मुझसे ये बातें कहीं, और मैंने उन्हें इस लट्ठी पर लखि लयिा।'

अधकिारयिों ने कहा, 'ये भवष्यिवाणयिाँ इतनी महत्वपूर्ण हैं कि इनकी सामग्री की सूचना अवश्य ही राजा को दी जानी चाहिए' (यर. 36:10-19)।

उनमें से जो बारूख के प्रतअिनुकूल थे, उन्होंने उसे कुछ समय के लिए छपि जाने की सलाह दी; उन्होंने यह भी आदेश दयिा कि भविष्यवक्ता यर्मियाह को कैद के कसिी अन्य स्थान पर स्थानांतरति कर दयिा जाए, ताकि कसिी को यह न पता चले कि परमेश्वर के वधिान के प्रचारक कहाँ पाए जाएँगे।

जब राजा को उस भवष्यिवाणी के लेख के बारे में सूचति कयिा गया, तो यहोयाकीम ने आज्ञा दी कि उसे उसके पास लाया जाए और सभी राजकुमारों के सामने उसकी उपस्थतिि में उसे ज़ोर से पढ़ा जाए। उस समय ठंड थी: यह नवंबर का महीना था; राजा अपने घर में जलते हुए कोयलों से भरी एक अंगीठी के सामने बैठा था, जबकि कुलीन उसके चारों ओर खड़े थे। कुछ कुलीनों ने[3325] ने यर्मियाह की बातों को ध्यान से सुना, लेकनि भविष्यवाणी का पाठ राजा और उसके दास-प्रवृत्ति वाले दरबारयिों के कठोर हृदय पर कोई उचति प्रभाव नहीं डाल सका। इतना ही नहीं, बल्कि जैसे ही पाठक लपेटा खोलकर तीन-चार स्तंभ पढ़ता, राजा उन्हें एक लपिकि की छुरी से काटकर अंगीठी की आग में फेंक देता था; लपेटा पूरा का पूरा पढ़ा गया और पूरा का पूरा जला दयिा गया (यर. 36:1–26)। इसके बाद, यहोयाकीम ने अपने गुर्गों को यर्मियाह और बारूक को पकड़कर दोनों को मार डालने का आदेश दयिा। लेकनि ईश्वर की व्यवस्था से वे उस समय छपि गए और मृत्यु से बच गए; और जल्द ही यहूदा के राज्य के लिए एक समय आया जब भविष्यवक्ताओं के शत्रुओं और घृणा करने वालों के पास अपने प्रतशिोध के बारे में सोचने या उसे अंजाम देने का समय नहीं बचा।

इस बीच, परमेश्वर की आज्ञा से, भविष्यवक्ता यर्मियाह ने दुष्ट राजा की नदिा करते हुए एक नया संदेश दयिा:

[3325] एलनातान, दलायाह और गर्मियाह – शाही अधकिारी – जाहरि तौर पर उम्मीद कर रहे थे कि इस पाठ का राजा पर प्रभाव पड़ेगा और वह, अपने पति योशयि्याह की तरह, नैतकि सुधार की ओर उन्मुख हो जाएगा। (2 राजा 22:10–13.)

प्रभु ने उससे कहा, 'एक और लट्ठी ले, और उस पर वे सब पूर्ववर्ती वचन लिख, जो पहली लट्ठी में थे, जिसे यहूदा का राजा यहोयाकीम जला दिया था। जहाँ तक यहोयाकीम की बात है, उसे कह दो: यहोवा इस प्रकार कहता है – तूने वह लेखपत्र जला दिया क्योंकि उसमें यह लिखा था कि बेबेल का राजा अवश्य आएगा और इस देश को उजाड़ देगा, और उसमें के मनुष्यों और पशुओं को नाश कर देगा। इसी कारण, यहोयाकीम के विषय में यहोवा यों कहता है: उसकी संतान दाऊद के सिंहासन पर नहीं बैठेगी , और उसकी मृत्यु के बाद उसका शव दिन की गर्मी और रात की ठंड में फेंक दिया जाएगा (यर. 36:27–30)।

प्रभु की यह आज्ञा पवित्र भविष्यवक्ता द्वारा पूरी की गई: यिर्मयाह के मुख से, बरोक ने एक और लट्ठी लिखी, जिसमें पिछले भविष्यद्वाणीय वचनों में बहुत कुछ जोड़ा गया।

उस समय यहूदियों को आश्चर्य हुआ जब नबूकदनेज़र की सेना ने यरूशलेम की घेराबंदी की, जिसमें खलदीयियों, सीरियाईयों, मोआबियों और अम्मोनीयों की हल्की पैदल सेना इकाइयाँ शामिल थीं। रक्षा के लिए तैयार नहीं यह पवित्र नगर हमलावरों द्वारा आसानी से जीत लिया गया; राजा यहोयाकीम को बंदी बना लिया गया और एक अपमानजनक मृत्यु प्राप्त हुई: उसका शव शहर की दीवारों के बाहर फेंक दिया गया ताकि जंगली जानवर और पक्षी उसे खा सकें। इस प्रकार पवित्र यिर्मयाह की यह भविष्यवाणी पूरी हुई कि यहूदा के राजा को गधे के दफ़न जैसा दफ़न दिया जाएगा: उसे खींचकर यरूशलेम के द्वारों से बहुत दूर फेंक दिया जाएगा (यिर्म. 22:19), और उसका मृत शरीर दिन की गर्मी और रात की ठंड में खुला छोड़ दिया जाएगा। हालाँकि, उसके बचे हुए हड्डियों को, जिन्हें जंगली जानवरों ने नोच डाला था, यहूदियों ने शाही परिवार के मकबरे में दफना दिया (2 इतिहास 36:8)।

यहोयाकीम की मृत्यु के बाद, उसका पुत्र यहोयाकीन यरूशलेम के सिंहासन पर बैठा, और वह अपने पिता से अधिक धर्मपरायण नहीं था। पवित्र यिर्मयाह ने उसके विषय में भविष्यवाणी की थी कि वह अपने पूरे घराने सहित प्रभु द्वारा बेबीलोन के राजा के हाथ में सौंप दिया जाएगा – और वह फिर कभी अपनी भूमि को नहीं देखेगा! – जो थोड़ी ही देर बाद सच साबित हुआ। जेकोनियाह ने दाऊद के सिंहासन पर केवल सौ दिन तक राज किया। अपने पिता के स्थान पर सिंहासन पर बैठकर, उसने एक मूर्खतापूर्ण भ्रम में, नबूकदनेसर का सामना करने के व्यर्थ सपने में लिप्त होकर, अपनी इच्छा से उसके सामने आत्मसमर्पण करने या उस पर उसके अधिकार को स्वीकार करने से इनकार कर दिया। अपने पिता की ही तरह अनैतिक, मूर्तिपूजक घृणित कृत्यों में लिप्त रहते हुए, यहोयाकीन ने सोचा कि वह यरूशलेम की मजबूत दीवारों के पीछे सुरक्षित रहेगा, और अपनी राजधानी की घेराबंदी की स्थिति में, उसने मिस्र से मदद की उम्मीद की। लेकिन नबूकदनेस्सर के एक तीव्र हमले से चकित होकर, जो यरूशलेम को घेरने वाले अपने सैनिकों के बीच व्यक्तिगत रूप से प्रकट हुआ, उसे अपने पूरे परिवार, अपने पूरे दरबार और अपने खसासों के साथ विजेता की इच्छा के आगे आत्मसमर्पण करने के लिए मजबूर होना पड़ा। पूरा शाही परिवार, कुलीन गणमान्य व्यक्ति, यहूदा देश के सभी उत्तम लोग, योद्धाओं और कारीगरों की श्रेष्ठ मंडली – कुल मिलाकर दस हजार तक के चुनिंदा लोग – को बेबीलोन ले जाया गया; प्रभु के मन्दिर के स्वर्ण पात्र और शाही खजाने को भी बंदियों के साथ वहाँ ले जाया गया (2 राजा 24:8–16)।

इस प्रकार यिर्मयाह की यह भविष्यवाणी पूरी हुई: यहूदा का राजा यहोयाकीन—प्रभु परमेश्वर के दाहिने हाथ की मुहर, जिसने एक बार यहूदियों को मिस्र से निकाला था—को अपनी जगह से उखाड़ दिया गया और, एक तुच्छ और अस्वीकार किए गए प्राणी की तरह, एक अनुपयोगी पात्र की तरह, अपनी माँ और अपने लोगों के साथ एक ऐसी विदेशी भूमि में निकाल दिया गया जिसे वे नहीं जानते थे, जहाँ उनका जन्म नहीं हुआ था, और वहाँ वे मर गए, और अपनी जन्मभूमि में कभी वापस नहीं आए, जिसकी उनकी आत्माएँ लालसा करती थीं (यर. 44:24-29)।

नबूकदनेसर द्वारा यरूशलेम पर कब्जा करने और यहूदा के राज्य के सबसे सम्मानित और प्रतिष्ठित लोगों को बेबीलोन निर्वासित करने के बाद, यहूदा में लगभग केवल गरीब और नीचले वर्ग के लोग ही बचे थे। यहूदा के इस अवशेष पर शासन करने के लिए, खलदानी विजेता ने यहोयाकीन के उत्तराधिकारी के रूप में मत्तन को नियुक्त किया—जो (धार्मिक) राजा योशिय्याह का तीसरा पुत्र, यहोयाकीन का चाचा और यहोआहाज तथा यहोयाकीम का भाई था; उसका नाम बदलकर सिदकिय्याह रख दिया गया।

जेकोनियाह, नबूकदनेसर की कठपुतली, ने ग्यारह वर्षों तक शासन किया, और अपने पूरे शासनकाल में उसने लगभग कुछ भी नहीं किया सिवाय उस काम के जो परमेश्वर की दीर्घ सहनशीलता की सीमाओं को पार करने वाला था: उसकी नैतिक पतनशीलता इतनी गहरी थी कि, उस पर आने वाली सबसे कठिन परीक्षाओं के बावजूद, वह अपनी दुष्ट प्रवृत्तियों पर काबू नहीं पा सका, और न ही वह पूरे दिल की ईमानदारी के साथ इस्राएल के प्रभु परमेश्वर की ओर मुड़

सका। उसके आसपास के लोग भी ऐसे ही थे—उसके करीबी सहयोगी और याजक। यहूदिया में, मूर्तिपूजक घृणित कृत्य दिन-ब-दिन बढ़ते जा रहे थे; स्वयं परमेश्वर का घर, यरूशलेम का मंदिर, मूर्तिपूजक पूजा की घृणित कृत्यों द्वारा अपवित्र किया गया था (यहे. 8, तुलना करें यिर्म. 23); नबीयों के मुख से कहे गए प्रभु के वचनों पर ध्यान नहीं दिया गया; इसके बजाय, लोगों ने झूठे नबियों के चापलूसी भरे शब्दों पर अधिक ध्यान दिया, जो पतित लोगों की कामुक इच्छाओं को पूरा करते थे। यह सब यरूशलेम और यहूदा के पूरे देश पर प्रभु का क्रोध एक धमकी भरे बादल की तरह इकट्ठा कर गया, यहाँ तक कि अंततः प्रभु ने अपने लोगों से मुख मोड़ लिया और पवित्र नगर यरूशलेम को पूर्ण विनाश और उजाड़ के हवाले कर दिया (यर. 52:1–3)।

यह अंतिम विपत्ति, जो यरूशलेम पर आई और जो अब तक आई हुई सब विपत्तियों में सबसे भयानक थी, इस प्रकार हुई। नबूकदनेस्सर ने, अपने विरोधी, शक्तिशाली और योद्धा यहूदियों को बेबीलोन निर्वासित करने और परमेश्वर के लोगों के कमजोर अवशेष पर यरूशलेम में सिदकियाह को राजा नियुक्त करने के बाद, यह आशा की कि मिस्र के विरुद्ध, जिसके साथ संघर्ष उसे निरंतर व्यस्त रखता था, कमजोर यहूदा में उसका एक गढ़ होगा। कलदीय शासक ने यह अनुमान लगाया कि उसका संरक्षित, अर्धसिक सिदकियाह, उसका सामंत बने रहते हुए, उसकी महान शक्ति से समर्थन मांगेगा और उसके प्रति आज्ञाकारी रहेगा। और लगभग तीन या चार वर्षों तक ऐसा ही रहा। लेकिन फिर, अपनी स्थिति को सुदृढ़ करने के बाद—या यूँ कहें कि, सटीक रूप से कहें तो, महज राजसी सिंहासन पर बैठ जाने के बाद—सिदकिया अपनी मामूली हैसियत से संतुष्ट नहीं रहा और बेबीलोन के राजा के जुए से खुद को मुक्त करना चाहता था। इसमें उन्हें उनके आसपास के दरबारियों ने प्रोत्साहित किया, जो एक पागल अंधापन से ग्रस्त थे; उनके लिए विशेष रूप से मोहक था पड़ोसी छोटे राजाओं—एदोम, मोआब, अम्मोन, टायर और सीडोन के—का परामर्श, जो खल्दीयियों पर अपनी निर्भरता से भी नाराज़ थे। उन्होंने नबूकदनेज़र के खिलाफ एक गठबंधन बनाया और यहोयाकीन को अपने गठबंधन में शामिल होने का प्रस्ताव लेकर यरूशलेम में एक दूतमंडल भेजा, ताकि वे मिलकर बेबीलोन के राजा के शासन के खिलाफ उठ खड़े हों, उसके घृणित जुए को उखाड़ फेंकें और उसे कर देने से इनकार कर दें।

उस समय, प्रभु ने भविष्यवक्ता यिर्मियाह को आज्ञा दी: 'अपने लिए पट्टियाँ और एक हारा बनाओ, और उन्हें अपनी गर्दन पर डालो; उन्हें अपने दूतों के द्वारा एदोम, मोआब, अम्मोन, टायर और सीदोन के राजाओं के पास भेज दो; और उन्हें आज्ञा दे कि वे अपने-अपने हाकिमों से प्रभु का यह वचन कहें' (यिर्म. 27:2–4)।

पवित्र नबी ने ठीक वैसा ही किया: अपने गले में पट्टियाँ और एक लकड़ी का जुआ डालकर, वह यिर्मियाह के दूतों के वहाँ होने के समय सद्दाक़ीयाह के महल में गया, और कहा:

'सेनाओं का यहोवा, इस्राएल का परमेश्वर, यों कहता है: यह अपने हाकिमों को बता दो: मैं ने अपनी महान सामर्थ्य से पृथ्वी, मनुष्यों और पृथ्वी के मुख पर जो जीव-जन्तु हैं, उन सभ को बनाया, और जो मुझे भान पड़ा, उसे दे दिया। और अब मैं ये सभी देश बेबीलोन के राजा नबूकदनेसर के हाथों में सौंप रहा हूँ। सभी देश उसकी, उसके पुत्र की, और उसके पुत्र के पुत्र की सेवा करेंगे, जब तक कि उसके अपने देश और स्वयं उसके लिए समय नहीं आ जाता। और यदि कोई राष्ट्र या राज्य बेबीलोन के राजा की सेवा करने से इनकार करता है, और नबूकदनेजर के जुए के अधीन नहीं होता है, तो मैं उस राष्ट्र को तलवार, अकाल और महामारी से दंडित करूँगा, जब तक कि मैं उसे बेबीलोन के राजा के हाथ से नष्ट नहीं कर देता। और अपने भविष्य बताने वालों और भविष्यद्रष्टों, अपने स्वप्न-विवेचकों, जादूगरों और ज्योतिषियों की न सुनो, जो तुमसे कहते हैं, 'तुम बबेल के राजा की सेवा नहीं करोगे'; क्योंकि वे तुम्हें झूठी भविष्यवाणी सुना रहे हैं, ताकि तुम्हें तुम्हारे देश से निकाल दें, और मैं तुम्हें निर्वासित कर दूँ और नष्ट कर दूँ। उनकी न सुनो, बल्कि बेबीलोन के राजा की सेवा करो और जीवित रहो; यह नगर और तुम्हारी भूमि क्यों उजाड़ दी जाएँ (यिर्म. 27:5–17)?

यह यहूदा के राजा सिदकियाह के राज्य के चौथे वर्ष में हुआ (यर. 28:1)।

एक दिन, परमेश्वर का नबी अपनी गर्दन पर एक जुआ डाले हुए यहोवा के भवन में गया, और वहाँ उसका सामना अनानयाह नामक एक झूठे नबी से हुआ, जिसने याजकों और सब लोगों के सामने कहा:

'इस्राएल का यहोवा यह कहता है: मैं बबेल के राजा का जुआ तोड़ डालूँगा; मैं दो वर्ष के भीतर यहोवा के भवन के वे सब पात्र जो बबेल ले जाए गए थे, इस स्थान पर वापस लाऊँगा, और मैं राजा यहोयाकीन और यहाँ के सब यहूदियों को वापस लाऊँगा।'

और अनानयाह ने भविष्यवक्ता यरिमयाह की गरदन पर जो जुआ था, उसे ले जाकर दो टुकड़े कर दिया। यरिमयाह मंदिर से बाहर चला गया, परन्तु थोड़ी ही देर बाद, परमेश्वर से प्रकटवाणी पाकर, वह मंदिर में लौट आया और अनानयाह से कहा:

'सुन, अनानयाह! यहोवा ने तुझे नहीं भेजा, और तू इस प्रजा को झूठी आशा दे रहा है। तूने लकड़ी का जुआ तोड़ दिया है; इसके स्थान पर लोहे का जुआ बना। क्योंकि परमेश्वर इन सब जातियों के गलों पर लोहे का जुआ रखेगा, ताकि वे बबेल के राजा नबूकदनेस्सर की सेवा करें।' परन्तु तू, क्योंकि तूने यहोवा के नाम का उपयोग करके झूठ बोला है, इसीलिए तू इसी वर्ष मर जाएगा; तू पृथ्वी के मुख से मिटि जाएगा, क्योंकि तू यहोवा के विरुद्ध बोलता है।'

और वास्तव में, एक महीने बाद, उस झूठे नबी की मृत्यु हो गई।

यह सुनकर यहोयाकीन भ्रम में पड़ गया और उस समय उसने बेबीलोन के राजा से खुले तौर पर अलग होने की हिम्मत नहीं की। हालाँकि, बाद में, जब मिस्र का फरिौन समेटखिुस द्वितीय, नेको का पुत्र, यूफ्रेटसि के क्षेत्रों तक अपना प्रभुत्व बढ़ाने की एक साहसी योजना के बहकावे में आकर, इथियोपियाई लोगों पर अपनी विजय के बाद, गठबंधनबद्ध कनानी राजाओं का नेतृत्व करने आया— यहोयाकीन खुले तौर पर सहयोगियों में शामिल हो गया: उसने नबूकदनेस्सर से अलग हो गया, खुद को उसका विरोधी घोषित कर दिया, और पवित्र यरिमयाह की उपदेशों पर कोई ध्यान नहीं दिया, जो हमेशा उसे और पूरे लोगों को समय पर और सही सलाह देते थे।

इस बीच, उसी समय, भविष्यवक्ता यरिमयाह ने गुप्त रूप से बबेल में बंदी बनाए गए यहूदियों के लिए एक संदेश भेजा[3326] । अपने संदेश में, उन्होंने अपने देशवासियों को सूचित किया कि, ईश्वर के आदेश से, वे वहाँ सत्तर वर्षों तक रहेंगे, और ईश्वर के नाम पर उन्होंने उन्हें प्रोत्साहित किया कि 'वे वहाँ अपने लिए घर बनाएँ और अंगूर के बाग लगाएँ, अपने बेटों और बेटियों के विवाह का प्रबंध करें, ताकि निर्विाचित लोग बंधन में रहते हुए कम न हो जाएँ, बल्कि यह कि चुने हुए लोग बढ़ें, और जिस नगर में वे बसे थे, उसकी भलाई का ध्यान रखें, और उसके लिए परमेश्वर से प्रार्थना करें , क्योंकि यदि वह फले-फूलेगा, तो वे भी फले-फूलेंगे, और वे शांति और सुकून से रहेंगे'। इसके अलावा, ईश्वर के नाम पर, पवित्र पैगंबर ने अपने देशवासियों को उनके बीच मौजूद झूठे नबियों और तथाकथित देशभक्तों के खिलाफ चेतावनी दी और उन्हें बंदी जीवन से शीघ्र मुक्ति का वादा किया, क्योंकि प्रभु इस प्रकार कहते हैं: 'जब तक तुम्हारे लिए बेबीलोन में सत्तर वर्ष पूरे नहीं हो जाते, तब तक मैं तुमसे मिलूँगा और तुम्हारे विषय में अपनी इस अच्छी बात को पूरा करूँगा, कि तुम्हें इस देश में वापस लाऊँ; क्योंकि मैं तुम्हारे लिए जो योजनाएँ बनाता हूँ, वे मैं जानता हूँ, वे भलाई की हैं, न कि बुराई की, तुम्हें भविष्य और आशा देने के लिए' (यरिम. 29:5)।

यरमियाह का पत्र बबेल में बंदी बनाए गए यहूदियों द्वारा सावधानीपूर्वक पढ़ा और माना गया; यहाँ तक कि अपने दुर्भाग्यपूर्ण देश के झूठे प्रेमियों—झूठे नबियों ने भी—इससे खुद को परिचित किया, लेकिन बाद में इसने उनमें क्रोध और नबी से बदला लेने की इच्छा जगाई। उन्होंने बेबीलोन से यरूशलेम के याजकों को पत्र लिखकर यह मांग की कि वे यरिमयाह को भविष्यद्वाणी करने और संदेश लिखने से रोक दें। इतना ही नहीं, बल्कि उन्होंने यह भी मांग की कि यिरिमयाह को बंधन में रखकर कैद में कड़ी निगिरानी में रखा जाए, ताकि वह अपनी बातों या पत्रों द्वारा लोगों को लंबी कैद का डर दिखाकर परेशान न कर सके। तथापि, परमेश्वर के भविष्यवक्ता ने, उन पर लगाए गए प्रतिबंधों और बेड़ियों के बावजूद, यहोवा का वचन प्रचार करना और यह घोषित करना बंद नहीं किया कि यहोवा बेबीलोन में निर्वासित लोगों पर अपनी दया दिखाएंगे, जबकि इसके विपरीत, यरूशलेम में बचे हुए लोग उनके धर्मी क्रोध से नष्ट हो जाएंगे।

'देखो,' यहोवा दाऊद के सिंहासन पर बैठे राजा और इस नगर में रहने वाले सब लोगों के विषय में यह कहता है, 'मैं उन पर तलवार, अकाल और महामारियाँ भेजूँगा, और मैं उन्हें ऐसे सड़े हुए अंजीरों के समान कर दूँगा जिन्हें खाने के काम नहीं आता क्योंकि वे अनुपयुक्त हैं; और मैं उनका पीछा करूँगा और उन्हें पृथ्वी के सभी राज्यों के बीच एक कहावत, एक शाप और एक भय, उन सभी राष्ट्रों के बीच एक उपहास और एक ताना बना दूँगा जहाँ मैं उन्हें ले जाऊँगा, क्योंकि उन्होंने मेरे वचनों की आज्ञा नहीं मानी (यर. 29:1–32)।

यरूशलेम के पास हिन्नोम के पुत्रों की घाटी थी, जिसे तोफेथ कहा जाता था, जहाँ ऊँचे वेदी बनाए गए थे; वहाँ दुष्ट यहूदियों ने मोलेक को बलिदान चढ़ाया, अपने बेटों और बेटियों को काटकर और जलाकर बलिदान किया; यह क्षेत्र अक्सर तुरहियों और झाँजियों की उन्मादी ध्वनियों से गूंजता रहता था, जो वध किए जा रहे बच्चों की हताश विलापों और चीखों को

[3326] यरमियाह का पत्र वहाँ राजा के दूतों द्वारा पहुँचाया गया था, जिन्हें सिदकियाह ने नबूकदनेसर के पास उपहारों के साथ भेजा था (यर. 29:3)।

दबा देती थीं। अपने समकालीनों के बीच ऐसी घृणति, अमानवीय अत्याचार की नदिा करने के लिए, भवष्यिवक्ता यरि्मयाह ने परमेश्वर की आज्ञा से, एक कुम्हार से एक पकाई हुई मट्टिी का घड़ा खरीदा और लोगों के बुज़ुर्गों और याजकों के बुज़ुर्गों को साथ लेकर तोपेत की घाटी में गया। वहाँ उसने ऊँचे स्वर में पुकारा:

'हे यहूदा के राजाओं और यरूशलेम के नविासयिों, यहोवा का वचन सुनो! 'इस्राएल का परमेश्वर यों कहता है: "देखो, मैं इस स्थान पर ऐसी वपित्तलाने वाला हूँ कि जो कोई भी इसकी सुनकर दंग रह जाएगा, क्योंकि मेरे लोगों ने मुझे त्याग दयिा है और इस स्थान को परदेशयिों के लिए बना दयिा है, और वे वहाँ अन्य देवताओं को धूप जलाते हैं जन्हिें न तो उनके पतिा जानते थे और न ही उनके राजा; उन्होंने इस स्थान को नर्दिोषों के लहू से भर दयिा है; उन्होंने ऊँचे वेदी बनाए हैं और अपने बेटों को बाल के लिए होमबलि के रूप में आग में जला दयिा है—ऐसा कुछ जो मैंने उन्हें करने की आज्ञा नहीं दी थी, और न ही मेरे मन में कभी आया था। इसलयि,े प्रभु की यह वाणी है, कि वे दनि आने वाले हैं, जब इस स्थान को फरि तोपेथ—हन्नि्ोम की घाटी—नहीं कहा जाएगा, परन्तु मृत्यु और वध की घाटी कहा जाएगा; क्योंकि यहाँ यहूदा के लोगों की एक बड़ी भीड़ उनके शत्रुओं की तलवार से मार डाली जाएगी; और मैं उनकी लाशें आकाश के पक्षयिों और पृथ्वी के जानवरों के खाने के लिए छोड़ दूँगा। मैं इस नगर, यरूशलेम को, वनिाश के घाट उतार दूँगा और इसे सबके लिए भय और आश्चर्य का वषिय बना दूँगा; हर राहगीर इसके घाव देखकर स्तब्ध रह जाएगा और अवश्विास से सीटी बजाएगा। और वे अपने बेटों और बेटयिों का मांस खाएँगे; हर कोई अपने पड़ोसी का मांस खाएगा जब वे घेराबंदी और संकट में होंगे, जब उनके शत्रु, जो उनके प्राणों के खोजी हैं, उन्हें घेरे और घेर लेंगे (यरि्म. 19:3–9)।

क्रोधति ईश्वर की ओर से ये भयानक शब्द कहने के बाद, संत यरि्मयाह ने अपने हाथ में पकड़े मट्टिी के घड़े को जमीन पर फेंक दयिा, उसे सभी की आँखों के सामने तोड़ डाला, और कहा:

'सेनाओं के यहोवा इस प्रकार कहते हैं: जैसे यह मट्टिी का पात्र टूट गया है और फरि नहीं जुड़ सकता, वैसे ही मैं इस प्रजा और इस नगर को तोड़ डालूँगा; मैं यरूशलेम को तोपेथ के समान बना दूँगा—यरूशलेम के लोगों के घर और यहूदा के राजाओं के घर तोपेथ के स्थान के समान, अपवत्रि, होंगे' (यरि्म. 19:10–13)।

यह भयानक भवष्यिवाणी कहने के बाद, यरि्मयाह तोपेत से नकिलकर यरूशलेम लौट आया। वहाँ, यहोवा के भवन के आँगन में खड़े होकर, उन्होंने लोगों से ये शब्द कहे:

'इस्राएल का परमेश्वर यहोवा यों कहता है: "देख, मैं इस नगर और उसकी सभों बस्तयिों पर वह सब वपित्तडालूँगा जो मैंने उस पर घोशति की है, क्योंकि वे दुष्ट हैं और मेरी बात नहीं मानते" (यरि्म. 19:14-15)।'

ये भवष्यिवाणी के वचन पाशूर, जो याजक और प्रभु के भवन का नगिराणी भी था, को बहुत अप्रयि लगे। उसने भवष्यिवक्ता यरि्मयाह को मारकर प्रभु के भवन के पास, बेंजामनि के ऊपरी फाटक, ' ' पर स्थति बेड़ी में डाल दयिा। लेकनि अगले दनि पाशूर ने यरि्मयाह को रहिा कर दयिा, और यरि्मयाह ने उससे कहा: 'तुम्हारे नाम के लिए "पाशूर" (तुम्हें शान्तमिलि) उपयुक्त नहीं है, बल्कि "महोर-मश्शिवबि" (हर ओर आतंक) उपयुक्त है; क्योंकि यहोवा इस प्रकार कहता है: "देख, मैं तुझे और तेरे सब मत्रिों को अपने लिए एक भय का कारण बनाऊँगा; तुम सब अपने शत्रुओं की तलवार से गरिोगे: तुम यह अपने ही आँखों से देखोगे। और मैं यहूदा के सब लोगों को बेबीलोन के राजा के हाथ में सौंप दूँगा, और वह उन्हें बेबीलोन ले जाकर तलवार से मार डालेगा। और मैं इस नगर की सारी संपत्तऔर उसकी सारी संपदा, और यहूदा के राजाओं के सारे खजाने को उनके शत्रुओं के हाथ में सौंप दूँगा; और वे उन्हें लूटकर ले जाएँगे, और बेबीलोन ले जाएँगे। और तू, पस्कोर, और तेरे घर में रहने वाले सब कैद में जाएँगे; और तू बबेल जाकर वहीं मरेगा, और वहीं तू और तेरे सब मत्रि, जनिके वषिय में तूने झूठी भवष्यिवाणी की है, दफ़नाए जाएँगे' (यरि्म. 20:1–6)।

शीघ्र ही संत यरि्मयाह की यह भवष्यिवाणी सच हुई। अपने शासन के नौवें वर्ष में, यहूदा के राजा सकिारीयाह ने खुले तौर पर बेबीलोन के राजा के वरिुद्ध वद्रिोह कर दयिा और उससे अपनी नष्ठिा तोड़ ली; और दसवें महीने के दसवें दनि, नबूकदनेस्सर अपनी वशिाल सेना के साथ यरूशलेम पर चढ़ आया (यर. 52:4) और उसने इसे चारों ओर से घेर लयिा; उसने इसकी दीवारों के चारों ओर ऊँची मट्टिी की दीवारें बनाईं, जनि पर उसने घेराबंदी के टावर खड़े कए। यरूशलेम के लिए एक भयानक घड़ी आ पहुँची थी! यहूदा के राज्य की राजधानी में, जो मजबूत दीवारों से सुरक्षति थी और पानी तथा हर प्रकार के सामान से अच्छी तरह सुसज्जति थी, कालेदीय आक्रमण (यर. 35:11) से शरण लेने के लिए लोगों के असाधारण रूप से एकत्रति होने के कारण, – इस प्रकार यहोवा का वचन है: 'देख, मैं इस नगर को बेबलिोन के राजा के हाथ में दे देता हूँ, और वह उसे लेकर आग लगा देगा; और हे राजा, तू उसके हाथ से न बच सकेगा, वरन् तू उसके हाथ में पड़ जाएगा।'" (यरि्म. 35:11)।

'यहोवा इस प्रकार कहता है: "देख, मैं इस नगर को और जो कुछ इसमें है, उसे बेबीलोन के राजा के हाथ में दे देता हूँ, और वह उसे घेर लेगा और जला देगा; और हे राजा, तू उसके हाथ से न बच पाएगा, वरन् तू निश्चय ही पकड़ा जाएगा और उसके हाथ में सौंप दिया जाएगा, और तू बेबीलोन ले जाया जाएगा"' (यर. 34:2-3)।

हालाँकि, यरूशलेम को पूर्ण विनाश से और यहूदा के राज्य को बर्बादी से बचाने की आशा में, यिर्मयाह ने सिदकियाह को नेबुचद्नेस्सर के सामने स्वेच्छा से आत्मसमर्पण करने और उसकी उदारता पर भरोसा करने की सलाह दी। लेकिन झूठे नबियों और वरिष्ठ पुरोहितों ने हर तरह से परमेश्वर के नबी की सलाह का विरोध किया और, स्वार्थी और महत्वाकांक्षी कुलीनों की बेतुकी कल्पनाओं से प्रोत्साहित होकर, राजा को यह यकीन दिला दिया कि वह 'यिर्मयाह, जिसे वे पागल कहते थे' की न सुने (यिर्म. 28)।

इस बीच, ज़ेदेकिया और उनके सलाहकारों का मूर्खतापूर्ण उत्साह, जिन्होंने बेबीलोन के राजा के सामने स्वेच्छा से आत्मसमर्पण करने से इनकार कर दिया था, को कुछ औचित्य मिल गया, भले ही यह केवल थोड़े समय के लिए ही था। मिस्र का फिरौन, जिस पर यहूदा का राजा, पहले उल्लेख किए गए अन्य सहयोगी राजाओं के साथ, अपनी उम्मीदें लगाए हुए था, ने अपनी सेना इकट्ठी की और ज़िदकिया की मदद के लिए निकल पड़ा, जिसे खलदीयनों ने घेराबंदी में डाल रखा था। यह जानकर, नबूकदनेस्सर ने शीघ्रता से यरूशलेम की घेराबंदी हटा ली और अपनी सारी सेना के साथ अपने मुख्य प्रतिद्वंद्वी के खिलाफ बढ़ गया (यिर्म. 37:5)। तब यरूशलेम में असाधारण हर्ष-उल्लास छा गया। जब लगभग पूरे एक साल से बंद रहे द्वार खोले गए, तो यरूशलेम के लोग स्वतंत्रता की भावना का अनुभव करने और यह देखने के लिए कि आसपास के गांवों और कस्बों में क्या हाल है, और खेतों तथा दाख की बारी का क्या हुआ है, शहर से बाहर निकल पड़े। यहूदियों का मानना था कि नबूकदनेसर ने अपनी सेनाओं की कमजोरी और उनकी राजधानी के किले पर विजय प्राप्त करने की असंभवता को महसूस करते हुए, जल्दबाजी में उनके शहर की घेराबंदी हटा ली और पीछे हट गया। 'देखो,' अपने स्वदेश की शक्ति के सपनों के धोखे में आकर उन्मादी उत्साही गर्व से बोले, 'बाबेल का राजा हम पर विजय प्राप्त नहीं कर सका और अपमानित होकर भाग गया।' और उन्होंने यिर्मयाह की भविष्यवाणी का अपमान किया, और उसे अपमानजनक रूप से अधूरा बताकर उसकी निंदा की। फिर भी उस समय भी, पवित्र यिर्मयाह बिना किसी हिचकिचाहट के यह प्रचार करते रहे कि यरूशलेम पर खलदीयियों का अधिकार हो जाएगा।

'कलदीय फिर आएँगे और इस नगर पर युद्ध करेंगे; वे इसे जीतकर आग लगा देंगे। स्वयं को धोखा न दें! 'भले ही तुम अपने विरुद्ध लड़ने वाली पूरी कलदी सेना को भगा भी दो, और उनके बीच केवल घायल ही बचें, वे भी उठ खड़े होंगे, हर कोई अपनी-अपनी झोपड़ी से, और इस नगर को आग लगा देंगे' (यर. 37:7–10)।

जब खलदानी यरूशलेम से पीछे हट गए, तब परमेश्वर के भविष्यवक्ता यिर्मयाह, घेराबंदी से घिरे शहर को छोड़कर गए अन्य यहूदियों के साथ, एक गधे पर सवार होकर बिन्यामीन के कुल में अपने गृहनगर अनातोत के लिए रवाना हो गए, जहाँ उनकी संपत्ति थी। लेकिन जैसे ही वह बेंजामिन के फाटकों पर पहुँचा, उसे उन फाटकों पर पहरेदारों के कप्तान, इर्शिया नामक एक व्यक्ति ने रोक लिया, जो झूठे नबी अनानियास (जिसका उल्लेख पहले किया गया था) का पोता था, जिसे यिर्मयाह ने निकट मृत्यु की भविष्यवाणी की थी। इस इर्सीया ने, अपने दादा के कारण नबी से नफरत करके, उसे राजद्रोह का संदेह कर हिरासत में ले लिया।

इर्सिया ने कहा, 'तुम खलदीयियों के पास भाग जाना चाहते हो।'

जिस पर यिर्मयाह ने उत्तर दिया:

'तुम झूठ बोल रहे हो; मैं खलदीयियों के पास नहीं जा रहा, बल्कि अपने ही नगर में जा रहा हूँ, जहाँ मेरी संपत्ति है।'

लेकिन, उनकी आश्वासन के बावजूद, पहरेदार ने परमेश्वर के सेवक को पकड़ लिया और, क्रूर बल से, उसे रईसों के सामने ले गया; और ये, उस निर्दोष व्यक्ति के खिलाफ अपनी लंबे समय से चली आ रही बुरी योजना को अंजाम देने के अवसर पर प्रसन्न थे, जो उनके लिए एक काँटा बना हुआ था, उसे एक असली जासूस समझकर, उन्होंने उसकी पिटाई की और उसे जोनाथन लिपिकि के घर में एक भूमिगत कालकोठरी में कैद कर दिया—जो एक क्रूर और निर्दयी व्यक्ति था (यर. 37:12–16)—जिसे कैदी की देखरेख का जिम्मा सौंपा गया था। हालाँकि, वे नबी पर हाथ उठाने या उसे मार डालने की हिम्मत नहीं कर सके, क्योंकि उन्हें डर था कि इससे वे अपने राजा सिदकियाह की अप्रसन्नता का कारण बन सकते हैं, जिसने, यद्यपि डिरपोकता से (यर. 37:19), कभी-कभी पवित्र यिर्मयाह पर अनुग्रह दिखाया था। ज़ेदेकिया के आदेश पर, परमेश्वर के भविष्यवक्ता को जल्द ही तहखाने के कुंड से महल की जेल में स्थानांतरित कर दिया गया, जहाँ उन्हें रोटी दी गई (यर. 37:21) और जहाँ से वे लोगों तक अपनी शिक्षाएँ पहुँचाने में सक्षम थे।

हालाँकि, यरूशलेम में यह आनंद का उत्सव अल्पकालिक था। नबूकदनेसर, जिसने यहूदी राजधानी को 390 दिनों तक घेराबंदी में रखा था और सिदकिय्याह की मदद के लिए आए मिस्र के फिरौन को खदेड़ने के लिए ही घेराबंदी हटाई थी, ने जल्द ही अपने दुश्मन को भागने पर मजबूर कर दिया और एक बार फिर यरूशलेम लौट आया, तथा पहले से भी अधिक कसकर उसकी घेराबंदी कर दी। मिस्रियों के खिलाफ काल्दीयनों का अभियान 100 दिनों से कुछ अधिक समय तक चला; हालाँकि, यरूशलेम की अंतिम घेराबंदी केवल 40 दिनों तक चली (यहे. 4:5–6)।

इस पूरे समय, पवित्र भविष्यवक्ता यिर्मयाह यहूदियों को पश्चाताप में परमेश्वर की ओर मुड़ने के लिए प्रोत्साहित करना कभी बंद नहीं हुए, और उन्होंने उन्हें यह बताते हुए कि भविष्यवाणियों की ओर इशारा करते हुए जो अब स्पष्ट रूप से पूरी हो रही थीं, कि पापियों के अधर्म के लिए ईश्वर द्वारा निर्धारित दंड का समय पहले ही आ चुका था, और उन्होंने ईश्वर की इच्छा का विरोध न करने और कलदीयों के अधीन होने की समझदारी भरी सलाह दी।

'यहोवा यों कहता है,' यिर्मयाह कहते थे, 'जो कोई इस नगर में रहेगा वह तलवार, अकाल और महामारियों से मरेगा; परन्तु जो कोई खलदीयियों के पास जाएगा वह जीवित रहेगा; वह कम से कम अपना सबसे बड़ा खजाना—अपनी आत्मा—बचाएगा और जीवित रहेगा। 'तथापि यह नगर निश्चय ही बेबीलोन के राजा की सेना के हाथ पड़ जाएगा' (यर. 38:2–3)।

नबी से ऐसे शब्द सुनकर, यहूदी राजकुमारों और कट्टर देशभक्तों, जिन्हें अपने देश से सच्चे प्रेम की कोई अवधारणा नहीं थी, राजा के पास इस मांग के साथ आए:

'इस मनुष्य को मार डाला जाए, क्योंकि वह ऐसे वचन बोलकर सैनिकों और सब लोगों के हौसले को कमजोर कर रहा है; क्योंकि यह मनुष्य अपने लोगों की भलाई नहीं चाहता, परन्तु उनका विनाश और अपमान चाहता है।'

राजा सिदकिय्याह ने निराशा में उनसे उत्तर दिया:

'वह तुम्हारे हाथ में है—तुम उसकी इच्छा के अनुसार करना; राजा तुम्हारी इच्छा के विरुद्ध कुछ नहीं कर सकता' (यर. 38:4–5)।

तब संत यिर्मयाह को रस्सियों से बाँधकर राजकीय जेल के आँगन में एक गहरे गड्ढे में उतारा गया, जो कीचड़ से भरा हुआ था। इस गड्ढे में, परमेश्वर का निर्दोष जन कीचड़ में गर्दन तक डूबा हुआ कष्ट सहता रहा; और यदि उसे एक ईश्वर-भयभीत विदेशी द्वारा न बचाया गया होता, तो वह वहाँ नमी और भूख से मर जाता। शाही दरबार में अबदेमेलेक नाम का एक इथियोपियाई नपुंसक था; जब उसने सुना कि यिर्मयाह को कुएँ में डाल दिया गया है, तो वह आदरणीय भविष्यवक्ता के साथ इस तरह के अपमानजनक व्यवहार से क्रोधित हो गया, और राजा की ओर मुड़कर कहने लगा:

'हे स्वामी, हे राजा! आपने नबी यिर्मयाह के साथ ऐसा व्यवहार करके गलत किया है, और उन्हें जानलेवा खतरे में डाल दिया है।'

राजा ने अबदेमेलेख को आज्ञा दी कि उसे कुएँ से बाहर निकालो। फिर सिदकिय्याह ने यिर्मयाह को अपने पास बुलाया और निजी तौर पर उससे पूछा कि क्या उसने जो कुछ भी भविष्यवाणी की थी, वह सब सच था।

नबी ने उत्तर दिया:

'यदि मैं आपको सच बताऊँ, तो क्या आप मुझे मार नहीं डालेंगे? और यदि मैं आपको कोई सलाह दूँ, तो आप मेरी नहीं सुनेंगे।'

राजा ने यिर्मयाह से गंभीरतापूर्वक वादा किया कि वह उसे न तो मार डालेगा और न ही उसे उन लोगों के हवाले करेगा जो उसे मारना चाहते थे। तब यिर्मयाह ने सिदकिय्याह से कहा:

सेनाओं के यहोवा, इस्राएल का परमेश्वर, यों कहता है: यदि तुम (इच्छा से आत्मसमर्पण करके) बेबीलोन के राजा के हाकिमों के पास चले जाओ, तो तुम्हारी जान बचेगी और यह नगर आग में नहीं जलाया जाएगा, और तुम और तुम्हारा घराना जीवित रहोगे; लेकिन यदि आप बेबीलोन के राजा के सेनापतियों के पास नहीं जाते हैं, तो यह नगर खलदीयियों के हाथ में दे दिया जाएगा, और वे इसे आग लगा देंगे, और आप उनके हाथ से नहीं बचेंगे।

राजा, अपने तथाकथित मित्रों द्वारा धोखा खाकर, ने भविष्यवक्ता की नहीं सुनी और न ही उसकी समझदार सलाह मानी। फिर भी, इन्हीं मित्रों से विश्वासघात के डर से—यिर्मयाह के लिए कम और अपने लिए ज़्यादा—उसने परमेश्वर के पुरुष से कहा कि उनकी गुप्त बातचीत के बारे में किसी को पता न चले और यदि राजकुमार इसके बारे में पूछें, तो उसे उत्तर देना है: 'मैंने राजा के सामने विनती की है, कि मुझे योनातान के घर वापस न भेजा जाए, कहीं मैं वहाँ मर न जाऊँ।'

और यरूशलेम के घेराबंदी के दौरान, पैगंबर शाही रक्षक दल के आंगन में पहरे के अधीन रहे, जब तक कि उन्हें खलदीयियों ने बंदी न बना लिया। यह ज़ेदेकिया के राज्य के ग्यारहवें वर्ष में हुआ (यिर्म. 38:1–28)।

आखरिकार, इस्राएल के गौरवशाली दुर्ग – यरूशलेम – के लिए अंतमि घड़ी आ गई: इसके रक्षकों की संख्या इतनी कम हो गई थी कि वे अब शहर की दीवारों को नहीं थाम सकते थे; शहर में अब कोई रोटी नहीं बची थी – यहूदी राजधानी पर अकाल का भय मंडरा रहा था; भय से ग्रस्त, यरूशलेम के लोग अपनी मानवता के अंतमि अवशेषों को खो रहे थे: वे अब रूपक अर्थ में 'एक दूसरे को नहीं खा रहे थे', बल्कि सचमुच 'अपने बेटों और बेटियों और अपने पड़ोसियों का मांस खा रहे थे'। इस प्रकार यर्मियाह की भवष्यिवाणी पूरी हुई! (यर्मि. 19:9 आदि)

चौथे महीने तमुज़ के नवें दनि, सदिकयि्याह के राज्य के ग्यारहवें वर्ष के नवें दनि (यर. 39:2) (589 ईसा पूर्व के जून महीने में), खलदयि्यों ने नगर की दीवार में एक चौड़ी खाई कर दी और यरूशलेम पर आक्रमण कर दयिा। उस समय नबूकदनेस्सर स्वयं उपस्थति नहीं थे। वे सीरयिा के रब्लिा में थे। उनके सेनापतयिों ने शहर पर धावा बोलकर मध्य द्वार पर अपने तंबू लगाए, जो सयिोन और नचिले नगर के बीच स्थति था (यर. 39:1–3)। दीर्घकालकि घेराबंदी से कुंठति, उग्र योद्धा शहर में बखिर गए और कसिी पर भी दया नहीं दखिाई। भूख और आतंक से थके हुए यहूदी, जो भी सक्षम थे, भाग गए (2 राजा 25:2)। राजा सकिारीयाह, अपने अंगरक्षकों के साथ, रात के समय शहर के उत्तर-पूर्वी भाग में शाही बगीचे के पास एक गुप्त मार्ग से होते हुए राजधानी से भागने में सफल रहे। उनका इरादा गलिाद के जंगल में शरण लेने का था। लेकनि उसकी भागने का पता जल्द ही खलदीयियों को चल गया, और उसके तथा उसके साथयिों के पीछे पीछा कयिा गया। भगोड़ों को यरीहो के मैदान में आसानी से पकड़ लयिा गया। राजा के साथ रहे सैनकि या तो भाग गए या मारे गए। ज़ेदेकयिा को बंदी बनाकर सीरयिा के एक शहर रब्लिा में नबूकदनेज़र के सामने लाया गया। साथ ही वहां महायाजक सरायाह और मंदरि के अधकिारी ज़ेफ़न्याह, जनि्हें शहर में ही पकड़ लयिा गया था, के साथ-साथ एक नपुंसक, सेना का प्रधान सेनापत,ि राजा के सामने खड़े रहने वाले सात कुलीनों, और लोगों के साठ प्रतषि्ठति प्रतनिधियिों को भी ले जाया गया। वजिेता ने पराजतिों पर अपना नर्णिय सुनाया: ज़ेदेकयिाह के पुत्रों और यरूशलेम के सभी नवािसयिों को, पूर्वी शासक की भयानक दृष्टि के सामने लाया गया, और वे दुर्भाग्यपूर्ण यहूदी राजा की आँखों के सामने वध कर दिए गए; फरि उसकी अपनी आँखें नकिाल दी गईं, और बाद में उसे काँसे की बेड़यिों में बाँधकर बेबीलोन भेज दयिा गया और वहाँ कैद कर दयिा गया, जहाँ उसकी मृत्यु हो गई (यर्मि. 52, तुलना करें यर्मि. 39:4–7)।

कलदीयों द्वारा यरूशलेम पर कब्ज़ा करने के एक महीने बाद (यर. 52:12), नबूकदनेसर के अंगरक्षकों का सेनापत ि नबूज़रादान वहाँ पहुँचा। यहूदा के राज्य की राजधानी तब मृतकों का नवािस स्थान बन गई थी: उसके सभी फाटक सुनसान पड़े थे, सयि्योन के मार्ग सुनसान थे, याजक क्षीण हो रहे थे, और यहूदा के जवान और कुँवारयिाँ जैसे दाख की कूट में रौंदी गई थीं (वलिापगीत 1:1–15)। फरि भी वह नगर, दाऊद के वंशजों की राजधानी, जो तब तक अद्भुत और गौरवशाली था, अपनी भव्यता और सुंदरता बनाए हुए अभी भी खड़ा था। इसे जीतने वाले सैन्य कमांडरों के पास इसके भाग्य का फैसला करने का कोई अधकिार नहीं था। खलदीयियों का शासक स्वयं दुवधिा में था: एक ओर, वह मस्रि के राजा की शत्रुतापूर्ण साज़शिों से अपनी रक्षा के लिए यहूदा की भूमि में एक कलिा चाहता था, और अपनी मजबूत दीवारों के साथ यरूशलेम इस उद्देश्य के लिए उपयोगी हो सकता था; लेकनि दूसरी ओर, वह अपने लिए एक खतरे का संदेह करने से खुद को रोक नहीं सका: कि हमेशा वश्विासघाती और वद्रिोही यहूदी इस कलिे का इस्तेमाल अपने वश्विासघाती उद्देश्यों के लिए करेंगे। बाद वाला वचिार हावी हो गया: नेबुचadnezzar ने नेबुज़रादान को यरूशलेम को मट्टिी में मलिा देने के काम पर भेजा। यरूशलेम के इस अंतमि, पूर्ण वनिाश को संत यर्मियाह ने मार्मकि रूप से चत्रिति कयिा, जनि्होंने अपनी 'वलिाप-गीत' की छंदों में अपनी गहरी पीड़ा व्यक्त की। पवत्रि शहर के इस वनिाश ने इस्राएल के लोगों के हृदयों को गहराई से हलिा दयिा – जनि्होंने 'बाबेल की नदयिों के कनिारे' अपनी सच्ची वलिाप शुरू की थी (भजन संहति 136), वे आज भी ऐसा करते हैं, इस घटना की स्मृति को समर्पति दनि को उपवास और पैरों में जूते-चप्पल न पहनकर मनाते हैं – शोक के प्रतीक के रूप में बूट या सैंडल के बनिा।

गवर्नर नेबुज़रदान को अपने स्वामी नेबुचद्नेज़र से पवत्रि भवष्यिवक्ता यर्मियाह के संबंध में एक वशिेष आज्ञा मलिी थी - अर्थात् यह: कि उसे ले जाए और उसकी वशिेष देखभाल करे, ताकि वह उत्पीड़न के बनिा जी सके, उसे कोई हानि नि पहुँचाए, और उसे सभी बातों में अपनी इच्छा से कार्य करने दे (यर. 39:11-12)। नबूकदनेसर यर्मियाह, उसकी भवष्यिवाणयिों और राजा सद्दाक़ीम को दिए गए उसके परामर्श से अच्छी तरह वाकफि था; इसीलिए उसने नबूज़रदान को भवष्यिवक्ता के भाग्य के संबंध में ऐसी हदिायतें दीं।

संत यर्मियाह, जनि्हें यरूशलेम की घेराबंदी के दौरान शाही रक्षक दल के आंगन में पहरे के नीचे बेड़यिों में जकड़कर रखा गया था, को अन्य यहूदयिों के साथ खलदीयियों ने बंदी बना लयिा; यरूशलेम में नबूज़रदान के आगमन पर,

उसे तुरंत इस व्यक्ति के सामने लाया गया, जिसके पास शहर और यहूदा के पूरे राज्य का भाग्य निर्धारित करने का अधिकार था, और उसने उससे निम्नलिखित अनुग्रहपूर्ण वचन सुने: 'प्रभु तुम्हारे परमेश्वर ने इस स्थान पर यह विपत्ति ठहराई है और जो उसने कहा था, वही किया है... परन्तु आज मैं तेरे हाथों की बेड़ियों से तुझे छुड़ाता हूँ: यदि तू मेरे साथ बबेल जाना चाहता है, तो चल; और यदि तू मेरे साथ जाना नहीं चाहता, तो रह जा। सारी भूमि तेरे सामने है; जहाँ कहीं तू जाना चाहे, और जहाँ कहीं जाना तुझे भाए, वहाँ जा' (यर. 40:1–4)। यिर्मयाह ने अपनी मातृभूमि में ही रहने की इच्छा व्यक्त की।

मुक्त हो जाने और नेबुज़रादन द्वारा दिखाए गए सुरक्षात्मक अनुग्रह को देखकर, यिर्मयाह ने सबसे पहले परमेश्वर के पवित्र स्थान, जो पूरे इस्राएल के इतिहास की परम सुंदरता और महिमा है—अर्थात् वाचा का सन्दूक—की चिंता की, ताकि वह विदेशियों द्वारा नष्ट न हो जाए, और परमेश्वर की महिमा अपवित्र न हो जाए। तब भविष्यवक्ता ने साहसपूर्वक विजेता से इस्राएल के परमेश्वर के पवित्र स्थान को ले जाने की अनुमति माँगी, इससे पहले कि यहोवा का मंदिर लूट और जलाए जाने के अधीन हो। और इस अनुमति का लाभ उठाते हुए, उसने उन भक्तिपूर्ण याजकों और लेवियों को ढूंढा जो बच गए थे, उन्हें अपने साथ ले लिया, और उनके साथ बहादुरी से और बिना किसी बाधा के खलदीयों के बीच से होकर, सुलैमान द्वारा निर्मित मंदिर में प्रवेश किया। वहाँ, परमेश्वर के भविष्यवक्ता ने उस अग्निकुंड से दीपक प्रज्वलित किया जिसे उसने तैयार किया था। यह अग्नि मूसा और हारून के दिनों में दहन-बलि के लिए (लैव. 9:24) परमेश्वर से चमत्कारिक रूप से अवतरित हुई थी और तब से वेदी पर निरंतर जलती रखी गई थी, और उसने उस दीपक को एक सूखे कुएँ में छिपा दिया, क्योंकि उन्हें दृढ़ विश्वास था और उन्होंने भविष्यवाणीपूर्वक यह देखा था कि, भले ही यह आग वहाँ अस्थायी रूप से बुझ भी जाए (चमत्कारिक रूप से एक अन्य तत्व, अर्थात् घना पानी, में बदलकर), यह उचित समय पर अपनी पूर्व प्रकृति में लौट आएगी और फिर से जल उठेगी; यह तब हुआ जब बेबीलोन के कैद से इस्राएलियों की वापसी पर, जब नेहेमायाह के दिनों में मंदिर का पुनर्निर्माण किया गया, तो पवित्र भविष्यवक्ता यिर्मयाह की मृत्यु के कई साल बाद, जिन्होंने इस आग को कुएँ के भीतर सील कर दिया था और उस स्थल को समतल कर दिया था, ताकि वह अदृश्य हो जाए और लंबे समय तक किसी के लिए अज्ञात रहे (2 मक्काबीस 1:19–32)।

बलिदान की अग्नि को छिपाए जाने के बाद, परमेश्वर के भविष्यवक्ता ने वाचा के संदूक को लिया, उसे मंदिर से बाहर ले गए और जब तक शहर में हलचल शांत नहीं हो गई, तब तक उसे अपने घर में रखा, जो उस समय नेबुज़रादान द्वारा यरूशलेम की लूटपाट और जलाने के आदेश के परिणामस्वरूप उत्पन्न हुई थी।

जब प्रभु के पवित्र स्थान को मंदिर से बाहर ले जाया गया, तो नेबुज़रदान के आदेश पर खलदीय सैनिकों ने तुरंत मंदिर के सभी खजाने—सोना, चाँदी और काँसा—को इकट्ठा करके उन्हें बेबीलोन भेज दिया, और उन्होंने स्वयं मंदिर को पूरी तरह से नष्ट कर दिया; साथ ही, यरूशलेम की सड़कों को सजाने वाले सभी शाही महल और सबसे शानदार घर भी उजाड़ दिए गए और जला दिए गए; शहर की दीवारों को खोदकर जमीन पर समेट दिया गया। तब विजेताओं की तलवार से यहूदियों की एक बड़ी भीड़ मारी गई, और सबसे अधिक तोफेत की घाटी में, जहाँ अधर्मी लोगों ने पहले अपने बेटों और बेटियों की बलि मोलक को चढ़ाई थी, और जहाँ अब काल्दीयनों ने उन्हें वध के लिए ले जाया। जिन्हें बख्श दिया गया और जिनमें अभी भी ताकत बची थी, उन्हें बाद में बंदी बना लिया गया। विद्रोही लोगों में से केवल कमजोर और बेसहारा लोग यहूदिया में छोड़ दिए गए; नबूज़रदान के आदेश पर, उन्हें खेती करने और अपना जीवन यापन करने के लिए दाख की बारी और खेत दे दिए गए (यर. 39:10; 2 राजा 25:12)।

यरूशलेम को लूट-खसूट और तबाही के बाद छोड़ते हुए, नेबुज़रदन ने अहीकाम के पुत्र गेदेलियाह को यहूदा के उजाड़े हुए प्रदेश का राज्यपाल नियुक्त किया—वही व्यक्ति जिसने एक बार यिर्मयाह को उसके हत्यारों के हाथों से बचाया था और जिसने यरूशलेम में नहीं बल्कि यरूशलेम के पास Massiph[3327] में अपना घर बसाना चुना था। यिर्मयाह भविष्यवक्ता भी वहीं बस गए, ताकि नबूज़रदान के आदेशानुसार, वे प्रांतीय राज्यपाल की सुरक्षा और संरक्षण में रह सकें (यर. 40:5)।

अपने देश में आई स्वतंत्रता और शांति का लाभ उठाते हुए, संत यिर्मयाह ने भक्तिपूर्ण याजकों और लेवियों के साथ मिलकर, परमेश्वर के भवन से वे पवित्र वस्तुएँ ले लीं जिन्हें उन्होंने संभाल कर रखा था और उन्हें यॉर्डन नदी के पार, मोआब देश के एक पहाड़ पर ले गए, जेरिको के पास, जहाँ से भविष्यवक्ता मूसा ने एक बार प्रतिज्ञात भूमि को

[3327] मसफिा यरूशलेम से बहुत दूर नहीं स्थित था और प्राचीन काल में यह प्रार्थना का स्थान था; यहूदियों ने हमलावर पलिश्तियों को पीछे हटाने से पहले शमूएल ने वहाँ एक होमबलि चढ़ाई थी (1 शमूएल 7:1–17)।

नहिारा था, जहाँ उनकी मृत्यु हुई और उन्हें कसिी अज्ञात स्थान पर दफनाया गया (व्यवस्थाविरण 34)। उस पहाड़ पर, , भविष्यवक्ता यरि्मयाह को एक गुफा मलिी, जसिमें उन्होंने वाचा का सन्दूक ले जाकर रखा; इस गुफा का प्रवेशद्वार एक बड़े पत्थर से बंद था। और यरि्मयाह ने, मानो, अपनी उंगली से उस पत्थर पर परमेश्वर का नाम लखिकर उसे सील कर दयिा – और यह लेख इस प्रकार था मानो लोहे की नोक से बनाया गया हो, क्योंकि भविष्यवक्ता की लखिने वाली उंगली के नीचे कठोर पत्थर मोम जतिना ही नरम हो गया था, और बाद में अपनी प्राकृतकि गुणों के अनुसार फरि से कठोर हो गया। और वह स्थान इतना मजबूत हो गया मानो वह लोहे से ढला हो। इसके बाद, संत यरि्मयाह ने अपने साथ चल रहे लोगों से कहा: 'प्रभु सयि्योन से स्वर्ग में चले गए हैं! – और वे शक्ति के साथ लौटेंगे, और उनके आने का संकेत यह होगा: जब पृथ्वी के सभी राष्ट्र उस वृक्ष की पूजा करेंगे' (वह क्रूस जसि पर संसार के उद्धारकर्ता, प्रभु यीशु मसीह को सूली पर चढ़ाया गया था)।

यरि्मयाह ने आगे कहा कि मूसा, जो परमेश्वर को देखने वाला भविष्यद्वक्ता था, के सविा कोई भी उस सन्दूक को इस स्थान से नहीं हटा सकता था; और यह कि याहवेह के हृदय के अनुकूल मनुष्य हारून के सविा कोई भी पुरोहति उस सन्दूक के भीतर रखे हुए वाचा के पट्टों को खोल या पढ़ नहीं सकता था; सामान्य पुनरुत्थान के दनि, इसे ईश्वर के नाम से मुहरबंद पत्थर के नीचे से बाहर नकिाला जाएगा और मोंट ज़योिन पर रखा जाएगा, और सभी संत प्रभु के आगमन की प्रत्याशा में इसके चारों ओर इकट्ठा होंगे, जो उन्हें उनके भयानक शत्रु – मसीह-वरिोधी, जो उनकी मृत्यु चाहता है – से मुक्त करेंगे। जब संत यरि्मयाह ये वचन याजकों और लेवयिों से कह रहे थे, तो अचानक एक बादल ने उस सीलबंद गुफा को ढक लयिा, और कोई भी यरि्मयाह की उंगली द्वारा पत्थर पर अंकति परमेश्वर का नाम नहीं पढ़ सका; वास्तव में, वह स्थान स्वयं ही अज्ञात हो गया, ताकि कोई भी उसे इंगति न कर सके। वहाँ उपस्थति कुछ लोगों ने उस स्थान और वहाँ जाने वाले रास्ते को चह्निति करना चाहा, लेकनि वे कसिी भी तरह ऐसा नहीं कर सके। हालाँकि, भविष्यवक्ता ने एक आध्यात्मकि प्रकटोक्ति में उनसे कहा: 'यह स्थान कसिी के लिए भी तब तक अज्ञात रहेगा जब तक कि प्रभु लोगों की सभाएँ इकट्ठा नहीं कर लेता; और फरि, अपनी दया में, वह इस स्थान को प्रकट करेगा—तब परमेश्वर की महमिा इस पर सभी के लिए प्रकट होगी, और एक बादल इस पर छा जाएगा, जैसा कि मूसा के दनिों में (लैव्य. 9:23-24) और सुलैमान के दनिों में था' (3 राजा 8:10–11)।

और इसलिए वह गुफा अज्ञात ही रहती है, और वह स्थान संसार के अंत तक अज्ञात ही रहेगा; परन्तु परमेश्वर की महमिा गुप्त रूप से वाचा के संदूक को एक उज्जवल, ज्वलंत बादल से प्रकाशति करती है, ठीक वैसे ही जैसे इसने मूसा के तम्बू और सुलैमान के मंदरि में इसे ढका था, क्योंकि उसकी महमिा समाप्त नहीं हो सकती!

सत्तर साल बाद, बेबीलोन की बंधुवाई से लौटने पर, यहूदयिों ने यरूशलेम में एक नया मंदरि बनाया, लेकनि उसमें अब प्राचीन मंदरि, प्रभु के पवत्रि स्थान की महमिा नहीं थी; तब सोने से वाचा का एक नया संदूक बनाया गया, जो मूसा के संदूक के नमूने पर बना था, और उसमें तथा उसके आसपास की हर चीज़ को पहले वाले नमूने के अनुसार व्यवस्थति कयिा गया था; फरि भी, उसमें अब चमत्कारकि शक्ति नहीं थी, और न ही यह परमेश्वर की महमिा से प्रकाशति था। नए मंदरि में केवल एक ही चीज़ संरक्षति थी, वह थी पूर्व मंदरि की स्वर्गीय अग्नि, जिसे जैसा कि ऊपर उल्लेख कयिा गया है, भविष्यवक्ता यरि्मयाह ने एक कुएँ में छपिा दयिा था और बाद में पुरोहतिों ने पाया था।

प्रभु की संदूक के छपिाए जाने के बाद, संत यरि्मयाह यहूदा देश की नई राजधानी मसफिा में अपने उजाड़े हुए देश के नए राज्यपाल गदल्याह के पास लौट आए और अपने बचे हुए देशवासयिों के बीच रहने लगे, और अपने दुर्भाग्यपूर्ण देश के लिए अवरिाम रोते रहे। खल्दीय आक्रमण के दौरान पड़ोसी देशों में बखिर गए यहूदी गेदेलयिाह के चारों ओर इकट्ठा होने लगे। गेदेलयिाह, जो अपने शासक की कृपा में थे, ने उनका उत्साह बढ़ाया, और खल्दीयों के पास उनकी ओर से मध्यस्थता करने तथा यह सुनश्चिति करने का वादा कयिा कि वे शांति से रह सकें। प्रभु स्वयं, दुष्टों को दंड देने के बाद, ने बेबीलोन के आक्रमण के ठीक पहले वर्ष में इस्राएल के पुत्रों के दुखी अवशेष को सांत्वना दी: उस वर्ष उन्होंने देश से हर तरह के फलों और शराब की भरपूर फसल काटी (यर. 40:9-12), फरि भी, वद्रिोही जुनून और अनयिंत्रति अत्याचार की संक्रामकता, जो नैतकि कानून द्वारा नयिंत्रति नहीं थी, यहूदी लोगों के हृदयों में इतनी गहराई से समा गई थी कि उसकी शक्ति और प्रभाव उन कठनि समयों में भी महसूस कए जाते रहे। एक इश्माएल, नाफान्याह का पुत्र, जो राजा सद्दाकयि्याह का रश्तिेदार था और जसिे बेबीलोन में बंदी बना लयिा गया था, और यहोयानी और योनातान, करयि्याह के पुत्र, और यहूदी सैन्य नेताओं में से अन्य, जो खलदीययिों से भागकर मोआबयिों, अम्मोनयिों और एदोमयिों के पास गए थे, लौट आए और अपने अनुयाययिों के साथ खंडहर बन चुके यरूशलेम के आसपास बस गए; वे गेदालयिा से संपर्क बनाए हुए

थे, मसफि में उससे मलिने आते थे, मानो उसे अपनी नष्ठिा व्यक्त करना चाहते हों। भोले-भाले गदेलयिाह ने, उनके बुरे इरादों पर संदेह न करते हुए, उनका गर्मजोशी और सम्मान के साथ स्वागत कयिा, यहाँ तक कि उनके लिए दावतें भी आयोजति कीं। करएिह के पुत्र योहानान ने, अन्य बातों के अलावा, गदेलयिाह को चेतावनी दी कि इश्माएल, अम्मोनीयों की मलिीभगत से, उसे मारने का इरादा रखता है, और गुप्त रूप से उसे अपनी नीच सेवाएँ प्रदान कीं:

उसने कहा, 'मुझे जाने दो कि मैं नाथन्याह के पुत्र इश्माएल को मार डालूँ, और कोई भी नहीं जान पाएगा; तुम उसे तुम्हें मार डालने क्यों दोगे, और अपने चारों ओर इकट्ठे यहूदयिों को नष्ट होने दोगे, और यहूदा के बचे-खुचे लोगों को बर्बाद होने दोगे?'

गेदेलयिाह ने उससे कहा, 'ऐसा मत करो, तुम इश्माएल के बारे में झूठ बोल रहे हो।'

इस बीच, कुछ ही समय बाद, इसहाक वास्तव में अपने दस आदमयिों के साथ गेदलयिाह के पास आया; देर शाम, एक दावत के बीच, उसने अपनी तलवार से गेदलयिाह को, उसके साथ मौजूद सभी यहूदयिों और खलदीय सैनकिों के साथ मार गरिाया। इस प्रकार अपने घृणति और खूनी कृत्य को सफलतापूर्वक अंजाम देने के बाद, इश्माएल ने अपने लुटेरे साजशियिों के गरिोह के साथ मलिकर मसफिह को लूट लयिा, प्रांतीय राज्यपाल की बेटयिों और वहाँ शांतपिूर्ण जीवन बसाने शुरू कर चुके लोगों को बंदी बना लयिा, और उन्हें अम्मोनी प्रदेश में ले गया। देशभक्ति के लिए काम करते प्रतीत होने वाले इस डाकू द्वारा की गई इस दुस्साहसी अमानवीय कृत्य ने उसके प्रति सर्वव्यापी घृणा को जन्म दयिा। कारीयाह के पुत्र योहानान और सैन्य दस्तों के अन्य कमांडर जल्द ही एकजुट हो गए और उस दुष्ट को दंडति करने का संकल्प लयिा; अपनी सेनाओं को इकट्ठा करने के बाद, उन्होंने इसमाएल का पीछा कयिा और उसे गबियिोन में पकड़ लयिा। जनि यहूदयिों को इसमाएल ने बंदी बनाया था, और यहाँ तक कि उसके अपने साथी-सैनकि भी, जॉनन को देखते ही प्रसन्न हो गए और उसके पक्ष में चले गए। इसमाएल, अपने केवल आठ सबसे करीबी सहयोगयिों के साथ, अम्मोनयिों के पास भाग गया।

लेकनि योहानान और उसके साथी अपने दुर्भाग्यपूर्ण स्वदेश के हतिों को वास्तव में समझने से कोसों दूर थे, एक बात जसिे भवष्यिवक्ता यर्मियाह हमेशा जोर देकर प्रचारति करते रहे थे। इश्माएल पर आसान जीत के बाद, यहूदयिों ने बेतलेहेम के पास हमिाम गाँव में रुककर, योहानान के नेतृत्व में एक परषिद बुलाई, जसिमें गदलयिाह, जो बेबीलोन के राजा का नयिुक्त अधकिारी था, की वश्विासघातपूर्ण हत्या के प्रतशिोध के डर से, उन्होंने मस्रि भाग जाने का संकल्प लयिा। और वे एक पूरे लोगों के रूप में मस्रि के लिए रवाना होने की तैयारी करने लगे—वही भूमि जहाँ से उनके पूर्वजों को कभी सर्वशक्तमिान ईश्वर के प्रबल हाथ और उसकी शक्तशिाली भुजा द्वारा मुक्ति मिली थी!... लेकनि इस नर्णिय को लागू करने से पहले, वे इस मामले पर पवत्रि यर्मियाह की राय सुनना चाहते थे। और सभी सैन्य कमांडर, और करयिह का पुत्र योहानान, और गोशायाह का पुत्र येजेन्याह, और सब लोग, छोटे से लेकर बड़े तक, आगे आए और भवष्यिवक्ता यर्मियाह से कहा:

'हमारी वनिती आपके अनुग्रह में आए; हमारे लिए यहोवा अपने परमेश्वर से प्रार्थना करें ("आपका", वे कहते हैं, न कि "हमारा", – यह वशिेष ध्यान देने योग्य है) इस सारे अवशेष के लिए, क्योंकि बहुतों में से हम में से कुछ ही बचे हैं, जैसा कि आपकी आँखें देख सकती हैं, ताकि यहोवा आपका परमेश्वर हमें वह मार्ग दखिाए जसिमें हमें चलना चाहिए और जो हमें करना चाहिए।

नबी ने उनसे उत्तर दयिा:

'मैंने तुम्हें सुन लयिा है, और मैं तुम्हारे प्रभु परमेश्वर से तुम्हारे अनुरोध के अनुसार प्रार्थना करूँगा; और जो कुछ भी प्रभु कहेंगे, मैं तुम्हें बता दूँगा—मैं तुमसे एक भी वचन नहीं छपिाऊँगा।'

यह सुनकर, उन्होंने यर्मियाह से कहा:

'प्रभु हमारे बीच एक वश्विासयोग्य और सच्चा साक्षी हों कि हम नश्चिय ही वह सब कुछ पूरा करेंगे जसिके लिए प्रभु तुम्हारा परमेश्वर तुम्हें हमारे पास भेजता है: चाहे वह अच्छा हो या बुरा, हम प्रभु अपने परमेश्वर की आज्ञा का पालन करेंगे, जसिके पास हम तुम्हें भेज रहे हैं, ताकि जब हम प्रभु अपने परमेश्वर की आज्ञा का पालन करें तो हमसे भलाई हो।'

नबी ने इस वादे को पूरा कयिा और, दस दनि बीत जाने के बाद, योहानान और उसके साथ के सैन्य कमांडरों, और सभी लोगों को यह घोषणा की:

'इस्राएल का यहोवा परमेश्वर यों कहता है, जिसके पास तुम मुझे अपनी विनती पेश करने के लिए भेजने आए हो: यदि तुम इस देश में बने रहोगे, तो मैं तुम्हें स्थिर करूँगा और नष्ट न करूँगा; मैं तुम्हें जड़ जमाऊँगा और उखाड़ूँ नहीं, क्योंकि मुझे उस विपत्ति का खेद है जो मैंने तुम पर डाली है। बाबेल के राजा से मत डरो, जिससे तुम डरते हो; उससे मत डरो, यहोवा की यही बात है, क्योंकि मैं तुम्हें बचाने और उसके हाथ से छुड़ाने के लिए तुम्हारे साथ हूँ। और मैं तुम पर दया दिखाऊँगा: वह, बेबिलोन का राजा, तुम्हें दण्ड नहीं देगा और तुम्हें अपनी भूमि में रहने देगा। परन्तु यदि तुम कहो, 'हम इस देश में नहीं रहना चाहते' और यहोवा अपने परमेश्वर की बात न मानो, यह कहते हुए: 'नहीं, हम मिस्र के देश में जाएँगे, जहाँ न तो हम युद्ध देखेंगे, न तुरही का शब्द सुनेंगे, और न अकाल झेलेंगे; और वहाँ हम रहेंगे', तो अब यहोवा का वचन सुनो, हे यहूदा के अवशेष; सेनाओं का यहोवा, इस्राएल का परमेश्वर, इस प्रकार कहता है: यदि तुम अपना मन दृढ़ करके मिस्र जाने और वहाँ बसने पर लगाओ, तो जिस तलवार का तुम डरते हो, वह तुम्हें वहाँ मिस्र की भूमि में पकड़ लेगी, और जिस अकाल से तुम भयभीत हो, वह तुम्हारा पीछा करेगा; वहाँ मिस्र में ही तुम मर जाओगे। और जो कोई भी मिस्र जाकर वहाँ बसने का मुँह मोड़ेगा, वह तलवार, अकाल और महामारी से मर जाएगा; उनमें से एक भी न बचेगा और न ही उस विपत्ति से बच पाएगा जो मैं उन पर लाऊँगा। क्योंकि इस्राएल का परमेश्वर यहोवा यों कहता है: जैसे मेरा क्रोध और मेरा प्रचंड क्रोध यरूशलेम के निवासियों पर उड़ेल दिया गया था, वैसे ही मेरा प्रचंड क्रोध तुम पर भी उड़ेल दिया जाएगा जब तुम मिस्र में प्रवेश करोगे; और तुम एक श्राप, एक भय, एक अपमान और एक उपहास बन जाओगे, और तुम यह स्थान फिर कभी नहीं देखोगे। तुम्हें, यहूदा के अवशेष को, यहोवा ने यह कहा है: 'मिस्र में न उतर जाओ; पर यह निश्चय जान लो कि मैं ने तुम्हें चेतावनी दी है! – अपने ही विरुद्ध पाप न करो : तुमने मुझे यहोवा परमेश्वर के पास भेजा था, यह कहते हुए कि तुम वही करोगे जो वह तुम्हें बताएगा; और अब मैं ने परमेश्वर की इच्छा तुम्हें बता दी है। – 'इसलिए जान लो कि तुम उसी तलवार, अकाल और महामारियों से मरोगे, जिनके लिए तुम जा रहे हो, यह सोचकर कि वहाँ तुम भरपूर और शान्ति में रहोगे' (यर. 42:2–22)।

यह भविष्यसूचक संबोधन उन हृदयों पर वांछित प्रभाव डालने में विफल रहा जो अनियंत्रित आत्म-इच्छा के विष में डूबे हुए थे। होशायाह के पुत्र अजर्याह, कारीयाह के पुत्र योहानान और अन्य अभिमानी लोगों ने यिर्मयाह से कहा: 'तुम झूठ बोल रहे हो; तुम्हें यह कहने के लिए यहोवा ने नहीं भेजा है कि, "मिस्र में न जाना", बल्कि बिरुक्या का पुत्र बरोख हमें तुम्हारे विरुद्ध उकसा रहा है कि हमें खलदीयियों के हाथ में सौंप दे, ताकि वे या तो हमें मार डालें या हमें बबेल में बंदी बनाकर ले जाएँ' (यर. 43:1-3)।

तथापि इन द्रोही लोगों ने यहोवा के वचन पर ध्यान देने से इनकार कर दिया कि वे यहूदा देश में ही रहकर बसें। योहानान और उसके लोग, यहूदा के बचे हुए सभी लोगों के साथ, अपने परिवारों और सामान को इकट्ठा करके मिस्र के लिए रवाना हो गए, और उन्होंने भविष्यवक्ता यिर्मयाह और उनके वफादार लिपिकि बारूक को भी जबरदस्ती अपने साथ ले लिया।

मिस्र की भूमि में पहुँचने पर, वे ताफ्नेस नगर में बस गए, जहाँ भविष्यवक्ता मूसा ने एक बार फिरौन के सामने चमत्कारिक चिह्न दिखाए थे। वहाँ, अपने उन देशवासियों के बीच जो अपनी मर्जी से वहाँ बसे थे, यिर्मयाह चार साल तक रहा, और उसे मिस्रिवासियों से अपने धर्मी जीवन और उनके लिए किए गए अच्छे कामों के कारण बहुत सम्मान मिला, जिसमें उसने अपनी प्रार्थनाओं के द्वारा विषैले साँपों और मगरमच्छों को मार गिराया था। वहीं उसकी मृत्यु हुई और उसे दफनाया गया।

पवित्र पैगंबर की मृत्यु एक शहीद की मृत्यु थी।

ताफनेस में, यहोवा का वचन यिर्मयाह के पास आया:

'अपने हाथों में बड़े-बड़े पत्थर ले जा और ताफ्नसि में फिरौन के घर के द्वार पर कीचड़ में छिपा दे, यहूदियों की आँखों के सामने, और उनसे कह: सेनाओं का यहोवा, इस्राएल का परमेश्वर, इस प्रकार कहता है: 'देखो, मैं बबेल का राजा, मेरा दास नबूकदनेसर को बुलाकर लाऊँगा, और मैं उसका सिंहासन इन पत्थरों पर स्थापित करूँगा जिन्हें मैंने छिपाया है; और वह अपना भव्य तम्बू उस पर तानेगा; और वह आकर मिस्र की भूमि को मारेंगे: जो मृत्यु के लिए ठहराए गए हैं, वे मार डाले जाएँगे, जो बंदी बनने के लिए ठहराए गए हैं, वे बंदी बनाए जाएँगे, और जो तलवार के लिए ठहराए गए हैं, वे तलवार से गिरेंगे (यिर्मयाह 43:8–11)। और तलवार से बच निकले यहूदियों में से केवल थोड़ी संख्या ही मिस्र के देश से यहूदा के देश में लौटेगी, और मिस्र के देश में रहने आए शेष यहूदी जान जाएंगे कि किसिका वचन सच होगा: मेरा या उनका। 'और यह तुम्हारे लिए एक चिह्न है,' यहोवा कहता है, 'कि मैं तुम्हें इसी स्थान पर दण्ड दूँगा, ताकि तुम जान लो कि मेरे वचन तुम्हारे

वषिय में तुम्हारी वनिाश के लिए सत्य होंगे; देखो, मैं मस्रि के फरिौन को उसके शत्रुओं के हाथ में सौंप दूँगा, ठीक वैसे ही जैसे मैंने यहूदा के राजा सदिकयि्याह को सौंपा था' (यरि्म. 44:28–30)।

यरमयिाह के शब्दों से यहूदयिों का क्रोध चरम पर पहुँच गया, और उन्होंने अंततःपरमेश्वर के उस भवषि्यवक्ता को पत्थर मार दयिा, जसिने नडिर होकर उन्हें सत्य बताया था! पवत्रि भवषि्यवक्ता की मृत्यु के वर्ष में, बेबीलोन का राजा मस्रि आया, मस्रि की सेना को हराया और फरिौन वाफ्रि को मार डाला; उसी समय, वहाँ बसे इस्राएल के पुत्रों का भी संहार कर दयिा गया।

कई वर्षों बाद, मैसेडोनयिा के महान अलेक्जेंडर द्वारा पवत्रि भवषि्यवक्ता यरि्मयाह की अवशेषों को[3328] उस अलेक्जेंड्रयिा शहर में स्थानांतरति कर दयिा गया था, जसिकी उन्होंने स्थापना की थी, और उन्हें टेट्रापाइल नामक स्थान पर दफनाया गया, जसिे अलेक्जेंड्रयिाई लोग बहुत सम्मान देते थे। रानी हेलेना ने यरूशलेम में उसी स्थान पर एक इमारत का नरि्माण कयिा जहाँ यरि्मयाह को कीचड़ की खाई में फेंका गया था।

संत यरि्मयाह ने प्रभु यीशु मसीह के दुख के वषिय में भी भवषि्यवाणी की, और स्वयं में उनके एक रहस्यमय पूर्वाभास को मूर्त रूप दयिा, 'वध के लिए ले जाया जाने वाला कोमल मेमना' (यरि्म. 2:19; तुलना करें यशा. 53:7)। संत एपफिानयिस द्वारा दर्ज की गई एक परंपरा के अनुसार, भवषि्यवक्ता यरि्मयाह ने सभी मस्रि की मूर्तयिों के पतन और वनिाश की भवषि्यवाणी तब की थी, जब कुँवारी—गुफा में जन्मी और ת בן में रखी गई शशिु सहति माँ—मस्रि आएँगी; – एक भवषि्यवाणी जसिे मस्रिवासयिों द्वारा एक युवती को सोफे पर लेटे हुए, उसके बगल में पालने में लपेटे हुए एक शशिु के साथ चत्रिति करने और ऐसी मूर्तकिो श्रद्धांजलदिेने की प्रथा का आधार माना जाता है। यह भी बताया जाता है कि, जब राजा टॉलेमी ने मस्रि के पुरोहतिों से पूछा कि ऐसी मूर्तकिी पूजा क्यों की जाती है, तो उन्होंने उत्तर दयिा कि यह एक रहस्य था जसिकी भवषि्यवाणी एक पवत्रि नबी ने उनके प्राचीन पूर्वजों से की थी, और वे इस रहस्य के पूर्ण होने की प्रतीक्षा कर रहे थे।

पवत्रि भवषि्यवक्ता यरि्मयाह की मृत्यु को कई वर्ष बीत चुके थे: खलदीययिों द्वारा बंदी बनाए गए यहूदी अपने मूल देश लौट आए थे; यरूशलेम में प्रभु का एक नया मंदरि बनाया गया था, और यहूदयिा में, यथासंभव, धार्मकि और नागरकि दोनों जीवन में व्यवस्था बहाल कर दी गई थी . लेकनि उन दनिों यहूदयिों को अब राजनीतकि स्वतंत्रता प्राप्त नहीं थी और वे बारी-बारी से सीरयिाई, मस्रियिों और मैसेडोनयिाई लोगों के अधीन थे; वे कनानी जनजातयिों और आंतरकि संघर्ष और कलह दोनों से कठनिाइयों को झेल रहे थे।

ऐसा हुआ कि एक बार, जब वशि्वासघाती सीरयिाई कमांडर नकिानोर—जन्हिोंने यहूदी लोगों को बहुत नुकसान पहुँचाया था—ने घमंडी अहंकार के साथ हर कीमत पर धार्मकि स्वतंत्रता के उत्साही योद्धा, अपने पूर्वजों के पवत्रि धर्म के प्रबल रक्षक, यहूदा मैकाबयिस को नष्ट करने की कोशशि की, यही यहूदा, जसिने अपने साथयिों को मजबूत ढालों और भालों से नहीं बल्कि अपने दयालु शब्दों और सर्वशक्तमिान की अतीत की चमत्कारी सहायता की याद दलिाकर सशस्त्र कयिा था, ने उन्हें अपने सपने के बारे में बताया; और इस वृत्तांत से उसने उन सभी को प्रसन्न और प्रेरति कयिा (2 मक्काबीस 15:1–11)।

उसका दर्शन इस प्रकार था: उसने ओनयिस को देखा—जो पूर्व महापुजारी, सत्यनष्ठिा और सदाचार के पुरुष थे, जन्हिोंने बचपन से ही सदाचार से संबंधति सभी बातों में उत्साहपूर्वक पारंगत हो गए थे—और उसने देखा कि यह पुरुष, जो रूप में आदरणीय था, अपने हाथ फैलाकर पूरे यहूदी लोगों के लिए प्रार्थना कर रहा था। तब एक और पुरुष प्रकट हुआ, जो सफेद बाल और महमिा से सुसज्जति था, और अद्भुत तथा असाधारण वैभव से घरिा हुआ था। और ओनयिस ने कहा:

'यह वशि्वास में एक भाई है जो लोगों और पवत्रि नगर के लिए प्रार्थना करता है, परमेश्वर का भवषि्यवक्ता यरि्मयाह।'

तब यरि्मयाह ने अपना हाथ बढ़ाकर यहूदा को एक सुनहरी तलवार दी और उसे देते हुए कहा:

'यह पवत्रि तलवार लो; यह ईश्वर की ओर से एक उपहार है, जसिसे तुम अपने शत्रुओं को कुचलोगे' (2 मक्काबीस 15:12–16)।

[3328] सकिंदर महान ने 336 से 323 ईसा पूर्व तक शासन कयिा। वह एक असाधारण वजिेता के रूप में प्रसद्धि हुआ। सकिंदर महान ने 332 ईसा पूर्व में यरूशलेम का दौरा कयिा।

और यहूदा मक्कबाईस के साथियों ने, उनके शब्दों से सांत्वना और प्रोत्साहन पाकर, बहादुरी से युद्ध में कूद पड़े और शत्रुओं को पराजित कर दिया। यहूदा द्वारा अपने सपने का यह वृत्तांत स्पष्ट रूप से इस बात की गवाही देता है कि परमेश्वर के पवित्र सेवक, अपने देह त्यागने के बाद, हमारे लिए परमेश्वर से प्रार्थना करते हैं और हमारी सहायता के लिए आते हैं, ठीक वैसे ही जैसे संत यिर्मयाह ने यहूदा मक्कबाईस को उसके विरोधियों पर विजय प्राप्त करने में मदद की थी। उनकी पवित्र प्रार्थनाएँ भी हमारे प्रभु और उद्धारकर्ता यीशु मसीह की कृपा और प्रेम द्वारा, हमारे दृश्य और अदृश्य शत्रुओं पर विजय पाने में हमारी सहायता करें, जिनके लिए पिता और पवित्र आत्मा के साथ, युगानुयुग महिमा हो। आमीन।

कॉन्टाकियन, स्वर 3:

हे महान नबी और शहीद, महिमामय यिर्मयाह, आपने पवित्र आत्मा द्वारा अपने तेजस्वी हृदय को शुद्ध करके, स्वर्गलोक से भविष्यवाणी का वरदान प्राप्त किया और सर्वभूमि में ऊँचे स्वर से पुकार लगाई: 'वही हमारा परमेश्वर है, और उसका कोई सानी नहीं, जिसने देहधारी होकर पृथ्वी पर प्रकट होकर आकर दिखाई दिया।'

हमारे पूजनीय पिता बोरोव्स्क के पाफनुटियस का जीवन[3329]

1 मई को स्मरणोत्सव

आदरणीय पाफनुटियस एक तातार बस्काक के पोते थे। जब, ईश्वर की अनुमति से, तातार ख़ान बटू[3330] अपनी विशाल सेना के साथ आया; तलवार और आग से देश को तबाह करने, नगरों पर कब्ज़ा करने, ईश्वर के गिरिजाघरों को उनके पवित्र अवशेषों सहित नष्ट करने, और रूसी राजकुमारों तथा सरदारों को पेड़ों या अनाज की बालियों की तरह काट डालने के बाद, उसने वहाँ तातार शासकों को स्थापित किया, जिन्हें बास्कक के नाम से जाना जाता था[3331] ।

आदरणीय पाफनुटियस के दादा भी ऐसे ही एक बास्कक थे। टाटारों के खिलाफ एक रूसी विद्रोह के दौरान, पाफनुटियस के दादा को बपतिस्मा लेने के लिए मजबूर किया गया और उन्हें मार्टिन नाम दिया गया। ईश्वर के इस नए अनुयायी, जो अपनी धार्मिकता के लिए प्रसिद्ध थे, के एक पुत्र हुआ जिसका नाम जॉन था, जिसने वयस्क होने पर फोटिनिया नाम की एक युवती से विवाह किया। जॉन और फोटिनिया अपने पैतृक गाँव कुदिनोवो में रहते थे, जो बोरोव्स्क से लगभग चार वर्स्ट दूर था[3332] । इन्हीं धर्मपरायण और परोपकारी दंपतियों के यहाँ लगभग 1395 में श्रद्धेय पाफनुटियस का जन्म हुआ था, जिन्हें उनके पवित्र बपतिस्मा पर पार्टेनियस का नाम दिया गया था। जैसे-जैसे वह शारीरिक रूप से विकसित और बड़ा हुआ, पार्थेनियस आध्यात्मिक रूप से भी विकसित हुआ। अपनी पढ़ाई में, विशेष रूप से पवित्र धर्मग्रंथों को पढ़ने में उत्कृष्टता हासिल करते हुए, उस युवक ने अच्छे चरित्र लक्षणों को भी विकसित किया: नम्रता, दया और पवित्रता। सदाचारी लोगों का अनुकरण करने के लिए उत्सुक, उसने लापरवाह व्यक्तियों की संगत से दृढ़ता से परहेज किया।

[3329] संत पाफनुटियस के बारे में जानकारी शामिल है: 1) उनके शिष्य इनोसेंट द्वारा संतों के अंतिम दिनों के बारे में एक उत्कृष्ट विवरण में, जो 1477 या 1478 में रचा गया था, यानी संतों की मृत्यु के ठीक बाद; 2) संत पाफनुटियस की प्राचीन जीवनी में, जो एक अन्य शिष्य, संत के भाई द्वारा लिखी गई थी जोसेफ ऑफ वोल्कोलामस्क, वासियन सानिन द्वारा 1500 और 1515 के बीच, जब वासियन मॉस्को के पास साइमनोव मठ के आर्चिमांड्राइट (1502 से 1506 तक) या रोस्तोव के आर्चबिशप (1506 से 1515 तक) थे; 3) वोलोकलाम के संत जोसेफ के भतीजे और उनके मठ के एक भिक्षु, डोसिथियस टोपोरकोव की संस्मरणों में; 4) वोलोकलाम के संत जोसेफ की अंतिम इच्छा और वसीयत और कुछ अन्य दस्तावेजों में; और अंत में, 5) वृत्तांतों में।

[3330] तातार खान बटू द्वारा रूसी पर आक्रमण 1237–1238 और 1240 में हुआ था।

[3331] रूसी में अनुवादित, इस शब्द का अर्थ 'उत्पीड़क' है। बास्ककों के प्रत्यक्ष कर्तव्य आबादी की जनगणना करना और कर एकत्र करना था। हालाँकि, वास्तव में, ये tatar अधिकारी, जो रूसी राजकुमारों और सैन्य कमांडरों से ऊपर थे, रूस के पूर्ण स्वामी थे। एक सेना और विभिन्न छोटे-मोटे टाटार अधिकारियों के साथ, उन्होंने विजित रूस के आंतरिक मामलों की भी देखरेख की: उन्होंने राजकुमारों के आचरण की निगरानी की, उनके पारस्परिक संबंधों में गहराई से जाँच की, उनके विवादों को सुलझाया और, सबसे बढ़कर, टाटार खान के साथ उनके संबंधों पर नजर रखी। वे 1240 में कीव पर कब्ज़ा होने के तुरंत बाद रस में दिखाई दिए।

[3332] बोरोव्स्क अब कलुगा गवर्नरेट में एक जिला शहर है। कुदिनोवो गाँव के स्थान पर अब एक चैपल खड़ा है।

जब पार्टेनयिस बीस वर्ष के हुए, तो उन्होंने अपने पिता का घर, अपने माता-पिता, रिश्तेदारों और दोस्तों का स्नेहपूर्ण प्यार त्याग दिया; उन्होंने सभी सांसारिक चीजों का त्याग कर दिया और बोरोव्स्क शहर के पास स्थित विसोकी पोक्रोव्स्की मठ में प्रवेश किया[3333] । इस मठ के मठाधीश मार्केल से, पार्थेनयिस ने पफनुटियस नाम से अपना संन्यासी मुंडन प्राप्त किया और उन्हें सम्माननीय सर्गियस के पूर्व शिष्य, वृद्ध संन्यासी पुरोहित निकिता के मार्गदर्शन में रखा गया[3334] । सात वर्षों तक, सम्माननीय पफनुटियस ने उस धर्मपरायण वृद्ध के अधीन सेवा की और उनसे संन्यासी सद्गुण सीखे। उन्होंने मठवासी समुदाय का सर्वसाधारण स्नेह और सम्मान अर्जित किया। जब मठाध्यक्ष मार्केल का निधन हो गया, तो मठवासी समुदाय और बोरोव्स्क के राजकुमार सिमियन व्लादिमीरोविच की लंबी और लगातार अनुरोधों के बाद, आदरणीय पाफनुटियस को विसोकाया मठ का मठाध्यक्ष चुना गया। उन्होंने सर्व-रूस के मेट्रोपॉलिटन, संत फोटियस[3335] के हाथों से अभिषेक प्राप्त किया।

नए मठाधीश ने एक भिक्षु के तपस्वी प्रयासों को मसीह के आध्यात्मिक झुंड के एक दयालु और कुशल चरवाहे और उनके सतर्क रक्षक की देखभाल के साथ जोड़ा। अपने जीवन में, उन्होंने अपने झुंड के लिए एक उदाहरण स्थापित किया। उन्होंने प्रभु के लिए दिन-रात अथक परिश्रम किया। उन्होंने अपने दिन मठ के कर्तव्यों का पालन करने में बिताए; उनकी रातें प्रार्थना के लिए समर्पित थीं।

प्रभु ने अपने वफादार सेवक को विवेक, सूझबूझ, अद्भुत प्रकटवाणियों और पवित्र आत्मा के अन्य उपहारों से संपन्न किया। सर्वज्ञ ईश्वर ने आदरणीय पाफनुटियस को यह क्षमता प्रदान की कि वे किसी व्यक्ति के चेहरे और दृष्टि से उनकी छिपी हुई इच्छाओं और आत्मा की कमजोरियों को पहचान सकें, साथ ही वे संत को उनकी नींद में अन्य बातें भी प्रकट करते थे।

यहाँ एक कहानी है जो इन दोनों बातों की स्पष्ट रूप से पुष्टि करती है। एक भाई, जिसे मठ की ज़रूरतों के लिए एक गाँव भेजा गया था, वहाँ देहगत पाप में पड़ गया। उसके गिरने की रात, संत ने अपने नियमित नियम पूरे करने के बाद, थोड़ी देर के लिए सोने के लिए लेट गए और उन्हें निम्नलिखित सपना आया। आदरणीय फादर ने खूबसूरत फलों के पेड़ों वाले एक अद्भुत बगीचे का सपना देखा। उन्होंने उन्हें आनंद और आश्चर्य भरी दृष्टि से देखा, और वह विशेष रूप से एक पेड़ से मोहित थे, जो अपनी मनमोहक सुंदरता के लिए सबसे अलग था। अचानक, उनकी आँखों के सामने ही, यह पेड़ उखड़ गया और जमीन पर गिर पड़ा। आदरणीय संत, अन्य पेड़ों की सुंदरता को भूलकर, उस सुंदर पेड़ के अचानक गिरने से बहुत दुखी हुए। वे उसके पास गए, उसे उठाया और वापस उसकी मूल जगह पर लगा दिया। पेड़ को मुरझाने से बचाने के लिए, उन्होंने उसके चारों ओर खाद का ढेर लगाया और उसके चारों ओर की मिट्टी को दबा दिया। उखड़े हुए पेड़ को स्थिर करने के लिए संत को बहुत प्रयास करना पड़ा।

जागने पर, उन्होंने उस दृष्टि का अर्थ समझ लिया और वे बहुत दुखी हुए। सुंदर बगीचा उनके मठ का प्रतीक था। सुंदर फलदार पेड़ उनके भाई थे। हालाँकि, उखड़ा हुआ और गिरा हुआ पेड़ एक पतित भाई का प्रतीक था, जिसे उसके उचित स्थान पर बहाल करने और पुनर्स्थापित करने के लिए मठाधीश से विशेष प्रयास की आवश्यकता थी। जब पापी ने आज्ञाकारिता का अपना कार्य पूरा कर मठ में लौटकर अपने मठाधीश के सामने उपस्थिति हुआ, तो उसने उनके सामने अपने पाप का पश्चाताप करते हुए घबरा गया और शर्म से उसका चेहरा लाल हो गया। रेवरेन्ड ने उस भाई से पूछा कि क्या रास्ते में उसे कोई दुखद घटना घटी थी। पतनशील भिक्षु को और भी अधिक शर्म महसूस हुई; उसने अपने पाप का इ इक़रार करने की हिम्मत नहीं की; वह उसकी आँखों में देख भी नहीं सका। अपने शिष्य की पीड़ा को देखकर, संत ने उसे अपना सपना सुनाया और, एक कुशल आध्यात्मिक चिकित्सक की तरह, इस बात पर ज़ोर दिया कि वह अपनी आत्मा के

[3333] विशोकी-पोक्रोव्स्की मठ बोरोव्स्क से एक वर्स्ट दूर प्रोट्वा नदी पर स्थित था। इसकी स्थापना 1410 में हुई थी। 1618 में, मठ को बोरोव्स्क के पाफनुटिव मठ से जोड़ दिया गया; 1764 में, इसे समाप्त कर दिया गया। इसे अपने स्थान के कारण 'विसोकी' नाम मिला: यह क्षेत्र आसपास के पूरे ग्रामीण इलाकों पर नजर रखता है। आज, इस मठ के स्थान पर उपनगरीय बस्ती विसोत्सकाया स्थित है।

[3334] आदरणीय निकिता 1395 से आदरणीय अथानासियस द यंगर के उत्तराधिकारी बनकर, विसोत्स्की सेरपुखोव्स्की मठ के मठाधीश थे। मठ का 19 वर्षों तक नेतृत्व करने के बाद, वृद्धावस्था और आँखों की बीमारी से पीड़ित होकर, आदरणीय निकिता ने विसोकी बोरोव्स्क मठ में सात वर्ष तक संन्यास में बिताए। इस मठ को छोड़कर (लगभग 1421), आदरणीय निकिता उत्तर की ओर गए और कोस्त्रोमा में एपिफेनी मठ की स्थापना की (लगभग 1426), जो आज भी मौजूद है (1864 से, यह एक मठ-निवेश है)। यहीं पर इस तपस्वी का निधन हुआ और उन्हें दफनाया गया।

[3335] बोरोव्स्क के राजकुमार सिमियन, सर्पुखोव के व्लादिमीर आंद्रेविच के पुत्र थे; वह 1426 में सव्वा नामक एक भिक्षु के रूप में प्लेग से मर गए और उन्हें ट्रिनिटी-सर्गीय मठ में दफनाया गया। – सेंट मेट्रोपॉलिटन फोतिउस (जिनका पर्व 2 जुलाई को मनाया जाता है) ने 1408 से 1431 तक रूसी चर्च का शासन किया। इससे यह पता चलता है कि आदरणीय पाफनुटियस 1426 तक मठाधीश बन गए थे।

भीतरी घाव को उसके सामने उजागर करे। मठाधीश के बहुत मनाने के बाद, पापी भिक्षु ने पश्चाताप किया। काफी समय तक, रेवरेंड फादर ने उसके आत्मा के घाव के लिए उपयुक्त आध्यात्मिक उपचार प्रदान किया; उन्होंने निराशा की ओर झुके हुए उसे ईश्वर की दया की आशा से सांत्वना दी, और अंततः पापी को पूर्ण पश्चाताप की ओर ले गए। इस प्रकार रेवरेंड फादर ने अपने भाइयों की देखभाल की: एक कुशल चिकित्सक की तरह, उन्होंने उनकी आध्यात्मिक कमजोरियों को ठीक किया; एक अच्छे चरवाहे की तरह, उन्होंने भेड़िये के जबड़ों से एक भेड़ को छीन लिया और उसे अपने कंधों पर उठा लिया; और एक मजबूत व्यक्ति की तरह, उन्होंने दुर्बल लोगों की कमजोरियों को उठाया।

आदरणीय पाफनुटियस ने तेरह वर्षों तक विसोकोए मठ के मठाध्यक्ष के रूप में सेवा की। इसके बाद वह लंबे समय तक गंभीर रूप से बीमार पड़ गए और बीमारी के दौरान उन्होंने स्कीमा ग्रहण किया।

स्वस्थ होने पर, उन्होंने मठाध्यक्ष का पद त्याग दिया और एक भाई के साथ बोरोव्स्क से तीन वर्स्ट दूर, दो नदियों के किनारे घने जंगल से घिरी एक ऊँची, बहुत खूबसूरत जगह पर चले गए[3336] । यह स्थान बोरोव्स्क क्षेत्र का नहीं, बल्कि सुखोदोल क्षेत्र का था। आदरणीय पाफनुटियस लगभग 1440 में इस नए स्थान पर बस गए। यहाँ भिक्षु उनके पास आने लगे, उन्होंने उनकी आज्ञा से अपनी कुटियाएँ बनाईं और उनके उद्धारकारी मार्गदर्शन में रहे। मठ बढ़ा, और भिक्षुओं की संख्या बढ़ गई। भिक्षुओं ने अपने आध्यात्मिक पिता से एक चर्च बनाने की अनुमति मांगी। और चूंकि आदरणीय पवित्र व्यक्ति ने उन्हें मना नहीं किया, उन्होंने परमेश्वर की अति पवित्र माता के जन्म के सम्मान में एक लकड़ी का चर्च बनाया। इस चर्च को मॉस्को के मेट्रोपॉलिटन, संत योना के आदेश से समर्पित किया गया था।

यह कहना चाहिए कि संत ने, एक विनम्र स्कीमा-भिक्षु के रूप में, अपने नए मठ में लिटिर्जी का अनुष्ठान नहीं किया। केवल एक बार, अपने निधन से ठीक पहले, मसीह के गौरवमय पुनरुत्थान के दिन, जब बड़ी रकम देने पर भी कोई पुरोहित नहीं मिला, तब उन्होंने बड़ी भक्ति और भावना के साथ लिटिर्जी का अनुष्ठान किया। 'अब मेरी आत्मा मुश्किल से मुझमें बची है,' उन्होंने इसे मनाने के बाद अपने शिष्यों से कहा।

शैतान, जो अच्छाई से नफरत करता है, ने कुछ लोगों को पूजनीय संत को परेशान करने और उनके नव-स्थापित मठ को नुकसान पहुँचाने के लिए उकसाया। लेकिन पूजनीय संत ने अच्छाई से बुराई पर विजय प्राप्त की और अपने धैर्य से सभी पर जीत हासिल की।

जो आदरणीय पाफनुटियस के लिए परेशानी का कारण बना, वह उस समय के बोरोव्स्क के राजकुमार, वासिली यारोस्लाविच थे, जिन्हें[3337] के नाम से जाना जाता था। संत द्वारा त्यागे गए विसोकाया बोरोवस्काया मठ के पतन और गरीबी, और साथ ही उनके साम्राज्य के बाहर स्थित नए मठ की समृद्धि और वृद्धि को देखकर, राजकुमार वासिली को संत पर बहुत क्रोध आया और उन्होंने माननीय को वहां से भगाने के तरीके सोचे। लेकिन चूँकि वह किसी दूसरे के राज्य में खुले तौर पर ऐसा नहीं कर सकता था, इसलिए उसने उस तपस्वी को गुप्त रूप से सताना शुरू कर दिया। कई मौकों पर, उसने अपने हिंसक नौकरों को उस मठ में, जिससे वह नफरत करता था, चारों ओर से आग लगाने के लिए भेजा। और हर बार, जब वे माननीय पाफनुटियस और उनके शिष्यों को काम करते हुए देखते, तो नौकर खाली हाथ अपने राजकुमार के पास लौट आते थे। बोरोव्स्क के राजकुमार के नौकरों में एरमोलाई नाम का एक नव-बपतिस्मा प्राप्त टाटार था। जब राजकुमार वासिली ने उसे पूज्य पिता के मठ में आग लगाने का आदेश दिया, तो इस बर्बर व्यक्ति ने खुशी-खुशी आज्ञा मानने में जल्दबाजी की। पूज्य पिता ने, उस टाटार से मिलते ही, उसे स्नेहपूर्वक नाम से संबोधित किया और पूछा कि वह क्यों आया है। संत के इस दयालु व्यवहार ने तुरंत यरमोलाई के पशु-सदृश स्वभाव को बदल दिया। उसने अपने बुरे इरादे पर पश्चाताप किया और स्पष्ट रूप से बताया कि उसे क्यों भेजा गया था। फिर, क्षमा और आशीर्वाद मांगने के बाद, वह संत के मठ को कोई नुकसान पहुँचाए बिना चला गया।

उस समय, ईश्वर की अनुमति से, अधर्मी ज़ार मामोट्यक[3338] ने तातारों के एक विशाल दल के साथ अचानक रूस पर आक्रमण कर दिया। ग्रैंड प्रिंस वासिली वासिलीविच[3339] और अन्य रूसी राजकुमारों ने, समय पर पर्याप्त सेना इकट्ठा

[3336] पाफनुती-नटविटी-ऑफ-द-थियोटोकोस मठ इस्ट्रेमा और प्रोट्वा नदियों के संगम पर स्थित है।

[3337] बोरोव्स्क के राजकुमार वासिली यारोस्लाविच, राजकुमार यारोस्लाव (अफानासी) व्लादिमीरोविच के पुत्र, का 1483 में निधन हो गया।

[3338] मामोत्याक – गोल्डन हॉर्ड के खान, मगोमेत, और कज़ान के ज़ार का पुत्र। यहाँ उल्लेखित आक्रमण 1445 में हुआ था। यह घटनाओं का क्रम है जैसा कि सेंट पाफनुटियस की प्राचीन संजीवनी में वर्णित है। हालाँकि, यह घटना चर्च के अभिषेक (लगभग 1448) और मठ के आधिकारिक उद्घाटन से पहले हुई थी।

[3339] महान राजकुमार वासिली द्वितीय वासिलीविच अंधा ने 1425 से 1462 तक शासन किया।

करने में वफिल रहने के कारण, सुज़दल[3340] के पास अधर्मी ततारों का सामना कयिा। एक युद्ध छड़ि गया, जसिमें तातारों ने रूसी सेना को पराजति कर दयिा और ग्रैंड प्रंसि सहति कई लोगों को बंदी बना लयिा। बंदयिों में बोरोव्स्क के राजकुमार वासलिी यारोस्लावचि भी थे, जो पूजनीय व्यक्तकि साथ ववािद में थे। बंधकत्व में रहते हुए, राजकुमार ने परम पूज्य पाफनुटयिस के प्रतअिपनी पापी द्वेषपूर्ण भावना पर पश्चाताप कयिा और परम पूज्य की मध्यस्थता से अपनी रहिाई के लिए ईश्वर से प्रार्थना की। इस बीच, क्षमाशील तपस्वी ने भी राजकुमार की रहिाई के लिए गहरी प्रार्थना की। उस ईश्वर-पुरुष की प्रार्थना स्वीकार हुई: राजकुमार वासलिी बनिा कसिी चोट के कैद से भाग नकिले। अपने देश लौटने पर, वह तुरंत उस व्यक्तकि मठ में गए जन्हिोंने उनके लिए प्रार्थना की थी और उनसे क्षमा और आशीर्वाद प्राप्त कयिा। तब से, राजकुमार ने परम पूज्य पाफनुटयिस का अत्यधकि सम्मान कयिा।

आदरणीय संत न केवल अपमान के सामने द्वेष से मुक्त थे, बल्कअिावश्यकता के समय में असाधारण रूप से धैर्यवान भी थे, और वे हमेशा अटूट वश्विास के साथ ईश्वर की सहायता में वश्विास करते थे। एक बार, जब ईस्टर का पर्व नकिट आ रहा था, तो मठ में एक भी मछली नहीं मलिी। इस बात से भाइयों और मठ के सेवकों को बहुत दुख हुआ और उन्होंने संत के खलिाफ शकिायत भी की।

'भाइयो, इस पर शोक मत करो, और ईश्वर को क्रोधति मत करो,' पूजनीय पति ने उनसे कहा, 'सर्व-दयालु प्रभु, जन्हिोंने हमें बनाया और अपने मृतकों में से जी उठने द्वारा संपूर्ण जगत को प्रकाशति कयिा, वे हमारे दुख में हमें, अपने सेवकों को, सांत्वना देंगे और जो उनका भय मानते हैं, उन पर अपनी कृपा की वर्षा करेंगे।'

सर्व-सत्कार्यकारी और सर्व-ज्ञानी प्रदाता में ऐसी आशा को अपना अद्भुत फल देने में अधकि समय नहीं लगा। महान शनचिर की संध्या को, उज्ज्वल रात्रसि ठीक पहले, सेxton पूजा के लिए पानी भरने हेतु एक छोटे से झरने पर गया और उसने मछलयिों की एक अनगनित भीड़ देखी, जन्हिें स्थानीय बोली में 'सझिकी' कहा जाता है, जो हेरगि से थोड़ी बड़ी होती हैं। उस समय पानी बाढ़ के रूप में बह रहा था, और पहले से कहीं ज़्यादा पानी था। सेxton जल्दी से यह बात संत को बताने गया। आदरणीय संत ने ईश्वर की स्तुतकि की और मछली पकड़ने वालों को अपना जाल डालने का आदेश दयिा। और उन्होंने इन मछलयिों का इतना बड़ा झुंड पकड़ा कपिूरे पवत्रि सप्ताह के लिए, दोपहर और रात के खाने दोनों के लिए, पूरे मठ के लिए पर्याप्त हो गया।

आदरणीय पाफनुटयिस के महान कार्यों की खबर दूर-दूर तक फैल गई, जसिसे मठ की भक्तकि और भी अधकि भक्त उनके पवत्रि मठ में आने लगे। उनमें कई उच्चतम सद्गुण वाले लोग थे। उदाहरण के लिए, ऐसे थे आदरणीय जोसेफ, जनिका संन्यास ग्रहण स्वयं संत ने कराया था और जो बाद में वोल्कोलामस्क मठ के संस्थापक बने; वृद्ध इनोसेंट; इसायाह, जन्हिें 'काला' के नाम से जाना जाता था, जो आदरणीय संत के एक रश्तिेदार थे; वासयिन, उनके जीवनचरति के लेखक, जो बाद में रोस्तोव के आर्चबशिप बने; और अन्य।

आदरणीय पतिाजी आध्यात्मकि संघर्ष के लिए तैयार एक तपस्वी का जीवंत उदाहरण थे। वे बहुत कठोर उपवास करते थे: वे सोमवार और शुक्रवार को कुछ नहीं खाते थे; बुधवार को वे केवल सूखा भोजन ही करते थे; और शेष दनिों में वे सामूहकि भोजन में बहुत संयम से खाते थे। 'उनका भोजन,' आदरणीय पतिाजी के शष्यि के अनुसार, 'भ्राताओं की संतुष्टि था।'

उसने अपने लिए भोजन में और आराम की सभी बातों में सबसे बुरा ही चुना। उसके कपड़े—भेड़ की खाल से बना एक लबादा और एक ट्यूनकि—और उसके जूते एक भखिारी के लिए भी उपयुक्त नहीं थे। पूजनीय पाफनुटयिस का पूरा जीवन अनवरत परश्रिम, तपस्या, कष्ट और प्रार्थना का था। सामूहकि प्रार्थना सेवा हो या काम, कोई भी उससे पहले नहीं पहुँचता था। वह सबसे कठनि कार्यों को उत्साहपूर्वक करता था: वह लकड़ियाँ काटता और ढोता था, जमीन खोदता था और बगीचे में पौधों को पानी देता था। सर्दयिों में, वह खुद को मछली पकड़ने के जालों को पढ़ने और ठीक करने में समर्पति कर देता था। आलस्य का एक स्थायी शत्रु, वह तपस्वी अपनी माँ के गर्भ से ही ब्रह्मचर्य का एक वफादार और नर्दिोष मत्रि था। ब्रह्मचर्य के नाम पर, वह कसिी को भी अपने शरीर को छूने की अनुमतनिहीं देता था; उसने न केवल महलिाओं को मठ में प्रवेश करने से रोका, बल्कवि उन्हें दूर से देखना भी पसंद नहीं करता था; वह महलिाओं को, यहाँ तक ककिुलीन जन्म वाली महलिाओं को भी, अपने मठ के द्वार के पास आने की अनुमतनिहीं देता था, और उसने भाइयों को उनके बारे में कोई भी बातचीत करने से सख्त मनाही कर रखी थी।

[3340] सुज़दाल वर्तमान में व्लादमिीर गवर्नरेट में एक जलिा शहर है।

आदरणीय संन्यासी अपनी शिक्षण क्षमता के लिए प्रसिद्ध थे। वे भिक्षुओं और गृहस्थों दोनों के साथ सहजता से बातचीत करते थे। उनकी वाणी हमेशा सरल और सुखद होती थी। यह तपस्वी चापलूसी से कोसों दूर थे - उन्होंने कभी भी अपने संवाददाता की चापलूसी नहीं की; वह किसी राजकुमार या बोयार (अमीर) की उपस्थिति से डरता नहीं था, और न ही उसने अमीरों से मिले उपहारों के सामने अपना रुख नरम किया, बल्कि वह हमेशा परमेश्वर के कानून और उसकी पवित्र आज्ञाओं के अनुसार सत्य बोलता था। वह आम लोगों से भी इसी तरह बात करता था, उन्हें 'भाई' कहकर संबोधित करता था, और कोई भी उसकी संगत से दुखी होकर नहीं जाता था। कई लोगों के लिए, यहाँ हृदय के वे रहस्य प्रकट हुए जो पहले अप्राप्य थे।

परम पूज्य पाफनुटियस के कुछ प्रवचन, वोलोकलामस्क के परम पूज्य जोसेफ के भतीजे, एल्डर डोसिथियस टोपोरकोव द्वारा दर्ज किए गए थे। हम यहाँ उनका सार प्रस्तुत करेंगे।

तपस्वी ने भाइयों को 1327 की महान विपत्ति के बारे में बताया। तब प्रभु का क्रोध लोगों के पापों के कारण रूसी भूमि पर पड़ा था, और नगरों तथा गांवों में महान शोक छा गया था। किसी व्यक्ति के शरीर पर एक फोड़ा निकल आता था, और तीन दिनों के भीतर उसकी मृत्यु हो जाती थी। कई लोग बिना सहायता के मर गए: बीमारों की मदद करने के लिए कोई नहीं बचा था, क्योंकि हर किसी के पास अपने मृतकों को दफ़नाने और शोक मनाने का काम था। लोगों पर भय और आतंक छा गया। ईश्वर-भयभीत धर्मपरायण लोगों ने पश्चाताप किया, संन्यास की शपथ ली और शांतिपूर्वक प्रभु के पास चले गए। लेकिन अन्य, निर्दयी, या तो ईश्वर के क्रोध से बेखौफ या खुद को भूलना चाहकर, अपनी निराशा में, , भयानक शराबखोरी में लिप्त हो गए और तब भी पिए जब वे पहले से ही बीमार थे; कुछ वहीं अपने दावत करने वाले दोस्तों के बीच मर गए, जबकि अन्य ने मृतक को एक तरफ धकेल दिया, यह सोचकर कि उसने शराब पीकर अपनी जान दे दी है। इस महामारी के दौरान कई लोग मर गए; मृतकों का सामान पड़ा हुआ रह गया, और कोई भी उसे लेना नहीं चाहता था: जो बच गए थे, उन्होंने केवल सोना और चाँदी ही ली।

रेवरेंड ने अपने श्रोताओं से दान-पुण्य, जो गुणों की रानी है, का अभ्यास करने का पुरजोर आग्रह किया। उन्होंने उन परोपकारी लोगों के उदाहरण दिए जिन्हें मृत्यु के बाद पुरस्कृत किया गया था: मॉस्को के ग्रैंड प्रिंस, इओआन दानिलोविच कलाइटा[3341] , जो बिना इनकार के गरीबों को दान देते थे; और एक निश्चित मुसलमान जिसे प्रभु ने, उसकी प्रचुर दानशीलता के कारण, नरक की यातनाओं से मुक्त कर दिया। 'एक दान का एक कार्य किसी व्यक्ति को बचा सकता है, बशर्ते कि वे एक धार्मिक जीवन जिएं,' रेवरेंड फादर ने कहा।

एक परोपकारी व्यक्ति का निधन हो गया, जबकि दूसरे को मृत्यु के बाद अपनी नियति के बारे में एक प्रकटवाणी प्राप्त हुई। मृतक को आग की एक नदी तक ले जाया गया, और नदी के दूसरी तरफ स्वर्ग था - एक अद्भुत, उज्ज्वल और आनंददायक स्थान, एक सुंदर बगीचा। लेकिन उस व्यक्ति की आत्मा किसी भी तरह से उस भयानक नदी को पार नहीं कर सकी। और इस प्रकार, भिक्षा पाने वाले अनेक भिखारी आए; वे नदी पर एक पुल बनाने के लिए लेट गए, और दानवीर व्यक्ति उस पुल से होकर स्वर्ग में पहुँच गया। इस कहानी में रेवरेंड ने यह जोड़कर कहा कि धर्मात्माओं की आत्माओं को स्वर्गदूत स्वर्ग में ले जाते हैं, लेकिन प्रभु ने हमारी शिक्षा के लिए एक धर्मात्मा की नियति को इस प्रकार प्रकट किया।

जब मठ के भाइयों की संख्या बढ़ गई, तो संत ने उनकी सहायता से एक पत्थर का चर्च बनाया। इसके निर्माण के दौरान, उन्होंने स्वयं एक साधारण मजदूर की तरह परिश्रम किया, और अपने कंधों पर पत्थर, पानी और निर्माण के लिए आवश्यक हर चीज़ ढोई। चर्च का निर्माण पूरा होने पर, रेवरेंड फादर ने इसे प्रतिमाचित्रों से सजाया और इस उद्देश्य के लिए सर्वश्रेष्ठ चित्रकारों को आमंत्रित किया, जिन्होंने इसे 'अत्यंत अद्भुत ढंग से' चित्रित किया। रेवरेंड फादर ने चर्च को प्रतिमाओं, पुस्तकों और हर तरह के चर्च के सामान से सजाया, ताकि धार्मिक वैभव के आदी राजकुमार भी इस पर चकित हो गए।

चूँकि उन्होंने स्वयं एक जीवित चर्च का निर्माण किया, अतः पूजनीय पाफनुटियस को ईश्वर ने अद्भुत अनुग्रह से विभूषित किया, जो चंगा करने, दूरदर्शिता, प्रकट होने और पवित्र आत्मा के अन्य वरदानों में प्रकट हुआ।

यहाँ उस तपस्वी के कुछ चमत्कार दिए गए हैं।

[3341] डोसिथियस का कार्य, जो 1546 से पहले का नहीं लिखा गया था, एक प्रकार का पैट्रिकोन (Paterikon) है - वोलोकलामस्क मठ के सेंट पाफनुटियस, सेंट जोसेफ और अन्य तपस्वियों से सुने गए संक्षिप्त विवरणों की एक श्रृंखला। डोसिथियस संत जोसेफ के लिए प्रशंसा-लेख के भी लेखक हैं। 16 जॉन कलाइता, संत राजकुमार डैनियल अलेक्जेंड्रोविच के पुत्र, 1328 से 1340 तक महा राजकुमार थे।

रेवरेंड फादर द्वारा मठ के चर्च में चित्रि बनाने के लिए आमंत्रित एक कुशल धर्मनरिपेक्ष प्रतमिा-चित्रिकार डायोनसियिस, अपने पैरों की बीमारी के कारण काम नहीं कर पा रहा था। पवित्रि एल्डर ने उससे कहा: 'डायोनसियिस! ईश्वर आपको आशीर्वाद दे; इस पुण्य कार्य को आरंभ करो; प्रभु और परमेश्वर की परम पवित्रि माता आपके पैरों को स्वस्थ कर देंगे।'

प्रतमिा-चित्रिकार ने, पूजनीय के शब्दों पर दृढ़ वशि्वास करते हुए, खुशी-खुशी काम शुरू कर दयिा और ठीक हो गया। पवित्रि पतिा ने इसी डायोनसियिस और अन्य गृहस्थ प्रतमिा-चित्रिकारों को आदेश दयिा कि वे मठ के भीतर मांस न खाएं, बल्कि उसे पास के गाँव में खाएं। कुछ समय तक उन्होंने इस आज्ञा का पालन कयिा। फरि वे भूल गए और अपने रात के खाने के लिए अंडों से भरी मेमने की उबली हुई टांग मठ में ले आए। जब डायोनसियिस ने सबसे पहले उसका स्वाद चखा, तो उसे भरावन में कीड़ों की भरमार मलिी और उसे उस नषिद्धि भोजन को कुत्तों को फेंकने के लिए मजबूर होना पड़ा। अचानक, उसे खुजली का[3342] दौरा पड़ा। एक घंटे के भीतर, डयिोनसियिस का पूरा शरीर मानो एक नरिंतर पपड़ी बन गया था, और वह हलि-डुल नहीं सकता था। तब उस बीमार व्यक्ति ने बनिा कसिी देरी के महाधर्माध्यक्ष को संदेश भेजा, और उनसे अपने पापों का पश्चाताप स्वीकार करने तथा उसे क्षमा करने के लिए कहा। संत ने डायोनसियिस को फरि कभी कोई नषिद्धि कार्य न करने की हदिायत देकर उसे चर्च ले गए, जहाँ पूरा समुदाय इकट्ठा था। सामूहकि प्रार्थना सेवा संपन्न होने के बाद, पादरी ने पानी का आशीर्वाद दयिा और उस बीमार व्यक्ति को अपने पूरे पीड़ति शरीर को उससे धोने का आदेश दयिा। जैसे ही डायोनसियिस ने ऐसा कयिा, वह थोड़ी देर के लिए सो गया। फरि, जागने पर, वह पूरी तरह से स्वस्थ महसूस करने लगा, मानो वह कभी बीमार ही न हुआ हो। उसके छाले मछली की पपड़ी की तरह झड़ गए, और उसने ईश्वर की स्तुति की।

आदरणीय पाफनुटयिस के मठ के चारों ओर एक घना जंगल था, जसिमें कई पक्षी रहते थे। यहाँ काले पंखों वाले कौवे बहुतायत में थे, जो मठ के पास अपने घोंसले बनाते थे। जब वे उन्हें देखते थे, तो आदरणीय व्यक्ति उन पर आश्चर्यचकति होते थे और उन्हें पकड़ने या नुकसान पहुँचाने पर रोक लगा दी थी। इसी बीच, एक दनि शहर के राज्यपाल का बेटा सेंट पाफनुटयिस के मठ के पास से गुज़र रहा था और कावों के झुंड को देखकर उसने अपना धनुष तानाा और उनमें से एक को मार गरिाया। वह युवक प्रसन्न हुआ, लेकनि जल्द ही उसे महसूस हुआ कि उसका सरि, एक तरफ़ मुड़ा हुआ, इतनी अस्वाभावकि स्थति में अचल रह गया था। उसके हृदय में आनंद और आत्मसंतोष की जगह शोक और भय ने ले ली। उसी समय, उस युवक को उस दुर्भाग्य के वास्तवकि कारण का एहसास हुआ जो उस पर आया था, और इसके बाद उसे पश्चाताप हुआ। इन भावनाओं से अभभिूत होकर, वोयोवोद का बेटा संत के पास भागा और उनके पैरों पर गरिकर क्षमा और अपने ठीक होने के लिए प्रभु के समक्ष उनकी पवित्रि प्रार्थना करने का नविेदन करने लगा। तपस्वी ने घंटी बजाने का आदेश दयिा और चर्च में चले गए। घंटी की इस अकस्मात आवाज़ से चकति होकर, भक्षिु जल्दी से चर्च में इकट्ठा हो गए और संत से इस असामान्य घंटी बजाने का कारण पूछा। पूजनीय ने मुस्कुराते हुए कहा: 'ईश्वर ने काग के खून का बदला ले लयिा है।'

तब प्रार्थना सेवा संपन्न कर और उस पीड़ति युवक को पवित्रि क्रूस से आशीर्वाद देकर, तपस्वी ने उससे कहा, 'माननीय और जीवन-दायक क्रूस की शक्ति से, मुड़ जा।'

और तुरंत उसका सरि अपनी प्राकृतकि स्थति में वापस आ गया।

एक दूसरे युवक ने कौवे पर एक बाज़ लगा दयिा। लेकनि बाज़ ने कौवे को मारने के बाद खुद भी मर गया। इस प्रकार शकिारी अपने मनोरंजन से वंचति रह गया।

एक रात, चोर आदरणीय संत के मठ में आए और आसपास के जंगल में चर रहे मठ के तीन काम करने वाले बैलों को पकड़कर उन्हें अपने घर ले जाने का इरादा कयिा। लेकनि अचानक, वे अपना रास्ता भूल गए और अंधों की तरह मठ में भटकने लगे। जैसे ही सुबह हुई, चोरों ने बैलों के बनिा भागने की कोशशि की। लेकनि ईश्वर की एक अदृश्य शक्ति ने उन्हें बाँध दयिा, और वे तब तक चुराए गए मवेशयिों से हलि भी नहीं सके जब तक कि उन्हें खोज रहे मठ के मजदूर उन्हें ढूंढकर सम्माननीय पतिाजी के पास नहीं ले आए। उन्होंने उन्हें यह शकि्षा देते हुए फटकार लगाई कि वे अपनी नहीं होने वाली चीज़ न लें, और चोरों को खाना खलिाकर उन्हें शांतपिूर्वक जाने का आदेश दयिा।

[3342] खुजली – दाद के समान, एक चकत्ता।

दो भिक्षुओं ने गुप्त रूप से मठ छोड़ने की साजिश रची थी और अपने सामान की पैकिंग भी कर ली थी। लेकिन ईश्वर ने यह बात रेवरेंड फादर को एक सपने में बता दी। सुबह की स्तुति के बाद, वह कुछ देर आराम करने के लिए लेटे और उन्हें यह सपना आया। एक काले इथियोपियाई ने अपनी कोठरी के चूल्हे से जलती हुई अंगारे निकाले और उन्हें इन शिष्यों की कोठरियों पर फेंक दिया। संत ने उन्हें सख्त लहजे में ऐसा करने से मना किया, यह कहते हुए कि इस तरह वह मठ में आग लगा देगा। लेकिन इथियोपियाई ने जवाब दिया कि वह ठीक इसी वजह से अंगारे फेंक रहा था। जागने पर, रेवरेंड ने सपने का अर्थ समझ लिया और तुरंत इन भिक्षुओं को बुलवाया। जब तपस्वी ने उन्हें वह सपना सुनाया, तो वे संत के वृत्तांत से भयभीत और प्रभावित हो गए; उन्होंने अपने पास जमा की गई चीजें उन्हें दिखा दीं, अपने पाप का इकरार किया और क्षमा याचना की।

एक शिकायत करने वाले भाई, जो मठ में होने वाली हर बात और स्वयं संत की निंदा कर रहा था, ने एक सपने में यह दृश्य देखा: ऐसा लगा जैसे वह गिरजाघर के बीच में गायकों के साथ खड़ा था; अचानक पवित्र पिता अंदर आए और, उसे गुस्से से घूरते हुए, कहा: 'यह एक ईश्वर-निन्दक है: इसे गिरजाघर से बाहर निकाल दो।' तुरंत, दो काले इथियोपियाई उसे पकड़कर बाहर खींच ले गए और ऐसा करते हुए उसे बुरी तरह पीटा। जागने पर, वह भाई बहुत डर गया, और आँखों में आँसू लिए, क्षमा माँगने के लिए आदरणीय संत के पास दौड़ा।

उनके मठ में कांस्टेंटिन नाम का एक धार्मिक वृद्ध था। बीमार पड़ने के बाद, उनका निधन हो गया। उनके निधन के ठीक उसी क्षण—जो अभी तक किसी को पता नहीं था—भिक्षु जोसेफ आदरणीय पाफनुटियस की कोठरी के दरवाज़े पर पहुँचा, जो प्रातःकालीन स्तुति के बाद विश्राम कर रहे थे, और मठ के रिवाज़ के अनुसार यीशु प्रार्थना का जाप करना चाहता था। अचानक, आदरणीय ने छोटी खिड़की खोली और जोसेफ को देखकर कहा:

'किसी ने प्रार्थना की और कहा: "वरिष्ठ कॉन्स्टेंटिन प्रभु के पास चले गए हैं।" लेकिन जब मैं जागा और खिड़की खोली, तो मैंने आपके अलावा किसी को भी आते हुए नहीं देखा।'

जोसेफ ने टिप्पणी की:

'मैं अभी-अभी कांस्टेंटिन के पास से ही आया हूँ। वह अभी भी जीवित है।'

लेकिन संत ने अपने शिष्य को कॉन्स्टेंटिन की कोठरी में जाने का आदेश दिया। वहाँ पहुँचने पर, जोसेफ ने वास्तव में उन्हें मृत पाया।

आदरणीय पाफनुटियस के पास दूरदर्शिता का वरदान था: वह एक भिक्षु के चेहरे से बता सकते थे कि उसे कौन सी वासना सता रही है, और उसने दिन के निर्धारित प्रार्थना नियम का पालन किया था या नहीं; वह पहली बार देखे जा रहे लोगों के गुप्त और बहुत पुरानी पापों को भी पहचान सकते थे।

एक नवसिखुआ भिक्षु, जो माननीय फादर के साथ रहता था और अभी तक अपने वासनाओं पर काबू नहीं पा सका था, किसी काम से मठ से बाहर गया। रास्ते में, उसकी मुलाकात आम लोगों से हुई, जिसमें महिलाएँ भी शामिल थीं। उन पर नज़र पड़ते ही, भिक्षु महिलाओं की मोहक नज़रों से मोहित हो गया और पापी विचारों में खो गया। संत की कोठरी में लौटने पर, पापी ने उन्हें पढ़ते हुए पाया। रेवरेंड ने अपने शिष्य की ओर देखा, तुरंत ही देख लिया कि वह अशुद्ध विचारों से परेशान था, और उससे मुंह फेरकर यह स्पष्ट कर दिया कि वह उसके अपराध के बारे में जान गए थे। ऐसी अंतर्दृष्टि से डरकर, उस भाई ने अपने कोठरी-साथी, जोसेफ ( ) से अपनी बात बताई। जोसेफ ने उससे कहा कि वह अपने पाप का इकबालिया बयान पूज्यनीय फादर के सामने दे और क्षमा मांगे। जब उस भिक्षु ने ऐसा किया, तो उसे क्षमा और पितृसुलभ मार्गदर्शन मिला।

एक अवसर पर, जब संत फिर से पवित्र शास्त्र पढ़ रहे थे, एक आदमी उनकी कोठरी के पास आया, एक प्रार्थना की और छोटी खिड़की से संत को देखते हुए, उनके शिष्य जोसेफ के बारे में पूछा, जो उस आगंतुक का हमवतन था। एक बिल्कुल अजनबी को देखकर, पवित्र एल्डर ने जोसेफ से कहा:

'बाहर जाओ! एक आदमी जिसकी आँखों में दुर्भावना थी, तुम्हें ढूंढ रहा था।' शिष्य बाहर गया और अपने परिचित को देखकर उसने पूछा कि वह क्यों आया था। उस आदमी ने जवाब दिया:

'मैं एक भिक्षु बनना चाहता हूँ।'

जोसेफ ने अपने पवित्र मठाधीश को अपनी इच्छा बताई, लेकिन मठाधीश ने कहा:

'उसे खिला-पिला कर इस आदमी को भेज दो, क्योंकि वह अच्छा आदमी नहीं है।'

जोसेफ इस जवाब से हैरान रह गया, लेकिन उसने और सवाल करने की हिम्मत नहीं की। पूज्य की इच्छा पूरी करके, वह अपनी कोठरी में लौट आया। फिर संत स्वयं जोसेफ से बोले:

'यह आदमी एक हत्यारा है। जब वह एक जवान आदमी था, तो उसने एक भिक्षु के पेट में चाकू घोंपकर उसकी हत्या कर दी थी। लेकिन वह बहुत समय पहले की बात है, और वह अपना पाप भूल गया है।'

जोसेफ इन शब्दों से चकित रह गया: उसने अपने परिचित द्वारा किए गए इस पाप के बारे में कभी नहीं सुना था।

एक साधु महात्मा के मठ में आया। तपस्वी ने उसे देखकर अपने शिष्यों से धीरे से कहा:

'क्या तुम देख रहे हो कि उसने मठवासी व्यवस्था की खातिर भी खुद को खून से पवित्र नहीं किया है?'

शिष्य हैरान थे, लेकिन वे पूजनीय पिताजी से यह पूछने से डर रहे थे कि इन शब्दों का क्या मतलब था। हालाँकि, बाद में बड़े भाई ने स्वयं उनका स्पष्टीकरण दिया:

'इस भिक्षु ने,' संत ने कहा, 'जब वह अभी एक गृहस्थ था, तो नोवगोरोड में जिस राजकुमार की वह सेवा करता था, उसे जहर दिया था। अपने अंतरात्मा से पीड़ित होकर, उसने संन्यास की शपथ ली।'[3343]

बोयार की पत्नी, अलेक्सी गबरिन की पत्नी, संत का विशेष सम्मान करती थी और उन पर बहुत आस्था रखती थी; वह अक्सर अपने बच्चों को उपहारों के साथ उनके पास भेजती थी, उनकी प्रार्थना और आशीर्वाद मांगती थी। शैतान के काम से, वह बीमार पड़ गई और अक्सर कई राक्षसों को देखती थी जो उसे डराते थे। तब एक कुबड़ा, छोटा कद का बूढ़ा आदमी, जिसकी बड़ी धूसर दाढ़ी थी और जो फटे-पुराने कपड़े पहने होता था, उसके सामने प्रकट होता था। वह बूढ़ा ज़ोर से दुष्टात्माओं को भगा देता था, और उसके बाद वह ठीक हो जाती थी। एक बार, जब ऐसा हो रहा था, तो उस बीमार महिला ने एक आवाज़ सुनी जो उससे कह रही थी: 'बोरोव्स्क में रहने वाले पाफ़नुटियस तुम्हारे अंदर से दुष्टात्माओं को भगा रहे हैं।'

बोयारिना के साथ यह कई बार हुआ। कुछ समय बीत जाने के बाद, वह पूरी तरह से ठीक हो गई और संत को देखना चाहती थी, यह पता लगाने के लिए कि क्या वास्तव में वही उसके सामने प्रकट हुए थे और राक्षसों को भगा दिया था। बोयारिना अपने नौकरों के साथ मठ में आई। हालाँकि, चूँकि महिला मठ महिलाओं के लिए वर्जित था, वह द्वार पर रुक गई और उसने अपने नौकरों को धन्य व्यक्ति के शिष्यों के पास भेजकर पूछवाया कि वह आदरणीय पिता से कैसे मिल सकती है। भिक्षुओं ने, नौकरों को पवित्र वृद्ध को दिखाने के बाद, उन्हें यह निर्देश दिया कि जब वे भोजन के लिए भाइयों के साथ बाहर आएँ, तो उन्हें अपनी स्वामिनी को दिखाएँ, क्योंकि दोपहर का भोजन का समय हो रहा था। लेकिन उस कुलीन महिला ने, ऐसी कोई आज्ञा दिए जाने से पहले ही, पूजनीय को देखकर, तुरंत उन्हें उसी वृद्ध के रूप में पहचान लिया जो उसके सामने प्रकट हुए थे और आँसुओं के साथ चिल्लाई: 'सचमुच, यही वह हैं जिन्होंने अपनी उपस्थिति मात्र से मुझसे राक्षसों को भगा दिया और मुझे स्वास्थ्य प्रदान किया।'

तब, ईश्वर, उनकी परम पवित्र माता और आदरणीय पाफनुटियस को धन्यवाद देने के बाद, उसने दान भेजा।

रेवरेंड फादर के शिष्यों में से एक आँख की बीमारी से पीड़ित था। वह बीमार व्यक्ति, अत्यधिक कष्ट में, पूरी ताकत से एक डॉक्टर की तलाश करने लगा। हालाँकि, संत ने उसे अपनी माला दे दी और उसे एक हजार बार यीशु प्रार्थना का जाप करने का निर्देश दिया। लेकिन, तीव्र पीड़ा के कारण, वह बीमार व्यक्ति मुश्किल से निर्धारित संख्या का आधा ही पूरा कर सका। प्रार्थना पाँच सौ बार जपने और अपनी आँख के ठीक हो जाने पर, संन्यासी अत्यंत प्रसन्न होकर, अपनी रिकवरी की खबर देने के लिए आदरणीय पिताजी के पास दौड़ा। लेकिन सूक्ष्मदर्शी वृद्ध ने शिष्य को फिर से आदेश दिया कि वह निर्धारित प्रार्थनाओं की संख्या पूरी करने के लिए उनके पास लौट आए।

धार्मिक गृहस्थों ने रेवरेंड फादर और उनकी कोठरी में बैठे भाइयों को मॉस्को के पास साइमनोव मठ के तत्कालीन आर्चिमांड्राइट के इस्तीफे के बारे में बताया। यह खबर सुनते ही इस पर चर्चा शुरू हो गई कि अब साइमनोव का आर्चिमांड्राइट कौन बनेगा। एक ने किसी का नाम लिया, दूसरे ने र का नाम लिया और एक अन्य ने किसी और का। हालाँकि, संत ने अपने बहुत ही युवा, हाल ही में मुंडन कराए शिष्य वसियन—जो परम पूजनीय जोसेफ के भाई थे (जिन्होंने बाद में उनकी जीवनी लिखी)—की ओर देखा और उनकी ओर इशारा करते हुए मुस्कुरा कर कहा: 'यही साइमनोव का आर्चिमांड्राइट है।'

[3343] यह, बेशक, राजकुमार दिमित्री जॉर्जीविच शेम्यका को संदर्भित करता है, जिनकी 1453 में वेलिकी नोवगोरोड में जहर देकर हत्या कर दी गई थी। यह जहर राजकुमार को उनके बोयार और प्रिय, इओआन कोतोव द्वारा दिया गया था।

संत के इन शब्दों में, दूर के भविष्य के प्रति उनकी अंतर्दृष्टि प्रकट हुई। कई वर्षों बाद, वासियन वास्तव में सिमोनोव मठ के आर्चिमैंड्राइट बने[3344] ।

एक अवसर पर, पूजनीय ने ओका नदी पर एक ही स्थान पर तीन दिनों तक मछली पकड़ने की अनुमति के लिए एक निश्चित राजकुमार से अनुरोध किया, इस शर्त पर कि पकड़ी गई सारी मछली मठ को जाएगी। जब उन्होंने अपने एक सेवक को इस मछली पकड़ने के अभियान पर भेजा, तो तपस्वी ने आदेश दिया कि उसे पाँच हृव्निया[3345] दी जाएँ ताकि वह निर्धारित समय के भीतर पकड़ी गई मछली को नमक करने के लिए बर्तन खरीद सके। सेवक ने इतनी बड़ी रकम लेने से इनकार कर दिया, क्योंकि उसे उम्मीद नहीं थी कि वह एक भी छोटा बर्तन मछली से भर पाएगा। तब संन्यासी ने क्रोध से उसकी ओर देखा और उसे वही करने का आदेश दिया जो उससे कहा गया था। फिर संदेशवाहक चल पड़ा और तीन दिनों में 730 बड़ी मछलियाँ पकड़ीं। राजकुमार के मछुआरों ने तो पूरी गर्मियों में भी इतनी मछलियाँ नहीं पकड़ी थीं। इस चमत्कारी पकड़ की पूर्वानुमान लगाते हुए, संत ने इतने सारे बर्तन खरीदने का आदेश दिया था।

एक युवक, जो भिक्षु बन गया था, शैतान के प्रलोभनों का शिकार हो गया। मानवता का प्राचीन शत्रु उसके सामने विभिन्न रूपों में प्रकट हुआ: कभी एक अज्ञात जानवर या एक काले कुत्ते के रूप में, और कभी-कभी, जब भिक्षु अपनी कोठरी में बैठता था, तो वह एक भालू की तरह कोठरी के चारों ओर मंडराता और उसकी दीवारों से टकराता। वरिष्ठ ने युवा भिक्षु को अपनी उपस्थिति में भजन संहिता पढ़ने का निर्देश दिया। जैसे ही उस युवक ने संत के आदेश का पालन किया, दैवीय दृश्य पूरी तरह से गायब हो गए, और वह भयानक भूत-प्रेतों से मुक्त हो गया।

आदरणीय पाफनुटियस के शिष्यों में दूरदर्शिता का वरदान रखने वाले भी थे। उनमें से एक थे अश्रुपूर्ण भिक्षु यूथमियस। यह तपस्वी, जो न केवल अपनी कोठरी में बल्कि चर्च में हर प्रार्थना सभा के दौरान भक्तिपूर्ण भावना से आँसू बहाते थे, को ईश्वर से दूरदर्शिता का वरदान मिला था, जो एक बार निम्नलिखित तरीके से प्रकट हुआ। दो भाइयों के बीच एक ऐसा प्रेम था जो ईश्वरीय नहीं, बल्कि सांसारिक था। और चूँकि आदरणीय पिता इस बात से उन पर बहुत क्रोधित थे, इसलिए उन्होंने मठ से चोरी-छिपे भाग जाने का निश्चय किया। यूथमियस, जो प्रार्थना सभा के दौरान अपनी आँसुओं भरी आराधना के साथ खड़ा था, उसने पवित्र पिता और उनके साथ गा रहे लोगों पर नज़र डाली, जिनमें वे दोनों भाई भी थे। और वहाँ उसने अपने सिर पर नुकीला हेलमेट पहने एक इथियोपियाई को उनके पीछे से कूदकर निकलते देखा। उसके हाथों में एक लोहे का हुक था। उस हुक से पापी भिक्षुओं के कपड़ों को हुक में फँसाकर, उसने उन्हें गायकों की पट्टी के पीछे से बाहर खींच लिया और, उन्हें अपनी ओर खींचते हुए, अपने हाथों से पकड़ने का प्रयास किया। लेकिन जैसे ही वह उन्हें पास खींचता, लोहे का हुक वापस उछल जाता। इसका मतलब यह था कि जब दो पापी शत्रु द्वारा उनमें बोए गए विचार—मठ छोड़ने और मठाधीश की अवज्ञा करने—के आगे झुक गए, तो शत्रु ने उन्हें आसानी से अपनी ओर खींच लिया; लेकिन जब उन्होंने इस विचार का विरोध किया, तो शैतान का हथियार शक्तिहीन साबित हुआ और वापस उछल गया। यह देखकर, उस दूरदर्शी ने अपनी आध्यात्मिक आँखों से उनकी आत्माओं में हो रही घटनाओं को झाँका। सुसमाचार के पाठ के दौरान और जब केरुबिकल भजन गाया जा रहा था, तो इथियोपियाई गायब हो गया। जब ये समाप्त हो गए, तो वह फिर से प्रकट हुआ। लेकिन जब पवित्र उपहारों का अभिषेक हुआ, साथ ही परम पवित्र थियोटोकोस (ईश्वरजननी) के भजन '[3346] ' का गायन हो रहा था, तो इथियोपियाई धुएँ की तरह गायब हो गया और फिर कभी नहीं दिखा। दूरदर्शी वृद्ध पूरी प्रार्थना सभा के दौरान विस्मय और आनंद में खड़े रहे, और बाद में उन्होंने अपना दर्शन पूजनीय पाफनुटियस को सुनाया। पूजनीय ने पापियों को अपने पास बुलाया और उन्हें पापी विचारों के खिलाफ संघर्ष करने और उन्हें अपने दिलों से जड़ से उखाड़ फेंकने का आदेश दिया। संत के निर्देश और प्रोत्साहन का पालन करते हुए, दोनों भिक्षु सही मार्ग पर आ गए।

[3344] वासियन (सानिन) का उल्लेख 1502 में आर्चिमैंड्राइट साइमनोव्स्की द्वारा किया गया है। 1506 में, उन्हें रोस्तोव के बिशप के रूप में अभिषिक्त किया गया था। – साइमनोव मठ की स्थापना लगभग 1370 में ग्रैंड प्रिंस दिमित्री डोंस्कोय के निर्देश पर सेंट सेरगियस ऑफ़ राडोनेज़ द्वारा की गई थी। अपने मूल स्थान (स्टारोए साइमनोवो बस्ती) से, मठ को जल्द ही शहर के दक्षिणी बाहरी इलाके में मॉस्क्वा नदी के ऊँचे किनारे पर अपने वर्तमान स्थान पर स्थानांतरित कर दिया गया। मठ के पहले मठाधीश सेंट सर्गियस के भतीजे थियोडोर थे (जो बाद में 1395 में रोस्तोव के आर्चबिशप बने)।

[3345] इस पर हमें कुछ दर्जन रूबल खर्च होंगे।

[3346] अर्थात्, 'यह वास्तव में उचित है'।

आदरणीय पाफनुटियिस का पवत्रि जीवन, दव्यि और मानवीय, सभी मामलों में उनकी बुद्धि और अनुभव का मतलब था कि न केवल भक्षिुओं ने बल्कि कई गृहस्थों ने भी उन्हें अपना आध्यात्मकि पति चुना। एक कुशल चकित्सिक की तरह, उनके पास कुलीन और आम लोग, अमीर और गरीब, धर्मात्मा और पापी आते थे, और सभी को ठोस सलाह और उचति प्रायश्चति मलिता था। उनके पास आने वालों को स्वीकार करते समय, संत ने कसिी का पक्षपात नहीं कयिा। शक्तशिाली लोगों से न डरने वाले और अहंकारी लोगों के प्रति कठोर, यह तपस्वी वनिम्र लोगों के प्रति बहुत दयालु थे।

वोलोकलामस्क के पूजनीय जोसेफ अपने गुरु, पूजनीय पाफनुटियिस के बारे में लखिते हैं कि जब आवश्यक होता था तो वे दयालु और सहष्णिु थे, लेकनि कभी-कभी यदि स्थति इसकी मांग करती थी तो वे सख्त और क्रोधति हो जाते थे। रेवरेंड के आध्यात्मकि बच्चे उनका सम्मान भी करते थे और उनसे डर भीते थे। जॉर्जी वासलिीवचि, प्रसि दमित्रिोव्स्की ने बताया कि जब वह रेवरेंड के पास पाप-स्वीकृति के लिए जाते थे, तो उनके घुटने कांपने लगते थे। फरि भी, आध्यात्मकि बच्चों ने, रेवरेंड को अपना पति चुनने के बाद, उनके नधिन के बाद भी उनसे अपना संबंध नहीं तोड़ा। एक अवसर पर, मैटनि्स से पहले चर्च के द्वार पर झपकी लेने के बाद, रेवरेंड फादर ने एक सपने में देखा कि मठ के द्वार खुल गए हैं और मोमबत्तयिाँ लिए लोगों का एक वशिाल समूह प्रवेश कर रहा था, जो चर्च की ओर बढ़ रहा था, और उनके बीच राजकुमार जॉर्जी वासलिीवचि थे। चर्च पहुँचने पर, राजकुमार ने पहले चर्च को, फरि अपने आध्यात्मकि पति को प्रणाम कयिा। रेवरेंड फादर ने उनसे पूछा:

'मेरे पुत्र और राजकुमार! क्या आप पहले ही स्वर्ग सधिार चुके हैं?'

'हाँ, आदरणीय फादर!'

'अब वहाँ तुम्हारे लिए कैसा है?' पूजति पति ने पूछा।

'आपकी पवत्रि प्रार्थनाओं के कारण, ईश्वर ने मुझ पर दया की है। वशिेष रूप से इसलिए, क्योंकि जब मैं नास्तकि अगारियों से लड़ने के लिए अलेक्सनि की ओर मार्च कर रहा था, तो मैंने अपने सभी पापों का इकबालयिा बयान आपके सामने दयिा था[3347] ।'

उसी क्षण, मैटनि्स (प्रार्थना सभा) के लिए घंटयिाँ बजने लगीं, और रेवरेंड फादर जाग गए।

रेवरेंड फादर गरीबों के प्रति बहुत दयालु और करुणामय थे। शब्द में दया का उपदेश देते हुए, इस तपस्वी ने इस गुण को व्यवहार में उतारा। बोरोव्स्क क्षेत्र में एक भीषण अकाल पड़ा, और रेवरेंड ने उत्साहपूर्वक अपने मठ में आसपास के गांवों से आए भूखे लोगों को खाना खलिाया। इस प्रकार, प्रतदिनि एक हजार या उससे भी अधकि लोग इकट्ठा हो जाते थे, और दयालु तपस्वी ने मठ का सारा सामान खर्च कर दयिा। अगले वर्ष, प्रभु ने भरपूर फसल भेजी।

आदरणीय पाफनुटियिस ने 83 वर्ष की आयु प्राप्त की, जनिमें से 63 वर्ष उन्होंने मठवासी तपस्या में बतिाए। सभी सांसारकि सुखों का त्याग कर और केवल ईश्वर और अनंतकाल के लिए जीते हुए, आदरणीय संत के लिए अब केवल इतना ही शेष था कि वे सभी क्षणकि चीजों से मुक्त हो जाएं और उस शाश्वत जीवन में प्रवेश करें जिसे ईश्वर ने अपने प्रेमयिों के लिए तैयार कयिा है—वह जीवन जिसे *'न किसी ने देखा है, न किसी ने सुना है, और न ही किसी मानव हृदय ने कल्पना की है'* (1 कुरन्थियिों 2:9)।

प्रभु ने पवत्रि वृद्ध को उनके परमधाम जाने के दनि के बारे में पूरे एक सप्ताह पहले ही बता दयिा था, और उस तपस्वी ने इसे शांति और नर्भिय होकर स्वीकार करने की तैयारी की। उन दनिों में, उनका शष्यि इन्नोकेन्टी संत के पास ही रहा; उसने अपने पवत्रि गुरु के जीवन के अंतमि दनिों का वृत्तांत[3348] पर छोड़ा है।

यह 1477 की वसंत ऋतु में, होली पास्का के त्योहार के ठीक बाद हुआ, जो उस वर्ष 6 अप्रैल को पड़ा था।

ईस्टर के बाद के तीसरे सप्ताह के गुरुवार (24 अप्रैल) को, मैटनि्स (प्रार्थना सभा) के बाद, संत इनोसेंट के साथ उस तालाब पर गए जिसे उन्होंने स्वयं खोदा था। उन्होंने देखा कि बांध से पानी रसि रहा था। रेवरेंड ने इनोसेंट को सखिाया कि पानी के रास्ते को कैसे रोकना है; फरि वे दव्यि प्रार्थना सभा का समय होने के कारण मठ में लौट आए। जब वरषि्ठ जा रहे थे, तो उनके शष्यि ने उनसे दोपहर के बाद काम में मदद करने के लिए आने को कहा। जवाब में, संत ने कहा: 'मैं नहीं आ सकता, क्योंकि मेरा दूसरा काम है जो अधकि आवश्यक और तात्कालकि है।'

[3347] यह, बेशक, 1472 में खान अख्मत द्वारा अलेक्सनि शहर (अब तुला गवर्नरेट में एक जलिा शहर) की लूट का संदर्भ है। राजकुमार जॉर्ज और अन्य लोग उस दुर्भाग्यपूर्ण शहर की सहायता के लिए आने में असमर्थ रहे और ऐसा कर पाए भी नहीं।

[3348] इनोकेन्टी के नोट्स को पुराने रूसी धर्म-इतहिास साहत्यि की उत्कृष्ट कृतयिों में से एक माना जाता है। उन्हें कुछ संक्षपि्त रूप में नीचे प्रस्तुत कयिा गया है।

लि[illegible]जी के बाद, पवित्र वृद्ध ने भ्राताओं के साथ भोजन किया; फिर उन्होंने इनोकेन्टी को बुलाया और तालाब पर जाने का निर्देश दिया। इनोकेन्टी संत की कोठरी में गया और अपने गुरु को बिस्तर पर बैठे देखकर उन्हें उनके कार्य की याद दिलाई। 'मुझे एक और आवश्यकता है, जिसकी तुम्हें जानकारी नहीं; एक विशेष बंधन को तोड़ना आवश्यक है,' संत ने उत्तर दिया।

इनोसेंट संत के शब्दों से इतना हैरान हो गया कि, तीन भाइयों के साथ काम करने के लिए बाहर जाकर, वह कुछ भी कर नहीं सका।

[3349]मठ लौटने पर, शिष्य ने तपस्वी को एक बार फिर अपने बिस्तर पर बैठे हुए पाया। बड़े संत ने राजकुमार मिखाइल आंद्रेविच को संदेश भेजने का आदेश दिया कि वे मठ न आएं, क्योंकि एक और मामला उत्पन्न हो गया था। उस दिन, संत न तो संध्या की प्रार्थना के लिए और न ही संध्या के बाद की प्रार्थना के लिए चर्च गए, बल्कि उन्होंने इनोकेन्टी को उन्हें अपनी कोठरी में करने का निर्देश दिया। भाइयों ने यह जानने के लिए कि वे प्रार्थना में क्यों नहीं गए, आदरणीय की कोठरी के पास आकर पूछा। लेकिन तपस्वी ने किसी को भी अपनी कोठरी में प्रवेश करने की अनुमति नहीं दी और सभी से अगले सुबह पर इकट्ठा होने के लिए कहा। जैसे ही उन्होंने अपने शिष्य को विदा किया, तपस्वी ने उससे कहा: 'ऐसे ही एक गुरुवार को, मैं अपनी दुर्बलता से मुक्त हो जाऊँगा।'

संत ने पूरी रात प्रार्थना में बिताई।

शुक्रवार, 25 अप्रैल की सुबह, मठवासी समुदाय विदाई लेने और उनका आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए पूज्यनीय संत के पास आया। उस समय मठ में 95 भिक्षु थे, और उनमें से प्रत्येक, यहाँ तक कि अस्वस्थ और अंधे भी, उस बीमार तपस्वी के चारों ओर इकट्ठा हो गए। भाइयों को विदा कहने के बाद, आदरणीय संत अपने शिष्यों के सहारे लिटर्जी (प्रार्थना सभा) के लिए गए। जब उनमें से एक, जो पहले से ही वृद्ध था, संत का सहारा देने के लिए उनका हाथ पकड़ने लगा, तो आदरणीय संत ने गुस्से में अपना हाथ खींच लिया और उसे केवल अपने चोगा को पकड़ने का आदेश दिया। उदासीनता की उनकी इतनी सावधानीपूर्वक रक्षा थी कि वृद्धावस्था और बीमारी में, और मृत्यु के द्वार पर भी, उन्होंने किसी को भी अपने शरीर को छूने की अनुमति नहीं दी। उस दिन वृद्ध ने कुछ भी नहीं खाया; उन्होंने केवल 'सिटी' (शहद के साथ पानी) माँगा। राजकुमार मिखाइल एंड्रीविच ने अपने डीकन को आदरणीय की कुशलता की पूछताछ करने और यह पूछने के लिए भेजा कि उन्होंने उन्हें मिलने आने से क्यों रोक दिया था। लेकिन आदरणीय ने संदेशवाहक को नहीं मिलने दिया। न ही उन्होंने टवर क्षेत्र से मठ को भेजा गया पत्र और पैसा स्वीकार किया। वह उस दिन संध्या की प्रार्थना में भी उपस्थित थे। अपनी कमजोरी के कारण, बीमार व्यक्ति मुश्किल से खुद को संभाल पा रहा था; वह अपने हाथों को अपने बेंत पर टिकाकर, अपना सिर उन पर झुकाए हुए खड़ा था। फिर भी, वह भाइयों के साथ लगन से गाता रहा और वेस्पर्स के बाद स्मरणोत्सव सेवा के लिए रुका रहा, इस तथ्य के बावजूद कि भाई उसे उसकी कोठरी में वापस ले जाना चाहते थे। 'मुझे इस स्मरणोत्सव सेवा की आवश्यकता है,' रेवरेंड फादर ने उनसे कहा, 'मैं इसे फिर से नहीं सुन पाऊँगा।'

शनिवार 26 तारीख को, बीमार एल्डर ने दिव्य लिटर्जी में भी भाग लिया। सेवा के अंत में, इनोकेन्टी ने उनके लिए थोड़ा भोजन तैयार किया और उन्हें कुछ खाने के लिए कहा, यह बताते हुए कि यह सब्बाथ था और उन्होंने गुरुवार से कुछ नहीं खाया था। लेकिन संत ने भोजन से इनकार कर दिया और कहा: 'मैं यह भी जानता हूँ: दैवीय नियमों के अनुसार, उपवास के लिए सप्तम दिन पर अनुमत भोजन ग्रहण करना उचित है; हालाँकि, जिसे बीमारी हो, उसे दैवीय रहस्यों को प्राप्त करने से पहले तीन दिनों तक भोजन से परहेज़ करना चाहिए।'

पवित्र वरिष्ठ की यही पुरानी प्रथा थी – पवित्र रहस्यों को प्राप्त करने से पहले उपवास करना और पूरे सप्ताह मौन में बिताना।

शाम को, उन्होंने भिक्षु यशायाह से पापस्वीकार किया।

सामान्य लोगों ने उस बीमार तपस्वी को परेशान करना जारी रखा, जो मृत्यु की तैयारी कर रहा था और अपने सभी विचार ईश्वर की ओर केंद्रित कर चुका था। राजकुमार माइकल ने एक बार फिर मठ में किसी को भेजा, इस बार अपने आध्यात्मिक पिता, पुरोहित जॉन को, और संत से अपने और अपने पुत्र जॉन के लिए क्षमा और आशीर्वाद माँगा। इन्नोकेन्टी ने राजकुमार का अनुरोध पहुँचाया। थोड़ी देर रुकने के बाद, आदरणीय संत ने कहा:

[3349] दिमित्री डोंस्कोय के पोते, राजकुमार मिखाइल आंद्रेविच वेरेयस्की का विवाह बोरोव्स्क के राजकुमार की बेटी एलेना यारोस्लाव्ना से हुआ था, और संभवतःउन्होंने उससे विवाह करके बोरोव्स्क की रियासत प्राप्त की थी। उनकी मृत्यु 1486 में हुई और उन्हें पूजनीय पाफनुटियस के मठ में दफनाया गया।

'मैं राजकुमार के इस संदेश पर आश्चर्यचकति हूँ: "मेरे पुत्र, राजकुमार जॉन को आशीर्वाद दें।" क्या राजकुमार बेसलि उनका पुत्र नहीं है?[3350] ईश्वर जाने, उसने स्वयं को वभिाजति कर लयिा है; तो फरि वह शांति और आशीर्वाद कैसे पा सकता है?'

फरि उन्होंने जोड़ा:

'उसका मुझसे कोई लेना-देना नहीं है, भले ही वह एक राजकुमार हो।'

ये शब्द राजकुमार के आध्यात्मकि पति तक पहुँचाए गए, लेकनि वह फरि भी बड़े संन्यासी से मलिना चाहता था और इसलिए संध्या-प्रार्थना के लिए चर्च गया। तपस्वी भी गया, लेकनि वह जल्दी से पवत्रि स्थल में छपि गया और तब तक वहीं रहा जब तक राजकुमार का दूत मठ से नहीं चला गया। पूज्यनीय ने भी अपने शष्यिों के सहारे रात्रि जागरण में भाग लयिा। फरि उन्होंने भाइयों से कहा:

'अब से मैं पूरी रात की प्रार्थना सभा नहीं सुनूँगा।'

सम्माननीय ने प्रार्थना के माध्यम से महान संस्कार में भाग लेने के लिए स्वयं को तैयार कयिा, और जैसे ही भोर होने लगा, उन्होंने सम्माननीय जोसेफ को पवत्रि कम्युनयिन के नयिम पढ़ने का नर्दिेश दयिा।

रवविार (27 अप्रैल) को चर्च में दैवीय अनुष्ठान के दौरान मसीह के जीवन-दायक रहस्यों में भाग लेने के बाद, पवत्रि वरष्ठि को उनकी कोठरी में वापस ले जाया गया। एक बार फरि, देखभाल करने वाले इनोकेन्टी ने उनके लिए थोड़ा भोजन तैयार कयिा। भाइयों ने उन्हें खाने के लिए कहा, और उन्हें दुखी न करने के लिए, रेवरेंड फादर ने थोड़ा सा चखा, और फरि जो उनके लिए तैयार कयिा गया था, वह भाइयों को वापस कर दयिा।

उस दनि, मास्को के ग्रैंड प्रसि जॉन वासलीवh[3351] ने कसिी अज्ञात तरीके से रेवरेंड पाफनुटयिस की बीमारी के बारे में जानकर, उनके पास एक पत्र के साथ एक संदेशवाहक भेजा। जब शष्यि ने तपस्वी को ग्रैंड प्रसि का संदेश सुनाया, तो उन्होंने कहा:

'संदेश को संदेशवाहक को लौटा दो – उसे भेजने वाले को दे देना। मैं अब इस संसार में कसिी भी चीज़ से बँधा नहीं हूँ: न मैं कोई सम्मान चाहता हूँ और न ही इस संसार के शक्तशिाली लोगों से डरता हूँ।'

इनोसेंट ने अपने गुरु से कहा:

'जहाँ तक तुम्हारा सवाल है, तुमने सच कहा है; लेकनि भगवान के लिए, हमारे लिए जो उपयोगी है वह करो—महान राजकुमार को नाराज़ मत करो, उनके क्रोध को मत भड़काओ।'

वरष्ठि ने उत्तर दयिा:

'मैं तुमसे सच कहता हूँ: एक को न भड़काओ, और फरि कोई भी मानवीय क्रोध तुम पर हावी नहीं होगा। लेकनि अगर तुम एक को—मसीह को—भड़काओगे, तो कोई भी तुम्हारी मदद नहीं कर पाएगा। और एक आदमी, भले ही वह क्रोधति हो जाए, अंततः फरि से नरम हो जाएगा।'

शष्यि अपने गुरु के आगे और आपत्ति करने की हम्मित नहीं कर सका और उसने महा राजकुमार का पत्र दूत को लौटा दयिा।

महान राजकुमार की माँ, मारयिा यारोस्लावना, जो उस सदाचारी संत की बहुत बड़ी प्रशंसक थीं, ने भी एक दूत भेजा, और साथ ही राजकुमार की पत्नी, ग्रीक महलिा सोफयिा फोमचिन्ना[3352] ने भी, जन्हिोंने उस पूजनीय संत को एक पत्र और कुछ सोना भेजा। संत ने कुछ भी स्वीकार नहीं कयिा और सब कुछ वापस भेजने का आदेश दयिा; उन्होंने अपने शष्यि को दूसरों को उन्हें परेशान करने की अनुमति देने के लिए डांटा भी। कई बोयार और आम लोगों ने मठ में बीमार तपस्वी को उपहार भेजे, लेकनि उसे अब इसकी सूचना भी नहीं दी जाती थी।

[3350] प्रसि मखिाइल आंद्रेवचि के नम्निलखिति बच्चे थे: वासलिी, उपनाम 'द डेयरगि' (1495), इओआन, और एक बेटी, अनास्तासयिा, जसिका ववािह डोरोगोबुज़ के प्रसि जोसेफ आंद्रेवचि से हुआ था, जो 1485 में मास्को के ग्रैंड प्रसि की सेवा में शामलि हो गए थे।

[3351] जॉन तृतीय वासलिीवचि 1462 से 1505 तक महा राजकुमार थे।

[3352] प्रसि यारोस्लाव (अफनासी) व्लादमिीरोवचि की बेटी और उपर्युक्त वासलिी यारोस्लावचि की बहन मारयिा यारोस्लावना ने 1433 में ग्रैंड प्रसि वासलिी वासलियेवचि 'अंधे' से ववािह कयिा; वह 1484 में एक नन के रूप में मर गईं, उन्होंने मार्था नाम अपनाया था। – सोफयिा फोमचिना, मोरयिा के डेस्पोट थॉमस पलाइओलोगोस की बेटी (जो कॉन्स्टेंटनिोपल के अंतमि सम्राट कॉन्स्टेंटनि XI के भाई थे, जनिकी 1453 में तुर्कों द्वारा ग्रीक राजधानी पर कब्जा कएि जाने पर उसकी दीवारों पर मृत्यु हो गई थी)। वह ग्रैंड प्रसि जॉन तृतीय की दूसरी पत्नी थीं; उन्होंने 1472 में उनसे ववािह कयिा और 1503 में उनकी मृत्यु हो गई।

पवत्रि वृद्ध को ऐसी गंभीर दुर्बलता में देखकर, इनोकेन्टी ने उनसे कहा:

'क्या आप बहुत कष्ट में हैं, फादर पाफनुटियस?'

बड़े संन्यासी ने उत्तर दिया:

'आप स्वयं देख सकते हैं - मैं थका हुआ हूँ, लेकिन मुझे ऐसा नहीं लगता कि मेरी बीमारी मेरी शक्ति से परे है।'

तपस्वी अब कोई भोजन नहीं करते थे। वे कुछ बनवाने का आदेश देते, लेकिन जब वह उनके पास लाया जाता, तो उसकी प्रशंसा करने के बाद, वे उसे सारा भाइयों को दे देते, यह कहते हुए:

'खाओ, और मैं तुम्हारे साथ हूँ।'

रात हो गई। तपस्वी अपने बिस्तर पर बैठकर मन ही मन यीशु की प्रार्थना जप रहे थे। उनकी कोठरी में उनके लिए भोर की प्रार्थना (मैटिन्स) पढ़ी गई।

सोमवार, 28 तारीख को, तपस्वी ने भाइयों की मदद से दैवीय पूजा का अनुष्ठान किया। सेवा के बाद, उन्होंने कुछ भी नहीं खाया; उन्होंने केवल थोड़ा सा पानी पिया। इनोकेन्टी ने सोचा कि बिड़े भाई मठ के संबंध में कोई व्यवस्था क्यों नहीं कर रहे थे, और अपनी हिचकिचाहट पर काबू पाकर, उन्होंने पूजनीय से पूछा:

'फादर पाफनुटियस! जब तक आप जीवित हैं, कृपया किसी को मठ के संगठन के संबंध में वसीयत तैयार करने का निर्देश दें: कि आपके बाद भाई-बंधु कैसे रहेंगे, और मठाध्यक्ष कौन होगा।'

एक संक्षिप्त विराम के बाद, वृद्ध ने आँसुओं भरी आँखों से कहा:

भाइयो, चर्च के नियम और मठ की व्यवस्था को अपनी इच्छा से बनाए रखो। चर्च की प्रार्थना के समय को मत बदलो। पुरोहितों का सम्मान करो जैसा मैंने किया है, और उन्हें उनके वेतन से वंचित मत करो, कहीं ऐसा न हो कि दिव्य सेवा का ह्रास हो जाए, क्योंकि सभी कार्यों में सफलता इसी पर निर्भर करती है। यात्रियों के लिए अपना भोजनशाला बंद न करो; दान-पुण्य का ध्यान रखो; भिखारी को खाली हाथ लौटाओ नहीं। अपने हस्तशिल्प में परिश्रम करो; परन्तु सांसारिक वार्तालाप से दूर रहो; अपने हृदय को दुष्ट विचारों से सावधानीपूर्वक बचाओ। संध्या की प्रार्थना के बाद, बातचीत के लिए इकट्ठा न हो: प्रत्येक व्यक्ति अपनी कोठरी में मौन रहे। बीमारी को छोड़कर, चर्च की प्रार्थना से कभी अनुपस्थित न रहें; पूरे नियम, चर्च के विनियमों और सभी धार्मिक आज्ञाओं का नम्रतापूर्वक, बिना किसी व्यवधान के और मौन रूप से पालन करें। संक्षेप में, जैसा मैं करता हूँ, वैसा ही करो। यदि तुम मेरे आज्ञापालन को नज़रअंदाज़ नहीं करोगे, तो मुझे सर्वशक्तिमान ईश्वर और ईश्वर की निर्मल कुँवारी माता पर विश्वास है कि प्रभु इस स्थान को अपनी सभी आशीर्वादों से वंचित नहीं करेंगे। लेकिन मैं जानता हूँ,' उस पूजनीय व्यक्ति ने भविष्यवाणी करते हुए कहा, 'कि मेरे प्रस्थान के बाद परम पवित्र मठ में एक उपद्रवी होगा; उसने मेरी आत्मा को कष्ट पहुँचाया है और भाइयों के बीच कलह खड़ा करेगा। हालाँकि, परम पवित्र रानी इस कलह और तूफान को शांत करेंगी, और अपने मठ तथा उसमें रहने वाले भाइयों को शांति प्रदान करेंगी[3353] ।

यह कहकर, वृद्ध थकान से मौन हो गए। उन्होंने रात अपनी नियमित प्रार्थनाओं में बिताई।

29 तारीख, मंगलवार को, आदरणीय मौन रहे, क्योंकि वे मध्य-पेंटेकोस्ट के पर्व पर पवित्र रहस्यों में भाग लेने की तैयारी कर रहे थे, जो उस वर्ष 30 अप्रैल को पड़ा था। एल्डर ने भजन, प्रार्थनाएँ, कैनन और पवित्र श्लोक गाए। यह दिन भर जारी रहा। इनोकेन्टी और पादरी के सेल के परिचारक इस असाधारण गायन को चुपचाप सुनते रहे, एक शब्द कहने की हिम्मत नहीं कर सके, क्योंकि तपस्वी ने उन्हें किसी भी तरह से उनका ध्यान भटकाने के लिए नहीं कहा था। बीमार व्यक्ति ने रात प्रार्थना में जागते हुए बिताई, लगभग पूरा समय खड़े रहे और केवल थोड़ी देर के लिए बैठे।

केवल दिन निकलने पर (बुधवार) ही रेवरेंड जोसेफ ने संत को पवित्र सहभाग के नियम पढ़कर सुनाए। उन्होंने चर्च में धर्मविधि का अनुष्ठान किया और मसीह के जीवन-दायक रहस्यों को ग्रहण किया। सेवा संभाल रहे पुरोहित से प्रथागत आशीर्वाद प्राप्त करने के बाद, भाइयों ने रेवरेंड फादर को उनकी कोठरी में वापस ले गए। अपनी कोठरी के प्रवेश हॉल में खड़े होकर, अपने शिष्यों द्वारा दोनों ओर से सहारा लिए हुए, रेवरेंड फादर ने परमेश्वर की परम पवित्र माता के प्रतिमाचित्र को निहारा; फिर, अपने हृदय की दृष्टि से पूरे समुदाय की ओर मुड़कर, उन्होंने एक आह और आँसुओं के साथ कहा:

[3353] वोलोकोलाम्स्क के संत जोसेफ की प्राचीन जीवनी-ग्रंथों से (उनकी स्मृति में 9 सितंबर को उनके मठ में उनकी याद की जाती है। आदरणीय पाफनुटियस की भविष्यवाणी के अनुसार, उनकी मृत्यु के तुरंत बाद, मठ में कलह और विवाद उत्पन्न हो गए, और नए मठाधीश – आदरणीय जोसेफ – ने 1477 या 1478 में गुप्त रूप से बोरोव्स्क मठ छोड़ दिया।

– हे सर्वशक्तिमान प्रभु! हे जो हृदयों और मन को परखते हो, तुम सर्व कुछ जानते हो। यदि कोई मेरे लिए दया महसूस करता है, तो हे प्रभु, उसे इस जीवन में सौ गुना पुरस्कृत करो, और आने वाले जीवन में उसे अनंत जीवन प्रदान करो। लेकिन यदि कोई मेरे मरने पर, एक पापी की मृत्यु पर, प्रसन्न होता है, तो हे प्रभु, इसे उसके विरुद्ध पाप न गिनना।

यह सुनकर जो लोग वहाँ थे, वे स्तब्ध रह गए, और प्रत्येक अपने अंतर्मन के न्याय की ओर मुड़ गया। हालाँकि, जब उस वृद्ध संत को उनकी कोठरी में ले जाया गया, तो उन्होंने एक प्रसन्न मुख के साथ भाइयों को सांत्वना देना शुरू कर दिया, मानो वे चाहते हों कि वे अभी-अभी कहे गए शब्दों को भूल जाएँ। संत के पहले के शब्दों को याद करते हुए कि उनकी बीमारी गंभीर नहीं थी, भाइयों ने सोचा कि वह बेहतर महसूस कर रहे हैं। उन्होंने उन्हें कुछ भोजन खाने के लिए कहा, लेकिन बड़े भाई ने मना कर दिया। उन्होंने प्याले से थोड़ा सा पिया, फिर उसे भाइयों को देते हुए कहा:

'मेरे बच्चों, यह प्याला पियो; इसे मेरी अंतिम आशीर्वाद के रूप में पियो, क्योंकि मैं इससे फिर कभी न तो पियूँगा और न ही खाऊँगा।'

उन्होंने भाइयों से लंबी बात की, उन्हें सांत्वना के और भी कई शब्द दिए, फिर अपने बिस्तर पर लेट गए, जहाँ अगले दिन उनका निधन हो गया। इनोसेंट को, जिसने उनकी बीमारी के दौरान उनकी देखभाल की थी, पूजनीय व्यक्ति ने शहद का एक पात्र विरासत में दिया; फिर उन्होंने भाइयों को उनके भोजन के लिए भेज दिया, क्योंकि दोपहर के भोजन का समय हो गया था। इनोसेंट, जो अपने बीमार गुरु के पास से नहीं हटा था, भोजन से जल्दी लौट आया और उन्हें बिस्तर पर लेटे हुए देखा; फिर, थोड़ी देर रुकने के बाद, उसने पूजनीय से पूछा:

'फादर पाफनुटियस! आप इसलिए ठीक नहीं हो रहे हैं क्योंकि आपने पूरे एक सप्ताह से कुछ भी नहीं खाया है। आप चुप क्यों हैं, मेरे प्रभु? आप अपना मठ किसे सौंप रहे हैं – भाइयों को या महा राजकुमार को? आप कुछ क्यों नहीं कहते?'

संत ने उत्तर दिया:

'परम पवित्र को।'

फिर, एक संक्षिप्त विराम के बाद, उन्होंने उससे कहा:

'भाई इनोसेंट! क्या आप सच कह रहे हैं?'

जब इन्नोकेन्टी ने देखा कि बिड़े भाई हक्के-बक्के रह गए हैं, तो वह चुप हो गया।

'भाई, किसने मुझे यह मठ स्थापित करने का आदेश दिया? स्वयं परम पवित्र रानी ने ऐसा करने की कृपा की। उन्हें इस स्थान से प्रेम था जहाँ उनका नाम महिमामय होता है, उन्होंने अपना चर्च बनाया, भाइयों और मुझे, एक भिखारी को, इकट्ठा किया, और लंबे समय तक भाइयों के साथ मुझे पोषित और सांत्वना दी। और अब, जब मैं, एक नश्वर मनुष्य, अपनी कफ़न में झाँक रहा हूँ और अपने लिए कुछ भी नहीं कर सकता, तो स्वर्ग की रानी स्वयं अपने मठ के लिए सबसे अच्छा प्रबंध करेंगी, ठीक वैसे ही जैसे उन्होंने इसकी शुरुआत की थी। आप भली-भाँति जानते हैं: यह मठ न तो राजसी शक्ति से बना, न ही शक्तिशाली लोगों के धन से, न ही सोने या चाँदी से, बल्कि ईश्वर की इच्छा और उनकी परम पवित्र माता की इच्छा से बना है। मैं अपनी सारी आशा उन पर रखता हूँ: उनकी दया से वह मुझे मेरे सफर में अंधकारमय और कपटी आत्माओं की हिंसा से बचाएंगी, और धर्मी न्याय के दिन वह मुझे अनंत यातना से मुक्ति दिलाएंगी और मुझे चुने हुए लोगों में गिनेंगी। यदि, तब, मुझे यह अनुग्रह प्राप्त होता है, तो मैं प्रभु से आपके लिए प्रार्थना करना नहीं छोड़ूंगा। इसलिए, आप स्वयं परिश्रमी बने रहें: एक पवित्र जीवन जिएँ; न केवल वैसे ही जैसे आप तब जीते थे जब मैं आपके साथ था, बल्कि उससे भी बेहतर; अपने उद्धार को भय और कम्प के साथ पूरा करें, ताकि, आपके अच्छे कर्मों के कारण, मैं चैन की सांस ले सकूँ, और ताकि मेरे बाद जो यहाँ आएँ वे भी अच्छी तरह से बस सकें। काश कि आपके देहांत के बाद आपको शांति मिले। प्रत्येक व्यक्ति उसी बुलावे में बना रहे जिसमें उसे बुलाया गया है। अपने आपको अकारण बड़ा न समझो – यह तुम्हारे लिए लाभदायक नहीं, बल्कि तुम्हारी आत्माओं के लिए हानिकारक है। न तो विचारों में और न ही कर्मों में अपने आपको अपने कमज़ोर भाइयों से ऊपर समझो, बल्कि उनके प्रति धीरज से बर्ताव करो, जैसे अपने अंगों के प्रति करते हो। आओ अब, मेरे बच्चों, भलाई करने में शीघ्रता करो!

यह कहने के बाद, संत थकान के मारे चुप हो गए।

कुछ ही समय बाद, मॉस्को के मेट्रोपॉलटिन गेरोन्टयिस[3354] द्वारा भेजा गया एक दूत मठ में पहुँचा, जसिके बाद ग्रैंड प्रसि और ग्रैंड प्रसिस के नए दूत भी आए। उन्होंने लगातार रेवरेंड फादर से मलिने और उनसे बात करने की मांग की। काफी समय तक, इन्नोकेन्टी ने इनकार कयिा और उन बीमार एल्डर को उनके बारे में बताना टालते रहे, लेकनि अंततः उन्होंने दूतों के बारे में जानकारी दी। एल्डर अपने शष्यि से नाराज़ हो गए और उन्होंने उससे कहा कि अपने 60 वर्षों के संन्यासी जीवन में, उन्होंने लगातार राजकुमारों, बोयारों और अन्य सामान्य लोगों के साथ व्यवहार कयिा है।

'अब मुझे एहसास हो गया है कि इसमें कोई लाभ नहीं है—यह केवल आत्मा के लिए एक परीक्षा है। अपनी दया में, बनिा पश्चाताप के पापी की मृत्यु नहीं चाहकर, प्रभु ने मुझे पश्चाताप के लिए छह दनि दिए हैं; फरि भी तुम मुझे कोई चैन नहीं देते, आम लोगों को मेरे पास लाते हो। अब मैं अपनी कोठरी से बाहर भी नहीं जा सकता, कहीं वे मुझे परेशान न करें।'

इनोसेंट इस बात से बहुत दुखी था कि उसने संत को नाराज़ कर दयिा था और उसे दूतों के लिए अनुमति भी नहीं मिली थी। अपनी कोठरी से बाहर नकिलकर, उसने उन्हें उस संत की प्रतक्रियिा बताई और उन्हें मठ छोड़ने के लिए कहा। हालाँकि, मठ छोड़ने के बाद, दूतों ने पास के एक गाँव में रात बतिाई ताकि वे अगली सुबह उस तपस्वी से मलि सकें। अगली रात, अपने जीवन की अंतमि रात, पवत्रि वृद्ध ने बनिा सोए, नरिंतर प्रार्थना में बतिाई: कभी-कभी वे भजन गाते, तो कभी-कभी उन्होंने यीशु की प्रार्थना का पाठ कयिा।

गुरुवार, 1 मई, पूजनीय पाफनुटयिस के नधिन का दनि आ गया। तपस्वी ने लतिर्जी को सामान्य से पहले मनाने का आदेश दयिा। वह स्वयं इसमें शामलि होने का इरादा रखता था; उसने जल्दी से तैयारी की और खुद से कहा: 'देखो, वह दनि आ गया है।'

भाइयों ने एक-दूसरे की ओर हैरानी से देखा, उन्हें समझ नहीं आ रहा था कि वरिष्ठ क्या कह रहे थे। इनोकेन्टी ने उनसे पूछा कि वह कसि दनि की बात कर रहे हैं।

'वह दनि जसिके बारे में मैंने आपसे पहले बात की थी,' संत ने उत्तर दयिा।

शष्यि ने दनिों का नाम लेना शुरू कयिा: रवविार, सोमवार, मंगलवार?

सम्माननीय ने कहा:

'आज गुरुवार है, वही जसिके बारे में मैंने तुमसे पहले बात की थी।'

भाईगण हैरान रह गए। वे बड़े भाई को चर्च ले गए, लेकनि उनके सेल से नकिलने से पहले ही, आदरणीय जोसेफ आ गए और उन्होंने बड़े भाई को सूचति कयिा कि कुलीनों द्वारा भेजे गए आम लोग उनका इंतजार कर रहे थे; कि पिछिले दनि वहां मौजूद लोगों के अलावा, नए लोग भी आ गए थे: वे सभी इकट्ठा हो गए थे और तपस्वी के चर्च जाने के रास्ते में खड़े थे। तब माननीय महोदय इस बात से आहत हो गए कि उन्होंने ईश्वर के घर जाने का उनका रास्ता रोक दयिा था, और वे अपनी कोठरी से बाहर नहीं नकिले। भाइयों को चर्च भेजने के बाद, वे बरामदे में बैठ गए और कहा: 'यह सब इनोकेन्टी का कयिा हुआ है; उसने ही ऐसा करने का आदेश दयिा है।'

इनोंकेन्ती ने, अपनी ओर से, अपना बचाव करने की हम्मित भी नहीं की।

वह भी चर्च गया, जबकि एल्डर एक ही शष्यि के साथ अपनी कोठरी में रहे और दरवाज़े बंद कर दिए ताकि भेजे गए लोग उन तक न पहुँच सकें। लि॥७जी के अंत में, आम लोगों को एहसास हुआ कि वे संत को नहीं देख पा रहे थे, और वे लौट गए। जब शष्यि फरि से उसके पास आए और चुपचाप उसके बस्तिर के चारों ओर खड़े हो गए, तो उसने जैसे कसिी और के बारे में कहा:

'उसका दनि आ गया है, और वह मर जाएगा।'

इनोसेंट ने पूछा, "फादर, आप कसिके बारे में बात कर रहे हैं, कौन मरने वाला है?"

'जसिके बारे में आप बात कर रहे हैं: जो बीमार है; उसने, पश्चाताप करके, मरना चाहता है,' उन्होंने कहा।

दोपहर के भोजन का समय हो गया था, और भाई भोजनशाला चले गए। केवल इनोकेन्टी बीमार व्यक्ति के साथ रह गया।

संत ने अपने शष्यि को उसे कोठरी के दूसरे तरफ ले जाने का नरि्देश दयिा, क्योंकि वहाँ ज्यादा शांत था; उन्होंने आदेश दयिा कि किसी को भी अंदर आने की अनुमति नि दी जाए।

[3354] मेट्रोपॉलटिन गेरोन्टयिस ने 1473 से 1489 तक रूसी चर्च का शासन कयिा।

'मैं थका हुआ हूँ,' उसने कहा, 'और मैं शाम की प्रार्थना तक आराम करना चाहता हूँ; शाम को, सभी भाई मेरे पास आएँगे।'

तभी शिष्य को एहसास हुआ कि उनके निधन का समय नजदीक आ रहा है।

इनोसेंट ने संत से पूछा:

'पिताजी, जब आप परलोक सिधारेंगे, तो क्या हमें आपके अंतिम संस्कार के लिए नगर के महापुजारी और अन्य पुरोहितों को बुलाना चाहिए?'

संत ने निर्देश दिया कि किसी को भी न बुलाया जाए और मठ के अपने पुरोहित ही काफी होंगे, ताकि लोग मठ में इकट्ठा न हों और पूरे शहर और गांवों में उनकी मृत्यु की खबर न फैलाएं। शिष्य ने पूछा:

'आपकी कब्र कहाँ खोदी जाए?'

उन्होंने निर्देश दिया कि इसे चर्च के दक्षिणी हिस्से में, चर्च के दरवाजों के पास खोदा जाए।

'और मेरे लिए ओक की ताबूत मत खरीदना,' संत ने कहा। 'इन छह सिक्कों से कुछ कलाच खरीदकर गरीबों को दे दो।'

शिष्य चुप हो गया, जबकि वृद्ध अपनी आत्मा की मुक्ति के लिए प्रार्थना कर रहे थे, और उन्होंने अपनी आशा परमेश्वर की अति पवित्र माता में रखी थी। उन्होंने अपने मठ को भी उन्हीं के हवाले कर दिया। इन्नोकेन्टी ने सम्मानित वृद्ध के सेवक को जगाया, उसे बीमार वृद्ध के पास बिठाया, और खुद बाहर जाकर सो गए, क्योंकि उन्हें खुद अस्वस्थ महसूस हो रहा था। जैसे ही वह झपकी लेने लगा, उसने आदरणीय की कोठरी में कई गायकों की आवाज़ें सुनीं। इस पर हैरान होकर, इनोसेंट कोठरी में गया और कोठरी के परिचारक से पूछा:

'भाइयों में से कौन यहाँ था?'

'कोई नहीं,' परिचारक ने उत्तर दिया। 'आपके जाने के बाद, उन्होंने आत्मा की शांति के लिए भजन के छंद गाते हुए यह गाना शुरू किया: "पवित्र लोगों ने जीवन का फव्वारा पाया है"।' भजन समाप्त करने के बाद, उन्होंने निम्नलिखित छंद गाए:

– *'धन्य हैं वे जिनका मार्ग निर्दोष है, जो प्रभु के विधान पर चलते हैं'* (भजन संहिता 118:1), – और अन्य।

इन्नोकेन्टी ने सेल सहायक से कहा, 'महात्मा ईश्वर के पास जा रहे हैं।'

शिष्य संत के पैरों पर गिर पड़े और उन्हें चूमने लगे, फिर क्षमा और आशीर्वाद की याचना करते हुए अपने माथे उनकी छाती से सटा लिए। लेकिन बड़े भाई अब उनकी बातों पर ध्यान नहीं दे रहे थे, बल्कि केवल प्रभु से प्रार्थना कर रहे थे: 'स्वर्गीय राजा, सर्वशक्तिमान! मैं आपसे, हे मेरे प्रभु, यीशु मसीह, प्रार्थना करता हूँ, कि मेरी आत्मा पर दया करें, ताकि वह दुष्टों की कैद में न पड़े, बल्कि आपके स्वर्गदूत उससे मिलें, उसे अंधकारमय परीक्षाओं के जालों से निकालते हुए और आपकी दया के प्रकाश की ओर निर्देशित करते हुए। हे प्रभु, मैं जानता हूँ कि तेरी मध्यस्थता के बिना कोई भी दुष्ट आत्माओं की चालाकी से नहीं बच सकता।"

मरणासन्न व्यक्ति के बाद के शब्द अस्पष्ट थे, और उसके शिष्यों को वे समझ नहीं आए। अचानक वह बाएँ से दाएँ मुड़ने लगा। कई बार शिष्यों ने उसे उसके बाएँ तरफ़ कर दिया, लेकिन वह फिर से दाईं ओर मुड़ जाता, और अनसुने शब्द फुसफुसाता रहा। इससे उन्होंने यह निष्कर्ष निकाला कि मरणासन्न तपस्वी कुछ असाधारण देख रहा था। भाई लोग कई बार उस आदरणीय के कक्ष के पास गए, लेकिन उनके साथ मौजूद दो शिष्यों ने कहा कि विरिष्ठ सो गए हैं। जब मठ में संध्या की प्रार्थना हो रही थी, तब आदरणीय ने मृत्यु की तैयारी की: उन्होंने अपने सीने पर क्रॉस के चिह्न में अपने हाथ जोड़ लिए और तीन साँसों में अपनी पवित्र आत्मा को प्रभु के हाथों में सौंप दिया।

आदरणीय पाफनुटियस का गुरुवार, 1 मई 1477 को, सूर्यास्त से एक घंटा पहले, यानी शाम के लगभग 7 बजे निधन हो गया[3355] । भ्रातृगण चर्च से बाहर आए और आदरणीय के निधन की खबर सुनकर उनके लिए जोर-जोर से रोए। तब तक संन्यासी को दफ़नाने में बहुत देर हो चुकी थी, और बिना सामान्य लोगों के दफ़न के संबंध में उनकी अंतिम इच्छा को पूरा करने के लिए, भाइयों ने अगले ही दिन, शुक्रवार, 2 मई को, सुबह 5 बजे अपने गुरु को दफ़ना दिया। भाइयों का शोक इतना गहरा था कि वे सभी रो पड़े और आँसू बहाए; कोई भी न तो गा सका और न ही भजन का नेतृत्व कर सका। अंत्येष्टि का

[3355] इन्nocent इसे इस प्रकार वर्णित करते हैं। वृत्तांत में कहा गया है कि पूज्यनीय महात्मा दिन के पंद्रहवें घंटे (सूर्योदय के बाद) में निधन कर गए। ध्यान में रखते हुए कि बोरोव्स्क में 1 मई को सूर्य लगभग 4 बजे उदय होता है, इस गणना के अनुसार तपस्वी का निधन शाम के सातवें घंटे में हुआ होगा।

संचालन आदरणीय के वफादार शष्यि, इनोकेन्टी ने कयिा था। अपनी आँसुओं के बीच, वह मुश्कलि से ही अंतमि संस्कार की रस्म का पाठ कर सका। 'और उस समय कोई भी गृहस्थ उपस्थति नहीं था; कसिी ने उसकी शवपेटकिा को नहीं छुआ; कसिी ने यह नहीं देखा कि उसे ताबूत में कैसे रखा गया,' – इनोकेन्टी इस प्रकार बताता है[3356] ।

जैसे ही दफ़न का काम पूरा हुआ, तपस्वी की मृत्यु की खबर बोरोव्स्क पहुँच गई, और पूरा शहर हलचल में पड़ गया। केवल भकि्षु और पुरोहति ही नहीं, बल्कि शहर के मजस्टि्रेट और लोग भी रेवरेंड फादर के मठ में गए। और यद्यपि पूरे नगर में यह खबर जल्द ही फैल गई कि संत के शरीर को पहले ही सुला दयिा गया है, लोग दनि भर मठ में उमड़ते रहे, और बड़ी भक्ति के साथ वे सभी दविंगत की ताबूत के सामने नतमस्तक हुए।

आदरणीय पाफनुटयिस के सम्मान में स्थानीय उत्सव 1531 में शुरू हुए। मॉस्को के मेट्रोपॉलटिन डेनयिल[3357] ने बशिपों के सनिड के साथ मलिकर, दव्यि सेवा के दौरान कैनन गाने और आदरणीय पाफनुटयिस के जीवन को पढ़ने का आशीर्वाद दयिा, और इस प्रकार उनके सम्मान में एक स्थानीय पर्व दविस की स्थापना की। हालांकि, 1547 की परषिद ने यह आदेश दयिा कि पूजनीय पाफनुटयिस की स्मृति का पूरे चर्च में पालन कयिा जाए।

परम पूज्यनीय के पवत्रि अवशेष मठ के मुख्य चर्च में, जो परम पवत्रि थओटोकोस के जन्म के लिए समर्पति है, उनके नाम से पवत्रि की गई एक पार्श्व वेदी में वरिाजमान हैं।

ट्रोपारयिन, स्वर 4:

अपने जीवन की करिणों से अपने स्वदेश को प्रकाशति कर, आप प्रार्थना और उपवास के द्वारा पवत्रि आत्मा के वरदानों से परपिूर्ण हुए; और, इस क्षणकि जीवन में अच्छी तरह से परश्रिम करके, आपने शोकग्रस्त सभी के लिए दया और करुणा के द्वार खोले, और आप गरीबों के लिए एक मध्यस्थ बने। इसलिए हम आपसे वनिती करते हैं, पति पाफनुतयिुस, कि आप हमारे ईश्वर मसीह से प्रार्थना करें कि वे हमारी आत्माओं को बचाएँ।

कॉन्टाकयिन, स्वर 8:

हे पति, ईश्वर के तेज से प्रकाशति होकर, आपने उपवास का जीवन प्राप्त कयिा; हे पूजनीय, आप भकि्षुओं के लिए एक उत्कृष्ट मार्गदर्शक और अपने उपवास द्वारा एक गौरवमय भूषण थे। इसी कारण, प्रभु ने, आपके श्रम को देखकर, आपको चमत्कारों के वरदान से समृद्ध कयिा है, क्योंकि आप रोगों को दूर करते हैं। हम, हर्षति होकर, आपको पुकारते हैं: हर्षति हो, फादर पाफनुटयिस।

- उसी दनि, हम पवत्रि शहीद मकारयिस, कीव के मेट्रोपॉलटिन का स्मरण करते हैं, जन्हिें 1497 में मन्स्कि गवर्नरेट के स्ट्रगिोलोवे गाँव में तातारों द्वारा मार डाला गया था।

संत वाटा का शहीदी दविस

1 मई को स्मरण कयिा जाता है

पवत्रि शहीद वाटा मूल रूप से फारस के रहने वाले थे। उनके पूर्वज ईसाई थे, और उनका पालन-पोषण स्वयं ईसाई धर्म में हुआ था। तीस वर्ष की आयु प्राप्त करने पर, उन्होंने अपने पति, माता, पत्नी और बच्चों को छोड़ दयिा, अपनी संपत्ति गरीबों में बाँट दी और, अपने पैतृक घर से नकिलकर, संन्यास का संकल्प लयिा। भकि्षु जीवन में पूरी लगन से संलग्न रहते हुए, उन्होंने शहादत द्वारा अपना जीवन समाप्त करने की इच्छा व्यक्त की। उस समय ईसाइयों पर अत्याचार का दौर चल रहा था[3358] , और जब संत के आश्रम के सभी भकि्षु भाग गए, तो वे अकेले ही वहाँ रह गए। उसे

[3356] हालाँकि, वृत्तांत और आदरणीय पाफनुटयिस की जीवनी दोनों में उल्लेख है कि एक धर्मनरिपेक्ष पुरोहति, नकिति—जो राजकुमार आंद्रेई वासलिीवचि के आध्यात्मकि पति थे—तपस्वी के अंतमि संस्कार में उपस्थति थे।

[3357] मेट्रोपॉलटिन डेनयिल ने 1522 से 1539 तक रूसी चर्च का नेतृत्व कयिा।

[3358] यह, बेशक, फारस में राजा शपुर द्वतिीय द्वारा ईसाइयों पर कए गए अत्याचारों को संदर्भति करता है, जन्होंने 310 से 381 तक शासन कयिा।

जल्द ही पकड़ लिया गया और निसीबिस शहर के राज्यपाल[3359] के सामने लाया गया। राज्यपाल ने उसे मसीह का त्याग करने और सूर्य और अग्नि की पूजा करने[3360] के लिए मजबूर करना शुरू कर दिया, लेकिन संत ने उसकी आज्ञा मानने से इनकार कर दिया और साहसपूर्वक मसीह को सच्चा ईश्वर स्वीकार किया। इसके लिए, उसके हाथ इतनी कसकर बांध दिए गए कि, अत्यधिक तनाव के कारण, वे उनके कंधे के जोड़ों से अलग हो गए। इसके बाद, संत को जमीन पर घसीटा गया और पूरे शरीर पर पीटा गया। इन सभी यातनाओं के बाद, पवित्र शहीद ने तलवार से सिर कलम किए जाने पर मसीह में अपने विश्वास के लिए प्राण त्याग दिए।[3361]

15 मई

2 मई (पुराने कैलेंडर के अनुसार)

संत एस्पेर और ज़ोई का शहादत दिवस

2 मई को स्मरणोत्सव

पवित्र शहीदों एस्पर, उनकी पत्नी ज़ोई, और उनके दो बेटों, सिरियिकस और थियोडुलस – जो चुने हुए लोगों के पिता, अब्राहम की तरह पृथ्वी पर यात्री थे, और अपने स्वर्गीय स्वदेश की ओर यात्रा कर रहे थे – को एक कुलीन रोमन, कैटुलस और उसकी पत्नी टर्टिया द्वारा दास के रूप में खरीदा गया था[3362] । यह कैटुलस रोम से पम्फिलिया[3363] , अटालिया[3364] शहर में आ गया; मूर्तिपूजक रोमनों के बीच प्रथा के अनुसार दास खरीदते समय, उसने फ्रीजिया[3365] में इन पवित्र शहीदों को खरीदा, जो एक ईसाई परिवार से थे और इसलिए प्रभु में विश्वास और आशा से परिपूर्ण थे।

कैटुलस का मूर्तिपूजक परिवार, जो मूर्तिपूजा में समर्पित था, अपनी आस्था की परंपराओं के अनुसार मूर्तियों को बलिदान चढ़ाता था और उन्हें अपने देवता कहता था। परन्तु मसीह के वफादार सेवक, अपने स्वामियों की व्यर्थ दुष्टता को देखकर, इस बात से बहुत दुखी हुए और, मसीही होने के नाते, वे अपने मूर्तिपूजक स्वामियों द्वारा प्रदान किए गए भोजन में भाग नहीं ले सकते थे, उन्हें अपवित्र होने का डर था, और यह डर और भी बढ़ गया क्योंकि उनके स्वामियों के अपने घर में भी मूर्तियाँ थीं।

एक दिन, संत ज़ोई, अपने मालकिों से भोजन प्राप्त करने के बाद, द्वार पर गईं और द्वारपाल से कहा:

[3366]'जाकर सो जाओ और थोड़ा आराम करो; अगर तुम्हारी ज़रूरत पड़ी, तो मैं तुम्हें जगा दूँगी। तुम तो पूरी रात जागकर, हमारे मालिक के घर आने-जाने वाले व्यर्थ लोगों को अंदर-बाहर करते हुए, पहले से ही काफी थक चुके हो।'

दरबान, उसकी सलाह मानकर, द्वार से हट गया और आँगन में सो गया, जबकि ज़ोई, इस डर से कि पास ही बँधे कुत्ते अपनी भौंक से उसे जगा सकते हैं, उन्हें थोड़ी ब्रेड दे दी और अपना बचा हुआ दोपहर का भोजन द्वार पर आने वाले भिखारियों और राहगीरों में बाँट दिया, और उन्हें ईसाई धर्म अपनाने के लिए प्रेरित किया।

कैटुलस के घर में ज़ोई के कर्तव्यों में उसके मालकिों द्वारा पाले गए घरेलू जानवरों को खिलाना शामिल था, जबकि उसके पति और बच्चे अपने नियोक्ताओं के लिए बाकी सभी काम करते थे।

[3359] निज़िबिस प्राचीन मेसोपोटामिया में, इसके उत्तरी भाग में, आर्मेनिया की सीमाओं के पास स्थित एक प्राचीन शहर है।

[3360] फ़ारसियों ने सर्वोच्च देवता मिथ्रा के रूप में सूर्य को पूजित किया, और अग्नि की भी पूजा की।

[3361] पवित्र शहीद की मृत्यु लगभग 364 में हुई।

[3362] प्राचीन काल में रोमनों के बीच दासता बहुत व्यापक थी, जैसा कि अन्य समकालीन लोगों के बीच थी। किसी भी संपन्न रोमन के पास दास होते थे। बहुत अमीर रोमनों के पास तो दसियों और सैकड़ों की संख्या में दास होते थे।

[3363] पम्फिलिया एशिया माइनर का एक क्षेत्र है।

[3364] अटालिया पम्फिलिया में एक शहर है, जो एशिया माइनर के दक्षिणी तट पर स्थित है। इसका नाम पर्गामोन के राजा अटालस द्वितीय (159–138 ईसा पूर्व) के नाम पर रखा गया था, जिन्होंने इसकी स्थापना की थी। यह शहर आज भी अदालिया नाम से मौजूद है; इसकी आबादी 15,000 है और यह तुर्की का हिस्सा है।

[3365] फ्रिजिया – एशिया माइनर का एक क्षेत्र।

[3366] फॉर्चयूना को रोमनों द्वारा खुशी की देवी और चूल्हे की संरक्षक माना जाता था।

वे दिन भर कड़ी मेहनत करते थे, और सूर्यास्त के समय वे उन बर्तनों में रखे भोजन में से थोड़ा-सा खाते थे, जिनके बारे में वे निस्संदेह जानते थे कि वे मूर्तिपूजक अनुष्ठानों से अशुद्ध नहीं हुए थे। यह भोजन उन्हें ईश्वर की कृपा से मिला था; जब वे इसे खा रहे थे, तो उन्होंने प्रभु के अपने पवित्र सुसमाचार में कहे गए वचन याद किए: *'आकाश के पक्षियों को देखो: वे न बोते हैं, न काटते हैं और न भंडारों में इकट्ठा करते हैं, और फिर भी तुम्हारा स्वर्गीय पिता उन्हें खिलाता है'* (मत्ती 6:26)।

एक बार, जब धन्य एस्पर को उसके मालकिों द्वारा कुछ काम करने के लिए भेजा गया, तो उसके बेटों, स्यरियाकस और थियोडुलस ने अपनी माँ से कहा:

'हम अब अधर्मी लोगों के बीच नहीं रहना चाहते; क्या आपने स्वयं हमें पवित्र धर्मग्रंथों के अनुसार प्रेरितों की आज्ञा का पालन करना नहीं सिखाया था: *"अविश्वासियों के साथ जुआ नहीं जोड़ना"* (2 कुरिन्थियों 6:14)? यदि हम पवित्र शास्त्रों की आज्ञा मानते हुए प्रभु की आज्ञाओं का पालन करना चाहें, लेकिन मूर्तिपूजकों से खुद को अलग न करें, तो हम प्रभु से वही दंड झेलेंगे जो वे झेलते हैं और ठीक वैसे ही नाश हो जाएंगे जैसे वे होते हैं।

माँ ने अपने बेटों को उत्तर दिया:

'मेरे प्रिय बच्चों! हम उनसे अलग कैसे हो सकते हैं? आखिरकार, वे हमारे स्वामी हैं; उनका अधिकार हमारे शरीरों पर भी है।'

उसके बेटों ने उससे उत्तर दिया:

मसीह ने हमारे लिए स्वयं को अविश्वासी यहूदियों के हाथों सौंप दिया; उन्हें सूली पर चढ़ाया गया, दफनाया गया, और तीसरे दिन पुनर्जीवित हो गए। यदि हम भी मसीह के नाम के लिए दुष्ट कैटुलस की शक्ति के सामने अपने शरीरों को यातना सहने के लिए समर्पित कर दें, तो भले ही वह हमें यातना के बाद मृत्युदंड दे दे, हमारी आत्माएँ हमेशा के लिए जीवित रहेंगी। इसलिए, हमें, , आनंद और हर्ष के साथ हमारे स्वामी के सामने प्रस्तुत करो; और जो कुछ भी प्रभु हमारे मुँह में डालेंगे, वही हम अपने स्वामी से कहेंगे।

और इन दोनों अच्छे युवकों ने, मसीह के पराक्रमी सैनिकों की तरह, मसीह के लिए शहीद होने की तैयारी की, और अपने स्वामी के सामने उपस्थित होकर प्रभु यीशु मसीह के नाम की गवाही देने के लिए एक अनुकूल अवसर की प्रतीक्षा की। उन्होंने एक-दूसरे से कहा:

'यदि हमारे प्रभु यीशु मसीह को यह भाए कि हम उनके पवित्र नाम के लिए मरें, तो इसके पुरस्कार स्वरूप हमें उन्हें देखने और उनके साथ सदा रहने का सौभाग्य मिलेगा।'

लेकिन उनकी माँ, इस डर से कि उसके बच्चे, दूसरों की तरह यातनाओं से अडिग रहकर, मूर्तियों की पूजा की ओर न मुड़ जाएँ, इस कारण से उनकी विनती मानने में हिचकिचाई (क्योंकि तब तक उनके मालकिों को यह नहीं पता था कि वे ईसाई थे); तो उसके बेटों ने उससे कहा:

'आप देरी क्यों कर रही हैं? आप किस बात से डर रही हैं? क्या आप नहीं जानती कि पवित्रशास्त्र क्या कहता है? *"मैं राजाओं के सामने तेरे प्रगट हुए वचन का प्रचार करूँगा और लज्जित न होऊँगा"* (भजन संहिता 118:46)।'

एक दिन, कैटुलस दोपहर के भोजन के समय कहीं से घर लौट रहा था। उसके दो भाई, स्यरियाकस और थियोडुलस, उससे मिलने बाहर आए और कहा:

'आपको शुभ दिन हो, हमारे दृश्यमान शरीरों के स्वामी: क्योंकि हमारे अदृश्य आत्माओं के स्वामी तो प्रभु यीशु मसीह हैं, जो स्वर्ग में वास करते हैं, सच्चे ईश्वर।'

कैटुलस उनके शब्दों से बहुत आश्चर्यचकित हुआ और कहा:

'ये युवक पागल हो गए हैं: वे यीशु मसीह का अजीब और अपरिचित नाम ले रहे हैं, उसे ईश्वर और प्रभु कह रहे हैं।'

तब, अपने सेवकों की ओर मुड़कर, उसने कहा:

'इन युवकों के पिता को मेरे पास बुलाओ।' नौकर तुरंत चले गए और, पिता को न पाकर, केवल युवकों की माँ को वापस ले आए। कैटुलस ने उससे पूछा:

'तुम्हारे पति कहाँ हैं?'

उसने उत्तर दिया:

'क्या तुम्हें ही उसे किसी काम से ट्रिटोनिया के गाँव नहीं भेजा था?'

कैटुलस ने कहा, 'अगर तुम अभी उसके साथ ट्रटिोनयिा में होतीं, तो तुम मुझे उस देवता की बातों से परेशान नहीं कर रही होतीं जसिकी तुम पूजा करती हो, जसिके बारे में न तो मैंने और न ही कसिी और ने कभी एक शब्द भी सुना है।' हालाँकि, मैं अभी तुम्हारी परीक्षा नहीं लेना चाहता; लेकनि जब टर्टयिा बच्चे को जन्म दे देगी और मैं उस अवसर पर हमारी महान देवी फॉर्चूना को धन्यवाद का बलदिान चढ़ाऊँगा, तब मैं तुम्हारी परीक्षा लूँगा।

और उसने तुरंत आदेश दयिा कि संत ज़ोई और उसके बच्चों को ट्रटिोनयिा में उनके पति के पास भेज दयिा जाए।

वहाँ आकर, माँ और बच्चे आनंदति हुए और प्रसन्न हुए, वे गीतों और बातचीत में पवत्रि शास्त्र के वचनों को याद कर रहे थे: *'यहोवा मेरा रखवाला है; मुझे कुछ भी कमी न होगी। वह मुझे हरे चरागाहों में लटिाता है'* (भजन संहति 22:1–2)। और यह भी: *'तूने मेरी आत्मा को अधोलोक से उबार लयिा है'* (भजन संहति 85:13) और *'तूने मेरी आत्मा को मृत्यु से बचाया है'* (भजन संहति 114:7) (अपने हृदय में, संतों ने अपने स्वामी के घर को नरक, कैटुलस को मृत्यु, और मूर्तयिों को नरक की आग माना)।

लेकनि फरि कैटुलस का बेटा पैदा हुआ। सारे नगरवासी प्रसन्न हुए और कैटुलस के साथ उसकी संतान के जन्मदनि का उत्सव मनाया, अपनी देवी फॉर्चूना को कृतज्ञता की बलि चिढ़ाई। उस समय, संत ज़ोई ने ईश्वर से प्रार्थना की, उनसे अपने पति और बच्चों को धैर्यपूर्वक इस कष्ट को सहने की शक्ति प्रदान करने का आग्रह कयिा। इस बीच, भोज के अंत में, कैटुलस ने अपनी पत्नी, टर्टयिा से कहा:

'हमारे पूरे परविार और हमारे नौकर-चाकर हमारे भोज में आनंद लें।'

उसने उससे उत्तर दयिा:

'बहुत अच्छा, सभी आनंद लें।'

तुरंत उन्होंने अपने सेवकों को—जनिमें एस्पेर का परविार भी था—मूर्तपिूजक भोज से एक मदरिा का पात्र और एक मांस का व्यंजन भेजा। संत ज़ोए ने, दूर से अपने स्वामी के उपहार ले जाते सेवकों को देखकर, आह भरते हुए कहा:

'हे प्रभु, अकथनीय परमेश्वर, जो मनुष्यों के गुप्त वचिारों को जानते हैं! हे हमारे प्रभु, हम दीन यात्रयिों के साथ रहो; आप के सविाय हम कसिी अन्य देवता को नहीं जानते। हमें दृढ़ता से आपके पवत्रि नाम का अंगीकार करने में सहायता करें।'

यह कहकर, वह लाए गए उपहारों के पास गई और, मांस लेकर, उसे कुत्तों को फेंक दयिा, जबकि उसने शराब को जमीन पर गरिा दयिा। नौकर तुरंत गया और यह सब अपने मालकि को बता दयिा।

यह खबर सुनकर कैटुलस बहुत क्रोधति हो गया, और उसने आदेश दयिा कि एस्पेरस और उसके परविार को तुरंत उसके घर लाया जाए। अपने स्वामी के घर जाते समय, ज़ोई ने अपने पति और बच्चों को प्रोत्साहति करते हुए कहा:

'हम दुष्ट कैटुलस के क्रोध या हमारे लिए उसके द्वारा रखी गई यातनाओं से न डरें, बल्कि उन्हें साहसपूर्वक सहें, ताकि अपना कार्य पूरा करके हम मसीह और उनके संतों के स्वर्गीय राज्य में प्रवेश कर सकें।'

जब संतों को स्वामी के घर में लाया गया, तो कैटुलस ने उनसे पूछा:

'जब तुमने मुझ पर इतना अपमान कयिा तो तुम कसिकी सुरक्षा पर भरोसा कर रहे थे? तुमने हमारी भेंटों को कुत्तों के सामने फेंकने की हम्मित कैसे की? हालाँकि, मैं अपने सम्मान की रक्षा उतनी नहीं कर रही हूँ, जतिना कि हमारी महान देवी, फॉर्चूना के सम्मान की।'

संत ज़ोई ने उनसे उत्तर दयिा:

'हमारी आशा और वशि्वास जीवति परमेश्वर के पुत्र, प्रभु यीशु मसीह में है; परन्तु जनि्हें तुम पूजते हो वे दानव हैं।'

कैटुलस ने उत्तर दयिा:

'अब मैं तुम्हारे बेटों को यातना दूँगा; फरि हम देखेंगे कि क्या मसीह, जसिे तुम ईश्वर कहते हो, उन्हें उनके दुख से मुक्त कर सकता है।'

तब जल्लादों ने दोनों युवकों को नग्न कर दयिा, उन्हें एक पेड़ पर लटका दयिा और लोहे के औजारों से उन्हें यातना देने लगे। संत ज़ोए ने अपने बच्चों की पीड़ा को देखकर, इन शब्दों से उन्हें बल दयिा:

'अपने दुखों को साहसपूर्वक सहो, मेरे बच्चों! सहन करो; दुष्ट कैटुलस द्वारा तुम्हें दी जा रही यातनाओं से हतोत्साहति न होओ।'

उसके बच्चों ने उत्तर दयिा:

'ये यातनाएँ हमारे लिए बहुत हल्की हैं: उस दुष्ट स्वामी से कहो कि वह इससे भी बड़ी यातनाएँ सोचे, ताकि हम अपने दुःखों के माध्यम से आने वाले जीवन में शहादत के मुकुट अर्जित कर सकें।'

संत ज़ोई ने कैटुलस से कहा:

'तुम मेरे बच्चों को बहुत हल्की यातनाएँ दे रहे हो; उन्हें कोई खास पीड़ा महसूस नहीं हो रही है; उनकी पीड़ा बढ़ाने की कोशिश करो।'

तब दुष्ट कैटुलस ने संत ज़ोई, धन्य एस्पर और उनके बच्चों को क्रूरतापूर्वक यातनाएँ देने के बाद, उन्हें सभी को एक जलती हुई भट्टी में फेंकने का आदेश दिया, और उसकी निगरानी के लिए पहरेदार तैनात कर दिए।

पवित्र शहीदों ने जलती हुई भट्टी के भीतर प्रभु का भजन किया और उनकी महिमा की। हालाँकि, कैटुलस ने जब उनका गायन सुना और संतों को अछूता देखा, तो वह इस बात पर बहुत चकित हुआ कि आग जैसी मौलिक शक्ति ने न तो उन्हें मार डाला और न ही उनके शरीरों को राख में बदल दिया। यह मानते हुए कि ईसाई किसी प्रकार की जादू-टोने से तत्वों को वश में कर रहे थे, उसने उन्हें मारने का कोई और, उससे भी अधिक क्रूर तरीका सोचना शुरू कर दिया। लेकिन पवित्र आत्मा ने पवित्र शहीदों से कहा:

'हौसला रखो! कैटुलस तुम्हें नष्ट करने के लिए और भी बड़े-बड़े यातनाएँ रच रहा है।'

यह सुनकर, शहीदों ने प्रार्थना करते हुए कहा:

'हे हमारे प्रभु यीशु मसीह के पिता, हे परमेश्वर, हमारी आत्माओं को शांतिपूर्वक ग्रहण करो।'

और थोड़ी ही देर बाद, संतों ने अपनी पवित्र आत्माएँ ईश्वर के हाथों में सौंप दीं।

यह घटना हैड्रियन के शासनकाल में[3367] , मई के दूसरे दिन हुई।

अगले दिन, दुष्ट कैटुलस अपने साथियों के साथ भट्टी पर आया और उसने देखा कि संतों के शहीद शरीर आग से अछूते थे। शरीर पूर्व की ओर मुख करके पड़े थे, जबकि उनकी पवित्र आत्माएँ सम्मानित शहीदों, स्वर्गदूतों और महादूतों की कतार में शामिल हो गई थीं। और स्वर्ग से एक आवाज सुनाई दी:

'हे धर्मी लोगो, अपने प्रभु के स्वर्ग में प्रवेश करो। परन्तु हे दुष्ट कैटुलस, तू गेहेना में जाएगा और वहाँ न बुझने वाली आग में सदा के लिए पीड़ा सहना।'

इस प्रकार, दुष्ट कैटुलस ने अनंत यातनाएँ झेलीं, जबकि मसीह के पवित्र शहीदों के लिए स्वर्ग के द्वार खुल गए। उनके दुःख-कष्टों के माध्यम से, उन्होंने शाश्वत आनंद प्राप्त किया, हमारे प्रभु यीशु मसीह के साथ निवास करते हुए, जिन्हें शाश्वत महिमा अर्पित है। आमीन।

रूस के राजकुमार, पवित्र शहीदों बोरिस और ग्लेब के कष्ट और चमत्कार[3368]

2 मई को स्मरण किया जाता है

धर्मी की संतति परमेश्वर की धन्य रहेगी (भजन संहिता 111:2)।

संत व्लादिमीर, स्वियातोस्लाव के पुत्र और इगोर के पोते, जिन्होंने पवित्र बपतिस्मा के माध्यम से पूरे रूस देश को प्रकाशित किया, के बारह पुत्र थे, एक पत्नी से नहीं, बल्कि विभिन्न पत्नियों से।

सबसे बड़े बेटे का नाम वयेशस्लाव था[3369] , दूसरे का इज़्यास्लाव, और तीसरे का स्वियातोपोलक था, जिसने अपने भाइयों की दुष्ट हत्या की साजिश रची। स्वियातोपोलक की माँ, एक ग्रीक महिला, पहले एक नन (सन्यासिनी) थी। व्लादिमीर के भाई, यारोपोलक, उसकी सुंदरता से मोहित होकर, उसे धर्मत्यागी बनाकर उससे विवाह कर लिया।

[3367] सम्राट हैड्रियन ने 117 से 138 तक रोमन साम्राज्य पर शासन किया। पवित्र शहीदों की मृत्यु का सटीक वर्ष अज्ञात है।

[3368] यह जीवनी जैकब द मोंक की एक रचना का अनुवाद है, जिसका शीर्षक 'द नैरेटिव ऑफ द पैशन्स एंड प्रेज़ ऑफ द मार्टरिडम ऑफ़ सेंट्स बोरिस एंड ग्लेब' है, जो उनकी शहादत के कुछ साल बाद, या तो यारोस्लाव के शासन के अंत में या इज़्यास्लाव के शासन की शुरुआत में लिखी गई थी, किसी भी स्थिति में 1072 से पहले, साथ ही इस हागीओग्राफी के निरंतरता का भी अनुवाद, जो प्राचीन पांडुलिपियों में इसके साथ मिलती हैं। इस अनुवाद में 'धन्य पीड़ा-भोगी बोरिस और ग्लेब के जीवन और शहादत पर पाठ' को भी शामिल किया गया है, जिसे सम्माननीय नेस्टर द क्रॉनिकलर ने याकूब द मॉंक के बाद और 1091 से पहले रचा था, और साथ ही 'पवित्र पीड़ा-भोगी, रूसी राजकुमारों की शहादत का वृत्तांत, बोरीस और ग्लेब', जिसे सेंट डेमेट्रियस ऑफ रोस्तोव ने संकलित किया है (मेनायोन में 2 मई के अंतर्गत)।

[3369] वशिस्लाव की मृत्यु 1010 में अपने पिता के जीवित रहते ही हो गई।

व्लादमिीर, जो उस समय एक पगान (ईसाई धर्म-वरिोधी) था, ने यारोपोलक को मार डाला और उसकी पत्नी को अपनी पत्नी बना लयिा। उसी से शापति स्वयितोपोलक का जन्म हुआ था। और व्लादमिीर उससे प्यार नहीं करता था।

व्लादमिीर के अन्य पुत्र भी थे - रोगनेदा से चार: इज्यास्लाव, म्स्तस्लिाव, यारोस्लाव और वेसेवोल्द। एक चेक महलिा से उन्हें वशिेस्लाव हुआ; एक अन्य पत्नी से, स्वयितोस्लाव और म्स्तस्लिाव; और एक बुल्गारयिाई महलिा से, बोरसि और ग्लेब। और उनके पतिा ने उन्हें वभिन्नि भूमि पर शासन करने के लिए नयिुक्त कयिा: स्वयितोपोलक को पसिक में, यारोस्लाव को नोवगोरोड में, बोरसि को रोस्तोव में, और ग्लेब को मुरोम में[3370] ।

अपने पवत्रि बपतस्मिा के अठ्ठाइस वर्ष बाद, व्लादमिीर एक गंभीर बीमारी से ग्रस्त हो गए। उस समय, बोरसि अपने पतिा से मलिने रोस्तोव से आए। पेचेनेग[3371] रूसी भूमि पर आक्रमण कर रहे थे, और व्लादमिीर बहुत दुखी थे, क्योंकि उनके पास अधर्मी लोगों का सामना करने की शक्ति नहीं थी। इससे चतिति होकर, उन्होंने बोरसि को बुलाया, जन्हिें उनके पवत्रि बपतस्मिा में रोमन नाम दयिा गया था[3372] । उनके पतिा ने, जो धन्य और आज्ञाकारी थे, बोरसि को बहुत सारे योद्धा दए और उन्हें अधर्मी पेचेनेगों के खलिाफ भेजा। बोरीस खुशी-खुशी रवाना हुआ, और अपने पतिा से कहा: 'मैं हाज़रि हूँ, आपके सामने तैयार हूँ, जो कुछ भी आपका मन चाहे, करने के लिए।'

ऐसों के बारे में नीतवचिन में कहा *गया है: 'एक पुत्र जो अपने पतिा का आज्ञाकारी और अपनी माता का प्रयि है'* (नीतवचिन 4:3)।

लेकनि बोरसि को अपने दुश्मन नहीं मलि। अपनी वापसी यात्रा पर, एक दूत आया और उसने उसे बताया कि उसके पतिा, व्लादमिीर, जसिका नाम बेसलि रखा गया था, की मृत्यु हो गई थी[3373] , और यह कि स्व्यातोपोलक ने अपने पतिा की मृत्यु को छपिाया था; रात के दौरान उसने बेरेस्तोवो गाँव के कमरों का फर्श हटा दयिा था, मृतक के शरीर को एक कालीन में लपेटा था, उसे रस्सयिों से नीचे उतारा था, स्लेज द्वारा[3374] चर्च ऑफ द होली मदर ऑफ गॉड[3375] तक ले गया था और उसे वहाँ रख दयिा था। यह सब गुप्त रूप से कयिा गया था।

यह सुनकर बोरसि का शरीर कमजोर पड़ गया; उसका पूरा चेहरा आँसुओं से भीग गया और वह बोल नहीं सका। लेकनि अपने दलि में वह अपने पतिा के लिए बहुत वलिाप कर रहा था: 'हाय मेरे लिए, मेरी आँखों की रोशनी, मेरे चेहरे की चमक और भोर, मेरे यौवन के शकि्षक , मेरी मूर्खता की सजा; हाय मेरे लिए, मेरे पतिा और मेरे स्वामी!' मैं कसिकी शरण जाऊँ, कसिकी ओर देखूँ, कहाँ मुझे आपकी बुद्धमित्ता की अच्छी शकि्षा और अनुशासन मलिेगा? हाय मेरी दुर्दशा, हाय मेरी दुर्दशा! मेरा सूरज डूब गया, और मैं यहाँ नहीं था; मैं स्वयं आपके सम्मानति शरीर को कपड़े नहीं पहना सका और न ही आपको अपनी हथेलयिों पर उठाकर ताबूत में रख सका। मैंने आपके सुंदर और वीर शरीर को नहीं उठाया; मुझे आपके सफेद बालों को चूमने का सम्मान नहीं मलिा! हे मेरे धन्य, अपनी वश्रिाम-स्थली में मेरा स्मरण करना। मेरा हृदय भीतर ही भीतर जलता है, मेरा मन व्याकुल है; मुझे नहीं पता कि मैं अपना कड़वा दुख बयां करने के लिए कसिके पास जाऊँ। अगर

[3370] आदरणीय नेस्टर, संतों बोरसि और ग्लेब के शुरुआती वर्षों के बारे में नम्निलखिति रपिोर्ट करते हैं। संत व्लादमिीर ने अपने सभी बच्चों को उन जलिों में भेज दयिा जनिके प्रशासन का उन्होंने उन्हें जम्मिा सौंपा था, लेकनि बोरसि और ग्लेब को अपने पास रख लयिा क्योंकि वे बहुत छोटे थे। संत ग्लेब अभी केवल एक बच्चा थे, जबकि संत बोरसि में पहले से ही महान बुद्धमित्ता थी, वे ईश्वर की कृपा से परपिूर्ण थे, शकि्षति थे और उन्हें कतिाबें पढ़ना पसंद था। वे संतों के जीवन और कष्टों के बारे में पढ़ते थे और आँसुओं के साथ प्रार्थना करते हुए, प्रभु से उन संतों में से एक का भाग देने के लिए कहते थे। इस प्रकार वह लगातार प्रार्थना करते थे, जबकि संत ग्लेब उनकी बात सुनते हुए हमेशा उनके साथ रहते थे। जब संत बोरसि वयस्क हुए, तो उनके पतिा ने उनकी शादी करने का नश्चिय कयिा। लेकनि संत शादी नहीं करना चाहते थे। हालाँकि, बोयारों ने उनसे अपने पतिा की अवज्ञा न करने का आग्रह कयिा। अपने पतिा के प्रति आज्ञाकारति के कारण, संत ने उनकी वनिती पर ववािह कर लयिा। तब उनके पतिा ने उन्हें वोल्ह्यमरि-वोल्हनिस्की में शासन करने के लिए भेजा, जहाँ उन्होंने बहुत दया दखिाई; लेकनि जब उन्हें पता चला कि स्वयितोपोलक, ईर्ष्या के कारण, बोरसि की जान लेने की साजशि रच रहा था, तो उन्होंने उन्हें कीव वापस बुला लयिा। यह संभवतः बोरसि के रोस्तोव मशिन से पहले हुआ था।

[3371] चेनजेक, तुर्की मूल के एक खानाबदोश लोगों ने, 10वीं शताब्दी के दूसरे भाग से रस पर छापेमारी करना शुरू कर दयिा। संत व्लादमिीर ने चेनजेक के खलिाफ एक रक्षात्मक रेखा के रूप में देसना, ओस्ट्रा, त्रुबेज़, सुला और स्टुग्ना नदयिों के कनिारे शहर बसाए। बाद में उन्हें दक्षणिी रूसी घास के मैदानों से तुर्क और पोलोव्त्सयिानों द्वारा खदेड़ दयिा गया, जो कि वे भी तुर्की लोग थे।

[3372] संत रोमन द मेलोडस्टि के नाम पर

[3373] १५ जुलाई १०१५

[3374] प्राचीन रूस में, अंतमि संस्कार की प्रार्थना के लिए मृतक को स्लेज पर चर्च ले जाने की प्रथा थी।

[3375] स्वाभावकि रूप से, यह कीव में दशांश चर्च (Church of the Tithes) को संदर्भति करता है, जो परमेश्वर की माता की महमिा को समर्पति था, और जसिे संत व्लादमिीर ने बनवाया और सजाया था। प्राचीन प्रोलॉग्स में, इस चर्च के अभषिेक का उल्लेख 11 मई को हुए के रूप में दर्ज है।

उस भाई के पास जाऊँ जिसे मैं पिता के स्थान पर चाहता था, तो लगता है कि वह सांसारिक व्यर्थताओं और मेरी हत्या में व्यस्त है। यदि, हालाँकि, वह मुझे मारने का निश्चय करता है, तो मैं अपने प्रभु के लिए एक शहीद बन जाऊँगा। लेकिन मैं विरोध नहीं करूँगी, क्योंकि लिखा है: *'प्रभु घमण्डी लोगों का विरोध करते हैं, पर नम्र लोगों पर अनुग्रह करते हैं'* (याकूब 4:6)। प्रेरित कहते हैं: *'जो कोई कहता है, "मैं परमेश्वर से प्रेम करता हूँ" पर अपने भाई से बैर रखता है, वह झूठा है'* (1 यूहन्ना 4:20)। और फिर: *'प्रेम में भय नहीं है, पर सिद्ध प्रेम भय को दूर कर देता है'* (1 यूहन्ना 4:18)। पर मैं क्या कहूँ और क्या करूँ? मैं अपने भाई के पास जाऊँगा और कहूँगा: 'मेरे लिए पिता बनो, मेरे बड़े भाई बनो; आप मुझे क्या आज्ञा देते हैं, मेरे स्वामी?'

मन में ऐसा सोचते हुए, बोरिस अपने भाई के पास गया, और मन ही मन कहा: 'वहाँ मैं अपने छोटे भाई ग्लेब का चेहरा देखूँगा, जैसे यूसुफ़ ने बिन्यामीन को देखा था। हे प्रभु, तेरी इच्छा पूरी हो' (उत्पत्ति 43:29)।

और बोरिस ने सोचा: 'अगर मैं अपने पिता के घर जाता हूँ, तो कई लोग मेरे दिल को अपने भाई को निर्वासित करने के विचार की ओर मोड़ देंगे, जैसा कि मेरे पिता ने मेरे पवित्र बपतिस्मा से पहले, इस दुनिया पर शासन करने की महिमा के लिए किया था[3376] । लेकिन यह सब क्षणिक, अस्थायी और मकड़ी के जाले से भी अधिक असत्य है। लेकिन, यदि मैं ऐसा करने का निश्चय करूँ, तो मैं कहाँ जाऊँगा, मेरा क्या होगा, तब मैं क्या उत्तर दूँगा, मैं अपने पापों की भीड़ को कहाँ छिपाऊँगा? मेरे पिता के भाइयों और मेरे पिता ने क्या प्राप्त किया? उनके जीवन और इस संसार का वैभव—बैंगनी रंग के चोगा और दावतें, चाँदी और सोना, शराब, शहद और आटा, तेज, उत्तम घोड़े, विशाल जमींदारियाँ, अनगिनत श्रद्धांजलि और सम्मान, और अपने बोयारों पर जो गर्व वे करते थे, वह सब कहाँ है? यह सब अब ऐसा है मानो कभी था ही नहीं; यह सब उनके साथ ही लुप्त हो गया है। और न तो उनके धन से, न ही उनके अनगिनत दासों से, और न ही इस दुनिया की महिमा से उनकी कोई मदद हो सकती है। देखो, सुलैमान ने सब कुछ अनुभव किया, सब कुछ देखा, सब कुछ प्राप्त किया, और सब कुछ पर विचार करने के बाद कहा: *'व्यर्थ की व्यर्थता, सब कुछ व्यर्थ है'* (उपदेशक 1:2); मदद केवल अच्छे कर्मों से, सच्चे विश्वास से और सच्चे प्रेम से आती है।"

जैसे ही वह आगे बढ़ा, बोरिस ने अपने शरीर की सुंदरता और ताकत पर विचार किया और जोर-जोर से रोया; वह अपने आँसू रोकना चाहता था, लेकिन नहीं रोक सका, और जो भी उसे रोते हुए देखता, वह उसकी कुलीन सुंदरता और अच्छे दिमाग के लिए रोता था, और हर कोई अपने दिल में दुखी हुआ: उसका दुख सभी को भावुक कर गया। और बोरिस की मृत्यु की पूर्वछाया देखकर, उसका निराश चेहरा और दुख देखकर, कौन रोने से खुद को रोक पाता! क्योंकि वह धन्य राजकुमार धर्मी, उदार और कोमल, नम्र और विनिम्र था; वह सभी पर दया करता था और सभी की मदद करता था।

लेकिन संत बोरिस इस विचार से मजबूत हुए कि, भले ही उनके भाई, दुष्ट लोगों द्वारा गुमराह होकर, उन्हें मार डालें, तो वे एक शहीद होंगे और प्रभु उनकी आत्मा को स्वीकार करेंगे। उन्होंने अपनी घातक पीड़ा को भूलकर, ईश्वर के वचनों से अपने हृदय को सांत्वना दी: *'जो कोई मेरी और सुसमाचार के लिए अपना जीवन खोता है, वह उसे बचाएगा'* (मरकुस 8:35) और उसे अनंत जीवन के लिए सुरक्षित रखे।

और बोरिस आनंदित हृदय से आगे बढ़ा, यह कहते हुए: 'हे परम दयालु प्रभु, मुझ पर तिरिस्कार न करें, जो आप में अपनी आशा रखता हूँ, बल्कि मेरी आत्मा को बचाएँ।'

इस बीच, स्व्यातोपोलक ने कीव में अपने पिता के राजसी सिंहासन पर आसीन होकर, कीव के लोगों को बुलाया, उनके बीच कई उपहार बांटे और उन्हें विदा कर दिया। फिर उसने बोरिस को इन शब्दों के साथ एक संदेश भेजा:

'भाई, मैं तुम्हारे साथ प्रेम में रहना चाहता हूँ और हमारे पिता की विरासत में तुम्हारा हिस्सा बढ़ा दूँगा।'

ये शब्द चापलूसी थे, सत्य नहीं।

स्वियातोपोलक रात में गुप्त रूप से विस्हगोरोद पहुँचा, उसने पुत्शा और विस्हगोरोद के लोगों को बुलाया, और उनसे कहा:

'मुझसे सच कहो: क्या तुम्हारे मन में मेरे प्रति कोई भलाई की भावना है?'

पुत्शा ने कहा:

– हम सभी आपके लिए अपनी जान देने को तैयार हैं।

[3376] यही व्लादिमीर ने अपने भाई यारोपोलक के साथ किया।

बुराई का पुरान दुश्मन, शैतान, यह देखकर कि संत बोरसि ने अपनी सारी आशा ईश्वर में रख दी थी, उसने स्व्यातोपोलक पर अपना और भी प्रबल प्रभाव डालना शुरू कर दिया, जो काइन की तरह, भाई-भ्राता की हत्या की आग में जल रहा था, और उसने अपने पिता के सभी वारिसों को मार डालने और स्वयं सत्ता पर कब्जा करने का निश्चय कर लिया था।

उस नीच, शापित स्व्यातोपोलक ने, जो सभी बुराइयों का उत्प्रेरक और सभी अन्यायों का सरगना था, एक बार फिर विष्णिगोरोद के लोगों को अपने पास बुलाया, अपना घिनौना मुँह खोला, अपनी दुष्ट आवाज़ में बोला और पुत्शा के लोगों से कहा:

'यदि तुम मेरे लिए अपनी जान देने का वादा करते हो, तो गुप्त रूप से जाओ, मेरे भाइयो, मेरे भाई बोरसि को ढूंढो और जब समय सही हो, तो उसे मार डालो।'

और उन्होंने स्व्यातोपोलक से वादा किया कि वे ऐसा ही करेंगे। ऐसे लोगों के बारे में भविष्यवक्ता ने कहा: *'उनके पैर बुराई की ओर दौड़ते हैं, और वे निर्दोषों का रक्त बहाने के लिए जल्दी करते हैं; उनके मार्ग अन्याय के मार्ग हैं, और वे अपनी आत्मा में दुष्टता को अपनाते हैं'* (नीतिवचन 1:16; यशायाह 59:6–7; रोमियों 3:15)।

अपने वापसी के सफर पर, धन्य बोरसि नदी अल्ता[3377] पर तंबुओं में रुके। और उनके अनुचर उनसे कहने लगे:

'जाओ और अपने पिता की राजसी मेज़ पर अपनी जगह लो, क्योंकि सभी योद्धा तुम्हारे साथ हैं[3378] ।'

लेकिन उन्होंने उनसे उत्तर दिया:

'मैं अपने भाई के विरुद्ध हाथ नहीं उठाऊँगा, और न ही अपने से बड़े के विरुद्ध, जिन्हें मुझे पिता के समान मानना चाहिए।'

यह सुनकर योद्धा बोरसि से पीछे हट गए, और वह अपने जवानों के साथ अकेला रह गया[3379] ।

यह एक सब्बाथ का दिन था।

दुख से अभिभूत होकर, वह अपने तंबू में गया और आँसुओं के साथ विलाप करते हुए पुकारा:

'हे प्रभु, मेरे आँसुओं को तुच्छ न समझिए। मुझे आप पर विश्वास है कि मैं आपके सभी संतों के साथ, आपके सेवकों के भाग में सहभागी होऊँगा। क्योंकि आप एक दयालु परमेश्वर हैं, और हम आपको युगानुयुग महिमा देते हैं, आमीन।'

जैसे ही उसने ये शब्द कहे, उसके मन में संत निकिता और संत व्याचेस्लाव के कष्ट और पीड़ा का ध्यान आया, और वह सोचने लगा कि उसे भी उस राजकुमार की तरह मार डाला जाएगा, और कैसे संत बारबरा को उसके अपने पिता ने ही मार डाला था। उसके मन में बुद्धिमान सुलैमान के वचन आए: *'किन्तु धर्मी सदा जीवते हैं; उनका प्रतिफल प्रभु के पास है, और सर्वोच्च उनकी परवाह करते हैं'* (बुद्धिमान 5:15)। केवल इन्हीं शब्दों से उसे सांत्वना और आनंद मिला।

शाम हो गई, और संत बोरसि ने संध्या सेवा का आयोजन करने का आदेश दिया; जबकि वे स्वयं अपने तंबू में चले गए और कड़वाहट भरे आँसुओं, बार-बार आहों और कई कराहों के साथ प्रार्थना और संध्या सेवा करने लगे। फिर वे लेट गए और सो गए। और उसकी नींद कई विचारों और इस गहरे और भयानक दुख से भरी रही कि वह कैसे पीड़ा सहन कर सकता है, अपने जीवन का अंत कर सकता है, और अपने विश्वास को बनाए रख सकता है, ताकि वह सर्वशक्तिमान के हाथ से उसके लिए तैयार किया गया मुकुट प्राप्त कर सके।

जल्दी जागने पर, उन्होंने देखा कि पहले ही मैटिन्स का समय हो चुका था। क्योंकि यह पवित्र रविवार था। और उन्होंने अपने पुरोहित से कहा:

'उठो और मैटिन्स आरंभ करो।'

उन्होंने स्वयं अपने जूते पहने, अपना चेहरा धोया, और प्रभु ईश्वर से प्रार्थना करने लगे।

स्वयातोपल्क द्वारा भेजे गए दूत रात में अल्ता पहुँचे; जैसे ही वे पास आए, उन्होंने धन्य शहीद की मतिन्स के लिए निर्धारित भजन गाने की आवाज़ सुनी। संत को उनके आसन्न हत्या की खबर पहले ही मिल चुकी थी, और उन्होंने गाया:

– *'हे प्रभु! मेरे कितने शत्रु हैं! कई लोग मेरे विरुद्ध उठते हैं!'* (भजन संहिता 3:2) और अन्य भजन संहिताएँ।

[3377] दक्षिण में पेरियास्लाव के पास।

[3378] नेस्टर के अनुसार, बोरसि के पास लगभग 8,000 पुरुषों का एक दल था।

[3379] नेस्टर के वृत्तांत के अनुसार, संत बोरसि ने एक युवक को विनती लेकर स्व्यातोपोलक के पास भेजा था। लेकिन स्व्यातोपोलक ने उस युवक को अपने पास ही रोक लिया।

तब उन्होंने गाना शुरू कयिा:

– *'कुत्तों ने मुझे घेर लयिा है; बैलों का झुंड मुझ पर टूट पड़ा है*।' फरि: *'हे प्रभु, मेरे परमेश्वर! मैं तुझ में शरण लेता हूँ; मुझे बचा!'* (भजन संहति 21:17, 13:1-7, 7:2)।

इसके बाद, उन्होंने कैनन गाया। माटन्सि समाप्त करने के बाद, संत बोरसि प्रभु की प्रतमिा के सामने प्रार्थना करने लगे, और कहा: 'हे प्रभु यीशु मसीह, आप इस रूप में पृथ्वी पर प्रकट हुए, आपने स्वेच्छा से क्रूस पर चढ़ने का चुनाव कयिा और हमारे पापों के लएि पीड़ा सहन की। कृपा करें कि मैं भी पीड़ा सहन करूँ।'

और तंबू के पास एक तेज शोर सुनकर, संत बोरसि काँप उठे, उनकी आँखों में आँसू आ गए और उन्होंने कहा: 'हे प्रभु, तुझे महमिा हो, कि इस जीवन में तूने मुझे ईर्ष्या के कारण एक कड़वी मृत्यु सहने और तेरे प्रेम और तेरे वचन के लएि दुख सहने के योग्य समझा है। क्योंकि मैंने अपने लएि शासन करने की खोज नहीं की। मैंने कसिी भी बात में अपनी इच्छा से कुछ नहीं कयिा, प्रेरति के वचनों के अनुसार: *'प्रेम धीरजवान है, प्रेम दयालु है; ईर्ष्या नहीं करता, घमण्ड नहीं करता, अहंकार नहीं करता'* (1 कुरन्थियिों 13:4–7)। और फरि: *'प्रेम में भय नहीं है; पर सद्धि प्रेम भय को दूर करता है'* (1 यूहन्ना 4:18)। हे प्रभु, मेरी आत्मा तेरे हाथों में है; मैं तेरी आज्ञा नहीं भूला। 'प्रभु जैसा चाहे, वैसा ही हो।'

पुरोहति और युवक, जो संत बोरसि का सेवक था, अपने स्वामी को दुर्बल और शोक से व्याकुल देखकर, फूट-फूट कर रोए और कहा:

'हमारे प्रयि और प्यारे स्वामी, आपने कतिना बड़ा आशीर्वाद प्राप्त कयिा है, क्योंकि आपने मसीह के प्रेम के लएि अपने भाई का वरिोध नहीं करना चाहा, भले ही आपके अधीन कई योद्धा थे।'

इसलएि उन्होंने गहरी भावना के साथ कहा।

तब उन्होंने तंबू की ओर दौड़ते हुए लोगों को देखा, उनके हथयिारों की चमक और उनकी खींची हुई तलवारें। बनिा कसिी दया के, मसीह के पवत्रि और धन्य शहीद, बोरसि के सम्मानति शरीर को भेद दयिा गया। उन्हें पुत्श, टालेट्स और येलोवचि ल्यश्को ने भाले से भेदा।

यह देखकर, संत बोरसि के युवा साथी ने स्वयं को उनके शरीर पर झोंक दयिा और कहा:

'मैं आपको नहीं छोड़ूँगा, मेरे प्रयि स्वामी; जहाँ आपके शरीर की शोभा फीकी पड़ गई है, वहीं मुझे भी आपके साथ अपना जीवन समाप्त करने की कृपा मलि।'

वह हंगरी मूल का था, और उसका नाम जॉर्ज था। संत बोरसि ने उस पर एक सोने का हरव्निनयिा रखा, और वह राजकुमार का अत्यंत प्रयि था। फरि उन्होंने उस युवक को भी भेद दयिा।

घायल होकर, संत बोरसि भयभीत होकर तंबू से बाहर भागा। और उसके आसपास खड़े लोग कहने लगे:

'तुम वहाँ खड़े-खड़े क्या देख रहे हो? चलो उस काम को पूरा करें जसिका हमें आदेश मलिा है।'

यह सुनकर, उस धन्य व्यक्ति ने उनसे वनिती और नविेदन करना शुरू कर दयिा, कहते हुए:

'मेरे प्रयि और प्यारे भाइयो! थोड़ी देर रुको; मुझे अपने ईश्वर से प्रार्थना करने दो।'

और आँखों में आँसू लएि स्वर्ग की ओर देखकर, उन्होंने कड़वी आह भरते हुए प्रार्थना करना शुरू कयिा:

'हे प्रभु, दयालु परमेश्वर, तेरा महमिा हो, क्योंकि तूने मुझे इस जीवन के प्रलोभनों से बचाया है। महमिा तेरी हो, हे जीवन के उदार दाता, जसिने मुझे अपने पवत्रि शहीदों के कष्ट प्रदान कएि हैं। महमिा तेरी हो, हे प्रभु, हे मानवता के प्रेमी, जसिने मेरे हृदय की इच्छा पूरी की है। महमिा हो आपकी, हे मसीह, आपकी दया के लएि, क्योंकि आपने मुझे प्रलोभन के बनिा आपके पास आने के लएि सही और शांतपिूर्ण मार्ग पर चलने के लएि मार्गदर्शन कयिा है। अपनी पवत्रिता की ऊँचाइयों से नीचे देखें; मेरे हृदय के कष्ट को देखें, जो मैंने अपने ही लोगों के हाथों सहा है। क्योंकि यह आपके ही कारण है कि वे आज मुझे मार रहे हैं। वे मुझे मेमने की तरह नोच-नोच कर खा रहे हैं। हे प्रभु, आप जानते हैं, आप जानते हैं कि मैं प्रतरिोध नहीं करता, न ही मैं आपत्ति जताता हूँ। यद्यपि मेरे पति के सभी योद्धा और उनके सभी प्रयिजन मेरे अधकिार में थे, मैंने अपने भाई को कोई हानि पहुँचाने का वचिार भी नहीं कयिा। फरि भी वह अपनी पूरी ताकत के साथ मेरे वरिुद्ध उठ खड़ा हुआ है। यदि किसी दुश्मन ने मेरा अपमान कयिा होता, तो मैं उसे सहन कर लेता; यदि मुझसे घृणा करने वाले ने मुझे अपमानति कयिा होता, तो मैं उससे बचने के लएि शरण ले लेता। परन्तु हे प्रभु, आप मेरी ओर देखएि और मेरे और मेरे भाई के बीच न्याय कीजएि। और इस पाप को उसके वरिुद्ध न गनिएि, परन्तु मेरी आत्मा को शान्ति में ग्रहण कीजएि। आमीन।

तब, अपने थके हुए चेहरे को हत्यारों की ओर मोड़कर और कोमल आँखों से उन्हें घूरते हुए, उसके चेहरे पर आँसुओं की धारा बह रही थी, उसने उनसे कहा:

'भाइयो, आगे आओ और जो आज्ञा तुम्हें दी गई है, उसे पूरा करो, और मेरे भाई के लिए और तुम भाइयो के लिए भी शांति हो।'

जो भी संत के शब्द सुन रहे थे, वे भय, तीव्र दुख और भरपूर आँसुओं से अभिभूत होकर बोल नहीं सके। तीव्र आहों के साथ, वे सभी दयनीय रूप से रो पड़े, और प्रत्येक ने सोचा:

'हाय मेरे प्रिय, प्यारे, धन्य राजकुमार, अंधों के मार्गदर्शक, नंगों के वस्त्र, बूढ़ों के सहारा, अनजानों के शिक्षक! इसे कौन ठीक करेगा? कितनी अद्भुत बात है कि आपने इस दुनिया की महिमा या महानता की इच्छा नहीं की, और न ही आप सम्मानित कुलीनों में शामिल होना चाहते थे! उसकी महान विनम्रता को देखकर और सुनकर कौन चकित नहीं होगा, कौन विनम्र नहीं होगा!

स्व्यातोपोलक द्वारा भेजे गए लोगों ने कई युवकों को भी पीटा। जहाँ तक जॉर्ज की बात है, वे उसकी ज़ंजीर नहीं उतार सके; उन्होंने उसका सिर काटकर एक तरफ फेंक दिया, ताकि बाद में भी वे उसके शरीर को पहचान न सकें। उन्होंने धन्य बोरिस को एक तंबू में लपेटा और, उसे एक गाड़ी पर रखकर, ले गए।

जब वे जंगल पहुँचे, तो संत बोरिस ने अपना सिर झुकाना शुरू कर दिया। यह जानने पर, स्व्यातोपोलक ने दो वरांगियनों को भेजा, जिन्होंने शहीद के दिल में तलवार घोंप दी। और तुरंत संत का निधन हो गया[3380] , उन्होंने 24 जुलाई को अपनी आत्मा को जीवित ईश्वर के हाथों में सौंप दिया। उनके शरीर को गुप्त रूप से विशिगोरोड[3381] लाया गया, सेंट बेसिल के चर्च के पास रखा गया, और वहीं दफनाया गया।

इस प्रकार संत बोरिस, मसीह ईश्वर से अपना मुकुट प्राप्त कर, धर्मी लोगों में गिने गए और उन्होंने भविष्यवक्ताओं, प्रेरितों और शहीदों के साथ अपना स्थान लिया, अब्राहम की गोद में विश्राम करते हुए, अकथनीय आनंद का दर्शन करते हुए, स्वर्गदूतों के साथ गाते हुए, और संतों की संगति में आनंदित होते हुए।

जहाँ तक शापित हत्यारों का सवाल है, वे स्व्यातोपोलक के पास आए और, चूँकि वे कानून-विहीन थे, वे खुद को प्रशंसा के योग्य मानते थे। ऐसे दानवों के सेवक होते हैं। क्योंकि दानव बुरा करने के लिए भेजे जाते हैं, जबकि स्वर्गदूत अच्छा करने के लिए भेजे जाते हैं। एक स्वर्गदूत किसी व्यक्ति को कोई नुकसान नहीं पहुँचाता, बल्कि हमेशा उसके भले के बारे में सोचता है। वह ईसाइयों की मदद करता है और उन्हें विरोधी शैतान से बचाता है। हालाँकि, राक्षस हमेशा बुराई करने की कोशिश करते हैं, हमेशा मनुष्य से ईर्ष्या करते हैं, क्योंकि वे देखते हैं कि उसे परमेश्वर से प्रेम है। मनुष्य से ईर्ष्या करते हुए, राक्षस उसे नुकसान पहुँचाने का प्रयास करते हैं। प्रभु ने कहा: 'आहाब को बहकाने के लिए कौन जाएगा?', और राक्षस ने उत्तर दिया: 'मैं हूँ' (3 राजा 22:20, 21)। हालाँकि, दुष्ट व्यक्ति, जो बुराई की तलाश में रहता है, एक राक्षस से कम दुष्ट नहीं है। राक्षस मनुष्य से डरते हैं, लेकिन दुष्ट व्यक्ति परमेश्वर से नहीं डरता और लोगों के सामने लज्जित नहीं होता। राक्षस प्रभु के क्रूस से डरते हैं, लेकिन दुष्ट व्यक्ति क्रूस से भी नहीं डरता। इस प्रकार भविष्यवक्ता दाऊद ने उनसे कहा: *'हे मनुष्यों के पुत्रो, क्या तुम सच में सत्य बोलते हो और न्याय से निर्णय लेते हो? तुम अपने हृदयों में अधर्म की योजना बनाते हो; तुम पृथ्वी पर अपने हाथों के दुष्ट कर्मों को तराजू पर रखते हो। दुष्ट जन्म से ही भटक गए हैं; वे अपनी माता के गर्भ से ही भटकते हुए झूठ बोलते हैं। उनका विष साँप के विष के समान है*' (भजन संहिता 57:1–4)।

शापित स्वयातोल्क इस हत्या पर ही नहीं रुका, बल्कि अपने उन्माद में और भी बड़े कर्म करने का प्रयत्न करने लगा। अपनी मनचाही पूरी होती देख, उसने उस दुष्ट हत्या या अपनी ही प्रलोभन के बारे में कोई विचार नहीं किया, और उसे जरा भी पछतावा नहीं हुआ। शैतान उसके हृदय में प्रवेश कर गया और उसे एक और भी बड़े और बुरे अपराध, तथा और हत्याओं के लिए उकसाने लगा। और उस दुष्ट मनुष्य ने सोचा: 'मैं क्या करूँ? यदि मैं इसी हत्या पर रुक गया, तो दोहरा बुरा परिणाम मेरा इंतज़ार कर रहा है। मेरे भाइयों को मेरे किए का पता चल जाएगा और वे जल्द ही मुझे मेरे किए से भी बुरा चकमा देंगे। और भले ही वे ऐसा न करें, वे मुझे भगा देंगे। और मैं अपने पिता के सिंहासन से अलग हो जाऊँगा, और अपनी भूमि के लिए पछतावा मुझे भीतर ही भीतर खा जाएगा। मेरे शत्रु मेरी निंदा करेंगे; कोई और मेरी रियाया पर कब्ज़ा कर लेगा, और मेरे घरों में कोई नहीं रहेगा। क्योंकि मैंने प्रभु के प्रियजन को सताया है और उसे घायल करके उसकी बीमारी में

[3380] नेस्टर के अनुसार, एक हत्यारे ने सेंट बोरिस के हृदय में वार किया।

[3381] विशिगोरोड कीव से 15 पोप्रीश्ची की दूरी पर स्थित है।

इज़ाफ़ा कयिा है। इसलएि, मैं अधर्म पर अधर्म बढ़ाऊँगा। मेरी माँ का पाप शुद्ध नहीं होगा; मैं कसिी भी हाल में धर्मी लोगों में गनिा नहीं जाऊँगा। तो मुझे जीवन की पुस्तक से मटिा दयिा जाए।

अपने मन में यह वचिार कर, इस दुष्ट शैतान के मत्रि ने धन्य ग्लेब[3382] को संदेश भेजा: 'जल्दी जाओ; मेरे पतिा बहुत अस्वस्थ हैं और तुम्हें बुला रहे हैं।'

ग्लेब तुरंत अपने घोड़े पर सवार हो गया और थोड़े से साथयिों के साथ बुलावे का जवाब देकर चल पड़ा। जब वह वोल्गा नदी पर, त्मा नदी के मुहाने पर पहुँचा, तो उसका घोड़ा खेत में एक खाई में ठोकर खाकर गरि गया और उसका पैर घायल हो गया। फरि वह स्मोलेंस्क पहुँचा और स्मोलेंस्क से नकिलने के बाद, स्म्यादनि नदी पर थोड़ी दूर एक नाव में रुक गया।

उस समय, प्रेडस्लावा से यारोस्लाव के पास उनके पतिा की मृत्यु की खबर पहुँची। तब यारोस्लाव ने ग्लेब को संदेश भेजा, जसिमें कहा गया: 'भाई, मत आना; तुम्हारे पतिा की मृत्यु हो गई है, और तुम्हारे भाई को स्व्यातोपोलक ने मार डाला है।'

यह सुनकर, वह धन्य व्यक्त शिोक से भर गया, जोर-जोर से रोया और कहा:

'हाय मेरे स्वामी! मैं दो प्रकार के वलिाप से रोता हूँ और दो प्रकार के शोक से शोक मनाता हूँ। हाय मेरे लएि, हाय मेरे लएि! मैं अपने पतिा के लएि रोता हूँ, लेकनि मैं नराशिा में, आपके लएि, मेरे भाई और मेरे स्वामी बोरसि के लएि और भी अधकि रोता हूँ। आपको कैसे भेदा गया! आपको कैसे नर्दियता से मार डाला गया—और आपकी मृत्यु शत्रु के हाथों नहीं, बल्कि आपके अपने भाई के हाथों हुई। हाय मेरी कस्मित! मैं आपके बनिा इस अकेले जीवन को जीने के बजाय आपके साथ मरना बेहतर समझती हूँ। मुझे आशा थी कि मैं आपका दव्यि मुखमंडल देख पाऊँगी। और अब, मुझ पर क्या दुख आ पड़ा है! हे मेरे स्वामी, मैं आपके साथ मरना बेहतर समझती हूँ। और अब मैं क्या करूँ, जो आपकी सुंदरता और मेरे पतिा की गहरी बुद्धमित्ता के लएि आँसुओं से भर गया हूँ और शोक कर रहा हूँ? हे मेरे प्रयि भाई और स्वामी, यदि आपको ईश्वर की कृपा प्राप्त हुई है, तो मेरे लएि प्रार्थना करें, जो नराश हूँ, कि मैं भी उसी मृत्यु को प्राप्त करने और इस प्रलोभनों से भरी दुनयिा में रहने के बजाय, आपके साथ रहने का योग्य समझा जाऊँ।

जब संत ग्लेब इस प्रकार कराह रहे थे, अपनी आँसुओं से धरती को भीगते हुए और बार-बार आह भरकर ईश्वर को पुकार रहे थे, तभी अचानक स्व्यातोपोलक द्वारा भेजे गए दुष्ट सेवक आ पहुँचे—नर्दियी, रक्तपपिासु पुरुष, भयानक भाई-वरिोधी, जनिके हृदय क्रूरता से भरे थे। संन्यासी नाव से यात्रा कर रहे थे, और वे स्म्यादनि के मुहाने पर उनसे मलिे। उन्हें देखकर उनकी आत्मा प्रसन्न हुई, जबकि वे उदास हो गए और उनकी ओर नौका चलाने लगे। हालाँकि संत को उनसे एक चुंबन मलिने की उम्मीद थी[3383] । जब नावें बराबर आ गईं, तो दुष्टों ने राजकुमार की नाव को पतवारों से पकड़ लयिा, उसे अपनी ओर खींचा और उसमें कूदने लगे, उनके हाथों में खींची हुई तलवारें थीं जो पानी की तरह चमक रही थीं। तुरंत ही नौका चलाने वालों के हाथों से चप्पू फसिल गए और वे सभी भय से जमे हुए रह गए। उस धन्य व्यक्ति ने, यह देखकर कि वे उसे मारने का इरादा रखते हैं, उन दुष्टों को कोमल दृष्टि से देखा और, टूटे दलि, वनिम्र मन और बार-बार आहें भरते हुए, बहुत रोते हुए और शरीर से कमजोर पड़ते हुए, दयालुता से उनसे वनिती करने लगे:

'मेरे प्यारे और प्रयि भाइयो, मुझ पर हाथ न उठाओ, मुझ पर हाथ न उठाओ – मैंने तुम्हें कोई हानि नहीं पहुँचाई है। मेरे प्यारे भाइयो और स्वामयिों, मुझ पर हाथ न उठाओ, मुझे चोट मत पहुँचाओ। मैंने अपने भाई और तुम लोगों के साथ क्या बुरा कयिा है, मेरे भाइयो और स्वामयिों? यदि कोई अपराध है, तो मुझे अपने राजकुमार, और अपने भाई और स्वामी के पास ले जाओ। मेरी जवानी पर दया करो, मेरे स्वामयिों; मेरे स्वामी बनो, और मैं आपका दास बनूँगा। जब मैं अभी भी अपरपिक्व हूँ तो मुझे मत काटो; उस अनाज की बाल को मत काटो जो अभी पका नहीं है, लेकनि अभी भी मासूमयित के दूध से भरा है। उस बेल को मत काटो जो अभी पकी नहीं है, पर जसिमें पहले से ही फल हैं। मैं आपसे वनिती और नवेिदन करता हूँ। प्रेरतिों

[3382] आदरणीय नेस्टर के वृत्तांत के अनुसार, सेंट व्लादमिीर ने, बोरसि को शासन करने के लएि भेजकर, ग्लेब को अपने पास ही रखा। अपने पतिा की मृत्यु के बाद, सेंट ग्लेब ने स्वेतोपोलक के हाथों हसिा से डरकर, अपने भाई के पास उत्तर की ओर भागने का नश्चिय कयिा। पवत्रि माता के गरिजाघर में प्रार्थना करने के बाद, वह एक नाव पर चढ़कर भाग गया। यह घटना संत बोरसि की हत्या से पहले की है।

[3383] आदरणीय नेस्टर के वृत्तांत के अनुसार, हत्यारों ने सेंट ग्लेब का एक नाव में लंबे समय तक पीछा कयिा। जब वे पास आए, तो सेंट ग्लेब ने उनके बुरे इरादे को भांपते हुए अपने साथयिों से वनिती की कि वे हथयिार न उठाएं या वरिोध न करें, यह कहते हुए कि यदि वे आत्मसमर्पण कर देते हैं, तो उन्हें बस उनके भाई के पास ले जाया जाएगा, लेकनि यदि वे वरिोध करते हैं, तो वे सभी काटे जाएंगे। संत के अनुरोध पर, उसके साथी कनिारे पर उतर गए, और उस धन्य व्यक्ति की ओर दयालुता भरी नज़रों से देखते रहे, जो युवकों के साथ नदी के बीच में ही रहा।

के मुख से कहे गए वचनों पर ध्यान दें: *'अपनी बुद्धि में शशि न बनो – बुराई के विषय में शशि बनो'* (1 कुरिन्थियों 14:20)। यह हत्या नहीं है, बल्कि एक कोमल अंकुर को काटना है। मुझे साबित करो कि मैंने कुछ भी बुरा किया है। और अगर तुम मेरा खून पीना चाहते हो तो मुझे पछतावा नहीं होगा; मैं पहले से ही तुम्हारे हाथों में हूँ, भाइयों, और अपने भाई, तुम्हारे राजकुमार के हाथों में।

लेकिन हत्यारों को एक भी शब्द शर्मिंदा नहीं कर सका, और उन्होंने अपनी योजना नहीं बदली। क्रूर जानवरों की तरह, वे संत पर झपट पड़े और इस प्रकार उसे पकड़ लिया। उन्होंने, यह देखकर कि वे उनकी बातों पर कोई ध्यान नहीं दे रहे थे, कहना शुरू किया:

'हे मेरे प्रिय पिता और स्वामी वासिली, आपकी रक्षा हो; मेरी माता, मेरी मातामह, की रक्षा हो; मेरे भाई बोरिस, मेरे यौवन के वरिष्ठ, और मेरे भाई यारोस्लाव, मेरे सहायक, की रक्षा हो; हे मेरे भाई और शत्रु स्वेतोपोलक, तुम्हारी भी रक्षा हो; और हे भाइयों और अनुचरगण, आप सभी की रक्षा हो। मैं इस जीवन में तुम्हें फिर कभी नहीं देख पाऊँगा, क्योंकि मुझे जबरदस्ती तुमसे अलग किया जा रहा है।

और उन्होंने आँसुओं के साथ कहा:

– वासिली, वासिली, मेरे पिता, अपना कान लगाओ और मेरी बात सुनो। देखो मेरे बेटे पर क्या बीती है, कैसे वे मुझे बिना किसी कारण के मार रहे हैं। हाय मेरी किस्मत, हाय मेरी किस्मत! हे आकाश, सुनो, और हे पृथ्वी, कान लगाओ (तुलना करें व्यवस्थाविवरण 32:1)। और तुम भी, मेरे भाई बोरिस, मेरी बात सुनो। मैंने अपने पिता बेसिल को पुकारा, पर उन्होंने मेरी नहीं सुनी; निश्चय ही तुम भी मेरी बात सुनने से इनकार नहीं करोगे? देखो, मेरे हृदय का दुख और मेरी आत्मा का घाव, मेरी आँखों से नदी की तरह आँसू बह रहे हैं। कोई मेरी नहीं सुनता। परन्तु मेरी याद रखना और सर्व के प्रभु से मेरे लिए प्रार्थना करना, क्योंकि तुम्हारे पास हिम्मत है और तुम उसके सिंहासन के सामने खड़े हो।

घुटने टेककर, उसने इस प्रकार प्रार्थना करना शुरू किया:

'हे अति उदार और दयालु प्रभु, मेरी आँसुओं को तुच्छ न समझिए, बल्कि मेरे टूटे हुए हृदय पर दया की दृष्टि डालिए। मैं यहाँ कष्ट में हूँ, पर किस कारण और किस अपराध के लिए—यह मुझे नहीं पता। हे प्रभु, आप जानते हैं, मेरे प्रभु। क्योंकि मैं जानता हूँ कि आपने अपने प्रेरितों से कहा था: *'वे मेरे नाम के कारण तुम पर हाथ उठाएंगे, और तुम्हें अधिकारियों के हवाले करेंगे; और एक भाई दूसरे भाई को मृत्यु तक धोखा देगा, और वे मेरे नाम के कारण तुम्हें मार डालेंगे'* (देखें मत्ती 10:17, 21)। और फिर: *'अपने धीरज से तुम अपनी आत्माओं को बचाओगे'* (लूका 21:19)। हे प्रभु, देखो और न्याय करो। हे प्रभु, मेरी आत्मा यहाँ तेरे सामने तैयार है, और हम तुझ में महिमा करते हैं, पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा में।

तब, हत्यारों को देखकर, उसने उनसे धीमी आवाज़ में कहा:

'तो आगे बढ़ो, और वह करो जिसके लिए तुम्हें भेजा गया है।'

तब शापित गोर्यासर ने उसे तुरंत मार डालने का आदेश दिया। ग्लेब के मुख्य रसोइए, जिसका नाम टॉर्चिन था, ने अपनी चाकू निकाली, घुटने टेक दिए, संत ग्लेब का सिर पकड़ा, और उस धन्य व्यक्ति का गला चीर दिया, मानो वह एक निर्दोष मेमना हो। यह घटना सितंबर महीने के 5वें दिन, सोमवार को हुई। और एक शुद्ध, पवित्र और सुगंधित बलिदान प्रभु को अर्पित किया गया, और वह परमेश्वर के स्वर्गीय निवासों में आरोहण कर गया। और संत ने अपने प्रिय भाई को देखा, और उन दोनों ने वे स्वर्गीय मुकुट प्राप्त किए जिनकी उन्होंने बहुत इच्छा की थी। और वे अकथनीय आनंद से आनंदित हुए, जो उन्होंने अपने भाई प्रेम के माध्यम से प्राप्त किया था। *'भाइयों का एक साथ रहना कितना अच्छा और सुखद है!'* (भजन संहिता 132:1)।

वे शापित हत्यारे उसी के पास लौट गए जिसने उन्हें भेजा था, जैसा कि भविष्यवक्ता दाऊद ने कहा: *'दुष्टों को शैओल में डाल दिया जाए, उन सभी राष्ट्रों को जो परमेश्वर को भूल जाते हैं'* (भजन संहिता 9:18)। और फिर: *'दुष्ट अपनी तलवारें खींचते हैं और अपने धनुष तानते हैं, ताकि वे धार्मिकता के मार्ग पर चलने वालों को भेद सकें। उनकी तलवार उनके ही हृदय में प्रवेश करेगी, और उनके धनुष टूट जाएँगे। दुष्ट नाश हो जाएँगे; वे लुप्त हो जाएँगे; वे धुएँ की तरह लुप्त हो जाएँगे'* (भजन संहिता 36:14–15, 19, 20)।

और उन्होंने स्व्यातोपोलक से कहा:

'हमने वैसा ही किया जैसा आपने आज्ञा दी थी।'

यह सुनकर उसका हृदय गर्व से भर गया, और भजनकार दाऊद के वचन पूरे हुए: *'हे पराक्रमी, तू दुष्टता का घमंड क्यों करता है? तेरी जीभ विनाश की योजना बनाती है। तू भलाई से अधिक बुराई, और सत्य बोलने से अधिक झूठ से प्रेम करता है। तुम हर प्रकार की विनाशकारी बातों से प्रेम करते हो, एक कपटी जीभ। इसलिए परमेश्वर तुम्हें सर्वथा कुचल देगा और तुम्हें तुम्हारे निवास से उखाड़ फेंकेगा, और तुम्हारी जड़ को जीवितों के देश से'* (भजन संहिता 51:3–7)। जैसा कि और सुलैमान ने कहा: *'मैं तेरे नाश पर हँसूँगा; जब तुझ पर भय आएगा तब मैं आनन्दित होऊँगा; क्योंकि वे अपने ही मार्गों का फल चखेंगे और अपनी ही युक्तियों से भर जाएँगे'* (नीतिवचन 1:26, 31)।

जब संत ग्लेब को मार डाला गया, तो उनके शरीर को दो लट्ठों के बीच एक सुनसान जगह पर फेंक दिया गया। लेकिन प्रभु अपने सेवकों को कभी नहीं छोड़ते, जैसा कि दाऊद ने कहा: *'वह उसकी सब हड्डियों की रक्षा करता है; उन में से एक भी नहीं टूटेगी'* (भजन संहिता 33:21)। और इस प्रकार, जब संत का शरीर उस सुनसान जगह पर लंबे समय तक पड़ा रहा, तो प्रभु ने इसे अज्ञात और उपेक्षा में रहने नहीं दिया, बल्कि उस स्थान को प्रकट किया—कभी एक जलती हुई मोमबत्ती से, तो कभी इस तरह कि गुज़रते हुए व्यापारी, शिकारी और चरवाहे स्वर्गदूतों का गायन सुन सकें। लेकिन इन बातों को सुनने या देखने वालों के मन में संत की कब्र की खोज करने का विचार तब तक नहीं आया, जब तक कि यारोस्लाव, इस हत्या से क्रोधित होकर, अपने भाई के हत्यारे, शापित स्व्यातोपोलक के खिलाफ युद्ध नहीं छेड़ दिया, जिसे उसने बहुत कठिन लड़ाई के बाद, ईश्वर की मदद और पवित्र राजकुमार-शहीदों के मध्यस्थता से हरा दिया। इस प्रकार उस दुष्ट व्यक्ति को शर्मिंदगी का सामना करना पड़ा और वह पराजित हुआ।

अपने भाइयों की हत्या करने के बाद, स्व्यातोपोलक ने कीव में शासन करना शुरू कर दिया। हालाँकि, यारोस्लाव को अभी भी अपने पिता की मृत्यु का पता नहीं था। यारोस्लाव की सेवा में कई वारांगियन थे, जो नोवगोरोड के लोगों और उनकी पत्नियों के खिलाफ हिंसा की घटनाएँ कर रहे थे। नोवगोरोड के लोगों ने विद्रोह कर दिया और पारमन के आँगन में वरांगियनों को हरा दिया। तब यारोस्लाव क्रोधित हो गया, और, यह कहते हुए, 'मैं मृतकों को जीवित नहीं कर सकता!' उसने उन कुलीनों को बुलवाया जिन्होंने आँगन में राजसी दरबार के वरांगियनों को मार डाला था, और उन्हें धोखा देकर मौत के घाट उतार दिया।

उसी रात, उसे कीव से अपनी बहन प्रेडस्लावा की खबर मिली: 'आपके पिता का निधन हो गया है। स्व्यातोपोलक अब कीव का राजकुमार है; उसने बोरिस को मार डाला है और ग्लेब के पीछे हत्यारों को भेज दिया है। उससे सावधान रहो।'

यह सुनते ही यारोस्लाव अपने पिता, भाई और पत्नी के शोक में डूब गया। अगले दिन, उसने बचे हुए नोवगोरोडवासियों को इकट्ठा किया और कहा:

'मेरे प्रिय अनुचरगण! कल मैंने उन्हें काट डाला था, लेकिन अब मुझे उनकी ज़रूरत है।'

उसने अपने आँसू पोंछे और वेचे में नोवगोरोद के लोगों से कहा:

'मेरे पिता मर गए हैं, और स्व्यातोपोलक कीव में बैठा है, अपने भाइयों को मार रहा है।'

और नोवगोरोडवासियों ने उससे कहा:

'भले ही तुमने हमारे भाइयों को मार डाला हो, हम फिर भी तुम्हारे लिए लड़ने को तैयार हैं।'

एक हज़ार वरांगियनों और अतिरिक्त 40,000 योद्धाओं को इकट्ठा करने के बाद, यारोस्लाव ने मदद के लिए ईश्वर से प्रार्थना की और स्व्यातोपोलक के खिलाफ़ चढ़ाई कर दी, यह कहते हुए: 'अपने भाइयों को मारना मैंने शुरू नहीं किया था, बल्कि उसने किया था। तो उसे अपने भाइयों के खून का हिसाब देना होगा, क्योंकि उसने बिना वजह बोरिस और ग्लेब का धर्मपरायण खून बहाया है, और वह मुझसे भी ऐसा ही कर सकता है। लेकिन ईश्वर न्याय करे, ताकि पापी की दुष्टता समाप्त हो जाए।'

और वह स्व्यातोपोलक के खिलाफ़ चल पड़ा। स्व्यातोपोलक ने यारोस्लाव के अभियान के बारे में सुनकर, रूसी और पेचेनेगों की एक विशाल सेना इकट्ठी की और ल्यूबेच के लिए रवाना हो गया।

यह 6524 (1016) की गर्मियों में था।

दोनों सेनाएँ डेन्यूपर नदी के किनारे मिलीं, नदी के दोनों किनारों पर एक-दूसरे का सामना करते हुए मोर्चा संभाला, और कोई भी लड़ाई शुरू करने की हिम्मत नहीं कर सका। इस प्रकार वे लगभग तीन महीने तक एक-दूसरे का सामना करते रहे। फिर स्वियातोपोलक का सेनापति, किनारे पर सवारी करते हुए, नोवगोरोडवासियों को डांटने लगा:

'तुम एक लंगड़े के साथ क्यों आए हो? तुम बढ़ई हो; हम तुम्हें हमारे लिए हवेलियाँ बनवाने पर मजबूर करेंगे।'

यह सुनकर नोवगोरोडियों को बुरा लगा और उन्होंने यारोस्लाव से कहा:

'कल हम नदी पार करेंगे। और अगर कोई हमारे साथ आने से इनकार करेगा, तो हम उसे खुद मार डालेंगे।'

उस समय तक ज़मीन पहले ही जम चुकी थी। स्व्यातोपोलक दो झीलों के बीच डेरा डाले हुए था। कनिारे पर उतरने के बाद, उसने अपने अनुचरों के साथ पूरी रात शराब पीकर बतिाई। भोर होते ही, यारोस्लाव और उसकी सेना नदी पार कर, कनिारे पर उतर आए, और अपनी नावों को कनिारे से दूर कर दयिा।

और इस प्रकार सेनाएँ एक-दूसरे पर बढ़ीं और भड़ि गईं। लड़ाई भयंकर थी; पेचेनेग झील के पीछे खड़े थे और वे स्व्यातोपोलक की मदद के लिए नहीं आ सके। यारोस्लाव के योद्धाओं ने स्व्यातोपोलक की सेना को झील की ओर धकेल दयिा, उन्हें बर्फ पर पहुँचा दयिा, जो उनके नीचे टूट गई। और यारोस्लाव हावी होने लगा।

यह देखकर, स्वयितोपोलक पोलशि लोगों के पास भाग गया। इस बीच, यारोस्लाव ने नोवगोरोड में 28 साल बतिाने के बाद, कीव में अपने पति का साम्राज्य संभाल लयिा।

दो साल बाद, स्वयितोपोलक ने राजा बोलेस्लाव और पोलशि सेना के साथ मलिकर यारोस्लाव के खलिाफ चढ़ाई की। यारोस्लाव ने रस, वरांगयिनों और स्लोवेनयिों की सेना तैयार की और वोल्हनियिा में प्रवेश कयिा। सेनाएँ नदी बग के कनिारे पर मलिीं और वपिरीत तटों पर मोर्चा संभाला। यारोस्लाव का एक पालक पति था, बुडा का वोइवोड, और उसने बोलेस्लाव को फटकारना शुरू कयिा:

'हम अपनी भालों से तुम्हारा पेट भेद देंगे।'

हालाँकि, बोलेस्लाव बहुत वशिालकाय और भारी था, और मुश्कलि से अपनी घोड़ी पर बैठ पाता था। और बोलेस्लाव ने अपने अनुचर से कहा:

'अगर तुम्हें इस ताने से बुरा नहीं लगता, तो मैं अकेला ही मर जाऊँगा।'

और वह घोड़े पर सवार होकर नदी में कूद पड़ा, और उसके योद्धा भी उसके पीछे कूद पड़े। हालाँकि, यारोस्लाव के पास युद्ध की तैयारी करने का समय नहीं था, और बोलेस्लाव ने यारोस्लाव को हरा दयिा। बोलेस्लाव, स्वयितोपोलक के साथ कीव में प्रवेश कर गया, जबकि यारोस्लाव चार आदमयिों के साथ नोवगोरोड भाग गया। वहाँ से वह समुद्र पार भागने का इरादा रखता था, लेकनि पसाद्न कॉन्स्टेंटनि, जो डोब्रीन्या का बेटा था, ने नोवगोरोड के लोगों के साथ मलिकर यारोस्लाव के जहाजों को काट डाला, यह कहते हुए: 'हम अभी भी बोलेस्लाव और स्वयितोपोलक से लड़ सकते हैं।'

और इस प्रकार उन्होंने पैसा इकट्ठा करना शुरू कर दयिा: हर आदमी से चार कुना, गाँव के बुज़ुर्गों से नौ ह्रव्निया, और बोयारों से अस्सी ह्रव्निया। फरि उन्होंने वरांगयिनों को बुलाया और उन्हें इकट्ठा कयिा हुआ पैसा दे दयिा। इस तरह, यारोस्लाव ने एक बड़ी सेना इकट्ठी की। हालाँकि, पागल स्वआितोपोलक ने कहा: 'जाओ और उनके शहरों में पोलशि लोगों का कत्लेआम करो।'

और उन्होंने वैसा ही कयिा। फरि बोलेस्लाव अपने सामान और बोयारों को साथ लेकर कीव से भाग गया। हालाँकि, यारोस्लाव ने स्वयितोपोलक के खलिाफ चढ़ाई की और उसे हरा दयिा। स्वयितोपोलक पेचेनेग्स के पास भाग गया।

6527 (1019) की गर्मयिों में, वह पेचेनेगों के एक बड़े दल के साथ लौटा। यारोस्लाव ने एक सेना इकट्ठी की और अल्ता की ओर उसके खलिाफ़ मार्च कयिा। उस स्थान पर खड़े होकर जहाँ सेंट बोरसि की हत्या हुई थी, उन्होंने अपने हाथ आकाश की ओर उठाए और कहा:

'हे प्रभु, देखो, मेरे भाई का लहू हाबलि के लहू की तरह तेरे पास पुकार रहा है। स्वयितोपोलक से उसका बदला ले, जैसे तूने अपने भाई के हत्यारे काइन से लयिा था, जसि पर तूने श्राप और कम्पन डाला था (उत्पत्ति 4:12)। हे प्रभु, मैं तुझसे वनिती करता हूँ, स्वयितोपोलक को भी वही कष्ट भोगना पड़े।'

तब, प्रार्थना करने के बाद, यारोस्लाव ने कहा:

'हे मेरे भाइयो, यद्यपि तुम देह में मरे हो, परन्तु अनुग्रह से जीवति हो और प्रभु के साम्हने खड़े हो। अपनी प्रार्थनाओं से मेरी सहायता करो।'

यह कहकर, वह स्व्यातोपोलक के वरिुद्ध चल पड़ा, और अल्ता नदी के कनिारे का मैदान योद्धाओं की भीड़ से भर गया। सूर्योदय के समय सेनाओं का सामना हुआ, और एक भयंकर युद्ध हुआ; वे तीन बार पीछे हटे, पूरे दनि लड़ते रहे, और केवल शाम के समय ही यारोस्लाव की वजिय हुई।

वह दुष्ट स्व्यातोपोलक भाग गया। फरि एक राक्षस ने उस पर काबू पा लयिा और उसकी हड्डयिाँ सुन्न कर दीं, जसिसे वह अपने घोड़े पर नहीं बैठ सका, और उसे एक पालकी पर ले जाया गया। इस प्रकार वे उसे ब्रेस्ट ले गए। वह बार-बार कहता रहा: 'भागो, वे हमारा पीछा कर रहे हैं!'

उन्होंने उसके पीछा करने वालों का पीछा करने के लिए लोगों को भेजा, लेकिन उन्हें कोई नहीं मिला। अपनी दुर्बलता में वहां लेटे हुए, स्व्यातोपोलक बार-बार उठकर कहता रहा: 'चलो भागते हैं; वे फिर से हमारा पीछा कर रहे हैं। हाय मेरी किस्मत!'

वह एक जगह नहीं ठहर सकता था। और ईश्वर के क्रोध से प्रेरित होकर, वह पोलिश लोगों के देश से होकर भागा और पोलिश तथा चेक लोगों के देशों के बीच के सुनसान इलाके में पहुँच गया। वहाँ उसने अपनी जान गंवाई और प्रभु से प्रतिशोध पाया, क्योंकि उस पर भेजी गई बीमारी मृत्यु के बाद अनंतकालिक यातनाओं की गवाही देती थी। इस प्रकार वह इस और परलोक दोनों से वंचित हो गया: यहाँ उसने न केवल अपना प्रधानता-पद बल्कि अपना जीवन भी खो दिया, जबकि वहाँ उसने न केवल स्वर्ग का राज्य और स्वर्गदूतों के बीच अपनी जगह खोई, बल्कि उसे यातना और आग में भी डाल दिया गया। उसकी कब्र आज भी मौजूद है। उससे एक भयानक बदबू आती है, जो लोगों के लिए एक चेतावनी है कि यदि कोई इस बारे में सुनकर ऐसा ही कोई अपराध करता है, तो उसे इससे भी बदतर नियति का सामना करना पड़ेगा। काइन को, जो प्रतिशोध से अनजान था, एक ही दंड मिला, जबकि लामेक, जो काइन के भाग्य के बारे में पहले से ही जान चुका था, ने सत्तर गुना प्रतिशोध लिया (उत्पत्ति 4:24)। जो बुराई करते हैं, उन्हें यही प्रतिशोध मिलता है। जिस प्रकार सम्राट जूलियन, जिसने कई पवित्र शहीदों का खून बहाया था, एक अज्ञात हमलावर द्वारा भाले से दिल में भेदे जाने पर एक कड़वी और अमानवीय मृत्यु भोगी[3384] , उसी प्रकार यह आदमी भी भागते समय मर गया, यह जाने बिना कि उसकी हिंसक मृत्यु किसने की थी। उस समय से, रूसी भूमि में विद्रोह समाप्त हो गया, और यारोस्लाव ने रस पर अपना शासन स्थापित किया।

और उसने संतों के शवों के बारे में पूछताछ करनी शुरू कर दी, यह पूछते हुए कि उन्हें कहाँ और कैसे दफनाया गया था। और उन्होंने उसे बताया कि संत बोरिस को विशिगोरोड में दफनाया गया था, जबकि यह सभी को नहीं पता था कि संत ग्लेब की हत्या स्मोलेंस्क में हुई थी। तब यारोस्लाव के करीबी लोगों ने उन्हें बताया कि उन्होंने वहाँ से लौट रहे यात्रियों से सुना था कि उन्होंने एक सुनसान जगह पर एक प्रकाश और मोमबत्तियाँ देखी थीं[3385] । यह सुनकर, यारोस्लाव ने उसे खोजने के लिए स्मोलेंस्क में पुरोहितों को भेजा और उनसे कहा: 'यह मेरा भाई है।'

वे गए और ठीक उसी स्थान पर उनका शरीर मिला जहाँ वेदनाएँ हुई थीं[3386] । श्रद्धापूर्वक, कई मोमबत्तियों और धूपदानों के साथ, वे उन्हें नावों तक ले गए और उन्हें विशिगोरोद ले गए, जहाँ परम धन्य बोरिस का शरीर पड़ा था; वहाँ उन्होंने एक कब्र खोदी और शरीर को अंतिम संस्कार के लिए रख दिया, और उनके सुंदर और तेजस्वी स्वरूप को देखकर चकित हुए। यह अद्भुत और आश्चर्यजनक है और स्मरण करने योग्य है कि संत का शरीर इतने वर्षों तक अक्षुण्ण रहा, मांसाहारी जानवरों द्वारा अछूता रहा; न केवल यह काला नहीं पड़ा था, जैसा कि शवों के साथ होता है, बल्कि यह उज्ज्वल, सुंदर, अखंड और सुगंधित था। इस प्रकार ईश्वर ने अपने शहीद के अवशेषों को संरक्षित रखा।

कई लोग इस बात से अनभिज्ञ थे कि यहाँ पवित्र शहीदों के शरीर पड़े थे। लेकिन जैसा कि पवित्र सुसमाचार प्रचारक ने कहा: *'पहाड़ पर स्थित नगर छिपा नहीं रह सकता। और लोग दीपक जलाकर उसे टोकरी के नीचे नहीं रखते, बल्कि दीवट पर रखते हैं, और वह सबको प्रकाश देता है'* (मत्ती 5:14, 15), उसी प्रकार प्रभु ने इन संतों को संसार के लिए चमकने और रूसी भूमि में अनगिनत चमत्कारों के माध्यम से प्रकाश फैलाने के लिए नियुक्त किया, जहाँ पीड़ितों को मुक्ति मिली। अंधे देखने लगे, लंगड़े हिरण की गति प्राप्त कर लिए, और कुबारे सीधे हो गए। लेकिन वहाँ हुए सभी चमत्कारों को कौन गिन सकता है और उनका वर्णन कैसे कर सकता है? सचमुच, संसार भी उन अद्भुत चमत्कारों को समाहित नहीं कर सकता जो किए गए थे; वे समुद्र के रेत से भी अधिक हैं; संतों ने उन्हें न केवल यहाँ, बल्कि सभी भूमि और देशों में किया, बीमारियों और सभी दुर्बलताओं को ठीक किया, और तहखानों में बंद और बेड़ियों में जकड़े हुए लोगों से मिले। जिन स्थानों पर उन्हें शहीद का मुकुट मिला, उन्हीं स्थानों पर उनके सम्मान में चर्च बनाए गए। और उन्होंने वहाँ कई चमत्कार किए।

[3384] रोमन सम्राट फ्लावियस क्लॉडियस जूलियनस द एपोस्टेट 361 से 363 तक राज किया। उन्होंने ईसाई धर्म का त्याग कर दिया और मूर्तिपूजा को बहाल करने का प्रयास किया। उन्हें फारसियों के खिलाफ़ युद्ध में मार दिया गया और उनकी मृत्यु इस शब्द के साथ हुई: 'तुम जीत गए, गलीलियाई।'

[3385] नेस्टर के वृत्तांत के अनुसार, शहर के बुजुर्ग ने उस स्थान पर, जहाँ शरीर पड़ा था, स्वयं संत ग्लेब को बिजली की तरह चमकते हुए देखा।

[3386] नेस्टर के अनुसार, सेंट ग्लेब का शरीर शिकारियों की मदद से मिला था।

हे पवत्रि भाइयों, तुम्हारी महमिा करने का मुझमें कौशल और सामर्थ्य नहीं है! यदमिैं तुम्हें स्वर्गदूत कहूँ, जो संकट में पड़े लोगों की तुरंत सहायता के लिए आते हैं, तो तुम लोगों के बीच देह में रहे। यदहिम आपको मनुष्य कहें, तो आप अपने अनेक चमत्कारों से मानवीय मन से परे हैं। यदहिम आपको सम्राट और राजकुमार कहें, तो आप साधारण और वनिम्र लोगों की तुलना में अधकि वनिम्र थे, और उसी के माध्यम से आप स्वर्गीय नविासों में प्रवेश कए। वास्तव में, आप राजाओं के राजा और राजकुमारों के राजकुमार हैं, क्योंकआिपकी मदद और सुरक्षा से हमारे राजकुमार अपने दुश्मनों पर बड़ी ताकत से वजिय प्राप्त करते हैं और आपकी सहायता से महमिामय होते हैं। आप उनका और हमारा हथयिार हैं; आप रूसी भूमकिी ढाल और नींव हैं; आप दोधारी तलवारें हैं जनिसे हम अपने दुश्मनों की अकड़न को धूल चटाते हैं और शैतान के घमंड को कुचल देते हैं। सचमुच और नस्सिंदेह यह कहा जाना चाहए: आप स्वर्गीय पुरुष और सांसारकि देवदूत हैं, हमारे देश के स्तंभ और नींव हैं। तो, अपनी मातृभूमकिी मदद करें, जैसे महान डेमेट्रयिस ने की थी, जसिने कहा था: 'यदमिैं उनकी खुशी में उनके साथ था, तो मैं उनके वनिाश के समय उनके साथ मरूँगा।'

लेकनि उन महान डेमेट्रयिस ने ये शब्द एक ही शहर के बारे में कहे थे, जबकआिप एक शहर, न ही दो, बल्कि सभी की - पूरी रूसी भूमकिी देखभाल करते हैं और प्रार्थनाएँ अर्पति करते हैं। हे धन्य तीर्थस्थल, जसिने आपके पवत्रि अवशेषों को एक अनमोल खजाने के रूप में ग्रहण कयिा है; हे धन्य चर्च, जसिमें आपके पवत्रि अवशेष-पात्र रखे गए हैं, जहाँ आपके धन्य शरीरों को वश्राम दयिा गया है! हे मसीह के सेवको! वास्तव में धन्य और गौरवान्वति है वशिगोरोद का शहर, जसिके पास स्वयं में ऐसा खजाना है जसिका संपूर्ण वश्वि सामना नहीं कर सकता। वास्तव में इसे वशिेगोरोड कहा जाता है, जो अन्य शहरों से ऊपर है। यह रूसी भूमकिें एक दूसरा थस्सिलुनीके बन गया है, जसिमें अपार उपचार मौजूद है। और ईश्वर द्वारा केवल हमारे लोगों को ही नहीं, बल्कि पूरी पृथ्वी को भी उद्धार प्रदान कयिा गया। लोग सभी देशों से वहाँ आते हैं और नःशुल्क चंगाई प्राप्त करते हैं। जैसा कि प्रभु ने पवत्रि सुसमाचार में पवत्रि प्रेरतिों से कहा: *'तुम्हें मुफ्त में मलिा है; मुफ्त में दो'* (मत्ती 10:8)।

इस बारे में प्रभु स्वयं ने कहा: *'जो मुझ पर वश्विास करता है, वह मैं जो काम करता हूँ वह भी करेगा; और इनसे भी बड़े काम वह करेगा'* (यूहन्ना 14:12)।

लेकनि, हे मसीह के धन्य क्लेश-वाहकों, उस मातृभूमकिो न भूलें जहाँ आप देह में रहे; अपनी अनुपस्थतिसि उसे न छोड़ें, और अपनी प्रार्थनाओं में हमेशा हमारे लिए प्रार्थना करें, कि कोई बुराई हम पर न आए और न ही कोई बीमारी आपके सेवकों के शरीर को छूए। क्योंकआिपको हमारे लिए प्रार्थना करने का अनुग्रह मलिा है; प्रभु ने आपको मध्यस्थ बना दयिा है, जो हमारी ओर से प्रार्थना करते हैं। हम आपकी शरण में आते हैं, हम आपसे वनिती करते हैं, आँसुओं के साथ आपके चरणों में गरिते हुए; हम आपसे प्रार्थना करते हैं कि घमंड का पैर हम पर न पड़े, कि पापी का हाथ हमें नष्ट न करे, और कि कोई वनिाश हम पर न आए। हमसे अकाल और वपत्तिति को दूर भगाएँ; हमें तलवार और गृहयुद्ध से बचाएँ; हमें पाप में न गरिने दें; हम अपनी आशा आप में रखते हैं; हमारे प्रभु परमेश्वर मसीह के पास हमारी प्रार्थना को भक्तपिूर्वक प्रस्तुत करें, क्योंकहिमने पाप कयिा है और अगणति अधर्म कयिा है। परन्तु, आपकी प्रार्थनाओं में अपनी आशा रखकर, आइए हम उद्धारकर्ता से पुकारें: 'प्रभु, केवल आप ही पाप रहति हैं; हम दीनों पर अपने पवत्रि स्वर्ग से दृष्टि डालिए। हमने पाप कयिा है – हमें शुद्ध कीजिए; हमने अधर्म कयिा है – हम पर दया कीजिए; हम ठोकर खा गए हैं – हमारे प्रतिधीरज धारण कीजिए; हमें उस वेश्या की तरह शुद्ध कीजिए, और हमें उस महसूल लेने वाले की तरह क्षमा कीजिए। हे प्रभु, अपनी दया हम पर बरसाओ, मानवजातिके प्रतिअपना प्रेम हम पर उंडेलो; हमें हमारे पापों में न छोड़ो, हमें कड़वी मृत्यु के हवाले न करो, बल्कहिमें इस युग के दुष्टता से छुड़ाओ; हमें पश्चाताप के लिए समय प्रदान करो, हे प्रभु, क्योंकितेरे सामने हमारा अधर्म महान है। हे प्रभु, हम पर दयालुता से व्यवहार करें, क्योंकहिम आपसे पुकार रहे हैं। हम पर दया करें, हम पर करुणा दखिाएँ, अपने सबसे सम्मानति यातना-भोगयिों की प्रार्थनाओं के द्वारा हमारे लिए मध्यस्थता करें; हमें नन्दिा के लिए न सौंपें, बल्कअिपने चरागाह के भेड़ों पर अपनी दया उंडेलें, क्योंकआिप हमारे ईश्वर हैं; आपको हम महमिा अर्पति करते हैं, पति और पुत्र और पवत्रि आत्मा को'।

यह वश्विासयोग्य बोरसि कुलीन जन्म का था, अपने पति के आज्ञाकारी और सभी का सम्मानति था; वह देखने में सुंदर था, लंबा, चौड़े कंधों वाला, और कमर में पतला; उसका चेहरा गोल और प्रसन्न था, उसकी आँखें दयालु थीं, और उसकी दाढ़ी और मूँछें छोटी थीं, क्योंकविह अभी भी जवान था। वह राजसी तेज से दमकता था, अपनी जवानी के खलिने से एक फूल की तरह सुसज्जति। वह युद्ध में पराक्रमी, और सलाह में बुद्धमिान और समझदार था; ईश्वर की कृपा उसमें फल-फूल रही थी।

'कोई भी इन सबको बयान नहीं कर सकता; आँख देख-देखकर कभी तृप्त नहीं होती, न ही कान सुन-सुनकर भरते हैं' (उपदेशक 1:8),' उपदेशक ने कहा; और इसी प्रकार, पवित्र शहीदों के चमत्कार हमारे मन की पहुँच से परे हैं, हमारी जीभ की शक्ति से परे हैं, और शब्दों की क्षमता से परे हैं—वे पुरस्कार जो उन्हें प्रभु ने उनकी मेहनत के लिए दिए, परमेश्वर के राज्य के बच्चों और सहभागी के रूप में। जैसा कि दार्शनिक यूहन्ना ने कहा: *'पर जितनों ने उसे ग्रहण किया, उन्हें परमेश्वर की संतान बनने का अधिकार दिया'* (यूहन्ना 1:12)। और दाऊद *ने कहा: 'जो पृथ्वी पर पवित्र लोग हैं, वे मेरी सारी अभिलाषा के पात्र हैं'* (भजन संहिता 15:3)। और फिर: *'हे परमेश्वर, तू अपने पवित्र मन्दिर में अद्भुत है; केवल तू ही चमत्कार करता है'* (भजन संहिता 67:36, 71:18)। सम्माननीय जॉन ऑफ़ डेमास्कस ने लिखा है कि ऐसे पुरुष मृत्यु के बाद भी जीवित रहते हैं और परमेश्वर के सामने खड़े होते हैं। हमारे उद्धार के स्रोत, हमारे उद्धारकर्ता मसीह, उन्हें सहायता प्रदान करेंगे, क्योंकि उनके शहीद शरीरों से एक सुगंधित मूर्रा बहती है। और इसके अलावा: जो कोई परमेश्वर और पुनरुत्थान की आशा में विश्वास करता है, वह उन्हें मृत नहीं कहेगा। क्योंकि मिरा हुआ मांस चमत्कार कैसे कर सकता है, उनके द्वारा दुष्टात्माएँ कैसे भगाई जा सकती हैं, बीमारियाँ कैसे दूर हो सकती हैं, दुर्बलताएँ कैसे चंगी हो सकती हैं, अंधों को दृष्टि कैसे मिल सकती है, कोढ़ियों को शुद्धता कैसे मिल सकती है, दुख और विपत्तियाँ कैसे मिट सकती हैं, और प्रकाश के पिता की ओर से हर अच्छा वरदान उनके द्वारा कैसे प्रवाहित हो सकता है—और फिर भी लोग उन पर बिना संदेह के और विश्वास के साथ प्रार्थना करते हैं! एक ऐसे नश्वर राजा के सामने मध्यस्थ खोजने के लिए आपको कितनी मेहनत करनी पड़ती है जो आपसे हिसाब लेता है, जबकि ये तो पूरे मानव जाति के मध्यस्थ हैं, जो हमारी ओर से ईश्वर से प्रार्थना करते हैं। हम उनका सम्मान करने में कैसे चूक सकते हैं, जो सभी को चर्च और ईश्वर तक ले जाते हैं! जैसे ही हम उनकी स्मृति का सम्मान करते हैं, हम उन संतों का पर्व आनंदपूर्वक मनाते हैं, जिन्हें प्रभु ने प्रचुर अनुग्रह और चमत्कारों से गौरवान्वित किया है - ये चमत्कारी, हमारे रूसी मातृभूमि की सभी भूमि के लिए मध्यस्थ हैं।

कई लोगों को इस बात की जानकारी नहीं थी कि मिसीह के पवित्र शहीदों और कष्ट-भोगियों, रोमन और डेविड, को विशिगोरोड में दफनाया गया था, लेकिन प्रभु ने इतने बड़े खजाने को पृथ्वी में छिपा रहने नहीं दिया, और इसे सभी के सामने प्रकट कर दिया। जिस स्थान पर वे पड़े थे, वहाँ कभी-कभी आग का एक स्तंभ देखा जाता था, जबकि अन्य समयों में स्वर्गदूतों का गायन सुना जा सकता था। यह सुनकर और देखकर, लोगों ने परमेश्वर की महिमा की और उस स्थान पर भक्तिपूर्वक पूजा करने आए। अन्य देशों से भी कई लोग आए। कुछ ने अफवाहों पर विश्वास किया, जबकि अन्य ने नहीं किया, उन्हें झूठ समझा, ठीक वैसे ही जैसे प्रेरित ने क्रूस के बारे में कहा था: *'जो नाश हो रहे हैं, उनके लिए यह मूर्खता है; परन्तु हम जो बच रहे हैं, हमारे लिए यह परमेश्वर की सामर्थ्य है'* (1 कुरिन्थियों 1:18)। प्रभु ने भी पवित्र सुसमाचार में कहा: *'और जो कोई इस पत्थर पर गिरेगा, वह चकनाचूर हो जाएगा'* (मत्ती 21:44), परन्तु जो कोई उस पर विश्वास करेगा, वह लज्जित नहीं होगा। एक बार, कुछ वरांगियन उस स्थान पर आए जहाँ संतों को जमीन के नीचे दफनाया गया था, और उनमें से एक ने कब्र पर पैर रखा; तुरंत ही कब्र से आग फूट पड़ी और वरांगियन के पैरों को झुलसा दिया। वह झट से खड़ा हो गया, जो हुआ था उसका ब्योरा देने लगा, और अपने झुलसे हुए पैरों को अपने साथियों को दिखाया। उस समय से, उन्होंने उसके पास जाने की हिम्मत नहीं की, बल्कि भय के साथ उसकी पूजा की। कुछ ही समय बाद, संत बेसिल का चर्च, जहाँ संतों को दफनाया गया था, में आग लग गई। उस चर्च का sexton, मैटिन्स सेवा समाप्त होने के बाद, दुष्ट शैतान द्वारा प्रेरित नींद में आ गया और, चर्च की ठीक से जाँच किए बिना, घर चला गया, और चर्च में ऊपर जलती हुई एक मोमबत्ती को बुझाना भूल गया। कुछ समय बाद, चर्च में आग लग गई। लोग उसकी ओर दौड़े; चर्च ऊपर से जल रहा था; वहाँ से सब कुछ निकाल लिया गया—प्रतिमाएँ और पवित्र पात्र—ताकि केवल इमारत ही जलकर राख हो गई और कुछ भी नहीं जला। यह सब ईश्वर की अनुमति से हुआ। चर्च लकड़ी का और जर्जर था। इसके माध्यम से, प्रभु ने अपनी इच्छा प्रकट की कि उस स्थान पर पवित्र और धन्य शहीदों बोरिस और ग्लेब के नाम पर एक और चर्च बनाया जाए, और उनके शरीरों को प्रेमपूर्वक धरती से निकाला जाए, और ठीक यही हुआ। यह सब यारोस्लाव को सुनाया गया। राजकुमार ने मेट्रोपॉलिटन जॉन को बुलाया, उन्हें अपने भाइयों, पवित्र शहीदों के बारे में बताया, और मेट्रोपॉलिटन, मानो, ईश्वर के सामने भय, संदेह, आनंद और साहस से भर गए। राजकुमार के पास से निकलकर, मेट्रोपॉलिटन ने गायक मंडली और सभी पुरोहितों को इकट्ठा किया और उन्हें विशिगोरोड तक एक जुलूस में जाने का आदेश दिया। और वे राजकुमार यारोस्लाव के साथ, संतों के पड़े होने की जगह के लिए रवाना हो गए। जहाँ जली हुई चर्च खड़ी थी, उस जगह पर उन्होंने एक छोटा सा चैपल बनाया। आर्चबिशप, क्रॉस के साथ पहुँचकर, वहाँ पूरी रात जागरण का आयोजन किया। सुबह-सुबह, आर्चबिशप क्रॉस के साथ उन स्थानों पर गए जहाँ संतों के पवित्र शरीर पड़े थे, प्रार्थना की, और संतों के ताबूत पर मिट्टी हटाने का आदेश दिया।

और उसे खोदने के बाद, उन्होंने ताबूत को जमीन से बाहर निकाला। तब मेट्रोपॉलिटन जॉन और पुरोहित श्रद्धा और प्रेम से आगे आए, उन्होंने संतों की ताबूत खोली, और एक अत्यंत शानदार चमत्कार देखा। संतों के शरीरों में क्षय का कोई भी लक्षण नहीं था; वे पूरी तरह से अक्षुण्ण और बर्फ की तरह सफेद थे, उनके चेहरे स्वर्गदूतों की तरह दमक रहे थे, और उनसे एक मीठी सुगंध आ रही थी। आर्चबिशप और सभी लोग अत्यंत चकित हुए। और उन्होंने उन पवित्र शरीरों को जली हुई चर्च की जगह पर बनी नई चर्च में ले जाकर दाहिनी ओर जमीन पर रख दिया।

विश्गोरोद में मरीनेग नाम का एक बाज़ार-बाग़ वाला व्यक्ति था। उसका एक बेटा था जिसकी टांग सूखकर मुड़ गई थी। वह चल नहीं सकता था और उसमें कोई संवेदना नहीं थी। हालाँकि, उसने लकड़ी की टांग बनाकर चलना शुरू कर दिया। वह संतों के पास आया, उनके ताबूत के सामने सिर झुकाया और ईश्वर तथा संतों से प्रार्थना करने लगा, संतों से चंगा होने की भीख माँगी। इस प्रकार, दिन-रात वह आँसुओं के साथ प्रार्थना करता रहा। एक रात, मसीह के पवित्र शहीद, रोमन और डेविड, उसे दिखाई दिए और उन्होंने कहा: 'तुम हमसे क्यों पुकार रहे हो?'

उसने उन्हें वह पैर दिखाया जिसे ठीक करने की आवश्यकता थी। उन्होंने उसका मुरझाया हुआ पैर लिया और उस पर तीन बार क्रॉस का चिह्न बनाया। जागने पर, उसने खुद को ठीक पाया और खुशी से कूदकर खड़ा हो गया, और ईश्वर तथा संतों की स्तुति करने लगा। फिर उसने सभी को बताया कि कैसे संतों ने उसे ठीक किया था, और कहा कि उसने सेंट बोरिस के युवा साथी जॉर्ज को भी देखा था, जो संतों के आगे एक मोमबत्ती लेकर चल रहा था। ऐसा चमत्कार देखकर, लोगों ने ईश्वर की स्तुति की।

एक अंधा आदमी आया और संतों की कफ़न के सामने गिर पड़ा, उसे प्यार से चूमते हुए, अपनी आँखें उस पर टिकाते हुए और चंगा होने की प्रार्थना करते हुए। और तुरंत ही उसकी दृष्टि वापस आ गई। और सभी ने ईश्वर की स्तुति की।

तब मरीनेग ने राजकुमार को दोनों चमत्कारों के बारे में बताया। राजकुमार यारोस्लाव ने ईश्वर और पवित्र शहीदों की स्तुति की और मेट्रोपॉलिटन जॉन को बुलवाकर, उन्होंने उन्हें वह सब कुछ खुशी से सुनाया जो उन्होंने सुना था। आर्चबिशप ने भी ईश्वर की स्तुति की और राजकुमार को एक भव्य चर्च बनाने की ईश्वरीय सलाह दी। राजकुमार उनकी सलाह से प्रसन्न हुआ, और उसने बढ़इयों को चर्च के निर्माण के लिए लकड़ी तैयार करने का आदेश दिया। तब तक सर्दी आ चुकी थी। बढ़ईयों ने लकड़ी तैयार की और, जब गर्मी आई, तो उन्होंने पाँच गुंबदों वाली एक भव्य चर्च का निर्माण किया। राजकुमार ने इसे हर तरह की चित्रकला से सजाया और संतों की प्रतिमाएँ बनाने का आदेश दिया, ताकि श्रद्धालु चर्च में स्वयं संतों को देख सकें, और उन्हें विश्वास और प्रेम से चूमकर उनकी पूजा कर सकें। और एक जुलूस में, मेट्रोपॉलिटन जॉन, राजकुमार यारोस्लाव, सभी पुरोहित और सभी लोग संतों के अवशेषों को चर्च में ले गए और उसे पवित्र किया। उन्होंने 24 जुलाई को एक पर्व दिवस स्थापित किया, वह दिन जब परम धन्य बोरिस की हत्या की गई थी। ठीक उसी दिन, पवित्र अवशेषों का स्थानांतरण और चर्च का अभिषेक हुआ।

जब राजकुमार और मेट्रोपॉलिटन दैवीय धर्मविधि में शामिल थे, तो संयोग से एक लंगड़ा आदमी चर्च में था। बड़ी कठिनाई से, वह घिसटते हुए चर्च में गया, और ईश्वर तथा संतों से प्रार्थना करने लगा। और तुरंत ही ईश्वर की कृपा और संतों की प्रार्थनाओं से उसके पैर मजबूत हो गए। और, अपने पैरों पर खड़ा होकर, वह सभी के सामने चलने लगा। यह चमत्कार देखकर, धर्मपरायण राजकुमार यारोस्लाव, मेट्रोपॉलिटन और सभी लोगों ने ईश्वर और संतों की स्तुति की।

लिTypजी के बाद, राजकुमार ने सभी को भोजन के लिए आमंत्रित किया: मेट्रोपॉलिटन और पुरोहितों को; और उन्होंने जैसा उचित था, वैसे त्योहार मनाया। और राजकुमार ने अपनी संपत्ति का बहुत हिस्सा गरीबों, अनाथों और विधवाओं में बाँट दिया।

और इस प्रकार यारोस्लाव (1054 में) का निधन हो गया, उन्होंने अपने पिता की मृत्यु के बाद 38 वर्षों तक सम्मानपूर्वक जीवन जिया और अपने बेटों: इज़ियास्लाव, स्वियातोस्लाव और वसेवोल्द को उत्तराधिकारी बनाया, और उनके बीच उपयुक्त रूप से विरासत का बँटवारा कर दिया: उन्होंने सबसे बड़े इज्यास्लाव को कीव में, स्वआतोस्लाव को चेर्निहिव में, वसेवोल्द को पेरियास्लाव में और अन्य लोगों को विभिन्न अन्य जिलों में शासन करने के लिए नियुक्त किया। राजकुमार इज्यास्लाव, जिन्हें यह भव्य रियासत विरासत में मिली थी, ने अपने पिता के शरीर को एक संगमरमर के सारकोफ़ैगस में रखा, जिसे उन्होंने सेंट सोफिया चर्च के नार्टेक्स में स्थापित किया था, जो उनके पिता द्वारा[3387] में बनाया गया था।

[3387] कीव में यह चर्च 1037 में स्थापित किया गया था।

दो साल बीत गए और चर्च पहले ही जीर्ण-शीर्ण हो चुका था। एक दिन जब इज़्यास्लाव यारोस्लावचि ने इसका दौरा किया, तो उन्होंने इसकी जर्जर हालत देखी, मुख्य बढ़ई को बुलाया और उसे पवित्र पीड़ा-भोगियों को समर्पित एक नया, एक-गुंबद वाला चर्च बनाने का आदेश दिया; उन्होंने पहले वाले, जर्जर चर्च के पास इसके लिए एक जगह भी निर्धारित की। राजकुमार ने मेट्रोपॉलिटन जॉर्ज से उस स्थान पर प्रार्थना करने और चर्च के निर्माण के लिए आवश्यक धन मुहैया कराने का भी अनुरोध किया। बढ़ईयों के मुखिया ने अपने सभी कामगारों को इकट्ठा किया और जल्द ही निर्धारित स्थल पर चर्च का निर्माण कर दिया। यह सुनकर, राजकुमार ने नगर के बुजुर्ग को एक संदेश भेजा, जिसमें कहा गया: 'मैं चर्च की सजावट के लिए राजकुमार के कर से धन प्रदान कर रहा हूँ।'

जब चर्च का निर्माण अंततः पूरा हो गया, तो ईश्वर-प्रेमी इज़्यास्लाव ने आर्चबिशप जॉर्ज से संतों के अवशेषों को नए चर्च में स्थानांतरित करने की व्यवस्था करने का आग्रह किया। इज़्यास्लाव और वसेवोल्द, कीव के मेट्रोपॉलिटन जॉर्ज और अन्य लोगों—नेओफिटस, चेरनिगिव के बिशप, पेरियास्लाव के पीटर, बेलोजेरो के निकिता, युरीएव के माइकल, थियोडोसियस, पेचेर्सक मठ के मठाध्यक्ष, सेंट माइकल के सोफ्रोनीयस, सेंट सेवियर के जर्मन, और अन्य सभी मठाध्यक्षों ने एक भव्य उत्सव मनाया। सबसे पहले, राजकुमारों ने संत बोरिस के शरीर को, जो एक लकड़ी के अवशेष-पात्र में बंद था, अपने कंधों पर उठाया और उसे ले चले, और उनके आगे मोमबत्तियाँ लिए हुए पूजनीय भिक्षु चल रहे थे। भिक्षुओं के पीछे डिकन और पुरोहित थे, और उनके पीछे मेट्रोपॉलिटन और बिशप थे। उसे लाने के बाद, उन्होंने अवशेष-पात्र को चर्च में रख दिया, उसे खोला, और चर्च एक अद्भुत सुगंध से भर गया। यह सब देखने वालों ने ईश्वर की महिमा की। हालाँकि, मेट्रोपॉलिटन भय से ग्रस्त हो गया, क्योंकि वह संतों में दृढ़ विश्वास नहीं रखता था; वह साष्टांग प्रणाम कर गिरा और क्षमा याचना करने लगा। और अवशेषों को चूमने के बाद, उन्होंने उन्हें एक पत्थर के अवशेष-पात्र में रख दिया। फिर उन्होंने संत ग्लेब के शरीर वाले पत्थर के अवशेष-पात्र को उठाया, उसे एक स्लेज पर रखा, और रस्सियाँ पकड़कर चल पड़े। और जब वे दरवाजे तक पहुँचे, तो अवशेष-पात्र रुक गया और आगे नहीं बढ़ा। तब उन्होंने लोगों को आज्ञा दी कि वे पुकारें: 'हे प्रभु, दया करें!' और उन्होंने प्रभु और संतों से प्रार्थना की। और तुरंत ही वह संदूक आगे बढ़ गया। फिर उन्होंने संत बोरिस के सिर को चूमा। मेट्रोपॉलिटन जॉर्ज ने संत ग्लेब का हाथ थामने के लिए कहा और राजकुमार इज़्यास्लाव, स्वियातोस्लाव और वसेवोल्द को आशीर्वाद दिया। एक बार फिर, स्वेतोस्लाव ने मेट्रोपॉलिटन का हाथ पकड़ा, जो संत का हाथ पकड़े हुए थे, और उसे अपनी गर्दन के फोड़े पर, अपनी आँखों पर और अपने सिर के ताज पर दबाया। फिर उन्होंने उस हाथ को ताबूत में रख दिया, और उन्होंने दैवीय लिटिर्जी गाना शुरू कर दिया। उसी क्षण, स्वेतोस्लाव ने बर्न से कहा: 'कुछ मेरे सिर में चुभ रहा है।'

बर्न ने अपना मुंह ढकने वाला कपड़ा उठाया और संत ग्लेब का नाखून अपने सिर पर देखकर, उसे हटाया और स्वेतोस्लाव को दे दिया। फिर स्वेतोस्लाव ने संतों के इस पवित्र उपहार के लिए ईश्वर की स्तुति की। लिटिर्जी के बाद, सभी भाइयों ने एक साथ भोजन किया। उन्होंने इस पर्व को आनंदपूर्वक मनाया और गरीबों को बहुत दान दिया। फिर उन्होंने एक-दूसरे को चूमकर शांतिपूर्वक अपने-अपने रास्ते चले गए। और तब से ई[3388] , यह पर्व हमारे प्रभु यीशु मसीह की कृपा से, पवित्र शहीदों के सम्मान और महिमा में, मई के दूसरे दिन स्थापित किया गया।

एक व्यक्ति था जो गूंगा और लंगड़ा था; उसकी टांग घुटने के नीचे से काट दी गई थी। उसने अपने लिए एक लकड़ी की टांग बना ली थी, और वह उसी पर चलता था। वह अन्य गरीब लोगों के साथ संतों के चर्च के पास रहता था, और ईसाइयों से भीख में कपड़े या जो कुछ भी कोई देना चाहता था, वह ले लेता था। और विशिगोरोड में बाज़ार के माली-बागवानों का एक मुखिया था, जिसका सांसारिक नाम ज़दान था, लेकिन बपतिस्मा का नाम निकोलस था। और वह हर साल संत निकोलस का पर्व मनाता था। एक दिन, उनके पर्व के दिन, वह गरीब और वह लंगड़ा आदमी वहाँ कुछ पाने की उम्मीद में गए। घर में प्रवेश करने पर, वह संत की प्रतिमा के सामने बैठ गया। हालाँकि, ऐसा हुआ कि उसे न तो भोजन मिला और न ही पानी, और वह भूखा-प्यासा वहीं बैठा रहा। फिर, अचानक, वह समाधि में चला गया और उसे एक दर्शन हुआ। उसे ऐसा लगा कि वह संतों के चर्च के पास बैठा है। और उसने बोरिस और ग्लेब को देखा, जो वेदी से बाहर आते और उसकी ओर बढ़ते हुए दिखाई दिए, और वह साष्टांग दंडवत हो गया। संतों ने उसका हाथ पकड़ा, उसे बिठाया, और उसके ठीक होने के बारे में बात करनी शुरू कर दी। फिर उन्होंने उसके होठों पर क्रॉस का चिह्न बनाया, उसकी बीमार टांग को, जैसे उस पर तेल लगा रहे हों, पकड़ा और उसे घुटने से खींचा। उस बीमार आदमी ने यह सब एक सपने में देखा, क्योंकि वह उस घर में मुंह के बल

[3388] अर्थात्, 1072 से

गरि पड़ा था। उसे ज़मीन पर मुँह के बल पड़ा हुआ देखकर, लोगों ने उसे इधर-उधर घुमाया। लेकनि वह, जैसे मृत पड़ा था, उसके पास अपने होंठ या अपनी आँखें हलिाने की भी ताकत नहीं थी। उसके भीतर केवल उसकी आत्मा ही बची थी, और उसका दलि अभी भी धड़क रहा था। सभी को लगा कि उस पर एक राक्षस सवार हो गया है। उन्होंने उसे उठाया, ले गए, और संतों के चर्च के दरवाज़ों के सामने लटिा दयिा। बहुत से लोग इकट्ठा हो गए, वे इस शानदार चमत्कार को देखकर चकति हो रहे थे। पीड़ति के घुटने से एक पैर नकिला और बढ़ने लगा, यहाँ तक कि वह दूसरे पैर के बराबर हो गया, और यह कसिी लंबी अवधि में नहीं, बल्कि एक ही घंटे के भीतर हुआ। यह देखकर, वहाँ मौजूद लोगों ने ईश्वर और उनके संतों, शहीदों रोमन और डेवडि की महमिा की। और वे सभी चल्लिा उठे:

– *'प्रभु के महान कामों की घोषणा कौन कर सकता है, या उसकी सारी स्तुति कौन सुना सकता है? धन्य है प्रभु परमेश्वर, जो अकेला ही चमत्कार करता है!'* (भजन संहति 105:2, 71:18).

डोरोगोबुज़ शहर में, एक दासी महलिा, आज्ञा के अनुसार, संत नकिोलस के दनि अपनी मालकनि के घर में काम कर रही थी, जबकि बाकी सब लोग अपनी-अपनी चर्च जा रहे थे। उसे काम करते देख अन्य महलिाओं ने उसे डाँटना शुरू कर दयिा और उसे चर्च आने के लिए कहा। लेकनि उसने उनकी कोई परवाह नहीं की और अपना काम करती रही। अचानक, सफेद वस्त्र पहने तीन पुरुष आँगन में सवार होकर आए। दरवाज़े से झाँककर, उसने उन्हें देखा। उनमें से एक बूढ़ा आदमी था, जसिके दोनों ओर दो जवान पुरुष खड़े थे। और जवान पुरुषों ने उससे कहा:

'हे स्त्री, तुझे हमारे पति, नकिोलस का अपमान करने की हम्मित कैसे हुई, कि तू उनके पर्व के दनि काम कर रही है और चर्च नहीं गई?'

उसने उनसे उत्तर दयिा:

'मैं एक गरीब वधिवा हूँ; मुझे चर्च जाने के बजाय काम करना ज़रूरी है।'

तब बूढ़े आदमी ने जवानों से कहा:

'तुम उससे बात क्यों कर रहे हो? उसका घर गरि दो।'

वे काम में लग गए और आधे घर की तलाशी लेने लगे। बूढ़ा आदमी, औरत के पास आकर, उसका दाहनिा हाथ पकड़कर उसे कमरे से बाहर फेंक दयिा। और वह मरकर गरि पड़ी। औरत को वहां पड़ा हुआ देखकर, पड़ोसयिों ने उसे उठाया और उसे दूसरे घर में ले गए। वे उसे लटिाकर उसके बगल में बैठ गए, यह सुनने के लिए कि वह क्या कहेगी। लेकनि वह न तो अपनी आँखें हलिा सकती थी और न ही अपने होंठ, बल्कि मृत की तरह पड़ी रही और अपनी मर्जी से कुछ भी नहीं खाया; केवल उसके होंठों को खोलकर, वे चम्मच से उसके मुँह में दूध या पानी डालते थे। इस तरह वह बड़ी तपस्या (Great Lent) तक रही। मीटफेयर संडे पर, उन्होंने उस महलिा को सेंट नकिोलस चर्च ले गए। उसके लिए प्रार्थना करने के बाद, उसने अपनी आँखें थोड़ी सी खोलीं और, जैसे नींद से जागते हुए, खाने के लिए कहा; वह खा सकी और उसने बताया कि क्या हुआ था। हालाँकि, उसका दाहनिा हाथ सूख गया था, और उसमें उसे कोई महसूस नहीं हो रहा था। और इस प्रकार उसके पास अब अपने मालकिों की सेवा करने की ताकत नहीं बची थी। उसे ऐसी कमजोर हालत में देखकर, उसकी मालकनि ने उसे नकिाल दयिा, और वह लड़का जो उसकी आज़ादी के समय हुआ था, एक दास बन गया। लेकनि न्यायाधीशों ने ऐसा होने नहीं दयिा; इसके बजाय, उन्होंने आदेश दयिा कि उसके मालकिों को उसकी कीमत चुकानी पड़ेगी, और दोनों को आज़ाद कर दयिा गया, क्योंकि उसने अपनी इच्छा के वरिुद्ध काम कयिा था और उसे दंडति कयिा गया था। तीन साल बीत गए। बेजान अंगों वाली उस महलिा ने सुना कि कैसे पवत्रि शहीदों रोमन और डेवडि के चर्च में बेजान बाहों और पैरों वाले एक व्यक्ति को चंगा कर दयिा गया था। और इस प्रकार वह वशिगोरोद के लिए चल पड़ी। वह शनविार को पहुँची, जो परमेश्वर की पवत्रि माता के स्वर्गारोहण के कैनन का दनि था, और उसने उस चर्च के वरष्ठि पुरोहति लाजरस से बात की। उसने उसे चर्च के पास ही रात बतिाने के लिए कहा। सुबह, जब वे क्रॉस लेकर पवत्रि माता के चर्च की ओर जा रहे थे, तो मुरझाए हुए हाथ वाली महलिा लाजरस के पास आई और उसे अपना सपना सुनाया:

'जब मैं कल रात चर्च के पास बैठी थी, तो दो सुंदर जवान मेरे पास आए और पूछा: "तुम्हें यहाँ बैठने के लिए कसिने कहा?" मैंने जवाब दयिा: "पादरी लाजरस ने मुझे बैठने के लिए कहा था, उन्होंने कहा: 'यहाँ बैठो; शायद ईश्वर, पवत्रि शहीदों की प्रार्थनाओं के द्वारा, तुम्हें ठीक कर देगा।'" यह सुनकर, उन युवकों में से बड़े ने तुरंत अपनी अंगूठी उतार ली, मुझे दे दी और कहा: 'इसे अपने हाथ में पहन लो और क्रॉस का चन्हि बनाओ, और यह तुम्हारे हाथ को ठीक कर देगा।'

यह सुनकर, लज़ारस ने उसे चर्च के दरवाज़ों पर लटिर्जी में शामलि होने का नर्दिेश दयिा, ताकि जब गायन और प्रार्थनाएँ समाप्त हो जाएँ, तो उसके हाथ पर धूपदान के तेल से अभषिेक कयिा जा सके। उन्होंने लटिर्जी का गायन शुरू

कयिा। जब उन्होंने 'हे पवत्रि ईश्वर' का भजन गाया और कंठकर्त्ता ने 'ईश्वर की माता का भजन, प्रोकीमेनोन: "मेरी आत्मा प्रभु की महमिा करती है"' की घोषणा की, तो अचानक उस स्त्री का मुरझाया हुआ हाथ दर्द करने लगा; उसके हाथ को सहारा देने वाली पट्टी फसिल गई, और वह स्त्री काँपते हुए और अपना हाथ हलिाते हुए वेदी की ओर दौड़ी। यह देखकर, सभी लोगों और पुरोहतिों ने उसे भूतग्रस्त समझा और उसे संतों के मकबरे तक घसीट कर ले गए। उसे देखकर और पहचानकर, लाजरस भय से भर गया। और उसी क्षण उसका हाथ ठीक हो गया। इस चमत्कार को देखने वाले सभी लोगों ने ईश्वर की महमिा की, और ईश्वर के त्वरति हस्तक्षेप तथा मसीह के पवत्रि शहीदों की शक्ति पर आश्चर्य कयिा।

उस नगर में एक अंधा व्यक्ति रहता था। वह संत जॉर्ज के चर्च जाता और संत से अपनी दृष्टि लौटाने के लिए प्रार्थना करता था। एक रात, पवत्रि शहीद जॉर्ज उसे दखिाई दिए और कहा: 'तुम मुझे क्यों पुकार रहे हो? यदि तुम देखना चाहते हो, तो मैं तुम्हें बताऊंगा कि यह कैसे प्राप्त कयिा जाए। संत बोरसि और ग्लेब के पास जाओ; यदि वे चाहेंगे, तो वे तुम्हें वह दृष्टि प्रदान करेंगे जसिकी तुम मांग कर रहे हो। क्योंकि उन्हें रूस की भूमि में ईश्वर द्वारा यह अनुग्रह दयिा गया है कि वे सभी प्रकार के कष्टों और दुर्बलताओं को क्षमा कर सकें और उनका उपचार कर सकें।'

यह देखकर और सुनकर, अंधा आदमी जाग उठा और जैसा उसे नर्दिेश दयिा गया था, वैसे ही अपनी यात्रा पर नकिल पड़ा। वह पवत्रि शहीदों के चर्च में आया और वहाँ कई दनिों तक रहा, वह पवत्रि शहीदों के सामने नतमस्तक हो रहा था और उनसे प्रार्थना कर रहा था, जब तक कि वे उसके पास नहीं आए। और उसकी दृष्टि वापस आ गई, और वह देखने लगा, और उसने परमेश्वर और पवत्रि शहीदों की महमिा की, क्योंकि वह चंगा हो गया था। और उसने सभी को बताया कि कैसे उसने पवत्रि शहीदों को अपने पास आते देखा, जन्हिोंने उसकी आँखों पर तीन बार क्रॉस का चह्नि बनाया, और तुरंत उसकी आँखें खुल गईं। सभी ने उन गौरवशाली, अद्भुत और अकथनीय चमत्कारों के लिए परमेश्वर का धन्यवाद कयिा जो पवत्रि शहीदों द्वारा कए गए थे। क्योंकि लखिा है: *'वह अपने भक्तों की इच्छा पूरी करता है; वह उनकी पुकार सुनता है और उन्हें बचाता है'* (भजन संहति 144:19), और फरि: *'वह जो चाहे करता है'* (भजन संहति 113:11)

संतों के चमत्कार बढ़ गए और उनकी कृपा बढ़ी। और जैसा कि पवत्रि सुसमाचार में लखिा है: *'दुनयिा स्वयं* उन पुस्तकों *को समा नहीं सकती'* (यूहन्ना 21:25), ये चमत्कार बनिा दर्ज कए हुए हुए, और जो उन्हें जानते थे उन्होंने उनका वर्णन कयिा। तब यारोस्लाव के पुत्र स्वयिातोस्लाव ने संतों के लिए एक पत्थर का चर्च बनाने का नश्चिय कयिा; उन्होंने इसे 50 कोहनों की ऊँचाई तक बनाया, और फरि (1079 में) देहांत हो गया। व्लादमिीर, रूसी भूमि के राजकुमार बनकर, ने संपूर्ण संरचना को पूरा कयिा। लेकनि जैसे ही यह पूरा हुआ, उसी रात इसका ऊपरी हस्सिा ढह गया और पूरी इमारत नष्ट हो गई। फरि व्लादमिीर का (1093 में) नधिन हो गया, जन्हिोंने शांतपिूर्वक जीवन जयिा और ईश्वर द्वारा उन्हें सौंपी गई रयिासत को सुधारा। स्वयिातोपोलक इज्यास्लावचि ने कीव में, डेवडि और ओलेग ने चेर्नगिोव में, और व्लादमिीर ने पेरयिास्लाव में रयिासत संभाली। उन दनिों, हमारी भूमि के शत्रु हमसे अधकि शक्तशिाली हो गए और उन्होंने हमारे पापों के कारण हम पर बहुत अत्याचार कयिा। पवत्रि शहीदों का चर्च उपेक्षा का शकिार हो गया था, और कोई भी उसकी देखभाल करने या उसके चमत्कारों को दर्ज करने में सक्षम नहीं था।

यह वही है जो उस चमत्कार के प्रत्यक्षदर्शयिों ने देखा। राजकुमार स्वयिातोपोलक ने मामले की जांच कए बनिा, बल्कि उन लोगों की सुनकर जन्हिोंने उन पर बदनामी की थी, कसिी अपराध के लिए दो पुरुषों को भारी बेड़यिों में जकड़कर एक भूमगित कालकोठरी में कैद कर दयिा। वह भवष्यिवक्ता दाऊद के वचन भूल गए थे: *'एक टेढ़ा हृदय मुझ से दूर रहेगा; मैं दुष्टों के संग कोई भाग नहीं लूंगा। मैं अपने पड़ोसी का बदनामी करने वाले को नकिाल फेंकूंगा'* (भजन संहति 100:4–5)। उन लोगों को कैद करने के बाद, राजकुमार उन सबको भूल गया। ऐसी पीड़ा में खुद को पाकर, उन्होंने पवत्रि शहीदों से भक्तपिूर्वक प्रार्थना की और हर रवविार, रक्षक को पैसे देते थे ताकि वह प्रॉस्फोरा खरीदकर संत रोमानस और डेवडि के चर्च में ले आ सके। बहुत समय बीत गया, फरि भी कैदी दुख और शोक में तड़पते रहे, अखंड प्रार्थना करते रहे और पवत्रि शहीदों को पुकारते रहे। और संतों ने उन्हें ठुकराया नहीं, बल्कि उन्हें बचाया, उनके लिए मध्यस्थता की और उनकी सहायता के लिए आए। एक रात, जब जेल के दरवाज़े बंद थे और सीढ़ी हटाकर बाहर रख दी गई थी, जब ये कैदी और कई अन्य सो रहे थे, तो अचानक कैदयिों में से एक ने खुद को तहखाने के ऊपर, बाहर सोते हुए पाया; वह अपनी बेड़यिों से मुक्त होकर जागा और उसने देखा कि जो लोहे की बेड़यिाँ उस पर और उसके साथी पर थीं, वे टूट गई थीं और उसके बगल में पड़ी थीं, जबकि उनके पैरों में जड़ी अंगूठयिाँ रस्सी की तरह मुड़ गई थीं। वह उठकर ईश्वर और उनके पवत्रि

सेवकों की महमिा करने लगा। उसने जो देखा था, उसे याद करते हुए उसने , पहरेदार को बुलाया, उसे जो हुआ था वह दखिाया, और कहा: 'मुझे गौरवशाली शहीदों के चर्च में ले जाओ।'

मैटनि्स के लिए चर्च पहुँचकर—और यह गुरुवार का दनि था—उसने पवत्रि अवशेष-पात्रों के सामने सरि झुकाया और चर्च में उपस्थति सभी पुरोहतिों और लोगों से कहा:

'जब हम और कई अन्य लोग कालकोठरी में सो रहे थे, अचानक, मानो, छत उठ गई, और हमने संतों को प्रवेश करते और कहते देखा: "तुम यहाँ क्यों हो?" हमने जवाब दयिा: "राजा की यही इच्छा है; हम पर झूठी अफवाह फैलाई गई है।"' लेकनि संतों ने हमसे कहा: 'हम तुम्हें आज्ञा देते हैं: तुम चर्च जाओ और जो तुमने देखा है, वह बताओ; जहाँ तक तुम्हारे साथी का सवाल है, हम उसे कालकोठरी में ही छोड़ देते हैं। हमने उसे अंधा कर दयिा है, दूसरों के लिए एक प्रमाण के रूप में, कहीं वे वशि्वास न करें। जहाँ तक हमारी बात है, हम ग्रीस की भूमकि लिए प्रस्थान करेंगे; तीन दनिों में लौटकर, हम उससे मलिेंगे और उसकी दृष्टवािपस कर देंगे। अब जाओ और राजकुमार से कहो: तुम इस तरह का व्यवहार क्यों कर रहे हो, मामले की जाँच कए बनिा हमें यातनाएँ क्यों दे रहे हो और हमें कष्ट क्यों पहुँचा रहे हो? यदतिुम इस पर पश्चाताप नहीं करते और ऐसा व्यवहार बंद नहीं करते, तो जान लो कतिुम कसिी भी तरह से नरक से नहीं बच पाओगे।' यह और अन्य बातें कहने के बाद, वे हमारी दृष्टसि ओझल हो गए। मैं, जसिने यह सब देखा, भाइयों, तुमसे कह चुका हूँ; लेकनि यदतिुम और स्पष्ट रूप से देखना और सुनना चाहते हो, तो चलो हम तहखाने में चलते हैं।

जब हम वहाँ पहुँचे, तो सभी ने देखा कताले अछूते और सुरक्षति थे, जबकअिंदर जाने-आने के लिए इस्तेमाल की जाने वाली सीढ़ी बाहर पड़ी थी। और वे चकति हो गए और प्रभु तथा संतों की महमिा करने लगे। जब उन्होंने कालकोठरी खोली, तो उन्होंने देखा कवि ह कैदी जसिके बारे में कहा गया था, वास्तव में अंधा था, उसकी पलकें और भौंहें तक नहीं दखिाई दे रही थीं, फरि भी उसके शरीर पर कोई घाव नहीं था। जब उससे पूछा गया, तो उसने वही कहानी सुनाई। तब दोनों कैदयिों को रहिा कर दयिा गया और वे दनि-रात चर्च से नहीं जाते थे, वशिेषकर अंधा आदमी; जैसे संतों की लज्जा उठाते हुए और जैसे कसिी कर्ज की मन्नित करते हुए, वह कब्रों के सामने साष्टांग दंडवत प्रणाम करता और प्रार्थना करके कहता: 'हे मसीह के पवत्रि सेवकों, हम पर तरिस्कार न करें, अपना वादा न भूलें। मुझे वह प्रदान करो जो तुमने करने का व्रत लयिा है, जसिसे तुमने स्वयं को बाँध लयिा है।'

वह तीन दनि तक इसी तरह करता रहा। जब रवविार आया, तो वह चर्च गया और मैटनि्स तक प्रार्थना करता रहा। उसकी पुकारों से गायकों को इतना कष्ट हुआ कवि े क्रोधति हो गए और उन्होंने कहा:

'इस अंधे आदमी को हटा दो, क्योंकहिम गा नहीं सकते।'

लेकनि वह वहीं रहा, तड़पता रहा और संतों के सामने गरिता रहा, और चलि्लाया:

'मेरे प्रतदिया करो, क्योंकआिपने मुझे यह वादा कयिा था।'

तब वह अचानक मुड़ा और बोला:

'गाओ: "हे प्रभु, दया कर!" देखो, परमेश्वर और संतों की महमिा: देखो, मुझे मेरी दृष्टवािपस मलि गई है।'

और उसकी आँखें ठीक हो गईं, मानो वे कभी बीमार या अंधी ही न थीं। तब सभी ने परमेश्वर और पवत्रि शहीदों की महमिा की। इसके बाद, वे जाकर राजकुमार स्वयितोपोलक को वह सब कुछ बताने लगे जो उन्होंने सुना और देखा था। उस समय से, उसने शायद ही कभी लोगों पर अत्याचार कयिा और आने वाले कई वर्षों तक, उसने संतों का पर्व मनाया, और अक्सर गर्मयिों में वशिगोरोद आया करता था।

वह संतों के मकबरे के ऊपर, पुराने स्थान पर एक चर्च बनाना भी चाहता था, यह कहते हुए: 'मैं इसे एक जगह से दूसरी जगह ले जाने की हम्मित नहीं करता।'

लेकनि ईश्वर की इच्छा और पवत्रि शहीदों की मर्जी से, उसकी योजना सफल नहीं हो सकी। उन दनिों, जैसा कि पहले कहा गया है, पेरयिास्लाव की भूमपिर व्लादमिीर, जो वसेवोल्ड के पुत्र और मोनोमाख के नाम से प्रसद्धि थे, का शासन था। उन्हें संतों से बहुत प्रेम था और उन्होंने उनके लिए कई भेंटें चढ़ाईं। और उन्होंने पूजनीय शहीदों के पवत्रि अवशेषों को चांदी और सोने में मढ़वाने का संकल्प लयिा। रात में आकर, उन्होंने ताबूतों को मापा और चांदी की पट्टयिों को हटाकर उन्हें सोने की परत से आच्छादति कर दयिा। फरि, रात में ही वापस आकर, उसने सभी चमत्कारी और पूजनीय पवत्रि ताबूतों को चाँदी और सोने से मढ़ दयिा और उसी रात वहाँ से चल दयिा। सुबह जब लोग पहुँचे तो उन्होंने यह देखकर प्रसन्नता व्यक्त की, नमन कयिा और संतों तथा ईश्वर की स्तुतकिी, जन्हिोंने धर्मनष्ठि राजकुमार व्लादमिीर के हृदय में ऐसा वचिार डाला था। उन्होंने कई शब्दों में उनकी नम्रता और वनिम्रता, उनकी कुलीनता और महान बुद्धि, संतों के

प्रति उनके प्रेम और ईश्वर तथा पवित्र चर्चों के प्रति उनकी भक्ति की प्रशंसा की, जो धर्मनिष्ठ राजकुमार व्लादिमीर ने, विशेष रूप से इन संतों के प्रति दिखाई थी।

उन्होंने यह 6610 (1102) की गर्मियों में किया; और अवशेषों को स्थानांतरित करने के बाद, उन्होंने संतों के मकबरों के ऊपर एक और भी भव्य संरचना का निर्माण किया। संतों की छवियों वाले चांदी के पैनल बनवाकर, उन्होंने उन्हें सोने की परत चढ़ाई, चांदी और सोने से सजाया, और उन पर बड़े सोने की परत चढ़े क्रिस्टल के मोमबत्तीदान लगाए, जिन पर मोमबत्तियाँ जलती थीं। और इस प्रकार उन्होंने सब कुछ इतनी खूबसूरती से सजाया कि इस वैभव का वर्णन करना असंभव है। और जो लोग ग्रीस और अन्य देशों से आए थे, उन्होंने कहा: 'हमने संतों के कई तीर्थस्थल देखे हैं, लेकिन कहीं भी ऐसी सुंदरता नहीं थी।'

उसने अपने पुण्य कर्मों की स्मृति में और प्रभु का आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए, जिन्होंने कहा: *'अपने लिए पृथ्वी पर धन-संपत्ति न संजोओ, बल्कि स्वर्ग में संजोओ'* (मत्ती 6:19–20), तथा उन संतों की, जिन्हें उसने अत्यधिक सम्मानित किया, और देखने व सुनने वालों की प्रशंसा व आशीर्वाद के लिए सब कुछ इतनी सुव्यवस्थित रूप से व्यवस्थित किया।

जब व्लादिमीर ने संतों के अवशेषों को धातु में बंद करवाया, तो स्वियातोस्लाव के पुत्र राजकुमार ओलेग ने विस्हगोरोद में नष्ट हुई चर्च के स्थान पर एक पत्थर की चर्च बनाने का संकल्प लिया। उसने प्रमुख निर्माणकर्ताओं को बुलाया और उन्हें निर्माण का आदेश दिया, साथ ही इस कार्य के लिए आवश्यक सभी चीजों की उदारतापूर्वक आपूर्ति की। जब चर्च का निर्माण और रंग-रोगन हो गया, तो उसने बार-बार स्वेतोपोलक से पवित्र शहीदों को नए बने चर्च में स्थानांतरित करने का आग्रह और विनती की। हालाँकि, स्वेतोपोलक ने अपने श्रम से ईर्ष्या करके ऐसा करने से इनकार कर दिया, क्योंकि उसने वह चर्च स्वयं नहीं बनाया था।

थोड़ी ही देर बाद, चर्च की सजावट के बाद दूसरी गर्मियों में, स्व्यातोपोलक की मृत्यु हो गई। तब लोगों के बीच एक बड़ा विद्रोह और बगावत हुई, और बहुत आक्रोश फैल गया। तब सभी लोग, विशेष रूप से बड़े और प्रतिष्ठित पुरुष, एकत्रित हुए और व्लादिमीर के पास यह अनुरोध लेकर आए कि वह इस विद्रोह को समाप्त करे। वह गया, विद्रोह और बड़बड़ाहट को दबा दिया, और रस की भूमि पर राजगद्दी संभाल ली।

6623 (1115) की गर्मियों में, जब व्लादिमीर रूस में शासन कर रहे थे, उन्होंने इन पवित्र शहीदों के अवशेषों को नए बने चर्च में स्थानांतरित करने का संकल्प लिया और इसकी घोषणा अपने भाइयों, डेविड और ओलेग को की। वे हमेशा प्रार्थना करते रहे और व्लादिमीर से संतों के अवशेषों को स्थानांतरित करने का आग्रह करते रहे। तब व्लादिमीर अपने बेटों के साथ, और उनके पीछे डेविड और ओलेग अपने बेटों के साथ, विशगोरोद आए; मेट्रोपॉलिटन निकिफोर भी सभी बिशपों को इकट्ठा करके पहुँचे: चेरनिहीव के थियोक्टिस्ट, पेरियास्लाव के लाजर, पोलोत्स्क के मीना, युर्येव के डैनियल, और सभी मठाधीशों को साथ लेकर आए: गुफाओं के प्रोकोरस, पवित्र उद्धारकर्ता के सावा, सेंट माइकल के सिल्वेस्टर, ब्लाचेर्ना की पवित्र माता परमेश्वर के मठ के पीटर, सेंट एंड्रयू के ग्रेगरी, सेंट डेमेट्रियस के थियोफिलिस, और कई अन्य मठाध्यक्ष, साथ ही पूरी पदानुक्रम और मठवासी क्रम, सभी पुरोहित वर्ग और सभी पादरी। और रूसी भूमि के सभी क्षेत्रों और अन्य भूमिओं से लोगों और राजकुमारों की एक बड़ी भीड़ यहाँ इकट्ठी हुई, पूरे रूसी देश और इसके अधीन सभी क्षेत्रों के सभी बोयार, बुजुर्ग और वोइवोड; संक्षेप में, हर क्षेत्र से सभी लोग यहाँ थे, अमीर और गरीब, स्वस्थ और बीमार, ताकि पूरा शहर खचाखच भर गया, और लोगों को शहर की दीवारों के किनारे भी जगह नहीं मिल सकी। और मई के 1 तारीख को, ईस्टर के बाद दूसरे सप्ताह के शनिवार को, चर्च का अभिषेक किया गया। उस महीने की 2 तारीख को, पवित्र रविवार की सुबह, दोनों चर्चों में भोर की प्रार्थना (मैटिन्स) गाई जाने लगी। और सबसे पहले उन्होंने संत बोरिस के अवशेष-पात्र को एक सजे हुए सांचे पर रखा, जो इस उद्देश्य के लिए तैयार किया गया था, और उसे बाहर ले जाया गया। व्लादिमीर श्रद्धा और विनम्रता के साथ गाड़ी के पीछे-पीछे चला, उसके साथ मेट्रोपॉलिटन और मोमबत्तियाँ तथा धूपदान उठाए हुए पुरोहित भी थे। और कुलीनों और सभी बोयारों ने मोटी रस्सियों से स्लेज को खींचा, धक्का-मुक्की और कड़ी मेहनत करते हुए। रस्सियाँ दोनों तरफ से बँधी हुई थीं; इन्हीं से पवित्र अवशेष-पात्र को खींचा गया, और लोगों की भारी भीड़ के कारण न तो चलना और न ही स्लेज को खींचना संभव था। तब व्लादिमीर ने आदेश दिया कि लोगों पर पैसा, फर और कपड़े फेंके जाएँ। यह देखकर, कुछ लोग उनकी ओर दौड़े, जबकि अन्य, इसे एक तरफ रखकर, पवित्र अवशेषों को छूने के सम्मान के लिए तेजी से आगे बढ़े। और चाहे वहाँ कितने भी लोग क्यों न हों, कोई भी खुशी और महान आनंद के आँसुओं को रोक नहीं सका। और इस प्रकार वे बड़ी मुश्किल से स्लेज को खींच पाए। इसी तरह, संत ग्लेब

का अवशेष-पात्र एक अन्य स्लेज पर रखा गया, जिसके साथ राजकुमार डेविड, बिशप, पुरोहित, बोयार और अनगिनत लोग थे, जो सभी चिल्ला उठे: 'हे प्रभु, दया करो' और आँसुओं के साथ ईश्वर से विनती करने लगे। और एक बड़ा चमत्कार हुआ। संत बोरिस की अवशेषों को सुरक्षित रूप से ले जाया गया, हालांकि भीड़ के कारण जगह काफी तंग हो गई थी। लेकिन जब वे संत ग्लेब के अवशेषों के साथ आगे बढ़े, तो अवशेष-पात्र ठहर गया। उन्होंने इसे ज़बरदस्ती खींचने की कोशिश की, लेकिन रस्सियाँ टूट गईं, हालांकि वे इतनी मोटी थीं कि एक आदमी उन्हें दोनों हाथों से मुश्किल से ही घेर सकता था। और वे एक ही बार में टूट गईं। लोग चिल्लाए: 'हे प्रभु, दया करें।' वे पूरे शहर में बहुसंख्यक थे; वे बाड़ों और शहर की दीवारों से सटे हुए थे। और पूरी भीड़ से एक पुकार उठी: 'हे प्रभु, दया करें।' और तुरंत ही वह शव-वाहक अपने आप चलने लगा। इस प्रकार, मई के दूसरे दिन, पवित्र शहीद बोरिस और ग्लेब को लाया गया और नव-निर्मित चर्च में सम्मानपूर्वक सुलाया गया। फिर सभी अपने-अपने घरों को चले गए, ईश्वर और पवित्र शहीदों की स्तुति करते हुए।

व्लादिमीर-ज़ालेस्की शहर में, व्लादिमीर मोनोमाख के पोते, वसेवोल्द यूरीविच, राजकुमार के रूप में शासन करते थे। उनके दो भतीजों, म्स्तिस्लाव और यारोपोलक रोस्टिस्लाविच (1175 में), ने उनके खिलाफ विद्रोह कर दिया; वे रोस्तोव के लोगों द्वारा गद्दी संभालने के लिए गुप्त रूप से बुलाए जाने पर वेलिकी नोवगोरोड से आए थे। और इस प्रकार उन्होंने अपने चाचा वसेवोल्ड के खिलाफ युद्ध छेड़ दिया, व्लादिमीर शहर पर चढ़ आए, ताकि वे राजकुमार को उसके पुश्तैनी क्षेत्र से भगा सकें और अपने लिए एक बड़ा इलाका हासिल कर सकें। एक बड़े युद्ध के बाद, रोस्टिस्लाविच वसेवोल्ड से हार गए, उन्हें बंदी बना लिया गया और व्लादिमीर लाया गया। वसेवोलॉड ने उन पर नजर रखने के लिए पहरेदार नियुक्त किए, लेकिन उन्हें स्वतंत्र रूप से घूमने की अनुमति दे दी। व्लादिमीर के लोगों ने, जब इन बंदी राजकुमारों को जेल में न देखकर स्वतंत्र रूप से घूमते देखा, तो वे विद्रोह कर उठे और हथियारों से लैस होकर अपने राजकुमार वसेवोलॉड के दरबार में आकर चिल्लाने लगे:

'राजकुमार, आप हमारे दुश्मनों को ज़ंजीरों में बांधने के बजाय आज़ाद क्यों रखते हैं? या तो उन्हें मार डालो, या उनकी आँखें फोड़ दो, या हमें सौंप दो।'

एक दयालु व्यक्ति होने के नाते, व्लादिमीर नहीं चाहते थे कि युद्ध में पकड़े गए राजकुमारों को नुकसान पहुँचाया जाए, लेकिन लोगों की खातिर उन्होंने उन्हें कैद करने का आदेश दिया ताकि लोकप्रिय विद्रोह को दबाया जा सके। कुछ समय बाद, व्लादिमीर के लोगों ने एक बार फिर से ग्रैंड प्रिंस व्लादिमीर से विनती करना शुरू कर दिया:

'रॉस्टिस्लाविचों को हमें सौंप दो; हम उनकी आँखें फोड़ना चाहते हैं।'

महान राजकुमार दुखी हुए, लेकिन वे लोगों को उनके विद्रोह से रोक नहीं सके। व्लादिमीर के लोगों ने कालकोठरी पर चढ़ाई कर दी और म्स्तिस्लाव तथा यारोपोलक को पकड़कर उनकी आँखें फोड़ दीं और उन्हें आज़ाद कर दिया। इस प्रकार, दुर्भाग्यपूर्ण रोस्तislavich भाइयों, म्स्तिस्लाव और यारोपोलक, जिन्होंने अधिक महिमा और शक्ति की चाह की थी, को वश में कर उनकी आँखें फोड़ दी गईं। और इस प्रकार वे स्मोलेंस्क के लिए रवाना हुए और स्म्यादिन पहुँचे, पवित्र शहीदों बोरिस और ग्लेब के चर्च में। उस दिन 5 सितंबर को संत ग्लेब की शहादत की बरसी थी। और राजकुमारों ने बड़ी लगन से ईश्वर से प्रार्थना की और सहायता के लिए अपने कुल के पवित्र शहीदों से विनती की, ताकि संत उन्हें राहत भेज सकें, क्योंकि जहाँ उनकी आँखें थीं, वहाँ के घाव सड़ रहे थे। जब वे प्रार्थना कर रहे थे, तो पहले दर्द कम हो गया, और फिर, अचानक, उनकी दृष्टि वापस आ गई। अब स्पष्ट रूप से देख पाने में सक्षम, रोस्तिसलाविचों ने परमेश्वर, परमेश्वर की अति पवित्र माता, और पवित्र राजकुमार रोमन और डेविड की स्तुति और धन्यवाद करना शुरू कर दिया। और वे आनंदपूर्वक अपने घरों को लौट गए, और सभी को पवित्र शहीदों की प्रार्थनाओं के माध्यम से मिली प्रभु की दया के बारे में बताते रहे।

प्राचीन काल में तुरोव नगर में, जो अब[3389] है, मार्टिन नाम का एक वृद्ध व्यक्ति रहता था, जिसने पहले तुरोव के बिशप: सिमियन, इग्नेशियस, जोआचिम और जॉर्ज के लिए रसोइए के रूप में काम किया था। बिशप जॉर्ज ने मार्टिन को उसकी वृद्धावस्था के कारण उसके कर्तव्यों से मुक्त कर दिया। संन्यास का व्रत लेने के बाद, मार्टिन पवित्र शहीदों बोरिस और ग्लेब के चर्च के पास बिशप के मठ में अकेले अपनी कोठरी में रहने चले गए। उन्हें अक्सर पेट की बीमारियों से पीड़ा होती थी। जब पीड़ा उन्हें घेर लेती, तो वह वृद्ध वहाँ दर्द से कराहते हुए लेटे रहते, उठने और अपनी ज़रूरतों को पूरा करने के लिए बहुत कमज़ोर हो जाते थे। एक दिन, इस बीमारी से पीड़ित, वह अपनी कोठरी में प्यास से व्याकुल पड़ा

[3389] 12वीं शताब्दी के मध्य में।

था। लेकिन कोई उसे देखने नहीं आया, क्योंकि उस समय मठ के आसपास का इलाका बाढ़ से जलमग्न था। तीसरे दिन, पवित्र शहीदों बोरिस और ग्लेब, ठीक वैसे ही जैसे वे आइकन में चित्रित थे, उसकी कोठरी में प्रकट हुए और कहा:

'तुम्हें क्या हुआ है, बूढ़े?'

उसने उन्हें अपनी बीमारी के बारे में बताया। और उन्होंने उससे पूछा:

'क्या तुम्हें पानी नहीं चाहिए?'

'हे मेरे स्वामिनी,' वृद्ध ने उत्तर दिया, 'मैं इसे बहुत समय से तरस रहा था।'

उनमें से एक ने जुए को उठाया और पानी लाया, जबकि दूसरे ने उसे एक चम्मच से उठाया। और उन्होंने बूढ़े आदमी को पिलाया। फिर उसने उनसे पूछा:

'तुम किसके बच्चे हो?'

उन्होंने उत्तर दिया:

'हम यारोस्लाव के भाई हैं।'

बुजुर्ग ने, यह सोचकर कि वे राजकुमार जॉर्ज यारोस्लाव के रिश्तेदार हैं, कहा:

'भगवान आपको लंबा जीवन दें, मेरे स्वामियों; आप स्वयं कुछ रोटी लेकर खाइए, क्योंकि मैं स्वयं आपकी सेवा नहीं कर सकता।'

उन्होंने उत्तर दिया:

'रोटी आपके लिए ही रहे; हम चलेंगे। ईश्वर करे कि आप अब बीमार न रहें, बल्कि सुला दें।'

और तुरंत वे अदृश्य हो गए। ठीक होने पर, बड़े संन्यासी को एहसास हुआ कि संत बोरिस और ग्लेब उनसे मिलने आए थे, और उठकर उन्होंने ईश्वर और उनके संतों की स्तुति की। और उस समय से उन्हें फिर कभी उस बीमारी से पीड़ा नहीं हुई, बल्कि वे हर समय अच्छे स्वास्थ्य में रहे और उन्होंने भाइयों को उन पवित्र शहीदों द्वारा उन पर किए गए चमत्कार के बारे में बताया।

धार्मिक राजकुमार अलेक्जेंडर यारोस्लाविच, जिन्हें नेवस्की के नाम से जाना जाता है, ने वेलिकी नोवगोरोड में अपने शासन के दौरान स्वीडिश लोगों के खिलाफ युद्ध छेड़ा। जब वह अपनी सेना के साथ नेवा नदी पर पहुँचा, तो उसके एक सेनापति, फिलिप नामक एक ईश्वर-भयभीत व्यक्ति ने, अपनी सौंपी गई रात की पहरेदारी के दौरान, सूर्योदय के समय पानी पर एक नाव को तैरते हुए देखा; नाव के बीच में पवित्र शहीद बोरिस और ग्लेब लाल परिधानों में खड़े थे, जबकि नौकर जैसे कोहरे में लिपटे हुए बैठे थे। और संत बोरिस ने संत ग्लेब से कहा:

'भाई ग्लेब, चलो हम अपने रिश्तेदार, राजकुमार अलेक्जेंडर की, उसके क्रूर दुश्मनों के खिलाफ मदद करने के लिए जल्दी करते हैं।'

वॉयवोड ने यह दृष्टि अपने राजकुमार को सुनाई। और उसी दिन, राजकुमार अलेक्जेंडर ने पवित्र शहीदों बोरिस और ग्लेब की मदद से स्वीडिश सेनाओं को हराया और उन्हें बुरी तरह पराजित किया; उन्होंने स्वयं अपनी तलवार से उनके नेता, बरिगर, के चेहरे पर वार किया और विजय प्राप्त कर वेलिकी नोवगोरोड लौट आए[3390] ।

इसी तरह, जब मास्को के ग्रैंड प्रिंस दिमित्री इवानोविच तातार ख़ान मामई के खिलाफ़ युद्ध लड़ रहे थे, तो रात्रि प्रहरी फोमा खात्सीबेव को ईश्वर द्वारा प्रकट किया गया एक दर्शन दिखाई दिया। आकाश में बहुत ऊँचा एक बड़ा बादल दिखाई दिया, और देखो, पूर्व से विशाल सेनाएँ आती हुई प्रतीत हुईं, जबकि दिक्षिण से दो तेजस्वी युवक प्रकट हुए, जिनके हाथों में मोमबत्तियाँ और तीखी, म्यान से बाहर तलवारें थीं। ये युवक पवित्र शहीद बोरिस और ग्लेब थे। और उन्होंने tatar कमांडरों से कहा:

'तुम्हें किसने आज्ञा दी है कि तुम हमारे स्वदेश को नष्ट करो, जो प्रभु ने हमें प्रदान किया है?'

और उन्होंने दुश्मनों पर वार करना शुरू कर दिया, जिससे उनमें से एक भी जीवित नहीं बचा। अगले सुबह, पहरेदार ने अपनी यह दृष्टि महाप्रमुख को सुनाई। प्रमुख ने अपनी आँखें आकाश की ओर उठाकर और अपने हाथ उठाकर, आँसुओं के साथ प्रार्थना करना शुरू कर दिया, कहते हुए:

'हे प्रभु, मानव जाति के प्रेमी, पवित्र शहीदों बोरिस और ग्लेब के मध्यस्थता से, मेरी सहायता करो! जैसे आपने मूसा की अमालेक के विरुद्ध (निर्गमन 17), दाऊद की गोलियाथ के विरुद्ध (1 शमूएल 17), यारोस्लाव की स्वियातोपोलक

[3390] यह 1240 में हुआ।

के वरिुद्ध, और मेरे परदादा अलेक्जेंडर की स्वीडन के राजा के वरिुद्ध मदद की, वैसे ही मुझे ममाई के वरिुद्ध मदद प्रदान करें।

और उसी दनि, मॉस्को के महा राजकुमार दमित्रिी ने, पवत्रि शहीदों बोरसि और ग्लेब के मध्यस्थता से, टाटारों के राजा मामई को हराया[3391] ।

प्रभु ने यह और अनगनित अन्य चमत्कार पवत्रि शहीदों के माध्यम से कएि, जन्हिें लोग पूजते हैं, और हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा अपने पापों की क्षमा मांगते हैं। उसी को महमिा हो, पता और पवत्रि आत्मा के साथ, अब और सदा और युगानुयुग। आमीन।

ट्रोपारयिन, स्वर 2:

एक सच्चे शहीद और मसीह के सुसमाचार के एक वफादार श्रोता, पवत्रि रोमानुस ने, कोमल दाऊद के साथ मलिकर, उस शत्रु का वरिोध नहीं कयिा जो वास्तव में एक भाई था, जो तुम्हारे शरीरों को तो मार सकता है पर तुम्हारी आत्माओं को छू नहीं सकता। दुष्ट सत्ता-लोलुप रोए: क्योंकि तुम, दैवीय सेनाओं के साथ हर्षति, पवत्रि त्रमिूर्ति के समक्ष खड़े, अपने स्वजनों की मुक्ति के लिए प्रार्थना करते हो, कि वे ईश्वर को प्रयि हों, और रूस के पुत्र उद्धार पाएँ।

कॉन्टाकयिन, स्वर 3:

आज आपकी महमिामय स्मृति प्रकाशति होती है, हे मसीह के गौरवशाली शहीदों, रोमन और डेवडि, जो हमें हमारे ईश्वर मसीह की स्तुति करने के लिए बुलाती है। जब हम आपके पवत्रि अवशेषों के संदूक की ओर शीघ्रता से बढ़ते हैं, तो हम आपकी पवत्रि प्रार्थनाओं के द्वारा चंगाई का वरदान प्राप्त करते हैं: क्योंकि आप दैवी उपचारक हैं।

- उसी दनि, हम अलेक्जेंड्रयिा के पैट्रआिर्क, हमारे पता अथानासयिस महान को संतों के बीच स्मरण करते हैं। उनकी स्मृति 18 जनवरी को भी मनाई जाती है, जहाँ उनकी जीवनी शामलि है।

16 मई

3 मई (पुराने कैलेंडर के अनुसार)

पवत्रि शहीदों तमिोथी और मौरा का कष्टकथा

3 मई को स्मरणोत्सव

ईश्वर-वरिोधी रोमन सम्राट डायोक्लेटयिन[3392] द्वारा शुरू कएि गए ईसाइयों के उत्पीड़न के दौरान, हेगेमोन एरयिन[3393] को थेबाइड[3394] में ईसाइयों का उत्पीड़न करने के लिए नयिुक्त कयिा गया था। उसके सामने मुकदमे के लिए लाए गए अन्य ईसाइयों में से एक चर्च रीडर[3395] , टमिोथी भी थे; वह पेरापेया नामक गाँव से आया था, बहुत युवा था, और हाल ही में मौरा नामक एक कुंवारी से ववािह कयिा था। ववािह के बीस दनि बाद, उसे मूर्तपिूजकों ने पकड़ लयिा और पूछताछ के लिए इगेमोन के सामने पेश कयिा। जब इगेमोन ने उसे देखा, तो सबसे पहले उसने पूछा:

[3391] यह 8 सतिंबर 1380 को हुआ।

[3392] डायोक्लेटयिन ने 284 से 305 तक रोमन साम्राज्य के पूर्वी भाग पर शासन कयिा।

[3393] गवर्नर एरयिन ने बाद में स्वयं ईसाई धर्म अपना लयिा और उन्हें शहीद का मुकुट प्रदान कयिा गया। उनका पर्व दविस 14 दसिंबर को मनाया जाता है।

[3394] थेबाइड मध्य मस्रि का एक क्षेत्र है।

[3395] एक पाठक या सहायक; थमिोथी के कर्तव्यों में केवल पढ़ना ही नहीं, बल्कि पूजा-संबंधी पुस्तकों की सुरक्षा करना भी शामलि था।

'तुम कौन हो, और तुम्हारा पद क्या है?'

तिमोथी ने उत्तर दिया:

'मैं एक ईसाई हूँ और परमेश्वर के चर्च में पाठक के रूप में सेवा करता हूँ।'

गवर्नर ने उससे कहा:

'क्या सचमुच तुम अकेले ही उस शाही फरमान के बारे में नहीं जानते, जिसमें हमारे महान देवताओं को बलिदान न चढ़ाने वालों को यातनाओं और यहाँ तक कि मृत्युदंड का सामना करना पड़ेगा?'

तिमिथियुस ने उत्तर दिया:

'मैं पूरे हृदय से विश्वास करता हूँ और पूरी तरह से अपने प्रभु, यीशु मसीह का हूँ, और इसलिए मैं तुम्हारे देवताओं को बलिदान नहीं चढ़ा सकता।'

हेगेमोन एरियन ने जारी रखा:

'क्या तुम अपने बगल में रखे यातना के उपकरण नहीं देख सकते?'

थिमोथी ने उत्तर दिया:

'वैसे भी, तुम परमेश्वर के स्वर्गदूतों को नहीं देखते जो मुझे बल देते हैं।'

गवर्नर ने संत से कहा:

'मुझे अपनी पुस्तकें दे दो[3396] ताकि मैं उनमें निहित जादुई शक्ति को समझ सकूँ।'

संत ने उत्तर दिया:

'हे मूर्ख और निरर्थक मनुष्य! क्या तु नहीं जानता कि कोई भी कभी अपने बच्चों को मृत्यु के घाट नहीं भेजता? और जो पुस्तकें मैंने लिखी हैं, वे मेरे बच्चे हैं: जब मैं उन्हें पढ़ता हूँ, तो ईश्वर के स्वर्गदूत मेरे सामने खड़े हो जाते हैं।'

गवर्नर ने कहा:

'तो तुम हमारे देवताओं को बलिदान चढ़ाने से भी इनकार करते हो और अपनी किताबें दिखाने से भी। सावधान रहो कि तुम्हारी अवज्ञा तुम्हारे कष्ट का कारण न बन जाए।'

संत तीमथियुस ने इस प्रकार उत्तर दिया:

'मैं न तो बलिदान चढ़ाऊँगा और न ही अपनी पुस्तकें तुम्हें दिखाऊँगा, क्योंकि मैं एक ईसाई हूँ।'

तब क्रोधित राज्यपाल ने अपने नौकरों को आज्ञा दी कि वे दो तेज लोहे की छड़ियाँ लाएँ, जो लाल-लाल गर्म हों, और उन्हें संत तीमथियुस के कानों में घुसा दें। असहनीय दर्द से, शहीद की आँखें आँसुओं से भर गईं, जिससे वह कुछ भी नहीं देख पा रहा था।

इसके बाद, राज्यपाल के सेवकों ने संत से कहा:

'चूंकि तुमने हमारे देवताओं को बलिदान चढ़ाने से इनकार कर दिया है, इसलिए अब तुम अपनी दृष्टि खो चुके हो।'

इस पर संत तीमथियुस ने उत्तर दिया:

'मेरी शारीरिक आँखें, जिन्होंने कई घृणित दृश्यों को देखा है, अब पीड़ित होकर अंधी हो गई हैं; लेकिन मेरी आंतरिक, आध्यात्मिक आँखें मेरी आत्मा को प्रकाशित करती हैं।'

संत के ऐसा कहने के बाद, राज्यपाल ने आदेश दिया कि संत के हाथ उसकी पीठ के पीछे बांध दिए जाएं, उसके मुंह में लकड़ी का एक टुकड़ा डाल दिया जाए, और उसे उल्टा लटका दिया जाए; और संत के कष्ट को बढ़ाने के लिए, यातना देने वाले ने आदेश दिया कि उसके गले में एक भारी पत्थर बांध दिया जाए।

जब राज्यपाल के सेवकों ने इस दुष्ट आज्ञा को पूरा करना शुरू किया, तो संत ने स्वर्ग की ओर अपनी दृष्टि उठाकर कहा:

'मेरा विश्वास है कि स्वर्ग में एक ईश्वर हैं जो मुझे इन यातनाओं से मुक्ति दिला सकते हैं।'

थिमोथी द्वारा सहन की गई पीड़ा इतनी भयानक थी कि उसके यातना देने वाले भी उसके लिए दया से भर गए और उन्होंने राज्यपाल से निवेदन किया कि वे क्रूरता के लिए नहीं बल्कि दिया के लिए थिमोथी को राजा की आज्ञा मानने के

[3396] यह ध्यान देने योग्य है कि डायोक्लेटियन के फरमान में न केवल ईसाइयों पर अत्याचार करने का आदेश था, बल्कि उनके चर्चों को नष्ट करने और उनकी पवित्र पुस्तकों को जलाने का भी। इसी आधार पर हेगेमोन एरियन ने टिमोथी से उसकी पूजा-संबंधी पुस्तकें मांगीं।

लिए मनाएं। इसी समय, राज्यपाल को खुश करने के लिए, नौकरों ने उससे कहा कि तिमोथी की शादी को केवल बीस दिन ही हुए थे और उसकी पत्नी अभी भी बहुत कम उम्र की महिला थी।

यह सुनकर, राज्यपाल ने तिमोथी की पत्नी को अदालत में पेश करने का आदेश दिया और उससे कहा:

'तुम्हारा नाम क्या है?'

'मेरा नाम मौरा है,' संत ने उत्तर दिया।

गवर्नर ने उससे कहा:

'मुझे तुम्हारी दुर्दशा पर बहुत तरस आ रहा है, क्योंकि इतनी कम उम्र में ही तुम विधवा बनने की तैयारी कर रही हो। मैं तुम्हें आज्ञा देता हूँ: अपने सबसे अच्छे कपड़े पहन लो, अपने बाल गूँथ लो, अपना चेहरा सजा लो, और तुरंत अपने पति के पास चली जाओ; एक बार जब तुम उसके पास पहुँच जाओ, तो उसे देवताओं को बलिदान चढ़ाने के लिए मनाओ, ताकि तुम इतनी कम उम्र में विधवा न बनो। अगर तुम उसे देवताओं को बलिदान चढ़ाने के लिए मना लेती हो, तो मैं तुम्हें कई उपहारों, सोने और चांदी से पुरस्कृत करूँगा।

मौरा ने ठीक वैसा ही किया जैसा हेगेमोन ने आदेश दिया था। चमकीले वस्त्र पहनकर, वह अपने पति के पास गई और उनसे काफी देर तक विनती करती रही कि वे हेगेमोन के आदेश का पालन करें, कम से कम कुछ समय के लिए, ताकि इस तरह वे बहुत कष्ट से बच सकें। लेकिन उसका पति उससे एक भी शब्द नहीं बोल सका, क्योंकि उसके मुँह में लकड़ी का एक टुकड़ा डाल दिया गया था, जिससे वह बोल नहीं पा रहा था।

तब मौरा राज्यपाल के पास लौटी और उसने विनम्रतापूर्वक निवेदन करना शुरू किया कि वह आदेश दे कि उसके पति के मुँह से लकड़ी का टुकड़ा हटा दिया जाए, ताकि वह बोल सके। राज्यपाल ने उसकी प्रार्थना मान ली। शहीद के मुँह से लकड़ी का टुकड़ा हटा दिया गया, और मौरा एक बार फिर संत थिमोथी के पास चल दी।

संत (जो अंधा था), मौरा के वस्त्रों से आई सुगंध को सूंघकर, ज़ोर से चिल्लाया:

'मेरे पिता, पादरी पिकोलपस कहाँ हैं?'

उसका पिता, जो भीड़ में पास ही खड़ा अपने बेटे की पीड़ा देख रहा था, उसके पास आया और कहा:

'तुम्हें क्या चाहिए, मेरे प्रिय पुत्र?'

टिमोथियस ने उत्तर दिया:

'मैं आपसे विनती करता हूँ, पिताजी, मेरी एक बात मानिए: कोई पुराना फटा हुआ कपड़ा लीजिए और मेरे चेहरे पर ओढ़ दीजिए, ताकि मैं मौरा के वस्त्रों से निकलने वाली आत्मा-विनाशकारी सुगंध को सूंघ न सकूँ; यह सुगंध लोगों के लिए हानिकारक है; यह उनके लिए नरक की आग तैयार करती है; यह खुशबू कामवासना का स्रोत है, शैतान की साथी है; यह पवित्र और धर्मी लोगों के लिए घृणित और घिनौनी है।

जब संत बोलना समाप्त कर चुके, तो मौरा ने उनसे कहा:

'प्रिय थिमोथी! तुम मुझे इतना अपमानित क्यों कर रहे हो? आखिरकार, मैंने तुम्हें अभी तक किसी भी तरह से ठेस नहीं पहुँचाई है! हमारी शादी को अभी केवल बीस दिन ही हुए हैं, और तुम अभी तक मेरे चरित्र को ठीक से नहीं जान पाए हो, जैसे मैं भी अभी तक तुम्हारे घर वालों को ठीक से नहीं जान पाई हूँ। मैं उस दुराचार से कोसों दूर हूँ जिसका आप मुझे दोष देते हैं, क्योंकि मैंने कभी किसी पुरुष को अपना जीवनसाथी बनाने का वादा नहीं किया। अब, आपको इतनी बड़ी पीड़ा में देखकर, मैं आपके लिए कड़वा रोती हूँ और मेरा दिल असहनीय रूप से पीड़ित है, क्योंकि आप यह यातनाएँ अपनी किसी गलती के बिना झेल रहे हैं। तुम्हारा दुख मेरी आत्मा को भी भेदता है, क्योंकि तुम मुझे विधवा बनाकर जाना चाहते हो। लेकिन शायद तुमने किसी से पैसे उधार लिए हैं और कर्ज चुकाने के लिए कुछ भी न होने के कारण, अब अपने लेनदारों के हाथों कष्ट झेल रहे हो? यदि ऐसा है, तो चलो हम अपने सबसे अच्छे कपड़े बेचकर कर्ज चुका दें; लेकिन यदि आप सार्वजनिक ऋण के कारण, उन करों के कारण इतनी बड़ी यातना सह रहे हैं जिन्हें चुकाने का आपके पास कोई साधन नहीं है, तो यहाँ आपके सामने हमारे सभी घरेलू सामान, हमारा सोना और हमारे सभी वस्त्र हैं; इसे सब बेच डालिए और राजा को कर चुका दीजिए।

इसके बाद, संत थिमोथी ने उससे कहा:

'मेरी बहन, मौरा! जब मैंने तुम्हें अपनी आत्मा की आँखों से देखा, जब तुम घर से निकल रही थीं, तो मैंने शैतान को तुम्हारे दाहिने ओर चलते हुए देखा। उसके हाथों में एक चाबी थी, जिससे वह तुम्हारे दिल को सांसारिक सुखों और आसक्तियों की ओर मोड़ रहा था।'

इस पर, मौरा ने जवाब दिया:

– मेरे भाई, थिमोथी! मैं तुम्हें ढूंढ रही हूँ; लेकिन मैं तुम्हें कहाँ पाऊँगी? जब शनिवार या रविवार आएगा, तो तुम्हारी किताबें कौन पढ़ेगा?

संत तिमोथी ने उससे उत्तर दिया:

'हे मौरा! इस संसार के व्यर्थता को पीछे छोड़ दो और मेरे साथ इस वीरतापूर्ण प्रयास में आओ! ईश्वर इस प्रयास के लिए हमारे सभी पापों को क्षमा कर देंगे और हमें अपने राज्य में अनुग्रह के मुकुट प्रदान करेंगे।'

हालाँकि, मावरा ने कहा:

'जब मैं तुम्हारे पास आ रही थी, तो मेरा हृदय सचमुच सांसारिक इच्छाओं से भरा था, लेकिन जैसे ही तुमने मुझसे बात करना शुरू किया, ईश्वर की कृपा मुझ पर उतरी। तो जान लो, मेरे प्रिय भाइयो, कि मैं भी वही चाहती हूँ जो तुम चाहते हो।'

संत थिमोथी ने उससे उत्तर दिया:

'यदि तुम सचमुच सत्य बोलती हो, तो राज्यपाल के पास जाओ और उसकी दुष्टता की निंदा करो।'

इस पर, संत मौरा ने कहा:

'मुझे डर है, मेरे भाई, कि जब मैं यातना के अनेक उपकरणों और क्रोधित राज्यपाल को देखूँगी तो मैं भय से अभिभूत हो जाऊँगी। मुझे डर है कि मैं इतनी भयंकर यातनाओं को सहन नहीं कर पाऊँगी, क्योंकि मैं अभी बहुत छोटी हूँ – मेरी उम्र केवल सत्रह वर्ष है।'

संत थिमोथी ने उनसे उत्तर दिया:

'प्रभु और हमारे ईश्वर, यीशु मसीह पर अपना विश्वास रखो, और तुम्हारे सभी यातनाएँ तुम्हारे शरीर पर डाले गए तेल के समान होंगी, और ओस की तरह तुम्हारी हड्डियों को ताज़गी देंगी और तुम्हारे सभी दुखों को कम करेंगी।'

तब पवित्र शहीद ने उसके लिए ईश्वर से प्रार्थना करना शुरू किया, और कहा: 'हे सर्व अनुग्रह के ईश्वर और पिता, जो आग के भट्ठी में डाले गए तीन युवकों (दानिय्येल 3) की सहायता के लिए आए; जिसने दानिय्येल को सिंहों के मुँह से बचाया[3397] , जिसने भविष्यवक्ता हबक्कूक के द्वारा भविष्यवक्ता को भोजन भेजा, जिसने न केवल सिंहों के बिल में बल्कि अग्नि भट्टी में भी मदद की, और जिसने उन लोगों को बचाया जिन्होंने आप पर भरोसा किया, यह मानव जाति के लिए आपके सभी प्रेम की गवाही के रूप में था, जिसकी शक्ति से आपने बंदियों को भविष्यवक्ताओं और शहीदों में बदल दिया: हे प्रभु, हे प्रभु, अब अपनी दासी मौरा पर दृष्टि कर! हे प्रभु, तू जिसने हमें विवाह में एक किया है, हमें इस संघर्ष में भी एक कर, ताकि हम तेरे पवित्र शहीदों की संगति से अलग न हों; हे प्रभु, हमें सभी यातनाओं और स्वयं मृत्यु को भी धैर्यपूर्वक सहने की शक्ति प्रदान कर, ताकि हमारे सभी विरोधी लज्जित हों, क्योंकि वे हमें हमारे प्रभु यीशु मसीह में हमारी एकलौती आस्था से अलग करने में असमर्थ होंगे। उसी को, पिता और पवित्र आत्मा के साथ, युगानुयुग सर्व महिमा प्राप्त हो। आमीन!'

जब संत थिमोथी ने अपनी पत्नी मौरा के लिए ईश्वर से प्रार्थना की, तो वह पवित्र आत्मा से प्रेरित होकर राज्यपाल के पास गईं और उसके सामने उपस्थित होकर कहा:

'हे दुष्ट राज्यपाल! तुमने मेरी आत्मा को विनाश की ओर ले जाने के लिए मुझे चाँदी और सोना देने का वादा किया था; तुम्हें मानव आत्माओं को विनाश की ओर ले जाने के अलावा और कुछ भी नहीं चाहिए! फिर भी तुम किसी भी प्रलोभन से मुझ पर विजय प्राप्त नहीं करोगे, क्योंकि मैं तुम्हारे सामने हमारे प्रभु और परमेश्वर के पूरे कवच को पहनकर खड़ी हूँ।'

[3397] दानिय्येल 'महान' भविष्यवक्ताओं (यशायाह, यिर्मियाह, यहेजकेल, दानिय्येल) में चौथे थे; वे राजसी वंश के थे और, जब वे अभी भी एक युवा व्यक्ति थे, अन्य यहूदी बंदियों के साथ बेबीलोन ले जाया गए। उत्कृष्ट मानसिक और शारीरिक गुणों से संपन्न, उन्होंने वहाँ कैलडीय भाषा और ज्ञान सीखा और अपने तीन साथियों—अनन्यास, अजर्याह और मिसाएल—के साथ राजसी दरबार में सेवा में नियुक्त किए गए। दानिय्येल ने बेबीलोन के राजा नबूकदनेसर के असाधारण सपनों की व्याख्या की, और उन्हें स्वयं भी बार-बार दर्शन प्राप्त हुए जिनमें उन्हें सबसे महत्वपूर्ण और अद्भुत पवित्र घटनाएँ प्रकट की गईं। दायरियस के सिंहासनारोहण पर, उन्हें साम्राज्य के तीन राज्यपालों में से एक नियुक्त किया गया और उन्हें शेरों से चमत्कारिक रूप से बचाया गया, जिन्हें उनके पिता के धर्म के प्रति उनकी निष्ठा के कारण शेरों के बिल में फेंक दिया गया था (दानिय्येल 6:10-24)। उनके जीवन और कार्यों की कहानी स्वयं उन्होंने अपने नाम वाली पवित्र पुस्तक में सुनाई है। पवित्र चर्च 17 दिसंबर को उनकी स्मृति का उत्सव मनाती है।

गवर्नर एरियन ने अपने सलाहकारों और सेवकों से कहा:

'क्या मैंने तुम्हें नहीं बताया था कि तीमोथियुस एक जादूगर है? यहाँ उसने अपनी ही पत्नी को अपनी जादूगरी से मोहित कर लिया है, और उसे हमारे आदेश की अवज्ञा करने के लिए मना लिया है।'

फिर, मौर की ओर मुड़कर, राज्यपाल ने उससे कहा:

'और तुम भी, थमिोथी के साथ, जीवन के बजाय मृत्यु का चुनाव कर रही हो। एक पल के लिए सोचो, और तुम देखोगी कि तुम स्वयं को इस मीठे जीवन से वंचित कर रही हो और स्वयं को कड़वी यातनाओं के लिए दंडित कर रही हो। लेकिन शायद, अपने पति की मृत्यु और अपनी विधवा होने की पूर्वदृष्टि से, तुमने उनके साथ मरने का निर्णय लिया है?' ऐसे में, निराश या दुखी न हो, क्योंकि तुम विधवा नहीं बनोगी: मैं तुम्हारा विवाह अपनी सेवा में से सबसे उत्कृष्ट और धनी सेंटूरियन[3398] में से एक के साथ कर दूँगा, ताकि तुम उसके साथ इस जीवन का आनंद ले सको और और भी अधिक सम्मानित हो सको, क्योंकि तुम्हारा दूसरा पति पहले वाले से भी अधिक कुलीन होगा।

इस पर संत मौरा ने उत्तर दिया:

'मैंने सारी सांसारिक व्यर्थता का त्याग कर दिया है; इसलिए मुझे आपके सेंचुरियन की कोई आवश्यकता नहीं है। मैं आपको सच कहती हूँ कि मैंने स्वयं को स्वर्गीय वर, ईश्वर के पुत्र, यीशु मसीह के साथ सगाई कर ली है; उन पर भरोसा करके, मैं आपके सामने एक साहसी हृदय के साथ आई हूँ और आपके अन्यायपूर्ण निर्णय से बिल्कुल भी नहीं डरती।'

क्रोधित होकर, राज्यपाल ने आदेश दिया कि उसके बाल तब तक उखाड़े जाएं जब तक कि एक भी लट बची न रहे। फिर उसने पवित्र शहीद से कहा:

'अब जब तेरे सिर के बाल उखाड़े जा चुके हैं, तो मैं तुझे सलाह देती हूँ कि देवताओं को बलिदान चढ़ा, ताकि तुझे और भी कई, इससे भी अधिक भयानक यातनाएँ न सहनी पड़ें।'

संत मौरा ने उत्तर दिया:

'अब मुझे एहसास हो गया है, हे राज्यपाल, कि स्वयं मसीह मुझे अपनी उपस्थिति में स्वीकार कर रहे हैं और मेरी उस अज्ञानता में की गई पाप को क्षमा कर रहे हैं—अर्थात्, कि, आपकी दुष्ट सलाह पर ध्यान देकर, मैंने अपने पति को बहकाने के लिए अपने बालों को सँवारा; और आपने इसे उखाड़कर अच्छा किया, क्योंकि मेरे बाल लेने से मुझसे एक बड़ा पाप छिन गया है; अब मैं अपने चारों ओर खड़े, मुझे देख रहे लोगों के लिए प्रलोभन नहीं रहूँगी।"

संत के ये वचन सुनकर, राज्यपाल अत्यधिक क्रोधित हो गया और उसने आदेश दिया कि उसकी उंगलियाँ काटकर फेंक दी जाएँ। लेकिन संत मौरा ने उससे कहा:

'और इस प्रकार आप मुझ पर एहसान कर रहे हैं, क्योंकि आप मुझसे वे उँगलियाँ ले रहे हैं जिनसे मैंने व्यर्थ के आभूषणों से अपना श्रृंगार किया था; परन्तु जान लीजिए कि आप स्वयं यह नहीं समझते कि आप क्या कर रहे हैं, क्योंकि मेरी उँगलियाँ काटकर आपने मुझे मेरे दूसरे पाप से शुद्ध कर दिया है। इसलिए, मैं आनंद और हर्ष के साथ आपके सामने खड़ी हूँ, सभी यातनाओं के लिए तैयार।'

इगेमोन पवित्र शहीद के अपार धैर्य को देखकर अत्यंत चकित हुआ। इस बीच, पादरी पिकोलपस, जो थमिोथी का पिता था, जो भीड़ में संत लोगों की पूछताछ को देखते हुए पास ही खड़ा था, संत मौरा के पराक्रम को देखकर चकित होकर, उससे धीमी आवाज़ में कहा:

'हे मौरा, मेरी सदाचारी पुत्री! तुमने अपनी उंगलियों के कटने का दुख कैसे सह लिया?'

इस पर संत मौरा ने उत्तर दिया:

'जैसे आपने, पिताजी, अंगूर के बगीचे में एक बेल से टहनियाँ कटते देखा है, वैसे ही मैंने अपनी उंगलियों के कटने को भी उसी भावना से देखा, और इसलिए मुझे बिल्कुल भी दर्द महसूस नहीं हुआ।'

इस सब के बाद, गवर्नर एरियन ने अपने बारह सैनिकों को एक बड़े कड़ाही को पानी से भरने और उसके नीचे आग जलाने का आदेश दिया, और सेंट मौरा को उसमें फेंकने का आदेश दिया। जब कड़ाही का पानी उबलने लगा और आग से फुसफुसाने लगा, तो सेंट मौरा को कड़ाही में फेंक दिया गया। लेकिन, कड़ाही के बीच में खड़ी होकर और बिल्कुल भी न जलते हुए, उसने राज्यपाल से कहा:

[3398] एक शतदलपति सैनिकों के एक दस्ते का कमांडर होता है, जिसमें आमतौर पर 100 पुरुष होते हैं।

'एक बार फरि मैं आपको धन्यवाद देती हूँ कि आपने मुझे मेरे पापों से धोने और शुद्ध करने का आदेश दयिा, ताकि मैं एक शुद्ध हृदय के साथ अपने ईश्वर के पास जा सकूँ और उनसे अनंत जीवन का मुकुट प्राप्त कर सकूँ। आपके हाथों जो कष्ट मैं सह रही हूँ, वह मुझे मेरे प्रभु मसीह के माध्यम से मोक्ष प्रदान करता है। लेकनि ऐसा लगता है कि मुझे इस कड़ाही में डालने में आप बहुत जल्दबाज़ी में थे, जो अभी पूरी तरह से गर्म नहीं हुई है, क्योंकि इसके अंदर का पानी बहुत ठंडा है और मुझे बल्कुल भी गर्मी महसूस नहीं हो रही है, ठीक वैसे ही जैसे पहले मुझे कोई और यातना महसूस नहीं हुई थी।

हालाँकि, राज्यपाल बहुत क्रोधति हो गया, और उसे संदेह होने लगा कि सैनकिों ने शहीद के प्रति दिया दखिाते हुए, मौरा को अपनी कामुक इच्छाओं के लिए जीवति रखने के उद्देश्य से, कलश से गर्म पानी नकिालकर उसमें ठंडा पानी डाल दयिा था। तुरंत, राज्यपाल अपने न्याय-पीठ से उठकर कड़ाही के पास गया, यह जानने के लिए कि क्या अंदर का पानी वाकई ठंडा था। कड़ाही के पास पहुँचकर, उसने संत से कहा:

'मेरे हाथ पर थोड़ा पानी डालो, ताकि मैं देख सकूँ कि यहाँ का पानी वाकई ठंडा है।'

संत ने उत्तर दयिा:

'यह पानी बहुत ठंडा है, और मुझे इसमें से बल्कुल भी गर्मी महसूस नहीं हो रही है। इसलिए, अगर आपके पास कड़ाही में आग भड़काने के लिए और कुछ नहीं है, तो अपने किसी नौकर को मेरे पति के पास भेजिए, और वह आपको लकड़ी का एक गट्ठा दे देंगे, क्योंकि वह एक बढ़ई हैं; इस लकड़ी से आप कड़ाही में आग भड़का सकते हैं।'

यह कहकर, संत ने कड़ाही से उबलता पानी राज्यपाल के हाथ पर डाल दयिा, और तुरंत ही राज्यपाल का हाथ झुलस गया, यहाँ तक कि उसकी त्वचा छलि गई; राज्यपाल स्वयं दर्द से ज़ोर से चल्लिाया और, सभी को चकति करते हुए, बोला:

'मौरनिस के प्रभु परमेश्वर धन्य हों, और उनके सविाय कोई दूसरा ईश्वर नहीं है, जनिके द्वारा मौरनिस को अब महमिा मलिी है।'

यह कहकर, उसने संत को रहिा करने का आदेश दयिा। हालाँकि, इससे पहले कि संत को अपनी यातना के स्थान से जाने का समय मलि पाता, शैतान एक बार फरि से राज्यपाल के हृदय में प्रवेश कर गया और उसे उन सभी का वरिोध करने के लिए उकसाया जो ईश्वर में सच्चा वश्विास रखते थे और जनिका अंतःकरण नर्मिल था। शहीद को अपने पास बुलाकर, उसने उससे कहा:

'मोरा, अपने मसीह पर न भरोसा करो और न ही अपनी आशा रखो; तुम्हारे लिए हमारे देवताओं को बलदिान देना बेहतर होगा।'

लेकनि संत ने उत्तर दयिा:

'मैं मूर्तयिों को बलदिान नहीं चढ़ाऊँगी, क्योंकि मेरे पास मसीह हैं, जो मेरी रक्षा करेंगे।'

इस पर राज्यपाल ने कहा:

'यदि तुम हमारे देवताओं को बलदिान नहीं चढ़ाओगी तो मैं तुम्हारे मुँह में जलते हुए कोयले भर दूँगा।'

संत ने उत्तर दयिा:

– तुम्हें एहसास नहीं है कि तुम अपने पागलपन में क्या करने जा रहे हो: तुम मेरी जीभ और होठों से कएि गए पापों से शुद्ध होने के लिए मेरे मुँह को जलते हुए कोयलों से भरना चाहते हो। क्योंकि मेरे प्रभु ने भी, जब उन्होंने भवष्यिवक्ता यशायाह को अपनी महमिा दखिाई और उसे स्वर्गदूतों के गीत सुनने का सौभाग्य प्रदान कयिा, तो उसे उसके पापों से शुद्ध करने के लिए, सेराफमि में से एक को भेजा, जसिके हाथ में वेदी से चमिटे से उठाया हुआ एक जलता हुआ कोयला था; सराफ़मि ने इस कोयले से नबी के होंठों को छुआ और कहा: *'यह तुम्हारे होंठों को छू गया है; तुम्हारा अधर्म दूर हो गया, और तुम्हारे पापों का प्रायश्चति हो गया'* (यशायाह 6:7)। और यदि भवष्यिवक्ता को कोयले के उसके होंठों को छूने के बाद उसके पापों की क्षमा मलि, तो मैं आपसे वनिती करता हूँ, कि केवल मेरे होंठों को ही नहीं, बल्कि मेरे चेहरे और मेरे सरि को भी जलते हुए कोयलों से भर दें, और मेरे पूरे शरीर को जलते हुए कोयलों से ढककर उसे जला दें, ताकि इसके द्वारा मैं मसीह की सुगंध बन जाऊँ। ईश्वर, जसिने एक बार भवष्यिवक्ता के पापों को शुद्ध कयिा था, वह मेरे पापों को भी शुद्ध कर देगा।

संत से ऐसे शब्द सुनकर, राज्यपाल और भी अधकि क्रोधति हो गया और एक दीपक लाने का आदेश दयिा जो गंधक और तारकोल से भरा हुआ था, ताकि शहीद को जलाया जा सके। हालाँकि, पास में खड़े लोग, जन्होंने सब कुछ देखा था, राज्यपाल से ऊँचे स्वर में चल्लिाने लगे, कहते हुए:

'तुम इस युवती के लिए और कितनी नई-नई यातनाएँ रचते रहोगे! अपना क्रोध शांत करो, राज्यपाल, क्योंकि हम उसके धैर्य से अत्यंत चकित हैं।'

तब संत मौरा ने भीड़ की ओर मुड़कर कहा:

'तुम में से हर कोई अपना-अपना काम देखो: पुरुष अपने कर्तव्यों और दायित्वों को निभाएँ, और महिलाएँ अपने; जहाँ तक मेरी बात है, तुम में से कोई भी मेरे बारे में चिंता न करे; मैं न तो तुम्हारी मदद मांगती हूँ और न ही तुम्हारी सुरक्षा, क्योंकि मेरा एक रक्षक है—ईश्वर, जिस पर मुझे भरोसा है।'

जब संत ये शब्द कह रही थीं, तो राज्यपाल ने आदेश दिया कि उनके शरीर को एक दीपक से झुलसाया जाए। संत ने दीपक को निहारते हुए राज्यपाल से कहा:

क्या तुम्हें लगता है कि तुम इस दीपक से मुझे डरा सकते हो, मानो तुमने मुझे पहले ही अपने पिछले यातनाओं से पर्याप्त रूप से परख नहीं लिया हो? क्या तुमने मुझे एक बड़े और भयानक, ज़ोर से उबलते हुए कड़ाही में नहीं डाला था, और फिर भी मुझे उससे कोई नुकसान नहीं हुआ, क्योंकि मुझे वह ठंडे पानी से भरी हुई प्रतीत हुई? तुमने स्वयं देखा कि जब तुम्हारे हाथ पानी से झुलस रहे थे, तब मुझे तनिक भी कष्ट नहीं हुआ। क्या तुम्हें सच में लगता है कि मैं इस छोटी सी मशाल से डर जाऊँगा? हे हेगेमोन, यदि तुम चाहो, तो एक पूरी भट्टी जलाओ और मुझे उसमें डाल दो, और तुम मेरे मसीह की शक्ति देखोगे, जिनके सेवक मैं हूँ; मुझे विश्वास है कि मेरा परमेश्वर, जिसने मुझे मेरे धन्य पति तीमुथियुस के द्वारा इस काम के लिए बुलाया है, मुझे नहीं छोड़ेंगे। जहाँ तक उस दीपक की बात है, जिससे तुम मेरे शरीर को जला रहे हो, मेरे लिए वह उस सुबह की ओस की तरह है जो धरती पर गिरती है और पेड़ों और फलों को बढ़ने में मदद करती है।

पवित्र शहीद के शब्दों से पराजित, जो उसके अपने कर्मों से पुष्ट हो रहे थे, और यह न जानते हुए कि संत मौरा के लिए और कौन से कष्ट रचें, राज्यपाल गहराई से दुखी हो गया। तब उसने तीमथियुस और मौरा को एक-दूसरे की ओर मुख करके सूली पर चढ़ाने का आदेश दिया।

जब संतों को सूली पर चढ़ाने के लिए ले जाया जा रहा था, तो मौरा की माँ उनसे मिलीं और अपनी बेटी को गले लगाकर उससे कहा:

'मेरी बेटी, मौरा! तुम अपनी माँ को क्यों छोड़ रही हो, जो तुम्हें ढूँढ़ रही है? तुम्हारा आभूषण कौन पहनेगा? तुम्हारी चाँदी, सोना और कीमती वस्त्र किसके पास जाएँगे, अगर तुम, मेरी बेटी, जीवित नहीं रहीं?'

संत मौरा ने अपनी माँ को उत्तर दिया:

'सोना और चाँदी नष्ट हो जाएँगे, और कीड़े मेरे कपड़ों को खा जाएँगे; एक युवा चेहरे की सुंदरता भी समय के साथ फीकी पड़ जाएगी, लेकिन वह मुकुट जो यीशु मसीह मुझे प्रदान करते हैं, वह हमेशा के लिए अमर रहेगा।'

और उसकी माँ संत मौरा के जवाब में एक शब्द भी नहीं कह सकीं। शहीद, अपनी माँ की पकड़ से छूटकर, सूली पर चढ़ाए जाने की जगह चली गईं, और अपनी माँ से कहती रहीं:

'तुम मुझे सूली से भटका क्यों रही हो और मेरे प्रभु के मुकुट का आनंद लेने से क्यों रोक रही हो, जिनका मैं अपनी मृत्यु में अनुकरण करना चाहती हूँ?'

तब सैनिकों ने संतों को एक-दूसरे की ओर मुँह करके सूली पर चढ़ा दिया। संत नौ दिन और नौ रात सूली पर रहे, एक-दूसरे को प्रोत्साहित और सांत्वना देते रहे। संत तीमुथियुस ने शाम तक अपनी पत्नी को उपदेश दिया, जबकि संत मौरा ने सुबह तक अपनी साथिन को प्रोत्साहित किया। उस समय, संत मौरा ने तीमुथियुस से कहा:

'हम नींद के आगे न झुकें, कहीं ऐसा न हो कि हमारे प्रभु यीशु मसीह जब आएँ, तो हमें सोया हुआ पाएँ और हम पर क्रोध करें। जैसे किसी ऐसे आदमी के घर में जो रात में जागता रहता है, एक जलती हुई मोमबत्ती चोरों को प्रवेश करने से रोकती है; इसके विपरीत, जब मोमबत्ती बुझ जाती है, तो एक चोर आसानी से घर में घुस जाता है और उसे लूट लेता है। इसलिए हम जागते रहें और अविराम प्रार्थना करें, ताकि हमारे प्रभु हमें अपने आगमन की प्रतीक्षा में धैर्यपूर्वक खड़े पाएँ; जैसे कि शत्रु हम पर तब हमला करने का साहस नहीं करेगा जब हम क्रूस पर होंगे, और न ही वह हमें अपमानित करने का साहस करेगा।

कुछ समय बाद, संत मौरा ने फिर से तिमोथी से कहा:

'हौसला रखो, मेरे भाई, और नींद को दूर भगाओ; जागते रहो और समझो कि मैंने क्या देखा है: मुझे ऐसा प्रतीत हुआ कि मेरे सामने, जब मैं एक तरह से समाधि की अवस्था में था, एक आदमी खड़ा था जिसके हाथ में दूध और शहद से भरा एक प्याला था। उस आदमी ने मुझसे कहा, "इसे लो और पियो।" लेकिन मैंने उससे कहा: 'तुम कौन हो?' उन्होंने उत्तर दिया, 'मैं

परमेश्वर का एक स्वर्गदूत हूँ।' तब मैंने उनसे कहा, 'आओ हम प्रभु से प्रार्थना करें।' तब उन्होंने मुझसे कहा, 'मैं तुम्हारा दुख कम करने के लिए तुम्हारे पास आया हूँ। मैंने देखा कि तुम्हें खाने-पीने की बहुत लालसा थी, क्योंकि अब तक तुमने कोई भोजन नहीं चखा है।' मैंने एक बार फिर उससे कहा, 'तुम्हें यह दया दिखाने के लिए किसने प्रेरित किया? और मेरी सहनशक्ति और उपवास का तुम्हें क्या काम है? क्या तुम नहीं जानते कि परमेश्वर इतना शक्तिशाली है कि वह वह भी कर सकता है जो मनुष्यों के लिए असंभव है?' जब मैंने प्रार्थना की, तो मैंने देखा कि वह आदमी अपना चेहरा पश्चिम की ओर मोड़ रहा था। इससे मुझे एहसास हुआ कि यह एक शैतानी धोखा था; शैतान हमें सूली पर भी प्रलोभित करना चाहता था। फिर, कुछ ही देर बाद, वह दर्शन गायब हो गया। बाद में, एक और आदमी पास आया, और मुझे ऐसा लगा कि वह मुझे दूध और शहद से बहती एक नदी तक ले गया, और मुझसे कहा, 'पियो।' – लेकिन मैंने जवाब दिया: 'मैं तुम्हें पहले ही बता चुका हूँ कि मैं न तो पानी पियूँगा और न ही कोई अन्य सांसारिक पेय, जब तक कि मैं अपने प्रभु मसीह के लिए मृत्यु का प्याला नहीं पी लेता, जिसे वह स्वयं मेरे लिए उद्धार और अनंत जीवन की अमरता में बदल देंगे।' जैसे ही मैंने ये शब्द बोले, वह आदमी नदी से पिया और अचानक गायब हो गया, वह और उसके साथ नदी दोनों। मैंने एक तीसरा पुरुष भी देखा, जिसकी आकृति अत्यंत सुंदर थी; उसका चेहरा सूर्य की तरह चमक रहा था। उसने मेरा हाथ पकड़कर मुझे स्वर्ग में उठा लिया और मुझे एक सिंहासन दिखाया जो सफेद वस्त्र से ढका हुआ था, और अद्भुत सुंदरता का एक मुकुट था। ऐसी सुंदरता से चकित होकर, मैंने उस पुरुष से पूछा जिसने मुझे स्वर्ग में लाया था: 'यह किसका है, महोदय?' उसने उत्तर दिया, 'यह तुम्हारे कर्मों का फल है; सिंहासन, चोगा और मुकुट, ये सभी तुम्हारे लिए तैयार किए गए हैं।' फिर उसी व्यक्ति ने मुझे थोड़ा और ऊपर उठाया और मुझे एक और सिंहासन दिखाया, जो उतनी ही खूबसूरती से सजा हुआ था, जिसके साथ एक सफेद चोगा और एक मुकुट था। मैंने मुझे वहाँ लाए उस व्यक्ति से एक बार फिर पूछा: 'और ये किसके हैं, महोदय?' उन्होंने उत्तर दिया: 'ये आपके पति, तिमोथी के हैं।' – मैंने उनसे पूछने की हिम्मत की: 'तो फिर, ये सिंहासन एक-दूसरे के बगल में क्यों नहीं हैं, बल्कि इतनी बड़ी दूरी पर हैं?' उसने मुझसे उत्तर दिया: 'क्योंकि तुम और तुम्हारे पति में बहुत बड़ा अंतर है। क्या तुम नहीं जानती कि तुमने स्वयं उसकी प्रेरणा पर शहीद होने का संघर्ष किया था, और इसलिए वह, एक हद तक, तुम्हारे मुकुट का कारण है? लेकिन अब अपने शरीर में लौट जाओ; कल सुबह, छठे घंटे पर, परमेश्वर के स्वर्गदूत तुम्हारी आत्माओं को लेने और उन्हें स्वर्ग में ले जाने आएँगे। हालाँकि, चौकस रहना, कहीं ऐसा न हो कि दुश्मन तुम्हें फिर से परीक्षा में डालने लगे।"

संत मौरा ने यह दृष्टि अपने भाई तीमथियुस को सुनाई, और उन्होंने प्रभु में एक-दूसरे को सांत्वना दी।

जब दसवें दिन का छठा घंटा आया, तो परमेश्वर के स्वर्गदूत पवित्र शहीदों की आत्माओं को लेने आए। उसी क्षण, संत मौरा, अपने कष्टों को देखने वाले लोगों की ओर मुड़कर, ऊँचे स्वर में कहा:

'भाइयो और बहनो! याद रखो कि जब हम लोगों के बीच में थे, तो हम (दुनियावी ढंग से) मनुष्यों की तरह रहे; लेकिन बाद में हम परमेश्वर की इच्छा के अनुसार, परमेश्वर के सेवक बनकर रहे। और अब हम शीघ्र ही हमारे प्रभु यीशु मसीह से अमरत्व के मुकुट प्राप्त करेंगे। इसी प्रकार, मानव स्वभाव की सभी आवश्यकताओं को पूरा करते हुए, परमेश्वर को प्रसन्न करने वाले कार्य करने का भी प्रयास करो; तब तुम पापों की क्षमा प्राप्त करोगे और उसी प्रभु और हमारे परमेश्वर से मुकुट प्राप्त करोगे।

जब संत मौरा ने ये वचन कहकर अपना कहना समाप्त किया, तो दोनों संतों ने अपनी धर्मी आत्माओं को ईश्वर के हाथों में सौंप दिया[3399] । इस प्रकार उनके दुखों को हमारे प्रभु, मसीह यीशु, के द्वारा धार्मिकता के मुकुट से विभूषित किया गया, जिनका महिमा हो, पिता और पवित्र आत्मा के साथ, युगानुयुग। आमीन।

कॉन्टाकियन, स्वर 4:

अनेक कष्ट सहने और ईश्वर से मुकुट प्राप्त करने के बाद, हे अति महान थिमोथी और अति महिमामय मौरा, हम आप दोनों की पवित्र स्मृति मनाते हैं, हमारे लिए प्रभु से प्रार्थना करें, कि वह इस नगर और इसके लोगों को शांति प्रदान करें: क्योंकि आप दोनों में ही विश्वासियों की शक्ति निहित है।

[3399] पवित्र शहीदों की शहादत लगभग 286 ईस्वी में हुई। कॉन्स्टेंटिनोपल में, पवित्र शहीदों टिमोथी और मौरा की स्मृति का बाद में जस्टिनियन के महलों के पास उनके सम्मान में निर्मित चर्च में भव्यता से उत्सव मनाया जाता था; इसी आधार पर, यह माना जा सकता है कि उनके अवशेष, या उनका कुछ हिस्सा, इस चर्च में रखा गया था।

गुफाओं के मठाध्यक्ष, हमारे पूजनीय पिता थियोडोसियस का जीवन

3 मई को स्मरणोत्सव

हमारे पूजनीय और ईश्वर-वाहक पिता एंथनी, जो रूसी चर्च के महान प्रकाश और कीव-गुफाओं की गौरवशाली लाव्रा के पराक्रमी तपस्वी थे, के बाद हमारे पूजनीय और ईश्वर-वाहक पिता थियोडोरस आए, जिन्हें उनके अनेक पराक्रमी कार्यों और चमत्कारों द्वारा ईश्वर ने महिमामय किया। जो कोई भी इस महिमामय पुरुष के जीवन के बारे में जानना चाहता है, उनके लिए गुफाओं के इतिहासकार, आदरणीय नेस्टर ने उनके बारे में विस्तृत जानकारी संरक्षित की है; एक विश्वसनीय दिव्य साक्षी के रूप में, वे हमें आदरणीय थियोडोरस के जीवन के बारे में विश्वसनीय जानकारी प्रदान करते हैं। यहाँ प्रस्तुत विवरण, इस जीवनी के आधार पर, कुछ संक्षिप्त संशोधनों के साथ संकलित किया गया है।

हमारे पूजनीय और ईश्वर-वाहक पिता थियोडोसियस का जन्मस्थान रूसी भूमि के शहरों में से एक था - Vasilev[3400] । उनके धर्मनिष्ठ माता-पिता ने अपने बेटे को छोटी उम्र से ही धर्मपरायणता में पाला, और जब वह बड़ा हुआ, तो उन्होंने उसे पढ़ना और लिखना सीखने के लिए भेजा। शीघ्र ही थियोडोसियस ने पवित्र धर्मग्रंथों का इतना गहन अध्ययन कर लिया था कि हर कोई उसकी बुद्धि और ज्ञान को देखकर चकित रह जाता था। अपने किशोरावस्था से ही थियोडोसियस उत्साहपूर्वक हर दिन चर्च जाता था और वहाँ जो कुछ भी पढ़ा और गाया जाता था, उसे ध्यान से सुनकर हमेशा चर्च की सेवाओं के अंत तक रहता था।

उन शुरुआती वर्षों में भी, वह अपने साथियों से दूरी बनाए रखता था और बच्चों के खेलों में कोई हिस्सा नहीं लेता था।

जब थियोडोसियस 13 वर्ष के हुए, तो किसी कारणवश उनके माता-पिता को कर्सक[3401] - रूसी भूमि के केंद्र के करीब स्थित एक शहर - में स्थानांतरित होना पड़ा। यहाँ, जल्द ही, दैवीय व्यवस्था की इच्छा के अनुसार, उनके पिता का निधन हो गया, और उनकी धार्मिक आत्मा इस पृथ्वी की घाटी से स्वर्गीय निवासों में चली गई। अपने पिता को खोने के बाद, तेरह वर्षीय थियोडोसियस अपनी माँ के साथ रहने लगा, और ईश्वर की कृपा से प्रत्येक बीतते वर्ष के साथ और अधिक मजबूत होता गया। अपने सांसारिक पिता की मृत्यु के बाद, थियोडोसियस ने स्वर्ग में अपने लिए अनंत जीवन सुनिश्चित करने के लिए और भी अधिक लगन से प्रयास करना शुरू कर दिया: वह ईश्वर को प्रसन्न करने वाले कर्मों की लालसा करता था और सभी सांसारिक सुखों से मुंह मोड़ लिया; उसने महंगे कपड़े पहनना बंद कर दिया और केवल साधारण वस्त्र पहनने लगा। उसकी हमेशा एक ही इच्छा थी - मोक्ष प्राप्त करना।

एक दिन, थियोडोसियस की मुलाकात यरूशलेम के कुछ तीर्थयात्रियों से हुई। उनकी कहानियों से आकर्षित और पवित्र स्थानों के प्रति गहरे प्रेम से भरकर, उस धन्य युवक ने उनसे उन अत्यंत पवित्र स्थानों की यात्रा पर अपने साथ चलने का आग्रह किया, जहाँ जगत के उद्धारकर्ता ने वास किया था और हमारे उद्धार के लिए अपना अमूल्य रक्त बहाया था। और इस प्रकार, अपनी योजना को अंजाम देते हुए, थियोडोसियस अपनी माँ को बिना बताए रात में एक लंबी यात्रा पर निकल पड़ा। इस बीच, उसकी माँ पूरे शहर में तीन दिन तक रोते हुए उसकी तलाश करती रहीं, जब तक उन्हें पता नहीं चल गया कि वह कहाँ गया था। फिर, अपने छोटे बेटे के साथ, वह तुरंत उसका पीछा करने निकल पड़ीं; जब वह उससे मिल गईं, तो गुस्से के दौरे में, उन्होंने उसे बेरहमी से पीटना शुरू कर दिया, उसे ज़मीन पर पटक दिया और पैरों तले कुचल दिया। फिर, उसे घर ले आकर, उन्होंने उसे एक कमरे में बंद कर दिया। थेओडोसियस ने यह सब बिना किसी शिकायत के, बल्कि कृतज्ञता के साथ सहन किया। अंत में, उसकी माँ को उस पर तरस आ गया और उसे आज़ाद करते हुए, वह आँसू भरी आँखों से उससे अपने घर न छोड़ने की विनती करने लगी। फिर थेओडोसियस अपनी पुरानी भक्ति में लौट आया और हर दिन चर्च जाना जारी रखा।

[3400] वासेलेव नामक एक शहर, जिसे वासिलिकोव के नाम से भी जाना जाता है, आज भी मौजूद है और यह कीव गवर्नरेट का एक जिला शहर है; यह कीव से 36 वर्स्ट दक्षिण-पश्चिम में स्थित है और डेन्यूपर की सहायक नदी स्टुग्ना पर बसा है। – आदरणीय थियोडोसियस का जन्म 1035 और 1038 के बीच हुआ था।

[3401] थेओडोसियस के माता-पिता को कर्सक जाने के लिए प्रेरित करने का कारण राजकुमार द्वारा जारी एक फरमान था, जिसमें थेओडोसियस के पिता को वासिलिव से स्थानांतरित होकर कर्सक में एक पद संभालने का आदेश दिया गया था। वासिलिवी में, कर्सक की तरह ही, थियोडोसियस के पिता ने संभवतः राजकुमार के 'तिनि' या न्यायाधीश का पद संभाला था, और वे (गैर-आपराधिक मामलों में) मजिस्ट्रेट के रूप में कार्यरत थे।

एक अवसर पर यह देखते हुए कि प्रोस्फोरा की कमी के कारण चर्च में अक्सर दैवीय अनुष्ठान नहीं होता था, थियोडोसियस ने स्वयं ईश्वर को बलिदान के रूप में चढ़ाए जाने वाले रोटी तैयार करने का संकल्प लिया। इस उद्देश्य के लिए, थियोडोसियस ने गेहूं खरीदा, उसे हाथ से पीसा और उससे प्रोस्फोरा पकाया, जिसे उन्होंने चर्च को उपहार के रूप में अर्पित किया। हालाँकि, यदि उसे प्रोस्कोमिडिया के लिए प्रॉस्फोरा चढ़ाने वालों से थोड़े बहुत पैसे मिलते, तो थियोडोसियस उन्हें गरीबों को दे देता था। उसने दो साल या उससे थोड़ा अधिक समय तक ऐसा जीवन जिया, और मानव जाति के शत्रु - शैतान - द्वारा उसके रास्ते में डाली गई बाधाओं की ओर उसने कोई ध्यान नहीं दिया। शैतान के उकसावे पर, थियोडोसियस के साथियों को इस बात पर आपत्ति हुई और उन्होंने उसकी अपनी माँ को भी उसके खिलाफ़ करने की कोशिश की। उसकी माँ ने थियोडोसियस से कहा:

'मैं तुझसे विनती करती हूँ, मेरे बच्चे, अपना यह काम छोड़ दे; इससे तू अपने परिवार पर अपमान ला रहा है।'

लेकिन उस धन्य युवक ने विनम्रता से उत्तर दिया:

'माँ, मेरी बात सुनो, मैं तुमसे विनती करता हूँ! हमारे प्रभु परमेश्वर यीशु मसीह ने स्वयं हमारे लिए अपना अपमान किया और इस प्रकार हमारे लिए एक उदाहरण स्थापित किया, ताकि हम भी उनके लिए अपना अपमान कर सकें। उन्होंने स्वयं अंतिम भोज में रोटी को अपने शरीर में बदल दिया; तो फिर कोई उस व्यक्ति की आलोचना या निंदा क्यों करे जो उस रोटी को तैयार करता है जिस पर रोटी के मसीह के शरीर में बदलने का यह महान रहस्य संपन्न होना है?

यह उत्तर सुनकर उसकी माँ लड़के की बुद्धिमत्ता से बहुत आश्चर्यचकित हुईं और तब से उन्होंने उसे चैन से रहने दिया। हालाँकि, शैतान ने उस विनम्र और मेहनती लड़के के खिलाफ उसे भड़काना बंद नहीं किया और उसके मन में यह इच्छा डाली कि वह अपने बेटे को प्रोस्फोरा तैयार करने से रोक दे। एक साल बाद, जब उसकी माँ ने थियोडोसियस को प्रॉस्फोरा बनाते और भट्टी की गर्मी से झुलसे हुए देखा, तो उसने एक बार फिर से उसे प्रॉस्फोरा बनाना छोड़ देने के लिए कहना शुरू कर दिया। उसने अपने बेटे को कभी दया से, कभी धमकियों से, और कभी-कभी तो मारपीट कर भी मनाने की कोशिश की। वह धन्य युवक, यह नहीं जानता था कि क्या करे, रात में उठा और चुपके से घर से निकल गया। एक पड़ोसी शहर के लिए निकलकर, वह एक पुरोहित के यहाँ रहने लगा, जहाँ उसने अपनी मेहनत जारी रखी। उसकी माँ ने उसे एक बार फिर ढूंढ निकाला और उसे पीटने के बाद, उसे अपने शहर वापस लौटने के लिए मजबूर कर दिया।

चर्च में धन्य थियोडोसियस की विनम्रता और भक्तिपूर्ण प्रार्थनाओं को देखकर कर्सक के मजिस्ट्रेट ने उसे पहनने के लिए सुंदर कपड़े भेंट किए। नए कपड़े थोड़े समय तक पहनने के बाद, थियोडोसियस ने उन्हें गरीबों को दे दिया। शहर के गवर्नर ने एक बार फिर से उन्हें और भी शानदार कपड़े पहनाए, लेकिन उस लड़के ने उन्हें भी गरीबों में बाँट दिया। धन्य थियोडोसियस ने कई मौकों पर इस तरह का व्यवहार किया।

इसके बाद, धन्य व्यक्ति एक लोहार की दुकान पर गए और वहां के लोहार से उन्हें एक जंजीर के रूप में लोहे का पट्टा बनाने को कहा। उन्होंने यह कसा हुआ पट्टा, जो उनके मांस में घुसकर खून तक निकल जाता था, सीधे अपने शरीर पर बांध लिया और फिर कभी नहीं उतारा।

एक उत्सव के अवसर पर, शहर के मजिस्ट्रेट ने थियोडोसियस को अपने भोज में आने का आदेश दिया, क्योंकि वह चाहता था कि लड़का उसके मेहमानों की सेवा करे। जब वह रात के खाने के लिए तैयार हो रहा था, तो लड़के ने अपनी माँ के निर्देशों का पालन करते हुए अपने उत्सव के कपड़े पहनने थे। और इसलिए, जब उसने कपड़े पहनना शुरू किया, तो उसकी माँ ने उसके चिथॉन (अंडरगारमेंट) पर खून देखा, भले ही लड़के ने उसे छिपाने की कितनी भी कोशिश की। यह जानने की इच्छा में कि लड़के का शरीर खून से क्यों लथपथ था, उसकी माँ ने करीब से देखा और उसकी कमर पर लोहे का पट्टा देखकर यह महसूस किया कि खून उसके मांस में पट्टे के कटने से बने घावों से बह रहा था। थियोडोसियस पर क्रोधित होकर, उसकी माँ ने उसकी कमीज़ फाड़ दी और उसे पीटते हुए अपने बेटे की कमर से पट्टा उतार दिया। लेकिन उस धन्य बालक ने, मानो उसे कोई चोट न लगी हो, कपड़े पहन लिए और, बड़ी विनम्रता से, शहर के राज्यपाल और उसके मेहमानों को रात के खाने में सेवा की।

कुछ समय बाद, थियोडोसियस ने चर्च में सुसमाचार से ये शब्द सुने: *'जो मुझसे अधिक पिता या माता से प्रेम करता है, वह मुझ योग्य नहीं'* (मत्ती 10:37); और यह भी: *'मेरी माता और मेरे भाइयों वे हैं जो परमेश्वर का वचन सुनते हैं और उसे मानते हैं'* (लूका 8:21)। इन शब्दों से तपस्वी प्रयासों को अपनाने के लिए प्रेरित होकर, थियोडोसियस ने गुप्त रूप से घर छोड़ दिया और कीव शहर चला गया। वहाँ उसने परम पूज्य एंथनी की गुफा में कठोर मठवासी जीवन के बारे में सुना और उनके बारे में कहानियों से प्रेरित होकर, वह परम पूज्य एल्डर से मिलने की इच्छा रखने लगा। एंथनी की गुफा में

पहुँचने पर, थियोडोसियस उनके सामने घुटनों के बल गिर पड़ा और आँसू भरी आँखों से उनसे मठीय जीवन के लिए उसे स्वीकार करने की विनती करने लगा। पूज्य एंथनी ने उसकी बात सुनकर इस प्रकार उत्तर दिया:

'हे युवक, तुम देख सकते हो कि यह गुफा कितनी उदास और तंग है; तुम यहाँ की कठिनाइयों को सहन नहीं कर पाओगे।'

इस पर, ईश्वर-प्रेरित युवक ने गहरी भावना के साथ उत्तर दिया:

'ईश्वर ने मुझे आपकी पवित्र गुफा तक लाया है, जो स्पष्ट रूप से इस बात का संकेत है कि मेरा उद्धार आपके द्वारा ही होना है। मैं वही करूँगा जो आप मुझे आज्ञा देंगे।'

तब पूजनीय एंथनी ने स्नेहपूर्वक उसे अपने पास रख लिया और आशीर्वाद देकर विद्वान पुरोहित, धन्य निकोन की देखभाल में सौंप दिया, जिन्होंने जल्द ही उस युवक का भिक्षु-दीक्षा संस्कार कर दिया। थियोडोसियस का 23 वर्ष की आयु में दीक्षा संस्कार हुआ, जो कवि के धार्मिक राजकुमार यारोस्लाव व्लादिमीरोविच की मृत्यु के तुरंत बाद हुआ[3402]।

पवित्र मठवासी व्रत लेने के बाद, आदरणीय थियोडोसियस ने स्वयं को पूरी तरह से ईश्वर की सेवा के लिए समर्पित कर दिया और अपने आध्यात्मिक पिता, एंथनी की इच्छा को लगन से पूरा किया। उन्होंने मसीह का जुआ उठाने वाले एक तपस्वी के रूप में, बड़ी लगन से महान मठवासी श्रम किए। उनींदापन पर काबू पाकर, वह पूरी रात जागते हुए ईश्वर की महिमा करते थे; जबकि दिन के समय, संयम और उपवास के द्वारा अपने शरीर को कष्ट देते हुए, वह विभिन्न कठिन कार्यों को करता था। उस युवक की ऐसी सद्गुण, विनम्रता, ऊर्जा और लगन ने आदरणीय एंथनी और धन्य निकोन को भी प्रभावित किया; थियोडोसियस के धार्मिक जीवन को देखकर, उन्होंने दोनों ने उसकी प्रशंसा में ईश्वर की स्तुति की।

इस बीच, थियोडोसियस की माँ, अपने शहर और आसपास के क्षेत्र में अपने बेटे की व्यर्थ खोज करने के बाद, पहले ही उसके लिए शोक मना रही थी मानो वह मर गया हो। केवल बाद में, बहुत समय बीत जाने के बाद, उसे कीव में, आदरणीय एंथनी की गुफा में अपने बेटे के शरिच्छेदन के बारे में पता चला। तब वह इस वृद्ध के पास गई और उससे गुफा से बाहर आकर उसे देखने के लिए विनती करने लगी। जब साधु अंततःउससे मिलने बाहर आए, तो वह आँसुओं से भरी आँखों से उनकी ओर मुड़ी और विनम्रतापूर्वक अपने बेटे को दिखाने का आग्रह करने लगी। साधु से अपनी माँ की विनती सुनकर, वह युवक बहुत दुखी हुआ, क्योंकि उसे लगा कि वह उससे कभी छिप नहीं सकता; हालाँकि, एंथनी की नसीहत मानकर, वह अपनी माँ से मिलने के लिए गुफा से बाहर निकला। अपने बेटे को एक भिक्षु के रूप में देखकर, जिसका चेहरा महान कार्यों और परिश्रम से दुबला पड़ा था, माँ ने खुद को उसकी छाती पर झोंक दिया और फूट-फूट कर रोते हुए उससे कहा:

'मेरे घर लौट आओ, मेरे बेटे, और जो तुम्हें उचित लगे, जो तुम अपनी आत्मा की मुक्ति के लिए लाभकारी समझो, वही करो। जब मैं मर जाऊँ, तो मेरे शरीर को मिट्टी में सौंप देना, और फिर इस गुफा में लौट आना। क्योंकि मैं तुम्हारे बिना नहीं जी सकती।'

उस धन्य युवक ने उससे उत्तर दिया:

'माँ, यहाँ कीव में ही रहो, और किसी मठ में प्रवेश कर लो; तब तुम समय-समय पर आकर मुझे देख पाओगी। इस तरह तुम अपना मोक्ष सुनिश्चित करोगी और अनंत जीवन में ईश्वर को देखने के योग्य समझी जाओगी।'

लेकिन उसकी माँ ने अपने बेटे की बात तक नहीं सुनी। तब उस धन्य युवक ने, गुफा में लौटकर, अपनी माँ की आत्मा की मुक्ति के लिए ईश्वर से भक्तिपूर्वक प्रार्थना करना शुरू कर दिया। और ईश्वर ने अपने सेवक की प्रार्थना सुनी। कुछ दिनों बाद, उसकी माँ उसके पास आईं और कहा:

'मेरे बेटे, मैं तुम्हारी बात मानूँगी और फिर कभी घर वापस नहीं लौटूँगी। ईश्वर की इच्छा के अनुसार वेल (परदा) धारण करके, मैं अपना बाकी जीवन एक कन्वेंट (धर्मनगरी) में बिताऊँगी, क्योंकि मुझे अब एहसास हो गया है, जैसा कि तुमने मुझे बताया था, कि यह क्षणभंगुर संसार कुछ भी नहीं है।'

यह जानकर, उस धन्य व्यक्ति ने मन ही मन प्रसन्न होकर रेवरेंड एंथनी को अपनी माँ के इरादे के बारे में बताया। रेवरेंड एंथनी ने अपनी माँ के हृदय के सत्य के मार्ग की ओर मुड़ने के लिए ईश्वर की स्तुति की और गुफा से बाहर आकर, उन्होंने उन्हें आत्मा-रक्षक शब्दों से विस्तार से उपदेश दिया; और फिर उन्होंने उन्हें सेंट निकोलस के कॉन्वेंट में भेज

[3402] यह 1055–1056 में था। यारोस्लाव प्रथम व्लादिमीरोविच ने 1019 से 1054 तक शासन किया।

दयिा, जहाँ उन्होंने वेला धारण कयिा। वहाँ कई वर्षों तक धर्मपरायणता से जीवन यापन करने के बाद, थयिोडोसयिस की माता का परलोकवास हो गया और वे ईश्वर के पास चली गईं।

अपनी माता के संन्यास ग्रहण करने के बाद, आखरिकार सभी सांसारकि चतिाओं को त्यागकर, धन्य थयिोडोसयिस ने, परम पूज्य एंथनी और धन्य नकिोन के साथ मलिकर, मठ के कार्यों में और भी अधकि लगन से स्वयं को समर्पति कर दयिा। वरषि्ठों के समुदाय में, थयिोडोसयिस ने जल्द ही उपवास और प्रार्थना के माध्यम से दुष्ट आत्माओं पर वजिय प्राप्त करने की अपनी शक्तिका प्रदर्शन कयिा। स्वयं ईश्वर ने उनकी इस में सहायता की, यह कहते हुए: *'क्योंकि जहाँ दो या तीन मेरे नाम पर इकट्ठे होते हैं, वहाँ मैं उनके बीच में होता हूँ'* (मत्ती 18:20)।

जब धन्य नकिोन को कहीं और अधकि कठोर तपस्या के लिए मठ छोड़ना पड़ा, तो धन्य थयिोडोसयिस को, ईश्वर की इच्छा से और आदरणीय एंथनी के अनुरोध पर, पुरोहति के रूप में अभषिक्ति कयिा गया[3403] । यह पद प्राप्त करने के बाद, उन्होंने प्रतदिनि बड़ी श्रद्धा के साथ दैवीय अनुष्ठान करने का प्रयास कयिा। थयिोडोसयिस के अभषिेक के तुरंत बाद, आदरणीय एंथनी ने गुफा में समुदाय के बारह भक्षिुओं को इकट्ठा कयिा और धन्य बार्लाम को उनका मठाधीश नयिुक्त कयिा, जबकि वे स्वयं उस स्थान को छोड़कर एक दूसरी गुफा में तपस्या करने चले गए जसिे उन्होंने खुद खोदा था। तब हमारे पूजनीय और धर्मपरायण पति थयिोडोसयिस, जो अब पुरोहति के पद से सम्मानति थे, और जो धन्य मठाधीश बार्लाम के साथ एंथनी की गुफा में रहे थे, उन्होंने मलिकर गुफा के ऊपर परमेश्वर की अतपिवत्रि माता के सम्मान में एक छोटी सी चर्च का नरि्माण कयिा, और इसे भाईचारे की सामूहकि प्रार्थना के लिए समर्पति कयिा।

उस समय संत थयिोडोसयिस अपने महान तपस्वी कारनामों: उपवास, उत्साह, शारीरकि श्रम, और सबसे बढ़कर, वनिम्रता और आज्ञाकारति के द्वारा सभी से श्रेष्ठ थे। उन्होंने भाइयों की मदद की: कभी-कभी पानी लाकर, कभी-कभी जंगल से लकड़ी लाकर, और कभी-कभी रात में अन्य भक्षिुओं को सौंपा गया काम करके; इसके अलावा, वह हमेशा रात भर प्रार्थना करते हुए जागते रहते थे। कभी-कभी गर्मयिों में रात को वह गुफा की चोटी पर चढ़ जाता था और कमर तक अपना शरीर उजागर करके अनगनित मक्खयिों और मच्छरों के काटने के लिए खुद को उजागर कर देता था। ऐसे समय में, वह भजन-संग्रह से छंदों का जाप करते हुए अपने हाथों से ऊन कातता था। कीड़ों के अनगनित डंकों और काटने के कारण उसका पूरा शरीर खून से सना रहता था, फरि भी वह तब तक अपनी जगह से नहीं हटता था जब तक कि प्रातः प्रार्थना (मैटनि्स) का आह्वान नहीं हो जाता था। वे फरि से चर्च में सबसे पहले पहुँचते और अपनी जगह पर बैठकर, व्यर्थ के वचिारों से वचिलति हुए बनिा, भक्तपिूर्वक धार्मकि प्रार्थनाएँ करते थे। और वे सभी के बाद चर्च से नकिलते थे। यह सब देखकर, हर कोई उनके वनिम्रता और धैर्य पर चकति होता था और उनके साथ एक पति की तरह प्रेम से पेश आता था।

कुछ समय बाद, गुफा-नविासी संतों के नेता धन्य बार्लाम को राजकुमार इज्यास्लाव[3404] द्वारा महान शहीद संत डेमेट्रयिस के मठ का मठाधीश नयिुक्त कयिा गया। तब, सभी भाइयों की प्रार्थना और इच्छा पर, पूजनीय एंथनी ने संत थयिोडोसयिस को अपने पास बुलाकर, पेचेर्स्क मठ में उस समय नविास कर रहे बारह भाइयों के अधषि्ठाता के रूप में सेवा करने का आशीर्वाद दयिा। इस प्रशंसनीय मठाधीश, हमारे पूजनीय पति थयिोडोसयिस ने, इस उच्च पद पर भी अपने वनिम्र जीवन-यापन को नहीं बदला और अपने *स्वयं के* आचरण पर कड़ी नगिरानी रखना जारी रखा, *'सद्कर्मों का उदाहरण प्रस्तुत करते हुए'* (तीतुस 2:7); वे अपने कर्तव्यों का पालन करने में सबसे पहले होते थे, दव्यि सेवा के लिए दूसरों से पहले चर्च पहुँचते थे, और सबसे अंत में जाते थे। इस धर्मात्मा की दैवीय प्रार्थनाओं के द्वारा, पेचेर्स्क मठ उस समय से फलने-फूलने लगा। इस प्रकार पवत्रि धर्मग्रंथ में कहा गया यह पूरा हुआ: *'धर्मी खजूर के वृक्ष की तरह फलते-फूलते हैं; वे लेबनान के देवदार के वृक्ष की तरह ऊँचे बढ़ते हैं'* (भजन संहति 91:13)। और वास्तव में, जैसे ईश्वर की कृपा से एक बीज अच्छी मट्टिी में सौ गुना फल देता है, वैसे ही संत थयिोडोसयिस ने गुफा में रहने वाले भाइयों की संख्या बढ़ाई। धीरे-धीरे, उन्होंने अपने मठ में सौ भाइयों को इकट्ठा कयिा, जनिका जीवन सदाचारी आचरण से फल-फूल उठा; कई भाइयों ने *'पश्चाताप के योग्य फल'* दिए (देखें मत्ती 3:8)।

भाइयों की संख्या में भारी वृद्धकि के कारण, गुफा बहुत तंग हो गई, जसिसे भक्षिुओं को आवश्यक कठोरता के साथ मौन जीवन जीने से रोका गया; इसी तरह, चर्च सामूहकि प्रार्थना के लिए बहुत छोटा पड़ गया। परणिामस्वरूप, पूजनीय

[3403] यह 1056–1057 में था।

[3404] इज्यास्लाव प्रथम यारोस्लावचि ने 1054 से 1073 तक, फरि 1076 से 1078 तक शासन कयिा।

थियोडोसियिस ने गुफा से बहुत दूर नहीं, एक सुंदर स्थान चुना, जो मठ की दीवारें बनाने के लिए पर्याप्त वशिाल था, और वहाँ एक मठ बनाने का संकल्प लयिा। आदरणीय एंथनी के आशीर्वाद से, उन्होंने मसीह-प्रेमी राजकुमार इज्यास्लाव से इस स्थल का अनुरोध कयिा और फरि, ईश्वर की मदद से, जल्द ही वहाँ परमेश्वर की परम पवत्रि माता के डोर्मशिन के सम्मान में एक वशिाल लकड़ी का चर्च बनवाया। फरि उन्होंने वहाँ मठ की दीवारें खड़ी कीं और पर्याप्त संख्या में कोठरयिाँ बनाकर, भाइयों के साथ नए मठ में आ गए।

धन्य एफ्रेम एक बार इस मठ में आए थे; उन्हीं के माध्यम से ईश्वर ने थयिोडोसयिस को मठवासी जीवन के स्टुडाइट नयिम[3405] से पूरी तरह परचिति कराया। एफ्रेम से पवत्रि स्टुडाइट मठ के नयिम की एक संपूर्ण प्रत प्राप्त करने के बाद, थयिोडोसयिस ने अपने स्वयं के मठ के मामलों सहति, हर मामले में इसका पालन करना शुरू कर दयिा। बाद में, अन्य सभी रूसी मठों ने प्राचीन कीव गुफाओं के मठ के उदाहरण का अनुसरण करते हुए इस नयिम को अपना लयिा।

आदरणीय थयिोडोसयिस ने अपने शष्यिों को लगन से उपदेश दयिा, और उन्हें सच्चे पश्चाताप के लिए प्रेरति कयिा। यह आदरणीय गुरु हर रात भाइयों की कोठरयिों का दौरा करने की आदत रखते थे; इस तरह, वे भाइयों के जीवन-यापन से परचिति रहते थे और प्रत्येक भाई के तपस्या के प्रयासों में उत्साह की मात्रा का पता लगाते थे। जब वे अपनी गश्त के दौरान एक भक्षिु को प्रार्थना करते हुए सुनते, तो वे आनंदति होते और ईश्वर की स्तुत करते; लेकनि जब भी, संध्या की प्रार्थना के बाद, संयोग से वे दो या तीन भक्षिुओं को कसिी कोठरी में बातचीत करने के लिए इकट्ठा सुनते, तो थयिोडोसयिस दरवाज़े पर खटखटाकर अपनी उपस्थति का एहसास कराते और भारी मन से वहाँ से चले जाते। अगले दनि, वह गलती करने वालों को बुलाता और, सीधे-सीधे डाँटे बनिा, उन्हें पश्चाताप की ओर ले जाने के लिए दृष्टान्तों का उपयोग करता। वनिम्र-हृदय भाई, तुरंत अपना दोष समझकर, क्षमा माँगता था; लेकनि कठोर-हृदय वाला, यह सोचकर क मठाधीश कसिी और के बारे में उपमाओं में बात कर रहे हैं, न क उसके बारे में, तब तक अपना अपराध स्वीकार नहीं करता था, जब तक क आदरणीय, सीधे-सीधे फटकार लगाए बनिा, दोषी व्यक्त पर प्रायश्चति नहीं थोप देते थे। इस प्रकार थयिोडोसयिस ने भाइयों को ईश्वर से लगन से प्रार्थना करना, संध्या की प्रार्थना के बाद बातचीत न करना, और नश्चिति रूप से बातचीत के लिए एक कोठरी से दूसरी कोठरी में न जाना सखिाया; उन्होंने प्रत्येक को अपनी कोठरी में प्रार्थना करना, और शारीरकि श्रम करते समय, हमेशा दाऊद के भजन जोर से पढ़ना सखिाया। अपने जीवनकाल में, भक्षिु अपने कर्मों से परमेश्वर के स्वर्गदूतों के समान प्रतीत होते थे, और पेचेर्सक मठ, मानो, एक स्वर्गीय नविास जैसा था। वास्तव में, अपने मठ में, हमारे पूजनीय पति थयिोडोरस पुण्यों के प्रकाश से एक महान स्वर्गीय दीपक की तरह चमके। अपने धार्मकि जीवन के लिए, थयिोडोरस को जीवति ही लोगों के सामने ईश्वर द्वारा महमिामंडति कयिा गया, जब एक दृश्यमान प्रकाश से वह प्रकाशति हो उठे। यह नम्निलखिति परस्थितियिों में हुआ।

एक अंधेरी रात, संत माइकल द आर्कएन्जेल के मठ के मठाधीश सोफ्रोनीउस अपने आवास पर लौट रहे थे, और वे थयिोडोसयिस के मठ के पास से गुज़र रहे थे। अचानक, उनके सामने एक असाधारण प्रकाश प्रकट हुआ, जो उस धर्मात्मा के मठ के ऊपर चमक रहा था। इस असाधारण दृश्य से प्रभावति होकर, सोफ्रोनीउस ने ईश्वर की स्तुत करते हुए कहा: 'हे प्रभु, आपकी दया कतिनी महान है! आपने इस स्थान के लोगों को थयिोडोरस के रूप में एक दीपक दयिा है, और वह अपनी करिणों से मठ को प्रकाशति करता है।'

इसी तरह की घटनाएँ कई बार अन्य लोगों द्वारा भी देखी गईं, और जब लोगों ने इस बारे में वस्तार से बात की, तो इसकी खबर राजकुमार और उसके बोयारों तक पहुँच गई। ये प्रकाश पवत्रि एल्डर के धार्मकि जीवन की रोशनी का प्रतबिबि थे। इस तरह हर कसिी ने अपने मन में इस घटना की व्याख्या की।

धन्य थयिोडोसयिस को मसीह-प्रेमी राजकुमार इज़यिास्लाव से बहुत स्नेह था, जो अपने पति यारोस्लाव के बाद कीव का राजकुमार बना था। इज़यिास्लाव अक्सर इस पूजनीय पति के पास उनके दैवीय प्रेरति संवाद का आनंद लेने आता था। यह ध्यान देने योग्य है क हिमारे पूजनीय पति थयिोडोसयिस ने अपने द्वारपाल को एक सख्त आदेश दयिा था: दव्यि प्रार्थना (Divine Liturgy) और संध्या प्रार्थना (Vespers) के बीच द्वार न खोलने का और कसिी को भी मठ के अंदर न

[3405] संत एफ्रेम कॉन्स्टेंटनिोपल गए, जहाँ उन्होंने स्टुडयिोन मठ के नयिम की प्रतलिपि बनाई। ये नयिम 9वीं शताब्दी की शुरुआत में कोंस्टेंटनिोपल में स्टुडाइट मठ के मठाधीश, परम पूजनीय थयिोडोर द स्टुडाइट द्वारा बनाए गए थे। 9वीं शताब्दी के अंत के आसपास, रूसी चर्च द्वारा इन्हें अपना लयिा गया और वे 14वीं शताब्दी के मध्य तक वहाँ उपयोग में रहे, जब उन्होंने यरूशलेम के नयिमों के लिए जगह बनानी शुरू कर दी। (यह नयिम 6वीं शताब्दी में पवत्रि सावास द्वारा फलिस्तीन के मठों में पेश कयिा गया था - संत सावास का पर्व 5 दसिंबर को मनाया जाता है)। संत बेसलि द ग्रेट द्वारा तैयार कए गए मठवासी जीवन के सामुदायकि नयिम। चर्च संत एफ्रेम का पर्व 28 जनवरी को मनाती है।

आने देने का। ऐसा उन्होंने इसलिए किया था ताकि भाइयों को अपनी लंबी रात की प्रार्थनाओं और सुबह की स्तुति से पहले दिन में आराम करने का अवसर मिल सके। एक दिन इन घंटों के दौरान, ईश्वर-प्रेमी राजकुमार इज्यास्लाव एक युवा पगे (पेज) के साथ घोड़े पर सवार होकर आए (उस समय तक राजकुमार कभी भी घोड़े पर सवार होकर मठ नहीं आए थे)। घोड़े से उतरकर, इज्यास्लाव द्वार के पास गए और खटखटाया, और द्वारपाल को इसे खोलने का आदेश दिया। दरबान ने उसे समझाया कि मठाधीश के आदेश पर, संध्या तक किसी के लिए भी द्वार नहीं खोला जाएगा। तब राजकुमार ने, दरबान को यह स्पष्ट करना चाहकर कि वह कौन था, कहा:

'यह मैं हूँ; सिर्फ मेरे लिए द्वार खोलो।'

हालाँकि, द्वारपाल यह समझ नहीं पाया कि वह एक राजकुमार से बात कर रहा है, और उसने जवाब दिया:

'मैं तुम्हें बता रहा हूँ: मठाधीश ने आदेश दिया है कि द्वार किसी के लिए भी नहीं खोला जाए, यहाँ तक कि अगर स्वयं राजकुमार भी आ जाएँ तो भी। इसलिए, यदि आप चाहें, तो संध्या तक थोड़ी देर प्रतीक्षा करें।'

'मैं राजकुमार हूँ,' इज्यास्लाव ने कहा, 'क्या तुम मेरे लिए द्वार नहीं खोलोगे?'

दरबान ने गेट के नीचे से देखने के लिए झुककर यह पक्का किया कि वाकई में राजकुमार ही है, लेकिन फिर भी उसने गेट नहीं खोला; इसके बजाय, वह यह बात रेवरेंड को बताने चला गया। राजकुमार को गेट पर धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा करने के लिए मजबूर होना पड़ा। फिर रेवरेंड बाहर आए और राजकुमार को देखकर उन्होंने उन्हें प्रणाम किया। तब राजकुमार ने सेंट थियोडोरस से कहा:

'कितनी सख्त है, पिताजी, आपकी आज्ञा: भिक्षु कहता है कि आपने आदेश दिया है कि स्वयं राजकुमार को भी प्रवेश न दिया जाए।'

रेवरेंड फादर ने उत्तर दिया:

'ऐसा इसलिए है, हे दयालु प्रभु, ताकि भ्रातियों रात की प्रार्थना की मेहनत से पहले दोपहर को थोड़ा आराम कर सकें। लेकिन हमारी परम पवित्र माता, ईश्वर की माता के प्रति आपकी प्रशंसनीय भक्ति, आपकी आत्मा के लिए अच्छी और उद्धारकारी है; और हम आपके हमारे यहाँ आने पर बहुत प्रसन्न हैं।'

फिर वे चर्च में गए; वहाँ, आदरणीय पिताजी द्वारा पढ़ी गई प्रार्थना के बाद, मसीह-प्रेमी राजकुमार ने संत थियोडोरस के साथ एक आत्मा-पोषक वार्तालाप का आनंद लिया। बाद में, राजकुमार बहुत लाभ प्राप्त करके घर लौट आया और ईश्वर का धन्यवाद किया। उस दिन से, इज्यास्लाव संत से और भी अधिक जुड़ गया और, उनमें प्राचीन पवित्र पिताओं के समान एक व्यक्ति को देखकर, सभी बातों में उनके उपदेश का पालन करने लगा।

राजकुमार और कुलीनों द्वारा दिखाए गए सम्मान के बावजूद, हमारे पूजनीय पिता थियोडोसियस में जरा भी अहंकार नहीं आया; बल्कि सचमुच, जैसे अँधेरे में एक तारा चमकता है, वैसे ही वे, और भी अधिक विनम्रता का वेश धारण कर, और भी अधिक परिश्रम करते थे, और अपने शिष्यों को न केवल शब्दों से बल्कि उदाहरण से भी सिखाते थे। मठाधीश के पद पर होने के बावजूद, संत थियोडोसियस अक्सर बेकरी जाते थे और वहाँ बेकर्स के साथ काम करते थे, आटा गूँथते और रोटी बेलते थे। आदरणीय पिता ने ईश्वर द्वारा प्रदान की गई शारीरिक शक्ति के वरदान को व्यर्थ नहीं जाने दिया, बल्कि, हमेशा उत्साही आत्मा के साथ, उन्होंने अपने जोश से दूसरों को प्रोत्साहित किया, और उन्हें अपने काम के प्रति उत्साह में कभी ढिलाई न करने के लिए प्रेरित किया।

एक बार, परम पवित्र ईश्वर की माता के नवरोत्सव के पूर्व संध्या पर, कोषाध्यक्ष थियोडोर पवित्र पिता के पास आए और कहा कि रसोई में पर्याप्त पानी नहीं है, और उसे लाने के लिए कोई नहीं है। तब पवित्र पिता उठे और तुरंत स्वयं कुएँ से पानी लाने लगे। भाइयों में से एक ने, जब उन्होंने एबट को इस कार्य में लगा हुआ देखा, तो तुरंत दौड़कर अन्य भिक्षुओं को इसके बारे में बताने गया, और वे सब बड़ी जल्दी से इकट्ठा हो गए और पर्याप्त से अधिक पानी लाए।

एक और इसी तरह की घटना हुई। एक अवसर पर, उन्होंने खाना पकाने के लिए पर्याप्त लकड़ी नहीं तैयार की थी; सेलरर फिर से माननीय पिताजी के पास गया और कहा:

'फादर, कृपया भाई-समुदाय में से किसी व्यस्त न होने वाले व्यक्ति को भेजने का निर्देश दें, जो जाकर आवश्यक मात्रा में लकड़ी तैयार कर आए।'

'मैं व्यस्त नहीं हूँ; मैं स्वयं जाऊँगा,' रेवरेंड फादर ने उत्तर दिया।

यह बातचीत दोपहर के भोजन के समय हुई। आदरणीय भिक्षु ने एक कुल्हाड़ी उठाई और स्वयं लकड़ी काटने लगे, और इस बीच उन्होंने बाकी भिक्षुओं से कहा कि वे जाकर अपना दोपहर का भोजन कर लें। दोपहर के भोजन के बाद

भोजनशाला से निकलने पर, भिक्षुओं ने अपने मठाध्यक्ष को काम करते हुए देखा। उनकी विनम्रता से लज्जित होकर, भिक्षुओं ने स्वयं अपनी कुल्हाड़ियाँ उठा लीं और कई दिनों तक चलने के लिए पर्याप्त लकड़ी तैयार कर ली।

जब आदरणीय एक के मुंडन करने वाले, धन्य निकोन[3406] , अपनी तपस्या की यात्रा से कीव-पेचेरस्क लाव्रा लौटे, तो आदरणीय थियोडोसियस ने उन्हें एक पिता के समान पूरा सम्मान दिया, भले ही उस समय स्वयं आदरणीय थियोडोसियस ही मठाध्यक्ष के पद पर थे। और जब धन्य निकोन को किताबें बांधने के लिए धागे की कमी हुई (जो उनका काम था), तो थियोडोसियस उनके लिए धागा कातते थे। अपने विभिन्न कार्यों और प्रयासों में इस ईश्वर-प्रेरित व्यक्ति की नम्रता और सादगी ऐसी ही थी। मठाधीश के कपड़े भी सादे और साधारण थे: उन्होंने अपने शरीर पर एक मोटे बालों वाली कमीज़ पहनी थी, और उसके ऊपर एक और बहुत घिसी-पिटी कमीज़ पहन रखी थी; उन्होंने यह इसलिए पहनी थी ताकि लोगों को नीचे वाली काँटेदार कमीज़ दिखाई न दे।

एक अवसर पर, आदरणीय महंत ईसा-प्रेमी राजकुमार इज़्यास्लाव के पास किसी काम से गए; लेकिन चूंकि राजकुमार उस समय शहर से दूर थे, थियोडोसियस को शाम तक वहाँ इंतजार करना पड़ा। जब वे घर लौटने की तैयारी करने लगे, तो ईसा-प्रेमी राजकुमार ने आदेश दिया कि उन्हें अपने रथ में वापस मठ ले जाया जाए। रास्ते में, रथ चलाने वाले युवक ने, reverend के फटे-पुराने कपड़े देखकर और यह सोचकर कि वह मठाधीश नहीं बल्कि एक साधारण भिक्षु है, उनसे कहा:

'भिक्षु, घोड़े पर चढ़ जाओ, और मैं रथ ले लूंगा।'

सम्माननीय ने तुरंत और विनम्रता से रथ से उतरकर अपनी जगह उस युवक को दे दी, जबकि वह स्वयं या तो साथ-साथ चला या जब वह थक गया, तो घोड़े पर सवार हो गया। इस प्रकार वे रात भर यात्रा करते रहे। प्रातःहोते-होते, उन्हें राजकुमार से मिलने जा रहे कुलीनों से सामना होने लगा। राजकुमार ने महात्मा को पहचान लिया, घोड़े से उतरकर उनके सामने झुक गया। तब महात्मा ने लड़के की ओर मुड़कर कहा:

'अब तो दिन निकल आया है; रथ से उतर जाओ और अपना घोड़ा चढ़ जाओ।'

हालाँकि, लड़का, रब्बी को झुकते हुए देखकर डर गया और रथ से उतरकर अपने घोड़े पर सवार हो गया। इस बीच, जब रब्बी रथ में अपनी जगह पर बैठ गए, तो उनसे मिलने वाले लोग और भी अधिक बार उनका अभिवादन करने लगे। इससे उसके साथ यात्रा कर रहे लड़के का घबरा जाना और भी बढ़ गया।

जब वे इस प्रकार मठ में पहुँचे, तो संपूर्ण समुदाय रेवरेंड फादर का स्वागत करने के लिए बाहर आया और उन्हें प्रणाम किया। उस लड़के को और भी अधिक भय सताने लगा, वह सोच रहा था कि यह व्यक्ति कौन है जिसे सभी पूज रहे थे। हालाँकि, रेवरेंड फादर ने उसका हाथ पकड़कर उसे भोजनशाला में ले गए और आदेश दिया कि उसे भोजन और पेय दिया जाए , फिर उपहारों के साथ उसे विदा कर दिया। यह घटना स्वयं उस लड़के के कारण ही सभी को पता चली, जबकि रेवरेंड फादर ने इस बारे में किसी को कुछ नहीं बताया, क्योंकि वह हमेशा अपने भाइयों को सिखाते थे कि किसी भी बात में घमंडी न बनें, बल्कि हमेशा विनम्र रहें और खुद को हर किसी से नीचा समझें।

रेवरेंड फादर अपने भाइयों को जिस नम्रता से सिखाते थे, वह ऐसी थी। अन्य बातों के अलावा, उन्होंने उन्हें यह सिखाया कि हर काम की शुरुआत में अपने बड़े का आशीर्वाद लें, और धर्मग्रंथ के इन शब्दों को ध्यान में रखें: *'जो उदारता से बोता है, वह उदारता से ही काटता है'* (2 कुरिन्थियों 9:6)। उन्होंने इस कथन के सत्य को व्यवहार में प्रदर्शित किया। यह उनकी आदत थी कि जब धर्मपरायण लोग अपनी ज़रूरत के समय में उनके पास आते थे, तो रेवरेंड फादर, दिव्य शिक्षा देने के बाद, उन्हें मठ के भंडार से रोटी और गर्म भोजन देते थे। एक बार, राजकुमार स्वयं, मठ का भोजन चखने के बाद, रेवरेंड फादर से कहा:

'आप जानते हैं, फादर, कि मेरा घर दुनिया की सभी दौलत से भरा है, फिर भी मैंने कभी कुछ इतना मीठा नहीं खाया। मेरे नौकर, भले ही वे तरह-तरह के महंगे व्यंजन बनाते हों, वे उन्हें इन व्यंजनों जितना मीठा नहीं बना सकते। मैं आपसे विनती करता हूँ, फादर, मुझे बताएं कि आपके भोजन में इतनी मिठास क्यों है?'

धन्य थियोडोसियस ने उत्तर दिया:

'यदि, मेरे प्रिय स्वामी, आप जानना चाहते हैं कि ऐसा क्यों है, तो सुनें – मैं आपको बताऊंगा: जब हमारी बंधुता गर्म भोजन पकाने या रोटी बेक करने के लिए इकट्ठा होती है, तो वे इस क्रम का पालन करते हैं: सबसे पहले, एक भिक्षु

[3406] आदरणीय निकोन रूस के दक्षिण में, त्मूताराकान चले गए।

महाधर्माध्यक्ष के पास जाता है और उनका आशीर्वाद प्राप्त करता है; फिर, पवित्र वेदी के सामने तीन बार जमीन पर सिर झुकाने के बाद, वह वेदी से एक मोमबत्ती जलाता है और इस लौ से रसोई और बेकरी में आग जलाता है। और जब बर्तन में पानी डालने का समय होता है, तो भिक्षु वरिष्ठ भिक्षु से कहता है: 'मुझे आशीर्वाद दीजिए, पिताजी।' वरिष्ठ भिक्षु उत्तर देते हैं: 'भगवान आपको आशीर्वाद दें, भाई।' इस प्रकार हमारे समुदाय में हर काम आशीर्वाद से शुरू होता है, और यही कारण है कि हमारा भोजन इतना स्वादिष्ट होता है। जहाँ तक आपके सेवकों की बात है, मैं कल्पना करता हूँ कि वे एक-दूसरे से झगड़ते, बड़बड़ाते और एक-दूसरे की निंदा करते हुए काम करते हैं, शायद अपने वरिष्ठों से अक्सर पिटाई भी खाते होंगे। इसीलिए उनका काम, जो पाप के बिना नहीं होता, आनंद का स्रोत नहीं है।

यह सुनकर, राजकुमार ने कहा:

'सचमुच, पिताजी, यह ठीक वैसा ही है जैसा आप कह रहे हैं।'

जब भी माननीय पिता को किसी भोजन के बारे में पता चलता था जो बड़े भिक्षु के आशीर्वाद के बिना और मठ के नियमों का उल्लंघन करते हुए बनाया गया हो, तो वह उस भोजन को 'शत्रु-भोजन' कहकर बुलाते और अपने आशीर्वाद प्राप्त अनुयायियों को उसका स्वाद चखने भी नहीं देते थे; वे इस तरह से बनाए गए भोजन को पानी या आग में फेंक देने का आदेश देते थे। ठीक यही हुआ जब आदरणीय फादर और उनके भाई-बंधु, उस संत के नाम पर स्थित एक पड़ोसी मठ में महान शहीद संत डेमेट्रियस का पर्व मनाने के लिए निकल रहे थे। उस दिन, कुछ धर्मपरायण लोगों ने मठ में कुछ बहुत स्वादिष्ट रोटी के पाव भेजे थे। थियोडोसियस ने सेलरर को आदेश दिया कि वह उन्हें उसी दिन शेष भाइयों के भोजन में परोसे। लेकिन व्यवस्थापक ने उनके आदेश का पालन नहीं किया, और मन ही मन सोचा: 'जब कल सभी भ्राता इकट्ठा होंगे, तो मैं यह रोटी रात के खाने में परोस दूँगा; आज, बाकी भिक्षु सामान्य मठ की रोटी खा लें।'

और उसने वैसा ही किया। अगले दिन, भिक्षु-प्रमुख भोजन के समय भाइयों के साथ मठ में लौटे। भोजन के दौरान, पूजनीय ने यह देखकर कि उपहार के रूप में भेजी गई रोटी ही परोसी गई थी, सेलर को बुलाया और उससे पूछा:

'यह रोटी कहाँ से आई?'

प्रबंधक ने उत्तर दिया:

'यह रोटी कल लाई गई थी, लेकिन मैंने उस दिन इसे परोसा नहीं क्योंकि दोपहर के भोजन में कुछ ही भाई मौजूद थे; मैंने सोचा कि जब सभी भाई एक साथ इकट्ठा होंगे तो उन्हें यह स्वादिष्ट रोटी खिलाना बेहतर होगा।'

तब पादरी ने उससे कहा:

'तुम्हारे लिए यह बेहतर होता कि तुम आने वाले दिन की चिंता न करते, बल्कि जैसा मैंने आदेश दिया था वैसा करते। क्योंकि प्रभु, जो हमेशा हमारी परवाह करते हैं, आज हमें हमारी ज़रूरत की हर चीज़, और उससे भी अधिक, प्रदान कर देते।'

फिर उन्होंने कटे हुए रोटी के टुकड़ों को एक टोकरी में इकट्ठा करके नदी में फेंकने का आदेश दिया, और अपने आदेश की अवज्ञा करने के लिए व्यवस्थापक पर कठोर दंड लगाया। जब भी अन्य भिक्षु किसी भी मामले में अपने वरिष्ठों की अवज्ञा करते थे, तो वे उनके साथ भी इसी तरह का व्यवहार करते थे।

यह देखते हुए कि भिक्षुओं ने कल की चिंता और सांसारिक वस्तुओं के संचय को पूरी तरह से नहीं छोड़ा था (जो उनके संन्यासी व्रतों का खंडन करता था), आदरणीय थियोडोसियस ने अपने भाइयों को धन-संचय न करने का सद्गुण अपनाना सिखाया। उन्होंने कहा कि भिक्षुओं को नश्वर संपत्ति की चाह करने के बजाय, ईश्वर में विश्वास और आशा के माध्यम से स्वयं को समृद्ध करना चाहिए। वे अक्सर कोठरियों का दौरा करते थे, और यदि उन्हें नियम— —द्वारा अनुमत से अधिक संपत्ति वाला कोई मिलता, चाहे वह भोजन हो, कपड़े हों या कुछ और, तो वे उसे लेकर भट्टी में फेंक देते थे, क्योंकि यह शैतान से उत्पन्न और मठ के नियम के विरुद्ध था। रेवरेंड फादर ने इस प्रकार भाइयों को अनासक्ति के गुण के लिए प्रोत्साहित किया:

'हमारे लिए, उन संन्यासियों के लिए जिन्होंने सभी सांसारिक चीजों का त्याग कर दिया है, अपनी कोठरियों में व्यर्थ की संपत्ति जमा करना सही नहीं है। हम ईश्वर से शुद्ध प्रार्थना कैसे कर सकते हैं जब हम अपनी कोठरियों में नश्वर खजाने रखते हैं! क्योंकि तुमने प्रभु के वचन सुने हैं: *"जहाँ तुम्हारा खजाना है, वहीं तुम्हारा हृदय भी होगा"* (मत्ती 6:21)। और फिर: *'हे मूर्ख! आज ही रात तेरी जान ले ली जाएगी; तब ये वस्तुएँ जिनके लिए तूने तैयारी की है, किसकी होंगी?'* (लूका 12:20)। इसलिए, भाइयों,' उन्होंने कहा, 'हम निर्धारित वस्त्रों और भोजनशाला में परोसे गए भोजन से ही संतुष्ट रहें; हमारे

सेलों में इस प्रकार की कोई भी चीज़ रखना हमारे लिए उचित नहीं है। तो, अपने पूरे उत्साह और हृदय की गहराई से, हम ईश्वर से शुद्ध प्रार्थना करें।

इस प्रकार संत थियोडोसियस ने बड़ी विनम्रता और आँसुओं के साथ भाइयों को प्रोत्साहित किया।

आदरणीय पिता दयालु, सौम्य, जल्दी गुस्सा न होने वाले थे, और सभी का ध्यान रखते थे। इस प्रकार, जब भी उनकी सांसारिक झुंड में से कोई आत्मा में कमजोर पड़ जाता और मठ छोड़ देता, तो रेवरेंड फादर, चले गए व्यक्ति के लिए बड़े दुख और शोक में, आँसुओं के साथ ईश्वर से प्रार्थना करते, उनसे अपने झुंड से भटक गए भेड़ को वापस लाने के लिए कहते। वे इस तरह तब तक प्रार्थना करते जब तक कि जो चला गया था, वह वापस नहीं आ जाता।

उनके भाइयों में एक ऐसा भिक्षु था जो विशेष रूप से चंचल था। वह अक्सर मठ से भाग जाता था, और हर बार जब वह लौटता, तो रेवरेंड फादर खुशी-खुशी उसका स्वागत करते, कहते हुए कि ईश्वर उसे कभी अकेला नहीं छोड़ेंगे और उसे मठ के बाहर अपना जीवन समाप्त करने की अनुमति नहीं देंगे: 'भले ही वह बार-बार हमें छोड़कर जाता है,' रेवरेंड फादर कहते, 'फिर भी वह अपना जीवन हमारे मठ में ही समाप्त करेगा।'

और आँखों में आँसू लिए, उन्होंने ईश्वर से उस भाई को धैर्य देने की प्रार्थना की। एक अवसर पर, यह भाई विशेष रूप से लंबे समय तक दूर रहा, लेकिन वह अंततः लौट आया और, हमेशा की तरह, उसे वापस लेने के लिए रेवरेंड फादर से विनती करने लगा। वास्तव में दयालु, थियोडोसियस ने एक बार फिर से उसे खुशी से स्वागत किया और लौटे हुए खोए हुए भेड़ को अपने झुंड में वापस स्वीकार कर लिया। लंबी अनुपस्थिति के बाद लौटने पर, भाई अपने साथ एक छोटी सी धनराशि लाया और उसे रेवरेंड फादर के सामने रख दिया, जो उसने अपनी मेहनत से कमाई थी (वह कपड़े सिलता था)। तब रेवरेंड फादर ने उससे कहा:

'यदि तुम सिद्ध होना चाहते हो, तो इसे लो और जलती भट्टी में फेंक दो, क्योंकि जो तुमने लाया है वह अवज्ञा का कार्य है।'

वह, एक सच्चे पश्चातापी की तरह, सब कुछ इकट्ठा कर, आदरणीय के आदेश पर, उसे भट्टी में फेंककर जला दिया। उस समय से, वह भाई मठ नहीं छोड़ते हुए रहा, अपने शेष दिन पश्चाताप में बिताए, और वहाँ, जैसा कि आदरणीय ने भविष्यवाणी की थी, वह शांतिपूर्वक निधन कर गया।

आदरणीय थियोडोसियस गरीबों पर बहुत दयालु थे। उन्होंने मठ के पास एक परिसर बनाया जिसमें संत स्टीफन प्रथम शहीद को समर्पित एक चर्च था, और वहाँ उन्होंने भिखारियों, अंधों, लंगड़ों और कोढ़ियों को बसाया, तथा मठ से उनकी सभी आवश्यकताओं को पूरा किया। मठ की आय का दसवां हिस्सा इस उद्देश्य के लिए अलग रखा जाता था। इसके अतिरिक्त, हर शनिवार को आदरणीय पिता एक ठेले भर रोटी उन लोगों को भेजते थे जो तहखानों और जेलों में कैद थे।

हमारे पूजनीय पिता थियोडोसियस ने न केवल गरीबों पर, बल्कि उन लोगों पर भी दया दिखाई जिन्होंने उनके मठ को नुकसान पहुँचाया था। इस प्रकार, एक अवसर पर, चोरी करने आए चोरों को आसपास के क्षेत्र में पकड़ लिया गया और मठाधीश के सामने लाया गया। उन्हें बँधा हुआ और निराश देखकर, पूजनीय पिताजी की आँखों में आँसू आ गए और उन्होंने उन्हें खोल देने का आदेश दिया। उन्हें खाना-पीना देने के बाद, उन्होंने उन्हें समझाया कि वे किसी का अहित न करें, बल्कि अपनी मेहनत के फल पर ही संतुष्ट रहें। फिर, उन्हें पर्याप्त पैसा देकर, उन्होंने पश्चातापी डाकुओं को शांति से विदा कर दिया।

आदरणीय थियोडोसियस को दृढ़ विश्वास था कि प्रभु स्वयं भाइयों के समुदाय की आवश्यकताओं की हर चीज़ को डाकुओं से सुरक्षित रखेंगे। यह कि यह आशा व्यर्थ नहीं थी, निम्नलिखित चमत्कार से प्रमाणित हुआ।

जैसे-जैसे भाइयों की संख्या बढ़ी, हमारे पूज्य पिता थियोडोसियस को मठ का विस्तार करने की आवश्यकता हुई, क्योंकि नए सेल बनाने की आवश्यकता थी। भाइयों के साथ मिलकर, पूज्य पिता ने काम शुरू किया और एक बड़ा घेरा बनाना शुरू कर दिया। और इस प्रकार, जब पुरानी दीवार ध्वस्त कर दी गई और मठ अपनी सुरक्षा के बिना रह गया, तो एक अँधेरी रात में लुटेरे मठ में आए और एक-दूसरे से कहने लगे: 'संन्यासियों ने अपने सामान चर्च के कमरों में छिपा रखा है; चलो वहाँ चलते हैं।'

लेकिन जब लुटेरे इस इरादे से चर्च के पास पहुँचे, तो उन्होंने गायन की आवाज़ सुनी। यह सोचकर कि वे शाम की प्रार्थना के लिए इकट्ठा हुए भिक्षु हैं, लुटेरे घने जंगल में भाग गए। वहाँ कुछ देर रुकने के बाद, वे एक बार फिर चर्च के पास पहुँचे। इस बार भी, अंदर से गायन की आवाज़ सुनाई दे रही थी और एक अद्भुत प्रकाश दिखाई दे रहा था, जबकि

चर्च से एक मीठी सुगंध आ रही थी। ऐसा इसलिए था क्योंकि चर्च के अंदर स्वर्गदूत थे , जो ईश्वर की महिमा कर रहे थे। हालाँकि, लुटेरों ने यह मानते हुए कि मठ का समुदाय अब मध्यरात्रि की प्रार्थना कर रहा था, एक बार फिर पीछे हट गए। उन्होंने थोड़ी देर और इंतजार करने का फैसला किया ताकि, जब भिक्षु तितर-बितर हो जाएँ, तो वे चर्च में घुसकर उसमें मौजूद सब कुछ चुरा सकें। इस तरह, वे कई बार चर्च के पास गए, और हर बार उन्होंने स्वर्गदूतों का गायन सुना।

इस बीच, मैटिन्स का समय आ गया, और सेक्सटन, अपनी आदत के अनुसार, घंटी बजाने लगा। घंटी की आवाज़ सुनकर, चोर एक-दूसरे से कहते हुए जंगल में भाग गए: 'अब हम क्या करें? निश्चित रूप से हमने चर्च में कोई भूत-प्रेत देखा होगा। चलो ऐसा करते हैं: जब भिक्षु चर्च में इकट्ठा हों, तो हम उनका रास्ता रोक देंगे और उन सभी को मारकर उनका धन-संपत्ति हड़प लेंगे।"

जब सभी संन्यासी, अपने गुरु, धन्य थियोडोसियस के साथ, सुबह की प्रार्थना के लिए चर्च में इकट्ठा हो गए, तब डकैतों ने चर्च की ओर धावा बोल दिया। वे पहले से ही अपने आपराधिक इरादे से चर्च के पास पहुँच रहे थे, तभी अचानक उन पर एक भयानक चमत्कार हुआ: चर्च, जिसमें भिक्षु अंदर थे, उठने लगा और हवा में इतनी ऊँचाई पर ठहर गया कि चोर तीर भी नहीं पहुँचा सके। यह देखकर वे बहुत डरे, और, बहुत डर और भय से भरकर, घर लौट गए। उस चमत्कार से प्रभावित होकर, लुटेरों ने फिर कभी लूटपाट न करने की कसम खाई; और उनका नेता, अपने तीन साथियों के साथ, परम पूज्य थियोडोसियस के पास गया, पश्चाताप किया, और उनसे अपने सभी अपराधों का स्वीकारोक्ति की। उनकी बात सुनने के बाद, परम पूज्य ने उस ईश्वर की स्तुति की, जिसने न केवल चर्च की संपत्ति बल्कि मठवासी समुदाय के जीवन को भी सुरक्षित रखा था। मठाधीश की जीवन-रक्षक शिक्षाओं के साथ विदा होकर, डाकू चले गए, और ईश्वर तथा उनके संत थियोडोसियस की स्तुति और धन्यवाद करते हुए।

सन्माननीय थियोडोसियस के मठाध्यक्षत्व के दौरान उसी मठ के चर्च में एक समान चमत्कार दूसरी बार हुआ। वास्तव में, यह चर्च स्वर्ग से स्वयं ईश्वर द्वारा संरक्षित था, मानो यह परम पवित्र ईश्वर की माता की रक्षा में हवा में अदृश्य रूप से लटका हो।

ईश्वर-प्रेमी राजकुमार इज़्यास्लाव के एक बोयार को एक रात, आदरणीय थियोडोसियस के मठ से लगभग पंद्रह पोप्रीश्च की दूरी पर, एक खेत में घोड़े पर सवार होकर जाते हुए एक अद्भुत दृश्य दिखाई दिया। अचानक, उसने दूर एक चर्च को बादलों के नीचे हवा में तैरता हुआ देखा। उस बोयार को इस दृश्य से बहुत भय हुआ; फिर भी, वह अपने नौकरों के साथ, यह पता लगाने के लिए कि यह किस प्रकार का चर्च था, तुरंत अपने घोड़े को तेज चलाने लगा। जब वह आदरणीय थियोडोसियस के मठ के पास पहुँचा, तो चर्च उसकी आँखों के सामने ही, जमीन पर उतरने लगा और मठ की दीवारों के भीतर, अपनी सही जगह पर आकर ठहर गया। तब बोयार ने द्वार पर दस्तक दी और मठ में प्रवेश करने पर, उसने अपनी दृष्टि का वर्णन माननीय संन्यासी को सुनाया। उस समय से, बोयार ने माननीय संन्यासी से अक्सर मिलने जाना शुरू कर दिया और उनके दैवीय प्रेरित शब्दों को आनंदपूर्वक सुना। बाद में, इस बोयार ने अपनी अधिकांश संपत्ति मठ के रखरखाव और चर्च की सजावट के लिए समर्पित कर दी, जिसे ईश्वर ने संरक्षित रखा।

जैसा कि निम्नलिखित घटना से पता चलता है, प्रभु ने न केवल चर्च को, बल्कि आदरणीय थियोडोसियस के मठ की संपत्ति को भी चमत्कारिक रूप से संरक्षित किया।

ऐसा हुआ कि कुछ लोगों को पकड़े गए डाकुओं को शहर में न्यायाधीश के पास ले जाना था। सड़क पेचेर्स्क मठ के एक गाँव के पास से गुज़रती थी। जब बँधे हुए डाकुओं को इस गाँव के पास से ले जाया जा रहा था, तो उनमें से एक ने उसकी ओर सिर हिलाकर कहा: 'एक रात हम इस गाँव में आए थे, लोगों को मारने और पूरे मठ को लूटने का इरादा था। हालाँकि, हम सफल नहीं हो सके, क्योंकि जब हम पहुँचे, तो गाँव इतनी ऊँचाई पर स्थित निकला कि उसके पास जाना पूरी तरह से असंभव था।'

इस प्रकार परमप्रदाता ईश्वर ने उस सम्माननीय संन्यासी की प्रार्थनाओं को सुनकर मठ की संपत्ति की रक्षा की, जिसने उन पर अपना विश्वास किया था। थियोडोसियस की आदत थी कि वह रात में प्रार्थना करते हुए मठ के चारों ओर घूमते थे, और अपनी प्रार्थना से, एक मजबूत दीवार की तरह, उन्होंने मठ और उसमें रहने वाले सभी लोगों की रक्षा की।

आदरणीय थियोडोसियस के मठाध्यक्ष रहते हुए, ईश्वर और परमेश्वर की अति पवित्र माता ने न केवल चोरों से मठ की रक्षा की, बल्कि ऊँचे स्थान से इसे सुशोभित करने में भी मदद की। उपरोक्त राजकुमार इज़्यास्लाव के एक बोयार, सुदस्लाव गीएविच—जिनका बपतस्मा का नाम क्लेमेंट था—ने अपने राजकुमार के साथ युद्ध के लिए निकलते

समय निम्नलिखित व्रत लिया: 'यदि ईश्वर मुझे अच्छे स्वास्थ्य के साथ घर सुरक्षित लौटने का वरदान दें, तो मैं पेचेर्स्क मठ में स्थित संत थियोडोसियस के चर्च को सोने के दो ह्रिव्निया ([3407]) दान करूँगा, और मैं परम पवित्र माता ईश्वर की प्रतिमा के लिए एक सुनहरा मुकुट बनवाऊँगा'।

इस लड़ाई में कई लोग मारे गए, लेकिन फिर भी दुश्मन हार गए। बोयार, युद्ध के मैदान से सुरक्षित लौटने के बाद, अपने व्रत को भूल गया।

कुछ दिनों बाद, वह दोपहर को अपने घर में शांति से सो रहा था जब अचानक उसे उसके नाम से पुकारती एक भयानक आवाज़ ने जगा दिया:

– क्लेमेंट!

जागने पर, उसने अपने सामने परम पवित्र ईश्वर माता की एक प्रतिमा देखी, जिसे आदरणीय थियोडोसियस के मठ में रखा गया था, और उससे एक आवाज़ सुनाई दी:

'क्लेमेंट, तुमने मुझसे किया अपना वादा क्यों नहीं निभाया? मैं तुम्हें अब याद दिला रही हूँ; अपना वादा पूरा करने की पूरी कोशिश करो।'

जैसे ही आवाज़ ने ये शब्द कहे, आइकन तुरंत ही बोयार की दृष्टि से ओझल हो गया। बोयार इस दृश्य से बहुत डरा हुआ था और उसने अपना वादा किया हुआ सोने की मात्रा तैयार कर ली; उसने परम पवित्र माता ईश्वर की आइकन को सजाने के लिए एक सुनहरा मुकुट भी बनवाया, और तुरंत मठ जाकर यह सब सम्माननीय थियोडोसियस को दे दिया।

कुछ समय बाद, बोयार ने उसी मठ को एक सुसमाचार दान करने की इच्छा व्यक्त की। इस इरादे से, वह सम्माननीय के पास आया, और उसने दान के लिए तैयार पवित्र सुसमाचार को अपने कपड़ों के नीचे छिपा रखा था। प्रार्थना करने के बाद, वे बैठने ही वाले थे, लेकिन चूँकि बोयार ने अभी तक सुसमाचार नहीं निकाला था, सम्माननीय ने कहा:

'भाई क्लेमेंट, पहले वह पवित्र सुसमाचार निकालो जो तुमने परम पवित्र ईश्वर माता को देने का वादा किया था, जिसे तुम अपने कपड़ों के नीचे छिपाए हुए हो, और फिर हम बैठेंगे।'

यह सुनकर, बोयार रेवरेंड की सूझबूझ से स्तब्ध रह गया, क्योंकि वह इस बात पर आश्वस्त था कि उसने जो सुसमाचार लाया था, उसके बारे में किसी को कुछ भी पता नहीं था। तुरंत, बोयार ने अपने कपड़ों के नीचे से पवित्र सुसमाचार निकालकर उसे रेवरेंड फादर को सौंप दिया। इसके बाद, वे बैठ गए, और बोयार, थियोडोसियस के साथ एक आध्यात्मिक बातचीत का आनंद लेने के बाद, घर लौट गया।

प्रभु ने अपने कई चमत्कारों के माध्यम से यह साबित कर दिया कि रेवरेंड थियोडोसियस की ईश्वर में आशा और विश्वास व्यर्थ नहीं थे। कीव केव्स मठ को दिव्य सहायता विशेष रूप से तब मिलती थी, जब भी मठ को किसी चीज़ की आवश्यकता होती थी। अपनी कोठरी में, आदरणीय संत हिलारियन नामक एक भिक्षु के साथ रहते थे; आमतौर पर, संत थियोडोसियस ऊन कातने या कोई अन्य काम करते समय चुपचाप भजन-संग्रह के श्लोकों का पाठ करते थे, जबकि हिलारियन दिन-रात किताबें लिखते थे। यही भिक्षु था जिसने बाद में निम्नलिखित घटना का वर्णन किया।

एक शाम, जब वे दोनों अपने-अपने काम में व्यस्त थे, तब व्यवस्थापक, जिसका नाम अनास्तासियस था, सेल में आया और रेवरेंड से कहा:

'कल हमारे पास भाइयों के लिए राशन खरीदने के लिए कुछ भी नहीं होगा, और मठ की अन्य ज़रूरतों को पूरा करने के लिए हमारे पास पैसे भी नहीं हैं।'

जिस पर पूजनीय फादर ने उत्तर दिया:

'जैसा कि आप देख सकते हैं, अब शाम हो गई है, और कल अभी बहुत दूर है। इसलिए, जाओ और धैर्य से प्रतीक्षा करो। ईश्वर से प्रार्थना करो: वह हमारी जरूरतों को पूरा करेगा और हम पर दया करेगा, यदि उसकी इच्छा हो।'

यह सुनकर, व्यवस्थापक चला गया। हालाँकि, पूजनीय पिता तुरंत उठे और हमेशा की तरह अपने नियम का पाठ करने के लिए अपनी भीतरी कोठरी में चले गए। अपनी प्रार्थना के बाद लौटकर, वे बैठ गए और अपना काम जारी रखा। व्यवस्थापक फिर से कोठरी में आया और उसी विषय पर बात करने लगा। तब पूजनीय पिता ने उससे कहा:

[3407] ह्रिव्निया (संस्कृत शब्द ग्रिवा से, जिसका अर्थ है 'गर्दन') सख्त रूप से कहें तो एक हार या माला है, जो आमतौर पर सोने की बनी होती है और आभूषण के रूप में गर्दन के चारों ओर पहनी जाती है। गले में ह्रिव्निया पहनने की प्रथा रस में तातारों से अपनाई गई थी। बाद में, 'ह्रिव्निया' शब्द का प्रयोग एक विशिष्ट वजन (72 से 96 ज़ोलोटनी तक) के सोने के बिस्किट के लिए होने लगा, जो एक सिक्के के रूप में चलन में था।

'क्या मैंने तुम्हें ईश्वर से प्रार्थना करने के लिए नहीं कहा था? कल शहर जाओ और भाइयों के लिए व्यापारियों से आवश्यक चीजें उधार लो; और फिर, जब ईश्वर हमारी मदद करेंगे, तो हम कर्ज़ चुका देंगे। यीशु मसीह ने सचमुच कहा है: *"कल की चिंता मत करो"* (मत्ती 6:34): ईश्वर अपनी कृपा से हमें नहीं छोड़ेंगे।'

सेवक के जाते ही एक युवक, जो प्रकाश से दमक रहा था और सैन्य पोशाक पहने हुए था, कोठरी में प्रवेश किया। झुककर, उसने रेवरेंड फादर के बगल में मेज पर एक सोने का ह्रविनिया रखा और बिना एक शब्द कहे बाहर चला गया। फिर रेवरेंड फादर उठे, सोना लिया, और कृतज्ञता के आँसुओं के साथ ईश्वर से प्रार्थना की।

अगली सुबह, माननीय फादर ने द्वारपाल को बुलाया और पूछा कि क्या पिछली रात के दौरान कोई मठ में आया था। द्वारपाल ने जवाब दिया:

'नहीं, जैसे ही सूरज डूबा, मैंने तुरंत दरवाज़े बंद कर दिए और तब से नहीं खोले हैं, क्योंकि कोई भी मठ में नहीं आया।'

तब रेवरेंड फादर ने बर्सर को बुलाया और उसे एक ह्रविनिया सोना देते हुए कहा:

'भाई अनास्तासियस, आप यह कैसे कह सकते हैं कि हमारे पास भाइयों के लिए आवश्यक चीजें खरीदने के लिए पैसे नहीं हैं? लो, यह सोना लो और जाओ और ज़रूरत की चीज़ें खरीद लाओ।'

प्रबंधक ने यह समझते हुए कि यह ईश्वर की कृपा से भेजा गया था, संत के चरणों में क्षमा याचना करते हुए झुक गया। और पूज्यनीय ने इस अवसर पर उसे निम्नलिखित उपदेश दिया:

'भाई, कभी भी निराशा में मत पड़ो, बल्कि हमेशा ईश्वर में विश्वास से मजबूत रहो, और हर दुख में प्रभु की सहायता में अपनी आशा रखो, क्योंकि यदि उनकी इच्छा होगी तो वह हमारी व्यवस्था करेंगे। इसलिए, भाइयों के लिए एक उत्सव का भोजन तैयार करो, क्योंकि यह ईश्वर की ओर से एक आशीर्वाद है। जब हमें आवश्यकता होगी, तो ईश्वर हमारी व्यवस्था करेंगे, जैसे उन्होंने आज किया है।'

इसी तरह, थियोडोर नामक एक तहखानेदार एक बार रेवरेंड फादर के पास आया और कहा:

'मेरे पास ऐसा कुछ भी खाने योग्य नहीं है जिसे मैं भाइयों के भोजन के लिए अर्पित कर सकूँ।'

रेवरेंड फादर ने, ठीक उसी अवसर की तरह, उत्तर दिया:

'जाओ, थोड़ी देर के लिए धैर्य रखो और ईश्वर से प्रार्थना करो; वह हमारे लिए प्रबंध करेगा; और यदि हम उसकी दया के योग्य नहीं हैं, तो रात के खाने में शहद के साथ उबला हुआ गेहूं परोस दो। लेकिन हमें यह आशा करनी चाहिए कि प्रभु, जिसने जंगल में अवज्ञाकारी लोगों के लिए रोटी भेजी (निर्गमन 16:15), वह हमारे लिए भी भोजन का प्रबंध कर सकता है।'

यह सुनकर, कोषाध्यक्ष पीछे हट गया, और रेवरेंड फादर ने ईश्वर से मन लगाकर प्रार्थना करना शुरू कर दिया। और इस प्रकार, ईश्वर की एक गुप्त प्रेरणा से, राजकुमार इज़्यास्लाव के मुख्य प्रबंधक, जिसका नाम जॉन था, ने माननीय को मठ के लिए तीन पूरी तरह से लदे हुए ठेले भेजे, जिनमें राशन था: रोटी, मछली, सब्जियां, बाजरा और शहद। यह सब प्राप्त करने पर, माननीय ने ईश्वर की स्तुति की, और प्रबंधक से कहा:

'देखो, भाई थियोडोर, ईश्वर हमें नहीं छोड़ेंगे, बशर्ते हम अपना सारा भरोसा उन पर रखें। इसलिए जाओ और भाइयों के लिए एक दावत तैयार करो, क्योंकि यह ईश्वर की ओर से एक आशीर्वाद है।'

इस प्रकार आदरणीय पिता भोजन के दौरान भाइयों के साथ आध्यात्मिक रूप से आनंदित हुए और परमेश्वर का धन्यवाद किया, क्योंकि *"जो उसकी भक्ति करते हैं, उनकी कोई कमी नहीं होती"* (भजन संहिता 33:10)। परमेश्वर अक्सर आदरणीय पिता की प्रार्थनाओं के द्वारा कीव गुफाओं के मठ में ऐसे चमत्कार करते थे।

एक अवसर पर, एक पुरोहित शहर से परम पावन पिता के पास आया और दिव्य लिटिर्जी के समारोह के लिए कुछ शराब उधार मांगी। तुरंत, संत थियोडोसियस ने चर्च के व्यवस्थापक को बुलाया और उसे उस बर्तन को शराब से भरने का आदेश दिया जो पादरी लाया था। व्यवस्थापक ने जवाब दिया कि उनके पास खुद इतनी कम शराब थी कि वह मुश्किल से तीन या चार लिटिर्जी करने के लिए ही काफी होगी। मान्यवर पिता ने जवाब दिया:

'इस आदमी के पात्र में सारी शराब डाल दो; ईश्वर स्वयं हमारी देखभाल करेंगे।'

चर्च के रखवाले ने, एक तरफ हटकर और संत के आदेश की अवज्ञा करते हुए, पुजारी के पात्र में थोड़ी सी शराब डाली, जबकि बाकी को अगले दिन की दिव्य प्रार्थना के लिए अपने पास रख लिया। फिर पुजारी गए और रेवरेंड फादर को दिखाया कि चर्च के रखवाले ने उन्हें कितनी कम शराब दी थी। रेवरेंड फादर ने एक बार फिर से चर्च के रखवाले को बुलाया और उससे कहा:

'क्या मैंने तुम्हें यह नहीं कहा था कि सारी शराब दे दो, और कल की चिंता मत करो? प्रभु अपनी माता के चर्च को कल बिना सेवा के नहीं रहने देंगे; वह आज ही भरपूर शराब भेजेंगे।'

तब चर्च के व्यवस्थापक ने पुरोहित को उसकी सारी शराब दे दी और उसे विदा कर दिया। इस बीच, रात के खाने के बाद, शाम के समय, ठीक वैसे ही जैसे मान्यवर फादर ने भविष्यवाणी की थी, शराब के बैरल से लदे तीन ठेले पहुँचाए गए। ये ईश्वर-प्रेमी राजकुमार वसेवोल्द की एक दासी ने मठ को उपहार स्वरूप भेजे थे। यह देखकर कि जो हुआ था, चर्च के व्यवस्थापक ने ईश्वर की स्तुति की, और आदरणीय थियोडोसियस द्वारा की गई भविष्यवाणी के पूरा होने पर आश्चर्य व्यक्त किया, जिन्होंने कहा था कि ईश्वर उसी दिन मठ में शराब की प्रचुरता भेजेंगे।

उसी गिरिजाघर के व्यवस्थापक ने एक और समान चमत्कार भी देखा, जो पूजनीय की प्रार्थनाओं से हुआ। यह इस प्रकार हुआ।

जब परमेश्वर की अति पवित्र माता के स्वर्गारोहण के पर्व पर, चर्च की बत्तियाँ जलाने के लिए तेल नहीं बचा, तो चर्च के व्यवस्थापक ने बीजों से कुछ तेल बनाने और सेवा के दौरान लकड़ी के दीपक के तेल के स्थान पर इस तेल का उपयोग करने का निर्णय लिया। चर्च के रखवाले ने ऐसा करने की अनुमति के लिए माननीय थियोडोसियस से पूछा, और चूंकि माननीय ने कोई आपत्ति नहीं जताई, रखवाले ने अपनी योजना के अनुसार काम किया। लेकिन जैसे ही वह तैयार किए गए तेल को दीयों में डालने वाला था, उसने तेल वाले पात्र में एक मरा हुआ चूहा तैरता हुआ देखा। तब रखवाला माननीय के पास दौड़ गया और कहा:

'मैंने अपने द्वारा तैयार किए गए तेल वाले पात्र को अच्छी तरह से ढक दिया था, और मुझे नहीं पता कि चूहा उसमें कैसे आ गया।'

रेवरेंड ने यह समझते हुए कि यह ईश्वर की इच्छा से हुआ था, प्रबंधक से कहा:

'हमें ईश्वर पर भरोसा करना चाहिए था कि वह हमारी सभी ज़रूरतों को पूरा करेंगे, और प्रभु की सर्वशक्तिमानता में आस्था के बिना काम करना गलत था: जाओ और तेल को ज़मीन पर डाल दो। आइए हम थोड़ी देर प्रतीक्षा करें और ईश्वर से प्रार्थना करें; वह आज हमें लकड़ी के तेल की प्रचुरता देंगे।'

प्रबंधक ने जैसा उससे कहा गया था वैसा ही किया, जबकि पादरी प्रार्थना करने लगे। शाम तक, एक अमीर आदमी वास्तव में मठ के लिए उपहार के रूप में लकड़ी के तेल का एक बहुत बड़ा बैरल ले आया। पुरोहित ने उस ईश्वर की स्तुति की, जिन्होंने उनकी प्रार्थना को इतनी जल्दी सुन लिया था। प्राप्त तेल से न केवल सभी दीपक भर गए, बल्कि आधा से अधिक तेल बच भी गया। इस प्रकार, भाइयों ने परमेश्वर की परम पवित्र माता के स्वर्गारोहण के गौरवशाली पर्व का उचित वैभव के साथ उत्सव मनाया।

यहाँ ऐसे ही एक और चमत्कार का वर्णन है, जिसके माध्यम से प्रभु ने आदरणीय थियोडोसियस की प्रार्थनाओं के उत्तर में मठ की तत्काल आवश्यकताओं को पूरा किया। मसीह-प्रेमी राजकुमार इज़्यास्लाव, जो आदरणीय थियोडोसियस के प्रति सच्चा ईसाई प्रेम रखते थे, अक्सर उनसे मिलने आते थे और उनके सुखद संभाषण में आनंदित होते थे। ऐसी ही एक यात्रा पर, वह संध्या की प्रार्थना तक उनसे बिना देखे बातें करता रहा; फिर राजकुमार पूजनीय के साथ चर्च गया। ईश्वर की व्यवस्था से, ठीक उसी क्षण अचानक तेज बारिश होने लगी। यह देखकर, पूजनीय ने व्यवस्थापक को बुलाया और राजकुमार के लिए भोजन तैयार करने का आदेश दिया।

'फादर,' नौकर ने कहा, 'हमारे पास राजकुमार और उनके साथियों के लिए मेहमाननवाज़ी करने हेतु बिल्कुल भी शहद नहीं है।'

तब पादरी ने पूछा:

'निश्चित रूप से आपके पास कम से कम थोड़ा तो होगा ही?'

'हाँ, फादर, बिल्कुल भी नहीं,' नौकर ने जवाब दिया, 'मैंने तो उस खाली बर्तन को भी पलट दिया है जिसमें पेय रखा जाता था, और उसे उल्टा रख दिया है।'

लेकिन रेवरेंड थियोडोसियस, जो अनुग्रह के वरदानों से परिपूर्ण थे, जैसा कि उनके नाम [3408] से ही स्पष्ट है, ने कहा:

[3408] ग्रीक से अनुवादित नाम थियोडोसियस का अर्थ है 'ईश्वर द्वारा दिया गया'; रूपक अर्थ में: 'ईश्वर के वरदानों से संपन्न'।

'तथास्तु। तथापि, मेरी आज्ञा के अनुसार और हमारे परम प्रिय प्रभु यीशु मसीह के नाम की शक्ति पर विश्वास करके आगे बढ़ो; तुम्हें उस पात्र में शहद मिलेगा।'

सेवक प्रभु की सर्वशक्तिमानता पर भरोसा करके चल पड़ा, और उसने देखा कि जैसे ही आदरणीय पिता ने भविष्यवाणी की थी, वह पीपा अपनी जगह पर शहद से भरा हुआ खड़ा था। विस्मित होकर, सेवक ने आदरणीय पिता को यह बताने के लिए जल्दी से दौड़ लगाई कि क्या हुआ था।

'चुप रहो,' पादरी ने उससे कहा, 'और इस बारे में किसी को मत बताना। जाओ और वह शहद राजकुमार और उसके साथियों को परोस दो; उन्हें जितना चाहें उतना खाने दो। भाइयों को भी यह शहद खिलाओ: क्योंकि आखिरकार, यह ईश्वर का आशीर्वाद है।'

कुछ देर बाद, बारिश रुक गई और राजकुमार घर के लिए रवाना हो गया। जहाँ तक मठ की बात है, वहाँ अभी भी इतना सारा शहद बचा था कि वह संतों के लिए लंबे समय तक चल सकता था।

एक अन्य अवसर पर, मुख्य बेकर महंत के पास आए और कहा कि मिठ में रोटी बनाने के लिए आटा खत्म हो गया है।

'जाओ और अनाज के गोदाम में देखो,' रेवरेंड फादर ने उत्तर दिया, 'शायद तुम्हें वहाँ थोड़ी सी आटा मिल जाएगी, और यह हमारे लिए तब तक पर्याप्त होगी जब तक प्रभु हमें फिर से प्रदान नहीं करते।'

तब बेकर ने रेवरेंड से कहा:

'मैं आपको सच बता रहा हूँ, फादर: मैंने खुद अनाजघर की तलाशी ली है, लेकिन वहाँ कोने में बचे हुए तीन-चार मुट्ठी चोकर के अलावा कुछ भी नहीं है।'

तब पादरी ने उससे कहा:

'मेरे कहने पर विश्वास करो, मेरे बेटे, कि परमेश्वर इस बचे हुए चोकर को भी आटे में बदल सकते हैं और हमारे अनाज के घर को इससे भर सकते हैं, जैसे कि एलियाह के समय में उन्होंने एक मुट्ठी से इतना सारा आटा बनाया था कि अकाल के दौरान विधवा और उसके बच्चों का उसी से पेट भरता रहा जब तक कि फसल ने सभी के लिए रोटी की भरमार नहीं कर दी (1 राजा 17:8–16)। और अब परमेश्वर उतने ही शक्तिशाली हैं, जो हमारी कमी को प्रचुरता में बदल सकते हैं। इसलिए जाओ और देखो कि क्या प्रभु उसी स्थान को भी अपनी दया से आशीष नहीं देंगे जहाँ हम अपना आटा रखते हैं।"

ये वचन सुनकर, रसोइया विदा हो गया। अनाजघर में प्रवेश करने पर, उसने देखा कि वह गोदाम, जो पहले खाली था, अब पूजनीय थियोडोसियस की प्रार्थनाओं के द्वारा इतना भर गया था कि आटा उसकी दीवारों के किनारों से जमीन पर गिर रहा था। भिक्षु इस शानदार चमत्कार को देखकर चकित रह गया; लौटने पर, उसने सब कुछ पूजनीय व्यक्ति को सुनाया।

'जाओ, भाई,' पूजनीय पिताजी ने उससे कहा, 'और जो हुआ है उसे किसी को मत बताना; अपनी रोटी हमेशा की तरह बनाओ। ईश्वर ने हमें यह आशीर्वाद हमारे पवित्र भाइयों की प्रार्थनाओं के माध्यम से भेजा है।'

इतनी बड़ी कृपाओं के लिए ईश्वर की स्तुति और धन्यवाद करते हुए, हमारे पूजनीय पिता थियोडोसियस हर रात प्रार्थना में बिताते थे: आँसू बहाते और घुटनों के बल झुककर, वे ईश्वर को उनकी महान कृपाओं के लिए धन्यवाद देते थे। मठ के भाई, जो सेवा शुरू होने से पहले प्रतिदिन भोर की प्रार्थना से पूर्व आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए आदरणीय पिता के पास आते थे, वे हमेशा दरवाज़े के पीछे से सुनते थे कि कैसे मठाध्यक्ष, आँसुओं से पूरी तरह अभिभूत होकर, प्रार्थना कर रहे थे और अक्सर अपना सिर ज़मीन पर टिका रहे थे। हालाँकि, अपने पैरों की आहट सुनते ही, आदरणीय पिताजी चुप हो जाते और सोने का नाटक करते, इसलिए भाइयों को कभी-कभी दरवाज़ा तीन बार खटखटाना पड़ता, और हर बार कहते: 'हमें आशीर्वाद दीजिए, पिताजी!'

तब रेवरेंड फादर, यह दिखावा करते हुए कि वे अभी-अभी जागे हैं, उत्तर देते:

'भगवान आपका भला करे!'

और, अपना आशीर्वाद देने के बाद, वे चर्च में प्रवेश करने वाले पहले व्यक्ति होते थे। कहा जाता था कि वे ऐसा हर रात करते थे।

इन कारनामों के अलावा, रेवरेंड फादर ने अपने मठाधीश के कार्यकाल के दौरान कई अन्य कार्यों को भी समर्पित किया। वे कभी बिस्तर पर आराम करते हुए नहीं देखे गए, और जब शारीरिक कमजोरी के कारण उन्हें दिन की प्रार्थनाओं

के बाद आराम करने की आवश्यकता होती थी, तो वे केवल थोड़ी देर के लिए और वह भी बैठे-बैठे ही सो जाते थे; फिर वह जल्द ही जाग जाता और पूरी रात की प्रार्थना सभा में चला जाता, जहाँ वह अक्सर घुटनों के बल प्रार्थना करता था। न ही वह कभी आनंद के लिए अपना शरीर धोते हुए देखा गया; वह केवल पानी से अपने हाथ और चेहरे ही धोता था। और जब मठ के नियमों में भाइयों के लिए शुष्क उपवास निर्धारित किया गया, तो वह भी सूखी रोटी और तेल में पकाया हुआ सूप खाता और केवल पानी पीता था। इतना ही नहीं, वह कभी भी मेज पर उदास बैठे नहीं देखा गया: उसका चेहरा हमेशा प्रसन्न रहता था, क्योंकि उसका हृदय भोजन से नहीं, बल्कि ईश्वर की कृपा से मजबूत था।

हर साल, महा-उपवास के दौरान, आदरणीय संत एक गुफा में चले जाते थे (जहाँ बाद में उनके पवित्र शरीर को दफनाया गया था) और पाम संडे के आगमन तक वहाँ खुद को बंद कर लेते थे; पाम संडे से पहले वाले शुक्रवार को, संध्या-प्रार्थना के समय, वे अपने भाइयों के पास लौट आते थे। भाईयों को लगता था कि वह उनके जाने-पहचाने गुफा में एकांत में रहता था, लेकिन वास्तव में, रात में, सभी से गुप्त रूप से, वह मठ के एक गाँव में जाता था और वहाँ, एक छिपे हुए स्थान पर स्थित दूसरी गुफा में, वह अकेला रहता था, ताकि ईश्वर के अलावा कोई भी उसके वास्तविक ठिकाने के बारे में न जान सके। वहाँ से, महा-उपवास के छठे सप्ताह के शुक्रवार से एक रात पहले, वह फिर से पहली गुफा में जाता था, जहाँ से वह शुक्रवार को भाइयों के पास लौट आता था, ताकि सभी यही सोचें कि उसने पूरा उपवास उनके जाने-पहचाने गुफा में ही बिताया था।

उस समय, दुष्ट आत्माओं ने गुफा में रहने वाले आदरणीय व्यक्ति के मन में बहुत दुख और व्यर्थ विचार डाले; कभी-कभी तो उन्होंने उस पर घाव भी किए। लेकिन ईश्वर ने उन्हें उन पर काबू पाने के लिए एक अदृश्य शक्ति प्रदान की, और आत्माएं किसी भी तरह से उस धन्य व्यक्ति को गुफा छोड़ने के लिए मजबूर नहीं कर सकीं। वे आदरणीय व्यक्ति अंधेरी गुफा में अकेले रहे और अंधकार के राजकुमार की सेनाओं की भीड़ से नहीं डरे। लेकिन उन्होंने स्वयं, मसीह के एक बहादुर सैनिक के रूप में, प्रार्थना और उपवास के द्वारा दुष्ट आत्माओं को अपने से दूर भगा दिया, ताकि वे बाद में उनकी ओर बढ़ने की हिम्मत न करें और केवल दूर से ही भूतिया रूपों में उन्हें दिखाई दें।

एक बार, गुफा में संध्या की प्रार्थना के बाद, थियोडोसियस थोड़ा आराम करने की इच्छा से बैठ गए। अचानक, एक भयानक चीख गूँजी। ऐसा लगा मानो गुफा में राक्षसों की भीड़ इकट्ठा हो गई हो: कुछ रथों पर सवार थे, कुछ ढोल बजा रहे थे, और कुछ बांसुरी बजा रहे थे। उस शोर और आवाज़ों से पूरी गुफा काँप उठी। यह सब सुनकर, पूजनीय फादर न तो डरे और न ही भयभीत हुए; बल्कि, उन्होंने क्रॉस का चिह्न बनाकर जैसे किसी हथियार से अपनी रक्षा की, खड़े हो गए और भजन-संग्रह से छंद गाने लगे। भूकंप और शोर तुरंत थम गए। लेकिन जब, उनकी प्रार्थना के बाद, वे फिर से आराम करने के लिए बैठ गए, तो पहले जैसा शोर और अनगिनत राक्षसों की आवाज़ें एक बार फिर सुनाई दीं। रेवरेंड फादर खड़े हो गए और फिर से गाने लगे, और एक बार फिर शोर थम गया। कई दिनों और रातों तक दुष्ट आत्माओं ने उन्हें परेशान किया, और उन्हें एक पल के लिए भी सोने नहीं दिया। यह तब तक चलता रहा जब तक कि ईश्वर की कृपा की मदद से, रेवरेंड फादर ने अंततः उन्हें हरा नहीं दिया और उन पर इतनी शक्ति प्राप्त नहीं कर ली कि वे अब उस स्थान के पास आने की हिम्मत भी नहीं करते थे जहाँ वह प्रार्थना में खड़े होते थे। राक्षस स्वयं उनसे भागने लगे, जैसा कि नीचे उद्धृत कई उदाहरणों से प्रमाणित होता है।

जिस कमरे में भाइयों के लिए रोटी पकाई जाती थी, उसमें राक्षसों ने अपनी योजनाओं से भाइयों को अंतहीन परेशानी दी: वे आटा बिखेर देते, रोटी के लिए तैयार खमीर गिरा देते, और भाइयों को कई अन्य परेशानियाँ पैदा करते। एक अवसर पर, मुख्य बेकर ने पूजनीय थियोडोसियस को राक्षसों की शरारतों के बारे में बताया। तब पूजनीय थियोडोसियस उस कमरे में गए, अपने पीछे दरवाज़े बंद कर लिए, और मैटिन्स तक वहाँ रहे, और इस पूरे समय ईश्वर से प्रार्थना करते रहे। उस क्षण से, राक्षस उस स्थान को हमेशा के लिए शांति से छोड़ गए और वहाँ फिर कभी कोई नुकसान नहीं पहुँचाया।

एक अन्य अवसर पर, मठ के गाँव का एक भाई रेवरेंड के पास आया और उन्हें बताया कि पशुओं के तबेले में, जहाँ पशुओं को रखा जाता था, राक्षस दिखाई दिए हैं, और वे जानवरों को खाने से रोककर बहुत नुकसान पहुँचा रहे थे। पादरी ने कई मौकों पर प्रार्थनाएँ पढ़ीं और तबेले में पवित्र जल छिड़का, लेकिन किसी भी चीज़ से मदद नहीं मिली। तब पूजनीय फादर, प्रार्थना और उपवास के द्वारा स्वयं को मजबूत करके, उस गाँव के लिए रवाना हो गए। शाम होते ही, वे खलिहान में गए, अपने पीछे दरवाज़े बंद कर लिए, और सुबह तक प्रार्थना में वहीं रहे। उस क्षण से, दुष्टात्माएँ उस स्थान पर फिर कभी नहीं दिखाई दीं और उस गाँव में किसी को भी कोई नुकसान नहीं पहुँचा सकीं।

रेवरेंड फादर ने न केवल खुद दैवीय शक्ति पर काबू पाया, बल्कि दूसरों को भी यह सिखाया कि वे खुद को भूत-प्रेत से कैसे मुक्त करें। अगर उन्हें पता चलता कि भाईचारे का कोई सदस्य भूत-प्रेत के कब्जे में है, तो वह उस भाई को उस जगह को न छोड़ने, बल्कि प्रार्थना और उपवास के माध्यम से खुद को सुरक्षित रखने और भूतों पर विजय के लिए ईश्वर को पुकारने की सलाह देते थे।

रेवरेंड ने भाइयों को शैतान की चालाकियों के बारे में इस प्रकार निर्देश दिया:

'शुरुआत में, मेरे साथ भी ऐसी ही घटनाएँ हुईं। एक रात, जब मैं अपनी कोठरी में सामान्य भजन गा रहा था, तो अचानक मेरे सामने एक काला कुत्ता प्रकट हुआ, और इतना करीब कि मैं प्रणाम नहीं कर सका। वह वहाँ काफी देर तक खड़ा रहा, और जैसे ही मैं उस पर वार करने वाला था, वह अचानक गायब हो गया। उस क्षण मुझे इतना भय और कांपन हुआ कि यदि प्रभु ने मेरी सहायता न की होती तो मैं उस स्थान से भाग गया होता। अपने भय से कुछ हद तक उबरने के बाद, मैंने पूरी लगन से प्रार्थना करना और बार-बार प्रणाम करना शुरू कर दिया। तब से, मैंने दैवीय प्रलोभनों से डरना पूरी तरह से छोड़ दिया है, भले ही राक्षस मेरी आँखों के सामने आ जाएँ।

भाइयों में से एक – हिलारियन (जिनका ऊपर उल्लेख किया गया है) – ने निम्नलिखित सुनाया:

'दैत्यों ने मेरी कोठरी में मुझे बहुत नुकसान पहुँचाया। उदाहरण के लिए, जब मैं रात को सोने के लिए लेटता, तो दैत्यों का एक समूह अचानक प्रकट हो जाता; वे मुझे मेरे बालों से पकड़कर और अपने पैरों से कुचलकर, मुझे जमीन पर घसीटते; जबकि दूसरे दैत्य, एक दीवार उठाकर, कहते: "आओ, हम उसे यहाँ खींचकर लाएँ और दीवार से कुचल दें।" वे हर रात मेरे साथ ऐसा करते थे, और मैं, अब और सहन न कर पाने के कारण, वहाँ से दूसरी कोठरी में जाने के इरादे से रेवरेंड थियोडोसियस के पास जाकर सब कुछ बता दिया। लेकिन रेवरेंड ने मुझसे कहा:

'नहीं, भाई, मत जाना, कहीं ऐसा न हो कि राक्षस तुम्हारे ऊपर विजय का ढिंढोरा पीटें और कहें कि तुम उनसे भाग गए। यदि आप चले गए, तो राक्षस उस क्षण से आपको और भी अधिक नुकसान पहुँचाएंगे, क्योंकि उन्हें आप पर शक्ति मिल जाएगी। अपनी कोठरी में मन लगाकर प्रार्थना करें, और ईश्वर, आपका धैर्य देखकर, आपको उन पर विजय प्राप्त करने में मदद करेंगे ताकि वे आपके पास आने की हिम्मत भी न करें।

तब मैंने पादरी से एक बार फिर कहा:

'मैं आपसे विनती करता हूँ, फादर, मुझे किसी दूसरी कोठरी में जाने दें; मुझमें अब पुरानी कोठरी में रहने की ताकत नहीं बची, क्योंकि वहाँ बहुत सारे राक्षस रहते हैं।'

तब रेवरेंड फादर ने मुझ पर क्रॉस का चिन्ह बनाते हुए कहा:

'जाओ, भाई, अपनी कोठरी में। अब से, दुष्ट राक्षस तुम्हें कोई नुकसान पहुँचाने की हिम्मत नहीं करेंगे।'

मैंने संत थियोडोसियस के शब्दों को श्रद्धापूर्वक सुना और, रेवरेंड फादर को प्रणाम करके, बाहर चला गया। उस समय से, अभिमानी राक्षसों ने मेरे सेल के पास आने की हिम्मत नहीं की, क्योंकि उन्हें रेवरेंड फादर थियोडोसियस की प्रार्थनाओं द्वारा हमेशा के लिए भगा दिया गया था।

जिस प्रकार पूजनीय थियोडोसियस अदृश्य शत्रुओं के खिलाफ अपने संघर्ष में दृढ़ थे, उसी प्रकार वे प्रभु मसीह के दृश्य शत्रुओं के खिलाफ अपने संघर्ष में भी साहसी थे। उनकी एक आदत थी: अक्सर, रात में किसी को बताए बिना उठकर, वे यहूदियों के पास जाते और वहाँ साहसपूर्वक मसीह के बारे में उनके साथ बहस करते थे। उन्होंने उन्हें डांटा और उनकी निंदा की, उन्हें कानून के उल्लंघनकर्ता और देव-हत्यारे कहकर संबोधित किया। मसीह के एक सच्चे अनुयायी के रूप में, वह उत्सुकता से उनके हाथों मृत्यु भोगने की इच्छा रखते थे, जिनके हाथों हमारे प्रभु यीशु मसीह स्वयं ने मृत्यु भोगी थी, और वह उनके नाम का प्रचार करना चाहते थे।

निम्नलिखित घटना इस बात की पुष्टि करती है कि मसीह के नाम का यह साहसी स्वीकारकर्ता सचमुच सत्य के लिए दुख सहने की इच्छा रखता था।

अपने समय के महाधर्माध्यक्ष के रूप में, अदृश्य शत्रु, अंधकार के राजकुमार ने तीन रूसी राजकुमारों के बीच कलह भड़काई। रक्त से दो भाई—चेर्निगोव के राजकुमार स्वियातोस्लाव और पेरियास्लाव के वसेवोल्द—ने अपने बड़े भाई, क्यिव के मसीह-प्रेमी राजकुमार इज़्यास्लाव के खिलाफ एक अन्यायपूर्ण युद्ध छेड़ा, और उन्हें राजधानी क्यिव से बाहर निकाल दिया[3409] । कीव में अपना स्थान लेने के बाद, उन्होंने आदरणीय थियोडोसियस को बुलाया और उनसे रात

[3409] स्वियातोस्लाव द्वितीय यारोस्लाविच ने 1073 से 1076 तक और वसेवोल्द प्रथम यारोस्लाविच ने 1078 से 1093 तक कीव पर शासन किया।

के खाने में शामलि होने के लिए कहा। हालाँकि, आदरणीय ने उनके नमिंत्रण का साहस और दृढ़ संकल्प के साथ जवाब दिया:

'मेरे लिए अन्याय से उत्पन्न भोजन में शामलि होना उचति नहीं है, जैसा कि जेजेबेल का भोजन था[3410] ।'

जब वेस्वेलोद पेरयिास्लाव में अपने क्षेत्र में वापस चले गए, और स्वयितोस्लाव ने कीव में इज्यास्लाव की जगह ले ली, तो आदरणीय थयिोडोसयिस ने राजकुमार स्वयितोस्लाव को उनके भाई के सहिासन पर गलत तरीके से बैठने के लिए लगातार फटकारना शुरू कर दिया। सम्माननीय थओिडोसयिस ने उनके पास आए राजदूतों से कहा कि वे राजकुमार को यह बताएं कि वह उनके कार्यों को स्वीकार नहीं करते। एक अवसर पर, उन्होंने उन्हें फटकार का एक लंबा पत्र भेजा, जसिमें उन्होंने अन्य बातों के अलावा लखिा: 'तुम्हारे ही भाई का लहू तुम्हारे वरिुद्ध परमेश्वर के पास पुकार लगा रहा है, जैसे हबलि का लहू काइन के वरिुद्ध पुकार लगा रहा था' (उत्पत्ति 4:10)।

उसे समझाने के लिए, उन्होंने पत्र में कई दुष्ट प्राचीन भातृहत्यारों के नाम याद दलिाए। यह पत्र पढ़कर राजकुमार स्वयितोस्लाव इतना क्रोधति हो गया कि उसने गुस्से में इसे ज़मीन पर फेंक दिया और तब से ही वह सम्माननीय थयिोडोसयिस को मठ में कैद करने का अवसर ढूंढने लगा। मठ के भाइयों ने, राजकुमार के इरादों से गहराई से परेशान होकर, माननीय पति से राजकुमार की नदिा बंद करने का आग्रह कयिा। इसी तरह, कई बोयार (जागीरदार) जो माननीय पति से मलिने आए, उन्होंने राजकुमार के क्रोध के बारे में सूचति करने के बाद उन्हें राजकुमार का वरिोध न करने की सलाह दी।

उन्होंने कहा, 'आखरिकार, राजकुमार तुम्हें कैद करने का इरादा रखता है।'

लेकनि जब आदरणीय ने उन्हें कारावास की बात करते सुना, तो उनकी आत्मा आनंदति हो उठी, और उन्होंने कहा:

'भाइयो, मैं इस बात से बहुत प्रसन्न हूँ! सत्य के लिए नर्विासति होने से अधकि मुझे जीवन में कुछ भी प्रयि नहीं है; इसके लिए मैं नर्विासन में जाने और यहाँ तक कि मृत्यु का सामना करने को भी तैयार हूँ।'

उस समय से, रेवरेंड ने अपने भाई के प्रति राजकुमार के द्वेष के लिए उस पर और भी अधकि फटकार लगाना शुरू कर दिया, मानो इस तरह वे अपनी ही कैद का आदेश दलिाना चाहते हों। अपने गुस्से के बावजूद, राजकुमार ने पादरी को कोई नुकसान पहुँचाने की हम्मित नहीं की, क्योंकि वह उनकी धार्मकिता और पवत्रिता को जानता था, क्योंकि उसने पहले अपने भाई, राजकुमार इज्यास्लाव से ईर्ष्या की थी, कि उसके राज्य में महान थयिोडोसयिस जैसे धार्मकि व्यक्ति थे। कुछ ही समय बाद, पूजनीय थयिोडोसयिस ने यह महसूस कयिा कि उनकी कठोर फटकारों का राजकुमार पर कोई असर नहीं हो रहा था, तो उन्होंने मठ समुदाय और कुलीनों की वनितियों को मानते हुए, राजकुमार की नदिा करना बंद कर दिया, और उस समय से उन्होंने आँसुओं के साथ उसे अपने भाई का राज्य वापस करने के लिए मनाना शुरू कर दिया।

जब, कुछ दनिों बाद, राजकुमार स्वयितोस्लाव को माननीय थयिोडोसयिस के अपनी फटकार बंद करने के इरादे के बारे में पता चला, तो वह बहुत प्रसन्न हुआ और उसने माननीय से यह पूछने के लिए भेजा कि क्या वह उसे मठ आने की अनुमति देंगे। और जब माननीय ने अपनी अनुमति दे दी, तो राजकुमार अपने बोयारों के साथ खुशी-खुशी मठ के लिए रवाना हो गया। रेवरेंड, भाइयों के साथ, चर्च से बाहर आए और उन्होंने राजकुमार का सम्मानपूर्वक स्वागत कयिा, यहाँ तक कि सभी भाइयों ने उनके सामने झुककर प्रणाम कयिा।

राजकुमार ने रेवरेंड फादर से कहा, 'मैं आपके पास आने की हम्मित नहीं कर सका, पतिाजी, यह सोचकर कि अपने गुस्से में, आप मुझे अपने मठ में नहीं आने देंगे।'

जसि पर रेवरेंड फादर ने उत्तर दिया:

'हे प्रभु, आपके अधकिार के सामने हमारा क्रोध क्या मायने रखता है? लेकनि आत्मा के लिए उद्धारकारी बातों पर फटकार लगाना और बोलना हमारा कर्तव्य है, जबकि उसे सुनना आपका कर्तव्य है।'

वे चर्च में गए और प्रार्थना की, और फरि आदरणीय थयिोडोसयिस ने उन्हें पवत्रि धर्मग्रंथों से वस्तिार से उपदेश दिया, और भाईचारे के प्रेम के बारे में बात की, क्योंकि राजकुमार ने अपने भाई पर कई बातों का दोष लगाया था।

[3410] जेज़ेबेल इस्राएली राजा आहाब की पत्नी थी, जो अपनी अत्यधकि दुष्टता और वलिासति के लिए जानी जाती थी। उसके प्रभाव में अंधाधुंध होकर, आहाब ने अपनी सभी पूर्वजों से भी अधकि दुष्टता की और सबसे शर्मनाक मूर्तपिूजा में लप्ति हो गया। उसने सामरयिा में बाअल का एक मंदरि बनवाया, पवत्रि वन लगाए, और यजेबेल को टायर और सीदोन के देवताओं के लिए वेदयिाँ बनाने की अनुमति दी (1 राजा 16:31–33)। यजेबेल चार सौ झूठे नबयिों का भरण-पोषण करती थी, जन्हिें उसकी मेज से भोजन मलिता था (1 राजा 18:19)। स्पष्ट रूप से यही 'भोजन' है जो इस मामले में संत थयिोडोसयिस के मन में है।

एक लंबी और शिक्षाप्रद बातचीत के बाद, राजकुमार घर लौट आया, और उसने ऐसे व्यक्ति से बातचीत करने का अवसर प्रदान करने के लिए ईश्वर का धन्यवाद किया, और उस समय से उसने अपने मठ में अक्सर आना शुरू कर दिया। उसके बाद कई मौकों पर, आदरणीय थियोडोसियस स्वयं इस शक्तिशाली राजकुमार, स्वियातोस्लाव से मिलने गए, और उन्हें ईश्वर के भय और अपने भाई के प्रति प्रेम की याद दिलाई।

ऐसी ही एक मुलाकात पर, आदरणीय महंत राजकुमार के निवास पर संगीतकारों से मिले, जो विभिन्न वाद्ययंत्र बजा रहे थे। सभी प्रसन्न थे। लंबे समय तक, आदरणीय महंत राजकुमार के बगल में चुपचाप बैठे रहे, उनकी दृष्टि झुकी हुई थी; फिर उन्होंने कहा:

'क्या परलोक में भी ऐसा ही होगा?'

आँसुओं से भरकर, राजकुमार रो पड़ा और संगीतकारों को तुरंत बजाना बंद करने का आदेश दिया। और उस समय से, जब भी रेवरेंड को महल में संगीत बजता हुआ मिलता, तो राजकुमार, उस धन्य व्यक्ति के आगमन की खबर पाकर, तुरंत उसे बंद करने का आदेश देता था।

जब राजकुमार को पादरी के आगमन की सूचना मिलती, तो वह अक्सर स्वयं बाहर निकलता, उसका चेहरा आनंद से खिल उठा होता, और महल के द्वार पर उनसे मिलता। आनंद से भरकर, राजकुमार आए हुए पादरी से कहता:

'पिताजी, मैं सचमुच आपसे कहता हूँ—यदि मुझे बताया जाता कि मेरे अपने पिता मृतकों में से जी उठे हैं, तो मैं आपकी آمد पर जितना प्रसन्न हूँ, उतना प्रसन्न नहीं होता; फिर भी, साथ ही, मैं उनसे उतना भयभीत नहीं होता, जितना मैं आपकी पवित्र आत्मा से भयभीत हूँ।'

'यदि बात वैसी ही है जैसी आप कह रहे हैं,' पादरी ने उत्तर दिया, 'तो मेरी एक विनती मानिए: अपने धर्मपरायण पिता द्वारा अपने भाई को प्रदान किया गया सिंहासन उसे वापस कर दें।'

यह सुनकर राजकुमार चुप हो गया, वह संत से क्या कहे, यह नहीं जानता था; दुश्मन ने उसे इतनी ज़ोरदार क्रोध से भर दिया था कि वह अपने भाई के बारे में सुनना भी नहीं चाहता था। तथापि, पूजनीय थियोडोसियस ने मसीह-प्रेमी राजकुमार इज़्यास्लाव के लिए दिन-रात ईश्वर से प्रार्थना की और, चर्च सेवाओं के दौरान, यह आदेश दिया कि उनका स्मरण कीव के वैध राजकुमार और बड़े भाई के रूप में किया जाए, जबकि अपने मठ में स्वआतोस्लाव का कोई भी उल्लेख निषिद्ध कर दिया, जिसने अवैध रूप से अपने भाई का सिंहासन छीन लिया था। बाद में, भाइयों के आग्रह पर, आदरणीय संत ने दोनों का स्मरण करने का आदेश दिया, हालांकि इज़्यास्लाव का नाम पहले और स्वआतोस्लाव का नाम दूसरे स्थान पर रखा गया।

रूस के राजकुमारों के बीच इस तरह के विवाद के साक्षी नहीं बनना चाहकर, उपर्युक्त धन्य निकोन (जिन्होंने आदरणीय थियोडोसियस का मुंडन किया था और बाद में हर बात में उनकी सहायता की थी) एक बार फिर पेचेरस्क मठ से ट्मुटराकान प्रायद्वीप पर चले गए, जहाँ उन्होंने अपना खुद का मठ स्थापित किया। जहाँ तक आदरणीय थियोडोसियस का प्रश्न है, उनके प्रस्थान के बाद उन्होंने पहले की तरह अकेले ही अपने कार्यों को जारी रखा।

चूँकि, उनके महाधर्माध्यक्ष के कार्यकाल के दौरान, भिक्षुओं की संख्या इतनी बढ़ गई थी कि जीर्ण-शीर्ण कीव गुफाओं का मठ समुदाय के लिए बहुत तंग हो गया था, हमारे पूजनीय पिता थियोडोसियस ने यह विचार करना शुरू कर दिया कि ईश्वर की सहायता से वह कैसे और कहाँ एक अधिक विशाल स्थल पर स्थानांतरित हो सकते हैं और वहाँ एक बड़ा पत्थर का चर्च बना सकते हैं, जो परमेश्वर की परम पवित्र माता को भी समर्पित हो। ईश्वर ने उस धर्मात्मा की प्रार्थना सुनी, स्थानांतरण के लिए उसने जो स्थान चुना था उसे मंजूरी दे दी, और उस बड़े पत्थर के चर्च के निर्माण को आशीर्वाद दिया। प्रभु ने अद्भुत चमत्कारों के माध्यम से अपनी इच्छा प्रकट की।

एक धर्मपरायण और ईश्वर-भयभीत व्यक्ति एक अँधेरी रात में जर्जर पेचेर्सक मठ के पास से गुजर रहा था, जब उसने निम्नलिखित देखा। मठ से एक तेज रोशनी निकल रही थी, और आदरणीय थियोडोसियस चर्च के सामने खड़े थे, उन्होंने अपने हाथ आकाश की ओर उठाए हुए थे और ईश्वर से प्रार्थना कर रहे थे। वह राहगीर विस्मय से इस दृश्य को निहारता रहा, तभी अचानक वह दृश्य बदल गया, और उसने एक और चमत्कार देखा: चर्च की छत के ऊपर एक बहुत बड़ी लौ प्रकट हुई और, एक चाप का आकार लेकर, एक दूसरे पहाड़ी की ओर बढ़ी—अर्थात्, ठीक उसी पहाड़ी की जिस पर बाद में पूजनीय थियोडोसियस ने एक नया पत्थर का चर्च बनाना शुरू किया। और इस प्रकार अग्नि के चाप का एक सिरा पुराने चर्च के ऊपर लटक रहा था, और दूसरा उस स्थान के ऊपर जहाँ नया चर्च बनाया जाना था। इस चमत्कार को देखने वाले व्यक्ति ने बाद में इसे पूजनीय थियोडोसियस के मठ में सुनाया।

एक अन्य अवसर पर, रात के समय, स्थानीय नविासी मठ के पास से आ रही अनेक आवाज़ों के गायन से जाग उठे। वे उठे, अपने घरों से बाहर नकिले, और यह देखने के लिए एक ऊँची जगह पर गए कि ये आवाज़ें ठीक कहाँ से आ रही थीं। वहाँ उन्होंने यह देखा: प्राचीन पेचेर्स्क मठ तेज प्रकाश में नहाया हुआ था; पुराने चर्च से भिक्षुओं का एक समूह निकल रहा था और वे एक नए स्थान की ओर जा रहे थे: कुछ सबसे पवित्र परमेश्वर की माता की प्रतिमा उठाए हुए थे, जबकि अन्य हाथों में जलती मोमबत्तियाँ लेकर भजनों के साथ पहले समूह के साथ चल रहे थे। सभी का नेतृत्व भिक्षुओं के पिता और गुरु, आदरणीय थियोडोसियस कर रहे थे। नए स्थल पर पहुँचने पर, उन्होंने भजन गाए और वहाँ प्रार्थनाएँ कीं; फिर, लौटकर, वे गाते हुए एक बार फिर पुरानी चर्च में प्रवेश कर गए। बाद में, अनेक गवाहों ने इस चमत्कार की वास्तविकता की गवाही दी। और चूँकि उपरोक्त जुलूस में एक भी भिक्षु ने भाग नहीं लिया था, इसलिए सभी को एहसास हुआ कि इन लोगों ने स्वर्गदूतों को देखा था।

इस प्रकार, ईश्वर द्वारा इतने महान चमत्कारों से चिह्नित स्थल पर, परमेश्वर की परम पवित्र माता[3411] को समर्पित एक पत्थर का चर्च बनाया जाना शुरू हुआ। आदरणीय थियोडोसियस ने स्वयं अपनी मेहनत से इस चर्च के निर्माण में एक प्रमुख भूमिका निभाई: वह प्रतिदिन वहाँ आते थे, काम की सावधानीपूर्वक निगरानी करते थे और, जहाँ तक संभव था, राजमिस्त्रियों के साथ काम करते हुए निर्माण में मदद करते थे। काम करते समय, उनका पहनावा इतना साधारण था कि कोई भी उन्हें सबसे निचले शिष्य समझ सकता था, लेकिन निश्चित रूप से मठाधीश नहीं।

एक दिन, जब आदरणीय थिओडोसियस चर्च के निर्माण स्थल की ओर जा रहे थे, तो उनकी मुलाकात एक विधवा से हुई, जिसके साथ एक न्यायाधीश ने अन्याय किया था, और उसने पूछा:

'भिक्षु, मुझे बताओ, तुम्हारा मठाधीश कहाँ है? क्या वह मठ में नहीं है?'

'तुम उससे क्या चाहती हो?' रेवरेंड फादर ने उत्तर दिया, 'क्योंकि वह भी एक पापी है, है ना?'

इस पर उस महिला ने उत्तर दिया:

'मुझे नहीं पता कि वह पापी है या नहीं; मैं केवल इतना जानती हूँ कि वह कई लोगों को दुःख और बुराई से बचाता है। इसीलिए मैं उससे उस अन्यायी न्यायाधीश के अन्याय से मेरी रक्षा करने के लिए कहने जा रही हूँ।'

उसकी दुर्दशा के बारे में जानकर, आदरणीय भिक्षु ने उस पर दया की और कहा:

'अब घर जाओ, और जब हमारे मठाधीश लौटेंगे, तो मैं उन्हें तुम्हारे बारे में बताऊँगा, और वह तुम्हें तुम्हारी मुसीबतों से मुक्ति दिलाएंगे।'

यह सुनकर वह महिला घर चली गई, जबकि पादरी न्यायाधीश के पास गए। संत थियोडोसियस की विनती पर ध्यान देते हुए, न्यायाधीश ने विधवा पर दया की और नरमी दिखाते हुए, उससे जो कुछ भी गलत तरीके से छीना गया था, वह सब उसे वापस कर दिया।

इस प्रकार और इसी तरह के धार्मिक कार्यों के माध्यम से, पूजनीय थियोडोसियस ने परमेश्वर की परम पवित्र माता को समर्पित पेचेर्स्क चर्च के निर्माण में सहायता की। उन्होंने अपने जीवनकाल में इस चर्च का निर्माण पूरा नहीं किया, लेकिन उनके निधन के बाद भी, ईश्वर को प्रसन्न करने वाली उनकी प्रार्थनाओं के माध्यम से, उन्होंने परम पूजनीय स्टीफन की सहायता की, जो उनके बाद मठाधीश बने और संत थियोडोसियस द्वारा शुरू किए गए चर्च के निर्माण को जारी रखा।

[3411] चर्च की स्थापना 1073 में हुई थी। पूजनीय थियोडोसियस चर्च और मठ के पूरा होने तक जीवित नहीं रहे। यह कार्य थियोडोसियस के उत्तराधिकारियों: स्टीफन (जो 1074 से 1078 तक मठाधीश रहे), निकोन (जिन्होंने 1078 से 1088 तक मठ का प्रशासन संभाला) और जॉन (जो 1088 या 1089 में मठाधीश चुने गए) द्वारा पूरा किया गया। आदरणीय थियोडोसियस द्वारा स्थापित नए मठ का पत्थर का चर्च 1075 में स्टीफन के अधीन पूरा हुआ; हालाँकि, शायद आंतरिक सजावट के लिए धन की कमी के कारण, जो धीरे-धीरे चल रही थी, इसे 14 साल बाद, 1089 में ही पवित्र किया गया। 1108 में, मठ समुदाय के लिए भोजनशाला पूरी हुई, और 1182 में मठ को एक पत्थर की दीवार से घेर लिया गया। नई मठ के बनने के बाद पुरानी मठ को ध्वस्त नहीं किया गया, बल्कि उसमें कुछ ही संन्यासियों के साथ यह बनी रही; जिस गुफा पर मठ स्थित था, संन्यासियों के चले जाने के बाद, वह मठ के लिए एक समाधि कक्ष या कब्रिस्तान के रूप में काम करने लगी। 1240 में, पेचेरस्क मठ को टाटारों द्वारा काफी हद तक नष्ट कर दिया गया था। मठ को 13वीं शताब्दी के अंत के आसपास फिर से बनाया गया था। अपनी वर्तमान रूप में, मठ में पूर्व-मंगोल काल से केवल 'महान' या मुख्य चर्च का निचला हिस्सा और, शायद, पवित्र त्रिमूर्ति को समर्पित द्वार का चर्च ही बचा है। मठ की आज की पत्थर की दीवारें 17वीं शताब्दी के अंत में लकड़ी की दीवारों (जो तातारों द्वारा नष्ट की गई पत्थर की दीवारों की जगह बनी थीं) की जगह पर बनाई गई थीं, और वास्तव में मठ की सभी वर्तमान इमारतें 18वीं शताब्दी में बनाई गई थीं (मुख्य चर्च के उपरोक्त निचले हिस्से और पवित्र त्रिमूर्ति को समर्पित द्वार के चर्च को छोड़कर)।

इस बीच, हमारे पूजनीय पिता थियोडोसियस का दैवी जीवन समाप्त होने को था। यह भाँपते हुए कि ईश्वर के पास उनका प्रस्थान निकट है, अपने निधन के दिन आदरणीय पिता ने पूरे ब्रदरहुड को इकट्ठा करने का आदेश दिया, और मठ में मौजूद लोगों को ही नहीं, बल्कि हर कारण से अनुपस्थिति या अपने कर्तव्यों में व्यस्त सभी लोगों को, और यहाँ तक कि मठ के सभी सेवकों को भी अपने पास बुलाया। जब सभी इकट्ठा हो गए, तो उन्होंने प्रत्येक व्यक्ति से, पूरी लगन और ईश्वर के भय के साथ, उन पर सौंपी गई जिम्मेदारियों को पूरा करने का आग्रह करना शुरू किया। आँखों में आँसू लिए, उन्होंने आत्मा के उद्धार, संयम युक्त ईश्वर-प्रसन्न जीवन, चर्च में लगन से उपस्थिति होने, उस श्रद्धापूर्ण भय के साथ जिसमें सभी को दिव्य सेवा के दौरान खड़ा होना चाहिए, और न केवल अपने बड़ों के प्रति बल्कि अपने साथियों के प्रति भी प्रेम और विनम्रता के बारे में बताया। सभी के कर्तव्यों के बारे में बोलने के बाद, उन्होंने भाइयों को आशीर्वाद दिया और उन्हें शांति से विदा किया। फिर धर्मपरायण राजकुमार स्वियातोस्लाव आदरणीय पिता से मिलने आए। अपने अनुग्रह-पूर्ण शब्दों से, उन्होंने उन्हें धर्मनिष्ठा, ऑर्थोडॉक्सी की रक्षा, और पवित्र चर्चों की देखभाल के बारे में निर्देश दिया। फिर उन्होंने उनसे कहा:

'मैं प्रभु परमेश्वर और उनकी सर्व-पवित्र माता से प्रार्थना करूँगा कि वे आपको धर्मपरायणता में मजबूत करें। ईश्वर करे कि आपका शासन शांतिपूर्ण और सुखद हो। और अब, मैं इस पवित्र पेचेर्सक मठ और परम पवित्र परमेश्वर की माता के चर्च, जो उनकी इच्छानुसार बनाया गया है, को आपकी देखभाल में सौंपता हूँ।'

कड़क ठंड और भयानक, झुलसा देने वाले बुखार के दौरों ने पूजनीय पिताजी के शरीर को इतना कमजोर कर दिया कि उन्हें बिस्तर पर लेटना पड़ा, एक ऐसा बिस्तर जिस पर वे पहले कभी नहीं लेटे थे। बिस्तर पर लेटे हुए, उन्होंने कहा:

'ईश्वर की इच्छा पूरी हो!' जैसा प्रभु उचित समझें, वैसा ही करें! परन्तु मैं तुझ से विनती करता हूँ, हे मेरे प्रभु, यीशु मसीह, मेरी आत्मा पर दया कर: यह कपटी दुष्टात्माओं से बच जाए; तेरे स्वर्गदूत इसे मिलें और वायु के परीक्षणों से पार ले जाकर, इसे तेरी दया के प्रकाश में प्रस्तुत करें!

यह कहकर वह चुप हो गए।

तीन दिनों तक वह आदरणीय न तो बोल सके और न ही अपनी आँखें खोल सके, इसलिए यदि उनके होठों पर दिखाई देने वाली मुरझाई हुई साँस न होती, तो उन्हें मृत ही समझ लिया गया होता। पवित्र एल्डर की जानलेवा बीमारी ने भाइयों को बहुत दुख और शोक पहुँचाया। तीन दिन तक बीमार पड़े रहने के बाद, आदरणीय पिताजी बिस्तर से उठे और वहाँ इकट्ठी पूरी समुदाय से कहा:

'मेरे भाइयो और पितरगणो! मेरा जीवन समाप्त होने को है – यह बात प्रभु ने मुझे महा-उपवास के दौरान गुफा में प्रकट की थी। आपस में चर्चा करो कि आप मेरी जगह अपना मठाधीश किसे बनाना चाहेंगे।'

इन शब्दों से गहराई से दुखी होकर, भाइयों ने रोना शुरू कर दिया। पूजनीय को छोड़कर और आपस में विचार-विमर्श करने के बाद, सभी भिक्षुओं ने स्तेफन, '[3412] ' को अपना मठाधीश चुनने पर सहमति व्यक्त की। अगले दिन, पूजनीय ने एक बार फिर सभी भाइयों को बुलाया और उनसे पूछा:

'मेरे बच्चों, तुमने आपस में क्या निर्णय लिया है? तुम में से कौन मठाधीश बनने के योग्य है?'

उन्होंने सभी ने कहा कि स्टीफन संन्यास-पद के योग्य हैं। स्टीफन को अपने पास बुलाकर, रेवरेंड फादर ने उन्हें अपना उत्तराधिकारी बनकर संन्यास-पद ग्रहण करने का आशीर्वाद दिया और उनसे कहा:

'हे मेरे पुत्र, मैं यह मठ तुम्हें सौंपता हूँ; इसकी अच्छी तरह देखभाल करना; मैंने जो सेवा-नियम स्थापित किए हैं, उनका पालन करना, और सभी बातों में मठवासी परंपरा का पालन करना। नियम को मत बदलना, बल्कि सब कुछ कानून और मठवासी व्यवस्था के अनुसार करना।'

आदरणीय ने भाइयों को विस्तार से उपदेश दिया, और उन्हें नए मठाधीश की आज्ञा मानने के लिए प्रोत्साहित किया। फिर उन्होंने सभी को विदा कर दिया, और अपने निधन के दिन - शनिवार - की भविष्यवाणी की।

उन्होंने भाइयों से कहा, 'सूर्योदय के बाद, मेरी आत्मा मेरे शरीर से प्रस्थान कर जाएगी।'

तब पूज्य पिता ने एक बार फिर स्टीफन को अपने पास बुलाया और अकेले में, पवित्र झुंड का चरवाहा कैसे बने, इस पर उसे विस्तार से निर्देश दिया। चूँकि पूज्य पिता बीमारी से बहुत कमजोर हो गए थे, स्टीफन उनके पास ही रहा और विनम्रता से उनकी सेवा करता रहा। अगले शनिवार की भोर में, संत थियोडोसियस ने भ्राताओं को बुलाया। जब सभी भिक्षु

[3412] 'उस्ताव्श्चिकि' कोरमास्टर या गायन मंडली का निर्देशक होता है।

इकट्ठा हो गए, तो संत ने उन्हें वदिाई देते हुए, प्रत्येक को स्नेह से चूमा; उन्होंने भी, इतने अच्छे चरवाहे के नकिट आने वाले नुकसान की पूर्व दृष्टि से, जोर-जोर से रोया। संत थयिोडोसयिस, जो अब मृत्यु के लिए पूरी तरह से तैयार हो चुके थे, ने उनसे कहा:

'मेरे प्रयि बच्चों और मेरे भाइयों! मैंने आप सभी को चूमा है क्योंकि मैं अपने प्रभु, यीशु मसीह के पास जा रहा हूँ। यह है वह मठाधीश जसिे आपने स्वयं चुना है; उसे अपने आध्यात्मकि पिता के रूप में सम्मान दें, उसकी आज्ञा का पालन करें, और उसकी आज्ञा पर ईश्वर को प्रसन्न करने वाला सब कुछ करें। ईश्वर स्वयं, जन्हिोंने अपने वचन और ज्ञान से सभी चीजों की रचना की, आपको आशीर्वाद दें और आपको दुष्ट की युक्तयिों से बचाएं; वे आपके भीतर, आपकी अंतमि सांस तक, एक-दूसरे के प्रति दृढ़ और अटूट वश्विास और प्रेम बनाए रखें। इसके अलावा, मैं आपसे वनिती और प्रार्थना करता हूँ: मुझे उन्हीं कपड़ों में दफनाना जो मैंने अभी पहने हैं, और मेरे शरीर को उस गुफा में रखना जहाँ मैंने बड़ी लेंट (Great Lent) बतिाई थी; कसिी भी परस्थितिि में मेरे इस दीन शरीर को न धोना। धर्मनरिपेक्ष दुनयिा में से कोई भी मेरी अंत्येष्टि का साक्षी न बने; केवल आप ही, भक्षिुओं, मुझे उस स्थान पर सुलाना जो मैंने बताया है।

संत के वचन सुनकर, भाइयों ने जोर-जोर से रोना शुरू कर दयिा। रेवरेंड फादर ने एक बार फरि उन्हें सांत्वना देना शुरू कयिा, और कहा:

'मैं आपसे वादा करता हूँ, भाइयो और पतिृगणो, कि यद्यपि मैं शरीर से आपको छोड़ रहा हूँ, मैं आत्मा में हमेशा आपके साथ रहूँगा।'

इन शब्दों के बाद, आदरणीय पिता ने सभी को वदिा कर दयिा, और अपने पास कसिी को नहीं रहने दयिा। भाइयों में से एक, जो लगातार उनकी सेवा करता था, यह देखने के लिए कि वे क्या कर रहे हैं, दरवाज़े में एक छोटा सा छेद कर दयिा। आदरणीय पिता जी, अपने बस्तिर से उठकर और साष्टांग प्रणाम करते हुए, अपने आत्मा के उद्धार के लिए दयालु ईश्वर से आँसुओं के साथ प्रार्थना करने लगे। अपनी प्रार्थना में, उन्होंने सभी संतों को मदद के लिए पुकारा, और सबसे बढ़कर हमारे परम पवत्रि प्रभु की माता को, जनिके सुपुर्द उन्होंने अपने झुंड और अपने मठ को ही कर दयिा था। अपनी प्रार्थना के बाद, वह एक बार फरि अपने बस्तिर पर लेट गया; फरि, थोड़ी देर आराम करने के बाद, उसने अपनी आँखें स्वर्ग की ओर उठाईं और, अपने चेहरे पर खुशी के साथ, ऊँचे स्वर में कहा: 'ईश्वर धन्य हो! यदि ऐसा है, तो मैं अब और नहीं डरता, बल्कि मैं इस दुनयिा से और भी बड़ी खुशी के साथ वदिा हो रहा हूँ।'

ऐसा माना जाना चाहिए कि, उपरोक्त शब्द कहते हुए, वह कसिी प्रकार का दर्शन देख रहे थे। फरि, अपने पैर फैलाकर और अपनी छाती पर क्रॉस के चह्नि में अपने हाथ जोड़कर, उन्होंने अपनी पवत्रि आत्मा को ईश्वर के हवाले कर दयिा और पवत्रि संतों की पंक्ति में शामलि हो गए। यह शनविार, 3 मई 1074 को, जैसा कि आदरणीय ने पूर्वानुमान लगाया था, सूर्योदय के बाद ' ' के समय हुआ। संत थयिोडोरयिस के नधिन पर गहरे शोक के साथ, भाइयों ने उनके पवत्रि शरीर को चर्च में ले गए और वहां दविंगत आत्मा के लिए प्रथागत प्रार्थनाएं और भजन कहि।

ईश्वरीय कृपा से, पूज्यनीय की नधिन की खबर तुरंत ही बहुत से लोगों तक फैल गई। लोग और कई बोयार, जो अपनी मर्जी से मठ के द्वार पर जमा हो गए थे, उस क्षण का इंतजार कर रहे थे जब पूज्यनीय का शरीर गुफा में दफनाने के लिए मठ से बाहर लाया जाएगा। हालाँकि, मठवासयिों ने द्वार बंद कर दहि और कसिी को भी मठ में प्रवेश नहीं करने दयिा, वे भीड़ के छंटने का इंतजार कर रहे थे ताकि वे आदरणीय की देह को, जैसा कि उन्होंने स्वयं वसीयत की थी, सामान्य लोगों की अनुपस्थिति में गुफा में दफना सकें। और फरि, ईश्वर की इच्छा से, आकाश अचानक बादलों से घरि गया; और भारी बारशि होने लगी। भीड़ के ततिर-बतिर होते ही सूरज फरि से चमक उठा। फरि भाइयों ने पूजनीय के शरीर को चर्च से बाहर ले जाकर सम्मानपूर्वक गुफा में रख दयिा[3413] ।

[3413] 1091 में, पवत्रि थयिोडोसयिस के पूजनीय अवशेषों को मठ समुदाय द्वारा उस गुफा से, जहाँ उन्हें मूल रूप से रखा गया था, परम पवत्रि ईश्वर की माता के सुप्तावस्था के चर्च में स्थानांतरति कयिा गया, जहाँ उन्हें दाईं ओर प्रवेश-मंडप में रखा गया। तातार आक्रमण के दौरान, थयिोडोसयिस की पवत्रि अवशेषों को सुरक्षा के लिए उसी चर्च के पश्चमिी दरवाजे के पास दहलीज़ के नीचे रखा गया था, जहाँ वे आज भी मौजूद हैं। आदरणीय थयिोडोसयिस की पवत्रि अवशेषों के स्थानांतरण का उत्सव 14 अगस्त को मनाया जाता है। 1108 में, मेट्रोपॉलटिन नकिफिोरस (जन्हिोंने 1103 से 1121 तक सेवा की) ने एक सनिड में यह आदेश दयिा कि थेओडोसयिस को सभी बशिपरीकों के सनिोडकिॉन में शामलि कयिा जाए'। उस समय से, परम पूजनीय थेओडोसयिस के नधिन और उनके पवत्रि अवशेषों के स्थानांतरण, दोनों का ही हर जगह उत्सव मनाया जाने लगा। परम पूज्य थयिोडोसयिस अपनी तपस्वी जीवन शैली के माध्यम से ही नहीं, बल्कि अपनी लखिति शक्षिाओं के माध्यम से भी आने वाली पीढ़ियों को प्रेरति करते हैं, जो मुख्य रूप से वभिन्नि अवसरों पर दहि गए उपदेशों के रूप में हमें प्राप्त हुई हैं। दुर्भाग्य से, रेवरेंड थयिोडोसयिस के कुछ लेखों की प्रामाणकिता का प्रश्न अभी तक नर्णिायक रूप से हल नहीं हुआ है। नम्निलखिति पाँच उपदेश नश्चिति रूप से रेवरेंड थयिोडोसयिस के माने जाते

उस धर्मनिष्ठ पुरुष के निधन के क्षण में, राजकुमार स्वयातोस्लाव पेचेरस्क मठ से बहुत दूर नहीं थे; अचानक उन्होंने मठ के ऊपर आग का एक स्तंभ देखा, जो धरती से आकाश तक फैला हुआ था। यह समझते हुए कि आदरणीय का निधन हो गया है, राजकुमार ने उपस्थित लोगों से कहा:

'मुझे विश्वास है कि आज आदरणीय थियोडोसियस पृथ्वी से स्वर्ग सिधार गए हैं; मैं कल उनसे मिला था और देखा था कि वे गंभीर रूप से बीमार थे।'

उसने पूज्य की खबर मंगवाई और जब उसे उनकी मृत्यु का यकीन हो गया, तो वह फूट-फूट कर रो पड़ा।

धन्य थियोडोसियस की मृत्यु के वर्ष में, उनकी प्रार्थनाओं के द्वारा, मठ के सभी खजाने बढ़ने लगे; खेतों में भरमार थी, और मठ के पशुओं ने बड़ी संख्या में संतान दी। इससे पहले कभी ऐसा वर्ष नहीं आया था। यह देखकर, भाइयों को अपने पवित्र पिता का वचन याद आया और उन्होंने परमेश्वर की स्तुति की कि उन्होंने अपने सेवक, धन्य थियोडोसियस पर अपनी कृपा-दायिनी देन प्रदान की। ये अनुग्रह के उपहार संत थियोडोसियस की मृत्यु के बाद उन अनेक चमत्कारों के माध्यम से प्रकट हुए, जो संत ने उन सभी की उत्कट प्रार्थनाओं के उत्तर में किए, जिन्होंने उनसे मदद मांगी थी।

उक्त समय में राजकुमार स्व्यातोस्लाव अपने एक बोयार पर बहुत क्रोधित हो गए। कई लोगों ने कहा कि राजकुमार उसे निर्वासित करने का इरादा रखता था। बोयार ने, हालांकि, ईश्वर से भक्तिपूर्वक प्रार्थना की और सहायता के लिए पूजनीय थियोडोसियस को पुकारा, कहते हुए: 'मैं जानता हूँ, पिता, कि आप पवित्र हैं; मैं संकट में हूँ; मुझ पर दया करें: स्वर्ग में प्रभु के प्रति आपकी प्रार्थनाओं के द्वारा, मुझे इस संकट से उबारें।'

जब बोयार सो गया, तो रेवरेंड उसे एक सपने में दिखाई दिए और कहा:

'तुम इतने दुखी क्यों हो? क्या तुम सच में सोचते हो कि मैं तुम्हें पूरी तरह से छोड़ गया हूँ? यद्यपि मैं शरीर से चला गया हूँ, मैं आत्मा में हमेशा तुम्हारे साथ रहता हूँ। कल राजकुमार तुम्हें बिना किसी क्रोध के बुलाएगा और तुम्हें तुम्हारे पूर्व पद पर बहाल कर देगा।'

होश में आकर और अपने आप को संभालकर, बोयार ने देखा कि आदरणीय संत कमरे से बाहर जा रहे थे और उसके पीछे दरवाज़े के पास खड़े थे। संत थियोडोसियस ने जो भविष्यवाणी की थी, वह वास्तव में सच हुई, और उस समय से बोयार ने कीव गुफाओं के मठ के लिए और भी अधिक प्रेम करने लगा।

जब वह अपनी यात्रा की तैयारी कर रहा था, तो एक व्यक्ति ने आदरणीय थियोडोसियस के मठ में एक छोटा चाँदी का ताबूत लाया और उसे अपने जानने वाले एक भिक्षु, कोनोन, की देखभाल में सौंप दिया। भिक्षु निकोलस को इस बात की जानकारी मिली और, शैतान के उकसावे पर, उसने वह ताबूत चुरा लिया और छिपा दिया। जब कोनोन लौटा, तो उसे अपनी कोठरी में चाँदी नहीं मिली; इस बात से गहराई से परेशान होकर, उसने आँसुओं के साथ ईश्वर से प्रार्थना करना

हैं: 1) महा-लेंट के तीसरे सप्ताह के बुधवार को 'घंटों के समय' पर 'धैर्य और प्रेम पर' एक उपदेश; 2) लेंट के तीसरे सप्ताह के गुरुवार को 'धैर्य, प्रेम और उपवास पर' एक प्रवचन; 3) लेंट के तीसरे सप्ताह के गुरुवार को 'घंटों के दौरान' 'धैर्य और दान पर' एक प्रवचन; 4) लेंट के तीसरे सप्ताह के शुक्रवार को दिया गया एक प्रवचन 'धैर्य और विनम्रता पर'; और, अंत में, 5) लेंट के तीसरे सप्ताह के शुक्रवार को 'घंटों के दौरान' दिया गया एक प्रवचन 'चर्च जाने और प्रार्थना पर'। इसके अतिरिक्त, निम्नलिखित उपदेश भी पूज्य थियोडोसियस के नाम से जोड़े जाते हैं: 1) 'कोषाध्यक्ष को' एक उपदेश (उसके कर्तव्यों पर); 2) 'ईश्वर की सजाओं पर' एक उपदेश (माना जाता है कि यह पूज्य थियोडोसियस द्वारा पोलोवत्सियनों के साथ विनाशकारी युद्ध के बाद 1067 में दिया गया था); 3) 'भोजन और पेय' पर एक प्रवचन (भाइयों के लिए); 4) 'मसीह के एक प्रेमी और सच्चे धर्म के उत्साही रक्षक के शब्द'; 5) 'नशे के संबंध में अपने बच्चों के लिए एक आध्यात्मिक पिता की चेतावनी'; 6) 'व्लादिमीर के बपतिस्मा और कुर्सुन पर कब्जा करने पर एक प्रवचन'; और, अंत में, 7) प्रवचनों से कुछ अंश। महा-उपवास के तीसरे सप्ताह के मंगलवार और बुधवार के लिए दो प्रवचन, जो संत थियोडोर द स्टुडाइट को समर्पित हैं, को भी आदरणीय थियोडोसियस का माना जाता है, साथ ही कई अन्य प्रवचन भी। इसके अलावा, संत थियोडोसियस ग्रेंड प्रिंस इज्यास्लाव को लिखे गए कई पत्रों (संभवतः दो या तीन) के लेखक हैं (बचे हुए पांडुलिपियों में, इन पत्रों को प्रिंस इज्यास्लाव की 'पड़ताल' के रूप में संदर्भित किया गया है)। उपरोक्त सूचीबद्ध सभी श्रद्धेय थियोडोसियस के कार्य बहुत सरल शैली में और गहरे भाव के साथ लिखे गए हैं। श्रद्धेय थियोडोसियस के प्रवचन और पत्र किसी भी अलंकारिक शोभा से रहित हैं। जहाँ तक उनकी सामग्री का सवाल है, संन्यासी समुदाय के लिए लिखे गए प्रवचनों में, श्रद्धेय थियोडोसियस संन्यासी संकल्पों और कर्तव्यों के बारे में बात करते हैं; वे विशेष रूप से अनासक्ति के व्रत पर विस्तार से चर्चा करते हैं; जबकि सामान्य लोगों के लिए दिए गए उपदेशों में, आदरणीय थियोडोसियस ने विभिन्न मूर्तिपूजक रीति-रिवाजों का जोरदार विरोध किया, जो उस समय रस' में बहुत प्रचलित थे और जिन्हें ईसाई उपदेशकों द्वारा अभी-अभी समाप्त किया जाना शुरू हुआ था। संत थियोडोसियस मूर्तिपूजा और शराब के सेवन के विशेष रूप से विरोधी थे। अंत में, संत थियोडोसियस को कई प्रार्थनाओं का श्रेय भी दिया जाता है, जो प्राचीन भजन संहिताओं (Psalters) की कुछ पांडुलिपियों में उनके नाम से मिलती हैं।

शुरू कर दिया, और सहायता के लिए पूजनीय थियोडोसियस को पुकारने लगा। अपनी प्रार्थना के बाद सो जाने पर, कोनोन ने पूजनीय थियोडोसियस को अपने सामने प्रकट होते देखा, जिन्होंने उससे कहा:

'जिस चाँदी के लिए तुम शोक कर रहे हो, उसे भिक्षु निकोलस ने शैतान के प्रभाव में लेकर एक गुफा में छिपा दिया था।'

फिर, सोना कहाँ छिपाया गया था, यह बताते हुए, उन्होंने उससे कहा:

'जाओ, और इस बारे में किसी को बताए बिना, जो तुम्हारा है, उसे ले लो।'

जागने पर, वह प्रसन्न भिक्षु तुरंत उठा, एक मोमबत्ती जलाई, और बताए गए स्थान के लिए निकल पड़ा। चोरी हुई वस्तु को पाकर, उसने ईश्वर और उनके संत, परमपूज्य थियोडोसियस का धन्यवाद किया।

निम्नलिखित घटना भी हुई। कीव में स्थित सेंट सोफिया के पवित्र महान कैथेड्रल का एक पुरोहित गंभीर रूप से बीमार पड़ गया: उसका पूरा शरीर एक तेज आंतरिक बुखार से जल रहा था। जब वह होश में आया, तो उसने ईश्वर और उनके पवित्र सेवक, आदरणीय थियोडोसियस से अपनी पीड़ा से राहत के लिए प्रार्थना की। जैसे ही वह सोया, उसने सपने में आदरणीय थियोडोसियस को देखा, जिन्होंने उसे एक लाठी देते हुए कहा: 'इसे लो और इसके सहारे चलो।'

जागने पर, उस बीमार व्यक्ति ने महसूस किया कि उसके शरीर में बुखार कम हो रहा है और बीमारी दूर हो रही है। और जब वह बाद में ठीक हो गया, तो वह कीव केव्स मठ गया और भाइयों को बताया कि कैसे वह संतोंदोषियस की प्रार्थनाओं के माध्यम से अपनी बीमारी से चंगा हो गया था। संतों ने, अपनी ओर से, ईश्वर की स्तुति की, जिन्होंने उस धर्मी व्यक्ति पर ऐसा अनुग्रह किया था।

ऐसा ही एक और उदाहरण था। पेचेर्सक मठ में अपने महाधर्माध्यक्ष के कार्यकाल के दौरान, पूजनीय थियोडोसियस ने यह आदेश दिया कि महा-प्रायश्चित के पहले सप्ताह के शुक्रवार को, भाइयों - जो संयम में परिश्रम करने वाले अच्छे तपस्वी थे - को भोजन में पूरी तरह से खमीर रहित रोटी परोसी जाए, जिसके साथ शहद और खसखस हो। इस आदेश का हमेशा पालन किया जाता था, जिसमें आदरणीय थियोडोसियस द्वारा स्वयं नियुक्त किए गए आदरणीय स्टीफन[3414] भी शामिल थे। स्टीफन के बाद, धन्य निकोन[3415] ने कीव केव्स मठ में मठाध्यक्ष का पद संभाला, और महा-उपवास के पहले सप्ताह के अगले शुक्रवार को, उन्होंने सेलरर (भंडारी) को आदरणीय थियोडोसियस के आदेश के अनुसार कार्य करने का आदेश दिया। हालाँकि, सेलरर ने मठाधीश के आदेश की अवज्ञा की और उस व्यवस्था को नहीं माना जो पूज्य थियोडोरस ने स्थापित की थी, इस बहाने कि ऐसी रोटी के लिए आटा नहीं था। लेकिन ईश्वर स्वयं भी यह नहीं होने दिया कि पूज्य थियोडोरस द्वारा स्थापित प्रथा निष्क्रिय हो जाए। जब, लिटिर्जी के बाद, भाई अपने लेंट के भोजन के लिए भोजनशाला की ओर जा रहे थे, तो कहीं से अचानक उनके लिए ताज़े रोटी से भरी एक गाड़ी लाई गई। यह चमत्कार देखकर, भाइयों ने परमेश्वर और उनके सेवक की महिमा की, जिन्होंने अपनी मृत्यु के बाद भी उन्हें नहीं छोड़ा था। उन्होंने अपने पिता और गुरु, आदरणीय थियोडोसियस की महिमा की, जिन्होंने भिक्षुओं की भलाई के लिए अपनी संस्था को संरक्षित रखा था और अपना वादा पूरा किया था - मठ को हमेशा सहायता प्रदान करने का अधिकार, जो उन्होंने अपने ईश्वरीय कार्यों से अर्जित किया था। पवित्र आदरणीय थियोडोसियस की साहसी प्रार्थनाओं की सहायता से, हम भी ईश्वर का उपहार प्राप्त करने के योग्य माने जाएँ—हमारे प्रभु, मसीह यीशु के साथ अनंत जीवन, जो परमपिता और पवित्र आत्मा के साथ युगों-युगों तक महिमामय हैं। आमीन।

ट्रोपारियन, स्वर 8:

सद्गुणों में उन्नत होकर, और अपने यौवन से ही मठवासियों के जीवन से प्रेम करके, आपने अपनी कुलीन इच्छा को प्राप्त किया, एक गुफा में निवास किया, और तपस्या तथा तेज से अपने जीवन को सुशोभित कर, आप देह रहित एक के समान प्रार्थना में निवास करते थे , रूसी भूमि पर एक उज्ज्वल प्रकाश के रूप में चमकते हुए, फादर थियोडोसियस: हमारे ईश्वर मसीह से प्रार्थना करें कि हमारी आत्माओं का उद्धार हो।

[3414] स्टीफन – 1074 से 1078 तक मठाधीश के रूप में कार्य किया।

[3415] निकॉन – 1078 से 1088 तक मठाधीश के रूप में कार्य किया।

कॉन्टाकयिन, स्वर 3:

आज हम रूस के तारे का सम्मान करते हैं, जो पूर्व से प्रकाशति होकर पश्चमि में आया: क्योंकि इसने इस पूरे देश को चमत्कारों और भलाई से समृद्ध कयिा है, और हम सभी को धन्य थयिोडोसयिस के मठवासी नयिम के कार्य और अनुग्रह के द्वारा।

हमारे पूजनीय पति पीटर चमत्कारकर्ता की स्मृति

3 मई को स्मरणोत्सव

इन पूजनीय की जन्मभूमि कॉन्स्टेंटनिोपल नगर थी। वे ईश्वर-भयभीत माता-पति के घर जन्मे थे। जब हमारे पूजनीय पतिाजी के माता-पति ने संन्यास की शपथ ली, और कुछ ही समय बाद उनके दो भाइयों, पॉल और डायोनसियिस को भी भक्षिु के रूप में दीक्षा दी गई, तो उन्होंने भी, उनके उदाहरण का अनुसरण करते हुए और उनके जैसे जीवन जीने की इच्छा से, अपने भाई प्लेटो के साथ मलिकर संन्यास की शपथ ली। भक्षिु बनने के बाद, उन्होंने मठवासी जीवन को इतनी लगन से समर्पति कयिा कि इस संबंध में वे अपने सभी समकालीनों से आगे नकिल गए; क्योंकि, पहले अपने साथयिों और फरि अन्य सभी भक्षिुओं का अनुकरण करने का प्रयास करते हुए, उन्होंने उनके गुणों को आत्मसात कयिा और उन्हें अपने जीवन में लागू कयिा। अपने अनुकरणीय तपस्वी जीवन के माध्यम से, उन्होंने उस समय के इटली के बशिप नकिोलस[3416] की कृपा प्राप्त की, जो उन्हें बशिप के पद से सम्मानति करना चाहते थे; लेकनि उन्होंने यह कहते हुए मना कर दयिा कि वह स्वयं को ऐसे सम्मान के अयोग्य मानते हैं। तब बशिप नकिोलस अपने भाई पॉल के पास गए, और कोरथि की कलीसयिा को सांत्वना देने के लिए, जसिके उस समय कोई बशिप नहीं था, उन्होंने उन्हें कोरथि का बशिप नयिुक्त कयिा[3417] । इसके बाद, पूजनीय पीटर, बशिप पद स्वीकार करने के लिए लगातार हो रहे अनुरोधों के आगे झुकते हुए, कोरथि में अपने भाई पॉल के पास गए और मौन का व्रत ले लयिा, लेकनि वे केवल एक वर्ष ही वहाँ रहे, क्योंकि कुलीनों और जहाज मालकिों[3418] ने कोरथि में पॉल के पास एक दूर के देश से आकर उनसे अपने भाई को अपना बशिप नयिुक्त करने का अनुरोध कयिा, इस आधार पर कि उनका बशिप गुजर गया था। उन्होंने स्वयं संत पीटर से इतनी वनिम्रता से अपने बशिप बनने का आग्रह कयिा कि, उन्हें मना न कर पाने के कारण, उन्होंने शुरू में कोरथि से भागने की योजना बनाई; लेकनि जब काफी समय बीत गया और आए हुए लोग और भी अधकि आग्रह के साथ अपनी वनिती करते रहे, तो वे अंततः उनकी आँसुओं से भावुक हो गए और उनका प्रस्ताव स्वीकार कर लयिा।

धर्मप्राचीन का पद स्वीकार करने के बाद, उन्होंने चर्च को सखिाने के कार्य के लिए अपना सम्पूर्ण जीवन समर्पति कर दयिा, और उनकी अपनी लगन उनके झुंड द्वारा उनमें दखिाई गई लगन का एक उपयुक्त उत्तर थी। अपने दान-पुण्य के कार्यों में, वह गरीबों के लिए अपने ही कपड़े भी बचाने से नहीं हचिकचिाया। उन्होंने अनाथों को खलिाया, वधिवाओं की देखभाल की, गरीबों को भोजन प्रदान कयिा, और ज़रूरतमंद सभी को गुप्त रूप से दान दयिा। जब खराब फसल का एक साल आया और देश में अकाल पड़ा, तो उन्होंने अपनी दान की अखंड वतिरण के माध्यम से हजारों भूखे लोगों को भोजन कराया। इस समय के दौरान एक अवसर पर, एक पात्र में केवल थोड़ा सा भोजन बचा था, लेकनि रेवरेंड ने जल्द ही उसे फरि से पूरी तरह से भरा हुआ पाया, ताकि उसमें मौजूद भोजन जरूरतमंदों के लिए पूरे एक साल के लिए पर्याप्त हो। पीड़तिों के प्रति अपनी करुणा के कारण, उन्होंने बंदयिों को छुड़ाया और शक्तशिाली लोगों के अत्याचार से कमजोरों को मुक्त कराया। इसके अलावा, उन्होंने एक राक्षस के वश में आई एक छोटी लड़की को ठीक कयिा, एक दृष्टांत में पेलोपोनेस पर आने वाली वपित्ति की भवषि्यवाणी की[3419] और, बहुत पहले , अपने नधिन के दनि का पूर्वानुमान लगाया

[3416] ये नकिोलस प्रथम द मस्टिकि, कॉन्स्टेंटनिोपल के पैट्रआिर्क थे। 895 में उन्होंने कॉन्स्टेंटनिोपल के पैट्रआिर्क का पदभार संभाला; 906 में, ज़ोई से चौथी बार ववािह करने के कारण सम्राट लयिो VI द फलिॉसफर को पवत्रि Communion से बहषि्कृत करने के लिए, उन्हें सम्राट द्वारा इरयिा द्वीप पर नर्विासति कर दयिा गया; और 911 में उन्हें उनके पद पर पुनर्स्थापति कयिा गया, जसिे उन्होंने 925 में अपनी मृत्यु तक संभाला।

[3417] कोरथि – ग्रीस के सबसे पुराने शहरों में से एक, जो प्राचीन अर्गोलीस के उत्तरी भाग में, कोरथि की खाड़ी के तट पर स्थति है। वहाँ का ईसाई चर्च संत पॉल द अपोस्टल द्वारा स्थापति कयिा गया था।

[3418] अर्थात्, आर्गोलकि खाड़ी के तट पर स्थति आर्गोस शहर से। सनिाक्सारयिा में से एक में उल्लेख है कि आदरणीय पीटर आर्गोस शहर में एक बशिप थे। इसमें यह भी कहा गया है कि उन्हें पैट्रआिर्क नकिोलस प्रथम द मस्टिकि द्वारा बशिप के रूप में अभषिक्ति कयिा गया था।

[3419] प्राचीन काल में, पेलोपोनेस उस नाम को दयिा गया था जो आज के ग्रीस के दक्षणिी भाग को कहा जाता था।

था। सत्तर वर्ष की आयु प्राप्त कर और अनगनित पुण्य कर्म करने के बाद, उन्होंने अपना धन्य आत्मा प्रभु को अर्पति कर दयिा। मृत्यु के बाद भी उन्होंने चमत्कार करना जारी रखा, उनकी कफ़न से सुगंधति खुशबू नकिलती रही, उन्होंने दुष्ट आत्माओं को भगाया और सभी प्रकार की बीमारयिों का उपचार कयिा, साथ ही अपनी कफ़न के पास मार्गदर्शन की चाह रखने वालों को उपदेश दयिा[3420] ।

17 मई

4 मई (पुराने कैलेंडर के अनुसार)

पवत्रि शहीद, कुंवारी पेलagia का कष्टकथा

4 मई को स्मरणोत्सव

जब अधर्मी रोमन सम्राट डायोक्लेटयिन[3421] ने ईसाइयों के खलिाफ उत्पीड़न शुरू कयिा, तो उनमें से कई, यातनाओं के डर से, पहाड़ों में भाग गए। लेकनि जो ईसाई अपने वशि्वास में दृढ़ थे और मनुष्यों से अधकि परमेश्वर का भय मानते थे, वे उन चर्चों में ही रहे जनिसे वे संबंधति थे, और संघर्ष के लिए उन्हें मजबूत बनाने हेतु परमेश्वर से भक्तपिूर्वक प्रार्थना करने लगे, ताकि वे आने वाली लड़ाई में वजियी होकर उभर सकें।

उस समय, क्लनिो तारसस शहर के बशिप थे[3422] । उन्होंने कई मूर्तपिूजकों को सच्चे ईश्वर के प्रतिपिरविर्तति कयिा और उनका बपतस्मिा दयिा; उन्हें एक अच्छे चरवाहे की तरह मसीह के झुंड में लाते हुए, उन्होंने उनमें से प्रत्येक को मसीह के नाम का प्रचार करते हुए दृढ़ रहने और उसके लिए अपना जीवन बलदिान करने के लिए प्रोत्साहति कयिा, इस अटूट आशा के साथ कि उन्हें स्वर्ग के राज्य में उससे वजिय का मुकुट प्राप्त होगा।

उस समय सलिसिियिा में मौजूद डायोक्लेटयिन ने इस साहसी बशिप के बारे में सुनकर, उसे गरिफ्तार करने का आदेश दयिा और यह आज्ञा दी कि शहर के द्वार बंद कर दिए जाएँ ताकि वह शहर से भाग न सके। लेकनि आदेश दिए जाने से पहले ही, बशिप को ईश्वर से उन सभी बातों के बारे में एक प्रकटवाणी प्राप्त हो चुकी थी जो होने वाली थीं, और कसिी को भी पता न चलने पर, वह शहर छोड़कर चला गया, क्योंकि उसका समय अभी नहीं आया था। अन्य ईसाइयों के साथ, उसने पहाड़ों और रेगस्तिानों में शरण ली। हालाँकि, बशिप को खोजने में अपनी असमर्थता पर क्रोधति होकर, डायोक्लेटयिन ने अपना गुस्सा उन लोगों पर उतारा जनि्हें बशिप ने मसीह के पास लाया था; उसने कई नव-धर्म परविर्तति मसीहयिों को गरिफ्तार करने का आदेश दयिा और उन्हें कैद कर दयिा।

उस समय तारसस नगर में पेलगयिा नाम की एक युवती रहती थी, जो कुलीन वंश की, अपनी संपत्ति और सुंदरता के लिए प्रसद्धि, और ईश्वर के भय तथा पवत्रिता से परपिूर्ण थी। जब उसने ईसा मसीह, परमेश्वर के पुत्र के बारे में ईसाइयों से सुना, तो उसका हृदय उनके प्रतिप्रेम से प्रज्वलति हो उठा; उसने उन पर वशि्वास कयिा और संकल्प लयिा कि वह कसिी भी नश्वर पुरुष से ववािह नहीं करेगी, क्योंकि उसने स्वर्गीय, अमर और अवनिाशी वर के साथ सगाई करने का नश्चिय कयिा था; मसीह में वशि्वास करने के बाद, वह पवत्रि बपतस्मिा प्राप्त करने के लिए लालायति थी।

[3420] परम पूज्यनीय का 10वीं शताब्दी में नधिन हो गया। 1421 में, उनके अवशेषों को आर्गोस से नाफ्प्लयिो ले जाया गया। प्रत्यक्षदर्शयिों के अनुसार, जब ताबूत खोला गया, तो धरती हलि गई, हवा धूप की सुगंध से भर गई, और कई चमत्कार हुए।

[3421] सम्राट डायोक्लेटयिन ने 284 से 305 तक रोमन साम्राज्य पर शासन कयिा।

[3422] टारसस एशयिा माइनर के एक क्षेत्र, सलिसिियिा, का एक बड़ा और प्राचीन काल में घनी आबादी वाला शहर था। इसकी स्थापना असीरयिन राजा सनहेरीब (705–681 ईसा पूर्व) ने की थी। सडिनस नदी पर स्थति होने के कारण, यह व्यापार का एक प्रमुख केंद्र था। – ईसाइयों के लिए, तारस शहर संत पौलुस प्रेरति के जन्मस्थान और प्रारंभकि घर के रूप में महत्वपूर्ण है। प्रभु द्वारा स्वयं अपनी महान सेवकाई के लिए बुलाए जाने पर, प्रेरति पौलुस ने शुरू में तर्cyc में जाकर प्रचार करने की तैयारी की (देखें प्रेरतिों के काम 9:11-30)। आज, तर्cyc अदाना वलियात में 8,000 की आबादी वाला एक छोटा सा शहर है और यह तुर्की का हस्सिा है। यह उल्लेखनीय है कि, आज भी, तारस और उसके आसपास के नविासयिों का मुख्य व्यवसाय कालीन, तंबुओं के लिए फेल्ट और हर तरह के बर्तन बनाना है, ठीक वैसे ही जैसे प्रेरति पौलुस के दनिों में था, जो तंबू बनाकर अपनी आजीवकिा कमाते थे (प्रेरतिों के काम 18:3)।

लेकिन जब उसे पता चला कि ईसाई बिशप शहर छोड़कर चले गए हैं, तो वह बहुत दुखी हुई, क्योंकि वह उन्हें देखना चाहती थी और उनके हाथों से पवित्र बपतिस्मा ग्रहण करना चाहती थी। तब तक, उसने बिशप को कभी नहीं देखा था और केवल उनके बारे में सुना था। चूंकि पेलagia की विधवा मां मूर्तिपूजा में विश्वास रखती थी, इसलिए पेलagia ने अपनी मसीही आस्था और अपने इरादों, दोनों को उससे छिपा रखा था।

उस समय, राजा के पुत्र, ई[3423] , ने कुंवारी पेलagia की असाधारण सुंदरता के बारे में सुना; उसे उसे देखने का अवसर मिला। उसने पेलagia को यह बताने के लिए सम्मानित पुरुषों को भेजा कि राजा का पुत्र उसके साथ विवाह संबंध बनाना चाहता है।

पेलagia की माँ इस घटनाक्रम से बहुत खुश हुईं, लेकिन उस पवित्र कन्या की सोच कुछ और थी। उसने क्रॉस का चिन्ह बनाते हुए, दूतों को निडर होकर उत्तर दिया: 'मैं पहले से ही परमेश्वर के पुत्र, अमर राजा की मंगेतर हूँ।'

इस उत्तर के साथ, दूत राजा के पुत्र के पास लौट गए।

संत पेलagia की प्रतिक्रिया सुनकर राजकुमार क्रोध से भर गया; उसने उस पवित्र कन्या से क्रूर बदला लेने का संकल्प लिया, लेकिन तुरंत नहीं, क्योंकि उसे उम्मीद थी कि वह अपना मन बदल लेगी और उसकी इच्छाओं का पालन करेगी।

इस बीच, पेलagia ने अपनी माँ से कहा कि वह अपनी दूध माँ से मिलना चाहती है, जिससे वह लंबे समय से नहीं मिली थी। उसकी दूध माँ शहर के बाहर रहती थी, और पेलagia एक ईसाई बिशप को खोजने के इरादे से घर से निकल पड़ी, जिसके गुप्त ठिकाने का पता उसने कुछ ईसाइयों से सुना था। लेकिन शैतान के प्रभाव में, संत पेलagia की माँ ने अपनी बेटी की बात मानने से इनकार कर दिया और दृढ़ता से विरोध करते हुए कहा: 'तुम्हें अभी वहाँ नहीं जाना चाहिए; तुम किसी और समय जाना।'

इससे पेलagia बहुत दुखी हुई।

उसी रात, प्रभु बिशप क्लिनिन के रूप में उसके सामने प्रकट हुए, और उन्होंने उससे एक शब्द भी नहीं कहा। वह इस दर्शन से चकित रह गई, क्योंकि उसके सामने प्रकट हुए व्यक्ति का भव्य मुख प्रकाश से दमक रहा था, और उसके वस्त्र अद्भुत थे।

जागने पर, उसने अपने दो सबसे भरोसेमंद खसाकों[3424] को गुप्त रूप से उस कालकोठरी में भेजा जहाँ ईसाइयों को कैद किया गया था, बिशप के रूप के बारे में उनसे पूछताछ करने के उद्देश्य से। उन्होंने उसकी आज्ञा का पालन किया और बिशप के रूप का एक विस्तृत विवरण लेकर लौटे। उस सदाचारी कन्या को आश्चर्य हुआ कि, उनके बयानों के अनुसार, बिशप का रूप हर विवरण में उसके सपने में देखे गए रूप से मेल खाता था, और उसे एहसास हुआ कि जिसे बिशप को उसने अपने सपने में देखा था, वही था। खुशी से भरकर, वह पूरे दिल से उसे वास्तविकता में देखने के लिए तरसने लगी और ईश्वर से इन शब्दों में भक्तिपूर्वक प्रार्थना करने लगी: 'हे प्रभु, मुझे अपना सेवक, जो आपकी कृपाओं का दूत है, देखने का सौभाग्य प्रदान करें, और मुझे अपने पवित्र संस्कारों से वंचित न करें।'

उसके बाद, उसने फिर से अपनी माँ से अपनी दूध माँ के पास जाने की मिन्नतें करनी शुरू कर दीं, यह कहते हुए कि वह उसे बहुत याद कर रही थी, क्योंकि उसे इतने लंबे समय से नहीं देखा था। उसकी माँ उसे जाने देने के लिए अनिच्छुक थीं। लेकिन इस डर से कि वह दुख से बीमार पड़ सकती है, उसकी माँ ने उसकी बात मान ली और यात्रा के लिए रथ, घोड़ों और नौकरों को तैयार करने का आदेश दिया। तब, राजकुमार की दुल्हन के अनुरूप पेलagia को शाही बैंगनी रंग का वस्त्र पहनाकर, और उसे सुनहरी आभूषणों तथा कीमती रत्नों से सजाकर, उसने उसे अपने सबसे भरोसेमंद सेवकों और नपुंसकों के साथ एक भव्य रथ में विदा किया, और ये विदाई शब्द कहे: 'शांति से जाओ, मेरी बेटी, और अपनी दूध माँ को मेरा प्रणाम कहना।'

पेलagia नौकरों की एक बड़ी टोली से घिरी हुई, खुशी-खुशी रवाना हुई। शहर से लगभग दस पोप्रीश्च[3425] की यात्रा करने के बाद, वे घने जंगल से ढके एक पहाड़ के पास पहुँचे। उसी क्षण, उसकी एक नौकर, जिसका नाम लोंगिनस था, ने

[3423] डायोक्लेटियन के कोई पुत्र नहीं थे। यहाँ उल्लेखित 'राजकुमार' को - जैसा कि रोस्तोव के संत डेमेट्रियस बताते हैं - एक ऐसे युवक के रूप में समझना चाहिए जिसे डायोक्लेटियन ने शाही सिंहासन का उत्तराधिकारी बनने के अधिकार के साथ पाला-पोसा और गोद लिया था।

[3424] एक नपुंसक एक ख़ासला नौकर होता था जिसे पूर्व के हरमों में सेवा के लिए रखा जाता था। नौकरों को ख़ासला करने की प्रथा प्राचीन ग्रीस और रोम में भी प्रचलित थी, लेकिन यह प्राचीन एशिया माइनर में विशेष रूप से व्यापक थी।

[3425] 'पोप्रीस्टी' लंबाई की एक इकाई थी जो हमारे 'साज़ेन' के लगभग 690 के बराबर थी।

पहाड़ से उतरते हुए एक धर्मी व्यक्ति को देखा। यह बिशप क्लिनी थे, जिनसे यात्रियों की यहाँ ईश्वर की कृपा से मुलाकात हो गई। लोंगिनस, जो एक गुप्त ईसाई था, ने इस व्यक्ति में बिशप क्लिनी को पहचान लिया और एक दूसरे नौकर से, जो वह भी एक गुप्त ईसाई था, कहा:

'भाई जूलियन! क्या आप हमारी ओर आ रहे इस व्यक्ति को पहचानते हैं? वह ईश्वर के पुरुष, बिशप क्लिनी हैं, जिनकी कीर्ति उनके चमत्कारों के कारण पूरे पूर्व में फैल गई है; राजा ने उनके बारे में सुनकर उन्हें खोजा, पर उन्हें ढूंढ नहीं पाए, और इसी कारण उन्होंने ईसाइयों पर अत्याचार शुरू कर दिया।'

लॉन्गिनस और जूलियन के बीच यह बातचीत उन दो खसासों ने सुन ली थी, जिन्हें पेलैजिया ने उस तहखाने में भेजा था जहाँ ईसाइयों को रखा गया था, ताकि यह पता लगाया जा सके कि बिशप कैसा दिखता है। उन्होंने जो सुना था उसकी रिपोर्ट पेलैजिया को दी।

पवित्र कन्या ने अपने रथ को रोका और उससे उतरकर ईश्वर के पुरुष की ओर बढ़ी। उसने अपने सेवकों को दूर रहने और पेड़ों की छाया में आराम करने के लिए कहा, क्योंकि वह नहीं चाहती थी कि विधर्मी पवित्र ईसाई धर्म के रहस्यों के बारे में सुनें। ईश्वर के पुरुष के पास पहुँचकर, उसने इन शब्दों के साथ अभिवादन किया:

'हे मसीह की दासी, आनन्दित हो!'

बिशप ने उत्तर दिया:

'मेरे मसीह की शांति तुम्हारे साथ हो, हे युवा कन्या।'

पेलagia ने जारी रखा:

'धन्य है वह ईश्वर, जिसने मुझे एक दर्शन में आपके चेहरे की प्रतिमा दिखाई और मेरी आत्मा को विनाश से बचाने के लिए मुझे आप को भेजा। मैं आपसे उस ईश्वर के नाम पर विनती करती हूँ, जिसकी आप सेवा करते हैं, मुझे बताइए: क्या आप क्लिनोन, ईसाई बिशप हैं?'

क्लिनोन ने उससे उत्तर दिया:

'मैं मसीह के झुंड का चरवाहा हूँ, जो अनंत जीवन प्राप्त करने की आशा रखता हूँ।'

'आप अपनी भेड़ों को क्या आज्ञा देते हैं कि वे अनंत जीवन प्राप्त कर सकें?' बिशप पेलैजियस ने पूछा।

'मैं उन्हें पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा को जानना सिखाता हूँ, और मैं उन्हें ईश्वर के भय और मसीह के प्रेम में एक ईश्वरीय जीवन जीने का निर्देश देता हूँ।'

'मुझे बताइए, मेरे पिता, जो आपके ईश्वर के साथ एक होना चाहते हैं, उन्हें सबसे बढ़कर क्या करना चाहिए?'

'मैं आपको बताता हूँ,' बिशप ने उत्तर दिया, 'पापों की क्षमा और अनंत जीवन के लिए बपतिस्मा; इससे अधिक आवश्यक कुछ भी नहीं हो सकता।'

बिशप के चरणों में गिरते हुए, पेलagia ने विनती करते हुए कहा:

'महाधर्माध्यक्ष, मुझ पर दया करें और मुझे अपना वरदान दें! जब से मैं आपसे बात कर रही हूँ, ईश्वर का प्रकाश मेरे हृदय में चमका है; मैं शैतान, उसके सेवकों, और उसके छल-कपट, और उन निर्जी मूर्तियों का त्याग करती हूँ जिन्हें मैं लंबे समय से नफरत करती हूँ, जिनमें जीवन नहीं, बल्कि मृत्यु और अनंत विनाश है। अत; अब मैं स्वर्ग में परमेश्वर से प्रार्थना करती हूँ कि वे मुझे, जो कि अयोग्य हूँ, अपने पुत्र के साथ सगाई करा दें, जिन्होंने मेरे हृदय को प्रकाशित किया है, क्योंकि वे धर्म के सूर्य हैं।

यह सुनकर, बिशप इस कन्या के ईश्वर के प्रति महान प्रेम से चकित हुए और अपने आत्मा में आनंदित हुए। फिर, उन्होंने स्वर्ग की ओर अपने हाथ उठाकर, इन शब्दों से प्रार्थना करना शुरू किया: 'हे हमारे प्रभु यीशु मसीह के पिता, हे ईश्वर! हे स्वर्ग में वास करने वाले, जिन्होंने इस कन्या को अपना ज्ञान प्राप्त करने के लिए बुलाया है, उसे अपने प्रिय पुत्र का पवित्र बपतिस्मा प्रदान करें।'

इस प्रकार बिशप ने प्रार्थना की।

अचानक, उनके सामने जमीन से जीवन के जल का एक सोता फूट पड़ा। यह चमत्कार देखकर, बिशप ने ईश्वर की स्तुति करते हुए कहा:

'महान हैं आप, हमारे ईश्वर, पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा, जिन्होंने मनुष्यों को अनंत जीवन के लिए विरासत के रूप में बपतिस्मा दिया है। हे प्रभु, जो हृदयों को जानते हैं! तेरी दासी की नम्रता तेरे सामने प्रकट है। तू देखता है कि मैं इस

कन्या का बपतस्मिा देने में लज्जति हूँ। अत; हे सर्वशक्तमिान, अपनी दृष्टसि सब कुछ नर्धिारति कर, और मुझे सखिा कमिुझे क्या करना चाहएि।

उसी क्षण पेलagia ने पुकारा, 'महोदय, मेरे पति, आपकी प्रार्थना स्वीकार हो गई है; देखएि, मैं दो तेजस्वी युवकों को झरने के पास खड़ा देख रही हूँ, जनिके हाथों में चमकीले घूंघट हैं। आप बनिा कसिी संकोच के मेरा बपतस्मिा दे सकते हैं।'

ईश्वर का धन्यवाद करने के बाद, बशिप झरने के पास गए और उन्होंने ईश्वर के दो स्वर्गदूतों को देखा जो, जैसा कपिेलagia ने कहा था, उस युवती के शरीर को ढकने के लएि बर्फ से भी अधकि सफेद घूंघट पकड़े हुए थे। फरि बशिप ने पानी को पवत्रि कयिा, और उस पर नम्निलखिति प्रार्थना का पाठ कयिा:

– हे सर्व सृष्टकि े राजा, *'आप अपने स्वर्गदूतों को आत्माएँ बनाते हैं, और अपने सेवकों को जलती हुई आग'* (भजन संहति 103:4), मुझे इस कन्या को, जसिे आपने मुझे भेजा है, एक आध्यात्मकि बलदिान के रूप में आपको अर्पति करने का योग्य बनाएं। उसे अपने चुने हुओं की कतार में गनि लीजएि, ताकि वह आपके राज्य के दनि पाँच बुद्धमिान कुँवारयिों के साथ जलता हुआ दीपक लेकर आपके मसीह के महल में प्रवेश कर सके[3426] ।

अपनी प्रार्थना समाप्त करने के बाद, बशिप ने धन्य पेलagia का पति, पुत्र और पवत्रि आत्मा के नाम पर बपतस्मिा दयिा, और उसे मसीह के शरीर का एक अंश दयिा, जसिे वह अपने साथ ले गई।

संस्कार संपन्न होने के बाद, संत पेलagia ने बशिप के सामने झुककर, उनके पैरों को चूमते हुए उनसे कहा:

'हे प्रभु, आदरणीय पति, प्रभु से मेरी प्रार्थना करें, कि वे मुझे अपने पवत्रि आत्मा से बल दें।'

बशिप ने उससे कहा:

'जसिे ईश्वर को आपने अपना संरक्षक बनाया है, *वह आपको* अपने *पवत्रि* स्थान *से सहायता भेजे* (भजन संहति 19:3), जो उसकी उपस्थतिि का नविास स्थान है, और आपको आपके शत्रुओं पर वजिय प्रदान करे।'

पवत्रि आत्मा से महान आनंद से परपिूर्ण, पेलagia ने बशिप से कहा:

'पतिाजी, मैं आपसे उस ईश्वर के नाम की वनिती करती हूँ, जन्हिोंने मुझे आपके द्वारा मोक्ष प्रदान कयिा है: मेरी प्रार्थना को अस्वीकार न करें। आपके पवत्रि हाथों से मुझे शाश्वत राजा का अक्षय बैंगनी वस्त्र प्राप्त हुआ है; अत; अब मुझे यह सांसारकि, नश्वर बैंगनी वस्त्र और ये व्यर्थ आभूषण नहीं पहनने चाहएि। इन्हें मुझसे ले लो, इन्हें बेच दो, और इनकी बक्रिी से प्राप्त धन को ज़रूरतमंदों में बाँट दो, क्योंकि ये सभी खजाने मुझमें केवल घृणा ही जगाते हैं।

बशिप ने उससे उत्तर दयिा:

'मेरे लएि इसे अपने हाथों में लेना अनुचति है; फरि भी, मैं आपको नराश नहीं करना चाहती, क्योंकि आप ईश्वर के नाम पर मांग रही हैं। बहुत अच्छा, मैं आपकी इच्छा पूरी करूँगी।'

जवाब में पेलagia ने कहा, 'मैंने सुना है, कि हमारे प्रभु अपनी पवत्रि सुसमाचार में कहते हैं: *"कोई भी दो मालकिों की सेवा नहीं कर सकता। तुम ईश्वर और धन दोनों की सेवा नहीं कर सकते"* (मत्ती 6:24)। इसलएि, एकमात्र ईश्वर की सेवा करने की इच्छा से, मैं धन को अस्वीकार करती हूँ[3427] ।'

बशिप संत पेलagia की बुद्धमित्ता से चकति रह गए। उनके लएि ईश्वर से प्रार्थना करने के बाद, उन्होंने उन्हें आशीर्वाद दयिा और उनसे वदिा हो गए।

संत पेलagia, पवत्रि आत्मा में अत्यधकि आनंदति होकर, इस बात के लएि कि उन्होंने उसे स्वर्गीय उपहार प्राप्त करने के योग्य समझा, परमेश्वर की स्तुतकि ी और पूरे हृदय से धन्यवाद दयिा।

जब वह उन सेवकों के पास पहुँची जो उसका इंतजार कर रहे थे, तो उसने देखा कि उनके आँखों पर शैतानी भ्रम की परत चढ़ गई थी: वे कुछ भी नहीं देख पा रहे थे और उन्हें यह भी नहीं पता था कि उन्हें कहाँ जाना है। संत ने, यह समझते हुए कि यह हमारे उद्धार के शत्रु के काम से हुआ था, प्रत्येक दास पर क्रॉस का चह्नि बनाया और इस प्रकार उन्हें उनकी अंधापन से मुक्त कर दयिा; वे पहले की तरह फरि से स्पष्ट रूप से देख सकते थे।

अपनी दृष्टि वापस पाकर, नौकरों ने संत पेलagia से पूछना शुरू कर दयिा:

[3426] दस कुँवारयिों का दृष्टान्त देखें (मत्ती 25:1–13)।

[3427] मम्मोन एक सीरयिाई देवता का नाम है, जो धन का संरक्षक है। रूपक अर्थ में, 'मम्मोन' सामान्यतः धन और सांसारकि वस्तुओं को संदर्भति करता था।

'मालकनि! वह आदमी कहाँ है जसिसे आप बात कर रही थीं? जब आप दूर थीं, हमने एक अत्यंत तेजस्वी महलि को आप और हम बीच दो दासयिों के साथ खड़ी देखा; उसके सरि पर दो मुकुट थे; और मुकुटों के ऊपर एक क्रॉस चमक रहा था[3428] ।'

संत पेलagia ने सेवकों को चुप रहने का आदेश दयिा; फरि उन्होंने उन्हें हमारे प्रभु यीशु मसीह के धर्म में उपदेश देना शुरू कयिा।

नौकरों ने उससे उत्तर दयिा:

'हम कैसे वशि्वास न करें, हमारी स्वामनिी, उस पर जो मृत्यु के बाद हमें अनंत यातना से मुक्त दिेगा और जसिके पास ही स्वर्ग में हमें अनंत जीवन प्रदान करने की शक्त है!'

संत ने अपने सेवकों के धर्म परविर्तन को देखकर प्रसन्नता व्यक्त की और उन्हें तुरंत पवत्रि बपतस्मिा ग्रहण करने की सलाह दी। फरि, रथ में अपनी सीट पर बैठकर, वह अपनी दुधमां के पास अपनी यात्रा जारी रखती रहीं।

उसकी दाई अपनी पालति कन्या से मलिने बाहर आई और कहा कि वह पहले से भी अधकि सुंदर हो गई है, लेकनि यह देखकर हैरान रह गई कि वह इतनी साधारण और बनिा कसिी आभूषण के सजी हुई थी।

उनके पुनर्मलिन की शुरुआती खुशी के बाद, दूध-माँ ने संत पेलagia के चरत्रि में एक बड़ा बदलाव देखा: पहले वह अहंकारी और घमंडी थी, लेकनि अब वह वनिम्र और नम्र हो गई थी; पहले वह बहुत बातूनी थी, लेकनि अब वह चुप रहती थी; पहले वह हर तरह के स्वादष्टि व्यंजनों से प्यार करती थी, लेकनि अब वह उपवास और संयम में रहती थी, और बहुत कम भोजन लेती थी; पहले, वह अपने दनि आलस्य और सुख-भोग में बतिाती थी, और रात को अपने शरीर को एक नरम बस्तिर पर आराम देती थी; अब वह दनि का अधकिांश समय प्रार्थना में, एक कठोर बस्तिर पर आराम करते हुए बतिाती थी, और रात को भी प्रार्थना के लिए उठती थी। इन सभी संकेतों से, दूध-मां ने महसूस कयिा कि पेलagia ने ईसाई धर्म अपना लयिा था। फरि उसने उससे कहा:

'मेरी प्यारी बेटी! जैसे तुमने कभी अपनी महान शारीरकि सुंदरता से राजकुमार और तुमसे मलिने वाले सभी लोगों को चकति कयिा था, वैसे ही अब परमेश्वर के पुत्र, शाश्वत राजा को, जनिके साथ तुमने एक वधू के रूप में स्वयं को सगाई की है, अपनी सच्ची आंतरकि सुंदरता से प्रसन्न करने का प्रयास करो। मैं देखती हूँ कि तुम स्वर्ग के सच्चे ईश्वर में वशि्वास करने लगी हो। ईश्वर तुम्हें अपने लिए दुख सहने के इस महान कार्य के लिए बल दें, ईश्वर तुम्हें शत्रु पर वजिय प्रदान करें, और ईश्वर तुम्हें अपन , अपनी महमिा के वजिय के मुकुट से वभिूषति करें। और अब, मेरी बेटी, यथाशीघ्र मेरे पास से शांतपिूर्वक चली जाओ; मैं नहीं चाहता कि तुम मेरे घर में ठहरी रहो; मैं तुम्हें रोकने की हम्मित नहीं करता, क्योंकि मुझे राजकुमार के क्रोध का डर है, जो तुम्हें अपनी मंगेतर मानता है। फरि भी यह मत सोचो कि मुझे अपने लिए डर है: अगर मैं तुम्हारे साथ दुख सहता, तो मुझे भी तुम्हारे साथ परमेश्वर से इनाम मलिता; पर मुझे अपने पूरे परविार और अपने सभी रशि्तेदारों के लिए डर है। यदि राजकुमार, जो तुमसे ववािह करना चाहता है, को यह पता चल जाए कि तुम ईसाई हो, और यह भी कि तुम मेरे घर में ठहरी हुई हो, तो वह मुझे और मेरे पूरे परविार को नष्ट कर देगा।

अपनी दाई से ये शब्द सुनकर, संत पेलagia सरि झुकाए अपनी माँ के पास वापस चल दी।

जैसे ही पेलagia अपने घर पहुँची, उसकी माँ उसे मलिने के लिए बाहर आई। अपनी बेटी को शाही पोशाक में नहीं और कीमती आभूषणों के बनिा, बल्कि साधारण कपड़ों में देखकर, वह भय और हैरानी से भर गई।

एक नौकर ने उसे रास्ते में हुई सारी बातें बताईं, और बताया कि कैसे पेलagia ने एक ईसाई बशिप से पवत्रि बपतस्मिा ग्रहण कयिा था। यह सुनकर, उसकी माँ को ऐसा लगा मानो उसका शरीर सुन्न हो गया हो, और अत्यधकि दुख से अभभिूत होकर, वह लंबे समय तक अपने बस्तिर पर पड़ी रही, जैसे मृत हो। बाद में, होश में आने पर, वह अपनी बेटी से एक शब्द भी कहे बनिा, राजा के पास दौड़ी और उससे अपनी बेटी को ईसाई धर्म में परविर्तति करने वाले बशिप का पता लगाकर उसे पकड़ने और मुकदमे के लिए लाने के लिए सैनकि देने को कहा। राजा ने उसे कई सैनकि दिए, घोड़े पर सवार और पैदल दोनों।

इस बीच, धन्य पेलagia ने अपनी माँ को गुस्से में देखा और अपने साथ मसीह में वशि्वास करने वाले कई नौकरों को लेकर, उनके साथ गुप्त रूप से घर छोड़ दयिा, और कडिन नामक नदी पार करके[3429] , वहाँ छपिने का फैसला कयिा।

[3428] स्पष्ट रूप से, जो अद्भुत महलि प्रकट हुई वह ईश्वर की माता थीं।

[3429] कडिन – जसिे अब तारसस-चाय के नाम से जाना जाता है – सलिसिियिा में एक छोटी नदी है; यह माउंट टॉरस पर उत्पन्न होती है और तारसस शहर से होकर बहती है।

उसकी माँ, सैनकिों के साथ घर लौटकर और वहाँ पेलagia को न पाकर, और भी अधकि परेशान हो गई और उसने सैनकिों को चारों ओर भेज दयिा, उन्हें पेलagia और बशिप क्लनिन की तलाश करने का आदेश दयिा।

सैनकि आसपास के ग्रामीण इलाकों में फैल गए, रास्तों पर पेलagia के बारे में पूछते हुए और पहाड़ों तथा रेगस्तिानों में हर जगह उसकी तलाश करते हुए, लेकनि वे उसे ढूंढ नहीं सके, क्योंकि स्वयं ईश्वर चमत्कारकि रूप से उसकी रक्षा कर रहे थे। संत पेलagia, नदी के कनिारे बैठी, ने सैनकिों को दूसरी ओर के कनिारे पर अपनी खोज करते देखा; लेकनि सैनकि, जनिकी शारीरकि आँखें उस क्षण ईश्वर की दव्यि व्यवस्था से अंधी हो गई थीं, न तो उन्हें और न ही उनके साथयिों को देख सके। तब संत ने अपने सेवकों से कहा:

'क्या तुम देखती हो कि हमारे प्रभु अपने उन सेवकों से कतिना प्रेम करते हैं और उनकी रक्षा करते हैं जो उन पर अपनी आशा रखते हैं?'

एक तीव्र लेकनि व्यर्थ खोज के बाद, सैनकि लौट आए, क्योंकि उन्हें न तो बशिप मलि और न ही पेलagia। इससे पेलagia की माँ गहरे दुख और शोक में डूब गईं, इतनी हद तक कि वह मुश्कलि से ही जीवति लग रही थीं।

तब पेलagia, अपने हृदय में पवत्रि आत्मा की प्रेरणा को महसूस करते हुए और अपने स्वर्गीय वधू-वर के प्रति इतनी गहरी प्रेम-भावना से जलते हुए कि वह मसीह के नाम के लिए कष्ट सहने को तैयार थी, अपनी माँ के घर गई और उनसे अपना झूठा शोक त्यागने के लिए इस प्रकार आग्रह करने लगी:

पेलagia ने अपनी माँ से कहा, 'तुम इतनी क्रोधति क्यों हो? तुम सत्य को स्वीकार क्यों नहीं करतीं? तुमने सर्वोच्च ईश्वर, सभी प्राणयिों के स्रष्टा का सम्मान करने वाले पवत्रि पुरुष की खोज के लिए सैनकिों को बुलाने में संकोच नहीं कयिा। क्या तुम्हें स्वर्गीय ईश्वर के वरिुद्ध युद्ध छेड़ने में शर्म नहीं आती! क्या तुम नहीं जानतीं कि उनके सेवक, बशिप, प्रार्थना के द्वारा उनसे वनिती कर सकते थे कि वे अपनी एक स्वर्गदूत को उनके पास भेजें, जो पलक झपकते ही सभी सैन्य दस्तों को नष्ट कर देगा?"

संत पेलagia ने प्रभु यीशु मसीह के वषिय में यह और भी बहुत कुछ कहा, और अपनी माँ को सच्चे परमेश्वर को जानने के लिए प्रोत्साहति कयिा, लेकनि कोई फायदा नहीं हुआ, क्योंकि उसकी माँ पागलपन से अंधी और दुर्भावना से कटु हो गई थी। अपनी बेटी के दैवीय प्रेरति शब्दों पर कोई ध्यान दिए बनिा, उसने राजा के बेटे को इस प्रकार संदेश भेजा: 'तुम्हारी मंगेतर ने स्वयं को ईसाई ईश्वर को समर्पति कर दयिा है।'

यह सुनकर वह युवक गहराई से व्यथति हो गया। उसकी आशाएँ चकनाचूर हो गईं। उसे याद आया कि कैसे उसके पति ने कतिने ईसाइयों को यातनाएँ दी थीं, फरि भी उनमें से एक को भी उसके सामने झुकने के लिए मना नहीं सके थे। भ्रम और दुख में, वह अपने कक्ष में अकेला बैठ गया और अपने आप से इस प्रकार तर्क करने लगा: 'अगर पेलagia ईसाई ईश्वर में वश्विास करने लगी है और उसने स्वयं को उनके लिए वधू बना लयिा है, तो वह कभी भी उनका त्याग करके मेरी पत्नी बनने के लिए सहमत नहीं होगी। मैं क्या करूँ? क्या मैं उसे यातना दूँ? उससे कुछ भी हासलि नहीं होगा, क्योंकि मैं जानता हूँ कि ईसाई अपने ईश्वर के लिए कतिनी बड़ी खुशी से यातना और सबसे क्रूर मृत्यु को स्वीकार करते हैं। पेलagia भी ऐसा ही करेगी; बेशक, वह मेरी पत्नी बनने के बजाय मरना ज्यादा पसंद करेगी; मेरे लिए जो कुछ बचा है वह है शर्म और उससे भी बड़ा दुख। ईसाइयों द्वारा मेरे उपहास से मुझे शर्म और अपमान मलिेगा, और उसकी मृत्यु से दुख और शोक , क्योंकि मैं उससे अपार प्रेम करता हूँ और मेरा पूरा अस्तत्वि उसके लिए प्रेम की आग से जल रहा है। मैं अपनी तक़दीर जानता हूँ! ताकि मैं उसकी यातनाओं का गवाह न बनूँ और प्रेम से घायल अपने दलि को और अधकि कष्ट से बचा सकूँ, मैं अपनी जान ले लूँगा, क्योंकि मेरे लिए एक बार मर जाना, उस मौत के रोज़मर्रा के कष्ट को सहने से बेहतर है, जसिे मैं उस प्रेम के कारण भुगतूँगा, जसिमें मैं जल रहा हूँ।'

यह कहकर, उस युवक ने अपनी तलवार खींची, अपना सीना उजागर कयिा और, तलवार की धार को अपने सीने पर रखकर, रोते हुए कहा:

'शापति हो वह घड़ी जब मेरी आँखों ने इस महान सौंदर्य को देखा, जसिका मैं न तो आनंद ले सकता हूँ और न ही तृप्त हो सकता हूँ। लेकनि अब, तुरंत, मैं अपने सभी दुखों से मुक्त हो जाऊँगा!'

यह कहकर, उस युवक ने अपनी तलवार से अपने सीने पर जोर से वार कयिा; अपने हृदय को भेदते हुए, वह तलवार पर गरि पड़ा और मर गया।

यह जानकर पेलagia की माँ भय से कांप उठी, उसे डर था कि सम्राट डायोक्लेटयिन अपने बेटे के बदले में उसे और उसके पूरे परविार को मौत की सज़ा देगा। इसलिए, उसने अपनी बेटी को खुद ही बाँधा और उसे सम्राट के सामने ले

आई, अपने बेटे की मौत का दोष पूरी तरह से उसी पर मढ़ दिया और उसे मौत और फांसी के हवाले कर दिया। डायोक्लेटियन ने माँ और बेटी को देखकर, अपने हृदय में गहरे दुख के साथ उनसे कहा:

'तुमने यह क्या किया? तुमने मेरे बेटे को मार डाला है।'

माँ ने उत्तर दिया:

'यहाँ मैं आपके सामने आपके बेटे की मौत की जिम्मेदार महिला को लाई हूँ। उसे मौत की सजा दें और उसकी मौत का बदला लें।'

इस बीच, डायोक्लेटियन पेलैगिया की महान सुंदरता से मोहित हो गया; वह उसकी सभी पत्नियों और रखेलियों से भी अधिक सुंदर थी, और उसने पहले कभी इतनी सुंदर महिला नहीं देखी थी। अब वह मृत्युदंड या बदले के बारे में नहीं, बल्कि अपने भीतर भड़की कामुक इच्छा को शांत करने के बारे में सोच रहा था। उसने पेलagia को मसीह से दूर करने और उसे अपनी पत्नी बनाने की योजना बनाना शुरू कर दिया। उसने आदेश दिया कि बड़ी मात्रा में सोना और कीमती पत्थर लाए जाएं और उस युवती के सामने रख दिए जाएं, ताकि वह मसीह की इस दुल्हन को उन चीजों से लुभा सके; और उसकी माँ को उसने सोने के एक सौ प्रतिभा[3430] दिए और उसे भेज दिया। वह अपने घर लौट आई, एक ऐसी खुशी से प्रसन्न थी जो कुछ और नहीं बल्कि शैतानी थी। हालाँकि, संत पेलagia को शाही कक्षों में राजा की दासियों की देखभाल में छोड़ दिया गया था।

अगले दिन, राजा ने पवित्र कन्या को सम्मान के साथ अपने सामने लाने का आदेश दिया, जबकि वह स्वयं अपने सभी सलाहकारों से घिरे हुए, अपनी पूरी भव्यता में सिंहासन पर विराजमान था। उसके चारों ओर सैनिकों की भीड़ खड़ी थी। इतनी बड़ी सभा के सामने, उसने पवित्र कन्या से ये शब्द कहे:

'पेलagia, मैं तुमसे केवल एक ही बात मांगता हूँ: कि तुम मसीह का त्याग कर दो; तब मैं तुम्हें अपनी पत्नी बना लूंगा, और तुम मेरे महल में प्रथम होगी; मैं तुम्हारे सिर पर राजसी मुकुट रखूंगा, और तुम मेरे पूरे राज्य पर मेरे साथ शासन करोगी। यदि तुम्हारे द्वारा मेरा कोई पुत्र हुआ, तो वह मेरे सिंहासन पर मेरा उत्तराधिकारी बनेगा।'

दिव्य उत्साह से परिपूर्ण संत पेलagia ने बिना किसी भय के उन्हें उत्तर दिया:

'हे राजा, मुझसे ऐसे शब्द कहकर तुम पागल हो गए हो! तब जान लो कि मैं तुम्हारी इच्छा पूरी नहीं करूँगी, क्योंकि मैं तुम्हारे इस नीच विवाह से घृणा करती हूँ, क्योंकि मेरा वर—स्वर्ग का राजा मसीह है; मैं तुम्हारे शाही, व्यर्थ और क्षणिक मुकुट की इच्छा नहीं करती, क्योंकि मेरे प्रभु ने स्वर्ग के राज्य में मेरे लिए तीन अक्षय मुकुट तैयार किए हैं। पहला – विश्वास के लिए, क्योंकि मैंने सच्चे ईश्वर में अपने पूरे हृदय से विश्वास किया है; दूसरा – पवित्रता के लिए, क्योंकि मैंने अपनी कुँवारी अवस्था को उसी के हवाले कर दिया है; तीसरा – शहादत के लिए, क्योंकि मैं उसकी खातिर हर यातना सहना चाहती हूँ और उससे अपने प्रेम के कारण अपनी जान भी दे दूँगी।

ये शब्द सुनकर, डायोक्लेटियन बहुत क्रोधित हो गया और उसने एक तांबे के बैल को गर्म करने का आदेश दिया, इस उम्मीद में कि वह पवित्र कन्या को डरा सके। जब बैल इतना लाल-गरम हो गया कि उससे जलते हुए कोयलों की तरह चिंगारियाँ निकलने लगीं, तो पवित्र कन्या को उसकी ओर ले जाया गया। इस तमाशे को देखने के लिए इकट्ठी हुई भीड़ में कई गुप्त ईसाई थे। कुंवारी को अपने कष्ट के लिए तैयार देख, उन्होंने चुपचाप उसके लिए ईश्वर से प्रार्थना की कि वह अपनी अज्ञात शक्ति से उसे ऊपर से मजबूत करें। सम्राट और उसके कुलीनों ने चापलूसी और धमकियों का सहारा लेकर उसे सम्राट की इच्छा मानने के लिए मनाने की कोशिश की, लेकिन वह अपने संकल्प में अडिग रही।

तब राजा ने आदेश दिया कि उसके सारे कपड़े उतार दिए जाएँ। यह देखकर कि वे उसे नग्न करने का इरादा रखते हैं, संत ने डायोक्लेटियन से ज़ोर से कहा:

'हे राजा, तुम्हारे लिए बेहतर होगा कि तुम अपनी ही पत्नियों और रखेलियों के बारे में सोचो, क्योंकि मेरा भी वही शरीर है जो उनका है।'

लेकिन सम्राट, वासना से भड़ककर और एक कुंवारी के नग्न शरीर के दृश्य से अपनी आँखों को तृप्त करना चाहकर, ने आदेश दिया कि उसे तुरंत नग्न कर दिया जाए। लेकिन शहीद ने, दुष्टों के हाथों के छूने का इंतजार किए बिना, स्वयं अपने ऊपर क्रॉस का चिह्न बनाया और तेजी से अपने सभी कपड़े उतार दिए, उन्हें सम्राट के चेहरे पर फेंक दिया,

---

[3430] टैलेंट चांदी या सोने की एक छड़ है जिसका आकार और मूल्य प्रचलन के समय और स्थान के आधार पर भिन्न-भिन्न होता है।

और स्वर्गदूतों और मनुष्यों की आँखों के सामने नग्न खड़ी हो गई, जो केवल अपनी कन्या-सी लाज से, मानो शाही बैंगनी चोगा पहने हो, सुसज्जित थी। और उसने इन शब्दों से राजा को डाँटना शुरू किया:

'हे राजा, मैं तुम्हें उस साँप के समान समझती हूँ जिसने हव्वा को बहकाया (उत्पत्ति 3:1–6) और काइन को हाबिल की हत्या करने के लिए उकसाया (उत्पत्ति 4:2–16), और उस दानव के समान जो धर्मी अय्यूब को परीक्षा में डालने के लिए परमेश्वर से अनुमति माँगता था (अय्यूब 1:6–12)। किन्तु शीघ्र ही, हे मसीह के शत्रु, तू अपने सभी समान विचारधारा वाले अनुयायियों सहित विनष्ट हो जाएगा।

यह कहने के बाद, उसने एक बार फिर से क्रॉस का चिह्न बनाया और स्वयं लाल-गरम बैल की ओर चली गई, बिना इसमें फेंके जाने का इंतज़ार किए। जब उसने अपने हाथों से उस बैल को पकड़ा, तो उसकी उग्र आग में उसके हाथ मोम की तरह पिघल गए। फिर भी, मानो उसे कोई दर्द ही न हो, उसने अपना सिर बैल में बने छेद से अंदर डाल दिया और, उसमें प्रवेश करते हुए, ऊँचे स्वर में ईश्वर की स्तुति करने लगी, यह कहते हुए:

'महिमा तेरी हो, हे प्रभु, परम-पवित्र परमेश्वर के एकमात्र पुत्र, क्योंकि तूने इस कमज़ोर को इस पराक्रम के लिए मज़बूत किया और शैतान और उसकी युक्तियों पर विजय पाने में मेरी मदद की। तुझको और तेरे अनंत पिता को, पवित्र आत्मा के साथ, युगानुयुग महिमा और आराधना मिले।'

यह कहने के बाद, संत ने अपना आत्मा अपने परम पवित्र और अमर वर के हाथों में सौंप दिया और स्वर्गदूतों के समूह के जयकारों और गायन '[3431] ' के बीच उनके साथ स्वर्गीय महल में प्रवेश कर गईं। हालाँकि, उनका पवित्र शरीर तांबे के बर्तन के भीतर तेल की तरह पिघल गया और सुगंधित लोहबान की तरह बह निकला, जिससे पूरा शहर एक अकथनीय सुगंध से भर गया। दुष्ट राजा ने उनके पवित्र अवशेषों को शहर से बाहर फेंकने का आदेश दिया, और उन्हें लिटिटन नामक पहाड़ पर ले जाया गया। मरुस्थल से आए चार सिंह उनके पास आकर बैठ गए, और अन्य जानवरों तथा मांसाहारी पक्षियों से उनकी रक्षा करने लगे।

बिशप क्लिनिन को संत पेलagia की मृत्यु और उनकी हड्डियों के स्थान के बारे में ईश्वर से एक प्रकटवाणी प्राप्त हुई। और बिशप उस पहाड़ पर गए और वहाँ संत पेलagia की पवित्र हड्डियाँ और उनकी रक्षा कर रहे शेरों को पाया। शेरों ने, ईश्वर के उस पुरुष को देखकर, उसके पास आए और उसके सामने झुककर, रेगिस्तान लौट गए। बिशप ने पवित्र शहीद की हड्डियाँ लेकर उन्हें उस पहाड़ की सबसे ऊँची चोटी पर ले गए और वहाँ एक पत्थर रखा। बाद में, सम्राट कॉन्स्टेंटिन के शासनकाल में, जब हर ओर धर्मपरायणता का बोलबाला था, तो उन्होंने वहाँ मसीह की वधू की पवित्र अवशेषों के ऊपर एक चर्च का निर्माण किया। कब्र-पट्ट पर, बिशप क्लिनो ने निम्नलिखित अंकित किया: 'पवित्र कुँवारी पेलagia, जिन्होंने स्वयं को ईश्वर को समर्पित कर दिया और अंत तक सत्य के लिए प्रयासरत रहीं, अपने अवशेषों में यहाँ विश्राम करती हैं, जबकि उनकी आत्मा स्वर्ग में स्वर्गदूतों के साथ मसीह की महिमा में राज करती है।'

इस प्रकार पवित्र शहीद पेलagia ने हमारे प्रभु मसीह के लिए अपना संघर्ष पूरा किया, जिनका महिमा हो, पिता और पवित्र आत्मा के साथ, अब और हमेशा और युगों-युगों तक।

कॉन्टाकियन, स्वर 3:

इस संसार की चीज़ों को तुच्छ समझकर, स्वर्गीय आशीर्वादों में भाग लेकर, और कष्टों का मुकुट प्राप्त कर, अति सम्मानित पेलagia, आपने प्रभु मसीह को अपने रक्त की धाराएँ एक उपहार के रूप में अर्पित कीं। प्रार्थना करें कि वह हमें हमारे कष्टों से बचाए, हम जो आपकी स्मृति का सम्मान करते हैं।

[3431] पवित्र शहीद पेलagia का निधन वर्ष 287 में हुआ। 8वीं शताब्दी में, सम्राट कॉन्स्टेंटिन कॉप्रोनिमस (741–775) के शासनकाल के दौरान, उनके पवित्र अवशेषों को कॉन्स्टेंटिनोपल ले जाया गया और उनके नाम से समर्पित चर्च में रख दिया गया।

कसियिा के बशिप, पवत्रि शहीद सल्विानुस[3432] और उनके साथ चालीस शहीदों का कष्टकथा

4 मई को स्मरणोत्सव

पवत्रि पुरोहति-शहीद सल्विानुस गाज़ा[3433] शहर के आसपास के रहने वाले थे और शुरू में एक सैनकि थे। बाद में, ईसाई धर्म के लिए, उन्होंने सांसारकि राजा की सेना छोड़ दी और स्वर्गीय राजा - मसीह - के सैनकि बन गए, और इस कारण से उन्हें पुरोहति पद की कृपा के योग्य माना गया: वे पहले एक प्रेस्बटिर और फरि एक बशिप बने। मसीह की कलीसयिा के प्रमुख के रूप में, उन्होंने अपनी शकि्षा द्वारा कई अवश्विासयिों को सच्चे ईश्वर की ओर परविर्तति कयिा। इसके लिए मूर्तपिूजकों के उत्साही अनुयायियिों ने उसे पकड़कर सीज़रयिा नगर में मुकदमे के लिए पेश कयिा[3434] । वहाँ पहले उसे क्रूरतापूर्वक पीटा गया, फरि फाँसी दी गई और उसका शरीर छील दयिा गया, और अंत में उसे तांबे की खदानों में काम करने के लिए दंडति कयिा गया[3435] । इस श्रम के दौरान, पवत्रि शहीद पूरी तरह से थक गए, फरि भी उन्होंने अथक रूप से मसीह को परमेश्वर के रूप में स्वीकार कयिा, जसिके लिए मूर्तपिूजकों ने उन्हें तलवार से सरि कलम कर दयिा, साथ ही चालीस अन्य शहीदों का भी, जन्हिें उन्होंने मसीह के धर्म में शकि्षति कयिा था[3436] ।

संत अल्वयिन, बशिप[3437] , और उनके शष्यि की शहादत

4 मई को स्मरण कयिा जाता है

पवत्रि शहीद अल्वयिन ने सम्राट मैक्समियिन के शासनकाल में[3438] में यातनाएँ भोगीं, जब एशयिा[3439] एलयिन के अधीन था।

संत अल्वयिन को तब गरिफ्तार कयिा गया जब एग्रपिनिस नामक एक मूर्तपिूजक पुरोहति मूर्तयिों को बलदिान दे रहा था। संत को मूर्तयिों को बलदिान चढ़ाने और वेदी पर अपनी हथेली रखने के लिए मजबूर कयिा गया, लेकनि उन्होंने गरमिापूर्वक उत्तर दयिा: 'मैं मसीह में वश्विास की प्रशंसा करता हूँ, और मैं मूर्तयिों की पूजा की नदिा करता हूँ'।

इसके लिए, उन्होंने पहले उसके पेट और पडिली को लाल-गरम लोहे की छड़ों से दागा, और फरि उसे बेरहमी से लाठयिों से पीटना शुरू कर दयिा।

इस तरह की यातनाओं के माध्यम से, यातना देने वालों ने संत को मसीह का त्याग करने और मूर्तयिों को बलदिान चढ़ाने के लिए मजबूर करने की कोशशि की, लेकनि न तो वह और न ही उसका शष्यि, जसिे उसके साथ यातना दी जा रही थी, इस बात के लिए सहमत हुए। इसके बाद, उसे खंभे पर जलाने की सज़ा दी गई; इस उद्देश्य के लिए, एक भट्टी गर्म की गई और उसे और उसके शष्यि को उसमें फेंक दयिा गया, जहाँ पवत्रि शहीदों ने अपनी प्राणों की आहुति दे दी[3440] ।

[3432] पवत्रि शहीद सल्विानस को केशयिा, यानी केसरयिा का बशिप कहा जाता है, उस स्थान के नाम पर जहाँ उन्हें कठोर श्रम की सज़ा दी गई थी; जबकि, उनकी सेवा के स्थान के अनुसार, वे गाज़ा (या गाज़ा के पास) के थे, जैसा कि चेती-मनिेई में भी इंगति है।

[3433] गाज़ा का प्राचीन फ़लिस्तीनी शहर फ़लिस्तीन में, यहूदयिा की दक्षणिी सीमा से बहुत दूर नहीं, भूमध्य सागर के तट पर स्थति था। चौथी शताब्दी तक, गाज़ा पहले से ही एक ईसाई शहर था; सातवीं शताब्दी में, इस पर मुसलमानों ने वजिय प्राप्त की।

[3434] कैसरयिा शहर, जो कभी फलिस्तीन के रोमन प्रोकोरेटर्स का केंद्र था, भूमध्य सागर के तट पर प्राचीन सामरयिा की सीमाओं के भीतर स्थति था।

[3435] पवत्रि शहीदों के समकालीन यूसेबयिस का कहना है कि सल्विानस को पेना शहर की खदानों में काम करने के लिए दंडति कयिा गया था, जो कुछ लोगों के अनुसार अरब के रेगस्तिानों में स्थति था, जबकि यूसेबयिस इसे फलिस्तीन में स्थति मानते हैं।

[3436] पवत्रि शहीदों की मृत्यु 311 में हुई।

[3437] पवत्रि शहीद अल्वयिन एशयिा माइनर में रोमन प्रांत एशयिा के शहर एनयिा के बशिप थे।

[3438] यह, बेशक, मैक्समियिन गैलेरयिस को संदर्भति करता है, जो डायोक्लेटयिन का सह-शासक था, जसिने 305 ईस्वी से रोमन साम्राज्य के पूर्वी भाग पर शासन कयिा।

[3439] एशयिा नाम लडियिा में एक छोटे, जल-समृद्ध, दलदली मैदान को दयिा गया था, यानी, आज के एशयिा माइनर प्रायद्वीप के पश्चमिी हस्सि के केंद्रीय भाग में, ईजयिन सागर के पूर्वी तट पर। यह प्रकाशतिवाक्य की पुस्तक (प्रकाशतिवाक्य 1:11) में उल्लखिति एशयिा माइनर के सात शहरों का घर था, और कुछ समय के लिए यह वह स्थान था जहाँ संत जॉन द थयिोलोजयिन ने अपना मंत्रालय कयिा।

[3440] मनिीउस के अनुसार, पवत्रि शहीदों की मृत्यु 304 में हुई।

संत एरास्मस की शहादत।

4 मई को स्मरणोत्सव

धन्य एरास्मस, जो अपने युवा काल से ही मसीह के प्रति प्रेम से परिपूर्ण थे, ने उत्साहपूर्वक उनके आज्ञाओं का पालन किया और फॉर्मिया के बिशप नियुक्त हुए[3441] . जब अधर्मी सम्राट डायोक्लेटियन ने ईसाइयों को यातनाएँ देकर अपने राज्य के नगरवासियों को भ्रम में डाल दिया, तब संत एरास्मस ने अपना धर्मपीठ छोड़कर लेबनान के पहाड़ों में शरण ली[3442] , जहाँ वे अपने उत्पीड़कों से छिपे रहकर सात वर्ष तक रहे। एक दिन उन्होंने स्वर्ग से एक देवदूत की आवाज़ सुनी, जिसने उनसे कहा: 'एरास्मस! कोई भी तब अपने दुश्मनों को हरा नहीं सकता जब वे सो रहे हों। तो जाओ, अपने शहर में जाओ, बहादुरी से संघर्ष करो, और तुम अपने दुश्मनों को हरा दोगे।'

इन शब्दों के बाद, जब एरास्मस स्वर्गदूत द्वारा बताए गए रास्ते पर चल पड़ा, तो उसका सामना सैनिकों से हुआ जिन्होंने उससे पूछा: 'आप किस ईश्वर की पूजा करते हैं?' संत एरास्मस ने खुद को एक ईसाई घोषित किया। फिर सैनिकों ने उसे पकड़ लिया और सम्राट डायोक्लेटियन के पास एंटिओक[3443] ले गए। रास्ते में, संत ने खुले तौर पर खुद को एक ईसाई घोषित किया, और सम्राट ने उसे लाठी से पीटने का आदेश दिया, लेकिन उसने सम्राट को फटकार लगाई। तब सम्राट ने उसे सीसे की छड़ों से पीटने का आदेश दिया, और चूंकि इसके बाद भी वह अपने विश्वास में अडिग रहा, तो यातना देने वाले के आदेश पर उसे और यातनाएं दी गईं: सबसे पहले, उन्होंने लोहे के कंघी से उसके पूरे शरीर की खाल खुरच डाली, और फिर उन्होंने पिघला हुआ पिच और गंधक उसके घावों पर डाल दिया, लेकिन इससे उसे बिल्कुल भी दर्द नहीं हुआ। इसके बाद, यातना देने वाले ने आदेश दिया कि उसके गले में भारी लोहे की बेड़ियाँ डाल दी जाएँ और उसे कैद कर दिया जाए, लेकिन प्रभु का स्वर्गदूत, जेल के दरवाजे खोलकर, उसे उसकी बेड़ियों से मुक्त कर दिया और उससे कहा: 'मेरे पीछे चलो; मैं तुम्हें इटली ले जाऊँगा। वहाँ भी, तुम कई लोगों को उद्धार की ओर ले जाओगे।'

[3444]इसके बाद, देवदूत ने संत एरास्मस को लिसिया के शहर[3445] में ले जाकर छोड़ दिया। एरास्मस ने सभी को मसीह में विश्वास सिखाना और उनका बपतिस्मा देना शुरू कर दिया। ऐसा करते हुए, उन्होंने बड़े चमत्कार किए; अन्य बातों के अलावा, उन्होंने अनास्तासियस नामक एक कुलीन व्यक्ति के मृत पुत्र को जीवित कर दिया, और बाद में दस हजार लोगों का बपतिस्मा दिया। यह जानकर, मैक्सिमियिन ने उसे इटली लाने के लिए सैनिक भेजे; और जब संत को उसके सामने लाया गया, तो उसने आदेश दिया कि उसके गालों पर थप्पड़ मारा जाए और उसे मूर्तिपूजक देवताओं को बलिदान न चढ़ाने पर सूली पर चढ़ाने की धमकी दी। तब एरास्मस ने उससे कहा:

'तो फिर तुम्हारे देवता कहाँ हैं, ताकि मैं उनके लिए बलिदान चढ़ा सकूँ?'

संत को जुपिटर के मंदिर में ले जाया गया। वहाँ उन्होंने प्रार्थना की, और उनकी प्रार्थना से सभी मूर्तियाँ गिर पड़ीं, जबकि मंदिर से आग निकल आई और मूर्तिपूजकों को भस्म कर दिया, जिससे मैक्सिमियिन को शहर छोड़कर भागने के लिए मजबूर होना पड़ा। इसके बाद, संत एरास्मस ने वहाँ कई लोगों का बपतिस्मा दिया और सिरिमियम शहर गए[3446] । उस शहर में, मैक्सिमियिन के आदेश पर, उन्हें फिर से पकड़ लिया गया और उन्हें और यातनाएँ दी गईं। उन्होंने उन्हें तांबे का कवच पहनाया और उन्हें एक तपे हुए बिस्तर पर लिटा दिया, और उनके पैरों को जमीन में ठोक दिया। इसके बाद, उन्होंने बिस्तर के ऊपर लकड़ी का ढेर लगा दिया और उसे आग लगाकर उस पर रेज़िन और तेल डालना शुरू कर दिया; लेकिन लकड़ी जलकर राख हो गई, जबकि संत को कोई नुकसान नहीं हुआ। मैक्सिमियिन, लोगों से डरकर, महल में चला गया, जबकि प्रभु का एक स्वर्गदूत संत को लेकर फॉर्मिया शहर में ले गया, जहाँ और भी कई लोगों ने उनसे बपतिस्मा

[3441] फ़ोर्मिया शहर इटली में कास्टाग्ना की खाड़ी पर, भूमध्य सागर के तट पर स्थित था।

[3442] लेबनानी पहाड़ सीरिया में स्थित हैं।

[3443] सीरिया की प्राचीन राजधानी एंटिओक, ओरोंटेस नदी के तट पर स्थित थी, जहाँ से यह भूमध्य सागर में मिलती है, उससे बहुत दूर नहीं।

[3444] मैक्सिमियिन हर्क्यूलिस, जो अगस्टस की उपाधि धारण करते थे, डायोक्लेटियन के सह-शासक थे और उन्होंने 285 से 305 तक रोमन साम्राज्य के पश्चिमी हिस्से पर शासन किया।

[3445] लिसिया शहर का स्थान विभिन्न रूप से पहचाना जाता है। निकोडेमस के अनुसार, यह उसी नाम की झील के किनारे स्थित मैसेडोनियाई शहर लिकिनडि था।

[3446] सिरिमियम शहर इल्लिरिया में सावा नदी के किनारे स्थित था, जो डेन्यूब की एक सहायक नदी है।

लयिा। यह सब होने के बाद, संत एरास्मस ने सभी के लिए धन्यवाद की प्रार्थना करते हुए अपनी आत्मा ईश्वर के हाथों में सौंप दी[3447] , और ईसाइयों ने उन्हें सम्मान के साथ दफनाया।

18 मई

5 मई (पुराने कैलेंडर के अनुसार)

महान शहीद संत इरीना का शहादत दविस

5 मई को स्मरणोत्सव

उन दनिों, जब प्रेरतिों के उपदेश के कारण, मूर्तपिूजा के अंधकार में डूबे लोगों के बीच पवत्रि ईसाई धर्म का प्रकाश चमका, तो मैग्डोना शहर में[3448] एक राजकुमार लसिनियिस[3449] रहता था। उसकी एक पत्नी थी, जसिका नाम भी उसके जैसे लसिनियिा था। उन्होंने अपनी बेटी का नाम पेनेलोप रखा। जैसे-जैसे वह बड़ी हुई और छह वर्ष की आयु तक पहुँची, वह असाधारण रूप से सुंदर प्रतीत होती थी, इतनी कि उसकी सुंदरता ने अपने सभी समवयस्कों की सुंदरता को फीका कर दयिा। उसके पतिा ने उसके लिए, शहर से बहुत दूर नामक एक मनोरम स्थान पर, कई कमरों वाला एक मीनार बनवाया, जो उत्तम स्वाद से सुसज्जति और धन-संपत्ति से भव्य था। कुर्सयिाँ, मेज़, दीपक, सोफे और सभी बर्तन शुद्ध सोने से जड़े हुए थे। वह अपनी बेटी पेनेलोप को तेरह सुंदर दासयिों के साथ इस मीनार में ले आया, और अपनी बेटी की देखभाल के लिए अपनी सोने की मूर्तयिाँ वहाँ स्थापति कीं। उसने यह आदेश दयिा कि उसकी बेटी तब तक इसी मीनार में रहे जब तक वह ववािह योग्य आयु की न हो जाए। लसिनियिस ने करयिा नाम की एक सम्मानति वृद्ध महलिा को अपनी बेटी की शकि्षकिा नयिुक्त कयिा, और उसे आदेश दयिा कि वह हमेशा अपनी बेटी के साथ रहे, उसके साथ भोजन करे, और सभी दासयिों का अधकिार उसे सौंप दयिा। इसके अलावा, लसिनियिस ने एपेलयिन नामक एक सम्मानति और ववेिकी वृद्ध व्यक्ति को नरि्देश दयिा कि वह अपनी बेटी से प्रतदिनि मलिें और उसे वद्वितापूर्ण ज्ञान सखिाएँ। इस प्रकार वह युवती छह साल और तीन महीने बतिाई, और जब वह 12 साल की हुई, तो उसके पतिा यह वचिार करने लगे कि उसे सबसे प्रतषि्ठति राजकुमारों में से कसिके साथ ववािह कराना चाहिए[3450] ।

एक दनि, जब वह युवती अपने कमरे में बैठी थी, तो पूर्व की ओर खुलने वाली खुली खड़िकी से एक कबूतर अपने चोंच में एक छोटी टहनी पकड़े हुए उड़कर अंदर आया; उसने उसे मेज पर रख दयिा और तुरंत खड़िकी से बाहर उड़ गया। एक घंटे बाद, एक चील वभिन्नि फूलों का एक हार लेकर कमरे में उड़ी; उसने भी वह हार मेज पर रखा और तुरंत उड़कर चली गई। फरि, एक और खड़िकी से, एक कागा़ चोंच में एक छोटा सा साँप लेकर आया, जसिे उसने मेज पर रख दयिा और वह भी उड़कर चला गया।

यह सब देखकर, वह युवती अपनी शकि्षकिा के साथ बहुत हैरान रह गईं, और सोचने लगीं कि इन पक्षयिों के आगमन का क्या संकेत हो सकता है। जब उनका शकि्षक एपेलयिन उनके पास आया, तो उन्होंने उसे जो कुछ हुआ था, वह सब बता दयिा। एपेलयिन एक गुप्त ईसाई था और उसमें दूरदर्शति का वरदान था। उन्होंने उनकी बताई हर बात पर वचिार करने के बाद, पेनेलोप की ओर मुड़कर कहा:

[3447] पवत्रि शहीद का 10 जुलाई 303 को नधिन हो गया। पोप ग्रेगरी (590–604) के पोपत्व के दौरान, उनके अवशेष फॉर्मयिा में रखे गए थे, और 9वीं शताब्दी में उन्हें कैस्ट में स्थानांतरति कर दयिा गया।

[3448] मैगेडन या मग्डिोनयिा थ्रेस में एक शहर है, जो ईजयिन सागर के उत्तरी तट पर स्थति एक क्षेत्र है।

[3449] यहाँ उल्लेखति राजकुमार लकिनियिस को रोमन सम्राट लकिनियिस (जो 311 से 324 तक राज करता था) से अलग समझना चाहिए, जसिने रोमन साम्राज्य के पूर्वी आधे हसि्से पर शासन कयिा था। बाद वाला, कॉन्स्टेंटनि द ग्रेट की बहन कॉन्स्टेंस से ववािहति था; जबकि यह लकिनियिस, लकिनियिा से ववािहति था; पहला नकिोमेडयिा के गौरवशाली शहर में रहता था, जबकि दूसरा मैग्डोना में रहता था; पहला अपनी दुष्टता में नष्ट हो गया, जबकि दूसरा ईसा में वशि्वास करने के बाद सम्मानपूर्वक मर गया; अंत में, पहला चौथी शताब्दी की शुरुआत में रहता था, जबकि दूसरा पहली शताब्दी के अंत में, लगभग प्रेरतिों के समय में रहता था।

[3450] प्राचीन काल में पूर्व में, लड़कयिों की बहुत कम उम्र में शादी कर दी जाती थी (यह अतीत में रूस में भी प्रथा थी)।

'जानो, मेरी बेटी, कि कबूतर तुम्हारे अच्छे चरित्र, तुम्हारी कोमलता, विनम्रता और कन्या-सी पवित्रता का प्रतीक है। जैतून की टहनी ईश्वर की कृपा का प्रतीक है, जो आपको बपतिस्मा के माध्यम से प्रदान की जाएगी। ऊँची उड़ान भरने वाला बाज, राजा और विजेता का प्रतिनिधित्व करता है; यह दर्शाता है कि आप अपनी इच्छाओं पर शासन करेंगी और ईश्वरीय विचारों से सम्मानित होकर, अदृश्य शत्रुओं पर विजय प्राप्त करेंगी, ठीक वैसे ही जैसे बाज पक्षियों पर विजय प्राप्त करता है। इस बीच, फूलों का हार आपके कर्मों के लिए राजा मसीह से उनके स्वर्गीय राज्य में प्राप्त होने वाले पुरस्कार का संकेत है, जहाँ आपके लिए अमर, शाश्वत महिमा का मुकुट तैयार किया जा रहा है। साँप वाले कौवे का प्रतीक शत्रु, शैतान है, जो आप पर दुख, शोक और उत्पीड़न थोपने का प्रयास करता है। तब, हे कन्या, जानो कि महान राजा, जो स्वर्ग और पृथ्वी को अपनी शक्ति में धारण करता है, तुम्हें अपनी वधू के रूप में स्वयं से सगाई करना चाहता है, और तुम उसके नाम के लिए बहुत कष्ट सहोगी।

अपनी शिक्षिका की बात सुनकर, उस कन्या ने उनके शब्दों को अपने हृदय में संजो लिया, और धीरे-धीरे दिव्य प्रेम की अग्नि उस हृदय में प्रवेश करने लगी।

अगले दिन, उसके पिता, राजकुमार लिसिनियस, राजकुमारी और अपने दरबारियों के साथ पेनेलोप के मीनार में आए। वह उसे देखना चाहता था और उससे उसकी शादी के बारे में बात करना चाहता था। जब उसने देखा कि उसका चेहरा सूरज की किरण की तरह सुंदरता से चमक रहा था, तो वह बहुत खुश हुआ और उससे कहा:

'देखो, मेरी प्यारी बेटी, तुम अब विवाह योग्य आयु में पहुँच गई हो। तो मुझे बताओ: तुम सभी राजकुमारों में से किस राजपुत्र को सबसे अधिक पसंद करती हो? मैं तुम्हारा विवाह उसी युवक से कराऊँगा।'

और उसने उसके लिए कई पड़ोसी राजकुमारों के बेटों के नाम बताए। युवती पेनेलोप ने अपने पिता को उत्तर दिया:

'पिताजी! मुझे विचार करने के लिए बस सात दिन का समय दीजिए, और फिर मैं आपको उत्तर दे दूँगी।'

उसकी इच्छा मानकर, उसके पिता उसे छोड़कर घर चले गए।

जब लिसिनियस चला गया, तो पेनलोप मूर्तियों के पास गई और उनसे कहा:

'यदि आप देवता हैं, तो आप मेरी सुनिए: मेरे पिता मुझे विवाह के लिए देना चाहते हैं, लेकिन मैं कुंवारी ही रहना चाहती हूँ, क्योंकि इस जीवन की चिंताएँ मुझे पूरे मन से ईश्वर की सेवा करने से रोकती हैं। तो मुझे बताइए: क्या मुझे विवाह करना चाहिए या नहीं?'

मूक मूर्तियाँ चुप रहीं, क्योंकि वे निर्जीव थीं। उन पर थूकते हुए, पेनेलोप पूर्व की ओर मुड़ी और, आकाश की ओर देखते हुए, बोली:

'यदि आप ही सच्चे ईश्वर हैं – वह जिनकी ईसाई उपदेश देते हैं – मैं आपसे विनती करती हूँ: मुझे बताइए, क्या मुझे पति ग्रहण करना चाहिए, या हमेशा के लिए कुंवारी रहना चाहिए?'

चूंकि शाम हो चुकी थी, पेनेलोप की आँख लग गई। अपने सपने में उसने ईश्वर के एक स्वर्गदूत को देखा, जिसने उससे कहा: 'पैनेलोप! अब से तुम्हें पैनेलोप नहीं कहा जाएगा, बल्कि इरिनि कहा जाएगा, क्योंकि तुम के लिए कई लोगों के लिए एक शरण और एक शांतिपूर्ण आश्रय[3451] बनोगी, और तुम्हारे द्वारा कई हजार मानव आत्माएँ ईश्वर की ओर मुड़ेंगी और उद्धार पाएँगी। तुम्हारा नाम संपूर्ण ब्रह्मांड में महान और अद्भुत होगा। जो कुछ वृद्ध एपेलियन ने तुम्हें उन पक्षियों के बारे में बताया था जो तुमने देखे थे, वह सत्य है, क्योंकि यह परमेश्वर की आत्मा थी जो उनके होठों से बोल रही थी। इसी रात, परमेश्वर का एक पुरुष जिसका नाम तीमुथियुस है, तुम्हारे पास आएगा; वह मसीही धर्म-शास्त्र में पारंगत है और उसे संत पौलुस ने नियुक्त किया है। यह पुरुष चर्चों में पौलुस के पत्र ले जाता है। वह तुम्हें पवित्र बपतिस्मा देगा और तुम्हें बताएगा कि तुम्हें क्या करना है।'

इन शब्दों के बाद, स्वर्गदूत गायब हो गया। होश में आने पर, पेनेलोप को आनंद हुआ और उसने उत्सुकता से पुरोहित के आगमन की प्रतीक्षा की।

अल्पांतरात्, वास्तव में, परमेश्वर के पुरुष तिमोथी उस स्तम्भ पर पहुँचे, जिन्हें परमेश्वर के एक स्वर्गदूत ने वहाँ लाकर उस पर चढ़ा दिया था। कन्या द्वारा हर्षपूर्वक स्वागत किए जाने पर, वे बैठ गए और उन्होंने उसे, उसकी अध्यापिका को तथा उसकी सभी सखियों को ईसाई धर्म की शिक्षा देना आरंभ किया, और उनके वचन उन सभी को भाए। उन्हें विश्वास में पर्याप्त रूप से शिक्षित करने और सच्चे परमेश्वर, यीशु मसीह, उन पर पवित्र विश्वास और मसीही

[3451] नाम 'इरीना' ग्रीक शब्द εἰρήνη/eirini – शांति, समृद्धि से लिया गया है।

संस्कारों के बारे में वह सब कुछ प्रकट करने के बाद जो उन्हें जानना चाहिए था, उन्होंने पेनेलोप को पति, पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम पर बपतिस्मा दिया। उसके बपतिस्मा पर, तिमोथी ने उसे एक नया नाम दिया: इरिना; और इस प्रकार उन्होंने उसे मसीह के लिए सगाई कर दी, और अंत तक पवित्रता में अपनी कुँवारी अवस्था बनाए रखने का आदेश दिया। तिमोथी ने उसकी शिक्षिका, कारिया, और उसकी सभी दासियों को भी बपतिस्मा दिया; तब उन्होंने आइरीन को हमारे प्रभु यीशु मसीह, सच्चे परमेश्वर और उनके अमर वरा के नाम का प्रचार करने के लिए सहन किए जाने वाले शहीदी कष्टों में धैर्य रखने के लिए प्रोत्साहित करना शुरू किया। फिर तीमुथियुस ने आइरीन और उसकी सहेलियों को आशीर्वाद दिया और, उन सभी को परमेश्वर की कृपा के हवाले कर, उनसे विदा हो गए।

धन्य इरीना ने अपनी दासियों के साथ मिलकर दिन-रात परमेश्वर की महिमा की और उसकी स्तुति की तथा उन प्रेरितों की रचनाओं का लगन से अध्ययन किया जो संत तीमथियुस ने उनके लिए छोड़ी थीं[3452] । फिर उन्होंने अपने पिता द्वारा स्थापित सोने की मूर्तियों को एक-एक करके खिड़की से नीचे फेंक दिया और कहा: 'यदि तुम देवता हो, तो खुद को बचाओ।'

बड़ी ऊँचाई से जमीन पर गिरने पर, मूर्तियाँ चकनाचूर हो गईं और धूल में मिल गईं, जबकि संत उनकी शक्तिहीनता पर हँसी और हमारे प्रभु यीशु मसीह, सच्चे परमेश्वर में आनंदित हुई।

जब सात दिन बीत गए, तो इरीना के पिता और माता, कुलीनों के साथ, स्तंभ पर चढ़कर उसके पास गए और उससे विवाह के बारे में बात की। उसने उन्हें उत्तर दिया:

'यह जान लो: मैं मसीह की दासी हूँ; मैं उसी पर विश्वास करती हूँ, और मैं उससे प्रेम करती हूँ, जो स्वर्ग का शाश्वत राजा है। मैंने स्वयं को इस वरा के साथ वचनबद्ध कर लिया है, जो पवित्र, स्वर्गीय और अमर है। मैं किसी अन्य वरा की इच्छा नहीं करती, और न ही मैं किसी अन्य ईश्वर की उपासना करूँगी, क्योंकि उसके सिवा कोई ईश्वर नहीं है।' इरिन ने अपनी बात जारी रखते हुए कहा, 'क्या तुमने अपने देवताओं का विनाश नहीं देखा, जो खिड़की से गिरकर जमीन पर गिर पड़े? वे अपनी भी मदद नहीं कर सके। तो फिर, वे तुम्हारी मदद कैसे कर सकते हैं? उनमें तुम्हारी आशा व्यर्थ है, और मूर्तियों पर तुम्हारी सारी मेहनत और खर्च व्यर्थ है। तुम्हें सोना और चाँदी भिखारियों, गरीबों, अनाथों और विधवाओं में बाँट देनी चाहिए थी; फिर भी तुमने कारीगरों को बुलाकर अपने लिए निर्जीव मूर्तियाँ बनवाईं और इस प्रकार गरीबों को दान से वंचित कर दिया; इसके द्वारा, तुम जीवित परमेश्वर के शत्रु और दुष्टों के सेवक बन गए हो। तुम एक जंगली घोड़े की तरह कब तक उन्मत्त दौड़ते रहोगे? आप जीवित परमेश्वर को, उस एक को, जो मार डालने और जीवन देने की शक्ति रखता है, कब जानेंगे? जब परमेश्वर का प्रकाश आपके हृदयों में चमकेगा, तो शैतान—जो लोगों को प्रकाश से दूर करके अंधकार और विनाश में ले जाता है, और उन्हें सीधे रास्ते से भटकाकर गलत मार्ग पर ले जाता है—आपसे भाग जाएगा। लेकिन तुम, सबसे पहले, अब शैतान से भागने का प्रयास करो, क्योंकि वह दुष्ट और क्रूर है। वह एक परीक्षा करने वाला है जो तुम्हारे हृदयों की आँखों पर पर्दा डाल देता है, ताकि तुम सत्य को न जान सको। मैं आपसे निवेदन करता हूँ, पिताजी, मैं आपसे विनती करता हूँ: उस सच्चे परमेश्वर को जानिए, जिसने अपने वचन से सभी चीज़ों की रचना की। जब आपने मेरे लिए इस स्तंभ को खड़ा करने का निश्चय किया, तो आपने इस कार्य के लिए बहुत से लोगों को इकट्ठा किया: वहाँ पाँच सौ पचास मजदूर और तीन सौ पर्यवेक्षक थे; और इसके बावजूद, वे मुश्किल से दस महीनों में निर्माण कार्य पूरा कर पाए। परन्तु अनन्त परमेश्वर ने, अपने एक ही वचन से, स्वर्ग और सूर्य, चंद्रमा और तारों, प्रकाश और अंधकार की सृष्टि की, और प्रकाश को 'दिन' तथा अंधकार को 'रात' कहा; वह पृथ्वी को हवा में टिकाए रखता है, हमारे लाभ के लिए जल को बहने का आदेश दिया, विभिन्न पेड़ों को उगाया, ऋतुओं, वर्षों और महीनों को निर्धारित किया, पृथ्वी के जानवरों, हवा के पक्षियों और जल की मछलियों को बनाया; अंत में, अपने सबसे पवित्र हाथों से, उसने मिट्टी का एक मुट्ठी लेकर मनुष्य को बनाया, और उसे संपूर्ण ब्रह्मांड का स्वामी बनाया, और सभी चीजों को उसके अधीन कर दिया। और परमेश्वर ने यह सब अपने एक वचन द्वारा छह दिनों में पूरा किया, जो उनके एकमात्र पुत्र, यीशु मसीह हैं, जो उनकी ही से बिना किसी पिता के उत्पन्न हुए, और जो उनके समान स्वभाव के और उनके साथ सिंहासन पर विराजमान हैं। पवित्र आत्मा के कार्य द्वारा, वह पवित्र सदा-कुँवारी मरियम से बिना पिता के जन्म लिए देहधारी हुए, और मनुष्यों के बीच रहे, अनगिनत चमत्कार किए: उन्होंने अंधों को दृष्टि प्रदान की, कुष्ठरोगियों को स्वच्छ किया, मृतकों को जीवित किया, और

[3452] प्रेरित तिमोथी ने मसीहियों के बीच संत पौलुस प्रेरित के पत्रों का सक्रिय रूप से प्रसार किया, विशेष रूप से उन दो पत्रों का जो व्यक्तिगत रूप से उनके नाम लिखे गए थे।

लकवाग्रस्त लोगों को चंगा किया। ईर्ष्या के कारण, यहूदियों ने उन्हें सूली पर चढ़ाया, उनकी अपनी इच्छा के अनुसार – हमारे उद्धार के लिए पीड़ा सहने हेतु। लेकिन उनके मृत्युपश्चात् और दफ़नाए जाने के बाद, वे अपनी दिव्यता की शक्ति से तीसरे दिन पुनर्जीवित हुए, स्वर्ग में आरोहण किए, परमेश्वर पिता के दाहिने हाथ पर बैठ गए, अपने शिष्यों पर पवित्र आत्मा को भेजा, और उन्हें संसार में भेज दिया, ताकि वे उन लोगों को ज्ञान दें जिनके मन अंधकारमय हो गए थे, उन लोगों को धर्मांतरित करें जो भटक गए थे, और उन लोगों को बचाएँ जो नाश हो रहे थे; क्योंकि वह सभी का उद्धार चाहता है, और मानव जाति के प्रति उसकी दया कभी भी विफल नहीं होगी।

तब संत ने ऐसा कहा, और उनके शब्द सभी को मीठे लगे। राजकुमार और राजकुमारी अपनी प्रिय पुत्री को लेकर अपने साथ नगर में ले गए। शहर की सभी युवतियाँ अपने सिर पर फूलों के हार पहनकर उससे मिलने के लिए बाहर आईं, और उसके प्रति निमन किया, जबकि सभी लोग, ऊँची जगहों, बाड़ों की दीवारों और घरों की छतों पर इकट्ठा होकर, उस सुंदर कन्या के लिए आनंदित जयकारे और प्रशंसा करने लगे। जैसे ही वे राजकुमार के महल के पास पहुँचे, संत आइरीन ने एक राक्षस देखा जो उस पर चिल्लाया:

'कन्या, इस नगर में मेरा तुमसे कोई संबंध नहीं है; हमारे नगर को छोड़ दो, क्योंकि यहाँ कोई ईसाई नहीं रहते।'

लेकिन संत ने उससे कहा:

'मैं तुझसे प्रभु यीशु मसीह के नाम पर आज्ञा देता हूँ कि मुझे बता कि तू कौन है।'

उसने उत्तर दिया:

'मैं एक राक्षस हूँ जो मूर्तियों में वास करता है, व्यभिचारियों और adulterers का शिक्षक, जादूगरों का उकसाने वाला, दुश्मनों का नेता, शराबी का दोस्त; मुझे रक्तपात में आनंद आता है; मैं सभी अन्याय और झूठ, और सभी बुराइयों का पिता हूँ।' मैं तुझसे फिर कहती हूँ: जा और हमारे नगर से भाग जा, नहीं तो मैं तेरे पिता को तेरे विरुद्ध कर दूँगी, उनका क्रोध तुझ पर भड़का दूँगी, और वे तुझे मार डालेंगे।

बहुतों ने इस दानव की आवाज़ सुनी, परन्तु उसे नहीं देखा। परन्तु धन्य इरिना, मुड़कर, उससे कहने लगी:

'मैं तुम्हें प्रभु यीशु मसीह के नाम पर आज्ञा देता हूँ, कि इस नगर को छोड़ दो।'

तुरंत राक्षस काँप उठा और अदृश्य हो गया। फिर राक्षस राजकुमार के हृदय में प्रवेश कर गया और उसमें अपनी बेटी के प्रति क्रोध भड़काया। राजकुमारी को बुलाकर, लिसिनियस ने उससे कहा:

'अब हम क्या करें? हमारी बेटी ईसाइयों के जाल में फंस गई है। ओह, काश मैंने वह स्तंभ नहीं लगवाया होता! मैं अपनी संतान को बचाना चाहता था, लेकिन इसके बजाय मैंने उसे बर्बाद कर दिया है। अब मेरी सारी उम्मीदें खत्म हो गईं।'

राजकुमारी ने उत्तर दिया:

'आप कितनी अजीब बातें कह रहे हैं! हमारी बेटी को किसने बहकाया है, और उसने क्या गलत किया है?'

राजकुमार ने उत्तर दिया:

'वह मसीह में विश्वास करती है और हमारे देवताओं का इनकार करती है।'

'तो उन्हें बर्बाद होने दो,' राजकुमारी ने पलटकर जवाब दिया, 'उन देवताओं को जिन्होंने स्वर्ग और पृथ्वी की रचना नहीं की; परन्तु मेरी बेटी को राजा मसीह की महिमा प्राप्त हो, जिसने उसे अनंत जीवन के लिए बुलाया है!'

अपने गुस्से में, राजकुमार ने राजकुमारी को महल से बाहर ले जाने का आदेश दिया। नौकरानियों में से एक ने यह खबर इरिना को दी, और वह अपने पिता के पास गई। जब राजा ने अपनी प्रिय बेटी को देखा, तो वह सिर झुका लिया। लेकिन उसके दिल में, शैतान की बदनामी से उकसाकर, गुस्सा भड़क उठा। संत इरिना ने अपने पिता से कहा:

'पिताजी, आप इतने दुखी क्यों हैं? आपका राज्य शांति में है; आपको युद्ध का कोई खतरा नहीं है; यहाँ मैं, आपकी बेटी, आपके पास आई हूँ; तो फिर आपका चेहरा इतना उदास क्यों है?'

लिसिनियस ने उससे उत्तर दिया:

'मेरे लिए तो अच्छा होता अगर मैंने तुम्हें कभी जन्म ही न दिया होता। मैंने तुम्हारी कितनी सावधानी से देखभाल की, तुम्हारे लिए एक शानदार स्तंभ खड़ा किया, तुम्हारी रक्षा के लिए उसमें सुनहरी मूर्तियाँ रखीं, और तुम्हारे लिए स्तंभों और बिस्तरों को सोने से सजाया; फिर भी तुमने मेरी दया का बदला बुराई से चुकाया है।'

'मुझे समझाइए, पिताजी, मैंने आपसे क्या बुराई की है?' संत आइरीन ने कहा।

'क्या यह मेरे लिए बड़ा दुख नहीं है कि मेरी बेटी मसीह को ईश्वर के रूप में स्वीकार करती है और मेरे देवताओं का त्याग करती है?'

संत ने उत्तर दिया:

'पिताजी! मैंने सच्चे ईश्वर में विश्वास करके और अपनी आशा आपकी मूर्तियों के बजाय उन पर रखकर कोई गलत काम नहीं किया है।'

'देवताओं को बलिदान चढ़ाओ, पेनेलोप!' राजकुमार की गूँजती चीख सुनाई दी।

'मेरे नाम का गलत उच्चारण मत करो, पिता: मेरा नाम पेनेलोप नहीं, बल्कि इरिना है, और यह नाम मुझे एक स्वर्गदूत ने एक दर्शन में और मेरे बपतिस्मा के समय एक पुरोहित ने दिया था,' संत इरिना ने नम्रता से लिसिनियस को उत्तर दिया।

"देवताओं को बलिदान चढ़ाओ, मेरे बच्चे को नहीं, बल्कि किसी और के!" लाइसनियस ने एक बार फिर कहा।

'मैं उनके लिए बलिदान नहीं चढ़ाऊँगी। वे ही हैं जो तुम्हें क्रोधित करते हैं; उनके कारण, तुम मूर्तिपूजकों के साथ आग में यातना सहोगे।'

क्रोध से उन्मत्त, राजकुमार ने उस युवती को बाँधकर क्रूर घोड़ों के खुरों के नीचे फेंकने का आदेश दिया। जैसे ही लिसिनियस का आदेश पूरा हो रहा था, वह स्वयं उसकी मृत्यु का साक्षी बनने आया। लेकिन उन सभी में सबसे क्रूर एक घोड़ा, अपनी बांधने की रस्सी तोड़कर, लिसिनियस पर झपट पड़ा और, उसकी दाहिनी बांह पकड़कर, उसे उसके कंधे से फाड़ दिया, राजकुमार को रौंद-रौंद कर मार डाला, और फिर शांति से अपनी जगह पर खड़ा हो गया। बाकी सभी घोड़ों ने मेमनों की तरह आज्ञाकारी होकर सेंट आइरीन को छुआ तक नहीं। जहाँ तक उस घोड़े का सवाल है जिसने लिकिनियस को मार डाला था, उसने ईश्वर की आज्ञा से मानव स्वर में पुकारा, और इस प्रकार पवित्र शहीद को सांत्वना दी:

'धन्य है तू, मसीह की कबूतर, जिसने साँप को रौंदा है[3453] । तू पृथ्वी पर महिमामय है और स्वर्ग में प्रेम से ग्रहण की जाएगी। तुम धर्मी लोगों के बीच आनंदित होओगी। एक बुद्धिमान और साहसी कन्या के रूप में, शाश्वत प्रकाश और अमर वर का महल तुम्हारा इंतजार कर रहा है: यद्यपि तुम स्वभाव से एक महिला हो, तुम एक योद्धा का पराक्रम दिखाती हो।

जब संत आइरीन को उसके बंधनों से मुक्त किया गया, तो उसने अपनी प्रार्थना से अपने मृत पिता को जीवित कर दिया और उनके हाथ को चंगा कर दिया। इस चमत्कार को देखकर राजकुमार और राजकुमारी, उनका पूरा परिवार, और लोगों की एक बड़ी भीड़—कुल मिलाकर लगभग तीन हजार लोग—मसीह में विश्वास करने लगे।

लिसिनियस ने मसीह की अधिक स्वतंत्र रूप से सेवा करने के लिए जल्द ही अपने राज्य का शासन छोड़ दिया, और अपनी पत्नी और करीबी सहयोगियों के साथ उसी स्तंभ में बस गया जिसे उसने एक बार अपनी बेटी के लिए खड़ा किया था; हालाँकि, संत आइरीन शहर में ही रहीं, लोगों को मसीह में विश्वास सिखाती रहीं, और कई लोगों को मसीह परमेश्वर की ओर ले गईं। वह अपने शिक्षक, एपेलियिन के घर में रहती थीं।

लिसिनियस के बाद, ज़ेडेकिया नामक एक अन्य राजा ने राज्य की बागडोर संभाली। आइरीन के बारे में सुनकर, उसने अपेलियिन को बुलाया और उससे पूछा कि क्या राजकुमारी आइरीन उसकी देखरेख में थी। अपेलियिन ने हाँ में जवाब दिया। ज़ेडेकिया ने उससे पूछा:

'क्या तुम्हें नहीं पता कि वह कैसे रहती है?'

वरिष्ठ ने उत्तर दिया:

'वह ठीक वैसे ही रहती है जैसे मैं रहता हूँ, और वैसे ही जैसे सच्चे ईश्वर में विश्वास रखने वाले सभी लोग रहते हैं।' उसका जीवन हर दिन शाम तक उपवास करने में बीतता है, जब वह रोटी का एक छोटा सा टुकड़ा खाती है और एक ही कप पानी पीती है; उसके पास बिस्तर नहीं है और वह नंगे जमीन पर केवल थोड़ी देर के लिए विश्राम करती है; वह दिन-रात ईश्वर से प्रार्थना करने और पवित्र धर्मग्रंथों को पढ़ने में बिताती है।

राजकुमार यह सुनकर चकित रह गया और उसने ईपार्क[3454] को इरिना को लाने के लिए भेजा, उसे आदेश देते हुए कि वह कन्या को सभी उचित सम्मान के साथ उसके पास लाए। पहुँचने पर, संत इरिना ने कहा:

'नमस्ते, राजकुमार!'

ज़ेदेकिया ने उससे उत्तर दिया:

[3453] अर्थात् मानव जाति के उद्धार का शत्रु – शैतान।

[3454] एपार्क – किसी शहर या क्षेत्र का प्रमुख।

'हे अद्भुत कन्या, आनंदित हो!'

"तुमने मुझे क्यों बुलाया?" इरिना ने पूछा।

'आओ, हम शांति और प्रेमपूर्वक बैठकर बातें करें,' राजकुमार ने उत्तर दिया।

पवित्र कन्या ने कहा:

'मैं पवित्र शास्त्र के वचन को पूरा कर रहा हूँ, जो कहते हैं: *"मैं कपटी लोगों के साथ नहीं बैठूँगा, और न ही मैं दुष्टों के साथ चलूँगा"* (भजन संहिता 25:4)।

'तो फिर, हम किस तरह से दोषी हैं?' ज़ेडकियाह ने पूछा।

पवित्र कन्या ने उत्तर दिया:

'हर वह मूर्तिपूजक जो सच्चे ईश्वर को नहीं जानता और मूर्तियों की पूजा करता है, एक अपराधी है।'

'हे राजकुमारी, आप मेरी इच्छा के विरुद्ध मुझे निर्दयता से आपको यातना देने के लिए मजबूर कर रही हैं,' ज़ेडकिया ने आपत्ति जताई।

'तो फिर तुम व्यर्थ की बातों पर समय क्यों बर्बाद कर रही हो?' संत आइरीन ने बहादुरी से जवाब दिया। 'मुझे यातना देना शुरू करो: मैं अपने मसीह के लिए किसी भी यातना को सहने के लिए तैयार हूँ।'

'अपनी मूर्खता त्याग दो, कन्या; देवताओं को बलिदान चढ़ाओ।'

इस पर संत ने उत्तर दिया:

'हे राजा, शैतान के बहकावे में आकर व्यर्थ चिंता मत करो: जान लो कि मैं शैतान की सेवा नहीं करूँगी, और न ही अपने प्रभु मसीह की खातिर अपने शरीर को बचाऊँगी।'

क्रोध से भरकर, राजकुमार ने एपार्क से परामर्श करना शुरू किया कि संत को क्या सज़ा दी जाए। यातना देने वाले के आदेश पर, एक गहरी खाई खोदी गई और उसमें साँप, रेंगने वाले जीव और सभी प्रकार के कीड़े-मकोड़े भर दिए गए, और पवित्र कन्या को उसमें फेंक दिया गया। फिर भी वह दस दिनों तक वहाँ सुरक्षित और अक्षुण्ण रही, क्योंकि प्रभु का स्वर्गदूत कुएँ में उसके पास उतरा और उसे सुरक्षित रखा; हालाँकि वहाँ मौजूद सभी सरपट जीव मर गए।

जब ज़ेडकियाह को पता चला कि शहीद कुएँ में जीवित बच गई है, तो वह चकित हो गया और उसने यह मान लिया कि उसने अपनी जादुई शक्तियों से उन प्राणियों को मंत्रमुग्ध कर उन्हें मार डाला था। उसने उसे कुएँ से बाहर निकालकर पूछताछ के लिए अपने सामने लाने का आदेश दिया। न्यायपीठ पर बैठकर, उसने उससे कहा:

'उन देवताओं को बलिदान चढ़ाओ जिन्होंने तुम्हें बचाया है: देखो, उन्होंने साँपों को मार डाला है, जबकि उन्होंने तुम्हें जीवित रखा है, ताकि तुम उनकी शक्ति और दया को पहचानो और उनकी पूजा करो।'

संत ने उत्तर दिया:

'हे पागल, शैतान के धोखे में पड़े, जिसे मैं तुच्छ समझता हूँ! क्या इन लकड़ी या पत्थर की मूर्तियों ने कभी साँपों को मारा है? तुम स्वयं जल्द ही उन देवताओं के साथ नरक की खाई में फेंक दिए जाओगे जिनकी तुम सेवा करते हो, और तुम *उस 'घोर अंधकार' में* डूब जाओगे जो शैतान ने तुम्हारे लिए तैयार किया है: *'वहाँ रोना और दांत पीसना होगा'* (मत्ती 25:30)।

अपने क्रोध में, राजकुमार ने लोहे की आरी वाले बढ़ईयों को बुलाया और उन्हें पवित्र कन्या को दो भागों में काटने का आदेश दिया। जब संत को एक पेड़ से बांधा गया और उन्होंने आरी चलाना शुरू किया, तो आरी उसके शरीर को छू भी नहीं पाई, बल्कि एक तेज पत्थर से टकराने पर जैसे कुंद हो जाती है, वैसे ही कुंद हो गई; अंत में, वह दो टुकड़ों में टूट गई। एक और आरी लाई गई, लेकिन वह भी दो टुकड़ों में टूट गई, और आरी चलाने वाले गिर पड़े, आरी के टुकड़ों से खुद को घायल कर बैठे और मर गए। अंत में, तीसरी आरी—जो सबसे तेज और सबसे मजबूत थी—लायी गई, और ज़ेडकियाह ने आदेश दिया कि युवती को कमर पर आरी से काटा जाए। उसे बांधने के बाद, उन्होंने उसे ज़मीन पर लिटा दिया, एक बड़े पत्थर से उसकी छाती को दबा दिया, और महा-शहीद के पवित्र शरीर को आरी से काटना शुरू कर दिया: इस बार आरी उसके शरीर को छू गई और उससे खून बहने लगा।

तब ज़ेडकियाह ने हँसते हुए शहीद से कहा:

'तो फिर, तुम्हारा ईश्वर कहाँ है? अब आए और तुम्हारी मदद करे, अगर उसमें शक्ति है।'

जब ज़ेडेकिया ने ये शब्द बोले, तो अचानक आकाश में बिजली चमक उठी, गड़गड़ाहट की एक भयंकर आवाज़ गूँजी, और हवा में एक आँधी उठ खड़ी हुई; वे सेवक जो पवित्र शहीद के शरीर को यातना दे रहे थे, वे बेहोश हो गए। राजकुमार, डर के मारे, अपने महल में भाग गया, और लोग चौक से अपने-अपने घरों को बिखर गए; मूसलाधार बारिश, बाढ़

की तरह, भारी ओलों के साथ हुई, और कई यातना देने वाले बजिली गरिने, गरज और ओलों से मारे गए। और प्रभु का स्वर्गदूत, स्वर्ग से उतरकर, पवत्रि शहीद के सीने से पत्थर हटा दयिा, उसके घावों को चंगा कयिा और उसे पूरी तरह से ठीक करके उठा दयिा।

इस चमत्कार को देखने के बाद आठ हज़ार लोगों ने मसीह में वशि्वास करना शुरू कर दयिा। लेकनि शैतान के उकसावे पर, राजकुमार ने फरि से संत को पकड़ने का आदेश दयिा और एक बार फरि एपार्क के साथ इस पर चर्चा करने लगा कि उसे कैसे नष्ट कयिा जाए। यातना देने वालों ने उसके लिए नम्निलखिति सज़ा सोची: उन्होंने उसे एक चक्की के पहयि से बांध दयिा ताकि जब वह घूमे, तो वह उसे चीर-फाड़ डाले। लेकनि जब उन्होंने पहयि के नीचे पानी बहाया, तो पानी ठहर गया, मानो पत्थर का हो गया हो; एक भी बूंद नहीं बही, और संत सुरक्षति रहीं। राजकुमार, अपने सलाहकारों के साथ, चलि्लाया:

'अहो, उसकी जादुई शक्ति कितिनी महान है, जसिने जल तत्व को एक अन्य पदार्थ में बदल दयिा है।'

यह चमत्कार देखने पर लोग दुष्ट राजकुमार के खलिाफ उठ खड़े हुए और फटकार और आक्रोश के ऊँचे-ऊँचे नारों के साथ उस पर पत्थर बरसाने लगे और उसे शहर से बाहर खदेड़ दयिा। वह, अपने देश लौटकर, वहाँ सात दनि रहा और दुख, क्रोध और शर्म से मर गया।

ज़ेदेकयिा की मृत्यु के बाद, उसके पुत्र सबक़, अपने पति की अपमान का बदला लेने की इच्छा से, लगभग एक लाख योद्धाओं की एक बड़ी सेना इकट्ठी की और मगे़दोन शहर के खलिाफ़ युद्ध के लिए चल पड़ा। उस शहर के नविासयिों ने, राजा सबक़ के आगमन की सूचना पाकर, डर के मारे खुद को शहर के भीतर ही बंद कर लयिा और संत आइरीन से कहा:

'हमारी बर्बादी का कारण तुम ही हो।'

लेकनि उन्होंने उन्हें अपने शत्रुओं से न डरने की आज्ञा दी और इन शब्दों से ईश्वर से प्रार्थना करने लगीं:

'हे प्रभु, जसिने एक बार अपने सेवक, भवषि्यवक्ता एलशिा की प्रार्थना सुनी थी, मेरी प्रार्थना भी सुनो, और इस शहर को नष्ट करने आ रहे इन लोगों को अदृश्य रूप से मार डालो; हमारे शत्रुओं को अंधा कर दो, ताकि वे यह जान सकें कि केवल आप ही सच्चे ईश्वर हैं।'

और तुरंत, उनकी प्रार्थना सुनकर, प्रभु ने राजकुमार और उसके साथ के सभी सैनकिों को अंधा कर दयिा।

कमांडर सावा को एहसास हो गया कि यह इरीना ही थी जसिने उस पर और उसकी सेना पर अंधापन लाया था, और उसने उसके पास इस अनुरोध के साथ एक दूत भेजा:

'अब मैं जान गया हूँ कि आपके ईश्वर की शक्ति अजेय है; अतः मैं आपसे वनिती करता हूँ कि आप मेरे और मेरे सैनकिों के लिए अपने ईश्वर से प्रार्थना करें, ताकि मेरी और उनकी दृष्टि वापस आ जाए!'

दयालु होकर, संत ने सर्व के प्रभु से एक प्रबल प्रार्थना की, और राजकुमार और उसके साथयिों की दृष्टि वापस आ गई। फरि सवाख ने शहर के नागरकिों को शांति के इन शब्दों के साथ संदेश भेजा:

– मुझे अपना राजकुमार मान लो, जैसे तुमने एक बार मेरे पति को अपना राजकुमार माना था; और मैं तुम्हें वह अपमान क्षमा कर दूँगा जो तुमने मेरे पति पर कयिा था।

नागरकिों ने, यह देखकर कि राजसी सेना कतिनी बड़ी थी, उसके साथ शांति स्थापति की, उसके लिए शहर के द्वार खोल दिए, उसके सामने झुक गए, और उसे अपना राजा स्वीकार कर लयिा। लेकनि जब सवाच ने राज्य पर कब्ज़ा कर लयिा, तो वह, शैतान के उकसावे पर, संत आइरीन से नाराज़ हो गया और, उसे बुलाकर, उससे कहा:

'मैं शहर के अपराध को माफ करता हूँ, लेकनि मैं तुमसे नाराज़ हूँ, क्योंकि तुमने मेरे पति के खलिाफ वद्रिोह भड़काया था, और इसी कारण उन्हें पत्थर मारकर मार डाला गया था; लेकनि अगर तुम भी मेरी क्षमा प्राप्त करना चाहते हो, तो मेरी आज्ञा का पालन करो: देवताओं को बलदिान चढ़ाओ, और तुम्हें रहिा कर दयिा जाएगा।'

संत ने राजकुमार की मूर्खता के लिए उसे फटकारना शुरू कर दयिा, जसिसे वह और भी अधकि क्रोधति हो गया।

सावाह ने उसे जेल में डालने का आदेश दयिा और अपने कुलीनों से परामर्श करने लगा कि उसके लिए यातना का कौन सा रूप तैयार कयिा जाए। इस बीच, संत पहले ही सात दनिों से जेल में थीं। वहाँ, मसीह उनके सामने प्रकट हुए और कहा:

'डरो मत, मेरी बेटी, क्योंकि मैं तेरे संग हूँ, और मैं तुझे बल देता हूँ।'

सावख ने आदेश दयिा कि शहीद को कालकोठरी से बाहर नकिाला जाए और उसके एड़यिों में लोहे के कील ठोक दिए जाएं; फरि, उसके कंधों पर रेत की एक भारी बोरी रखकर, उसने आदेश दयिा कि उसे शहर से पाँच स्टेडयिम दूर एक

स्थान पर ले जाया जाए[3455] । नौकरों ने संत के मुंह में लगाम डाल दी और उसे, जैसे घोड़ों को दौड़ाया जाता है, नियुक्त स्थान पर ले गए। हालाँकि, संत ने इतनी अपमानित की जाने के दौरान, ईश्वर की ओर मुड़कर कहा:

'सत्य में, हे प्रभु, *"मैं तेरे सामने एक मृग-सा था"। "परन्तु मैं सदा तेरे संग रहता हूँ; तू मुझे अपने दाहिने हाथ से पकड़े रहता है। तू मुझे अपनी सलाह से मार्गदर्शन करता है और मुझे महिमा में ग्रहण करेगा"* (भजन संहिता 72:22-24)।

दाईं ओर देखने पर, संत ने प्रभु के स्वर्गदूतों को अपने साथ आते देखा और उसकी आत्मा आनंदित हुई। जब यातना देने वाले नियत स्थान पर पहुँचे, तो सेवक शहर की ओर वापस मुड़ गए, और वे पवित्र शहीद को लगाम से खींचते हुए उस पर अपमानजनक शब्द उछाल रहे थे। उनके पीछे-पीछे एक बड़ी भीड़ चली, और संत ने अपने सामने एक स्वर्गदूत को अपनी लाठी से जमीन पर टक्कर मारते हुए देखा, और उसने अपने मन में सोचा: 'ईश्वर के शत्रु नष्ट हो जाएँगे।'

जब वे उस स्थान पर पहुँचे जहाँ देवदूत खड़ा था, तो अचानक जमीन फट गई और संन्यागी को ले जा रहे यातना देने वालों के सेवकों को निगल गई। संत ने खुद को अपनी बेड़ियों से मुक्त महसूस किया, और अदृश्य हाथों ने उसके कंधों से रेत की बोरी हटा दी; उसके पैरों से कीलें गिर गईं, और वह स्वस्थ हो गई और ईश्वर की स्तुति करते हुए चलने लगी। यह जानकर, राजकुमार ने कहा:

'देवताओं ने पृथ्वी को फाड़ दिया है और इस जादूगरनी से मेरे सेवकों को पाताल लोक में ले गए हैं।'

लेकिन दूसरों ने उनसे आपत्ति जिताई, कहते हुए:

– पवित्र शहीद इरीना के साथ सजीव ईश्वर हों!

हालाँकि अन्य लोगों ने उस पवित्र कन्या को अपमानजनक शब्दों से गाली दी। तब देवदूत ने पृथ्वी खोलकर कई अविश्वासियों को—दस हजार तक—अचानक मृत्यु से मार गिराया; जबकि मूर्तिपूजकों में बचे हुए लोग चिल्ला उठे:

– हे इरिना के ईश्वर, हम पर दया करो, क्योंकि हम तुम पर विश्वास करते हैं और तुम्हारी शरण लेते हैं।

उस समय, लगभग तीस हजार लोग वास्तव में मसीह पर विश्वास करने लगे। हालाँकि, राजकुमार सवाह ईश्वर में विश्वास नहीं करता था, और ईश्वर के स्वर्गदूत ने उसे इसी कारण मार गिराया।

इस बीच, संत आइरीन ने शहर में मसीह के नाम का प्रचार करना जारी रखा और मसीह की शक्ति से कई चमत्कार किए। उन्होंने न केवल बीमारों को ठीक किया, कुष्ठरोगियों को स्वच्छ किया और लोगों से दुष्ट आत्माओं को निकाला, बल्कि उन्होंने अपने माता-पिता द्वारा गहराई से शोकग्रस्त एक मृत युवक को भी जीवित कर दिया, और दस हजार तक लोगों को मसीह में परिवर्तित किया।

उस समय, ईश्वर की आज्ञा से, संत तीमथियुस पादरी शहर में आए और उन्होंने संत आइरीन को बपतिस्मा दिया। उसे आनंद के साथ स्वागत करते हुए, संत आइरीन, उनके साथ और जो अन्य लोग मसीह में विश्वास करने आए थे, उस स्तंभ पर गईं जहाँ उनके पिता और माता रहते थे, और चुपचाप ईश्वर की सेवा करते थे; और वहाँ, मसीह में विश्वास करने आए सभी लोगों ने पवित्र बपतिस्मा प्राप्त किया।

संत आइरीन ने मगदिोन शहर में तीन साल बिताए, लोगों को सिखाते हुए और उन्हें मसीह के विश्वास में मजबूत करते हुए। फिर वह कैलपिोलिस[3456] नामक एक अन्य शहर में गईं, जहाँ राजकुमार नुमेरियन का शासन था, जो आइरीन के उत्पीड़क, राजा ज़ेडेकियाह और सवा के रिश्तेदार थे।

जैसे ही संत आइरीन शहर में प्रवेश कीं, वहां के मूर्तिपूजक देवी आर्टेमिस[3457] के सम्मान में एक अधर्मी उत्सव मना रहे थे, और राजकुमार मूर्ति के सामने बलिदान दे रहा था। संत आइरीन उसके सामने खड़ी हो गईं, उन्होंने उसके अधर्म की निंदा की, और मसीह को सच्चा ईश्वर स्वीकार किया। राजकुमार ने अपने कुलीनों से कहा:

'यह कन्या चेहरे और कद-काठी में अपने पिता लिकिनियस से मिलती-जुलती है, लेकिन दुष्ट संतान अपने माता-पिता पर विपत्ति लाती है।' वास्तव में, इसी युवती के कारण उसके अच्छे पिता ने अपना राज्य खो दिया। उसने स्वयं, जैसा मैंने सुना है, मेरे भाई ज़ेडकियाह की मृत्यु के लिए ज़िम्मेदार है; उसने अपनी जादू-टोने से उसके बेटे, सावाह को भी मार डाला; सचमुच, यह युवती राजाओं की विनाशक है।

तब नुमेरियन ने संत आइरीन से कहा:

'तुम क्या कहती हो, जादूगरनी? क्या तुम देवताओं को बलिदान दोगी, या अपने विनाशकारी भ्रम में ही रहोगी?'

[3455] 'पॉप्रिशि्चे' लंबाई की एक इकाई है; यह हमारे 'साज़ेन' के लगभग 690 के बराबर थी।

[3456] कैलपिोलीस शहर, मैसेडोनिया की तरह, थ्रेस में स्थित था।

[3457] आर्टमिसि या डायना – प्रकाश और चंद्रमा की ग्रीक-रोमन देवी, जिन्हें शिकार की संरक्षक देवी भी माना जाता था।

संत ने, क्रॉस का चह्नि बनाकर, उत्तर दयिा:

मैं सर्वोच्च ईश्वर की स्तुति का बलदिान दूँगी, परन्तु मैं तुम्हारे राक्षसों या तुम्हारी नर्जिी मूर्तयिों को कोई बलदिान नहीं दूँगी। जहाँ तक तुम्हारे संबंधयिों, राजकुमारों का सवाल है, यह जान लो: उन्हें मरने का आदेश मैंने नहीं, बल्कि मेरे ईश्वर ने दयिा था—जो हर आत्मा के जीवन और मृत्यु पर अधकिार रखता है; इसलिए तुम्हें भी मेरे ईश्वर से डरना चाहिए, क्योंकि तुम्हारे पास जीने के लिए बस कुछ ही दनि बचे हैं, और मृत्यु जल्द ही तुम्हें भी आ घेरेगी।

यह सुनकर, नुमेरयिन क्रोध से आग-बबूला हो गया, उसने दाँत पीसे, सिंह की तरह दहाड़ लगाई, और अपने सेवकों को तीन काँसे के बैलों को पघिलाने का आदेश दयिा, यह ठानकर कि यदि संत एक बैल में आग की गर्मी सहन कर लेती है, तो उसे दूसरे में डाल दयिा जाएगा; और यदि वह दूसरे में भी ऐसा ही करती है, तो उसे तीसरे में डाल दयिा जाएगा। और ऐसा ही हुआ। जब काँसे के बैल जलते अंगारों की तरह लाल-लाल हो गए, तो संत को उनमें से एक में फेंक दयिा गया। वहाँ उन्होंने इन शब्दों के साथ ज़ोर से प्रार्थना करना शुरू कर दयिा: 'हे प्रभु! मेरी सहायता के लिए जल्दी आओ, मैं जो आपके पवत्रि नाम के लिए कष्ट सह रही हूँ!'

प्रभु का स्वर्गदूत उसके सामने प्रकट हुआ। उसने उसे यातनाओं से न डरने के लिए कहा और आग की लपटों को बुझा दयिा। हालाँकि, लोगों ने नुमेरयिन के वरिुद्ध बड़बड़ाया, यह कहते हुए:

'तुमने अनावश्यक रूप से अपनी जवानी के चरम पर एक कुंवारी का वध कर दयिा है।'

जब तांबा ठंडा हो गया, तो संत जीवति और कुशल पाई गईं, आग से उन्हें बलि्कुल भी नुकसान नहीं हुआ था, और राजकुमार ने अपने आसपास के लोगों से कहा:

'क्या मैंने तुम्हें चेतावनी नहीं दी थी कि यह युवती एक जादूगरनी है? देखो उसने आग कैसे बुझा दी है; इसे दूसरी भट्टी में डाल दो।'

और संत को एक और कड़ाही में फेंका गया। जब यह भी चमत्कारकि रूप से ठंडा हो गया, तो उसे एक तीसरी में फेंका गया। और फरि यह तीसरी कड़ाही, सर्वशक्तमिान और सर्व-प्रभावी ईश्वर की आज्ञा से, जीवति की तरह अपनी जगह से हलिकर, अखाड़े के चारों ओर एक चौथाई रास्ता तय करके, अपनी जगह पर वापस आकर टुकड़े-टुकड़े हो गई, जबकि पवत्रि शहीद इससे बनिा कसिी चोट के बाहर नकिल आईं। ऐसा चमत्कार देखकर लोग जोर से चल्लि उठे:

'महान हैं आप, हे आइरीन के ईश्वर! अपनी महान दया से हम पर दया करें! आप हमारे ईश्वर, शक्तशिाली और सर्वशक्तमिान हैं, जो अद्भुत और गौरवशाली चमत्कार करते हैं!'

और उस समय, एक लाख तक लोग मसीह में वश्विास करने लगे। हालाँकि, राजकुमार नुमेरयिन न केवल अवश्विासी बना रहा, बल्कि उसने सर्वोच्च ईश्वर का अपमान भी कयिा, जसिके लिए, ईश्वर के स्वर्गदूत द्वारा अदृश्य रूप से प्रहार कए जाने के बाद, वह घातक रूप से बीमार पड़ गया। मरते समय, उसने अपने राज्यपाल, वावोदान को आदेश दयिा कि वह आइरीन को वभिन्नि यातनाएँ दे और फरि उसे सबसे क्रूर तरीके से मृत्युदंड दे।

जब अधर्मी राजकुमार नुमेरयिन की मृत्यु हो गई, तो संत आइरीन, शहर में ही रहकर, लोगों को प्रभु मसीह में वश्विास करना सखिाती रहीं और हर तरह की बीमारयिों को ठीक करती रहीं; जबकि उस समय वहाँ आए हुए पुरोहति तमिोथी ने उन लोगों का बपतस्मिा दयिा जो मसीह में वश्विास करने आए थे।

जब गवर्नर ने देखा कि पूरा नगर संत आइरीन के प्रति सहानुभूति रखता है, तो वह उस नगर में उन्हें यातनाएँ देने से डर गया, इस डर से कि इससे लोगों में असंतोष और वद्रिोह भड़क जाएगा। वह कॉन्स्टेंटनिा ([3458]) नामक दूसरे नगर के लिए रवाना हो गया और अपने सैनकिों को शहीद को अपने साथ ले जाने का आदेश दयिा। उस नगर में पहुँचने पर, वह अदालत में अपनी सीट पर बैठ गया और संत से कहा:

'क्या तुम जानती हो कि मुझे तुम पर अधकिार दयिा गया है? आओ अब हमारे देवताओं के सामने और उन्हें बलदिान अर्पति करो; अन्यथा, मैं तुम्हें भयानक यातनाओं से गुज़ारूँगा।'

संत ने उत्तर दयिा:

'मेरा उत्तर सुनो, राज्यपाल: मुझे हर उस यातना से गुज़ारो जो तुम सोच सकते हो, और तुम ईश्वर की शक्ति देखोगे।'

[3458] कॉन्स्टेंटनिा थ्रेस में, कैलपिोलसि से बहुत दूर नहीं स्थति थी।

गवर्नर ने एक लोहे की जाली लाने का आदेश दिया; शहीद को उस पर रखकर, उसने उसे लोहे की ज़ंजीरों से बांधने का आदेश दिया; फिर, जाली के नीचे लकड़ी रखकर, उसने उसे आग लगाने का आदेश दिया। एक भयंकर आग भड़क उठी, और फिर, राज्यपाल के आदेश पर, उन्होंने शहीद पर तेल, चर्बी और गोंद डालना शुरू कर दिया; इस प्रकार उन्होंने संत को कई घंटों तक यातना दी; जाली और लोहे की ज़ंजीरों को तब तक गर्म किया गया जब तक वे लाल नहीं हो गईं। हालाँकि, संत को कोई नुकसान नहीं हुआ और उन्होंने ईश्वर की महिमा करते हुए गाया, मानो उन पर ठंडी ओस की बौछार हो रही हो। फिर लोहे की ज़ंजीरें उनसे अलग हो गईं, और वह स्वस्थ और पूरी तरह से सुरक्षित उठ खड़ी हुईं।

यह देखकर राज्यपाल और उसके सलाहकार बहुत हैरान हो गए। राज्यपाल संत के पैरों पर गिर पड़ा और उससे कहा:

'हे सच्चे परमेश्वर की दासी! मैं आपसे विनती करता हूँ, जैसा आपने हमारे राजकुमारों को नष्ट किया है, वैसा मुझे नष्ट न करें, क्योंकि मैं भी परमेश्वर के पुत्र पर विश्वास करता हूँ और एक ईसाई बनना चाहता हूँ।'

और इस प्रकार राज्यपाल वावोदान मसीह में विश्वास करने लगा, और उसके साथ बहुत से लोग भी। ईश्वर के एक स्वर्गदूत ने पादरी तिमोथी को इस नगर में लाया, और मसीह में विश्वास करने आए सभी लोगों का उन्होंने बपतिस्मा दिया।

उस नगर में पचास दिन रहने के बाद, संत आइरीन चली गईं और थ्रेसियाई नगर मेसेम्ब्रिया में रहने वाले राजकुमार सावोरियस के सैनिकों द्वारा पकड़ ली गईं। उन्हें उनके सामने लाया गया, क्योंकि इस राजकुमार ने उनके बारे में सुना था और लंबे समय से उन्हें पकड़ने की इच्छा रखता था। संत को देखकर वह आग-बबूला हो गया, उसने तलवार से उसका सिर कलम कर दिया, और उसे शहर के बाहर दफना दिया गया। इसके बाद, सावोरियस ने खुलेआम घोषणा की:

'इस जादूगरनी के बारे में भयानक अफवाहें फैली थीं, क्योंकि वह अपने जादू-टोने से राजकुमारों को मार डालती थी। तो फिर, वह अब मुझे क्यों नहीं मार सकी, जबकि मैंने उसे मार डाला है? और उसका मददगार, मसीह, कहाँ है? उन्होंने उसे मेरे हाथों से क्यों नहीं छुड़ाया?'

इस प्रकार उस अधर्मी राजा ने मसीह की शक्ति का अपमान किया और इरिना को जीतने वाले के रूप में अपनी बड़ाई की।

लेकिन परमेश्वर की सर्वशक्तिमान शक्ति के लिए क्या असंभव है? वही, जिसने अपनी स्वेच्छा से मृत्यु के समय, *'सो गए हुए कई संतों के शरीरों को* जिला उठा', ताकि वे, *'उसके पुनरुत्थान के बाद कब्रों से निकलकर पवित्र नगर में प्रवेश करें और बहुतों के सामने प्रकट हों'* (मत्ती 27:52-53)। क्या वह इस संत को भी मृतकों में से जीवित नहीं कर सकता था, ताकि वह मेसेम्ब्रिया में प्रवेश कर सके और राजकुमार के सामने प्रकट हो सके? सचमुच, मसीह हमारे परमेश्वर स्वर्ग में और पृथ्वी पर शक्तिमान हैं और जो कुछ वे चाहते हैं, वह करते हैं। उन्होंने अपना स्वर्गदूत भेजा और संत आइरीन को उनकी कब्र से जीवित कर दिया; उसी क्षण, प्रभु के स्वर्गदूत ने उनसे कहा:

– 'यद्यपि तुमने पहले ही अपने दुख-कष्ट का पराक्रम पूरा कर लिया है और तुम्हारे लिए विश्राम करना उचित था, क्योंकि तुम स्वर्ग में आनंद की अधिकारी हो; फिर भी, कहीं ऐसा न हो कि दुष्ट और अधर्मी फिर से उठ खड़े हों, यह घमंड करते हुए कि उन्होंने हमारे परमेश्वर की शक्ति पर विजय प्राप्त कर ली है, शहर में जाओ ताकि वे तुम्हें जीवित देख सकें, और सभी दुष्ट लज्जित हों, यह महसूस करते हुए कि हमारा परमेश्वर सर्वशक्तिमान है; तुम्हें अब किसी से भी और कोई पीड़ा नहीं सहनी पड़ेगी।

और संत जैतून की टहनी हाथ में लिए मेसेम्ब्रिया नगर में प्रवेश कर गईं। जब नागरिकों ने उन्हें देखा, तो उनके हृदय भय से भर गए और वे अत्यंत चकित हो गए। पूरा भीड़ संत के चारों ओर इकट्ठा हो गया, और जोर-जोर से चिल्लाने लगा:

'इरैना का ईश्वर अद्भुत है, और उसके सिवा कोई और ईश्वर नहीं है।'

उस नगर के राजकुमार को यह खबर मिली कि इरीना मृतकों में से जी उठी है। यह सुनकर वह बहुत डरा और संत को देखकर उनके चरणों में गिर पड़ा, और कहने लगा:

'अब मुझे एहसास हो गया है कि आपका ईश्वर महान है। मैं आपसे विनती करता हूँ कि आप हमारे शहर में रुकें और हमें ईसाई बना दें।'

संत सत्तर दनिों तक उनके साथ रहीं, उन्हें पवत्रि वशि्वास सखिाती रहीं, और उस नगर के सभी नविासी मसीह में वशि्वास करने लगे; जबकि धन्य पुरोहति तीमथयिुस, जो ईश्वर की आज्ञा से वहाँ आए थे, ने राजकुमार और अन्य सभी लोगों का बपतस्मिा दयिा।

वहाँ से, संत आइरीन अपने स्वदेश, मैगीडन शहर के लिए रवाना हुईं, जहाँ उस समय उनके पति का नधिन हो गया था। और उन्होंने उनके लिए ईश्वर से प्रार्थना करते हुए शोक मनाया। वह कुछ समय के लिए अपनी माँ के साथ रहीं, और फरि एक बादल पर बैठकर एफ़सिुस ले जाई गईं[3459] , और उन्होंने उस शहर में प्रेरतिों की रीति पर मसीह के नाम का प्रचार करते हुए घूम-घूम कर कई चमत्कार कए और वभिन्नि प्रकार के रोगों को ठीक कयिा। अपने उपदेश के माध्यम से, संत आइरीन ने कई मूर्तपिूजकों को मूर्तपिूजा से ईसाई धर्म में परविर्तति कयिा।

कुछ समय बाद, एपेलयिन नामक वृद्ध, जो कभी उसकी शक्षिकिा रह चुकी थीं और जन्हिें ईश्वर ने उसके पास भेजा था, एफ़सिुस में संत आइरीन के पास आए। संत उन्हें देखकर अत्यंत प्रसन्न हुईं। कुछ दनिों बाद, उन्होंने लोगों से कहा:

'खुश हो जाओ, मेरे भाइयो और बहनो! प्रभु यीशु मसीह की शांति तुम पर बनी रहे; हमारे प्रभु में आनंदति रहो और वशि्वास में दृढ़ रहो। मैं तुमसे वदिा हो रही हूँ, और मैं तुम लोगों की आभारी हूँ कि तुमने एक अजनबी का स्वागत कयिा। तो जान लो कि जो कोई अजनबयिों का स्वागत करता है, वह स्वर्ग में परमेश्वर का मत्रि है।'

नागरकिों ने उनके शब्द सुनकर एक-दूसरे से पूछना शुरू कर दयिा:

'हमारे शक्षिक कहाँ जा रहे हैं?'

अन्य लोगों ने कहा:

'क्या वह मरना नहीं चाहती?'

फरि भी अन्य लोगों ने घोषणा की:

'वह ईश्वर की योग्य है; उसे हमारी दृष्टि से हटा दयिा जाएगा क्योंकि हम पापी हैं।'

अगले दनि, संत आइरीन, वृद्ध एपेलयिन और छह धर्मनषि्ठ पुरुषों को अपने साथ लेकर, उनके साथ शहर से बाहर गईं और एक चट्टानी पहाड़ी में एक नई, खाली कब्र पाई जसिमें कभी कसिी को दफनाया नहीं गया था, इस कब्र में प्रवेश कयिा और एपेलयिन और अन्य पुरुषों से कहा:

– मुझे एक पत्थर से अच्छी तरह ढक दो ताकि चौथे दनि से पहले कोई मुझे न खोल सके।

फरि उन्होंने एपेलयिन और उनके साथ मौजूद पुरुषों को अंतमि वदिाई दी। इसके बाद, उन्होंने क्रॉस का चह्नि बनाया और लेट गईं। पुरुषों ने कब्र के ऊपर एक भारी पत्थर रख दयिा और शहर लौट गए।

चौथे दनि, एपेलयिन उन्हीं लोगों के साथ ताबूत के पास आया, लेकनि संत आइरीन का शरीर गायब देखकर, उसने मन ही मन सोचा कि मसीह ईश्वर ने उन्हें स्वर्ग बुला लयिा है। वह यह घोषणा करने के लिए शहर की ओर चल पड़ा। बहुत से लोग ताबूत के चारों ओर इकट्ठा हुए और, यह देखकर कि वह खाली था, हैरान रह गए और भय-भीत होकर ईश्वर की महमिा करने लगे।

इस प्रकार पवत्रि कुंवारी आइरीन के दुख-दर्द समाप्त हुए; मसीह की वधू – इस कुंवारी के ऐसे ही कारनामे थे। उसने पहले अपने पति लकिनियिस के समक्ष, फरि ज़ेडेकयिा और उसके पुत्र सवाच के समक्ष, फरि वावोदान के राज्यपाल नुमेरयिन के समक्ष, और अंत में, सवोरीउस के समक्ष मसीह में अपने वशि्वास की घोषणा की। जनि शहरों में उन्होंने यातनाएँ झेलीं, वे इस प्रकार थे: मगदिोन – उनका जन्मस्थान, कैलपिोलसि (या कैलनिकिस), थ्रेस में कॉन्स्टेंटनिा और मेसेम्ब्रयिा।[3460] को मई के पाँचवें दनि एफ़ेसस शहर में उन्होंने प्रभु में नदि्रावस्था प्राप्त की।

मसीह के समक्ष उपस्थति होकर, वह संपूर्ण ब्रह्मांड के लिए उनसे वनिती करती हैं। उनके कार्यों और कष्टों का वृत्तांत एल्डर एपेलयिन द्वारा, पति, पुत्र और पवत्रि आत्मा की महमिा के लिए लखिा गया था, जो त्रमिूर्ति में महमिामय एकमात्र ईश्वर हैं, जन्हिें प्रत्येक प्राणी से अब और हमेशा के लिए युगों-युगों तक सम्मान और आराधना मलिनी चाहए। आमेन।

[3459] एफ़सिुस – प्राचीन काल में एशयिा माइनर में कोरेस और पायन के पहाड़ों की तलहटी में स्थति एक बहुत बड़ा शहर था; इसके पास एक वशिाल बंदरगाह था (जो अब पूरी तरह से दलदली हो गया है), जसिके कारण यहाँ से व्यापक व्यापार होता था। ईसाई चर्च के इतहिास में, एफ़सिुस शहर इस स्थान के रूप में उल्लेखनीय है जहाँ संत पौलुस प्रेरति ने उपदेश दयिा था और यह तीसरी सार्वभौमकि परषिद (431 में) का स्थल भी था।

[3460] पवत्रि महान शहीद आइरीन की मृत्यु पहली शताब्दी के अंत या दूसरी शताब्दी की शुरुआत में हुई।

ट्रोपारयिन, स्वर 4:

हे यीशु, तेरा मेमना, आइरीन एक प्रबल स्वर में पुकारती है: 'मैं तुझसे प्रेम करती हूँ, हे मेरे वधूवर, और तुझे खोजते हुए मैं दुख सहती हूँ, और क्रूस पर चढ़ा दी जाती हूँ, और तेरे बपतस्मिा में दफ़नाई जाती हूँ, और तेरे लिए कष्ट सहती हूँ, ताकि मैं तेरे संग महमिा में राज्य करूँ, और तेरे लिए मरूँ, ताकि मैं तेरे संग जीवति रहूँ; परन्तु मुझे एक नरि्दोष बलदिान के रूप में स्वीकार कर, क्योंकि मैंने स्वयं को प्रेम के कारण तुझ पर अर्पति कर दयिा है: उनकी प्रार्थनाओं के द्वारा, हे दयालु, हमारी आत्माओं को बचाओ।

कॉन्टाकयिन, स्वर 4:

हे कुँवारीपन के सद्गुणों से सुसज्जति कन्या, हे अति सुन्दर आइरीन, तुम अपने कष्टों से और भी महमिामय बनीं, अपने ही रक्त से रँगीं, और तुम्हारी सुन्दरता ने अधर्म को परास्त कर दयिा: इसी कारण तुमने अपने सृष्टकिर्ता के हाथ से वजिय का सम्मान प्राप्त कयिा।

19 मई

6 मई (पुराना संस्करण)

संत योब, धर्मी और दीर्घ-सहष्णिु का जीवन

6 मई को स्मरणोत्सव

पवत्रि और धर्मी अय्यूब उत्पत्ति से अब्राहम के कुल के थे; वे अरब में रहते थे – उनका नविास स्थान Hus[3461] का देश था, जहाँ अब्राहम के भतीजे ऊज़ के वंशज रहते थे, जो अब्राहम के भाई नाहोर का पहला पुत्र था (उत्पत्ति 22:20-21)। अय्यूब एक ईमानदार व्यक्ति थे (अय्यूब 6:24–30; तुलना करें यॉब 27:2–4) – वह अपने नरि्दोष आचरण, सभी के प्रति अपनी नष्पिक्षता और दया, और अपनी परोपकारति के लिए वशिष्टि थे; सबसे बढ़कर, वह ईश्वर-भयभीत थे, अपने हृदय को शुद्ध रखते थे और सभी बुराइयों से दूर रहते थे, न केवल अपने कर्मों में बल्कि अपने सबसे भीतरी वचिारों में भी। उनके सात पुत्र और तीन बेटयिाँ थीं। वे अपनी संपत्ति के लिए भी अपने देश में प्रसद्धि थे: उनके पास सात हज़ार भेड़ें, तीन हज़ार ऊँट, पाँच सौ जोड़े बैल, पाँच सौ गधे, और अनगनित सेवक थे; वह अपने कबीले के साथयिों के जीवन में सक्रयि और उत्साही रूप से भाग लेते थे और सार्वजनकि मामलों पर बहुत प्रभाव डालते थे, क्योंकि पूरे पूर्व में उनकी कुलीनता और ईमानदारी के लिए उन्हें बहुत सम्मान दयिा जाता था (योब 30:5–10; तुलना करें योब 30:1–3)। यद्यपि योब के पुत्र, प्रत्येक अपने तम्बू—अपने घर—में अलग-अलग रहते थे, फरि भी उन्होंने एक-दूसरे के प्रति इतना गहरा आपसी प्रेम और इतनी सामंजस्यपूर्ण जीवनशैली वकिसति की थी कि उन्होंने कभी भी अपने पारविारकि संगम से अलग भोजन या पेय पदार्थ ग्रहण नहीं कयिा। प्रत्येक दनि, बारी-बारी से, वे अपने-अपने घरों में भोज देते थे और अपनी बहनों के साथ एक भाईचारे के घेरे में समय बतिाते थे, जो मासूमयित भरी मौज-मस्ती से भरपूर होता था, हर तरह के अतविाद से मुक्त और शराबखोरी तथा अव्यवस्थति आचरण से कोसों दूर। उनके दयालु और धर्मी पति कसिी भी अनैतकि प्रकृति के समारोहों को बर्दाश्त नहीं करते। लेकनि चूँकि योब के बच्चों के भोज उनके भाईचारे के प्रेम और शांत सदाचार की अभव्यिक्ति थे, इसलिए उस धर्मी व्यक्ति ने न केवल उन्हें मना नहीं कयिा, बल्कि अपने परविार की शांति में सांत्वना पाकर उनका उत्साहवर्धन भी कयिा। हर बार, जब सात दनि बीत जाते और उनकी नयिमति भाईचारे की सभाएँ समाप्त हो जाती थीं, तो अय्यूब अपने बच्चों से आग्रह करते थे कि वे अपने आचरण की सावधानीपूर्वक और अच्छी अंतरात्मा से जाँच करें - यह

[3461] हूस का देश मृत सागर के पार, फलिस्तीन के दक्षणि-पूर्व में स्थति था।

देखने के लिए कि क्या उनमें से किसी ने शब्द या विचार में परमेश्वर के विरुद्ध पाप किया था; क्योंकि वह परमेश्वर का बहुत भय मानता था, परन्तु दास के भय से नहीं, बल्कि एक पुत्र के प्रेम की आदर से; और वह स्वयं और अपने घर-बार दोनों की सावधानी से रखवाली करता था, कहीं ऐसा न हो कि उनके बीच ऐसा कुछ हो जाए जो प्रभु परमेश्वर को क्रोधित करे। हालाँकि, इस ईश्वर-भयभीत धर्मी मनुष्य ने खुद को केवल अपने परिवार की देखभाल करने और उन्हें निष्कलंक जीवन जीने के लिए प्रोत्साहित करने तक ही सीमित नहीं रखा, ताकि उनमें से कोई भी अपने सृष्टिकर्ता के विरुद्ध मन में भी पाप न करे—बल्कि जब भी पर्व-दिवसों का चक्र समाप्त हो जाता था, इयोब, सुबह-सुबह अपने पूरे परिवार की उपस्थिति में, अपने बच्चों की संख्या के अनुसार होमबलि चढ़ाता था, और उनके प्राणों के लिए एक जवान सांड को पापबलि के रूप में चढ़ाता था; क्योंकि, उसने कहा, शायद मेरे बेटों ने पाप किया होगा और अपने मन में परमेश्वर की निंदा की होगी; इयोब सभी ऐसे विशेष दिनों पर इसी प्रकार करता था (इयोब 1:5)।

एक समय, जब स्वर्ग में मानव जाति के रक्षक, परमेश्वर के स्वर्गदूत, सर्वशक्तिमान परमेश्वर के सिंहासन के सामने मानवता के लिए मध्यस्थता करने और मानव जाति की जीवन की सभी आवश्यकताओं के संबंध में उनकी प्रार्थनाएँ के पास लाने के लिए एकत्र हुए थे, तब मानव जाति का निन्दक और प्रलोभक, शैतान, उनके बीच आ गया। शैतान, जो स्वर्ग से निष्कासित किया गया था, परमेश्वर की अनुमति से वहाँ स्वर्गदूतों के बीच प्रकट हुआ, अपनी पतित प्रकृति को बदले बिना; अच्छाई के लिए मध्यस्थता करने की अच्छी इच्छा से नहीं, बल्कि अपनी द्वेषित को उगलने और अच्छाई का अपमान करने के लिए। शैतान का अहंकार, अपनी आंतरिक अंधता में, कभी भी सत्य को स्वीकार नहीं करता, और न ही वह सर्व-सत्कार्यशील ईश्वर की इच्छा के प्रति विनम्रता और समर्पित भक्ति में मिलने वाली आनंदमय शांति को महसूस करता है; यह निर्भीकता से दिव्य जीवन के दीप्तिमान क्षेत्र पर—जो इससे अपरिचित है—अपनी ही निराशाजनक दृष्टि से वास्तविकता की अपनी पुनर्व्याख्या थोपता है, और निर्लज्जतापूर्वक सभी चीजों को अपनी ही अहंकार की कसौटी से मापता है!

और प्रभु ने शैतान से कहा, जो स्वर्गदूतों के साथ खड़ा था:

'तुम कहाँ से आए हो?'

शैतान ने उत्तर दिया:

'मैं पृथ्वी पर चला हूँ और उसके चारों ओर घूम चुका हूँ।'

प्रभु ने उससे कहा:

'क्या तुमने मेरे सेवक अय्यूब पर ध्यान दिया है? पृथ्वी पर उसकी तरह कोई नहीं—इतना निष्कलंक, सीधा, ईश्वर-भयभीत और सभी दुष्टता से मुक्त!'

इस पर शैतान ने प्रभु से उत्तर दिया:

क्या योब की भक्ति व्यर्थ है? क्या तूने उसके और उसके घर और उसकी सारी संपत्ति के चारों ओर रक्षा की बाड़ नहीं लगाई है? आपने उसके हाथों के काम को आशीष दी है और उसके झुंडों को बढ़ाया है, और उन्हें देश भर में फैला दिया है। परन्तु अपना हाथ बढ़ाकर जो कुछ भी उसके पास है, उसे मार डालो; सब कुछ उससे छीन लो, और तब देखना कि क्या वह फिर भी तुम्हें आशीष देगा।"

तब यहोवा ने शैतान से कहा:

'मैं उसकी सारी संपत्ति तुम्हारे हाथ में देता हूँ; जो चाहो कर लो, पर उसके प्राण पर हाथ न उठाना।'

शैतान प्रभु की उपस्थिति से चला गया (यशायाह 1:6–12)। एक दिन, यॉब के पुत्र और पुत्रियाँ अपने बड़े भाई के घर पर दावत कर रहे थे। फिर एक दूत यॉब के पास आया और कहा:

'तेरे बैल खेत में जोड़े बनाकर हल जोत रहे थे, और गधे उनके पास चर रहे थे; अचानक शेबाई लोग आ पड़े और उन्हें ले गए, और नोकरों को मार डाला; मैं ही बचकर तुझे सूचित करने आया हूँ।'

वह अभी बोल ही रहा था कि एक और दूत यॉब के घर आया और उसने बताया:

'आकाश से आग गिर पड़ी और उसने सभी झुंडों और चरवाहों को भस्म कर दिया; मैं ही बच पाया हूँ और तुम्हें बताने दौड़ आया हूँ।'

उसके बोलने का काम पूरा भी न हुआ था कि एक तीसरा दूत आया और उसने बताया:

'कलदीय लोग आ गए; वे तीन दलों में बँट गए, उन्होंने ऊँटों को घेर लिया और उन्हें उठा ले गए, और नौकरों को मार डाला; मैं ही अकेला बच पाया हूँ और आपको बताने दौड़ा चला आया हूँ।'

जब वह अभी भी बोल ही रहा था, एक और दूत आया और उसने यॉब से कहा:

'तेरे पुत्र और तेरी पुत्रियाँ अपने बड़े भाई के घर में भोज कर रहे थे; अचानक मरुभूमि से एक भयंकर आँधी आई, चारों ओर से घर को घेर लिया और उसे तेरे बच्चों पर ढहा दिया; वे सब मर गए हैं; मैं अकेला बच गया हूँ और तुझे यह खबर देने आया हूँ।'

यह भयानक समाचार, एक के बाद एक संदेश सुनकर, अय्यूब उठ खड़ा हुआ; अपने गहरे शोक के चिन्ह स्वरूप, उसने अपना बाहरी वस्त्र फाड़ा, अपना सिर मुंडवाया, जमीन पर गिर पड़ा, और प्रभु के सामने झुककर कहा:

'मैं अपनी माँ के गर्भ से नग्न आया, और नग्न ही मैं पृथ्वी के गर्भ में लौटूँगा। प्रभु ने दिया, और प्रभु ने ले लिया; जैसा उन्हें उचित लगा, वैसा ही हुआ; प्रभु का नाम धन्य हो!'

इस प्रकार, इन सब में, अय्यूब ने एक भी जल्दबाज़ी में बोले गए शब्द से परमेश्वर के विरुद्ध पाप नहीं किया (अय्यूब 1:13–22)।

एक दिन, परमेश्वर के स्वर्गदूत फिर से प्रभु के सामने उपस्थित होने आए; और शैतान भी उनके बीच आ गया।

और यहोवा ने शैतान से कहा:

'तुम कहाँ से आए हो?'

शैतान ने उत्तर दिया:

'मैं पृथ्वी पर घूमता-फिरता रहा हूँ।'

प्रभु ने उससे कहा:

'क्या तूने मेरे सेवक अय्यूब पर ध्यान दिया है? पृथ्वी पर उसकी समान कोई नहीं है; वह इतना भला, सीधा और धर्मनिष्ठ है, और हर बुराई से इतना दूर है! और उस पर आई विपत्तियों के बावजूद , वह आज तक अपनी निष्ठा में दृढ़ बना हुआ है; फिर भी तूने बिना कारण के मुझे उसके विरुद्ध भड़काया है ताकि उसे नष्ट कर दे!'

और शैतान ने प्रभु को उत्तर दिया और कहा:

'एक आदमी अपनी जान के लिए अपनी हर चीज़ त्याग देगा, लेकिन अपनी खाल के लिए नहीं' – अर्थात्: एक आदमी किसी और की खाल में पीड़ा सहन कर सकता है; किसी और की खाल में, प्रहार इतने दर्दनाक नहीं होते; यहाँ तक कि उस खाल को हटाना भी सहनीय होता है, उसके लिए दर्दनाक नहीं, और वह शांत रह सकता है; लेकिन उसके अपने शरीर को छूने का प्रयास करो—अपना हाथ बढ़ाओ और उसकी हड्डी और उसके मांस को छूओ, और तुम देखोगे कि क्या वह तुम्हें आशीर्वाद देगा।

तब यहोवा ने शैतान से कहा:

'देख, वह तेरे वश में है। तू उसकी देह से जो चाहे कर; पर उसकी जान को न छेड़' – उसके अस्तित्व की नींव, उसकी स्वतंत्र इच्छा पर अतिक्रमण न कर (अय्यूब 2:1–6)।

शैतान प्रभु की उपस्थिति से चला गया और उसने यॉब के पूरे शरीर पर, उसके पैरों के तलवों से लेकर सिर के शीर्ष तक, एक भयानक कोढ़ का प्रकोप कर दिया। पीड़ित को जीवित लोगों की संगत छोड़ने के लिए मजबूर होना पड़ा, क्योंकि उस पर चढ़ आई बीमारी के संक्रामक स्वभाव के कारण वह उनके लिए असहनीय हो गया था। उसका शरीर घृणित, बदबूदार पपड़ियों से ढका हुआ था; एक तीव्र आंतरिक अग्नि उसके सभी जोड़ों में भड़क रही थी; बस्ती के बाहर राख में बैठकर, अय्यूब मिट्टी के एक टुकड़े से अपने सड़ते हुए घावों को खुरचता था। उसके सभी पड़ोसी और परिचित उससे मुंह मोड़कर चले गए और उसे छोड़ दिया। यहां तक कि उसकी पत्नी ने भी उसके प्रति अपनी सहानुभूति खो दी।

बहुत समय बाद, निराशा की एक घड़ी में, उसने एक बार यॉब से कहा: 'तुम यह और कितनी देर तक सहोगे? – देखो, मैं अपने उद्धार की आशा में थोड़ा और इंतजार करूँगी; क्योंकि तुम्हारी यादें, तुम्हारे बेटे और बेटियाँ, मेरे गर्भ के फल और जिन परिश्रमों में मैंने व्यर्थ ही मेहनत की, वे सब पृथ्वी से नष्ट हो गए हैं। तुम स्वयं कीड़ों की बदबू के बीच बैठे हो, कम्बल के बिना रात बिताते हो, जबकि मैं एक जगह से दूसरी जगह, घर-घर भटकती और सेवा करती फिरती हूँ, इस इंतज़ार में कि सूर्य अस्त हो जाए ताकि मुझे अपनी मेहनत और अब सता रही बीमारियों से राहत मिल सके। हठी मत बनो; अपनी निर्दोषता पर दृढ़ता से कायम मत रहो; परन्तु परमेश्वर से एक बात बोल, उसकी निन्दा कर और मर जा—मृत्यु में तुझे अपने दुखों से छुटकारा मिलेगा; यह मुझे भी मेरे कष्टों से छुटकारा दिलाएगी।'

इतनी सरलता और स्वाभाविकता से, और जाहिर तौर पर संतोषजनक ढंग से भी, यॉब की पत्नी ने उसके और अपने लिए जीवन के प्रश्न का समाधान कर दिया, इसके अर्थ और उद्देश्य की सांसारिक समझ से आगे जाए बिना, शैतान के

उकसावे पर – 'एक के लिए एक'। थकी-हार कर और नैतिक रूप से थक चुकी, वह सच्चे जीवन की अंतिम करिण को बुझाने के लिए तैयार थी: 'ईश्वर की निंदा करो और—मर जाओ'।

हालाँकि, योब ने स्वयं अपनी स्थिति के बारे में इस तरह तर्क नहीं किया, क्योंकि वह अपनी मानवीय प्रकृति को संकीर्ण स्वार्थ के दृष्टिकोण से नहीं देखता था। अपनी पत्नी की ओर खेदपूर्ण दृष्टि डालते हुए, उसने उससे कहा:

'तुम उन मूर्ख स्त्रियों में से किसी के समान क्यों बोलती हो? यदि हम परमेश्वर से भलाई ग्रहण करते हैं, तो क्या हम बुराई भी न सहें—या उसे स्वीकार करने से इनकार करें?

और इस अवसर पर, अय्यूब ने परमेश्वर के विरुद्ध पाप नहीं किया – उसके होंठों से उनकी निन्दा नहीं निकली (अय्यूब 2:7–10)।

यॉब पर आई विपत्ति की खबर आस-पास के सभी प्रदेशों में फैल गई। उसकी तीन मित्र—तेमान का एलिफाज, शूही का बिल्दद और नामाई का सोफर[3462] —ने उसकी दुर्दशा के बारे में सुनकर, दुखी व्यक्ति को सांत्वना देने और उसके दुख में भागीदार बनने के लिए एक साथ मिलकर आ गए। लेकिन जब वे उसके पास पहुँचे और उसे पहचान नहीं सके—क्योंकि उसका चेहरा एक लगातार पस-पसिया हुआ घाव था—तो वे दूर से ही भयभीत होकर चिल्ला उठे और रोने लगे, प्रत्येक ने अपना बाहरी वस्त्र फाड़ा और गहरे दुख में, अपने सिर पर धूल उछाल ली। तब वे अपने मित्र के सामने जमीन पर सात दिन और सात रात तक बिना एक शब्द बोले बैठे रहे, क्योंकि उन्होंने देखा कि उसका दुख बहुत अधिक था और वे ऐसी दशा में उसे सांत्वना देने का कोई उपाय नहीं खोज सके (यॉब 2:11–13)। इस पीड़ादायक मौन को खुद अय्यूब ने तोड़ा। वह सबसे पहले बोला: उसने अपनी जन्म की दिन को शाप दिया और इस बात पर गहरा दुख व्यक्त किया कि उसे प्रकाश देखने की अनुमति क्यों दी गई, जो अब उसके लिए अंधकार में लिपट गया था। उसे जीवन क्यों दिया गया था, जब यह उसके लिए निराशाजनक यातना के सिवा कुछ नहीं था?

पीड़ित ने कहा, 'जिस भयानक बात का मैं भय करता था, वह मुझ पर आ पड़ी है, और जिस भयंकर बात से मैं डरता था, वह मुझ पर आ पहुँची है। मुझे न चैन है, न विश्राम, न कोई सांत्वना!' (अय्यूब 3:1–26)।

तब उसके मित्र बातचीत में शामिल हुए, हालाँकि उनके तर्क, जिनसे वे उसे सांत्वना देना चाहते थे, ने केवल उसके पहले से ही पीड़ित हृदय को और अधिक विषाक्त कर दिया (अय्यूब 21:34; अय्यूब 16 और उसके बाद)। के अनुसार, उनकी ईमानदार दृढ़ विश्वास, और यह विश्वास कि एक न्यायी ईश्वर अच्छे लोगों को पुरस्कृत करता है और दुष्टों को दंडित करता है, वे इसे निर्विवाद और संदेह से परे मानते थे कि यदि कोई दुर्भाग्य से पीड़ित है, तो वह व्यक्ति एक पापी है; और उन्होंने तर्क दिया कि जितना बड़ा दुर्भाग्य, उतनी ही गहरी उसकी पाप की स्थिति थी। यही कारण था कि उन्होंने सोचा कि अय्यूब के कुछ गुप्त पाप होंगे जिन्हें उसने लोगों से कुशलता से छिपा रखा था (अय्यूब 32:1–22, 33:1–33, आदि), और जिनके लिए सर्व-दृष्टा ईश्वर अपने मित्र को दंडित कर रहा था। उन्होंने अपनी चर्चाओं की शुरुआत से ही यह बात पीड़ित को स्पष्ट कर दी और फिर, अपनी लंबी बहसों के दौरान, उसे अपने पापों को स्वीकार करने और पश्चाताप करने के लिए मनाने का प्रयास किया। यद्यपि उनके तर्क स्पष्ट रूप से प्रभावशाली लग रहे थे, फिर भी अपने निर्दोष होने का एहसास करने वाले अय्यूब ने अपने मन में उनके तर्क को न्यायसंगत मानने से खुद को बहुत दूर समझा (अय्यूब 27:1-7; तुलना करें अय्यूब 10:17); अपने निर्दोष होने की पूरी ताकत से, उसने अपने अच्छे नाम का बचाव किया।

'तुम मेरी आत्मा को और अपने वचनों से मुझे कब तक सताओगे? देखो, तुमने मुझे पहले ही दस बार लज्जित किया है, और फिर भी तुम्हें मुझे सताना लज्जास्पद नहीं लगता! हे नीच सांत्वना देने वालों! क्या तुम्हारे इन व्यर्थ शब्दों का कभी अंत होगा?' (अय्यूब 19:2–3; तुलना करें अय्यूब 16:2)।

अय्यूब ने अपने मित्रों को समझाया और उन्हें आश्वासन दिया कि वह अपने पापों के लिए नहीं बल्कि इस बात के लिए दुख उठा रहा था कि ईश्वर अपनी इच्छा के अनुसार—जो मनुष्य के लिए अकल्पनीय है—किसी को कठिनाइयों भरा जीवन और किसी को सुखद जीवन भेजते हैं। यॉब के मित्र, जो यह मानते थे कि परमेश्वर भी लोगों के साथ उसी प्रतिशोध के नियमों के अनुसार व्यवहार करता है जिनके द्वारा मानव न्याय निर्णय सुनाता है, उसकी आत्मरक्षा की बातों से आश्वस्त नहीं हुए, यद्यपि उन्होंने उस पर अपने आरोप लगाना बंद कर दिया और उसके शब्दों का जवाब देना बंद कर दिया (यॉब 32:1–15)। इस समय, रामोथ के कुल के, बूज़ी, बराखियेल के पुत्र एलीहू नामक एक युवक ने बड़ी उत्सुकता से सामान्य चर्चा में भाग लिया; उसने प्रचंड साहस के साथ उस सम्माननीय पीड़ित के विरुद्ध तर्क दिया 'क्योंकि उसने

[3462] वे एसाव के वंशज थे, जिन्हें 'एदोम' के नाम से भी जाना जाता है (उत्पत्ति 36:1–43 देखें)।

स्वयं और अपनी निर्दोषता की परमेश्वर से भी अधिक रक्षा की थी' (यॉब 32 और बाद के)। इस वक्ता ने भी, सृष्टिकर्ता को मानव पहुँच से परे एक न्याय का श्रेय देते हुए, यॉब के दुखों का कारण उसकी अपनी दुष्टता में ही देखा, भले ही वह मानव आँखों को स्पष्ट रूप से दिखाई नहीं दे रहा था।

'ईश्वर शक्तिशाली है और दृढ़ संकल्प वाले हृदय का तिरस्कार नहीं करता। वह दुष्टों का समर्थन नहीं करता, और न ही वह धर्मी लोगों से अपनी दृष्टि हटाता है; लेकिन एलिहू ने अय्यूब से कहा, 'तुम दुष्टों के न्याय से भरे हो, क्योंकि तुम्हारी दृष्टि में, परमेश्वर द्वारा तुम्हें दी गई सज़ा अनुचित है, 'फिर भी न्याय और निदा निकट हैं', तुम्हारे भीतर इतनी गहराई से गुंथे हुए (अय्यूब 36:5–17)।

अंत में, पीड़ित ने प्रार्थना में परमेश्वर की ओर मुड़कर उनसे अपनी निर्दोषता की गवाही देने का आग्रह किया।

वास्तव में, परमेश्वर यॉब के पास एक प्रचंड आँधी में प्रकट हुए और उन्होंने दैवीय शासन के कामकाज का हिसाब माँगने के उसके इरादे के लिए उसे फटकार लगाई। सर्वशक्तिमान ने अय्यूब को बताया कि उसके चारों ओर की दृश्य प्रकृति की घटनाओं और रचनाओं में भी मनुष्य के लिए बहुत कुछ अकल्पनीय है; और उससे भी परे, परमेश्वर के विधान के रहस्यों को जानने और यह समझाने की इच्छा कि वह लोगों के साथ एक तरह से नहीं बल्कि दूसरे तरह से व्यवहार क्यों करता है—ऐसी इच्छा अपने आप में एक दुस्साहसी अनुमान का कार्य है।

प्रभु ने उग्र आँधी से अय्यूब से पूछा, 'यह कौन है जो व्यर्थ शब्दों से दिव्य व्यवस्था को अँधकारमय करता है?' 'एक पराक्रमी मनुष्य की तरह कमर कस और उत्तर दे: जब मैं पृथ्वी की नींव डाल रहा था, तब तू कहाँ था? मुझे बता, यदि तू जानता है। उसकी नींव किस पर रखी गई है, या स्वर्ग के तारों की सामान्य प्रसन्नता और परमेश्वर के पुत्रों के आनंदित, स्तुतिपूर्ण उद्गारों के बीच उसका मूल पत्थर किसने रखा? क्या तुमने अपने जीवन में कभी भोर को आज्ञा दी है, या उषा को उसका स्थान दिखाया है? क्या तुम आकाश के नियमों को जानते हो? क्या तुम बादलों तक अपनी आवाज़ उठा सकते हो, या बिजली भेज सकते हो? … क्या तुम मेरा न्याय पलटना चाहते हो, खुद को सही ठहराने के लिए मुझ पर दोष लगाना चाहते हो: 'क्या तुममें वह शक्ति है जो मुझमें है?' – अपने को भव्यता और महिमा से सजाओ; वैभव और शोभा के वस्त्र धारण करो; अपने क्रोध की आग बरसाओ; जो कुछ भी घमंडी और अहंकारी है, उस पर दृष्टि डालो और उसे नम्र बनाओ; दुष्ट शक्तिशाली को उनके स्थान पर कुचल डालो। तब मैं भी यह मान लूँगा कि तुम्हारा दाहिना हाथ तुम्हारी रक्षा करने के लिए पर्याप्त शक्तिशाली है। जो सर्वशक्तिमान से विवाद करता है, जो परमेश्वर पर दोष लगाता है, वह उसे उत्तर दे।

और आयोब ने प्रभु को उत्तर दिया और कहा:

'मैं जानता हूँ कि आप सब कुछ कर सकते हैं, और आपका उद्देश्य विफल नहीं किया जा सकता।

'यह कौन है जो बिना समझ के मेरी योजना को धुंधला करता है?'

'मैंने उन बातों के विषय में कहा है जिन्हें मैं नहीं समझता था—ऐसे कामों के विषय में जो मेरे लिए अतिशय अद्भुत थे, जिन्हें मैं नहीं जानता था।' मैंने पहले तो केवल अपने कान के सिरे से तेरे विषय में सुना था, परन्तु अब मेरी आँखों ने तुझे देखा है; इसलिये मैं अपने आपको घृणा से तुच्छ जानता हूँ, और राख में पश्चाताप करता हूँ; मैं तो मिट्टी ही हूँ, और मैं तुझ से क्या कह सकता हूँ? – मैं अपना हाथ अपने मुँह पर रखता हूँ (अय्यूब 38–40)।

और उसके बाद यहोवा की आज्ञा यॉब के मित्रों को मिली, कि वे उसके पास जाकर उसकी ओर से एक बलिदान चढ़ाने के लिए उससे निवेदन करें; क्योंकि यहोवा ने तेमानी एलिफज से कहा, केवल यॉब का चरित्र, 'मैं यह स्वीकार करूँगा, ताकि मैं तुम्हें इस कारण से न त्याग दूँ कि तुमने मेरे सेवक आयोब की अपेक्षा मुझसे कम सत्य बात कही' (अय्यूब 42:7-9)। दोस्तों ने प्रभु की इस आज्ञा का पालन किया और बलिदान के लिए आयोब के पास सात साँड़ और सात नर भेड़ें लाए। आयोब ने परमेश्वर को बलिदान चढ़ाया और अपने दोस्तों के लिए प्रार्थना की। ईश्वर ने उनकी ओर से उसकी मध्यस्थता को स्वीकार किया, उसकी अपनी शारीरिक सेहत बहाल की, और उसे पहले से दोगुना कुछ दे दिया। यहोवा के चंगा होने की खबर सुनकर, यहोवा के रिश्तेदार और उसके सभी पूर्व परिचित उसे सांत्वना देने और उसके साथ आनंद मनाने के लिए मिलने आए, और उनमें से प्रत्येक ने उसके लिए एक उपहार और एक सोने की अंगूठी लाई। प्रभु ने भी अय्यूब को आशीष दी: बाद में उसके पास चौदह हज़ार छोटे पशु, छः हज़ार ऊँट, एक हज़ार जोड़े बैल और एक हज़ार मादा गधे थे। जोब को मरने वालों के स्थान पर सात पुत्र और तीन पुत्रियाँ भी हुईं; और उस सारी भूमि में जोब की पुत्रियों जैसी सुन्दर कोई स्त्रियाँ नहीं थीं, और उनके पिता ने उन्हें उनके भाइयों के बीच में विरासत दी (योब 42:10–15)। प्रभु ने योब की भेड़ों की संख्या को दोगुना तो किया, परन्तु उसके बच्चों की संख्या को नहीं, जैसा कि उसने किया था: यह इसलिए था कि कोई यह

न सोचे कि उसके पहले बच्चे, जो मर गए थे, हमेशा के लिए खो गए थे – नहीं, यद्यपि वे मर गए, वे खोए नहीं थे – वे धर्मी लोगों के सामान्य पुनरुत्थान में फिर से उठेंगे।

इयोब, अपनी परीक्षाओं को धैर्यपूर्वक सहने के बाद, एक सौ चालीस वर्ष जिया (और कुल मिलाकर वह पृथ्वी पर दो सौ अड़तालीस वर्ष जिया), और उसने अपनी वंशावली को चौथी पीढ़ी तक देखा; वह एक परिपूर्ण जीवन जीकर, बहुत वृद्धावस्था में मर गया (इयोब 42:16–17); परन्तु अब वह पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के राज्य में एक ऐसा जीवन जीता है जो न तो बूढ़ा होता है और न ही किसी बीमारी से पीड़ित होता है, वह एक ईश्वर जो त्रिमूर्ति में महिमामय है; क्योंकि पृथ्वी पर अपनी विपत्तियों को सहते हुए भी, उसने अब्राहम की तरह प्रभु का महान दिन पहले ही देख लिया था, और उसमें आनन्दित हुआ था (यूहन्ना 8:56)।

'मैं जानता हूँ,' उसने कहा, एक घृणित फोड़े से पीड़ित, 'मैं जानता हूँ कि मेरा मुक्तिदाता जीवित है, और वह अंतिम दिन इस सड़ती हुई मेरी त्वचा को धूल से उठाएगा, और मैं अपने ही शरीर में परमेश्वर को देखूँगा। मैं स्वयं उसे देखूँगा; मेरी अपनी आँखें, न कि किसी और की आँखें, उसे निहारेंगी। इस आशा से मेरा हृदय मेरे वक्ष में पिघल जाता है! (अय्यूब 19:25-27)

यह वही है जो धर्मी अय्यूब ने अपने मित्रों के सामने स्वीकार किया, और उनसे आग्रह किया कि वे देह के दुखों और सांसारिक आशीषों से वंचित होने से नहीं, बल्कि यहोवा की तलवार' से, सर्वशक्तिमान के क्रोध से 'डरे', 'जो अधर्म का प्रतिशोध लेने वाला है'।

'जान लो कि एक न्याय है' (योब 19:29)[3463] , वह हमारे लिए एक सबक के रूप में उद्घोषित करते हैं, 'एक ऐसा न्याय जिसमें केवल वही लोग सिद्ध होंगे जिनके पास सच्ची बुद्धि—परमेश्वर का भय—और सच्ची समझ—बुराई से बचना—है' (योब 28:28)।

[3463] योब की पुस्तक का विषय इस प्रश्न का समाधान करना है: हम संसार में ईश्वर की व्यवस्था की उपस्थिति को पृथ्वी पर उस सर्वसाधारण घटना के साथ कैसे सामंजस्य स्थापित कर सकते हैं, जिसमें सदाचारी लोग अपना जीवन दुख-दर्द में बिताते हैं, जबकि दुष्ट समृद्धि प्राप्त करते हैं? यॉब के मित्र—एलिफ़ज़, बिल्दद और सोफ़र—ने धर्मी यॉब पर आई विपत्तियों के बारे में सुना; वे दुखी यॉब से मिलने आए, और जब उन्होंने अपने मित्र को फोड़ों से भरे बिस्तर पर लेटे देखा, तो उन्होंने सात दिन तक मौन में शोक मनाया। फिर उन्होंने उससे बातचीत की: यह मानते हुए कि सभी दुख किसी न किसी गलत काम की सजा होती है, जो कि पुराने नियम का एक आम दृष्टिकोण था, उन्होंने योब से अपनी बातों में यह विचार विकसित किया कि यदि वह अब दुख सह रहा है, तो निस्संदेह यह उसके अपने ही कुछ पापों के कारण था, जिनके लिए उसे पश्चाताप करना चाहिए। अपने दोस्तों के शब्दों से दुखी और यह महसूस करते हुए कि वह परमेश्वर के सामने सही था, आयोब ने, इस बात पर शोक करते हुए कि प्रभु का हाथ उस पर भारी हो गया था, परमेश्वर के मार्गों की अपारता में अपने विश्वास को व्यक्त किया, जिनके सामने मानव विचार शक्तिहीन है, साथ ही यह इच्छा भी व्यक्त की कि प्रभु स्वयं उसका न्याय करें। ईश्वर तूफ़ान में यॉब के सामने प्रकट होते हैं। यॉब को उसकी जल्दबाज़ी भरी माँग के लिए फटकार लगाने के बाद कि ईश्वर दुनिया पर अपने शासन का हिसाब दें, प्रभु यॉब के मन में दैवीय व्यवस्था की असीम और अगम्य रीतिओं के प्रति श्रद्धा की भावना जगाते हैं, जो सभी चीज़ों को अच्छे परिणामों की ओर निर्देशित करती है। निष्कर्षत; प्रभु एलियिज़र और उसके साथियों को आज्ञा देते हैं कि वे अपने अन्यायपूर्ण निंदा के पाप के लिए यॉब की मध्यस्थता माँगें, जबकि वह यॉब को उसके नुकसान और कष्टों के लिए दोगुना पुरस्कार देते हैं। यॉब की पुस्तक के लेखक का प्रश्न बहस का विषय है। संत ग्रेगरी द थियोलोजियन और संत जॉन क्रिसोस्टोम का मानना था कि इसे सुलैमान ने लिखा था। हालाँकि, यह उस सामान्य धारणा से मेल खाना मुश्किल है जो पुस्तक से मिलती है, जो एक अतुलनीय रूप से पुरातन उत्पत्ति का सुझाव देती है। इसमें मूसा के कानूनों का कहीं भी उल्लेख नहीं है; साथ ही, इसका वर्णन पितृसत्तात्मक जीवन की विशेषताओं को प्रकट करता है, जिसमें एक अत्यधिक विकसित सामाजिक जीवन के संकेत पहले से ही स्पष्ट हैं। एक प्रतिष्ठित योद्धा, राजकुमार और न्यायाधीश के रूप में, अय्यूब एक शानदार जीवन जीते हैं और पड़ोसी शहर की अपनी अक्सर होने वाली यात्राओं के दौरान सम्मान का आनंद लेते हैं; इसके अलावा, पुस्तक में कानूनी कार्यवाहियों के उचित रूपों, यॉब के समकालीनों की खगोलीय घटनाओं को देखने और इन अवलोकनों से उपयुक्त खगोलीय निष्कर्ष निकालने की क्षमता के संदर्भ हैं; इसमें अयस्क खदानों, बड़ी संरचनाओं, साथ ही बड़े राजनीतिक उथल-पुथल का भी उल्लेख है। यह सब बहुत अधिक संभावना के साथ, आयोब के जीवन के समय को मिस्र में यहूदियों के प्रवास की अवधि से जोड़ने का आधार प्रदान करता है। आयोब, जिसने समृद्धि के दिनों के बाद अपनी संपत्ति, अपने बच्चों और एक गंभीर बीमारी को खोने का अनुभव किया, और फिर परमेश्वर से जो कुछ उसने खोया था वह वापस पाया—और भी अधिक मात्रा में (आयोब 42:10)—मसीहा उद्धारकर्ता की पूर्वसूचना के रूप में कार्य करता है, जो स्वयं को इतना नम्र कर गए कि उन्होंने क्रूस पर एक अपमानजनक मृत्यु स्वीकार की और इसलिए उन्हें परमेश्वर पिता द्वारा (फिलि. 2:7–9) गौरवान्वित किया गया—जिन्होंने मानवता के लिए अपने उद्धार के कार्य के मुकुट के रूप में वह महिमा प्राप्त की जो उनके पास संसार की रचना से पहले पिता के साथ थी (यूहन्ना 17:6)। चौथी शताब्दी में जीवित पवित्र शहीद और वेरोना के बिशप, सेंट ज़िनो, प्रकार और प्रतिप्रकार के बीच और भी अन्य—अत्यंत विशिष्ट—समानता के बिंदुओं की पहचान करते हैं। पवित्र पिता कहते हैं, 'मेरी राय में, अय्यूब हमारे उद्धारकर्ता यीशु मसीह का एक प्रकार थे। एक तुलना हमें इस सत्य को समझाएगी। अय्यूब धर्मी थे – हमारे उद्धारकर्ता स्वयं धार्मिकता हैं, हमारी धार्मिकता का स्रोत, क्योंकि उनके बारे में यह भविष्यवाणी की गई थी: *'देखो, एक दिन आ रहा है... धार्मिकता का सूर्य उदय होगा'* (मला. 4:1–2)। अय्यूब सत्यवादी थे – हमारे प्रभु सच्चा और पूर्ण सत्य हैं: *'मैं मार्ग, सत्य और जीवन हूँ'* (यूहन्ना 14:6)। अय्यूब धनी थे, लेकिन

ट्रोपारयिन, स्वर 1:

यॉब के गुणों की संपदा को देखकर, धर्मी के शत्रु ने उसे चुराने की साजशि रची; और यद्यपि उसने उसके शरीर के स्तंभ को फा दयिा, फरि भी वह उसकी आत्मा के खजाने को चुरा न सका, क्योंकि उसने नरि्दोष की आत्मा को दृढ़-पुष्ट पाया। परन्तु मुझे नंगा करके बंदी बना लेने के बाद: अंत से पहले मुझ पर हावी होने के कारण, हे उद्धारकर्ता, मुझे छलने वाले से बचा और मुझे बचा ले।

कॉन्टाकयिन, स्वर 8:

क्योंकि आप सच्चे और धर्मी, ईश्वर-भक्त और नरि्दोष हैं, और परमेश्वर के सर्व-महमिामय, सच्चे सेवक के रूप में प्रकट हुए हैं; हे अति धैर्यवान और अति पराक्रमी, आपने अपने धैर्य से संसार को प्रकाशति कयिा है: इसलिए, हम जो परमेश्वर में बुद्धमिान हैं, आपकी स्तुति करते हैं।

पवत्रि शहीद बार्बेरस योद्धा और उनके साथयिों का कष्टकथा

6 मई को स्मरणोत्सव

हमारे प्रभु की संपत्ति की तुलना कसिसे की जा सकती है, जनिके हैं संपूर्ण ब्रह्मांड, जैसा कि धन्य दाऊद गवाही देते हैं: *'पृथ्वी यहोवा की है, और जो कुछ उस में है वह सब उसी का है, संसार और जो लोग उस में बसते हैं वे सब उसी के हैं'* (भजन संहति 23:1)? अय्यूब को शैतान द्वारा तीन बार परीक्षा में डाला गया (उसकी संपत्ति के नुकसान, अपने बच्चों की मृत्यु और अपनी बीमारी के माध्यम से); इसी तरह, सुसमाचार लेखक के अनुसार, शैतान ने हमारे प्रभु को भी तीन बार परीक्षा में डाला (मत्ती 4:1-11)। अय्यूब, अपनी सारी संपत्ति से वंचति होकर, दरदि्र हो गया – हमारे प्रभु, हमसे प्रेम के कारण, पृथ्वी पर आकर और स्वर्ग की सभी आशीषों को छोड़कर, हमें समृद्ध करने के लिए स्वयं भी दरदि्र हो गए। अय्यूब के बच्चों को क्रोधति शैतान ने मार डाला – हमारे प्रभु के बच्चों, अर्थात् भवषि्यद्वक्ताओं को, पागल फरीसयिों ने मृत्युदंड दयिा (लूका 13:34; प्रेरतिों के काम 7:52)। अय्यूब को फोड़ों से पीड़ति कयिा गया – हमारे प्रभु ने, अपने ऊपर संपूर्ण मानव जाति के सभी पापों और हमारे शरीर को ग्रहण करते हुए, इस प्रकार सभी अशुद्धयिों और पापी कष्टों को भी अपने ऊपर ले लयिा। अय्यूब पर उसके दोस्तों ने आक्रमण कयिा – हमारे प्रभु का वरिोध सबसे अधकि महापुजारयिों और शास्त्रयिों ने कयिा, जनि्हें सबसे अधकि सम्मान देना चाहए था और उनके मत्रि होने चाहए थे। अर्बुद रोग से पीड़ति और कीड़ों द्वारा चाटा गया अय्यूब नगर के बाहर राख में बैठा था – हमारे प्रभु, जनि्होंने संपूर्ण मानव जाति की सभी पापी पीड़ाओं को स्वयं पर ले लयिा था, इस अशुद्ध संसार में दोषों से भरे और वासनाओं से उबलते लोगों के बीच चले, जनि्होंने उन्हें नगर के बाहर एक लज्जास्पद मृत्यु के हवाले कर दयिा। इयोब ने अपने अजेय धैर्य के द्वारा अपना स्वास्थ्य और अपनी संपत्ति दोनों फरि से प्राप्त की – हमारे प्रभु ने, अपने पुनरुत्थान के द्वारा मृत्यु पर वजिय प्राप्त करके, उन लोगों को जो उन पर वशि्वास करते हैं, न केवल स्वास्थ्य बल्कि अमरत्व भी प्रदान कयिा, और परमेश्वर पति से सभी पर अधकिार और प्रभुत्व प्राप्त कयिा, जैसा कि उन्होंने स्वयं गवाही दी: *'सब कुछ मेरे पति ने मुझे सौंप दयिा है'* (लूका 10:22)। धन्य अय्यूब शांतपिूर्वक नधिन कर गए – हमारे प्रभु, जनि्होंने हमें अपने लहू की कीमत पर खरी हुई शांति छोड़कर, नम्र और शांतपिूर्ण महमिा में अपने पति के पास आरोहण कयिा। धर्मी अय्यूब के जीवन के अनुकरणीय महत्व को देखते हुए, कलीसयिा ने अनादि काल से यह स्थापति कयिा है कि मसीह के दुखों की स्मृति के लिए समर्पति दनिों पर, अय्यूब की पुस्तक से पाठ वशि्वासयिों के ध्यान में प्रस्तुत कए जाने चाहए। – पवत्रि सप्ताह के दौरान अय्यूब की पुस्तक से पाठ इस प्रकार हैं: सोमवार को, संध्या समय, अय्यूब 1:1–12; मंगलवार को, वेस्पर्स पर: यॉब 1:13–22; बुधवार को, वेस्पर्स पर: यॉब 2:1–10; माउंडी गुरुवार को, वेस्पर्स पर: यॉब 38:1–23, 42:1–5; गुड फ्राइडे को, वेस्पर्स पर: यॉब 42:12–17।

जब ईश्वर-द्वेषी राजा जूलियिन द अपोस्टेट[3464] ने फ्रैंक्स[3465] के खलिाफ युद्ध छेड़ा, तो उसने उनके खलिाफ कमांडर बक्कस को भेजा; उसकी रेजमिेंट में बारबरस नाम का एक वीर योद्धा था, जो वशि्वास से ईसाई था, यद्यपि एक गुप्त ईसाई था। दोनों पक्षों की सेनाएँ युद्ध के लिए तैयार हो गईं; फ्रैंकों में गोलयिथ (1 शमूएल 17) जैसा एक शक्तशिाली योद्धा था। रोमन पंक्तयिों के सामने आकर, उसने उन्हें एक-एक करके लड़ने की चुनौती दी, और कसिी को आगे आकर उससे लड़ने के लिए कहा; और चूँकि कसिी भी रोमन ने उससे लड़ने की हम्मित नहीं की—क्योंकि उसकी शक्ल-सूरत ही, जो उसकी ताकत की गवाही देती थी, उन्हें डरा गई थी—उसने उनका मज़ाक उड़ाया। तब राज्यपाल बैकस ने, धन्य बार्बरस की वीरता के बारे में जानकर, उसे बुलाया और पूछा कि क्या वह इस घमंडी पहलवान से लड़ने को तैयार होगा जो अपनी ताकत का घमंड करता था। बार्बरस ने, हालांकि, अपने प्रभु यीशु मसीह की मदद पर भरोसा करते हुए, जनि पर वह वशि्वास करता था, द्वंद्व युद्ध से इनकार नहीं कयिा: उसने स्वयं को क्रूस के चह्नि से सशस्त्र कयिा, शत्रु पर बढ़ गया और, उससे लड़ते हुए, ईश्वर की सहायता से उस पर वजिय प्राप्त की और उसे मार डाला; क्योंकि प्रभु ने धन्य बार्बरोस की सहायता के लिए एक स्वर्गदूत भेजा था। तब फ्रैंक्स लज्जति और भयभीत हो गए; कन्तिु रोमनों ने, उनके पराक्रम से प्रेरति होकर, उन पर धावा बोल दयिा और एक नर्णिायक वजिय प्राप्त की। धन्य बार्बेरस के इस बहादुरीपूर्ण कार्य ने उन्हें रोमन रेजमिेंटों में बहुत सम्मान और सम्राट की प्रशंसा दलिाई: उन्हें कोमटि[3466] का पद दयिा गया।

इसके बाद, अपने दुश्मनों पर इस शानदार वजिय के बाद, जब राज्यपाल बकस थ्रेस में अपनी सेना के साथ तैनात थे[3467] , तो उन्होंने इस वजिय के लिए मूर्तयिों को धन्यवाद देने हेतु बलदिान चढ़ाने की इच्छा व्यक्त की, जसिे उन्होंने मसीह ईश्वर को नहीं, बल्कि अपनी व्यर्थ मूर्तयिों को अर्पति कयिा। और इस प्रकार उसने कोमति बार्बरस को, एक प्रमुख वजिेता के रूप में, अपनी अशुद्ध बलदिानों में भाग लेने के लिए आमंत्रति कयिा। लेकनि संत बार्बरस ने, यह खुले तौर पर स्वीकार करते हुए कि वह एक ईसाई था, मूर्तयिों से मुंह मोड़ लयिा। तब राज्यपाल ने इसकी सूचना राजा को दी; राजा ने मसीह के उस सपिाही को अपने सामने लाने का आदेश दयिा और उसे मूर्तयिों को बलदिान चढ़ाने के लिए मजबूर कयिा; लेकनि चूंकि धन्य वरवर ने आज्ञा नहीं मानी, राजा ने आदेश दयिा कि उसे यातना वृक्ष पर लटका दयिा जाए और उसकी तलवार से पेट चीर दयिा जाए, जब तक कि उसकी आंतें जमीन पर न गरि जाएं। लेकनि जब संत प्रार्थना कर रहे थे, तो एक देवदूत प्रकट हुआ और, उसकी आंतों को इकट्ठा करके, उन्हें शहीद के शरीर में उनकी सही जगह पर वापस रख दयिा और उसे चंगा कर दयिा, ताकि उसके शरीर पर घाव का कोई नशिान भी न बचे; फरि उसने उसे यातना वृक्ष से खोल दयिा। यह चमत्कार देखने पर, राज्यपाल बाकस, दो सैनकिों—कैलमिाकस और डायोनसियिस—के साथ मसीह में वशि्वास करने लगे और उन्होंने दुष्ट मूर्तपिूजक देवताओं की नदिा की। इसके लिए, राजा जूलियिन के आदेश पर, मसीह के नाम के नए स्वीकारकर्ताओं—बैकस, कैलमिाकस और डायोनसियिस—का सरि कलम कर दयिा गया और इस प्रकार उन्हें स्वर्ग में पवत्रि शहीदों में शामलि कर लयिा गया। जहाँ तक संत बार्बरा का सवाल है, दुष्ट राजा ने आदेश दयिा कि उसे

[3464] जूलियिन द एपोस्टेट, कॉन्स्टेंटाइन द ग्रेट का भतीजा, 331 में पैदा हुआ था। 345 में, अपने भाई गैलस के साथ, उसे कॉन्स्टैंटयिस द्वारा कैपाडोसयिा में नर्वािसति कर दयिा गया था, जहाँ उसने सख्त नगिरानी में छह साल बतिाए। 351 में, वह अपने नर्वािसन स्थल से चला गया और नकिोमेडयिा में कई साल बतिाए, जहाँ उसने खुद को दर्शनशास्त्र के अध्ययन के लिए समर्पति कर दयिा; 355 में, उसे कॉन्स्टैंटयिस द्वारा गॉल में सैनकिों का कमांडर नयिुक्त कयिा गया; वहाँ उसने सेना का स्नेह जीतने में कामयाबी हासलि की, जसिने 361 में उसे सम्राट घोषति कर दयिा। एक मूर्तपिूजक शकि्षक के अधीन दर्शनशास्त्र का अध्ययन, एरयिन उथल-पुथल से उत्पन्न ईसाइयों के बीच असहमति, और कॉन्स्टैंटयिस के प्रति उसकी घृणा ने जूलियिन में अपने उत्पीड़क - ईसाई धर्म - के धर्म के प्रति घृणा भर दी। उसने मूर्तपिूजा को बहाल करने और ईसाई धर्म को नष्ट करने का लक्ष्य नर्धिारति कयिा। लेकनि उसके सभी प्रयास पूरी तरह से वफिल रहे। जूलियिन की मृत्यु 363 में फारसयिों के साथ एक लड़ाई के बाद हुई, जसिमें वह एक भाले से घातक रूप से घायल हो गया था; अपनी अंतमि सांसों में – 'तुम जीत गए, गलीलयिाई!' – जूलियिन ने मूर्तपिूजा पर ईसाई धर्म की वजिय को स्वीकार कयिा।

[3465] फ्रैंक्स नचिले राइन पर जर्मनकि लोगों का एक संघ था। रोमन क्षेत्र पर अपने छापों के माध्यम से, फ्रैंक्स ने रोमन साम्राज्य के पतन को काफी हद तक तेज़ कर दयिा। उत्तरी गॉल पर आक्रमण करने के बाद, फ्रैंक्स स्वदेशी आबादी के साथ मलि गए और, कुछ हद तक, उनके रीति-रवािजों को अपना लयिा। रोमनों और एलेमनी और वसिगिोथ्स के दक्षणिी जनजातयिों पर वजिय के बाद, कैरोलगियिनों के अधीन फ्रैंक्स की शक्ति वशि्व-ऐतहिासकि महत्व के स्तर तक बढ़ गई।

[3466] 'कोमटि्स' शब्द से राजा के अंगरक्षकों को संदर्भति कयिा जाता था। बाद में, यह उपाधि उन अधकिारयिों पर भी लागू होने लगी (जो उच्चतम रैंक के अधकिारयिों - प्रोकोन्सल्स, प्रांतीय गवर्नरों और राज्यपालों - के अनुचर दल का गठन करते थे) जनिके कर्तव्यों में बाद में राज्य कोष के लिए करों का संग्रह भी शामलि हो गया।

[3467] बाल्कन प्रायद्वीप के उत्तर-पूर्वी भाग में स्थति बीजान्टनि साम्राज्य का एक क्षेत्र। आज, थ्रेस, जसिे रोमोलयिा या रुमेलयिा के नाम से जाना जाता है, यूरोपीय तुर्की का एक प्रांत है।

एक लोहे के पहिये से बाँधा जाए, जिसके नीचे एक भयंकर आग जलाई जाए, और उस पहिये को शहीद के बँधे होने के साथ घुमाया जाए, जबकि उसके पीड़ित शरीर पर उबलता हुआ तेल डाला जाए। लेकिन शहीद, जिन्होंने ईश्वर से भक्तिपूर्वक प्रार्थना की थी, आग से पूरी तरह से अछूते रहे: इसके विपरीत, आग ने यातना देने वाले सैनिकों पर धावा बोल दिया, उन्हें झुलसा दिया, और उनमें से दो को राख कर दिया। इसके बाद, मसीह के लिए पीड़ित को एक कालकोठरी में डाल दिया गया, जहाँ प्रभु स्वयं उसके सामने प्रकट हुए और उसे शक्ति प्रदान की।

अगली सुबह, संत बार्बरा को फिर से यातना देने के लिए बाहर लाया गया; नग्न अवस्था में, उन्हें चारों दिशाओं में खींचा गया, जिसके बाद उन्हें बैल की टेंडन से पीठ और पेट पर निर्दयता से पीटा गया। फिर शहीद को एक भट्टी में डाल दिया गया, जिसे तीन दिनों से पहले ही भड़काया गया था। वहाँ सात दिन तक रहने के बाद, संत फिर से जीवित, अच्छे स्वास्थ्य में और आग से बिल्कुल भी प्रभावित हुए बिना पाए गए; संक्षेप में, वह भट्टी से ऐसे निकले जैसे स्नानागार से निकले हों, और ईश्वर की महिमा कर रहे थे। इसके बाद, संत बार्बरा को एक बार फिर एक कालकोठरी में डाल दिया गया, जहाँ उनके साथ बिच्छुओं, साँपों और सभी प्रकार के सरीसृपों की भीड़ फेंक दी गई, इस उम्मीद में कि वे उनके हाथों मारी जाएँगी। लेकिन इस कैद के दौरान भी, संत बार्बरा, क्रॉस के चिह्न से विषैले जीवों को अपने से दूर भगाकर, सुरक्षित रहीं।

तब क्रोधित यातनाकर्ता, मसीह की शक्ति को स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं, ने आदेश दिया कि एक कांसे का बैल पूरी तरह से गर्म किया जाए और शहीद को उसमें फेंक दिया जाए; लेकिन वहाँ भी संत को कोई चोट नहीं लगी। उसे आग से कोई दर्द महसूस नहीं हुआ, जबकि कांसे का बैल, मानो लपटों की गर्मी को महसूस करते हुए, जीवित हो कर हिलने-डुलने, आवाज़ें निकालने और इधर-उधर घूमने लगा। इस चमत्कार को देखकर कई विधर्मी मसीह में विश्वास करने लगे।

अंत में, इन सब के बाद, यातना देने वाले ने पवित्र शहीद बार्बरा का सिर कलम करने का आदेश दिया। और इस प्रकार उन्होंने प्रभु मसीह के लिए बहादुरी से अपनी शहादत पूरी की। उनके पवित्र शरीर को धर्मनिष्ठ बिशप फिलिकियस ने सम्मानपूर्वक ग्रहण किया, जिन्होंने इसे पेलोपोनेस के मेफोन नगर में दफनाया, और मसीह परमेश्वर की महिमा की, जो पिता और पवित्र आत्मा के साथ युगानुयुग महिमामय हैं, आमीन।

पहले एक डाकू, संत बार्बरा की स्मृति

6 मई को स्मरण किया जाता है

ये धन्य बार्बेरस पहले लुकेनिया के प्रदेशों में एक क्रूर डाकू थे[3468] । उन्होंने बहुत मानव रक्त बहाया, और कोई भी उन्हें पकड़ नहीं सकता था, लड़ना तो दूर की बात है, क्योंकि उनमें असाधारण शारीरिक शक्ति थी। परन्तु परम अनुग्रहकारी और दयालु परमेश्वर, जो पापी की मृत्यु नहीं चाहता, बल्कि सभी के उद्धार की कामना करता है, ने ठीक वैसे ही जैसे उसने एक बार प्रेरित पौलुस के साथ किया था (प्रेरितों के काम 22:1–30), अपनी पूर्वज्ञान की योजना के कार्यों के द्वारा, इस डाकू को उद्धार के जाल में फँसा लिया। एक दिन, जब यह डाकू अपनी गुफा में बैठकर लूटे हुए सोने के विशाल भंडार को निहार रहा था, तो अचानक ईश्वर की कृपा ने उसके हृदय को छू लिया, और उस पापी को पश्चाताप के मार्ग पर ले आई। और इस प्रकार डाकू की आत्मा पश्चाताप से भर गई; ईश्वर के अंतिम न्याय को याद करते हुए, वह दुखी होने लगा, और अपने हृदय में कहने लगा: 'हाय, मैं पापी! मैंने यह क्या किया! मैंने बहुत मानव रक्त बहाया है, कई महिलाओं का अपमान किया है, दूसरों की संपत्ति चुराई है, और कई अन्य बुराइयाँ की हैं! फिर भी, आज मरुँ या कल, मुझे तो मरना ही है; और मुझे मिला क्या है – यह किसके पास रहेगा?!' और फिर वह फिर से चिल्लाया: 'मैं जानता हूँ कि मसीह ने, अपनी दया में (लूका 23:40-43), पुराने समय के चोर को अपनी उपस्थिति में स्वीकार किया था: और वह मुझे भी स्वीकार कर लेंगे, बशर्ते कि मैं पश्चाताप करूँ। अब मैं पश्चाताप करता हूँ, मैं अपने दुष्कर्मों के लिए पछतावा करता हूँ, और मैं उनकी दया माँगता हूँ।'

अपने हृदय की गहराई से यह कहकर, बारबर खड़ा हो गया और, अपने साथियों से एक शब्द भी कहे बिना, केवल अपनी तलवार उठाई और उसे अपने कपड़ों के नीचे छिपा लिया; सब कुछ पीछे छोड़कर, वह रात में सबसे नज़दीकी गाँव के

[3468] संभवत; ग्रीस में।

लिए निकल पड़ा, जहाँ एक चर्च था। मैटिन्स के समय चर्च पहुँचकर, सेवा समाप्त होने पर वह आँसुओं से भरा पुरोहित के पैरों पर गिर पड़ा, और पुकार उठा:

'हे पवित्र पिता! मुझे, एक दुष्ट पापी, जो आपकी पवित्रता के पास आया है, से वंचित न करें; क्योंकि मैं अपने किए गए बुरे कर्मों का पश्चाताप करना चाहता हूँ।'

पुजारी ने उसे फर्श से उठाकर पवित्र वेदी तक ले जाया और कहा:

'मेरे बेटे, परमेश्वर के सामने अपने किए हुए पापों का इकरार करो; और मैं तुम्हारे इकरार और पश्चाताप का एक नम्र साक्षी बनूँगा।'

पश्चातापी बोलने लगा:

'मैं, फादर, वही डाकू बार्बेरस हूँ, जिसके बारे में, मुझे विश्वास है, आपने भी सुना होगा। मैं अनगिनत पापों, शारीरिक अशुद्धि, डकैती और हत्या के बोझ तले दबा हुआ हूँ; क्योंकि मैंने तीन सौ लोगों तक की हत्या की है, जिसमें दो पुरोहित भी शामिल हैं जिन्हें मैंने अपनी तलवार से मार डाला क्योंकि वे मुझे पश्चाताप की संस्कार में शामिल नहीं करना चाहते थे। और अब, पिताजी, यदि आप जानते हैं कि पश्चाताप करने पर ईश्वर मुझे स्वीकार करेंगे, तो कृपया ईश्वर की आज्ञाओं से मेरे पापी घावों को बाँध दें; परन्तु यदि नहीं, तो यह तलवार ले लें और उन्हें मुझे मार डालने का आदेश दें।

लेकिन उस वृद्ध ने उससे उत्तर दिया:

'मेरे बच्चे! ऐसा कोई पाप नहीं है जो ईश्वर की दया पर भारी पड़ सके: बस निराश मत हो। मेरे घर आओ, और जो कुछ भी मैं तुम्हें आज्ञा दूँ, वह करो।'

चर्च से निकलते समय, पुरोहित ने पीछे मुड़कर देखा और देखा कि बारबेरस उसके पीछे कोहनियों और घुटनों के बल रेंग रहा था, और उससे मुड़कर कहा:

'तुम क्या कर रहे हो, मेरे बच्चे?'

बारबर ने उत्तर दिया:

'इस क्षण से, अपने पापों के साथ प्रभु मेरे परमेश्वर के सामने भूमि पर मस्तक टेककर, मैं तब तक भूमि से नहीं उठूँगा जब तक मेरे सभी बुरे कर्म क्षमा नहीं हो जाते।'

'मेरे बच्चे,' पादरी ने कहा, 'तुम इस मामले में स्वेच्छा से ईश्वर को व्रत दे रहे हो। इसे निभाओ, और तुम्हें सब कुछ क्षमा कर दिया जाएगा।'

जब वे घर पहुँचे, तो पुरोहित ने उससे एक बार फिर कहा:

'देख, मेरे बच्चे, मेरे बच्चों, मेरे सेवकों, मेरे पशुओं, मेरे कुत्तों: तुम इनमें से किसके समान बनना चाहते हो, ताकि तुम उनके साथ अपना भोजन कर सको?'

उस बर्बर ने उत्तर दिया:

'पिताजी, मैं स्वयं को कुत्तों के बराबर भी नहीं मानता; परन्तु शरीर की अनिवार्य भोजन-आवश्यकता के कारण, मुझे उनके साथ रखिए, ताकि मैं उनके साथ खा सकूँ और दिन-रात आश्रयविहीन रहूँ।'

इस पर पुरोहित ने कहा:

'मेरे बच्चे, जैसा तुम कहते हो वैसा करो, ईश्वर के सामने, और उनकी महान दया पर भरोसा रखो।'

और इस प्रकार बारबरस उस पुरोहित के साथ तीन वर्षों तक इसी अवस्था में रहा, एक चार-पांव वाले जानवर की तरह, अपने हाथों और घुटनों पर रेंगता और कभी जमीन से उठता नहीं, खुद को लोगों के बीच रहने के अयोग्य समझता, बल्कि केवल चार-पांव वाले जानवरों और कुत्तों के बीच; वह उनके साथ खाता और दिन-रात घर के बाहर उनके साथ रहता था। तीसरे वर्ष के अंत में, उस पुरोहित ने उससे कहा:

'बस, मेरे बच्चे, कुत्तों के साथ खाना बंद कर दे, क्योंकि प्रभु तुझ पर अपनी दया दिखा रहे हैं।'

बारबेरस ने उत्तर दिया, 'लेकिन मैं, पिताजी, अभी भी मवेशियों के साथ चराई करना चाहता हूँ।'

और पुरोहित ने उससे कहा:

'मेरे बच्चे! ईश्वर तुम्हारा यह व्रत देखता है, जो तुम अपनी विनम्रता से उन्हें अर्पित करते हो, इस प्रकार अपने पापों के लिए दुख सहने की इच्छा से।'

और बारबेरस मवेशियों के साथ गाँव के उस पार चला गया, एक चार-पैर वाले जानवर की तरह चलता हुआ और थोड़ी-बहुत घास खाता हुआ। घास के मैदान पर पहुँचकर, वह बारह वर्षों तक वहाँ रहा, नग्न और अपने शरीर को ढकने

के लिए एक भी कपड़ा उसके पास नहीं था। और उसकी त्वचा पेड़ की छाल की तरह हो गई: धूप की गर्मी से झुलसी और पाले से फटी, वह कोयले की तरह काली पड़ गई। और धन्य बारबरस एक स्वैच्छिक शहीद बन गया।

जब नरि्जन स्थान में ऐसे दुखों के बारह वर्ष बीत गए, तो उसे दविय प्रकटवाणी के द्वारा अपने पापों की क्षमा का समाचार मलिा और यह भी कि उसे अपने रक्त से शहादत द्वारा अपने प्रायश्चति का कार्य पूरा करना है। और इस प्रकार एक दनि, खेत के पार चलते हुए, बारबरस एक सड़क पर पहुँचा जहाँ कुछ व्यापारी रुके हुए थे। यह सोचकर कि कोई जंगली जानवर आ गया है (क्योंकि वे घनी घास में क्या था, यह नहीं देख पा रहे थे), उन्होंने अपनी तानी हुई धनुषों से उस पर कई तीर चलाए और उसे तीन तीरों से घायल कर दयिा; लेकनि जब वे पास आए, तो उन्होंने देखा कि उन्होंने एक आदमी को मार दयिा है, और वे भय से भर गए। हालाँकि, बारबरा ने उनसे डरने या दुखी न होने के लिए कहा, और अपने बारे में सब कुछ बताया, और उन्हें उस गाँव के पुरोहति को उसकी मृत्यु के बारे में सूचति करने का नरि्देश दयिा। यह कहकर, उसने अपनी आत्मा ईश्वर के हाथों में सौंप दी।

उपरोक्त पुरोहति, व्यापारियों से यह सब जानकर, उस स्थान पर गया जहाँ उसने धन्य वरवर के शरीर को प्रकाश की तरह चमकते हुए देखा। परंपरागत अंतमि संस्कार की रस्में नभिाने के बाद, उन्होंने उसे उसी स्थान पर दफनाया जहाँ उसे मार गरिाया गया था। इसके बाद, धन्य वरवर की कफ़न से वभिन्नि रोगों से पीड़ति लोगों के लिए चंगाई का प्रवाह होने लगा।

कुछ समय बीत जाने के बाद, लोग उस पादरी के साथ वहाँ इकट्ठा हुए; उन्होंने ताबूत खोला और देखा कि संत का शरीर न केवल अपरविर्तति था, बल्कि उससे चंगा करने वाला मूर्रा भी नकिल रहा था। तब सभी आश्चर्य से भर गए और परमेश्वर की महमिा की; और संत बार्बरा के पवत्रि अवशेषों को बड़े सम्मान के साथ उनके गाँव ले जाया गया और चर्च में रख दयिा गया, और वे हमारे परमेश्वर मसीह के मानवता के प्रति अद्भुत प्रेम और दया पर आश्चर्यचकति थे, जनिके लिए, पति और पवत्रि आत्मा के साथ, युगानुयुग सम्मान और महमिा बनी रहे। आमीन।

20 मई

7 मई (पुराने कैलेंडर के अनुसार)

शहीद संत अक्काकयिस का कष्टकथा

7 मई को स्मरणोत्सव

संत अक्काकयिस ने मॅक्समियिन के शासनकाल में मसीह के नाम का प्रचार करने के लिए कष्ट सहे[3469] , वशिेष रूप से इस सम्राट द्वारा शैतान के उकसावे पर शुरू कए गए ईसाइयों के तीसरे उत्पीड़न के दौरान।

संत अक्काकयिोस कापडोसयिा[3470] के मूल नविासी थे; वे एक सैनकि थे जनिका पद सेंट्यूरयिन (शतमुखी) था और उन्होंने कर्नल फर्मस के अधीन मार्टसियिस रेजमिेंट[3471] में सेवा की।

उस समय, सम्राट मैक्समियिन ने आदेश दयिा था कि ईसाइयों को न केवल शहरों में बल्कि सैनकिों की पंक्तियों में भी खोजा जाए; और यदि सैनकिों में से कोई मसीह में वशि्वास करता हुआ पाया जाता है, तो यह आदेश दयिा गया था कि ऐसे व्यक्ति को मुकदमे का सामना कराकर यातना दी जाए; यदि कोई ईसाई शाही फरमान का पालन करने से इनकार करता है, तो उसे मृत्युदंड दयिा जाए।

इस आदेश के परणिामस्वरूप, कर्नल फर्मस ने प्रत्येक सैनकि को व्यक्तगित रूप से अपने पास बुलाया और प्रत्येक से उसके वशि्वास के बारे में पूछताछ की: और यदि यह पता चलता कि उसके कसिी सैनकि ने मसीह में वशि्वास कयिा है, तो फर्मस उसे हर संभव तरीके से, प्रलोभनों और धमकयिों दोनों से, मूर्तपिूजा करने के लिए मजबूर करता था।

[3469] मैक्समियिन – 284 से 305 तक रोमन साम्राज्य के पश्चमिी भाग पर शासन कयिा।

[3470] एशयिा माइनर का एक क्षेत्र।

[3471] मार्तसियिस रेजमिेंट – मार्शयिन (अर्थात् बहादुर) का एक दस्ते

इस तरह का व्यवहार करके, फर्म ने कई ईसाइयों—जो आस्था में कमजोर और डरपोक थे—को धर्मत्याग करने पर मजबूर कर दिया।

जब फर्मस ने शताधिकारी अकाकियोस को अपने पास बुलाया, तो उसने सभी के सामने घोषणा की:

'मैं ईसाइयों में पैदा हुआ हूँ, और एक ईसाई ही रहूँगा; स्वयं प्रभु यीशु मसीह इसकी गवाही दें; न केवल मेरे माता-पिता, बल्कि मेरे दादा और परदादा भी ईसाई थे: इसलिए मैं भी एक ईसाई ही रहूँगा।'

संत के इन शब्दों के बाद, फर्मस ने चापलूसी और धमकियों दोनों का उपयोग करते हुए उसे मूर्तियों की पूजा करने के लिए मनाने की कोशिश की; उसने उसे तीन बार बुलाया और राजा की आज्ञा का पालन करने के लिए उसे प्रोत्साहित किया। हालाँकि, यह देखकर कि अकाकियोस अडिग रहा, फर्मस ने उसे हथकड़ी में डालने और सैन्य कमांडर वेवियानुस के पास भेजने का आदेश दिया।

[3472]जब सैन्य कमांडर वेवियन न्यायपीठ पर बैठे थे और मसीह के अन्य स्वीकारकर्ताओं से पूछताछ कर रहे थे, तब टीकाकार एंटोनिनिस उनके पास आए और कहा:

'कल, मार्टिसियन रेजिमेंट के कर्नल फर्म ने अपने सेंचुरियन अकाकियोस को हथकड़ी लगवाई; अब वह उसे आपके पास भेज रहा है, क्योंकि अकाकियोस राजा के आदेश का पालन करने से इनकार करता है और ईसाई धर्म का प्रचार करता है।'

अकाकियोस को तुरंत पूछताछ के लिए कमांडर के सामने लाया गया।

उसे देखते हुए, कमांडर ने पूछा:

'तुम्हारा नाम क्या है?'

संत ने उत्तर दिया:

'जो नाम मुझे और मेरे सभी संबंधियों को सबसे प्रिय है, वह है जो मसीह के गौरवशाली नाम से लिया गया है - मुझे मसीही कहा जाता है, लेकिन मानवीय मानकों के अनुसार मुझे अकाकियोस के नाम से जाना जाता है।'

इस पर सेनापति ने उत्तर दिया:

'तुम्हारा चरित्र तुम्हारे नाम के अनुरूप है, क्योंकि तुम दुष्ट हो, चूंकि तुम राजा की आज्ञा का पालन नहीं करते!'

इस पर संत ने उत्तर दिया:

'हे राज्यपाल! आप झूठ बोल रहे हैं और मेरे नाम का अर्थ तोड़-मरोड़ रहे हैं, क्योंकि अक्काकियोस का अर्थ है "दुष्टता रहित"[3473] । मुझे इस नाम से सही ही बुलाया जाता है, क्योंकि मैं शैतान की दुष्टता में भागीदार नहीं बनना चाहता, जो मानव रक्त पीती है।'

गवर्नर ने कहा:

– तुम्हें ऐसी मूर्खतापूर्ण बातें कहाँ से सीखने को मिलीं?

संत ने उत्तर दिया:

मैं कैपाडोसिया का रहने वाला हूँ; मसीह के नाम के लिए वहाँ से कई शहीद हुए हैं, और मैंने स्वयं प्रभु की कृपा और शक्ति से संतों के निधन के बाद हुए चमत्कारों को देखा है; मैंने स्वयं देखा है कि कैसे उनकी ताबूतों और पवित्र अवशेषों ने कई बीमारों को चंगा किया। इसीलिए मैं इन पवित्र शहीदों के उदाहरण का अनुसरण करना चाहता हूँ, न कि आपका, और इसीलिए मैं आपके अधर्मी कानूनों का पालन नहीं करता, जो आपके साथ ही नष्ट हो जाएँगे।

तब राज्यपाल ने संत से कहा:

'यह मत सोचो कि तुम्हें केवल तुच्छ यातनाओं का सामना करना पड़ेगा। अपने अहंकार और व्यर्थ की बातों के कारण, तुम कठोर दंड के पात्र हो; लेकिन अगर तुम इससे बचना चाहते हो, तो ईसाई धर्म का त्याग करो और राजा की आज्ञा का पालन करो: देवताओं की पूजा करो, जिनकी कृपा से सम्राट शासन करते हैं और अपने शत्रुओं पर विजय प्राप्त करते हैं; मुझे शर्मिंदा मत करो, जो इस दरबार में बैठे हैं; खुद को सभी मनुष्यों से बुद्धिमान मत समझो, और मसीह नामक व्यक्ति में अपनी आशा मत रखो, जिसे, जैसा कि वे कहते हैं, यातना दी गई और कानूनी रूप से मृत्युदंड दिया गया।"

इस पर संत ने उत्तर दिया:

[3472] कमेंटारियस – जेलों का प्रमुख।

[3473] अकाकियोस (ग्रीक Ακακιος से, जो κακος – 'बुरा', 'दुष्ट', और नकारात्मक उपसर्ग a से व्युत्पन्न है) का वास्तव में अर्थ है 'दुष्ट नहीं'।

न्यायाधीश, तुम यह कहकर गलत हो, और तुम शैतान द्वारा अंधा होकर घोर पाप कर रहे हो; क्योंकि राजा न तो तुम्हारे देवताओं की कृपा से शासन करते हैं और विजय प्राप्त करते हैं, बल्कि हमारे सर्व-सत्पुरुष ईश्वर की व्यवस्था और इच्छा से शासन करते हैं और विजय प्राप्त करते हैं। और जहाँ तक आपके इस दावे की बात है कि मैं अपनी आशा एक ऐसे व्यक्ति में रखता हूँ जिसे यातना दी गई और मृत्युदंड दिया गया – जान लीजिए कि वह हमारे प्रभु यीशु मसीह हैं, परमेश्वर के पुत्र, जो हमारे उद्धार के लिए, हम पापी लोगों के लिए, पृथ्वी पर आए और मनुष्य बने, जबकि वे सच्चे परमेश्वर बने रहे; हमारे प्रभु यीशु मसीह ने, किसी अद्भुत और अगोचर तरीके से, स्वयं पर हमारी प्रकृति धारण की; यह कैसे हुआ – न तो आप इसे समझेंगे, और न ही आप इसके बारे में सुनेंगे, जब तक कि आप पहले मसीही न बन जाएँ। प्रभु मसीह ने, जैसा कि मैंने कहा, सच्चे परमेश्वर होकर, वचन (यूहन्ना 1:1) होकर, पिता के सह-शाश्वत और उनके साथ सह-अस्तित्वमान होकर, उनके प्रसन्न होने के समय पर, हमारे उद्धार का कार्य पूरा किया और इस प्रकार हमें शत्रु, शैतान, की दासता से मुक्त किया, जो समय की शुरुआत से ही हमसे ईर्ष्या करता आया है।

संत के इन शब्दों पर, कमांडर ने उत्तर दिया:

'यदि राजा आपके मसीह के विरोधी हैं, तो फिर वह उन्हें मार क्यों नहीं डालते, सर्वशक्तिमान परमेश्वर होकर, जैसा आप कहते हैं?'

संत ने उत्तर दिया:

– यही कारण है कि आपको उसकी अनंत दया और असीम शक्ति को जानना चाहिए: भले ही आप उसकी निंदा करते हैं, वह आपको मार नहीं डालता, बल्कि आप गरीबों से बड़ी धैर्यता से प्रतीक्षा करता है कि आप पश्चाताप करें और उसे सम्मान दें जो परमेश्वर को मिलना चाहिए, न कि दुष्टात्माओं को। इसके अलावा, वह धैर्यवान है ताकि उसके चुने हुए सेवक, जिन्हें वह प्रेम करता है, अपने महिमामय कर्म सभी लोगों की आँखों के सामने प्रदर्शित कर सकें। यदि हमारे ईश्वर आपको तुरंत नष्ट कर देते, तो आप भी हमेशा के लिए नष्ट हो जाते, और उसके सेवक दुनिया के सामने प्रकट नहीं होते; न ही लोगों के सामने उसकी कृपा की शक्ति प्रकट होती। यदि हमारे प्रभु ने हमारे महान पापों के प्रति अपनी दीर्घ सहनशीलता न दिखाई होती, तो उनकी महिमा कैसे होती? इसीलिए वह अभी भी आपको दंड से बचाता है; फिर भी आप, जो उसकी दीर्घ सहनशीलता का तिरस्कार करते हैं, जो अपनी दुष्टता पर अड़े रहते हैं और हम निर्दोषों पर अपना क्रोध उगलते हैं—यदि आप पश्चाताप नहीं करते हैं, तो आप अपना विनाश स्वयं बुलाएँगे और अपने अधर्म के कारण उसमें डूब जाएँगे; जहाँ तक हमारी बात है, हम अपने परमेश्वर की शक्ति और सामर्थ्य को जानते हुए, और उनके नाम के लिए धैर्यपूर्वक दुख सहते हुए, उनसे अनंत और धन्य जीवन प्राप्त करेंगे; उनकी महिमा उन लोगों पर भी प्रकट होगी, जिन्होंने अपनी भूल को पहचानकर पश्चाताप किया और अपने मार्गों को सुधार लिया।

शहीद के बुद्धिमानी भरे उत्तर से चकित होकर, सैन्य कमांडर वेलेरियन ने उससे पूछा:

'क्या तुम्हें शास्त्रीय शिक्षा नहीं मिली है, क्योंकि तुमने मुझे इतनी बुद्धिमानी से उत्तर दिया है? तुम सही कहते हो जब तुम कहते हो कि मनुष्य का जीवन परमेश्वर के हाथ में, उनकी व्यवस्था और दीर्घ सहनशीलता में है।'

संत ने उत्तर दिया:

'इस तथ्य से कि मैंने, बिना किसी औपचारिक शिक्षा प्राप्त किए, आपको इस प्रकार उत्तर दिया है, आपको हमारे परमेश्वर की शक्ति और अनुग्रह को पहचानना चाहिए, जो संपूर्ण संसार पर शासन करते हैं; क्योंकि परमेश्वर स्वयं अपने सेवकों के मुख से बोलते हैं, एक ऐसा तथ्य जिस पर आप भी, जो स्वयं को सबसे बुद्धिमान मानते हैं, चकित हैं। और बिल्कुल शुरुआत से, जब हमारे प्रभु ने संपूर्ण ब्रह्मांड में सुसमाचार का प्रचार करने की इच्छा की, तो उन्होंने उपदेश के लिए न तो कुलीनों और धनी लोगों को चुना, न ही बुद्धिमान दार्शनिकों और वाक्पटु वक्ताओं को, बल्कि मछुआरों और कर वसूलने वालों, साधारण और गरीब लोगों को चुना। प्रभु ने यह इसलिए किया कि उनकी अकल्पनीय शक्ति और बुद्धि, जो हर समझ से परे है, उन लोगों में प्रकट हो सके जिन्हें पवित्र आत्मा स्वयं अदृश्य रूप से सिखाते और निर्देशित करते थे।

इसके बाद, सेनापति ने संत से कहा:

'अपनी लंबी-चौड़ी बातें बंद करो और मेरे इस सवाल का जवाब दो: क्या तुम्हें राजा के उस फरमान का पता है जो तुम ईसाइयों को आदेश देता है कि या तो देवताओं को बलिदान चढ़ाओ या कठोर यातनाएँ सहो? मुझे बताओ: क्या तुम राजा की आज्ञा का पालन करोगे; क्या तुम देवताओं को बलिदान चढ़ाओगे या नहीं?'

संत ने उत्तर दिया:

तब सैन्य कमांडर ने कहा:

तब कमांडर ने कहा:

'तुम्हारी युवावस्था के लिहाज़ से—क्योंकि तुम्हारी उम्र पच्चीस साल से ज़्यादा नहीं है—और एक शताब्दी-प्रमुख के रूप में तुम्हारे पद के सम्मान के कारण, मैं तुम्हें कष्ट देने की बिल्कुल भी इच्छा नहीं रखता। हालाँकि, अगर तुम अपनी अधर्मीता पर अड़े रहे, तो तुम मुझे तुम्हें सबसे भयानक यातनाएँ देने के लिए मजबूर करोगे।'

इस पर संत ने उत्तर दिया:

'यह पागलपन नहीं, बल्कि सबसे विवेकपूर्ण और सबसे ईश्वर-प्रसन्न करने वाला कार्य है – एकमात्र सच्चे ईश्वर, मेरे स्रष्टा, जिनकी इच्छा से मैं आज तक जीवित रहा हूँ, उन पर अपने विश्वास को न छोड़ना।'

कमांडर ने संत से कहा:

'तुम यह कैसे कह सकते हो कि केवल एक ही ईश्वर है? क्योंकि अभी-अभी तो तुमने मसीह, ईश्वर के पुत्र का इकरार किया है। लेकिन अगर तुम्हारे ईश्वर का कोई पुत्र है जो उसके बराबर है, तो तुम्हें दो ईश्वर मानने होंगे: एक ईश्वर पिता, और दूसरे ईश्वर पुत्र। और अगर तुम्हारे दो ईश्वर हैं, तो फिर तुमने अब मुझसे केवल एक ईश्वर का इकरार क्यों किया है?' अब मैं देख सकता हूँ कि तुम गलत हो और मुझसे झूठ बोल रहे हो, क्योंकि तुम जो कह रहे हो उसमें तुम स्वयं का खंडन कर रहे हो।"

इस पर, संत अकाकियोस ने उत्तर दिया:

मैं अपने प्रभु यीशु मसीह में विश्वास करता हूँ और उसी में अपनी आशा रखता हूँ, जिन्हें पोंतियस पिलातुस के अधीन क्रूस पर चढ़ाया गया था, कि वह पवित्र आत्मा के द्वारा मुझे प्रबुद्ध करेंगे और सिखाएंगे कि मैं आपके प्रश्न का उत्तर कैसे दूँ; क्योंकि आपका प्रश्न—कि दो का नाम लेते हुए भी हम केवल एक परमेश्वर को ही क्यों मानते हैं—एक कठिन प्रश्न है और आसानी से हल नहीं होता। लेकिन मैं तुमसे कहता हूँ कि हम ईसाई न केवल पिता और पुत्र, बल्कि पवित्र आत्मा को भी सच्चे परमेश्वर के रूप में स्वीकार करते हैं। इन तीनों नामों में तीन व्यक्ति हैं, लेकिन एक ही ईश्वरत्व और एक ही शक्ति है। हम वचन और पवित्र आत्मा के साथ एक ही परमेश्वर को स्वीकार करते हैं, क्योंकि यह उचित नहीं है कि परमेश्वर वचन और जीवन-दायक आत्मा के बिना हों। अपने शब्दों को समझाने के लिए, मैं आपको एक उपमा दूँगा: यहाँ एक राजा है, जिसे आप शासक कहते हैं, और मैं एक मनुष्य कहता हूँ—उसका नाम मैक्सिमियिन है; उसका एक पुत्र है, मैक्सेंटियस। ये दोनों हैं; फिर भी वे एक स्वभाव—मानवीय स्वभाव—को साझा करते हैं और उनका राज्य अविभाज्य है; पुत्र का सम्मान पिता के लिए किया जाता है, और पिता को पुत्र के लिए महिमामय किया जाता है; उसी प्रकार, हम ईश्वर के बारे में सोचते हैं, क्योंकि पिता, वचन और पवित्र आत्मा का दैवीय सार एक और समान है, और कभी नहीं बदलता, क्योंकि जिसे ईश्वर को हम सम्मानित करते हैं वह एक है।

गवर्नर ने संत से कहा:

'मैंने तुम्हें एक से अधिक बार कहा है कि मुझसे केवल चल रही बात पर ही बात करो; फिर भी इस सारी बेकार की बातों से तुम बस हमारी चर्चा के विषय से भटक रहे हो। आखिरी बार, मैं तुम्हें कहता हूँ: हमारे देवताओं को बलिदान चढ़ाओ, जिनकी इच्छा से यह संसार अस्तित्व में है; यदि तुम मेरा यह आदेश नहीं मानोगे, तो मैं तुम्हारी अवज्ञा अब और बर्दाश्त नहीं करूँगा।'

इस पर संत ने उत्तर दिया:

'यातना देकर मुझे डराने का सोच भी मत रखना; यह मेरा शरीर है, जो पहले से ही घावों को सहने के लिए तैयार है; इसे जितना चाहो पीड़ित करो। लेकिन न तो तुम, न राजा, न तुम्हारे जिन राक्षसों की तुम पूजा करते हो, और न ही कोई और कभी मेरे विचारों या मेरे हृदय की गहरी आस्था को बदल पाएगा, और न ही उन्हें बुराई की ओर ले जा पाएगा।'

तब कमांडर, क्रोधित होकर, ने संत को चार खंभों से नग्न बाँधने और छह सैनिकों द्वारा निर्दयता से कठोर चाबुक से पीटने का आदेश दिया, पहले उसकी पीठ पर और फिर उसके पेट पर। ऐसा होते देख कमांडर ने कहा: 'चलो देखते हैं कि क्या उसका ईश्वर उसकी मदद करेगा।' पवित्र शहीद को इस तरह लंबे समय तक यातना दी गई, यहाँ तक कि उसे पीटने वाले सैनिक कई बार बदल दिए गए; जमीन पहले ही उसके खून से लथपथ हो चुकी थी। लेकिन पीड़ित ने कुछ और नहीं कहा, सिवाय इसके: 'हे मसीह, मेरे उद्धारकर्ता! मेरी मदद करो, आपके इस नम्र सेवक की! हे प्रभु मेरे ईश्वर! मुझे अकेला न छोड़ो!'

जब कमांडर ने देखा कि पवित्र शहीद घावों और खून से लथपथ था, तो उसने उससे कहा:

'शायद अब तुम देवताओं को बलदिान चढ़ाओगे?'

संत ने उत्तर दयिा:

'मैं राक्षसों को बलदिान नहीं चढ़ाऊँगा, क्योंकि मेरा वशि्वास मेरे प्रभु यीशु मसीह में है, जो मेरी सहायता करते हैं; अब, इन यातनाओं के बीच, मैं पहले से भी अधकि साहसी और दृढ़ महसूस कर रहा हूँ; अब तक, पीड़ा की संभावना ने मुझे कुछ हद तक परेशान कयिा था; लेकनि जैसे ही मैंने पीड़ा सहना शुरू कयिा, मसीह की शक्ति ने मुझे मजबूत कयिा, और मैंने अपने भीतर यातना के लिए एक तत्परता महसूस की, भले ही वह और भी बड़ी और अधकि गंभीर क्यों न हो, क्योंकि मेरा दृढ़ वशि्वास है और मैं अपने प्रभु और अपने परमेश्वर में अपनी आशा रखता हूँ। लेकनि यह जान लो: तुम मेरे ऊपर जतिना अधकि यातनाएँ डालोगे, उतना ही अधकि लाभ तुम मुझे पहुँचाओगे; तुम मुझे जतिनी बड़ी यातनाओं में डालोगे, उतनी ही बड़ी कृपा तुम मेरे लिए परमेश्वर के सामने मध्यस्थता करोगे।

तथापि, संत के वचनों से क्रोधति सेनापति ने आदेश दयिा कि उसे सीसे की पट्टयिों से होठों पर मारा जाए। जब संत के सुंदर गालों को उसके यातनादाताओं द्वारा वकिृत कयिा जा रहा था, तो सेनापति ने शहीद से कहा:

'देवताओं को बलदिान चढ़ाओ, और फरि तुम्हें तुम्हारे लिए तैयार की गई और भी भयंकर यातनाओं से बचा लयिा जाएगा।' संत ने उत्तर दयिा:

'मुझे आने वाले कष्टों की उतनी ही परवाह है, जतिनी कि उन कष्टों की जो मैंने पहले ही झेले हैं।'

तब सेनापति ने कहा:

'यह कैसे है कि तुम, एक सैनकि होते हुए और ऊपर से शकि्षा-कला में अनपढ़, मुझसे इतनी बुद्धमिानी से उत्तर देते हो?'

पवत्रि शहीद ने उत्तर दयिा:

'पवत्रि आत्मा अपने सेवकों को धैर्य प्रदान करता है और उन्हें न्याय के दनि उत्तर देने में सहायता करता है, क्योंकि हमारे उद्धारकर्ता, प्रभु यीशु मसीह ने अपने शष्यिों से कहा: *"जब वे तुम्हें* शासनों और अधकिारों के *हवाले करें, तो इस बात की चति मत करो कि कैसे या क्या कहना है; क्योंकि उसी घड़ी... तुम नहीं बोलोगे, बल्कि तुम्हारे पति का आत्मा तुम में बोलता रहेगा।"* (मत्ती 10:19–20)।

तब टीकाकार एंटोननिस ने संत से कहा:

'तुम्हारी वाचालता तुम्हारा क्या भला करेगी, हे नीच, जबकि तुम राजा की आज्ञा का उल्लंघन कर रहे हो, जसिके कारण तुम यातनाएँ भोग रहे हो? परन्तु अब वे तुम्हें और भी अधकि यातनाएँ देंगे; तब तुम नश्चिय ही राजा की आज्ञा का पालन करोगे।'

संत ने उन्हें उत्तर दयिा:

'मेरे पास से दूर हो जाओ और पहले खुद को समझाओ। अगर मैं कई यातनाओं के बावजूद राज्यपाल की आज्ञा नहीं माना, तो क्या मैं तुम्हारी आज्ञा मानूँगा?'

इसके बाद, कमांडर ने शहीद को थ्रेस के पेरनिफा शहर की कोठरी में कैद करने का आदेश दयिा[3474] । पवत्रि शहीद वहाँ सात दनिों तक रहे।

जब संत अकाकयिोस जेल में थे, प्रभु में आनंदति हो रहे थे और उनके पवत्रि नाम के लिए कष्ट सहने के योग्य समझने के लिए उनका धन्यवाद कर रहे थे, तब थ्रेस के राज्यपाल फ्लैकनिोस से सेनापति वववियिन के लिए एक संदेश आया; इस संदेश में ववियिन को आदेश दयिा गया था कि वह अपने हरिासत में मौजूद सभी कैदयिों के साथ बज़िान्टयिम जाए। कमांडर ववियिन तुरंत रवाना हो गया, और संत अकाकयिोस भी उसके साथ बज़िान्टयिम गए, वभिन्नि अपराधों के लिए कैद कए गए कई अन्य कैदयिों के साथ यात्रा करते हुए। पवत्रि शहीद यात्रा के दौरान अपने घावों, लोहे की बेड़यिों, भूख और प्यास, और सामान्य रूप से लंबी और जल्दबाजी में की गई यात्रा के कारण बहुत कमजोर हो गए थे—और यह सब और भी अधकि इसलिए था क्योंकि उनके साथ चल रहे सैनकि नर्दियी थे और उन्हें बार-बार तेज चलने के लिए कहकर पीटते थे। इन सभी कष्टों के बीच, संत को जीवति बचने की कोई उम्मीद नहीं थी और उन्हें लगा कि वे जल्द ही मर जाएँगे; इसलिए, उन्होंने बार-बार उनका नेतृत्व कर रहे सैनकिों से थोड़ी देर रुकने का अनुरोध कयिा ताकि वे ईश्वर से प्रार्थना

[3474] थ्रेस – रोमन साम्राज्य का एक क्षेत्र जो मैसेडोनयिा के उत्तर-पूर्व में स्थति था। आज, थ्रेस, रुमेलयिा नाम से, यूरोपीय तुर्की का हस्सिा है।

कर सकें; हालाँकि, संत की प्रार्थना स्वीकार नहीं की गई। जब वे अंततः रात बिताने के लिए एक जगह रुके, तो संत ने स्वर्ग की ओर अपनी आँखें उठाकर तुरंत इस प्रकार प्रार्थना करना शुरू कर दिया: 'महिमा तेरी हो, हे ईश्वर, जो अपनी दयालुता में उन सभी पर अपनी दया दिखाते हैं जो आपसे प्रेम करते हैं! महिमा तेरी हो, जिन्होंने मुझे, एक पापी को, इस कृत्य के लिए बुलाया है! महिमा तेरी हो, हे प्रभु यीशु मसीह, जो हमारे शरीर की दुर्बलता को जानते हो और मुझे इन यातनाओं को सहने की शक्ति प्रदान की है! अब हे प्रभु, यह देखकर कि मैं इतने दुखों से घिरा हुआ हूँ, कि मुझे तो ऐसा प्रतीत होता है कि मेरी आत्मा भी अपने शरीर से अलग होने के लिए तरस रही है, – अपना पवित्र स्वर्गदूत भेजो, ताकि वह मेरे घावों को चंगा करे और मेरे दुखों को कम करे; या मेरे यातना देने वालों को आज्ञा दें कि वे मुझे तुरंत मार डालें, ताकि मैं तेज़ी से तेरे पास आ सकूँ, हे मेरे प्रभु।'

जैसे ही संत ईश्वर से ये शब्द प्रार्थना कर रहे थे, उस स्थान पर अचानक एक बादल प्रकट हुआ, और बादल से एक आवाज सुनाई दी, जो कह रही थी: 'अकाकियोस! हौसला रखो, और मज़बूत बनो!'

वहाँ मौजूद सभी ने यह आवाज़ सुनी – सैनिकों और कैदियों दोनों ने; आश्चर्यचकित होकर, उन्होंने एक-दूसरे से कहा:

'क्या बादल सचमुच लोगों की तरह बोल सकते हैं? क्या किसी ने आज जैसा हमने सुना है, वैसा कभी सुना है?'

और जो हुआ था, उसे देखकर सभी चकित रह गए। उस स्वर को सुनकर कई कैदी प्रभु यीशु मसीह, परमेश्वर के पुत्र, पर विश्वास करने लगे, और संत अकाकियोस के चरणों में गिरकर, उन्हें ईसाई धर्म की सच्चाइयाँ सिखाने के लिए विनम्रतापूर्वक निवेदन करने लगे। मसीह के शहीद संत अकाकियोस, उनके साथ-साथ चलते हुए, इस प्रकार बोले:

'यद्यपि अब तक मैंने स्वयं को किताबों में नहीं बल्कि एक सैनिक के कर्तव्य में समर्पित किया है, फिर भी मेरा पालन-पोषण एक पुरोहित के घर में हुआ, क्योंकि मैं पुरोहितों की एक वंश परंपरा से आता हूँ। मुझे पुरोहितों से सुना हुआ याद है कि ईश्वर, स्वर्ग से निकाले गए मानव जाति को बचाने और उन्हें नरक से मुक्त करने की इच्छा से, ने अपने शाश्वत वचन, अपने पुत्र को, संसार में भेजा; और परमेश्वर का पुत्र, संसार में आकर, सर्व पवित्र और निर्दोष कुँवारी मरियम से देह धारण कर, रूप में मनुष्य के समान हो गया; फिर उन्होंने सूली पर मृत्यु को सहन किया, ताकि सूली के वृक्ष के द्वारा वे आदम के ईश्वर की आज्ञा की अवज्ञा के पाप का प्रायश्चित कर सकें; दंडित मानवजाति को मोक्ष प्रदान करने के लिए, उन्होंने स्वयं सूली पर अपनी स्वेच्छा से पीड़ा सहकर ईश्वर की न्याय को बकाया चुकाया। सलीब पर कीलें ठोक दिए जाने के द्वारा, परमेश्वर के पुत्र ने इस प्रकार हमारे पापों का अभिलेख नष्ट कर दिया, अपनी ही मृत्यु से हमारी मृत्यु पर विजय प्राप्त की, नरक को वश में किया, और शैतान की सारी शक्ति को लज्जित और शक्तिहीन कर दिया। जब परमेश्वर के पुत्र ने सभी दुष्टात्माओं को मार गिराया और पीतल के द्वार चकनाचूर कर दिए और लोहे की जंजीरों को तोड़ दिया ([3475]), तो वह तीसरे दिन मरे हुओं में से जी उठे और इस प्रकार मानव जाति को यह अवसर प्रदान किया कि सभी फिर से उठें और आने वाले युग में अनंत काल तक जीवित रहें। हालाँकि, यह दृश्यमान संसार तुच्छ है और केवल थोड़े समय के लिए ही रहेगा।

शहीद से ये और इसी तरह के शब्द सुनकर, संत के साथ यात्रा कर रहे कैदी खुशी-खुशी ईसाई धर्म में परिवर्तित हो गए।

जब रात हुई, तो यात्री पास के एक गाँव में रात बिताने के लिए रुके। वहाँ, आधी रात को, कैदियों को एक अद्भुत दर्शन हुआ: उन्होंने कई युवकों को चमकीले वस्त्र पहने देखा (ये पवित्र स्वर्गदूत थे), मानो वे सैन्य वर्दी में हों, जो संत अकाकियोस से बात कर रहे थे। यह देखकर, कैदियों ने सोचा कि ये अक्काकियोस के रिश्तेदार और दोस्त थे जो (अपने यातनाकर्ता के डर से) रात में उससे मिलने आए थे।

अगली सुबह, वे सभी चल पड़े। उस दिन वे बहुत तेजी से यात्रा करके शाम तक बिज़ान्टियम पहुँच गए; वे सभी रात के लिए एक ही घर में रुके। और उस रात कैदियों ने उन्हीं युवकों को सेंट अक्काकियस से बात करते देखा, ठीक वैसे ही जैसे उन्होंने पिछली रात देखा था; उसी समय, कैदियों ने देखा कि ये तेजस्वी युवक शहीद के घावों को गर्म पानी से धो रहे थे और उन्हें ठीक कर रहे थे। यह देखकर, कैदियों ने अपने मन में सोचा: 'सचमुच, यह दृश्य ईश्वर की ओर से है, क्योंकि कल रात संत के पास मनुष्य नहीं बल्कि स्वर्गदूत आए थे; और आज रात, पवित्र स्वर्गदूतों ने उनसे भेंट की है।'

[3475] एक चर्च भजन का एक वाक्यांश।

जब सुबह हुई, तो सभी को वापस कालकोठरी में ले जाया गया। हालाँकि, संत अकाकियोस को कमांडर के आदेश से, दूसरों से अलग, कालकोठरी के एक भीतरी कमरे में बंद कर दिया गया था; उन्हें लोहे की बेड़ियों में जकड़ा गया था और एक पत्थर से जंजीरों में बाँध दिया गया था; किसी को भी उससे बात करने की अनुमति नहीं थी, न ही उसे पीने या खाने के लिए कुछ दिया गया, क्योंकि उसके यातना देने वाले उसे भूख, प्यास और भयानक पीड़ा के माध्यम से मसीह का त्याग करने और उनकी आज्ञा - मूर्तियों की पूजा करने - के लिए मजबूर करना चाहते थे; हालांकि, सभी अन्य कैदियों को कालकोठरी के बाहरी हिस्से में रखा गया था।

रात होने से पहले, कैदियों को एक बार फिर उसी अद्भुत दृश्य को देखने का सौभाग्य मिला – अर्थात्, उन्होंने कालकोठरी के भीतरी कक्ष में एक तेज रोशनी चमकती हुई देखी; यह देखने के लिए कि यह क्या था, खिड़कियों के पास जाने पर, उन्होंने कई तेजस्वी पुरुषों को देखा; जिन्होंने शहीद को उसकी बेड़ियों से मुक्त कर दिया, उसके घावों पर मरहम-पट्टी की और उसे बर्फ की तरह सफेद अद्भुत भोजन और पेय दिया।

चूँकि यह हर रात होता रहा, कैदियों ने इसकी सूचना जेलर को दी। रात में खिड़की के पास जाकर जेलर ने भी वही देखा। लेकिन जब जेलर तहखाने के भीतरी कमरे में गया, तो उसे वहाँ पवित्र शहीद के अलावा कोई नहीं मिला, जो बेड़ियों में जकड़ा हुआ था। यह सब देखकर जेलर बहुत डर गया।

विज़िटियम में कैदियों के आगमन के सात दिन बाद, सैन्य कमांडर विवियिन ने न्यायपीठ पर अपनी सीट ली और पवित्र शहीद अकाकियोस को पूछताछ के लिए बुलाया। मसीह के शहीद को अच्छे स्वास्थ्य में और प्रसन्न मुख देख कर विवियिन बहुत हैरान हुआ, क्योंकि उसे उम्मीद थी कि वह शहीद को उसके घावों और बेड़ियों, भूख और प्यास, और लंबी यात्रा से बीमार, थका-हारा देखेगा। विवियिन ने सोचा कि सैनिकों ने संत के दुख को कम किया था; इसलिए, उन पर बहुत क्रोधित होकर, उसने उनसे कहा:

'क्या मैंने तुम्हें आदेश नहीं दिया था कि इस आदमी को कालकोठरी की सबसे भीतरी कोठरी में बंद कर दो, उसे बेड़ियों और लोहे की जंजीरों में जकड़ दो, और उसे भोजन और पानी से पूरी तरह वंचित कर दो? फिर भी तुमने उसे आज़ाद रखा है और उसके घाव भरने में उसकी मदद की है। और अब मैं उसे पहले से भी अधिक स्वस्थ और तेजस्वी चेहरे के साथ देख रहा हूँ।'

टिप्पणीकार एंटोनिन ने उत्तर दिया:

'कमांडर, सब कुछ ठीक वैसा ही किया गया जैसा आपने आदेश दिया था। पेरीन्फा से लेकर इस शहर तक, हमने उसे भारी लोहे की बेड़ियों में जकड़कर लाया; आप खुद उन्हें उठाकर देख सकते हैं कि उनका वजन कितना है। इस शहर में, हमने उसे कालकोठरी की सबसे भीतरी और सबसे तंग कोठरी में बंद किया, और किसी भी सैनिक ने उसे खाने या पीने के लिए कुछ भी नहीं दिया।' जेलर से पूछो और तुम्हें पता चल जाएगा कि सब कुछ तुम्हारे आदेशानुसार किया गया या नहीं।

तुरंत कमांडर ने जेलर को बुलाने का आदेश दिया। जब जेलर कमांडर के सामने उपस्थित हुआ, तो कमांडर ने गुस्से से उससे कहा:

'अरे नीच, तुमने मेरे आदेश क्यों नहीं माने, और अक्काकियोस को खाना और उसके घावों का इलाज करवाने क्यों दिया, जिससे वह अब इतना ताकतवर हो गया है कि वह पूरी तरह से युद्ध के लिए तैयार है?'

इस पर संत अकाकियोस ने उत्तर दिया:

'यह यीशु मसीह, उद्धारकर्ता हैं, जिन्होंने मुझे स्वर्ग से शक्ति और चपलता प्रदान की है, मेरे घावों को चंगा किया है और मुझे स्वस्थ कर दिया है।'

तथापि, कमांडर ने क्रोध से कहा:

'उसके चेहरे पर मारो और उसके होंठ फोड़ दो, ताकि जब उससे कुछ न पूछा जाए तो वह बोल न सके।'

इसके बाद, नौकरों ने संत को पीटना शुरू कर दिया। फिर कमांडर ने जेलर से कहा:

'तुम्हें, नीच, मुझसे क्या कहना है?'

रक्षक ने उत्तर दिया:

'मैं आपके अधिकार की कसम खाता हूँ कि मैंने वही सब कुछ किया है जो आपने मुझे करने का आदेश दिया था।' मैंने उसे बहुत कड़ी निगरानी में रखा और हर तरह से रोक-टोक की; लेकिन कुछ लोग थे जिन्होंने उसे खाना खिलाया और उसके घावों की देखभाल की, जैसा कि यहाँ कैद सभी जानते हैं। उनसे पूछताछ करो, और अगर तुम्हें इसके विपरीत कुछ सुनाई दे – तो मेरा सिर तुम्हारे सामने है; मेरे साथ अपनी मनमर्जी करो। हमें अक्सर ऐसा लगता था कि कुछ सैनिक उसे देखने आते

थे; उनमें से कुछ उसकी बेड़ियाँ ढीली कर देते, दूसरे उसके घाव धोकर उन्हें ठीक कर देते, और अंत में, एक तीसरा समूह उसके लिए खाना-पीना लाता और उससे दोस्ताना अंदाज़ में बातचीत करता। मुझे यह सब उन कैदियों ने बताया था जिन्हें मेरे साथ पेरनिफ से यहाँ लाया गया था; उन्होंने कहा कि यह घटना यात्रा के दौरान और यहाँ तहखाने में दोनों ही जगह हुई थी। लेकिन मैंने उनकी बातों पर विश्वास नहीं किया, और इसलिए मैं उन तेजस्वी लोगों को खुद देखना चाहता था; और वास्तव में, मैंने खुद अपनी आँखों से वह सब कुछ देखा जो उन्होंने मुझे बताया था। और जब मैंने अचानक दरवाज़ा खोला और अककिय से यह पूछने के लिए कि ये आगंतुक कौन थे, वे कहाँ से आए थे, और वे बंद दरवाज़ों से कैसे अंदर आ गए, तहखाने के भीतरी कमरे में प्रवेश किया, तो मुझे वहाँ उस कैदी के अलावा और कोई नहीं मिला, जो एक चौखट से जंजीरों और लोहे की बेड़ियों में जकड़ा हुआ था; कभी-कभी मैं उसे ईश्वर से प्रार्थना करते हुए पाता, तो कभी सोते हुए।

जेलर की बात सुनने के बाद, सैन्य कमांडर ने उससे कहा:

'अरे नीच, तूने शायद अकाकी के रिश्तेदारों से सोना लिया है और उन्हें खाने-पीने की चीज़ों और दवाओं के साथ उसके पास आने दिया है।'

और उसके यह कहते ही कमांडर ने रक्षक को लोहे की छड़ों से बुरी तरह पीटने का आदेश दे दिया।

जैसे ही पहरेदार को पीटा जा रहा था, वह चिल्लाया:

'मैं आपसे विनती करता हूँ, कमांडर, पहले मामले की पूरी जाँच करें; यदि यह साबित हो जाए कि बातें वैसी नहीं थीं जैसी मैंने आपको बताई हैं, तो मुझे मार डालिए।'

गवर्नर ने उत्तर दिया:

'तो वह आदमी एक जादूगर और जादू-टोना करने वाला है।'

रक्षक ने उत्तर दिया:

'मैंने तुम्हें वही बताया है जो मैंने स्वयं देखा; वह आदमी जादूगर है या नहीं—यह मुझे नहीं पता।'

इसके बाद, कमांडर ने जेलर को और भी बुरी तरह पीटने का आदेश दिया। इस प्रकार, इस जेलर ने मसीह के शहीद के लिए अन्यायपूर्ण रूप से कष्ट सहे। पवित्र शहीद अक्काकियोस ने यह देखकर सेनापति की मूर्खता पर हँस दिया, भले ही पवित्र शहीद के होंठ और गाल चोटिल थे। यह देखकर सेनापति और भी अधिक क्रोधित हो गया और शहीद से क्रोधित होकर कहा:

'क्या तुम अपनी जादू-टोने से खुद को बचाने की उम्मीद में हमारा मज़ाक उड़ाने आए हो?'

संत ने उत्तर दिया:

– यह मत सोचो कि मैं तुम्हारा मज़ाक उड़ा रहा हूँ और तुम्हारी बर्बादी पर प्रसन्न हूँ; नहीं, तुम्हारे अनंत विनाश के विचार से मेरा हृदय पीड़ित है और दुखित है; फिर भी तुम स्वयं हमारा उपहास करते हो और हमें तिरस्कार करते हो, क्योंकि तुमने स्वर्ग और पृथ्वी के सच्चे ईश्वर, सभी अस्तित्व के स्रोत, को त्याग दिया है, और पत्थर और लकड़ी की पूजा करते हो तथा उन्हें दिव्य सम्मान देते हो।

इन शब्दों के बाद, कमांडर ने दस सैनिकों को शहीद की पीठ और पेट पर ओक की लकड़ियों से पीटने का आदेश दिया। शहीद ने, हालांकि, धैर्यपूर्वक प्रहार सहते हुए कहा: 'हे प्रभु यीशु मसीह!' मेरे प्रभु, मेरी सहायता करो, मैं आपका सेवक हूँ!' और स्वर्ग से एक आवाज सुनाई दी, जिसने संत को बल दिया; उसी समय, जो सैनिक उस पर वार कर रहे थे, वे लकवाग्रस्त हो गए और शहीद के विरुद्ध अपने हाथ नहीं उठा सके। कमांडर, यह नहीं जानते हुए कि क्या करें, ने संत को हेगेमोन के पास भेजने का फैसला किया, जो तब तक बिज़ान्टियम पहुँच चुके थे; कमांडर ने हेगेमोन को निम्नलिखित संदेश लिखा: 'प्रिय और सम्माननीय न्यायाधीश फ्लैकिनस, थ्रेस के हेगेमोन, विवियन कमांडर की ओर से – नमस्ते। मैंने अधर्मी ईसाई धर्म के रक्षक अकाकियोस को विभिन्न प्रकार की यातनाएँ दी हैं; उसे बीस दिन पहले मार्टिसियन रेजिमेंट के कमांडर फर्मस ने मुझे भेजा था, क्योंकि उसने शाही फरमान की अवज्ञा की थी। मैं किसी भी तरह से उसे शाही फरमान के आगे झुकने के लिए मजबूर नहीं कर सका; चूँकि आप इस व्यक्ति को और भी कठोर दंड दे सकते हैं, इसलिए मैं उसे आपके पास भेज रहा हूँ, साथ ही टिप्पणीकार द्वारा तैयार किए गए उसके कर्मों का विवरण भी भेज रहा हूँ।'

इगेमोन ने विवियन का पत्र पढ़ने के बाद शहीद को कैद करने का आदेश दिया, लेकिन बिना हथकड़ी और बिना सख्त पहरे के; उसने ऐसा इसलिए किया क्योंकि उसकी एक ईसाई पत्नी थी, जिसने कई आँसुओं भरी विनतियों के बाद, उसे मना लिया था कि वह पूछताछ के लिए उसके सामने लाए गए ईसाइयों को बहुत देर तक तकलीफ न दे, बल्कि अगर उन्हें रिहा नहीं किया जा सकता तो उन्हें जल्द से जल्द मौत की सजा दे दे।

पाँच दिन बाद, राज्यपाल ने शहीद को पूछताछ के लिए अपने पास बुलाया, और आदेश दिया कि शहीद के सभी कर्मों का विवरण—उसके दुःखों का इतिहास, जिसका एक रिकॉर्ड सैन्य कमांडर विवियन द्वारा उसे भेजा गया था—पहले से ही पढ़कर सुनाया जाए। राज्यपाल यातनाओं की क्रूरता और संत अकाकियोस के साहस, दोनों से बहुत हैरान था, और उसने विवियन को एक आदमी—जो पद में एक सैनिक था—को तुरंत मौत की सजा देने के बजाय इतने लंबे समय तक यातना देने के लिए बुरी तरह फटकारा। हालाँकि यह महसूस करते हुए कि संत अकाकियोस को मसीह के नाम का इकरार करने से किसी भी तरह से रोका नहीं जा सकता, राज्यपाल ने आदेश दिया कि उसका सिर शहर (बाइज़ेन्टियम) के बाहर काट दिया जाए। जब पवित्र शहीद को फांसी के लिए ले जाया जा रहा था, तो उन्होंने ईश्वर से पुकारा:

'हे जीवन के स्रोत, हे ईश्वर के पुत्र मसीह, मैं आपकी कितनी स्तुति करूँ कि आप मुझ जैसे पापी पर इतने दयालु और कृपालु हुए कि आपने मुझे शहीद होने का गौरव प्रदान किया!'

जब संत अपने सिर कलम किए जाने वाली जगह पर पहुँचे और उन्होंने सैनिकों से प्रार्थना करने के लिए समय माँगा, तो वे घुटने टेककर बोले:

'महिमा तेरी हो, हे ईश्वर! आपकी अनंतकाल तक स्तुति होनी चाहिए, क्योंकि आप हम पापों के बोझ तले दबे लोगों में महिमामय होते हैं; और जितना अधिक आप हम पर अपनी दया दिखाते हैं, जितना अधिक आप हमारे पापों को क्षमा करते हैं, उतनी ही अधिक प्रबलता और उज्जवलता से आपकी भलाई और अगणित दया की महिमा प्रकाशित होती है। हे ईश्वर, धन्य हो तेरा पवित्र नाम, क्योंकि तूने मुझे, जो कि अयोग्य हूँ, इतना बड़ा सम्मान देने के योग्य समझा है – मसीह का शहीद कहलाने का अधिकार। और तूने यह महान सम्मान मुझ पर मेरी किसी भी योग्यता के कारण नहीं, बल्कि केवल अपनी अकथनीय दयालुता और अपनी अनुपम कृपा के कारण प्रदान किया है। हे प्रभु, इस्राएल के पवित्र परमेश्वर, मैं आपकी महिमा और स्तुति करता हूँ, आपके एकलौते पुत्र और आपके पवित्र आत्मा के साथ, क्योंकि महिमा, सम्मान और आराधना आपको ही मिले, अब और हमेशा और युगानुयुग। आमीन।

यह कहने के बाद, संत ने तलवार के नीचे अपना सिर झुकाया और उनका सिर कलम कर दिया गया[3476] ।

इस प्रकार पवित्र शहीद अकाकियोस ने मसीह के लिए अपने दुःख को समाप्त किया। उनके पवित्र शरीर को उसी स्थान पर ईसाइयों द्वारा सम्मान के साथ दफनाया गया जहाँ उनका सिर कलम किया गया था; इस स्थान को 'स्टावरियन' कहा जाता था। यह सब, जैसा कि हमने कहा है, मूर्तिपूजकों के बीच मैक्सिमियन के शासनकाल में और ईसाइयों के बीच हमारे प्रभु यीशु मसीह के शासनकाल में हुआ, जिनका महिमा, सम्मान और आराधना युगानुयुग हो। आमीन।

स्वर्ग में प्रभु के सम्माननीय और जीवन-दायक क्रूस के चिह्न के प्रकट होने की स्मृति

7 मई को स्मरण किया जाता है

[3476] पवित्र शहीद की मृत्यु 303 में हुई थी। उनके अवशेष लंबे समय तक उनके नाम पर बने चर्च में रखे गए थे, जिसे सम्राट कॉन्स्टेंटिन द ग्रेट ने उनके दफन स्थल, स्टैव्रियन या स्टैवरोड्रोमिया में, बनवाया था। संत अकाकियोस के अवशेष आइकॉनोकलास्ट्स के समय तक वहीं रखे गए थे, जब ईसाइयों ने उन्हें नास्तिक उत्पीड़कों के उत्पीड़न से बचाने के लिए, दक्षिणी इतालवी शहर स्काइलैक्स में स्थानांतरित कर दिया।

पहले ईसाई, वशि्वासयोग्य और धर्मनषि्ठ सम्राट कॉन्स्टेंटाइन महान की मृत्यु के बाद, शाही सहिासन उनके पुत्र कॉन्स्टेंटयिस[3477] के हाथों में आ गया, जो अरअिस की दुष्ट वधिर्म में भटक गया था, जसिने परमेश्वर के पुत्र[3478] का अपमान कयिा था। तब, दुष्ट वधिर्मयिों को लज्जति करने, अवशि्वासयिों को आश्वस्त करने और ऑर्थोडॉक्स को मजबूत करने के लिए, पवत्रि नगर यरूशलेम में एक अद्भुत संकेत दखिाई दयिा: पेंटेकोस्ट के पर्व पर, 7 मई को, तीसरे घंटे पर[3479] , स्वर्ग में प्रभु के पवत्रि क्रूस की एक प्रतमिा प्रकट हुई, जो एक अकथनीय प्रकाश से चमक रही थी, जो सूर्य की करिणों से भी अधकि तेज था, जसिे सभी लोगों ने देखा, और वे महान भय और आश्चर्य से भर गए, क्रूस का यह चहि्न, जो पवत्रि गोलगोथा पर्वत के ऊपर से शुरू होकर, जसि पर हमारे प्रभु को सूली पर चढ़ाया गया था[3480] , पंद्रह स्टेडयिम दूर स्थति जैतून के पर्वत[3481] तक फैला था; क्रूस के चहि्न की चौड़ाई उसकी लंबाई के बराबर थी; इसकी सुंदरता, जो एक बहुरंगी इंद्रधनुष के समान थी, इतनी महान थी कि उसने सभी का ध्यान अपनी ओर खींच लयिा। और हर कोई—चाहे वे कसिी काम में लगे हों या अपने घरों में हों—अपना सारा काम छोड़कर, गहरे भाव और हार्दकि स्नेह के साथ पवत्रि चर्च की ओर दौड़ पड़ा, और उस अद्भुत चहि्न को वस्मिय और श्रद्धा से नहिारने लगा। तब यरूशलेम के सभी वशिाल जनसमूह, इस दैवीय दर्शन से वस्मिय और आनंद से भरकर, गहरी भावना और हार्दकि स्नेह के साथ पवत्रि चर्च की ओर दौड़े—सभी बुज़ुर्ग और जवान, पुरुष और महलिाएँ, जनिमें अपनी बाहों में शशिुओं को लिए हुए लोग, साथ ही मौन में रहीं अवविाहति कुंवारी भी शामलि थीं – और वे भी, अपने घरों को छोड़कर, उसी स्थान पर जल्दी से पहुँचे; वास्तव में, यरूशलेम के हर उम्र और हर वर्ग के नविासी, यात्री और वदिेशी, ऑर्थोडॉक्स ईसाई और अन्य धर्मों के लोग। और वे सभी, एक स्वर में, ज़ोर से हमारे प्रभु यीशु मसीह, परमेश्वर के एकलौते पुत्र, सच्चे परमेश्वर जो सच्चे परमेश्वर से उत्पन्न हुए, महान चमत्कारों के कर्ता की महमिा करने लगे।

तब अवशि्वासी वधिर्मी, मसीह की दव्यिता के शत्रु और नन्दिक, क्रूस के दर्शन में प्रभु मसीह की ऐसी महान, दव्यि महमिा और शक्त देखकर लज्जति हो गए, और उसी क्षण घटना की वास्तवकिता से इस बात का वशि्वास हो गया कि ईसाई धर्म धर्मी, सत्य और धर्मपरायण है, और यह वशि्वासी को मानवीय बाहरी बुद्धि से सीखे हुए शब्द नहीं, बल्कि

[3477] कांस्टेंटनि महान के पुत्र कांस्टैंटयिस को पूर्व, एशयिा और मस्रि का क्षेत्र सौंपा गया था; 357 में, अपने भाई कॉन्स्टेंस के हत्यारे मैग्नेंशयिस को हराने के बाद, उसने पूरे रोमन साम्राज्य को अपने शासन के अधीन कर लयिा। उसने मूर्तपिूजक मंदरिों को नष्ट कर दयिा या उन्हें चर्चों में बदलने के लिए ईसाइयों को सौंप दयिा; कई मौकों पर उन्होंने मूर्तपिूजा के अभ्यास पर प्रतबिंध लगाने वाले कानून जारी कएि। हालाँकि, एरयिन वधिर्म के प्रति अपनी सहानुभूति के कारण, कॉन्स्टैंटयिस ने उस समय के धार्मकि संघर्ष को बहुत बढ़ा दयिा: उन्होंने रूढ़विादी बशिपों को सताया, उन्हें उनके पदों से हटा दयिा और यहाँ तक कि उन्हें कैद भी कर दयिा; उनके शासन के तहत, एरयिनों ने राज्य में उच्चतम पदों पर कब्ज़ा कर लयिा था। कांस्टैंटयिस की मृत्यु 361 में अपने चचेरे भाई जूलयिन के खलिाफ अभयिान के दौरान हुई, जसिे गॉल की सेनाओं द्वारा सम्राट घोषति कयिा गया था, जहाँ कांस्टैंटयिस ने स्वयं उसे मुख्य सेनापति नयिुक्त कयिा था। नाज़यिान्ज़स के ग्रेगरी के अनुसार, अपनी मृत्यु से पहले, कांस्टैंटयिस ने ऑर्थोडॉक्स (सही आस्था वाले) लोगों पर अत्याचार करने के लिए पश्चाताप कयिा था।

[3478] एरयिन वधिर्म के संस्थापक अलेक्ज़ेंड्रयिा के एक पादरी एरयिस थे। उन्होंने इस बात से इनकार कयिा कि परमेश्वर का पुत्र पति के समान ही तत्व का है, यीशु मसीह को एक सृजति प्राणी माना, और उनमें दव्यि गुणों - सर्वशक्तमिान, सर्वज्ञ, आदि - को नहीं माना। अरअिस के धर्मद्रोह को पहले (325 ईस्वी) और दूसरे (381 ईस्वी) सार्वभौमकि परषिदों में दृढ़ता से नदिा कयिा गया, जसिमें परमेश्वर के पुत्र की पति के साथ समानता स्थापति की गई थी—यह एक ऐसा वशि्वास है जसिे पहले सार्वभौमकि परषिद के धर्मपति द्वारा रचति धर्म-वशि्वास के दूसरे अनुच्छेद में हर ईसाई स्वीकार करता है। 5वीं शताब्दी में, रोमन साम्राज्य में एरयिनवाद के लगभग कोई अनुयायी नहीं थे, लेकनि यह जर्मनी में गोथ, बर्गंडयिन, वैंडल और लोम्बार्ड लोगों के बीच पुनर्जीवति हो गया, जहाँ यह 7वीं शताब्दी तक बना रहा।

[3479] हमारी गणना के अनुसार, सुबह लगभग 9 बजे। – इस घटना को स्वयं वर्ष 351 का माना जाना चाहिए। उस वर्ष, ईस्टर 31 मार्च को और पेंटेकोस्ट 19 मई को पड़ा; 7 मई पेंटेकोस्ट से पहले के अंतमि सप्ताह के मंगलवार को पड़ता है।

[3480] गोलगोथा पहले यरूशलेम के बाहर स्थति था (मत्ती 27:32–33, यूहन्ना 19:17–41; इब्रानयिों 13:12); यह पवत्रि नगर के उत्तर-पश्चमिी हस्सि में स्थति है। संभवतः इसका नाम (गोलगोथा, जो हब्रिू में 'खोपड़ी' या 'खोपड़ी की जगह' के लिए प्रयुक्त होता है (लूका 13:33)) खोपड़ी से इसकी समानता के कारण पड़ा। परंपरा के अनुसार, आदम को यहीं दफनाया गया था।

[3481] जैतून का पर्वत और जैतून का पर्वत – यरूशलेम के पूर्व में स्थति यहूदी पर्वत (यहेज़केल 11:23); जैतून का पर्वत वहाँ उगे जैतून के वृक्षों की बहुतायत के कारण ऐसा नाम पड़ा। अपने पृथ्वी पर जीवन के दौरान, प्रभु यीशु मसीह अक्सर अपने शष्यिों के साथ पहाड़ पर चढ़ा करते थे (यूहन्ना 8:1, 18:2)। जैतून के पहाड़ की पश्चमिी ढलान पर गेथ्सेमनी का बगीचा है, जहाँ प्रभु ने अपने दुख-संकट से एक रात पहले प्रार्थना की और जहाँ यहूदा ने उनका वशि्वासघात कयिा (मत्ती 26:36–57; मरकुस 14:26–53; लूका 22:39–54; यूहन्ना 18:1–13)। पहाड़ की दक्षणि-पूर्वी ढलान पर बेथनी नामक गाँव बसा था, जहाँ से प्रभु ने यरूशलेम में अपनी वजियी प्रवेश की (मत्ती 21:21; लूका 14:29)। परंपरा के अनुसार, प्रभु जैतून के पहाड़ से स्वर्ग में आरोहण हुए (प्रेरतिों के काम 1:12)। दूसरी शताब्दी में, कॉन्स्टेंटाइन महान की माँ ने जैतून के पहाड़ पर एक ईसाई चर्च बनवाया था, जसिे बाद में तुर्कों ने मस्जदि में बदल दयिा।

पवित्र आत्मा और अनुग्रह के प्रकाशन पर आधारित प्रदान करता है, और स्वर्गीय चिह्नों और चमत्कारों द्वारा इसकी गवाही दी जाती है। परम पावन सिरिल, यरूशलेम के पैट्रिआर्क[3482] , ने राजा कॉन्स्टेंटियस को एक पत्र में क्रूस के इस चमत्कारी चिह्न के दर्शन की सूचना दी, और उन्हें ऑर्थोडॉक्स सिद्धांत की ओर मुड़ने के लिए प्रोत्साहित किया। हर्मेस सोज़ोमेन[3483] , अपनी ओर से, गवाही देते हैं कि पवित्र क्रूस[3484] के इस स्वर्गीय प्रकट होने के माध्यम से, बहुत से यहूदी और यूनानी सच्चे धर्म में आए और, हमारे परमेश्वर मसीह के प्रति पश्चाताप करके मुड़े, और पवित्र बपतिस्मा प्राप्त किया। और सभी ने भक्तिपूर्वक हमारे परमेश्वर मसीह की महिमा की, जो पिता और पवित्र आत्मा के सह-तत्त्व और सह-शाश्वत हैं। हम भी, क्रूस के माध्यम से प्रकट हुई उनकी अगोचर शक्ति की गवाही देते हुए, अपने प्रभु परमेश्वर की उनकी क्रूस के चरणों में कृतज्ञ स्तुति और आराधना के साथ महिमा करते हैं, प्रभु की दया का निवेदन करते हुए, कि उनकी दूसरी, भयानक आगमनी पर, मसीह हमें देखने का अनुग्रह प्रदान करें *'मानव पुत्र का चिह्न'* (मत्ती 24:30), पवित्र क्रूस, मोक्ष के आनंद और आशा में, और इसके द्वारा, जैसे एक कुंजी के रूप में, वह हमारे लिए स्वर्ग के राज्य के द्वार खोलें, जैसे उसने एक बार चतुर चोर के लिए स्वर्ग खोला था (लूका 23:40–43), और वह हमें अपनी धन्य भेड़ों के साथ हमेशा के लिए स्थापित करें (मत्ती 25:33–34)। आमेन।

क्रूस का ट्रॉपारियन, स्वर 8:

तेरे क्रूस का स्वरूप अब सूर्य से भी अधिक प्रकाशमान है, जिसे तूने पवित्र पर्वत से लेकर गोलगोथा तक फैलाया था: और उसमें तूने अपना उद्धार और सामर्थ्य प्रकट किया, जिससे हमारे विश्वासयोग्य राजाओं को बल मिला: हे मसीह परमेश्वर, परमेश्वर की माता की प्रार्थनाओं के द्वारा उन्हें भी शान्ति में बचा, और हमें भी बचा।

कॉन्टाकियन, स्वर 4:

हे स्वर्ग, जो बंदियों के लिए खुला, स्वर्गों में सर्वाधिक तेजस्वी किरणों वाली, अति-शुद्ध क्रूस पृथ्वी पर चमक उठी है: अत; इसकी किरणों के प्रभाव को ग्रहण करते हुए, हम अक्षय प्रकाश की ओर निर्देशित होते हैं, और युद्ध में हमारे पास यह शांति का हथियार, एक अजेय विजय के रूप में है।

21 मई

8 मई (पुराना कैलेंडर)

हमारे पूजनीय पिता अर्सेनियस महान का जीवन

8 मई को स्मरणोत्सव

आदरणीय आर्सेनियस का जन्म रोम में धर्मनिष्ठ ईसाई माता-पिता के यहाँ हुआ था, जिन्होंने उन्हें ईश्वर के भय में पाला-पोसा और विज्ञान में शिक्षित किया। आर्सेनियस न केवल सदाचार के पुरुष थे, बल्कि महान बुद्धि के भी धनी

[3482] यरूशलेम के आर्चबिशप, संत सिरिल, ने 350 से 387 तक पैट्रिआर्क के रूप में कार्य किया। वह एरियन विधर्म के खिलाफ अपने संघर्ष के लिए जाने जाते हैं। उनका पर्व दिवस 18 मार्च को मनाया जाता है।

[3483] सोजोमेन 5वीं शताब्दी के एक चर्च इतिहासकार थे। उनकी *चर्च हिस्ट्री* 323 से 439 की अवधि को कवर करती है (हालांकि केवल 423 तक का विवरण ही आज तक बचा है)। सोजोमेन ने ईसाई धर्म की पहली तीन शताब्दियों का इतिहास भी लिखा था, लेकिन दुर्भाग्य से यह संरक्षित नहीं है। – सोजोमेन ने अपनी *चर्च हिस्ट्री* की पुस्तक IV, अध्याय 5 में इस अद्भुत संकेत का उल्लेख किया है।

[3484] आकाश में क्रॉस का प्रकट होना चर्च के लिए कठिन समय - एरियनवाद के प्रभुत्व - का संकेत दे रहा था। ठीक 10 वर्षों (361 से) तक, कॉन्स्टैंटियस के माध्यम से एरियनवाद का प्रभुत्व रहा, जिसके बाद उसका स्थान जूलियन (361–363) के धर्मत्याग ने लिया; जूलियन के बाद, सम्राट वैलेंस (364–378) ने 14 वर्षों तक एरियनवाद को संरक्षण दिया।

थे: उन्होंने सभी वाक्पटुता-वशिारदों और दार्शनकिों की कृतयिों का अध्ययन कयिा और वे ग्रीक तथा लैटनि दोनों में पारंगत थे। हालाँकि, उन्होंने संसार के व्यर्थ जीवन का त्याग कर दयिा और हेलेनकि दर्शन से मुंह मोड़ लयिा; वे पुरोहति वर्ग में शामलि हो गए, और स्वयं को ईश्वर की सेवा के लिए समर्पति कर दयिा, क्योंकि उन्होंने पवत्रि प्रेरति याकूब द्वारा प्रशंसति सच्चे ज्ञान की खोज की, वह ज्ञान जो *'शुद्ध, शांतपिूर्ण, सौम्य'*, आज्ञाकारी, और *'दया और अच्छे फलों'* सेभरपूर है (याकूब 3:17)। आर्सेनयिस, रोम के महान चर्च के डीकन के रूप में अभषिक्ति होने के बाद, एक पवत्रि जीवन व्यतीत कयिा, और स्वयं को पवत्रि आत्मा और सर्व-पवत्रि करने वाले आत्मा के लिए एक योग्य नविास स्थान बनाने का प्रयास कयिा।

उस समय, रोमन साम्राज्य के पूर्वी भाग पर थयिोडोसयिस महान[3485] का शासन था, जबकि पश्चमिी भाग पर ग्राटयिन[3486] का शासन था। थयिोडोसयिस, जनिके दो पुत्र थे—आर्काडयिस और होनोरयिस—ने उनके लिए एक ऐसे शक्षिक की तलाश की जो उन्हें न केवल मानवीय बुद्धि बल्कि दैवीय बुद्धि भी सखिाए; थेओडोसयिस चाहते थे कि उनके बच्चों को न केवल दर्शनशास्त्र और अन्य हेलेनकि वज्ञिान सखिाए जाएँ, बल्कि एक सदाचारी और ईश्वर-प्रसन्न करने वाला ईसाई जीवन भी सखिाया जाए। इस उद्देश्य के लिए, थयिोडोसयिस ने अपने पूरे साम्राज्य में ऐसे व्यक्ति की खोज का आदेश दयिा; हालाँकि, वह कोई नहीं ढूंढ सका, क्योंकि जो लोग वह भेजे थे, उन्हें कई बुद्धमिान और वद्विान पुरुष मलि जो ईश्वरवादी जीवन नहीं जीते थे, और, इसके वपिरीत, उन्हें ऐसे लोग भी मलि जो धार्मकि रूप से जीवन यापन करते थे लेकनि धर्मनरिपेक्ष वज्ञिानों में पूरी तरह से अनपढ़ थे। इसलिए, थयिोडोसयिस को पश्चमिी सम्राट ग्राटयिन को यह लखिने के लिए मजबूर होना पड़ा कि उसे अपने बच्चों को शक्षिति करने के लिए ठीक ऐसे ही व्यक्ति की आवश्यकता है, जैसा कि ऊपर वर्णति है। ग्राटयिन ने इस मामले पर पोप डमासस[3487] से परामर्श करने के बाद जवाब दयिा: 'यह हमारे राज्य के लिए अपमान की बात होगी यदि हम उसमें सम्राट थयिोडोसयिस द्वारा अनुरोधति जैसा कोई सदाचारी और बुद्धमिान व्यक्ति न ढूंढ पाएँ। हमें ऐसे व्यक्ति को खोजना ही होगा जो उनके बेटों को दर्शनशास्त्र सखिा सके और उनमें ईश्वर का भय न केवल अपने शब्दों से बल्कि अपने सदाचारी जीवन के उदाहरण से भी पैदा कर सके।'

रोम में अच्छी तरह से खोजबीन करने के बाद, उन्हें डकिन आर्सेनयिस से अधकि बुद्धमिान या अधकि सदाचारी कोई व्यक्ति नहीं मलिा, जो एक सदाचारी जीवन जीता था, अपने कार्यों में कई लोगों से आगे था, और अब जवान नहीं रहा था। उन्हें अपनी उपस्थति में बुलाकर, उन्होंने उन्हें पूर्वी सम्राट की इच्छा बताई और आर्सेनयिस को उनके पास जाने का आदेश दयिा। लेकनि आर्सेनयिस ने हर तरह से उन्हें मनाने की कोशशि की, यह कहते हुए कि उसने बहुत पहले ही सभी सांसारकि ज्ञान को त्याग दयिा था, क्योंकि उसने एक पुरोहति के रूप में ईश्वर की सेवा के लिए खुद को समर्पति करने का संकल्प ले लयिा था; आर्सेनयिस ने कहा कि उसने बहुत पहले ही वक्ताओं की सारी वाक्पटुता को भूल गया था, क्योंकि उसने अपनी सारी ऊर्जा चर्च और वेदी की सेवा में समर्पति करने का संकल्प ले लयिा था।

हालाँकि, जतिना अधकि आर्सेनयिस ने इनकार कयिा, उतना ही सम्राट और पोप ने उन पर अपनी वनिती मानने के लिए ज़ोर दयिा, क्योंकि वे उनसे एक ऐसा कार्य करने के लिए कह रहे थे जसिसे पूरी ईसाई दुनयिा और ईश्वर की कलीसयिा को लाभ पहुँचेगा। उन्होंने उससे कहा कि उसे सम्राट के बच्चों को न केवल वद्वितापूर्ण ज्ञान बल्कि ईसाई भक्ति भी सखिानी चाहिए, ताकि वे मूर्तपिूजक कथाओं पर वशि्वास न करें, बल्कि ईसाई धर्म की रक्षा और प्रचार करें।

तब, अपनी इच्छा के वरिुद्ध, आर्सेनयिस ने सम्राट और पोप के आदेशों का पालन कयिा। उन्होंने उसे बहुत सम्मान के साथ सम्राट थयिोडोसयिस के पास कॉन्स्टेंटनिोपल भेजा।

जब आदरणीय (रेवरेंड) कॉन्स्टेंटनिोपल पहुँचे, तो सम्राट थयिोडोसयिस ने उनकी बहुत कृपापूर्वक अगवानी की: उन्हें देखते ही, थयिोडोसयिस ने उन्हें, उनके बाहरी रूप से भी, परमेश्वर के एक पुरुष के रूप में पहचान लयिा, जो परमेश्वर की बुद्धि और ज्ञान से परपिूर्ण थे, और उनके आगमन से बहुत प्रसन्न हुए। ईश्वर का धन्यवाद करने के बाद, थयिोडोसयिस ने अपने पुत्रों, आर्कैडयिस और होनोरयिस को, आर्सेनयिस के पास लाया और उन्हें यह कहते हुए उनके हवाले कर दयिा:

अब से, आप उनके लिए मुझसे भी अधकि पति होंगे, क्योंकि उन्हें पालना जन्म देने से भी कठनि है। मैं उन्हें और आपकी बुद्धमित्ता को सौंपता हूँ; मैं आपसे जैसा नविेदन करता हूँ, उन्हें वैसा ही पालें; उन्हें सदाचार की आदत डालें और

[3485] थेओडोसयिस ने 379 से 395 तक रोमन साम्राज्य के पूर्वी भाग पर और 383 से 395 तक पश्चमिी भाग पर शासन कयिा।

[3486] ग्रेटयिन ने 375 से 383 तक शासन कयिा।

[3487] दामासस प्रथम ने 366 से 384 तक पोप का पद संभाला।

बुद्धमित्ता सिखाएँ; उनके आध्यात्मिक पिता के रूप में, यह देखें कि वे युवावस्था के विभिन्न प्रलोभनों से बचें। इन सब के लिए, आपको ईश्वर से पुरस्कार मिलेगा। ईमानदार आर्सेनियस! ओह, काश आप उन्हें धर्मपरायणता और सदाचार के जीवन में पालें! मैं इस पर कितनी प्रसन्नता होगी, और इसके लिए मैं ईश्वर की कितनी प्रशंसा करूँगा! मैं यह सब अपने बेटों की उपस्थिति में आपको कह रहा हूँ, ताकि वे स्वयं इसे सुन और देख सकें। इस बात पर ध्यान न दें कि वे राजा के बेटे हैं; उन्हें आज्ञाकारी और आपके प्रति समर्पित बनाकर पालें, क्योंकि मैं चाहता हूँ कि वे अपने पिता और शिक्षक के रूप में आपकी हर बात मानें, और आपके अपने बच्चों और शिष्यों की तरह आपकी बात सुनें।

अपने बच्चों को आर्सेनियस के हवाले करने के बाद, थियोडोसियस ने महल के पास उनके लिए एक स्कूल बनवाने का आदेश दिया, ताकि उन्हें मिलने-जुलने और उनकी शिक्षा तथा दैनिक जीवन की देखरेख करने में सुविधा हो सके; जहाँ तक धन्य आर्सेनियस की बात है, सम्राट ने उन्हें बहुत सम्मान दिया: उन्होंने उन्हें अपने सलाहकारों में से एक का पद दिया और आदेश दिया कि उन्हें न केवल अपने बच्चों का पिता कहा जाए, बल्कि अपना भी पिता कहा जाए, ताकि आर्सेनियस सभी के बीच 'शासक और उसके बच्चों के पिता' के रूप में जाने जाएँ। यह भी एक रिपोर्ट है कि धन्य आर्सेनियस ने ज़ार के बेटों, आर्काडियस और होनोरियस के पवित्र बपतिस्मा में गॉडफादर के रूप में कार्य किया, क्योंकि दोनों का बपतिस्मा शिशु के रूप में नहीं बल्कि उनके युवा होने पर हुआ था।

ज़ार के बेटों को अपनी छत्रछाया में लेकर, आर्सेनियस ने उनकी परवरिश और शिक्षा का लगन से ध्यान रखा; उन्होंने उनके साथ ग्रीक और लैटिन ग्रंथों का अध्ययन किया और, साथ ही, उन्हें एक ईश्वरीय जीवन का उपदेश दिया, और उन्हें पवित्र धर्मग्रंथों की व्याख्या की; विशेष रूप से, आर्सेनियस ने उन्हें सिखाया कि जब प्रभु उन्हें राज्य का शासन सौंपने के लिए उचित समझें, तो उन्हें अपना आचरण कैसे करना चाहिए; उन्होंने उनसे कहा कि उन्हें राजसी मुकुट से नहीं बल्कि धार्मिकता के अच्छे कर्मों से स्वयं को सजाना चाहिए; – यद्यपि दुष्ट और अधर्मी पुरुष शासन कर चुके थे, जैसे कि सभी मूर्तिपूजक सम्राट थे, ईसाई राजाओं को सदाचारी पुरुष होना चाहिए; उन्हें ईश्वर को प्रसन्न करना चाहिए और लोगों के प्रति अच्छा व्यवहार करना चाहिए यदि वे चाहते हैं कि उनकी स्मृति पीढ़ी-दर-पीढ़ी चली जाए।

इस प्रकार आर्काडियस और होनोरियस को निर्देश देते हुए, आर्सेनियस ने उन्हें राजा के बेटों के अनुरूप सम्मान का हर प्रतीक दिखाया; इस कारण से, वह आमतौर पर उन्हें सिंहासन पर बैठने के लिए आमंत्रित करते थे, जबकि वह स्वयं खड़े होकर उनसे बात करते थे।

एक दिन ऐसा हुआ कि जब वे पढ़ रहे थे, तब थियोडोसियस अचानक उनके पास आ गया। अपने बेटों को सिंहासन पर बैठे और उनके शिक्षक, आर्सेनियस को उनके सामने खड़े देख, थियोडोसियस बहुत दुखी हुआ और उसने आर्सेनियस से कहा:

'क्या मैंने ऐसा आदेश दिया था? क्या मैंने तुम्हें यह नहीं कहा था कि मेरे बेटों को अपने शिष्यों और बच्चों के रूप में मानो, और इस बात पर कोई ध्यान न दो कि वे राजा के बच्चे हैं?'

लेकिन धन्य आर्सेनियस ने विनम्रतापूर्वक थियोडोसियस को निम्नलिखित उत्तर दिया:

'हे राजा! हर चीज़ की अपनी जगह होती है: युवाओं को शिक्षा की आवश्यकता होती है, जबकि शाही सम्मान के लिए आदर की मांग होती है।'

ये शब्द सुनकर राजा और भी अधिक नाराज़ हो गया और कहा:

'तो क्या तुम उन्हें राजा मानते हो?'

यह कहकर, थियोडोसियस ने अपने बेटों से राजसी गरिमा के प्रतीक छीन लिए और जबरदस्ती आर्सेनियस को सिंहासन पर बिठा दिया, जबकि अपने बेटों को अपने सामने खड़ा कर दिया, और कहा:

'यदि वे ईश्वर का भय सीखें और उसकी आज्ञाओं का पालन करें और एक सदाचारी जीवन के माध्यम से उसे प्रसन्न करें, तो स्वर्ग का राजा उन्हें पृथ्वी पर राजा बना देगा, यदि वे इसके योग्य हों; लेकिन यदि वे शाही सिंहासन के अयोग्य दुष्ट पुरुष हैं, तो उनके लिए बिल्कुल भी शासन न करना बेहतर होगा। मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि वह उन्हें इस जीवन से उनकी जवानी में ही ले जाए, बजाय इसके कि उन्हें दुष्टता में पले-बढ़े रहने दे, जिससे उनके और दूसरों के प्राणों का नाश हो।

यह कहकर, ज़ार विदा हो गए।

आर्सेनियस ने मन ही मन राजा की प्रशंसा की और तब से उसने उसकी आज्ञा का पालन किया: वह राजा के बेटों को बैठे-बैठे ही उपदेश देता था, जबकि वे उसके सामने खड़े रहते थे।

लेकिन आर्सेनियस के चारों ओर जितनी अधिक महिमा थी, उसकी आत्मा उतनी ही अधिक दुखी थी, क्योंकि उसका हृदय न तो महिमा पर, न धन-संपत्ति पर, और न ही व्यर्थ सांसारिक प्रशंसा पर लगा था; अपनी आत्मा की गहराई में वह एक विनम्र मठवासी जीवन में, मौन और गरीबी में, ईश्वर की सेवा करने के लिए तीव्रता से तरसता था; इसलिए आर्सेनियस ने प्रभु से भक्तिपूर्वक प्रार्थना करना शुरू कर दिया, उनसे अपने शाही कक्षों में रहने से मुक्त करने और उसे रेगिस्तान में एक मठवासी जीवन प्रदान करने के लिए निवेदन किया।

एक दिन ऐसा हुआ कि आर्सेनियस ने आर्काडी द्वारा किए गए एक दुराचार पर ध्यान दिया। इससे क्रोधित होकर, आर्सेनियस ने उसे डंडों से पीटा, और इतनी बुरी तरह से कि आर्काडी को यह सजा अपनी मृत्यु के दिन तक याद रही, क्योंकि डंडों के निशान आर्काडी के शरीर पर बने रहे। यह सब ईश्वर की इच्छा से हुआ, ताकि इसके माध्यम से आर्सेनियस को इस सांसारिक जीवन से मुक्ति मिल सके और उसे रेगिस्तान में मठवासी जीवन जीने का अवसर मिल सके, जिसकी वह बहुत इच्छा रखते थे। आर्काडी, अपने हृदय में अपने गुरु के प्रति क्रोध पालते हुए और वयस्क हो जाने पर, ने आर्सेनियस को मारने की एक योजना बनाना शुरू कर दिया। उसने अपनी मंशा एक विश्वसनीय सलाहकार को बताई और उससे आर्सेनियस को किसी भी तरीके से मार डालने का आग्रह किया, जैसा वह उचित समझे। लेकिन सलाहकार, ईश्वर और सम्राट थियोडोसियस से डरकर और ऐसा दुष्ट कार्य करने के इच्छुक न होकर—विशेषकर इसलिए क्योंकि वह आर्सेनियस के अनेक गुणों के कारण उनका बहुत सम्मान करता था —ने गुप्त रूप से, निजी तौर पर, आर्काडी की साजिश का खुलासा उन्हें कर दिया और पूजनीय को अपना जीवन बचाने की सलाह दी।

अर्सेनियस, दुख और भय से भरकर, एक बार फिर आँसुओं के साथ ईश्वर से प्रार्थना करने लगा, उनसे मोक्ष के मार्ग पर चलने का मार्गदर्शन करने के लिए विनती करते हुए।

उस रात, प्रार्थना करते समय, आर्सेनियस ने ऊपर से एक आवाज़ सुनी जो कह रही थी: 'आर्सेनियस! लोगों से दूर भाग जाओ, और तुम बच जाओगे।'

यह सुनकर, आर्सेनियस ने साधारण कपड़े पहने और, गुप्त रूप से शाही महल छोड़कर, समुद्र तट पर चला गया; वहाँ, ईश्वर की कृपा से, उसे अलेक्जेंड्रिया के लिए रवाना होने वाला एक जहाज़ मिला[3488] । वह उस पर चढ़ गया और ईश्वर में अपनी सारी आशा रखकर चल पड़ा। जब जहाज़ अलेक्जेंड्रिया पहुँचा, तो आर्सेनियस तुरंत ही संन्यास आश्रम[3489] के लिए निकल पड़े। चर्च में प्रवेश करते ही, उन्होंने पुरोहितों से आँसू भरी विनती करनी शुरू कर दी कि वे उन्हें एक भिक्षु के रूप में दीक्षा दें और उन्हें मोक्ष के मार्ग पर मार्गदर्शन करें। पुरोहितों ने, यह देखकर कि वे एक ईमानदार और धर्मनिष्ठ व्यक्ति से बात कर रहे हैं, उनसे पूछा:

'तुम कौन हो, और कहाँ से आए हो?'

उसने उत्तर दिया:

'मैं एक यात्री और एक गरीब आदमी हूँ।'

मंडलीयों ने आपस में इस पर विचार करने के बाद कि निवागंतुक को भिक्षु जीवन की शिक्षा के लिए किसके हवाले किया जाए, उसे बाबा जॉन कोलोव के हवाले करने का फैसला किया, और उन्हें इस बारे में सूचित किया। वृद्ध जॉन ने ईश्वर से प्रार्थना करने के बाद कहा: 'प्रभु की इच्छा पूरी हो!'

इस बीच, जॉन ने भाइयों के लिए भोजन तैयार करने का आदेश दिया, क्योंकि दिन का दसवां घंटा हो गया था। भाइयों मेज पर बैठ गए, लेकिन आर्सेनियस खड़ा रहा, क्योंकि किसी ने उसे बैठने के लिए आमंत्रित नहीं किया था। भाई खाने लगे, लेकिन आर्सेनियस ने कुछ भी नहीं खाया और सिर झुकाए हुए पूरे समय वहीं खड़ा रहा, मानो वह ईश्वर और उनके पवित्र स्वर्गदूतों के सामने खड़ा हो। तब वृद्ध जॉन ने भोजन में परोसे गए रस्क में से एक उठाया और उसे आर्सेनियस की ओर फेंकते हुए कहा:

'खाओ, अगर तुम चाहो।'

[3488] अलेक्जेंड्रिया – प्राचीन काल में एक प्रसिद्ध शहर, जो मिस्र में नील नदी के मुहाने पर स्थित था और जिसकी स्थापना महान अलेक्जेंडर (336–323 ईसा पूर्व) ने की थी। प्राचीन काल में, अलेक्जेंड्रिया व्यापार, उद्योग और शिक्षा का केंद्र था, और ईसाई धर्म की शुरुआती शताब्दियों में यह ईसाई शिक्षा का पालना था। आज, अलेक्जेंड्रिया सबसे महत्वपूर्ण बंदरगाह शहरों में से एक है।

[3489] मिस्र कई तपस्वियों का सामान्य निवास स्थान था। मठवासी बस्तियाँ मध्य और निचले मिस्र दोनों में पाई जाती थीं। निचले मिस्र में स्थित और नील नदी के पार देश के अंदर गहराई में स्थित, नित्रियन मरुभूमि मिस्र में विशेष रूप से प्रसिद्ध थी। स्कैटकि मरुभूमि लीबिया के पास स्थित थी। यह एक जंगली, रेतीला मरुभूमि थि; वहाँ कोई पक्के रास्ते भी नहीं थे - यात्री तारों की गति का अनुसरण करके अपना रास्ता खोजते थे।

योहन ने यह नए आगंतुक की विनम्रता की परीक्षा लेने और यह जानने के लिए किया कि क्या वह सचमुच संसार का त्याग करने यहाँ आया था।

इस बीच, आर्सेनियस ने मन ही मन सोचा: 'यह एल्डर ईश्वर का एक देवदूत और एक दूरदर्शी व्यक्ति हैं, क्योंकि वे जानते हैं कि मैं कुत्ते से भी बदतर हूँ; इसीलिए उन्होंने मुझे कुत्ते की तरह ही रस्क फेंकी; इसी कारण, मुझे इसे कुत्ते की तरह ही खाना चाहिए।'

और, ज़मीन पर झुककर, वह एक चार-पैर वाले जानवर की तरह, रोटी के टुकड़े की ओर रेंगता हुआ गया, उसे सीधे अपने मुँह में डाल लिया, फिर उसे लेकर एक कोने में चला गया और वहाँ ज़मीन पर लेटकर उसे खा गया।

संत अर्सेनियस में ऐसी विनम्रता देखकर, धन्य जॉन ने पुरोहितों से कहा:

– वह एक महान तपस्वी होगा।

जॉन को आर्सेनियस की विनम्रता बहुत पसंद आई और उन्होंने जल्द ही उसे भिक्षु नियुक्त कर दिया; फिर, उसे मठवासी जीवन का मार्ग सिखाने के बाद, उन्होंने उसे अपने सेल के पास ही एक कोठरी दी, क्योंकि वह पहले से ही दृढ़ और सद्गुणों में अनुभवी भिक्षु था।

इस बीच, महल छोड़ने के तुरंत बाद सम्राट थियोडोसियस ने आर्सेनियस की तलाश शुरू कर दी। थियोडोसियस को आर्सेनियस की बहुत याद आने लगी और इसलिए उन्होंने आदेश दिया कि उसे विभिन्न शहरों में खोजा जाए। हालाँकि, वे उन्हें किसी भी तरह से नहीं ढूंढ सके, क्योंकि प्रभु ने अपने प्रिय सेवक का ठिकाना तब तक छिपा रखा था जब तक कि उन्हें यह उचित नहीं लगा कि वे उन्हें कई लोगों के लाभ के लिए दुनिया के सामने प्रकट करें।

जहाँ तक आर्सेनियस की बात है, वह बूढ़े द्वारा बताई गई कुटिया में रहते हुए, उपवास, प्रार्थना और संन्यासी श्रम में स्वयं को समर्पित कर दिया, और सभी सद्गुणों में इस हद तक उत्कृष्ट हो गया कि वह अपने तपस्या के कार्यों में कई बूढ़ों से भी आगे निकल गया। एक बार, जब वह प्रार्थना कर रहा था, तो उसने कहा:

'प्रभु, मुझे बचाए जाने का मार्ग सिखाइए!'

जवाब में, स्वर्ग से एक आवाज़ आई, जिसमें कहा गया:

'अर्सेनियस! लोगों से दूर रहो और मौन धारण करो; यही सद्गुणों की जड़ है।'

इस आवाज़ पर ध्यान देते हुए, आर्सेनियस उस स्थान को छोड़कर रेगिस्तान के गहरे हिस्से में चले गए, जहाँ उन्होंने अपने लिए एक छोटी सी कुटिया बनाई; इस कुटिया में वे हमेशा अकेले रहते थे, और हर तरह से मौन का पालन करने का प्रयास करते थे। वे सभी तरह की बातचीत से बचते थे और लगातार अपने मन को स्वर्ग की ओर केंद्रित करते थे; जबकि उनका शरीर पृथ्वी पर रहता था, उनकी आत्मा दिव्य शक्तियों की ओर उड़ान भरती थी। वह हर रविवार और पर्व के दिनों में चर्च जाता था। प्रार्थना सभा के अंत में, वह तुरंत मौन रूप से अपनी कुटिया में लौट आता था; वह किसी से भी बातचीत नहीं करता था; केवल कभी-कभार, जब कोई प्रश्न पूछा जाता, तो वह संक्षेप में उत्तर देता और फिर अपनी मौन कुटिया में लौटने के लिए जल्दी करता। स्केटे के रेगिस्तान में रहने वाले सभी तपस्वी, आदरणीय आर्सेनियस के पुण्य जीवन से बहुत चकित थे। एक बार, बाबा मार्क ने उनसे पूछा:

'आदरणीय पिताजी, आप हमसे अलग क्यों रहते हैं?'

अर्सेनियस ने उत्तर दिया:

'ईश्वर जाने कि मैं आपसे कितना प्रेम करता हूँ; लेकिन मैं एक ही समय में ईश्वर और लोगों दोनों के साथ नहीं रह सकता, क्योंकि स्वर्ग में, यद्यपि वहाँ बहुत सारी स्वर्गीय शक्तियाँ हैं—हजारों-हजारों या दसियों हज़ार—उन सभी की एक ही इच्छा है और इसलिए वे एक ही स्वर में ईश्वर की महिमा करती हैं; लेकिन पृथ्वी पर कई मानवीय इच्छाएँ हैं, और प्रत्येक व्यक्ति के अपने विचार हैं; हम में से प्रत्येक के इरादे और विचार अलग-अलग हैं, और इसलिए मैं ईश्वर को छोड़कर लोगों के बीच नहीं रह सकता।

ईश्वर के जितना संभव हो उतना करीब आने का प्रयास करते हुए, आर्सेनियस ने हर तरह से लोगों से खुद को दूर कर लिया, इतना कि वह नहीं चाहता था कि कोई उसे देखे या उसके बारे में जाने; फिर भी, एक दीपक की तरह, वह छिपा नहीं रह सका; उसके कारनामों की अफवाहें दूर-दूर तक फैल गईं और कॉन्स्टेंटिनोपल तक पहुंच गईं।

धर्मनरिपेक्ष सम्राट थयिोडोसयिस महान की मृत्यु के बाद, उनके पुत्र आर्कैडयिस सहिासन पर आसीन हुए[3490] । जब आर्कैडयिस को आदरणीय आर्सेनयिस के ठकिाने और जीवन-शैली के बारे में पता चला, तो उसने उन्हें एक पत्र लखिा जसिमें उसने वनिम्रतापूर्वक अपनी जवानी के पापों के लएि क्षमा मांगी, और उनसे अपने और अपने भाई होनोरयिस, जो रोमन साम्राज्य के पश्चमिी आधे हस्सि पर शासन करता था[3491] , के लएि ईश्वर से प्रार्थना करने का भी अनुरोध कयिा, ताकि उनके शासन को ईश्वर का आशीर्वाद प्राप्त हो। इसके अलावा, आर्कैडयिस ने अरसेनयिस को मस्रि से एकत्रति की गई सभी कर-राशि का उपयोग करने और अपनी ववेिक-बुद्धि के अनुसार उसे चर्चों, मठों और सभी जरूरतमंदों में वतिरति करने का अधकिार दे दयिा। पूजनीय अरसेनयिस सम्राट को लखिति में उत्तर देना नहीं चाहते थे, लेकनि उन्होंने केवल दूत से कहा:

'तुम्हें भेजने वालों से कह दो: वनिम्र अर्सेनयिस इस प्रकार कहते हैं – ईश्वर तुम्हारे पापों को क्षमा करें और तुम्हारे शासन को आशीर्वाद दें, और वह तुम्हारी सहायता करें कि तुम उसकी पवत्रि इच्छा को पूरा कर सको। तुमने कर के बारे में लखिा है; परन्तु अर्सेनयिस को इसकी कोई आवश्यकता नहीं है, क्योंकि वह संसार के लएि मर चुका है; अब कोई भी उसे जीवति (अर्थात् संसार के लएि जीने वाला) न समझे।'

यह उत्तर देकर दूत सम्राट के पास गया, जबकि पूजनीय संत अपनी नर्जिन कुटयिा में चले गए और वहाँ मौन में रहे, प्रार्थना में नरिंतर ईश्वर से संवाद करते हुए, और केवल कभी-कभार ही उससे बाहर नकिलकर दूसरों को साधु-संतों के गुणों में शक्षिति करते थे।

एक दनि, रेवरेंड आर्सेनयिस एक ऐसी जगह पर आए जहाँ सरकंडों का बहुत बड़ा झुंड था। वहाँ उन्होंने कुछ संतों को सरकंडों के पास बैठे हुए पाया। जब हवा में सरकंडे सरसरा रहे थे, तो रेवरेंड ने संतों से पूछा:

'यह शोर कहाँ से आ रहा है?'

भक्षिुओं ने उत्तर दयिा:

'यह हवा में सरकंडों के सरसराने की आवाज़ है।'

तब आदरणीय ने उनसे कहा:

'तो फरि, आप यहाँ खरपतवारों की सरसराहट सुनने के लएि क्यों बैठे हैं? जो व्यक्ति वास्तव में मौन से प्रेम करता है, उसे पक्षयिों की चहचहाहट भी नहीं सुननी चाहिए, जो आत्मा की शांति को भंग कर सकती है; खरपतवारों की सरसराहट तो एक भक्षिु के हृदय को और भी अधकि वचिलति कर सकती है।'

एक दनि, अलेक्जेंड्रयिा के आर्चबशिप थयिोफलिस[3492] , एक कुलीन व्यक्ति के साथ रेवरेंड फादर के पास आए, जो उनसे बातचीत करना और उनका मार्गदर्शन प्राप्त करना चाहता था। रेवरेंड फादर ने थोड़ी देर रुकने के बाद, उनसे कहा:

'क्या आप वैसा ही करेंगे जैसा मैं कहूँ?'

उन्होंने जो कुछ भी वह कहेंगे, करने का वादा कयिा।

तब रेवरेंड फादर ने कहा:

'कभी भी उस जगह न जाना जहाँ आर्सेनयिस हो।'

जो लोग आए थे वे पादरी के जवाब से हैरान रह गए, लेकनि उन्होंने आज्ञा मानी और वदिा हो गए।

कुछ समय बाद, आर्चबशिप आर्सेनयिस से फरि मलिना चाहते थे, इसलएि उन्होंने एक संदेशवाहक को यह पूछने के लएि भेजा: 'जब आर्चबशिप आपसे मलिने आएँगे तो क्या आप अपनी कोठरी खोलेंगे?'

हालाँकि, रेवरेन्ड ने संदेशवाहक से कहा: 'अगर तुम आओगे, तो मैं इसे खोलूँगा; लेकनि अगर मैं तुम्हारे लएि अपनी कोठरी खोलूँगा, तो मुझे हर कसिी के लएि इसे खोलना होगा; और उस स्थति में, मुझे कोठरी छोड़नी होगी।'

यह उत्तर सुनकर, आर्चबशिप उस पूज्य के पास नहीं गए, क्योंकि उन्हें डर था कि वह उस स्थान को छोड़ देंगे।

एक दनि ऐसा हुआ कि एक घुमक्कड़ भक्षिु, जो उन्हें देखना चाहता था, रेवरेंड आर्सेनयिस की कोठरी पर आया। दरवाज़े पर आकर उसने खटखटाया। आर्सेनयिस ने यह सोचकर कि यह उनका शष्यि है जो उनकी सेवा करता था, तुरंत दरवाज़ा खोल दयिा। लेकनि, एक अजनबी को देखकर, वह आगंतुक की ओर न देखने के लएि, मुंह के बल जमीन पर गरि

[3490] सम्राट आर्कैडयिस ने 395 से 408 तक रोमन साम्राज्य के पूर्वी भाग पर शासन कयिा।

[3491] 395 से 423 तक

[3492] थेओफलिस ने 385 से 412 तक पैट्रआर्क के रूप में कार्य कयिा।

पड़ा। हालांकि, आगंतुक ने माननीय पिता से जमीन से उठने का आग्रह करना शुरू कर दिया। आर्सेनियस ने, हालांकि, उठने से इनकार कर दिया और कहा: 'मैं तब तक नहीं उठूंगा जब तक आप इस जगह से नहीं चले जाते।'

और वास्तव में, वह लंबे समय तक जमीन से नहीं उठा। भिक्षु ने बहुत देर तक आदरणीय पिता से विनती की; लेकिन, चूँकि आदरणीय पिता उसकी विनती मानने के लिए तैयार नहीं हुए, भिक्षु चला गया।

एक अन्य अवसर पर, एक और भिक्षु दूर से स्केटे में आया, जो रेवरेंड फादर से मिलने की इच्छा रखता था, और उसने भाइयों से अर्सेनियस की कोठरी का रास्ता दिखाने के लिए कहना शुरू कर दिया। ऐसा करते हुए, उसने भाइयों से कहा:

'मैं पिता आर्सेनियस से बात करना चाहता हूँ।'

लेकिन भाइयों ने उत्तर दिया:

'भाई, रविवार तक प्रतीक्षा करो, और जब वह चर्च आएँगे तो तुम उन्हें देख लेना।' तब भिक्षु ने भाइयों से कहा:

'मैं आदरणीय पिताजी को देखे बिना भोजन नहीं करूँगा।'

तो भाइयों ने एक भिक्षु को नए आए व्यक्ति के साथ भेजा और उसे बूढ़े आर्सेनियस की कोठरी का रास्ता दिखाने का निर्देश दिया (यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि आर्सेनियस की कोठरी स्केटा से तीस स्टेडियम दूर थी)[3493] ।

कोठरी तक पहुँचने पर, भाई ने दरवाज़ा खटखटाया।

वरिष्ठ ने दरवाज़ा खोला और आगंतुकों को कोठरी में आने दिया; फिर वे सिर झुकाकर बैठ गए और चुप रहे। आगंतुक भी चुपचाप बैठे रहे। कुछ समय तक सभी चुप रहे। अंत में, स्केटे का भिक्षु बोला:

'मैं वापस लौट जाऊँगा, क्योंकि मुझे चर्च में अपने कर्तव्यों का पालन करना है।'

और, अपनी सीट से उठकर, वह जाने की तैयारी करने लगा।

उसके साथ आए दूसरे भाई ने, वृद्ध के साथ रहने की हिम्मत न करते हुए, उससे कहा:

'मैं आपके साथ चलूँगा।'

फिर, उठकर, उसने वरिष्ठ को प्रणाम किया और सेल से बाहर निकल गया, बिना पूजनीय के मुंह से एक भी शब्द सुने।

इसके बाद, भटकते संन्यासी ने उस भाई से विनती करनी शुरू कर दी कि वह उसे मूसा के पास ले जाए, जो संन्यास का व्रत लेने से पहले एक डाकू था। भाई ने उसकी विनती मान ली और उसे पूजनीय मूसा के पास ले गया।

जब वे मूसा के निवास पर पहुँचे, तो उन्होंने खुशी से उनका स्वागत किया, उन्हें आराम करने और कुछ खाने के लिए आमंत्रित किया, और उन पर बहुत दया दिखाने के बाद, उन्हें विदा कर दिया।

रास्ते में, तपस्वी ने आगंतुक से कहा:

'अब तुम पिता अर्सेनियस और पिता मूसा दोनों से मिल चुके हो। तुम्हें इनमें से कौन बेहतर लगता है?'

भाई ने उत्तर दिया:

'इन दोनों में से जो बेहतर है, वह है जिसने हमें प्रेम से स्वागत किया।'

एक भिक्षु ने यह जानकर ईश्वर से प्रार्थना करनी शुरू कर दी, और कहा: 'हे प्रभु! मुझे बताइए, उनमें से कौन अधिक परिपूर्ण है और आपकी अधिक कृपा का पात्र है: वह जो आपके लिए लोगों से दूर रहता है, या वह जो आपके लिए ही सभी का स्वागत करता है?'

उसकी प्रार्थना के उत्तर में, इस भिक्षु को निम्नलिखित दर्शन हुआ: उसने एक बहुत बड़ी नदी में बहते हुए दो जहाज़ देखे; एक जहाज़ में आदरणीय आर्सेनियस थे, और परमेश्वर की आत्मा उनके जहाज़ को चला रही थी, उन्हें गहरी शांति में रखती हुई; दूसरे में आदरणीय मूसा थे; जबकि उसकी नाव ईश्वर के स्वर्गदूतों द्वारा चलाई जा रही थी, जो मूसा के मुँह में शहद डाल रहे थे।

उस संन्यासी ने यह दृष्टि अन्य, अधिक अनुभवी तपस्वियों को सुनाई, और वे सभी इस बात पर सहमत हुए कि मौन में रहने वाले आर्सेनियस, जो यात्रियों को ठहराते थे मोसेस से अधिक पूर्ण थे, क्योंकि ईश्वर स्वयं आर्सेनियस के साथ वास करते थे, जबकि मोसेस के साथ केवल पवित्र स्वर्गदूत थे।

[3493] हमारी गणना के अनुसार लगभग 5 वर्स्ट।

लोगों से संपर्क और उनसे बातचीत से हर तरह से बचते हुए, आर्सेनियस विशेष रूप से महिलाओं को देखने और उनसे बात करने से बचने में सावधान रहते थे, जैसा कि निम्नलिखित घटना से देखा जा सकता है।

एक धनी कुलीन महिला—जो धार्मिक, पवित्र और परमेश्वर से अत्यधिक भय रखने वाली थी तथा एक कठोर जीवन जीती थी—ने पूजनीय आर्सेनियस के बारे में सुनकर, उन्हें देखने की इच्छा व्यक्त की; इस उद्देश्य के लिए, वह आर्चबिशप से मिलने के लिए रोम से अलेक्जेंड्रिया तक की यात्रा की और उनसे अनुरोध किया कि वे अर्सेनियस को मनाएं कि वह उसे एक तीर्थयात्री के रूप में स्वीकार करें और इतनी लंबी यात्रा करने के लिए उसे अपना आशीर्वाद दें। आर्चबिशप ने उनका बड़े सम्मान से स्वागत किया, क्योंकि वह एक प्रतिष्ठित सेनेटोरियल परिवार से आई थीं, और उन्होंने हर संभव तरीके से सम्माननीय महंत को उनकी विनती मानने के लिए मनाने की कोशिश की, लेकिन सब व्यर्थ गया, क्योंकि महंत न केवल उन्हें देखना नहीं चाहते थे, बल्कि किसी महिला के बारे में सुनना भी नहीं चाहते थे।

यह जानकर, बोयार की पत्नी ने अपने नौकरों को यात्रा की तैयारी करने का आदेश दिया, और कहा:

'मैं ईश्वर में अपनी आशा रखती हूँ कि वह मुझे आर्सेनियस को देखने की कृपा देंगे, क्योंकि मैं केवल एक साधारण व्यक्ति को देखने नहीं आई हूँ (और हमारे शहर में ऐसे बहुत से साधारण लोग हैं); नहीं, मैं एक भविष्यवक्ता को देखना चाहती हूँ। इसी कारण से मैंने इतनी लंबी यात्रा की है।'

यह कहकर वह रेगिस्तान में स्थित तपस्थली के लिए चल पड़ी। जब बोयार की पत्नी आदरणीय संन्यासी की कुटिया के पास पहुँची, तो ईश्वर की इच्छा से ऐसा हुआ कि संन्यासी अपनी कुटिया के बाहर थे; अचानक उनके पास पहुँचकर वह उनके पैरों पर गिर पड़ी। उन्होंने, तथापि, उसे उठने का आदेश दिया और सीधे उसके चेहरे को देखते हुए गुस्से में उससे कहा:

'अगर तुम मेरा चेहरा देखना चाहती थीं, तो यह लो – देखो।'

लेकिन वह इतनी लज्जित थी कि वह उसकी ओर देखने के लिए अपनी आँखें भी नहीं उठा सकी। तब एल्डर ने उससे कहा:

'अगर तुमने मेरे किसी अच्छे काम के बारे में सुना है, तो तुम्हारे लिए अच्छा होगा कि तुम उन्हें करो। जहाँ तक मेरे चेहरे की बात है, तुम्हें उसे देखने की कोई ज़रूरत नहीं है। तो फिर, तुमने इतना लंबा सफ़र क्यों तय किया? क्या तुम्हें पता नहीं कि तुम एक महिला हो और इस कारण तुम्हें अपने घर में ही रहना चाहिए, कहीं बाहर नहीं जाना चाहिए? क्या तुम सच में यहाँ इसलिए आई हो ताकि रोम लौटकर तुम दूसरी महिलाओं से यह घमंड कर सको कि तुमने आर्सेनियस को देखा है? अगर तुम ऐसा करोगी, तो शहर की सारी महिलाएँ मेरे पास आ जाएँगी।

उसने उत्तर दिया:

'यदि प्रभु मुझे लौटने में मदद करते हैं, तो मैं किसी को भी तुम्हारे पास नहीं जाने दूँगा, ताकि तुम्हारी मेहनत में बाधा न पहुँचे। लेकिन मैं तुमसे निवेदन करता हूँ – मेरे लिए ईश्वर से प्रार्थना करना और अपनी प्रार्थनाओं में मेरा स्मरण रखना।'

तब वृद्ध ने उससे कहा:

'मैं ईश्वर से प्रार्थना करूँगी कि वह मेरे दिल से आपकी याद मिटा दे।'

यह सुनकर, बोयार की पत्नी अत्यंत व्यथित हृदय से पादरी से विदा हुई। अलेक्जेंड्रिया शहर पहुँचने पर, वह और भी अधिक दुख में डूब गई।

आर्चबिशप को पता चला कि बोयार की पत्नी बहुत दुख के साथ संन्यासी के पास से लौट आई थी। उसके पास जाकर उन्होंने उसके दुख का कारण पूछा। बोयार की पत्नी ने उत्तर दिया:

'मेरे लिए तो अच्छा होता अगर मैं यहाँ आती ही नहीं। मैंने उस संत से कहा कि वे अपनी प्रार्थनाओं में मेरा स्मरण करें, लेकिन उन्होंने मुझसे कहा: "मैं ईश्वर से प्रार्थना करूँगा कि वे मेरे दिल से तुम्हारी याद मिटा दें।" इसी कारण, मैं घोर पीड़ा में हूँ।'

तब आर्चबिशप ने उससे कहा:

'इस पर शोक मत करो, मेरी बेटी, क्योंकि साधु ने यह बिना कारण नहीं कहा: आखिरकार, तुम एक महिला हो, और महिलाओं के माध्यम से शैतान पवित्र पुरुषों के लिए बहुत परेशानी पैदा करता है। इसीलिए साधु ने वे शब्द कहे, शैतानी प्रलोभन के डर से; जहाँ तक तुम्हारी आत्मा की बात है, वह उसके लिए प्रार्थना करते हैं और हमेशा प्रार्थना करेंगे।'

उस कुलीन महिला को इन शब्दों से सांत्वना मिली, उसने दुख करना छोड़ दिया, और आनंद के साथ अपने लौटने के सफर पर निकल पड़ी।

आदरणीय आर्सेनियस मौन में बने रहे, और ईश्वर के ध्यान में और भी गहराई तक डूबते गए; वे ईश्वर के प्रति इतने तीव्र प्रेम से जल रहे थे कि वे अपनी प्रबल प्रार्थनाओं के कारण, मानो, लगातार आग में जल रहे थे।

एक अवसर पर, एक भाई किसी काम से स्केटे से वरिष्ठ की कोठरी में आया; खिड़की के पास जाकर, उसने वरिष्ठ को प्रार्थना में खड़े देखा, और वरिष्ठ प्रार्थना में इस प्रकार आग की तरह जल रहे थे, मानो आग से ही। यह देखकर, वह भाई भय से भर गया। चूँकि उसे इस दर्शन के लिए योग्य माना गया था, वह दरवाज़ा खटखटाने से पहले एक पल के लिए वहीं खड़ा रहा। वरिष्ठ अपनी कोठरी से बाहर आए और भाई को डरा हुआ देखकर उससे पूछा:

'तुम यहाँ कितनी देर से हो? क्या तुमने कुछ असाधारण देखा है?'

लेकिन भाई ने उत्तर दिया:

'मैंने कुछ भी नहीं देखा।'

फिर, उस मामले पर उससे बात करने के बाद, बड़े भाई ने उसे आश्रम वापस भेज दिया।

इस अद्भुत संन्यासी के बारे में यह भी कहा जाता है कि जब वह शाही महल में रहते थे, तो उनसे बेहतर कपड़े कोई नहीं पहनता था; लेकिन जब उन्होंने संसार त्याग दिया, तो उनसे अधिक फटेहाल कपड़े किसी के पास नहीं थे।

इस साधु ने अपने शाही जीवन की एक आदत बनाए रखी थी, वह यह थी कि कभी-कभी बैठते समय वे एक पैर दूसरे पर चढ़ा लेते थे, जो शायद पूरी तरह से उचित नहीं लगता था। कुछ भाइयों ने यह देखा; हालाँकि उनमें से किसी ने भी उसे कुछ कहने की हिम्मत नहीं की, क्योंकि वे सभी उसे बहुत मान-सम्मान देते थे। लेकिन केवल एक वृद्ध, बाबा पिमेन, ने भाइयों से कहा:

'अब्बा आर्सेनियस के पास जाओ, और मैं उनके पास ठीक वैसे ही बैठूँगा जैसे वे कभी-कभी बैठते हैं; तब तुम मुझे यह बताना कि मैं ठीक से नहीं बैठा हूँ। मैं तुमसे क्षमा माँगूँगा; साथ ही, हम उस वृद्ध भिक्षु को भी सुधारेंगे।'

वे गए और उन्होंने वैसा ही किया जैसा उन्होंने कहा था। पूजनीय आर्सेनियस ने, यह महसूस करते हुए कि एक भिक्षु के लिए इस तरह बैठना अनुचित था, अपनी आदत छोड़ दी।

धन्य अर्सेनियस इतने विनम्र थे कि वे साधारण संतों की सलाह भी सुनते थे। उदाहरण के लिए, एक वृद्ध मिस्र के संत से बातचीत करते समय, उन्होंने पापपूर्ण विचारों को दूर करने का तरीका सिखाने के लिए कहा। एक अन्य भाई को यह बात पता चली और बाद में उसने अर्सेनियस से कहा:

'आदरणीय पिताजी, ऐसा क्यों है कि आप, जो विज्ञान में इतने पारंगत और ग्रीक तथा लैटिन में इतने विद्वान हैं, पापपूर्ण विचारों को दूर करने के लिए एक साधारण व्यक्ति से सलाह ले रहे हैं?'

रेवरेंड फादर ने उस भिक्षु को उत्तर दिया:

'मैं यूनानियों और रोमनों के सांसारिक ज्ञान में तो पारंगत हूँ; लेकिन मुझे एक साधारण व्यक्ति के धार्मिक जीवन से संबंधित ज्ञान की एबीसी भी नहीं आती।'

रेवरेंड ने यह यह दिखाने के लिए कहा कि विनम्रता सभी सद्गुणों का आधार है, जैसे कि वर्णमाला सभी सीखने का आधार है; जो कोई भी सभी सांसारिक ज्ञान का अध्ययन करे लेकिन उसमें सच्ची विनम्रता न हो, वह मोक्ष प्राप्त नहीं कर सकता।

नम्रता के अलावा, रेवरेंड में कोमलता का वरदान भी था।

अपने पूरे जीवन में, जब भी वह शारीरिक श्रम में लगे होते, तो वह हमेशा अपनी छाती पर एक रूमाल रख लेते थे, क्योंकि उनकी आँखों से लगातार आँसू बहते रहते थे। वह शरीर और आत्मा दोनों से बहुत ऊर्जावान थे; वह दिन भर काम करते और रात भर ईश्वर से प्रार्थना करते थे, और केवल कभी-कभार ही खुद को सोने देते थे। जब उनकी आँखें भारी हो जातीं और उन्हें नींद आने की तीव्र इच्छा होती, तो वे अपने आप से कहते: 'दूर हो जा, दुष्ट दास, और मेरे साथ मत रह!'

और भले ही, उसके बाद, वह बैठते हुए थोड़ी देर के लिए झपकी ले लेता, वह जल्द ही खुद को जगाता, उठता, और ईश्वर से प्रार्थना करता। वह अक्सर अपने शिष्यों से कहा करते थे:

'एक भिक्षु को एक घंटे से अधिक नहीं सोना चाहिए।'

प्रत्येक रविवार की पूर्व संध्या पर, वह शनिवार की शाम ही प्रार्थना में खड़ा हो जाता था, अपने हाथ ऊपर उठाए हुए; वह सूर्य की ओर पीठ किए खड़ा रहता था और तब तक ऐसे ही रहता था जब तक कि अगली सुबह सूर्य उसकी ओर चमकने न लगे।

धन्य वृद्ध हमेशा हस्तशिल्प में लगे रहते थे: विशेष रूप से, वे खजूर की पत्तियों से टोकरियाँ और चटाइयाँ बुनते थे, और जिस पानी में वे पत्तियों को भिगोते थे, उसे पूरे एक साल तक नहीं बदलते थे; वे केवल समय-समय पर थोड़ा पानी मिला देते थे। इस वजह से, कुछ भाइयों ने उनसे कहा:

'आदरणीय पिताजी, आप खजूर की पत्तियों को भिगोने वाला पानी क्यों नहीं बदलते? क्या आप यह नहीं देखते कि वह पानी आपकी कोठरी में कितनी बदबू फैला देता है?'

सम्माननीय पिता ने उनसे उत्तर दिया:

'जिस दुनिया में मैं रहता था, वहाँ मुझे जो धूप और सुगंधित इत्रों की महक आती थी, उसकी जगह अब मुझे यह बदबू लेनी पड़ती है, ताकि न्याय के दिन प्रभु मुझे गेहेन्ना (नरक) की असहनीय बदबू से मुक्त कर दें।'

कभी-कभी दुष्टात्माएँ आदरणीय पिता को प्रलोभित करने का साहस करती थीं; और उनकी देखभाल करने वाला भाई, जब उनकी कोठरी के पास आता, तो ऐसे अवसरों पर वृद्ध को ईश्वर से पुकारते हुए सुनता: 'हे प्रभु, मुझे न छोड़िए! यद्यपि मैंने आपके सामने कोई अच्छा काम नहीं किया है, परन्तु अपनी कृपा से अब मुझे एक अच्छी शुरुआत करने में मदद कीजिए!'

एक बार ऐसा हुआ कि पूजनीय आर्सेनियस गंभीर रूप से बीमार पड़ गए। स्केटे के भिक्षु उनके पास आए, उन्हें उठाया और उनकी देखभाल के लिए चर्च से जुड़ी चिकित्सालय में ले गए। उन्होंने उन्हें एक बिस्तर पर लिटाया जो अच्छी तरह से बनाया गया था और जिसका सिरहाना नरम था। एक भाई माननीय फादर से मिलने आया। माननीय फादर को नरम बिस्तर पर लेटे हुए देखकर, उस भाई के मन में लालच आया और उसने कहा:

'क्या ये फादर आर्सेनियस हैं? और क्या वे सचमुच एक नरम बिस्तर पर लेटे हैं?'

यह सुनकर, एक वरिष्ठ ने उस भाई को पास बुलाया और उससे अकेले में पूछा:

'भाई, जब तुम संसार में थे, तो तुम क्या काम करते थे, और तुम्हारा जीवन कैसा था?'

उसने उत्तर दिया:

'मैं एक चरवाहा था और मैंने अपना जीवन अनेक परिश्रमों और दुःखों में बिताया।'

फिर पुरोहित ने उससे फिर पूछा:

– और अब आप कैसे जीते हैं?

उसने उत्तर दिया:

'अब मैं शांति से रहता हूँ, मेरे पास मेरी ज़रूरत की हर चीज़ है, और मुझे कोई चिंता या दुःख नहीं है।'

तब पुरोहित ने उससे कहा:

'देखो, इस मनुष्य को जिसे तुम देखते हो, फादर आर्सेनी: जब वह संसार में था, तो वह राजाओं का पिता था; उसके पास हजारों नौकर थे जो सुंदर वस्त्रों, सुनहरी कमरपट्टियों और सोने के सिक्कों के साथ उसकी सेवा करते थे[3494] ; उसका बिस्तर शानदार ढंग से सजा होता था और उसकी संपत्ति अनगिनत थी; जबकि तुम मवेशियों की देखभाल करते थे और एक भिखारी थे; तुम्हें संसार में वह शांति नहीं मिली जो अब तुम प्राप्त कर रहे हो; तुम संसार के श्रम से विश्राम कर रहे हो, जबकि फादर आर्सेनियस अब संसार में शांति और संतोष जानने के बाद, गरीबी में परिश्रम कर रहे हैं और कष्ट सह रहे हैं।

पुजारी के शब्दों से भावुक होकर, उस भाई ने सिर झुकाया और उससे क्षमा मांगते हुए कहा:

'वास्तव में, आदरणीय फादर, सब कुछ ठीक वैसा ही था जैसा आपने कहा: मैं यहाँ अपनी मेहनत से आराम पाने आया था, जबकि फादर आर्सेनियस आराम भरा जीवन जीने के बाद यहाँ मेहनत करने आए थे।'

यह शिक्षा प्राप्त कर, जो उसकी आत्मा के लिए लाभदायक थी, वह भाई पुरोहित से विदा हो गया।

[3494] हरविनिया एक सोने की माला है जिसे हार के रूप में पहना जाता है।

ऐसा हुआ कि एक बार बर्बरों ने उस भूमि पर आक्रमण कर दिया। सभी संन्यासी आश्रम से शहरों और गांवों में भाग गए; लेकिन आदरणीय अरसेनीयस मरुभूमि छोड़कर शहर नहीं जाना चाहते थे, उन्होंने तर्क दिया: 'यदि प्रभु मेरी रक्षा नहीं करते हैं, तो पृथ्वी पर मेरा जीवित रहना व्यर्थ है।'

बर्बरों ने पूरे मठ को लूट लिया, लेकिन वे पूजनीय आर्सेनियस को नहीं ढूंढ सके, क्योंकि ईश्वर स्वयं ने अपने सेवक को उनसे छिपा दिया था। हालाँकि, अपने मन में विचार करने के बाद, ताकि उन्हें अन्य संतों की प्रशंसा न सुननी पड़े और न ही वे अहंकार के आगे झुकें, पूज्य पिता उसी रास्ते पर चल पड़े जिससे अन्य संत भाग गए थे। आर्सेनियस आश्रम के उजाड़पन पर जोर-जोर से रोए, और कहा:

'रोम ने संसार को नष्ट कर दिया[3495] , और संन्यासियों ने स्केटे को नष्ट कर दिया।'

जब बर्बर लोग स्केटे से चले गए, तो भिक्षु एक बार फिर वहाँ लौट आए; स्केटे को बहाल करने के बाद, वे अपनी-अपनी कोठरियों में रहने लगे। पूजनीय आर्सेनियस भी उनके साथ अपनी कोठरी में लौट आए।

एक दिन, रोम से आदरणीय के पास एक वसीयत लाई गई, जिसे उनके एक रिश्तेदार, एक बोयार ने लिखा था, जिसने अपनी सारी विशाल संपत्ति आदरणीय को विरासत में दी थी, ताकि वे इसे अपनी इच्छा के अनुसार खर्च कर सकें। हालाँकि, आदरणीय ने वसीयत लेकर उसे फाड़ने ही वाले थे, लेकिन उसे लाने वाले व्यक्ति ने उनसे दस्तावेज़ को नष्ट न करने का अनुरोध किया, यह कहते हुए:

'मैं आपसे विनती करता हूँ, सम्माननीय फादर, इस वसीयत को फाड़ें नहीं, क्योंकि जिन्होंने इसे भेजा है, वे इसका हिसाब मुझसे लेंगे।'

हालाँकि, रेवरेंड ने वसीयत को अछूता ही उसे वापस कर दिया और कहा:

'मैं उससे पहले (दुनिया के लिए) मर गया था; तो फिर वह, हाल ही में मरकर, मुझे, एक मृत व्यक्ति को, अपनी संपत्ति का वारिस क्यों बनाता है?'

और उन्होंने वसीयत लेकर आए दूत को वापस भेज दिया, जो उसे भेजने वालों के पास गया।

रेवरेंड फादर हमेशा एक ही स्थान पर नहीं रहते थे, बल्कि कभी-कभी स्केट मरुभूमि से अधिक एकांत और शांत स्थानों पर चले जाते थे, और उनसे बात करने आने वाले लोगों से दूर हो जाते थे, क्योंकि वे उनकी आंतरिक शांति को भंग करते थे। इस प्रकार वह कुछ समय के लिए बेबीलोन के पास और मेम्फिस शहर के सामने ट्रोगिन में, फिर अलेक्ज़ेंड्रिया के पास कैनोपस में, और कुछ अन्य सुनसान स्थानों में रहा; बाद में वह एक बार फिर से स्केटे लौट आता था, ताकि कोई भी उसके जीवन की प्रकृति को न जान सके।

एक अवसर पर, जब रेवरेंड लोअर इजिप्ट में रह रहे थे, तो वे अपनी कोठरी छोड़कर किसी अन्य स्थान पर जाना चाहते थे, क्योंकि बहुत से लोग उनसे मिलने आते थे और उनके मौन जीवन में खलल डालते थे। अपने साथ कुछ भी न लेते हुए, वे अपने दो शिष्यों, अलेक्ज़ेंडर और ज़ोइलस से कहते हुए अपनी यात्रा पर निकल पड़े:

'तुम, अलेक्ज़ेंडर, यहीं ठहरो, और तुम, ज़ोइलस, मेरे साथ नदी तक चलो और मेरे लिए अलेक्ज़ेंड्रिया जाने वाली कोई नाव ढूंढो। फिर अपने भाई अलेक्ज़ेंडर के पास लौट आओ।'

उनके शिष्य इन शब्दों से बहुत हैरान थे; हालाँकि, उनमें से किसी ने भी महात्मा से यह पूछने की हिम्मत नहीं की, 'आप हमें क्यों छोड़ रहे हैं?'

अलेक्ज़ेंड्रिया पहुँचने के बाद, संत गंभीर रूप से बीमार पड़ गए और कुछ समय तक ऐसे ही रहे। अलेक्ज़ेंडर और ज़ोइलस, जो संत के कक्ष में ही रुके हुए थे, एक-दूसरे से पूछने लगे: क्या उनमें से किसी ने भी अवज्ञा के किसी कार्य से पूजनीय पिता को दुख पहुँचाया था? अपने आप में कोई दोष न पाकर, वे संत के लिए गहरे दुख से भर गए।

जब आदरणीय पिता स्वस्थ हो गए, तो उन्होंने अपने मन में कहा: 'अब मैं अपने शिष्यों के पास जाऊँगा।'

और, उठकर, वह चल पड़ा।

ऐसा हुआ कि वह नदी के पास पहुँच गया और वहाँ उस सड़क पर चल रहे यात्रियों की एक भीड़ से मिला; जब यह हो रहा था, तो एक मिस्र की महिला ने पूज्यनीय के चोगा को छू लिया। लेकिन वह, बुरा मानकर, उसे डाँटते हुए कहने लगा कि एक महिला को भिक्षु के चोगा को नहीं छूना चाहिए। हालाँकि, उस महिला ने उससे कहा:

'यदि तुम एक भिक्षु हो, तो मरुभूमि के पहाड़ों में जाओ।'

[3495] यह संभवतः रोमन सम्राटों द्वारा प्रेरित ईसाइयों के उत्पीड़न को संदर्भित करता है।

वरष्ठि उनके शब्दों से प्रभावति हुए और अक्सर स्वयं से कहते थे, उस महलिा के शब्दों को दोहराते हुए: 'आर्सेनयिस! यदि तुम एक भक्षिु हो, तो पहाड़ों में जाओ और रेगस्तिानों में भटको।'

अंतत; आदरणीय पति उस स्थान पर पहुँचे (जसिे 'द रॉक' कहा जाता था) जहाँ उनके शष्यि रहते थे। अलेक्जेंडर और ज़ोइलस, उन्हें देखकर, उनके पैरों पर गरि पड़े और आनंद के आँसू बहाने लगे। बड़े भाई ने भी उन्हें गले लगाकर रोया। फरि शष्यिों ने बड़े भाई से कहा:

'माननीय पतिाजी, आपका यहाँ से जाना हमें बहुत दुख पहुँचा है, क्योंकि कुछ संतों ने हमें बताया कि यदि उनके शष्यिों ने अपनी अवज्ञा से उन्हें दुखी न कयिा होता, तो बाबा आर्सेनयिस अपनी कुटयिा नहीं छोड़ते।'

लेकनि वृद्ध ने उनसे कहा:

'मेरे बच्चों! मैंने भी सोचा था कि भक्षिु मेरे यहाँ से जाने के बारे में यही कहेंगे; इसीलएि मैं आपके पास लौट आया हूँ। अब भक्षिु मेरे बारे में कह सकते हैं: 'वह कबूतर जो नूह के सन्दूक से बाहर उड़ गया था, अपने पैरों के नीचे कोई ठोस जमीन न पाकर, नूह के पास सन्दूक में लौट आया' (देखें उत्पत्ति 8:8-9)।

आदरणीय के शष्यि इन शब्दों से सांत्वना पा गए और तब से संत की मृत्यु तक उनसे अवभिाज्य बने रहे।

एक दनि, जब माननीय पति अपनी कोठरी में थे, उन्हें ईश्वर से एक प्रकटवाणी प्राप्त हुई। उन्होंने एक आवाज़ सुनी जो कह रही थी: 'अपनी कोठरी से बाहर आओ, और मैं तुम्हें मानवता के मार्ग दखिाऊँगा।'

वरष्ठि, अपनी कोठरी से बाहर नकिलने के बाद, मानो एक प्रकार के आनंद से भर गए। उन्होंने परमेश्वर के एक स्वर्गदूत को देखा, जसिने उनका हाथ पकड़कर उन्हें एक नश्चिति स्थान पर ले गया; वहाँ स्वर्गदूत ने उन्हें एक साँवले रंग का आदमी दखिाया जो लकड़ी काट रहा था और उसने बहुत सारी लकड़ी तैयार कर रखी थी; तब वह आदमी अपनी काटी हुई लकड़ी को कंधों पर लादकर ले जाना चाहता था, लेकनि वह ऐसा नहीं कर सका क्योंकि वह बहुत अधकि थी। हालाँकि, गट्ठी से कुछ लकड़ी हटाने के बजाय , वह आदमी और अधकि लकड़ी काटने लगा और उसे उठाने की फरि से कोशशि करने लगा, लेकनि अब वह ऐसा करने में पूरी तरह से असमर्थ था; फरि भी वह और अधकि लकड़ी काटता रहा, जसिसे उसका बोझ और भी बढ़ता गया। तब परमेश्वर के स्वर्गदूत ने पादरी को एक और स्थान पर एक आदमी दखिाया जो एक कुएँ के पास खड़ा होकर एक टपकती हुई पात्र में पानी भर रहा था; पानी पात्र से बहकर कुएँ में वापस जा रहा था, फरि भी पानी भरने वाला आदमी व्यर्थ ही परश्रिम करता रहा। अंत में, देवदूत ने रेवरेंड फादर को एक नया दर्शन दखिाया: आर्सेनयिस ने एक चर्च देखा जसिके दरवाज़े खुले हुए थे और दो घुड़सवार थे, जनिमें से प्रत्येक ने अपने हाथों में एक लकड़ी का गट्ठा पकड़ रखा था; ये घुड़सवार चर्च के दरवाजों से होकर गुजरना चाहते थे, लेकनि वे नहीं कर सके, क्योंकि लकड़यिाँ रास्ते में पड़ी थीं; एक घुड़सवार दूसरे को रास्ते में लकड़ी रखने से रोक रहा था; एक-दूसरे को रास्ता देने के बजाय, घुड़सवार एक ही समय में दरवाजे से गुजरने की कोशशि कर रहे थे और इसलएि वे दरवाजे के पास ही इधर-उधर भटकते रहे और चर्च के अंदर बलि्कुल भी नहीं जा सके।

इन सब के बाद, वृद्ध ने स्वर्गदूत से पूछा:

'यह दृष्टि क्या दर्शाती है?'

देवदूत ने उत्तर दयिा:

'दोनों व्यक्ति, जनिके हाथों में लकड़ी का एक-एक टुकड़ा है, सदाचारी लेकनि अहंकारी लोगों का प्रतीक हैं जो एक-दूसरे के सामने वनिम्र होने को तैयार नहीं हैं; वे स्वर्ग के राज्य में प्रवेश नहीं करेंगे, बल्कि अपने अहंकार के कारण इसके बाहर ही रहेंगे, जो उनके सभी गुणों को नष्ट कर देगा।' जसि आदमी ने पानी खींचकर एक टपकती हुई पात्र में डाल रहा था, वह उस आदमी का प्रतीक है जो कुछ अच्छे कर्म तो करता है लेकनि अपने पापों को नहीं छोड़ता; यह आदमी व्यर्थ में परश्रिम करता है, क्योंकि अपने पापों से वह उस पुरस्कार को नष्ट कर देता है जो उसे ईश्वर से मलि सकता था। जो काला आदमी लकड़ी काट रहा था और अपने ऊपर लगातार बढ़ते हुए बोझ लाद रहा था, वह उस आदमी की तरह है जो कई पापों में लप्ति रहता है और पश्चाताप करने के बजाय, अपने पापों में पाप जोड़ता जाता है।

आदरणीय आर्सेनयिस ने अपने शष्यिों के नरि्माण के लएि यह दृष्टि सुनाई, और अपनी वनिम्रता में, उन्होंने उनसे कहा कि उन्होंने यह सब स्वयं नहीं देखा था, बल्कि केवल कसिी अन्य वरष्ठि से इसके बारे में सुना था।

इसके अलावा, आर्सेनयिस ने अपने शष्यिों को मसीह के दव्यि रहस्यों के बारे में एक भयानक रहस्योद्घाटन के बारे में बताया, जो अन्य मरुभूमि के पतिाओं को दयिा गया था।

अर्सेनियस ने कहा, 'स्केटे में एक वृद्ध संन्यासी थे जो बहुत कठोर जीवन जीते थे और सभी संतों के बीच अपने गुणों के लिए प्रसिद्ध थे। यह वृद्ध, अपनी सादगी के कारण (उसे पवित्र धर्मग्रंथों की शिक्षा नहीं दी गई थी), मसीह के सबसे पवित्र रहस्यों के बारे में भटक गया, यह सोचकर कि जो रोटी हम पवित्र वेदी से प्राप्त करते हैं, और जिस प्याले से हम भाग लेते हैं, वे मसीह का सच्चा शरीर और रक्त नहीं हैं, परन्तु केवल मसीह के शरीर और रक्त का एक सादृश्य मात्र है। दो अनुभवी वृद्धों को इस बात की जानकारी हुई; यह समझते हुए कि उस वृद्ध ने यह विचार द्वेष से नहीं, बल्कि अपनी सादगी और अज्ञानता के कारण धारण किया था, उन्होंने उसे सही मार्ग पर लाने का निश्चय किया। इस उद्देश्य के लिए, वे उसके पास गए और आत्मा के लिए लाभदायक विषयों पर उससे विस्तार से वार्तालाप करने के बाद, अन्य बातों के अलावा, निम्नलिखित कहा:

'हमने सुना है, आदरणीय पिताजी, एक ऐसे भाई के बारे में जो पवित्र वेदी से हमें प्राप्त होने वाले रोटी और जिस प्याले से हम पीते हैं, उनके संबंध में एक गलत धारणा रखता है—कि ये मसीह की सच्ची देह और रक्त नहीं हैं, बल्कि केवल उनकी एक प्रतिमा मात्र हैं।'

वरिष्ठ ने उनसे उत्तर दिया:

'मेरा यही मानना है।'

उन्होंने उसे मनाने की कोशिश करते हुए कहा:

'ऐसे मत सोचिए, आदरणीय पिता, बल्कि उसी प्रकार विश्वास कीजिए जैसा पवित्र, कैथोलिक और प्रेरितिक चर्च हमें सिखाती है। हम विश्वास करते हैं और स्वीकार करते हैं कि रोटी मसीह का वास्तविक शरीर है, और प्याले में मदिरा उनका वास्तविक रक्त है, न कि केवल शरीर और रक्त का प्रतीक।'

तब उन पादरियों ने अपने शब्दों की सच्चाई के प्रमाण के रूप में पवित्र शास्त्र और चर्च के पिता तथा शिक्षकों की रचनाओं से अनेक प्रमाण उद्धृत किए, और उस वृद्ध व्यक्ति को उसका झूठा विश्वास त्यागने के लिए मनाने का प्रयास किया। लेकिन उसने, अपने हृदय की सादगी में, उनसे कहा:

'जब तक मैं स्वयं इस कृत्य से आश्वस्त नहीं हो जाता, मैं विश्वास नहीं करूँगा।'

तब बुजुर्गों ने उससे कहा:

'हम तीनों इस बारे में ईश्वर से प्रार्थना करें, कि वह पूरे सप्ताह का उपवास करने के बाद हमें यह रहस्य प्रकट करें। हमें विश्वास है कि वह हमें यह रहस्य प्रकट करेंगे, क्योंकि वह आपके कई वर्षों के श्रम को व्यर्थ नहीं जाने देंगे।'

बुजुर्ग ने स्नेहपूर्वक उनकी सलाह सुनी, और वे सभी पूरे सप्ताह के लिए अपने-अपने कोठरी में अलग-थलग हो गए, अपना समय उपवास और प्रार्थना में बिताते हुए। बुजुर्ग ने ईश्वर से इस प्रकार प्रार्थना की:

'हे प्रभु! आप जानते हैं कि मैं यह द्वेष से नहीं सोचता, परन्तु अपने साधारण मन से मैं इस रहस्य को नहीं समझ पाता। अपनी कृपा से मुझे सत्य का ज्ञान दीजिए, ताकि मैं अविश्वास में न भटक जाऊँ।'

हालाँकि, अन्य दो बुजुर्गों ने अपनी प्रार्थना में कहा:

'हे प्रभु! हमारे भाई पर अपना महान रहस्य प्रकट करें, ताकि वह इसमें अविश्वासी न रहे और इस प्रकार अपने श्रम और सद्गुणों को व्यर्थ न कर दे।'

ईश्वर ने अपने सेवकों की सुनी और इस प्रकार उन्हें वह अद्भुत रहस्य प्रकट किया।

बुजुर्गों के उपवास और प्रार्थना शुरू किए एक सप्ताह बीत चुका था, और जब रविवार आया, तो वे तीनों बुजुर्ग दिव्य अनुष्ठान में शामिल होने के लिए चर्च गए; चर्च में वे एक साथ खड़े थे। प्रभु ने उनकी आध्यात्मिक आँखें खोल दीं। जब पवित्र Communion के लिए रोटी तैयार की गई, तो उन्होंने रोटी की जगह एक छोटे बच्चे को देखा। जैसे ही पुरोहित ने रोटी तोड़ने के लिए अपना हाथ बढ़ाया, बुजुर्गों ने स्वर्ग से उतरते हुए परमेश्वर के एक स्वर्गदूत को देखा, जिसके हाथ में एक चाकू था। शिशु को मारने के बाद, स्वर्गदूत ने खून को प्याले में डाल दिया। जैसे ही पुरोहित ने रोटी तोड़ी, स्वर्गदूत ने शरीर को टुकड़ों में फाड़ दिया।

इस बीच, संप्रदाय का समय आ गया था। अन्य भाइयों के साथ, अविश्वासी भाई संप्रदाय ग्रहण करने के लिए आगे बढ़ा। अपने हाथों में मांस का एक टुकड़ा लेते हुए[3496] , जो कच्चा और खून से लथपथ था, और प्याले में खून देखकर, इस वृद्ध ने भय से पुकारा:

'हे प्रभु, मैं विश्वास करता हूँ कि यह रोटी आपका शरीर है, और यह मदिरा आपका रक्त है।'

तत्क्षण मांस रोटी में और रक्त मदिरा में बदल गया।

तब उस वृद्ध ने बड़ी श्रद्धा और हार्दिक भक्ति के साथ मसीह के पवित्र रहस्यों को ग्रहण किया।

अन्य दो वृद्धों ने उससे कहा:

'मसीह ईश्वर जानते हैं कि मनुष्य कच्चा मांस नहीं खा सकता या खून नहीं पी सकता। इसीलिए वह विश्वासियों को रोटी के रूप में अपना सबसे पवित्र शरीर और शराब के रूप में अपना जीवन-दायक रक्त अर्पित करते हैं।'

तब बुजुर्गों ने इस प्रकट होने के लिए और इस बात के लिए प्रभु का धन्यवाद किया कि उन्होंने उस धर्मनिष्ठ बुजुर्ग को अविश्वास में नष्ट होने नहीं दिया।

एक बार, एक भाई ने आर्सेनियस से पूछा कि आत्मा के लिए क्या लाभदायक है। पूजनीय पिता ने उत्तर दिया:

'यह सुनिश्चित करने के लिए हर संभव सावधानी बरतें कि आप जो कुछ भी अपने मन में सोचते हैं वह ईश्वर को प्रसन्न करे। ऐसा करने से, आप हर पाप पर आसानी से विजय प्राप्त कर लेंगे।'

संत ने यह यह दिखाने के लिए कहा कि सभी पाप और वासनाएँ बुरे विचारों से उत्पन्न होती हैं, जिन्हें हृदय स्वीकार करता है और आनंद के साथ संजोता है; लेकिन जो अपने विचारों पर नज़र रखता है और पापपूर्ण विचारों को दूर भगाता है, वह अपने वासनाओं को बुझा देता है और पापपूर्ण इच्छाओं पर विजय प्राप्त करता है।

एक अन्य अवसर पर, पूज्य पिताजी ने कहा:

'यदि हम सचमुच पूरे मन से परमेश्वर को खोजते हैं, तो वह स्वयं हमारे पास आएंगे और हम उन्हें देखेंगे; और यदि हम एक पवित्र जीवन के द्वारा उन्हें अपने निकट रखते हैं, तो वह हमारे साथ वास करेंगे।'

एक बार एक वृद्ध ने बाबा आर्सेनियस से पूछा:

'मैं क्या करूँ, आदरणीय पिता? मैं इस विचार से छुटकारा नहीं पा सकता कि मैं बूढ़ा हूँ और इसलिए, अपनी वृद्धावस्था के कारण, न तो उपवास कर सकता हूँ और न ही मठवासी तपस्या कर सकता हूँ। अत; मुझे ऐसा लगता है कि मुझे बीमारों से मिलने जाना चाहिए, क्योंकि यह ईसाई प्रेम का एक कार्य है।'

रेवरेंड फादर ने यह महसूस करते हुए कि यह एक शैतानी प्रलोभन था, बुजुर्ग से कहा:

– खाओ, पियो, सोओ, लेकिन अपनी कोठरी मत छोड़ो।

रेवरेंड फादर ने यह इसलिए कहा क्योंकि वे जानते थे कि जो भिक्षु अपनी कोठरी छोड़ता है और सांसारिक बस्तियों के पास जाता है, उसे शत्रु से कई प्रलोभनों और जालों का सामना करना पड़ता है; और वास्तव में, जिसने संसार के लिए मरा है, उसे उचित कारण के बिना मठ नहीं छोड़ना चाहिए, ठीक वैसे ही जैसे एक मृत व्यक्ति अपनी कब्र नहीं छोड़ता। जो भिक्षु अपनी इच्छा से मठ छोड़ता है, वह वास्तव में मृत हो जाता है, क्योंकि वह अपनी आत्मा में मर जाता है।

आदरणीय फादर ने यह भी कहा:

'ऐसे बहुत से लोग हैं जो हर तरह से शारीरिक शुद्धता बनाए रखने का प्रयास करते हैं और, इस उद्देश्य के लिए, उपवास, जागरण और कई कष्टों के द्वारा अपने शरीर को कष्ट देते हैं; लेकिन ऐसे बहुत कम हैं जो अपने आत्मा की रक्षा अहंकार, घमंड, लालच, ईर्ष्या, भाइयों से द्वेष, क्रोध, द्वेष और निंदा के पापों से लगन से करते हैं। ऐसे लोग शरीर से तो शुद्ध होते हैं, पर उनकी आत्मा अशुद्ध होती है; वे बाहरी रूप से सुसज्जित कब्रों के समान हैं, पर भीतर से बदबूदार

[3496] इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं होनी चाहिए कि भाइयों ने मसीह के पवित्र शरीर को अपने हाथों में लिया; ईसाई धर्म की शुरुआती शताब्दियों में, यहां तक कि अनभिज्ञ लोगों को भी पवित्र उपहारों को अपने हाथों में लेने और उन्हें घर ले जाने या अपनी यात्राओं पर साथ ले जाने की अनुमति थी; लेकिन बाद में चर्च के धर्मगुरुओं और शिक्षकों ने निम्नलिखित कारण से इस प्रथा पर रोक लगा दी: कॉन्स्टेंटिनोपल में संत जॉन क्रिसोस्टोम के धर्मगुरुत्व के दौरान, एक महिला ने पवित्र उपहारों को घर ले जाकर उन्हें जादू-टोने के लिए कुछ औषधियों के साथ मिला दिया। यह जानने पर, संत जॉन क्राइसोस्टोम ने सभी चर्चों को एक आदेश जारी किया कि मसीह के पवित्र शरीर को मसीहियों को सौंपा न जाए, बल्कि विश्वासियों को कलश से दिव्य रक्त के साथ दिया जाए। – रोस्तोव के संत डेमेट्रियस, आदरणीय थिओक्टिस्टा के जीवन के वृत्तांत में, 9 नवंबर के अंतर्गत इस बारे में बात करते हैं।

हड्डियों से भरे होते हैं। धन्य है वह जो अपने शरीर और अपनी आत्मा दोनों को अशुद्धि से बचाने का प्रयास करता है; सच्चे अर्थ में धन्य हैं हृदय से शुद्ध लोग (न कि केवल शरीर से), क्योंकि वे परमेश्वर को देखेंगे।

एक भाई ने रेवरेंड फादर से कहा:

'रेवरेंड फादर! मैंने कई किताबें और भजन-संग्रह पढ़े हैं और मैं उन्हें हार्दिक भक्ति के साथ पढ़ना चाहता हूँ, लेकिन मुझमें वह भक्ति नहीं है क्योंकि मैं पवित्र धर्मग्रंथ की शक्ति को नहीं समझता, और मैं इस बात पर गहराई से दुखी हूँ।'

रेवरेंड फादर ने उत्तर दिया:

'मेरे बच्चे! तुम्हें परमेश्वर के वचन को पढ़ने का अभ्यास लगातार करना चाहिए, भले ही तुम उसकी शक्ति को न समझो और उससे प्रभावित न होओ।' मैंने अबा पिमेन और अन्य पादरियों को कहते सुना है कि साँपों को बहलाने वाले स्वयं अपने बोले हुए शब्दों को नहीं समझते; फिर भी साँप, उनके शब्द सुनकर, वश में हो जाते हैं, मानो वे उन्हें समझ गए हों, और बिना किसी बाधा के अपने आप को उनके हाथों में सौंप देते हैं। हम भी ऐसा ही कर सकते हैं, भले ही हम पवित्र शास्त्र की शक्ति को न समझते हों। क्योंकि जब हमारे होठों पर पवित्र शास्त्र के वचन होते हैं, तो उन्हें सुनकर दुष्टात्माएँ भय से भर जाती हैं और हमसे भाग जाती हैं, क्योंकि वे पवित्र आत्मा के वचनों को सहन नहीं कर सकतीं, जिन्होंने अपने सेवकों, भविष्यद्वक्ताओं और प्रेरितों के द्वारा वचन कहा था।

जब आदरणीय की परमधाम जाने का समय निकट आया, तो उन्होंने अपने शिष्यों से कहा:

'जब मैं मरूँ, तो मेरे लिए कोई स्मरणोत्सव न करना, भोजन के लिए भाइयों को इकट्ठा न करना, बल्कि केवल यह सुनिश्चित करना कि मेरे पापी आत्मा के लिए दिव्य बलिदान अर्पित किया जाए।'

यह सुनकर उनके शिष्य अत्यंत दुखी हुए और रोने लगे। लेकिन पूजनीय पिता ने उनसे कहा:

'रोओ मत, मेरे बच्चों! मेरी विदाई का समय अभी नहीं आया है, हालांकि वह दूर भी नहीं है।'

तब शिष्यों ने उनसे पूछा:

'हम आपको कैसे दफनाएँगे, आदरणीय पिता?'

उन्होंने उत्तर दिया:

'मेरे पैरों में रस्सियाँ बाँधो और मुझे पहाड़ से फेंक दो।'

जब पूजनीय की मृत्यु का समय नजदीक आने लगा, तो वे बहुत रोने लगे और उन्हें बहुत डर सताने लगा। उनके शिष्यों ने उन्हें रोते हुए देखकर पूछा:

'क्या आप भी, आदरणीय पिताजी, मृत्यु से डरते हैं?'

लेकिन उन्होंने उनसे उत्तर दिया:

'वास्तव में, मैंने अपने संपूर्ण मठवासी जीवन में मृत्यु के भय को हमेशा महसूस किया है, उस दिन से जब मैंने मठवासी संकल्प लिए थे।'

तब आदरणीय व्यक्ति मृत्यु की धन्य निद्रा में लीन हो गए, और अपनी धार्मिक आत्मा को अपने प्रभु के हाथों में सौंप दिया, जिनकी उन्होंने अपने पूरे जीवन में इतनी भक्ति से सेवा की थी।

जब बाबा पिमेन को उस पूजनीय की शांतिपूर्ण निधन का समाचार मिला, तो वे रो पड़े और कहा:

'धन्य हैं आप, पिता आर्सेनियस, क्योंकि आपने अपने जीवन भर रोया; इसके लिए आप सदा के लिए आनंदित होंगे। लेकिन जो कोई भी यहाँ अपनी इच्छा से नहीं रोता, वह मृत्यु के बाद यातनाओं के बीच अनिच्छा से रोएगा, फिर भी इस रोने का किसी को कोई लाभ नहीं होगा।'

महान संत आर्सेनियस के बारे में कहा जाता है कि वे अक्सर अपने आप से ये शब्द कहते थे: 'आर्सेनियस! तुम यहाँ क्यों आए? तुम यहाँ आराम के लिए नहीं, बल्कि परिश्रम के लिए आए हो; आलस्य के लिए नहीं, बल्कि तपस्या के लिए। इसलिए प्रयास करो, परिश्रम करो, और आलसी न रहो।'

आदरणीय पिताजी भी अक्सर ये शब्द कहते थे: 'कई बार मुझे अपने मुँह से निकले शब्दों पर पछतावा हुआ है, लेकिन मुझे अपनी चुप्पी पर कभी पछतावा नहीं हुआ।'

अब्बा डैनियल ने पूज्य अर्सेनियस के बारे में बताया कि उन्होंने कभी भी धर्मग्रंथों से किसी से प्रश्न नहीं पूछे, यद्यपि वे ऐसा कर सकते थे, क्योंकि वे धर्मग्रंथों को अच्छी तरह जानते थे। पूज्य ने ऐसा इसलिए किया क्योंकि वे धर्मग्रंथों में अत्यधिक विद्वान प्रतीत नहीं होना चाहते थे; न ही रेवरेंड फादर ने कभी किसी को धर्मोपदेशात्मक पत्र

लखि, क्योंकि वे स्वयं को मसीह के लिए एक साधारण और अज्ञानी व्यक्ति मानते थे[3497] ; वे कभी भी पवित्र स्थल में प्रवेश नहीं करते थे, यद्यपि एक डिकन के रूप में अभिषिक्त होने के कारण उनका ऐसा करने का अधिकार था, बल्कि वे हमेशा साधारण संतों के साथ दिव्य रहस्यों में भाग लेते थे। उन्होंने यह सब अपनी महान विनम्रता के कारण किया। जब भी धन्य आर्सेनियस दिव्य लिटिर्जी के लिए चर्च आते थे, तो वे एक स्तंभ के पीछे खड़े हो जाते थे ताकि न तो वे किसी का चेहरा देख सकें और न ही कोई उन्हें देख सके।

देखने में, आदरणीय पिता एक देवदूत की तरह सुंदर थे; उनके बाल सफेद थे, उनका शरीर सुंदर बनावट का था, वे महान संयम के कारण दुबले थे, और उनकी दाढ़ी उनकी कमर तक आती थी; निरंतर रोने के कारण उनकी आँखें धँसी हुई थीं; वे कद में लंबे थे, लेकिन उम्र के कारण झुके हुए थे। परम पूज्य पिता ने पचास-पाँच वर्ष मठवासी परिश्रम और तपस्या के कार्यों में बिताने के बाद, उपवास और प्रार्थना द्वारा ईश्वर को प्रसन्न करते हुए, अपना देह त्यागा; उन्होंने चालीस वर्ष स्केटा में बिताए; दस वर्षों तक वे मेम्फिस के पास ट्रोगोन नामक स्थान पर रहे; फिर परम पूज्य पिता ने अलेक्जेंड्रिया के पास कैनोपस में तीन वर्ष बिताए; वहाँ से वे एक बार फिर ट्रोगोन लौटे, दो साल वहाँ रहे, और वहीं प्रभु में निद्रित हुए। कुल मिलाकर, रेवरेंड फादर लगभग एक सौ साल तक जीवित रहे[3498] । प्रभु उनकी पवित्र प्रार्थनाओं के द्वारा हमें भी पापों की क्षमा और हमारे प्रभु मसीह के साथ अनंत जीवन प्रदान करें, जिनका महिमा पिता और पवित्र आत्मा के साथ युगानुयुग हो। आमीन।

ट्रोपारियन, स्वर 8:

आपने अपने आँसुओं की धाराओं से उजाड़ रेगिस्तान को उपजाऊ बनाया, और अपनी गहरी आहों की गहराइयों से, सौ-सौ परिश्रमों के द्वारा, आपने फल उत्पन्न किए; और आप संसार के लिए एक दीपक थे, जो चमत्कारों से जगमगाते थे, हे हमारे पिता आर्सेनियस। हमारे ईश्वर मसीह से प्रार्थना करें कि हमारी आत्माओं का उद्धार हो।

कॉन्टाकियन, स्वर 3:

रोम से आप महान सूर्य के समान प्रकाशित हुए, और हे अति धन्य, आप राजसी नगर तक पहुँचे, उसे अपने वचनों और कर्मों से प्रकाशित करते हुए, अज्ञानता के हर कुहासे को दूर करते हुए। इसी कारण हम आपको, संतों के गौरव, आदरणीय आर्सेनियस, सम्मानित करते हैं।

संत जॉन प्रेरित और सुसमाचार प्रचारक, धर्मशास्त्री की स्मृति

8 मई को स्मरणोत्सव

इस पवित्र प्रेरित और सुसमाचार प्रचारक—योहन द थियोलोजियन, मसीह के विश्वासपात्र, कुंवारे और प्रिय शिष्य—की सम्माननीय निधि (स्वर्गवास) का पर्व छब्बीस सितंबर को मनाया जाता है; उनका जीवन भी इसी तिथि के अंतर्गत दर्ज है। किन्तु, आज के दिन हम उनके पवित्र अवशेषों का स्मरण करते हैं, जिनसे उनके मकबरे से चंगाई की शक्ति उत्सर्जित हुई।

[3497] आदरणीय आर्सेनियस के बारे में अब केवल कुछ कहावतें और भिक्षुओं के लिए निर्देश ही बचे हैं, जैसे कि ऊपर उद्धृत दो कहावतें, जिन्हें प्राचीन पैट्रिकॉन और प्राचीन पिताओं - मरुभूमि के पिताओं - द्वारा कही गई कहावतों के संग्रह में संरक्षित किया गया है।

[3498] आदरणीय आर्सेनियस के जीवन और गतिविधियों को कालानुक्रमिक रूप से इस प्रकार सारांशित किया जा सकता है: उनका जन्म 354 में हुआ था; 29 वर्ष की आयु में - 383 में दरबार में प्रवेश मिला; 11 वर्षों तक - 394 तक दरबार में रहे; 40 वर्ष स्केटे रेगिस्तान में बिताए - 434 तक; वे 10 साल तक ट्रोगनि (या ट्रोन) में रहे, 3 साल कैनॉप्स में बिताए, आखिरी दो साल फिर से ट्रोगनि में रहे, और 449 या 450 की शुरुआत में अपने 95वें वर्ष में उनकी मृत्यु हो गई।

जब संत योहन द थियोलोजयिन सौ वर्ष के हो गए, और मसीह के सुसमाचार के प्रचार में बहुत परश्रिम कर चुके थे, तो वे एफेस शहर[3499] से अपने सात शष्यिों के साथ नकिल गए और उन्होंने उन्हें अपने लएि एक क्रूस के आकार की कब्र खोदने का नर्दिेश दयिा, जसिमें वे जीवति रहते हुए ही लेटकर मरने के लएि तैयार हो गए (जैसा कि उनके जीवनचरति में वर्णति है)। प्रेरति की मृत्यु के बाद, एफ़ेसुस शहर में रहने वाले ईसाइयों ने उनकी कब्र खोद दी, लेकनि उन्हें उनके शरीर का कोई नशिान नहीं मलिा; उनके सम्मानजनक नधिन पर शोक मनाने के बाद, वे शहर लौट आए और उसके बाद से उन्होंने अक्सर प्रेरति की कब्र का दौरा कयिा, जहाँ उन्होंने ईश्वर से प्रार्थना की, और ईश्वर के समक्ष संत जॉन द थियोलोजयिन की मदद और मध्यस्थता का आह्वान कयिा। इसके अलावा, हर साल इस दनि और महीने को, प्रेरति की कब्र से एक प्रकार की महीन धूल नकिलती थी, जो चंगाई करती थी[3500] । श्रद्धालु इस धूल को इकट्ठा करते थे और इसका उपयोग वभिन्नि प्रकार के रोगों और बीमारयिों को ठीक करने के लएि करते थे। इसी कारण, इस दनि, ठीक सतिंबर के महीने की तरह, वश्विासयिों के बीच यह प्रथा बन गई है कि वे इस महान संत की स्तुति और महमिा भजनों[3501] के साथ करें—जो सभी अन्य संतों से बढ़कर परमेश्वर के प्रयि हैं। उनकी प्रार्थनाओं के द्वारा, प्रभु हमें हमारी आध्यात्मकि और शारीरकि व्याधयिों से चंगा करें, और हम भी हमारे ईश्वर मसीह द्वारा योग्य और प्रयि समझे जाएँ।

22 मई

9 मई (पुराना तरीका)

पैगंबर सेंट यशायाह का जीवन

9 मई को स्मरणोत्सव

संत यशायाह की भवष्यिवाणी की सेवा का काल (हब्रिू में, उनका नाम 'येशुआ-यहोवा' उच्चारति होता है और इसका अर्थ है 'यहोवा का उद्धार', यानी प्रभु से प्राप्त उद्धार) यहूदी लोगों के जीवन में एक कठनि समय था: इस महान भवष्यिवक्ता के दनिों में, इस्राएल का राज्य अस्तत्वि में नहीं रहा, जबकि यहूदा का राज्य बेबीलोन के कैद के अपने अंतमि वर्ष जी रहा था। यह दुखद भाग्य—पैगन (मूर्तपिूजक) राजाओं के कठोर शासन के अधीन 'चुने हुए लोगों' का दमन—भगवान के प्रति आज्ञाकारति से उनके वचिलन के लएि प्रभु की ओर से एक दंड था, क्योंकि वे अन्याय और मूर्तपिूजा में और गहराई तक डूब रहे थे। परमेश्वर की वाचा से भटकना इज़राइल के राज्य में वशिेष रूप से बहुत अधकि था, और इसी कारण उसे एक त्वरति दंड भुगतना पड़ा; 'हालांकि यहूदा के राज्य में, समय-समय पर एक बेहतर भवष्यि की आशा की करिण चमकती रही', और यदि यहूदयिा में ईश्वर के प्रति पवत्रि उत्साह की ज्वाला पूरी तरह से बुझ नहीं गई थी और प्रभु इसे ठीक करने के लएि नर्धिारति दंड में अभी भी देरी कर रहे थे, तो यहूदयिा का साम्राज्य इसका श्रेय मुख्य रूप से संत यशायाह की भवष्यिवाणी संबंधी सेवा को देता है।

पवत्रि भवष्यिवक्ता यशायाह, जो बन्यिामीन के वंशज थे, का जन्म लगभग 760 ईसा पूर्व हुआ था; वे आमोस के पुत्र थे, जनिके बारे में पवत्रि धर्मग्रंथों में कुछ भी दर्ज नहीं है और जन्हिें यहूदी परंपरा राजा अमाज्याह के भाई आमोस के रूप में पहचानती है। संत यशायाह का स्थायी नविास यरूशलेम था - यहूदा के राज्य की राजधानी। भवष्यिवक्ता का सचेत बचपन और कशिोरावस्था बुद्धमिान और दयालु राजा उज्जीय के गौरवशाली शासन के साथ मेल खाता था; इस शासन ने नस्सिंदेह भवष्यि के भवष्यिवक्ता की आत्मा पर एक लाभकारी धार्मकि और राजनीतकि प्रभाव डाला। संत यशायाह के

[3499] एफ़सिुस एशयिा माइनर में, ईजयिन सागर के तट पर स्थति था; यह अपने व्यापक व्यापार के लएि प्रसद्धि था और प्राचीन काल में वज्ञिान और कला के प्रमुख केंद्रों में से एक था। वर्तमान में, इस कभी-प्रसद्धि शहर के केवल खंडहर ही बचे हैं।

[3500] संत ऑगस्टीन और टूर के ग्रेगरी इस धूल या मन्ना के बारे में बात करते हैं। 12वीं सदी के एक रूसी तीर्थयात्री, मठाधीश डैनयिल, ने भी जॉन द थियोलोजयिन की कब्र से एक टुकड़े की खोज का उल्लेख कयिा है।

[3501] सनिई सुसमाचारों में, इस पर्व को ροδισμος, यानी 'गुलाब पर्व' कहा जाता है; ऐसा माना जाता है कि स्वयं मन्ना, जो जॉन द थियोलोजयिन की कब्र से नकिला था, उसे ροδις – गुलाब का लेप, गुलाब का पाउडर कहा जाता था; लेकनि 'गुलाब का पर्व' को गुलाबों के उपयोग वाले उत्सव के रूप में समझना अधकि सटीक है, ठीक वैसे ही जैसे हम त्रत्वि रवविार (Trinity Sunday) पर फूलों का उपयोग करते हैं।

युवा दनिों के शुरुआती वर्षों के बारे में वास्तव में कुछ भी ज्ञात नहीं है, लेकनि प्रभु की महमिा का उनके सामने प्रकट होना और प्रभु द्वारा उन्हें एक महान मंत्रालय के लिए बुलाना, उनके जीवन के उस चरण में भी भवषि्यवक्ता की धार्मकिता का अवविादनीय प्रमाण प्रदान करते हैं; उनके भवषि्यवाणी संबंधी वचन भी इसकी गवाही देते हैं, जो उनके लोगों की पवत्रि पुस्तकों का उनका उत्कृष्ट ज्ञान प्रकट करते हैं; यह स्पष्ट है कि कम उम्र से ही संत यशायाह को परमेश्वर के कानून की शकि्षा दी गई थी। एक धार्मकि व्यक्ति के रूप में, उन्होंने अपने लिए एक ईश्वर-भयभीत पत्नी ली, जसिसे उनके दो पुत्र हुए; यह उनकी पत्नी के बारे में ज्ञात है कि वह भी एक भवषि्यवक्ता महलिा थीं (यशा. 7:3, 8:3, 8:18)।

संत यशायाह को राजा उज्जीय की मृत्यु के वर्ष (ईसा पूर्व 737 में) में एक वशिेष दर्शन के माध्यम से अपनी भवषि्यवाणी की सेवा के लिए बुलाया गया था। एक दनि वह मंदरि में दैवीय सेवा में शामलि थे; उनकी आँखों के सामने पुरोहतिों का आँगन और पवत्रि स्थान था। पवत्रि स्थान की ओर प्रार्थनापूर्वक देखते हुए, संत यशायाह ने अचानक देखा कि मंदरि का पर्दा फटने लगा; उनकी आध्यात्मकि आँखों के सामने, परम पवत्रि स्थान का भीतरी भाग प्रकट हो गया; फरि उस रहस्यमय परम पवत्रि स्थान को छपिाने वाला पर्दा गायब हो गया, और चकति तथा अभभिूत भवषि्यवक्ता ने स्वर्ग और पृथ्वी के प्रभु का एक गंभीर दर्शन देखा, जो 'एक ऊँचे और उत्तम सहिासन पर वरिाजमान' थे – मानो स्वर्ग और पृथ्वी के बीच खड़े हों; ईश्वर के राजसी वस्त्रों का आँचल मंदरि में भर गया। प्रभु के चारों ओर 'सैराफमि' खड़े थे; प्रत्येक के छह-छह पंख थे: दो-दो से उन्होंने अपना मुँह ढका, दो-दो से अपने पैर ढके, और दो से वे उड़ते थे। और वे एक-दूसरे को पुकार कर कहने लगे: 'सेनाओं का यहोवा पवत्रि, पवत्रि, पवत्रि है। सारी पृथ्वी उसकी महमिा से भरपूर है!'[3502] सेराफमि की गर्जन-सी स्तुति से, 'दरवाज़ों के खंभे हलि गए और मंदरि धुएँ से भर गया'। संत यशायाह भय से भर गए और आतंकति होकर पुकार उठे:

'हाय, मैं बर्बाद हो गया! क्योंकि मैं अशुद्ध होंठों वाला मनुष्य हूँ, और मैं अशुद्ध होंठों वाले लोगों के बीच रहता हूँ[3503] , और मेरी आँखों ने राजा, सेनाओं के प्रभु को देखा है[3504] ।'

तब सेराफमि में से एक उड़कर उस व्याकुल भवषि्यवक्ता के पास आया, जसिके हाथ में वेदी से चमिटे से उठाया हुआ एक जलता हुआ कोयला था—अर्थात्, जैसा कि संत बेसलि द ग्रेट बताते हैं, 'स्वर्गीय वेदी' से। उसने भवषि्यवक्ता के होठों को छूते हुए कहा:

'देख, इसने तेरे होठों को छू लिया है; तेरा अधर्म दूर हो गया, और तेरा पाप क्षमा हो गया।'

तत्पश्चात, भवषि्यवक्ता ने प्रभु की रहस्यमयी आवाज़ सुनी, जो पूछ रही थी:

'मैं किसे भेजूँ? और हमारी ओर से कौन जाएगा?'[3505]

पवत्रि दृढ़ वशि्वास से भरकर, संत यशायाह आगे बढ़े, और उन्होंने 'हठी' यहूदी लोगों को परमेश्वर की इच्छा का प्रचार करने का जमि्मेदार और भारी दायत्वि स्वयं लेने की अपनी इच्छा व्यक्त की:

'मैं यहाँ हूँ; मुझे भेजिए,' उन्होंने कहा।

प्रभु ने संत यशायाह की पेशकश को अस्वीकार नहीं किया और इन शब्दों में अपनी सहमति व्यक्त की:

'जाकर इस प्रजा से कह: "तुम कानों से सुनोगे पर समझोगे नहीं, और आँखों से देखोगे पर देखोगे नहीं।"' क्योंकि इस जनता का हृदय कठोर हो गया है; उनके कान सुनने के लिए बहरे हो गए हैं, और उन्होंने अपनी आँखें बंद कर ली हैं, कहीं ऐसा न हो कि वे अपनी आँखों से देखें, और अपने हृदय से समझें, और लौट आएं, और मैं उन्हें चंगा करूँ।'

यशायाह ने प्रभु से पूछा कि लोग इतने आध्यात्मकि कठोरपन में कितने समय तक रहेंगे, और उन्हें इस्राएल पर आने वाली आने वाली वपित्तयिों के बारे में एक भयानक रहस्योद्घाटन उत्तर में मलिा:

[3502] सेराफमि की यह स्तुति, जो तीन बार ईश्वरत्व की पवत्रिता की ओर संकेत करती है, को न केवल ईसाइयों द्वारा बल्कि कुछ रब्बयिों द्वारा भी ईश्वरत्व के तीन व्यक्तयिों के बारे में एक प्रकटीकरण के रूप में मान्यता प्राप्त है।

[3503] यहाँ, सेंट यशायाह संभवतः स्वयं और अपने लोगों की तुलना कोढ़ियों से करते हैं, जन्हिें मूसा की व्यवस्था (लैव. 13:45) के अनुसार अपना मुँह ढकना आवश्यक था, और वे 'अशुद्ध, अशुद्ध' की पुकार से राहगीरों को चेतावनी देते थे।

[3504] प्रभु ने मूसा से कहा: *'कोई भी मुझे देखकर जीवति नहीं रह सकता'* (नरि्गमन 33:20)। सबओथ – सेनाओं का प्रभु (स्वर्गीय)।

[3505] यह बहुवचन सर्वनाम – 'हमें' – जो एक ही ईश्वर को संदर्भति करता है, पवत्रि त्रमिूर्ति के रहस्य का भी एक प्रकटीकरण है। तुलना करें उत्पत्ति 4:26, 11:7।

'जब तक नगर सुनसान और नर्जिन न हो जाएँ, और घर लोगहीन न रह जाएँ, और जब तक यह देश पूरी तरह उजाड़ न हो जाए' (यशायाह 6:1–11)

दृष्टि समाप्त हो गई, और परमेश्वर का आत्मा पवित्र यशायाह पर उतर आया, और उसने उसे रहस्यमय और दूर के भविष्य को जैसे वर्तमान हो, प्रकट किया, और अपने ही लोगों के बीच नैतिक पतन के विरुद्ध उसके कठिन संघर्ष में उसे बल दिया।

नबी का हृदय, जो अपने लोगों से प्रेम करता था, उनके राजनीतिक विभाजन से अनभिज्ञ था, और, परमेश्वर की इच्छा के आज्ञाकारी होकर, उसने अपनी भविष्यवाणी की सेवकाई को एक ही राज्य की सीमाओं तक सीमित नहीं रखा। हालाँकि, जब तक संत यशायाह ने अपना भविष्यवाणी का उपदेश दिया, तब तक इस्राएल के राज्य के दिन गिने-चुने थे, और भविष्यवक्ता के पास उत्तरी राज्य की राजधानी सामरीया पर पहले से ही मंडरा रहे महान 'विनाश' की भविष्यवाणी करने के अलावा कुछ भी करने को नहीं बचा था:

– हाय शमारेया, मद्यपान में डूबे एप्रैमियों के गर्व का मुकुट, उसकी सुन्दर शोभा का मुरझाया हुआ फूल, जो मद्य के नशे में चूर लोगों की उपजाऊ घाटी के शिखर पर खड़ा है। देखो, प्रभु का शक्तिशाली और बलवान... उसे शक्ति से जमीन पर पटक देता है। नशे में धुत एप्रैमियों के घमंड का मुकुट पैरों तले रौंदा जाता है। और उसकी सुंदर शोभा के मुरझाए हुए फूल के साथ... वैसा ही होता है जैसा समय से पहले पकी अंजीर के साथ होता है, जिसे कोई भी देखता है, तो तुरंत अपने हाथ में लेता है और निगल जाता है (यशायाह 28:1–4)।

यह दुखद भविष्यवाणी जल्द ही पूरी हो गई। ईसा पूर्व 722 में, सामरिया को अस्सूर के राजा सरगोन ने जीत लिया, और इस्राएल का राज्य हमेशा के लिए समाप्त हो गया[3506] । इस प्रकार इस्राएली, जिन्होंने 'अपने परमेश्वर यहोवा की सारी आज्ञाओं' को त्याग दिया था, उन्हें उसकी उपस्थिति से निकाल दिया गया। 'केवल यहूदा का कुल ही शेष रह गया था' (2 राजा 17:16–18)।

समरिया के पतन के साथ, पवित्र भविष्यवक्ता यशायाह ने अपनी भविष्यवाणी की दृष्टि मुख्य रूप से यहूदा के राज्य की किस्मत पर केंद्रित की, जहाँ अहज़ के सिंहासनारोहण के साथ नैतिक भ्रष्टाचार विशेष रूप से फैल गया था। अमज़ियाह, उज्जीयह और योथाम के शासन के बाद, यहूदा का राज्य, जिसे राज्य शक्ति की काफी हद तक ऊँचाई पर पहुँचाया गया था, अहज़ के पास गया, ताकि अम्मोनी और कई पड़ोसी फ़िलिस्तीनी शहर यहूदियों के अधीन करदाता बन गए। साथ ही, यहूदा में काफी धन-संपत्ति जमा हो गई थी, जिसे दुष्ट आहाज़ के हाथों में ईश्वर के चुने हुए लोगों के लिए अनुचित कार्यों में खर्च किया गया। जन्म से तो इस्राएली लेकिन दिल से एक मूर्तिपूजक, आहाज़ ने यरूशलेम को फिनिसिया और विशेष रूप से अस्सिरिया के मूर्तिपूजक राज्यों की राजधानियों की एक सटीक प्रतिकृति बनाने का लक्ष्य निर्धारित किया। उसने यरूशलेम में सूर्य, चंद्रमा और अन्य खगोलीय पिंडों की पूजा शुरू की (2 राजा 23:5), और वह प्रभु के मंदिर का अपमान करने से भी नहीं हिचकिचाया। प्रभु के भवन में व्यभिचार की देवी अस्तारोथ की एक मूर्ति स्थापित की गई थी, और मंदिर के ठीक पास 'वेश्यालय' थे, जहाँ महिलाएँ अस्तारोथ के लिए वस्त्र बुनती थीं (2 राजा 23:6-7); मंदिर के ठीक प्रवेश द्वार पर सूर्य देवता को समर्पित सफेद घोड़े रखे जाते थे; कुछ कमरों, जो पवित्र पात्रों के भंडारण और अपनी बारी पर सेवा करने वाले याजकों के आवास के लिए बनाए गए थे, उन्हें अस्तबल में बदल दिया गया था (2 राजा 23:11)। स्वयं दहन-बलि का वेदी, जिसे सुलैमान ने बनवाया था, उसे अहाज़ ने पवित्र स्थान के सामने से हटाकर मंदिर के उत्तरी भाग में रख दिया और उसकी जगह एक नई वेदी लगा दी, जो अस्सyrian शैली पर बनाई गई थी (2 राजा 16:14-15)। यरूशलेम के सभी कोनों में वेदियाँ स्थापित की गईं ताकि आने-जाने वाले उन पर धूप जला सकें (2 इतिहास 28:24); यरूशलेम के फाटकों पर और अन्य यहूदी नगरों में यहोवा को बलिदान चढ़ाने के लिए पुराने समय से 'उच्च स्थान' बचे हुए थे (2 राजा 15:4, 35); प्रभु के मंदिर के निर्माण के बाद उनका अस्तित्व पहले ही अवैध हो चुका था (3 राजा 3:2; Deut. 12:13–14). फोनीशियन देवता मोलक के सम्मान में, यरूशलेम की दीवारों के ठीक नीचे, हिन्नोम की घाटी में एक नया

[3506] सर्गन के अपने अभिलेखों में इस घटना के बारे में निम्नलिखित दर्ज है: 'मैंने समरिया शहर पर घेराबंदी की और उसे जीत लिया। मैंने 27,280 नागरिकों को बंदी बना लिया; उनमें से मैंने अपने लिए 50 रथ चुने; इस शहर के लोगों की बाकी सारी संपत्ति मैं अपने सेवकों को लेने दिया। मैंने उन पर स्थायी राज्यपाल नियुक्त किए और उन पर वही कर लगाया जो पहले अदा किया जाता था। बंदी बनाए गए लोगों के स्थान पर, मैंने अपनी जीती हुई भूमि से वहाँ निवासी भेजे और उन पर वही कर लगाया जो मैं अस्सिरियाई लोगों से वसूल करता हूँ।' तुलना करें 2 राजा 17:6। इस्राएली आबादी के अवशेषों के, अस्सिरियाई राजा द्वारा वहाँ जबरदस्ती बसाए गए मूर्तिपूजकों के साथ मिलन से ही, बाद में सामरी के नाम से जाने जाने वाले मिश्रित लोग उत्पन्न हुए।

पवित्र स्थान बनाया गया था; यहाँ मोलक की एक बड़ी कांसे की मूर्ति खड़ी थी; इसके अंदर एक भट्टी थी, और इसके फैले हुए हाथों के नीचे एक वेदी थी जिस पर बच्चों की बलि चढ़ाई जाती थी। आहाज़ ने स्वयं इस अमानवीय मूर्तिपूजा के प्रति उत्साही भक्ति का एक उदाहरण प्रस्तुत किया: उसने अपने ही एक पुत्र को मोलक को बलिदान कर दिया (2 राजा 16:3; 2 इतिहास 28:3)।

इस दुष्टता के लिए, जिसने यहूदा के राज्य को भ्रष्ट कर दिया और प्रभु के धर्मी क्रोध को भड़काया, यहूदा को जल्द ही एक ऐसी सजा मिली जो आने वाली और भी भयानक दैवीय दंडों का अग्रदूत थी। इज़राइल के राजा पेकह और सीरिया के रेज़िन ने अपनी संयुक्त सेनाओं के साथ यहूदा के राज्य पर आक्रमण किया; अपने रास्ते में आने वाली हर चीज़ को लूटते और तबाह करते हुए, वे स्वयं यरूशलेम तक पहुँच गए; इसके अलावा, एदोमियों और फ़िलिस्तीयों ने विद्रोह कर दिया, और अपनी स्वतंत्रता पुनःप्राप्त कर ली। *'इस प्रकार यहोवा ने यहूदा के राजा अहज़ के कारण यहूदा को दीन किया, क्योंकि उसने यहूदा को भटका दिया था और यहोवा के विरुद्ध घोर पाप किया था'* (2 इतिहास 28:19)।

जब मित्र राष्ट्रों के राजा पेकाह और रेज़िन यरूशलेम के फाटकों पर खड़े थे, तो शहर आतंक और भ्रम में डूब गया था, जैसे एक बलवंत हवा से हिलती हुई ओक की घनी छाया (यशायाह 7:2)। लेकिन दयालु प्रभु ने अपने पापी लोगों को नहीं छोड़ा: दंड के साथ-साथ, उन्होंने उन्हें भविष्यवक्ता यशायाह के माध्यम से सांत्वना और एक चेतावनी भेजी। परमेश्वर की आज्ञा से बेलीनचि के मैदान के रास्ते पर, ऊपरी तालाब के जलमार्गों के पास, जब उन्होंने अहज से भेंट की, तो पवित्र यशायाह ने उससे कहा:

'देखो और चैन से रहो; डर न करो, और तुम्हारा मन हताश न हो… (रज़ीन और पेकाह – ये धधकती मशालों के सिरे हैं) तुम्हारे विरुद्ध बुराई की साजिश रच रहे हैं, यह कहते हुए, "हम यहूदा पर चढ़ चलें और वहाँ उथल-पुथल मचा दें, और उस पर कब्ज़ा कर लें"… परन्तु यहोवा परमेश्वर यों कहते हैं: ऐसा न होगा, और न ही यह पूरा होगा।

अहाज़ के अपने शब्दों पर अविश्वास को देखकर, पवित्र यशायाह ने उससे कहा:

'प्रभु अपने परमेश्वर से एक चिन्ह माँग: गहराइयों में या ऊँचाइयों में माँग।'

इस पर अहज ने, प्रभु की परीक्षा करने से हिचकिचाहट दिखाकर अपने अविश्वास को छिपाते हुए, उत्तर दिया:

'मैं पूछूँगा नहीं, और न ही मैं प्रभु की परीक्षा लूँगा।'

तब भविष्यवक्ता, राजा की अविश्वास के लिए उसे फटकारते हुए, मसीहा, मसीह के कुँवारी से होने वाले चमत्कारिक जन्म की ओर संकेत करता है, जो उसके वचनों की पूर्ति की पुष्टि करने वाला एक संकेत है; रेज़िन और पेकाह के निकटवर्ती उन्मूलन की भविष्यवाणी करने के बाद, वह उसी समय अश्शूरियों द्वारा एक भविष्य के, और भी भयानक आक्रमण की भविष्यवाणी करता है:

[3507]– सुनो, हे दाऊद के घराने!... प्रभु स्वयं तुम्हें एक संकेत देते हैं: देखो, एक कुँवारी गर्भधारण करेगी और एक पुत्र को जन्म देगी, और वे उसका नाम इम्मानुएल रखेंगे। वह दूध और शहद खाकर पलेगा; जब तक वह भला और बुरा जानने के योग्य न हो जाए, तब तक जिस देश से तुम डरते हो, उसके दोनों राजा उसे छोड़ देंगे। परन्तु यहोवा तुम्हारे ऊपर, और तेरी प्रजा के ऊपर, और तेरे पिता के घराने के ऊपर ऐसे दिन लाएगा, जो उस समय से नहीं आए जब से एप्रैम यहूदा से अलग हुआ; वह अस्सूर के राजा को लाएगा (यशायाह 7:1–17)।

लेकिन अविश्वासी आहाज़ ने परमेश्वर के बजाय अश्शूर के राजा में अपनी आशा रखने को प्राथमिकता दी, वही राजा जिसके बारे में भविष्यवक्ता ने उसे चेतावनी दी थी। यहूदा पर आक्रमण करने वाले राजाओं से सुरक्षा की तलाश में, आहाज़ ने अश्शूर के राजा तिग्लत-पिलिसर द्वितीय के साथ गठबंधन किया, और ऐसा करते हुए उसने न केवल अपने शाही घर बल्कि मंदिर के भी सभी खजाने उसे सौंप दिए; वह स्वयं दमिश्क जाकर तिग्लथ-पिलिसर को श्रद्धांजलि अर्पित करने गया, और वहाँ उसे उपर्युक्त अश्शूरिया वेदी का खाका मिला। इस समर्पण के इनाम में, अश्शूर के राजा ने सीरिया और फिलिस्तीन के उस हिस्से को लूट लिया जो इस्राएल के राज्य का गठन करता था। जहाँ तक आहाज की बात है, मंदिर को लूटने के बाद, उसने उसके बड़े दरवाजे बंद कर दिए; मंदिर के दीपक बुझ गए; धूप न चढ़ाई गई, और पवित्र स्थान को पूरी तरह से उपेक्षा की स्थिति में छोड़ दिया गया। यहोवा की सच्ची उपासना, जो लगातार बढ़ती हुई घृणित मूर्तिपूजा से विस्थापित हो गई थी, लगभग भुला दी गई थी (2 राजा 16:5–10; 2 इतिहास 28:5–25)।

[3507] सुसमाचार लेखक संत मत्ती, परम पवित्र कुँवारी मरियम से प्रभु यीशु मसीह के जन्म में, पवित्र यशायाह की इस भविष्यवाणी की पूर्ति देखते हैं: *'यह सब इसलिये हुआ कि जो बात प्रभु ने भविष्यवक्ता के द्वारा कही थी, वह पूरी हो, जो कहता है: "देख, एक कुँवारी गर्भधारण करेगी और एक पुत्र जनेगी, और वे उसका नाम इम्मानुएल रखेंगे," जिसका अर्थ है "परमेश्वर हमारे साथ" ।'* (मत्ती 1:22–23)

आहाज़ की मृत्यु के बाद, उसका बीस वर्षीय पुत्र हज़िकयि्याह सहिासन पर बैठा (ईसा पूर्व 728 में), और वह चुने हुए लोगों के सबसे उत्कृष्ट राजाओं में से एक साबति हुआ। हेजेकयि्याह को अपने पति से एक दुखद वरिासत मलि। यहूदा का राज्य, जो अस्सरियि को एक अपमानजनक और वनिाशकारी कर देता था, उन दुराचारों से भी कमजोर हो रहा था जो इसकी आंतरकि संरचना को खोखला कर रहे थे। उच्च वर्गों के बीच, जनि्होंने न्यायकि शक्त अपने हाथों में केंद्रति कर रखी थी, अन्याय का राज था, और धन के लालची न्यायाधीशों के हाथों गरीबों पर अत्याचार आम बात थी (मीका 3:9–11; यशा. 1:17, 1–23, 3:14–15); याजक—जो लोगों के शकि्षक थे—उसी तरह के दुराचार से ग्रस्त थे (मीका 3:11), और सच्चे भवषि्यद्वक्ताओं की आवाज़ झूठे भवषि्यद्वक्ताओं द्वारा दबा दी गई थी जो व्यक्तगित लाभ चाहते थे (यशा. 30:20–21; होशे 9:8)। पूरा राष्ट्र, जो व्यभचिार में डूबा हुआ था (यशायाह 1:21) और अपने हृदयों में प्रभु से दूर था, अधकितम केवल वधि के संस्कारकि पहलुओं का पालन करता था[3508] , बनिा अपने दैनकि जीवन में इसके उपदेशों का पालन कए। इसलए, यशायाह भवषि्यवक्ता के माध्यम से, प्रभु ने अपने लोगों को एक ऐसे मार्मकि और गंभीर अनुशासनात्मक उपदेश के साथ संबोधति कयि, उन्हें पश्चाताप के लए बुलाते हुए:

'मैंने,' यहोवा कहता है, 'बच्चे पाल-पोसकर बड़े कए, परन्तु उन्होंने मेरी आज्ञा का उल्लंघन कयि। बैल अपने मालकि को और गधा अपने स्वामी के खूटे को जानता है; परन्तु इस्राएल मुझे नहीं जानता, मेरा प्रजा नहीं समझता।' हाय, पापी लोग, अधर्म के बोझ तले दबे लोग, दुष्टों की संतान, वनिाश के लए अभशिप्त पुत्र! उन्होंने यहोवा (यहोवा) को त्याग दयि है, इस्राएल के पवत्रि को तुच्छ जाना है, और मुँह फेर लयि है। मैं तुम्हें और कतिनी बार मारूँ, तुम जो अपनी हठीलई पर बने रहते हो? तुम्हारा सारा सरि फोड़ों से ढका हुआ है, और तुम्हारा सारा हृदय मुरझा गया है। उसके पैर के तलवे से लेके सरि के सघिाड़े तक उसमें कोई साबुत जगह नहीं है: छाले, चोटें, पक्की फुंसयिाँ, न साफ़ की हुईं और न बाँधी हुईं, और न तेल से ठंडी की हुईं… हे содом के हाकमिों, यहोवा का वचन सुनो; हे गमोरा के लोगों, हमारे परमेश्वर की व्यवस्था पर कान लगाओ। मुझे तुम्हारी बहुत सी बलदिानों का क्या काम?.. मैं मेषों की होमबल और मोटी पशुओं की चर्बी से तंग आ गया हूँ; और मुझे बैलों, मेमनों या बकरयिों के लहू की कोई इच्छा नहीं है। जब तुम मेरे सामने उपस्थति होने आते हो, तो मेरे आँगनों को रौंदने के लए तुम्हें कसिने कहा? अब व्यर्थ की भेंट न लाओ: धूप मुझे घृणास्पद है; मैं तुम्हारे नवचंद्र उत्सवों, तुम्हारे सब्बाथों और तुम्हारी गंभीर सभाओं को सहन नहीं कर सकता—वे अधर्म और मूर्तपिूजा हैं। मेरी आत्मा तुम्हारे नवचंद्र उत्सवों और तुम्हारी गंभीर सभाओं से घृणा करती है; वे मेरे लए भार हैं; उनका बोझ उठाना मेरे लए भार है। और जब तुम अपने हाथ फैलाते हो, तब मैं तुम से अपनी आँखें फेर लेता हूँ; और जब तुम अपनी प्रार्थनाएँ बढ़ाते हो, तब मैं नहीं सुनता; तुम्हारे हाथ लहू से भरे हैं (यशायाह 1:2–15)। तुम्हारा चाँदी काढ़ा हो गया है; तुम्हारा दाखमधु पानी से मलि गया है। तुम्हारे हाकमि कानून तोड़ने वाले और चोरों के साथी हैं; वे सब तोहफे पसंद करते हैं और घूस का पीछा करते हैं; वे अनाथ की रक्षा नहीं करते, और न ही वधिवा का मुकदमा उनके सामने आता है (यशायाह 1:22–23)। अपने आपको धोओ, अपने आपको शुद्ध करो; अपनी बुरी करतूतों को मेरी आँखों के सामने से हटा दो; बुराई करना बंद करो; भलाई करना सीखो; न्याय की खोज करो; उत्पीड़तिों को बचाओ; अनाथ की रक्षा करो; वधिवा का पक्ष लो। फरि आओ, और हम एक साथ तर्क करें… यद्यपि तुम्हारे पाप सुर्ख-लाल हों, मैं उन्हें हमि के समान سفید कर दूँगा; यद्यपि वे रक्तवर्ण हों, मैं उन्हें ऊन के समान سفید कर दूँगा (यशायाह 1:16–18)।

राजा हज़िकयि्याह, जो अपनी माता की ओर से भवषि्यवक्ता ज़करयिाह के वंशज थे, अपने पति के बलि्कुल वपिरीत थे, जो एक दुष्ट व्यक्त थि और अस्सyrian की सभी बातों की ओर झुकाव रखता था: हेजेकयि्याह राष्ट्रीय रीत-रिवाजों और परंपराओं के प्रत समर्पति थे और सच्चे धर्म के प्रत प्रेम से जलते हुए, उन्होंने यहोवा की उपासना को बहाल करना और मूर्तपिूजा से अपवत्रि हुई भूम को शुद्ध करना अपना जीवन-ध्येय बना लयि। यह एक ऐसे लोगों के बीच कोई आसान काम नहीं था, जो अधकिांशतःमूर्तपिूजक प्रवृत्तयिों से ग्रस्त थे। यहाँ, संत यशायाह के नेतृत्व में, वे भवषि्यवक्ता जनिका वह बहुत सम्मान करता था, उस धर्मनष्ठि राजा की सहायता के लए आगे आए। उसने अपने चारों ओर शषि्यों की एक बड़ी संख्या को इकट्ठा कयि, जो अपने गुरु द्वारा प्रबुद्ध होकर, बदले में स्वयं लोगों के प्रबुद्धकर्ता बने। इस प्रकार, सेंट यशायाह द्वारा स्थापति भवषि्यद्वक्ता वद्यिालय ने लोगों के धार्मकि और नैतकि पुनरुत्थान में राजा हजिकयि्याह को शक्तशिाली समर्थन प्रदान कयि। – हेजेकयि्याह का पहला कार्य मूर्तपिूजा की घृणति प्रथाओं से मंदरि को शुद्ध करना और वहाँ पूजा को पुनर्स्थापति करना था (2 इतहिास 29:3–36); साथ ही, 'उच्च स्थानों' को नष्ट

[3508] जैसा क हिम पहले ही देख चुके हैं, अहज़ के शासन के अंत के करीब, मंदरि बंद कर दयि गया था।

करके, हेजेकयि्याह ने नजिी पूजा को समाप्त कर दयिा। मूर्तपिूजा को समाप्त करने के अपने प्रयास में, उन्होंने राष्ट्र के पवत्रि खजाने को भी नहीं बख्शा: उनके आदेश पर, कांस्य के साँप को—जसिकी कई यहूदयिों द्वारा पूजा की जाती थी, जसिे लगभग 800 साल पहले मूसा द्वारा बनाया गया था (गनिती 21:9) और जो यरूशलेम के बीचोबीच स्थति था (2 राजा 18:4)। बाद में, इज़राइल के राज्य के पतन के बाद—जसिकी मदद हेज़ेकयिा अपने ही राज्य के डर से नहीं कर सके थे—यरूशलेम में यहूदयिों की एक बड़ी भीड़ की उपस्थतिमिें पासओवर का भव्य रूप से पालन कयिा गया[3509] , एक ऐसा त्योहार जसिे पहले, पूरी संभावना है, नजिी तौर पर, परविारों के भीतर मनाया जाता था (2 इतहिास 30)।

इस बीच, सामरयिा के वजिेता सरगोन की मृत्यु हो गई, और उनके सबसे छोटे पुत्र सनाकेरबि सहिासन पर आरूढ़ हुए। सर्गन की मृत्यु ने एक वद्रिोह को जन्म दयिा, जो अस्सरियिाई लोगों के भारी जुए के अधीन रहने वाले लोगों में एक वशिाल लहर की तरह फैल गया, जो पश्चमिी एशयिा के पूरे क्षेत्र में फैला हुआ था और वहां से नील नदी के तटों तक फैला हुआ था। वद्रिोहयिों के नेतृत्व में मस्रि का फरिौन सेती और इथयिोपयिा के राजा तरिगाक थे। राजा हजिकयि्याह भी वद्रिोही लोगों में शामलि हो गए। वशिाल सेनाओं के साथ, सेनानाशेरबि ने वद्रिोहयिों को वश में करने के लिए नकिल पड़ा। मस्रि को अपनी मुहमि का अंतमि लक्ष्य बनाकर, वह पहले उत्तर से फलिस्तीन में प्रवेश कयिा। वहाँ के कुछ वद्रिोही लोगों को फरि से अस्सरियिाई शासन के अधीन लाने के बाद, सेनानाशेरबि ने अपनी सेना का एक हस्सिा यरूशलेम की ओर भेज दयिा। यहूदा के 46 कलिेबंद शहरों पर चढ़ाई करने और लूटपाट करने के बाद, सेनानायक के दस्ते ने जल्द ही इसकी राजधानी यरूशलेम की घेराबंदी कर ली; सेनानायक ने स्वयं लाकीश की घेराबंदी की, जो मस्रि की सीमा पर यहूदा के राज्य का एक और शहर था। घेराबंदी में पड़े यरूशलेम के नविासयिों में आतंक छा गया, जनिके लिए पवत्रि यशायाह ने प्रोत्साहन का एक शब्द कहना नहीं छोड़ा, यह भवष्यिवाणी करते हुए कि परमेश्वर का दंड अश्शूरयिों की प्रतीक्षा कर रहा था, और वशिेष रूप से चुने हुए लोगों की भूमि में (यशायाह 14:24–25)। लेकनि भवष्यिवक्ता के शब्दों ने पहले से ही डर से दबे हुए लोगों के मन में साहस जगाने में बहुत कम मदद की। शहर की घेराबंदी लंबी खचि गई, क्योंकि हजिकयि्याह यरूशलेम को आत्मसमर्पण करने को तैयार नहीं था और उसे मजबूत करने में व्यस्त था; हालात को और खराब करते हुए, अकाल पड़ गया, और कुछ लोगों ने, अपनी नराशिा में, व्यभचिार करना शुरू कर दयिा, जसि पर पवत्रि यशायाह ने कड़ी फटकार लगाई (यशायाह 22:1–2, 12–14)। अंतत; अश्शूरयिों का वरिोध करने की व्यर्थता को समझते हुए, हजिकयि्याह ने आत्मसमर्पण करने का फैसला कयिा: उसने अपनी अधीनता व्यक्त करने के लिए लाकीश में सेनाकेरीब के पास दूत भेजे। सन्नाकेरीब ने यरूशलेम की घेराबंदी हटा ली, और यहूदा के राज्य पर पहले से भी अधकि कर लगा दयिा, ताकि उसे चुकाने के लिए, उन्हें मंदरि की पछिली लूट से बचे हुए सोने को हटाना पड़ा—जो पवत्रि स्थान में जाने वाले द्वारों और चौखटों से था। लेकनि फरि सेनाचरब को पता चला कि मस्रि का फरिौन सेती, जसिे उसने पहले हराया था, इथयिोपयिा के राजा तर्हिाक के साथ मलिकर उसके खलिाफ़ मार्च कर गया था, जसिने अपनी सेनाओं को ऊपरी नील नदी के कनिारों से हटा लयिा था। इन परस्थितियिों में, सेनाकेरीब ने हजिकयि्याह की आत्मसमर्पण को केवल एक वश्विासघाती युक्ति माना, जसिका उद्देश्य तब तक समय खरीदना था जब तक कि सहयोगी राजा उसकी सहायता के लिए नहीं आ जाते। इसलिए, सनाकेरीब ने हेzekiah के साथ अभी-अभी संपन्न हुए संधि की अवहेलना करते हुए, एक बार फरि तीन जनरलों के नेतृत्व में यरूशलेम के लिए एक टुकड़ी भेजी, जनिमें चीफ ऑफ स्टाफ राप्साक भी शामलि था। उस टुकड़ी ने यरूशलेम के द्वार बंद पाए और उसकी दीवारें रक्षा के लिए तैयार थीं। अश्शूर की सेना के सेनापतयिों ने राजा हजिकयि्याह के प्रतनिधियिों के साथ बातचीत की, और यरूशलेम से स्वेच्छा से आत्मसमर्पण करने का आग्रह कयिा; आवश्यकता के कारण, यह बातचीत शहर की दीवारों पर लोगों की भारी भीड़ की उपस्थति में हुई। यह बातचीत रप्सक द्वारा घेराबंदी में फंसे सभी लोगों को संबोधति नम्निलखिति धर्मनदिात्मक भाषण के साथ समाप्त हुई:

'अश्शूर के महान राजा के वचन सुनो। राजा यों कहते हैं: हेzekiah तुम्हें धोखा न दे… और न ही प्रभु में तुम्हें झूठी आशा दे… यह कहते हुए, "प्रभु हमें बचाएंगे, और यह नगर अश्शूर के राजा के हाथ में नहीं दयिा जाएगा।" हेzekiah की न सुनो, क्योंकि अश्शूर का राजा इस प्रकार कहता है: मेरे साथ मेल-मलिाप करो और मेरे पास नकिल आओ, और हर कोई अपनी दाख की बेल और अपने अंजीर के पेड़ का फल खाए, और हर कोई अपने कुएं का पानी पिए, जब तक कि मैं आकर तुम्हें तुम्हारे ही देश जैसे देश में न ले जाऊं, एक ऐसी भूमि जहाँ रोटी और दाखमधु मलिे, एक ऐसी भूमि जहाँ फल और दाख

[3509] यद्यपि हजिकयि्याह ने सर्गन के नर्विासन के बाद बचे हुए इस्राएलयिों को उत्सव में आमंत्रति कयिा, उन्होंने तरिस्कारपूर्वक इस नमिंत्रण को अस्वीकार कर दयिा (2 इतहिास 30:5–10)।

की बारी हों, एक ऐसी भूमि जहाँ जैतून के पेड़ और शहद हों; और तुम जीवित रहोगे, और न मरोगे। इसलिए हेzekiah की न सुनो, जो तुम्हें यह कहकर धोखा देता है, 'यहोवा तुम्हें बचाएगा।' क्या अन्यजातियों के देवताओं ने अपनी ही भूमि को अश्शूर के राजा के हाथ से बचाया है? हमाथ और अर्पाद के देवता कहाँ हैं? सेफ़र्वाइम, एना और इव्वा के देवता कहाँ हैं? क्या उन्होंने सामरयिा को मेरे हाथ से बचाया? इन सभी देशों के देवताओं में से कसिने अपनी भूमि को मेरे हाथ से बचाया है? तो क्या यहोवा सचमुच यरूशलेम को मेरे हाथ से बचाएगा?' (2 राजा 18:28–35)।

जब ये वचन हजिकयि्याह के पास पहुँचे, तो उसने गहरे दुख में अपने वस्त्र फाड़े और बोरी का कपड़ा पहनकर मंदरि गया; और उसने दरबार के अधकिारयिों एल्याकीम और शेबना को, वरषि्ठ याजकों के साथ, भवषि्यवक्ता यशायाह के पास भेजा; राजा की तरह वस्त्र-पोशाक पहनकर, हजि़कयि्याह के दूतों ने पवत्रि यशायाह से कहा:

'यह दुख, दण्ड और अपमान का दनि है... शायद यहोवा, तुम्हारा परमेश्वर, अश्शूर के राजा द्वारा भेजे गए रबशाके के उन सभी वचनों को सुनेगा... जसिने जीवते परमेश्वर की नन्दिा करने और उसे उन वचनों से अपमानति करने के लिए भेजा है, जन्हिें यहोवा, तुम्हारे परमेश्वर ने सुना है। इसलिए, जो बचे हुए हैं, जो अभी भी जीवति हैं, उनके लिए प्रार्थना करो (2 राजा 19:3–4)।

इन शब्दों के उत्तर में, जो एक नश्चिति अनश्चितिता को दर्शाते थे, परमेश्वर के भवषि्यवक्ता ने प्रभु की सहायता में दृढ़ वश्विास से भरा एक उत्तर दयिा:

अपने स्वामी से इस प्रकार कहो—यहोवा का वचन है: उन वचनों से मत डर जो तूने सुने हैं, जनिसे अश्शूर के राजा के दासों ने मेरी नन्दिा की है। सुन, मैं उस पर एक आत्मा भेजूंगा, और वह एक अफवाह सुनकर अपनी ही भूमि में लौट जाएगा, और मैं उसे उसी भूमि में तलवार से मार डालूंगा[3510] (2 राजा 19:6-7)।

नबी के प्रोत्साहन से, हजिकयि्याह ने अश्शूर के राजा के दूतों को जवाब दयिा और शहर आत्मसमर्पण करने से इनकार कर दयिा, हालांकि बाद में उसने स्वयं एक प्रतनिधिमिंडल सेनाकेरीब के पास भेजा, ताकि उसे अपनी देशद्रोह की मंशा से इनकार करके अश्शूर के आक्रमण से अपने देश को बचा सके। हेज़कयि्याह के दूतों ने सेनाचेरबि को पहले से ही लकीश में पाया और उन्हें कोई सफलता नहीं मलिी; सेनाचेरबि ने उनकी बात तक नहीं सुनी। अपनी सेना के पीछे की सुरक्षा सुनश्चिति करने के लिए, उसने यरूशलेम पर कब्जा करने का नश्चिय कयिा। शहर की घेराबंदी में समय बर्बाद नहीं करना चाहकर, उसने पहले हेज़कयि्याह को बनिा लड़ाई के शहर सौंप देने के लिए मनाने का प्रयास कयिा; इसलिए सेनापति नसरपल ने हजिकयि्याह के पास एक दूसरा दूत एक पत्र के साथ भेजा जसिमें, अपनी ही शक्ति पर भरोसा करते हुए, उसने उस पर जोर दयिा कि वह यहोवा से शहर को बचाने की कोई भी उम्मीद छोड़ दे। वह पत्र पाकर, हजिकयि्याह परमेश्वर के मंदरि में गए, उसे यहोवा के सामने खोलकर रख दयिा, और उनसे इस हार्दकि प्रार्थना के साथ नविेदन कयिा:

'हे इस्राएल के परमेश्वर, जो करूबों पर वरिाजमान हैं! आप ही पृथ्वी के सभी राज्यों के एकमात्र परमेश्वर हैं। आपने स्वर्ग और पृथ्वी की रचना की। हे प्रभु, अपना कान लगाकर सुन (मुझे); हे प्रभु, अपनी आँखें खोलकर देखो, और सुनो सेनासरबि के वचन, जसिने जीवते परमेश्वर के नन्दिा करने के लिए भेजा है। यह सच है, हे प्रभु! अश्शूर के राजाओं ने राष्ट्रों और उनकी भूमि को उजाड़ दयिा है, और उनके देवताओं को आग में फेंक दयिा है। परन्तु वे देवता नहीं, बल्कि मनुष्यों के हाथों का काम हैं, लकड़ी और पत्थर के बने हुए – इसीलिए उन्होंने उन्हें नष्ट कर दयिा है। और अब, हे यहोवा हमारे परमेश्वर, हमें उसके हाथ से बचा, और पृथ्वी के सब राज्य जान जाएँ कि हे यहोवा, तू ही एकमात्र परमेश्वर है (2 राजा 19:15–19)।

पवत्रि भवषि्यवक्ता यशायाह ने भी हजिकयि्याह की प्रार्थना में अपनी प्रार्थना जोड़ दी (2 इतवृित्त 32:20)। और उनकी प्रार्थना सुनी गई। भवषि्यवक्ता यशायाह के द्वारा, प्रभु ने हजिकयि्याह से ये आत्मकि बल देने वाले वचन कहे:

'इस्राएल का परमेश्वर यहोवा यों कहता है: मैंने अश्शूर के राजा सनहेरीब के वषिय में तेरी मेरी की हुई प्रार्थना सुनी है। यह वह वचन है जो यहोवा ने उसके वषिय में कहा है: सयि्योन की कुँवारी बेटी तुझ से तरिस्कार करेगी और तेरी हँसी उड़ाएगी; यरूशलेम की बेटी तेरे पास से गुज़रते समय सरि हलिाएगी। तुमने कसिकी नन्दिा और अपमान कयिा है? और कसिके वरिुद्ध तुमने अपनी आवाज़ उठाई है और अपनी आँखें इतनी ऊँची की हैं? इस्राएल के पवत्रि के वरिुद्ध... मेरे वरिुद्ध तुम्हारी अभद्रता के कारण, और क्योंकि तुम्हारा घमंड मेरे कानों तक पहुँचा है, मैं तुम्हारी नाक में नथुनी डालूँगा...

[3510] कुछ वर्षों बाद, सेनाचरब की मृत्यु वास्तव में अस्सरियिा में ही हुई, जसि उसके अपने बेटों ने मार डाला था (2 राजा 19:37)।

और मैं तुम्हें उसी मार्ग से वापस लाऊँगा, जिससे तुम आए हो। और हे इज़कियाह, तेरे लिए यह एक चिन्ह है: इस वर्ष तू गिरे हुए बीज से उपजी हुई फसल खाएगा, और अगले वर्ष अपने आप उगे हुए से; परन्तु तीसरे वर्ष बोई करना और कटाई करना, दाख की बारी लगाना और उनका फल खाना। और यहूदा के घराने में से जो बचे हुए हैं, जो क्षमा किए गए हैं, वे नीचे जड़ पकड़ेंगे और ऊपर फल देंगे [3511] । क्योंकि यरूशलेम से एक अवशेष निकलेगा, और सियोन पर्वत से जो बचेंगे[3512] । इसलिये प्रभु अश्शूर के राजा के विषय में यह कहते हैं: वह इस नगर में प्रवेश नहीं करेगा, और न वहाँ तीर चलाएगा, और न ढाल लेकर इसके सामने आएगा, और न इसके विरुद्ध एक ढेर लगाकर किला बनाएगा... मैं इस नगर की रक्षा करूँगा, उसे बचाऊँगा, अपने ही निमित्त और अपने सेवक दाऊद के निमित्त (2 राजा 19:21–22, 28–34)।

और यहोवा ने आश्चर्यजनक रीति से अश्शूर के राजा पर अपनी शक्ति और यहूदा पर अपनी अनुकूलता प्रकट करने में देर नहीं की। जैसे ही सूरज उगा और रात की धुंध छंट गई, वैसे ही यरूशलेम पर मंडरा रहा भय और चिंता भी दूर हो गई: उसी रात *'प्रभु का दूत निकल गया और अश्शूरियों के डेरे में एक लाख पचासी हजार को मार गिराया; और जब वे भोर को उठे, तो देखो, वे सब लाशें ही लाशें थे'* (2 राजा 19:35), और अश्शूर का राजा *'अपनी भूमि में अपमानित होकर लौट गया'* (2 इतिहास 32:21)। इस बीच यरूशलेम के निवासियों को बहुत सारा लूट का माल मिला, जिसने अब अपने रक्षकों से रहित अश्शूर के शिविर को भर दिया[3513] ।

शांति का आनंद लेते हुए, हिजकियाह ने अपने राज्य के शांतिपूर्ण विकास का काम शुरू किया, जिसने धीरे-धीरे आसपास के राष्ट्रों का सम्मान प्राप्त किया (2 इतिहास 29:22-23)। लेकिन ये शांतिपूर्ण और खुशहाल दिन चिंता के एक नए कारण से बदल गए: राजा हिजकियाह घातक रूप से बीमार पड़ गए; भविष्यवक्ता यशायाह उसके शय्यापाश के पास आए और प्रभु का दुखद संदेश दिया, जिसमें उन्होंने हेzekiah को अपने परिवार के लिए वसीयत करने का निर्देश दिया, क्योंकि उसकी मृत्यु निकट थी। पुराने नियम के समय में जीते हुए, जब परलोक के अंधकार में आने वाले उद्धारकर्ता की एक क्षीण सी आशा भी नहीं थी, नरक और मृत्यु के विजेता, और इसके अलावा, उसके पास कोई उत्तराधिकारी नहीं था जिसे वह राज्य सौंप सके, और जीवन से अभी तृप्त न होकर, हिजकियाह निराश होकर दीवार की ओर मुड़ गया, सूर्य के प्रकाश से दूर, और जोर-जोर से रोया: 'हे! प्रभु,' उसने पुकारा, 'याद रखो कि मैं तेरे सामने विश्वासयोग्यता से और पूर्ण मन से चला हूँ, और जो तेरी दृष्टि में भला है, वह किया है' (2 राजा 20:3)।

जब भविष्यवक्ता यशायाह ने बीमार राजा को छोड़ दिया, तो 'वह शहर से बाहर नहीं गया था कि यहोवा का वचन उसके पास पहुँचा', क्योंकि प्रभु ने अपने विश्वासयोग्य सेवक की प्रार्थना सुन ली थी:

'लौट जाओ और मेरे लोगों के शासक हिजकियाह से कह दो: यहोवा, तुम्हारे पिता दाऊद का परमेश्वर, इस प्रकार कहता है: मैंने तुम्हारी प्रार्थना सुनी है और तुम्हारे आँसू देखे हैं। देख, मैं तुझे चंगा करूँगा; तीसरे दिन तू प्रभु के भवन में चढ़ जाएगा; और मैं तेरी आयु में पंद्रह वर्ष जोड़ दूँगा; और मैं तुझे और इस नगर को अश्शूर के राजा के हाथ से बचा लूँगा, और मैं अपने निमित्त और अपने दाऊद के दास के निमित्त इस नगर की रक्षा करूँगा' (2 राजा 20:5–6)।

हेजेकियाह के रोग को ठीक करने के लिए, भविष्यवक्ता यशायाह ने एक ऐसे उपचार के उपयोग का आदेश दिया जो पूर्व में आज भी बहुत आम है, अर्थात् अंजीर का लेप: भविष्यवक्ता के निर्देशों के अनुसार, इसे राजा के शरीर पर निकले फोड़े ([3514]) पर लगाया गया। राजा को प्रोत्साहित करने के लिए और उसकी प्रार्थना पर, प्रभु ने उसे एक चमत्कारिक संकेत दिया, जिससे इस बात का कोई संदेह नहीं रहा कि ठीक हो चुका हेज़कियाह 'प्रभु के भवन में जाएगा'। भविष्यवक्ता यशायाह ने राजा से कहा:

[3511] यहूदा की सारी फसलें अश्शूरियों की सेनाओं द्वारा काट ली गई थीं या पैरों तले रौंद दी गई थीं; इसलिए, यहूदा के लोग जाहिर तौर पर एक अनिवार्य अकाल का सामना कर रहे थे। लेकिन भविष्यवक्ता कहते हैं - प्रभु ऐसा नहीं होने देंगे: जो अनाज जमीन पर गिर गया है, वह न केवल उस वर्ष जब अश्शूरियों को बाहर निकाल दिया जाएगा, बल्कि अगले वर्ष भी उनका भरण-पोषण करने के लिए पर्याप्त फल देगा। इस प्रकार, 'बचा हुआ अंश (अनाज का) फिर से नीचे जड़ें जमाएगा और ऊपर फल देगा'।

[3512] यहाँ, 'अवशेष' से तात्पर्य, बेशक, सच्चे परमेश्वर के प्रति विफादार उन लोगों के 'अवशेष' से है जो अविश्वासी यहूदी लोगों के बीच लगातार पाए जाते थे (यशा. 1:9; 10:22; यहे. 6:8; रोम. 8:29), जिनकी संतति से पुराने नियम के धर्मी लोग उत्पन्न हुए, जिनमें से मसीह के प्रेरित थे, और जिनसे कलीसिया—जो संसार का उद्धार है—उगी।

[3513] चुने हुए लोगों की उद्धारकर्ता परमेश्वर के प्रति परमानंदपूर्ण आनंद और कृतज्ञता, जैसा कि कुछ टीकाकार सुझाते हैं, भजन संहिता 45:1–12, 46:1–10, 75:1–13 में व्यक्त हुई।

[3514] हिब्रू ग्रंथ में, हिज़कियाह की बीमारी को 'शेखिन' कहा गया है; ऐसा माना जाता है कि यह बुबोनिक फोड़ा था।

'यहोवा की ओर से एक चिह्न है, कि यहोवा ने जो वचन कहा है, उसे वह पूरा करेगा: क्या छाया दस सीढ़ियाँ आगे बढ़ेगी, या दस सीढ़ियाँ पीछे जाएगी?'

हेजेकिय्याह ने उत्तर दिया:

'छाया को दस सीढ़ियाँ आगे बढ़ना आसान है; नहीं, छाया को दस सीढ़ियाँ पीछे हट जाना चाहिए।'

'तब भविष्यवक्ता यशायाह ने प्रभु से विनती की, और प्रभु ने अहज़ की सीढ़ी के पायदानों पर छाया को दस सीढ़ियाँ पीछे कर दिया[3515] (2 राजा 20:8–11)।'

यशायाह की पुस्तक में उस प्रार्थना का वर्णन है जो हिजकिय्याह ने अपनी बीमारी से ठीक होने की शुभ सूचना पाकर की थी। यह प्रार्थना, इतने मार्मिक शब्दों में, मृत्यु के सामने और उससे बचने पर राजा की आत्मा की स्थिति को दर्शाती है: मैंने अपने मन में कहा: "मैं अपने दिनों के बीच में कब्र के द्वार पर जाना होगा; मेरे शेष वर्ष कट गए हैं। मैंने कहा: 'मैं जीवितों के देश में प्रभु, प्रभु को नहीं देखूँगा; मैं अब संसार में रहने वालों में किसी मनुष्य को नहीं देखूँगा।' मेरा डेरा चरवाहे के तम्बू की तरह फाड़ा जा रहा है और मुझसे दूर ले जाया जा रहा है; मुझे बुनकर की तरह अपना जीवन संक्षेप में समाप्त करना होगा: वह (अर्थात् ईश्वर) मुझे चरखा से काट देगा; दिन-रात मैंने तुम्हारा इंतज़ार किया कि तुम मुझे मौत भेजो। मैं भोर तक प्रतीक्षा करता रहा; सिंह की तरह, उसने मेरी सभी हड्डियाँ तोड़ डालीं; दिन-रात मैं तेरे द्वारा मेरे अंत लाने की प्रतीक्षा करता रहा। सारस और गौरैया की तरह, मैं पुकारा; मैं कबूतर की तरह विलाप किया; मेरी आँखें निराश होकर स्वर्ग की ओर टकटकी लगाए रहीं: 'हे प्रभु! मैं संकट में हूँ: मुझे बचा।' मैं क्या कहूँ? उसने मुझसे कहा—और उसने ऐसा किया। मैं अपने जीवन के सभी वर्ष शान्ति में बिताऊँगा, अपनी आत्मा के दुख को याद करते हुए… देखो, यह महान दुख मेरे भले के लिए था, और तुमने मेरी आत्मा को नाश की खाई (अर्थात्, कब्र) से बचा लिया है, और मेरे सभी पापों को अपनी पीठ के पीछे डाल दिया है[3516] (यशायाह 38:11–15, 17)।

राजा हिजकिय्याह के चमत्कारी स्वास्थ्य लाभ की खबर तेजी से फैली और यह बेबीलोन जैसे दूरस्थ देश तक भी पहुँच गई। उसका राजा, मेरोदक-बालदान, जिसने अश्शूरियों के प्रचंड आक्रमण के बावजूद अपने राज्य की स्वतंत्रता बनाए रखने में सफलता हासिल की थी, ने इस अवसर का लाभ उठाकर हिज़किय्याह को एक राजदूत भेजने का निर्णय लिया, जो दिखावे के लिए तो उसके ठीक होने पर बधाई देने और उसके साथ आए चमत्कारिक संकेत के बारे में विस्तार से पूछताछ करने के लिए था; लेकिन इस राजदूतमंडल का असली उद्देश्य हिज़किय्याह के साथ एक आक्रामक और रक्षात्मक गठबंधन करना था; राजदूतमंडल के साथ बेबीलोन के राजा का एक पत्र और उपहार भी हिज़किय्याह के लिए आए थे। हेजेकिय्याह एक विशाल साम्राज्य के राजा का दूतवृंद प्राप्त करके बहुत प्रसन्न हुआ और उसने उन्हें अपना सारा खजाना दिखा दिया। यह दूतवृंद परमेश्वर द्वारा हेजेकिय्याह के लिए एक परीक्षा थी, 'उसके हृदय में जो कुछ भी था, उसे प्रकट करने के लिए'। और वह धार्मिक राजा परीक्षा में असफल हो गया: हाल ही में एक चमत्कारिक संकेत के साथ ईश्वर की दया का प्रत्यक्ष अनुभव करने के बाद भी, हेजेकिय्याह, अहंकार में बहक गया—जिसमें प्रभु की महिमा के विचार के लिए कोई जगह नहीं थी—और उसने अपनी आशा ईश्वर से हटाकर मनुष्यों और स्वयं पर रख ली। लेकिन यह तथ्य कि हिजकिय्याह ने बेबीलोनियाई शासक के दूतों को अपने राज्य के सभी रहस्य प्रकट कर दिए, यह ईश्वर की अथाह आज्ञाओं को समझने में मानव मन की कमजोरी का एक प्रकटीकरण था, जिनके द्वारा यहूदा का पतन निश्चित था, और वह भी ठीक बेबीलोनियाई शासक के हाथों। यह इस दुखद प्रकटीकरण के साथ था—जो हिज़किय्याह की अटकलबाजी के लिए एक दंड के रूप में था—कि जब दूत चले गए, तो भविष्यवक्ता यशायाह यहूदा के राजा के सामने प्रकट हुए। यह जानकर कि दूत स्वयं हेज़ेकियाह से ही 'एक दूर के देश, बेबीलोन से' आए थे और 'उसके राज्य में ऐसी कोई भी चीज़ नहीं थी जो राजा ने उन्हें न दिखाई हो', यशायाह ने यहूदा के राजा से कहा:

[3515] यह अहाज़ द्वारा बेबीलोनियन मॉडल पर बनाए गए सूर्यघड़ियों का संदर्भ है; ये या तो ऊपर की ओर चढ़ते हुए सीढ़ियों वाली एक ऊँची संरचना के रूप में या एक क्षैतिज वृत्त के रूप में हो सकती थीं, जिस पर एक विशिष्ट क्रम में रेखाएँ अंकित थीं; इन सूर्यघड़ियों पर सूर्य द्वारा डाई गई छाया धीरे-धीरे सीढ़ियों या रेखाओं पर आगे बढ़ती थी, जो वास्तव में समय का संकेतक था। यह ध्यान देने योग्य है कि, खगोलीय गणनाओं के अनुसार, 26 सितंबर 703 को, जो हेजेकिय्याह की बीमारी के वर्ष के साथ मेल खाता है, यरूशलेम में एक आंशिक सूर्यग्रहण दिखाई दिया था; यह अच्छी तरह से बाइबिल में वर्णित उस चमत्कारिक घटना (सूर्य की छाया का दस सीढ़ियाँ पीछे हटना) का कारण हो सकता है।

[3516] अर्थात्, उसने उन्हें क्षमा कर दिया और उनके बारे में भूल गया।

'यहोवा का वचन सुन: वे दनि आ रहे हैं जब तेरे घर की सब वस्तुएँ, और जो कुछ तेरे पूर्वजों ने आज के दनि तक इकट्ठा कयि है, सब बबेल में ले जाया जाएगा; कुछ भी नहीं बचेगा। तेरे ही पुत्रों में से कुछ, जो तुझ से उत्पन्न होंगे, उन्हें ले जाया जाएगा और वे बबेल के राजा के महल में नपुंसक की सेवा करेंगे।'

पश्चातापी हज़िकयि्याह ने नम्रतापूर्वक उत्तर दयि, "आपने जो वचन कहा है, वह अच्छा है," और साथ ही यह प्रार्थना की कि कम से कम उसके जीवन के शेष दनिों में शांति और समृद्धि बनी रहे (2 राजा 20:13-19; 2 इतहिास 32:31; यशायाह 39)।

प्रभु ने पापी राजा की प्रार्थना को अस्वीकार नहीं कयि: शांति में 'हज़िकयि्याह अपने पूर्वजों के पास चला गया' (2 राजा 20:21) और उसे यहूदयिों की एक बड़ी भीड़ की उपस्थति में, यरूशलेम में दाऊद के पुत्रों की कब्रों के ऊपर, सभी सम्मान के साथ दफनाया गया[3517] (2 इतहिास 32:33)।

इसके तुरंत बाद, महान भवष्यिवक्ता संत यशायाह का भी नधिन हो गया: यहूदी परंपरा के अनुसार, जसिे टर्तुल्लयिन, लैक्टैंटयिस और धन्य जेरोम ने स्वीकार कयि है, संत यशायाह ने हज़कयि्याह के उत्तराधकिारी, मनश्शेह के शासनकाल में आरी से चीरकर शहादत प्राप्त की[3518] ।

यदि, जैसा कि जेरूसलम के संत सरिलि कहते हैं, 'मसीह भवष्यिवक्ताओं में से कसिी के लिए भी अज्ञात नहीं थे', तो यह वशिेष रूप से भवष्यिवक्ता यशायाह के बारे में कहा जाना चाहिए। उनकी पुस्तक में मसीहा उद्धारकर्ता के बारे में ऐसी पूर्ण और स्पष्ट भवष्यिवाणयिाँ हैं कि बलि्कुल सही, चर्च के पतिागण ने संत यशायाह को 'पुराने नयिम के सुसमाचारकर्ता' की उपाधि प्रदान की है।

इस महान पुराने नयिम के नबी में हमें आने वाले मसीहा का एक वस्तिृत चत्रि मलिता है।

पूर्ववर्ती के आगमन (यशायाह 40:3) से पहले, मसीहा, जो येशै के घराने से देह में अवतरति हुए (यशायाह 11:1), एक कुंवारी से जन्म लेंगे (यशायाह 7:14) और पवत्रि आत्मा के वरदानों से परपिूर्ण होंगे (यशायाह 11:2), और ऐसे नामों से वभिूषति होंगे जो नस्संदेह उनकी दव्यि गरमिा की ओर संकेत करते हैं (यशायाह 9:6)। ईश्वर का नम्र और कोमल सेवक, जो प्रभु का प्रयि है और जसिे उसने राष्ट्रों को सत्य का प्रचार करने के लिए भेजा है, मसीह *'एक कुचली हुई बेंत को नहीं तोड़ेगा, और जलती हुई लौ को नहीं बुझाएगा'*, जबकि साथ ही पृथ्वी पर अपने राज्य की स्थापना में महान शक्ति का प्रदर्शन करेगा (यशायाह 9:1-4), जो धार्मकिता, शांति और परमेश्वर के ज्ञान का राज्य होगा – *'तब भेड़यि मेमने के साथ रहेगा, और तेंदुआ बछड़े के साथ लेट जाएगा; और बछड़ा, और जवान शेर और बैल एक साथ रहेंगे; और एक छोटा बच्चा उनका नेतृत्व करेगा; और गाय और मादा भालू एक साथ चरेंगे; और उनके बच्चे एक साथ लेटेंगे; और एक छोटा बच्चा उनका नेतृत्व करेगा; और शेर बैल की तरह भूसा खाएगा; और दूध पीता बच्चा वषिैले साँप के बलि के ऊपर खेलेगा, और बच्चा वषिैले साँप के बलि में अपना हाथ डालेगा।' 'वे मेरे सारे पवत्रि पर्वत पर न तो कोई हानि करेंगे और न ही कसिी को नाश करेंगे; क्योंकि पृथ्वी यहोवा के ज्ञान से इस प्रकार भर जाएगी जैसे समुद्र जल से भर हुआ है'* (यशायाह 11:6–9)। लेकनि इस राज्य के आगमन से पहले मानव जाति के पापों के लिए मसीहा का अपमान, पीड़ा और अंत में मृत्यु होना आवश्यक है: *'हे प्रभु,'* भवष्यिवक्ता पुकारता है, मानो सूली पर चढ़ाए गए उद्धारकर्ता के क्रूस पर खड़ा हो, *'हमने जो सुना है* (अर्थात् परमेश्वर के देहधारी पुत्र के वषिय में प्रचार) *उस पर कसिने वश्विास कयि है, और यहोवा की भुजा कसि पर प्रगट हुई है?' क्योंकि वह उसके सामने ऐसे नकिला जैसे अंकुर, सूखी भूमि से नकिली कोमल कली; उसमें न तो कोई रूप था और न ही कोई भव्यता; और जब हमने उसे देखा, तो उसमें ऐसी कोई सुंदरता नहीं थी जो हमें उसकी ओर आकर्षति करती। वह मनुष्यों के सामने तुच्छ समझा गया और नीचा दखिाया गया, दुखों का पुरुष और शोक से परचिति, और हमने उससे अपना मुँह छपिा लयि; उसे तुच्छ जाना गया, और हमने उसकी कोई कदर न की।'* जबकि *'उसने स्वयं पर हमारी दुर्बलताएँ उठा लीं और हमारी बीमारयिाँ उठाईं, फरि भी हमने सोचा कि वह परमेश्वर द्वारा प्रहारति, दण्डति और अपमानति कयि गया है। परन्तु वह हमारे अपराधों के कारण घायल कयि गया और हमारी अधर्म के कारण कुचला गया; हमें शान्ति देने वाली ताड़ना उसी पर पड़ी, और उसके कोड़ों से हम चंगे हुए; हम सब भेड़ों की तरह भटक गए; हम में से हर एक अपनी राह पर मुड़ गया; और यहोवा ने हम सब के अधर्म का भार उसी पर लाद दयि। वह दबाया गया, फरि भी उसने अपने दुख को सह लयि और अपना मुँह नहीं खोला; जैसे वध के लिए ले जाई जाने वाली भेड़, और जैसे ऊन काटने*

[3517] सबसे वश्विसनीय स्रोतों के अनुसार, हज़िकयि्याह की मृत्यु 699 में हुई।

[3518] यह संभवतः संत यशायाह की शहादत को संदर्भति करता है। इब्रानयिों 11:39।

वाले के सामने मेमना चुप रहता है, वैसे ही उसने अपना मुँह नहीं खोला। उन्हें कैद और न्याय से ले जाया गया, परन्तु उनकी पीढ़ी का वर्णन कौन कर सकता है? क्योंकि उन्हें जीवितों की भूमि से काट दिया गया; अपने लोगों के अपराध के कारण उन्होंने दण्ड भोगा। उन्होंने उन्हें दुष्टों के साथ कब्र दी, परन्तु उन्हें धनी के साथ □□ नाया गया, क्योंकि उन्होंने कोई पाप नहीं किया, और उनके मुँह में कोई छल नहीं पाया गया।' दुख सहने वाले मसीहा की इस छवि के साथ, जो अपनी असीम विनम्रता में राजसी हैं, भविष्यवक्ता मसीहा, जो कलीसिया के संस्थापक हैं, को चित्रित करते हैं, जिन्हें उनके दुखों के लिए महिमामय किया गया है: *'प्रभु को उसे कुचलना भाया, और उसने उसे कष्ट भोगने के लिए सौंप दिया; फिर भी जब उसकी आत्मा प्रायश्चित का बलिदान चढ़ाएगी, तो वह एक ऐसे वंश को देखेगा जो हमेशा तक टिकेगा, और प्रभु की इच्छा उसके हाथ से पूरी होगी; वह अपनी आत्मा के काम को देखकर तृप्त होगा; अपने ज्ञान के द्वारा, वह, धर्मी, मेरा दास, बहुतों को धर्मी ठहराएगा और उनके पाप अपने ऊपर उठा लेगा। 'इसलिये मैं उसे महान लोगों में एक हिस्सा दूँगा, और वह पराक्रमी लोगों के साथ लूट बाँटेगा, क्योंकि उसने अपनी आत्मा को मृत्यु तक उंडेल दिया और अपराधियों में गिना गया; फिर भी उसने बहुतों का पाप उठाया, और अपराधियों के लिये मध्यस्थता की'* (यशायाह 53:1–12)।

कॉन्टाकियन, स्वर 2:

हे नबी-शहीद, ईश्वर के प्रचारक यशायाह, भविष्यवाणी का वरदान प्राप्त करके, आपने सभी के लिए प्रभु के अवतार को स्पष्ट किया, और अंत में जोर से उद्घोषणा की: 'देखो, कुँवारी गर्भ धारण करेगी।'

शहीद संत क्रिस्टोफ़र का कष्टकथा।

9 मई को स्मरण किया जाता है

इस गौरवशाली शहीद[3519] के बारे में एक अजीब और असाधारण कहानी बताई जाती है, कि उसका सिर कुत्ते का था और वह नरभक्षियों की भूमि से आया था[3520] । जब उसे युद्ध में एक निश्चित काउंट[3521] द्वारा बंदी बना लिया गया, तो वह बोल नहीं सकता था। उसने ईश्वर से प्रार्थना की, और प्रभु ने उसके पास एक देवदूत भेजा, जिसने उससे कहा: 'हौसला रखो, रेप्रेव!' – क्योंकि यही उसका पहला नाम था – और फिर उसने उसके होंठों को छुआ, जिससे उसे बोलने की क्षमता प्राप्त हो गई। जब वह बाद में एक नगर में पहुँचा, तो उसने उन लोगों की निंदा करना शुरू कर दिया जो ईसाइयों का उत्पीड़न करते थे। इसके लिए, एक बक्कस नामक व्यक्ति ने उसे पीटा, लेकिन जवाब में उसने बक्कस से कहा कि वह मसीह की आज्ञा की खातिर ही विनम्रतापूर्वक उसकी पिटाई स्वीकार कर रहा है; और अगर वह गुस्से में आ जाता, तो न तो बक्कस खुद और न ही सम्राट की शक्ति—जिसे वह कुछ भी नहीं कर सकता था—उसका सामना कर पाती। इसके तुरंत बाद, दो सौ सैनिकों को उन्हें सम्राट[3522] के सामने लाने के लिए भेजा गया, और जैसे ही वे चल रहे थे, संत के हाथ में पूरी तरह से सूखा डंडा चमत्कारिक रूप से फूल गया; और बाद में, जब यात्रा के दौरान सैनिकों के पास रोटी खत्म हो गई, तो उन्होंने उसे प्रचुर मात्रा में बढ़ा दिया। इस महान चमत्कार से सैनिक चकित हो गए, और वे मसीह में विश्वास करने लगे; संत के साथ, उन्हें अंफियालोपोलिस के बिशप, पवित्र शहीद बाबिलास द्वारा बपतिस्मा दिया गया, और संत को रेप्रेवा के स्थान पर क्रिस्टोफ़र नाम दिया गया। जब संत को सम्राट के सामने लाया गया, तो उसे देखकर सम्राट भयभीत हो गया और अचानक पीछे गिर पड़ा; फिर, होश में आने के बाद, उसने ईसा मसीह का त्याग करने के लिए संत को जबरदस्ती करने का निश्चय किया, खुले तौर पर हिंसा के माध्यम से नहीं, बल्कि चालाकी से: पहले उसके मनोभाव को

[3519] संत क्रिस्टोफ़र की स्मृति का पूर्व में और उससे भी अधिक पश्चिम में, विशेष रूप से स्पेन में, बहुत सम्मान किया जाता है। पश्चिम में, लोग संक्रामक रोगों के प्रकोप के दौरान उनकी शरण लेते हैं।

[3520] कुछ का दावा है कि संत क्रिस्टोफ़र कानानी मूल के थे, जबकि अन्य उनकी वंशावली को कैननीज़ (जो *canis* - कुत्ते से लिया गया है) या मनुष्यभक्षी साइनसेफली से जोड़ते हैं। स्लावोनिक प्रोलाग में संत के रूप का वर्णन खारिज कर दिया गया है, जबकि साइनैक्सारियन में निकोडेमस उन्हें केवल भयानक के रूप में चित्रित करता है।

[3521] 'कोमाइट्स' शाही अंगरक्षक थे; बाद में, यह उपाधि सामान्य रूप से उप-प्रांतपति, प्रांतीय गवर्नरों और अन्य लोगों के अनुचर दल के सदस्यों पर लागू होने लगी।

[3522] ग्रीक प्रोलाग्स के आधार पर, अस्सेमानी का मानना है कि यह सम्राट डेसियस था, जिसने 249 से 251 तक रोमन साम्राज्य पर शासन किया।

बदलना, और फरि चापलूसी के माध्यम से, उसे अपनी बात मानने के लिए मनाना। इस उद्देश्य के लिए, उसने दो महलिाओं को बुलाने का आदेश दयिा – वेश्याएँ, जो सुंदर मुख वाली और व्यभचिार में संलप्ति होने के लिए तैयार थीं – जन्हिोंने, मोहक बातचीत के माध्यम से, युवकों में व्यभचिार की एक अदम्य, पागलपन भरी इच्छा जगाई। इन महलिाओं में से एक का नाम कैलनिसियिा था, और दूसरी का अक्वलिनिा। सम्राट ने उन्हें संत की उपस्थतिमिें जाने और उनमें वभिन्नि प्रलोभनकारी वचिार जगाने का आदेश दयिा, जैसा कि उनका रवािज था, ताकि उनके प्रतिपापी प्रेम से प्रेरति होकर, वह मसीह में अपने वश्विास को त्यागने और मूर्तपिूजक देवताओं को बलदिान चढ़ाने के लिए सहमत हो जाएगा; लेकनि संत क्रस्टिोफ़र ने उन्हें मसीह के धर्म की शक्षिा देना शुरू कर दयिा और अपने शब्दों के माध्यम से उन्हें मूर्तपिूजा से दूर कर दयिा। सम्राट के पास लौटकर, उन्होंने स्वयं को ईसाई घोषति कर दयिा, जसिके लिए उन्हें क्रूर यातनाओं का सामना करना पड़ा; और इस प्रकार मसीह में अपने वश्विास के लिए पीड़ा सहने के बाद, उन्होंने शहादत के मुकुट प्राप्त कए। इन महलिाओं से क्रोधति होकर, सम्राट ने संत क्रस्टिोफ़र को अपने सामने लाने का आदेश दयिा और उनके चेहरे के असामान्य स्वरूप के कारण उनका मज़ाक उड़ाने लगा; लेकनि संत ने जवाब में उन्हें शैतान के कामों का पात्र कहा, क्योंकि सम्राट डसियिस के नाम का यही अर्थ था। इसके बाद, सम्राट ने उन दो सौ सैनकिों को मृत्युदंड दयिा, जन्हिें संत क्रस्टिोफ़र को उसके सामने लाने के लिए भेजा गया था और जन्हिोंने उसके साथ पवत्रि बपतस्मिा प्राप्त कयिा था, क्योंकि वे सम्राट की उपस्थतिमिें संत के पास गए थे और उसके सामने झुक गए थे। उसने सभी के सरि कलम करने और उनके शरीर जलाने का आदेश दयिा; जहाँ तक संत क्रस्टिोफ़र की बात है, उसने उसे एक तांबे के पात्र में बंद करने, उसमें कीलें ठोकने और फरि उस पात्र को लाल-गरम करने का आदेश दयिा, लेकनि जब ऐसा कयिा गया, तो संत को कोई हानि नहीं हुई। न तो आग से और न ही कीलों से कोई दर्द महसूस करते हुए, वह लाल-गरम पात्र में ऐसे खड़ा रहा मानो कसिी सुखद ठंडक में हो। मौजूद कई लोगों को यह एक चाल लग रही थी, लेकनि संत ने वश्विासयिों से पूरी सच्चाई और खुशी के साथ कहा कि अपने यातना के दौरान, उन्होंने बहुत बड़ी कद-काठी और सुंदर रूप वाले एक व्यक्ति को देखा था, जो सफेद वस्त्र पहने हुए था, जसिकी रोशनी से सूर्य भी फीका पड़ गया था और जसिके सरि पर एक चमकता हुआ मुकुट था, कि उसके चारों ओर योद्धाओं की भीड़ थी, जनिके खलिाफ कुछ काले और बदबूदार मूर लड़ रहे थे, जो उसे पकड़कर खींच ले जाने की कोशशि कर रहे थे; लेकनि इस भयानक नेता ने उन पर क्रोधति दृष्टि डाली और एक ही नजर में पूरे शत्रु दल को भ्रम में डाल दयिा और उन्हें धराशायी कर दयिा, साथ ही उसे बनिा कसिी चोट के यातना सहने की शक्ति प्रदान की। यह वृत्तांत सुनकर और संत को पूरी तरह से अछूता देखकर, कई लोगों ने उस पर वश्विास कयिा और मसीह की ओर मुड़ गए; फरि उन्होंने संत को उस लाल-गरम पात्र से बाहर नकिाला, जसिके लिए उन्हें राजा के जल्लादों द्वारा टुकड़े-टुकड़े कर दयिा गया । इसके बाद, संत क्रस्टिोफ़र के गले में एक पत्थर बाँधकर उन्हें एक कुएँ में फेंक दयिा गया, लेकनि एक देवदूत ने उन्हें वहाँ से बचा लयिा; फरि उन्हें लाल-गरम तांबे के वस्त्र पहनाए गए और अंत में, उनकी गर्दन तलवार से काट दी गई[3523] । संत क्रस्टिोफ़र और उनके साथ शहीद हुए अन्य पवत्रि शहीदों का स्मरणोत्सव काइपारसियिा[3524] में उनके नधिन के दनि मनाया जाता है, जो महान शहीद संत जॉर्ज के नधिन के दनि के नकिट है।

ट्रोपारयिन, स्वर 4:

रक्त-रंजति वस्त्रों से सुसज्जति, हे सदा-स्मरणीय क्रस्टिोफ़र, तुम प्रभु, शक्तयिों के राजा, के समक्ष खड़े हो; वहाँ, अदेहयिों और शहीदों के साथ, तुम मीठी और भयानक धुन में त्रसिगयिन गाते हो; अपनी प्रार्थनाओं से, अपनी भेड़-बकरयिों को बचाओ।

[3523] पवत्रि शहीद लगभग 250 ईस्वी में सम्राट डेसयिस के शासनकाल के दौरान लकियिा में मृत्यु हो गए। शहीद के कृत्यों के अनुसार, सभी शुरुआती कैलेंडर, पूर्वी और पश्चमिी दोनों, उनकी मृत्यु की तारीख 23 अप्रैल को बताते हैं।

[3524] क्यपारसियिोस या क्यपारसि कॉन्स्टेंटनिोपल में एक जलिा है।

संत निकोलस, मायरा के आर्चबशिप के अवशेषों के स्थानांतरण की कथा[3525]

9 मई को स्मरण किया जाता है

1087 की गर्मियों में, ग्रीक सम्राट अलेक्सियोस कोम्नेनोस के शासनकाल में[3526] और कॉन्स्टेंटिनोपल के पैट्रआर्क निकोलस ग्रामैटिकस के अधीन[3527] , जबकि वेसेवोलॉड यारोस्लाविच[3528] कीव रस में और उनके पुत्र व्लादिमीर वेसेवोलोदोविच मोनोमाख[3529] चेर्निहिव में शासन कर रहे थे, इसमाइलियों ने[3530] समुद्र के दोनों किनारों से ग्रीक क्षेत्रों पर आक्रमण किया। वे कर्सुन[3531] से लेकर अंताकिया और यरूशलेम तक सभी नगरों और गांवों में तबाही मचाते हुए आगे बढ़े; इस दौरान उन्होंने पुरुषों का कत्लेआम किया, महिलाओं और बच्चों को बंदी बनाया और घरों व संपत्तियों को आग लगा दी। चर्चों और मठों को बर्बाद कर दिया गया, और नगर अविश्वासियों के हाथों में चले गए। उस समय, लिकियाई मायरा को भी उजाड़ दिया गया था, जहाँ संत निकोलस का शरीर विराजमान था—एक कीमती और अति सम्माननीय शरीर, जिसने अद्भुत और शानदार चमत्कार किए थे। यह पूजनीय व्यक्ति अपने शहर और चर्च को विनाश से बचा सकते थे, लेकिन ईश्वर की आज्ञा से, उन्होंने विरोध नहीं किया, यह कहते हुए: 'हे प्रभु, मैं वही करूँगा जो आपकी दृष्टि में अनुकूल है।'

लेकिन हमारे प्रभु यीशु मसीह यह नहीं होने दे सकते थे कि संत की अवशेष एक सुनसान जगह पर पड़े रहें और किसी द्वारा सम्मानित न किए जाएँ, जैसा कि पवित्रशास्त्र में लिखा है: 'संत महिमा में आनंद मनाएँ' (भजन संहिता 149:5); और फिर: 'उनकी सभी संतजनों को महिमा मिलेगी' (भजन संहिता 149:9)।

बारी नगर में, जो उस समय नॉर्मन लोगों का था[3532] , एक निश्चित पुरोहित रहता था, जो मसीह से प्रेम करने वाला और धर्मी व्यक्ति था। संत निकोलस उसे सपने में दिखाई दिए और कहा: 'जाओ और नागरिकों तथा पूरी चर्च परिषद को बता दो कि वे मायरा शहर जाएँ, मुझे वहाँ से ले आकर यहाँ रख दें, क्योंकि मैं उस सुनसान जगह पर नहीं रह सकता। प्रभु की यही इच्छा है।'

यह कहने के बाद, संत अदृश्य हो गए। सुबह जागने पर, पादरी ने यह दृष्टि सभी को सुनाई। वे आनंदित हुए और कहा: 'अब प्रभु ने अपने लोगों और हमारे शहर पर अपनी दया दिखाई है, क्योंकि उन्होंने हमें अपने प्रिय, संत निकोलस को प्राप्त करने के योग्य समझा है।'

तुरंत उन्होंने अपने बीच से धर्मनिष्ठ और ईश्वर-भयभीत पुरुषों को चुना, और उन्हें संत की अवशेषों को लाने के लिए तीन जहाजों पर भेज दिया। व्यापार के लिए यात्रा करने का बहाना बनाकर, इन लोगों ने अपने जहाजों में गेहूं लाद लिया और समुद्र पार कर चले गए।

अंत्योख पहुँचने पर, उन्होंने गेहूँ बेच दिया और अपनी ज़रूरत की हर चीज़ खरीद ली। वहाँ उन्हें पता चला कि शहर में मौजूद वेनिस के लोग उनसे पहले पहुँचकर संत निकोलस के अवशेषों पर कब्ज़ा करने का इरादा रखते थे। बिना किसी देरी के, बारोन जल्दबाजी में रवाना हुए, लिसिया के मायरा पहुँचे और शहर के बंदरगाह पर लंगर डाल दिया। अपने और अपने शहर को बचाने की एक योजना बनाने के बाद, उन्होंने खुद को हथियारबंद किया और सेंट निकोलस के चर्च में प्रवेश किया। वहाँ उन्होंने चार भिक्षुओं को देखा और उनसे पूछा कि सेंट निकोलस की अवशेष कहाँ रखी गई थीं। भिक्षुओं ने उन्हें अवशेष-पात्र का स्थान दिखाया। बैरी के लोगों ने चर्च का फर्श खोदा और अवशेष-पात्र को ढूंढ निकाला, जो मूर

[3525] संत निकोलस चमत्कारिक के जीवन के लिए, 6 दिसंबर देखें।

[3526] एलेक्सियस प्रथम कोमनेनस ने 1081 से 1118 तक बीजान्टिन साम्राज्य पर शासन किया।

[3527] निकोलस तृतीय व्याकरणकार ने 1084 से 1111 तक पैट्रआर्क के रूप में कार्य किया।

[3528] व्लादिमीर यारोस्लाविच, यारोस्लाव द वाइज़ के पुत्र और संत व्लादिमीर के पोते, ने 1075 से 1076 (6 महीने) तक; फिर 1078 से 1093 तक शासन किया।

[3529] व्लादिमीर वसेवोदोविच मोनोमाख ने 1073 से 1125 तक शासन किया।

[3530] यहाँ 'इज़माइलाइट्स' शब्द संबंधित पूर्वी लोगों को संदर्भित करता है: तुर्क, पेचेनेग और पोलोवत्सियन।

[3531] क्रिमिया में सेवस्तोपोल के पास एक प्राचीन शहर, जिसे चेरसोनेसोस टौरिका के नाम से भी जाना जाता है।

[3532] बारी शहर इतालवी प्रायद्वीप के दक्षिण में, एड्रियाटिक सागर के पूर्वी तट पर, अपुलिया नामक क्षेत्र में स्थित है। दक्षिणी इटली की आबादी लंबे समय से यूनानी थी। 9वीं शताब्दी के अंत तक, यहाँ ग्रीक सम्राट का अधिकार स्थापित हो चुका था। 1070 में, जर्मनिक लोगों के एक उत्तरी जनजाति, नॉर्मनों द्वारा बारी शहर ग्रीकों से जीत लिया गया; फिर भी इसके बाद भी, कुछ अपुलियन मठों में ऑर्थोडॉक्स धर्म और दैवीय सेवाएँ संरक्षित रहीं, जो कॉन्स्टेंटिनोपल के पैट्रआर्क के अधीन थे।

के तेल से भरा हुआ था। उन्होंने मरि्रा को एक पात्र में डाला, संत की अवशेषों को लयिा और उन्हें जहाज पर ले गए, फरि समुद्र यात्रा शुरू की। दो भकि्षु मायरा में ही रह गए, जबकि अन्य दो संत नकिोलस के अवशेषों के साथ चल दिए[3533] । वे 11 अप्रैल को मायरा शहर से रवाना हुए और 9 मई को, रवविार की शाम को, बारी शहर पहुँचे। जब यह देखा गया कि वे संत नकिोलस की अवशेषों के साथ मरि शहर से आए हैं, तो बारी शहर के सभी नविासी—पुरुष और महलिाएं, युवा और वृद्ध—मशालों और धूप लेकर संत से मलिने बाहर नकिले; उन्होंने अवशेषों को खुशी और बड़े सम्मान के साथ स्वीकार कयिा और उन्हें समुद्र के कनिारे स्थति संत जॉन द बैपटस्टि के चर्च में रख दयिा।

संत की अवशेषों ने यहाँ कई चमत्कार कए। वे रवविार शाम को बारी पहुँचे और सोमवार सुबह तक, वभिन्नि बीमारयिों से पीड़ति 47 पुरुषों और महलिाओं को पहले ही ठीक कर चुके थे: एक को सरिदर्द था, दूसरे को आँखों की समस्या थी, एक और को अपनी बाहों और पैरों या दलि में बीमारी थी, जबकि कुछ के पूरे शरीर को अशुद्ध आत्माओं ने पीड़ति कर रखा था। मंगलवार को 22 बीमार लोग चंगे हुए, और बुधवार को 29। गुरुवार की सुबह-सुबह, संत नकिोलस ने एक बधरि-मूक व्यक्ति को चंगा कयिा जो पांच साल से बीमार था। तब संत एक धार्मकि भकि्षु के सामने प्रकट हुए और कहा: 'इस प्रकार, ईश्वर की इच्छा से, मैं इस भूमि पर, प्रभु के दनि, नवें घंटे पर आप लोगों के पास आया हूँ, और देखो, 111 लोग मेरे द्वारा चंगा कए गए हैं।'

और संत नकिोलस दनि-प्रतदिनि अन्य चमत्कार करते रहे, जैसे एक अंतहीन झरना। और संत को कई उपहार लाए गए: सोना, चाँदी और कीमती वस्त्र। उनके महमिामय चमत्कारों को देखकर, नागरकि महान आनंद से भर गए; उन्होंने चमत्कार करने वाले संत नकिोलस के नाम पर एक भव्य और सुंदर चर्च का नरि्माण कयिा[3534] , और उनके अवशेषों के लए चाँदी-जड़ा हुआ रलिकि्वरी (अवशेष-पात्र) बनाया। लसिया के मायरा से अवशेषों के स्थानांतरण के बाद तीसरी गर्मयिों में, उन्होंने रोम में पोप अर्बन को एक संदेश भेजा, जसिमें उनसे सेंट नकिोलस के अवशेषों को स्थानांतरति करने के लए अपने बशिपों और संपूर्ण धार्मकि पुरोहति वर्ग के साथ बारी आने का अनुरोध कयिा। पोप बशिपों और पुरोहतिों के साथ पहुंचे; उन्होंने संत की अवशेषों को एक चांदी के अवशेष-पात्र में रखा; फरि बशिपों और कुलीनों ने इसे नए, भव्य चर्च में ले जाकर 9 मई को वेदी पर स्थापति कयिा। उन्होंने संत की प्राचीन कफ़न भी लाई, जसिमें उन्हें मयरा से लाया गया था, कफ़न को चर्च में रखा और उसमें उनके अवशेषों से संत के हाथ का एक हसि्सा रखा। कई लोग संत की पूजा करने आए, उन्होंने उनके अवशेषों और रलिकि्वरी को चूमा। पोप अर्बन, बशिपों और सभी नागरकिों ने उस दनि संत के सम्मान में एक बड़ा उत्सव मनाया, और वे ऐसा आज भी करते हैं[3535] । उन दनिों उन्होंने दावत की और शराब पी, और गरीबों को उदार दान देने के बाद, वे शांति से अपने घर लौट गए, ईश्वर और उनके पवत्रि सेवक नकिोलस की महमिा और स्तुति करते हुए।

ट्रोपारयिन, स्वर 4:

महमिामय पर्व का दनि आ गया है; बार का नगर हर्षति है, और उसके साथ ही संपूर्ण ब्रह्मांड भजनों और आध्यात्मकि गीतों से आनंदति होता है: क्योंकि आज संत नकिोलस चमत्कारकर्ता की सम्माननति और सर्व-चंगा करने वाली अवशेषों के स्थानांतरण का पवत्रि पर्व है, जो कभी अस्त न होने वाले सूर्य की तरह, तेजस्वी करिणों से प्रकाशति होते हैं, और उन लोगों के प्रलोभनों के अंधकार तथा दुर्भाग्यों को दूर करते हैं जो वशि्वास के साथ पुकारते हैं: 'हे हमारे महान मध्यस्थ, संत नकिोलस, हमें बचाओ।'

[3533] संत नकिोलस की अवशेषों के स्थानांतरण की सेवा में, नम्निलखिति गाया जाता है: 'हे पवत्रि संत, आपके जुलूस समुद्र मार्ग से होते हुए लसिया के मयरा से बारग्राड तक आए: क्योंकि आपका अवशेष-कोष कब्र से नकिाला गया था, और पूर्व से पश्चमि तक यात्रा की, उन धर्मनष्ठि भकि्षुओं के साथ, जो आपकी कब्र के पास खड़े होकर आपका सम्मान करते हुए, सर्व के प्रभु की आज्ञा से आपके पीछे-पीछे चले, हे अति महमिामय नकिोलस' [स्टचिैरा पर दूसरा स्टचिैरा। – *'अज़बुका वेरी'* द्वारा *संपादति*।

[3534] रूस में संत नकिोलस की अवशेषों के स्थानांतरण का उत्सव 1089 में कीव के मेट्रोपॉलटिन जॉन द्वतिीय के अधीन स्थापति कयिा गया था।

[3535] यह चर्च आज भी खड़ा है।

कॉन्टाकयिन, स्वर 3:

हे संत नकिोलस, आपकी अवशेषों ने पूर्व से पश्चमि तक एक तारे की तरह चमक बखिेरी है; आपके जुलूस से समुद्र पवत्रि हुआ है, और बार्स नगर ने आपकी कृपा प्राप्त की है: क्योंकि आप हमारे लिए एक अद्भुत, चमत्कारकि और दयालु चमत्कारकर्ता के रूप में प्रकट हुए हैं।

23 मई

10 मई (पुराना कैलेंडर)

संत साइमन उत्साही, प्रेरति की स्मृति

10 मई को स्मरणोत्सव

ये संत समिोन गलील के कना के नविासी थे और वे प्रभु तथा उनकी परम पवत्रि माता को व्यक्तगित रूप से जानते थे, क्योंकि किना नगर नासरत से थोड़ी दूरी पर स्थति था। जब समिोन अपनी शादी का जश्न मना रहे थे, तो उन्होंने प्रभु को, उनके शष्यिों के साथ, और परम पवत्रि माता को भोज में आमंत्रति कयिा। लेकनि जब मेहमानों के लिए दाखरस खत्म हो गया, तो प्रभु ने पानी को दाखरस में बदल दयिा (देखें यूहन्ना 2:1–11)। इस चमत्कार से प्रभावति होकर, वर ने प्रभु यीशु मसीह में सच्चे ईश्वर के रूप में वश्विास करना शुरू कर दयिा और ववािह के भोज तथा उस घर को छोड़कर, उत्साह के साथ प्रभु यीशु का अनुसरण करने लगा; इसीलिए उन्हें ज़ेलोट, या उत्साही ([3536]) कहा गया, क्योंकि वे इतने बड़े उत्साह से भर गए थे कि मसीह के प्रति प्रेम से, उन्होंने अपनी दुल्हन और अपने सभी लगावों को छोड़ दयिा, और अपनी आत्मा को स्वर्गीय दूल्हे के साथ वचनबद्ध कर दयिा। इसके लिए, साइमन को मसीह के शष्यिों में गनिा गया और पवत्रि बारह प्रेरतिों में शामलि कयिा गया।

जब पेंटेकोस्ट के दनि आग की जीभों के रूप में पवत्रि आत्मा प्रेरतिों पर उतरा, तो उन्हें जीभों का वरदान मलिा, ताकि वे सभी राष्ट्रों को सुसमाचार का प्रचार कर सकें; और शमिोन को, अन्य ग्यारह प्रेरतिों के साथ, पवत्रि आत्मा प्राप्त करने के लिए योग्य माना गया। पवत्रि आत्मा प्राप्त करने के बाद, वह मस्रि, मॉरटिानयिा, लीबयिा, नुमडियिा, साइरेनकिा और अब्खज़यिा से होते हुए वभिन्नि देशों में मसीह के बारे में प्रचार करने नकिला। वह ब्रटिेन भी गए। वहाँ उन्होंने मसीह को न जानने वाले कई मूर्तपिूजकों को मसीह के वश्विास से प्रकाशति कयिा, जसिके लिए उन्हें अवश्विासयिों द्वारा सूली पर चढ़ाया गया और उन्होंने यीशु मसीह के क्रूस पर हुई शहादत के समान शहादत से अपने जीवन का अंत कयिा[3537]।

[3536] 'ज़ीलोट' और 'उत्साही' पर्यायवाची शब्द हैं; 'ज़ीलोट' हब्रिू शब्द 'कनानीत' (जो 'काना' - उत्साह से आता है) का ग्रीक अनुवाद है। एक सद्धिांत है कि प्रेरति बनने से पहले, शमिोन कट्टरपंथी कट्टरपंथी संप्रदाय का सदस्य था – जो देशी धर्म के लिए कट्टरपंथी थे और जो मूसा की व्यवस्था के अनुष्ठानकि नयिमों का पालन करने पर वशिेष ध्यान देते थे।

[3537] ज़ीलोत शमिोन की मृत्यु अब्खाज़यिा में एक शहीद के रूप में हुई और उन्हें जगिेती के पास स्थति नकिोपोलसि शहर में दफनाया गया। स्थानीय नविासी आज भी सुखुम से लगभग 20 वर्स्ट (लगभग 20 कलिोमीटर) दूर, समुद्र तट से ज्यादा दूर नहीं, इस शहर के अवशेषों की ओर इशारा करते हैं। संत की मृत्यु के स्थान पर एक चर्च बनाया गया था, जसिे 1875 में एक ग्रैंड ड्यूक के प्रयासों से बहाल कयिा गया था। पवत्रि प्रेरति शमिोन सीलोती, जनिका हम अब स्मरण करते हैं, को सबसे पहले, अलग करना चाहिए, समिोन पतरस, जो बारहों में से एक प्रेरति भी थे, और समिोन या शमिोन, जो प्रभु के मांस में एक संबंधी थे (मत्ती 13:55), जो सत्तर प्रेरतिों की संख्या में से हैं और यरूशलेम के दूसरे बशिप थे – प्रेरति याकूब, जो प्रभु के मांस में भाई थे, के उत्तराधकिारी थे। – सेंट साइमन द ज़ीलट का स्मरणोत्सव पवत्रि चर्च द्वारा 30 जून को, अन्य ग्यारह प्रेरतिों के स्मरणोत्सव के साथ मनाया जाता है)।

कॉन्टाकयिन, स्वर 2:

अपने उपदेश की बुद्धमित्ता के लिए प्रसद्धि, जो भक्तों की आत्माओं में गहरी जड़ें जमा चुकी है, आइए हम साइमन की स्तुति करें, जो ईश्वर के वचन बोलते हैं: क्योंकि वह अब महमिा के सहिासन के सामने खड़े हैं और अदेह प्राणयिों के साथ आनंदति हैं, हम सभी के लिए अखंड रूप से प्रार्थना करते हुए।

मसीह के लिए पूज्य इसडिोरा मूर्ख की जीवन कथा

10 मई को स्मरणोत्सव

थेबाइड में स्थति टावेनीसी कन्वेंट[3538] में, अन्य बहनों के बीच इसडिोरा नाम की एक युवती रहती थी, जसिने पवत्रि मूर्खता का तपस्वी अभ्यास अपनाया था। वह ऐसा व्यवहार करती थी मानो वह मूर्ख और वक्षिप्ति हो, इसीलिए अन्य बहनें उससे इतनी घृणा करती थीं कि उनमें से कोई भी उसके साथ भोजन नहीं करती थी। सभी लोग उसे अपमानति और नीचा दखिाते थे, लेकनि इसडिोरा ने अपने तप को बहुत धैर्य से सहन कयिा, हमेशा धन्यवाद देते हुए और ईश्वर की स्तुति करते हुए।

इसडिोरा मठ की रसोई में लगातार काम करती थी, सभी बहनों की सेवा करती थी और मठ के सभी काम करती थी, यहाँ तक कि सबसे कठनि और गंदे कामों से भी नहीं कतराती थी। वह अपने हाथों से मठ को सभी गंदगी और मैल से साफ़ करती थी। इस प्रकार वह पूजनीय व्यक्ति सुबह से रात तक, बनिा खुद को एक घंटे का आराम दिए, अथक परश्रिम करती रहीं, और हमेशा अपने शरीर को थकाती रहीं।

कभी-कभी इसडिोरा अपने चारों ओर की बहनों से अपनी गुणों को छपिाने के लिए, जैसे कि वह पगला गई हो, ऐसा दखिावा करती थीं। इस प्रकार, उनके द्वारा प्रेरतिों के वचन की पूर्ति हुई: *'यदि कोई इस युग में बुद्धमिान समझता है, तो वह मूर्ख बन जाए, ताकि वह बुद्धमिान बन सके'* (1 कुरन्थियिों 3:18)।

उस मठ में चालीस बहनें थीं, और उन सभी ने मठ जीवन के नयिमों के अनुसार अपने सरि पर घूंघट ओढ़ रखा था; लेकनि इसाडोरा अपने सरि पर एक साधारण सी चीर से ढक लेती थी। उसने कभी कसिी को रोटी का एक कौर खाते या मेज पर बैठकर पका हुआ भोजन करते हुए नहीं देखा था, क्योंकि वह मेज से गरिने वाले टुकड़ों को इकट्ठा कर उन्हें खाती थी; पके हुए भोजन के बजाय, इसाडोरा वही पानी पीती थी जसिसे उसने बर्तन और हांडयिाँ धोई थीं। उस पूजनीय ने अपने शब्दों से कभी कसिी का अपमान नहीं कयिा, कभी कसिी पर क्रोधति नहीं हुईं, ईश्वर के वरिुद्ध कभी शकिायत नहीं की, बल्कि हमेशा मौन रहीं; उन्होंने कसिी से भी, चाहे वह लंबी हो या छोटी, कभी बातचीत नहीं की, और वास्तव में कसिी से भी बात नहीं की, इसके बावजूद कि उनकी सह-बहनें अक्सर उन्हें पीटती थीं और उनकी बदनामी करती थीं।

जब आदरणीय इसाडोरा ने ऐसे तपस्या के प्रयासों में पर्याप्त वर्ष बति लिए, तो उनके बारे में एक प्रकटवाणी पटिरिमि नामक एक महान पुण्यात्मा को हुई, जो पास के पोर्फरिाइट रेगस्तिान में एक तपस्वी के रूप में रह रहे थे। प्रभु का एक स्वर्गदूत उन्हें दखिाई दयिा और कहा: 'तुम इस सुनसान स्थान में रहते हुए, अपने मन में क्यों गर्व करते हो और स्वयं को पुण्यशील क्यों मानते हो? क्या तुम अपनी ही तरह की कसिी महलिा को देखना चाहते हो, जसिने अपने तपस्या कार्यों से ईश्वर को तुमसे अधकि प्रसन्न कयिा है? यदि तुम ऐसी महलिा को देखना चाहते हो, तो टावेनीशयिन मठ जाओ; वहाँ तुम्हें एक बहन मलिेगी जो घूंघट के बजाय अपने सरि पर एक फटी-पुरानी चादर ओढ़ती है; इस बहन ने अपने कर्मों से तुम्हारे से अधकि ईश्वर को प्रसन्न कयिा है, क्योंकि, हमेशा अन्य बहनों के बीच रहते हुए और हमेशा सभी की प्रेम से सेवा करते हुए, वह सभी की घृणा का पात्र है; फरि भी, इसके बावजूद, उसका हृदय कभी ईश्वर से वमिुख नहीं होता, ठीक वैसे ही जैसे उसका मन हमेशा ईश्वर के वचिारों में मग्न रहता है। 'और तुम, यहाँ एकांत में रहते हुए और इस स्थान को कभी न छोड़ते हुए, अपने मन से सभी शहरों में भ्रमण करो।'

[3538] ताबेनीसी मठ की स्थापना प्रसद्धि मस्रि के तपस्वी, संत पाचोमयिस महान (जनिका पर्व 15 मई को मनाया जाता है) द्वारा की गई थी, और यह अपर थेबाइड में स्थति था। मठ की स्थापना इसलिए की गई थी क्योंकि पाचोमयिस की बहन एकांत जीवन जीना चाहती थीं। कन्वेंट के लिए चुनी गई जगह का नाम मेन था और यह नील नदी के कनिारे पर स्थति थी, जबकि पुरुषों का मठ नील नदी के बीच में एक द्वीप पर स्थति था। सेंट पाचोमयिस ने ननों को एक सख्त नयिम दयिा, जो लगभग उनके अपने मठ के नयिम के समान ही था।

पटिरिमि तुरंत ही टावेनसि की महलिा मठ के लिए रवाना हो गए। टावेनसि में पुरुषों के मठ में पहुँचने पर, पटिरिमि ने उस मठ के मठाधीश से महलिा मठ तक ले जाने के लिए साथी देने का अनुरोध कयिा। चूँकि पटिरिमि यहाँ अपने पराक्रमी कार्यों के लिए अच्छी तरह से जाने जाते थे, और उनके तपस्वी जीवन तथा उनकी उन्नत आयु को देखते हुए, मठाधीश ने उन्हें मठ के समुदाय से मार्गदर्शक प्रदान कयि, जिन्होंने, देखभाल और स्नेह के साथ, उन्हें दोनों मठों - पुरुषों और महलिाओं के - को अलग करने वाली नदी के पार पहुँचाया और उन्हें महलिाओं के मठ तक ले गए।

कन्वेंट पहुँचने पर, आदरणीय वृद्ध सबसे पहले कन्वेंट चर्च गए। वहाँ अपनी नयिमति प्रार्थना करने के बाद, पटिरिमि ने सभी बहनों से अपने चारों ओर इकट्ठा होने के लिए कहा ताकि वह उन्हें सबको देख सकें। सभी बहनें इकट्ठा हो गईं, सविाय इसडिोरा के। उस बहन को न देखकर, जसिके बारे में उसे देवदूत से संदेश मलिा था और जसिके लिए वह यहाँ आया था, वरष्ठि ने कहा:

'सभी बहनों को मेरे पास लाओ, क्योंकि मुझे लगता है कि एक गायब है।'

बहनों ने उत्तर दयिा:

'हम सब यहाँ आपके सामने खड़ी हैं।'

लेकनि वरष्ठि ने कहा:

'यहाँ एक गायब है, वही जसिके बारे में मुझे परमेश्वर के स्वर्गदूत से प्रकटवाणी मलिी थी।'

तब बहनों ने कहा:

'हम सभी यहाँ हैं, आदरणीय पति; केवल एक बहन ही अनुपस्थति है, जो रसोई में है, लेकनि वह सरल-स्वभाव की है और भूत-प्रेत से ग्रस्त है।'

तब बड़े भाई ने कहा:

'उस बहन को भी मेरे पास ले आओ, ताकि मैं उसे देख सकूँ, क्योंकि मैं तुम्हारे ही लिए यहाँ आया हूँ।'

बहनें उसे बुलाने गईं और उन्होंने उससे कहा कि पुरोहति उसे बुला रहे हैं। लेकनि वह जाना नहीं चाहती थी, क्योंकि वह अपने आत्मा में उस प्रकटवाणी को समझ गई थी जो स्वर्गदूत ने पुरोहति को दी थी।

तब बहनों ने उसे पकड़कर जबरदस्ती खींचते हुए कहा:

– पूजनीय फादर पटिरिमि आपको बुला रहे हैं।

जब इसाडोरा को पुरोहति के सामने लाया गया, तो उसे देखकर और यह समझकर कि वह वास्तव में वही बहन है जसिके बारे में देवदूत ने उन्हें बताया था, वे उसके पैरों पर गरि पड़े और कहा:

'मुझे आशीर्वाद दीजए, आदरणीय माता!'

लेकनि इसडिोरा स्वयं उसके पैरों पर गरि पड़ी और कहा:

'मुझे आशीर्वाद दीजए, आदरणीय फादर!'

यह सब देखकर, बहनें बहुत हैरान हो गईं और उन्होंने वृद्ध से कहा:

'महाशय, आपको ऐसा अपमान कभी न झेलना पड़े! क्योंकि यह बहन पागल है।'

लेकनि धन्य पटिरिमि ने उनसे कहा:

'शायद आप सब पागल हैं; लेकनि इस बहन ने ईश्वर को मुझसे या आप सब से अधकि प्रसन्न कयिा है; वह हम सबकी माँ हैं, और मैं प्रभु से प्रार्थना करूँगा कि वे मुझे न्याय के दनि उनके साथ अपना हस्सिा दें।'

यह सुनकर, सभी बहनें वृद्ध के सामने गरि पड़ीं और आँसुओं के साथ उन्हें उन सभी अपमानों के बारे में बताया जो उन्होंने दनि-प्रतदिनि उन पर ढाए थे। जैसे ही वे बोल रही थीं, एक बहन ने कहा:

'मैं हमेशा उस पर डाँटती थी।'

एक और ने कहा:

'मैं उस पर गंदा पानी डालती थी।'

तीसरी ने कहा:

'मैं उसे अपने हाथ से मारती थी।'

चौथा:

– मैंने उसे लाठी से मारा।

और अन्य बहनों ने वरिष्ठ बहन को कई अन्य अपमानों के बारे में बताया जो उन्होंने उस पवित्र नन पर किए थे। इसडोरा के सामने प्रणाम कर, वे सभी उससे क्षमा याचना करने लगीं।

धर्मनिष्ठ वृद्ध पटिरिमि ने आदरणीय इसडोरा के साथ मिलकर बहनों के लिए ईश्वर से एक प्रार्थना की कि उनके पाप क्षमा हो जाएँ। इसके बाद, पटिरिमि ने बहनों को उनकी आत्माओं के कल्याण के लिए उपदेश देने और उनसे संवाद करने में काफी समय व्यतीत किया; और अंततः वह अपने तपस्या कार्यों के स्थान पर लौट आए, उस ईश्वर की स्तुति और महिमा करते हुए, जिन्होंने उन्हें सभी से छिपे हुए अपने सेवक को देखने का सौभाग्य प्रदान किया था।

जहाँ तक पूजनीय इसडोरा का प्रश्न है, उन्होंने बहनों के सम्मान को स्वीकार नहीं करना चाहा, इसलिए वे वृद्ध के प्रस्थान के तुरंत बाद, किसी को भी पता न चले, गुप्त रूप से मठ से चली गईं, और अपने मृत्यु के दिन तक किसी के भी अज्ञात स्थानों पर रहीं।

इस ईश्वर-प्रसन्न करने वाली का जीवन ऐसा था, जो सभी से छिपी हुई थी, और जिसने अपनी पवित्र मूर्खता के बहाने गुप्त रूप से प्रभु की सेवा की। इसके लिए उसे स्वर्ग में प्रभु से अपना प्रतिफल खुले तौर पर, उसके सभी स्वर्गीय सह-नागरिकों की आँखों के सामने प्राप्त होगा; उनके बीच अपनी जगह लेने के बाद, वह पिता, और पुत्र, और पवित्र आत्मा, त्रिमूर्ति में एक परमेश्वर की महिमा करती है[3539] ।

धन्य ताइशिया की स्मृति

10 मई को स्मरण किया जाता है

मिस्र में ताइशिया नाम की एक ईसाई कन्या रहती थी। जब उसके माता-पिता की मृत्यु हो गई और वह अनाथ रह गई, तो अपनी कुँवारी पवित्रता को बनाए रखने की इच्छा से, ताइसिया ने अपना सारा धन गरीबों में बाँट दिया, और अपने घर को तपस्वी संन्यासियों के लिए अतिथि-गृह बना दिया। इस प्रकार वह लंबे समय तक अपने घर में तपस्वियों का स्वागत करती रही और उन्हें उनकी यात्राओं से विश्राम प्रदान करती रही। काफी समय बाद, तैसिया के पास अपनी सारी संपत्ति समाप्त हो गई, जिससे वह बहुत गरीबी में आ गई। शैतान के धोखे से, कुछ पापी उसके करीब आ गए; उन्होंने उसे पाप की ओर भटका दिया और उसे मोक्ष के मार्ग से हटा दिया; उस समय से, तैसिया ने एक पापी जीवन जीना शुरू कर दिया, व्यभिचार और दुराचार में लिप्त हो गई।

जब स्केटे के संतों को ताइसा के जीवन में इस बदलाव के बारे में पता चला, तो वे बहुत दुखी हुए। आपस में सलाह-मशविरा करने के बाद, वे बाबा जॉन कोलोव के पास गए और उनसे कहा:

'हमने सुना है कि हमारी बहन एक पापी जीवन जी रही है। लेकिन चूँकि उसने हमें अपने घर में आश्रय देकर हमसे बहुत प्रेम दिखाया, हम भी उसे अपना आध्यात्मिक प्रेम दिखाएँगे और उसकी आत्मा के उद्धार का ध्यान रखेंगे। 'कृपया, आदरणीय फादर, उसके पास जाएँ और उसे पश्चाताप के लिए प्रोत्साहित करें; आप ऐसा कर सकेंगे, क्योंकि आप ईश्वर से बुद्धि प्राप्त हैं। जहाँ तक हमारी बात है, हम उपवास करेंगे और ईश्वर से प्रार्थना करेंगे कि प्रभु आपकी सहायता करें।'

आबा जॉन कोलोव, सम्मानित पादरियों के अनुरोध को पूरा करते हुए, उस महिला से मिलने शहर गए, और रास्ते में अपने सहायक, ईश्वर से चुपचाप प्रार्थना करते रहे—जिनके मन में यह बात प्रसन्न करती है कि सभी का उद्धार हो।

थाइसिया के घर पहुँचकर, बुजुर्ग ने दरवाज़ा खटखटाया और फिर प्रवेश द्वार की रखवाली कर रही महिला से कहा:

'अपनी मालकिन से कह दो कि मैं उससे बात करने आया हूँ।'

लेकिन द्वारपाल ने गुस्से में जवाब दिया:

'तुम संन्यासियों ने उसकी सारी संपत्ति बिर्बाद कर दी है!'

लेकिन वृद्ध ने उससे कहा:

'उसे बता दो कि मैंने उसके लिए बहुत कीमती कुछ लाया हूँ।' द्वारपाल गया और उसने अपनी मालकिन को बूढ़े आदमी की बात बता दी।

[3539] संत इसडोरा का निधन चौथी शताब्दी के अंत के आसपास हुआ।

उस महिला ने उत्तर दिया:

'वे भविष्य, काले सागर के पास चलते हुए, कभी-कभी मोती पाते हैं। उस बूढ़े को मेरे पास ले आओ।'

घर में प्रवेश करते ही, वह बूढ़ा तैसेया के बगल में बैठ गया; फिर, उसके चेहरे को देखकर और गहरी आह भरकर, उसने सिर झुकाया और रोने लगा।

तब तैसिया ने बूढ़े आदमी से पूछा:

'आदरणीय पिताजी! आप क्यों रो रहे हैं?'

बुजुर्ग ने उत्तर दिया:

'मैं देख रहा हूँ कि शैतान तुम्हारे चेहरे पर कैसे काम कर रहा है; तो फिर मैं कैसे न रोऊँ? तुमने हमारे प्रभु यीशु मसीह, जो परम सम्माननीय और अमर वर हैं, को अपना पति क्यों नहीं बनाना चाहा? तुमने उनके महल को क्यों ठुकरा दिया और खुद को शैतान के हवाले क्यों कर दिया? तुम उसके दुष्ट काम क्यों करती हो?'

ये शब्द सुनकर ताइस्सिया अपनी आत्मा में गहराई से प्रभावित हुई, क्योंकि वृद्ध के शब्द उसके लिए एक अग्नि-बाण की तरह थे जो उसके हृदय को भेद रहे थे। तुरंत, उसे अपने पापी जीवन से घृणा हुई; उसे खुद और अपने पापी कर्मों से शर्म आने लगी। फिर उसने वृद्ध से कहा:

'आदरणीय पिता! क्या पापियों के लिए पश्चाताप संभव है?'

बड़े ने उत्तर दिया:

'वास्तव में है, और उद्धारकर्ता आपके मन फिराने की प्रतीक्षा कर रहे हैं, और आपको अपने पितृत्व के आलिंगन में लेने के लिए तैयार हैं; क्योंकि वह नहीं चाहते कि पापी नाश हो जाए, बल्कि यह चाहते हैं कि पापी उद्धार के मार्ग पर लौट आए। और इस प्रकार मैं तुम्हारा गारंटर बनूँगा कि, यदि तुम सच्चे मन से पश्चाताप करती हो और पूरे हृदय से प्रभु की ओर मुड़ती हो, तो वह तुम्हें अपनी वधू के रूप में एक बार फिर से प्रेम करेंगे और, तुम्हें सभी पापी अशुद्धियों से शुद्ध करने के बाद, तुम्हें अपने अमर स्वर्गीय महल में ले आएँगे। तब स्वर्गदूतों के सभी गण आपके लिए आनन्द मनाएँगे, क्योंकि वे एक पश्चाताप करने वाले पापी पर भी आनन्द मनाते हैं।

इस पर तैसिया ने उत्तर दिया:

'परमेश्वर की इच्छा पूरी हो, आदरणीय पिता! मुझे यहाँ से ले जाइए और मुझे वहाँ ले चलिए जहाँ आप जानते हैं, जहाँ मुझे पश्चाताप के लिए कोई उपयुक्त स्थान मिल सके।'

बड़े ने उत्तर दिया:

'चलो चलें।'

तब, उठकर, वह उसके घर के बाहर निकलने की ओर बढ़ गया।

तैसिया भी उठ खड़ी हुई और उस वृद्ध का अनुसरण करने लगी। उसने अपने घर में कोई व्यवस्था नहीं की थी, घर के बारे में किसी से कुछ नहीं कहा था, बल्कि मसीह के लिए सब कुछ तुरंत पीछे छोड़ दिया था।

जब फादर जॉन ने देखा कि तैसिया ने अपने घर की बिल्कुल भी परवाह नहीं की और किसी से कुछ नहीं कहा, तो वे इस अचानक बदलाव और ईश्वर के प्रति तैसिया के उत्साह से बहुत आश्चर्यचकित हुए। इसके लिए ईश्वर का धन्यवाद करने के बाद, वे अपने रास्ते चल पड़े। हालांकि, तैसिया काफी दूरी पर उनके पीछे-पीछे चल रही थी।

जब तक यात्री रेगिस्तान पहुँचे, तब तक देर हो चुकी थी; रात होने लगी थी।

ज़मीन पर रेत का एक छोटा सा बिस्तर बिछाकर, एल्डर ने तैसिया से कहा:

'ईश्वर की कृपा की छाया में यहाँ सो जाओ।'

तब, उसे क्रॉस के चिह्न से आशीर्वाद देकर, वह थोड़ी दूरी पर पीछे हट गया। अपनी रोज़ की प्रार्थनाएँ कहने के बाद, वह बूढ़ा ज़मीन पर लेट गया और सो गया।

जब आधी रात हुई, तो वृद्ध जाग उठा, क्योंकि उसने आकाश में एक रोशनी देखी थी। अपनी आँखें ऊपर उठाकर, वृद्ध ने देखा कि आकाश से आग की एक पट्टी तैसिया की ओर उतर रही थी।

इस दृश्य को देखकर जॉन भय से भर गया। ताइसा को और करीब से देखने पर, उसने देखा कि परमेश्वर के स्वर्गदूत उसकी आत्मा को उसी मार्ग से स्वर्ग ले जा रहे थे। जॉन इस अद्भुत दृश्य को तब तक निहारता रहा जब तक कि वह उसकी दृष्टि से ओझल नहीं हो गया। तब, उठकर जॉन तैसिया के पास गया; उसके पास आकर, उसने उसे अपने

हाथ से हलिाया, लेकनि देखा कि वह मर चुकी थी[3540] । तब वह वृद्ध, भय और कांपते हुए, जमीन पर लोट गया। और स्वर्ग से एक आवाज़ उसे सुनाई दी, जो कह रही थी: 'एक ही घड़ी में कयिा गया उसका पश्चाताप, लंबे समय तक चलने वाले पश्चाताप से कहीं अधकि प्रसन्न करने वाला है; क्योंकि दूसरे मामले में, पश्चाताप करने वालों के हृदय में इतनी गर्माहट नहीं होती।'

वरष्ठि प्रातःतक प्रार्थना में रहे। तब, धन्य तैसयिा के पवत्रि शरीर को भूमि में सुलाने के बाद, वह मठ में लौट आए, जहाँ उन्होंने संतों को वह सब कुछ बताया जो हुआ था। यह सब जानकर, भक्षिुओं ने मसीह परमेश्वर की महान दया के लिए उनकी स्तुति की और धन्यवाद दयिा। उसी—सच्चे परमेश्वर—की महमिा युगों-युगों तक हो। आमीन।

व्लादमिीर और सुज़दाल के बशिप, पूजनीय साइमन का जीवन

10 मई को स्मरणोत्सव

यीशु, सरिाख के पुत्र ने, ओनयिस के पुत्र समिोन के बारे में जो कहा, वह[3541] इस प्रकार है: *'एक महान याजक, जसिने अपने जीवनकाल में भवन को पुनर्स्थापति कयिा और अपने दनिों में मंदरि को दृढ़ कयिा'* (सीर. 50:1); और फरि: *'बादलों के बीच प्रभात की करिण के समान, दनिों में पूर्णमिा के समान, परमप्रभु के मंदरि पर चमकते सूर्य के समान, राजसी बादलों में चमकते इंद्रधनुष के समान'* (सरि. 50:6-7) – यही बात हमें अपने पूजनीय पति साइमन, व्लादमिीर और सुज़्डल के बशिप, गुफाओं के संतों के जीवन के साक्षी और इतहिासकार, धन्य नेस्टर के बाद दूसरे इतहिासकार के बारे में भी कहनी चाहिए। नस्सिंदेह, उन्होंने ईश्वर के घर का भलीभांति नरि्माण कयिा और अपने जीवन के उदाहरण तथा संतों के जीवन के शक्षिाप्रद वृत्तांतों के माध्यम से कलीसयिा को सुदृढ़ कयिा, उन अच्छे चरवाहों में से एक के रूप में जनिके वषिय में प्रभु ने यरि्मयाह भवष्यिवक्ता से यह कहकर वादा कयिा था: *'मैं तुम्हें अपने हृदय के अनुसार चरवाहे दूँगा, और वे तुम्हें ज्ञान और समझ के साथ चराएंगे'* (यर. 3:15)। वास्तव में, साइमन, ' ' को दिए गए सभी खतिाब, जो यहूदी कानून के अच्छे चरवाहे और संरक्षक थे, इस सम्माननीय साइमन, व्लादमिीर और सुज़दाल के आर्चबशिप पर भी लागू कए जा सकते हैं।

इस धन्य साइमन ने पवत्रि पेचेर्स्क मठ में संन्यासी की शपथ ली, जो स्वर्ग के समान था, पवत्रि तपस्वयिों से सुसज्जति, मानो आध्यात्मकि तारों, चंद्रमा और सूर्य से। मठ में प्रवेश करते ही साइमन ने उन संतों के जीवन वृत्तांतों को लगन से पढ़ा, जो उससे पहले आए थे और जन्हिोंने स्वर्ग के तारों की तरह ईश्वर को प्रसन्न कयिा था। और धन्य साइमन स्वयं इन संतों के कर्मों के प्रति प्रेम से जल उठा और हर संभव प्रयास कयिा कि उनका अनुकरण कर सके। उन्होंने स्नेहपूर्वक मठ के प्रथम संस्थापक, परम पूज्य थयिोडोरस के कार्यों को याद कयिा, जन्हिोंने मठ के इन आध्यात्मकि सतिारों—भक्षिुओं—की संख्या बहुत बढ़ाई थी, और हर तरह से उनके जीवन का अनुकरण करने का प्रयास कयिा। उन्होंने संत एंथनी के कर्मों को भी याद कयिा, जन्हिोंने सभी को अपने अच्छे कर्मों की रोशनी से, सूर्य की तरह, प्रबुद्ध कयिा; और उन्होंने उस पूजनीय संत के दव्यि जीवन शैली का अनुकरण कयिा; तारों की तरह अनगनित पूजनीय संतों को, जो चंद्रमा और सूर्य की सेवा कर रहे थे, नहिारते हुए, साइमन ने वनिम्रता सीखी; वशिेष रूप से, उसने परम पूज्य थयिोडोसयिस के उदाहरण से वनिम्रता सीखी, जो चंद्रमा की तरह, सभी अन्य सतिारों से अधकि चमके और अन्य भाइयों की तुलना में ईश्वर से अपने लिए एक अधकि गौरवशाली मुकुट अर्जति कयिा। एंथनी से, जो बनिा कसिी अन्य प्रकाशमान तारे के, अकेले आकाश में यात्रा करने वाले सूर्य की तरह थे, साइमन ने दैवीय मौन का जीवन अपनाया। एक दर्पण की तरह, उन्होंने अपने भीतर उन सभी आध्यात्मकि प्रकाशमान तारों—तारागण, चंद्रमा और सूर्य—का प्रतबिंबि डाला, और स्वयं तारों, चंद्रमा और सूर्य का प्रकाश बखिेरा। इसके अलावा, ठीक उसी प्राचीन महापुजारी साइमन की तरह, यह

[3540] संत थाइस की मृत्यु 5वीं शताब्दी में हुई।

[3541] यह, बेशक, साइमन प्रथम को संदर्भति करता है, जो यहूदयिों के महापुजारी और महापुजारी ओनयिस प्रथम के पुत्र और उत्तराधकिारी थे, जन्हिें उनके समकालीनों ने उनकी धार्मकिता के लिए 'धर्मी' कहा था। मस्रि के राजाओं के शासन के तहत शांति की अवधि का लाभ उठाते हुए, उन्होंने यरूशलेम के कलिेबंदी कार्य को फरि से शुरू कयिा, मंदरि को सुशोभति कयिा, उसे ऊँची दीवारों से घेर दयिा, और उसके भीतर महत्वपूर्ण मरम्मत और सुधार कए; लेकनि, सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि उन्होंने अपने स्वयं के धार्मकि जीवन के उदाहरण द्वारा लोगों के धार्मकि और नैतकि जीवन को ऊँचा उठाया, यही कारण है कि उन्होंने सबसे प्रयि स्मृतयिाँ पीछे छोड़ीं (सरि. 50:1–21)। – साइमन ने ईसा पूर्व तीसरी शताब्दी की शुरुआत में महापुजारी के रूप में कार्य कयिा।

भी प्रभात की किरण, पूर्णिमा के चंद्रमा और सर्वोच्च के चर्च पर चमकते सूर्य के समान था। उन्होंने स्वर्ग के समान पवित्र पेचेर्स्क मठ में परिश्रम से काम किया, और साइमन स्वयं, अपने कर्मों के द्वारा, प्रातःकाल के तारे के समान थे, जो हमेशा परमेश्वर की अति पवित्र माता का अनुकरण करते थे, जो चंद्रमा की तरह सुंदर और सूर्य की तरह तेजस्वी थीं। अपनी पूरी क्षमता से, उन्होंने परमेश्वर की माता की सेवा उत्साह के साथ की, और निरंतर महान विनम्रता और उत्कट प्रार्थना में लगे रहे, कभी अपने भाइयों के साथ मिलकर और कभी एकांत में।

जब यह संत साइमन अपने कर्मों के लिए कई पड़ोसी देशों में प्रसिद्ध हो गए, यहाँ तक कि वे बहुत दूर के देशों में भी जाने जाने लगे, तो ऐसा हुआ कि उस समय व्लादिमीर और सुज़्डल के डायोसीस का बिशप पद खाली था। चर्च के लिए तारों के मुकुट से सुसज्जित होना उचित है (देखें प्रका. 12:1), जैसा कि संत जॉन अपने प्रकाशितवाक्य में लिखते हैं। व्लादिमीर और सुज़्दल की उस धर्मपीठ पर कोई चरवाहा नहीं था—न कोई चमकता हुआ सूरज और न ही कोई सुंदर चंद्रमा—ताकि कलीसिया भजन संहिता के वचनों: 'मेरा सिंहासन मेरे सामने सूर्य के समान है' और *'चंद्रमा के समान, जो युगानुयुग परिपूर्ण है'* (भजन संहिता 88:38) पर घमंड न कर सके। इसी समय, चरवाहों के मुखिया—यीशु की इच्छा से, जिन्होंने एक बार अपनी भेड़ों को उस व्यक्ति को सौंप दिया था जो 'सबसे अधिक प्रेम करता था' (यूहन्ना 21:15–17), इस धन्य शिमोन, जिसने परमेश्वर की अति पवित्र माता से अपने पूरे हृदय से प्रेम किया था, को परमेश्वर द्वारा उन शहरों – व्लादिमीर और सुज़्दाल – का शासन करने के लिए बिशप के सिंहासन पर बुलाया गया, जिन्हें परमेश्वर ने संरक्षित किया था। इस प्रकार कलीसिया का मुकुट उस तारकीय प्रकाश से सुशोभित हुआ, जबकि उसका सिंहासन सूर्य और पूर्णिमा के समान दमक उठा। यह धन्य चरवाहा अपने सिंहासन पर अपने पुण्य कार्यों से प्रातःकाल के तारे, चंद्रमा और सूर्य की भाँति दमक उठा; अपने उपदेश द्वारा उसने सभी को ज्ञान का प्रकाश दिया, उन्हें प्रेम से आलोकित किया, और ईश्वर से याचना की गई कृपा के द्वारा सभी को (आध्यात्मिक) जीवन प्रदान किया। यह धन्य साइमन स्वयं को सदैव, मानो, उस प्रभात तारे के रूप में मानते थे, जो रात के अंत और दिन की शुरुआत का संकेत देता है; अतः उन्होंने स्वयं को हमेशा सभी बुराइयों और पापपूर्ण कर्मों से दूर रखा और पूरी शक्ति से अच्छे और अनुग्रह-पूर्ण कर्मों के लिए प्रयास किया। संत ने यह भी मनन किया कि सूर्य और चंद्रमा, मानो, स्वर्ग में निरंतर निहारने वाली दो आँखें हैं; इसलिए उन्होंने यह सुनिश्चित करने के लिए हर संभव सावधानी बरती कि उनका सिंहासन सूर्य और पूर्णिमा के चंद्रमा की तरह चमके, और व्यक्तिगत रूप से उन चौकस स्वर्गीय आँखों का अनुकरण करने का प्रयास किया, जिसके उद्देश्य से उन्होंने अपने आध्यात्मिक झुंड की अथक उत्साह के साथ लगन से देखभाल की।

धन्य साइमन ने एक उत्साही चरवाहे के रूप में लंबे समय तक परिश्रम किया, और अपने झुंड की लगन और ध्यान से देखभाल की; और यह ध्यान देने योग्य है कि आदरणीय ने अपने मंत्रालय को बड़ी सफलता के साथ पूरा किया। साथ ही, संत ने अपने मठवासी श्रमों की उपेक्षा नहीं की, वे हमेशा गुफाओं के सम्मानित तपस्वियों के श्रम और कारनामों को ध्यान में रखते थे और अपनी आत्मा में इस बात का आनंद मनाते थे कि प्रभु ने उन्हें, इस सम्मानित मठ में, मठवासी जीवन अपनाने और, यूं कहें, गुफाओं के पवित्र तपस्वियों के साथ एक सह-निवासी बनने के योग्य समझा था; संत साइमन लगातार अपनी प्रार्थनाओं में उनसे मदद मांगते थे और, ईश्वर के समक्ष उनके मध्यस्थता और ईश्वर की कृपा की सहायता से, उन्होंने अपने झुंड के मामलों को सफलतापूर्वक प्रबंधित किया, ताकि सिरिक के पुत्र यीशु को आरंभिक सभी अन्य समानताएं और उपाधियाँ, सिमोन, यहूदी महापुजारी, जिसने पुराने नियम में परमेश्वर को प्रसन्न किया। उपर्युक्त उपाधियों के अलावा, यीशु, सिराख का पुत्र, साइमन के बारे में लिखते हैं कि वह, मानो, एक स्वर्गीय मेहराब, काँटों में एक फूल, एक लिली, एक लेबनानी देवदार, आग पर धूप, पीटे हुए सोने का एक पात्र, एक जैतून का पेड़ और एक सरू का पेड़ था (सिर. 50:8–11)। इन उपमाओं द्वारा प्रतीकित ये सभी प्रमुख-पादरीय सद्गुण, अच्छे चरवाहे साइमन के जीवन में प्रकट हुए। इस प्रकार, उन्होंने लोगों के बीच इंद्रधनुष द्वारा प्रतीकित शांति को बनाए रखने और स्थापित करने का बहुत ध्यान रखा; इसके अलावा, उन्होंने अपने जीवन के उदाहरण से ही सभी को धैर्य का गुण सिखाया, जो काँटों के बीच सेब के पेड़ के फूल की तरह खिलता था, और वे अपनी भेड़ों के आध्यात्मिक बगीचे में हमेशा परिश्रम करते थे; उन्होंने सभी को कर्म और वचन दोनों से आध्यात्मिक पवित्रता का उपदेश दिया, मानो एक सफेद लिली का पौधा लगा रहे हों; उन्होंने सभी को ईश्वर से अखंड रूप से प्रार्थना करना सिखाया, मानो लेबनान के सुगंधित पौधों को बढ़ा रहे हों; उन्होंने अपनी दुःखों के बीच भी हमेशा ईश्वर का धन्यवाद किया, और इसके अलावा अपने झुंड को यह शिक्षा दी, कि वे स्वयं को एक सुगंधित धूप की तरह प्रस्तुत करें, जो अग्नि पर सुगंधित हो, और प्रेम तथा आध्यात्मिक ज्ञान के कीमती पात्र में

सभी के लिए अर्पित हो; उन्होंने अपने झुंड में दया और पड़ोसी के प्रति प्रेम का जैतून का पेड़ लगाया, और देवदार के वृक्ष की तरह अपने झुंड में ईश्वर की निरंतर स्मृति भी भर दी।

इन धन्य साइमन ने गुफाओं के पवित्र तपस्वियों के तपस्वी जीवन का इतनी गहराई से अध्ययन किया था कि, मानो, उन्होंने इसे अपने हृदय की पटलियों पर अंकित कर लिया था; इसलिए, वह चाहता था कि अन्य धर्मपरायण लोग भी गुफाओं के तपस्वियों के जीवन को जान सकें; और इस उद्देश्य के लिए, उसने गुफाओं के भिक्षुओं के तपस्वी जीवन का एक लिखित विवरण संकलित करने का संकल्प लिया। यह ध्यान देने योग्य है कि उस समय, कई युद्धों और गृह युद्ध के कारण, कई पुस्तकें खो गई थीं, इसलिए इन पुस्तकों में वर्णित कई घटनाएँ भुला दी जाने लगी थीं। इसी को ध्यान में रखते हुए, धन्य साइमन ने गुफाओं के मठ में घटित किसी न किसी चमत्कारिक घटना के सभी प्रत्यक्षदर्शियों की बड़ी लगन से तलाश की, और माननीय फादर ने एक बुद्धिमान मधुमक्खी की तरह परिश्रम करते हुए, इस प्रकार प्राप्त सभी जानकारी को एक साथ संकलित किया। यही कारण है कि उन्होंने हमें सूर्य, चंद्रमा और तारों के प्रकाश से प्रबुद्ध किया, क्योंकि उन्होंने हमें पूजनीय एंथनी, उस तेजस्वी सूर्य, के चमत्कारों और पूजनीय थियोडोरियस के अवशेषों के चमत्कारिक संवर्धन का वर्णन किया - जो पूर्णिमा के समान थे; इन सबके अतिरिक्त, धन्य साइमन ने पवित्र, स्वर्ग-सदृश, गुफा चर्च का वृत्तांत जोड़ा, जिसका सिंहासन वास्तव में सूर्य और पूर्णिमा के समान दमकता था; – यह सब आदरणीय नेस्टर द्वारा पैटेरिकॉन के पहले भाग में दर्ज किया गया था[3542] । इसके अलावा, धन्य साइमन ने पॉलीकार्प को लिखे एक पत्र में गुफाओं के कई तपस्वियों के जीवन के बारे में जानकारी दी, जो अपने कर्मों से तारों की तरह चमके; – इसे पैटेरिकॉन के दूसरे भाग में शामिल किया गया था। बाद में, साइमन ने उसी पॉलीकार्प को एक और पत्र लिखा, जिसमें उन्होंने गुफाओं के कई अन्य तपस्वियों के कर्मों के बारे में बताया।

इस धन्य साइमन की रचनाओं से यह स्पष्ट है कि वह परमेश्वर की परम पवित्र माता और सम्माननीय पिताओं - गुफाओं के एंथनी और थियोडोसियस - से इतना अधिक प्रेम करता था कि, आत्मा और मन से, वह इन सम्माननीय पुरुषों के साथ उसी गुफा में रहने जैसा रहता था, भले ही शरीर से वह अपने स्वयं के धर्मप्रांत में रहता था।

जिस प्रकार सिमोन पतरस ने अन्य प्रेरितों से अधिक प्रभु से प्रेम किया था, उसी प्रकार इस सिमोन ने भी, जिसका नाम उस महिमामय प्रेरित के नाम पर रखा गया था, परमेश्वर की अति पवित्र माता और गुफाओं में उनके मठ के प्रति परम प्रेम और भक्ति दिखाई।

अपने जीवनकाल में, विश्वासियों ने स्वर्ग में एक अद्भुत संकेत देखा – अर्थात्, उन्होंने देखा कि एक विशेष महिला, वह वधू जो वधू नहीं है, परमेश्वर की अति पवित्र माता, के चरणों के नीचे न केवल चंद्रमा का प्रकाश, बल्कि तारों और सूर्य का भी प्रकाश था; क्योंकि यह सच्चा चरवाहा (जैसा कि हमने ऊपर कहा है) अपने पुण्य कार्यों से एक तारे और चंद्रमा की तरह चमका, और उन्होंने इतनी महान विनम्रता दिखाई कि, एक बिशप होते हुए भी, उन्होंने अपने पत्र में लिखा कि वे इसे एक सम्मान समझेंगे कि वे श्रम का स्रोत बनें, राहगीरों के पैरों तले कुचले जाएं और फेंक दिए जाएं, जैसा कि उनका पत्र गवाही देता है।

यह अच्छा चरवाहा काफी लंबे समय तक परिश्रम करता रहा, अपनी आध्यात्मिक भेड़-बकरियों को उस अमर भोजन से पोषित करता रहा जो जीवन की ओर ले जाता है, क्योंकि उसने अपनी सारी भेड़-बकरियों को उन संतों के जीवन की पेशकश की जिन्होंने गुफाओं के मठ में परिश्रम किया था, लेखन के माध्यम से और अपने स्वयं के जीवन के उदाहरण के माध्यम से भी।

धर्मोपदेशाध्यक्षीय सिंहासन पर बारह वर्ष बिताने के बाद, धन्य साइमन बारह सिंहासनों पर विराजमान चरवाहों और स्वयं प्रमुख चरवाहे, प्रभु यीशु के पास चले गए, ताकि वे उहें से अ , से अमर महिमा का मुकुट प्राप्त कर सकें। उनके पवित्र शरीर को, धन्य पॉलिकार्प को लिखे एक पत्र में व्यक्त उनकी इच्छा के अनुसार, और गुफाओं के पवित्र तपस्वियों के प्रति उनके प्रेम के अनुरूप, गुफाओं में ही सुलाया गया, जहाँ यह आज भी अपरिवर्तित अवस्था में सुरक्षित

[3542] ग्रीक से अनुवादित 'पेटेरिकॉन' का अर्थ है 'पिता का संग्रह', यानी एक संकलन जिसमें तपस्वियों के जीवन के संक्षिप्त विवरण या उनके नैतिक उपदेश शामिल होते हैं। कीव-पेचेरस्क पेटेरिकॉन, पेचेरस्क के भिक्षुओं के कार्यों के संक्षिप्त विवरणों का एक संग्रह है। यह पैट्रिकॉन व्लादिमीर और सुज़दाल के बिशप साइमन की 14 कहानियों पर आधारित है, जिसके बाद इतिहासकार नेस्टर और अन्य लोगों द्वारा संकलित संतों के जीवन का वर्णन है। जहाँ तक साइमन की कहानियों का सवाल है, उनमें से नौ गुफाओं के चमत्कार करने वालों के जीवन का वर्णन करती हैं, और पाँच गुफाओं के मुख्य चर्च के निर्माण के साथ हुए चमत्कारों का वर्णन करती हैं।

है, पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा की महिमा, यश और स्तुति के लिए। एक ईश्वर जो त्रिमूर्ति में महिमामय है, अब और सदा, और युगानुयुग। आमीन[3543] ।

शहीद संत इसचियिस का कष्टकथा

10 मई को स्मरण किया जाता है

पवित्र शहीद इसचियिस ने सम्राट मैक्सिमियिन के शासनकाल में यातनाएँ भोगीं[3544] । बाद वाले के दरबार में, वह उच्चतम पद पर थे, उन्हें मैजिस्ट्रियिन की उपाधि प्राप्त थी[3545] और वे अंकोन में रहते थे[3546] । मैक्सिमियिन ने ईसाइयों को सैन्य सेवा से बाहर कर दिया और जो ईसाई धर्म में बने रहना चाहते थे, उन्हें अपनी सैन्य पट्टियाँ उतारकर भाड़े के नौकर का पद लेने का आदेश दिया। इस शाही फरमान के बाद, कई लोगों ने सैन्य पद की विनाशकारी सम्मान के बजाय एक नौकर का अपमानजनक जीवन चुना। उनमें प्रसिद्ध इसचियिस भी था। यह जानकर, मैक्सिमियिन ने उसे अपना कीमती राजकीय चोगा उतारने, एक मोटे बालों वाला वस्त्र पहनने[3547] और दासीयों के बीच रहने का आदेश दिया। कुछ दिनों बाद, उसने इसचियिस को अपनी उपस्थिति में बुलाया और उससे कहा:

'इसचियिस, मुझे बताओ, क्या तुम्हें इतनी अपमानजनक स्थिति में बने रहने में शर्म नहीं आती?'

लेकिन संत ने उत्तर दिया:

'मुझे आपसे जो सम्मान मिला था, वह अस्थायी था।'

यह उत्तर सुनकर, मैक्सिमियिन ने आदेश दिया कि इसचियिस के गले में एक चक्की का पाट बाँध दिया जाए और उसे नदी में फेंक दिया जाए। इस प्रकार पवित्र शहीद ने अपना प्राण त्यागा[3548] ।

पवित्र शहीदों अल्फियास, फिलाडेल्फस, साइप्रियिन[3549] और उनके साथ पीड़ा सहने वालों की स्मृति

10 मई को स्मरणोत्सव

ये मसीह के पवित्र शहीद इटली के थे। इनमें अल्फियिस, फिलाडेल्फस और साइप्रियिन इतालवी राजकुमार[3550] के पुत्र थे, और उन्हें ईसाई धर्म की शिक्षा दी गई तथा किसी ओनेसिमिस ने उन्हें बपतिस्मा दिया। उस समय, रोम से उनके देश में ईसाइयों की खोज के लिए एक आदेश भेजा गया था, और जब यह पता चला कि वे ईसाई हैं, तो उन्हें ओनेसिमिस,

---

[3543] आदरणीय साइमन का 1226 में, व्लादिमीर और सुज़दल के धर्मप्रांत के अपने प्रशासन के 11वें वर्ष में निधन हो गया (उन्होंने 1215 से 1226 तक धर्मप्रांत का प्रशासन संभाला)।

[3544] यह, बेशक, मैक्सिमियिन गैलेरियस को संदर्भित करता है, जो सम्राट डायोक्लेटियिन के दामाद और उत्तराधिकारी थे, जिन्होंने 305 से 311 तक रोमन साम्राज्य के पूर्वी हिस्से पर शासन किया। 292 में, डायोक्लेटियिन ने गेलेरियस को सीज़र की उपाधि के साथ अपना सह-शासक चुना और उसे इलिरिया और डेन्यूब के किनारे की भूमि सौंप दी। डायोक्लेटियिन के संबंधी होने के नाते, गैलेरियस ने वृद्ध सम्राट पर गहरा प्रभाव डाला और 303 में ईसाइयों के खिलाफ सामान्य फरमान जारी होने से पहले ही, उन्हें एक निजी फरमान जारी करने के लिए मजबूर कर दिया जिसके तहत ईसाइयों को सैन्य सेवा से हटा दिया गया; वास्तव में, वह स्वयं इस फरमान का सबसे उत्साही प्रवर्तक था। उसने न केवल ईसाइयों को सैन्य सेवा से निकाल दिया, बल्कि उन्हें अपनी दरबार से भी हटा दिया।

[3545] 'मैजिस्ट्रियिन' या 'मैजिस्टर' की उपाधि रोमन सम्राटों के दरबार में उच्चतम कार्यालयों में से एक को दर्शाती थी, जो हमारे 'कोर्ट मिनिस्टर' के समान कुछ था।

[3546] यह सीरिया के एंटिओक (Antioch) को संदर्भित करता है, जो कभी सीरिया की भव्य राजधानी थी, लेकिन अब तुर्की के एंटिओक क्षेत्र में एक गरीब छोटा शहर है।

[3547] 'व्लासेनट्सा' घोड़े के बालों से बुना गया एक वस्त्र है।

[3548] यह पवित्र शहीद डायोक्लेटियिन के शासनकाल के दौरान मारे गए, लेकिन उनकी मृत्यु का वर्ष अज्ञात है।

[3549] मेनायोन के ग्रीक श्लोक में साइप्रियिन को 'Kyprin' और संतों के कृत्यों तथा अन्य प्राचीन स्रोतों में 'Kyri'n' कहा गया है।

[3550] बोलांडीस्ट्स के शोध के अनुसार, इन पवित्र शहीदों का जन्मस्थान दक्षिणी इटली में, सिसिलियिन या आयोनियिन सागर के तट के पास, बास्ता शहर था; सम्राट बेसिल के मासिक कैलेंडर के अनुसार, उनके पिता का नाम वटिलियिस था।

एरास्मस और चौदह अन्य ईसाइयों के साथ मलिकर रोम के में सम्राट लकिनियिस[3551] के पास भेजा गया। उनके आदेश पर, ओनेसमिस की छाती पर एक वशिाल पत्थर रखा गया, जसिसे उसकी मृत्यु हो गई। हालाँकि, एरास्मस और अन्य चौदह पवत्रि शहीदों के सरि तलवार से काट दएि गए, जबकि अल्फयिस, फलिाडेल्फस और साइप्रयिन को सेलेउकयिा[3552] भेजा गया और वहाँ मसीह में उनके वशि्वास के लएि मार डाला गया[3553] ।

24 मई

11 मई (पुराने कैलेंडर के अनुसार)

संत मोकयिस हरिोमार्टायर की शहादत।

11 मई को स्मरण कयिा जाता है

डायोक्लेटयिन[3554] के शासनकाल में, एम्फीपैट्स[3555] लाओडकियिा और मैक्समिस के अधीन, एक ऐसे समय में जब हर जगह ईसाइयों पर अत्याचार हो रहे थे, ईसाई पुरोहति मोकयिस मैसेडोनयिा में स्थति एम्फीपोलसि शहर में रहते थे। उस समय जब मूर्तपिूजक अपने दुष्ट देवता डायोनसिस, या बाखस[3556] के सम्मान में अपना अशुद्ध त्योहार मना रहे थे, तब मसीह के नाम के प्रति उत्साह से जलता हुआ यह पुरोहति, मूर्तपिूजकों के बीच खड़ा हुआ और सभी के सुनने के लएि इतनी ऊँची आवाज़ में घोषणा की:

'सुनो, हे भ्रम में पड़े और मार्गभ्रष्ट हुए हो! तुम मूर्तपिूजा के अंधकार में लापरवाही से भटकते हुए, और कतिनी देर तक मार्गभ्रष्ट होते रहोगे? तुम अपनी वनिाश से कब तक अनभज्ञि रहोगे? आखरि कब ये सभी दैवीय घृणति कृत्य तुम्हें घृणति लगेंगे? तो फरि, प्रभु परमेश्वर को जानो, जो हमें अपने एकलौते पुत्र, हमारे प्रभु यीशु मसीह के माध्यम से प्रकट हुए हैं, जन्हिोंने सत्य के प्रकाश के रूप में अज्ञानता के अंधकार को दूर कर दयिा है।

धन्य मोकयिस ने इस प्रकार के और भी कई वचन कहे, और वह उन्हें केवल एक बार ही नहीं, बल्कि प्रतदिनि कहा; लोगों के पास जाकर, उन्होंने मूर्तयिों की पूजा करने वाले अवशि्वासयिों की भूल की सार्वजनकि रूप से नदिा की, और सच्चे परमेश्वर, मसीह का प्रचार कयिा। लेकनि, मूर्खता से अंधा होकर, नागरकिों ने पूजनीय पति के शब्दों पर कोई ध्यान नहीं दयिा और अपने अपवत्रि अनुष्ठान करते रहे।

इस बीच, मैसेडोनयिा में स्थति अपोलोनयिा शहर से, लाओडकियिस नामक एक एम्फपिैटस अम्फपिोलीस आया और वहाँ डायोनसिस को बलदिान चढ़ाने लगा। लाओडकियिस को मसीह के सेवक, मोकयिस के बारे में बताया गया था कि वह बहुत से लोगों को देवता डायोनसिस की पूजा से दूर कर रहा था। मूर्तपिूजकों ने संत की बहुत बदनामी की, और कहा:

[3551] बोलैंडस्टिों के अनुसार, उस समय लसिनियिस सम्राट नहीं था, बल्कि केवल प्रांतीय राज्यपाल का पद धारण करता था, जबकि साम्राज्य पर डसियिस का शासन था। सम्राट बेसलि के कैलेंडर के अनुसार, पवत्रि भाई शहीदों और उनके साथ पीड़ति अन्य लोगों का उत्पीड़क प्रफिेक्ट डायोमेड्स था, जसिे लसिनियिस ने उन्हें मुकदमे और सज़ा के लएि सौंप दयिा था।

[3552] सेलेउकयिा एशयिा माइनर में रोमन प्रांत सलिसियिा का एक शहर है, लेकनि प्रोलॉग में यहाँ एक मुद्रण संबंधी त्रुटि यिा लेखन की चूक है। सेंट्स के कार्यों के अनुसार, तीनों पवत्रि भाई-शहीद ससिलिी में, लयिोन्टनिा शहर में भटकते रहे।

[3553] पवत्रि शहीदों का नधिन 10 मई 251 को हुआ। गवर्नर टर्टलिस ने आदेश दयिा कि अल्फीयस की जीभ काट दी जाए, और वह रक्तस्राव से मर गया; फलिाडेल्फस को लोहे की जाली पर जलाया गया, और साइप्रयिन को एक तवे पर। 1517 में, उनके शरीर लयिोन्टनिी शहर में पाए गए और श्रद्धांजलि के लएि भक्तपिूर्वक प्रदर्शति कएि गए।

[3554] डायोक्लेटयिन ने 284 से 305 तक रोमन साम्राज्य पर शासन कयिा।

[3555] एम्फपिैटस – प्रांत का गवर्नर।

[3556] ग्रीक पौराणकि कथाओं के अनुसार, डायोनसिस या बाकस, ज्यूस और सेमेली के पुत्र थे, जो अंगूर की बेल और शराब बनाने के देवता थे, जो शराब के उपहार से लोगों के दलिों को प्रसन्न करते थे। डायोनसिस को खेतों में उगने वाली सभी चीज़ों - फूलों और फलों - के संरक्षक के रूप में माना जाता था। डायोनसिस के सम्मान में उत्सव शुरू में मध्यम स्वभाव के थे, लेकनि बाद में वे अश्लीलता और व्यभचिार में बदल गए। इन उत्सवों के दौरान, मूर्तपिूजक उन्मत्त और नशे में धुत अवस्था में इधर-उधर दौड़ते-भागते, जानवरों को टुकड़े-टुकड़े कर देते और खून से सना मांस खाते थे। देवता डायोनसिस के सम्मान में त्योहार साल में चार बार आयोजति कएि जाते थे और प्रत्येक अवसर पर कई दनिों या हफ्तों तक चलते थे।

'यहाँ एक ईसाई शिक्षक है जो लोगों को किसी अजीब सिद्धांत से बहकाने की कोशिश कर रहा है; वह सभी को एक ऐसे मनुष्य में विश्वास करने के लिए मनाता है जिसे सूली पर चढ़ाया गया था और जो मर गया; और वास्तव में, कई लोगों ने हमारे देवताओं को त्यागकर उसका धर्म अपना लिया है। यदि आप उसे यह शिक्षा फैलाने से नहीं रोकते, तो पूरा शहर उसका अनुयायी बन जाएगा, और फिर देवताओं को बलिदान चढ़ाने वाला कोई नहीं बचेगा।"

अम्फिपैटस, अत्यधिक क्रोधित होकर, संत को कोड़े मारने का आदेश दिया। फिर, न्यायाधीश की कुर्सी पर बैठकर, उसने संत मोकियास को अपने सामने पेश करने का आदेश दिया। जब उन्हें पेश किया गया, तो अम्फिपैटस ने उनसे पूछा:

'मुझे बताओ: तुम कौन हो, जो हमारे साथ बलिदान करने से इनकार करते हो और लोगों को देवताओं को बलिदान देने से रोकते हो?'

संत मोकिय ने उत्तर दिया:

'हे अज्ञानी मनुष्य, जो सत्य को नहीं जानता! तू मुझसे ऐसी बातों के बारे में क्यों पूछता है जिन्हें तू वैसे भी नहीं समझ सकता? अपने बारे में थोड़ा चिंतन कर और सत्य को स्वीकार कर, क्योंकि मैंने पवित्र धर्मग्रंथों का अध्ययन किया है और उनसे यह सीखा है कि सभी मूर्तिपूजक देवता राक्षस हैं (भजन संहिता 95:5), और उन पर आशा रखना व्यर्थ है।'

तब लाओदिकिया ने कहा:

'मुझे लगता है कि तुम वाक्पटुता में निपुण हो।'

मोकीयस ने उत्तर दिया:

'हमारी वाक्पटुता हमें सत्य सिखाती है; यदि तुम सत्य को समझना चाहते हो, तो सुनो जो मैं तुम्हें बताने जा रहा हूँ: जिन देवताओं की तुम पूजा करते हो वे राक्षस हैं - वे मूक और बधिर हैं।'

लॉडिकियस ने कहा:

'यदि तुम अपना जीवन बचाना चाहते हो, जिसे तुम जानबूझकर नष्ट करने की कोशिश कर रहे हो, तो देवताओं को बलिदान चढ़ाओ।'

लेकिन संत ने उत्तर दिया:

'हे एम्फिपैटस! मसीह के लिए मृत्यु मेरे लिए एक महान लाभ है।'

तब क्रोध से भरकर एम्फिपैटस ने संत मोकियास को यातना-वृक्ष पर लटकाने और उनके शरीर को सिर से पैर तक लोहे के औजारों से खुरचने का आदेश दिया।

यातनाओं के दौरान, संत ने ईश्वर से पुकार लगाते हुए कहा: 'हे प्रभु, जो हमेशा राज्य करते हैं, और धार्मिकता की किरणों से प्रकाशमान हैं! अपने सेवकों पर अपनी दिव्य शक्ति प्रकट करें और मुझे आपके पवित्र आज्ञाओं के लिए अंत तक प्रयास करने की शक्ति प्रदान करें।'

यातना देने वालों के सेवकों ने संत के शरीर को इतनी देर तक यातना दी कि अंत में वे स्वयं ही थक गए। तब अम्फिपैटस ने उन्हें जाने का आदेश दिया, और उन्हें आलसी और कमजोर कहा; लेकिन उसने शहीद को पूछताछ के लिए एक बार फिर अपने पास बुलाने का आदेश दिया।

झेले गए यातनाओं के बावजूद, संत लाओडिसियस के सामने पूरी तरह से स्वस्थ होकर उपस्थित हुए, और सच्चाई की गवाही देने के लिए और भी अधिक साहस के साथ तैयार थे। जैसे ही वे यातना देने वाले की ओर बढ़े, मोकिय ने ऊँचे स्वर में ईश्वर की महिमा की।

लाओडिकियस ने संत से कहा:

'देवता डायोनिसिस को बलिदान चढ़ाओ, ताकि वह तुम्हें तुम्हारी अनेक परेशानियों से मुक्ति दे।'

लेकिन शहीद ने उत्तर दिया:

क्या तुम सच में एक मूर्ति—जो निर्जीव और निश्चेष्ट है, और मानव हाथों से बनी है—को देवता मानते हो? हे शैतान के धोखे में पड़े सेवक! क्या तुम यह नहीं देख सकते कि मेरे शरीर को तुम्हारे यातनाओं से कमज़ोरी नहीं हुई है? क्या तुम यह नहीं देख सकते कि मुझे अपने घावों में बिल्कुल भी दर्द महसूस नहीं हो रहा है? तुम्हारी सारी शक्ति कुछ भी नहीं है।

ये शब्द सुनकर, लाओडिकिअस ने कहा:

'यातनाओं के सामने तुम्हारी दृढ़ता तुम्हारे ईश्वर की शक्ति पर नहीं, बल्कि तुम्हारी जादू-टोने पर निर्भर करती है। देखो, मैं आज्ञा देता हूँ कि तुम्हारे शरीर को आग में जला दिया जाए, ताकि तुम्हारे सभी अंग राख हो जाएँ और हवा से बिखर जाएँ।'

और तुरंत यातना देने वाले ने एक भट्टी तैयार करने का आदेश दिया—एक बहुत बड़ी भट्टी—और आज्ञा दी कि उसे गोंद और सूखी लकड़ी से भरकर आग लगा दी जाए; भट्टी से निकलने वाला धुआं साठ कोहनों तक हवा में उठ गया, जिससे भट्टी के चारों ओर की हवा बहुत दूर तक अंधेरी हो गई। तब लाओडिसियस ने संत से कहा:

'देवता डायोनिसस को बलिदान अर्पित करो।'

लेकिन शहीद चुप रहे।

तब लाओडिसियस ने फिर कहा:

'तुम मेरी आज्ञाओं का उल्लंघन कितनी देर तक करोगे? यह आग तुम्हारे लिए तैयार है। इसे देखो और हमारे देवता डायोनिसिस की महानता और शक्ति को पहचानो, और उसकी पूजा करो।'

संत ने उत्तर दिया:

'मैं तुम्हें पहले ही बता चुका हूँ, एम्फिपिटस, कि मैं मानव आत्माओं के बिरि, अंधे और मूक विनाशक की पूजा नहीं करूँगा। क्या तुम स्वयं यह नहीं देखना चाहोगे कि जिसे तुम देवता कहते हो, वह देवता नहीं, बल्कि एक मूर्ति है?'

लॉडिसियस ने गुस्से में जवाब दिया:

'हे शापित! क्या वह जो अपने भीतर दिव्य शक्ति रखता है, एक मूर्ति हो सकता है? तुम स्वयं देख सकते हो कि उसमें निहित शक्ति हमारी बलिदानों को स्वीकार करती है और हमें समृद्धि प्रदान करती है।'

लेकिन संत ने उससे कहा:

'क्या तुम नहीं चाहोगे कि मैं तुम्हारे देवता को बलिदान अर्पित करूँ, ताकि हर कोई यह देखकर कि मैं देवता डायोनिसिस को बलिदान दे रहा हूँ, उसकी महान शक्ति को पहचान सके?'

लॉडिसियस ने कहा:

'झुक जाओ और बलिदान चढ़ाओ, और उसकी महानता को पहचानो।'

तब मोकियस, मूर्तिपूजक मंदिर में प्रवेश करके, सबसे पहले उसने अपने ऊपर क्रॉस का चिन्ह बनाया, ताकि वह शैतान के विरुद्ध मसीह के हथियारों से लैस हो सके; फिर, उस स्थान के पास खड़ा होकर जहाँ डिओनिसिस की मूर्ति खड़ी थी, उसने ईश्वर से इस प्रकार प्रार्थना की: 'हे प्रभु, जो सारी सृष्टि को अपनी शक्ति में धारण करते हैं और जिन्होंने अपने मसीह के द्वारा सभी चीजों की रचना की, जिन्होंने शैतान को—जो आपके सत्य को नहीं जानता—लज्जित किया, और जिन्होंने आप सभी का भय मानने वालों और आपके पवित्र नाम का सम्मान करने वालों पर परमेश्वर के ज्ञान और पवित्रता का आनंद प्रदान किया! हे पवित्र प्रभु, जिन्होंने बेबीलोन की मूर्तियों को चूर-चूर कर दिया और अपने भविष्यवक्ता दानियेल के सच्चे विश्वास को प्रकट किया; हे, जिन्होंने अपने तीन युवकों के द्वारा घृणित मूर्तिपूजक वेदी को समाप्त कर दिया और भट्टी में आग बुझा दी (दानियेल 3); आप, जिन्होंने फिरौन को समुद्र की गहराइयों में डुबो दिया और मूसा की प्रार्थनाओं को सुना (निर्गमन 14); आप, जिन्होंने चट्टान से पानी निकाला (निर्गमन 17:1–7); आप, शाश्वत राजा, जो अब हैं, जो पहले थे, और जो हमेशा रहेंगे – हे मेरे स्वामी, मेरी सुनिए! देखो, मैं तुमसे विनती करता हूँ: मेरी सहायता के लिए आओ और उन लोगों पर अपनी शक्ति दिखाओ जो सत्य के स्थान पर मिथ्या को धारण करते हैं, ताकि वे जान जाएँ कि तुम ही एकमात्र सच्चे और शाश्वत ईश्वर हो, और ताकि तुम्हारा प्रकाश मूर्तिपूजा के भ्रम के अंधकार को दूर कर दे।'

इस प्रकार प्रार्थना करने के बाद, संत ने मूर्ति को संबोधित करते हुए ऊँचे स्वर में पुकारा:

'हे व्यर्थ और घमंडी मनुष्य! हे मूक और असंवेदनशील डायोनिसियस! मैं तुझे मेरे स्वर्ग में जीवित मसीह के महान और महिमामय नाम की आज्ञा देता हूँ: गिर जा और भूमि पर लोट जा, ताकि सब तेरी दुर्बलता और तेरी शक्तिहीनता को देखें।'

और उसी क्षण पृथ्वी और वह मंदिर काँप उठे; मूर्ति एक बड़े धमाके के साथ ज़मीन पर गिर पड़ी और टुकड़े-टुकड़े हो गई। यह देखकर, वहाँ मौजूद सभी विधर्मी डरकर भाग गए, और जो हुआ था, उस पर वे मन ही मन चकित थे।

इसके बाद, संत मोकियस ने लाओदिकिया के एम्फीपेट को कहा:

'देखो, तुम राक्षसों, तुम्हारे देवताओं की व्यर्थता। अब आओ और अपने देवता के अवशेषों को इकट्ठा करो, जिस पर तुमने अपना भरोसा किया था, और यह जान लो कि तुम विनाश के किस मार्ग पर हो!'

लाओडिसियस बहुत दुखी हुआ, वह डायोनिसिस की मूर्ति के नष्ट होने पर शोक मना रहा था, और उसने तुरंत आदेश दिया कि संत को जलती हुई भट्टी में फेंक दिया जाए।

जब संत को आग में फेंका गया, तो वह लपटों के बीच निडर खड़े रहे, मानो किसी बगीचे में हों, और सभी सुन सकें, इस तरह उन्होंने ईश्वर की स्तुति की। भट्टी में तीन अन्य पुरुष भी उसके साथ गाते हुए दिखाई दिए; इन तीनों में से एक का चेहरा बहुत तेजस्वी था, जो सूर्य की तरह चमक रहा था; उसके चेहरे से निकलने वाली किरणें स्वयं आग से भी अधिक तेज थीं। फिर संत ने भट्टी में अपने साथ मौजूद पुरुषों से कहा:

'मैं तेरा धन्यवाद करता हूँ, हे हमारे पूर्वजों के प्रभु परमेश्वर, जिसके वचन का सभी पालन करते हैं; धन्य है तू, हे सेनाओं के प्रभु, सभी स्वर्गीय शक्तियों के सृष्टिकर्ता, जिसकी प्रशंसा पवित्र महादूतों के होठों से होती है, जो एक बार तीन युवकों के साथ लपटों में वास करते थे (उन तीन युवकों में तू, चौथा, देखा गया था)। मैं आपसे विनती करता हूँ, हे मेरे उद्धारकर्ता, कि इस जलती हुई भट्टी की आग को बुझा दें और नष्ट कर दें और इस अम्फिपैटस को आग से भस्म कर दें। उस पर अपना क्रोध प्रकट करें और उसे पृथ्वी के चेहरे से मिटा दें, ताकि सभी देख सकें कि आप ही स्वर्ग में वास करने वाले एकमात्र सच्चे ईश्वर हैं।

और तुरंत भट्टी की आग फैलकर उस अम्फिपैटस पर पड़ गई और उसे तथा उसके पास खड़े नौ कवचधारियों को राख कर दिया, कि उनके शरीरों का कुछ भी अवशेष न बचा, क्योंकि ईश्वर का क्रोध उन्हें नष्ट कर चुका था। यह सब देखकर लोग बहुत डर गए और भयभीत होकर भट्टी से भाग गए; लेकिन संत मोकियस भट्टी से पूरी तरह स्वस्थ और सुरक्षित बाहर आ गए।

यह चमत्कार जानकर, राज्यपाल फाल्लेस क्रोध से भर गया और उसने संत मोकियस को पकड़कर उसे कैद करने का आदेश दिया।

बीस दिन बाद, मैक्सिमिस नाम का एक और एम्फीपैटस शहर में आया। संत ने जो कुछ भी किया था और लाओडिसिया के विनाश के बारे में जानने के बाद, मैक्सिमिस ने संत को नष्ट करने का कोई साधन खोजना शुरू कर दिया। न्यायाधीश की कुर्सी पर बैठकर, मैक्सिमिस ने मसीह के शहीद को पूछताछ के लिए अपने सामने लाने का आदेश दिया। जब संत को लाया गया, तो अम्फिपैटस ने उनसे पूछा:

'मुझे बताओ, तुम्हारा नाम क्या है और तुम किस कुल से हो?'

संत ने उत्तर दिया:

'यदि तुम मेरा नाम और वंश जानना चाहते हो, तो सुनो: मेरे पिता का नाम यूफ्रेटियस था, और मेरी माता का नाम यूस्टैथिया था; जब उन्होंने पवित्र बपतिस्मा ग्रहण किया, तो उन्होंने मेरा नाम मोकियस रखा। मेरे माता-पिता द्वारा ईश्वर-भयपूर्ण जीवन में पाले जाने के कारण, मुझे मेरे ईश्वर मसीह की कलीसिया में पुरोहित के पद के लिए योग्य समझा गया; और अब मेरा जीवन वृद्धावस्था के निकट आ गया है।'

तब मैक्सिमिस ने कहा:

'आपके माता-पिता कौन थे?'

संत ने उत्तर दिया:

'मेरे पिता महान शहर रोम के नागरिक थे और सेना में सेवा करते थे; मेरी माँ, हालाँकि, एम्फीपेट लम्पाडियस की बेटी थीं।'

मैक्सिमिस ने कहा:

'यदि आप इतने कुलीन वंश से आते हैं, तो आपने जादू-टोने का सहारा क्यों लिया, जो आपके लिए अनुचित है? आपने महान देवता डायोनिसिस को क्यों नष्ट किया और राजा के मित्र, लाओडिसिया के एम्फीपेट को क्यों जलाया? आपने देवताओं को उत्सवी बलिदान चढ़ाने से क्यों रोका?'

संत मोकियस ने उत्तर दिया:

'यह मैं नहीं था, बल्कि मेरा सर्वशक्तिमान ईश्वर, प्रभु यीशु मसीह था, जिसने निर्जीव देवता डिओनिसिस को नष्ट और कुचल दिया और लाओदिकिया को अपने क्रोध की आग से जला दिया। मैं तो केवल भय और प्रेम से अपने ईश्वर की सेवा करता हूँ और अपने होठों से उनके पवित्र नाम का अंगीकार करता हूँ।'

मैक्सिमिस ने उत्तर दिया:

'अपना पागलपन छोड़ दो और अपोलो[3557] को बलिदान चढ़ाओ; नहीं तो, तुम्हारी भयानक मृत्यु होगी।'

लेकिन शहीद ने उत्तर दिया:

'मैं केवल तभी एक भयानक मृत्यु मरूँगा, जब मैं अपने ईश्वर द्वारा मुझ पर दी गई आशीर्वादों और दया को भूल जाऊँगा, और उन लोगों की पूजा और सम्मान करूँगा जो देवता नहीं बल्कि मूर्तियाँ हैं।'

तब मैक्सिमिस ने शहीद को यातना देने के लिए बनाए गए दो पहियों से बांधने का आदेश दिया, ताकि पहियों के घूमने पर वे उसके शरीर को चीर-फाड़ दें।

लेकिन संत, अपने यातनाओं के बीच, चिल्लाया:

'परमेश्वर के प्रति प्रेम कितना मधुर है!'

फिर, अपने यातनाकर्ता की ओर मुड़कर, उन्होंने कहा:

'अपने पिता—शैतान—की इच्छा को उत्साह के साथ पूरा करो। जहाँ तक मेरी बात है, मैं मसीह के नाम के लिए सभी यातनाओं और यहाँ तक कि स्वयं मृत्यु को भी स्वीकार करता हूँ।'

तब संत ने प्रार्थना करना शुरू किया, और इस प्रकार कहा: 'हे प्रभु, पवित्रता के स्रोत, मेरे सहायक, रक्षक और उद्धारकर्ता! मैं आपकी इस बात के लिए धन्यवाद देता हूँ कि आपने मुझे, जो कि अयोग्य हूँ, इस कृत्य के लिए योग्य समझा और शैतान पर विजय प्राप्त करने में मेरी मदद की। आप ही एकमात्र सच्चे ईश्वर हैं, जो मेरे मन को शुद्ध रखते हैं और उसे अशुद्ध विचारों से बचाते हैं। आप ऐसा प्रबंध करते हैं कि मेरा मन आप में, मेरे सृष्टिकर्ता, आनंद पा सके, क्योंकि जो आप से प्रेम करते हैं उनके लिए आपका नाम महान है।"

संत की इस प्रकार प्रार्थना करने के बाद, यातना देने वाले के पहिये अचानक चकनाचूर हो गए, और शहीद पूरी तरह से स्वस्थ और सुरक्षित होकर अपने पैरों पर खड़ा हो गया।

यह चमत्कार देखने वाले सभी लोग जो कुछ हुआ उसे देखकर अत्यंत चकित रह गए। हालाँकि, शहीद से हारने के कारण शर्मिंदा अत्याचारी, संत पर और भी अधिक क्रोधित हो गया और उसे एक कालकोठरी में फेंकने का आदेश दिया। तीन दिन बाद, उसने संत को कालकोठरी से बाहर निकालकर जंगली जानवरों के सामने फेंकने का आदेश दिया।

दो भूखे शेर, ज़ोर से दहाड़ते हुए, संत पर टूट पड़े। जब वे उसके पास पहुँचे, तो वे उसके सामने ज़मीन पर लेट गए, मानो उसकी पूजा कर रहे हों और उसके पैरों से लिपट रहे हों; फिर शेरों ने संत के पैरों को चाटना शुरू कर दिया, मानो उन्हें चूम रहे हों।

यह सब देखने के बाद भीड़ ने जोर से पुकार लगाकर कहा:

'इस धर्मी व्यक्ति को, जिसका यहाँ तक कि जानवर भी सम्मान करते हैं और जिसे ईश्वर प्रेम करते हैं, मुक्त किया जाए!'

तब अम्फिपेट मैक्सिमिस ने शहीद को थ्रेसियन शहर पेरिथिस (जो अब हेराक्लिया कहलाता है) में हेगेमोन फिलिप्पिसिस के पास भेजा, जिन्हें उसने शहीद के बारे में पूरी जानकारी दी थी। इस हेगेमोन ने संत को आठ दिन जेल में रखने के बाद, उसे बिथिनियम ले जाने का आदेश दिया, ताकि शहीद का सिर वहाँ काटा जा सके।

जब संत को मृत्युदंड के स्थान पर लाया गया, तो उन्होंने अपनी आँखें स्वर्ग की ओर उठाईं और कहा:

'धन्य हैं आप, हे प्रभु, जिन्होंने युगों की रचना की और संतों के कर्मों को उनके पूर्णत्व तक पहुँचाते हैं। मेरी आत्मा को शांतिपूर्वक ग्रहण करें!'

और स्वर्ग से संत को एक आवाज़ सुनाई दी, जो कह रही थी:

'हे मेरे अच्छे तपस्वी, मोकिय, आनन्द मनाओ, जिसने सभी के सामने यातना देने वाले की शक्ति पर स्पष्ट रूप से विजय प्राप्त की है। आओ और स्वर्ग के राज्य में अन्य तपस्वियों के साथ निवास करो। तुमने इस संसार में पर्याप्त परिश्रम किया है; अब स्वर्ग में विश्राम करो और आनन्दित होओ।'

तब मसीह के शहीद का सिर कलम कर दिया गया[3558] ।

[3557] अपोलो – ग्रीक पौराणिक कथाओं के अनुसार, ज्यूस और लेटो का पुत्र – समृद्धि और व्यवस्था का देवता, और कानून का संरक्षक था। ज्यूस की इच्छा को मानवता तक पहुँचाने वाले दूत के रूप में, उसे भविष्यवाणी और ओरेकल (भविष्य बताने वाली जगह) के देवता के रूप में भी माना जाता था।

[3558] शहीद की मृत्यु लगभग 295 ईस्वी में हुई।

संत मोकयि ने मई के ग्यारहवें दनि अपना बलदिान दयिा, और इसी तारीख को बाद में सम्राट कॉन्स्टेंटनि ने उनके पर्व का दनि घोषति कयिा। इसी सम्राट ने संत के सम्मान में एक चर्च भी बनवाया और शहीद के अवशेष वहां स्थानांतरति कर दए। जो भी पवत्रि शहीद मोकयिस की स्मृत मिनाते हैं, वे उस वश्विास से प्रेरति हों कि वे भी हमारे प्रभु यीशु मसीह के धन्य राज्य में उनके साथ सहभागी होंगे, जन्हिें पता और पवत्रि आत्मा के साथ, युगानुयुग महमिा, सम्मान और आराधना हो। आमीन।

कॉन्टाकयिन, स्वर 2:

हे पवत्रि शहीद, वश्विास के ढाल से सुसज्जति होकर, आपने अधर्मी सेना को परास्त कयिा है, और मसीह से मुकुट प्राप्त कयिा है, मोकयिस: अत; स्वर्गदूतों के साथ आनंदति होकर, उन लोगों को संकट से बचाएँ जो आपकी स्तुत करते हैं, और हम सभी के लए अनवरत प्रार्थना करें।

हमारे पूजनीय पताओं मेथोडयिस और कॉन्स्टेंटनि का जीवन और कार्य, जो मठवासी जीवन में स्लावों के शक्षिक, सरिोइल के नाम से जाने जाते थे।

11 मई को स्मरणोत्सव

मूर्तभिंजनवादी यूनानी सम्राटों लयिो द आर्मनियिन[3559] , माइकल ट्रावलस[3560] (या बाल्बा), और बाद में माइकल के पुत्र थयिोफलिस[3561] के दनिों में, मैसेडोनयिा के थ्रेसलॉनीकी शहर में, लयिो नाम का एक कुलीन और धनी व्यक्त रहता था, जो सेंचुरयिन (सैकड़ों का सेनापत) के पद पर था। उसकी पत्नी का नाम मैरी था। वह एक धार्मक जीवन जीता था, ईश्वर की सभी आज्ञाओं का पालन करते हुए, ठीक वैसे ही जैसे प्राचीन काल में अय्यूब ने कयिा था। उनके सात पुत्र थे: सबसे बड़े का नाम मेथोडयिस था, और सबसे छोटे का नाम कॉन्स्टेंटनि था, जन्हिें मठवासी जीवन में सरिलि के नाम से जाना जाता था।

संत मेथोडयिस ने शुरुआत में अपने पता की तरह सेना में सेवा की। ज़ार ने, उन्हें एक उत्कृष्ट योद्धा के रूप में जानकर, उन्हें एक स्लावक रयिासत, स्लावनियिा का राज्यपाल नयिुक्त कयिा, जो उस समय यूनानी शासन के अधीन थी। यह ईश्वर की वशिष व्यवस्था से हुआ और ताक मेथोडयिस स्लावक भाषा को बेहतर ढंग से सीख सकें, क्योंक उनका भाग्य स्लावों के आध्यात्मक शक्षिक और चरवाहे के रूप में होना था[3562] ।

लगभग 10 वर्षों तक एक वोइवोड के रूप में सेवा करने और सांसारक जीवन की व्यर्थता को महसूस करने के बाद, मेथोडयिस ने सभी सांसारक चीजों को त्यागने और अपने वचिारों को दव्यि चीजों की ओर नर्दिेशति करने की इच्छा जताई। इसके अलावा, उस समय, मूर्तभिंजक ज़ार थयिोफलिस ने पवत्रि प्रतमिाओं के खलिाफ एक उत्पीड़न शुरू कयिा। इस उत्पीड़न ने मेथोडयिस को सांसारक जीवन की व्यर्थता और भी अधक स्पष्ट रूप से दखिा दी, और इसलए, अपनी गवर्नरी और दुनयिा के सभी सुखों को त्यागकर, उन्होंने ओलंपस पर्वत पर संन्यास की शपथ ली[3563] , जहाँ उन्होंने बड़ी

[3559] लेओ पंचम द आर्मेनयिन ने 813 से 820 तक शासन कयिा।

[3560] माइकल द्वतिीय हकला 820 से 829 तक शासन कयिा।

[3561] थेओफलिस ने 829 से 842 तक शासन कयिा।

[3562] यह ज्ञात नहीं है क स्लाव यूरोप में कब आए। लगभग 2वीं शताब्दी ईस्वी के आसपास, स्लावों को डैन्यूब नदी के मध्य और नचिले हस्सिों में बसे हुए जाना जाता था। यहाँ उन्हें ट्राजन के शासनकाल के दौरान वोल्ची, यानी रोमनों, के हाथों बहुत कष्ट झेलना पड़ा, जसिके कारण स्लावों को डैन्यूब के कनिारे अपने घर छोड़ने के लए मजबूर होना पड़ा। इसके बाद, स्लाव दूसरी से सातवीं शताब्दी तक कार्पेथयिन पर्वतमालाओं में बस गए। वहाँ से, राजकुमार डुलेब के नेतृत्व में, स्लावों ने बाइजेंटाइयम के खलिाफ लंबे समय तक युद्ध लड़े, और वहीं से भी, आवारों के आक्रमण के बाद, वे वभिन्नि दशिाओं में बखिर गए। एक कवदिंती है क ग्रीस के राजा हेराक्लयिस ने 7वीं शताब्दी में अवारों से लड़ने के लए स्लावों को बाल्कन प्रायद्वीप में आमंत्रति कयिा था। एवरों के दबाव में, उसी स्लाव जनजात के अन्य गोत्र डैन्यूब की सहायक नदयिों की ओर बढ़े और वभिन्नि नामों से वहाँ बस गए। मोरावा नदी के कनिारे मोरावयिाई थे; उनके पश्चमि में चेक थे। चेकों के उत्तर में सर्ब - लुसाटयिाई थे; पूर्व में, वस्तिुला नदी के कनिारे, पोलशि लोग थे। हालाँक, कार्पेथयिनों से स्लावों का एक हस्सिा पूर्व और पूर्वोत्तर की ओर चला गया, और डेनएिपर और ओका नदयिों के कनिारे नोवगोरोड तक बस गया - ये पोलान, ड्रेव्लयिन, सेवेरयिन और अन्य थे जो रूसी मैदान में रहते थे।

[3563] ओलंपस पर्वत एशयिा माइनर में, फ्रीजयिा और बथिनियिा की सीमाओं पर एक पर्वत है।

आज्ञाकारिता और विनम्रता के साथ, स्वयं को पवित्र धर्मग्रंथों के अध्ययन के लिए समर्पित करते हुए, अपने संन्यास के व्रत को पूरा करने का प्रयास किया।

लियो के सबसे छोटे पुत्र, धन्य कॉन्स्टेंटिन ने, एक शिशु के रूप में भी कुछ अद्भुत प्रदर्शित किया। जब उनके जन्म के बाद उनकी माँ ने उन्हें दूध छुड़ाने के लिए एक दाई के पास सौंपा, तो उन्होंने अपनी माँ के दूध के अलावा कोई और दूध पीने से इनकार कर दिया। स्पष्ट रूप से, यह धर्मपरायण बच्चा किसी और के दूध से पोषित होने के लिए नहीं बना था। कॉन्स्टेंटिन के जन्म पर, उसके दयालु माता-पिता ने भाई और बहन के रूप में रहने की कसम खाई, और उन्होंने अपनी मृत्यु तक 14 वर्षों तक ऐसा ही किया। अपने पति की मृत्यु से पहले, मारिया रोईं, यह कहते हुए:

'मुझे कांस्टेंटाइन से ज़्यादा दुख किसी बात का नहीं है: वह जीवन में कैसा करेगा?'

लियो ने जवाब दिया, 'मुझ पर भरोसा रखो, मेरी पत्नी, मैं ईश्वर में अपनी आशा रखता हूँ कि प्रभु उसे ऐसा पिता और निर्माता बनाएंगे कि वह सभी ईसाइयों का भरण-पोषण करेगा।'

और ऐसा ही हुआ।

जब वह सात साल का था, तो कॉन्स्टेंटिन ने एक सपना देखा, जिसे उसने अपने माता-पिता को सुनाया।

'मैंने सपना देखा,' कांस्टेंटिन ने कहा, 'कि राज्यपाल ने शहर की सभी युवतियों को इकट्ठा किया था और मुझसे कहा: "इनमें से किसी एक को अपनी दुल्हन चुन लो।" मैंने उन्हें देखा और उनमें सबसे सुंदर को चुना, जिसका चेहरा दमक रहा था और जो कई सोने के आभूषणों और कीमती पत्थरों से सुसज्जित थी, जिसका नाम सोफिया था।'

उनके माता-पिता को एहसास हुआ कि प्रभु उस लड़के को कन्या सोफिया दे रहे थे[3564] — यानी, ईश्वर की बुद्धि — और वे आत्मा में आनंदित हुए और उन्होंने बड़ी लगन से न केवल कांस्टेंटिन को किताबें पढ़ना सिखाना शुरू किया, बल्कि ईश्वरीय सद्गुण — आध्यात्मिक बुद्धि — भी सिखाना शुरू किया।

उन्होंने सुलैमान के वचन उद्धृत करते हुए कॉन्स्टेंटाइन से कहा, 'बेटा, *प्रभु का आदर करो और तुम दृढ़ हो जाओगे; उसकी आज्ञाओं का पालन करो और तुम जीवित रहोगे;* परमेश्वर के वचन को अपने हृदय की पट्टी पर लिख लो: *"ज्ञान से कहो, 'तुम मेरी बहन हो' और समझ को अपनी बहिन कहो"* (नीतिवचन 7:1–4)। ज्ञान सूर्य से भी अधिक चमकता है, और यदि तुम उसे अपना साथी बनाओगे, तो वह तुम्हें बहुत से बुराइयों से बचाएगी।'

कॉन्स्टेंटाइन के माता-पिता ने उसे शास्त्रीय शिक्षा के लिए भेजा। वह अपनी अच्छी याददाश्त और तीव्र बुद्धि के लिए प्रसिद्ध था, इसलिए अपनी पढ़ाई में वह अपने सभी साथियों से आगे था। उसके साथ निम्नलिखित घटना घटी:

धनी माता-पिता के पुत्र के रूप में, कांस्टेंटाइन एक बार अपने दोस्तों के साथ बाज़-शिकार करने गया। जैसे ही कांस्टेंटाइन ने अपनी बाज़ को छोड़ा, एक तेज़ हवा उठी, जो पक्षी को अज्ञात स्थानों पर ले गई। कांस्टेंटाइन अपनी बाज़ के नुकसान से इतना दुखी हो गया कि उसने दो दिनों तक कुछ भी नहीं खाया, यहाँ तक कि रोटी भी नहीं। दयालु प्रभु, जो नहीं चाहते थे कि वह युवक सांसारिक बातों पर इतना शोक करे, ने इस बाज़ का उपयोग उसके हृदय को जीतने के लिए किया, ठीक वैसे ही जैसे उन्होंने एक बार प्लाकिडास को जीतने के लिए एक हिरण का उपयोग किया था। इस जीवन के सुखों पर विचार करते हुए, संत कॉन्स्टेंटिन ने कहा: 'यह कैसा जीवन है, जहाँ आनंद अनिवार्य रूप से दुख लाता है? आज से, मैं एक अलग रास्ता अपनाऊंगा, जो इससे बेहतर है, ताकि मैं इस दुनिया की व्यर्थता से बच सकूँ।' उस समय से, उन्होंने अपना लगभग सारा समय घर पर बिताया, और बड़ी लगन से विज्ञान, विशेष रूप से संत ग्रेगरी द थियोलोजियन की शिक्षाओं का अध्ययन करने का प्रयास किया।

संत कॉन्स्टेंटिन को इस संत से बहुत प्रेम था और वे उनके उपदेशों को काफी हद तक कंठस्थ जानते थे। दीवार पर पवित्र क्रॉस का चित्र बनाने के बाद, उन्होंने इसके नीचे संत ग्रेगरी के लिए निम्नलिखित शब्दों में एक प्रशंसा-गीत लिखा: 'हे ईश्वर के संत, ग्रेगरी द थियोलोजियन! आप देह में एक मनुष्य थे, फिर भी आपने अपने जीवन में स्वयं को एक देवदूत साबित किया, क्योंकि आपके होंठों ने, सेराफिम की तरह, परमेश्वर की स्तुति से उसकी महिमा की और अपनी ऑर्थोडॉक्स शिक्षाओं से ब्रह्मांड को प्रबुद्ध किया। मैं आपसे विनती करता हूँ, मुझे स्वीकार करें, जो विश्वास और प्रेम के साथ आपके सामने प्रणाम करता है, और मेरे शिक्षक और प्रबुद्धकर्ता बनें।"

जैसे-जैसे वह लगन से किताबें पढ़ता गया, कॉन्स्टेंटाइन को एहसास हुआ कि एक अच्छे शिक्षक की कमी के कारण उसका ज्ञान अभी भी कितना सीमित था, और इससे वह गहरे निराश में पड़ गया। उनके शहर में व्याकरण जानने

[3564] सोफिया – ग्रीक शब्द से, जिसका अर्थ है 'ज्ञान'।

वाला एक व्यक्ति (एक यात्री) रहता था। कॉन्स्टेंटाइन उसके पास गया, उससे विनती की और उसके सामने प्रणाम करते हुए कहा:

'मेरे ऊपर एक एहसान करो: मुझे व्याकरण सिखाओ।'

इस पर यात्री ने उत्तर दिया:

'युवा, मुझसे यह न पूछो। मैंने पहले ही संकल्प ले रखा है कि मैं किसी और को नहीं सिखाऊँगा।'

एक बार फिर, कॉन्स्टेंटाइन ने रोते हुए उससे बात करना शुरू किया:

'मेरे पिता की संपत्ति में मेरा जो हिस्सा है, वह ले लो, बस मुझे सिखा दो।'

लेकिन इससे भी उस आदमी को मना नहीं सका। तो कॉन्स्टेंटिन घर चला गया और उसने पूरी लगन से प्रार्थना करना शुरू कर दिया कि प्रभु उसके हृदय की इच्छा पूरी करें और उसके लिए एक शिक्षक खोजें। प्रभु ने जल्द ही उसकी इच्छा पूरी कर दी।

उस समय, यूनानी प्रदेशों में राजा थियोडोसियस की मृत्यु हो गई, और उनके पुत्र माइकल ने अपनी माता, धर्मपरायण रानी थियोडोरा के साथ मिलकर शासन करना शुरू कर दिया। जब उनके पिता की मृत्यु हुई तब यह राजा अभी भी नाबालिग था, और तीन कुलीनों को उनके संरक्षक नियुक्त किया गया: डोमेस्टिकोस[3565] मैनुअल, पैट्रिसियोस[3566] थियोक्टिस्ट, और लोगोथेते[3567] ड्रोमी, जो मेथोडियस और कॉन्स्टेंटाइन के माता-पिता को अच्छी तरह से जानता था। लोगोथेते, जो कॉन्स्टेंटाइन की उपलब्धियों और लगन से परिचित था, ने उसे बुलाया ताकि वह युवा ज़ार माइकल के साथ विज्ञान का अध्ययन कर सके, जो कॉन्स्टेंटाइन की लगन का अनुकरण कर सके। उस लड़के का उत्साह बढ़ गया और वह प्रसन्नचित्त होकर निकिल पड़ा, और सोलोमन की प्रार्थना के साथ ईश्वर से प्रार्थना करने लगा: 'हे हमारे पूर्वजों के ईश्वर और दया के स्वामी,' कॉन्स्टेंटाइन ने प्रार्थना की, 'जिसने मनुष्य को बनाया। मुझे वह बुद्धि प्रदान करें जो आपके सिंहासन पर विराजमान है, और मुझे अपने सेवकों की संख्या से बाहर न करें, क्योंकि मैं आपका सेवक और आपकी दासी का पुत्र हूँ। यह अनुग्रह करें कि मैं वह सब जान सकूँ जो आपको प्रसन्न करता है और अपने जीवन के सभी दिनों में आपके नाम के लिए सेवा करूँ।"

कॉन्स्टेंटिनोपल में, कॉन्स्टेंटाइन कभी-कभी एक बोयार के घर में, तो कभी-कभी शाही महलों में रहता था। तीन महीने के भीतर उसने व्याकरण सीख लिया था; फिर उसने होमर[3568] और ज्यामिति का अध्ययन किया, जबकि लियो और फोतिउस[3569] के अधीन तर्कशास्त्र और दर्शनशास्त्र का अध्ययन किया। इन विषयों के अलावा, उसने अलंकारशास्त्र, अंकगणित, खगोल विज्ञान, संगीत और वास्तव में, सभी अन्य हेलेनिक विज्ञानों का अध्ययन किया। वह न केवल ग्रीक, बल्कि अन्य भाषाओं: लैटिन, सीरियक और कई विदेशी भाषाओं में भी पारंगत थे। उनकी बुद्धि और लगन ने उनके शिक्षकों को चकित कर दिया, जिसके लिए उन्हें बाद में 'दार्शनिक-ज्ञानी' की उपाधि दी गई। लेकिन वह केवल शिक्षा में ही नहीं बल्कि जीवन में भी बुद्धिमान था; उसने विनम्र रहने का प्रयास किया, उन लोगों से बातचीत की जिनसे वह मार्गदर्शन प्राप्त करना चाहता था, और उन लोगों से दूर रहा जो उसे बुराई की ओर ले जा सकते थे। संक्षेप में, उसने सांसारिक चीजों को स्वर्गीय चीजों के लिए बदलने और ईश्वर के साथ जीने का प्रयास किया।

लोगोथेते ने कॉन्स्टेंटाइन के सदाचारी जीवन और विज्ञान में उसकी सफलता को देखकर उसे अपने घर का प्रबंधक बना दिया और उसे राजसी कक्षों में प्रवेश करने की अनुमति भी दे दी, जिसके लिए उसे अपनी उपस्थिति की घोषणा करने की आवश्यकता नहीं थी। एक दिन, लोगोथेते ने कॉन्स्टेंटाइन से पूछा:

'मुझे बताओ, दार्शनिक, दर्शनशास्त्र क्या है?'

'दर्शन,' कॉन्स्टेंटिन ने उत्तर दिया, 'ईश्वरीय और मानवीय मामलों की समझ है, जो एक व्यक्ति को सद्गुण के माध्यम से, ईश्वर के जितना संभव हो उतना करीब आने की शिक्षा देती है, जिसने मनुष्य को अपनी ही छवि और समानता में बनाया है।'

[3565] डोमेस्टिकोस – एक उच्च-पदस्थ सैन्य अधिकारी जो शाही दरबार में स्थायी रूप से रहता था; उसका कर्तव्य सम्राट की व्यक्तिगत सुरक्षा करना था।

[3566] प्राचीन काल में, 'पैट्रिशियंस' शब्द कुलीन जन्म के लोगों को संदर्भित करता था।

[3567] लोगोथेते – मुहर का रक्षक, एक राज्य चांसलर के समकक्ष।

[3568] होमर – प्रसिद्ध प्राचीन यूनानी लेखक, *इलियड* और *ओडिसी* के लेखक, जो हमारे युग से 3,000 साल पहले रहते थे।

[3569] वह बाद में एक पैट्रिआर्क बने।

इसके बाद, लोगोथेते को कॉन्स्टेंटाइन से और भी अधिक स्नेह हो गया और वह उससे दर्शनशास्त्र की शिक्षा प्राप्त करना चाहता था। कॉन्स्टेंटाइन ने संक्षेप में उसे दार्शनिक सिद्धांत की रूपरेखा बताई, जिसके लिए लोगोथेते ने उसका विशेष सम्मान किया और उसे बहुत सारा सोना भी दिया, लेकिन कॉन्स्टेंटाइन ने मना कर दिया।

उस कुलीन व्यक्ति की एक धर्मपुत्री थी - एक अमीर और प्रतिष्ठित परिवार की एक युवती। लोगोथेते ने कॉन्स्टेंटाइन का विवाह उससे कराने का निश्चय किया और उसे इस प्रकार मनाने की कोशिश की।

'आपकी सुंदरता और बुद्धिमत्ता,' लोगोफेट ने कहा, 'इंसान को बिना सोचे-समझे आपसे प्रेम करने पर मजबूर कर देती है। मेरी एक धर्मपुत्री है, जो एक अच्छे और कुलीन परिवार की एक सुंदर, अमीर और युवा महिला है। यदि आप चाहें, तो उसे अपनी पत्नी बना लें। आपको ज़ार से बहुत सम्मान और एक रियासत मिलेगी, और जल्द ही आपको एक वोयोवोड नियुक्त किया जाएगा।'

'जो लोग इसे चाहते हैं, उनके लिए यह एक बड़ा उपहार है,' कॉन्स्टेंटाइन ने जवाब दिया, 'लेकिन मेरे लिए शिक्षा से अधिक कीमती कुछ भी नहीं है, जिसके द्वारा मैं ज्ञान, सच्चा सम्मान और धन प्राप्त कर सकता हूँ।'

इन शब्दों के बाद, लोगोथेते रानी के पास गया और कहा:

'उस युवा दार्शनिक को इस जीवन की व्यर्थताओं से कोई लगाव नहीं है। हम उसे अपने साथ बनाए रखने का प्रयास करेंगे, और इस उद्देश्य के लिए हम उसे पुरोहित पद ग्रहण करने और सेंट सोफिया चर्च में पैट्रआर्कल लाइब्रेरियन के रूप में सेवा करने के लिए मनाएंगे। केवल इसी तरह ही हम उसे बनाए रख सकते हैं।'

और उन्होंने ऐसा ही किया। कॉन्स्टेंटिन सेंट सोफिया चर्च में एक पादरी और पुस्तकालयाध्यक्ष बन गया। लेकिन इस पद पर भी, कॉन्स्टेंटिन उनके साथ ज्यादा समय तक नहीं रहा। किसी को एक शब्द बताए बिना, वह गोल्डन हॉर्न[3570] के लिए निकल पड़ा और वहाँ एक मठ में छिप गया। उन्होंने कांस्टेनटाइन को बहुत लंबे समय तक खोजा और छह महीने बाद ही उसे ढूंढ पाए। वे उसे अपने पूर्व पद पर वापस आने के लिए मना नहीं सके, लेकिन उसे कॉन्स्टेंटिनोपल के मुख्य स्कूल में दर्शनशास्त्र का शिक्षक बनने के लिए मनाने में कामयाब रहे।

उस समय, पितृश्रेष्ठ जॉन[3571] ने पवित्र प्रतिमाओं का उत्पीड़न शुरू किया। फिर एक परिषद बुलाई गई, जिसमें यह निर्णय लिया गया कि इस पितृश्रेष्ठ को सिंहासन से हटा दिया जाए। परिषद के निर्णय के जवाब में, जॉन ने कहा:

'मुझे जबरदस्ती हटा दिया गया है, फिर भी वे मुझे दोषी नहीं ठहरा सके, क्योंकि कोई भी मेरे शब्दों का खंडन नहीं कर सकता।'

ज़ार ने नए पैट्रआर्क के साथ मिलकर जॉन के पास कांस्टेंटिन को निम्नलिखित संदेश के साथ भेजा:

'यदि तुम इस युवक का खंडन कर सकते हो, तो तुम अपना सिंहासन फिर से संभालोगे।'

इतने युवा दार्शनिक को देखकर और उसकी तीव्र बुद्धि से अनभिज्ञ, जॉन ने कॉन्स्टेंटिन और उसके दूतों से कहा:

'तुम मेरे पैरों तले खड़े होने के भी योग्य नहीं हो। तो फिर मैं तुमसे बहस कैसे करूँ?'

'मानवीय रीति-रिवाजों से न चिपको,' कॉन्स्टेंटिन ने उत्तर दिया, 'बल्कि ईश्वर की आज्ञाओं पर ध्यान दो। तुम और हम दोनों मिट्टी से बने हैं, लेकिन आत्मा ईश्वर से आती है। इसलिए, हे मनुष्य, पृथ्वी को देखकर घमंड मत करो!'

जॉन ने कहा, "शरद ऋतु में फूलों की तलाश करना मूर्खता है, ठीक वैसे ही जैसे एक बूढ़े आदमी को युद्ध में भेजना मूर्खता है।"

'आप अपनी ही मूर्खता को उजागर कर रहे हैं,' दार्शनिक ने उत्तर दिया। 'बताइए, किस उम्र में आत्मा शरीर से अधिक शक्तिशाली होती है?'

'वृद्धावस्था में,' जॉन ने उत्तर दिया।

'हम तुम्हें किस तरह के युद्ध के लिए बुला रहे हैं,' दार्शनिक ने पूछा, 'शारीरिक वाले के लिए या आध्यात्मिक वाले के लिए?'

'एक आध्यात्मिक युद्ध,' जॉन ने उत्तर दिया।

[3570] गोल्डन हॉर्न बोस्फोरस जलडमरूमध्य की एक खाड़ी बनाने वाली एक लंबी, संकरी जलधारा है।

[3571] जॉन सप्तम ने 832 से 842 तक पैट्रआर्क के रूप में कार्य किया।

'अगर तुम अब आत्मा में सबसे बलिष्ठ हो,' दार्शनिक ने कहा, 'तो हमें ऐसे तुलनाएँ प्रस्तुत मत करो। हम बेमौसम फूलों की तलाश नहीं करते, और न ही हम तुम्हें अनुचित समय पर बहस के लिए चुनौती देते हैं।'

इसके बाद, वे बातचीत करने लगे। बड़े ने पूछा:

'मुझसे कहो, युवक: यदि एक क्रॉस टूट जाए, तो हम न तो उसकी पूजा करेंगे और न ही उसे चूमेंगे। तो फिर यह कैसे है कि यदि क्रॉस पर केवल एक ही चेहरा हो, तो भी तुम उसे एक आइकन के रूप में सम्मानित करने में शर्म नहीं महसूस करोगे?'

'क्रूस के चार भाग होते हैं,' दार्शनिक ने उत्तर दिया, 'और यदि एक भाग भी गायब हो जाए, तो क्रूस अपना रूप खो देता है; जबकि एक प्रतिमा में तब भी रूप और सादृश्य होता है, जब उस पर जिस व्यक्ति को दर्शाया गया है, उसका चेहरा चित्रित होता है। और देखने वाला, शेर या तेंदुए के चेहरे को नहीं, बल्कि असली आकृति को देखता है।'

'यहाँ आप क्रूस के सामने झुकते हैं,' बुजुर्ग ने कहा, 'भले ही उस पर कोई शिलालेख न हो; फिर भी आप एक प्रतिमा का सम्मान नहीं करते यदि उस पर कोई चित्र नहीं है।'

'हर क्रॉस,' दार्शनिक ने उत्तर दिया, 'मसीह के क्रॉस से मिलता-जुलता है, जबकि सभी आइकन में एक ही छवि नहीं होती, बल्कि वे भिन्न-भिन्न होते हैं।'

अंत में, बुजुर्ग ने कहा:

'आप प्रतिमाओं के सामने सिर क्यों झुकाते हैं, जबकि परमेश्वर ने भविष्यवक्ता मूसा से कहा था: "तुम किसी भी समानता को नहीं बनाओगे" (निर्गमन 20:4)?

दार्शनिक ने उत्तर दिया, 'यदि प्रभु ने कहा होता, "तुम कोई भी प्रतिमा नहीं बनाओगे," तो आप सही होते; लेकिन प्रभु ने कहा, "कोई भी प्रतिमा", यानी, उसको छोड़कर जो योग्य हो।'

बूढ़े के पास इसका कोई उत्तर नहीं था और वह चुप हो गया। इसी समय, सीरिया पर शासन करने वाले अविश्वासी हागारी या सराकिनों के दूत कॉन्स्टेंटिनोपल पहुँचे। ये सारासेन, पूर्व सम्राट थियोफिलस के शासनकाल में भी, ईश्वर की अनुमति से पापों की सजा के रूप में, ग्रीक क्षेत्र में घुस आए थे और उन्होंने अमोरिया के सुंदर शहर को बर्बाद कर दिया था[3572] । उस समय से, उन्होंने ईसाइयों के सामने अपनी ताकत का घमंड करना शुरू कर दिया और उन्होंने कॉन्स्टेंटिनोपल को एक पत्र भेजा जिसमें परम पवित्र त्रिमूर्ति के खिलाफ ईश्वरनिंदा थी।

सरैसेनों ने लिखा, 'यह कैसे है कि तुम ईसाई कहते हो कि केवल एक ही ईश्वर है, फिर भी उसे तीन में विभाजित करते हो: तुम पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा की गवाही देते हो? यदि तुम इसे साबित कर सकते हो, तो हमें ऐसे पुरुष भेजो जो हमारे साथ विश्वास पर चर्चा कर सकें और हमें विश्वास दिला सकें[3573] ।'

उस समय, धन्य कॉन्स्टेंटिन 24 वर्ष के थे। सम्राट ने पैट्रिआर्क के साथ मिलकर एक परिषद बुलाई, जिसमें उन्होंने कॉन्स्टेंटिन को बुलाया और उससे कहा:

'हे दार्शनिक, क्या तुम सुनते हो कि वे दुष्ट हागराई हमारे धर्म के बारे में क्या कह रहे हैं? यदि तुम पवित्र त्रिमूर्ति के सेवक और शिष्य हो, तो जाओ और उनका खंडन करो।' और ईश्वर, जो सभी चीजों के कर्ता हैं, त्रिमूर्ति—पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा—में महिमामय हैं, आपको अपने शब्दों में अनुग्रह और शक्ति प्रदान करते हैं, ताकि आप दूसरों के सामने एक अन्य दाऊद के रूप में प्रकट हों, जिसने तीन पत्थरों से गोलियथ को हराया था (1 शमूएल 17), और फिर आपको सुरक्षित रूप से हमारे पास वापस लाएंगे।

ये शब्द सुनकर, दार्शनिक ने उत्तर दिया:

'मैं ईसाई धर्म के लिए जाने में प्रसन्न हूँ। मेरे लिए इससे बेहतर और क्या हो सकता है: पवित्र त्रिमूर्ति के लिए मरना या जीना?'

[3574]उन्होंने कॉन्स्टेंटाइन को दो ईसाई दास दिए, और उन्हें सारासेनों के पास भेज दिया। वे सीधे सारासेन रियासत की राजधानी - फरात नदी के पास स्थित समारा गए, जहाँ सारासेन राजकुमार अमीर-मुश्ना रहता था। वहाँ उन्होंने अजीब और घृणित चीजें देखीं जो अगारियों ने उन हिस्सों में रहने वाले ईसाइयों का मज़ाक उड़ाने और उनका उपहास करने के लिए की थीं। सारासेन अधिकारियों के आदेश पर, उन घरों के दरवाजों के बाहर राक्षसों की छवियाँ चित्रित की गई थीं जहाँ

[3572] इसका विवरण 6 मार्च के अंतर्गत अम्मोरिया के पवित्र शहीदों की पीड़ा के वर्णन में पाया जा सकता है।

[3573] यह 851 में हुआ।

[3574] उनमें से एक का नाम जॉर्ज था।

ईसाई रहते थे। इससे, अगारियों ने यह दखिाना चाहा कि वे ईसाइयों को राक्षसों के समान तुच्छ समझते थे। जैसे ही कॉन्स्टेंटाइन पहुँचे, सारासेनों ने राक्षसों की ओर इशारा करते हुए उनसे पूछा:

'हे दार्शनकि, क्या आप समझ सकते हैं कि ये चित्रि क्या दर्शाते हैं?'

'मैं एक राक्षसी छवि देखता हूँ,' दार्शनकि ने उत्तर दयिा, 'और मुझे लगता है कि यहाँ ईसाई रहते हैं। राक्षस ईसाइयों के साथ नहीं रह सकते और उनसे भागते हैं (वे दरवाज़ों के बाहर हैं)। जहाँ दरवाज़ों के बाहर ऐसी कोई छवि नहीं है, वहाँ यह स्पष्ट है कि राक्षस इमारत के अंदर रहते हैं।'

सारासेनों ने कॉन्स्टेंटाइन को दोपहर के भोजन के लिए राजकुमार के कक्ष में आमंत्रति कयिा। मेज पर ज्यामति,ि खगोल वज्ञिान और अन्य वज्ञिानों में पारंगत बुद्धमिान और वद्विान पुरुष बैठे थे। कॉन्स्टेंटाइन की परीक्षा लेने के लिए, उन्होंने उससे पूछा:

'क्या आप देखते हैं, हे दार्शनकि, कि यह कतिनी अद्भुत बात है: पैगंबर मुहम्मद ने ईश्वर से एक अच्छा उपदेश लाए और कई लोगों को धर्मांतरति कयिा। हम सभी उनके धर्म पर समान रूप से दृढ़ता से अड़े हैं और कुछ भी नहीं बदलते। लेकनि आप ईसाइयों में, जो मसीह के कानून का पालन करते हैं, एक एक तरह से वश्विास करता है, दूसरा दूसरे तरह से, और हर कोई अपनी मर्जी से जीता है। आपके बीच कई शक्षिक हैं जो अलग-अलग तरीकों से सखिाते हैं, और ऐसे भक्षिु भी हैं जो काले वस्त्र पहनते हैं और एक वशिेष जीवन शैली जीते हैं। फरि भी आप सभी को ईसाई कहा जाता है।

'मुझसे दो प्रश्न पूछे गए हैं,' धन्य कॉन्स्टेंटनि ने उत्तर दयिा, 'ईसाई धर्म और ईसाई कानून के बारे में, या: ईसाई कैसे वश्विास करते हैं और वे अपने जीवन में अपने वश्विास को कैसे व्यवहार में लाते हैं। मैं सबसे पहले वश्विास के बारे में बात करूँगा। हमारा ईश्वर समुद्र की गहराइयों के समान है – जसिकी चौड़ाई और गहराई अमापनीय है, जो मानव मन के लिए अकल्पनीय और मानव शब्दों में अकथनीय है, जैसा कि पवित्र भवषि्यवक्ता यशायाह उनके वषिय में कहते हैं: *'उनकी पीढ़ी की घोषणा कौन कर सकता है?'* (यशायाह 53:8); इसी आधार पर, हमारे शक्षिक, पवित्र प्रेरति पौलुस, उद्घोषणा करते हुए कहते हैं: *'हे परमेश्वर की धनाधपित्य, बुद्धि और ज्ञान की गहराई! उसकी समझ कतिनी अथाह है, और उसके मार्ग कतिने अचनि्त्य हैं!'* (रोमयिों 11:33)। कई जो परमेश्वर को खोजते हैं, इस गर्ता में प्रवेश करते हैं, और उनमें से जो मन से दृढ़ हैं और स्वयं प्रभु की सहायता प्राप्त कर चुके हैं, वे परमेश्वर की अगम्यता के समुद्र को सुरक्षति रूप से पार कर जाते हैं; जबकि जो मन से कमज़ोर हैं और, अपनी ही तुच्छ सोच के कारण, ईश्वर की सहायता से वंचति हो गए हैं, वे इस गर्ता को लीक हो रहे जहाजों में पार करने का प्रयास करते हैं, या तो वधिर्म और भूल में डूब जाते हैं, या बड़ी कठनिाई से एक ही स्थान पर बने रहते हैं, अनश्चितिता और संदेह से इधर-उधर उछाले जाते हैं। इसलिए, मसीहयिों में से कई (जैसा कि आप कहते हैं) अपने वश्विास में भन्नि हैं। मैंने वश्विास के बारे में कहा है; जहाँ तक वश्विास के कार्यों की बात है, मैं नम्निलखिति कहूँगा: मसीह का वधिान वही है जो परमेश्वर ने सनिाई पर्वत पर मूसा को दयिा था (नर्गि. 20:1–18)—न हत्या करना, न चोरी करना, न व्यभचिार करना, न दूसरे की वस्तु पर लालच करना, और इसी तरह। हमारे प्रभु ने कहा: *'मैं व्यवस्था को रद्द करने नहीं आया हूँ... बल्कि उसे पूरा करने आया हूँ'* (मत्ती 5:17)। अधकि पूर्ण जीवन और परमेश्वर की महान सेवा के लिए, प्रभु ने एक अधकि शुद्ध, ब्रह्मचारी जीवन जीने और वशिष्टि कर्म करने की सलाह दी जो संकीर्ण और दुखद मार्ग पर अनंत जीवन की ओर ले जाते हैं। हालाँकि, प्रभु कसिी को भी इस जीवन के लिए मजबूर नहीं करते, और यह बलपूर्वक प्राप्त नहीं कयिा जाता है। ईश्वर ने मनुष्य को स्वर्ग और पृथ्वी के बीच बनाया: ; तर्क और समझ के द्वारा, मनुष्य मूक प्राणयिों से भन्नि है; क्रोध और वासना के द्वारा, वह स्वर्गदूतों से भन्नि है। तब ईश्वर ने मनुष्य को स्वतंत्र इच्छा प्रदान की, ताकि वह अपनी मर्जी से काम करे और अपनी पसंद की कसिी भी चीज़ के करीब आए – और उसी के साथ उसकी संगति होगी: या तो वह स्वर्गदूतों का साथी होगा, जो ईश्वर की सेवा करेगा जैसा कि उसका मन, जो वश्विास से प्रबुद्ध है, उसे नर्दिेश देता है, या उसकी संगति बेसुध जानवरों के साथ होगी, यदि वह बनिा कसिी रोक-टोक के अपनी सभी कामुक इच्छाओं में लप्ति रहता है। और चूँकि परमेश्वर ने मनुष्य को स्वतंत्र इच्छा के साथ बनाया है, वह चाहता है कि हम जबरदस्ती से नहीं बल्कि अपनी स्वतंत्र इच्छा से उद्धार पाएँ, और कहता है: *'यदि कोई मेरे पीछे आना चाहता है, तो वह अपना इन्कार करे, और अपना क्रूस उठाए, और मेरे पीछे हो ले'* (मत्ती 16:24); और: *'जो कोई ग्रहण कर सकता है, वह ग्रहण करे'* (मत्ती 19:12)। कुछ वश्विासी ईसाई इस जीवन में एक अधकि आरामदायक मार्ग पर चलते हैं, जो प्रकृति के नयिमों के अनुसार सम्मानजनक ववािह में शुद्धता से रहते हैं, जबकि अन्य, जो अधकि उत्साही हैं और अधकि परपिूर्ण बनना चाहते हैं, स्वर्गदूतों की तरह जीने और संकीर्ण मार्ग पर चलने का प्रयास करते हैं। इसलिए, ईसाई अलग-अलग जीवन जीते हैं।

कांस्टेन्टाइन ने अपनी बात जारी रखते हुए कहा, 'जहाँ तक आपके विश्वास और आपके कानून की बात है, उनमें कोई कठिनाई नहीं है; वे समुद्र के समान नहीं, बल्कि एक छोटी धारा के समान हैं, जिसे कोई भी, चाहे वह बड़ा हो या छोटा, बिना किसी कठिनाई के आसानी से पार कर सकता है।' आपके धर्म और आपके कानून में कुछ भी दिव्य या दैवीय रूप से प्रेरित नहीं है, बल्कि केवल मानवीय रीति-रिवाज और कामुक कल्पनाएँ हैं, जिनका पालन आसानी से किया जा सकता है। आखिरकार, आपके विधि-दाता, मुहम्मद ने आपको कोई ऐसी आज्ञाएँ नहीं दीं जिन्हें पूरा करना कठिन हो: उन्होंने आपको क्रोध और अनियंत्रित वासना से भी नहीं रोका, बल्कि हर चीज़ की अनुमति दे दी। इसलिए, आप सभी अपने कानून का उसी तरह पालन करते हैं, जैसे कि यह आपकी वासनाओं को पूरा करने के लिए ही दिया गया हो। परन्तु हमारे उद्धारकर्ता मसीह ने ऐसा नहीं किया। वे स्वयं, जो परम पवित्र और सभी पवित्रता के स्रोत हैं, यह चाहते हैं कि उनके सेवक भी पवित्र जीवन जिएँ, सभी वासनाओं से दूर रहें, और पवित्र केवल पवित्रों के साथ संगति करें; क्योंकि *'कोई भी अशुद्ध वस्तु'* उनके राज्य में *प्रवेश नहीं करेगी* (प्रकाशितवाक्य 21:27)।

तब सारसेन के विद्वानों ने कॉन्स्टेंटाइन से पूछा:

'तुम ईसाई एक ईश्वर को तीन में क्यों विभाजित करते हो: उसे पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा कहकर? यदि ईश्वर का पुत्र हो सकता है, तो उसे एक पत्नी भी दे दो, ताकि कई देवता हो जाएँ?'

'दिव्य त्रिमूर्ति का अपमान मत करो,' ईसाई दार्शनिक ने उत्तर दिया, 'जिसकी हम प्राचीन भविष्यवक्ताओं से स्वीकार करना सीखे हैं, जिन्हें आप स्वयं स्वीकार करते हैं, क्योंकि आप उनके साथ खतना का पालन करते हैं। वे हमें सिखाते हैं कि पिता, पुत्र और आत्मा तीन व्यक्ति हैं, फिर भी उनका सार एक है। इसकी एक समानता स्वर्ग में देखी जा सकती है। इस प्रकार, सूर्य में, जो पवित्र त्रिमूर्ति की प्रतिमा में ईश्वर द्वारा बनाया गया है, तीन चीजें हैं: एक वृत्त, प्रकाश की एक किरण और ऊष्मा। पवित्र त्रिमूर्ति में, सौर वृत्त ईश्वर पिता की समानता है। जैसे वृत्त की न कोई शुरुआत है और न कोई अंत, वैसे ही ईश्वर की न कोई शुरुआत है और न ही कोई अंत। जिस प्रकार प्रकाश की किरण और सूर्य की ऊष्मा सूर्य के वृत्त से निकलती है, उसी प्रकार पुत्र परमेश्वर पिता से उत्पन्न होते हैं और पवित्र आत्मा उनसे निकलते हैं। इस प्रकार, सूर्य की किरण, जो पूरे ब्रह्मांड को प्रकाशित करती है, परमेश्वर पुत्र की एक प्रतिमा है, जो पिता से उत्पन्न हुए और इस संसार में प्रकट हुए; जबकि सूर्य की ऊष्मा, जो उसी सूर्य के वृत्त से किरण के साथ निकलती है, यह परमेश्वर पवित्र आत्मा की समानता है, जो, उत्पन्न हुए पुत्र के साथ, अनंतकाल से पिता से निकलता है, यद्यपि समय में उसे पुत्र द्वारा लोगों के पास भेजा जाता है![3575] , उदाहरण के लिए, उसे आग की जीभों के रूप में प्रेरितों के पास भेजा गया था। और जैसे सूर्य, जो तीन तत्वों—डिस्क, तेज किरण और गर्मी—से मिलकर बना है, तीन सूर्यों में विभाजित नहीं होता, भले ही इन प्रत्येक तत्व की अपनी विशेषताएँ हैं—एक डिस्क है, दूसरा किरण है, और तीसरा गर्मी है—फिर भी तीन सूर्य नहीं बल्कि एक ही है; उसी प्रकार परम पवित्र त्रिमूर्ति भी, यद्यपि इसमें तीन व्यक्ति हैं: पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा; फिर भी दिव्य स्वभाव तीन देवताओं में विभाजित नहीं है, बल्कि एक ही ईश्वर है। क्या आपको याद है कि धर्मग्रंथ क्या कहता है कि ईश्वर ममरे की ओक के पास कुलपिता अब्राहम के सामने कैसे प्रकट हुए, जिससे आप अपना खतना प्राप्त करते हैं? ईश्वर अब्राहम के सामने तीन व्यक्तियों में प्रकट हुए। *'उसने* (अब्राहम ने) *अपनी आँखें उठाईं और देखा, और देखो, तीन पुरुष उसके सामने खड़े थे। जब उसने उन्हें देखा, तो वह उन्हें मिलने के लिए डेरे के द्वार से दौड़ा और भूमि पर मुँह के बल झुक गया। और उसने कहा: "हे मेरे प्रभु! यदि मैं आपकी दृष्टि में अनुग्रह पाया है, तो अपने दास के पास से न जाएँ"* (उत्पत्ति 18:2–3)।

इस पर ध्यान दें: अब्राहम अपने सामने तीन पुरुषों को देखते हैं, फिर भी एक से बात करते हुए कहते हैं, *'हे प्रभु! यदि मैं आपकी दृष्टि में अनुग्रह प्राप्त कर सका हूँ'* स्पष्ट रूप से, उस पवित्र पूर्वज ने तीन व्यक्तियों में एक ईश्वर की गवाही दी।

सारासेन के विद्वानों ने, परम पवित्र त्रिमूर्ति के सिद्धांत के बारे में क्या कहें यह न जानते हुए, चुप रह गए, और फिर पूछा:

'यह कैसे है कि आप ईसाई कहते हैं कि ईश्वर एक स्त्री से पैदा हुए? क्या ईश्वर एक स्त्री के गर्भ से पैदा हो सकता है?'

[3575] अर्थात्, मसीह के सूली पर चढ़ाए जाने के लिए: *'क्योंकि पवित्र आत्मा अभी तक उन पर नहीं उड़ाया गया था, क्योंकि यीशु को अभी महिमा नहीं मिली थी'* (यूहन्ना 7:39)।

'केवल एक साधारण स्त्री से नहीं,' दार्शनिक ने उत्तर दिया, 'बल्कि निष्पाप कुँवारी से, जो विवाहित नहीं थी, परमेश्वर पुत्र पवित्र आत्मा की शक्ति से उत्पन्न हुए, जिन्होंने निष्पाप कुँवारी के गर्भ में, एक अनुपम तरीके से मसीह परमेश्वर का शरीर बनाया और पिता के वचन के अलौकिक अवतार और जन्म को संभव बनाया। इसलिए, पवित्र आत्मा के द्वारा पुत्र को गर्भ में धारण करने वाली कन्या, ईश्वर की इच्छा से, जन्म से पहले, जन्म के दौरान और जन्म के बाद भी एक पवित्र कन्या ही रहीं, जिसके अधीन हर सृजित प्राणी है, जैसा कि चर्च के भजन में कहा गया है: 'क्योंकि जहाँ ईश्वर इच्छा करते हैं, वहाँ प्रकृति का क्रम पार हो जाता है'[3576] .

और यह कि मसीह पवित्र कुँवारी से पवित्र आत्मा के द्वारा जन्मे थे, इसकी गवाही आपके पैगंबर मुहम्मद ने भी दी है, जिन्होंने निम्नलिखित लिखा है: 'पवित्र आत्मा को पवित्र कुँवारी के पास भेजा गया था, ताकि, उनकी इच्छा से, वह एक पुत्र को जन्म दे सके'।

– हम इस बात पर विवाद नहीं करते – सारसेनों ने कहा – कि मसीह पवित्र कुँवारी से पैदा हुए थे; हम बस उन्हें ईश्वर नहीं कहते।

'यदि मसीह केवल एक मनुष्य होते, और ईश्वर नहीं, तो पवित्र आत्मा द्वारा उनकी गर्भधारण क्यों आवश्यक होता? एक साधारण मनुष्य एक विवाहित महिला से पैदा होता है, न कि एक कुंवारी से जिसने कभी किसी पुरुष को नहीं जाना, और वह स्वाभाविक रूप से पति से गर्भ में आता है, न कि पवित्र आत्मा की विशेष प्रेरणा और कार्य से।'

इसके बाद, सरैसेनों ने पूछा:

– यदि मसीह आपके ईश्वर हैं, तो आप उनकी आज्ञा का पालन क्यों नहीं करते? क्योंकि सुसमाचार में लिखा है: अपने शत्रुओं के लिए प्रार्थना करो, जो तुमसे घृणा करते और तुम्हारा उत्पीड़न करते हैं, उनके प्रति दया करो, और जो तुम्हें एक गाल पर थप्पड़ मारता है, उसे दूसरा भी फेर दो। फिर भी आप ऐसा नहीं करते: आप अपने विरोधियों के विरुद्ध अपने हथियार तेज करते हैं।

इस पर, दार्शनिक ने उत्तर दिया:

'यदि किसी कानून में दो आज्ञाएँ हों और उन्हें लोगों को मानने के लिए दिया गया हो, तो उनमें से कौन कानून का सच्चा पालनकर्ता होगा: वह जो एक आज्ञा का पालन करता है, या वह जो दोनों का पालन करता है?'

'बेशक, कानून का बेहतर पालन करने वाला वही होगा,' सरासेनों ने उत्तर दिया, 'जो दोनों आज्ञाओं का पालन करता है।'

'मसीह हमारे ईश्वर ने,' दार्शनिक ने उत्तर में कहा, 'हमें आज्ञा दी कि हम अपने से गलत करने वालों के लिए प्रार्थना करें और उनके भले के लिए काम करें, लेकिन उन्होंने यह भी कहा: *"मनुष्य के प्रेम का यह बड़ा प्रमाण नहीं कि कोई अपने मित्रों के लिए अपना प्राण दे"* (यूहन्ना 15:13)। हम अपमान सह लेते हैं यदि वे केवल एक व्यक्ति के खिलाफ हों, लेकिन हम दूसरों के लिए खड़े हो जाते हैं और यहां तक कि अपनी जान भी दे देते हैं यदि वे समुदाय के खिलाफ हों, ताकि हमारे भाई कैद में न पड़ें, जहाँ उन्हें अधर्मी और बुरे कर्मों के लिए बहकाया जा सकता है।

एक बार फिर सेरासेंस ने कहा:

'तुम्हारे मसीह ने अपने लिए और दूसरों (अपोस्तल पतरस) के लिए कर का भुगतान किया। तो फिर, तुम इस उदाहरण का पालन क्यों नहीं करते और कर देने से इनकार क्यों करते हो? अगर तुम सचमुच एक-दूसरे के लिए खड़े होते, तो तुम निश्चित रूप से अपने भाइयों के लिए इसमाइलियों जैसे महान और शक्तिशाली लोगों को कर का भुगतान करते।'

'यदि कोई अपने गुरु के पदचिन्हों पर चलता है और हमेशा ऐसा ही करना चाहता है,' कॉन्स्टेंटाइन ने उत्तर दिया, 'और कोई और उसे इस रास्ते से भटका देता है, तो क्या ऐसा व्यक्ति उसके लिए मित्र है या शत्रु?'

'निस्संदेह, एक दुश्मन,' सारासेनों ने उत्तर दिया।

तब कॉन्स्टेंटाइन ने पूछा, 'जब मसीह ने कर दिया था, तो वह किस राज्य का था: इसमाइलियों का या रोम का?'

'रोमन साम्राज्य,' सरासनों ने उत्तर दिया।

'इसीलिए हम भी,' दार्शनिक ने उत्तर दिया, 'मसीह का अनुसरण करते हुए, उस राजा को कर देते हैं जो नए रोम (कॉन्स्टेंटिनोपल) में रहता है और प्राचीन रोम पर शासन करता है। लेकिन जब आप हमसे कर की मांग करते हैं, तो आप हमें मसीह के मार्ग से भटका देते हैं और हमारे दुश्मन बन जाते हैं।'

[3576] सातवें स्वर के धर्मशास्त्रीय प्रबंध से। – *'द एबीसी ऑफ फेथ' द्वारा संपादित*

इसके बाद, उन्होंने उन ज्ञान के क्षेत्रों से, जिनसे वे परिचित थे, कॉन्स्टेंटिन से कई अन्य प्रश्न पूछे। कॉन्स्टेंटिन ने हर प्रश्न का ऐसा उत्तर दिया कि सिरैसेन जवाब में कुछ भी नहीं कह सके। फिर उन्होंने उससे पूछा:

'तुम्हें यह सब क्यों पता है?'

तब कॉन्स्टेंटाइन ने निम्नलिखित उपमा दी:

उन्होंने कहा, 'एक आदमी ने समुद्र से पानी निकाला और फिर उसे एक थैले में भर लिया। समुद्र से बहुत दूर जाकर, उसने पानी के उस थैले की ओर इशारा किया और सभी से कहा: "क्या तुम यह पानी देखते हो, जो मेरे सिवाय कोई और नहीं रखता?"' तट का एक आदमी उसके पास आया और बोला: 'तुम्हें उस पानी की बोरी का घमंड करने में शर्म नहीं आती, जबकि हमारे पास पूरा समुद्र है?' ठीक यही तुम कर रहे हो जब तुम उन विज्ञानों के बारे में सवाल पूछते हो जो तुमने हमसे (ग्रीकों से) सीखे हैं।

तब, जैसे कि यह कोई अद्भुत चीज़ हो, सरासनिों ने कॉन्स्टेंटाइन को एक अंगूर का बगीचा दिखाया, जिसे कभी बड़ी सावधानी से लगाया गया था और अब वह फल-फूल रहा था[3577] । कॉन्स्टेंटाइन ने समझाया कि यह कैसे किया गया था। फिर सरासनिों ने उसे अपनी सारी संपत्ति दिखाई: सोने, चांदी और कीमती पत्थरों से सजे महल, और कहा:

'हे दार्शनिक, क्या तुम देखते हो कि सिरैसेनों के शासक उमर के पास कितनी शक्ति और कितना धन है?'

'इसमें कुछ भी आश्चर्य की बात नहीं है,' दार्शनिक ने उत्तर दिया। 'इन सब के लिए, हमें ईश्वर की स्तुति करनी चाहिए, जिन्होंने मानव जाति के आनंद के लिए ये धन-संपत्तियाँ प्रदान की हैं। यह सब ईश्वर का है और किसी और का नहीं।'

अंत में, सरासनिों ने अपना असली रंग दिखा दिया। उन्होंने धन्य कॉन्स्टेंटिन के पेय में जहर मिला दिया। लेकिन प्रभु, जिन्होंने अपने नाम में परिश्रम करने वालों से वादा किया था कि *'यदि वे कुछ भी घातक पीते हैं, तो यह उन्हें नुकसान नहीं पहुंचाएगा'* (मरकुस 16:18), ने अपने सेवक को सुरक्षित और अक्षुण्ण रखा। इस चमत्कार को देखकर सारासेंसों ने कॉन्स्टेंटिन को अन्य दूतों के साथ, अपने राजकुमार के सम्मान और उपहारों के साथ वापस भेज दिया।

कॉन्स्टेंटिनोपल में, सम्राट और पैट्रिआर्क ने धन्य कॉन्स्टेन्टाइन का स्वागत किया और उनके द्वारा किए गए ईश्वरीय कार्यों की प्रशंसा की। लेकिन कॉन्स्टेन्टाइन कॉन्स्टेंटिनोपल में ज्यादा समय नहीं रुके। जल्द ही वह एक शांत और एकांत स्थान पर चले गए, जहाँ उन्होंने अपना पूरा समय केवल अपनी मुक्ति के लिए समर्पित कर दिया। उन्होंने अपने साथ कोई भोजन नहीं लिया, बल्कि ईश्वर की व्यवस्था पर भरोसा किया, जिसने मसीह-प्रेमी लोगों के माध्यम से उन्हें भोजन उपलब्ध कराया। कॉन्स्टेंटिन ने अगले दिन के लिए लाए गए भोजन में से कुछ भी नहीं रखा; बल्कि, अपने सामान्य भोजन के बाद, उन्होंने बाकी सब कुछ गरीबों में बाँट दिया, और उस ईश्वर पर भरोसा किया, जो अपना उदार हाथ खोलता है और अपनी कृपा से सभी जीवित प्राणियों का पोषण करता है।

एक बार, एक बड़े पर्व की पूर्व संध्या पर, कॉन्स्टेंटाइन के पास बिल्कुल भी भोजन नहीं था, इस बात से उनके सेवक को बहुत दुख हुआ। धन्य कॉन्स्टेंटाइन ने उससे कहा:

'जिसने एक बार कई वर्षों तक जंगल में इस्राएलियों का पालन-पोषण किया—क्या वह हमें इस महान दिन में भी पालन-पोषण नहीं करेगा? तुम्हें निश्चित रूप से जाकर कम से कम पाँच भिखारियों को दोपहर के भोजन के लिए आमंत्रित करना है, और हम ईश्वर की दया की प्रतीक्षा करेंगे, क्योंकि वह हमें नहीं छोड़ेंगे।'

और ऐसा ही हुआ। दोपहर के भोजन के समय, एक व्यक्ति आया और उसने हर तरह के बहुत सारे भोजन और दस सोने के सिक्के लाए। धन्य व्यक्ति ने उन्हें ले लिया और अपने प्रदाता, ईश्वर का धन्यवाद किया।

वहाँ से, कॉन्स्टेंटाइन अपने बड़े भाई मेथोडियस के पास जाने के लिए ओलंपस पर्वत की ओर रवाना हो गए, जिनके साथ उन्होंने मठवासी तपस्या का अभ्यास करते हुए, अपना समय प्रार्थना या किताबें पढ़ने में बिताना शुरू कर दिया[3578] ।

[3577] यह स्पष्ट रूप से कुछ कृत्रिम साधनों द्वारा अंगूर के बागों को उगाने की एक विशिष्ट विधि को संदर्भित करता है।

[3578] ओलंपस पर्वत पर, धन्य कॉन्स्टेंटिन ने पहली बार स्लाव भाषा का अध्ययन शुरू किया। जिस वातावरण में वह था, वह इसके लिए अनुकूल था। पहाड़ पर मठों में, विभिन्न पड़ोसी देशों के कई स्लाव भिक्षु थे, इसीलिए कॉन्स्टेंटाइन यहाँ नियमित रूप से भाषा का अभ्यास कर सके—यह उसके लिए विशेष रूप से महत्वपूर्ण था, क्योंकि उसने बचपन से ही लगभग अपना पूरा जीवन एक ग्रीक-भाषी वातावरण में बिताया था। इस बात की पुष्टि कि पवित्र भाई यहाँ स्लाव भाषा का अध्ययन कर रहे थे, बुल्गारियाई स्लाव भिक्षु हराब्रा की गवाही से होती है।

उस समय, कोसैकों के दूत ([3579]) यूनानी ज़ार माइकल के पास आए और कहा:

'हम सबसे ऊपर उस एक ईश्वर को स्वीकार करते हैं जो सर्वत्र शासन करता है, और हम उसकी ओर प्रार्थना करते हुए पूर्व की ओर झुकते हैं; फिर भी हम कुछ अनुचित रीति-रिवाज़ भी अपनाते हैं।

यहूदी हमें अपना धर्म और रीति-रिवाज अपनाने के लिए प्रेरित कर रहे हैं, और हम में से कई पहले ही विश्वास में यहूदी बन चुके हैं। दूसरी ओर, सारासेन, हमारे साथ गठबंधन करके और हमें उपहार देकर, हमें इस्लाम धर्म अपनाने के लिए मजबूर कर रहे हैं और दावा करते हैं कि सारासेन का धर्म सभी अन्य लोगों के धर्म से श्रेष्ठ है। इसलिए, हम आपसे, जिनके साथ हमारे लंबे समय से चले आ रहे प्रेम और मित्रता के संबंध हैं, सुठली सलाह प्राप्त करना चाहते हैं और आपसे एक विद्वान व्यक्ति को भेजने का अनुरोध करते हैं; और यदि वह यहूदियों और सरासीनों का खंडन करता है, तो हम आपका धर्म स्वीकार कर लेंगे।

तब ज़ार माइकल ने, परम पावन पैट्रिआर्क इग्नेशियस[3580] की सलाह पर, जिन्होंने संत मेथोडियस[3581] का स्थान लिया था, यह निर्णय लिया कि धन्य कॉन्स्टेंटिन, जिन्हें माउंट ओलंपस से बुलाया गया था, को खज़ारों के पास भेजा जाए। खज़ारों का अनुरोध पहुँचाने के बाद, ज़ार ने कॉन्स्टेंटिन से कहा:

'जाओ, दार्शनिक, इन लोगों के पास और, पवित्र त्रिमूर्ति की सहायता से, उन्हें परम पवित्र त्रिमूर्ति के सिद्धांत का उपदेश दो। यह कार्य तुमसे बेहतर कोई नहीं कर सकता।'

'यदि आप आज्ञा देते हैं, मेरे स्वामी,' कॉन्स्टेंटिन ने उत्तर दिया, 'तो मैं खुशी-खुशी पैदल, नंगे पैर और बिना किसी ऐसी चीज़ के जाऊँगा, जिसे प्रभु ने अपने शिष्यों को प्रचार के लिए भेजते समय लेने का आदेश नहीं दिया था।'

'अगर आप यह अपने मन से कर रहे होते,' ज़ार ने जवाब दिया, 'तो मुझे कोई आपत्ति नहीं होती, लेकिन चूँकि आप हमारी ओर से जा रहे हैं, तो सम्मान और ज़ार के समर्थन के साथ जाएँ।'

इसके बाद, कॉन्स्टेंटाइन ने अपने भाई, धन्य मेथोडियस, जो स्लाव भाषा जानते थे, को ईसाई धर्म के प्रकाश से अविश्वासियों को प्रबुद्ध करने के अपने प्रेरित मिशन पर अपने साथ आने के लिए मना लिया। मेथोडियस मान गए, और

[3579] कोज़ार, जिन्हें यूनानी खज़ार और रोमनों गाज़ार कहते थे, सामूहिक रूप से स्कैथियन नाम से जाने जाते थे। वे एक स्लाव या रूसी भाषा बोलते थे और मौटिसि झील या मृत (अज़ोव) सागर के पास रहते थे, जिसमें डॉन नदी का पानी आता है; यह नदी (प्राचीन काल में) यूरोप को एशिया से अलग करती थी। इस क्षेत्र में शुरू में याफ़थ के पहले पुत्र गेमर की जनजाति रहती थी, जिन्हें ग्रीक में 'जेमेरी' या 'साइमेरी' और रूसी में 'किम्ब्री' के नाम से जाना जाता था; और इन्हीं के नाम पर मेओटियन झील का मुहाना, जहाँ से यह यूक्सिन सागर (ब्लैक सी) में बहती है, सिमेरियन बोस्फोरस कहा जाने लगा, अर्थात् सिमेरियन सागर में संकीर्ण मार्ग। जब सिम्ब्री उत्तरी भूमि में प्रवास कर गए और विभिन्न लोगों के साथ मिल गए, खुद को लिथुआनियाई, सामोगटियन कहने लगे, गोथ और अन्य, तुर्की मूल के एक स्कैथियाई जनजाति, जिन्हें एलान (एलान पहाड़ों से) के नाम से जाना जाता था, मेओटिस झील या सिम्मिरियन बोस्फोरस के पास उनके पूर्व क्षेत्र में बसने आए; बाद में उन्हें कोज़ार (कोज़ार नदी से) कहा जाने लगा। यह जनजाति बहुत बढ़ गई और डॉन नदी के दोनों किनारों पर रहने लगी: एशिया में - वोल्गा तक, जो कैस्पियन या खज़ालीन सागर में बहती है; यूरोप में - डेन्यूपर तक, जो काला सागर में बहती है; और उससे भी आगे - पैनोनिया तक, हालांकि तब तक वे अन्य नामों से जाने जाते थे: अवर्स, हूण और अन्य। कोज़ार लोग अपने व्यवहार में कठोर और रूप में अप्रिय थे। एक खानाबदोश लोगों के रूप में, वे तंबुओं में रहते थे और एक स्थान से दूसरे स्थान जाते रहते थे। वे रोटी की तुलना में अधिकतर सब्जियों और आधे कच्चे मांस पर जीविकोपार्जन करते थे; युद्ध में वे बहुत बहादुर थे और सभी उनसे डरते थे। खाज़ारों के शासक को 'कागन' (खगन या खयान) कहा जाता था, जो हमारे यहाँ के ज़ार या राजकुमार के समान था। यूनानी और रोमन इतिहासकारों के वृत्तांतों में इस लोगों की बहादुरी के कई उल्लेख मिलते हैं। हेरक्यूलियस के शासनकाल और सेरजियस के पादरीत्व के दौरान खज़ारों ने कॉन्स्टेंटिनोपल को बहुत कष्ट दिया, जब उन्हें परम पवित्र परमेश्वर की माता की अजेय शक्ति द्वारा चमत्कारिक रूप से हराया गया, जिन्होंने अपने शहर को मूर्तिपूजक खज़ारों और उनके साथ हाथ मिलाने वाले फारसियों से बचाया, जैसा कि इस घटना का वर्णन महा-उपवास के 5वें शनिवार को साइनैक्सैरियन में विस्तार से किया गया है। बहुत बाद में, यूनानी सम्राट लियो द इसाउरियन, खज़ारों के साथ शांति से रहना चाहते हुए, अपने बेटे कॉन्स्टेंटाइन (कोप्रोनिमस) का विवाह खज़ार खगान की बेटी से कर दिया, जिसे बपतिस्मा लेने पर इरिना नाम दिया गया था। उनका एक बेटा, लियो था, जिसे उसकी माँ के नाम पर काज़ारिन या खज़ारिस कहा जाता था (इस लियो की एक पत्नी, इरिना थी, जिसने अपने पति की मृत्यु पर, सातवें सार्वभौमिक परिषद में प्रतिमा-विरोधी विधर्म को अस्वीकार करते हुए, ऑर्थोडॉक्सी को बहाल किया)। इस विवाह के बाद, यूनानियों ने खज़ारों के साथ शांति से रहना शुरू कर दिया, और बाद वाले ईसाई धर्म से परिचित होने लगे। ईसाई धर्म का खज़ारों के बीच प्रसार मुख्य रूप से चेरसोनेसोस (जो एक ग्रीक उपनिवेश था) के लोगों और विशेष रूप से पवित्र शिक्षकों कॉन्स्टेंटिन और मेथोडियस के कार्यों के बाद हुआ। खज़ार लंबे समय से रूसी स्लावों से कर वसूलते थे: हर घर से एक गिलहरी की खाल और हर हल से एक शेलैग। यह कर अस्कॉल्ड और डिर ने समाप्त कर दिया, जिन्होंने खज़ारों, उत्तरी लोगों और रादिमिचिों के क्षेत्रों को उनसे छीन लिया। संत व्लादिमीर के पिता, स्वियातोस्लाव ने, अंततः(यूरोपीय) खज़ारों को हराया; उन्होंने उनका शहर बेलाया वेज़ा पर कब्ज़ा कर लिया और उन पर कर लगाया, जबकि एशियाई खज़ारों (जो डॉन और वोल्गा के बीच रहते थे) को पोलोव्त्सियानों और पेचेनेगों ने जीत लिया था।

[3580] इग्नेशियस ने 847 से 857 तक; फिर दूसरी बार 867 से 877 तक पैट्रिआर्क के रूप में कार्य किया।

[3581] संत मेथोडियस का पर्व 23 अक्टूबर को मनाया जाता है।

वे साथ में चल पड़े। उनका मार्ग मैदानों से होकर गुज़रता था, और उस समय उन मैदानों में उग्रयिों का वास था, जो आज के हंगेरयिन या मैगीयर हैं। ये उग्रयिाँ इतने भयानक थे कि वे मुश्कलि से इंसानों जैसे दखिते थे: वे अपने फर को उल्टा पहनते थे, अनाज नहीं बोते थे, और लूट-पाट कर जीवकिोपार्जन करते थे। जब पवत्रि भाइयों ने वहाँ प्रार्थना करने के लिए रुकें, तो उन पर उग्रयिों ने हमला कर दयिा, जो भेड़यिों की तरह दहाड़ रहे थे और उन्हें टुकड़े-टुकड़े करने पर तुले हुए थे। कॉन्स्टेंटनि नहीं डरे; उन्होंने अपनी प्रार्थना बंद नहीं की और प्रभु का नाम लेकर बार-बार पुकार लगाई: 'हे प्रभु, दया करो!'

जब प्रार्थना समाप्त हुई, तो दव्यि कृपा से, उग्रयिों ने कॉन्स्टेंटनि को देखकर नम्र हो गए और उसके सामने झुकने लगे; कॉन्स्टेंटनि ने उन्हें कुछ उपदेशात्मक शब्द कहे, जसिके बाद उग्रयिों ने उन्हें अपनी राह जारी रखने दी।

सबसे पहले, पवत्रि भाइयों ने खज़ारों के पड़ोसी, (वर्तमान) सेवस्तोपोल से बहुत दूर नहीं, समुद्र तट पर स्थति ग्रीक शहर चेरसन के लिए प्रस्थान कयिा। यहाँ उन्होंने खज़ार भाषा[3582] और ग्रीक का अध्ययन करने में काफी समय बतिाया। यहीं पर कॉन्स्टेंटाइन ने हब्रि व्याकरण के आठ खंडों का अनुवाद कयिा। उन्होंने यह अध्ययन खज़ारों को अधकि सफलतापूर्वक ज्ञान देने और यहूदयिों से प्रतस्पिर्धा करने के लिए कयिा, जनिकी संख्या खज़ारों में बहुत थी[3583] ।

वहाँ एक समारटिन भी रहता था, जो कॉन्स्टेंटनि से मलिता था और उसके साथ आस्था के मामलों पर चर्चा करता था। एक दनि, वह कुछ समारटिन पुस्तकें लाया और उन्हें कॉन्स्टेंटनि को दखिाया। कॉन्स्टेंटाइन ने सामरी से कतिाबें मांगीं और अपने कमरे में अकेले हो कर, ईश्वर से उन पर अध्ययन करने में मदद करने के लिए भक्तपिूर्वक प्रार्थना करने लगा। ईश्वर की मदद से, कॉन्स्टेंटाइन ने जल्द ही इन कतिाबों में पूरी तरह महारत हासलि कर ली। यह जानकर, सामरी ने कहा: 'सचमुच, जो कोई भी मसीह में वश्विास करता है, उसे पवत्रि आत्मा की कृपा शीघ्र प्राप्त होती है।'

समारयिाई के पुत्र का तुरंत बपतस्मिा हुआ; उसके बाद, समारयिाई स्वयं ईसाई धर्म अपना गया।

चेर्सोन में, कॉन्स्टेंटनि को 'रस' लपिि में लखिी 'इंजील और भजन संहति' मलिी, साथ ही एक ऐसा व्यक्त भी मलिा जो उस भाषा को बोलता था। कॉन्स्टेंटाइन ने उससे बातचीत करते हुए यह भाषा सीख ली और अपनी बातचीत के आधार पर, उन्होंने अक्षरों को स्वर और व्यंजन में वभिाजति कयिा; और ईश्वर की मदद से, उन्होंने जल्द ही उन कतिाबों को पढ़ना और समझाना शुरू कर दयिा जो उन्हें मलिी थीं। कई लोगों ने ऐसी बुद्धमिानी देखकर आश्चर्यचकति होकर ईश्वर की महमिा की।

यहीं पर पवत्रि भाइयों को पता चला कि रोम के पोप, पवत्रि शहीद क्लेमेंट[3584] के अवशेष समुद्र में पड़े थे। उन्होंने चेरसन के बशिप को पवत्रि अवशेषों को खोजने के लिए मनाना शुरू कर दयिा। इन अवशेषों के बारे में नम्निलखिति वर्णति है:

जब संत क्लेमेंट को रोम से चेरसन नर्विासति कयिा गया था और उन्होंने वहाँ कई लोगों को ईसाई धर्म में परविर्तति कर दयिा था, तो गवर्नर ऑफडियिन ने सम्राट ट्राजन के आदेश पर[3585] , उन्हें समुद्र में डुबोने का आदेश दयिा, उनकी गर्दन में जहाज का एक लंगर बाँधकर ताकि ईसाई उनका शरीर ढूंढ न सकें। संत के वफादार शष्यि तट पर खड़े होकर अपने गुरु को डूबते हुए रोते हुए देखते रहे। फरि उनके दो सबसे भक्तपिूर्ण शष्यिों, कॉर्नेलयिस और थेब्स ने ईसाइयों से कहा:

'आओ हम सब एक स्वर में प्रार्थना करें कि प्रभु हमें पवत्रि शहीद का शरीर प्रकट करें।'

[3586]ईसाइयों की प्रार्थना करने के बाद, समुद्र तीन स्टेडयिम पीछे हट गया[3587] । लोग, लाल सागर पर प्राचीन इस्राएलयिों की तरह, सूखे समुद्र तल पर चलकर एक संगमरमर की कब्र तक पहुँचे, जो एक चर्च के समान बनी थी, और वहाँ उन्होंने पवत्रि शरीर को पड़ा हुआ पाया, साथ ही वह लंगर भी था जसिसे संत को डुबोया गया था। ईसाइयों ने पवत्रि शरीर को वहाँ से हटाने का इरादा कयिा, लेकनि उपर्युक्त शष्यिों को एक प्रकटवाणी मलिी कि पवत्रि अवशेषों को अछूता

[3582] खज़ार एक स्लाव भाषा बोलते थे।

[3583] यहूदयिों का प्रभाव यहाँ इतना मजबूत था कि खिज़ार खगानों का राजवंश, उनके दरबार के साथ—अर्थात् खज़ार समाज की ऊपरी वर्ग—यहूदी धर्म में परविर्तति हो गया।

[3584] उनका पर्व दविस पवत्रि चर्च द्वारा 25 नवंबर को मनाया जाता है।

[3585] ट्राजन ने 98 से 117 तक शासन कयिा।

[3586] नकिफिोरोस प्रथम ने 802 से 811 तक शासन कयिा।

[3587] एक 'पॉप्रश्चि' में एक हजार बड़े कदम होते थे, और प्रत्येक कदम को पाँच फीट लंबा माना जाता था।

छोड़ दिया जाए, और यह कि हर साल, संत की स्मृति में, समुद्र सात दिनों के लिए पीछे हट जाएगा, जिससे पवित्र अवशेषों की पूजा करना चाहने वालों के लिए रास्ता बन जाएगा। यह ट्राजन के शासनकाल से लेकर यूनानी राजा निकिफोरस के शासनकाल तक 700 वर्षों तक जारी रहा। हालाँकि, लोगों के पापों के कारण, निकिफोरस के शासनकाल के दौरान समुद्र पीछे हटना बंद हो गया, जिससे ईसाइयों को बहुत दुख हुआ।

संत कॉन्स्टेंटिन और मेथोडियस चेरसन पहुँचे, जब पवित्र अवशेषों को अंततः छिपाए हुए 50 से अधिक वर्ष बीत चुके थे। चेरसन के धन्य बिशप जॉर्ज, जिन्हें उन पवित्र भाइयों ने पवित्र अवशेषों को उजागर करने के लिए मनाया था, ने सबसे पहले सम्राट और पैट्रिआर्क से इस उद्घाटन की अनुमति माँगने के लिए कॉन्स्टेंटिनोपल की यात्रा की। कॉन्स्टेंटिनोपल के बिशप के साथ, सेंट सोफिया चर्च के सभी पुरोहित पवित्र अवशेषों को उजागर करने के लिए आए। फिर, सभी—संत कॉन्स्टेंटिन और मेथोडियस सहित—लोगों के साथ, वे अपनी इच्छा पूरी करने की आशा में समुद्र तट की ओर रवाना हुए। लेकिन समुद्र पीछे नहीं हटा। फिर, सूर्यास्त के बाद, वे एक जहाज पर चढ़े और समुद्र यात्रा के लिए निकल पड़े। अचानक, आधी रात को, समुद्र से एक प्रकाश चमका और पूजनीय सिरि प्रकट हुआ; फिर संत क्लेमेंट का पूरा शरीर दिखाई देने लगा। पवित्र अवशेषों को जहाज पर रखा गया और, बड़ी सम्मान के साथ, शहर ले जाया गया और एपोस्टोलिक चर्च[3588] में रख दिया गया। संत कॉन्स्टेंटिन और मेथोडियस ने पवित्र अवशेषों का एक हिस्सा लिया और जहाँ भी वे गए, उसे साथ ले गए, जब तक कि उन्होंने अंततः इस हिस्से को रोम नहीं ले आए।

खेरसोन से, कॉन्स्टेंटाइन और मेथोडियस खज़ारों के लिए रवाना हुए, जहाँ खज़ार खगान ने उनका सम्मानपूर्वक स्वागत किया, जिन्हें उन्होंने ग्रीक सम्राट का एक पत्र सौंपा। धन्य कॉन्स्टेंटाइन को खज़ारों, यहूदियों और सारासेनों के साथ लंबी चर्चाओं में शामिल होना पड़ा। मेथोडियस ने इन चर्चाओं में लगभग कोई हिस्सा नहीं लिया, क्योंकि वह कॉन्स्टेंटाइन से कम शिक्षित थे: एक पूर्व सैन्य कमांडर के रूप में, वे विद्वतापूर्ण चर्चाओं को आयोजित करने की तुलना में लोगों से निपटने के तरीके को बेहतर जानते थे। परिणामस्वरूप, कॉन्स्टेंटाइन—जो बचपन से ही विज्ञान में निपुण था, पवित्र धर्मग्रंथों का अच्छा जानकार था, और एक उत्कृष्ट उपदेशक था, जो किसी भी प्रश्न का उत्तर देने के लिए तैयार रहता था—को अकेले ही विश्वास पर चर्चाएं करनी पड़ीं; जबकि मेथोडियस ने अपनी ओर से, प्रार्थनाओं के माध्यम से कॉन्स्टेंटाइन की सहायता की।

खज़ारों ने कॉन्स्टेंटिन के पास एक चालाक और धूर्त व्यक्ति भेजा, जिसने उससे कहा:

'तुम्हारे यूनानियों की एक बुरी प्रथा है कि वे एक राजा को एक सामान्य, गैर-शाही वंश के दूसरे राजा से बदल देते हैं। इस प्रकार, निकिफ़ोरस के बाद, तुमने बोयार माइकल कुरोपालेट्स को राजा बनाया; और उसे पदच्युत करने के बाद, तुमने विनिम्र जन्म के लियो द आर्मेनियन को सिंहासन पर बिठाया; और उसकी मृत्यु के बाद, तुमने अमोरिया के मूल निवासी माइकल ट्रैवलोस को स्थापित किया। हमारे यहाँ ऐसा नहीं है: हमारे सभी खगान खगान की वंशावली से होते हैं, और हम में से कोई भी तब तक राज नहीं कर सकता जब तक कि वह उस वंशावली का न हो।

इस पर, कॉन्स्टेंटिन ने संक्षेप में उत्तर दिया:

'क्या ईश्वर ने सही नहीं किया जब उन्होंने राजा शाऊल को, जो उन्हें अप्रिय था, अस्वीकार कर दिया, और झुंडों के चरवाहों में से दाऊद को, जो उनके हृदय के अनुकूल था, चुना?'

कोज़ारिन को इसका कोई उत्तर नहीं सूझा और उसने एक और प्रश्न पूछा:

'तुम अपनी किताबों से नैतिक शिक्षा देते हो; हम, हालाँकि, ऐसा नहीं करते, बल्कि अपनी ही रचनाओं पर गर्व किए बिना, अपनी ही अंतर्ज्ञान से सारी बुद्धिमानी बोलते हैं, जैसे तुम करते हो। ऐसा लगता है मानो सारी बुद्धिमानी हमारे भीतर ही निहित है।'

'अगर आप एक नग्न आदमी से मिलें,' कॉन्स्टेंटाइन ने जवाब दिया, 'जो दावा करे कि उसके पास बहुत सारे कपड़े, सोना और ज़मीनें हैं, तो क्या आप उस पर विश्वास करेंगे, जब वह नग्न होगा और उसके हाथ में कुछ भी नहीं होगा?'

कोज़ारिन ने कहा, 'नहीं। अगर उसके पास कुछ भी होता, तो वह नंगा घूम नहीं रहा होता।'

कोज़ारिन ने कोन्स्टान्टिन से कहा, 'अगर, जैसा तुम घमंड करते हो, तुमने सारी बुद्धिमानी आत्मसात कर ली है, तो मुझे बताओ: आदम से लेकर मूसा तक कितनी पीढ़ियाँ थीं, और प्रत्येक पीढ़ी पृथ्वी पर कहाँ रहती थी?'

[3588] पैन्नोंयिन संस्करण के अनुसार, संतों की अवशेषों की खोज इस प्रकार हुई: सभी लोग जहाज से उस स्थान की ओर रवाना हुए जहाँ संतों की अवशेषों के होने का विश्वास था। जब समुद्र पूरी तरह शांत हो गया, तो उन्होंने चर्च के भजन गाते हुए खोज शुरू की। पहले एक अद्भुत सुगंध फैली, मानो कई धूपदानों से आ रही हो, और उसके बाद संतों की अवशेषें प्रकट हुईं।

कोज़ारनि कुछ नहीं कह सका। कॉन्स्टेंटाइन ने जारी रखा:

'इसीलिए मैं तुम्हारी बात पर विश्वास नहीं करता जब तुम कहते हो कि तुमने सभी ज्ञान में महारत हासिल कर ली है और तुम्हें किताबों की कोई ज़रूरत नहीं है।'

पवित्र भाइयों को खागान के साथ भोजन के लिए आमंत्रित किया गया था। मेज पर बैठने से पहले, खागान ने उनसे पूछा:

'मुझे बताओ, तुम किस वंश से हो, ताकि हम जान सकें कि तुम्हें कहाँ बिठाना है।'

'हमारे दादा,' कॉन्स्टेंटिन ने जवाब दिया, 'एक महान और गौरवशाली वंश से थे और ज़ार के बहुत करीब थे। लेकिन वे अपने ऊपर प्रदान की गई महान महिमा को बनाए रखने में असमर्थ रहे; उन्हें ज़ार द्वारा निर्वासित कर दिया गया और वे एक विदेशी भूमि में चले गए, जहाँ उन्होंने हमें जन्म दिया। हम अब अपने दादा की प्राचीन महिमा की तलाश में हैं और हमें और कुछ नहीं चाहिए। हमारे दादा आदम थे।

"अतिथि, तुमने उपयुक्त और सही कहा," खगान ने कहा, जिसके बाद उसने कॉन्स्टेंटाइन को विशेष सम्मान देना शुरू कर दिया।

जब वे मेज़ पर बैठ गए, खगान ने एक प्याला उठाया और कहा:

'मैं एक ईश्वर के सम्मान में पीता हूँ, जिसने सारी सृष्टि की रचना की।' कॉन्स्टेंटाइन ने अपना प्याला उठाया और कहा:

'मैं एक ईश्वर और उनके वचन की महिमा के लिए पीता हूँ, जिनके द्वारा स्वर्ग स्थापित हुए, और जीवन-दायक आत्मा के लिए, जिसके द्वारा सभी सृजित वस्तुओं का अस्तित्व बना रहता है।'

खगान ने कॉन्स्टेंटाइन से कहा, 'यहाँ हम हैं, हम सभी प्राणियों के स्रष्टा, ईश्वर के बारे में एक ही सिद्धांत रखते हैं; हम केवल इस बात पर असहमत हैं कि आप त्रिमूर्ति की महिमा करते हैं, जबकि हम यहूदी धर्मग्रंथों के अनुसार एक ईश्वर की महिमा करते हैं।'

'यदि,' कॉन्स्टेंटाइन ने उत्तर दिया, 'आपने यहूदी धर्मग्रंथों से यह सीखा है कि ईश्वर एक है, तो उन्हीं धर्मग्रंथों से आपको पवित्र त्रिमूर्ति को भी जानना चाहिए। यहूदी धर्मग्रंथ, अपनी भविष्यवाणियों में, न केवल पिता बल्कि वचन और आत्मा की भी घोषणा करते हैं।' इस प्रकार राजा और भविष्यवक्ता दाऊद कहते हैं: *'प्रभु के वचन से आकाश बने, और उनके होठों के साँस से उनकी सारी सेना'* (भजन संहिता 32:6)। यहाँ, एकता और त्रित्व दोनों का स्पष्ट रूप से संकेत दिया गया है: प्रभु, उनका वचन और आत्मा। प्रभु परमपिता परमेश्वर हैं, वचन पुत्र परमेश्वर हैं, और प्रभु के ओठों का आत्मा पवित्र आत्मा परमेश्वर हैं। हालाँकि, प्रभु तीन नहीं हैं, बल्कि एक ही प्रभु हैं जो अपने वचन और आत्मा के साथ हैं; और न ही परमेश्वरत्व में तीन परमेश्वर हैं, बल्कि एक ही परमेश्वर हैं जिसकी आराधना की जाती है। इस पर भी विचार करें: आपके राजसी व्यक्तित्व की पूजा करने वाला इनमें से कौन बेहतर होगा—वह जो केवल आपका सम्मान करेगा, जबकि आपके वचन और आपके होठों की आत्मा को तुच्छ समझेगा, या वह जो आपका, आपके वचन और आपके होठों की आत्मा का समान रूप से सम्मान करेगा?

'निस्संदेह दूसरा,' खगन ने उत्तर दिया।

'अतः' दार्शनिक ने जारी रखा, 'पवित्र त्रिमूर्ति—पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा—का समान रूप से सम्मान करके, हम ईश्वर के आपके अपेक्षा बेहतर और सच्चे उपासक हैं। हमने पूजा का यह रूप भविष्यवाणी की पुस्तकों से सीखा है। उपरोक्त अंश के अलावा, मैं अन्य उद्धरण भी दूँगा। इस प्रकार पवित्र भविष्यवक्ता यशायाह निम्नलिखित शब्दों में परमेश्वर पुत्र के बारे में कहते हैं: *'हे याकूब और इस्राएल, मेरी सुनो, जिन्हें मैंने बुलाया है: मैं वही हूँ, मैं प्रथम हूँ, और मैं अंतिम हूँ... और अब प्रभु परमेश्वर और उनकी आत्मा ने मुझे भेजा है'* (यशायाह 48:12, 16)। हमारे प्राचीन पिताओं ने[3589] इस पवित्र धर्मग्रंथ के अंश की इस प्रकार व्याख्या की है:

– भेजा गया वह कौन है, यदि पुत्र नहीं? उसे किसके द्वारा भेजा गया है, यदि पिता और पिता के पवित्र आत्मा के द्वारा नहीं?

इस भोज में बहुत से यहूदी थे। उनमें से कुछ ने धन्य कॉन्स्टेंटाइन से कहा:

[3589] महान अथानासियस, महान बेसिल, नाइसा के ग्रेगरी।

– हमें बताओ, हे ईसाई दार्शनिक: एक स्त्री का गर्भ उस ईश्वर को कैसे धारण कर सकता है, जिसे स्वर्गदूत भी नहीं देख सकते?

दार्शनिक ने कागन के मुख्य सलाहकार की ओर अपनी उंगली से इशारा करते हुए कहा:

'अगर कोई कहे कि यह मुख्य सलाहकार अपने घर में खागन का स्वागत और उसकी मेजबानी नहीं कर सकता, जबकि सबसे नीचला दास भी ऐसा कर सकता है, तो हम उसे क्या कहेंगे: पागल या समझदार?'

'पूरी तरह से पागल,' यहूदियों ने उत्तर दिया।

तब दार्शनिक ने निम्नलिखित प्रश्न पूछा:

'आकाश के नीचे दिखाई देने वाले सभी प्राणियों में सबसे सम्मानित कौन है?'

यहूदियों ने उत्तर दिया, 'मनुष्य सभी प्राणियों में सबसे सम्मानित है, क्योंकि उसमें एक तर्कशील आत्मा है, जो ईश्वर की छवि पर बनाई गई है।'

'इसलिए,' दार्शनिक ने उत्तर दिया, 'वे लोग अनुचित सोचते हैं जो यह मानते हैं कि ईश्वर के लिए मानव गर्भ में वास करना असंभव है, जबकि वे जानते हैं कि मूसा के समय में वह एक कांटेदार झाड़ी (एक ब्रेम्बल) में वास कर चुका है। क्या एक झाड़ी—एक निर्जीव और असंवेदनशील सृष्टि—एक ईश्वर-सदृश आत्मा वाले संवेदनशील और तर्कशील प्राणी से अधिक सम्माननीय है? झाड़ी के अलावा, जब ईश्वर यॉब, मूसा और एलियाह के सामने प्रकट हुए, तो वे एक बादल में, धुएँ में और आग में वास करते थे। यह विशेष रूप से अद्भुत है कि ईश्वर ने सभी जीवित प्राणियों में सबसे सम्मानित का रूप धारण किया, पृथ्वी पर प्रकट होने और लोगों के बीच रहने की इच्छा से, ताकि उन्हें आदम के पाप द्वारा मानव जाति पर लाई गई घातक पीड़ा से मुक्ति मिल सके। मुझे बताइए, सृष्टिकर्ता स्वयं के अलावा और किससे सभी प्राणियों में सबसे सम्मानित—अर्थात् मानव जाति—को चंगाई और नवीनीकरण की उम्मीद करनी चाहिए थी? क्या यह दाऊद ही नहीं थे जिन्होंने भविष्यवाणी की थी: *'उसने अपना वचन भेजा और उन्हें चंगा किया'* (भजन संहिता 106:20)? इसलिए, पिता का वचन, परमेश्वर पुत्र, आए और उन्होंने मानव स्वभाव को चंगा किया। यदि परमपिता का वचन अवतार के द्वारा मनुष्य के साथ एक नहीं हुआ होता और उपचार करने वाले प्लास्टर की तरह स्वयं को मनुष्य पर नहीं लगाया होता, तो वह मनुष्य का उपचार कैसे कर सकता था? क्या कोई चिकित्सक, जो एक घायल व्यक्ति को ठीक करना चाहता है, मरीज के बजाय किसी पेड़ या पत्थर पर प्लास्टर लगाता है? इसलिए, परमेश्वर ने अपने एकलौते वचन को, एक पट्टी की तरह, न तो किसी पेड़ पर लगाया—यद्यपि वह पहले झाड़ी में पेड़ों के बीच प्रकट हुए थे—और न ही किसी पत्थर पर—यद्यपि उन्हें सिनाई और होरेब के पत्थरीले पहाड़ों में मूसा और एलीजा द्वारा देखा गया था—बल्कि पाप की बीमारी से पीड़ित एक मनुष्य पर लगाया। यह मिलन अटूट हो गया, क्योंकि प्रभु एक शुद्ध, कुँवारी—और केवल एक महिला की ही नहीं—गर्भ में वास करने में प्रसन्न थे, जैसा कि यशायाह ने भविष्यवाणी की थी: *'देखो, एक कुँवारी गर्भधारण करेगी और एक पुत्र को जन्म देगी, और वे उसका नाम इम्मानुएल रखेंगे, जिसका अर्थ है "परमेश्वर हमारे साथ"'* (यशायाह 7:14)। यहाँ नबी स्पष्ट रूप से बताता है कि परमेश्वर पुत्र एक शुद्ध और अविवाहित कुँवारी से पृथ्वी पर जन्म लेगा। और जहाँ तक इस बात का सवाल है कि हमारे उद्धार के लिए परमेश्वर का एक कुँवारी के गर्भ में रहना कैसे संभव था, तो अपनी ही किताबों में लिखा हुआ याद करो। तुम्हारे रब्बी अचिल्ला कहते हैं:

– 'हे प्रभु, हमें पत्थरों की गर्जना या तुरहियों की ध्वनि में प्रकट न हो; हे उदार प्रभु, हमें प्रकट न हो, बल्कि हमारे गर्भों में वास करो और हमारे पापों को दूर करो।'

– यदि मूसा ने ईश्वर से हमारे गर्भों में वास करने की प्रार्थना की, तो फिर आप हम पर इस बात का आरोप क्यों लगाते हैं कि हमने यह स्वीकार किया कि ईश्वर एक महिला के गर्भ में वास किया—और वह भी केवल किसी महिला का नहीं, बल्कि एक कुंवारी का, जो पवित्र, निर्दोष और अविवाहित थी? वह हमारे गर्भों में भी वास करते हैं जब हम, ईसाइयों के रूप में, रहस्यमय बलिदान में यूखरिस्त ग्रहण करते हैं। जैसा कि आप देख सकते हैं, रब्बी अचिल्ला की गवाही के अनुसार आपकी पुस्तकों में दर्ज मूसा की प्राचीन प्रार्थना पूरी हुई है: ईश्वर हमारे गर्भों में वास कर चुके हैं, हमारे पापों को दूर करते हुए।

दोपहर के भोजन के बाद, सभी अपने-अपने रास्ते चले गए और एक तारीख तय की जिस पर वे एक बार फिर विश्वास पर चर्चा करते। निर्धारित दिन, सभी इकट्ठा हुए और, खगान के निमंत्रण पर, अपनी-अपनी निर्धारित सीटों पर बैठ गए। कॉन्स्टेंटाइन ने चर्चा की शुरुआत निम्नलिखित शब्दों से की:

'मैं यहाँ हूँ, आप सबके बीच एकमात्र अजनबी, फिर भी हम सभी ईश्वर की चर्चा कर रहे हैं, जिनके हाथ में सभी चीजें हैं, जिसमें हमारे दिल भी शामिल हैं। जैसे-जैसे हम चर्चा करें, आप में से जो वाक्पटु हैं, यदि वे समझें, तो हमारे शब्दों की पुष्टि करें; और यदि नहीं, तो आप फिर से पूछें, और हम समझाने का प्रयास करेंगे।'

यहूदियों ने इस प्रश्न के साथ चर्चा शुरू की:

'हमें बताइए: ईश्वर ने सबसे पहले कौन सा कानून दिया—मोशे का, या वह जिसे आप ईसाई मानते हैं?'

धन्य कॉन्स्टेंटिन ने उत्तर दिया, "क्या यह सही नहीं है कि तुमने मुझसे यह पूछा है कि पहला कानून कौन-सा था, ताकि तुम बाद में यह कह सको कि पहला ही सबसे अच्छा है?"

यहूदियों ने उत्तर दिया, 'हाँ। और इसीलिए पहले कानून का पालन करना चाहिए, क्योंकि वह सबसे अधिक प्रामाणिक और सर्वोत्तम है।'

'यदि आप केवल पहला विधान मानना चाहते हैं, तो खतना त्याग दें,' कॉन्स्टेंटाइन ने यहूदियों से कहा।

यहूदियों ने पूछा, 'आप ऐसा क्यों कह रहे हैं?'

'मुझे सच बताओ,' कॉन्स्टेंटाइन ने यहूदियों से कहा, 'क्या पहला कानून खतना किए जाने पर दिया गया था या बिना खतना किए जाने पर?'

यहूदियों ने उत्तर दिया, "हमारा विश्वास है कि यह खतना के माध्यम से था।"

कांस्टेंटाइन ने कहा, 'क्या ईश्वर ने पहला विधान नोआ को नहीं दिया था? और यह खतना से पहले और आदम को उसके पतन के बाद ईडन के बगीचे में दिए गए आज्ञा के बाद था। ईश्वर ने नोआ को आज्ञा दी कि किसी भी मानव का रक्त न बहाया जाए: *"जो कोई भी मानव का रक्त बहाएगा, उसे मानव के रक्त से ही मार डाला जाएगा"* (उत्पत्ति 9:6)। फिर, जड़ी-बूटियों, जानवरों, पशुओं, पक्षियों और मछलियों के खाने के बारे में बात करते हुए, परमेश्वर ने नोआ से कहा: *'मैं तेरे और तेरे बाद तेरे वंशजों के साथ अपनी वाचा स्थापित करता हूँ'* (उत्पत्ति 9:9)।

'लेकिन एक वाचा कोई कानून नहीं है,' यहूदियों ने कहा। 'ईश्वर ने नूह से "मेरा कानून" नहीं कहा, बल्कि "मेरी वाचा" कहा। हम, हालांकि, कानून की बात कर रहे हैं।'

"क्या आप खतना को एक कानून के रूप में मानते हैं, या नहीं?" कॉन्स्टेंटाइन ने पूछा।

'हम इसे एक कानून के रूप में मानते हैं,' यहूदियों ने उत्तर दिया।

'फिर भी खतना,' कॉन्स्टेंटाइन ने जारी रखा, 'ईश्वर ने इसे कानून नहीं कहा, बल्कि केवल एक वाचा कहा, जब उन्होंने अब्राहम से कहा: *"तुम मेरा नियम, और तुम्हारे बाद तुम्हारे वंशज अपनी-अपनी पीढ़ियों में पालना करना... तुम में हर पुरुष का खतना किया जाएगा... और यह मेरे और तुम्हारे बीच वाचा का चिन्ह होगा... और मेरा वाचा तुम्हारे शरीर में एक अनन्त वाचा के रूप में होगी"* (उत्पत्ति 17:9–13)। अब देखो," कांस्टेंटाइन ने कहा, "ईश्वर ने एक बार भी खतना को कानून नहीं कहा, बल्कि एक वाचा कहा। तो क्या आप खतना को अवैध घोषित कर देंगे? यदि, तथापि, आप खतने की वाचा को एक कानून के रूप में मानते हैं, तो आपको नोआ को दी गई वाचा को भी एक कानून के रूप में मानना चाहिए और इसे पहला कानून कहना चाहिए जो परमेश्वर ने स्वर्ग से निकाले गए और जलप्रलय के पानी से बचाए गए मानव जाति को दिया था।

यहूदियों ने उत्तर दिया, 'नहीं। केवल मूसा को दिया गया विधान ही विधान है, और हम उसी का पालन करते हैं।'

'यदि नूह को दिया गया वाचा,' कॉन्स्टेंटाइन ने कहा, 'कानून नहीं बल्कि केवल एक वाचा है—क्योंकि परमेश्वर ने इसे कानून नहीं बल्कि वाचा कहा—तो मूसा को दिया गया कानून भी कानून नहीं *है*, क्योंकि यिर्मियाह की पुस्तक के अध्याय 11 में परमेश्वर इसे कानून नहीं बल्कि वाचा कहते *हैं*: *"इस वाचा के वचन सुनो... इस्राएल का परमेश्वर यहोवा यों कहता है: उस मनुष्य का श्राप हो जो इस वाचा के वचनों की आज्ञा न माने, जो मैं ने तुम्हारे पितरों को तब दी थी जब मैं उन्हें मिस्र देश से निकाल लाया था"* (यर. 11:2–4)। यदि यह वाचा आपके लिए एक कानून है, तो नूह को दिया गया वाचा भी एक कानून है। और चूँकि यह कानून खतना से पहले दिया गया था, आपको इसे पहला मानकर पालन करना चाहिए और इसके बाद आए अन्य कानूनों, यानी इब्राहीम और मूसा के कानूनों की उपेक्षा करनी चाहिए। क्योंकि आपने स्वयं कहा है कि पहला कानून सबसे अच्छा है और उसका पालन किया जाना चाहिए।

तब यहूदियों ने इस प्रश्न को टाल दिया, दूसरी बात करने लगे, और कहा:

'जो कोई भी मूसा के व्यवस्था का पालन करता था, वह परमेश्वर को प्रसन्न करता था। इसलिए, इसका पालन करके, हम भी परमेश्वर को प्रसन्न करने की आशा रखते हैं। आप, हालाँकि, एक नई व्यवस्था का पालन करते हैं जिसे आपने स्वयं अपने लिए बनाया है, जबकि पुरानी व्यवस्था को तुच्छ समझते हैं।'

दार्शनिक ने उत्तर दिया, 'नए कानून को स्वीकार करके, हमने अच्छा किया है। क्योंकि यदि इब्राहीम का खतना नहीं हुआ होता और उन्होंने केवल नूह की वाचा का पालन किया होता, तो उन्हें ईश्वर का मित्र नहीं कहा जाता। इसी प्रकार, इब्राहीम के बाद मूसा, नूह और इब्राहीम को पहले दिए गए कानूनों से संतुष्ट नहीं थे, इसलिए उन्होंने एक नया कानून लिखा। हम भी उनके उदाहरण का अनुसरण करते हैं। हालाँकि, जैसे उन्होंने, एक के बाद एक, पहले के कानूनों को समाप्त नहीं किया—अब्राहम ने नूह के कानून को खारिज नहीं किया, न ही मूसा ने दोनों को खारिज किया; बल्कि, जो कमी थी उसे पूरा करके, उन्होंने अधिक विस्तृत कानूनों में परमेश्वर की अधिक परिपूर्ण इच्छा को स्थापित किया, ताकि प्रभु की आज्ञा स्थापित हो सके। इसी तरह, हम मूसा की पट्टियों पर लिखी पुरानी वाचा से इनकार नहीं करते, बल्कि हम उन सभी बातों का समर्थन करते हैं जो एकमात्र ईश्वर, सभी प्राणियों के सृष्टिकर्ता, को जानने के लिए आवश्यक हैं, साथ ही: ना मारना, ना चोरी करना, और अन्य आज्ञाएँ। हम केवल वही अस्वीकार करते हैं जो मूसा की पट्टियों पर नहीं लिखा है, उदाहरण के लिए: खतना, पशुओं की बलि चढ़ाना, और ऐसी अन्य बातें। ये केवल आने वाले नए विधान की छाया और पूर्वाभास थे; इसलिए, इसके आगमन के साथ, इन्हें अलग रखना पड़ा। जब हमारे हाथों में असली वस्तु ही मौजूद है, तो छाया को बनाए रखने की क्या आवश्यकता?

'यदि आप जो पुराने नियम के बारे में कह रहे हैं वह सच है,' यहूदियों ने आपत्ति जताई, 'कि मूसा की पट्टियों के अलावा के विधान और संधि केवल आपके नए नियम की एक छाया और पूर्वाभास थे, तो प्राचीन विधि-निर्माताओं को यह पता होता और वे आपके उस नए नियम के बारे में बात करते, जो भविष्य में आने वाला था। क्योंकि एक छाया और एक प्रतिरूप को ठीक उसी चीज़ को दर्शाना चाहिए जिसकी कोई अपनी आँखों से उम्मीद करता है। लेकिन विधिदाताओं ने आपके विधान की पूर्वधारणा नहीं की थी; अतः पुराने नियम के सभी विधान और वादे, ठीक मूसा की पट्टियों की तरह, न तो कोई छाया हैं और न ही कोई प्रतीक, बल्कि स्वयं सत्य (वास्तविकता) हैं, जिसे आपको, ठीक वैसे ही जैसे मूसा की पट्टियों पर लिखा है, सत्य के रूप में स्थापित करना चाहिए।

इस पर दार्शनिक ने इस प्रकार उत्तर दिया:

'यदि पुराने नियम के प्राचीन विधायकों को यह नहीं पता होता कि उनके अपने नियम के बाद एक नया नियम आएगा, तो मैं आपसे यह पूछता: जब परमेश्वर ने सबसे पहले नूह को उस वाचा दी, जिसके बारे में हमने पहले बात की थी, तो क्या उन्होंने तब उसे यह घोषित किया कि वह उसके बाद अपने सेवक अब्राहम को एक और नियम देंगे? बिल्कुल नहीं; बल्कि, उन्होंने पहले वाचा को सभी पीढ़ियों के लिए स्थायी के रूप में पुष्ट किया। क्या उन्होंने वाचा देते समय अब्राहम को यह भी बताया कि वे बाद में मूसा को एक और कानून देंगे? जहाँ तक हमारी अपनी, यानी नई वाचा का सवाल है, उन्होंने इसका खुलासा अपने पवित्र भविष्यवक्ताओं के माध्यम से विस्तार से किया। तो यिर्मयाह के वचन सुनो: *'देखो, वे दिन आ रहे हैं, यहोवा की यही वाणी है,* जब मैं *इस्राएल के घराने और यहूदा के घराने के साथ एक नया वाचा करूंगा—उस वाचा के समान नहीं जो मैंने उनके पूर्वजों के साथ उस दिन की थी जब मैंने उन्हें मिस्र देश से निकालने के लिए उनका हाथ पकड़ा था; क्योंकि उन्होंने मेरी वाचा तोड़ दी, यद्यपि मैं उनके साथ गठबंधन में था, यहोवा की यही वाणी है।'* (यर. 31:31–32)। यहाँ, आप देखते हैं, हमारे नए नियम के बारे में प्रसिद्ध भविष्यवाणी है। इसी प्रकार, भविष्यवक्ता यशायाह ने प्रभु की ओर से नए नियम की भविष्यवाणी की, कहते हुए: *'तथापि तुम पहिले की बातें न स्मरण करते हो, और न प्राचीन बातों पर विचार करते हो। मैं एक नई बात करता हूँ: अब वह निकलती है'* (यशायाह 43:18–19)। इस प्रकार, प्राचीन विधि-निर्माताओं को अनुग्रह के नए विधान का ज्ञान था, उन्होंने इसकी प्रतीक्षा की, और इसकी भविष्यवाणी की। इसलिए, आपके पुराने नियम के विधान और वाचाएँ उस विधान की एक छाया और पूर्वाभास हैं जिसकी हम प्रतीक्षा करते हैं, न कि स्वयं सत्य की; और इसी कारण, उन्हें अनावश्यक के रूप में अलग कर दिया जाना चाहिए।

यहूदियों ने कहा, 'हर यहूदी इस बात को सच मानता है कि एक नया विधान होगा, लेकिन अभिषिक्त के प्रकट होने का समय अभी नहीं आया है।'

'आप और किसका इंतज़ार कर रहे हैं?' कॉन्स्टेंटाइन ने जवाब दिया। 'क्या तुम्हारे राज्य और प्रधानता का अधिकार—जो हमारे पूर्वज याकूब की भविष्यवाणी के अनुसार, मसीहा मसीह के आने तक ही चलना था—समाप्त नहीं हो गया है? क्या यरूशलेम नष्ट नहीं हो गया है? क्या बलिदान अस्वीकार नहीं कर दिए गए हैं? क्या प्रभु की महिमा तुमसे

गैर-यहूदियों के पास नहीं चली गई है, जैसा कि भविष्यवक्ता मलाकी ने स्पष्ट रूप से भविष्यवाणी की थी, यह कहते हुए: 'मैं तुमसे प्रसन्न नहीं हूँ,' सर्वशक्तिमान यहोवा कहते हैं, 'और मैं तुम्हारे हाथों से बलिदान स्वीकार नहीं करूँगा। क्योंकि सूर्योदय से सूर्यास्त तक, मेरा नाम महान होगा, और हर स्थान पर मेरे नाम के लिए शुद्ध भेंट चढ़ाई जाएगी; मेरा नाम अन्यजातियों में महान होगा, यह सेनाओं का यहोवा कहता है' (मला. 1:10–11)।

'हम इस अंश का यह अर्थ समझते हैं,' यहूदियों ने उत्तर दिया, 'कि अन्यजाति हमारे द्वारा धन्य होंगे, ठीक वैसे ही जैसे हम—इब्राहीम की संतान—धन्य हैं, और यरूशलेम नगर में खतना कराए जाएँगे।'

'अब्राहम की संतान को किसके द्वारा आशीष दी गई है?' कॉन्स्टेंटाइन ने उत्तर दिया, 'उसी के द्वारा हमें भी आशीष दी गई है—अर्थात् मसीह के द्वारा, जो अब्राहम, इसहाक, याकूब, यशै और दाऊद की संतान थे। क्योंकि परमेश्वर ने अब्राहम से कहा: *"पृथ्वी के सभी कुल तुझ में आशीष पाएंगे"* (उत्पत्ति 12:3), और इसहाक से: *'पृथ्वी के सभी लोग तेरे वंश से आशीष पाएंगे'* (उत्पत्ति 26:4), और याकूब से भी यही (उत्पत्ति 28:14); जबकि दाऊद कहते हैं: *'कबीले उसी से आशीष पाएंगे; सभी लोग उसकी स्तुति करेंगे'* (भजन संहिता 71:17)। और इस तथ्य के संबंध में कि मसीहा अब्राहम की वंश परंपरा के लिए और अन्यजातियों के उद्धार के लिए दोनों ही आना था, याकूब ने एक बार यहूदा को आशीर्वाद देते हुए कहा था: *'राजदंड यहूदा से न हटेगा, और न ही उसके पैरों के बीच से शासक, जब तक कि शिलो न आए; और उसके प्रति लोगों का आज्ञाकार होगा'* (उत्पत्ति 49:10)। और भविष्यवक्ता ज़करियाह, जो सियोन की बेटी—यरूशलेम—को एक गधे और गधे के बच्चे पर सवार नम्र राजा के आगमन की घोषणा करते हुए कहते हैं: *'तब मैं एफ्राइम से रथ और यरूशलेम से घोड़ों को दूर कर दूँगा; युद्ध का धनुष टूट जाएगा, और वह राष्ट्रों में शांति का प्रचार करेगा'* (जकर्याह 9:10)। तो आप देखते हैं, कि मसीहा न केवल आपके लिए, हे यहूदियों, बल्कि अन्यजातियों के लिए भी आने वाले थे। मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि वह आपकी अपेक्षा अन्यजातियों के लिए अधिक आए, क्योंकि आपने उसे स्वीकार नहीं किया, जबकि अन्यजातियों ने किया; आपने उसे मार डाला, जबकि अन्यजातियों ने उस पर विश्वास किया; आपने उसे अस्वीकार कर दिया, जबकि अन्यजातियों ने उससे प्रेम किया; इसलिए उसने आपको अस्वीकार कर दिया, परन्तु अन्यजातियों को बुलाया, और उनमें महिमा पाता है। जहाँ तक इस तथ्य का सवाल है कि लंबे समय से प्रतीक्षित मसीहा वास्तव में पहले ही आ चुके हैं, आप इसकी पुष्टि पवित्र भविष्यवक्ता दानियेल के माध्यम से कर सकते हैं। बेबीलोन में, दारा के शासनकाल के पहले वर्ष में , प्रभु का स्वर्गदूत, गब्रियल, इस भविष्यवक्ता के पास प्रकट हुए और मसीहा के संसार में आने तक उस समय से सत्तर सप्ताह निर्धारित किए। प्रत्येक सप्ताह में सात वर्ष होते हैं, और कुल मिलाकर वे 490 वर्ष होते हैं। यह आपके तालमूड का भी यही मत है। ये वर्ष कितनी पुरानी बात है? यदि आप विचार करें, तो आपको पता चलेगा कि दाऊद को बताई गई सप्ताहों की भविष्यवाणी के पूरे होने के बाद से (दानियेल 2:1–49) 800 से अधिक वर्ष बीत चुके हैं।

'मैं आपसे यह भी पूछना चाहूँगा,' कॉन्स्टेंटाइन ने कहा, 'आपके विचार में वह लोहे का राज्य कौन-सा था, जिसका उल्लेख दानियेल ने नबूकदनेसर से उस समय किया था जब उसने उसे उस महान प्रतिमा के स्वप्न की व्याख्या सुनाई थी?'

'लोहे का साम्राज्य रोम साम्राज्य को संदर्भित करता था,' यहूदियों ने उत्तर दिया।

'और वह पत्थर किसका प्रतीक है,' दार्शनिक ने पूछा, 'जो बिना मानव हाथों के पहाड़ से कटकर निकला और उस प्रतिमा को कुचल दिया?'

यहूदियों ने उत्तर दिया, 'पत्थर मसीहा का प्रतीक है', और उन्होंने आगे कहा, 'अगर भविष्यवाणियों और अन्य घटनाओं के अनुसार, जैसा कि आप कहते हैं, मसीहा पहले ही आ चुके हैं, तो फिर रोमन साम्राज्य आज भी सत्ता में क्यों है?'

'नहीं,' दार्शनिक ने उत्तर दिया, 'इसका शासन अब नहीं रहा, यह भी अन्य साम्राज्यों की तरह ही समाप्त हो गया है।' हमारा राज्य रोमन नहीं, बल्कि मसीह का है, जैसा कि भविष्यवक्ता ने कहा: *'स्वर्ग का परमेश्वर एक राज्य स्थापित करेगा जो कभी नष्ट नहीं होगा, और यह राज्य किसी अन्य लोगों के हवाले नहीं किया जाएगा; यह सभी राज्यों को कुचलकर उनका अंत कर देगा, परन्तु यह स्वयं हमेशा के लिए बना रहेगा'* (दानियेल 2:44)। क्या यह मसीही राज्य नहीं है, जिसका नाम मसीह के नाम पर रखा गया है? रोमनों ने मूर्तियों की पूजा की, लेकिन ये—मसीही, जिनमें से कुछ इसी लोगों से और कुछ अन्य कबीलों और राष्ट्रों से हैं—मसीह के नाम पर शासन करते हैं, जैसा कि भविष्यवक्ता यशायाह वर्णन करते हैं, कहते हुए: *'तुम अपना नाम मेरे चुने हुओं के लिए एक शाप के रूप में छोड़ दोगे; परन्तु यहोवा तुम्हें मार डालेगा, और वह*

अपने दासों को दूसरे नाम से पुकारेगा; जिस नाम से कोई भी पृथ्वी पर आशीर्वाद मांगेगा, वह सच्चे परमेश्वर की शपथ खाएगा' (यशायाह 65:15–16)। क्या मसीह के विषय में की गई सभी भविष्यवाणियाँ पूरी नहीं हुईं? यशायाह ने एक कुँवारी से उनके जन्म की भविष्यवाणी इस प्रकार की: *'देखो, एक कुँवारी गर्भधारण करेगी और एक पुत्र को जन्म देगी, और वे उसका नाम इम्मानुएल रखेंगे'* (यशायाह 7:14)। और पवित्र भविष्यवक्ता मीका बेतलहम में जन्म के बारे में इस प्रकार कहते हैं: *'और हे बेतलहम, एफ्राता के घर, क्या तू यहूदा के गोत्रों में बहुत छोटा है? मेरे पास से वह निकलेगा जो इस्राएल का अधिपति होगा, जिसकी उत्पत्ति प्राचीन काल से, आदि काल से हुई है। इसलिये वह तब तक उन्हें छोड़ देगा जब तक कि प्रसूति करने वाली प्रसूति न कर ले'* (मीका 5:2-3)।

'हम,' यहूदियों ने कहा, 'शेम की धन्य संतानें हैं, जिन्हें उनके पिता, नोआ से आशीर्वाद मिला था। तुमने, हालाँकि, कोई आशीर्वाद नहीं पाया है।'

कांस्टेंटिन ने कहा, 'नोआ का शेम के लिए दिया गया आशीर्वाद तुम्हारा विषय नहीं है, बल्कि यह केवल ईश्वर की महिमा है, क्योंकि नोआ ने कहा: *"शेम के प्रभु ईश्वर धन्य हों"* (उत्पत्ति 9:26)। यहाँ, सदाचारी शेम के लिए नोआ के होठों से प्रभु ईश्वर को धन्य कहा गया है, और इससे अधिक कुछ नहीं।' जहाँ तक याफ़थ का सवाल है, जिनकी वंशावली से हम आते हैं, नूह ने कहा: *'ईश्वर याफ़थ को विशाल बनाए; और वह शेम के निवासों में निवास करे'* (उत्पत्ति 9:27)। आप स्वयं देख सकते हैं कि परमेश्वर की कृपा से, ईसाई धर्म कैसे फैल रहा है और आप कैसे अपनी महत्ता दिन-ब-दिन खो रहे हैं। यहाँ तक कि उन स्थानों में भी जहाँ आप कभी रहते थे, हमारे प्रभु यीशु मसीह का नाम अब ईसाइयों द्वारा धन्य और महिमामय किया जा रहा है।'

यहूदियों ने कहा, 'देखो, तुम एक मनुष्य पर भरोसा कर रहे हो, यह सोचकर कि तुम धन्य हो जाओगे, जबकि धर्मग्रंथ ऐसे लोगों को शाप देते हैं।'

इस पर दार्शनिक ने यहूदियों से निम्नलिखित प्रश्न पूछा:

'क्या दाऊद शापित है या धन्य?'

'निश्चित रूप से धन्य,' यहूदियों ने उत्तर दिया।

'तो,' कॉन्स्टेंटिन ने कहा, 'हम भी धन्य हैं, क्योंकि हम उसी में अपनी आशा रखते हैं जिसमें उसने भी अपनी आशा रखी थी जब उसने भजन में कहा था: *"मेरे मेल का मनुष्य, जिस पर मैं भरोसा करता था"* (भजन संहिता 40:10)। वह पुरुष प्रभु मसीह हैं। जहाँ तक किसी ऐसे व्यक्ति का प्रश्न है जो केवल एक मनुष्य पर अपना भरोसा रखता है, हम उसे शापित मानते हैं।

इसके बाद, यहूदियों ने एक और प्रश्न उठाया:

– तुम ईसाई खतना क्यों अस्वीकार करते हो, जबकि मसीह ने इसे अस्वीकार नहीं किया बल्कि व्यवस्था के अनुसार इसे पूरा किया?

दार्शनिक ने उत्तर दिया:

'जिसने सबसे पहले अब्राहम से कहा था, "यह मेरे और तुम्हारे बीच एक चिह्न होगा," वह आया और उसे (सन्नधिान को) पूरा किया; इसीलिए इसे उस समय (अब्राहम) से लेकर इस समय (मसीह) तक माना जाता था[3590] । सन्नधिान के स्थान पर मसीह ने बपतिस्मा की स्थापना की।'

तब यहूदियों ने कहा:

– 'तो फिर, कुछ लोगों ने उस चिह्न (बपतिस्मा) को स्वीकार न करके परमेश्वर को प्रसन्न क्यों किया, जबकि इब्राहीम (खतना) ने किया था?'

दार्शनिक ने उत्तर दिया, 'उनमें से किसी के भी दो पत्नियाँ नहीं थीं, सिवाय इब्राहीम के। और इसीलिए ईश्वर ने उसे खतना दिया, ताकि एक सीमा निर्धारित हो सके, जिससे वह और अधिक उल्लंघन न करे, बल्कि आदम के जीवन के मूल उदाहरण (एक पत्नी रखना) के अनुसार जिए।' और उसने याकूब को भी इसी तरह का आदेश दिया जब उसने उसकी जांघ पर प्रहार किया, क्योंकि उसकी दो पत्नियाँ थीं। जब याकूब को अपने दोष का एहसास हुआ और यह समझ में आया

[3590] खतना एक चिह्न के रूप में दिया गया था, जिसकी शुरुआत अब्राहम के समय से हुई और मसीह द्वारा इसकी पूर्ति ('मेरे और तुम्हारे बीच') के साथ इसका अंत हुआ, और यही कारण है कि इसका अंत मसीह के साथ होना था। यरूशलेम की परिषद (प्रेरितों के काम 15:1–41) में खतना को मसीहियों के लिए एक अनावश्यक जूए के रूप में पूरी तरह से समाप्त कर दिया गया था।

कि उसके साथ ऐसा क्यों किया गया था, तो उसे 'इज़राइल' नाम दिया गया, यानी, 'जो अपने मन से ईश्वर को देखता है'। हालाँकि, अब्राहम यह नहीं समझ सके।

यहूदियों ने पूछा, 'यह कैसे हो सकता है कि मूर्तियों को प्रणाम करके, आप सोचते हैं कि आप ईश्वर को प्रसन्न कर रहे हैं?'

'सबसे पहले,' दार्शनिक ने उत्तर दिया, 'शब्दों के बीच अंतर करना सीखो: एक प्रतिमा क्या है और एक मूर्ति क्या है; फिर तुम देखोगे कि तुम ईसाइयों को दोष देने में गलत हो। तुम्हारी अपनी किताबों में छवियों के बारे में कई निर्देश हैं।' मैं आपसे उनमें से कुछ के बारे में पूछूँगा: क्या मूसा ने मंडप उस नमूने के अनुसार बनाया था जो उसने पहाड़ पर देखा था, या उस नमूने के अनुसार जो उसकी कलात्मक कल्पना में आया था? क्या उसने मंडप लकड़ी, चमड़े, ऊन और करूबों के योग्य सामग्रियों से बनाया था? लेकिन चूँकि पहला सत्य है, तो क्या हम आपको ईश्वर की बजाय लकड़ी, चमड़े और ऊन का सम्मान करने और उन्हें प्रणाम करने का दोष देंगे, वही ईश्वर जिसने अपने समय में मूसा को मंडप का ऐसा नमूना (प्रतिमा) दिया था? मैं सुलैमान के मंदिर के बारे में भी यही कहूँगा, जिसमें कई प्रतिमाएँ थीं, जैसे कि करूब, स्वर्गदूत और अन्य। इसी तरह, हम ईसाई, जिन्होंने परमेश्वर को प्रसन्न किया है, उनके अनुष्ठानों का सम्मान करके परमेश्वर का सम्मान करते हैं।

यहूदियों ने कहा, 'आप सूअर का मांस और खरगोश क्यों खाते हैं, जबकि यह परमेश्वर को घृणास्पद है?'

दार्शनिक ने कहा, 'पहला नियम (नूह का),' यह आदेश देता है: *"हर जीवित चलने-फिरने वाली चीज़ तुम्हारे खाने के लिए होगी; मैं तुम्हें सब कुछ देता हूँ, जैसे मैंने तुम्हें हरे पौधे दिए"* (उत्पत्ति 9:3), क्योंकि शुद्ध लोगों के लिए, सब कुछ शुद्ध है, परन्तु दुष्टों के लिए, उनका विवेक कलंकित है। इसी तरह, परमेश्वर ने अपनी सृष्टि की हर चीज़ के बारे में कहा: *'यह बहुत अच्छी है'*[3591] (उत्पत्ति 1:31)। फिर भी, आपके अपने भले और आपके निर्माण के लिए, परमेश्वर ने आपसे बहुत कम ही चीज़ें छिपा रखी हैं। जहाँ तक इस बात का सवाल है कि यह अतिशय भोग आपके लिए कितना हानिकारक है, यह लिखा है: *'इज़राइल मोटा हो गया और परमेश्वर को त्याग दिया'* (व्यवस्थाविवरण 32:15), या *'लोग खाने-पीने के लिए बैठ गए, और बाद में खेलने के लिए उठ खड़े हुए'* (निर्गमन 32:6)।

इस प्रकार के संवाद धन्य दार्शनिक कॉन्स्टेंटाइन ने यहूदियों के साथ ईसाई धर्म के विषय में किए। ये संवाद स्वयं खगान की उपस्थिति में प्रतिदिन होते थे और काफी समय तक चले। बाद में इन्हें धन्य मेथोडियस द्वारा दर्ज किया गया और आठ भागों में विभाजित किया गया, जिनमें से यहाँ बहुत कम उद्धृत किया गया है।

धन्य कॉन्स्टेंटिन ने न केवल यहूदियों के साथ, बल्कि सारासेनों के साथ भी चर्चाएँ कीं, जिन्हें उन्होंने हमारे प्रभु की मदद से इसी प्रकार खंडित किया, जिन्होंने अपने सेवकों से वादा किया था कि उन्हें *'ऐसे शब्द और ज्ञान'* देंगे *'जिसका उनके कोई भी विरोधी विरोध या सामना नहीं कर पाएगा'* (लूका 21:15)।

ईसाई धर्म के अनुकूल ऐसे मधुर शब्द सुनकर, खगान और उसके मुख्य सलाहकारों ने कॉन्स्टेंटिन से कहा:

'ईश्वर ने हमें शिक्षा देने के लिए आपको हमारे पास भेजा है। आपने उनसे धर्मग्रंथों को सीखा है; आपने सभी बातों में सही कहा है और हमें पवित्र धर्मग्रंथों के मधुर शब्दों से तृप्त किया है। यद्यपि हम अनपढ़ लोग ("पुस्तकों से अपरिचित") हैं, फिर भी हम विश्वास करते हैं कि यह शिक्षा ईश्वर की ओर से आई है।' तो, यदि आप हमारी आत्माओं को पूर्ण शांति देना चाहते हैं, तो हमें न केवल किताबों से, बल्कि दृष्टान्तों के माध्यम से भी, विश्वास के बारे में हम जो कुछ भी आपसे पूछेंगे, उसके बारे में बताएं।"

इसके बाद, सभी अपने-अपने आराम के लिए चले गए। अगले दिन वे फिर से इकट्ठा हुए और कॉन्स्टेंटाइन से कहा:

'हे अति सम्माननीय पुरुष, तर्क और दृष्टान्तों के माध्यम से हमें प्रमाणित करें कि कौन सा धर्म सबसे अच्छा है?'

'एक समय एक राजा था,' दार्शनिक ने उत्तर दिया, 'जो पति और पत्नी का बहुत सम्मान करता था। जब उन्होंने पाप किया, तो उसने उन्हें उस भूमि से निर्वासित कर दिया जहाँ वे रहते थे (स्वर्ग से)। वे वहाँ कई वर्षों तक रहे और गरीबी में बच्चों को जन्म दिया।' बच्चे एक साथ इकट्ठा हुए और इस बात पर विचार करने लगे कि वे अपने माता-पिता का सम्मान कैसे बहाल कर सकते हैं। एक ने एक चीज़ का सुझाव दिया, दूसरे ने दूसरी चीज़ का; प्रत्येक ने वह सलाह दी जिसका,

---

[3591] यरूशलेम की परिषद में, मसीहियों को मूर्तियों को बलिदान किए गए भोजन, रक्त और गला घोंटकर मारे गए जानवरों के मांस से परहेज़ करने की आज्ञा दी गई (प्रेरितों के काम 15:29)।

उसकी राय में, पालन कयिा जाना चाहिए। इन सलाहों में से कसिका पालन कयिा जाना चाहिए? नस्सिंदेह सबसे अच्छी सलाह का? – कॉन्स्टेंटाइन ने अपनी तुलना समाप्त करते हुए कहा।

'आप ऐसा क्यों कह रहे हैं?' कोज़ारों ने उत्तर दयिा। 'हर कोई यही सोचता है कि उसकी अपनी सलाह दूसरों से बेहतर है। तो हमें बताइए, ताकि हम समझ सकें कि इन सलाहों में से सबसे अच्छी कौन सी है?'

'आग,' दार्शनकि ने उत्तर दयिा, 'सोने और चांदी को शुद्ध करती है, जबकि एक व्यक्ति झूठ को सच से अलग करने के लिए अपनी बुद्धि का उपयोग करता है। बताइए, पहली गरिावट का कारण क्या था: क्या वह मीठे फल का दृश्य और देवताओं जैसा बनने की इच्छा नहीं थी?'

'बलि्कुल सही,' खज़ारों ने उत्तर दयिा।

दार्शनकि ने जारी रखा:

'यदि मधु या ठंडा पानी कसिी बीमार व्यक्ति के लिए हानकिारक है, तो कौन सा डॉक्टर सबसे अच्छी सलाह देगा: वह जो उन लोगों से जनि्हें शहद हानकिारक है, कहता है कि 'शहद खाओ', और जनि्हें ठंडा पानी हानकिारक है, उनसे कहता है कि 'ठंडा पानी पीओ और ठंड में नंगे खड़े रहो', या वह जो हानि के वपिरीत उपचार बताता है: शहद के बजाय, सावधानी से लयिा जाने वाला एक कड़वा पेय; ठंडे पानी के बजाय, कुछ गर्म और आरामदायक?

– बेशक,' सभी ने कहा, 'वही व्यक्ति जो वपिरीत उपचार बताता है, सबसे अच्छी सलाह देगा। इसी तरह, पापी वासना को जीवन की कठनिाइयों से वश में कयिा जाना चाहिए, और अहंकार को वनिम्रता से – सामान्य तौर पर, वपिरीत गुणों का इलाज उनके वपिरीत गुणों से कयिा जाता है। हम देखते हैं कि अगर वसंत में कोई बेर की झाड़ी काँटों से ढकी होती है, तो वह पतझड़ में अच्छा, मीठा फल देती है।

'आपने बहुत अच्छी बात कही,' कांसटेंटाइन ने उत्तर दयिा। 'और मसीह का वधिान कहता है कि ईश्वर के अनुसार जीना कठोर जीवन जीना है (संकीर्ण मार्ग पर चलना), जो शाश्वत नविास में सौ गुना फल देगा।'

इसके बाद, खगान के एक प्रमुख सलाहकार, जो मुहम्मद की अधर्मी शकि्षाओं से अच्छी तरह वाकफि था, ने दार्शनकि से पूछा:

'मुझे बताइए, मेहमान, आप मुहम्मद का सम्मान क्यों नहीं करते? आखरिकार, उन्होंने अपनी कतिाबों में मसीह की बहुत प्रशंसा की और उनके बारे में ऐसा कहा: मरयिम से, मूसा की बहन से, एक महान नबी का जन्म हुआ, जसिने मृतकों को जीवति कयिा और बड़ी शक्ति से हर बीमारी को ठीक कयिा।'

'खगान स्वयं हमारे बीच फैसला करें,' दार्शनकि ने कहा। 'बताइए, अगर मुहम्मद एक पैगंबर हैं, तो क्या हम तब दानयिेल पर वशि्वास करें, जसिने कहा था कि मसीह के साथ सभी दर्शन और भवषि्यवाणयिाँ समाप्त हो जाएँगी? तो फरि वह उसके बाद पैगंबर कैसे हो सकते हैं? इसलिए, अगर हम मुहम्मद को पैगंबर कहते हैं, तो हम दानयिेल को अस्वीकार कर रहे हैं।'

इस पर, उपस्थति कई लोगों ने उत्तर दयिा:

'हम जानते हैं कि दानयिेल ने परमेश्वर की आत्मा से भवषि्यवाणी की थी, जबकि हम जानते हैं कि मुहम्मद एक झूठा और कई लोगों के उद्धार का वनिाशक है।'

तब खगन के मुख्य सलाहकार ने यहूदयिों की ओर मुड़कर कहा:

'ईश्वर की मदद से, हमारे मेहमान ने सारे सेरेकन (Saracen) के घमंड को घुटनों पर ला दयिा है, जबकि आपके अपने घमंड को उसने गंदगी की तरह बाहर फेंक दयिा है।' फरि उन्होंने उपस्थति सभी लोगों को संबोधति करते हुए कहा:

'ईसाई राजा को सभी राष्ट्रों पर अधकिार और पूर्ण बुद्धि प्रदान की गई है; उनका धर्म सबसे उत्तम है, और इसके बनिा, अनंत जीवन प्राप्त नहीं कयिा जा सकता।'

सभी ने कहा:

'आमीन।'

उसके बाद, दार्शनकि ने आँखों में आँसू लिए हुए, सभी को संबोधति करते हुए कहा:

'भाइयो, पतिृजनो, मत्रिो और बालको! हम यहाँ ईश्वर की कृपा से हैं, और हमने सब कुछ यथोचति रूप से समझाया और उत्तर दयिा है। यदि अब भी आप में से कसिी को कुछ समझ नहीं आया हो, तो वे आकर मुझसे पूछें। जो कोई इस शकि्षा का पालन करे, उसे पवत्रि त्रमिूर्ति के नाम पर बपतस्मिा दयिा जाए; और जो कोई इसका पालन न करे, मैं उसके

लिए कोई पाप का भार नहीं उठाऊँगा, बल्कि वे स्वयं न्याय के दिन अपना पाप देखेंगे, जब समय के बीतने के साथ वृद्ध हुआ न्यायाधीश सभी राष्ट्रों पर न्याय करने के लिए विराजमान होगा।

इस पर, कोरियाकों और उनके खगन ने उत्तर दिया:

'हम एक-दूसरे के दुश्मन नहीं हैं, और इसलिए हम यह आदेश देते हैं: आज से, जो कोई भी चाहे और सक्षम हो, अच्छी तरह सोच-समझकर, बपतिस्मा ग्रहण करने के लिए आगे बढ़े। लेकिन जो कोई पश्चिम की ओर झुकता है (मूर्तिपूजक), या यहूदी प्रार्थना करता है (यहूदी), या सारासेन धर्म का पालन करता है (मुसलमान), उसे शीघ्र मृत्यु मिलेगी।'

यह निर्णय लेने के बाद, सभी प्रसन्नचित्त होकर अपने-अपने रास्ते चले गए। दो सौ कोसैक्स ने अपनी मूर्तिपूजा की घृणित प्रथाओं और कानूनहीन जीवन शैली को त्याग दिया और ईसाई धर्म को अपना लिया।

खाज़ार साम्राज्य में ईसाई धर्म की स्थापना करने के बाद, आदरणीय शिक्षकों कॉन्स्टेंटाइन और मेथोडियस ने अपने स्वयं के देशों में लौटने का संकल्प लिया। उन्होंने खज़ारों के साथ चेरसोनेसोस से अपने साथ आए पुरोहितों को छोड़ दिया। खगन ने पवित्र भाइयों को निम्नलिखित पत्र ग्रीक सम्राट तक पहुँचाने का निर्देश दिया: 'महामहिम! आपने हमारे पास एक व्यक्ति भेजा जिसने हमें ईसाई धर्म का प्रचार किया और पवित्र त्रिमूर्ति का उपदेश दिया। उसके माध्यम से हमने जाना कि यह धर्म सच्चा धर्म है, और हमने सभी इच्छुक लोगों को बिना किसी बाधा के पवित्र बपतिस्मा ग्रहण करने का आदेश दिया, इस आशा के साथ कि हम स्वयं भी इसे ग्रहण करेंगे। हम सभी आपके राज्य के मित्र और सहयोगी हैं और यदि आप चाहें तो, आपकी सेवा करने के लिए तैयार हैं।"

जब खगान ने उन पवित्र भाइयों को विदा किया, तो उसने उन्हें कई उपहार दिए, लेकिन उन्होंने यह कहते हुए मना कर दिया: 'हमारे साथ यहाँ मौजूद सभी ग्रीक बंदियों को रिहा कर दो - हमारे लिए यह सबसे अच्छा उपहार होगा।'

200 से अधिक बंदी थे, और वे सभी खुशी-खुशी चल पड़े। यात्रियों को रेगिस्तान और सूखे क्षेत्रों से होकर गुजरना पड़ा। वहाँ, वे सभी प्यास से कमजोर हो गए। कभी-कभी उन्हें झीलें मिलती थीं, लेकिन वे उनसे पानी नहीं पी सकते थे, क्योंकि पानी में बहुत अधिक नमक था, जिससे वह पित्त की तरह कड़वा हो गया था। सभी लोग अच्छे पानी की तलाश में अपने-अपने रास्ते चले गए, सिवाय कॉन्स्टेंटाइन के, जो इतना कमजोर हो गया था कि वह और आगे नहीं जा सकता था। वह अपने भाई मेथोडियस की ओर मुड़ा और इन शब्दों में बोला:

'मैं अब इस प्यास को और सहन नहीं कर सकता। इस पानी में से कुछ निकालो, क्योंकि मुझे विश्वास है कि जिसने एक बार इस्राएलियों के लिए कड़वे पानी को मीठे पानी में बदल दिया था, वह हमारे लिए भी इस कड़वे पानी को मीठा कर देगा, जो प्यास से बेहाल हो रहे हैं।'

जब उन्होंने पानी निकाला और चखा, तो वह शहद की तरह मीठा और सर्दियों की तरह ठंडा निकला। इस पानी से, उन्होंने सभी ने अपनी प्यास बुझाई और ईश्वर की स्तुति की।

खेरसन पहुँचने पर, पवित्र भाइयों ने बिशप से भेंट की। भोजन करते समय, कॉन्स्टेंटाइन ने बिशप से कहा: 'मेरे लिए प्रार्थना करें, महाधर्माध्यक्ष महोदय, और मुझे आशीर्वाद दें, जैसे कोई पिता अपने बच्चे को अंतिम आशीर्वाद देता है।'

वहाँ मौजूद लोगों ने सोचा कि कांस्टेंटिन अगले सुबह निकलने की योजना बना रहा है और उन्होंने उससे इस बारे में पूछा। हालाँकि, उसने उनमें से कुछ को गुप्त रूप से बताया कि बिशप अगले सुबह इस दुनिया को छोड़कर प्रभु के पास चले जाएँगे। और ऐसा ही हुआ। सुबह, बिशप का निधन हो गया।

कॉन्स्टेंटिनोपल के रास्ते में, उन्हें उस भूमि से होकर गुजरना पड़ा जहाँ फुल लोग रहते थे[3592] । ये लोग एक बड़े ओक के पेड़ के नीचे बलिदान देते थे, जो एक चेरी के पेड़ से जुड़ा हुआ था, जिसे अलेक्जेंडर कहा जाता था। महिलाओं को इस ओक के पेड़ के पास जाने या बलिदानों में भाग लेने से मना किया गया था। धन्य कॉन्स्टेंटाइन इन लोगों के पास गए, उनके बीच खड़े हुए और कहा:

'ग्रीक स्वर्ग और पृथ्वी की पूजा करके—जो इतने महान और दयालु सृजन हैं—शाश्वत यातना से नहीं बच पाए; तो तुम, एक ओक के पेड़ को, जो एक अपार रूप से निम्न सृजन है, सिर झुकाकर, शाश्वत अग्नि से कैसे बचोगे।'

[3592] अज़ोव सागर के पास रहने वाला एक मूर्तिपूजक जनजाति।

पगानों ने उत्तर दयिा, 'हमने न केवल अभी-अभी यह करना शुरू नहीं कयिा है, बल्कि यह रविाज हमें हमारे पूर्वजों से वरिासत में मलिा है। ओक के पेड़ के सामने बलदिान चढ़ाकर, हमें वह मलिता है जो हम मांगते हैं: बारशि और इसके अलावा और भी बहुत कुछ। और हम इस पूजा को कैसे त्याग सकते हैं, जबकि हम में से कोई भी ऐसा करने में सक्षम नहीं है? और अगर कोई ऐसा करने की हमि्मत करता है, तो वह फरि कभी बारशि देखे बनिा ही मर जाएगा।

दार्शनकि ने इन शब्दों से उन्हें समझाना शुरू कयिा:

'ईश्वर पवत्रि पुस्तकों में तुम्हारे बारे में बात करते हैं; तो फरि तुम उन्हें कैसे अस्वीकार कर सकते हो? इस प्रकार भवषि्यवक्ता यशायाह प्रभु की उपस्थतिि से पुकारते हुए कहते हैं: *"मैं सभी राष्ट्रों को इकट्ठा करने आऊँगा, और वे मेरी महमिा देखेंगे। और मैं उन पर एक चहि्न लगाऊँगा, और मैं उनमें से जो बच गए हैं, उन्हें राष्ट्रों के पास भेजूँगा: तर्शीश, पूल और लूद, तूबाल और यावन के पास, और उन दूर के द्वीपों के पास जहाँ उन्होंने न तो मुझसे सुना है और न ही मेरी महमिा देखी है; और वे राष्ट्रों में मेरी महमिा का प्रचार करेंगे...'* प्रभु कहते हैं: *'मैं बहुत से मछुआरे भेजूंगा, और वे उन्हें हर पहाड़ और हर टीले पर, और चट्टानों की घाटयिों में पकड़ेंगे'* (यशायाह 66:18-19; यरि्मयाह 16:16)।

'तब, हे भाइयो, सुनो,' कांस्टेंटाइन ने कहना जारी रखा, 'उस परमेश्वर को, जसिने तुम्हें बनाया है। देखो परमेश्वर की नई वाचा का सुसमाचार, जसिके द्वारा तुम्हें पवत्रि बपतस्मिा ग्रहण करना है।'

इसी प्रकार के शब्दों से, धन्य कॉन्स्टेंटाइन ने मूर्तपिूजकों को इस ओक के पेड़ को काटने और जलाने के लिए मना लयिा। इस लोगों के एक बुजुर्ग ने कॉन्स्टेंटाइन के पास आकर पवत्रि सुसमाचार को चूमा। अन्य मूर्तपिूजकों ने भी उनका अनुसरण कयिा। तब दार्शनकि ने सफेद मोमबत्तयिाँ बांटीं, और सभी लोग जलती हुई मोमबत्तयिाँ लेकर गाते हुए ओक के पेड़ की ओर चल पड़े। कॉन्स्टेंटाइन ने एक कुल्हाड़ी उठाई और ओक के पेड़ पर 33 बार वार कयिा; उसके बाद, दूसरों ने ओक के पेड़ को जड़ तक काट डाला और उसे जला दयिा। उसी रात, प्रभु ने भारी बारशि भेजी। सभी ने आनंदपूर्वक परमेश्वर की स्तुति की, जो पापयिों के उद्धार में प्रसन्न होते हैं। कॉन्स्टेंटनिोपल में, कॉन्स्टेंटाइन और मेथोडयिस का बहुत सम्मान के साथ स्वागत कयिा गया, मानो वे प्रेरति हों। उन्हें बशिप का पद दयिा गया, लेकनि उन्होंने उसे स्वीकार करने से इनकार कर दयिा। मेथोडयिस पॉलीक्रोनयिस मठ के मठाधीश बने, जबकि कॉन्स्टेंटाइन ने पवत्रि प्रेरतिों के चर्च में नविास कर लयिा। जल्द ही दोनों को नए कार्यों के लिए बुलाया गया।

बुल्गारयिा के ज़ार बोरसि, या बोगोरसि, ग्रीकों के साथ युद्ध के बाद ईसाई धर्म अपनाना चाहते थे। बोरसि की बहन, जसिे कई साल पहले कॉन्स्टेंटनिोपल में बंदी बना लयिा गया था, एक ईसाई के रूप में बुल्गारयिा लौटी और उसने अपने भाई को भी उसी धर्म को अपनाने के लिए मनाने का प्रयास कयिा। लंबे समय तक उन्होंने मना कर दयिा; लेकनि अकाल और एक घातक महामारी ने उनके राज्य को तबाह कर दयिा। फरि, अपनी बहन की सलाह पर, उन्होंने ईसाई ईश्वर से प्रार्थना की, और वपित्तयिाँ थम गईं। बोरसि ने शक्षिकों का अनुरोध करने के लिए कॉन्स्टेंटनिोपल को राजदूत भेजे। मेथोडयिस बुल्गारयिा की यात्रा पर गए। उन्होंने शाही कक्ष की दीवार पर अंतमि न्याय का चत्रिण कयिा और ज़ार को धर्मात्माओं की परमानंद और पापयिों के कष्टों के बारे में समझाया। ज़ार, जो पहले से ही अपनी बहन के शब्दों और उदाहरण तथा आपदाओं के चमत्कारकि रूप से रुक जाने से तैयार थे, ने ईसाई धर्म को अपना लयिा। यह 860 या 861 में हुआ।[3593]

जैसे ही कॉन्स्टेंटनि और मेथोडयिस ने बुल्गारयिाई लोगों का बपतस्मिा देने का काम शुरू कयिा, उनकी प्रेरतिकि गतविधि के लिए एक नया क्षेत्र खुल गया। मोरवयिा के राजकुमार रोस्टस्लिाव ने, ईश्वर की प्रेरणा से, अपने राजकुमारों[3594] और संपूर्ण मोरवयिाई लोगों के साथ एक परषिद आयोजति की, जसिमें ईसाई शक्षिकों को भेजने का अनुरोध करने के लिए ग्रीक ज़ार माइकल के पास दूत भेजे जाने थे। परषिद में, दूतों को नम्निलखिति शब्दों के साथ भेजने का नरि्णय लयिा गया: 'हमारे लोगों[3595] ने मूर्तपिूजा को अस्वीकार कर दयिा है और ईसाई कानून का पालन करते हैं। फरि भी

[3593] पूरे बुल्गारयिा का बपतस्मिा 869 में हुआ था।

[3594] इस परषिद में रोस्टस्लिाव के भतीजे स्वआितोपोलक, मोरावयिा (नट्रिा) के राजकुमार, और कोसेल, ब्लात्नो (पैनोनयिा में) के राजकुमार ने भी भाग लयिा था।

[3595] इससे पहले, कॉन्स्टेंटनिोपल और पश्चमि के प्रचारक मोरावयिा में आ चुके थे और लोगों का बपतस्मिा दे चुके थे, लेकनि वहां ईसाइयों की संख्या बहुत कम थी। तब जर्मन पादरी आए और उन्होंने सभी का बनिा भेदभाव के बपतस्मिा देना शुरू कर दयिा। ये पादरी लोगों से जर्मन में बात करते हुए, सेवाएं लैटनि में आयोजति करते थे। परणिामस्वरूप, स्लाव, जो इन भाषाओं को नहीं समझते थे, यह नहीं जानते थे कि उनका कसि धर्म में बपतस्मिा दयिा जा रहा है और वे ईसाई धर्म के सद्धिांत को नहीं समझ सके।

हमारे पास कोई ऐसा शिक्षक नहीं है जो हमें हमारी अपनी भाषा में मसीह के धर्म की व्याख्या कर सके। अन्य (स्लावाकि) राष्ट्र, इसे देखकर, हमारे उदाहरण का अनुसरण करना चाहेंगे। इस दृष्टि से, हे प्रभु, हमें ऐसा बिशप और शिक्षक भेजो: क्योंकि तुमसे ही अच्छा धर्म सभी राष्ट्रों तक जाता है'[3596] ।

ज़ार माइकल ने एक परिषद बुलाई, जिसमें दार्शनिक कॉन्स्टेंटिन को बुलाया गया। ज़ार ने उन्हें स्लावों की इच्छा के बारे में बताया और कहा:

'हे दार्शनिक, मैं जानता हूँ कि आप अस्वस्थ हैं; परन्तु आपको वहाँ अवश्य जाना चाहिए, क्योंकि यह कार्य आपसे बेहतर कोई नहीं कर सकता।'

'यद्यपि मैं शरीर से अस्वस्थ और बीमार हूँ,' दार्शनिक ने उत्तर दिया, 'मैं खुशी-खुशी वहाँ जाऊँगा, बशर्ते कि उनके पास अपनी भाषा में पुस्तकें हों।'

'मेरे दादा, मेरे पिता, और कई अन्य लोगों ने,' ज़ार ने उत्तर दिया, 'उनकी खोज की लेकिन उन्हें नहीं पाया; तो फिर मैं उन्हें कैसे ढूंढ सकता हूँ?'

'तो मैं उनसे उपदेश कैसे दूँ?' दार्शनिक ने कहा। 'यह पानी पर बातचीत लिखने जैसा होगा। इसके अलावा, अगर स्लाव मुझे गलत समझ लेते हैं, तो मुझे एक विधर्मी करार दिया जा सकता है।'

इस पर, ज़ार ने अपने चाचा वर्दा के साथ मिलकर दार्शनिक से कहा:

'यदि आप ऐसा चाहते हैं, तो ईश्वर आपको वह देगा जो आप माँगते हैं, क्योंकि वह उन सभी को देता है जो विश्वास के साथ उससे माँगते हैं और जो समझ की खोज करते हैं, उन्हें वह स्वयं प्रकट होता है।'

कॉन्स्टेंटिन ने ज़ार की उपस्थिति छोड़ दी और यह सब अपने भाई मेथोडियस और अपने कुछ शिष्यों को सुनाया[3597] । अपनी आदत के अनुसार, कॉन्स्टेंटिन ने सबसे पहले प्रार्थना की, और फिर चालीस दिनों का उपवास शुरू किया। अल्पा समय में, ईश्वर, जो अपने सेवकों की प्रार्थनाएँ सुनते हैं, ने वह प्रदान किया जिसकी कॉन्स्टेंटाइन ने प्रार्थना की थी। उन्होंने 38 अक्षरों वाले स्लावोनिक वर्णमाला का आविष्कार किया, और फिर ग्रीक पवित्र पुस्तकों का स्लावोनिक भाषा में अनुवाद करना शुरू किया। इसमें, उन्हें धन्य मेथोडियस और उनके शिष्यों ने सहायता की। पवित्र पुस्तकों का अनुवाद यूहन्ना के सुसमाचार के पहले अध्याय से शुरू हुआ। *'आरंभ में वचन था, और वह वचन परमेश्वर के साथ था, और वही वचन परमेश्वर था'* – ये स्लावोनिक भाषा में अनुवादित पहले शब्द थे।

पवित्र भाइयों ने अपना अनुवाद ज़ार, पैट्रिआर्क और संपूर्ण सिनोद के समक्ष विचारार्थ प्रस्तुत किया। ज़ार आनंदित हुआ और संपूर्ण सिनोद के साथ मिलकर परमेश्वर की दया के लिए उसकी स्तुति की।

इसके बाद, कॉन्स्टेंटाइन अपने भाई मेथोडियस और उनके शिष्यों के साथ स्लाव भूमि के लिए रवाना हुए। ज़ार ने उन्हें यात्रा के लिए सभी आवश्यक सामग्री की पर्याप्त आपूर्ति प्रदान की, और रोस्टिस्लाव को निम्नलिखित संदेश लिखा: 'ईश्वर, जो चाहता है कि प्रत्येक व्यक्ति सच्ची समझ रखे और सर्वोच्च सम्मान प्राप्त करे, आपकी आस्था और आपकी लगन देखकर, ने अब, हमारे समय में, आपकी इच्छा को पूरा करने का निर्णय लिया है।' उसने आपकी भाषा के अक्षरों को प्रकट किया है, जो अब तक अज्ञात थे ('सबसे शुरुआती वर्षों को छोड़कर किसी को नहीं पता था'), ताकि आप भी उन महान राष्ट्रों में गिने जाएँ जो अपनी ही भाषा में ईश्वर की महिमा करते हैं। और इसलिए हम आपके पास उस व्यक्ति को भेज रहे हैं जिसे ईश्वर ने उन्हें (अक्षरों को) प्रकट किया है: एक ईमानदार व्यक्ति, दृढ़ आस्था वाला, एक विद्वान और एक दार्शनिक। इस उपहार को स्वीकार करो, जो सभी सोने और चांदी, कीमती पत्थरों और क्षणिक धन-संपत्ति से कहीं अधिक कीमती है, और उसे जल्द से जल्द अपना मिशन पूरा करने में मदद करो। पूरे मन से ईश्वर और सार्वभौमिक उद्धार की खोज करो, और इस उद्देश्य के लिए सभी (अपने प्रजा) को अपने उद्धार का ध्यान रखने और सत्य के मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करने में आलसी न बनो। तब आप भी, अपने लोगों को ईश्वर की बुद्धि की ओर ले जाने के लिए प्रयास करके, इसके लिए इस जीवन और अगले जीवन दोनों में एक पुरस्कार प्राप्त करेंगे, उन सभी आत्माओं के लिए जो अपने अंतिम दिन तक हमारे ईश्वर मसीह में विश्वास करना चाहती हैं। इस प्रकार, महान राजकुमार कॉन्स्टेंटिन की तरह, आप आने वाली पीढ़ियों के लिए एक सच्ची विरासत छोड़ेंगे।'

[3596] यह राजदूत मिशन वर्ष 862 का है।

[3597] माउंट ओलंपस पर रहते हुए, कॉन्स्टेंटिन के पहले से ही शिष्य थे जिनके साथ उन्होंने स्लाव भाषा का अध्ययन किया। इन शिष्यों में, निम्नलिखित ज्ञात हैं: गोरज़द, क्लेमेंट, सव्वा, नाउम और एंजेलार।

जब कॉन्स्टेंटिन और मेथोडियस मोरावियो पहुँचे, तो उनका वहाँ बड़े सम्मान से स्वागत किया गया। सबसे पहले, रोस्टिस्लाव ने कई युवकों को इकट्ठा किया और उन्हें पवित्र भाइयों से स्लावोनिक वर्णमाला और नई अनुवादित पुस्तकें सीखने का आदेश दिया। तब रोस्टिस्लाव ने पवित्र भाइयों के मार्गदर्शन में चर्चों का निर्माण शुरू किया। एक वर्ष के भीतर, ओलोमौक शहर में पहला चर्च पूरा हो गया, और बाद में मोरावियो में कई और चर्च बनाए गए। कॉन्स्टेंटाइन ने इन चर्चों को पवित्र किया और उनमें स्लावोनिक संस्कार में दैवीय धर्मविधि का अनुष्ठान किया।

यहाँ अपने समय के दौरान, कॉन्स्टेंटिन ने अपने शिष्यों के साथ मिलकर संपूर्ण संस्कारिक व्यवस्था का अनुवाद किया और उन्हें मैटिन्स और द आवर्स, दिव्य लिटिर्जी, वेस्पर्स, कॉम्प्लाइन और 'मिस्ट्री सर्विस' सिखाई। और, भविष्यवाणी के वचन की पूर्ति में, बधिरों के कान धर्मग्रंथ के वचन को सुनने के लिए खुल गए, और गूंगों की जीभें वाक्पटु हो गईं। परमेश्वर, जो एक ही पापी के उद्धार से प्रसन्न होता है, ने एक पूरे लोगों के धर्मपरिवर्तन पर आनन्द के साथ दृष्टि डाली।

जब दिव्य शिक्षा स्लाव लोगों के बीच फैलने लगी और उनकी अपनी भाषा में पूजा की जाने लगी, तो पहला और सबसे दुष्ट ईर्ष्यालु, शैतान, यह सहन न कर सका, वह अपने वाहकों में प्रवेश कर गया और कई लोगों को भड़काने लगा, उनसे कहते हुए: 'इससे परमेश्वर की महिमा नहीं होती। यदि यह उनकी इच्छा होती, तो क्या वे शुरू से ही और अपनी महिमा के लिए यह व्यवस्था नहीं कर सकते थे कि परमेश्वर के वचन का प्रचार उसी लोगों की भाषा में दर्ज किया जाए जिनके लिए यह प्रचारित किया गया था? लेकिन परमेश्वर ने केवल तीन भाषाओं को चुना: हिब्रू, ग्रीक और लैटिन, जिनमें परमेश्वर की महिमा करना उचित है।'

इस प्रकार लैटिन और जर्मन बिशपों, पुरोहितों और उनके शिष्यों ने कहा। कॉन्स्टेंटिन ने उनके साथ विवाद किया, जैसे एक बार दाऊद ने विदेशियों के साथ किया था, और पवित्र पुस्तकों के शब्दों से उन पर विजय प्राप्त की, और उन्हें त्रिभाषी कहा, जैसे पिलातुस ने, जिसने प्रभु के क्रूस पर शिलालेख तीन भाषाओं में लिखा था।

जर्मन और लैटिन पादरियों ने लोगों को न केवल यह, बल्कि दुष्टता के कई अन्य रूप भी सिखाए। उन्होंने कहा: 'पृथ्वी के नीचे बहु-शीर्ष वाले पुरुष रहते हैं[3598] ; सभी सरपटें शैतान की रचना हैं; यदि कोई साँप को मारता है, तो उसके लिए उसे नौ पापों से मुक्ति मिलेगी; यदि कोई आदमी को मारता है, तो उसे लकड़ी के प्याले से पीना चाहिए, और उसे काँच के प्याले को नहीं छूना चाहिए।'

उन्होंने लोगों को पुराने रिवाज़ के अनुसार मूर्तिपूजक बलिदान करने से नहीं रोका, और न ही उन्होंने बहुविवाह पर रोक लगाई।

पवित्र भाइयों ने अपने शब्दों की आग से, खरपतवार की तरह, इन झूठी शिक्षाओं को जड़ से उखाड़ फेंकने का प्रयास किया।

उन्होंने उन्हें नबी के शब्दों से फटकारते हुए कहा, *'ईश्वर को स्तुति अर्पित करो, और सर्वोच्च को अपनी प्रार्थनाएँ अर्पित करो'* (भजन संहिता 49:14)। *'अपनी आत्मा की रक्षा करो, और कोई भी अपनी जवानी की पत्नी के विरुद्ध विश्वासघात न करे: यदि तुम उससे घृणा करते हो, तो उसे जाने दो,* सर्वशक्तिमान *यहोवा का यह वचन है,* और वह *तुम्हारे मन की दुष्टता पर पर्दा डाल देगा; इसलिये अपनी आत्मा का ध्यान* रखो... और अपनी पत्नियों को न छोड़ो। और देखो, यदि तुम उससे घृणा करते हो, *तो* याद *करो* कि *यहोवा तुम और तुम्हारी जवानी की पत्नी के बीच गवाह था... वह तुम्हारी संगिनी और तुम्हारी वैध पत्नी है"* (मला. 2:15–16, 13–14)। सुसमाचार में, प्रभु कहते हैं: *'तुम ने सुना है कि प्राचीनों से कहा गया था, "तुम व्यभिचार न करना।" परन्तु मैं तुम से कहता हूँ: जो कोई किसी स्त्री को वासना की दृष्टि से देखता है, वह मन में उसके साथ व्यभिचार कर चुका है'* (मत्ती 5:27–28)। *'मैं तुम से कहता हूँ: जो कोई अपनी पत्नी को व्यभिचार के सिवाय तलाक़ दे कर दूसरे से विवाह करता है, वह व्यभिचार करता है; और जो कोई तलाक़शुदा स्त्री से विवाह करता है, वह* व्यभिचार *करता है'* (मत्ती 19:9)

इस प्रकार पवित्र भाइयों ने मोरावियो में 40 महीने तक एक स्थान से दूसरे स्थान जाते हुए, स्लाविक भाषा में लोगों को हर जगह सिखाते हुए जीवन व्यतीत किया। स्लाव लोगों को उनकी मातृभाषा में ईश्वर का वचन—जो एक अनमोल उपहार है—प्रदान करते हुए, कॉन्स्टेंटाइन पवित्र सुसमाचार की प्रस्तावना में उनसे कहते हैं: 'हे सभी स्लावों, वह वचन सुनो जो हृदयों और मन को बल देता है।' स्लाव युवकों के लिए स्कूल स्थापित करके, उन्हें कई शिष्य मिले जो अपने लोगों

[3598] बड़े सिरों के साथ।

के बीच अच्छे शिक्षक और योग्य पुरोहित बनने के लिए तैयार थे। इस उद्देश्य के लिए, अपने शिष्यों को पवित्र मंत्रालय में नियुक्त करने हेतु, पवित्र भाइयों ने रोम के लिए प्रस्थान करने का निश्चय किया। इसके अलावा, तत्कालीन पोप निकोलस[3599] को, संतों कॉन्स्टेंटाइन और मेथोडियस के उपदेश की सफलता के बारे में पता चलने पर, उन्हें रोम में परमेश्वर के स्वर्गदूतों के रूप में देखना चाहते थे[3600] ।

रोम के रास्ते में, संत कॉन्स्टेंटाइन और मेथोडियस पन्नोनिया[3601] पहुँचे। वहाँ, प्रिबिना के पुत्र राजकुमार कोसेल ने पवित्र भाइयों को ब्लात्नो शहर में आमंत्रित किया, ताकि वह स्वयं उनसे स्लाव वर्णमाला सीख सके, और साथ ही वे उन पचास छात्रों को भी सिखा सकें जिन्हें राजकुमार ने अपने लोगों के बीच से इकट्ठा किया था। उनके प्रस्थान पर, कोसेल ने पवित्र प्रचारकों को बहुत सम्मान दिया और उन्हें शानदार उपहार दिए। लेकिन कॉन्स्टेंटाइन और मेथोडियस ने मोरावियों के रोस्टिस्लाव या कोसेल, दोनों से कोई सोना, चांदी या अन्य संपत्ति स्वीकार करने से इनकार कर दिया। उन्होंने बिना किसी पुरस्कार की मांग के सुसमाचार का प्रचार किया और केवल इतना अनुरोध किया कि दोनों राजकुमार 900 ग्रीक कैदियों को आजादी दें।

पैनोनिया के अलावा, संत कॉन्स्टेंटाइन और मेथोडियस ने वेनिस का भी दौरा किया। वहाँ, लैटिन और जर्मन पादरियों और भिक्षुओं ने कॉन्स्टेंटाइन पर कौवों की तरह झपट पड़े, त्रिभाषी विधर्म का प्रचार करते हुए:

उन्होंने कॉन्स्टेंटाइन से कहा, 'हमसे बताओ, आदमी, तुमने पवित्र पुस्तकों का स्लाव भाषा में अनुवाद क्यों किया है और उन्हें उसी भाषा में क्यों सिखा रहे हो, जबकि पहले ऐसा किसी ने नहीं किया था: न तो प्रेरितों ने, न रोम के पोप ने, न ग्रेगरी द थियोलॉजिस्ट[3602] ने, न जेरोम ने, न ही ऑगस्टीन ने?'[3603] हम केवल तीन भाषाओं को जानते हैं जिनमें ईश्वर की महिमा करना उचित है: हिब्रू, ग्रीक और लैटिन।

दार्शनिक ने उन्हें उत्तर दिया:

'क्या वर्षा ईश्वर की ओर से सभी पर समान रूप से नहीं होती, या क्या सूर्य सभी के लिए नहीं चमकता, या क्या सभी प्राणी एक ही वायु में श्वास नहीं लेते? आप यह सोचकर कैसे लज्जित नहीं होते कि इन तीन भाषाओं के अलावा सभी अन्य लोग और भाषाएँ अंधी और बहरी होनी चाहिए?' मुझसे कहो, क्या तुम सच में सोचते हो कि ईश्वर सर्वशक्तिमान नहीं है, और इसलिए वह ऐसा नहीं कर सकता, या कि वह ईर्ष्यालु है और ऐसा करना नहीं चाहता? हालाँकि, हम कई ऐसे लोगों को जानते हैं जिनकी अपनी धर्मग्रंथ हैं और जो अपनी-अपनी भाषा में ईश्वर की महिमा करते हैं। उनमें निम्नलिखित शामिल हैं: अर्मेनियाई, फ़ारसी, अब्खाज़ियाई, इवार (जॉर्जियाई), सोग्डियाई, गोथ, ओब्री, तुर्क, खज़ार, अरावलियाई, मिस्रवासी, सीरियाई और कई अन्य।

यदि आप इस बात से सहमत नहीं होना चाहते, तो पवित्र शास्त्र आपका न्यायकर्ता होगा। क्योंकि दाऊद पुकारता है: *'प्रभु के लिए एक नया गीत गाओ; हे सारी पृथ्वी, प्रभु के लिए गाओ!'* (भजन संहिता 95:1), और अन्यत्र: *'हे सारी पृथ्वी, प्रभु के लिए जयजयकार करो; गाओ और आनंद मनाओ, और संगीत करो'* (भजन संहिता 97:4), और फिर: *'हे पृथ्वी, सब मिलकर प्रभु के सामने दण्डवत करो और उसी का भजन करो; उसके नाम का भजन करो'* (भजन संहिता 65:4), और फिर: *'हे सब जातियों, प्रभु की स्तुति करो; हे सब लोगों, उसकी स्तुति करो... हर जीती-जागती चीज़ प्रभु की स्तुति करेगी'* (भजन संहिता 116:1, 150:6)। सुसमाचार में लिखा है: *'पर जितनों ने उसे ग्रहण किया, और जो उसके नाम पर विश्वास करते हैं, उन्हें परमेश्वर की संतान बनने का अधिकार दिया...'* (यूहन्ना 1:12). *'मैं न केवल इनके लिए ही प्रार्थना करता हूँ, बल्कि उनके लिए भी जो उनके वचन के द्वारा मुझ पर विश्वास करेंगे, कि वे सब एक हों, जैसे तू, हे पिता, मुझ में है और मैं तुझ में हूँ* (यूहन्ना 17:20–21). मत्ती की सुसमाचार में कहा गया है: *'स्वर्ग और पृथ्वी पर सब अधिकार मुझे दिया गया है; इसलिये जाओ और सब जातियों को चेला बनाओ, उन्हें पिता और पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो, और उन्हें यह सिखाओ कि जो कुछ मैं ने तुम से आज्ञा दी है, सब का पालन करें; और देखो, मैं युग के अन्त तक सदा तुम्हारे संग हूँ। आमीन'* (मत्ती 28:18–20)। सुसमाचार लेखक मरकुस भी कहते हैं: *'सारी दुनिया में जाओ और हर प्राणी को सुसमाचार का प्रचार करो। जो कोई विश्वास करेगा और बपतिस्मा लेगा, वह उद्धार पाएगा, परन्तु*

[3599] उन्होंने 858 से 867 तक शासन किया।

[3600] यह माना जा सकता है कि पोप ने जर्मन और लैटिन पादरियों के उकसावे पर पवित्र प्रचारकों को रोम बुलाया।

[3601] आधुनिक हंगरी।

[3602] पूर्वी चर्च के सबसे प्रसिद्ध फादर, जो चौथी शताब्दी में रहते थे – उनकी जीवनी 25 जनवरी के अंतर्गत देखें

[3603] पश्चिमी चर्च के एक शिक्षक; वह चौथी शताब्दी के उत्तरार्ध और पाँचवीं शताब्दी के आरंभिक काल में रहते थे।

जो कोई वशि्वास नहीं करेगा, वह दोषी ठहराया जाएगा; और वशि्वास करने वालों के साथ ये चनि्ह होंगे: वे मेरे नाम पर, दुष्टात्माओं को नकिालेंगे, और नई-नई भाषाएँ बोलेंगे' (मरकुस 16:15–17)। आइए हम, धर्मग्रंथ के शब्दों में, आपसे भी (जर्मन और लैटनि पादरयिों से) कहें: *'हाय तुम पर, हे लखिनेवालो और फरीसयिो, हे कपटयिो, क्योंकि तुम मनुष्यों के मुंह से स्वर्ग का राज्य बंद करते हो; न तो तुम स्वयं प्रवेश करते हो और न ही प्रवेश करनेवालों को प्रवेश करने देते हो'* (मत्ती 23:13)। *'धर्म-शकि्षकों, हाय तुम्हें! क्योंकि तुमने ज्ञान की कुंजी उठा रखी है; न तो तुम स्वयं प्रवेश कर सकते हो, और न ही प्रवेश करने वालों को प्रवेश करने देते हो'* (लूका 11:52)। प्रेरति पौलुस कुरनि्थयिों से कहते हैं: *'मैं चाहता हूँ कि तुम सब अन्यभाषा बोलो; परन्तु यह उससे उत्तम है कि तुम भवष्यिद्वाणी करो'* (1 कुरनि्थयिों 14:5), या फरि: *'और हर एक जीभ यह मान ले कि प्रभु यीशु मसीह परमपति परमेश्वर की महमिा के लयि है'* (फलिप्पियिों 2:11)।

इन और कई अन्य समान शब्दों के साथ, संत कॉन्स्टेंटनि ने लैटनि और जर्मन पुरोहतिों को फटकारा।

वेनसि से, कॉन्स्टेंटाइन और मेथोडयिस सीधे रोम गए। जब वे अभी भी वेनसि में थे, पोप नकिोलस का नधिन हो गया और उनकी जगह एड्रयिन द्वतिीय का चुनाव हुआ[3604] । नए पोप ने, यह जानकर कि कॉन्स्टेंटाइन और मेथोडयिस वेनसि में थे, उन्हें रोम आमंत्रति कयिा। जैसे ही पवत्रि भाई रोम पहुँचे, पोप स्वयं, अपने पुरोहतिों और मोमबत्तयिाँ जलाकर ले आए नागरकिों के साथ, पवत्रि प्रचारकों से मलिने के लए बाहर आए, क्योंकि वे चेरसोनेसोस में खोजी गई संत क्लेमेंट शहीद और रोम के पोप की अवशेषों को ले जा रहे थे। प्रभु ने कई चमत्कारों के साथ पवत्रि अवशेषों के स्थानांतरण को महमिामय बनाया। इस प्रकार, एक लकवाग्रस्त व्यक्ति को चंगा कयिा गया, और कई अन्य बीमार लोग अपनी बीमारयिों से मुक्त हो गए।

पोप ने स्लावोनकि पुस्तकों को स्वीकार कयिा, उन्हें पवत्रि कयिा और 'फतनी' (खाना) के नाम से जानी जाने वाली पवत्रि वर्जनि मैरी के चर्च में रख दयिा, और तब से ईश्वरीय अनुष्ठान इन पुस्तकों का उपयोग करके मनाया जाने लगा। इसके बाद, पोप ने दो बशिपों को कॉन्स्टेंटाइन और मेथोडयिस के साथ आए स्लावोनकि शष्यिों का अभषिेक करने का नर्दिेश दयिा। शष्यिों का अभषिेक पहले दनि संत पीटर द एपोस्टल के चर्च में हुआ, जहाँ स्लावोनकि भाषा में लटिर्जी का पाठ कयिा गया; दूसरे दनि, संत पेट्रोनलिा के चर्च में; और तीसरे दनि, संत एंड्रयू द एपोस्टल के चर्च में हुआ। फरि उन्होंने राष्ट्रों के महान शकि्षक – प्रेरति पौलुस – के चर्च में स्लावोनकि भाषा में 'ऑल-नाइट वजिलि' (रात्रि जागरण प्रार्थना) गाई और सुबह को पवत्रि सेपल्चर में लटिर्जी का अनुष्ठान कयिा। उक्त दोनों बशिपों को इस अनुष्ठान में सात बशिपों में से एक, आर्सेनयिस, और पुस्तकालयाध्यक्ष अनास्तासयिस ने सहायता की।

कॉन्स्टेंटाइन और मेथोडयिस, अपने शष्यिों के साथ, ईश्वर को सर्व महमिा देने से कभी नहीं रुके, जबकि रोमवासी उनसे—और वशिेष रूप से कॉन्स्टेंटाइन से—मलिने और हर बात के बारे में पूछने आना बंद नहीं करते थे। कुछ लोग दो या तीन बार आए और उपदेश प्राप्त कयिा। एक अवसर पर, एक यहूदी कॉन्स्टेंटनि के पास आया और कहा कि मसीह, जसिके बारे में भवष्यिवक्ताओं ने बात की थी—कि वह एक कुंवारी से पैदा होगा—अभी तक नहीं आया है। कॉन्स्टेंटनि ने उसे आदम से मसीह तक की पीढ़यिों की संख्या बताई, यह साबति कयिा कि मसीह पहले ही आ चुके थे, और समझाया कि तब से कतिने साल बीत चुके थे।

थोड़ी ही देर बाद, कॉन्स्टेंटाइन—जो पहले कमजोर था, अपने कामों और लंबी यात्रा से थका हुआ था—गंभीर रूप से बीमार पड़ गया, और जब वह बीमार था, तो प्रभु ने उसे प्रकट कयिा कि उसे मरना है। अपनी नकिट मृत्यु के बारे में जानने पर, कॉन्स्टेंटाइन ने नम्निलखिति चर्च भजन गाना शुरू कर दयिा:

– 'हे तुमने मुझसे कहा, "आओ हम प्रभु के आंगनों में चलें", मेरी आत्मा प्रसन्न हुई और मेरा हृदय आनंदति हुआ'[3605] ।

फरि उन्होंने अपने सबसे अच्छे कपड़े पहने, पूरा दनि आनंद में बतिाया, और कहा:

– 'इस क्षण से, मैं अब पृथ्वी पर कसिी का सेवक नहीं हूँ, बल्कि केवल सर्वशक्तमिान ईश्वर का; मैं था, मैं हूँ, और मैं हमेशा रहूँगा, आमीन।'

अगले दनि, कॉन्स्टेंटाइन ने स्कीमा ग्रहण करने की इच्छा व्यक्त की, और उन्हें सरिलि नाम दयिा गया। उनकी बीमारी 50 दनिों तक चली।

[3604] एड्रयिन द्वतिीय ने 867 से 872 तक शासन कयिा।

[3605] प्रत्युत्तर, स्वर 1।

एक बार, जब वह बीमार था, तो सरिलि ने मेथोडयिस की ओर मुड़कर ये शब्द कहे: 'देखो, भाई,' उसने उससे कहा, 'तुम और मैं एक जोड़ी बैलों की तरह थे जो एक ही खेत में सामंजस्य से जुताई कर रहे थे, और अब मैं अपने दनि पूरे कर लेने के बाद हल के नीचे गरि रहा हूँ। मैं जानता हूँ कि तुम ओलंपस पर्वत से बहुत प्यार करने लगे हो, लेकनि पर्वत की खातरि, अपने उपदेश को छोड़ने का वचिार भी मत करना। इस पराक्रम के माध्यम से, तुम मोक्ष को बेहतर ढंग से प्राप्त कर सकते हो।"

जब उनके वशि्राम करने और अगले जीवन में प्रवेश करने का समय नकिट आया, तो संत सरिलि ने अपने हाथ ईश्वर की ओर उठाए और आँसुओं के साथ प्रार्थना की: 'हे प्रभु मेरे ईश्वर! हे प्रभु, मेरे ईश्वर! मेरी प्रार्थना सुनें और अपने वशि्वासी झुंड की रक्षा करें, जसिे आपने अपने पापी और अयोग्य सेवक, मुझे, चराने के लिए सौंपा है। इस झुंड को सभी अधर्म से बचाएँ । हे जनि्होंने अदेह दैवीय सेनाओं को बनाया, आकाश को फैलाया, पृथ्वी की नींव डाली, और जो कुछ भी उस पर है उसे शून्य से अस्तत्वि में लाया; हे जो हमेशा और हर बात में उन लोगों की सुनते हैं जो आपकी इच्छा करते हैं, जो आपसे डरते हैं और आपके आज्ञाओं का पालन करते हैं: मेरी ई प्रार्थना सुनों और अपनी उस वशि्वासी भेड़-बकरयिों के झुंड की रक्षा करो, जसिका चरवाहा होने के लिए तुमने मुझे, तुम्हारे एक पापी और अयोग्य सेवक को, नयिुक्त कयिा है। इस झुंड को सभी अधर्म और दुष्टता से, और हर वाचाल वधिर्मी जीभ से बचाओ जो तुम्हारा अपमान करती है। त्रमिूर्तविाद की वधिर्म को नष्ट कर और अपनी कलीसयिा की संख्या बढ़ा। सभी को सामंजस्य में एक कर दे और सभी को अपनी सच्ची आस्था और सही स्वीकारोक्ति के वषिय में एकमत बना दे। उनके हृदयों में अपनी शक्षिा का वचन फूँकें, क्योंकि यही आपका वरदान है। यदि आपने मुझे, जो कि अयोग्य हूँ, अपने मसीह का सुसमाचार प्रचार करने के लिए योग्य समझा है, और मैं भले काम करने तथा वह सब कुछ करने का प्रयास करूँ जो आपको भाता है, तो मुझे यह अनुमति दें कि मैं आपको वह सब कुछ वापस कर सकूँ जो आपने मुझे दयिा है, क्योंकि वह सब आपका ही है। उन्हें अपने सामर्थी दहनि हाथ से बलवान बनाइए, उन्हें अपनी सुरक्षा से ढकिए, ताकि सब पति और पुत्र और पवत्रि आत्मा के नाम की सदा और सदा महमिा और स्तुति करते रहें, आमीन।"

तब, उन सभी को चूमने के बाद, उन्होंने कहा: 'धन्य हो हमारा परमेश्वर, जसिने हमें हमारे अदृश्य शत्रुओं के हाथ में शकिार के रूप में नहीं सौंपा, बल्कि उनके जालों को तोड़ दयिा और हमें भ्रष्टता से बचा लयिा।'

इन शब्दों के साथ, संत सरिलि 14 फरवरी 869 को प्रभु में नद्रिति हुए।

पोप एड्रयिन ने रोम में रहने वाले सभी ग्रीकों के साथ-साथ रोमनों को भी अंतमि संस्कार में शामलि होने और जलती हुई मोमबत्तयिाँ लेकर सरिोइल के ताबूत के पास खड़े होने का आदेश दयिा, और यह आदेश दयिा कि अंतमि संस्कार का जुलूस ठीक उसी तरह से आयोजति कयिा जाए जैसे स्वयं पोप के लिए कयिा जाता है। संत मेथोडयिस को जब पता चला कि वे रोम में संत सरिलि के पवत्रि शरीर को दफनाने की तैयारी कर रहे हैं, तो वे पोप के पास गए और उनसे कहा:

'हमारी माता ने हमसे वनिती की, यह कहते हुए कि यदि हिम में से पहला मर जाए, तो दूसरा उसे अपने मठ (ओलंपस पर्वत पर) ले जाकर वहीं दफनाए।'

इसके बाद, पोप ने आदेश दयिा कि सिसिरलि के पवत्रि शरीर को एक अवशेष-पात्र में रखा जाए, लोहे के कीलों से सील कयिा जाए, और यात्रा के लिए तैयार कयिा जाए। पवत्रि अवशेष सात दनिों तक इसी अवस्था में रहे।

हालांकि, रोमन बशिपों ने पोप से कहा:

'चूँकि ईश्वर ने सरिलि को कई देशों की यात्रा कराकर यहाँ लाया और उनकी आत्मा को यहाँ लयिा, इसलिए उन्हें एक धर्मी व्यक्ति के रूप में यहीं दफनाया भी जाना चाहिए।'

पोप ने कहा, 'यदि ऐसा है, तो मैं रोमन रीति-रिवाज को अलग रखूँगा और, सरिलि की पवत्रिता और प्रेम के सम्मान में, उन्हें सेंट पीटर द एपोस्टल के चर्च में, अपनी ही कब्र में दफनाऊँगा।'

तब संत मेथोडयिस ने कहा:

'यदि आपने मेरी बात नहीं मानी है और उसे मुझे नहीं दयिा है, क्योंकि आप स्वयं उसे अपने पास रखना चाहते हैं, तो उस स्थति में उसे सेंट क्लेमेंट के चर्च में सुला दो, जनिके साथ वह यहाँ आया था।'

पोप ने आदेश दयिा कि संत मेथोडयिस के शब्दों को पूरा कयिा जाए। एक बार फरि, सभी बशिप, भक्षिु और लोग इकट्ठा हुए, और उन्होंने पवत्रि अवशेषों को सम्मान के साथ संत क्लेमेंट के चर्च तक पहुँचाया। ताबूत को नीचे उतारने से पहले, बशिपों ने कहा:

'आओ हम अवशेष-पात्र खोलें और देखें कि क्या पवत्रि अवशेषों से कुछ लयिा गया है।'

लेकिन उन्होंने चाहे जितनी भी कोशिश कर ली, ईश्वर की कृपा से वे अवशेष-पात्र को खोलने में असमर्थ रहे, और इस प्रकार पवित्र अवशेषों को सेंट क्लेमेंट चर्च में वेदी के दाईं ओर रख दिया गया। इसके बाद, वहाँ कई चमत्कार होने लगे। यह देखकर, रोमनों ने संत सिरिल की और अधिक महिमा करनी शुरू कर दी; और, उनकी एक प्रतिमा बनाकर, वे दिन-रात उसके सामने मोमबत्तियाँ जलाने लगे, और उस ईश्वर की स्तुति करने लगे, जो उनसे प्रेम करते हैं उनकी महिमा करता है।

संत सिरिल की मृत्यु के बाद, पन्नोनिया के राजकुमार कोसेल के दूत पोप के पास आए और उनसे धन्य मेथोडियस को उनके पास भेजने का अनुरोध किया। पोप ने दूतों को निम्नलिखित उत्तर दिया:

'मैं उन्हें न केवल आपके पास, बल्कि सभी स्लाव लोगों के पास भेज रहा हूँ, ईश्वर और स्वर्ग के राज्य की चाबियाँ के प्रथम प्रबंधक और रक्षक, संत पतरस द्वारा भेजे गए एक शिक्षक के रूप में।'

जब पोप ने संत मेथोडियस को स्लाव लोगों के पास भेजा, तो उन्होंने उन्हें स्लाव राजकुमारों के लिए निम्नलिखित संदेश सौंपा: 'ईश्वर के बिशप और सेवक एड्रियन की ओर से रोस्टिस्लाव, स्वेतोपोलक और कोत्सेल को: *"परम-परम में परमेश्वर की महिमा, और पृथ्वी पर शांति, और मनुष्यों में प्रीति"* (लूका 2:14)। हमें यह जानकर बहुत प्रसन्नता हुई कि प्रभु ने आपके हृदयों को स्वयं की खोज करने के लिए प्रेरित किया है और आपको यह दिखाया है कि आपको केवल विश्वास से ही नहीं, बल्कि अच्छे कर्मों के माध्यम से भी उनकी सेवा करनी चाहिए: *'कर्म रहित विश्वास मृत है'* (याकूब 2:26)। अतः जो लोग सोचते हैं कि वे ईश्वर को जानते हैं, परन्तु उनके विधान का पालन नहीं करते, वे पाप कर रहे हैं। आपने न केवल इस पवित्र सिंहासन से, बल्कि धर्मनिष्ठ ज़ार माइकल से भी शिक्षकों की मांग की: आपने उनसे धन्य दार्शनिक कॉन्स्टेंटिन और उनके भाई को आपके पास भेजने का अनुरोध किया। जब पवित्र भाइयों को पता चला कि आपका देश प्रेरितिक सिंहासन के अधिकार क्षेत्र में था, तो उन्होंने कैनन कानून के विरुद्ध कुछ नहीं किया, बल्कि हमारे पास आए और संत क्लेमेंट के अवशेष लाए। हमने, अपनी ओर से, हर्षित होकर, यह निश्चय किया कि हम अपने पुत्र मेथोडियस को आपके प्रदेशों में भेजें—जो पूर्ण बुद्धि और ऑर्थोडॉक्स आस्था वाले व्यक्ति हैं—और उन्हें तथा उनके शिष्यों को पवित्र मंत्रालय के लिए नियुक्त करें। वह आपको, जैसा कि आपने अनुरोध किया है, सिखा सकता है, और पवित्र पुस्तकों का आपके भाषा ' ' में अनुवाद कर सकता है, और उनके माध्यम से पवित्र सेवा (लिटजी) का अनुष्ठान कर सकता है, बपतिस्मा दे सकता है और चर्च के सभी अनुष्ठानों का क्रम संचालित कर सकता है, जैसा कि सबसे पहले पवित्र दार्शनिक कॉन्स्टेंटिन द्वारा, ईश्वर की सहायता से और संत क्लेमेंट की प्रार्थनाओं के द्वारा स्थापित किया गया था। इसके अलावा, यदि कोई और भी पवित्र ग्रंथों का आपकी भाषा में सही और निष्ठापूर्वक अनुवाद कर सकता है, ताकि आप ईश्वर की आज्ञाओं को अधिक आसानी से समझ सकें, तो यह कार्य ईश्वर, हम और संपूर्ण कैथोलिक चर्च द्वारा पवित्र और धन्य माना जाए। केवल इस एक रीति का पालन करें: कि धर्मविधि में सबसे पहले रोमन रीति से पत्र और सुसमाचार पढ़ा जाए, और फिर स्लावोनिक में, ताकि पवित्रशास्त्र के वचन पूरे हों: *'सभी राष्ट्रों, प्रभु की स्तुति करो'* (भजन संहिता 116:1) और यह भी: *'वे अन्य भाषाओं में बोलने लगे...'* ईश्वर की महानता, *'जैसे पवित्र आत्मा ने उन्हें बोलने की सामर्थ्य दी'* (प्रेरितों के काम 2:4)। यदि, तथापि, कोई उपर्युक्त शिक्षकों की आलोचना करने और लोगों को सत्य से हटाकर मिथकों की ओर ले जाने की हिम्मत करता है, या, आपको भ्रष्ट करके, आपकी भाषा की पुस्तकों का अपमान करता है, तो उसे चर्च से बहिष्कृत कर दिया जाए और निर्णय के लिए चर्च के समक्ष लाया जाए, और जब तक वह सुधर नहीं जाता, तब तक उसे क्षमा न दी जाए। क्योंकि ये भेड़ें नहीं, बल्कि भेड़िये हैं, और इन्हें उनके फलों से जाना और उनसे सावधान रहना चाहिए। जहाँ तक आप प्रिय बच्चों का सवाल है, परमेश्वर की शिक्षा पर ध्यान दें और कलीसिया की शिक्षाओं से न भटकें; तब आप सभी संतों के साथ अपने स्वर्गीय पिता के सच्चे उपासक होंगे। आमीन।

कोसेल ने मेथोडियस का बड़े सम्मान से स्वागत किया, लेकिन जल्द ही उन्हें कुलीन वंश के बीस लोगों के साथ पोप के पास वापस भेज दिया, और पोप से पन्नोनिया के बिशप के रूप में संत मेथोडियस को अभिषेक करने का अनुरोध किया, जो सत्तर प्रेरितों में से एक, संत एंड्रोनिकस के पद पर था। पोप ने ऐसा किया।

इसके बाद, सत्य के एक पुराने शत्रु और वरिोधी, मोरावयिा के राजकुमार[3606] , उस क्षेत्र के जर्मन और लैटनि बशिपों के साथ मलिकर मेथोडयिस के खलिाफ उठ खड़े हुए। संत मेथोडयिस को एक परषिद में बुलाया गया, जहाँ उनसे नम्निलखिति प्रश्न पूछा गया:

'आप हमारे क्षेत्र में क्यों उपदेश दे रहे हैं?'

संत मेथोडयिस ने उत्तर दयिा, 'यदि मुझे पता होता कि यह आपका क्षेत्र है, तो मैं यहाँ उपदेश नहीं देता; परन्तु यह क्षेत्र पवत्रि प्रेरति पतरस का है।' लेकनि यदि, कलह और लालच के लिए, आप नयिमों के वपिरीत जाकर ईश्वर की शक्षिा का प्रचार प्रतबिंधति करते हैं, तो सावधान रहें कि लोहे के पहाड़ को अपनी खोपड़ी से भेदने की कोशशि में, आप अपना ही सरि फोड़ न बैठें।

'क्रोध में बोलकर,' बशिपों ने उत्तर दयिा, 'आप अपने लिए मुसीबत बुला रहे हैं।'

'मुझे राजाओं के सामने भी सच बोलने में शर्म नहीं आती,' संत मेथोडयिस ने उत्तर दयिा। 'मेरे साथ जो चाहो करो। मैं उन लोगों से बेहतर नहीं हूँ जिन्होंने सत्य के लिए इस जीवन में बहुत यातनाएँ सहन की हैं।'

इस सभा में कई भाषण दिए गए, लेकनि मेथोडयिस के वरिोधी उसके खलिाफ कुछ भी नहीं कह सके। फरि राजकुमार ने उपहास करते हुए कहा:

'मेरे मेथोडयिस को थकाओ नहीं। वह ऐसे पसीना बहा रहा है मानो वह कसिी गर्म भट्टी के पास खड़ा हो।'

'हाँ, महाशय,' मेथोडयिस ने उत्तर दयिा। 'एक बार, एक पसीने से लथपथ दार्शनकि के पास जाकर पूछा गया, "आप पसीना क्यों बहा रहे हैं?" दार्शनकि ने उत्तर दयिा, "मैं कुछ असभ्य नौकरों से बहस कर रहा था।"'

बशिपों ने मेथोडयिस के बारे में लंबी-चौड़ी बातें कीं। अंत में, उन्हें स्वाबयिा में नर्विासति कर दयिा गया, जहाँ वे ढाई साल तक जेल में रहे[3607] ।

संत मेथोडयिस की कैद की खबर पोप तक पहुँची। यह जानकर, एड्रयिन द्वतिीय के उत्तराधकिारी, पोप जॉन आठवें ने जर्मन बशिपों पर शाप जारी कयिा और उन्हें तब तक धर्मोपदेश मना करने का आदेश दयिा जब तक वे मेथोडयिस को रहिा नहीं कर देते। तब बशिपों ने मेथोडयिस को रहिा कर दयिा, लेकनि पन्नोनयिा के राजकुमार कोसेल से कहा: 'यदि तुम मेथोडयिस को आश्रय दोगे, तो हमें शुभचतिक मत समझना'[3608] ।

हालाँकि, ये बशिप स्वयं परमेश्वर और प्रेरति पतरस के न्याय से नहीं बच सके। उनमें से चार जल्द ही मर गए।

इस बीच, मोरावयिा में स्लावों और जर्मन पुरोहतिों के बीच एक ववािद उत्पन्न हुआ। मोरावयिावासयिों को एहसास हुआ कि उनके बीच रहने वाले जर्मन पुरोहति स्लावों के दुश्मन थे और वे उन्हें जर्मनों के हाथों धोखा देने की कोशशि कर रहे थे। उन्होंने उन्हें नकिाल दयिा और पोप को नम्निलखिति अनुरोध भेजा: 'जसि प्रकार हमारे पूर्वजों का बपतस्मिा संत पतरस ने दयिा था, उसी प्रकार अब हमें महाधर्माध्यक्ष और शक्षिक मेथोडयिस की आवश्यकता है।'

पोप ने तुरंत सेंट मेथोडयिस को मोरावयिा भेजा, जहाँ उनका स्वागत प्रसि स्वयितोपोलक—जो अब जर्मनों से अलग हो चुके थे—और मोरावयिाई लोगों ने कयिा, जन्होंने सभी स्लावकि शहरों में सभी चर्चों और पुरोहतिों को उनके हवाले कर दयिा। नकिाले गए जर्मन पुरोहतिों की जगह, सेंट मेथोडयिस ने स्लावकि पुरोहतिों की नयिुक्ति की। जैसे ही संत मेथोडयिस और पुरोहतिों ने स्लाव भाषा में धार्मकि सेवाएं आयोजति कीं और लोगों को सखिाया, ईश्वर की शक्षिा बहुत

[3606] इस समय, रोस्टस्लिाव, जो पवत्रि भाइयों की सहायता कर रहे थे, कैद में मर गए, और उनके भतीजे स्वयितोपोलक उनके उत्तराधकिारी बने; अपने शासन की शुरुआत में, वे जर्मन सम्राट के साथ बहुत सौहार्दपूर्ण संबंधों में थे।

[3607] स्वैबयिा जर्मनी में है। – जेल में, जर्मनों ने संत मेथोडयिस को हर संभव तरीके से यातना दी: वे कई दनिों तक उससे खाना छपिा लेते; सर्दयिों में, वे उसे नंगे पैर और बनिा सरि ढके जेल के आंगन में बाहर ले जाते, बर्फ में बठिा देते, और उसे पूरे दनि, या उससे भी अधकि समय तक, एक ही जगह खड़ा रहने के लिए मजबूर करते। उन्होंने संत मेथोडयिस को कोड़ों से भी पीटा। लेकनि प्रभु ने संत की रक्षा की और उन्हें मजबूत बनाया। उनके शष्यिों, जो अक्सर जेल में उनसे मलिने आते थे, ने उन्हें बहुत सांत्वना दी।

[3608] ऐसा लगता है कि कोत्सेल ने भी संत मेथोडयिस की रहिाई में एक भूमकिा नभिाई।

अधकि फलने-फूलने लगी। कई वधिर्मी अपने भ्रमों का त्याग कर सच्चे ईश्वर[3609] में वशि्वास करने लगे। उस समय, मोरावयिाई राज्य पहले से कहीं अधकि शक्तशिाली था[3610] ।

संत मेथोडयिस में भवषि्यवाणी का वरदान था। उनकी कई भवषि्यवाणयिाँ सच हुईं; हम यहाँ उनमें से कुछ का उल्लेख करेंगे।

वस्तिुला नदी के कनिारे रहने वाले एक नशि्चति मूर्तपिूजक राजकुमार ने ईसाइयों का अपमान कयिा और उन्हें कष्ट पहुँचाया। संत मेथोडयिस ने उसे संदेश भेजा, जसिमें कहा गया: 'मेरे बेटे, अपने देश में अपनी इच्छा से बपतस्मिा लेना, वदिेश में एक कैदी के रूप में अपनी इच्छा के वरिुद्ध बपतस्मिा लेने से बेहतर है।'

और ऐसा ही हुआ।

एक अवसर पर, स्व्यातोपोलक का pagans से युद्ध चल रहा था, और संघर्ष लंबा खचि गया। संत पीटर द एपोस्टल का पर्व नजदीक आ रहा था, और संत मेथोडयिस ने स्व्यातोपोलक को संदेश भेजा: 'यदि आप संत पीटर के दनि तक मेरे और अपनी सेना के साथ रहने का वादा करते हैं, तो मेरा वशि्वास है कि ईश्वर जल्द ही pagans को आपके हाथों में सौंप देंगे।'

और ऐसा ही हुआ।

एक धनी व्यक्ति ने अपनी बहू से ववािह कर लयिा। संत मेथोडयिस ने उसे वस्तिार से उपदेश दयिा और फटकार लगाई, फरि भी वे उन्हें तलाक देने के लएि मना नहीं सके। हालाँकि, अन्य लोग उनकी संपत्ति के कारण उन्हें खुशामद करते थे। तब मेथोडयिस ने उस धनी व्यक्ति से कहा: 'वह समय आएगा जब ये खुशामदी करने वाले आपकी मदद नहीं कर पाएँगे, और आपको मेरे शब्द याद आएँगे, लेकनि तब बहुत देर हो चुकी होगी।'

अचानक, ईश्वर की व्यवस्था से, इन अमीर लोगों को ऐसी बीमारी हो गई कि उन्हें कोई आराम नहीं मलिा। इसी अवस्था में, वे चल बसे।

मानव जाति के प्राचीन शत्रु और ईर्ष्यालु ने एक बार फरि से मेथोडयिस के वरिुद्ध खुले और गुप्त शत्रुओं को भड़काया, ठीक वैसे ही जैसे दाथान और अबीराम ने एक बार मूसा के वरिुद्ध कयिा था (गनिती 16)। उस समय, ऐसे वधिर्मी प्रकट हुए जन्हिोंने यह सखिाया कि पवत्रि आत्मा पुत्र से भी नकिलता है। इन वधिर्मयिों ने प्रतपिादकों को सच्चे मार्ग से भटका दयिा, और संत मेथोडयिस के बारे में, जन्हिोंने उनके अधर्मी उपदेश की नदिा की, उन्होंने कहा: 'पोप ने हमें अधकिार दयिा है और हमें मेथोडयिस और उसके उपदेश को भगा देने का आदेश दयिा है।'

सभी मोरावयिाई एकत्रति हुए और आदेश दयिा कि वह पत्र, जसिके द्वारा कथति तौर पर मेथोडयिस को नष्किासति कयिा जा रहा था, सभी लोगों के सामने पढ़ा जाए। लोगों ने ऐसे चरवाहे और शकि्षक के खोने पर गहरा शोक मनाया, सविाय उन लोगों के जन्हिें चापलूसी वैसे ही नयिंत्रति करती है जैसे हवा पत्तयिों को। पोप के इसी पत्र में लखिा था: 'हमारे भाई, मेथोडयिस, ऑर्थोडॉक्स (सही आस्था वाले) हैं और प्रेरतिकि सेवा का पालन करते हैं। सभी स्लावकि देश प्रेरतिकि सहिासन से उनके अधीन हैं, और जसि वह शाप देता है, वह शापति है, और जसि वह पवत्रि करता है, वह पवत्रि होगा[3611] '।

[3609] इस प्रकार चेकों के राजकुमार बोरीवोय ने स्व्यातोपोल्क के पास संदेशवाहक भेजे कि चेकों का राजकुमार बपतस्मिा लेना चाहता है और पुरोहतिों का अनुरोध कर रहा है। स्व्यातोपोल्क ने चेकों के संदेशवाहकों से कहा: 'बशिप मेथोडयिस से पूछो; उसे दो या तीन पुरोहति चुनने दो और उन्हें अपने साथ अपने राजकुमार के पास भेज दो।' संत मेथोडयिस स्वयं बोहेमयिा गए और बोरवोय, उनकी पत्नी लुडमलिा और उनके दो बेटों को बपतस्मिा दयिा। संत मेथोडयिस लगभग एक साल तक बोहेमयिा में रहे और पहले दो बोहेमयिन चर्चों का अभषिेक कयिा: एक लटिोमशिल शहर में और दूसरा लेवी हराडेक में। इसके बाद मेथोडयिस बोहेमयिा में कई स्लाव पादरयिों को छोड़कर मोरावयिा लौट आए। सेंट मेथोडयिस ने पोलैंड में पादरयिों को भेजा, जहाँ उन्होंने राजा और कई पोलों को बपतस्मिा दयिा।

[3610] यह वेलेहराद की लड़ाई के बाद का दौर था, जब स्वयितोपोलक ने जर्मनों को हराया और लगभग सभी स्लावों को एकजुट कयिा।

[3611] इस समय तक, परस्थितियिाँ पूरी तरह से बदल चुकी थीं। जर्मन पादरी, जनिमें से कई उपर्युक्त वधिर्म से प्रभावति थे, मोरावयिा में फरि से दखिाई देने लगे और उन्होंने स्व्यातोपोलक को अपने पक्ष में करना शुरू कर दयिा। हालांकि स्वेतopolk का बपतस्मिा हो चुका था, वह एक ईसाई जीवन नहीं जीता था: वह बहुत अधकि शराब पीता था, उसकी कई पत्नयिाँ थीं, और गुस्से में अपने आप पर काबू नहीं रख पाता था। मेथोडयिस ने हर संभव तरीके से राजकुमार को उसके दुर्गुणों को छोड़ने के लएि मनाने की कोशशि की, उसे नजिी और सार्वजनकि रूप से फटकार लगाई, लेकनि कोई फायदा नहीं हुआ। जब जर्मन पादरयिों ने स्व्यातोपोलक से मलिना शुरू कयिा, तो उन्होंने उससे मेथोडयिस के बारे में कहना शुरू कर दयिा: 'राजकुमार, आप इस बूढ़े की बात क्यों मानते हैं? आप देख सकते हैं कि वह दूसरे लोगों जैसा नहीं है; वह सब कुछ दान कर देता है और एक भखिारी की तरह रहता है। आप, राजकुमार, अपने ही देश के शासक हैं।' ऐसे ही कई चापलूसी भरे शब्दों से, जर्मन पादरयिों ने स्वेतopolk को सेंट मेथोडयिस के खलिाफ पूरी तरह से कर दयिा। फरि उन्होंने पोप जॉन से मेथोडयिस के बारे में शकिायत करना शुरू कर दयिा, उस पर धर्मद्रोह का आरोप

इसके बाद, मेथोडियस के सभी दुश्मन शर्मिंदगी में बखिर गए। फरि भी, संत मेथोडियस के दुश्मनों की दुर्भावना यहीं खत्म नहीं हुई। संत को परेशान करने की इच्छा से, उन्होंने दावा कयिा कि यूनानी राजा उससे नाराज़ था, और यदि मेथोडियस उसके अधिकार के अधीन होता, तो वह जीवित नहीं रहता। लेकिन ईश्वर ने, अपनी दया में, यह न चाहकर कि उनके सेवक पर इस तरह बदनामी की जाए, राजा के हृदय को प्रेरित कयिा – क्योंकि राजा का हृदय हमेशा ईश्वर के हाथों में होता है – कि संत मेथोडियस को निम्नलिखित संदेश भेजा जाए: 'माननीय पिताजी, मैं आपको बहुत देखना चाहता हूँ। मुझ पर यह एहसान करें और हमारे पास आने का प्रयास करें, ताकि मैं आपको जीवित देख सकूँ और आपका आशीर्वाद प्राप्त कर सकूँ[3612] "।

संत मेथोडियस कॉन्स्टेंटिनोपल के लिए रवाना हुए और वहाँ राजा और पैट्रिआर्क ने उनका बड़े सम्मान और खुशी के साथ स्वागत कयिा। राजा ने उनके उपदेशों की प्रशंसा की और संत मेथोडियस के दो शिष्यों—एक पुरोहित और एक डीकन—को स्लावोनिक पुस्तकों के साथ अपने पास रखकर, मेथोडियस को स्वयं उदार उपहारों के साथ मोरावियिा वापस भेज दियिा।

संत मेथोडियस को कई कठिनाइयों को सहना पड़ा: रेगिस्तान में – डाकुओं के हाथों से; समुद्र में – प्रचंड लहरों से; नदियों में – अचानक भँवरों से; ताकि प्रेरित के वचन उनमें पूरे हुए: *'नदियों में संकट, डाकुओं से संकट... समुद्र में संकट, अन्यजातियों से संकट; मेहनत और थकान में, अक्सर उपवास में, भूख और प्यास में'* (2 कुरिन्थियों 11:26–27)। फरि, अपनी सभी चिंताओं और दुखों को ईश्वर पर छोड़कर, संत मेथोडियस ने अपने दो पुरोहित शिष्यों के साथ उन पुस्तकों का अनुवाद करना शुरू कयिा, जिन्हें उन्होंने अपने भाई, धन्य कॉन्स्टेंटिन के साथ अनुवाद करने का समय नहीं पाया था। उनके साथ मिलकर, उन्होंने मैकाबीज़ की पुस्तकों को छोड़कर पूरे पुराने नियम का अनुवाद कयिा, साथ ही नोमोकेनन (पवित्र पिताओं के नियम) और पैट्रिस्टिक लेखन (पेटेरिकन) का भी अनुवाद कयिा। संत मेथोडियस ने मार्च में अपना अनुवाद शुरू कयिा और 26 अक्टूबर को इसे पूरा कयिा। अनुवाद पूरा करने के बाद, संत मेथोडियस ने अनुकूल प्रशंसा और महिमा ईश्वर और थ्रेसलॉनिकी के संत डेमेट्रियस को अर्पित की, जिनके पर्व के दिन उन्होंने अनुवाद पूरा कयिा था और जिन्हें, थ्रेसलॉनिकी के मूल निवासी होने के नाते, वह विशेष रूप से सम्मानित करते थे।

इस समय के आसपास, डैन्यूब क्षेत्र में मौजूद हंगरी के राजा संत मेथोडियस से मिलना चाहते थे। कई लोगों ने मेथोडियस से, इस डर से कि उन्हें उत्पीड़न का सामना करना पड़ सकता है, इस राजा के पास न जाने का आग्रह कयिा, लेकिन संत मेथोडियस फरि भी चले गए। हंगरी के राजकुमार ने, एक राजा के अनुरूप, मेथोडियस का सम्मानपूर्वक स्वागत कयिा, उनसे बातचीत की, और उन्हें उदार उपहारों के साथ विदा कयिा। जब वे विदा हुए, तो राजा ने संत से कहा: 'माननीय पिता, मुझे अपनी पवित्र प्रार्थनाओं में हमेशा याद रखना।'

इस प्रकार संत मेथोडियस ने अपनी भेड़ों का ध्यान रखा, सभी देशों में मसीह के वफादार अनुयायियों को खोजा और घमंडी लोगों का मुँह बंद कर दियिा। वे प्रेरित के साथ यह कह सकते थे: *'मैंने अच्छा संघर्ष कयिा है, मैंने दौड़ पूरी कर ली है, मैंने विश्वास बनाए रखा है; अब मेरे लिए धार्मिकता का मुकुट रखा हुआ है'* (2 तीमुथियुस 4:7-8)।

लगाया, जबकि मुख्य रूप से स्लाव पूजा के स्वरूप को खत्म करने की कोशिश कर रहे थे। उस समय जर्मन राजा से सारसेनों के खिलाफ सहायता प्राप्त करने की इच्छा रखने वाले पोप जॉन ने जर्मन पुरोहितों का पक्ष लयिा और मोरावियिा को एक संदेश भेजा जिसमें स्लावोनिक पूजा-विधि पर प्रतिबंध लगाया गया और केवल स्लावोनिक भाषा में उपदेश देने की अनुमति दी गई। यह संदेश पढ़ने के बाद मेथोडियस ने कहा: 'अब क्या होगा? लोग चर्च आएँगे और वहाँ खड़े रहेंगे, कुछ भी समझे बिना। और वे मसीह की शिक्षाओं को भूल जाएँगे, और मॉरावियिा में मूर्तिपूजक रीति-रिवाज फरि से उभर आएँगे। नहीं, मैं लैटिन में प्रार्थना सभा नहीं करूँगा; यह लोगों के नुकसान के लिए होगा।" जर्मन पुरोहितों ने इसकी सूचना पोप को दी, और पोप ने मेथोडियस को रोम बुलाया। संत मेथोडियस रोम पहुँचे, और पोप ने उन पर मुकदमा चलाया। उस समय, पोप को सारासेनों के खिलाफ युद्ध में ग्रीक सम्राट बेसिल द मैसेडोनियन से सहायता मिली थी, और इसी कारण से उन्होंने मेथोडियस का पक्ष लयिा। इस मुकदमे में, संत मेथोडियस को बरी कर दियिा गया, स्लाव भूमि में आर्चबिशप के रूप में बहाल कयिा गया, और उन्हें स्लाव भाषा में धार्मिक अनुष्ठान करने की अनुमति दी गई। हालाँकि, स्व्यातोपोलक को नाराज़ नहीं करना चाहकर, पोप ने उन्हें निम्नलिखित संदेश लिखा: 'यदि, राजकुमार, स्लाव मिस्सा आपको पसंद नहीं है, तो आप अपने महल में ही जर्मन पुरोहितों द्वारा आयोजित लैटिन मिस्सा में शामिल हो सकते हैं।' मेथोडियस के साथ उनके सहायक के रूप में मोरावियिा गए एक वाइकिंग पुरोहित, जो जर्मन राजा का शिष्य और स्लावों का कट्टर दुश्मन था। यह वाइकिंग सेंट मेथोडियस का मुख्य विरोधी बन गया। जर्मन पादरियों ने स्व्यातोपोलक को बताना शुरू कर दियिा कि मेथोडियस असली पत्र नहीं लाया था, बल्कि एक और पत्र था, जिसके अनुसार मेथोडियस को निकाल दियिा जाना चाहिए और वाइकिंग को आर्चबिशप नियुक्त कयिा जाना चाहिए। तब संत मेथोडियस ने पोप जॉन को निम्नलिखित पत्र लिखा: 'फादर, आपने आर्चबिशप के रूप में किसे नियुक्त कयिा है: मुझे या वाइकिंग को?' इस पत्र के जवाब में, पोप ने उपरोक्त संदेश भेजा।

[3612] उस समय, बेसिल द मेसेडोनियन सम्राट था।

जब संत मेथोडियस के लिए अपने दुखों से विश्राम पाने और अपने अनेक श्रमों का प्रतिफल प्राप्त करने का समय निकट आया, तो लोग उनसे पूछने लगे:

'माननीय पिता और शिक्षक, आप अपने शिष्यों में से किसे अपना उत्तराधिकारी नियुक्त करेंगे?'

अपने शिष्यों में से एक, गोरज़्द की ओर इशारा करते हुए, संत ने कहा:

'देखो, तुम्हारे देश का एक मनुष्य, जो रूढ़िवादी और लैटिन ग्रंथों में पारंगत है। यदि ईश्वर की इच्छा हो और तुम्हारी सहमति हो, तो मैं चाहता हूँ कि वही मेरा उत्तराधिकारी बने।'

पवित्र सप्ताह के दौरान, संत मेथोडियस चर्च आए लेकिन वे सेवा का अनुष्ठान करने के लिए बहुत कमजोर थे; इसके बजाय, उन्होंने यूनानी राजा, स्लाव राजकुमारों, पुरोहित वर्ग और सभी लोगों के लिए प्रार्थना की, और कहा:

'मेरे बच्चों, तीसरे दिन तक मेरा ध्यान रखना।'

और वास्तव में, तीसरे दिन की सुबह, संत मेथोडियस, 'हे प्रभु, मैं अपनी आत्मा तेरे हाथों में सौंपता हूँ' इस वाक्य के साथ, पुरोहितों द्वारा पकड़े जाने के दौरान प्रभु में निधन कर गए। यह 6 अप्रैल 885 को हुआ था।

अंतिम संस्कार की रस्म लैटिन, ग्रीक और स्लावोनिक भाषा में संपन्न हुई, और उन्हें वेलेग्राद के कैथेड्रल चर्च में दफनाया गया। दफन के लिए अनगिनत लोगों की भीड़ जमा हुई। वहाँ पुरुष और महिलाएँ, जवान और बूढ़े, अमीर और गरीब, स्वतंत्र लोग और दास, विधवाएँ और अनाथ, यात्री और स्थानीय लोग, बीमार और स्वस्थ सभी शामिल थे। सभी ने ऐसे अच्छे शिक्षक और चरवाहे को आँसू भरी विदाई दी, जो 'सबके बचने के लिए' सभी के लिए सब कुछ थे।

हे पवित्र और धर्मी नेता! ऊँचे सिंहासन से, हम पर अपनी प्रार्थनाओं में कृपा दृष्टि रखें, जो आपसे प्रार्थना करते हैं, और अपने शिष्यों को—जो मसीह की शिक्षा का प्रचार करते हैं और विधर्मों का खंडन करते हैं—सभी कष्टों से बचाएँ, ताकि, इस जीवन में गरिमा के साथ अपने बुलावे को पूरा करके, हम मसीह हमारे परमेश्वर के दाहिने हाथ में आपके साथ खड़े हो सकें, उनसे अनंत जीवन प्राप्त करके। क्योंकि उसी को युग-युग तक महिमा और सम्मान प्राप्त हो। आमीन।

ट्रोपारियन, स्वर 4:

एक मन वाले प्रेरितों और स्लाव भूमि के शिक्षकों, ईश्वर में बुद्धिमान, सिरिल और मेथोडियस, सभी के प्रभु से प्रार्थना करते हैं कि वह सभी स्लाव भाषाओं को ऑर्थोडॉक्स और मन की एकता में मजबूत करें, दुनिया में शांति लाएं, और हमारी आत्माओं को बचाएं।

कॉन्टाकियन, स्वर 3:

आइए हम अपने प्रकाशकों, इस पवित्र युगल का सम्मान करें, जिन्होंने दिव्य धर्मग्रंथों की व्याख्या के माध्यम से हमारे लिए परमेश्वर के ज्ञान का स्रोत खोल दिया है, जिससे हम आज भी प्रचुर मात्रा में लाभान्वित होते हैं; हम आपको धन्य कहते हैं, सिरिल और मेथोडियस, जो परमपिता के सिंहासन के सामने खड़े हैं और हमारी आत्माओं के लिए उत्साहपूर्वक मध्यस्थता करते हैं।

25 मई

12 मई (पुराना कैलेंडर)

हमारे पवित्र पिता हरमन, कॉन्स्टेंटिनोपल के आर्चबिशप का जीवन।

12 मई को स्मरणोत्सव

संत जर्मनस का जन्म कॉन्स्टेंटिनोपल शहर में हुआ था। उनके पिता, जस्टिन, जो एक कुलीन दर्जे के व्यक्ति थे, प्रमुख सेनटर्स में से एक थे, जो महिमा और सम्मान में दूसरों से श्रेष्ठ थे; जब कॉन्स्टेंटिन पोगोनाटस[3613] ग्रीक सिंहासन पर आसीन हुआ, तो ईर्ष्या के कारण उन्हें मृत्युदंड दिया गया। इस प्रतिष्ठित सेनेटर की हत्या के बाद, कॉन्स्टेंटाइन ने आदेश दिया कि उसके बेटे, उस समय के अभी भी युवा धन्य जर्मनस को नपुंसक बना दिया जाए और चर्च के पुरोहितों के हवाले कर दिया जाए। उसने ऐसा इसलिए किया ताकि हिर्मन, वयस्क होने और दुनिया में एक प्रमुख पद और सेनेटर का दर्जा प्राप्त करने पर, अपने पिता की हत्या का पोगोनाट परिवार से कोई बदला न ले सके। इस प्रकार पुरोहित पद में प्रवेश पाकर, धन्य हरमन ईश्वर के स्वर्गदूत की तरह जीवन यापन करने लगे: वे सांसारिक मोह-माया और इस जीवन की व्यर्थता से परे, अपना सम्पूर्ण मन ईश्वर में लगाकर, सदैव प्रभु की स्तुति करते हुए, दिन-रात लगन से पवित्र शास्त्रों के अध्ययन में स्वयं को समर्पित कर दिए। इनसे उन्होंने ज्ञान की गहराइयों को जाना और दिव्य प्रेरित शिक्षाओं का जीवित जल ग्रहण किया, जिससे उन्होंने एक चरवाहे और शिक्षक के रूप में मसीह की कलीसिया को पोषित किया। जब संत जर्मनस परिपक्व हुए, और अपने पुण्य जीवन से दीपक की तरह जगमगा रहे थे, तो उन्हें पहले साइज़िकस शहर के बिशप के रूप में अभिषिक्त किया गया[3614] । वहाँ, उन्होंने परम पावन पैट्रिआर्क साइरस[3615] के साथ मिलकर मोनोथेलिटिक विधर्म[3616] के खिलाफ लड़ाई लड़ी, जिन्हें अविश्वासी राजा फिलिप[3617] द्वारा निर्वासित कर दिया गया था। उत्पीड़क की मृत्यु के बाद, जिसका अंत शीघ्र ही कलंकित हुआ, तथा निर्वासन में निधन करने वाले पैट्रिआर्क साइरस के निधन और छद्म-पैट्रिआर्क, विधर्मी जॉन की पदावनति के पश्चात्, अनास्तासियस द्वितीय के नाम से विख्यात आर्टेमियस के शासनकाल में, संत जर्मनस को कॉन्स्टेंटिनोपल में सिंहासनारूढ़ किया गया, जिससे जनसमूह में हर्ष छा गया। वह एक योग्य पुरुष थे, और साथ ही ईश्वर की कृपा से परिपूर्ण थे, जो भविष्य को पूर्वदर्शी करने और

[3613] कॉन्स्टेंटिन पोगोनाटस ने 668 से 686 तक शासन किया।

[3614] क्यज़िकोस एशिया माइनर में फ्रीजिया क्षेत्र का एक शहर है।

[3615] संत सिरिल ने 705 से 711 तक कॉन्स्टेंटिनोपल में पैट्रिआर्क का पद संभाला; उनकी मृत्यु 714 में निर्वासन में हुई।

[3616] *मोनोथेलिज़्म,* या एकल इच्छा का विधर्म, प्रारंभिक 7वीं शताब्दी में बाइजेंटाइन शासकों की व्यापक *मोनोफिसाइट* विधर्म को ईसाई धर्म के साथ सुलझाने की इच्छा के प्रभाव में उत्पन्न हुआ, जो यह सिखाता था कि प्रभु यीशु मसीह में *एक ही* दिव्य स्वभाव था, क्योंकि ऑर्थोडॉक्स और मोनोफिज़िट्स के बीच असहमति न केवल चर्च बल्कि राज्य के लिए भी एक विपत्ति थी। मोनोफिसाइट बिशपों, विशेष रूप से कोल्चिस में फासिस के बिशप साइरस ने, सम्राट हेराक्लियस (611–641) के समक्ष यह विचार प्रस्तुत किया कि उनके और ऑर्थोडॉक्स के बीच एकता तब हासिल की जा सकती है जब ऑर्थोडॉक्स चर्च मसीह यीशु में एक ही इच्छा और एक ही क्रिया को मान्यता दे। 633 में, सम्राट और अलेक्जेंड्रिया के पैट्रिआर्क नियुक्त किए गए साइरस के प्रयासों से, मिस्र के मोनोफिसाइट्स और ऑर्थोडॉक्स के बीच एकता स्थापित हुई; कॉन्स्टेंटिनोपल के पैट्रिआर्क सेरजियस के नेतृत्व में लगभग सभी पूर्वी और ग्रीक बिशप इस संघ में शामिल हो गए। अलेक्जेंड्रिया के पैट्रिआर्क, दयालु जॉन के प्रिय शिष्य सोफ्रोनीस नामक एक भिक्षु ने इस अवैध समझौते का खुले तौर पर विरोध किया, यह तर्क देते हुए कि एकल इच्छा का सिद्धांत स्वयं मोनोफिज़िटिज़्म था—अर्थात्, मसीह यीशु में केवल एक (दिव्य) स्वभाव की मान्यता; क्योंकि यदि स्वभाव एक है, तो स्वाभाविक रूप से इच्छा भी एक है। 634 में यरूशलेम के पैट्रिआर्क बनने के बाद, उन्होंने और भी अधिक उत्साह के साथ ऑर्थोडॉक्सी (सही आस्था) का बचाव किया: उन्होंने यरूशलेम में एक परिषद बुलाई जिसमें उन्होंने मोनोथेलिटिज़्म की निंदा की। विवाद को समाप्त करने की इच्छा से, सम्राट हेराक्लियस ने 638 में 'विश्वास की व्याख्या' (एक्टेसिस) जारी की, जिसमें मसीह यीशु में दो स्वभावों के ऑर्थोडॉक्स सिद्धांत को प्रस्तुत किया गया और उनकी इच्छाओं का कोई उल्लेख करने पर प्रतिबंध लगा दिया गया, जबकि साथ ही यह भी जोड़ा गया कि ऑर्थोडॉक्स विश्वास एकल इच्छा की मान्यता की मांग करता है। (एक्टिसिस), जिसमें मसीह यीशु में दो स्वभावों के ऑर्थोडॉक्स सिद्धांत को प्रस्तुत किया गया और उनकी इच्छाओं का कोई उल्लेख करने से मना किया गया, जबकि साथ ही यह भी जोड़ा गया कि ऑर्थोडॉक्स विश्वास एक ही इच्छा की मान्यता की मांग करता है। 'विश्वास की व्याख्या' के प्रकाशन के बाद, कॉन्स्टेंटिनोपल के संन्यासी मैक्सिमिस द कन्फेशर (जिनका स्मरण 21 जनवरी को किया जाता है) ऑर्थोडॉक्सी के एक उत्साही रक्षक के रूप में उभरे, जिन्होंने उत्तरी अफ्रीका और रोम में मोनोथेलिट्स का सफलतापूर्वक विरोध किया। हेराक्लियस के उत्तराधिकारी, कॉन्स्टेंस द्वितीय, एक्टेसिस को समाप्त करने की इच्छा से—जिन्होंने और भी अधिक असहमति पैदा कर दी थी—ने 648 में 'टाइपॉस' जारी किया: यह विश्वास का एक मॉडल था जो एक या दो इच्छाओं के बारे में बात करने से रोकता था, और लोगों को पिछले पाँच सार्वभौमिक परिषदों के अनुसार विश्वास करने के लिए मजबूर करता था। लेकिन 'टाइपॉस' ने विवादों को समाप्त नहीं किया। अंत में, सम्राट कॉन्स्टेंटिन पोगोनाटस ने कॉन्स्टेंटिनोपल में छठे (ट्रुलियन) सार्वभौमिक परिषद का आयोजन किया, जिसमें मोनोफिजिज़्म को विधर्म घोषित किया गया और यह आदेश दिया गया कि मसीह यीशु में दो क्रियाओं और दो इच्छाओं को स्वीकार किया जाना चाहिए, जिसमें मानवीय इच्छा सभी बातों में दैवी इच्छा के अधीन हो, बिना इसके कि वह नष्ट हो जाए। – मोनोफिसाइट्स के अवशेष आज भी मारोनाइट्स के रूप में मौजूद हैं। उन्होंने (680 से) पहली बार लेबनान के पहाड़ों में शरण ली; क्रूसेड्स (1182) के दौरान, मोनोफिसाइट सिद्धांत पश्चिम में, यूरोप तक फैल गया, लेकिन पोपों के प्रयासों के कारण इसे बहुत सारे अनुयायी नहीं मिले, हालांकि यह 1736 तक बना रहा, जब यहूदी मोनोफिसाइट्स कैथोलिक चर्च में शामिल हो गए। पूर्व में, सीरिया में, यह आज भी बना हुआ है।

[3617] फिलिप बार्डेन, बीजान्टिन सम्राट (711–715)।

उसके बारे में भविष्यवाणी करने की उनकी क्षमता में स्पष्ट था। इस प्रकार, जब वह अपनी सेवा के दौरान पहली बार भक्तिपूर्वक संत सोफिया के चर्च में प्रवेश किया, तो नव निर्वाचित पैट्रिआर्क को देखने के लिए उत्सुक लोगों से घिरे हुए, अन्ना नाम की एक गर्भवती महिला उसके पास आई और कहा:

'धन्य करें, पिताजी, मेरे गर्भ में संवर रहे बच्चे को।'

पैट्रिआर्क ने उसकी ओर देखा और अपनी अंतर्दृष्टि से भविष्य देख कर कहा:

'पवित्र प्रथम शहीद की प्रार्थनाओं के द्वारा प्रभु आपको आशीर्वाद दें।'

इन शब्दों के साथ, उन्होंने भविष्यवाणी की कि एक पुत्र का जन्म होगा, जिसका नाम पवित्र प्रथम शहीद स्टीफन के नाम पर रखा जाएगा। उन्होंने इस भविष्यवाणी की पुष्टि एक चमत्कार से की। जैसे ही हर्मन ने कहा, उनके शब्दों के साथ उनके मुँह से एक अग्नि की लपट निकली, जिसे उस महिला ने देखा; उसने बाद में सबको इसकी कसम देकर पुष्टि की, जिससे उसे संत की भविष्यवाणी पर दृढ़ विश्वास हो गया। और वास्तव में, अन्ना ने एक पुत्र को जन्म दिया, जिसका नाम उसने परम पावन पैट्रिआर्क हर्मन की भविष्यवाणी के अनुसार स्टीफन रखा। यह स्टीफन, वयस्क होने पर, मठवासी संन्यास ग्रहण कर ऑक्सेन्टियस पर्वत पर एक धार्मिक जीवन व्यतीत करने लगा; बाद में, वह मसीह के नाम के लिए एक कन्फैसर बना, और दुष्ट ज़ार कॉन्स्टेंटिन कॉप्रोनिमिस[3618] के हाथों पवित्र प्रतिमाओं के लिए शहादत प्राप्त की। ग्रीक सम्राट लियो द इसाउरियन[3619] के पुत्र इस कॉप्रोनाइमस के बारे में, संत जर्मनस की एक भविष्यवाणी यह भी थी कि वह ऑर्थोडॉक्स श्रद्धालुओं का एक क्रूर उत्पीड़क और यातनाकर्ता होगा। अपने बपतिस्मा के दौरान, जो परम पावन पैट्रिआर्क हर्मन द्वारा संपन्न किया गया था, कॉन्स्टेंटिन ने अपने मल से पवित्र बपतिस्मा पात्र को अपवित्र कर दिया। फिर संत हर्मन ने बपतिस्मा ग्रहण कर रहे व्यक्ति के बारे में कहा:

'यह बच्चा, जब वयस्क होगा, तो ईसाइयों और पूरी कलीसिया पर बड़ी बुराई लाएगा: वह विधर्म से पवित्र पूजा स्थल को अपवित्र करेगा और मसीह के वफादार सेवकों का बहुत सारा खून बहाएगा।'

बाद में कॉन्स्टेंटिन को कॉप्रोनाइमस उपनाम दिया गया, जिसका अर्थ है 'खाद'[3620] । संत जर्मनस की भविष्यवाणी एक-एक करके सच हुई: कॉप्रोनाइमस ने सम्मानित प्रतिमाओं की पूजा करने के लिए कई लोगों को यातना दी, जिनमें उपर्युक्त स्टीफन भी शामिल था।

मूर्तिभंजक विधर्म कोप्रोनिमिस के पिता, लियो द इसाउरियन के शासनकाल में शुरू हुआ। लियो द इसाउरियन, जो इस विधर्म में डूबा हुआ था, ने इसे अपने लोगों के बीच यथासंभव मजबूत करने और फैलाने की कोशिश की। उन्होंने अपने राज्य के सभी प्रांतों में एक दुष्ट फरमान भेजा, जिसमें आदेश दिया गया था कि पवित्र प्रतिमाओं को हर जगह चर्चों से बाहर फेंक दिया जाए, पैरों तले कुचल दिया जाए और जला दिया जाए, क्योंकि वह पवित्र प्रतिमाओं को मूर्तियाँ मानते थे और उनकी पूजा करने वालों को मूर्तिपूजक मानते थे।

संत जर्मैनस, पैट्रिआर्क, ने साहसपूर्वक विधर्मी सम्राट का विरोध किया। उन्होंने बार-बार पादरी वर्ग के समझदार और सम्मानित लोगों को सम्राट के पास भेजा, और खुद भी उसे अपने बुरे इरादे से मुंह मोड़ने के लिए मनाने गए; लेकिन संत जर्मैनस की विनतियों का कोई असर नहीं हुआ।

एक अवसर पर, पैट्रिआर्क ने ज़ार से कहा:

'मैंने एक संत की भविष्यवाणी सुनी है कि एक समय आएगा जब धर्मद्रोही पवित्र प्रतिमाओं का उत्पीड़न करेंगे, लेकिन काश यह आपके शासनकाल में न हो।'

'तो यह किस समय, और किसके शासनकाल में होगा?' सम्राट ने ध्यानपूर्वक पूछा।

'कोनन नामक एक राजा,' संत हरमन ने कहा, 'पवित्र प्रतिमाओं का उत्पीड़न भड़काएगा।'

"मेरा नाम कोनोन है," आइज़ोरियन लेव ने उत्तर दिया। "यह नाम मुझे मेरे बपतिस्मा के समय दिया गया था; लेव नाम मुझे बाद में प्रदान किया गया।"

'इसलिए, यह भविष्यवाणी निश्चित रूप से मेरे शासनकाल में पूरी होगी।'

'नहीं, महामहिम,' संत हरमन ने ज़ार से आपत्ति जताई, 'ऐसा न हो; आपकी राजगद्दी पर ऐसा कोई बुराई न आए, क्योंकि जो इस दुष्टता को लाना चाहता है, वह विरोधी मसीह है, दिव्य अवतार का शत्रु। हे राजा, यह भी याद रखो कि

[3618] कॉन्स्टेंटिन कॉप्रोनिमिस ने 741 से 776 तक शासन किया।

[3619] लियो द इसाउरियन ने 716 से 741 तक शासन किया।

[3620] 'कोप्रोन्यम' ग्रीक शब्द 'कोप्रोस' से आया है – जिसका अर्थ खाद, गोबर है।

राजसी सहिासन पर चढ़ने से पहले तुमने पवत्रि धर्म को नर्दिोष रूप से बनाए रखने की शपथ ली थी, पवत्रि प्रेरतिों और दैवीय रूप से प्रेरति पतिाओं की परंपराओं में से कुछ भी नष्ट कएि बनिा, और ईसाई धर्म के वपिरीत कुछ भी नया परचिय दएि बनिा।

सर्वाधकि पवत्रि पैट्रआर्क के ये वचन सुनकर राजा शर्म और क्रोध की भावनाओं के बीच झूलता रहा, और पैट्रआर्क के खलिाफ कोई ऐसा आरोप खोजने का प्रयास कर रहा था जसिसे वह उन्हें उनके पद से न सत्य के स्वीकारकर्ता के रूप में, बल्कि एक दंगाई के रूप में हटा सके। उसे अपनी इस दुष्ट साज़शि में हरमन के एक शष्यि, अनास्तासयिस नामक एक पादरी के रूप में एक सहयोगी मलि गया। इस अनास्तासयिस से, जसिका चरत्रि यहूदा जैसा था, राजा ने वादा कयिा कि हरमन के नर्वासन के बाद उसे पाट्रीआर्कात्मक सहिासन मलिेगा; और बदले में उसने धर्मद्रोह स्थापति करने और पवत्रि प्रतमिाओं को नष्ट करने में राजा की सहायता करने का वादा कयिा। परणिामस्वरूप, अनास्तासयिस संत जर्मनस का एक कट्टर दुश्मन बन गया, और उसने संत के नर्वासन से पहले ही पैट्रआर्क के सहिासन पर कब्जा करने का प्रयास कयिा। संत जर्मनस ने, अपने मन में अनास्तासयिस के दुष्ट इरादे और उसके भवष्यि के भाग्य को भांपते हुए, नम्निलखिति परस्थितियिों में अनास्तासयिस के भाग्य की भवष्यिवाणी की।

एक दनि, पैट्रआर्क हर्मन ज़ार के कक्ष में प्रवेश कर रहे थे। अनास्तासयिस, गर्व से उनका पीछा करते हुए, पीछे से उनके चोगा के कनिारे पर पैर रख बैठा। तब हर्मन ने अनास्तासयिस से कहा, 'इतनी जल्दी मत करो, वह समय आएगा जब तुम, लोगों की भीड़ से घरि हुए, चल्लिाहटों के बीच डुबोने के लिए ले जाए जाओगे'[3621] ।

हालाँकि, उस समय न तो अनास्तासयिस ने और न ही उसे सुनने वाले अन्य लोगों ने संत जर्मनस के इन शब्दों पर कोई ध्यान दयिा; उन्होंने इन्हें केवल बाद में तब याद कयिा, जब कहा गया था वह घटति हुआ, जैसा कि नीचे चर्चा की जाएगी।

संत हर्मन, मसीह के एक वफादार सैनकि के रूप में, ईश्वर के वचन की तलवार से वधिर्मयिों के खलिाफ नडिर और साहसपूर्वक लड़े। उन्होंने सबसे उत्कृष्ट पुरोहतिों में से एक को इन शब्दों के साथ ज़ार के पास भेजा:

'हे ज़ार, आपके लिए यह उचति नहीं है कि आप अपने सृष्टकिर्ता, परमेश्वर के सामने अहंकारपूर्वक खुद को बड़ा मानें, जन्होंने आपको जीवन और सार्वभौमकिता प्रदान की है; और न ही आपके पास, जैसा कि कहा जाता है, अचल को चलाने का अधकिार है; आपके लिए यह उचति नहीं है कि आप पवत्रि पुरखों द्वारा प्राचीन काल में स्थापति सीमाओं को लांघें।' क्योंकि यह परमेश्वर के वचन द्वारा परम शुद्ध और परम पवत्रि कुँवारी से ग्रहण की गई मानवीय प्रकृति के माध्यम से ही था कि राक्षसों की सेवा का उन्मूलन हुआ और मूर्तपिूजा का नाश हुआ। मानव रूप में मसीह और उनकी अनुपम धन्य माता के चत्रिण के साथ-साथ परमेश्वर के पवत्रि संतों के चत्रिण को, 725 वर्ष पहले, जब हमारे प्रभु मानव रूप में पृथ्वी पर प्रकट हुए थे, हमें श्रद्धांजलि के लिए सौंपा गया था। प्रभु के स्वर्गारोहण के बाद, वह स्त्री जसिे उनके वस्त्र के कनिारे को छूकर रक्तस्राव से चंगा कयिा गया था (मरकुस 5:25–34), इस कृतज्ञता में , ने उद्धारकर्ता की एक प्रतमिा बनाई। लेकनि उससे भी पहले, प्रभु ने स्वयं एक रूमाल पर अपना दैवीय मुखमंडल अंकति कयिा था और उसे एदेसा में अबगार के पास भेजा था। पवत्रि सुसमाचार लेखक लूका ने परम पवत्रि कुँवारी मरयिम की एक प्रतमिा चत्रिति की। अत; वभिन्नि समयों और वभिन्नि स्थानों पर आयोजति दैवीय परषिदों ने यह आदेश दयिा कि पवत्रि प्रतमिाओं को नष्ट नहीं कयिा जाना चाहए, बल्कि उनकी पूजा की जानी चाहए। अत; हे राजा, यह जान लो: यदि तुम इस प्रतमिा-वरिोधी सद्धिांत को स्थापति करने में मदद करते हो, तो मैं इसका वरिोध करने वाला पहला व्यक्ति बनूँगा। मैं अपने मसीह की प्रतमिा के लिए अपना रक्त बहाने को तैयार हूँ, जन्होंने मेरी आत्मा की पतति प्रतमिा को नवीनीकृत करने के लिए अपना रक्त बहाया। यह स्पष्ट है कि मसीह की प्रतमिा पर कयिा गया अपमान मूल प्रतमिा, यानी स्वयं मसीह पर कयिा गया अपमान है, ठीक उसी तरह जैसे प्रतमिा को दयिा गया सम्मान स्वयं मसीह को दयिा गया सम्मान है। अत; हमारे लिए, मसीह के वफादार सेवकों के रूप में, अपने प्रभु की आराधना के लिए मरना उचति है।

एक अन्य अवसर पर, स्वयं संत हरमन ने ज़ार से इस प्रकार कहा:

'यदि मैं योनह हूँ, तो मुझे समुद्र में फेंक दो, क्योंकि एक सार्वभौमकि परषिद के बनिा मुझे धर्मशास्त्र के संबंध में कुछ भी नया करने का अधकिार नहीं है।'

[3621] कॉन्स्टेंटनिोपल में, 'डप्पिनि' एक सार्वजनकि चौक का नाम था जहाँ आमतौर पर वभिन्नि मनोरंजक कार्यक्रम आयोजति कएि जाते थे।

जब पवित्र पैट्रआर्क ने देखा कि वे राजा को वधिर्म से दूर करने के लिए कुछ नहीं कर सकते, तो उन्होंने अपना ओमोफोरीयोन दिव्य वेदी पर, पवित्र सिंहासन पर रख दिया, और अपने पद से त्यागपत्र दे दिया। अपने साहसी शब्दों के लिए संत जर्मनस पर बहुत क्रोधित होकर, राजा ने सशस्त्र सैनिक भेजे—मानो किसी युद्ध के लिए—जिन्होंने संत को पीटा और अपमानपूर्वक उन्हें पैट्रआर्कालय से बाहर निकाल दिया। इसके बाद संत जर्मनस एक मठ में चले गए, जहाँ उन्होंने अपने शेष दिन संतों के बीच मौन में बिताए, और प्रभु में शांतिपूर्वक निधन कर गए। उन्होंने 14 साल और 6 महीने तक पैट्रआर्क के रूप में सेवा की[3622] ।

उनकी पवित्रता पैट्रआर्क जर्मनस के निर्वासन के बाद, सम्राट ने उनकी जगह लेने के लिए उपर्युक्त बिशप अनास्तासियस को नियुक्त किया[3623] , जिसने सम्राट के साथ मिलकर चर्चों से पवित्र प्रतिमाओं को हटा दिया और प्रतिमा-विरोधी वधिर्म का समर्थन किया। उनके बारे में संत जर्मनस की भविष्यवाणी इस प्रकार पूरी हुई।

जब दुष्ट लियो द इसाउरियन की मृत्यु हो गई, तो उसका पुत्र कॉन्स्टेंटिन कॉप्रोन्यमस सिंहासन पर बैठा, लेकिन उसे लियो के दामाद आर्टवास्देस ने पदच्युत कर दिया। इस कार्य में पैट्रआर्क अनास्तासियस ने आर्टवास्देस की सहायता की; उन्होंने ही आर्टवास्देस और उसके पुत्र निकिफोरोस को सम्राट के रूप में ताज पहनाया। तीन साल बाद, कोप्रोन्यमस ने एक बड़ी सेना इकट्ठी की और कॉन्स्टेंटिनोपल पर कब्जा कर लिया। कॉन्स्टेंटिन ने अपने दामाद आर्टवास्देस और उसके बेटों—जो उसके अपने भतीजे थे—की आँखें फोड़ दीं और आर्टवास्देस के कई समर्थक कुलीनों को मौत की सज़ा दी। जहाँ तक पैट्रआर्क अनास्तासियस का सवाल है, कॉन्स्टेंटाइन ने आदेश दिया कि उसे 'डिप्पिन' नामक स्थान पर पूरे लोगों के सामने नग्न कर दिया जाए और कोड़े मारे जाएँ; फिर, उसे गधे पर उल्टा बिठाकर, उसे अपमानित होकर शहर में घुमाया गया। इस प्रकार संत जर्मनस की भविष्यवाणी पूरी हुई, जिन्होंने अनास्तासियस से कहा था कि उसे लोगों की एक बड़ी सभा के बीच डिप्पिन ले जाया जाएगा। धर्मद्रोही ज़ार कोप्रोनिमि तो अनास्तासियस को पैट्रआर्क के सिंहासन से हटाना भी चाहता था; लेकिन, चूंकि उसे पवित्र प्रतिमाओं का अपमान करने में अनास्तासियस से अधिक उत्सुक कोई और नहीं मिला, इसलिए उसने उसे पैट्रआर्क के सिंहासन पर ही छोड़ दिया, जहाँ वह पवित्र स्थान में विराजता की घृणित वस्तु (मत्ती 24:15) की तरह 24 वर्षों तक बना रहा। अपने जीवन के अंत के करीब, वह 'कोर्डास्पोस' नामक एक बीमारी से पीड़ित हो गया, जिससे उसका अधर्मी मुँह, जिसने पवित्र प्रतिमाओं और अपने ही गुरु की निन्दा की थी, एक गंदा मार्ग बन गया जिससे प्राकृतिक पीब बहती थी। अनास्तासियस की मृत्यु इसी बीमारी से हुई।

इस प्रकार, अनास्तासियस की एक भयानक मृत्यु हुई, जबकि संत जर्मनस, पवित्र धर्मगुरुओं के साथ, हमारे प्रभु यीशु मसीह के राज्य में धन्य जीवन के वारिस बने; उसी को, पिता और पवित्र आत्मा के साथ, अब और हमेशा और युगों-युगों तक सम्मान और महिमा मिले। आमीन।

हमारे पवित्र पिता सावन, साइप्रस के बिशप की स्मृति

12 मई को स्मरणोत्सव

[3622] संत हरमन की मृत्यु 740 में, 96 वर्ष की आयु में हुई, और उन्हें कॉन्स्टेंटिनोपल के उत्तरी उपनगर में स्थित कोरा मठ में दफनाया गया। संत हरमन को एक चर्च-संबंधी लेखक के रूप में जाना जाता है; 'उनकी रचनाएँ पूरे ब्रह्मांड में प्रसिद्ध हैं', जैसा कि 7वें सार्वभौमिक परिषद द्वारा प्रमाणित है, जिसने उन्हें संतों के डिप्टिाइक्स में शामिल किया। संत हर्मन की रचनाएँ स्वभाव में विविध हैं। उन्होंने पीछे छोड़ा: पवित्र धर्मग्रंथ के सबसे कठिन अंशों की व्याख्या; मृत्यु के बाद धार्मिक प्रतिफल पर एक ग्रंथ; और, 7वें रविवार पर, उनके आइकन की पूजा पर तीन पत्र पढ़े गए; और, जैसा कि सेंट हर्मन के प्राचीन जीवनीकार ने उल्लेख किया है, 'धार्मिक लोगों के लिए काफी संख्या में शिक्षाप्रद शब्द' भी संरक्षित हैं—अर्थात्, ईश्वर की माता के मंदिर में प्रवेश के लिए, उनके निद्रोपवेश के लिए, अवतार की घोषणा के लिए, मंदिर के नवीनीकरण के लिए, और परम पवित्र ईश्वर की माता की कमरबंद रखने के लिए उपदेश। विशेष महत्व का है, इसमें निहित ऐतिहासिक जानकारी की प्रचुरता के कारण, उनका प्रबंध जो प्रेरितों के समय की वधिर्मों और लियो द आइकोनोक्लास्ट के शासनकाल के दौरान हुए सार्वभौमिक परिषदों पर है। संत हरमन ने दैवीय धर्मविधि से संबंधित कई कृतियाँ छोड़ी हैं; इनमें से, धर्मविधि पर उनकी व्याख्या विशेष रूप से महत्वपूर्ण है; इस प्रकार की अन्य कृतियों में संतों की स्तुति और अनुग्रह के अद्भुत कार्यों की महिमा में पैट्रआर्क द्वारा रचित भजन शामिल हैं।

[3623] अनास्तासियस ने 730 से 753 तक पैट्रआर्क का पद संभाला।

ये आदरणीय पुरुष फोएनशियिा की भूमि के मूल नविासी थे[3624] और लसियिा के एक शहर में पैदा हुए थे, जहाँ उन्हें संत एपफिानयिस के अधीन बपतस्मि दयिा गया और उन्होंने संन्यासी की शपथ ली। जब ईश्वर ने एपफिानयिस को महमिामंडति कयिा, तो लसियिा के नविासयिों ने उनके पास एक ऐसे व्यक्ति को भेजा जो उनके बीच प्रसद्धि था, ताकि वह उन्हें अपने शहर का बशिप नयिुक्त कर सके। उस समय, सावनि इस व्यक्ति के साथ एपफिानयिस के पास आया; संसार का त्याग करने के बाद, वह एपफिानयिस के साथ ही रहा और उसने संन्यास की शपथ ली। इसके बाद, वह एपफिानयिस के साथ रेगस्तिान में चले गए और पाँच साल तक उनके साथ रहे। उन्होंने पूज्य व्यक्ति का जीवन लखिा, जसिमें उन्होंने उनकी पूरी रात की प्रार्थना सभाओं, उनकी उत्कट प्रणामों, और उन चमत्कारों का वर्णन कयिा जो प्रभु ने उनके माध्यम से कए। जब संत एपफिानयिस साइप्रस द्वीप पर बशिप थे[3625] , तो उन्होंने सावनि को एक पादरी के रूप में नयिुक्त करना चाहा, लेकनि वह इसके लए सहमत नहीं हुए। तब आदरणीय संत उन्हें चर्च में ले गए और उनसे कहा:

'यहाँ खड़े रहो और हलिना-डुलना मत।'

वह वहीं खड़े रहे, उनके पैर जैसे जमीन में ठोक दए गए हों, और संत एपफिेनयिस ने उन्हें एक पादरी के रूप में नयिुक्त कयिा। एपफिेनयिस की मृत्यु के बाद, सावनि ने उनका स्थान लयिा, और उसी कॉन्स्टेंस शहर में बशिप का पद संभाला[3626] , जहाँ एपफिेनयिस भी बशिप रहे थे। कई यादगार चमत्कार करने, वधिर्मयिों से अपनी कलीसयिा की रक्षा करने और एक धार्मकि जीवन जीने के बाद, संत सावनि प्रभु के पास चले गए[3627] ।

हमारे पवत्रि पति पोलुवयिस, रनिोकरि के बशिप की स्मृति।

12 मई को स्मरण कयिा जाता है

हमारे पूजनीय पति पोलुवयिस संत एपफिेनयिस के शष्यि थे। वह अपने गुरु के साथ तब गए जब वे कॉन्स्टेंटनिोपल शहर से वापस नौकायन कर रहे थे। उस समय, संत एपफिेनयिस ने उनसे कहा:

'मेरे पुत्र पोलुवयिस! मैं अब इस जीवन से वदिा हो रहा हूँ; मेरी आज्ञा का पालन करना, मस्रि जाना, क्योंकि मेरी मृत्यु के बाद भी मैं तुम्हारी देखभाल करूँगा।'

और जब संत एपफिानयिस का नधिन हो गया, तो पोलुवयिस ने उनके अंतमि संस्कार का इंतज़ार कए बनिा—क्योंकि उनका शरीर दस दनिों तक दफ़नाया नहीं गया था—उनकी अंतमि इच्छा के अनुसार मस्रि के लए प्रस्थान कयिा, और वहाँ उनका शहर के राज्यपाल, रनिोकरि[3628] ने स्वागत कयिा, जन्होंने उनसे पूछा:

'आप कहाँ से आए हैं?'

पोलुवीयस ने उत्तर दयिा, 'साइप्रस से, क्योंकि मैं साइप्रस के आर्चबशिप एपफिानयिस का शष्यि था, जो अब प्रभु के पास चले गए हैं।'

रनिोकयिा के राज्यपाल इस पूजनीय व्यक्ति की मृत्यु से गहराई से दुखी हुए और संत पोलुवयिस को अपने नविास पर आमंत्रति करने के बाद, उन्हें अपने शहर का बशिप नयिुक्त कयिा। अपने सदाचारी और नष्पिाप जीवन के कारण, संत पोलुवयिस को चमत्कार करने का वरदान प्राप्त हुआ। इस प्रकार, प्रार्थना के द्वारा, उन्होंने स्वर्ग से वर्षा कराई और इस प्रकार खेतों में फसल बढ़ाई। एक वृद्ध आयु प्राप्त करने के बाद, वे प्रभु के पास चले गए[3629] ।

[3624] फ़निसियिा भूमध्य सागर के तट पर फ़लिस्तीन और प्राचीन सीरयिाई राज्य के बीच स्थति थी। फ़निसियिा में ईसाई धर्म की शुरुआत प्रेरतिों के समय से मानी जाती है।

[3625] साइप्रस द्वीप प्राचीन फनिसियिा के तटों के पास भूमध्य सागर में स्थति है। वहां धर्मप्रचारक संत पौलुस ने अपनी पहली धर्मप्रचार यात्रा के दौरान ईसाई धर्म की स्थापना की थी।

[3626] सलामसि शहर, जहाँ संत एपफिेनयिस ने बशिप के रूप में सेवा की, को साइप्रस की कॉन्स्टेंस के नाम से भी जाना जाता था। यह द्वीप के पूर्वी तट पर समुद्र के ठीक कनिारे स्थति है।

[3627] संत सावनि की मृत्यु 5वीं शताब्दी के मध्य के आसपास हुई।

[3628] रनिोकर शहर ऊपरी (दक्षणिी) मस्रि में थेबाइड रेगस्तिान के पहाड़ी हस्सि में स्थति था।

[3629] संत पोलुवयिस की मृत्यु 5वीं शताब्दी में हुई।

साइप्रस के आर्चबशिप, हमारे पवत्रि पतिा एपफिानयिस का जीवन

12 मई को स्मरणोत्सव

यहूदी वंश के संत एपफिानयिस का जन्मस्थान फोएनशियिा[3630] था, जो लेबनानी पहाड़ों से नकिलकर फोएनशियिन सागर में बहने वाली एलेउथेर नदी[3631] के कनिारे स्थति था। नकियिा शहर से तीन पोप्रीष्चा[3632] की दूरी पर वसिंडुक नामक गाँव बसा था; यहीं संत एपफिानयिस के माता-पतिा रहते थे और खेती करते थे; साथ ही उनका एक बेटा था, और एक बेटी, कैलट्रिोपयिा, जो उससे छोटी थी। जब लड़का दस साल का था, तो उसके पतिा की मृत्यु हो गई, जसिसे उसकी पत्नी पर बच्चों के पालन-पोषण का भारी बोझ आ गया: शोकाकुल परविार के पास खाने के लएि मुश्कलि से ही कुछ था, और बच्चे, इस बीच, अभी भी बहुत छोटे थे। उनकी माँ को अपने हाथों की मेहनत से ही उनका भरण-पोषण करना पड़ता था। इस तरह कई साल बीत गए। संयोग से उस वधिवा के पास एक गधा था जो बहुत जद्दिी और अव्यवस्थति था। और इसलएि एक दनि उसकी माँ ने एपफिानयिस से कहा:

'बेटा, गधा ले जा, उसे शहर के बाज़ार में ले जाकर बेच देना और हमारे लएि कुछ खाना खरीद लेना।'

'तुम जानते हो,' एपफिानयिस ने अपनी माँ से कहा, 'कि वह गधा बहुत हठी और अव्यवस्थति है, और जब बाज़ार में खरीदारों को यह पता चलेगा, तो वे मुझे पीटना शुरू कर देंगे।'

'जा, मेरे बेटे; हमारे पूर्वजों का ईश्वर उस गधे को वश में कर दे,' उसकी माँ ने उससे कहा। तब उस लड़के ने अपनी माँ की आज्ञा मानते हुए, गधे को बेचने के लएि शहर में ले गया। वहाँ, उसका पहला ग्राहक भी एक यहूदी नकिला। अपने साथी यहूदी को वक्रिेता के रूप में पहचानकर, उसने उससे कहा:

'बेटा, तू और मैं एक ही ईश्वर में वश्विास रखते हैं जो सत्य से प्रेम करते हैं, और हमें एक-दूसरे के साथ अन्याय नहीं करना चाहएि, कहीं ऐसा न हो कि हम अपने ईश्वर को क्रोधति कर दें और फरि एक-दूसरे के खलिाफ शकिायत करने का कारण मलि जाए। तो चल, हम गधे का सही-सही आकलन करें।'

एपफिानयिस ने उत्तर दयिा:

'मैं तुम्हें यह गधा नहीं बेचना चाहता, क्योंकि यह अभी भी अनसुलझा है, और इसके अलावा, यह जद्दिी और अव्यवस्थति है; केवल भूख के कारण, और खाने के लएि कुछ भी न होने के कारण, मेरी माँ ने इसे बेचने का फैसला कयिा। लेकनि अब मैं तुमसे सुनता हूँ कि लाभ के लएि अपने पड़ोसी को नुकसान पहुँचाना एक पाप है, और मुझे डर है कि ईश्वर मुझे दंडति कर सकते हैं।'

उस लड़के की बुद्धमिानी और अच्छे चरत्रि को देखकर यहूदी ने उसे तीन पेनी[3633] दे दएि, और कहा:

'बेटा, यह ले लो, अपनी माँ के लएि कुछ रोटी खरीद लाओ और गधे के साथ घर लौट आओ; और अगर गधा पालतू हो जाए, तो उसे अपने पास रख लेना; लेकनि अगर नहीं, तो उसे भगा देना, कहीं वह कसिी को मार न डाले।'

एपफिानयिस घर के लएि रवाना हो गया और अपने गाँव के पास रास्ते में, उसे क्लेओवयिस नाम का एक ईसाई मलिा, जो गधा खरीदना चाहता था। लेकनि ईमानदार लड़के ने उसे बेचने से इनकार कर दयिा। जब वे बात कर रहे थे, तो गधा हठी हो गया और हनिहनिाने तथा लात मारने लगा; फरि, एपफिानयिस को अपनी पीठ से गरिाकर, वह सड़क से उतर गया। गरि गया युवक इतना बुरी तरह से जख्मी हो गया था कि वह उठ नहीं पा रहा था और वहाँ फूट-फूट कर रो रहा था: उसकी चोट लगी जांघ में बहुत दर्द हो रहा था। क्लयिोवयिस उसके पास गया, उसकी जांघ को छुआ और उस पर तीन बार क्रॉस का चन्हि बनाया। तुरंत, एपफिानयिस को आराम आया और वह खड़ा हो गया। फरि क्लयिोवयिस गधे की ओर मुड़ा और कहा:

'हमारे प्रभु, यीशु मसीह के नाम पर, जन्हिें सूली पर चढ़ाया गया था, मैं तुझे आज्ञा देता हूँ कि रुक जा; और क्योंकि तूने अपने मालकि को मारने की कोशशि की, तू स्वयं इस जगह से नहीं जाएगा।'

तुरंत गधा गरि पड़ा और मर गया। यह देखकर चकति लड़के ने क्लेओपास से पूछा:

'पतिाजी, यह सूली पर चढ़ाया गया यीशु मसीह कौन है, जसिके नाम पर ऐसे चमत्कार कएि जाते हैं?'

[3630] *फीनसियिा* – फलिस्तीन के उत्तर-पश्चमि में भूमध्य सागर के तट पर एक देश; इसके नवािसी नावकिों और व्यापारयिों के रूप में प्रसद्धि थे।

[3631] अर्थात् भूमध्य सागर।

[3632] एक पोप्रीश्चे लगभग 690 साज़ेन्ज़ था।

[3633] पेनयिाज़ एक ड्रैक्मा का छठा हस्सिा है।

'ईश्वर का पुत्र, जिसे यहूदियों ने सूली पर चढ़ाया था,' क्लोपास ने उत्तर दिया। एपफिनियस उससे अपनी यहूदी पहचान बताने से डर गया और सूली पर चढ़ाए गए मसीह के बारे में सोचते हुए और उन पर विश्वास करने की इच्छा के साथ घर की ओर चल पड़ा। अपनी माँ के पास पहुँचने पर, उसने उन्हें वह सब कुछ बताया जो हुआ था। इस बीच, उसके पास अपने बच्चों को खिलाने के लिए कुछ न होने के कारण, उसकी माँ ने अपना खेत बेच दिया और एपफिनियस से शहर जाकर कोई धंधा सीखने के लिए कहा, ताकि समय आने पर वह अपना, अपनी माँ और अपनी बहन का भरण-पोषण कर सके। जैसे ही एपफिनियस शहर की ओर रवाना होने ही वाला था, कानून का एक अमीर यहूदी शिक्षक, जिसका नाम त्रिफोन था, शहर से विसिंदुक में आया; वह उसके माता-पिता को अच्छी तरह जानता था और उनके गाँव में कई संपत्तियों का मालिक था। यह जानकर कि एपफिनियस की माँ विधवा हो गई थीं, और उन्हें गरीबी में देखकर, उसने उनसे कहा:

'मुझे अपना बेटा दे दो—मैं उसे गोद ले लूँगा; और अगर तुम राज़ी हो, तो अब से वह मेरा बेटा माना जाएगा, जबकि तुम्हारा और तुम्हारी बेटी का पालन-पोषण मेरा घर करेगा।'

विधवा ने अत्यधिक हर्ष के साथ अपने पुत्र को इस अप्रत्याशित परोपकारी के संरक्षण में सौंप दिया। और एपफिनियस, यहूदी धर्मग्रंथों की शिक्षा पाते हुए, त्रिफोन के घर में एक पुत्र के रूप में रहने लगा। इस सभ्य शिष्य की तीव्र ग्रहणशीलता और दुर्लभ बुद्धिमत्ता ने उसे अपने शिक्षक का प्रिय बना दिया। ट्राइफोन तो अपनी इकलौती बेटी का विवाह भी उसी से करना चाहता था। लेकिन ईश्वर की इच्छा से, उसकी मृत्यु हो गई। कुछ ही समय बाद, उसके माता-पिता की भी मृत्यु हो गई, और एपफिनियस की माँ की भी। ट्राइफोन की पूरी संपत्ति का एकमात्र उत्तराधिकारी बनने के बाद, एपफिनियस ने अपनी बहन कैलिट्रोपिया को अपनी देखरेख में ले लिया और उसमें अपने पालक पिता और शिक्षक की अच्छी शिक्षाएँ भर दीं।

एक दिन, एपफिनियस अपने मूल गाँव के लिए उस संपत्ति का निरीक्षण करने निकला जो उसे त्रिफोन से विरासत में मिली थी। ईश्वर की कृपा से, रास्ते में उसकी मुलाकात लूसियन नामक एक भिक्षु से हुई, जो किताबें लिखकर स्वयं और गरीबों का भरण-पोषण करता था। जैसे ही एपफिनियस भिक्षु से बात कर रहा था, एक भिखारी लूसियन के पैरों को पकड़कर बोला:

'हे ईश्वर के मनुष्य, मुझ पर दया करो: मैंने तीन दिनों से रोटी नहीं खाई है, और मुझे नहीं पता कि मैं क्या खाऊँ।'

धन्य लूसियन, जिसके हाथों में कुछ भी नहीं था, ने अपने ही कपड़े उतारकर भिखारी को दे दिए, और कहा:

'शहर में जाओ, ये कपड़े बेच दो और अपने लिए कुछ रोटी खरीद लो।' एपफिनियस, जो यह सब देख रहा था, अपने मिले भिक्षु की ऐसी दयालुता पर चकित रह गया और, मानो समाधि की अवस्था में पहुँचकर, उसने एक चमकता हुआ सफेद वस्त्र देखा जो भिक्षु पर उतर रहा था और उसे ढक रहा था। भयभीत होकर, वह तुरंत घोड़े से उतर गया और भिक्षु के सामने घुटनों के बल गिरकर, उन्हें प्रणाम करते हुए बोला:

'मैं आपसे विनती करता हूँ, मुझे बताइए, आप कौन हैं?'

लुसियन ने उत्तर दिया, "पहले मुझे बताओ कि तुम किस धर्म का पालन करते हो, और फिर मैं तुम्हें अपने बारे में बताऊँगा।" एपफिनियस ने कहा:

'मैं एक यहूदी हूँ।'

तब उसके वार्तालापकर्ता—उस सूक्ष्मदर्शी बूढ़े ने—जो उससे मिलने आए यहूदी पर ईश्वर की उदधारकारी कृपा का प्रभाव देखकर—उससे निम्नलिखित शब्दों में कहा:

– यह कैसे हो सकता है कि तुम, एक यहूदी होकर, मुझसे – एक ईसाई से – पूछ रहे हो कि मैं कौन हूँ? क्योंकि यहूदियों और ईसाइयों में बहुत कम समानता होती है। अब जब तुम जान गए हो कि मैं एक ईसाई हूँ, तो तुम्हें मुझसे यह बातचीत जारी नहीं रखनी चाहिए।

'और, पिताजी, मुझे ईसाई बनने से क्या रोकता है?' एपफिनियस ने पूछा, और मसीह के अनुयायी से यह उत्तर मिला:

'तुम्हारे रास्ते में जो एकमात्र बाधा है, वह यह है कि तुम चाहो ही नहीं, क्योंकि हर अच्छे काम से पहले एक इच्छुक हृदय होता है। यदि तुम सच में ऐसा चाहते, तो तुम ईसाई बन जाते।'

ये शब्द एपफिनियस को गहराई से प्रभावित कर गए: अपने मूल गांव में अपने गृह-देश की यात्रा की अपनी मूल योजना को त्यागते हुए, वह अपने साथी से उसके साथ चलने का आग्रह करने के बाद अपने शहर के घर लौट आया। उसे अपने घर ले जाकर, उसने उसे अपनी सारी संपत्ति दिखाई।

मेज़बान ने अपने मेहमान से कहा, 'फादर, यह मेरी संपत्ति है, मैं एक ईसाई बनना चाहता हूँ और संन्यास का व्रत लेना चाहता हूँ, लेकिन मेरी एक छोटी बहन है; आप उसके बारे में क्या कहते हैं?'

ईसाई ने उत्तर दिया, 'मेरे बच्चे, तुम वास्तव में सांसारिक धन और एक बहन दोनों का स्वामित्व रखते हुए भी ईसाई बन सकते हो। इनमें से कोई भी बात पवित्र ईसाई धर्म के विपरीत नहीं है। हालाँकि, तुम संन्यास का संकल्प नहीं ले सकते।' सबसे पहले, अपनी बहन के साथ मिलकर पवित्र बपतिस्मा ग्रहण करो। फिर उसे पर्याप्त दहेज के साथ किसी ईसाई को ब्याह दो। उसके बाद, जो कुछ बचे, उसे गरीबों को दे दो। और फिर तुम एक सच्चे भिक्षु बन सकते हो।"

'यह सब, पिताजी,' एपिफेनियस ने कहा, 'मैं वास्तव में आपकी आज्ञा के अनुसार करूँगा; बस हमें ईसाई समुदाय में स्वीकार करने में देरी न करें।'

लुसियन ने कहा, 'इस बारे में, हमें बिशप को सूचित करना होगा: उनके बिना, बपतिस्मा का संस्कार नहीं किया जा सकता है। इसलिए मैं उनके पास जाऊँगा। जहाँ तक तुम्हारा सवाल है, हमारे प्रभु मसीह के प्रति अपने संकल्प और भक्ति में दृढ़ रहना। मैं जल्द ही तुम्हारे पास लौटूँगा।'

लुसियन स्थानीय बिशप से मिलने गया। इस बीच, एपिफेनियस अपनी बहन के कमरे में गया और उससे कहा:

'मैं ईसाई बनना चाहती हूँ और संन्यासी जीवन के व्रत लेना चाहती हूँ।'

'जो कुछ भी तुम चाहते हो,' उसकी बहन ने अपने भाई से कहा, 'वही मैं भी चाहती हूँ; और जो कुछ भी तुम करोगे, मैं भी वैसा ही करूँगी।'

एपिफेनियस की बपतिस्मा लेने की इच्छा के बारे में सुनकर, बिशप अत्यंत प्रसन्न हुए और उन्होंने उस अच्छे दूत से कहा:

'जाओ, उस युवक और उसकी बहन को पवित्र विश्वास में शिक्षित करो और उन्हें मसीह के विधान की शिक्षा दो। जब रविवार आए और हम चर्च में प्रवेश करें, तो उन्हें दयालु और प्रेममय उद्धारकर्ता परमेश्वर के सामने लाना, ताकि हम उन्हें पवित्र बपतिस्मा के द्वारा उनमें एक कर सकें।'

जब लूसियन एपिफेनियस के पास लौटा, तो वह और उसकी बहन बूढ़े के सामने जमीन पर सिर झुकाकर आँसुओं से विनती करने लगे:

'हम आपसे विनती करते हैं, पिताजी, हमें यथाशीघ्र ईसाई बना दीजिए।'

लुसियन ने उन्हें आश्रय देने के बाद ईसाई भक्ति का उपदेश देना शुरू किया: यह उपदेश, प्रार्थना के साथ, लगभग बिना किसी रुकावट के दिन-रात रविवार तक जारी रहा। रविवार को लूसियन एपिफेनियस और कैलट्रिोपिया को बिशप के पास ले गए। बिशप के सामने, जैसे स्वयं मसीह के सामने, वे प्रणाम कर पड़े और उनसे पवित्र शिक्षा की याचना की। उन्हें उठाकर और स्नेहपूर्वक बोलकर, उन्होंने उन्हें शिक्षा दी। फिर बिशप चर्च में गए, उनके पीछे लूसियन और उसके बाद नए उपदेशार्थी चल रहे थे। जब एपिफेनियस चर्च के प्रवेश द्वार की पहली सीढ़ी पर चढ़ा, तो उसके बाएँ पैर का चप्पल फिसल गया[3634] । जब वह अपने नंगे पैर दहलीज पर चढ़ा, तो उसके दाहिने पैर का चप्पल भी फिसल गया। एपिफेनियस अपने चप्पलों के लिए वापस नहीं मुड़े, बल्कि नंगे पैर चर्च में प्रवेश कर गए: ईश्वर की ओर बढ़ते हुए उनका उत्साह ऐसा था। चर्च के अंदर एपिफेनियस पर एक नज़र डालते ही, बिशप ने उनके सिर पर एक मुकुट और उनके चेहरे पर महिमा की चमक देखी। और बिशप और लूसियन ने एपिफेनियस और उसकी बहन को बपतिस्मा के कुंड तक ले गए और उन्हें पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम पर बपतिस्मा दिया। एपिफेनियस के धर्म-पिता लूसियन थे, और पवित्र कुंवारी वेरोनिका कैलट्रिोपिया की धर्म-माता थीं। दैवीय धर्मविधि में, नव-बपतिस्मित लोगों ने मसीह के पवित्र रहस्यों को ग्रहण किया। तब, बिशप के आदेश पर, उन्होंने उनके साथ भोजन किया और आठ दिनों तक बिशप के निवास में रहे। इसके बाद, एपिफेनियस अपनी बहन, लूसियन और वेरोनिका को अपने घर ले गए: वहाँ, एक हजार ज़लैटिक लेकर, उन्होंने उन्हें अपनी बहन के साथ, मसीह-सेवक ननों की मठ-प्रमुख के रूप में वेरोनिका के हवाले कर दिया, और दोनों महिलाओं को उनके रास्ते पर भेज दिया। अंत में, अपनी पूरी संपत्ति की बिक्री से प्राप्त आय को ज़रूरतमंदों में बाँटने और अपने लिए पवित्र पुस्तकें खरीदने के लिए केवल 400 ज़लाटिक रखने के बाद, नव-बपतिस्मित व्यक्ति लूसियन के साथ बुज़ुर्ग द्वारा स्थापित मठ के लिए शहर छोड़ गया। वहाँ दस भिक्षु रहते थे, जो पूरी लगन से पुस्तकों की प्रतिलिपि बिनाने में लगे रहते थे, जिससे वे अपनी आजीविका चलाते थे।

[3634] चप्पलें – एक प्रकार का जूता। ये चमड़े या खपच्चियों के तले से बनी होती थीं, जिन्हें पट्टे से पैर पर बांधा जाता था।

छब्बीस वर्षीय एपफिनयिस ने संन्यासी की शपथ ली और उसे लूसयिन के बाद दूसरे स्थान पर रहे संन्यासी हलिारयिन के मार्गदर्शन में रखा गया; यद्यपि वह उम्र में युवा था, वह सद्गुणों में परपिूर्ण और चमत्कार करने की महान शक्तयिों से संपन्न था। अपने गुरु का बारीकी से नरिीक्षण करते हुए, नए शष्यि ने उनके तपस्वी श्रम का अनुकरण करना शुरू कर दयिा। उसने न केवल लूसयिन के कहने पर, हलिारयिन के मार्गदर्शन में, ग्रीक ग्रंथों को पढ़ना और लखिना सीखा, बल्कि उसने उनसे संन्यास का तपस्वी और ईश्वर-प्रसन्न जीवन भी सीखा। मसीह की कृपा की मदद से, एपफिनयिस दनि-प्रतदिनि अधकि सुदृढ़ होता गया। आदरणीय लूसयिन की मृत्यु के बाद, उनके गुरु मठाधीश बन गए और उन्होंने और भी अधकि कठोर जीवन जीना शुरू कर दयिा। ऐसा प्रतीत होता था मानो वह कोई मनुष्य नहीं, बल्कि स्वर्गदूतों में से एक हों जो हमेशा ईश्वर की सेवा करते हैं। हलिारयिन का भोजन थोड़ी सी रोटी, थोड़ा नमक और पानी होता था। और वह भी वह केवल हर दूसरे दनि, या हर दो दनि में, या हर तीन दनि में ही खाते थे; और कभी-कभी तो वे पूरे सप्ताह बनिा भोजन के रहते थे। एपफिनयिस, ऐसे तपस्या को देखकर, उनकी नकल करने का प्रयास करने लगे, और उसके बाद, अपने पूरे जीवन में, महान तपस्वी हलिारयिन से अपनाए गए तपस्या के नयिम का पालन करते रहे। प्रभु ने अपने सेवक को चमत्कार करने का वरदान देकर पुरस्कृत कयिा। उनके चमत्कारों की शुरुआत इस प्रकार हुई। मठ एक जलहीन क्षेत्र से घरिा हुआ था, और भाइयों को पानी लाने के लिए पाँच पोप्रीश्ची चलना पड़ता था, और वह भी दनि के समय सूरज की असह्य गर्मी के कारण केवल रात में ही। ऐसा हुआ कि एक दनि, अत्यधकि गर्मी वाले दनि, कुछ गुज़रते हुए यात्री अपनी भयंकर प्यास बुझाने के लिए मठ में आए। लेकनि भक्षिु ऐसा करने में असमर्थ थे, क्योंकि उस समय मठ में पानी की एक बूंद भी नहीं थी। यात्री पहले ही मरने की उम्मीद कर रहे थे। एपफिनयिस, उन पर दया करके, उन्होंने उनके द्वारा ले जाई जा रही शराब के पात्र की ओर अपना हाथ बढ़ाया, और उसे छूते हुए भाइयों से कहा:

'भाइयों, मुझ पर वश्विास करो, कि जिसिने एक बार पानी को शराब में बदल दयिा था, वह अब शराब को पानी में बदलने के लिए पर्याप्त शक्तशिाली है (यूहन्ना 2:1–11)।'

और एपफिनयिस के वचन पर, तुरंत ही शराब पानी में बदल गई। प्रसन्न यात्रयिों ने न केवल मन भरकर पयिा, बल्कि अपने पशुओं को भी पलिाया। इसके बाद, पानी फरि से शराब में बदल गया। यह चमत्कार देखकर सभी अनायास ही चकति रह गए और तब से उन्होंने एपफिनयिस को उनके पवत्रि जीवन के लिए वशिेष सम्मान देना शुरू कर दयिा। हालाँकि, वह अपने भाइयों का यह सम्मान सहन नहीं कर सके और गुप्त रूप से मठ छोड़कर स्पैंड्रयिन रेगस्तिान में शरण ले गए, जहाँ वे उगने वाले अनाज पर नरि्भर होकर जीवन यापन करने लगे।

कुछ समय बाद, उस रेगस्तिान से यात्रा कर रहे चालीस सारासेन[3635] ने एपफिनयिस को उनके मठीय वस्त्रों में देखा और उनका मज़ाक उड़ाने लगे। डाकुओं में एक एक-आँख वाला व्यक्ति था, जो अपनी क्रूरता और अमानवीयता के लिए वशिेष रूप से कुख्यात था। अपनी तलवार खींचकर, वह एपफिनयिस पर वार करने ही वाला था।

लेकनि जैसे ही उस डाकू ने वार करने के लिए अपना हाथ उठाया, उसकी आँख ठीक हो गई। हैरानी में, उसने अपनी तलवार जमीन पर फेंक दी, और अपने साथयिों से देखने के लिए अपनी ठीक हुई आँख की ओर इशारा कयिा। इस चमत्कार के गवाहों ने एपफिनयिस को जबरदस्ती अपने साथ ले लयिा, और कहा:

'तुम हमारे देवता हो; हमारे साथ चलो और हमें आने वाली वपित्तयिों से बचाओ।'

तीन महीने तक संत उनके साथ यात्रा करते रहे। उन्होंने उन्हें सभी बुरे कामों से रोका और अपनी उपस्थति में किसी भी तरह की अराजकता करने से रोका, उन्होंने वह सारा समय उन्हें सच्चे ईश्वर के ज्ञान की शक्षिा देने में बतिाया, और उनमें ईश्वर का एक उद्धारकारी भय पैदा कयिा।

उन्होंने उनसे कहा, 'यदि तुम अपने बुरे कर्म नहीं छोड़ोगे, तो तुम पृथ्वी पर समृद्धि नहीं पाओगे और प्रभु के धर्मी और दंडात्मक क्रोध के नीचे नष्ट हो जाओगे।'

हालाँकि, वह नम्र साधु इन अभद्र डाकुओं का नेता अधकि समय तक नहीं रह सका। तीन महीने बाद, मानव रूप में मौजूद राक्षसों के लिए देहधारी देवदूत की अथक चेतावनयिाँ और रोक-टोक बल्कि‌ुल असहनीय हो गईं। और जहाँ पहले, जब वे चमत्कारी संन्यासी से मलिते थे, तो वे उनसे अपने साथ चलने की वनिती करते थे, वहीं अब, इसके वपिरीत, वे संत से अपने पुराने नविास में लौटने की प्रार्थना करने लगे। उसे वहाँ ले जाने के बाद, उन्होंने उसके लिए एक झोपड़ी बनाई। फरि

[3635] सारासेन – अरब के नविासी। मूल रूप से, यह नाम एक खानाबदोश डाकू जनजाति को संदर्भति करता था, लेकनि बाद में ईसाई लेखकों ने इस शब्द को सामान्य रूप से सभी मुसलमानों पर लागू कर दयिा।

वे उससे वदिा हो गए, सविाय एक के जो मसीह में वशि्वास करने लगा था और परम पूज्य का एक योग्य शषि्य बन गया था। डेढ़ साल तक, मसीह-प्रेमी शकि्षक ने पश्चातापी डाकू को पवत्रि धर्मग्रंथों में शकि्षति कयिा और उसे तपस्वी जीवन में मार्गदर्शन दयिा। इसके बाद, गुरु अपने शषि्य के साथ संत हलिारयिन के मठ गए और उन्होंने उस नव-उपदेशति व्यक्ति का बपतस्मिा देने के लिए कहा। महान मठाधीश ने उस पर यह संस्कार कयिा, और उसका नाम जॉन रखा। जॉन ने कभी भी अपने गुरु का साथ नहीं छोड़ा और अपनी मृत्यु तक, जो कि उस पूजनीय संत से पहले हुई, उनके जीवन का वृत्तांत लखिा।

मठ से तपस्या-स्थल लौटते समय, संत एपफिानयिस और उनके नव-बपतस्मिा प्राप्त शषि्य जॉन का सामना एक भूत-ग्रस्त युवक से हुआ जो रेगस्तिान में नग्न भटक रहा था। उस पर दया करके, संत ने प्रभु ईश्वर से प्रार्थना करने के बाद, उससे राक्षस को बाहर नकिाल दयिा। राक्षस, अपने पूर्व पीड़ति को छोड़ते हुए, चलि्लाया:

'हे एपफिानयिस, तुम मुझे उस स्थान से बाहर नकिाल रहे हो जहाँ मैं बाईस वर्षों से रहा हूँ, लेकनि मैं तुम्हें फारस खींच ले जाऊँगा, जहाँ तुम अपनी इच्छा के वरिुद्ध राजा के सामने उपस्थति होओगे।'

इतना कहकर, दानव गायब हो गया। हालाँकि, वह युवक पूरी तरह से स्वस्थ हो गया था और अपने उपचारकर्ता के पैरों पर गरिकर, उसने उनका धन्यवाद कयिा। स्वस्थ हुए व्यक्ति को ईश्वर का धन्यवाद करने की आज्ञा देकर, संत ने उसे घर भेज दयिा। इस बीच, नषि्कासति दानव, फारस पहुँचकर[3636] , राजा की बेटी में प्रवेश कर गया और उसे बुरी तरह से सताना शुरू कर दयिा। ऐसा करते हुए, वह चलि्लाया:

'जब तक एपफिानयिस यहाँ नहीं आता, मैं इस कन्या को नहीं छोड़ूँगा। एपफिानयिस, जो फनिसिियिा का नविासी है, यहाँ आओ, और मैं राजा की बेटी को छोड़ दूँगा।'

राजा ने, फनिसिियिा के देश के बारे में सुनकर, एपफिानयिस को खोजने के लिए अपने सेवकों को वहाँ भेजा। हालाँकि, फनिसिियिा के सभी कस्बों और गाँवों में उसके बारे में पूछताछ करते समय, वे कुछ भी पता नहीं लगा सके और स्थानीय लोगों द्वारा लगभग मार डाले गए, जनि्होंने उन्हें जासूस समझ लयिा था। जब वे राजा के पास खाली हाथ लौटे, तो उस कन्या के भीतर का शैतान ज़ोर-ज़ोर से चलि्लाता रहा:

'एपफिानयिस स्पैंड्रयिन नामक रेगस्तिान में रहता है; उसे यहाँ ले आओ।'

तब राजा ने अपने तीस सबसे भरोसेमंद लोगों को बुलाया और उनसे कहा:

'अपने फारसी वस्त्र उतार दो और यूनानी वस्त्र पहन लो; फनिसिियिा जाओ और स्पैनड्रियिस नामक एक सुनसान जगह खोजो। वहाँ तुम्हें एपफिानयिस नाम का एक व्यक्ति मलिेगा। उसे अपने साथ ले आओ और मुझे मेरे पास ले आओ।'

अपना कपड़ा बदलकर, दूत नकिल पड़े और उस रेगस्तिान में पहुँच गए। उन्होंने वहाँ लंबे समय तक एपफिानयिस को खोजा। अंत में, एक व्यक्ति के नर्दिेशों का पालन करते हुए, वे रात में उसकी कुटयिा पर पहुँचे, जबकि संत एपफिानयिस ( ) अपनी प्रथा के अनुसार अपने शषि्य के साथ अपनी रात की प्रार्थना कर रहे थे। उन्होंने उसके दरवाज़े पर ज़ोर से दस्तक दी। लेकनि मसीह के तपस्वी, अपनी प्रार्थना की दनिचर्या में बाधा नहीं डालना चाहकर, प्रार्थना में ही लगे रहे, दरवाज़े पर होने वाली खटखटाहट से बलि्कुल भी वचिलति हुए बनिा और मानो उस पर ध्यान ही न दे रहे हों। एक भयानक क्रोध से भरकर, फ़ारसयिों ने अंततःसेल के दरवाज़े तोड़ने का नशि्चय कयिा। उनमें से एक ने दरवाज़े पर वार करने के लिए अपना हथयिार उठाया। और अचानक उसका उठा हुआ हाथ लकड़ी का हो गया और मुरझा गया। बाकी लोग, डर के मारे, अनजाने में ही कोठरी से कुछ दूरी पर पीछे हट गए और भोर का इंतज़ार करने लगे। भोर होते ही, एपफिानयिस, जो पहले ही अपनी रात और सुबह की प्रार्थनाएँ कर चुके थे, ने दरवाज़ा खोला और बाहर कदम रखा। उस सम्मानति पति को देखते ही, जसि पर प्रहार कयिा गया था, वह व्यक्ति उनके सामने साष्टांग दंडवत हो गया और बोला:

'हे अमर ईश्वर के सेवक, मुझ पर दया करो।'

'एक पापी आदमी से आप क्या चाहते हैं?' ईश्वर के वनिम्र सेवक ने पूछा।

उसने उत्तर दयिा, 'मैं इस स्थान पर अच्छे स्वास्थ्य में आया था, और अब मेरा हाथ सूख गया है।'

'जसि प्रकार आप यहाँ अच्छे स्वास्थ्य में आए हैं,' पूज्य ने कहा, 'उसी प्रकार आप अच्छे स्वास्थ्य में रहें।'

इन शब्दों के साथ, उन्होंने मुरझाए हुए हाथ को छुआ, और वह तुरंत दूसरे हाथ जतिना ही स्वस्थ हो गया। ऐसा चमत्कार देखकर, ठीक हुए व्यक्ति के साथी संत के पास आए और, झुककर, अपनी आने की वजह बताई: उन्होंने उससे

[3636] परसयिा ईरानी पठार के पश्चमिी भाग में स्थति है।

राजा की बेटी को ठीक करने के लिए राजा के पास जाने की विनती की। रेवरेंड को यह एहसास हुआ कि जिसे आत्मा को उन्होंने उस युवक से भगाया था, वह फारस के राजा की बेटी में प्रवेश कर गई थी, तो उन्होंने प्रार्थना से उस दानव के खिलाफ खुद को तैयार किया और ईश्वर पर भरोसा करके, अपने शिष्य के साथ फारसियों के ऊंटों पर सवार होकर चल पड़े। पैंतीस दिनों के बाद, यात्री फारस पहुँचे और उरियन शहर में रुके। तीन फारसी एपफिनियस के आगमन की सूचना देने के लिए राजा के पास गए। राजा ने तुरंत आदेश दिया कि उसे उसके सामने लाया जाए। रेवरेंड उसके पास एक आम आदमी की तरह गए, न कि एक राजा की तरह। पार्थिव शासक स्वर्गीय राजा के वफादार सेवक का स्वागत करने के लिए अपने सिंहासन से उठ खड़े हुए। संत ने उनसे सच्चे ईश्वर, हमारे उद्धारकर्ता मसीह, और उनकी अजेय शक्ति के बारे में बात की, जो हर प्रकार के दुष्टात्मा को भगा देती है। उनकी बातचीत के बाद, राजा की दुष्टात्मा ग्रस्त बेटी को चमत्कार करने वाले संत के सामने लाया गया। पीड़ित लड़की के लिए ईश्वर से प्रार्थना करने के बाद, संत ने उसके ऊपर तीन बार क्रॉस का चिह्न बनाया। ऐसा करते ही राक्षस ने युवती को छोड़ दिया, जो इसके बाद पूरी तरह से स्वस्थ हो गई। अपनी बेटी के ठीक होने से प्रसन्न होकर, राजा ने आदरणीय संत के सामने झुककर नमस्कार किया।

[3637]चमत्कार देखने वाले फारसी मजूसों में से एक ने पूजनीय से कहा:

'हे प्रिय मग, जो हमारी शिक्षाओं को सुधारने के लिए यहाँ आए हैं, हमारे साथ यहीं ठहरिए और हमें सिखाइए, और हम सभी, फारसी मग, आपकी बात सुनेंगे।'

मगस के शब्दों के जवाब में, संत ने उसे धमकी भरी नज़रों से घूरकर गुस्से में कहा:

'हे सत्य के शत्रु! तेरा झूठा मुँह बंद हो जाए, क्योंकि तूने मुझे, मेरे प्रभु यीशु मसीह के सेवक को, एक जादूगर कहा है।'

और उसी क्षण जादूगर गूंगा हो गया। सभी लोग अनैच्छिक रूप से भयभीत हो गए। गूंगा हो गया हुआ आदमी परमप्रभु के सेवक के पैरों पर गिर पड़ा और, सिर झुकाकर, उससे अपनी वाणी वापस दिलाने की विनती करने लगा। उसे पर्याप्त शिक्षा देने के बाद, उस दयालु धर्मी व्यक्ति ने दंडित व्यक्ति को चंगा कर दिया।

ठीक हो चुका आदमी चिल्लाया, 'हे परमेश्वर के सेवक, मैंने तुझ पर पाप किया है, मुझे क्षमा कर।'

इस बीच, कृतज्ञ ज़ार ने आदेश दिया कि अद्भुत चिकित्सक को उपहार स्वरूप बड़ी मात्रा में सोना, चाँदी और कीमती पत्थर लाए जाएँ। सांसारिक मोह से परे रहने वाले संन्यासी ने अपने लिए कुछ भी नहीं लिया।

'हम ये क्षणिक धनाढ्यताएँ नहीं चाहते,' उसने राजा से कहा, 'बल्कि भविष्य के जीवन में बेहतर, शाश्वत धनाढ्यताओं की आशा करते हैं, जो हमारे प्रभु मसीह ने हमें वचन दिया है। 'आप अपनी चीज़ें अपने पास ही रखें; आपको धन इकट्ठा करना पसंद है, और इसके कारण आप अपनी आत्मा को बर्बाद कर रहे हैं, क्योंकि सोने के प्रेमी होने के नाते, आप दूसरों की चीज़ें चुराते हैं, फिर भी ज़रूरतमंदों को कुछ नहीं देते।'

उन्होंने राजा के साथ भोजन करने के निमंत्रण को भी अस्वीकार कर दिया।

'मेरे नाजुक शरीर को बनाए रखने के लिए एक भूसी की रोटी और थोड़ा सा नमक ही काफी है,' महान तपस्वी ने राजा के बुलावे के जवाब में कहा। हालाँकि, संत के मना करने के बावजूद जब राजा ने उन्हें और जॉन को एक निजी कमरे में ले जाने का आदेश दिया, जहाँ की मेज कीमती व्यंजनों से लदी हुई थी, तो उस कठोर तपस्वी ने रोटी के अलावा कुछ भी नहीं चखा।

मसीह के इस सच्चे अनुयायी ने महल में दस दिन बिताए, और राजा को पवित्र ईसाई धर्म की शिक्षा दी। लेकिन ईसाई उपदेश के बीज पत्थर के दिल और मूर्तिपूजा से अंधे मन पर पड़े। अविश्वासी राजा के साथ अपनी अंतिम मुलाकात में, संत एपफिनियस ने उसके सामने धर्मी न्याय, दया, राक्षसों के सेवक के रूप में मगों, और ईसाई राजाओं के खिलाफ युद्ध छेड़ने की अनुमेयताहीनता पर एक उपदेश दिया:

'यदि तुम उनके विरुद्ध युद्ध करोगे, तो तुम स्वयं मसीह के शत्रु बन जाओगे, जिन्हें सूली पर चढ़ाया गया था, और तुम एक भयानक तरीके से विनिष्ट हो जाओगे,' उस धर्मी पुरुष ने निष्कर्ष निकाला, जब शासक स्वयं उसे शाही कक्षों से बाहर ले जा रहा था। महलों से निकलते समय, जीवित परमेश्वर के सेवक ने एक शव को दफ़नाने के लिए ले जाते देखा। उसे उठाए हुए लोगों को रुकने का आदेश देकर, संत एपफिनियस ने आकाश की ओर देखते हुए कहा:

[3637] प्राचीन काल में, 'मागी' शब्द का अर्थ व्यापक ज्ञान रखने वाले बुद्धिमान पुरुषों से था, विशेष रूप से प्रकृति की छिपी हुई शक्तियों और खगोलीय पिंडों के बारे में। वे प्राकृतिक घटनाओं का अवलोकन करते थे, सपनों की व्याख्या करते थे और भविष्य की भविष्यवाणी करते थे; अधिकांशत; वे पुरोहित भी होते थे और उन्हें शाही दरबारों और आम लोगों दोनों के बीच बहुत सम्मान प्राप्त था।

'हे परमेश्वर के पुत्र, जिसने चार दिन से मरे हुए लाजरुस को जीवित किया (यूहन्ना 11:39-44), इस मरे हुए मनुष्य को भी अपने परम पवित्र नाम की महिमा के लिए जीवित कर।'

प्रार्थना करने के बाद, संत एपिफानियस ने मृतक को छुआ, और वह तुरंत जीवित हो उठा। उसके आसपास के लोग भय से भर गए और चमत्कार करने वाले को देवताओं में से एक समझ बैठे। लेकिन उस विनम्र संन्यासी ने, खुद को परमेश्वर का सेवक बताते हुए, उन्हें पवित्र त्रिमूर्ति में महिमामय सच्चे परमेश्वर के बारे में उपदेश दिया। चूंकि उनके श्रोता मसीह के झुंड में नहीं थे, वह जल्दबाजी में अपने देश लौट आए। राजा उन्हें फारस की सीमा तक एक सुरक्षा दल के साथ भेजना चाहता था। लेकिन मसीह के नडिर योद्धा ने मना कर दिया।

उसने राजा से कहा, 'मेरी रक्षा के लिए ईश्वर हैं, और उनके योद्धा—पवित्र स्वर्गदूत।'

तब राजा ने तपस्वी को विदा कहकर, इन शब्दों के साथ उन्हें रवाना किया:

'एपिफानियस, यूनानियों के गौरव, शांति से जाओ; और फारस में रह गए हम लोगों को याद रखना।'

और संत, ईश्वर की सुरक्षा में, अपनी निर्जन स्थल की ओर चल पड़े, जिसे सारसेनों ने उनके लिए बनाया था। वहाँ पहुँचने पर, उन्होंने एक बार फिर मौन में स्वयं को समर्पित कर दिया।

बस्ती के आसपास बहुत दूर तक पानी नहीं था। ईश्वर के उस पुरुष ने, प्रभु परमेश्वर से प्रार्थना करने के बाद, सूखी भूमि से पानी का एक झरना निकाला, ठीक वैसे ही जैसे मूसा ने एक बार जंगल में चट्टान से निकाला था (गिनती 20:11)। तब, अपने शिष्य की मदद से, तपस्वी ने एक छोटा सा बगीचा लगाया, उसमें खाने योग्य अनाज बोए, और उन्हें चमत्कारी झरने से पानी दिया। लेकिन बगीचे में आने वाले जानवर उन्हें खा गए। बगीचे में इन अवांछित मेहमानों को एक बार देखने के बाद, पूजनीय ने उनसे, मानो वे इंसान हों, इन शब्दों में कहा:

'इस गरीब और पापी मनुष्य को नुकसान मत पहुँचाओ जो अपने पापों का शोक मनाने के लिए यहाँ बसा है: मेरे पास इस अनाज का केवल थोड़ा सा हिस्सा है, जो ईश्वर ने मुझे मेरे जीवन-यापन के लिए दिया है।'

और जानवर, मानो समझ गए हों, शर्मिंदा होकर चले गए और संत को फिर कभी कोई नुकसान नहीं पहुँचाया। स्पैंड्रियस रेगिस्तान के पवित्र तपस्वी की ख्याति पूरे फिनिसिया में फैल गई। इससे सारासेन एक बार फिर उनके पास आए; वे उनका आशीर्वाद लेना चाहते थे और उनके चारों ओर इकट्ठा हुए कई शिष्यों के लिए उन्होंने तीन और कोठरियाँ बनवाईं। शीघ्र ही वहाँ एक पूर्ण विकसित मठ स्थापित हो गया, जिसमें 50 भाई थे। उनमें रोमन एपार्क[3638] के पुत्र एटियस कैलिकिस्टस भी थे। उन्होंने एपिफानियस से निम्नलिखित कारण से मठवासी संन्यास की शपथ ली। अपनी युवावस्था में एक राक्षस के वश में आ जाने के कारण, उन्होंने एक बार सपने में एपिफानियस को देखा, जिन्होंने उनसे कहा:

'क्या तुम चाहते हो, कैलिकिस्टस, कि मैं तुमसे इस अशुद्ध आत्मा को भगा दूँ?'

जिस युवक के सपने में वह आया था, उसने पूछा, 'हे स्वामी, आप कौन हैं जो इस भयंकर यातना देने वाले को मुझसे दूर कर सकते हैं?' उसने उत्तर दिया:

'मैं एपिफानियस हूँ, जो फिलिस्तीन के फोएनशिया में स्पैनड्रियम नामक एक मरुस्थल मठ में रहता हूँ। अगर मैं तुम्हारे भीतर से इस दुष्ट आत्मा को भगा दूँ, तो क्या तुम मेरे पास आकर मेरे मठ में मेरे साथ रहोगे?'

बीमार व्यक्ति ने उत्तर दिया, "महाराज, बस इस यातना देने वाले को मुझसे भगा दीजिए, और मैं तुरंत आपके पास आकर आपके साथ आपके मठ में रहूँगा।"

एपिफानियस ने कैलिकिस्टस को चेतावनी दी, "सावधान रहना, मेरे बच्चे, अपना वादा मत तोड़ना।"

जागने पर, भूतग्रस्त व्यक्ति पूरी तरह से ठीक महसूस कर रहा था और उसने अपने माता-पिता को अपनी चमत्कारी चिकित्सा के बारे में बताया। तीन महीने बाद, कैलिकिस्टस ने उनसे निम्नलिखित अनुरोध किया।

'मुझे मास्टर एपिफानियस को खोजने के लिए फिलिस्तीन में फिनिसिया जाने दो, ताकि मैं उनके साथ रह सकूँ – मुझे डर है कि वह यातना देने वाला, शैतान, मुझ पर फिर से आ सकता है।'

उसके माता-पिता ने तुरंत अपने बेटे को उसके दासों और बहुत सारा सोना-चांदी के साथ उस आदरणीय व्यक्ति के पास भेज दिया। अपने उपचारक के निवास पर पहुँचने पर, ठीक हो चुका व्यक्ति उनके हाथों से मठ का वस्त्र ग्रहण किया और मठ के निर्माण के लिए अपने साथ लाई सोना-चांदी उन्हें दे दी; उसने अपने दासों को वापस अपने माता-पिता के पास भेज दिया।

[3638] एपार्क एक प्रांत का प्रमुख होता है।

उस समय, मसीह का एक और तपस्वी पूरे फलिस्तीन में प्रसद्धि था - आदरणीय हलिारयिन महान, जनिका तपोवन गैसयिन मायूम के पास रेगस्तिान में था। एक बार संत एपफिानयिस अपने शष्यि जॉन के साथ उनसे मलिने आए थे। मठाधीश और भाइयों ने मेहमानों का गर्मजोशी से स्वागत कयिा और उन्हें कई दनिों तक अपने पास रखा। इस दौरान, शैतान ने एपफिानयिस का रूप धारण कर लयिा और हलिारयिन महान के यहाँ से लौटते हुए, अपने मठ में आ गया। रूप बदलकर आए राक्षस को एक लापरवाह और असावधान भाई ने देखा, जो बनिा कसिी उचति कारण के मठ छोड़कर गया था। उसे असली एपफिेनीयस समझकर, वह उसके सामने झुक गया, और तुरंत ही राक्षस, उसमें प्रवेश करके, उसे सताना शुरू कर दयिा। भाइयों ने जब उसे उन्मत्त देखा, तो वे इस बात से हैरान थे कि अब तक स्वस्थ रहे एक भक्षिु पर यह कष्ट कैसे आ गया, और वे उसके लिए दुखी हुए। जो बात उनके साथी भक्षिुओं के लिए अकल्पनीय थी, वह उनकी दूरदर्शी मठाधीश ने अपनी आध्यात्मकि अंतर्दृष्टि से पहले ही देख लयिा था, जो उस समय वहाँ मौजूद नहीं थे।

तब एपफिानयिस ने हलिारयिन से कहा, 'पतिाजी, एक भेड़यिा मेरी भेड़ों के झुंड में घुस आया है और मेरी भेड़ों को सता रहा है: मैं उसे भगाने जा रहा हूँ।'

यह कहकर, उन्होंने महान वरष्ठि और भाइयों से वदिा ली। मठ में जल्दी से लौटकर, उन्होंने अपनी उपस्थति मात्र से शैतान को उसके धोखे के शकिार व्यक्त से नकिलने के लिए मजबूर कर दयिा। फरि ठीक हुए व्यक्त ने उन्हें बताया कि वह कैसे पसिति हो गया था। उसका वृत्तांत सुनने के बाद, संत ने भाइयों को शैतान की चालाकयिों से सावधान रहने की हदिायत दी।

एपफिानयिस के मठ से बहुत दूर नहीं, रेगस्तिान से होकर जाने वाले एक रास्ते पर, एक भयंकर शेर रहता था जसिने कई राहगीरों को मार डाला था, इसलिए यात्री केवल बहुत बड़े समूहों में ही आगे बढ़ने का जोखमि उठाते थे। एक दनि वे सब इकट्ठा होकर, रेवरेंड फादर से मलिने मठ आए और उन्हें उस जानवर की रक्तपपिासा के बारे में बताया, जसिने इतने लोगों की जान ले ली थी। उनकी बात सुनने के बाद, रेवरेंड फादर ने उनसे कहा:

'आओ, मेरे बच्चों, प्रभु के नाम पर, और चलो हम उस सहि को देखने चलें।'

और वे सभी चल पड़े। जैसे ही वे सहि के बलि के पास पहुँचे, उन सभी पर डर सवार हो गया, और वे सभी वापस मुड़ना चाहते थे। लेकनि संत ने कहा:

'मुझे दखिाओ कि वह कहाँ है।'

उन्होंने उसे दूर खड़े होकर दखिाया। फरि पादरी जानवर की ओर बढ़े, पुकारते हुए:

'शेर का बलि कहाँ है?'

तुरंत, सहि ने मानव की आवाज़ सुनकर अपनी गुफा से छलांग लगाई; लेकनि, संत का चेहरा देखते ही वह मृत लोट गया। दूर खड़े लोग, सहि को बाहर आते देख, यह सोचकर कि वह एपफिानयिस को चीर-फाड़ डालेगा, डरकर भाग गए। लेकनि ईश्वर के पुरुष ने उनसे ऊँचे स्वर में पुकारा:

'डरो मत, मेरे बच्चों: आओ और इस जानवर की लाश को देखो।' बहुत हचिकचिाहट के बाद, उन्होंने संत के पास जाने का साहस कयिा और, उसके पैरों तले पड़े मृत शेर को देखकर, वे बहुत आश्चर्यचकति हुए और परमेश्वर की महमिा करने लगे।

[3639]चमत्कार करने का वरदान और कई अन्य वरदानों के साथ-साथ, प्रभु ने अपने वफादार सेवक को ज्ञान और पवत्रि धर्मग्रंथों की व्याख्या का महान वरदान भी दयिा। वे उन्हें अपने भाइयों को पढ़कर सुनाते थे, और उन्हें स्पष्ट रूप से और इस तरह समझाते थे कि सभी समझ सकें। एक ग्रीक दार्शनकि ने उनकी वद्विता और तीव्र बुद्धि के बारे में सुना। एडेसा[3640] से संत के मठ में आए, उस दार्शनकि ने उनके साथ हेलेनकि ऋषयिों के कार्यों के आधार पर बहस की: उसने ग्रीक बहुदेववाद की प्रशंसा की, जबकि एपफिानयिस ने पवत्रि धर्मग्रंथों की शक्षिाओं के माध्यम से एक ईश्वर

[3639] ज़ंजीरें – बंधन, बेड़यिाँ।

[3640] एडेसा, जो अब उर्फ़ा है, उत्तरी मेसोपोटामयिा में यूफ्रेट्स नदी पर एक शहर है; 137 ईसा पूर्व से, यह नवगठति राज्य ओज्रोएन या एडेसा की राजधानी थी; 217 ईस्वी में, इसे रोमनों ने एक पूर्वी कॉलोनी में बदल दयिा। एडेसा में ईसाई धर्म जल्दी फैल गया; चौथी शताब्दी में, सेंट एफ्रेम द सीरयिन ने वहाँ एक धर्मशास्त्र वद्यिालय की स्थापना की, जो पाँचवीं शताब्दी में नेस्टोरयिनवाद की ओर झुक गया, जसिके लिए एडेसान स्कूल के शक्षिक, प्रेस्बटिर इवा, एक वशिष रूप से सक्रयि समर्थक थे। 641 में, अरब खलीफ़ों ने एडेसा पर वजिय प्राप्त की; 1098 में इसे काउंट बाल्डवनि ने जीत लयिा, जसिने इसे एडसा की रयिासत की राजधानी बना दयिा; 1144 में इसे तुर्कों ने जीत लयिा और उस समय से यह हाथों-हाथ बदलती रही, जब तक कि 1637 में यह अंततः तुर्की के शासन में नहीं आ गई।

में, पवत्रि त्रमिूर्तमिें महमिामंडति, ईसाई वशि्वास की सच्चाई को सदि्ध कयिा। उस ग्रीक वदि्वान ने उस ईसाई संत के मठ में पूरे एक वर्ष बतिाए, उसके साथ बहस करते हुए और संत तथा उनके शषि्यों के दैवीय जीवन का अवलोकन करते हुए। इसके अलावा, एपफिानयिस द्वारा कएि गए चमत्कारों को देखकर, वह दार्शनकि धीरे-धीरे मसीह की सच्चाई को पहचानने लगा। अंतत; नमि्नलखिति चमत्कार ने उन्हें वशिेष रूप से प्रभावति कयिा और उन्हें नरि्णायक रूप से ईसा मसीह के चमत्कारों में वशि्वास दलिा दयिा। साठ लोगों ने एक दानव-ग्रस्त व्यक्तकिो, जो बेड़यिों में जकड़ा हुआ था, मठ में लाया। रेवरेंड ने दार्शनकि से कहा:

'सुनो, हे दार्शनकि, तुम जो पापी एपफिानयिस से बहस करते हो: या तो तुम अपने देवताओं का आह्वान करके इस आदमी से इस उग्र दानव को भगा दो, ताकमिैं उन पर वशि्वास कर सकूँ; या मैं अपने ईश्वर, सूली पर चढ़ाए गए यीशु मसीह का आह्वान करूँगा, और दानव को भगा दूँगा, और फरि तुम हमारे ईसाई धर्म में परविर्तति हो जाओगे।'

दार्शनकि चुप रहा, उसे कोई जवाब सूझ नहीं रहा था। तब संत ने, ईश्वर के नाम का उच्चारण करते हुए, दानव को फटकारा और उसे ईश्वर की सृष्टसिे बाहर नकिाल दयिा। इस चमत्कार के बाद, दार्शनकि चमत्कार करने वाले के पैरों में गरि पड़ा, बपतस्मिा देने का आग्रह करते हुए और एक सच्चे ईश्वर, सूली पर चढ़ाए गए मसीह की गवाही देते हुए। रेवरेंड ने नव-धर्मपरविर्तति व्यक्तकिो हलिारयिन के पास भेजा, जनि्होंने उसे एपफिानयिस नाम से बपतस्मिा दयिा। बाद में, बपतस्मिा प्राप्त उस व्यक्तने भकि्षु जीवन के संन्यास-व्रत ग्रहण कर लिए, और वह एक पुरोहति तथा भकि्षुओं का मठाधीश बन गया।

हर दनि, बड़ी संख्या में भकि्षु और गृहस्थ वभिनि्न स्थानों से रेवरेंड के पास आते थे। अपने पवत्रि एकांत में इन अनगनित और अवांछति घुसपैठयिों से बचने के लिए, एपफिानयिस ने मस्रि की भूमभिें चले जाने का फैसला कयिा। यह अच्छी तरह जानते हुए कभिाई उन्हें जाने नहीं देंगे, उन्होंने उन्हें बुलाया और कहा:

'मैं महान वरषि्ठ हलिारयिन से मलिने जाना चाहता हूँ।'

भाइयों ने अपने गुरु की मंशा को भांपते हुए, एक चीख के साथ उनके सामने साष्टांग दंडवत कयिा और उनसे वनिती की कवि उन्हें छोड़कर न जाएँ। वरषि्ठ ने उन्हें न छोड़ने का वचन दयिा और अपनी कोठरी में ही रहे। लेकनि दस दनि बाद, अपने शषि्य यूहन्ना के साथ, उन्होंने गुप्त रूप से मठ छोड़ दयिा और यरूशलेम के लिए रवाना हो गए[3641] । वहाँ प्रभु के क्रूस के जीवन-दायक वृक्ष को प्रणाम करने के बाद, उन्होंने यरूशलेम के अन्य पवत्रि स्थलों पर भी प्रार्थना की। फरि वे जोप्पा[3642] गए, जहाँ एक बंदरगाह था, और अलेक्जेंड्रयिा[3643] के लिए रवाना होने वाले एक जहाज पर सवार हो गए। शहर में प्रवेश करते ही, उनका सामना कानून के एक यहूदी शकि्षक अक्वलिा से हुआ, जो पवत्रि धर्मग्रंथों के आधार पर उनके साथ आस्था पर बहस करना चाहता था। यह बहस दो दनि तक चली। अंत में, वह यहूदी, ईसाई से पराजति होकर, बपतस्मिा लेना चाहता था। रेवरेंड फादर उसे आर्चबशिप अथेनासयिस के पास ले गए। संत ने उन्हें दोनों को खुशी-खुशी स्वीकार कयिा: यहूदी को मसीह की ओर मुड़ने वाले के रूप में, और एपफिानयिस को सही रास्ते पर ले जाने वाले के रूप में। कुछ ही समय बाद, अलेक्जेंड्रयिा के एपफिानयिस अपने शषि्य के साथ थेबाइड के लिए रवाना हो गए[3644] । वहाँ उनका स्वागत एंथनी द ग्रेट के एक पूर्व शषि्य, पाफनुटयिस ने कयिा[3645] ।

[3641] *यरूशलेम,* जसिका हब्रिू में अर्थ 'शांतकिा नविास' है, फलिस्तीन का सबसे पुराना और सबसे प्रसदि्ध शहर है। यह कदि्रोन घाटी के स्रोत पर, यॉर्डन नदी और मृत सागर से बहुत दूर नहीं, यहूदी पहाड़यिों की तीन उप-श्रेणयिों: अकर, सयिोन और मोरयि्याह की ढलानों पर स्थति है। यरूशलेम की उत्पत्तकिा पता अब्राहम के समय से लगाया जाता है, इस धारणा पर कयिह सेलम का शहर है, जहाँ मेल्कीजेदक राजा और महायाजक दोनों थे (उत्पत्ति 14:18)। यह शहर, जसिे पुराने और नए नयिम में चुने हुए यहूदी लोगों की ऐतहिासकि घटनाओं का केंद्र बदिु माना जाता है, हर ईसाई के लिए प्रभु यीशु के दुख और पुनरुत्थान के स्थल और ईसाई चर्च के पालने के रूप में अतुलनीय रूप से प्रयि है, जहाँ से सुसमाचार का वचन पूरे ब्रह्मांड में फैला।

[3642] जोपा (अब याफ़ा) एशयिा के सबसे पुराने शहरों में से एक है, जो भूमध्य सागर के उत्तर-पश्चमिी तट पर स्थति है। यह सोलोमन के शासनकाल से ही एक यहूदी बंदरगाह था।

[3643] अलेक्जेंड्रयिा – मस्रि का एक महत्वपूर्ण बंदरगाह शहर, जसिकी स्थापना सन 332 ईसा पूर्व में महान अलेक्जेंडर ने भूमध्य सागर के दक्षणिी तट से बाहर नकिले एक प्रायद्वीप पर की थी, जो आज के उसी नाम के शहर से थोड़ा दक्षणि में है; यह कभी शकि्षा का केंद्र और दुनयिा का अग्रणी व्यापारकि शहर था; चौथी शताब्दी की शुरुआत में, यह ईसाई धर्म का केंद्र और पैट्रआर्क (धर्मगुरु) का आसन बन गया।

[3644] प्राचीन काल में प्रसदि्ध थेब्स शहर का क्षेत्र; इस नाम का उपयोग इसके प्रमुख शहर के बाद पूरे ऊपरी (दक्षणिी) मस्रि को संदर्भति करने के लिए भी कयिा जाता था। यहाँ स्थति मरुभूमचिौथी और पाँचवीं शताब्दी के पूर्वी तपस्वयिों के लिए एक पसंदीदा वशि्राम स्थल थी।

[3645] संत एंथोनी महान, जो मठवासी जीवन के प्रथम संस्थापक और मस्रि के मूल नविासी थे, ने थेबाइड के पास नील नदी के पूर्वी तट पर एक तपस्वी के रूप में जीवन व्यतीत कयिा। वहाँ, बालों वाली कमीज़ पहनकर और केवल जड़ी-बूटयिों व जड़ों पर जीवकिोपार्जन करते हुए, उन्होंने

'हमें आशीर्वाद दीजिए, पिताजी,' पूज्य ने उनसे कहा।

इस पर उन्होंने उत्तर दिया:

'प्रभु आपको आशीर्वाद दें।'

प्रार्थना करने के बाद, वे बैठ गए और बातचीत करने लगे: एपिफानियस ने उससे एंथनी के जीवन के बारे में पूछा, और उसने उसे इसके बारे में बताया।

इस वृत्तांत के बाद उसने उससे कहा, "मैं नट्रियिन मरुभूमि में रहना चाहता हूँ[3646] ।"

'जाओ,' एपिफानियस के साथी ने उत्तर दिया, 'और नट्रिया में रहने वाले पवित्र पिताओं के साथ अपने संवादों का आनंद लो, और उनसे वह आध्यात्मिक पोषण प्राप्त करो जिससे तुम साइप्रस द्वीप पर अपनी भेड़ों के झुंड को पालोगे[3647] ।'

पाफनुतियुस के शब्द साइप्रस द्वीप पर एपिफानियस के भविष्य के बिशप पद के संबंध में एक भविष्यवाणी थे। प्रार्थना करने के बाद, दोनों व्यक्ति विदा हुए और अपने-अपने रास्ते चले गए। जब वह लियोनटोपोलिस नगर के पास पहुँचा, तो एपिफेनियस ने सुना कि नगर के पास एक मठ था जहाँ हिएराक्स नाम का एक भिक्षु रहता था – एक ऐसा व्यक्ति जो धार्मिक प्रतीत होता था लेकिन वास्तव में एक विधर्मी था, क्योंकि वह हमारे शरीर के बारे में अप्रामाणिक सिद्धांतों को सिखाता था। उनके विचार में, शरीर का पुनरुत्थान नहीं होगा, बल्कि इसके बजाय ईश्वर आने वाले जीवन में एक अलग शरीर प्रदान करेंगे। क्योंकि लिखा है: *'तू धूल है, और धूल में ही फिर लौट जाएगा'* (उत्पत्ति 3:19)।

वह यह भी दावा करता था कि उस युग में बच्चे अपूर्ण होंगे। एपिफानियस ने फिलिस्तीन में रहते हुए ही उसके बारे में सुना था और उसे देखना चाहता था। इसी तरह, हिएराक्स ने उस सम्माननीय संत के बारे में सुना था। इस मठ में पहुँचने पर, संत ने हिएराक्स की शिक्षा सुनने के लिए एक बड़ी भीड़ देखी: हर कोई उसे सदाचारी, एक महान तपस्वी मानता था जो न तो तेल खाता था और न ही शराब पीता था। दो भटकते संन्यासियों को देखकर, हिएराक्स ने उनसे पूछा:

'आप कहाँ से हैं?'

यात्रियों ने उत्तर दिया, 'फिलिस्तीन से।' तब उनके नाम पूछने पर, वह निराश हो गया: वह एपिफानियस से नापसंद करने लगा, जो मिस्र में अपनी पवित्रता और ज्ञान के लिए प्रसिद्ध था। एपिफानियस पर और ध्यान दिए बिना, उन्होंने लोगों को सिखाना जारी रखा। जब वह विधर्मी अपने प्रवचन के उस भाग पर पहुँचा जो मृतकों के पुनरुत्थान से संबंधित था और यह सिखाने लगा कि मानव शरीर पुनर्जीवित नहीं होंगे, तो एपिफानियस, उसकी गलती को सहन न कर सके, और उसे फटकारते हुए ये शब्द कहे।

'तुम्हारा मुँह बन्द हो जाए,' ताकि तुम हमारी आशा के विरुद्ध निन्दा करना न सीखो।

और तुरंत ही वह विधर्मी गूंगा हो गया और अचल हो गया। इस चमत्कार को देखने वाले भय से भर गए। और चमत्कार करने वाले ने मृतकों के पुनरुत्थान के बारे में सिखाना शुरू किया, और उन्हें आश्वासन दिया कि वे उसी शरीर में—हालांकि रूपांतरित—उठेंगे जिसमें वे इस दुनिया में रहे थे। अपने प्रवचन के कुछ घंटों बाद, संत ने उस व्यक्ति से कहा जिसे दंडित किया गया था:

'सच्चे धर्म को सीखो और दूसरों को सिखाओ।'

और मूक व्यक्ति अचानक बोल उठा, अपनी गलती स्वीकार करते हुए और पश्चाताप करने का वादा करते हुए। पूजनीय संत ने उसे सच्चे धर्म के बारे में पर्याप्त रूप से समझाया, और फिर ऊपरी थेबाइड के लिए रवाना हो गए। वहाँ वुवुली नामक एक सुनसान जगह थी। वहाँ बस जाने के बाद, संत सात साल तक रहे। लेकिन इस रेगिस्तान ने भी उन्हें आगंतुकों से नहीं बख्शा। उनमें यूडमिोन नाम का एक स्थानीय दार्शनिक था, जो विश्वास के बारे में संत से बहस करने

निरंतर परिश्रम और प्रार्थना को समर्पित होकर 20 वर्ष गुमनामी में बिताए, उन्होंने ईश्वर की कृपा से प्रलोभक की आत्मा को पराजित किया, जो उन्हें प्रलोभनों और भय से परेशान करती थी। अंतत; उनके जीवन की पवित्रता और उनके द्वारा किए गए चमत्कारों ने रेगिस्तान में कई तपस्वियों को एंथनी की ओर आकर्षित किया; वे उनके पास आकर बस गए और एंथनी द्वारा निर्धारित नियमों को अपना आदर्श मान लिया, जिसने मठवासी जीवन की शुरुआत को चिह्नित किया। सेंट एंथनी का 366 ईस्वी में, 105 वर्ष की आयु में निधन हो गया। उनका पर्व दिवस 17 जनवरी को मनाया जाता है।

[3646] यह, बेशक, उन तपस्वियों को संदर्भित करता है जो मिस्र के उत्तर-पश्चिमी भाग में स्थित, माउंट नाइट्रियन के समीप, नाइट्रियन रेगिस्तान में रहते थे।

[3647] साइप्रस द्वीप भूमध्य सागर के उत्तर-पूर्वी छोर पर स्थित है।

आया था; दार्शनिक अपने बेटे के साथ आया था, जिसकी एक आँख टेढ़ी थी। एक लंबी बहस के बाद, रेवरेंड ने दार्शनिक के बेटे को देखते हुए उससे कहा:

'आप अपने पुत्र का ध्यान क्यों नहीं रखते, ताकि उसे उसके शारीरिक दोष से मुक्ति मिल सके?'

'अगर, पूरी दुनिया में, यूडेमोन का बेटा ही एक आँख वाला एकमात्र व्यक्ति होता, तो निश्चित रूप से मुझे उसकी देखभाल करनी चाहिए थी। लेकिन चूँकि पृथ्वी पर बहुत से एक-आँख वाले लोग हैं, तो उसे जैसा है वैसा ही रहने दो।'

'लेकिन अगर, वास्तव में, आपका बेटा पूरी दुनिया में एकमात्र तिरछी आँखों वाला व्यक्ति होता, जबकि पृथ्वी पर बाकी सभी लोग दोनों आँखों से देख सकते हों, तो आप उसे ठीक करने के लिए क्या करते?' एपिफेनियस ने एवडेमोन से पूछना जारी रखा।

'और कुछ नहीं,' दार्शनिक ने उत्तर दिया, 'सिवाय इसके कि मैं अपने आप से कहूँ: पूरी दुनिया में मेरे बेटे से अधिक दुखी कोई नहीं है।'

'मेरी बातों को मज़ाक न समझो,' संत ने कहा, 'लेकिन मुझे अपने बेटे को ठीक करने दो, और तुम ईश्वर की महिमा देखोगे।' जवाब देते हुए संत ने लड़के को लेकर उसकी आँख पर तीन बार क्रॉस का चिह्न बनाया और उसे ठीक कर दिया। ऐसा चमत्कार देखकर, दार्शनिक और उसका बेटा मसीह में विश्वास करने लगे। सच्चे धर्म में पर्याप्त रूप से शिक्षित होने के बाद, यूडेमोन ने अपने पूरे परिवार के साथ स्थानीय बिशप से बपतिस्मा ग्रहण किया।

संत एपिफेनियस की ख्याति, जिसने जनसमूहों को उनकी ओर आकर्षित किया, मिस्र के बिशपों में इस सम्मानित संत को किसी स्थानीय नगर का संरक्षक संत बनाने की इच्छा जगाई। लेकिन संत ने आध्यात्मिक रूप से बिशपों की मंशा को भाँप लिया और अपने शिष्य से कहा:

'चलो, मेरे बच्चे, हम अपने देश लौट चलें।'

और इस प्रकार वे दोनों फिनिसिया के लिए रवाना हो गए। रास्ते में, वे महान हिलारियन के मठ में रुके, लेकिन उन्हें वहाँ वरिष्ठ नहीं मिला: उस मठ में आने वाले अनगिनत आगंतुकों ने उन्हें साइप्रस के शहर पाफोस की सीमाओं के भीतर एक सुनसान जगह पर चले जाने के लिए प्रेरित किया था[3648] । जो भाई अपने पिता के चले जाने पर रो रहे थे, वे संत एपिफेनियस को उनके बीच देखकर अपने दुःख में सांत्वना पाए: चालीस दिनों तक उन्होंने उन्हें सांत्वना दी। फिर वे अपने मठ, स्पैनडियिन के लिए रवाना हो गए, जहाँ उनके लौटने पर सभी ने खुशी मनाई। उस वर्ष सूखे के कारण फिनिसिया में अकाल पड़ा था। महान चमत्कार करने वाले की वापसी की खबर सुनकर, एक बड़ी भीड़ मठ में उनके पास आई, और उन्हें ईश्वर से वर्षा के लिए प्रार्थना करने का आग्रह करने लगी, ताकि भूमि अपना फल दे सके।

सम्माननीय पिता ने उनसे कहा, 'तुम मुझे क्यों सता रहे हो? मैं तो केवल एक पापी मनुष्य हूँ।'

लेकिन उन्होंने उनसे बहुत देर तक और अथक प्रयास से विनती की। अंत में, संत ने अपने कोठरी में अकेले हो कर, वह बहुप्रतीक्षित प्रार्थना शुरू की। और अचानक आकाश, जो तब तक बिलकुल साफ़ था, तूफ़ानी बादलों से ढक गया, और उन बादलों से तीन दिनों तक पूरे फिनिसिया पर भारी, अविराम वर्षा होती रही। तब लोगों ने परमेश्वर के उस पुरुष से वर्षा रुकवाने के लिए कहना शुरू कर दिया। संत की प्रार्थना से बारिश रुक गई, और उस वर्ष धरती पर भरपूर फसल हुई।

जैसे-जैसे पूजनीय की ख्याति बढ़ती गई—जो हर दिन अनगिनत आगंतुकों की भीड़ को उनकी ओर खींचती थी—वैसे-वैसे वे फिर से फिनिसिया छोड़ने के बारे में अधिक सोचने लगे। उनका इरादा जल्द ही एक निर्णय में बदल गया। Lycia[3649] में, जो संत एपिफेनियस के बपतिस्मा का स्थल था, एक बिशप की मृत्यु हो गई थी, और पड़ोसी शहरों के बिशप एक नए बिशप का चुनाव करने के लिए इकट्ठा हुए; ऐसा करते हुए, उन्हें संत एपिफेनियस की याद आई। परिषद में उपस्थित लोगों में पोलुवियस नाम का एक युवा भिक्षु था, जो अपने आचरण में निर्दोष, ब्रह्मचारी और सदाचारी था, और जो उस आदरणीय व्यक्ति को जानता था। बिशपों ने उसे घोड़े पर सवार होकर यथाशीघ्र स्पैनडियिन के मठ में जाने और पूरी गोपनीयता से यह पता लगाने का आदेश दिया कि क्या एपिफेनियस वास्तव में मिस्र से लौट आए थे और अपने मठ में थे।

[3648] प्राचीन काल में, साइप्रस द्वीप पर पाफोस नामक दो शहर थे: *पुराना शहर,* जो इसके पश्चिमी तट पर समुद्र से 10 स्टेडियम दूर था, और फिनिशियाई उपनिवेश *नया पाफोस* (अब बाफ़ो), जो पुराने शहर से 15 वर्स्ट उत्तर-पश्चिम में था। दोनों शहरों के खंडहर आज भी मौजूद हैं। यह ज्ञात नहीं है कि सेंट एपिफेनियस इनमें से किसके आसपास रहते थे।

[3649] लिकिया, काफी हद तक, एशिया माइनर के दक्षिणी तट पर उसी नाम के पहाड़ी क्षेत्र का प्रमुख शहर था।

'इस मशिन को कसिी को न बताओ, यहाँ तक कि स्वयं एपफिानयिस को भी नहीं,' परषिद के प्रमुखों ने पोलुवयिस से कहा। वह मठ में संत को ढूंढकर उनसे मलिा और अभविादन कयिा।

'तुम यहाँ क्यों आए हो, मेरे बेटे?' संत ने पोलुवयिस से पूछा। पोलुवयिस ने उत्तर दयिा:

'मैं परम पावन से मलिने आया हूँ।'

'तुम, मेरे बच्चे,' भवषि्यवक्ता ने उत्तर दयिा, 'मेरी तुच्छता पर जासूसी करने आए हो, यह देखने के लिए कि क्या मैं यहाँ हूँ।' मुझसे वह बात मत छपिाओ जो तुम्हें आज्ञा दी गई है, क्योंकि झूठ बोलना पाप है: सत्य बोलो, क्योंकि ईश्वर हमारे बीच में हैं – सत्य के सच्चे सेवक बनो, जबकि पापी एपफिेनयिस एक स्थान से दूसरे स्थान तक भटकता है, अपने पापों की भीड़ से कराहता और डरता हुआ। लेकनि सुनो, पोलुवयिस: यहीं रुको, और घोड़ा बशिपों के पास भेज दो। वे बशिप पद के लिए कसिी ऐसे व्यक्ति को खोजें जसिे वे योग्य जानते हों; जहाँ तक मेरी बात है, मैं उनके लिए अज्ञात रहूँगा।

पोलुवीय ने भवषि्यवक्ता की बात मानी: अपने घोड़े और नौकर को भेज देने के बाद, वह स्वयं आदरणीय पति के साथ ठहरा। जब रात हुई, तो एपफिानयिस, अपने स्थायी शषि्य जॉन और नए आए पोलुवीय के साथ, सभी की जानकारी के बनिा, गुप्त रूप से मठ से नकिल गए। सबसे पहले, उन्होंने प्रभु के क्रूस के जीवन-दायक वृक्ष और यरूशलेम तथा उसके आसपास के अन्य पवत्रि स्थलों की पूजा करने के लिए यरूशलेम का दौरा कयिा। ईसाइयों के लिए पवत्रि शहर में तीन दनि रहने के बाद, संत एपफिानयिस ने अपने दो शषि्यों से कहा:

'मैंने सुना है, मेरे बच्चों, कि हमारे महान पति हलिारयिन अब साइप्रस की भूमि में, पाफोस शहर के पास रहते हैं; तो चलिए हम उनके पास जाएँ और उनका आशीर्वाद प्राप्त करें।'

यह कहने के बाद, वह उनके साथ फलिस्तिीन के सेज़ारयिा फलिपिी (3650) गया, ताकि वहाँ से साइप्रस द्वीप के लिए जाने वाली एक जहाज पर चढ़ सके। साइप्रस के तट पर पहुँचने पर, वह महान तपस्वी हलिारयिन से मलिने के लिए पाफ़ोस मरुभूमि में गया। लंबी वरिह के बाद पुनःमलिने पर दोनों संन्यासयिों के हृदय आनंद से भर उठे। हलिारयिन को बड़ी संख्या में आगंतुकों से होने वाली व्यथा और दूसरे स्थान पर जाने के इरादे को देखकर, एपफिानयिस ने दो महीने बाद अपने आतथि्यशील मेज़बान से वदिा लेने का नर्णिय लयिा। जब वे वदिा हुए, हलिारयिन ने अपने अतथि से पूछा:

'एपफिानयिस, आप कहाँ जाना चाहते हैं?'

'मैं अस्कालोन और गाज़ा[3651] और उससे भी आगे जाऊँगा, जब तक कि मुझे रेगस्तिान में कहीं एक शांत जगह न मलि जाए।'

जवाब में, संत एपफिानयिस को उस दरषि्टा से नम्निलखिति सलाह मलिी:

'जाओ, मेरे बच्चे, साइप्रस द्वीप पर स्थति सालामसि नगर[3652] में। और तुम्हारा उस नगर में एक धन्य प्रवास होगा।'

एपफिानयिस ने इन भवषि्यसूचक शब्दों को सुना भी नहीं, जनिमें यह भवषि्यवाणी थी कि वह उस शहर का आर्चबशिप बनेगा। तब पवत्रि दरषि्टा ने उसे अपना उपदेश दोहराते हुए कहा:

'मैं तुझसे कहता हूँ, मेरे बच्चे, कि तुझे उस शहर में जाकर वहाँ रहना चाहिए। इसलिए मेरी अवज्ञा मत करना, कहीं ऐसा न हो कि समुद्र में तुझे कोई दुर्भाग्य आ जाए।'

हलिारयिन को वदिा कहने के बाद, एपफिानयिस अपने शषि्यों के साथ बंदरगाह की ओर रवाना हो गए। वहाँ दो जहाज़ खड़े थे: एक अस्कालॉन के लिए, और दूसरा सलामसि के लिए। रेवरेंड ने पहले जहाज़ से ही प्रस्थान कयिा। कुछ ही घंटों बाद, समुद्र में अचानक एक बड़ी आंधी आ गई। प्रबल लहरों ने कसिी भी क्षण जहाज़ को टुकड़े-टुकड़े कर समुद्र की गहराई में डुबो देने की धमकी दी। सभी ने अपने जीवन की आशा छोड़ दी। यह कषि्ट तीन दनिों तक चला। अंतत; चौथे

3650 सेज़रयिा फलिपिी या पनेआस, फलिस्तिीन के बहुत उत्तर-पूर्व में, जॉर्डन नदी के उद्गम के पास एक शहर है। इसका नाम हेरोद के पुत्र फलिपि के नाम पर रखा गया है, जन्हिें यह उनके जागीर के रूप में मलिा था, और इसे फलिस्तिीन की सेज़रयिा से अलग करने के लिए, जो भूमध्य सागर के तट पर स्थति है।

3651 अश्कलॉन और गाज़ा भूमध्यसागरीय तट पर प्रमुख फ़लिस्तिीनी शहरों में से थे।

3652 सालामसि – साइप्रस के शहरों में सबसे बड़ा और सबसे अच्छी तरह से कलिेबंदी कयिा गया शहर – द्वीप के पूर्वी तट पर स्थति था। इसमें एक शानदार बंदरगाह था जो पूरे बेड़े को समाने में सक्षम था। सालामसि का पतन ट्राजन (98–117 ईस्वी) के शासनकाल के दौरान एक यहूदी वदि्रोह के दौरान शुरू हुआ, जसिने इसके एक महत्वपूर्ण हस्सि को नषि्ट कर दयिा। कांसर्टेाइन महान (306–337) के शासनकाल के दौरान आए एक भूकंप ने इसे पूरी तरह से नषि्ट कर दयिा, जसिसे लगभग पूरी आबादी खत्म हो गई। इसे कॉन्स्र्टेयिस (337–361) द्वारा फरि से बनाया गया, जन्हिोंने इसका नाम 'कॉन्स्र्टेयिस' रखा। इसके खंडहर फमागुस्ता के पास स्थति हैं।

दनि, लहरों ने जहाज को सलामसि शहर के तट पर लाकर लगा दयिा। उतरने पर, लंबे समय के भय और अत्यधकि भूख से थके हुए यात्री, मृतक की भाँतजिमीन पर गरि पड़े। थके हुए नावकिों को आराम देने और क्षतग्रिस्त जहाज की मरम्मत करने के लएि तीन दनि का ठहराव आवश्यक था। चौथे दनि ही जहाज फरि से समुद्र यात्रा के लएि तैयार हुआ। पादरी भी अपनी समुद्री यात्रा जारी रखना चाहते थे। लेकनि ईश्वर की योजना कुछ और थी।

उसी समय, शहर में एक आर्चबशिप का चुनाव हो रहा था। इस अवसर के लएि इकट्ठा हुए बशिप कई दनिों से ईश्वर से प्रार्थना कर रहे थे, उनसे ऐसे उच्च पद के योग्य व्यक्तिका मार्गदर्शन करने के लएि कह रहे थे। उनमें कफ़िर के दूरदर्शी और सम्माननीय संत पापयिस[3653] भी थे, जनि्होंने पचास वर्षों तक बशिप के रूप में सेवा की थी और सालामसि के बशिप गेलासयिस के साथ मसीह के नाम पर कई कष्ट सहन कएि थे। क्राइस्ट के इस स्वीकारकर्ता को, जनि्हें साइप्रस के सभी बशिपों द्वारा एक पति के रूप में सम्मानति कयिा जाता था, ईश्वर द्वारा यह प्रकट कयिा गया कि संत एपफिानयिस सालामसि में आ गए थे, और उन्हें शहर के बशिप के रूप में नयिुक्त करने का आदेश दयिा गया। उस समय पतझड़ का मौसम था, और अंगूर की फसल पूरे ज़ोरों पर थी।

एपफिेनयिस ने अपने शष्यिों से कहा, 'चलो, बच्चों, हम शहर चलते हैं, और यात्रा के लएि अपने लएि कुछ अंगूर की मँजयिाँ खरीद लेते हैं।'

जब वे बाजार में एक अंगूर बेचने वाले के पास पहुँचे, तो एपफिानयिस ने दो बड़े गुच्छे उठाए और उससे पूछा:

'इनके कतिने दोगे?' – तभी उसने अचानक देखा कि चार बशिप उसकी ओर आ रहे थे। उनमें से वृद्ध पापयिस, जो दो डीकनों के सहारे चल रहे थे, ने जैसे ही उन्हें देखा, पवत्रि आत्मा द्वारा उन्हें पहचान लयिा और उनसे कहा:

'अब्बा एपफिानयिस, अंगूर की मँजों को छोड़एि और हमारे साथ पवत्रि चर्च चलएि।'

आमंत्रति होकर, और दाऊद के वचनों को याद करते हुए: *'जब उन्होंने मुझसे कहा, "आओ हम यहोवा के भवन में चलें", तो मैं आनन्दति हुआ* (भजन संहति 121:1), उन्होंने अंगूर छोड़ दएि और बशिपों के साथ चले गए। जैसे ही आदरणीय व्यक्तिचिर्च में प्रवेश कयिा, बशिपों की पूरी धर्मसभा ने उन्हें इन शब्दों के साथ अभविादन कयिा:

'हे अबा, ईश्वर ने आपको हमारे पास भेजा है; आप इस नगर और सम्पूर्ण साइप्रस द्वीप के आर्चबशिप बनें।'

हालाँकि, संत ने स्वयं को एक पापी और अयोग्य बताते हुए, इतना ऊँचा पद संभालने से इनकार कर दयिा। लेकनि बशिपों ने, उनकी वनितयिों पर ध्यान दएि बनिा, उन्हें पुरोहति पद के वभिन्नि चरणों से होते हुए क्रमशःपदोन्नत करना शुरू कर दयिा। जनिका अभषिेक कयिा जा रहा था, वे पुरोहत्यि के बोझ को अपने लएि बहुत भारी समझकर, जोर-जोर से रो पड़े। अपने दुखी उम्मीदवार के आँसू देखकर, पापयिस ने उनसे कहा:

'मेरे बच्चे, हमारे लएि यह उचति है कि हम तुम्हारे वषिय में हमें प्राप्त प्रकटवाणी के बारे में मौन रहें; परन्तु चूंकि मैं तुम्हें दुखी और रोते हुए देखता हूँ, मुझे तुम्हें वह बात बतानी चाहएि जो परमेश्वर ने हमें बताने की कृपा की है। ये पवत्रि पति, यहाँ इकट्ठे हुए बशिपों ने, मेरी इस अयोग्यता पर आर्चबशिप का पद सौंपा है, और मुझ जैसे पापी से कहा है: 'ईश्वर से मन लगाकर प्रार्थना करो, क्योंकि हमें वशि्वास है कि ईश्वर तुम्हें आर्चबशिप पद के योग्य एक पुरुष दखिाएंगे।' मैं, तथापि, अपने शयनकक्ष में स्वयं को बंद करके, इसके लएि प्रभु उद्धारकर्ता से प्रार्थना कर रहा था, और अचानक एक प्रकाश बजिली की तरह मुझ पर चमका, और मैंने एक आवाज को मुझ, एक पापी से, कहते हुए सुना: 'पैपयिस, पैपयिस, सुनो!' और मैं, भय से भरकर, बोला: 'आपका आदेश क्या है, मेरे प्रभु?' और वह आवाज़ मुझसे धीरे से बोली: 'उठो और बाज़ार जाओ, और वहाँ तुम एक भक्षिु को अंगूर की मँजयिाँ खरीदते हुए देखोगे, जो चेहरे और कद-काठी में भवष्यिवक्ता एलशिा जैसा दखिता है, और उसके साथ दो शष्यि हैं। 'उसे ले जाओ और उसे आर्चबशिप नयिुक्त करो; और उस भक्षिु का नाम एपफिेनयिस रखना।' – और इस प्रकार मैं उठा और जैसा मुझे आज्ञा दी गई थी, वैसा ही कयिा। और तुम, मेरे बच्चे, परमेश्वर की इच्छा का वरिोध मत करो: *'अपना और उस सारी भेड़-बकरयिों का ध्यान रखना, जनिके लएि पवत्रि आत्मा ने तुम्हें नरिीक्षक नयिुक्त कयिा है'* (प्रेरतिों के काम 20:28)।

पापयिास के बोलने के बाद, एपफिानयिस उनके सामने झुक गया और प्रभु की इच्छा का पालन करते हुए, बशिप के रूप में अपने अभषिेक को स्वीकार कर लयिा। इसके बाद, आनंदति बशिप अपने-अपने रास्ते चले गए। हालाँकि, नव-

[3653] कफिेरा या कटिर, जसिे साइथेरा के नाम से भी जाना जाता है, भूमध्य सागर में आयोनयिन द्वीपसमूह के सबसे दक्षणिी द्वीप, इसी नाम के द्वीप के दक्षणिी तट पर स्थति मुख्य शहर है।

नियुक्त महा-गड़रिये ने, उसे सौंपी गई मसीह की भेड़ों की देखभाल आध्यात्मिक चरागाह पर न केवल अपने उपदेशों के द्वारा बल्कि अपने सदाचारी जीवन के उदाहरण से भी करनी शुरू कर दी।

संत एपफिनियस की बिशप की सेवा की शुरुआत में, यूग्नोमोन नामक एक कुलीन रोमन को सालामिस के एक नागरिक ड्रैकोन से सौ सोने के सिक्के का कर्ज न चुका पाने के कारण कैद कर लिया गया था। कोई भी कैदी की मदद के लिए आगे नहीं आया: चूँकि वह अपने देश रोम से बहुत दूर था[3654] , इसलिए कोई भी उसकी जमानत देने को तैयार नहीं था। यह सुनकर और उस कर्जदार पर दया करके, संत उस धनी लेकिन कंजूस मूर्तिपूजक, ड्रैकोन के पास गए, और उससे यूग्नोमन को उसके बंधन से मुक्त करने के लिए कहा। संत के अनुरोध से मूर्तिपूजक का प्रचंड क्रोध भड़क उठा।

'हमारे शहर में एक अजनबी!' उसने दुष्टता से उत्तर दिया। 'अगर तुम चाहते हो कि मैं तुम्हारे ऋणी को रिहा कर दूँ, तो जाओ और मुझे सौ जलाटिक ले आओ।'

धन्य एपफिनियस ने उसे चर्च के कोष से सौ सोने के सिक्के दे दिए और इस प्रकार उस ऋणी को उसके बंधनों और उसके कर्ज, दोनों से मुक्त कर दिया। घमंडी और दुर्भावनापूर्ण डिकिन कैरिनि ने बांटे गए सोने को लेकर संत के खिलाफ बड़बड़ाना शुरू कर दिया, जिससे अन्य पुरोहितों के बीच भी उनके प्रति असंतोष फैल गया।

उसने उनसे कहा, "क्या तुम इस नवागंतुक को देखते हो, वह चर्च की सारी संपत्ति लूट लेना चाहता है, और हम चर्च के खजाने की चोरी के दोषी ठहरेंगे।"

करिनि, जो कभी एक अमीर आदमी था, संत एपफिनियस को आर्चबिशप के सिंहासन से हटाने के लिए इसे एक बहाने के रूप में इस्तेमाल कर रहा था, ताकि वह उसे अपने लिए ले सके। सभी पुरोहित, जो उसके द्वारा आर्चपास्टर के दया के कार्य के प्रति पूर्वाग्रही हो गए थे, ने एपफिनियस से कहा:

'क्या तुम्हारे लिए संत की उपाधि का सम्मान पर्याप्त नहीं है? फिर भी तुम चर्च की संपत्ति को एक भटकते हुए और एक अजनबी की तरह बर्बाद कर रहे हो जो यहाँ निर्धन और नग्न आया था। इसलिए, या तो चर्च को सौ सोने के सिक्के वापस करो, या यहाँ से चले जाओ, वापस वहीं जहाँ से तुम आए हो।'

संत ने इसे चुपचाप सहन किया। अपनी बेड़ियों से मुक्त होते ही, वह रोम के लिए रवाना हो गया, अपने सारे सामान बेच दिए, और बहुत सारे सोने के साथ संत के पास लौट आया। बिक्री से प्राप्त सारी राशि एपफिनियस को सौंपकर, वह पूरी तरह से ईश्वर और उनके बिशप की सेवा में समर्पित हो गया, और अपनी मृत्यु तक एपफिनियस के साथ रहा। हालाँकि, बिशप ने उसके पास लाए गए सोने में से 100 सोने के सिक्के ले लिए और उन्हें करिनि को देते हुए कहा:

'यह चर्च का सोना है, जो एक ऋणी को आजाद कराने के लिए उधार लिया गया था।'

कारिनि ने उसे ले लिया। इस बीच, संत ने बाकी सोना ज़रूरतमंदों में बाँट दिया। और कारिनि ने, पादरियों को बुलाकर, उनके सामने गर्व से डींगें हाँकीं।

उसने उनसे कहा, 'यहाँ है एपफिनियस द्वारा बर्बाद किया गया सोना, जो मैंने उससे वापस माँगा था।'

लेकिन पुरोहितों ने करिनि को डाँटना शुरू कर दिया, जिसने उन्हें शिकायत करने और संत का अपमान करने के पाप में डाल दिया था, और गुस्से में उससे कहा कि वह इन सोने के सिक्कों को संत को वापस कर दे:

उन्होंने कहा, 'क्योंकि संत के पास चर्च की संपत्ति को धर्मार्थ कार्यों पर खर्च करने का अधिकार है।'

करिना ने संत को और भी कई परेशानियाँ दीं, लेकिन उन्होंने उन्हें नम्रता से सहन किया।

एक बार, जब संत घर पर सभी पुरोहितों की उपस्थिति में दोपहर का भोजन कर रहे थे और पवित्र धर्मग्रंथ के कुछ रहस्यों की व्याख्या कर रहे थे, तो एक कौवा खिड़की के पास उड़ा और काँव-काँव करने लगा। और कारिनि ने संत की शिक्षा का मज़ाक उड़ाते हुए, अन्य पुरोहितों से कहा:

'तुम में से कौन जानता है कि यह कौवा काँव-काँव करते हुए क्या कह रहा है?'

चूंकि सभी उपदेश को ध्यान से सुन रहे थे, किसी ने भी डिकिन के प्रश्न का उत्तर नहीं दिया।

और करिनि ने दूसरी और तीसरी बार पूछा:

'तुम में से कौन इतना बुद्धिमान है कि काग की बात समझ सके?'

लेकिन फिर भी किसी ने भी उसके शब्दों पर ध्यान नहीं दिया, और वे संत एपफिनियस के दैवीय प्रेरित प्रवचन को सुनते रहे। उस अभद्र डीकन ने अंततः स्वयं संत से पूछा:

[3654] रोम – इटली की राजधानी, जो टिबर नदी के दोनों किनारों पर, उसके मुहाने पर स्थित है, जहाँ यह समुद्र में मिलती है।

'अगर तुम इतने बुद्धमिान हो, तो मुझे बताओ यह कौवा क्या कह रहा है, और अगर तुम ऐसा कर सकते हो, तो मेरी सारी संपत्ति तुम्हारी हो सकती है।'

संत ने उसकी ओर देखते हुए कहा:

'मैं जानता हूँ कि वह कागा क्या कह रहा है: वह कह रहा है कि अब से तुम डीकन का पद नहीं संभालोगे।'

और संत के शब्द सुनते ही करनि भय से कांप उठी; इसके अलावा, वह किसी बीमारी से ग्रस्त हो गया था, इसलिए वह अब मेज पर बैठे नहीं रह सका और नौकरों द्वारा उसे घर ले जाया गया।

अगली सुबह उनकी मृत्यु हो गई। सभी पुरोहितों में बहुत भय छा गया, और उस घड़ी से उन्होंने मसीह के संत, संत एपफिानियस का श्रद्धापूर्वक पालन और सम्मान किया। दंडित व्यक्ति की ईश्वर-भयभीत और नम्रिंतान विधवा ने अपने पति द्वारा छोड़ी गई संपत्ति चर्च में बिशप के पास ले आई और स्वयं को ईश्वर की सेवा के लिए समर्पित कर दिया; उसका एक हाथ पूरी तरह से लकवाग्रस्त था, यह एक ऐसी स्थिति थी जो उसे दस साल पहले हो गई थी; विधवा के बीमार हाथ पर—जो कुछ भी पकड़ने के लिए भी बहुत कमजोर था—क्रॉस का चिह्न बनाने पर, संत एपफिानियस ने उसे पूरी तरह से स्वस्थ कर दिया। फिर उन्होंने विधवा को एक डीकोनेस[3655] के रूप में नियुक्त किया, और उसे पवित्र और चर्च की सेवा के योग्य माना। ईश्वर के महान बिशप, संत एपफिानियस के पास यह भी अनुग्रह था कि वे रक्तहीन बलिदान की प्रस्तुति के दौरान, पवित्र उपहारों पर पवित्र आत्मा का अवतरण देख सकें; और वे आमतौर पर तब तक भेंट-प्रार्थना समाप्त नहीं करते थे जब तक उन्हें पवित्र आत्मा के अवतरण का दर्शन नहीं हो जाता था। एक अवसर पर, जब वे भेंट की प्रार्थना का पाठ कर रहे थे, तो लिटिर्जी का अनुष्ठान करने वाले बिशप को वह संकेत दिखाई नहीं दिया। उन्होंने इसे बिल्कुल शुरुआत से दो बार दोहराया, लेकिन वह दर्शन नहीं हुआ; तब संत ने, आँखों में आँसू लिए, ईश्वर से प्रार्थना की कि वे इस दुखद घटना का कारण प्रकट करें। दाईं ओर खड़े रिपिडा थामे डीकन की ओर देखते ही उन्होंने देखा कि उसका चेहरा काला पड़ गया था और उसका माथा कोढ़ से ढका हुआ था[3656] । संत ने उससे रिपिडा लेकर कोमलता से कहा:

'मेरे बच्चे, इस समय दिव्य उपहार ग्रहण मत करो, बल्कि घर जाओ।'

जब वह पवित्रस्थान से चला गया, तो पूजनीय पिता ने पवित्र आत्मा की कृपा को अर्पित उपहारों पर उतरते हुए देखा। धर्मविधि के बाद, संत ने उस डिकिन को बुलाया जिसे भेज दिया गया था और उससे पूछा कि क्या उसके अंतरात्मा पर कोई विशेष पाप है । दीकन ने स्वीकार किया कि पिछली रात वह अपनी पत्नी के साथ था। फिर संत ने अपने सभी पुरोहितों को बुलाया और कहा:

'हे बच्चों, जो वेदी की सेवा के योग्य समझे गए हैं, मौन कामुक वासनाओं के जूते उतार दो—जब तक तुम कामुक इच्छाओं से बँधे हो, तब तक दिव्य वेदी के पास मत आओ; पवित्र प्रेरित की सुनें, जो कहते हैं: *"जिनकी पत्नियाँ हैं, वे ऐसे हों जैसे कि उनकी कोई नहीं है"* (1 कुरिन्थियों 7:29)।'

उस समय से, संत एपफिानियस ने केवल धार्मिक भिक्षुओं और निष्कलंक विधुरों को ही डिकिन और पुरोहित के रूप में नियुक्त किया, और विवाहित पुरुषों को कतई स्वीकार नहीं किया। और उनकी कलीसिया, पवित्र सेवकों से सुसज्जित, एक सुन्दर वधू की भाँति दिमक उठी।

इस बिंदु तक, पूजनीय एपफिानियस के जीवन का वर्णन उनके शिष्य जॉन द्वारा किया गया है, जिनका निधन प्रेस्बिटिर के पद पर रहते हुए हुआ। हालाँकि, संत के जीवन का शेष भाग उनके एक अन्य शिष्य - पोलुवियस द्वारा लिखा गया था। वह इस प्रकार शुरू करते हैं।

'महिमा उस परमेश्वर की हो, जो जीवन देता है और उन लोगों को महिमामय बनाता है जो उसकी महिमा करते हैं, ठीक उसी प्रकार जैसे उसने अपने सेवक एपफिानियस को अपनी चमत्कारी कृपा से महिमामय बनाया, जिनके अद्भुत

[3655] एक डीकोनेस प्रारंभिक ईसाई चर्च में विधवाओं या वृद्ध अविवाहित महिलाओं में से एक महिला चर्च मंत्री होती थी। डीकोनेस की सेवा मुख्य रूप से महिलाओं से संबंधित कुछ चर्च के कर्तव्यों में व्यक्त होती थी। इनमें, उदाहरण के लिए, शामिल थे: महिलाओं को बपतिस्मा के लिए तैयार करना, उन्हें बपतिस्मा देने वाले के प्रश्नों के सही उत्तर सिखाना, बिशप की सहायता करना ताकि वे यह संस्कार प्राप्त कर सकें, लबाद के अलावा शरीर के अन्य अंगों पर अभिषेक करना, बपतिस्मा के बाद उन्हें उचित आचरण की शिक्षा देना, यह सुनिश्चित करना कि वे चर्च में व्यवस्थित रूप से खड़ी हों, और बिशपों, प्रेस्बिटिरों और डीकनों द्वारा उनके साथ की जाने वाली चर्चाओं के दौरान उपस्थित रहना। इसके अलावा, डिकिनेस (स्तरियों के उपदेशक) गरीबों और बीमारों की देखभाल के लिए जिम्मेदार थीं, जिन्हें दान और देखभाल की आवश्यकता होती थी।

[3656] कोढ़ सबसे संक्रामक, भयानक और, अधिकांशत; घातक बीमारियों में से एक है। इसे आमतौर पर तीन प्रकारों में वर्गीकृत किया जाता है: सफेद, काला और लाल, या एलिफिंटियासिस। बाद वाला सबसे अधिक संक्रामक है। ये नाम शरीर पर पड़ने वाले उन तीन अलग-अलग रंगों के धब्बों से संबंधित हैं, जो सड़न भरे छाले निकलने से पहले दिखाई देते हैं।

कार्यों को दर्ज करने के लिए मुझे भी योग्य समझा गया है।' धन्य पुरोहित जॉन, जो हमारे पवित्र पिता एपफिनियस के शिष्य थे, बीमार पड़कर मृत्यु के समीप पहुँच गए, उन्होंने मुझे अपने पास बुलाया और कहा:

– मेरे पुत्र पोलुवियस!

'पिताजी, आप मुझे क्या आज्ञा देते हैं?' मैंने उनसे पूछा। इस पर जॉन ने उत्तर दिया:

'चूँकि हमारे पिता एपफिनियस, उनकी पवित्रता द्वारा ईश्वर द्वारा किए गए चमत्कारों को दर्ज करने की मनाही करते हैं, इसलिए ये पांडुलिपियाँ ले लो, जिनमें मैंने आज तक गुप्त रूप से वह सब कुछ दर्ज किया है जो मैंने उन्हें करते देखा है; और जो कुछ भी तुम अब से देखोगे, उसे भी लिखो, क्योंकि ईश्वर कहते हैं, "*तुम्हारे जीवन के वर्ष बढ़ जाएँगे*" (नीतिवचन 9:11), और तुम अपने जीवन भर उसकी पवित्र उपस्थिति में रहोगे। जहाँ तक मेरी बात है, मैं उस यात्रा पर निकल रहा हूँ जो सभी नश्वर प्राणियों के लिए अनिवार्य है। इसलिए देखना कि तुम लिखने में लापरवाही न करना, क्योंकि ईश्वर ने मुझे यह लिखने के लिए प्रेरित किया है... जाओ और पिता से कहो कि वे मेरे पास आएं,' उन्होंने बाद में जोड़ा।

मैं गया और परमेश्वर के बिशप को बुलवाया। जब वह उस बीमार व्यक्ति के पास आया, तो उसने कहा:

'जॉन, तुम पापी एपफिनियस के लिए ईश्वर से प्रार्थना करने में लापरवाह रहे हो।'

बीमार व्यक्ति ने उत्तर दिया, 'पिताजी, अब आपके लिए मेरे लिए, आपके सेवक के लिए, प्रार्थना करना अधिक उपयुक्त है।'

महाधर्माध्यक्ष द्वारा उस बीमार व्यक्ति के लिए प्रार्थना करने के बाद, उन्होंने संत से कहा:

'मेरे पास आओ, पिताजी।'

संत पास आए।

मरणासन्न व्यक्ति ने कहा, "पिताजी, अपनी हथेलियाँ मेरी आँखों पर रखें और मुझे अंतिम चूम दें, क्योंकि मैं जा चुका हूँ।"

और जैसे ही बिशप ने उनकी आँखों पर हाथ रखा और उन्हें चूमा, उन्होंने अपनी आत्मा प्रभु को सौंप दी। अपने प्रिय शिष्य के लिए कड़वा रोने के बाद, बिशप-गुरु ने उनके लिए पूरे सम्मान के साथ अंतिम संस्कार का प्रबंध किया।

इसके बाद, पूजनीय ने पहले वाले छोटे और बहुत जर्जर चर्च की जगह एक नया चर्च बनाने का संकल्प लिया। उन्होंने मदद के लिए ईश्वर से प्रार्थना की और प्रार्थना करते समय, ऊपर से एक आवाज़ सुनी जिसने सहायता का वादा किया और उन्हें बिना किसी हिचकिचाहट के अपनी योजनाबद्ध कार्य शुरू करने का आदेश दिया। प्रभु का अचूक वचन पूरा होने में ज़्यादा समय नहीं लगा। उपरोक्त ग्रीक के पुत्र, ड्रैकोन, लंबे समय से बीमार था। उसके पिता ने अपने पुत्र के लिए सबसे कुशल चिकित्सकों को बुलाया, लेकिन इससे उसे कोई लाभ नहीं हुआ, और अंततः वे स्वयं भी बीमार पड़ गए। संत, उसके घर आकर, पहले बेटे और फिर पिता को प्रार्थना के माध्यम से चंगा कर गए। फिर ड्रैकोन, विश्वास में आकर और अपने पूरे परिवार के साथ बपतिस्मा ग्रहण करने के बाद, चर्च के निर्माण के लिए पाँच हज़ार ज़्लाटिक का दान कर दिया। और ईश्वर की महिमा के लिए एक बड़ा, पत्थर का और सुंदर चर्च बनाया गया।

उसी शहर का एक और नागरिक, सिनिसियस नाम का एक अमीर मूर्तिपूजक, अपने तेरह वर्षीय एकमात्र पुत्र यूस्टोर्जियस को खो बैठा: एक बीमारी ने उसकी गर्दन मोड़ दी और इस प्रकार उसका गला घोंट दिया। उस अमीर ग्रीक के घर में भारी विलाप मच गया। यह सुनकर, उसके पड़ोसी, ईसाई हर्मियास ने मृतक की माँ से कहा:

'मैडम, यदि महान एपफिनियस यहाँ आ जाएँ, तो वे आपके बेटे को मृतकों में से जीवित कर देंगे।'

अपनी पड़ोसन की बातों पर विश्वास करके, उसने उससे एपफिनियस को उनके पास लाने के लिए कहा। हरमियास ने ईश्वर के बिशप को अपने घर बुलाया। जैसे ही स्वागत योग्य अतिथि अंदर आए, घर की मालकिन उनके पैरों पर गिर पड़ी, और कहने लगी:

'हे मसीह के महान चिकित्सक, अपने चंगा करने वाले कौशल को हमारे बच्चे पर लगाएँ और उसे मृतकों में से जीवित कर दें। यदि आप ऐसा करते हैं, तो हम और हमारा पूरा घर तुरंत आपके मसीह की ओर मुड़ जाएँगे।'

'यदि तुम सूली पर चढ़ाए गए मसीह पर विश्वास रखती हो,' संत ने उससे कहा, 'तो तुम अपने पुत्र को जीवित देखोगी।'

उसने जवाब दिया, 'मेरे मन में और कुछ नहीं है, सिवाय उस पर विश्वास करने के: क्या मैं अपने बच्चे को जीवित देखूँगी?'

तब संत, मृतक के बिस्तर के पास आए, उन्होंने अपने दाहिने हाथ से उसकी गर्दन पर हाथ फेरा और उस पर अपनी दिव्य दृष्टि टिकाकर, धीरे से कहा:

'यूस्टोरजियस!'

लड़के ने तुरंत अपनी आँखें खोल दीं और बिस्तर पर बैठ गया। इस अद्भुत चमत्कार को देखकर घर में मौजूद सभी लोग विस्मय और आश्चर्य से भर गए। और जी उठे लड़के के पिता ने अपनी पत्नी और अपने पूरे परिवार के साथ मिलकर मसीह के नाम पर बपतिस्मा ग्रहण किया और संत को तीन हजार सोने के सिक्के दिए। लेकिन चमत्कार करने वाले ने उससे कहा:

– मैं यह नहीं मांगता; इसे चर्च के निर्माताओं के पास ले जाओ।

और सिनीसियस में नव-निर्मित चर्च को सोने से भव्य रूप से सजाया गया था, क्योंकि इसके पुरोहित के रूप में संत के एक शिष्य, पोलुबियस को प्राप्त किया गया था।

एक दिन, यरूशलेम से साइप्रस द्वीप पर एक डीकन आया और उसने संत को यरूशलेम के बिशप जॉन के बारे में बताया, और उनका वर्णन एक ऐसे व्यक्ति के रूप में किया जो धन का लालची था और गरीबों से घृणा करता था। जॉन कभी महान हिलारियन के मठ में एपिफानियस का साथी भिक्षु था। उन्होंने अपने परिचित को एक प्रेरणात्मक पत्र लिखा, जिसमें उन्होंने उसे गरीबों के प्रति दयालुता से पेश आने के लिए कहा। लेकिन उस लोभी व्यक्ति ने ईश्वर के संत की प्रेरणाओं पर कोई ध्यान नहीं दिया। कुछ वर्षों बाद, साइप्रस के आर्चबिशप ने अपने शिष्य पोलुवियस से कहा:

'चलो, मेरे पुत्र, पवित्र क्रूस और प्रभु के समाधिस्थल की पूजा करने के लिए यरूशलेम चलें। और वहाँ अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करने के बाद, हम वापस आ जाएँगे।'

और इस प्रकार वे साइप्रस से सेसरेया फिलिपी तक नाव से गए, और वहाँ से वे यरूशलेम गए। वहाँ के पवित्र स्थानों पर श्रद्धांजलि अर्पित करने के बाद, वे बिशप जॉन के पास पहुँचे, जो एपिफानियस को देखकर अत्यंत प्रसन्न हुए। साइप्रस के संत ने उनसे कहा:

'भाई, कृपया मुझे रहने की व्यवस्था कर दीजिए, क्योंकि मैं कुछ समय के लिए यहीं ठहरना चाहता हूँ।'

यरूशलेम के बिशप ने अपने मेहमान की विनती मान ली। उन्होंने उसे एक शानदार घर दिया और हर दिन उसके साथ भोजन करने का निमंत्रण दिया। मेहमान ने, एक ओर भोजन और पेय के साथ लाए गए चांदी के बर्तनों की भीड़ को देखकर और दूसरी ओर जॉन की कंजूसी के बारे में भिखारियों की भीड़ की बड़बड़ाहट सुनकर, सोचा कि उसे दान-पुण्य की ओर प्रेरित किया जाए। और इसलिए एक दिन उसने अपने अमीर मेज़बान से कहा:

'फादर जॉन, कृपया मुझे ये चाँदी के बर्तन कुछ समय के लिए उधार दे दीजिए: साइप्रस से कुछ प्रतिष्ठित लोग मुझसे मिलने आए हैं, और मैं उन्हें अपने घर पर ठहराना चाहता हूँ, ताकि मैं उनसे आपकी दयालुता और आपके घर की चाँदी के बारे में बता सकूँ, जो आपने मुझे मेरी विश्राम के लिए दी है। इससे आपको सम्मान मिलेगा, क्योंकि जब ये मेहमान घर लौटेंगे, तो वे दूसरे प्रतिष्ठित लोगों को बताना शुरू कर देंगे कि आप मुझसे कितना प्यार करते हैं, और आपके घर की महिमा, सम्मान और धन-संपत्ति कितनी महान है। इसलिए, यह सारा चाँदी का सामान मुझे थोड़े समय के लिए उधार दे दें। मैं इसे जल्द ही, आभार के साथ, आपको वापस कर दूँगा।"

जॉन ने उसके लिए बहुत सारे विभिन्न चाँदी के बर्तन लाए। फिर एपिफानियस ने पूछा:

'क्या आपके पास और कुछ है, पिताजी?'

'इतना ही काफी है,' लालची, कीर्ति-लालची आदमी ने जवाब दिया, 'यहाँ तक कि यह भी।'

एपिफानियस ने कहा, 'नहीं, लेकिन मुझे वह सब कुछ दो जो सबसे कीमती और बेहतरीन हो, ताकि मेहमान चकित हों और आपको सबसे बड़ी महिमा प्राप्त हो।'

जॉन ने उसके लिए सबसे उत्तम पात्र लाकर कहा:

'जो चाहें ले लीजिए, पिता एपिफानियस।'

संत ने उससे लगभग 1,500 लीटर चाँदी ([3657]) ली और उसे अपने कक्षों में ले गया। उस समय, रोम से व्यवसाय के सिलसिले में एस्टेरियस नामक एक चाँदीकार यरूशलेम पहुँचा। पूजनीय ने स्थानीय बिशप द्वारा दी गई चाँदी को उचित

[3657] लिट्रा वजन की एक इकाई है जो 72 ज़ोलोटनिक के बराबर होती है। एक चांदी की लिट्रा का मूल्य 42 रूबल तक होता था, जबकि एक सोने की लिट्रा का मूल्य 506 रूबल तक होता था।

मूल्य पर व्यापारी को बेच दिया। इसे खरीदने के बाद, एस्टेरियस अपने आवास पर लौट गया। परन्तु ईश्वर के पुरुष ने उस बिक्री से प्राप्त धन को दिन-रात गरीबों में बाँट दिया – आखिरी सिक्के तक। कुछ दिनों बाद, जॉन ने एपफिनियस से कहा:

'पिताजी, मुझे वह चाँदी वापस कर दीजिए जो मैंने आपको दी थी।'

'धैर्य रखें, पिताजी,' साइप्रस के आर्चबिशप ने जवाब दिया, 'मैं आपको सब कुछ दे दूँगा: मैं एक बार फिर अपने घर पर मेहमानों की मेजबानी करना चाहता हूँ।'

कुछ और दिनों के बाद, यरूशलेम के बिशप ने उस चर्च में जहाँ प्रभु के क्रूस के जीवन-दायक वृक्ष को रखा गया है, एक बार फिर उस आदरणीय व्यक्ति को चाँदी लौटाने की याद दिलाई।

उन्होंने उनसे कहा, "मुझे वह चाँदी वापस कर दो जो तुमने मुझसे ली है।"

एपफिनियस ने धीरे से जवाब दिया, "मैंने आपको बता दिया है, फादर, मैं सब कुछ लौटा दूँगा, लेकिन कृपया थोड़ी देर और धैर्य रखें।"

इस जवाब पर, गुस्से से भरकर जॉन ने एपफिनियस के कपड़ों को पकड़ लिया और उन्हें कसकर पकड़े हुए, धमकी भरे लहजे में कहा:

'जब तक तुम मेरा चाँदी का पैसा वापस नहीं कर देते, तब तक तुम इस जगह से न हटना, न बैठना, न ही आराम करना। हे दुष्ट और विश्वासघाती मनुष्य! जो तूने लिया है वह मुझे वापस कर; जो चर्च का है उसे चर्च को लौटा दे।'

एपफिनियस उस क्रोधित व्यक्ति के व्यवहार से विचलित नहीं हुआ। वह नम्र बना रहा। इस बीच, यरूशलेम के क्रोधित बिशप ने उस पूजनीय व्यक्ति को लगभग दो घंटे तक सताया। चर्च में मौजूद सभी लोग, संत के प्रति उसके कठोर शब्द सुनकर, चकित रह गए। लेकिन अपमानित किया गया व्यक्ति, अपने आरोपकर्ता के अनियंत्रित क्रोध और उग्रता को देखकर, उसके चेहरे पर थूक दिया, जिस पर वह तुरंत अंधा हो गया। इस चमत्कारी दंड से अनजाने में ही विस्मित होकर, वहाँ मौजूद सभी लोगों के साथ, जॉन संत के सामने साष्टांग दंडवत हो गया, और उससे विनती करने लगा कि वह उसकी दृष्टि वापस पाने के लिए ईश्वर से प्रार्थना करें।

'जाओ और प्रभु के क्रूस की सम्मानित लकड़ी की पूजा करो,' ईश्वर के पुरुष ने उसकी विनती का उत्तर देते हुए कहा, 'और तुम्हारी दृष्टि वापस आ जाएगी।'

लेकिन दंडित व्यक्ति एपफिनियस के पास से नहीं गया, वह उससे विनती करता रहा। तब महान संत ने, अपने दैवी-ज्ञानी होठ खोलकर, उस लालची व्यक्ति को गरीबी और दान के प्रेम पर लंबी शिक्षा दी। फिर, प्रार्थना करने और उस पर अपना हाथ रखने के बाद, उन्होंने उसकी दाहिनी आँख की दृष्टि वापस कर दी। आधा ठीक हुए व्यक्ति ने चमत्कार करने वाले से अपनी बाईं आँख की रोशनी भी लौटाने का अनुरोध किया। लेकिन संत ने उत्तर दिया:

'यह मेरा काम नहीं है, मेरे बच्चे, बल्कि ईश्वर का है: चूँकि ईश्वर ने आँख बंद की है, ईश्वर ही इसे खोलेंगे, ताकि तुम होश में आ सको।'

इस अनुशासनात्मक दंड के बाद, जॉन ने सुधार किया, और गरीबों के प्रति दयालु तथा अपने सभी कार्यों में धर्मी हो गया।

यरूशलेम से अपने धर्मप्रांत में लौटते समय, एपफिनियस की मुलाकात दो मसखरों से हुई जो निम्नलिखित तरीके से उनका मज़ाक उड़ाना चाहते थे। संत को दूर से देखते ही, उनमें से एक ने मरने का नाटक किया। जब संत पास आए, तो दूसरे ने उनसे कहा:

'फादर, मृतक के पास जाएँ और उसके नग्न शरीर को किसी वस्त्र से ढक दें।'

हालाँकि, संत ने ढोंगी को देखकर, विदाई आत्मा के लिए प्रार्थना करने के लिए पूर्व की ओर मुख किया। प्रार्थना करने के बाद, उन्होंने अपने कपड़े उतार लिए और 'मृतक' को उन कपड़ों से ढककर अपने रास्ते चल दिए।

उसके जाने के बाद, जीवित आदमी ने मृतक का नाटक कर रहे दूसरे से कहा:

'उठो, भाई; वह मूर्ख तो जा चुका है।'

लेकिन उस व्यक्ति ने कोई जवाब नहीं दिया। दूसरी बार पुकारने और उसे धक्का देने पर, उसे पता चला कि वह वास्तव में मर चुका था। भयभीत होकर, मसखरा ईश्वर के बिशप के पीछे भागा। महान चमत्कार करने वाले को पकड़ने पर, वह उनके पैरों पर गिर पड़ा, अपने पाप के लिए क्षमा याचना करने लगा और उनसे विनती करने लगा कि वे उस व्यक्ति से अपने वस्त्र और मृत्यु के बंधन हटा दें जिसे उन्होंने दंडित किया था।

'जाओ, मेरे बच्चे,' संत ने उत्तर दिया, 'अपने मृतक को दफ़ना दो: क्योंकि तुमने उसे ढकने के लिए कपड़े माँगना भी शुरू ही नहीं किया था, तब तक वह मर चुका था।'

साइप्रस के बिशप के अपने कैथेड्रल शहर में आगमन पर, रोम से भेजे गए दूत उनके पास एक अनुरोध लेकर आए कि वे सम्राट थियोडोसियस महान[3658] की बेटी और आर्कैडियस तथा हॉनोरीयस[3659] की बहन प्रोकलशिया को एक लंबे समय से चल रही और لاعلاج बीमारी से ठीक करें, जिनका विवाह एक प्रतिष्ठित पैट्रिसियन से हुआ था। सम्राट के दूतों के आगमन की खबर एक स्थानीय, सम्मानित और बहुत धनी मूर्तिपूजक, फाउस्टिनियन तक पहुँची, जो संत एपिफेनियस के प्रति गहरी शत्रुता रखता था। फाउस्टिनियन ने उन्हें अपने घर आमंत्रित किया और प्रतिदिन उनकी मेजबानी की। उनके साथ उनके ठहरने के दौरान, वह लगभग लगातार संत की निंदा करता रहा।

'तुम इस धोखेबाज़ में ऐसे क्यों विश्वास करते हो जैसे वह ईश्वर हो?' वह उनसे कहता था। 'तुम उसकी खोखली बातें क्यों सुनते हो? वह केवल झूठ बोलता है और बहुत दुष्ट रीति-रिवाजों का आदी है।'

लेकिन ऐसा हुआ कि संत एपिफेनियस, रोमनों के साथ, और फाउस्टिनियन एक चर्च के निर्माण स्थल पर एक साथ पहुँच गए। उनके सामने ही, जब वे निर्माणाधीन चर्च में खड़े थे, एक बढ़ई जो ठोकर खाकर गिर गया, ऊपर से जमीन पर आ गिरा और अपने पैरों से संत के दुश्मन को ठोकर मार बैठा। सभी को आश्चर्य हुआ, गिरने वाला आदमी बिल्कुल भी घायल नहीं हुआ और तुरंत उठ खड़ा हुआ; लेकिन फाउस्टिनियन, उस धक्के से, मरकर गिर पड़ा। एपिफानियस, उसके पास जाकर और उसका हाथ पकड़कर, कहा:

'उठो, मेरे बच्चे, प्रभु के नाम पर, और अच्छे स्वास्थ्य के साथ घर जाओ।'

और तुरंत वह मृतक जीवित हो उठा, खड़ा हो गया और घर चला गया। फाउस्टिनियन की पत्नी, अपने पति की मृत्यु और अप्रत्याशित पुनरुत्थान के बारे में जानकर, उसके उपचारक के पास 1,000 ज़लाटकि ले आई।

'यह मुझे मत दो,' सम्माननीय व्यक्ति ने उससे कहा, 'बल्कि चर्च भवन को दो, और स्वर्ग में तुम्हारा खजाना होगा।'

इसके बाद, ईश्वर के पुरुष रोम गए। वहाँ, प्रार्थना और क्रॉस के चिह्न द्वारा, उन्होंने प्रोक्लशिया को ठीक किया, उसके नवजात पुत्र को मृतकों में से जीवित कर दिया, उसका बपतिस्मा दिया, और दो शाही बेटों, होनोरियस और आर्काडियस का भी बपतिस्मा दिया। बाद में, महान चमत्कार करने वाले को सम्राट थियोडोसियस महान स्वयं द्वारा कॉन्स्टेंटिनोपल में आमंत्रित किया गया, जो पैरों की एक لاعلاج और अत्यधिक पीड़ादायक बीमारी से पीड़ित थे। संत एपिफानियस ने उन्हें एक ही घंटे में क्रॉस का चिह्न बनाकर ठीक कर दिया, जिसके लिए उन्हें थियोडोसियस का विशेष अनुग्रह प्राप्त हुआ।

[3658] थेओडोसियस महान ने 389 से 395 तक पूर्व में, और 392 से 395 तक ग्रीको-रोमन साम्राज्य के पश्चिम में शासन किया। उन्होंने 392 में एकमात्र शासक बनकर मूर्तिपूजक धर्म को अंतिम आघात पहुँचाया। थियोडोसियस ने एक कानून जारी किया जिसके तहत देवताओं की पूजा को राजद्रोह के समान अपराध माना गया।

[3659] पूर्वी रोमन सम्राट और थियोडोसियस महान के पुत्र आर्कैडियस को अपने पिता की मृत्यु (395) पर तथाकथित पूर्वी साम्राज्य विरासत में मिला, जबकि उनके भाई होनोरियस को पश्चिमी साम्राज्य मिला; उनका जन्म 377 में हुआ था और 408 में उनकी मृत्यु हो गई। अपने पूरे शासनकाल में, राज्य उन लोगों द्वारा शासित था जो कमजोर इच्छाशक्ति वाले सम्राट को अपने प्रभाव में लाने में सक्षम थे। इस प्रकार, उनके शासनकाल की शुरुआत में, राज्य का शासन रुफिनस के हाथ में था, जिसने पहले से ही भारी कर बोझ को और बढ़ा दिया, जुर्माने की संख्या में वृद्धि की, और इस प्रकार साम्राज्य में दहशत फैला दी। रूफिनस की मृत्यु के बाद, उनके उत्तराधिकारी एक ख़ास दास यूट्रोपियस बने, और जब सम्राज्ञी यूडोक्सिया ने उनकी फांसी (399) सुनिश्चित करवाई, तो आर्कैडियस पूरी तरह से अपनी पत्नी के प्रभाव में आ गए, जो उस समय कॉन्स्टेंटिनोपल के पैट्रिआर्क सेंट जॉन क्रिसोस्टोम के प्रति अपनी शत्रुता के लिए जानी जाती थीं। सम्राट आर्कैडियस के शासनकाल के दौरान, उनके द्वारा दिए गए प्राधिकरण पत्रों से लैस मिशनरियों ने प्रांतों के उन हिस्सों में ईसाई धर्म का प्रचार किया जहाँ अभी भी मूर्तिपूजक रहते थे।

आर्काडियस के भाई होनोरियस पश्चिमी रोमन सम्राट थे। उनके शासन के आरंभ में, सरकार का नेतृत्व चतुर राजनेता और प्रसिद्ध सैन्य कमांडर स्टिलिको कर रहे थे, जिन्होंने विसिगोथ्स, वैंडल्स, सूएबी और बर्गुंडी लोगों द्वारा साम्राज्य पर किए गए हमलों को बार-बार विफल किया था। उनके पतन और मृत्यु के बाद, साम्राज्य की किस्मत और भी खराब हो गई। 408 में, विसिगोथिक नेता एलारिक ने रोम की घेराबंदी की और शहर को भारी जज़िया देने के लिए मजबूर किया; 410 में, उसने शहर पर कब्ज़ा कर लिया और अपनी सेना को इसे लूटने की अनुमति दी। एलारिक की मृत्यु के बाद, उसके साले अताउल्फ ने होनोरियस के साथ एक शांति संधि की, जिसके बाद विसिगोथ अल्प्स के पार चले गए। होनोरियस के आदेश पर, शेष सभी मूर्तिपूजक मंदिरों को ध्वस्त कर दिया गया, और मूर्तिपूजकों को स्वयं सार्वजनिक पद से हटा दिया गया। होनोरियस के आदेश पर, शेष सभी मूर्तिपूजक मंदिरों को नष्ट कर दिया गया, और मूर्तिपूजकों को स्वयं सार्वजनिक पदों से हटा दिया गया।

एक साल, साइप्रस द्वीप पर एक बड़ी अकाल पड़ी। परणिामस्वरूप, बेसहारा और गरीब बड़ी संख्या में मर गए। इस बीच, कंजूस अमीर फाउस्टनियिनस, अपने गेहूं, जौ और अन्य अनाज से भरे कई अनाज भंडार होने के बावजूद, बहुत ऊँजी कीमत पर रोटी बेच रहा था।

एक दनि संत ने उससे कहा, "मेरे अच्छे मत्रि, गरीबों को खलिाने के लिए अपनी अनाज की कोठड़ियों से मुझे कुछ गेहूँ दो, और मैं तुम्हारा ऋणी रहूँगा।"

'अपने यीशु से प्रार्थना करो, जसि पर तुम वशि्वास करते हो,' कठोर-हृदय मूर्तपिूजक ने एक दुष्ट ताने के साथ उत्तर दयिा, 'कि वह तुम्हें अपने भखिारी दोस्तों को खलिाने के लिए गेहूँ दे।'

लेकनि जो उपहास में कहा गया था, वह सच हो गया। संत एपफिेनयिस की एक धार्मकि प्रथा थी कि वे हर रात पवत्रि शहीदों की कब्र पर जाते और वहाँ ईश्वर से प्रार्थना करते कि जो कुछ भी आवश्यक हो, वह भेज दें; संत एपफिेनयिस ने अपनी प्रार्थना को और प्रबल बनाने के लिए पवत्रि शहीदों से अनुरोध कयिा कि वे उनके सामने मध्यस्थता करें

प्रभु के समक्ष, और उसे हमेशा वही मलिता था जो वह माँगता था। और अब, अपनी आदत के अनुसार, संत एपफिेनयिस रात में पवत्रि शहीदों के मकबरे के लिए नकिल पड़े, जहाँ उन्होंने आँसुओं के साथ दयालु ईश्वर से भूख से मर रहे लोगों को बचाने के लिए प्रार्थना की। जब वह प्रार्थना कर रहे थे, तो उन्होंने एक आवाज़ सुनी जो उनसे कह रही थी:

'एपफिानयिस! नस्रिंकोच 'Die[3660] ' के मंदरि में जाओ, और दरवाज़े तुम्हारे सामने खुल जाएँगे, और तुम्हें उसके अंदर सोना और चाँदी मलिेगी; इसे लो और फाउस्टनियिानुस से बाजरा, जौ और अन्य अनाज खरीदो, और गरीबों को खलिाओ।'

यह ध्यान देने योग्य है कि 'दीवा का कलिा' के नाम से जाना जाने वाला यह मंदरि तब से बंद पड़ा था, जब से देश पर नयिंत्रण करने वाले ईसाई शासकों ने शाही फरमान द्वारा सभी मंदरिों को बंद करके सील कर दयिा था, ताकि वहाँ कोई और अधर्मी, दैवीय बलदिान न कयिा जा सके। लोगों में यह अफवाहें फैली थीं—जसिे मूर्तपिूजकों ने दृढ़ वशि्वास के रूप में माना था—कि कोई भी मानव उपरोक्त मंदरि के पास नहीं जा सकता था या उसे छू नहीं सकता था: ऐसा व्यक्ति (कथति तौर पर) वहीं पर अचानक मृत्यु का शकिार हो जाएगा। और सभी लोग मंदरि से दूर ही रहते थे , और यह और भी इसलिए था क्योंकि राक्षस अपनी धमकयिों से लोगों को डराते थे और उन ईसाइयों को भी मार डालते थे, जनि पर ईश्वर की अनुमति से, उनकी वही शक्ति थी जो उनके मूर्तपिूजक पूजकों पर थी।

ईश्वर की आज्ञा का पालन करते हुए, संत एपफिानयिस तुरंत मूर्तघिर के लिए रवाना हो गए, जसिके दरवाज़े उनके सामने तुरंत खुल गए; वहाँ उन्हें सोने और चाँदी की बहुत बड़ी मात्रा मलिी। इन चमत्कारकि रूप से प्राप्त धन-संपत्तियों के साथ, उन्होंने फाउस्टनियिानुस से रोटी खरीदना शुरू कर दयिा। पैसा-प्रेमी अमीर ने खुशी-खुशी संत एपफिानयिस को अपने घर का सारा अनाज बेच दयिा, जो दयालु बशिप की परोपकारिता के कारण गरीबों और बेसहारों के घरों तक पहुँच गया। इस प्रकार भूखे लोगों को भोजन मलिा, जबकि फाउस्टनियिन्स के अमीर परविार को इससे वंचति कर दयिा गया और वहाँ अकाल पड़ गया। अपने ही घर के लिए भोजन माँगने में पादरी से शर्मदिा होकर, उस अमीर आदमी ने अपने दोस्त लोंगनिस को सोने और ग्यारह जहाजों के साथ कैलाब्रयिा[3661] भेजा। लेकनि वापसी की यात्रा पर, शहर से सौ स्टेडयिम दूर, रोटी से लदे जहाज एक भयंकर तूफान में अप्रत्याशति रूप से टूट गए। उसकी दुर्दशा के बारे में जानकर, फौस्टनियिन ने बड़े दुख में सर्वशक्तमिान और उनके संत की नदिा की।

उसने कहा, 'देखो, यह ईसाई जादूगर मेरे साथ क्या शरारत कर रहा है: न केवल उसने अपनी धोखाधड़ी से मेरे घर को जमीन पर भोजन से वंचति कर दयिा है, बल्कि उसने समुद्र में मेरे अनाज को भी नष्ट कर दयिा है, और राक्षसों के काम से मेरे जहाजों को डुबो दयिा है।'

इस बीच, उफनता हुआ समुद्र डूबे हुए अनाज को सालामसि के तटों पर बहा रहा था। भखिारयिों ने उसे इकट्ठा कर लयिा। इस प्रकार भजन संहति का वचन पूरा हुआ: *'गरीब कष्ट सहते हैं और भूखे रहते हैं, परन्तु जो यहोवा की खोज करते हैं, उन्हें कसिी भी अच्छी वस्तु की कमी नहीं होती'* (भजन संहति 33:11)।

[3660] यह मंदरि मूर्तपिूजक देवता डाये, या वैकल्पकि रूप से ज़ीउस, को समर्पति होने के कारण इसका नाम 'डाये' रखा गया था।

[3661] कैलाब्रयिा सरोनकि खाड़ी में पोरोस द्वीप का प्राचीन नाम है।

भूख से तड़पते हुए, दंडति धनी व्यक्ति की पत्नी ने संत के पास अपने घर के लिए रोटी खरीदने के अनुरोध के साथ सोना भेजा, लेकिन पूजनीय ने सोना वापस भेजते हुए कहा:

'अब मुफ्त में, जितना तुम्हें चाहिए, उतना ले लो, और जब फसल आएगी तो तुम मुझे चुका देना।'

धनी व्यक्ति स्वयं, संत के प्रति कटु होकर, दुष्ट डकिन रुफिनस को उस पवित्र व्यक्ति की हत्या करने के लिए उकसाया, और बदले में उसने अपनी संपत्ति और संबंधों का उपयोग करके रुफिनस को बिशप पद पर स्थापित करने का वादा किया। लेकिन ईश्वर ने अपने सेवक को उस दुष्ट व्यक्ति की चालाकियों से बचाया। दीकन ने एक तेज चाकू तैयार किया, जिसकी नोक उसने चर्च के उच्च वेदी पर बिशप की कुर्सी में ऊपर की ओर ठूँस दी; फिर उसने उस कुर्सी को सामान्य वस्त्र से ढक दिया: उसने यह इस इरादे से किया कि जब संत सेवा के दौरान निर्धारित समय पर उस कुर्सी पर बैठेंगे, तो उन्हें जानलेवा छुरा घोंपा जाएगा। लेकिन वह समय आ गया जब, धार्मिक अनुष्ठान के क्रम के अनुसार, बिशप को ऊँचे सिंहासन पर अपनी जगह लेनी थी; उस ओर बढ़ते हुए, संत एपिफानियस ने डीकन रूफिनस से कहा:

'ले लो, मेरे बेटे, सिंहासन से आवरण।'

लेकिन रूफिनस ने आज्ञा नहीं मानी, भले ही संत ने तीन बार अपनी आज्ञा दोहराई। तब संत एपिफानियस ने स्वयं आवरण हटा दिया, जिस पर चाकू गिर पड़ा और उसकी धार डकिन के दाहिने पैर में घुस गई।

दीकन के कपटी इरादों को भांपते हुए, संत एपिफानियस ने कहा:

'मेरे बेटे, अपनी साजिशें बंद कर दो, कहीं तुझ पर इससे भी बड़ी विपत्ति न आ पड़े; अब चर्च छोड़ दे, क्योंकि तुम पवित्र रहस्यों में भाग लेने के अयोग्य हो।'

तीसरे दिन ही वह बीमार पड़ गया और उसकी मृत्यु हो गई। जहाँ तक फाउस्टिनियन का सवाल है, उस पर जल्द ही सम्राट के सामने ईश्वर के खिलाफ अपमानजनक टिप्पणी करने का आरोप लगाया गया और उसे शाही कालकोठरी में कैद कर दिया गया। अपने शत्रुओं से प्रेम करने वाले संत, उस कैदी की रिहाई के लिए शासक से मध्यस्थता करना चाहते थे। लेकिन राजा ने अपने गुस्से में संत को उसकी ओर से कोई मध्यस्थता करने से मना कर दिया। संत चुप रहे और, कुछ ही समय बाद, उन्होंने जेल में फाउस्टिनियन की अप्रत्याशित मृत्यु पर शोक व्यक्त किया। अपने पति की मृत्यु के बाद, फाउस्टिनियन की पत्नी ने अपनी सारी संपत्ति चर्च को दान कर दी और, उसकी इच्छानुसार, संत द्वारा उसे एक डीकोनेस (दीकनी) के रूप में नियुक्त किया गया।

संत एपिफानियस के बिशप के घर में रहने वाले अस्सी भिक्षुओं में सावित्री नामक एक डकिन था, जो अपने सदाचारी जीवन, अपनी बुद्धि और प्रभावशाली रचनाएँ लिखने में अपनी कुशलता के लिए विख्यात था। अन्य बातों के अलावा, उन्होंने संत एपिफानियस के जीवन का वृत्तांत लिखा; अपने वृत्तांत में, उन्होंने संत की पूरी रात की प्रार्थना, विनती में घुटने टेकने, और उनके द्वारा किए गए चमत्कारों का वर्णन किया है। इस हायरिओडीकन के असाधारण गुणों को देखते हुए, आर्चबिशप ने उन्हें धार्मिक मामलों में न्यायाधीश नियुक्त किया। एक अवसर पर, एक धनी व्यक्ति जो सच बोल रहा था और एक गरीब व्यक्ति जिसने झूठी गवाही दी थी, उसके सामने अदालत में उपस्थित हुए। न्यायाधीश ने गरीब व्यक्ति पर दया करके उसकी पैरवी की। मुकदमे के दौरान, संत चुपके से आए और एक छिपे हुए स्थान पर छिप गए, और जैसे ही उन्होंने सुना कि न्यायाधीश ने अन्यायी गरीब व्यक्ति को बरी कर दिया है, वे उस स्थान से बाहर आ गए।

आर्चबिशप ने न्यायाधीश से कहा, 'मेरे पुत्र, जाओ, पुस्तकें लिखो और धर्मग्रंथों के वचनों पर मनन करो, ताकि तुम धार्मिकता से न्याय करना सीख सको, क्योंकि लिखा है: *'तुम न्याय में पक्षपात न करना; न तो दरिद्र का पक्ष लो और न ही बड़े का; अपने पड़ोसी का न्याय ठीक-ठीक करना'* (लैव. 19:15)।

उस समय से, संत एपिफेनियस उनके पास आने वाले सभी लोगों का स्वयं न्याय करते थे।

अपनी भेड़ों का बड़ी सावधानी से ध्यान रखते हुए, उन्होंने अपने शब्दों और चमत्कारों दोनों से ही विधर्मियों को परास्त किया। उन्होंने विधर्मी बिशप एटियस[3662] को गूंगा कर दिया; एटियस की छह दिन बाद मृत्यु हो गई, और इस चमत्कार को देखने के बाद उसके कई अनुयायी ऑर्थोडॉक्स धर्म में परिवर्तित हो गए, और चमत्कार करने वाले के पैरों पर गिर पड़े। इसके अलावा, सच्चे धर्म के इस उत्साही रक्षक ने सभी अविचल विधर्मी लोगों के बारे में राजा को लिखा।

[3662] एटियस या एटियस – एंटिओक का एक डकिन था जिसकी मृत्यु 370 में हुई; एरियस के अनुयायी के रूप में, उसने एरियनों का नेतृत्व किया, जो यह अस्वीकार करते थे कि परमेश्वर का पुत्र परमेश्वर पिता के समान सार का है और इसलिए उसने पवित्र त्रिमूर्ति के दूसरे व्यक्ति की प्रथम व्यक्ति के साथ असमानता को खुले तौर पर स्थापित किया।

राजा ने उन्हें साइप्रस से निष्कासित करने का अधिकार दे दिया। इन सब के कारण, अच्छे चरवाहे का आध्यात्मिक झुंड भेड़ियों से सुरक्षित रहा।

कई वर्षों तक पुरोहित के भारी दायित्व को वहन करने और एक परिपक्व उम्र तक पहुँचने के बाद, संत एपिफानियस अपने परम विराम के करीब आ गए। इससे कुछ समय पहले, उन्हें निम्नलिखित कारण से कॉन्स्टेंटिनोपल की यात्रा करनी पड़ी थी। सम्राट आर्कैडियस की पत्नी यूडोक्सिया, जो उनके पिता थियोडोसियस महान के बाद पूर्व में शासन करती थी, ने अलेक्जेंड्रिया के पैट्रिआर्क थियोफिलिस[3663] के साथ मिलकर कॉन्स्टेंटिनोपल के पैट्रिआर्क जॉन क्रिसोस्टोम को निर्वासित करने का निर्णय लिया। उसने अपनी कपटी पत्रों के माध्यम से एपिफानियस को परिषद के लिए कॉन्स्टेंटिनोपल आने के लिए मना लिया। इन पत्रों में, थियोफिलिस ने जॉन पर यह आरोप लगाकर उनकी बदनामी की कि वह कथित तौर पर एक विधर्मी थे जो ओरिजिन[3664] के विचारों को मानते थे। अपनी सादगी के कारण, संत ने उनकी बात पर विश्वास कर लिया और कॉन्स्टेंटिनोपल के लिए रवाना हो गए। सम्राट के साथ अपनी मुलाकात के दौरान, बाद वाले ने उनका आशीर्वाद लिया और उनसे उनकी उम्र पूछी।

'साठ साल,' संत एपिफानियस ने उत्तर दिया, 'मुझे बिशप नियुक्त किया गया था, और मैंने 55 साल और तीन महीने तक बिशप के रूप में सेवा की है। इस प्रकार, मेरी कुल उम्र 115 साल और तीन महीने है।'

सम्राट ने उनके पवित्र सफेद बालों और पवित्र मुखमंडल का सम्मान किया। हालाँकि, सम्राज्ञी यूडोक्सिया ने संत को अपने पास बुलाया और उनसे कहा:

'फादर एपिफानियस, आप जानते हैं कि संपूर्ण रोमन साम्राज्य हमारे हाथ में है: और इसलिए आज मैं आपको सभी धार्मिक अधिकार प्रदान करूँगी, यदि आप मेरी आज्ञा का पालन करेंगे, मेरे हृदय के दुख को दूर करेंगे, और मेरी इच्छानुसार करेंगे।'

'बोलो, मेरी बेटी,' संत ने उत्तर दिया, 'हम अपनी पूरी कोशिश करेंगे कि वह सब कुछ करें जो तुम्हारी आत्मा के उद्धार का कारण बने।'

तब रानी ने चालाकी से संत को अपनी योजना में शामिल करने के लिए मनाने की सोचकर, संत क्रिसोस्टोम के बारे में उनसे इस प्रकार कहना शुरू किया:

'यह योहन चर्च पर शासन करने और इतने उच्च पद पर रहने के लिए अयोग्य साबित हुआ है, क्योंकि उसने राजा के खिलाफ विद्रोह कर दिया है और हमें वह सम्मान नहीं देता जो हमें मिलना चाहिए। इसके अलावा, कई लोग कहते हैं कि वह लंबे समय से एक विधर्मी रहा है। इसी कारण, हमने एक परिषद बुलाने और उसे उसके पद से हटाकर उसकी जगह किसी और को नियुक्त करने का निर्णय लिया है—जो चर्च को सुव्यवस्थित करने में सक्षम हो—ताकि अब से हमारा राज्य शांति में रहे।

यह कहते हुए रानी का चेहरा गुस्से से लाल हो गया।

[3663] थेओफिलिस ने 386 से 412 तक पैट्रिआर्क का पद संभाला

[3664] ओरिजिन – अलेक्जेंड्रिया के चर्च के प्रसिद्ध ईसाई शिक्षक (मृत्यु 254) – अपनी विशाल बुद्धि और ज्ञान की गहराई के लिए अपने युग के एक आश्चर्य थे। चर्च के कई सबसे प्रतिष्ठित धर्मपिताओं ने ओरिजिन की धार्मिक कृतियों और उपलब्धियों को सर्वोच्च सम्मान दिया; फिर भी बाद में, जब वह जीवित था, अलेक्जेंड्रिया में दो स्थानीय परिषदों में, और 543 में कॉन्स्टेंटिनोपल की स्थानीय परिषद में उसकी मृत्यु के बाद, उसे एक विधर्मी घोषित कर दिया गया। हालांकि ओरिजिन ने अपने गैर-पारंपरिक विचारों को अपरिवर्तनीय सत्य के रूप में प्रस्तुत नहीं किया, फिर भी उन्होंने ईसाई चर्च के सिद्धांत के कई सत्यों पर गलत विचार रखे, यही कारण है कि कुछ लोगों ने सबसे बुनियादी ईसाई धर्मनिरपेक्षताओं के प्रति उनके दृढ़ पालन को संदिग्ध माना। आत्माओं के पूर्व-अस्तित्व के गैर-पारंपरिक सिद्धांत को विकसित करते हुए, उन्होंने मसीह के संबंध में गलत विचार रखे, यह मानते हुए कि ईश्वर ने समान गरिमा वाले एक निश्चित संख्या में आध्यात्मिक प्राणियों को बनाया था, जो दिव्यता को समझने और उसकी तरह बनने में सक्षम थे; इन सृजित आत्माओं में से एक दिव्यता की ओर इतनी तीव्रता से आकर्षित हुई कि वह दिव्य वचन के साथ अविभाज्य रूप से एक हो गई, या उसकी सृजित पात्र बन गई; ओरिजिन की दृष्टि में, यह मानव आत्मा है जिसके माध्यम से परमेश्वर वचन पृथ्वी पर अवतार ले सके, क्योंकि, उनके *गलत* दृष्टिकोण के अनुसार, दिव्यता का प्रत्यक्ष अवतार अकल्पनीय है। परमेश्वर वचन के अवतार और संसार तथा मनुष्य की सृष्टि के एक विधर्मी दृष्टिकोण पर अड़े रहकर, ओरिजिन ने मसीह की मृत्यु को भी एक गैर-पारंपरिक अर्थ में समझा, इसे आध्यात्मिक जगत में आध्यात्मिक रूप से दोहराई जाने वाली और वहाँ स्वर्गदूतों की मुक्ति पर प्रभाव डालने वाली घटना माना, जबकि उद्धार के कार्य को हमारी प्रकृति को प्रदान की गई सामान्य शक्तियों से कहीं अधिक श्रेय दिया। ओरिजिन पुनरुत्थान और आने वाले जीवन पर अपने शिक्षण के कुछ पहलुओं में भी गलत थे, उदाहरण के लिए, इस विश्वास में कि शैतान को बचाया जा सकता है; और पवित्र धर्मग्रंथ की अपनी व्याख्या में, उन्होंने बहुत कुछ को गूढ़ अर्थ में समझा, जिससे धर्मग्रंथ के ऐतिहासिक अर्थ का नाश हो गया।

'इतनी बड़ी संख्या में पादरियों को परिषद के लिए यहाँ बुलाकर परेशान करने की कोई आवश्यकता नहीं है; बल्कि, हे पवित्र पिता, यह आदेश दीजिए कि उसे चर्च से निकाल दिया जाए और उसकी जगह किसी और को नियुक्त किया जाए, जिसे ईश्वर आपको दिखाएगा। मैं, अपनी ओर से, यह सुनिश्चित करूँगी कि आपका आदेश माना जाए।'

'मेरी बेटी,' संत ने उत्तर दिया, 'बिना क्रोध के अपने पिता की बात सुनो! यदि जॉन, जैसा तुम कहती हो, एक विधर्मी है, और यदि वह अपने विधर्म पर पश्चाताप नहीं करता है, तो वह पैट्रिआर्की के पद के अयोग्य है, और हम उसके साथ वैसा ही व्यवहार करेंगे जैसा तुम आज्ञा दोगी। लेकिन यदि आप उन्हें केवल इस एक अपराध के लिए निष्कासित करना चाहती हैं कि उन्होंने आपकी बदनामी की है, तो एपिफेनियस इस बात की सहमति नहीं देंगे। क्योंकि राजाओं के लिए द्वेष रखने के बजाय क्षमाशील होना, और अपने ऊपर की गई अपमानजनक बातों को दयालुता, सौम्यता और क्षमा से लेना उचित है, क्योंकि स्वर्ग में आपका भी एक राजा है और आप अपने पापों के लिए उसी से क्षमा मांगती हैं। *'दयालु बनो, जैसे तुम्हारा पिता दयालु है'* (लूका 6:36)।

उनके ये शब्द सुनकर, उस घमंडी रानी का क्रोध और भी भड़क उठा। अपनी तीव्र चिड़चिड़ाहट से आँसू बहाते हुए, उसने क्रोध में कहा:

'यदि तुम योहन के निर्वासन के रास्ते में खड़े हो, तो मैं मूर्तिपूजक मंदिरों को फिर से खोलूँगी और यह सुनिश्चित करूँगी कि कई लोग, ईश्वर से मुँह मोड़कर, मूर्तियों की पूजा करना शुरू कर दें, और यह बाद वाला पहले वाले से भी बदतर होगा।'

एपिफेनियस, उसकी तीव्र क्रोध से चकित होकर, ने कहा:

'मैं उस आरोप से निर्दोष हूँ।'

यह कहकर, वह शाही कक्ष से निकल गया। इस बीच, पूरे शहर में एपिफेनियस की रानी से जॉन के निष्कासन के संबंध में हुई मुलाकात और उसके साथ हुए समझौते की अफवाहें फैल गईं। यह अफवाह उस व्यक्ति तक पहुँच गई जिस पर इसका सबसे अधिक प्रभाव पड़ा था। कॉन्स्टेंटिनोपल के संत ने तुरंत एपिफेनियस को निम्नलिखित लिखा:

'भाई एपिफेनियस, मैंने सुना है कि आपने मेरे निर्वासन की सलाह दी; तो जान लो, कि तुम फिर कभी अपना धर्मप्रांत नहीं देखोगे।'

संत एपिफेनियस ने उत्तर दिया:

'शहीद जॉन, अन्याय सहने पर भी, विजयी हो; फिर भी तुम उस स्थान तक नहीं पहुँचोगे जहाँ तुम्हारा निर्वासन होना है।'

और दोनों पुरुषों की भविष्यवाणी सच हुई।

संत जॉन को अन्यायपूर्ण रूप से दोषी ठहराने की इच्छा को देखकर, संत एपिफेनियस ने ऐसे किसी गैरकानूनी मुकदमे में भाग लेने से इनकार कर दिया। अपने करीबी सहयोगियों के साथ गुप्त रूप से एक जहाज पर सवार होकर, वे घर लौट आए। समुद्र पार करते समय, वृद्धावस्था की थकान को महसूस करते हुए और ईश्वर के साथ अपने निकट प्रस्थान की पूर्व दृष्टि रखते हुए, उन्होंने अपने शिष्यों से इस प्रकार कहना शुरू किया:

'मेरे बच्चों, मेरी आज्ञाओं को मानो, और परमेश्वर का प्रेम तुम में बना रहेगा: तुम जानते हो कि मेरा जीवन कितनी दुखों से भरा रहा है, और मैंने उन्हें दुख नहीं समझा, बल्कि परमेश्वर के द्वारा उनमें हमेशा आनन्दित हुआ, और परमेश्वर ने मुझे नहीं छोड़ा, बल्कि हर शत्रुतापूर्ण विपत्ति से मेरी रक्षा की: *"'जो लोग परमेश्वर से प्रेम करते हैं, उनके भले के लिए सब कुछ मिलकर काम करता है'* (रोमियों 8:28)। एक बार, मेरे प्रियजनों, जब मैं जंगल में रहता था और मसीह परमेश्वर से शत्रु की युक्तियों से मेरी रक्षा करने के लिए प्रार्थना कर रहा था, तो अचानक, परमेश्वर की अनुमति से, बहुत सारे दानव मुझ पर आ पड़े; उन्होंने मुझे जमीन पर पटक दिया और पैरों से पकड़कर, मुझे जमीन पर घसीटा; जबकि उनमें से कुछ मुझे पीट रहे थे। उन्होंने दस दिनों तक मेरे साथ ऐसा किया, और फिर वे गायब हो गए। और उस क्षण से, मैंने अपने जीवन के बाकी दिनों में उन्हें फिर कभी नहीं देखा। केवल दुष्ट लोगों, अर्थात् विधर्मी लोगों ने ही मुझे परेशानी दी। सावधान रहो, हे मेरे बच्चों, और पापी एपिफेनियस के वचनों पर ध्यान दो। धन की लालसा मत करो, और बहुत धन तुम्हारे पास आएगा। किसी मनुष्य के प्रति घृणा न पालो, और ईश्वर तुमसे प्रेम करेगा। अपने भाई की निंदा न करो, और शैतान की

ईर्ष्या तुम पर हावी नहीं होगी। *Panaria*[3665] नामक पुस्तक में जिन विधिर्मों के बारे में मैंने तुम्हें लिखा है, उनसे विषैले साँपों की तरह भागो। से मुंह मोड़ो और सांसारिक वासनाओं से अपना बचाव करो, जो शरीर और मन दोनों को भड़काती हैं। जान लो कि ये शैतान की युक्तियाँ हैं; क्योंकि भले ही असावधान मनुष्य का शरीर विद्रोह न करे, फिर भी मन बुराई के लिए तरसता है। परन्तु यदि हमारा मन संयमी और परमेश्वर के प्रति जागरूक है, तो हम शत्रु को आसानी से परास्त कर सकते हैं।

अपने शिष्यों को इन और कई अन्य आध्यात्मिक उपदेशों के बाद, रेवरेंड ने पोलुवियस को भविष्यवाणी की कि वह जल्द ही अपर थेबाइड में स्थित रिनोकिरिसक शहर का बिशप बनेगा। नौका के गुलामों से, उन्होंने एक तूफान की भविष्यवाणी की जो बहुत जल्द आने वाला था, और साथ ही उन्हें निर्देश दिया कि वे भयभीत न हों, बल्कि ईश्वर में अपना विश्वास रखें। उनमें से एक से उन्होंने कहा:

'दूसरों को परीक्षा में न डालो, कहीं तुम स्वयं परीक्षा में न पड़ो।'

[3665] उनका ग्रंथ *पैनारिया* (जिसका अर्थ है 'औषधालय' या 'दवा की तिजोरी') 20 पूर्व-ईसाई और 80 ईसाई संप्रदायों की व्याख्या और खंडन है। एपिफेनियस की एक अन्य कृति, जिसका शीर्षक *एंकोरेटस* (एंकर) है, विधिर्मों का खंडन करने के लिए समर्पित है; इसमें, वह मुख्य रूप से एरियन, सेमी-एरियन, डुचोबोर और अपोलिनारियन के रूप में जाने जाने वाले विधिर्मी लोगों के विरुद्ध, त्रिमूर्ति, अवतार, मृतकों के पुनरुत्थान और आने वाले जीवन के ऑर्थोडॉक्स सिद्धांत की व्याख्या करते हैं। संत एपिफानियस निम्नलिखित कृतियों के भी लेखक हैं: क) 'पत्थरों पर', यहूदी महापुजारी की वक्ष-पट्टी पर 12 पत्थरों की व्याख्या करती है; ख) 'पुराने नियम के 22 नबियों और नए नियम के 3 नबियों, और मसीह के 12 प्रेरितों और 70 शिष्यों पर', जिसमें काफी संख्या में मूल्यवान मौखिक चर्च-ऐतिहासिक परंपराएं शामिल हैं; c) 'वज़न और माप (बाइबिल संबंधी) पर एक पुस्तक', जिसमें बाइबिल के मापों पर जानकारी के अलावा, बाइबिल के ग्रीक अनुवादों के कुछ संदर्भ भी शामिल हैं; d) 'द फिजियोलॉगस' (बाइबिल के जानवरों की विशेषताओं पर एक अवलोकन) पुस्तक पर एक टीका; और e) संभवतः12 उपदेश, जिनकी प्रामाणिकता पर विवाद है।
संत जॉन क्रिसिस्टम के कार्यों ने चौथी और पाँचवीं शताब्दी में ही ईसाई जगत में महान ख्याति प्राप्त कर ली थी: उन्हें शाही महलों में कीमती रत्नों की तरह संजोया जाता था और सोने के अक्षरों में लिखा जाता था। हालाँकि उनके कई ग्रंथ आज तक संरक्षित नहीं रहे हैं, फिर भी संरक्षित ग्रंथों की संख्या चर्च के किसी अन्य पिता या शिक्षक से अधिक है। ग्रीक होरोलॉजियन के अनुसार, आज तक संरक्षित सेंट जॉन क्राइसोस्टोम के ग्रंथों की कुल संख्या 1,447 है, जिनमें 244 तक पत्र शामिल हैं। जॉन क्रिसोस्टोम से जो सामग्री बची है, उसमें से अधिकांश उपदेश और चर्च संबंधी प्रवचन हैं। सेंट जॉन के उपदेश अपनी सुसंगति, विचारों की गहराई और विषय-वस्तु की विविधता के लिए उल्लेखनीय हैं। संत इसिडोर ने क्रिसोस्टोम के बारे में लिखा, 'मैं दूसरों की बात नहीं कर रहा हूँ, बल्कि स्वयं लिबानियस—जो अपनी वाक्पटुता के लिए प्रसिद्ध थे—भी प्रसिद्ध जॉन के भाषण, उनके विचारों की सुंदरता और उनके तर्कों की ताकत को देखकर चकित थे।' संत जॉन क्राइसोस्टोम के सबसे अच्छे उपदेशों में सही मायने में उनकी मूर्तियों पर अंकोनिया के लोगों को दिए गए प्रवचन, यूट्रोपिया पर उनका उपदेश, 'गरीबों के बचाव में' उनका उपदेश, राजधानी से उनके निष्कासन और राजधानी में उनकी वापसी पर उनके उपदेश, और प्रेरित पौलुस के लिए उनके प्रशंसा के शब्द शामिल हैं। अपने उपदेशों में, 'स्वर्ण-जिह्वा' शिक्षक ने ईसाई जीवन के लगभग हर विशिष्ट पहलू पर मार्गदर्शन दिया। इसके अलावा, अपनी सार्वजनिक सेवा के दौरान, उन्होंने अपने उपदेशों में पवित्र धर्मग्रंथों—मुख्य रूप से नए नियम—पर व्याख्यान दिया। क्रिसोस्टोम के प्रत्येक व्याख्यात्मक प्रवचन में दो भाग होते हैं: एक में वह परमेश्वर के वचन के ग्रंथों की व्याख्या करते हैं, जबकि दूसरे में वह नैतिक शिक्षा प्रदान करते हैं। संत जॉन क्रिसोस्टोम ने कुछ ही कट्टरतावादी ग्रंथ लिखे, और उन सभी में विश्वासियों के नैतिक सुधार के प्रति उनकी चिंता झलकती है। इस श्रेणी के कार्यों में, 'स्टैगिरियस को' नामक ग्रंथ का विशेष उल्लेख किया जाना चाहिए, जो ईश्वर की दिव्य व्यवस्था के अस्तित्व के बावजूद इस प्रश्न को संबोधित करता है कि धर्मात्माओं पर क्यों कष्ट आता है। 'अनपेक्षित पर छह प्रवचन' भी ध्यान देने योग्य हैं, जो एनोमियन का खंडन करने के लिए दिए गए थे। ये एनोमियन अपनी ही कल्पनाओं के आधार पर, परमेश्वर पिता और परमेश्वर पुत्र के बीच के संबंध को स्पष्ट करने का प्रयास करते थे, और यह सिखाते थे कि परमेश्वर का पुत्र एक सृजित प्राणी है और उसे पिता ने शून्य से बनाया था। इसके अलावा, पवित्र आत्मा के विषय पर जॉन क्रिसिस्टम का प्रबंध, जो पवित्र आत्मा के पिता से निकलने के सिद्धांत से संबंधित है, भी उल्लेखनीय है। यहूदियों और मूर्तिपूजकों के विरुद्ध अपने प्रबंध में, वह भविष्यवाणियों की पूर्ति और लोगों के हृदयों पर ईसाई सुसमाचार के प्रभाव के माध्यम से ईसाई शिक्षा की दिव्यता को प्रदर्शित करते हैं, जबकि अपनी 'यहूदियों के विरुद्ध आठ प्रवचन' में वह दिखाते हैं कि यहूदी रीति-रिवाजों को समाप्त कर दिया गया है, और इसलिए अब उनका पालन करना परमेश्वर की इच्छा के विरुद्ध कार्य करना है। संत जॉन क्राइसोस्टोम को लिटिर्जी (पूजा-विधि) का एक विशेष क्रम स्थापित करने के लिए भी प्रसिद्ध हैं, जिसका नाम आज भी उनके नाम पर है। क्रिसोस्टोम के शिष्य और बाद में कॉन्स्टेंटिनोपल के सिंहासन पर उनके उत्तराधिकारी में से एक, सेंट प्रोक्लस, इस संत की इस संस्था के बारे में इस प्रकार लिखते हैं: 'सेंट बेसिल (द ग्रेट) ने लोगों के साथ ऐसा व्यवहार करते हुए, मानो वे बीमार हों, संक्षिप्त रूप में लिटिर्जी प्रस्तुत की। थोड़ी ही देर बाद, हमारे पिता, स्वर्ण-जिह्वा जॉन ने, एक ओर एक अच्छे चरवाहे के रूप में अपनी भेड़ों के उद्धार की लगन से देखभाल करते हुए, और दूसरी ओर, मानव स्वभाव की कमजोरी को ध्यान में रखते हुए, हर शैतानी बहाने को जड़ से उखाड़ फेंकने का संकल्प लिया। इसलिए, बहुत कुछ छोड़ते हुए, उन्होंने अनुष्ठान की सबसे संक्षिप्त रूपरेखा स्थापित की।' जॉन द्वारा संक्षिप्त किए गए अनुष्ठान में मूल रूप से वे सभी भजन नहीं थे जो आज इसमें हैं, लेकिन इन भजनों ने अनुष्ठान के मूल क्रम को नहीं बदला। आम तौर पर, एपिफेनियस एक बहुत ही विद्वान व्यक्ति थे, जो, जेरोम के अनुसार, हिब्रू, सीरियाक, ग्रीक और लैटिन जानते थे, और 'अपने ज्ञान में अतुलनीय एक चरवाहा' थे। सातवां सार्वभौमिक परिषद उन्हें न केवल चर्च के एक पिता के रूप में, बल्कि इसके शिक्षक के रूप में भी संदर्भित करती है।

संत ने ये सभी शब्द सुबह 11 बजे बोले। जैसे ही सूर्य अस्त हुआ, एक बड़ा तूफान उठा, जो दो दिन तक चला और सभी नाविकों में भारी भय भर गया। संबंधित संत ने अपनी मृत्युशय्या पर जहाज और उसमें सवार सभी लोगों की रक्षा के लिए ईश्वर से प्रार्थना की। तीसरे दिन उन्होंने अपने शिष्यों को कुछ कोयले जलाने, उन पर धूप चढ़ाने और ईश्वर से प्रार्थना करने का निर्देश दिया। बाद में स्वयं प्रार्थना करने के बाद उन्होंने सभी को गले लगाया, चूमा और ये अंतिम शब्द कहे:

'अपने आप को बचाओ, मेरे बच्चों, क्योंकि एपफिनियस अब इस जीवन में तुम्हारे साथ नहीं रहेगा।'

ये शब्द कहने के बाद, उन्होंने अपनी आत्मा ईश्वर के हाथों में सौंप दी[3666] । उनकी मृत्यु में दुख और आनंद दोनों का मिश्रण था। उनके शिष्य और नाविक, जो मृतक के लिए गहरा शोक मना रहे थे, समुद्र में तूफान के अचानक और पूरी तरह से थम जाने से प्रसन्न हुए। यह देखकर, उस नाविक ने, जिससे संत ने कहा था, 'परीक्षा मत लेना, कहीं ऐसा न हो कि तुम स्वयं परीक्षा में पड़ो', जिज्ञासावश यह जानना चाहा कि क्या एपफिनियस का खतना हुआ था या नहीं। जब उसने संत के पवित्र शरीर को उजागर करना शुरू किया, तो मृत चमत्कार करने वाले ने अपना दाहिना पैर उठाया और उस जिज्ञासु व्यक्ति के चेहरे पर इतनी जोर से मारा कि वह शरीर से दूर जा गिरा और मर गया। सभी पर भय छा गया, और नाविक के साथियों ने, दंडित व्यक्ति पर दया करके, उसे एपफिनियस के चरणों में लिटा दिया। जैसे ही उसका शरीर उनके शरीर से लगा, मृत नाविक जीवित हो उठा। और उन सभी पर एक और भी बड़ा भय छा गया। सालामिस पहुँचने के बाद, संत के शिष्यों ने पूरे शहर में उनके निधन की घोषणा की। तुरंत ही, चारों ओर से लोगों की भीड़ रोते-बिलखते हुए इकट्ठा हो गई। अपने पिता का पूजनीय शरीर उठाकर, उनके अनाथ बच्चों ने उसे उसी चर्च में ले गए जहाँ उन्होंने स्थापना की थी। संत की कफ़न के पास, हर तरह की बीमारियों से पीड़ित लोगों के लिए कई चमत्कार किए गए। अन्य बातों के अलावा, तीन अंधे लोगों को दृष्टि प्राप्त हुई । दसवें दिन, पूरे द्वीप से बिशप, पुरोहित, मठाधीश और अनगिनत लोग इकट्ठा हुए और सम्मानपूर्वक संत एपफिनियस के पवित्र अवशेषों को उसी चर्च में दफनाया, जिसमें उन्होंने दिवंगत महा-धर्म-पालक के कार्यों, चमत्कारों और दिव्य प्रेरित शिक्षाओं को याद किया, और त्रिमूर्ति में एक ईश्वर की महिमा की, जिसकी महिमा युगानुयुग होती रहे। आमीन।

कॉन्टाकियन, स्वर 4:

आओ, जैसा कि हमारा कर्तव्य है, पवित्र नेताओं के इस अद्भुत जोड़े की, हरमन और दैवीय एपफिनियस के साथ, प्रशंसा करें: क्योंकि उन्होंने अधर्मी लोगों का मुँह बंद कर दिया, सभी को सबसे बुद्धिमानी भरे सिद्धांत सिखाए, जबकि ऑर्थोडॉक्स (सही विश्वास वाले) हमेशा धर्मपरायणता के महान रहस्य का गायन करते हैं।

26 मई

13 मई (पुराने कैलेंडर के अनुसार)

पवित्र शहीद ग्लीकेरिया और उनके साथ, लियोदिसीया, जेलर की यातनाएँ

13 मई को स्मरणोत्सव

अधर्मी रोमन सम्राट एंटोनिनिस[3667] के शासन के प्रथम वर्ष में, जब ग्रीस पर हेगेमोन सविनस का शासन था, थ्रेसियन शहर ट्रायनोपोलिस में रहने वाले ईसाई प्रतिदिन अपनी चर्च में इकट्ठा होते थे; वहाँ, वे भक्तिपूर्वक प्रार्थना के द्वारा परमेश्वर से शांति और विश्वासियों की संख्या में वृद्धि के लिए विनती करते थे, क्योंकि उस समय परमेश्वर का भय मानने वाले मसीही बहुत कम थे, और वे भी उत्पीड़न के परिणामस्वरूप बहुत कष्ट सह रहे थे। ईसाइयों के खिलाफ

[3666] संत का अप्रैल 403 में निधन हो गया और 12 मई को उन्हें दफनाया गया।

[3667] एंटोनिनिस पियस ने 138 से 161 तक रोमन साम्राज्य पर शासन किया।

उत्पीड़न इसलिए भड़काया गया क्योंकि सम्राट एंटोनिनस, एक मूर्तिपूजक होने के नाते, अशुद्ध मूर्तियों को बलिदान चढ़ाते थे और उन्होंने पूरे साम्राज्य में एक फरमान जारी किया जिसमें मूर्तिपूजक देवताओं को बलिदान चढ़ाने से इनकार करने वालों को मृत्युदंड देने का आदेश दिया गया था। जब यह शाही फरमान थ्रेस पहुँचा, तो हेगेमोन सावनि उस आदेश के साथ ट्राइयनोपोलिस शहर के लिए रवाना हो गया और एक दिन निर्धारित किया जिस पर उस शहर के नागरिकों को देवता डिया के सम्मान में एक उत्सव में भाग लेना था[3668] ; इस त्योहार को 'लैम्पाडोफोरिया'[3669] कहा जाता था, यानी 'लालटेन जुलूस', और यह ट्रायनोपोलिस में सवनिस के आगमन के तीन दिन बाद शुरू होने वाला था।

इस शहर में ग्लिसेरिया नाम की एक ईसाई कन्या रहती थी, जो मकरियस की बेटी थी, जो पहले एक रोमन एम्फीपेट[3670] रह चुके थे। ग्लिसेरिया अपने माता-पिता के साथ रोम से यहाँ आई थी, और बाद में अनाथ हो गई; यहाँ वह मसीह में विश्वास करने लगी और ईसाइयों में शामिल हो गई; वह हर दिन उनके साथ चर्च जाती थी और वहाँ प्रभु यीशु मसीह और उनकी परम पवित्र माता से, जिनके प्रति उसका विशेष रूप से गहरा प्रेम था, परमेश्वर के पुत्र की माता के रूप में, आग्रहपूर्वक प्रार्थना करती थी; उनकी निर्मल कुँवारीपन का अनुकरण करते हुए, ग्लिसेरिया ने स्वयं को प्रभु यीशु मसीह की वधू के रूप में सगाई कर ली। वह अक्सर ईसाइयों को यह कहते हुए उपदेश देती थीं:

'भाइयो, बहनो, पितृगणो, और अन्य सभी जो मेरी सांसारिक माता की जगह लेते हैं!' मेरी बात सुनो: याद करो कि हम किसी राजा की सेवा करते हैं, किसी राजा की प्रतिमा हम अपने ऊपर धारण करते हैं, और किसी चिह्न से हम अपनी रक्षा करते हैं। अतः हमें हर संभव प्रयास करना चाहिए कि हम इस राजा की आज्ञाओं का पालन करें, ताकि हम अनंत मुकुट प्राप्त कर सकें , जो केवल उन्हीं को प्रदान की जाएगी जो ईसाई आह्वान के सभी कर्तव्यों को निष्ठापूर्वक और साहसपूर्वक पूरा करते हैं।

ईसाइयों ने उससे उत्तर दिया:

'हम सभी, अभी भी, अपने प्रभु के लिए अपना जीवन बलिदान करने को तैयार हैं।'

इस पर, ग्लिसेरिया ने उनसे कहा:

'मैं आपसे विनती करती हूँ, मेरे लिए प्रभु से प्रार्थना करें, कि वह मुझे भी आपके साथ इस पराक्रम के लिए बल प्रदान करें, कि वह कृपा करके मुझे भी अपने नाम के लिए दुख सहने की अनुमति दें। मेरे लिए प्रभु से प्रार्थना करें, कि वह मुझे भी अपने स्वर्गीय महल में निवास करने वाली अपनी अमर वधुओं की पंक्ति में गिने।'

और ईसाइयों ने उसके लिए प्रार्थना की।

इस बीच, ट्रायनोपोलिस में सावनि के आगमन के तीन दिन बाद, एक मूर्तिपूजक और अधर्मी त्योहार शुरू हुआ; उस शहर में रहने वाले मूर्तिपूजक नागरिक एकत्रित हुए और, जलती हुई मोमबत्तियाँ लेकर, सभी डिया के मंदिर की ओर दौड़ पड़े। यह देखकर, धन्य कन्या ग्लीकेरिया अपने प्रभु और परमेश्वर मसीह के लिए उत्साह से भर गई; उसने क्रूस का चिह्न बनाया, और दया के मंदिर की ओर दौड़ी और, मूर्तिपूजकों की सभा के सामने खड़ी होकर, हेगेमोन से जोर से कहा:

'माननीय हेगेमोन! देखिए, मैं सच्चे ईश्वर को बलिदान चढ़ाना शुरू करना चाहती हूँ। जन्म से, मैं इस शहर के सभी निवासियों से अधिक प्रतिष्ठित हूँ, क्योंकि मेरे पिता ने महिमामय रोम नगर के एम्फीपेट का माननीय पद संभाला था। इसलिए, यह उचित है कि मैं सबसे पहले ईश्वर को बलिदान चढ़ाऊँ।'

हेगेमोन ने उससे उत्तर दिया:

'लेकिन वह दीपक कहाँ है, जिससे तुम अपनी बलिदान को प्रज्वलित कर सको?'

संत ग्लिसेरिया ने उत्तर दिया:

'मेरा दीपक मेरे माथे पर अंकित है; यह अविनाशी है और सच्चे ईश्वर को अर्पित हर बलिदान को प्रकाशित करता है।'

[3668] ज्यूस – प्राचीन यूनानी धर्म का सर्वोच्च देवता, जिसे अन्य देवताओं का पूर्वज माना जाता था।

[3669] प्राचीन यूनानी मशाल लेकर दौड़ने को 'लैम्पाडोफोरिया' या 'लैम्पाडोड्रोमिया' कहते थे। इन दौड़ों में मुख्य रूप से युवा पुरुष भाग लेते थे। इन्हें पुरस्कारों के लिए आयोजित किया जाता था, जो जलती हुई मशाल या दीपक लेकर एक निर्दिष्ट दूरी तक दौड़ने वाले युवा पुरुषों द्वारा जीते जाते थे। लैम्पाडोफोरिया विभिन्न धार्मिक त्योहारों और समारोहों से जुड़ी थीं, जो आमतौर पर प्रकाश और अग्नि के देवताओं (प्रोमेथियस, पैन) के साथ-साथ सर्वोच्च देवता ज्यूस के सम्मान में आयोजित की जाती थीं।

[3670] एम्फिपैटस – शहर का राज्यपाल।

हालाँकि, राज्यपाल यह नहीं समझ पाया कि ग्लसिरेयिा ने क्या कहा था। इसलिए, उसकी ओर मुड़कर उसने कहा:

'बहुत अच्छा। आगे आओ और किसी और से पहले अपना बलदिान चढ़ाओ।'

लेकिन संत ने कहा:

'शाश्वत ईश्वर यह नहीं चाहते कि उनके सामने धुआँ उगलते दीपक जलाए जाएँ। अत; आदेश दो कि सभी के दीपक बुझा दिए जाएँ, ताकि यह घृणित धुआँ न देखा जाए। तब तुम मेरा निर्मल बलदिान देखोगे, जो मैं अपने ईश्वर को अर्पित करने का इरादा रखती हूँ।'

गवर्नर ने सभी दीयों को बुझाने का आदेश दिया।

उस क्षण, संत ग्लसिरेयिा, एक ऊँचे मंच पर खड़ी थीं ताकि वह सभी लोगों को दिखाई दे सकें, उन्होंने अपना माथा खोला और सभी को उस पर उकेरा हुआ मसीह के क्रूस का चिह्न दिखाया; फिर उन्होंने कहा, ताकि वहाँ मौजूद सभी लोग सुन सकें:

'क्या तुम अब मेरे ललाट पर चमकता हुआ सबसे तेजस्वी दीपक देख रहे हो?'

तब, उन्होंने स्वर्ग की ओर अपनी आँखें उठाईं और अपने हाथ उठाकर कहा:

'हे सर्वशक्तिमान ईश्वर, जो अपने सेवकों द्वारा महिमामय हुए, जो बेबीलोन की भट्टी में अपने तीन जवानों के पास प्रकट हुए और उन्हें आग से बचाया (दानिय्येल 3), जिसने शेरों के मुँह बंद कर दिए (दानिय्येल 6), जिसने अपने सेवक दानिय्येल को विजयी बनाया, जिसने बेल की मूर्ति को नष्ट किया[3671] , जिसने साँप को मार डाला[3672] और जिसने देइरा के मैदान में शैतान की मूर्ति को कुचल दिया! (दानिय्येल 3) हे यीशु मसीह, परमेश्वर के परम पवित्र, हे पवित्र मेमने! मैं तुझ से विनती करता हूँ, आकर मेरी, अपने दीन दास की, सहायता कर, इस मानव हाथों से बने मूर्ति को चूर-चूर करने और इन घृणित और व्यर्थ दानवी बलदिानों को नष्ट करने में।

जब संत इस प्रकार ईश्वर से प्रार्थना कर रही थीं, तो अचानक गरज के साथ बिजली चमकने लगी, और देवताओं की मूर्ति ज़मीन पर गिरकर छोटे-छोटे टुकड़ों में टूट गई (यह पत्थर की बनी थी)।

इगेमोन और पुरोहितों ने यह देखकर क्रोध से भर गए और लोगों को संत पर पत्थर फेंकने का आदेश दिया। हालाँकि, उन पर फेंके गए पत्थर उन्हें छू नहीं पाए, बल्कि उनके पास गिर गए और उनके चारों ओर एक किले जैसा बनकर , उन्हें मूर्तिपूजकों से बचा लिया। ईश्वरहीन मूर्तिपूजकों ने, ईश्वर की शक्ति को न पहचानते हुए, संत को एक जादूगरनी कहा। लेकिन उन्होंने उनसे कहा:

'मसीह की शक्ति, जो मुझमें कार्य कर रही है, तुम्हारी भूल को उजागर करती है; और मेरे परमेश्वर की सहायता मेरे विरुद्ध रची गई सभी यातनाओं को पूरी तरह से व्यर्थ कर देगी।'

इसके बाद, राज्यपाल ने आदेश दिया कि संत को बाँधकर जेल ले जाया जाए। उन्होंने जेल के रक्षकों को संत पर बड़ी सावधानी से नजर रखने का आदेश देते हुए कहा:

'ध्यान रखना कि वह अपनी जादू-टोने से कालकोठरी से भाग न जाए। फिर वह दावा करेगी कि उसके ईश्वर ने उसे छुड़ा लिया है; और इसके माध्यम से वह कई लोगों को गुमराह कर सकती है।'

तथापि, पवित्र कन्या ने राज्यपाल से कहा:

– तुम पागल, दुष्ट और लापरवाह आदमी! क्या तुम्हें यह एहसास नहीं कि मैं अपने प्रभु परमेश्वर की आज्ञाओं और उनके विधान से बँधी हूँ? मैं इन बंधनों से खुद को मुक्त नहीं कर सकती, जो मुझे प्रिय हैं; अतः मैं उस शहादत से भाग नहीं सकती, जिसके लिए मैं अपने उद्धारकर्ता मसीह की खातिर स्वेच्छा से जा रही हूँ।

संत के ये वचन कहने के बाद, उन्हें जेल भेज दिया गया।

जब संत ग्लसिरेयिा जेल में थीं, तब परमेश्वर के याजक, फिलोक्रेट्स, मसीह की इस कैदी से मिलने की इच्छा से उनके पास आए। संत ने उनसे कहा:

[3671] बेल या बाअल – बेबीलोनियों का सर्वोच्च देवता, सूर्य और सामान्य रूप से प्रकाश का देवता। बेबीलोन में उनके सम्मान में एक बड़ा मंदिर बनाया गया था, जो एक ऊँचे आयताकार टावर के रूप में था। यहाँ, भूतल पर, एक बिस्तर और एक सुनहरी मेज रखी थी, जिस पर पुरोहित प्रतिदिन बेल के लिए भोजन रखते थे। बेबीलोनियों ने बेल को एक जीवित देवता माना जो खाता-पीता था। लेकिन इस धोखे का खुलासा भविष्यवक्ता दानिय्येल ने किया (दानिय्येल 14:1–22)।

[3672] साँप, जिसे बेबीलोनियों द्वारा बहुत पूजित किया जाता था और जिसका एक सोने का ढाला हुआ प्रतिमा बेल के उसी मीनार में था, उसे दानिय्येल नबी ने मार गिराया और धूल में मिला दिया (देखें दानिय्येल 14:23-27)।

'मेरे ऊपर क्रूस का चह्नि बनाओ; मुझे इस चह्नि से, एक प्रकार के अभषिेक की तरह, अलंकृत करके, मेरे लिए प्रार्थना करो, कि मैं अपने ईश्वर और राजा को प्रसन्न कर सकूँ, जनिकी तुम सेवा करते हो; मेरे लिए प्रार्थना करो, कि मैं, पवत्रि क्रूस के चह्नि से संरक्षति होकर, शैतान की दुष्टता पर वजिय प्राप्त कर सकूँ।'

पुजारी ने, ग्लेसयिा को पवत्रि क्रूस का चह्नि लगाते हुए, कहा:

'मसीह का चन्हि तुम्हारी सहायता करे; स्वयं मसीह, जो तुम्हें अपनी कृपा से अभषिेक करते हैं, तुम्हारा आध्यात्मकि शान्त हिों, ताकि तुम अपने परीक्षण को साहसपूर्वक सह सको।'

ग्लकिेरयिा को प्रभु में दृढ़ करके और उसे वदिा कहकर, फलिोक्रेटस ने कालकोठरी छोड़ दी।

अगले दनि सुबह, हेगेमोन सावनि शाही दरबार में पहुँचा, उसका इरादा वहाँ संत ग्लसिेरयिा को यातनाएँ देने का था। उसे अपने न्यायालय में बुलाकर, उसने उससे कहा:

'क्या अब तुम तैयार हो, ग्लसिेरयिा, महान देवता ज़ीउस को बलदिान चढ़ाने के लिए, जसिकी पूजा हमारे सम्राट स्वयं करते हैं और जन्हिें वे बलदिान चढ़ाते हैं?'

संत ने उत्तर दयिा:

'मैं उसकी पूजा या बलदिान कैसे कर सकती हूँ, जबकि तुम्हारा देवता, जमीन पर गरिकर, टुकड़े-टुकड़े हो गया था, और खुद की भी मदद नहीं कर सका? मैं केवल एक ईश्वर को जानती हूँ, जो स्वर्ग में वास करते हैं, जन्होंने मुझे तुम्हारी अशुद्ध मूर्ति को तोड़ने में मदद की। हमें इसी ईश्वर की पूजा करनी चाहिए, इसी को बलदिान चढ़ाना चाहिए और इसी को प्रसन्न करना चाहिए।'

राज्यपाल ने फरि कहा:

'बलदिान चढ़ाओ, यदि तुम यातनाएँ नहीं झेलना चाहते।'

लेकनि संत ने उत्तर दयिा:

'अगर मैं तुम्हारी आज्ञा मानूँगा तो मेरा ईश्वर मुझे यातना देगा।'

राज्यपाल ने कहा:

'तो तुम मरना चाहते हो?'

शहीद ने उत्तर दयिा:

'मैं अपने शरीर के कष्टों के माध्यम से अपनी आत्मा की बीमारयिों को ठीक करना चाहती हूँ।'

तब राज्यपाल ने आदेश दयिा कि सिंन्यासनिी को उसके बालों से यातना वृक्ष पर लटकाया जाए और उसकी मृत्यु तक लोहे की पंजाओं से उसके शरीर को खुरोचा जाए।

जब संत को लटकाया और यातनाएँ दी गईं, तो उन्हें अपने कष्टों से बलि्कुल भी दर्द महसूस नहीं हुआ और उन्होंने राज्यपाल से कहा:

'हे दुष्ट मनुष्य, जो हर प्रकार की द्वेषपूर्णता से भरा है, शैतान का सेवक! तुम जनि सभी यातनाओं को मुझ पर थोप रहे हो, वे मेरे लिए कुछ भी नहीं हैं, क्योंकि मुझे उनका बलि्कुल भी एहसास नहीं होता। प्रभु और मेरे ईश्वर, यीशु मसीह, मेरे पास हैं और मेरी मदद करते हैं। मेरे लिए और भी बड़ी यातनाएँ तैयार करो, क्योंकि मुझे इन यातनाओं से बलि्कुल भी दर्द महसूस नहीं होता।"

जब संत ये शब्द बोल रही थीं, तो उन्हें यातना देने वाले सेवक थक गए। गवर्नर ने, यह देखकर कि ग्लसिेरयिा के लिए उसने जो यातनाएँ रची थीं, वे संत द्वारा पार कर दी गई थीं, आदेश दयिा कि उसे यातना के वृक्ष से उतार लयिा जाए और उसके चेहरे पर थप्पड़ मारा जाए।

जब उस पर वार कयिा जा रहा था, तो संत ने कहा:

'ईश्वर मेरी रोशनी है, और मसीह मेरी शक्ति है। वह अपनी भलाई से अपने सेवक की रक्षा करेगा।'

तब, स्वर्ग की ओर देखते हुए, संत ने कहा:

'हे प्रभु, मैं आपसे वनिती करती हूँ कि मेरे मुख पर प्रकाश डालें और मुझे इन प्रहारों को साहस के साथ सहने में मदद करें। हे प्रभु, मुझे शक्ति दें, क्योंकि आप ही सच्चे ईश्वर हैं, जो पवत्रि आत्मा के खजाने से उन सभी को समृद्ध करते हैं, जो अपने अत्याचारयिों के सामने नडिर होकर आपके परम पवत्रि नाम का स्वीकार करते हैं। आप प्रभु हैं जो पृथ्वी पर उन सभी की सहायता करते हैं जो आपको प्रसन्न करते हैं; आप अपने संतों के रक्षक हैं, जनिके द्वारा मैं भी

आपको, सच्चे परमेश्वर को, जानने और अपने सृष्टकिर्ता से प्रेम करने लगा हूँ। अब मेरी सुनो, हे प्रभु, जो आपकी दीन दासी है और आपके नाम के लिए यत्नशील है, और मुझे शैतान के फंदे और साँप के मुँह से बचने में सहायता करें।

जब संत ये शब्द कह रही थीं, तो उनके नर्दियी यातना देने वाले उनके मुँह पर वार कर रहे थे। लेकिन अचानक प्रभु का स्वर्गदूत उनके बीच प्रकट हुआ, जिसने यातना देने वालों को इतना भयभीत कर दिया कि वे सब मृतक की भाँति भूमि पर गिर पड़े। हालाँकि, राज्यपाल, जो स्वर्गदूत को नहीं देख सकता था, ने संत से कहा:

'मुझसे बताओ, ग्लिसैरिया: तुम राजा की आज्ञा की अवज्ञा क्यों करती हो?'

संत ने उत्तर दिया:

'तो फिर मैं किस राजा की आज्ञा मानूँ?' राज्यपाल ने कहा:

'रोमन सम्राट, जिसने हमारे पूर्वजों से हमें विरासत में मिले इस प्राचीन कानून का पालन करने का आदेश दिया है, जो यह निर्धारित करता है कि हम अपने देवताओं की पूजा करें।'

लेकिन संत ने कहा:

मैं सर्वशक्तिमान परमेश्वर की आज्ञा मानती हूँ और उनके विधान के प्रति समर्पित हूँ। मैं उनके विधान का पालन करती हूँ और इसलिए स्वयं को बलिदान के रूप में अर्पित करती हूँ, ठीक वैसे ही जैसे प्राचीन काल में अब्राहम ने अपने पुत्र इसहाक को परमेश्वर के लिए बलिदान के रूप में अर्पित किया था (उत्पत्ति 22:1–19), जिसके लिए अब्राहम को सच्चे परमेश्वर की कृपा प्राप्त हुई; इस बलिदान के लिए, ईश्वर ने उस पर आशीर्वाद दिया और उससे कहा कि वह कई राष्ट्रों का पिता होगा।

इगेमोन ने कहा:

'अंततः वही करो, जिसका मैं तुम्हें आदेश देता हूँ, यदि तुम एक भटकी हुई स्त्री की तरह भयानक मृत्यु से नहीं मिलना चाहते।'

लेकिन शहीद ने उत्तर दिया:

'मसीह, जो हम ईसाइयों के प्रमुख और हमारे साहस के प्रथम आदर्श हैं, संघर्ष के लिए न केवल पुरुषों बल्कि महिलाओं को भी सशक्त बनाते हैं; और उनमें से जो आपके पिता, शैतान, के विरुद्ध वीरता से लड़ी हैं, उन्हें वह एक तेजस्वी मुकुट का इनाम देते हैं।'

इसके बाद, राज्यपाल ने शहीद को जेल ले जाने का आदेश दिया और हुक्म दिया कि उसे कई दिनों तक भूखा-प्यासा रखा जाए।

संत आनंदपूर्वक जेल में चली गईं, और ईश्वर की स्तुति करने लगीं। जब वह जेल के भीतरी कक्ष में प्रवेश कर गईं और उनके पीछे दरवाज़े बंद हो गए, तो उन्होंने इन शब्दों से प्रभु की महिमा करना शुरू किया: 'धन्य हैं आप, हे हमारे पूर्वजों के प्रभु और परमेश्वर! धन्य हैं आप, हे ईश्वर, जो अपने संतों के लिए जाने जाते हैं जो आपके आज्ञाओं का वफादारी से पालन करते हैं, जिन्होंने स्वयं को पवित्र प्रेरित पतरस को प्रकट किया जब वह रोम छोड़ रहे थे[3673] , जिन्होंने उनके विरोधी जादूगर शिमोन को लज्जित किया[3674] , जो दाऊद की सहायता के लिए आए, जिसके सामने आपने गोलियाथ को घुटनों के बल ला दिया (1 शमूएल 17:4–51)। हे अति सम्माननीय और अति पवित्र परमेश्वर, मेरी प्रार्थना सुनें और अपने दास की सहायता के लिए आएं। मुझे शत्रु की चालाकियों से और इस दुष्ट शासक के प्रलोभन से बचाएं।'

तीन दिन बाद, शासक ने ट्रिब्यून से कहा: 'मेरी मुहर की अंगूठी लो और उससे उस कोठरी को सील कर दो जिसमें वह जादूगरनी कैद है।'

[3673] यह संत पतरस प्रेरित के जीवन की निम्नलिखित घटना को संदर्भित करता है, जिसका वर्णन उनकी जीवनी (29 जून के अंतर्गत) में किया गया है: रोम में रहते हुए (अपनी मृत्यु से ठीक पहले), रोमन अधिकारी उन्हें मृत्युदंड देने के लिए खोज रहे थे। रोमन ईसाइयों के जोरदार आग्रह पर, पतरस ने अपने शत्रुओं के उत्पीड़न से भागने का निर्णय लिया और इस उद्देश्य के लिए, वह रात में चुपके से रोम से निकल गया। जब पतरस पहले ही शहर के द्वार के पास पहुँच चुका था, तो प्रभु उसे दिखाई दिए। उनके सामने झुकते हुए, पतरस ने कहा: 'प्रभु! आप कहाँ जा रहे हैं?' प्रभु ने पतरस को उत्तर दिया: 'मैं दूसरी बार सूली पर चढ़ाए जाने के लिए रोम जा रहा हूँ।' प्रभु के इन शब्दों से, पतरस ने समझा कि प्रभु उन्हें कष्ट सहने के लिए बुला रहे थे, और वे रोम लौट आए। वहाँ वे कुछ ही समय बाद कष्ट सहने लगे।

[3674] साइमन जादूगर – प्रेरित पतरस के ही युग का एक यहूदी; वह मूल रूप से सामरिया का रहने वाला था, फिर उसने अलेक्ज़ेंड्रिया में दर्शन और जादू-टोने की पढ़ाई की; वह जादुई शक्तियों वाला एक जादूगर के रूप में प्रसिद्ध हुआ। साइमन जादूगर बार-बार प्रेरित पतरस के प्रचार में बाधा डालता था, लेकिन हमेशा उससे परास्त हो जाता था। प्रेरित पतरस के साइमन जादूगर के साथ संघर्ष का वृत्तांत प्रेरितों के काम 8:9-25 और संत पतरस प्रेरित के जीवन के वृत्तांत (29 जून के अंतर्गत) में पाया जा सकता है।

ट्रबि्यून तुरंत गया, उसने जेल के दरवाजे पर मुहर लगा दी और जेलर को आदेश दयिा कि वे ध्यान से पहरा दें ताकि कोई भी शहीद को भोजन या पानी न दे पाए। लेकनि परमेश्वर के स्वर्गदूतों ने पवत्रि शहीद के पास भोजन और पानी पहुँचाया और मसीह की दुल्हन को बल प्रदान कयि।

कुछ दनिों बाद, राज्यपाल, हेराक्लयिा शहर जाने का इरादा रखते हुए, शहीद को देखने के लिए कालकोठरी में आया, क्योंकि वह उसे अपने साथ ले जाना चाहता था। कालकोठरी के दरवाजे पर अपनी मुहर देखकर, उसने सोचा कि ग्लसिरियिा भूख और प्यास से पहले ही मर चुकी है, क्योंकि उसे कैद हुए कई दनि बीत चुके थे। लेकनि जब उसने दरवाज़ा खोला और संत को ज़िंदा, अपनी बेड़यिों से मुक्त देखा, और ग्लसिरियिा के सामने रखे बर्तनों को भी देखा (जसिमें ताज़ा रोटी, दूध और एक प्याले में पानी था), गवर्नर इन सब बातों से बहुत चकति हुआ, क्योंकि वह, एक दुखी मनुष्य होने के नाते, यह नहीं समझ पाया था कि स्वयं ईश्वर ही अपने सेवक का भरण-पोषण कर रहे थे। तत्पश्चात गवर्नर ने आदेश दयिा कि शहीद को कालकोठरी से बाहर नकिाला जाए और उसे हेराक्लयिा शहर[3675] में उसके सामने लाया जाए। संत ने, अपनी ओर से, इन सब के लिए प्रभु का धन्यवाद करते हुए कहा: 'हे प्रभु ईश्वर! आप जो हमें अपना सत्य जानना सखिाते हैं, जो अपने वशि्वासयोग्य सेवकों का भरण-पोषण करते हैं, जनि्होंने दानयिेल को सहिों के बलि में रहते हुए भोजन भेजा[3676], जनि्होंने नबी एलयिा को भोजन भेजा (1 राजा 17:2–6) जब वह नाले के पास रहते थे, जो भटके हुए को सत्य की ओर मोड़ते हैं, जो अंधों को प्रकाश देते हैं! मैं तुझे धन्यवाद देती हूँ कि तूने मुझे, अपनी दीन दासी को, याद रखा है, और अकाल के समय में अपने उदार हाथ से अपने अनगनित भंडारों से मेरा पोषण कयि है।'

ये शब्द कहकर, संत हरेक्लयिा शहर की ओर चल पड़ीं। राज्यपाल, जो पहले ही वहाँ पहुँच चुके थे, देवता डयिोस को समर्पति मंदरि में पहले से ही बलदिान कर रहे थे।

इस बीच, हरेक्लयिा शहर में रहने वाले ईसाइयों ने, यह जानकर कि ट्रायनोपोलसि में मसीह के लिए पीड़ा सहने वाली ग्लसिरियिा उनके पास आ रही थी, अपने सम्मानति बशिप डोमेटीयस के साथ, उनका स्वागत करने के लिए बाहर नकिले। शहर से तीन स्टेडयिम बाहर जाकर संत को देखकर, उन्होंने मसीह के लिए उनके दुखों के लिए जोर-जोर से उनकी महमिा की, जबकि बशिप ने सभी के सुनने के लिए ईश्वर से प्रार्थना करते हुए इस प्रकार कहा: 'हे प्रभु यीशु मसीह, अक्षय प्रकाश, अंधकार में रहने वालों सभी का प्रकाशक, भटके हुओं के नेता, जनि्होंने मूसा को सूखी भूमि पर समुद्र के पार ले गए, जबकि फिरौन को समुद्र में डुबो दयिा (नरि्ग. 14), हम तुझ से प्रार्थना करते हैं: अपने दास की दासी का नेता और सेवक बन; उसे अंत तक धैर्यपूर्वक तेरे सम्मानति और सर्व-पवत्रि नाम का अंगीकार करने में मदद कर!"

इस बीच, संत को उनके साथ आए सैनकिों द्वारा बेड़यिों में जकड़कर शहर में ले जाया गया।

अगली सुबह, राज्यपाल ने फैसला कयि कि यदि उसने देवताओं को बलदिान चढ़ाने से इनकार कर दयिा तो शहीद को खंभे पर जला दयिा जाए। उसे अपने न्यायालय के सामने बुलाकर, उसने उससे कहा:

'ग्लेसयिा, क्या तुमने अभी तक हमारे देवताओं को बलदिान चढ़ाने का नरि्णय नहीं लयिा है?'

संत ने उत्तर दयिा:

'सच्चे ईश्वर द्वारा हमें दिए गए वधिान में लखिा है: *"तुम अपने प्रभु ईश्वर को परीक्षा में मत डालना"* (Deut. 6:16); अतः मुझे मनाने का प्रयास बंद करो। मैं पहले ही कह चुका हूँ कि मैंने स्वयं को पूरी तरह से अपने ईश्वर और प्रभु मसीह के साथ एक कर लयिा है और उनकी ही सेवा करता हूँ, और मैं उस शैतान को अस्वीकार करता हूँ जसिकी तुम सेवा करते हो। लेकनि अगर मैं मसीह के साथ एक हूँ, अगर मैंने स्वयं को मसीह के लिए वधू के रूप में अर्पति कर दयिा है, तो

[3675] प्राचीन काल में, हेराक्लआि नाम से लगभग 20 शहर ज्ञात थे; इस मामले में, यह नश्चिति रूप से हेराक्लआि को संदर्भति करता है, जो थ्रेस में स्थति था और प्रोपोंटसि (मार्मारा सागर) के पास था।

[3676] एक बार, फारस के राजा कुसरू के शासनकाल में, दानयिेल ने एक सांप को मारा—जसिे बेबीलोनयिों द्वारा एक देवता के रूप में पूजा जाता था—बनिा तलवार या लाठी के। तब बेबीलोनी दानयिेल के खलिाफ भयंकर वद्रिोह में उठ खड़े हुए और राजा से दानयिेल को एक खाई में फेंकने की अनुमति देने के लिए वनिती की। इस गड्ढे में सात शेर थे, जनि्हें दानेल को खा सकने के लिए भूखा रखा गया था। उस समय, नबी हबक्कूक यहूदयिा में थे। उन्होंने कुछ भोजन तैयार कयि था और लोगों को देने के लिए उसे खेतों में ले जा रहे थे। लेकनि एक स्वर्गदूत उनके पास प्रकट हुआ और कहा: *'जो भोजन तुम्हारे पास है, उसे लेकर बाबेल में दानेल के पास, शेरों के गड्ढे में जाओ।' 'प्रभु,' हबक्कूक ने उत्तर दयिा, 'मैंने कभी बाबेल नहीं देखा है और मुझे नहीं पता कि वह खाई कहाँ है।'* तब स्वर्गदूत ने हबक्कूक को उसके सरि के बालों से उठाया और उसे बाबेल में खाई के ऊपर रख दयिा। हबक्कूक ने पुकारा: *'दानयिेल, दानयिेल! परमेश्वर ने जो भोजन तुम्हें भेजा है, उसे ले जाओ।'* दानयिेल ने उत्तर दयिा, *'हे परमेश्वर, तूने मुझे स्मरण कयि है, और जो तुझ से प्रेम करते हैं, उन्हें नहीं त्यागा है।'* तब दानयिेल उठ खड़ा हुआ और हबक्कूक द्वारा लाया गया भोजन खा लयिा (दानयिेल 14:29–42)

क्या आप सचमुच सोचते हैं कि मैं कभी मसीह, अपने ईश्वर, का त्याग करूँगी और अनंत जीवन के बजाय मृत्यु को चुनूँगी? तुम मेरे साथ जो चाहो कर सकते हो; परन्तु मैं इस पृथ्वी के सभी व्यर्थ आशीर्वादों को तुच्छ समझती हूँ, और समझती रहूँगी, क्योंकि मैं स्वर्ग के आशीर्वादों को प्राप्त करना और अपने लिए सुरक्षित करना चाहती हूँ।

संत के बोल समाप्त होते ही, राज्यपाल ने उसे आग की भट्टी में फेंकने का आदेश दिया।

जब भट्टी प्रज्वलित कर दी गई, तो संत ने क्रॉस का चिह्न बनाया और कहा:

हे सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर! मैं आपको धन्य कहता हूँ और आपके पवित्र नाम की महिमा करता हूँ, क्योंकि आपने मुझे आज के दिन और इसी घड़ी शाश्वत आनंद प्रदान किया है, और मेरे अंगीकार को स्वर्गदूतों और मनुष्यों के सामने दर्ज किया है। मैं आपसे विनती करती हूँ – मेरी आत्मा की इच्छा पूरी कीजिए: इस दुष्ट और घृणित शासक को दिखा दीजिए कि आप ही सचमुच मेरे सहायक हैं।

जब उसने ये शब्द कहे, तो संत को भट्टी में डाल दिया गया। लेकिन तुरंत स्वर्ग से ओस गिरी और भट्टी की लपटें बुझ गईं। संत, भट्टी के बीचों-बीच एक शुद्ध मेमने की तरह खड़ी थी,

इन शब्दों का गायन किया: 'हे ईश्वर, आप पवित्र हैं!' धन्य हैं आप, जिन्होंने स्वर्ग से मुझे, अपने दीन दास को, सहायता भेजी है; सभी यह जान लें कि हर प्राणी आपके अधीन है; सभी यह जान लें कि, आपकी इच्छा से, इस भट्टी की आग ने अपनी शक्ति खो दी है।' यह कहकर, संत भट्टी से बिना किसी चोट के बाहर आ गए। हालाँकि, राज्यपाल ने यह सोचकर कि ग्लिसिरिया ने अपनी जादू-टोने से आग से कोई नुकसान नहीं उठाया है, आदेश दिया कि उसके सिर की खाल उधेड़ दी जाए। जब राज्यपाल के नौकरों ने उसका आदेश पालन करना शुरू किया, तो पवित्र शहीद ने ईश्वर से प्रार्थना करते हुए कहा: 'हे प्रभु ईश्वर, प्रकाश के स्रष्टा! हे प्रभु, जिन्होंने चाहा कि इन यातनाओं के बीच सत्य का प्रसार हो, अधर्मी राज्यपाल सिनिस को दिखा दो कि जो कोई भी दृढ़ता से आप में आशा रखता है और आपकी शक्ति पर भरोसा करता है, वह आपके नाम के लिए यातनाओं से कभी नहीं डरता, बल्कि एक और भी बड़ा शहादत का कार्य करने की इच्छा रखता है, ताकि उसे एक और भी गौरवशाली शहीद का ताज प्राप्त हो सके। मैं सिर से त्वचा उतार दिए जाने के बाद, मेरी आत्मा की गहराई को प्रकट करने के लिए आपकी स्तुति और धन्यवाद करती हूँ, ताकि मैं, आपकी ज्योति से प्रकाशित होकर, अब अपने विषय में कह सकूँ: *'मेरी आँखें खोल, और मैं तेरी व्यवस्था के आश्चर्यकर्म देखूँगा'* (भजन संहिता 118:18)।

हालाँकि, राज्यपाल ने संत के इन शब्दों को अपने लिए अपमान समझा, और उसे जेल में डालने का आदेश दिया; और उसके हाथ-पैर बाँधकर, आज्ञा दी कि उसे नग्न होकर एक तीखे पत्थर पर लिटा दिया जाए।

जब मध्यरात्रि हुई, तो प्रभु का एक स्वर्गदूत कुंड में उतरा। कुंड को प्रकाशित करते हुए, उसने संन्यासिनी को उसके बंधनों से मुक्त किया और उसे चंगा किया, उसके उत्पीड़कों द्वारा उधेड़ी गई उसके सिर की त्वचा को वापस कर दिया, ताकि संन्यासिनी के चेहरे पर एक भी घाव दिखाई न दे, और वह स्वस्थ थी और उसका मुखमंडल दीप्तिमान था।

अगली सुबह, राज्यपाल ने संत को पूछताछ के लिए एक बार फिर अपने सामने लाने का आदेश दिया। जब जेलर, लाओडिसियस, ने जेल का दरवाज़ा खोला और देखा कि संत को उसकी बेड़ियों से मुक्त कर दिया गया है, तो वह भय और आतंक से भर गया; यह महसूस किए बिना कि यह ग्लिसिरिया थी, उसने अपनी जान लेने का निश्चय किया, क्योंकि वह सोचता था कि ग्लिसिरिया तहखाने से भाग गई है (रक्षक ऐसा इसलिए करना चाहता था क्योंकि वह राज्यपाल से सजा से बहुत डरता था)। लेकिन संत ने उससे कहा:

'खुद को नुकसान मत पहुँचाओ, क्योंकि यह मैं—ग्लेसिया हूँ।'

हालाँकि, डर के मारे काँपता हुआ रक्षक बोला:

'मेरे ऊपर दया करो, मुझे बचा लो, कहीं मैं डर के मारे मर न जाऊँ, क्योंकि मैं उस ईश्वर में विश्वास रखता हूँ, जो तुम्हारी सहायता करता है।'

तब संत ने उससे कहा:

'मसीह का अनुसरण करो, और तुम भी उद्धार पाओगे।'

कारागार के रक्षक ने, तहखाने से निकलकर, वे बेड़ियाँ पहन लीं जिनसे शहीद को बाँधा गया था, और उन्हें अपने ऊपर धारण करके, राज्यपाल के पास गया।

जब राज्यपाल ने उसे देखा, तो उसने कहा:

'तूने यह क्या कयि, लाओडकियिस? जसि कैदी को तेरे हवाले कयि गया था, वह कहाँ है?' लाओडकियिस ने उत्तर दयि:

'वह यहीं आपके सामने खड़ी है। कल रात वह ईश्वर के प्रकाश से प्रकाशति हुई और ईश्वर द्वारा भेजे गए एक स्वर्गदूत द्वारा चंगाई पाई, जसिने उसे उसकी बेड़यिों से मुक्त कयि; मैंने ये बेड़यिाँ अपने ऊपर ले ली हैं; उसी समय, उसने अपनी मूल सुंदरता पुनःप्राप्त कर ली और स्वर्गदूत द्वारा अपने घावों से पूरी तरह ठीक हो गई।' ईश्वर के इन सभी चमत्कारों को देखकर, मैं ईश्वर में आस्था रखने लगा हूँ और ग्लसिरयिा की मृत्यु में सहभागी होना चाहता हूँ।

तब राज्यपाल, क्रोध से भरकर, बोला:

'इस दुर्भाग्यपूर्ण की गर्दन काट दो, और फरि देखेंगे कि क्या मसीह उसकी मदद को आते हैं!'

जब तलवार से सरि कलम कए जाने का समय नकिट आया, तो लाओडसियिस ने अपनी आँखें आकाश की ओर उठाकर जोर से पुकारा:

'हे ईसा मसीह के प्रभु और परमेश्वर! मुझे अपने राज्य में अपनी पवत्रि सेवकिा ग्लाइसेरयिा के साथ गनि लीजए।'

संत ग्लकिरियिा ने भी, अपनी ओर से, उसके लए ईश्वर से प्रार्थना की, और इस प्रकार कहा: 'हे हमारे प्रभु यीशु मसीह के पति, जन्होंने घातक दुर्बलताओं को चंगा कयि और पाप के कैदी मनुष्य को नरक के बंधनों से मुक्त कयि, उसी प्रकार अपने सेवक लाओदीकयिाई को भी शैतान की शक्ति से बचाओ; उसे अपने वश्विास की कसौटी को अंत तक नभिाने में मदद करें, और उसकी आत्मा को शांतपिूर्वक स्वीकार करें।"

लाओदकियिस ने ग्लसिरयिा की प्रार्थना सुनकर कहा: 'आमीन'।

इसके बाद, उनका सरि कलम कर दयि गया; और उनका शरीर, जसि वश्विासयोग्य ईसाइयों ने गुप्त रूप से ले लयि, सम्मान के साथ दफनाया गया।

इस बीच, गवर्नर ने ग्लसिरयिा की ओर मुड़कर उससे कहा:

'हम जानते हैं कि आपके पति एक रोमन अम्फपिेट थे, और हम यह भी जानते हैं कि आपकी माता भी उतनी ही कुलीन उत्पत्ति की थीं; लेकनि हम यह नहीं जानते कि आपकी मदद कौन कर रहा है; यह हमें स्वयं बताएं।'

संत ने उत्तर दयि:

'मसीह मेरी मदद करते हैं, जो संसार के उद्धारकर्ता और सभी आनंद का स्रोत हैं, जन्होंने मुझे मेरे कालकोठरी में भोजन भेजा, मुझे मेरी बेड़यिों से मुक्त कयि, और मेरे चेहरे की वह सुंदरता लौटाई जसि आपने कलंकति कयि था।'

इसके बाद, राज्यपाल ने संत को जंगली जानवरों के सामने फेंकने का आदेश दयि ताकि वे उसे नोच-नोच कर खा जाएँ।

संत प्रसन्नता और आनंद के साथ जानवरों की ओर चलीं, मानो वे कसिी दावत में जा रही हों। जब वे उस स्थान पर पहुँचीं जहाँ जानवर छोड़े गए थे, तो वे रुक गईं। तुरंत, एक बड़ी सहिनी, भयानक गुर्राहट करते हुए, ग्लसिरयिा पर छोड़ दी गई; लेकनि, संत के पास आकर, वह चुपचाप उनके पैरों तले लेट गई और उन्हें चाटने लगी। संत ने स्वर्ग की ओर अपनी आँखें उठाकर कहा: 'मैं आपको धन्यवाद देती हूँ, हे सर्वशक्तमिान ईश्वर, हमारे पूर्वजों के ईश्वर, हे दया के ईश्वर! मैं आपको धन्यवाद देती हूँ कि आपने जानवर के क्रोध को वश में कयि, ताकि सभी को आपकी दव्यि शक्ति दिखाई दे!' मैं आपकी धन्यवाद करती हूँ कि आपने मेरे सभी दुखों, यहाँ तक कि सबसे क्रूर दुखों को भी, सहनीय बनाया। हे ईश्वर, मेरी सुनए, और इस दुष्ट शासक को उसके कर्मों के अनुसार प्रतफिल दीजए; परन्तु मुझे अपने अन्य संतों के साथ अपनी कृपा के मुकुट से वंचति न करें।'

संत की इस प्रकार प्रार्थना करने के बाद, स्वर्ग से एक आवाज़ सुनाई दी, जसिमें कहा गया: 'मैंने तुम्हारी प्रार्थना सुनी है! शांति से मेरी ओर आओ! देखो, स्वर्ग के राज्य के द्वार तुम्हारे लए खुल गए हैं!'

कुछ ही समय बाद, एक और सहिनि छोड़ी गई; वह संत के पास आई और उन्हें काट लयि, फरि भी संत का शरीर सहिनि द्वारा फाड़ा नहीं गया। इस प्रकार संत ने अपनी आत्मा को ईश्वर के हाथों में सौंप दयि[3677] । इस बीच, जानवर तुरंत अपने पंजिरों में लौट गए। उसी क्षण, राज्यपाल एक गंभीर बीमारी से गंभीर रूप से बीमार पड़ गया – उसका पूरा शरीर व्रणरोग (dropsy) से सूज गया और इतना फूला कि वह सड़क पर ही मर गया, क्योंकि वे उसे घर के अंदर ले जाने में कामयाब नहीं हो सके। तब बशिप डोमेटयिस ने पवत्रि शहीद ग्लसिरयिा के बहु-पीड़ति शरीर को लयि और इसे हेराक्लयि

[3677] पवत्रि शहीद की मृत्यु लगभग 177 ईस्वी में हुई।

के पास एक सुंदर स्थान पर दफना दिया। इसके बाद, संत ग्लसिरिया के पवित्र अवशेषों से एक चंगा करने वाला मुर्रा[3678] बहा, जिसने विभिन्न प्रकार के रोगों को ठीक किया, पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा की महिमा के लिए, त्रिमूर्ति में महिमामय एकमात्र परमेश्वर की, जिन्हें सम्मान, महिमा और आराधना अर्पित की जाती है, अब और हमेशा और युगों-युगों तक। आमीन।

कॉन्टाकियन, स्वर 3:

हे कुंवारी, जिन्होंने परमेश्वर की माता मरियम से प्रेम किया, तुमने अपनी कुँवारी अवस्था को अक्षुण्ण रखा; और, उत्साहपूर्वक स्वयं को प्रभु को समर्पित कर, तुमने बुद्धिमानी से मृत्यु तक कष्ट सहे। इसी कारण, मसीह परमेश्वर तुम्हें, हे कुंवारी शहीद, दोहरा मुकुट पहनाते हैं।

शहीद संत अलेक्जेंडर का कष्टकथा

13 मई को स्मरण किया जाता है

ईश्वर-विहीन रोमन सम्राट मैक्सिमियन के शासनकाल में, पूरे रोमन साम्राज्य में ईसाइयों पर एक भयंकर उत्पीड़न शुरू किया गया था। सेंटूरियन (सैनिक दस्ते के कमांडर) में से एक, जो मूर्तिपूजक देवताओं का एक उत्साही उपासक था , ने सम्राट के आदेश पर, रोम से बहुत दूर नहीं, उससे लगभग एक स्टेडियम की दूरी पर, अपने दुष्ट देवता, डीईआई (Dii) के लिए एक मंदिर बनवाया[3679] । उसी समय, सभी ईसाइयों को मूर्तिपूजक देवताओं को बलिदान चढ़ाने और डीईआई के मंदिर के अभिषेक के लिए इकट्ठा होने का आदेश दिया गया। सम्राट के दूत दूर-दूर तक गए और जोर-जोर से घोषणा करते हुए:

'हे देवताओं के मित्रो, सुनो! कल सुबह तुम्हें सम्राट के साथ देवता दिया के मंदिर में एकत्रित होना है।'

शाही उद्घोषकों से ये उद्घोषणाएँ सुनकर सभी मूर्तिपूजकों ने सुबह के लिए तैयारी की, और देवता डाई के मंदिर में जाने का इरादा किया। सुबह, कई मूर्तिपूजक, शहर में अपनी खरीदारी करने के बाद, मंदिर के लिए रवाना हो गए, आंशिक रूप से डाई की पूजा करने और बलिदान चढ़ाने के लिए, और आंशिक रूप से जो कुछ उन्होंने खरीदा था उसे बेचने के लिए।

उस समय, टायबेरियन नामक एक कुलीन और धनी व्यक्ति, जो ट्रिब्यून के पद पर था[3680] और जिसके अधीन कमांडर फलिक्स द्वारा उसकी देखभाल के लिए सौंपे गए कई सैनिक थे, ने इन सैनिकों को बुलाया और उनसे कहा:

'सुनो, भाइयो! क्या आप उस शाही फरमान से अवगत हैं जो आज हमें डाइउस के मंदिर में राजा के साथ उपस्थिति होने का आदेश देता है? तो तैयार हो जाइए।'

जब वह बोल ही रहा था, उसे सूचित किया गया कि सम्राट पहले ही उस मंदिर में आ चुके थे। तुरंत, वे सभी सम्राट के साथ शामिल होने के लिए मंदिर की ओर दौड़े। लेकिन उन सैनिकों में से एक, जिसका नाम अलेक्जेंडर था, जो बचपन से ही ईसाई धर्म में पला-बढ़ा था और ईश्वर का भय रखता था, ने ट्रिब्यून से कहा:

'तुम्हारे लिए यही कहना बेहतर होगा कि हमें स्वर्ग में रहने वाले सच्चे ईश्वर की उपासना करने जानी चाहिए; क्योंकि जिन्हें तुम देवता कहते हो, वे देवता नहीं, बल्कि दानव हैं।'

टिबेरियन ने उससे कहा:

'आज हम सभी देवताओं को नहीं, बल्कि केवल एक देवता, डायोस को ही बलिदान चढ़ाएंगे, यद्यपि हमारे कई देवता हैं जिनका सम्मान स्वयं राजा और हम दोनों करते हैं।'

[3678] पवित्र शहीद ग्लेसेरिया के ताबूत से मुर्रा के प्रवाह के साक्षी लोगों में, अन्य लोगों के साथ-साथ, सम्राट मॉरिस (जो 582 से 602 तक शासन करते थे) भी थे। उनके शासनकाल के दौरान, पवित्र शहीद की कब्र पर निम्नलिखित चमत्कार हुआ: हेराक्लिया के बिशप पवित्र मुर्रा बहने वाले तांबे के पात्र को चांदी के एक पात्र से बदलना चाहते थे, और इस उद्देश्य के लिए उन्होंने कॉन्स्टेंटिनोपल में एक खरीदा। लेकिन जब इस पात्र को संत की कब्र के पास रखा गया, तो मुर्रा बहना बंद हो गया। उत्कट प्रार्थनाओं के बाद और पात्र को पुराने वाले से बदलने पर, फिर से रस बहने लगा। पता चला कि चांदी का पात्र पहले एक जादूगर का था और उसका उपयोग उसने दुष्ट उद्देश्यों के लिए किया था।

[3679] सम्राट मैक्सिमियन ने 285 से 305 तक शासन किया।

[3680] एक ट्राइब्यून एक जनजाति या रेजिमेंट का कमांडर होता है।

धन्य अलेक्जेंडर ने उत्तर दिया:

'डियस, जिसे आप देवता कहते हैं, अन्य कपटी राक्षसों की तरह ही है, जो अपने पूजकों को विनाश की ओर ले जाता है, उन्हें नीच और अवैध कृत्यों के लिए प्रलोभित करता है, जिनसे आपके अपने देवता भी, जैसा कि आप उनके बारे में कहते हैं, अपवित्र हो गए थे, अर्थात्, कि कभी-कभी, कामुक वासना से प्रज्वलित होकर, उन्होंने महिलाओं को बहकाया और उनके साथ घृणित कृत्य किए, जिससे न केवल पृथ्वी, बल्कि समुद्र और वायु भी अपवित्र हो गए[3681] । लेकिन किसने कभी किसी देवता को व्यभिचार करते हुए सुना या देखा है? हमारा ईश्वर, तथापि, देह की आँखों से अदृश्य है, परन्तु केवल विश्वास द्वारा ही जाना जाता है; वह परम पवित्र, सर्वशक्तिमान, स्वर्ग और पृथ्वी का सृष्टिकर्ता है। हमारे ईश्वर को ऐसी बलिदानों की आवश्यकता नहीं है जैसी आप अपने अशुद्ध दानवों को चढ़ाते हैं; इन बलिदानों के स्थान पर, वह हमसे एक शुद्ध और रक्तहीन बलिदान की अपेक्षा करता है।

अलेक्जेंडर की बात सुनने के बाद, टिबेरियन ने कहा:

'हे अलेक्जेंडर, अपना पागलपन छोड़ दो! हमारे उपकारी देवताओं का अपमान मत कर, नहीं तो राजा को यह सुनकर मुझ पर क्रोध आएगा कि मैंने ऐसे एक ईश्वर-निन्दक को अपनी रेजिमेंट में रहने दिया!'

यह कहकर, टिबेरियन राजा के दरबार के लिए रवाना हो गया, जबकि अलेक्जेंडर अपने घर चला गया।

जब बलिदान का समय आया, तो राजा ने उस मंदिर में अपने घृणित देवता, डायोस, को बलिदान देना शुरू कर दिया। उसी क्षण, टिबेरियन ने राजा से कहा कि उसका एक सैनिक, जिसका नाम अलेक्जेंडर था, राजा के आदेशों की अवज्ञा कर रहा था, देवता डायोस को बलिदान नहीं दे रहा था, बल्कि देवताओं की निंदा और अपमान कर रहा था। तत्काल राजा ने आदेश दिया कि उसे लाया जाए और लोहे की बेड़ियों में जकड़कर उसके सामने पेश किया जाए।

तब दिन का छठा घंटा था[3682] । उस समय अलेक्जेंडर अपने बिस्तर पर गहरी नींद में सो रहा था। अचानक, प्रभु का स्वर्गदूत उसे एक सपने में दिखाई दिया और कहा: 'अलेक्जेंडर! साहसी बनो और हिम्मत रखो, क्योंकि तुम्हें यीशु मसीह के नाम के लिए बहुत कष्ट सहना होगा। देखो, तुम्हारे लिए पहले से ही बड़े-बड़े कष्ट तैयार किए जा चुके हैं; देखो, सैनिक तुम्हें ले जाने के लिए पहले से ही आ रहे हैं। परन्तु उनसे मत डरना; अपने हृदय को उनसे डरने न देना, क्योंकि मुझे तुम्हारी सहायता के लिए भेजा गया है। तब उठो, और परमेश्वर से प्रार्थना करो, और मैं तुम्हारे पूरे संघर्ष में तुम्हारे साथ रहूँगा।'

अपने बिस्तर से उठकर, अलेक्जेंडर ने दाऊद का एक भजन गाना शुरू किया: *'जो परम ध्रुव की छाया में रहता है, वह सर्वशक्तिमान की छाया में निवास करेगा; वह प्रभु से कहेगा: "मेरा शरणस्थान और मेरा किला, मेरा परमेश्वर, जिस पर मैं भरोसा करता हूँ"* (भजन संहिता 90:1–2), और उस भजन के बाकी हिस्से को अंत तक। तब, घर से निकलते ही, अलेक्जेंडर उन सैनिकों से मिला जो उसका पीछा कर रहे थे; ये सैनिक उसकी रेजिमेंट के साथी सैनिक थे। संत अलेक्जेंडर को देखकर, वे सभी डर के मारे जमीन पर गिर पड़े, क्योंकि संत का चेहरा बिजली की तरह चमक रहा था। लेकिन संत ने उनसे कहा:

'उठो, भाइयो! तुम क्यों डर गए हो?'

सैनिकों ने उत्तर दिया:

'हमें ऐसा लगा कि आप ईश्वर की शक्ति से घिरे हुए हैं; इसीलिए हम डर के मारे जमीन पर गिर पड़े।'

लेकिन संत ने उनसे कहा:

'भाइयो, मेरी बात सुनो! स्वर्ग और पृथ्वी के ईश्वर ने अपने सेवक से भेंट की है; परन्तु निराश न हो: जैसा तुम्हें आज्ञा दी गई है, वैसा ही करो; क्योंकि तुम्हें मुझे हथकड़ियों में जकड़कर राजा के सामने पूछताछ के लिए लाने के लिए भेजा गया है।'

इस पर सैनिकों ने उत्तर दिया:

'हमने तो तुमसे कुछ भी न कहने का वादा किया था। फिर यह बात तुम्हें कैसे पता चली? हमें बताओ।'

संत ने उत्तर दिया:

[3681] इस मामले में, संत अलेक्जेंडर देवताओं के कारनामों से संबंधित यूनानी पौराणिक कथाओं की अश्लील और अभद्र कहानियों का उल्लेख कर रहे हैं। प्राचीन यूनानियों की दृष्टि में, उनके देवता भी मनुष्यों की तरह ही कमियों से ग्रस्त थे।

[3682] हमारी गणना के अनुसार – दोपहर के 12 बजे।

'मुझे तुमसे लंबा-चौड़ा बात नहीं करना चाहिए, क्योंकि मैं उस कार्य की ओर तेज़ी से बढ़ रहा हूँ जो स्वर्ग के राजा ने मेरे लिए तैयार किया है। मुझे रोम से बिज़ान्टियम की यात्रा करनी है।'

यह कहकर, संत घुटने के बल झुक गए और प्रभु से इन शब्दों में प्रार्थना करने लगे: 'हे हमारे पूर्वजों के प्रभु परमेश्वर, सदा के लिए स्तुत्य और धन्य! मैं तुझसे विनती और प्रार्थना करता हूँ: अब मुझे अपने धर्मी लोगों की संगति से अलग मत कर; जब मैं तेरे पास आ रहा हूँ तो मुझे अलग मत कर, क्योंकि तूने मुझे अपना पवित्र और भयानक नाम प्रकट किया है। हे प्रभु, मेरे सहायक और रक्षक, अपनी दूत को मेरे पास भेजो, ताकि वह मेरी सहायता करे और मुझे सिखाए कि मैं अपने यातनाकर्ता के सामने क्या उत्तर दूँ।"

संत की प्रार्थना समाप्त होने के बाद, सैनिकों ने उन पर हाथ रखकर उन्हें लोहे की जंजीरों से बाँध दिया; फिर वे उन्हें सम्राट मैक्सिमियिन के सामने ले गए। संत की माँ, जिनका नाम पिमेनिया था, को अभी तक यह नहीं पता था कि उनके बेटे, अलेक्जेंडर को, सम्राट के सामने पूछताछ के लिए ले जाया गया था। संत शरीर से मजबूत, कद में लंबा, सुंदर और जवान था, क्योंकि उसकी उम्र केवल अठारह वर्ष थी। जब संत को पूछताछ के लिए सम्राट के सामने लाया गया, तो मैक्सिमियिन ने उससे पूछा:

'क्या तुम वही हो जिसने मुझसे अपमान करने की हिम्मत की? क्या तुम वही हो जो अपने वरिष्ठ की अवज्ञा करते हो और मेरे महान देवता, डियोस की पूजा करने से इनकार करते हो?'

संत ने उत्तर दिया:

'मैं अपने परमेश्वर की उपासना करता हूँ, जो स्वर्ग में वास करते हैं, और उनके एकलौते पुत्र, प्रभु यीशु मसीह, और पवित्र आत्मा की। मैं किसी दूसरे देवता को नहीं जानता और किसी दूसरे की स्वीकारोक्ति नहीं करूँगा। इसलिए, मुझसे किसी दूसरे देवता के बारे में न पूछो।' जहाँ तक आपके अधिकार की बात है, मैं उससे बिल्कुल भी नहीं डरता; मैं न तो आपकी धमकियों से डरता हूँ, और न ही उन यातनाओं से जिनका आप मुझे सामना कराएँगे।

यह सुनकर मैक्सिमियिन अत्यंत क्रोधित हो गया और कहा:

'जिस ईश्वर का तुम प्रचार करते हो, वह क्या कर सकता है?'

संत ने उत्तर दिया:

'मेरा ईश्वर एक अदृश्य और सर्वशक्तिमान ईश्वर है, इसलिए मेरे ईश्वर के लिए कुछ भी असंभव नहीं है।'

मैक्सिमियिन ने उत्तर दिया:

'क्या वह जो मनुष्यों द्वारा सूली पर चढ़ाया गया और मृत्युदंड के बाद मरा, एक देवता हो सकता है?' संत ने उत्तर दिया:

– चुप हो जा, शैतान, क्योंकि तू अपने नीच होठों से मेरे प्रभु यीशु मसीह का सबसे पवित्र और सबसे पवित्र नाम उच्चारण करने की हिम्मत नहीं कर सकता, जिन्होंने अपनी इच्छा से, सूली पर चढ़ाए जाने और मृत्यु दोनों को सहन किया! हे पागल! यदि तुम उसे सूली पर चढ़ाया और मार डाला गया कहो, तो फिर तुम इस तथ्य के बारे में भी क्यों नहीं बोलते कि वह मृतकों में से जी उठा और कई मृतकों को जीवन प्रदान किया?

मैक्सिमियिन ने कहा:

'मैं तुम्हारी जवानी को बचाना चाहता हूँ, क्योंकि मैं देखता हूँ कि तुम बहुत जवान हो।' लेकिन संत ने उत्तर दिया:

'तुम्हारे लिए बेहतर होगा कि तुम खुद पर दया करो और उस जाल से खुद को छुड़ाने का प्रयास करो जिसमें शैतान ने तुम्हें फँसाया है। जहाँ तक मेरी बात है, मैं किसी भी यातना से नहीं डरता, क्योंकि ईश्वर मेरा सहायक है।'

मैक्सिमियिन ने कहा:

'मैं पहले ही कह चुका हूँ कि मैं तुम्हें बचाना चाहता हूँ। तो आगे आओ, और बलिदान चढ़ाओ; तब तुम शाही कक्ष में स्थायी रूप से निवास करोगे और यहाँ सबसे प्रमुख स्थान भी प्राप्त करोगे।'

संत ने उत्तर दिया:

'तो फिर, आप मुझे किस देवता की पूजा करने का आदेश देते हैं?'

मैक्सिमियिन ने उत्तर दिया:

'महान देवता डीई को पूजा करो और बलिदान चढ़ाओ।'

संत ने स्वर्ग की ओर अपने हाथ उठाकर इस प्रकार प्रार्थना करना शुरू किया: 'हे प्रभु यीशु मसीह! अपने इस दीन सेवक को न छोड़िए; हे पापी और अयोग्य, मेरी सहायता कीजिए।'

जैसे ही उन्होंने ऐसा प्रार्थना की, उन्होंने अपनी आँखें आकाश की ओर उठाईं और देखा कि स्वर्ग खुल गया था; उन्होंने पिता के दाहिने हाथ पर परमेश्वर के पुत्र को भी विराजमान देखा। इस दर्शन से संत महान आध्यात्मिक आनंद से भर गए। फिर उन्होंने मैक्सिमियिन से फिर पूछा:

'आप मुझे किस देवता को बलिदान चढ़ाने के लिए कहते हैं?'

मैक्सिमियिन ने कहा:

'महान देवता दियाना को बलिदान चढ़ाओ।'

संत ने उत्तर दिया:

'क्या तुम्हें नहीं पता कि जिसे तुम देवता कहते हो, वह कभी एक इंसान था, और वह भी एक भ्रष्ट और नीच इंसान, क्योंकि एक बार, एक महिला के प्रति कामुक वासना से ग्रस्त होकर, उसने एक बैल का रूप धारण किया और, अपनी जादू-टोने से, उसे बहकाया और अपवित्र कर दिया?'[3683]

यह सुनकर मैक्सिमियिन हँसा और बोला:

यह हमारे देवताओं की शक्ति को प्रमाणित करता है, क्योंकि वे स्वयं जिस भी रूप में चाहें, लोगों के सामने प्रकट होते हैं।

लेकिन संत ने उससे कहा:

– हे नीच मनुष्य! तुम अपने देवताओं के घृणित और घिनौने कर्मों की प्रशंसा करते हो, क्योंकि तुम स्वयं अपने अशुद्ध कर्मों द्वारा उनके समान बन रहे हो, चूंकि तुम सच्चे ईश्वर को जानने से इनकार करते हो, जिसने तुम्हें सम्मान और राज्य दोनों प्रदान किए हैं।

मैक्सिमियिन ने कहा:

'मेरे देवताओं ने मुझे राजसी शक्ति प्रदान की है।'

संत ने कहा:

'मैं तुम पर हैरान हूँ: तुम स्वयं को बुद्धिमान समझते हुए भी खुद को नष्ट कर रहे हो, क्योंकि तुम राक्षसों पर विश्वास करते हो और मूक तथा निर्जीव मूर्तियों की पूजा करते हो, और जीवित तथा अमर ईश्वर को त्याग दिया है। तुम अपने पिता शैतान का अनुसरण क्यों करते हो? बल्कि अंधकार से प्रकाश की ओर मुड़ जाओ, कहीं ऐसा न हो कि तुम अनंतकाल के लिए अग्निमय गेहेन्ना में नाश हो जाओ।

तब क्रोध से भरकर मैक्सिमियिन ने अलेक्जेंडर को ट्राइब्यून टिबेरियस के हवाले कर दिया और संत को यातना देने का आदेश दिया। साथ ही, मैक्सिमियिन ने टिबेरियस को केवल अलेक्जेंडर ही नहीं, बल्कि सभी ईसाइयों को यातना देने का आदेश दिया; इस उद्देश्य के लिए, उसने ट्राइब्यून को थ्रेस भेज दिया, और उसे हर जगह ईसाइयों का उत्पीड़न करने का आदेश दिया। मैक्सिमियिन ने आदेश दिया कि अलेक्जेंडर को बिज़ान्टियम में उसके सामने लाया जाए। जब संत अलेक्जेंडर ने यह सुना, तो उन्होंने सम्राट से कहा:

'मैं तुम्हारा धन्यवाद करता हूँ, हे मेरे यातनाकर्ता, कि तुम मेरे नाम को अनेक देशों में प्रसिद्ध करना चाहते हो। हे प्रभु और मेरे ईश्वर, इस पवित्र नाम के लिए, पृथ्वी के हर कोने में हर प्रकार की बीमारियों और यातनाओं को सहने की कृपा मुझे प्रदान करें।'

हालांकि, मैक्सिमियिन ने संत को अपनी उपस्थिति से हटाने का आदेश दिया। ट्रिब्यून टिबेरियस ने उन्हें अपनी हिरासत में ले लिया, और अगली सुबह आदेश दिया कि संत को यातना वृक्ष पर लटकाने के बाद, उनके शरीर को लोहे की पंजाओं से खुरचा जाए। अपनी यातना के दौरान, अलेक्जेंडर ने एक भी आह नहीं भरी, बल्कि स्वर्ग की ओर अपनी दृष्टि उठाकर ईश्वर का धन्यवाद किया। फिर, संत को यातना के वृक्ष से उतारने के बाद, ट्राइब्यून टिबेरियस ने उसे लोहे की जंजीरों में बांधने का आदेश दिया और अपने सैनिकों को उसे थ्रेस ले जाने का निर्देश दिया।

जब संत अलेक्जेंडर को सैनिकों द्वारा थ्रेस ले जाया जा रहा था, तब प्रभु का एक स्वर्गदूत उनकी माँ, पमिनिया, के सपने में प्रकट हुआ और उनसे कहा: 'जागो, अपने बिस्तर से उठो, अपने सेवकों और अपने पशुओं को ले लो, और अपने बेटे के पीछे थ्रेस चलो; क्योंकि वे तुम्हारे पुत्र को वहाँ इसलिए ले जा रहे हैं ताकि वह मसीह के नाम के लिए दुःख सहन करे; और तुम, उसकी मृत्यु के बाद, उसके पवित्र शरीर को दफ़नाना।"

[3683] इस मामले में, संत अलेक्जेंडर देवताओं के कारनामों से संबंधित ग्रीक पौराणिक कथाओं का भी संदर्भ दे रहे हैं।

धन्य पमिेनयिा, जागने पर, न तो दुखी हुईं और न ही रोईं, बल्कि इसके वपिरीत अपने पुत्र के लिए महान आध्यात्मकि आनंद से भर गईं। तुरंत उठकर यात्रा के लिए आवश्यक सभी चीजें तैयार कर, वह उसी मार्ग पर तेजी से चलीं जसि पर उनका पुत्र गया था। पमिेनयिा कैटार्गेन शहर में अलेक्जेंडर तक पहुँच गईं।

शहर में प्रवेश करते ही, उसने देखा कि उसका बेटा टबिेरयिन के सामने खड़ा था, जो उसका न्याय कर रहा था। तब यह देखकर कि अलेक्जेंडर को यातनाएँ दी जा रही थीं, और अपने प्रयि पुत्र के पराक्रम पर अत्यधकि प्रसन्न होकर, पमिेनयिा ने ऊँचे स्वर में पुकारा, और इस प्रकार कहा:

'हे सर्वोच्च ईश्वर, हे शुभ चरवाहे, मेरे पुत्र की सहायता करें!'

जब टबिेरयिन ने उसकी आवाज़ सुनी, तो उसने पूछा:

'वह कसिकी आवाज़ है?'

हालाँकि, कोई यह नहीं कह सकता था कि वह आवाज़ कहाँ से आ रही थी, क्योंकि उस जगह के पास बहुत सारे लोग खड़े थे। तब टबिेरयिन ने शहीद से कहा:

'अभागे, देवताओं को बलदिान अर्पति कर!'

लेकनि संत ने उत्तर दयिा:

'मैं ईश्वर की स्तुति का बलदिान चढ़ाने के लिए सहमत हूँ।'

यातनाकर्ता ने उत्तर दयिा:

'क्या तुमने मुझे यह नहीं बताया था कि तुम्हारा ईश्वर कसिी भी बलदिान की मांग नहीं करता?' संत ने उत्तर दयिा:

– वास्तव में, मेरे ईश्वर को उस प्रकार की बलदिानों की आवश्यकता नहीं है जो तुम अपनी मूर्तयिों को चढ़ाते हो, बल्कि उन्हें सत्य और पवत्रिता की बलदिान चाहिए, क्योंकि वह पवत्रि और धर्मी ईश्वर हैं।

तब टबिेरयिस ने संत के शरीर को मोमबत्तयिों से झुलसाने का आदेश दयिा, यह कहते हुए:

'आओ देखें कि क्या उसका ईश्वर उसे मेरी पकड़ से बचाने आएगा।'

लेकनि संत, जलते हुए, स्वर्ग की ओर अपनी दृष्टि उठाकर बोले: 'महमिा तेरी हो, हे प्रभु यीशु मसीह, जन्हिोंने अपने महादूत माइकल को बबेल भेजा और तीन जवानों को भट्टी की आग से बचाया (दानयिेल 3), हे प्रभु, मुझे भी इस पीड़ादायक यातना से बचाओ और यातना देने वाले को लज्जति करो, ताकि मैं भी भजनकार दाऊद के साथ कह सकूँ: *'हम आग और पानी से गुज़रे, और आपने हमें स्वतंत्रता में नकिाला'* (भजन संहति 65:12)।

जब टबिेरयिस ने देखा कि आग ने शहीद को बलि्कुल भी नुकसान नहीं पहुँचाया है, तो वह बहुत शर्मदिा हुआ और सैनकिों को आदेश दयिा कि वे अलेक्जेंडर को बाँध दें और उसे उसके रास्ते पर ले जाएँ। संत की माँ ने, यह देखकर कि सैनकि उसके बेटे को यातना देने वाले से दूर ले जा रहे हैं, उनसे वनिती की कि उसे अपने बेटे को देखने दें। सैनकिों ने उसे रोका नहीं। पवत्रि शहीद ने अपनी माँ को देखकर कहा:

'हे देवी, आप यहाँ आकर बहुत अच्छा कयिा। मेरे साथ उस स्थान तक चलिए जहाँ मैं अपना पराक्रम पूरा करूँगा[3684], जैसा कि प्रभु ने मुझे बताया है।'

हालाँकि, कुछ सैनकिों ने इस पर कहा:

'धन्य है तू, अलेक्जेंडर, क्योंकि तेरा वशि्वास महान है; और महान है ईसाई ईश्वर। देखो, तूने कतिनी पीड़ा सहन की है, और फरि भी तू अपने बयानों में जरा भी नहीं डगमगाया।'

इस प्रकार उन्होंने टबिेरयिस के आदेश पर की गई यात्रा के दौरान बात की।

जब यात्री एक ऐसे झरने पर पहुँचे जो सड़क के कनिारे बह रहा था, तो वे रुके और खाने लगे। उसी समय, उन्होंने अलेक्जेंडर से उनके साथ खाने का आग्रह कयिा, और वे इस बात पर और भी अधकि आग्रह करने लगे क्योंकि उसने चौदह दनिों से न तो रोटी खाई थी और न ही पानी पयिा था। हालाँकि संत ने भोजन के बजाय प्रार्थना को प्राथमकिता दी, वे घुटने टेककर भजन गाने लगे: *'मैं पहाड़ों की ओर अपनी आँखें उठाता हूँ—मेरी सहायता कहाँ से आएगी? मेरी सहायता यहोवा से आती है, जो आकाश और पृथ्वी का सृष्टकिर्ता है'* (भजन संहति 120:1–2)। तब उन्होंने इस प्रकार प्रार्थना करना शुरू कयिा: 'हे प्रभु यीशु मसीह, मुझे, अपने मेम्ने को, नर्दिोष बनाए रखो, ताकि मेरा शत्रु मुझ पर न आनन्दति हो,

---

[3684] अर्थात्, बज़िान्टयिम शहर को।

क्योंकि मैं ने तेरा परम पवित्र नाम जान लिया है। हे प्रभु, मुझे मेरे उत्पीड़क के सामने लज्जित न कर, परन्तु अपनी पवित्र स्वर्गदूत और अपना दाहिना हाथ मेरी सहायता के लिए भेज, और मेरा रक्षक, सहायक और संरक्षक बन।"

जब संत ने अपनी प्रार्थना समाप्त कर ली, तो प्रभु का स्वर्गदूत उसके पास प्रकट हुआ और कहा: 'अलेक्ज़ेंडर, डरो मत! प्रभु ने तुम्हारी प्रार्थना सुनी है, और मुझे परमेश्वर ने तुम्हारी सहायता के लिए भेजा है।'

जब स्वर्गदूत ये वचन कह रहा था, तब सैनिकों ने किसी को अलेक्ज़ेंडर से बात करते सुना, परन्तु वे यह नहीं देख सके कि वह कौन था; इसलिये वे बहुत डर गए और भय तथा आतंक से भरकर, मुँह के बल जमीन पर गिर पड़े। परन्तु धन्य अलेक्ज़ेंडर ने उनसे कहा:

'भाइयो, तुमने क्या देखा है कि तुम इतने भयभीत हो गए हो?'

उन्होंने उत्तर दिया:

'हमने आपके ईश्वर की आवाज़ आपको संबोधित करते हुए सुनी; इसीलिए हम भयभीत हो गए और डर के मारे ज़मीन पर गिर पड़े।'

जब सैनिक संत से ये बातें कर ही रहे थे, तब टिबेरियन शहर के कुलीनों के साथ उस स्थान पर पहुँचे। टिबेरियन ने कुलीनों से पूछा:

'इस जगह का नाम क्या है?'

उन्होंने उत्तर दिया:

'इसे न्याय का स्थान कहते हैं।'

इस पर टिबेरियन ने उत्तर दिया:

'यदि यह न्याय का स्थान है, तो यहाँ न्याय किया जाना चाहिए। मुझे ईसाई अलेक्ज़ेंडर को मेरे सामने लाओ।'

जब संत टिबेरियन के सामने उपस्थित हुए, तो टिबेरियन ने उनसे कहा:

'क्या तुम अब भी अपने पागलपन पर अड़े हो और हमारे देवताओं की पूजा करने से इनकार करते हो? मैं देखता हूँ कि तुम्हारा हृदय कठोर हो गया है; फिर भी, मुझे तुम पर बहुत तरस आता है और इसलिए मैं तुम्हें पूरे ब्रह्मांड के शासकों, देवताओं की पूजा की ओर मोड़ना चाहता हूँ।'

शहीद ने उत्तर दिया:

'हे दुष्ट मनुष्य, बुद्धि से अंधा, शैतान की संतान, जो अपने पिता—सैतान की सेवा कर रहा है। तू मुझ पर कैसे दया कर सकता है और मुझे दया दिखा सकता है, जबकि शैतान, तेरा पिता, किसी पर दया नहीं करता; इसके विपरीत, वह सभी को आग की गेहेना में खींचकर अपने साथ नष्ट करना चाहता है।'

टिबेरियन ने कहा:

– हे दुष्ट और अविचल पापी! तुझे मुझसे इस तरह बात करने की हिम्मत कैसे हुई? क्या मैं तेरा समकक्ष हूँ, जो तू मुझसे ऐसी अभद्रता से बात करता है? क्या इसलिए तू मेरा अपमान कर रहा है क्योंकि मैं तुझे क्षमा दे रहा हूँ? तुझे तो मेरी दया और कृपा के लिए मेरा और भी अधिक सम्मान और आदर करना चाहिए, न कि मुझे अपमानजनक शब्दों से गाली देकर!

संत ने उत्तर दिया:

'सचमुच, तुम अपने पिता, शैतान, जैसे ही हो, क्योंकि तुम्हारा हृदय किसी भी कठोर पत्थर की तरह कठोर है। क्या तुम्हें यह एहसास नहीं है कि इस जगह को न्याय का स्थान कहा जाता है? और यह स्पष्ट रूप से दर्शाता है कि तुम्हें जल्द ही ईश्वर के धर्मी न्याय का सामना करना होगा, जो सभी का, जीवितों और मृतकों दोनों का न्याय करेंगे, और जो प्रत्येक व्यक्ति को उनके कर्मों के अनुसार पुरस्कृत करेंगे। तब तुम्हें एहसास होगा कि मैंने तुम्हें सच कहा था। ईश्वर तुम्हें बिना दया के मुझे सताने के लिए दंड देगा। वह जानता है कि तुम मुझे कितनी क्रूरता और अन्याय से सताते हो। लेकिन यह जान लो: ये यातनाएँ मुझे महिमा प्रदान करेंगी, जबकि वे तुम्हें अनंत विनाश की ओर ले जाएँगी।

ये शब्द सुनते ही टिबेरियन और भी अधिक क्रोधित हो गया और उसने जमीन पर लोहे की काँटें बिछाने और शहीद को उन पर घसीटने का आदेश दिया। फिर भी इतनी भयंकर यातना के दौरान, संत मौन रहे, मानो उन्हें बिल्कुल भी पीड़ा न हो रही हो। जब देखा कि यातना अपना उद्देश्य पूरा नहीं कर रही है, तो टिबेरियन और भी अधिक क्रोधित हो गया और चार सैनिकों को गाँठदार डंडों से संत को पीटने का आदेश दिया। पीटे जाने के दौरान, संत ने टिबेरियन से कहा:

'हे दुष्ट! तुमने मेरे लिए केवल ये यातनाएँ ही सोची हैं। और भी, इससे भी कठोर यातनाएँ जोड़ो, क्योंकि मुझे इन यातनाओं से बिल्कुल भी दर्द महसूस नहीं हो रहा है, क्योंकि मसीह, मेरे ईश्वर, मेरी मदद कर रहे हैं।'

टिबेरियन ने उत्तर दिया:

'मैं तुम्हारे शरीर को टुकड़ों में काटकर उन्हें आग में फेंक दूँगा, और हवाओं में बिखेर दूँगा, ताकि पृथ्वी पर तुम्हारी कोई स्मृति भी न बचे। तब मैं देखूँगा कि क्या मसीह तुम्हारी सहायता करने और तुम्हें मेरे हाथों से बचाने आएगा।'

संत ने उत्तर दिया:

'मेरा मसीह तुम्हें तुरंत ही नष्ट कर देगा। तुम्हारा शरीर टुकड़ों में फाड़ दिया जाएगा और तुम्हारी हड्डियाँ पृथ्वी पर बिखेर दी जाएँगी; तुम फिर कभी रोम को नहीं देखोगे, और न ही अपने दुष्ट सम्राट का चेहरा देखोगे, क्योंकि प्रभु तुम्हारी स्मृति को पृथ्वी के चेहरे से मिटा देगा। और यह सब तुम्हारी सज़ा होगी, क्योंकि तुम सच्चे ईश्वर को नहीं जानते, और तुमने, हे नीच, उस ईश्वर का सम्मान नहीं किया जिसने तुम्हें यह सम्मान और यह शक्ति प्रदान की। लेकिन अगर तुम ईश्वर को जानते, तो तुम स्वर्ग में अपने लिए अनंत जीवन सुनिश्चित कर सकते थे; लेकिन अब, सच्चे ईश्वर को त्यागकर, तुमने अपने पिता, शैतान, से अपने पूरे हृदय से प्रेम किया है; उसके साथ ही तुम भी आग की गेहेना में फेंके जाओगे। जहाँ तक मेरी बात है, मैं हमेशा अपने प्रभु और उद्धारकर्ता, प्रभु यीशु मसीह की महिमा करूँगा, जो मुझे तुम्हारे हाथों से छुड़ाएंगे और मुझे अपने अनंत राज्य में अपनी कृपा प्रदान करेंगे।

ये शब्द सुनकर, यातना देने वाले का चेहरा क्रोध और गुस्से से विकृत हो गया। फिर भी, उसने यातना बंद करने का आदेश दिया।

इस बीच, दिन ढल रहा था। जब रात हुई, तो टिबेरियन उसी जगह रात के लिए ठहर गया। सोते समय, उसने एक सपने में परमेश्वर के एक स्वर्गदूत को देखा, जो उसके सामने एक भयानक रूप में प्रकट हुआ, जिसके हाथ में एक तलवार थी। स्वर्गदूत ने उससे कहा: 'दुष्ट मनुष्य! देख, मैं तुझ पर आया हूँ, क्योंकि तूने परमेश्वर के दास, अलेक्ज़ेंडर को क्रूर यातनाएँ दी हैं; जान रख कि मैं इसी तलवार से तुझे मार सकता हूँ। पर मैं थोड़ी देर और प्रतीक्षा करूँगा। जब तू जागे, तो इलिरिया से होकर जल्दी बाइजेंटीयम जा, क्योंकि परमेश्वर के दास, अलेक्ज़ेंडर की मृत्यु का समय निकट आ गया है।'

टिबेरियन भय से जाग उठा। वह आतंक से कांप उठा। उसने अपने साथ यात्रा कर रहे सलाहकारों को बुलाया और उन्हें अपना दर्शन सुनाया। उन्होंने उससे कहा:

'हम लंबे समय से आपको यह बताना चाहते थे कि आपको उस आदमी को इतनी क्रूरता और अन्याय से पीड़ा नहीं देनी चाहिए। लेकिन हम ऐसा करने की हिम्मत नहीं कर सके। हमने सुना है कि ईसाई ईश्वर महान है और जो उसके सेवकों को पीड़ा देते हैं, उन्हें वह बुझने वाली आग में अनंतकालिक यातना की सजा देता है।'

ये शब्द सुनते ही, टिबेरियन पर और भी अधिक भय और आतंक छा गया, और उसने तुरंत अपने सैनिकों को शहीद को आगे लाने का आदेश दिया। वह स्वयं उसके पीछे-पीछे चला। टिबेरियन कई शहरों से गुज़रा, फिर भी वह किसी में न तो गया और न ही रुका, क्योंकि, देवदूत के आदेश के अनुसार, वह बिज़ेन्टियम पहुँचने के लिए बहुत जल्दबाज़ी में था। फिर भी, जो दर्शन उसने अपनी नींद में देखा था, वह कई दिनों तक उसके मन में बना रहा; इसलिए, टिबेरियन बहुत डर गया और संत अलेक्ज़ेंडर को कोई कष्ट पहुँचाने की हिम्मत नहीं की। जब टिबेरियन इलिरिया से गुजर रहा था और सार्डिका शहर के पास पहुँचा, तो शहर का राज्यपाल और शहर के कुलीनों बाहर आकर उससे मिले; लेकिन टिबेरियन शहर में नहीं गया; बल्कि, वह सीधे उसके पास से गुज़र गया। उस शहर में रहने वाले ईसाई, यह सुनकर कि रोम से यात्रा कर रहा ट्रिब्यून टिबेरियन अपने साथ शहीद को ला रहा था, शहर से बाहर आए—ट्रिब्यून से मिलने के लिए नहीं, बल्कि शहीद को देखने के लिए। जब उन्होंने देखा कि शहीद अकेले चल रहे थे, तो ईसाई उनके पास आए और उनके पैरों पर गिर पड़े, और कहा:

'हे मसीह के दुखिति, हमारे लिए ईश्वर से प्रार्थना करो!'

उसने उत्तर दिया:

'भाइयों, मेरे लिए भी प्रार्थना करो, कि मैं मसीह यीशु के लिए अपना संघर्ष पूरा कर सकूँ और उनके पवित्र दाहिने हाथ से मुझे वादा किए गए मुकुट को प्राप्त करने के योग्य ठहराया जाऊँ।'

तब सैनिकों ने शहीद को उसकी राह पर आगे बढ़ाया। क्लिसुरा नगर से गुज़रने के बाद, यात्री फिलिपोपोलिस से चालीस स्टेडियम दूर स्थित वोनोमसियन कैंप नामक स्थान पर पहुँचे, जहाँ वे रुके; इस समय तक, टिबेरियन शहीद

अलेक्जेंडर के बारे में देखे गए उस भयानक दृश्य को भूलना शुरू कर चुका था। संत को पूछताछ के लिए अपने पास बुलाकर, उसने उससे पूछा:

'क्या सचमुच, अलेक्जेंडर, तुम अभी भी अपने पागलपन में हो? क्या तुम हमारे दयालु देवताओं, डायोस और एस्क्लेपियस[3685] , जो ब्रह्मांड पर शासन करते हैं, को बलिदान अर्पित नहीं करना चाहोगे?'

संत ने उत्तर दिया:

'हे शैतान के पुत्र, हे मन से अंधे! तू मुझसे और क्या सुनना चाहता है? क्योंकि मैंने तुझसे कह दिया है कि मैं राक्षसों को बलिदान नहीं चढ़ाऊँगा।'

टिबेरियन ने कहा:

'नहीं, मैं आपको राक्षसों को बलिदान देने के लिए मनाने की कोशिश नहीं कर रहा हूँ; मैं तो बस आपसे हमारे महान देवताओं, डियोस और एस्क्लेपियस को बलिदान देने के लिए कह रहा हूँ।'

संत ने उत्तर दिया:

'तुम पागल! क्या तुम्हें यह एहसास नहीं कि तुम्हारे डायोस और एस्क्लेपियस राक्षस हैं?' टिबेरियन ने कहा:

'नहीं, वे मेरे देवता हैं। और इसलिए मैं यह सुनिश्चित करूँगा कि मेरे और मेरे देवताओं के खिलाफ इतनी बड़ी ईश्वरनिंदा के लिए पूरे देश में आपके नाम का बहिष्कार किया जाए।'

संत ने उत्तर दिया:

'मैं स्वयं चाहता हूँ कि मसीह का नाम मेरे द्वारा पूरे देश में महिमामय हो।'

तब टिबेरियन ने उसके सामने खड़े सैनिकों से कहा:

'इसे मेरी उपस्थिति से दूर ले जाओ, क्योंकि मैं इसकी धर्मनिंदा सहन नहीं कर सकता। इसे फिलिप्पोपोलिस ले जाओ और वहाँ एक कालकोठरी में बंद कर दो; इसे तब तक कालकोठरी में ही रखना जब तक मैं उस शहर में न आ जाऊँ।'

टिबेरियन के आदेश के अनुसार, शहीद को सैनिकों द्वारा फिलिप्पोपोलिस ले जाया गया और वहाँ कैद कर दिया गया।

इस बीच, उस शहर के नागरिकों को यह पता चला कि टाइबेरियन जल्द ही आ रहे हैं, तो वे उनका स्वागत करने के लिए बाहर गए। शहर में प्रवेश करने पर, टाइबेरियन ने ज़्यूस और एस्क्लेपियस को बलिदान चढ़ाने की तैयारी की। उस नगर में रहने वाले ईसाइयों को, जब यह पता चला कि पवित्र शहीद अलेक्जेंडर को वहाँ एक कालकोठरी में रखा गया है, तो वे कालकोठरी पर गए और जेलर से उन्हें अंदर जाने देने की विनती करने लगे, ताकि वे मसीह के शहीद को देख सकें। जेलर ने उन्हें नहीं रोका, क्योंकि वह स्वयं परमेश्वर से डरता था। जेल में प्रवेश करके और संत को बेड़ियों में जकड़ा हुआ देखकर, ईसाई उनके पैरों पर गिर पड़े और उनकी बेड़ियों को चूमते हुए कहने लगे: 'हे मसीह के कष्ट-भोगी, हमें आशीर्वाद दो; हमारे देश को भी आशीर्वाद दो, क्योंकि हम ईसाई हैं; हम इस शहर में रहते हैं, जो लगातार बड़े भय से ग्रस्त है, क्योंकि इस शहर का राज्यपाल हमेशा हमें ढूंढता रहता है, हमें यातनाओं के द्वारा मसीह से दूर करने की कोशिश करता है। फिर भी, आज तक, वह हमें मसीह के नाम का अंगीकार करने से दूर नहीं कर सका है। ईश्वर की कृपा से, हम यहाँ बहुत से हैं; हम मसीहियों में तो इस शहर के सबसे प्रतिष्ठित और विशिष्ट नागरिक भी शामिल हैं। हमें आशा है कि मसीह की शक्ति अधर्मी हेलेनिक धर्म पर विजय प्राप्त करेगी और अंत में, हमारा पूरा शहर सर्वसम्मति से मसीह के नाम का गौरव करेगा। और आप, मसीह के लिए कष्ट सहने वाले, मसीह के लिए अपने संघर्ष में अंत तक डटे रहें।'

इस बीच, टिबेरियस, मूर्तियों को अपना घृणित बलिदान अर्पित करते हुए, जेल में बंद अलेक्जेंडर को याद आया, और उसने शहर के कुलीनों से कहा:

'तुम जान लो कि मेरे साथ एक ईसाई है, जिसे मुझे परखने के लिए सौंपा गया है; मैंने उसे हमारे देवताओं की पूजा करने के लिए मजबूर करने हेतु तरह-तरह की यातनाएँ दी हैं, लेकिन मैं इसमें बिल्कुल भी सफल नहीं हुआ हूँ। वह मेरे सवालों का जवाब बहुत अभद्रता से देता है और लगातार मेरा और हमारे देवताओं का अपमान करता है। उसे यहाँ लाया जाए। शायद वह यहाँ मौजूद आप सभी को शर्मिंदा कर देगा और देवताओं को बलिदान चढ़ाएगा।"

अलेक्जेंडर को तुरंत लाया गया। हेगेमोन के बगल में बैठे टिबेरियन ने शहीद से कहा:

[3685] एस्कलेपियस को प्राचीन यूनानियों द्वारा उपचार के देवता के रूप में माना जाता था।

'मुझसे कहो, अलेक्जेंडर: क्या तुम अभी भी हमारे देवताओं को बलदिान चढ़ाने से इनकार करते हो? इस शहर में रहने वाले सभी ईसाइयों ने पहले ही डायोनसिस और एस्क्लेपयिस की पूजा कर ली है; केवल तुम ही हमारा वरिोध कर रहे हो।'

संत ने उत्तर दयिा:

'झूठ बोलता है, हे नीच, ठीक अपने पति, शैतान की तरह: यहाँ का एक भी ईसाई अब तक तेरे दुष्ट आदेश का पालन नहीं कर चुका है।' जहाँ तक मेरी बात है, आप मुझसे वह सुनने के अलावा कुछ नहीं सुनेंगे जो मैं आपको पहले ही बता चुका हूँ, अर्थात्, कि मैं एक ईसाई हूँ, और मैं आपके घृणति राक्षसों को बलदिान नहीं चढ़ाऊँगा। और इसलिए अब, एक बार फरि, यहाँ मौजूद सभी लोगों की सुनवाई में, मैं दोहराता हूँ कि मैं स्वर्ग के ईश्वर का सेवक हूँ और मैं अपने ईश्वर मसीह का कभी त्याग नहीं करूँगा।

टबिेरयिन, लज्जति होकर, सैनकिों से बोला: 'उसे लोहे की बेड़यिों में बाँधो और मेरे सामने ले चलो; मैं तुम्हारे पीछे आऊँगा।'

और संत को उनके रास्ते पर ले जाया गया।

सरिमयिा नामक एक झरने पर पहुँचकर, शहीद ने अपना चेहरा और हाथ धोए। फरि, पूर्व की ओर मुड़कर, उन्होंने प्रार्थना करना शुरू कयिा, और कहा: 'हे प्रभु मेरे परमेश्वर, मैं आपकी धन्यवाद करता हूँ कि आपने मुझे फलिपिोपोलसि में आपके परम पवत्रि नाम का इकरार करने की कृपा दी।'

लेकनि सैनकिों ने उसे और प्रार्थना करने नहीं दी और उसे अपना रास्ता जारी रखने के लिए मजबूर कयिा।

जब वे पोल्चश्निो नामक स्थान पर पहुँचे (जहाँ मूर्तपिूजक त्योहार मनाए जाते थे), तो टबिेरयिन यात्रयिों के पास पहुँचा। अलेक्जेंडर को अपने पास बुलाकर, टबिेरयिन ने उससे कहा:

'क्या तुम नहीं जानते, अलेक्जेंडर, कि मैंने राज्यपाल के सामने तुम्हारे साथ सौम्यता से बात की थी, और तुम्हें हमारे देवताओं को बलदिान चढ़ाने के लिए कहा था; फरि भी तुमने, इतनी प्रतष्ठिति सभा के सामने, मेरी वनिती को ठुकरा दयिा। तो ऐसे में, कम से कम अब मेरा आदेश मानो, और मैं तुम्हें तुम्हारे दुखों से मुक्त कर दूँगा।'

संत ने उत्तर दयिा:

'जो मैंने तुम्हें राज्यपाल के सामने कहा था, वही मैं कहीं भी कहूँगा। इसलिए, हे शैतान के पुत्र, शैतान के प्रपंच में फँसे, यह मत सोचो कि तुम मुझे कभी मसीह के नाम का अंगीकार करने से हटा सकोगे।'

तब टबिेरयिन ने सैनकिों को आज्ञा दी कि वे जमीन में चार खंभे गाड़ें और शहीद को चारों दशिाओं में खींचकर उन खंभों से बाँध दें तथा दो सौ कोड़े लगाएँ। शहीद ने, तथापि, उन घावों को मौन रूप से सहन कयिा, अपने प्रभु परमेश्वर से प्रार्थना करते हुए। उस क्षण स्वर्ग से एक आवाज़ सुनाई दी, जो कह रही थी: 'साहस रखो, अलेक्जेंडर, और इन यातनाओं से मत डरो, क्योंकि ये अस्थायी हैं और जल्द ही समाप्त हो जाएँगी। मैं हमेशा तुम्हारे साथ हूँ।'

स्वर्ग से आवाज़ सुनकर, टबिेरयिस बहुत डर गया; उसने तुरंत यातनाएँ बंद करने का आदेश दयिा और फरि अपनी यात्रा पर चल पड़ा। फलिपि्पोपोलसि और बेरयिा के बीच स्थति करसुरा नामक नगर में पहुँचने पर, टबिेरयिन उसमें प्रवेश कर गया; सैनकिों ने, हालाँकि, टबिेरयिन के साथ नगर में प्रवेश नहीं कयिा, बल्कि नगर के पास पेड़ों की छाया में रुक गए। दनि का छठा घंटा था। चूँकि बहुत गर्मी थी, संत ने सैनकिों से कहा:

'भाइयो, मुझे बहुत प्यास लगी है।'

लेकनि उन्होंने उत्तर दयिा:

'हम भी बहुत प्यासे हैं, लेकनि हमें यहाँ पानी कहाँ मलिेगा?' संत ने उनसे कहा:

'यहीं थोड़ी देर रुको, क्योंकि शायद ईश्वर हमें इसी जगह पानी प्रदान कर देंगे।'

यह कहकर, संत घुटने के बल बैठ गए और प्रभु से इन शब्दों में प्रार्थना करने लगे: 'हे प्रभु यीशु मसीह, जन्हिोंने एक बार मरुभूमि में इस्राएल के प्यासे लोगों के लिए चट्टान से पानी नकिाला था (नर्गिमन 17:1–7), अब अपने दास पर अनुग्रह की दृष्टि डालें और हमें इसी स्थान पर पानी प्रदान करें, ताकि मैं और मेरे साथ जो सभी हैं, अपनी प्यास बुझा सकें। इसके द्वारा, तेरा पवत्रि नाम महमिामय होगा।"

जब संत ने इस प्रकार प्रार्थना की, तो अचानक धरती फट गई और ओक के पेड़ के नीचे से शुद्ध, ठंडे पानी का एक झरना फूट पड़ा। ऐसा चमत्कार देखकर, सैनकिों ने कहा:

'नश्चिय ही महान है ईसाई परमेश्वर, जो अपने वश्विासयोग्य सेवकों की प्रार्थनाएँ स्वीकार करता है।'

तब शहीद और सैनकिों ने उस झरने से पानी पयिा और मसीह परमेश्वर की महमिा की।

काफी दूरी तय करने के बाद, सैनकि अर्सोन नामक एक नदी पर पहुँचे। चूँकि वे सभी लंबी यात्रा से थके हुए थे, इसलएि वे वहाँ आराम करने के लएि ठहर गए। अलेक्जेंडर भी आराम करने के लएि बैठ गया। वहाँ, टबिेरयिन सैनकिों के पास पहुँचा और शहीद को बैठा हुआ देखकर, सैनकिों से गुस्से में कहा:

'तुम नीच लोग, उस अधर्मी आदमी को वहाँ क्यों बैठने देते हो?'

फरि, उठकर वे बेरयिा नगर की ओर चल पड़े।

जैसे ही वे शहर के पास पहुँचे, नागरकिों ने टायबेरयिन का सम्मानपूर्वक स्वागत कयिा। इस शहर में बहुत सारे ईसाई थे—आधी से अधकि आबादी—फरि भी, मूर्तपिूजकों के हाथों यातनाओं के डर से, वे गुप्त रूप से मसीह के नाम का प्रचार करते थे। मसीह के शहीद को ट्रबि्यून से अलग चलते हुए देखकर, वे उसके पास गए और कहा:

'हे मसीह के शहीद, आनन्दति हो! हौसला रखो और दृढ़ बनो, क्योंकि दुष्ट यातना देने वाले हमारे प्रभु, यीशु मसीह की सर्वशक्तमिान शक्ति के वरिुद्ध कभी भी सफल नहीं होंगे।'

इस बीच, टबिेरयिन ने शहीद को अपने पास बुलाया और कहा:

'मेरी बात सुनो, अलेक्जेंडर, जैसे तुम अपने पति की सुनते हो: अभी मेरे साथ मलिकर हमारे देवताओं को बलदिान चढ़ाओ। अगर तुम ऐसा करोगे, तो मैं तुमसे यहाँ मौजूद सभी के सामने वादा करता हूँ कि मैं तुम्हें आज़ाद कर दूँगा, और अगर तुम चाहो, तो तुम मेरी रेजमिेंट में कमांडर का पद ले सकते हो; लेकनि अगर तुम रेजमिेंट कमांडर नहीं बनना चाहते, तो तुम जहाँ चाहो वहाँ जा सकते हो।'

तथापि संत मुस्कुराए और उनसे कहा:

'ओह, काश तुम जान पाते कि तुम्हारा यह सांत्वना देना मेरे लएि कतिना कड़वा है! क्योंकि तुम्हारे ये शब्द मेरी आत्मा को महान पीड़ा पहुँचाते हैं। लेकनि ईश्वर मेरी मदद करेंगे कि मैं तुम्हारी सलाह पर ध्यान न दूँ। मैंने तुम्हें पहले भी कई बार बताया है, और मैं अब कहता हूँ और एक बार फरि दोहराता हूँ: मैं एक ईसाई हूँ और मैं तुम्हारे राक्षसों को बलदिान नहीं चढ़ाऊँगा।'

और टबिेरयिन वहाँ से आगे बढ़ गया। शहीद लोहे की जंजीरों में जकड़ा हुआ उसका पीछा कर रहा था। वे उसी अर्सोना नदी के कनिारे स्थति एक और स्थान पर पहुँचे। यह स्थान बेरयिा से चौदह स्टेडयिम दूर था। यहाँ कई सरायें और अतथि-गृह थे। टबिेरयिन ने वहाँ रात बतिाई, शहीद का इंतजार करते हुए, जनिके साथ बेरयिा शहर के कई ईसाई थे।

जब शहीद के साथ सैनकि उस स्थान पर पहुँचे जहाँ टबिेरयिन था, तो शहीद ने टबिेरयिन से थोड़ी देर के लएि अपने ईश्वर से प्रार्थना करने की अनुमति माँगी। टबिेरयिन ने उसे अनुमति दे दी। संत ने पास में एक बड़ा अखरोट का पेड़ देखा, वे उसके पास गए और उसकी शाखाओं के नीचे खड़े हो गए , और घुटने टेककर ईश्वर से इन शब्दों में प्रार्थना करने लगे: 'हे प्रभु यीशु मसीह! अपना पवत्रि स्वर्गदूत भेजो और मेरी आत्मा को ले लो, क्योंकि मैं अब इन यातनाओं को सहन नहीं कर सकता, क्योंकि मेरा शरीर थक गया है।"

टबिेरयिन ने, जब देखा कि शहीद प्रार्थना कर रहा था, तो सैनकिों से कहा:

'मैं हैरान हूँ कि अलेक्जेंडर ने ये जादुई प्रार्थनाएँ कहाँ से सीखीं। आखरिकार, वह मेरी आँखों के सामने ही बड़ा हुआ है। मैंने खुद उसे सैनकि का पद दयिा था और मैंने कभी यह कल्पना भी नहीं की थी कि वह कोई जादू जानता है।'

फरि, अलेक्जेंडर को अपने पास बुलाकर, उसने उससे कहा:

'अलेक्जेंडर, देवताओं को बलदिान अर्पति करो!'

संत ने उत्तर दयिा:

'सचमुच, तुम्हारा दमिाग़ ख़राब हो गया है, क्योंकि तुम एक बार फरि मुझसे वह सुनना चाहते हो जो मैं तुम्हें पहले ही कई बार बता चुका हूँ।'

संत के इन शब्दों के बाद, टबिेरयिस ने अपने नौकरों को शहीद की पीठ पर उबलता हुआ तेल डालने का आदेश दयिा। लेकनि प्रभु का स्वर्गदूत, शहीद के बगल में अदृश्य रूप से प्रकट होकर, तेल वाले पात्र को तोड़ दयिा; ऐसा होते ही, तेल यातना देने वालों के नौकरों पर गरि गया और उन्हें बुरी तरह से झुलसा दयिा। हालाँकि, टबिेरयिन ने जब देखा कि तेल से जलने वाले शहीद नहीं बल्कि उसके नौकर थे, तो वह बहुत क्रोधति हो गया और चार सैनकिों को आदेश दयिा कि वे शहीद को एक अखरोट के पेड़ के नीचे लटिा दें और उसे डंडों से बेरहमी से पीटें। पटिाई तब तक चलती रही जब तक कि सैनकि थक नहीं गए। जब यातना देने वालों ने पटिाई बंद कर दी, तो संत अलेक्जेंडर ने कहा: 'हे प्रभु परमेश्वर! इस पेड़

को आशीर्वाद दें और इसे चंगा करने की शक्ति प्रदान करें, क्योंकि मैंने आपके पवित्र नाम के लिए इसके नीचे पीड़ा सहन की है।'

उस समय से, उस पेड़ के फल और पत्तियों में चंगा करने की शक्ति आ गई और उन्होंने विश्वासियों को विभिन्न प्रकार की बीमारियों और व्याधियों से ठीक किया।

फिर सैनिक शहीद को एक बार फिर से ले चले, और उसे टिबेरियस के सामने मार्च कराया। जब वे एड्रियनोपल से गुज़र चुके थे, तो वे वर्तोडेक्सियन नामक एक स्थान पर पहुँचे। वहाँ संत अपनी माता, धन्य पमिनिया से मिले, जो शहीद से पहले ही वहाँ पहुँच चुकी थीं; अपने प्रिय पुत्र को देखकर, वह रोते और विलाप करते हुए उसके पैरों पर गिर पड़ीं। फिर, उठकर, उन्होंने उसे पूरे शरीर पर चूमा। और संत ने उनसे कहा:

'माँ, रोओ मत, क्योंकि मैं अपने प्रभु में आशा रखता हूँ, कि वह मुझे अगले दिन की सुबह तक अपना पराक्रम पूरा करने में मदद करेंगे।'

यहीं पर टिबेरियन सैनिकों से मिला। चूँकि दिन पहले ही समाप्त होने वाला था, टिबेरियन रात के लिए यहीं रुक गया और सो गया। रात के आठवें घंटे[3686] में वह अपने बिस्तर से उठा और ज़ियोनकेल नामक नदी पर गया, जहाँ एक सराय थी। सूरज पहले ही निकल चुका था। यहाँ अपनी यात्रा से थोड़ा आराम करने के बाद, टिबेरियन ने शहीद से कहा:

'मैंने तुम्हें पहले ही कई यातनाएँ दी हैं, और फिर भी तुमने मेरे देवताओं की पूजा करने से इनकार कर दिया है। तो जान लो, कि अगर तुम मेरे आदेश का पालन नहीं करते हो तो मैं तुम्हें मौत की सजा दूँगा।'

यह कहकर, टिबेरियन उस स्थान से चला गया। जब वह बिज़िंटियम के करीब पहुँचा और एरिगोने नदी पर स्थित ड्रिज़िपिरोस नगर के पास गया, तो टिबेरियन ने वहाँ शहीद पर अंतिम निर्णय सुनाने का निश्चय किया और उससे कहा:

'अलेक्जेंडर, यह रही तुम्हारी मौत। अब तुम क्या कहते हो: क्या तुम हमारे देवताओं को बलिदान दोगे, या नहीं? मैं यहीं और अभी तुम्हें मौत की सज़ा दूँगा और तुम्हारे शरीर को मछलियों के खाने के लिए नदी में फेंक दूँगा।'

लेकिन संत ने उत्तर दिया:

'मैं तुम्हारा बहुत आभारी रहूँगा अगर तुम वैसा ही करो जैसा तुम कहते हो; तो मैं तुरंत ही तुम्हारे हाथों से मुक्त हो जाऊँगा। लेकिन किसी भी परिस्थिति में मैं तुम्हारे घृणित देवताओं को बलिदान नहीं चढ़ाऊँगा, भले ही तुम मुझे हजारों बार मौत के घाट क्यों न उतार दो।'

तब यातना देने वाले ने अलेक्जेंडर को मृत्युदंड सुनाया और उसे सैनिकों के हवाले कर दिया, यह आदेश देते हुए कि वे उसका सिर कलम कर दें और उसके शरीर को नदी में फेंक दें। फिर वह अपनी यात्रा पर चल पड़ा; लेकिन सैनिक, टिबेरियस के आदेश को पूरा करने के लिए वहीं रुके रहे। यहाँ बहुत सारे लोग मसीह के शहीद की मृत्यु का साक्षी बनने की इच्छा से इकट्ठा हुए थे; वहाँ कुछ ईसाई भी मौजूद थे। पवित्र शहीद ने जल्लाद की ओर मुड़कर उससे सिर कलम करने में थोड़ी देर करने और उसे प्रार्थना करने की अनुमति देने के लिए कहा; उसी समय, शहीद ने पानी माँगा। इस दृश्य को देखने आए लोगों में से एक ने एक पात्र लिया, नदी से पानी निकाला और उसे शहीद के पास ले आया। संत ने उस पानी से अपना चेहरा और हाथ धोए, फिर पूर्व की ओर मुड़े; फिर, क्रॉस का चिह्न बनाकर, उन्होंने इस प्रकार प्रार्थना करना शुरू किया: 'महिमा हो आपको, हमारे पूर्वजों के परमेश्वर! महिमा तेरी हो, हे Abraham, , इसहाक और याकूब के परमेश्वर! महिमा तेरी हो, जिनके सामने सारी सृष्टि काँपती है और जिनके सामने सभी सिर झुकाते हैं, क्योंकि तू स्वर्ग और पृथ्वी का सृष्टिकर्ता है! हे सर्व के परमेश्वर, अदृश्य और अमर परमेश्वर, आपके सामने सेराफिम भयभीत होकर खड़े हैं, वे आपको देखने की हिम्मत नहीं करते, और अनवरत पुकारते हैं: *'महापवित्र, महापवित्र, महापवित्र है सेनाओं का यहोवा! सारी पृथ्वी उसकी महिमा से परिपूर्ण है!'* (यशायाह 6:3)। सूर्य, जब वह आकाश में अपनी यात्रा करता है, तो आपको आशीर्वाद देता है; पृथ्वी और उस पर जो कुछ भी है, वह आपको आशीर्वाद देता है; लोग और जानवर, हर जीवित प्राणी, आपकी स्तुति करते हैं, क्योंकि आप ही सच्चे ईश्वर हैं, पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा, जो सदा निवास करते हैं। हे प्रभु, अपने भयभीत करने वालों को याद रखो, और जो आपके सर्व-पवित्र नाम का धन्यवाद करते हैं। हे मानव जाति के प्रेमी प्रभु, अपने दीन और अयोग्य सेवक को भी तुच्छ न समझो।"

तब, ईसाइयों की ओर मुड़कर, संत ने कहा:

[3686] हमारी गणना के अनुसार – सुबह के 2 बजे।

'भाइयो और पतिृवर! मेरी कठनिाइयों को याद करो, क्योंकि मैं हमारे प्रभु यीशु मसीह के नाम के लिए दुख सहने से कभी पीछे नहीं हटा, ताकि वह मुझ पर और सभी अन्य मसीहयिों पर दया करे। जान लो कि रोम से इस स्थान तक की मैंने जो लंबी यात्रा की है—हर मोड़ पर बेड़यिों और हथकड़यिों में जकड़ा हुआ, पीटे जाते हुए घसीटा गया, और हर तरह से यातनाएँ दी गईं—यह कठनि यात्रा मैंने अपनी शक्ति से नहीं, बल्कि हमारे प्रभु यीशु मसीह की सहायता से की है। प्रभु यीशु मसीह की शक्ति से, मैंने अपने यातना देने वाले टबिेरयिस और उसके साथी, शैतान, दोनों पर वजिय प्राप्त की है। अब मैं इस स्थान को छोड़कर अपने प्रभु के सामने उपस्थति होने जा रहा हूँ। तुम भी मेरे लिए प्रार्थना करो, कि मुझे प्रभु से दया मलि।

तब संत ने जल्लाद से थोड़ी देर और प्रतीक्षा करने के लिए कहा और घुटने टेककर ईश्वर से इन शब्दों में प्रार्थना करने लगे: 'हे प्रभु यीशु मसीह! अपने सेवक को सुनो, जो तेरे पवत्रि नाम के लिए कष्ट सह रहा है! मेरी देह पर अपनी कृपा भेज; यह अनुग्रह कर कि जहाँ भी इसे रखा जाए, यह सर्वत्र रोगयिों को आरोग्य प्रदान करे, तेरे अति पवत्रि नाम की महमिा के लिए।'

तत्क्षण स्वर्ग से एक आवाज़ सुनाई दी, जो शहीद की प्रार्थना को पूरा करने का वचन दे रही थी।

तब शहीद ने सैनकिों से कहा:

'भाइयो! जो आज्ञा तुम्हें दी गई है, उसे बनिा वलिंब के पूरा करो!' जल्लाद, जसिका नाम सेलेस्टीन था, ने संत से कहा:

'हे मसीह के शहीद! अपने ईश्वर से प्रार्थना करो कि वह इसे मेरे वरिुद्ध पाप न माने, क्योंकि मुझे तुम्हें मृत्युदंड देने का आदेश दयिा गया है।'

संत ने उत्तर दयिा:

'तुम यह अपने मन से नहीं कर रहे हो, बल्कि दूसरों के आदेश पर कर रहे हो। पाप उस पर होगा जसिने यह आदेश दयिा है; जहाँ तक तुम्हारा सवाल है, जो तुम्हें आदेश दयिा गया है, उसे बनिा देरी के करो, क्योंकि मैं अपने प्रभु के पास जा रहा हूँ।'

सेलेस्टाइन ने संत की आँखों पर एक साफ़ तौलयि से पट्टी बाँध दी और, अपनी तलवार म्यान से नकिालकर, शहीद को मारने ही वाला था। लेकनि, शहीद की आत्मा को लेने आए पवत्रि स्वर्गदूतों को देखकर, वह बहुत डर गया और वहाँ खड़ा रह गया, यह नहीं जानता था कि क्या करे। संत, यह सोचकर कि उसका सरि कसिी भी पल कट जाएगा, जल्लाद से कहा:

'करो, भाई, जो तुम्हें आज्ञा दी गई है।'

लेकनि जल्लाद ने उत्तर दयिा:

'हे परमेश्वर के सेवक, मैं डर गया हूँ, क्योंकि मैं तेरे पास कुछ अद्भुत पुरुषों को खड़ा हुआ देखता हूँ।'

तब संत ने ईश्वर से पुकार लगाई, और कहा: 'हे प्रभु यीशु मसीह! कृपा करें कि मैं इसी घड़ी अपना पराक्रम पूरा कर सकूँ!'

इसके बाद, स्वर्गदूत संत से थोड़ी दूरी पर हट गए। फरि जल्लाद, सेलेस्टीन ने, शहीद का सम्मानति सरि काट दयिा, और तुरंत ही उनकी पवत्रि आत्मा स्वर्गदूतों के हाथों स्वर्ग में उठा ली गई; स्वर्गदूतों ने इसे ईश्वर की स्तुति के ध्वनि के बीच स्वर्ग तक ले गए। वह दैवीय स्वर उस स्थान के पास खड़े सभी ईसाइयों द्वारा सुना गया।

इस प्रकार मसीह के पवत्रि शहीद, अलेक्जेंडर ने अपनी शहादत को पूर्ण कयिा[3687] , जबकि यातना देने वाले के आदेश के अनुसार, टबिेरयिस के सैनकिों ने उनके पूजनीय शरीर को नदी में फेंक दयिा था। लेकनि, ईश्वर की व्यवस्था से, चार कुत्तों ने शहीद के पूजनीय शरीर को पानी से खींचकर कनिारे पर ले आए। कुत्तों ने पवत्रि शरीर को चाटा और उसके पास बैठकर शकिारी पक्षयिों और जंगली जानवरों से उसकी रक्षा की। जब शहीद की माँ, धन्य पमिनयिा, उस स्थान पर पहुँचीं, तो उन्होंने अपने प्रयि पुत्र के दीर्घ-पीड़ति शरीर को उठाया और उसे सुगंधति तेलों से अभषिेक कर एक स्वच्छ कफ़न में लपेटकर, नदी एरगिोने के कनिारे सम्मानपूर्वक दफनाया। शहीद की कब्र से, वश्विास के साथ आने वाले सभी लोगों पर प्रचुर चंगाई की गई।

[3687] संत अलेक्जेंडर की शहादत तीसरी शताब्दी के अंत या चौथी शताब्दी की शुरुआत में हुई थी।

कुछ ही समय बाद, पवित्र शहीद अपनी माँ के समक्ष एक दर्शन में प्रकट हुए, उन्होंने उन्हें सांत्वना दी, और उन्हें यह घोषणा की कि उन्हें भी जल्द ही ईश्वर की उपस्थिति में बुलाया जाएगा। उनके साथ, यह पवित्र शहीद अब अन्य पवित्र शहीदों की भीड़ के बीच परमेश्वर की महिमा के सिंहासन के सामने खड़े हैं, मानवता के प्रेमी प्रभु के पास हमारे लिए मध्यस्थता कर रहे हैं, और पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा की महिमा कर रहे हैं, त्रिमूर्ति में एक ईश्वर, जिनकी महिमा और स्तुति सारी दृश्य और अदृश्य सृष्टि करती है, अब और हमेशा और युगों-युगों तक। आमीन।

हमारे पूजनीय पिता पाव्सिकिकयिोस, सिनाडा के बिशप की स्मृति

13 मई को स्मरणोत्सव

धन्य पाव्सिकिकयिोस का जन्म अपामिया नगर में[3688] में हुआ था, और वे ऐसे माता-पिता के पुत्र थे जो सच्ची ईसाई भक्ति में विशिष्ट, कुलीन और उत्साही थे। अपने पालन-पोषण के दौरान, कम उम्र में ही, उन्होंने स्वयं को कठोर उपवास, प्रार्थना और अन्य कठोर तपस्या में समर्पित कर दिया, और इसी कारण उन्होंने बाद में संन्यासी की शपथ ली। केवल थोड़ी सी रोटी और पानी पर जीवन यापन करते हुए, और प्रार्थना के माध्यम से चंगा करने का वर प्राप्त करने के बाद, उन्होंने शारीरिक और आध्यात्मिक दोनों तरह की बीमारियों को ठीक किया। इस प्रकार, राक्षसों के खिलाफ लड़ाई छेड़ने के बाद, वह दूर से ही ग्रस्त लोगों से उन्हें भगा देता था, अंधों को दृष्टि प्रदान करता था, लंगड़ों को सीधा करता था, और अन्य अद्भुत चमत्कार करता था। जब यह खबर फैली, तो वह कॉन्स्टेंटिनोपल के आर्चबिशप, धन्य सिरिकिस[3689] के ध्यान में आए, जिन्होंने उन्हें बिशप के रूप में नियुक्त करने के बाद, उन्हें सिनाडा के चर्च का बिशप[3690] नियुक्त किया।

बिशप बनने पर, संत पॉसिकिकीओस ने तुरंत अपने शब्दों की गुलेल[3691] से 'भेड़ की खाल में भेड़ियों'[3692] को अपनी भेड़ों के झुंड से बाहर निकाल दिया और, उन्हें शरीर के संक्रमित अंगों के रूप में मानकर, अपनी वाक-तलवार से उन्हें टुकड़े-टुकड़े कर बाहर फेंक दिया, ताकि वे स्वस्थ सदस्यों को कोई नुकसान न पहुँचा सकें। अपने झुंड की इतनी लगन से देखभाल करते हुए और इस प्रकार उनकी मुक्ति में सहायता करते हुए, रेवरेंड कॉन्स्टेंटिनोपल शहर गए और वहाँ उन्होंने सम्राट मॉरिस को उस बीमारी से ठीक किया जिससे वह उस समय पीड़ित थे; इसके लिए, सम्राट ने उन्हें एक सुनहरी मुहर के साथ, उनके शहर में सोने की एक लिट्रा[3693] का योग्य पुरस्कार भेजा। जब आदरणीय पिता कांस्टेंटिनोपल से सिनाडा लौट रहे थे, तो सिलिन में[3694] रहते हुए, उन्होंने प्रार्थना द्वारा पृथ्वी से पानी का एक झरना निकाला, और उनके साथियों ने अपनी प्यास बुझाई। इतना धार्मिक और ईश्वर को प्रिय जीवन जीने तथा अनेक लोगों का उद्धार करने के बाद, संत पाउसिकिकीओस ने इस जीवन को त्याग दिया और अपने प्रिय प्रभु[3695] के पास चले गए।

कन्फैसर सेंट जॉर्ज की स्मृति

13 मई को स्मरण किया जाता है

[3688] अपामेया नगर दक्षिण-पश्चिमी सीरिया में ओरोंटेस नदी के किनारे स्थित था। प्राचीन काल में, यह नगर सीरियाई प्रांत अपामिया की राजधानी था और इसका नाम सीरिया के शासक सेल्यूकस प्रथम की पत्नी अपामिया के नाम पर पड़ा था।

[3689] सिरिकिस 592 से 606 तक कॉन्स्टेंटिनोपल के पैट्रिआर्क थे।

[3690] सिनाड या सिनाडी – उत्तरी फ्रीजिया में एक शहर, जो अब एस्कीपार-गस्साफ के पास खंडहर में है।

[3691] स्लिंग पत्थर फेंकने के लिए एक हाथ से पकड़ने वाला हथियार है। 'शब्द की स्लिंग' शब्द की शक्ति को संदर्भित करती है।

[3692] 'चर्च भेड़िये' शब्द का प्रयोग विधर्मी और स्वतंत्र विचारकों के साथ-साथ उन लोगों के लिए भी किया जाता है जो एक अपमानजनक जीवन शैली जीते हैं और अपनी भ्रष्टता पर अड़े रहते हैं।

[3693] लिट्रा वजन की एक इकाई है जो 72 ज़ोलोटनिक के बराबर होती है (1 ज़ोलोटनिक ≈ 4.265 ग्राम)।

[3694] सिलिन—या यूनानी प्रस्तावना के अनुसार सोलोन—का स्थान अज्ञात है।

[3695] आदरणीय पाउसिकिकियोस का निधन 606 में हुआ।

मसीह के शहीद और स्वीकारकर्ता संत जॉर्ज का जन्म कॉन्स्टेंटिनोपल शहर में हुआ था। पवित्र प्रतिमाओं की पूजा और सम्मान करने के लिए, उन्हें प्रतिमा-भंजकों द्वारा पकड़ लिया गया और निर्दयी सम्राट थियोफिलस[3696] के सामने लाया गया। बाद वाले ने धमकियों और मनाने दोनों के माध्यम से, उन्हें मसीह और पवित्र प्रतिमाओं की पूजा का त्याग करने के लिए मजबूर करने की कोशिश की, लेकिन संत ने ऐसा करने से इनकार कर दिया। अपने यातनाकर्ता के घृणित और कपटपूर्ण शब्दों से क्रोधित होकर, उन्होंने उससे कहा: 'हर सच्चे ईसाई को पवित्र प्रतिमाओं की पूजा और सम्मान करना चाहिए, क्योंकि उनकी veneration मूल पर स्थानांतरित हो जाती है।'

इन शब्दों के लिए, संत जॉर्ज के गले में एक रस्सी बाँध दी गई और उसे एक अपराधी की तरह शहर की सड़कों पर घसीटा गया; फिर उसे कैद कर दिया गया और अंत में, जब उसकी सारी संपत्ति जब्त और लूट ली गई, तो उसे अपनी पत्नी इरीना और उनके बच्चों के साथ निर्वासन में भेज दिया गया, जहाँ, कई कष्ट सहने के बाद, वह आनंदपूर्वक प्रभु के पास चला गया[3697] ।

27 मई

14 मई (पुराने कैलेंडर के अनुसार)

उसी दिन, संत इसिडोर, मसीह के लिए पवित्र मूर्ख, रोस्तोव के चमत्कार-कर्ता की स्मृति मनाई जाती है, जिनका 1474 में निधन हुआ।

उसी दिन, हमारे पूजनीय पिता निकिता, गुफाओं के तपस्वी, जो बाद में नोवगोरोड के बिशप बने, जिनका निधन 1108 में हुआ, का स्मरणोत्सव मनाया जाता है।

शहीद संत इसिडोर का कष्टकथा

14 मई को स्मरण किया जाता है

सम्राट डेसियस[3698] के शासन के प्रथम वर्ष में, रोमन साम्राज्य के सभी प्रांतों और क्षेत्रों में एक शाही फरमान जारी किया गया, जिसमें सैनिकों की जनगणना और उन्हें रेजिमेंटों में शामिल करने का आदेश दिया गया। इस अवसर पर, राज्यपाल नुमेरियस के जहाज सैन्य सेवा के लिए नियत सभी युवा पुरुषों को इकट्ठा करने के लिए किओस द्वीप[3699] पर पहुँचे।

उस समय, अलेक्जेंड्रिया शहर के मूल निवासी संत इसिडोर, खियोस द्वीप पर रह रहे थे; वे शरीर से मजबूत और आत्मा से साहसी थे, और विश्वास से ईसाई थे। उन्होंने ईश्वर को प्रसन्न करने वाला जीवन जिया, हमेशा उपवास और अच्छे कर्मों में स्वयं को समर्पित किया; उन्होंने इस दुनिया के व्यर्थ के कार्यों और अशुद्ध सुखों से परहेज किया; इसी तरह, उन्होंने ग्रीकों के अशुद्ध रीति-रिवाजों से भी दूरी बनाए रखी। इस इसिडोर को, उसकी बहादुरी और साहस के लिए, सैनिकों में भर्ती कर लिया गया और उसे नुमेरियन की रेजिमेंट में नियुक्त किया गया।

कुछ ही समय बाद, सम्राट द्वारा एक नया फरमान जारी किया गया – सभी ईसाइयों को रोमन देवताओं की पूजा करने के लिए मजबूर करने का; और जो लोग पूजा करने से इनकार करते थे, उन्हें यातनाओं के माध्यम से ऐसा करने के लिए मजबूर किया जाना था: सैनिकों पर कड़ी नजर रखने के विशेष आदेश दिए गए थे; यदि उनमें कोई ईसाई पाया जाता, तो

[3696] बाइज़ेंटाइन सम्राट थियोफिलस, जो सम्राट माइकल द्वितीय के पुत्र और उत्तराधिकारी थे, जिन्हें बचपन से ही उनके शिक्षक जॉन द ग्रामरियन के प्रभाव में प्रतिमाओं के प्रति गहरी अरुचि थी, ने प्रतिमा-पूजकों का क्रूरतापूर्वक उत्पीड़न किया, हालांकि उन्हें मृत्युदंड नहीं दिया। उन्होंने 829 से 842 तक शासन किया।

[3697] संत जॉर्ज की मृत्यु की तिथि अज्ञात है। किसी भी स्थिति में, उनकी मृत्यु तब हुई जब थियोफिलस अभी भी सिंहासन पर था; परिणामस्वरूप, यह 9वीं शताब्दी के पहले छमाही के अंत के आसपास था।

[3698] डेसियस ने 249 से 251 तक शासन किया।

[3699] चियोस द्वीप भूमध्य सागर में (इसके उत्तरी भाग में) स्थित है।

उन्हें प्राचीन रोमन रीति-रिवाज के अनुसार पूजा करने और मूर्तियों को बलिदान चढ़ाने के लिए मजबूर करने का निर्देश दिया गया था।

उस समय, जूलियस नामक एक शतमुख ने राज्यपाल नुमेरियन के पास आकर उसे सूचित किया कि धन्य इसिडोर एक ईसाई था। राज्यपाल ने तुरंत संत को गिरफ्तार करने का आदेश दिया। जब संत को नुमेरियन की अदालत में लाया गया, तो राज्यपाल ने उनसे पूछा:

'तुम्हारा नाम क्या है?'

'मेरा नाम इसिडोर है,' संत ने कहा।

गवर्नर ने कहा:

'क्या तुम ही हमारे सम्राट डिसियस के आदेश की अवज्ञा कर रहे हो और देवताओं को बलिदान चढ़ाने से इनकार कर रहे हो?'

संत इसिडोर ने उत्तर दिया:

'तुम्हारे देवता कौन हैं, कि मैं, एक ईसाई, उन्हें बलिदान अर्पित करूँ? क्या वे मूर्तियाँ नहीं हैं—बधिर, अंधी और असंवेदनशील?'

गवर्नर ने उत्तर दिया:

'हे दुष्ट और अधर्मी नेदिक! सचमुच, तुम बड़े कष्टों और मृत्युदंड के योग्य हो!'

संत ने कहा:

'निश्चय ही, मैं अपने परमेश्वर के नाम के लिए दुख सहने के योग्य हूँ; उनके परम पवित्र नाम के लिए, मैं किसी भी यातना और यहाँ तक कि मृत्यु को भी सहन करने को तैयार हूँ, ताकि मेरे प्रभु मुझे वही भाग्य दें जो मेरे पहले उनके पवित्र नाम के लिए पीड़ा सहने वाले पवित्र शहीदों को मिला था। लेकिन मैं विश्वास करता हूँ और दृढ़ता से आशा करता हूँ कि जो कोई भी उस पर विश्वास करता है और उसके पवित्र नाम पर भरोसा करता है, वह कभी नहीं मरेगा, जैसा कि हमारे प्रभु यीशु मसीह ने स्वयं कहा है: *'जो मुझ पर विश्वास करता है'* (यूहन्ना 6:47), *'यदि वह मर भी जाए, तो भी वह जीवित रहेगा'* (यूहन्ना 11:25)।

न्यूमेरियन ने कहा, 'इसिडोर, अगर तुम जीवित रहना चाहते हो तो क्या तुम देवताओं को बलिदान दोगे, या नहीं?'

संत ने उत्तर दिया:

'भले ही तुम मुझे मार डालो, तुम्हारा मेरे प्राणों पर कोई अधिकार नहीं है। इसलिए, मुझे जो चाहो यातना दो, क्योंकि मेरा सहायक सच्चा और जीवित ईश्वर और प्रभु यीशु मसीह हैं, जो अब मेरे साथ हैं और मेरी मृत्यु के बाद मेरे साथ रहेंगे, और मैं उनके साथ रहूँगा।' जब तक मेरे शरीर में जीवन का एक भी साँस बाकी है, मैं उनके परम पवित्र नाम का इकरार करना बंद नहीं करूँगा।

गवर्नर ने कहा:

'बस एक बार, राजा की आज्ञा का पालन करते हुए बलिदान चढ़ाओ, और फिर जो चाहो करो।'

लेकिन संत ने उत्तर दिया:

'हे दुष्ट मनुष्य, यह मत सोच कि तू अपनी चालाकी से मुझे धोखा दे सकेगा। क्या जिसे एक बार मसीह और उसके परमेश्वर से मुख मोड़ लिया है, उसे उनका वफादार सेवक कहा जा सकता है? *'जो थोड़ी सी बात में अविश्वासी है, वह बहुत सी बात में भी अविश्वासी है'* (लूका 16:10), परन्तु मैं अपने विचारों में भी प्रभु को अप्रसन्न करने वाली किसी भी बात पर विचार करने की अनुमति नहीं दूँगा।

गवर्नर ने कहा:

'मैं तुम्हारे भले के लिए, इसिडोर, तुम्हें समझा रहा हूँ। तो मेरी बात सुनो। लेकिन अगर तुम मेरी बात नहीं मानोगे, तो मैं तुम्हें भयंकर यातनाओं में डाल दूँगा और तब तक तुम्हें पीड़ित करूँगा जब तक तुम हमारे देवताओं की महानता की स्वीकारोक्ति नहीं कर लेते।'

तब राज्यपाल ने अपने सैनिकों को संत को दबाने का आदेश दिया और चार सैनिकों को बिना दया के उस पर प्रहार करने को कहा।

जब यातना देने वाले संत को पीट रहे थे, तो उनके आसपास खड़े लोगों ने उनसे कहा:

'समर्पण कर दो, इसडिोर, सम्राट की इच्छा के आगे, यदि तुम नहीं चाहते कि तुम्हारा जीवन यातनाओं में समाप्त हो जाए।'

लेकिन संत ने उत्तर दिया:

'मैं अपने ईश्वर, स्वर्ग के राजा, जो सदा जीवित रहते हैं, की इच्छा और आज्ञा का पालन करता हूँ। यही ईश्वर है जिसकी मैं घोषणा करता हूँ और सम्मान करता हूँ; मैं उनका त्याग नहीं करूँगा, और न ही न्याय के दिन वे मुझे बहिष्कृत करेंगे।'

कोड़ों की पिटाई के बाद, यातना देने वाले ने बहुत समय तक संत को मूर्तिपूजा के लिए लुभाने की कोशिश की, जिसमें वह चापलूसी और धमकियों, दोनों का सहारा ले रहा था, लेकिन उसे बिल्कुल भी सफलता नहीं मिली और उसे शहीद से केवल अपशब्द और फटकारें ही सुनने को मिलीं, जो स्वयं उसके और उसके देवताओं, दोनों के लिए थीं। अंत में, क्रोध से भरकर, उसने कहा:

'मैं तुम्हारी घृणित जीभ को टुकड़े-टुकड़े करवा दूँगा।'

संत ने उत्तर दिया:

'भले ही तुम मेरी जीभ काट दो, फिर भी तुम मेरे होठों से मसीह के नाम का स्वीकार नहीं करवा पाओगे।'

और यातना देने वाले के आदेश पर संत की जीभ काट दी गई। हालाँकि, जीभ कट जाने के बाद भी, संत बहुत स्पष्ट रूप से बोल रहे थे, सच्चे ईश्वर, मसीह की महिमा कर रहे थे: लेकिन राज्यपाल डर के मारे जमीन पर गिर पड़ा और गूंगा हो गया। जब उसे जमीन से उठाया गया, तो वह एक भी शब्द नहीं बोल सका और केवल हाथ हिलाकर ही अपने विचार व्यक्त कर सका। फिर, एक कागज़ का टुकड़ा माँगकर, उन्होंने उस पर लिखा:

'मैं आदेश देता हूँ कि इसडिोर, जो राजा के फरमान की अवज्ञा करता है, का सिर तलवार से कलम कर दिया जाए।'

जब ये शब्द शहीद को पढ़कर सुनाए गए, तो उन्होंने आनंदपूर्वक पुकार लगाते हुए कहा:

'मैं आपको धन्यवाद देता हूँ, हे प्रभु यीशु मसीह, कि आपने मुझे अपनी कृपा से वंचित नहीं किया!' मैं आपकी स्तुति करता हूँ, हे मेरे प्रभु, मेरे जीवन, मेरे प्राण! मैं आपकी स्तुति करता हूँ, हे प्रभु, मेरे बल, मेरे मन की प्रबुद्धता! मैं आपकी महिमा करता हूँ, जिन्होंने मुझे एक जीभ दी है जिससे मैं निरंतर आपकी महानता की स्तुति करता हूँ!

तब जल्लाद ने शहीद को पकड़ा और उसे सिर कलम करने की जगह ले गया। संत इसडिोर आनंद और शीघ्रता से चले, जैसे कोई मेमना वध के लिए ले जाया जा रहा हो। फिर, एक दमकते चेहरे और प्रसन्न आँखों से स्वर्ग की ओर देखते हुए, संत ने कहा:

'हे पवित्र प्रभु! मैं आपकी स्तुति करता हूँ कि, आपकी दया से, आप अब मुझे अपने निवास स्थानों और विश्राम के स्थानों में ग्रहण करेंगे।'

जिस स्थान पर शहीद का सिर कलम किया जाना था, वहाँ पहुँचने पर संत ने जल्लाद से प्रार्थना करने की अनुमति माँगी। तब, पर्याप्त समय तक प्रार्थना करने के बाद, उन्होंने अपना सम्मानित सिर तलवार के नीचे झुका दिया[3700] और इस प्रकार ईश्वर के पुत्र, यीशु मसीह के नाम का प्रचार करने के लिए उनका सिर कलम कर दिया गया, जिन्होंने हमारे पापियों के लिए क्रूस पर अपना परम पवित्र सिर झुकाया था।

उनके सिर कलम किए जाने के बाद, उनके अत्याचारियों ने पवित्र शहीद के पूजनीय शरीर को बिना दफनाए एक तरफ फेंक दिया, ताकि कुत्ते और जंगली जानवर उसे नोच-नोच कर खा जाएँ। लेकिन संत के एक मित्र, अम्मोनियस नामक एक गुप्त ईसाई ने, पवित्र शहीद का शरीर उठाया, अन्य विश्वासयोग्य भाइयों के साथ मिलकर एक कब्र खोदी, और इसडिोर के सम्मानित शरीर को इस प्रकार धरती में सुला दिया, मानो यह कोई अनमोल खजाना हो। यह स्वयं ईसाई इसडिोर के बहादुरीपूर्ण कार्य का अनुकरण करने वाला साबित हुआ; हेलेस्पोंट पार करते समय, उसने साइज़िकस में शहीद का मुकुट प्राप्त किया[3701] । बाद में एफ़िसुस शहर से आई एक धर्मनिष्ठ महिला, मायरोपिया नामक, ने संत इसडिोर के पवित्र अवशेषों को खोदकर निकाला; उसने पवित्र अवशेषों पर कीमती इत्रों से अभिषेक किया और उन्हें एक शुद्ध कफ़न में लपेटकर सम्मान के स्थान पर रख दिया। जब ईसाइयों पर अत्याचार बंद हो गया, तो पवित्र शहीद इसडिोर के सम्मान में एक चर्च का निर्माण किया गया, जिसमें मसीह के शहीद की पवित्र अवशेषों के माध्यम से पीड़ितों को अनेक

[3700] पवित्र शहीद इसडिोर की मृत्यु वर्ष 250 में हुई।

[3701] प्रोपोंटिस (मार्मारा सागर) की आर्कटोनिस्सोस प्रायद्वीप पर क्यज़िकोस स्थित था।

प्रकार के चंगाई के वरदान प्राप्त हुए, हमारे परमेश्वर मसीह की महमिा के लिए, जो पति, पुत्र और पवत्रि आत्मा के साथ सदा-सदा महमिामय हैं। आमीन।

कॉन्टाकयिन, स्वर 4:

हे पवत्रि एक, ईश्वर के प्रत आपकी प्रार्थनाओं के द्वारा आप ब्रह्मांड के महान व्यवस्थापक के रूप में प्रकट हुए हैं: अतःहम आज आपकी स्तुत गाते हैं, हे ईश्वर-ज्ञानी शहीद, अत महमिामय इसडिोर।

हमारे पूजनीय पति सेरापयिन द सडिोनाइट का जीवन

14 मई को स्मरणोत्सव

मस्रि में सेरापयिन नामक एक वृद्ध रहते थे, जन्हिें 'सडिोनटि'[3702] उपनाम दयि गया था, क्योंक वे अपने शरीर के नग्न भाग को केवल एक ही लबादे से ढकते थे। अपनी युवावस्था से ही उन्होंने मठवासी जीवन जयि; उनके पास न तो कोई संपत्त थी, और न ही कोई कोठरी; उनका कोई स्थायी नविास नहीं था और वे आकाश के पक्षी की तरह रहते थे। वह आराम करने या बस्तिर पर लेटने के लिए कभी कसिी घर में नहीं गया। वह केवल एक छोटा सा लबादा पहनता था और उसके पास एक छोटी सी सुसमाचार के अलावा और कुछ नहीं था; सेरापयिन एक स्थान से दूसरे स्थान तक भटकता रहता था और जहाँ भी रात हो जाती, वहीं रात बताता था। अगली सुबह, जागने पर, वह उसी जगह नहीं रहता था, बल्क अपनी यात्रा फरि से जारी रखता था, मानो वह अवांछनीय हो, और यही कारण था क कई लोग उसे 'नष्कपट' कहते थे। कई बार उसका सामना उस गाँव के पास हुआ जहाँ वह रुका था। लोगों ने उसे सड़क के कनिारे बैठे, रोते हुए देखा और उससे पूछा:

'तुम क्यों रो रहे हो, बूढ़े?'

जो पूछते थे, उन्हें वह जवाब देता था:

'मेरे प्रभु ने अपनी संपत्त मुझे सौंपी थी। लेकनि मैं उन्हें खो चुका हूँ, और अब वह मुझे दंडति करना चाहते हैं।'

संत ने रूपक में बात की, ईश्वर को 'मेरा स्वामी' और अपनी आत्मा को 'मेरी संपत्त' कहा—एक आत्मा जसिे ईश्वर की छवि में बनाया गया है और ईश्वर के पुत्र के लहू से मुक्त मिली है।

जनि लोगों ने यह उत्तर सुना, वे यह न समझ सके क क्या कहा गया है, उन्होंने सोचा क बूढ़ा सोने की बात कर रहा है; इसलिए उन्होंने जो कुछ भी उनके पास था, उसे फेंक दयि—कुछ रोटी, कुछ सब्जयिाँ—और कहा:

'भाई, इसे लो; उस धन के लिए दुखी मत हो जसिे तुमने खो दयि है, क्योंक ईश्वर तुम्हें उसे वापस कर सकते हैं।'

और उस वृद्ध ने उत्तर दयि:

'आमीन! आमीन!'

जब सेरापयिन अलेक्जेंड्रयि पहुँचे, तो उन्हें एक भखिारी मलि, जो पूरी तरह से नग्न था और ठंड से काँप रहा था। और उस बुजुर्ग ने मन ही मन सोचना शुरू कयि:

'यह कैसे हो सकता है क मैं, जो खुद को उपवास करने वाला और मसीह की आज्ञाओं का एक वफादार पालनकर्ता मानता हूँ, कपड़े पहने हूँ, जबक यह भखिारी—जसिमें स्वयं मसीह मौजूद हैं—ठंड से पीड़ति है? मैं उस पर कैसे दया न करूँ! सचमुच, यद मैं उसकी नग्नता को न ढकूँ और उसे ठंड से मरने दूँ, तो न्याय के दनि मुझे एक हत्यारे के रूप में दंडति कयि जाएगा।"

फरि, अपना लबादा उतारकर, सेरापयिन ने वह एक भखिारी को दे दयि, जबक वह स्वयं उस स्थान के पास नग्न बैठ गया, केवल अपने सीने से पवत्रि सुसमाचार को लगाए हुए, जसिसे वह कभी अलग नहीं होता था।

संयोग से एक व्यक्त जो उस वृद्ध को जानता था, वहाँ से गुज़र रहा था। सेरापयिन को नग्न देखकर, वह राहगीर उससे पूछा:

'फादर सेरापयिन! कसिने आपकी नग्नता उजागर कर दी?'

सरापयिन ने पवत्रि सुसमाचार की ओर इशारा करते हुए उत्तर दयि:

[3702] सम्माननीय सेरापयिन को 'सडिोनटि' नाम इसलिए दयि गया क्योंक वे केवल एक ही सडिोन – एक मोटा लनिन का वस्त्र – पहनते थे।

'इसीने मेरी नग्नता को उजागर कयिा है।'

बाद में, उस धन्य व्यक्तकिी मुलाकात एक ऐसे व्यक्तसिे हुई जसिे कर्ज के कारण जेल ले जाया जा रहा था। उस पर दया करके, लेकनि उसके पास देने के लिए कुछ न होने के कारण, उस पूजनीय व्यक्तने अपने पास रखी सुसमाचार बेच दी और उसकी आय उस व्यक्तका कर्ज चुकाने के लिए दे दी। फरि सेरापयिन उस झोपड़ी में चले गए जहाँ वे कभी-कभी ठहरते थे। आदरणीय के शष्यि ने, उन्हें नग्न देखकर, उनसे पूछा:

'आपका चोगा कहाँ है, आदरणीय पतिाजी?'

वरष्ठि ने उत्तर दयिा:

'मैंने उसे एक ऐसी जगह भेज दयिा है जहाँ इसके बदले हमें कई गुना बेहतर चीज़ मलिेगी।'

शष्यि ने फरि कहा:

'और छोटी सुसमाचार कहाँ है?'

बड़े ने उत्तर दयिा:

'मेरे बच्चे, इसने (सुसमाचार ने) मुझसे हर दनि कहा: *"अपना सामान बेच दो और गरीबों को दे दो"* (मत्ती 19:21), ताकि मैं न्याय के दनि इसे प्राप्त कर सकूँ। मैंने इसकी बात मानी और जैसा इसने मुझे सलाह दी, वैसा ही कयिा। मैंने उसे बेच दयिा और उसकी आय ज़रूरतमंदों को दे दी, ताकि मैं उसकी पवत्रि सुसमाचार की बात मानकर हमारे ईश्वर, यीशु मसीह की कृपा प्राप्त कर सकूँ।

कुछ समय बाद, एक परचिति ने उस पादरी को एक पुराना, फटा-पुराना चोगा दयिा ताकि वह उससे अपने नग्न शरीर को ढक सके।

यह सांसारकि मोह से परे रहने वाले वृद्ध एक बार ग्रीस आए और एथेन्स में तीन दनि रुके; वे बहुत भूखे थे, लेकनि उन्हें कसिी से एक नवािला भी नहीं मलि सका, क्योंकि कोई उन्हें कुछ नहीं देता था, और उनके पास रोटी खरीदने के लिए पैसे भी नहीं थे। मसीह के वचनों के अनुसार, वह अपने साथ कभी कोई सक्कि्का, धन का थैला, या अतरिक्ति कपड़े नहीं रखता था (मत्ती 10:9-10), सवािय उस पतले लबादे के जसिसे वह अपनी नग्नता को ढकता था। एथेंस में अपने प्रवास के चौथे दनि, सेरापयिन को बहुत भूख लगी। शहर में एक ऊँची जगह पर खड़े होकर, वह रोने और ज़ोर से चल्लिाने लगे:

'एथेन्स के लोगों! मेरी मदद करो!'

दार्शनकिों और शहर के अधकिारयिों ने उसके पास आकर पूछा:

'हे बूढ़े, तुम कहाँ से आए हो? और कौन-सी पीड़ा तुम्हें सता रही है?'

उसने उत्तर दयिा:

'मैं मूल रूप से मस्रि का रहने वाला हूँ। जब मैं अपनी मातृभूमसि े नकिला, तो मैं तुरंत तीन कर्जों में फँस गया, अर्थात्: मैंने दो लेनदारों को पीछे छोड़ दयिा जनिके पास मुझसे लेने के लिए कुछ भी नहीं था, जबकि तीसरे लेनदार ने आज तक मुझे अकेला नहीं छोड़ा है, बल्कि मुझे सताता है, अपने कर्ज की अदायगी की मांग करता है।'

तब दार्शनकिों ने उससे पूछा:

'ये आपके लेनदार कौन हैं, और कौन आपको सता रहा है? हमें बताएं, और हम आपकी मदद करेंगे।'

तब बूढ़े ने उनसे कहा:

'जवानी से ही मैं कामुक वासना, धन के प्रेम और अत्यधकि खाने-पीने के शौक से परेशान था; मैं पहले दो से तो पहले ही छुटकारा पा चुका हूँ, और वे अब मुझे परेशान नहीं करते, क्योंकि मुझे कोई कामुक इच्छा नहीं है; और न ही मेरे पास कोई संपत्तयिा धन-दौलत है; फरि भी भोजन की मेरी भूख मुझे नहीं छोड़ती: अब चार दनि हो गए हैं जब से मैंने अपने मुँह में कुछ नहीं डाला है; इसलिए, भोजन की मेरी भूख मुझे नहीं छोड़ती, मुझे परेशान करती है और अपनी सामान्य मांग करती है।

कुछ दार्शनकिों ने सोचा कि वह उन्हें धोखा दे रहा है, इसलिए उन्होंने उसे एक सोने का सक्कि्का दे दयिा, लेकनि यह देखने के लिए कि वह क्या करेगा, उसे दूर से देख रहे थे।

हालाँकि, उस बूढ़े ने सक्कि्का ले लयिा, रोटी बेचने वालों के पास दौड़ा, सक्कि्का उनके सामने रख दयिा, एक रोटी उठाई और चला गया; वह फरि कभी उस शहर में वापस नहीं आया। तब दार्शनकिों को यकीन हो गया कि यह बूढ़ा वाकई एक सदाचारी व्यक्तथिा। जब वे रोटी बेचने वालों के पास गए, तो उन्होंने उन्हें उस बूढ़े आदमी द्वारा खरीदी गई रोटी की कीमत के बराबर एक सक्कि्का दे दयिा, जबकि सोने का सक्कि्का उन्होंने अपने पास रख लयिा।

धन्य सेरापयिन, लेकेडेमोन[3703] आकर जब यह जान गए कि स्थानीय मजस्ट्रिेटों में से एक मनीकयि[3704] था, फरि भी एक पुण्य जीवन यापन कर रहा था, तो वे उसके पास गए और खुद को उसके दास के रूप में बेच दयिा। दो साल बाद, ईश्वर की कृपा से, सेरापयिन ने उसे वधिर्म त्यागने के लिए मना लयिा, और वह अपने पूरे परविार के साथ पवत्रि ऑर्थोडॉक्स चर्च में शामलि हो गया। फरि वहाँ के सभी लोग वृद्ध से एक वफादार दास के रूप में नहीं, बल्कि एक प्यारे पति के रूप में प्रेम करने लगे, और उन्होंने उन्हें वधिर्म से मुक्ति की खुशी में अत्यधकि सम्मान दयिा और ईश्वर की महमिा की। जब उन लोगों की आत्माओं के उद्धार के लिए वृद्ध को जतिना समय आवश्यक लगा, उतना वहाँ रहने और उनसे प्राप्त धन उन्हें वापस करने के बाद, वे अपनी प्रथा के अनुसार वहाँ से प्रस्थान कर गए, और कई देशों तथा नगरों में यात्रा करते हुए आगे बढ़े।

इस वृद्ध के बारे में यह भी बताया जाता है कि जब वह एक जवान आदमी था, तो उसने खुद को चाँदी के बीस टुकड़ों के लिए एक ग्रीक स्कोमोरोख को बेच दयिा और उस पैसे को रखकर, उस ग्रीक के साथ तब तक रहा जब तक उसने उसे और उसके पूरे घर को मसीह ईश्वर के धर्म में परविर्तति नहीं कर दयिा। ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि जोकर ने देखा कि उसका नौकर अपने सभी दनि उपवास में बतिाता था, शाम को ही रोटी खाता और पानी पीता था, और वह भी बहुत कम मात्रा में; जबकि रात में वह हमेशा अपने बस्तिर से उठकर आँसुओं के साथ ईश्वर से प्रार्थना करता था; यह सब देखकर, स्कोमोरोख दयालु हो गया और, सच्चे ईश्वर, मसीह में वश्विास करने के बाद, उसका बपतस्मिा हुआ; और उसके बाद, उसकी पत्नी और उसके पूरे परविार का भी बपतस्मिा हुआ। इसके बाद, ग्रीक ने सेरापयिन से कहा:

'जाओ, भाई, क्योंकि हम तुम्हें तुम्हारी दासता से मुक्त करना चाहते हैं, ठीक वैसे ही जैसे तुमने हमें शैतान की दासता से मुक्त कयिा है।'

उसने उनसे उत्तर दयिा:

चूँकि मेरे ईश्वर ने तुम्हें उद्धार प्रदान कयिा है, मैं अपना रहस्य तुम्हें बताऊँगा: मैं दास नहीं, बल्कि एक स्वतंत्र मस्रिी था; फरि भी, यह देखकर कि तुम भटक रहे थे और वनिाश के कगार पर थे, मैंने तुम पर दया की और इसी कारण से मैंने स्वयं को तुम्हारे दास के रूप में बेच दयिा, ताकि ईश्वर की मदद से मैं तुम्हें उद्धार के मार्ग पर ले जा सकूँ। परन्तु अब जब तुम इस मार्ग पर चल पड़े हो, तो अपना चाँदी वापस ले लो; मैं जाऊँगा और दूसरे लोगों के उद्धार का प्रबंध करूँगा।

लेकनि उन्होंने अंततः उससे वनिती करते हुए कहा:

'हम आपको अपना पति और स्वामी मानने के लिए तैयार हैं; इसलिए, अब से आप हमारे स्वामी बनें, और हम आपके सेवक बनेंगे। बस हमें छोड़कर न जाएँ!'

हालाँकि, वे उसे कसिी भी तरह से वहाँ रुकने के लिए मना नहीं कर सके। इसके अलावा, वे बूढ़े आदमी से चाँदी के सक्कि स्वीकार नहीं करना चाहते थे और उससे कहा:

'माननीय पति, इसे गरीबों को दे दीजए; हमारे लिए इतना ही काफी है कि आपने हमें मोक्ष के मार्ग पर स्थापति कर दयिा है।'

परन्तु परमेश्वर के मनुष्य ने उन से उत्तर दयिा:

'तुम अपना दयिा करो; मैं कसिी और की चाँदी गरीबों को नहीं दे सकता।'

उन्होंने फरि से उससे वनिती करनी शुरू कर दी कि वह कम से कम एक साल में उन्हें मलिने आए। इसके बाद, वह पूजनीय व्यक्ति वहाँ से दूसरे देश के लिए रवाना हो गए।

एक दनि, अलेक्जेंड्रयिा से रोम के लिए रवाना हो रहे एक जहाज को देखकर, सेरापयिन रोम की यात्रा करने की इच्छा से उस पर चढ़ गया। हालाँकि, नावकिों ने तट से रवाना होने के बाद, बुजुर्ग से यह नहीं पूछा कि क्या उसने यात्रा के लिए आवश्यक करिाया चुकाया था। वे एक-दूसरे पर बूढ़े से पैसे या सामान लेने का संदेह करने लगे; हालाँकि उन्होंने देखा

[3703] लेकेडमिोन या लकोनयिा – पेलोपोनेस का दक्षणि-पूर्वी क्षेत्र, जो उत्तर में अर्गोलीस और आर्केडयिा, पूर्व में मर्टोयन सागर, दक्षणि में लकोनयिन या गाइपयिन की खाड़ी, और पश्चमि में मेसेनयिा से घरिा हुआ है।

[3704] मनीखीय धर्म – एक वधिर्मी मथि्या सद्धिांत, जो ईसाई शक्षिाओं और ज़रथुष्टी धर्म के सद्धिांतों का मश्रिण था। मनीखीय धर्म के संस्थापक मनीस थे, जो एक फ़ारसी पुरोहति थे। मनीस ने सखिाया कि दो स्वतंत्र क्षेत्र – अच्छाई का और बुराई का – अनादि काल से मौजूद हैं और एक-दूसरे के साथ नरिंतर संघर्ष में हैं। मेनेस की शक्षिाओं के अनुसार, मनुष्यों में भी दो तत्वों - प्रकाश और अंधकार - का मश्रिण होता है और उनमें, यूं कहें तो, दो आत्माएं होती हैं - एक अच्छी और एक बुरी - जो लगातार एक-दूसरे से लड़ती रहती हैं। अपने दैनकि जीवन में, मनीकयिों का जीवन अत्यंत तपस्वी जैसा था: वे ब्रह्मचर्य और नरिंतर उपवास का उपदेश देते थे। 3वीं और 4वीं शताब्दी में मनीकवाद काफी व्यापक था।

कि उसने एक बहुत ही फटी-पुरानी चोग़ा पहन रखी थी, फिर भी उन्होंने सोचा कि उसके पास किराया चुकाने के लिए पर्याप्त पैसे होंगे।

जब नावकि तट से लगभग पाँच सौ स्टेडियम दूर निकल आए, तो वे शाम को खाने के लिए बैठ गए। बूढ़े को खाते हुए न देखकर, उन्होंने सोचा कि वह उस दिन उपवास कर रहा है। दूसरे और तीसरे दिन भी यही देखकर, और यह न समझकर कि बुजुर्ग क्यों नहीं खा रहे थे, उन्होंने सोचा कि उन्हें समुद्र की ठंडी हवा से जुकाम हो गया है और वे उससे पीड़ित हैं। जब चौथे और पांचवें दिन भी बुजुर्ग ने कुछ नहीं खाया, तो उन्होंने उनसे पूछा:

'अरे! तुम कुछ भी क्यों नहीं खा रहे हो?'

उसने उनसे उत्तर दिया:

'मैं इसलिए नहीं खाता क्योंकि मेरे पास खाने के लिए कुछ भी नहीं है।'

यह चर्चा करने के बाद कि जहाज पर उस आदमी का सामान किसने लिया था, और यह महसूस करते हुए कि उसने किराया नहीं चुकाया था, नाविकों ने क्रोधित होकर उस पूजनीय व्यक्ति से शिकायत करना शुरू कर दिया:

'तुम कुछ भी साथ लाए बिना जहाज पर क्यों आ गए? यहाँ खाओगे क्या? किराया कैसे दोगे?'

लेकिन बुजुर्ग ने उनसे उत्तर दिया:

'मेरे पास इस फटे-पुराने कपड़े के सिवा कुछ भी नहीं है, जैसा कि आप खुद देख सकते हैं। अगर आप मुझे अपने साथ नहीं ले जाना चाहते, तो मुझे वापस वहीं छोड़ दें जहाँ से आपने मुझे उठाया था।'

लेकिन नाविकों ने बूढ़े आदमी से कहा:

'भले ही तुम हमें सिर्फ़ तुम्हारे लिए वापस मुड़ने के लिए सौ सोने के सिक्के दे दो, तब भी हम मना कर देंगे, खासकर जब हमारे पीछे अब अनुकूल हवा है।'

और उन्होंने उस बूढ़े आदमी को जहाज़ पर रहने दिया, और उसे भगवान के लिए खाना खिलाया।

जहाँ तक उस पादरी का सवाल है, रोम पहुँचने पर उसने उन सभी नागरिकों के घरों का दौरा किया, जिनके बारे में उसने सुना था कि वे धार्मिक जीवन जीते थे। उनसे संवाद करके उन्हें आत्मिक लाभ प्राप्त हुआ। इसी उद्देश्य से उन्होंने यात्रा की, आत्मिक संपदा इकट्ठी की, ताकि वे स्वयं के लिए शाश्वत विश्राम में स्वर्ग का आशीर्वाद प्राप्त कर सकें। ये आशीर्वाद उन्हें हमारे प्रभु यीशु मसीह की कृपा से प्राप्त हुए, जिनकी महिमा युगों-युगों तक हो। आमीन।[3705] ।

शहीद संत मैक्सिमिस का कष्टकथा

14 मई को स्मरणोत्सव

मसीह के एक शहीद, संत मैक्सिमिस, जिनके हृदय में ईश्वर के प्रति उत्साह था, ने एक बार देखा कि मूर्तिपूजक न केवल स्वयं मूर्तियों की पूजा में लगे हुए थे, बल्कि दूसरों को भी ऐसा करने के लिए लुभाते थे, और उन्हें मूर्तिपूजक मंदिर के सामने झुकने के लिए मजबूर करते थे। इसके बाद, उन्होंने ईश्वर से प्रार्थना करना शुरू कर दिया कि वह ईसाइयों पर हो रहे अत्याचार को समाप्त कर दे, और उन्होंने स्वयं कई अविश्वासियों का बपतिस्मा दिया। एक अवसर पर, जब मूर्तियों की पूजा की जा रही थी, और सभी मूर्तिपूजक बड़ी संख्या में इकट्ठा होने लगे और अपने देवताओं को बलिदान चढ़ाने लगे—न केवल जानवर बल्कि मनुष्यों को भी—पवित्र शहीद, ऐसी दृश्य सहन न कर सके, मूर्तिपूजकों के बीच में गए और सार्वजनिक रूप से उनकी निंदा की, उनके देवताओं को 'लकड़ी और पत्थर' कहा, जो खुद की मदद करने में भी असमर्थ थे। तब मूर्तिपूजकों ने उसे पकड़ लिया और पहले तो उसे बुरी तरह पीटा, और फिर उसे पत्थर मार-मार कर हत्या कर दी। इस प्रकार पवित्र शहीद[3706] ने अपना अंत किया।

[3705] संत सेरापियन का 5वीं शताब्दी में निधन हो गया।

[3706] सम्राट बेसिलि के कैलेंडर के अनुसार, पवित्र शहीद मैक्सिमिस की मृत्यु 250 ईस्वी के 14 मई को डेसियस के उत्पीड़न के दौरान हुई।

28 मई

15 मई (पुराना कैलेंडर)

इसी दनि, हम रोस्तोव के बशिप, हमारे पतिा यशायाह का स्मरण करते हैं, जो वर्ष 1090 में परमेश्वर में नविास कर गए।

उसी दनि, 1591 में, पवत्रि और धर्मी राजकुमार डेमेट्रयिस, मॉस्को और सम्पूर्ण रूस के चमत्कार-कर्ता की शहादत।

उसी दनि, गुफाओं के पूजनीय इसाया, चमत्कार करने वाले की स्मृति, जनिका नधिन 1115 में हुआ।

हमारे पूजनीय पतिा महापादरी पाचोमयिस का जीवन

15 मई को स्मरणोत्सव

पाचोमयिस का जन्म ऊपरी मस्रि में – थेबाइड में, वशिेष रूप से एस्ना शहर के आसपास[3707] , तीसरी शताब्दी के अंतमि दशक में हुआ था।[3708] उनके माता-पतिा धर्मपरायण मूर्तपिूजक थे। उनका ईसाइयों से संपर्क बहुत बाद में, सेना में अपनी संक्षप्ति सेवा के दौरान हुआ। एक पवत्रि जीवन के बीज उनमें बहुत कम उम्र से ही स्पष्ट थे, यहाँ तक कि मसीह को जानने से पहले ही।

एक अवसर पर, उसके माता-पतिा ने पाचोमयिस से मजदूरों के पास गोमांस का एक बर्तन ले जाने को कहा। वहाँ रात बतिाने के लिए मजबूर होने पर, पाचोमयिस एक प्रलोभन का सामना हुआ। उनके मालकि की बेटयिों में से एक, जो एक बहुत ही सुंदर युवती थी, ने उसे अपने साथ पाप करने के लिए मनाने की कोशशि की। पवत्रि पाखोमयिस ने सख्त लहजे में जवाब दयिा: 'मेरे लिए यह बुरा काम करना असंभव है; क्या मेरी आँखें कुत्ते की आँखें हैं, कि मैं अपनी बहन के साथ पाप करूँ?'

वह तुरंत घर चला गया। बाद में, उसने स्वयं यह घटना भक्षिुओं को सुनाई, और उन्हें प्रलोभनों के प्रतसितर्क रहने तथा उन पर वजिय प्राप्त करने के लिए प्रेरति कयिा।

संत पाचोमयिस औपचारकि शक्षिा से अपरचिति नहीं थे। उनकी बाद की गतविधियिाँ यह साबति करती हैं। इसके अलावा, उनके माता-पतिा अमीर थे, और मस्रिवासयिों को सीखने का गहरा शौक था। बच्चों को बहुत कम उम्र में, पाँच से आठ साल के बीच, स्कूल भेजा जाता था। वहाँ वे पढ़ना और लखिना सीखते थे, और उन्हें नैतकिता के नयिम भी सखिाए जाते थे: ये नयिम उन अभ्यासों में ही शामलि थे जन्हिें वे करते थे।

जब पचोमयिस बीस वर्ष के हुए, तो उन्हें सेना में भर्ती कर लयिा गया। उस समय, सम्राट कॉन्स्टेंटाइन 315 ईस्वी में एक 'तानाशाह' - शायद मैक्सेंटीयस - के साथ युद्धरत थे। पचोमयिस अपने साथयिों के साथ अपनी यात्रा पर रवाना हुए, जो नए भर्ती हुए सैनकि थे। शाम तक वे एस्ने शहर पहुँच गए। यहाँ, पाचोमयिस और उसके साथयिों को एक जेल की इमारत में पहरे के नीचे छोड़ दयिा गया। जल्द ही, रोटी और वभिन्नि प्रकार के भोजन का सामान लेकर ईसाई आए, और उन्होंने यात्रयिों से अपनी ताकत बहाल करने का पुरजोर आग्रह कयिा। जब बाद में पाचोमयिस ने पूछा कि ये लोग उन्हें बल्कि्ुल भी जाने बनिा उनकी इतनी देखभाल क्यों कर रहे थे, तो उन्होंने जवाब दयिा कि वे ईसाई हैं और वे ईश्वर की खातरि ऐसा कर रहे हैं। इस बात का पाचोमयिस की भावुक आत्मा पर गहरा प्रभाव पड़ा।

अगले दनि, पाचोमयिस और उसके साथी आगे की ओर, एंटनिोए शहर की ओर चल पड़े[3709] । यहाँ, बहुत सारे युवा सैनकि हर तरह के उत्सव और कामुक सुखों में मग्न थे। उन्होंने पाचोमयिस को भी लुभाने की कोशशि की, लेकनि वह इस प्रलोभन से ऊपर उठ गया और लगातार अपने साथयिों को बुराई से दूर रहने के लिए मनाता रहा।

[3707] मेटाफ्रास्टस और बाद में रोस्तोव के संत डेमेट्रयिस ऑक्सरि्रचि का उल्लेख करते हैं, जो अपने नविासयिों की धार्मकिता के लिए प्रसद्धि एक शहर था, जो रूफनिस के अनुसार, दस हजार और बीस हजार कुंवारी कन्याओं का घर था। हालाँकि, नए खोजे गए दस्तावेजों में इस शहर का स्पष्ट रूप से एस्ने के रूप में नाम दयिा गया है।

[3708] लगभग 295

[3709] नील नदी के दाहनिे कनिारे पर, हर्मोपोलसि के सामने स्थति एक शहर, जसिे सम्राट हैड्रयिन ने अपने प्रयि, एंटनिोउस के सम्मान में बनवाया था।

उस समय, सम्राट कॉन्स्टेंटाइन अपने दुश्मनों पर विजय प्राप्त कर चुके थे और सेना को भंग करने का आदेश दे दिया था। इस प्रकार, दूसरों के साथ-साथ पाचोमियस को भी अभियान में भाग लेने की बाध्यता से मुक्ति मिल गई। अब उसके लिए ईसाई बनने का समय आ गया था। वह पूरी लगन से प्रभु मसीह की निष्ठापूर्वक सेवा करने, शरीर और आत्मा की हर अशुद्धि से स्वयं को शुद्ध रखने, और अपनी क्षमता के अनुसार अपने पड़ोसियों के प्रति अच्छा करने की तीव्र इच्छा रखता था। ईसाना शहर में कैद होने के दौरान, ईसाइयों की दया से प्रेरित होकर, उसने पहले ही मसीह के प्रति पूर्ण निष्ठा का व्रत ले लिया था।

मुक्त होने के बाद, संत पाचोमियस अब शेनेसिट (खनिोव्स्क) के एकांत गाँव के लिए रवाना हुए। यहाँ उन्हें ईसाई धर्म की सच्चाइयों के बारे में निर्देश दिया गया और उन्होंने स्थानीय चर्च में पवित्र बपतिस्मा ग्रहण किया। पाचोमियस कुछ समय के लिए शेनेसिट गाँव के आसपास रहे। वे यहाँ सेरापिस के प्राचीन मंदिर में बस गए, जो उस समय पहले से ही सुनसान था। यह ध्यान देने योग्य है कि ईसाई धर्म के व्यापक रूप से अपनाए जाने के साथ, कई मूर्तिपूजक मंदिरों का उपयोग बंद हो गया होगा। उन्होंने मेहनत से अपनी आजीविका कमाई, सब्जियों और कुछ खजूर के पेड़ों की खेती करके। ये सब्जियां और फल उन लोगों के भोजन के रूप में काम आते थे जो यहाँ संयोग से या जानबूझकर आते थे, और शेनेसिट में रहने वाले गरीबों के लिए भी। यहाँ पाचोमियस अपने पड़ोसी के प्रति प्रेम में उत्कृष्ट थे। कई लोगों ने उनसे सांत्वना मांगी। उनकी ख्याति शेनेसिट से परे फैल गई। पाचोमियस की धार्मिकता, अपने पड़ोसी के प्रति प्रेम और विवेक पहले से ही कई लोगों को वहाँ स्थायी रूप से बसने के लिए आकर्षित कर रहे थे। उस समय, ईश्वर को प्रसन्न करने के उत्साह ने बहुत से लोगों को शोर-शराबे वाले शहरों और गांवों को छोड़ने के लिए प्रेरित किया, और यदि कहीं कोई विशेष रूप से समर्पित तपस्वी दिखाई देता था, तो मरुभूमि के जीवन से प्रेम करने वाले लोग उसकी ओर आकर्षित हो जाते थे। हम देखते हैं कि पैकोमियस ने जल्द ही अधिक एकांत की तलाश करनी शुरू कर दी और अपने लिए एक आध्यात्मिक मार्गदर्शक की तलाश करने लगा। शायद अपने साथी तपस्वियों का मार्गदर्शन करने के अपने अनुभव ने ही पैकोमियस में अपने लिए भी एक मार्गदर्शक की आवश्यकता को जगाया। शेनेसिट के आसपास रहने के कारण, पैकोमियस ने उस गाँव के निवासियों की बहुत सेवा की। जब गाँव में एक भयानक, संक्रामक बीमारी फैलने लगी, जिससे कई मौतें हो गईं, तो पाचोमियस ने बीमारों की सेवा की और यहाँ तक कि निवासियों को बड़ी मात्रा में अकेशिया की टहनियाँ भी उपलब्ध कराईं ताकि वे उन्हें जलाकर हवा को शुद्ध कर सकें।

अपने संन्यासी जीवन के शुरुआती वर्षों में, पाचोमियस अभी तक ऑर्थोडॉक्स (सही) शिक्षा को विधर्मी कपोलकल्पनाओं से पूरी तरह नहीं पहचान पाए थे, और न ही उन्हें यह पूरी निश्चितता के साथ पता था कि मसीह की सच्ची कलीसिया कहाँ थी। विधर्मी मार्सियन के अनुयायियों ने[3710] उन्हें अपने पक्ष में करने की कोशिश की। लेकिन वह जानते थे कि अन्य शिक्षाएँ भी थीं, जो एक-दूसरे से अलग थीं और सभी अपनी-अपनी सच्चाई को साबित करने का प्रयास कर रही थीं। इस मतभेद से भ्रमित होकर, उन्होंने आँसुओं से भरी आँखों से ईश्वर से प्रार्थना की कि वह उन्हें बताएं कि सत्य कहाँ है। उन्हें आश्चर्य हुआ, जब उन्होंने एक आवाज़ सुनी जो उन्हें बता रही थी कि सत्य अलेक्जेंड्रिया के बिशप अलेक्जेंडर के नेतृत्व वाली चर्च में पाया जा सकता है। स्वाभाविक रूप से, अब पचोमियस ने पूरे दिल से इस सत्य को जानने और हर समय इसके प्रति पूरी तरह से वफादार रहने की इच्छा की।

एक आध्यात्मिक मार्गदर्शक की आवश्यकता ने पाचोमियस को शेनेसिट के बाहरी इलाके में अपने घर को छोड़ने के लिए प्रेरित किया। इसके लिए एक और प्रेरणा ईश्वर, आध्यात्मिक शुद्धिकरण और आध्यात्मिक पूर्णता को पूरी तरह से समर्पित होने की उसकी इच्छा थी। पाचोमियस को यह भी डर था कि सामान्य लोगों की विभिन्न जरूरतों के प्रति उनकी निरंतर चिंता—जो चिंताएँ पुरोहितों और धर्मपरायण सामान्य लोगों के लिए अधिक उपयुक्त थीं—कमजोर भिक्षुओं को भटका सकती हैं: पाचोमियस के उदाहरण का अनुसरण करते हुए, वे दुनिया की सेवा में इतने मग्न हो सकते थे कि वे खुद को उससे अछूता रखने में असफल हो जाते। पाचोमियस तीन साल वहाँ रहने के बाद शेनेसिट के आसपास के क्षेत्र से चले गए। जाते समय, उन्होंने एक वृद्ध भिक्षु से अनुरोध किया कि वह उस क्षेत्र में आने वाले गरीबों के लाभ के लिए वहाँ सब्जियाँ और ताड़ के पेड़ उगाएँ।

[3710] मार्सियन, दूसरी शताब्दी का एक विधर्मी, यह सिखाता था कि दुनिया में दो स्वतंत्र सिद्धांत हैं: अच्छा – दयालु ईश्वर – और बुरा – पदार्थ, जो शैतान के अधीन है।

तब पाचोमयिस ने अपने कर्मों के लिए प्रसद्धि, वृद्ध पलामोन की कुटयिा की तलाश की। यह वृद्ध शहरों और गांवों से कुछ दूरी पर रहता था। आसपास के पूरे ग्रामीण इलाकों में उसका बहुत सम्मान कयिा जाता था। अन्य भक्षिु उनके पास रहते थे, उनकी सलाह का पालन करते थे और उनके जीवन के तरीके की नकल करते थे। लेकनि बहुत से लोग जल्द ही चले गए, यह महसूस करते हुए कि इतना सख्त जीवन उनका बस की बात नहीं थी। जब पाचोमयिस ने बाबा पलामोन के दरवाजे पर दस्तक दी, तो बुजुर्ग ने पूछा:

'तुम खटखटा क्यों रहे हो?'

पाचोमयिस ने उत्तर दयिा कि वह भी एक भक्षिु बनना चाहता था।

वरषि्ठ ने आपत्ति जताई, और उसे वापस जाने तथा यह परखने के लिए कहा कि क्या वह पालामन के शषि्यों द्वारा अपनाए गए कठोर जीवन को सहन कर सकता है। उन्होंने पाचोमयिस से कहा:

'मुझे पहले तुम्हें यह बताना होगा कि साधु जीवन में क्या-क्या शामलि है। यह रहा। हम हर समय आधी रात तक जागते हैं, ईश्वर के वचन पर ध्यान लगाते हैं; अक्सर हम शाम से सुबह तक अपने हाथों से रस्सयिाँ बनाते हैं, ताकि नींद से लड़ सकें और अपने शरीर को बनाए रखने के लिए आवश्यक चीजें जुटा सकें। जो कुछ भी हमारी ज़रूरतों से ज़्यादा बचता है, हम उसे गरीबों को दे देते हैं। जहाँ तक तेल या पकाया हुआ कुछ भी खाने, या शराब पीने की बात है, हम नहीं जानते कि इसका क्या मतलब है। हम गर्मयिों में हर दनि शाम तक उपवास करते हैं, और सर्दयिों में हम लगातार दो या तीन दनिों तक उपवास करते हैं। सामूहकि प्रार्थना का नयिम है कि दनि में साठ बार और रात में साठ बार प्रार्थना की जाए, उन प्रार्थनाओं के अलावा जो हम हर पल करते हैं और जनिकी संख्या हमें नहीं पता।

अब्बा पलामोन ने पाचोमयिस से आग्रह कयिा कि वह स्वयं का और परीक्षण करे और केवल उसके बाद ही उसके पास फरि से आए।

पाचोमयिस ने बूढ़े को दृढ़ता से उत्तर दयिा:

'मैं आपके पास आने से पहले कई दनिों तक हर तरह से खुद को परख चुका हूँ।'

तब पालामोन ने दरवाज़ा खोला, पाचोमयिस को भाईचारे से चूमा, और जल्दी से उसे यह समझाने लगे कि उन्होंने यह सब घमंड से नहीं, बल्कि उसकी मुक्ति के लिए कहा था, और वे ऐसी बातें सांसारकि लोगों को नहीं बताते। हालाँकि, अब्बा पालामोन ने फरि से अपनी इच्छा व्यक्त की कि पाचोमयिस अपने पूर्व नविास पर लौट जाए और वहाँ एक बार फरि खुद को परखे।

लेकनि पाचोमयिस ने आपत्ति जताई:

'मैंने पहले ही हर तरह से अपनी आत्मा की परीक्षा दे दी है, और मुझे यकीन है कि ईश्वर की मदद और आपकी पवत्रि प्रार्थनाओं से आपका हृदय मेरे बारे में नश्चिंति रहेगा।'

वरषि्ठ ने उत्तर दयिा:

– बहुत अच्छा।

पाचोमयिस को तुरंत स्वीकार कर लयिा गया। अब्बा पलामोन ने प्रार्थना, जागरण और उपवास में उनकी परीक्षा लेने के लिए कई दनिों तक पाचोमयिस पर वशिेष रूप से बारीकी से नज़र रखी। जब रोटी खाने का समय होता, तो बड़े भाई पाचोमयिस को अकेले खाने के लिए छोड़ देते थे।

तीन महीने की परीक्षा अवधि के बाद, बाबा पलामोन ने पाचोमयिस को मठवासी वस्त्र पहनाए और उसे मठवासी पट्टा[3711] से कसा, जसिके सामने दोनों तपस्वयिों ने पूरी रात एक साथ प्रार्थना की। अब पालामोन ने खास तौर पर यह ध्यान रखा कि पाचोमयिस रात की प्रार्थना सभाओं का आदी हो जाए। शाम को, वे शारीरकि श्रम के लिए सामग्री तैयार करते, फरि लंबे समय तक भक्तपिूर्वक प्रार्थना करते; अंत में, वे काम में लग जाते, इस प्रयास में कि वे अपनी प्रार्थनामय मानसकि स्थति नि खोएं या नींद के आगे न हार जाएं।

जब पवत्रि ईस्टर का पर्व आया, तो पलामन ने पाचोमयिस से कहा कि वह उस दनि दो बार भोजन करेगा। भोजन तैयार करते समय, पाचोमयिस ने उसमें थोड़ा तेल मलि दयिा। लेकनि पालामन ईस्टर के दनि भी इस तरह अपना उपवास

[3711] हम पहले से ही संत एंथनी महान की उक्तयिों से जानते हैं कि मठवाद के शुरुआती दनिों में वशिषि्ट मठवासी वस्त्र मौजूद थे। आर्कमैंड्राइट पैलाडयिस की पुस्तक *द न्यूली डस्किवर्ड सेइंग्स ऑफ द वेनेरेबल एंथनी द ग्रेट। बेस्ड ऑन अ कॉप्टकि कलेक्शन ऑफ अकाउंट्स अबाउट द वेनेरेबल वन* (काज़ान, 1898), पृ. 30 देखें।

तोड़ना नहीं चाहता था। बड़े दुख के साथ उसने कहा: 'मेरे ईश्वर को मेरे लिए सूली पर चढ़ाया गया था, और फिर भी मुझे तेल खाना है, जो शरीर को शक्ति देता है!'

वह अगले दिन तक भोजन पूरी तरह से छोड़ने ही वाला था। बूढ़े संन्यासी ने तब भोजन करने के लिए सहमति दी जब पाचोमियस ने थोड़ा तेल वाला नमक हटा दिया और उसे राख छिड़का हुआ नमक दिया। पाचोमियस ने बहुत विनम्रता से क्षमा मांगी। बेशक, उन्होंने दोनों ने नमक के साथ रोटी चखी। सख्त स्वभाव के उस वरिष्ठ और उनके विनम्र शिष्य की गालों पर आँसू बहने लगे, जो हर बात में अपने प्रिय गुरु का अनुकरण करना चाहता था।

पाचोमियस अक्सर पहाड़ों में चले जाते थे, जहाँ वे पूरी-पूरी रातें भक्तिपूर्वक प्रार्थना में बिताते थे। गर्मियों की तपिश में जिस स्थान पर वे स्वर्ग की ओर अपने हाथ उठाकर उन्हें नीचे नहीं आने देते हुए प्रार्थना करते थे, वह स्थान कभी-कभी उनके शरीर से निकलने वाले प्रचुर पसीने से कीचड़ से भी ढक जाता था। पाचोमियस इस बात पर कोई ध्यान नहीं देते थे कि ब्लैकथॉर्न की काँटें कभी-कभी उनके पैरों में चुभ जाती थीं। मरुभूमि का जीवन चाहे कैसी भी कठिनाइयाँ लाता हो, वह उन्हें सभी को समान भाव से सहन करते थे, और हमारे उद्धार के लिए प्रभु यीशु मसीह द्वारा सहन की गई पीड़ाओं पर लगातार मनन करते थे।

हर बात में स्वयं पर सख्त लेकिन विनम्र, पलामोन और पचोमियस ने ईश्वर से किसी संकेत की मांग करने का साहस नहीं किया, और न ही उन्होंने कभी अपनी ही धार्मिकता पर भरोसा किया। अबा पलामोन के जीवन के अंतिम वर्षों की निम्नलिखित घटना यह दर्शाती है कि शिक्षिक पचोमियस स्वयं पर कितने सख्त थे, यहाँ तक कि जब वृद्धावस्था और उनकी तपस्या के कठोर श्रम के कारण उनकी शक्ति बहुत कम हो गई थी।

एक अवसर पर, पलामोन गंभीर रूप से बीमार पड़ गए। भिक्षुओं ने उनकी देखभाल के लिए एक अनुभवी चिकित्सक को बुलाया। लेकिन डॉक्टर ने वरिष्ठ का इलाज करने से इनकार कर दिया, यह कहते हुए कि सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण, उन्हें अपने आहार में सुधार करने की आवश्यकता है। भाइयों ने वरिष्ठ को डॉक्टर की सलाह मानने के लिए मनाना शुरू कर दिया। उन्होंने बीमारों के लिए निर्धारित भोजन खाने के लिए सहमति दे दी। जब पलामोन को फिर भी आराम नहीं मिला, तो उन्होंने गहरी दृढ़ता के साथ भिक्षुओं से कहना शुरू कर दिया:

'यह मत सोचो कि स्वास्थ्य नश्वर भोजन से आता है: क्योंकि शक्ति और स्वास्थ्य मसीह से आते हैं; मसीह के शहीदों ने अपने अंग कटवाने दिए, आग और हर तरह की यातनाओं को सहन किया, जब तक कि, अंत में, उनका सिर नहीं काट दिया गया। लेकिन मैं! मैं थोड़ी सी बीमारी भी सहन नहीं कर सकता; मैंने डॉक्टर से मेरा ख्याल रखने को कहा; मैंने दवा ली; फिर भी, उसे लेने के लिए सहमत होने के बाद भी मुझे उससे कोई लाभ नहीं हुआ। मेरे लिए अब केवल एक ही चीज़ बची है – अपने तपस्या के कार्यों को फिर से शुरू करना; यही सबसे अच्छी दवा है, और वह, जिनके पदचिन्हों पर मैं चलता हूँ, वे निश्चित रूप से मेरे इरादे को जानेंगे और मेरी उस तरह से देखभाल करेंगे जैसे मैं स्वयं कभी नहीं कर सकता।

अब्बा पलामोन ने अपने पूर्व उत्साह और दृढ़ता के साथ मठवासी तपस्या में खुद को समर्पित कर दिया, और अपनी सभी आवश्यकताओं को सीमित कर लिया। दयालु प्रभु ने कुछ समय के लिए उनका स्वास्थ्य बहाल कर दिया।

एक दिन, पाचोमियस रेगिस्तान में चल रहे थे। अंततः वे Tentir[3712] जिले में शेनेसिट के थोड़ा दक्षिण में स्थित टावेनीसी गाँव के खंडहरों तक पहुँचे। वहाँ, पाचोमियस ने एक आवाज़ सुनी जो कह रही थी: 'पाचोमियस, पाचोमियस, तपस्या में परिश्रम करो और इसी स्थान पर रहो; अपना एक मठ बनाओ, और कई लोग तुम्हारे पास तुम्हारी संगति में भिक्षु बनने आएँगे, और वे अपनी आत्माओं को लाभ पहुँचाएंगे।'

पाचोमियस तुरंत अबा पलामोन के पास गए और उन्हें यह बात बताई। फिर वे दोनों तावेनीसी के लिए रवाना हुए और वहाँ एक मठ बनाया—वास्तव में, एक छोटा सा मठवास। पलामोन अपने पूर्व तपस्या कार्यों के स्थान पर लौट आए। इसी समय, उन्होंने संकेत दिया कि उनकी मृत्यु निकट है और पाचोमियस के मठ की भविष्य की महिमा की भविष्यवाणी की। वरिष्ठ ने अपने प्रिय शिष्य को आश्वासन दिया कि प्रभु उसे भिक्षुओं के एक बड़े समुदाय का नेतृत्व करने के लिए शक्ति और धैर्य प्रदान करेंगे। प्रार्थना की एक लंबी अवधि के बाद, वे अलग हो गए। पालामोन के साथ उसके कुछ शिष्य भी थे जो अपने गुरु से मिलने आए थे।

कुछ समय बीता, और बाबा पलामोन गंभीर रूप से बीमार पड़ गए। उनके शिष्यों ने पाचोमियस को बुलाया। वह बूढ़े के पास दौड़कर आए और उनकी मृत्यु तक उनकी सेवा करते रहे। अंत में, बूढ़े ने आविव महीने के पच्चीसवें दिन के दसवें

[3712] तावेनीसी गाँव अब बिल्कुल मौजूद नहीं है।

घंटे में धर्मी लोगों की धार्मकिता में प्राण त्याग दिए। उनके शष्यिों ने पूरी रात बूढ़े के शरीर के पास भजन पढ़े और गाए। सुबह उन्होंने अपनी नयिमति प्रार्थना की और फरि दविंगत की लाश को उनकी कोठरी से कुछ दूरी पर एक पहाड़ी पर ले गए; वहाँ उन्होंने संत लोगों के साथ दविंगत बूढ़े की आत्मा की शांति के लिए एक बार फरि से भक्तपिूर्वक प्रार्थना करने के बाद उन्हें दफनाया। अब वे सभी बहुत दुखी थे। महान वृद्ध बाबा पलामोन की सलाह और सांत्वना खोने के बाद, वे खुद को अनाथ समझने लगे। पाचोमयिस अपने दविंगत गुरु का शोक मनाते हुए तावेनीसी में अपनी कुटयिा में लौट आए, और अपने एकांत में उन्होंने खुद को कठोर तपस्या में समर्पति कर दयिा। जल्द ही वे स्वयं मोक्ष के मार्ग पर दूसरों के लिए एक मार्गदर्शक बन गए।

जब पाचोमयिस टावेनीसी में अकेले रह रहे थे, तो उनके बड़े भाई, जॉन, उनके पास आए। पाचोमयिस ने अपने भाई का स्नेहपूर्वक स्वागत कयिा। एक-दूसरे को देखे कई साल हो गए थे, क्योंकि पाचोमयिस सेना में भर्ती होने के बाद घर वापस नहीं आया था। पाचोमयिस के धर्मोपदेश का जॉन पर गहरा प्रभाव पड़ा, और वह हमेशा के लिए टावेनीसी में ही रह गया।

अब दोनों भाई साथ में काम करने लगे। वे अपनी कड़ी मेहनत से जो कुछ भी कमाते, उसे ज़रूरतमंदों को दे देते थे। उन्होंने बहुत ही सादा जीवन जयिा। मोटे ऊनी चोगा पहनकर, वे गर्म स्थानों में चले जाते और सुबह तक प्रार्थना में खड़े रहते, न तो अपने घुटनों को और न ही अपनी बाहों को मोड़ते, जो आकाश की ओर फैली होती थीं। वे अक्सर पूरी रात जागते थे, भले ही कभी-कभी तनाव से उनके पैर सूज जाते थे, और मच्छर उनकी बाहों को तब तक काटते थे जब तक कि उनसे खून न नकिलने लगे। यदि तपस्वी भाइयों पर नींद हावी हो जाती, तो वे उसी जगह बैठ जाते जहाँ वे प्रार्थना कर रहे होते, लेकनि वे खुद को कसिी भी चीज़ पर झुकने नहीं देते थे। दनि के दौरान, वे तब तक शारीरकि श्रम में लगे रहते जब तक कि दक्षणिी सूर्य की तपती करिणों की गर्मी असहनीय न हो जाए।

अपने भावी साथी भक्षिुओं के लिए, पाचोमयिस ने उस जगह के चारों ओर एक बाड़ लगवाने की व्यवस्था करना शुरू कर दयिा जहाँ वह और उसका भाई रह रहे थे। पाचोमयिस चाहता था कि बाड़ में यथासंभव अधकि से अधकि जगह घरिी रहे: उसे उम्मीद थी कि कई अन्य भक्षिु भी उसके साथ शामलि होंगे। लेकनि जॉन, यह मानकर कि वे दोनों हमेशा साथ रहेंगे, इस मेहनत को शत्रुतापूर्ण नजरए से देखता था। उसने तो जानबूझकर उस दीवार को भी नुकसान पहुँचाया जसिे वे बना रहे थे। इस मामले पर पाचोमयिस ने एक बार उससे कहा: 'यह पागलपन अब बहुत हुआ!'

जॉन बहुत गुस्से में आ गया और बाद में काफी देर तक शांत नहीं हो सका, भले ही पाचोमयिस ने माफी मांगी।

उस दनि शाम को, पाचोमयिस दीवार से नीचे उतरा और उसने लंबी प्रार्थना की। उस क्षण, उसे जॉन के प्रति अपना अपराधबोध और भी तीव्र रूप से महसूस हुआ, और सुबह उसने और भी अधकि वनिम्रता के साथ उससे क्षमा मांगी। स्वाभावकि रूप से, अब उन तपस्वी भाइयों में एक-दूसरे के प्रति प्रेम और भी बढ़ गया और वे एक-दूसरे के सामने स्वयं को नम्र करने लगे; जॉन अपने धर्मपरायणता और आत्म-त्याग के कार्यों में दनि-प्रतदिनि अधकि सफल होता गया। जल्द ही आध्यात्मकि पूर्णता की उच्चतम डग्रिी प्राप्त करने के बाद, उसकी मृत्यु हो गई, जसि पर उसके भाई पाचोमयिस ने शोक व्यक्त कयिा।

उस समय तक, पाचोमयिस पहले से ही एक परपिूर्ण तपस्वी बन चुके थे। परणिामस्वरूप, उनके प्रलोभन बहुत कठनि थे, लेकनि अपनी प्रार्थना और धैर्य के माध्यम से वह हमेशा दुश्मन की सबसे भयानक चालाकयिों को पीछे धकेलने में सफल रहे।

उसके साथ यह होता था। कभी-कभी, जब वह प्रार्थना के लिए घुटने टेकना चाहता, तो उसके सामने एक तरह की खाई प्रकट हो जाती, मानो राक्षसों के काम से; लेकनि पाचोमयिस बनिा डरे प्रार्थना करता। कभी-कभी, रास्ते में, राक्षस सम्मान गार्ड की तरह उसे घेर लेते और ज़ोर से चलि्लाते: 'ईश्वर के पुरुष के लिए रास्ता दो।'

शैतान पाचोमयिस में अहंकार और घमंड भरने के लिए बहुत उत्सुक था; लेकनि वह इस प्रलोभन के प्रति पूरी तरह से अडगि रहे। फरि अचानक शैतान पाचोमयिस की कोठरी को हलिाने और डुलाने लगता, मानो वह ढहने ही वाली हो; लेकनि पाचोमयिस इस पर बलि्कुल भी वचिलति नहीं हुए और, गहरी शांति के साथ, भजन के शब्दों को दोहराया: *'ईश्वर हमारा शरणस्थान और बल हैं, संकट में तुरंत सहायता करने वाले। इसलयि हम न डरेंगे, चाहे पृथ्वी हलि जाए और पहाड़ समुद्र के बीच में पहुँच जाएँ* (भजन संहति 45:2–3)।

एक अवसर पर, राक्षस पाचोमयिस के सामने मजदूरों के भेष में प्रकट हुए, जो रस्सयिों की सहायता से एक पत्थर को उसकी जगह से हटाने के लिए पूरी लगन से प्रयास कर रहे थे, लेकनि वे सफल नहीं हो सके। पाचोमयिस की प्रार्थना

से वे गायब हो गए। कई मौकों पर, जब पाकोमयिस अपना मामूली भोजन करने के लिए बैठता, तो राक्षस उसके सामने नग्न महलिाओं के रूप में प्रकट होते; लेकनि पाकोमयिस अपनी आँखें बंद कर लेता और उस दृश्य से अपना मन हटा लेता, और राक्षस गायब हो जाते। नरक की अंधकारमय शक्तयिों के खलिाफ संघर्ष के लिए यह आवश्यक था कि पाकोमयिस अपनी पूरी ताकत लगा दे, और कभी-कभी यह उसे बहुत थका देता था। एक बार, प्रभु ने उसे भक्षिु अपोलोन[3713] के रूप में एक नया सांत्वना देने वाला भेजा। पाकोमयिस के पास आकर, इस धार्मकि, अनुभवी और दयालु भक्षिु ने दृढ़ता से उससे कहा:

'धैर्य रखो, पाचोमयिस: आत्माओं के कसिी भी कार्य से मत डरना, क्योंकि ईश्वर की सहायता तुम्हें उन पर वजिय दलिाएगी।'

यह वृद्ध पाकॉमयिस के साथ रहे, जसिसे दोनों को बहुत सांत्वना मलिी। हालाँकि, वृद्ध अपोलोन का जल्द ही नधिन हो गया। एक दनि, जब पाकॉमयिस अपनी कारीगरी के लिए खपच्चयिाँ इकट्ठा कर रहे थे, तो प्रभु का एक स्वर्गदूत प्रकट हुआ और उसने उनसे कहा: 'पाकॉमयिस, पाकॉमयिस, पाकॉमयिस! ईश्वर की इच्छा है कि तुम मानव जाति की सेवा करो और लोगों को ईश्वर से पुनर्मलिन कराओ।"

जब प्रभु का स्वर्गदूत चला गया, तो पाचोमयिस उसे जाते हुए देखता रहा और कहा: 'यह प्रभु का कार्य है।'

कुछ सरकंडयिाँ इकट्ठा करके, वह अपने आवास में चला गया।

स्वर्गदूत के प्रकट होने के तुरंत बाद, तीन व्यक्ति – फ्शेंताइसी, सुरस और फ्शौई – आदरणीय पाचोमयिस के पास आए। उन्होंने पाचोमयिस से कहा: 'हम आपके पास भक्षिु बनना चाहते हैं और मसीह के सेवक बनना चाहते हैं।'

उनकी सच्ची भक्ति से आश्वस्त होकर, पाचोमयिस ने उन्हें प्रेम और आनंद के साथ स्वागत कयिा और उन्हें संन्यासी वस्त्र प्रदान कए।

ये तीनों भक्षिु संत पाचोमयिस के उदाहरण और शक्षिाओं से नर्दिेशति होकर, उत्साह और दृढ़ता के साथ सबसे कठनि तपस्या के कार्यों में खुद को समर्पति कर दए। वे उनकी लगन से प्रभावति थे। अब्बा पाचोमयिस स्वयं सब कुछ संभालते थे: वे बगीचे की सफाई और पानी देते थे, आगंतुकों के लिए दरवाज़ा खोलते और उनसे बातचीत करते थे, और उत्साह के साथ बीमारों की सेवा करते थे। नए भक्षिुओं के बारे में बात करते हुए, उन्होंने कहा: 'ये ऐसे युवा पौधे हैं जो अभी उस स्तर पर नहीं पहुँचे हैं जहाँ वे दूसरों की सेवा कर सकें।'

नए भक्षिुओं को सभी बाहरी चतिाओं से मुक्त करके, पाचोमयिस ने उन्हें पूरे मन से उन गतविधियिों में संलग्न होने के लिए प्रेरति कयिा जो सीधे हृदय की शुद्धि और भलाई करने की इच्छाशक्ति को मजबूत करती हैं। जब उनके पहले शषि्यों ने उनके नरिंतर परशि्रम के लिए खुले तौर पर खेद व्यक्त कयिा, तो उन्होंने गहरी दृढ़ता के साथ उनसे कहा: 'कोई ऐसा व्यक्ति जो कसिी जानवर को गाड़ी से जोड़ दे[3714] और जब तक वह गरिकर मर न जाए, उसकी उपेक्षा करे, वह कैसा व्यक्ति होगा? जब प्रभु देखेंगे कि मैं थका हुआ हूँ, तो वे हमारे पास ऐसे लोगों को भेजेंगे जो हर अच्छे काम में हमारी सहायता करेंगे।'

अपने पहले शषि्यों को सद्गुणों में मजबूत करने के लिए, संत पाचोमयिस ने उनके लिए कुछ नयिम बनाए। इस छोटे से समुदाय में भी भोजन और वस्त्रों में एकरूपता को आवश्यक माना गया।

संत पाचोमयिस की भक्ति और ज्ञान की ख्याति पूरे मस्रि में और भी अधकि फैल गई। वभिन्नि लोग, जो उच्चतम आध्यात्मकि उपलब्धियिों की प्यास से ओत-प्रोत थे, उनके पास आए। कभी-कभी वे संन्यासी भी आते थे जन्हिोंने पहले ही आध्यात्मकि पूर्णता की उच्चतम डग्रिी प्राप्त कर ली थी, और वे स्वयं को संत पाचोमयिस के मार्गदर्शन में रखने के लिए आते थे। इस प्रकार पाँच गौरवशाली तपस्वी प्रकट हुए थे जन्हिोंने पहले ही संन्यासी का जीवन जयिा था। वे थे: अबा पेकोस (या पेकुसयिोस), अबा कॉर्नेलयिस, अबा पॉल, अबा पाचोमयिस और अबा जॉन। पाचोमयिस ने सभी का खुशी से स्वागत कयिा। कभी-कभी, खराब आध्यात्मकि प्रवृत्ति और बुरी आदतों वाले लोग भी प्रकट होते थे। यह महसूस करते हुए कि उनका सुधार नहीं कयिा जा सकता, लेकनि वे अपने उदाहरण से अन्य भक्षिुओं को भटका सकते हैं, पाचोमयिस ने उन्हें अपनी समुदाय से हटा दयिा। कई लोगों ने संत पाचोमयिस को खोजा, और वह उनके लिए एक स्थायी मार्गदर्शक और गुरु थे।

[3713] अरबी 'जीवन' इसे अम्रयिारागाबुल नाम से संदर्भति करता है। इस नाम का एक अन्य रूप इएराकापोलोन है।

[3714] यह, बेशक, एक हाइड्रोलकि मशीन को संदर्भति करता है जसिमें एक जानवर को पानी उठाने वाले पहयि को घुमाने के लिए जोड़ा जाता है।

अपने पड़ोसी के प्रति प्रेम से प्रेरित होकर, संत पाचोमियस ने अपने भिक्षुओं की मदद से मठ के सबसे नजदीकी गाँव में एक चर्च बनवाया, ताकि उस गाँव के निवासी अधिक बार पवित्र संस्कार प्राप्त कर सकें और ईश्वर का वचन सुनकर आध्यात्मिक रूप से लाभान्वित हो सकें। निवासियों की गरीबी के कारण, संत पाचोमियस ने यूखरिस्त का अनुष्ठान करने का सारा खर्च स्वयं उठाया। वे स्वयं, अपने भाइयों के साथ, इस चर्च में धर्मग्रंथों का पाठ करते थे। जब कोई पुरोहित नहीं मिलता था, तो पाचोमियस चर्च में आकर ईश्वर का वचन पढ़कर उपस्थित लोगों को उपदेश देते थे। भिक्षुओं ने चर्च में इतनी श्रद्धापूर्वक व्यवहार किया, और पाचोमियस ने एक पाठक के रूप में अपने कर्तव्यों का इतनी लगन से पालन किया, कि इस चर्च में आने वाले लोगों ने धीरे-धीरे अपने पापों को त्याग दिया, अपने हृदय को शुद्ध करने का प्रयास किया, और केवल नाम मात्र के नहीं, बल्कि सच्चे ईसाई बन गए। वे अबा पाचोमियस को एक मनुष्य नहीं, बल्कि परमेश्वर के एक स्वर्गदूत के रूप में मानते थे।

टावेनीसी समुदाय में भिक्षुओं की संख्या लगातार बढ़ती गई। जब यह संख्या सौ तक पहुँच गई, तो पाचोमियस इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि मठ के भीतर ही एक चर्च का निर्माण करना आवश्यक है। एक बार चर्च बन जाने के बाद, भाई लोग पहले की तरह शनिवार को गाँव के चर्च में जाना जारी रखे रहे, जबकि रविवार को एक पादरी मठ में आता था और वहाँ लिटर्जी का अनुष्ठान करता था। बाद में, भाई लोग शनिवार को लिटर्जी के अनुष्ठान में भाग लेने के लिए गाँव जाना बंद कर दिए।

पाचोमियस के मठ में किसी भी भिक्षु ने पुरोहित का पद नहीं संभाला। न ही पाचोमियस स्वयं यह पद स्वीकार करना चाहते थे। वे अक्सर भाइयों से कहते थे: 'हमारे लिए ऐसी चीज़ की मांग न करना ही अच्छा है, ताकि भिक्षुओं के बीच ईर्ष्या, कलह, अवज्ञा और विभाजन न हो, जो ईश्वर की इच्छा के विरुद्ध है। खलिहान में लगी आग की तरह, यदि उसे जल्दी न बुझाया जाए, तो वह पूरे साल की मेहनत को नष्ट कर देगी: अपने शुरुआती चरण में गर्व के विचार के साथ भी ऐसा ही है। हमारे लिए यह अच्छा है कि हम दृढ़ता और शांति से परमेश्वर की कलीसिया के अधीन रहें। और हर समय, जिसे भी हम बिशप के रूप में नियुक्त पाएं, वह इस मामले में हमारे लिए पर्याप्त होगा।

जो पुरोहित भिक्षु बनना चाहते थे, वे भी पूजनीय पाचोमियस के पास आए। पवित्र बाबा ने उन्हें मठ में प्रवेश देने से इनकार नहीं किया। बेशक, उन्हें मठवासी जीवन के नियमों और सामुदायिक जीवन की प्रथाओं के प्रति सभी बातों में बिना शर्त समर्पण करना पड़ा। अपने पड़ोसियों के उद्धार के लिए अपनी सेवा में, पाकोमियस ने उनका सहयोग मांगा, बशर्ते कि वे लगातार विनम्र और आज्ञाकारी साबित हों। पाकोमियस स्वयं किसी भी परिस्थिति में पुरोहित बनने के लिए सहमत नहीं हुए, हालांकि सभी द्वारा उनके गुणों की बहुत प्रशंसा की जाती थी।

उनके जीवन की एक घटना प्रसिद्ध है। एक अवसर पर, अलेक्जेंड्रिया के आर्चबिशप, संत अथेनासियस, अपने धर्मप्रांत का दौरा कर रहे थे। जहाँ भी वे गए, उनका भव्य समारोह के साथ स्वागत किया गया। बिशप, पुरोहित और लोग उन्हें मिलने के लिए बाहर आए। कुछ बिशप, पुरोहित और बड़ी संख्या में पादरी उनके साथ चल दिए। पाचोमियस स्वयं, अपने भिक्षुओं के साथ, महान संत से मिलने बाहर गए। उन्होंने तब तक भजन गाए जब तक कि महाधर्माध्यक्ष मठ में प्रवेश नहीं कर गए। उसी क्षण, टेंटिरा के बिशप सेरापियन ने महाधर्माध्यक्ष अथेनासियस का हाथ पकड़ा और उनसे कहा:

'मैं विनम्रतापूर्वक आपसे निवेदन करता हूँ कि आप भिक्षुओं के पिता, अबा पचोमियस को पुरोहित नियुक्त करें, ताकि वे मेरे धर्मप्रांत के सभी भिक्षुओं का शासन कर सकें।'

यह सुनते ही संत पाचोमियस तुरंत पीछे हट गए। आर्चबिशप अपनी सीट पर बैठ गए। उनके चारों ओर एक बड़ी भीड़ इकट्ठा हो गई। संत अथेनासियस ने बिशप सेरापियन को संबोधित करते हुए ऊँचे स्वर में कहा:

'मैंने पाकोमियस के विश्वास के बारे में तब सुना था जब मैं अभी भी अलेक्जेंड्रिया में था, अपने अभिषेक से पहले।'

तब संत अथेनासियस उठे, उन्होंने प्रार्थना की, और पाचोमियस के शिष्यों से कहा:

'अपने पिता को प्रणाम कहो और उनसे कहना: तुमने मुझसे अपना आप छिपाया है और उस चीज़ से बचे हो जो ईर्ष्या और प्रतिद्वंद्विता को जन्म दे सकती थी; तुमने एक ऐसा सद्गुण चुना है जो मसीह के साथ अनंतकाल तक रहेगा। ईश्वर तुम्हें तुम्हारा मनचाहा दे।'

बेशक, आदरणीय पाचोमियस की विनम्रता ने टावेनीसी समुदाय के भाइयों को भी विनम्रता की ओर प्रेरित किया। अपने महान मठाधीश की तरह, उन्होंने न तो पदोन्नति की चाह की और न ही उससे डरते थे। न तो ग्रीक और न ही कॉप्टिक इतिहासकारों ने उनके बीच किसी पुरोहित का उल्लेख किया है।

जैसे-जैसे ताबेनीसी में भिक्षुओं की संख्या बढ़ी, वहाँ के समुदाय की सुव्यवस्थिति संरचना को मजबूत करना संभव हो गया, जिससे सभी भिक्षुओं के कार्यों को सख्त सामुदायिक नियमों के अनुरूप लाया जा सका। सम्माननीय पाचोमियस स्वयं सेनोबाइट्स के लिए[3715] , शिक्षक और न्यायाधीश, दोनों थे; वे सभी के आचरण के लिए नियम और आदर्श भी थे।

सबसे बढ़कर, महान बाबा पाचोमियस स्वयं सभी और प्रत्येक व्यक्ति की भलाई का ध्यान रखते थे। वे लगातार भिक्षुओं से आग्रह करते थे कि वे प्रार्थना में सुस्ती न करें, और न ही ईश्वर के नाम का जाप करना बंद करें, ताकि प्रार्थना के बिना शैतान उन्हें अनजाने में पकड़ न ले। संत पाचोमियस हर अवसर पर किसी न किसी भाई को शिक्षाप्रद वचन देते थे। लेकिन, इन निजी वार्ताओं के अलावा, वे आमतौर पर सप्ताह के दौरान तीन सामान्य उपदेश देते थे - एक शनिवार को और दो रविवार को। उन्होंने यह आदेश दिया कि मिठ के मठाधीश को हमेशा सप्ताह में तीन उपदेश तैयार करने और देने चाहिए। मठाध्यक्ष के तीन प्रवचनों के अलावा, भिक्षुओं की शनिवार और रविवार की सभाओं के दौरान, और दो साप्ताहिक उपवास के दिनों—अर्थात् बुधवार और शुक्रवार को—निश्चय ही, मठों के प्रमुख अपने भिक्षुओं को प्रवचन देते थे।

हर शाम भिक्षु आध्यात्मिक बातचीत के लिए इकट्ठा होते थे और, आम तौर पर, परमेश्वर के वचन को पढ़ने और विभिन्न लोगों के जीवन को देखने से जो सबक उन्होंने सीखा था, उससे एक-दूसरे को सुसज्जित करना पसंद करते थे। भिक्षुओं को पवित्र शास्त्र के अंश दोहराना और उन पर मनन करना पसंद था। परिणामस्वरूप, अपनी पारस्परिक बातचीत के दौरान, वे हमेशा बाइबिल के विचारों और शब्दों से एक-दूसरे को सुसज्जित कर पाते थे। हमें टावेनी में कोई बेकार की बातें या गपशप नहीं मिलती। मठ परिसर में कई घर थे; प्रत्येक की देखरेख एक विशिष्ट अधीक्षक द्वारा की जाती थी, जिसके पास अपना एक सहायक था, जो उसके उप-अधीक्षक के रूप में कार्य करता था। यह उप-अधीक्षक, अधीक्षक की अनुपस्थिति या बीमारी की स्थिति में उसकी जगह लेता था।

संत पाचोमियस यह सुनिश्चित करते थे कि मिठ में प्रवेश करने वाले प्रत्येक भाई का स्वागत विशेष रूप से धार्मिक और बुद्धिमान भिक्षुओं द्वारा किया जाए। ये 'द्वारपाल' भिक्षु प्रत्येक नए भाई का स्वागत करते, उसे बसाते, और तीन वर्षों तक—जब तक उसे भिक्षु वस्त्र नहीं पहनाया जाता था, उस परीक्षण अवधि के दौरान—अपनी बातचीत के माध्यम से उसे लगन से निर्देश देते और सभी बुराइयों से उसकी रक्षा करते। इस प्रकार, टाबेनीसी में नवोदितों को अनुभवी और दृढ़ संकल्प वाले मार्गदर्शक मिले और वे मठ में अपने जीवन के पहले वर्षों से ही एक धार्मिक स्वभाव विकसित कर सके। स्वयं संत पाचोमियस नवोदितों पर कड़ी नजर रखते थे। युवा भिक्षुओं की सफलताओं और उत्साह से उन्हें कितनी प्रसन्नता होती थी! वे उनकी ज़रूरतों के प्रति कितने चौकस थे! कैसे उन्होंने उन्हें हर तरह के प्रलोभन और मोह से, साथ ही किसी भी अशुद्ध विचार से भटकने से बचाया!

तावेनीसी में बीमार भाइयों का बहुत ध्यान रखा जाता था। उनकी देखभाल अस्पताल में सेवा करने के लिए विशेष रूप से नियुक्त भिक्षुओं द्वारा, उनके अधिष्ठाता के साथ, और स्वयं पूजनीय पाचोमियस द्वारा की जाती थी।

विशेष भिक्षु भाइयों के भोजन पर सेवा करते थे। उन्हें हर तीन सप्ताह में बदल दिया जाता था। इन भिक्षुओं को निरंतर परिश्रम दिखाना आवश्यक था, और यह और भी अधिक आवश्यक था क्योंकि सभी भाई एक ही समय पर भोजन नहीं करते थे। भोजन के समय सेवा करने वाले भिक्षु ब्रेड, विभिन्न प्रकार की सब्जियां और जैतून तैयार करने, वितरित करने और व्यवस्थित करने में तीन घंटे बिताते थे। अनुमत दिनों पर, भोजन में पनीर, अंडे, उबली हुई सब्जियां और उबले अनाज से बना सूप परोसा जाता था। प्रत्येक भाई जब चाहे मेज के पास आता और अपनी थाली लेता। लेकिन यह दिन में केवल एक बार होता था: कुछ छठे घंटे पर खाते थे, कुछ सातवें पर, कुछ आठवें पर, कुछ नौवें, दसवें या ग्यारहवें पर, जबकि अन्य शाम को खाते थे, जब आकाश में तारे दिखाई देते थे। कुछ भिक्षु अपने प्रति इतने सख्त थे कि वे हर दो दिनों में केवल एक बार ही खाते थे। आम तौर पर, मूल नियम के अनुसार, उपवास[3716] किसी पर उसकी इच्छा के विरुद्ध नहीं थोपा जाता था। संत पाकोमियस केवल अपने सबसे करीबी भिक्षुओं को बुधवार और शुक्रवार को उपवास करने—यानी, भोजन से पूरी तरह परहेज़ करने—के लिए प्रोत्साहित करते थे। लेकिन कई भिक्षुओं ने खुद पर और भी सख्त उपवास थोप रखा था।

[3715] किनोवियि (ग्रीक शब्द κοινος, 'साझा', और βιος, 'जीवन' से) से तात्पर्य सामुदायिक मठों से है, जिनमें भाइयों का भरण-पोषण मठ के खर्च पर होता है और बदले में, वे मठ की सामान्य भलाई के लिए अपनी मेहनत देते हैं।

[3716] उपवास, ग्रीक νηστεια, का अर्थ भोजन से पूर्ण परहेज़ है।

टवेनशियि मठ में भक्षिुओं की बड़ी संख्या को देखते हुए, कई अलग-अलग कर्तव्य और कार्य भी थे। कुछ कर्तव्यों का पालन करना वशिेष रूप से कठनि था। मठ में कोई न कोई 'कर्तव्य' नभिाने वाले सभी, वशिेष रूप से वरषि्ठ, बहुत परशि्रमी थे। कुछ समय बीत जाने के बाद, आदरणीय पाचोमयिस कभी-कभी कसिी वशिेष 'कर्तव्य' का पालन करने वालों को छुट्टी दे देते थे, और उनकी जगह दूसरों को लगा देते थे। ऐसा करते हुए, वे दो उद्देश्यों को प्राप्त करना चाहते थे। पहला, वह यह सुनशि्चति करना चाहते थे कि नव-नयिुक्त भक्षिु अपने 'कर्तव्य' से आध्यात्मकि लाभ प्राप्त करे, ताकि उसे भाईचारे के लाभ के लिए अपनी उत्साही मेहनत के लिए प्रभु से इनाम मलि सके। संत पाचोमयिस की यह राय थी कि मठ में कोई भी 'कर्तव्य', जो उत्साह के साथ कयिा जाता है, भक्षिु को उतना ही पुरस्कार दलिाता है जतिना उसे उपवास करने, जागते रहने और उत्साह के साथ ईश्वर से प्रार्थना करने पर मलिता। दूसरा, पाचोमयिस चाहता था कि उत्साही श्रमकिों को अपने श्रम के बाद, भले ही थोड़ी देर के लिए, आराम करने का अवसर मलि। हालाँकि, भाई, जो अपनी 'कर्तव्यों' को पूरा करने में गंभीरता से लगे हुए थे, महान बाबा द्वारा प्रदान कयिा गया आराम स्वीकार करने में अनचि्छुक थे। वे इस बात से आश्वस्त थे कि यह संसार आराम की जगह नहीं, बल्कि कठोर परशि्रम, नरिंतर संघर्ष और आत्म-बलदिान वाले कार्यों की जगह है, और केवल वही लोग जो यहाँ परशि्रम करते हैं, उन्हें आने वाले जीवन में सच्चा आराम और अनंत आनंद प्राप्त होगा। और प्रत्येक व्यक्ति अपने जाने-पहचाने कार्य या शलि्प, या वास्तव में मठ के कसिी भी कार्य के लिए, अपने वरषि्ठ के आदेशों का कड़ाई से पालन करते हुए, उत्साहपूर्वक खुद को समर्पति करता रहा।

प्रत्येक भक्षिु, चाहे मठ में उसका कोई भी पद हो, को अपने वरषि्ठ के प्रति पूर्ण आज्ञाकारति दखिाने और नयिम का बनिा शर्त और सटीक रूप से पालन करने की आवश्यकता होती थी। यही सैनोबटिकि समुदाय के जीवन और शब्द के सख्त अर्थ में एक तपस्वी के जीवन के बीच मुख्य अंतर था। समुदाय में रहने वाले संन्यासयिों की आध्यात्मकि पूर्णता की गारंटी इसी पूर्ण आज्ञाकारति में नहिति थी। आज्ञाकारति ही समुदाय में रहने वाले संन्यासयिों के जीवन का महान नैतकि लाभ था। अपने वरषि्ठ के आदेशों या मठ के संवधिान के नयिमों का उल्लंघन, भले ही वह तपस्या के उत्साह से प्रेरति क्यों न हो, हमेशा दूसरों की ओर से शकिायत का कारण बन सकता था और समुदाय में हर तरह का अव्यवस्था पैदा कर सकता था। इसलिए, पाचोमयिस ने उन लोगों को, जो आज्ञाकारति के अपने कर्तव्य का उल्लंघन करते थे, चाहे वे कोई भी बहाना बनाते हों, कठोर दंड दयिा। टवेनेसी समुदाय में इस प्रकार की घटनाएँ हुईं, यद्यपि बहुत ही कम।

आवश्यक वस्तुओं की खरीद और मठ की हस्तशलि्प वस्तुओं की बक्रिी के लिए वशिेष रूप से भरोसेमंद, सभी गुणों से युक्त भक्षिुओं को चुना जाता था, ताकि दुनयिा उन्हें लुभा न सके, और वे दुनयिा के लिए एक उदाहरण बन सकें। इस बात का वशिेष ध्यान रखा जाता था कि वे लालची न हों, भले ही मठ को ऐसे लाभों से काफी फायदा हो सकता था।

जैसे-जैसे तावेनीसी में भक्षिुओं की संख्या बढ़ती गई, वहाँ वभिन्नि प्रशासनकि नकिायों की संख्या भी बढ़ना स्वाभावकि था। मठ की ववििधि आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए वभिन्नि 'कर्तव्यों' का नर्विहन करने वाले व्यक्तयिों की संख्या भी बढ़ना स्वाभावकि था। जैसे-जैसे पाचोमयिन कनिोइया में भक्षिुओं और मठों की संख्या बढ़ी, हमें वहाँ बहुत से भक्षिु दखिाई देते हैं जन्हिें वभिन्नि मठीय कर्तव्य सौंपे गए थे। हमें यहाँ सुव्यवस्थति अनाज भंडार मलिते हैं, जो प्रारंभ में केवल टावेनीसी में थे, और बाद में पेवू (सबसे महत्वपूर्ण) और फेनम के मठों में भी। इन अनाज भंडारों में, भक्षिु गहरी शांति में काम करते थे, जसिसे उनके श्रम की सफलता और उनकी आध्यात्मकि शांति दोनों को बढ़ावा मलिता था। यहाँ कोई बात नहीं होती थी। पानी या आटे के लिए पूछना भी मना था: पात्र पर ठोकर लगाकर अनुरोध कयिा जाता था। काम करते समय, वे ईश्वर के वचन से सीखे हुए अंशों को स्मरण से सुनाते थे।

एक समय में, टावेनसिी मठ में 15 दर्जी, 7 लोहार, 4 बढ़ई, 15 रंगसाज़, 20 चमड़ा रंगाने वाले, 12 ऊँट चालक, 20 माली, 15 जूता बनाने वाले, 12 चादर बनाने वाले भक्षिु, 10 रात्रि पहरेदार और 10 लपिकिार। अपनी मेहनत से, भक्षिु मठ के लिए आवश्यक सभी चीजें बनाते थे, और उन्हें शहरों से बहुत कम सामान खरीदना पड़ता था। सेनोबाइट्स के बीच चटाई बनाना वशिेष रूप से व्यापक था; यह न केवल भक्षिुओं के लिए एक उपयोगी शलि्प था, बल्कि मठ के वति्त को मजबूत करने का भी काम करता था, और यहाँ भी पैसे की आवश्यकता थी।

संत पाचोमयिस की आज्ञा के अनुसार, पैसा एक ही स्थान पर, कोषाध्यक्ष की देखरेख में रखा जाता था। यही कोषाध्यक्ष सभी भाइयों की ज़रूरतों को पूरा करता था। हालाँकि, भक्षिुओं को अपना पैसा रखने की अनुमति नहीं थी। भक्षिुओं में कई ऐसे थे जो अपने माता-पति के साथ बच्चों के रूप में मठ में आए थे। बड़े होकर, वे सोने और चांदी में अंतर नहीं कर सकते थे और पैसे के प्रति पूरी तरह से उदासीन थे।

समुदाय की ज़रूरतें बहुत साधारण थीं। सांसारिक संपत्ति से उनका मोहभंग इतना गहरा था कि प्रत्येक भिक्षु के पास केवल कपड़ों का एक सेट और भेड़ या बकरी की खाल से बना एक लबादा होता था। एक विशेष रूप से नियुक्त भिक्षु फटे हुए कपड़ों की मरम्मत करने, उन्हें धोने और फिर उन्हें पुराने कपड़ों के गोदाम में रखने के लिए जिम्मेदार था। जब कोई भी भिक्षु अपना चोगा धोना चाहता था, तो वह इन मरम्मत किए गए कपड़ों में से एक लेता था, और अपना चोगा धोने के बाद, वह उस कपड़े को उसके प्रभारी भिक्षु को वापस कर देता था।

मठ में बहुत सारे प्रतिलिपि बनाने वाले लेखक थे। ये अनुभवी लेखक, वरिष्ठ के निर्देशानुसार, उन पुस्तकों की लगन से प्रतिलिपि बनाते थे जो भिक्षुओं के लिए विशेष रूप से उपयोगी थीं। वे सफलतापूर्वक काम करते थे: मठ के पुस्तकालय बढ़े, और हर भिक्षु को वहाँ अपने लिए आध्यात्मिक पोषण मिल जाता था।

बाहरी दुनिया के साथ सभी व्यवहारों में, भिक्षुओं को विशेष सावधानी बरतने की आवश्यकता होती थी। यात्रा करते समय, उन्हें अपने द्वारा जाने गए पवित्र शास्त्रों के अंश अपने आप से दोहराने और उन पर मनन करने के लिए कहा जाता था। वे हमेशा कम से कम दो की संख्या में समूह बनाकर अपनी यात्राओं पर निकलते थे। यदि रास्ते में कोई महिला उनसे बात करना चाहती, तो वरिष्ठ भिक्षु उसके पास जाता और अपनी दृष्टि नीची रखकर बड़ी विनम्रता से संक्षिप्त बातचीत करता। रास्ते में किसी मजिस्ट्रेट या सैनिक से मिलने पर, प्रत्येक भिक्षु अपनी गधी से उतरकर एक तरफ हो कर प्रार्थना करता और यात्री को रास्ता दे देता।

सामान्य लोगों के घरों में, भिक्षु आमतौर पर भोजन ग्रहण नहीं करते थे। चरम परिस्थितियों में, वे केवल वही खाते थे जो मठ के नियमों द्वारा अनुमत था।

लिखित पत्राचार के माध्यम से बाहरी दुनिया के भिक्षुओं पर हानिकारक प्रभाव डालने को रोकने के लिए, मठ को संबोधित पत्र मठाधीश द्वारा प्राप्त किए जाते थे; यदि उन्हें लगता कि पत्र में सकारात्मक विचार हैं, तो वे इसे इच्छित प्राप्तकर्ता को भेज देते थे। मठ में किसी को भी सांसारिक दुनिया में जो कुछ भी उसने देखा या सुना हो, उसे बताने की अनुमति नहीं थी, जब तक कि यह समुदाय के सामान्य कल्याण के लिए न हो। कोई भी प्रेरणादायक बात केवल मठाधीश की अनुमति से ही बताई जा सकती थी। आम तौर पर, भिक्षुओं के बीच बहुत अधिक बातूनी होने को प्रोत्साहित नहीं किया जाता था।

यात्रियों का स्वागत एक विशेष कमरे में किया जाता था। भाइयों में से किसी को भी उन्हें अपनी कोठरी में ठहराने की अनुमति नहीं थी। यहाँ तक कि किसी रिश्तेदार के आने की सूचना भी भिक्षुओं को नहीं दी जा सकती थी: केवल द्वारपालों को ही यात्रियों के आगमन के बारे में संबंधित लोगों को सूचित करने का अधिकार था। अतिथि गृह में यात्रियों का बहुत गर्मजोशी से स्वागत किया जाता था। महिलाओं के लिए पुरुषों से अलग एक अलग कमरा था। यहाँ तक कि दूसरे मठों के भिक्षुओं को भी सेंट पाचोमियस के अपने भिक्षुओं के साथ नहीं ठहराया जाता था; उन्होंने उन्हें सामूहिक भोजन में भी शामिल होने की अनुमति नहीं दी, हालांकि उन्होंने उन्हें भाईचारे के सभी संकेत दिखाए और यदि वे ऑर्थोडॉक्स थे और विधर्मी नहीं थे, तो उन्हें सामूहिक प्रार्थना के दौरान चर्च में प्रवेश करने की अनुमति दी।

संत पाचोमियस की ख्याति पूरे मिस्र में और भी फैलती गई। अंततः उनकी अपनी बहन, मरियम—जो पहले ही ईसाई धर्म से प्रबुद्ध हो चुकी थी और कुंवारी थी—को उनके महान कार्यों के बारे में पता चला। अपने भाई पाचोमियस से मिलने की उत्सुकता में, वह तबेनीसी के लिए रवाना हो गई। पाचोमियस को उसके आगमन की सूचना दी गई। सभी सांसारिक लगावों को त्यागकर और महिलाओं से मिलने से बचते हुए, संत पचोमियस ने अपनी बहन से मिलने से इनकार कर दिया, लेकिन साथ ही, द्वारपाल के रूप में सेवा करने वाले भिक्षु के माध्यम से, उन्होंने उसे जीवन का एक नया तरीका दिखाया। वे उनसे कहते हैं कि यह वर्तमान जीवन आने वाले युग के जीवन के लिए केवल एक तैयारी है, और यह कि दुनिया से अलग जीवन—संन्यासी जीवन—मोक्ष के सभी साधन प्रदान कर सकता है। पाकोमियस अपनी बहन से वादा करते हैं कि यदि वह संन्यासी जीवन जीना चाहती है तो भिक्षु उसके लिए एक एकांत निवास बनाएंगे। फिर, वह कहते हैं, अन्य महिलाएँ, उसके साथ बस जाने के बाद, खुद को पूरी तरह से आध्यात्मिक पूर्णता की खोज में समर्पित कर सकती हैं। मरियम के लिए यह सुनना दुखद था कि उसका भाई खुद उससे बात नहीं करना चाहता था। वह रो पड़ी। लेकिन द्वारपाल भिक्षु के माध्यम से उसे पहुँचाए गए पाचोमियस के शब्दों में बहुत कुछ सांत्वना देने वाला था। उसने पाचोमियस द्वारा कही गई बात मान ली। फिर पाचोमियस ने उसके लिए गाँव के पास, पुरुषों के मठ से काफी दूरी पर, नील नदी के दूसरी तरफ एक आवास बनाने के लिए भिक्षुओं को भेजा।

कुछ ही समय में, बड़ी संख्या में महलिाएँ अपने बाकी जीवन उनके साथ बतिाने के लिए मरयिम के पास आने लगीं। आदरणीय पाचोमयिस की बहन उनके लिए एक माँ और आध्यात्मकि मार्गदर्शक बन गईं। उन्होंने अपनी मृत्यु तक उन्हें मोक्ष के मार्ग पर मार्गदर्शन कयिा।

अपनी ओर से, अबा पचोमयिस ने इस मठ का बहुत ध्यान रखा। उन्होंने महलिा मठ के भीतर आध्यात्मकि जीवन पर तत्काल मार्गदर्शन प्रदान करने के लिए एल्डर पीटर को नयिुक्त कयिा। पचोमयिस ने स्वयं मठ जीवन के नयिमों को नरि्धारति करते हुए एक वशिेष पुस्तक लखिी, और मठ की बहनों को इन नयिमों का अध्ययन करने और इनका सावधानीपूर्वक पालन करने की आवश्यकता थी।

बेशक, कभी-कभी ऐसा हो सकता था कि किसी भक्षिु को कसिी वशिेष बहन से मलिने की आवश्यकता हो। आवश्यकता पड़ने पर ऐसे दौरे स्वयं पाचोमयिस द्वारा अधकिृत कए जाते थे। पाचोमयिस की अनुमति मलिने के बाद, भक्षिु स्वयं को एल्डर पीटर के सामने प्रस्तुत करता था, जो महलिा मठ का प्रभारी था। वरषि्ठ बहन माता सुपीरयिर, उस भक्षिुणी को बुलाती थीं जसिे भक्षिु देखना चाहता था, और एक तीसरी भक्षिुणी को भी: वे सभी अपनी-अपनी जगह पर बैठ जातीं, और फरि बातचीत शुरू होती, हालांकि, बेशक, हर कोई इस बात का ध्यान रखता था कि लंबी और, सबसे बढ़कर, बेकार की बातचीत संन्यासयिों के लिए अनुचति थी।

यदि कोई नन मरणासन्न होती, तो बहनें उसे उस स्थान पर ले जातीं जहाँ वे अपनी प्रार्थना सभाएँ करती थीं। मदर सुपीरयिर उसे अंतमि संस्कार के वस्त्र पहनाती थीं। अब्बा पीटर पाचोमयिस को नन की मृत्यु की सूचना देते थे। उनके द्वारा नयिुक्त भक्षिु, जन्होंने नष्किलंक जीवन जयिा था, मठ के लिए नकिल पड़ते थे। वे प्रार्थना घर के द्वार पर रुकते थे और वहाँ पवत्रि भजन गाते थे। अंत में, मृतक को दफनाया जाता था; उनकी माता-प्रधान के नेतृत्व में बहनें गाते हुए कब्र तक उनका साथ देती थीं, जबकि वरषि्ठ उनके पीछे चलती थीं। मृतक को सुलाए जाने और उनके लिए अंतमि प्रार्थना कए जाने के बाद वे सब ततिर-बतिर हो जाते थे। कभी-कभी बहनों को स्वयं मठ के भीतर ही दफनाया जाता था, और कभी-कभी उन्हें सबसे नजदीकी पहाड़ पर ले जाया जाता था।

एक अन्य अवसर पर, टावेनीसी पुरुष मठ के भक्षिुओं ने महलिा मठ को बहुत सहायता प्रदान की। जब भी ननघरा में कसिी इमारत की मरम्मत या पुनर्नरि्माण करना आवश्यक होता, तो पाचोमयिस काम करने के लिए सबसे अधकि धर्मनषि्ठ भक्षिुओं को भेजता था। वे वहाँ एल्डर पीटर की नरिंतर देखरेख में रहते थे। उन्हें भोजन करने के लिए ननघरा में रहने की अनुमति नहीं थी, बल्कि वे उसी दनि अपने मठ वापस लौट जाते थे।

महलिा समुदाय में बहनों की संख्या जल्द ही चार सौ हो गई। ननों का दैनकि भोजन, उनके उपवास, और उनके वस्त्र—उनके सरि ढकने वाले आवरण को छोड़कर—सभी पुरुष समुदाय में पालन कए जाने वाले रीति-रिवाजों के अनुरूप थे। ननहयिों ने पुरुषों के मठ के लाभ के लिए भी काम कयिा: वे भक्षिुओं के लिए ऊनी कपड़े बनाती थीं। बदले में, उन्हें पुरुषों के मठ के व्यवस्थापक से अपनी ज़रूरत का सामान मलिता था।

महलिाओं के मठ के जीवन की एक उल्लेखनीय घटना है। एक बार ननों में से एक मठ की दीवारों के बाहर चली गई। उसकी मुलाकात एक आम दर्जी से हुई और हैरान होकर उसने उससे पूछा कि वह इन इलाकों में क्यों आया है। उसने जवाब दयिा कि वह काम की तलाश में है। भक्षिुणी ने आपत्ति जताई, कहा कि उनके अपने दर्जी हैं। दर्जी वदिा हो गया। एक वशिेष भक्षिुणी ने इस बातचीत को देख लयिा था। एक बार उस भक्षिुणी से मनमुटाव होने के कारण, उसने उस पर ताना मारना शुरू कर दयिा और ताने की लहजे में, दर्जी के साथ उसकी बातचीत का जकि्र कयिा। झूठे आरोप से व्यथति, वह युवा नन जोर-जोर से रोई। उसने अतशियोक्तपिूर्ण ढंग से उस अपमान की कल्पना की, जो उसकी नजर में अब कॉन्वेंट में उसका इंतजार कर रहा था। दुख से अभभिूत होकर, वह गुप्त रूप से नदी पर गई, उसमें कूद गई और डूब गई। यह जानकर, दूसरी नन, जसिने उस दुर्भाग्यपूर्ण युवा नन को अन्यायपूर्ण रूप से फटकार लगाई थी, गहरी नरिाशा में पड़ गई और रस्सी से गला घोंटकर अपनी जान दे दी।

महान पाचोमयिस को जल्द ही इस बात की जानकारी हो गई। इस घटना से गहराई से दुखी होकर, वरषि्ठ ने समुदाय की प्रार्थनाओं में उनका स्मरण करने, उनके लिए धर्मोपदेश मनाने और उनकी ओर से दान देने पर रोक लगा दी। पाचोमयिस ने कन्वेंट की सभी बहनों के प्रति भी एक कठोर रुख अपनाया। चूँकि उन्होंने उस मासूम लड़की और जसिने उसके साथ अन्याय कयिा था, उसे खोजने और उनसे मेल-मलिाप करने तथा उन्हें सांत्वना देने का आवश्यक प्रयास नहीं कयिा था, और उन्होंने उनकी स्थति और मानसकि शांति की उपेक्षा की थी—और शायद एक बहन की बदनामी पर भी वशि्वास कर लयिा था—तो बड़े भाई ने उन्हें सात साल के लिए पवत्रि Communion से बहषि्कृत कर दयिा।

चारों ओर से अनगनित लोग जीवन भर के लिए खुद को उनके हवाले करने आए। टावेनी में भक्षिुओं की संख्या बहुत अधकि बढ़ गई थी। वहाँ बहुत तंगी हो गई थी। ईश्वर की प्रेरणा से, संत पाचोमयिस ने एक नया मठ बनाने के लिए एक और उपयुक्त स्थान खोजने के लिए नकिल पड़े। तावेनीसी से बहुत दूर नहीं, उत्तर में एक बहुत उपयुक्त स्थल मलिा। इस स्थान को 'एकेलौथसि' (Pevou[3717]) कहा जाता था। यहीं पर एक नया मठ स्थापति कयिा गया, जो बहुत वशिाल था और जल्द ही पूरे समुदाय का केंद्र बन गया।

यह मठ एक दीवार से घरिा हुआ था। डायोस्पोलसि के धर्मप्रांत के बशिप की भक्षिुओं के प्रत अिनुकूल भावना थी। उनके सुझाव पर, आदरणीय पाचोमयिस ने वहाँ एक चर्च भी बनवाया।

अब समुदाय में उन सभी को शामलि करना संभव था जो वहाँ स्थायी रूप से बसना चाहते थे। पाचोमयिस ने कई भक्षिुओं को पुराने मठ से नए मठ में स्थानांतरति कयिा, वशिेष रूप से उन लोगों को जो समुदाय के नयिमों से अच्छी तरह परचिति थे और नए भाइयों के लिए अनुभवी नेता के रूप में काम कर सकते थे और एक अच्छा उदाहरण प्रस्तुत कर सकते थे। यहाँ भी, वभिन्नि कर्तव्यों को पूरा करने के लिए एक मठाधीश, एक व्यवस्थापक और मठवासी समुदाय नयिुक्त कएि गए। सभी को समुदाय के नयिमों का सावधानीपूर्वक पालन करना आवश्यक था, यह ध्यान में रखते हुए कि वे नए साधकों और अधीक्षकों दोनों पर समान रूप से लागू होते थे।

कुछ समय बीत गया, और दोनों मठ अब वहाँ रहने के इच्छुक सभी लोगों के लिए पर्याप्त नहीं रहे। धीरे-धीरे, सात और मठ स्थापति कएि गए। टावेनशियिन समुदाय में भक्षिुओं की संख्या सात हजार तक पहुँच गई। बेशक, कुछ मठों में अन्य की तुलना में अधकि संन्यासी रहते थे। और कई मठों में फैले संन्यासयिों की यह सारी भीड़ एक ही मठवासी भाईचारा बनाती थी।

संत पाचोमयिस अक्सर सभी मठों का दौरा करते थे। उन्होंने स्वयं पेवू मठ में नविास कयिा, जहाँ सभी मठों का सामान्य प्रशासन केंद्रति था। इस मठ में सबसे अधकि संन्यासयिों की संख्या थी। यहीं से अन्य मठों के संन्यासयिों को उनकी आवश्यक आपूर्त प्राप्त होती थी। इस मठ के कोषाध्यक्ष को 'एकेल' ( ) में कएि गए कार्यों पर एक रपिोर्ट दी गई थी। सभी मठों के भक्षिु साल में दो बार यहाँ प्रार्थनाओं में भाग लेने, उपदेश सुनने और अपने प्रयासों के लिए संत पाकोमयिस का आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए इकट्ठा होते थे। पेवू मठ में, पवत्रि लेंट के दनिों के दौरान कैटेकुमेन का बपतस्मिा भी कयिा जाता था। उस समय, सभी मठों से कैटेकुमेन को यहाँ लाया जाता था। इस प्रकार, भक्षिुओं के बीच ऐसे लोग थे जन्हिोंने अभी तक पवत्रि बपतस्मिा प्राप्त नहीं कयिा था, लेकनि इसकी तैयारी कर रहे थे; ये ही कैटेकुमेन थे। उन्हें बपतस्मिा के लिए पेवू लाया जाता था, शायद इसलिए क्योंकि वहाँ पुरोहति थे, जबकि अन्य मठों में कोई नहीं था। बेशक, सभी मठों के बीच यह सहभागति भक्षिुओं के लिए अत्यंत लाभकारी थी: इसने पाकोमयिस के मठों के सभी भक्षिुओं को आध्यात्मकि प्रेम के घनष्ठितम बंधनों से एक साथ बाँध दयिा, इसने कमजोर दलि वालों को प्रोत्साहति कयिा, उन लोगों में उत्साह जगाया जो सुस्त हो गए थे, और उत्साही तथा नपिुण तपस्वयिों के लिए यह बहुत महत्वपूर्ण था कि वे तपस्या के जीवन के उच्चतम उदाहरण देखें और उन्हें अनुकरण करना सीखें, साथ ही अपनी उपलब्धयिों को वनिम्रता से देखें। लेकनि सबसे महत्वपूर्ण बात यह थी कि पेवौ की ये यात्राएँ सभी भक्षिुओं को संत पाकोमयिस के दैनकि जीवन को देखने और उनकी शक्षिाओं को सुनने का अवसर देती थीं। और मठों का नरीक्षण करने के अपने यात्राओं के दौरान, संत पाचोमयिस ने भक्षिुओं को केवल शब्दों से ही नहीं बल्कि उदाहरण द्वारा भी सखिाया। वह कसिी का भी आदेश मानने के लिए तैयार रहते थे, अपने से नम्निि पद वालों के सामने स्वयं को नम्र करते थे, और समुदाय के सबसे छोटे सदस्य से भी खुशी-खुशी कोई सीख स्वीकार कर लेते थे। ऐसे कई उदाहरणों में से एक यहाँ दयिा गया है।

आदरणीय पाचोमयिस वशिेष रूप से अक्सर टावेनीसी जाते थे। इन यात्राओं के दौरान, उन्होंने अपने सामान्य शारीरकि श्रम की उपेक्षा नहीं की। अबा थयिोडोरेट के नर्दिेश पर, वहाँ चटाई बुनने की एक वशिेष वधिि का उपयोग कयिा जाता था: रस्सयिों को बहुत कसकर नहीं खींचना था; इससे काम कम श्रमसाध्य हो जाता था और बेहतर चटाई बनती थी। जब पाचोमयिस वहाँ अपनी चटाई बुन रहे थे, तो मठ में रहने वाला एक छोटा लड़का—जो उस सप्ताह इस काम पर तैनात था—ने स्पष्ट रूप से उन्हें बताया कि वे उस तरीके से नहीं बुन रहे थे जैसा कि बाबा थयिोडोरस ने नर्दिेश दयिा था। पाचोमयिस ने उस लड़के की बात को सौम्य आनंद के साथ सुना और उससे ठीक उसी तरह काम करना सखिाने के लिए

[3717] पेवौ का मठ तावेनीसी के थोड़ा उत्तर में, नील नदी के पूर्वी तट पर, डायोस्पोलसि क्षेत्र में स्थति था।

कहा जैसा कि करना चाहिए। लड़के ने पाचोमियस को दिखाया कि वे अपना काम कैसे करते थे। अबा पाचोमियस ने तुरंत ही ठीक उसी तरह चटाई बुनना शुरू कर दिया।

नज़दीक में रहने वाले बर्बर लोगों ने टावरनीसी के लोगों में बहुत डर पैदा कर दिया था, क्योंकि न केवल तब बल्कि बाद में भी उन्होंने गांवों और मठों पर हमले किए, और उन्हें बहुत नुकसान पहुँचाया: उन्होंने लूटपाट की, उगाही की, निवासियों से फिरौती वसूल की, या उन्हें गुलामी में ले गए। उत्तरी मठों के भिक्षु उनसे भाग गए। उत्तरी मठों को पूरी तरह से बर्बाद होने और भिक्षुओं को पूरी तरह से बेसहारा होने से बचाने के लिए, आदरणीय पाचोमियस ने बड़ी संख्या में भिक्षुओं को उत्तरी मठों में भेजा। वे स्वयं पेवू के मठ में रुके, जबकि उन्होंने अपने प्रिय शिष्य थियोडोर को उत्तरी मठों के भिक्षुओं को पढ़ने के लिए किताबें लेकर भेजा। थियोडोर को वहाँ भेजते समय, पाचोमियस ने उसे ईश्वर की सहायता की आशा देकर सांत्वना दी। पाचोमियस ने एक व्रत लिया कि, यदि बर्बर पीछे हट गए, तो वह उस चर्च को, जिसे उन्होंने लूटा था, किताबें, भरपूर गेहूं और चर्च को जो कुछ भी और चाहिए, भेजेगा। ठीक अगले ही दिन, शाही सेना द्वारा पूरी तरह से पराजित होकर, बर्बर पीछे हट गए। इससे भिक्षुओं का मन शांत हो गया।

जबकि बर्बरियों को अभी तक हराया नहीं गया था, उन्होंने एक तपस्वी को ढूंढ निकाला और उसे अपनी शराब परोसने के लिए मजबूर किया। लेकिन जब वह उन्हें शराब परोसने ही वाला था, तो उन्होंने उससे पहले अपने देवताओं को बलिदान चढ़ाने की मांग की। भिक्षु ने मना कर दिया। बर्बरियों ने उसे उनकी मांगों को न मानने पर मार डालने की धमकी देना शुरू कर दिया। उस दुर्भाग्यशाली तपस्वी में विधर्मी देवताओं को बलिदान देने से इनकार करने का साहस नहीं था। उसने बर्बरों की मांग मान ली। इसके बाद, उसने बर्बरों को शराब परोसना शुरू कर दिया। वे नशे में सो गए। इससे भिक्षु को उनसे भागने का अवसर मिल गया। लेकिन उस तपस्वी का हृदय दुख से भर गया था। वह अपने दुख से इतना अभिभूत था कि वह प्रार्थना भी नहीं कर सका। पाचोमियस की दया और बुद्धिमानी को याद करते हुए, यह भिक्षु महान संन्यासी के निर्णय के प्रति स्वयं को पूरी तरह समर्पित करने का संकल्प लेकर, उनके पास दौड़ गया। गहरे दुख के साथ, उसने संत पाचोमियस से कहा कि झूठे देवताओं को बलिदान चढ़ाकर बाहरी रूप से मसीह का त्याग करने के बाद, उसे अब अपने पापों के लिए पश्चाताप करने और क्षमा प्राप्त करने की कोई संभावना नहीं दिख रही थी; इसी कारण, उसने पूरे एक महीने से ईश्वर से प्रार्थना नहीं की थी।

पाचोमियस ने उसे एक पिता की तरह डांटा कि उसने, मानो, उस मुकुट को आग में फेंक दिया था जिसे देवदूत उसके सिर के ऊपर पकड़े हुए था और जो उसे पहनाने ही वाला था। मसीह के साथ अनजाने में विश्वासघात करने वाले उस भिक्षु के सच्चे आँसू देखकर, पाचोमियस ने उसे मन की शांति का मार्ग दिखाया। उन्होंने उसे सलाह दी कि वह दिन-रात जितना हो सके प्रार्थना करे, हर समय शाम तक उपवास रखे, और गंभीर बीमारी के मामलों को छोड़कर कभी भी पकाया हुआ कुछ न खाए। तब वह परमेश्वर की कृपा प्राप्त कर सकता था, क्षमा पा सकता था, और एक बार फिर मसीह का एक वफादार सेवक बन सकता था। पाचोमियस के विश्वास ने इस भिक्षु को प्रोत्साहित किया: उसने निराशा छोड़ दी और ईश्वर की दया में आशा रखकर अपने पाप के लिए सच्चे मन से पश्चाताप करना शुरू कर दिया।

लंबे समय तक, टेबेनीसी मठ में केवल कॉप्ट ही रहते थे[3718] । अंततः संत पाचोमियस की ख्याति यूनानियों और रोमनों तक भी पहुँच गई। उनमें से कुछ ने बुद्धिमान बाबा पाचोमियस के मार्गदर्शन में मठ में प्रवेश की मांग की और वहाँ भिक्षु बन गए। संत पाखोमियस ने उनकी भी बहुत देखभाल की: वे उनके लिए कॉप्ट्स जितने ही प्रिय थे।

ग्रीक भिक्षुओं (जिनकी संख्या रोमनों से अधिक थी) के साथ व्यवहार करने में पैकोमियस को एक कठिनाई का सामना करना पड़ा, वह थी ग्रीक भाषा का उनका अभाव। इसी तरह, अन्य कॉप्टिक भिक्षुओं को भी यह भाषा नहीं आती थी। यहाँ तक कि अलेक्ज़ेंड्रिया के निकटवर्ती क्षेत्र में भी[3719] , बोली जाने वाली भाषा ग्रीक नहीं बल्कि कॉप्टिक थी। अलेक्ज़ेंड्रिया से अपेक्षाकृत दूर नहीं रहने वाले तपस्वी, जैसे कि सेंट एंथनी द ग्रेट, जो हेराक्लिओपोलिस मैग्ना के पास पैदा हुए थे, और सेंट पिमेन द ग्रेट, जिन्होंने अपना पूरा जीवन निचले मिस्र में, स्केटे में बिताया, टेरेनुफे और उत्तरी डायोल्कोस में ग्रीक नहीं बोली जाती थी; वास्तव में, थेबाइड[3720] में ग्रीक जानने वाला कोई भिक्षु मिलना और भी कठिन

[3718] कॉप्ट्स – मिस्रवासी (ईसाई)।

[3719] अलेक्ज़ेंड्रिया – शिक्षा, राजनीतिक महत्व और व्यापार के लिए प्रसिद्ध एक शहर, जिसकी स्थापना लगभग 333 ईसा पूर्व में मिस्र में यूनानी सम्राट सिकंदर महान ने की थी।

[3720] थेबाइड – ऊपरी मिस्र का एक क्षेत्र।

था। ग्रीकों की देखभाल के अपने कार्य में, आदरणीय पाचोमयिस की सहायता अलेक्जेंड्रिया के चर्च के एक पूर्व रीडर थियोडोर ने की थी। लेकिन संत पाचोमयिस ने स्वयं भी ग्रीक भाषा सीखना सुनिश्चित किया।

संत पाचोमयिस ने भिक्षुओं को शब्दों और उदाहरण दोनों से सिखाया। उनके शब्दों का प्रभाव और भी अधिक था क्योंकि भिक्षुओं ने उनमें हर सद्गुण का उदाहरण देखा। पाचोमयिस की प्रार्थना की निरंतर भावना, उनकी गहरी विनम्रता, स्वयं के प्रति उनकी कठोरता—बीमार होने पर भी—सभी के प्रति उनका प्रेम, उनकी अंतर्दृष्टि और बुद्धिमत्ता—यह सब भाइयों के हृदय को उनकी ओर आकर्षित करता था, जिससे हर कोई बिना सवाल के उनके वचन का पालन करता और उनकी सलाह को स्वीकार करता था।

पचोमयिस की विनम्रता अत्यंत महान थी, भले ही वह असाधारण कार्य करते थे, और भले ही भिक्षुओं, गृहस्थों और यहां तक कि बिशपों द्वारा उन्हें सबसे बड़ा सम्मान दिया जाता था, जो कभी-कभी भिक्षुओं को उनके पास यह निर्णय कराने के लिए भेजते थे। संत पचोमयिस दूसरों की निंदा करने से डरते थे, यहां तक कि अपने विचारों में भी। कई मौकों पर ईश्वर से प्राप्त दर्शनों और प्रकटवाणियों से सम्मानित होने के कारण, वह अपने भाइयों से केवल तभी उनके बारे में बात करते थे जब उन्हें उम्मीद होती कि उनका वर्णन समुदाय के लिए नैतिक लाभ लाएगा।

एक अवसर पर, भाइयों ने उनसे अपने एक दर्शन के बारे में बताने के लिए कहा। उनका उत्तर असाधारण था। अपने अनुभव किए गए दर्शनों के बारे में बात न करना चाहकर, और उन भिक्षुओं के बीच घमंड के प्रति चेतावनी देने के उद्देश्य से जिन्हें प्रभु ने विशेष आध्यात्मिक उपहारों से सम्मानित किया था, संत पाचोमयिस ने कहा: 'जो पाप से भरा है, वह आध्यात्मिक दर्शन की कृपा प्राप्त नहीं करेगा। लेकिन यदि आप एक सुंदर और अद्भुत दर्शन प्राप्त करना चाहते हैं, तो मैं आपको एक बताऊंगा: जब आप एक ईश्वर-भक्त, हृदय से विनम्र और पवित्र व्यक्ति को देखते हैं - वही सबसे सुंदर दर्शन है: आप इस दृश्यमान व्यक्ति में अदृश्य ईश्वर को देखते हैं। इससे बेहतर किसी अन्य दर्शन के लिए न पूछें।'

नम्र पाचोमयिस अपने भाइयों पर किसी भी बात में कोई बढ़त नहीं चाहते थे। वे किसी भाई को तब तक सच्चा न्यायप्रिय मानते थे, जब तक वे उसे दूसरों की तुलना में भोजन का अधिक हिस्सा न दें। और वे दूसरों के साथ बराबरी के स्तर पर काम करना चाहते थे। वे किसी को भी अपने काम को हल्का करने नहीं देते थे।

एक अवसर पर, महान बाबा अपने भाइयों के साथ काम के लिए निकले। प्रत्येक व्यक्ति को अपने साथी के साथ एक निश्चित मात्रा में रोटी ले जानी थी। पाचोमयिस के साथी ने अकेले ही सारी रोटी ले जाने की इच्छा व्यक्त की। लेकिन पाचोमयिस इस बात से सहमत नहीं हुए, उन्होंने कहा कि नेता को सभी बातों में भाइयों के समान ही परिश्रम करना चाहिए।

अत्यंत संसार-त्यागी, पाचोमयिस बहुत साधारण वस्त्र पहनते थे। ठंडे मौसम में वे उनके कपड़े और कंबल दोनों का काम करते थे। इन्हीं वस्त्रों में वे अपने पास आने वाले पुरोहितों और भिक्षुओं का स्वागत करते थे।

अथानासियस नामक एक भाई, जो मठ के कपड़ों का प्रभारी था, संत थियोडोर के पास एक अनुरोध लेकर आया कि वे अपना चोगा उतारने के बाद उसे भंडारगृह में सौंप दें, और उसे एक वरिष्ठ के योग्य दूसरे, नए चोगे से बदल दें।

थियोडोर ने अथानासियस की सलाह मानी और एक वस्त्र को दूसरे से बदल दिया।

लेकिन फिर पाचोमयिस अपनी पुरानी चोगा ढूँढ़ने चले गए। थियोडोर ने नई वाली की ओर इशारा किया, लेकिन पाचोमयिस ने ज़ोर देकर कहा कि उनकी पुरानी चोगा उन्हें वापस कर दी जाए। वरिष्ठ की तीन बार दोहराई गई विनती के जवाब में, थियोडोर ने कहा कि अब उन चोगाओं को ढूंढना असंभव था; हालाँकि, थियोडोर को इस बात का बहुत अफ़सोस था कि उसने वरिष्ठ को उन चोगाओं से वंचित कर दिया था जो ठंडे मौसम में उसके लिए कंबल का भी काम करती थीं। वह इस पर रो भी पड़ा। लेकिन पाचोमयिस ने भी इस मामले में खुद को सही नहीं समझा। उन्होंने लंबे समय तक प्रभु से इस बात के लिए क्षमा मांगी कि दूसरों को आज्ञाकारिता सिखाते हुए, वह खुद मठ में वस्त्रों के प्रभारी की आज्ञा का पालन करने में विफल रहे थे। कितनी महान विनम्रता!

एक दिन जब पाचोमयिस बीमार पड़ गए, तो थियोडोर उन्हें उस जगह ले गए जहाँ बीमार भिक्षु भोजन कर रहे थे। उनके लिए एक पौष्टिक सूप तैयार किया गया था। उन्होंने भोजन तैयार करने वाले भाई से कहा:

'तुम खाना बनाना नहीं जानते; मुझे थोड़ा पानी दो।'

पाचोमयिस ने उसे दिया गया पानी बर्तन में डाल दिया। ठीक इसके बाद, थियोडोर ने भोजन शुरू होने से पहले अपने हाथों पर पानी डाल लिया। पाचोमयिस ने, बदले में, उसके पैरों पर पानी डाल दिया।

भोजन के बाद, उनके बीच बातचीत शुरू हुई। जब थियोडोर ने पूछा कि उसने पानी से व्यंजन क्यों खराब कर दिया, तो पाचोमियस ने जवाब दिया:

– 'भाई, जिसने मेरा भोजन बनाया, उसने मेरे लिए बड़ी लगन से ऐसा किया, लेकिन लोगों के बीच ऐसी लगन ज्यादा देर तक नहीं टिकती। और मैंने अपने आप से कहा: "मैं इस बार तो अच्छी तरह खा लूँगा, लेकिन जब कल आएगा, तो मैं बीमार हो जाऊँगा; फिर भी मैं अपने भाई से एक अच्छा भोजन देने की उम्मीद करूँगा," और इसी कारण मेरा दिल बेचैन हो जाता था।' मैंने ठीक इसी वजह से मेरे सामने परोसे गए उस स्वादिष्ट भोजन को खराब कर दिया, ताकि अगली बार, अगर वह लापरवाह हो और उसे पहले की तरह अच्छी तरह से न बनाए, तो इसका मुझ पर कोई असर न पड़े।

थियोडोर ने बड़े संत से पूछा कि उन्होंने उसके पैरों पर पानी क्यों डाला। संत पाकोमियस ने उसे एक असाधारण उत्तर दिया।

'मैंने यह इसलिए किया ताकि, अगर परलोक में वे मुझसे कहें, "थियोडोर ने तुम्हारे हाथों पर पानी डाला", तो मैं यह जवाब देकर सही ठहराया जा सकूँ, "मैंने स्वयं उसके पैर धोए।"'

बीमार पचोमियस ने तेल युक्त भोजन खाने से इनकार कर दिया। अपनी बीमारी के दौरान एक अन्य अवसर पर, उन्होंने पुआल की चटाई के बजाय एक बेहतर कंबल ओढ़ने और एक मुट्ठी खजूर स्वीकार करने से भी इनकार कर दिया। क्या आत्म-अनुशासन है!

पाचोमियस ने बीमार संतों के प्रति विशेष स्नेह दिखाया। सबसे बढ़कर, वह अपने बीमार भाई की आत्मा की मुक्ति के लिए चिंतित था। उसने बीमार व्यक्ति से ईश्वर का धन्यवाद करने का आग्रह किया, उसे धार्मिक विचारों से प्रेरित किया, सांसारिक चीजों से आसक्ति और अशुद्ध विचारों में बह जाने के प्रति उसे चेतावनी दी, और उसे ईश्वर से क्षमा मांगने तथा प्रभु में अपना विश्वास रखकर आशा के साथ भविष्य की ओर देखने के लिए प्रोत्साहित किया। वह हमेशा बीमार भाई की शारीरिक भलाई का भी ध्यान रखते थे। समुदाय में बीमार लोगों को कभी भी सख्त उपवास करने के लिए मजबूर नहीं किया जाता था, हालांकि उन्हें उपवास करने से रोका भी नहीं जाता था। यदि पाचोमियस को लगता था कि उपवास बीमार व्यक्ति की ताकत बहुत कम कर रहा है और उसे ठीक होने से रोक रहा है, तो वे कभी-कभी उपवास में ढील देना आवश्यक समझते थे।

उदाहरण के लिए, एक भाई लेंट (महाप्रायश्चित्त) के दौरान बीमार था। हालाँकि, उसने कुछ भी पकाया हुआ खाने या शराब पीने से इनकार कर दिया। वह खुद को कोई ढील नहीं देता था, भले ही इसका मतलब अत्यधिक संयम से मरना ही क्यों न हो। बुद्धिमान बाबा पाचोमियस ने उन्हें सलाह दी कि, यदि वह इस उपवास को पूरी तरह से नहीं छोड़ना चाहते, तो उन्हें अपना उपवास तब तक के लिए टाल देना चाहिए जब तक कि वह पूरी तरह से स्वस्थ न हो जाएँ, जिसके बाद वह अब उपवास करने के लिए निर्धारित दिनों के लिए सख्त उपवास कर सकेंगे।

अस्पताल में सेवा कर रहे संतों में से कुछ ऐसे थे जो बीमारों की कुछ मांगों को पूरा करने के लिए अनिच्छुक थे, जिन्हें वे एक संत के लिए अनुचित जिद मानते थे। लेकिन संत पाकोमियस का दृष्टिकोण अलग था। वह बीमारों को हर संभव आराम प्रदान करने के लिए तैयार थे।

उदाहरण के लिए, एक बार पाचोमियस स्वयं गंभीर रूप से बीमार पड़ गए। चिकित्सालय में, उन्हें कुछ उबली हुई सब्जियां दी गईं। उस समय, चिकित्सालय में एक गंभीर रूप से बीमार भिक्षु पड़ा हुआ था, उसका शरीर केवल हड्डी-चमड़ी रह गया था: लंबी बीमारी के बाद वह इतना दुबला-पतला हो गया था। जब इस भिक्षु ने चिकित्सालय के भाइयों से थोड़ा सा गोमांस देने के लिए कहा, तो उन्होंने मना कर दिया। तब उस बीमार ने आबा पाकोमियस के पास ले जाए जाने की विनती की। महान आबा, भिक्षु की अत्यधिक दुर्दशा और अस्पताल के भाइयों की ओर से समझदारी भरे करुणा की कमी देखकर स्तब्ध रह गए। उन्होंने उनसे सख्त लहजे में कहा: 'तुम मूर्खों, ईश्वर का भय कहाँ है? क्योंकि ईश्वर ने कहा है: "अपने पड़ोसी से वैसे ही प्रेम करो जैसे तुम स्वयं से करते हो।"' क्या तुम यह नहीं देख सकते कि यह भाई लगभग मर चुका है? तुमने उसे वह क्यों नहीं दिया जिस ने तुमसे माँगा था? अब मैं न तो खा सकता हूँ और न ही पी सकता हूँ। क्योंकि बीमारियों में अंतर होता है, और एक बीमारी दूसरी से अधिक गंभीर होती है।'

गंभीर रूप से बीमार भिक्षु को देखकर और भोजन संबंधी नियमों का कड़ाई से पालन करने में दूसरों के निर्दयी उत्साह को देखकर पाचोमियस अपने आँसू नहीं रोक सके। अब भिक्षुओं को एहसास हुआ कि वे गलत थे। उन्होंने तुरंत एक बछड़े को मंगवाया और उससे भोजन बनाया, जिसने बीमार भाई के कमजोर शरीर को बल दिया और उसके निराश मन को उत्साहित किया।

पाचोमयिस ने अपने शष्यिों में ईश्वर में आशा जगाने का प्रयास कयिा। यहाँ एक उदाहरण है जो इसे पुष्ट करता है।

एक शाम, भाई लोग नाव पर सरकंडों का भार लादने आए। थयिोडोर को डर था कि उसने जो स्टू ([3721]) बनाया था, वह सभी के लिए पर्याप्त नहीं होगा। पाचोमयिस ने उसके वचिारों को समझा और उसे भोजन को लेकर अत्यधकि चंति और इस संबंध में डरने से मना कयिा, और मानवता के लिए ईश्वर की व्यवस्था की ओर उसका ध्यान आकर्षति कयिा। ईश्वर में यह वश्विास पाचोमयिस को नराश नहीं हुआ।

एक अवसर पर, मठ में गेहूँ की कमी हो गई। इससे भक्षिुओं को बहुत दुख और चंति हुई। नकिट भवष्यि को लेकर उनके डर को शांत करने के लिए, पाचोमयिस ने उनका ध्यान एक दयालु व्यक्ति द्वारा दान कए गए दो सुंदर कालीनों की ओर आकर्षति कयिा: अगर हालात बहुत खराब हो गए, तो उन्हें बेचकर उससे प्राप्त धन का उपयोग गेहूं खरीदने के लिए कयिा जा सकता था। पाचोमयिस ने पूरी रात भक्तिपूर्वक प्रार्थना में बतिाई।

अगली सुबह, एक नगर का मजस्ट्रिेट मठ के द्वार पर आया। जब द्वारपाल ने उसे अंदर आने दयिा, तो उसने कहा कि उसने जरूरतमंदों को एक नश्चिति मात्रा में रोटी देने का व्रत लयिा था, और उसी रात उसे सपने में पता चला कि इस मठ के भक्षिुओं को ही रोटी की सख्त जरूरत है; इसलिए कोई आकर वह रोटी ले जाए जो वह लाया है। जब यह बात पाचोमयिस को स्वयं बताई गई, तो वह बहुत प्रसन्न हुआ और उसने शहर के मजस्ट्रिेट से कहा कि उन्हें वास्तव में रोटी की ज़रूरत है, लेकनि उन्हें भुगतान में कुछ समय की मोहलत चाहए। दयालु ईसाई ने जवाब दयिा: 'मैं यह पैसे के लिए नहीं लाया हूँ, बल्कि इसलिए लाया हूँ क्योंकि आप ईश्वर के लोग हैं। तो फरि, भाई इसे अंदर ले आएं।'

पाचोमयिस, उस दयालु व्यक्ति के प्रति हार्दकि रूप से आभारी था जो मठ की सबसे बड़ी ज़रूरत के समय मदद के लिए आया था, और उसने उसे आशीर्वाद स्वरूप मठ की कुछ रोटी और सब्ज़ियाँ दीं। शहर के मजस्ट्रिेट ने खुशी-खुशी इसे स्वीकार कर लयिा और इस बात से प्रसन्न होकर चल दयिा कि वह ईश्वर के सेवकों की मदद कर सका। मजस्ट्रिेट, जो संन्यासयिों का बहुत बड़ा भक्त था, से यह अप्रत्याशति उपहार पाकर भाई-बंधु हैरान और प्रसन्न हुए।

पाचोमयिस को डर था कि भक्षिु सांसारकि सुंदरता के कसिी भी रूप से जुड़ सकते हैं। उन्हें यह भी डर था कि चिर्च की सामंजस्य, अनुग्रह और सुंदरता भक्षिुओं का ध्यान भटका सकती है। संत पाचोमयिस ने अपने शष्यिों को व्यर्थता के प्रति गंभीरता से चेतावनी दी। उन्होंने अपने भक्षिुओं से मानव प्रशंसा के लिए नहीं, बल्कि ईश्वर के लिए, गुप्त रूप से तपस्या के कार्य करने का आग्रह कयिा। उन्होंने उन्हें अपनी उपस्थति में बाकी भाइयों से अलग न खड़े होने की सलाह दी। यहाँ कुछ उदाहरण दिए गए हैं जो दर्शाते हैं कि उन्होंने इस तपस्या के शत्रु के खलिाफ कतिनी लगातार लड़ाई लड़ी।

एक भक्षिु कई रातें अखंड प्रार्थना में जागकर बतिाता था, लोगों से वशिेष सम्मान पाने की आशा में आनंदति होता था। पाचोमयिस ने उसे अपना जीवन यापन का तरीका बदलने के लिए मनाया, और कहा कि जब भाइयों को भोजनशाला में बुलाया जाए तो वह वहाँ जाए और उनके साथ खाए, लेकनि पेट भरकर न खाए; सभी भक्षिुओं के लिए नर्धिारति प्रार्थनाओं की संख्या का पालन करे; और अपनी कोठरी से बाहर नकिलते समय, सभी के प्रति दयालु रहे और उदास न दखि। बेशक, कसिी को अपने तपस्या के अभ्यास को नहीं छोड़ना चाहए, क्योंकि वह भी शैतान को खुश करने जैसा होगा; लेकनि मनुष्य को सब कुछ ईश्वर के लिए करना चाहए, और अपने दलि में शैतान के लिए कोई जगह नहीं छोड़नी चाहए। जब इस भक्षिु ने पहले की तरह ही व्यवहार करना जारी रखा, इस डर से कि वह अपने भाइयों के सामने कमजोर और दयनीय दखिाई दे सकता है, तो पाचोमयिस ने फरि से उसे अपनी तपस्या में ढील देने के लिए कहा। कई बार उन्होंने उस घमंडी भक्षिु को अपनी पछिली शक्षिाओं की याद दलिाई और अंत में उससे कहा कि अगर वह दूसरों की इज्जत के लिए बाहरी तपस्या के अपने जुनून पर कायम रहा, न कि अपने जुनून को काबू करने के लिए, तो वह पागलपन में चला जाएगा। लेकनि भक्षिु ने अपनी मनमानी की, और पाचोमयिस की भवष्यिवाणी सच साबति हुई। वह घमंडी भक्षिु, अपनी बाहरी भक्ति के कारण गर्व से और अधकि फूलता गया, और पागलपन तथा आत्म-भूल की स्थति में पहुँच गया। वह संत थयिोडोर को मारने के लिए भी तैयार था, जब मठाधीश उसे इस भक्षिु का ध्यान उसकी व्यर्थ और ईश्वर को अप्रयि लगने वाली प्रार्थना से भटकाने के लिए भेजा। सौभाग्य से, लकड़ी का एक टुकड़ा लेकर फैले उसके हाथ सुन्न हो गए, और वह बस थ्योडोर पर

[3721] एक प्रकार का पौधे-आधारति भोजन।

पागलों की तरह चल्लिाया, उसे ईश्वर का शत्रु कहकर। वह लंबे समय तक इस दयनीय स्थतिमें रहा। अंतत; वह अपने पागलपन से और साथ ही अपने पुराने जद्दिी अहंकार से भी मुक्त हो गया।

एक बार संत पाचोमयिस अपने सेल के बाहर कुछ बुज़ुर्गों के साथ बैठे थे, और वे उनसे परमेश्वर के वचन के बारे में बात कर रहे थे। उसी समय, एक भाई उनके सेल के दरवाज़े के बाहर एक चटाई तैयार कर रहा था। वह बहुत लगन से काम कर रहा था और उस दनि उसने दो चटाईयाँ बुन ली थीं। वह अबा पाचोमयिस से प्रशंसा की उम्मीद कर रहा था। उसकी मानसकि स्थतिको देखकर, पाचोमयिस ने अपने साथयिों से कहा: 'क्या तुम इस दुर्भाग्यशाली भाई को नहीं देखते? उसने आज की मेहनत बर्बाद कर दी है, क्योंकउिसने परमेश्वर की महमिा से अधकि मनुष्यों की महमिा को प्रेम कयिा है; उसने खुद को थका दयिा है और अपनी आत्मा को हर सफलता और लाभ से वंचति कर दयिा है।'

पाचोमयिस ने इस भक्षिु को बुलाया और उसके वचिारों के लएि उसे कड़ी फटकार लगाई। फरि, अपनी फटकार को नरम करते हुए, पाचोमयिस ने उसे नर्दिेश दयिा कजिब भ्राता चर्च में इकट्ठा हों तो वह ये दो चटाईयाँ ले आए, और भक्षिुओं से क्षमा और उनकी प्रार्थनाओं के लएि नविेदन करे। उसे भोजनशाला में रात्रकि भोजन के समय भी यही करना था। उसकी आत्मा को और भी शुद्ध करने के लएि, पाचोमयिस ने उसे अपने कोठरी में बंद रहने, हर दनि एक के बजाय दो चटाईयाँ बनाने, केवल रोटी और नमक खाने, उस एक भाई के अलावा कसिी से बात न करने जो उसके लएि रोटी लाएगा, और अपने पाप के लएि ईश्वर से वनिम्रतापूर्वक क्षमा माँगने का आदेश दयिा। यह सज़ा वशिेष रूप से भक्षिु के मुख्य जुनून के खलिाफ थी: सज़ा के तौर पर, उसे वही करना था जो वह पहले घमंड के कारण करता था। यह सज़ा उसे लगातार उसके द्वारा कएि गए पाप की याद दलिाती थी और इसका उद्देश्य उसके हृदय में गहरी पश्चाताप की भावना जगाना था। वह पाचोमयिस की प्रशंसा को संजोता था: बेशक, वह यह समझने में वफिल नहीं हो सकता था कमिहान बाबा ने उसे बनिा कसिी अच्छे कारण के इतनी सख्त सज़ा नहीं दी होगी, खासकर जब उन्होंने पहले सभी के सामने उसे फटकार लगाई थी।

यहाँ एक और उल्लेखनीय घटना है। एक अवसर पर, संत पाचोमयिस को एक मठ का दौरा करना पड़ा जहाँ भक्षिु वधिर्मी वचिारों से संक्रमति थे। वहाँ, भक्षिुओं ने पाचोमयिस के शष्यिों से कहा कउिनका अधष्ठिाता यह प्रस्ताव कर रहा था कपिाचोमयिस उनके साथ नदी पार करें ताकयिह दखिाया जा सके कउिनमें से कौन सही था, और कौन परमेश्वर को अधकि प्रसन्न करता था। जब शष्यिों ने यह बात पाचोमयिस को बताई, तो वह इस बात से बहुत दुखी हुए कउिनके भक्षिुओं ने उनकी बात सुनी थी और ऐसी मांग आगे बढ़ा रहे थे। पचोमयिस ने उनसे सख्त लहजे में कहा: 'एक वधिर्मी पानी की सतह पर नदी पार कर सकता है, ठीक वैसे ही जैसे कोई सूखी ज़मीन पर चलता है, ईश्वर की अनुमतसि और शैतान की मदद से, जो उसे उसके अधर्मी वश्विास में पुष्ट करना चाहता है और दूसरों को भी इस वश्विास को अपनाने के लएि प्रेरति करना चाहता है। अब जाओ और इन लोगों से कहो: 'परमेश्वर का सेवक, पाचोमयिस, कहता है: मेरी मेहनत और चताएँ पैदल नदी पार करने के लएि नहीं, बल्कपिरमेश्वर की सजाओं से बचने और उस आग की नदी को पार करने के लएि हैं, जसिे हम सभी को, मनुष्यों के रूप में, हमारे प्रभु यीशु मसीह के सहिासन के सामने पार करना है।' इसके अलावा, सुसमाचार में कहा गया है: 'तुम अपने प्रभु परमेश्वर की परीक्षा न करना।'

संत पाचोमयिस ने वधिर्मयिों के प्रस्ताव में शैतान की साजशि देखी, जो एक चमत्कारकि प्रकट होने के माध्यम से, भक्षिुओं के वश्विास को हलिाना और उनके भीतर अहंकार को भड़काना चाहता था। उन्होंने अपने शष्यिों से आग्रह कयिा कवि कभी भी इस तरह की कसिी भी बात से प्रभावति न हों और कभी भी अहंकार के आगे न झुकें।

जब भी कसिी तपस्वी में अहंकार से रहति कोई एक भी सद्गुण प्रकट होता था, तो संत पाकोमयिस अपने भाई की इस छोटी सी उपलब्धपिर प्रसन्न होते थे और उसमें अपने मोक्ष का वादा देखकर उस सद्गुण को सावधानीपूर्वक पोषति करते थे। संत पाचोमयिस नहीं चाहते थे कभिक्षिु जबरदस्ती तपस्या करें, बल्कवि चाहते थे कवि अपनी इच्छा से ऐसा करें। मठ के जीवन की नम्निलखिति घटना इस बात की स्पष्ट गवाही देती है।

एक बार, जब संत पाचोमयिस अन्य मठों का दौरा करने के बाद उस मठ में लौट रहे थे जहाँ वे स्थायी रूप से रहते थे, तो भाई लोग उनका स्वागत करने के लएि बाहर आए। जैसे ही वे पास आए, एक युवा भक्षिु ने ज़ोर से घोषणा की कजिब से पाचोमयिस ने उन्हें छोड़ा था, उन्हें खाने के लएि कुछ भी नहीं दयिा गया था, न अनाज और न ही सब्जयिां। संत पाचोमयिस ने उससे सौम्य और दयालु स्वर में उत्तर दयिा:

'दुखी मत हो, मेरे बेटे; अब से मैं तुम्हारे मामलों की देखभाल करूँगा और तुम्हारे भोजन का प्रबंध करूँगा।'

मठ में प्रवेश करने और चर्च में प्रार्थना करने के बाद, पचोमियस सीधे रसोई में गए। रसोइए चटाइयाँ बुन रहे थे, और पचोमियस ने मुख्य रसोइए से पूछा:

'आपने भाइयों के लिए सूप बनाना कब से बंद कर दिया?' पता चला कि उन्होंने उनके लिए आखिरी बार सूप बनाए हुए दो महीने हो गए थे। पाचोमियस ने उनसे पूछा:

'जब नियमों के अनुसार भाइयों को हर शनिवार और रविवार को सूप परोसा जाना चाहिए, तो आप ऐसा क्यों कर रहे हैं?'

मुख्य रसोइये ने जवाब दिया कि, तपस्या के प्रति प्रेम के कारण, भाइयों ने सूप नहीं पिया, वे थोड़ी सी सब्जी और तेल से ही संतुष्ट रहते थे; पहले, तेल से तैयार किया गया सूप फेंक दिया जाता था; अब उसने एक भाई को भोजनशाला में जैतून, सब्जियां और सरिका लाने का काम सौंपा था, जबकि वह और अन्य लोग चटाई बनाने में लगे थे। इस दौरान, रसोई में पांच सौ चटाईयां बनाई गई थीं।

पाचोमियस रसोई के प्रभारी भिक्षु के अत्याचार से बहुत दुखी हुए। बिना अनुमति के बनाए गए चटाइयों को जलाने का आदेश देने के बाद, संत पाचोमियस ने इस भिक्षु से सख्ती से कहा कि, अपने अत्यधिक उत्साह के कारण, उसने नियमों की अवहेलना की है। इसके अलावा, इस मामले में भिक्षुओं का संयम अब स्वैच्छिक नहीं था, बल्कि एक आवश्यकता का परिणाम था: अब कोई भी अपनी लगन नहीं दिखा सकता था; सभी अपनी इच्छा के विरुद्ध उपवास कर रहे थे।

'जहाँ तक मेरी बात है,' संत पाचोमियस ने कहा, 'मैं विभिन्न व्यंजन तैयार करना और हर तरह के फल पकाना पसंद करूँगा, और यह सब भाइयों के सामने रखूँगा, ताकि, यदि वे अपनी इच्छाओं पर संयम रखें और तपस्या के लिए स्वेच्छा से इसे खाने से परहेज़ करें, तो वे ईश्वर के सामने एक महान और पुण्य कार्य कर सकें।' यदि नियमों द्वारा अनुमत भोजन भोजन में परोसा न जाए, तो भाईचारे के दुर्बल सदस्य अपनी क्षीण हुई शक्ति को पर्याप्त रूप से पुनःप्राप्त नहीं कर पाएंगे: वे पूरी तरह से कमजोर हो सकते हैं। इसके अलावा, भाइयों में कई नवसिखिए हैं, जिनमें से कुछ बहुत युवा और शारीरिक रूप से कमजोर हैं: वे मठ के तपस्या के अधिक अनुभवी लोगों की बराबरी नहीं कर सकते। उनके लिए यह विशेष रूप से कठिन होगा यदि उन्हें शनिवार, रविवार और पर्व के दिनों में भी पका हुआ भोजन से वंचित कर दिया जाए: वे जीवन की कठोरता के कारण निराशा के आगे झुक सकते हैं, जो उनके लिए अपरिचित है।

इस मामले पर कितना सटीक दृष्टिकोण है! नियम तोड़ने वालों के प्रति कितनी समझदारी भरी सख्ती, समुदाय में व्यवस्था बनाए रखने के लिए कितनी चिंता, और कमजोर भाइयों के लिए कितना प्यार, यह सब उस रसोइए की फटकार में सुना जा सकता है, जिसने संयम के प्रति अत्यधिक उत्साह के कारण भोजन संबंधी नियमों का उल्लंघन किया था!

संत पाचोमियस हमेशा इस बात का ध्यान रखते थे कि अत्यधिक कठोरता कुछ तपस्वियों को निराशा की ओर धकेल सकती है। वे नए और अनुभवहीन भिक्षुओं के साथ विशेष देखभाल और कोमलता से पेश आते थे, उनमें उन्हें देखभाल और समर्थन की आवश्यकता वाले 'नए पौधे' दिखाई देते थे। पाचोमियस ने अपने पसंदीदा शिष्य थियोडोरस को अपने भाई पाफनुटियस के प्रति कठोरता दिखाने के लिए फटकारा। केवल पाचोमियस के प्रेम और ज्ञान के कारण ही पाफनुटियस मठ में बना रहा। यहाँ दूसरे मठ के एक भिक्षु के प्रति दिखाई गई ऐसी दूरदर्शिता और प्रेम का एक उदाहरण है।

टावेनीसी से बहुत दूर नहीं एक छोटा सा मठ था जो समुदाय का नहीं था। इस मठ का मठाधीश अक्सर संत पाचोमियस के पास उनकी बुद्धिमानी भरी शिक्षाएँ सुनने आता था, ताकि वह बाद में उन्हें अपने भिक्षुओं तक पहुँचा सके। इस मठ का एक भिक्षु लगातार एक ऐसे पद की तलाश में था जिसके वह लायक नहीं था। एक अवसर पर, मठाध्यक्ष ने उसकी विनतियों का जवाब देते हुए कहा कि पाचोमियस ने उसे यह पद देने के खिलाफ सलाह दी थी क्योंकि वह इसके लायक नहीं था, हालाँकि पाचोमियस ने वास्तव में ऐसा कुछ नहीं कहा था। घमंडी भिक्षु ने लगभग जबरदस्ती अपने मठाधीश को संत पाचोमियस के पास जवाब तलब करने ले गया। मठाधीश, जो अपने भिक्षु के बेकाबू गुस्से से हैरान थे, पीले चेहरे और गहरे विचारों में डूबे हुए, उसके पीछे-पीछे चले गए।

उन्हें पाचोमियस मठ की दीवार बनाते हुए मिले। क्रोध से उन्मत्त, उस भिक्षु ने पाचोमियस पर चिल्लाया:

'नीचे आओ और मेरे पाप को साबित करो, पाचोमियस – तुम झूठे!'

अत्यंत विनम्र और धैर्यवान, पचोमियस ने उस असभ्य भिक्षु के जवाब में कुछ नहीं कहा। हालाँकि, भिक्षु अपनी बकबक जारी रखे हुए था। पचोमियस ने उसके मनोदशा को समझा और शांति से जवाब दिया:

'मुझे क्षमा करो, मैंने पाप किया है; लेकिन क्या तुमने कभी पाप नहीं किया?'

भिक्षु का क्रोध शांत हो गया। फिर पाचोमियस ने मठाध्यक्ष को एक तरफ ले जाकर पूछा कि मामला क्या है। मठाध्यक्ष ने उन्हें यह सलाह दी:

'मेरी बात सुनो और उसकी प्रार्थना मान लो, ताकि उसकी आत्मा शत्रु के हाथों से छीन ली जाए।'

मठाधीश ने इस सलाह पर अमल किया। पाचोमियस ने उन्हें और उनके भिक्षु दोनों को सांत्वना दी और आश्वस्त किया।

कुछ दिनों बाद, इस भिक्षु को पाचोमियस के प्रति अपनी असभ्यता पर पछतावा हुआ और वह क्षमा मांगने के लिए उनके पास गया। उसने स्वीकार किया कि पाचोमियस लोगों के कहने से भी बड़े थे, और उनसे निम्नलिखित कहा: 'ईश्वर जानता है कि यदि आप मुझ पर उदार न होते और मुझसे एक भी कठोर शब्द कह देते, तो मैं, एक पापी, संन्यासी जीवन छोड़कर फिर से एक गृहस्थ बन जाता। धन्य हैं आप, हे ईश्वर के पुरुष, क्योंकि प्रभु ने आपकी उदारता के द्वारा मुझे पुनर्जीवित किया है।'

संत पाचोमियस अक्सर भिक्षुओं को उस उत्साह की याद दिलाते थे जो उनके पास होना चाहिए। उन्होंने उनमें तपस्या के प्रयासों, अपने पापों पर शोक करने और आध्यात्मिक प्रगति के लिए उत्साह जगाने का हर अवसर का लाभ उठाया।

एक बार, अपने शिष्य थियोडोर के साथ कब्रों के पास टहलते समय, पाचोमियस ने वहाँ कई महिलाओं को बेसुध होकर रोते हुए देखा। उन्होंने थियोडोर से कहा:

'क्या तुम इन महिलाओं को उन मृतकों के लिए रोते हुए नहीं देखते, जिन्हें वे मृतकों में से जीवित नहीं कर सकतीं? तो फिर, हम—जिन्हें भिक्षु कहा जाता है—क्या अपनी आत्माओं के लिए नहीं रोएँगे, जो पाप के कारण मर चुकी हैं, और जिन्हें मसीह मानवजाति के प्रति अपने प्रेम के द्वारा मृतकों में से जीवित करेंगे!' वैसे भी, आँसू प्रशंसनीय होते हैं यदि वे अच्छे इरादे से बहाए जाएँ।

आदरणीय पाचोमियस और उनके भिक्षु न केवल अपनी मुक्ति और कल्याण में, बल्कि अपने पड़ोसियों की मुक्ति और उनके सच्चे कल्याण में भी आनंदित हुए। झूठी शिक्षाएँ विश्वासियों को भ्रमित करती हैं, जिससे चर्च के भीतर अशांति और विभाजन पैदा होता है: संत पाचोमियस इस पर दुखी हैं। ऑर्थोडॉक्स की विजय होती है, विधर्म घटता है: कितनी खुशी से भर उठते हैं तावेनी के लोगों के दिल, जिनके सिर पर आदरणीय पाचोमियस हैं! देश में अकाल या कोई अन्य सार्वजनिक विपत्ति आती है: मिस्र का सामूहिक दुख जल्द ही टावेनिसी के गवर्नर तक पहुँचता है, और यहाँ दूसरों का दुख गहरी करुणा को जगाता है।

इस प्रकार, एक अवसर पर, परम पूजनीय पाचोमियस को बताया गया कि मिस्र में एक बड़ी अकाल पड़ रही थी, जिसके साथ प्लेग भी था—जो अकाल का लगभग अविभाज्य साथी है। यह लगातार दूसरा दिन था जब पाचोमियस ने भोजन नहीं किया था। लेकिन उन्होंने इतने लोगों के भूख से होने वाले कष्ट को इतना गहराई से महसूस किया कि उन्होंने अगले दिन तक बिल्कुल भी भोजन नहीं किया, और संकट में पड़े लोगों के लिए अत्यधिक सहानुभूति से बात की: 'जब मेरे भाई भूखे हैं और उनके पास रोटी नहीं है, तो मैं कैसे खा सकता हूँ।'

और जब तक मिस्र में अकाल पड़ा रहा, तब तक पाचोमियस बड़े दुख में रहे, उन्होंने सबसे कठोर उपवास किया, और लोगों की विपत्ति के अंत के लिए प्रार्थना की।

सभी लोगों, और विशेष रूप से भिक्षुओं के प्रति गहरी सहानुभूति रखते हुए, संत पाचोमियस ने सभी के लिए भक्तिपूर्वक प्रार्थना की। उन्होंने प्रार्थना की कि प्रभु भिक्षुओं को उनके उच्च संकल्पों को पूरा करने में मदद करें और उनमें से प्रत्येक को पवित्र आत्मा का एक शुद्ध मंदिर बना दें। दूसरों के लिए प्रार्थना करते हुए, उन्होंने सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण रूप से उन लोगों के लिए प्रार्थना की जो अच्छा करते हैं, कि प्रभु उनके हृदय से सांसारिक चीजों की सभी चिंताओं को दूर कर दें, सिवाय जीवन के लिए आवश्यक चीजों के। महान बाबा ने उन लोगों के लिए भी प्रार्थना की जो अभी भी पाप के दास थे या विधर्म से भ्रमित थे, कि प्रभु उन्हें पश्चाताप की कृपा दें। उन्होंने राजाओं और सभी शासकों के लिए प्रार्थना की, कि वे ईश्वर और सभी लोगों के प्रेम में जीवें, कि वे उत्पीड़ितों के लिए न्याय करें, कि वे क्षणिक महिमा से न बहकें, और कि वे उन राजाओं जैसे हों जो ईश्वर की इच्छा करते थे और ईश्वर को प्रसन्न करते थे, जैसे राजा दाऊद। पाचोमियस ने चरवाहों के लिए भी प्रार्थना की, कि प्रभु उन्हें प्रेरितों का वफादार

उत्तराधिकारी बनने में मदद करें, प्रभु की सभी आज्ञाओं में निर्दोष रूप से चलने में, और सच्चे ज्ञान, दृढ़ प्रेरितिक विश्वास, पवित्रता और धार्मिकता से सुसज्जित होने में।

संत पाचोमियस, जो संसार की भलाई के लिए प्रार्थना करते थे, ने जब भी संभव हुआ, सभी को मदद की पेशकश की। उनके पवित्र जीवन और उनके कठोर नहीं बल्कि सौम्य शब्दों के प्रभाव में कई लोग एक सदाचारी जीवन की ओर प्रेरित हुए। कई भिक्षु उनके प्रत्यक्ष मार्गदर्शन में उद्धार पाए। लेकिन इतना ही नहीं था। संत पाचोमियस ने ईश्वर की सहायता से लोगों को उनके शारीरिक रोगों में चमत्कारिक सहायता प्रदान की।

डायोनिसियस नामक एक पादरी एक रक्तस्राव से पीड़ित महिला को मठ के द्वार पर लाया; उसे किसी से कोई मदद नहीं मिली थी, लेकिन अब वह संत पाकोमियस के वस्त्र के किनारे को छूकर पूरी तरह से ठीक हो गई थी। आदरणीय पाचोमियस ने, पवित्र तेल लगाकर, एक व्यक्ति की बेटी को ठीक किया जो उसे उनके पास लाया था; उन्होंने उसके पिता से कहा कि वह कुँवारी पवित्रता में नहीं रह रही थी और उसके पिता के माध्यम से उसे पवित्र रहने का आदेश दिया। एक अन्य व्यक्ति अपने पुत्र को, जिस पर एक अशुद्ध आत्मा का कब्ज़ा था, संत पाचोमियस के पास लाया। उस युवक को चंगा कर दिया गया। और महान बाबा ने जल्द ही एक और व्यक्ति को, जिस पर एक राक्षस का कब्ज़ा था, चंगा कर दिया। उपचार की एक समान घटना भी थी।

संत पाचोमियस ने एक बार एक ऐसे व्यक्ति के लिए प्रार्थना की जो एक अशुद्ध आत्मा से ग्रस्त था, लेकिन स्वर्ग से एक आवाज़ ने उन्हें उसके लिए प्रार्थना बंद करने के लिए कहा, क्योंकि यह दुर्भाग्य उसके अपने आध्यात्मिक भले के लिए ही हुआ था।

पेवू के मठ में एक भाई बीमार था। वह तीन दिनों से बीमारी से जूझ रहा था। पाचोमियस के पास जाकर, उसने अपनी बीमारी से ठीक होने के लिए आँसू भरी आँखों से प्रार्थना करने का अनुरोध किया, यह बताते हुए कि कई आम लोग ठीक हो जाते हैं। पाचोमियस ने उससे कहा: 'साधारण लोगों का विश्वास उनके शरीर को चंगा करता है, और ईश्वर द्वारा प्रदान की गई चंगाई के माध्यम से, वे अच्छा करने के लिए प्रेरित होते हैं। जहाँ तक हम, मसीह के सेवकों का सवाल है, हमारा विश्वास वह अमर विश्राम है जो ईश्वर हमें आने वाली दुनिया में प्रदान करता है; बीमारी के बिना, दुख के बिना, हम आज्ञा के विपरीत कार्य कर रहे होते।'

पाचोमियस की इस सलाह ने उस बीमार भिक्षु को सांत्वना दी।

कुछ समय बाद, जब उसकी बीमारी बनी रही, तो वह भाइयों के साथ पाचोमियस के पास आया। तब सभी ने महान बाबा से इस भाई के स्वास्थ्य के लिए प्रार्थना करने का आग्रह किया। पाकोमियस ने प्रार्थना करना शुरू किया, लेकिन तुरंत एक आवाज़ सुनाई दी जो कह रही थी: 'इस भाई के लिए प्रार्थना मत करो, क्योंकि प्रभु ने उसे शैतान की चालाकियों से बचाने के लिए यह बीमारी भेजी है।'

तब सभी भाइयों ने प्रभु की स्तुति की, जो अपने सेवकों की परवाह करते हैं और उनका उद्धार सुनिश्चित करते हैं।

यद्यपि प्रभु ने पाचोमियस के हाथों से कई चमत्कारिक उपचार किए, महान बाबा हमेशा आत्मा के उपचार—मूर्ति पूजा, झूठ, व्यभिचार और हर तरह की अशुद्धता, और वास्तव में हर पाप से मुक्ति—को सबसे उच्च और सबसे आवश्यक मानते थे। और शरीर को उपचार देते हुए, वह हमेशा व्यक्ति की आत्मा को भी ठीक करने का प्रयास करते थे।

संत पाचोमियस के परिश्रम के फल महान थे। उनके मार्गदर्शन में भिक्षुओं ने पूर्णता की उच्चतम डिग्री प्राप्त की। यहाँ तक कि आलसी और दुराचार में गहराई से डूबे हुए लोग भी सुधर गए और पूर्णता की उच्चतम डिग्री प्राप्त करने का प्रयास करते थे। ऐसे महान तपस्वियों के बीच, किसी भी विशेष तरीके से अलग दिखना मुश्किल था। यही कारण है कि इन भिक्षुओं में से बहुत कम नाम हमें मिले हैं। यहाँ कुछ उत्कृष्ट तपस्वी हैं।

हम माली योना में परिश्रम, धैर्य और शरीर से वैराग्य का एक उदाहरण देखते हैं। उन्होंने पचहत्तर वर्ष मठ के श्रम में व्यतीत किए। बगीचे के सभी पेड़ उन्होंने ही लगाए थे, फिर भी उन्होंने कभी उनका फल नहीं चखा। ये फल उन भिक्षुओं को पोषण और आराम प्रदान करते थे जो योना से मिलने आते थे। उनका वस्त्र सबसे साधारण था, जो मुश्किल से उनके शरीर को ढकने वाला एक चमड़े का लबादा जैसा था। वे पवित्र संस्कार प्राप्त करने से पहले ही मोटे ऊन का एक वस्त्र पहनते थे, और फिर तुरंत उसे उतार देते थे; यही एक वस्त्र उनके पूरे जीवन भर चला। उन्होंने कभी भी आग पर पकाया गया कोई व्यंजन नहीं खाया। वह अपना नियमित भोजन, जिसमें रोटी और सिरका शामिल था, केवल शाम को ही करते थे, और तब भी तब तक नहीं खाते थे जब तक वे पूरी तरह से तृप्त नहीं हो जाते थे। वे शारीरिक आराम के बारे में

बल्कुल भी नहीं सोचते थे, और बीमार होने पर भी, यहाँ तक कि जब वे मौत के करीब थे, तो भी उन्हें अस्पताल जाने के लिए मनाया नहीं जा सका: वे खुद को दूसरों की सेवाओं को प्राप्त करने के अयोग्य मानते थे। सूरज की तपती किरणों के नीचे पूरे दिन बगीचे में काम करने के बाद, योना इस कठिन श्रम को केवल शाम के समय ही बंद करते थे। जब रात होती, तो वे अपनी कोठरी में चले जाते, अपनी कुर्सी पर बीच में बैठ जाते और आधी रात तक रस्सियाँ कतरते रहते, अपने होठों और अपने दिल से ईश्वर की स्तुति करते हुए। तब जाकर वह रस्सियों को पकड़े हुए ही अपनी कुर्सी पर थोड़ी देर के लिए सोते थे। ऊर्जा से भरपूर, बाबा योना जल्द ही उठकर प्रार्थना में लग जाते और फिर बगीचे में काम करने लगते। रात में, प्रार्थना और काम करते समय, वह कभी भी दीपक नहीं जलाते थे। उन्होंने प्रशंसा के योग्य कई अन्य कार्य किए। वे अपनी कुर्सी पर बैठे-बैठे ही मर गए: रस्सियाँ उनके हाथों में ही रह गईं। जब भाइयों ने उन्हें दफनाने की कोशिश की, तो वे उनके पैरों को एक साथ नहीं ला सके, न ही उनकी बाहों को उनके शरीर से लगा सके, और न ही वे उनके सामान्य चमड़े के कपड़े उतारकर उन्हें एक साफ ऊनी चादर में लपेट सके। उन्होंने उन्हें ठीक वैसे ही दफनाया जैसे वे मरे थे, केवल एक ऊनी कफ़न पहने हुए। पाचोमियस के मठ में अथिनोडोरस नाम का एक कुष्ठरोगी भिक्षु था। यह भिक्षु एक निरंतर, क्रूर बीमारी के सामने धैर्य, सौम्यता और लगन का एक दुर्लभ उदाहरण था। एक कुष्ठरोगी के रूप में, दूसरों से अलग रहते हुए, अथिनोडोरस रोटी और नमक के अलावा कुछ नहीं खाता था, और वह भी शाम को हर दो दिन में एक बार ही। समुदाय के सभी संतों की तरह, वह हर दिन चटाई बुनता था, भले ही कुष्ठ रोग से क्षत-विक्षत उसके हाथ इस काम से खून से लथपथ हो जाते थे। दिन के दौरान, वह खुद को आराम करने के लिए कभी लेटने नहीं देता था। धीरे-धीरे, उसने पवित्र धर्मग्रंथों के अंशों को याद कर लिया। सोने से पहले, वह लंबी प्रार्थना करते थे, और आधी रात को वे सामूहिक प्रार्थना सेवा में जाते थे। लेकिन उनके बारे में सबसे उल्लेखनीय बात उनकी बीमारी को धैर्यपूर्वक सहन करना था। संत पाचोमियस अक्सर उन्हें विभिन्न मठों में भेजते थे, इस विश्वास के साथ कि इस भिक्षु का केवल दर्शन ही कई लोगों में धार्मिक उत्साह जगा देगा। एक अवसर पर, एक दयालु भिक्षु उनकी कोठरी में आए। वे बाबा एथेनोडोरस के धैर्य और उनकी बीमार काया देखकर गहरे तक प्रभावित हुए। भाईचारे के स्नेह से, इस भिक्षु ने उन्हें चटाई बुनने का काम बंद करने के लिए कहा, क्योंकि इससे उनके हाथों में भयंकर दर्द होता था। साधु ने कहा कि उनमें से कोई भी खुशी-खुशी उसके लिए यह काम कर लेगा और यह उन पर बिल्कुल भी बोझ नहीं होगा। वे तो पहले से ही प्रभु की खातिर बीमारों और राहगीरों की सेवा करते थे। लेकिन धैर्यवान अथिनाडोरस, जो हर व्यक्ति और विशेष रूप से एक भिक्षु के लिए परिश्रम के महत्व को अच्छी तरह जानते थे, ने दृढ़ता से अपने शुभचिंतक से कहा कि उसके लिए काम करना बंद करना असंभव था।

दयालु भाई ने उसे कम से कम अपने हाथों पर तेल मलने की सलाह दी, ताकि वे कुछ नरम हो जाएँ और फटने बंद हो जाएँ। अथिनाडोरस ने इस सलाह पर अमल किया। लेकिन तेल से उसके हाथ और भी नाजुक हो गए; काम करते समय उसे और भी अधिक दर्द महसूस हुआ। पाचोमियस ने देखा कि यह भाई अब्सीनियाई तेल का उपयोग कर रहा था। अब्बा ने भाई जैसी फटकार लगाते हुए एथेनोडोरस को बताया कि उसे अपनी आशा तेल में नहीं रखनी चाहिए, बल्कि उसे पूरी तरह से ईश्वर की इच्छा पर भरोसा करना चाहिए, क्योंकि यह कष्ट उस पर ईश्वर की व्यवस्था के बिना नहीं आया था, और न ही यह स्वयं और दूसरों के लिए लाभदायक था। एथेनोडोरस ने अपना दोष स्वीकार किया और पाचोमियस से क्षमा याचना की। फिर उसने इस पाप पर एक पूरा वर्ष शोक मनाया। पाचोमियस के समुदाय के भिक्षुओं ने स्वयं के प्रति इसी कठोरता का पालन किया था। संत पाचोमियस जानते थे कि किसिके प्रति कठोर हुआ जाए और किसिके प्रति उदारता दिखाई जाए।

एक दिन, दो युवक पाचोमियस के पास आए। वे दोनों भिक्षु बनना चाहते थे। उनमें से एक, सिल्वानस, जो सोलह या सत्रह साल का लड़का था, अब तक कामुक अशुद्धता में जीवन यापन कर रहा था। पाचोमियस ने निम्नलिखित विचारों के साथ उनका स्वागत किया: 'मैं उन्हें भिक्षु बनाऊँगा, और यदि दुष्ट जीवन जीने वाले युवक ने पश्चाताप किया है, तो मैं उसे रखूँगा; लेकिन अगर उसने पश्चाताप नहीं किया है, तो मैं उसे बाहर निकाल दूँगा।'

अब्बा पाचोमियस ने सिल्वानस से अकेले में बात की, और उस युवक ने अपने अतीत के पापों के बारे में खुलकर बताया। उसने एक अलग इंसान बनने और अब से पाप न करने का वादा किया। लेकिन कुछ ही समय बीता और सिलवानस अपने पुराने पापों में वापस पड़ गया। बाबा पाचोमियस पहले ही उसे निकालने का मन बना चुके थे, ताकि उसका उदाहरण मठ में किसी को भ्रष्ट न कर दे। बाबा ने एक धार्मिक भिक्षु को बुलाया और उसे सिलवानस और पाँच अन्य भिक्षुओं के साथ उस मठ के लिए रवाना होने का निर्देश दिया, जिसे उन्होंने निर्दिष्ट किया था, और वहाँ उसका इंतजार करने के लिए कहा।

अगले दिन, उनका इरादा सिल्वानस को समुदाय से निष्कासित करने का अपना निर्णय घोषित करने का था। लेकिन उसी दिन की पूर्व संध्या पर, रात के दौरान, ईश्वर की कृपा उस युवक के हृदय को छू गई, और उसने दृढ़ संकल्प लिया कि वह अपने जीवन के तरीके को बदलेगा और अपने हृदय का सुधार करेगा। उसी रात वह अपने बिस्तर से उठा, उस भक्तिमय भाई को ढूंढ निकाला जो उसे उस मठ तक साथ ले जाने वाला था, उसके बगल में बैठ गया, और जोर-जोर से रोने लगा। जब उस भाई ने उससे पूछा कि वह क्यों रो रहा है, तो सिलवानस ने उत्तर दिया: 'मैं इसलिए रो रहा हूँ क्योंकि मैं परमेश्वर के भय के बिना जी रहा हूँ; यदि मैं प्रभु का भय मानता, तो मैं हमारे परमेश्वर के पुरुष, अबा पाचोमियस के वचनों पर ध्यान देता।'

दयालु भिक्षु ने उसे सांत्वना देने की कोशिश की। उन्होंने उस युवक को यह सलाह दी: 'आज तक तुम परमेश्वर के भय के बिना जीए हो, लेकिन अब अपनी आत्मा को उन सभी आज्ञाओं के प्रति समर्पित कर दो जो उन्होंने तुम्हें दी हैं, और यदि तुम इसका पालन करोगे तो तुम परमेश्वर का भय प्राप्त करोगे।'

सुबह, संत पाचोमियस दो भिक्षुओं के साथ मठ में पहुँचे। उन्होंने चुपके से सिलवानस को बुलाया और उससे सुबह से लेकर दोपहर के सात बजे तक बात की। इस बातचीत के दौरान, उन्होंने उस युवक की मानसिक स्थिति को उजागर किया, उसकी बड़ी गलती की ओर इशारा किया, और घोषणा की कि वह उसे अब और मठ में नहीं रख सकते। महान बाबा के शब्द उस युवक के हृदय को गहराई से छू गए। वह पहले से ही आत्म-सुधार, अपने हृदय को शुद्ध करने, और आध्यात्मिक पुनर्जन्म के बारे में सोच रहा था, और अब उसने सुना कि उसे संतों के उस समुदाय से निष्कासित कर दिया जाएगा, जिसे वह अपने पूरे दिल से प्यार और सम्मान करता था। कड़वी आँसुओं के साथ, सिल्वान पाचोमियस के पैरों में गिर पड़ा। बड़े भिक्षु से दया की भीख माँगते हुए, उसने कहा: 'इस बार मैं पश्चाताप करूँगा और आप जो भी आज्ञा देंगे, वह सब करूँगा, केवल आपके लिए नहीं, बल्कि उस ईश्वर के लिए, जो आप में वास करते हैं और जिन्होंने मेरी अशुद्धता को आपको प्रकट किया है।'

उसने वरिष्ठ से निवेदन किया कि उसे मठ से न निकाला जाए, बशर्ते वह अपना वादा फिर से न तोड़े। सिल्वान के पश्चाताप की ईमानदारी स्पष्ट थी। पाचोमियस थोड़ी देर के लिए एक एकांत स्थान पर चले गए और उसके लिए प्रार्थना की, कि प्रभु उसे अपना वचन निभाने में दृढ़ता प्रदान करें। फिर उन्होंने धर्मनिष्ठ भिक्षु सनामोन को बुलाया और सिलवानस की देखभाल का दायित्व सौंपा, तथा उस युवक के व्यवहार के बारे में बताते हुए उन्हें इसे गुप्त रखने के लिए कहा। पाचोमियस ने इस भिक्षु को चेतावनी दी कि सिल्वानस को सुधारने में उसे कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा, और तब ही उसने उस युवक को उसके हवाले किया जब उस अच्छे तपस्वी ने उसके आध्यात्मिक पुनर्जन्म का सावधानीपूर्वक ध्यान रखने के लिए सहमति दे दी। फिर पाचोमियस ने सिलवानस को बुलाया और उसे निर्देश दिए, जिसमें उन्होंने उसे हमेशा इस वरिष्ठ के साथ रहने, उनके जीवन के तरीके का अनुकरण करने, कभी उनका साथ न छोड़ने और बिना अनुमति के कुछ भी न करने के लिए कहा। सिलवानस ने पाचोमियस के आदेश का पालन करने का वादा किया। पाचोमियस ने उस मठ के मठाधीश से कहा कि किसी भी परिस्थिति में उन्हें इन दो भिक्षुओं को अलग नहीं करना चाहिए; लेकिन उन्होंने सिलवानस के अतीत के व्यवहार के बारे में कुछ भी प्रकट नहीं किया। अब ईश्वर के प्रति प्रेम से भरकर, सिल्वन ने ऊपर से मदद माँगी और हर दुख और अपमान को अपने लिए योग्य समझकर सहने के लिए पूरी तरह तैयार रहने का वादा किया; उसने वादा किया कि वह अपने दिल पर लगातार नज़र रखेगा; सिल्वानस ने अपना व्रत पूरा किया। वह लगातार अपने तपस्वी प्रयासों को तीव्र करता रहता है। वह दिन में केवल एक बार ही भोजन करता है और अपनी प्यास आंशिक रूप से बुझने तक ही पानी पीता है। वह भक्तिपूर्वक प्रार्थना करता है और रात का अधिकांश समय प्रार्थना में ही बिताता है; और जब अंततः नींद उस पर हावी हो जाती है, तो वह अपनी चटाई पर बैठ जाता है, और खुद को दीवार से सहारा लेने नहीं देता। वह यह सब बिना किसी अहंकार के, अत्यंत विनम्रता के साथ करता है, और उसके मन में केवल अपने हृदय की शुद्धि, पापी इच्छाओं का दमन, और ईश्वर के प्रति सबसे पूर्ण प्रेम की प्राप्ति का विचार रहता है। उनकी विनम्रता इस हद तक थी कि वे अपने लिए खाए जाने वाले सबसे गरीब सब्ज़ियों का चुनाव करते थे और चटाई और टोकरी बुनने के लिए सबसे खराब सरकंडों को प्राप्त करने का प्रयास करते थे, और खुद को सभी संतों में सबसे बुरा मानते थे।

थोड़े ही समय में, सिलवानस ने आत्मा की पूर्ण पवित्रता प्राप्त कर ली। पाचोमियस स्वयं उस युवा तपस्वी की आध्यात्मिक प्रगति को देखकर प्रसन्न हुआ, जिसने पश्चाताप के फल दिए थे।

एक दनि, सल्विान के रहने वाले मठ के भ्राता बेंत इकट्ठा कर रहे थे। इस अवसर पर पाकोमयिस भी उनके साथ थे, जो उन्हें ईश्वर के वचन से आध्यात्मकि रूप से प्रोत्साहति कर रहे थे। अंत में, उन्होंने भकि्षुओं से कहा:

'मैं आपको उस चमत्कार के बारे में बताना चाहता हूँ जो प्रभु ने आपके बीच कयिा है। आप में से एक ऐसा है जो दूसरे जन्म के माध्यम से परविर्तति हो गया है और एक नया मनुष्य बन गया है, ताकि वह हृदय की पवत्रिता में सद्धि हो गया है।'

पचोमयिस ने यह भी बताया कि, उच्च स्तर की आध्यात्मकि पवत्रिता का स्वामी होने के साथ-साथ, यह भाई घमंड से पूरी तरह मुक्त था, और समुदाय का एक भी सदस्य आत्मा की पवत्रिता और गरमिा में उसकी बराबरी नहीं कर सकता था। भकि्षुओं को यह एहसास हो कर आश्चर्य हुआ कि पचोमयिस उनके सामने सल्विानस के बारे में ही बात कर रहे थे। अब पूरा समुदाय सलिवान का अत्यधकि सम्मान करने लगा। एक के बाद एक, वे उनसे शकि्षा का एक वचन सुनने के लिए उनके पास आते थे। अब वे उन्हें अब्बा सलिवान के अलावा कुछ और नहीं कहते थे। लेकनि उस वनिम्र भकि्षु ने, बड़ी नम्रता से, उनसे कहा: 'क्या यह सच है कि मैं आपका अब्बा हूँ?'

उन्होंने ऐसी ऊँचाई तक पहुँचने के लिए परम परशि्रम कयिा था। उसके बाद, वह अधकि समय तक जीवति नहीं रहे। उनकी मृत्यु ईश्वर और अपने अंतरात्मा के साथ शांति में हुई।

प्रभु ने संत पाचोमयिस को मठवासी जीवन के भवषि्य के भाग्य का प्रकटीकरण कयिा। एक अवसर पर, कई भाई पैकोमयिस के साथ खपच्चयिाँ काटने के लिए नकिले। कुछ भकि्षु उनके साथ गए। उनमें पैकोमयिस के प्रयि शषि्य, संत थयिोडोर भी थे। जैसे ही वे तट से नौका द्वारा प्रस्थान करने वाले थे, पैकोमयिस ने थयिोडोर से कहा: 'जल्दी करो और नाव में चढ़ जाओ।'

थयिोडोर ने बनिा यह पूछे कि क्यों, तुरंत वरषि्ठ की आज्ञा का पालन कयिा, नाव में बैठ गया और उस पुस्तक को साथ ले जाने का वचिार भी नहीं कयिा जसिे वह उन दनिों आत्मकि उन्नति के लिए पढ़ रहा था। वह इस बात से प्रसन्न था कि वरषि्ठ ने उसे आज्ञाकारति दखिाने का अवसर दयिा था, यह पूछे बनिा कि उसे कहाँ या क्यों ले जाया जा रहा है, ठीक उसी तरह जैसे अब्राहम ने, जसिने ईश्वर की आज्ञा पर अपना देश छोड़ दयिा था, भले ही वह नहीं जानता था कि वह कहाँ जा रहा है। जब नाव सरकंडों से भर गई, तो पचोमयिस ने कुछ वास्तव में भयानक देखा। उसे ऐसा लगा कि कुछ भकि्षु शेरों के जबड़ों में, कुछ मगरमच्छों के जबड़ों में, कुछ आग के बीच में, और कुछ एक पहाड़ के नीचे थे जसि पर लहरें टकरा रही थीं - वे पहाड़ पर चढ़ने की कोशशि कर रहे थे, लेकनि उनके सभी प्रयास व्यर्थ साबति हुए। वे सभी चल्लिाए: 'प्रभु, हमारी मदद करो!'

भकि्षुओं को ऐसी पीड़ा में देखकर, पाचोमयिस ने अपने कंधों पर रखा खपच्चयिों का बंडल ज़मीन पर फेंक दयिा, स्वर्ग की ओर अपनी बाहें फैला दीं और इन दुर्भाग्यशाली आत्माओं के लिए प्रभु से मदद मांगते हुए बहुत ज़ोर से प्रार्थना करने लगा। यह देखकर, सभी भकि्षुओं ने भी अपने बोझ एक तरफ रख दिए और प्रार्थना करने लगे। भकि्षुओं की भीड़ द्वारा की गई यह भक्तपूर्ण प्रार्थना शाम तक जारी रही। पाचोमयिस को यह प्रकट कयिा गया कि यह दर्शन उस समय से संबंधति था जब वह जीवति नहीं रहेगा। उस शाम, रात्रभिोज पर, पाचोमयिस ने कुछ भी नहीं खाया। संत थयिोडोर, जसिे खपच्चयिाँ इकट्ठी की जा रही थीं, तब एक भकि्षु के साथ कसिी काम से बाहर भेजा गया था, उसे इस बात का कुछ भी पता नहीं था कि क्या हुआ था। बाद में, उसे पाचोमयिस के दर्शन के बारे में बताया गया। यह जानकर कि वरषि्ठ ने कुछ भी नहीं खाया था, थयिोडोर ने कुछ ब्रेड भगिोई, उसे कुछ अन्य भोजन के साथ तैयार कयिा, और एक साथी भकि्षु के माध्यम से पाचोमयिस को संदेश भेजा कि वह उनसे मलिना चाहता है। यह सुनकर कि थयिोडोर उन्हें बुला रहे थे, पाचोमयिस तुरंत उनके पास गए। कई भकि्षुओं की तक़दीर के बारे में सोचकर, वरषि्ठ अभी भी रो रहे थे। और उन्होंने थयिोडोर से कहा कि उसे भी प्रभु के सामने रोना चाहिए। उसी क्षण, एक भाई ने टप्पिणी की कि थयिोडोर ने अभी तक कुछ भी नहीं खाया है। पाचोमयिस ने उससे जवाब दयिा: 'यह तुम्हारा क्या मामला है? उसे न खाने दो और न रोने दो।'

वरषि्ठ ने अपने प्रयि शषि्य को और अधकि दुखी न करने के लिए, थयिोडोर द्वारा दयिा गया भोजन स्वयं खा लयिा, हालांकि उनका दुख अभी भी उनके दलि में बहुत गहरा था।

अपने जीवन के अंतमि वर्षों में, संत पाचोमयिस को मठवाद के भाग्य के बारे में एक और दर्शन हुआ। एक अवसर पर, अपनी कोठरी में अकेले रहकर, पाचोमयिस ने ग्यारहवें घंटे (अर्थात्, शाम के पाँच बजे) से आधी रात तक प्रार्थना की। अचानक, एक तेज प्रकाश ने उसके कमरे को रोशन कर दयिा। उसने एक आवाज़ सुनी: 'जो पीढ़ी तुम्हारे बाद आएगी, वह ईश्वर को प्रयि लगने वाला जीवन जएिगी, ठीक वैसे ही जैसे इन दनिों में।'

तब उसे यह प्रकट हुआ कि मठ कितने व्यापक हो जाएँगे। लेकिन फिर, उसे आश्चर्य हुआ जब उसने एक बहुत गहरी, खड़ी और अंधेरी खाई देखी। अनगिनत भिक्षु इस खाई में भटक रहे थे, एक-दूसरे से अलग नहीं पहचान पा रहे थे और एक-दूसरे से टकरा रहे थे। कुछ लोग इस खाई से बाहर निकलने के लिए बेताब कोशिशें कर रहे थे । उनमें से कुछ आधे रास्ते तक पहुँचने में सफल हो गए, लेकिन फिर सिर के बल गिर पड़े। कई दयनीय स्वर में दया की भीख माँग रहे थे। कुछ अंततः इस खाई के बिलकुल शीर्ष तक पहुँचने में सफल हो गए – वही मुहाना जिससे प्रकाश इस भयानक अँधेरे को पाचोमियस के लिए रोशन कर रहा था; और उन्होंने तब ईश्वर की बहुत स्तुति की। होश में आते ही, पाचोमियस को एहसास हुआ कि इस दर्शन ने उन्हें उन भिक्षुओं की आत्माओं की भविष्य की स्थिति दिखाई थी जो बुरा व्यवहार करते थे - चाहे अपनी ही लापरवाही से या खराब नेताओं की गलती से। बड़े दुख के साथ, पाचोमियस ने मठों और भिक्षुओं पर दया की याचना करते हुए ईश्वर से पुकारा। वह उनके लिए लगभग निराशा में था। ईश्वर से उसकी पुकार के उत्तर में, उसने एक आवाज़ सुनी: 'पाचोमियस, यह न भूलो कि तुम एक मनुष्य हो: सब कुछ मेरी दया पर निर्भर करता है।'

पैकोमियस ने जमीन पर सिर झुकाकर ईश्वर से अपने लिए दया की प्रार्थना की। फिर उसे स्वयं उद्धारकर्ता मसीह के दर्शन से सांत्वना मिली, जो अकथनीय सुंदरता वाले एक युवक के रूप में प्रकट हुए, जिसके सिर पर काँटों का मुकुट था। मसीह ने उन्हें बताया कि उनके शिष्य उन्हें एक ऐसे दीपक के रूप में देखेंगे जिससे वे अपने लिए प्रकाश प्राप्त कर सकेंगे। उनका आचरण नियमों के अनुसार होगा। उनका आंतरिक स्वभाव अच्छा होगा। बाद के भिक्षु उनके उदाहरण का पालन करेंगे। लेकिन एक समय आएगा जब विश्वास कमजोर हो जाएगा और दुर्गुण मजबूत हो जाएंगे। उस समय के भिक्षुओं की पहचान लापरवाही और इंद्रिय सुखों की प्रवृत्ति से होगी। आध्यात्मिक अंधकार गहरा जाएगा। वे सांसारिक वस्तुओं के स्वामित्व के लिए आपस में संघर्ष करेंगे। सच्चे तपस्वी बहुत कम होंगे। उनके कोई आध्यात्मिक गुरु नहीं होंगे। उन्हें अच्छा करने और बुराई से दूर रहने के लिए खुद को प्रेरित करना होगा। बेशक, पहले के संतों की तुलना में उनके कर्म बहुत कम महत्व के होंगे। हालाँकि, उन्हें पहले वालों के बराबर का इनाम मिलेगा, क्योंकि उन्हें आधुनिक जीवन की कठोर परिस्थितियों से बहुत कष्ट सहना होगा, जिन्हें संतों के लिए सहना मुश्किल है। जब यह सब पैकोमियस को प्रकट हुआ तो वह अत्यंत प्रसन्न हुआ। कई दिनों तक उन्होंने भोजन नहीं किया। अगले दिन, जब भ्राता प्रार्थना के लिए इकट्ठा हो रहे थे, तो बाबा उनके साथ चर्च गए। वहाँ, प्रार्थना के बाद, उन्होंने इकट्ठा हुए भिक्षुओं को एक मार्मिक प्रवचन दिया।

उन्होंने कहा, 'यह जीवन जल्दी बीत जाता है, और मृत्यु हमसे नजदीक आ रही है। मृत्यु हमें अचानक आ सकती है, जब हम पूरी तरह से तैयार नहीं होते हैं। इसलिए एक व्यक्ति को हमेशा ईश्वर की आज्ञाओं का पालन करना चाहिए, और एक भी आज्ञा की अवहेलना नहीं करनी चाहिए। धर्मी लोगों के आनंद और पापियों के कष्टों का विचार हमेशा हमारे साथ होना चाहिए।' हमारे भाइयों की कब्रों को देखकर, हम मानव जीवन की क्षणभंगुरता पर, इस तथ्य पर विचार किए बिना नहीं रह सकते कि इस जीवन में ऐसा कुछ भी नहीं है जिस पर कोई गर्व कर सके, ऐसा कुछ भी नहीं है जिससे कोई जुड़ा रह सके। संत पाचोमियस भिक्षुओं को गंभीरता से चेतावनी देते हैं कि दुनिया को त्यागने के बाद भी, यदि वे अपने कर्तव्य के विपरीत कार्य करते हैं, तो वे ही सबसे दयनीय होंगे, यदि वे ईश्वर के बजाय शैतान और पाप की सेवा करते हैं। महान बाबा अपने शिष्यों को उनके उद्धार के लिए लगन से परिश्रम करने, सब कुछ संभव करने और हमेशा ईश्वर में अपनी आशा रखने के लिए आमंत्रित करते हैं।

अपने तपस्वी कार्यों से बहुत कमजोर हो जाने के कारण, पूजनीय पाचोमियस ईस्टर के तुरंत बाद गंभीर रूप से बीमार पड़ गए, यह एक ऐसी बीमारी थी जिससे पहले ही कई भिक्षु मर चुके थे। जब भी कोई इस बीमारी की चपेट में आता था, तो उन्हें तेज बुखार चढ़ने लगता था, उनकी आँखें लाल हो जाती थीं, उनका रंग बदल जाता था, और उन्हें एक प्रकार का घुटन जैसा अनुभव होता था। सभी मठों में, एक के बाद एक भिक्षु मर रहे थे, जबकि और भी अधिक बीमार थे। जब पाचोमियस बीमार पड़ गए, तो थियोडोर ने एक पिता के स्नेह से उनकी सेवा की। महान बाबा की बीमारी कई दिनों तक चली। वह धीरे-धीरे कमजोर होते गए। बुखार असाधारण था। तीन दिनों तक, उस वरिष्ठ ने बिल्कुल भी भोजन या पानी नहीं लिया। फिर भी, उन्होंने भाइयों के साथ बातचीत जारी रखी। पचोमियस चालीस दिनों तक चिकित्सालय में रहे। उनकी देखभाल अन्य सभी रोगियों के समान ही की गई। वह इतने कमजोर हो गए थे कि भारी कंबल भी उन पर भारी पड़ रहा था। उन्होंने थियोडोर से उन्हें एक हल्की कंबल से ढकने के लिए कहा। थियोडोर तुरंत एक हल्की, और वह भी नई, कंबल लेकर आए और उन्होंने उस वरिष्ठ को ओढ़ा दी। पाचोमियस ने देखा कि उनके साथ विशेष व्यवहार किया जा रहा है और

उन्हें यह अनुचित लगा। वरिष्ठ को डर था कि इससे कोई प्रलोभन में पड़ सकता है। तब थियोडोर ने वह कंबल उनसे हटा दिया और उन्हें अन्य सभी मरीजों की तरह ही एक और कंबल ओढ़ा दिया।

भिक्षुओं को, और विशेष रूप से उनके अधीनस्थों को, कई उपयोगी शिक्षाएँ देने के बाद, संत पाचोमियस का निधन पाशॉन्स महीने के चौदहवें दिन[3722] , सबसे अधिक संभावना है कि वर्ष 348 में, 53 वर्ष की आयु में हुआ।

थेओडोर ने महान पाचोमियस की आँखें बंद कर दीं। भाई लोग पवित्र अवशेषों की ओर दौड़े, और आँसुओं से अबा पाचोमियस के होंठों और पवित्र शरीर को चूमने लगे। उन्होंने उस पूरे दिन और पूरी रात उनकी आत्मा की शांति के लिए प्रार्थनाएँ कीं। सुबह, उनके लिए रक्तहीन बलिदान अर्पित किया गया। फिर, भजन गाते हुए, भाइयों ने पाचोमियस के शरीर को पहाड़ पर ले जाकर रीति-रिवाज के अनुसार दफना दिया। यह पचोंस महीने के पंद्रहवें दिन की बात है।

मठ लौटने पर, भाइयों ने एक-दूसरे से बड़े दुख के साथ कहा:

'सचमुच, आज हम अनाथ हो गए हैं।'

ट्रोपारियन, स्वर 8:

आपने अपने आँसुओं की धाराओं से बंजर रेगिस्तान को उपजाऊ बनाया, और अपने गहरे निश्वासों से सौ परिश्रम उत्पन्न किए; आप संसार के लिए एक दीपक थे, जो चमत्कारों से जगमगाता था, पचोमियस, हमारे पिता। हमारे ईश्वर मसीह से प्रार्थना करें कि हमारी आत्माएँ उद्धार पाएँ।

कॉन्टाकियन, स्वर 2:

आप पृथ्वी के छोर तक एक उज्ज्वल दीपक के रूप में प्रकट हुए, और अपने मठवासी समुदायों के साथ आपने वीरान जगह को शहरों में बदल दिया: आपने स्वयं को सूली पर चढ़ाया, अपना क्रूस अपने कंधों पर उठाया, और संयम के द्वारा आपने अपने शरीर को थका दिया, हम सभी के लिए अथक प्रार्थना करते हुए।

हमारे पूजनीय पिता यूफ्रोसिनिस, पस्कोव के चमत्कारिक संत की स्मृति

१५ मई को स्मरणोत्सव

पवित्र शहीद एलेज़र[3723] जाफेत के अधिकार क्षेत्र में उत्तर और पश्चिम के बीच स्थित रूस के महान द्वीप से, उत्तरी भूमि से, ईश्वर-संरक्षित महान शहर पस्कॉव[3724] के आसपास से आए थे। उनका जन्म और पालन-पोषण वडिलबिई[3725] गाँव में हुआ था, जो पस्कॉव शहर से तीस पोप्रीश्ची[3726] दूर स्थित है। उनके मांसपेशी माता-पिता कौन थे, यह अज्ञात है; केवल इतना ज्ञात है कि वह आत्मा से जन्मे थे, और उनके पिता परमेश्वर थे, जिन्होंने उन्हें जल और आत्मा से उत्पन्न किया, जबकि उनकी माता संतों की ऑर्थोडॉक्स चर्च थी, और इसलिए उन्हें सच्चे विश्वास और शिक्षा में पाला गया। जब वे वयस्क हुए, तो उनके माता-पिता ने उन्हें पवित्र धर्मग्रंथों का अध्ययन करने के लिए भेजा, और उन्होंने जल्द ही दिव्य धर्मग्रंथों को इतनी स्पष्ट रूप से समझ लिया कि वे न केवल मौखिक रूप से उनका

[3722] पाशोंस का महीना हमारी मई के अनुरूप है, जो 26 अप्रैल से शुरू होता है। इसलिए, 14 पाशोंस 9 मई को होता है।

[3723] यह वह नाम था जो यूफ्रोसिनिस ने दुनिया में धारण किया था।

[3724] जिस क्षेत्र से वह आदरणीय भिक्षु आता है, उसका वर्णन इतना अलंकृत है कि शब्दों का अर्थ समझना मुश्किल हो जाता है। इस क्षेत्र को एक द्वीप कहा जाता है, शायद इसलिए क्योंकि उत्तर में फिनलैंड की खाड़ी और लादोगा झील हैं, जो नेवा नदी द्वारा जुड़ी हुई हैं; पूर्व में वोल्खोव नदी बहती है, जो लादोगा झील और इल्मेन झील को जोड़ती है; जबकि पश्चिम में पेइपस झील है, जो नारोवा नदी द्वारा फिनलैंड की खाड़ी से जुड़ी है, और उससे आगे दक्षिण में – पेइपस झील का ही विस्तार, प्सकोव झील है। यह बाद वाली झील दक्षिण में वेलीकाया और शेलोन्या नदियों द्वारा इल्मेन झील से जुड़ी है। इस क्षेत्र के उत्तर में वोडी और इझोरा के गैर-स्लाविक जनजातियाँ, और पश्चिम में - चुद, लिव्स और लिथुआनियाई रहते थे, जबकि स्वयं यह क्षेत्र स्लावों द्वारा बसा हुआ था, जिन्हें, यह मानना चाहिए, 'याफेथ की विरासत' कहा जाता है।

[3725] वडिलब्ये प्सकोव काउंटी में एक गाँव है। यह प्सकोव के आदरणीय निकिन्द्र का जन्मस्थान था, जिनका पर्व दिवस 24 सितंबर को मनाया जाता है।

[3726] पोप्रीश्चे दूरी की एक इकाई है जो 690 सैज़ेन्ज़ के बराबर होती है।

स्पष्टीकरण दे सकते थे, बल्कि अपने स्वयं के शिक्षाप्रद लेखन भी रच सकते थे। इसी समय, उन्होंने दार्शनिक विज्ञानों का भी अध्ययन किया, जिससे स्वयं वरिष्ठ भी उनकी बुद्धिमत्ता से चकित हो गए और उन्होंने उनकी बहुत प्रशंसा की। वह कभी भी खेल-कूद या मनोरंजन की ओर झुकाव नहीं दिखाता था, बल्कि सबसे बढ़कर पवित्र धर्मग्रंथों और चर्च के भजनों को पढ़ना पसंद करता था; इसके अलावा, कम उम्र से ही उसने स्वयं को कठोर संयम के लिए समर्पित कर दिया था, और पूरी तरह से मीठी चीज़ों से परहेज़ करता था। अपने बेटे में इतनी आत्म-अनुशासन देखकर, उसके माता-पिता ने उससे कहा:

'बेटा! तुम इतने कठोर जीवन-यापन से अपना शरीर क्यों क्षीण कर रहे हो, जिससे हमें बहुत दुख होता है?'

लड़के ने उत्तर दिया, 'मेरे माता-पिता, धर्मग्रंथ में लिखा है कि भोजन और पेय हमें परमेश्वर के निकट नहीं लाते (1 कुरिन्थियों 8:8), बल्कि केवल उपवास, प्रार्थना, शारीरिक शुद्धता और संयम—ये ही हमें परमेश्वर के निकट लाते हैं।'

इसके बाद, एलेज़र के माता-पिता उसे एक वैध विवाह में ब्याह देना चाहते थे, लेकिन वह समझदार लड़का अपने माता-पिता से ऐसे भाग गया जैसे हिरण जाल से भागती है[3727] । उसके माता-पिता उसे बहुत समय तक रोते हुए हर जगह खोजते रहे, लेकिन उसे कहीं नहीं मिल सके, परन्तु परमेश्वर की कृपा ने उसकी रक्षा की। जल्द ही उसके पिता का निधन हो गया, और उसकी माँ विधवा रह गईं। तब दयालु परमेश्वर, जो चाहता है कि सभी लोग बचें और सत्य के ज्ञान में आएं, ने उसके हृदय में यह अच्छा विचार डाला कि वह अपनी मुक्ति कैसे सुनिश्चित कर सकता है और संसार से अलग हो सकता है। उसने इस विचार को तुरंत ही क्रियान्वित कर दिया। सबसे पवित्र परमेश्वर की माता के जन्म के मठ के लिए प्रस्थान करते हुए, जो स्नोवी पर्वत पर स्थित है, – जैसा कि वेलीकाया नदी के किनारे का वह क्षेत्र, जो प्सकोव शहर से तीन पोप्रीश्चा दूर था, कहा जाता था – उन्होंने उस मठ के मठाधीश से मठवासी दीक्षा ग्रहण की, और इस प्रकार दुनिया की ओर आकर्षित करने वाले सभी विचारों को हमेशा के लिए त्याग दिया और स्वयं को मठवासी जीवन के संकल्पों के प्रति पूरी तरह से समर्पित कर दिया। दीक्षा के समय, उन्हें यूफ्रोसिनिस नाम दिया गया।

संन्यास की शपथ लेने के बाद, पूजनीय यूफ्रोसिनिस ने उत्साहपूर्वक उपवास, जागरण, प्रार्थना और पूरी रात की जाग; साथ ही, मठ की प्रथा के अनुसार, उन्होंने भाईचारे की रसोई, बेकरी और अन्य सभी मठीय कार्यों में अथक सेवा की, जिससे मठ में रहने वाले सभी भिक्षुओं का स्नेह प्राप्त किया। शीघ्र ही, उनके पुण्य जीवन के कारण, रेवरेंड फादर की ख्याति दूर-दूर तक फैलने लगी। यह जानकर वह दुखी हो गया, क्योंकि वह मानवीय महिमा से दूर रहता था और इसे अपने लिए एक पाप और शर्म का स्रोत मानता था; और इसलिए उसने इस प्रसिद्धि से कैसे बचें, इस पर विचार करना शुरू कर दिया, और इस उद्देश्य के लिए एकांत और मौन का जीवन चुनकर, केवल ईश्वर को समर्पित हो गया। उन्होंने अपने आध्यात्मिक पिता को इस इरादे के बारे में बताया, और उन्होंने, यह देखकर कि वह सदाचार में फल-फूल रहा था, उसे आशीर्वाद दिया और उससे कहा: 'शांति से जाओ, मेरे बेटे! प्रभु तुम्हारे साथ हों; वे तुम्हें ज्ञान दें और तुम्हें उस अच्छे काम की ओर मार्गदर्शन करें जिसके लिए उन्होंने तुम्हें बुलाया है।'

इसके बाद, धन्य यूफ्रोसिनिस ने अपने आध्यात्मिक पिता का आशीर्वाद प्राप्त कर, सर्वपवित्र थियोटोकोस मठ छोड़ दिया और एकांत में मौन जीवन के लिए समर्पित होने के लिए एक स्थान की तलाश में कई स्थानों की यात्रा करने लगे। ईश्वर की विशेष कृपा से, उन्होंने टोल्वा नदी के तट पर एक स्थान के बारे में सुना, जो प्सकोव शहर से पच्चीस पोप्रीश्चा दूर स्थित था, जहाँ मसीह की कृपा से, अब '[3728] ' का मठ स्थित है। इस स्थान के स्वामियों ने कुछ धर्मपरायण लोगों के माध्यम से उन्हें आमंत्रित करना शुरू कर दिया—अपने आप से नहीं, बल्कि प्रभु की इच्छा से, जो इस बात से प्रसन्न थे कि उनका पवित्र नाम यहाँ भी महिमामय हो। यहीं पर आदरणीय पिता ने एक शांत, एकांत जीवन जीने का निश्चय किया, जैसा कि दिव्य नबी ने कहा: *'मैं दूर चला जाऊँगा और जंगल में रहूँगा। मैं आँधी-तूफान से शरण लेने के लिए शीघ्रता करूँगा* (भजन संहिता 54:8–9)। उन्होंने यहाँ अपने लिए एक झोपड़ी बनाई और खुद को मठवासी तपस्या के प्रति उत्साहपूर्वक समर्पित कर दिया, उपवास, जागरण, प्रार्थना, पूरी रात की जाग-प्रार्थना और प्रणामों के माध्यम से अदृश्य शत्रु की युक्तियों को दूर करते हुए। एक बार, गर्मी की तपिश में, जब आदरणीय संत अपने तंबू से बाहर निकले और अपने तपस्वी श्रम से थोड़ा आराम करने के लिए जमीन पर लेट गए, तो वे तुरंत गहरी नींद में सो गए; और उसी क्षण

[3727] 'टेनेटी' पक्षियों और जानवरों को पकड़ने के लिए एक जाल को संदर्भित करता है।

[3728] यह, बेशक, पस्कोव गवर्नरेट में स्थित स्पासो-वेलिको-पुस्टिन्स्की एलेज़ारोव मठ को संदर्भित करता है, जो टोल्वा नदी पर, पस्कोव से 30 वर्स्ट दूर है।

सार्वभौमिक शिक्षकों, बेसिल द ग्रेट, ग्रेगरी द थियोलॉजिस्ट और जॉन क्रिसोस्टोम, और उन्होंने उसी क्षेत्र में जहाँ वह अपना तपस्या-साधना कर रहे थे, उनके नाम समर्पित एक चर्च के निर्माण के लिए एक स्थान का संकेत दिया। जब वह बाद में अपनी नींद से जागे, तो वहाँ उन्हें कोई नहीं मिला, और इस असाधारण दृष्टि ने उन्हें चकित कर दिया।

उसके बाद बहुत समय बीत गया, और आदरणीय की माँ ने कुछ लोगों से उनके ठिकाने के बारे में पता लगाया। यात्रा के लिए आवश्यक सभी चीजें साथ लेकर, वह टोल्वा नदी के किनारे उस स्थान पर आई जहाँ आदरणीय रहते थे। उनकी झोपड़ी के पास पहुँचकर, उसने उनसे विनती करना शुरू किया, कहती हुई:

– हे प्रिय संतान! अपनी वृद्धावस्था में अपनी माता को सांत्वना दे; मुझे अपना दैवीय मुख दिखा; मुझे दुःख में अपनी कब्र तक न जाने दे, जहाँ हमारे पूर्वज भी विश्राम करते हैं।

दरार के बीच से, संत यूफ्रोसिनिस ने अपनी माँ को देखा और उन्हें पहचानकर कहा:

– दुखी मत हो, मेरी माँ; इस जगह को छोड़ दो और अपने बुढ़ापे में खुद को थकाओ मत। अगर तुम मुझे यहाँ देखना चाहती हो, तो तुम मुझे परलोक में नहीं देख पाओगी। तो फिर, एक मठ में चली जाओ और, अपने तपस्या के कार्यों के माध्यम से, अपनी आत्मा को बचा लो।

और इस प्रकार उस आदरणीय की माँ ने अपनी इच्छा पूरी होते कभी नहीं देखा। भारी मन से, वह उसे छोड़कर एक मठ में चली गईं और अपने दिन धार्मिक तपस्या में बिताते हुए, अपनी मृत्यु तक वहीं रहीं। जहाँ तक आदरणीय यूफ्रोसिनिस का सवाल है, उन्होंने अपना जीवन बहादुरी और महिमा से जिया, और प्रभु के पास प्रस्थान किया[3729] ।

हमारे पूजनीय पिता अचिलियस, लारिसा के बिशप की स्मृति

१५ मई को स्मरणोत्सव

यह आदरणीय पुरुष सम्राट कॉन्स्टेंटिन द ग्रेट के शासनकाल में रहते थे और धार्मिक माता-पिता के घर पैदा हुए थे। एक धर्मपरायण और ईश्वर-भयभीत जीवन के लिए खुद को समर्पित करने और सांसारिक विज्ञानों तथा उच्च दर्शन का अध्ययन करने के बाद, उन्होंने हर तरह के दैवीय कार्यों द्वारा खुद को विशिष्ट बनाया, जिसके परिणामस्वरूप उन्हें थिसली में ऊपरी लारिसा के बिशप[3730] के रूप में नियुक्त किया गया, ताकि वे पूरे हेलेस में रहने वाले ईसाइयों की देखभाल कर सकें। जब वे निकिया के सार्वभौमिक परिषद[3731] में शामिल हुए, तो उन्होंने एरियस और उसके अनुयायियों की निंदा की[3732] । इसके बाद लारिसा लौटकर, उन्होंने कई मूर्तिपूजक पूजा स्थलों को नष्ट कर दिया, भूत-प्रेत ग्रस्त लोगों से भूत-प्रेत भगाए, और अन्य कई चमत्कार किए। इसके अलावा, उन्होंने चर्च भवनों का पुनर्निर्माण किया और उन्हें भव्य रूप से सुसज्जित किया, जिसके बाद उनका शांतिपूर्वक निधन हो गया[3733] ।

29 मई

16 मई (पुराने कैलेंडर के अनुसार)

[3729] आदरणीय यूफ्रोसिनिस का 15 मई 1481 को 95 वर्ष की आयु में निधन हो गया। उनके अवशेषों को शुरू में स्पासो-वेलकिोपस्टनि्स्की एलेज़ारोव मठ में स्थापित किया गया था, जिसकी उन्होंने स्थापना की थी। बाद में, इस मठ को एक पहाड़ी पर स्थानांतरित कर दिया गया, जहाँ तीन पवित्र धर्मगुरुओं को समर्पित एक नया पत्थर का कैथेड्रल चर्च बनाया गया, और पूजनीय संत की अवशेषों को वहाँ स्थानांतरित कर दिया गया; वे अब पहले कोयर के पीछे दीवार के पास फर्श के नीचे विराजमान हैं।

[3730] थेस्साली प्राचीन ग्रीस का एक क्षेत्र है। ऊपरी थेस्साली को पेनियस नदी पर स्थित लारिसा शहर के नाम पर लारिसियिन के रूप में जाना जाता है।

[3731] निकाया शहर एशिया माइनर में, प्राचीन रोमन प्रांत बिथिनिया में, अस्केनिया झील के पूर्वी तट पर स्थित था।

[3732] सम्राट बेसिल के मेनोलोजियन में कहा गया है कि आदरणीय अचिलियस ने प्रथम सार्वभौमिक परिषद में विधर्मियों को परास्त करने के बाद, सर्वत्र प्रशंसा अर्जित की।

[3733] आदरणीय अचिलियस की मृत्यु लगभग 330 ईस्वी में हुई। 978 से, उनके अवशेष बुल्गारिया के अचिलियस नामक गाँव में रखे गए हैं, जिसका नाम उनके नाम पर रखा गया है।

उसी दनि, हम हमारे पतिा संत जॉर्ज, माइटलिनि के बशिप का स्मरण करते हैं, जन्हिें 842 में बशिप के रूप में अभषिक्ति कयिा गया था।

इसी दनि, हम पवत्रि शहीदों वीटा, मॉडेस्टस और क्रसिैन्शयिा की स्मृतमिनाते हैं, जन्हिोंने डायोक्लेटयिन के शासनकाल में यातनाएँ झेलीं।

इस दनि, नोवगोरोड के चमत्कार करने वाले, पेरकोप के पूजनीय एफ्रेम के अवशेषों के स्थानांतरण का पर्व मनाया जाता है, जनिका नधिन 26 सतिंबर 1523 को हुआ था। अवशेषों का स्थानांतरण 16 मई 1545 को हुआ था।

हमारे पूज्य पतिा थयिोडोर अभषिक्ति का जीवन, पाचोमयिस के एक शष्यि

16 मई को स्मरण कयिा जाता है

जब पवत्रि थयिोडोर अभी भी एक लड़का थे, तब संत पाचोमयिस पहले से ही एक व्यापक रूप से प्रसद्धि मठाधीश थे। उन्होंने पहली बार पाचोमयिस के बारे में तब सुना जब वे एक मठ में रह रहे थे, और युवा जोश के साथ परम पूर्णता की ओर प्रयासरत थे।

थयिोडोर अमीर और कुलीन माता-पतिा के पुत्र थे[3734] । बारह वर्ष की आयु में, वह अपने पतिा के अनुरोध पर प्रतदिनि स्कूल जाता था। अपनी बुद्धमित्ता और धार्मकिता के कारण वह अपनी सभी संतानों में अपनी माँ का सबसे प्रयि था। एक बार, एपफिेनी के पर्व पर, उसके माता-पतिा ने एक शानदार दावत तैयार की, वभिन्नि प्रकार की शराबें रखीं, और सभी कमरों में कालीन बछिा दए। युवा थयिोडोर, घर में उत्सव का माहौल और भव्य मेज़ देखकर, एक ही वचिार से गहराई से परेशान हो गया। उसने अपने आप से कहा: 'यदि तुम ये व्यंजन खाओगे, तो ईश्वर तुम्हें आने वाले जीवन का आशीर्वाद नहीं देंगे।' इस वचिार से गहराई से परेशान होकर, वह लड़का एक एकांत स्थान पर गया, घुटने टेककर, आँसुओं भरी आँखों से उद्धारकर्ता से प्रार्थना करने लगा।

उसने कहा, 'मुझे यह नश्वर भोजन नहीं चाहए, जो वनिाश की ओर ले जाता है; बल्कि मैं केवल आपको चाहता हूँ, उन आशीर्वादों के साथ जन्हिें आपने परलोक में वश्विासयिों के लए नर्धिारति कयिा है।'

काफी देर तक, आँखों में आँसू लए, वह इन शब्दों को दोहराता रहा। इस बीच, उसकी माँ पूरे घर में उसे ढूँढ़ रही थी। वे थओिडोर का मेज पर उनके साथ इंतजार कर रहे थे, और कसिी ने भी खाना शुरू नहीं कयिा था। उसे ढूँढ़कर और उसके चेहरे पर आँसू देखकर, उसकी माँ ने स्नेहपूर्वक उससे कहा:

'बेटा, तुम रो रहे हो! तुम कहाँ थे? हम तुम्हें ढूँढ़ रहे थे।'

थयिोडोर ने जवाब दयिा कि उसके साथ कुछ नहीं हुआ है। उसकी माँ ने उसे खाने के लए बुलाया, यह कहते हुए कि अगर वह नहीं खाएगा, तो कोई और भी मेज पर नहीं बैठेगा। थयिोडोर ने दृढ़ता से त्योहार के भोजन में हस्सिा लेने से इनकार कर दयिा। वह कुछ समय और अपने माता-पतिा के घर रहा, और उसने उपवास, प्रार्थना और रोने में अपना समय लगाया। इन सभी आँसुओं से युवा थयिोडोर की आँखें तक दर्द करने लगीं। इस दौरान, वह स्कूल जाता रहा। लेकनि फरि उस साल का अंत आ गया। जसि गाँव में थयिोडोर के माता-पतिा रहते थे, उससे बहुत दूर एक मठ था। यहाँ, प्रत्येक भक्षिु दूसरे से अलग, अपनी-अपनी कोठरी में रहता था। थयिोडोर वहाँ गया और एक तपस्वी की तरह रहने लगा। अपनी बुद्धमित्ता, धार्मकिता और वनिम्रता के कारण वह जल्द ही वहाँ सभी का प्रयि हो गया।

जसि मठ में आदरणीय थयिोडोर ने नविास कयिा था, वहाँ हर शाम भोजन के बाद आध्यात्मकि बातचीत के लए एक साथ इकट्ठा होना एक रविाज था। वे कसिी भी व्यक्ति द्वारा पवत्रि धर्मग्रंथों से सीखी गई या सुनी गई कसिी भी बात पर चर्चा करते थे, बशर्ते कि वह सभी के लए एक सीख हो। इन चर्चाओं ने आत्मा को भरपूर पोषण दयिा और उन्हें बेकार की बातों या बुरे वचिारों द्वारा भटकने से बचाया। ऐसी ही एक बातचीत के दौरान, एक भक्षिु जसिने हाल ही में पाकोमयिस के मठ का दौरा कयिा था, ने पवत्रि धर्मग्रंथ के एक अंश की व्याख्या याद की जो उसने स्वयं पाकोमयिस से सुनी थी। इस भक्षिु ने टावेनीसी समुदाय की प्रथाओं के बारे में, वहाँ उसे मलि गर्मजोशी भरे स्वागत के बारे में, और सबसे बढ़कर, स्वयं पाकोमयिस के बारे में बहुत उत्साह के साथ बात की। हमेशा की तरह, युवा थयिोडोर, जो स्वयं हमेशा चुप रहता था, ने वशिेष ध्यान से सुना। पाचोमयिस के बारे में इतने उत्साही ववरिण के बाद, थयिोडोर महान मठाधीश को देखने

[3734] उनका जन्म लगभग 316 में हुआ था।

की तीव्र इच्छा से भर गया। अकेला रहकर, उसने बड़ी लगन से प्रार्थना की। युवा तपस्वी की प्रार्थना का सार इस प्रकार है:

– हे ईश्वर, हे प्रभु, सर्वसृष्टि के स्रष्टा! यदि आप मेरी सुनते हैं और जो मैं आपसे माँगता हूँ वह मुझे प्रदान करते हैं; यदि आप मुझे अपने सेवक पाचोमियस को देखने का अवसर देते हैं: तो मैं अपने जीवन के सभी दिनों में आपकी सेवा करूँगा और अपनी मृत्यु के दिन तक आपसे विमुख नहीं होऊँगा। आपकी इच्छा पूरी हो, परन्तु मुझे अपने सेवक को देखने के योग्य बनाइए!

वह संपूर्ण रात भिक्षुओं के महान गुरु से अपनी मुलाकात के विचारों में खोया रहा, इसलिए सो नहीं सका। सुबह से पहले, वह कई बार उठा, और प्रभु से आँसुओं के साथ विनती करने लगा कि वह उसे पाचोमियस को देखने का योग्य बनाएँ। फिर वह तावेनीसी में ठहरे हुए भाई की कोठरी में गया और उससे पाचोमियस के जीवन और भिक्षुओं के लिए बनाए गए नियमों के बारे में विस्तार से बताने के लिए कहा। उस भाई ने उसे पाचोमियस, उनके जीवन और उनके द्वारा निर्धारित नियमों के बारे में अपनी जानकारी का विस्तृत विवरण दिया। उस समय से, थियोडोर ने ईश्वर से और भी अधिक भक्तिपूर्वक प्रार्थना की कि वह कृपा करके उसे पाचोमियस से मिलने की अनुमति दे। थियोडोर को उम्मीद थी कि पाचोमियस के मध्यस्थता से, वह ईश्वर और उनकी पवित्र इच्छा को बेहतर ढंग से समझ पाएगा।

इस समय, थियोडोर बीमार पड़ गया। उसके माता-पिता उसके लिए भोजन लाए, लेकिन उसने उसे खाने से इनकार कर दिया। हालाँकि, उसकी बीमारी और बिगड़ गई। उसके माता-पिता उसे मठ से घर ले आए। उसे इसका एहसास भी नहीं हुआ, क्योंकि वह अपनी बीमारी के कारण कुछ समय से बेहोश था। जब वह होश में आया, तो अपने माता-पिता के घर वापस पाकर वह बहुत दुखी हुआ। उसके माता-पिता, उसके दृढ़ संकल्प को समझकर, उसे वापस मठ में ले आए। अब संन्यासियों ने स्वयं उस युवा तपस्वी की तब तक पूरी देखभाल की जब तक वह पूरी तरह से ठीक नहीं हो गया।

चार महीने और बीत गए, और थियोडोर पाचोमियस से मिलने के लिए प्रार्थना करना बंद नहीं हुआ। इस समय, पाचोमियस के मठ का एक भिक्षु, अबा पेचोश (या पेकुसियोस), उस मठ में आया जहाँ थियोडोर रहता था। वहाँ अपने प्रवास के दौरान भिक्षुओं की सेवा करने का कार्य उसे सौंपा गया था। उसकी विनम्रता, उसका भक्तिपूर्ण स्वभाव और उसका संपूर्ण आचरण सभी भिक्षुओं में आश्चर्य और सम्मान जगा गया, और सभी के दिल स्वाभाविक रूप से पेकोश की ओर खिंच गए। स्वाभाविक रूप से, थियोडोर ने भी उससे परिचय किया। उसे एहसास हुआ कि इस मठाधीश के माध्यम से, उसके लिए अपनी इच्छा को पूरा करना सबसे आसान होगा। इसलिए उसने पेकोश से इस मामले में उसकी मदद करने के लिए कहा। हालांकि, पेकोश ने लड़के के माता-पिता के क्रोध से डरकर, थियोडोर को अपने साथ ले जाने की हिम्मत नहीं की। थियोडोर अपने संकल्प पर अडिग था। जब बाबा पेकोश कुछ भिक्षुओं के साथ मठ के लिए रवाना होने हेतु नाव पर सवार हुए, तो थियोडोर उनके पीछे पैदल चल पड़ा। अभी भी कोई उसे देख नहीं पाया था, वह नाव से ज़्यादा दूर नहीं, नील नदी के किनारे-किनारे चलता रहा। आखिरकार, कुछ संतों ने उसे देख लिया। उन्होंने उसे बाबा पेकोश को दिखाया, और याद दिलाया कि यही वह था जिसने मठाधीश से उसे भी नाव पर चढ़ा लेने के लिए कहा था। वे अंततः टावेनीसी पहुँचे।

मठ की दीवारें देखते ही, थियोडोर ने अपनी इच्छा पूरी करने के लिए प्रभु का धन्यवाद किया और, आनंद से भरकर, उन दीवारों को चूमा। जब उसने स्वयं पाचोमियस को देखा, तो उसने उस महान वरिष्ठ का आनंद के आँसुओं के साथ अभिवादन किया। पाचोमियस ने अपना ध्यान प्रभु की ओर केंद्रित किया, जो उनके धर्मपरायण हृदय की हर इच्छा को पूरा करेंगे, क्योंकि उन्होंने प्रभु के लिए संसार को त्याग दिया था। थियोडोर तावेनीसी में ही रहा, मठ जीवन के सभी नियमों का पालन करने और हर बात में अपने वरिष्ठों की इच्छा के अधीन रहने के लिए तैयार था। वह केवल चौदह वर्ष का था। अब पाचोमियस के मठ की स्थापना को पाँचवाँ वर्ष हो गया था।

बिशप अम्मोन के अनुसार, पैकोमियस ने स्वयं सटीकता के साथ टेवेनीसी में थियोडोर के आगमन की भविष्यवाणी की थी।

तावेनीसी में बस जाने के बाद, थियोडोर ने ईश्वर को प्रसन्न करने के लिए परम उत्साह दिखाना शुरू कर दिया। वह युवा तपस्वी भाग्यशाली था कि पाचोमियस की शिक्षाओं और निजी बातचीत ने उसे साधुत्व की पूर्णता का सच्चा मार्ग दिखाया, जबकि मठ में जीवन का संपूर्ण तरीका यह सुनिश्चित करता था कि उसका उत्साह कभी कम न हो।

एक बार, भाइयों के साथ बातचीत में, पूजनीय पाचोमियस ने निम्नलिखित विचार व्यक्त किया: 'यदि किसी व्यक्ति के पास सच्चा ज्ञान होता, तो वह न तो ईश्वर के विरुद्ध और न ही अपने पड़ोसी के विरुद्ध पाप करता।' थियोडोर की आत्मा इस सच्चे ज्ञान को प्राप्त करने की इच्छा से जल उठी। साथ ही, वह इस विचार से गहराई से दुखी हुआ कि उसके

लिए अपनी इच्छा को पूरा करना मुश्किल होगा। उसने विनम्रतापूर्वक अपनी अयोग्यता और सत्य जानने में अपनी असमर्थता को स्वीकार करते हुए, ईश्वर से सच्चा ज्ञान प्रदान करने के लिए earnestly प्रार्थना की।

'हे प्रभु,' वह प्रार्थना में कहता था, 'हे प्रभु, जिनकी शरण मैंने ली है! मुझे ज्ञान प्रदान करें, जैसा आपने अपने प्रेम करने वालों से वादा किया है, ताकि मैं वह सब कर सकूँ जो आपको प्रसन्न करे।'

थियोडोर अक्सर इस बात पर रो पड़ता था कि वह सच्चे ज्ञान से बहुत दूर था। पाचोमियस उस युवक के आँसुओं पर मन ही मन प्रसन्न हुआ और सच्चा ज्ञान प्राप्त करने की उसकी इच्छा को प्रोत्साहित किया। जब भी वे मिलते, वह अक्सर थियोडोर से कहता था:

– सच्चे ज्ञान को प्राप्त करने का प्रयास करें।

एक रात, जब चाँदनी चमक रही थी, उसने थियोडोर को बुलाया। उस युवक के विचारों को उन प्रकाशमान तारों वाले अद्भुत आकाश से हटाकर सभी चीज़ों के अदृश्य स्रष्टा की ओर मोड़ते हुए, अबा पाचोमियस ने थियोडोर से कहा:

– अपने जीवन के सभी दिनों में उसका भय मानो; जानो कि वही है जिसने हमें सारी सृष्टि के साथ बनाया है, और हम उसकी हथेली में हैं। जब तुम परमेश्वर का भय मानते हो और यह महसूस करते हो कि परमेश्वर तुम्हें हर क्षण देखता है, तो सावधान रहो कि उसके विरुद्ध पाप न करो, और इस प्रकार वह तुम्हें विश्वासयोग्य सहायता भेजेगा। हर दिन उसे महिमा दो।

आँसुओं की मुक्त धारा उनकी बातचीत की गंभीरता की गवाह थी। उन्होंने ईश्वर और उसे प्रसन्न करने के विषय में अपने विचारों के आदान-प्रदान का समापन प्रार्थना के साथ किया।

उन्होंने एक से अधिक मौकों पर ऐसी बातचीत की। थियोडोर के लिए, जो ईश्वर को प्रसन्न करने के पवित्र उत्साह से जलने वाला असाधारण ग्रहणशीलता वाला एक युवक था, संत पाचोमियस का हर शब्द बहुत महत्व रखता था: न केवल उसकी आत्मा में उसके धार्मिक भाव और आकांक्षाएँ मजबूत हुईं, बल्कि उसके भीतर आध्यात्मिक ज्ञान भी विकसित हुआ। अपने संवादों के माध्यम से, और विशेष रूप से थियोडोर के साथ अपनी घनिष्ठ संगति के माध्यम से, पाचोमियस—चाहे जानबूझकर या अनजाने में—थियोडोर को भिक्षुओं के लिए उसकी भविष्य की सेवा के लिए तैयार कर रहे थे, जिसमें वह पहले से ही उनके आध्यात्मिक मार्गदर्शक की भूमिका में था।

आदरणीय पाचोमियस थियोडोर के हर कार्य और यहाँ तक कि हर शब्द पर कितने चौकस थे, उन्होंने उस युवा तपस्वी का कितनी दृढ़ता से उच्चतम पूर्णता की ओर मार्गदर्शन किया!

एक अवसर पर, थियोडोर एक भाई से मिला जो कंधों पर एक कालीन लादकर किसी मठ के काम से लौट रहा था। थियोडोर ने उससे पूछा कि वह कहाँ गया था। यह प्रश्न पाचोमियस ने सुन लिया। उसने थियोडोर को अपने पास बुलाया और कहा:

'थियोडोर, सुनो: हर क्षण अपने हृदय के स्वामी बनो। किसी भाई से यह न पूछो, "तुम कहाँ से आ रहे हो?" यह एक आदत बन सकती है। इस तरह बोलने की क्या आवश्यकता है? क्योंकि ये शब्द न तो सांत्वना देने के लिए हैं और न ही बचाने के लिए।'

थियोडोर अक्सर अपने शिक्षक की इस शिक्षा को याद करते थे, और इसे बहुत महत्व देते थे: वह जानते थे कि छोटी-छोटी बातों में निष्ठा बड़े कामों में निष्ठा की ओर ले जाती है, और यह उद्धारकर्ता की आज्ञा द्वारा आवश्यक है।

एक अवसर पर, थियोडोर ने पाचोमियस से शिकायत करना शुरू किया कि उसे बहुत तेज सिरदर्द हो रहा है। पाचोमियस ने जवाब दिया कि एक विश्वासी को अपनी शारीरिक बीमारियों के बारे में किसी से बात नहीं करनी चाहिए, सिवाय उन मामलों के जहाँ बीमारी दूसरों से छिपाई नहीं जा सकती; लेकिन ऐसी बीमारियों को भी उचित धैर्य के साथ सहना चाहिए। क्योंकि स्वैच्छिक और अनैच्छिक दोनों तरह के दुख, एक तरह से, शहादत का एक रूप हैं। इसके अलावा, मनुष्य को ईश्वर के प्रति प्रेम के कारण अपने शरीर को संयम में रखना चाहिए। पूजनीय थियोडोर ने पाचोमियस की शिक्षा को गहरी आस्था के साथ स्वीकार किया और उस सिरदर्द को दूसरों से छिपाना शुरू कर दिया, जिससे वह लंबे समय से पीड़ित था। उसे यह दर्द और बीस साल तक सहना पड़ा, लेकिन फिर किसी ने भी उसे कभी शिकायत करते नहीं सुना। थियोडोर अन्य बीमारियों से भी पीड़ित थे, जिनकी अवधि अलग-अलग थी - उदाहरण के लिए, कान का दर्द, बुखार और आँख की एक समस्या: उन्होंने उन सभी को चुपचाप और धैर्य के साथ सहन किया। वास्तव में, किसी भी भिक्षु ने खुद को थियोडोर जितना नहीं कष्ट दिया, जिन्होंने अपने तपस्या के कारनामों को दूसरों से सावधानीपूर्वक छिपाया। वह हर दिन केवल देर

शाम को ही भोजन करते थे, और कभी-कभी वे लगातार दो दनिों तक उपवास करते थे, और दूसरे दनि के अंत में ही भोजन करते थे। कभी-कभी वे भोजन तो कर लेते थे लेकनि लगातार दो दनिों तक पानी नहीं पीते थे। वे केवल बीमार होने पर ही पका हुआ भोजन खाते थे। वे स्वाद में सुखद लगने वाले फलों का पूरी तरह से त्याग करते थे। लेकनि यदि भाई खजूर खाते, तो वह भी संतों के साथ उन्हें खाता; वह अपने साथ कई खजूर ले भी लेता, हालांकि फिरि भी वह दो से अधकि नहीं खाता था। उसे रात जागकर बतिाना पसंद था। आदरणीय थयिोडोर ने कम समय में ही कई आध्यात्मकि फल प्राप्त कर लिए।

थयिोडोर अपने महान वरष्ठि, आदरणीय पाचोमयिस, और अपने साथी भक्षिुओं से गहराई से जुड़े हुए थे। वे सभी उसके समान वचिारधारा वाले थे, और वे सभी बदले में उससे प्रेम करते थे। फरि भी वह युवा तपस्वी अपने रक्त संबंधयिों के प्रति किसी भी लगाव से पूरी तरह से मुक्त था: वे थयिोडोर के लिए लगभग अस्तत्विहीन थे; वे उसे पाचोमयिस और भक्षिुओं के प्रति उसके प्रेम से भटका नहीं सकते थे।

नम्निलखिति घटना यह दर्शाती है कि थयिोडोर पारविारकि बंधनों से कतिना डरता था। टावेनीसी में उसके आने के दनि से दस साल बीत चुके थे। उसकी माँ, जो लंबे समय से अपने बेटे से मलिने की इच्छा रखती थी, एस्ने के बशिप का एक पत्र लेकर वहाँ आई। संत ने पाचोमयिस से इस महलिा को अपने बेटे से मलिने की अनुमति देने के लिए कहा। बशिप का पत्र पढ़ने के बाद, पाचोमयिस ने थयिोडोर से अपनी माँ से मलिने जाने के लिए कहा, क्योंकि वह उसे बहुत देखना चाहती थी और बशिप ने भी ऐसा करने का अनुरोध कयिा था। लेकनि थयिोडोर ऐसा करने के लिए खुद को तैयार नहीं कर सका और उसने संत पाचोमयिस से कहा:

'मैं आपसे एक बात पूछना चाहता हूँ। मुझे बताइए: यदि मैं अपनी माँ के पास जाता हूँ, तो क्या मैं प्रभु के सामने पापी नहीं ठहरूँगा, क्योंकि मैंने सुसमाचार में लखिे आज्ञाओं की अवज्ञा की है, क्योंकि हमारे प्रभु ने कहा है: *'जो पति या माता से मुझसे अधकि प्रेम करता है, वह मुझसे योग्य नहीं है'* (मत्ती 10:37)।

पाचोमयिस ने कहा कि उनका ईश्वर की सेवा को पूर्ण करने के लिए पारविारकि लगाव को त्यागने संबंधी सुसमाचार के आज्ञाकार को तोड़ने के लिए उसे मजबूर करने का कोई इरादा नहीं था, लेकनि उन्होंने सुझाव दयिा कि वह अपनी माँ से मलिने जाए क्योंकि वह उनके आँसुओं के बारे में जानते थे और उन्हें डर था कि थयिोडोर स्वयं अपनी माँ के दुख से दुखी हो जाएगा। पचोमयिस ने, यह स्वीकार करते हुए कि वह स्वयं इस बात से बहुत प्रसन्न था कि उसके शष्यि ने ईश्वर की आज्ञा का कड़ाई से पालन कयिा था, यह वचिार व्यक्त कयिा कि बशिप भी इससे प्रसन्न होंगे, क्योंकि यह बशिप ही हैं जो सुसमाचार में नहिति सच्चाइयों को सखिाते हैं। कुछ भाइयों ने, थयिोडोर की माँ को कम से कम थोड़ा सांत्वना देने की इच्छा से, मठ के बाहर भक्षिुओं के लिए एक सामूहकि कार्य का आयोजन कयिा। थयिोडोर भी इस कार्य को करने के लिए नकिल पड़ा। उसकी माँ को इस बात से सांत्वना मलिी कि, भले ही दूर से, वह अपने पुत्र, तपस्वी को, भक्षिुओं के बीच देख सकती थी।

एक दनि, जब थयिोडोर मठ के बाहर कोई काम कर रहे थे, तो उनके भाई पाफनुटयिस मठ में आए। उन्होंने भक्षिु बनने की इच्छा व्यक्त की, लेकनि इस शर्त पर कि उन्हें थयिोडोर के साथ रहने दयिा जाए। जब थयिोडोर मठ लौटा, तो उसके भाई के शब्द उसे सुनाए गए। लेकनि उस भक्तमिय भक्षिु को यह गलत लगा कि उसका भाई केवल उसकी खातरि ही भक्षिु बनना चाहता था। इसलिए, वह अपने भाई से मलिना भी नहीं चाहता था। हालाँकि, पाचोमयिस ने उसे अपने भाई से मलिने से इनकार न करने के लिए मना लयिा। अभविादन के आदान-प्रदान के बाद, थयिोडोर ने अपने भाई से कहा:

'अगर तुम मेरी खातरि यहाँ आए हो, तो जहाँ से आए हो वहीं लौट जाओ; लेकनि अगर तुम ईश्वर की खातरि आए हो, तो मैं तुम्हारे पास आने से पहले ही भक्षिु बनने के लिए राज़ी क्यों नहीं हुए?'

ये शब्द कहकर थयिोडोर तुरंत अपने भाई से चला गया। लेकनि पाफनुटयिस उसके पीछे गया और उसे पकड़कर, आँसुओं से भरी आँखों से उससे कहा:

'मैंने तुम्हारे आने का कतिने दनि तक इंतज़ार कयिा है, और फरि भी, आकर तुम मुझसे इतने कठोर शब्द कहते हो!'

थयिोडोर ने उत्तर दयिा:

'अगर तुम मेरे लिए आए हो, अब संन्यासी बनने के लिए, तो तुम संन्यास-जीवन छोड़ सकते थे अगर मैं इसे छोड़ देता। लेकनि अगर तुम यह ईश्वर के भय से कर रहे हो, तो चाहे मैं इस जीवन को सहन करूँ या न करूँ, तुम हमेशा के लिए मठ में ही रहोगे।'

थियोडोर अपने भाई को मठ में ले गया। थोड़ी ही देर बाद, थियोडोर की कोठरी माँगकर, पाफनुटियस उसमें गया और बैठ गया। अपने भाई को अपनी कोठरी में देखकर, थियोडोर बहुत शर्मिंदा हुआ और उससे कहा:

'यहीं रहो; लेकिन मैं अब यहाँ नहीं रहना चाहता, मुझे डर है कि हम रक्त संबंधी लोगों जैसे हो जाएँगे। मुझे सभी भाइयों के साथ बराबरी के दर्जे पर आपके पास रहने दें, क्योंकि इस मठ में कोई भेदभाव नहीं है: हम सभी ईश्वर के सेवक और अपने बाबा के बच्चे हैं।'

थियोडोर के कठोर शब्दों से उसके भाई को गहरा दुख हुआ। पाफनुटियस तुरंत संत पाकोमियस के पास गया और आँसू भरी आँखों से उनसे घर लौटने की अनुमति देने का आग्रह किया, क्योंकि उसे थियोडोर का भाईचारे के विपरीत व्यवहार असहनीय लग रहा था। तब पाकोमियस ने थियोडोर को बुलाया और उससे कठोरता से कहा:

'तुम उससे इतनी कठोरता से क्यों बोले? क्या तुम्हें एहसास नहीं है कि वह अभी एक नाजुक पौधा है? क्या तुम्हें नहीं लगता कि जो कोई भी भिक्षु बनने आता है, उसमें पहले से ही पवित्र आत्मा का भय होता है? आखिरकार, कुछ लोग अपनी आत्मा को बचाने के लिए आते हैं, जबकि अन्य विभिन्न कारणों से आते हैं।'

पाचोमियस ने थियोडोर को बताया कि संन्यासियों को, किसी भी स्थिति में, ऐसे लोगों के साथ पूर्ण धैर्य से व्यवहार करना चाहिए, इस आशा के साथ कि वे भी अंततः ईश्वर के मार्ग को जान लेंगे और अपनी सांसारिक बुद्धि को त्याग देंगे। अंत में, पाचोमियस ने थियोडोर से कहा कि वह उस भिक्षु के भिक्षु जीवन में मार्गदर्शक के रूप में तब तक काम करे, जब तक कि वह स्वयं भिक्षु के कर्तव्यों की सच्ची समझ न प्राप्त कर ले।

संत पाचोमियस के प्रत्यक्ष मार्गदर्शन में और उनकी सभी आज्ञाओं को अथक उत्साह से पूरा करते हुए, थियोडोर जल्द ही सभी भिक्षुओं के लिए एक आदर्श बन गए। आदरणीय पाचोमियस ने मार्गदर्शन और सांत्वना के लिए कई भिक्षुओं को उनके पास भेजा भी। अपने बुद्धिमानी भरे और प्रेमपूर्ण शब्दों से, संत थियोडोर कई लोगों को सांत्वना देने और आश्वस्त करने में सफल रहे। एक भिक्षु संत पाचोमियस की कठोर फटकारों को सहन नहीं कर सका। वह समुदाय छोड़ने के लिए भी तैयार था। केवल संत थियोडोर ही उसे शांत करने का तरीका खोज सके।

थियोडोर ने कहा, 'तुम अकेले दुखी नहीं हो, मैं भी उसके कारण मन ही मन दुखी हूँ, क्योंकि उसने मुझ पर भी कई बार डाँटा है। आइए अब हम एक साथ रहें और एक-दूसरे को सांत्वना दें, जब तक कि हम यह न देख लें कि वह हम पर डाँटना बंद करता है या नहीं; अन्यथा, हम कहीं और चले जाएँगे।'

इन शब्दों ने संन्यासी की आत्मा को शांति दी। इस बीच, थियोडोर ने दूसरों से गुप्त रूप से सब कुछ पाचोमियस को बता दिया। एक महीने बाद, थियोडोर ने इस भाई को पाचोमियस से मिलने के लिए आमंत्रित किया। स्वाभाविक रूप से, पाचोमियस ने दोनों संन्यासियों का बड़े विनम्रता और पितृवत् स्नेह से स्वागत किया। दोनों को सुकून मिला: एक तो वह भिक्षु, जो पहले पाचोमियस से दुखी था, वह इस बात से प्रसन्न था कि अब्बा ने उसके प्रति अपना रवैया बदल दिया था, जबकि थियोडोर को मिली इस सांत्वना पर आनंद हुआ और उसने ईश्वर का धन्यवाद किया, जिन्होंने उसे उस दुखी भिक्षु के लिए मोक्ष का साधन बनने का अवसर प्रदान किया था।

यहाँ एक और उदाहरण है जो भाइयों के प्रति उस दूरदर्शी प्रेम की गवाही देता है, जो पाचोमियस और थियोडोर दोनों की विशेषता थी। एक युवा भिक्षु अपने माता-पिता से मिलने जाने के लिए दृढ़ था। पाखोमियस को बहुत डर था कि वह मठ में वापस नहीं आएगा। इसलिए, बुद्धिमान बाबा उसे अकेले नहीं जाने दिया, बल्कि उसके साथ एक साथी के रूप में थियोडोरस को भेज दिया।

'हर बात में उसकी हाँ में हाँ मिलाओ, ताकि वह तुम्हारे साथ यहाँ वापस लौट आए,' पाचोमियस ने थियोडोरेट से कहा।

युवा भिक्षु के माता-पिता ने अपने बेटे और उसके साथी का प्यार से स्वागत किया। एक विशेष कमरे में, उन्हें मठ की प्रथाओं द्वारा अनुमत भोजन परोसा गया। युवा भिक्षु ने थियोडोरा से भी खाने के लिए कहा। पहले तो उसने मना कर दिया। लेकिन उसके भाई ने कहा कि अगर थियोडोरा उसके साथ नहीं खाएगी, तो वह मठ वापस नहीं जाएगा। थेओडोर को पाचोमियस की आज्ञा याद आई, उसने भोजन की ओर हाथ बढ़ाया और थोड़ा सा खाया। फिर भी, पाचोमियस की अंतिम आज्ञा का पालन करते हुए, थेओडोर को उनकी सबसे पहली और सबसे महत्वपूर्ण आज्ञाओं में से एक भी अच्छी तरह याद आई। अब्बा ने एक बार उससे कहा था कि अपने संन्यासी जीवन के दौरान, उन्होंने कभी भी किसी गृहस्थ को उन्हें खाते हुए नहीं देखा था। नतीजतन, आदरणीय पाचोमियस के अनुसार, एक भिक्षु को अत्यंत आवश्यकता के मामलों को छोड़कर, किसी गृहस्थ के घर में भोजन नहीं करना चाहिए। इस बात से थियोडोर को लंबे समय तक बहुत पछतावा हुआ,

और उसने ईश्वर से प्रार्थना की कि वह उस पाप के लिए उसे क्षमा कर दे जो उसने एक युवा भिक्षु को संसार में पूरी तरह से बने रहने से रोकने के लिए किया था। आदरणीय थियोडोर की अपने प्रति यही कठोरता थी।

संत थियोडोर की स्वयं के प्रति कठोरता और अपनी ही रायों के प्रति संशय उनकी प्रमुख विशेषताएँ थीं। यहाँ एक उदाहरण है जिसमें उनकी आत्म-अनुशासन विशेष रूप से स्पष्ट था। एक भ्राता बहुत अधिक लीक खा रहा था। यह मानते हुए कि एक युवा भिक्षु के लिए इतनी अधिक लीक खाना लाभदायक नहीं था, क्योंकि वे शरीर को मजबूत बनाती हैं, थियोडोर ने सौम्य रूप से उसे फटकारा। बाद में, थियोडोर ने यह विचार किया कि क्या उसने सही कार्य किया था: शायद वह भिक्षु अपने आप ही अपने व्यवहार को सुधार लेता। हालाँकि, थियोडोर के शब्दों का उस युवा भिक्षु पर गहरा प्रभाव पड़ा: अगले उन्तीस वर्षों तक, अपनी मृत्यु तक, उसने पूरी तरह से लीक खाना छोड़ दिया। जब थियोडोर को इस भिक्षु के संयम के बारे में पता चला, तो वह स्वयं भी अपनी मृत्यु तक लीक खाने से बचता रहा, ताकि प्रभु के सामने उस नियम को तोड़ने का दोषी न पाया जाए जो उसने दूसरे पर लगाया था।

आत्म-बलिदान की इस गुणवत्ता और चरित्र की उत्कृष्ट कुलीनता में, सेंट थियोडोर, अन्य सभी मामलों की तरह, सेंट पाचोमियस के एक सच्चे शिष्य थे।

संत पाचोमियस के लिए नौ मठों में फैले भिक्षुओं के एक बड़े समुदाय का शासन चलाना कोई आसान काम नहीं था। उन्हें एक सहायक की आवश्यकता थी। महान वृद्ध के शिष्यों में सबसे उत्तम, अभिषिक्त थियोडोर, भिक्षुओं के मोक्ष की सेवा के कार्य में उनके सर्वोत्तम सहायक बनने के लिए भी उपयुक्त थे। पाचोमियस की 'जीवनी' में वर्णित है कि उन्हें परमपिता से एक दिव्य प्रकाश मिला, जिसने माननीय थियोडोर को अपना सहायक बनाने के उनके निर्णय की पुष्टि की।

समर्पित थियोडोर न केवल अपने पुण्य जीवन के लिए, बल्कि वाक्पटुता के विशेष वरदान और पवित्र धर्मग्रंथों के ज्ञान के लिए भी विशिष्ट थे। संत पाचोमियस ने एक बार उन्हें रविवार को भाइयों को उपदेश देने का काम सौंपा। थियोडोर ने बिना किसी अहंकार के, पाचोमियस की जगह ली और उपदेश दिया, तथा बड़बंद की इच्छा को अपने लिए कानून मान लिया। पाचोमियस स्वयं भिक्षुओं की कतार में आकर अपने शिष्य के भावुक भाषण को गहरी तल्लीनता से सुन रहे थे। लेकिन कुछ भिक्षुओं को यह बात पसंद नहीं आई कि यह युवा भिक्षु थियोडोर, पाचोमियस की जगह उन्हें उपदेश दे रहा था। उन पर तीव्र ईर्ष्या हावी हो गई। वे सभा छोड़कर भी चले गए। उपदेश समाप्त हुआ। पाचोमियस ने उपदेश छोड़कर गए भिक्षुओं को बुलाया और उन्हें डांटा कि उन्होंने अहंकार के कारण थियोडोर का उपदेश सुनने से इनकार कर दिया, जबकि उसने उनकी उपस्थिति में ही इस संबंध में निर्देश दिए थे, और इसके अलावा, उसने स्वयं अपने शिष्य की बात को अपनी आत्मा के लाभ के लिए ध्यान से सुना था। पाचोमियस ने उन्हें आश्वासन दिया कि जब तक वे सच्ची पश्चाताप नहीं करते, तब तक उन्हें ईश्वर से कोई दया नहीं मिलेगी। बेशक, बूढ़े के कठोर शब्दों से कई लोग होश में आ गए, और कई लोगों ने अपने दिलों से ईर्ष्या और अहंकार को दूर करने की उनकी सलाह मानी। हालाँकि, कुछ ऐसे भिक्षु भी थे जो बड़े भिक्षु की फटकार के बाद थियोडोर से और भी अधिक नफरत करने लगे, यहाँ तक कि वे उसे शांति से देख भी नहीं सकते थे। थियोडोर ने स्वयं न केवल उनके प्रति थोड़ी सी भी शत्रुता नहीं रखी, बल्कि हमेशा उनके साथ विशेष देखभाल और स्नेह से व्यवहार किया।

जल्द ही, संत पाचोमियस ने थियोडोर को टावेनीसी में निर्माता नियुक्त किया। महान वरिष्ठ स्वयं पेवौ नामक एक अन्य मठ में बस गए। उन्हें उम्मीद थी कि थियोडोर उनके आत्मा के अनुसार शासन करेंगे, और उनके बुद्धिमानी भरे प्रवचन और प्रेरणादायक उदाहरण भिक्षुओं के लिए बहुत फायदेमंद होंगे।

इस समय तक थियोडोर द्वारा प्राप्त आध्यात्मिक ऊँचाइयाँ, पैकोमियस के शुरुआती शिष्यों में से एक, अनुभवी और उत्साही अबा कॉर्नेलियस की गवाही से स्पष्ट हैं। कोर्नेलियस, जो आदरणीय पाचोमियस को देह में एक देवदूत मानते थे, ने थियोडोर में पाचोमियस के शिष्यों में सबसे उत्तम देखा और कहा कि आने वाले जीवन में वह थियोडोर के ठीक बाद अपना स्थान लेना चाहेंगे।

तावेनीसी में मठाध्यक्ष बनने के बाद, संत थियोडोर अक्सर अबा पाचोमियस से सलाह लेने या उनके सामान्य उपदेशों को सुनने के लिए पेवौ की यात्रा करते थे। अपने भिक्षुओं के पास लौटने पर, वह उन्हें वह सब कुछ बता देते थे जो उन्होंने पाचोमियस से सुना था। अब्बा पाचोमियस की प्रथा थी कि वे उपदेश के अंत में भिक्षुओं से जो कहा गया था, उसे दोहराते थे। और संत थियोडोर ने भी इस प्रथा को अपनाया। अपनी ओर से, वे उपदेश देने के श्रम को अपने लिए आवश्यक मानते थे, और परमेश्वर के वचन को आत्मसात करने तथा दूसरों तक पहुँचाने में उन्हें महान आनंद मिलता था।

पाचोमयिस कभी-कभी टावेनीसी भी जाते थे, जहाँ वे सभी से, या कसिी से नजिी तौर पर, आत्मा के उद्धार के बारे में बातचीत करते थे। उनकी बुद्धमित्ता, उनके सद्गुण—वशिषकर सभी के प्रत,ि यहाँ तक कि समुदाय के सबसे छोटे सदस्यों के प्रत भिी, उनका वनिम्र व्यवहार—यह सब सभी के लिए प्रेरणा का स्रोत था। लेकनि थयिोडोर इन मुलाकातों को वशिेष रूप से संजोता था और महान वरष्ठि के जीवन और शब्दों से प्राप्त सीख को अपने दलि में संजोए रखता था।

पाचोमयिस थयिोडोर के सभी कार्यों पर बारीकी से नजर रखते थे ताकि वह समय रहते उसे सही सलाह दे सकें। जब थयिोडोर पैकोमयिस द्वारा नरि्धारति सभी नयिमों का सख्ती से पालन कराने में वफिल रहा, तो पैकोमयिस ने उसे बताया कि भकि्षुओं से पूर्ण आज्ञाकारति की मांग करना आवश्यक था—छोटी-छोटी बातों में भी आज्ञाकारति—क्योंकि सबसे छोटे नयिम का भी उल्लंघन मठवासी जीवन के क्रम को बाधति करता है और भकि्षुओं के बीच अवज्ञा की भावना को बढ़ावा देता है।

जब दो भकि्षुओं ने बेकरी में काम करते समय बातें कीं, और थयिोडोर ने इस पर कोई ध्यान नहीं दयिा, तो पाचोमयिस ने उसे सख्ती से और जोर देकर कहा कि उसे यह सुनश्चिति करना चाहिए कि बाहरी आचरण के नयिमों का पालन कयिा जाए।

जब थयिोडोर, दनि-ब-दनि अधकि परपिूर्ण होता गया, और अंततः उसने हृदय की पवत्रिता और आध्यात्मकि ज्ञान की उच्चतम डग्रिी प्राप्त कर ली, तो पूजनीय पाचोमयिस ने उसे तावेनीसी से पेवू में अपने पास बुलाया, यह इच्छा रखते हुए कि थयिोडोर सभी मठों के प्रशासन के कार्यों में उनके साथ साझेदार बने। ताकि वह उसके लिए उसी प्रकार का सहायक हो सके जैसे यहोशू मूसा के लिए था। अब पाचोमयिस अक्सर थयिोडोर को बहुत महत्वपूर्ण कार्य सौंपता था। वह उसे अपनी जगह भाइयों की आध्यात्मकि स्थति का नरीक्षण करने और उनकी आत्माओं की सेवा करने के लिए भेजता था। सभी मठों में थयिोडोर के पास भकि्षुओं को प्रवेश देने और उन लोगों को मठ से नकिालने का अधकिार था, जो सुधार से परे थे और अपने व्यवहार से भाइयों के बीच कलंक फैलाते थे। जब पचोमयिस पवत्रि धर्मग्रंथों की व्याख्या करते थे, तो वे थयिोडोर को अपने बगल में बठिाते थे। अब थयिोडोर पाचोमयिस की जगह पहले से भी अधकि बार उपदेश देता है। उनके शब्दों का उनके श्रोताओं पर अत्यंत लाभकारी प्रभाव पड़ता है। एक प्राचीन जीवनीकार के अनुसार, थयिोडोर के भीतर जो प्रेम था, वह केवल हर भकि्षु के लिए ही नहीं बल्कि हर व्यक्ति के लिए था, और इसने उन्हें अपने भाइयों की आध्यात्मकि जरूरतों को समझने और उन्हें बुद्धमिानी भरे और स्नेहपूर्ण शब्दों से मदद करने में सक्षम बनाया। अपने हसि्से के लिए, पाचोमयिस उसके लिए एक अनुभवी सलाहकार और एक सख्त डाँटने वाले दोनों थे: वे चाहते थे कि थयिोडोर उस नैतकि पवत्रिता और आध्यात्मकि ज्ञान के स्तर पर न रहे जसिे उसने इतनी जल्दी प्राप्त कर लयिा था, बल्कि यह कि वह और भी अधकि सुधार करे, ताकि वह आत्मा से पूरी तरह शुद्ध हो जाए और फरि कभी उस पवत्रिता को न खोए।

आदरणीय थयिोडोर अक्सर भकि्षुओं को उपदेश देते थे। ऐसा करते हुए, वह अक्सर भाषणों के माध्यम से भकि्षुओं को संबोधति करते थे, जसिमें वह या तो कई लोगों में आम दोषों या व्यक्तयिों के दोषों और उल्लंघनों की फटकार लगाते थे, बनिा दोषयिों का नाम लिए। कभी-कभी ऐसा होता था कि वे स्वयं पूरी सभा के सामने पश्चाताप करते और भाइयों से क्षमा मांगते थे।

आदरणीय पाचोमयिस और उनके उत्तराधकिारी, बाबा पेट्रोनयिस, जनिका पाचोमयिस के बाद केवल थोड़े समय तक ही जीवन था, की मृत्यु के बाद, संत थयिोडोर ताबेनीसी के सभी मठों के लिए मोक्ष के मार्ग पर एक बुद्धमिान मार्गदर्शक थे, जो आंशकि रूप से उनके प्रशासन में अबा ऑर्ससियिस की सहायता करते थे, और आंशकि रूप से उनकी जगह मठों का प्रबंधन करते थे, हालांकि उनके साथ पूर्ण सामंजस्य में, मानो उनके सह-शासक के रूप में कार्य करते थे। अपने जीवन और अपने शब्दों दोनों के माध्यम से, उन्होंने भकि्षुओं को बहुत लाभ पहुँचाया और अपने चमत्कारों से और भी महमिामय हुए। संत अथेनासयिस महान उन्हें उनके कार्यों और उनकी बुद्धमित्ता के लिए वशिेष सम्मान देते थे। वे आदरणीय पाचोमयिस की मृत्यु के लगभग बीस साल बाद[3735] नधिन हो गए। अब्बा ओरससियिस के नेतृत्व में भकि्षुओं ने लंबे समय तक उनके लिए शोक मनाया। संत अथेनासयिस ने भी उनके दुख में सच्चे मन से भागीदारी की। भकि्षुओं को सांत्वना देने के लिए, अलेक्जेंड्रयिा के पवत्रि बशिप ने उन्हें एक लंबा पत्र भेजा, जसिमें उन्होंने अब्बा थयिोडोर द सैंक्चुडाइड के गुणों और कारनामों के बारे में वस्तिार से और वाक्पटुता से लखिा।

[3735] संभवतः वर्ष 368 में।

ट्रोपारयिन, स्वर 1:

हे मरुस्थलवासी, देह में एक स्वर्गदूत और चमत्कार-कर्ता, आप हमारे ईश्वर-धारी पिता थियोडोर के रूप में प्रकट हुए: उपवास, जागरण और प्रार्थना के द्वारा, आपने स्वर्गीय वर प्राप्त किए, और विश्वास के साथ आपके पास आने वालों के रोगों और आत्माओं का उपचार किया। उसकी महिमा हो जिसने आपको शक्ति दी; उसकी महिमा हो जिसने आपको मुकुट पहनाया; उसकी महिमा हो जो आपके द्वारा सभी चंगाई करता है।

कॉन्टाकयिन, स्वर 2:

ईश्वर के घर में आप फिनिक्स की तरह फलते-फूलते रहे, और अपने अनुकरणीय तपस्या द्वारा आपने प्रभु के लिए सद्गुणों के फल दिए, हे पूजनीय पिता। अतः आप धन्य हैं, अदेह प्राणियों के समकक्ष।

धन्य कुँवारी म्यूज़ की स्मृति

१६ मई को स्मरणोत्सव

रोम के पोप, संत ग्रेगरी द डायलॉजिस्ट[3736] ने अपने महाधर्माध्यक्ष पीटर को धन्य कन्या मूसा के बारे में निम्नलिखित वृत्तांत सुनाया (जैसा कि मूसा के भाई, प्रोबस द्वारा बताया गया):

'जब मूसा एक युवती ही थीं, तब परमेश्वर की परम पवित्र माता, सदा कुंवारी मरियम, रात्रि में एक स्वप्न में उनके सामने प्रकट हुईं; परमेश्वर की माता के साथ मूसा की ही कोमल आयु की कई कन्याएँ थीं। परमेश्वर की माता ने मूसा से पूछा:

'क्या तुम इन कन्याओं के साथ मिलकर रहना और हमेशा मेरा अनुसरण करना नहीं चाहोगी?'

इस पर मूसा ने उत्तर दिया:

'मैं बहुत चाहती हूँ, मेरी मालकिन।'

तब ईश्वर की माता ने मूसा से कहा कि वह बचकाने खेलों और उन सभी बातों से बचें जो ईश्वर को प्रसन्न नहीं करतीं, क्योंकि तीस दिनों में मूसा उनके पास आएँगी और अन्य युवा कन्याओं के साथ शामिल हो जाएँगी।

उस समय से, मूसा ने अपने जीवन के तरीके को बदल दिया: बच्चों के खेल और मनोरंजन को त्यागकर, उसने अपना पूरा जीवन ईश्वर को प्रसन्न करने वाले जीवन को समर्पित कर दिया।

अपनी बेटी के जीवन में ऐसा बदलाव देखकर, मूसा के माता-पिता बहुत आश्चर्यचकित हुए। जब उन्होंने इस बदलाव का कारण पूछा, तो मुज़ा ने उन्हें बताया कि उसने सपने में परमेश्वर की अति पवित्र माता को देखा था; उसने उन्हें उस आज्ञा के बारे में बताया जो परमेश्वर की माता ने उसे दी थी; उसने उस दिन के बारे में भी बताया जिस दिन वह इस जीवन से चल जाएगी और परमेश्वर की माता के साथ चलने वाली अन्य कुंवारी कन्याओं के समूह में शामिल हो जाएगी।

ईश्वर की माता के मूसा के समक्ष प्रकट होने के पच्चीसवें दिन, वह कन्या गंभीर रूप से बीमार पड़ गई; उसका पूरा शरीर आग की तरह जल रहा था। तीसवें दिन, जब उस धन्य कन्या के निधन का समय निकट आया, मूसा ने फिर से परमेश्वर की माता को देखा, जो उन्हीं कन्याओं के साथ आई थीं। परमेश्वर की माता ने मूसा को अपनी ओर बुलाना शुरू किया। उस धन्य कन्या ने उन्हें कोमल स्वर में उत्तर दिया:

'मैं आ रही हूँ, मेरी मालकि, मैं आ रही हूँ!'

[3736] संत ग्रेगरी महान (द डायलॉजिस्ट) – पश्चिमी चर्च के एक प्रसिद्ध शिक्षक जो 6वीं शताब्दी में रहते थे। उनके कार्यों में, निम्नलिखित विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं: 'इटालियन पिताओं के जीवन पर संवाद' (इसी कार्य के लिए, जिसे संवादात्मक, यानी वार्तालाप के रूप में लिखा गया था, संत ग्रेगरी ने 'द डायलॉजिस्ट' की उपाधि प्राप्त की); *द पास्टोरल रूल*, जिसमें एक चरवाहे को कैसा होना चाहिए और उसे अपने कर्तव्यों को कैसे पूरा करना चाहिए, इस पर चिंतन किया गया है; *द ऑर्डर ऑफ द लिटर्जी ऑफ द प्रेसैंक्टिफाइड गिविंग्स*; सुसमाचार और यहेजकेल नबी की पुस्तक पर उपदेश, और अन्य। – उनकी पर्व तिथि पवित्र चर्च द्वारा 12 मार्च को मनाई जाती है।

इन शब्दों के साथ, धन्य मूसा ने अपनी आत्मा परमेश्वर की अतिपवित्र माता के हाथों में सौंप दी और, इस सांसारिक जीवन को त्यागकर, परमेश्वर की माता के साथ आई अन्य कुंवारी कन्याओं के साथ शाश्वत निवासों में अपना वास कर लिया[3737] ।

जब आर्चडीकन पीटर ने यह वृत्तांत सुना, तो उन्होंने संत पोप ग्रेगरी से पूछा:

'मैं जानना चाहूँगा, आदरणीय प्रभु, कि क्या धर्मात्माओं की आत्माओं को उनके शरीरों से अलग होने से पहले स्वर्ग में स्वीकार किया जा सकता है?'

जिस पर संत ग्रेगरी ने उत्तर दिया:

– हम यह नहीं कह सकते, बिना किसी अपवाद के, कि सभी धर्मपरायण लोगों की आत्माओं का स्वर्ग में स्वागत किया जाएगा; न ही हम यह कह सकते हैं कि किसिकी आत्माओं का स्वर्ग में स्वागत नहीं किया जाएगा। लेकिन शायद ऐसे धर्मपरायण लोग भी हैं जिनकी आत्माएँ, एक तरह से, स्वर्ग के राज्य से कुछ दूरी पर हैं। इसका कारण यह है कि अपने सांसारिक जीवन के दौरान, ये लोग सदाचारी जीवन में एक निश्चित स्तर की पूर्णता प्राप्त नहीं कर पाए। जहाँ तक इस तथ्य का सवाल है कि पृथ्वी पर ईश्वर को प्रसन्न करने वाले ढंग से जीवन जीने वाले धर्मात्माओं की आत्माएँ, जब वे देह से मुक्त हो जाती हैं, तो स्वर्गीय निवासों में निवास करती हैं, यह सत्य सूर्य की रोशनी से भी अधिक स्पष्ट है; क्योंकि हमारे प्रभु यीशु मसीह स्वयं कहते हैं: *'क्योंकि जहाँ शव होता है, वहाँ गिद्ध इकट्ठा होते हैं'* (मत्ती 24:28); अर्थात्, जहाँ हमारे प्रभु यीशु मसीह हैं, जिन्होंने स्वयं हमारे मानव शरीर को धारण किया है, वहाँ, निस्संदेह, धार्मिकों की आत्माएँ भी होंगी। और पवित्र प्रेरित पौलुस ने *'प्रस्थान करके मसीह के साथ होने' की* बहुत इच्छा की थी (फिलिप्पियों 1:23)। जो कोई भी यह मानता है कि प्रभु स्वर्ग में वास करते हैं, उसे यह भी मानना चाहिए कि पौलुस की आत्मा मसीह के साथ स्वर्ग में वास करती है। वही प्रेरित, सभी के देखने के लिए स्पष्ट रूप से गवाही देते हैं, कि धर्मी लोगों की आत्माएँ, शरीर से अलग होने पर, स्वर्गीय स्वदेश में निवास करती हैं, क्योंकि वे कहते हैं: *'हम जानते हैं कि जब हमारा पृथ्वी का यह डेरा, यह तम्बू, गिरा दिया जाएगा, तो हमारे लिए स्वर्ग में परमेश्वर के पास एक आवास है, एक ऐसा घर जो हाथों से नहीं बना, बल्कि अनन्त है'* (2 कुरिन्थियों 5:1)। हमारे परमेश्वर को महिमा, सम्मान और आराधना मिले, अब और युगानुयुग। आमीन।

30 मई

17 मई (पुराना कैलेंडर)

संत प्रेरित एंड्रोनिकस और उनकी सहचारिणी जूनीया की स्मृति

17 मई को स्मरणोत्सव

प्रेरित संत एंड्रोनिकस सत्तर प्रेरितों में गिने जाते हैं; वह प्रेरित संत पौलुस से पहले मसीह में विश्वास लाए, जो उनके संबंधी थे, जैसा कि संत पौलुस रोमियों के नाम अपनी पत्री में गवाही देते हुए कहते हैं: *'अंद्रोनिकुस और जूनिया को नमस्कार करना, जो मेरे संबंधी और सह कैदी हैं, जो प्रेरितों में विशिष्ट हैं और जिन्होंने मुझसे पहले मसीह पर विश्वास किया था'* (रोमियों 16:7)।

संत एंड्रोनिकस पैनोनिया के बिशप थे[3738] ; हालाँकि, वे किसी एक शहर या देश तक सीमित उपदेशक और शिक्षक नहीं थे, बल्कि उन्होंने पूरी दुनिया में शिक्षा दी; वे विभिन्न देशों में घूमे, हर जगह मसीह के नाम का प्रचार किया और दुष्टात्माओं के धोखे को जड़ से उखाड़ा। उनके सभी उपदेश कार्यों में उनकी सहायक सबसे गौरवशाली जुनिया थीं। एंड्रोनिकस ने, जुनिया के साथ मिलकर, मसीह के लिए अपना जीवन दे दिया, ताकि बहुत से लोग सच्चे परमेश्वर को जान

[3737] पवित्र कन्या मूसा की मृत्यु 5वीं शताब्दी में हुई।

[3738] वास्तव में, वह पन्नोनिया में सिरमियम का बिशप था। पन्नोनिया डैन्यूब नदी के दक्षिण में रोमन साम्राज्य के प्रमुख क्षेत्रों में से एक था, जो पश्चिम में आल्प्स, दक्षिण में सावा नदी, और पूर्व तथा उत्तर में डैन्यूब नदी से घिरा हुआ था। – ईसाई चर्च के इतिहास में, पन्नोनिया संत सिरिल और मेथोडियस, प्रेरितों के समकक्ष, स्लावों के पहले शिक्षकों, के मिशनरी कार्य के स्थल के रूप में उल्लेखनीय है।

सकें। वास्तव में, अपने उपदेश के माध्यम से, अन्द्रोनकिुस और जूनीया ने कई मूर्तपिूजक मंदरिों को नष्ट कयिा और उनकी जगह पर ईसाई चर्चों की स्थापना की, हर जगह लोगों से अशुद्ध आत्माओं को नकिाला और दुर्बल तथा बीमारों को चंगा कयिा। जब संत एंड्रोनकिस और जूनीया, सभी लोगों के सामान्य कर्तव्य को पूरा करते हुए, अपने प्राण त्याग दिए, तो प्रभु ने उन्हें प्रेरतित्व और शहीदता का मुकुट प्रदान कयिा, क्योंकि उन्होंने मूर्तपिूजकों के हाथों बहुत कष्ट सहे थे। उनके पूजनीय अवशेष यूजेनयिा के[3739] में कई अन्य पवत्रि शहीदों के अवशेषों के साथ पाए गए। इन अवशेषों का स्थान ईसाइयों को ईश्वर के एक वशिेष प्रकाशन के माध्यम से प्रकट कयिा गया था, जैसा कि 22 फरवरी के ववरिण में वस्तिार से वर्णति है।

कॉन्टाकयिन, स्वर 2:

आओ हम मसीह के प्रेरति एंड्रोनकिस की स्तुति करें, जो एक तेजस्वी तारा थे जनि्होंने दव्यि ज्ञान के प्रकाश से राष्ट्रों को प्रबुद्ध कयिा, और अति बुद्धमिान जूनयिा की, जनि्होंने सुसमाचार के प्रचार में उनके साथ परशि्रम कयिा, यह पुकारते हुए: हम सभी के लिए मसीह हमारे परमेश्वर से अनवरत प्रार्थना करो।

पवत्रि शहीद सोलोखोन की स्मृति

17 मई को स्मरणोत्सव

पवत्रि शहीद सोलोखोन सम्राट मैक्समियिन[3740] के समय में रहते थे; वे मस्रि के मूल के थे और वशि्वास से ईसाई थे। उन्होंने ट्राइब्यून कैंपन के अधीन एक सैनकि के रूप में सेवा की, जो तीन हजार सैनकिों का कमांडर था। जब सम्राट के आदेश पर, कैंपान अपनी रेजमिेंट के साथ मस्रि से काल्सेडॉन[3741] पहुँचा, तो सभी कमांडरों को अपने सैनकिों सहति मूर्तयिों को बलदिान चढ़ाने का आदेश दयिा गया। सम्राट के आदेश का पालन करते हुए, कैंपान बलदिान चढ़ाने के लिए आगे बढ़ा।

जब कम्पन की रेजमिेंट के सैनकि मूर्तयिों को बलदिान दे रहे थे, तब संत सोलोखोन, दो सैनकिों के साथ, पम्फामरि और पम्फालोन ने स्वयं को ईसाई घोषति कयिा और सभी के सामने घोषणा की कि वह कसिी भी परस्थितिि में मसीह का त्याग नहीं करेगा, भले ही उसे सबसे क्रूर यातनाओं का सामना करना पड़े, बल्कि उसने अपने जीवन भर मसीह के प्रति वफादार रहने का वादा कयिा। इसके बाद, जब संतों को वभिन्नि क्रूर यातनाओं का सामना करना पड़ा और उन्हें बुरी तरह पीटा गया, तो पाम्फामरि और पाम्फालोन ने अपनी आत्माएँ ईश्वर के हाथों में सौंप दीं, जबकि संत सोलोखोन ने सभी के सामने साहसपूर्वक मसीह के नाम की घोषणा करना जारी रखा। यह जानकर, कम्पन बहुत क्रोधति हो गया और उसने अपने नौकरों को आदेश दयिा कि वे शहीद का मुँह तलवार से चीर दें और मूर्तपिूजा की बलि का खून उसके मुँह में डाल दें। लेकनि शहीद ने अपने दाँतों की ताकत से लोहे को कुचल दयिा; फरि उसने अपनी बेड़यिाँ तोड़ दीं और अपने अत्याचारी के सामने आज़ाद खड़ा हो गया, मसीह के नाम की महमिा करते हुए और कैम्पान की दुष्टता की नदिा करते हुए। उसी क्षण, स्वर्ग से एक आवाज़ सुनाई दी, जसिने संन्यासी को उसके दुखों में मजबूत कयिा और उसे साहस के लिए बुलाया। इसके बाद, संत को कई अन्य यातनाएँ दी गईं: उनके यातनादाताओं ने उन्हें बेरहमी से पीटा और पैरों से पकड़कर छत की टाइलों

[3739] संत एंड्रोनकिस और जूनीया का नधिन पहली शताब्दी के उत्तरार्ध में हुआ। – 'यूजेनयिा' कन्स्टेंटनिोपल के एक जलि का नाम था, जो इस तथ्य के लिए उल्लेखनीय था कि सम्राट आर्काडयिस (396–408) और होनोरयिस (396–423) के शासनकाल के दौरान वहाँ कई पवत्रि अवशेष पाए गए थे। खोजी गई अन्य अवशेषों में संत एंड्रोनकिस और जूनयिा के अवशेष भी शामलि थे। 12वीं शताब्दी में, सम्राट एंड्रोनकिस प्रथम (जनिका शासन लगभग 1183 से 1185 तक था) द्वारा यहाँ प्रेरति एंड्रोनकिस के सम्मान में एक चर्च का नरि्माण कयिा गया था। – संत एंड्रोनकिस का पर्व 30 जुलाई को, सत्तर प्रेरतिों: सलिास, सलिवानस, क्रस्किस और एफेनेटस के साथ मनाया जाता है।

[3740] रोमन सम्राट मैक्समियिन ने 284 से 305 तक शासन कयिा।

[3741] काल्सेडोन – या, अधकि सही रूप से, काल्सेडोन – मूल रूप से मार्मारा सागर के तट पर एक मेगारीन कॉलोनी थी। ईसाई सम्राटों के अधीन, काल्सेडोन एशयिा माइनर प्रांत बथिनियिा की राजधानी थी। ईसाई चर्च के इतहिास में, कल्केडोन चौथे सार्वभौमकि परषिद के स्थल के रूप में उल्लेखनीय है, जसिे 451 में सम्राट मार्सयिन द्वारा बुलाया गया था (शासन 460–467) मोनोफसिाइट वधिर्म की नदिा करने के लिए (मोनोफसिाइट वधिर्म की स्थापना कॉन्स्टेंटनिोपल के आर्चमिैंड्राइट यूटकिीस ने की थी, जनि्होंने यह सखिाया कि यीशु मसीह में मानवीय स्वभाव पूरी तरह से दैवीय स्वभाव में समाहति हो गया था और इसलिए, उनमें केवल दैवीय स्वभाव को ही मान्यता दी जानी चाहिए)।

और तेज पत्थरों पर घसीटा; फिर उन्होंने उन्हें घर से जुड़ी एक पेड़ की टहनी से दाहिने हाथ से लटका दिया, जबकि उनके बाएं पैर से एक बड़ा पत्थर बांध दिया गया; इस अवस्था में संत छठे घंटे से लेकर नौवें घंटे तक लटके रहे; इस पूरे समय, उनके यातना देने वालों ने सोलोखोन को हर तरह से मसीह का त्याग करने के लिए उकसाया, लेकिन उन्होंने उनकी दुष्ट इच्छा पूरी नहीं की। जब, शाम के समय, संत को यातना देने वाले पेड़ से उतारा गया और जमीन पर रखा गया, तो सभी को आश्चर्य हुआ, वह बिल्कुल स्वस्थ व्यक्ति की तरह खड़े हो सके। अंत में, देर शाम को, कम्पन ने क्रोध के एक दौरे में लेखन की कलम पकड़ी और, उग्र क्रोध में, उसे संत के कान में घुसा दिया, जिससे वह उनके सिर से पार हो गई। जब सैनिक यातना स्थल से चले गए, तो ईसाई आए और उन्होंने पवित्र शहीद के सम्मानित शरीर को उठाया, जो अपने कष्टों से बहुत कमजोर हो गया था; उसे एक बिस्तर पर लिटाकर, वे उसे एक ईसाई विधवा के घर ले गए। वहाँ संत ने थोड़ी सी रोटी खाई और कुछ पानी पिया। कुछ ताकत वापस पाकर, उन्होंने अपने बिस्तर के चारों ओर इकट्ठा हुए ईसाइयों से बात करना शुरू किया, और उन्हें ईसाई धर्म की अपनी स्वीकारोक्ति में दृढ़ और साहसी बने रहने के लिए प्रोत्साहित किया। तब, स्वर्ग की ओर अपनी आँखें उठाकर और पर्याप्त समय के लिए परमेश्वर से प्रार्थना करके, संत ने अपना प्राण मसीह को सौंप दिया[3742] , हमारे परमेश्वर, जिसकी महिमा युगानुयुग होती रहे। आमीन।

31 मई

18 मई (पुराना तरीका)

पवित्र शहीद थियोडोतस और उनके साथ की सात कुंवारी कन्याओं: फाइना, क्लॉडिया, मैट्रोना, टेकुसा, जूलिया, अलेक्जेंड्रा और यूफ्रेशिया की यातनाएँ

18 मई को स्मरणोत्सव

संत् की जीवनी के लेखक, नीलस कहते हैं, 'पवित्र शहीद थियोडोटस से कई आशीर्वाद प्राप्त करने के बाद, मैं इसे अपना कर्तव्य मानता हूँ कि न केवल शब्दों में उनके बलिदान की प्रशंसा करूँ, बल्कि कर्मों द्वारा उन्हें धन्यवाद भी दूँ; और यद्यपि मैं इसे शब्द और कर्म दोनों में पूरी तरह से पूरा नहीं कर सकता, फिर भी मैं अपनी क्षमता के अनुसार प्रयास करूँगा, क्योंकि मुझे ईश्वर-प्रेमियों के निर्माण और उनके आध्यात्मिक लाभ के लिए, पवित्र शहीद थियोडोटस के जीवन की कहानी और उनके दुखों का वृत्तांत लिखना अत्यंत आवश्यक लगता है। कुछ लोग उनके बारे में कहते हैं कि वह मूल रूप से इस दुनिया के अन्य अधिकांश पापी लोगों की तरह ही रहते थे, क्योंकि उन्होंने भी इस दुनिया की संपत्ति प्राप्त करने की कोशिश की थी; वे कहते हैं कि, एक वैध विवाह करने के बाद, उन्होंने अपनी संपत्ति बढ़ाने के लिए एक सराय खरीदी। फिर भी, उनका पूरा जीवन उनके शहीद होने से मुकुटित और सुशोभित है। वे उसके बारे में जो चाहें कहें; जहाँ तक मेरी बात है, मैं वह सब कुछ बयान करूँगा जो मैंने उसके साथ रहते हुए अपनी आँखों से देखा, और मैं उन बातचीतों को भी बताऊँगा जो मुझे संत के साथ करने का सौभाग्य मिला।

अपने शहीद होने से बहुत पहले, संत ने कई पुण्य कार्य किए। इस प्रकार, उन्होंने हर तरह से शारीरिक इच्छाओं के खिलाफ संघर्ष किया; यद्यपि वे एक वैध विवाह में थे, उन्होंने अपने ही शरीर के खिलाफ संघर्ष किया, उसे आत्मा के अधीन किया, प्रेरित के शब्दों के अनुसार: *'जिनकी पत्नियाँ हैं, उन्हें ऐसा व्यवहार करना चाहिए जैसे कि उनकी कोई पत्नी न हो'* (1 कुरिन्थियों 7:29)। संत इस गुण में इतने अधिक निपुण थे कि वे कई अन्य लोगों के लिए पवित्रता और ब्रह्मचर्य के शिक्षक बन सकते थे। संत ने हर तरह से कामुक सुख और सभी पापी अशुद्धियों से परहेज़ किया, और उपवास तथा संयम के द्वारा अपने शरीर को आत्मा के अधीन कर लिया। हर अच्छे काम की शुरुआत और नींव को उपवास मानते हुए, संत ने आध्यात्मिक युद्ध की तैयारी करते हुए, मानो एक ढाल के रूप में, इसे अपने आप पर चढ़ा लिया। संत ने शरीर को कष्ट देना हर ईसाई का कर्तव्य माना; उन्होंने अपनी सारी संपत्ति गरीबों में उत्साहपूर्वक बाँटकर धन-संपत्ति की लालसा और संचय पर विजय प्राप्त की। उनके जीवन से यह शिक्षा मिलती है कि, एक सराय के मालिक होने के बावजूद,

[3742] संत सोलोखोन, पंफिरि और पंफालोन की शहादत तीसरी शताब्दी के अंत या चौथी शताब्दी की शुरुआत में हुई थी।

उन्होंने प्रचुर मात्रा में आध्यात्मिक कार्य किया और कई मानव आत्माओं को ईश्वर के लिए जीता; इसका कारण यह था कि संत थियोडोटस ने एक सराय चलाने के बहाने, प्रेरितों के दायित्व को पूरा किया; अपनी ईश्वर-प्रेरित शिक्षाओं और प्रवचनों के माध्यम से, उन्होंने कई ग्रीकों और यहूदियों को मसीह के पास लाया, और कई पापियों को उनके पापों से पश्चाताप करने के लिए प्रेरित किया। संत थियोडोटस में बीमारियों को ठीक करने का वरदान भी था: अपने हाथ रखने और प्रार्थना के द्वारा, उन्होंने कई शारीरिक बीमारियों को ठीक किया, जबकि अपने शब्दों से उन्होंने आत्मा के घावों को भर दिया।

मसीह के नाम के लिए संत थियोडोतस के दुख सहने का कारण इस प्रकार था। एक हेगेमोन, जिसका नाम थियोटेकन था, ने गलाटिया के अंकीरा प्रांत का प्रभार संभाला[3743] । यह हेगेमोन एक अत्यंत क्रूर और दुष्ट व्यक्ति था; उसे रक्तपात और हत्या के दृश्य से आनंद आता था, और उसकी दुष्टता इतनी अधिक थी कि उसे मानव शब्दों में व्यक्त करना भी कठिन है। थियोटेकन ने सम्राट डायोक्लेटियन से हेगेमोन का पद प्राप्त करने पर[3744] , उनसे वादा किया कि वह शीघ्र ही एन्कयरा में रहने वाले सभी ईसाइयों को मूर्तिपूजा में परिवर्तित कर देगा।

वास्तव में, जब थियोटेकन अंकीरा पहुँचा, तो उसकी آمد की खबर से ही ईसाइयों में इतना बड़ा भय और आतंक छा गया कि वे तुरंत उस स्थान से भाग गए; बस्ती सुनसान रह गई, जबकि रेगिस्तान और पहाड़ भागने वालों से भर गए। थियोटेकन ने अपनी ओर से एक के बाद एक दूत भेजे, जो दूर-दूर तक यात्रा करके सम्राट के कठोर आदेश का प्रचार कर रहे थे, जिसमें आदेश दिया गया था कि ईसाई चर्चों को नष्ट कर जमीन-दोस्त कर दिया जाए, और जो कोई भी मसीह के नाम का प्रचार करता पाया जाए, उसे बेड़ियों में जकड़कर कालकोठरियों में डाल दिया जाए, जहाँ ईसाई भयंकर यातनाओं की प्रतीक्षा में रहेंगे; साथ ही, ईसाइयों की संपत्ति जब्त कर लूट ली जाए। उस समय, मसीह की कलीसिया विशाल लहरों के बीच संकट में एक जहाज के समान थी, जिसे डर था कि वह समुद्र की गहराई में डूब जाएगी; क्योंकि अधर्मी मूर्तिपूजक मसीहियों के घरों पर छापे मार रहे थे, उनकी संपत्ति लूट रहे थे, और निर्लज्जतापूर्वक पुरुषों और महिलाओं को घसीट रहे थे, युवा पुरुषों और कुंवारी लड़कियों को खींचकर या तो उनके दुष्ट बलिदानों के स्थलों पर या जेल में ले जाया जाता था। उस समय ईसाइयों को जो-जो दुख झेलने पड़े, उन सभी का वर्णन करना भी कठिन है। कई पुरोहित, यातनाओं के डर से, अपने चर्चों से भाग गए; चर्चों के दरवाजे खुले रहे; फिर भी भागकर आए लोग खुद के लिए कोई ऐसी जगह नहीं ढूंढ पाए जहाँ वे मूर्तिपूजकों के उत्पीड़न से शरण ले सकें। एक बार जब ईसाइयों की संपत्ति लूट ली गई, तो एक अकाल पड़ा, जो स्वयं मूर्तिपूजकों द्वारा दी गई यातनाओं जितना ही भयंकर था। तब कई ईसाई, जो पहाड़ों और रेगिस्तानों में छिपे हुए थे, भूख की पीड़ा सहन न कर सके, और दया की आशा में मूर्तिपूजकों के पास जाकर उनके हाथों में आत्मसमर्पण कर दिए। मरुभूमियों और पहाड़ों में शरण लेने वाले सभी शरणार्थियों के लिए यह एक कठिन समय था: यह उन ईसाइयों के लिए विशेष रूप से कठिन था जो पहले आराम और ऐश्वर्य में रहते थे और जिन्होंने कभी अभाव नहीं देखा था; अब ऐसे ईसाइयों को जंगली में मिलने वाली जड़ों को चबाकर और विभिन्न जंगली जड़ी-बूटियों पर जीवित रहने के लिए मजबूर होना पड़ा।

ठीक इसी समय में धन्य थियोडोतस ने प्रभु की आज्ञाओं को पूरा करने के लिए बहुत परिश्रम किया, और निडर होकर स्वयं को कई खतरों में डाला; उसने सोना प्राप्त करने के उद्देश्य से स रन एक सराय नहीं चलाई, जैसा कि कुछ लोग उसके बारे में कहते हैं, बल्कि उसने वह सराय इस लिए प्राप्त की ताकि सभी उत्पीड़ित ईसाइयों को वहाँ आश्रय और विश्राम प्रदान कर सके। इसके अलावा, उन्होंने बेड़ियों में जकड़े हुए ईसाइयों की बहुत देखभाल की, और अपने मूर्तिपूजक अत्याचारियों से भागे हुए लोगों को आश्रय दिया; उन्होंने पहाड़ों और रेगिस्तानों में छिपे हुए सभी ईसाइयों की भी देखभाल की; जबकि पवित्र शहीदों के शवों को, जिन्हें मूर्तिपूजकों द्वारा कुत्तों, जंगली जानवरों और पक्षियों द्वारा खाए जाने के लिए फेंक दिया गया था, उन्होंने गुप्त रूप से दफनाया (यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि राज्यपाल ने उन ईसाइयों को मृत्युदंड का आदेश दिया था जो अपने भाइयों के शवों को दफनाते थे; इसलिए, धन्य थियोडोतस उन्हें चुरा लेते और गुप्त रूप से उनका अंतिम संस्कार कर देते थे)। इस प्रकार, संत थियोडोतस का घर ईसाइयों के लिए एक सराय और एक आश्रय दोनों का काम करता था, क्योंकि थियोडोतस, जिन्हें एक सराय-मालिक माना जाता था, ने pagans का संदेह नहीं जगाया कि वह एक ईसाई था। और वह सभी के लिए एक संत थे: उत्पीड़ितों के रक्षक, भूखों के लिए भोजन प्रदान

[3743] गलातिया – एशिया माइनर में एक क्षेत्र।

[3744] सम्राट डायोक्लेशियन ने 284 से 305 तक रोमन साम्राज्य पर शासन किया।

करने वाले, बीमारों के उपचारक, संदेह करने वालों के लिए दृढ़ आश्वासन का स्रोत, विश्वास और धार्मिकता के शिक्षक, ईश्वरीय जीवन के मार्गदर्शक, और शहादत के कार्य के लिए प्रेरक।

उस समय, दुष्ट राज्यपाल थियोटेक्नोस ने आदेश दिया कि बाजारों में बेचे जाने वाले सभी भोजन और पेय पर मूर्ति पूजा की बलि के खून से हर जगह छिड़काव किया जाए। उसने ईसाइयों के साथ ऐसा इसलिए किया, ताकि उन्हें, उनकी इच्छा के विरुद्ध भी, ऐसे खून से अशुद्ध भोजन खाने के लिए मजबूर किया जा सके; परिणामस्वरूप, ईसाई चर्चों में सच्चे ईश्वर को बलिदान देना असंभव हो गया, क्योंकि पूरे शहर में ऐसा कोई रोटी या शराब नहीं थी जिसे मूर्तिपूजकों ने अपवित्र न किया हो। यह जानकर, संत थियोडोटस ने विश्वासियों को अनाज, गेहूं और शराब का वितरण करना शुरू कर दिया, जिसे उन्होंने पहले से खरीदकर प्रचुर मात्रा में रखा था। दूर-दूर तक भोजन और पेय का वितरण करके और अपने घर में कई ईसाइयों को खिलाकर, थियोडोटस ने अपनी सराय की तुलना नूह की कश्ती से की, जिसने उसमें मौजूद सभी लोगों को बाढ़ के पानी से बचाया था (उत्पत्ति 7:1–24)। क्योंकि जैसे उन दिनों, नूह के समय में, नूह की कश्ती के अंदर मौजूद लोगों के सिवाय बाढ़ के पानी से कोई भी नहीं बच सकता था, वैसे ही अब हमारे शहर में (संत थियोडोतस के जीवनचरित के लेखक के अनुसार), एक भी ईसाई मूर्तिपूजक बलिदानों की घृणित हरकतों से होने वाले अपवित्रता से खुद को तब तक बचा नहीं सकता था जब तक कि वह थियोडोतस के घर न जाता। इस प्रकार, थियोडोतस का सराय आतिथ्य का स्थान, प्रार्थना का घर, और परमेश्वर के याजकों के लिए एक वेदी बन गया, जो वहाँ निर्मल दिव्य बलिदान का अनुष्ठान करते थे। महाप्रलय के समय जैसे-जैसे लोग नौआह की नाव में शरण लेने भागे थे, वैसे ही सभी लोग थियोडोटस के घर में शरण लेने भागे। इस धन्य थियोडोटस की आतिथ्य-सत्कार ऐसी थी; यही उसका लाभ और अर्जन था। खैर, इतना ही काफी है। आइए हम पवित्र शहीद के अन्य कर्मों का भी वर्णन करें।

ईसाइयों के खिलाफ इस उत्पीड़न के दौरान, ऐसा हुआ कि थियोदोतस का एक मित्र, जिसका नाम विक्टर था, को pagans ने निम्नलिखित कारण से पकड़ लिया: आर्टमिसि के कुछ पुरोहितों[3745] ने विक्टर पर इगेमोन के पास इस प्रकार की बदनामी की कि विक्टर ने उनकी देवी का अपमान किया है, यह कहते हुए कि अपोलो[3746] ने अपनी पूर्ण बहन आर्टमिसि के साथ बलात्कार किया था और उसे डेले में वेदी[3747] के सामने अपवित्र कर दिया था, और यह टिप्पणी की कि यूनानियों को अपने ऐसे देवताओं पर शर्म आनी चाहिए – कामुक जो अपने आप को ऐसे घृणित कृत्य करने की अनुमति देते हैं, जिनके बारे में शुद्ध लोग सुनना भी बर्दाश्त नहीं कर सकते। विक्टर को, जिस पर इस तरह झूठा आरोप लगाया गया था, गिरफ्तार करने के बाद हेगेमोन ने उसे कैद करने का आदेश दिया। कई यूनानी कैदी के पास आए और उसे चापलूसी से प्रोत्साहित करते हुए कहा:

'हेगेमोन की आज्ञा का पालन करो; तब तुम्हें बड़ी प्रतिष्ठा से सम्मानित किया जाएगा, तुम राजा के मित्र बन जाओगे, तुम्हें उससे तरह-तरह की दौलत मिलेगी, और तुम शाही महलों में रहोगे।' लेकिन अगर तुम हेगेमोन की अवज्ञा करते हो, तो उन यातनाओं के बारे में सोचो जो तुम्हारा इंतज़ार कर रही हैं; तब तुम्हारे पूरे घर-बार और सारी संपत्ति लूट ली जाएगी, तुम्हारे सभी रिश्तेदारों का संहार कर दिया जाएगा, और तुम्हारे शरीर को भी, बहुत क्रूर यातनाओं के बाद, एक कड़वी मौत दी जाएगी और कुत्तों के खाने के लिए फेंक दिया जाएगा।

उन्होंने विक्टर से ये और भी कई बातें कहीं।

धर्म के संरक्षक, थियोडोडस, रात में विक्टर के कालकोठरी में आकर, उसे आने वाले कठिन कार्य के लिए इस प्रकार कहकर मजबूत किया:

'किसी भी परिस्थिति में, विक्टर, तुम्हें उन अधर्मी मूर्तिपूजकों द्वारा कही गई चापलूसी भरी बातों को नहीं सुनना चाहिए; उनकी दुष्ट सलाह को स्वीकार मत करो; उनके पदचिन्हों पर मत चलो; हमें मत छोड़ो; पवित्रता की अपेक्षा अपवित्रता और दुष्टता को मत चुनो; और सत्य से अधिक असत्य से प्रेम मत करो। ऐसा मत करो, हे मेरे मित्र! यह मत करो, यह जानते हुए कि वे दुष्ट पुरुष, अपनी चालाकी और चापलूसी भरे वादों से, तुम्हें विनाश की ओर ले जाने की कोशिश कर रहे हैं। क्या यहूदियों ने विश्वासघाती यहूदा को ऐसे ही वादों से बहकाया नहीं था? क्या उन तीस चाँदी के टुकड़ों से, जो

[3745] आर्टमिसि या डायना – शिकार की देवी और जंगलों की संरक्षक।

[3746] अपोल्लो – सूर्य के देवता और कलाओं के संरक्षक।

[3747] यह देवताओं के कारनामों से संबंधित यूनानी पौराणिक कथाओं को संदर्भित करता है। यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि प्राचीन यूनानी धर्म ने अपने देवताओं को न केवल विभिन्न परोपकारी शक्तियों, कलाओं और ज्ञान से, बल्कि सबसे नीच स्वभाव के लोगों की विशेषता वाले दोषों से भी संपन्न किया था।

उसने उनसे प्राप्त कि, उसे कोई लाभ हुआ? उसे उन तीस चाँदी के टुकड़ों से और कुछ नहीं मिला, सिवाय उस रस्सी के जिससे उसने खुद को फाँसी दी (मत्ती 27:3-5)। कभी यह मत सोचो कि तुम्हें दुष्टों से कोई अच्छाई मिलेगी, क्योंकि उनके वादे अनंत मृत्यु की ओर ले जाते हैं।"

इन और इसी तरह के शब्दों से, संत थियोडोतस ने विक्टर को उसकी धार्मिकता में मजबूत किया। और विक्टर ने वास्तव में तब तक बहादुरी से अपनी परीक्षा को सहन किया, जब तक उसे उन शब्दों की याद थी जिनसे संत थियोडोतस ने उसे प्रोत्साहित किया था। संत के कष्टों को देखने वाले सभी लोगों ने उनके गौरवशाली कार्य की प्रशंसा की। हालाँकि, जब उनके शहीद होने का समय नजदीक आया और इस दुनिया से उनके प्रस्थान का समय आ गया, तो विक्टर ने अपने यातनाकर्ता से कुछ समय के लिए अपनी यातनाएँ रोकने के लिए कहा, ताकि उन्हें अपने भीतर मनन करने का समय मिल सके। तुरंत, राज्यपाल के नौकरों ने यातना बंद कर दी और विक्टर को वापस उसकी कोठरी में ले गए। लेकिन विक्टर अपने घावों के कारण अपनी कोठरी में ही मर गया, और उसके बयानों का परिणाम अज्ञात रह गया।

इसके बाद, धन्य थियोडोतस शहर से चौदह स्टेडियम दूर स्थित 'मालोस' नामक गाँव के लिए रवाना हुए। संत वहाँ इसलिए गए क्योंकि उन्हें पता चला था कि यहीं पर पवित्र शहीद वैलेंट, जिन्होंने पहले मिदिकिनिा में कष्ट सहे थे, ने अपनी शहादत पूरी की थी और उन्हें गालियोस नामक नदी में फेंक दिया गया था। थेओडोटस इस गाँव के लिए रवाना हुए, लेकिन वे उसमें नहीं गए; इसके बजाय, वे गाँव से दो स्टेडियम की दूरी पर, नदी के किनारे रुके। पवित्र शहीद के अवशेष पाकर, थेओडोटस ने उन्हें सम्मान के साथ दफनाया। जब वह वहाँ से लौट रहे थे, तो उनकी मुलाकात कुछ ईसाइयों से हुई, जिन्होंने उन्हें देखकर सभी ईसाइयों के एक उपकारी के रूप में उनका बहुत-बहुत धन्यवाद किया; विशेष रूप से, उन्होंने संत द्वारा उन पर किए गए एक महान दयालुता के कार्य के लिए उनका धन्यवाद किया, अर्थात्: जब आर्टेमिसिनि का वेदी नष्ट कर दी गई थी, तो इन ईसाइयों को यातना देने के लिए राज्यपाल के हवाले कर दिया गया था; लेकिन संत थियोडोटस ने बहुत प्रयास के बाद, और बहुत बड़ी कीमत चुकाकर उन्हें छुड़ाया। इसी कारण से ईसाइयों ने अब उनके सामने झुककर उन्हें नमस्कार किया और उनका धन्यवाद किया। संत ने उन्हें देखकर अपनी प्रसन्नता व्यक्त की और उन्हें अपने साथ भोजन करने के लिए आमंत्रित किया। एक ऊँची और सुंदर जगह पाकर, वे घास पर लेट गए; वहाँ कई सुंदर पेड़, कई फूल थे, और हर तरफ़ पक्षियों की चहचहाहट सुनाई दे रही थी। खाने शुरू करने से पहले, संत ने उनमें से दो को गाँव में एक पादरी को बुलाने के लिए भेजा जो उनके भोजन पर आशीर्वाद दे, उनके साथ भोजन करे, और फिर उन्हें पारंपरिक प्रार्थनाओं के साथ विदा करे (यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि संत थियोडोٹس हमेशा पादरी की आशीर्वाद से और, जब भी संभव हो, उनकी उपस्थिति में भोजन करने के आदी थे)। जैसे ही दूत गाँव के पास पहुँचे, उन्होंने छठे घंटे की प्रार्थना के बाद चर्च से बाहर आते हुए एक पुरोहित को देखा; हालाँकि, उन्हें यह एहसास नहीं हुआ कि वह उस गाँव के पुरोहित थे। यह देखकर कि गाँव के कुत्ते यात्रियों पर ज़ोर-ज़ोर से भौंक रहे थे, पुरोहित उनके पास गए, कुत्तों को भगा दिया, उनका अभिवादन किया, और फिर पूछा:

'क्या आप ईसाई हैं? यदि आप ईसाई हैं, तो मेरे घर में आइए, ताकि हम मसीह के प्रेम में आनंदित हो सकें।'

उन्होंने उत्तर दिया:

'हाँ, हम ईसाई हैं, और हम अन्य ईसाइयों की तलाश में हैं।' पादरी मुस्कुराते हुए मन ही मन बोले:

'फ्रंटन! (उनका नाम था)। देखो, तुम्हारे सपनों के दृश्य सच हो रहे हैं!'

फिर, यात्रियों की ओर मुड़कर, उन्होंने कहा:

'कल रात मैंने सपने में दो आदमी देखे जो आप लोगों जैसे ही दिखते थे; उन्होंने मुझसे कहा: "हम इस क्षेत्र में एक खजाना लाए हैं।" चूँकि मुझे लगता है कि आप उन आदमियों से बहुत मिलते-जुलते हैं, तो मुझे बताइए: आप अपने साथ कौन सा खजाना लाए हैं?'

उन लोगों ने उत्तर दिया:

'वास्तव में, हमारे साथ एक व्यक्ति है, धन्य थियोडोतस, जो किसी भी खजाने से अधिक कीमती है; यदि आप चाहें, तो आप उसे देख सकते हैं, लेकिन पहले हमें इस गाँव के पुरोहित को दिखाएँ।'

उसने उत्तर दिया:

'मैं ही वह हूँ जिसकी तुम तलाश कर रहे हो। तो चलो, और इस ईश्वर के पुरुष को मेरे घर ले चलो।'

इसके बाद वे सभी संत थियोडोटस से मिलने के लिए चल पड़े।

जब पुरोहति ने थयिोडोतस को देखा, तो उसने उसका गर्मजोशी से स्वागत कयिा; उसने अन्य ईसाइयों का भी अभविादन कयिा, और फरि उन सभी को अपने घर आने के लिए आग्रह करने लगा। लेकनि संत थयिोडोतस नहीं जाना चाहते थे, उन्होंने कहा:

'मैं जल्द से जल्द शहर पहुँचने के लिए जल्दी में हूँ, क्योंकि अब ईसाइयों पर एक बड़ी परीक्षा आई है; इसलिए, मुझे अपने उन भाइयों की सेवा करने के लिए अपनी पूरी कोशशि करनी चाहिए जो संकट और बड़े खतरे में हैं।'

इसके बाद, पुरोहति ने एक प्रार्थना की, और फरि सभी खाने के लिए बैठ गए। भोजन के अंत में, संत थयिोडोटस ने अपने चेहरे पर मुस्कान के साथ प्रेस्बटिर से कहा:

– यह स्थान कतिना सुंदर है, और पवत्रि अवशेषों को दफनाने के लिए यह कतिना उपयुक्त है!

पुरोहति ने उत्तर दयिा:

'कृपया हमारे लिए यहाँ कुछ पूजनीय अवशेष लाने का अपना सर्वश्रेष्ठ प्रयास करें।'

संत थयिोडोटस ने उत्तर दयिा:

कृपया, फादर, इस स्थान पर एक पूजा स्थल बनाने का कष्ट उठाएँ, जसिमें पवत्रि अवशेष स्थापति कएि जा सकें, और शीघ्र ही शहीदों के अवशेष आपके पास लाए जाएँगे।

तब संत ने अपनी उंगली से अंगूठी उतारकर पुरोहति को देते हुए कहा:

– ईश्वर मेरी और आपकी गवाही दें कि शहीद के अवशेष शीघ्र ही यहाँ लाए जाएँगे।

संत ने ये शब्द कहे, भवष्यिवाणी करते हुए कि उनके अवशेष यहीं वश्राम करेंगे, क्योंकि वह अपनी पूरी आत्मा से शहादत के पराक्रम के लिए लालायति थे।

थोड़ी ही देर बाद, संत थयिोडोतस अपने नगर और अपने घर लौटे, तो उन्होंने सब कुछ पूरी तरह से तबाही और बर्बादी की हालत में पाया, मानो कोई बड़ा भूकंप आ गया हो।

उस नगर में सात धर्मपरायण कुंवारी रहती थीं, जनिका पालन-पोषण बचपन से ही धर्म और ईश्वर के भय में हुआ था, जन्होंने अपनी शारीरकि और आध्यात्मकि पवत्रिता को बनाए रखा था और स्वयं को अवनिाशी और अमर वर, ईश्वर के पुत्र मसीह के लिए व्रतबद्ध कर लयिा था। एक धर्मपरायण और ईश्वर-प्रसन्न जीवन जीते हुए, ये कुंवारी वृद्धावस्था तक पहुँच गईं; उनमें सबसे बड़ी टेकुसा थी, जो संत थयिोडोटस की चाची थीं। इन पवत्रि कुंवारी कन्याओं को पकड़ने के बाद, राज्यपाल ने उन्हें हर तरह की यातनाएं दीं; लेकनि चूंकि यातनाएं उनके वश्वास को हलिा न सकीं, उसने उन्हें अपवत्रि करने के लिए कामुक युवकों के हवाले कर दयिा, और उन्हें गाली देने लगा तथा ईसाई भक्ति का मज़ाक उड़ाने लगा। जब उन कुंवारी कन्याओं को अपवत्रि करने के लिए ले जाया गया, तो उन्होंने अपने हृदय की गहराई से आह भरी, अपनी आँखें स्वर्ग की ओर उठाईं और अपने हाथ ऊपर उठाए, और इन शब्दों से परमेश्वर से प्रार्थना करना शुरू कयिा:

'हे प्रभु यीशु मसीह! आप जानते हैं कि जब तक यह हमारी शक्ति में था, हमने कतिनी सावधानी और उत्साह से अपनी कुँवारी अवस्था की रक्षा की है; लेकनि अब इन नर्लिज्ज युवकों ने हमारे शरीरों पर अधकिार कर लयिा है। तो फरि, हमें पवत्रिता में सुरक्षति रखें, उन तरीकों से जो केवल आपको ही ज्ञात हैं।'

जब पवत्रि कुंवारी इन शब्दों में आँसुओं के साथ ईश्वर से प्रार्थना कर रही थीं, तो उन नर्लिज्ज युवकों में से एक ने सबसे बड़ी कुंवारी, टेकुसा को, उसे अपवत्रि करने के इरादे से अपनी ओर खींचा। उसने, हालांकि, उसके पैरों को पकड़ते हुए, अपने आँसुओं के बीच उससे कहा:

'मेरे बच्चे! हमारी देह—जो वृद्धावस्था, उपवास, बीमारी और पीड़ा से थक चुकी है, जैसा कि तुम स्वयं देख सकते हो—तुम्हें क्या सुख दे सकती है? मेरी आयु सत्तर वर्ष से अधकि हो चुकी है। और मेरी अन्य बहनें मुझसे केवल थोड़ी छोटी हैं। तुम्हारे जैसे जवान के लिए यह उचति नहीं है कि तुम ऐसे शरीरों को छुओ जो लगभग मृतक समान हैं, जन्हें तुम जल्द ही जानवरों और पक्षयिों द्वारा खाया हुआ देखोगे, क्योंकि राज्यपाल ने हमें पहले ही लगभग मौत की सज़ा सुना ही दी है। हमसे कोई बुराई मत करो, और इसके लिए तुम्हें हमारे ईश्वर, प्रभु यीशु मसीह से इनाम मलिेगा।"

यह कहकर, संत टेकुसा ने अपने सरि से घूंघट हटाया और उस युवक को अपने सफेद बाल दखिाते हुए, उससे फरि कहा:

'मेरे बच्चे! तुझे शर्म आनी चाहिए, क्योंकि मुझे लगता है कि तुम्हारी भी एक माँ है, जो अगर जीवति है तो मेरी ही उम्र की होगी; लेकनि अगर उसकी मृत्यु हो गई है, तो उसकी याद करके हमें छोड़ दो, और तुम्हें हमारे प्रभु मसीह से पुरस्कार मलिेगा, क्योंकि उन पर आशा व्यर्थ नहीं है।'

टेकुसा के ये शब्द उस युवक और उसके साथियों के हृदय में दया जगा गए; अपनी कामुक इच्छाओं को त्यागकर, उन युवकों ने रोना शुरू कर दिया और उन पवित्र कुंवारी कन्याओं को बिना कोई हानि पहुँचाए, उनसे दूर हट गए।

जब थियोटेकन को पता चला कि कुंवारी अछूत थीं, तो उसने उन्हें जबरदस्ती अपवित्र करने का विचार त्याग दिया और उन्हें देवी आर्टेमिस की पुजारिनों के रूप में सेवा करने का आदेश दिया; उनका कर्तव्य था कि वे विधर्मी रीति-रिवाज के अनुसार, पास की झील में मूर्तियों को धोएं।

मूर्तियों को धोने का दिन आ गया, एक ऐसा दिन जिसे मूर्तिपूजकों द्वारा बड़ी धूमधाम से मनाया जाता था। मूर्तिपूजकों ने मूर्तियों को, प्रत्येक को एक अलग रथ पर रखकर, पूरे शहर के सामने गाते और आनंद मनाते हुए झील तक जुलूस निकाला। हेगेमोन के आदेश पर, बहुदेववादियों ने पवित्र कुंवारी कन्याओं को भी मूर्तियों के सामने, प्रत्येक को एक अलग रथ पर, परेड कराया; कुंवारी कन्याओं को बहुदेववादियों के मनोरंजन और उपहास के लिए नग्न कर दिया गया। सभी नागरिक इस त्योहार में तुरही, झांझों की ध्वनि और महिलाओं के गायन को सुनने के लिए बाहर निकले, जो अपने सिर खुले और बाल बिखरे हुए करके गलियों से गुज़र रही थीं। भीड़ के शोर और पैरों की ठोकरों से, साथ ही तुरहियों की आवाज़ से, सारी धरती काँपती हुई प्रतीत हो रही थी। पूरी भीड़ के साथ-साथ हेगेमोन थियोटेकन भी चल रहा था—जो एचडिना की संतान और शैतान का सेवक था। मूर्तिपूजकों ने नग्न कुंवारी कन्याओं को देखा; उनमें से कुछ हँसे, कुछ उनके धैर्य और साहस पर चकित हुए, जबकि अन्य, उनके घावों से दुबले-पतले शरीर पर दया करके, करुणा से रो पड़े और गहराई से दुखी हुए।

जब यह अधर्मी उत्सव ऐसे हालात में चल रहा था, तब संत थियोडोतस पवित्र कुंवारी कन्याओं के लिए बड़े दुख में थे, क्योंकि उन्हें डर था कि उनमें से कोई एक, अपनी नारी स्वभाव की दुर्बलता के कारण, अपने शहीद होने में लड़खड़ा सकती है और प्रभु यीशु मसीह की सहायता में आशा खो सकती है। इस पर विचार करने के बाद, थियोडोतस ने पवित्र तपस्विनियों के लिए बहुत विनम्रता से प्रार्थना करना शुरू कर दिया, और ईश्वर से उनके संघर्ष में उन्हें मजबूत करने के लिए प्रार्थना की। प्रार्थना करने के लिए, संत थियोडोतस ने अपने संबंधी पोलिख्रोनीउस, युवा थियोडोतस (जो भी एक संबंधी था), और अन्य ईसाइयों के साथ मिलकर थियोचारिदास नामक एक गरीब ईसाई के घर में खुद को बंद कर लिया, जो पवित्र पुरखों: अब्राहम, इसहाक और याकूब को समर्पित चर्च के पास स्थित था। प्रणाम करते हुए, थियोडोतस और उनके साथ प्रार्थना कर रहे अन्य ईसाई दिन के पहले घंटे से छठे घंटे तक जमीन पर पड़े रहे, जब तक कि थियोचारिदास की पत्नी ने यह घोषणा नहीं की कि सम्मानित कुंवारी लड़कियों के शरीर झील में डूब गए थे[3748] । यह समाचार सुनकर, संत थियोडोटस ने ज़मीन से थोड़ा उठकर घुटने टेक दिए; फिर, अपने हाथ स्वर्ग की ओर उठाकर, बारिश की बूंदों की तरह आँसू बहाते हुए, इन शब्दों से प्रार्थना की:

'हे प्रभु, मैं तेरा धन्यवाद करता हूँ कि तूने मेरी विलाप की पुकार सुनी और मेरे आँसू व्यर्थ नहीं जाने दिए!'

तब उन्होंने थियोकैरिस की पत्नी से पूछना शुरू किया कि कुंवारी कैसे डूबीं और यह घटना ठीक कहाँ हुई—किनारे के पास या नदी के बीचोबीच। उसने उत्तर दिया:

मैं अन्य महिलाओं के साथ उस स्थान के पास खड़ी थी और मैंने देखा कि हेगेमोन लंबे समय से युवतियों को मूर्तियों को धोकर उनकी सेवा करने के लिए कह रहा था, और उन्हें कई उपहार देने का वादा कर रहा था; हालाँकि, हेगेमोन अपनी बात में जरा भी सफल नहीं हुआ, बल्कि संत टेकुसा के ताना भरे शब्दों से उसे और भी अधिक शर्मिंदगी उठानी पड़ी। आर्टेमिस और एथेना के पुरोहितों ने[3749] उन्हें सफेद वस्त्र और सुसज्जित मालाएँ दीं, ताकि वे इन वस्त्रों और मालाओं को पहनकर मूर्तियों के लिए स्नान-संस्कार कर सकें। लेकिन शहीदों ने, उन वस्त्रों और मालाओं को लेकर, उन्हें जमीन पर फेंक दिया और उन पर पैर पटकने लगे। तब राज्यपाल ने संतों के गलों में भारी पत्थर बांधने का आदेश दिया; फिर, उन्हें नावों में बिठाकर, उन्हें एक गहरे स्थान पर ले जाकर पानी में फेंकने का आदेश दिया। उन्हें तट से दो स्टेडियम दूर पानी में फेंक दिया गया।

यह सुनकर, संत ने दिन का बाकी समय पॉलीक्रोनियस और थियोकैराइड्स के साथ इस पर विचार करने में बिताया कि वे पवित्र शहीदों के पवित्र शरीरों को पानी से कैसे निकाल सकते हैं, ताकि उन्हें दफनाया जा सके। जैसे ही सूर्य अस्त हो रहा था, ग्लाइसेरियस नामक एक युवा ईसाई व्यक्ति उनके पास आया और कहा कि राज्यपाल ने झील के पास सैनिकों

[3748] पवित्र कुंवारी कन्याओं की शहादत चौथी शताब्दी की शुरुआत में हुई।

[3749] एथेना या मिनर्वा – बुद्धि की देवी।

की एक चौकी लगा दी है, और उन्हें यह सुनश्चिति करने का आदेश दिया है कि शहीदों के शवों को झील से न निकाला जाए। यह सुनकर संत थियोडोटस को गहरा दुख हुआ, क्योंकि अब उनके लिए पवित्र शहीदों के शरीरों को निकालना कोई आसान काम नहीं था, आंशिक रूप से पहरे के कारण और आंशिक रूप से संतों की गर्दन के चारों ओर बँधे भारी पत्थरों के कारण; ये पत्थर इतने भारी थे कि उन्हें मुश्किल से रथों पर ले जाया जा सकता था। शाम को, थियोडोतस पवित्र पितृगण के निकटवर्ती चर्च के लिए रवाना हुए, जिसके प्रवेश द्वार को मूर्तिपूजकों ने ईसाइयों को प्रवेश करने से रोकने के लिए बंद कर दिया था। चर्च पहुँचने पर, संत ने इसके सामने प्रणाम किया और लंबे समय तक प्रार्थना की। फिर, उठकर वह चर्च के प्रवेश द्वार की ओर बढ़ा; लेकिन प्रवेश द्वार बंद देखकर वह रुक गया और एक बार फिर प्रार्थना के लिए घुटने टेक दिए। कुछ दूरी से चिल्लाहट और हंगामा सुनकर, और यह सोचकर कि मूर्तिपूजक उसका पीछा कर रहे हैं, संत तुरंत उठे और थियोचैरिडिस के घर चले गए। वहाँ वह थोड़ी देर के लिए सो गए। अपने सपने में, उनकी चाची, संत टेकुसा, उन्हें दिखाई दीं और कहा:

'तुम सो रहे हो, थियोडोडस के पुत्र, और तुम्हें हमारी कोई परवाह नहीं है। क्या तुम्हें याद नहीं कि जब तुम अभी एक जवान आदमी थे, तब मैंने तुम्हें कैसे सिखाया था? क्या तुम्हें याद नहीं कि मैंने तुम्हारे पिता और माता की जगह लेकर तुम्हें सदाचारी जीवन का मार्ग दिखाया था? और जब मैं जीवित थी, तब तुमने मुझे कभी दुखी नहीं किया, बल्कि हमेशा मुझे अपनी माँ के रूप में सम्मानित किया, । लेकिन अब, मेरी मृत्यु के बाद, तुम मुझे भूल गए हो, जबकि तुम्हें अपने पूरे जीवन तक मेरी सेवा करनी चाहिए थी। लेकिन मैं तुमसे विनती करती हूँ, हमारे शवों को पानी में मत छोड़ना, कहीं वे मछलियों का भोजन न बन जाएँ; बल्कि उन्हें जल्द से जल्द पानी से निकालने की जहमत उठाना, क्योंकि तुम स्वयं दो दिन में अपनी शहादत के लिए निकल पड़ोगे। अपने बिस्तर से उठो और झील पर जाओ, लेकिन गद्दार से सावधान रहना।

यह कहकर, संत ने थियोडोडस से विदा ली।

जागने पर, थियोडोतस ने घर में मौजूद अन्य ईसाइयों को अपने दर्शन के बारे में बताया, और वे सभी आँसुओं के साथ प्रभु से प्रार्थना करने लगे, उनसे पवित्र शहीदों के शरीर खोजने में मदद करने के लिए विनती करने लगे। जहाँ तक धन्य थियोडोतस की बात है, उसने उस दर्शन पर विचार करते हुए यह सोचकर उलझन में पड़ गया कि टेकुसा के उसके लिए अंतिम शब्द—'गद्दार से सावधान रहो'—का क्या मतलब था। लेकिन बाद में ये शब्द सच साबित हुए, जैसा कि आगे के विवरण से स्पष्ट होगा।

जब सुबह हुई, तो थियोडोतस ने उपर्युक्त युवक, ग्लाइकेरियोस को, थियोचारिडिस के साथ, नदी के पास खड़े सैनिकों के बारे में और अधिक सटीक जानकारी लेने के लिए भेजा, क्योंकि उसे लगा कि वे देवी आर्टेमिस के त्योहार के कारण चले गए थे, जिसे उस दिन मूर्तिपूजक मना रहे थे। दूत निकल पड़े, लेकिन उन्होंने देखा कि सैनिक अभी तक नहीं गए थे; लौटकर उन्होंने यह बात दूसरे ईसाइयों को बताई, और उन्होंने सभी ने उस दिन उपवास और प्रार्थना में बिताया। जैसे ही शाम हुई, ईसाइयों ने, जो अभी तक कुछ नहीं खा चुके थे, झील की ओर प्रस्थान किया, अपने साथ तेज दराँतें ले गए ताकि वे पवित्र शहीदों की गर्दन के चारों ओर बँधी रस्सियों को काट सकें। उस समय बहुत अँधेरा था, क्योंकि उस रात न तो चाँद चमक रहा था और न ही तारे। जब वे सभी उस स्थान पर पहुँचे जहाँ दुष्टों और चोरों को मौत की सज़ा दी जाती थी (और यह स्थान इतना भयानक था कि कोई भी सूर्यास्त के बाद वहाँ से गुज़रने की हिम्मत नहीं करता था; शव, हड्डियाँ और उनके शरीरों से अलग किए गए सिर इधर-उधर बिखरे पड़े थे, जिनमें से कुछ सिर खंभों में ठूंसे गए थे), वे सभी बहुत डर गए; हालाँकि, वे जल्द ही हिम्मत कर ली, क्योंकि उन्होंने एक आवाज़ सुनी जो कह रही थी:

'साहस के साथ आगे बढ़ो, थियोडोतस!'

इन शब्दों को श्रद्धापूर्वक सुनकर, उन्होंने सभी ने क्रॉस का चिह्न बनाया। और तुरंत ही पूर्व से आकाश में एक तेजस्वी क्रॉस प्रकट हुआ, जो सभी दिशाओं में अग्नि-किरणें बिखेर रहा था। इस क्रॉस को देखकर, वे सभी आनंदित हुए और विस्मय से भर गए; और फिर, घुटनों के बल गिरकर, वे सभी पवित्र क्रॉस के सामने नमन करके प्रभु से प्रार्थना करने लगे। प्रार्थना के बाद उठकर, वे सभी झील की ओर चल पड़े; लेकिन चूंकि तब तक क्रूस का दर्शन ओझल हो चुका था, अँधेरा फिर से इतना हो गया कि कोई एक-दूसरे को देख नहीं पा रहा था। उसी क्षण, बारिश होने लगी, जिससे रास्ता फिसलन भरा हो गया और उनकी यात्रा में बहुत बाधा आई। तब वे सभी प्रार्थना करने लगे, और इस संकट में मदद के लिए ईश्वर से विनती करने लगे, और तुरंत एक अग्नि का दीपक प्रकट हुआ, जो उन्हें रास्ता दिखा रहा था; उसी समय, सफेद वस्त्रों में दो सम्मानित पुरुष, जिनके सिर और दाढ़ी में सफेद बाल थे, संत थियोडोटस के सामने प्रकट हुए और उससे कहा:

'हौसला रखो, थियोडोतस, क्योंकि प्रभु और हमारे ईश्वर, यीशु मसीह ने, अपनी पवित्र वधुओं के शरीरों को वापस पाने के लिए तुम्हारी अश्रुपूर्ण प्रार्थना सुनकर, तुम्हारे नाम को शहीदों के नामों में अंकित कर दिया है। हमें तुम्हारी मदद करने के लिए उन्हीं ने भेजा है; हम उन पुरखों के समूह से हैं जिनके चर्च में आपने कल रात प्रार्थना की थी। जब आप झील पर पहुँचेंगे, तो आप वहाँ शहीद सोसान्डर को हथियारबंद देखेंगे, जो झील की रखवाली कर रहे सैनिकों के दलों में डर पैदा करते हुए और उन्हें भगाते हुए हैं; हालाँकि, आपको उस गद्दार को अपने साथ नहीं ले जाना चाहिए।

यह कहकर संत अदृश्य हो गए।

संत थियोडोडोटस को यह कभी पता नहीं चल पाया कि उनके साथ यात्रा करने वालों में गद्दार कौन था।

प्रकट हुए दीपक के पीछे-पीछे, वे सभी झील के पास पहुँचे। उसी क्षण, गरज गूँजी, बिजली चमकी, मूसलाधार बारिश होने लगी, और एक भयंकर तूफ़ान आ गया; झील के किनारे खड़े योद्धा, अत्यंत भयभीत होकर, वहाँ से भाग गए, हालाँकि वे गरज, बिजली और तूफ़ान से उतना डरे हुए नहीं थे, जितना कि एक भयानक दृश्य से; क्योंकि उन्होंने एक बहुत लंबा आदमी देखा जिसके हाथों में कवच, एक ढाल और एक भाला था; उसके सिर पर एक हेलमेट था; और उसके चारों ओर एक तेज प्रकाश चमक रहा था। वह शहीद सोसान्डर थे। इस दृश्य से भयभीत होकर, सैनिक बड़े डर के मारे भाग गए। इस बीच, झील का पानी हवा से झील के एक किनारे से दूसरे किनारे तक उड़ रहा था, जिससे झील का तल उजागर हो गया और झील के तल पर पड़े पवित्र शहीदों के शरीर ईसाइयों की आँखों के सामने आ गए। पवित्र शहीदों के पास पहुँचकर, ईसाइयों ने उन कुल्हाड़ियों से रस्सियाँ काट दीं जिनसे पत्थरों को शहीदों की गर्दनों से बाँधा गया था; फिर, पूजनीय शरीरों को लेकर, उन्होंने उन्हें रथों पर रखा और पवित्र पुरोहितों के चर्च में ले गए, जहाँ उन्हें सम्मान के साथ दफनाया गया। इन शहीदों के नाम इस प्रकार थे: टेकुसा, अलेक्जेंड्रा, क्लॉडिया, फाइना, यूफ्रेशिया, मैट्रोना और जूलिया। इन पवित्र कुंवारी कन्याओं ने मई के अठारहवें दिन अपना बलिदान दिया।

अगली सुबह, पूरे शहर में यह खबर फैल गई कि पवित्र शहीदों के शवों को ईसाइयों द्वारा झील से निकाल लिया गया था। यह सुनकर, राज्यपाल, मूर्तिपूजक पुरोहित और अन्य सभी मूर्तिपूजक इतने क्रोधित हो गए कि उन्होंने सड़क पर मिलने वाले हर ईसाई को पूछताछ के लिए घसीट लिया। उस समय, कई ईसाइयों को पूछताछ के लिए ले जाया गया और उन्हें एक क्रूर और पीड़ादायक मृत्यु दी गई; उन्हें उनके अत्याचारियों ने इस तरह टुकड़े-टुकड़े कर दिया, जैसे जंगली जानवरों के दांतों से। जब संत थियोडोटस को इस बात का पता चला, तो उन्होंने खुद को pagans के हवाले करने की इच्छा व्यक्त की, लेकिन उनके रिश्तेदारों ने उन्हें ऐसा करने से रोक दिया। हालाँकि, पोलीक्रोनियस ने अपने कपड़े बदलकर खुद को एक किसान का भेष दे लिया और यह पता लगाने के लिए शहर के चौक पर गया कि शहर में क्या हो रहा है, लेकिन उसे तुरंत ही मूर्तिपूजकों ने पकड़ लिया और पूछताछ के लिए राज्यपाल के सामने ले आए। पॉलीक्रोनियस ने अपने अत्याचारियों के हाथों कई पिटाई और घाव सहन किए, फिर भी वह चुप रहा। लेकिन जब उसने अपने सिर के ऊपर तलवार उठती देखी, तो वह बहुत डर गया और उसने अपने अत्याचारियों को बताया कि निवकि थियोडोडस ने कैसे पवित्र शहीदों के शरीर झील से निकाले थे और उन्हें पवित्र पुरखों के सम्मान में बने चर्च के पास दफनाया था। यह जानने पर, मूर्तिपूजकों ने तुरंत उस स्थान के लिए रवाना हो गए जहाँ पवित्र शहीदों के शरीर दफनाए गए थे, उन्होंने उनकी कब्रें खोदकर उनके शरीरों को जला दिया; इसके बाद, मूर्तिपूजक थियोडोटस की तलाश में निकल पड़े, इस बात की जानकारी उसे उसी शाम गुप्त रूप से दी गई थी। उस समय, संत थियोडोतस को एहसास हुआ कि पॉलीक्रोनियस - जो उनके रिश्तेदार और दोस्त थे - वही गद्दार थे जिनसे पवित्र पुरखों ने उन्हें सावधान रहने की चेतावनी दी थी। यातनाएँ सहने का संकल्प लेकर, थियोडोतस ने अपने रिश्तेदारों से इस प्रकार कहा:

'प्रभु, हमारे ईश्वर, यीशु मसीह से मेरी खातिर प्रार्थना करो, कि वह मुझे शहीद का मुकुट प्रदान करें।'

और वे सभी रात भर उनके साथ प्रार्थना करते रहे, जबकि संत थियोडोटस इन शब्दों से प्रार्थना कर रहे थे:

हे प्रभु यीशु मसीह, निराश लोगों की आशा, – मुझे धैर्य के साथ अपना शहीदी कर्म करने में सहायता करो, और मेरे अत्याचारियों द्वारा बहाए गए मेरे रक्त को, सभी उत्पीड़ित ईसाइयों की ओर से तुम्हें अर्पित एक बलिदान के रूप में स्वीकार करो। उनके दुख को कम कर, और उत्पीड़न के प्रचंड तूफान को शांत कर, ताकि विश्वासी शांति और सुकून से रह सकें।

जब दिन चढ़ा, तो संत ने अपने अत्याचारियों के पास जाकर अपने आपको उनके हवाले करने का निश्चय किया। यह जानकर, उनके सभी रिश्तेदार रो पड़े और उन्हें गले लगाकर कहा:

हे चर्च के प्रकाश और भूषण, सम्माननीय थियोडोडस, आपको मोक्ष प्राप्त हो! जब आपके दुख समाप्त हो जाएँ, तो आप स्वर्गीय प्रकाश में सहभागी हों, आपको स्वर्गदूतों और महादूतों के समूह में गिना जाए, और पवित्र आत्मा तथा हमारे प्रभु यीशु मसीह की महिमा, जो परमेश्वर पिता के दाहिने हाथ पर विराजमान हैं, आप पर चमक उठे। आपको उस कार्य के लिए ये सभी आशीर्वाद प्राप्त हों जिसे आप करने जा रहे हैं। लेकिन यह जान लें कि हमारे लिए, जो ऐसी विपत्तियों के बीच रह गए हैं, आपका प्रस्थान बहुत दुख और आँसू लाएगा।

जबकि सभी रो रहे थे, ये शब्द कहते हुए, संत थियोडोटस ने प्रत्येक को अंतिम चुंबन दिया; फिर उन्होंने आदेश दिया कि उनके शरीर को, यदि उसे उनके अत्याचारियों से गुप्त रूप से वापस प्राप्त किया जा सके, तो पुरोहित फ्रोंटन को दे दिया जाए, जो मालोस गाँव से उनकी अंगूठी लेकर आएगा।

अंत में, संत थियोडोटस ने क्रॉस का चिह्न बनाया और साहसपूर्वक अपने घर से निकल पड़े।

रास्ते में, उनकी मुलाकात शहर के दो प्रमुख नागरिकों से हुई। अपना प्रेम और सम्मान दिखाने के लिए, उन्होंने उन्हें जल्द से जल्द कहीं छिप जाने की सलाह दी और कहा:

एथेना और आर्टेमिस के पुरोहित, अन्य विधर्मी लोगों के साथ मिलकर, राज्यपाल के पास आपकी बदनामी कर रहे हैं, और कह रहे हैं कि आप सभी ईसाइयों को निर्जीव पत्थरों और पेड़ों की पूजा न करने की सलाह देते हैं; वे आपके बारे में और भी बहुत कुछ कह रहे हैं; और पॉलीक्रोनियस ने कहा है कि आपने गुप्त रूप से कुंवारी लड़कियों के शव चुरा लिए थे। इसलिए थियोडोटस, समय रहते अपने आपको छिपा लो, क्योंकि अपने ही सताने वालों के हाथों में खुद को सौंप देना पागलपन है।

लेकिन संत ने उनसे उत्तर दिया:

'यदि तुम मेरे मित्र हो और यदि तुम सचमुच मुझसे अपना प्रेम दिखाना चाहते हो, तो मेरे रास्ते में मत खड़े हो, बल्कि अदालत में जाओ और वहाँ के बुजुर्गों से कहो: "देखो, थियोडोडस, जिसके बारे में पुरोहित और लोग बदनामी कर रहे हैं, वह यहाँ, द्वारों के सामने खड़ा है।"'

यह कहकर, संत ने आगे बढ़कर, अदालत के बीच में खड़े होकर, प्रसन्न मुख से यातना के उपकरणों को निहारने लगे; वहाँ एक जलती हुई भट्टी, उबलते पानी के बर्तन, पहिये, और यातना के कई अन्य उपकरण थे। यह सब देखकर संत का हृदय तनिक भी भयभीत नहीं हुआ, न ही उनके विचार विक्षिप्त हुए, बल्कि वे एक प्रसन्न मुख के साथ खड़े रहे, और सभी के सामने अपनी वीरता का प्रदर्शन कर रहे थे। जब राज्यपाल ने संत को देखा, तो उसने उनसे कहा:

'तुम्हें यहाँ मौजूद किसी भी यातना के उपकरण से कोई भी हानि नहीं होगी, बशर्ते तुम देवताओं को बलिदान चढ़ाओ; तब तुम उन सभी अपराधों से मुक्त हो जाओगे जिनका आरोप पुरोहित और हमारा पूरा शहर तुम पर लगाते हैं; इसके अलावा, तुम हमारे मित्र और राजा के प्रियजन बन जाओगे, जो तुम्हें बड़े सम्मान से सम्मानित करेगा; बस यीशु का त्याग कर दो, जिसे पिलातुस—जो हमसे पहले शासन करता था—ने यहूदिया में सूली पर चढ़ाया था। इस पर विचार करो, थियोडोटस! तुम मुझे एक समझदार आदमी लगते हो; और एक समझदार आदमी को हर काम में विवेक और तर्क से काम करना चाहिए। सारी मूर्खता से दूर हो जाओ; दूसरे ईसाइयों को भी अपनी मूर्खता छोड़ने के लिए मनाओ, और फिर तुम इस पूरे शहर के शासक बन जाओगे; तब आप हमारे मुख्य देवता, अपोलो के पुरोहित होंगे, जो लोगों पर कई आशीर्वाद देते हैं, भविष्य बताता है और अपनी चिकित्सा कला के माध्यम से बीमारियों को ठीक करता है; यदि आप इस देवता की सेवा करते हैं, तो आपको सभी शेष देवताओं की सेवा के लिए अन्य पुरोहितों को नियुक्त करने का अधिकार दिया जाएगा। सबसे महत्वपूर्ण पदों पर सभी नियुक्तियाँ आपके माध्यम से होंगी; आप न्यायाधीशों के समक्ष मध्यस्थ के रूप में कार्य करेंगे; आप लोगों की विभिन्न आवश्यकताओं के संबंध में राजा की ओर से सभी राष्ट्रों को पत्र लिखेंगे; आप अत्यंत धनी होंगे, और आपके सभी रिश्तेदारों को उच्च सम्मान दिया जाएगा। यदि आप धन और संपत्ति चाहते हैं, तो मैं उन्हें आपको अभी भी दे सकता हूँ।

जब राज्यपाल बोल रहे थे, तो भीड़ में से एक जोरदार आवाज़ उठी, जो राज्यपाल के शब्दों का समर्थन कर रही थी और थियोडोटस को राज्यपाल से धन और सम्मान स्वीकार करने के लिए प्रेरित कर रही थी। लेकिन संत थियोडोटस ने राज्यपाल थियोटेक्नॉस को इस प्रकार उत्तर दिया:

'सबसे पहले, मैं अपने प्रभु, यीशु मसीह (जिन्हें आपने एक साधारण मनुष्य कहा है) से प्रार्थना करता हूँ, कि वह मुझे आपकी भूल को उजागर करने और आपके देवताओं की व्यर्थता को प्रकट करने की कृपा दे; साथ ही, मैं कुछ ही शब्दों में आपको अपने प्रभु के अवतार का रहस्य और उनके द्वारा किए गए चमत्कारों के बारे में बताऊँगा। हे थियोटेक्न!

मुझे तुम्हें अपने वशि्वास और अपने कर्मों के बारे में बताना चाहिए; परन्तु मैं तुम्हारे सभी देवताओं के कर्मों को, तुम्हारी लज्जा के लिए, तुम्हारे सामने उजागर करूँगा, जनिका वर्णन करना भी अत्यंत लज्जास्पद है। जसिको तुम Deus[3750] कहते हो और जसिे तुम अपने सभी अन्य देवताओं से अधकि महमिामय देवता मानते हो, उसने स्वयं को इतनी नीच कामुक वासनाओं के हवाले कर दयिा कि उसे सभी बुराइयों की शुरुआत और अंत माना जा सकता है। आपका कवि ऑर्फयिस[3751] बताता है कि डीउस ने अपने ही पति सैटर्न[3752] को मार डाला, अपनी ही माँ रेया को अपनी पत्नी बना लयिा, और उससे एक बेटी, पर्सेफोन, को जन्म दयिा; लेकनि वह यहीं नहीं रुका; उसने अपनी ही बेटी के साथ व्यभचिार कयिा और, इसके अलावा, अपनी बहन जूनो[3753] को अपनी पत्नी बना लयिा; ठीक उसी तरह, अपोलो ने डेलोस द्वीप पर वेदी के सामने अपनी बहन डायना के साथ अश्लील कृत्य कयिा। इसी तरह, मंगल[3754] वीनस[3755] के प्रति कामुक वासना से ग्रस्त था, और वल्कन[3756] मनिर्वा के लिए – भाई अपनी ही बहनों के साथ। हेगेमोन, क्या तुम नहीं देख सकते कि तुम्हारे देवताओं के दुष्ट कर्म कतिने घृणति हैं? क्या तुम्हारा अपना कानून ऐसे अपराध करने वालों को दंडति नहीं करता? फरि भी तुम अपने कामुक देवताओं के ऐसे कृत्यों का घमंड करते हो और कुलघातयिों, व्यभचिारी जोड़ों, व्यभचिारयिों, बाल शोषकों और जादूगरों की पूजा करने में शर्म नहीं करते (तुम्हारे सभी कवयिों ने इन बातों के बारे में लखिा है, और तुम्हारे देवताओं के घृणति कृत्यों की प्रशंसा की है)। लेकनि हमारे प्रभु यीशु मसीह के कर्म और चमत्कार शुद्ध और हर दोष से मुक्त हैं। सभी पवत्रि भवष्यिवक्ताओं ने हमारे प्रभु यीशु मसीह के अवतार के रहस्य की भवष्यिवाणी की, यह कहते हुए कि अंतमि दनिों में परमेश्वर स्वर्ग से मनुष्यों के पास आएँगे, एक मनुष्य के रूप में लोगों के बीच रहेंगे, अकथनीय चह्निों और आश्चर्यों को प्रदर्शति करेंगे, हर प्रकार की बीमारयिों को चंगा करेंगे और लोगों को स्वर्ग के राज्य के योग्य बनाएँगे। और केवल प्रभु के अवतार ही नहीं, बल्कि हमारे लिए उनकी स्वेच्छा से पीड़ा, उनकी मृत्यु और दफ़न की भी भवष्यिवाणी उन्हीं पवत्रि भवष्यिवक्ताओं द्वारा बहुत सटीकता से पहले से की गई थी; इसके गवाह थे काल्दी और फारस के बुद्धमिान मगि, जिन्होंने तारे के मार्गदर्शन में, उनके जन्मस्थान को खोज नकिाला और उपहार लेकर उनके पास आए, ताकि वे उनकी परमेश्वर के रूप में आराधना कर सकें। इस बीच, उनके पुनरुत्थान के गवाह वे रोमन सैनकि थे जो उनकी कब्र की रखवाली कर रहे थे। उन्होंने स्वयं देखा कि प्रभु कब्र से कैसे उठे; यही उन्होंने महापुजारयिों को रपिोर्ट क । लेकनि हमारे प्रभु, यीशु मसीह ने अपने पृथ्वी पर जीवन के दौरान जो सभी अद्भुत और महमिामय कार्य कए, उन्हें कौन गनि सकता है? सबसे पहले, उन्होंने पानी को शराब में बदल दयिा; फरि, पाँच रोटयिों और दो मछलयिों से, उन्होंने जंगल में पाँच हज़ार लोगों को खलिाया; उन्होंने बीमारों को चंगा कयिा और समुद्र पर सूखी ज़मीन की तरह चले; आग का स्वभाव भी उनकी शक्ति से डर गया; उन्होंने जन्म से अंधे को दृष्टि प्रदान की और लंगड़ों को शीघ्रता से दौड़ाया; उनके आदेश पर मृतकों को जीवति कयिा गया; उन्होंने लाजरुस को, जो चार दनि से मृत था, जीवति कयिा और उसे जीवन वापस दयिा। ये सभी गौरवशाली और अद्भुत चमत्कार स्पष्ट रूप से सभी को दखिाते हैं कि यीशु मसीह सच्चे ईश्वर थे, न कि केवल एक मनुष्य।

जब संत ने इन शब्दों में हमारे प्रभु यीशु मसीह की दविता की गवाही दी, तो उस स्थान के पास खड़े सभी अवशि्वासी बड़े भ्रम में पड़ गए और हवा से उथली समुद्र की तरह शोर मचाने लगे। पुरोहतिों ने अपने बाल नोचे, अपने वस्त्र फाड़े और अपने फूलमालाओं को चकनाचूर कर दयिा; जबकि भीड़ और अधकि उत्तेजति हो उठी और क्रोधति होकर गवर्नर से पूछने लगी कि उसने मृत्युदंड और यातना के योग्य ऐसे धर्मनदिा करने वाले को इतनी लंबी बात करने की अनुमति क्यों दी, बजाय इसके कि उसे मृत्युदंड और यातना के लिए सौंप देता?

तब राज्यपाल, और भी अधकि क्रोधति होकर, सैनकिों को आदेश दयिा कि वे संत के कपड़े उतार दें, उसे नग्न करके यातना वृक्ष पर लटका दें, और लोहे के औजारों से उसके शरीर को पीड़ति करें; राज्यपाल स्वयं अपनी कुर्सी से उठ खड़ा हुआ, अपनी ही हथेलयिों से संत को यातना देने का इरादा लिए हुए। उसी क्षण, लोगों की चीखों से एक सच्ची

[3750] ज्यूस – प्राचीन यूनानी धर्म का सर्वोच्च देवता, जसिे अन्य देवताओं का पूर्वज माना जाता है।

[3751] ओर्फयिस – प्राचीन यूनानी पौराणकि कथाओं के प्रमुख व्यक्तयिों में से एक। ओर्फयिस को थ्रेस के राजा ईगर और म्यूज़ कैलओिपे का पुत्र माना जाता था। पौराणकि परंपरा के अनुसार, उसकी लीर से इतने अद्भुत सुर नकिलते थे कि जंगली जानवर अपनी बलिों से बाहर आकर उसका अनुसरण करते थे। ओर्फयिस को एक कुशल कवि और प्राचीन ग्रीक कवति का संस्थापक माना जाता था।

[3752] सैटर्न – पृथ्वी और फसलों के देवता।

[3753] जूनो को पारविारकि जीवन की संरक्षक माना जाता था।

[3754] मंगल – युद्ध के देवता।

[3755] वीनस या एफ्रोडाइट – प्रेम और सुंदरता की देवी।

[3756] वल्कन – आग और धातुओं के देवता।

आंधी उठ खड़ी हुई; लोगों ने चल्लिाया, मांग की और राज्यपाल के नौकरों को यातना शुरू करने का आदेश दयिा; नौकरों ने यातना के उपकरण तैयार कर लिए; और फरि भी पवत्रि शहीद अकेले ही शांत खड़े रहे, उनकी आत्मा अवचिल और उनका हृदय नडिर था। थयिोडोतस इतने शांत थे कि ऐसा लग रहा था मानो उनके लिए यातना तैयार ही नहीं की जा रही हो।

तब संत को एक पेड़ से लटका दयिा गया। जब सैनकिों ने लोहे की पंजाओं से नरि्दयतापूर्वक संत के शरीर को चीरना शुरू कयिा, तो ऐसा प्रतीत हुआ कि वह आनंद से दमक रहा था, क्योंकि प्रभु यीशु मसीह उसके सहायक थे। इस प्रकार संत को लंबे समय तक यातना दी गई। सेवक पहले ही थक चुके थे और उनकी जगह दूसरे आ गए। तथापि, शहीद मसीह के नाम की गवाही में अडगि रहे, ऐसा प्रतीत हुआ मानो वे अपने शरीर में नहीं बल्कि किसी और के शरीर में पीड़ा भोग रहे हों; उन्होंने अपने सभी वचिार प्रभु यीशु मसीह की ओर केंद्रति कएि, जो उनकी सहायता कर रहे थे।

कुछ समय बाद, राज्यपाल थयिोक्टनिोस ने आदेश दयिा कि संत के घावों पर नमक मलिा सबसे तेज सरिका डाला जाए, और फरि शहीद की पवत्रि पसलयिों को मोमबत्तयिों से जलाने का आदेश दयिा। शहीद, आग से झुलसकर और अपने शरीर से उठती बदबू को महसूस करते हुए, अपना चेहरा मोड़ने लगा; यह देखकर, हेगेमोन तुरंत उसके पास आया और कहा:

'तो फरि, थयिोडोतस, अब तेरे वे सब दमदार शब्द कहाँ हैं? मैं देखता हूँ कि तू अपने कष्टों से पराजति हो गया है। लेकनि अगर तूने हमारे देवताओं का अपमान न कयिा होता और उनकी पूजा की होती, तो आज तू इतना कष्ट नहीं झेल रहा होता।' लेकनि क्या मैंने तुम्हें—एक नीच कुल के आदमी, जो एक शराबखाना चलाता है—यह सलाह नहीं दी थी कि तुम राजा की आज्ञा का उल्लंघन न करो, जो तुम्हारे जीवन और मृत्यु पर अधकिार रखता है?

इस पर पवत्रि शहीद ने उत्तर दयिा:

हे हेगेमोन, यह मत सोचो कि तुम्हारे यातनाएँ मुझ पर हावी हो रही हैं, यह देखकर कि मैंने अपने झुलसे हुए शरीर की बदबू न सूंघने के लिए अपना मुँह फेर लयिा है। तुम्हारे लिए बेहतर होगा कि तुम अपने नौकरों को अपने आदेशों का पालन अधकि उत्साह से करने का आदेश दो, क्योंकि मुझे लगता है कि वे अपने कर्तव्यों का पालन बहुत आलस्य से कर रहे हैं। तुम स्वयं मेरे लिए और भी अधकि क्रूर यातनाएँ सोचो, ताकि तुम जान सको कि मेरे प्रभु यीशु मसीह की शक्ति कितनी महान है, जो इन यातनाओं के बीच मुझे बल देता है। अपने परमेश्वर की सहायता पर भरोसा और वश्विास करके, मैं न केवल तुम्हारी, बल्कि तुम्हारे राजा की भी, जो सबसे नीच कैदी है, तुच्छता करता हूँ।

जब संत ने ऐसा कहा, तो राज्यपाल ने सैनकिों को शहीद के मुँह पर वार करने और उसके जबड़े तथा दाँत कुचलने का आदेश दयिा। हालाँकि, संत ने प्रहार सहते हुए राज्यपाल से कहा:

'भले ही तुम मेरी जीभ के टुकड़े-टुकड़े कर दो, फरि भी तुम अपने प्रयासों में कुछ भी हासलि नहीं कर पाओगे, क्योंकि ईश्वर और हमारे प्रभु यीशु मसीह अपने मौन सेवकों की भी सुनते हैं।'

जब सैनकिों द्वारा संत को पर्याप्त समय तक यातनाएँ दी गईं और प्रताड़ति कयिा गया, यहाँ तक कि राज्यपाल के सभी सेवक थक गए, तब राज्यपाल ने आदेश दयिा कि थयिोडोटस को यातना के यंत्र से उतारकर अगली यातना सत्र तक एक कालकोठरी में बंद कर दयिा जाए।

सैनकि संत थयिोडोटस को पूरे शहर से होते हुए कालकोठरी तक ले गए। संत का पूरा शरीर घावों से ढका हुआ था, जनिके माध्यम से थयिोडोटस ने सभी को अपने अत्याचारी और शैतान पर अपनी वजिय दखिाई। कालकोठरी तक के जुलूस के दौरान, संत के चारों ओर लोगों की एक बड़ी भीड़ जमा हो गई, जो मसीह के शहीद को एक प्रकार के ' ' (एक वचित्रि तमाशे) के रूप में देख रहे थे। हालाँकि, संत ने सभी के सुनने के लिए हमारे प्रभु यीशु मसीह की शक्ति का प्रचार करते हुए कहा:

'देखो, मेरे प्रभु मसीह की शक्ति कितनी महान और गौरवशाली है। यहाँ आप स्वयं देख सकते हैं कि, उनकी दव्यि व्यवस्था से, जो उनके पवत्रि नाम के लिए पीड़ा सहते हैं, उन्हें अपने घावों और यातनाओं से कोई पीड़ा नहीं होती; आप देखते हैं कि वह नाजुक मानव शरीर को आग से भी अधकि मजबूत बना देते हैं; आप देखते हैं कि वह दीन-हीन जन्म के लोगों को इतनी महान हम्मित और ताकत प्रदान करता है कि वे स्वयं राजाओं और राजकुमारों के आदेशों को कुछ नहीं समझते। हमारे प्रभु उन सभी पर अपनी कृपा प्रदान करते हैं जो उन पर वश्विास करते हैं, चाहे वे दीन-हीन हों या कुलीन, दास हों या स्वतंत्र, बर्बर हों या यूनानी।

फरि, अपने घावों की ओर इशारा करते हुए, उन्होंने फरि कहा:

'वश्विासयिों को परमेश्वर और हमारे प्रभु यीशु मसीह को ऐसा बलदिान अर्पति करना चाहिए, क्योंकि उन्होंने स्वयं हमारे सभी के लिए दुख उठाया।'

जब संत ने यह कहा, तो उन्हें कालकोठरी में ले जाया गया और वहाँ एक तंग और संकरी जगह में बंद कर दिया गया।

संत थियोडोटस के कैद किए जाने के सोलह दिन बाद, राज्यपाल ने शहर के केंद्र में, उस स्थान पर जहाँ आम तौर पर तमाशे होते थे, मुकदमे के लिए एक जगह तैयार करने का आदेश दिया। पवित्र शहीद को कालकोठरी से बाहर निकालकर न्यायाधिकरण के सामने लाया गया। उसे देखकर, राज्यपाल ने उससे कहा:

'थेओडोटस, हमारे पास आओ, क्योंकि मुझे लगता है कि पहले पर्याप्त दंड मिल चुकने के बाद, तुमने अब अपना सारा अहंकार त्याग दिया है और बेहतर हो गए हो।' वास्तव में, तुमने अपने ऊपर इतनी बड़ी यातनाएँ लाकर मूर्खता की है। हम तुम्हें यातना देना नहीं चाहते थे। लेकिन अब, अपनी हठ छोड़कर, हमारे देवताओं की शक्ति और सामर्थ्य को पहचानो; तब हम तुम्हें उन उपहारों से पुरस्कृत करेंगे जिनके बारे में हमने पहले बात की थी। हमने आपको ये उपहार पहले भी दिए थे, और अब भी देते हैं; यदि आप हमारे देवताओं की पूजा करेंगे तो आपको ये मिलेंगे; लेकिन यदि आप हमारे देवताओं की पूजा नहीं करेंगे, तो आप तुरंत अपने लिए तैयार की गई आग, तेज लोहे के औजार, और आपको चीर-फाड़ करने के लिए तैयार जानवरों के जबड़े देखेंगे।

इस पर पवित्र शहीद ने उत्तर दिया:

'हे थियोटेक्न! क्या तुम ऐसा कोई यातना सुझा सकते हो जो मेरे प्रभु यीशु मसीह की शक्ति को तोड़ सके, जो मेरी पीड़ाओं के बीच मुझे बल देता है? लेकिन यद्यपि मेरे शरीर को यातना के उपकरणों से पहले ही पर्याप्त रूप से चीर-फाड़ दिया गया है, जैसा कि आप स्वयं देख सकते हैं, – मेरी दृढ़ता को एक बार फिर आज़माओ; मुझे नई यातनाएँ दो, और तुम देखोगे कि मैं उन्हें भी उतनी ही बहादुरी से सहन करूँगा, जितनी बहादुरी से मैंने पहले वाली यातनाएँ सहन कीं।

तब राज्यपाल ने संत को फिर से यातना वृक्ष पर लटकाने और लोहे के औजारों से उनके शरीर को चीरने-फाड़ने का आदेश दिया, जिससे उनके पुराने घाव फिर से खुल गए। यातनाओं के दौरान, संत ने ऊँचे स्वर में मसीह का नाम उद्घोषित किया। फिर यातना देने वाले ने सैनिकों को आदेश दिया कि वे संत को यातना वृक्ष से उतारकर मिट्टी के बर्तन के लाल-गरम टुकड़ों पर घसीटें। इसके बाद, संत को फिर से उस वृक्ष पर लटकाया गया और लोहे के औजारों से फिर यातना दी गई, जिससे शहीद के शरीर पर एक भी अखंड, निशान रहित स्थान नहीं बचा: वह, मानो, एक ही लगातार घाव था; केवल उसकी जीभ सुरक्षित बची थी, जिससे वह ईश्वर की स्तुति करता था, और अपने यातकों तथा सैनिकों को कमजोर कहकर उनकी निंदा करता था। संत को और कौन-सी यातना दी जाए, यह न जानते हुए, राज्यपाल ने संत को मृत्युदंड की सजा सुनाते हुए एक फरमान जारी किया, जो इस प्रकार था:

'हम आदेश देते हैं कि गिलीलियाई धर्म के रक्षक, हमारे देवताओं के शत्रु, राजा के फरमानों के विरोधी और मेरे ईश्वर-निन्दक थियोडोतस को तलवार से सिर कलम किया जाए; और उसके शरीर को जला दिया जाए, ताकि ईसाई उसे दफना न सकें।'

और संत को सिर कलम करने के लिए शहर से बाहर, एक मैदान में ले जाया गया। उनके पीछे पुरुषों और महिलाओं की एक बहुत बड़ी भीड़ चल रही थी, जो उनकी मृत्यु का साक्षी बनना चाहती थी। निर्धारित स्थान पर पहुँचने पर, संत ने इन शब्दों के साथ ईश्वर से प्रार्थना करना शुरू कर दिया:

हे प्रभु यीशु मसीह, स्वर्ग और पृथ्वी के सृष्टिकर्ता, जो अपने पवित्र नाम पर भरोसा करने वालों को कभी नहीं छोड़ते! मैं तुझे धन्यवाद देता हूँ कि तू मुझे स्वर्गीय स्वदेश का नागरिक और अपने राज्य का सहभागी बनने के योग्य समझा। मैं तुझे धन्यवाद देता हूँ कि तूने मुझे साँप पर विजय प्राप्त करने और उसका सिर कुचलने में मदद की। मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ - अपने भक्तों को उन कष्टों से राहत दें जो उन्हें घेरे हुए हैं; हे प्रभु, मेरे मरने के साथ ही अधर्मी विधिर्मियों द्वारा आपकी कलीसिया पर किया जा रहा उत्पीड़न समाप्त हो जाए। अपनी कलीसिया को शांति प्रदान करें और उसे शत्रु की निंदाओं से बचाएँ।

जैसे ही उन्होंने अपनी प्रार्थना समाप्त की और 'आमीन' कहा, संत ने मुड़कर देखा तो ईसाई उनके लिए रो रहे थे। तब संत ने उनसे कहा:

'भाइयो, मेरे लिए मत रोओ, बल्कि हमारे प्रभु यीशु मसीह की शक्ति की महिमा करो, जिन्होंने मुझे साहसपूर्वक अपना पराक्रम पूरा करने और शत्रु को परास्त करने में मदद की। जहाँ तक मेरी बात है, मैं स्वर्ग में तुम्हारे लिए निडर होकर परमेश्वर से प्रार्थना करूँगा।'

यह कहने के बाद, शहीद ने अपना सम्मानित सिर तलवार के नीचे झुका दिया और[3757] को जून के सातवें दिन उनका सिर कलम कर दिया गया।

इस बीच, राज्यपाल के नौकरों ने उस स्थान पर बहुत सारी लकड़ियाँ लाईं, एक चिता बनाई और मसीह के शहीद के शरीर को उस पर रख दिया, राज्यपाल की आज्ञा से उसे जलाने के इरादे से। लेकिन अचानक, ईश्वर की कृपा से, एक बड़ी आंधी उठ खड़ी हुई, और एक प्रकाश प्रकट हुआ, जो बिजली की तरह शहीद के शरीर के चारों ओर चमक रहा था, जिससे कोई भी सैनिक लकड़ी के पास जाकर उसे आग लगाने की हिम्मत नहीं कर सका।

जब राज्यपाल को इस बात की जानकारी मिली, तो उसने सैनिकों को उस स्थान को न छोड़ने और शहीद के शरीर की रखवाली करने का आदेश दिया, कहीं कि ईसाई उसे चुरा न लें। राज्यपाल के आदेश का पालन करते हुए, सैनिकों ने बबूल की टहनियों और खपच्चियों से अपने लिए एक आश्रय बनाया और उसमें बैठकर ईसाइयों से शहीद के शरीर की रखवाली करने लगे।

इस बीच, ईश्वर की व्यवस्था से, ऐसा हुआ कि पादरी फ्रोंटन, जिसके अंगूठे में शहीद थियोडोटोस की अंगूठी थी, उसी जगह से गुजर रहा था। वह अपने गाँव से एक पड़ोसी गाँव जा रहा था और उसे इस बात की कोई खबर नहीं थी कि संत थियोडोटोस के साथ क्या हुआ था। फ्रोंटन अपने गधे पर कुछ बहुत अच्छी शराब लादकर ले जा रहा था, जो कुछ समय पहले तैयार की गई थी; फ्रोंटन इस शराब को शहर में बेचने का इरादा रखता था, क्योंकि वह एक अंगूर का बाग़ीचा रखता था और अपनी उपज से अपना और अपने परिवार का भरण-पोषण करता था। जब फ्रोंटन उस जगह पर पहुँचा जहाँ सैनिकों का तंबू लगा था और जहाँ शहीद का शरीर पड़ा था, तो गधा ठोकर खाकर ज़मीन पर गिर पड़ा। यह देखकर, सैनिक फ्रोंटन की मदद के लिए आए और उससे कहा:

'यात्री, तुम कहाँ जा रहे हो? रात तो हो ही चुकी है। तुम्हें हमारे साथ ही रुक जाना चाहिए, खासकर कि यहाँ पशुओं के लिए चरागाह भी है।'

पुजारी उनकी रात उनके साथ बिताने के लिए राजी हो गया और उनके तम्बू की ओर बढ़ा (यह ध्यान देने योग्य है कि शहीद के शरीर को टहनियों और सूखे घास से ढक दिया गया था)। तम्बू के पास आग जला दी गई थी और भोजन पहले से ही तैयार था। सैनिकों ने फ्रोंटन को अपने साथ खाने के लिए आमंत्रित किया। फ्रोंटन ने उनसे एक पात्र लेकर उसमें शराब भर दी और उसे पीने के लिए सैनिकों को दे दिया। शराब का स्वाद चखने पर, सैनिकों ने उसकी प्रशंसा की, क्योंकि वह वास्तव में बहुत अच्छी थी। फिर सैनिकों ने फ्रोंटन से पूछा:

'यह शराब कितनी पुरानी है?'

फ्रोंटन ने उत्तर दिया:

'यह अब पाँच साल पुरानी हो गई है।'

सैनिकों ने वह शराब पी ली, यह जाने बिना कि उनका मेहमान एक ईसाई और उससे भी बढ़कर, एक पादरी था; भोजन के दौरान, सैनिकों ने फ्रोंटन से हाल ही में हुई घटनाओं के बारे में बात की; उन्होंने उसे बताया कि कैसे सात कुंवारी मूर्तियों को धोने से इनकार करने पर डूब गई थीं, कैसे सरायकुल दियोदोतस ने रात में झील से उनके शव निकाले और उन्हें ठीक से दफनाया, कैसे शहर के अधिकारियों ने इस मामले में उसे ढूंढा था, कैसे वह खुद अदालत में पेश हुआ और यातनाओं के लिए खुद को सौंप दिया, कैसे उसने बहादुरी से उन्हें सहन किया, और कैसे, जैसे कि उसके शरीर में लोहा भरा हो। फिर उन्होंने कहा:

'यहाँ उस व्यक्ति का धड़ है, जिसकी हम राज्यपाल के आदेश पर रखवाली कर रहे हैं।'

उनके शब्द सुनकर, पुरोहित ने ईश्वर का धन्यवाद किया, जिन्होंने उसे पवित्र शहीद थियोडोतस के दुख और मृत्यु के बारे में जानने का सौभाग्य प्रदान किया था। फिर पुरोहित यह विचार करने लगा कि वह वहां से मसीह के शहीद का सम्मानित शरीर कैसे ले जा सकता है। एक पात्र को किनारे तक भरकर, उसने उसे सैनिकों को दे दिया और उनसे कहा कि वे जितनी चाहें उतनी वाइन पी सकते हैं। जब सैनिक मदहोश होकर सो गए, तो फ्रोंटन मसीह के शहीद के पवित्र शरीर के पास गया, उसे ढका हुआ हटाया और आँसुओं से उसे चूमने लगा; फिर, अपनी उंगली से अंगूठी उतारकर, उसने उसे शहीद की उंगली पर पहना दिया, यह कहते हुए:

[3757] संत थियोडोतस शहीद की मृत्यु 303 या 304 में हुई थी – इस पवित्र शहीद की स्मृति 7 जून, उनके निधन के दिन भी मनाई जाती है। हालांकि, उनका जीवन 18 मई को मनाया जाता है क्योंकि उनकी शहादत का गहरा संबंध सात पवित्र कुंवारीयों की शहादत से है, जिनका स्मरण उसी दिन किया जाता है।

'हे मसीह के पवत्रि शहीद थयिोडोतस! आपने सचमुच वह पूरा कर दयिा जो मैंने आपसे माँगा था।'

तब फ्रोंटन ने शहीद के पवत्रि शरीर और सरि को अपनी गधी से मजबूती से बाँधा और गधी को अकेले ही अपने गाँव वापस भेज दयिा। और गधी शहीद के पवत्रि शरीर को लेकर फ्रोंटन के गाँव की ओर चल पड़ी; फ्रोंटन ने फरि से उस स्थान पर जहाँ शहीद का शरीर पड़ा था, टहनयिाँ और घास बछिाईं, और अपने तंबू में जाकर सो गया।

अगली सुबह, फ्रोंटन बहुत जल्दी उठा और जैसे कि गधे के नुकसान पर शोक मनाने लगा, यह कहते हुए:

'मेरा जानवर यहाँ से भाग गया है: क्या कसिी ने इसे चुरा लयिा है?'

सैनकि फ्रोंटन के प्रति सहानुभूति रखने लगे, यह न समझते हुए कि शहीद के पवत्रि शरीर को वहां से ले जाया गया था, क्योंकि उन्होंने देखा कि टहनयिां और पुआल अभी भी अपनी जगह पर पड़े थे। उनके पास कुछ शराब छोड़कर, पुरोहति अपने गधे को खोजने के बहाने उनके तंबू से नकिल गया, लेकनि वह उनके पास वापस नहीं आया, क्योंकि वह अपने गांव चला गया था।

हालाँकि, ईश्वर की कृपा से, गधा ठीक उसी स्थान पर आ गया जहाँ संत थयिोडोडस ने एक बार फ्रोंटन से बात की थी और इस स्थान की अत्यंत सुंदरता की प्रशंसा की थी और इसे संत के अवशेषों को रखने के लिए उपयुक्त बताया था; यही वह स्थान था जहाँ मसीह के शहीद ने फ्रोंटन को एक चर्च बनाने की सलाह दी थी और शहीद की अवशेषों को वहाँ भेजने का वादा कयिा था। इस स्थान पर पहुँचने पर, गधा रुक गया और तब तक आगे नहीं बढ़ा जब तक कि उसका मालकि, फ्रोंटन, नहीं आया और उससे पूजनीय अवशेषों को नहीं नकिाल लयिा। तब फ्रोंटन ने ईसाइयों को इस स्थान पर बुलाया और शहीद के पवत्रि अवशेषों को सम्मानपूर्वक दफनाया; बाद में, उन्होंने हमारे ईश्वर, मसीह की महमिा के लिए, यहाँ पवत्रि शहीद थयिोडोتس के नाम पर एक चर्च का नरि्माण कयिा।

यह सब मैंने, दीन नीलस ने, दर्ज कयिा है (पवत्रि शहीद थयिोडोटस के जीवन के लेखक का कथन); और मैंने यह अपने मसीह में प्रयि भाइयों सभी के लिए बड़ी सावधानी और उत्साह के साथ लखिा है, क्योंकि मैं पवत्रि शहीद के जीवन की कहानी जानता था और उसके साथ कैद कयिा गया था। आप भी इसे वशि्वास और प्रेम से पढ़ें, ताकि आप स्वर्ग के राज्य में पवत्रि शहीद थयिोडोटस और उन सभी संतों के साथ उसी नयिति में भागीदार हो सकें जनि्होंने धार्मकिता के लिए प्रयत्न कयिा है, और ताकि आप हमारे प्रभु मसीह यीशु में स्वर्ग में आनंदति हो सकें, जनिका महमिा हो, सम्मान और आराधना, पति और पवत्रि आत्मा के साथ, युगानुयुग। आमीन।

कॉन्टाकयिन, स्वर 2:

आपने अपने साथी शहीदों, थयिोडोतस के साथ दुख सहने में परशि्रम कयिा, और सम्माननीय कुंवारी शहीदों के साथ सम्मान के मुकुट प्राप्त कए। इसलिए, हम सभी के लिए मसीह हमारे परमेश्वर से अवरिाम प्रार्थना करें।

पवत्रि शहीदों पीटर, डायोनसियिस, एंड्रयू, सॉल, क्रसि्टीना, हेराक्लयिस, पॉलनिस और वेनेडमिस की शहादत।

18 मई को स्मरण कयिा जाता है

मूर्तविादयिों द्वारा ईसाइयों पर कए गए अत्याचारों के दौरान, मसीह के इन वशि्वासयोग्य सैनकिों ने अपने प्रभु के लिए अपने प्राण न्योछावर कर दए, जसिसे सारी दुनयिा शहीदों के रक्त से रंजति हो गई। उस समय, ईसाई पतरस, जो एक सुंदर युवक था और शरीर के साथ-साथ आत्मा में भी उतना ही मजबूत था, को मूर्तपिूजकों ने पकड़ लयिा; उसे हेलेस्पोंट पर स्थति एक शहर लैम्प्सैक्स में ले जाया गया। जब पतरस को पूछताछ के लिए राज्यपाल ऑप्टमिनिस के सामने लाया गया, तो राज्यपाल ने उससे पूछा:

'क्या तुम ईसाई हो?'

'हाँ, मैं एक ईसाई हूँ,' पीटर ने उत्तर दयिा। राज्यपाल ने कहा:

'तुम्हारे सामने हमारे अजेय राजाओं के आदेश हैं; अतःहमारी महान देवी वीनस को बलदिान अर्पति करो।'

उस युवक ने उत्तर दयिा:

'हेगेमोन, मैं तुम पर हैरान हूँ कि तुम मुझे एक नीच और कामुक महिला की पूजा करने के लिए मनाने की हिम्मत करते हो, जिसने स्वयं को ऐसे घृणित कृत्य करने की अनुमति दी है कि जिनका उल्लेख करना भी शर्मनाक है। क्या तुम अब उन लोगों को कानून द्वारा सताते और दंडित नहीं करते जो ऐसे कृत्यों को करने की अनुमति देते हैं, जैसे तुम अपनी देवी वीनस पर आरोप लगाते हो? लेकिन यदि आप अपनी देवी को एक वेश्या मानते हैं, तो मैं एक घृणित वेश्या की पूजा और बलिदान कैसे कर सकता हूँ? नहीं, मुझे तो जीवित और सच्चे परमेश्वर, सभी युगों के राजा, मेरे प्रभु मसीह की ही पूजा करनी चाहिए; केवल उन्हीं को प्रार्थना, स्तुति और भक्ति का बलिदान अर्पित करना उचित है।

ये शब्द सुनकर, राज्यपाल ने सैनिकों को आज्ञा दी कि वे उस युवक को पहियों से बाँध दें और लकड़ी तथा लोहे के औजारों से उसके शरीर को पीड़ित करें, जिससे उसकी हड्डियाँ कुचल जाएँ। परन्तु परमेश्वर का सेवक, पतरस, जितना अधिक क्रूरता से उसे यातना दी गई, उतना ही अधिक दृढ़ता और अटूटता से वह प्रभु यीशु मसीह की सहायता की आशा में स्थिर रहा, और राज्यपाल की मूर्खता का उपहास करता रहा। तब पतरस ने अपनी आँखें स्वर्ग की ओर उठाईं और इस प्रकार प्रार्थना करना आरंभ किया:

'मैं तुझे धन्यवाद देता हूँ, हे प्रभु यीशु मसीह, कि तूने मुझे मेरे यातनाओं के बीच ऐसी शक्ति और दृढ़ता दी है; यह अनुग्रह कर कि मैं साहसपूर्वक अपने संघर्ष को सफल समापन तक पहुँचा सकूँ और दुष्ट शत्रु को परास्त कर सकूँ।'

यह महसूस करते हुए कि यातनाएं साहसी युवक पतरस को तोड़ने में कुछ भी नहीं कर सकतीं, राज्यपाल ने आदेश दिया कि उसकी तलवार से सिर कलम कर दिया जाए।

उसी समय, डायोनिसियस, जो ईसाई धर्म का अनुयायी था, को भी गिरफ्तार कर कैद कर दिया गया। जब राज्यपाल लैम्प्सैक्स से हेलेस्पोंट क्षेत्र के पास स्थित शहर ट्रॉयस के लिए रवाना होने की तैयारी कर रहा था, तो Mesopotamia[3758] के दो ईसाई सैनिक, जिनका नाम

एंड्रयू और पॉल; उनके साथ निकोमाकस नामक एक ईसाई को भी लाया गया, जो जोर-जोर से और बिना रुके चिल्ला रहा था:

'मैं एक ईसाई हूँ!'

गवर्नर ने, निकोमाकस को सभी के सामने ईसाई होने की घोषणा करते देखा, तो एंड्रयू और पॉल से पूछा:

'और तुम क्या कहना चाहते हो?'

उन्होंने उत्तर दिया:

'हम भी ईसाई हैं।'

तब राज्यपाल ने निकोमाखुस से कहा:

'राजा की आज्ञा के अनुसार देवताओं को बलिदान अर्पित करो।'

निकोमाखुस ने उत्तर दिया:

'क्या तुम नहीं जानते कि ईसाई राक्षसों को बलिदान नहीं चढ़ाते?'

और तुरंत राज्यपाल ने सैनिकों को आदेश दिया कि वे निकोमाखस के कपड़े उतार दें, उसे यातना वृक्ष पर लटका दें और लोहे के औजारों से उसके शरीर को चीर-फाड़ दें।

जब निकोमाखुस अपने अंत के करीब था और शहीद का ताज प्राप्त करने से पहले उसे बस थोड़ा और सहना था (जो, मानो, पहले ही उसके हाथों में था), तो उसने अप्रत्याशित रूप से खुद को इस गौरवशाली ताज से वंचित कर लिया। अपने दृढ़ विश्वास का परित्याग करते हुए, उसने मसीह का त्याग कर दिया और सबके सुनने के लिए चिल्लाया:

'मैं कभी ईसाई नहीं रहा! मैं देवताओं को बलिदान चढ़ाने के लिए तैयार हूँ।'

और तुरंत सैनिकों ने उस पर अत्याचार करना बंद कर दिया और उसे यातना वृक्ष से उतार लिया।

जब इस दुष्ट धर्मत्यागी ने मूर्तियों को बलिदान चढ़ाया और उनकी पूजा की, तो एक राक्षस ने उस पर कब्ज़ा कर लिया और उसे ज़ोर से ज़मीन पर पटक दिया, जिससे निकोमैकस एक पागल की तरह गुस्से में आ गया, अपनी जीभ काटता रहा और उसके मुँह से खून के छींटे उड़ने लगे, जब तक कि उसने अपनी दुखद अंतिम साँस नहीं ले ली।

[3758] मेसोपोटामिया – टाइग्रिस और यूफ्रेटिस नदियों के बीच स्थित एक चट्टानी और रेतीला क्षेत्र, जो उत्तर में आर्मेनिया से लेकर दक्षिण में फारस की खाड़ी तक फैला हुआ है।

जब यह सब हो रहा था, भीड़ में खड़ी सोलह वर्षीय क्रिस्टीना नाम की एक युवती, सताए हुए निकोमेकस की ओर मुड़ी और उससे कहा:

'हे दुखी और दुर्भाग्यशाली मनुष्य! एक क्षण के कारण, तूने अब अपने ऊपर शाश्वत और अकथनीय यातना ला ली है।'

यह सुनकर, राज्यपाल ने आदेश दिया कि उस लड़की को पकड़कर अदालत में पेश किया जाए; फिर उसने उससे पूछा:

'क्या तुम ईसाई हो?'

युवती ने उत्तर दिया:

'हाँ, मैं एक ईसाई हूँ, और अब मैं उस दुष्ट व्यक्ति के विनाश पर रोती और शोक मनाती हूँ, जो अपने लिए शाश्वत शांति प्राप्त करने के लिए थोड़े समय के दुख को सहन करने को तैयार नहीं था।'

गवर्नर ने उससे कहा:

'उसे अब शांति मिल गई है, क्योंकि उसने देवताओं को बलिदान अर्पित किया है; परन्तु यह सुनिश्चित करने के लिए कि तुम ईसाई लोग उसकी निंदा न करो, हमारी महान देवियों डायना और वीनस ने उसे यहाँ से ले जाने की कृपा की है। परन्तु मैं चाहता हूँ कि तुम भी इन देवियों को बलिदान अर्पित करो, यदि तुम नहीं चाहते कि तुम्हारी निंदा की जाए और तुम्हें खंभे पर जलाया जाए।'

संत ने उत्तर दिया:

'मेरा ईश्वर मेरे लिए तुमसे अधिक महत्वपूर्ण है, और इसलिए मैं तुम्हारी धमकियों से नहीं डरती। मैं अपने ईश्वर में अपना विश्वास रखती हूँ, और मेरा मानना है कि वह मेरी रक्षा करेगा और मुझे सभी बातों में धैर्य प्रदान करेगा।'

तब राज्यपाल ने उसे दो दुराचारी युवकों के हवाले करने का आदेश दिया, ताकि वे उसका अपमान और कलंकित करें। एंड्रयू और पॉल के बारे में, उसने उन्हें उसी कोठरी में कैद करने का आदेश दिया जहाँ डायोनिसियस को रखा गया था।

इस बीच, उन दो निर्लज्ज युवकों ने उस पवित्र और पवित्र कन्या को पकड़कर, उसे अपवित्र करने के इरादे से अपने घर ले गए; लेकिन जैसे ही वे उसे अपने घर में ले आए, उनकी कामुक वासना दूर हो गई, और वे आधी रात तक उसे अपवित्र नहीं कर सके। उसी रात, एक तेजस्वी युवक क्रिस्टीना के पास प्रकट हुआ, जिसने अपनी रोशनी से पूरे घर को प्रकाशमान कर दिया। वे दोनों निर्लज्ज युवक अपने भय से मृतप्राय होकर जमीन पर गिर पड़े; जब उन्हें होश आया, तो वे संत क्रिस्टीना के पैरों पर गिर पड़े और उनसे विनती करने लगे कि वह उनके लिए अपने ईश्वर से प्रार्थना करें, ताकि उन्हें उनके द्वारा कोई दंड न मिले। उन्होंने, तथापि, उन्हें जमीन से उठाया और उनसे कहा:

'डरो मत; यह जान लो: वह युवक जिसे तुमने देखा है, एक पवित्र स्वर्गदूत है, जिसे मेरे ईश्वर, मसीह ने मेरी कुँवारी अवस्था की रक्षा के लिए मुझे भेजा है, जो भी मुझसे छेड़छाड़ करेगा, उसे मार डालने के लिए वह सदैव तैयार रहता है।'

इस प्रकार पवित्र कुँवारी क्रिस्टीना स्वयं ईश्वर द्वारा संरक्षित रहकर पवित्र रहीं।

अगली सुबह, उस शहर के नागरिक, मूर्तिपूजक पुरोहितों द्वारा उकसाए गए, राज्यपाल के पास आए और उन्होंने जेल में बंद ईसाइयों को उनके हवाले करने की मांग की। राज्यपाल ने डायोनिसियस, एंड्रयू और पॉल को जेल से बाहर निकाला और उनसे कहा:

'तुम्हें महान देवी डायना को बलिदान चढ़ाना होगा।'

लेकिन संतों ने उत्तर दिया:

'हम न तो डायना को जानते हैं और न ही उन अन्य दुष्ट आत्माओं में से किसी को, जिनकी तुम पूजा करते हो; हम केवल अपने परमेश्वर, प्रभु यीशु मसीह को जानते और उसकी पूजा करते हैं।'

भीड़ ने शहीदों का यह उत्तर सुनकर फिर से ऊँचे स्वर में माँग की कि राज्यपाल उन्हें उन ईसाइयों को सौंप दे जिन्होंने उनके देवताओं का अपमान किया था। राज्यपाल ने शहीदों को कोड़े लगवाने का आदेश दिया, और फिर उन्हें भीड़ के हवाले करने का हुक्म दिया।

तब भीड़ ने संतों के पैरों में रस्सियाँ बाँधकर, उन्हें जोर-जोर से चिल्लाहट के बीच शहर से बाहर खींच लिया, और वहाँ उन्हें पत्थर मारने का इरादा किया।

जब पवत्रि शहीदों पर पत्थर चलाया जा रहा था, तो यह जानकर संत क्रस्टिीना घटनास्थल पर दौड़ी आईं और पत्थर खा रहे संतों के शवों पर आँसू भरी आँखों से गरिते हुए कहा:

'मैं पृथ्वी पर आपके साथ मरना चाहती हूँ, ताकि मैं स्वर्ग में आपके साथ जी सकूँ!'

इसी बीच, राज्यपाल को यह सूचना मलिी कि एक ईसाई युवती, जसिे अपमानति करने के लिए दो युवकों के हवाले कर दयिा गया था, को एक तेजस्वी युवक ने उनके चंगुल से छुड़ा लयिा था; युवकों के घर से भागकर, वह उस स्थान पर आई जहाँ ईसाइयों पर पत्थर फेंके जा रहे थे और उसने खुद को उनके शवों पर फेंक दयिा। यह जानकर, राज्यपाल ने उसे तलवार से सरि कलम करके मौत की सज़ा देने का आदेश दयिा।

इस प्रकार, उपरोक्त सभी पवत्रि शहीदों को, जन्हिोंने शैतान, संसार और राज्यपाल ओपटिमिनिस के वरिुद्ध लड़ाई लड़ी, हमारे ईश्वर मसीह की मदद से अपने दुश्मनों पर वजिय प्राप्त हुई; पीटर को वभिन्नि यातनाएँ सहने के बाद मृत्युदंड दयिा गया, डायोनसियिस, एंड्रयू और पॉल को पत्थर मारकर मौत की सज़ा दी गई, जबकि पवत्रि कन्या क्रस्टिीना का सरि तलवार से कलम कर दयिा गया। यह सब राजा डेसयिस के शासनकाल के दौरान लैम्प्सैक्स शहर में हुआ था[3759] ।

पवत्रि शहीद हेराक्लयिस, पावलनि और वेनेडमिस एथेंस के नागरकि थे। उन्होंने एथेंस में बड़ी नर्भिीकता से मसीह के नाम का प्रचार कयिा और सभी अधर्मी लोगों को अपनी व्यर्थ मूर्तपिूजा छोड़ने और पति, पुत्र और पवत्रि आत्मा के नाम पर बपतस्मिा लेने के लिए प्रोत्साहति कयिा। उनके उपदेश देने के कारण, उन्हें गरिफ्तार कर पूछताछ के लिए एथेंस के राज्यपाल के सामने लाया गया। पूछताछ के दौरान, उन्होंने सच्चे ईश्वर, सभी प्राणयिों के स्रष्टा, की गवाही दी, जबकि मूर्तयिों को मानव हाथों की कृति, बेजान पत्थर और लकड़ी कहा। मसीह के नाम की गवाही देने के कारण, इन पवत्रि शहीदों को वभिन्नि यातनाएँ दी गईं और अंत में, अपने शष्यिों के साथ, उन्हें एक आग भट्टी में डाल दयिा गया, जहाँ उन्होंने अपनी आत्मा त्याग दी[3760] । अपने इस पराक्रम के लिए, उन्होंने हमारे ईश्वर मसीह से अक्षय मुकुट प्राप्त कएि, जनिकी महमिा युगों-युगों तक हो। आमीन।

पवत्रि शहीदों सकिंदर, इसहाक और वाखतीस का कष्टकथा।

18 मई को स्मरणोत्सव

मसीह के पवत्रि शहीदों, सकिंदर, इसहाक और वाख्तसिी, फारस के मूल नविासी थे और उन्होंने दुष्ट राजा सापोइर के शासनकाल में कष्ट सहे[3761] । क्योंकि वे मसीही थे, मूर्तपिूजकों ने उन्हें पकड़ लयिा और मसीह का परत्यिाग करने तथा सूर्य और अग्नि की पूजा करने के लिए मजबूर करने लगे[3762] , लेकनि उन्होंने उत्तर दयिा:

'हम सभी चीजों के सृष्टकिर्ता का त्याग नहीं करेंगे, और न ही हम सूर्य या अग्नि की पूजा करेंगे।'

तब उनके यातना देने वालों ने उनके हाथ-पैर बाँध दएि और उन्हें बेरहमी से पीटा, फरि उन्हें एक कालकोठरी में फेंक दयिा, जहाँ उन्हें सात दनिों तक भोजन नहीं दयिा गया। इसके बाद, उन्हें कालकोठरी से बाहर नकिालकर वभिन्नि यातनाएँ दी गईं; अंत में, उनकी महान कलगी तलवार से काट दी गई। इस प्रकार पवत्रि शहीदों ने अपना बलदिान दयिा।

जून

[3759] डेसयिस ने 249 से 251 तक शासन कयिा।

[3760] पवत्रि शहीदों – हेराक्लयिस, पॉलनिस और वेनेडमिस – की मृत्यु का वर्ष अज्ञात है। यह संभवतःचौथी या पाँचवीं शताब्दी में हुई थी।

[3761] सापor II महान ने 310 से 381 तक फारस पर शासन कयिा। वह रोमनों के खलिाफ अपनी सफल युद्धों के लिए जाना जाता है; वह ईसाइयों का एक क्रूर उत्पीड़क था।

[3762] फारसी मथि्रा, या सूर्य, को अपना सर्वोच्च देवता मानते थे। वे अग्नि की भी पूजा करते थे।

1 जून

19 मई (पुराने कैलेंडर के अनुसार)

इसी दनि, हम वोल्गोडा के चमत्कार करने वाले, कोमेल के पूजनीय कॉर्नेलयिस का स्मरण करते हैं, जनिका 1537 में कोमेल मठ में नधिन हो गया था, जसिकी स्थापना उन्होंने स्वयं की थी (ग्रयाज़ोवेट्स शहर से 5 वर्स्ट दूर), जहाँ अब उनके पवत्रि अवशेष वशि्राम करते हैं।

पवत्रि पुरोहति-शहीद पैट्रकि और उनके साथ तीन वरषि्ठ पुरोहतिों: अकाकयिोस, मेनांडर और पोलयिनेस की शहादत

19 मई को स्मरण कयिा जाता है

संत पैट्रकि का धर्माध्यक्षीय आसन बथिुनयिा के प्रुसा शहर में था[3763] । एक दनि उन्होंने खुले तौर पर मूर्तपिूजकों की त्रुटयिों की नदिा करना और मसीह के धर्म का प्रचार करना शुरू कर दयिा; उनके उपदेश से कई मूर्तपिूजक ईसाई बने; इसके लिए, मूर्तपिूजकों ने उन्हें तीन पुरोहतिों – अक्काकयिोस, मेनांडर और पॉलीएनोस – के साथ पकड़ लयिा और पूछताछ के लिए बथिनियिा के हेगेमोन जूलयिस, जो मूर्तयिों का एक उत्साही सेवक था, के सामने पेश कयिा। उसी समय गर्म झरनों[3764] के लिए नकिलते समय, उसने आदेश दयिा कि ईसाई बशिप और उनके तीन पुरोहतिों को लोहे की जंजीरों में बाँधकर उसके पीछे-पीछे ले जाया जाए। झरनों पर पहुँचकर और उनमें स्नान करने के बाद, जूलयिस ने अपने अशुद्ध देवता एस्क्लेपयिस[3765] और घृणति देवी सोतयिा[3766] को बलदिान अर्पति कयिा। फरि, न्यायालय में अपनी सीट पर बैठकर और संत पैट्रकि तथा उनके पुरोहतिों को बुलाकर, जूलयिस ने उनसे कहा:

'हे पागल, जो मसीह का आह्वान करता है और व्यर्थ की कथाओं पर वशि्वास करता है! देखो, हमारे देवताओं का सर्वशक्तमिान कतिना महान है। देखो, उन्होंने हमारे लाभ के लिए इन झरनों में कतिनी उपचार शक्ति प्रदान की है। और सबसे बढ़कर, यह जानो कि हमारे पति एस्क्लेपयिस की शक्ति और दया कतिनी महान है! यदि तुम चाहत ह , कि वह बंधनों और यातनाओं से बच जाए और अपने देश में शांति से रहे, तो गरि पड़ो, एक वनिम्र प्रार्थना के साथ उसकी पूजा करो, और उसे एक बलदिान अर्पति करो।

इस पर, संत पैट्रसियिस ने उत्तर दयिा:

'ओ हेगेमोन, तुमने अपनी संक्षप्ति वाणी में कतिना बुरा कहा है!'

तब राज्यपाल ने उससे गुस्से में कहा:

'मैंने क्या गलत कहा है? तुम मुझ पर कसि बात का आरोप लगा सकते हो, दुर्भाग्यशाली! तुम स्वयं बनिा कसिी छल या चालाकी के उस बात को स्वीकार करो जो स्पष्ट है: क्या तुम अपनी आँखों से नहीं देखते कि हमारे सर्वशक्तमिान देवताओं की शक्ति से गर्म झरनों द्वारा प्रदान कए गए चमत्कारकि उपचार होते हैं?'

संत पैट्रसियिस ने उत्तर दयिा:

'हे अतशिय प्रतषि्ठति हेगेमोन! यदि आप इन गर्म झरनों की उत्पत्ति, प्रवाह और उपचार शक्ति के बारे में सत्य जानना चाहते हैं, तो मैं आपको इसके बारे में सब कुछ बताऊँगा, बशर्ते कि आप वनिम्रता से मेरी बात सुनें।'

इस पर राज्यपाल ने उत्तर दयिा:

'यद्यपि मुझे आपसे झूठ-मूठ की कथाओं के सवि कुछ नहीं सुनने की उम्मीद है, फरि भी बोलए; मुझे सुनने दीजए कि आप क्या कहना चाहते हैं।'

[3763] एशयिा माइनर का क्षेत्र।

[3764] इगेमोन जूलयिस औषधीय प्रयोजनों के लिए गर्म झरनों की यात्रा पर गया था। इन झरनों में वास्तव में उपचारात्मक गुण थे, जो उनके पानी में वभिन्नि खनजि पदार्थों की उपस्थति के कारण थे। प्राचीन काल में इटली में, ससिलिी द्वीप पर ऐसी कई झरने जानी जाती थीं।

[3765] एस्कलेपयिस या एस्कुलेपयिस – एक ग्रीक-रोमन देवता जनिहें चकित्सिा कला का संरक्षक माना जाता था।

[3766] सोतयिा, ग्रीक शब्द 'उद्धारकर्ता' से लयिा गया, उन देवयिों के लिए एक सामान्य शब्द था जो, मूर्तपिूजकों के अनुसार, बीमारयिों को ठीक करती थीं। यह नाम आमतौर पर एथेना या एफ्रोडाइट देवयिों के लिए प्रयुक्त होता था।

संत ने उत्तर दिया:

'यह कोई कल्पना नहीं, बल्कि सत्य है जो मैं आपको बताना चाहता हूँ।'

राज्यपाल ने कहा:

'हमारे देवताओं की शक्ति के अलावा, आप गर्म पानी के लिए और कौन-सी शक्ति का स्रोत बता सकते हैं?'

संत ने उत्तर दिया:

'मैं एक ईसाई हूँ, और जो कोई भी इस पवित्र ईसाई धर्म को स्वीकार करता है और एकमात्र सच्चे ईश्वर की उपासना करता है, वह अपने विवेक के द्वारा ईश्वर के रहस्यों को समझ सकता है; अत; यद्यपि मैं एक पापी हूँ, मसीह का सेवक होने का दावा करके, मैं इन जलों के विषय में सत्य जानता हूँ और आपको बता सकता हूँ।'

राज्यपाल ने कहा:

'क्या तुम इतने साहसी और लापरवाह हो कि खुद को हमारे दार्शनिकों से अधिक बुद्धिमान समझते हो?'

संत ने उत्तर दिया:

– *'इस संसार का ज्ञान परमेश्वर के सामने मूर्खता है, जैसा कि लिखा है: "वह बुद्धिमानों को उनकी चालाकी में पकड़ता है"* (1 कुरिन्थियों 3:19)। हमारे प्रभु मसीह ने, अपने पिता की महिमा करते हुए, कहा: *'मैं तुझे स्तुति करता हूँ हे पिता, हे आकाश और पृथ्वी के प्रभु, क्योंकि तूने ये बातें बुद्धिमानों और विद्वानों से छिपा दीं और छोटे बच्चों पर प्रगट कीं* (लूका 10:21)। और प्रेरित कहते हैं: उन्होंने सत्य को नहीं समझा: *'क्योंकि यदि वे जान गए होते, तो वे महिमा के प्रभु को क्रूस पर नहीं चढ़ाते'* (1 कुरिन्थियों 2:8)।

गवर्नर ने संत से कहा:

'जो आप कह रहे हैं वह समझना कठिन है। यह बताना बेहतर होगा कि किस शक्ति और व्यवस्था से ये गर्म, उपचारात्मक जल बहते हैं? जहाँ तक मेरा सवाल है, मैं इसे हमारे देवताओं की दिव्य व्यवस्था का परिणाम मानता हूँ, जो इस तरह लोगों की मदद करना चाहते थे।'

जवाब में, मसीह के संत, संत पैट्रिसियस ने राज्यपाल से कहा:

– बोलना शुरू करने से पहले, मैं आपसे विनती करता हूँ, राज्यपाल महोदय, कि बाड़ हटा दी जाए[3767] ताकि हर कोई मेरे शब्द सुन सके।

राज्यपाल के आदेश पर बाधा हटा दी गई और लोग उसके चारों ओर के पूरे क्षेत्र में भर गए। फिर संत ने निम्नलिखित शब्दों में जोर से बोलना शुरू किया:

[3768][3769]– वही सर्वशक्तिमान और शाश्वत ईश्वर, जो मानव जाति के स्रष्टा हैं, ने अपने एकमात्र पुत्र के माध्यम से शून्य से आग और पानी की रचना की। उसने अपने वचन द्वारा आग से प्रकाश, सूर्य और अन्य स्वर्गीय पिंडों को बनाया, और उन्हें दिन और रात चमकने के लिए नियुक्त किया: उसकी सर्वशक्तिमान शक्ति उतनी दूर तक फैली जितनी उसने चाहा। उसने पानी से आकाशमंडल का निर्माण किया, और जल पर पृथ्वी को स्थापित किया। अपनी सर्व-दर्शी व्यवस्था द्वारा, उन्होंने स्वर्ग और पृथ्वी पर मनुष्य के जीवन के लिए आवश्यक सभी चीजों की व्यवस्था की, जिसे उन्होंने बनाया भी था। लेकिन यह पूर्वानुमान लगाते हुए कि जिन लोगों को उसने बनाया था, वे उसके क्रोध को भड़काएंगे, और वे, उनके स्रष्टा को त्यागकर, जीवित ईश्वर की उपासना छोड़ देंगे और अपने लिए निर्जीव मूर्तियाँ गढ़ेंगे और उनकी पूजा करेंगे – इस कारण से उसने दो स्थान तैयार किए जहाँ लोग अपने सांसारिक जीवन के बाद जाएँगे। पहले स्थान को उन्होंने शाश्वत प्रकाश से प्रज्ज्वलित किया और उसे प्रचुर तथा अकथनीय आशीर्वादों से भर दिया; जबकि दूसरे स्थान को उन्होंने अतल अंधकार, न बुझने वाली आग और शाश्वत यातनाओं से भर दिया; जो लोग, उसकी आज्ञाओं का पालन करके, उसे प्रसन्न करते हैं, उन्हें प्रकाश के स्थान पर स्थानांतरित कर दिया जाएगा; जबकि जो लोग, अपने दुष्ट जीवन के माध्यम से, अपने सृष्टिकर्ता के क्रोध को भड़काते हैं और इस प्रकार अपने ऊपर दंड लाते हैं, उन्हें अंधकार के स्थान में डाल दिया जाएगा। इस प्रकार, जो प्रकाश के स्थान में स्थिर हैं, वे अनवरत और अनंत आनंद में एक अमर जीवन जिएंगे, जबकि अंधकार के स्थान में रहने वालों को अनंत युगों तक निरंतर यातना दी जाएगी। जल से आग को और

[3767] आमतौर पर, वह जगह जहाँ हेगेमोन ईसाइयों पर मुकदमा चलाने के लिए बैठता था, उसे घेर लिया जाता था, क्योंकि ज़्यादातर मामलों में ईसाइयों का मुकदमा खुले में होता था।

[3768] सिसिली भूमध्य सागर के सबसे बड़े द्वीपों में से एक है और अब यह इटली के साम्राज्य का हिस्सा है।

[3769] सिसिली द्वीप, इसे ढकने वाले चूना पत्थर के पहाड़ों में मौजूद असंख्य दरारों और अवसादों के कारण, कई गर्म झरनों का घर था।

अंधकार से प्रकाश को अलग करने के बाद, सृष्टकिर्ता ने उनमें से प्रत्येक को अलग-अलग बनाया और प्रत्येक को उसकी उचति जगह सौंपी। आग और पानी आकाशमंडल के ऊपर और पृथ्वी के नीचे दोनों जगह पाए जाते हैं; पृथ्वी पर दखिाई देने वाला पानी, जो अपने भंडारों में इकट्ठा होता है, उसे समुद्र कहा जाता है (उत्पत्ति 1:10), जबकि जो पृथ्वी के नीचे है उसे गर्ता कहा जाता है; इस गर्त से, पृथ्वी पर रहने वाले लोगों के लाभ के लिए और वास्तव में, सभी जीवति प्राणयिों के लाभ के लिए, पानी पृथ्वी के भीतरी भाग से ऊपर की ओर भेजा जाता है, जैसे कि पानी की पाइपों के माध्यम से; पृथ्वी की सतह पर नकिलकर, वे या तो झरने, कुएँ या नदयिाँ बनाते हैं। जो जल भूमगित बहते हुए आग के पास से गुजरते हैं, वे सतह पर गर्म आकर नकिलते हैं, जबकि जो आग से दूर बहते हैं, वे सतह पर ठंडे आकर नकिलते हैं। यही कारण है कि ये जल गर्म होते हैं, क्योंकि वे अपने मार्ग में भूमगित अग्नि के पास से गुजरते हैं; जबकि अन्य स्थानों पर ऐसे जल हैं जो अत्यंत ठंडे होते हैं, और बर्फ बन जाते हैं, क्योंकि वे अग्नि से बहुत दूर स्थति होते हैं। इस प्रकार, भूमगित अग्नि दुष्ट आत्माओं के कष्ट के लिए है; जबकि पाताल लोक का जल, बर्फ में बदलकर, टार्टारस[3770] कहलाता है, जसिमें आपके देवता और उनकी पूजा करने वाले अनंत कष्ट सहेंगे, जैसा कि आपके एक कवि ने गाया था, कहते हुए: 'पृथ्वी और समुद्र की (अत्यंत) सीमाएँ, बाहरी सीमाओं के अलावा और कुछ नहीं हैं, जहाँ इयापेटस और सैटर्न[3771] (आपके इन देवताओं के ऐसे नाम हैं) न तो उज्ज्वल सूर्य के वैभव का आनंद लेते हैं और न ही ठंडी हवाओं का'; दूसरे शब्दों में: आपके देवता, जो अंधकार और टार्टरस में रहते हैं, उन्हें न तो सूर्य के प्रकाश से प्रकाश मलिता है और न ही गर्मी मलिती है, जबकि आग में रहने वालों को हवा से ठंडक नहीं मलिती। – पृथ्वी के नीचे स्थति तारटारस, सभी अन्य गर्तों से उतना ही गहरा है जतिना कि स्वर्ग सभी सांसारकि ऊँचाइयों से ऊँचा है। और यह कि दुष्टों के लिए पृथ्वी के नीचे आग तैयार की गई है, इसका प्रमाण ससिलिी में उबलते झरने हैं, जो पृथ्वी के नीचे से नकिलते हैं।

संत के ये वचन सुनकर, राज्यपाल ने उससे पूछा:

'तो, आपका मसीह उन सभी चीज़ों का स्रष्टा है जनिके बारे में आपने बात की है।'

संत पैट्रसियिस ने उत्तर दयिा:

'सचमुच, मसीह, और कोई नहीं, सभी सृष्टि का स्रष्टा है; क्योंकि लखिा है: *"सभी वस्तुएँ उसके द्वारा बनीं, और उसके बनि कुछ भी नहीं बना जो बना है"* (यूहन्ना 1:3)। और फरि: *'क्योंकि जातयिों के सब देवता कुछ नहीं, परन्तु यहोवा ने आकाश बनाया'* (1 इतहिास 16:26)।

तब राज्यपाल ने संत से फरि पूछा:

'क्या आप मसीह को स्वर्ग का सृष्टकिर्ता मानते हैं?'

संत ने उत्तर दयिा:

'मैं मसीह को सारी सृष्टि का सृष्टकिर्ता कहता हूँ, क्योंकि लखिा है: *"जब मैं आपकी आकाशमण्डल को—जो आपकी उँगलयिों का काम है—और चंद्रमा और तारों को, जन्हिें आपने व्यवस्थति कयिा है, देखता हूँ"* (भजन संहति 8:4)।

गवर्नर ने कहा:

'और यदि मैं तुम्हें इन उबलते हुए पानी में डाल दूँ, जनिका स्रष्टा तुम हमारे देवताओं के बजाय मसीह को मानते हो, तो क्या मसीह तुम्हें उनकी आग से सुरक्षति रखेगा?'

संत ने उत्तर दयिा:

मैं अपने मसीह की शक्ति को जानता हूँ; मैं जानता हूँ कि यदि वह चाहे तो वह मुझे इन जल से सुरक्षति रख सकता है: क्योंकि मैं स्वयं उन जल के द्वारा इस क्षणकि जीवन से मुक्त होना चाहूँगा, ताकि मैं मसीह के साथ अनंतकाल तक जीवति रह सकूँ; तथापि, मेरी नहीं बल्कि उनकी पवत्रि इच्छा मुझ पर पूरी हो, जसिके बनि मनुष्य के सरि से एक भी बाल

[3770] टार्टारस पर चर्चा करते समय, संत पैट्रसियिस अपने आस-पास के पगनों को समझने का प्रयास करते हैं और उन्हें टार्टारस के बारे में उनका अपना दृष्टकिोण बताते हैं। – प्राचीन ग्रीक पौराणकि कथाओं के अनुसार, टार्टारस एक अंधेरी खाई है, जो पृथ्वी की सतह से उतनी ही दूर है जतिना आकाश पृथ्वी से। ग्रीकों के अनुसार, टार्टरस अंधकार की एक तहिरी परत और एक लोहे की दीवार से घरि हुआ था; यह पतति देवताओं के लिए कारावास का स्थान था।

[3771] इपेटस टाइटन्स में से एक था - यूरेनस (आकाश) और गैया (पृथ्वी) का पुत्र। यूनानी पौराणकि कथाओं के अनुसार, इपेटस (क्रोनस के साथ) ने सर्वोच्च देवता, ज्यूस के खलिाफ वदि्रोह कयिा, जसिके लिए उसे बाद में ज्यूस द्वारा टार्टारस में कैद कर दयिा गया। – सैटर्न – एक प्राचीन रोमन देवता, जन्हिें पृथ्वी और फसलों का संरक्षक माना जाता था। ग्रीक पौराणकि कथाओं के अनुसार, सैटर्न को भी इयापेटस की तरह ज्यूस द्वारा स्वर्ग से नीचे फेंका गया था और कुछ समय के लिए टार्टारस में कैद कर दयिा गया था।

नहीं गरिता, जसिके बनिा एक भी पक्षी जाल में नहीं फँसता। परन्तु जो कोई भी अब मेरे वचन सुन रहे हैं, वे यह जान लें कि जो लोग, आपके साथ, एक नरि्जीव पत्थर की देवता के रूप में पूजा करते हैं, वे अधोलोक की न बुझने वाली आग में और टार्टारस की गहराइयों में अनंतकालकि यातनाओं का सामना करते हैं।

यह सुनकर, राज्यपाल क्रोध से आग-बबूला हो गया और तुरंत आदेश दयिा कि संत को नग्न करके उस झरने के ठीक उसी स्थान पर फेंक दयिा जाए जहाँ से उबलता हुआ पानी फूटता है। संत, जब उसे फेंका जा रहा था, तो उन्होंने ईश्वर से पुकार लगाई, कहते हुए:

'हे प्रभु यीशु मसीह, अपने दास की सहायता करो!'

जब संत को पानी में फेंका गया, तो झरने से छटिकते पानी की बूँदें आग की चगिारयिों की तरह भड़क रही थीं और आसपास खड़े लोगों तक पहुँचकर उन्हें गंभीर जलन पहुँचा रही थीं। लेकनि संत पैट्रसियिस उन पानी में बनिा कसिी नुकसान के रहे, जैसे कसिी ठंडी जगह पर हों, और आनंदति होकर उन्होंने मसीह ईश्वर की स्तुति की।

यह देखकर, यातना देने वाले और भी अधकि क्रोधति हो गए। राज्यपाल ने सैनकिों को आदेश दयिा कि वे संत को पानी से बाहर नकिालें और तीन पुरोहतिों के साथ कुल्हाड़ी से उसका सरि कलम कर दें।

अपने सरि कलम कएि जाने की तैयारी करते हुए, इस मसीह के शहीद और स्वीकारकर्ता ने अपने हाथ स्वर्ग की ओर उठाए और कहा:

'हे सर्व के राजा और प्रभु, जो अपनी शक्ति में सभी दृश्य और अदृश्य सृष्टि को धारण करते हैं, जो उन सभी की ओर अपना कान लगाते हैं जो सच्चे मन से आपको पुकारते हैं, जनि्होंने इन जलों को भी धर्मी के उद्धार और दुष्टों के दंड के लिए बनाया है! अब मेरी सहायता करें, जब मैं आपके वशि्वास की गवाही देते हुए मर रहा हूँ!'

अपना प्रार्थना समाप्त करने के बाद, संत ने अपना पवत्रि सरि धड़ से अलग करवाने के लिए झुकाया और एक शहीद की मृत्यु प्राप्त की। उनके तीन पवत्रि पुरोहति—अकाकयिोस, मेनांडर और पोलएिन—को भी उनके साथ सरि कलम कर दयिा गया, और वे सभी संतगण की महमिा में मसीह ईश्वर के सामने प्रकट हुए। हालाँकि संत पैट्रसियिस को उनके सेवकों के साथ[3772] के उन्नीसवें दनि मार डाला गया और उन्होंने हमारे प्रभु, मसीह यीशु से वजिय का मुकुट प्राप्त कयिा, जनिके लिए, पता और पवत्रि आत्मा के साथ, अब और हमेशा और युगों-युगों तक सम्मान और महमिा हो। आमीन।

कॉन्टाकयिन, स्वर 4:

याजकीय पुण्य की ज्योति से प्रकाशमान और शहादत के रक्त से अलंकृत, आप उन लोगों के साथ मसीह के समक्ष खड़े हैं जनि्होंने आपके साथ कष्ट सहे, हे पैट्रकि, हमें स्मरण कीजए, हे सम्माननीय पीड़ति।

शहीद संत कलूफ़ मस्रिवासी का कष्टकथा

19 मई को स्मरण कयिा जाता है

मसीह के पवत्रि शहीद, कालूफ़, ने मॅक्समियिन के शासनकाल में[3773] कष्ट सहे। वह मस्रि के थेब्स शहर[3774] का मूल नविासी था और मसीह में अपने वशि्वास की घोषणा करने के लिए, उसे गरिफ्तार कर राज्यपाल के हवाले कर दयिा गया। गवर्नर ने आदेश दयिा कि उसके गले में एक बड़ा पत्थर बाँधा जाए और उसे उल्टा लटका दयिा जाए; जसि पर जल्लादों ने उसे पीटना शुरू कर दयिा, लेकनि पवत्रि शहीद ने उनसे कहा:

'मैं आने वाले जीवन की आनंदमयता की कामना करता हूँ, और इसके लिए मैं धैर्यपूर्वक इन प्रहारों और कष्टों को सहन करता हूँ।'

[3772] उनकी मृत्यु की सटीक तारीख अज्ञात है, लेकनि ऐसा माना जाता है कि यह चौथी शताब्दी के मध्य में हुई थी।

[3773] यह, बेशक, मैक्समियिन हर्क्यूलस को संदर्भति करता है, जो डयिोक्लेटयिन का सह-शासक था, जसिने अगस्तस की उपाधि धारण करके 284 से 305 तक इटली और अफ्रीका पर शासन कयिा।

[3774] थेब्स शहर ऊपरी मस्रि में स्थति था और यह नील नदी के दोनों कनिारों पर बसा था।

ऐसी यातनाओं के बाद, संत को पेड़ से उतारा गया और उन्होंने उसे मूर्तियों को बलिदान चढ़ाने के लिए मजबूर करना शुरू कर दिया, लेकिन उसने ऐसा करने से इनकार कर दिया। फिर उसे आग में फेंक दिया गया, जहाँ इस सांसारिक जीवन का अंत हुआ।

उग्लिच के धर्मी राजकुमार जॉन का निधन, जो मठवासी जीवन में इग्नाटियस, वोलोग्दा के चमत्कार करने वाले के नाम से जाने जाते थे।

स्मरणोत्सव 19 मई को

[3775]संत जॉन, धर्मनिष्ठ राजकुमार, उग्लिच के धर्मनिष्ठ और मसीह-प्रेमी राजकुमार आंद्रेई वासिलीविच[3776] और धर्मनिष्ठ राजकुमारी एलेना के पुत्र थे। उन्होंने बेलिकी लुकी नगर में पवित्र बपतिस्मा ग्रहण किया[3777] और उपयुक्त आयु प्राप्त करने पर शीघ्र ही पढ़ना-लिखना सीख लिया। उनमें कोमल और शांतिप्रिय स्वभाव था, बच्चों के खेलों में उन्हें कोई रुचि नहीं थी और सभी बातों में संयम बरतते हुए वे तीस वर्ष की आयु तक अपने पिता के घर में रहे। उस समय, मानव जाति का शत्रु, जो सभी अच्छाइयों से घृणा करता है, ने मास्को के महा राजकुमार इवान वासिलीविच[3778] में अपने ही भाई, उग्लिच के धार्मिक राजकुमार आंद्रेई वासिलीविच, और उनके बेटों, अर्थात् इवान और दिमित्री, के प्रति घृणा भर दी, और उन्होंने आदेश दिया कि उन्हें जब्त कर लिया जाए, भारी बेड़ियों में जकड़ा जाए, पेरियास्लावल शहर ले जाया जाए और कैद कर दिया जाए। इसके बाद, उन्हें पहले बेलोओज़ेरो[3779] और फिर वोल्गोडा शहर[3780] ले जाया गया, जहाँ वे भारी पहरे में एक तहखाने में बेड़ियों में जकड़े कई वर्षों तक रहे। धन्य राजकुमार जॉन एंड्रीविच, जो अपनी बुद्धिमत्ता के लिए प्रसिद्ध थे, ने अपने भाई, राजकुमार दिमित्री को सांत्वना दी और उनसे कहा:

'भाई! इस बात का दुख मत करो कि तुम बंदी हो और इन बेड़ियों से पीड़ित हो। ईश्वर ने हमारे चाचा, महाप्रतापी जॉन वासिलीविच को हमारी आत्माओं के हित के लिए हमारे साथ ऐसा व्यवहार करने की प्रेरणा दी; क्योंकि इसके द्वारा उन्होंने इस संसार की व्यर्थताओं में लिप्त होने को हमारे लिए असंभव बना दिया है। तो आइए हम प्रभु परमेश्वर से प्रार्थना करें कि वह हम पर अपनी दया करें, ताकि हम उनके नाम में अपने दुखों को आनंदपूर्वक सह सकें और अनंत यातना से मुक्त हो सकें।

इस प्रकार अपने दुखों और अपने पापों के शोक में सांत्वना पाकर, पवित्र राजकुमार बत्तीस साल तक जेल और बेड़ियों में रहे; और अंत में, गंभीर रूप से बीमार पड़ने पर, उन्हें आभास हुआ कि उनका अंत निकट है। उन्होंने संत डेमेट्रियस[3781] और स्पस्की मठ के मठाधीश मिसाइल को बुलाया और उनसे मठवासी मुंडन ग्रहण किया, उस समय उन्हें

[3775] संत राजकुमार जॉन के समय में उत्तर-पूर्वी रूस में पेरियास्लाव नामक दो नगर थे। एक वर्तमान व्लादिमीर गवर्नरेट में स्थित था और इसे पेरियास्लाव्-ज़ालेस्की कहा जाता था, जबकि दूसरा वर्तमान रियाज़ान गवर्नरेट में था; 1778 में रियाज़ान वाइसरॉयल्टी की स्थापना के समय इसका नाम बदलकर रियाज़ान कर दिया गया और इसे प्रांतीय राजधानी बनाया गया। दूसरे की स्थापना लगभग 1095 में मुरोम के राजकुमार कॉन्स्टेंटिनोविच स्वियातोस्लाविच ने की थी, जबकि पेरियास्लाव-ज़ालेस्की की स्थापना अपनी वर्तमान स्थल पर 1162 में सुज़्डल के राजकुमार यूरी व्लादिमीरोविच डॉल्गोरुकी ने की थी। यह अनुमान लगाया जा सकता है कि राजकुमार एंड्रे और उनके परिवार को पेरियास्लाव-रियाज़ान्स्की में कैद किया गया था, क्योंकि लगभग 1513 में वहाँ एक लकड़ी की दीवार से घिरि किले का उल्लेख मिलता है।

[3776] उग्लिच नगर, जो अब यारोस्लाव प्रांत का एक जिला शहर है, वोलगा नदी के किनारे स्थित है।

[3777] बेलिकी लुकी शहर, जिसे 15वीं शताब्दी तक केवल 'बेलिकी' विशेषण के बिना लुकी कहा जाता था, सबसे पुराने रूसी शहरों में से एक है: इसका उल्लेख नोवगोरोड क्रॉनिकल में वर्ष 1166 के अंतर्गत मिलता है। आज, यह पस्कॉव गवर्नोरेट में एक जिला शहर है, जो लोवात नदी के दोनों किनारों और द्याटलोवका द्वीप पर स्थित है।

[3778] महान राजकुमार इवान तृतीय वासिलीयेविच ने 1462 से 1505 तक मॉस्को पर शासन किया। उन्हें अपने भाई आंद्रेई पर देशद्रोह का संदेह था क्योंकि वह तातारों के खिलाफ उनकी सहायता के लिए सैनिक भेजने में विफल रहा था, और इसी कारण उन्होंने उसे और उसके परिवार को कैद कर दिया।

[3779] बेलो-ओज़ेरो – अब बेलोज़ेर्स्क, नोवगोरोड गवर्नरेट का एक जिला शहर है। 7 अक्टूबर 1443 को अपने पिता की मृत्यु के बाद राजकुमार भाइयों को बेलो-ओज़ेरो भेज दिया गया था। उनकी माँ, राजकुमारी एलेना, इससे भी पहले, 1442 में ही मर चुकी थीं।

[3780] वोलोग्दा, जो अब एक प्रांतीय शहर है, उत्तरी ड्विना की एक सहायक नदी सूखोना पर स्थित है।

[3781] यह, बेशक, स्पसो-प्रिलुत्स्की मठ को संदर्भित करता है, जिसकी स्थापना 1371 में वोलोग्दा से पाँच वर्स्ट की दूरी पर आदरणीय दिमित्री द्वारा की गई थी, जो वोलोग्दा क्षेत्र में सामुदायिक जीवन शुरू करने वाले पहले व्यक्ति थे। आदरणीय दिमित्री का पर्व 11 फरवरी को मनाया जाता है।

इग्नाटियिस नाम दयिा गया। जब उन्हें दैवीय पद दयिा गया तो धन्य राजकुमार की आत्मा आनंद और प्रसन्नता से भर गई। मसीह के परम पवत्रि रहस्यों को प्राप्त करने के बाद, उन्होंने क्रॉस का चह्नि बनाया और शाश्वत नविासों के लिए प्रस्थान कर गए। यह 1522 के मई महीने के उन्नीस तारीख को हुआ था[3782] । पूजनीय राजकुमार की मृत्यु के बाद, उनके शरीर से एक सुगंधति खुशबू नकिली, जसिने पूरे शहर को भर दयिा। फरि नगरवासयिों ने उनके शरीर को दफनाने के लिए तैयार कयिा, और उसे प्रलिुत्स्क के पूजनीय पति दमित्रिी के मठ में ले गए, सर्वाधकि दयालु उद्धारकर्ता के चर्च में ले जाया गया, और उन्हें संत डेमेट्रयिस चमत्कारकर्ता के पास वेदी के नीचे दफनाया गया; आज भी, संत उन लोगों को चंगा करते रहते हैं जो श्रद्धा के साथ उनके पास आते हैं।

हमारे पूजनीय पति गोथा के बशिप, जॉन की स्मृति

19 मई को स्मरण कयिा जाता है

[3783]हमारे पवत्रि पति जॉन, गोथा के बशिप, सम्राट कॉन्स्टेंटनि के शासनकाल में गोथयिा की भूमि में रहते थे।[3784] उनका जन्म उनके माता-पति की प्रार्थनाओं से हुआ था, ठीक वैसे ही जैसे प्राचीन काल में भवष्यिवक्ता सैमुअल का हुआ था (1 शमूएल 1:9–20), और, कम उम्र से ही मठवासी तपस्या के लिए खुद को समर्पति कर देने के बाद, वे मसीह का वासस्थान बन गए। उन्होंने यरूशलेम की यात्रा की और तीन वर्षों में सभी पवत्रि स्थलों का भ्रमण करने के बाद अपने देश लौट आए। उस समय, सम्राट कॉन्स्टेंटाइन ने स्थानीय बशिप को थ्रेस के हेराक्लयिा[3785] में स्थानांतरति कर दयिा था, और ऑर्थोडॉक्स गोथों ने सेंट जॉन से अपने बशिप बनने का पुरजोर अनुरोध कयिा। उन्होंने उन्हें इबेरयिा[3786] भेजा, जहाँ उन्हें बशिप के रूप में अभषिेक कयिा गया और बाद में वे एक बार फरि अपनी मातृभूमि लौट आए। जब उनके देश में खगान[3787] द्वारा भड़काए गए अशांतयिों का प्रकोप फैला, जसिने तलवार से कई नर्दिोष लोगों का कत्ल कयिा, तो वह बड़ी मुश्कलि से बचकर अमास्ट्रसि[3788] पहुँचे, जहाँ उन्होंने चार साल तक जीवन यापन कयिा। खगान की मृत्यु की खबर सुनकर, उन्होंने अपने साथयिों से कहा:

'चालीस दनिों में, मैं मसीह के सामने न्याय के लिए उसके पास जाऊँगा।'

और ऐसा ही हुआ। चालीस दनि बाद, संत जॉन लोगों को उपदेश दे रहे थे, उन्हें मोक्ष के मार्ग का नर्दिेश दे रहे थे, जब उन्होंने अपना प्राण प्रभु को सौंप दयिा[3789] । तुरंत, उनकी भवष्यिवाणी के अनुसार, एक जहाज बंदरगाह पर आ पहुँचा, और फरि अमास्त्रसि के बशिप, परम पावन जॉर्ज ने उनके शरीर को ताबूत में रखा और सभी नगरवासयिों के साथ, मोमबत्तयिों और धूप के साथ उसे जहाज तक ले गए। जहाज पर संत के शरीर को उनके मठ, पार्टेनटिसि[3790] , ले जाया गया

[3782] परम पूज्य राजकुमार का 45 वर्ष की आयु में नधिन हो गया।

[3783] यह सम्राट कॉन्स्टेंटनि कॉप्रोन्यमस थे, जो इतहिास में अपनी मूर्तभिंजनवादी मुहमि के लिए जाने जाते हैं; उन्होंने 741 से 775 तक शासन कयिा।

[3784] यहाँ 'गोथों की भूमि' शब्द का तात्पर्य क्रीमयिा प्रायद्वीप के दक्षणिी तट पर के क्षेत्र से है, जो उस समय गोथकि शासन के अधीन था और टौरोस्कथियिा के नाम से जाना जाता था। संत जॉन का नविास स्थान माउंट आयुडाग के तल पर स्थति पार्टेनटिसि बंदरगाह था।

[3785] थ्रेस में स्थति हेराक्लयिा शहर, जसिे पेरनिफ के नाम से भी जाना जाता था, प्रोपोंटसि या मार्मारा सागर के तट पर स्थति था। 754 में, गोथयिा के बशिप ने प्रतमिा-भंजक परषिद के फरमान पर हस्ताक्षर कए, और इसके लिए कांस्टेंटनि कॉप्रोन्यमस ने उन्हें हेराक्लयिा का मेट्रोपॉलटिन नयिुक्त कयिा।

[3786] इबेरयिा आज का जॉर्जयिा है। उस समय, यह मूर्तभिंजन की कुसंप्रदाय से प्रभावति नहीं हुआ था, जो इस बात की व्याख्या करता है कि संत जॉन को उनके बशिप पद की दीक्षा के लिए उस देश में क्यों भेजा गया था।

[3787] खज़ारों ने सेंट जॉन के धर्मप्रांत के प्रमुख शहर डोरी पर कब्ज़ा कर लयिा था, और उन्होंने गोथयिा के शासक को खज़ारों को बाहर नकिालने के लिए मना लयिा; हालाँकि, खज़ार खगान ने शहर पर फरि से कब्ज़ा कर लयिा, कई लोगों को मार डाला, और जॉन को हरिासत में ले लयिा, जसिसे वह गोथयिा के ईसाइयों की मदद से समुद्र पार करके अमास्त्रसि भाग गया।

[3788] अमास्त्रसि का शहर एशयिा माइनर में प्राचीन रोमन प्रांत पाफलैगोनयिा में, यूक्सनि या ब्लैक सी के तट पर स्थति था।

[3789] संत जॉन की मृत्यु 8वीं शताब्दी के अंत में, लगभग 790 ईस्वी में, 26 जून को हुई।

[3790] प्रस्तावना में, पार्थेनॉन को गलती से संत जॉन के दफन का स्थान बताया गया है। पार्थेनॉन क्रीमयिा में चेरसोनेसस के पास स्थति था, जबकि वह मठ जहाँ संत का शरीर दफनाया गया था, माउंट आयुदाग के पैर में स्थति था। यहीं सेंट जॉन रहते थे, और यहीं उन्होंने संतों पतरस और पवत्रि प्रेरति पौलुस को समर्पति एक बड़ा चर्च बनवाया था, जसिे 1425 में सभी गोथयिा के मेट्रोपॉलटिन डेमयिन द्वारा पुनर्स्थापति कयिा गया था, और जो अब मौजूद नहीं है।

और वहाँ भिक्षुओं के कब्रस्तिान में दफनाया गया। ठीक इसी स्थान पर, संत जॉन के दफन के बाद से कई चमत्कार हुए हैं और आज भी होते रहते हैं। पूज्यनीय ने अपने जीवनकाल में भी कई चमत्कार किए थे।

2 जून

20 मई (पुराने कैलेंडर के अनुसार)

इसी दिन, 1299 में मॉस्को के राजकुमार, संत डोवमोंट-तिमोटियस का निधन हुआ।

पवित्र शहीद फलालेउस का कष्टकथा

20 मई को स्मरण किया जाता है

न्यूमेरियन के शासनकाल में[3791] , राज्यपाल थियोडोर ने एगे शहर में ईश्वर की कलीसिया पर अत्याचार भड़काया[3792] और मसीह के वफादार सेवकों को मृत्यु के विभिन्न रूपों से पीड़ित किया। उस समय, फलालेई नामक एक ईसाई युवक को उत्पीड़क पकड़ ले गए; वह चेहरे और कद-काठी से सुंदर, गोरे बालों वाला, लगभग अठारह वर्ष का था, और पेशे से एक चिकित्सक था जो हर तरह की बीमारियों का बिना किसी शुल्क के इलाज करता था। उस युवक को हैड्रियन के मंदिर में स्थित धर्महीन न्यायाधिकरण के समक्ष लाया गया[3793] । उसे देखकर और उसकी सुंदरता पर चकित होकर, राज्यपाल ने अपने आसपास खड़े लोगों से कहा:

'तुम्हें यह सुंदर युवक कहाँ मिला?'

उन्होंने उत्तर दिया:

'अनाज़ार[3794] शहर जाते समय, हमने उसे अपने सामने देखा; लेकिन जब उसने हमें देखा, तो वह जल्दी से ओक के वृक्षसमूह में छिप गया। हमने उसे लगन से ढूंढना शुरू किया और बड़ी मुश्किल से उसे एक जंगली जैतून के पेड़ के नीचे बैठे हुए पाया; फिर हमने उसे पकड़कर आपके पास न्याय के लिए लाया।'

गवर्नर ने संत से कहा:

'बताना, युवक: तुम्हारा धर्म क्या है, तुम किस नगर के रहने वाले हो, तुम्हारे माता-पिता कौन हैं, और तुम्हारा नाम क्या है?'

संत ने उत्तर दिया:

'मैं एक ईसाई हूँ; मेरा नाम फलालेई है; मैं लेबनान[3795] का रहने वाला हूँ; मेरे पिता, जिनका नाम बेरुकी था, एक सैन्य कमांडर थे; मेरी माँ का नाम रोमिला है; मेरा एक भाई भी है जो चर्च के पुरोहित वर्ग का सदस्य है, और सबडीकन का पद धारण करता है; मैंने चिकित्सा की कला चिकित्सक मकरियस से सीखी है।' जब लेबनान में रहने वाले सभी ईसाई मूर्तिपूजकों के उत्पीड़न के कारण पहाड़ों और रेगिस्तानों में भाग गए, तो मुझे पकड़ लिया गया और एडसा के राज्यपाल टिबेरियस के सामने लाया गया[3796] ; जब उसे यातना दी जा रही थी, तो मैंने पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा, सच्चे और सर्व-सद्भावनामय ईश्वर, सभी का सृष्टिकर्ता होने का नाम स्वीकार किया, और अपने प्रभु की सहायता से मैं अपने यातना

[3791] रोमन सम्राट नुमेरियन ने 283 से 284 तक शासन किया।

[3792] एजिया या एग एशिया माइनर के एक क्षेत्र - सिलिसिया में एक तटीय शहर है। यह आज भी आयस्कला नाम से मौजूद है।

[3793] अर्थात्, सम्राट हैड्रियन (जो 117 से 138 तक शासन करते थे) के सम्मान में बने मंदिर में। यह ध्यान देने योग्य है कि प्राचीन रोमनों की अपनी सम्राटों के सम्मान में मंदिर बनाने, साथ ही मंदिरों और सार्वजनिक चौकों में उनकी मूर्तियाँ स्थापित करने की प्रथा थी।

[3794] अनाज़ार शहर सिलिसिया में स्थित था।

[3795] लेबनान सीरिया में एक पर्वत शृंखला है; यह उस पर्वत प्रणाली का हिस्सा है जो सिनाई से शुरू होकर, अरब, फिलिस्तीन और सीरिया से होते हुए भूमध्य सागर के पूर्वी तट के समानांतर उत्तर की ओर फैली हुई है, और टॉरस पर्वत से मिलती है। लेबनान इस पर्वत प्रणाली का केंद्रीय, सबसे ऊँचा हिस्सा है।

[3796] एडेसा – मेसडोनिया का एक शहर।

देने वालों के हाथों से छूटकर भाग गया: लेकिन अब, एक बार फिर पकड़े जाने के बाद, मैं आपकी शक्ति में हूँ। मेरे साथ जो चाहो करो, क्योंकि मेरे लिए स्वर्गीय ईश्वर, मेरे उद्धारकर्ता मसीह के लिए मरना उचित है।

राज्यपाल ने कहा:

'क्या तुम, हे नीच, यह आशा करते हो कि तुम मेरी पकड़ से बच निकलोगे, जैसे तुम टिबेरियस की पकड़ से बचे थे?'

संत ने उत्तर दिया:

'मैं अब भागना नहीं चाहता, क्योंकि मेरा विश्वास अपने प्रभु यीशु मसीह में है और मुझे उन पर भरोसा है, कि वे मुझे लज्जित नहीं होने देंगे, बल्कि अंत तक यातनाओं को सहने में मेरी मदद करेंगे।'

संत के पास दो जल्लाद, अलेक्जेंडर और एस्टरियस, खड़े थे; राज्यपाल ने उन्हें आदेश दिया कि वे शहीद की पिंडली में एक सुई से छेद करें, छेद में रस्सी डालें, और उसे लटका दें। लेकिन, ईश्वर की कृपा से, उनकी आध्यात्मिक आँखें खुल गईं, और उन्होंने संत के बजाय एक पेड़ में छेद करके उसे लटका दिया। विश्वासियों में से एक, संत फलालेउस के शिष्य तिमोथी, जो वहाँ खड़ा था और हो रही सारी घटनाओं का साक्षी था, ने संत की ओर सिर हिलाकर कहा:

'क्या तुम देख रहे हो कि वे क्या कर रहे हैं?'

संत ने उत्तर दिया:

'चुप रहो, भाई; मसीह मेरे साथ हैं, मेरी मदद कर रहे हैं।'

हालाँकि, राज्यपाल ने देखा और शहीद को नहीं बल्कि लटके हुए पेड़ को देखा, और जल्लादों से कहा:

'तुमने क्या किया? मैंने तुम्हें एक आदमी को फांसी देने का आदेश दिया था, फिर भी तुमने एक पेड़ को फांसी दे दी?'

और, क्रोधित होकर, राज्यपाल ने सोचा कि वे उसका मज़ाक उड़ा रहे हैं, और दोनों को बेरहमी से कोड़े मारने का आदेश दिया। जब उन्हें कोड़े मारे जा रहे थे, तो उन्होंने कहा:

– प्रभु का नाम धन्य हो, क्योंकि अब से हम भी मसीही बन गए हैं, क्योंकि हम प्रभु यीशु मसीह में विश्वास करते हैं और उनके लिए दुख सहते हैं!

ये शब्द सुनकर, राज्यपाल ने तुरंत उन्हें तलवार से सिर कलम करने का आदेश दिया, और उन्होंने शहीद की मृत्यु प्राप्त की, और अन्य पवित्र शहीदों के साथ मसीह ईश्वर से अपने मुकुट प्राप्त किए।

जहाँ तक संत फलालेउस का प्रश्न है, राज्यपाल ने उनसे कहा:

'देवताओं को बलिदान चढ़ाओ और तुम जीवित रहोगे, और इस संसार के सुखों का आनंद उठाओगे।'

शहीद ने उत्तर दिया:

'तुम मसीह के एक सेवक को राक्षसों को बलिदान चढ़ाने के लिए राज़ी नहीं कर सकते।'

हालाँकि, क्रोध से भरकर राज्यपाल स्वयं संत की पिंडली में भाला घोंपना चाहता था; लेकिन ठीक उसी क्षण जब वह अपनी कुर्सी से उठने का प्रयास कर रहा था, उसने अपनी शक्ति क्षीण होती हुई महसूस की और पाया कि वह अपनी जगह से उठ नहीं पा रहा है। और हेड्रियन के मंदिर में मौजूद सभी विधर्मी, यह देखकर कि क्या हुआ था, ऊँचे स्वर में चिल्लाए, कहते हुए:

'महान है ईसाई ईश्वर, जो ऐसे चमत्कार करता है!'

हालाँकि राज्यपाल लज्जा से भरकर शहीद से विनती करने लगा, कहने लगा:

'फलालेउस, मेरे लिए अपने ईश्वर से प्रार्थना करो, कि मैं अपनी सीट से उठ सकूँ, क्योंकि सचमुच तुम्हारा ईश्वर महान है।'

जब संत ने प्रार्थना की, तो राज्यपाल अपने पैरों पर खड़ा हो गया; लेकिन, इसमें दिव्य शक्ति नहीं बल्कि फलालेउस की जादू-टोना देखकर, वह संत पर बहुत क्रोधित हो गया, और दाँत पीसने लगा। फिर, एक ड्रिल पकड़कर, उसने स्वयं संत के पैरों में छेद करना शुरू कर दिया, लेकिन तुरंत ही उसके हाथ सूख गए। राज्यपाल ने एक बार फिर संत से कहा:

'मैं तुझसे एक बार फिर विनती करता हूँ, फलालेई, मेरे लिए प्रार्थना कर, ताकि मेरे हाथ ठीक हो जाएँ।'

उनकी प्रार्थना से संत ने उसके हाथों को चंगा कर दिया। फिर राज्यपाल ने अपने आसपास खड़े लोगों से कहा:

'इस जादूगर को मेरी आँखों से दूर ले जाओ और उसे समुद्र की गहराई में डुबो दो, ताकि वह मर जाए।'

और संत ने उससे कहा:

'तुमने मेरे खलिाफ यह जांच शुरू की है; इसलिए, तुम्हें इसे अंत तक पूरा करना होगा।'

राज्यपाल ने उत्तर दिया:

'मुझसे दूर हो जा, जादूगर, और कहीं और जाकर मर जा; क्योंकि मैंने अभी तक तुम्हें कोई नुकसान नहीं पहुँचाया है, फिर भी तुमने अपनी जादू-टोने से मुझे पहले ही बहुत नुकसान पहुँचा दिया है!'

संत ने कहा:

'यह मत सोचो, हे मेरे यातनाकर्ता, कि मैं तुम्हारी धमकी से डर जाऊँगा और अपने ईश्वर से मुँह मोड़ लूँगा; यह जान लो: किसी भी परिस्थिति में मैं तुम्हारे देवताओं को बलिदान नहीं चढ़ाऊँगा; और न ही मैं उन राक्षसों की पूजा करूँगा जिनकी तुम सेवा करते हो।'

ये शब्द सुनते ही, राज्यपाल के सेवकों ने संत को पकड़ लिया और उसे नाव में बिठाकर समुद्र के बीचोबीच ले जाकर वहाँ डुबो दिया। डूबते समय, संत ने ईश्वर से यह प्रार्थना की:

'हे प्रभु मेरे ईश्वर! मुझे अभी मरने न देना, क्योंकि मैं तेरे पवित्र नाम के लिए और अधिक कष्ट सहना चाहता हूँ, ताकि एक और भी महान शहादत का कार्य करके, मैं तुझसे अनंत जीवन में अक्षय मुकुट प्राप्त करूँ।'

शहीद के डूब जाने के बाद लौटे सेवकों ने इग्यूमेन से कहा:

'हमने वैसा ही किया जैसा आपने हमें आज्ञा दी थी: हमने फलालेउस को समुद्र में फेंका, और वह हमारी आँखों के सामने डूब गया।'

लेकिन जब नौकर राज्यपाल से ये बातें कर ही रहे थे, तब सफेद वस्त्र धारण किए हुए संत फलालेउस प्रकट हुए। राज्यपाल और उसके साथ मौजूद सभी लोग संत को देखकर बहुत चकित हो गए। और राज्यपाल ने संत से कहा:

'तो तुम्हारी जादूगरी ने तो समुद्र को भी जीत लिया है!'

संत ने उनसे उत्तर दिया:

'अब कहाँ है तुम्हारे देवताओं की शक्ति और सामर्थ्य? तुम्हारा अहंकार कहाँ है? देखो, मेरे प्रभु, यीशु मसीह ने तुम्हारी योजनाओं को विफल कर दिया है और मुझे मरने नहीं दिया है, ताकि मैं तुम्हारे पिता, शैतान को अभी भी हरा सकूँ।'

अधीक्षक क्रोधित हो गया और अपने पास खड़े लोगों से कहा:

'देखो कि इस जादूगर ने समुद्र को मंत्रमुग्ध कर दिया है और हम पर अपमान उगल रहा है; अगर हमने उसे ऐसे ही जाने दिया, तो वह अपनी जादू-टोने से हम सबको नष्ट कर देगा।'

अब राज्यपाल के साथ उरवकी नाम का एक जादूगर था; उसने राज्यपाल को यह कहते हुए सलाह दी:

'आदेश दो, हे शासक, कि उसे जानवरों के सामने फेंक दिया जाए ताकि वे उसे नोच-नोच कर खा जाएँ।'

और तुरंत राज्यपाल ने जानवरों को खिलाने वाले रक्षक को बुलाया और उसे तमाशे के लिए एक जगह तैयार करने का आदेश दिया, और उसने संत से कहा:

'फलालेई, क्या तुम देवताओं को बलिदान दोगे, या तुम चाहते हो कि तुम्हारा शरीर जानवरों का भोजन बन जाए?'

इस पर पवित्र शहीद ने उत्तर दिया:

'क्या तुमने अभी तक प्रभु और मेरे ईश्वर, यीशु मसीह की शक्ति और महिमा को नहीं पहचाना? मैं तुम्हें भविष्यद्वक्ताओं के वचनों में घोषित करूँगा: *"प्रभु का दहिना हाथ ऊँचा किया गया है; प्रभु का दहिना हाथ महान काम करता है! मैं न मरूँगा, पर जीवित रहूँगा, और प्रभु के कामों की घोषणा करूँगा"* (भजन संहिता 117:16–17)।

तब उन्होंने संत को चौक में ले जाकर जंगली जानवरों के हवाले कर दिया कि वे उन्हें फाड़-फाड़ कर खा जाएँ। लेकिन जानवरों ने संत को छुआ भी नहीं। एक भयंकर मादा भालू उनके पास आई, उनके पैरों के पास लेट गई और उन्हें चाटने लगी। यह देखकर, राज्यपाल ने क्रोध से दाँत पीसे और सिंह की तरह गरजा। तब उसने एक भूखे सिंह और एक सिंहनी को उस पर छोड़ने का आदेश दिया, लेकिन वे भी, पास आते ही, शहीद के पैरों पर गिर पड़े और उन्हें चाटने लगे। राज्यपाल, अपने क्रोध में, अपने कपड़े फाड़ने लगा, जबकि भीड़ ने अपनी पूरी ताकत से चिल्लाना शुरू कर दिया, यह कहते हुए:

'महान है ईसाई ईश्वर! हे फलालेयस के ईश्वर, हम पर दया करो!'

फिर उन्होंने जादूगर उरवकिया को पकड़कर जानवरों के सामने फेंक दिया, और उसे तुरंत ही चीर-फाड़कर खा लिया गया। राज्यपाल अपनी कुर्सी से उठे और शहीद को तलवार से मार डालने का आदेश दिया।

और पवत्रि शहीद को एडसा नामक एक स्थान पर, जो इस उद्देश्य के लिए वशिेष रूप से तैयार कयिा गया था, सरि कलम करने के लिए ले जाया गया, और प्रार्थना के बाद उन्होंने[3797] के मई महीने के बीसवें दनि अपना अंतमि सांस लयिा, हमारे प्रभु यीशु मसीह के सम्मान और महमिा के लिए, जो पतिा और पवत्रि आत्मा के साथ महमिामय हैं, अब और हमेशा और युगों-युगों तक। आमीन।

कॉन्टाकयिन, स्वर 3:

आप एक शहीद और एक दयालु व्यक्तथि, महमिा के राजा के एक पराक्रमी सैनकि; परीक्षाओं और यातनाओं के माध्यम से आपने मूर्तपिूजकों की घमंड को पैरों तले कुचल दयिा: इसी कारण हम आपकी सम्मानति स्मृतकिा गायन करते हैं, हे बुद्धमिान फलालेउस।

अस्कालोन के पवत्रि शहीद का कष्टकथा।

20 मई को स्मरण कयिा जाता है

जब राज्यपाल एरयिन हर्मोपोलीस[3798] शहर से एंटनिोए[3799] शहर की यात्रा कर रहे थे, तो रास्ते में अस्कलॉन नामक एक ईसाई उनके सामने लाया गया। उसे देखकर राज्यपाल ने कहा:

'वह कौन है?'

हेगेमोन के एक सलाहकार, अपोलोनडिस नामक व्यक्तनि े उत्तर दयिा:

'मुझे लगता है कि वह एक ईसाई है।'

गवर्नर ने अपोलोनडिस से कहा:

'उससे पूछो कि वह कौन है।'

अपोल्लोनडिस ने संत से पूछा:

'तुम कौन हो?'

संत ने उत्तर दयिा:

'मैं एक ईसाई हूँ।'

राज्यपाल ने उससे कहा:

'क्या तुमने उन शाही फरमानों के बारे में सुना है जो सभी राज्यों में भेजे गए हैं, जो ईसाइयों को देवताओं को बलदिान चढ़ाने के लिए मजबूर करते हैं?'

संत अस्कलॉन ने उत्तर दयिा:

'हाँ, मैंने उन अधर्मी आदेशों के बारे में सुना है, जो कई लोगों को भटकाने के लिए जारी कए गए हैं।'

गवर्नर ने कहा:

'तुम्हारी हम्मित कैसे हुई राजाओं के बारे में इतना बुरा बोलने की, उनके पवत्रि और उद्धारकारी आदेशों को एक ठोकर कहकर?'

संत ने उत्तर दयिा:

मेरे साथ जो चाहो करो, क्योंकि मैं उन आदेशों को नहीं मानता, क्योंकि वे अवैध रूप से जारी कए गए हैं, लोगों के भले के लिए नहीं बल्कि विनिाश के लिए; क्योंकि मूर्तयिों की पूजा का आदेश देने में कोई भला हो ही नहीं सकता?

राज्यपाल ने कहा:

[3797] संत फलालयिस का 284 ईस्वी में नधिन हो गया।

[3798] मस्रि में हर्मोपोलसि नामक दो शहर हैं: एक (हर्मोपोलसि माइनर) नचिले मस्रि में स्थति था, और दूसरा (हर्मोपोलसि मेजर) मध्य मस्रि में। इस मामले में, बेशक, बाद वाले की ही बात हो रही है।

[3799] एंटीनोया शहर मस्रि के मध्य भाग में, नील नदी के दूसरी कनिारे, ग्रेट हर्मोपोलीस के सामने स्थति था।

– हमारे राजाओं की निंदा करना ही तुम्हारे लिए काफी नहीं है: तुम हमारे देवताओं को मूर्तियाँ भी कहते हो। मैं स्वयं देवताओं की शपथ लेकर कहता हूँ कि, जब तक तुम उनकी पूजा नहीं करोगे और उन्हें बलिदान नहीं चढ़ाओगे, तब तक तुम अवज्ञाकारियों के लिए निर्धारित यातनाओं को भुगतोगे।

संत ने उत्तर दिया:

'मैं तुम्हारी धमकी से नहीं डरता, बल्कि मैं उससे डरता हूँ जिसने कहा है: *"उनसे मत डरो जो शरीर को मार सकते हैं पर आत्मा को नहीं मार सकते; बल्कि उससे डरो जो आत्मा और शरीर दोनों को गेहेन्ना में नाश कर सकता है"* (मत्ती 10:28)। इसलिए, मनुष्य को परमेश्वर से डरना चाहिए, जो पूरे व्यक्ति को हमेशा के लिए पीड़ा दे सकता है, न कि तुमसे, जो केवल शरीर को पीड़ा देते हो, और वह भी हमेशा के लिए नहीं, बल्कि थोड़े समय के लिए।

हेगेमोन ने कहा:

'मेरी बात सुनो और अमर देवताओं को बलिदान चढ़ाओ; क्योंकि यदि तुम आज्ञा नहीं मानोगे, तो यातना का स्थान और यातना देने वाले पहले से ही तैयार हैं।'

संत ने उत्तर दिया:

'हम देखेंगे कि हम में से कौन अधिक शक्तिशाली साबित होता है: क्या तुम यातनाओं के माध्यम से मुझे मूर्तियों को देवता कहने के लिए मना लोगे, या मैं तुम्हें मेरे प्रभु मसीह को सभी चीजों के सच्चे ईश्वर और सृष्टिकर्ता के रूप में स्वीकार करने के लिए मना लूंगा?'

क्रोधित होकर, राज्यपाल ने आदेश दिया कि शहीद को नग्न करके एक पेड़ से लटका दिया जाए, और उसे कोड़ों से पीटा जाए तथा लोहे के औजारों से खुरच दिया जाए। हालाँकि, संत, जब उनका शरीर निर्दयता से यातना दी जा रही थी और फाड़ा जा रहा था, यहाँ तक कि उसके टुकड़े ज़मीन पर गिर रहे थे, मौन रहे, न तो उन्होंने दर्द की एक भी कराह निकाली और न ही कोई आवाज़ की।

तब राज्यपाल ने उससे कहा:

'क्या तुम्हारा हृदय नहीं पसीजा, ताकि तुम देवताओं को बलिदान अर्पित कर सको?'

[3800]वहाँ खड़े एक विशिष्ट ईसाई, विज़िमोन नामक व्यक्ति ने कहा:

'मृत्यु पहले ही उसके समीप आ चुकी है, और वह अपना होश खो चुका है।'

तत्क्षण संन्यासी ने निडरता से उत्तर दिया:

'मैं भ्रम की स्थिति में नहीं हूँ, और मैं कभी भी ईश्वर, मेरे स्रष्टा से मुंह नहीं मोड़ूंगा।'

एरियन ने कहा:

'एक बार फिर तुम्हारा दिल कठोर हो रहा है। हालाँकि, सड़क के किनारे यह जगह तुम्हें गरिमा के साथ यातना देने के लिए उपयुक्त नहीं है; चलो शहर में चलते हैं, और वहाँ तुम अपनी अवज्ञा के अनुरूप यातनाएँ भुगतोगे।'

यह कहकर, हेगेमोन ने आदेश दिया कि शहीद को तुरंत खोल दिया जाए और उसके साथ ले जाया जाए। रास्ते में, शहर के पास, नील नामक एक बड़ी नदी बहती थी। अस्कलॉन के पवित्र शहीद को पहले ही एंटिनोए शहर में लाया जा चुका था, क्योंकि हेगेमोन आराम से पीछे-पीछे चल रहा था। अंतिनोए के नागरिक, जो राज्यपाल से मिलने के लिए बाहर आए थे, संत के चारों ओर इकट्ठा हो गए, जो नदी के किनारे जमीन पर नग्न और घायल पड़े थे (क्योंकि अपने घावों के कारण वे न तो खड़े हो सकते थे और न ही बैठ सकते थे), और उन्होंने उन्हें अपनी संवेदनाएँ दीं, और तुरंत, नदी तक पहुँच चुके और नाव पर चढ़ रहे हेगेमोन को देखकर, वे उनका स्वागत करने की तैयारी करने लगे। लेकिन पवित्र शहीद ने, यह सुनकर कि हेगेमोन नाव से पार जा रहे हैं, अपनी शक्ति इकट्ठी की, जमीन से उठे और स्वर्ग की ओर अपने हाथ उठाकर, प्रभु से पुकार कर कहा:

हे मेरे ईश्वर, हे यीशु मसीह, जिनके लिए मैं ये यातनाएँ सहता हूँ और जिनके प्रेम में मैं सभी की लज्जा के लिए नग्न खड़ा हूँ! अब मेरी सुन, अपने पवित्र नाम की महिमा के लिए, और अपना सर्वशक्तिमान हाथ बढ़ा: इस नाव को, जिसमें यह दुष्ट न्यायाधीश बैठा है, नदी के बीचों-बीच रोक दे, और जब तक वह तुझे एक सच्चा ईश्वर न माने, तब तक उसे इस किनारे तक न पहुँचने दे, सभी का सृष्टिकर्ता और शासक, और सभी लोगों के सामने अपने पवित्र नाम—जिसे वह घृणा करता है—की महिमा करे।

[3800] अलंकारशास्त्र का एक शिक्षक।

जब संत ने इस प्रकार प्रार्थना की, तो अचानक वह नाव जसिमें राज्यपाल बैठा था, नदी के बीच में रुक गई और बलि्कुल भी हलि नहीं सकी। यह देखकर एरयिन चकति हो गया और उस शहीद के शब्दों को याद करते हुए, जसिने उसे मसीह को परमेश्वर के रूप में स्वीकार करने के लिए ले जाने का वादा कयिा था, उसने अपने सेवकों से कहा:

'तुम्हें इस बात का क्या लगता है कि नाव समुद्र में रुक गई है? क्या यह उस ईसाई के जादू-टोने का काम नहीं हो सकता?'

यह कहकर, राज्यपाल ने एक और नाव लाने का आदेश दयिा और उसमें चढ़ गया – और जसि नाव से राज्यपाल उतर गया था, वह तुरंत चल पड़ी; जबकि जसि नाव में वह चढ़ा था, वह सूखी ज़मीन की तरह वहीं रुकी रही और बलि्कुल नहीं हलि सकी, भले ही उसमें कई नौकर थे, पाल फैले हुए थे, और हवा अनुकूल थी। यह देखकर, राज्यपाल ने शहीद को संदेश भेजा:

'चूंकि तुम उन यातनाओं से डर गए थे जनिसे मैंने तुम्हें डराया था, इसीलिए तुमने अपनी जादू-टोने से मुझे नदी पार करने और शहर में प्रवेश करने से रोक दयिा है।'

शहीद ने दूत को उत्तर दयिा:

'जसि प्रकार मेरा प्रभु परमेश्वर जीवति है, जसि नाव में एरयिन बैठा है, वह तब तक नहीं चलेगी जब तक कि वह मेरे प्रभु यीशु मसीह के नाम का अंगीकार नहीं कर लेता, ठीक वैसे ही जैसे मैंने पहले उसे बताया था।'

तब दूत ने उससे कहा:

'भले ही राज्यपाल नदी के बीच में आपके ईश्वर का नाम स्वीकार कर ले, जैसा आप चाहते हैं, आप कनिारे पर बैठकर उसकी आवाज़ कैसे सुनेंगे, क्योंकि नदी, जैसा आप देख सकते हैं, बहुत चौड़ी है?'

शहीद ने उससे कहा:

'वह मेरे प्रभु की स्वीकारोक्ति एक लट्ठी पर लखि और उसे मेरे पास भेजे, और उसी क्षण नाव अपनी जगह से हटकर कनिारे पर आ जाएगी।'

वापस आकर, दूत ने शहीद के शब्द राज्यपाल को बताए। राज्यपाल ने तुरंत पर्चमेंट लेकर, अपने हाथ से नम्निलखिति शब्द लखि:

'केवल एक ही सच्चा ईश्वर है, जसिकी अश्कलून पूजा करता है, और वह सवािय उसके और कोई नहीं है। वह सभी का स्रष्टा और स्वामी है।'

यह लखिने के बाद, राज्यपाल ने दस्तावेज़ अस्कालॉन को भेज दयिा। शहीद ने जो लखिा था उसे पढ़ा, ईश्वर से प्रार्थना की, और तुरंत ही राज्यपाल को ले जा रही नाव चल पड़ी और कनिारे पर पहुँच गई।

शहर में प्रवेश करने पर, राज्यपाल ने न्यायालय में अपनी सीट ली और जब शहीद को उनके सामने लाया गया, तो उन्होंने उससे कहा:

'तुमने मुझे नदी पर ही रखने के लिए अपनी सारी अधर्मी, जादू-टोने की शक्ति मुझ पर लगा दी है, लेकनि यहाँ सूखी ज़मीन पर मैं अपने अधकिार की पूरी ताकत तुम पर दखिाऊँगा।'

और तुरंत उसने शहीद के कपड़े उतारने, उसे एक पेड़ से लटकाने, और उसकी पसलयिों और पेट को तब तक जलाने का आदेश दयिा जब तक कि उसका पूरा शरीर भस्म न हो जाए।

संत, भले ही झुलस गए हों, मौन रहे।

और एरयिन ने उससे कहा:

'मेरी दृष्टि में, तुम पहले ही मर चुके हो, अस्कलॉन।'

संत ने उत्तर दयिा:

'भले ही मैं मर जाऊँ, फरि भी मैं पुनर्जीवति होऊँगा।'

और राज्यपाल ने अपने सेवकों से कहा:

'हम उसे यातना देकर केवल अपना ही समय बर्बाद कर रहे हैं; मैं देख सकता हूँ कि वह अपने धर्म को त्यागने के बजाय मरना पसंद करेगा। फरि भी, हम जो कर सकते हैं, करेंगे।'

यह कहकर, राज्यपाल ने संत के पैरों में एक बड़ा पत्थर बांधने का आदेश दयिा और उसे नदी की गहराई में फेंकने का हुक्म दयिा। सैनकिों ने संत को पकड़कर नदी तक ले गए। एक बड़ी भीड़ उनका पीछा कर रही थी, जसिमें कई ईसाई

भी थे जो शहीद की मृत्यु का साक्षी बनने आए थे। ईसाइयों ने अपने साथ रोटी लाई थी और संत से कुछ चखने का आग्रह कयिा। लेकनि उन्होंने मना कर दयिा और कहा:

'मैं इस संसार के कसिी भी नश्वर भोजन का सेवन नहीं करूँगा, क्योंकि मैंने स्वयं को उस प्राप्त करने के लिए तैयार कयिा है जसिे *"न कसिी ने देखा है, न कसिी ने सुना है, और न ही कसिी मानव हृदय ने कल्पना की है"* (1 कुरन्थियिों 2:9)। अत; हे मेरे भाइयों, परमेश्वर के संतों द्वारा तैयार की गई आशीर्वादों को प्राप्त करने का प्रयास करो।'

जैसे ही संत ने ऐसा कहा, सैनकिों ने उन्हें एक नाव में बठिाया और कनिारे से दूर नौका चलाकर उनके पैरों में एक बड़ा पत्थर बांधना शुरू कर दयिा। लेकनि उन्होंने, कनिारे पर खड़े ईसाइयों की ओर मुड़कर कहा:

'मेरे बच्चों, मेरी कब्र पर ध्यान देना; परन्तु आज या कल मेरा शरीर न ढूँढ़ना; बल्कि तीसरे दनि, नगर के उत्तरी भाग में जाना, और वहाँ तुम मेरा शरीर कनिारे पर पथ्थर बँधे हुए पाओगे; मुझे उसी पथ्थर के साथ फेंक देना।'

और ऐसा ही हुआ। शहीद के डूबने के तीसरे दनि, ईसाइयों ने उसका पवत्रि शरीर ठीक वैसा ही पाया जैसा उसने उन्हें बताया था, एक पत्थर बँधा हुआ, और उन्होंने उसे सम्मान के साथ दफनाया, हमारे प्रभु यीशु मसीह की महमिा करते हुए, जन्हिें पता और पवत्रि आत्मा के साथ, अब और हमेशा और अनंत काल तक सम्मान और आराधना मलिनी चाहिए। आमेन।

सभी रूस के मेट्रोपॉलटिन और चमत्कार-कर्ता अलेक्सयिस के पूजनीय अवशेषों की खोज और स्थानांतरण

20 मई को स्मरण कयिा जाता है

[3801]सभी रूस के सर्वशक्तमिान शासक, धर्मनष्ठि ग्रैंड प्रंसि वासलिी वासलिीवचि के दनिों में, संत अलेक्सयिस के नधिन के लगभग साठ साल बाद, सर्व-सत्कार्य परमेश्वर, जो अपने संतों में अद्भुत हैं और उन्हें महमिामय करते हैं, ने इस प्रकार एक अनमोल खजाने, अर्थात् इस पवत्रि और महान धर्मगुरु, मेट्रोपॉलटिन अलेक्सयिस के जीवन-दायक अवशेषों को प्रकट कयिा।

चूंकि इस मठ में सबसे पहले चर्च[3802] स्वयं संत अलेक्सयिस द्वारा संत माइकल महादूत के सम्मान में बनाया गया था, जो चमत्कार उन्होंने एक बार Chonae में कयिा था, उसकी स्मृति में यह चर्च लकड़ी की बनी थी; समय के साथ इस चर्च की छत जर्जर हो गई थी, और जब दव्यि लटिर्जी का आयोजन चल रहा था, तब यह ढह गई, फरि भी ईश्वर की कृपा से उस समय चर्च में मौजूद सभी लोग सुरक्षति रहे। तब महा राजकुमार ने एक पत्थर का चर्च बनाने का आदेश दयिा, और जब उन्होंने नए चर्च की नींव रखने के लिए पहले वाले लकड़ी के चर्च के अंदर खाई खोदनी शुरू की, तो उन्हें महान संत, संत एलेक्सयिस के अवशेष अक्षुण्ण मलिे, और यहाँ तक कि उनके वस्त्र भी क्षय नहीं हुए थे। थोड़ी ही देर बाद, संत माइकल महादूत के नाम पर एक पत्थर का चर्च बनाया गया, जसिमें दक्षणि की ओर एक पार्श्व चैपल था जो परमेश्वर की अतपिवत्रि माता के सूचनार्थ (एन्नन्शएिशन) को समर्पति था। यह चर्च ज़मीन से तीन सीढ़ियाँ ऊपर था, लेकनि यह पहले वाले लकड़ी के चर्च से छोटा था, जो भले ही अधकि वशिाल था, लेकनि एक ही स्तर पर बना था, और उसका फर्श सीधे ज़मीन पर था। जब नव-नर्मिति चर्च को वधिवित सजाया और पवत्रि कयिा गया, तो संत एलेक्सयिस के चमत्कारकि अवशेषों को उसमें लाया गया और परम पवत्रि ईश्वर माता की घोषणा को समर्पति पार्श्व चैपल में रखा गया।

इसके बाद कई साल बीत गए, और ग्रैंड प्रंसि जॉन वासलिीव[3803] के शासनकाल में, उनकी उत्कृष्टता मेट्रोपॉलटिन जेरोन्टयिस[3804] के अधीन, इस मठ के आर्चमिांड्राइट गेनाडी के प्रयासों से, संत मेट्रोपॉलटिन अलेक्सयिस

[3801] यह, बेशक, ग्रैंड प्रंसि वासलिी वासलिीवचि द डार्क को संदर्भति करता है। उन्होंने 1425 से 1462 तक शासन कयिा।

[3802] 'इस मठ' से तात्पर्य चुदोव मठ से है, जसिकी स्थापना 1365 में मॉस्को के मेट्रोपॉलटिन, संत अलेक्सयिस ने क्रेमलनि में की थी। यह मठ उस स्थान पर बना था जसिे तातार रानी ताइदुला ने दान में दयिा था, जन्हिें उन्होंने अंधापन से ठीक कयिा था। रानी को अंधापन से ठीक करने के संत के चमत्कारकि उपचार की स्मृति में इसका नाम चुदोव रखा गया था।

[3803] इवान तृतीय वासलिीवचि 1462 से 1505 तक मॉस्को के ग्रैंड प्रंसि थे।

[3804] मेट्रोपॉलटिन जेरोन्टयिस 1473 से 1489 तक मॉस्को के आध्यात्मकि प्रमुख रहे।

को समर्पति एक भोजनशाला के साथ एक नई चर्च का नर्मिाण शुरू हुआ; लेकनि उस समय यह चर्च पूरा नहीं हो सका, क्योंकि आर्चमिांड्राइट गेनाडी को वेलकिी नोवगोरोड का आर्चबशिप[3805] नयिुक्त कयिा गया था। कुछ समय बाद, जब उसी आर्चबशिप गेनाडी की लगन के कारण, चर्च और भोजनालय, साथ ही अन्य इमारतें पूरी हो गईं और चर्च को सजाया और पवत्रि कयिा गया, संत अलेक्सयिस की पवत्रि अवशेषों को परमेश्वर की परम पवत्रि माता की घोषणा की पार्श्व वेदी से स्थानांतरति करके उनके सम्मान में नर्मिति चर्च की दक्षणिी दीवार के पास रखा गया। 1534 में, ग्रैंड प्रंसि वासलिी इओनोवचि[3806] ने चमत्कारी संत अलेक्सयिस की अवशेषों के लिए एक चांदी का अवशेष-पात्र बनवाने का आदेश दयिा, जसिके ऊपरी पैनल पर स्वयं संत अलेक्सयिस की एक छवि चांदी से बनाई जानी थी और उसे सोने, रत्नों और मनकों से सजाया जाना था। ग्रैंड प्रंसि की मृत्यु के बाद, 1535 में, रलिक्विेरी का नर्मिाण पूरा हो गया, और संत अलेक्सयिस के अवशेषों को उनके पुत्र, ग्रैंड प्रंसि इयान वासलीवचि[3807] के शासनकाल में, संत के नधिन के दनि, यानी महा-उपवास के पहले सप्ताह के गुरुवार से शुक्रवार, 12 फरवरी को, इसके भीतर रखा गया।

संत अलेक्सयिस के अवशेषों वाली रलिक्विरी 1686 तक, लगभग दो सौ वर्षों तक, इसी स्थान पर रखी रही। चूंकि नोवगोरोड के आर्चबशिप जेनाडयिस द्वारा नर्मिति चर्च और भोजनशाला जर्जर हो गए थे, इसलिए 1683 में , धर्मपरायण ज़ार और ग्रैंड प्रंसि थयिोडोर अलेक्ज़ेवचि[3808] , सर्व-रूस के नरिंकुश शासक, के आदेश पर, और मॉस्को तथा सर्व-रूस के परमपावन पैट्रआर्क जोआचमि के आशीर्वाद से, मठ के तत्कालीन मठाधीश, आर्चमैंड्राइट एड्रयिन के प्रयासों और परश्रिम से, जो कुछ ही समय बाद शाही शहर कज़ान के मेट्रोपॉलटिन बने[3809] , और बाद में, ईश्वर की कृपा से, शाही महानगर मास्को और सर्व रूस के परम पावन पैट्रआर्क के पद पर पदोन्नत हुए[3810] , – एक नई जगह पर एक नया, बड़ा भोजनशाला बनाया गया। यह लगभग पूरी तरह से मठ के परसिर के बाहर स्थति था, इसका केवल एक छोटा सा हस्सिा—अर्थात् उत्तरी दीवार—चर्चों के साथ मठ परसिर का हस्सिा था, जनिमें से पहला—जो परम पवत्रि ईश्वर माता की घोषणा को समर्पति था, जो पहले सेंट माइकल द आर्कएन्जेल चर्च के भीतर एक पार्श्व-गरिजाघर था—और दूसरा, पहले के बगल में, जैसा कि हमने पहले ही देखा है, – जो सेंट एलेक्सयिस द मेट्रोपॉलटिन को समर्पति था; और उनके साथ दो नारथेक्स, या भोजन कक्ष थे, जो चमत्कारकि अवशेषों की पूजा करने, प्रार्थना करने और चर्च सेवा में भाग लेने के लिए आने वालों को समायोजति करने के लिए बनाए गए थे। इसी स्थल पर, इन दोनों चर्चों के बीच, मठ के भक्षिुओं के लिए संत एंड्रयू द फर्स्ट-कॉल्ड अपोस्टल के सम्मान में एक नया चर्च बनाया गया था, ताकि वे हमेशा, और वशिेष रूप से सर्दयिों में, मठ के चर्चों में आने वाले बाहरी आगंतुकों से अलग, वभिन्नि चर्च सेवाओं में भाग ले सकें। इसके अतरिक्ति, इन सभी इमारतों के पश्चमिी हस्सिे में, भक्षिुओं के भोजन के लिए एक और भोजनशाला बनाई गई थी, ताकि वे मठ में आने वालों—जो सांसारकि चतिाओं में डूबे सांसारकि लोग थे—से पूरी तरह से अलग रह सकें और केवल ईश्वर के बारे में सोच सकें और अपनी मुक्ति के बारे में ही चतिति रह सकें, प्रार्थना, उपवास और शारीरकि श्रम में लगन से लगे रहने के लिए, क्योंकि संपूर्ण मठवासी जीवन इन्हीं में नहिति है। इस उद्देश्य के लिए, मठ के बाहर से चर्च तक वभिन्नि प्रवेश द्वार भी बनाए गए: पुरुषों के लिए, सेंट एलेक्सयिस चर्च के लिए एक अलग प्रवेश द्वार, और महलिाओं के लिए, परम पवत्रि ईश्वर माता के घोषणा चर्च के लिए एक अलग प्रवेश द्वार था, ताकि संत की जीवन-दायक अवशेषों को देखने आने वाले लोग मठ के बाहर से इन चर्चों में प्रवेश कर सकें और बनिा मलि-जुले उनके भीतर खड़े रह सकें, प्रत्येक लगि एक अलग चर्च में, पुरुष अलग और महलिाएं अलग। हालांकि, इस मठ में रहने वाले भक्षिुओं के लिए, इन चर्चों और भोजनशालाओं के अन्य प्रवेश द्वार मठ के भीतर से प्रदान कए गए थे। ऐसा इसलिए था ताकि भक्षिु सांसारकि वकिर्षणों से मुक्त, मौन का जीवन जी सकें, और साथ ही ताकि पवत्रि पतिाओं की परंपरा और मठ के नयिम के अनुसार, मठ के द्वार हमेशा बंद रहें, जसिसे आम लोगों को अनुचति समय पर मठ में प्रवेश करने से रोका जा सके और भक्षिुओं को कसिी भी समय मठ

[3805] यह 12 दसिंबर 1484 को हुआ था। आर्चबशिप जेनाडयिस ने यहूदीकरणवादयिों के वधिर्म के खलिाफ संघर्ष में सक्रयि भूमकिा नभिाई। जून 1504 में, 'अपनी अस्वस्थता के कारण', उन्होंने अपने धर्मप्रांत का प्रशासन छोड़ दयिा, चुदोव मठ में बस गए, और 4 दसिंबर 1505 को वहीं उनकी मृत्यु हो गई।

[3806] जॉन III के उत्तराधकिारी, वासलिी IV इओआनोवचि, 1505 से 1533 तक मॉस्को के ग्रैंड प्रंसि थे; परणिामस्वरूप, जैसा कि प्रस्तावना में कहा गया है, वह वर्ष जसिमें राजकुमार ने संत की अवशेषों के लिए अवशेष-पात्र बनवाया था, गलत है।

[3807] इवान चतुर्थ वासलियेवचि द टेरबिल 1533 से 1584 तक मॉस्को के ज़ार थे।

[3808] फ्योडोर तृतीय अलेक्ज़ेयेवचि ने 1676 से 1682 तक शासन कयिा।

[3809] काज़ान को एक 'शाही शहर' कहा जाता है, संभवतःइसलिए क्योंकि यह कभी काज़ान तातार खानते की राजधानी था।

[3810] सर्व-रूसी पैट्रआर्कों में अंतमि पैट्रआर्क एड्रयिन ने 1690 से 1700 तक रूसी चर्च का नेतृत्व कयिा।

छोड़ने की अनुमति मिल सके। क्योंकि पुराने समय में, मठ के नियम में यह प्रावधान था कि सप्ताह के तीन दिनों पर, अर्थात्: सोमवार, बुधवार और शुक्रवार को, भिक्षुओं को किसी भी परिस्थिति में मठ की दीवारों से बाहर निकलने की अनुमति नहीं थी; शेष चार दिनों में, उन्हें किसी भी आवश्यक आवश्यकता के मामले में बाहर निकलने की अनुमति थी, और तब भी अपनी मर्जी से नहीं, बल्कि पहले मठाधीश या मठ के प्रभारी व्यक्ति से अनुमति लेने के बाद ही।

जब चर्चों और भोजनशालाओं का निर्माण पूरी तरह से पूरा हो गया और उन्हें उपयुक्त वैभव से सजाया गया, तो उन्हें सभी महान के शासकों, धर्मनिष्ठ ज़ार और ग्रैंड प्रिंस जॉन अलेक्ज़ेविच और पीटर अलेक्ज़ेविच के अपने हाथों द्वारा पवित्र किया गया, लघु और श्वेत रूस, और उनके शाही गणमान्य व्यक्तियों—उनके साथ सर्व-रूस के सर्वोच्च धर्मगुरु जोआचिम, मॉस्को में उस समय उपस्थित बिशप, सम्पूर्ण पुरोहित वर्ग और लोगों की भारी भीड़ के साथ, महान संत, मेट्रोपॉलिटन अलेक्सियस की जीवन-दायक अवशेषों को, धूप और सुगंधित तेलों के साथ, पुराने भोजनशाला चर्च से नए बने चर्च तक ले जाया गया और दो चर्चों, परम पवित्र ईश्वर की माता के घोषणा के चर्च और संत अलेक्सियस के चर्च के बीच तैयार की गई जगह में रखा गया। यह 20 मई 1686 को हुआ। संत मेट्रोपॉलिटन अलेक्सियस के सम्मान में चर्च का अभिषेक स्वयं परम पावन पैट्रिआर्क जोआचिम ने एक कैथेड्रल सेवा में किया, जो त्रिमूर्ति में महिमामय, एक ईश्वर की महिमा के लिए थी।

ट्रोपारियन, स्वर 4:

महाधर्माध्यक्षों के सह-समारोही, प्रेरितों के उत्तराधिकारी, पूरे रूस के चरवाहे और शिक्षक, सर्व-धन्य पिता अलेक्सियस, सभी के प्रभु से प्रार्थना करें कि वे आपके झुंड को शांति, उनकी आत्माओं को उद्धार, और महान दया प्रदान करें।

ट्रोपारियन, स्वर 2:

अनमोल मूल्य के खजाने के समान, जो लंबे समय तक पृथ्वी में छिपा था, आपके पवित्र अवशेष चमत्कारी सिद्ध हुए हैं, सर्वधन्य पिता और संत अलेक्सियस: उनके द्वारा हम उनके चंगा करने वाले शक्ति से समृद्ध होते हैं, और हम मसीह की महिमा करते हुए कहते हैं: 'महिमा उसको हो जो अपने संतों की महिमा करता है।'

कॉन्टाकियन, स्वर 8:

कभी न अस्त होने वाले सूर्य की तरह, आपके पवित्र और अक्षय अवशेष, जो कई वर्षों तक छिपे रहे, कब्र से हमारे ऊपर चमक उठे हैं, हे संत अलेक्सियस; आपके द्वारा हम अनुग्रह प्राप्त करते हैं। क्योंकि आप अनुग्रह के कार्य द्वारा इस पूरे देश को हर प्रकार के चमत्कारों और भलाई से समृद्ध करते हैं; आइए हम आपको गाएं: हर्षित हो, पिता, रूस के प्रकाश।

3 जून

21 मई (पुराना कैलेंडर)

इस दिन हम उग्लिच के पूजनीय ग्रीक कासियन, चमत्कार करने वाले संत का स्मरण करते हैं, जिनका 2 अक्टूबर 1504 को निधन हुआ।

राजा और प्रेरितों के तुल्य संत कॉन्सटेंटाइन का जीवन, और उनकी पवित्र माता हेलेना

21 मई को स्मरण किया जाता है

जबकि मूर्तिपूजक दुनिया, आग और तलवार से लैस होकर ईसाई धर्म के विरुद्ध खड़ी थी, उसने तीसरी शताब्दी के अंत और चौथी शताब्दी की शुरुआत में ईसाइयों का नाम ही पृथ्वी के चेहरे से मिटा देने का प्रयास किया[3811] , ईश्वर की व्यवस्था ने, उन्हीं सीज़रों के बीच जिन्होंने ईसाई धर्म का उत्पीड़न किया था, मसीह की कलीसिया के लिए कन्स्टेंटाइन के रूप में एक राजसी संरक्षक तैयार किया था - एक राजा जिसे, अपने जीवित रहते हुए ही, 'चेलों के समान' की उपाधि मिली, जो ईसाई इतिहास में उसके लिए दृढ़ता से स्थापित है, और विश्व इतिहास में 'महान' की उपाधि मिली।

274 ईस्वी में ऐसे माता-पिता के यहाँ जन्मे जो, यद्यपि ईसाई नहीं थे, फिर भी ईसाई धर्म से परिचित थे और उसका समर्थन करते थे, कॉन्स्टेंटाइन ने बचपन से ही मूर्तिपूजक अंधविश्वासों से दूरी बना ली और सच्चे ईश्वर, मसीह के करीब आ गए। स्वयं प्रभु का दयालु हाथ धीरे-धीरे उन्हें तैयार करता गया और कई तरह से उन्हें परमेश्वर की महिमा के लिए एक चुने हुए पात्र के रूप में शुद्ध करता गया।

कांस्टेंटाइन के पिता, साम्राज्य के पश्चिमी भाग के सीज़र कांस्टेंटियस क्लोरस[3812] , यद्यपि बाहरी रूप से - और आधिकारिक तौर पर - मूर्तिपूजक थे, परन्तु हृदय से वे मूर्तिपूजक अंधविश्वासों से बहुत दूर थे; उसने अपने हृदय में कई झूठे देवताओं की पूजा का त्याग कर दिया था और एक सच्चे परमेश्वर को स्वीकार किया था – वह केवल उसी की पूजा करता था, और उसने अपने बच्चों और सेवकों सहित अपने पूरे परिवार को एक ही राजा – परमेश्वर[3813] को समर्पित कर दिया था। कॉन्स्टेंटीयस मूर्ति पूजा की अंधविश्वासी पूजा से कितना दूर था, यह उसके जीवन की निम्नलिखित उल्लेखनीय घटना से स्पष्ट होता है। बलिदान और धूप के द्वारा मूर्ति पूजा का त्याग करने के बाद, कॉन्स्टेंटियस एक बार अपने दरबारियों की सच्ची प्रवृत्ति की परख करना चाहत ; उसने दिखावा किया कि वह अंधविश्वासी पैगन अनुष्ठान करना चाहता है, और अपने दरबारियों से कहा:

'जो कोई भी मेरी कृपा और स्नेह का आनंद लेना चाहता है और अपने सम्मान को बनाए रखना चाहता है, उसे मूर्तियों को बलिदान चढ़ाना होगा; लेकिन जो कोई भी ऐसा करने से इनकार करता है, उसे मेरी दृष्टि से दूर हो जाना चाहिए और अब मेरी कृपा की उम्मीद नहीं करनी चाहिए, क्योंकि मैं उन लोगों के साथ एकता बनाए नहीं रख सकता जो मेरे विश्वास को साझा नहीं करते।'

सीज़र के शब्दों को सुसमाचार मानकर, दरबारी तुरंत दो गुटों में बंट गए: एक ओर, पाखंडी—वे लोग जिनकी वास्तविक धार्मिक आस्था नहीं थी, जिनकी अंतरात्मा लचीली थी और जो दाहिनी या बाईं ओर झुक सकती थी— उन्होंने तुरंत राजा के प्रस्ताव से अपनी सहमति व्यक्त की, हालाँकि उस समय तक, अपने स्वार्थी हित के कारण, उन्होंने मूर्तिपूजा को अस्वीकार करने में उनके 'अच्छे उदाहरण' का अनुसरण किया था; जबकि अन्य, जिन्होंने दिल से ही मूर्तिपूजा को अस्वीकार कर दिया था और अब मसीह के सच्चे सेवकों के रूप में अपनी आस्था पर कायम रहे, सांसारिक और क्षणिक सम्मानों को त्यागकर, राजा के अनुचर दल से अलग होने लगे। यह देखकर, कॉन्स्टेंटियस ने राजमहल छोड़ रहे सच्चे ईसाइयों को वापस बुलाया और उनसे कहा:

[3811] सम्राट डायोक्लेटियन के एक फरमान – दिनांक 23 फरवरी 303 – के द्वारा ईसाई धर्म को उसके सभी संस्थानों और पूजा स्थलों सहित उखाड़ फेंकने के आदेश दिए गए थे। क्रूर उत्पीड़न की शुरुआत पूर्वी रोमन साम्राज्य की राजधानी निकोमेडिया में एक ईसाई चर्च को सैन्य बल द्वारा लूटने और नष्ट करने से हुई, जहाँ एक ही घटना में 20,000 तक विश्वासियों को जिंदा जला दिया गया था; इसके बाद, उत्पीड़न का भयावह रूप सीरिया, फिलिस्तीन, एशिया माइनर और मिस्र के साथ-साथ इटली में भी फैल गया। लैक्टैंटियस ('ओन द डेथ ऑफ द पर्सेक्यूटर्स', अध्याय XV और XVI) ने उत्पीड़न की क्रूरता के बारे में बताया है: 'अगर मेरे पास सौ मुँह और लोहे की जीभ होती, तब भी मैं विश्वासियों द्वारा सहन किए गए सभी कष्टों का वर्णन नहीं कर सकता:... लोहा कुंद हो जाता और टूट जाता; हत्यारे थक जाते और बारी-बारी से काम करते, बारी लेते हुए....'

[3812] सम्राट डायोक्लेटियन ने विशाल रोमन साम्राज्य के प्रशासन को आसान बनाने के लिए, इसे दो भागों में विभाजित किया, जिनमें से एक - पूर्वी भाग - पर उन्होंने स्वयं शासन किया, निकोमेडिया में रहते हुए और सीज़र गैलेरियस को अपना सह-शासक बनाकर, जबकि दूसरी – पश्चिमी आधी – में उन्होंने मैक्सिमियन को सम्राट नियुक्त किया, जिनके सह-शासक सीज़र कॉन्स्टैंटियस क्लोरोस थे, जो सीधे तौर पर गॉल और ब्रिटेन पर शासन करते थे।

[3813] यूसेबियस। *द लाइफ़ ऑफ़ कॉन्स्टेंटाइन*, पुस्तक I, अध्याय 17

'चूंकि मैं देखता हूँ कि आप अपने ईश्वर की निष्ठापूर्वक सेवा करते हैं, मैं चाहता हूँ कि आप मेरे सेवक—मंत्री और सलाहकार—बन जाएँ, क्योंकि मुझे आशा है कि आप मेरे प्रति भी उतने ही निष्ठावान रहेंगे जितने आप अपने ईश्वर के प्रति हैं।'

ईसाई धर्म त्यागकर मूर्तियों की पूजा करने के इच्छुक लोगों की ओर मुड़कर राजा ने कहा:

'मैं तुम्हें अपनी दरबार में बर्दाश्त नहीं कर सकता; अगर तुम अपने ईश्वर के प्रति विफादार नहीं रहोगे, तो तुम मुझ पर कैसे वफादार रह सकते हो!'

इस प्रकार उन्हें शर्मिंदा करने के बाद, उन्होंने इन पाखंडियों को अपनी उपस्थिति से निष्कासित कर दिया; जबकि उन्होंने ईश्वर के वफादार सेवकों को अपने करीब खींचा और उन्हें अपने प्रांत में राज्यपाल नियुक्त किया[3814] । और इस प्रकार, जब डायोक्लेटियन का उत्पीड़न विशाल रोमन साम्राज्य के बाकी हिस्सों में चरम पर था, तब कॉन्स्टैंटियस के प्रांत में ईसाई शांति और समृद्धि में रहते थे[3815] । हालाँकि, सम्राटों में वरिष्ठ डायोक्लेटियन की इच्छा को चुनौती देने में असमर्थ, कॉन्स्टैंटियस ने एक बात की अनुमति दी: कुछ ईसाई चर्चों का विनाश[3816] ।

यही थे कॉन्स्टैंटियस क्लोरोस, 'चौवन-के-बराबर' कॉन्स्टेंटाइन के पिता। – ईसाइयों के प्रति उनकी सद्भावना और मूर्तिपूजकों की तुलना में उन्हें प्राथमिकता देना; उनकी पत्नी, संत हेलेना (कॉन्स्टेंटाइन की माँ), और कॉन्स्टेंटियस की बेटी[3817] (कॉन्स्टेंटाइन की बहन) का ईसाई धर्म अपनाना, ने कम उम्र से ही बाद वाली के मन में ईश्वर और उनके कानून के प्रति सच्चा प्रेम भर दिया, और उनके नैतिक चरित्र के पोषण और सुदृढ़ीकरण के लिए एक ठोस नींव रखी। और उसके बचपन की आत्मा में बोया गया यह छोटा सा बीज बाद में एक विशाल वृक्ष बन गया।

कांस्टेनटाइन को अपनी जवानी अपने परिवार के बीच नहीं, बल्कि निकोमेडिया में डायोक्लेटियन के दरबार में बिताने के लिए मजबूर होना पड़ा, जहाँ उसे बड़े सम्राट डायोक्लेटियन के प्रति अपने पिता कॉन्स्टैंटियस की वफादारी सुनिश्चित करने के लिए लगभग एक बंधक—हालांकि एक सम्मानित बंधक—के रूप में ले जाया गया था। उस समय राजधानी में दरबारी जीवन, छोटे पैमाने पर, उस नैतिक और धार्मिक पतन की पूरी सीमा का प्रतिनिधित्व करता था, जिस तक मानवता गिर सकती है जब वह हृदय की अशुद्ध, भावुक इच्छाओं की दास बन जाती है और एक 'विकृत मन' (रोमियों 1:28) में पड़ जाती है। व्यर्थ का दिखावा और विलासिता, मद्यपान और अंधाधुंध भोग, विचार और जीवन की अनियंत्रित अश्लीलता, षड्यंत्र और विद्रोह, ईश्वर की सच्ची उपासना के प्रति शत्रुता और काल्पनिक देवताओं के प्रति पाखंडपूर्ण, कपटी श्रद्धा, – यह वह भयावह तस्वीर है जिसमें दैवीय इच्छा ने कॉन्स्टेंटाइन को मूर्तिपूजा की सारी तुच्छता और अपमान दिखाया। फिर भी, ठीक उसी क्षण, और इसलिए और भी अधिक प्रभावशाली ढंग से, कॉन्स्टेंटाइन की आँखों के सामने एक अलग समुदाय का जीवन सामने आया, – यह ईसाई समुदाय का जीवन था, जहाँ बुजुर्गों, युवकों और कन्याओं, साधारण लोगों और विद्वान ऋषियों, यहाँ तक कि बच्चों ने भी अपने विश्वास की सच्चाई, उसके सार की पवित्रता और ऊँचाई को केवल शब्दों से नहीं बल्कि अपने कर्मों से, अपने सदाचारी जीवन के माध्यम से इसकी घोषणा करके, और इसके लिए मृत्यु तक पीड़ा सहकर प्रदर्शित किया। क्योंकि उस समय मसीह की कलीसिया पर सबसे भयानक उत्पीड़न शुरू हुआ, जो उत्पीड़कों की दुष्टता, यातनाओं की विविधता, शहीदों की संख्या में सभी अन्य उत्पीड़नों से बढ़कर था, और – विजय में, सभी मूर्तिपूजक साज़िशों पर ईसाई धर्म की विजयी विजय। प्रोविडेंस (ईश्वरीय व्यवस्था) द्वारा पगनवाद की दुष्टता के केंद्र में स्थापित, कॉन्स्टेंटाइन यह देखने से चूक नहीं सकता था कि अजेय को जीतने के उनके सभी प्रयास व्यर्थ थे; उसने अपनी आँखों से कमज़ोरी में ईश्वर की शक्ति को साकार होते और सभी चीज़ों को अपने अधीन करते देखा। प्रत्येक ईसाई साक्षी में, प्रत्येक शहादत के कार्य में, कॉन्स्टेंटाइन ने ईसाई धर्म की धार्मिकता, मूर्तिपूजा पर इसकी श्रेष्ठता और इसकी दैवीय उत्पत्ति का अविवादनीय प्रमाण देखा। और कॉन्स्टेंटाइन ने अपने बचपन में बोई गई अच्छाई के बीज को अपनी आत्मा में संजोकर रखा - उसने अपने दिल की पवित्रता और मासूमियत और ईश्वर के कानून के प्रति अपने सम्मान को बनाए रखा, भले ही वह नैतिक रूप से भ्रष्ट वातावरण में रहता था। फिर भी, कांस्टेंटाइन का भ्रष्ट दरबारी जीवन से आंतरिक अलगाव, उसका जिज्ञासु मन और विनम्रता से ढकी

[3814] यूसेबियस। *द लाइफ़ ऑफ़ कॉन्स्टेंटाइन*, पुस्तक I, 16

[3815] यूसेबियस। *चर्च हिस्ट्री*, पुस्तक VIII, 13; *द लाइफ़ ऑफ़ कॉन्स्टेंटाइन*, पुस्तक I, 13

[3816] लैक्टैंटियस: *ऑन द डेथ ऑफ द पर्सेक्यूटर्स*, अध्याय 15.

[3817] कांस्टैंटिन हेलेना का एकमात्र पुत्र था; कॉन्स्टैंटियस उसकी दूसरी पत्नी, क्लोरा थियोडोरा की बेटी थी, जिससे कॉन्स्टैंटियस के अन्य बच्चे भी थे। दुर्भाग्य से, समकालीन स्रोत उसके बचपन के दौरान कांस्टैंटिन पर सेंट हेलेना के प्रभाव का कोई उल्लेख नहीं करते हैं।

उसकी आध्यात्मिक शांति, स्वाभाविक रूप से उसके आसपास के दरबारियों की द्वेष भावना को भड़काती थी; और उसका राजसी, सुंदर कद-काठी, उसकी लंबी कद-काठी और असाधारण शारीरिक शक्ति के साथ मिलकर—जो लोगों का ध्यान उसकी ओर खींचती थी और पूरी सेना का स्नेह उसे दिलाती थी—कई लोगों, और विशेष रूप से सीज़र गैलेरियस के लिए ईर्ष्या का कारण थी। उसने उसे नष्ट करने की साजिश रची और यहाँ तक कि एक षड्यंत्र भी रचा कि कॉन्स्टेंटाइन को साम्राज्यीय सिंहासन प्राप्त करने से रोका जाए, जिसके वह जन्मसिद्ध हकदार थे।

कांस्टैंटिन का जीवन खतरे में था, लेकिन दैवीय कृपा ने अपने चुने हुए को बचाया और उसे वह प्रदान किया जो बेकाबू, घातक ईर्ष्या उससे छीनने की कोशिश कर रही थी। कांस्टैंटिन अपने पिता के पास रहने के लिए गॉल चला गया, जिन्हें वह पहले ही मृत्युशय्या पर पाया और जो जल्द ही चल बसे।

कॉन्स्टैंटियस क्लोरस की मृत्यु के बाद, उनके अधीन सेवा करने वाली सेना ने (वर्ष 306 में) कॉन्स्टेंटाइन—जो तब अपनी उम्र के बत्तीसवे वर्ष में थे—को गाउल और ब्रिटेन का सम्राट, सीज़र के प्रिय पुत्र के रूप में घोषित किया, जिन्हें सभी बहुत सम्मान देते थे। पूर्व में ईसाइयों पर हो रहे भयानक अत्याचारों को देखकर, जो उसने स्वयं देखा था, बहुत प्रभावित होकर, कॉन्स्टेंटाइन ने, अपने पिता से सत्ता विरासत में पाकर, ईसाइयों के पक्ष में अपने पिता के सभी फरमानों को फिर से लागू करना अपनी पहली प्राथमिकता बना लिया - उसने अपने क्षेत्रों में ईसाई पूजा की स्वतंत्रता की घोषणा की। इस प्रकार मूर्तिपूजक अंधविश्वास पर ईसाई धर्म की विजय का क्षण नज़दीक आ गया! लेकिन चर्च के लिए बेहतर समय की शुरुआत से पहले, उसके उत्पीड़क पर ईश्वर के न्याय का समय आया। – सम्राट डायोक्लेटियन और मैक्सिमियन, पवित्र सत्य के लिए अडिग शहीदों के प्रति अपनी ही द्वेष से थके हुए, ने शाही सिंहासन त्यागकर शांति की तलाश करने का संकल्प लिया; लेकिन सत्ता का उनका त्याग, सबसे क्रूर उत्पीड़क के लिए भी शांति लाने के बजाय, सामाजिक अशांति का एक और कारण बन गया। गेलेरियस, जो पूर्व में डायोक्लेटियन की जगह सिंहासन पर चढ़ा था और उत्तर-पश्चिम में कॉन्स्टेंटाइन के उत्तराधिकार से असंतुष्ट था, ने उसे सम्राट के रूप में स्वीकार नहीं किया, बल्कि सेवरस को स्वीकार किया, जो इटली और अफ्रीका पर शासन करता था; इस बीच, इटली में, मैक्सिमियन के बेटे मैक्सेंटियस को सम्राट घोषित किया गया। सेवरस का समर्थन करते हुए, गैलेरियस मैक्सेंटियस के खिलाफ युद्ध पर निकल पड़ा, जिसने अपने पिता से सुरक्षा की मांग की – बाद वाले ने एक बार फिर से सरकार की बागडोर संभाली। सेवरस ने मैक्सिमियन के सामने आत्मसमर्पण कर दिया और उसे मौत की सजा दे दी गई। फिर गैलेरियस ने अपने जनरल लिसिनियस को सम्राट घोषित किया, जबकि सेना ने मैक्सिमियन को सीज़र घोषित किया। इस प्रकार यह हुआ कि रोमन साम्राज्य में एक साथ छह सम्राटों का शासन था, और वे सभी एक-दूसरे से युद्धरत थे। केवल कॉन्स्टेंटाइन के प्रजाजनों को ही शांति और समृद्धि मिली; वह अपने पिता से विरासत में मिली रियाया से संतुष्ट था और अपने सह-शासकों के आपसी संघर्ष में भाग नहीं लेना चाहता था – उसने खुद को पूरी तरह से अपने शुद्ध हृदय और स्वस्थ मन की प्रेरणाओं के अनुसार, दैवीय प्रावधान के प्रति समर्पण में, देश के शासन को समर्पित कर दिया।

'मैंने खुद को,' कॉन्स्टेंटाइन ने अपने बारे में कहा, 'अतीत के शासकों से अलग कर लिया है, क्योंकि मैंने उनके तरीकों की क्रूरता देखी थी[3818] ।'

ईसाइयों के प्रति, अपने पिता के उदाहरण का पालन करते हुए, उन्होंने शांति की नीति अपनाई, क्योंकि वह उन्हें मेहनती और वफादार प्रजा के रूप में महत्व देते थे। कांस्टेनटाइन समझ गए थे कि ईसाई धर्म एक महान शक्ति थी जो दुनिया को नया आकार दे सकती थी। फिर भी, वह अभी ईसाई नहीं बने थे; मसीह के सेवकों के प्रति अपनी गहरी श्रद्धा के बावजूद, वह आंतरिक संघर्ष के बिना, आसानी से प्राचीन मूर्तिपूजक संधियों को त्याग नहीं सकते थे। यह केवल भयानक और कठिन परिस्थितियों की शुरुआत थी जिसने उसे 'क्रूसित ईश्वर' की महिमा के सामने खुले तौर पर झुकने के लिए प्रेरित किया, जिसने एक अद्भुत तरीके से उसे उसके अनिश्चितता की स्थिति से मुक्त किया और एक ईसाई बनने के उसके संकल्प को मजबूत किया।

गेलेरियस, जो (311 में) एक भयानक संक्रामक बीमारी से मर गया था, और सीरिया के शासक मैक्सिमियन - जिनका (313 में) आत्महत्या करके अपमानजनक अंत हुआ - की मृत्यु के बाद, लिसिनियस साम्राज्य के पूर्वी आधे हिस्से का एकमात्र शासक बना रहा, क्योंकि उसने बाद में कॉन्स्टेंटाइन की बहन से विवाह कर लिया था। पश्चिमी भाग में – इटली के क्षेत्र में – मैक्सिमियन के दूसरे शासन के बाद, मैक्सेंटियस ने एक बार फिर रोमन लोगों की इच्छा के विरुद्ध सिंहासन

[3818] यूसेबियस। *द लाइफ़ ऑफ़ कॉन्स्टेंटाइन*, पुस्तक II, 49

पर आसीन हुआ। कांस्टैंटिन ने उसे रोम में सम्राट के रूप में मान्यता दे दी और यहाँ तक कि उसके पास एक शांति दूत भी भेजा। लेकिन मैक्सेंटियस ने न केवल कांस्टैंटिन के साथ शांतिपूर्ण संबंध बनाए रखने से इनकार कर दिया, बल्कि वह उसे सम्राट के रूप में स्वीकार भी नहीं करना चाहता था, बल्कि वह रोमन साम्राज्य के सभी भूमि और प्रांतों का एकमात्र तानाशाह बनना चाहता था। सिंहासन पर अपनी स्थिति को मजबूत करने के बाद, उसने न केवल ईसाइयों के प्रति, बल्कि अपने साथी मूर्तिपूजकों के प्रति भी अपनी अंतर्निहित विश्वासघाती क्रूरता और लालच को पूरी तरह प्रदर्शित किया। सिंहासन पर बैठने के बाद, जिन लोगों की उसे ज़रूरत थी, उन्हें उपहारों और वादों से बहकाने के बाद, उसने सम्मानित सेनेटर्स को सताना और यातना देना शुरू कर दिया, उनकी संपत्ति लूट ली और अपनी तथा अपने चहेतों की पशुवत कामुक इच्छाओं को पूरा करने के लिए उनकी पत्नियों और बेटियों का अपहरण कर लिया। और वह अपनी क्रूरता और घृणित आचरण के कारण पूरे रोम के लिए एक बड़ा बोझ और घृणा का विषय था। रोमवासियों ने, जो उसके कठोर शासन के अधीन पीड़ित थे, गुप्त रूप से कॉन्स्टेंटाइन से सुरक्षा की मांग करने का संकल्प लिया, और उससे आने तथा उन्हें इस यातनाकर्ता से मुक्ति दिलाने के लिए कहा। कांस्टेंटिन ने सबसे पहले इस मामले पर मैक्सेंटियस को एक पत्र भेजा, जिसमें उसने मैत्रीपूर्ण ढंग से उससे हिंसा के अपने कृत्यों को बंद करने का आग्रह किया। लेकिन मैक्सेंटियस न केवल उसकी अच्छी सलाह पर ध्यान देने में विफल रहा और उसने सुधार नहीं किया, बल्कि और भी अधिक कटु हो गया। उसका क्रोध इतना बढ़ गया कि उसने कांस्टेंटिन के खिलाफ युद्ध की तैयारी शुरू कर दी।

यह सुनकर, कॉन्स्टेंटाइन ने 312 में रोमन सम्राट के खिलाफ एक सैन्य अभियान शुरू करने का संकल्प लिया: वह दुष्ट तानाशाह की पकड़ से रोम को छीनना चाहता था। फिर भी, इस अभियान ने अतिकठिन कठिनाइयाँ प्रस्तुत कीं। – अपने सैनिकों द्वारा प्रिय, सबसे बहादुर कमांडर के लिए भी, सेना को तलवारें लेकर इटली के दिल में मार्च करने, महान रोम की धरती पर युद्ध लाने के लिए मनाना कोई आसान काम नहीं था, जो उस समय के लोगों के लिए पवित्र थी: ऐसा उपक्रम साम्राज्यवादी सेना पर विनाशकारी प्रभाव डालने और असंतोष की गहरी गुनगुनाहट को भड़काने वाला था। और स्वयं कॉन्स्टेंटाइन इस अभियान को शुरू करते समय अनैच्छिक भय की भावना से मुक्त नहीं हो सकते थे, और यह भावना और भी गहरी थी क्योंकि उन्होंने स्वयं कभी रोम को नहीं देखा था, जो उन्हें एक भयानक दैत्य जैसा लगा होगा। इसके अलावा, कॉन्स्टेंटाइन को अच्छी तरह पता था कि उसके प्रतिद्वंद्वी की सेना संख्या में उससे कहीं अधिक थी, और मैक्सेंटीयस को अपने राष्ट्रीय देवताओं की सहायता पर दृढ़ विश्वास था, जिन्हें वह भव्य बलिदानों से प्रसन्न करने का प्रयास कर रहा था, जिसमें छोटे लड़कों और लड़कियों की बलि भी शामिल थी, – कि मैक्सेंटियस स्वयं और अपनी सेना को हर तरह के जादू-टोने से ढक रहा था और उसकी ओर से बड़ी दैवीय शक्ति थी। केवल मानवीय शक्ति और संसाधनों पर निर्भर रहना कॉन्स्टेंटाइन के लिए पर्याप्त नहीं था, और उसे ऊपर से मदद की सच्ची इच्छा हुई। साम्राज्य की दयनीय स्थिति पर चिंतन करते हुए, जो निर्जीव मूर्तियों से व्यर्थ में सुरक्षा की मांग कर रहा था; ईश्वर की मदद पर, जो बार-बार उसके पिता और स्वयं उसके सामने प्रकट हुई थी; उन राजनीतिक उथल-पुथल पर जो उसकी आँखों के सामने हुई थीं; और उन तीन पुरुषों के कुछ ही समय में हुए शर्मनाक निधन पर, जिन्होंने साम्राज्य में उसके साथ सर्वोच्च शक्ति साझा की थी, उसने यह मूर्खता माना कि अस्तित्वहीन देवताओं से व्यर्थ ही चिपके रहना और इतने सारे प्रमाणों के बाद भी भूल में बने रहना[3819] ।

इस तरह के परेशान करने वाले विचारों के बीच, कॉन्स्टेंटाइन ने अपने पिता के ईश्वर से प्रार्थना करना शुरू कर दिया, उनसे अपने बारे में ज्ञान देने, साहस प्रदान करने, और आने वाले कार्य में अपना दयालु हाथ उसके ऊपर रखने का अनुरोध किया[3820] । और उसकी यह प्रार्थना, प्राचीन काल के जेलर की प्रार्थना (प्रेरितों के काम 16) की तरह, सुनी गई – प्रभु ने जल्द ही एक प्रत्यक्ष प्रकट होकर उसे सांत्वना दी और उसे दिखाया कि उसे क्या करना चाहिए। उस घटना के समकालीन यूसेबियस, जिसने राजा से व्यक्तिगत रूप से इसके बारे में सुना था, वर्णन करते हैं:

'एक दोपहर, जब पश्चिम में सूरज पहले ही डूबना शुरू हो चुका था,' राजा ने कहा, 'मैंने अपनी आँखों से प्रकाश से बना एक क्रॉस का चिह्न देखा, जो सूरज में स्थित था, जिस पर लिखा था: "इसी से तू विजय प्राप्त करोगा"।'

यह दृश्य सम्राट और उसके पास खड़ी सेना दोनों में आतंक भर गया, क्योंकि शर्मनाक फांसी के एक उपकरण के रूप में, शून्यवादियों द्वारा क्रूस को एक बुरा शगुन माना जाता था। कॉन्स्टेंटाइन हैरान था और उसने अपने आप से

[3819] यूसेबियस। *कॉन्स्टेंटाइन का जीवन*, पुस्तक I, 27

[3820] यूसेबियस। *कॉन्स्टेंटाइन का जीवन*, पुस्तक I, 36; लैक्टान्टियस: *उत्पीडकों की मृत्यु पर*, 44.

कहा: 'इस घटना का क्या मतलब है?' लेकिन जब वह इस पर विचार कर ही रहा था, तो रात हो गई। फिर, एक सपने में, मसीह उस चिह्न के साथ उसके सामने प्रकट हुए जो उसने स्वर्ग में देखा था और उन्होंने उसे स्वर्ग में देखे गए झंडे जैसा एक ध्वज बनाने और दुश्मन के हमलों से सुरक्षा के लिए इसका उपयोग करने का आदेश दिया।

जागने के बाद, कॉन्स्टेंटाइन ने अपने दोस्तों को अपने सपने का रहस्य बताया; फिर उसने कुशल कारीगरों को बुलाया और उन्हें उस अद्भुत ध्वज की छवि का वर्णन करके, उनके समान सोने और कीमती पत्थरों का एक ध्वज बनाने का आदेश दिया; जहाँ तक उसके सैनिकों की बात है, उसने उन्हें अपनी ढालों और कवच-टोपी ( ) पर एक क्रॉस अंकित करने का आदेश दिया। इस अद्भुत दर्शन से प्रभावित होकर, कॉन्स्टेंटाइन ने उसी समय यह संकल्प लिया कि वह उस मसीह के अलावा किसी अन्य देवता की पूजा नहीं करेगा, जो उसे प्रकट हुआ था; उसने अपने दरबार में उन लोगों को आमंत्रित किया जो उसके वचन में दीक्षित थे – यानी ईसाई पुरोहित – और उनसे पूछा: यह ईश्वर कौन है, और उस चिह्न का क्या अर्थ है जो उसने देखा था? एक ईश्वर के बारे में उनका उत्तर सुनने के बाद, मानव जाति के उद्धार के लिए उनके एकलौते पुत्र के अवतार के रहस्य, मृत्यु की शक्ति को जीतने वाले प्रभु यीशु के सूली पर चढ़ाए जाने, और उसे दिखाई दिए क्रॉस के चिह्न—कि यह विजय का प्रतीक था—के बारे में, कॉन्स्टेंटाइन अपने हृदय में पूरी तरह से और सचेत रूप से एक ईसाई बन गया। उस समय से, उन्होंने पवित्र धर्मग्रंथों को पढ़ने के लिए खुद को गंभीरता से समर्पित कर दिया और हमेशा अपने साथ पुरोहित रखते थे, हालांकि उन्होंने अभी तक पवित्र बपतिस्मा प्राप्त नहीं किया था[3821] ।

'सर्वशक्तिमान ईश्वर और उनके मसीह को अपने सहायक और रक्षक के रूप में पुकारने, और अपने योद्धाओं के सामने उद्धार के चिह्न वाला विजयी ध्वज फहराने के बाद, कॉन्स्टेंटाइन अपनी पूरी सेना के साथ गॉल से इटली के क्षेत्र में मैक्सेंशियस के खिलाफ एक अभियान पर निकल पड़ा।'[3822]

रोम को उस क्रूर तानाशाह से मुक्त कराने के लिए कॉन्स्टेंटाइन द्वारा शुरू की गई मुहिम उसे होश में लाने में विफल रही। – दुष्ट मैक्सेंटियस, देवताओं को भव्य समारोहों के साथ प्रचुर बलिदान चढ़ाने और गर्भवती महिलाओं के आंतरिक अंगों से भविष्यवाणी करने वाले ज्योतिषियों की भविष्यवाणियों पर ध्यान देने के बाद, एक विशाल सेना के साथ कॉन्स्टेंटाइन पर चढ़ आया; फिर भी उसने अपनी दुष्टता के कारण होने वाले न्यायसंगत प्रतिशोध को नहीं टाला। क्रूस के उद्धारक चिह्न से संरक्षित, कॉन्स्टेंटाइन ने शत्रु के साथ तीन मुठभेड़ों के बाद स्वयं शाश्वत नगर पर चढ़ाई की और वहाँ उसे निर्णायक पराजय दी। मैक्सेंटियस, टिबर नदी पार भागते हुए, एक प्राचीन फिरौन की तरह, पुल के ढह जाने पर अपने विशिष्ट घुड़सवारों के साथ पानी की गहराई में डूबकर मर गया। विजेता ने रोम में विजयी प्रवेश किया और लोगों ने बड़ी खुशी के साथ उसका स्वागत किया। यह महसूस करते हुए कि यह विजय दैवीय सहायता से प्राप्त हुई थी, कॉन्स्टेंटाइन ने शहर के सबसे व्यस्त हिस्से में पवित्र ध्वज स्थापित किया; और बाद में, जब कृतज्ञ रोमवासियों ने अपने नए सम्राट के सम्मान में एक मूर्ति स्थापित की, तो उन्होंने आदेश दिया कि उनकी मूर्ति के हाथ में एक लंबा भाला क्रूस के आकार का रखा जाए और इस पर निम्नलिखित शिलालेख उकेरा जाए: 'इस उद्धारक चिह्न द्वारा मैंने आपके शहर को अत्याचारी के जुए से मुक्त कराया है और रोमन लोगों तथा सीनेट को उनकी पूर्व वैभव और ख्याति पुनःप्रदान की है'[3823] ।

इस प्रकार रोमन साम्राज्य के पूरे पश्चिमी हिस्से का शासक बनने के बाद, सीज़रों में से पहले, कॉन्स्टेंटाइन ने (313 में) एक फरमान जारी किया जिसमें अपने शासन के लोगों को पूर्ण धार्मिक सहिष्णुता प्रदान की गई: उन्होंने pagans (पगनों) को अपनी पूजा के तरीकों का अभ्यास करने का अधिकार दिया, जबकि ईसाइयों को एक सच्चे ईश्वर की स्वतंत्र रूप से पूजा करने की अनुमति दी। इस आदेश के बाद मसीह के चर्च के पक्ष में कई और आदेश जारी किए गए[3824] : सूली पर चढ़ाने पर प्रतिबंध लगा दिया गया, और सर्कस में खूनी तमाशे बंद कर दिए गए; पौराणिक बलिदान और पर्व के दिनों में धूप जलाना बंद कर दिया गया; प्रभु के दिन का पालन स्थापित किया गया, जिसमें उस दिन न्यायालयी कार्यवाहियों पर प्रतिबंध और स्वतंत्र नागरिकों तथा दासों दोनों के लिए कामकाज बंद करना शामिल था; अनाथों और उनके माता-पिता द्वारा त्यागे गए बच्चों, गरीबों और बेसहारों, जिन्हें मूर्तिपूजक धर्म ने बिना किसी मदद या दया के छोड़ दिया था, को शाही संरक्षण में ले लिया गया; सभी शहरों में, चर्चों के नवीनीकरण और समर्पण के उपलक्ष्य में त्योहार शुरू हुए; हर

[3821] यूसेबियस। *कॉन्स्टेंटाइन का जीवन*, पुस्तक I, 28–32.

[3822] यूसेबियस। *द लाइफ़ ऑफ़ कॉन्स्टेंटाइन*, पुस्तक I, 37.

[3823] यूसेबियस। *चर्च हिस्ट्री*, पुस्तक IX, 9; *द लाइफ़ ऑफ़ कॉन्स्टेंटाइन*, पुस्तक I, 40.

[3824] यूसेबियस। *चर्च हिस्ट्री*, पुस्तक X, 5 और 6।

जगह ईश्वर की स्तुति के गीत और धन्यवाद की प्रार्थनाएँ सुनाई देती थीं; बिशप चर्च की ज़रूरतों पर चर्चा करने के लिए स्वतंत्र रूप से इकट्ठा होते थे। कॉन्स्टेंटाइन स्वयं कभी-कभी इन सभाओं में शामिल होते थे, विश्वास से संबंधित मामलों में गहराई से विचार करते थे, और ईसाई समुदाय के लाभ के लिए जो भी आवश्यक होता था, उसे खुशी-खुशी करते थे। उन्होंने पुरोहित वर्ग को सभी अतिरिक्त कर्तव्यों और करों से मुक्त कर दिया - ठीक वैसे ही जैसे मूर्तिपूजक पुरोहित करों से मुक्त थे - ताकि वे पूरी तरह से ईश्वर की सेवा में खुद को समर्पित कर सकें; उन्होंने न केवल उत्पीड़कوں द्वारा जब्त किए गए मकबरों और सभी स्थलों को चर्च को वापस कर दिया, बल्कि पूजा के लिए बेसिलिका के नाम से जानी जाने वाली कई विशाल इमारतें भी प्रदान कीं, जिनमें न्यायाधीश बैठते थे और जिन्हें उनकी आंतरिक बनावट के कारण आसानी से चर्चों में बदला जा सकता था; – उन्होंने पादरियों को ईसाइयों के बीच विवादों और आपसी मतभेदों को सुलझाने का अधिकार दिया। अपने हेलमेट पर, मसीह ईश्वर के प्रति अपनी श्रद्धापूर्ण भक्ति के सभी को दिखाई देने वाले चिह्न के रूप में, मोनोग्राम 'क्रिस्ट'[3825] , कांस्टेनटाइन ने अपने सैनिकों को एक प्रार्थना दी जिसे उन्हें रविवार को पढ़ना था और , जो सम्राट के अपने हार्दिक विश्वास का एक इकरार था, ने सभी को सभी अच्छी चीजों के एक सर्वशक्तिमान दाता को स्वीकार करने और अपने सभी मामलों में उनकी मदद मांगने के लिए प्रेरित किया[3826] ।

सम्राट की कृपा ने ईसाइयों में महान आनंद जगाया: उनके हृदय नई सरकार के अधीन जीवन की मिठास का स्वाद चखते हुए महान आध्यात्मिक आनंद से भर गए। एक समकालीन, यूसेबियस, उस समय का वर्णन इस प्रकार करते हैं:

– अब एक उज्ज्वल और स्पष्ट दिन, जो किसी भी छाया से रहित है, ने मसीह की कलीसिया को स्वर्गीय प्रकाश की किरणों से प्रकाशित किया है। हमें यह स्वीकार करना चाहिए कि हमारी खुशी हमारे कर्मों से बढ़कर है; हम इतने बड़े उपहारों के दाता की कृपा पर अत्यधिक आश्चर्य से भर गए हैं: हम आश्चर्यपूर्वक उनकी स्तुति करते हैं और भविष्यवक्ता के साथ कहते हैं: *'आओ और प्रभु के काम देखो—उसने पृथ्वी पर कितनी उजाड़ियाँ मचाई हैं'* (भजन संहिता 45:9)। हर उम्र के लोग, पुरुष और महिलाएँ, अपनी आत्मा की पूरी शक्ति से आनंद मनाते हुए, अपने मन और हृदय से परमेश्वर को प्रार्थना और धन्यवाद अर्पित करते हैं[3827] ।

लेकिन जब पश्चिम में ईसाई कॉन्स्टेंटाइन के शासन में इस प्रकार समृद्धि कर रहे थे, तब पूर्व की स्थिति बिल्कुल अलग थी, जहाँ लिसिनियस का शासन था: डायोक्लेटियन के दरबार में पले-बढ़े और गैलेरियस के अधीन एक जनरल, उसने सीज़र का पद प्राप्त करने के बाद अपने दिल में ईसाइयों के प्रति गहरी नफ़रत पाल रखी थी। शादी के द्वारा कॉन्स्टेंटाइन का संबंधी बनने के बाद, लिकिनियस ने पहले अपने शक्तिशाली साले का विरोध करने की हिम्मत नहीं की[3828] – उसने तो धार्मिक सहिष्णुता पर बाद वाले के फरमान (मिलान का फरमान) पर भी हस्ताक्षर कर दिए; लेकिन जल्द ही, सम्राट मैक्सिमियन की मृत्यु के बाद पूरे पूर्व का एकमात्र शासक बनने पर, उसने ईसाइयों का उत्पीड़न और अपमान करना शुरू कर दिया। इस डर से कि वह अपनी शाही सत्ता खो सकता है और मूर्तिपूजा के प्रतिनिधियों के बदनाम करने वाले आरोपों पर ध्यान देते हुए, उसने इस बहाने से ईसाई चर्चों को बंद कर दिया और नष्ट कर दिया कि लोग उनमें कॉन्स्टेंटाइन के पक्ष में उसके खिलाफ एक तख्तापलट के लिए प्रार्थना कर रहे थे, और यह मांग की कि हर कोई—और सबसे बढ़कर उसके अपने सैनिक—एक मूर्तिपूजक शपथ लें और मूर्तियों को बलिदान चढ़ाएं; जिन लोगों ने उसकी इच्छा की अवज्ञा की, उन्हें उसने कैद और भयानक यातनाओं का शिकार बनाया, और उन्हें शहीद कर दिया। इस समय, अन्य लोगों के साथ-साथ, 40 शहीदों के एक वीर दल ने भी यातनाएँ झेलीं। – हालाँकि, लिसिनियस केवल ईसाइयों के प्रति ही क्रूर नहीं था: उसके शासन के तहत सभी लोगों को उसकी लालच और दुर्भावना के कारण बहुत कष्ट झेलना पड़ा। उसकी संदिग्ध प्रकृति और क्रूरता का केवल इस तथ्य से ही भरपूर प्रमाण मिलता है कि उसने अपने पूर्व संरक्षक, डायोक्लेटियन की पत्नी और बेटी को मौत की सज़ा दी, और सम्राटों—मैक्सिमियन, सेवरस और गैलेरियस के सभी बच्चों का संहार कर दिया। यूसेबियस द्वारा वर्णित रोमन साम्राज्य दो भागों में विभाजित था, जो दिन और रात के विपरीत का प्रतिनिधित्व करते थे: पूर्व के निवासी रात के अंधकार में लिपटे हुए थे, जबकि पश्चिम के निवासी दिन के उज्ज्वल प्रकाश में नहाए हुए थे।

[3825] यह मोनोग्राम दो अक्षरों, X और P, से बना था, जिसमें पहला अक्षर दूसरे को ढक रहा था।

[3826] यूसेबियस। *द लाइफ़ ऑफ़ कॉन्स्टेंटाइन*, पुस्तक IV, 19.

[3827] यूसेबियस। *चर्च हिस्ट्री*, पुस्तक X, 1–3।

[3828] उन्होंने 313 में कॉन्स्टेंटाइन की बहन से विवाह किया।

लसिनियिस के संबंध कॉन्स्टेंटाइन के साथ मैत्रीपूर्ण नहीं रहे और न ही रह सके। लसिनियिस ने कॉन्स्टेंटाइन के साथ अपने व्यवहार में वश्विासघात और कपटपूर्णता दखिाई; उसने कॉन्स्टेंटाइन को अपनी दोस्ती का भरोसा दलिाया जबकि गुप्त रूप से उससे नफरत करता था और उसे हर संभव नुकसान पहुँचाने की कोशशि कर रहा था; उसकी साजशिें वफिल हो गईं, और कई मौकों पर उनके बीच ववािद उठे, जो युद्धों में परणित हुए। कॉन्स्टेंटाइन वजियी रहा, लेकनि अपने दामाद के झूठे आश्वासनों से धोखा खाकर उसने उसके साथ शांति स्थापति कर ली। हालाँकि, जैसे-जैसे समय बीतता गया, सम्राटों के बीच संबंध और अधकि तनावपूर्ण होते गए। लसिनियिस के उत्पीड़ति प्रजा और जनि ईसाइयों को उसने सताया, उन्हें अपनी पीड़ा का कोई अंत दखिाई नहीं दे रहा था। अंततःलसिनियिस ने कॉन्स्टेंटाइन के खलिाफ अपनी साजशिों को छपिाना बंद कर दयिा और खुले संघर्ष में उतर आया। 323 में, उनके बीच एक क्रूर युद्ध छड़ि गया। यह युद्ध रोमन साम्राज्य में ईसाई धर्म के भाग्य का अंतमि नर्णिय करने वाला था, जसिमें 'सम्पूर्ण ब्रह्मांड' शामलि था।

दोनों सम्राटों ने अपनी-अपनी आस्था के अनुसार काफी बड़ी सेनाएँ इकट्ठी कीं और एक नर्णिायक युद्ध की तैयारी की: ऐसा लग रहा था कि जीर्ण-शीर्ण मूर्तपिूजा, मानवता को नया जीवन देने आई ईसाई धर्म के खलिाफ खड़ी हो गई थी। – युद्ध की पूर्व संध्या पर, लसिनियिस, पुरोहतिों और ज्योतषियिों से घरिा, अपने वशिष्टि योद्धाओं और सबसे करीबी दोस्तों को एक छायादार बगीचे में इकट्ठा कयिा जहाँ मूर्तयिाँ खड़ी थीं; उसने एक गंभीर बलदिान कयिा और उपस्थति सभी लोगों को संबोधति करते हुए कहा:

'मत्रिों! ये हैं हमारे सार्वजनकि देवता, जनिकी हमें पूजा करनी चाहए, जैसा कि हमारे पूर्वजों ने हमें सखिाया है। हालाँकि, हमारे शत्रु सेनापति ने हमारी पारंपरकि प्रथाओं को अस्वीकार कर दयिा है, उसने झूठे वश्विासों को अपना लयिा है और कसिी वदिेशी, अज्ञात ईश्वर की महमिा करता है। अपने शर्मनाक ध्वज (क्रॉस) के साथ, वह अपनी ही सेना का अपमान करता है; उस पर भरोसा करके, वह अपना हथयिार हम पर नहीं बल्कि देवताओं के खलिाफ उठाता है। परणिाम स्वयं यह प्रकट करेगा कि कौन सही है और कौन गलत – यदि हम वजियी हुए, तो यह स्पष्ट हो जाएगा कि हमारे देवता ही सच्चे देवता हैं; लेकनि यदि कॉन्स्टेंटाइन का ईश्वर, वह वदिेशी देवता जसिका हम मज़ाक उड़ाते हैं, वजियी हुआ, तो वे उसकी पूजा करें। लेकनि इसमें कोई संदेह नहीं है कि हमारे देवता वजियी होंगे; अत; हम हाथ में हथयिार लेकर नडिर होकर अधर्मी लोगों पर धावा बोलें![3829]

दूसरी ओर, कॉन्स्टेंटाइन युद्ध से पहले अपने तंबू में चला गया और वहाँ प्रार्थना और उपवास के माध्यम से लड़ाई की तैयारी की; अपने जीवन के इन नर्णिायक क्षणों में, उसने अपने अतीत पर चतिन कयिा, अपने जीवन की घटनाओं और उन खतरों को याद कयिा जनिका उसने सामना कयिा था, जो उससे बनिा कसिी नुकसान के गुजर गए थे, – वह ईसाई धर्म के उत्पीड़कों के शर्मनाक पतन और मसीह के शष्यिों के साहसी और शांतपिूर्ण नधिन को याद करता था; और, इन सब में सर्वोच्च की अद्भुत दव्यि व्यवस्था को देखते हुए, उसने स्वयं को और अपने पूरे कार्य को उच्चतम दव्यि मार्गदर्शन और मध्यस्थता के हवाले कर दयिा। ईसाई अपने संरक्षक सम्राट के लिए भक्तपिूर्वक प्रार्थना करते थे; पवत्रि ध्वज कॉन्स्टेंटाइन की रेजमिेंटों के बीच ऊँचा लहराता था और दव्यि सहायता की आशा जगाता था। उसकी सेना इस वजियी ध्वज को श्रद्धापूर्वक नहिारती थी, जबकि उसके दुश्मन इसे भय से देखते थे; लसिनियिस के राज्य के कई शहरों में, दनिदहाड़े, लोगों ने इस ध्वज के साथ वजियी मार्च करते हुए कॉन्स्टेंटाइन की सेनाओं के भूतयिा दृश्य देखे। लसिनियिस ने स्वयं अपने सैनकिों से दुश्मन के ध्वज को न देखने के लिए कहा, 'क्योंकि,' उसने कहा, 'यह अपनी शक्ति में भयानक और हमारे लिए शत्रुतापूर्ण है'।

मूर्तपिूजक पुरोहतिों और भवष्यिद्रष्टाओं ने लसिनियिस के लिए वजिय की भवष्यिवाणी की, लेकनि ईश्वर ने इसे कॉन्स्टेंटाइन को प्रदान कयिा। लसिनियिस ने पास आते हुए दुश्मन पर बार-बार हमले कए, लेकनि हर बार उसे हार का सामना करना पड़ा और वह भाग गया; पश्चाताप का नाटक करते हुए, उसने शांति की मांग की, जबकि गुप्त रूप से नई मलिशियिा इकट्ठा कर रहा था और बर्बर लोगों से मदद मांग रहा था। अंत में, बज़िान्टयिम के पास क्रसि्पस, कॉन्स्टेंटाइन के बेटे की नौसैनकि जीत, और एड्रयिानोपल की लड़ाई ने युद्ध के परणिाम को नर्णिायक रूप से तय कर दयिा। लसिनियिस ने आत्मसमर्पण कर दयिा, लेकनि कुछ समय बाद थेस्सालोनकिा में उसे फांसी दे दी गई, क्योंकि वजिेता के सामने आत्मसमर्पण करने के बाद भी उसने कॉन्स्टेंटाइन के खलिाफ साजशि रची थी। 323 में, कॉन्स्टेंटाइन पूरे रोमन साम्राज्य का एकमात्र शासक बन गया।

[3829] यूसेबयिस। *कॉन्स्टेंटाइन का जीवन*, पुस्तक XI, 9.

लसिनियिस पर इस वजिय ने कॉन्स्टेंटाइन को एक बार फरि से, इतनी ठोस और स्पष्ट रूप से, यह वशि्वास दलिाया कि सांसारकि आशीर्वाद और सफलताएं उन पर ही प्रदान की जाती हैं जो सच्चे ईश्वर की पूजा करते हैं। और इसलिए, स्वयं को सर्वशक्तमिान के हाथों में एक नम्र उपकरण मानते हुए, वह अपनी सफलताओं के लिए वनिम्रतापूर्वक केवल ईश्वर को ही महमिा देता है:

वे अपने एक फरमान में कहते हैं, 'उस व्यक्तिको घमंड करने में नशि्चति रूप से कोई गर्व नहीं होगा जो यह महसूस करता है कि उसे सर्वशक्तमिान से अपनी आशीर्वादें प्राप्त हुई हैं।' ईश्वर ने मेरी सेवा को स्वीकार कयिा है और उसे अपनी इच्छा को पूरा करने के लिए उपयुक्त माना है। ब्रटिशि सागर से आरंभ होकर, मैंने, कसिी सर्वोच्च शक्तिकी सहायता से, अपने सामने आने वाली सभी भयानक चीज़ों को भगा दयिा, ताकि मानव जाति, जो मेरे प्रभाव में पोषति हुई है, उसे सबसे पवत्रि कानून की सेवा के लिए बुलाया जा सके और, सर्वोच्च सत्ता के मार्गदर्शन में, सबसे धन्य आस्था का पालन कर सके।"

'मैं दृढ़ता से वशि्वास करता था,' वह जोड़ता है, 'कि मेरी पूरी आत्मा, वह सब कुछ जो मुझे सांस लेने के लिए प्रेरति करता है, वह सब कुछ जो मेरे मन की गहराइयों में मौजूद है—यह सब मुझे महान ईश्वर को अर्पति करना चाहिए।'

अपने हृदय में इस दृढ़ वशि्वास के साथ, कॉन्स्टेंटाइन ने अपनी वजिय के बाद पूर्वी साम्राज्य के ईसाइयों को वही अधकिार प्रदान करने में शीघ्रता दखिाई जो उन्हें पश्चमि में प्राप्त थे। और पूर्व में, उन्होंने सम्राट के नाम पर मूर्तयिों की बलि चढ़ाने पर रोक लगा दी; उन्होंने प्रांतीय गवर्नर के रूप में मुख्य रूप से ईसाइयों को नयिुक्त कयिा; उन्होंने चर्चों के पुनर्स्थापन और नरि्माण का काम देखा; और उन्होंने उत्पीड़न के दौरान उनसे छीनी गई संपत्तिको वशि्वासयिों को वापस कर दयिा।

एक फरमान में कहा गया, 'जसिने भी अपनी संपत्ति खोई है,' 'जन्हिोंने नडिरता और अटूटता से शहादत के गौरवशाली और दव्यि मार्ग पर चलकर, या एक कन्फेसर बनकर अपने लिए शाश्वत आशाएँ सुनशि्चति कीं, या जन्हिोंने अपने धर्म को त्यागने की मांग करने वाले उत्पीड़क के आगे झुकने से इनकार करने पर पुनर्वास के लिए मजबूर कएि जाने के कारण अपनी संपत्ति खो दी—हम आदेश देते हैं कि ऐसे सभी व्यक्तयिों की संपत्ति लौटा दी जाए।'

जनि मामलों में कोई करीबी रशि्तेदार नहीं मलि सका, उन ईसाइयों से जब्त की गई संपत्ति स्थानीय चर्चों को हस्तांतरति कर दी गई; जबकि उन नजिी व्यक्तयिों को, जनिसे शहीदों की संपत्ति ली गई थी, शाही खजाने से मुआवजा मलिा। कॉन्स्टेंटाइन की ईसाई भावनाएँ वशिेष रूप से पूरी तरह से और वशिष्टि रूप से प्रांतीय गवर्नरों को लखिे उनके पुनर्लेख में व्यक्त की गईं:

– अब, – इस प्रकार वह यहाँ ईश्वर से संबोधति करते हैं, – मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ, हे महान ईश्वर! पूर्व के अपने लोगों पर दयालु और कृपालु बनें; और मेरे माध्यम से, अपने सेवक के माध्यम से, सभी प्रांतीय गवर्नरों को आरोग्य प्रदान करें.... आपके मार्गदर्शन में मैंने उद्धार का कार्य शुरू कयिा और पूरा कयिा; हर जगह आपका ध्वज उठाकर, मैंने वजियी सेना का नेतृत्व क ; और जहाँ भी कसिी सार्वजनकि आवश्यकता ने मुझे बुलाया, मैंने आपकी शक्तिके उस चहि्न का अनुसरण कयिा और शत्रुओं के वरिुद्ध मार्च कयिा। इसीलिए मैंने अपनी आत्मा, जो प्रेम और भय में अच्छी तरह से परखी गई है, आपको सौंप दी है, क्योंकि मैं आपके नाम से सच्चा प्रेम करता हूँ और उस शक्तिका सम्मान करता हूँ जसिे आपने कई परीक्षाओं के माध्यम से प्रकट कयिा है और जसिसे आप मेरे वशि्वास को मजबूत करते हैं.... मैं चाहता हूँ कि आपके लोग शांति और सुकून का आनंद लें; मैं चाहता हूँ कि, वशि्वासयिों की तरह, जो लोग भटक गए हैं, वे भी शांति और सुकून के आनंद का स्वाद चखें, क्योंकि ऐसा मेल-मलिाप उन्हें भी सत्य के मार्ग पर ले जा सकता है। कोई कसिी को परेशान न करे.... समझदार लोगों को यह जानना चाहिए कि केवल वे ही जो आप स्वयं अपने पवत्रि नयिमों के अधीन रहने के लिए बुलाते हैं, एक पवत्रि और शुद्ध जीवन जएिंगे; और जो मुंह मोड़ते हैं, यदि वे चाहें, तो वे अपनी झूठी शकि्षा के भाग्य को ही थामे रहें... कोई कसिी को नुकसान न पहुँचाए; जो कुछ भी उसने सीखा और समझा है, उसे, यदि संभव हो, तो अपने पड़ोसी के लाभ के लिए उपयोग करना चाहिए; और जब यह असंभव हो, तो उसे इसे वैसे ही छोड़ देना चाहिए, क्योंकि अमरत्व के लिए स्वेच्छा से संघर्ष करना एक बात है, और फाँसी के माध्यम से इसके लिए मजबूर होना एकदम दूसरी बात है... जो कुछ भी प्रतकिूल है उससे अपने ववि ेक को हटाकर, फरि भी हमें उन सभी अच्छी चीज़ों का उपयोग करना चाहिए जो हमें प्रदान की गई हैं, अर्थात् शांति की भलाई[3830] ।

[3830] पॉबोएडोनोस्ट्सेव द्वारा ऑर्थोडॉक्स चर्च का इतहिास, 1892 संस्करण, पृष्ठ 73–74।

पूरे रोमन साम्राज्य का एकमात्र शासक बनकर और 'सम्पूर्ण ब्रह्मांड में' (लूका 2:1) धार्मिक सहिष्णुता की घोषणा करने के बाद भी, कॉन्स्टेंटाइन अपने शाही जीवन में 'नासमझ' (प्रकाशितवाक्य 3:15) नहीं थे। पैगन धर्म को त्यागने और ईसाई समुदाय का नेतृत्व संभालने के बाद, उन्होंने ईसाई धर्म को साम्राज्य का सबसे महत्वपूर्ण स्तंभ, राज्य की शक्ति और समृद्धि की मुख्य गारंटी के रूप में देखा, जो, उनके दृष्टिकोण में, पृथ्वी पर परमेश्वर के राज्य की स्वतंत्र और अहिंसक स्थापना का मार्ग प्रशस्त करने वाला था, – मसीह की भावना में मानव जाति की शिक्षा और उन्नति के लिए मार्गदर्शन करना और साधन प्रदान करना। मसीहियों के एक मुखर संरक्षक के रूप में, कॉन्स्टेंटाइन रोम में विशेष रूप से लोकप्रिय नहीं थे, जहाँ कई मूर्तिपूजक रीति-रिवाज और परंपराएँ अभी भी बनी हुई थीं। न ही वह स्वयं रोम और उसके पैंथियन (Pantheon) की परवाह करता था, जहाँ सभी विजित लोगों के मूर्तिपूजक देवताओं को, मानो, यंत्रवत इकट्ठा कर दिया गया था; और वह इस पुराने राजधानी में बहुत कम और अनिच्छा से आता था। और रोमवासियों ने, भले ही अपने उद्धारकर्ता को अत्याचारी (मैक्सेंटियस) से मुक्ति दिलाने के लिए आभारी थे, फिर भी वे सम्राट के कार्यों को न तो समझ सके और न ही उसकी उचित सराहना कर सके; उनमें उन्होंने अपनी समय-सिद्ध परंपराओं के उल्लंघनकर्ता, अपने धर्म के शत्रु को देखा, जो रोम की राजनीतिक महानता से गहराई से जुड़ा हुआ था। उनका असंतोष और बड़बड़ाहट, यहाँ तक कि साजिशें और - कभी-कभी - खुली बगावतें, ही वह कारण थीं कि कांस्टेंटिन के मन में अपने लिए एक नई राजधानी स्थापित करने का विचार, एक ऐसा ईसाई शहर जिसका पैगनवाद से कोई संबंध न हो, जड़ पकड़ गया और पका। कांस्टेंटाइन बोस्फोरस के किनारे बसे एक प्राचीन छोटे से शहर, बाइजेंशियम के स्थान से बहुत प्रभावित हुए, यह वह जगह भी थी जहाँ उन्होंने लिसिनियस पर अपनी नौसैनिक विजय प्राप्त की थी; उन्होंने इसे चुना और इसे साम्राज्य की नई राजधानी बना दिया; उन्होंने स्वयं एक भव्य जुलूस में, नए शहर की सीमाओं की अंतिम सीमाओं को चिह्नित किया और वहाँ शानदार संरचनाओं का निर्माण शुरू कर दिया। विशाल महल, जलाशय, स्नानागार और रंगमंच राजधानी को सुशोभित करते थे; यह ग्रीस, इटली और एशिया से लाए गए कलात्मक खजाने से भरा हुआ था। फिर भी, वहां मूर्तिपूजक देवताओं को समर्पित मंदिर अब नहीं बनाए जा रहे थे, और कोलोसियम के स्थान पर, जहाँ ग्लैडिएटरियल मुकाबले हुआ करते थे, घोड़ों की दौड़ के लिए एक सर्कस का निर्माण किया गया। नए शहर की मुख्य शोभा सच्चे ईश्वर को समर्पित चर्च थे, जिनके निर्माण में ईसाइयों के शाही संरक्षक ने स्वयं सक्रिय भाग लिया। इस अवसर पर, उनकी देखभाल न केवल प्रार्थना घरों की भव्यता तक ही सीमित थी, बल्कि उदाहरण के लिए, उनके उच्च पद को देखते हुए, ऐसी मामूली प्रतीत होने वाली बातों तक भी थी: राजधानी में नई चर्चों के निर्माण के साथ, पूजा-पाठ की किताबों की कमी स्पष्ट हो गई, और ज़ार ने उनकी तत्काल उत्पादन सुनिश्चित करने की जिम्मेदारी खुद ली, – केसरिया के बिशप यूसेबियस के पास एक विशेष दूत भेजा गया, इस निर्देश के साथ कि 'उत्कृष्ट लेखक तैयार किए गए पार्चमेंट पर किताबों की पचास प्रतियां लिखें' और कि इन पांडुलिपियों को उन्हें सौंप दिया जाए, जबकि 'उन्होंने श्रम के लिए उचित पारिश्रमिक निर्धारित करने का अधिकार अपने लिए सुरक्षित रखा'[3831] ।

उनके अपने आदेश से, राजधानी के चर्चों में पूजा-संबंधी पुस्तकों को उपयुक्त रूप से भव्य बाइंडिंग में रखा जाना था।

धर्म की गहरी भावना से प्रेरित होकर, कॉन्स्टेंटाइन ने अपनी नई राजधानी में अपने दैनिक जीवन को भक्ति और पवित्रता की आवश्यकताओं के अनुसार व्यवस्थित किया। महल स्वयं उनके ईसाई दृष्टिकोण का एक स्पष्ट प्रतिबिंब था। 'शाही महलों के भीतर चर्च ऑफ़ गॉड की एक प्रतिमा स्थापित की गई थी, और सम्राट ने अपनी धार्मिक प्रथाओं के प्रति उत्साह के माध्यम से दूसरों के लिए एक उदाहरण स्थापित किया; हर दिन, निर्धारित समय पर, वह एकांत कक्षों में चला जाता था और वहाँ, अकेले में, ईश्वर से संवाद करता था, प्रार्थना में घुटने टेकता था और अपनी ज़रूरत के लिए माँग करता था; और कभी-कभी वह अपने दरबारियों को प्रार्थना में उसके साथ शामिल होने के लिए आमंत्रित करता था। वह रविवार और शुक्रवार - प्रभु यीशु के सूली पर चढ़ाए जाने का दिन - का विशेष श्रद्धा के साथ पालन करता था; इन दिनों वह अपनी सामान्य गतिविधियाँ बंद कर देता था और स्वयं को ईश्वर की सेवा के लिए समर्पित कर देता था। इस प्रकार कॉन्स्टेंटाइन का महल पूर्व के रोमन सीज़रों के महलों से बिल्कुल अलग था: यहाँ न तो व्यर्थ की बातें होती थीं और न ही कपटी साजिशें, और न ही शोर-शराबे वाले, तुच्छ और अक्सर खूनी मनोरंजन होते थे; यहाँ 'ईश्वर की स्तुति के भजन' सुने जाते थे। ज़ार के साथी 'ईश्वर के वचन के व्यवस्थापक' थे - बिशप और पुरोहित - जबकि उसके सेवक और पूरे परिवार के

[3831] यूसेबियस। *द लाइफ़ ऑफ़ कॉन्स्टेंटाइन*, पुस्तक III, 1.

संरक्षक ऐसे पुरुष थे जो अपने जीवन की पवित्रता और अपने सद्गुणों के लिए प्रसिद्ध थे; यहाँ तक कि भालेबाज़ और अंगरक्षक भी धार्मिक ज़ार के उदाहरण से प्रेरित थे। एक ईसाई और महल के स्वामी के रूप में, उन्होंने हर चीज़ पर एक ईसाई छाप लगाई। मुख्य हॉल में, छत में सोने के काम वाले एक गुहा-सा हिस्से के भीतर, कीमती पत्थरों से जड़े एक सुनहरे फ्रेम में क्रूस का चित्र था। शाही कक्षों में जाने वाले दरवाज़े के ऊपर, 'सबके सामने', मोम से बनी एक रंगीन पेंटिंग लटकी हुई थी। इस चित्र में निम्नलिखित को दर्शाया गया था: सम्राट का चेहरा, उसके सिर के ऊपर एक क्रॉस, और उसके पैरों तले एक ड्रैगन को गर्त में फेंका जा रहा था; इस चित्र का अर्थ इस प्रकार था: कॉन्स्टेंटाइन ने, ईसाई धर्म के उत्पीड़क—मूर्तिपूजक सम्राटों—के रूप में, ड्रैगन—मानव जाति के शत्रु—को क्रॉस की उद्धारक शक्ति द्वारा विनाश की गर्त में फेंक दिया था। इस चित्र ने सभी पर यह प्रभाव डाला कि इसका स्वामी सच्चे ईश्वर का उपासक था, जिसने अपने पुत्र के सूली पर चढ़ाए जाने के माध्यम से मानवता को नया जीवन प्रदान किया था।

[3832]नई ईसाई राजधानी, जिसका नाम इसके संस्थापक के नाम पर रखा गया था – 'सम्राट कॉन्स्टेंटिन का शहर' – कॉन्स्टेंटिनोपल, जो साम्राज्य की पूर्व राजधानियों—रोम और निकोमेडिया—के बीच एक केंद्रीय स्थिति में था—ठीक वैसे ही जैसे यरूशलेम, 'राजा दाऊद का शहर', ने कभी किया था, जो विशेष रूप से इज़राइल के किसी एक कबीले का नहीं था[3833] , अपनी अनुकूल भौगोलिक स्थिति के कारण, और ईश्वर की माता की संरक्षा में सौंपे जाने पर, यह शीघ्र ही फल-फूल उठा और इसने न केवल भव्य निकोमेडिया, बल्कि स्वयं रोम की महिमा और वैभव को भी फीका कर दिया। और जैसे प्राचीन काल में दाऊद, सियोन में बस जाने के बाद, इस बात से व्यथित था कि वह *'देर के काष्ठ के घर में* रहता था', *'जबकि वाचा का सन्दूक एक तम्बू के नीचे* था' (2 शमूएल 5:9–11, 7:2; 1 इतिवृत्त 17 और बाद में), उसी प्रकार अब कॉन्स्टेंटिन, सुंदर बाइजेंटाइयम में बस जाने के बाद, ईसा मसीह के प्रभुत्व वाले ईसाई धर्म की अपमानित 'पालना' - प्रभु यीशु के सांसारिक जीवन, उनके दुःख, मृत्यु और पुनरुत्थान के स्थान - के प्रति उदासीन नहीं रह सके। क्रूस के चिह्न के प्रति श्रद्धा से भरकर, वह उसी 'जीवन-दायक वृक्ष' को महिमामंडित करना चाहता था, जिस पर राजा और प्रभु को सूली पर चढ़ाया गया था। हालांकि, एक ऐसे योद्धा के रूप में जिसने बहुत खून बहाया था, वह खुद को इसे व्यक्तिगत रूप से करने के लिए अयोग्य समझता था। सम्राट के इस धर्मपरायण इरादे को उनकी उतनी ही पूजनीय माता, रानी हेलेना द्वारा पूरा किया गया, जिन्हें उन्होंने पूरे अधिकार और भव्य उपहारों के साथ यरूशलेम भेजा।

[3834]यूसेबियस के अनुसार, हेलेना, यह वृद्ध महिला, एक युवती की चपलता के साथ, प्रभु के पदचिन्हों को उचित श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए पूर्व की ओर तेजी से बढ़ी – भविष्यवक्ता के शब्दों के अनुसार, *'आओ हम उसके पाँवों के तख़्त पर आराधना करें* (भजन संहिता 131:7)।

उस पवित्र भूमि में, जो अद्भुत घटनाओं से चिह्नित थी, जहाँ हर चीज़ 'धर्मपरायणता के महान रहस्य - देह में परमेश्वर के प्रकट होने' की याद दिलाती है, इस शाही वृद्ध महिला की विनम्र आत्मा की महानता स्पष्ट रूप से स्पष्ट थी; वहाँ, संत हेलेना ने अपने पद के अनुरूप वस्त्र नहीं पहने, बल्कि, सबसे साधारण वस्त्रों में, भीड़ में घुल-मिल गईं, अनजान बने रहने का प्रयास करती रहीं, और उदार दान बाँटा; प्रभु यीशु की नकल करते हुए, उन्होंने अपनी विनम्रता को इस हद तक बढ़ाया कि उन्होंने कुँवारियों को अपने घर में बसाया, उनका सत्कार किया और स्वयं एक साधारण सेवक के रूप में मेज पर सेवा की[3835] । रानी के सच्ची भक्ति के उदाहरण ने न केवल मसीह में विश्वास करने वालों, बल्कि अविश्वासियों पर भी गहरा प्रभाव डाला।

'ईसाई धर्म के पालने' में रानी माता का प्रवास उनके राजसी पुत्र के बारे में भविष्यवाणियों की पूर्ति से भी चिह्नित था। फिलिस्तीन में, सुसमाचारों की घटनाओं द्वारा पवित्र किए गए सभी स्थल बहुत पहले ही उजाड़ दिए गए थे। ईसाई धर्म से घृणा के कारण, pagans ने इन स्थानों की स्मृति को भी मिटाने की कोशिश की थी; एक विश्वासी ईसाई के हृदय के सबसे प्रिय स्थल – पवित्र सेपुलक्र की गुफा – को मलबे के नीचे दबा दिया गया था और इस प्रकार श्रद्धालुओं की श्रद्धापूर्ण दृष्टि से छिपा दिया गया था; इतना ही नहीं, बल्कि मानो 'क्रूस पर चढ़ाए गए ईश्वर' और उनके उपासकों का मज़ाक उड़ाने के लिए, पवित्र गुफा के ऊपर बनी पहाड़ी पर 'प्रेम की कामुक राक्षसी' (वीनस) को समर्पित एक मंदिर

[3832] 'हमारा संपूर्ण धर्म इसी देश (फ़िलिस्तीन) और इसी नगर (यरूशलेम) से उत्पन्न हुआ है' – धन्य जेरोम का कथन। कृतियाँ, खंड II, पृ. 6.

[3833] ज़ीबोन का किला (यरूशलेम) यहूदा और बेंजामिन के गोत्रों की सीमाओं पर स्थित था; यह दाऊद द्वारा कनानी ज़ीबोनी गोत्र से जीता गया था, और इस प्रकार यह वादा किए गए देश के गोत्रगत विभाजन की सीमाओं के बाहर खड़ा था।

[3834] यूसेबियस। *द लाइफ़ ऑफ़ कॉन्स्टेंटाइन*, पुस्तक III, 42.

[3835] रूफिनस द्वारा चर्च इतिहास, पुस्तक I, पृ. 8.

बनाया गया था। हेलेना के आदेश पर, ईसाइयों के लिए पवित्र स्थानों पर बनाए गए मूर्तिपूजक पूजास्थलों को ध्वस्त कर दिया गया और उनकी जगह पवित्र चर्च बनाए गए। इस प्रकार, रानी के आदेश और खर्च पर, बेथलहम में जन्म की गुफा के ऊपर, जैतून के पहाड़ पर - प्रभु के स्वर्गारोहण के स्थल पर - भव्य चर्च बनाए गए; गेथ्सेमनी में - परमेश्वर की परम पवित्र माता के निद्रारोहण के स्थल पर - और उस स्थान पर जहाँ ममरे की ओक के पास परमेश्वर अब्राहम को प्रकट हुए थे, चर्च बनाए गए।

लेकिन रानी माता की मुख्य चिंता अपने महान पुत्र के दृष्टिकोण को साकार करना था: उस वृक्ष को खोजना जिस पर संसार के उद्धारकर्ता को सूली पर चढ़ाया गया था।

जहाँ प्रभु का क्रूस छिपा था, वह स्थान अज्ञात था; धर्मपरायण हेलेना ने उसे खोजने के लिए अपनी पूरी शक्ति लगाई और अपने सभी शाही प्रभाव का उपयोग किया। और लंबे तथा गहन पूछताछ और खोज के बाद, यह स्थान एक यहूदी वृद्ध पुरुष, जो एक यहूदी शिक्षक का पुत्र था, नामक जुडास द्वारा प्रकट किया गया – यह संकेत मिला कि यह प्रभु के कब्र की गुफा को ढकने वाली पहाड़ी पर बने एक मूर्तिपूजक मंदिर के नीचे था। रानी के आदेश पर, घृणित वीनस की मूर्ति को नीचे फेंक दिया गया, और उसके मंदिर को तुरंत ध्वस्त कर दिया गया; यरूशलेम के संत मकारियस ने अपवित्र स्थल पर प्रार्थना की; और पहाड़ी को साफ करने का काम शुरू हो गया। और इस धर्मपरायण उत्साह को एक अद्भुत पुष्टि मिली: मिट्टी खोदने वाले विश्वासयोग्य श्रमिकों को भूमि के नीचे से उठती एक सुगंधित खुशबू की महक आई। मसीह के नाम की महिमा के प्रति उत्साह ने धन्य हेलेना की इच्छानुसार श्रमिकों को प्रेरित किया कि वे नष्ट किए गए मूर्तिपूजक मंदिर की सामग्री और उसके नीचे का सारा मलबा प्रभु यीशु के दफन स्थल से यथासंभव दूर ले जाएँ, ताकि मूर्तिपूजा से अपवित्र कोई भी चीज़ महान ईसाई तीर्थस्थल को न छू सके। पवित्र सेपल्चर की गुफा मिली और उसे साफ़ किया गया; इसके पास, पूर्वी ओर, तीन क्रॉस मिले, साथ ही एक पट्टिका मिली जिस पर एक शिलालेख था और पवित्र कीलें भी थीं। 'लेकिन यह कैसे जाना जाए कि तीन क्रॉस में से उद्धारकर्ता का क्रॉस कौन सा है?' इस मामले पर सामान्य भ्रम, ईश्वर की व्यवस्था द्वारा, एक चमत्कारिक घटना के माध्यम से हल हो गया: ऐसा हुआ कि उसी क्षण एक मृत शरीर को दफनाने के लिए इस स्थान से ले जाया जा रहा था; संत मकारियस ने मृतक को ले जा रहे लोगों को रुकने का आदेश दिया; बिशप की सलाह पर, उन्होंने पाए गए क्रॉस को, एक-एक करके, मृतक पर रखना शुरू कर दिया; और जब मसीह का क्रॉस उस पर रखा गया, तो मृत व्यक्ति जीवित हो उठा। यह चमत्कार देखकर सभी आनंदित हुए और प्रभु के जीवन-दायक क्रूस की अद्भुत शक्ति की महिमा करने लगे। वृद्ध रानी ने सम्मानपूर्वक उस पवित्र वृक्ष के सामने सिर झुकाया और उसे चूमा। और चूँकि इतनी बड़ी भीड़ के कारण, रानी के उदाहरण का पालन करते हुए, यह संभव नहीं था, प्रत्येक व्यक्ति द्वारा पुनः प्राप्त क्रूस को व्यक्तिगत रूप से उचित श्रद्धांजलि अर्पित करना असंभव होने के कारण, संत मकरियस ने, कम से कम दूर से ही पवित्र अवशेष को देखने की सामान्य इच्छा को पूरा करते हुए, उसे श्रद्धापूर्वक उठाया और एक ऊँचे मंच पर खड़े होकर, विश्वासियों की भीड़ के सामने प्रभु के क्रूस का उत्थान किया, जिन्होंने उस क्षण ऊँचे स्वर में पुकारा: 'हे प्रभु, दया करें!' यह माननीय और जीवन-दायक क्रूस का पहला उत्थान था; यह वर्ष 326 में हुआ था। ऑर्थोडॉक्स चर्च इस घटना का वार्षिक उत्सव 14 सितंबर को मनाती है[3836] । तब कई मूर्तिपूजक और यहूदी मसीह में परिवर्तित हो गए; जिन लोगों ने धर्म परिवर्तन किया, उनमें वही यहूदा भी था जिसने उस स्थान का संकेत दिया था जहाँ पवित्र क्रूस रखी गई थी[3837] । बाद में पवित्र क्रूस को सुरक्षित रखने के लिए चांदी के एक संदूक में रख दिया गया; गुड फ्राइडे को इसे पूजा के लिए गोलगोथा (बाद में बने चर्च में, जहाँ इसे रखा गया था) ले जाया गया। हालाँकि, जब संत हेलेना यरूशलेम से रवाना हुईं, तो वह जीवन-दायक वृक्ष का एक टुकड़ा अपने साथ अपने पुत्र कॉन्स्टेंटाइन के लिए उपहार के रूप में ले गईं। कुछ ही समय बाद, धन्य रानी माता का निधन हो गया और उन्हें सम्मानपूर्वक दफनाया गया।

[3836] पवित्र क्रूस के उत्थान के पर्व पर – जो कि उपवास का दिन है – ऑर्थोडॉक्स चर्च की दैवीय सेवा प्रभु के क्रूस के महिमामंडन और क्रूस पर उद्धारकर्ता की मृत्यु की स्मृति को समर्पित है; सारी रात की प्रार्थना सभा के दौरान, महा स्तुति-गीत के बाद, पादरीगण क्रूस को गंभीरता से पवित्र स्थल से चर्च के केंद्र में ले जाते हैं, जहाँ उसकी पूजा की जाती है। गिरिजाघरों में क्रूस की बुलंदी की रस्म विशेष गंभीरता से की जाती है, जिसे बिशप करते हैं, जबकि पुरोहित बार-बार 'हे प्रभु, दया करें' का जाप करते हैं।

[3837] जुडास, जिसे बपतिस्मा के बाद सिरियिकस के नाम से जाना गया, बाद में यरूशलेम का पैट्रिआर्क बना और जूलियन द एपोस्टेट के अधीन शहीद हो गया। उसका पर्व दिवस 28 अक्टूबर है।

अपनी माता, धन्य हेलेना से, अनमोल खजाना—पवित्र क्रूस का एक टुकड़ा—प्राप्त करने के बाद, कॉन्स्टेंटाइन ने पवित्र सेपल्चर की गुफा को सजाने और उसके बगल में एक चर्च बनाने का संकल्प लिया जो 'दुनिया में कहीं भी किसी भी चर्च से अधिक भव्य' होगा... यूसेबियस के अनुसार, 'समग्र परिसर के केंद्र के रूप में, गुफा को राजा की मसीह-प्रेमी उदारता द्वारा भव्य स्तंभों और असंख्य आभूषणों से सुशोभित किया गया था। गुफा से निकलने का रास्ता ' ' नामक एक विशाल खुले चौक पर था। यह चौक चमचमाते पत्थरों से पक्का किया गया था और तीन ओर से बिना किसी रुकावट वाले बरामदों से घिरा हुआ था।' जहाँ तक उस असाधारण देखभाल का सवाल है, जिसके साथ ईसाई राजा ने गुफा के पूर्वी हिस्से में चर्च के निर्माण पर ध्यान दिया, इस बात को यरूशलेम के संत मकारियस को कॉन्स्टेंटाइन के पत्र की निम्नलिखित पंक्तियाँ सबसे अच्छी तरह से दर्शाती हैं: 'जहाँ तक मंदिर की दीवारों के निर्माण और उत्कृष्ट सजावट की बात है, जान लो कि मैंने यह कार्य फ़िलिस्तीन के राज्यपालों को सौंपा है। मैंने यह सुनिश्चित किया है कि उनकी देखरेख में, कलाकार, कारीगर और निर्माण के लिए आवश्यक हर चीज़ बिना किसी देरी के आपको पहुँचा दी जाए। जहाँ तक स्तंभों और संगमरमर का सवाल है, ध्यान से विचार करें कि आपके अनुसार कौन सा सबसे कीमती और उपयोगी है, और मुझे बिना किसी देरी के लिखें, ताकि मैं आपके पत्र से यह जान सकूँ कि प्रत्येक सामग्री की कितनी आवश्यकता है और उन्हें हर जगह से मंगवा सकूँ। इसके अलावा, मैं जानना चाहता हूँ कि आप चर्च के लिए किस प्रकार की छत पसंद करते हैं – मोज़ेक छत या किसी अन्य तरीके से सजाई गई छत। यदि यह मोज़ेक छत होनी है, तो बाकी आंतरिक भाग को सोने से सजाया जा सकता है। आप महाशय उपर्युक्त शासकों को यथाशीघ्र सूचित करें कि कितने कारीगरों और कलाकारों की आवश्यकता होगी और लागत क्या होगी। कृपया मुझे तुरंत न केवल संगमरमर और स्तंभों के बारे में, बल्कि उस मोज़ेक के बारे में भी सूचित करें जिसे आप सर्वश्रेष्ठ मानते हैं।'

वैसे, कॉन्स्टेंटाइन ने स्वयं यह विचार सोचा था कि चर्च को बारह स्तंभों से अच्छी तरह सजाया जाए – जो प्रेरितों की संख्या के अनुरूप हों – जिनके ऊपर चांदी से ढले हुए फूलदान होंगे। इसलिए यह आश्चर्य की बात नहीं है कि यह चर्च सुंदरता की एक अद्भुत कृति थी और इसके रूप-रंग ने उसके समकालीनों को आनंदित कर दिया। संयोग से, इतिहासकार यूसेबियस ने पहले ईसाई सम्राट के धार्मिक उत्साह के इस स्मारक का वर्णन इस प्रकार किया है: 'बेसिलिका (चर्च) एक असाधारण इमारत है, जिसकी ऊंचाई, चौड़ाई और लंबाई अथाह है। इसके भीतरी हिस्से को बहुरंगी संगमरमर से सजाया गया है, जबकि दीवारों का बाहरी हिस्सा, एक-दूसरे के करीब जड़े पॉलिश किए हुए पत्थरों से दमकता हुआ, एक असाधारण रूप से सुंदर दृश्य प्रस्तुत करता है और संगमरमर से किसी भी तरह से कम नहीं है। गुंबददार छत अद्भुत नक्काशी से सुशोभित है, जो पूरे बेसिलिका में आपस में जुड़ी मेहराबों के ऊपर एक विशाल सागर की तरह फैली हुई है और हर जगह सोने से दमकती हुई, पूरे चर्च को प्रकाश की किरणों की तरह रोशन करती है। पूरे ढांचे की केंद्रीय विशेषता बेसिलिका के बिल्कुल किनारे (पूर्वी ओर) स्थित एक अर्धवृत्त है, जिसके शीर्ष पर बारह स्तंभ हैं जो बारह प्रेरितों की संख्या के अनुरूप हैं, जिनके ऊपरी भाग चांदी में ढले बड़े फूलदानों से सुशोभित हैं – जो स्वयं राजा द्वारा ईश्वर को दी गई एक शानदार भेंट है।

लेकिन धर्मपरायण सम्राट ने ईसाई धर्म के प्रति अपने रवैये को केवल उसके बाहरी वैभव की चिंता तक सीमित नहीं रखा; वह मसीह के चर्च के आंतरिक जीवन के प्रति भी चिंतित थे। कॉन्स्टेंटाइन के दृष्टिकोण में, चर्च को राज्य जीवन के सबसे महत्वपूर्ण स्तंभ के रूप में काम करना था; धार्मिक एकता साम्राज्य की समृद्धि की एक शक्तिशाली गारंटी होने वाली थी। चर्च, अपनी भव्यता और बाहरी वैभव में शोभायमान, अपनी आंतरिक शांति के माध्यम से मूर्तिपूजक आबादी को अपनी ओर आकर्षित करने वाला था, और धीरे-धीरे पूरे राज्य को मसीह की एक ही आत्मा से जीवंत, एक एकल, आंतरिक रूप से सुसंगठित जीव में बदलने वाला था। चर्च की ऐसी एकता और समृद्धि ने 'परवाह करने वाले सम्राट को शांतिपूर्ण दिन और शांत रातें प्रदान कीं'; इसमें उन्होंने अपने लिए और दुनिया भर में अपने शासन के अधीन सभी लोगों के लिए खुशी देखी।

हालाँकि, ये 'शांतिपूर्ण दिन और शांत रात्रियाँ' महान सम्राट को हमेशा नहीं मिलीं, और न ही वे आसानी से प्राप्त हुईं। उसके समय में, मसीह की कलीसिया—जो पहले से ही शहादत की विजयी माला से सुशोभित थी और जिसे नागरिक अस्तित्व का अधिकार, यहाँ तक कि मूर्तिपूजा पर विशेषाधिकार भी प्राप्त थे—आंतरिक कलह से हिल गई थी, जो उत्पीड़न के अंधकारमय दिनों के दौरान ही जड़ें जमाकर फल-फूल चुकी थी। रोम में कॉन्स्टेंटाइन के सिंहासनारोहण करते ही, उसे यह जानकर आश्चर्य और दुख हुआ कि उसके साम्राज्य का एक पूरा क्षेत्र एक ही पिता की संतानों के बीच संघर्ष से तबाह हो रहा था। – अफ्रीका में ईसाइयों के बीच कार्थेज के बिशप के रूप में सेसिलियन की नियुक्ति को लेकर

एक संघर्ष छड़ि गया था – एक 'गद्दार'[3838] ; उसके वरिोधयिों ने मायोरीन को अपना बशिप चुना, और कुछ ही समय बाद – मायोरीन की मृत्यु के बाद – अपने वरिोध के मुख्य उत्तेजक, डोनाटस को उसके स्थान पर पदोन्नत कर दयिा[3839] । बाद वाले के अनुयायी – 'डोनाटसि्ट' – ने 'नोवाटयिनों'[3840] के साथ गठबंधन करके दावा कयिा कि केवल वही मसीह की कलीसयिा हैं और, अपने उन्मत्त कट्टरपंथ में, उन्होंने अपने वरिोधयिों पर बदनाम करने वाले आरोप लगाने या यहां तक कि जबरदस्ती उनके चर्चों पर कब्जा करने में संकोच नहीं कयिा; युद्धरत गुटों के बीच अक्सर खून-खराबा हो जाता था। उन्हें सुलह कराने और उनकी पारस्परकि शकिायतों की जांच करने के लिए, कॉन्स्टेंटाइन ने पहले अपने 'प्रयि और सम्मानति' बशिप, ओसयिा को कार्थेज भेजा[3841] , और साथ ही उन्हें वहाँ के नरि्धन ईसाइयों को वत्तिीय सहायता वतिरति करने का नरि्देश दयिा[3842] ; फरि, डोनाटसि्ट मामले के संबंध में सम्राट के स्पष्ट आदेश पर, दो परषिदें बुलाई गईं – एक छोटी रोम में और दूसरी 'वभिन्नि स्थानों के कई बशिपों से मलिकर बनी' आर्ल्स में[3843] । इन परषिदों द्वारा इन परेशान करने वाले संप्रदायवादयिों पर दयिा गया नरि्णय अंततः316 में मलिान में, कॉन्स्टेंटाइन की व्यक्तगित अध्यक्षता में, पुष्टि कर दयिा गया, और मामला स्पष्ट रूप से सुलझा लयिा गया।

लेकनि जतिना अधकि धर्मपरायण सम्राट ईसाई धर्म की वास्तवकि स्थतिि से परचिति होता गया, उतना ही यह मसीह के चर्च के बच्चों की पवत्रि एकता की उसकी आदर्शवादी धारणा पर खरा नहीं उतरता था। डोनाटसि्ट मामला, जसिने अपने शासन के शुरुआती दनिों में कॉन्स्टेंटाइन को परेशान कयिा था, अपनी सामग्री के लिए उतना महत्वपूर्ण नहीं था, जतिना कि इसमें शामलि लोगों के उत्साह के लिए। 323 में, लकिनियिस पर अपनी वजिय के बाद और पूरे साम्राज्य का एकमात्र शासक बन जाने पर, कॉन्स्टेंटाइन बेहतर, अधकि ठोस नींव पर पूरे राज्य का पुनर्नरि्माण करने की सच्ची इच्छा से प्रेरति होकर पूर्व की ओर रवाना हो गया। अपनी योजनाओं में, उन्होंने ईसाई चर्च को सर्वोपरि स्थान दयिा; उनके वचिार में, इसका उद्देश्य राजनीतकि रूप से एकजुट वशि्व साम्राज्य को आध्यात्मकि रूप से एकजुट करना था। लेकनि वहाँ, पूर्व में, उन्हें पश्चमि की तुलना में कहीं अधकि कड़वी नराशिा का सामना करना पड़ा। वे वहाँ ऐसे समय में पहुँचे जब एरयिन वधिर्म[3844] द्वारा भड़काए गए और अनयिंत्रति ववािद अपने चरम पर पहुँच चुके थे। यूसेबयिस इस अवधि

[3838] यह नाम उत्पीड़न के दौरान उन लोगों पर लगाया गया था, जनि्होंने डर के मारे अपने धार्मकि श्रद्धा के वस्तुओं को मूर्तविादयिों को सौंप दयिा था: ऐसा कहा गया कि सेसलियिा ने उत्पीड़कों को पवत्रि पुस्तकें सौंप दी थीं - एक आरोप जो झूठा साबति हुआ।

[3839] डोनाटस कार्थेज में एक पुरोहति था।

[3840] नोवाटयिनों ने यह सखिाया कि जो लोग उत्पीड़नों के दौरान गरि गए थे, और वास्तव में सभी जनि्होंने गंभीर ('घातक') पाप कए थे, उन्हें चर्च की संप्रभुता में पश्चाताप के माध्यम से नहीं, बल्कि पुनःबपतस्मिा के माध्यम से फरि से शामलि कयिा जाना चाहए।

[3841] स्पेन के मूल नवािसी होसयिास, जनि्होंने 60 से अधकि वर्षों तक बशिप के रूप में सेवा की, डायोक्लेटयिन के उत्पीड़न के दौरान मसीह के लिए एक कन्फैसर (अपनी आस्था के लिए दृढ़ रहने वाले) के रूप में प्रसद्धि हुए। वह कोर्डोबा के बशिप थे। सम्राट कॉन्स्टेंटाइन ने उन्हें अपने दरबार में बुलाया और उन पर स्नेह और वशि्वास की वर्षा की। उस समय, ईसाई हलकों में यह व्यापक रूप से माना जाता था कि कॉन्स्टेंटाइन के इस पसंदीदा सलाहकार का उस पर एक मजबूत प्रभाव था (सुक्रेटसि, *चर्च हसि्ट्री*, 1, 7)।

[3842] यूसेबयिस, *चर्च हसि्ट्री*, X, 6.

[3843] उपरोक्त, X, 5।

[3844] एरयिस ने अपमानजनक रूप से यह सखिाया कि यीशु मसीह शाश्वत और अनंतकाल से अस्तत्वि में रहने वाले ईश्वर नहीं हैं, कि वे पता के समतत्त्व के नहीं हैं और उनकी सृष्टि हैं - एक समय था जब उनका अस्तत्वि नहीं था। एरयिस ने अपना धर्मशास्त्रीय शकि्षण अंटीओक में शहीद लूसयिन के स्कूल में प्राप्त कयिा; अलेक्जेंड्रयिा में एक पादरी बनकर, उसने वहाँ अपने बौद्धकि गुणों और अपने कठोर तपस्वी जीवन, दोनों के लिए व्यापक ध्यान आकर्षति कयिा। अपनी बुद्धि और वद्विता पर गर्व करने वाले एरयिस ने अपने बशिप, अलेक्जेंडर की चेतावनयिों और उपदेशों पर कोई ध्यान नहीं दयिा; न ही वह बशिप द्वारा बुलाई गई उस परषिद के सामने झुका, जसिने उसे दोषी ठहराया था। इतना ही नहीं, बल्कि अपनी वाक्पटुता से पादरयिों और लोगों को मोहति करके, उसने अपनी वधिर्म की फसल को अपने स्थानीय चर्च की सीमाओं से परे फैलाने का प्रयास कयिा। अपने काफी अनुयायी होने के कारण, उसने पूर्वी चर्चों के कई बशिपों के पास एक शकिायत पत्र लेकर एक प्रतनिधिमिंडल भेजा। वहाँ उसे नकिोमेडयिा के यूसेबयिस के नेतृत्व में समर्थक मलि, जो पहले लूसयिन के स्कूल से एरयिस को जानते थे – एक 'वद्विान व्यक्ति', और साथ ही साम्राज्यकि परविार के रश्तिेदार और इसलिए एक प्रभावशाली व्यक्ति। राजधानी के बशिप यूसेबयिस (यह उस समय था जब सम्राट लकिनियिस जीवति थे, जनिका नवािस नकिोमेडयिा था) ने अलेक्जेंड्रयिा के बशिप के नरि्णय के अधकिार को स्वीकार नहीं कयिा। एरयिस को लखि एक पत्र में, उन्होंने उत्तर दयिा: 'अत्यंत बुद्धमिान होने के नाते, काश सभी इतने बुद्धमिान होते, क्योंकि यह सभी के लिए स्पष्ट है कि जो कुछ भी बनाया गया है, वह तब तक मौजूद नहीं था जब तक उसे अस्तत्वि में नहीं लाया गया; और जसिे अस्तत्वि में लाया गया है, उसकी एक शुरुआत होती है।' इस प्रकार अलेक्जेंड्रयिा के बशिप खुद को एक गंभीर स्थति में पाया; लगभग 318 ईस्वी में, अलेक्जेंडर ने चरम उपाय अपनाने का संकल्प लयिा: उन्होंने सौ बशिपों की एक परषिद बुलाई; एरयिस और उसके अनुयायियों को चर्च से बहष्कृत कर दयिा; उस ईश्वरनन्दिक को अलेक्जेंड्रयिा से नरि्वासति कर दयिा; और सभी चर्चों को एक परपित्र पत्र में इसकी घोषणा की (देखें थयिोलॉजकिल हेराल्ड, दसिंबर 1906:

का वर्णन इस प्रकार करते हैं: 'न केवल चर्चों के नेता एक-दूसरे के साथ विवादों में लगे हुए थे, बल्कि लोग भी बँटे हुए थे; घटनाएँ ऐसी अश्लील स्थिति तक पहुँच गई थीं कि दैवीय शिक्षा का मूर्तिपूजक रंगमंचों में भी अपमानजनक उपहास उड़ाया जाता था।' यह उन लोगों के लिए एक अनुकूल समय था जो प्रभु यीशु मसीह की दिव्यता का अपमान करते थे। लिसिनियस – कॉन्स्टेंटाइन का ससुर, जो उस समय अपने शासन के अंतिम वर्ष बिता रहा था और जिसने कभी कॉन्स्टेंटाइन के साथ धार्मिक सहिष्णुता पर मिलान का फरमान (Edict of Milan) पर हस्ताक्षर किए थे – सामान्य रूप से ईसाइयों को संदेह की दृष्टि से देखता था, उन्हें अविश्वसनीय मानता था, और उनसे नफरत करता था, यहाँ तक कि उनका क्रूरता से उत्पीड़न भी करता था। एरियन संप्रदाय द्वारा उत्पन्न उनके पारस्परिक संघर्ष में, उसने शायद एक ऐसा विकास देखा होगा जो उसके लिए वांछनीय और लाभकारी था। ये विवाद, चर्च को कमजोर करके, शायद उसे अपने शक्तिशाली ससुर के खिलाफ अपनी योजनाओं के लिए समर्थन हासिल करने की उम्मीद दे रहे थे। और लिसिनियस की गणनाएँ व्यर्थ नहीं थीं। उदाहरण के लिए, कॉन्स्टेंटाइन ने निकोमेडिया के बिशप यूसेबियस के बारे में इन शब्दों में कहा: 'उसने मेरे पास जासूस भी भेजे और तानाशाह (लिकिनियस) को लगभग सशस्त्र सहायता प्रदान की'[3845] .

निकोमेडिया पहुँचने पर, कॉन्स्टेंटाइन एरियनवाद द्वारा भड़काई गई कलह से गहराई से प्रभावित हुए। हालाँकि, उन्होंने इन घटनाओं के महत्व को तुरंत नहीं समझा। यहाँ उन्हें और उनके साथ पश्चिम से आए दैवीय शिक्षा के 'रहस्यवादियों' को निकोमेडिया के लोगों से एरियस के मामले का एकपक्षीय विवरण मिला, जो धार्मिक सिद्धांतों के प्रश्नों को महत्वपूर्ण धार्मिक आस्था का मामला नहीं, बल्कि विद्वतापूर्ण जांच के क्षेत्र और यहां तक कि केवल शाब्दिक तर्क-वितर्क के रूप में देखते थे। फिर भी, कॉन्स्टेंटाइन ने एरियन पक्ष को नजरअंदाज नहीं किया; शुरुआत में, उन्होंने बिशप अलेक्जेंडर और एरियस से आपसी कलह को समाप्त करने का आग्रह करते हुए अलेक्जेंड्रिया को एक लंबा सुलह पत्र भेजा। सम्राट की दृष्टि में, बिशप अपनी असावधानी और तीखे प्रश्नों के कारण भी दोषी थे, जबकि एरियस बिशप के अधीन होने से इनकार करके संप्रदाय तोड़ने के लिए दोषी था; उन्होंने दोनों को दार्शनिकों का उदाहरण लेने की सलाह दी, जो यद्यपि आपस में बहस करते हैं, फिर भी शांति से एक साथ रहते हैं। इसके अलावा, वे दोनों एक आम आधार पर खड़े हैं: दोनों दैवीय व्यवस्था को स्वीकार करते हैं, और इसलिए उनके लिए मेल-मिलाप करना आसान है[3846] ...

इस संदेश के साथ, कॉन्स्टेंटाइन ने अपने 'प्रिय' बिशप ओसिया को अलेक्जेंड्रिया भेजा, जहाँ उन्हें मौके पर मामले की जांच करनी थी और अलेक्जेंड्रिया के लोगों को शांत करने में मदद करनी थी। ओसिया ने सम्राट के निर्देशों का पालन किया। 'हालांकि उसने विरोधियों को सुलह नहीं कराई, विवादों की उसकी जांच ने उसे इस निष्कर्ष पर पहुंचा दिया कि एरियस का विधर्म केवल कोरी बातें नहीं थीं, बल्कि इसने ईसाई धर्म की नींव तक को हिला देने का खतरा पैदा कर दिया था – जिससे समग्र रूप से ईसाई धर्म का ही इनकार हो सकता था।' 324 में, कॉर्डोबा के होसिया सम्राट के पास लौटे और उन्होंने उन्हें एरियन आंदोलन से उत्पन्न गंभीर खतरे के बारे में समझाया। तब कॉन्स्टेंटिन ने एक सार्वभौमिक परिषद बुलाने का संकल्प लिया, जो उनके विचार में, चर्च में शांति बहाल करने का एकमात्र साधन था। सम्राट के दृष्टिकोण में, इस परिषद को, 'मुख्य शत्रु के खिलाफ युद्ध छेड़ते हुए'—जो उस समय चर्च की शांति भंग कर रही धर्मनिंदा करने वाली एरियन विधर्म थी—अन्य मामलों पर भी विचार करना था और ईसाइयों के आंतरिक जीवन के संगठन के संबंध में उत्तर—परिभाषाएं—प्रदान करनी थीं[3847] ।

सम्राट के आदेशानुसार, सार्वभौमिक परिषद निकिया शहर में आयोजित की जानी थी[3848] । कॉन्स्टेंटाइन ने आमंत्रित बिशपों की बैठक स्थल तक यात्रा को सुगम बनाने के लिए अपनी पूरी शक्ति लगा दी, और उन्होंने राज्य के

ए. ए. स्पैस्की, पृ. 584)। इस उपाय ने एरियन विवादों को और भड़काया और उनकी लपटों को पूरे पूर्व में फैला दिया। एरियन मामला अब अपनी स्थानीय विशेषता खो रहा था और एक सार्वभौमिक-चर्च महत्व ग्रहण कर रहा था।

[3845] थियोलॉजिकल हेराल्ड, दिसंबर 1906, पृष्ठ 694।

[3846] यूसेबियस। *द लाइफ़ ऑफ़ कॉन्स्टेंटाइन*, II, 64–72.

[3847] यूसेबियस। *द लाइफ़ ऑफ़ कॉन्स्टेंटाइन*, III17, V:6.

[3848] निकाया, जो अब इज़निक है – आज एक गरीब गाँव, लेकिन उस समय एक विशाल और समृद्ध शहर – बिथिनिया के तटीय क्षेत्र का प्रमुख शहर था; यह एक झील के माध्यम से समुद्र से जुड़ा था और समुद्र तथा भूमि दोनों द्वारा समान रूप से सुलभ था; वहाँ एक विशाल शाही महल और कई इमारतें थीं जो परिषद के लिए एकत्र हुए बिशपों और पुरोहितों को आराम से समायोजित कर सकती थीं; निकीया, उस समय सम्राट के निवास निकोमेडिया से महज 20 मील दूर स्थित थी, जिससे परिषद में शामिल होने में उन्हें बड़ी सुविधा मिली। यूसेबियस के अनुसार, परिषद के स्थल के रूप में निकिया के चुनाव पर जाहिरा तौर पर इसके नाम - 'विजय' (रूसी अनुवाद में) - का ही प्रभाव था। यूसेबियस, *द लाइफ ऑफ कॉन्स्टेंटाइन*, III, 6.

खर्च पर नकियिा पहुँचने वालों के खर्चों का वहन कयिा। मस्रि और फलिस्तीन, सीरयिा और मेसोपोटामयिा, एशयिा माइनर, ग्रीस, फारस और आर्मेनयिा से, तथा डैन्यूब के पार गोथों से बशिप नकियिा पहुँचे; रोम से, वृद्ध बशिप के स्थान पर दो प्रेस्बटिर आए। एकत्रति बशिपों में शामलि थे: अलेक्जेंड्रयिा के वृद्ध अलेक्जेंडर, जो एरयिस की नदिा करने वाले पहले व्यक्ति थे, और जो अपने साथ आर्चडीकन अथेनासयिस को लाए थे, जो एरयिनों के एक साहसी और कुशल वरिोधी थे (बाद में 'महान' के रूप में जाने गए, अलेक्जेंड्रयिा के आर्चबशिप); लसियिा के मायरा के संत नकिोलस; और चमत्कार करने वाले संत स्परिडिोन। कुल मलिाकर, परषिद में 2,000 से अधकि लोगों ने भाग लयिा (जसिमें बशिपों के साथ आए प्रेस्बटिर और डीकन शामलि थे), और अकेले 318 बशिप थे।

परषिद जून 325 में शाही महल के एक वशिाल हॉल में शुरू हुई। बशिपों के लिए कमरे के चारों ओर बेंचें लगाई गई थीं, और केंद्र में एक मेज रखी गई थी जसि पर पवत्रि धर्मग्रंथ रखे थे, जो सत्य की नष्ठिावान गवाही के रूप में थे। जब सभी इकट्ठा हो गए, तो कॉन्स्टेंटाइन अपने शाही पद की पूरी भव्यता के साथ, लेकनि बनिा सशस्त्र अंगरक्षक के, ईसाई दरबारयिों के साथ उपस्थति हुए और सोने व कीमती पत्थरों से जगमगाते हुए सबसे शानदार शाही वस्त्र पहने हुए थे। उनके आगमन ने सभा को चकति कर दयिा, और वशिेष रूप से उन उपस्थति लोगों को, जो दूर-दराज के देशों से आए थे और जन्हिोंने पहले न तो उनका राजसी चेहरा देखा था और न ही उनकी शाही भव्यता; लेकनि वह स्वयं भी मसीह की कलीसयिा के ऐसे प्रतष्ठिति चरवाहों के जमावड़े को देखकर चकति रह गया, जनिमें कठोर तपस्वी और चमत्कारी, तथा अपने धर्म की गवाही देने वाले और शहीद, जनिके हाथ झुलसे हुए और आँखें भेदी हुई थीं, शामलि थे[3849] , जन्हिोंने अपने धर्म के लिए कष्ट सहे थे, चुपचाप, झुकी हुई आँखों से, वह अपने लिए तैयार कए गए सुनहरे सहिासन के पास गया और तब तक प्रतीक्षा करता रहा जब तक कि पवत्रि बशिपों ने उसे बैठने के लिए आमंत्रति नहीं कयिा। तब अंतीयक के यूस्टेथयिस और इतहिासकार केसेरयिा के यूसेबयिस द्वारा दए गए स्वागत और आभार व्यक्त करने वाले संबोधनों को सुनने के बाद, कॉन्स्टेंटाइन ने स्वयं सभा को एक भाषण दयिा जसिमें उन्होंने पतिृगणों के इतने बड़े जमावड़े को देखकर अपनी प्रसन्नता व्यक्त की, और उनसे ववािदास्पद मुद्दों को शांतपिूर्वक हल करने का आग्रह कयिा। उन्होंने कहा, 'ईश्वर ने मुझे उत्पीड़कों के अधर्मी शासन को उखाड़ फेंकने में मदद की है; लेकनि कसिी भी युद्ध, कसिी भी खूनी लड़ाई से कहीं अधकि दुखद और कहीं अधकि वनिाशकारी है ईश्वर की कलीसयिा के भीतर आंतरकि कलह।'

एरयिनों ने परषिद में भाग लयिा और वहाँ साहस और आत्मवश्विास के साथ व्यवहार कयिा; उन्होंने यह अनुमान नहीं लगाया था कि उनका पक्ष पूरी तरह से और बुरी तरह से हार जाएगा; इसके वपिरीत, उन्हें उम्मीद थी कि उनकी योजनाएँ सफल होंगी: – उनके पक्ष में 17 बशिप थे; उनका नेतृत्व मेट्रोपोलटिन बशिप कर रहे थे, जनिके शाही दरबार में संबंध थे। अरअिसयिों को उम्मीद थी कि परषिद, भले ही वह उनके वचिारों से सहमत न हो, उन्हें कठोर नदिा के अधीन नहीं करेगी।

एरयिस ने अपनी वाक्पटुता की पूरी शक्ति का उपयोग करते हुए अपने सद्धिांत का जद्दिी ढंग से बचाव कयिा। लेकनि परषिद के पतिरों का, पतिरों की सच्ची चर्च संबंधी शक्षिा के प्रति अटूट, दृढ़ समर्पण ने उस ईश्वरनन्दिक की झूठी बुद्धि को शर्मदिा कर दयिा। सम्यक-धर्म के रक्षकों ने एरयिन वधिर्म के सार को अच्छी तरह समझा और गरमिा, गहरे धार्मकि भाव और एक वास्तव में प्रबुद्ध मन से इसका खंडन कयिा। अलेक्जेंड्रयिा के डकिन, अथेनासयिस ने वशिेष रूप से अपने शब्दों की शक्ति और वधिर्मी कपटपूर्ण तर्क को बेनकाब करने में अपनी तीक्ष्णता से खुद को प्रतष्ठिति कयिा: उनके शब्द वधिर्मी की कपटपूर्ण तर्क को उतनी ही आसानी से चीर देते थे जतिनी आसानी से एक मकड़ी का जाला। बहसें तीव्र और लंबी चलीं; कॉन्स्टेंटाइन ने ववािदकारयिों को सुलह कराने और ववािद का सौहार्दपूर्ण समाधान नकिालने के लिए अपने प्रभाव का उपयोग करने का व्यर्थ प्रयास कयिा; बहसें जतिनी लंबी चलती रहीं, यह उतना ही स्पष्ट होता गया कि एरयिनों ने सत्य से कतिनी दूर भटक गए थे। नकिोमेडयिा के यूसेबयिस – एरयिनों के नेता – द्वारा परषिद में प्रस्तुत वश्विास का कथन, जसिमें स्पष्ट रूप से यह वचिार व्यक्त कयिा गया था कि 'ईश्वर का पुत्र'

[3849] इतहिासकार परषिद के फादरों की संख्या के बारे में अलग-अलग ववरिण देते हैं; उदाहरण के लिए, यूसेबयिस (*द लाइफ ऑफ कॉन्स्टेंटाइन*, III, 8), इस संख्या को 250 बताता है; अलेक्जेंड्रयिा के संत अथेनासयिस अपने लेखों में, और स्वयं सम्राट, 300 तक का उल्लेख करते हैं। 318 की संख्या का उल्लेख सेंट अथेनासयिस ने अफ्रीकी चर्च को लखि अपने एक पत्र में कयिा है; इसके ग्रीक रूप – TIH – में यह 'यीशु के क्रूस' जैसा दखिता है, और यही कारण है कि इसका सामान्य उपयोग होने लगा, जसिसे नीकयिा परषिद को 318 पतिाओं की परषिद के रूप में जाना जाने लगा।

एक 'सृष्टि' है, एक 'सृष्टि' है, और 'एक समय था जब वह अस्तित्व में नहीं था', को परिषद के पितरों ने सर्वसम्मति से झूठा और अधर्मी घोषित कर खारिज कर दिया – जिस पांडुलिपि पर यह लिखा था, उसे भी फाड़ दिया गया।

इस प्रकार एरियनवाद को अपरिवर्तनीय रूप से निंदा करने के बाद, परिषद के पितरों ने विश्वासियों को ऑर्थोडॉक्स सिद्धांत का एक सटीक स्वीकारोक्ति - एक धर्मसूत्र - प्रदान करने का संकल्प लिया। कैसरिया के बिशप यूसेबियस ने उनके ध्यान में 'बपतिस्मा का प्रतीक-विश्वास' प्रस्तुत किया, जो लंबे समय से उनकी कलीसिया में प्रचलन में था और लगभग पूरी तरह से पवित्र धर्मग्रंथों से लिए गए वाक्यांशों से बना था। पिताजी ने इस धर्मविश्वास को अनुमोदन के साथ स्वीकार किया; लेकिन इसमें विधर्मी विचारों को डाले जाने की किसी भी संभावना को निर्णायक रूप से समाप्त करने के लिए, उन्होंने इसके भीतर कुछ सामान्य अभिव्यक्तियों को बदलकर ऐसी अन्य अभिव्यक्तियाँ रखने को आवश्यक समझा जो चर्च के सत्य को पूरी तरह से परिभाषित कर सकें। परिषद में उपस्थित सम्राट, धर्मपिताओं के साथ कैसरियाई प्रतीक की स्वीकृति में शामिल हुए और इसके साथ अपनी पूर्ण सहमति व्यक्त की; लेकिन साथ ही कॉन्स्टेंटाइन ने धर्म-विश्वास में उस सूत्र को शामिल करने का प्रस्ताव रखा, जिस पर चर्च के नेताओं ने प्रारंभिक विचार-विमर्श के दौरान पहले ही सहमति व्यक्त कर दी थी, ताकि परमेश्वर के पुत्र और परमेश्वर पिता के साथ उनके संबंध के बारे में चर्च की शिक्षा व्यक्त की जा सके - अर्थात्, कि वह पिता के 'समान सार' के हैं। सम्राट द्वारा कहे गए शब्दों को परिषद द्वारा सर्वसम्मति से स्वीकार कर लिया गया और यह प्रभु यीशु के व्यक्तित्व से संबंधित सिद्धांत के लिए निर्णायक आधार बन गया, जो केंद्रीय ईसाई धर्मशास्त्र है।

'बपतिस्मा' धर्मविश्वास को संशोधित किया गया, और परिषद ने नए नाइसीन धर्मविश्वास को प्रस्तुत किया, जिसे संपूर्ण सार्वभौमिक चर्च ने बिना किसी विवाद के स्वीकार कर लिया।

निकाया में धर्मपिताओं की अंतिम भव्य सभा 25 अगस्त 325 को शाही महल में हुई; यह कांस्टेंटिन के शासन की 20वीं वर्षगांठ के साथ मेल खाती थी[3850] ।

जब उन्होंने परिषद के धर्मगुरुओं को विदाई दी, तो कॉन्स्टेंटाइन ने अपने विदाई भाषण में उनसे आपस में शांति बनाए रखने का आग्रह किया।

उन्होंने कहा, 'अपने बीच कड़वे विवादों से सावधान रहो। कोई भी उन लोगों के प्रति ईर्ष्या न करे जिन्होंने विशेष बुद्धिमत्ता दिखाई है: प्रत्येक की गरिमा को पूरी कलीसिया की साझा विरासत मानो। आप जो उच्च पद पर हैं और अधिक प्रतिष्ठित हैं, वे जो निम्न पद पर हैं, उन पर तुच्छ दृष्टि न रखें: ईश्वर ही जानता है कि कौन श्रेष्ठ है; पूर्णता दुर्लभ है, और भाइयों में सबसे कमजोर के प्रति सहनशीलता दिखानी चाहिए; शांतिपूर्ण सामंजस्य किसी भी चीज़ से अधिक कीमती है। अविश्वासियों को बचाने में, याद रखें कि हर किसी को विद्वतापूर्ण तर्क से धर्मांतरित नहीं किया जा सकता - शिक्षा को प्रत्येक व्यक्ति के विभिन्न स्वभावों के अनुसार अनुकूलित किया जाना चाहिए, ठीक वैसे ही जैसे डॉक्टर विभिन्न बीमारियों के लिए अपनी दवाओं का उपयोग करते हैं।

इस प्रकार धर्मनिष्ठ सम्राट की वह प्रिय इच्छा पूरी हुई, जिसकी उसने घोषणा की थी, यहाँ तक कि एक बार उसने स्वयं ईश्वर को गवाह तक बुलाया था—वह इच्छा 'अपने राज्य के सभी लोगों की ईश्वरत्व संबंधी शिक्षाओं को एक ही, सामान्य प्रणाली में एकजुट करने की'। यह महान विचार, जो सम्राट को उनके पवित्र धार्मिक भाव से प्रेरित हुआ था, और जिसके साकार होने को उन्होंने एक हार्दिक इच्छा के साथ अपने जीवन का कार्य बनाया था—महान कॉन्स्टेंटाइन का यह विचार, जो अपनी विषय-वस्तु की गरिमा और अपने दायरे की व्यापकता में प्रभावशाली था—अब सामूहिक चेतना में लाया गया और संपूर्ण ईसाई जगत की विरासत बन गया। केवल इतना ही नहीं – इस विचार को ईसाई जीवन में साकार करने के लिए, धर्मनिष्ठ ज़ार ने सबसे निश्चित मार्ग भी बताया: सार्वभौमिक परिषद। इस मार्ग का अनुसरण करके, मसीह के झुंड के भेड़ें – जो पहले से बुलाए गए हैं और जो अभी तक नहीं बुलाए गए हैं, दोनों ही – ईश्वर की कृपा से, बिना किसी विफलता के, स्वर्गीय पिता के प्रांगण में प्रवेश करती हैं, क्योंकि सच्चा जीवन (यूहन्ना 10:9)। और प्रेरितों के समान राजा का यह वास्तव में विजयी उत्सव उसी समय उनकी महान प्रसन्नता के लिए एक अनमोल खजाने की प्राप्ति से और भी गौरवान्वित हुआ: प्रभु के जीवन-दायक क्रूस का एक टुकड़ा, जिसे उनकी माता, रानी हेलेना ने उपहार के रूप में यरूशलेम से उनके लिए लाया था।

[3850] यूसेबियस। *द लाइफ़ ऑफ़ कॉन्स्टेंटाइन*, पुस्तक II, 65.

उसके बाद कॉन्स्टेंटाइन दस वर्षों से अधिक समय तक जीवित रहा, और अपने पूरे शासनकाल में उसने नाइसन धर्म-सत्य ([3851]) के प्रति अटूट निष्ठा बनाए रखी, और अपने राज्य में ईसाई भक्ति की भावना को बनाए रखने के लिए उत्साहपूर्वक प्रयास किया, और अपने जीवन में अनुकरण के योग्य उदाहरण प्रस्तुत किया। व्यापक सामान्य शिक्षा, और विशेष रूप से धार्मिक शिक्षा के धनी, उन्होंने विश्वास, भक्ति और ईसाई जीवन के संगठन के मामलों पर चर्चों के प्रमुखों के साथ व्यापक पत्राचार बनाए रखा; और वह अक्सर अपने महल में दरबारियों और लोगों की सभाओं को संबोधित करते थे, यहाँ तक कि 'दिव्य' शिक्षाएँ भी देते थे। उनकी लगन असाधारण थी; वह आलस्य को बर्दाश्त नहीं कर सकते थे: अपने बुढ़ापे में भी, उन्होंने अपने हाथ से विस्तृत विधायी अधिनियम लिखना बोझ नहीं समझा[3852] । सत्यवादी, स्वभाव से उदार और विनम्र, वह अपने शाही वैभव या भीड़ के जोरदार जयकारों से मोहित नहीं हुआ - वास्तव में, ऐसे जयकारे उसे ऊबाते भी थे। नैतिक विकास के उच्च स्तर पर खड़े होकर, कॉन्स्टेंटाइन चाहते थे कि उनसे संपर्क में आने वाले सभी लोगों को भी उसी स्तर पर लाया जाए। इस प्रकार, एक अवसर पर, उन्होंने एक भ्रष्ट कुलीन व्यक्ति को निम्नलिखित तरीके से सीधा किया: उसे अपनी उपस्थिति में आमंत्रित करने के बाद, उन्होंने उसका हाथ पकड़ा और कहा:

'हम अपनी लालच को किस हद तक फैलाएँगे?'

फिर, अपनी भाला से एक आदमी की ऊँचाई का एक वृत्त बनाते हुए, उन्होंने कहा:

'भले ही तुम दुनिया की सारी दौलत हासिल कर लो और धरती के सभी तत्वों पर अपना कब्ज़ा जमा लो, तब भी तुम इस जमीन के टुकड़े से आगे कुछ भी इस्तेमाल नहीं कर पाओगे—और शायद तुम इसके भी लायक नहीं हो!'

एक और उदाहरण: एक विशेष व्यक्ति (एक पुरोहित) की चापलूसी भरी बातें सुनने के बाद, जिसने ज़ार को 'धन्य' कहा और घोषणा की कि 'उसे इस जीवन में सभी पर पूर्ण प्रभुत्व दिया गया है, और अगले जीवन में वह परमेश्वर के पुत्र के साथ शासन करेगा', कॉन्स्टेंटिन ने चापलूस को जवाब दिया:

'तुम्हारे लिए यह बेहतर होगा कि तुम ज़ार के लिए प्रार्थना करो, कि वह भी आने वाले जीवन में परमेश्वर का सेवक बनने के योग्य समझा जाए।'

एक समकालीन वृत्तांत के अनुसार, ज़ार की परोपकारिता एक सतत धारा की तरह बहती थी: 'सुबह से लेकर रात तक वह उन लोगों को खोजता रहता था जिनके लिए वह कोई अच्छा काम कर सके'; वह भिखारियों और वास्तव में, उन सभी को जो सड़कों पर बेसहारा हो गए थे, पैसे, भोजन और अच्छी वेशभूषा प्रदान करता था; वह एक पिता के रूप में अनाथ बच्चों की देखभाल करता था; और उसने उन युवतियों का विवाह करवाया जो अपने माता-पिता को खो चुकी थीं, और उन्हें अपनी ही खजाना-गृह से दहेज प्रदान किया। वह विशेष रूप से ईस्टर के दिन बहुत से दान-पुण्य के कार्य करता था। अपने नए राजधानी में, कॉन्स्टेंटाइन ने ईस्टर की रात को शहर की सभी सड़कों पर लंबे मोम के दीपक जलाने की प्रथा शुरू की – 'जैसे वे अग्नि के दीपक हों' – ताकि रहस्यमयी रात स्वयं दिन से भी अधिक उज्ज्वल हो जाए; और जैसे ही सुबह हुई, कांस्टेनटाइन सभी गरीबों के लिए अपना दाहिना हाथ बढ़ाते, उनके बीच उपहार बांटते। उसी उदारता के साथ, सम्राट अपने परिवार के आनंद के अवसरों पर, जैसे कि अपने बेटों की शादियों पर, दान देते थे; – ऐसे अवसरों पर, आमंत्रित मेहमानों के लिए भव्य दावतें और भोज आयोजित किए जाते थे, और हर्षोल्लास महल से निकलकर सड़कों तक फैल जाता था – ज़ार महिला नर्तकों के समूह का गर्मजोशी से स्वागत करते थे। फिर भी, ज़ार की उपस्थिति में, हर बात में हमेशा पूर्ण शिष्टाचार का पालन किया जाता था, और कुछ भी अश्लील या आकर्षक करने की अनुमति नहीं थी।

ज़ार कॉन्स्टेंटिन के जीवन के अंतिम वर्ष, और विशेष रूप से अंतिम दिन, तथा उनका निधन, उनकी ईसाई भक्ति का उपयुक्त समापन थे। अपने निधन से बहुत पहले ही, कॉन्स्टेंटाइन ने इसकी तैयारी के लिए एक समाधि ( ) बनवाना शुरू कर दिया था। – अपनी नई राजधानी में, उन्होंने पवित्र प्रेरितों को समर्पित एक चर्च का निर्माण किया। इस चर्च को अन्य चीजों के अलावा, प्रेरितों के सम्मान में बारह अवशेष-कोष्ठों (reliquaries) से सजाया गया था, और इन अवशेष-कोष्ठों के बीच एक कब्र का निर्माण किया गया था। शुरू में यह स्पष्ट नहीं था कि यह मकबरा वहाँ क्यों बनाया गया था, लेकिन बाद में यह स्पष्ट हो गया और पता चला कि धर्मनिष्ठ सम्राट ने यह मकबरा अपने लिए बनवाया था। जैसे ही

[3851] काउंसिल के बाद भी एरियन विधर्म पूरी तरह से समाप्त नहीं हुआ। एरियन, अपनी चालाकी और धूर्तता से, कभी-कभी राजा का विश्वास जीत लेते थे और उसकी उदारता तथा शांति-प्रिय स्वभाव का फायदा उठाकर, समय-समय पर ऑर्थोडॉक्स पर अभद्र हमले करते थे; विशेष रूप से, संत अथेनासियस द ग्रेट को उनके हाथों बहुत कष्ट झेलना पड़ा।

[3852] यूसेबियस। *द लाइफ़ ऑफ़ कॉन्स्टेंटाइन*, पुस्तक IV:66, IV

कॉन्स्टेंटाइन ने अपनी शारीरिक शक्ति में कमी महसूस करना शुरू किया, मृत्यु का विचार उनके लिए गहन चिंतन का विषय बन गया।

337 में, कॉन्स्टेंटाइन ने कॉन्स्टेंटिनोपल में आखिरी बार बड़ी धूमधाम से ईस्टर मनाया और जल्द ही बीमार पड़ गए। यह महसूस करते हुए कि उसका अंत निकट था, वह पूरी तरह से भक्तिपूर्ण कार्यों में लग गया: वह अक्सर घुटने टेकता, और ईश्वर से भक्तिपूर्वक प्रार्थना करता; अपने चिकित्सकों की सलाह पर, वह इस समय गर्म स्नान से उपचार कराने के लिए एलेओनोपोलिस शहर चला गया।

फिर भी इस समय तक कॉन्स्टेंटाइन का बपतिस्मा नहीं हुआ था! आज यह हमें एक बहुत ही अजीब घटना लग सकती है, लेकिन ईसाई चर्च के शुरुआती दिनों में, कई लोगों का मध्य आयु या वृद्धावस्था में भी बपतिस्मा हुआ करता था; कुछ लोग इस महान संस्कार के प्रति गहरे सम्मान के कारण ऐसा करते थे, जिसके लिए वे लंबी तैयारी को आवश्यक मानते थे, – जबकि अन्य, एक दुष्ट इच्छा के साथ, पहले अपने पापी सुखों का अनुभव करना चाहते थे और केवल उसके बाद ही एक नए आध्यात्मिक जीवन में पुनर्जन्म लेना चाहते थे (ईश्वर ही उनका न्याय करे!)। कांस्टेंटिन, जिसने अपनी युवावस्था से ही अपने हृदय में मसीह को बसा रखा था और जो लंबे समय से अपनी आत्मा में एक मसीही बन चुका था, ने अपनी पापी प्रकृति के विनिम्र ज्ञान के कारण अपने बपतिस्मा को स्थगित कर दिया, और वह अपनी पूरी ज़िंदगी के प्रयासों से इसके लिए खुद को तैयार करना चाहता था। इसके अलावा, उसकी यह सच्ची इच्छा थी कि उसे यॉर्डन नदी के पानी में बपतिस्मा दिया जाए।

एलेओनोपोलिस में कोई राहत न पाकर और अपनी शारीरिक शक्ति को पूरी तरह से खत्म होती हुई महसूस करके, कॉन्स्टेंटाइन निकोमेडिया चला गया और वहाँ, बिशपों को बुलाकर, उनसे पवित्र बपतिस्मा देने के लिए कहा।

अपने बपतिस्मा से पहले, मरणासन्न सम्राट ने निम्नलिखित संबोधन दिया:

'वह लंबे समय से प्रतीक्षित क्षण आ गया है, जिसके लिए मैंने लंबे समय से तरस लगाई है और जिसके लिए मैंने उद्धार के घड़ी के रूप में प्रार्थना की है। हमारे लिए भी अमरत्व की मुहर प्राप्त करने और उद्धार की कृपा में भाग लेने का समय आ गया है। मेरा इरादा इसे नदी यॉर्डन के पानी में करने का था, जहाँ हमारे लिए एक उदाहरण के रूप में, उद्धारकर्ता स्वयं का बपतिस्मा हुआ था; लेकिन ईश्वर, जो जानते हैं कि क्या सबसे अच्छा है, ने मुझे यह यहाँ प्रदान किया है।'

पवित्र बपतिस्मा प्राप्त करने के बाद, कॉन्स्टेंटाइन 'आत्मा में आनंदित हुआ; उसका हृदय जीवंत आनंद से भर गया। बपतिस्मा के समय प्रकाश की तरह चमकने वाले सफेद वस्त्र पहनकर, उसने उन्हें अपनी मृत्यु तक कभी नहीं उतारा। वे सफेद चादरों से ढके बिस्तर पर ही चल बसे; जहाँ तक बैंगनी वस्त्रों—उस शाही सम्मान—की बात है, 'ईश्वर के सेवक' अब उन्हें छूना भी नहीं चाहते थे। अपनी आवाज़ उठाकर, ज़ार ने अपनी अंतिम धन्यवाद-प्रार्थना इन शब्दों के साथ समाप्त की:

'अब मैं स्वयं को सच्चे अर्थों में धन्य मानता हूँ, क्योंकि मुझे अटूट विश्वास है कि मैंने दिव्य प्रकाश में भाग लिया है और मुझे अनंत जीवन प्रदान किया गया है।'

महान और प्रेरितों के समकक्ष कांस्टेनटाइन का निधन हो गया, उन्होंने अपने राज्य को अपने तीन बेटों को विरासत में दिया, वर्ष 337 में, अपने शासन के बत्तीसरे वर्ष में, पेंटेकोस्ट के दिन ही, पचहत्तर वर्ष की आयु में। उनके शरीर को बड़ी भव्यता के साथ उनके द्वारा स्थापित कॉन्स्टेंटिनोपल शहर में ले जाया गया और उनकी इच्छानुसार, पवित्र प्रेरितों के चर्च में, उनके द्वारा स्वयं तैयार की गई कब्र में सुलाया गया। अब वह हमारे ईश्वर मसीह के अनंत राज्य में एक शाश्वत जीवन जीते हैं, जिन्हें पिता और पवित्र आत्मा के साथ, युगानुयुग सम्मान और महिमा प्राप्त हो। आमेन।

ट्रोपारियन, स्वर 8:

हे प्रभु, स्वर्ग में अपने क्रूस का प्रतिबिंब देखकर, और जैसे पौलुस ने अपना बुलावा मनुष्यों से नहीं पाया, अपने राजदूत, राजा को उस नगर में स्थापित करें जो आपके हाथ में राज करता है: मानवजाति के एकमात्र प्रेमी, हे परमेश्वर की माता की प्रार्थनाओं के द्वारा, उन्हें सदा शांति में बचाएँ।

कॉन्टाकयिन, स्वर 3:

आज कॉन्स्टेंटनि, अपनी माता हेलेना के साथ, सर्व-सम्माननीय वृक्ष, क्रूस को प्रकट करते हैं, जो सभी यहूदयिों के लिए लज्जा का स्रोत है, और वश्विासयिों के राजाओं के शत्रुओं के वरिुद्ध एक हथयिार है: हमारे लिए यह एक महान चह्निन के रूप में प्रकट हुआ, और युद्ध में एक भयंकर चह्निन के रूप में।

पवत्रि और वश्विासयोग्य राजकुमार कॉन्स्टेंटनि और उनके पुत्रों: मुरोम के चमत्कार-कर्ता माइकल और थयिोडोर की स्मृति।

21 मई को स्मरणोत्सव

ये पवत्रि और वश्विासयोग्य महा राजकुमार कन्स्टेन्टाइन स्वयितोस्लावचि महा राजकुमार व्लादमिीर की वंशज थे, जन्हिोंने पवत्रि बपतस्मिा से रस की भूमि को बपतस्मिा दयिा था। 1192 में,[3853] अपने बेटों, राजकुमारों माइकल और थयिोडोर के साथ, शेवा के गौरवशाली शहर से रयिाज़ान क्षेत्र के मुरोम शहर में आए। उस समय, इस शहर में ऐसे मूर्तपिूजक रहते थे जन्हिें अभी तक सच्चे ईश्वर[3854] के ज्ञान से प्रबुद्ध नहीं कयिा गया था। संत राजकुमार कॉन्स्टेंटनि से बहुत पहले, उनके रश्तिेदार, धर्मपरायण राजकुमार ग्लेब, जो ग्रैंड प्रंसि व्लादमिीर के पुत्र थे—जन्हिें मुरोम शहर पर शासन करने के लिए नयिुक्त कयिा गया था—ने उस पर नयिंत्रण करने और इसके नविासयिों को पवत्रि बपतस्मिा स्वीकार करने के लिए मनाने का बहुत प्रयास कयिा था, लेकनि वे ऐसा करने में असमर्थ रहे और दो पोप्रीश्ची की दूरी पर, उससे दूर दो साल तक रहे[3855] , और फरि स्व्यातोपोलक ने धूर्तता से उसे अपने पति के पास बुलाया, और रास्ते में उसकी हत्या कर दी गई[3856] । और यह पवत्रि और धर्मपरायण राजकुमार कॉन्स्टेंटनि, अपने बेटों और उसके साथ मौजूद सेना के साथ, शहर के ठीक बाहर मुरोम के लोगों के साथ युद्ध में लगा, और एक बहुत बड़ा युद्ध हुआ, जसिमें धर्मपरायण राजकुमार माइकल मारे गए। इसके बाद, उन्होंने फरि से शहर के नविासयिों के साथ युद्ध कयिा और उन्हें हराकर, मुरोम पर कब्ज़ा कर लयिा और वहाँ शासन करना शुरू कर दयिा।

सबसे पहले, उन्होंने शहर के पुराने पहाड़ी इलाके में सबसे पहला चर्च बनाया, जो परमेश्वर की परम पवत्रि माता की घोषणा को समर्पति था, और अपने मारे गए बेटे, धर्मपरायण राजकुमार माइकल को वहीं दफनाया; फरि उन्होंने शहर के मूर्तपिूजक नविासयिों को ईसाई धर्म में परविर्तति कयिा और उन्हें पवत्रि बपतस्मिा दयिा। इस प्रयास में अपनी सफलता के लिए ईश्वर को धन्यवाद देने के बाद, पवत्रि राजकुमार ने बाद में कई अन्य चर्च बनाए[3857] और अपने शहर में एक बशिप की सीट स्थापति की। तब उन्होंने सच्चे वश्विास और सभी बातों में नरि्दोषता से अपना जीवन जयिा, हमेशा गरीबों और अनाथों के रक्षक के रूप में कार्य कयिा, और जल्द ही प्रभु के पास चले गए। उनके नधिन से लोगों में बहुत दुख हुआ। सभी ने एक पति के रूप में उनके शोक मनाया और उन्हें उनकी बनाई हुई घोषणा के चर्च में, अपने बेटों, धर्मपरायण राजकुमार माइकल और थयिोडोर के पास दफनाया।

[3853] कॉन्स्टेंटनि-यारोस्लाव स्वयितोस्लावचि, चेरनगिोव के पहले राजकुमार और बाद में कीव के ग्रैंड प्रंसि (1073–1077) स्वयितोस्लाव यारोस्लावचि के सबसे छोटे बेटे, यारोस्लाव महान के पोते और सेंट व्लादमिीर के परपोते थे। 1097 में ल्यूबेच राजकुमारों की परषिद में राजकुमारों के एक नरि्णय द्वारा, मुरोम कॉन्स्टेंटनि-यारोस्लाव को प्रदान कयिा गया था। वह संत ग्लेब के बाद मुरोम के पहले राजकुमार और मुरोम तथा रयिाज़ान के राजकुमारों के बाद के वंश के संस्थापक थे। संत कॉन्स्टेंटनि ने 1096 से लेकर 1129 में अपनी मृत्यु तक मुरोम पर शासन कयिा। प्रोलॉग में वर्ष 1192 (1092?) को पवत्रि राजकुमार के मुरोम आगमन का वर्ष बताया जाना एक त्रुटि माना जाना चाहिए।

[3854] मुरोम – उत्तरी रोस्तोव-सुज़दल क्षेत्र का केंद्र, जो अब व्लादमिीर गवर्नरेट में एक तुच्छ जलिा शहर है – प्राचीन काल में फनिो-उग्रकि जनजातयिों, वशिेष रूप से मुरोमा, की बस्तयिों में से एक था, मेरयिन और मॉर्डवनि्स; इस तथ्य के बावजूद कि शहर में मूर्तपिूजक वदिेशी रहते थे, यहाँ पहले से ही स्पास्की मठ था, जो आज भी मौजूद है। इसका उल्लेख लाव्रेन्तवि क्रॉनकिल में वर्ष 1096 के अंतर्गत मलिता है। ऐसा मानने का कारण है कि इसकी स्थापना चेर्नगिोव के बशिपों के प्रयासों से हुई थी, क्योंकि मुरोम चेर्नगिोव के राजकुमारों के अपानगे (appanage) में आता था।

[3855] 'पॉप्रश्चि' दूरी की एक इकाई है जो 690 सैज़ेन्ज़ के बराबर होती है। ऐसा माना जाता है कि मुरोम के लोगों से प्रतरिोध का सामना करने के बाद, संत ग्लेब मुरोम से 12 वर्स्ट दूर इश्ने नदी पर बस गए।

[3856] संत राजकुमार ग्लेब का 1015 में नधिन हो गया। उनका पर्व 6 सतिंबर को मनाया जाता है।

[3857] इस प्रकार, उन्होंने संत बोरसि और ग्लेब को समर्पति एक चर्च का नरि्माण कयिा।

कुछ समय बाद, पवित्र राजकुमार कॉन्स्टेंटिन के एक रिश्तेदार, धर्मनिष्ठ राजकुमार जॉर्ज यारोस्लावि ने परमेश्वर की परम पवित्र माता के घोषणा के मूल चर्च[3858] को पुनर्स्थापित किया, और उस समय से प्रभु ने पवित्र राजकुमारों, कॉन्स्टेंटिन और उनके बेटों को महिमामंडित किया, क्योंकि उनके मकबरों पर चमत्कार होने लगे।

कई साल बाद, 1553 में, सभी रूस के धर्मपरायण ज़ार और ग्रैंड प्रिंस, इवान वासिलीविच ने, काज़ान शहर की ओर नास्तिक टाटर्स के खिलाफ मार्च करते समय, मुरोम शहर में रुके और वहाँ दो सप्ताह तक रहे । पवित्र चमत्कार करने वालों की ताबूतों पर प्रार्थना सेवा करने के बाद, उन्होंने यह संकल्प लिया कि यदि वे अभियान से विजयी होकर लौटे तो वे एक मठ बनाएँगे। ईश्वर की मदद से, उन्होंने कज़ान के गौरवशाली शहर पर कब्ज़ा कर लिया और, अपने शाही शहर मास्को लौटने पर, पवित्र चमत्कार करने वालों की ताबूतों के बगल में एक पत्थर का चर्च बनाने का आदेश दिया। और जब उन्होंने इस चर्च की नींव खोदनी शुरू की, तो उन्हें पवित्र राजकुमारों के अवशेष अक्षुण्ण और पूरी तरह से क्षति-मुक्त मिले। चर्च के निर्माण के पूरा होने पर, चर्च की दीवार में एक विशेष कोना बनाया गया, जहाँ उनके पवित्र अवशेषों को रख दिया गया। तब धर्मनिष्ठ ज़ार और महा राजकुमार जॉन वासिलीविच, सर्व रूस के निरंकुश शासक ने, रियाज़ान के बिशप गुरी को नव-निर्मित चर्च का अभिषेक करने का आदेश दिया और अभिषेक के लिए विभिन्न धार्मिक पात्र भेजे। चर्च का अभिषेक किया गया, इसके बगल में एक मठ स्थापित किया गया, और इस घटना का बड़े धूमधाम से जश्न मनाया गया। उस समय, पवित्र राजकुमारों की कब्रों पर कई चमत्कार हुए, जो मसीह ईश्वर की महिमा के लिए आज भी जारी हैं।

ट्रोपारियन, स्वर 4:

कॉन्स्टेंटिन आज आनंदपूर्वक हर्षित है[3859] , पवित्र त्रिमूर्ति के सिंहासन के सामने खड़ा होकर, अपनी मातृभूमि को आध्यात्मिक वैभव से दमकते हुए देख रहा है[3860] , उसके पीछे उसके पुत्र माइकल और थियोडोर हैं: और तीनों हमारे आत्माओं के लिए एक साथ प्रार्थना करते हैं।

कॉन्टाकियन, स्वर 8:

साहसी सेनापति और ऑर्थोडॉक्स राजकुमार कॉन्स्टेंटिन को, उनके पुत्र के साथ, उनका देश स्तुति में पुकारता है, उन्हें अपना नेता और रक्षक मानकर: क्योंकि उनके द्वारा वह मूर्तिपूजा के भ्रम और कलंक से मुक्त हो गया है। इसी कारण हम उनसे इस प्रकार पुकारते हैं: आनंदित हो, अति धन्य राजकुमार कॉन्स्टेंटिन।

4 जून

22 मई (पुराना कैलेंडर)

पवित्र शहीद वासिलिस्क का कष्टकथा

22 मई को स्मरणोत्सव

पवित्र शहीदों यूट्रोपियस और क्लियोनिकस की शहादत के बाद, जिनके साथ संत बैसिलिस्क ने भी कई कष्ट सहे थे (हालांकि बाद वाले जीवित रहे, उन्हें जेल में रखा गया था), और गवर्नर एस्क्लेपियोडोटास की मृत्यु के बाद भी, उत्पीड़क मैक्सिमिनस और मैक्सिमिनस द्वारा भेजा गया, अग्रीपा नाम का एक और गवर्नर, पोंटस प्रांत में आया, अग्रेप्पा नामक एक अन्य राज्यपाल, उत्पीड़क मैक्सिमिनस और मैक्सिमिनस द्वारा भेजा गया, पोंटस के क्षेत्र में

[3858] यूरी यारोस्लावि द्वारा घोषणा चर्च का पुनर्निर्माण 1351 में हुआ था।

[3859] अर्थात् यह आनंदपूर्वक मनाता है।

[3860] अर्थात् मसीह में ऑर्थोडॉक्स धर्म की स्वीकारोक्ति और ईसाई भक्ति में प्रयासरत।

पहुँचा, जिसे उत्पीड़न जारी रखने और मसीह में विश्वास करने वालों को मार डालने का आदेश मिला था। अमासिया शहर में उसके आगमन से पहले ही, संत बेसिलिस्क, जिसे वहाँ जेल में रखा गया था, ने आँसू भरी प्रार्थना करते हुए ईश्वर से ये शब्द कहे: 'हे प्रभु यीशु मसीह, मुझे याद रखना और मेरे दुख के अंतिम क्षण तक मुझे न भूलना, बल्कि मुझे शीघ्र ही शहीद का मुकुट प्राप्त करने में मदद करो, ताकि मैं उन पवित्र पुरुषों से अलग न हो जाऊँ जो मेरे साथ बंदी बनाए गए थे, जिन्होंने मुझसे पहले कष्ट सहे और शहीद का मुकुट प्राप्त किया।'

[3861]आधी रात को प्रभु ने उसे एक स्वप्न में दर्शन दिया और कहा: 'मैं तुम्हें याद रखता हूँ और तुम्हें कभी नहीं भूलूँगा; तुम्हारा नाम (शहीदों की सूची में) उन लोगों से पहले लिखा है जिन्हें तुम्हारे साथ उठाया गया है। उनके बाद तुम्हें जो कष्ट सहने होंगे, उस पर दुखी मत हो, क्योंकि तुम बहुतों को चेतावनी दोगे; और मैं तुम्हारी स्मृति को पूरे ब्रह्मांड में गौरवशाली बनाऊँगा।' अब जाओ और अपनी माँ, अपने भाइयों और अपने रिश्तेदारों को आखिरी बार विदा कहो; और जब तुम लौटोगे, तो तुम तुरंत शहीद का मुकुट प्राप्त करोगे और कोमाना में दफनाए जाओगे। उन यातनाओं से मत डरो जिनसे तुम गुज़रोगे, क्योंकि मैं तुम्हारे साथ हूँ, और मानव द्वेष तुम्हारी आत्मा को नष्ट नहीं कर सकता।'

जागने पर, संत वासिलिस्क आनंद से भर गए और उन्होंने ईश्वर का धन्यवाद किया। फिर उन्होंने देखा कि जेल के दरवाज़े खुले हुए थे। जैसे ही भोर होने लगी, उन्होंने अपनी रखवाली कर रहे सैनिकों और मुख्य जेलर से कहा:

'मुझे चार दिन की आज़ादी दें, ताकि मैं अपने गाँव कुमियाल में रहने वाली अपनी माँ और अपने भाइयों से विदा ले सकूँ; और अपनी वापसी पर, मैं अपने सच्चे पिता, प्रभु यीशु मसीह के पास जाऊँगा।'

सैनिकों और जेलर ने उनसे उत्तर दिया:

'तुम्हारा परमेश्वर, जिसकी तुम निरन्तर सेवा करते हो, गवाह हो कि यदि हमें राज्यपाल के आने का भय न होता, तो हम तुम्हें पूरी तरह से जेल से रिहा कर देते।'

संत ने उत्तर दिया:

'मैं पूरी तरह से रिहा नहीं होना चाहता, लेकिन, जैसा कि मैंने कहा है, मैं केवल जाकर अपनी माँ, अपने भाइयों और अपने रिश्तेदारों को अलविदा कहूँगा, क्योंकि मेरे प्रभु ने मुझे ऐसा करने की आज्ञा दी है।'

सैनिकों ने ज़िद करते हुए कहा, 'हमें डर है कि तुम्हारी रिहाई के तुरंत बाद, हमें तुम्हें वापस बुलाने के लिए कहा जा सकता है, क्योंकि, जैसा कि हमने सुना है, राज्यपाल आज शहर में आने वाले हैं, और सभी कैदियों का नाम अदालत के रजिस्टर में दर्ज होता है।'

संत वासिलिस्क ने इस प्रकार उत्तर दिया:

'यह मेरे ईश्वर की इच्छा है कि मैं अपने पैतृक गाँव जाऊँ; अत; यदि आप सहमत हैं, तो आप में से कुछ मेरे साथ चलें और मेरे साथ वापस लौटें।'

तब सैनिकों ने उसकी प्रार्थना मान ली, और उनमें से कुछ इकट्ठा होकर बेसिलिस्क के साथ उसके गाँव के लिए रवाना हो गए।

संत का अपने भाइयों (उनके तीन भाई थे) और अपनी माँ द्वारा बड़े आनंद के साथ स्वागत किया गया, और सैनिकों का उनके घर में बड़े सम्मान के साथ स्वागत किया गया।

अगली सुबह, संत ने अपने सभी रिश्तेदारों को बुलाया और उन्हें आत्मा के लिए लाभदायक बातों पर विस्तार से उपदेश दिया, साथ ही उन्हें ईसाई धर्म के सिद्धांतों की सच्चाइयों के बारे में भी बताया; उन्होंने उन्हें विस्तार से यह भी सिखाया कि केवल दुख-कष्ट के माध्यम से ही हम मसीह के राज्य में प्रवेश कर सकते हैं।

इस प्रकार, सभी को सांत्वना देने और अपने रिश्तेदारों को अंतिम बार चूमने के बाद, संत ने घोषणा की:

'भाइयो, पितृजनो और संतानो, मसीह में! हमारे प्रभु यीशु मसीह में अपने विश्वास में दृढ़ रहो और किसी भी परिस्थिति में उससे मुंह न मोड़ो, क्योंकि संसार और जो कुछ भी उसमें है, वह सब एक छाया है जो शीघ्र ही मिट जाती है; परन्तु प्रभु सदा के लिए रहता है। मैं आपसे विनती करता हूँ कि आप हम सभी के प्रभु - ईश्वर - से मेरे लिए प्रार्थना करें, कि वह मुझे उन परीक्षाओं और कष्टों को सहने की शक्ति दे, जैसे कि संत थियोडोर टायरन, यूट्रोपियस और क्लियोनिकिस ने, जिन्हें मेरे साथ बंदी बनाया गया था, सहन की। हे पुरुषों, पत्नियों, भाइयों, बहनों और बच्चों, सावधान हो जाओ; क्योंकि मैं तुमसे जा रहा हूँ, और तुम मुझे इस क्षणिक जीवन में फिर कभी नहीं देखोगे।

[3861] यह शहर अमासिया से चार दिन की यात्रा पर स्थित था।

जब संत अपनी बात समाप्त कर चुके, तो एक बड़ा शोर और रोना-धोना मच गया, और सभी ने संत से विनती करना शुरू कर दिया:

'जब आप अपना पवित्र जीवन पूरा कर लें, तो हमारे और सभी ईसाइयों के लिए प्रभु से प्रार्थना करें, कि यातना देने वालों द्वारा शुरू किया गया ऑर्थोडॉक्स धर्म का उत्पीड़न समाप्त हो जाए और मूर्तिपूजा नष्ट हो जाए; और मसीह का अनुग्रह सारी पृथ्वी पर प्रकाशित हो।'

इसके बाद, संत बैसिलिस्क सैनिकों के साथ अपनी जेल की कोठरी में लौटने के लिए रवाना हुए।

उस समय, राज्यपाल अग्रीपा अमासिया शहर में पहुँचे और सबसे सम्मानित नागरिकों को बुलाकर, उनके साथ पेटासन नामक एक मूर्तिपूजक मंदिर में गए[3862] , और फिर सेरापियन नामक दूसरे मंदिर में गए[3863] , और अपने अशुद्ध देवताओं को बलिदान चढ़ाया। अगली सुबह, राज्यपाल मुकदमे की जगह गया और वहाँ बेड़ियों में जकड़े लोगों के बारे में पूछताछ की; सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण, उसने वासिलिस्क के बारे में पूछा, क्योंकि उसने उसके बारे में सुना था और वह उसे शुरू में ही अपनी अदालत के सामने लाना चाहता था।

शहर का राज्यपाल वासिलिस्क को राज्यपाल के सामने लाने के इरादे से कालकोठरी में गया, लेकिन उसे वहाँ न पाकर, उसने कालकोठरी के पहरेदार को पकड़ लिया, उसे बाँध दिया, और उसे अदालत के सामने पेश किया। राज्यपाल ने उसे यातनाएँ देने के बाद पूछा:

'तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई कि तुम उस दुश्मन को, जो हमारे देवताओं का शत्रु और राजा की आज्ञाओं का उल्लंघनकर्ता था, जेल से रिहा कर दो?'

'आज दूसरे दिन हो गए हैं,' जेलर ने उत्तर दिया, 'जब से वासिलिस्क और उसके योद्धा अपने बसेरे के लिए रवाना हुए।'

'मैं तुम्हें मौत की सज़ा दिलवा दूँगा,' क्रोध से उबलते हुए राज्यपाल ने कहा, 'जब तक तुम मेरे सामने उस आदमी को नहीं लाते जिसने हमारे देवताओं का अपमान किया है!'

'चौथे दिन मैं उसे आपके सामने लाऊँगा,' जेलर ने उत्तर दिया।

और तुरंत राज्यपाल ने उस पहरेदार के साथ एक magistrate[3864] को भेजा, जो दुष्ट और उग्र स्वभाव का व्यक्ति था, साथ ही कुछ सैनिक भी भेजे, और उसे निम्नलिखित निर्देश दिए:

'तब ही मैं विश्वास करूँगा कि तुम हमारे देवताओं के प्रति उत्साही व्यक्ति हो, जब तुम उस ईश्वरनिन्दक को पकड़कर मेरे सामने लाओगे। उसे कोमाणी भेजो, क्योंकि मैं स्वयं वहाँ जा रहा हूँ।'

गवर्नर की उपस्थिति से निकलने के बाद, मैजिस्ट्रियन ने काँसे के जूते बनवाए, जिनमें तेज, आयताकार लोहे के कीलों की भरमार थी, और एक जेलर तथा सैनिकों को साथ लेकर, शहीद के लिए तैयार की गई भारी लोहे की ज़ंजीरों को एक गधे पर लादकर, बेसिलिस्क के पैतृक गाँव के लिए रवाना हो गया।

'मैं भी निकल पड़ा,' कहते हैं इसके बाद की घटनाओं के वृत्तांतकार, संत यूसिग्नियस[3865] , 'यह आशा लेकर कि मैं संत बैसिलिस्क के कष्ट और मृत्यु का साक्षी बन सकूँ। उस गाँव में पहुँचने पर, उन्होंने शहीद को पकड़ लिया, जो पहले ही अपना घर छोड़कर अपनी कोठरी में लौटने के लिए अमासिया शहर की ओर जा रहे थे, और उन्हें दोहरी ज़ंजीरों से बाँध दिया; उन्होंने उसकी गर्दन में लोहे की ज़ंजीर डाल दी, और उसके पैरों में कीलों से जड़ी तांबे की जूतियाँ पहना दीं, जिससे कीलें संत के पैरों में हड्डी तक घुस गईं, और उसके घायल पैरों से खून की धाराएँ बहने लगीं; ऐसा करते हुए, यातना देने वालों ने क्रीस के शहीद को कोमाना शहर की ओर ले जाते समय बुरी तरह पीटा। उनकी माँ, भाइयों और रिश्तेदारों ने उन्हें रोते हुए विदा किया। विदा लेते समय उनकी माँ ने उनसे कहा:

[3862] यह स्पष्ट रूप से मिस्र-हेलेनिस्टिक देवता प्टाह को समर्पित एक मंदिर का उल्लेख करता है – जो मृतकों के देवता हैं।

[3863] सेरापियन, सेरापिस को समर्पित एक मंदिर है – जो एक मिस्र-हेलेनिस्टिक देवता हैं और प्राचीन यूनानी देव ज़ूस के समकक्ष हैं। सेरापिस और (उपरोक्त) देवता प्टाह दोनों मिस्र धर्म के मूल देवता थे। हालाँकि, पूर्वी धर्मों (ईसा पूर्व दूसरी शताब्दी) के प्रति आकर्षण के दौर के दौरान, यूनानियों ने इन देवताओं का बहुत सम्मान किया और उनके सम्मान में कई मंदिर बनाए।

[3864] एक मैजिस्ट्रियन प्रांतीय राज्यपाल का सहायक होता था, जिसके पास अपने अधीन एक निश्चित संख्या में सैनिक होते थे, जिनके साथ वह आमतौर पर राज्यपाल द्वारा विभिन्न मिशनों पर प्रांत में भेजा जाता था।

[3865] पवित्र शहीद यूसिग्निउस, जिन्होंने पवित्र शहीद बैसिलिस्क के जीवन और कार्यों का वर्णन किया, ने तीन रोमन सम्राटों: डायोक्लेटियन (284–305), मैक्सिमियिन (305–311) और कॉन्स्टेंटाइन महान के अधीन 60 वर्षों तक एक सैनिक के रूप में सेवा की।

'मेरे प्रयि पुत्र! जसि मसीह से तुमने प्रेम कयिा है, वह इस शहादत के कार्य में तुम्हारा सहायक हो। यहाँ तुम्हारा जीवन छोटा होगा, लेकनि आने वाले युग में अनंत जीवन तुम्हारा इंतजार कर रहा है; यद्यपि तुम अब भयानक यातनाएँ सह रहे हो, तुम हमारे ईश्वर मसीह से एक महमिामय मुकुट प्राप्त करोगे; दुष्ट मनुष्य तुम्हें पृथ्वी पर यातनाएँ देंगे, फरि भी संसार के स्वर्गदूत तुम्हें स्वर्ग में स्वागत करेंगे; तुम्हें अपराधी ठहराया गया है, फरि भी वही अपराधी जसिे मसीह के साथ सूली पर चढ़ाया गया था, तुम्हें स्वर्ग में स्वागत करेगा; नश्वर और क्षणभंगुर राजा तुम्हारा जीवन छीन लेते हैं, फरि भी शाश्वत ईश्वर तुम्हारे जीवन को पुनर्स्थापति करेंगे और तुम्हें स्वर्गदूतों की सेनाओं में शामलि करेंगे। और हे मेरे प्रयि पुत्र, प्रभु के उस मार्ग पर जहाँ तू यात्रा कर रहा है, हमको याद रखना!

यह कहने के बाद, उसकी माँ अपने घर लौट गईं, और अपने पुत्र के लिए प्रभु से प्रार्थना करने लगीं कि वह उसे साहस के साथ अपने दुखों को सहने के लिए बल प्रदान करें।

तथापि संत ने पीछे मुड़कर अपने तीन भाइयों को अपने पीछे आते हुए और अपने रश्तिेदारों तथा बहुत से लोगों को अपने लिए रोते हुए देखकर, उनसे इन शब्दों में घर लौटने का आग्रह कयिा:

'मेरे लिए मत रोओ, बल्कि प्रभु से प्रार्थना करो कि वह मुझे शैतान को हराने और उसके सेवकों को लज्जति करने की शक्ति दे।'

तब उसने सभी को चूमा और उन्हें लौटने के लिए आग्रह करते हुए कहा:

'हम पुनरुत्थान और अनंत जीवन के दनि फरि मलिेंगे।'

लेकनि जो संत को वदिा करने आए थे, वे वापस नहीं जाना चाहते थे और वे रोते हुए उनका पीछा करने लगे।

और एक बार फरि संत ने इन शब्दों से उन्हें प्रोत्साहति कयिा:

'तुम अपने रोने और आँसुओं से मेरे हृदय को क्यों क्लेश पहुँचा रहे हो? हे, काश मुझे हमारे प्रभु यीशु मसीह के लिए कई बार मरने की अनुमति मिलिती! मैं तुमसे वनिती करता हूँ, लौट जाओ और मेरे लिए ईश्वर से प्रार्थना करो!'

लेकनि चूँकि वे फरि भी लौटने से इनकार कर रहे थे, तो मजस्ट्रिेट ने उनसे कहा:

'मैं अपने बादशाहों की सलामती की कसम खाता हूँ कि, अगर तुम वापस नहीं लौटे, तो मैं तुम सबको बाँधकर राज्यपाल के पास ले जाऊँगा।'

लेकनि जब उन्होंने भी उसकी बातों पर ध्यान नहीं दयिा, तो मजस्ट्रिेट और उसके सैनकिों ने उन्हें पीटना शुरू कर दयिा और वे उन्हें संत से मुश्कलि से ही दूर भगा सके।

जब उन्हें इस प्रकार ले जाया जा रहा था, तो संत ने बहादुरी से लोहे की जंजीरों का भार सहन कयिा और अपने पैरों के दर्द को वीरतापूर्वक सहन कयिा, जो तांबे के जूतों में ठूंसे गए तेज कीलों से कई जगहों पर छेदति हो गए थे, और उनका रास्ता खून से लथपथ हो गया था। उन्होंने स्वयं आनंदपूर्वक गाया:

– 'यदि एक सेना भी मुझ पर चढ़ाई करे, तो भी मेरा हृदय न डरेगा' (भजन संहति 26:3), क्योंकि हे प्रभु मसीह, आप मेरे साथ हैं।

संत ने गीत और प्रार्थना में प्रभु को संबोधति करते हुए और भी बहुत कुछ कहा। न्यायाधीश और उसके साथी, यह देखकर कि शहीद कीलें लगी जूतों में अपने पैरों के बावजूद सहजता से चल रहे थे, बहुत हैरान थे; लेकनि प्रभु पवत्रि शहीद के साथ थे, उनके दुखों को कम कर रहे थे।

जब वे डाकोज़ारयिा नामक गाँव में पहुँचे, तो मजस्ट्रिेट और सैनकिों ने वश्राम करना चाहा, क्योंकि दनि का समय था और गर्मी भी थी। उस गाँव की स्वामनिी, ट्रोइयाना नामक एक वधिवा, ने सैनकिों के साथ आए मजस्ट्रिेट को देखकर उन्हें भोजन के लिए अपने घर आमंत्रति कयिा; कुल मलिाकर वे चालीस लोग थे। जब वे अंदर आए, तो उसने उनके लिए सभी आवश्यक व्यवस्थाएँ कीं। इसलिए उन्होंने खाया, पयिा और आनंद मनाया, जबकि पवत्रि शहीद वासलिस्कि, जनिके हाथ पीठ पीछे बँधे हुए थे, उनके घर के द्वार के पास उगे एक सूखे ओक के पेड़ से बँधे हुए थे। पुरुषों, महलिाओं और बच्चों की एक बड़ी भीड़ संत के चारों ओर इकट्ठा हो गई। उन्हें भारी बेड़यिों में जकड़ा हुआ और तपती धूप में बंधा हुआ, और उनके पैरों से बहते हुए खून को देखकर, वे दयालु हो गए और उन्होंने उनके प्रति अपनी सहानुभूति व्यक्त की। तथापि संत ने ईश्वर से प्रार्थना करते हुए पुकारा: 'प्रभु, जैसे आपने जेल में यूसुफ (उत्पत्ति 41) पर, सहिों के बलि में दानयिेल (दानयिेल 6) पर, और बेबीलोन की भट्टी में तीन जवानों (दानयिेल 3) पर कृपा की थी, वैसे ही मुझ पर भी कृपा करें।' और जैसे आपने सुसन्ना (दानयिेल 13) पर दया दखिाई, जसिे दुष्ट बड़ों की चालाकी का शकिार बनाया गया था, और पतरस को जेल से छुड़ाया (प्रेरतिों के काम 5:17–20), और थैक्ला को अपवत्रिता से बचाया, उसी प्रकार मुझ पर भी, आपके वनिम्र

और अयोग्य सेवक पर, अपनी अद्भुत दया दिखाएँ और अपने परम पवित्र नाम की महिमा के लिए अपने चमत्कार प्रकट करें!'

जब संत ने अपनी प्रार्थना समाप्त कर ली, तो अचानक एक भूकंप आ गया, और ऊपर से एक आवाज सुनाई दी, जो कह रही थी: 'डरो मत, मैं तुम्हारे साथ हूँ!'

और अचानक शहीद के पैरों पर लगे काँसे के जूते ऐसे पिघल गए मानो आग के सामने मोम; संत के बंधन टूट गए, और सूखी ओक की लकड़ी हरी हो गई, उसने अपनी अनेक, मोटी शाखाएँ संत के ऊपर फैला दीं और चारों ओर एक विशाल क्षेत्र पर अपनी छाया डाली। और उस स्थान पर जहाँ संत खड़े थे, और जहाँ उनकी खून से धरती रँगी हुई थी, वहाँ पानी का एक झरना बहने लगा।

इसके बाद, संत ने इन शब्दों के साथ ईश्वर का धन्यवाद किया: 'हे प्रभु यीशु मसीह, अनंत वचन और अकल्पनीय तथा अकथनीय पिता के पुत्र, जिन्होंने पृथ्वी पर उतरकर मनुष्य बनने की कृपा की, ताकि आप हमें प्राचीन यातनादाता, शैतान से छुड़ा सकें, और हमें उसकी सभी चालाकियों से बचा सकें; जिन्होंने हमें स्वर्ग तक उठाया, जबकि उसे पैरों तले कुचल दिया और उसे गर्ता में रहने के लिए दंडित किया; जिन्होंने हमें नया जीवन प्रदान किया, – मैं किस मुख से आपकी महिमा करूँ, किस शब्दों में अपनी भावनाएँ आपके समक्ष व्यक्त करूँ, मैं आपकी स्तुति कैसे करूँ और आपके महान कार्यों तथा शक्ति का प्रचार कैसे करूँ, जो आपने अब मुझ पर, अपने सेवक पर प्रकट की है, जैसे आपने पहले अपनी संतों, यूट्रोपिया और क्लियोनिस पर प्रकट की थी, जब उन्हें गवर्नर एस्क्लेपियोडोټس के आदेश पर यातनाएँ दी गई थीं! सचमुच, मैं कौन हूँ, जो अयोग्य हूँ, कि आपने मुझ पर इतनी बड़ी और अद्भुत दया दिखाई हो; स्वयं पृथ्वी, आपकी शक्ति का साक्षी बनकर, काँप उठी।'

भूकंप से भयभीत होकर, मजिस्ट्रेट और सैनिक उस घर से भाग गए और घटित चमत्कारों को देखकर वे बड़ी हैरानी में पड़ गए। उनमें से कुछ ने कहा कि ऐसा केवल प्रतीत हुआ है, जबकि अन्य इसे जादू-टोना मानते थे; लेकिन संत के चारों ओर खड़े लोग इस पर भयभीत होकर चकित हो गए और मसीह परमेश्वर की शक्ति की महिमा करने लगे। और बहुत से लोग मसीह में विश्वास करने लगे, यह कहते हुए: 'देखो, एक पवित्र व्यक्ति हमारे स्थान को पवित्र करने के लिए परमेश्वर द्वारा यहाँ भेजा गया है।'

वे संत के पास एक बिस्तर पर लेटे हुए लकवाग्रस्त व्यक्ति को लाए; जब मसीह के शहीद ने उसे छुआ, तो वह लकवाग्रस्त व्यक्ति तुरंत ठीक होकर उठ खड़ा हुआ, और अपना बिस्तर उठाकर घर चला गया, ईश्वर की महिमा करता हुआ; वे कोढ़ी भी लाए, और उन्होंने उन्हें भी छूकर चंगा कर दिया; जल भय और बुखार के दौरे से पीड़ित सभी, साथ ही हर तरह की अन्य बीमारियों से ग्रस्त या अशुद्ध आत्माओं से पीड़ित लोगों को - संत ने अपने वचन से सभी को चंगा किया। इन चमत्कारों को देखने वाले सभी ने सच्चे परमेश्वर की महिमा की और उस पर विश्वास किया; जबकि उस गाँव के निवासी परम आनंद से भर गए। उस गाँव की महिला, ट्रॉयआना, अपने बेटे ट्रॉयन के साथ, ने भी मसीह में विश्वास किया और बपतिस्मा लेने का अनुरोध किया। कथावाचक कहते हैं, 'मैं, पापी यूसग्नियिस, जो कुछ भी हुआ था, उसे देखकर, पूरे दिल से प्रभु की महिमा की।' उसी शाम, मवेशियों का एक झुंड, चरागाह से गाँव लौटते हुए और उसी रास्ते से गुजरते हुए जहाँ मसीह के पवित्र शहीद खड़े थे, मानो ईश्वर के महान कार्यों की महिमा करते हुए, संत के सामने घुटनों के बल गिर पड़ा।

तब मजिस्ट्रेट और सैनिकों को उस क्रूरता का पछतावा हुआ जो उन्होंने संत पर की थी, क्योंकि जब उन्होंने संत की प्रार्थनाओं के माध्यम से प्रभु द्वारा किए गए अद्भुत चमत्कार देखे तो वे भयभीत हो गए। अगले दिन, मजिस्ट्रेट ने शहीद से विनम्रता से कहा:

'यदि आपसे हो सके, प्रभु बैसलिस्क, तो चलिए हम अपना सफर शुरू करें, कहीं ऐसा न हो कि आपके कारण हमें शासक से दंड भुगतना पड़े।'

'ठीक है, चलो चलें,' संत ने उत्तर दिया, 'क्योंकि मैं अपने प्रभु के लिए मरना चाहता हूँ।'

जब वे सभी गाँव से निकल गए, तो सभी लोगों ने, ट्रॉयना नामक महिला के साथ, संत को विदा किया। हालाँकि, पवित्र शहीद ने उनसे सभी को घर लौटने की विनती की: कुछ ने ऐसा किया, जबकि अन्य उनके पीछे चलते रहे। जब वे आइरियोस नदी पर बने बड़े पुल पर पहुँचे, तो मसीह की उपस्थिति से पुल काँप उठा, जो अपने सेवक, संत बैसलिस्क के साथ अदृश्य रूप से चल रहे थे, जैसा कि पवित्र शहीद बैसलिस्क ने बाद में मुझसे, अयोग्य यूसग्नियिस से, बताया था,"

कथावाचक कहते हैं। 'जब पुल काँपा, तो संत रुके और ईश्वर की स्तुति करते हुए, लोगों से वापस मुड़ने का आग्रह किया; और उन्होंने बड़ी मुश्किल से उन्हें अपनी बात मानने के लिए मनाया।

अपनी यात्रा के दौरान, संत हर ऊँचे और सुंदर स्थान पर घुटने टेकते और प्रभु से इन शब्दों में प्रार्थना करते: 'हे मेरी आत्मा, प्रभु के सभी अधिपत्तियों में प्रभु का धन्यवाद कर!' (भजन संहिता 102:22)।

जब वे सभी सॉन नामक गाँव में पहुँचे, तो सैनिकों और मजिस्ट्रेट ने खाने की तैयारी की और संत से उनके साथ कुछ रोटी बाँटने का आग्रह किया। लेकिन उन्होंने मना कर दिया, यह कहते हुए: 'यहोवा मेरा रखवाला है; मुझे कुछ भी कमी न होगी' (भजन संहिता 22:1); 'मेरे प्रभु, यीशु मसीह, मुझे पोषण देते हैं।'

उन्होंने फिर से आग्रह किया, कहते हुए:

'खा लीजिए, महोदय, कहीं आप भूख से न मर जाएँ और यदि हम आपको राज्यपाल के पास न ले जाएँ तो हमें आपके कारण दंड न भुगतना पड़े; क्योंकि आज तीसरा दिन हो गया है जब से आपने कुछ भी नहीं खाया है।'

संत ने उनसे उत्तर दिया:

मैं अमरत्व के भोजन से तृप्त हूँ, और इसलिए मैं नश्वर भोजन ग्रहण नहीं करना चाहता। तुम सांसारिक रोटी से पोषित होते हो, लेकिन मैं परमेश्वर के स्वर्गीय वचन से पोषित होता हूँ; तुम शराब से प्रसन्न होते हो, लेकिन मैं पवित्र आत्मा की कृपा से प्रसन्न होता हूँ; तुम मांस से तृप्त होते हो, लेकिन मैं उपवास से तृप्त होता हूँ; तुम शारीरिक शक्ति से बलवान होते हो, लेकिन मैं मसीह के नाम पर क्रूस से बलवान होता हूँ; सोना आपको धनी बनाता है, लेकिन यीशु मसीह के लिए प्रेम मुझे धनी बनाता है; वस्त्र आपको सुशोभित करते हैं, लेकिन सद्गुण मुझे सुशोभित करते हैं; आपको हँसी में आनंद मिलता है, लेकिन मैं प्रार्थना के माध्यम से अपनी आत्मा को सांत्वना देता हूँ; तुम अपने सांसारिक राजा से प्रेम करते हो, जो नश्वर और क्षयशील है; तुम उसे देखने और उसके नियमों का पालन करने के लिए लालायित रहते हो, जबकि मैं ईश्वर और अपने स्वर्गीय राजा से प्रेम करता हूँ; मैं उनके नियमों का पालन करता हूँ और उनके दर्शन से पोषित होने के लिए लालायित रहता हूँ; तुम पृथ्वी पर महिमा की प्रतीक्षा करते हो, जबकि मैं स्वर्ग में इसकी प्रतीक्षा करता हूँ; आप मनुष्यों में ख्याति चाहते हैं, जबकि मैं धर्मात्माओं के पुनरुत्थान पर अंतिम न्याय में महिमा प्राप्त करने की आशा करता हूँ, जब मेरे प्रभु कहेंगे: 'आओ, हे मेरे पिता द्वारा धन्य किए हुए, संसार की नींव के समय से तुम्हारे लिए तैयार किए गए राज्य का उत्तराधिकार प्राप्त करो' (मत्ती 25:34)।

जब संत ने ऐसा कहा, तो मजिस्ट्रेट ने जानवरों पर काठी चढ़ाने का आदेश दिया और शहीद को एक गधे पर बैठने की पेशकश की, यह कहते हुए:

'तुम तीन दिन से भूखे पेट चल रहे हो; कम से कम जानवर पर बैठ जाओ, कहीं तुम पूरी तरह से थक न जाओ।'

लेकिन संत ने बैठने से इनकार कर दिया, और कहा:

'मेरे प्रभु, यीशु मसीह, मुझे बल देते हैं, और पवित्र आत्मा मुझे शांति और सांत्वना प्रदान करते हैं।'

फिर वे सभी चल पड़े, और शाम तक वे एक गाँव में पहुँचे, जहाँ वे रात के लिए रुके। और जब सैनिक अपने शाम के भोजन के लिए बैठे, तो मजिस्ट्रेट ने संत बैसलिस्क से उनके साथ कुछ खाने का आग्रह किया, लेकिन उन्होंने मना कर दिया और पूरी रात प्रार्थना और भजन-कीर्तन में बिताई, जबकि पवित्र स्वर्गदूत स्वयं मसीह के सेवक के साथ गा रहे थे।

जब दिन चढ़ा, तो वे फिर से चल पड़े और दिन के चौथे घंटे पर कोमाना नगर पहुँचे। जब वे नगर के पास पहुँचे, तो उन्होंने रास्ते में मिले कई लोगों से सुना कि राज्यपाल उन सभी को मृत्युदंड दे रहा था जो मूर्तियों को प्रणाम करने से इनकार करते थे। लेकिन प्रभु संत वासलिस्क के पास प्रकट हुए और उनसे कहा: 'हौसला रखो; मूर्तिपूजकों की धमकियों से मत डरो, क्योंकि मैं तुम्हारे साथ हूँ।'

जब वे नगर में प्रवेश किए, तो संत के साथ आए सैनिकों ने नगरवासियों से पूछा:

'गवर्नर अभी कहाँ है?'

उन्हें बताया गया कि राज्यपाल अपोलो के मंदिर[3866] में थे, जहाँ वे देवताओं को बलिदान दे रहे थे।

[3866] अपोल्लो – ग्रीक पौराणिक कथाओं में – प्रकाश के देवता, ज्यूस और लेटो के पुत्र हैं।

मैजस्ट्रियिन राज्यपाल के पास गया और उसे सूचित किया कि वह बेसलिस्क को ले आया है। राज्यपाल इस पर अत्यंत प्रसन्न हुआ। मैजस्ट्रियिन ने उसे उनकी यात्रा के दौरान हुई चमत्कारों के बारे में भी बताया, लेकिन राज्यपाल ने उस पर विश्वास नहीं किया और टिप्पणी की:

'यह सब ईसाई जादू-टोना है।'

फिर उसने आदेश दिया कि संत बेसलिस्क को अपोलो के मंदिर में उसके सामने लाया जाए, ताकि वह उसे वहाँ बलिदान करने के लिए मजबूर कर सके। तुरंत, शासक के सैनिक बेसलिस्क की ओर दौड़ पड़े और संत को जबरदस्ती खींचकर मंदिर में ले गए, कहते हुए:

'अगर तुम जीवित रहना चाहते हो तो मंदिर में जाकर शासक की पूजा करो।'

हालाँकि, मैजस्ट्रियिन और उसके साथ यात्रा पर आए सैनिकों ने शासक के सैनिकों को उन चमत्कारों के बारे में बताना शुरू कर दिया, जिन्हें उन्होंने देखा था, और यह जोड़ते हुए कहा:

'सचमुच, हमने अद्भुत संकेत और ईश्वर की शक्ति देखी है, न तो किसी दर्शन में और न ही जादू-टोने से, बल्कि वास्तविकता में घटित होते हुए।'

तब, संत की ओर मुड़कर, उन्होंने उससे कहा:

'प्रभु बैसलिस्क, हमारे अज्ञान के कारण हम आप पर जो अत्याचार कर बैठे, उसके लिए हमें क्षमा करें, और हमारे लिए अपने ईश्वर से प्रार्थना करें!'

जब वे बात कर ही रहे थे, तो राज्यपाल द्वारा भेजे गए नए सैनिकों ने शहीद को पकड़ लिया और उसे मंदिर में ले गए। संत प्रभु, अपने ईश्वर में आनंदित होकर, एक तेजस्वी मुख के साथ मंदिर में प्रवेश हुए।

उसे देखकर राज्यपाल ने पूछा:

'क्या वह तुम हो, बेसलिस्क?'

'हाँ, मैं ही हूँ,' संत ने उत्तर दिया।

'तो फिर,' राज्यपाल ने कहना जारी रखा, 'क्या तुम देवताओं को बलिदान चढ़ाओगे, या नहीं?'

संत ने आपत्ति जताते हुए कहा, 'तुम्हें मेरे बारे में यह किसने बताया कि मैं ईश्वर को बलिदान नहीं चढ़ाता? मैं हर पल अपने ईश्वर के सम्मान में स्तुति का बलिदान चढ़ाता हूँ।'

हालाँकि शासक यह समझ नहीं पाया कि क्या कहा गया था, उसने संत से कहा:

'बहुत अच्छा; तो हमारे सभी देवताओं में से जिसको भी तुम चाहो, उसकी बलि चढ़ाओ।'

संत बैसलिस्क, मूर्ति के पास आकर, अपने आसपास के लोगों से पूछा:

– तुम्हारे इस देवता का नाम क्या है?

उन्होंने उससे कहा:

– अपोलो।

– आप सही कह रहे हैं कि उसका नाम अपोलो है,' संत ने पुष्टि की; 'अपोलो का अर्थ है "विनाशक"[3867] और वास्तव में जो लोग उस पर विश्वास करते हैं और उसकी एक देवता के रूप में पूजा करते हैं, उन्हें वह विनाश की ओर ले जाता है, क्योंकि वह कोई देवता नहीं है।

'और उस देवता का नाम क्या है जिसे आप बलिदान चढ़ाना चाहते हैं?' शासक ने पूछा।

'मेरे ईश्वर,' संत ने उत्तर दिया, 'जो अपने गुणों में अकथनीय, अगम्य, अदृश्य और अवर्णनीय हैं।'

'क्या आपके ईश्वर का कोई नाम नहीं है?' शासक ने ज़िद की।

'मेरे ईश्वर के नाम पवित्र पुस्तकों में निहित हैं,' संत ने उत्तर दिया, 'और, यदि आप उन्हें सुनना चाहते हैं, तो मैं आपको बता दूँगा।'

'उनके नाम बताइए,' शासक ने कहा। तब पवित्र शहीद ने कहा:

'मेरे ईश्वर को पिता और सर्वशक्तिमान, Hosts[3868] के प्रभु, सभी का राजा, उद्धारकर्ता जो अनुग्रहकारी, दयालु और दीर्घ-सहिष्णु हैं, कहा जाता है। मैं केवल उन्हीं को स्तुति का बलिदान अर्पित करता हूँ!'

[3867] अपोल्लो – ग्रीक में – का अर्थ 'विनाशक' है। यूनानी आमतौर पर उसे धनुष, तीरों और तरकश के साथ चित्रित करते थे, जो प्रकाश के लिए हानिकारक शक्तियों का शत्रु और विजेता था, यानी, चीजों के नैतिक क्रम का।

[3868] सेनाओं का प्रभु – सेनाओं का प्रभु, शक्तियों का प्रभु (1 शमूएल 1:3, 11)।

'तुम कसि देवता को बलदिान चढ़ाना चाहते हो, इससे मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता—बस चढ़ा दो,' राज्यपाल ने ज़ोर देकर कहा, 'क्योंकि तुम्हें बहस करने के लिए नहीं, बल्कि सिर्फ़ बलदिान चढ़ाने के लिए बुलाया गया है।'

'ठीक है, सुनो,' संत ने शासक से कहा, 'यह मेरा बलदिान है।'

और उसने अपने हाथ स्वर्ग की ओर उठाकर, इस प्रकार ईश्वर से प्रार्थना की:

'हे शाश्वत ईश्वर, हे स्वर्ग और पृथ्वी के स्रष्टा, जो उन सभी की सुनते हैं जो सच्चे मन से आपकी सेवा करते हैं, अब मेरी, अपने सेवक की, सुनो, और इसी क्षण इस बधरि और अंधे, असंवेदनशील मूर्ति को चूर-चूर कर दो, ताकि अधर्मी लोग समझ सकें कि वे किस प्रकार के ईश्वर की पूजा कर रहे हैं, और वे लज्जति हों और यह वशि्वास करें कि केवल आप ही सर्वशक्तमिान ईश्वर हैं।

संत के प्रार्थना समाप्त करते ही पृथ्वी कांप उठी, और मूर्ति ज़मीन पर गरिकर टुकड़े-टुकड़े हो गई। मंदरि में मौजूद शासक और लोग डरकर भाग गए, और केवल संत बैसलिस्कि मंदरि में रह गए, गाते हुए:

– 'परमेश्वर उठे, और उसके शत्रु बखिर जाएँ; जो उससे बैर रखते हैं, वे उसके सामने से भाग जाएँ। जैसे धुआँ उड़ जाता है, वैसे ही उन्हें दूर कर दे… जैसे आग के सामने मोम पघिलता है, वैसे ही दुष्ट परमेश्वर के सामने नाश हो जाएँ' (भजन संहति 67:2–3)।

कुछ समय बाद, शासक ने संत को मंदरि से बाहर ले जाने का आदेश दयिा और उनके प्रति क्रोध में दाँत पीसते हुए कहा:

'हे हमारे देवताओं के शत्रु! तुमने एक बात का वादा क्यों कयिा और दूसरी क्यों की? तुमने देवता को बलदिान चढ़ाने का वादा कयिा था, फरि भी अपनी जादू-टोने से तुमने हमारे देवता, अपोलो को गरिा दयिा और उसके टुकड़े-टुकड़े कर दिए।'

जसि पर संत ने उत्तर दयिा:

'जसिने तुम्हारे देवता को कुचल दयिा है, वही उसके मंदरि को भी जला देगा।'

संत के बोलते ही स्वर्ग से अग्नि गिरिकर अपोलो के मंदरि पर आ गरिी और उसे जलाकर खाक कर दयिा। डर के मारे, शासक और सभी लोग वहाँ से भाग गए। फरि, संत बैसलिस्कि को बुलाकर, शासक ने उनसे ये शब्द कहे:

'हे, आपकी जादुई शक्तयिाँ कतिनी महान हैं! आपने एक देवता को नष्ट कर दयिा और उसके मंदरि को जला दयिा!'

लेकनि संत ने उत्तर दयिा:

'अगर आपका देवता सचमुच एक देवता है, जैसा कि आप उसे कहते हैं, तो उसे खुद मुझसे बदला लेने दो।'

'हमारे देवता अच्छे हैं,' शासक ने उत्तर दयिा, 'और वे अपने दुश्मनों को कोई नुकसान नहीं पहुँचाते।'

'हे मूर्ख!' संत ने कहा। 'दैत्य स्वभाव से ही दुष्ट होते हैं, वे भला कैसे कर सकते हैं? वे तो अपने पूजकों को भी अपने साथ नरक में खींच ले जाएँगे।'

'दुर्भाग्यपूर्ण जादूगर,' शासक ने संत से कहा, 'देवताओं को बलदिान चढ़ाओ; अन्यथा, मैं तुम्हें क्रूर मृत्यु दूँगा।'

इस पर संत ने शासक से उत्तर दयिा:

'जंगल में रहने वाला जानवर, खून चाटने वाला कुत्ता, भ्रष्ट एग्रप्पिा, शैतान की मूरत, कानून तोड़ने वाला यातनाकर्ता! तुम मुझे अभी भी क्यों रोक रहे हो? मैं अपनी जान लेने की जल्दी में हूँ!'

शासक संत पर बहुत क्रोधति हो गया और उसे तलवार से सरि कलम करने का आदेश दयिा।

सैनकिों ने संत को पकड़ लयिा और उन्हें शहर से बाहर दीओस्कोरयिा नामक स्थान पर सरि कलम करने के लिए ले गए; संत के साथ रास्ते में लोगों की भारी भीड़ चल पड़ी। शासक ने आदेश दयिा था कि सरि कलम करने के बाद, संत के शरीर को नदी में फेंक दयिा जाए।

जब Christ,[3869] के शहीद का सरि कलम कर दयिा गया, तो हम (जैसा कि संत यूसग्नियिस बताते हैं), जन्हिें यह दर्शन दखिाया गया था, एक अद्भुत चमत्कार के साक्षी बने: पवत्रि स्वर्गदूतों की एक भीड़ प्रकट हुई, जन्हिोंने संत की आत्मा को प्राप्त कर उसे स्वर्ग तक ले गए। हमारे प्रभु यीशु मसीह को स्वर्ग में खड़े देखा गया, जो कह रहे थे: 'आओ, मेरे अच्छे और वशि्वासयोग्य सेवक, वासलिस्कि, धर्मी लोगों के बीच स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करो, जहाँ मेरे सेवक रहते हैं, जन्हिें तुम्हारे साथ मेरी खातरि दुख सहने के लिए लयिा गया था।'

[3869] पवत्रि शहीद की मृत्यु चौथी शताब्दी की शुरुआत में हुई।

कथावाचक आगे कहते हैं, 'हम जन्हिोंने यह सब देखा और सुना, भूमपिर लोटकर प्रभु की आराधना करने लगे और हमें ऐसा दर्शन प्रदान करने के लिए उनका धन्यवाद करने लगे।'

तब जल्लाद, जसिका नाम प्रस्किस था, ने शहीद का शरीर उठाया और उसे नदी की ओर घसीट कर ले गया। यूसग्िनयिस कहते हैं, हम उसके पास गए और भीड़ छंटने तक थोड़ी देर रुकने के लिए कहा, और हमने उसे शहीद के शरीर के बदले छुड़ौती के रूप में तीस सोने के सक्कि दे दिए। उसने शहीद का शरीर हमें सौंपते हुए कहा:

'ध्यान रखना कि कोई इसे पहचान न ले या राज्यपाल को इस बारे में न बता दे; वरना, तुम्हें और मुझे दोनों को परेशानी होगी।'

यूसग्िनयिस आगे कहते हैं, 'हमने, पवत्रि देह को ले लेने के बाद, उसे छपिा दयिा और रात में, उसे एक जोते हुए खेत में ले जाकर दफना दयिा, और उसी जगह बीज बो दिए। उसी रात बीज अंकुरति हो गए, और अगले दनि उन पर फूल और फल आ गए।' जब हम शहीद की कब्र खोद रहे थे, तो हम में से कुछ को प्यास लगी; संत बैसलिस्कि की प्रार्थनाओं के द्वारा, जन्हिें हमने पुकारा था, कब्र के पास तुरंत एक जल का स्रोत प्रकट हुआ; अपनी प्यास बुझाने के बाद, हमने परमेश्वर की महमिा की और धन्यवाद दयिा। वह स्रोत आज भी मौजूद है, और जो बीमार वश्विास के साथ उसका पानी पीते हैं, वे ठीक हो जाते हैं।"

यह सब होने के बाद, राज्यपाल एग्रप्पिा पर एक अशुद्ध आत्मा सवार हो गई, और वह शहीद के शरीर की तलाश करने लगा, और मन ही मन सोचने लगा: 'अगर मैं बेसलिस्कि के शरीर को छू लूँ, तो मैं नश्चिति रूप से इस दुर्भाग्य से मुक्त हो जाऊँगा।'

और कोई भी उसे यह बताने की हम्मित नहीं कर सका कि शहीद के शरीर को जमीन में दफनाया गया था। कुछ लोगों ने उससे कहा, 'आपने शरीर को नदी में फेंकने का आदेश दयिा था; तो अब आप उसे क्यों ढूंढ रहे हैं?'

तब Агриппа उस स्थान पर गया जहाँ मसीह के शहीद का सरि कलम कयिा गया था, वहाँ उसे उसके रक्त की कुछ बूँदें मलिीं, और उसने उन्हें कुछ मट्टिी के साथ अपने हाथों से इकट्ठा करके अपनी कमर में बाँध लयिा। तुरंत ही वह अशुद्ध आत्मा से मुक्त हो गया और हमारे प्रभु यीशु मसीह पर वश्विास करने लगा।

कुछ समय बाद, कोमाना के एक धर्मनष्ठि नागरकि मारनि ने पवत्रि शहीद बेसलिस्कि के सम्मान में एक चर्च बनवाया और उनकी पवत्रि अवशेषों को जमीन से खोदकर इस चर्च में स्थानांतरति कर दयिा। संत की अवशेषों से, उनकी प्रार्थनाओं द्वारा और हमारे प्रभु यीशु मसीह की कृपा से, हर प्रकार की बीमारयिों से कई चमत्कारी चंगे होने के मामले हुए, जनिके लिए, पति और पवत्रि आत्मा के साथ, महमिा और सम्मान उन्हें अर्पति कयिा जाता है, अब और हमेशा और युगों-युगों तक। आमीन।

कॉन्टाकयिन, स्वर 8:

तुमने दुख सहने में स्वयं को शक्तशिाली और पराक्रमी, और चमत्कारों में अद्भुत सद्धि कयिा; मसीह के नाम का खुलेआम प्रचार करते हुए, तुमने यातना देने वाले को लज्जति कयिा। इसलिए हम तुम्हारा सम्मान करते हैं, वासलिस्किा, और सभी सम्मान के साथ सदैव तुम्हें पुकारते हैं: हे शहीदों की तेजस्वी भलाई, आनन्दति हो।

5 जून

23 मई (पुराने कैलेंडर के अनुसार)

इस दनि हम रोस्तोव के चमत्कार करने वाले बशिप सेंट लयिोन्टयिस के अवशेषों की खोज (1164 में) का उत्सव मनाते हैं।

इसी दनि, हम गालचि के परमपूज्य पैसयिस का स्मरण करते हैं, जो 'मां ऑफ गॉड के डॉर्मशिन और सेंट नकिोलस' मठ (गालचि शहर के पास) के पूर्व आर्चमैंड्राइट थे और जनिका नधिन 1460 में हुआ था।

हमारे पूजनीय पति माइकल द कन्फेशनर की स्मृति

23 मई को स्मरणोत्सव

आज स्मरण कए जाने वाले संत हैं सनिाडा के बशिप संत माइकल[3870] , जनिका नाम स्वर्गदूतों के प्रधान दूत के समान था, और उन्होंने कुँवारी पवत्रिता और हर प्रकार के सद्गुणों से सुशोभति एक दैवीय जीवन जयिा। जन्म लेते ही उन्हें ईश्वर को समर्पति कर दयिा गया था, और अपनी युवावस्था में उन्होंने मठवासी संन्यास की शपथ ली और स्वयं को ईश्वर का एक योग्य सेवक साबति कयिा, उन्होंने परमपावन तारासयिस के पैट्रआर्केट के दौरान नकिोमेडयिा के बशिप संत थयिोफलिैक्ट[3871] के साथ मलिकर काम कयिा, जन्हिोंने दोनों को काला सागर के तट पर स्थति एक मठ में भेजा था। वहाँ मठ के कर्तव्यों में लगे हुए, दोनों संत गुणों में अत्यधकि उत्कृष्ट थे, और उनकी प्रार्थनाएँ ईश्वर के समक्ष अत्यंत प्रभावशाली थीं।

एक बार, फसल काटने के समय, जब हवा में गर्मी असहनीय हो गई थी, और उस स्थान पर पानी की कमी के कारण कई लोग प्यास से बेहोश हो गए थे, तो संतों ने ईश्वर से प्रार्थना की; और उनकी प्रार्थनाओं के उत्तर में, एक खाली तांबे का पात्र पर्याप्त मात्रा में पानी बहाने लगा। इस प्रकार प्रभु अपने भक्तों की वनितयिों और प्रार्थनाओं को पूरा करते हैं और उनकी प्रार्थनाओं के लिए अपना कान लगाते हैं। यह चमत्कार उस चमत्कार की याद दलिाता है जो पहले जंगल में हुआ था, जब परमेश्वर ने प्यास से बेहाल हो रहे इस्राएलयिों के लिए चट्टान से पानी नकिाला था (नर्गि. 17:6), और एक अन्य, जब, इज़राइल के न्यायाधीश शमिशोन के लिए, जो प्यास से मर रहा था, परमेश्वर ने एक सूखी गधे की जबड़े की हड्डी से जीवनदायी जल का झरना बहाया (न्यायययिों 15:19)।

इसके बाद, परम पावन पैट्रआर्क तारासयिस ने, इन पूजनीय पतिाओं के सदाचारी जीवन को देखकर, जो स्वर्ग में तारों की तरह चमक रहे थे, उन्हें बशिप के उच्च पद के लिए योग्य माना। उन्होंने धन्य थयिोफलिैक्ट को नकिोमेडयिा का मेट्रोपॉलटिन और संत माइकल को सनिाड शहर का बशिप नयिुक्त कयिा, और उन दोनों ने अपने जीवन के द्वारा अपने झुंड के लिए एक अच्छा उदाहरण स्थापति करते हुए मसीह के झुंड की देखभाल की।

जब परम पावन पैट्रआर्क तारासयिस प्रभु के साथ रहने के लिए इस संसार से चल बसे, और संत नकिफिोरस ने कॉन्स्टेंटनिोपल की कलीसयिा के प्रमुख के रूप में उनका स्थान लयिा, तो प्रतमिा-वरिोधी वधिर्म का तूफान—जसिे पहले ही सातवें सार्वभौमकि परषिद[3872] में पवत्रि पतिाओं द्वारा नदिा कयिा जा चुका था—एक बार फरि उठ खड़ा हुआ। उस वधिर्मी धर्म से प्रभावति होकर, नर्दियी सम्राट लयिो द आर्मनियिन[3873] ने मसीह की कलीसयिा पर अत्याचार शुरू कर दयिा, पवत्रि प्रतमिाओं की पूजा को अस्वीकार कर उन्हें मूर्तयिाँ कहने लगा, और जो उनकी पूजा करते थे उन्हें यातनाएँ देकर मृत्युदंड देने लगा। सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण, उसने परम पावन पैट्रआर्क नकिफिोरस के साथ-साथ अन्य ऑर्थोडॉक्स बशिपों को उनके पदों से हटा दयिा, और उनकी जगह अपने समान वचिारधारा वाले वधिर्मी लोगों को नयिुक्त कर दयिा – और पवत्रि स्थानों में वनिाश की घृणा व्याप्त हो गई (दानयिेल 9:27)।

उस समय, संत माइकल ने खुद को ऑर्थोडॉक्सी के एक उत्साही रक्षक और वधिर्मी दुष्टता के एक उजागरकर्ता के रूप में साबति कयिा। पवत्रि आत्मा की कृपा से सुदृढ़ और नर्दिेशति होकर, उन्होंने वधिर्मयिों का वरिोध कयिा और उन लोगों को चुप करा दयिा जन्हिोंने पवत्रि प्रतमिाओं की नदिा की। धर्मद्रोही सम्राट लयिो, संत की फटकार सहन न कर सका, जसिने नडिर होकर उसके वधिर्मी भ्रम की नदिा की, और उसने मसीह के पवत्रि शहीद को यातनाएँ दीं। हालाँकि, संत ने कसिी भी यातना से न डरते हुए, बहादुरी से अपने वशि्वास का बचाव कयिा और सम्राट से कहा:

'मैं अपने उद्धारकर्ता यीशु मसीह और उनकी माता, अत्यंत पवत्रि कुँवारी, तथा अन्य संतों के पवत्रि प्रतमिाओं का सम्मान करता हूँ, और उनकी उपासना करता हूँ; परन्तु मैं आपके आदेश का पालन करना संभव नहीं समझता।'

लज्जति और क्रोध से भरकर, लयिो ने मसीह के इस स्वीकारकर्ता को नर्वासन की सज़ा सुनाई[3874] ।

एक स्थान से दूसरे स्थान पर भगाए जाने के कारण, संत ने कई कड़वे दुख और कष्ट सहन कए जब तक कि वे स्वर्गीय नविास में नहीं पहुँचे और उन्हें शाश्वत वशि्राम प्राप्त नहीं हुआ। इस प्रकार उन्होंने अपना धर्मी जीवन

[3870] सनिाड – प्राचीन काला सागर के शहरों में से एक।

[3871] नकिोमेडयिा – मार्मारा सागर द्वारा नर्मिति खाड़ी के उत्तर-पूर्वी कोने में एक शहर। इसकी स्थापना 264 ईसा पूर्व में हुई थी और इसका नाम बथिनियिा के राजा नकिोमेड्स प्रथम के नाम पर रखा गया था। अब ईस्नदि शहर प्राचीन नकिोमेडयिा की जगह पर स्थति है।

[3872] सातवाँ सार्वभौमकि परषिद 787 में नकिया शहर में हुआ था।

[3873] सम्राट लयिो (पाँचवें) अर्मेनयिाई ने 813 से 820 तक शासन कयिा।

[3874] संत माइकल को शुरू में थ्रेसयिन शहर यूडोक्सयिा में नर्वासति कयिा गया था।

समाप्त कयिा, जो एक दोहरे मुकुट से सुसज्जति था, बशिपों में एक बशिप के रूप में और शहीदों में एक शहीद के रूप में गनि गए, हमारे ईश्वर मसीह की महमिा के लिए[3875] ।

कॉन्टाकयिन, स्वर 8:

एक अतसिम्माननीय बशिप और धर्मपरायणता के लिए एक पवत्रि पीड़ति के रूप में, आप ने दुष्टों की नदिा से नहीं डरे, बल्कि उनके वधिर्मी वरिोध पर वजिय प्राप्त की, और एक मुक्त स्वर में ऊँची आवाज़ में पुकार उठे: 'मैं मसीह की प्रतमिा और उनकी परम पवत्रि माता की पूजा करता हूँ।' इसी कारण हम आपको सम्मानति करते हैं, माइकल।

पवत्रि पूजनीय शहीद माइकल काले वस्त्रधारी की शहादत

23 मई को स्मरणोत्सव

पवत्रि शहीद माइकल एडसा शहर के नविासी थे[3876] और ईसाई माता-पति के पुत्र थे। उनके माता-पति की मृत्यु के बाद, उन्होंने अपने माता-पति से वरिासत में मलिी सारी संपत्ति गरीबों में बाँट दी और पवत्रि स्थानों के दर्शन के लिए यरूशलेम के लिए रवाना हो गए। उस समय, यरूशलेम पहले से ही मुस्लमि शासन के अधीन था।

पवत्रि स्थलों पर श्रद्धांजलि अर्पति करने के बाद, वह संत सावस के मठ में चला गया और वहाँ भकि्षु जीवन के संकल्प लिए।

कुछ समय बाद, उनके गुरु ने उन्हें भकि्षुओं की हस्तशलि्प वस्तुएँ बेचने के लिए यरूशलेम भेजा। वहाँ उनकी मुलाकात एक ख़ास eunuch[3877] से हुई, जो मुस्लमि रानी सेइदा की सेवा करता था; उस ख़ास ने उन्हें अपने साथ ले लयिा, क्योंकि वे बर्तन जो वह बेच रहा था, बहुत सुंदर और अच्छी तरह से बने हुए थे, और उन्हें अपनी रानी के सामने ले गया। रानी, उस युवा भकि्षु को देखकर—जो चेहरे से सुंदर लेकनि उपवास से दुबला-पतला था—उस पर मोहति हो गई; उसने उसे व्यभचिार के लिए लुभाना शुरू कर दयिा और कहा:

'मेरी आज्ञा मानो, और यदि तुम बीमार हो, तो मैं तुम्हें तुम्हारी बीमारी से ठीक कर दूँगी।'

रानी के इन शब्दों पर, धन्य माइकल ने इस प्रकार उत्तर दयिा:

'मैं अपने पापों से पीड़ति हूँ; फरि भी मैं अपने प्रभु, यीशु मसीह की सेवा करता हूँ, और मैं तुम्हारी नहीं सुनूँगा।'

रानी ने हर तरह से उस संत को पाप करने के लिए मजबूर करने की कोशशि की, ठीक वैसे ही जैसे एक बार पेंटेफ्री की पत्नी ने मस्रि में सुंदर यूसुफ को पाप करने के लिए मजबूर करने की कोशशि की थी (उत्पत्ति 39:1–23); लेकनि पवत्रि माइकल ने पाप करने के लिए सहमति नहीं दी, और रानी को इस प्रकार समझाया:

'मैं ऐसा नहीं कर सकता, क्योंकि मैं एक भकि्षु हूँ और मैंने ईश्वर से अपने जीवन के अंत तक अपने शरीर की पवत्रिता को नरि्दोष बनाए रखने की प्रतज्ञि की है।'

उस दुष्ट महलि ने, यह महसूस कर लयिा था कि वह पवत्रि भकि्षु कसिी भी परस्थितिि में उसकी अवैध मांग के लिए सहमत नहीं होगा, लज्जा और क्रोध से भरकर, संत को डंडों से पीटने का आदेश दयिा। तब उसने उस भकि्षु को—मानो वह उनके धर्म का आलोचक हो—राजा के पास भेजा, जो उस समय यरूशलेम से बहुत दूर नहीं था।

राजा ने संत से पूछताछ करने के बाद, उसे खोलने का आदेश दयिा और उसे मुस्लमि धर्म में परविर्तति होने के लिए मनाने की कोशशि की।

लेकनि संत ने राजा से कहा:

'मैं अपने ईश्वर को त्यागकर शैतान का अनुयायी नहीं बन सकता।'

राजा ने फरि उसे लुभाना शुरू कयिा:

'जो कुछ भी तुम चाहो, मुझसे माँगो, और तुम मेरे साथ राज्य करोगे।'

[3875] पवत्रि शहीद की मृत्यु लगभग 818 में हुई।

[3876] एडेसा प्राचीन काल में मेसोपोटामयिा के उत्तरी भाग में स्थति एक शहर था।

[3877] एक नपुंसक एक ख़ासला नौकर होता है, जसिे आमतौर पर पूर्व के हरमों में सेवा के लिए रखा जाता है।

'मैं आपसे तीन में से एक बात मांगता हूँ,' संत ने उत्तर दिया, 'या तो मुझे मेरे गुरु के पास जाने दो, या मेरे ईश्वर के नाम पर बपतिस्मा लो, या मुझे तलवार के एक वार से मेरे ईश्वर, मसीह के पास भेज दो।'

लेकिन राजा ने आदेश दिया कि संत को एक घातक जहर का प्याला दिया जाए। हालांकि, संत ने जहर पीने के बाद भी कोई हानि नहीं हुई, जैसा कि मसीह ने अपनी पवित्र सुसमाचार में कहा था: *'यदि वे कुछ भी घातक पीते हैं, तो यह उन्हें नुकसान नहीं पहुंचाएगा'* (मरकुस 16:18)।

अपमानित राजा ने आदेश दिया कि यीशु के सेवक का सिर यरूशलेम के ठीक केंद्र में तलवार से काट दिया जाए[3878] ।

संत सावा के मठ के संतों ने, पवित्र शहीद के शरीर को लेकर, उसे अपने मठ में ले गए और मसीह के शहीद को सम्मान के साथ पवित्र पिताओं के बगल में सुला दिया, और मसीह परमेश्वर की महिमा की, जो अपने संतों में अद्भुत हैं। आमीन।

पोलोत्स्क की अधिष्ठात्री, पूज्य यूफ्रोसीन का जीवन

23 मई को स्मरणोत्सव

पोलोत्स्क शहर में वसेस्लाव नामक एक राजकुमार रहता था[3879] , जिसके एक पुत्र का नाम जॉर्ज था। इसी जॉर्ज से धन्य यूफ्रोसीन का जन्म हुआ था।

संन्यास की शपथ लेने से पहले, संत यूफ्रोसीन को प्रेदस्लावा के नाम से जाना जाता था। बहुत कम उम्र से ही पढ़ना-लिखना सिखाए जाने के कारण, यूफ्रोसीन ने धर्मग्रंथों और आत्मा के उद्धार के लिए अनुकूल अन्य पुस्तकों का लगन से अध्ययन किया। धर्मग्रंथों से ही उन्होंने ईश्वर का भय और अपने स्रष्टा, ईश्वर के प्रति गहरा प्रेम सीखा।

वह आदरणीय कन्या अत्यंत सुंदर थी, इतनी कि जब वह बारह वर्ष की हुई, तो कई प्रसिद्ध राजकुमारों ने यूफ्रोसीन के पिता से उसे अपने बेटों के विवाह के लिए मांगी[3880] । लेकिन वह कन्या किसी भी परिस्थिति में एक सांसारिक, नश्वर पति को अपना विवाह करने के लिए सहमत नहीं हुई, क्योंकि उसने स्वयं को अमर स्वर्गीय वर, परमेश्वर के पुत्र, प्रभु यीशु मसीह को वचन दिया था। उस पवित्र संत के सभी विचार परमेश्वर की ओर केंद्रित थे। हालाँकि, यूफ्रोसीन के पिता ने उसकी इच्छा के विरुद्ध एक राजकुमार से उसका विवाह करने का फैसला किया । जब यूफ्रोसीन को यह पता चला, तो वह चुपके से धन्य मठाधीश, राजकुमारी रोमाना द्वारा संचालित एक मठ में भाग गई, और एक नन के रूप में दीक्षा देने के लिए विनम्रतापूर्वक निवेदन करने लगी। तथापि, धन्य रोमाना लंबे समय तक इसके लिए सहमत नहीं हुईं, आंशिक रूप से यूफ्रोसीन की कम उम्र के कारण, और आंशिक रूप से उसके पिता के डर से; इसलिए, रोमाना ने उसे सांसारिक जीवन में बने रहने की सलाह दी, यह कहते हुए कि वह अभी भी बहुत छोटी और चेहरे से बहुत सुंदर थी। लेकिन यह देखकर कि यूफ्रोसीन अपनी कुँवारी अवस्था की रक्षा करने और स्वर्ग के राज्य को प्राप्त करने के लिए दृढ़ संकल्पित थी कि वह साया धारण करेगी, और यह भी देखकर कि यूफ्रोसीन के हृदय में प्रभु यीशु मसीह के लिए बहुत प्रेम था, रोमाना ने अपने मठ में ठहरे पुरोहित को प्रेदस्लावा के सिर मुंडवाने और उसे स्वर्गदूतों का वेश पहनाने का आदेश दिया; उसी समय, उस युवा राजकुमारी को यूफ्रोसीन नाम दिया गया।

जब उस धन्य कन्या के माता-पिता को सारी घटना का पता चला, तो वे बड़े दुख से भर गए और तुरंत उस मठ के लिए रवाना हो गए। अपनी बेटी को वहाँ उसकी साधु-पोशाक में देखकर, वे फूट-फूट कर रो पड़े। लेकिन धन्य यूफ्रोसीन ने, अपने माता-पिता के आँसुओं से विचलित हुए बिना, उन्हें रोने के लिए नहीं, बल्कि इस बात पर आनंदित होने के लिए कहा कि उनकी बेटी का विवाह स्वर्ग के राजा, प्रभु यीशु मसीह के साथ हो गया था।

कन्वेंट में, पूजनीय यूफ्रोसीन ने निरंतर उपवास और प्रार्थना का जीवन जिया और अन्य भिक्षुणियों के साथ मिलकर सभी मठ संबंधी कर्तव्यों का पालन किया, तथा सभी के प्रति महान विनम्रता से समर्पित रहीं।

[3878] पवित्र शहीद की मृत्यु 9वीं शताब्दी में हुई।

[3879] व्सेस्लाव ब्र्याचिस्लाविच, ब्र्याचिस्लाव इज्यास्लाविक के पुत्र, ने 1044 से 1101 तक पोलोत्स्क के राजकुमार के रूप में शासन किया।

[3880] प्राचीन रूस में कम उम्र में विवाह आम था।

कुछ समय बाद, पूज्यनीय यूफ्रोसीन ने पोलोत्स्क के बशिप एलयिा से वनिती करनी शुरू कर दी कि उन्हें संत सोफयिा को समर्पति महान कैथेड्रल चर्च के बगल में लगाए गए एक तम्बू में रहने की अनुमति दे दें (ऐसा करते हुए, धन्य यूफ्रोसीन यरूशलेम की प्राचीन कुंवारी कन्याओं के उदाहरण का अनुसरण कर रही थीं, जनिमें सर्वपवत्रि कुंवारी मरयिम भी शामलि थीं; वे कुंवारी सोलोमन के चर्च के पास, चर्च की दीवार से सटे वशिेष तंबुओं में रहती थीं[3881] । बशिप ने संत के दैवीय जीवन और ईश्वर के प्रति सेराफकि प्रेम को देखकर उनकी हृदय की शुभ इच्छा के मार्ग में बाधा नहीं डाली। और संत, ईश्वर के एक स्वर्गदूत की तरह, चर्च के पास एक तंबू में, नरिंतर, दनि-रात, ईश्वर से प्रार्थना करती और उनकी महमिा करती हुई रहती थीं। अपने खाली समय में, जब प्रार्थना नहीं कर रही होती थीं, तो वह अपने हाथों से कतिाबें लखितीं और उन्हें बेचती थीं; इस तरह से जो भी पैसा वह कमाती थीं, वह सब गरीबों को दान कर देती थीं।

जब संत पर्याप्त समय तक संत सोफयिा के चर्च की सेवा में समर्पति रहीं, तो एक रात उन्होंने सपने में परमेश्वर के एक स्वर्गदूत को देखा। उसने उसका हाथ पकड़कर उसे शहर से बाहर सेलेट्स नामक स्थान पर ले जाया; यहाँ सेंट सोफयिा का महल था; वहाँ पवत्रि उद्धारकर्ता को समर्पति एक छोटी लकड़ी की चर्च भी थी; और देवदूत ने धन्य महलिा से कहा:

'तुम्हारे लिए यहीं रहना उचति है, क्योंकि तुम्हारे द्वारा ईश्वर इस स्थान पर कई लोगों को मोक्ष की ओर ले जाएँगे।'

यह दर्शन दूसरी और तीसरी बार दोहराया गया। वह पूजनीय महलिा उस दृश्य को देखकर चकति और हैरान रह गईं, और उन्होंने उस ईश्वर का धन्यवाद कयिा, जसिने उन्हें इस तरह के दर्शन के योग्य समझा था। हालाँकि, ईश्वर की आज्ञा का पालन करते हुए, यूफ्रोसीन ने उत्तर दयिा:

'हे ईश्वर, मेरा हृदय तैयार है, मेरा हृदय तैयार है!'

और एक स्वर्गदूत उस बशिप को एक दर्शन में प्रकट हुआ और कहा:

'ईश्वर की दासी, यूफ्रोसीन को सेलेट्स के पास स्थति उद्धारकर्ता के चर्च तक ले जाओ, और उसे वहाँ बसा दो, ताकि ईश्वर को समर्पति कन्याओं के लिए वहाँ एक मठ स्थापति हो सके, जनि्हें ईश्वर इस धन्य यूफ्रोसीन के माध्यम से बचाना चाहता है।' उसकी प्रार्थना सुगंधति लोहबान की तरह ईश्वर तक पहुँचती है, और पवत्रि आत्मा उस पर एक राजा के सरि पर की तरह वरिाजमान होता है; और जैसे सूर्य ब्रह्मांड पर चमकता है, वैसे ही उसका जीवन ईश्वर के स्वर्गदूतों के सामने चमकेगा।

बशिप, अपनी नींद से जागने के बाद, परम पूजनीय यूफ्रोसीन के पास ईश्वर की इच्छा की घोषणा करने गए। यूफ्रोसीन ने भी बदले में बशिप को अपने दर्शन के बारे में बताया, और दोनों ने ईश्वर का धन्यवाद कयिा।

तब बशिप ने राजकुमार बोरसि (यूफ्रोसीन के चाचा), राजकुमार जॉर्ज (उनके पति), और कई बोयार (जागीरदारों) तथा अन्य सम्मानति पुरुषों को बुलाया; और, उन्हें उस दव्यि दर्शन के बारे में बताने के बाद, उन्होंने कहा:

'यहाँ, आपकी उपस्थति में, मैं यूफ्रोसीन को सेलेट्स में स्थति पवत्रि उद्धारकर्ता चर्च में एक स्थल प्रदान करता हूँ, ताकि वहाँ एक मठ स्थापति कयिा जा सके। कोई भी उसे बाधति न करे या उससे वह वस्तु छीन न ले जो मैंने उसे दी है।'

सभी बशिप से सहमत हो गए।

इसके बाद, संत यूफ्रोसीन को उद्धारकर्ता को समर्पति चर्च में बसाया गया, और वहाँ उन युवा महलिाओं के लिए एक मठ बनाया गया जो पवत्रिता में प्रभु यीशु मसीह की सेवा करना चाहती थीं। इस प्रकार, संत यूफ्रोसीन उन कई युवा महलिाओं के लिए एक मार्गदर्शक और गुरु बनीं जनि्होंने संसार का त्याग कर संन्यासी जीवन अपनाया था। धन्य यूफ्रोसीन का ईश्वरीय जीवन देखकर, अन्य सभी युवतयिों को ईश्वर को प्रसन्न करने वाले कार्य करने के लिए प्रोत्साहति कयिा गया।

कुछ समय बाद, आदरणीया ने अपने पति को संदेश भेजा:

'मेरी बहन ग्रादस्लिाव को मेरे पास भेजो, ताकि मैं उसे पवत्रि शास्त्रों का ज्ञान दे सकूँ।'

[3881] इसका अधकि वस्तिृत ववरिण 21 नवंबर के अंतर्गत सूचीबद्ध 'परमेश्वर की परम पवत्रि माता की प्रस्तुति' की कथा में पाया जा सकता है।

उनके पिता ने ग्रैडस्लिावा को उनके पास भेज दिया। संत यूफ्रोसीन ने अपनी छोटी बहन को पढ़ना सिखाया और, कई आत्मा-मोक्षकारी प्रवचनों से उसे शिक्षित करने के बाद, उसकी सगाई मसीह से करा दी, क्योंकि उन्होंने उसे यूडोक्सिया के नाम से मठवासी जीवन अपनाने के लिए मना लिया था।

कुछ समय बीत जाने के बाद, यूफ्रोसीन के पिता ने उसे संदेश भेजा:

'अपनी बहन को हमारे पास भेजो।'

लेकिन यूफ्रोसीन ने उत्तर दिया:

'उसे थोड़ी देर और मेरे पास रहने दो, क्योंकि उसने अभी तक धर्मग्रंथों में पूरी तरह से पारंगत नहीं हो पाई है।'

हालाँकि, यूफ्रोसीन के माता-पिता को जल्द ही अपनी दूसरी बेटी के सिर मुंडवाने की खबर मिल गई। गुस्से से भरकर, वे मठ आए और, अपने दिलों में गहरे दुख के साथ, धन्य यूफ्रोसीन से कहा:

'हे हमारी बेटी! तुमने हमारे साथ यह क्या किया! तुमने हमारे पुराने दुख में एक नया दुख, और हमारे मौजूदा शोक में एक नया शोक जोड़ दिया है! क्या तुम्हारे लिए हमें छोड़ देना ही काफी नहीं था? अब तुमने हमारा दूसरा बच्चा, जो हमें इतना प्रिय था, हमसे छीन लिया है! क्या हम तुम्हें इसी लिए जन्म देते, क्या हम तुम्हें इसी लिए पालते!' क्या हम तुम्हें इसीलिए जन्म देने आए थे, ताकि अपनी मृत्यु से पहले ही, तुम्हें इन काले परिधानों में, जैसे ताबूत में, बंद कर दिया जाए, एक मठ में रहने लगो, और हमें उस सांत्वना से वंचित कर दो जिसकी हमें तुमसे आशा थी?..

हालाँकि, पूज्य यूफ्रोसीन ने अपने माता-पिता को आत्मा-रक्षक शब्दों से सांत्वना देना शुरू कर दिया। कुछ सांत्वना पाकर, वे अपने घर लौट गए, और अपने माता-पिता के हृदय के स्वाभाविक दुख को आध्यात्मिक आनंद से कम कर दिया।

कुछ ही समय बाद, राजकुमारी ज्वेनस्लिावा, जो उसकी रिश्तेदार और चाचा बोरिस की बेटी थी, आदरणीय यूफ्रोसीन के पास आई। ज्वेनस्लिावा ने आदरणीय के पास अपनी शादी के लिए तैयार किए गए अपने सभी कीमती वस्त्र लाए, और धन्य को कहा:

'हे मेरी स्वामिनी और मेरी बहन! मैं इस संसार के सभी खजाने को कुछ भी नहीं समझती; मैं ये विवाह के आभूषण उद्धारकर्ता के चर्च को अर्पित करती हूँ, और मैं स्वयं प्रभु और अपने ईश्वर के साथ एक आध्यात्मिक विवाह में वरमंडित होना चाहती हूँ, और उनके शुभ और हल्के जुए के नीचे अपना सिर झुकाना चाहती हूँ।'

आदरणीय यूफ्रोसीन ने उन्हें खुशी से स्वीकार किया और तुरंत आदेश दिया कि उनका मुंडन किया जाए, और उन्हें यूप्रैक्सिया नाम दिया। और दोनों तपस्वियों ने उपवास और पूरी रात की प्रार्थना में स्वयं को समर्पित कर दिया, और भक्ति और धार्मिकता में एक हृदय से प्रभु की सेवा की।

जब उन्होंने देखा कि मठ में बहनों की संख्या दिन-ब-दिन बढ़ रही थी, तो पूजनीय यूफ्रोसीन ने उद्धारकर्ता के नाम पर एक पत्थर का चर्च बनाने की इच्छा व्यक्त की। उनके उत्साह को ईश्वर की सहायता से सफलता का मुकुट मिला। कुछ ही समय बाद, उसी वर्ष, एक सुंदर पत्थर का चर्च बना। जॉन नाम का एक व्यक्ति काम की देखरेख का प्रभारी था। एक रात, जब वह सूर्योदय से पहले सो रहा था, तो उसने कई बार एक आवाज़ सुनी, जो उससे कह रही थी:

'जॉन! उठो, जाओ और सर्वशक्तिमान के सम्मान में चर्च के निर्माण की देखरेख करो।'

एक दिन वह यूफ्रोसीन के पास गया और उससे पूछा:

'मैडम, क्या आप ही मुझे आपको जगाने और जल्द से जल्द काम पर भेजने के लिए कह रही हैं?'

यूफ्रोसीन ने यह महसूस करते हुए कि यह आवाज़ मनुष्यों की नहीं बल्कि ईश्वर की थी, जॉन को उत्तर दिया:

– भले ही तुम्हें जगाने के लिए मैंने ही तुम्हें न भेजा हो, फिर भी, उस आवाज़ पर ध्यान दो जो तुम्हें काम करने के लिए बुला रही है और जैसा वह तुमसे कहती है, वैसा ही करो, क्योंकि यह ईश्वर का कार्य है।

चर्च के निर्माण का कार्य पहले ही पूरा होने वाला था। बस निर्माण के लिए आवश्यक ईंटों की कमी थी। तब उस सम्मानित महिला ने ईश्वर से प्रार्थना करते हुए कहा:

'मैं आपको धन्यवाद देती हूँ, हे प्रभु, मानव जाति के प्रेमी, सर्वशक्तिमान ईश्वर! आपने हमें इतना कुछ दिया है, कृपया यह छोटी सी बात भी हमें दे दें, ताकि हम चर्च के निर्माण का कार्य पूरा कर सकें, जो आपके परम पवित्र नाम की महिमा के लिए बनाया जा रहा है।'

अगली सुबह, ईश्वर की कृपा से, निर्माणकर्ताओं को एक भट्टी भरी हुई पकी ईंटें मिलीं, जो पहले से ही ठंडी हो चुकी थीं और वे बहुत मजबूत भी थीं। ये ईंटें एक अदृश्य हाथ द्वारा और बहुत कम समय में बनाई गई थीं – यह चमत्कारिक

कार्य एक ही रात में हुआ था। सभी आनंदति हो गए और उन्होंने ईश्वर की स्तुति की। इस प्रकार, चर्च का निर्माण पूरा हुआ। कुछ ही समय बाद, बिशप यहाँ पुरोहितों, राजकुमारों और सभी नगरवासियों के साथ चर्च का अभिषेक करने आए; सभी ने बड़ी खुशी के साथ अभिषेक का उत्सव मनाया। पूजनीय यूफ्रोसीन, चर्च में साष्टांग दंडवत होकर, आँसुओं के साथ ईश्वर से प्रार्थना की, और कहा:

हे प्रभु, हृदयों के जानने वाले, सर्वशक्तिमान, इस चर्च पर दृष्टि डालो, जो आपके नाम पर बनाया गया है, जैसे आपने एक बार सुलैमान के मंदिर पर दृष्टि डाली थी; और आपके इस चर्च में इकट्ठी हुई भेड़-बकरियों पर भी दृष्टि डालो। इस पवित्र चर्च में आपकी सेवा करने वाले हम सभी पर दया करें। हमें हर अच्छे काम में अपनी सहायता प्रदान करें, ताकि हम अपने ऊपर डाले गए जुए को सफलतापूर्वक उठा सकें और आपके, हमारे वधूवर, के पदचिह्नों पर चल सकें। अपने झुंड के इस झुंड की स्वयं रक्षा करें। आप हमारे चरवाहे, हमारे द्वारपाल और हमारे रक्षक बनें, ताकि हमारी एक भी बहन मनुष्यों की आत्माओं को नष्ट करने वाले भेड़िये - शैतान - के द्वारा छीन न ली जाए। हे प्रभु, आप हमारा हथियार और हमारी मज़बूत रक्षा बनें, ताकि *'कोई बुराई* हम पर न आए, *न कोई घाव* हमारे शरीर *के पास* आए' (भजन संहिता 90:10), और हमारे पापों के कारण हमें नष्ट न करें। हम अपनी सारी आशा आप में ही रखते हैं, क्योंकि आप उन सभी पर दयालु और अनुग्रहकारी परमेश्वर हैं जो आप में विश्वास करते हैं। हम अपने जीवन के अंत तक निरंतर आपको महिमा देंगे।

तब आदरणीय ने बहनों को यह कहते हुए उपदेश देना शुरू किया:

'देखो, मैं तुम्हें प्रभु के नाम के लिए इकट्ठा कर चुकी हूँ, जैसे एक पक्षी अपने बच्चों को अपने पंखों के नीचे इकट्ठा करता है; मैंने तुम्हें परमेश्वर के भेड़ों की तरह दिव्य चरागाह में इकट्ठा किया है: तो, प्रभु की आज्ञाओं पर चरो, और गुणों में दिन-प्रतिदिन बढ़ो, ताकि मैं भी तुम्हारे उद्धार का ध्यान रख सकूँ और तुम्हें दुख के बजाय आनंद से सिखा सकूँ, और ताकि तुम्हारी मेहनत के आध्यात्मिक फलों को देखकर मेरी आत्मा आनंदित हो सके। आप स्वयं देख सकते हैं कि मैं कितनी बड़ी मेहनत से परमेश्वर के वचन आपके हृदयों में बोता हूँ; फिर भी, कभी-कभी, आपके हृदयों के खेत, मानो, अपरिपक्व ही रह जाते हैं, और सद्गुणों में फलते-फूलते नहीं हैं, जबकि फसल काटने का समय नज़दीक आ रहा है। फानूस पहले ही खलिहान में है; यह भूसी को गेहूं से अलग कर देगा। हे मेरी बहनों, मुझे बहुत डर है, कि कहीं तुम में ऐसी भूसी तो नहीं है जिसे बुझने न वाले आग में फेंक दिया जाएगा। मैं आपसे विनती करती हूँ, जल्दी कीजिए और स्वयं को पापी खरपतवारों से बचा लीजिए, ताकि आप गेहन्ना की आग से बच सकें। स्वयं को मसीह के शुद्ध गेहूँ के रूप में तैयार कीजिए; अपने तपस्वी श्रमों के द्वारा स्वयं को परिपूर्ण कीजिए, नम्रता, पवित्रता, प्रेम और प्रार्थना में प्रयासरत रहिए; और तब आप स्वयं को परमेश्वर को भाने वाले रोटी बनने के लिए तैयार कर लेंगी।

इस प्रकार पूजनीय यूफ्रोसीन ने अपनी कन्वेंट की बहनों को निर्देश दिया, और एक प्रेममयी माँ की तरह अपने आध्यात्मिक बच्चों का ध्यानपूर्वक ख्याल रखा। उनकी शिक्षाओं और प्रार्थनाओं के कारण, सभी नन एक सदाचारी जीवन में फल-फूल गईं और उन्होंने स्वयं को पवित्र आत्मा के वास के योग्य पात्रों के रूप में तैयार किया।

उपरोक्त पत्थर के चर्च के अलावा, पूजनीय यूफ्रोसीन ने परमेश्वर की परम पवित्र माता के सम्मान और महिमा में एक और पत्थर का चर्च भी बनाया। उसे प्रतिमाओं से सजाकर, उन्होंने इसे ननियों को सौंप दिया, जिनके लिए उन्होंने इस चर्च के बगल में एक मठ भी बनवाया था[3882] ।

आदरणीय यूफ्रोसीन अपने मठ में परमेश्वर की अति पवित्र माता की 'ओडिगिट्रिया' नामक एक प्रतिमा रखना चाहती थीं[3883] – विशेष रूप से, संत ल्यूक सुसमाचारकार द्वारा उनके जीवनकाल में बनाई गई एक प्रतिमा। आदरणीय

[3882] संत यूफ्रोसीन द्वारा स्थापित मठ आज भी स्पसो-यूफ्रोसीन मठ के नाम से मौजूद है। 1579 में, इसे जेसुइटों ने जब्त कर लिया था, और 1820 में उनके नियंत्रण से मुक्त किया गया। मठ में संत यूफ्रोसीन द्वारा निर्मित वेदी का क्रॉस रखा है; आगंतुकों को वे दो कोठरियाँ दिखाई जाती हैं जिनमें पूजनीय यूफ्रोसीन रहती थीं और अपने तपस्वी जीवन का अभ्यास करती थीं। मठ से संलग्न पादरियों की लड़कियों के लिए एक स्कूल है।

[3883] ओडिगिट्रिया (ग्रीक 'मैं रास्ता दिखाती हूँ' से) – 'मार्गदर्शक'। यह उपाधि ईश्वर की माता को श्रद्धांजलि स्वरूप कुछ प्रतिमाओं पर लगाई गई थी, जो विश्वासियों की आध्यात्मिक मार्गदर्शक थीं। विशेष रूप से, माँ ऑफ़ गॉड ओडिगिट्रिया की प्रतिमा, जो कॉन्स्टेंटिनोपल के ब्लाचेर्ना चर्च में रखी गई थी, का नाम इसलिए रखा गया क्योंकि एक अवसर पर स्वयं माँ ऑफ़ गॉड दो अंधे पुरुषों के सामने प्रकट हुईं, उन्हें ब्लाचेर्ना चर्च में अपनी प्रतिमा तक ले गईं, और उसके सामने उनकी दृष्टि वापस कर दी। 'ओडिगिट्रिया' नाम उन मसीह की माता की प्रतिमाओं पर भी लगाया जाता था जिन्हें नावकि जहाज के आगे या पीछे रखते थे। इसी कारण से, कई स्थानों पर आज भी एक धार्मिक प्रथा का पालन किया जाता है: जब कोई लंबी यात्रा पर निकलता है, विशेषकर समुद्र मार्ग से, तो मसीह की माता - ओडिगिट्रिया की प्रतिमा के सामने एक प्रार्थना सभा आयोजित की जाती है। माता ईश्वर की ओडिगिट्रिया प्रतिमा का पर्व दिवस 21 जनवरी, 28 जुलाई और अन्य दिनों में मनाया जाता है।

ईवफ्रॉसीन को ज्ञात था कि संत ल्यूक द्वारा चित्रित तीनों प्रतिमाएँ कहाँ स्थित थीं – एक यरूशलेम में, दूसरी कॉन्स्टेंटिनोपल में, और तीसरी एफ़िसुस में। उन्होंने आँसुओं के साथ ईश्वर से प्रार्थना की, उनसे अपनी इच्छा पूरी करने का निवेदन किया, और अपनी मठ के एक सेवक, जिसका नाम माइकल था, को भेजा, कॉन्स्टेंटिनोपल में धर्मनिष्ठ सम्राट मैनुएल[3884] और परम पावन पैट्रिआर्क ल्यूक[3885] के पास कई उपहारों के साथ भेजा, और उनसे धर्मप्रचारक ल्यूक द्वारा चित्रित परम पवित्र ईश्वर की माता के आइकन में से एक, अर्थात् एफ़िसुस शहर में स्थित आइकन, उसे भेजने का अनुरोध किया। राजा और पैट्रिआर्क ने, धन्य यूफ्रोसीन की ईश्वर और परमेश्वर की अति पवित्र माता के प्रति गहरी भक्ति को देखकर, उनकी प्रार्थना स्वीकार करने का निर्णय लिया और एशिया में एक दूत भेजा, जिसने एफ़िसुस से परमेश्वर की अति पवित्र माता की चमत्कारी प्रतिमा कॉन्स्टेंटिनोपल लाई। सम्राट और पैट्रिआर्क ने इस प्रतिमा को यूफ्रोसीन के मठ के एक सेवक को सौंप दिया और उसे विदा कर दिया। उन्होंने उसे एक पत्र दिया जिसमें मसीह की दासी की प्रशंसा की गई थी और उस पर पैट्रिआर्क का आशीर्वाद भी दिया गया था।

प्रतिष्ठित प्रतिमा प्राप्त करते ही, पूजनीय यूफ्रोसीन आनंद से भर गईं और उन्होंने प्रभु यीशु मसीह और उनकी परम पवित्र माता का धन्यवाद किया। यूफ्रोसीन ने इस प्रतिमा को पवित्र उद्धारकर्ता के चर्च में रखा, और इसे सोने और कीमती पत्थरों से सजाया[3886] ।

इस बीच, पूजनीय यूफ्रोसीन के माता-पिता का निधन हो चुका था। कई वर्षों तक मठवासी तपस्या में बिताने के बाद, धन्य यूफ्रोसीन यरूशलेम शहर के पवित्र स्थानों को देखना और मसीह के जीवन-दायक समाधि का पूजन करना चाहती थीं। धन्य यूफ्रोसीन का इरादा वहीं अपना जीवन समाप्त करने का था, जिसके लिए उन्होंने प्रभु से भक्तिपूर्वक प्रार्थना की। जब उसके आसपास के सभी लोगों को उसके इरादे का पता चला, तो वे बहुत दुखी हो गए। उसके पास आकर, वे सभी आँसुओं के साथ, उससे विनती करने लगे कि वह उन्हें या अपनी मातृभूमि को न छोड़े। हालाँकि, धन्य ने सभी को प्रेमपूर्ण और शिक्षाप्रद बातों के माध्यम से सांत्वना दी, ठीक वैसे ही जैसे एक माँ अपने बच्चों को सांत्वना देती है। अन्य लोगों के अलावा, उसका प्रिय भाई व्याचेस्लाव अपनी पत्नी और बच्चों के साथ यूफ्रोसीन के पास आया। उसके सामने झुकते हुए, उसने अपने आँसुओं के बीच कहा:

'मेरी मालकिन, मेरी बहन और मेरी माँ। आप अब मुझे क्यों छोड़ना चाहती हैं! आप हमें, मेरी आँखों की रोशनी और मेरे जीवन की मार्गदर्शक, क्यों छोड़ रही हैं!'

संत ने उत्तर दिया:

'मैं तुम्हें छोड़ना नहीं चाहती, परन्तु मैं उन पवित्र स्थानों में अपने और तुम्हारे लिए प्रार्थना करना चाहती हूँ।'

जब धन्य यूफ्रोसीन ने अपने भाई के साथ अपनी आध्यात्मिक बातचीत समाप्त कर ली, तो उन्होंने उसे अपनी दो बेटियों, करिनिया और ओल्गा को अपनी बहन यूडोकीया के पास छोड़ने का निर्देश दिया; क्योंकि धन्य यूफ्रोसीन के पास ऐसा आध्यात्मिक वरदान था कि, किसी को अपनी आँखों से देखने पर, वह तुरंत पहचान जाती थीं कि उनमें सद्गुण की आत्मा वास करती है या नहीं और क्या वे प्रभु के लिए चुने हुए पात्र हो सकते हैं। इस प्रकार, वह पहले से ही जानती थीं कि वे दो युवतियाँ, उनके भाई की बेटियाँ, अपने सद्गुणी जीवन के द्वारा मसीह को प्रसन्न करेंगी। जब व्याचेस्लाव यूफ्रॉसीन से चले गए, तो संत ने अपनी बेटियों से कहा:

'मैं तुम्हें अमर वर के साथ सगाई करना चाहती हूँ, ताकि तुम्हें स्वर्ग के राज्य के महल में ले जाया जा सके।'

कन्याएँ, उसकी दैवीय प्रेरित बातों से प्रसन्न होकर, अपने हृदय में गहराई से प्रभावित हुईं और, उसके चरणों में गिरकर, कहने लगीं:

'प्रभु की इच्छा पूरी हो! आपकी पवित्र प्रार्थना हमारे लिए जैसा उचित समझे, वैसा ही प्रबंध करे।'

युफ्रोसीन, उन कन्याओं के शुभ इरादों से अपने आत्मा में आनंदित होकर, उन्हें आत्मा-रक्षक शिक्षाओं से शिक्षित किया और उनके हृदयों में मसीह के प्रति प्रेम को पोषित किया।

फिर, कुछ समय बाद, यूफ्रोसीन ने अपने भाई व्याचेस्लाव को बुलाया और उससे कहा:

'मैं तुम्हारी बेटियों का मुंडन कराना चाहती हूँ, ताकि वे मसीह की वधू बन सकें।'

लेकिन व्याचेस्लाव उसके शब्दों से बहुत परेशान हो गया और उससे कहा:

[3884] सम्राट मैनुअल कोम्नेनोस ने 1143 से 1180 तक शासन किया।

[3885] ल्यूक क्रिसोवर्गोस ने 1186 से 1196 तक पैट्रिआर्क के रूप में कार्य किया।

[3886] 1239 में, नोवगोरोड के ग्रैंड प्रिंस सेंट अलेक्जेंडर नेवस्की की पत्नी द्वारा इस प्रतिमा को टोरोपेत्स शहर में स्थानांतरित कर दिया गया था।

'मेरी मालकनि और माँ! आप मुझसे क्या करवाना चाहती हैं? आप मेरे मौजूदा दुख में एक और दुख जोड़ना चाहती हैं; आप चाहती हैं कि मैं सबसे पहले, आपको हमसे एक दूर देश में जाते देख कर रोऊँ; और फिर, आप चाहती हैं कि मैं अपने बच्चों के लिए रोऊँ, क्योंकि मैं उनके सहारे से वंचित हो गई हूँ!'

व्याचेस्लाव की पत्नी, उन युवतियों की माँ, अपने पति से भी अधिक दुखी हुईं और उन्होंने लंबे समय तक बहुत रोया। हालाँकि, व्याचेस्लाव और उसकी पत्नी ने धन्य यूफ्रोसीन के शब्दों का विरोध करने की हिम्मत नहीं की, क्योंकि वे उनके शब्दों को स्वयं मसीह के शब्दों के समान मानते थे, और जानते थे कि वह मसीह की एक सच्ची सेविका और पवित्र आत्मा का एक योग्य पात्र थी।

तब यूफ्रोसीन ने उस समय के बिशप डायोनिसियिस से मठ में आने, कन्याओं को चर्च में ले जाने और उनका मुंडन करने के लिए कहा; उस समय, करिनिया को अगथिया और ओल्गा को यूफेमिया नाम दिया गया। फिर बिशप ने उन्हें उन पवित्र पुरखों और पवित्र माताओं के आशीर्वाद से आशीर्वाद दिया, जिन्होंने आदि काल से परमेश्वर को प्रसन्न किया था।

कुछ समय बाद, धन्य यूफ्रोसीन ने अपनी बहन यूडोक्सिया को अपनी ननघर सौंपी और सभी बहनों को चूमने के बाद, ईश्वर से प्रार्थना की और अपनी सारी आशा उन पर रखकर, यरूशलेम के लिए रवाना हो गईं; सभी लोग कड़वे आँसू बहाते हुए यूफ्रोसीन के साथ उनके रास्ते में चल दिए। अपने साथ एक और भाई, जिसका नाम डेविड था, और अपनी रिश्तेदार यूप्रैक्सिया को लेकर, यूफ्रोसीन सबसे पहले कॉन्स्टेंटिनोपल पहुँची। वहाँ सम्राट और पैट्रिआर्क ने उनका बड़े सम्मान से स्वागत किया। फिर, वहाँ के पवित्र चर्चों और संतों के कई अवशेषों को श्रद्धांजलि अर्पित करने के बाद, वह यरूशलेम के लिए रवाना हो गईं। शहर पहुँचने पर, उन्होंने मसीह के जीवन-दायक मकबरे का पूजन किया; फिर उन्होंने मकबरे के पास एक सुनहरी धूपदान रखा और यरूशलेम के चर्च तथा पैट्रिआर्क को कई उपहार भेंट किए। धन्य यूफ्रोसीन ने यरूशलेम के आसपास के अन्य पूजनीय स्थलों का भी दौरा किया; पवित्र अवशेषों की बड़ी भक्ति के साथ पूजा करने के बाद, यूफ्रोसीन ने परमेश्वर की परम पवित्र माता के सम्मान और महिमा में निर्मित एक चर्च के बगल में स्थित रूसी मठ नामक एक मठ में निवास किया। फिर वह पवित्र सेपल्चर लौट आई और वहाँ आँसुओं और हार्दिक भक्ति के साथ प्रार्थना करने लगी, यह कहते हुए:

– हे प्रभु यीशु मसीह, परमेश्वर के पुत्र, जो परम पवित्र और अति पवित्र सदा कुंवारी मरियम से जन्म लिए, जिन्होंने हमारे उद्धार के लिए कहा: 'माँगो, तो तुम्हें दिया जाएगा' (मत्ती 7:7)। मैं आपकी भलाई के लिए धन्यवाद करती हूँ, कि मुझे, एक पापी को, आपसे वही मिला है जो मैंने माँगा था, क्योंकि मुझे इन पवित्र स्थानों को देखने का योग्य समझा गया, जिन्हें आपने अपने अति पवित्र चरणों से पवित्र किया है, और मुझे आपके पवित्र समाधि को चूमने का योग्य समझा गया, जिसमें आपने हमारे लिए मृत्यु स्वीकार करने के बाद अपने अति पवित्र शरीर में विश्राम किया। हे परम धन्य प्रभु! मैं आपसे एक और बात का अनुरोध करती हूँ: कृपा करें कि मैं इसी पवित्र स्थान पर देहांत करूँ। हे मेरे सृष्टा, मेरे विनम्र प्रार्थना को तुच्छ न समझें! इस पवित्र नगर में मेरी आत्मा को स्वीकार करें और मुझे उन अन्य लोगों के साथ, जिन्होंने आपको प्रसन्न किया है, इब्राहीम की गोद में एक स्थान प्रदान करें।

इस प्रकार प्रार्थना करने के बाद, संत उस उपर्युक्त चर्च में गईं, जिसके पास उन्होंने निवास कर लिया था। वहाँ उन्हें बीमारी हो गई। अपनी बीमारी के बिस्तर पर लेटी, उन्होंने प्रभु से इस प्रकार प्रार्थना की:

– महिमा हो तुझे, हे मेरे प्रभु, हे प्रभु यीशु मसीह! मैं तुझसे अपने इस अयोग्य सेवक की प्रार्थना सुनने के लिए और मेरे साथ वैसा ही व्यवहार करने के लिए धन्यवाद करती हूँ, जैसा तू स्वयं चाहता था।

धन्य यूफ्रोसीन भी यॉर्डन जाना चाहती थीं, लेकिन अपनी बीमारी के कारण वह वहाँ की यात्रा करने में असमर्थ थीं। इसलिए, उन्होंने अपने भाई डेविड और यूप्रैक्सिया को यॉर्डन भेज दिया। उनके लौटने पर, वे उनके लिए यॉर्डन का पानी ले आए। संत ने उस जल को बड़ी प्रसन्नता और कृतज्ञता से ग्रहण किया; उन्होंने उसे पिया और अपने पूरे शरीर पर छिड़का। फिर, अपने बिस्तर पर लेटकर, उन्होंने कहा:

'धन्य है परमेश्वर, जो संसार में आने वाले प्रत्येक व्यक्ति को ज्ञान प्रदान करता है और पवित्र करता है।'

उस बीमारी के दौरान, पूजनीय संत को एक दैवीय दर्शन हुआ, जिसमें ईश्वर ने उन्हें उनके धन्य निधन और उनके लिए तैयार विश्राम-स्थल, दोनों के बारे में बताया। और संत की आत्मा अपने उद्धारकर्ता, ईश्वर में आनंदित हुई, और उनकी अनेक अनुग्रहों के लिए उनकी स्तुति और महिमा करने लगी।

इसके बाद, संत ने सेंट साव्हा मठ को संदेश भेजकर आर्चमैंड्राइट और भाइयों से पूछा कि क्या वहाँ उनके लिए दफन की जगह दी जा सकती है।

उन्होंने उत्तर दिया:

'हमें हमारे पवित्र पिता सव्वा से आज्ञा है: उनके मठ में कभी भी महिलाओं को दफनाया न जाए। वहाँ थियोडोसियस का सामुदायिक मठ है, जो परमेश्वर की अति पवित्र माता की महिमा और सम्मान के लिए बनाया गया है। वहाँ कई पवित्र महिलाएँ विश्राम करती हैं। वहाँ संत साव्वा की माता, संत थियोडोसियस की माता, संत थियोडोटीयस अनमरसेनरी की माता और कई अन्य सदाचारी महिलाएँ भी विश्राम करती हैं; यह उचित है कि धन्य यूफ्रोसीन को भी वहाँ दफनाया जाए।

यह उत्तर सुनकर, परम पूज्य ने ईश्वर का धन्यवाद किया कि उनका शरीर पवित्र महिलाओं के अवशेषों के बगल में विश्राम करेगा, और तुरंत ही परम पूज्य थियोडोसियस के मठ को एक संदेश भेजकर उनके अंतिम संस्कार के लिए जगह तैयार करने का अनुरोध किया। मठ की ननियों ने चर्च के बरामदे के पास एक स्थान निर्धारित किया और संत के अंतिम संस्कार के लिए एक ताबूत तैयार किया।

आदरणीय यूफ्रोसीन अगले चौबीस दिनों तक अपनी शय्या पर ही रहीं। जब उनके परमधाम जाने का समय निकट आया, तो उन्होंने एक पुरोहित को बुलाया, उससे पवित्र परमप्रसाद ग्रहण किया, और प्रार्थना के बीच, महीने के तेईसवें दिन मई[3887] को अपनी पवित्र आत्मा ईश्वर के हाथों में सौंप दी। उनके पवित्र शरीर को परम पूज्य थियोडोरस के मठ में, सर्वपवित्र परमेश्वर की माता के चर्च[3888] के बरामदे के पास, विसव के लिए रखा गया।

इसके बाद, उनके भाई डेवडि और उनकी रिश्तेदार यूप्रैक्सिया, अपने मूल देश, पोलोत्स्क शहर लौट आए, और उन्होंने वहाँ आदरणीय यूफ्रॉसीन की धन्य निधना और सम्मानजनक दफन की खबर लाई। धन्य यूफ्रॉसीन के निधन पर शोक मनाने के बाद, सभी ने पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा की महिमा के लिए, जो सभी सृष्टि द्वारा अब और अनंत काल तक स्तुत और महिमामय है, उनकी वार्षिक स्मृति मनाने का संकल्प लिया। आमीन।

6 जून

24 मई (पुराने कैलेंडर के अनुसार)

हमारे पूजनीय पिता अद्भुत पर्वत के सिमोन

24 मई को स्मरणोत्सव

[3889]एडसा से अपने माता-पिता के साथ एंटिओक[3890] पहुँचे एक युवक का नाम जॉन था। जॉन विवाह योग्य आयु का था, इसलिए उसके माता-पिता ने वहाँ मार्था नाम की एक बहुत ही सुंदर कन्या को देखकर उसकी माता-पिता से पूछा कि क्या वे अपनी बेटी का विवाह उनके पुत्र से करने के लिए सहमत होंगे। उसके माता-पिता ने यह बात मार्था को बताई। लेकिन वह कन्या विवाह नहीं करना चाहती थी, क्योंकि उसने अपने ईश्वर और प्रभु मसीह के साथ स्वयं को व्रतबद्ध करने का संकल्प लिया था, ताकि वह अपनी कुँवारी अवस्था को पवित्रता में बनाए रख सके। लेकिन जब उसके माता-पिता उसे शादी के लिए मजबूर कर रहे थे, तो मार्था ने उन्हें छोड़ दिया और अंतीयक शहर के पास स्थित संत जॉन द बैपटिस्ट के चर्च में भाग गई। वहाँ पहुँचने पर, वह घुटनों के बल गिर पड़ी और आँसुओं के साथ प्रभु से प्रार्थना करने लगी, उनसे यह पूछते हुए कि वे सब कुछ इस तरह से व्यवस्थित करें जो उसके लिए सबसे अधिक लाभकारी और उद्धारकारी हो। और

[3887] आदरणीय यूफ्रोसीन का 1178 में निधन हो गया।

[3888] संत यूफ्रोसीन के पवित्र अवशेष बाद में (कुछ के अनुसार, 1187 में) कीव ले जाए गए, जहाँ वे संत थियोडोसियस की गुफाओं में विश्राम करते हैं।

[3889] एदेसा नाम से कई शहर जाने जाते हैं। इस मामले में, यह संभवतःएदेसा (अब उर्फा) को संदर्भित करता है, जो मेसोपोटामिया के उत्तरी भाग में स्थित था।

[3890] यह, बेशक, सीरिया में स्थित एंटिओक को संदर्भित करता है।

उसी चर्च में, मार्था को एक दर्शन हुआ जिसमें उन्हें आज्ञा दी गई कि वे अपने माता-पिता की आज्ञा मानें और विवाह कर लें। ईश्वर की इच्छा का पालन करते हुए, उस युवती ने जॉन से विवाह कर लिया, और वह न केवल दैनिक जीवन के सभी मामलों में उसकी सहायक थी, बल्कि उसकी मार्गदर्शक भी थी, जो उसे हर अच्छे कार्य में निर्देश देती थी; मार्था ने अपने जीवन को विनम्रता, संयम और प्रार्थना से सुशोभित किया, और ईश्वर को प्रसन्न करने का प्रयास किया। सदाचारी मार्था अक्सर अग्रदूत के चर्च में आती थीं और वहाँ अग्रदूत जॉन से बड़ी लगन के साथ प्रार्थना करती थीं, उनसे निवेदन करती थीं कि वे अपनी प्रार्थनाओं के द्वारा एक पुत्र को जन्म देने का वरदान पाने के लिए ईश्वर से मध्यस्थता करें; साथ ही, मार्था ने उसे, जैसे हन्नाह ने एक बार शमूएल को (1 शमूएल 1:11) समर्पित किया था, वैसे ही ईश्वर की सेवा के लिए समर्पित करने का वचन दिया। एक साल बाद, जब मार्था वहाँ रात में प्रार्थना कर रही थी और झपकी ले गई थी, तो संत यूहन्ना बपतिस्मादाता उसे दिखाई दिए और उन्होंने कहा:

'हौसला रखो, मेरी पत्नी। तुम्हारी प्रार्थना स्वीकार हो गई है, और तुम्हें वह मिलेगा जो तुमने माँगा है। ईश्वर की कृपा के चिन्ह के रूप में, यह धूप ग्रहण करो' (और यह कहकर उन्होंने उसे धूप से भरा एक धूपदान दिया); 'इस धूपदान से अपने घर को सुगंधित करो।'

नींद से जागने पर, मार्था ने अपने हाथ में एक धूपदान पाया जिससे एक अकथनीय सुगंध निकल रही थी।

तब प्रभु के अग्रदूत फिर उसके पास प्रकट हुए और कहा:

'अपने पति के पास जाओ, क्योंकि तुम एक पुत्र को गर्भ धारण करोगी और उसका नाम शिमोन रखना। वह केवल तुम्हारे दाहिने स्तन का दूध पिएगा; वह बाएँ को बिल्कुल भी नहीं छूएगा। वह दाहिने हाथ का पुत्र होगा; वह न तो मांस खाएगा, न शराब पिएगा, और न ही मनुष्यों के हाथों से तैयार किया गया कोई अन्य भोजन खाएगा; उसका भोजन केवल रोटी, शहद, नमक और पानी से ही बनेगा। तुम्हें उसे अत्यंत सावधानी से पालना है, क्योंकि वह हमारे प्रभु परमेश्वर की सेवा के लिए एक पवित्र पात्र है। उसके जन्म के दो साल बाद, तुम्हें उसे मेरे चर्च में लाना है और वहाँ उसका बपतिस्मा कराना है; जब शिशु को बपतिस्मा की कृपा प्राप्त होगी, तब सभी को स्पष्ट हो जाएगा कि उसका क्या होगा।

इस दर्शन से भय और आनंद दोनों से भरकर मार्था ने परमेश्वर और प्रभु के अग्रदूत सेंट जॉन का बहुत धन्यवाद किया। फिर, अपने पति के घर लौटकर, वह उनसे गर्भवती हुई; और जब समय आया, तो उसने बिना किसी जटिलता के एक पुत्र को जन्म दिया और उसका नाम सिमीओन रखा। मार्था ने शिशु को अपने दाहिने स्तन से दूध पिलाया। हालाँकि, कभी-कभी, दृष्टि में संत जॉन द फॉररनर द्वारा उससे कहे गए शब्दों की परीक्षा करने की इच्छा से, वह शिशु को अपना बायाँ स्तन देती थी; लेकिन शिशु रोते हुए बाएँ स्तन से अपना चेहरा मोड़ लेता था, और किसी भी परिस्थिति में उससे दूध स्वीकार नहीं करता था। यह भी आश्चर्यजनक था कि जिस भी दिन मार्था मांस खाती या शराब पीती, उसी दिन शिशु अपनी माँ का दूध पीने से इनकार कर देता और अगले दिन तक भूखा रहता। जब मार्था को यह एहसास हुआ कि बच्चा दूध क्यों नहीं पीता, तो उसने मांस और शराब का त्याग कर दिया और इस प्रकार उसने उस बच्चे का पोषण किया जो एक महान तपस्वी बनने वाला था, जबकि वह स्वयं निरंतर उपवास और प्रार्थना में लगी रही।

जब शिशु दो वर्ष का हुआ, तो उसके माता-पिता उसे सेंट जॉन द बैपटिस्ट के चर्च ले गए और वहाँ उसका बपतिस्मा कराया। बपतिस्मा के तुरंत बाद, शिशु बोलने लगा, और स्पष्ट रूप से निम्नलिखित शब्द बोले:

'मेरा एक पिता है, फिर भी मेरा कोई पिता नहीं है; मेरी एक माता है, फिर भी मेरी कोई माता नहीं है!'

उसने ये शब्द सात दिनों तक दोहराए। इसके देखकर उसके माता-पिता बहुत चकित हुए और उन्होंने पहले से ही भांप लिया था कि उनका बच्चा सांसारिक रास्तों पर नहीं, बल्कि दिव्य रास्तों पर चलेगा। जब बच्चे को दूध छुड़ाया गया, तो उन्होंने उसे रोटी, शहद और पानी खिलाना शुरू कर दिया, क्योंकि वह किसी भी हालत में मांस खाने से इनकार कर देता था, ठीक उसी तरह जैसे वह कुछ भी पकाया हुआ खाने से इनकार करता था।

जब बच्चा छह वर्ष का हुआ, तो (जस्टिनियन महान के शासनकाल में) अंफ़ियोक्स में एक भूकंप आया[3891] । इस भूकंप के दौरान, सिमोन के माता-पिता का पत्थर का घर ढह गया; उसके पिता गिरती इमारत के मलबे में दबकर मर गए, जबकि उसकी माँ बच गईं, क्योंकि ईश्वर की कृपा से, वह भूकंप के दौरान घर से बाहर निकलकर उस समय चर्च में थीं; शिशु सिकीमोन भी उस समय अपने घर में नहीं था, बल्कि संत स्टीफन प्रथम शहीद के चर्च में था, जहाँ उसे ईश्वर ने सुरक्षित रखा। चर्च से निकलने पर, सिकीमोन को यह नहीं पता था कि घर लौटने के लिए किस दिशा में जाएँ, क्योंकि निष्ट

[3891] जस्टिनियन प्रथम (महान) ने 527 से 565 तक शासन किया।

हुए घरों का मलबा हर ओर बखिरा पड़ा था। अपना घर न पाकर, वह लंबे समय तक अंतीयक के खंडहरों में भटकता रहा; अंत में, एक धर्मपरायण महलि जो उसके माता-पति को जानती थी, उसे अपनी पीठ पर उठाकर शहर के पास एक पहाड़ी पर ले गई, जहाँ वह स्वयं रहती थी।

धन्य मार्था, समिीओन की माँ, ने यह जानकर कि उसका घर ढह गया था और यह सोचकर कि उसका पति और बेटा पत्थर की दीवारों के नीचे दबकर मर गए हैं, जोर-जोर से रोने लगी। सात दनि बाद, संत यूहन्ना बपतसि्मा देने वाले उसे दखिाई दिए और उन्होंने उसे बताया कि उसका बेटा जीवति है, साथ ही उस जगह का भी संकेत दयिा जहाँ वह था। मार्था तुरंत उस पहाड़ के लिए रवाना हो गई। वहाँ पहुँचने पर, उसे समिीओन वह महलि के साथ मलि, जसिने समिीओन की माँ से आश्चर्य व्यक्त करते हुए कहा कि उन पूरे सात दनिों के दौरान लड़के ने थोड़ी सी रोटी और पानी के अलावा कुछ नहीं खाया था। माँ ने उसे लेकर संत जॉन द बैपटस्टि के चर्च के लिए प्रस्थान कयिा और वहाँ उसने लड़के को जीवति रखने के लिए ईश्वर और उनके संत, जॉन द बैपटस्टि, का धन्यवाद कयिा; फरि वह घर लौट आई।

एक दनि, जब मार्था अपने मन में उस लड़के के बारे में देखे गए दर्शनों और उसके संबंध में पहले ही घटति हो चुके कई अद्भुत कार्यों पर वचिार कर रही थी, तो वह सोचने लगी कि उसके बेटे का क्या होगा; जैसे ही वह सो गई, उसे एक दर्शन हुआ: उसे ऐसा लगा कि उसके पंख उग आए हैं और वह लड़के को अपनी बाहों में पकड़े हुए ऊँची उड़ान भर रही है; जब उसने उसे प्रभु के लिए एक भेंट के रूप में अर्पति कयिा, तो उसने कहा:

'हे मेरे बच्चे, मैं तुम्हारा ऐसा ही उत्थान देखना चाहूँगी। मेरा सृष्टकिर्ता मुझे शांति से भेजें, मैं जो कई स्त्रयिों में धन्य मानी गई हूँ, क्योंकि मैं सर्वोच्च को अपनी कोख का फल अर्पति कर रही हूँ।'

इसके बाद, मार्था अपने बेटे के साथ एंटओिक में 'केरुबमि' नामक एक स्थान पर बस गई। इस स्थान को यह नाम नम्निलखिति कारण से दयिा गया था: रोमन सम्राट वेस्पयिन के पुत्र टाइटस ने[3892] , यरूशलेम पर वजिय प्राप्त करने के बाद, यरूशलेम के मंदरि से वाचा के संदूक के ऊपर रखे दो सुनहरे करूबों को ले लयिा और उन्हें अंओक ले आया। जसि स्थान पर इन करूबों को स्थापति कयिा गया था, वह 'करूबमि' के नाम से जाना जाने लगा।

जब धन्य मार्था अपने पुत्र के साथ वहाँ ठहरी हुई थीं, तब समिोन को एक दर्शन हुआ: उन्होंने प्रभु यीशु मसीह को एक ऊँचे सहिासन पर वरिाजमान देखा, और बहुत से धर्मी लोग चारों ओर से उनकी ओर बढ़ रहे थे; सहिासन के सामने जीवन की खुली पुस्तक पड़ी थी, जसिके द्वारा न्याय कयिा जा रहा था; पूर्व में आनंद का स्वर्ग था, जबकि पश्चमि में अग्नमिय गेहेना था। तब पवत्रि आत्मा ने समिीओन से कहा:

'हे युवक, सुन और जो कुछ भी तू यहाँ देखता है उसे समझ; ईश्वर को प्रसन्न करने का प्रयास कर, और तब तुझे भी अन्य संतों के समान सम्मान और महमिा प्रदान की जाएगी, और तुझे वे अकथनीय आशीर्वाद प्राप्त होंगे जो प्रभु से प्रेम करने वालों के लिए तैयार कए गए हैं।'

इस दर्शन के बाद, वह लड़का दैवी ज्ञान से भर गया और उसे कई अज्ञात और अद्भुत रहस्यों के प्रकाशन और दर्शन प्राप्त हुए।

कुछ समय बाद, समिीओन ने एक अद्भुत मुखमंडल वाले व्यक्ति को देखा, जो सफेद वस्त्र पहने हुए थे, और उन्होंने उससे कहा:

'मेरे पीछे चलो।'

सीमोन उसके पीछे हो लयिा। जो आदमी उसे दखिाई दयिा था, वह उसे सेलेउकयिा के पास स्थति टबिेरनिस के क्षेत्र में ले गया। उस आदमी ने उस युवक को पलि नामक एक स्थान पर ले जाकर छोड़ा। वहाँ वह युवक एक सुनसान पहाड़ पर रहता था, जंगली जानवरों के बीच इस तरह रहता था जैसे वे मेमने हों। उसके एकमात्र साथी जंगली जानवर थे, इसलिए कोई भी मनुष्य उसे कभी नहीं देख पाया। दनि-रात वह एक अनुपम प्रकाश में नहाया रहता था। समिीओन को अपना भोजन उस तेजस्वी व्यक्ति के हाथों से मलिता था जसिने उसे वहाँ लाया था। वह व्यक्ति अक्सर उसके सामने प्रकट होता था, उसे सभी बातों में शक्षिति करता था और समय-समय पर उसे भोजन प्रदान करता था।

कुछ समय बाद, उसी व्यक्ति की सलाह पर, समिीओन पहाड़ की चोटी पर चढ़ा और वहाँ एक छोटा सा मठ पाया, जसिका मठाधीश धन्य जॉन थे, जो एक स्तंभ पर रहते थे। इस मठाधीश को अक्सर ऐसे दर्शन होते थे जो यह भवष्यिवाणी करते थे कि धन्य युवक समिीओन उसके पास आएगा: उदाहरण के लिए, उन्होंने उस युवक को सफेद वस्त्रों में देखा,

[3892] वेस्पासयिन ने 70 से 79 ईस्वी तक रोमन साम्राज्य पर शासन कयिा। उनके पुत्र, टाइटस ने 79 से 81 तक शासन कयिा।

कभी रथ में मठ की ओर जाते हुए, कभी हवा में उड़ते हुए और मठ के ऊपर मंडराते हुए, और कभी एक प्रकाशमान स्तंभ पर खड़े होकर उस स्तंभ के साथ मठ की ओर आते हुए। इस धन्य जॉन ने एक देवदूत को भी देखा जो उस युवक की ओर इशारा कर रहा था और कह रहा था:

'यही वह है जिसके द्वारा तुम उद्धार प्राप्त करोगे।'

मठाध्यक्ष जॉन ने इन सभी दृष्टिगोचरताओं के बारे में अपने साथ मौजूद भिक्षुओं से बताया।

जब, ईश्वर की कृपा से, धन्य सिमीओन उसके मठ में पहुँचे, तो भिक्षु इस बात पर बहुत हैरान थे कि छह साल की उम्र से भी कम का एक इतना छोटा बच्चा, ऐसी सुनसान जगह से अकेले चलकर मठ तक पहुँच सकता है। हालाँकि, स्तंभ से सिमीओन को देखते ही, अब्बॉट जॉन को एहसास हुआ कि यह वास्तव में वही लड़का था जिसे उन्होंने अपनी दृष्टियों में बार-बार देखा था। जो कुछ भी हुआ था, उस पर अत्यधिक प्रसन्न होकर, जॉन ने सिमीओन को अपने पास बुलाया, उसे अपनी बाहों में उठा लिया और चूम लिया, और आँसुओं से भरी आँखों के साथ ईश्वर का धन्यवाद किया। वह लड़का अत्यंत सुंदर और सुनहरे बालों वाला था; उसकी दृष्टि स्पष्ट और तेज थी, जो सभी को उसकी आत्मा की भलाई का एहसास कराती थी; वह नम्र, कम बोलने वाला, उत्तर देने में धीमा, अपनी वाणी में बुद्धिमान और दिव्य वरदानों से परिपूर्ण था। सिमोन उस मठ में सभी से अलग रहा, और मौन में अपने होंठ सीले रखता था। उसका उपवास इस प्रकार था: कभी-कभी हर तीन दिन में, कभी-कभी हर सात दिन में, और कभी-कभी हर दस दिन में, वह पानी में भिगोए हुए मटर खाता और बहुत कम पानी पीता था। यह सब देखकर, मठाधीश जॉन बहुत आश्चर्यचकित हुए।

उस मठ में एक साधारण व्यक्ति रहता था जो भेड़ों का चरवाहा था। उस युवक के अलौकिक तप को देखकर, वह उससे शैतानी ईर्ष्या से भर गया और उसकी हत्या की साजिश रची। लेकिन जब उसने अपनी दुष्ट योजना को अंजाम देना शुरू किया, तो उसका हाथ तुरंत सूख गया; उसका पूरा शरीर बीमार पड़ गया, और वह मौत के कगार पर पहुँच गया; परिणामस्वरूप, उसने अपना पाप महाधर्माध्यक्ष और धन्य सिमियिन के सामने कबूल किया और उसका पश्चाताप किया। हालाँकि वह युवक द्वेष से मुक्त था, उसने न केवल उसके पाप को क्षमा किया, बल्कि उसके ठीक होने के लिए ईश्वर से प्रार्थना भी की; और जैसे ही उसने उसके मुरझाए हुए हाथ को छुआ, वह ठीक हो गया और उस आदमी का पूरा शरीर स्वस्थ हो गया। उस समय से, मठाधीश और भाइयों ने इस धन्य युवक का और भी अधिक सम्मान करना शुरू कर दिया, क्योंकि उन्होंने उसमें उस व्यक्ति को देखा जिसे ईश्वर ने उसकी माँ के गर्भ से ही उनकी सेवा करने के लिए चुना था।

कुछ समय बाद, धन्य सिमोन ने भाइयों से विनम्रतापूर्वक आग्रह करना शुरू कर दिया कि वे उन्हें अब्बा जॉन के स्तंभ के पास एक स्तंभ बना दें; उनकी इच्छानुसार, जॉन के स्तंभ के बगल में एक स्तंभ खड़ा किया गया। केवल सात वर्ष की आयु में, धन्य योहन द्वारा संन्यासी वस्त्र धारण कराए जाने के बाद वह उस पर चढ़ गया। और वह अब्बा योहन की नकल करते हुए स्तंभ पर खड़ा हो गया।

अपने स्तंभ-उपवास की शुरुआत में, हमारे प्रभु यीशु मसीह एक बालक के रूप में उनके सामने प्रकट हुए, जो अनुपम सौंदर्य से दमक रहे थे। इस बालक को देखकर, संत सिमियिोन अपने हृदय की गहराइयों से उनके प्रति प्रेम से भर गए। यह समझते हुए कि यह ईश्वर और उनके प्रभु थे, उन्होंने निडर होकर उनसे पूछा:

'प्रभु, यहूदियों ने आपको सूली पर कैसे चढ़ाया?'

प्रभु ने, अपना हाथ क्रूस के आकार में फैलाते हुए, उससे कहा:

'यहूदियों ने मुझे इसी तरह सूली पर चढ़ाया; फिर भी मैंने स्वयं स्वेच्छा से खुद को सूली पर चढ़ाए जाने के लिए अर्पित किया। तुम भी हिम्मत करो और मज़बूत बनो, अपने जीवन के सभी दिनों में मेरी सूली पर चढ़ाए जाने का अनुकरण करो।'

उस समय से, संत सिमोन ने अपने शरीर को पूरी तरह से भूल दिया और वे देहहीन प्राणियों के समान हो गए, एक दैवीय जीवन जीने लगे और अपने तपस्या के कार्यों में यहाँ तक कि ज्येष्ठ यूहन्ना से भी आगे निकल गए। यूहन्ना हर रात तीस भजन गाते थे, जबकि सिकिमिोन पचास, और कभी-कभी अस्सी गाते थे; वास्तव में, वे अक्सर पूरी एक रात में बिना सोए संपूर्ण भजन संहिता गा लेते थे; और दिन के समय संत निरंतर प्रभु की महिमा करते थे। हालाँकि, बड़े भाई ने सीमोन की कम उम्र को ध्यान में रखते हुए और इस डर से कि वह इतनी बड़ी मेहनत से थक सकता है, उसे समझाते हुए कहा:

'मेरे बच्चे! अपने इन कार्यों को बंद कर दो, जो मानवीय शक्ति से परे हैं, जिससे तुम हमें सोने भी नहीं देते; तुम्हारे लिए यह ही काफी है कि तुम जन्म के क्षण से ही मसीह के साथ सलीब पर चढ़ाए गए हो; तुम्हें अपने शरीर का भी कुछ, भले ही थोड़ा सा, ध्यान रखना चाहिए; तुम्हें कम से कम थोड़ी देर के लिए सोना चाहिए और संयम से भोजन करना चाहिए,

ताकि तुम अंत तक तपस्वी जीवन सहन कर सको; क्योंकि भोजन और पेय मनुष्य को अशुद्ध नहीं करते, जैसा कि प्रभु स्वयं अपनी पवित्र धर्मग्रंथ में कहते हैं: *'हर जीवित चलने वाली वस्तु तुम्हारे भोजन के लिए होगी; मैं तुम्हें सब कुछ देता हूँ जैसे मैंने तुम्हें हरी-भरी वनस्पतियाँ दीं'* (उत्पत्ति 9:3)।

धन्य सिमोन ने वृद्ध को उत्तर दिया:

'यद्यपि भोजन व्यक्ति को अशुद्ध नहीं करता, यह पापी विचारों को जन्म देता है, मन को धुंधला करता है, कामवासना को गहरा करता है, आध्यात्मिक व्यक्ति को देहधारी में बदल देता है, और उसके विचारों को सांसारिक इच्छाओं की ओर निर्देशित करता है; परन्तु हम भिक्षुओं के लिए यह उचित है कि हम दिन-रात प्रभु की व्यवस्था का अध्ययन करें, कहीं हम नींद के भ्रम के शिकार न हो जाएँ, और कहीं हम निराशा में न डूब जाएँ, जैसा कि भविष्यवक्ता कहते हैं: *'मेरी आत्मा शोक से पिघल जाती है'* (भजन संहिता 118:28)। विशेष रूप से, परमेश्वर की महिमा के लिए, हमें अटूट उत्साह के साथ अपना मुँह खोलना चाहिए, और तब हम अपने ऊपर पवित्र आत्मा की कृपा को आकर्षित करेंगे। हालाँकि, माननीय पिता जी, मुझे जो कुछ भी कहना है, उससे आपकी क्या चिंता? मैं यह नियम केवल अपने लिए ही निर्धारित करता हूँ, और किसी भी तरह से दूसरों के लिए नहीं, क्योंकि मेरे लिए अपने युवा शरीर को इतने बड़े तपस्या के कार्यों से वश में करना आवश्यक है।

युवा लड़के से ऐसा समझदारी भरा उत्तर सुनकर वरिष्ठ बहुत आश्चर्यचकित हुए।

एक बार, जब सिमीओन पर पवित्र आत्मा का प्रकाश हुआ, तो शैतान का पूरा राज्य और सभी राक्षसों के भ्रम उसके सामने प्रकट हो गए; क्योंकि उसने स्वयं अंधकार के राजकुमार को एक बड़े सिंहासन पर बैठे देखा, जिसके सिर पर एक मुकुट चमक रहा था, जबकि राक्षसों की कतारें उसके सामने खड़ी थीं; और अंधकार के राजकुमार के मुख के सामने वे सभी सांसारिक प्रलोभन दिखाई दे रहे थे जो उसने तैयार किए थे: सोना, चांदी, कीमती पत्थर और मोती; यह सब, मानो, किसी प्रकार की कीचड़ में पड़ा था; हर जगह तुरही, बांसुरी और अन्य वाद्य यंत्रों की ध्वनियाँ सुनाई दे रही थीं। और पाप एक सुंदर महिला के रूप में दिखाई दे रहा था, जिसके पीछे नौकर थीं जो प्रलोभन डालने वाली थीं, जो लोगों को पाप की ओर लुभा रही थीं: अहंकार की आत्मा, अशुद्धता की आत्मा, आलस्य की आत्मा और लालच की आत्मा दिखाई दे रही थीं; साँप भी दिखाई दे रहा था, जो अपने ही मुँह से कभी तृप्त नहीं होता, और जो पूरी दुनिया को निगलने के लिए तैयार था। प्रलोभन की इन आत्माओं ने सिमीओन को भी पाप की ओर ले जाने की कोशिश की; उन्होंने उसे विभिन्न चालाक शब्दों से पाप करने के लिए बुलाया, लेकिन उसने, अपने सामान्य हथियार – पवित्र क्रॉस के चिह्न – से खुद को लैस करके और मसीह के नाम का आह्वान करके, उन सभी दैवीय भ्रमों को हमेशा अपने से दूर भगा दिया, ठीक वैसे ही जैसे सूरज अंधेरे को दूर भगा देता है। चर्च की ओर देखते हुए, सिमीओन ने परमेश्वर का सिंहासन देखा, जिससे परमेश्वर का तेज निकल रहा था, जो सिमीओन को भी प्रकाशित कर रहा था; उसी क्षण, चर्च से एक महापुरुष संत सिमीओन के पास भेजा गया, जिसके हाथ में सुगंधित मूर्र था; सिमीओन के सिर पर इसे डालते हुए, उसने कहा:

'इस अभिषेक की शक्ति से, आप राक्षसों को भगा सकें! स्वर्ग की दिव्य शक्ति से सुसज्जित, आप उन्हें हजारों की संख्या में मार डालें और दसियों हज़ारों की संख्या में परास्त करें। अतः अपने सृष्टिकर्ता पर भरोसा रखकर हौसला बढ़ाएँ, क्योंकि *'शत्रु उस पर हावी नहीं होगा, और अधर्म का पुत्र उसे सताएगा नहीं'* (भजन संहिता 88:23)।

उस समय से, धन्य सिमीओन ने अशुद्ध आत्माओं पर अधिकार कर लिया और उन्हें लोगों से निकाल दिया, जिन्हें उसने अन्य सभी प्रकार की बीमारियों से भी चंगा किया।

एक दिन, परमेश्वर के सेवक सीमियोन स्टाइलाइट ने धन्य वृद्ध सेवक से इन शब्दों में कहा:

'पिताजी! कुछ ही दिन पहले, प्रभु ने मुझे शैतान की शक्ति और उसकी सारी विनाशकारी संपत्ति का ज्ञान दिया; मैंने उसकी सारी चापलूसी और चालाकी देखी, जिससे वह धर्मात्मा लोगों पर युद्ध छेड़ता है।'

योहन ने सिमीओन से उत्तर दिया:

'ईश्वर तुम्हें उसकी सभी चालाकियों से बचाए, मेरे बच्चे।'

सिमियोन ने कहा:

'भले ही दुष्ट दुष्टात्माओं की शक्ति हम पर बहुत नुकसान पहुँचाने की साजिश रचे, वह थोड़े भी सफल नहीं होगी।'

वरिष्ठ ने, यह देखकर कि युवक राक्षसों के प्रलोभनों को कोई महत्व नहीं दे रहा था, और इस डर से कि वह घमंड में पड़ सकता है, उससे कहा:

'किसी भी हाल में, मेरे बच्चे, हमें राक्षसों की अनेक और विविध चालाकियों से सावधान रहना चाहिए, और केवल अपनी ही सदाचार पर निर्भर रहना पर्याप्त नहीं है; क्योंकि हमारे शत्रु ने लोहे के जूते पहन लिए हैं[3893] , और वह हमेशा संन्यासियों को प्रलोभन में डालने का प्रयास करता रहता है; और जब भी उसे कोई अनुकूल अवसर मिलता है, तो वह संन्यासियों के विरुद्ध एक भयंकर युद्ध छेड़ता है। हमारी ओर से, हमें हमेशा ईश्वर से प्रार्थना करनी चाहिए और सहायता के लिए इम्मानुएल[3894] को पुकारना चाहिए, ताकि वह हमेशा हमारे साथ रहे और शत्रु की सारी शक्ति को चूर-चूर कर दे।

जब संत इस प्रकार बातें कर रहे थे, तब शैतान, उनकी बातचीत सुनकर, क्रोध से भर गया और उस युवा तपस्वी पर दाँत पीसने लगा; फिर उसने विभिन्न भ्रामक दृश्यों से उसे भयभीत करना शुरू कर दिया, कभी स्वयं को भयंकर साँपों में, कभी जानवरों में बदलकर, दिन-रात उस पर झपटता रहा मानो उसे निगल जाना चाहता हो। लेकिन धन्य सिमोन, सर्वोच्च ईश्वर को अपना सहायक मानकर और स्वयं को क्रॉस के चिह्न से ढकते हुए, बोले:

'मैं *"रात के भय, दिन में उड़ने वाले तीर, अँधेरे में घात लगाने वाली महामारी, दोपहर में तबाही मचाने वाली प्लेग"* (भजन संहिता 90:5-6) से नहीं डरूँगा।'

दिसंबर की एक रात, विशेष रूप से रात की दूसरी पहर में, शैतान ने अपनी सारी फौज इकट्ठा करके, अचानक संत सिमोन की ओर बढ़ चला और स्तंभ के ऊपर बनी छत को फाड़कर, धन्य सिमोन को स्तंभ से नीचे फेंक दिया। लेकिन ईश्वर के हाथ ने उस युवक की रक्षा की; और इस प्रकार संत बिना किसी चोट के स्तंभ के पास खड़े रहे, उनका हौसला अटूट था, क्योंकि वे शत्रु के हमले से जरा भी नहीं डरे थे। फिर शैतान ने समुद्र से एक तेज और प्रचंड हवा उकसाई; एक तूफान उठ खड़ा हुआ, गरज की आवाजें सुनी गईं, और रात भर बिजुली चमकती हुई सिमियोन के स्तंभ पर गिरती दिखाई दी। तथापि, पूज्य जॉन ने यह सोचकर कि सिमोन पहले ही गरज और बिजली से गिर चुका है, रोना शुरू कर दिया और भिक्षुओं से विनती की कि वे जाकर देखें कि क्या वह लड़का अभी भी जीवित है और क्या वह अभी भी स्तंभ पर है। लेकिन भिक्षुओं ने जॉन को कोई जवाब नहीं दिया, क्योंकि उस दैवीय भ्रम के डर से, वे अपनी कुटियाओं से बाहर नहीं निकले; और भिक्षुओं में कुछ ऐसे भी थे जो उस युवक सिमोन से नफरत करते थे, और वे दैवीय प्रलोभन के आगे झुक गए थे। भिक्षुओं ने एक-दूसरे से कहा:

'तो फिर, उस लड़के का तप, जो मानवीय शक्ति से परे है, कहाँ है? उसके पराक्रम कहाँ हैं? उसके चमत्कार कहाँ हैं? अब वह खुद अपनी मदद करे!'

लेकिन धन्य सिमोन ने, यह सुनकर कि वरिष्ठ जॉन उसके लिए रो रहे थे, उन्हें ऊँचे स्वर में पुकारा, और कहा:

'पिताजी, मेरे लिए शोक न करें, क्योंकि मुझे मसीह की कृपा से कोई हानि नहीं हुई है; परन्तु शैतान लज्जित हुआ है।'

जब सुबह हुई, तो भिक्षु सिमियिन के स्तंभ की ओर चल पड़े, यह सोचकर कि वे उस युवक को पहले ही मृत पाएँगे; लेकिन, उसे जीवित और प्रसन्न देखकर, उसका चेहरा परमेश्वर के एक स्वर्गदूत की तरह चमक रहा था, वे लज्जित हो गए। बड़े जॉन द्वारा फटकारे जाने पर, वे अपमानित होकर अपनी कुटियाओं में लौट गए।

अंतियोखिया के आर्चबिशप एफ्रेम ने धन्य सिमोन के बारे में सुना। उसके द्वारा अपने जीवन को पुण्य के महान कार्यों से व्यतीत करने के बारे में जानकर, एफ्रेम उसके पास आया और उस युवक को देखकर—जो शरीर से तो बहुत छोटा था, परन्तु मसीह के साथ स्वयं को सूली पर चढ़ाकर, पुण्य के जीवन में पहले ही इतना परिपूर्ण था—उसने परमेश्वर की स्तुति की और आँसुओं के साथ अपने नगर लौट गया, तथा नागरिकों के लाभ के लिए हर जगह इस मसीह के सेवक के कठोर तपस्वी जीवन के बारे में बताता गया।

उस समय से, कई भिक्षु और गृहस्थ धन्य सिमोन के पास आने लगे—कुछ उन्हें देखने के लिए, कुछ उनके दैवीय प्रेरित संवाद का आनंद लेने के लिए, और अंत में, कुछ अन्य अपने शारीरिक रोगों से ठीक होने के लिए, क्योंकि वे सिमोन में एक ऐसे चिकित्सक और उपचारक को देखते थे जो बिना किसी शुल्क के सेवा करते थे।

एक दिन, धन्य सिमियिन ने उनसे आए लोगों से एक मज़बूत और कसी हुई रस्सी माँगी और किसी को भी बताए बिना, उन्होंने उसे अपने शरीर पर इतनी कसकर लपेट लिया कि वह रस्सी उनकी हड्डियों तक समा गई; उनके शरीर पर छाले हो गए जिनसे खून बहने लगा; खून में भीगी हुई रस्सी संत के शरीर से चिपक गई; उसका मांस पहले ही सड़ना शुरू हो

[3893] यह राक्षसों की शक्ति और चालाकी को दर्शाने वाला एक रूपक अभिव्यक्ति है।

[3894] इम्मानुएल वह नाम है जो मसीहा या यीशु मसीह को यशायाह की कुँवारी के पुत्र के जन्म के बारे में प्रसिद्ध भविष्यवाणी (यशायाह 7:14) में दिया गया है। इस नाम का हिब्रू में अर्थ है, 'ईश्वर हमारे साथ है'।

गया था, लेकिन संत समियिन ने अपने तपस्या के इस कार्य को दृढ़ता से सहन कयिा; अंत में, उसके सड़ते हुए मांस से एक बदबू आने लगी। जो संन्यासी स्तंभ पर चढ़कर उनके पास गए, उन्हें पहले यह नहीं पता चला कि यह बदबू कहाँ से आ रही है; लेकिन बाद में, संत के इस महान कार्य को समझने पर, उन्होंने सब कुछ बाबा जॉन को बता दयिा। इस महान पराक्रम से भयभीत होकर जॉन ने आदेश दयिा कि सिमियिन के शरीर से रस्सी को धीरे-धीरे हटा दयिा जाए और उन्होंने संत को अपने शरीर को इतनी भयंकर यातनाओं के अधीन करने से मना कर दयिा।

धन्य समिोन में शक्षिण की कृपा भी थी, जो उनके होठों से नदी की तरह बहती थी। जब वरषि्ठ जॉन भाइयों को एक साथ इकट्ठा करते थे, तो वे समियिोन को उपदेश देने का नरि्देश देते थे, और वे स्वयं प्रेम से उनकी बात सुनते थे। और इस प्रकार वह जवान लड़का वरषि्ठों के लिए एक बुद्धमिान और सहायक शक्षिक था, क्योंकि उसके होंठ पवत्रि आत्मा की कृपा से परपिूर्ण थे।

वरषि्ठ योहन समिीओन को उसकी शक्षिण प्रतभिा के कारण 'नया दाऊद' कहते थे; उन्होंने उसे एक सपने में उसके बारे में मलिी दर्शन के बारे में भी बताया, अर्थात्, उन्होंने देखा था, मानो एक दव्यि शक्ति अपने दाहनिे हाथ में एक मधुकोश पकड़े हुए थी जसिसे उस लड़के के सरि पर शहद टपक रहा था।

एक बार एक अन्य वृद्ध ने शमिोन के स्तंभ की ओर इशारा करते हुए भाइयों से पूछा:

'क्या इस स्तंभ में कोई कबूतर हैं?'

भाइयों ने उत्तर दयिा:

– नहीं।

तब बूढ़े आदमी ने कहा:

– मैंने एक कबूतर को देखा, जो रूप में तेजस्वी था, वह दरवाज़े से होते हुए लड़के के पास आया, फरि, एक घंटे बाद, उससे बाहर नकिलकर स्वर्ग में आरोहण कर गया।

जब वृद्ध भाइयों से बात कर रहे थे, तो धन्य समिोन को एक दर्शन हुआ: उन्हें ऐसा प्रतीत हुआ कि उन्हें बहुत ऊँचाई पर उठा लयिा गया और वे पंखों वाले की तरह पूरे ब्रह्मांड में उड़ रहे थे; तब उसे ऐसा प्रतीत हुआ कि उसे सात सीढ़ियों से एक ऊँचे पर्वत पर ले जाया गया, जहाँ, पवत्रि प्रेरति पौलुस की तरह, उसने वह देखा जो *'कोई आँख नहीं देखी'* और सुना जो *'कोई कान नहीं सुना'* (1 कुरन्थियों 2:9)।

संत समियिन, वहाँ से उतरकर, उस व्यक्ति से पूछा जो उनका मार्गदर्शन कर रहा था:

'मैंने क्या देखा था?'

उस व्यक्ति ने उत्तर दयिा:

'ये वे सात स्वर्ग हैं जनिमें तुम उठा लिए गए थे।'

तब संत ने स्वर्ग का दर्शन कयिा, और सुंदर बगीचे, और शानदार और वशिाल महल, और वहाँ बहती हुई शांति का फव्वारा। यहाँ आदरणीय संत ने आदम और पश्चातापी चोर के सविा और कसिी को नहीं देखा।

जब समियिोन को होश आया, तो उसने वृद्ध जॉन को वह सब कुछ बताया जो उसने देखा था। वृद्ध ने सुनकर कहा:

'मेरे बच्चे! धन्य है वह ईश्वर, जसिने तुझ पर इतना अनुग्रह कयिा है।'

इस बीच, वह लड़का अपने तपस्वी कार्यों में दनि-ब-दनि अधकि सफल होता गया। यदि कोई उसके पास आता था जसिके पास कपड़े नहीं थे, तो वह अपने कपड़े उतारकर आगंतुक को दे देता था, जबकि वह खुद नग्न रह जाता था; वह ऐसा न केवल गर्मयिों में बल्कि सर्दयिों में भी करता था। हालाँकि, वृद्ध जॉन ने कई मौकों पर उसे कपड़े पहनाए, भले ही वह लड़का ऐसा नहीं चाहता था, क्योंकि उन्हें डर था कि वह ठंड और पाले से मर जाएगा। लेकिन वह लड़का, अपना सीना पीटते हुए, रोता हुआ कहने लगा:

'हाय, मैं कतिना दुर्भाग्यशाली हूँ! देखो, पवत्रि चालीस शहीदों ने मसीह के नाम के लिए झील क[3895] में ठंड और पाले को सहन कयिा, और मैं तो थोड़ी सी ठंड से भी डर रहा हूँ। तो फरि मैं अनंतकाल के दाँत पीसने से कैसे बचूँगा? मैं संतों के समान भाग्य में कैसे शामलि हो सकता हूँ?'

और शमिोन ये और इसी प्रकार के वचन बोलते हुए, बहुत समय तक रोया।

[3895] यह पवत्रि चालीस शहीदों के पराक्रम को संदर्भति करता है, जन्हिोंने चौथी शताब्दी में अर्मेनयिा के सेबास्टे शहर में कष्ट सहे। उनकी स्मृति पवत्रि चर्च द्वारा 9 मार्च को मनाई जाती है।

तथापि, वरिष्ठ संत व्यथित हो गए और कहा:

'सिमोन, तुम अपने साथ और क्या करना चाहते हो? अब तुम्हें बस खुद को मारने के लिए एक चाकू चाहिए!'

कुछ समय बाद, सिमीओन ने अपने शरीर के लिए यह यातना सोची: वह अपने पैरों पर बैठ गया और पूरे एक साल तक नहीं उठा; परिणामस्वरूप, उस सम्माननीय व्यक्ति की जांघें और पिंडलियाँ सड़ने लगीं, जिससे सड़न से चारों ओर एक भयानक बदबू फैल गई। अब्बा जॉन ने एक चिकित्सक को बुलाया और उसे सिमीओन के घावों का इलाज करने के लिए कहा, लेकिन सिमीओन मुस्कुराते हुए कहने लगा:

'जिस प्रकार मेरे प्रभु जीवित हैं! कोई भी मानव हाथ या सहायता मुझे छू न सके।'

लेकिन प्रभु ने, अपनी कृपा से, उन्हें स्वास्थ्य प्रदान किया, और वह युवक अपने पैरों पर खड़ा हो गया, उसके पैर और जांघें स्वस्थ थीं, और उन पर उसके घावों के किसी भी दाग का निशान तक नहीं था। घुटनों के बल गिरकर, संत ने अपनी चंगाई के लिए लंबे समय तक परमेश्वर का धन्यवाद किया।

जब पेंटेकोस्ट का पर्व आया, तो पर्व के दिन की सुबह धन्य सिमोन ने परम पूजनीय जॉन से पूछा:

'पिताजी, पवित्र आत्मा को प्राप्त करने के लिए कौन योग्य है, ठीक वैसे ही जैसे पवित्र प्रेरितों ने उन्हें आग की जीभों में प्राप्त किया था?' (प्रेरितों के काम 2:1–4)।

वरिष्ठ ने उत्तर दिया:

'जो तुम्हारी पहुँच से परे है उसे न खोजो, और न ही उस बात की जाँच-पड़ताल करो जो तुम्हें नहीं पता; बल्कि उस बात पर मनन करो जिसका तुम्हें आज्ञा दी गई है।'

युवक ने उत्तर दिया:

– पवित्र धर्मग्रंथ में लिखा है: *'वह अपने भक्तों की इच्छाएँ पूरी करता है; वह उनकी पुकार सुनता है और उन्हें बचाता है'* (भजन संहिता 144:19)।

यह कहकर, युवक ने अपनी आँखें स्वर्ग की ओर उठाईं और अपने हृदय की गहराई से, ईश्वर से इन शब्दों में प्रार्थना की:

'हे प्रभु, जिसने अपने पवित्र शिष्यों और प्रेरितों पर अपना पवित्र आत्मा भेजा, वही अनुग्रह का वरदान मुझ पर भी भेजो; *"मुझे समझ दे, कि मैं तेरी आज्ञाओं को सीख सकूँ"* (भजन संहिता 118:73), क्योंकि आप *'शिशुओं के होठों से'* (भजन संहिता 8:3) अपनी स्तुति कर सकते हैं। अपना पवित्र आत्मा मुझ पर उतारें, ताकि मैं लोगों को जीवन के वचन प्रचार कर सकूँ।

जब संत इस प्रकार प्रार्थना कर रहे थे, तब स्वर्ग से पवित्र आत्मा एक जलती हुई मोमबत्ती के रूप में उन पर अवतरित हुआ और उनके हृदय को ज्ञान और समझ से भर दिया, जिससे संत ने दिव्य शास्त्रों से सभी को उपदेश देते हुए, विस्तार से बोलना शुरू कर दिया; उनके भीतर वास करने वाले आत्मा के ज्ञान का कोई भी विरोध नहीं कर सका। और न केवल अपने शब्दों के माध्यम से, बल्कि अपने लेखनों के माध्यम से भी, संत ने मठवाद, पश्चाताप, मसीह के अवतार, और अंतिम न्याय पर कई आत्मा-रक्षक प्रवचन दिए; इसके अलावा, उन्होंने पवित्र धर्मग्रंथ के कई कठिन अंशों की व्याख्या की।

वरिष्ठ जॉन उस युवा लड़के में ऐसी प्रतिभा देखकर अत्यंत चकित हुए और कहा:

'इस लड़के में, जो दाऊद ने लिखा था वह पूरा हुआ है: *"प्रभु का वचन उसे आज़माया गया"* (भजन संहिता 104:19)। अब मैं समझ गया हूँ कि वह कई अद्भुत कार्य करेगा, जो लगभग प्रेरितों के कार्यों जितने ही महिमामय होंगे।'

और अन्य सभी भिक्षु उस लड़के को देखकर बहुत चकित हुए, और यहाँ तक कि उससे डरने भी लगे, वे न केवल उसकी शिक्षा से बल्कि उसके द्वारा किए गए चमत्कारों से भी आश्चर्यचकित थे।

उन भिक्षुओं में से कुछ ने एक सपने में तीन हॉल, उनके भीतर तीन सिंहासन, और सिंहासनों पर रखे तीन मुकुट देखे। जब उन भिक्षुओं ने पूछा कि यह महिमा किसके लिए तैयार की गई है, तो उन्होंने एक आवाज़ सुनी जो कह रही थी:

'युवा सिमोन के लिए!'

आदरणीय सिमोन, अपने दैवीय जीवन से सूर्य की भाँति चमकते हुए, सांसारिक सभी चीजों से ऊपर उठकर स्वर्गीय की ओर और भी ऊँचा उड़ान भर रहे थे। वे एक और भी ऊँचे स्तंभ पर तपस्या करना चाहते थे, इसीलिए उनके लिए चालीस सीढ़ियों का एक स्तंभ बनाया गया। जब सिमोन इस स्तंभ पर चढ़ने की तैयारी कर रहे थे, तो एंटिओक के आर्चबिशप और सेल्यूकिया के बिशप, उस युवा लड़के के कारनामों के बारे में सुनकर, यह जानकर उनके पास आए। अपने पुरोहितों के साथ

मठ पहुँचकर, उन्होंने श्रद्धापूर्वक उस धन्य युवक को लिया और जली हुई मोमबत्तियों के साथ, पहले उसे चर्च में - पवित्र वेदी तक ले गए, जहाँ उन्होंने उसे एक डिकन के रूप में अभिषिक्त किया - और फिर, भजन गाते हुए, उसे उस स्तंभ पर चढ़ा दिया। और संत सिमोन आठ साल तक उस स्तंभ पर रहे। वरिष्ठ जॉन उस युवक के लिए अपने हृदय में गहराई से दुखी थे, क्योंकि वे उसका चेहरा नहीं देख पा रहे थे । हालाँकि, सिमोन ने ऊँचे स्तंभ पर रहते हुए, सभी को अपना स्वर्गदूत जैसा जीवन प्रकट किया, खुद को करूबों के समान समझा, और लगातार परमेश्वर की महिमा की।

लेकिन ताकि कोई मनुष्य ईश्वर के सामने घमंड न करे या स्वयं को बड़ा न माने, ईश्वर ने शैतान को सिमोन के खिलाफ एक भयंकर सांसारिक लड़ाई छेड़ने की अनुमति दी: शैतान ने उसे स्वप्नलि दृश्यों से कलंकित करने का प्रयास किया, लेकिन उस युवक ने बहादुरी से प्रलोभन का विरोध किया; शिमोन ने अपनी आँखों को नींद से वंचित रखा और प्रभु से उत्कटता से प्रार्थना की, उनसे अपने विरुद्ध उठ रहे शत्रु के खिलाफ अपनी सहायता करने का आग्रह किया। तब शिमोन ने स्वर्ग से उतरते हुए एक सम्माननीय पुरुष को देखा, जिसका मुखमंडल तेजस्वी और बाल सफेद थे, जो पुरोहित के वस्त्र पहने हुए था और उसके हाथों में मसीह के शरीर और रक्त के दिव्य रहस्यों से भरा एक प्याला था; तब सारा वातावरण एक अकथनीय सुगंध से भर गया; जब वह तेजस्वी पुरुष धन्य सिमियोन के पास आया, तो उसने उसे पवित्र और जीवन-दायक रहस्यों से सहभागी किया और कहा:

'हौसला रखो, और अपने हृदय को मज़बूत करो! अब से, स्वप्न-सदृश दर्शन तुम्हें परेशान नहीं करेंगे; बस अपने विचारों पर ध्यान दो और ईश्वर पर अपना भरोसा रखो।'

दिव्यदृष्टि के कारण परम आनंद और हृदय की अकथनीय मधुरता से परिपूर्ण संत सिमोन ने ईश्वर की स्तुति की।

उस धन्य युवक ने स्वयं को विभिन्न अधार्मिक विचारों और लोगों से बातचीत करने, दोनों से बचाया: वह हर दिन नौवें घंटे तक स्वयं को अलग रखता था, और केवल ईश्वर के अलावा किसी और से बात नहीं करना चाहता था।

इस बीच, अबा जॉन द स्टाइलाइट के धन्य निधन का समय आ गया। इस निधन का पूर्वाभास पाकर, धन्य सिमियिन ने जॉन को संदेश भेजा:

'सम्माननीय पिता, यदि आप अपने निधन के दिन के बारे में सुनें तो शोक न करें, क्योंकि मृत्यु सभी मनुष्यों का सामान्य भाग्य है। मैं जानता हूँ कि अब मसीह ईश्वर आपको विश्राम के लिए बुला रहे हैं, ताकि आपके श्रम के बाद, आप अन्य संतों के साथ विश्राम कर सकें। आदरणीय पिताजी, मुझे अब्राहम का आशीर्वाद प्रदान करें, और जब आप परम पवित्र और एकसार त्रिमूर्ति के महिमा के सिंहासन की उपासना करने आएँ, तो मेरा स्मरण करें; हमारे लिए प्रार्थना करें, कि हम भी, संसार पर विजय प्राप्त कर, स्वर्ग का राज्य प्राप्त करें, और वहाँ एक-दूसरे से मिलें।

योहन ने ये वचन सुनकर उनकी सच्चाई पर संदेह नहीं किया; न ही उसका हृदय भय से भर गया, क्योंकि वह मृत्यु के लिए हमेशा तैयार रहता था, भले ही उस समय वह किसी बीमारी से पीड़ित नहीं था, बल्कि शरीर से पूरी तरह स्वस्थ था। योहन ने दूत के द्वारा सिमीओन को उत्तर दिया:

'जिसे परमपिता को तुमने खोजा है, वह तुम्हें आशीर्वाद दे, हे मेरे बच्चे; और परमपिता के एकलौते पुत्र, जिसे तुमने प्रेम किया है, वह तुम्हें आशीर्वाद दे; और जीवन-दायक आत्मा, जिसकी तुमने अपने पूरे हृदय से लालसा की है, वह तुम्हें आशीर्वाद दे। परम पवित्र त्रिमूर्ति का एकमात्र ईश्वर आपकी शक्ति और सुरक्षा बने, और वह आपका मार्गदर्शन करे और आपको सांत्वना दे। जो भी तुम्हें आशीर्वाद दें, वे धन्य हों, और जो तुम्हें शाप दें, वे शापित हों। प्रभु तुम्हें सम्मान और महिमा प्रदान करें क्योंकि तुमने मुझे, अपने आध्यात्मिक पिता को, वैसे ही सम्मानित किया जैसे तुम अपने सांसारिक पिता को करते। तुम्हारी धन्य माता, जिन्होंने मेरी इतनी अच्छी सेवा की है, उन्हें भी प्रभु से अनुग्रह और दया मिले।

वरिष्ठ के पास खड़े भाइयों ने ये शब्द सुनकर भयभीत हो गए और धन्य योहन से पूछा:

'क्या बात है, आदरणीय पिता, आप युवक सिमीओन के संबंध में क्या वसीयत कर रहे हैं?'

वरिष्ठ ने उत्तर दिया:

'मैं हार्दिक रूप से कामना करता हूँ कि आप सभी ईश्वर से उसकी उत्कट प्रार्थना में सिमोन के उदाहरण का अनुसरण करें; काश आपको भी इस लड़के की मध्यस्थता प्राप्त हो, क्योंकि वह स्वयं ईश्वर द्वारा चुना गया एक महान और सम्माननीय पात्र है।'

तब बाबा योहन ने भाइयों को आत्मा-रक्षक उपदेश दिए और उनके लिए प्रार्थना की; इसके बाद वे कुछ देर विश्राम करने के लिए अपने बिस्तर पर लेट गए, और शीघ्र ही बिना किसी शारीरिक पीड़ा के, सदा के लिए एक सुखद निद्रा में लीन हो गए - और इस प्रकार अन्य धन्य पिताओं के पास चले गए।

धन्य वृद्ध जॉन के निधन के बाद, संत सिमियिन ने स्वयं को और भी बड़े परिश्रमों में लगाना शुरू कर दिया। उनकी दैनिक दिनचर्या इस प्रकार थी: सुबह जल्दी से लेकर नौ बजे तक वे प्रार्थना करते थे; नौ बजे के बाद वे सूर्यास्त तक किताबें पढ़ने और उनकी नकल करने में खुद को समर्पित करते थे; और सूर्यास्त के बाद वे फिर से प्रार्थना शुरू कर देते थे, और भोर तक निरंतर प्रार्थना में पूरी रात जागते रहते थे। जब दिन का उदय होता, तो सिमियोन नींद को, मानो एक सेवक को, थोड़ी देर के लिए अपने पास आने देते थे। थोड़ी देर झपकी लेने के बाद, वह जल्द ही उठ जाता और अपनी नियमित प्रार्थना शुरू कर देता। प्रार्थना के दौरान, वह अपने दाहिने हाथ में धूप का धुआं पकड़े रहता, जो बिना जलती कोयलों के ही चारों ओर सुगंध फैला देता था । कभी-कभी उसे एक आवाज़ सुनाई देती, मानो हवा में लोगों की भीड़ से आ रही हो, जो उसके साथ गा रही हो और घोषणा कर रही हो:

– अल्लेलुया!

यह पवित्र स्वर्गदूतों की आवाज़ थी।

संत अक्सर कई दिन और रातें बिल्कुल भी सोए बिना बिताते थे। एक अवसर पर, उन्होंने तीस दिनों और तीस रातों तक बिल्कुल भी नहीं सोया, और ईश्वर से प्रार्थना की कि वे उनकी आँखों से नींद को दूर कर दें। और ईश्वर ने उनसे कहा:

'तुम्हारे लिए उचित है, भले ही थोड़ी देर के लिए ही सही, कि तुम अपने शरीर को नींद के द्वारा आराम दो।'

हालाँकि, शैतान, धन्य सिमोन द्वारा ऐसे गौरवशाली कार्य को सहन न कर सका, और एक बार फिर अपनी पूरी सेना के साथ उनके विरुद्ध निकल पड़ा, और विभिन्न काल्पनिक दृश्यों से उन्हें डराने का प्रयास करने लगा; कभी वह खुद को साँपों में बदलता, तो कभी विभिन्न जानवरों में, और उन सबके जबड़ों से संत पर झपटता; कभी-कभी वह खुद को एक युवा चेहरे वाले अजीब पक्षी में बदल लेता था, और उस पूजनीय संत पर झपटता था; तो कभी वह उसे महान चिल्लाहटों के साथ युद्ध में मार्च करते हुए कई योद्धाओं के रूप में दिखाई देता था, जिसका उद्देश्य संत को स्तंभ से भगाना और स्वयं स्तंभ को जमीन पर गिरा देना था। एक बार शैतान ने एक बड़े पत्थर से स्तंभ पर प्रहार किया; स्तंभ झुक गया, मानो गिरने ही वाला हो, लेकिन ईश्वर की एक अदृश्य शक्ति ने उसे सहारा दिया और फिर से सीधा कर दिया। एक अन्य अवसर पर, राक्षस एक युवती के रूप में प्रकट हुआ, जिसका चेहरा काला और व्यवहार में निर्लज्ज था, जिसने संत की गर्दन के चारों ओर अपनी बाहें डालने की कोशिश की और कहा:

'यह आखिरी बार है जब मैं तुमसे लड़ूँगा, और अगर तुम मुझ पर काबू पा गए, तो मैं कुछ समय के लिए तुमसे दूर चला जाऊँगा।'

संत ने प्रार्थना और पवित्र क्रॉस के चिह्न द्वारा इन सभी और इसी तरह के राक्षसी दृष्टिकोणों और प्रकट होने वालों को भगा दिया।

संत को एक अद्भुत दैवीय दर्शन भी हुआ: उन्होंने स्वर्ग खुलते देखा और हमारे प्रभु यीशु मसीह को, एक अकथनीय तेज से घिरे हुए, मानो किसी अग्नि की लपट से; प्रभु के सामने पवित्र महादूत, माइकल और गब्रियल खड़े थे, एक उनके दाहिने हाथ और दूसरा उनके बाएँ हाथ में। प्रभु के पैरों के नीचे एक गाढ़ा लाल बादल था। यह सब देखकर, संत सिमोन अपने प्रभु के सामने झुक गए और उनके प्रति अपने हाथ फैलाकर, उनसे उनकी दया से, अच्छे फल देने में सहायता करने का आग्रह किया। प्रभु मसीह ने अपनी उंगलियों से सीमोन को तीन बार आशीर्वाद दिया। फिर, नीचे देखते हुए, सीमोन ने पृथ्वी पर राक्षसों की एक बड़ी भीड़ देखी, जो विभिन्न रूप धारण कर रहे थे: उनमें से कुछ जंगली सूअरों के रूप में थे, और कुछ बकरियों के रूप में। और प्रभु ने सिमोन को उन सभी राक्षसों पर अधिकार दिया, ताकि वह उन्हें भगा सके। इस अधिकार के चिन्ह के रूप में, प्रभु ने सिमोन को खजूर के पेड़ की एक लाठी दी। तुरंत ही, सभी राक्षस सिमोन की उपस्थिति से भाग गए और गायब हो गए, किसी को नहीं पता कि कहाँ।

धन्य सिमीओन ने उन लोगों से भी सभी दुष्ट आत्माओं को भगा दिया जो उसके पास लाए गए थे और जो दानवों से ग्रस्त थे; संत ने कई अन्य बीमारियों को भी ठीक किया और यहां तक कि मृतकों को भी जीवित कर दिया। इस प्रकार, एक अवसर पर, एक आदमी जिसका बेटा मर गया था, संत के पास आया। आँसुओं से संत के चरणों में गिरकर, उस व्यक्ति

ने परमेश्वर के पुरुष से उस बड़ी वपित्ति से बचाने और अपने मृत पुत्र के लिए परमेश्वर से प्रार्थना करने का आग्रह किया। संत ने परमेश्वर से प्रार्थना करने के बाद, उस व्यक्ति से कहा:

'प्रभु के नाम पर जाओ! तुम्हारा बेटा जीवित है!'

उस आदमी ने संत के शब्दों पर विश्वास किया। अपने घर लौटने पर, उसने वास्तव में अपने बेटे को मृतकों में से जी उठा हुआ पाया। उसे लेकर, वह आदमी अकथनीय आनंद के साथ उसके साथ संत के पास गया और ईश्वर तथा उनके सेवक, संत सिमियिन का धन्यवाद किया।

तब सिमीओन ने फिर प्रभु और हमारे परमेश्वर को देखा, जिनके सामने स्वर्गदूतों की कतारें खड़ी थीं; और स्वर्गदूतों में सबसे आगे वालों ने अपने हाथों में रत्नों से जड़ा एक शाही मुकुट पकड़ रखा था; मुकुट के शीर्ष पर बिजली की तरह चमकता हुआ एक क्रॉस था। इस मुकुट से, स्वर्गदूत सिमीओन को राजा के रूप में ताज पहनाना चाहते थे। यह सब देखकर, सिमीओन ने स्वर्गदूतों से कहा:

'मुझसे वह रौआँ का वस्त्र मत छीनना जो मैंने मसीह के नाम के लिए पहना है।'

देवदूतों ने उनसे उत्तर दिया:

'इसके लिए तुम्हें मसीह के राज्य का मुकुट प्राप्त होगा जो तुम्हारे लिए तैयार किया गया है, और तुम पवित्र आत्मा की कृपा में बैंगनी वस्त्र की भाँति परिधान धारण करोगे, और तुम अन्य संतों के साथ शाश्वत राज्य में राज्य करोगे।'

धन्य सिमियोन, प्रभु को निहारते हुए, ने कहा:

'हे सर्व के प्रभु और सृष्टिकर्ता! यदि आपकी इच्छा हो कि आप मुझे अपने राज्य में अपने संतों का गौरव प्रदान करें, तो मैं आपकी दया से प्रार्थना करता हूँ, कृपा करके मुझे नश्वर मानवीय भोजन का सेवन न करने दें!'

और सिमीओन ने सुना कि प्रभु ने उसकी प्रार्थना स्वीकार कर ली है। तब स्वर्गदूत उस धन्य पुरुष के पास आए, उन्होंने उसे उसकी तपस्वी के बालों वाली कमीज़ पर उसकी तेजस्वी शाही पोशाक पहनाई, उसके सिर पर मुकुट रखाया, और ऊँचे स्वर में गाते हुए यह कहा:

'महानतम महिमामय हैं मसीह, ईश्वर, स्वर्ग और पृथ्वी के राजा; उनके सेवक सिमीओन की भी स्तुति हो!'

इस दर्शन के बाद, संत सिमियिन ने अपने शेष जीवन में सांसारिक भोजन का स्वाद बिल्कुल भी नहीं चखा, बल्कि एक देवदूत द्वारा लाए गए स्वर्गीय भोजन से ही उनका पोषण होता था।

संत सिमियिन द्वारा किए गए महान चमत्कारों और उनके गौरवशाली कार्यों के बारे में बहुत कुछ बताया गया है; हालाँकि, यहाँ हम धन्य सिमियिन के कई कार्यों में से केवल कुछ ही प्रस्तुत करते हैं।

एक अवसर पर, संत सिमोन को अंफियापोलीस शहर और उसके पूरे आसपास के क्षेत्र पर जल्द ही आने वाली सभी विपत्तियों का खुलासा हुआ: सिमोन ने अंफियापोलीस शहर के ऊपर हवा में एक स्वर्गदूत को उसके हाथ में तलवार लिए हुए मंडराते देखा। तब संत ने पूरे मन से प्रभु से प्रार्थना करनी शुरू कर दी, परमेश्वर के समक्ष एक नए मूसा के रूप में अंतीयक शहर के लिए मध्यस्थता करते हुए और प्रभु से विनती करते हुए कि वह लोगों से अपना क्रोध हटा दें। और प्रभु ने उनसे कहा:

'देखो, इस नगर के पापों का क्रंदन मुझ तक पहुँच गया है; इसलिये मैं इस नगर से क्रुद्ध हूँ और इसे आग, तलवार और मृत्यु भेजकर नष्ट कर दूँगा। क्योंकि इस नगर ने अपने पापों से मुझे क्रुद्ध किया है, मैं इसे एक मूर्ख लोगों के हाथ में सौंप दूँगा।'

संत सिमोन ने इस दर्शन के बारे में उन सभी नगरवासियों से कहा जो उनके पास आए थे और उन्हें अपने पापों से पश्चाताप करने के लिए प्रोत्साहित किया।

जल्द ही, प्रभु ने वास्तव में फारस के राजा खुसरू को (उस युवा खुसरू के दादा, जिसने यरूशलेम में प्रभु के क्रूस के जीवन-दायक वृक्ष को बंदी बना लिया था) अंतीयक के विरुद्ध खड़ा किया[3896] । खोसरू एक विशाल फारसी और कलदी

[3896] फ़ारसी में ख़सरो (या, अधिक सटीक रूप से, ख़सरोव) का अर्थ 'राजा' है। यह उपाधि आमतौर पर किसी विशेष राजा के दिए गए नाम के साथ जोड़ी जाती थी। इस मामले में, यह स्वाभाविक रूप से ख़सरो प्रथम अनूशिरवान को संदर्भित करता है, जिनका शासन 531 से 579 तक रहा। उनके पोते, खुसरौ द्वितीय परवेज़ (जो 590 से 628 तक शासन किया), ने 614 में यूनानी सम्राट फोकास के साथ युद्ध के दौरान, यरूशलेम से प्रभु के क्रूस के जीवन-दायक वृक्ष को ले लिया था। सच्ची क्रॉस को 628 में खुसरो द्वितीय के उत्तराधिकारी सुरोस ने, यूनानी सम्राट हेराक्लियस के साथ एक शांति संधि के समापन के बाद वापस कर दिया था।

सेना के साथ पहुँचे और उन्होंने अँटीओक शहर के नागरकिों के साथ एक भयंकर लड़ाई लड़ी। धन्य समिोन ने, हालांकि, स्तंभ पर खड़े होकर और देश पर आक्रमण करने वाले बर्बर लोगों से परमेश्वर द्वारा छपिाए हुए, प्रभु से वनिम्रता से प्रार्थना की, उनसे शहर से अपना क्रोध दूर करने और इसे शत्रुओं के हाथों में न सौंपने की याचना की; फरि भी वह परमेश्वर को प्रसन्न नहीं कर सके या उनके धर्मी क्रोध को शांत नहीं कर सके। संत समिोन को एक नया दर्शन हुआ: समाधि की अवस्था में, उन्होंने अपने सामने एक अत्यंत तेजस्वी क्रॉस देखा, और क्रॉस के पास दो स्वर्गदूत खड़े थे, जनिके हाथों में धनुष चढ़ा हुआ था और तीर तैयार थे। और स्वर्गदूतों ने उनसे कहा:

'प्रभु ने यह क्रूस तुम्हारी रक्षा के लिए शांति के चन्हि के रूप में भेजा है, क्योंकि इस देश के वरिुद्ध परमेश्वर का प्रकोप तुम पर न पड़ेगा; और ये तीर उन शत्रुओं को भगाने के लिए तैयार हैं, यदि वे उस स्थान के पास आने का प्रयास करें जहाँ तुम परश्रिम करते हो। तुम्हारी रक्षा के लिए हमें यहाँ स्थापति कयिा गया है।'

तब समिीओन ने एक दर्शन में देखा कि शहर पर कब्ज़ा हो गया था; दुश्मन उसके केंद्र से होकर मार्च कर रहे थे; हर तरफ़ से बड़ी चीख़-पुकार और रोना-धोना सुनाई दे रहा था; जबकि कुछ नागरकि तलवार से काटे जा रहे थे, कुछ को बंदी बनाकर ले जाया जा रहा था, और कुछ शहर की दीवारों से कूदकर भाग रहे थे; उनमें से उसने अपने मठ के दो भक्षिुओं को देखा, जो बर्बर आक्रमण से डरकर मठ और पहाड़ छोड़कर शहर में भाग आए थे; लेकनि जैसे ही ये भक्षिु शहर से भाग रहे थे, बर्बरों ने उन्हें पकड़ लयिा, और उनमें से एक की तलवार से हत्या कर दी गई, जबकि दूसरे को बंदी बना लयिा गया।

संत ने जो कुछ भी देखा था, वह उस दृष्टि के कुछ ही दनिों बाद सच हो गया। अंतीयक शहर पर दुश्मन ने कब्ज़ा कर लयिा, उसे तलवारों से काट डाला और आग लगा दी, और कई नागरकिों को बंदी बना लयिा गया। लेकनि संत समिीओन की प्रार्थनाओं के कारण, कुछ नागरकि बर्बरों के हाथों से बच नकिले। इस प्रकार, जब बर्बर लोग शहर में घुसे, तो कई नागरकि उन अन्य द्वारों से भागने में सफल रहे जन्हिें अभी तक दुश्मन ने नहीं पकड़ा था; कई नागरकि शहर की दीवारों पर चढ़कर भी बच नकिले। भगोड़े पहाड़ों और रेगस्तिानों में शरण लेने चले गए, और ईश्वर की दया से सुरक्षति रहे, सवािय पहले उल्लेख कएि गए दो भक्षिुओं के।

जंगली लोग उस पहाड़ पर भी आए जसि पर मठ और समियिोन का स्तंभ था, लेकनि वे खाली हाथ लौट गए; क्योंकि वह पहाड़ उनसे उस प्रकार ढका हुआ था, जैसे एक बार माउंट सनिाई अंधकार और एक बादल से ढका था (नरि्गमन 19:16), ताकि जंगली लोगों ने न तो मठ देखा और न ही स्तंभ। कई शत्रु एक अदृश्य शक्ति से आतंकति होकर भाग खड़े हुए; वे इतने बड़े भय से भागे मानो सशस्त्र योद्धाओं की सेनाएँ उनका पीछा कर रही हों; क्योंकि संत समियिन की प्रार्थना उनके वरिोधयिों के वरिुद्ध एक भयानक और अजेय हथयिार थी। मठ में रहने वाले उन सभी भक्षिुओं में से एक भी भक्षिु उन बर्बर लोगों के हाथों पीड़ति नहीं हुआ, सवािय ऊपर उल्लेख कएि गए दो भक्षिुओं के, जो दुश्मन के डर से मठ से शहर भाग गए थे।

जब बर्बर उस भूमि से चले गए, तो कई घायल लोग संत के पास आए; धन्य समिोन ने उन सभी का इलाज कयिा। इसके अलावा, संत ने कई नागरकिों को—जन्हिें पहले ही बंदी बना लयिा गया था—उनकी बेड़यिों और कैद से मुक्त कराया; क्योंकि जो भी लोग बेड़यिों में रहते हुए केवल समिोन का नाम लेते थे, वे तुरंत उनसे मुक्त हो जाते थे; उनके हाथों और पैरों से बंधन टूट गए, और वे बर्बरों के बीच बनि उनके ध्यान में आए चले गए, और फरि दुश्मन की कसिी भी बाधा के बनि अपनी भूमि पर लौट आए। उपरोक्त भक्षिु (जसिका साथी शत्रु की तलवार से मारा गया था) ठीक इसी प्रकार कैद से बच गया था। अंफ़यिोपोलसि के एक सैनकि के साथ शत्रु के हाथ से भागने के बाद, उस भक्षिु ने अपने बारे में नम्निलखिति बातें बताईं:

'जैसे ही हमने धन्य समिीओन को याद कयिा और भावुकता के आँसुओं के साथ, मदद के लिए उनसे प्रार्थना की, वैसे ही हमें बाँधने वाले बंधन ढीले पड़ गए और अपने आप गरि गए; फरि हम उन बर्बर लोगों के बीच से गुज़रे, क्योंकि उनमें से कसिी ने भी हमसे कुछ नहीं पूछा और न ही हमें रोका।'

अंतयिोकयिा नगर के पास, पहाड़ के पास, एक वृद्ध, अंधा व्यक्ति बैठा था; वह भीख पर जीवति था, जो वह उस सड़क से गुजरने वाले सभी लोगों से माँगता था। जब बर्बर लोग शहर की ओर बढ़े, तो उनमें से एक ने बूढ़े आदमी के गले पर अपनी तलवार मारी; हालाँकि, उसने उसका सरि नहीं काटा, बल्कि केवल एक घातक घाव पहुँचाया; बूढ़ा आदमी अपने से बहते खून के एक तालाब में पड़ा था, और मुश्कलि से जीवति था। संत समियिन ने अपनी दूरदर्शी आँख से यह सब देखकर, कुछ भाइयों को उस बूढ़े आदमी को लाने और उसे उनके पास लाने के लिए भेजा। भक्षिुओं ने बूढ़े आदमी को एक चटाई

पर लटिाया और उसे समियिन के स्तंभ तक ले गए। संत ने अपने हाथों में कुछ मट्टिी लेकर और उस पर पवत्रि जल छड़िककर, उसे घाव पर लगाते हुए कहा:

'इमैनुएल के नाम पर, सरि अपनी जगह पर लौट आओ और वहीं मजबूत हो जाओ।'

और तुरंत ही उस वृद्ध का सरि अपनी सही जगह पर वापस आ गया, नसों से जुड़ गया, और पूरी तरह से ठीक हो गया। जब वृद्ध इस भयानक घाव से ठीक हो गया, तो संत समियिन ने कहा:

'देखो, उसकी आँखें खुल गई हैं!'

इस चमत्कार को देखने वाले सभी लोगों ने ईश्वर की स्तुति की।

कुछ समय बाद, धन्य समिीओन वभिन्नि देशों से आने वाले अनगनित लोगों की भीड़ द्वारा पैदा की गई नरिंतर अशांति से परेशान हो गए, जो अपने साथ कई बीमार और अस्वस्थ लोगों को लाते थे। चूँकि यह सब उसकी मौन की जीवन-शैली में बाधा डाल रहा था, इसलिए उसने आठ साल तक तपस्या करने वाले स्तंभ को छोड़कर किसी अन्य, अधकि एकांत स्थान पर जाने का नरि्णय लिया। थोड़ी दूरी पर एक पहाड़ था, जो ऊँचा और पूरी तरह से सुनसान था, क्योंकि वहाँ बलि्कुल भी पानी नहीं था। पानी की कमी के कारण कोई भी वहाँ कभी चढ़ता नहीं था; वहाँ केवल जंगली जानवर, साँप और अन्य वषिैले जीव-जंतु रहते थे।

धन्य समिीओन ने इसी पहाड़ पर जाने का नश्चिय कयिा। जब उन्होंने ऐसा सोचा, तो प्रभु उनके पास प्रकट हुए, उनके साथ कई स्वर्गदूत थे, जो स्वर्ग से एक तेज बादल पर उस पहाड़ पर उतर रहे थे। प्रभु ने उनसे कहा:

'सावधान, समिीओन, इस अद्भुत mountain[3897] पर चढ़, क्योंकि इस समय से इस पहाड़ को इसी नाम से बुलाया जाएगा; इस पर मैं तुझ पर अपनी कृपा प्रकट करूँगा, जसिसे सभी चकति हो जाएँगे।'

और तुरंत ही पहाड़ पर संत को एक ऊँची पहाड़ी और एक चट्टान दखिाई दी, जसि पर प्रभु के पैर खड़े थे; और उस चट्टान का पैर सूर्य की तरह प्रभु की महमिा से चमक रहा था; इस चट्टान पर प्रभु ने समिोन को खड़े होने और तपस्या में स्वयं को समर्पति करने की आज्ञा दी।

जब यह दर्शन समाप्त हो गया, तो समिीओन ने भाइयों को बुलाया और उन्हें प्रभु की इच्छा के बारे में बताया कि उसे उस पहाड़ पर जाना चाहिए। भकि्षुओं के लिए एक वृद्ध और अनुभवी व्यक्ति को मठाधीश नयिुक्त करने के बाद, समिीओन अपने स्तंभ से उतर आए और भाइयों के साथ अद्भुत पहाड़ के लिए रवाना हो गए, जो उनके जाने पर रो रहे थे।

जब संत उस पहाड़ी के पास पहुँचे जो ईश्वर ने उन्हें बताई थी, तो वे रुके और बहुत देर तक ईश्वर से प्रार्थना की। उनकी प्रार्थना के अंत में, स्वर्गदूतों की भीड़ की आवाज़ सुनाई दी, जो 'आमेन!' चलि्ला रही थी।

तब धन्य समिोन ने अपने शष्यिों को उस स्थान पर एक पत्थर का صليب खड़ा करने का नरि्देश दयिा, ताकि वहाँ सुना गई स्वर्गदूतों की आवाज़ की स्थायी याद बनी रहे। अद्भुत पर्वत पर स्थति पहाड़ी को देखकर, संत ने उस पर ईश्वर की महमिा को चमकते हुए देखा; फरि, प्रसन्न होकर उस पर चढ़े, और उसी चट्टान पर खड़े हो गए जसि पर उन्होंने प्रभु को देखा था। उस समय, धन्य समिोन की आयु उन्नीस वर्ष थी।

हालाँकि, संत समियिन को उनके पास आने वाले आगंतुकों से भी यहाँ कोई शांति नहीं मलिी। इसलिए, अगले दनि सुबह-सुबह, समिीओन के मठ में आए लोग, वहाँ परमेश्वर के पुरुष को न पाकर, बहुत वलिाप करने लगे। जब उन्हें पता चला कि संत वहाँ से दूसरे पहाड़ पर चले गए हैं, तो भीड़ का सारा हुजूम वहाँ दौड़ पड़ा, और अपने साथ कई बीमार और अस्वस्थ लोगों को ले आए। आए हुए लोगों को देखकर संत दुखी हो गए, क्योंकि यहाँ भी उन्हें ईश्वर के साथ अकेले रहने नहीं दयिा गया था। हालाँकि, नए आए लोगों पर दया करके, उन्होंने दयालुता दखिायी और मसीह के नाम का स्मरण करते हुए बीमारों पर अपने हाथ रखकर उन्हें चंगा कर दयिा और उन्हें पूरी तरह से स्वस्थ होकर घर भेज दयिा।

एक बार ऐसा हुआ कि उस पहाड़ पर रहने वाला एक शेर उस व्यक्ति पर झपट पड़ा जो पूजनीय के पास जा रहा था; शेर उस व्यक्ति को चीर-फाड़ करने के लिए पूरी तरह तैयार था; लेकनि उस व्यक्ति ने, भागकर उस जानवर से बचने की कोई उम्मीद न रखते हुए, पुकारा:

'ईश्वर के सेवक समिीओन के वास्ते, मुझे कोई हानि मत पहुँचाओ!'

और तुरंत, समिीओन का नाम सुनते ही, शेर काबू में आ गया और उस आदमी को बलि्कुल भी नुकसान नहीं पहुँचाया।

[3897] पवत्रि पर्वत, ओरोंटेस नदी पर स्थति एंटओक, सेल्यूकयिा-शेरयिा और रोस शहरों द्वारा बने त्रकिोण के भीतर स्थति था।

यह आदमी संत के पास आया और उसने उन्हें जो कुछ हुआ था, वह सब बता दिया। दूसरे आगंतुक, जो उस जानवर से डर रहे थे, ने पूजनीय पिता से उस जानवर को उस पहाड़ से भगा देने के लिए कहा, ताकि हर कोई बिना किसी डर के उनके पास आ सके। तथापि, आदरणीय ने अपने शिष्य अनास्तासियस को बुलाया—जिसे उन्होंने ठीक वैसे ही जैसे मसीह ने एक बार किया था, सात दुष्टात्माओं से मुक्त कराया था[3898] —और उससे कहा:

'गुफा में सिंह के पास जाओ और उससे कहो:

'सिमीओन, मसीह का एक सेवक, परमेश्वर के नाम पर तुमसे कहता है: इस पहाड़ से चले जाओ; यहाँ तुम्हारे लिए कोई बिल न हो, कहीं तुम यहाँ आने वाले भाइयों को डरा दो।'

अनास्तासियस सिंह की गुफा में गया और वहाँ उस जानवर को पाकर, उसने उस आदरणीय व्यक्ति के शब्द उसके सामने दोहराए, उससे एक तर्कशील प्राणी की तरह बात करते हुए।

शेर, उस पूजनीय के वचनों का पालन करते हुए, वहाँ से अन्य सुनसान स्थानों की ओर तेज़ी से चला गया, और रास्ते में किसी को भी नुकसान नहीं पहुँचाया।

उस समय, उस देश में विभिन्न प्रकार की बीमारियाँ बहुत व्यापक हो गई थीं, और बहुत से लोग मर रहे थे। तथापि संत ने, अपने आत्मा में यह जानकर कि यह मानव जाति के पापों के कारण ईश्वर के क्रोध के कारण हुआ था, प्रभु से आँसुओं के साथ विनम्रता से प्रार्थना करना शुरू कर दिया, उनसे अपने लोगों पर दया करने और अपने धर्मी क्रोध को उनसे दूर करने की याचना करते हुए। और संत ने प्रभु से एक आवाज सुनी, जो कह रही थी:

'इन लोगों के लिए तुम्हारा हृदय क्यों व्यथित है? क्या तुम मुझसे भी अधिक उनसे प्रेम करते हो? चूंकि उनके पाप और अपराध बढ़ गए हैं, वे दण्ड के पात्र हैं। तथापि, तुम्हें दुखी न करने के लिए, मैं तुम्हें उनके विभिन्न रोगों और व्याधियों को चंगा करने की शक्ति देता हूँ।'

प्रभु ने अपने सेवक सिमीओन से इस प्रकार कहा।

उस स्थान के पास रहने वाले लोग, जैसे ही बीमार पड़ते, तुरंत परमेश्वर के संत सिमियोन की सहायता के लिए पुकारते थे, और वे उन्हें (अपने सपनों में) अपने घरों में आते हुए देखते थे, जो उन्हें क्रॉस के चिह्न से आशीर्वाद देते और उन सभी को चंगा करते थे। जब उनके सपने खत्म हो जाते, तो वे फिर से स्वस्थ महसूस करते हुए जाग उठते थे। वे इस प्रकार सिमीओन का नाम पुकारते थे: वे अपने घरों में तेल से भरे दीपक जलाते और धूप जलाते हुए कहते थे:

'हे मसीह हमारे ईश्वर, पवित्र पर्वत पर परिश्रम करने वाले अपने दास सिमीओन की प्रार्थनाओं के द्वारा, हम पर दया करो!'

और उन्हें प्रभु से दया मिली।

उनमें से जिनके पास तेल की बड़ी आपूर्ति नहीं थी, वे एक धूपदान में तेल डालते और उसे जलाते थे; धूपदान तीसरे या चौथे दिन तक नहीं बुझता था, मानो उसमें लगातार नया तेल डाला जा रहा हो; इस प्रकार, एक चमत्कारिक तरीके से, उनके धूपदानों में तेल कभी खत्म नहीं होता था, क्योंकि उन्होंने सिमीओन का नाम पुकारा था।

एक अवसर पर, प्रभु ने संत सिमियोन को अंᏃᏁओक के परम पवित्र आर्चबिशप एफ्रेम की निकट मृत्यु का प्रकटीकरण किया। भाइयों को अपने पास बुलाकर, संत सिमीओन ने उन्हें यह सूचित किया; फिर सिमीओन ने भाइयों से प्रभु से और भी उत्साहपूर्वक प्रार्थना करने को कहा, क्योंकि, उन्होंने कहा, 'चर्च का एक महान स्तंभ गिरने वाला है।' लेकिन भाइयों ने उत्तर दिया:

'हमने सुना है कि महाधर्माध्यक्ष अच्छे स्वास्थ्य में हैं।'

अगले दिन, सुबह की प्रार्थना सभा के बाद (क्योंकि शुक्रवार था), संत सिमियन ने फिर से भाइयों को बुलाया और उनसे हृदय से भावुक होकर कहा:

'पवित्र पिता एफ्रेम का कल रात निधन हो गया, क्योंकि मैंने उनके प्राण को स्वर्ग ले जाते हुए पवित्र स्वर्गदूतों को देखा। जब वे मेरे पास से गुज़रे, तो एफ्रेम ने मुझे गाल पर चूमा और कहा:

'मैं आपसे विनती करता हूँ, प्रभु से अपनी प्रार्थनाओं में मेरी याद करना।'

तब पूजनीय सिमियन ने आँखों में आँसू लिए हुए कहना शुरू किया:

[3898] यीशु मसीह ने मरियम मग्दलीनी से सात दुष्टात्माएँ निकालीं (देखें मरकुस 16:9)।

'अंतयोकिया पर वनिाश है, क्योंकि अब उसमें कोई एफ्रेम नहीं है! उस नगर पर वनिाश है, क्योंकि एफ्रेम अब उससे ले लिया गया है!'[3899]

धन्य एफ्रेम के नधिन के बाद, महाधर्माध्यक्ष का पद डोमनस[3900] ने संभाला, जो कॉन्स्टेंटनिोपल से अंत्योखिया आए थे। यह डोमनस गरीबों के प्रति निर्दयी थे। यह जानकर, पूजनीय समियिन ने भवष्यिवाणी की कि ईश्वर डोमनस को उनकी नर्दियता के लिए दंडति करेंगे। और वास्तव में, कुछ ही समय बाद डोमनस गंभीर रूप से बीमार पड़ गया: उसके हाथ और पैर टेढ़े-मेढ़े हो गए, जिससे वह न तो चल सकता था और न ही अपने हाथ हिला सकता था, बल्कि लकड़ी के टुकड़े की तरह पड़ा रहता था।

तब संत समियिन को एक भूकंप के बारे में बताया गया जो अंतीयक पर आने वाला था, जो पहले वाले से भी अधकि भयानक था। यह सब उपस्थति लोगों को बताने के बाद, समिोन रोने लगे और ईश्वर से अपने क्रोध को मोड़ने की वनिती करने लगे। उसी शाम, पृथ्वी इतनी जोर से काँपी कि शहर की दीवारें ढह गईं और कई इमारतें धूल-चटा हो गईं; सभी लोग बड़े भय और आतंक से भर गए। कई नागरकि गरिती हुई शहर की दीवारों के मलबे में दबकर मारे गए; फरि भी बाकी लोग ईश्वर के संत के पास अद्भुत पर्वत पर दौड़ पड़े, और उनसे आँसुओं के साथ वनिती करने लगे कि वे प्रभु से इस वपित्ति को समाप्त करने के लिए प्रार्थना करें। जब संत ने बड़ी लगन से प्रार्थना की, तो भूकंप रुक गया; फरि संत ने देखा कि पूर्वी ओर स्वर्ग खुल गया; जहाँ से एक अकथनीय प्रकाश नकिला, जो पश्चातापी लोगों के प्रति ईश्वर की कृपा का सूचक था। फरि, ईश्वर की आज्ञा से, परम पूजनीय समिोन ने अद्भुत पर्वत पर एक मठ बनवाया, और उन लोगों के हाथों से एक चर्च भी बनवाया जिन्हें उन्होंने चंगा किया था (क्योंकि ऐसे बहुत से लोग थे जिन्हें संत समिोन की प्रार्थनाओं से उनके रोगों से मुक्ति मिली थी); बाद में, उनकी प्रार्थनाओं के द्वारा, आदरणीय संत ने मठ के लिए पानी की पर्याप्त आपूर्ति के लिए ईश्वर से वनिती की; उनकी प्रार्थनाओं के द्वारा, मठ के अनाज भंडार में रखे गेहूं की मात्रा भी बढ़ गई, इस हद तक कि तीन वर्षों तक इसकी मात्रा में लगभग कोई कमी नहीं आई, इस तथ्य के बावजूद कि आगंतुकों की भीड़ को खलिाने के लिए अनाज भंडारों से बड़ी मात्रा में अनाज लिया जा रहा था।

इसके बाद, संत समियिन ने एक नया स्तंभ बनाया, जिस पर (जैसा कि रेवरेंड फादर ने स्पष्ट रूप से देखा) प्रभु यीशु मसीह स्वयं अपने पवित्र स्वर्गदूतों के साथ आए और उस स्तंभ को पवित्र किया। धन्य समियिन बड़ी खुशी से उस स्तंभ पर चढ़े, और अपने जीवन के अंत तक उस पर परश्रिम करते रहे।

जब धन्य समियिन तेईस वर्ष के हो गए, तो ईश्वर की आज्ञा से (जो संत को एक दर्शन में प्रकट हुई थी), समियिन ने पुरोहति नयिुक्त होने का संकल्प लिया, यद्यपि वह पहले इस उच्च पद को स्वीकार करने में अनचि्छुक थे। ईश्वर की व्यवस्था से, सेल्यूकिया के बशिप डायोनसियिस, धन्य समिोन के पास आए और उन्हें एक पुरोहति के रूप में अभषिति किया।

पुरोहति के रूप में अभषिेक होने के बाद, धन्य समियिन ने परम पवित्रिता के साथ, एक स्वर्गदूत की भाँति, परमेश्वर की सेवा करते हुए, मसीह के शरीर और रक्त का दविय रक्तहीन बलदिान मनाया। संत को अक्सर ईश्वर से वभिन्नि प्रकार के अद्भुत दर्शन और प्रकटवाक्य होते थे। उन्होंने भवष्यि की घटनाओं की भवष्यिवाणी की, दूर की घटनाओं को ऐसे देख लिया जैसे वे वर्तमान में घटति हो रही हों; संत मनुष्यों के गुप्त वचिारों को भी जान लेते थे। उन्होंने जमीन और समुद्र दोनों पर, तथा दर्शनों में प्रकट होकर, बहुत से चमत्कार किए; उन्होंने अंधों की दृष्टि लौटाई, कुष्ठरोगयिों को स्वच्छ किया, लंगड़ों को चंगा किया, लोगों से दुष्टात्माओं को नकिाला, जंगली जानवरों को वश में किया, हर घाव और हर दुर्बलता को ठीक किया, और मृतकों को जीवति किया, ताकि मसीह के वचन उनमें पूरे हुए: *'जो मुझ पर वशि्वास करता है, वह वे काम करेगा जो मैं करता हूँ और वह इनसे भी बड़े काम करेगा'* (यूहन्ना 14:12)। सचमुच, परमेश्वर अद्भुत थे, जो अपने सेवक, अद्भुत समियिोन में प्रकट हुए!

जब आदरणीय समिीओन पचहत्तर वर्ष के हो गए, तो प्रभु के पास अपने नकिट प्रस्थान का पूर्वानुमान लगाकर, उन्होंने भाइयों को अपने पास बुलाया, उन्हें विस्तार से उपदेश दिया, फरि, साँझ को सभी को अंतमि चुम्बन देकर, उन्होंने[3901] के चौबीस तारीख को अपना प्राण ईश्वर के हाथों में सौंप दिया, ठीक उसी घड़ी जब वे आमतौर पर स्वर्गदूत

[3899] एफ्रेम ने 527 से 545 तक पैट्रआर्क के रूप में कार्य किया।

[3900] डोमनुस द्वतिीय ने 546 से 560 तक पैट्रआर्क के रूप में कार्य किया।

[3901] आदरणीय साइमन द स्टाइलाइट के जीवन की प्रमुख घटनाएँ इस प्रकार हैं: संत साइमन का जन्म 521 में हुआ था; 527 में, छह वर्ष की आयु में, वे स्तंभ पर चढ़ गए; आठ साल बाद, 535 में, वह दूसरे स्तंभ पर चले गए; 22 वर्ष की आयु में, वह चमत्कारों के पर्वत पर चले गए, यानी 543

से अपना भोजन ग्रहण करते थे। पवित्र स्वर्गदूतों के साथ, वह अब शाश्वत राज्य में आनंदित हैं, परमेश्वर का मुख दर्शन करते हुए, और पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा, त्रिमूर्ति में एक परमेश्वर की महिमा करते हुए, जिनकी महिमा अब और युगानुयुग होती रहे। आमीन।

ट्रोपारियन, स्वर 1:

हे तपस्वी, देहधारी स्वर्गदूत और चमत्कार-कर्ता, आप प्रकट हुए हैं, हमारे ईश्वर-वाहक पिता सिमोन: उपवास, जागरण और प्रार्थना के द्वारा, आपने स्वर्गीय वर प्राप्त किए, विश्वास के साथ आने वालों के रोगों और आत्माओं को चंगा करते हुए। उसकी महिमा हो जिसने आपको शक्ति दी; उसकी महिमा हो जिसने आपको मुकुट पहनाया; उसकी महिमा हो जो आपके द्वारा सभी चंगाइयाँ करता है।

कॉन्टाकियन, स्वर 2:

ऊपर की वस्तुओं की इच्छा करते हुए, नीचे की वस्तुओं को त्यागकर, और स्वर्ग के समान एक स्तंभ बनकर: इस प्रकार, हे पूजनीय, आप चमत्कारों की प्रभात से सुशोभित हुए हैं, और आप हम सभी के लिए, सभी के ईश्वर मसीह से अविराम प्रार्थना करते हैं।

पवित्र शहीद मेलेटियस स्ट्रैटलिट्स और उनके साथ 1,318 सैनिकों का कष्ट-सफर

24 मई को स्मरणोत्सव

पवित्र शहीद मेलेटियस रोमन सम्राट एंटोनिनस[3902] के शासनकाल में रहते थे, उन्होंने स्ट्रैटलिट्स[3903] का पद संभाला और वे गालाटिया[3904] प्रांत के दक्षिणी क्षेत्रों से थे। एक ईसाई के रूप में, उन्होंने ईश्वर से प्रार्थना की कि मूर्तिपूजक भ्रम पूरी तरह से समाप्त हो जाए। तब राक्षसों ने, अपनी विनाश के समीप आते देख, कुत्तों में प्रवेश किया और अपने विनाश पर विलाप करने लगे। वे हर ओर भटकते हुए भौंकते रहे और इस प्रकार लोगों में भय पैदा करते रहे, लेकिन संत मेलेटियस ने अपने अधीन सैनिकों के साथ मिलकर उन्हें पराजित किया और मूर्तिपूजक मंदिरों को नष्ट कर दिया। इसके लिए, शहर के राज्यपाल मैक्सिमियिन[3905] , जहाँ पवित्र शहीद[3906] ठहरे हुए थे, ने उन्हें पकड़ने का आदेश दिया और उन्हें मूर्तियों को बलिदान चढ़ाने के लिए मजबूर करने लगे, लेकिन संत ने इसकी बात तक सुनने से इनकार कर दिया। फिर यातना देने वाले ने उन्हें लोहे के हथौड़ों से पीटने और अन्य यातनाएँ देने का आदेश दिया। इसके बाद, संत मेलेटियस को एक चीड़ के पेड़ से लटकाकर उसमें कीलों से ठोक दिया गया, जिससे उनकी मृत्यु हो गई। जहाँ तक

में; 560 में, 39 वर्ष की आयु में, उन्हें पादरी का पद दिया गया। उनकी मृत्यु 596 में, 76 वर्ष की आयु में हुई। – पूजनीय साइमन द स्टाइलाइट, जिनकी स्मृति हम अब मनाते हैं, को एक अन्य साइमन, जो स्वयं एक स्टाइलाइट थे, उनसे अलग किया जाना चाहिए, जिनकी स्मृति 1 सितंबर को मनाई जाती है; उन्होंने भी सीरियाई एंटिओक की सीमाओं के भीतर सेवा की, लेकिन काफी पहले जीवित थे (उनकी मृत्यु 459 में हुई)।

[3902] साइनाक्सारियन में 'निकोडेमस' और अन्य स्रोतों में 'एंटोनिनस' से अभिप्रेत रोमन सम्राट एंटोनिनस हेलीओगाबलस हैं, जिनका शासन 218 से 222 तक रहा।

[3903] स्ट्राटलिइट्स का अर्थ 'राज्यपाल' या 'सैन्य कमांडर' है।

[3904] गालाटिया एशिया माइनर प्रायद्वीप के लगभग केंद्र में स्थित था। उत्तर में इसकी सीमा पाफ्लागोनिया से, पश्चिम में बिथिनिया और फ्रीजिया से, दक्षिण में लिकोनिया और कैपैडोसिया से, और पूर्व में पोंटस से मिलती थी।

[3905] हेगेमोन मैक्सिमियिन, या मैक्सिमिस, शुरू में मिस्र का राज्यपाल था, और बाद में एंटोनिनस ने उसे ईसाइयों पर अत्याचार करने के लिए गैलेटिया भेजा।

[3906] इस शहर को तावियम कहा जाता था। यह पूर्वी गालाटिया में, पोंटस के साथ इसकी सीमा के पास स्थित था।

कमांडरों[3907] स्टीफन और जॉन तथा उनके अधीन सभी सैनिकों, उनकी पत्नियों और बच्चों का सवाल है, उनके सिर तलवार से काट दिए गए। इस प्रकार पवित्र शहीदों[3908] ने मसीह के लिए प्राण त्यागे।

पवित्र शहीद सेरापियन की शहादत, कैलनिकिस, थियोडोर और फाउस्टस के साथ

24 मई को स्मरण किया जाता है

मसीह के पवित्र शहीद सेरापियन मिस्र के मूल निवासी थे। जब संत मेलेटियस शहीद हो रहे थे, तब वे मिस्र से आए और उनके साथ यातनाएं झेल रहे लोगों को देखकर मसीह में विश्वास करने लगे। इसी कारण उन्हें गिरफ्तार कर जेल में डाल दिया गया, जहाँ परमेश्वर के एक स्वर्गदूत ने उन्हें उन लोगों को उपदेश देने के लिए बिशप नियुक्त किया जो मसीह के लिए पीड़ा सहना चाहते थे। उसी दिन, संत मेलेटियस के रिश्तेदार, कोमीट्स और सैनिक इकट्ठा हुए और ऊँचे स्वर में घोषणा की कि वे भी ईसाई हैं, जिससे शासक का क्रोध भड़क उठा। बिशप सेरापियन और जादूगर कैलनिकिोस, जो मसीह में विश्वास करने लगे थे, के सिर तलवार से काट दिए गए; थियोडोर और फावस्टस, कई अन्य लोगों के साथ, खंभे पर जला दिए गए; और महिलाओं और बच्चों को जल्लादों ने लकड़ी की तलवारों से काट-काट कर टुकड़े-टुकड़े कर दिया। इस प्रकार पवित्र शहीदों ने अपनी आत्माएँ प्रभु के हाथों में सौंप दीं।

हमारे पूजनीय पिता निकिता द स्टाइलाइट, पेरियास्लाव के चमत्कारकारिणी की स्मृति

24 मई को स्मरण किया जाता है

हमारे इन पूजनीय पिता का जन्म और पालन-पोषण पेरियास्लाव-ज़ालेस्की[3909] नामक शहर में हुआ था। छोटी उम्र से ही, वह अपनी क्रूर और झगड़ालू प्रकृति के लिए जाना जाता था; वह अशांति फैलाता था और लोगों को बहुत नुकसान पहुँचाता था, उन्हें अदालतों के सामने खींच लाता था और लूटपाट की हरकतें करता था। उसके दोस्त भी उसके जैसे ही थे। एक दिन, अपनी पढ़ाई पूरी करने के बाद, वह शाम की प्रार्थना के दौरान चर्च गया और वहाँ उसने भविष्यवक्ता यशायाह के निम्नलिखित वचन पढ़े: *'अपने आपको धोओ, और शुद्ध हो जाओ; अपनी दुष्टताएँ मेरी आँखों के सामने से हटा दो; बुराई करना बंद करो'* (यशायाह 1:16), आदि। ये शब्द सुनते ही वह भयभीत हो गया, और घर लौटने पर, उसने पूरी रात जागते हुए इन पर विचार किया। अगले दिन, अपनी आदत के अनुसार, वह अपने दोस्तों से मिलने गया, उनके साथ आनंद से समय बिताया, और उन्हें उस दिन अपने घर पर भोजन के लिए आमंत्रित किया। बाद में, वह राशन खरीदने के लिए बाजार गया और, उन्हें घर लाकर, उसने अपनी पत्नी को भोजन तैयार करने का निर्देश दिया। और जब उसकी पत्नी मांस धोने लगी, तो उसने देखा कि उससे खून असामान्य तरीके से बह रहा था; फिर, जब उसने उसे एक बर्तन में रखकर पकाना शुरू किया, तो उसने देखा कि बर्तन में खून उबल रहा था और कभी एक मानव सिर, कभी एक हाथ, तो कभी पैर सतह पर तैरने लगते थे। इससे वह भयभीत हो गई, और उसने अपने पति को बताया। जब वह आया और उसने खुद देखा कि उसकी पत्नी ने उसे क्या बताया था, तो वह लंबे समय तक भय से ग्रस्त रहा; लेकिन फिर, संभलने के बाद, उसने एक गहरी, दिल से निकली आह के साथ कहा:

'हाय मेरे भाग्य! मैंने बहुत बड़ा पाप किया है।'

[3907] एक 'कोमिति' शाही अंगरक्षक, शाही कोष के लिए करों का संग्रहकर्ता, या एक शहर का राज्यपाल होता है; हालाँकि, इस संदर्भ में, 'कोमिति' शब्द का अर्थ सैन्य ट्राइब्यून, यानी शहर के राज्यपालों से है।

[3908] संत मेलेटियस और उनके साथ शहीद हुए अन्य पवित्र शहीदों की शहादत का वर्ष 218 माना जाता है।

[3909] पेरेयासलाव-ज़ालेस्की, जो अब व्लादिमीर गवर्नोरेट का एक जिला शहर है, मूल रूप से प्लेशचिनो झील पर स्थित था, जो क्लाज़्मा नदी की एक सहायक नदी पर्म के उद्गम के पास था, और फिर, लगभग 1152 में, सुज़दल के प्रिंस यूरी डॉल्गोरुकी द्वारा इसे पांच वर्स्ट दक्षिण में एक नए स्थान पर स्थानांतरित कर दिया गया। इसे ज़ालेस्की नाम इसलिए दिया गया क्योंकि यह घने जंगलों में स्थित था जो इसे अन्य शहरों से अलग करते थे।

इन शब्दों के बाद, प्रार्थना करते और जोर-जोर से रोते हुए, वह घर से निकल गया और शहर से थोड़ी दूरी पर चलकर, संत निकिता महान शहीद के मठ[3910] पहुँचा। वहाँ वह इस मठ के मठाधीश के चरणों में गिर पड़ा और कहा:

'मेरी नाश हो रही आत्मा को बचाओ।'

निकिता में इतनी असाधारण परिवर्तन देखकर, मठाध्यक्ष ने उत्तर दिया:

'खुद को परीक्षा में डालो: मठ के द्वार पर तीन दिन बिताओ, और मठ में आने-जाने वाले हर व्यक्ति के सामने रोते हुए अपने पापों का इकरार करो।'

निकिता ने ठीक वैसा ही किया। तीन दिनों तक वह रोता और प्रार्थना करता रहा, सभी के सामने अपने पापों का इकरार करता रहा। इसके बाद, उसने मठ के पास एक दलदली जगह देखी, जो सरकंडों से ढकी हुई थी, और उसके ऊपर मच्छरों और कीड़ों का झुंड उड़ रहा था। वह उस जगह पर गया, अपने कपड़े उतार दिए और, पूरी तरह नग्न होकर दलदल में प्रवेश कर गया, सरकंडों के बीच बैठ गया और ईश्वर से प्रार्थना करने लगा। तीन दिन बाद, मठाधीश ने यह देखने के लिए एक भिक्षु को भेजा कि निकिता क्या कर रहा है। भिक्षु पहुँचा और जब उसे मठ के द्वार पर नहीं मिला, तो थोड़ी खोजबीन के बाद उसे खरपतवारों के बीच लेटा हुआ पाया। उसके ऊपर मच्छरों और कीड़ों का एक विशाल झुंड मंडरा रहा था। मठ लौटने पर, भिक्षु ने महाधर्माध्यक्ष को वह सब बताया जो उसने देखा था। फिर महाधर्माध्यक्ष, मठ के भाइयों के साथ, निकिता के पास गए और उसे ऐसी अवस्था में देखकर कि उसका शरीर भी दिखाई नहीं दे रहा था (उससे इतना अधिक रक्त बह रहा था), उससे कहा:

'मेरे बेटे! तुम अपने साथ यह क्या कर रहे हो!'

लेकिन निकिता ने कोई और जवाब नहीं दिया, केवल मठाधीश से कहा:

'पिताजी! मेरी नष्ट हो रही आत्मा को बचाएँ।'

[3911]इसके बाद, मठाधीश ने उसे मठ में स्वीकार किया, भिक्षु के रूप में उसके सिर का मुंडन किया और उसे एक तंग कोठरी में रख दिया, जहाँ उसने लगातार प्रार्थना और उपवास में खुद को समर्पित कर दिया, दिन-रात जागते हुए बिताए। इस समय, धूर्त शत्रु ने विभिन्न दर्शनों के माध्यम से उसमें भय उत्पन्न करना शुरू कर दिया, लेकिन उसने स्वयं को इन दर्शनों से क्रॉस का चिह्न बनाकर, सहायता के लिए पवित्र महान शहीद निकिता को पुकारकर सुरक्षित रखा, और इस बारे में किसी को कुछ नहीं बताया। जल्द ही निकिता ने चर्च के पास अपने लिए एक स्तंभ खड़ा किया और चर्च की दीवार के नीचे एक संकरा रास्ता खोदा, जिसके माध्यम से वह प्रार्थना करने के लिए चर्च में प्रवेश करता था। ऐसे कारनामों के लिए, उसे ईश्वर से चमत्कार करने का वरदान मिला, क्योंकि विभिन्न बीमारियों से पीड़ित कई लोग जो उसके पास आते थे, उन्हें उसने ठीक कर दिया।

उस समय, चेर्निगोव के धर्मपरायण राजकुमार माइकल[3912] को पक्षाघात हो गया था। संत निकिता के बारे में सुनकर, उन्होंने अपने बोयारों को उन्हें उपचार के लिए पेरियास्लावल शहर में आदरणीय के पास ले जाने का आदेश दिया। जब वह रास्ते में था, तो एक राक्षस भिक्षु के भेष में उससे मिला और उसने दावा किया कि वह उसी मठ का है जहाँ संत निकिता एक भिक्षु के रूप में रहते थे। राजकुमार ने उससे उस पूजनीय भिक्षु के बारे में पूछा, और राक्षस ने जवाब दिया कि वह एक धोखेबाज़ था। इससे राजकुमार बहुत दुखी हो गया। कुछ समय बाद, वही राक्षस, अब एक अलग रूप में, सड़क पर राजकुमार से फिर मिला और उससे कहा:

'राजकुमार, इतनी लंबी यात्रा करके तुम व्यर्थ ही परिश्रम कर रहे हो।'

जब राजकुमार उस मठ से एक खेत की दूरी पर पहुँचा जहाँ पूजनीय व्यक्ति ठहरे हुए थे, तो उसने अपने लिए एक तंबू लगवाने का आदेश दिया ताकि वह अपनी यात्रा से आराम कर सके, और अपने एक बोयार (अधिकारी) को मठ भेजकर पूजनीय व्यक्ति को अपने आगमन की सूचना देने के लिए भेजा। तब वही राक्षस एक एक-आँखे भिक्षु के भेष में, जिसके हाथ में एक फावड़ा था, संदेशवाहक से मिला और उसे बताया कि आदरणीय की मृत्यु हो गई थी और उसने उन्हें पहले ही दफना दिया था।

[3910] निकित्स्की मठ शहर से तीन वर्स्ट उत्तर में, एक खेत में स्थित था। इसका उल्लेख पूजनीय निकिता की जीवनी में मिलता है। इसकी स्थापना की तारीख अज्ञात है।

[3911] जो स्तंभ पूजनीय व्यक्ति ने अपने तपस्या के अभ्यास के लिए बनाया था, वह ज़मीन के ऊपर नहीं बल्कि ज़मीन के नीचे था। यह एक स्तंभ के आकार की गोलाकार खाई या बस एक गुफा थी, इसलिए संत निकिता का स्तंभ-निवास, वास्तव में, एक प्रकार का आश्रम था।

[3912] राजकुमार माइकल, चेर्निगोव के राजकुमार वसेवोल्ड के पुत्र थे। उनके ठीक होने का वर्ष 1186 माना जाता है।

धोखा खाने का एहसास होते ही, बोयार ने संत से प्रार्थना करते हुए राक्षस को डांटा, और राक्षस जिस जगह खड़ा था, वहीं पूरी तरह से अचल हो गया। फिर बोयार संत निकिता के स्तंभ पर गया और उसे राजकुमार के आगमन और उसकी गंभीर बीमारी के बारे में सूचित किया, जिस पर संत ने अपना दंड राजकुमार के पास भेज दिया। धार्मिक राजकुमार माइकल ने इस लाठी को अपने हाथ में लिया और पूरी तरह से स्वस्थ होकर अपने पैरों पर खड़ा हो गया, और वह आदरणीय संत के स्तंभ तक चला गया, उनका आशीर्वाद लिया और अपनी यात्रा के दौरान सामना किए गए दैवीय प्रलोभन के बारे में उन्हें सब कुछ बताया। तब आदरणीय संत ने ईश्वर के नाम पर राक्षस को डांटा और उसे तीन घंटे तक सभी के सामने अपने स्तंभ के पास अचल खड़े रहने का आदेश दिया; जिसके बाद राक्षस ने संत से शपथ ली कि वह फिर कभी लोगों को नुकसान नहीं पहुंचाएगा और तुरंत गायब हो गया। चंगा हो जाने के बाद, धर्मपरायण राजकुमार माइकल ने ईश्वर और पवित्र वृद्ध को हार्दिक धन्यवाद दिया और मठ को उदार दान देकर अपने नगर लौट आए।

इस प्रकार हमारे पवित्र पिता निकिता ने, अपने स्तंभ में रहते हुए और ईश्वर से निरंतर प्रार्थना करते हुए, उन सभी को चंगा किया जो अपनी बीमारियों का इलाज खोजने उनके पास आए।

एक रात, उसके कुछ रिश्तेदार आदरणीय संत के पास आए और उनसे अपने लिए प्रार्थना करने का आग्रह किया; और, उन पर पड़ी भारी बेड़ियों को देखकर—जो शरीर से लगातार घर्षण के कारण चिकनी और चमकदार हो गई थीं—वे समझ बैठे कि वे चांदी की बनी हैं। शैतान के उकसावे में आकर, उन्होंने संत को मारने का निश्चय किया और, , खंभे के पास आकर, उस पर चढ़ी चादर को हटा दिया, उसमें घुस गए और जबरदस्ती संत की आत्मा को उसके शरीर से अलग कर दिया[3913] ।

फिर उन्होंने बेड़ियाँ उठाईं, उन्हें मोटे कैनवास में लपेटा और भाग गए। सुबह की प्रार्थना से पहले, पर-चर्च-प्रमुख[3914] , जैसा कि रिवाज था, संत के स्तंभ पर उनका आशीर्वाद लेने आए; और, जब उन्होंने देखा कि स्तंभ की आवरण हटा दी गई थी, तो वे मठाधीश के पास गए और उन्हें इसकी सूचना दी। फिर वे स्तंभ पर गए और पाया कि पूजनीय संत का शरीर अभी भी गर्म था, और उससे एक मीठी सुगंध आ रही थी। उसे स्तंभ से श्रद्धापूर्वक हटाकर, उन्होंने धूप जलाकर और भजन गाकर, संत निकिता शहीद के चर्च के बगल में, दाईं ओर वेदी के पास, विधिवत दफनाया। उसी क्षण, उस समय जो भी लोग बीमार थे, वे सभी ठीक हो गए।

जहाँ तक पूजनीय की दुष्ट हत्यारों का सवाल है, यह सोचकर कि उन्हें एक कीमती खजाना मिल गया है, वे भागते रहे और जल्द ही वोल्गा नदी तक पहुँच गए। वहाँ उन्होंने कैनवास को खोला और जब देखा कि उसमें तीन पवित्र क्रॉस और भारी लोहे की ज़ंजीरें थीं—जो लंबे समय तक घर्षण से चिकनी और चमकदार हो गई थीं—तो उन्होंने उन्हें यारोस्लावल शहर के पास, संत पीटर द अपोस्टल के मठ के समीप नदी में फेंक दिया।[3915] इसके ठीक बाद वाली पहली ही रात को, उस मठ का एक भिक्षु, जिसका नाम सिमियिन था, ने उस स्थान पर, किनारे से बहुत दूर नहीं, तीन चमकते हुए स्तंभ देखे। वे जमीन से आकाश की ओर उठे और प्रकाश की किरणें बिखेर रहे थे। भिक्षु ने अपने मठ के आर्चिमांड्राइट को इस बारे में बताया, और आर्चिमांड्राइट ने शहर के गवर्नर को सूचित किया; एक बड़ी भीड़ के साथ, वे उस स्थान के लिए रवाना हुए और उन्हें उस पूजनीय की पवित्र बेड़ियाँ मिलीं, जो सूखी लकड़ी की तरह, पानी की सतह पर चमत्कारिक रूप से तैर रही थीं। उन्हें श्रद्धापूर्वक लेकर, वे भजन गाते हुए शहर में ले गए; और, रास्ते में एक लंगड़े आदमी से मिलना हुआ जो जमीन पर हाथ और घुटनों के बल रेंग रहा था, उन्होंने उसे जंजीरों से लगे क्रॉस से आशीर्वाद दिया, जिस पर उसके पैर और घुटने मजबूत हो गए, और वह पूरी तरह से ठीक होकर अपने पैरों पर खड़ा हो गया। इसके अतिरिक्त, विभिन्न प्रकार की बीमारियों से पीड़ित कई अन्य बीमार लोगों को भी उस आदरणीय संत की जंजीरों से चंगा किया गया। कुछ समय बाद, आदरणीय निकिता उपर्युक्त भिक्षु सिमियोन के समक्ष प्रकट हुए और उनसे कहा:

'मेरे कर्मों के इस सम्मानित प्रतीक को उचित समय पर यहाँ से हटाकर मेरी कफ़न पर रखा जाए।'

इसके बाद, पूज्यनीय की जंजीरों को यारोस्लावल शहर से सम्मानपूर्वक पेरियास्लावल शहर में स्थानांतरित किया गया और उनके पवित्र ताबूत पर रखा गया। जो भी श्रद्धा के साथ आते हैं, उन्हें मसीह ईश्वर की महिमा के लिए वे अनेक चंगाई प्रदान करती हैं।

[3913] आदरणीय निकिता का 24 मई 1186 को निधन हो गया।

[3914] पैरेकलीसियार्क एक सेक्सटन (चर्च का नौकर) होता है जो मठों में प्रतिमाओं के सामने दीपक जलाता है।

[3915] यारोस्लाव में सेंट पीटर और सेंट पॉल मठ वोल्गा नदी के तट पर उस स्थान पर स्थित था जहाँ अब सेंट पीटर चर्च खड़ा है।

ट्रोपारयिन, स्वर 4:

ऑर्थोडॉक्स शिक्षा के अनुसार युवा इच्छाओं को त्यागकर और सदाचारी आदतें अपनाकर, आपने अपनी बुद्धि से शत्रु को पराजित किया और ईश्वर को प्रसन्न किया; और उनसे चमत्कारों का वरदान प्राप्त कर—दैत्य भगाने और व्याधियों को ठीक करने का—हे अति महिमामय निकिता, मसीह ईश्वर से हमारे आत्माओं के उद्धार के लिए प्रार्थना करें।

कॉन्टाकयिन, स्वर 8:

मसीह के लिए, आपने अपने सेवकों के लिए एक आवश्यक मृत्यु को सहन किया और उनसे अक्षय का मुकुट प्राप्त किया; और जो विश्वास के साथ आते हैं, उन्हें आप अपने सम्मानित कब्र से चंगाई प्रदान करते हैं, हे पूजनीय निकिता, हमारे आत्माओं के मध्यस्थ।

7 जून

25 मई (पुराना कैलेंडर)

उसी दिन, संत योहन बपतिस्मादाता के सम्माननीय सिर की तीसरी खोज का पर्व मनाया जाता है (इस घटना के बारे में अधिक जानकारी के लिए, 24 फरवरी देखें)

पवित्र शहीद और साइप्रस के बिशप, संत फेरापोंटस की स्मृति

25 मई को स्मरणोत्सव

ये संत फेरेपोंट एक भिक्षु थे और, बिशप का पद धारण करते हुए, साइप्रस द्वीप पर सेवा कार्य किया[3916] । मूर्तिवादियों द्वारा भड़काए गए ईसाइयों के उत्पीड़न के दौरान[3917] , उन्होंने साहसपूर्वक प्रभु यीशु मसीह के नाम की गवाही दी और शहीद का मुकुट प्राप्त किया[3918] । उनके पवित्र अवशेष मूल रूप से साइप्रस में रखे गए थे, जहाँ उन्होंने सभी के लिए चमत्कार किए; लेकिन बाद में निम्नलिखित कारण से उन्हें कॉन्स्टेंटिनोपल ले जाया गया: जब अगारियन, ईश्वर की अनुमति से, हमारे पापों के कारण सभी पूर्वी भूमि को लूट रहे थे, और उनके निवासियों को बंदी बना रहे थे, तो वे साइप्रस द्वीप के पास भी पहुँचे, यह इरादा लेकर कि वे इसके साथ भी वैसा ही करें जैसा उन्होंने अन्य पूर्वी भूमि के साथ किया था। उस समय, संत फेरेपोंट अपने चर्च के सेवक के सामने प्रकट हुए और उससे कहा:

'जल्दी जाओ, मेरे अवशेष ले लो और उन्हें कॉन्स्टेंटिनोपल ले जाओ, क्योंकि मसीह के क्रूस के शत्रु इस द्वीप पर आकर इसे उजाड़ना चाहते हैं; यह बात अन्य ईसाइयों को बता दो, ताकि वे अगारियन आक्रमण से पहले यहाँ से भाग सकें।'

तुरंत, चर्च के सेवक ने सभी ईसाइयों को संत के प्रकट होने और उनके आदेश के बारे में सूचित किया; कुछ ही समय में, ईसाइयों ने जहाज द्वारा अपनी यात्रा की तैयारी की; एक नया अवशेष-पात्र तैयार करके, उन्होंने उसमें संत फेरापोंट के पवित्र अवशेष रखे और उन्हें जहाज पर अपने साथ लेकर अपनी यात्रा पर निकल पड़े।

जब यात्री अधिकांश समुद्र पार कर चुके थे और पहले ही कॉन्स्टेंटिनोपल के पास पहुँच रहे थे, तो अचानक समुद्र में एक बड़ी आंधी उठ खड़ी हुई; हर कोई बड़े भय और भ्रम में पड़ गया; लेकिन उसी क्षण अवशेषों वाले संदूक से एक

[3916] साइप्रस द्वीप भूमध्य सागर के उत्तर-पूर्वी भाग में, प्राचीन फिनिसिया के तटों के पास स्थित था। वहाँ ईसाई धर्म का प्रचलन संत पॉल द अपोस्टल द्वारा किया गया था।

[3917] यह डियोक्लेटियन (जिसका शासन 284 से 305 तक रहा) के अधीन हुए उत्पीड़न को संदर्भित करता है।

[3918] संत फेरापोंट की मृत्यु का समय डायोक्लेटियन के उत्पीड़न द्वारा निर्धारित किया जाता है। उनके निधन की सटीक तारीख अज्ञात है। 25 मई, पूरी संभावना है, वह दिन है जिस दिन उनके अवशेष कॉन्स्टेंटिनोपल ले जाए गए थे।

अद्भुत सुगंध निकलने लगी (जैसे कि यह किसी प्रकार की महीन वाष्प हो); यह सुगंध न केवल पूरे जहाज़ में भर गई, बल्कि जहाज़ के चारों ओर तीन स्टेडियम तक समुद्र में भी फैल गई: और तुरंत ही तूफ़ान थम गया, मानो उस अद्भुत और अकथनीय सुगंध से शांत हो गया हो। चर्च का परिचारक, जो पवित्र शहीद की पवित्र अवशेषों की प्रेमपूर्वक रक्षा कर रहा था, ने अवशेष-पेटिका से एक आवाज़ सुनी, जो उसे अपनी ओर बुला रही थी। अंत में, वहाँ मौजूद सभी लोगों ने उस आवाज़ को सुना, जिससे संत फेरापोंट अपने अवशेषों के रक्षक को अपनी ओर बुला रहे थे; फिर, भय और श्रद्धा के साथ, वे सभी पवित्र शहीद के अवशेषों को देखने के लिए अवशेष-पेटिका के पास पहुँचे। रिलिक्वेरी के पास पहुँचने पर, उन्होंने सभी ने पवित्र शहीद की अवशेषों से निकलती सुगंधित मूरा को देखा, जिसने पूरी रिलिक्वेरी को भर दिया। जहाज पर सवार ईसाइयों ने उस मूरा को कांच के बर्तनों में भर लिया और अपने आत्मा और शरीर के उपचार के लिए, विश्वासपूर्वक उससे स्वयं को अभिषिक्त किया।

कॉन्स्टेंटिनोपल पहुँचने पर, ईसाइयों ने पवित्र शहीद फेरापोंट के पूजनीय अवशेषों को परम पवित्र ईश्वर की माता[3919] के सम्मान और महिमा में निर्मित एक चर्च में रखा। यह सब निकिफोरोस[3920] के शासनकाल के दौरान हुआ। कुछ समय बाद, उन पवित्र अवशेषों के माध्यम से हुए कई चमत्कारों के कारण, ईसाइयों ने पवित्र शहीद फेरापोंट को समर्पित एक और चर्च का निर्माण किया; ईश्वर के उस पुरुष के पवित्र अवशेष इसी चर्च में स्थानांतरित किए गए थे।

ईश्वर-प्रसन्नकर्ता फेरपोंट द्वारा किए गए अनेक चमत्कारों में से केवल कुछ ही दर्ज किए गए हैं। हम उनमें से कुछ के वृत्तांत सुनाएंगे।

फ्लोरिन नाम का एक व्यक्ति, जो जन्म से इतालवी था और अशुद्ध आत्माओं की एक सेना द्वारा पीड़ित था, संत फेरपोंट के अवशेषों पर ठीक हो गया और पूरी तरह से स्वस्थ होकर घर लौट आया। उसने कहा कि उसने पवित्र अवशेषों वाली संदूक से निकलती हुई एक सुगंधित, अत्यंत सुगंधित वाष्प देखी थी; राक्षसों का दल इस सुगंध को सहन नहीं कर सका, और इसीलिए वे इससे भाग गए, मानो कोई उन्हें भगा रहा हो।

अनास्तासियस, विक्सिनिया नगर का एक नागरिक, लंबे समय से एक सूखी हुई बांह से पीड़ित था, जो उसके कंधे से इस तरह लटकती थी जैसे वह मृत हो। लेकिन जब वह प्रभु के प्रकटोत्सव की पूर्व संध्या पर पवित्र शहीद फेरपोंट के चर्च में आया, तो वह पूरी तरह से ठीक हो गया: उसकी बांह में फिर से ताकत आ गई और वह दूसरी बांह जितनी स्वस्थ हो गई; सभी के सामने, अनास्तासियस ने अपनी ठीक हुई बांह से एक पात्र उठाया और उसे प्रकटोत्सव के जल से भर दिया। यह देखकर, सभी ने परमेश्वर का धन्यवाद किया, जो अपने पवित्र सेवक फेरपोंट में महिमामय हैं।

एक और व्यक्ति भी था, जिसका नाम जॉर्ज था, जो एक डेक्यूरियन[3921] और एक सैनिक था; शैतान के धोखे से, उसका चेहरा पीछे की ओर मुड़ गया था और वह एक आँख से अंधा था। यह जॉर्ज, शहीद की कफ़न पर प्रार्थना करने के बाद, शीघ्र ही ठीक हो गया: उसका चेहरा वापस अपनी पूर्व स्थिति में आ गया और उसकी आँख की रोशनी वापस आ गई, जिसके लिए जॉर्ज ने अपने चिकित्सक का धन्यवाद किया जिसने उसका बिना किसी शुल्क के इलाज किया था।

लकवा से पीड़ित थियोडोर नामक एक व्यक्ति को पवित्र शहीद के सम्मान में निर्मित चर्च में लाया गया। एक सपने में, संत उसके सामने प्रकट हुए और उसे रोटी और शराब का एक प्याला दिया। वह सोते हुए ही संत के हाथों से ये ले लिया, और तुरंत जाग उठा, अपने भीतर शक्ति महसूस करते हुए; अपने बिस्तर से उठकर, उसने प्रभु यीशु मसीह और उनके पवित्र शहीद की महिमा की, यह कहते हुए:

'हे संत फेरापोंट, आप कितनी आसानी और जल्दी सभी बीमारियों और रोगों को ठीक कर देते हैं!'

एक छोटी लड़की को पवित्र शहीद के चर्च में लाया गया; जन्म के समय से ही उसके पैर एक साथ जुड़ गए थे, पीछे की ओर मुड़े हुए थे और उसकी पीठ से चिपके हुए थे; लेकिन जब उसके माता-पिता ने संत फेरापोंट से एक भक्तिपूर्ण प्रार्थना की, तो उसके पैर तुरंत अपनी सामान्य स्थिति में आ गए; वे सीधे हो गए और अलग हो गए, और इस प्रकार वह युवती, जब वयस्क हो गई, तो परमेश्वर की महिमा और धन्यवाद करते हुए चलने लगी।

[3919] यह चर्च परमेश्वर की माता 'एलेइना' या 'दयालु' की प्रतिमा के सम्मान और महिमा में बनाया गया था। परमेश्वर की माता की इस प्रतिमा के सम्मान में उत्सव ऑर्थोडॉक्स चर्च में 12 नवंबर को मनाया जाता है।

[3920] सम्राट निकिफ़ोरस प्रथम ने 802 से 811 तक शासन किया। पवित्र शहीद फेरापोंटोस की पवित्र अवशेषों का स्थानांतरण 806 में हुआ।

[3921] अर्थात् दस सैनिकों का एक कमांडर।

मारिया नाम की एक महिला कैंसर नामक एक लाइलाज बीमारी से पीड़ित थी; बहुत कष्ट सहने और ठीक होने की उम्मीद खो देने के बाद, मारिया भक्तिपूर्ण प्रार्थना के साथ पवित्र शहीद के मकबरे पर दौड़ी और वहाँ उसे अपनी बीमारी से शीघ्र और पूर्ण रूप से स्वास्थ्य लाभ मिला।

एक अन्य महिला, जो सात वर्षों से रक्तस्राव से पीड़ित थी, भक्ति और विश्वास के साथ दौड़ती हुई संत फेरापोंट के पास आई; और जैसे ही उसने उनके ताबूत को छुआ, उसका रक्तस्राव तुरंत बंद हो गया, और वह पूर्ण स्वास्थ्य के साथ घर लौट आई।

एक और महिला, जो व्रणरोग से पीड़ित थी, संत फेरापोंट के अवशेषों के पास आई और उसने, एक स्वप्न-जैसी दृष्टि में, पवित्र शहीद को अपने शरीर के प्रभावित हिस्से पर किसी प्रकार का लेप लगाते हुए देखा। जागने पर, उसने देखा कि प्रभावित क्षेत्र से बहुत सारा पीबा निकल गया था, जिसके बाद वह पूरी तरह से ठीक महसूस करने लगी।

आर्मेनियाई रेजिमेंट के एक सैनिक, स्टीफन, को एक शारीरिक बीमारी से बहुत तकलीफ होती थी; वह कुबड़ा और झुका हुआ था; थियोडोर नाम का एक और सैनिक, बिल्कुल उसी बीमारी से पीड़ित था। जब दोनों ने ईश्वर के संत की मदद मांगी और उन्हें भक्तिपूर्वक प्रार्थना की, तो वे पूरी तरह से ठीक हो गए।

एक कुष्ठरोगी, संत के मकबरे पर आकर, अपनी प्रार्थनाओं के द्वारा अपने कुष्ठरोग से मुक्त हो गया और ईश्वर का धन्यवाद किया।

एक दार्शनिक, जिसकी छाती पर एक खतरनाक और बहुत बड़ा फोड़ा था, संत की कब्र पर आया और, वहाँ झपकी लेते समय, उसने देखा कि संत ने उसकी छाती के प्रभावित हिस्से पर एक पट्टी लगा दी थी। जागने पर, उसे अपनी बीमारी से काफी राहत महसूस हुई, और एक दिन के भीतर वह इससे पूरी तरह ठीक हो गया, जिसके लिए उसने ईश्वर का धन्यवाद किया।

ईश्वर के सेवक फेरपोंट के पवित्र अवशेषों से निकलने वाली मूरा से अभिषेक करके कई अन्य बीमारियाँ और रोग ठीक हुए; उसी मूर से लोगों से पिशाच निकल गए, और मरणासन्न जीवित हो उठे; और यह सब पवित्र शहीद फेरापोंट की प्रार्थनाओं द्वारा, हमारे प्रभु यीशु मसीह की कृपा से हुआ, जिनका महिमा युगानुयुग हो। आमीन।

8 जून

26 मई (पुराने कैलेंडर के अनुसार)

उसी दिन, कुछ स्रोतों के अनुसार, प्रेरित अल्फियुस के बच्चे, पवित्र शहीदों एवर्कीयस और हेलेना की स्मृति मनाई जाती है। संत एवर्कीयस ने मसीह के लिए कष्ट सहे, उन्हें नग्न अवस्था में मधुमक्खियों के बीच बाँध दिया गया और उनके डंकों से उनके शरीर को चीर दिया गया; जबकि उनकी बहन हेलेना को पत्थर मार-मार कर हत्या कर दी गई।

इसी दिन, काल्याज़िन के पूजनीय मकारियस के अवशेषों की खोज का उत्सव मनाया जाता है। उनका जीवन 17 मार्च के अंतर्गत देखें।

संत जॉर्ज नवें का कष्टकथा[3922]

26 मई को स्मरण किया जाता है

संत जॉर्ज धर्मपरायण माता-पिता के पुत्र थे; उनके पिता, जिनका नाम जॉन था, स्रेडेट्स शहर के सबसे प्रतिष्ठित कुलीनों में से एक थे[3923] , और उनकी माँ का नाम मैरी था। जॉर्ज उनकी प्रार्थनाओं की तीव्रता से अपने माता-पिता को मिला, क्योंकि वे पहले ही वृद्धावस्था में पहुँच चुके थे और उनके कोई संतान नहीं थी, ठीक वैसे ही जैसे पुराने समय में

[3922] संत जॉर्ज को 'नए' की उपाधि अन्य जॉर्ज नामक संतों से अलग करने के लिए दी गई है, जो उनसे बहुत पहले रहते थे, जैसे कि महान शहीद जॉर्ज (जिनका पर्व 23 अप्रैल को मनाया जाता है, आदि)।

[3923] स्रेडेट्स या सोफिया – बुल्गारियाई रियासत की राजधानी। प्राचीन काल में भी, सोफिया एक महत्वपूर्ण व्यापारिक केंद्र था और रोमन प्रांत डेसिया का मुख्य शहर था। 441 में, सोफिया पर हूणों ने तबाही मचाई; 809 में, इसे बुल्गारियाई लोगों ने जीत लिया; और 1382 में, यह तुर्कों के हाथ लग गई। 22 दिसंबर 1877 को, इसे गुरको के नेतृत्व में रूसी सेना ने कब्जा कर लिया, जिसके बाद अधिकांश मुस्लिम आबादी भाग गई।

अब्राहम और सारा के साथ था; इसी कारण, जॉन और मैरी ने प्रभु, उनकी अतिपवित्र माता और कैपाडोसिया के महान शहीद सेंट जॉर्ज से भक्तिपूर्वक प्रार्थना की; वे प्रतिदिन इस संत के चर्च में जाते, वहां दान देते और प्रभु से विनती करते कि उनकी बांझपन दूर हो जाए। और प्रभु ने उनकी प्रार्थनाओं को अनसुना नहीं किया, बल्कि उनके वृद्धावस्था में उन्हें एक पुत्र का वरदान दिया। जॉन और मैरी उस शिशु को महान शहीद सेंट जॉर्ज के चर्च में ले गए, उसे पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम पर बपतिस्मा दिया, और उसके पवित्र बपतिस्मा पर उसका नाम जॉर्ज रखा।

लड़के का पालन-पोषण ईश्वर के भय में हुआ और उसे पढ़ना सिखाया गया; जॉर्ज ने जल्द ही पवित्र धर्मग्रंथों में इतनी अच्छी तरह से महारत हासिल कर ली कि उसका ज्ञान अपने सभी समकालीनों से बढ़ गया। जब जॉर्ज युवक बना, तो वह अपने मुख की सुंदरता और अपनी पवित्रता में प्राचीन यूसुफ से बहुत मिलता-जुलता था।

उस समय, बुल्गारिया पर सारासेनों का शासन था; जब धन्य जॉर्ज पच्चीस वर्ष के हो गए (तब तक उनके माता-पिता का निधन हो चुका था), तो सारासेनों ने उन्हें अपने दुष्ट तरीकों को अपनाने के लिए मनाने की कोशिश शुरू कर दी, और उनसे कहा:

'जॉर्ज, ईसाई धर्म का त्याग कर और हमारे धर्म को अपना। ईश्वर के दूत, मुहम्मद[3924] की बात मान; हमारे कानून को स्वीकार कर।'

ये शब्द सुनते ही, सारसेनों ने संत जॉन के पवित्र सिर पर एक ताफिया (टोपी) रखना शुरू कर दिया, जिसे वे अपनी परंपरा के अनुसार अपने सिर पर पहनते थे और जिसमें वे अपनी पूजा की जगहों में प्रवेश करते थे। लेकिन संत ने उनसे इस प्रकार उत्तर दिया:

हमारे लिए ईसाइयों के रूप में, आपकी अधार्मिक प्रथाओं का अनुकरण करना और अपने सिर पर ताफिया (टोपी) पहनना उचित नहीं है; हमारे लिए ईसा मसीह, सच्चे ईश्वर, स्वर्ग और पृथ्वी के सृष्टिकर्ता का त्याग करना और स्वयं को पवित्र बपतिस्मा के फलों से वंचित करना उचित नहीं है। मुझे बताओ: क्या मैं मुहम्मद में विश्वास कर सकता हूँ, जिसे न तो ईश्वर ने भेजा, न ईश्वर के नबियों ने, और न ही प्रेरितों ने, बल्कि वह तो शैतान की सेना का एक कमांडर था, जो शैतान के झंडे लिए हुए था? तुम स्वयं नहीं जानते कि तुम किसमें विश्वास करते हो; तुम स्वयं सच्चे मार्ग से भटक गए हो।

इस प्रकार सारासेंस का पर्दाफाश करने के बाद, संत जॉर्ज ने जोर से घोषणा करनी शुरू कर दी कि मसीह ही सच्चे ईश्वर, सभी दृश्य और अदृश्य, सांसारिक और स्वर्गीय वस्तुओं के सृष्टिकर्ता और रचयिता हैं।

तब, दुष्टों के मुँह पर थूकते हुए और उन्हें अधर्मी कहकर, संत ने ताफिया को ज़मीन पर फेंक दिया और उसे पैरों तले रौंदना शुरू कर दिया, और अपने आप से कहने लगे: 'हे जॉर्ज! तुम देर क्यों कर रहे हो? मसीह तुम्हें बुला रहे हैं!'

दुष्ट सारासेनों ने क्रोध से भरकर संत को पकड़ लिया और उसे बुरी तरह पीटने तथा अपमानित करने के बाद, उसे अपने शासक के सामने लाए, और उस पर आरोप लगाते हुए कहा:

'देखो, यह आदमी हमारे धर्म का अपमान और निंदा कर रहा है।'

हालाँकि, राज्यपाल संत के चेहरे की सुंदरता और उनकी साहसी दृष्टि से प्रभावित होकर, चापलूसी से उनके साथ बात करने लगा:

'यदि तुम यीशु मसीह का, जिसे तुम परमेश्वर का पुत्र कहते हो, परित्याग कर दो, और यदि तुम निरंकुश सुलतान सलीम की आज्ञा का पालन करते हो[3925] और उसकी इच्छा पूरी करते हो (कई राज्य इस सलीम की आज्ञा मानते हैं), तो तुम हमारे राजा से कई उपहार और हर तरह के सम्मान प्राप्त करोगे, और तुम्हें श्रेडेट्स के महानगर के सभी राज्यपालों का कमांडर नियुक्त किया जाएगा।

लेकिन मसीह के शहीद ने एक बार फिर एक विशाल भीड़ की उपस्थिति में प्रभु यीशु मसीह की गवाही दी, और साथ ही सारासेन धर्म की निंदा और फटकार की। तब यातना देने वाले ने, क्रोध से आग-बबूला होकर, संत को बेरहमी से लाठियों से पीटने का आदेश दिया। और संत जॉर्ज को इतनी क्रूरता से यातना दी गई कि उनका मांस लाठियों से चिपक गया, जबकि उनके घावों से खून टपक रहा था। फिर भी, इसके बावजूद, संत ने राजा की अधर्मी आज्ञा के आगे झुकने का कोई इरादा नहीं दिखाया।

[3924] मुहम्मद – इस्लाम धर्म के संस्थापक (जो 6वीं शताब्दी के अंत और 7वीं शताब्दी की शुरुआत में रहते थे)।

[3925] तुर्की के सुल्तान सलीम प्रथम ने 1512 से 1529 तक शासन किया; वह अपने असाधारण कट्टरपंथ (धार्मिक असहिष्णुता) के लिए जाना जाता था।

तब शासक ने आदेश दिया कि उसके पूरे शरीर को सिर से पैर तक छुरी से काटा जाए, और उसके घावों को जलती हुई मोमबत्तियों से जलाया जाए; संत का पूरा शरीर मोमबत्तियों से झुलस गया, इतना कि उसका चेहरा भी दिखाई नहीं दे रहा था, और उसका मांस आग में मोम की तरह पिघलने लगा। लेकिन मसीह के शहीद ने प्रभु यीशु मसीह के नाम का स्मरण करते और उसकी गवाही देते हुए, बहादुरी से अपने कष्ट सहे।

इसके बाद, यातना देने वाले ने सैनिकों को आदेश दिया कि वे शहीद को ढोल बजाते और चिल्लाते हुए शहर में घुमाएँ: 'ईश्वर के दूत मुहम्मद का अपमान मत करो, और न ही सारसेन धर्म पर उनके उपदेशों की निंदा करो।'

तथापि, संत ने प्रभु मसीह से प्रार्थना की और सारासेंस को मसीह में विश्वास करने के लिए प्रोत्साहित किया।

तब दुष्ट लोगों ने नगर के बीच में संत को जलाने के इरादे से एक बड़ी चिता बनाई। और मसीह के शहीद जॉर्ज को जलाने के लिए तैयार की गई जगह पर ले जाया गया।

लेकिन, अपने घावों से थके हुए, वह निश्शब्द होकर जमीन पर गिर पड़े; केवल उनके होंठ ही हिल रहे थे, जो प्रभु से मदद की पुकार कर रहे थे। हालाँकि, सारासेंसों ने संत को, जब वह अभी भी जीवित थे, पकड़ लिया और उन्हें चिता पर फेंक दिया। इस प्रकार मसीह के शहीद, सेंट जॉर्ज ने अपनी शहादत को समाप्त किया। धर्मद्रोही सारासेनों ने कई कुत्तों को भी चिता पर फेंक दिया ताकि ईसाई शहीद के अवशेषों को पहचान न सकें। लेकिन ईश्वर ने अपने सेवक को महिमामय किया: अचानक उस स्थान पर बादल छा गए, साथ में गरज और बिजली चमकने लगी, और एक तेज मूसलाधार बारिश शुरू हो गई, जिसने आग को बुझा दिया, और चिता से धुआं भी नहीं बचा। ऐसे महान चमत्कार से भयभीत होकर सारासेन उस स्थान से भाग गए। इस बीच, बारिश रात तक जारी रही।

जब रात हुई, तो उस स्थान के ऊपर जहाँ शहीद का पवित्र शरीर जलाया गया था, एक अत्यंत तेज प्रकाश प्रकट हुआ, जिसने पूरे क्षेत्र को प्रकाशित कर दिया। तब कैपाडोसिया के महान शहीद सेंट जॉर्ज को समर्पित कैथेड्रल चर्च के महापुजारी अन्य ईसाइयों के साथ न्यायाधीशों के पास गए; उन्होंने उन्हें धन देकर शहीद की पवित्र अवशेषों को लेने और उन्हें उचित दफन देने की अनुमति मांगी। जब न्यायाधीशों ने इस अनुरोध को स्वीकार कर लिया, तो महापुजारी मेट्रोपॉलिटिन जेरमियाह के पास गए और उन्हें उस पवित्र शहीद के बारे में सब कुछ बताया। इसके बाद मेट्रोपॉलिटिन, संपूर्ण पवित्र धर्मसभा और कई धर्मनिष्ठ ईसाइयों के साथ, भजन और स्तोत्र गाते हुए, मोमबत्तियाँ और धूपदान लेकर, बड़ी शीघ्रता और श्रद्धा के साथ पवित्र शहीद की अवशेषों की ओर रवाना हुए। जिस स्थान पर प्रकाश दिखाई दे रहा था, वहाँ से राख हटाने पर, ईसाइयों को आग से अप्रभावित, नए सेंट जॉर्ज के पवित्र अवशेष मिले। हालाँकि, कुत्तों की हड्डियाँ राख और धूल में बदल गई थीं।

ठीक उन्हीं स्थानों पर जहाँ उस रात मसीह के पवित्र शहीद को शहर में ले जाया गया था और जहाँ से उसका खून टपका था, वहाँ रात में एक रोशनी दिखाई दी, मानो किसी जलती हुई मोमबत्ती से निकल रही हो; यह सभी ईसाइयों ने देखा।

पवित्र शहीद के पवित्र अवशेष लेकर, मेट्रोपॉलिटिन ने उन्हें कापाडोसिया के महान शहीद सेंट जॉर्ज के चर्च में एक अवशेष-पात्र में रख दिया। पवित्र शहीद के पवित्र अवशेष आज भी वहीं विराजमान हैं और ईश्वर की कृपा से, जो भी श्रद्धा के साथ उनके पास आता है, उसे चंगा करते हैं।

मसीह के पवित्र शहीद, जॉर्ज ने, बुल्गारिया के शहर स्रेडेट्स में अपना शहीद जीवन यापन किया, जहाँ उनका पालन-पोषण हुआ था; उन्होंने सृष्टि के 7022वें वर्ष में, और परमेश्वर वचन के अवतार के 1514वें वर्ष में , 26 मई[3926] को, हमारे प्रभु यीशु मसीह के सर्वव्यापी राज्य के दौरान अपना बलिदान दिया, जिनका महिमा हो, पिता और पवित्र आत्मा के साथ, युगानुयुग। आमीन।

ट्रोपारियन, स्वर 4:

दिव्य इच्छा से, आप कम उम्र से ही स्वयं को पूरी तरह से प्रभु को समर्पित कर दिए; प्रार्थना और उपवास में आप सदाचार के आदर्श थे, और आपने धन, महिमा और शारीरिक सुंदरता को इस तरह तुच्छ समझा मानो वे मौजूद ही न हों, और आप केवल मसीह से ही अपने पूरे हृदय से प्रेम करते थे, और उस सच्चे ईश्वर की, जिसकी त्रिमूर्ति में पूजा की

[3926] कुछ के अनुसार, सेंट जॉर्ज 11 फरवरी को शहीद हुए थे। इस मामले में, 26 मई को वह दिन माना जाता है जिस दिन उनके अवशेष स्थानांतरित किए गए थे।

जाती है, तूने अधर्मी तुर्कों के सामने घोषणा की: सारसेन धर्म और मोहम्मद के कानूनों को पैरों तले रौंदते हुए, और अपने यातना देने वालों के हृदय में आतंक भरते हुए, तूने शहादत का गौरवपूर्ण मुकुट प्राप्त किया, और विजय के साथ स्वर्ग में आरोहण किया, हे अति बुद्धिमान जॉर्ज। हमारे प्रभु मसीह से प्रार्थना करें कि वे आपके स्वदेश की रक्षा करें, और ऑर्थोडॉक्स सम्राट, लोगों और उस नगर को बचाएँ, जो सदैव आपके कार्यों का सम्मान करते हैं।

कॉन्टाकियन, स्वर 4:

क्योंकि तुम संसार में बिना किसी छल के, एक अत्यंत तेजस्वी तारे के रूप में प्रकट हुए, जो धर्मी सूर्य, मसीह की घोषणा करता था; अपने कष्टों के द्वारा, हे मसीह के महान क्लेश-भोगी और शहीद, जॉर्ज, तुमने सारासेनों के भ्रम को समाप्त कर दिया, और मोहम्मद की परंपराओं और कानूनों को अपने पैरों तले कुचल दिया: और अपनी दृढ़ सहनशीलता से तुमने अधर्मी राजा और अपने यातना देने वालों में आतंक भर दिया; और तुम विश्वासियों पर प्रकाश प्रदान करते हो, हम सभी के लिए परमेश्वर से अनवरत प्रार्थना करते हुए।

हमारे पूजनीय पिता जॉन द साइकाइट की स्मृति

26 मई को स्मरण किया जाता है

हमारे पवित्र पिता जॉन, जिन्होंने अपने यौवन से ही मसीह से प्रेम किया, चरित्र में पवित्र भविष्यवक्ताओं एलिया और यूहन्ना के समान हो गए। दुनिया को पीछे छोड़कर, वह प्सिचाइटा मठ[3927] के लिए रवाना हुए और वहाँ उन्होंने मठवासी संन्यास की शपथ ली, जिसके बाद उन्हें ईश्वर से दुष्टात्माओं को भगाने और बीमारों को चंगा करने का वरदान मिला। उन्होंने प्रतिमा-भंजक उथल-पुथल के दौरान परिश्रम किया, और अपनी शिक्षाओं के माध्यम से ऑर्थोडॉक्सों को उनके विश्वास में मजबूत किया। उनके खिलाफ मूर्तियों के उत्पीड़क सम्राट[3928] के पास एक शिकायत दर्ज की गई, और बाद वाले ने उन्हें बुलाकर पवित्र मूर्तियों की पूजा त्यागने, उनके विधर्म में शामिल होने और एक अधर्मी दस्तावेज़ पर हस्ताक्षर करने के लिए मजबूर करना शुरू कर दिया; लेकिन आदरणीय संत ने ऐसा करने से इनकार कर दिया और यहाँ तक कि सम्राट की निंदा करते हुए उन्हें एक विधर्मी कहा। इसके लिए उन्हें निर्वासित कर दिया गया, जहाँ उन्होंने कानून तोड़ने वाले और अन्यायपूर्ण मूर्तिभंजकों के हाथों कई कष्ट सहे, और वहीं उन्होंने अपना जीवन समाप्त किया।

सत्तर प्रेरितों में से एक, संत कार्पस की स्मृति

26 मई को स्मरणोत्सव

सत्तर प्रेरितों में से एक, संत कार्पस, संत प्रेरित पौलुस के एक शिष्य और सेवक थे; वे उनकी पत्री उन स्थानों तक ले जाते थे जिनके लिए वे लिखी गई थीं। काफी समय तक, संत कार्पस ने प्रेरित पौलुस के साथ मिलकर क्रीट द्वीप पर मसीह के वचन का प्रचार किया[3929] , और इसके लिए उन्होंने बहुत सी कठिनाइयों और कष्टों को सहन किया। बाद में, संत कार्पस को प्रेरित पौलुस द्वारा थ्रेस में बेरिया शहर का बिशप नियुक्त किया गया[3930] ।

[3927] बोलैंडिस्ट्स के अनुसार, सिखाइट लावरा कॉन्स्टेंटिनोपल में स्थित थी।

[3928] ग्रीक सम्राट कॉन्स्टेंटाइन कोप्रोन्यमस (743–775) आइकन (चित्रों) का एक विशेष रूप से निर्दयी उत्पीड़क था; उसका इरादा विधिवत और कानून के अनुसार, आइकन की पूजा को विधर्म के रूप में समाप्त करने का था, जिसके लिए उसने 754 में एक परिषद बुलाई और इसे एक सार्वभौमिक परिषद घोषित किया। सम्राट लियो द आर्मेनियन (813–820) ने भी प्रतिमा पूजा का उतनी ही निर्दयता से उत्पीड़न किया – उन्होंने भिक्षुओं को प्रतिमा पूजा के बारे में उपदेश देने से रोकने का एक फरमान जारी किया, और सभी भिक्षुओं को इस फरमान पर हस्ताक्षर करना अनिवार्य था। संभवत; यहाँ 'प्रतिमाओं का उत्पीड़क सम्राट' से तात्पर्य, बेशक, अंतिम सम्राट से ही है।

[3929] संयोग से, प्रेरित पौलुस ने थ्रोआ में अपना ओढ़ना और विभिन्न पुस्तकें छोड़ दीं, जिनमें प्रेरित विशेष रूप से चमड़े के लपेटे हुए पांडुलिपियों का उल्लेख करते हैं (2 तीमु. 4:13)।

[3930] थ्रेस बाल्कन प्रायद्वीप के उस हिस्से का नाम था जो मैसेडोनिया, एजियन सागर और मार्मारा सागर के उत्तर में स्थित था। वर्तमान में, प्राचीन थ्रेस की सीमाओं के भीतर निम्नलिखित क्षेत्र आते हैं: हंगरी का पूर्वी भाग, ट्रांसिल्वेनिया, बेसरबिया, मोल्डोवा, वलाचिया, बुल्गारिया,

पवत्रि प्रेरति कार्पस ने क्रीट द्वीप पर मसीह के सुसमाचार का प्रचार करने के लिए परश्रिम कयिा[3931] ; वहाँ, अन्य बातों के अलावा, उन्होंने संत डायोनसियिस द एरोपागटि का अपने घर में स्वागत कयिा[3932] और उन्होंने प्रभु को एक दर्शन में प्रकट होते देखा, उस समय जब कार्पस उनसे दो पापयिों को मृत्युदंड देने के लिए कह रहे थे, और उन्होंने उनकी यह आवाज़ सुनी जो घोषणा कर रही थी: 'मुझे और अधकि पीड़ा दो, क्योंकि मैं मानव जाति के उद्धार के लिए एक बार फरि से दुख सहने और क्रूस पर चढ़ने के लिए तैयार हूँ'[3933] ।

संत डायोनसियिस द एरोपागटि इस पवत्रि कार्पस की गवाही देते हैं और इस तथ्य की भी कि उन्होंने तब तक सबसे शुद्ध और जीवन-दायक रहस्यों का अनुष्ठान शुरू नहीं कयिा जब तक उन्हें स्वर्ग से प्रकट हुई दैवीय दृष्टि के योग्य नहीं ठहराया गया।[3934]

बेरयिा में बशिप के रूप में सेवा करते हुए, कार्पस ने कई यूनानी मूर्तपिूजकों को मसीह में परविर्तति कयिा; यहूदयिों की नदिा करते हुए, उन्होंने उनसे कहा कि मसीह, जसिे उन्होंने सूली पर चढ़ाया था, सच्चे ईश्वर और सभी चीजों के सृष्टकिर्ता हैं। बाद में, यहूदयिों द्वारा क्रूरतापूर्वक उनकी हत्या कर दी गई और इस प्रकार उन्होंने अपना प्राण प्रभु[3935] के हाथों में सौंप दयिा। उनके पवत्रि अवशेषों को उन्हीं लोगों द्वारा उसी शहर में सम्मानपूर्वक दफनाया गया जहाँ उन्होंने बशिप के रूप में सेवा की थी, और इन अवशेषों के माध्यम से पीड़तिों को हमारे ईश्वर, मसीह की महमिा के लिए, अनेक प्रकार के चंगाई के वरदान प्राप्त हुए।

द्रोपारयिन, स्वर 3:

हे पवत्रि प्रेरति कार्पस, दयालु परमेश्वर से प्रार्थना करें कि वे हमारे आत्माओं को पापों की क्षमा प्रदान करें।

सर्बयिा और रुमेली का पूर्वी भाग। बेरयिा नगर को अब वेरयिा या कारा-वेरयिा कहा जाता है; इसकी जनसंख्या लगभग 12,000 है। – प्रेरति पौलुस ने अपनी दूसरी धर्म-प्रचार यात्रा के दौरान बेरयिा का दौरा कयिा।

[3931] क्रीट द्वीप (जसिे कैंडयिा भी कहा जाता है, अपने राजधानी शहर के नाम पर) भूमध्य सागर के मध्य भाग में, ईजयिन सागर के दक्षणि में स्थति है। यहाँ ईसाई धर्म की शुरुआत प्रेरतिों पर पवत्रि आत्मा के अवतरण से हुई, क्योंकि उस घटना में क्रीटवासी उपस्थति थे (प्रेरतिों के काम 2:11)। बाद में यहाँ प्रेरति पौलुस द्वारा ईसाई धर्म की स्थापना की गई, जन्होंने ततिुस को बशिप नयिुक्त कयिा ताकि वह *'जो कुछ कयिा जाना बाकी है उसे व्यवस्थति कर सके और हर नगर में बुज़ुर्गों की नयिुक्ति कर सके'* (ततिुस 1:5)। – 17वीं शताब्दी में, क्रीट तुर्की के शासन में आ गया।

[3932] डयिोनसियिस द एरओिपागटि – एथेन्स की सर्वोच्च अदालत, एरओिपागस के एक सदस्य। वे प्रेरति पौलुस के दूसरे प्रेरतिकि प्रवास (लगभग 54 ईस्वी) के दौरान ईसाई बने थे। उन्हें पवत्रि चर्च द्वारा संत घोषति कयिा गया था। – उनका पर्व दविस 3 अक्टूबर को मनाया जाता है।

[3933] इन शब्दों को समझने के लिए, पवत्रि प्रेरति कार्पस के जीवन की नम्निलखिति घटना को याद करना आवश्यक है। एक अवशि्वासी ने एक ईसाई को दुष्टता में बहका दयिा था। इससे कार्पस को गहरा दुख हुआ। कार्पस, जन्होंने पहले कभी भी अधीरता नहीं दखिाई थी, इस बार अपने हृदय में बहुत व्याकुल हो गए। उसने मन ही मन सोचा कि दुष्ट, जो लोगों को भ्रष्ट करते और नष्ट करते हैं, उन्हें पृथ्वी पर नहीं रहना चाहिए; और वह ईश्वर से प्रार्थना करने लगा कि स्वर्ग से आग बरसे और उन दो दुष्ट पुरुषों को भस्म कर दे – एक तो जसिे रास्ता भटकाया गया था और दूसरा जो भटकाने वाला था। जब वह इसके लिए प्रार्थना कर रहा था, तो अचानक वह ऊपरी कमरा जसिमें वह खड़ा था, हलि गया और दो टुकड़ों में टूट गया। अपनी आँखें ऊपर उठाकर, उसने स्वर्ग को खुलते देखा और प्रभु यीशु मसीह को वहाँ मानव रूप में बैठे देखा। नीचे देखते हुए, उसने एक गहरी खाई देखी, जसिके कनिारे पर वे दो पापी खड़े थे जनिके वनिाश के लिए कार्प ने प्रार्थना की थी। कार्प, यह देखकर कि जन्होंने उसे दुखी कयिा था, वे अब गहरे गर्त में गरिने और नीचे तड़प रहे साँप द्वारा नगिल लिए जाने के लिए तैयार थे, आनंदति हो गया; लेकनि चूँकि वे अभी तक गर्त में नहीं गरि थे, कार्प फरि से बेचैन और दुखी होने लगा, और फरि से उनके वनिाश के लिए ईश्वर से वनिती करने लगा। जब उसने अपनी आँखें स्वर्ग की ओर उठाईं, तो उसने देखा कि प्रभु उन पापयिों के पास आ गए थे और उन्होंने उनकी ओर मदद का हाथ बढ़ाया था। तब प्रभु ने कार्प से कहा: 'मुझे और अधकि पीड़ा पहुँचाओ, क्योंकि मैं मानव जाति के उद्धार के लिए एक बार फरि दुख सहने और सूली पर चढ़ने को तैयार हूँ।' यह वृत्तांत संत डायोनसियिस द एरोपागटि ने भक्षिु डेमोफलिस को लखिे अपने पत्र में दर्ज कयिा है। यह पत्र 3 अक्टूबर (संत डायोनसियिस द एरोपागटि का पर्व दविस) को पढ़ा जा सकता है।

[3934] संत डायोनसियिस द एरोपागटि, प्रेरति कार्पस की बहुत प्रशंसा करते हैं। उदाहरण के लिए, भक्षिु डेमोफलिस को लखिे अपने पत्र में, वे कार्पस के बारे में कहते हैं: 'यह व्यक्ति अपने गुणों में महान और मन की इतनी उत्कृष्ट पवत्रिता से वशिष्टि था कि उसमें ईश्वर के दर्शनों के लिए एक बड़ी क्षमता थी।'

[3935] पवत्रि प्रेरति कार्पस की मृत्यु पहली शताब्दी के अंत के आसपास हुई।

कॉन्टाकयिन, स्वर 4:

चूंकि चर्च ने आपको, प्रेरति कार्पस, हमेशा एक अत्यंत तेजस्वी तारे के रूप में माना है, और आपके चमत्कारों की भीड़ से प्रबुद्ध है: उन लोगों को बचाएं जो आपकी स्मृति का विश्वास के साथ सम्मान करते हैं।

प्रेरति संत अल्फयिस की स्मृति

26 मई को स्मरणोत्सव

पवित्र प्रेरति अल्फयिस, प्रेरतिों याकूब (अल्फयिस का पुत्र) और लवी के पिता थे। यह लवी एक महसूल अधिकारी था[3936] और यही वह था जिसे प्रभु ने बुलाया, कहते हुए: *'मेरे पीछे चलो!'* (मरकुस 2:14)।

सब कुछ छोड़कर, लेवी मसीह के पीछे चल पड़ा और जीवन भर उनका स्थायी साथी बना रहा।

प्रेरति लवी को मत्ती के नाम से भी जाना जाता है, और उन्होंने ही पहली सुसमाचार लिखी थी।

पवित्र प्रेरति अल्फयिस कैपरनम नगर से थे, लेकिन यह ज्ञात नहीं है कि उन्होंने सुसमाचार का प्रचार कहाँ किया।

9 जून

27 मई (पुराने कैलेंडर के अनुसार)

पवित्र शहीदों थियोडोरा और डिडिमिस का कष्टकथा

27 मई को स्मरण किया जाता है

सम्राटों डायोक्लेटियिन[3937] और मैक्सिमियिन[3938] के शासनकाल में, जब राजकुमार यूस्ट्रेटियस[3939] अलेक्जेंड्रिया शहर पर शासन कर रहे थे, एक शाही फरमान जारी किया गया जिसमें ईसाइयों को या तो देवताओं को बलिदान चढ़ाने या शहादत भुगतने का आदेश दिया गया।

अलेक्जेंड्रिया में न्यायपीठ पर अपनी सीट संभालने के बाद राजकुमार यूस्ट्राटियस ने हाल ही में गिरफ्तार और कैद की गई एक ईसाई युवती थियोडोरा को मुकदमे के लिए अपने सामने पेश करने का आदेश दिया। जब उसे पेश किया गया, तो न्यायाधीश ने उससे पूछा:

'कुँवारी, तुम्हारा धर्म क्या है?'

संत ने उत्तर दिया:

'मैं ईसाई हूँ।'

न्यायाधीश ने कहा:

'क्या तुम एक स्वतंत्र महिला हो, या दासी?'

"मैंने तुम्हें पहले ही बताया था," थियोडोरा ने उत्तर दिया, "कि मैं एक ईसाई हूँ; और मसीह, जो संसार में आए, ने मुझे पाप से मुक्त कर दिया; और मैं इस व्यर्थ संसार में कुलीन माता-पिता से जन्मी थी।"

राजकुमार ने नगरपालिका अधिकारी, जिसका नाम ल्यूक था, की ओर एक नज़र डालते हुए उससे पूछा:

[3936] एक कर वसूलकर्ता।

[3937] डायोक्लेटियिन ने 284 से 305 तक रोमन साम्राज्य के पूर्वी भाग पर शासन किया।

[3938] मैक्सिमियिन ने 284 से 305 तक रोमन साम्राज्य के पश्चिमी भाग पर शासन किया।

[3939] अलेक्जेंड्रिया – मिस्र में भूमध्य सागर के तट पर लगभग 333 ईसा पूर्व में महान अलेक्जेंडर द्वारा स्थापित एक प्रसिद्ध शहर; सामान्य युग से पहले शिक्षा और व्यापार के केंद्र के रूप में प्रसिद्ध; चौथी शताब्दी की शुरुआत से, यह ईसाई जीवन के सबसे महत्वपूर्ण केंद्रों में से एक और पैट्रिआर्क का आसन बन गया।

'क्या आप इस युवती को जानते हैं?'

लुकियि ने उत्तर दयिा:

'हाँ, मुझे पता है कि वह एक कुलीन और सम्मानति परविार से आती है।'

तब राजकुमार थयिोडोरा की ओर मुड़कर बोला:

'यदि आप, युवती, एक कुलीन और सम्मानति परविार से हैं, तो आपका ववािह अभी तक क्यों नहीं हुआ?'

युवती ने उत्तर दयिा:

'मैंने मसीह के लिए, हमारे प्रभु यीशु मसीह के लिए ववािह त्याग दयिा है, जो संसार में आए और सर्व-पवत्रि सदा-कुँवारी मरयिम से उत्पन्न हुए, जन्हिोंने हमें भ्रष्टता से मुक्ति दिलाई है और हमें अनंत जीवन देने का वादा कयिा है। और इसलिए मैंने, उन पर वश्विास करते हुए, उनके प्रति प्रेम के कारण, अपनी कुँवारी अवस्था को मृत्यु के दनि तक पवत्रिता में बनाए रखने का संकल्प लयिा है।'

न्यायाधीश ने उत्तर में कहा:

'राजाओं ने हमें आदेश दयिा है कि हम उन सभी कन्याओं को, जो अपनी पवत्रिता बनाए रखना चाहती हैं, हमारे देवताओं की पूजा करने के लिए मजबूर करें; लेकनि यदि तुम देवताओं की पूजा करने से इनकार करोगी, तो तुम्हें वेश्यालय भेज दयिा जाएगा।'

युवती ने उत्तर दयिा:

'तुम नश्चिति रूप से जानते हो कि ईश्वर सबसे पहले और सबसे बढ़कर दलि के इरादे को देखता है। दलिों का जानने वाला होने के नाते, वह हमारे सभी वचिारों को जानता है और हमारे इरादों को ही कर्म के रूप में स्वीकार करता है। मेरा ईश्वर मेरे इरादे को जानता है—अपनी कुँवारी अवस्था को पवत्रिता में बनाए रखने का; इसलिए, भले ही आप, जैसा कि आप घमंड करते हैं, आदेश दें कि मुझे व्यभचिारयिों के हवाले कर दयिा जाए, यह मेरे शरीर के लिए व्यभचिार नहीं होगा, बल्कि मेरे लिए हसिा और पीड़ा होगी; और अगर तुम मेरा सरि, या मेरा हाथ, या मेरा पैर काट दो, या जबरदस्ती मेरी कुँवारीपन छीन लो, तो तुम मुझे वेश्या नहीं बल्कि एक शहीद बना दोगे। लेकनि यह जान लो: मेरा प्रभु और ईश्वर अगर चाहें तो मेरी कुँवारीपन को पवत्रिता में बनाए रखने के लिए पर्याप्त शक्तशिाली हैं।

न्यायाधीश ने कहा:

'अपनी कुलीनता का अपमान करने का प्रयास मत करो; अपने सम्मान और महमिामय माता-पति की बेटी होने के नाते, जो यहाँ आपके बारे में गवाही दी गई है, खुद को तरिस्कार और उपहास का पात्र मत बनाओ।'

युवती ने उत्तर दयिा:

'मैं मसीह और अपने ईश्वर की स्तुति करती हूँ, जन्हिोंने मुझे कुलीनता और पवत्रिता प्रदान की है, और मुझे वश्विास है कि वह अपनी कबूतर को उसकी अखंडता में सुरक्षति रखेंगे।'

न्यायाधीश ने कहा:

'तुम एक ऐसे आदमी में वश्विास करके खुद को क्यों धोखा देती हो जसिे ईश्वर की तरह सूली पर चढ़ाया गया था? क्या वह सचमुच तुम्हें उन हाथों से बचाएगा जो तुम्हें अपवत्रि करने वाले हैं? यह मत सोचो कि वेश्यालय में प्रवेश करने के बाद तुम उससे पवत्रि होकर नकिल जाओगी।'

थयिोडोरा ने उत्तर दयिा:

'मैं वश्विास करती हूँ कि मसीह, मेरे ईश्वर, जन्हिोंने पोंतयिस पलिातुस के अधीन दुख उठाया, वे मुझे व्यभचिारयिों के अशुद्ध हाथों से बचाएंगे और अपनी दासी को पवत्रिता में सुरक्षति रखेंगे।'

इसके बाद, न्यायाधीश ने थयिोडोरा को वचिार करने के लिए तीन दनि का समय दयिा। लेकनि उसने पीड़ा सहने की अपनी तत्परता व्यक्त करते हुए कहा कि तीन दनिों में, जैसे वह और अधकि दनिों में करती, उसका मकसद या इच्छा अपने ईश्वर, मसीह, के लिए मरने के अलावा और कुछ नहीं होगा।

उसके बाद, संत को जेल ले जाया गया और तीन दनि बाद, पूछताछ के लिए फरि से न्यायाधीश के सामने पेश कयिा गया। जब राज्यपाल को यह एहसास हुआ कि वह पवत्रि ईसाई धर्म में दृढ़ रहेगी, तो उसने उसे वेश्यालय ले जाने का आदेश दयिा। जब उसे वहाँ ले जाया जा रहा था, तो संत ने प्रभु से प्रार्थना करते हुए इस प्रकार कहा:

हे मसीह हमारे ईश्वर, जन्हिोंने अपनी पवत्रि शहीद थेकला की उपस्थति में मूक जानवरों को वश में कयिा (देखें 24 सतिंबर को उनका जीवन), बोलने वाले जानवरों में सबसे क्रूर, उन व्यभचिारयिों को भी वश में करें जो मेरे शरीर की

पवित्रता को कलंकित करने का इरादा रखते हैं। हे ईश्वर, जिन्होंने सुसन्ना को वृद्ध व्यभिचारियों के हाथों से बचाया (दानियेल 13), अपनी दासी को भी ऐसे व्यभिचारियों से बचाएँ; उस मंदिर को अपवित्र न होने दें, जो केवल आपके लिए समर्पित है। हे प्रभु, जिन्होंने उन अदृश्य शत्रुओं को मुझसे दूर भगा दिया, जो मेरे कुँवारीपन के खजाने को चोरी से चुराना चाहते थे, इन खुले लुटेरों को भी दूर भगा दो, जो जबरदस्ती मुझसे मेरी संपत्ति छीनने का इरादा रखते हैं। हे मेरे प्रभु परमेश्वर, मेरी रक्षा के लिए आओ, और अपनी सर्वशक्तिमान शक्ति से यह सुनिश्चित करो कि मैं इस स्थान से पवित्र होकर जाऊँ, कि ये दुष्ट हाथ मुझे न छू सकें, ताकि मैं आपके पवित्र नाम का महिमामंडन कर सकूँ।

जब संत इस प्रकार प्रार्थना कर रहे थे, तो घृणित व्यभिचारियों ने उस घर के पास आकर आपस में यह बहस की कि पहले कौन कन्या के कक्ष में प्रवेश करेगा। उसी क्षण, एक युवक, जो शरीर से बलवान और योद्धा का वेश धारण किए हुए था, उनके पास आया, उन्हें घर से भगा दिया, और कन्या के कक्ष में प्रवेश कर गया, और किसी ने भी उसे उसके पास जाने से नहीं रोका। वह डिडिमिस नामक एक ईसाई था, जो ईश्वर की व्यवस्था से, जानबूझकर एक योद्धा के भेष में उस घर में प्रवेश किया था, मानो पापी उद्देश्यों के लिए हो, लेकिन वास्तव में वह उस युवती की रक्षा के लिए वहाँ आया था। उसे देखकर संत थियोडोरा बहुत आश्चर्यचकित हुईं। लेकिन धन्य डिडिमिस ने उनसे कहा:

'भय मत करो, बहन! जो तुम्हें बाहर से भेड़िये के रूप में दिखाई देता है, वह वास्तव में एक मेमना और पवित्र विश्वास में तुम्हारा भाई है। मैं तुम्हें बचाने आया हूँ, मेरे ईश्वर की दासी और कबूतर। आओ हम अपने वस्त्र बदलें—तुम मेरे वस्त्र पहनना, और मैं तुम्हारे वस्त्र पहनूँगा, ताकि तुम अपनी कुँवारी अवस्था को यहाँ से सुरक्षित ले जा सको, मेरे वस्त्रों से छिपी हुई। जहाँ तक मेरी बात है, तुम्हारे वस्त्रों में सजे हुए, मैं शहादत का पराक्रम करने और हमारे ईश्वर मसीह के एक सच्चे योद्धा के रूप में खुद को साबित करने के लिए आगे बढ़ूँगा।

पवित्र कन्या इस बात के लिए राज़ी हो गई, यह समझते हुए कि डिडिइमस को ईश्वर ने उसके पास भेजा था। अपने कपड़े बदलने के बाद, उन्होंने उसी के अनुसार कपड़े पहने – कन्या ने पुरुषों के वस्त्र पहने, और युवक ने महिलाओं के वस्त्र। फिर युवक ने कन्या से कहा:

'जब तुम यहाँ से निकलो, तो अपने चेहरे को इस तरह ढक लेना जैसे कि तुम शर्मिंदा हो, क्योंकि हर कोई इस जगह से शर्मिंदगी के साथ ही निकलता है; तब कोई भी तुम्हें पहचान नहीं पाएगा।'

उस कन्या ने ठीक वैसा ही किया; वह अपना चेहरा ढककर सैन्य वेशभूषा में बाहर निकली; वह अपने घर की ओर तेज़ी से चली, अपने प्रति ईश्वर की व्यवस्था की प्रशंसा करते हुए, क्योंकि उन्होंने इस प्रकार उसे व्यभिचारियों से, जैसे एक पक्षी को जाल से, या भेड़ियों से एक भेड़ को, बचाया था।

जब थियोडोरा वेश्यालय से निकली, तो कामवासना से ग्रस्त एक युवक उसमें प्रवेश किया; एक युवती के बजाय एक पुरुष को देखकर वह बहुत हैरान हुआ और चिल्लाया:

'यह क्या है? यह युवती पुरुष कैसे बन गई? मैंने सुना है कि एक बार, जैसा कि ईसाई कहते हैं, मसीह ने पानी को शराब में बदल दिया था (यूहन्ना 2:1–11), लेकिन अब मैं देखता हूँ कि उसने स्त्रीलिंग को पुल्लिंग में बदल दिया है।'

और जैसे ही वह वेश्यालय से बाहर निकला, उसने अपने दोस्तों से कहा:

'आओ यहाँ से जल्दी भाग चलें, भाग चलें, कहीं मसीह हमें औरतें न बना दें!'

और भागकर, उन्होंने सारी बात जज यूस्ट्रैटियस को बता दी। तब यूस्ट्रैटियस ने डिडिइमस को अदालत में पेश करने का आदेश दिया और उससे पूछा:

'तुम कौन हो?'

डायडिमिस ने उत्तर दिया:

'मैं यीशु मसीह का सेवक हूँ; मेरा नाम डिडिमिस है।'

न्यायाधीश ने कहा:

'हम तुम्हें पुरुषों के कपड़ों की बजाय महिलाओं के कपड़े पहने हुए क्यों देख रहे हैं?'

दिदिमिस ने उत्तर दिया:

'मैंने वे वस्त्र थियोडोरा से लिए और उसे अपने वस्त्र दे दिए, ताकि उसे व्यभिचारियों द्वारा पहचाना न जा सके और वह उनकी चंगुल से बच सके।'

न्यायाधीश ने पूछा:

'यह करने का आदेश तुम्हें किसने दिया?'

डायडिमिस ने उत्तर दिया:

'मेरे ईश्वर, यीशु मसीह ने मुझे इस प्रकार कार्य करने की शिक्षा दी; उन्होंने मुझे अपनी भेड़ों को जानवरों के दांतों से सुरक्षित और सलामत बचाने के लिए भेजा।'

न्यायाधीश ने कहा:

'तो फिर थियोडोरा कहाँ है? हमें बताओ वह कहाँ है, अगर तुम नहीं चाहते कि हम तुम्हें यातना दें।'

डायडिमिस ने उत्तर दिया:

'सचमुच, मुझे नहीं पता कि वह इस समय कहाँ है; मैं उसके बारे में बस इतना जानता हूँ कि वह मसीह की एक ईमानदार और वफादार सेविका है, कि वह हमारे ईश्वर, मसीह के पवित्रतम नाम की घोषणा करती है; इसलिए मसीह ने उससे प्रेम किया है और उसे अपनी दुल्हन के रूप में शुद्ध रखा है।'

हालाँकि, क्रोध से भरकर राजकुमार ने दीदमिस का सिर तलवार से काट डालने का आदेश दिया, और हुक्म दिया कि उसके शरीर को आग में फेंक दिया जाए।

संत डिडिमिस, अपनी मृत्युदंड की सजा के बारे में जानकर, आनंदित हो गए और ईश्वर से इस प्रकार पुकार कर कहा:

'धन्य हैं आप, हे हमारे प्रभु यीशु मसीह के पिता, परमेश्वर, जिन्होंने मेरी प्रार्थना को तुच्छ नहीं समझा और मेरी इच्छा पूरी की है; क्योंकि आपने अपनी दासी, थियोडोरा को पवित्रता और सत्यनिष्ठा में संरक्षित रखा है, और आप मुझे शहीद का मुकुट प्रदान करते हैं!'

और संत को सिर कलम करने के लिए शहर के बाहर ले जाया गया। जब संत थियोडोरा को यह पता चला, तो वह पवित्र शहीद डिडिमिस के पीछे चली गईं और, निष्पादन के स्थान पर पहुँचकर, शहीद के मुकुट को लेकर उनसे बहस करने लगीं, यह कहते हुए:

– यद्यपि तुमने मुझे कलंक से बचाया है, पर मैंने तुमसे मृत्यु से बचाने का आग्रह नहीं किया था। मैं सबसे पहले पकड़ी गई, सबसे पहले यातना दी गई और सबसे पहले न्याय किया गया; मुझे एक शहीद की मृत्यु का वरदान दो; मेरा सिर काट दो, जबकि तुम जहाँ चाहो वहाँ जाओ; क्योंकि तुमने मेरी कुँवारीता की रक्षा की है, इस तथ्य के लिए प्रभु से तुम्हें एक बड़ा इनाम मिलेगा; मैं नहीं चाहती कि आप मेरी जगह मरें और मेरे मुकुट को रोकें; मैं आपकी मृत्यु का कारण नहीं बनना चाहती; मैं स्वयं मरूँगी, मैं स्वयं अपना कर्ज चुकाऊँगी, क्योंकि मेरे पास एक सिर है; इसे मसीह के नाम के लिए काट दिया जाए; मेरा रक्त है; इसे हमारे प्रभु के लिए बहाया जाए; मैं न तो कलंकित होना चाहती थी, और न ही चाहती हूँ, परन्तु मैं यातना सहने की इच्छा रखती थी, और अब भी रखती हूँ; अतः मुझसे वह मुकुट न छीनो जिसे मैंने तुम्हारे सामने बुनना शुरू किया था। लेकिन यदि तुम्हें मेरे शहीद होने से ईर्ष्या है, तो पहले मुझे तलवार के नीचे जाने दो; तुम भी मेरे बाद मसीह के लिए शहीद हो सकती हो; मैं चाहता हूँ कि तुम मेरे बाद रहो, न कि मैं तुम्हारे बाद, क्योंकि वे तुम्हारी पवित्रता नहीं छीन सकते, जबकि वे मुझसे मेरी निर्दोषता छीन सकते हैं। यदि तुमने मुझे वेश्यालय से पवित्र बचाया है, तो मुझे मसीह के सामने पवित्र होकर प्रकट होने दो।

तब संत डिडिमिस ने उससे कहा:

'प्रिय बहन! हमारे प्रभु, जिन्होंने तुम्हें पहले भी एक बार निर्दोष रखा है, वे हमेशा तुम्हारी पवित्रता की रक्षा कर सकते हैं; जहाँ तक मेरी बात है, जो मृत्युदंडित हूँ, मुझे मरने से मत रोको; मैं मसीह के लिए मरूँगा और अपने रक्त से अपने पापों को धो लूँगा।'

जब वे इस प्रकार एक-दूसरे से प्रेमपूर्वक बहस कर रहे थे, तो उन्हें तलवार से सिर कलम करने का आदेश दिया गया; पवित्र शहीद थियोडोरा ने सबसे पहले अपना सिर तलवार के आगे झुकाया, और फिर पवित्र शहीद डिडिमिस ने भी अपना सिर तलवार के आगे झुका दिया[3940] । फिर उनके शरीर आग में फेंक दिए गए। इस प्रकार उन्होंने हमारे ईश्वर, मसीह से अपने विजयी मुकुट प्राप्त किए, जिनका, पिता और पवित्र आत्मा के साथ, युगानुयुग महिमा, सम्मान और आराधना हो। आमीन।

[3940] पवित्र शहीदों थियोडोरा और डिडिमिस का 303 या 304 में निधन हो गया।

पवत्रि ह्यरोमार्टायर फेरापोंटस की स्मृत

27 मई को स्मरण कयिा जाता है

ये पवत्रि फेरपोंट सार्डसि में कलीसयिा के बशिप थे[3941] ; वहाँ, अपनी शक्षिा के द्वारा, उन्होंने कई यूनानी मूर्तपिूजकों को मसीह के प्रत पिरविर्तति कयिा और उन्हें पवत्रि बपतस्मिा के द्वारा प्रबुद्ध कयिा। संत फेरपोंट को राज्यपाल जूलयिन द्वारा गरिफ्तार कर जंजीरों में बंद करके जेल में डाल दयिा गया; उन्हें लंबे समय तक भूख और प्यास से पीड़ति कयिा गया; जेल से बाहर नकिालने के बाद, उन्हें वभिन्नि यातनाओं का शकिार बनाया गया; फरि उन्हें बाँधकर फ्राइजयिा के एक शहर सनिाऑन[3942] और गलातयिा के एक शहर एन्क्रा ले जाया गया, जहाँ उन्हें कई अलग-अलग तरीकों से यातना दी गई। जब संत को अस्ताला नामक नदी पर लाया गया, तो उन्हें नग्न करके जमीन पर लटिा दयिा गया और जमीन में ठोक दएि गए चार खंभों से बाँध दयिा गया; फरि उनके अत्याचारयिों ने उन्हें इतनी बुरी तरह पीटा कि उनके शरीर से त्वचा तक फाड़ दी गई और धरती उनके खून से सराबोर हो गई। हालाँकि, उन खंभों में अंकुर फूट नकिले और उन पर शाखाएँ और पत्तयिाँ नकिल आईं; जो बाद में बड़े पेड़ बन गए, और उनकी पत्तयिों ने लोगों के वभिन्नि रोगों और बीमारयिों को ठीक कयिा। अंत में, संत फेरापोंट को सतालयिा के धर्मप्रांत (सार्डसि के महानगर के अधकिार क्षेत्र के अंतर्गत) में, लडियिा में हर्मस नदी (जो लडियिा से होकर बहती है) के पास एक क्षेत्र में ले जाया गया, और यहाँ, बहुत कष्ट सहने के बाद, उन्हें मसीह के नाम का प्रचार करने के लएि मृत्युदंड दयिा गया और इस प्रकार उन्होंने प्रभु से अक्षय मुकुट प्राप्त कयिा[3943] ।

कएिव और समस्त रूस के चमत्कार-कर्त्ता, पूज्य संत साइप्रयिन, फोतउिस और योनाह के पवत्रि अवशेषों का स्थानांतरण

27 मई को स्मरण कयिा जाता है

अप्रैल 1472 के महीने में, सभी रूस के मसीह-प्रेमी महा राजकुमार, जॉन वासलिीवचि[3944] के शासनकाल के दौरान, उनकी उत्कृष्टता मेट्रोपॉलटिन फलिपि[3945] के अधीन, मास्को के गौरवशाली शहर में, परम पवत्रि ईश्वर की माता के सोमरस के पवत्रि और महान कैथेड्रल चर्च के लएि नींव का पत्थर रखा गया । और जब उन्होंने संत पीटर चमत्कारकर्ता[3946] द्वारा नर्मिति पहली चर्च को ध्वस्त करना शुरू कयिा, और उसे फर्श की तख्तयिों तक उजाड़ दयिा, तो पूर्व रूसी संतों, उनकी उत्कृष्टताएं मेट्रोपॉलटिन साइप्रयिन, फोतउिस और जोनाह के ताबूत मलि। 28 मई को, दनि के दूसरे घंटे की शुरुआत में, उनके ताबूत दफनाए गए, और फरि सर्व रूस के उनकी उत्कृष्टता मेट्रोपॉलटिन फलिपि आर्चबशिपों के साथ पहुंचे, और उनके साथ, पूरे मॉस्को के पुरोहति भी थे; धर्मपरायण ग्रैंड प्रंसि जॉन वासलिीवच भी अपने बेटे, ग्रैंड प्रंसि की माँ, अपने भाइयों, प्रंसि जॉर्ज, एंड्रयू, के साथ पहुंचे, बोрис और एंड्रे, ग्रैंड ड्यूक के दरबार के सभी गणमान्य व्यक्ति, राजकुमार और बोयार, और मास्को के गौरवशाली शहर के पुरुष और महलिाएं, दोनों ही ऑर्थोडॉक्स ईसाइयों की भीड़। अवसर के अनुरूप भजन गाने के बाद, उन्होंने सर्वप्रथम सर्व-रूस के मेट्रोपॉलटिन साइप्रयिन की कफ़न को उठाया और उसे नव-नर्मिति चर्च के दाहनिी ओर, इसके लएि तैयार की गई जगह पर एक वशिेष अवशेष-पात्र में रखा; फरि उन्होंने मेट्रोपॉलटिन फोटयिस की कफ़न को उठाया और उसे उसी स्थान पर रख दयिा। संतों द्वारा पहने गए पवत्रि वस्त्र और ओमोफोरीयॉन, उनके नधिन के कई वर्षों बाद भी, अपरविर्तति पाए गए; क्योंकि

[3941] सार्डसि, या सार्ड का शहर एशयिा माइनर के लडियिा क्षेत्र में स्थति था; प्राचीन काल में यह लडियिन साम्राज्य की राजधानी था और अपनी संपत्ति के लएि प्रसद्धि था। प्रेरतिों के समय में वहाँ पहले से ही कई ईसाई थे। सार्डसि में चर्च का उल्लेख प्रकाशतिवाक्य की पुस्तक में मलिता है (प्रकाशतिवाक्य 1:11, 3:1–4)।

[3942] एशयिा माइनर का क्षेत्र।

[3943] संत फेरापोंट की मृत्यु की तारीख अज्ञात है।

[3944] यह, बेशक, ग्रैंड प्रंसि जॉन वासलिीवचि तृतीय को संदर्भति करता है, जन्हिोंने 1462 से 1505 तक मॉस्को पर शासन कयिा।

[3945] यह मेट्रोपॉलटिन फलिपि प्रथम थे, जन्हिोंने 1465 से 1473 तक महान राजकुमार जॉन तृतीय के अधीन मॉस्को का पद संभाला।

[3946] यह, बेशक, मेट्रोपॉलटिन सेंट पीटर को संदर्भति करता है, जो 1325 में व्लादमिीर से मास्को चले गए थे और जनिके आग्रह पर मास्को के राजकुमार जॉन कलाइटा ने 'दॉरमशिन ऑफ द मदर ऑफ गॉड' का पहला पत्थर का चर्च बनवाया था।

मेट्रोपॉलटिन साइप्रयिन की मृत्यु को अठाईस दनि कम करके पैंसठ वर्ष, और मेट्रोपॉलटिन फोतउिस की मृत्यु को चौंतीस दनि कम करके एकलहत्तर वर्ष बीत चुके थे। संत साइप्रयिन और फोटयिस के अवशेषों को स्थानांतरति करने के बाद, वे संत मेट्रोपॉलटिन जोनाह की ताबूत के पास आए, और जब तुरंत ढक्कन हटाया गया, तो इतनी तेज सुगंध फैली कि वहाँ खड़े सभी लोग उसे सूंघ सके। उस क्षण, सभी ने देखा कि संत के पवत्रि अवशेष पूरी तरह से अक्षुण्ण थे; केवल उनका शरीर सूखकर हड्डयिों से चपिक गया था, और जसि वस्त्र में उन्हें लपेटा गया था, वह भी सड़न से अछूता और पूरा था, भले ही उनके नधिन को 11 साल और 2 महीने बीत चुके थे। संत की ताबूत को उठाकर, उन्होंने इसे चर्च के बाईं ओर जमीन पर रख दयिा।

तब धर्मपरायण राजकुमार जॉन और परम पूज्य मेट्रोपॉलटिन ने, ऑर्थोडॉक्स श्रद्धालुओं की भीड़ के साथ, इसके लिए ईश्वर का धन्यवाद कयिा और आदेश दयिा कि संतों की पवत्रि अवशेषों की खोज का स्मरणोत्सव मई के 27वें दनि मनाया जाए।

हमारे पूजनीय पति फेरापोंट, बेलोजेरो के चमत्कार करने वाले की स्मृति

27 मई को स्मरणोत्सव

[3947]हमारे ये पूजनीय पति फेरपोंट, मॉस्को क्षेत्र के वोल्कोक लाम्स्कोये नगर से आए थे[3948] । वे पस्कोचनि परविार के धर्मपरायण माता-पति के पुत्र थे और संसार में उनका नाम थयिोडोर रखा गया था। वयस्क होने पर, वे ईश्वर के भय से परपिूर्ण हो गए और संसार से अलग हो जाना चाहते थे। अपने घर और माता-पति को पीछे छोड़कर, वह मास्को के गौरवशाली शहर में आए और सर्वपवत्रि परमेश्वर की माता के समिोनोव मठ[3949] में मठवासी संन्यास ग्रहण कयिा, उस समय उन्हें फेरपोंट नाम दयिा गया। इसके बाद, आज्ञाकारति, प्रार्थना और उपवास को समर्पति होकर, उन्होंने इस मठ में कई वर्षों तक सेवा की। एक अवसर पर, कुछ मठ संबंधी आवश्यकताओं के लिए, उन्हें आर्चमिैंड्राइट द्वारा व्हाइट लेक (White Lake) के क्षेत्र में भेजा गया था; वहाँ के स्थानों का नरिीक्षण करने के बाद, वे उन स्थानों से बहुत प्रभावति हुए और अपने मठ में लौट आए।

ईश्वर की व्यवस्था से, ऐसा हुआ कि आदरणीय सरिलि, जन्हिें बाद में बेलोये ओज़ेरो के चमत्कार करने वाले के रूप में जाना गया, इस मठ में मौन व्रत में रह रहे थे; और उसी समय उन्हें ईश्वर की परम पवत्रि माता का दर्शन हुआ, जन्हिोंने उन्हें बेलोये ओज़ेरो की भूमि पर जाने की आज्ञा दी, जैसा कि उनकी जीवनी[3950] में अधकि वसि्तार से वर्णति है। इस पर सहमत होकर, पूज्य सरिलि और फेरपोंट, समिोन के मठ, से एक साथ रवाना हुए और सफेद झील के क्षेत्र में पहुँचे। वहाँ के सभी सुनसान स्थानों का पता लगाने के बाद, वे उस स्थान पर पहुँचे जहाँ अब सेंट सरिलि का मठ स्थति है[3951] । यहाँ, पूजनीय सरिलि ने फेरपोंट को ईश्वर की परम पवत्रि माता के दर्शन के बारे में बताया जो उन्होंने अनुभव कए थे, और उन्होंने उस स्थान पर अपने लिए एक कोठरी बनाना शुरू कर दयिा। हालाँकि, पूजनीय फेरापोंट, पूजनीय सरिलि के साथ अधकि समय तक नहीं रहे। जल्द ही वे उन्हें छोड़कर दो झीलों के बीच एक ऐसी जगह पर पहुँचे जो उन्हें बहुत पसंद आई। उन्होंने उस जमीन को साफ करना शुरू कयिा और अपने लिए एक कोठरी बना ली। इसके बाद, भक्षिु उनके चारों ओर इकट्ठा होने लगे; उन्होंने एक मठ की स्थापना की और उसमें परम पवत्रि माता परमेश्वर की जन्मजयंती के सम्मान

[3947] व्हाइट लेक, या बेलोओज़ेरो, वर्तमान में नोवगोरोड गवर्नोरेट में स्थति है।

[3948] वोल्ोक लाम्स्की, जसि सामान्यतः वोल्ोक कहा जाता है, जो अब मास्को गवर्नरेट में वोल्कोलामस्क जलि का शहर है, इसकी स्थापना नोवगोरोड के उपनविेशवादयिों ने गोरोडेनका नदी पर की थी, जो लामा नदी की एक सहायक नदी है, और यह 1135 में ही अस्तत्वि में था। प्राचीन काल में, यह शहर बहुत बड़ा और घनी आबादी वाला था, लेकनि आज यह 1,000 की आबादी वाला एक मामूली सा छोटा शहर है।

[3949] समिोनोव मठ, जसिका नाम समिोनोवो के नाम से जानी जाने वाली मॉस्क्वा नदी के पास की बस्ती के नाम पर रखा गया है, की स्थापना लगभग 1370 में रोस्तोव के संत सेरगयिस ऑफ़ राडोनेज़ के एक शष्यि और भतीजे ने की थी, जन्हिोंने वहां सबसे पवत्रि परमेश्वर की माता को समर्पति पहला चर्च बनाया था, जो उनकी महमिामय जयंती के सम्मान में था। उनका पर्व 28 नवंबर को मनाया जाता है।

[3950] आदरणीय सरिील, मास्को में साइमनोव मठ के संस्थापक, आदरणीय थयिोडोर के एक मठवासी शष्यि थे। थयिोडोर के रोस्तोव के आर्चबशिप के पद पर स्थानांतरति होने के बाद, 1390 में उन्हें मठ का आर्चमिैंड्राइट चुना गया, लेकनि वे इस पद पर अधकि समय तक नहीं रहे। अमीरों और कुलीनों द्वारा बार-बार मलिने से परेशान होकर, वे अपनी पुरानी कोठरी में चले गए और मौन में रहने का प्रयास कयिा; फरि भी, वहां भी, उनकी आत्मा एक सुनसान जगह पर पूर्ण एकांत और मौन के लिए तरसती थी। उनका पर्व 9 जून को मनाया जाता है।

[3951] यह स्थान माउंट मौरा के पास, शेक्ना नदी से बहुत दूर नहीं स्थति है। मठ की स्थापना 1397 में सविर्स्कोए झील के उत्तरी तट पर हुई थी।

में एक चर्च का निर्माण किया[3952] । आदरणीय फेरापोंट अक्सर आदरणीय सिरिल से आध्यात्मिक बातचीत करने और मठवासी जीवन को व्यवस्थित करने के लिए मिलते थे, क्योंकि उनका मठ उनके मठ से बहुत दूर नहीं था—केवल बारह पोप्रीश्ची की दूरी पर—और उन्हें उनसे बहुत लाभ होता था। इस प्रकार इन आदरणीय संतों ने ईश्वर में अपना जीवन व्यतीत किया।

इस प्रकार के पुण्य जीवन के परिणामस्वरूप, उनकी ख्याति उस भूमि के शासकों और यहाँ तक कि स्वयं महा राजकुमार एंड्रे दिमित्रीविच के कानों तक भी पहुँची, जिनके अधिकार क्षेत्र में बेलोये ओज़ेरो के क्षेत्र शामिल थे। इन पवित्र तपस्वियों के बारे में सुनकर, राजकुमार इस बात से बहुत प्रसन्न हुआ कि उसके राज्य में ऐसे पूजनीय पुरुष प्रकट हुए थे; उसने ईश्वर की स्तुति की और मठों के निर्माण के लिए अपने कोषागार से उदार दान दिया। ऐसा हुआ कि राजकुमार का एक करीबी सहयोगी, एक बोयार, बेलोज़ेरो क्षेत्र में राजकुमार के राज्यपाल के रूप में कार्यरत था। वह सर्वपवित्र परमेश्वर की माता के मठ गए, सम्मानित एल्डर फेरापोंट से मिले, उनसे बातचीत की और उनसे बहुत स्नेह करने लगे। बाद में मोजाइस्क लौटकर, उन्होंने राजकुमार को सम्मानित एल्डर के बारे में बताया, और यह सुनकर राजकुमार बहुत प्रभावित हुए, क्योंकि वे स्वयं एक अत्यंत धार्मिक और ईश्वर-प्रेमी व्यक्ति थे।

इसके कुछ समय बाद, राजकुमार को अपने नगर मोजाइस्क में एक मठ स्थापित करने की तीव्र इच्छा हुई, जहाँ उनका राजसी आवास था। उसने ऐसे मठ की स्थापना करने में सक्षम व्यक्ति को खोजने के लिए अपने बोयारों से सलाह ली, और बोयारों ने उसे धन्य फेरापोंट की याद दिलाई, कहते हुए कि इस पवित्र कार्य के लिए वह उससे अधिक अनुभवी कोई नहीं पाएगा। तब राजकुमार ने अपने एक कुलीबली को एक पत्र और उपहारों के साथ उस पवित्र संत के पास भेजा, और उनसे अनुरोध किया कि वे उनका निवेदन अस्वीकार न करें। संत ने राजकुमार का निवेदन सुनकर उस पर गंभीरता से विचार किया और मठवासी समुदाय के साथ चर्चा की; समुदाय ने उन्हें राजकुमार का निवेदन पूरा करने की सलाह दी। आदरणीय भिक्षु भाईचारे की इच्छा के आगे झुक गए और अपने साथ एक भिक्षु को लेकर राजकुमार एंड्रयू के पास गए। राजकुमार ने पवित्र साधु और उनके साथी का बड़े सम्मान से स्वागत किया और उनसे एक मठ बनाने के लिए एक जगह खोजने को कहा। सम्माननीय पिताजी ने लंबे समय तक यह अस्वीकार किया, और राजकुमार से विनती की कि उन्हें अपने मठ में लौटने दें, लेकिन वे मना नहीं कर सके; इसलिए, राजकुमार की इच्छाओं के आगे झुकते हुए, वे गए और मॉस्क्वा नदी के पास एक उपयुक्त और सुंदर स्थान पाया, जो मोजायस्क शहर से एक 'पोप्रशिचे' दूर था[3953] । तब, राजकुमार के साथ मिलकर, उन्होंने बिशप का आशीर्वाद प्राप्त किया और सर्वपवित्र परमेश्वर की माता के जन्म के सम्मान में एक चर्च का निर्माण किया—यह नाम पूजनीय के पहले मठ के चर्च के समान ही था—और, मठ के रीति-रिवाज के अनुसार, इसके बगल में सभी आवश्यक इमारतें खड़ी कीं, उन्हें भव्य रूप से सजाया, और भिक्षुओं को इकट्ठा किया[3954] . राजकुमार इस मठ को आसपास के अन्य मठों की तुलना में बहुत अधिक सम्मान देता था। उसने इसके मठाध्यक्ष के लिए आर्चिमैंड्राइट का पद प्राप्त किया, सम्माननीय फेरापोंट को इसका पहला मठाध्यक्ष नियुक्त किया, और वृद्धावस्था में उनकी बड़ी देखभाल की।

इसके बाद, रेवरेंड फादर ने ईश्वर को प्रसन्न करने वाले ढंग से अपना शेष जीवन व्यतीत किया, और अपनी वृद्धावस्था में प्रभु[3955] के पास परलोक सिधार गए, जिनसे वे अपनी जवानी से प्रेम करते थे, और इस मठ में सम्मान के साथ दफनाए गए। हमारे ईश्वर की महिमा हो, अब और हमेशा और युगों-युगों तक।

[3952] यह मठ, जिसे अब बेलोजेर्स्की फेरापोन्टोव मठ के नाम से जाना जाता है, की स्थापना 1398 में बोरोदावस्कोए झील के ऊँचे किनारे पर, आज के किरिलोव शहर से 14 वर्स्ट की दूरी पर हुई थी।

[3953] उस स्थान को लुज़्की कहा जाता था, जिसके कारण मठ को लुज़्हेत्स्की के नाम से जाना जाने लगा।

[3954] यह 1408 में था।

[3955] परम पूजनीय फेरापोंट का 27 मई 1426 को, लगभग 90 वर्ष की आयु में निधन हो गया, और वे लुज़्हेत्स्की मठ में 18 वर्षों तक रहे। उनका पूजन 15वीं शताब्दी के अंत से ही शुरू हो गया था, और 1547 में मॉस्को परिषद में उन्हें संत का दर्जा दिया गया। उनके अवशेष लुज़्हेत्स्की मठ के कैथेड्रल चर्च में वेदी के नीचे रखे गए हैं, जबकि बेलोजेर्स्क मठ में उनके नाम पर एक चर्च स्थित है।

10 जून

28 मई (पुराने कैलेंडर के अनुसार)

पवत्रि शहीद एलकिोनडिा का कष्टकथा

28 मई को स्मरणोत्सव

पवत्रि शहीद एलीकोनदिा, गॉर्डयिन[3956] और फलिपि[3957] के शासनकाल में रहती थीं; उनका जन्म और पालन-पोषण थस्सिलुनीके[3958] में हुआ था। जब ईसाइयों पर अत्याचार शुरू हुआ, तो वह कोरंथि[3959] शहर में आ गईं। वहाँ लोगों को मूर्तयिों को बलदिान देते हुए देखकर, वह एक ऊँची जगह पर खड़ी हुईं और ऊँचे स्वर में चल्लिाईं:

'हे कोरन्थि के मूर्ख और कठोर-हृदय मनुष्यों! मैं देखती हूँ कि तुम अत्यंत दुष्ट हो, क्योंकि तुमने अनन्त और अवनिाशी परमेश्वर को त्याग दयिा है और आत्मा-वनिाशक मूर्तयिों की उपासना की ओर मुड़ गए हो। देखो, मैं तुमसे वनिती करती हूँ, स्वर्ग की ऊँचाइयों और पृथ्वी की चौड़ाई पर दृष्टि डालो; क्या तुम उस पर मनन नहीं करते जसिने तुम्हारे सरिों पर आकाश को एक तम्बू की तरह फैलाया? जसिने पृथ्वी को गर्ता पर बछिाया? कौन है जो अपने भयानक और महमिामय नाम से समुद्र की उन्मत्त लहरों को वश में कर सकता है? जसिने मनुष्य को मट्टिी से बनाया और उसके मुख में जीवन का श्वास फूँका? केवल वही जो अपने हाथ से सारी सृष्टि को धारण करता है, स्वर्ग में वास करने वाला एकमात्र सच्चा परमेश्वर है। *'क्योंकि अन्य जातयिों के सब देवता मूर्तयिाँ हैं'* (भजन संहति 95:5), वे मूक और नर्जिीव हैं; जो कोई भी उनके सामने सरि झुकाता है, वह भी उनके समान हो जाए!

जब संत यह बातें नडिरता और ऊँचे स्वर में कह रही थीं, तो अधर्मी वधिर्मीयों ने उन्हें पकड़ लयिा और न्याय के लिए अपने राज्यपाल, पेरनियिस के सामने घसीट कर ले गए।

अधकिारयिों ने, उसे देखकर और यह जानकर कि वह बहुत सुंदर और कुलीन मुखमंडल वाली थी, उससे कोमलता से बात करनी शुरू की, और कहा:

'हर आशीर्वाद तुम पर हो, मेरी सुन्दर बेटी, क्योंकि मुझे वश्विास है कि तुम मानती हो कि हमारे देवता शाश्वत हैं; मैं तुम्हारे लिए प्रसन्न हूँ।'

संत ने उत्तर दयिा:

'धर्महीनों को क्या आनंद हो सकता है? हे शासक, तुम्हारा आनंद शोक में बदल जाएगा, और तुम्हारा गर्व कमज़ोरी में बदल जाएगा। मैं उस ईश्वर में वश्विास करती हूँ, जो सर्व पर शासन करता है, और मैं इस बात की प्रसन्नता व्यक्त करती हूँ कि मुझे अपने ईश्वर की खातरि, इस पराक्रम को करने के लिए योग्य समझा गया है, जसिमें मुझे नस्सिंदेह वजिता का मुकुट प्राप्त होने की आशा है।'

गवर्नर ने कहा:

'उन मूर्ख महलिाओं की तरह मत बनो जो अपनी अंतहीन बकवास करती हैं, बल्कि हमें धीरे से और संक्षेप में बताओ: तुम्हारा नाम क्या है?'

संत ने उत्तर दयिा:

'मैं पागल नहीं हूँ, बल्कि अपने प्रभु मसीह यीशु में बुद्धमिान हूँ; और यदि आप मेरा नाम जानना चाहते हैं, तो मेरा नाम एलकिोनडिा है।'

[3956] सम्राट गॉर्डयिन ने 238 से 244 तक शासन कयिा।

[3957] सम्राट फलिपि ने 244 से 249 तक शासन कयिा।

[3958] थेस्सालोनकिी, या सोलुन, प्राचीन मैसेडोनयिा का एक बहुत महत्वपूर्ण शहर था, जो एजयिन सागर में फर्मे की खाड़ी के तट पर स्थति था। रूसी चर्च के इतहिास में, यह शहर संतों सरिलि और मेथोडयिस, स्लावों के पहले शक्षिकों, के जन्मस्थान के रूप में उल्लेखनीय है (उनके जीवन के बारे में 11 मई को देखें); इसे थेस्सालोनकिी कहा जाता है और इसे यूरोपीय तुर्की के पहले (कॉन्स्टेंटनिोपल के बाद) व्यापारकि शहरों में गनिा जा सकता है।

[3959] कोरंथि – प्राचीन काल में एक प्रसद्धि शहर, जो आयोनयिन और एजयिन सागरों के बीच कोरंथि की खाड़ी के दक्षणि-पूर्वी कोने में स्थति था। आज, प्राचीन कोरंथि के स्थल पर 5,000 की आबादी वाला कुरोन्टो गाँव बसा हुआ है।

गवर्नर ने कहा:

'तुम्हें एलकिोनडिा नाम इसलएि नहीं दयिा गया है कि तुम इसके योग्य हो, क्योंकि अपनी बड़ी मूर्खता के कारण तुम अपने शरीर को यातना और घावों के अधीन कर रही हो।'

संत ने उत्तर दयिा:

'नहीं, मुझे सही ही एलकिोनडिा कहा जाता है, क्योंकि मेरे ईश्वर की दया हमेशा मेरे साथ है, और मैं तुम्हारे पति, शैतान[3960] पर तीर चलाती हूँ।' इसी तरह, तुम्हें बलि्कुल सही ढंग से ' ' परनियिा नाम दयिा गया है, क्योंकि तुम्हारा दुष्ट और शापति शरीर, तुम्हारी घृणति आत्मा के साथ, अग्नि-त्रशिूलों द्वारा वनिाश की ओर घसीटा जाएगा।

गवर्नर ने कहा:

'संक्षेप में बताओ: क्या तुम देवताओं को बलदिान दोगे, या नहीं? मैं अपने देवता उपचारकर्ता एस्क्लेपयिस[3961] की कसम खाता हूँ कि अगर तुम राजा की आज्ञा का पालन नहीं करोगे और हमारे देवताओं की पूजा नहीं करोगे तो मैं तुम्हें कोई दया नहीं दखिाऊँगा।'

'तुम सुन रहे हो,' संत ने उत्तर दयिा, 'कि मैं बेबाकी से बोल रही हूँ; मैं मसीह की दासी हूँ; जहाँ तक तुम्हारे एस्कलेपयिस की बात है—मैं उसके बारे में कुछ नहीं जानती। मुझसे जो चाहो कर लो।'

तब राज्यपाल, क्रोध से भरकर, संत को यातनाएँ देने लगा। पहले उसने उसे नग्न कर जमीन पर लटिाकर पीटने का आदेश दयिा; उसके पैर काट दएि गए, और फरि उसने शहीद को उबलते हुए गोंद से भरे एक कड़ाही में फेंकने का आदेश दयिा। लेकनि अचानक प्रभु का स्वर्गदूत प्रकट हुआ, जसिने कड़ाही को ठंडा कर दयिा, उबलते हुए पचि को ठंडी ओस में बदल दयिा, जसिसे उससे एक मीठी सुगंध फैलने लगी। यह देखकर, राज्यपाल ने कहा:

'हे, कतिना महान है जादूगर मसीह, जो आग को पानी में बदल सकता है!'

तब संत ने राज्यपाल की ओर मुड़कर कहा:

'क्या अब तुम अपने देवताओं, Dia[3962] और एस्क्लेपयिस को महान मानते हो, जब उन्हें मसीह की एक दासी, एक महलि द्वारा लज्जति कयिा गया हो?'

ये शब्द सुनकर, राज्यपाल और भी अधकि क्रोधति हो गया और संत को एक जादूगरनी कहकर आदेश दयिा कि उसके सरि से उसकी त्वचा सहति बाल उखाड़े जाएं, और उसके सरि और छाती को मोमबत्तयिों से जलाया जाए। संत ने इन सभी यातनाओं को साहसपूर्वक सहन कयिा, मानो उसे बलि्कुल भी दर्द महसूस नहीं हो रहा हो।

तब राज्यपाल, जसिका क्रोध सौम्यता में बदल गया था, संत से चापलूसी भरे शब्दों में बात करने लगा:

'मेरी प्रयि पुत्री!' आगे आओ और हमारे अजेय देवताओं, वशिेष रूप से वीनस[3963] और मनिर्वा[3964] को बलदिान चढ़ाओ, और मैं तुम्हें महान डायना[3965] की पुजारीनी बना दूँगा और तुम्हें सेनेटर्स की पत्नयिों के समकक्ष स्थापति करूँगा। तुम्हारे सम्मान में, मैं शहर के केंद्र में एक सुनहरा स्तंभ खड़ा करूँगा, मैं तुम्हारे बारे में राजाओं को लखिूँगा, और तुम, मानो, इस पूरे शहर की माँ बन जाओगी।"

संत एलकिोनडिा ने उत्तर दयिा:

'मुझे अपने देवताओं के मंदरि ले चलो, ताकि मैं उनके लएि बलदिान कर सकूँ।'

यह सुनकर, राज्यपाल बहुत प्रसन्न हुआ और उसने तुरंत घोषणाकारों और तुरहीवादकों को यह पूरे शहर में घोषति करने का आदेश दयिा; फरि, बड़ी धूमधाम से, वह संत को मूर्तपिूजक मंदरि में ले गया। जब वह मंदरि में प्रवेश कयिा, तो संत ने पुरोहतिों से कहा:

– मैं अकेले, नजिी तौर पर शुद्ध बलदिान अर्पति करना चाहती हूँ; अत; सभी को मंदरि छोड़ने का आदेश दो; तुम्हें भी जाना चाहएि और अपने पीछे दरवाज़े बंद कर देना चाहएि।

[3960] 'एलकिोनडिा' नाम ग्रीक शब्दों 'दया' और 'फेंकना' से लयिा गया है। एलकिोनडिा, अर्थात् वह जो ईश्वर की दया से शैतान पर तीर चलाती है।

[3961] एस्कलेपयिस को प्राचीन यूनानयिों द्वारा उपचार के देवता के रूप में माना जाता था।

[3962] ज्यूस, प्राचीन यूनानी धर्म का सर्वोच्च देवता।

[3963] वीनस या एफ्रोडाइट प्रेम और सुंदरता की देवी हैं।

[3964] मनिर्वा या एथेना ज्ञान की देवी हैं।

[3965] डायना या आर्टेमसि – शकिार की देवी और जंगलों की संरक्षक।

पुरोहितों ने उसके आदेश का पालन किया और उसे मंदिर में अकेला छोड़ दिया, जबकि वे स्वयं बाहर खड़े होकर आनंदित हुए और अपनी तुरहियों और ढोलकियों को बजाने लगे।

इस बीच, मसीह की वधू, मंदिर में प्रवेश करने के बाद, वीनस की मूर्ति उठाई और उसे तीन टुकड़ों में तोड़ दिया; उसी तरह, उसने मिनर्वा की मूर्ति को भी गिरा दिया, जो जमीन पर गिरकर पूरी तरह से चकनाचूर हो गई। फिर उसने एस्कुलेपियस की मूर्ति को वेदी से नीचे फेंक दिया और उसके हाथ, पैर और सिर को काट दिया; उसने ज्यूस के साथ भी ऐसा ही किया। लेकिन मंदिर के बाहर खड़े लोग यह नहीं सुन सकते थे कि अंदर क्या हो रहा है, क्योंकि तुरही और ढोल की आवाज़ से सब कुछ दब गया था; और वे सभी मंदिर के बाहर खड़े रहे, उस युवती के अपने प्रार्थना और बलिदान पूरा करने का इंतज़ार करते रहे।

काफी समय बाद, इंतजार से ऊब चुके पुजारी मंदिर में दाखिल हुए और जब उन्होंने देखा कि उनके देवताओं को ज़मीन पर फेंक दिया गया है, और वे युवती को वेदी पर बैठे मसीह की स्तुति करते हुए भी देखा, उनके ईश्वर, वे तुरंत खड़े हो गए, अपने वस्त्र फाड़े, बड़ी क्रोधित होकर उस कन्या को पकड़ लिया, और उसे राज्यपाल के सामने घसीट लाए। राज्यपाल के सामने पहुँचकर उन्होंने कहा:

'इस जादूगरनी का अंत करो!'

और उन सभी लोगों के बीच एक कोलाहल और चीख मच गई, जो अपनी मूर्तियों के विनाश से क्रोधित थे; वे सभी चिल्ला उठे, पुकारते हुए:

– हे हेगेमोन! इस जादूगरनी को तुरंत मार डालो!

गवर्नर ने आदेश दिया कि पवित्र शहीद के स्तन काट दिए जाएँ और उसे कैद कर दिया जाए, ताकि उसे यह विचार करने का समय मिल सके कि उस पर कैसी क्रूर मृत्यु थोपी जाए। और संत पाँच दिनों तक जेल में रहीं।

उस समय, जस्टिन नामक एक अन्य राज्यपाल, पेरिनियस की जगह लेने के लिए कोरिंथ पहुँचा। उसे शहीद एलिकोनिडा, उसके दुःख-दर्द और मूर्तियों को तोड़ने के बारे में सूचित किया गया। हालांकि, जस्टिन, अपने देवताओं के प्रति अत्यधिक उत्साही होने के कारण, मूर्तियों को तोड़ने के लिए एलिकोनिडा के प्रति अत्यधिक क्रोध से भर गया, और उसने भट्टी को यथासंभव प्रचंड रूप से भड़काने का आदेश दिया। और वह भट्टी तीन दिनों तक भड़काई गई; फिर जस्टिन ने पवित्र एलिकोनिडा को उसमें फेंकने का आदेश दिया। फिर भी संत, बेबीलोन के प्राचीन युवकों की तरह, भट्टी के बीच में आनंदित हुईं, प्रभु की महिमा और आशीर्वाद करती हुईं, क्योंकि आग उनके लिए ओस के समान थी, और ज्वाला एक ठंडी हवा के झोंके के समान थी। तब भट्टी से एक बड़ी ज्वाला फूट निकली और उसके चारों ओर खड़े मूर्तिपूजकों की ओर बढ़ी; परिणामस्वरूप, लगभग सत्तर पुरुष जलकर मर गए; लेकिन संत, कुछ समय बाद, आग से बिना किसी चोट के बाहर निकल आईं।

राज्यपाल ने उससे कहा:

'बताओ हमें, दुष्ट स्त्री, किस जादू-टोने से तुम आग की शक्ति पर काबू पा सकीं?'

संत ने उत्तर दिया:

'मसीह, मेरे प्रभु, जिन्हें तुमने नहीं देखा है और जिन्हें तुम देख भी नहीं सकते, वे मेरे पास आए और भट्टी की लपटों को बुझा दिया।'

इस पर विश्वास न करते हुए, राज्यपाल ने अदालत में एक तांबे का बिस्तर लाने का आदेश दिया; उसने आज्ञा दी कि उसे आग लगा दी जाए और संत को उसकी आँखों के सामने ही उस पर लिटा दिया जाए। बिस्तर को नीचे से कोयले से गर्म करने का आदेश देने के बाद, राज्यपाल ने कहा:

– अब देखते हैं कि क्या मसीह उसे बचाने आएँगे।

जब संत को इस प्रकार यातना दी जा रही थी, तो उनके शरीर से इतना रक्त बहा कि उसने आग को बुझा दिया; और उनका बिस्तर ठंडा पड़ गया।

तब शहीद को बिस्तर से उतारकर एक कालकोठरी में ले जाया गया, जहाँ, जमीन पर लोटकर, उसने इस प्रकार प्रार्थना की:

'यीशु, हमारी शक्ति और हमारा किला! यीशु, हमारी महिमा! मसीह, हमारी आशा! हे परम चिकित्सक, मेरी सहायता करो और मेरे घावों को चंगा करो, जो अपनी दया से उन सभी को बचाते हैं जो आप में आशा रखते हैं।'

जब वह ये शब्द प्रार्थना कर रही थी, तब संसार के उद्धारकर्ता मसीह, संत माइकल महादूत और गब्रियिल महादूत के साथ, अत्यंत तेजस्वी प्रकाश से घरि हुए, उसके सामने प्रकट हुए। उसके पास आकर, उन्होंने अपना हाथ उसकी ओर बढ़ाया और कहा:

'उठो, अपने पैरों पर खड़ी हो जाओ और बल प्राप्त करो! मैं हमेशा तुम्हारे साथ हूँ! मैं तुम्हारे संघर्ष की रक्षा करता हूँ; अपनी दविय शक्ति से मैं तुम्हारे दुखों को कम करता हूँ और तुम्हारे घावों को भरता हूँ।'

अपने पैरों पर खड़ी होकर, वह शहीद प्रभु के सामने साष्टांग दण्डवत हो गई, उनके सामने झुक गई और कहा:

'यीशु, मसीह, मेरे ईश्वर! मुझे, अपनी दासी को, चंगा कर! मेरे शत्रु को परास्त करने में मेरी सहायता कर, ताकि उसकी शक्ति पिर वजिय प्राप्त कर, मैं गीत और आनन्द के स्वर के साथ तेरे मंदरि में प्रवेश करूँ।'

और प्रभु ने उससे कहा:

'हौसला रखो, मेरी बेटी! देखो, मैं तुम्हें चंगा करूँगा और अपनी शाश्वत राज में तुम्हारे लिए एक अमर मुकुट तैयार करूँगा।'

यह कहने के बाद, प्रभु स्वर्ग में आरोहण कर गए, जबकि पवत्रि स्वर्गदूतों ने एलकिोनडिा को सूर्य के समान चमकने वाला शुद्ध आहार दयिा। यह रोटी चखते ही, एलकिोनडिा पूरी तरह से स्वस्थ हो गई; उसका चेहरा सूर्य की तरह चमक उठा, और उसका शरीर बर्फ की तरह सफेद हो गया। और संत ने परमेश्वर का धन्यवाद कयिा, और भोर तक उनकी महमिा करती रही।

जब सुबह हुई, तो संत को उनके कालकोठरी से बाहर नकिाला गया, फरि मुकदमे की जगह ले जाया गया, और बाद में जानवरों के सामने फेंक दयिा गया। दो भूखे शेर, जन्होंने तीन दनिों से कुछ नहीं खाया था, उन पर छोड़ दएि गए। लेकनि शेर, संत के पास आकर, उनके सामने झुक गए और उनके पैरों को चाटने लगे। यह देखकर भीड़ ने शोर मचाते हुए पुकार लगाई:

'सचमुच, यह औरत एक जादूगरनी है, क्योंकि उसने तो जानवरों को भी मोहति कर दयिा है, इसलएि वे उसके पास आने की हम्मित नहीं करते। हे राज्यपाल! इस औरत को मार डालो! इसे तुरंत मार डालो!'

जब भीड़ ऐसा बोल ही रही थी, तब ईश्वर की शक्ति से भवन के दरवाज़े चूर-चूर हो गए और खुल गए; वही शेर बाहर नकिल आए और भीड़ पर बड़े क्रोध से झपट पड़े, ज़ोर-ज़ोर से दहाड़ रहे थे; भीड़ भाग नकिली ; राज्यपाल स्वयं, डर के मारे, प्राटोरयिम[3966] भाग गया। शेरों ने भाग रहे लोगों का पीछा करते हुए भीड़ में से एक सौ बीस लोगों को मार डाला। फरि राज्यपाल, यह न जानते हुए कि शहीद के साथ और क्या करे, ने आदेश दयिा कि उसकी तलवार से गर्दन काट दी जाए।

जब संत को सरि कलम करवाने के लिए शहर से बाहर ले जाया गया, तो उन्होंने अपने हाथ स्वर्ग की ओर उठाए और इस प्रकार प्रार्थना करना शुरू कयिा:

'हे मसीह, मेरे ईश्वर! अब मेरे पास आओ! इस घड़ी अपने सेवक के साथ रहो! अपना वादा पूरा करो और मुझे अपने पवत्रि झुंड में ले आओ; मुझे अपने धन्य भेड़ों में गनिो। मुझे उन महलिाओं में गनिो जन्होंने आपको प्रसन्न कयिा है: सारा, रेबेका, राहेल, लेहा, सुसानना, और तेरी नष्किलंक माता, परम पवत्रि सदा-कुंवारी मरयिम; साथ ही लाजरस की बहनों मार्था और मरयिम, और भवष्यिवक्ता अन्ना के साथ, जन्होंने तेरे समर्पण के समय संत समियिन परमेश्वर-स्वीकारकर्ता के साथ मलिकर तेरी गवाही दी; मुझे भी एलजिाबेथ, आपके अग्रदूत यूहन्ना की माता, और प्रथम शहीद थकिला के बीच गनिए; मुझे उनकी संख्या में शामलि करें और यह अनुग्रह दें कि मैं हमेशा उनके साथ वश्राम करूँ।

जब संत इस प्रकार प्रार्थना कर रही थीं, तो स्वर्ग से एक आवाज़ सुनाई दी, जो उद्घोषणा कर रही थी:

'आओ, मेरी बेटी! तुम्हारे लिए एक मुकुट और एक सहिासन पहले से ही तैयार कर दयिा गया है। देखो, स्वर्गदूत अब तुम्हारे स्वर्गारोहण के लिए गंभीर भजन गाना शुरू कर रहे हैं।'

यह आवाज सुनकर संत एलकिोनडिा महान आनंद से भर गईं, और प्रसन्नतापूर्वक उन्होंने तलवार के नीचे अपना सरि झुका दयिा। जब उनका सरि कलम कयिा गया, तो घाव से खून के बजाय दूध बहा, जो उनकी पवत्रिता का संकेत था[3967]

[3966] प्रेटोरीयम शहर में एक सार्वजनकि स्थान था जहाँ आमतौर पर मुकदमे चलाए जाते थे।

[3967] संत एलकिोनडिा की शहादत वर्ष 244 में हुई थी।

। उनके पवत्रि शरीर को ईसाइयों द्वारा श्रद्धापूर्वक दफनाया गया, जन्हिोंने त्रमिूर्तमिें एक परमेश्वर, पतिा, पुत्र और पवत्रि आत्मा की महमिा की, जनिकी महमिा, सम्मान और आराधना अब और हमेशा के लिए हो। आमीन।

हमारे पूजनीय पतिा नकितिा, काल्सेडन के बशिप की स्मृत[3968]

28 मई को स्मरण कयिा जाता है

हमारे पूजनीय पतिा नकितिा ने अपनी युवावस्था से ही मसीह से प्रेम कयिा; संसार और सभी सांसारकि लगावों को त्यागकर, उन्होंने अपने सदाचारी जीवन से परमेश्वर को प्रसन्न कयिा, और काल्सेडोन के सहिासन पर पदोन्नत हुए, जहाँ से, एक दीपक-स्तंभ पर रखी मोमबत्ती की तरह, उन्होंने संसार को प्रकाश दयिा और मसीह की कलीसयिा को सुशोभति कयिा।

संत नकितिा गरीबों के प्रतअित्यंत दयालु थे; उन्होंने भूखों को भोजन दयिा, नंगों को वस्त्र पहनाए, यात्रयिों का अपने घर में स्वागत कयिा और उन्हें वश्रिाम दयिा; वे अनाथों के लिए एक पतिा, वधिवाओं के रक्षक और अन्याय सहने वालों के उद्धारकर्ता थे।

जब प्रतमिा-भंजक वधिर्म के कठनि समय का आगमन हुआ[3969] , लयिो द आर्मनियिन[3970] के शासनकाल के दौरान, संत नकितिा ने स्वयं को मसीह के नाम का एक साहसी स्वीकारकर्ता साबति कयिा, क्योंकि उन्होंने अधर्मी शक्षिाओं के खलिाफ संघर्ष में बहुत परश्रिम कयिा, गैर-पारंपरकि सद्धिांतों की नदिा की और सभी को प्रभु मसीह और उनकी परम पवत्रि परमेश्वर माता की प्रतमिा, साथ ही अन्य सभी संतों की प्रतमिाओं की श्रद्धापूर्वक पूजा करने के लिए प्रोत्साहति कयिा; मसीह के इस वीर स्वीकारकर्ता ने अधर्मी ज़ार और उसके समान वचिारधारा वाले अनुयायियों के हाथों अनेक यातनाएँ सहन कीं; उसने अपने ऑर्थोडॉक्स वश्विास के लिए नर्विासन, अपमान और अन्य वपित्तयिाँ भी झेलीं।

धर्म की घोषणा में अनेक परश्रिमों के बाद, पर्याप्त समय बीत जाने पर, संत नकितिा इस पृथ्वी से स्वर्गीय नविासों के लिए प्रस्थान कर गए[3971] ; ईश्वर ने स्वर्ग में अपने स्वर्गदूतों के समक्ष और पृथ्वी पर मनुष्यों के समक्ष उन्हें महमिामय कयिा, क्योंकि उनके पवत्रि अवशेषों द्वारा अनेक चमत्कार हुए और सभी प्रकार की व्याधयिों से उपचार प्राप्त हुए, ईश्वर की महमिा के लिए, जो अपने संतों में महमिामय होते हैं।

कॉन्टाकयिन, स्वर 8:

हे पूजनीय, अपने कर्मों की करिणों से आप प्रकाशमान हुए; आप प्रेरतिों के सहिासन के वारसि, नकितिा थे: और हे पतिा, सभी दव्यि शक्षिाओं से परपिूर्ण होकर, आप सूर्य की भाँतिअपने झुंड पर चमके। अतः हम आपसे पुकारते हैं: हर्षति हो, काल्सेडोन के सांत्वनादाता।

[3968] चल्केडोन, या अधकि सही रूप से काल्सेडोन, मूल रूप से मरमरा सागर के तट पर एक मेगारी उपनविेश था। ईसाई सम्राटों के अधीन, चल्केडोन एशयिा माइनर प्रांत बथिनियिा की राजधानी थी। – ईसाई चर्च के इतहिास में, काल्सेडोन चौथे सार्वभौमकि परषिद के स्थल के रूप में उल्लेखनीय है, जसिे 451 में सम्राट मार्सयिन द्वारा बुलाया गया था (शासन 450–457) ने मोनोफसिाइट संप्रदाय की नदिा करने के लिए चौथा सार्वभौमकि धर्मसभा बुलाई थी। (यह संप्रदाय कॉन्स्टेंटनिोपल के आर्चमिांड्राइट यूटकिस द्वारा स्थापति कयिा गया था, जसिने यह सखिाया था कि यीशु मसीह में मानवीय स्वभाव पूरी तरह से दैवीय स्वभाव में समाहति हो गया था और इसलिए उनमें केवल एक ही स्वभाव – दैवीय – को पहचाना जाना चाहिए)।

[3969] मूर्तभिंजन की कुसंप्रदाय 8वीं शताब्दी में उभरा। मूर्तभिंजकों ने मूर्तयिों की पूजा को मूर्तपिूजा के साथ मूर्खतापूर्ण ढंग से मलिा दयिा। नकियिा (फ्राइजयिा - एशयिा माइनर का एक क्षेत्र) के बशिप कॉन्स्टेंटनि को इस कुसंप्रदाय का संस्थापक माना जाता है। मूर्तभिंजनवाद के सबसे कट्टर समर्थक सम्राट लयिो तृतीय इसाउरयिन (717–741) और कॉन्स्टेंटनि पंचम कॉप्रोन्यमस (741–776) थे। इस वधिर्म की नदिा सातवें सार्वभौमकि परषिद (जो 787 में नकियिा शहर में आयोजति हुई थी) में की गई थी।

[3970] लयिो पंचम अर्मेनयिाई ने 813 से 820 तक शासन कयिा।

[3971] प्रतष्ठिति नकितिा की मृत्यु 9वीं शताब्दी की शुरुआत में हुई।

रोस्तोव के बशिप संत इग्नाटयिस का स्मरणोत्सव

28 मई को स्मरणोत्सव

संत इग्नेशयिस का जन्म धर्मपरायण माता-पिता के यहाँ हुआ था और उन्होंने उन्हें हर ईसाई सद्गुण में पाला-पोसा। इस संसार की क्षणभंगुरता को समझकर, उन्होंने संसार का त्याग कर दयिा और संन्यास की शपथ ली। उन्होंने एक अत्यंत सदाचारी जीवन जयिा, इसलएि उन्हें पहले आर्चमिांड्राइट और फरि रोस्तोव शहर के बशिप के रूप में नयिुक्त कयिा गया[3972] । रोस्तोव के धर्मप्रांत को अपनी देखरेख में लेने के बाद, उन्होंने बड़ी लगन से अपने झुंड का मार्गदर्शन कयिा। छब्बीस वर्षों तक बशिप के पद पर सेवा करने के बाद, वे संसार की सृष्टि के 6796वें वर्ष में, परमेश्वर के वचन के अवतार के 1288वें वर्ष में, शुक्रवार, 28 मई को, संध्या-प्रार्थना के बाद प्रभु के पास चले गए[3973] ।

संत के नधिन की खबर सुनकर, रोस्तोव का पूरा शहर उनके शरीर के चारों ओर इकट्ठा हो गया; सभी ने कड़वा रोना रोया और ससिकयिाँ भरीं, अपने सामान्य चरवाहे और शक्षिक, संकट और दुख के समय में सहायक और मध्यस्थ, वधिवाओं और अनाथों के पैरोकार, गरीबों और बेसहारा लोगों के पालनहार, पादरयिों और मठवासी समुदाय के मार्गदर्शक और शक्षिक, तथा राजकुमारों और कुलीनों के सलाहकार के नधिन पर शोक मनाया। संत इग्नाशयिस के पवत्रि शरीर को लेकर वे सभी उसे चर्च ले गए; लेकनि वहाँ इकट्ठी हुई भीड़ के कारण, वे उसे चर्च के अंदर नहीं ला सके और इसलएि उसे चर्च के सामने रख दयिा; इसके बाद, उन्होंने अंतमि संस्कार के भजन गाना शुरू कर दयिा।

उस समय, दो धर्मनष्ठि नन चर्च के पास से गुजर रही थीं; उनमें से एक का नाम थयिोडोसयिा था; वह संत के प्रोटोडीकन, पॉल की पत्नी थीं, लेकनि वैध ववािह करने के तुरंत बाद, उन्होंने खुद को एक पवत्रि और शुद्ध जीवन के लएि समर्पति कर दयिा था। अपने पूरे जीवन में उन्होंने उपवास और प्रार्थना को समर्पति कयिा। कई लोग उनके जीवन की पवत्रिता की गवाही दे सकते थे। जब धन्य पॉल प्रभु के पास गए, तो उनकी पत्नी ने संन्यास की शपथ ली। संत इग्नेशयिस की मृत्यु के बारे में जानने पर, वह उनके अवशेषों की पूजा करने आईं; उनके साथ ज़ेनयिा नाम की एक और नन भी आईं, जन्हिोंने समान रूप से सदाचारी और ईश्वर-प्रसन्न जीवन जयिा। इन दो ननों ने, कई अन्य धर्मपरायण लोगों के साथ जन्हिें दव्यि प्रकटकिरण प्राप्त हुआ था, नम्निलखिति चमत्कार देखा: जब संत इग्नेशयिस के पूजनीय अवशेषों को चर्च ले जाया जा रहा था, तो संत अपने बशिप के परधिान में अपनी कब्र से उठे, हवा में चले और चर्च के बहुत ऊपर खड़े हो गए; फरि उन्होंने सभी लोगों और पूरे शहर पर आशीर्वाद दयिा; बाद में, वे वेदी के पास जमीन में बनाई गई एक गुफा में प्रवेश कर गए, जहाँ उनके लएि एक ताबूत तैयार कयिा गया था।

ईश्वर ने यह उस समय की ननयिों को, साथ ही कुछ अन्य धर्मनष्ठि लोगों को, अपने प्रयि सेवक की महमिा के लएि और उनकी संपूर्ण पवत्रिता की गवाही के रूप में प्रकट कयिा; इसके द्वारा प्रभु ने लोगों को दखिाया कि संत इग्नेशयिस ने प्रभु की कृपा अर्जति की थी और उन्हें संतों के बराबर के हस्सिे का योग्य माना गया था।

लगभग उसी समय, एक और चमत्कार हुआ: एक आर्कमिैंड्राइट स्टीफन का, जन्म के दनि से ही, एक उंगली हथेली की ओर मुड़ी हुई थी; जब उसने संत इग्नेशयिस के पवत्रि शरीर को छुआ, तो उसकी टेढ़ी उंगली तुरंत सीधी हो गई और ठीक हो गई, ठीक अपनी अन्य उंगलयिों की तरह।

इसके बाद, संत इग्नेशयिस के पवत्रि शरीर को चर्च में ले जाया गया। अगली सुबह, सभी लोग परमेश्वर के प्रयि सेवक की अवशेषों के सामने फरि से इकट्ठा हुए, ताकि पारंपरकि सेवा का आयोजन कयिा जा सके और अंतमि संस्कार के भजन गाए जा सकें। जब संत के शरीर को ताबूत में रखा गया और उनके हाथ में ताम्रपत्र रखे गए—जनि पर उन सभी के नाम लखिे थे जन्हिें संत इग्नेशयिस ने पुरोहति और डकिन के रूप में नयिुक्त कयिा था—तो संत ने, जैसे जीवति हों, अपना हाथ बढ़ाया और ताम्रपत्र ले लएि। इस चमत्कार को देखने वाले सभी लोग महान भय और आनंद से भर गए, और उन्होंने ईश्वर की स्तुति की। ईश्वर के इस सेवक, संत इग्नेशयिस की प्रार्थनाओं के द्वारा, हम भी उनके साथ उन शाश्वत

[3972] संत इग्नासयिस को 19 सतिंबर 1262 को बशिप के रूप में अभषिक्ति कयिा गया था।

[3973] कहा जाता है कि 1269 में संत इग्नेशयिस ने बेलोये झील के तट पर, शेक्स्ना नदी के मुहाने पर, पवत्रि त्रमिूर्ति को समर्पति एक मठ की स्थापना की। इस मठ के भक्षिुओं ने चुद और कोरेल लोगों को ईसाई धर्म में परविर्तति करने के लएि कड़ी मेहनत की। 1274 में, संत इग्नासयिस ने व्लादमिीर की स्थानीय परषिद में भाग लयिा। दो अवसरों पर, संत को अपने धर्मप्रांत की ओर से मध्यस्थता करने के लएि हॉर्ड तक एक कठनि यात्रा करनी पड़ी। संत इग्नासयिस को राजकुमार दमित्रिी और कॉन्स्टेंटनि बोरसिोवचि के बीच शांतदिूत के रूप में जाना जाता है। इस सुलह की स्मृति में, रोस्तोव में सेंट्स बोरसि और ग्लेब का चर्च स्थापति कयिा गया था। सेंट इग्नेशयिस का 1288 में नधिन हो गया। उनके पूजनीय अवशेष आज भी रोस्तोव में डोर्मशिन कैथेड्रल में वरिाजमान हैं।

आशीर्वादों में सहभागी होने के योग्य ठहराए जाएँ, जो हमारे प्रभु, मसीह यीशु के द्वारा तैयार कए गए हैं, जनिका महमिा युगानुयुग होती रहे। आमीन।

ट्रोपारयिन, स्वर 4:

वशि्वास से प्रकाशति होकर, आपने पुरोहतित्व की शक्षि ा ग्रहण की और झुंड का प्रभार संभाला; और प्रेरतिों के उत्तराधकिारी के रूप में, हे पवत्रि पति इग्नेशयिस, आपने ईश्वर से चमत्कारों का वरदान प्राप्त कयि। हमारे ईश्वर मसीह से प्रार्थना करें कि वह हमारी आत्माओं को बचाए।

कॉन्टाकयिन, स्वर 4:

हे अतधिन्य संत इग्नासयिस, आज आपकी अतदिीप्तमिान स्मृतमिनाई जाती है, जो संसार में चमकते हुए सभी को दव्यि तेज प्रकट करते हैं।

पवत्रि शहीद हेलाडयिस की स्मृति

28 मई को स्मरणोत्सव

संत हेलाडयिस ने वभिन्नि यातनाएँ सहने और आग में फेंके जाने पर भी अछूते रहने के बाद, अपनी पटिाई से मृत्यु प्राप्त की। उनके लए नरि्धारति सेवा में कहा गया है कि मसीह ने जेल में उनसे मुलाकात की और उनके घावों को चंगा कयि, और उनके बंधन उनसे टूट गए। ऐसा माना जाता है कि उन्होंने रोमन साम्राज्य के पूर्वी प्रांतों पर फारसयिों के आक्रमण के दौरान उनके हाथों यातनाएँ सहन कीं।

11 जून

29 मई (पुराना तरीका)

पवत्रि शहीद थयिोडोसयिा की स्मृति

29 मई को स्मरण कयि जाता है

टायर की संत थयिोडोसयिा[3974] , यूसेबयिस[3975] , फलिस्तिीन के सेसरेया के बशिप[3976] , एक प्रत्यक्षदर्शी, नम्निलखिति रपिोर्ट करते हैं: 'जबकि तब तक हमारे देश में पाँच वर्षों से धर्मद्रोही मूर्तपिूजकों द्वारा ईसाइयों का

[3974] पवत्रि शहीद थयिोडोसयिस का जन्मस्थान टायर शहर था। टायर मृत सागर के उत्तर-पूर्वी तट पर, गलिाद पर्वत श्रृंखला की दक्षणि-पश्चमिी ढलान पर स्थति है।

[3975] केसरयिा के बशिप यूसेबयिस (जो 268 से 340 तक जीवति थे), एक प्रसद्धि चर्च इतहिासकार थे जन्होंने चर्च इतहिास की नींव रखी; वे अपनी महान वद्विता के लए प्रसद्धि थे। वे नम्निलखिति कृतयिों के लेखक हैं: 1) *चर्च इतहिास*, जो प्रेरतिों के समय से लेकर 324 ईस्वी तक की अवधि को कवर करता है; 10 पुस्तकों में वभिाजति; 2) *द लाइफ़ ऑफ़ कॉन्स्टेंटाइन*; 4 पुस्तकों का संग्रह और *चर्च हस्टि्री* का प्रत्यक्ष नरिंतरता; 3) *क्रोनोग्राफी*। इसके अतरिक्ति, यूसेबयिस कई छोटे कार्यों के लेखक हैं जो रक्षात्मक, ववािदात्मक और व्याख्यात्मक प्रकृति के हैं।

[3976] फ़लिस्तिीन में केसरयिा भूमध्य सागर के पूर्वी तट पर स्थति था। प्राचीन काल में, केसरयिा रोमन प्रोक्वेरटर्स का मुख्यालय और देश के सामाजकि एवं राजनीतकि जीवन का केंद्र था। – ईसाई चर्च के इतहिास में, फलिस्तिीन की केसरयिा इस बात के लए उल्लेखनीय है कि यह वह स्थान था जहाँ, पहली बार, प्रेरति पतरस ने शतनरिीक्षक कोर्नेलयिुस को बपतस्मिा देकर मूर्तपिूजकों के लए मसीह की कलीसयिा का द्वार खोला (प्रेरतिों के काम 10)। यहीं पर प्रेरति पौलुस का अंतमि मुकदमा भी हुआ, जसिके बाद उन्हें रोम भेजा गया (प्रेरतिों के काम 26; प्रेरतिों के

उत्पीड़न जारी था, अप्रैल की सत्रहवीं तारीख को, स्वयं मसीह के पुनरुत्थान के पर्व के दिन, हमारे शहर की एक धर्मपरायण और ईश्वर-भयभीत कन्या, – यूसेबियस कहते हैं – टायर की एक निवासी, जिसकी आयु अठारह वर्ष भी नहीं हुई थी, प्राटोरियम में बंदी बनाए गए ईसाई कैदियों के पास गई; उस समय ईसाई अपने बीच निडरता से परमेश्वर के राज्य पर चर्चा कर रहे थे; उनके पास आकर थियोडोसिया ने उनसे प्रभु के सामने अपनी याद दिलाने के लिए कहना शुरू किया, जब वे अपनी शहादत पूरी करके परमेश्वर के सामने खड़े होंगे। हालाँकि, सैनिकों ने जब उस कुंवारी को ईसाई कैदियों के सामने झुकते हुए देखा, तो उन्होंने उसे पकड़ लिया और मानो उसने कोई बुरा काम किया हो, उसे पूछताछ के लिए राज्यपाल उर्वान के सामने घसीट लाए। बड़े क्रोध और रोष से भरकर राज्यपाल ने उसे क्रूर यातनाएँ देने का आदेश दिया। लोहे के पंजों से उसकी पसलियाँ और स्तन फाड़े गए, जिससे हड्डी तक उसका मांस उधड़ गया; फिर राज्यपाल ने मसीह की इस शहीद को—जो अभी भी जीवित थी और प्रसन्न मुख से अपनी यातनाएँ सहन कर रही थी—समुद्र में डुबो देने का आदेश दिया।

यूसेबियस ऐसा कहते हैं, जिन्होंने यह सब अपनी आँखों से देखा था।

इसके अलावा, यह भी कहा जाता है कि मसीह की यह पवित्र शहीद, थियोडोसिया, को समुद्र में फेंके जाने के बाद, स्वर्गदूतों द्वारा पानी से बाहर सूखी ज़मीन पर निकाला गया, वह भी पूरी तरह से जीवित। और संत अपने गले में बँधी एक पत्थर को अपनी बाहों में उठाए हुए चलीं। फिर संत को एक बार फिर मूर्तिपूजकों ने पकड़ लिया, जो उसे अदालत के सामने ले आए। संत थियोडोसिया को जंगली जानवरों द्वारा नोचा जाने की सज़ा दी गई, लेकिन वे उनसे पूरी तरह से सुरक्षित रहीं। अंत में, यातना देने वाले ने आदेश दिया कि उनकी तलवार से गर्दन काट दी जाए। उनकी गर्दन कटते ही, उनके मुंह से एक कबूतर को उड़ते हुए देखा गया, जो सोने की तरह चमक रहा था और स्वर्ग की ओर बढ़ रहा था[3977] ।

जब रात हुई, तो पवित्र शहीद अपने माता-पिता के सामने कई अन्य पवित्र कुंवारीयों के साथ प्रकट हुईं; उन्होंने बर्फ से भी अधिक सफेद वस्त्र पहने हुए थे; उनके हाथ में एक सुनहरी क्रॉस थी, और उनके सिर पर एक माला थी; उसी क्षण, संत ने अपने माता-पिता से कहा:

'देखो, मेरे मसीह की महिमा और अनुग्रह कितना महान है! देखो, वह महिमा कितनी महान है जिससे तुम मुझे वंचित करना चाहते थे।'

संत ने ये शब्द इसलिए बोले क्योंकि उनके माता-पिता, मसीह के लिए पीड़ा सहने की उनकी इच्छा को देखकर, उन्हें ऐसा करने से रोकने के लिए अपनी पूरी ताकत लगा चुके थे; लेकिन वह गुप्त रूप से मसीह के कैदियों के पास गईं और, जैसा कि हमने कहा है, उन्हें यातना देने और हमारे प्रभु यीशु मसीह, हमारे परमेश्वर, शहादत के दाता, द्वारा मुकुट पहनाने के लिए ले जाया गया।

पवित्र शहीद थियोडोसियस की शहादत

29 मई को स्मरणोत्सव

संत थियोडोसिया, मसीह की वधू, का जन्म कॉन्स्टेंटिनोपल में अमीर, ईमानदार, धार्मिक और सदाचारी माता-पिता के घर हुआ था। शुरुआत में, वे कई वर्षों तक संतानहीन रहे। इस पर दुखी होकर, उन्होंने अक्सर प्रार्थना और उपवास किया, दिन-रात ईश्वर के चर्चों में जाते रहे, और गरीबों को उदारतापूर्वक दान दिया।

एक दिन, जब वे पवित्र शहीद अनास्तासिया को समर्पित एक चर्च में रात्रि-भर की प्रार्थना सभा में शामिल थे, तब संत थियोडोसिया की माँ ने अपनी बाँझपन के उपचार के लिए पहले से कहीं अधिक आग्रहपूर्वक प्रार्थना की; जब वह एक पल के लिए झपकी ले लीं, तो पवित्र शहीद अनास्तासिया उनके सामने प्रकट हुईं और कहा:

'हे स्त्री, दुख मत करो, क्योंकि तुम गर्भधारण करोगी और प्रसव करोगी।'

काम 27)। – फिलिस्तीन में एक और कैसरिया था, जिसे वर्तमान वाले से अलग करने के लिए कैसरिया फिलिपी के नाम से जाना जाता था। यह यॉर्डन नदी के स्रोत पर स्थित था।

[3977] पवित्र शहीद की मृत्यु 6 अप्रैल को 307 या 308 में हुई थी। 29 मई उनके अवशेषों के स्थानांतरण का दिन है। पवित्र शहीद के अवशेषों को शुरू में कॉन्स्टेंटिनोपल और बाद में वेनिस ले जाया गया था।

जागने पर, वह अत्यधिक आनंद से भर गई और उसने अपने पति को उस दिव्य दर्शन के बारे में बताया। तब उसके पति ने उससे कहा:

'प्रभु की कसम! यदि वह हमारी बाँझपन को दूर कर दे, और चाहे हमें पुत्र हो या पुत्री, हम उस बच्चे को हमारे प्रभु, मसीह परमेश्वर को भेंट स्वरूप अर्पित करेंगे।'

कुछ समय बाद, उसकी पत्नी वास्तव में गर्भवती हुई और इस पवित्र कन्या को जन्म दिया, जिसका नाम उन्होंने थियोडोसिया रखा, यानी 'ईश्वर द्वारा दिया गया', क्योंकि वह ईश्वर की एक देन थी। फिर शिशु को पवित्र बपतिस्मा द्वारा प्रबुद्ध किया गया।

उसके जन्म के चालीस दिन बाद, उसकी माँ ने अपनी बेटी को गोद में उठाकर संत अनास्तासिया के चर्च में ले गईं, आँसुओं से भरी प्रसन्नता के साथ ईश्वर और पवित्र शहीद को धन्यवाद देते हुए, उन्होंने अपनी बेटी को मठ जीवन के लिए समर्पित करने का वचन दिया, ताकि वह मसीह की कुंवारी और वधूओं में गिनी जाए (यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि उस चर्च से जुड़ा एक मठ था, जो उन युवा महिलाओं के लिए था जिन्होंने स्वयं को ईश्वर की सेवा के लिए समर्पित कर दिया था)।

ईश्वर का आशीर्वाद प्राप्त करने के बाद, माँ घर लौट आईं और उन्होंने ईश्वर को समर्पित की गई अपनी बेटी का बड़े ध्यान से पालन-पोषण करना शुरू कर दिया, थियोडोसियस को पवित्र धर्मग्रंथ पढ़ना और ईश्वर का भय सिखाया, और उसके हृदय में दैवी प्रेम की अग्नि प्रज्वलित की।

जब थियोडोसियस सात साल की हुई, तो उसके पिता की मृत्यु हो गई; जिसके बाद उसकी माँ उस छोटी लड़की को लेकर सेंट अनास्तासिया के कॉन्वेंट ले गईं और उसे पवित्र एंजेलिक ऑर्डर में दीक्षा देने के लिए प्रस्तुत किया।

तीन साल बाद थियोडोसियस की माँ की भी मृत्यु हो गई, और उन्होंने अपनी सारी संपत्ति अपनी बेटी, नन को विरासत में दे दी। लेकिन थियोडोसियस, वयस्क होने और ईश्वर के प्रति जिज्ञान व प्रेम से परिपूर्ण होकर, अपनी माँ द्वारा छोड़ी गई संपत्ति स्वीकार नहीं करना चाहता था, बल्कि उसने उसे ईश्वर को अर्पित कर दिया, जिनके प्रति उसने स्वयं को भी बलिदान के रूप में अर्पित किया था: एक सुनार को बुलाकर, उसने उसे तीन प्रतिमाओं पर सोने का पानी चढ़ाने के लिए पर्याप्त सोना और चाँदी दी: उद्धारकर्ता मसीह, परमेश्वर की अति पवित्र माता, और पवित्र शहीद अनास्तासिया। ये प्रतिमाएँ तीन कोहनी ऊँची थीं[3978] । धन्य थियोडोसिया ने उन्हें चर्च में स्थापित किया, जबकि अपनी बाकी संपत्ति को गरीबों, बेसहारों, अनाथों और विधवाओं में बाँट दिया; और स्वयं, मठवासी सादगी में, दिन-रात प्रभु की सेवा करती रहीं, और ईश्वर द्वारा आध्यात्मिक धन से समृद्ध हुईं। अदृश्य विरोधी के विरुद्ध प्रार्थना के कवच से स्वयं को लैस करते हुए, उसने तपस्या के कृत्यों द्वारा शरीर को, जो आत्मा के विरुद्ध युद्ध करता था, वश में किया; उसने अदेह शत्रु को पराजित किया, पाताल सर्प के सिर पर पैर रखा, और गर्वित अजगर को[3979] विनम्रता, कोमलता, ईश्वर-प्रसन्न प्रेम, पवित्रता, धर्मपरायणता, आज्ञाकारिता और अन्य मठवासी सद्गुणों द्वारा नीचे गिरा दिया।

एक बार, जब संत रात में प्रार्थना कर रही थीं, तो शैतान उनके पास आया और कहा:

'तो तुम मुझसे युद्ध कर रहे हो: ऐसे में, मैं भी तुमसे युद्ध करूँगा, और न केवल तुमसे, बल्कि सभी ईसाइयों से, क्योंकि मैंने एक आदमी को खोज लिया है जिसके माध्यम से मैं चर्च पर युद्ध छेड़ सकूँगा; मैं कई लोगों को मसीह की प्रतिमा की पूजा से हटा दूँगा; कई लोग मेरे पदचिन्हों पर चलेंगे और मेरी इच्छा करेंगे।'

लेकिन संत थियोडोसिया ने, क्रॉस का चिह्न बनाते हुए, कहा:

'हे शैतान, ईसाइयों के शत्रु, तुझ पर शाप हो! मेरे ईश्वर, मसीह की शक्ति से तेरी सारी योजनाएँ नष्ट हो जाएँ और व्यर्थ हो जाएँ!'

और शैतान गायब हो गया। पूजनीय थियोडोसिया ने, क्रॉस का चिह्न बनाकर, दाऊद का एक भजन गाना शुरू किया: *'ईश्वर उठे, और उसके शत्रु बिखर जाएँ; जो उससे द्वेष करते हैं, वे उसके सामने से भाग जाएँ* (भजन संहिता 67:2)।

संत थियोडोसिया ने यह भयानक दृष्टि और शैतान के सभी घमंडी शब्दों को अपनी मठाधीश को सुनाया और उनसे पूछा:

'तो फिर, वह विपत्ति ईसाइयों पर कहाँ से आएगी, जिसे शत्रु लाने का वादा करता है?'

[3978] एक 'लोकोट' 8–10 'वर्शोक' के बराबर था।

[3979] बेलियल – या, अधिक सही रूप से, बेलियल – का हिब्रू से अनुवाद करने पर अर्थ है: बेकार, दुष्ट, बुरा। प्रेरित पौलुस इस नाम को शैतान पर लागू करते हैं, जो सभी बुराइयों का स्रोत है (2 कुरिन्थियों 6:15)।

अब्बेस ने उत्तर दिया:

'मेरी बेटी! प्रेरित गवाही देते हैं: *"और जो कोई भी मसीह यीशु में भक्ति से जीवन व्यतीत करना चाहता है, वह सताया जाएगा"* (2 तीमु. 3:12)। क्योंकि मसीह की भेड़-बकरियों को हमेशा से धोखेबाज़ लोगों द्वारा परेशान किया जाता रहा है, जो झूठी बुद्धि का अभ्यास करते हैं, और सभी को धोखा देते हैं—उन लोगों सहित जो स्वयं धोखा खाए हुए हैं; ये धोखेबाज़ लोग स्वयं शैतान के उपकरण हैं। इसी तरह, अभी भी शैतान परमेश्वर की कलीसिया में भ्रम और उत्पीड़न लाएगा। *'पर जो बातें तू ने सीखीं और जिन पर तुझ में विश्वास है, उन पर बना रह; क्योंकि तू जानता है कि वे किस से सीखीं। और बाल्यकाल से पवित्र शास्त्र तुझ में हैं, जो मसीह यीशु में विश्वास द्वारा उद्धार के लिये तुझे बुद्धिमान कर सकते हैं* (2 तीमु. 3:13-15)।

कुछ समय बाद, रूढ़िवादी राजा थियोडोसियस, जिन्हें 'एड्रामटियिन' के नाम से जाना जाता था, के खिलाफ एक विद्रोह फूट पड़ा[3980] । इसका नेतृत्व उनके गवर्नर, लियो नामक व्यक्ति ने किया था, जिन्हें कोनन के नाम से भी जाना जाता था, जो इसौरी मूल का था[3981] । थियोडोसियस को उसके शाही अधिकार से वंचित करने के बाद, लियो स्वयं सिंहासन पर बैठ गया[3982] ।

अपने शासन की शुरुआत में उसने खुद को धार्मिक दिखाया, लेकिन जल्द ही वह एक नए बेलशस्सर[3983] में बदल गया, जिसने चर्च की पवित्रता का अपमान किया और सर्वोच्च ईश्वर, मसीह और उनकी सम्मानित प्रतिमा की पूजा करने से इनकार कर दिया। और उसने चर्च में आत्मा-विनाशकारी मनगढ़ंत धर्म के रूप में साँपों का विष फूँका; इसके अलावा, इस दानव-सदृश व्यक्ति ने, मानो सिंह की आवाज़ में गरजते हुए, पवित्र प्रतिमाओं के विरुद्ध अपमानजनक और विधर्मी शब्द बोले, उन्हें मूर्तियाँ कहकर पुकारा, और जो उनकी पूजा करते थे उन्हें मूर्तिपूजक कहा। इस अधर्मी राजा ने एक फरमान जारी किया जिसमें अपने पूरे राज्य में प्रतिमाओं की पूजा को समाप्त करने का आदेश दिया गया।

उस समय, संत जर्मनस कॉन्स्टेंटिनोपल के धर्माध्यक्ष थे। अन्य ऑर्थोडॉक्स बिशपों के साथ मिलकर, उन्होंने सम्राट का पुरज़ोर विरोध किया और प्रतिमाओं की पूजा त्यागने का आदेश देने वाले उसके विधर्मी फरमान को स्वीकार करने से इनकार कर दिया। जर्मनस ने इस ईश्वरनिंदा करने वाले से कहा:

'जब हमारे प्रभु और उद्धारकर्ता परमेश्वर की अति पवित्र माता के सम्मानित गर्भ से अवतार धारण करके हमारे उद्धार के लिए सभी दिव्य योजनाओं को पूरा कर चुके, तब मूर्तिपूजा समाप्त कर दी गई और सभी मूर्तिपूजक छवियों को आग के हवाले कर दिया गया। अब सात सौ वर्ष से अधिक हो गए हैं जब से प्रेरितों ने परिश्रम किया और संसार को मसीह की उद्धारक शिक्षा का प्रचार किया। इन सात सौ वर्षों के दौरान बहुत सारे धर्मी और सम्मानित पादरी हुए हैं, और उनमें से एक ने भी पवित्र प्रतिमाओं का अपमान नहीं किया है; और वास्तव में, उनमें से किसी ने भी उस अधर्मी तर्क-वितर्क के बारे में नहीं सुना है जिसे आप पवित्र प्रतिमाओं की veneration को अस्वीकार करके चर्च में ला रहे हैं, जो कि अनादि काल से पवित्र छवियों के प्रति एक कर्तव्य है। क्योंकि पवित्र चर्च ने आदिकाल से ही पवित्र प्रतिमाओं की पूजा की प्रथा का पालन किया है, जिसकी शुरुआत उस प्रतिमा से हुई जो मानव हाथों से नहीं बनी थी और जिसे उद्धारकर्ता स्वयं ने एदेसा के राजकुमार अबगर को एक कपड़े पर भेजा था। फिर रक्तस्राव से पीड़ित वह महिला, जिसे मसीह के वस्त्र के किनारे को छूने से चंगा किया गया था, ने प्रभु के स्वर्ग आरोहण के बाद पत्थर से यीशु मसीह की एक प्रतिमा बनाई। बाद में, पवित्र सुसमाचार लेखक लूका ने परम पवित्र कुँवारी मरियम का एक आइकन चित्रित किया; तब से ही पवित्र प्रतिमाएँ बनाने और उनसे परमेश्वर के गिरिजाघरों तथा ईसाइयों के घरों को सजाने की धार्मिक प्रथा शुरू हो गई। इस प्रकार, हमसे पहले हुए छह सार्वभौमिक परिषदों[3984] ने इस प्रथा की निंदा नहीं की, बल्कि इसके विपरीत, संतजनों की प्रतिमाओं को पूजित करने और अस्वीकार न करने का आदेश दिया। हे ज़ार, जान लो कि पवित्र प्रतिमाओं के लिए मैं न केवल किसी भी प्रकार की बुराई को सहने के लिए तैयार हूँ, बल्कि मृत्यु को भी स्वीकार करने के लिए;

[3980] एड्रामटियिम का थियोडोसियस तृतीय 715 से 716 तक राज करता था।

[3981] इसौरिया एशिया माइनर का एक क्षेत्र था, जो पूर्व में लाइकोनिया, उत्तर में फ्रीजिया, पश्चिम में पिसीडिया और दक्षिण में सिलिसिया से सटा हुआ था।

[3982] लियो तृतीय इसौरीय ने 716 से 741 तक शासन किया।

[3983] बेलशद्दर – बेबीलोन के राजा नबूकदनेस्सर के वंशजों में से एक – एक दुष्ट और भ्रष्ट व्यक्ति के रूप में जाना जाता है (देखें दानिय्येल 5:1–4, 22–23)। उसने यहूदियों के पवित्र पात्रों का अपमान किया, जिन्हें नबूकदनेसर ने यरूशलेम से लिया था (दानिय्येल 5:3)।

[3984] इस समय तक सप्तम सार्वभौमिक परिषद का आयोजन नहीं किया गया था।

क्योंकि मसीह की प्रतिमा में स्वयं मसीह का नाम है, जो निर्दोष कुँवारी मरियम से अवतार लेकर मनुष्यों के बीच पृथ्वी पर रहे। हर धर्मनिष्ठ ईसाई को मसीह के नाम और उनके सम्मानित प्रतिमाओं, दोनों के लिए मरने को तैयार रहना चाहिए, क्योंकि जो कोई भी किसी प्रतिमा का अपमान करता है, वह उसी का अपमान करता है जिसकी वह प्रतिमा है।'

यह सुनकर राजा क्रोध और रोष से भर गया; एक शेर की तरह दहाड़ते हुए, वह बड़ी क्रूरता से उग्र हो गया, उसने विश्वासियों को सताया और जो भी उसका विरोध करता था, उसे विभिन्न प्रकार की मृत्युदंडों का सामना करना पड़ा। सबसे पहले, उसने अपने सशस्त्र सैनिकों को भेजा और उन्हें सेंट जर्मनस को अपमानपूर्वक और पिटाई करके पैट्रिआर्केट से निकाल देने का आदेश दिया; जर्मनस की जगह, लियो ने झूठे पैट्रिआर्क अनास्तासियस[3985] , जो एक विधर्मी और उसके समान विचारधारा वाले सहयोगी थे, को स्थापित किया। फिर लियो ने आदेश दिया कि सभी दैवीय पुस्तकों और ईश्वर-ज्ञानी शिक्षकों के लेखों को आग लगा दी जाए। यह ध्यान देने योग्य है कि सेंट सोफिया चर्च से संलग्न एक पुस्तकालय था, जिसमें लगभग तीन लाख पुस्तकें थीं; इस पुस्तकालय से संलग्न बारह स्कूल और उतने ही संख्या में विद्वान शिक्षक थे; और इन शिक्षकों का अध्यक्ष एक विद्वान जिम्नासियार्क था, जिसे यह सम्मान सम्राट और पैट्रिआर्क से प्राप्त हुआ था। इन सभी शिक्षकों ने दुष्ट सम्राट के अधर्मी आदेश का विरोध किया; इसलिए, उस अधर्मी यातनाकर्ता ने अपने सैनिकों के साथ पुस्तकालय और सभी स्कूलों को—उनके शिक्षकों और छात्रों सहित—घेरकर, चारों ओर से आग लगा दी और उसे जला दिया, ताकि उपस्थित लोगों में से कोई भी आग से न बच सके, और न ही एक भी किताब आग की लपटों से बची।

उस समय, पूरे कॉन्स्टेंटिनोपल शहर में गहरा शोक और दुख छा गया; हर कोई रो रहा था और आहें भर रहा था; कुछ लोग परम पावन पैट्रिआर्क जर्मनस के अन्यायपूर्ण निर्वासन पर शोक मना रहे थे, कुछ और इतने बड़ी संख्या में पुस्तकों के जलने और बुद्धिमान शिक्षकों की मृत्यु पर, और कुछ अन्य प्रतिमाओं पर की गई महान अपवित्रता पर, क्योंकि प्रतिमाओं को हर जगह तोड़ा जा रहा था, दलदलों में फेंका जा रहा था और चिताओं पर जलाया जा रहा था।

नव-नियुक्त विधर्मी पैट्रिआर्क, अनास्तासियस, जो पवित्र स्थान में 'विराने की घृणा' (मत्ती 24:15) के रूप में खड़ा था, ज़ार को बहुत पसंद था, क्योंकि उसने उसकी मूर्ति-भंजक विधर्म में हर तरह से सहायता की। इस झूठे पादरी ने जल्द ही पवित्र प्रतिमाओं को महान चर्च से बाहर फेंक दिया और सभी अन्य चर्चों में भी ऐसा ही करने का आदेश दिया।

कॉन्स्टेंटिनोपल में 'कांस्य द्वार' नामक एक द्वार था; यह महान कॉन्स्टेंटाइन के समय में बनाया गया था और शाही महलों तक जाता था। इन द्वारों के ऊपर उद्धारकर्ता की एक तांबे की प्रतिमा लटकी हुई थी, जो चार सौ साल या उससे अधिक समय से वहां थी। उस दुष्ट पादरी ने इस पूजनीय प्रतिमा को हटाकर आग लगा देने का निश्चय किया, और इस उद्देश्य के लिए इस अधार्मिक कृत्य को अंजाम देने के लिए कुल्हाड़ियों से लैस सैनिक भेजे। जब उन सैनिकों के कमांडर—जो पद में एक स्पैथारियोस था—ने द्वार के सहारे एक सीढ़ी लगाई और अपने हाथों में कुल्हाड़ी लेकर उसे चढ़ना शुरू किया, और वह पहले से ही अपना यह अधर्मी कृत्य करने की तैयारी कर रहा था, तो कुछ धर्मपरायण महिलाओं ने उसे देख लिया जो वहाँ से गुजर रही थीं; उसे ननियों ने भी देखा, जिनमें पूजनीय थियोडोसिया भी थीं; मसीह की प्रतिमा के प्रति उत्साह से भरकर और धन्य थियोडोसिया—जो सम्माननीय प्रतिमाओं के लिए उन सभी से अधिक उत्साही थीं और दिव्य साहस और निर्भीकता से परिपूर्ण थीं—द्वारा प्रेरित होकर, उन ननों ने सीढ़ी की ओर दौड़ लगाई और उसे जमीन पर पटक दिया; उसी समय, उन्होंने उस सैनिक को भी नीचे फेंक दिया, जो बहुत ऊँचाई से गिरने के कारण बुरी तरह घायल हो गया। फिर उन्होंने उसे जमीन पर घसीटा और मरने तक उसकी पिटाई की; इसके बाद, वे जल्दी से पैट्रिआर्क अनास्तासियस के पास गए और उनकी दुष्टता की निंदा करने लगे; उन्होंने उन्हें भेड़िया, शिकारी, विधर्मी और मसीह की कलीसिया का शत्रु कहकर फटकारा; फिर उन्होंने उन पर पत्थर बरसाने शुरू कर दिए। हालाँकि, अनास्तासियस, शर्म से भरकर और इस डर से कि उसके खिलाफ एक लोकप्रिय विद्रोह हो सकता है, राजा के पास दौड़ा और उन महिलाओं द्वारा उस पर किए गए अपमान की सूचना दी; उसने कांस्य द्वार पर स्पैथारियो की हत्या की भी सूचना दी। क्रोध और आक्रोश से भरकर सम्राट ने तुरंत अपने सैनिकों को खींची हुई तलवारों के साथ भेजा, और उन्हें पादरी के अपमान और स्पैथारियोस की मृत्यु का बदला लेने का आदेश दिया। और उन पवित्र महिलाओं को उनकी धार्मिक निष्ठा में दिखाए गए उत्साह के कारण तलवारों से काट डाला गया; लेकिन धन्य नन थियोडोसियस के बारे में, जो कुलीन जन्म की थीं और जिन्होंने अधिक साहस के साथ धर्मपरायणता का प्रदर्शन किया था, और जिन्हें हुई सभी घटनाओं की उत्प्रेरक माना

[3985] अनास्तासियस ने 730 से 753 तक पैट्रिआर्क के रूप में कार्य किया।

गया, राजा ने उन्हें पकड़कर कैद करने और उन्हें प्रतदिनि सौ कोड़े मारने का आदेश दयिा। इस प्रकार संत को सात दनिों तक यातना दी गई।

आठवें दनि, यातनाकर्ता ने आदेश दयिा कि संत को पूरे शहर में घुमाया जाए और बेरहमी से पीटा जाए। जब संत को 'वोलोवी टॉर्ग' नामक स्थान पर लाया गया (जहाँ जानवर बेचे और काटे जाते थे)[3986] , तो ऐसा हुआ कि संत के साथ चल रहे एक सैनकि ने गलती से एक बड़ी बकरी के सींग पर पैर रख दयिा और अपनी टांग घायल कर ली। क्रोधति होकर, उसने सींग पकड़ लयिा और उससे पवत्रि शहीद के सरि पर नर्दियता से वार करने लगा; फरि उसने सींग को उसके गले में घुसा दयिा, जसिसे वह छेद गया; और तुरंत पवत्रि शहीद और कुंवारी थयिोडोसयिा, मसीह की पवत्रि वधू, ने अपना पवत्रि आत्मा अपने अमर वधूवर के हाथों में सौंप दयिा और कुँवारीपन और शहादत के दोहरे मुकुट से वभिूषति होकर, उनके स्वर्गीय नविास में चली गईं[3987] । उनके दीर्घ-सहष्णिु शरीर को, जो जमीन पर फेंका गया था, ईसाइयों ने नेत्रोदक श्रद्धा के साथ उठाया और एक वशिष स्थान पर दफनाया। संत थयिोडोसयिा के सम्मानति अवशेषों से, हमारे ईश्वर, मसीह की महमिा के लिए, पीड़तिों को चंगाई का वरदान मलिा, जो पति और पवत्रि आत्मा के साथ महमिामय हैं, अब और हमेशा के लिए। आमीन[3988] .

ट्रोपारयिन, स्वर 4:

हे शहीद, तू अनुकूल रूप से सद्गुण प्राप्त कर चुका है, क्योंकि तू मसीह का पवत्रि वास और पवत्रि आत्मा का प्रयि नविास रहा है: अत; हे कष्ट-सहनशील, तूने मानव जाति से युद्ध करने वाले शत्रु को लज्जति कयिा है, और वश्विास की तलवार से तूने कोप्रोनमिस थयिोडोसयिस को मार गरिाया है; और तू आनंदति होकर स्वर्गीय महल में प्रस्थान कर गया है। जो लोग वश्विास के साथ आपका सम्मान करते हैं, उनके लिए सदैव महान दया हेतु प्रार्थना करें।

कॉन्टाकयिन, स्वर 2:

आपने अपने परश्रिम से एक नर्विघ्नि जीवन प्राप्त कयिा, और कोप्रोनमिस के रक्त से आपने शहीद, मसीह की कलीसयिा के उस घृणति शत्रु, सर्वधन्य थयिोडोसयिस का गला घोंट दयिा; और आप स्वर्गीय सेनाओं के साथ आनंदति हैं जो आपकी स्मृति का सम्मान करते हैं।

उस्तीग के चमत्कार करने वाले संत जॉन द फुल फॉर क्राइस्ट की स्मृति

29 मई को स्मरणोत्सव

[3989]धन्य जॉन का जन्म धर्मपरायण माता-पति—उनके पति, जनिका नाम सव्वा था, और उनकी माता, नतालयिा—के यहाँ, उस्त्युग के महान शहर के आसपास, पुखोवो नामक एक गाँव में हुआ था, जो सुखोना नदी के दूसरी ओर स्थति था, जहाँ उस्त्युग का प्राचीन शहर बसा था। छोटी उम्र से ही, उन्होंने असाधारण आत्म-अनुशासन का

[3986] कुछ ववरिणों के अनुसार, इस स्थान को 'वोलोवये' कहा जाता था क्योंकि वहाँ एक बैल के आकार की भट्टी थी, जसिमें अपराधयिों को जलाया जाता था।

[3987] पवत्रि शहीद थयिोडोसयिस का नधिन वर्ष 730 में हुआ।

[3988] 13वीं सदी में रहे महान लोगोथेते (पत्रिसत्तात्मक मुहर के रक्षक) कांस्टेंटनि द्वारा दर्ज कए गए अभलिेखों में, पवत्रि शहीद की अवशेषों से जुड़े चमत्कारों को संरक्षति कयिा गया है। फ्राइसयिा का एक युवक, जो अपने पैरों का इस्तेमाल खो चुका था, संत की कब्र पर लाए जाने के बाद पूरी तरह से ठीक हो गया; एक अन्य युवक, जो अपने घोड़े से गरिकर अपना होश खो चुका था, संत थयिोडोसयिा की कब्र पर लाए जाने और वहां दीपक के तेल से अभषिेक कए जाने के बाद तुरंत ठीक हो गया; खुद कॉन्स्टेंटनि द लोगोथेते कहते हैं कि वे अपने पैरों की एक बीमारी से बहुत पीड़ति थे जसिे सबसे अच्छे चकित्सिक भी ठीक नहीं कर सके; लेकनि, पवत्रि शहीद की ओर मुड़ने पर, उन्हें पूर्ण रूप से स्वास्थ्य लाभ मलिा। कॉन्स्टेंटनि द लोगोथेते अपने वृत्तांत में उल्लेख करते हैं कि सेंट थयिोडोसयिा द्वारा कए गए चमत्कार अनगनित हैं। पवत्रि शहीद के पवत्रि अवशेषों को कॉन्स्टेंटनिोपल में गोल्डन हॉर्न से बहुत दूर नहीं, डयिोक्रैटसि या डेक्सयिोक्रैटसि (उस कुलीन व्यक्ति का नाम जसिने मठ चर्च का नर्मिाण कयिा था) के मठ में रखा गया था।

[3989] वेलकिी उस्त्युग, जो अब वोल्गोडा गवर्नरेट का एक जलिा शहर है, सूखोना नदी के बाएं कनिारे पर, युगा नदी के संगम पर स्थति है।

प्रदर्शन कयिा। वे बुधवार और शुक्रवार को कुछ नहीं खाते थे, और अन्य दनिों में केवल रोटी और पानी पर ही जीवन-यापन करते थे; इसके अलावा, वे हमेशा प्रार्थना में अपनी रातें जागकर बतिाते थे और हमेशा एक उदास और दुखी मुखमंडल के साथ घूमते थे, इसलएि जो भी उन्हें देखते थे, वे सोचते थे कि वे अपने होश में नहीं हैं। इस प्रकार वह धन्य युवक हमेशा व्यवहार करता था, और उसकी माँ ने बार-बार उसे इस जीवन शैली को बदलने के लएि कहा, यह कहते हुए:

'बेटा, खाने-पीने से परहेज़ करके अपने शरीर को थका मत करो; इतना कठोर तपस्या तुम्हें बीमार कर सकती है।'

लड़के ने उत्तर दयिा, "माँ, मुझे ऐसा करने के लएि मजबूर मत करो, संयम ही मुझे पाप से मुक्त करेगा।"

'मेरे बच्चे, तुम्हारी इतनी कम उम्र में कौन से पाप हो सकते हैं?' उसकी माँ ने पूछा, 'तुममें तो केवल ईश्वर की कृपा है, और हमें तुममें कोई पाप नहीं दखिता।'

इस पर लड़के ने अपनी माँ से उत्तर दयिा:

'माँ! ऐसे शब्द बोलना बंद करो; सुनो कि धर्मग्रंथ क्या कहता है: कोई भी यह घमंड न करे कि वह पापरहति है; केवल परमेश्वर ही पापरहति है (रोमयिों 3:10, 23; 1 यूहन्ना 1:8, 9)। और इसके अलावा: भोजन और पेय हमें परमेश्वर के नकिट नहीं लाते (1 कुरन्थियिों 8:8)। इसलएि, हम अपने शरीरों को पोषण न दें, कहीं वे हमारे शत्रु न बन जाएँ।

इन शब्दों के साथ, धन्य योहन ने अपनी माँ को प्रोत्साहति कयिा। यद्यपि वह स्वयं नरिक्षर थे, उन्हें उन पर प्रदत्त पवत्रि आत्मा की कृपा से सखिाया गया था, जैसा कि भवषि्यवक्ता ने कहा: *'मैं प्रभु परमेश्वर के महान कार्यों पर मनन करूँगा; मैं तेरे सत्य को—केवल तेरे ही—याद करूँगा'* (भजन संहति 70:15-16)।

[3990]इसके बाद, धन्य युवक के पति पुखोवा गाँव से यूस्ट्योग के आसपास स्थति ऑर्लेट्स नामक एक कस्बे में चले गए, जो युग नदी पर था, और वहीं उनका नधिन हो गया। तब उनकी माँ वहाँ स्थति जीवन-दायक त्रमिूर्ति के मठ में चली गईं, उन्होंने मठवासी संन्यास की शपथ ली और जल्द ही उन्हें उस मठ की अधषि्ठात्री चुना गया। वह अपने बेटे को हर समय अपने पास रखती थीं, लेकनि उस धन्य युवक ने, इस दुनिया की क्षणभंगुरता को समझकर, एक पवत्रि मूर्ख का रूप धारण कर लयि[3991] , और उसकी माँ ने, यह देखकर कि वह इस तरह व्यवहार कर रहा है, उसे ईश्वर की इच्छा पर छोड़ दयिा।

इसके बाद, पूजनीय जॉन मठ से चले गए और उस्त्युग शहर में पहुँचकर, सर्वपवत्रि परमेश्वर की माता और उनकी गौरवमय नदिरोपमृत्यु के कैथेड्रल चर्च के पास, चर्च के द्वारपाल के आवास में बस गए। रात में जागकर वह प्रभु से अखंड प्रार्थनाएँ कयिा करते थे, जबकि दनिि में वे लोगों के सामने एक पवत्रि मूर्ख के रूप में दखिने का प्रयास करते थे और इस तरह सड़कों पर दौड़ते थे कि उनकी यह दखिावा पकड़ी न जाए। वे आमतौर पर गोबर के ढेर पर आराम करते थे और पूरी तरह नग्न घूमते थे, कमर पर केवल एक फटी-पुरानी चादर लपेटे हुए। लेकनि जब वह कभी कमीज़ पहनता भी, तो वह हमेशा फाटी-पुरानी होती थी और वह उसे कभी धोता नहीं था। रेवरेंड ने तुच्छ लोगों के हाथों बहुत अपमान, उपहास और पटिाई सहन की; वह लगातार भूख और प्यास से पीड़ति रहता था, फरि भी कसिी से कुछ भी स्वीकार नहीं करता था। एक बार, सर्दयिों की ठंड के कारण, वह एक बहुत गर्म भट्टी पर चढ़ गया, जलते हुए कोयलों पर बस्तिर की तरह लेट गया, और उसे बलि्कुल भी कोई चोट नहीं लगी। इसके अलावा, उसने थयिोडोर नामक एक राजकुमार की पत्नी, जसिे 'द रेड' के नाम से जाना जाता था[3992] , और मारयिा नाम की एक राजकुमारी को बुखार से ठीक कयिा।

इस प्रकार अपना जीवन जीने के बाद, धन्य जॉन ने यह महसूस करते हुए कि प्रभु के पास जाने का उनका समय आ गया है, पूरी दुनयिा के लएि प्रार्थना की, क्रॉस का चहि्न बनाया, और, जमीन पर लेटकर, अपनी पवत्रि आत्मा को ईश्वर के हाथों में सौंप दयिा। यह 1494 में, 29 मई को हुआ। उनका दफन कैथेड्रल चर्च के पास कयिा गया था और जो भी श्रद्धा के साथ उनकी ओर मुड़ते हैं, उनके लएि वे चमत्कार करते हैं[3993] ।

[3990] ओर्लेट्स नामक नगर उस्तीग से युगा नदी पर 40 वर्स्ट दूर स्थति था, जो सुखोना नदी की एक सहायक नदी है।

[3991] 'यूरोदवी' शब्द का शाब्दकि अर्थ 'मूर्ख' या 'पागल' है। यह उन ईसाई तपस्वयिों को दयिा गया नाम है जो वनिम्रता और अपने अनंत मोक्ष के लएि मूर्ख या अजीब होने का दखिावा करते थे।

[3992] ये उस्त्युग के गवर्नर, राजकुमार फ्योडोर क्रास्नी थे।

[3993] अंतरमि शासन की वपित्तयिों के दौरान उस्त्युग के नविासयिों ने प्रार्थना में धन्य जॉन का सहारा लयिा और 1610 में सापएिहा पर ज़ार की सेना की वजिय का श्रेय उन्हें दयिा; और 1613 में, उस्त्युग के चमत्कार-कर्ता (प्रोकोपयिस और जॉन) की प्रार्थनाओं के माध्यम से, उन्होंने न केवल पोलशि लोगों के खलिाफ अपने शहर की रक्षा की बल्कि उन्हें बुरी तरह पराजति भी कयिा। उस्त्युग में धन्य जॉन को समर्पति एक चर्च का नरि्माण कयिा गया है।

ट्रोपारयिन, स्वर 5:

हे परम बुद्धमिान जॉन, शरीर की नग्नता और धैर्य के द्वारा, तुमने शत्रु की चालाकयिों को उजागर कर दयिा, और उसके अश्लील कर्मों को प्रकट कयिा; सूर्य की तपती गर्मी और महान कठनिाइयों—ठंड, पाला और आग—को सहते हुए भी, तुमने उन्हें महसूस नहीं कयिा, क्योंकि तुम ईश्वर की सहायता से सुरक्षति थे। उन लोगों के लिए प्रार्थना करें जो वशि्वास के साथ आपकी स्मृति का सम्मान करते हैं और जो भक्तपिूर्वक आपके पवत्रि अवशेषों के संदूक के पास आते हैं, ताकि वे वपित्ति से मुक्त हों और पाप में न पड़ें।

कॉन्टाकयिन, स्वर 8:

स्वर्ग की सुंदरता की इच्छा रखते हुए, आपने इस संसार के देहकि सुखों को सावधानीपूर्वक त्याग दयिा; इस संसार की व्यर्थताओं से अपना त्याग करके, आपने दैवीय जीवन से प्रेम कयिा; इस क्षणकि संसार से परलोक सधिार चुके, हे धन्य योहन: हमारे प्रभु मसीह से हमारे लिए, उन सबके साथ, अनवरत प्रार्थना करें।

12 जून

30 मई (पुराना कैलेंडर)

हमारे पूजनीय पति इसाक वद्विान् का जीवन

30 मई को स्मरणोत्सव

महान कॉन्स्टेंटाइन के शासनकाल के दौरान हमारे प्रभु यीशु मसीह के अति सम्माननीय और जीवन-दायक क्रूस की खोज के तुरंत बाद—जनिका जीवन 21 मई को मनाया जाता है—ईसाई धर्म का एक शत्रु, और वशिेष रूप से हमारे उद्धारकर्ता, स्वयं मसीह का, तथा पवत्रि वशि्वास का एक वरिोधी, अपनी चालाकी से परमेश्वर की कलीसयिा में भ्रम पैदा कर दयिा, अर्थात्: उसने दुष्ट और अधर्मी सम्राट वैलेंस ([3994]) को एरयिन वधिर्म ([3995]) का बचाव करने और उसके प्रसार को बढ़ावा देने के लिए राज़ी कयिा। इस अधर्मी सम्राट ने ईसाई धर्म के प्रति उत्पीड़न शुरू कर दयिा; उसने पवत्रि चर्चों को बंद करने का आदेश दयिा, ताकि उनमें पारंपरकि दैवीय बलदिान न हो सकें, जबकि कुछ अन्य को उसने घोड़ों के अस्तबल में बदल दयिा, और कुछ को उसने धूल-चटा कर दयिा। यह उत्पीड़न लंबे समय तक जारी रहा। और उस समय ईसाइयों में बहुत रोना और बहुत दुख था, जो दनि-रात प्रभु से प्रार्थना करते थे, उससे वनिती करते थे कि वह अपनी पवत्रि कलीसयिा पर दया करें और अधर्मी राजा पर धर्मी न्याय और प्रतशिोध लाएं। उस समय की स्थति बिहुत हद तक प्रेरतिीय युग जैसी थी, जब राजा हेरोदेस *ने 'कलीसयिा के कुछ सदस्यों पर हाथ डाला ताकि उन्हें हानि पहुँचा सके'* (प्रेरतिों के काम 12:1)।

कुछ समय बाद, परमेश्वर ने अपनी सेवक, संन्यासी इसाक को, चर्च की रक्षा के लिए खड़ा कयिा, ठीक वैसे ही जैसे उन्होंने एक बार नर्दिोष सुसन्ना की रक्षा के लिए भवषि्यवक्ता दानयिेल को खड़ा कयिा था[3996] । यह धन्य इसाक शुरू में पूर्वी मरुभूमि में एक तपस्वी के रूप में रहते थे, वे नबी एलयिा का अनुकरण करते हुए एक दैवीय जीवन व्यतीत कर रहे थे। ईश्वर की कलीसयिा के वरिुद्ध एरयिनों द्वारा शुरू कए गए उत्पीड़न के बारे में, और यह भी जानकर कि सम्राट वधिर्म के प्रसार में सहायता कर रहा था, वे बहुत दुखी हुए; मरुभूमि छोड़कर, वह धर्मात्माओं को उनकी भक्ति में मजबूत करने के लिए कॉन्स्टेंटनिोपल आया; उसका वचन एक जलती हुई मोमबत्ती के समान था; परमेश्वर का आत्मा उस पर

[3994] वैलेन्स ने 364 से 378 तक शासन कयिा।

[3995] एरयिन धर्मनषि्ठा पर अधकि जानकारी के लिए, प्रथम सार्वभौमकि परषिद पर पूरक लेख में नीचे देखें।

[3996] सुसन्ना की कहानी दानयिेल 13 में वर्णति है।

वरिाजा और स्वर्गीय अनुग्रह उस पर चमका। धर्मनरिपेक्ष राजा और उसके समान वचिारधारा वाले अनुयायियों के हाथों वशि्वासयिों द्वारा सहन की गई महान कष्टों को अपनी आँखों से देखने के बाद, उसने ईश्वर से प्रार्थना की, उनसे वनिती करते हुए कि वे अपने सहिासन की ऊँचाई से उन पर नज़र डालें जो अन्यायपूर्ण रूप से सताए जा रहे थे और उन पर अपनी दया दखिाएँ, साथ ही अपने सताने वालों के घमंड को नम्र करें।

ईश्वर, जसिने एक बार अपने सेवक मूसा को अपने संकटग्रस्त लोगों के लिए प्रार्थना करते हुए सुना था (1 शमूएल 28:17–22), ने अपने सेवक इसहाक की भी सुनी, और दुष्ट राजा वैलेंस के वरिुद्ध बर्बर लोगों को खड़ा कयिा; अर्थात्, उस समय डैन्यूब नदी के कनिारे रहने वाले बर्बर लोगों ने, अपनी सारी सेनाएँ इकट्ठी करके, यूनानयिों के वरिुद्ध युद्ध छेड़ा; वे पहले ही थ्रेस को अपने नयिंत्रण में ले चुके थे और कॉन्स्टेंटनिोपल के पास आ रहे थे। राजा वैलेंस को दुश्मनों से लड़ने के लिए अपने सैनकिों को इकट्ठा करने की आवश्यकता थी; लेकनि यहाँ राजा के साथ वही हुआ जो एक बार इज़राइल के राजा और दाऊद के दुश्मन शाऊल के साथ हुआ था; क्योंकि सन्त शमूएल की भवष्यिवाणी के अनुसार साऊल युद्ध के मैदान से वापस नहीं आया, क्योंकि उसने परमेश्वर का क्रोध भड़काया था (1 राजा 22:1–53)।

जब वैलेंट अपनी सेनाओं के साथ कॉन्स्टेंटनिोपल से जा रहा था, तब धन्य इसाक आगे बढ़ा और ऊँचे स्वर में चल्लिाया:

'हे राजा! वशि्वासयिों के लिए चर्चें खोलो, और तब प्रभु तुम्हें तुम्हारी यात्रा में सफलता प्रदान करेंगे।'

लेकनि राजा ने उसे उत्तर नहीं दयिा; उसने उसे एक मूर्ख और पागल समझकर उपेक्षा की; उसकी बातों पर ध्यान दएि बनिा, वह अपने रास्ते पर आगे बढ़ गया।

अगले दनि सुबह, धन्य वृद्ध राजा के पास गए और एक बार फरि कहा:

'हे राजा, वशि्वासयिों के लिए चर्चों के द्वार खोलें, और फरि युद्ध आपके लिए अच्छी तरह समाप्त होगा: आप अपने दुश्मनों को हराएंगे और शांति और अच्छे स्वास्थ्य के साथ घर लौटेंगे।'

राजा ने, 'आप शांति और अच्छे स्वास्थ्य के साथ घर लौटेंगे' इस बात पर ध्यान देते हुए, चर्च के दरवाज़े खोलने और चर्चों को ऑर्थोडॉक्स वशि्वासयिों को सौंपने की इच्छा जताई, और इस मामले पर अपने कुलीनों से परामर्श करना भी शुरू कर दयिा था। लेकनि एक सैन्य कमांडर, जो एरयिनवाद की वधिर्म का अनुयायी था, ने राजा को सलाह दी कि वह उस संन्यासी की न सुने, बल्कि उसे अपमानति करके भगा दे। वृद्ध को डांटने के बाद, राजा ने उसे अपमानति करके और पीटकर भगा दयिा, और अपने सफर पर नकिल पड़ा।

और तीसरे दनि, धन्य संन्यासी एक बार फरि राजा के पास आए; जसि घोड़े पर वह सवार था, उसकी लगाम पकड़कर इसहाक ने राजा से और भी अधकि गंभीरता से गरि्जाघरों को फरि से खोलने का आग्रह और उपदेश करना शुरू कर दयिा; अन्यथा, उन्होंने उसे चेतावनी दी, कि उसे ईश्वर के न्याय का सामना करना पड़ेगा।

उस स्थान पर एक गहरी खाई थी, जसिके तल में झाड़-झंखाड़ उगते थे और एक दलदल था; जब भी कोई जानवर इस दलदल में गरिता, तो वह फरि बाहर नहीं नकिल पाता, बल्कि कीचड़ में धँसकर मर जाता था। राजा ने इसहाक को इसी दलदल में फेंकने का आदेश दयिा, ताकि वह वहीं मर जाए; फरि वह एक बार फरि अपनी यात्रा पर चल पड़ा।

हालाँकि, संत इसाक को इस दलदल में फेंके जाने पर, ईश्वर के दहनिे हाथ द्वारा उनकी रक्षा की गई और उन्हें वहाँ कोई हानि नहीं हुई: न तो उन्हें झाड़ियों से चोट लगी और न ही दलदल में खचिा गया; वह काँटों के बीच इस प्रकार लेटा मानो फूलों की नरम बस्तिर पर हो, और परमेश्वर की स्तुति और धन्यवाद करता रहा, जब तक कि उसके पास तीन तेजस्वी पुरुष प्रकट नहीं हुए, जन्हिोंने उसे दलदल से सुरक्षति और सलामत बाहर नकिाला और उसे सूखी जमीन पर खड़ा कर दयिा; फरि वे स्वयं अदृश्य हो गए।

तब पूजनीय इसहाक को एहसास हुआ कि यह स्वयं प्रभु ही थे जन्हिोंने उसे उस गहरी खाई से बचाने के लिए अपने स्वर्गदूतों को भेजा था; घुटनों के बल झुककर, उसने अपने उद्धारकर्ता का धन्यवाद कयिा कि वह अपने सेवकों की देखभाल करते हैं और उन सभी को कभी नहीं छोड़ते जो उनसे डरते हैं और जनिकी आशा उन पर है।

पर्याप्त समय तक प्रार्थना करने और पवत्रि आत्मा से बल प्राप्त करने के बाद, इसहाक अपने पैरों पर खड़ा हो गया; फरि वह एक घुमावदार रास्ते से जल्दी से चल पड़ा और राजा को पीछे छोड़कर उसके रास्ते में खड़ा हो गया। संत को देखकर, राजा बहुत डरा और डर और हैरानी के मारे चुप हो गया। हालाँकि, संत ने उससे नडिर होकर कहा:

'यहाँ तुमने मुझे काँटों और दलदल के बीच नष्ट करने का प्रयास कयिा; परन्तु प्रभु ने मुझे जीवति रखा और अपने स्वर्गदूतों को मेरी ओर भेजा, जन्हिोंने मुझे उस गहरे गड्ढे से बाहर नकिाला। अत; हे राजा! मेरी बात सुनो!' वशि्वासयिों के

लिए चर्चों के द्वार खोलो; तब तुम अपने शत्रुओं को परास्त करोगे और महिमा में लौटोगे; परन्तु यदि तुम मेरी बात नहीं मानोगे, तो तुम रणभूमि से वापस नहीं लौटोगे, बल्कि वहीं पर नष्ट हो जाओगे।

राजा भिक्षु की निर्भीकता और उसके मुखमंडल की दिव्य ज्योति से अत्यंत चकित हुआ, परन्तु इसके बावजूद उसने उसकी बात पर ध्यान नहीं दिया, क्योंकि उसका हृदय कठोर हो गया था और वह ईश्वर से दूर हो गया था। तब राजा ने उस धन्य व्यक्ति को अपने दो सम्मानित अधिकारियों, सैटरनिनस और विक्टर, के हवाले कर दिया और उन्हें उसे बेड़ियों में जकड़ने का आदेश दिया। ऐसा करते हुए, उसने उनसे कहा:

'इस परेशान करने वाले बूढ़े आदमी को अपनी हिरासत में तब तक रखो जब तक मैं वापस न आ जाऊँ और उसकी निर्लज्जता और दुस्साहस का बदला न ले लूँ।'

लेकिन आदरणीय इसाक, पवित्र आत्मा की कृपा से परिपूर्ण होकर, और भी अधिक उत्साह से भर गए (जैसे भविष्यवक्ता मीका एक बार इस्राएल के राजा आहाब के विरुद्ध हुए थे) और वेलेन्स से ऊँचे स्वर में चिल्लाए:

'"*यदि तुम शांति से लौटोगे,*" तो जान लो कि "*यह यहोवा नहीं है जिसने मुझसे बात की।*" *और उसने कहा: "हे सब लोग, सुनो!*"' (1 राजा 22:28)। तो मैं तुमसे कहता हूँ, कि यदि तुम अपनी सेनाओं को युद्ध में ले जाओगे, तो तुम बर्बर लोगों को पराजित नहीं करोगे, बल्कि उनसे भागोगे, उनके द्वारा पकड़े जाओगे, और आग में जिंदा जला दिए जाओगे।

जब संत ने यह कहा, तो राजा क्रोध में अपनी यात्रा जारी रखने के लिए निकल पड़ा, जबकि संत को बेड़ियों में जकड़कर ले जाया गया।

इस बीच, यूनानियों का सामना बर्बर लोगों से हुआ; लड़ाई बहुत भयंकर थी; ईश्वर की अनुमति से, संत इसाक की भविष्यवाणी के अनुसार, बर्बर लोग विजयी रहे; कई यूनानी तलवार के घाट उतरे; राजा वैलेंस स्वयं घायल हो गए और अपने दुश्मनों का सामना न कर पाने के कारण भाग खड़े हुए। हालाँकि, बर्बर लोगों ने यूनानियों का पीछा किया और यूनानी सैनिकों को घास की तरह काट डाला; वे पहले ही स्वयं राजा के करीब पहुँच रहे थे, जो अपने एक सलाहकार, एक सैन्य कमांडर और एरियन के साथ भाग रहे थे, जिसने उन्हें इसाक की बात न मानने की सलाह दी थी। एक गाँव में पहुँचने पर, उसने एक खलिहान देखा जिसमें भूसा था; चूँकि उसका घोड़ा पहले ही थक चुका था, वह घोड़े से उतर गया और अपने सलाहकार के साथ उस खलिहान में शरण ले ली। लेकिन वह ईश्वर के दंड से नहीं बच सका, क्योंकि उसका पीछा कर रहे बर्बर, उस गाँव में पहुँचकर जब यह पता चला कि यूनानी उस खलिहान में छिपे हुए हैं, तो उन्होंने उसे चारों ओर से आग लगा दी और उसे पूरी तरह जलाकर राख कर दिया। इस प्रकार वह शापित राजा और उसका दुष्ट सलाहकार नष्ट हो गए।

[3997]उस लड़ाई के बाद, अक्षुण्ण बनी हुई ग्रीक सेना, रोमन सम्राट ग्राटियन[3998] से मिलने के लिए रवाना हुई, जो ग्रीकों की सहायता के लिए आ रहे थे। ग्रीक क्षेत्र में पहुँचने पर, ग्रेटियन ने थियोडोसियस, जिन्हें महान के रूप में जाना जाता है, को ग्रीकों का राजा चुना। थियोडोसियस ने अपनी सेना इकट्ठी की, बर्बरों के खिलाफ़ निकल पड़े, उन्हें हराया और भगा दिया, और विजय प्राप्त कर कॉन्स्टेंटिनोपल लौट आए।

इस बीच, कुछ यूनानी सैनिक, जिन्हें वैलेंस की मृत्यु का पता नहीं चला था, उसकी मृत्यु के कुछ समय बाद श्रद्धेय इसाक के पास आए, जिन्हें बेड़ियों में जकड़कर रखा गया था, और उनसे कहा:

'जवाब देने के लिए खुद को तैयार करो, क्योंकि सम्राट जल्द ही युद्ध के मैदान से लौटेंगे और तुम्हारी पूछताछ कर तुम्हें यातनाएँ देंगे।'

लेकिन संत ने उनसे उत्तर दिया:

'मुझे उसकी जली हुई हड्डियों की बदबू सूंघे हुए सात दिन हो गए हैं; क्योंकि, जैसा मैंने कहा, वह जल गया है।'

यह सुनकर जो लोग भी मौजूद थे, वे भयभीत हो गए; और वास्तव में, जल्द ही वैलेंस की मृत्यु की खबर आ गई। इसके बाद, संत इसाक को उनके बंधनों से मुक्त कर दिया गया, और सभी ने उन्हें ईश्वर का एक भविष्यवक्ता मानकर सम्मानित करना शुरू कर दिया।

जब थियोडोसियस विजय प्राप्त करके शहर में प्रवेश किया, तो उपरोक्त कुलीनों, सैटरनिनस और विक्टर ने उन्हें परम पूजनीय इसाक के बारे में सब कुछ बताया – उन्होंने उनकी साहस और उनकी भविष्यवाणी के बारे में बताया। राजा, ऐसे व्यक्ति का बहुत सम्मान करते हुए, ने आदेश दिया कि उसे बड़े सम्मान के साथ उसके सामने लाया जाए और

[3997] थेओडोसियस महान ने 379 से 395 तक रोमन साम्राज्य के पूर्वी हिस्से पर और 393 से 396 तक पश्चिमी हिस्से पर शासन किया।

[3998] सम्राट ग्रेटियन ने 375 से 383 तक शासन किया।

वह उसके सामने झुक गया, उसे ईश्वर के एक महान सेवक के रूप में सम्मानित किया और उससे अपने और अपने पूरे राज्य के लिए ईश्वर से प्रार्थना करने के लिए कहा। तथापि, पूज्य ने राजा को धर्मपरायण बने रहने, चर्च में शांति बहाल करने और उत्पीड़ितों को सांत्वना देने के लिए प्रोत्साहित किया। राजा ने संत की बात मानी और वैसा ही किया: उसने कॉन्स्टेंटिनोपल से एरियनों को निकाल दिया, जिस पर विश्वासियों ने बहुत प्रसन्नता व्यक्त की।

धन्य इसाक ने, सभी चीजों के लिए ईश्वर को धन्यवाद देने के बाद, खुद को वहाँ तपस्या के लिए समर्पित करने हेतु मरुभूमि में जाने का इरादा किया; लेकिन सैटरननिस और विक्टर ने पूजनीय पिता से विनती की कि वे शाही शहर न छोड़ें, बल्कि उनके साथ रहें और अपनी प्रार्थनाओं और शिक्षा के माध्यम से, ईसाइयों के बीच शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व को बढ़ावा दें; संत ने उनकी विनती मान ली।

उस समय, सैटरननिस और विक्टर के बीच एक विवाद उत्पन्न हुआ, क्योंकि उनमें से प्रत्येक चाहता था कि आदरणीय संत उनके अपने घर में निवास करें। उनके विवाद का कारण जानने पर, संत ने उनसे संबोधित होकर कहा:

'मेरे बच्चों! मैं तुम सबके प्रति तुम्हारे प्रेम को देखता हूँ। लेकिन चूँकि तुम मेरी विनम्रता का सम्मान करना चाहते हो, मैं तुमसे कहता हूँ: मैं अपने शेष जीवन के लिए, उस व्यक्ति के साथ रहूँगा जो मेरे लिए सबसे पहले एक घर बनाएगा।'

और इस प्रकार दोनों ने परमेश्वर के उस पुरुष के लिए यथाशीघ्र एक घर बनाने का काम शुरू कर दिया।

सैटरननिस के पास शहर के बाहर एक बहुत ही सुंदर जगह थी, जो संतों के जीवन के लिए सबसे उपयुक्त थी; वहाँ उसने उस ईश्वर पुरुष के लिए एक मठ बनाने की जल्दी की; और वहीं सम्माननीय इसाक ने निवास ग्रहण किया। इसी तरह, विक्टर ने संत के लिए एक सुंदर आवास बनाया और इस बात का गहरा खेद व्यक्त किया कि सैटरननिस उससे पहले ही ऐसा कर चुका था। संत से मिलने पर, उन्होंने उनसे विनम्रतापूर्वक अनुरोध करना शुरू कर दिया कि वे उनके लिए बनी कोठरी में आ जाएँ। लेकिन आदरणीय संत सतरननिस के मठ में ही अपना तपस्वी जीवन जारी रखे रहे, हालांकि वे कभी-कभी विक्टर से मिलने जाते और कुछ दिनों के लिए उनके साथ ठहरते थे, क्योंकि वे इनकार करके उसे दुखी नहीं करना चाहते थे।

इस बीच, कई लोग संन्यासी के पास इकट्ठा होने लगे, जो उनके साथ मठ के कर्तव्यों में काम करना चाहते थे। इस प्रकार, ईश्वर-प्रेमी पुरुषों सैटरननिस और विक्टर द्वारा प्रदान किए गए धन से एक बड़ा मठ बनाया गया। और रेवरेंड फादर कई भिक्षुओं के लिए मार्गदर्शक और मठाधीश के रूप में, और गृहस्थों के लिए भी एक सहायक शिक्षक के रूप में सेवा करते थे, क्योंकि उन्होंने अपने शब्दों और अपने सदाचारी जीवन के उदाहरण, दोनों से सभी को मोक्ष के मार्ग पर मार्गदर्शन दिया। वे दयालु व्यक्ति गरीबों के प्रति अत्यंत दयालु थे, इसलिए यदि कभी उनके पास किसी याचक को देने के लिए कुछ नहीं होता, तो वे अपने ही कपड़े उतारकर दे देते थे; संत ने कई अन्य परोपकारी कार्य भी किए। अंत में, वृद्धावस्था प्राप्त करने के बाद, वे मृत्यु के समीप पहुँच गए। पूरे समुदाय को बुलाकर और सभी को धर्मोपदेश देने के बाद, संत इसाक ने अपनी जगह पर एक सम्मानित व्यक्ति, धन्य डाल्मेटस, जो एक पवित्र जीवन जीते थे, को मठाध्यक्ष नियुक्त किया, जिसके नाम पर बाद में इस मठ को 'डाल्मेटस का मठ' के नाम से जाना जाने लगा।

कई धर्मार्थ कार्यों में परिश्रम करने के बाद, पूजनीय इसाक शाश्वत विश्राम के लिए प्रभु के पास चले गए[3999]; उनका अंतिम संस्कार करने के लिए पूरा शहर इकट्ठा हुआ; उनके पूजनीय शरीर को संत स्टीफन प्रथम शहीद के चर्च में दफनाया गया; जबकि उनकी पवित्र आत्मा पवित्र त्रिमूर्ति के सिंहासन के सामने, पवित्र और पूजनीय पिताओं की संगति में खड़ी है, और उनके साथ हमारे लिए पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा, त्रिमूर्ति में एक ईश्वर, से प्रार्थना करती है, जिन्हें सदा के लिए महिमा दी जाती है। आमीन।

कॉन्टाकियन, स्वर 8:

हे आदरणीय इसाक, परमेश्वर के एक वफादार सेवक के रूप में, मसीह की कलीसिया के प्रति उत्साह से जलते हुए, वीरता की लगाम को दृढ़ता से थामे हुए, आपने भविष्यद्वाणीपूर्वक उस विनाशकारी मृत्यु की भविष्यवाणी की, जो

[3999] संत इसाक का निधन चौथी शताब्दी के अंत में हुआ। उनके अवशेषों को शुरू में डलमेशियाई मठ के बगल में स्थित संत स्टीफन के चर्च में रखा गया था; बाद में उन्हें ऑल सेंट्स के चर्च में स्थानांतरित कर दिया गया।

कलीसिया पर उसके बंद होने के कारण आएगी। इसलिए, हे आदरणीय इसाक, हम जो आपका सम्मान करते हैं, उनके लिए सदा प्रार्थना करें।

13 जून

31 मई (पुराने कैलेंडर के अनुसार)

जून

शहीद संत हर्मियास का कष्टकथा

31 मई को स्मरण किया जाता है

धर्मनिरपेक्ष रोमन सम्राट एंटोनिनिस[4000] के शासनकाल में ईसाइयों पर किए गए उत्पीड़न के दौरान, सम्राट ने सेबेस्टियन नामक एक कुलीन व्यक्ति को ईसाइयों पर यातनाएँ देने के लिए नियुक्त किया। सिलिसिया से कैपाडोसिया[4001] की यात्रा करने के बाद, वह कोमाना[4002] में हर्मियस नामक एक सैनिक से मिला, जो उम्र के कारण सफेद हो चुके बालों वाला एक वृद्ध व्यक्ति था, एक ईसाई जो एक सच्चे ईश्वर में विश्वास करता था और एक पुण्य जीवन यापन करता था। राजकुमार ने हर्मियस से कहा:

'मुझे रोमन सम्राट एंटोनिनिस का एक फरमान मिला है, जिसमें सभी ईसाइयों को रोमन देवताओं को बलिदान चढ़ाने का आदेश दिया गया है; यदि, तथापि, ईसाई बलिदान चढ़ाने से इनकार करते हैं, तो उन्हें कई क्रूर यातनाओं का सामना करना पड़ेगा। अत; हे हर्मियास, तुम्हें भी देवताओं को बलिदान चढ़ाना चाहिए: तब तुम राजा के मित्र बन जाओगे; तुम्हें महान सम्मानों से पुरस्कृत किया जाएगा।' मेरी आज्ञा मानो, अन्यथा मैं तुम्हारी आत्मा और शरीर दोनों को यातनाओं में डाल दूँगा।

मसीह के तपस्वी, हर्मीस ने उत्तर दिया:

मैं मसीह का सैनिक हूँ, जो स्वर्गीय और अमर राजा हैं, जिनका राज्य कभी समाप्त नहीं होगा; इसलिए मैं एक नश्वर और अधर्मी राजा की आज्ञा का पालन नहीं करूँगा, जिसका शासन क्षणिक है, जबकि हमारे प्रभु यीशु मसीह का राज्य हमेशा के लिए अपरिवर्तित रहेगा; जो कोई भी उन पर विश्वास करता है, वह अनंत जीवन का वारिस होगा। और इसलिए मैं उस पर विश्वास करता हूँ। मैं पहले गुप्त रूप से उसकी सेवा करता था, लेकिन अब मैं खुले तौर पर उसकी सेवा करता हूँ; शैतान मुझे हरा नहीं सकता; जहाँ तक तुम्हारा सवाल है, तुम्हारे पास केवल मेरे शरीर पर ही शक्ति है, और वह भी केवल ईश्वर की अनुमति से; लेकिन मेरी आत्मा पर ईश्वर के सिवा किसी की भी शक्ति नहीं है, जो मुझे धैर्य प्रदान करेगा और मुझे हमेशा के लिए सुरक्षित रखेगा।

जब सेबस्टियन ने संत हेरमास की बात सुनी, तो वह उनकी ओर मुड़ा और कहा:

'देवताओं को बलिदान चढ़ाओ, यदि तुम इस जीवन के सुखों का आनंद लेना चाहते हो।'

लेकिन संत ने उत्तर दिया:

'मेरे लिए क्या आनंद, क्या सुख, और क्या जीवन हो सकता है, यदि मैं अपने सृष्टिकर्ता से मुँह मोड़कर राक्षसों की पूजा करूँ? सचमुच, यह आनंद नहीं बल्कि दुख है; यह सुख नहीं बल्कि शोक है; यह जीवन नहीं बल्कि अनंत मृत्यु है।'

राजकुमार ने कहा:

'मैं देख सकता हूँ कि आप बहुत बुद्धिमान हैं।'

संत ने उत्तर दिया:

[4000] सम्राट एंटोनिनिस प्रथम ने 138 से 161 तक शासन किया।

[4001] सिलिसिया और कैपाडोसिया एशिया माइनर के क्षेत्र हैं।

[4002] कोमाना शहर एशिया माइनर के उत्तर-पूर्वी भाग में, पोंटस प्रांत में स्थित था। – ईसाई चर्च के इतिहास में, यह शहर सेंट जॉन क्रिसोस्टोम के निर्वासन की जगह के रूप में जाना जाता है (13 नवंबर के अंतर्गत उनका जीवन देखें)। हालाँकि, कुछ लोग इसे कैपाडोसिया में स्थित कोमाना शहर के रूप में पहचानते हैं।

'मैं प्रभु, अपने परमेश्वर के विषय में बुद्धिमान हूँ, जिन पर मैं विश्वास करता हूँ और जिनकी मैं पूरे हृदय से सेवा करता हूँ; उनके लिए मैं दुख सहने को तैयार हूँ और आनन्दपूर्वक मरने को भी इच्छुक हूँ।'

राजकुमार ने कहा, 'आपके सफेद बालों और आपकी बुद्धिमत्ता के सम्मान में, मैं आपको क्षमा करने और आप पर दया दिखाने के लिए तैयार हूँ।'

संत ने उत्तर दिया:

'मैं आपसे कोई दया नहीं चाहता, बल्कि मैं परमेश्वर से दया चाहता हूँ, जो पवित्र आत्मा के द्वारा अपने सेवकों को ज्ञान प्रदान करते हैं।'

इस पर राजकुमार ने कहा:

'तो, क्या तुम जीवन से मृत्यु को अधिक पसंद करते हो?'

संत ने उत्तर दिया, 'यह मृत्यु, मृत्यु नहीं है, बल्कि शाश्वत जीवन है, यदि मैं आपके द्वारा निर्धारित यातनाओं को धैर्यपूर्वक सहन करूँ।'

तब राजकुमार ने आज्ञा दी कि संत के चेहरे को पत्थरों से कुचला जाए, उसके मुँह पर वार किया जाए, और उसके चेहरे से त्वचा उधेड़ी जाए। और संत ने कहा:

'मैं अपने ईश्वर का धन्यवाद करता हूँ, क्योंकि उनकी कृपा मुझ पर बनी रहती है।'

तब राजकुमार ने सिपाही से पूछा:

'आप अपना कर क्यों नहीं लेते, जैसा कि अन्य सभी सैनिक करते हैं?'

'चूंकि तुम अन्याय से गरीबों को लूटते हो,' शहीद ने उत्तर दिया, 'मैं इस कारण से तुम्हारा कर नहीं लेता, न ही मैं इससे भोजन करता हूँ, क्योंकि मुझे पवित्र आत्मा द्वारा आध्यात्मिक भोजन प्रदान किया गया है, जिससे मैं कभी भूखा नहीं रहूँगा।'

तब राजकुमार ने भट्टी जलाने और मसीह के शहीद को उसमें फेंकने का आदेश दिया। तीन दिन बाद, उन्होंने भट्टी खोली, लेकिन संत को जीवित और सुरक्षित पाया, जो ईश्वर की स्तुति कर रहे थे, क्योंकि आग ने उनके शरीर को छुआ तक नहीं था।

इसके बाद, राजकुमार ने एक जादूगर को बुलाया और उसे हरमियस को ज़हर देने का आदेश दिया।

लेकिन संत ने ईश्वर से प्रार्थना करने के बाद, जहरीला पेय पी लिया और उन्हें बिल्कुल भी कोई हानि नहीं हुई, प्रभु मसीह के वचनों के अनुसार, जिन्होंने कहा था: *'यदि वे कोई घातक वस्तु पीएँ, तो भी वह उन्हें हानि नहीं पहुँचाएगी'* (मरकुस 16:18)।

जादूगर ने एक और भी ज्यादा खतरनाक ज़हर तैयार किया और शहीद को देते हुए कहा:

'यदि तुम्हें इस ज़हर से ज़रा भी नुकसान नहीं हुआ, तो मैं अपनी जादू-टोना छोड़ दूँगा और उस सूली पर चढ़ाए गए ईश्वर पर विश्वास कर लूँगा जिसकी तुम सेवा करते हो।'

लेकिन संत हरमियास ने इस जहर का स्वाद चखकर उसे तल तक पी लिया, उन्हें कोई भी हानि नहीं हुई, बल्कि वे स्वस्थ और सुरक्षित रहे। तब जादूगर चिल्लाया:

'तुमने मुझे हरा दिया, हर्मियास! तुम विजयी हुए और मुझ पर विजय प्राप्त की, हे मसीह के सेवक! आपने मेरी खोई हुई आत्मा को नरक से बचाया है और मुझे ईश्वर की सेवा करने के लिए प्रेरित किया है। जैसे लोहे की एक पुरानी मूर्ति का नवीनीकरण तब होता है जब उसे फिर से ढाला जाता है, वैसे ही मैं भी, जो पाप और दुष्टता में बूढ़ा हो गया था, अपनी आत्मा में नवीनीकृत हुआ हूँ; मैं सदा निवास करने वाले जीवित ईश्वर की ओर मुड़कर नवीनीकृत हुआ हूँ। हे स्वर्ग के ईश्वर, एकमात्र सच्चे परमेश्वर, जिन्होंने अपने सेवक यिर्मयाह के द्वारा मुझे दानवों के भ्रम और मूर्तिपूजा की अशुद्धता से मुक्त किया है! मुझे स्वीकार करें, एक पापी जो आपसे मुड़ता है, और मुझ पर दया करें, जो आपकी स्वीकारोक्ति करता है!

जब उसने ऐसा पुकारा, तो राजकुमार क्रोध से भर गया और उसे सिर कलम करने का आदेश दिया। और उस जादूगर का सिर कलम कर दिया गया, जो अपने ही रक्त से बपतिस्मा ले चुका था; और वह नया ईसाई और शहीद मसीह परमेश्वर के पास चला गया, जिसके लिए उसने अपनी जान दी थी।

जहाँ तक संत हरमास का सवाल है, राजकुमार ने आदेश दिया कि उन्हें बेरहमी से यातना दी जाए, और उनके पूरे शरीर की नसें निकाल दी जाएँ। इतनी क्रूरता से यातना दिए जाने के दौरान, संत ने कहा:

'मुझे इस यातना से बिल्कुल भी दर्द महसूस नहीं हो रहा है; क्योंकि जैसे एक चाकू नस काटकर खराब खून को बाहर निकालकर शरीर को स्वस्थ कर देता है, वैसे ही मैं अपनी नसों के उखड़ने को सहकर, मसीह के धर्म में और भी अधिक दृढ़ हो रहा हूँ।'

तब यातना देने वाले ने आज्ञा दी कि संत को उबलते तेल से भरे एक बड़े पात्र में फेंक दिया जाए। लेकिन वह पात्र तुरंत ठंडा हो गया, और उबलता हुआ तेल ठंडी ओस में बदल गया। फिर भी, मसीह के शहीद ने ऊँचे स्वर में पुकारा:

'मुझे कोई दर्द महसूस नहीं हो रहा है और मैं तुम्हारी आज्ञा का पालन नहीं करूँगा, यातना देने वाले! मैं केवल स्वर्गीय पिता की इच्छा का पालन करूँगा, जिन्हें मैं स्वयं को एक निर्दोष बलिदान के रूप में अर्पित करता हूँ, क्योंकि वे हमारे आत्मा और शरीर के प्रभु हैं।'

जब संत ऐसा कह ही रहे थे, तो यातना देने वाले ने आदेश दिया कि उनके गले में पित्त मिला हुआ कड़वा सिरका डाला जाए। लेकिन शहीद ने कहा:

'यह कड़वाहट मेरे लिए मेरे ईश्वर की खातिर सौ मधु के पात्रों के समान है, जिनके नाम पर मैं यह सब सहन कर रहा हूँ।'

तब यातनाकर्ता ने संत हरमास की आँखें निकालने का आदेश दिया। यह सुनकर संत ने यातनाकर्ता से कहा:

'यदि तुम मेरी शारीरिक आँखें चाहते हो, जो इस संसार की व्यर्थता को देखती हैं, तो उन्हें ले लो; मेरे पास हृदय की आँखें हैं, जिनसे मैं स्पष्ट रूप से सच्ची रोशनी को देखता हूँ।'

और पवित्र शहीद की आँखें निकाल ली गईं।

इसके बाद, संत को उल्टा लटका दिया गया और वे तीन दिनों तक उसी स्थिति में रहे, जिससे उनकी नाक से बहुत सारा खून बह निकला। जब तीन दिन बीत गए, तो कुछ लोग संत को देखने आए, यह सोचकर कि वे मर चुके हैं, लेकिन उन्होंने उन्हें जीवित और ईश्वर की महिमा करते हुए पाया, जिससे वे बहुत हैरान रह गए। लेकिन उनके अविश्वास के कारण, उनकी आँखें अंधकार से ढक गईं; वे अंधे हो गए और चिल्लाने लगे:

'हे सच्चे ईश्वर के सेवक, हम पर दया करो, क्योंकि हम अंधे हो गए हैं!'

तब संत ने उनसे कहा:

'मेरे पास आओ!'

जब वे उसके पास आए, तो उसने उन पर अपने हाथ रखे और कहा:

'मेरे प्रभु यीशु मसीह के नाम पर, अपनी दृष्टि प्राप्त करो।'

और तुरंत ही उन सब की दृष्टि लौट आई और वे लौटकर उस सबको बताया जो कुछ हुआ था।

तथापि, राजकुमार और भी अधिक क्रोधित हो गया, और उसने आदेश दिया कि शहीद की पूरी देह से चमड़ी उधेड़ दी जाए। जब नौकर यातनाकर्ता के आदेश को पूरा कर रहे थे, तो संत ने राजकुमार की निंदा की और उसके घृणित देवताओं की निंदा की, जिससे राजकुमार और भी अधिक क्रोधित हो गया। एक सिंह की तरह दहाड़ते हुए, उसने चाकू से पवित्र शहीद का उत्कृष्ट सिर काट दिया।

[4003]इस प्रकार मसीह के शहीद हर्मियास की शहादत समाप्त हुई।

ईसाई, उस स्थान पर गुप्त रूप से आकर, उसके पवित्र शरीर को ले गए और उसे कापाडोसिया में कोमाना नामक स्थान पर दफना दिया। यहाँ, शहीद की पवित्र अवशेषों के माध्यम से कई चमत्कार हुए, और हमारे ईश्वर मसीह की महिमा के लिए अनेक चंगाइयाँ प्रदान की गईं, जिन्हें पिता और पवित्र आत्मा के साथ, अब और हमेशा के लिए महिमा, सम्मान और आराधना हो। आमीन।

कॉन्टाकियन, स्वर 6:

हे शहीद हर्मास, जिन्होंने मसीह के लिए उत्साहपूर्वक परिश्रम किया और अपने वृद्धावस्था में सच्ची वीरता प्राप्त की: मसीह की शक्ति से अधर्मी लोगों की दुष्ट योजनाओं पर विजय प्राप्त कर, आप जादुई औषधियों से अप्रभावित रहे, पुकारते हुए: 'ईश्वर मेरे साथ है, और कोई भी मेरे विरुद्ध नहीं है।'

[4003] पवित्र शहीद हर्मास की मृत्यु लगभग 166 ईस्वी में हुई थी।

पवत्रि शहीद दार्शनकि के कष्ट

31 मई को स्मरणोत्सव

मसीह के इस पवत्रि शहीद, दार्शनकि[4004] , अलेक्जेंड्रयिा शहर[4005] के आसपास के रहने वाले थे। महान संन्यासी एंथनी[4006] ने उनकी कहानी और इस बात का वर्णन कयिा कि उन्होंने अपना बलदिान कैसे दयिा।

एक बहुत ही सुंदर बगीचा था, जो हर तरह के रंग-बरिंगे और सुगंधति पौधों से भरा हुआ था। इस बगीचे में, उसके यातना के लिए एक भव्य रूप से सजी हुई खाट लगाई गई थी, और उस पर यह पवत्रि शहीद, दार्शनकि, हाथ-पैरों में बंधा हुआ लेटा हुआ था। अपने पास आई अपनी व्यभचिारणिी पत्नी के मोहक और नरि्लज्ज शब्दों को सुनकर, उस वीर शहीद ने उससे नज़रें न मलिाने के लिए अपनी आँखें बंद कर लीं; लेकनि वह अपनी पलकों या कानों को ढक नहीं सका, क्योंकि वह बंधा हुआ था और इसलिए इसके बारे में कुछ भी करने में असमर्थ था। तो उन्होंने यह कयिा। अपनी जीभ को दाँतों से काटकर और स्वयं को बहुत दर्द पहुँचाकर, उस दर्द ने उन्हें यह सुनने से रोक दयिा कि वह नरि्लज्ज महलिा उन्हें क्या फुसफुसा रही थी; और चूँकि वह अपनी नाक छुपा नहीं सकते थे, उन्होंने अपनी खून से लथपथ जीभ से उस अशुद्ध बस्तिर को भीगा दयिा, अपने कपड़ों को खून से बुरी तरह रँग दयिा, और इस प्रकार प्रलोभन से अछूते रहे। यह बहादुर शहीद द्वारा कयिा गया पराक्रम था, फरि भी वह अपने यातनाकर्ता के आगे नहीं झुका। इसके बाद, उसका सरि काट दयिा गया[4007] , और अब वह स्वर्ग में अनंतकाल तक आनंदति है[4008] ।

14 जून

1 जून (पुराने कैलेंडर के अनुसार)

संत जस्टनि द फलिॉसफर का जीवन और शहादत

1 जून को स्मरणोत्सव

मसीह के पवत्रि शहीद, दार्शनकि जस्टनि का जन्म फलिस्तीनी सीरयिा में, सामरयिा की सीमाओं के भीतर, एक शहर में हुआ था जसिे मूल रूप से शेchem कहा जाता था, और बाद में[4009] नेपोलसि फ्लावयिस[4010] कहा जाने लगा। उनके पतिा, जनिका नाम प्रस्किस था, एक प्रतष्ठिति मूर्तपिूजक थे; जस्टनि स्वयं भी तब तक मूर्तपिूजक थे जब तक कि उन्हें पवत्रि वशि्वास के प्रकाश से ज्ञान नहीं मलिा। सत्य के प्रति प्रेम से प्रेरति होकर, वे अपने युवा काल से ही वदि्वतापूर्ण अध्ययन में समर्पति थे और अपनी तीव्र बुद्धि के कारण, ग्रीक मूर्तपिूजक स्कूलों में पढ़ाए जाने वाले वषियों में उत्कृष्टता प्राप्त की। वाक्पटुता की कला में महारत हासलि करने के बाद, उन्होंने दर्शन की ओर झुकाव

[4004] 'दार्शनकि' उनका वास्तवकि नाम नहीं है, और न ही इस संत से जुड़े अन्य नाम। उन्हें जस्टनि द फलिॉसफर के सम्मान में 31 मई को सूचीबद्ध कयिा गया है, जनिका पर्व दवित 1 जून को मनाया जाता है।

[4005] अलेक्जेंड्रयिा मस्रि का एक शहर है, जसिकी स्थापना सकिंदर महान ने नील नदी के मुहाने पर भूमध्य सागर के तट पर की थी।

[4006] यह, बेशक, सम्माननीय एंथनी महान की ओर इशारा करता है, जो मस्रि में मठवासी जीवन के संस्थापक थे। उनका पर्व दवित 17 जनवरी को मनाया जाता है।

[4007] पवत्रि शहीद दार्शनकि ने लगभग 252 ईस्वी में सम्राट डेसयिस के अधीन शहादत प्राप्त की।

[4008] पवत्रि शहीद दार्शनकि के कारनामों का वृत्तांत आदरणीय पॉल ऑफ थेब्स के जीवन चरति और उनके अपने जीवन चरति में अधकि वस्तिार से और अधकि स्पष्ट रूप से वर्णति है।

[4009] रोमनों द्वारा फलिस्तीन पर वजिय के बाद (ईसा की पहली शताब्दी)।

[4010] आज का नाब्लस।

महसूस कयिा और प्रारंभ में एक नश्चिति स्टोइक दार्शनकि[4011] के शष्यि बन गए, ताकि वे स्टोइक सद्धिांत को जान सकें। जस्टनि ईश्वर को समझने के लएि उत्सुक था, लेकनि, स्टोइक दार्शनकि के साथ कुछ समय बतिाने के बाद, उसे उससे ईश्वर के बारे में कुछ भी नहीं पता चला, क्योंकि स्टोइक ईश्वर को नहीं जानता था और ईश्वर के सद्धिांत को आवश्यक नहीं मानता था। तब जस्टनि इस शक्षिक को छोड़कर एक अन्य दार्शनकि, तथाकथति पेरपिैटेक्टकि[4012] , के पास गया, जन्हिें एक ऋषि माना जाता था। कुछ ही दनि बीते थे कि इस दार्शनकि ने मुफ्त में पढ़ाने के लएि अनचि्छुक होकर जस्टनि के साथ शुल्क पर बातचीत करनी शुरू कर दी। अपने शक्षिक की लालच देखकर, जस्टनि को उससे एक सट्टेबाज़ के रूप में घृणा हुई, और उसने तय कयिा कि यह शक्षिक दार्शनकि कहे जाने के भी योग्य नहीं था, क्योंकि वह सांसारकि धन के प्रति तिरिस्कार नहीं जानता था। उपरोक्त कारणों से स्टोइकों और पेरपिैटेटक्सि को अस्वीकार करने के बाद, जस्टनि, जो ईश्वर के ज्ञान की ओर ले जाने वाले सच्चे दर्शन की एक अपूर्व लालसा से प्रेरति था, अपने शक्षिक के रूप में एक प्रसद्धि पाइथागोरयिन दार्शनकि[4013] को चुनने वाला था। उनका मानना था कि जस्टनि को सबसे पहले खगोल वज्ञिान, ज्यामति, अंकगणति, संगीत और कुछ अन्य वज्ञिानों का अध्ययन करना चाहएि, जन्हिें वे सांसारकि जीवन के लएि आवश्यक मानते थे। लेकनि जस्टनि ने तर्क दयिा कि इन वज्ञिानों में महारत हासलि करने में कई साल लग जाएँगे, जबकि उनका आत्मा को कोई लाभ नहीं होगा; क्योंकि इस शक्षिक से भी उसे कुछ ऐसा नहीं मलिा जसिसे उसके हृदय की उस इच्छा की तृप्ति हो सके, जो दनि-प्रतदिनि दव्यि प्रेम से और अधकि उत्कट होती जा रही थी, जस्टनि ने उसे भी छोड़ दयिा। फरि वह प्लेटोनस्टि्स में से एक[4014] की ओर मुड़ा, जनिकी शक्षिाओं को उन दनिों में बहुत सम्मान और आदर प्राप्त था; उस प्लेटोनकि दार्शनकि ने उसे मूर्त वस्तुओं के समानुपात के माध्यम से अमूर्त वस्तुओं का ज्ञान, नम्नि ज्ञान के समानुपात के माध्यम से उच्च ज्ञान, और वचिारों की समझ के माध्यम से ईश्वर की समझ सखिाने का वादा कयिा – क्योंकि इस प्लेटोनकि शक्षिा का कथति चरमोत्कर्ष वचिारों के ज्ञान से ईश्वर की समझ में संक्रमण था। धन्य जस्टनि ने अपनी आकांक्षाओं के उद्देश्य - दव्यि ज्ञान, जो ईश्वर का ज्ञान प्रदान करता है और मनुष्य को उसकी कृपा से भर देता है - को प्राप्त करने की आशा में इस मार्ग पर सहर्ष कदम रखा। वे अपने प्लेटोनकि शक्षिक के साथ काफी समय तक रहे, प्लेटो के सद्धिांतों और उपदेशों में शीघ्रता से पारंगत हो गए, और एक , हेलेनकि दार्शनकि के रूप में पूर्णता और ख्याति प्राप्त की। फरि भी जस्टनि इस मार्ग से ईश्वर के बारे में सच्चा ईसाई ज्ञान प्राप्त नहीं कर सके, क्योंकि यूनानी दार्शनकि, जो नश्वर मनुष्यों, पक्षयिों, चौपायों और सरीसृपों के नश्वर रूपों में अमर ईश्वर की पूजा करते थे, उन्होंने उनकी उतनी महमिा नहीं की जतिनी वे इसके हकदार थे। फरि भी, जस्टनि को ईश्वर पर ध्यान लगाने और ईश्वर के ज्ञान का अध्ययन करने में कुछ आध्यात्मकि सांत्वना मलिी, उस हद तक जहाँ तक उसका मन—जो अभी तक सच्ची शक्षिा से प्रबुद्ध नहीं हुआ था—इसे समझ सकता था।

एक दनि, जब जस्टनि शहर के बाहर समुद्र के पास एक सुनसान जगह पर टहल रहे थे और अपने मन में वभिन्नि दार्शनकि शक्षिाओं पर वचिार कर रहे थे, तो उन्होंने एक सम्माननीय बूढ़े व्यक्ति को देखा, जो उन्हें अज्ञात था और जसिके बाल उम्र के कारण सफेद हो गए थे। जैसे ही उन्होंने उस बूढ़े व्यक्ति को ध्यान से देखा, उस व्यक्ति ने कहा:

'क्या तुम मुझे जानते हो, कि तुम मुझे इतनी ध्यान से देख रहे हो?'

जस्टनि ने उत्तर दयिा, 'मैं आपको नहीं जानता, लेकनि मैं आपको इस सुनसान जगह पर देखकर हैरान हूँ, जहाँ मुझे कसिी से मलिने की उम्मीद नहीं थी।'

'मेरे प्रयिजन,' बूढ़े ने कहा, 'उस तरफ़ गए हैं; उनके लौटने का इंतज़ार करते हुए, मैं उनसे मलिने बाहर आया हूँ, ताकि मैं उन्हें दूर से देख सकूँ। और आप यहाँ क्या कर रहे हैं?'

जस्टनि ने उत्तर दयिा:

'मुझे एकांत में टहलना पसंद है ताकि मैं बनिा कसिी बाधा के दर्शन पर चंतिन कर सकूँ।'

'तुम्हें दर्शनशास्त्र से क्या लाभ मलिता है?' बूढ़े ने पूछा।

[4011] स्टोइकज्मि के संस्थापक ज़ेनो (3वीं शताब्दी ईसा पूर्व) थे; यह मुख्य रूप से एक व्यावहारकि वचिारधारा थी और इसका उद्देश्य जीवन की सभी परस्थितियिों में वासनाओं पर नयिंत्रण और समत्वभाव सखिाना था।

[4012] पेरपिैटेक्टकि – अरस्तू (चौथी शताब्दी ईसा पूर्व) के अनुयायी; उन्होंने सखिाया कि सभी ज्ञान का स्रोत अनुभव है।

[4013] पाइथागोरस (5वीं शताब्दी ईसा पूर्व) की शक्षिाओं का स्वरूप, पाइथागोरयिन जस्टनिस द्वारा दी गई नर्दिेशों से स्पष्ट होता है।

[4014] प्लेटो (चौथी शताब्दी ईसा पूर्व) ने ईश्वर, सत्य और सद्भाव जैसी जन्मजात अवधारणाओं, आत्मा के स्वतंत्र अस्तत्वि आदि को स्वीकार कयिा। उनकी शक्षिाएँ अन्य प्राचीन दार्शनकि सद्धिांतों की तुलना में ईसाई धर्म के अधकि करीब हैं।

जस्टनि ने उत्तर दयिा:

'दर्शन से अधकि उपयोगी और क्या हो सकता है? यह मन का प्रबोधक है, सभी तर्क का मार्गदर्शक और गुरु है, जीवन का नर्दिेशक है; जो कोई भी इसे अच्छी तरह से जान लेता है, वह दूसरों के अज्ञान और भूल को, जैसे आईने में, देखता है; दार्शनकि शक्षिा और ववेक के उचति उपयोग के बनिा, ज्ञान का अस्तत्वि नहीं हो सकता। इसलए, प्रत्येक व्यक्तकिो दर्शनशास्त्र का अध्ययन करना चाहए, ताकवि ह जान सके कक्या लाभदायक है और क्या नहीं, कसि चीज़ को अपनाना चाहए और कसि चीज़ को अस्वीकार करना चाहए।

'लेकनि क्या दर्शनशास्त्र कसिी व्यक्तकिो खुशी देता है?' बुजुर्ग ने पूछा।

जस्टनि ने उत्तर दयिा:

'बेशक, यह लाती है।

'तो मुझे बताइए, दर्शन क्या है, और यह कसि प्रकार खुशी लाता है?'

जस्टनि ने उत्तर दयिा, 'दर्शन, जो कुछ भी अस्तत्वि में है उसकी समझ और सत्य का ज्ञान है; और दर्शन से मलिने वाली खुशी ठीक उसी समझ और बुद्धकि े स्वामत्वि में नहति है।'

वरष्ठि ने पूछा:

'यदसित्य को सही दार्शनकि समझ के माध्यम से जाना जाता है, तो आप ईश्वर के बारे में क्या कहते हैं?'

जस्टनि ने उत्तर दयिा:

'एक ऐसा अस्तत्वि जो कभी नहीं बदलता, बल्कहिमेशा एक ही अवस्था में रहता है, सभी अस्तत्वि का पहला कारण – इस तरह मैं ईश्वर की कल्पना करता हूँ।'

वरष्ठि इस उत्तर से प्रसन्न हुए, और उन्होंने अपने प्रश्न जारी रखे:

'क्या सभी अस्तत्वियों के आधार में एक ही सामान्य बुद्धहि ै? क्योंकहिम कसिी भी कला में नपिुण व्यक्तकिे बारे में कहते हैं कवि ह उस कला को समझता है: चाहे वह सर्वेक्षण हो, नौवहन हो या चकित्सिा; क्या दव्यि और मानवीय दोनों ही अन्य चीजों के संबंध में भी ऐसा ही नहीं है?' मुझे यह भी बताओ: क्या ऐसा कोई मन है जसिसे दैवी और मानवीय दोनों बातों का ज्ञान उत्पन्न होता है?

– हाँ, है, – जस्टनि ने उत्तर दयिा।

'क्या ईश्वर को समझना और संगीत, अंकगणति, खगोल वज्ञिान, या इस तरह की कसिी भी चीज़ को समझना, एक ही बात है?'

'बल्कुिल नहीं। ईश्वर को समझना एक बात है, और कसिी भी कला को जानना एक बल्कुिल दूसरी बात है।'

'आपने अच्छा उत्तर दयिा,' वृद्ध ने कहा, 'कुछ ज्ञान हम या तो सुनने और सखिाए जाने से प्राप्त करते हैं या कसिी वस्तु को अपनी आँखों से देखने से। उदाहरण के लए, यदकिोई आपको बताए कभिारत में एक ऐसा जानवर है, जो कसिी अन्य जानवर के समान नहीं है, बल्कअिपनी वभिन्नि वशिेषताओं में उनसे पूरी तरह से अलग है – तो अपनी आँखों से उसे देखे बनिा, आप उसके बारे में नहीं जान सकते, और स्वयं इस जानवर का वृत्तांत सुने बनिा, आप कसिी दूसरे व्यक्तकिो इसके बारे में नहीं बता सकते। तो अब मैं आपसे पूछता हूँ: आपके हेलेनकि दार्शनकि ईश्वर को सही ढंग से कैसे समझ सकते हैं और उसके बारे में कुछ भी सच्चा कैसे कह सकते हैं, यदउिन्होंने उसे कभी देखा नहीं है, कभी उसके बारे में सुना नहीं है और, परणिामस्वरूप, उन्हें उसके बारे में बल्कुिल भी कोई ज्ञान नहीं है?

जस्टनि ने उत्तर दयिा:

'पता! दव्यि शक्तकिो भौतकि आँखों से नहीं देखा जा सकता, जैसे कोई व्यक्तपिृथ्वी पर जीवति प्राणयिों को देखता है; परन्तु ईश्वर को केवल मन से ही समझा जा सकता है, जैसा प्लेटो कहते हैं, जनिकी शक्षिाओं का मैं अनुसरण करता हूँ।'

वरष्ठि ने पूछा:

– क्या हमारे मन के भीतर ऐसी गुणों वाली और इतनी शक्तशिाली कोई शक्तनिहीं है, जसिके द्वारा हम अपनी शारीरकि इंद्रयिों से कसिी भी वस्तु को जानने की अपेक्षा अदृश्य को अधकि सहजता से समझ सकें?

जस्टनि ने उत्तर दयिा:

'नस्सिंदेह, ऐसी शक्तहै; प्लेटो इसे मन की आँख कहते हैं, जो उनकी शक्षिा के अनुसार, मनुष्य को इस उद्देश्य के लए दी गई है कि ज्ञान की शक्षिा द्वारा शुद्ध और प्रबुद्ध होकर, वह स्वयं दव्यि सत्य का चतिन कर सके, जो

मन द्वारा समझी जाने वाली सभी चीजों का कारण है। हालांकि, इस सत्य का कोई निश्चित रूप नहीं है, न ही कोई समानता, न ही कोई आयु, न ही कोई ऐसी चीज़ जो भौतिक आँखों को दिखाई दे; बल्कि यह सभी प्राणियों से परे एक सत्ता है, अकल्पनीय, अतुलनीय, अच्छाई और सुंदरता का एक मिलन है; और यही वह सत्ता है जिसने, आरंभ से ही, महान आत्माओं में उसे जानने की इच्छा जगाई है—क्योंकि जब ऐसी आत्माएँ उसे जानती और उसका चिंतन करती हैं तो उसे आनंद होता है।

बुजुर्ग ऐसे शब्द सुनकर प्रसन्न हुए, फिर भी वे प्लेटो की शिक्षाओं पर आधारित जस्टिन के ईश्वर विषयक प्रवचन से पूरी तरह संतुष्ट नहीं थे, क्योंकि वे इसे ईसाई स्वीकारोक्ति की अनुपस्थिति के कारण अपूर्ण मानते थे; और, प्लेटो की असहमति व्यक्त करते हुए, उन्होंने कहा:

'यदि प्लेटो वही सिखाता है जैसा आप दावा करते हैं, तो उसने स्वयं ईश्वर की सच्चाई को जानने और समझने का प्रयास क्यों नहीं किया?' यह दावा करते हुए कि ईश्वर अदृश्य और अगम्य है, उसने दृश्य प्राणियों—आकाश, तारों, मनुष्य के रूप में तराशे गए पेड़ों और पत्थरों—की स्वयं ईश्वर के रूप में पूजा की; और, ईश्वर के सत्य को झूठ में बदलकर, उसने मूर्तिपूजा का अभ्यास किया और दूसरों को भी ऐसा करने का उपदेश दिया। मेरा मानना है कि प्लेटो और अन्य हेलेनिक दार्शनिकों के पास ईश्वर के सच्चे ज्ञान को प्राप्त करने में सक्षम सुदृढ़ तर्क नहीं था: *'वे अपने विचारों में व्यर्थ हो गए, और उनके मूर्ख हृदय अंधकारमय हो गए; बुद्धिमान होने का दावा करते हुए, वे मूर्ख बन गए'* (रोमियों 1:21–22)। संक्षेप में, मैं इसे इस प्रकार कहूँगा: मानव मन, जब तक पवित्र आत्मा द्वारा निर्देशित और विश्वास से प्रबुद्ध नहीं होता, तब तक वह परमेश्वर को जानने और समझने में पूरी तरह से असमर्थ है।

वरिष्ठ ने इसी संदर्भ में ईश्वर के सच्चे ज्ञान, ईश्वर की सच्ची उपासना और अन्य दैवीय विषयों के बारे में विस्तार से बात की, और हेलेनिक दार्शनिकों की त्रुटियों को उजागर किया। वरिष्ठ के शब्दों से चकित होकर, जस्टिन ने पूछा:

'तो फिर, सत्य सिखाने के लिए कोई ऐसा शिक्षक कहाँ और कैसा मिल सकता है, यदि प्लेटो या अन्य दार्शनिकों में कोई सत्य नहीं है?'

तब वृद्ध ने उनसे पवित्र भविष्यवक्ताओं के बारे में बताना शुरू किया, और कहा:

'सबसे प्राचीन काल में, किसी भी दार्शनिक से बहुत पहले, कुछ पवित्र पुरुष थे, जो धर्मी और परमेश्वर को प्रसन्न करने वाले थे; पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होकर, उन्होंने उस बात की भविष्यवाणी की जो अब घटित हो रही है, और इन पुरुषों को नबी कहा जाता है। केवल वही, किसी और से पहले, सत्य को जान पाए और, लोगों को इसका प्रचार करते हुए, न तो किसी के सामने उन्हें लज्जित होना पड़ा और न ही उन्होंने किसी से डर महसूस किया; कोई भी उन्हें एक शब्द के बराबर भी सत्य से भटका नहीं सका, और व्यर्थ की कीर्ति उन पर हावी नहीं हो सकी। उन्होंने उन प्रकटनों में ईश्वर से जो कुछ भी उन्होंने देखा या सुना था, उसके बारे में सरलता से, सत्यनिष्ठा से और निडर होकर बताया। उनके लेख आज भी मौजूद हैं; जो उन्हें श्रद्धा से पढ़ते हैं, उन्हें वे महान लाभ पहुँचाते हैं और सत्य के ज्ञान के लिए मन को प्रबुद्ध करते हैं। ये पवित्र नबी अपने शब्दों की पुष्टि sofistry या किसी भी प्रकार के sofistical[4015] तर्कों या युक्ति-वितर्क से नहीं करते, बल्कि साधारण भाषा में वे परम सत्य का उच्चारण करते हैं; क्योंकि वे स्वयं, सभी sofistical तर्कों को त्यागकर, सत्य के सबसे विश्वसनीय साक्षी हैं, जिन्होंने एक सच्चे ईश्वर में विश्वास किया है, जो सर्व का सृष्टिकर्ता है, और जिन्होंने अपने पुत्र, प्रभु मसीह के संसार में आगमन की भविष्यवाणी की। और इसमें कोई संदेह नहीं है कि भविष्यवक्ताओं पर विश्वास किया जाना चाहिए, क्योंकि उनकी कुछ भविष्यवाणियाँ पहले ही पूरी हो चुकी हैं, जबकि अन्य अब पूरी हो रही हैं। उन्होंने चमत्कारों के द्वारा अपनी कुछ भविष्यवाणियों की सच्चाई की भी पुष्टि की, परमेश्वर की कृपा से स्वर्ग से प्राप्त शक्ति द्वारा अद्भुत कार्य किए—ऐसा कुछ जो झूठे नबियों, जिन्हें परमेश्वर ने नियुक्त नहीं किया था, कभी पूरा नहीं कर सकते थे, बल्कि वे केवल कुछ दैवीय आकृतियों और धोखाधड़ियों से लोगों को डराते थे।

इस प्रकार जस्टिन से एक धन्य पुरुष ने कहा जिसे वह नहीं जानता था, और अंत में उसने उससे कहा:

'सबसे बढ़कर, सच्चे ईश्वर से मन लगाकर प्रार्थना करो, कि वह तुम्हारे लिए ज्ञान के द्वार खोल दे; क्योंकि केवल वही व्यक्ति जिसे ईश्वर स्वयं प्रकट होने के योग्य समझता है, वह दिव्य का चिंतन और समझ सकता है; और वह

[4015] सोफ़िस्टों ने चीज़ों के निश्चित ज्ञान की संभावना से इनकार किया और किसी भी कथन, यहाँ तक कि एक झूठे कथन को भी, साबित करने में लग गए। इसलिए 'सोफ़िज़्म' शब्द आया - एक गलत पूर्वधारणा से निकाला गया सही निष्कर्ष।

स्वयं को हर उस व्यक्ति के सामने प्रकट करता है जो प्रार्थना के द्वारा उसकी खोज करता है और प्रेम में उसके समीप आता है।'

यह कहकर, वह वृद्ध उससे वदिा हो गए और अदृश्य हो गए; जस्टनि फरि कभी, कहीं भी, इस व्यक्ति को खोज या देख नहीं पाया। वृद्ध के जाने के बाद अपनी हृदय की भावनाओं के बारे में, जस्टनि ने स्वयं, प्रसद्धि यहूदी ट्रायफोन से बातचीत में, इस प्रकार बताया:

'मेरे भीतर एक अग्नि प्रज्वलति हो उठी, जसिने मेरी आत्मा को ईश्वर की लालसा से भर दयिा, और पवत्रि भवष्यिवक्ताओं तथा मसीह के मत्रिों के प्रति मेरा प्रेम मेरे भीतर बढ़ गया।' उस वृद्ध के शब्दों पर मनन करने पर, मुझे एहसास हुआ कि जिसि दर्शन की उन्होंने घोषणा की थी, वह ही एकमात्र सच्चा दर्शन था; मैंने भवष्यिवाणी करने वाली और प्रेरतिों की पुस्तकें पढ़ना शुरू कर दयिा, और उनके माध्यम से मैं वास्तव में एक दार्शनकि बन गया—अर्थात्, एक सच्चा ईसाई।

बाद में ट्रायफ़ोन को अपने बारे में यह सब बताने के बाद, धन्य जस्टनि ने यह भी याद कयिा कि ईश्वर की ओर उनका रूपांतरण कैसे शुरू हुआ था, जब एक अज्ञात व्यक्ति ने—मानो स्वर्ग से भेजा गया हो—उन्हें सही मार्ग पर मार्गदर्शन दयिा था।

ईश्वर-प्रेरति वृद्ध के साथ एक आत्मा-स्पर्शी वार्तालाप के बाद, जस्टनि तुरंत ईसाई लेखों की ओर मुड़ गए और, हार्दकि भक्ति के साथ, दव्यि धर्मग्रंथों को पढ़ना शुरू कर दयिा। उन्होंने सबिलिों की प्राचीन भवष्यिवाणयिों[4016] की तुलना पवत्रि भवष्यिवक्ताओं की उन भवष्यिवाणयिों से की जो परम पवत्रि कुँवारी से मसीह के अवतार, उनकी स्वैच्छकि पीड़ाओं, भवष्यि के न्याय, और दृश्यमान संसार के अंत के बारे में थीं; दोनों के बीच पूर्ण सामंजस्य को देखते हुए, वह चकति रह गया, और धीरे-धीरे, पवत्रि आत्मा द्वारा आंतरकि रूप से नरि्देशति होकर, परमेश्वर और परमेश्वर के पुत्र के अधकि पूर्ण ज्ञान पर पहुँचा। दनि-प्रतदिनि, उसकी आत्मा में धर्मपरायणता की लालसा और प्रबल होती गई, और, ईसाई धर्म की ओर मुड़कर, उसने अपने भीतर यूनानयिों की मूर्खता की नदिा की। उस समय, ईसाई धर्मपरायणता के लिए प्रयासरत आत्मा के अच्छे इरादों में एक बड़ा बाधा ईसाइयों का बार-बार और क्रूर उत्पीड़न था, साथ ही कई अपमानजनक, मूर्तपिूजकों द्वारा ईसाइयों पर झूठे रूप से लगाए गए दुष्चारत्रि्य के बारे में कई अपमानजनक, लज्जास्पद और पूरी तरह से बेतुके नदिात्मक आरोप थे – मानो वे अपनी रात्रि (प्रार्थना) सभाओं में, अपने दीपक बुझाकर, एक साथ शुद्धता की रोशनी को भी बुझा देते थे, एक-दूसरे को अशुद्धता से कलंकति करते थे, और, जानवरों की तरह, मानव मांस खाते थे। इस प्रकार और इसी तरह के घृणति अपमानजनक आरोपों से, मूर्तपिूजकों और यहूदयिों ने सभी राष्ट्रों के सामने नरि्दोष ईसाइयों को बदनाम कयिा। दुष्टों और पागलों की झूठी बातों को सच मान लयिा जाता था; और सभी अवश्विासयिों ने धर्मी और पवत्रि लोगों—ईसाइयों से—नफ़रत की, उन्हें तुच्छ समझा, उनकी अवहेलना की और उनसे ऐसे परहेज़ कयिा मानो वे बड़े अपराधी हों जो गंभीर पापों के दोषी हों, और ईसाइयों को अनेक और ववििधि प्रकार की यातनाओं के बाद मृत्युदंड दे दयिा। इन परस्थितियिों ने शुरू में जस्टनि को ईसाइयों में शामलि होने के उसके इरादे में बाधा डाली; फरि भी उसने उन पर लगाए गए आरोपों पर अधकि भरोसा नहीं कयिा, यह अच्छी तरह जानते हुए कि अक्सर, लोगों के तर्कहीन नरि्णय में, नरि्दोषों को दोषी ठहराया जाता है, पवत्रिों को भ्रष्ट के रूप में बदनाम कयिा जाता है, और धर्मी को पापी माना जाता है। हालाँकि, यह देखकर कि ईसाई अदालत में नडिर होकर जवाब देते थे, बहादुरी से अपने यातनाओं को सहते थे, इस दुनयिा की सभी दृश्यमान वस्तुओं को भूसी की तरह तुच्छ समझते थे, अपने प्रभु के लिए स्वेच्छा से यातनाएँ सहते थे, और मृत्यु को एक दावत की तरह देखते थे, जस्टनि ने अपने मन में वचिार कयिा:

'ईसाइयों के बारे में जो कहा जाता है, वह सच नहीं है, कि वे ऐसी अराजकता करते हैं: एक पापी, जो अनयिंत्रति कामुक सुखों में डूबा होता है और वासना के कारण मानव मांस खाता है, यातना सहन नहीं कर सकता, स्वेच्छा से घावों को नहीं झेलता, बल्कि उनसे बचता है; और जब कसिी अदालत के सामने लाया जाता है, तो वह हर संभव तरीके से भागने की कोशशि करता है और सज़ा से बचने के लिए कोई कसर नहीं छोड़ता, ताकि वह फरि पीड़ा-रहति जीवन जी सके और, अच्छे स्वास्थ्य का आनंद लेते हुए, अपनी कामुक इच्छाओं में और भी अधकि लप्ति हो सके। ईसाई ऐसे नहीं हैं: मसीह के लिए,

[4016] सबिलिं यूनानयिों और रोमनों के बीच भवष्यि की महलिा भवष्यिवक्ता थीं। उनके द्वारा बताई गई भवष्यिवाणयिाँ उद्धारकर्ता के सांसारकि जीवन की वभिन्नि परस्थितियिों का स्पष्ट रूप से वर्णन करती हैं।

जनि पर वे वशि्वास करते हैं, दुख सहने का स्वेच्छा से चुनाव करके, और जीवन से मृत्यु को श्रेष्ठ मानकर, वे पाप से इतनी अधकि मात्रा में प्रेम कैसे कर सकते हैं?

इस प्रकार तर्क करते हुए, उसने ईसाइयों के जीवन के बारे में पूरी जाँच-पड़ताल की और पूरी तरह से आश्वस्त हो गया कि वे प्रभु के भय में, शुद्ध और नरि्दोष जीवन जीते हैं; कि वे अपनी पवत्रिता का सावधानीपूर्वक संरक्षण करते हैं; कि वे उपवास और संयम के द्वारा लगातार अपने शरीर को वश में रखते हैं; कि वे अक्सर प्रार्थना करते हैं; और कि वे हमेशा हर अच्छा काम करते हैं। इन सब बातों से आश्वस्त होकर, जस्टनि ने पूरे दलि से ईसाइयों से गहरा प्रेम कयिा, उनसे जुड़ गए, और पवत्रि बपतस्मिा ग्रहण कयिा। और वह ईसाई धर्म का एक महान समर्थक, यूनानयिों और यहूदयिों के वरिुद्ध वचन और धर्मग्रंथ के साथ लड़ने वाला, मसीह का एक अजेय योद्धा, और एक दृढ़ तथा साहसी तपस्वी बन गए।

[4017]मानव आत्माओं को बचाने के लिए उत्सुक, वह वभिन्नि देशों में घूमे: उन्होंने मसीह के नाम पर उपदेश दयिा और प्रचार कयिा, अवशि्वासयिों को उनकी भूल से हटाकर ईश्वर की ओर मोड़ा। वह एक दार्शनकि के रूप में रोम भी आए – एक दार्शनकि के वेश में, अपने शष्यिों के साथ। क्योंकि शकि्षा के लिए बड़ी संख्या में लोग उनके पास आते थे, उन्होंने स्कूल स्थापति कयि और धर्मनरिपेक्ष ज्ञान के आवरण में, सच्चा ईसाई दर्शन सखिाया। वहाँ मार्सयिोन[4018] से मलिने पर, जो एक वधिर्म का संस्थापक था, उन्होंने उसका जोरदार वरिोध कयिा, उसका खंडन कयिा और उसके वधिर्मों के साथ-साथ अन्य वधिर्मी शकि्षाओं के खलिाफ पुस्तकें लखिीं। रोम में भी, एक नश्चिति पैगन साइनीक दार्शनकि[4019] , क्रसि्पस थे, जो ईसाइयों के बड़े शत्रु थे; इस अधर्मी दार्शनकि के वरिुद्ध, सच्चे ईसाई दार्शनकि संत जस्टनि ने वचन से अनवरत संघर्ष कयिा और उनके वरिुद्ध पुस्तकें लखिीं। यह साइनकि, जो स्वयं एक अशुद्ध और पूरी तरह से कानूनहीन जीवन जीता था, ईसाइयों से उनके ईश्वर के अनुसार पवत्रि जीवन के कारण घृणा करता था और जस्टनि की अच्छी प्रतषि्ठा से ईर्ष्या करता था, जो अपनी दैवीय प्रेरति बुद्धमित्ता और शुद्ध, नरि्दोष जीवन के लिए सभी रोमनों के बीच सम्मानजनक ख्याति का आनंद लेता था। अपनी दुर्भावना में, उस साइनकि ने लोगों की नजरों में जस्टनि और उसके साथी वशि्वासयिों को बदनाम करने और उनके प्रति घृणा पैदा करने के लिए, ईसाइयों पर कई शर्मनाक कृत्यों का आरोप लगाते हुए उनकी बदनामी की। यह सुनकर और देखकर, संत जस्टनि ने कहा:

'मैं मसीह के वशि्वास के लिए दुख सहने और अवशि्वासयिों के हाथों मृत्यु का सामना करने के लिए तैयार हूँ; और मेरा मानना है कि मेरी मृत्यु इसी साइनकि, क्रसिैन्स के हाथों होगी—एक पागल जो ज्ञान से अधकि अहंकार से प्रेम करता है, और जो दार्शनकि की उपाधि का अयोग्य है, क्योंकि वह उस बात का दावा करने की हम्मित करता है जसिे वह वास्तव में नहीं जानता, अर्थात् कि ईसाई अधर्मी (जनिका कोई ईश्वर नहीं है) हैं और कई अशुद्ध और गैर-कानूनी कृत्य करते हैं; इस प्रकार वह हम पर घृणा और द्वेष के कारण अपमान करता है, और वह सामान्य लोगों से भी बदतर है, क्योंकि वे उन चीजों के बारे में बोलने का अनुमान नहीं लगाते जनि्हें वे नहीं जानते।

उस समय, रोम में हैड्रयिन के उत्तराधकिारी, एंटोननिुस[4020] का शासन था। एंटोननिुस स्वयं ईसाइयों के प्रति कोई द्वेष नहीं रखता था; हालाँकि, पछिले सम्राटों के फरमानों के कारण, लोगों पर शासन करने वाले अधर्मी मूर्तपिूजकों ने ईसाइयों से अत्यधकि घृणा और उनकी संपत्ति लूटने की लालच के कारण उनका उत्पीड़न कयिा और उन्हें मार डाला; और ईसा मसीह के नाम का प्रचार करने के लिए नहीं, बल्कि अनेक अपराधों के झूठे और बदनाम करने वाले आरोपों के आधार पर वशि्वासयिों को मुकदमे में लाया जाता था, गढ़े गए अपमानों के आधार पर उनसे पूछताछ की जाती थी, और वभिन्नि तरीकों से उन्हें मृत्युदंड दयिा जाता था। उस समय, रोम में नम्निलखिति घटना घटी: एक नश्चिति मूर्तपिूजक महलिा, जो एक अनैतकि जीवन जी रही थी, ने ईसाइयों से सच्चे परमेश्वर का वचन और पवत्रि जीवन, धर्मी लोगों के लिए

[4017] रोम – रोमन साम्राज्य की राजधानी, मध्य इटली में टबिर नदी के दोनों कनिारों पर, उसके मुहाने पर स्थति है, जहाँ यह समुद्र में मलिती है।

[4018] मार्सयिन संप्रदायकि नोस्टकिों से संबंधति था और उसने यह सखिाया कि दृश्यमान संसार ईश्वर द्वारा नहीं बल्कि उसकी नम्नितर शक्तियिों द्वारा बनाया गया था; उसने पुराने नयिम को अस्वीकार कर दयिा।

[4019] कनिीक (जनिके संस्थापक चौथी शताब्दी ईसा पूर्व में एंटस्थिनीज़ थे) ने जीवन में सादगी के सद्धिांत को चरम तक ले जाकर वज्ञिान, कला और सभी बाहरी संस्कृति को अस्वीकार कर दयिा।

[4020] संत जस्टनि की दो क्षमायाचनाएँ ज्ञात हैं: पहली, जो 150 ईस्वी से पहले नहीं लखिी गई थी और जसिमें 68 अध्याय हैं, में उन्होंने ईसाइयों के लिए सम्राट एंटोननिस की सुरक्षा सुनश्चिति करने का प्रयास कयिा; दूसरी (लगभग 162 ईस्वी में लखिी गई) में उन्होंने मार्कस ऑरेलयिस को ईसाइयों के प्रति अधकि उदार व्यवहार करने के लिए मनाने का प्रयास कयिा। अपने 'अपोलाजीज़' में, जस्टनि द फलिॉसफर 'अन्यायपूर्वक घृणति और सताए गए ईसाइयों की ओर से' बोलते हैं।

पुरस्कार और पापियों के लिए यातना के बारे में शिक्षा सुनी, और वह अपने हृदय में प्रेरित होकर मसीह में विश्वास करने लगी। उसने हर संभव तरीके से अपने पति—जो एक कामुक अशुद्धि में डूबा हुआ उत्साही मूर्तिपूजक था—को संयम के जीवन की ओर मार्गदर्शन करने और सच्चे धर्म की ओर ले जाने की उम्मीद में मनाने की कोशिश की। हालाँकि, जब उसने देखा कि वह उसे सुधारने में पूरी तरह से असमर्थ थी, तो उसने उससे अपना विवाह समाप्त करने का एक तरीका खोजा, ताकि वह अब उसके साथ न रहे या उसकी अशुद्धता से अशुद्ध न हो। उसके पति ने, यह जानकर कि किसी ईसाई ने उसकी पत्नी को ईसाई धर्म की शिक्षा दी थी, उस ईसाई की शिकायत करने के लिए राज्यपाल के पास गया, जिसका नाम टॉलेमी था। मसीह के सेवक टोलेमी को गिरफ्तार कर लिया गया, उसे लंबे समय तक एक बदबूदार कालकोठरी में रखा गया और मुकदमे के बाद, राज्यपाल ने उसे मृत्युदंड की सजा सुनाई। इस अन्यायपूर्ण मुकदमे के दौरान, ल्यूक नाम का एक व्यक्ति वहाँ खड़ा था, और जब उसने देखा कि धन्य टोलेमी को गलत तरीके से दोषी ठहराया गया है, तो उसने अन्यायपूर्ण न्यायाधीश से कहा:

'गवर्नर, आप एक ऐसे व्यक्ति को मृत्युदंड क्यों दे रहे हैं जो मृत्यु का दोषी नहीं है? वह न तो व्यभिचारी है, न बलात्कारी, न हत्यारा, न चोर, न डकैत, और न ही उस पर किसी अन्य अपराध का आरोप है। उसका एकमात्र अपराध यह है कि उसने स्वयं को एक ईसाई घोषित किया है।'

वक्ता को धमकी भरी नज़रों से देखते हुए, राज्यपाल ने गुस्से से पूछा:

'और क्या आप स्वयं उन ईसाइयों में से नहीं हैं?'

लूका ने उत्तर दिया:

'हाँ, मैं एक ईसाई हूँ।'

तब राज्यपाल ने आदेश दिया कि उसे भी मौत की सज़ा दी जाए। एक तीसरा व्यक्ति, जो इन दो ईसाइयों का मित्र था, उनके साथ शामिल हो गया, और सार्वजनिक रूप से खुद को ईसाई घोषित कर दिया; और तीनों ने मसीह के लिए अपनी जान दे दी।

धन्य जस्टिन, संतों की इस अन्यायपूर्ण हत्या के बारे में जानकर, दुःख से भर गए; उन्होंने ईसाइयों की बेगुनाही को साबित करते हुए एक ग्रंथ, या अपोलोजी[4021] , लिखा और उसे राजा, उनके बेटों और पूरी सीनेट को प्रस्तुत किया, जो मसीह के लिए यातना और मृत्यु सहने के लिए निडर थे। राजा ने इस पांडुलिपि को ध्यान से पढ़ा, वह इस ईसाई दार्शनिक की बुद्धिमत्ता से चकित रह गया, और न केवल उसने उससे कोई आपत्ति नहीं की या उसे मृत्युदंड नहीं दिया, बल्कि उसने उसकी बुद्धि की प्रशंसा भी की। इस पांडुलिपि में, जस्टिन ने मूर्तिपूजक देवताओं की मिथ्याता उजागर की, मसीह की सर्वशक्तिमानता को स्पष्ट रूप से प्रदर्शित किया, यह साबित किया कि मसीहियों पर लगाए गए आरोप झूठे थे, और उनका जीवन पवित्र और धर्मी था। दया से प्रेरित होकर, सम्राट ने आदेश दिया कि ईसाइयों को मसीह के नाम का प्रचार करने के लिए यातना न दी जाए, और न ही उनकी संपत्ति लूटी जाए, सिवाय उन मामलों के जो वास्तव में निंदा और मृत्युदंड के पात्र हों।

संत जस्टिन ने इस शाही फरमान को दर्ज किया; सम्राट द्वारा रिहा किए जाने के बाद, वह सम्राट की अनुमति से एशिया के लिए रवाना हो गए, जहाँ उस समय ईसाइयों पर विशेष रूप से अत्याचार किया जा रहा था। एक दार्शनिक के वस्त्र पहनकर, जो उन्होंने अपनी मृत्यु तक पहनना जारी रखा, जस्टिन एफेसस पहुँचे[4022] , उन्होंने सभी को राजा के फरमान की घोषणा की और उसकी व्याख्या की, और इसे आसपास के क्षेत्रों और शहरों में भेज दिया। मसीह की कलीसिया में शांति लौट आई; कुछ समय के लिए उत्पीड़न बंद हो गया, और विश्वासियों ने बहुत आनंद मनाया। एफ़िसुस में रहते हुए, संत जस्टिन ने सबसे विद्वान यहूदी रब्बी, ट्रायफोन के साथ एक बहस में भाग लिया और पुराने नियम के

[4021] ये वीर पुरुष, जो दूसरी और तीसरी शताब्दी में ईसाइयों के कड़े उत्पीड़न के दौरान ईसाइयों के साहित्यिक रक्षकों और मूर्तिपूजा के निंदकों के रूप में रोमन सरकार और समाज के सामने उपस्थित हुए, चर्च के इतिहास में 'अपोलॉजिस्ट' - यानी, रक्षक - के रूप में जाने जाते हैं, जबकि उनके लेखन को सामूहिक रूप से 'अपोलॉजी' कहा जाता है। ईसाई चर्च के इतिहास में निम्नलिखित धर्मरक्षकों को जाना जाता है: पूर्व में: अरिस्टिडीज़, कोड्रैटस, सार्डिस के बिशप मेलिटिन, टाटियन, एथेनोजेनेस, मिल्टियाडेस, सेंट थियोफिलस, एंटिओक के बिशप; पश्चिम में: मिनुसियस फेलिक्स, क्वाड्रेटस सेप्टिमियस टर्तु□□□□यन, अर्नोबियस, लैक्टैंटियस और सेंट साइप्रियन, कारथेज के बिशप

[4022] एफ़िसुस – एशिया माइनर में एशिया प्रांत का प्रमुख शहर; काइस्टर नदी पर स्थित। आज, प्राचीन शहर एफ़िसुस के स्थल पर, सेसिया-सेलुक नामक एक गरीब तुर्की गाँव है।

धर्मग्रंथों का हवाला देते हुए वजियी रहे; इस बहस का, साथ ही उपरोक्त 'अपोलॉजी' का, एक वस्तृत ववरण जस्टनि की पुस्तक '[4023] ' में मलिता है।

एफ़सिस में काफी समय बताने के बाद, वह एक बार फरि इटली लौट आए और प्रेरतिों के उदाहरण का अनुसरण करते हुए, रास्ते में हर जगह मसीह का उपदेश दयिा, बहस के माध्यम से यहूदयिों और यूनानयिों को पवत्रि धर्म में परविर्तति कयिा, और उसमें वश्विासयिों को मजबूत कयिा। जब वह रोम पहुँचा, तो उपर्युक्त हेलेनकि दार्शनकि क्रसिैन्स, जो एक काइनकि था, ने उसके खलिाफ सबसे तीव्र घृणा और सबसे बड़ी दुर्भावना के साथ मोर्चा संभाला; संत जस्टनि अक्सर उसके साथ बहस में शामलि होते थे, और हमेशा उसे हराकर सभी के सामने उसे शर्मदिा कर देते थे। जस्टनि का सामना करने में असमर्थ और यह नहीं जानते हुए कि और क्या करें, दुर्भावनापूर्ण क्रसिैन्स ने रोमन अदालत में उस पर कई झूठे आरोप लगाए। संत को गरिफ्तार कर लयिा गया और, दंड के पात्र के रूप में, मुकदमे के दौरान उसे बेड़यिों में जकड़कर यातना दी गई; फरि भी उसमें कोई दोष नहीं पाया गया। हालाँकि, वह ईर्ष्यालु व्यक्ति इस डर से कि जस्टनि को रहिा कर दयिा जाएगा, उसने गुप्त रूप से एक घातक जहर तैयार कयिा, जसिके द्वारा उसने धोखे से मसीह के इस अजेय योद्धा का जीवन ले लयिा।

इस प्रकार सच्चे ईसाई दार्शनकि, संत जस्टनि,[4024] , का नधिन हो गया, जन्हिोंने अपने पीछे कई रचनाएँ छोड़ीं, जो मसीह की कलीसयिा के लिए अत्यंत लाभकारी और पवत्रि आत्मा की बुद्धि से परपिूर्ण हैं[4025] । प्रभु मसीह, शहादत के दाता, के समक्ष उपस्थति होकर, उन्होंने उनसे पीड़ा का मुकुट प्राप्त कयिा और पवत्रि त्रमिूर्ति—पति, पुत्र और पवत्रि आत्मा—की अनंतकाल तक महमिा करने वाले पवत्रि शहीदों में गनि गए। आमीन।

कॉन्टाकयिन, स्वर 2:

हे जस्टनि, आपके दैवी वचनों की बुद्धि से, परमेश्वर की संपूर्ण कलीसयिा सुसज्जति होती है, और आपकी जीवन-करिणों से संसार प्रकाशति होता है: आपने अपने रक्त के बहाव के लिए मुकुट प्राप्त कयिा है, और स्वर्गदूतों के साथ मसीह के समक्ष खड़े होकर, हम सभी के लिए अनवरत प्रार्थना करें।

संत जस्टनि शहीद और उनके साथयिों का शहीदी पर्व

1 जून को स्मरणोत्सव

उस समय, जब सभी देशों और शहरों में मूर्तपिूजकों ने धर्मनष्ठि ईसाइयों के वरिुद्ध एक अधर्मी फरमान जारी कयिा, जो पवत्रि वधिान का पालन करते थे, ताकि मसीह में हर वश्विासी को मूर्तयिों को बलदिान चढ़ाने के लिए मजबूर कयिा जा सके, तब पवत्रि शहीदों जस्टनि, कैरटिोन और कैरटिा (एक महलिा), एवेल्पस्टि, हायरेक्स, पयिोन और वलेरयिन को गरिफ्तार कर रोम लाया गया और मुकदमे के लिए शहर के राज्यपाल रस्टकिस के सामने पेश कयिा गया। उसने जस्टनि से कहा:

'देवताओं और शाही फरमानों का पालन करो, नहीं तो तुम्हें दोषी ठहराया जाएगा।'

संत जस्टनि ने उत्तर दयिा:

'यदि कोई हमारे उद्धारकर्ता यीशु मसीह की आज्ञाओं का पालन करता है तो उसे कभी भी दोषी नहीं ठहराया जा सकता।'

[4023] 'यहूदी ट्रफिो के साथ संवाद'।

[4024] 165–166 में।

[4025] उपरोक्त के अलावा, प्राचीन लोगों को ज्ञात संत जस्टनि के लेखनों में शामलि थे: 'आत्मा पर एक टप्पिणी', साथ ही: 'ग्रीकों के वरिुद्ध एक व्याख्या' और 'ग्रीकों के वरिुद्ध एक प्रवचन', जनिमें मूर्तपिूजा की नदिा शामलि थी। सेंट जॉन ऑफ डेमास्कस ने जस्टनि के कार्य *ऑन द रेसरेक्शन* के एक महत्वपूर्ण हस्सि को संरक्षति कयिा है, जो आज तक सुरक्षति नहीं रहा है। प्रसद्धि चर्च इतहिासकार यूसेबयिस का दावा है कि जस्टनि ने *द सगिर*, *एन एक्सपोजशिन अगेंस्ट ऑल पास्ट हेरेसीज़* और *अगेंस्ट मार्शन* नामक पुस्तकें लखिीं। जस्टनि द फलिॉसफर स्वयं अपनी पहली अपोलॉजी में वधिर्मों के खलिाफ अपने प्रबंध का उल्लेख करते हैं। जस्टनि द फलिॉसफर का सबसे उल्लेखनीय कार्य यहूदयिों के खलिाफ एक संवाद था जसिका शीर्षक *ए डायलॉग वदि ट्रायफो द ज्यू* था।

'तुम कसि सद्धिांत का पालन करते हो?' गवर्नर ने पूछा।

जस्टनि ने उत्तर दयिा:

– मैंने सभी प्रकार की सांसारकि शक्षिाओं का गहन अध्ययन कयिा है और ज्ञान की हर शाखा में महारत हासलि की है, लेकनि तब से मैंने सच्चे ईसाई धर्म को अपना लयिा है – भले ही झूठी बुद्धि से भटक जाने वाले लोग इसे स्वीकार नहीं करते।

तब रस्टकिस ने कहा:

'तो तुम, नीच, हमारे दर्शन के वपिरीत शक्षिाओं का समर्थन करते हो?'

'हाँ, मैं करता हूँ,' संत जस्टनि ने उत्तर दयिा, 'क्योंकि मैं ईसाइयों की धर्मपरायण शक्षिा का अनुसरण करता हूँ।'

'यह कसि प्रकार की शक्षिा है?'

'सच्चा सद्धिांत, जसिे हम ईसाई दृढ़ता से मानते हैं, वह यह है: एकमात्र ईश्वर को जानना, जो सभी दृश्य और अदृश्य चीजों का सृष्टकिर्ता और नर्िमाता है, और प्रभु यीशु मसीह, जो परमेश्वर का पुत्र है, जसिकी भवष्यिवाणी भवष्यिवक्ताओं ने की थी, और जो मानव जाति का न्याय करने आएगा, उसकी स्वीकारोक्ति करना। वे मोक्ष के प्रचारक और उन लोगों के शक्षिक हैं जो सदाचार में दृढ़ होना चाहते हैं। जहाँ तक उसकी अनंत दव्यिता का प्रश्न है, मैं, एक दुर्बल मनुष्य, जो सभी से छोटा है, उसके बारे में पर्याप्त वाक्पटुता से बात नहीं कर सकता; फरि भी मैं स्वीकार करता हूँ कि इसकी भवष्यिवाणी भवष्यिवक्ताओं द्वारा की गई थी: कई शताब्दयिों पहले, उन्होंने उस के पृथ्वी पर आने की भवष्यिवाणी की थी जसिे मैंने परमेश्वर का पुत्र कहा है।

गवर्नर ने पूछा:

'ईसाई कहाँ इकट्ठा होते हैं?'

जस्टनि ने उत्तर दयिा:

'हर कोई जहाँ चाहे और जहाँ जा सके, वहाँ जाता है। क्या आप सचमुच सोचते हैं कि हम सब एक ही जगह पर इकट्ठा होते हैं? यह असंभव है: क्योंकि ईसाई परमेश्वर कसिी वशिेष स्थान पर नहीं रहता, बल्कि, अदृश्य होने के कारण, वह स्वर्ग और पृथ्वी को भरता है; वश्विास करने वाले हर जगह उसकी उपासना करते हैं, और उसकी महमिा दूर-दूर तक प्रचारति होती है।'

राज्यपाल ने कहा:

'फरि भी, हमें बताओ कि तुम कहाँ इकट्ठा होते हो, और अपने शष्यिों को कहाँ जमा करते हो।' जस्टनि ने उत्तर दयिा:

'अब तक मैं टमियिोइटी के नाम से जाने जाने वाले स्नानागारों के पास, मार्टनि नामक एक व्यक्ति के घर के पास ठहरा हूँ; मैं दूसरी बार रोम नगर में आया हूँ, और उस उल्लेखति स्थान के अलावा मुझे कोई और स्थान नहीं पता; मैंने उन सभी को जो मुझसे मलिना चाहते थे, सच्ची शक्षिा की ओर लाया है।'

'तो, क्या आप एक ईसाई हैं?' रस्टकिस ने पूछा।

'हाँ, मैं एक ईसाई हूँ,' जस्टनि ने उत्तर दयिा। फरि राज्यपाल ने चैरटिों की ओर मुड़कर कहा:

'और क्या तुम ईसाई नहीं हो?'

संत चारटिॉन ने उत्तर दयिा:

'ईश्वर की कृपा से, मैं भी एक ईसाई हूँ।'

तब रस्टकिस ने चैरटिा से, जो चैरटिाइटन की धन्य पत्नी थीं, पूछा कि क्या वह भी ईसाई धर्म का पालन करती हैं; चैरटिा ने भी ईश्वर की कृपा से स्वयं को ईसाई घोषति कयिा। रस्टकिस ने फरि एवेल्पस्टिस से पूछा:

'और तुम कौन हो?'

उसने उत्तर दयिा, 'मैं सम्राट का दास हूँ, लेकनि एक ईसाई के रूप में, स्वयं मसीह ने मुझे स्वतंत्रता प्रदान की है; उनकी दया और अनुग्रह से, मैं भी उन्हीं लोगों की समान आशा में सहभागी बन गया हूँ जन्हिें आप यहाँ देखते हैं।'

तब राज्यपाल ने हायरेक्स से पूछा कि क्या वह भी एक ईसाई है। हायरेक्स ने उत्तर दयिा:

'सचमुच, मैं भी एक ईसाई हूँ, क्योंकि मैं उसी ईश्वर का सम्मान करता हूँ और उसकी पूजा करता हूँ।'

'क्या जस्टनि ने तुम्हें ईसाई बनाया?' गवर्नर ने पूछा।

Ieraks ने जवाब दयिा:

'मैं ईसाई रहा हूँ, और हमेशा ईसाई रहूँगा।'

मौजूद संत पैऑन ने तुरंत कहा:

'मैं भी एक ईसाई हूँ।'

'आपको ईसाई धर्म की शिक्षा किसने दी?'

'मैंने यह उत्तम धर्म अपने माता-पिता से प्राप्त किया है,' पायोन ने उत्तर दिया।

तब एवलपसि्ट ने कहा:

'मुझे भी अपने माता-पिता से ईसाई धर्म की शिक्षा मिली, और जस्टिन के शब्दों पर ध्यान देकर, मैं ईसाई विश्वास में और भी अधिक दृढ़ हो गया।'

– 'आपके माता-पिता कहाँ हैं?' गवर्नर ने पूछा:

– कैपाडोसिया में।

तब राज्यपाल ने हायरेक्स से पूछा:

'आपके माता-पिता किस देश में रहते हैं?'

इराक्स ने उत्तर दिया:

'हमारे सच्चे पिता मसीह हैं, और हमारी माता उन पर विश्वास है; मेरे सांसारिक माता-पिता का निधन हो चुका है, और मैं फ्रीजिया के इकोनियम से यहाँ आया हूँ।'

गवर्नर ने वैलेरियन की ओर मुड़कर उसे उत्तर देने के लिए कहा:

'क्या तुम भी ईसाई हो, और देवताओं की पूजा नहीं करते?'

वेलेरियन ने उत्तर दिया:

'मैं भी एक ईसाई हूँ; मैं एकमात्र सच्चे ईश्वर का सम्मान करता हूँ और उसकी उपासना करता हूँ, जबकि मैं तुम्हारे देवताओं से घृणा करता हूँ।'

एक बार फिर राज्यपाल जस्टिन की ओर मुड़ा:

'सुनो, तुम जो खुद को वाक्पटु कहते हो और सच्चे धर्म के अनुयायी माने जाते हो: अगर तुम सिर से पैर तक फोड़ों से ढक लो, तो क्या तुम्हें लगता है कि उससे तुम स्वर्ग में प्रवेश कर पाओगे?'

जस्टिन ने उत्तर दिया:

'यदि मैं उस यातना को सहन करूँ जिसका आपने वर्णन किया है, तो मुझे आशा है कि मुझे अपने प्रभु से वही पुरस्कार मिलेगा जो मसीह की शिक्षाओं का पालन करने वालों के लिए आरक्षित है; क्योंकि मैं जानता हूँ कि जो भी धर्मपरायणता से रहे हैं और परमेश्वर के लिए किसी भी प्रकार का दुख सहन किया है, उन्हें दुनिया के अंत तक परमेश्वर की गुप्त कृपा प्रदान की जाएगी।'

इस पर, राज्यपाल रस्टिकस ने कहा:

'तो, क्या आप मानते हैं कि आप स्वर्ग में आरोहण करेंगे और अपने ईश्वर से कोई पुरस्कार प्राप्त करेंगे?'

जस्टिन ने उत्तर दिया, 'मैं ऐसा नहीं मानता, बल्कि मैं यह निश्चित रूप से जानता हूँ और बिना किसी संदेह के इसकी आशा करता हूँ।'

रस्टिकस ने कहा:

'फिर भी, आइए हम अपने सामने के कार्य की ओर मुड़ें: इकट्ठा हो जाओ, और तुम सब मिलकर देवताओं को बलिदान अर्पित करो।'

इस पर जस्टिन ने उत्तर दिया:

'कोई भी होश-हवास में व्यक्ति धर्मत्याग करके भूल और अव्यवस्था में नहीं पड़ना चाहेगा।'

मजिस्ट्रेट रस्टिकस ने कहा:

'यदि तुम हमारे आदेशों का पालन नहीं करोगे, तो तुम बिना किसी दया के यातना सहोगे।'

जस्टिन ने उत्तर दिया:

'सचमुच, हम अपने प्रभु यीशु मसीह के लिए यातनाएँ सहने और उद्धार पाने की इच्छा रखते हैं, क्योंकि ये यातनाएँ हमें उनके अंतिम न्याय में उद्धार और निडरता प्रदान करती हैं, जिसके सामने, ईश्वर की आज्ञा से, पूरी दुनिया उपस्थित होगी।'

बाकी सभी पवत्रि शहीदों ने भी इसी तरह कहा, और यह जोड़ते हुए कहा:

'अपना इरादा तुरंत पूरा करो; हम मसीही हैं – हम मूर्तयिों को बलदिान नहीं चढ़ाएंगे।'

यह सुनकर, राज्यपाल ने यह सजा सुनाई:

'जो देवताओं को बलदिान चढ़ाने और राजा की आज्ञा मानने से इनकार करते हैं, उन्हें रोमन कानून के अनुसार लाठी से पीटा जाएगा और सरि कलम करके मृत्युदंड दयिा जाएगा।'

इस प्रकार पवत्रि शहीदों को, परमेश्वर की महमिा करते हुए, मृत्युदंड के सामान्य स्थान पर ले जाया गया, उन्होंने अपने घाव पाए और, कुल्हाड़ी से वार कर, वश्विास की उद्धारक स्वीकारोक्त मिें अपने कष्टों का अंत कयिा। बाद में, कुछ वश्विासयिों ने चुपके से उनके सम्मानति शरीरों को उठाया और हमारे प्रभु यीशु मसीह की कृपा से, उन्हें एक उपयुक्त स्थान पर दफनाया, जनिका महमिा युगों-युगों तक हो, आमीन।

गुफाओं के हमारे पूजनीय पति अगापटिस, अनाम चकित्सिक का जीवन

1 जून को स्मरणोत्सव

जब हमारे पूजनीय पति गुफाओं के एंथनी को चंगा करने का वरदान मलिा, तो धन्य अगपटिस कीव से उनकी गुफा में आए, ताकि वे उनके द्वारा मठवासी क्रम में दी जाने वाली मुंडन संस्कार के माध्यम से आध्यात्मकि उपचार प्राप्त कर सकें; अपनी इच्छा पूरी होने पर, उन्होंने पूरी नष्ठिा से पूज्य एंथनी के दैवीय जीवन का अनुसरण कयिा, और उनके उपदेशों का पालन कयिा। अगापतिुस ने देखा कि कैसे इस महान व्यक्ति स्वयं बीमारों की सेवा करते थे और अपनी प्रार्थना के द्वारा उन्हें ठीक करते थे; अपनी प्रार्थना पर मलिा वरदान छपिाते हुए, वे बीमारों को अपने भोजन से जड़ी-बूटयिाँ, दवा के रूप में देते थे। यह देखकर, धन्य अगापतिुस ने अपने तपस्या के प्रयासों में पवत्रि वृद्ध की नकल करना शुरू कर दयिा और इस तरह कई वर्षों तक परश्रिम कयिा; जब भी भाईचारे का कोई सदस्य बीमार पड़ता, तो आदरणीय संत अपनी कोठरी से नकिल पड़ते—जसिमें चोरी की जा सके, ऐसा कुछ भी नहीं था—और बीमार भाई की देखभाल करने जाते: वे उसे उठाते, लटिाते, अपनी बाहों में उठाकर रखते, और उस बीमार व्यक्ति के ठीक होने के लिए ईश्वर से अथक प्रार्थना करते; और यदि कभी-कभी बीमारी लंबी खचि जाती, तो यह इसलिए होता था क्योंकि प्रभु इस प्रकार अपने सेवक अगपयिुस के वश्विास को बढ़ाना और उसकी प्रार्थना को मजबूत करना चाहते थे। आदरणीय एंथनी के उदाहरण का पालन करते हुए, धन्य अगापटिस को उनके समान ही अनुग्रह में भागीदार होने के योग्य माना गया: अपनी प्रार्थनाओं से उन्होंने सभी बीमारों को ठीक कयिा, साथ ही उन्हें वे जड़ी-बूटयिाँ भी दीं जन्हिें वे अपने भोजन के लिए उबालते थे, और वास्तव में, इसी कारण उन्हें एक उपचारक कहा जाने लगा। उनकी ख्याति पूरे कीव में फैल गई, और कई बीमार लोग उनके पास आए, और स्वस्थ होकर लौटे।

उस समय, कीव में एक चकित्सिक रहता था, जो जन्म और धर्म से एक अर्मेनयिाई था, और अपने कौशल में इतना नपिुण था कि उसका कोई सानी नहीं था। उसके लिए कसिी लाइलाज बीमारी से पीड़ति रोगी पर एक नज़र डालना ही काफी था कि वह तुरंत ही उसके मृत्यु का दनि और समय पहचानकर बता दे, और वह भी हमेशा बनिा कसिी त्रुटि के; वह कसिी भी परस्थितिि में ऐसे रोगी का इलाज करने के लिए सहमत नहीं होता था। ऐसे ही एक मरीज, ग्रैंड प्रंसि वसेवोल्ड के मुख्य बोयार ([4026]), जसिे उस अर्मेनयिाई ने आठ दनिों में मृत्यु की भवष्यिवाणी करके नराशिा में डाल दयिा था, को पेचेरस्क मठ में लाया गया। लेकनि धन्य अगपटिस ने उसके लिए प्रार्थना करने के बाद, उसे खाने के लिए जड़ी-बूटयिाँ दीं—जन्हिें उन्होंने स्वयं खाया था—और उसे ठीक कर दयिा; और तुरंत ही उसकी कीर्ति पूरी रूस की भूमि में फैल गई। ईर्ष्या के तीर से घायल होकर, उस अर्मेनयिाई ने आदरणीय को कोसना शुरू कर दयिा और पेचेरस्क मठ में एक मृत्युदंड प्राप्त व्यक्ति को भेजा, जसिे अगपयिटस की उपस्थितिि में ज़हर पीकर मरना था। उस धन्य व्यक्ति ने, उस आदमी को मरते हुए देखकर, उसके लिए प्रार्थना करते हुए, वह जड़ी-बूटी दी जो उसने स्वयं खाई थी, और इस प्रकार उस मृत्युदंड प्राप्त व्यक्ति को मृत्यु से बचा लयिा। उस समय से, वह अर्मेनयिाई उस धन्य व्यक्ति के प्रति विशिष रूप से शत्रुतापूर्ण हो गया और अपने साथी वश्विासयिों को उकसाया कि वे अगपयिुस को स्वयं घातक जहर मलिाया हुआ पेय दें; लेकनि धन्य

[4026] व्लादमिीर वसेवोदोवचि ने पहली बार छह महीने (1075–1076) और दूसरी बार 1078 से 1093 तक कीव पर शासन कयिा।

पुरुष ने उसे पी लिया और उन्हें कोई हानि नहीं हुई। *'प्रभु जानते हैं कि धर्मी को परीक्षा से कैसे बचाना है'* (2 पतरस 2:9), उनके अपने शब्दों के अनुसार: *'यदि वे कुछ भी घातक पीते हैं, तो यह उन्हें हानि नहीं पहुँचाएगा'* (मरकुस 16:18)।

बाद में, राजकुमार व्लादिमीर वसेवोदोविच मोनोमाख[4027] चेरनिहिव में बीमार पड़ गए। यद्यपि अर्मेनियाई चिकित्सक ने उनका लगन से इलाज किया, लेकिन उनकी कोशिशें व्यर्थ गईं, और बीमारी और भी बिगड़ती गई। जब वे मृत्युशय्या पर लेटे थे, तो राजकुमार ने कीव गुफाओं के तत्कालीन मठाधीश, जॉन से, उन्हें चेरनिहिव में उपचार के लिए धन्य अगापिटस को भेजने के लिए कहा। मठाध्यक्ष ने उन्हें बुलाया और राजकुमार के अनुरोध से अवगत कराया, लेकिन धन्य अगपिटस, जिन्हें किसी ने कभी मठ के द्वार से बाहर निकलकर चिकित्सा करते नहीं देखा था, ने विनम्रतापूर्वक उत्तर दिया:

'यदि मैं इस मामले में राजकुमार के पास गया, तो मुझे सभी के पास जाना होगा। मैं आपसे विनती करता हूँ, पिताजी, मुझे मानव महिमा के लिए मठ के द्वारों से बाहर जाने के लिए प्रेरित न करें, जिसकी मैंने ईश्वर के सामने अपनी अंतिम साँस तक परहेज करने की कसम खाई है। यदि आप अनुमति दें, तो मैं किसी अन्य भूमि पर चला जाऊँगा और इस आवश्यकता के समाप्त होने पर फिर यहाँ लौट आऊँगा।'

राजकुमार के दूत को, यह समझते हुए कि वह स्वयं धन्य अगपिटस को अपने स्वामी के पास नहीं बुला पाएगा, उपचार के लिए कम से कम कुछ जड़ी-बूटियाँ देने के लिए कहना शुरू कर दिया। मठाधीश के आग्रह पर, धन्य व्यक्ति ने दूत को अपने भोजन में से कुछ जड़ी-बूटियाँ दे दीं; इन्हें राजकुमार के पास लाया गया, जिसने उन्हें चखा और धन्य व्यक्ति की प्रार्थनाओं के माध्यम से तुरंत स्वस्थ हो गया।

तब राजकुमार व्लादिमीर मोनोमाख स्वयं पेचेरस्क मठ आए, उस व्यक्ति से मिलने की इच्छा से जिसके माध्यम से ईश्वर ने उनका स्वास्थ्य बहाल किया था; वे पहले कभी परम पुण्य पुरुष से नहीं मिले थे और अब उन्हें उदार उपहारों से सम्मानित करना चाहते थे। लेकिन अगपियस, जो सांसारिक महिमा के इच्छुक नहीं थे, छिप गए; इसलिए राजकुमार ने उस ईश्वर-पुरुष के लिए लाया हुआ सोना मठाधीश को दे दिया। लेकिन कुछ ही समय बाद, उसी व्लादिमीर ने फिर से अपने एक बोयार (अधिकारी) को कई उपहारों के साथ धन्य अगपिटस के पास भेजा। संदेशवाहक ने संत अगपिटस को उनकी कोठरी में पाया और राजकुमार के उपहार उनके सामने रख दिए। धन्य पुरुष ने उससे कहा:

'मेरे पुत्र, मैंने कभी किसी से (चंगा करने के बदले में) कुछ नहीं लिया है, क्योंकि मैंने अपनी शक्ति से नहीं, बल्कि मसीह की शक्ति से चंगा किया है; और न ही मैं अब इसके लिए माँग करता हूँ।'

बोयार ने उत्तर दिया:

'पिताजी, जिसने मुझे भेजा है वह जानता है कि आप कुछ नहीं मांगते; लेकिन मैं आपसे विनती करता हूँ कि इसे स्वीकार कर लें, अपने पुत्र को सांत्वना दें, जिसे ईश्वर ने आपके माध्यम से स्वास्थ्य प्रदान किया है; और यदि आप चाहें तो यह उपहार गरीबों को दे दें।'

वरिष्ठ ने उससे उत्तर दिया:

– यदि आप ऐसा कहते हैं, तो मैं इसे खुशी-खुशी स्वीकार करूँगा। जिसने आपको भेजा है, उसे कह दीजिए कि उसके पास जो कुछ भी है, वह सब दूसरों का है, और जब वह इस जीवन से जाएगा तो अपने साथ कुछ भी नहीं ले जाएगा; इसलिए, वह बाकी सब कुछ गरीबों में बाँट दे। क्योंकि प्रभु स्वयं, जो दरिद्रों के बीच वास करते हैं, ने उसे मृत्यु से बचाया है; जहाँ तक मेरी बात है, मुझे स्वयं कोई सफलता नहीं मिलती; और मैं उससे विनती करता हूँ कि वह मेरी इन आज्ञाओं को नज़रअंदाज़ न करे, अन्यथा उसे और भी अधिक कष्ट सहना पड़ेगा।

ये शब्द कहकर, धन्य अगापिटस ने लाया गया सोना लिया और उसे छिपाने का अभिनय करते हुए अपनी कोठरी से बाहर निकल गए; उन्होंने उसे बाहर ले जाकर फेंक दिया, और स्वयं भागकर छिप गए। कुछ ही समय बाद, बोयार बाहर आया, उसने द्वार के सामने उपहार पड़े देखे, उन्हें उठाया और उन्हें मठाधीश जॉन को दे दिया। राजकुमार के पास लौटकर, उसने उसे वह सब कुछ बताया जो उसने उस धन्य व्यक्ति की कोठरी में देखा था और जो उसने उससे सुना था; और सभी ने यह महसूस किया कि वह ईश्वर का एक सच्चा सेवक था, जो अपना इनाम केवल ईश्वर से चाहता था, न कि मनुष्यों से। राजकुमार, संत की अवज्ञा करने की हिम्मत न करते हुए, गरीबों में उदारतापूर्वक दान बांटने लगा।

[4027] उसके बाद व्लादिमीर वसेवोदोविच ने 1114 से 1125 तक कीव पर शासन किया।

कई धार्मिक कार्यों और पुण्यों के बाद, धन्य वृद्ध अगपटिस, जो बिना शुल्क के चिकित्सा करने वाले चिकित्सक थे, स्वयं बीमार पड़ गए। यह जानकर, उपर्युक्त अर्मेनियाई चिकित्सक उनसे मिलने आए और चिकित्सा कला पर उनसे बहस करने लगे, यह पूछते हुए कि अगपटिस के रोग के इलाज के लिए कौन सा उपाय किया जा रहा है।

धन्य वृद्ध ने उत्तर दिया:

'उस माध्यम से जिससे प्रभु स्वयं, आत्मा और शरीर के चिकित्सक, स्वास्थ्य प्रदान करते हैं।'

उस अर्मेनियाई ने उसे चिकित्सा का पूर्णतःअज्ञानी समझा और अपने साथ आए लोगों से कहा:

'उसे हमारी कला का कुछ भी नहीं पता।'

तब, उसका हाथ पकड़कर, उसने कहा:

'मैं सत्य कहता हूँ: तीसरे दिन वह मर जाएगा; यदि मेरा वचन झूठा सिद्ध हुआ, तो मैं अपना जीवन त्याग दूँगा और स्वयं एक भिक्षु बन जाऊँगा।'

धन्य ने उत्साहपूर्वक उत्तर दिया:

'तो यह है तुम्हारा इलाज करने का तरीका: मदद की तुलना में मौत के बारे में अधिक बात करना! अगर तुम माहिर हो, तो मुझे जीवन दो; अगर तुम ऐसा नहीं कर सकते, तो मुझे अपमानित क्यों करते हो और मुझे तीसरे दिन मौत की सजा क्यों देते हो? क्योंकि प्रभु ने मुझसे कहा है कि तीन महीने में मैं उनके पास चला जाऊँगा।'

अर्मेनियाई ने उससे फिर कहा:

'देखो, तुम पहले ही पूरी तरह बदल चुके हो; ऐसे लोग तीन दिन से ज़्यादा नहीं जीते।'

संत अगापटिस वास्तव में अत्यधिक थकान की स्थिति में थे, इतने अधिक कि वे बिना सहायता के हिल भी नहीं सकते थे। इसी बीच, कीव का एक बीमार व्यक्ति उपचार के लिए धन्य अगपियस के पास लाया गया—जो स्वयं भी बहुत दर्द में थे। ईश्वर की सहायता से, वह धन्य व्यक्ति तुरंत अपने पैरों पर खड़ा हो गया, मानो वह बिल्कुल भी बीमार न हो; उसने अपनी वह सामान्य जड़ी-बूटी ली, जिसे वह लेता आ रहा था, और उसे अर्मेनियाई व्यक्ति को दिखाते हुए कहा:

'यह है वह जड़ी-बूटी जिससे मैं चंगा करता हूँ: देखो और समझो।'

उस आदमी ने उसे देखकर संत से कहा:

'यह हमारी जड़ी-बूटियों में से एक नहीं है, बल्कि, मुझे लगता है, अलेक्जेंड्रिया से है।'

परम पावन ने उसकी अज्ञानता पर डाँट लगाते हुए, उस बीमार व्यक्ति को जड़ी-बूटी चखाई, प्रार्थना की, और तुरंत उसे स्वस्थ कर दिया। फिर उन्होंने अर्मेनियाई से कहा:

'मेरे बेटे, मैं तुमसे विनती करता हूँ, अगर तुम चाहो तो मेरे साथ इस जड़ी-बूटी का स्वाद चखो, क्योंकि मेरे पास तुम्हें देने के लिए और कुछ भी नहीं है।'

'पिताजी,' अर्मेनियाई ने उत्तर दिया, 'हम इस महीने चार दिन का उपवास रखते हैं, और मैं इस समय उपवास पर हूँ।'

यह सुनकर, धन्य व्यक्ति ने उससे पूछा:

'तुम कौन हो, और तुम्हारा धर्म क्या है?'

उस आदमी ने उत्तर दिया:

'क्या तुमने नहीं सुना कि मैं एक अर्मेनियाई हूँ?'

तब धन्य ने उससे कहा:

'तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई यहाँ आने की और मेरी कोठरी को अपवित्र करने की, और मुझे मेरे पापी हाथ से पकड़ने की? मुझसे दूर हो जाओ, तुम विधर्मी[4028] और अधर्मी।'

और वह आदमी, लज्जित होकर, चला गया।

[4028] अर्मेनियाई मोनोफिज़िट संप्रदाय का पालन करते हैं, जिसे कालसीडोन (451) में चौथे सार्वभौमिक परिषद द्वारा निंदा किया गया था, और वे सभी बाद की सार्वभौमिक परिषदों को अस्वीकार करते हैं। मोनोफिसाइट विधर्म का सार इस शिक्षा में निहित है कि प्रभु यीशु मसीह, जो दो स्वभावों से जन्मे हैं, दो में नहीं बसते - क्योंकि परमेश्वर वचन के व्यक्तित्व में मानवीय स्वभाव उनके दिव्य स्वभाव के साथ इतना घनिष्ठ रूप से एकजुट है कि इसे केवल विचार में ही उससे अलग किया जा सकता है। प्राचीन रूस में, अर्मेनियाई लोगों को आम तौर पर दुष्ट विधर्मी माना जाता था: इस प्रकार, मेट्रोपॉलिटन साइप्रियन (1376–1406) ने अपने कैननिकल उत्तरों में एबॉट अथेनासियस को लिखा: 'अर्मेनियाई विधर्म सभी विधर्मों में सबसे घृणित है; इसी कारण, एक ऑर्थोडॉक्स क्रिसान (यानी एक ईसाई) के लिए उनके साथ थोड़ा भी मेलजोल रखना अनुचित है'

[4029]इसके बाद, धन्य अगपयिस ने, जैसा कि उन्होंने भवष्यिवाणी की थी, तीन महीने जीवति रहे और, एक संक्षप्ति बीमारी के बाद, प्रभु के पास चले गए। पृथ्वी पर एक ऐसे चकित्सिक रहे जो नश्शिुल्क सेवा करते थे, उन्हें स्वर्ग में अपना महान पुरस्कार मलिा, जहाँ कोई बीमारी नहीं है। भाइयों ने उनके पवत्रि शरीर को दफ़नाने के लिए तैयार कयिा और, प्रथागत मंत्रोच्चार के साथ, उसे पूजनीय एंथनी की गुफा में सुला दयिा। संत के नधिन के बाद, एक अर्मेनयिाई पेचेर्स्क मठ में आया और मठाध्यक्ष से कहा:

'अब से, मैं अर्मेनयिाई वधिर्म का त्याग करता हूँ और प्रभु यीशु मसीह में सच्चे मन से वश्विास करता हूँ, जनिके लिए मैं पवत्रि मठवासी क्रम में परश्रिम करना चाहता हूँ। धन्य अगपटिस मुझे प्रकट हुए और कहा:

'तुमने मठवासी संन्यास ग्रहण करने का वादा कयिा था; अगर तुम झूठ बोलोगे, तो तुम अपना जीवन और अपनी आत्मा दोनों नष्ट कर दोगे।' मुझे वश्विास है कि जो मेरे सामने प्रकट हुए थे वे पवत्रि थे, और यदि वे यहाँ और अधकि समय तक रहना चाहते, तो ईश्वर उन्हें ऐसा दे देता। मैंने सोचा था कि वे तीन दनि भी नहीं बचेंगे, लेकनि ईश्वर ने उन्हें तीन महीने दिए; और यदि वे चाहते, तो वे तीन साल तक भी रह सकते थे। लेकनि मुझे लगता है कि वह स्वयं, एक संत के रूप में, हमें छोड़कर संत-पुरुषों के राज्य के लिए प्रयासरत होना चाहते थे; और यदि ईश्वर ने उन्हें इस मठ में रहते हुए इस क्षणकि जीवन से उठा लयिा, तो उन्होंने उन्हें स्वर्गीय नविासों में अनंत जीवन प्रदान कयिा। अत; मैं इस संत पुरुष की आज्ञा का बनिा वलिंब के पालन करना चाहता हूँ।

आर्मेनयिाई की बात सुनकर मठाधीश ने उसे भक्षिु की दीक्षा दी और चकित्सिक को वस्तिार से नरि्देश दयिा, ताकि वह धन्य अगापटिस के पदचनि्हों पर चलकर अपनी आत्मा के उपचार में नपिुण हो सके। उस अर्मेनयिाई ने ईश्वर को प्रसन्न करने वाला जीवन जयिा और, अपना शेष जीवन उसी पेचेर्स्क मठ में बतिाने के बाद, वहीं उन्होंने अपना धन्य अंत प्राप्त कयिा, और अपनी आत्मा को आत्माओं और शरीरों के चकित्सिक के हाथों में सौंप दयिा, हमारे प्रभु यीशु मसीह, जो पति के साथ अनारंभ रूप से महमिामय हैं और परम पवत्रि, शुभ और जीवन-प्रद आत्मा के साथ, अब और सदा के लिए और युगों-युगों तक। आमीन।

हमारे पूजनीय पति ग्लुशत्सिा के मठाध्यक्ष, नए चमत्कार-कर्ता, डायोनसियिस की स्मृति

1 जून को स्मरणोत्सव

[4030]हमारे इन पूजनीय पति, डायोनसियिस ने, सबसे पहले वोलोग्दा शहर के पूर्व में चौदह पोपरीश्ची[4031] की दूरी पर स्थति ग्रेट कुबेन्स्की[4032] नामक झील के पास सेवा की। बाद में, वे उस स्थान को छोड़कर, पाचोमयिस नामक एक भक्षिु के साथ, उपर्युक्त झील के आसपास के कई स्थानों की यात्रा करने लगे, एक ऐसा स्थान खोजते हुए जहाँ वे एकांत में स्वयं को ईश्वर की सेवा के लिए समर्पति कर सकें। आदरणीय डायोनसियिस और पाचोमयिस लुचट्सिा नामक एक बस्ती में आए, जहाँ उन्होंने सबसे पहले अपने लिए एक कोठरी बनाई; कुछ ही समय बाद, उन्होंने संत नकिोलस को समर्पति एक चर्च भी बनाया, जसिे उन्होंने रोस्तोव के बशिप ग्रेगरी के आशीर्वाद से पवत्रि कयिा। इसके बाद, भक्षिु उनके चारों ओर इकट्ठा होने लगे ताकि वे उनके साथ रह सकें और अपनी आत्माओं के उद्धार के लिए प्रयास कर सकें। उपर्युक्त स्थल पर एक मठ स्थापति करने के बाद, आदरणीय डायोनसियिस ने वहाँ एक सामुदायकि आवास स्थापति

[4029] संत अगापटिस की मृत्यु 1095 से पहले ही हो गई थी; उनके अवशेष संत एंथनी की गुफा में रखे गए हैं।

[4030] लुचट्सिा गाँव, जसिे 'सेंट ल्यूक' के नाम से भी जाना जाता है, नदी कुबेनी के मुहाने पर कुबेनस्कोये झील के कनिारे स्थति था। आदरणीय डायोनसियिस के आगमन से पहले, यहाँ एक मठ था जो खस्ताहाल हो चुका था, और डायोनसियिस ने इसे बहाल कयिा।

[4031] 'पॉप्रश्चि' दूरी की एक इकाई है जो 690 सैज़ेन्ज़ की होती है।

[4032] आदरणीय डायोनसियिस, जनिका जन्म डमिट्रिी के नाम से हुआ था, का जन्म 1362 में वोल्गोडा शहर के आसपास हुआ था। उनके माता-पति या संन्यास का व्रत लेने से पहले के जीवन के बारे में कोई जानकारी उपलब्ध नहीं है। उनका मुंडन कुबेन्स्कोये झील पर स्थति स्पासोकामेन्याया मठ के मठाध्यक्ष डायोनसियिस ने कयिा था, और उन्होंने उस मठ में नौ साल तक एक भक्षिु के रूप में जीवन व्यतीत कयिा। कुबेन्स्कोये झील को 'महान' कहा जाता है, शायद इसलिए क्योंकि वोल्गोडा क्षेत्र की सभी झीलों में यह सबसे बड़ी है।

कयिा और, बाद में पुरोहति के रूप में अभषिकि्त होकर[4033] , उन्होंने पवत्रिता के साथ प्रभु को बलदिान चढ़ाना शुरू कर दयिा।

कुछ ही समय बाद, आदरणीय व्यक्तनि े अपने शष्यि, उपर्युक्त पाचोमयिस को, अपनी स्थापति की हुई मठ का मठाधीश नयिुक्त कयिा; और, भाइयों पर अपना आशीर्वाद प्रदान करने के बाद, वे स्वयं मठ से पंद्रह पोप्रीश्ची की दूरी पर ग्लुशत्सिा नदी तक चले गए, जहाँ वे रात के लिए रुके। हल्की नींद में, उन्होंने उस सुनसान स्थान में एक आवाज़ गूँजती हुई सुनी, जो उन्हें पुकार रही थी। वह तुरंत जाग उठा, उसे बहुत आनंद हुआ और एक प्रार्थना करने के बाद, उसने उस स्थान पर एक क्रॉस स्थापति कयिा, जसिे वह अपने साथ लाया था; फरि, एक पेड़ के नीचे – जो आज भी मठ के भीतर उगता है, जसि पर काले बेर लगते हैं और जसिे बर्ड चेरी कहा जाता है – उसने अपने लिए एक छोटी सी कोठरी बना ली। दाँत दर्द से पीड़ति एक व्यक्तनि े श्रद्धापूर्वक इस पेड़ का एक बेर खाया और तुरंत ही वह स्वस्थ हो गया। इसके बाद, पूजनीय डायोनसियिस ने इस स्थान पर कठोर संयम, पूरी रात जागने, उपवास और प्रार्थना में स्वयं को समर्पति कर दयिा। और कुछ ही समय बाद, भक्षिु एक के बाद एक इस स्थान पर उनके पास आने लगे, जसिसे उनके शष्यिों की संख्या बढ़ने लगी। यह देखकर, आदरणीय धर्मगुरु ने इस स्थल पर परमेश्वर की अतपिवत्रि माता, उनकी सम्मानति सुरक्षा[4034] के नाम पर एक चर्च का नरि्माण कयिा और एक मठ की स्थापना की। इसके बाद कई साल बीत गए, और भक्षिुओं की संख्या इतनी बढ़ गई कि चर्च उनके लिए बहुत छोटा पड़ गया, और उन्होंने संत डायोनसियिस से उनके लिए एक और चर्च बनाने के लिए कहना शुरू कर दयिा, जो इस से बड़ा हो। भाइयों की प्रार्थना को स्वीकार करते हुए, रेवरेंड फादर ने पहले वाले से काफी बड़ा एक नया चर्च,[4035] , बनाया; उन्होंने इसे आइकन[4036] से खूबसूरती से सजाया, इसे कतिाबें उपलब्ध कराईं, और भाइयों को आध्यात्मकि लाभ पहुँचाने वाले मामलों में मार्गदर्शन करते हुए, उन्हें अथक रूप से उपदेश देना शुरू कर दयिा।

एक दनि, जब रेवरेंड फादर सेवा के लिए चर्च जा रहे थे, तो राक्षसों के एक समूह ने उन पर हमला कर दयिा। दाँत पीसते हुए, उन्होंने उन्हें पीटना शुरू कर दयिा; फरि, फर्श को उठाकर, उन्होंने उन्हें वहाँ लटिा दयिा और उनसे कहा:

'इस जगह को छोड़ दो, नहीं तो तुम एक भयानक मौत मरेगा!'

लेकनि रेवरेंड फादर ने प्रार्थना के माध्यम से उनकी कमजोर शक्तपि र वजिय प्राप्त की, और वे तुरंत गायब हो गए। इस बीच, संतों को न देख कर, भाई उसकी कोठरी में आए और जब उन्होंने उन्हें फर्श की तख्तयिों के नीचे दबे हुए पाया, तो उन्होंने फर्श उठाया, जसिके बाद उन्होंने उनसे कहा:

'देखो भाइयों, हमारे शत्रु हमसे कतिना संघर्ष कर रहे हैं, परन्तु इससे हम डरें नहीं।'

इसके बाद, पूजनीय डायोनसियिस ने भाइयों की जानकारी के बनिा गुप्त रूप से मठ छोड़ दयिा और उसी ग्लुशत्सिा नदी के कनिारे, महान लाव्रा[4037] से चार पोप्रीष्चा दक्षणि में स्थति एक सुनसान स्थान, जसिे सोसनोवेट्स के नाम से जाना जाता है, चले गए। यहाँ उन्होंने जॉन द बैपटस्टि को समर्पति एक चर्च[4038] का नरि्माण कयिा, कोठरयिाँ बनाईं, और अपने मठ के कुछ भाइयों को इस स्थान पर लाया। उन्होंने उन्हें बताया कि उनका शरीर यहीं दफनाया जाएगा और उन्हें नरि्देश दयिा कि वे अपनी देखभाल के लिए आवश्यक सभी चीजें महान मठ से प्राप्त करें। अपने तपस्वी जीवन के इस अंतमि स्थान पर, अपनी मृत्यु से सात साल पहले, रेवरेंड फादर ने स्वयं के लिए एक कब्र खोदी, ताकि यह उन्हें हर दनि उस घड़ी की याद दलिा सके जब उनके शरीर को वहाँ आराम के लिए रखा जाएगा। उस समय से, उन्होंने उपवास, प्रार्थना और जागरण में अपने धार्मकि कार्यों को दोगुना कर दयिा, और कई मौकों पर ठंड में पूरी रात खड़े रहे, इस प्रकार अपने शरीर

[4033] आदरणीय डायोनसियिस को रोस्तोव के आर्चबशिप ग्रेगरी द्वारा पुरोहति नयिुक्त कयिा गया था, और उनकी उत्कृष्टता फलिारेट के अनुसार ('लाइव्स ऑफ द सेंट्स', जून, पृ. 11), यह लुचट्सिा में चर्च के पूरा होने से भी पहले हुआ था।

[4034] यह चर्च 1403 में बनाया गया था। कुबेन के राजकुमार दमित्रिी ने, आदरणीय डायोनसियिस की सहायता करने की इच्छा से, इसे बनाने के लिए अपने स्वयं के माहरि राजमस्त्रियिों और बढ़इयों को भेजा।

[4035] यह दूसरी चर्च पहली के नौ साल बाद, 1412 में बनाई गई थी।

[4036] परम पूज्य डायोनसियिस स्वयं आइकन चत्रिति करते थे, क्योंकि वे एक कुशल कलाकार थे। उनके अपने हाथ से बनाए गए आइकन आज भी मौजूद हैं। उदाहरण के लिए, प्रलिुट्स्क मठ में परम पूज्य डेमेट्रयिस का एक आइकन है जसिे उन्होंने बनाया था; करिलिो-बेलोज़ेर्स्की मठ में, कैथेड्रल के आयकोनोस्टास में परम पूज्य सरिलि की एक छवि है – जो उनका ही काम है – और अन्य।

[4037] यह नाम यहाँ पोक्रोव्स्की मठ को दयिा गया है, जहाँ से परम पूज्य प्रस्थान कर गए थे।

[4038] यह चर्च 1420 में बनाया गया था।

को वश में कयि। मसीह की शक्ति से कई चमत्कार करने और अपनी आत्मा के प्रस्थान से पहले मसीह के परम पवित्र शरीर और रक्त को ग्रहण करने के बाद, पूजनीय डायोनसियिस ने शाश्वत वश्राम में प्रवेश कयि।[4039]

ट्रोपारयिन, स्वर 1:

अपने यौवन से ही दव्यि प्रेम से जलते हुए, आदरणीय डायोनसियिस, आपने संसार की सभी सुंदरताओं से घृणा की और केवल मसीह से प्रेम कयि: और इसी कारण से आपने भीतरी मरुभूमि में नविास कयि, जानवरों के बीच रहते हुए, पूरी तरह से मसीह को समर्पति[4040] । इसलिए, सर्व-द्रष्टा नेत्र[4041] ने आपके कार्यों को देखकर, आपके नधिन के बाद भी आपको चमत्कारों के वरदान से समृद्ध कयि है। अतःहम आपसे पुकार लगाते हैं: हम सभी के लिए अनवरत प्रार्थना करें, जो अपने भजनों में आपकी पवित्र स्मृति का सम्मान करते हैं।

कॉन्टाकयिन, स्वर 8:

अपने मन की सारी इच्छा ईश्वर पर केंद्रति कर, आपने अपने प्राणों की गहराई से अटूट रूप से उनका अनुसरण कयि, मरुस्थल में नविास कयि, और वहाँ दव्यि रूप से जीवन यापन कयि; आप अनेक लोगों के लिए मोक्ष का मार्ग बने: इसी कारण, मसीह ने आपको महमिामय कयि और चमत्कारों के वरदान से आपको समृद्ध कयि। इसलिए हम सभी आपसे पुकारते हैं: आनंदति हो, पूजनीय डायोनसियिस, मरुस्थल के वासी।

15 जून

2 जून (पुराना संस्करण)

संतों में से कोंस्टेंटनिोपल के पैट्रआर्क, हमारे पति नकिफिोरस वद्विान का जीवन

2 जून को स्मरणोत्सव

[4042]धर्मपरायणता के एक महान रक्षक, संत नकिफिोरस का जन्म कॉन्स्टेंटनिोपल में[4043] धर्मपरायण और ईश्वर-भयभीत माता-पति, थयिोडोरस और यूडोक्सयिा के यहाँ हुआ था। उनके पति को पवित्र प्रतमिाओं की पूजा करने के लिए घाव और नर्विासन सहने के बाद, धर्मसाक्ष्य का मुकुट प्रदान कयि गया था। कोप्रोन्यमस[4044] के शासनकाल

[4039] आदरणीय डायोनसियिस का 1 जून 1437, रवविार को 74 वर्ष की आयु में नधिन हो गया। मेट्रोपॉलटिन मकारी के अधीन 1547 में आयोजति मॉस्को परषिद ने उन्हें संत का दर्जा दयि, और 16वीं शताब्दी में उनके नाम पर समर्पति पहला चर्च बनाया गया। उनके अवशेष सॉसनोवेत्स्की मठ में, संतों डायोनसियिस और एम्फलिोचयिस को समर्पति चर्च के फर्श के नीचे स्थति हैं। मठ में दो आइकन (चति्र) हैं - एक 'मां ऑफ गॉड की सुरक्षा' का और दूसरा 'मां ऑफ गॉड के संकेत' का - जो दोनों, परंपरा के अनुसार, पूजनीय डायोनसियिस द्वारा चति्रति कए गए थे। परम पूजनीय की आकृति इस प्रकार थी: वे कद में छोटे और बहुत दुबले-पतले थे; उनका सरि कुछ बड़ा, भौंहें अर्धवृत्ताकार, चेहरा लंबा, गाल धँसे हुए, आँखें कोमल, छाती तक पहुँचती मोटी दाढ़ी, और बाल हल्के सुनहरे-आधे सफेद थे।

[4040] पूरी तरह से मसीह को समर्पति, अर्थात् उन्होंने अपना सर्वस्व मसीह को अर्पति कर दयि और मसीह की आज्ञाओं को पूरा करने में अपनी सारी शक्ति लगा दी।

[4041] सर्व-द्रष्टा आँख, अर्थात् सर्व-द्रष्टा ईश्वर।

[4042] ग्रीक से अनुवादति 'एडामेंट' का अर्थ 'हीरा' है – एक ऐसा पत्थर जो अपनी कठोरता के लिए जाना जाता है।

[4043] कॉन्स्टेंटनिोपल या त्सारग्राद – बीजान्टनि (अब तुर्की) साम्राज्य की राजधानी; इसकी स्थापना चौथी शताब्दी ईस्वी में सम्राट कॉन्स्टेंटनि द ग्रेट ने पूर्व शहर बाइजेंशयिम के स्थान पर की थी।

[4044] कॉन्स्टेंटनि पंचम कोप्रोन्यमस ने 741 से 775 तक शासन कयि।

में, उन्होंने गुप्त शाही मामलों के लिए नोटरी[4045] का पद संभाला, और दुष्ट सम्राट के पास उनके खिलाफ एक निंदा की गई, जिसमें आरोप लगाया गया कि वह पवित्र प्रतिमाओं की भक्तिपूर्वक पूजा करते थे और उद्धारकर्ता, परमेश्वर की अति पवित्र माता और सभी संतों की प्रतिमा की पूजा करते थे। तत्काल दुष्ट ज़ार ने धन्य थियोडोर को बुलवाया, उससे पूछताछ की और आरोप की सच्चाई का पता चलने पर, उसे लंबे समय तक प्रतिमाओं की पूजा से इनकार करने के लिए मजबूर किया; लेकिन जब मसीह के सेवक ने राजा की इच्छा का पालन करने से इनकार कर दिया, तो उसे बुरी तरह कोड़े मारने के बाद मोलिन शहर में निर्वासित कर दिया गया, जहाँ उसे एक भयानक कालकोठरी में डाल दिया गया, जिसमें उसने अपने ऑर्थोडॉक्स विश्वास के लिए कष्ट उठाया। कुछ समय बाद, उन्हें एक बार फिर कॉन्स्टेंटिनोपल बुलाया गया और सम्राट द्वारा प्रचारित विधर्म को स्वीकार करने के लिए और भी बेरहमी से दबाया गया; लेकिन वह अपनी भक्ति में अडिग रहे, उन्होंने चर्च के नियमों और पवित्र पिताओं की परंपरा का उल्लंघन करने के बजाय घाव और मृत्यु को स्वीकार करना पसंद किया। अधर्मी सम्राट के आदेश पर, उन्हें एक बार फिर विभिन्न क्रूर यातनाओं का शिकार बनाया गया और निर्वासन में भेज दिया गया; निकिया[4046] में एक कैदी और पीड़ित के रूप में छह साल बिताने के बाद, वे प्रभु के पास एक धन्य जीवन की शाश्वत स्वतंत्रता में प्रस्थान कर गए।

उनकी पत्नी, सदाचारी यूडोक्सिया, ने अपने पति की सभी कष्टों और पीड़ाओं में साथ दिया; वह उनके साथ निर्वासन में चली गईं और अपनी कैद को सहन किया, और शरीर या आत्मा में कभी भी उनसे अलग नहीं हुईं। अपने पति की मृत्यु के बाद, वह कॉन्स्टेंटिनोपल लौट आईं और एक ईसाई विधवा के लिए उचित, ईश्वर को प्रसन्न करने वाले तरीके से अपने दिन व्यतीत किए। इस दौरान, उनके पुत्र निकिफोरस ने अपनी पढ़ाई पूरी करने के बाद शाही दरबार में अपने पिता के पूर्व पद पर नियुक्ति प्राप्त की। इसके बाद, धन्य यूडोक्सिया को अपने पुत्र को पहले एक देवदूत के रूप में, और फिर एक बिशप के पवित्र पद पर देखने की कृपा प्राप्त हुई; जिसके पश्चात्, ईश्वर का धन्यवाद करने के बाद, वह एक मठ में चली गईं, मठवासी संकल्प लिए, और धर्मपरायण कार्यों से परिपूर्ण जीवन जीने के बाद, सम्मानित वृद्धावस्था में प्रभु के पास चली गईं।

[4047]जिन धन्य निकिफोर की हम बात कर रहे हैं, वे एक पवित्र मूल से निकली पवित्र शाखा थे: उन्होंने अपनी माता की गोद में भक्ति से पोषण प्राप्त किया, अच्छे चरित्र में पालन-पोषण किया गया, और ईश्वर को प्रिय लगने वाले जीवन में शिक्षित किया गया, उन्होंने अपने युवा के वर्ष ब्रह्मचर्य और महान संयम में बिताए, और वे बाहरी और आंतरिक - सांसारिक और आध्यात्मिक - दोनों तरह से ज्ञान से परिपूर्ण थे: उन्होंने न केवल ज्ञान के ग्रीक प्रेमियों के कार्यों में, बल्कि दिव्य धर्मग्रंथों में भी महारत हासिल की; एक वाक्पटु वक्ता, सभी सद्गुणों से सुशोभित, अपनी बुद्धि और अच्छे चरित्र के लिए विशिष्ट, वह सभी का प्रिय और सम्मानित था। वयस्क होने पर, कोप्रोन्यमस के पुत्र लियो के शासनकाल में, निकिफोरस को शाही सलाहकार का पद प्राप्त हुआ और उन्होंने संतों की प्रतिमाओं की पूजा करते हुए, और अपने ईश्वर-प्रेरित उपदेशों के माध्यम से दूसरों को भी ऐसा करने के लिए प्रेरित करते हुए, विधर्मियों के बीच सच्चे धर्म को बनाए रखा। जब, लियो की मृत्यु के बाद, उनके पुत्र कॉन्स्टेंटिन और उनकी माता आइरीन[4048] के शासनकाल में, प्रतिमा-भंजनवादी विधर्म के खिलाफ नाइकेया में सप्तम सार्वभौमिक परिषद का आयोजन किया गया[4049] , तब धन्य निकिफोरस ने, एक सामान्य व्यक्ति रहते हुए, परिषद में विराजमान पवित्र पितरों को पवित्र धर्मग्रंथों में ज्ञान और विद्वता के धनी व्यक्ति के रूप में महत्वपूर्ण सहायता प्रदान की; एक विशिष्ट कुलीन व्यक्ति के रूप में, उन्हें सम्राट की ओर से परिषद में बोलने का कार्य सौंपा गया था।

[4045] 'नोटरी' शब्द का शाब्दिक अर्थ 'संक्षिप्त लेखक' है। ईस्वी की शुरुआती शताब्दियों में, यह नाम उन शाही सचिवों को दिया जाता था जो आधिकारिक दस्तावेजों को प्रामाणिक बनाते थे। कॉन्स्टेंटाइन द ग्रेट के अधीन, नोटरी की एक गुप्त चान्सरी स्थापित की गई थी, जिसका काम सबसे महत्वपूर्ण राज्य परिषदों के कार्यवृत्त रखना था। कॉन्स्टेंटिनोपल के पैट्रिआर्क के सचिवों को भी नोटरी कहा जाता था।

[4046] वर्णित समय में, निकिया बिथिनिया के तटीय क्षेत्र का एक महत्वपूर्ण शहर था; आज यह इज़निक के नाम से जाना जाने वाला एक गरीब गाँव है। यह ईसाई चर्च के इतिहास में पहले (325 में) सार्वभौमिक परिषद के स्थल के रूप में उल्लेखनीय है।

[4047] लेओ चौथे खज़ार ने 776 से 780 तक शासन किया।

[4048] चूंकि उसका बेटा, सम्राट कॉन्स्टेंटिन (पोर्फिरोजेनिटिस), अभी भी नाबालिग था, इसलिए आइरीन ने शुरू में साम्राज्य पर शासन किया।

[4049] 787 में निकिया में आयोजित सप्तम सार्वभौमिक परिषद ने मूर्तिभंजन की निंदा की और प्रतिमाओं की पूजा को बहाल किया।

इस प्रकार, अपने एपस्कोपेट (धर्मप्राचार्य पद) से पहले ही, उन्होंने स्वयं को ऑर्थोडॉक्सी (सही आस्था) के रक्षक और शिक्षक के रूप में साबित कर दिया, और विवादास्पद मुद्दों के समाधान में विधर्मियों को निरस्त कर दिया, जिसके लिए परिषद के पवित्र पिताओं ने उनकी प्रशंसा की और उन्हें आशीर्वाद दिया।

उस परिषद के बाद, निकिफोरस कुछ और वर्षों तक शाही सलाहकार के सम्मानित धर्मनिरपेक्ष पद पर रहे। फिर, यह महसूस करने पर कि व्यर्थ और विद्रोही दुनिया के लिए परिश्रम से आत्मा को कोई लाभ नहीं होता – क्योंकि उन्होंने देखा कि महल में पुत्र और उसकी माँ के बीच संघर्ष शुरू हो रहा था – – निकिफोरोस ने व्यर्थ की सांसारिक महिमा की परवाह किए बिना, अपने उच्च पद का त्याग कर दिया, शहर से दूर हो गए और थ्रेसियन बोस्फोरस के किनारे एक दूरस्थ और एकांत स्थान पर बस गए[4050] ; वहाँ उन्होंने केवल ईश्वर के लिए एकांत में परिश्रम करना शुरू कर दिया, और प्रार्थना तथा उपवास के माध्यम से अपनी मुक्ति के लिए प्रयास किया। कुछ समय बीत जाने के बाद, उन्होंने एक चर्च बनवाया, भिक्षुओं को इकट्ठा किया और एक मठ की स्थापना की; यद्यपि उन्होंने स्वयं अभी तक संन्यास का संकल्प नहीं लिया था, फिर भी वे एक भिक्षु के रूप में परिश्रम कर रहे थे, यह परखते हुए कि क्या वे दुख से भरे संन्यासी जीवन को सहन कर सकते हैं। और वे कई वर्षों तक इसी प्रकार रहे, लगभग निकेफ़ोरस के शासन के मध्य तक[4051] ।

कॉन्स्टेंटिनोपल के पैट्रिआर्क, परम पावन तारासियस के प्रभु के पास निधन के बाद, धन्य निकिफोरस, दिखावे में एक सामान्य व्यक्ति लेकिन अपने जीवन-यापन में एक परिपूर्ण भिक्षु, को पैट्रिआर्केट के लिए चुना गया; उस समय उन्होंने पहली बार भिक्षु संन्यास ग्रहण किया, और बाद में पहले एक प्रेस्बिटिर के रूप में अभिषिक्त हुए, और फिर, अपनी इच्छा के विरुद्ध और ज़ार निकिफोरस के आग्रह पर, पवित्र ईस्टर के सबसे गौरवशाली दिन बिशप के रूप में सिंहासनारूढ़ हुए। और उन्होंने अपने उपदेशात्मक शब्दों और सदाचारी जीवन से पवित्र चर्च को सुशोभित किया, दुष्टों को सुधारते हुए, धर्मी को मजबूत करते हुए, और वचन के झुंड से भेड़ियों की तरह विधर्मियों को भगाया। उन वर्षों में, यूनानी बुल्गारियाई लोगों के साथ युद्ध में थे, और युद्ध के लिए निकले जार निकिफोरस मारे गए। उनके बाद उनके पुत्र स्टैव्रकियोस ने उत्तराधिकारी के रूप में पदभार संभाला, लेकिन उनका शासन भी अल्पकालिक था—यह केवल दो महीने ही चला—और फिर उनकी भी मृत्यु हो गई। स्टैव्रकियोस के बाद, धर्मपरायण माइकल, जिन्हें रंगव के नाम से जाना जाता था, और जो पहले किरोपालेट्स[4052] के पद पर थे, सिंहासन पर बैठे। दो साल बाद, उन्हें लियो द आर्मेनियन[4053] ने पदच्युत कर दिया, जिसने ग्रीक साम्राज्य का राजदंड छीन लिया था। उनके परम पावन निकिफोरस ने इस उत्तराधिकारी के राज्याभिषेक से पहले, ऑर्थोडॉक्स धर्म के स्वीकारोक्ति पत्र को लेकर बिशप भेजे, और नए राजा से अनुरोध किया कि वह पूर्व के धर्मनिष्ठ राजाओं की प्रथा के अनुसार, उस स्वीकारोक्ति में वर्णित पवित्र धर्म के सिद्धांतों को अटूट रूप से बनाए रखने की प्रतिज्ञा पर अपने हाथ से हस्ताक्षर करे। चतुर और पाखंडी राजा ने शब्दों में ही भक्ति के प्रति उत्साही होने का ढोंग किया और उस स्वीकारोक्ति पर हस्ताक्षर करने का वादा किया, लेकिन अपने राज्याभिषेक के बाद ही:

उसने कहा, 'जब शाही ताज मेरे सिर पर रखा जाएगा, तब मैं हस्ताक्षर करूँगा।'

और वे इस लोमड़ी पर विश्वास कर बैठे। धर्मपरायण विश्वास के स्वीकारोक्ति पत्र के बजाय, चापलूस ने संप्रदायवादियों द्वारा चुपके से उसके पास लाई गई एक किताब पर हस्ताक्षर कर दिए, और वह ऐसे सच्चे चरवाहों के बजाय, जो उससे कहीं बेहतर थे, अपने जैसे ही शिकारी भेड़ियों का आज्ञाकारी बन गया। फिर, बड़े तामझाम और शाही वैभव के साथ, वह सेंट सोफिया कैथेड्रल में प्रवेश किया; लेकिन जब शाही राज्याभिषेक का प्रथागत अनुष्ठान किया जा रहा था, और परम पवित्र पैट्रिआर्क उसके अयोग्य सिर पर मुकुट रख रहे थे, तो ईश्वर ने परम पवित्र पैट्रिआर्क को प्रकट किया कि यह आदमी किस तरह का राजा होगा: क्योंकि उसके सिर पर रखा गया राजसी मुकुट, मानो, महाधर्माध्यक्ष के हाथों में काँटों के ताज में बदल गया, और उसकी नुकीली नोकों ने धर्मगुरु के हाथों को दर्दनाक रूप से चुभा, जिन्हें एहसास हुआ कि यह उस राजा के हाथों जल्द ही आने वाले उत्पीड़न और यातना का संकेत था, जिसके बारे में उन्होंने भारी मन से अपने पुरोहितों को सूचित किया।

[4050] बोस्फोरस, या कॉन्स्टेंटिनोपल की जलसंधि, जो ब्लैक सी को मारमारा सागर से जोड़ती है, को कई अन्य जलसंधियों से अलग करने के लिए फ्रेटियन जलसंधि कहा जाता है, जिन्हें यह नाम दिया गया है।

[4051] निकेफ़ोरस ने 802 से 811 तक शासन किया।

[4052] माइकल प्रथम ने 811 से 813 तक शासन किया। कायोरोपैलेट्स महल के रक्षक दल का कमांडर था।

[4053] लेओ द आर्मेनियन ने 813 से 820 तक शासन किया।

शादी के अगले दिन, संत निकिफोरस ने एक बार फिर ज़ार से अपना वादा पूरा करने और पुराने धर्मनिष्ठ ज़ारों के उदाहरण का पालन करते हुए, ऑर्थोडॉक्स आस्था की घोषणा पर हस्ताक्षर करने का अनुरोध किया; लेकिन लियो पहले ही झूठ के रास्ते पर चल पड़ा था और शाही सम्मान को कलंकित करते हुए, संत के अनुरोध को दृढ़ता से अस्वीकार कर दिया। कुछ समय बीता, और सम्राट ने खुले तौर पर पवित्र प्रतिमाओं का अपमान करना शुरू कर दिया, युद्ध नहीं उन दुश्मनों के खिलाफ जो हर तरफ से ग्रीस पर हमला कर रहे थे और उसे तबाह कर रहे थे, बल्कि मसीह, परमेश्वर की अति पवित्र माता और सभी संतों की प्रतिमाओं के खिलाफ, और उन लोगों के खिलाफ जो उनकी पूजा करते थे। विभिन्न अपराधों के कारण, कैनन के अनुसार दिव्य वेदी पर मंत्रालय से बहिष्कृत किए गए सभी बिशपों और पुरोहितों को कॉन्स्टेंटिनोपल बुलाने के बाद, उन्होंने उन्हें शाही महलों में रहने की व्यवस्था दी और उन्हें इस तरह पाल-पोस कर खिलाया जैसे वे मोटे किए जा रहे जानवर हों, और इस प्रकार उन लोगों की कृपा प्राप्त की जिनका नाम 'पेट' ([4054]) है; सम्राट अक्सर उनसे बात करता था, प्रतिमा-विरोधी विधर्म के बारे में जानता था, और प्रतिमाओं के विरुद्ध उस अपमानजनक सिद्धांत को, जिसे सातवें सार्वभौमिक परिषद द्वारा खारिज कर दिया गया था, पुनर्स्थापित करने के सर्वोत्तम तरीके पर उनकी सलाह मांगता था। उनके विचारों को अपनाने के लिए उन्हें मनाना आसान बनाने हेतु, उसने न केवल उन्हें वे पूर्व उपाधियाँ वापस देने का वादा किया जिनसे उन्हें वंचित किया गया था, बल्कि उनके सम्मान को बढ़ाने का भी वादा किया। राजा की कृपा से घमंडी होकर, उन्होंने उत्साहपूर्वक उसकी सहायता करना शुरू कर दिया, और हर जगह ईसाई आस्था के अनुयायियों को उत्पीड़न से परेशान करने लगे। राजा के नाम पर, उन्होंने हर जगह से अनगिनत पुस्तकें इकट्ठी कीं और मिलकर उनका परीक्षण किया; और यदि उन्हें प्रतिमाओं के विरुद्ध कोई विधर्मी पुस्तक मिलती, तो वे उसे तुरंत सच्ची सुसमाचार मानकर अपने पास रख लेते; लेकिन यदि उन्हें प्रतिमा-भंजन विधर्म के विरुद्ध कोई पुस्तक मिलती, , तो वे उसे तुरंत एक घृणास्पद वस्तु समझकर आग में फेंक देते और जला देते थे। तब ज़ार ने सभी ग्रीक बिशपों को एक परिषद के लिए कॉन्स्टेंटिनोपल में इकट्ठा होने का आदेश दिया। बिशप अपने-अपने स्थानों से रवाना हुए और शहर में पहुँचने पर, परंपरा के अनुसार, उन्होंने परम पावन पैट्रिआर्क निकिफोरस के समक्ष उपस्थिति होकर अपनी उपस्थिति दर्ज करवाई। हालाँकि, ज़ार ने आदेश दिया कि ऐसे बिशपों को तुरंत पकड़कर जेल में डाल दिया जाए; उनमें से जो लोग, उसके भयानक क्रोध और उत्पीड़न के डर से, उसके विधर्मी विचारों को साझा करने के लिए इच्छुक थे, उन्हें उसने उनके बंधनों और काल-कोठरियों से मुक्त कर दिया और सम्मानों से सम्मानित किया; जबकि जो लोग सच्चे धर्म में दृढ़ रहे, उन्हें शर्मनाक रूप से जंजीरों में जकड़कर, भूख और प्यास से पीड़ित किया गया। डर के मारे बहुत से लोग राजा के विधर्मी विचारों में शामिल हो गए, और विधर्मी भीड़ काफी मजबूत हो गई। झूठे शिक्षकों ने सभी चर्चों में निडरता और बिना किसी रोक-टोक के अपनी धर्मनिंदा करने वाली शिक्षाओं का प्रचार करना शुरू कर दिया, और लोगों को पवित्र प्रतिमाओं की पूजा न करने के लिए मनाने लगे, जबकि उन्होंने चर्चों से ऑर्थोडॉक्सी के सच्चे शिक्षकों को निकाल दिया, उन पर अत्याचार किया, और यहाँ तक कि स्वयं परम पवित्र पैट्रिआर्क—जो ईश्वर की आवाज़ हैं—को चुप कराने और उन्हें कैथेड्रल में प्रवेश करने से रोकने का प्रयास किया।

ईश्वर के सेवक, संत निकिफोरस ने, कलीसिया में हो रही इन सभी बातों को सुनकर और देखकर, निरंतर आँसुओं के साथ ईश्वर से प्रार्थना की, कि वह अपनी कलीसिया को निर्दोष बनाए रखें और अपने झुंड को विधर्मियों से सुरक्षित रखें। उन्होंने अपने चारों ओर कई ऑर्थोडॉक्स विश्वासियों को इकट्ठा किया, उन्हें प्रोत्साहित किया, विनती की और निर्देश दिया: कि वे विधर्मीयों के साथ संगति न करें, खमीर से बचें (मत्ती 16:6; लूका 12:1–9) और उनकी शिक्षाओं से, जो एक विषैले सांप के डंक के समान हैं; और समय की उग्रता या यातना देने वाले की धमकियों से डर न जाना, जो शरीर को तो मारता है पर आत्मा को नहीं (लूका 12:4–10)।

उन्होंने सिखाया, 'भले ही, यदि सारी प्रजा राजा के पीछे विधर्म में भटक जाए, और केवल कुछ ही लोग सच्चे विश्वास के प्रति विफादार रहें, तो जो लोग बचे रहें वे अपनी संख्या की कम होने से निराश न हों, क्योंकि प्रभु की कृपा भीड़ पर नहीं है: वह उन लोगों पर, जो परमेश्वर के भय से अनदेखी करते हैं, की अपेक्षा उस व्यक्ति पर अधिक अनुग्रह की दृष्टि रखते हैं जो उनके वचनों से डरता और काँपता है, जैसा कि सुसमाचार में उनके अपने वचनों में कहा गया है: *'डरो नहीं, हे छोटे झुंड! क्योंकि तुम्हें राज्य देना तुम्हारे पिता को भाया है'* (लूका 12:32)।

[4054] *'उनका अंत नाश है, उनका देवता उनका पेट है, और उनका घमंड उनकी लज्जा में है; वे सांसारिक बातों में लगे रहते हैं'* (फिलि. 3:19)।

इसके बाद, परम पावन पैट्रआर्क ने सबसे प्रतिष्ठित बिशपों को अपनी उपस्थिति में बुलाया: साइज़िकस के इमैनुएल, सार्डिस के यूथिमियस, थिस्सलोनिका के जोसेफ, अमोएया के यूडोक्सियस, सिनाडा के माइकल, निकोमेडिया के थियोफिलैक्ट, निकिया के पीटर, और कई अन्य पवित्र पिता, जिनमें थियोडोर द स्टुडाइट[4055] , मिदिकी के मठाधीश निकितास, और अन्य ऑर्थोडॉक्स पुरुष शामिल थे। पवित्र शास्त्र और पवित्र पिताओं की परंपरा के आधार पर, पवित्र प्रतिमाओं की आराधना पर उनके साथ एक लंबी चर्चा के बाद, वह शाम को सेंट सोफिया कैथेड्रल गए और सर्व-रात्रि जागरण शुरू किया, और ईश्वर से चर्च को शांति प्रदान करने तथा उसे विधर्म से बचाने के लिए प्रार्थना की। जब ज़ार को इस बात की जानकारी मिली, तो वह परेशान और डरा हुआ था कि पैट्रआर्क चर्च में पूरी रात की प्रार्थना सभा के लिए बड़ी संख्या में इकट्ठा हुए लोगों के बीच उसके खिलाफ विद्रोह भड़का सकता है: वह जानता था कि लोग पैट्रआर्क से प्यार करते थे, और वे सभी खुशी-खुशी उसकी आज्ञा का पालन करेंगे, यहाँ तक कि उसके लिए मरने को भी तैयार रहेंगे। और इस प्रकार, भोर होते ही, राजा ने चर्च में पादरी के पास एक संदेशवाहक भेजा यह कहने के लिए:

'आप लोगों को क्यों बेचैन कर रहे हैं और उस ज़ार के खिलाफ साज़िश क्यों रच रहे हैं, जो सार्वभौमिक शांति और मानसिक एकता की कामना करते हैं? आप पागलों को विद्रोह के लिए क्यों उकसा रहे हैं, और राजसी शहर को गृहयुद्ध के रक्त से क्यों भरना चाहते हैं?'

परम पावन पैट्रआर्क ने राजा के दूतों को उत्तर दिया:

'हमने आपके द्वारा कही जा रही बात जैसी किसी बात के बारे में सोचा भी नहीं है; वास्तव में, हमारे मन में यह विचार भी कभी नहीं आया कि जिसे ज़ार ने आपको भेजा है, वह हमारे बारे में ऐसी बातें सोचेगा। हम ईश्वर के घर में राजा के विरुद्ध किसी षड्यंत्र के लिए नहीं, बल्कि ईश्वर की महिमा करने, प्रार्थना और विनती करने के लिए एकत्रित हुए हैं, ताकि ईश्वर प्रसन्न हों और अपनी कलीसिया, राजा और सभी लोगों को शांति से सुरक्षित रखें, कि वह विधर्मी भटकावों का अंत करें, और सभी को एकजुट ऑर्थोडॉक्स धर्म में स्थापित करें।

दूतों ने उत्तर दिया:

'नहीं, यह वैसा नहीं है जैसा आप कह रहे हैं: आप अपने होठों से एक बात कहते हैं, लेकिन अपने दिल में कुछ और सोचते हैं, और आप जो सोचते हैं उसे अमल में लाना चाहते हैं। और चूँकि तुम स्पष्ट रूप से राजा के खिलाफ विद्रोह करने का इरादा रख रहे हो, इसलिए तुम्हें और तुम्हारे समान विचारधारा वाले अनुयायियों को, जब नियुक्त दिन आए, तो राजसी कक्ष में जाकर स्वयं राजा के सामने हमारे द्वारा पूछे गए प्रश्न का उत्तर देना होगा, ताकि राजा तुम्हारे इरादों के बारे में और पूरी तरह से जान सके।

यह कहकर, दूत चले गए। चर्च में मौजूद सभी लोगों ने यह देखकर और सुनकर, यह समझ लिया कि क्या होने वाला है—वह उत्पीड़न और बुराई जिसे परमेश्वर का सेवक और मसीह की पूरी कलीसिया सहने वाली थी—और वे और भी अधिक आग्रह से, बहुत आँसुओं और आहों के साथ प्रार्थना करने लगे। सारी रात की प्रार्थना सभा के समापन पर, परम पावन निकिफोरस चर्च के केंद्र में आए और उन्होंने मंडली को संबोधित किया:

[4055] संत थियोडोरस द स्टुडाइट ने कम उम्र में ही संन्यासी जीवन की शुरुआत की, और शुरू में अपने चाचा, परम पूजनीय प्लेटो (जिनका स्मरणोत्सव 5 अप्रैल को मनाया जाता है; उनकी प्रतिमा को सातवें सार्वभौमिक परिषद में पूजित किया गया था) के मार्गदर्शन में तपस्या का अभ्यास किया। बाद में, संत थियोडोरस कॉन्स्टेंटिनोपल में स्टुडाइट मठ के मठाधीश बने; उनके नेतृत्व में, यह मठ अभूतपूर्व ऊंचाइयों पर पहुंचा। सम्राट कॉन्स्टेंटिन पोरफिरोजेनिटिस की निंदा करने के लिए सेंट थियोडोर को दो बार कॉन्स्टेंटिनोपल से निर्वासित किया गया था, जिन्होंने अपनी पत्नी मारिया को अवैध रूप से तलाक दे दिया था और थियोडोटा के साथ एक अवैध विवाह करके अपने अपराध की गंभीरता को और बढ़ा दिया था। निर्वासन से स्टुडियो मठ में लौटने पर, जब पवित्र प्रतिमाओं का उत्पीड़न शुरू हुआ, तो संत थियोडोरस ने प्रतिमा-विरोधियों की धमकियों की परवाह किए बिना, विश्वासयोग्य भिक्षुओं के साथ खुले तौर पर जुलूसों का नेतृत्व किया। उस समय, सम्राट लियो द आर्मेनियन ने उन्हें कैद में डाल दिया, जहाँ उन्हें नम और घुटन भरी कोठरियों में रखा गया, और बार-बार क्रूरतापूर्वक पीटा गया। माइकल द स्टैम्पर के शासनकाल में, सेंट थियोडोर को कैद से रिहा कर दिया गया, लेकिन वे अपनी कैद से थके-हारे होने के कारण अधिक समय तक जीवित नहीं रहे। 11 नवंबर 826 को 67 वर्ष की आयु में उनका निधन हो गया, जिस दिन अब उनकी स्मृति मनाई जाती है। संत थियोडोर की मृत्यु के क्षण में, डल्मेशिया के संत हिलारियन ने स्वर्ग से उतरते हुए स्वर्गदूतों के एक समूह को देखा और एक आवाज़ सुनी जो कह रही थी: 'देखो, स्टुडियो के मठाधीश थियोडोर की आत्मा विजय प्राप्त कर स्वर्ग में आरोहण कर रही है, और स्वर्ग के दूत उसे मिलने आ रहे हैं।'

संत थियोडोर अपने पीछे उपदेश, घोषणाएं, पत्र, कैनन, स्टिचेरा, एक-छंदक कविताएं और जीवनियों के रूप में असंख्य रचनाएं छोड़ गए। सेंट थियोडोर के लेखों का सबसे व्यापक रूसी संग्रह *क्रिश्चियन रीडिंग* पत्रिका के संपादकीय बोर्ड द्वारा 1907 और 1908 के वर्षों के लिए पत्रिका के पूरक के रूप में संकलित किया गया था।

'हे परमेश्वर की आत्मा द्वारा एकत्रित मंडली! किसने यह उम्मीद की होगी कि पवित्र कलीसिया को ऐसी परीक्षाओं से गुजरना पड़ेगा जैसी हम अब देख रहे हैं!?' खुशी के बजाय, वह दुख का अनुभव करती है, और शांति से वह भ्रम में चली जाती है। वचन का झुंड, जो एक अच्छी चरागाह में चर रहा था, दुष्टों के हाथों लूट का शिकार हो जाता है, और वह माता, जो अपने सभी बच्चों को मन की एकता के लिए प्रोत्साहित करती है, को टुकड़ों में फाड़ दिया जाता है! वह कलीसिया जिसे मसीह ने अपने बहुमूल्य लहू से खरीदा, जिसे उन्होंने हर प्रकार की अशुद्धता से शुद्ध रखा (इफिसियों 5:27), जिसकी उन्होंने हर पद के प्रेरितों, भविष्यद्वक्ताओं, शहीदों और संतों के द्वारा रक्षा की, और जिसे उन्होंने दीवारों से घिरे एक सुसज्जित स्वर्ग के रूप में प्रस्तुत किया, – अब वह उन लोगों के हाथों क्या-क्या विपत्तियाँ झेल रही है, जो दिखावे में तो हम जैसे हैं, पर वास्तव में हमसे बहुत दूर हैं, हमारे दुश्मन बन गए हैं, और अपनी दुष्टता में इतने आगे बढ़ गए हैं कि, प्रतिमा के साथ-साथ, वे उसमें चित्रित व्यक्ति का अपमान करते हैं, और, तख्ते पर चित्रित मसीह की आकृति के साथ-साथ, वे स्वयं मसीह को अस्वीकार करते हैं: क्योंकि प्रतिमा को दिया गया सम्मान और अपमान, दोनों ही आइकन में चित्रित व्यक्ति से संबंधित हैं। अब सत्य के शत्रु पवित्र आइकनों की पूजा की प्राचीन चर्च परंपरा को नष्ट कर रहे हैं और पूर्व की परंपरा के विपरीत, विधर्मियों द्वारा बनाई गई एक नई परंपरा को वैध बना रहे हैं, और इस प्रकार विश्वासियों के मन को भ्रमित कर रहे हैं। भाइयो और बच्चों! मैं आपसे विनती करता हूँ, हम भयभीत या हतोत्साहित न हों; उनके धमकियाँ हमारे हृदयों को भयभीत न करें; हम ईश्वर की सहायता की प्रतीक्षा करें। जो हमारे प्रति शत्रुता रखते हैं और चर्च से सत्य को मिटाना चाहते हैं, वे नदी की धारा के विपरीत तैरने वालों के समान हैं: अंत में, वे थकान से पराजित होकर गहराई में डूब जाएँगे, क्योंकि सत्य अजेय है, और यह उन लोगों को मुकुट पहनाता है जो इसका सम्मान करते हैं, तथा उन पर विजय प्राप्त करता है जो इसके विरुद्ध लड़ते हैं। जो भी सत्य को थामे रहता है, वह बिना हथियार के भी शत्रु पर विजय प्राप्त कर लेगा; जिसने इसे खो दिया है, वह आसानी से पराजित हो जाएगा, भले ही वह युद्ध के लिए सज्जित एक योद्धा ही क्यों न हो। हमारे शब्दों के गवाह वे हैं जिनके बारे में हम बात कर रहे हैं: उन्हें सत्य का कोई ज्ञान नहीं है; यहाँ तक कि अपने अक्षर ज्ञान सीखने वाले स्कूल के लड़के भी उन पर हँसते हैं, क्योंकि वे अपनी व्यर्थ की कल्पनाओं में स्वयं का खंडन करते हैं, मानो वे, किसी भूत-प्रेत के वश में हो, अपना ही मांस चबा रहे हों। भाइयों, क्या आप समझ रहे हैं कि मैं क्या कह रहा हूँ?

चर्च में उपस्थित सभी लोग चिल्ला उठे:

'हम जानते हैं और हमें यकीन है, परम पावन पिता, कि हमारा ऑर्थोडॉक्स धर्म ही सच्चा धर्म है, और हम सभी इसके लिए मरने को तैयार हैं।'

पैट्रिआर्क ने कहा:

'भाइयो, यह हमारे लिए उचित है कि हम ऑर्थोडॉक्स धर्म की स्वीकारोक्ति में एकजुट और एकमत रहें, ताकि हमारे विरोधी हम में से किसी एक को भी अपनी विनाश की ओर मोड़ न सकें: क्योंकि मसीह की कृपा से हम उनसे अधिक संख्या में हैं।'

लोगों ने ऊँचे स्वर में पुकार लगाते हुए, मृत्यु तक चर्च के साथ खड़े रहने का एक बार फिर से दृढ़ संकल्प लिया। चर्च में लोगों के साथ एक लंबी बातचीत के बाद, परम पावन पैट्रिआर्क ने, जैसे ही दिन चढ़ा, ओमोफोरीयन अपने कंधों पर रख लिया और अपने साथ मौजूद बिशपों, मठाधीशों और संपूर्ण पुरोहित वर्ग के साथ राजसी कक्षों के लिए प्रस्थान किया। उनके पीछे-पीछे एक बड़ी भीड़ चल पड़ी। जब पैट्रिआर्क और ऑर्थोडॉक्स विश्वासी महल के द्वार पर पहुँचे, तो पूरे समूह को रोक दिया गया; केवल प्राइमेट को ही अंदर जाने की अनुमति दी गई। यह ग्रीक राजाओं की प्रथा थी कि वे पैट्रिआर्क का आशीर्वाद लेते और आध्यात्मिक प्रेम के प्रतीक के रूप में एक-दूसरे का दाहिना हाथ चूमते थे। हालांकि, दुष्ट लियो द आर्मेनियन ने प्रवेश कर रहे पैट्रिआर्क को प्रथागत सम्मानजनक अभिवादन नहीं किया; उसने न तो उनका आशीर्वाद माँगा, और न ही उन्हें बैठने के लिए कोई सीट दी, बल्कि, उन्हें धमकी भरी नज़रों से घूरते हुए, गुस्से में बोलना शुरू कर दिया:

'यह किस तरह का मतभेद है जो तुममें उत्पन्न हो गया है, और यह राजा के सम्मान के खिलाफ साजिश और विद्रोह क्या है? क्या हमारी जानकारी के बिना तुम परिषदें बुलाते हो, लोगों को बेचैन करते हो और उन्हें अशांति और विद्रोह के लिए उकसाते हो? हमारी सहमति या सलाह के बिना परिषदों का आह्वान करना, और लोगों के बीच यह धारणा फैलाना कि हम धार्मिक सिद्धांत के बजाय अंधविश्वास का पालन करते हैं—क्या यह स्पष्ट शत्रुता और कलह की शुरुआत नहीं है? यदि हम धर्मपरायण कैनन—जिन्हें आप 'प्राचीन' कहते हैं—को समाप्त करना चाहते, तो हमें अपमानित

करने, तुच्छ समझने और हमें दुष्ट वधिर्म का दोषी ठहराने का यह उचति समय होता; लेकनि अब, जब हम धर्मपरायणता के प्रेम से, संघर्ष और कलह को समाप्त करना चाहते हैं और सभी को आस्था की एकता में लाना चाहते हैं, तो आप हम पर क्यों अपमान करते हैं, शत्रुता दखिाते हैं और दावा करते हैं कि हम चर्च को नुकसान पहुँचा रहे हैं, जबकि हम इसकी शांति और सुव्यवस्था के लिए चंतिति हैं? क्या आप नहीं जानते कि कई लोग, अपनी भ्रम की स्थति में, चर्च से दूर हो रहे हैं क्योंकि प्रतमिाएँ बनाई और प्रदर्शति की जाती हैं; जो लोग दूर हो जाते हैं वे कतिाबें लाते हैं और पवत्रि धर्मग्रंथों के उन अंशों की ओर इशारा करते हैं जो प्रतमिाओं के नर्मिाण और उनकी पूजा को मना करते हैं? और यदि उनके उठाए गए प्रश्नों का कोई उत्तर नहीं है, तो उस मतभेद को क्या रोकेगा जसिसे कभी पुनर्मलिन नहीं हो सकता? अत; उन लोगों के हति में जनिके मन परेशान हैं और जो संदेह से वचिलति हैं, यह उचति है कि आप प्रतमिाओं के मुद्दे पर (चर्च से) अलग हो रहे लोगों के साथ तुरंत बहस में शामलि हों। हमारा अधकिार चाहता है और आज्ञा देता है कि यिा तो आप उनका खंडन करें और उन्हें अपनी सोच पर लाएं, या, बहस में पराजति होकर, स्वयं उनके अधीन हो जाएं; तब हम भी, यह देखकर कि सत्य कहाँ है, बेहतर पक्ष में शामलि होंगे और उसे अपने शाही अधकिार से समर्थन देंगे, ताकि हम दृढ़ता से उसके साथ खड़े रहें।

परम पावन नकिफिोरस ने ज़ार को उत्तर दयिा:

– नहीं, मैं आपकी राजसी महोदयता से वनिती करता हूँ, हमें संप्रदायकि वभिाजन और वद्रिोहों का दोषी न ठहराएँ। हमने आपकी राजसी सत्ता के वरिुद्ध प्रार्थना को भी हथयिार के रूप में इस्तेमाल नहीं कयिा है, क्योंकि हमने पवत्रि शास्त्रों से राजा के लिए प्रार्थना करना सीखा है, न कि उसे हानि पहुँचाने की कामना करना (1 तीमुथयिुस 2:2)। न ही हम सुदृढ़ वचनों और वश्विास की शकि्षाओं को वधिर्मी तर्क और वनिाश में तोड़ते-मरोड़ते हैं, क्योंकि सत्य के शकि्षक, संत जॉन द थयिोलोजयिन, आज्ञा देते हैं कि जो लोग ऐसा करने की हम्मित करते हैं, उन्हें अपने घर में न तो ठहराना चाहिए और न ही नमस्ते करना चाहिए (2 यूहन्ना 1:10)। यह बात न केवल हमें बल्कि थोड़ी सी भी समझ रखने वाले कसिी भी व्यक्ति को अच्छी तरह पता है, कि शांति और सुकून एक अत्यंत अच्छी चीज़ है: और यदि कोई शांति भंग करने का दोषी है, तो सभी को सही मायने में उसे एक दुष्ट कहना चाहिए। एक अच्छा राजा वह है जो जानता है कि कैसे कलह को शांति में और वद्रिोह को सुकून में बदलना है; फरि भी तुमने, अपने समान वचिारधारा वाले अनुयायियों के साथ मलिकर, उस चर्च पर कलह लाने का संकल्प लयिा है जो शांति में नविास करता है; और उन पवत्रि नयिमों को त्यागकर, जनिके द्वारा मसीह के क्रूस का गौरव होता है और धार्मकिता ब्रह्मांड को प्रकाशति करती है, तुमने वनिाशकारी लोगों की वकिृत शकि्षा को अपनाने का प्रस्ताव दयिा है, जसिे एक भी चर्च स्वीकार नहीं करता: क्योंकि न तो यरूशलेम, न रोम, न अलेक्ज़ेंड्रयिा और न ही अंताकयिा मसीह, परमेश्वर की परम पवत्रि माता, की प्रतमिाओं को अस्वीकार करते हैं, प्रेरतिों और परमेश्वर के अन्य संतों की; इसके वपिरीत, वे पवत्रि पति की परंपरा के अनुसार उनकी भक्तपिूर्वक पूजा करते हैं। कसि सार्वभौमकि परषिद ने, पवत्रि आत्मा द्वारा ऑर्थोडॉक्स वश्विास के सद्धिांतों को स्थापति करने के बाद, प्रतमिा-वरिोधी वचिारों को मंजूरी दी और स्वीकार कयिा है? और हे राजा, आप भी, अत; एक खारजि की गई वधिर्म को पुनःस्थापति न करें, न ही पवत्रि चर्च में एक ऐसे सद्धिांत को लाएँ जसिे पहले ही नदिा कयिा जा चुका है। जहाँ तक हमारी बात है, हम वधिर्मयिों के साथ कोई बहस नहीं करेंगे, क्योंकि उस बात पर बहस करने की क्या आवश्यकता है जसिे परषिद में पवत्रि पतिरों द्वारा पहले ही खंडति, खारजि और शापति कयिा जा चुका है?

राजा ने परम पावन पैट्रआिर्क को उत्तर दयिा:

क्या परमेश्वर ने मूसा से यह नहीं कहा: *"तुम अपने लिए कोई मूर्त यिा ऊपर स्वर्ग में, या नीचे पृथ्वी पर, या पृथ्वी के नीचे जल में जो कुछ भी है, उसकी कोई प्रतमिा नहीं बनाओगे; तुम उन को दण्डवत् नहीं करोगे और न उनकी उपासना करोगे"* (नर्गि. 20:4–5)? तो फरि, आप कनि तर्कसंगत आधारों पर प्रतमिाएँ बनाते हैं, और अपनी बनाई हुई छवयिों और प्रतमिाओं को वह सम्मान देते हैं जो स्वयं ईश्वर का है? जो मूर्तपिूजकों ने प्राचीन काल में कयिा था, वही आप अब कर रहे हैं, मूसा को दयिा गया ईश्वर का आज्ञा-वधिान और उसके माध्यम से सभी लोगों को दयिा गया आज्ञा-वधिान—न केवल पुराने नयिम के प्राचीन लोगों को, बल्कि नए नयिम के हम, वश्विासयिों ईसाइयों को भी—उपेक्षति कर रहे हैं।

परम पावन नकिफिोरस ने उत्तर दयिा:

क्या आप नहीं जानते कि मिस्र से उनके नकिलने के बाद, परमेश्वर ने इस्राएलयिों को मूर्तयिाँ या कसिी भी प्रकार की कोई प्रतमिा न बनाने की आज्ञा क्यों दी? ऐसा इसलिए था क्योंकि मिस्र में जीवन ने इस्राएलयिों को मस्रिवासयिों की दुष्टता और मूर्तपिूजक बहुदेववाद का आदी बना दयिा था, जो लंबे समय पहले मर चुके कुछ लोगों के

साथ-साथ आकाश के पक्षियों, पृथ्वी के जानवरों, और सरपटों को भी देवता मानते थे, मछलियों और सभी प्रकार के राक्षसों; उन्होंने उनकी मूर्तियाँ बनाईं और उनकी पूजा इस प्रकार की मानो वे सच्चे ईश्वर हों। मिस्र में जिस मूर्तिपूजा की आदत इस्राएलियों को पड़ गई थी, उसे उनसे जड़ से मिटाने के लिए, परमेश्वर ने उन्हें मूर्तियाँ या किसी भी प्रकार की कोई आकृति न बनाने की आज्ञा दी; फिर भी, उन्होंने सम्माननीय छवियों और प्रतिमाओं के निर्माण पर रोक नहीं लगाई, जो परमेश्वर के प्रति श्रद्धा को कम करने के बजाय बढ़ाती हैं। क्या यह उसी ईश्वर की आज्ञा से नहीं था कि मूसा ने तम्बू बनाया और वाचा के संदूक को चारों ओर सोने से मढ़ा, जिसमें , पत्थर की पट्टियाँ, हारून की लाठी और मन्ना रखे गए थे? (3 राजा 7 और बाद के) क्या परमेश्वर ने आज्ञा नहीं दी कि सोने के करूब बनाए जाएँ और उन्हें तम्बू में संधि-पेटिका के ऊपर रखा जाए, और क्या तम्बू के परदों में करूबों के चेहरों की आकृतियाँ बुनी नहीं गई थीं? और क्या इज़राइलियों ने इन सभी को पवित्र और दैवीय नहीं माना, और क्या उन्होंने इन सभी वस्तुओं की उपस्थिति में ईश्वर की उपासना और बलिदान नहीं अर्पित किए? फिर भी जब वे तम्बू, संदूक और करूबों के सामने झुकते और बलिदान चढ़ाते थे, तो वे तम्बू, संदूक या करूबों की पूजा नहीं कर रहे थे, और न ही वे उन्हें बलिदान चढ़ा रहे थे, बल्कि स्वयं परमेश्वर को चढ़ा रहे थे, जो स्वर्ग में वास करते हैं; बल्कि उन्होंने तम्बू और संदूक, उसमें रखे सभी सामान, और करूबों की प्रतिमा का सम्मान श्रद्धापूर्वक किया, उन्हें दैवीय वस्तुओं के रूप में, न कि पूजे जाने वाली चीज़ों के रूप में, ठीक वैसे ही जैसे हम आज पवित्र प्रतिमाओं की पूजा करते हैं, उनके सामने मोमबत्तियाँ जलाते हैं और तेल के दीपक लगाते हैं। हम लकड़ी या रंग के सामने नहीं झुकते, बल्कि उस प्रतिमा के सामने झुकते हैं जो आइकन पर मसीह की मानव प्रकृति को दर्शाती है, जिसे एक बार मानव आँखों ने देखा था और मानव हाथों ने छुआ था, और हम मसीह की प्रतिमा को 'ईश्वर' नहीं कहते, बल्कि मसीह के चेहरे की एक प्रतिमा कहते हैं, जो स्वयं ईश्वर हैं। – लेकिन हम मसीह की मानवता को चित्रित करते हैं, जिसे एक बार मानव आँखों ने देखा और मानव हाथों ने छुआ था; न ही हम मसीह की प्रतिमा को 'ईश्वर' कहते हैं, बल्कि इसे मसीह, ईश्वर के मुख की एक प्रतिमा कहते हैं। हम परमेश्वर के सामने जैसे नमन करते हैं, वैसे ही उनके पवित्र प्रतिमा के सामने भी नमन करते हैं, और हम मसीह की प्रतिमा को एक दैवीय वस्तु के रूप में पूजते हैं, लेकिन हम इसकी पूजा नहीं करते। यही बात परमेश्वर की अति पवित्र माता की प्रतिमा और अन्य संतों के बारे में भी कही जानी चाहिए, जिनमें स्वयं परमेश्वर, जो अपने संतों में अद्भुत हैं, की पूजा की जाती है। लेकिन पुराने नियम से शुरू करके, हम अभी समाप्त नहीं हुए हैं। क्या परमेश्वर ने मूसा को जंगल में एक काँसे का साँप खड़ा करने की आज्ञा नहीं दी, ताकि साँपों द्वारा डँसे हुए लोग आकर उसे देख सकें? और क्या वह काँसे का साँप एक चमत्कारी प्रतिमा नहीं थी, जो जीवित साँपों द्वारा डँसे हुए लोगों को अद्भुत ढंग से चंगा करती थी? क्योंकि उस सर्प में अपने आप में कोई चंगा करने की शक्ति नहीं थी, बल्कि वह उस एक से मिली थी जिसकी वह पूर्वसूचक था। यह हमारे उद्धारकर्ता मसीह का पूर्वसंकेत था, जिन्हें सुसमाचार में स्वयं मसीह द्वारा बाद में कहे गए शब्दों के अनुसार, क्रूस पर उठाया जाना था: *'जिस प्रकार मूसा ने जंगल में सर्प को उठाया, उसी प्रकार मनुष्य के पुत्र को भी उठाया जाना चाहिए'* (यूहन्ना 3:14)

और इस तथ्य में क्या आश्चर्य की बात है कि आज भी पवित्र प्रतिमाएँ चमत्कारी हैं, जबकि पुराने नियम में कांसे के साँप द्वारा पहले ही चमत्कार किए जा चुके थे? लेकिन जैसे उस साँप ने अपनी इच्छा से चमत्कार नहीं किए, बल्कि उस व्यक्ति की शक्ति से किए जिसकी वह पूर्वसूचक था, वैसे ही पवित्र प्रतिमाएँ भी उन पर चित्रित व्यक्ति की शक्ति से चमत्कारी बनती हैं। आइए हम सुलैमान के मंदिर को भी याद करें: क्या ईश्वर ने इसे सुलैमान के विरुद्ध एक पाप माना कि उसने अपने बनाए मंदिर में, मूसा द्वारा बनाए गए स्वर्गदूतों के अलावा बड़े सुनहरे स्वर्गदूतों को बनाया, और उनकी आकृतियों को दीवारों, स्तंभों और दरवाजों पर अंकित किया, और बारह नक्काशीदार बैलों पर कांसे का महासागर बनाया? ईश्वर ने न केवल इस बात को सोलोमन के खिलाफ नहीं माना, बल्कि उन्होंने यह भी दिखाया कि यह कार्य उन्हें प्रसन्न हुआ जब उन्होंने स्वयं उस मंदिर और उसमें जो कुछ भी था, उसका दौरा किया, क्योंकि लिखा है: *'मेघ प्रभु के भवन में छा गया; और याजक मेघ के कारण सेवा करने के लिए खड़े नहीं हो सके, क्योंकि प्रभु की महिमा से मंदिर भर गया'* (1 राजा 8:11)।

इस प्रकार, हे राजा, किसी भी प्रतिमा को बनाने पर रोक लगाने संबंधी परमेश्वर के कानून की आज्ञा, जिसका आपने पहले उल्लेख किया था और जो मूसा को दी गई थी, केवल विधिर्मी मूर्तिपूजा को समाप्त करती है, न कि हमारी ईसाई भक्ति—पवित्र प्रतिमाओं की पूजा को। यदि परमेश्वर ने, अपनी इस मूल आज्ञा द्वारा, सम्मानित व्यक्तियों के हर चित्रण और प्रतिमा को भी पूरी तरह से मना कर दिया होता, ठीक वैसे ही जैसे उन्होंने अधर्मी छवियों को मना किया था, तो उन्होंने बाद में मूसा को, जैसा कि कहा गया है, तम्बू और उसके सामान बनाने, और यहाँ तक कि काँसे के साँप को

भी खड़ा करने की आज्ञा देकर स्वयं का खंडन किया होता। लेकिन इस तरह से बात करना सही नहीं है: परमेश्वर स्वयं का विरोध नहीं करते, और जैसे वे अपने सभी वचनों में विश्वासयोग्य हैं, वैसे ही वे अपने सभी कार्यों में पवित्र हैं। उन्होंने वचन द्वारा मूर्तिपूजक मूर्तियाँ न बनाने का आदेश दिया; परन्तु चर्च की शोभा और परमेश्वर की महिमा के लिए पवित्र प्रतिमाएँ बनाने के लिए – यह उन्होंने कर्म द्वारा सिखाया, स्वयं मूसा को ऐसा करने का निर्देश देते हुए, उन्हें करूबों के मुखों की समानता चित्रित करने का आदेश दिया।

इस प्रकार ज़ार और पैट्रिआर्क ने पवित्र प्रतिमाओं के बारे में विस्तार से बात की, पहले निजी तौर पर; बाद में, दरवाज़ों के बाहर खड़े बिशप और पुरोहितों को अंदर बुलाया गया। कई सेनेटर भी अंदर आए; इसके अलावा, ज़ार ने कमरे में खींची हुई तलवारों के साथ सशस्त्र सैनिकों को बुलाया, ताकि जो लोग उससे सहमत होने से इनकार करते थे, उन्हें डराया जा सके। वहाँ क्या हुआ, कौन-कौन तर्क रखे गए, और उन निडर हृदयों द्वारा आत्मा की क्या महानता और साहस प्रदर्शित किया गया, यह सब 11 नवंबर को मनाए जाने वाले पूज्य थियोडोर द स्टुडाइट के जीवन-चरित्र और 3 अप्रैल को मनाए जाने वाले संत निकिता द कन्फेशर के जीवन-चरित्र में दर्ज है। हालाँकि, इसका अंत राजा के क्रोध और आक्रोश में हुआ, और राजसी महल से पैट्रिआर्क और उनके पूरे दल के अपमानजनक निष्कासन में हुआ। जो बिशप परम पावन निकिफोरस के साथ थे, उन्हें तुरंत विभिन्न स्थानों पर निर्वासित कर दिया गया, लेकिन पैट्रिआर्क को फिलहाल उनके पद पर ही रहने दिया गया, आंशिक रूप से इसलिए क्योंकि वे उन्हें सीधे तौर पर नुकसान पहुँचाने की हिम्मत नहीं कर सके, और आंशिक रूप से इस डर से कि लोग उनके कारण विद्रोह और बगावत पर उतर सकते हैं। जहाँ तक पादरियों और मठवासी समुदाय के कई सदस्यों का सवाल है, उन्हें तहखानों और जेलों में घावों के साथ यातना दी गई, भूख और प्यास से तड़पाया गया, और उन्हें विधर्म अपनाने के लिए मजबूर किया गया।

परम पावन पैट्रिआर्क ने, यह देखकर कि ज़ार सच्चे धर्म से पूरी तरह से भटक गया था, और चर्च बहुत परेशान था, जबकि पुरोहितों को सताया जा रहा था और वे कष्ट झेल रहे थे, ने महारानी को लिखा, और उनसे आग्रह किया कि वे सम्राट को इस तरह के उत्पीड़न को समाप्त करने के लिए आवश्यक सलाह दें; उन्होंने राज्यपाल यूटिकियन को भी लिखा, जो सम्राट के विचारों से सहमत थे और उनके मुख्य सलाहकार थे। प्रेरितीय उत्साह और एक भविष्यसूचक आत्मा से प्रेरित होकर, उन्होंने अपनी उपदेशों में निम्नलिखित कठोर चेतावनी जोड़ी:

'यदि आप प्रभु के सीधे मार्गों से लोगों को भटकाना बंद नहीं करते हैं, तो प्रभु का दंड देने वाला हाथ जल्द ही आप पर पड़ेगा।'

हालाँकि, पवित्र पैट्रिआर्क न केवल हठी लोगों को मनाने में असमर्थ रहे, बल्कि उन्होंने उन्हें और भी अधिक क्रोधित कर दिया। सम्राट ने एक कुलीन व्यक्ति, थॉमस को भेजा, ताकि वह पितृराज को सेंट सोफिया के कैथेड्रल चर्च पर उनका अधिकार छीन ले और पितृराज को वहाँ मास मनाने या लोगों को उपदेश देने से रोक दे, ताकि पितृराज अपने ही घर में, जैसे कैद में हों, कहीं बाहर न निकलें। शोक और अपने अनेक कार्यों से शरीर में थके हुए, वह बीमार पड़ गए और मृत्यु की प्रतीक्षा में अपनी शय्या पर पड़े रहे; जबकि विधर्मी भीड़ परेशानी खड़ी करती रही और उनसे बहस करने का प्रयास करती रही। रानी का भाई, थियोफानेस, जो स्पैथारियोस[4056] का पद धारण करता था, को राजा और उसके समान विचारधारा वाले अनुयायियों द्वारा परम पवित्र पैट्रिआर्क को बहस के लिए उनके सामने लाने हेतु भेजा गया। संत ने दूत को उत्तर दिया:

'एक चरवाहा जो अपनी भेड़ों से वंचित हो, वह भेड़ियों से लड़ने नहीं निकलता, और जो अपनी भलाई चाहता है, वह जंगली जानवरों से नहीं लड़ता। तो फिर, मसीह द्वारा मुझे सौंपी गई भेड़ों को मुझसे छीनकर, आप मुझे बहस के लिए क्यों बुला रहे हैं, ताकि मैं अकेला ही विधर्मियों से भेड़ियों की तरह लड़ूँ? यदि यही आपकी इच्छा है, तो मेरी भेड़ें मुझे वापस कर दो, पुरोहितों और पादरियों को उनके बंधनों और काल-कोठरियों से मुक्त करो, और प्रत्येक को उसका उचित स्थान लेने दो; बिशपों को निर्वासन से वापस आने दो और उन्हें एक बार फिर से अपने पद ग्रहण करने दो, और विधर्मी झूठे बिशपों को, जिन्हें गलत तरीके से स्थापित किया गया है, उन्हें पदच्युत कर दिया जाए; और सभी ऑर्थोडॉक्स, जो उत्पीड़ित और पीड़ित हैं, को (उत्पीड़न से) विश्राम मिले और अपनी मूल स्वतंत्रता पुनःप्राप्त हो: तब, यदि ईश्वर को प्रसन्न हो और यदि मैं स्वस्थ हो जाऊं, तो हम एक परिषद सभा में, विधर्मियों की हानिकारक दुष्टता की निंदा करने के लिए तैयार रहेंगे। जहाँ तक परिषद और धर्म पर चर्चा का प्रश्न है, ये महान, कैथोलिक चर्च में होनी चाहिए, जहाँ स्वयं मसीह ईश्वर सबसे

[4056] शाही तलवार का धारी

पवित्र रहस्यों में उपस्थिति हैं, न कि शाही महलों में; क्योंकि चर्च के मामलों पर चर्चा चर्च में होनी चाहिए, जबकि नागरिक मामलों का संचालन महलों में किया जाना चाहिए।

इस उत्तर के साथ, थियोफानेस उन लोगों के पास लौट आए जिन्होंने उन्हें भेजा था। वे संत के प्रति और भी अधिक कटु हो गए, और एक बार फिर उन्होंने अपने गुट के कई सदस्यों को उनके पास मुकदमे के लिए बुलाने हेतु भेजा। पवित्र पैट्रिआर्क ने उनसे उत्तर दिया:

'मुझे किसके पास मुकदमे के लिए बुलाया जा रहा है? क्या यह रोम, अलेक्जेंड्रिया, एंटिओक या यरूशलेम के किसी महाधर्माध्यक्ष ने किया है? यदि उनमें से कोई भी आपके परिषद में उपस्थित नहीं है, तो मैं किसके पास जाऊँ? या क्या आप, महाधर्माध्यक्ष, मुझे बुला रहे हैं? क्या तुम, अधर्मी लोग, मेरे न्याय करोगे, जो एक वैध चरवाहा हूँ? मैं अपने खुले दुश्मनों के पास नहीं जाऊँगा, जिन्होंने जंगली जानवरों की तरह मुझे टुकड़े-टुकड़े करने की तैयारी की है, जबकि मैं निर्दोष हूँ। और मैं बीमार होने की स्थिति में कैसे जा सकता हूँ, जब मैं अपनी बिस्तर से उठने में भी सक्षम नहीं हूँ? क्या तुम मुझे मेरे बिस्तर पर ले जाओगे और मुझे उठाकर ले जाओगे?

और ये दूत खाली हाथ लौट आए। तब उस विधर्मी सभा ने, जो बड़ी द्वेषपूर्ण थी, अन्यायपूर्वक निर्दोष, पवित्र और ईश्वर-भयभीत व्यक्ति, पैट्रिआर्क निकिफिोरस को पदच्युत कर दिया और उन पर चर्च से बहिष्कार की सज़ा लगा दी, जबकि वे स्वयं निष्कासन और शाप के सबसे बड़े पात्र थे; उन्होंने न केवल संत निकिफिोरस को, बल्कि उनके पूर्ववर्तियों, सबसे पवित्र ऑर्थोडॉक्स पैट्रिआर्क, तारासियस और जर्मनस को भी, जो एक धन्य मृत्यु के बाद प्रभु के पास चले गए थे, चर्च से बहिष्कृत कर दिया। इस प्रकार उस दुष्ट विधर्मी परिषद का अंत हुआ।

शाम के देर से, ज़ार ने सैनिकों को भेजा कि वे निकिफिोरस को पैट्रिआर्क के आवास से ले जाएँ और उसे बंदी बना लें। हथियारों और लाठियों से लैस क्रूर सैनिक घर के पास पहुँचे; बहुत शोर मचाकर और हंगामा कर, उन्होंने परम पावन निकिफिोरस और पूर्व पैट्रिआर्कों हर्मन और तारासियस का अपमान किया। यह सुनकर, पैट्रिआर्क रो पड़े और उन्होंने ईश्वर का धन्यवाद किया कि उन्हें ऑर्थोडॉक्सी के लिए ऐसी बदनामी के योग्य समझा गया। उपरोक्त कुलीन थॉमस, जिसे ज़ार ने सेंट सोफिया के कैथेड्रल चर्च का प्रभार सौंपा था, और जो Patriarch के आवास का संरक्षक भी था, ने सैनिकों को हंगामा बंद करने का आदेश दिया, Patriarch के आवास के प्रवेश द्वार को दृढ़ता से बंद कर दिया, ज़ार के पास गया और उससे कहा:

'महाराज! बड़ी संख्या में सैनिकों की आवश्यकता नहीं है; अन्यथा, हंगामा सुनकर लोग इकट्ठा हो जाएँगे और कोई हानि पहुँचा सकते हैं। केवल दो व्यक्ति भेजें, जिनके साथ कुछ नौकर हों, जो महाधर्माध्यक्ष को अपनी बाहों में उठाकर ले जाएँ, क्योंकि वह बहुत बीमार हैं और स्वयं नहीं चल सकते।'

ज़ार ने ठीक वैसा ही किया – उन्होंने सैनिकों को पैट्रिआर्क के आवास से पीछे हटने का आदेश दिया, और एक घंटे बाद अपने महल से दो लोगों को भेजा; और परम पावन निकिफिोरस को उनके घर से बाहर ले जाया गया, या यूँ कहें कि उठाकर बाहर ले जाया गया। अपने महान गिरिजाघर, सेंट सोफिया चर्च में प्रार्थना करने की इच्छा से, वे उन दो पुरुषों के सहारे उसमें प्रवेश किए, मोमबत्तियाँ जलाने और धूप जलाने का आदेश दिया, खुद को जमीन पर क्रूस के आकार में लोट लिया, और लंबे समय तक प्रार्थना की, रोते हुए और अपनी आँसुओं से जमीन को भीगते हुए।

फिर वे जमीन से उठे; चर्च में आए कुछ ऑर्थोडॉक्स ईसाइयों को देखकर, जो पैट्रिआर्क के लिए रो रहे थे, उन्होंने उन पर आशीर्वाद दिया और इन शब्दों के साथ उनसे अंतिम विदा ली:

'मेरे बच्चों, मैंने तुम्हें सच्चे ईसाई पाया है, और मैं तुम्हें सच्चे ईसाइयों के रूप में ही छोड़ता हूँ।'

और वह चर्च से निकल गए। सैनिकों ने उन्हें एक रथ में बिठाया, और आधी रात को, जब सभी सो रहे थे, उन्हें समुद्र तट पर ले गए। वहाँ उन्होंने उन्हें एक नाव में बिठाया और क्रिसोपोलिस[4057] ले गए, वोल्यू नामक एक स्थान पर[4058], जहाँ एक मठ था। इस प्रकार ईश्वर के महान सेवक, परम पावन पैट्रिआर्क निकिफिोरस को, मसीह के चर्च पर नौ वर्षों तक शासन करने के बाद, अन्यायपूर्ण ढंग से उनके सिंहासन से हटा दिया गया। कुछ ही समय बाद, उन्हें और दूर प्रोकोनिसि द्वीप[4059] पर, संत थियोडोर महान शहीद के मठ में भेज दिया गया। अब, जब उन्हें जहाज़ से उस द्वीप ले जाया

[4057] क्रिसोपोलिस – बिथिनिया में बाइजेंटाइम के पास, अब श्कोदर।

[4058] ग्रीक मूल के अनुसार, यह 'सत्पुरुष' (अर्थात् मसीह) के मठ को संदर्भित करता है; हालाँकि, अनुवाद के लैटिन प्रतिलिखक ने 'वोपि' (सत्पुरुष) के लिए 'सांड' शब्द का प्रयोग किया, इसलिए स्लावोनिक अनुवाद में इसका नाम 'वोलेउ' पड़ा।

[4059] प्रोकोन्निसि – मर्मरा सागर में एक द्वीप; अब मर्मरा के नाम से जाना जाता है।

जा रहा था, तो जैसे ही वे उस क्षेत्र से गुज़रे जहाँ महान गाँव के मठाधीश, आदरणीय थियोफानेस रहते थे, दोनों पवित्र पुरुषों ने अपनी सूक्ष्म दृष्टि से एक-दूसरे को देखा और अभिवादन किया। आदरणीय थियोफानेस ने अपनी कोठरी में रहते हुए अपने शिष्य को धूपदान में जलती हुई कोयले डालने, मोमबत्तियाँ जलाने, कोयलों पर इत्र डालने और जमीन पर सिर झुकाने का निर्देश दिया, मानो वे रास्ते से गुजर रहे किसी व्यक्ति से बात कर रहे हों। उनके शिष्य ने उनसे पूछा:

'फादर! आप क्या कर रहे हैं? आपने किसके सामने सिर झुकाया, और आप किससे बात कर रहे हैं?'

सम्माननीय फादर ने उत्तर दिया:

'परम पावन पैट्रिआर्क निकिफोरस, जिन्हें उनके धर्मनिष्ठता के कारण अन्यायपूर्ण रूप से निर्वासित किया गया है, को इस देश से गुजरने वाले एक जहाज पर बंदी बनाकर ले जाया जा रहा है; इसीलिए हमने मोमबत्तियाँ और धूप जलाई है, ताकि पैट्रिआर्क को वह सम्मान दिया जा सके जिसके वे हकदार हैं।'

उसी क्षण, जहाज़ पर विराजमान परम पावन पैट्रिआर्क निकिफोरस अचानक घुटने पर बैठ गए, उन्होंने उस पवित्र साधु को प्रणाम किया, और आकाश की ओर अपने हाथ फैलाकर आशीर्वाद दिया। जहाज़ पर परम पावन के साथ आए एक व्यक्ति ने उनसे पूछा:

'आप किस पर आशीर्वाद दे रहे हैं, परम पावन पिता, और आप किसके सामने घुटने टेक रहे हैं?'

पैट्रिआर्क ने उत्तर दिया:

'थेओफेनेस द कन्फेशर, महान गाँव के मठाधीश, ने हमारा अभिवादन किया और जली हुई मोमबत्तियों और धूप से हमारा सम्मान किया; मेरी ओर से, मैंने उन्हें प्रणाम किया, क्योंकि वह भी जल्द ही हमारे जैसे ही कष्ट सहेंगे।'

ऐसा जल्द ही हुआ। मसीह के पवित्र सेवक, निकिफोरस, को जब निर्वासित रहने के लिए निर्धारित स्थान मिला, तो उन्होंने वहाँ तंग परिस्थितियों और बार-बार बीमारी में तेरह वर्ष बिताए, जीवन की आवश्यक वस्तुओं की कमी को सहते हुए, इससे पहले कि वे प्रभु के साथ शाश्वत विश्राम में प्रविष्ट हुए। जब वे प्राण त्याग रहे थे, तो उन्होंने एक आनंदित आत्मा के साथ दाऊद के वचन कहे: *'धन्य है यहोवा, जिसने हमें उनके दाँतों का आहार नहीं बनाया! हमारा प्राण पक्षियों के फंदे से ऐसे निकल भागा है जैसे पक्षी; फंदा टूट गया, और हम छुड़ाए गए'* (भजन संहिता 123:6–7)।

यह कहने के बाद, उसने अपनी आत्मा अपने प्रभु के हाथों में सौंप दी, और विश्वासियों ने उसके लिए रोया, जबकि विधर्मी आनंदित हुए। उनके पवित्र शरीर को संत थियोडोर द ग्रेट मार्टायर के चर्च में दफनाया गया था। बाद में, जब विधर्मी नायक नष्ट हो गए, तो मूर्तिभंजक उत्पीड़न समाप्त हो गया और शांति तथा ऑर्थोडॉक्सी (सम्यक धर्म) एक बार फिर से स्थापित हुई; संत निकिफोरस के पवित्र अवशेषों को 13 मार्च 846 को कॉन्स्टेंटिनोपल ले जाया गया, माइकल, थियोफिलिस के पुत्र, और उनकी माता थियोडोरा के शासनकाल के दौरान, और हमारे ईश्वर मसीह की महिमा के लिए, जिन्हें पिता और पवित्र आत्मा के साथ सदा-सदा महिमामय माना जाता है, सम्मानपूर्वक सेंट सोफिया कैथेड्रल में दफनाया गया, आमीन।

कॉन्टाकियन, स्वर 4:

हे अति महिमामय निकिफोरस, स्वर्ग से विजय का मुकुट, जो आपने ईश्वर से प्राप्त किया है, उन लोगों को बचाएँ जो आपको विश्वास में सम्मानित करते हैं, मसीह के एक आध्यात्मिक नेता और शिक्षक के रूप में।

पवित्र महान शहीद जॉन द न्यू का कष्टकथा

2 जून को स्मरणोत्सव

ऐसे बहुत कम पवित्र पुरुष हैं, जिन्होंने अपने ईश्वर-प्रसन्न और सदाचारी जीवन से हमारे अनुकरण के लिए एक आदर्श स्थापित किया है; उनमें से एक हैं ईश्वर के ये सच्चे सेवक, जो महत्व में प्रथम हैं, यद्यपि समय में अंतिम हैं। हमारे प्रभु मसीह ने न केवल प्रारंभिक शताब्दियों के शहीदों को मुकुटों से सम्मानित किया है, बल्कि अभी भी, इन अंतिम दिनों में, वह उन लोगों के लिए (अपने राज्य का) द्वार खोलते हैं जो इसे खोजते हैं, और उन पर वही महिमा और उपहार प्रदान करते हैं। तो आइए हम मसीह के पराक्रमी योद्धा, पवित्र आत्मा की कृपा से परिपूर्ण संत यूहन्ना का वृत्तांत आरंभ करें – कि वह कौन थे, कहाँ से आए थे, और कैसे उन्हें एक शहीद के पद और मुकुट के योग्य ठहराया गया।

इनका जन्मस्थान ट्रेबज़िॉन्ड था, जो पूर्वी देशों में, अस्सरियिा और ग्रेटर आर्मेनयिा की सीमा के पास स्थति एक गौरवशाली और महान शहर था। सभी आवश्यकताओं से परपिूर्ण, यह शहर सभी दशिाओं से आने वाले जहाजों के लिए एक सुवधिाजनक बंदरगाह के रूप में कार्य करता है; इसके नविासी, जो समुद्र के कनिारे रहते हैं, व्यापार और समुद्री यात्रा में लगे रहते हैं, जसिसे वे अपनी आजीवकिा कमाते हैं। वास्तव में, धन्य जॉन स्वयं व्यापार में लगे हुए थे, और वे वभिन्नि शहरों के लिए अक्सर समुद्री यात्राएँ करते थे। एक अवसर पर, उन्हें एक वदिेशी व्यक्तकि जहाज पर चढ़ना पड़ा—जो जन्म से फ्रीजयिन था[4060] —जो पूर्वी धर्म को नहीं मानता था, और जसिका चरत्रि कठोर, नर्दियी और अमानवीय था। जब संत उस व्यक्तकि साथ समुद्र यात्रा कर रहे थे, तो शत्रु, शैतान, जॉन के नर्दिोष जीवन से ईर्ष्या करने लगा: वह उस धन्य व्यक्तकि सदाचारी जीवन को सहन नहीं कर सका, क्योंकि वह अक्सर उसे प्रार्थना और उपवास में, अच्छे चरत्रि का और सभी के लिए सुलभ, जहाज पर जरूरतमंदों और बीमारों के प्रतदिायालु देखता था। मसीह के सेवक ने ऐसे लोगों को सांत्वना दी, उन्हें अपनी साधनों से उनकी ज़रूरत की चीज़ें प्रदान कीं, और उनकी मदद के लिए उदार हाथ बढ़ाया; आँसुओं से भरी आँखों के साथ, उन्होंने अपने आप से कहा:

'यदि तुम एक पीड़ति भाई पर दया दखिाओगे, तो तुम पर स्वयं दया की जाएगी; और यदि तुम दुखी लोगों को सांत्वना दोगे, तो तुम्हें स्वयं परमेश्वर से सांत्वना मलिेगी।'

अदृश्य शत्रु ने यह देखा, ईर्ष्यालु हो गया, और संत को उनके मोक्ष के मार्ग पर बाधति करने का प्रयास कयिा। सबसे पहले, उसने उसे धर्मपरायण वश्विास से भटकाने का नश्चिय कयिा और उस पर एक दृश्यमान शत्रु, जहाज के कप्तान को भेजा, जो आस्था के एक अलग बयानी पर कायम था और जसिने पूर्वी (ऑर्थोडॉक्स) धर्मपरायणता से संबंधति तर्कों के साथ मसीह के धर्मनष्ठि सेवक को परेशान करना शुरू कर दयिा। समुद्री यात्रा के दौरान उनके बीच वश्विास पर हुए अनेक मौखकि बहसों में, संत जॉन, जो महान ज्ञान के व्यक्तऔर शास्त्रीय ज्ञान में पारंगत थे, हमेशा व्यापारी पर हावी हो जाते थे और उसकी वधिर्मति का पर्दाफाश करते थे; जबकि बाद वाला इस मसीह के अजेय योद्धा से क्रोधति हो गया, चढ़ि गया, उसे कई अपमानों से परेशान करने लगा, और, शत्रुता की भावना से, उसके खलिाफ बुराई की साजशि रचने लगा। जब उसके भीतर ऐसी शत्रुता भड़क उठी, तो जहाज़ बोस्फोरस के पास बेलग्रेड में लंगर डाल गया[4061] । वहाँ, दुष्ट जहाज़ के कप्तान स्थानीय गवर्नर के पास गया, जो जन्म और धर्म से एक फ़ारसी था[4062] , जो अपनी पारंपरकि मान्यताओं का एक उत्साही रक्षक था, और उसने संत जॉन के वरिुद्ध उसके सामने नम्निलखिति बदनामी की:

'गवर्नर! मेरे साथ जहाज़ पर एक आदमी आया है जो अपने पूर्वजों से मलिी ईसाई धर्म को त्यागकर, आपके धर्म को अपनाना और आपकी परंपराओं में शामलि होना चाहता है; समुद्री यात्रा के दौरान उसने मुझे यह बताया और कई कसमतों के साथ पुष्टकि की कि वह अपनी मंशा नहीं बदलेगा। यदि आप बनिा कसिी देरी के उसे अपने साथ वश्विास की एकता में लाने का ध्यान रखते हैं, तो आपको अपने लोगों से बहुत प्रशंसा मलिेगी, क्योंकि यह व्यक्तवाक्पटुता में अत्यधकि नपिुण है और ट्रेबज़िॉन्ड शहर के सबसे प्रतष्ठिति कुलीनों में से एक से कम नहीं है।

यह सुनकर, वह अधर्मी न्यायाधीश आनंदति हो गया; अपने सामान्य न्याय-स्थान पर बैठकर, उसने धन्य जॉन को सम्मानपूर्वक अपने सामने लाने का आदेश दयिा और उससे कहा:

'मैंने आपके बारे में बहुत कुछ सुना है, सम्माननीय पुरुष—मैंने सुना है कि आप हमारे धर्म से प्रेम करने लगे हैं और इसे अपनाना चाहते हैं। हमारा धर्म चतिन के लिए उत्कृष्ट वषिय प्रदान करता है और जो इसे समझते हैं, उनके हृदय में अपने प्रतपि्रेम जगाता है; जो इसे खुशी से स्वीकार करते हैं, उन्हें यह समृद्ध और दीर्घायु जीवन प्रदान करता है; जबकि ईसाई धर्म उपहास का पात्र है। आदरणीय मत्रि! इसे त्यागने में देरी न करें और, इस सार्वजनकि सभा के सामने, ईसाई परंपराओं और कानूनों की सार्वजनकि रूप से नदिा करें; क्योंकि यही कारण है कि सभी यहाँ इकट्ठा हुए हैं—पत्नयिों और

[4060] प्राचीन काल में रूस में, 'फ्रायागी' शब्द का उपयोग मुख्य रूप से जेनोइस (जेनोआ के लोगों) को संदर्भति करने के लिए कयिा जाता था, और बाद में सामान्य रूप से पश्चमिी यूरोपीय लोगों के लिए।

[4061] प्रसद्धि चर्च इतहिासकार ई. ई. गोलुबनिस्की के अनुसार, यहाँ उल्लेखति 'बेलग्रेड' आज का बेसराबयिाई शहर बाल्त्सी है। अन्य लोग 'बेलग्रेड' की व्याख्या अकरमैन के संदर्भ में करते हैं।

[4062] मोल्दावयिाई-वालाचयिाई चर्च (1416, 1419 से दक्षणिी रूस के मेट्रोपॉलटिन) के एक पादरी द्वारा संकलति संत जॉन की जीवन-कथा, साथ ही धर्मवधिि के अनुसार, शहीद अग्नि-पूजकों के हाथों पीड़ति हुए, जबकि ग्रीक शहीद-सूची के अनुसार, वे मुसलमानों के हाथों पीड़ति हुए। हालांकि, ऐतहिासकि अभलिेख यह इंगति नहीं करते कि ये अग्नि-पूजक फ़ारसी या मुसलमान थे: 14वीं शताब्दी के मध्य में, महान शहीद जॉन की मृत्यु के समय के आसपास, अकरमन पोलोवत्सयिों के नयिंत्रण में था, जन्होंने, बटू खान के शासनकाल के दौरान टाटारों की तरह, अग्नि पूजा का अभ्यास कयिा होगा।

बच्चों सहति—आपकी हमारी उज्ज्वल और गौरवशाली आस्था की घोषणा करने की इच्छा के बारे में सुनकर। तो जाओ, हे अद्भुत पुरुष, हमारे साथ खड़े हो जाओ, सबसे स्पष्ट स्वर में तेजस्वी सूर्य की महमिा करो, सूर्य से पहले आने वाले तारे को श्रद्धांजलअिर्पति करो, और ब्रह्मांड को प्रकाशति करने वाले दविय पंडिों को बलदिान चढ़ाओ; तब हमारे राजा द्वारा आपको अनेक सम्मान और उच्च पद प्राप्त होंगे, और हमारे लिए आप एक सच्चे भाई होंगे तथा सभी लोगों को भाने वाला जीवन जएिँगे।

जब शासक ने ये चापलूसी भरे शब्द द्वेष और चालाकी के मश्रिण से कहे, तब संत जॉन ने अपने मन की आँखें उठाकर प्रभु से सहायता की याचना की, जन्हिोंने कहा था: 'जब वे तुम्हें मेरे नाम के कारण राजाओं और शासकों के सामने लाएँ, तो उस घड़ी क्या कहना है या कैसे उत्तर देना है, इस बारे में पहले से चंति मत करो: क्योंकि तुम्हें एक ऐसा वचन दयिा जाएगा जसिका वरिोध करने वाले सब भी वरिोध नहीं कर सकेंगे (देखें मरकुस 13:11)। फरि, अपने शारीरकि नेत्रों से अपने यातनाकर्ता को नहिारते हुए और नडिर होकर अपना हाथ बढ़ाते हुए, उसने उत्तर दयिा:

'हे प्रधान, मुझे तो स्पष्ट रूप से झूठ बोलता हुआ प्रतीत हो रहा है! मैंने यह नहीं कहा कि मैं अपने मसीह का त्याग करना चाहता हूँ; ईश्वर न करे कि ऐसा कभी मुझ पर पड़े, ईश्वर न करे कि मेरे प्रभु यीशु मसीह मेरे मन में इस वचिार को भी आने दें; यह सत्य के शत्रु, तुम्हारे पति, शैतान की योजना है। तुम्हारे भीतर प्रवेश करके, जैसे अपनी सच्ची पात्र में, वह मुझसे तुम्हारे माध्यम से बोलता है, इस आशा में कि मुझे वनिाश की ओर ले जाएगा, और मुझे सच्चे ईश्वर से मुंह मोड़ने के लिए मजबूर करता है, सभी अन्य दृश्य और अदृश्य प्राणयिों के स्रष्टा, और साथ ही इस सूर्य के भी, जसिकी आप अंधकार की शक्ति से मोहति होकर, एक देवता के रूप में पूजा करते हैं, और अपने पागलपन में एक प्राणी को वह सम्मान देते हैं जो केवल ईश्वर को ही मलिना चाहिए। तो, मुझे झूठ के आगे झुकने के लिए प्रलोभति मत करो; बल्कि मुझसे सत्य के रहस्य को जानकर, मैं तुमसे वनिती करता हूँ, अपनी आत्मा पर छाए दुष्टता के अँधेरे को दूर कर दो, और प्रकाश का पुत्र बनने के योग्य ठहरो, जो दैवी बपतस्मिा की भोर में सूर्य से भी अधकि चमके। और स्वर्ग में दखिाई देने वाले सूर्य को ईश्वर न समझो, बल्कि यह जानो कि वह एक अग्नमिय प्रकाशमान पंडि है, जसिे सृष्टकिर्ता ने मानवता की सेवा के लिए स्थापति कयिा है और जो चौथे दनि बनाया गया था। क्या कोई सृजति वस्तु ईश्वर हो सकती है?

यह कहकर, संत जॉन ने अपने हाथ उठाए और स्वर्ग की ओर अपनी दृष्टि उठाई, और सभी के सुनने के लिए पुकार कर कहा:

'मैं आपको, हे मसीह मेरे उद्धारकर्ता, आपके अनंतकालीन पति और परम पवत्रि आत्मा, महमिामय परमेश्वर के साथ त्यागूँगा नहीं! मैं सूर्य की पूजा नहीं करूँगा, मैं अग्नि की सेवा नहीं करूँगा, मैं उस तारे को बलदिान नहीं चढ़ाऊँगा जसिे वधिर्मी कथाएँ शुक्र कहती हैं, जो व्यभचिार के जुनून के नाम पर रखा गया है!'

शहीद ने दृढ़ स्वर में और प्रसन्न मुख के साथ कहा। अंतरकि क्रोध की ज्वालाओं से प्रज्वलति, यातनाकर्ता का मुख बार-बार बदलता रहा, और वह उस व्यक्ति के शब्दों को अधकि देर तक सहन नहीं कर सका जो उसके वरिुद्ध बोल रहा था; क्योंकि संत जॉन ने, महान भीड़ के बीच, उस मसीह की महमिा की जसिे शासक ने अपमानति कयिा, उसे सच्चे ईश्वर के रूप में स्वीकार कयिा, और अंत तक अधर्मी वश्विास को अपमानति और धराशायी कयिा—या, या यूँ कहें, शासक का भ्रम। फरि यातना देने वाले ने सैनकिों को शहीद के कपड़े उतारने का आदेश दयिा, जसिे सैनकिों ने तुरंत, बनिा कसिी देरी के पूरा कर दयिा; और संत नग्न खड़े रहे—मसीह में परधिानति। फरि कमांडर ने शहीद के सामने लकड़ियों का एक ढेर लगाने का आदेश दयिा और उससे कहा:

'तुमने मथिकों को न दोहराने का वादा कयिा था, बल्कि अपने हानकिारक वश्विास का त्याग करने का, और तुमने उत्सुकता से हमारे प्रकाशमान वश्विास में शामलि होने और हमारे कानूनों से सुसज्जति होने की इच्छा व्यक्त की थी। तो अपनी लंबी नदिा को समाप्त करो और अपना वादा पूरा करो, 'हमारे सबसे गौरवशाली धर्म में शामलि हो जाओ और तेजस्वी सूर्य की पूजा करो; लेकनि अगर तुम ऐसा नहीं करते हो, तो हमारी उस धर्म के लिए, जो अपनी भलाई में उत्कृष्ट है, मैं न केवल इन डंडों से तुम्हारे शरीर को चूर-चूर कर दूँगा, बल्कि मैं तुम्हें अन्य, कहीं अधकि क्रूर यातनाओं से भी पीड़ा दूँगा, जो एक मनुष्य के लिए असहनीय हैं, और अंत में तुम्हें सबसे कड़वी मृत्यु दूँगा।'

पवत्रि शहीद ने उत्तर दयिा:

'हे यातना देने वाले, हर तरह की गंदगी से भरे! मैं कोई कथा-कहने वाला नहीं, बल्कि सच्चे ईश्वर का सेवक और प्रचारक हूँ, जो त्रमिूर्ति में महमिामय है, जसिमें मुझे मेरे पूर्वजों और माता-पति ने वश्विास करना सखिाया था; अब मैं केवल उसी की उपासना करता हूँ, उसकी स्तुति का बलदिान चढ़ाता हूँ, उसे सभी वस्तुओं का सृष्टकिर्ता मानता और

स्वीकार करता हूँ, और जीवतिों तथा मृतकों के न्यायाधीश के रूप में उसकी प्रतीक्षा करता हूँ; वह उस समय प्रत्येक व्यक्ति को उनके कर्मों के अनुसार पुरस्कृत करने आएगा, जब उसकी आज्ञा से, मानव जाति की सेवा के लिए स्थापति यह दृश्यमान सूर्य, मुरझा जाएगा। इसलिए, मुझसे और कुछ सुनने की उम्मीद मत करो – जो मैंने शुरुआत में कहा था, वही मैं अब कहता हूँ: जब तक मैं होश में हूँ और अपने विवेक पर काबू रखता हूँ, मैं सृष्टिकर्ता के स्थान पर किसी प्राणी का सम्मान नहीं करूँगा, और न ही सृष्टिकर्ता के स्थान पर किसी सृष्टि की पूजा करूँगा। और अब, हे अन्यायी, अपने भीतर छपिी पशुता और अमानवीयता को खुलेआम प्रकट करने में देरी न कर, और मेरे लिए यातनाएँ रचने की झंझट से खुद को मुक्त कर—तू चाहे किसी भी यातना और मृत्यु के साधन का चुनाव करे, मुझे प्रभु परमेश्वर के पास भेज दे, जिनकी मैं स्वयं आकांक्षा करता हूँ। तुम जो चाहो करो, और जल्दी करो, ताकि मेरे कान तुम्हारे अधर्मी शब्दों को अधिक समय तक न सुनने के लिए विवश हों, जिनके विषय में भविष्यवक्ता ने कहा: *'वे अपने हृदयों में बुराई की योजना बनाते हैं; दिन-प्रतिदिन वे हिंसा की साजिश रचते हैं'* (भजन संहिता 139:3), और ताकि मेरी आँखें तुम्हारा अत्यंत घृणित चेहरा फिर न देखें। यह मेरा नग्न शरीर है, तुम्हारी यातना के लिए तैयार। मुझे लाठियों से मारो, आग से जला दो, पानी में डुबो दो, या तलवार से काट डालो; और यदि तुम्हारे पास अन्य, और भी क्रूर यातनाएँ हैं, तो उन पर मुझे यातना देने में संकोच मत करो: मैं मसीह के प्रति अपने प्रेम के लिए उन सभी को खुशी-खुशी स्वीकार करने को तैयार हूँ।

शहीद के इन शब्दों ने क्रूर यातनाकर्ता को क्रोध से भर दिया; उसने तुरंत उस धन्य व्यक्ति को ज़मीन पर लिटाने और गाँठदार लाठियों से निर्दयता से पीटने का आदेश दिया। सेवकों ने मसीह के कष्ट-भोगी को इतनी निर्दयता से पीटा कि उसकी टूटी-फूटी मांस की कई टुकड़ियाँ डंडों के साथ हवा में उछल गईं, और वह पूरा स्थान जहाँ संत को यातना दी जा रही थी, खून से लथपथ हो गया। हालाँकि, उस वीर पीड़ित ने इस यातना को साहसपूर्वक सहन किया और स्वर्ग की ओर अपनी बुद्धिमान आँखें उठाकर कहा:

'मैं तुझसे धन्यवाद करता हूँ, हे प्रभु परमेश्वर, कि तू मुझे मेरे अपने रक्त से मेरे पापों से शुद्ध होने के योग्य समझा, उन पापों में जिनमें मैं मानव दुर्बलता के कारण अपने पवित्र बपतिस्मा के बाद गिर गया था।'

विनाश के पुत्रों ने, शहीद की ईश्वर से प्रार्थना सुनकर, और भी अधिक क्रोध से भर गए और उन्होंने उसे तब तक निर्दयता से पीटा जब तक उसकी आवाज़ शांत नहीं हो गई। शाम होते ही, राज्यपाल ने उस शहीद को, जो मुश्किल से साँस ले रहा था, दो ज़ंजीरों से बाँधने, एक कालकोठरी में फेंकने और सुबह की सबसे कठोर यातना के लिए पहरे पर रखने का आदेश दिया। और चूँकि शहीद अपने गंभीर घावों के कारण बिना सहारे के चल नहीं सकता था, उसे एक लाश की तरह घसीटकर जेल में डाल दिया गया।

अगली सुबह, जानवर जैसे अत्याचारी ने अदालत में अपनी सामान्य सीट पर बैठकर, पवित्र शहीद जॉन को अपने सामने लाने का आदेश दिया। मसीह के लिए पीड़ित एक दमकते चेहरे और आनंदित आत्मा के साथ प्रकट हुआ। शहीद पर नज़र डालते और उनका उज्ज्वल तथा प्रसन्न चेहरा देखकर, दुष्ट न्यायाधीश यह देखकर बहुत हैरान रह गया कि इतनी भयंकर यातना के बाद भी, शहीद की आत्मा अडिग बनी हुई थी और वह इस तरह आनंदित था - मानो उसे बिल्कुल भी दर्द नहीं हुआ हो।

उसने कहा, 'जॉन, क्या तुम देख रहे हो कि तुम्हारी अवज्ञा ने तुम्हें किस अपमान तक पहुँचा दिया है? तुम उस मीठे जीवन को खोने के बहुत करीब आ गए हो जो सभी लोगों के लिए सबसे प्रिय है।' हालाँकि, यदि तुम मेरी युक्तिपूर्ण बातों को मान लो, तो तुम्हारा ठीक होना निश्चित है: कुछ ही दिनों में तुम्हारा घायल शरीर ठीक हो जाएगा, क्योंकि हमारे पास भारत और फारस से आए हुए बहुत कुशल वैद्य हैं; परन्तु यदि तुम ईसाई बने रहना चाहते हो, तो जान लो कि तुम्हारा और भी बड़ा बुरा समय आने वाला है।"

पवित्र शहीद ने उत्तर दिया:

हे न्यायाधीश! मैं अपने घायल शरीर की बिल्कुल भी परवाह नहीं करता! क्योंकि जब हमारा बाहरी मनुष्य क्षीण हो रहा है, तो हमारा भीतरी मनुष्य नया किया जा रहा है, जैसा कि प्रिभु के महान प्रेरित कहते हैं (2 कुरिन्थियों 4:16)। मेरी केवल एक ही चिंता है: आपके द्वारा मुझे दी जा रही यातनाओं को अंत तक सहना, हे मसीह जो मुझे बल देते हो, जिन्होंने कहा: *'जो अंत तक टिकेगा वह उद्धार पाएगा'* (मरकुस 13:13)। यदि तुमने मेरे लिए और भी यातनाएँ सोची हैं, तो उन्हें मुझ पर करो: क्योंकि तुमने जो पहले घाव मुझे दिए हैं, वे कुछ भी नहीं हैं।

संत के इन बुद्धिमानी भरे शब्दों से लज्जित होकर, पागल यातनाकर्ता क्रोध से कांप उठा और एक जानवर की तरह दहाड़ मारते हुए, शहीद को फिर से जमीन पर लिटाने और और भी क्रूरता से पीटने का आदेश दिया; और लंबे समय

तक नौकरों ने बारी-बारी से उस कष्ट-भोगी को नर्दियता से पीटा, यहां तक कि शहीद की आंतें भी चीर-फाड़ दी गईं; फिर भी उसने, अपने होठों से फुसफुसाते हुए, ईश्वर से प्रार्थना की। जब उन सैनिकों ने उस शरीर के अंगों को पीटना बंद कर दिया जिसमें अडिग आत्मा बसी थी, और यातना देखने के लिए इकट्ठा हुए हर उम्र के लोग दुष्ट न्यायाधीश पर चिल्लाने लगे, उसकी निर्दयी और कठोर प्रकृति की निंदा करने लगे, तो यातना देने वाले ने एक जंगली और उग्र घोड़ा लाने का आदेश दिया, ताकि शहीद के पैरों को उसकी पूंछ से मजबूती से बाँधा जाए, और एक सैनिक के लिए, घोड़े पर सवार होकर, उसे शहर की सड़कों से होते हुए दौड़ाया जाए और मसीह के पीड़ित को तब तक घसीटा जाए जब तक घोड़े में दौड़ने की ताकत बची रहे। इस प्रकार संत को पूरे शहर में घसीटा गया, और यह धर्मपरायण आँखों के लिए एक दुखद दृश्य था। जब संत को घसीटते हुए सवार, , यहूदियों के इलाके में पहुँचा और उनकी सड़कों से तेज़ी से गुज़रा, तो यहूदियों की भीड़ ने शहीद का अपमान किया जब उसे घसीटा जा रहा था; इन दुर्भावनापूर्ण लोगों ने, अपने चेहरे विकृत करते हुए, अपने हाथों में जो कुछ भी था, उसे उस पर फेंका और चिल्लाते हुए, उन्मत्त और बेतुकी हँसी में लिप्त रहे। अंत में, यहूदियों में से एक घर में घुसा, एक खींची हुई तलवार उठाई, जैसे ही संत को घसीटते हुए ले जाया जा रहा था, उसके पास पहुँचा और उसका पवित्र सिर काट दिया। इस प्रकार यीशु मसीह के इस वीर योद्धा ने अपनी शहादत को समाप्त किया, और अपनी पवित्र आत्मा को अपने प्रभु के हाथों में सौंप दिया[4063] । उस योद्धा ने अपने सम्मानित शरीर को घोड़े की पूंछ से खोलकर उसी स्थान पर फेंक दिया, और वहाँ वह अपने धड़ से अलग सिर के साथ, बिना दफनाए और बिना देखभाल के पड़ा रहा; और ईश्वर-विरोधियों के क्रोध से डरकर, कोई भी ईसाई उसे छूने की हिम्मत नहीं कर सका।

जब रात हुई, तो शहीद के शरीर के ऊपर एक अद्भुत चमत्कार स्पष्ट रूप से देखा गया: बड़ी संख्या में दीपक तेज़ी से जल रहे थे, और तीन तेजस्वी पुरुष अकथनीय पवित्र भजन गा रहे थे, धूप जला रहे थे, और संत के शरीर के ऊपर आग का एक स्तंभ दृढ़ता से खड़ा था: कई लोगों ने इस चमत्कार को देखा। एक यहूदी, जिसका घर उस स्थान के पास था जहाँ वह कष्ट-सहिष्णु शरीर पड़ा था, ने सोचा कि ईसाई पुरोहित उसे ले जाकर ठीक से दफनाने आए हैं; उसने एक धनुष और एक तीर उठाया, उस स्थान पर पहुँचा और उन (कथित) पादरियों में से किसी एक को मारने की इच्छा से, उसने तीर को धनुष की नोक पर रखा, फिर धनुष को अपनी पूरी ताकत से खींचा। लेकिन जब उसने तीर छोड़ना चाहा, तो तीर और धनुष की डोरी उसके दाहिने हाथ की उंगलियों से चिपक गए, और धनुष उसके बाएं हाथ से, और वह न तो तीर छोड़ सका और न ही अपने हाथों को धनुष और तीर से मुक्त कर सका; और इस प्रकार यह यहूदी, वह साँप का संतान, सारी रात तक पीड़ित रहा। प्रातःहोते ही, वे चमत्कारी पुरुष अदृश्य हो गए; अग्नि का स्तंभ और दीपक गायब हो गए, और सभी आयु के लोग, उस स्थान पर इकट्ठा होकर, उस शापित धनुर्धर को उसी स्थिति में देखा, जैसा उसने तीर के साथ धनुष खींचा था, वैसे ही वह ईश्वर की अदृश्य शक्ति से बँधा हुआ था, मानो लोहे की बेड़ियों में जकड़ा हो। अपनी इच्छा के विरुद्ध, इस यहूदी को विस्तार से बताने के लिए मजबूर किया गया कि उसने शहीद के शरीर पर क्या देखा था और इस दुष्ट कृत्य के दुस्साहसी प्रयास के लिए उसे ईश्वर से क्या दंड मिला था। जब इस चमत्कार की पर्याप्त रूप से घोषणा हो गई, तो उसके हाथ खोल दिए गए, और उसे अपनी सज़ा से मुक्त कर दिया गया। जब राज्यपाल को इस बात की जानकारी मिली, तो वह बहुत डरा और उसने ईसाइयों को शहीद के शरीर को ठीक से दफनाने का आदेश दिया: ईसाइयों ने उसे उठाया और अपने चर्च के बगल में सम्मान के साथ दफना दिया।

कुछ दिनों बाद, जिसे फ्रिजियन ने संत को यातना देने के लिए सौंपा था, वह उनके पवित्र शरीर को चुराकर अपनी मातृभूमि वापस ले जाना चाहता था: वह पहले ही अपने दुष्ट कर्म पर पश्चाताप कर चुका था। एक रात, एक उपयुक्त समय चुनकर, वह अपने साथियों के साथ शहीद की कब्र तक आया, उस जगह को खोदा, ताबूत खोला और पवित्र अवशेष ले जाने ही वाला था। लेकिन उसी क्षण, मसीह का योद्धा उस चर्च के पुरोहित को सपने में दिखाई दिया और कहा:

'उठो और जल्दी से चर्च जाओ, क्योंकि वे मुझे चुराना चाहते हैं।'

[4064]प्रेस्बिटर तुरंत उठे, उस स्थान पर दौड़े, उन्होंने ताबूत को खोदा हुआ और खुला हुआ पाया, और संत का शरीर लगभग ले जाया ही जा चुका था। कुछ भक्तिपूर्ण लोगों को बुलाकर, उन्होंने उन्हें जो हुआ था वह बताया, और उन्होंने सभी ने उस परमेश्वर की स्तुति की, जो अपने संतों की महिमा करता है; शहीद के पवित्र अवशेषों को लेकर, वे उन्हें चर्च में ले गए और पवित्र वेदी के पास पवित्र स्थल में रख दिया। पवित्र अवशेष सत्तर वर्षों से अधिक समय तक वहीं रहे,

[4063] यह पवित्र शहीद संभवतः1340 से पहले ही निधन कर गए थे।

[4064] कुछ लोगों के अनुसार, आज का जियू शहर रोमानिया में, डैन्यूब नदी के बाएं किनारे पर, रुश्चुक के सामने स्थित एक शहर है।

और दनि-रात उनके ऊपर वभिन्नि चमत्कारकि घटनाएँ अक्सर घटति होती थीं: कभी-कभी एक अद्भुत प्रकाश दखिाई देता था, कभी-कभी आग का एक स्तंभ; कभी-कभी ताबूत से एक अकथनीय सुगंध नकिलती थी, और चंगा करने वाली शक्तयिाँ भी प्रकट होती थीं। इसकी खबर धर्मपरायण और मसीह-प्रेमी ग्रैंड वोइवोड अलेक्जेंडर तक पहुँची, जो उस समय मोल्डोवा और पोमेरेनयिा पर शासन करते थे—एक ऐसे व्यक्त जिो कई गुणों से वभिूषति थे और शहीदों से प्रेम करते थे; और वह इस सबसे कीमती खजाने—मसीह के पवत्रि शहीद, जॉन की पवत्रि अवशेषों—को प्राप्त करने की बहुत इच्छा रखते थे। परम पावन आर्चबशिप जोसेफ[4065] की सलाह पर, उन्होंने अपने कई कुलीनों को पर्याप्त संख्या में सैनकिों के साथ बेलग्रेड भेजा, और उन्होंने वहाँ से शहीद की अवशेषों को वापस लाने में कोई समय बर्बाद नहीं कयिा। महान वोयवोड सभी कुलीनों, परम पूजनीय आर्चबशिप अपने पुरोहतिों के साथ, और संपूर्ण जनता के साथ उनके स्वागत के लिए बाहर आए, और उन्होंने मोमबत्तयिाँ, धूपदान और सुगंधति मूर्रा के साथ शहीद के आगमन का आनंदपूर्वक स्वागत कयिा। महान वोइवोड, संत के अवशेष-पात्र के सामने प्रणाम करके, उनके दीर्घ-पीड़ति अवशेषों को गले लगा लयिा, शहीद के पवत्रि हाथों को अपनी आँखों और होठों से छुआ, और आनंदति और प्रचुर आँसू बहाते हुए, संत से अपने राज्य के संरक्षक बनने की प्रार्थना की। बड़े सम्मान के साथ, शहीद की पवत्रि अवशेषों को मोल्दावयिाई-वालाचयिाई राज्य की राजधानी, सोहाव में स्थति परम पवत्रि मेट्रोपोलसि में वरिाजति कयिा गया। जहाँ तक उन चंगाइयों का सवाल है जो तब और बाद में हुईं—जो शहीद की अवशेषों द्वारा वभिन्नि बीमारयिों से पीड़ति लोगों को प्रदान की गईं और की जाती हैं—हम इसे उन लोगों पर छोड़ते हैं, जन्हिें स्वयं बोलने का सौभाग्य मलिा है, ताकि वे उन आशीर्वादों की घोषणा कर सकें जो उन्हें उनसे प्राप्त हुए हैं। यहाँ, संत जॉन द्वारा सहन कएि गए कष्टों, उन्होंने कैसे दुष्ट राज्यपाल को शर्मदिा कयिा, उन्होंने जो पराक्रम कयिा, और उन्होंने पराक्रम प्रदान करने वाले मसीह के हाथ से अपना मुकुट कैसे प्राप्त कयिा, इस पर प्रकाश डालना ही पर्याप्त है। संत जॉन का यही धन्य लाभ था: उन्होंने थोड़ा दयिा, पर बहुत कुछ प्राप्त कयिा; दुष्ट यातनाकर्ता पर बोझ बनकर अपने शरीर को त्यागकर, वे ट्रेबज़िॉन्ड नहीं बल्कि स्वर्गीय यरूशलेम की ओर बढ़े – एक शहीद के रूप में शहीदों की कतार में, अब्राहम की गोद में, संतों के वासस्थान में, धन्य नविासों में, अवनिाशी महलों में, जहाँ वह परम पवत्रि और परम दैवी त्रमिूर्ति के समक्ष खड़ा हुआ, जनिके लिए महमिा, सामर्थ्य, सम्मान, स्तुति और आराधना हो, अब और हमेशा के लिए, आमीन।

ट्रोपारयिन, स्वर 4:

पृथ्वी पर एक अच्छा जीवन जीकर, हे कष्ट सहने वाले, दान, बारंबार प्रार्थना और आँसुओं से पोषति होकर, और एक बार फरि साहसपूर्वक दुख में स्वयं को झोंककर, तुमने फारसियिों की दुष्टता की नदिा की; इस प्रकार तुम चर्च के एक स्तंभ और ईसाइयों के लिए प्रशंसा का स्रोत बने, हे सदा-स्मरणीय योहन।

कॉन्टाकयिन, स्वर 4:

तुम व्यापारी बनकर गहरे समुद्रों में नौकायन करते हुए पूर्व से उत्तर की ओर यात्रा कर रहे थे; परन्तु जब ईश्वर ने तुम्हें बुलाया—जैसे उन्होंने मत्ती नामक कर-संग्रहकर्ता को बुलाया था—तब तुमने अपना व्यवसाय छोड़ दयिा और उनका अनुसरण कयिा, शहादत के कष्टों को सहते हुए इस संसार की अतक्रिमति न हो सकने वाली बाधाओं का प्रायश्चति कयिा, और तुमने अजेय मुकुट प्राप्त कयिा।

16 जून

3 जून (पुराना कैलेंडर)

[4065] उन्हें 1401 या 1402 में मोल्दावयिा और वलाचयिा का मेट्रोपॉलटिन नयिुक्त कयिा गया था।

पवत्रि शहीद लुसलियिन और उनके साथ चार युवक क्लॉडयिस, हाइपैटयिस, पॉल और डायोनसियिस, तथा पवत्रि कुंवारी पाउला की स्मृत

3 जून को स्मरणोत्सव

पवत्रि शहीद लुसलियिन, जन्हिोंने रोमन सम्राट ऑरेलयिन[4066] के शासनकाल में यातनाएँ सहन कीं, प्रारंभ में मूर्तपिूजक बहुदेववाद में जीवन यापन करते थे और एक मूर्तपिूजक पुरोहति भी थे, जो पहले ही सफेद बालों और गरमिापूर्ण रूप से सुशोभति एक सम्मानजनक वृद्धावस्था में पहुँच चुके थे। वह नकिोमेडयिा से बहुत दूर नहीं रहता था[4067] , और मंदरिों में दुष्ट देवताओं की सेवा करता था। फरि, हमारे ईश्वर मसीह की कृपा से, जो चाहता है कि सभी का उद्धार हो और कोई भी नष्ट न हो (तुलना करें 1 तीमुथयिुस 2:4), वह राक्षसों की धोखाधड़ी और मूर्तपिूजा की भूल से आश्वस्त हो गया, उसने सत्य का ज्ञान प्राप्त कयिा, एकमात्र सच्चे परमेश्वर, हमारे प्रभु यीशु मसीह पर वश्विास कयिा, मूर्तयिों को अस्वीकार कयिा और उनसे घृणा की, और अपनी वृद्धावस्था में उसकी जवानी एक गरुड़ की तरह नवीनीकृत हो गई (भजन संहति 102:5)। तब वह पवत्रि बपतस्मिा द्वारा पुनर्जन्म हुआ और उसने मन और आत्मा से पूरी तरह मसीह के प्रेम को समर्पति कर दयिा।

उन्होंने अन्य मूर्तपिूजकों को उनकी अधर्मीता की व्यर्थता और वनिाश समझाया, उन्हें उद्धार के मार्ग में शक्षिति कयिा, और अपने उपदेश के माध्यम से उन्हें मसीह तक पहुँचाया, ताकि कई लोगों के लिए वह परमेश्वर की ओर मुड़ने का एक उदाहरण बने। स्थानीय यहूदी, यह देखकर कि लूसलियिन ने मूर्तपिूजा को छोड़कर ईसाई धर्म अपना लयिा था और कई लोग, उसके उदाहरण और शक्षिा का अनुसरण करते हुए, मूर्तयिों की पूजा छोड़ रहे थे, ईसाइयों में शामलि हो रहे थे और पवत्रि बपतस्मिा ग्रहण कर रहे थे, क्रोध और घृणा से भर गए। इन अधर्मी और क्रूर लोगों ने ईर्ष्या के कारण उस पर झूठी कलंक लगाई और उसे अधर्मी अदालत के हवाले कर दयिा; और मसीह के सेवक को पूछताछ के लिए नकिोमेडयिा के राज्यपाल सल्विानस के सामने लाया गया। राज्यपाल ने उस वृद्ध पर मसीह का परत्यिाग करने और मूर्तपिूजा पर लौटने के लिए कड़ा दबाव डाला, लेकनि उसने उसकी आज्ञा मानने से इनकार कर दयिा। तब राज्यपाल क्रोध से भर गया और उसने लूसलियिन को वभिन्नि यातनाएँ देने का आदेश दयिा: उसके जबड़े तोड़ दिए गए , उसे बेरहमी से लाठयिों से पीटा गया, उल्टा लटका दयिा गया और फरि, लंबी और भयंकर यातना के बाद, एक कालकोठरी में डाल दयिा गया। वहाँ, संत लूसलियिन को मसीह में अपने वश्विास के लिए कैद कए गए चार युवक मलि: क्लॉडयिस, हाइपैटयिा, पॉल और डायोनसियिस। उन्होंने उनके साथ मसीह परमेश्वर के बारे में आनंदपूर्वक बात की और उन्हें शहादत के कार्य के लिए दृढ़ बनाया, ताकि स्वर्ग में शाश्वत पुरस्कार को ध्यान में रखते हुए, वे अस्थायी यातनाओं से न डरें, आने वाले जीवन के लिए मृत्यु से न घबराएं, और मसीह के लिए अपनी खलिती हुई जवानी की परवाह न करें, जो उनके लिए अपने राज्य में अक्षय आनंद तैयार करते हैं। वे सब मलिकर दनि-रात ईश्वर से प्रार्थना करते रहे और मसीह में अपनी आशा में सांत्वना पाते रहे। काफी दनि बीत जाने के बाद, संत लूसलियिन को फरि से यातनाएँ दी गईं, इस बार युवकों के साथ, और उन्हें उनके साथ लाल-गरम भट्टी में फेंक दयिा गया। लेकनि सर्वशक्तमिान ईश्वर ने उन पर अपनी अद्भुत दया दखिाई, ठीक वैसे ही जैसे उन्होंने एक बार बेबीलोन की भट्टी में फेंके गए यहूदी युवकों के लिए कयिा था (दानयिेल 3): आग ठंडक में बदल गई, लपटें ओस में, और ऊपर से बरसती मूसलाधार बारशि ने पूरी भट्टी को पूरी तरह से ठंडा कर दयिा, और संत लुसलियिन और युवक सुरक्षति बाहर नकिल आए। अवश्विास और द्वेष से अंधे हो चुके मूर्तपिूजकों ने ईश्वर के इस गौरवशाली चमत्कार का श्रेय ईश्वर की शक्ति को नहीं, बल्कि ईसाइयों की जादू-टोने को दयिा। फरि उस अन्यायपूर्ण न्यायाधीश ने पवत्रि शहीदों को मृत्युदंड की सजा सुनाई और उन्हें नष्पिादन के लिए बज़िान्टयिम[4068] भेज दयिा। जब वे बज़िान्टयिम पहुँचे, तो चारों पवत्रि युवकों—क्लॉडयिस, हाइपैटयिस, पॉल और डायोनसियिस—का सरि तलवार से काट दयिा गया, जबकि संत लूसलियिन को एक क्रूस पर लटका दयिा गया, और उनके पूरे शरीर को उसमें ठोक दयिा गया, और इस प्रकार उन्होंने अपनी आत्मा ईश्वर को सौंप दी। उन्हें यहूदयिों द्वारा सूली पर चढ़ाया गया था, जैसा कि उनके लिए समर्पति

[4066] *ऑरेलयिन ने* 270 से 275 तक शासन कयिा।

[4067] नकिोमेडयिा एशयिा माइनर के बथिनियिा क्षेत्र में, प्रोपोंटसि (मार्मारा सागर) के तट पर स्थति एक शहर था।

[4068] बज़िान्टयिम मेगारयिन उपनवेश था, जसिकी स्थापना 658 ईसा पूर्व में बोस्फोरस के यूरोपीय कनिारे पर हुई थी; यह ब्लैक सी को मार्मारा सागर से जोड़ने वाले संकरे जलडमरूमध्य पर एक प्रमुख स्थान पर स्थति था। 330 ईस्वी में, लकिनियिस पर अपनी वजिय के बाद, कॉन्स्टेंटाइन महान ने रोमन साम्राज्य की राजधानी यहाँ स्थानांतरति कर दी, और बज़िंटीयम को कॉन्स्टेंटनिोपल, यानी नया रोम के नाम से जाना जाने लगा।

कैनन की तीसरी ओड से स्पष्ट है, जसिमें इस प्रकार कहा गया है: 'यहूदा ने पुराने समय के उद्धारकर्ता मसीह को ईश्वर-हत्यारों के हवाले कर दयिा था: लेकनि अब तुम्हें भी कानूनहीन यहूदयिों ने धोखा दयिा है।'

पवत्रि कुंवारी पाउला ने भी उनके दुख के मुकुट में शामलि होकर उनका साथ दयिा। ईसाई माता-पतिा की बेटी, उसने अपने युवा दनिों से ही अपने हृदय में मसीह के प्रतगिहरा प्रेम पाला, अपनी अमर वरा के लिए अपनी कुँवारी अवस्था को संरक्षति रखा, और स्वर्गीय महल की योग्य बनने का प्रयास कयिा। अपने माता-पतिा की मृत्यु के बाद अनाथ और धनी होने के कारण, वह कालकोठरयिों में जाती और सोने के बल पर पहरेदारों को खरीदकर मसीह के लिए पीड़ति कैदयिों से मलिती। उसने मसीह के सेवकों की सेवा की, उन्हें अपनी संपत्तसि उनकी सभी आवश्यकताओं की पूर्तकिी; भूख और प्यास से पीड़तिों को वह भोजन और पानी लाती थी; नंगों को कपड़े देती थी; उसने शहीदों के उन शरीरों को, जन्हिें फाड़कर दरांती से सड़ाने के लिए छोड़ दयिा गया था, धोकर और पोंछकर, औषधीय पट्टी लगाकर और साफ लनिेन से बांधकर ठीक कयिा। मसीह के लिए सहे गए उनके घावों को चूमते हुए, उसने आँसू भरी आँखों से उनसे वनिती की कवि उसकी ओर से मसीह ईश्वर से प्रार्थना करें, ताकवि वह उसे अपनी दया से वंचति न करे। मसीह की इस चुनी हुई वधू ने सेंट लूसलियिन से भी मुलाकात की, जन्हिें नकिोमेडयिा में युवकों के साथ एक कुएँ में कैद कयिा गया था, और उनके प्रेरणादायक उपदेशों से सांत्वना ली। जब संत और युवकों को यातनाएँ दी जा रही थीं, तो वह उनके पराक्रम की गवाह बनी, और अपने हृदय की गहराई में उसने उनके लिए मसीह से वनिम्रतापूर्वक प्रार्थना की, कवि वह अपने सेवकों को मजबूत करें और उन्हें अपने पवत्रि नाम की महमिा के लिए, अंत तक अपनी यातनाओं को सहने का साहस और सहायता प्रदान करें। जब फांसी के बाद भीड़ ततिर-बतिर हो जाती थी, तो वह संतों की शहादत स्थल पर जाती, जमीन पर गरि उनके खून को इकट्ठा करती और उसे एक पवत्रि तीर्थस्थल के रूप में अपने पास रखती थी; जब बुजुर्ग और चार युवकों को मृत्युदंड के लिए बाइजेंटाइयम ले जाया गया, तो वह उनके पीछे चली गईं और उनकी सेवा की; और जब पवत्रि युवकों का सरि कलम कर दयिा गया, तो पवत्रि कन्या ने उनके सम्मानति शरीरों को उठाया और उन्हें श्रद्धापूर्वक दफनाया। सेंट लूसलियिन और पवत्रि युवकों की मृत्यु के बाद, वह नकिोमेडयिा लौट आईं और इसी तरह का काम करती रहीं। दुष्टों को पता चल गया कवि वह एक ईसाई थी; उन्होंने उसे पकड़ लयिा और उसी राज्यपाल सलिवानस के सामने मुकदमे के लिए लाया, जसिने, कई चापलूसी और धमकी भरी नसीहतों के बाद भी उसके अडगि रहने पर, उसे नग्न शरीर पर डंडों और लट्ठों से लंबी और नर्दियी पटिाई करने का आदेश दयिा; लेकनि जब वह अपने कई घावों से शारीरकि रूप से थक गई, लेकनि आत्मा में नहीं, प्रभु का स्वर्गदूत प्रकट हुआ और उसने उसे चंगा कर दयिा; और शहीद का शारीरकि स्वास्थ्य बहाल हो गया, और वह अपने यातनाओं में और भी अधकि साहसी और दृढ़ साबति हुई। फरि उन्होंने उसे अपने अपमानजनक शब्दों से अपने यातनाकर्ता को चढ़ाने के लिए उसके मुँह पर बेरहमी से मारा। तब उसे एक कालकोठरी में डाल दयिा गया, और बाद में यातना देने के लिए फरि से बाहर नकिाला गया और एक जलती हुई भट्टी में फेंक दयिा गया। लेकनि वह भट्टी से बनिा कसिी चोट के बाहर नकिली, क्योंकि, प्राचीन पवत्रि शहीदों की तरह, ईश्वर की शक्तने आग की शक्तिको नष्क्रयि कर दयिा था, ताकि जलती हुई लपटें मसीह की दुल्हन को छू न सकें। इन सब के बाद, यातना देने वाले ने उसे तलवार से सरि कलम करके मौत की सज़ा सुनाई और उसे बज़िेन्टयिम भेज दयिा, ताकवि वह ठीक उसी जगह पर अपनी मृत्यु को प्राप्त करे जहाँ सेंट लूसलियिन और युवकों की भी मृत्यु हुई थी। उसे ठीक उसी स्थान पर ले जाया गया जहाँ लूसलियिन ने मसीह के लिए सूली पर चढ़ाए जाने का दुख सहा था, मसीह की इस शहीद ने परमेश्वर को हार्दकि धन्यवाद दयिा, जन्हिोंने उसे शहीद के मुकुट और संतों के साथ सहभागति के योग्य समझा था। प्रभु से वनिम्रतापूर्वक प्रार्थना करने के बाद, उसने आनंदपूर्वक अपना कुंवारा सरि तलवार के नीचे झुकाया और उसका सरि कलम कर दयिा गया। इस प्रकार वह सांसारकि क्षेत्र से स्वर्गीय क्षेत्र में चली गई और स्वर्गीय महल में प्रवेश कयिा, अपने प्रभु के आनंद के लिए, अपने सबसे प्रयि वधू-वर, हमारे प्रभु मसीह द्वारा, एक दोहरे मुकुट—कुँवारीपन और शहादत के मुकुट—से मुकुटधारी हुई।

पुरोहति-शहीद संत लूसयिन का जीवन और शहादत

3 जून को स्मरण कयिा जाता है

शैतान और उसके सेवकों पर गौरवशाली शहीदों की वजियों, और मसीह के तपस्वयिों के दुख-कष्टों के कार्यों को याद करना, हमारे परमेश्वर मसीह की महमिा का उद्घोष करना है और उनकी शक्तकिा प्रचार करना है, जो उनके परम पवत्रि नाम की महमिा के लिए पीड़ा सहने वाले शहीदों के उत्कृष्ट कार्यों में प्रकट हुई। मसीह स्वयं सभी बातों में वजिेता

थे, अपनी ही बातों के अनुसार: *'साहस रखो; मैंने संसार पर वजिय प्राप्त की है'* (यूहन्ना 16:33), और शुरू में उन्होंने ही सभी की ओर से शत्रु से लड़ाई लड़ी। पवत्रि शहीदों ने, जो उनके बाद कष्ट सहने वाले उनके शरीर के अंग हैं (1 कुरन्थियों 12:27), प्रेरति के शब्दों में, *'मसीह की कष्टों की कमी* पूरी *की'* (कुलुस्सयिों 1:24) उनके अपने शरीर में; और चूंकि वे, उनके परम पवत्रि नाम के लिए संघर्ष करते हुए, अजेय होकर मरते हैं, इस हद तक मसीह उनमें वजिेता हैं, क्योंकि उनमें वे अपने शरीर के अंगों की तरह पीड़ति होते हैं, उनमें वह शत्रु पर अपनी वजिय प्रकट करता है और, महमिामय होकर, अपने साथ उन अंगों को भी महमिामय करता है जन्हिोंने उसके लिए दुख उठाया—अर्थात् पवत्रि शहीदों को, जो महमिा में उसके और भी नकिट हैं, क्योंकि वे दुख सहने में उसके अनुकरणकर्ता थे। इसलिए यह उचति है कि हम भी मसीह के इन पराक्रमी योद्धाओं का सम्मान और प्रशंसा करें, जनिके उपदेशों और साहसी कर्मों के उदाहरण द्वारा मसीह की कलीसयिा संपूर्ण ब्रह्मांड में प्रकाशमान होती है; जबकि वे स्वयं, वेदी के नीचे, अपने ही रक्त से दागे़ हुए परन्तु मसीह के रक्त से श्वेत कएि हुए वस्त्रों को पहने हुए, आनंद में वश्रिाम करते हैं (देखें मत्ती 5:14)।

संत लूसयिन भी शहीदों के समूह से संबंधति थे; जैसे ही दैवीय अनुग्रह ने उन्हें बपतस्मिा के जल में धोया, यह पहले से ही स्पष्ट था कि वह मनुष्यों में महान और गौरवशाली होंगे। उनके सांसारकि माता-पति ने उनका नाम लुसयिस रखा, जो महान प्रोकॉन्सल लुसयिस के सम्मान में था, जनिकी वंश परंपरा से वे जुड़े थे; बाद में, पवत्रि आत्मा की कृपा से और पवत्रि पतिाओं की परंपरा के अनुसार, बपतस्मिा के समय उनका नाम बदलकर एक बेहतर नाम रख दयिा गया। अपने माता-पति द्वारा लुसयिस—अर्थात्, 'प्रतभिाशाली'—नाम दएि गए, और ईश्वर की प्रतभिाओं से परपिूर्ण होकर, उन्हें एक अति उत्तम नाम प्राप्त हुआ, और उन्हें लुसयिन कहा गया, जसिका अर्थ है 'प्रकाश में प्रकट हुआ'। यह इस बात का संकेत था कि, नई अनुग्रह के प्रकाश में, वे प्रभु के वषिय में संसार के लिए एक ज्योति होंगे (मत्ती 5:14)। जन्म से वह कुलीन वंश का एक रोमी था, लेकनि उसे अपनी दूसरी, ईसाई जन्म (यूहन्ना 3:3) से और भी अधकि सम्मानति कयिा गया, क्योंकि उसे शाश्वत राजा के पुत्र के रूप में दत्तक ग्रहण का वरदान मलिा था। वह ज्ञान में नपिुण और ग्रीक तथा लैटनि दोनों में शक्षिति था, लेकनि उसने पवत्रि प्रेरति पतरस की शक्षिाओं से पूर्ण ज्ञान प्राप्त कयिा; क्योंकि वह उनसे जुड़ गया, उनका शष्यि बन गया, और उनमें से दव्यि ज्ञान से परपिूर्ण हो गया। उसने उनसे प्रेरतिों के मार्ग और परश्रिम भी सीखे: शहीद की मृत्यु के बाद, उसने इटली की कई जगहों का दौरा कयिा, और परमेश्वर के वचन के बीज बोए।

लुसयिन पहले ही परमेश्वर की बुद्धि में पूर्णता प्राप्त कर चुके थे, जब संत डायोनसियिस द एरोपागटि[4069] , परमेश्वर के मार्गदर्शन में, पवत्रि कैदयिों, प्रेरति पतरस और पौलुस से मलिने की इच्छा से रोम आए, लेकनि उन्हें जीवति नहीं पाया। उस समय, पोप क्लेमेंट प्रेरतिकि सहिासन पर थे। उन्होंने डायोनसियिस का उनकी पवत्रिता और मसीह में उनके बीच लंबे समय से चले आ रहे आध्यात्मकि प्रेम, दोनों के कारण, गर्मजोशी और बड़े सम्मान के साथ स्वागत कयिा, और डायोनसियिस कुछ समय के लिए उनके साथ रहे; उन्होंने एक-दूसरे की संगति में सांत्वना पाई, आध्यात्मकि वार्तालापों का आनंद लयिा, और एक-दूसरे को न केवल शब्दों से बल्कि सद्गुणों के उदाहरणों के माध्यम से भी मजबूत कयिा। एक दनि, धन्य क्लेमेंट, पवत्रि आत्मा से परपिूर्ण होकर, बोले:

'हे मेरे प्रयि भ्राता डायोनसियिस! क्या तुम देखते हो कि अन्यजातयिों के बीच प्रभु की फसल कतिनी भरपूर है, और परमेश्वर के प्रचार के काम में मजदूर कतिने कम हैं (मत्ती 9:37)? और चूँकि आप ऑर्थोडॉक्स धर्म में पूरी तरह से शक्षिति हैं और ईसाई कानून के गुणों में पूर्णता प्राप्त कर चुके हैं, मैं आपसे वनिती करता हूँ: हमारे प्रभु यीशु मसीह के लिए पश्चमिी भूमि पर जाएँ; उनके एक पराक्रमी सैनकि के रूप में, हमारे प्रभु के शत्रुओं के वरिुद्ध हथयिार उठाएँ और उन्हें उस परमेश्वर की शक्ति से परास्त करें जो आपको बल देता है।

संत डायोनसियिस ने पूरे दलि से इस बात के लिए सहमति दे दी, और फरि धन्य क्लेमेंट ने उनके लिए मत्रिों, सहायकों और साथी सेवकों को खोजने और इकट्ठा करने लगे—ऐसे धर्मनष्ठि और बुद्धमिान पुरुष जो पवत्रि जीवन से दमकते थे। उन्होंने उनमें से संत लूसयिन को चुना, उसे बशिप नयिुक्त कयिा, और उसे संत डायोनसियिस के साथ जोड़ा, ताकि वह परमेश्वर के वचन का प्रचार करने में उनका साथी और सहकर्मी हो सके, और दूसरों के लिए—पवत्रि आत्मा

[4069] संत डायोनसियिस द एरोपागटि (एथेन्स में एरोपागस - उच्चतम शासकीय नकिाय के एक सदस्य) प्रेरति पौलुस के उपदेश के प्रभाव में ईसाई धर्म में परविर्तति हो गए (प्रेरतिों के काम 17:34) और उन्हें एथेन्स का बशिप नयिुक्त कयिा गया; फरि, 90 ईस्वी में, उन्हें प्रेस्बटिर रस्टकिस और डीकन एलेउथेरीउस के साथ सुसमाचार का प्रचार करने के लिए गॉल भेजा गया। उन्होंने 96 ईस्वी में डोमशियिन के अधीन उनके साथ शहादत प्राप्त की। उनका पर्व दविस 3 अक्टूबर है।

में एक पति, एक शिक्षक और एक मार्गदर्शक। इस प्रकार व्यवस्था करने के बाद, धन्य क्लेमेंट ने अपने चुने हुए लोगों को दयालु शब्दों से प्रोत्साहित किया, और कहा:

– आगे बढ़ो, प्रिय भाइयों, जाओ, मसीह के अजेय योद्धाओं, और जैसे प्रभु हमारे पवित्र पितरों, प्रेरितों और उनके साथियों के साथ थे, वैसे ही वे तुम्हारे, उनके पवित्र नाम के प्रचारकों के साथ रहें: क्योंकि एक महान और अगणित भीड़ जातियों की तुम्हारे द्वारा प्रभु की ओर मोड़ी जाएगी और उनके झुंड में लाई जाएगी।

एक लंबी बातचीत के बाद, संत क्लेमेंट ने उन्हें हार्दिक विदाई दी, उन पर आशीर्वाद दिया और उन्हें शांतिपूर्वक विदा किया; और वे एक साथ निकल पड़े, और पहले पूरे इटली में मसीह का प्रचार करने लगे।

जब वे टिसिनम नगर[4070] के पास पहुँचे, तो धन्य लूसियन ने पार्मा नामक स्थान पर लोगों को परमेश्वर का वचन प्रचार किया और उन्हें व्यर्थ की मूर्तिपूजा से हटा दिया। स्थानीय निवासी, जो अविश्वासी और कट्टर मूर्तिपूजक थे, अपने देवताओं पर हुई अपमान को सहन न कर सके और ईश्वर के वचन की घोषणा पर ध्यान देने से इनकार कर दिया, उन्होंने सेंट लूसियन को पकड़ने में कोई समय बर्बाद नहीं किया; उसे कई अपमानों के बाद, उन्होंने अकेले ही सार्वजनिक कालकोठरी में डाल दिया। उसमें प्रवेश करते समय, धन्य व्यक्ति ने बड़ी प्रसन्नता से गाया: *'हे प्रभु, मुझे अपना मार्ग सिखा, और मैं तेरी सच्चाई में चलूँगा'* (भजन संहिता 85:11), और फिर: *'मेरे पाँवों को अपने मार्गों में स्थिर कर, ताकि मेरे पाँव न फिसलें'* (भजन संहिता 16:5)। प्रभु में इस प्रकार आनंदित होकर, वह पवित्र पुरुष जेल में परमेश्वर के पंखों की छाया में रहने के समान रहा, और मसीह की सुरक्षा में पूरी आशा रखकर, उसने उनसे इस प्रकार प्रार्थना की: *'मेरी आत्मा को कुंड से निकाल, ताकि मैं तेरा धन्यवाद करूँ'* (भजन संहिता 141:6), क्योंकि धर्मी लोग मेरा इंतजार कर रहे हैं – कि मेरे द्वारा, हे मसीह, संसार के उद्धारकर्ता, अन्यजातियों में से जो अनंत जीवन के लिए पूर्वनिर्धारित हैं, वे आप की ओर मुड़ें (रोमियों 8:28)। संत ने इस प्रकार और इसी तरह की प्रार्थनाएँ पूरे हृदय से कीं, और उसकी प्रार्थना, स्वर्गों से होकर गुज़रकर, प्रभु के कानों में पड़ी: क्योंकि उसने यह माँगा था कि उसे अपनी यात्रा में अपने साथियों के बिना न छोड़ा जाए, जिनके साथ वह कष्ट सहने और उस स्थान पर पहुँचने के लिए निकलना चाहता था, जहाँ उसे भेजा गया था। मसीह के इस पराक्रमी योद्धा ने यह प्रार्थना इसलिए नहीं की क्योंकि वह अपने प्रभु के लिए मरने से डरता था, बल्कि इसलिए क्योंकि वह पहले प्रभु के आध्यात्मिक फल को बढ़ाना चाहता था, और फिर, एक भरपूर और समृद्ध फसल इकट्ठा करने के बाद, अपने दोस्तों के साथ शहीद का मुकुट और अपनी मेहनत का इनाम प्राप्त करना चाहता था। और जल्द ही उसे ईश्वर की सहायता मिली: कुछ ईसाइयों ने, उस पवित्र व्यक्ति की दुर्दशा के बारे में जानकर, मसीह के प्रति अपने प्रेम से प्रेरित होकर, रात में जेल आए और किसी भी तरह से लूसियन को उसके बंधनों से मुक्त कर दिया और उसे अपने पवित्र मित्रों के साथ प्रस्थान करने में सक्षम बनाया।

प्रभु के मार्गदर्शन में यह पवित्र समूह, इटली प्रांत के गौरवशाली शहर टिसिनो, जिसे पाविया के नाम से भी जाना जाता है, में सुरक्षित पहुँचा; वहाँ अपने परिश्रम से थोड़ी देर विश्राम करने के बाद, उन्होंने विभिन्न स्थानों पर अथक और प्रचुर मात्रा में मसीह के वचन का प्रचार करते हुए परमेश्वर की महिमा का वर्णन करना जारी रखा, ताकि उनमें भविष्यद्वाणी के वचनों की पूर्ति देखी जा सके: *'उन पहाड़ों पर दूत के पाँव कितने सुन्दर हैं जो शान्ति का प्रचार करते हैं, जो आनन्द की सुसमाचार लाते हैं'* (यशायाह 52:7; रोमियों 10:15)। यह वर्णन करना असंभव है कि उन्होंने इतने कम समय में कितने हज़ारों लोगों को मसीह के प्रति परिवर्तित किया, सभी को उद्धार का वचन सुनाते हुए; और परमेश्वर की शक्ति उनके माध्यम से इतनी सामर्थ्य से कार्य कर रही थी कि जो भी उन्हें देखते थे, वे सोचते थे कि वे स्वर्ग के नागरिकों को देख रहे हैं, क्योंकि वे सभी के बीच चिह्नों और अद्भुत कार्यों से चमकते थे, और परमेश्वर के चुने हुओं की आत्माओं को प्रबुद्ध करते थे। फिर वे इटली से चले गए; समुद्र तट पर पहुँचकर, वे एक जहाज पर सवार हो गए और जहाँ भी पवित्र आत्मा ने उन्हें निर्देश दिया, वहाँ नौकायन करने लगे। वे आनंदपूर्वक आर्ल्स शहर के बंदरगाह में प्रवेश किए, उतर गए, और उस शहर के निवासियों द्वारा सम्मान और दोस्ती के साथ उनका स्वागत किया गया; यहाँ वे विश्राम करने लगे और, पवित्र प्रेरितों के उदाहरण का अनुसरण करते हुए, परमेश्वर का वचन प्रचार करने के लिए क्षेत्रों का चयन करने लगे। मसीह के सुसमाचार के प्रचार के माध्यम से, ब्रिटिश द्वीप समूह तक भी, मूर्तिपूजकों के बीच हर जगह परमेश्वर की कलीसिया का प्रसार और वृद्धि करने के लिए, संत मार्सेलिनस अपने कुछ भाइयों के साथ स्पेन गए, धन्य सैटरनिस

[4070] टिसिनम, जो अब पाविया है, सिसाल्पाइन गॉल में एक प्राचीन शहर है, जो टिसिनो नदी के बाएं किनारे पर स्थित है, और ठीक वहीं से थोड़ी दूरी पर है जहाँ यह पो नदी में मिलती है।

गॉल गए, जबकि संत डायोनसियिस, धन्य ल्यूसयिन और अन्य लोगों के साथ, पेरसि के क्षेत्र में आए। वहाँ से, संत ल्यूसयिन, पुरोहति मैक्सयिन और डकिन जूलयिन के साथ, बेल्जयिम में उपदेश देने के लिए रवाना हुए। पवत्रि आत्मा की कृपा से परपिूर्ण होकर, उन्होंने वहाँ प्रभु का नाम प्रचार कयिा, शत्रु की शक्ति पर वजिय प्राप्त की, मसीह की कलीसयिा की स्थापना की, और अपने शब्दों के साथ-साथ अपने सदाचारी जीवन के उदाहरण द्वारा भी लोगों को मोक्ष का मार्ग दखिाया। इसके अलावा, ईश्वर ने उन्हें चमत्कार करने और लोगों में हर तरह की बीमारयिों और कमज़ोरयिों को ठीक करने की शक्ति प्रदान की; और उन्हें दुष्टात्माओं पर इतना अधकिार प्राप्त हुआ कि, जैसे ही वे उनका आदेश सुनते, वे तुरंत उन लोगों को छोड़ देते थे जनि्हें वे पीड़ति कर रहे थे।

दनि-रात मसीह के बारे में अथक रूप से उपदेश देते हुए, लूसयिन ने स्वयं को प्रार्थना और जागने, दैनकि उपवास, संयम और शरीर के पूर्ण संयम को समर्पति कर दयिा, और इस प्रकार प्रेरति के शब्दों में, *'उसने अपने शरीर को एक जीवति बलदिान के रूप में प्रस्तुत कयिा, जो पवत्रि और परमेश्वर को भाता था'* (देखें रोमयिों 12:1)। उसका सामान्य भोजन रोटी का एक छोटा टुकड़ा और हरी सब्जयिाँ होता था, और उसका पेय पानी था; फरि भी ईश्वर की शक्ति ने उसे जीवति रखा, और प्रभु की कृपा ने उसके थके हुए अंगों को बल दयिा। धन्य व्यक्ति शहीद के मुकुट के लिए इतनी तीव्र लालसा रखता था कि वह दुनयिा के लिए पहले ही मृत प्रतीत होने लगा।

इस प्रकार प्रभु मसीह के इस सच्चे अनुयायी ने अपना क्रूस उठाया। वह जानता था कि पीड़ा दो प्रकार की होती है: एक गुप्त, दूसरी प्रकट; और प्रकट शहादत के कार्य को करने तथा प्रभु से अक्षय मुकुट धारण करने से पहले, उसने गुप्त रूप से स्वयं को थाम लयिा, यद्यपि उसकी आत्म-त्याग सभी को ज्ञात था। शारीरकि संयम के द्वारा वह दुबला-पतला हो गया था, और धैर्य से सुसज्जति था; अद्भुत वनिम्रता और नम्रता से परपिूर्ण, वह सद्गुणों में इतनी पूर्णता को प्राप्त कर गया था कि, पृथ्वी पर शरीर में रहते हुए भी, आत्मा में वह पहले ही स्वर्ग में स्वर्गदूतों के साथ नविास करता प्रतीत होता था। इसलिए, उनका मुख हमेशा दीप्तमिान और स्वागत करने वाला दखिाई देता था, उनका मन शांत था, और इस वरष्ठि की, अद्भुत सफेद बालों से सुशोभति, संपूर्ण आकृति उन्हें एक सांसारकि देवदूत, एक स्वर्गीय मानव के रूप में प्रकट करती थी।

जब पूरे बेल्जयिम में लूसयिन की ख्याति फैल गई, तो लोग बपतस्मिा लेने की इच्छा से उसके पास आने लगे, और उन्होंने उससे पति, पुत्र और पवत्रि आत्मा के नाम पर बपतस्मिा लयिा, और बाद में उन मूर्तयिों को तोड़ डाला जनि्हें वे पहले पूजते थे। प्राचीन शत्रु, शैतान, ने जब देखा कि मसीह अपने सेवकों के माध्यम से लोगों को अपनी ओर खींच रहे थे, तो उसने अपनी सारी चालाकयिाँ और योजनाएँ परमेश्वर की पवत्रि कलीसयिा के वनिाश की ओर मोड़ दीं; उसने डोमशियिन में ईसाइयों के प्रति क्रोध और घृणा को भड़काया, जसिने नीरो—जो तब तक मर चुका था—का अनुसरण करते हुए, ईसाइयों पर दूसरा उत्पीड़न शुरू कयिा: उसने उसे यह आदेश दयिा कि वह रोमन साम्राज्य भर के ईसाइयों को मूर्तपिूजा करने और मूर्तपिूजक देवताओं को बलदिान चढ़ाने के लिए मजबूर करे, और जो वश्विास में दृढ़ रहे उन्हें वभिन्नि यातनाओं के बाद मृत्युदंड दे। डोमशियिन ने अपने राज्य के सभी कस्बों और गांवों में एक दुष्ट फरमान जारी कयिा, जसिमें सभी स्थानीय मजस्ट्रिेटों को आदेश दयिा गया कि वे ईसाइयों को मूर्तयिों की पूजा करने और उन्हें बलदिान चढ़ाने के लिए मनाएं, और जो आज्ञा मानने से इनकार करें उन्हें वभिन्नि प्रकार की यातनाओं से मार डालें। मसीह के नाम के उत्पीड़क गॉल भेजे गए ताकि वे मसीह के सैनकिों को ढूंढ सकें, वशिेष रूप से उन लोगों को जो रोम से वहाँ आए थे, जनिकी ख्याति पहले ही दूर-दूर तक फैल चुकी थी; वे उनके साथ मसीह का नाम भी जड़ से मटिा देना चाहते थे। वहाँ तीन उत्पीड़क भेजे गए: लैट्रनि, एरयिस और एंटोर। उन्हें एक वशिेष आदेश दयिा गया था: ईश्वर के पवत्रि सेवक, लूसयिन को ढूंढना, उसे पकड़कर नर्णिय के लिए सीज़र के सामने लाना, या यदि वह मूर्तयिों को बलदिान चढ़ाने से इनकार करता है तो उसे तलवार से तुरंत मार देना। उत्पीड़क गाउल के शहरों और गांवों में घूमे, लेकनि उन्हें वह व्यक्ति कहीं नहीं मलिा जसिे वे ढूंढ रहे थे। तब उन्हें खबर मलिी कि लूसयिन, ईश्वर का एक पुरुष, शाश्वत राज्य की सुसमाचार का प्रचार करके बेल्जयिम के लोगों को ज्ञान प्रदान कर रहा था। यह सुनकर, अत्याचारयिों ने अत्यधकि क्रोध और रोष से भरकर, बेल्जयिम की ओर बढ़ चले।

पवत्रि आत्मा के प्रकट वचन द्वारा, संत लूसयिन को यातना देने वालों के पहुँचने से पहले ही उनके आगमन की सूचना मलि गई। वह वहीं रहे जहाँ वह लोगों को जीवन के वचन सखिा रहे थे, और उनके साथ लोगों की एक बड़ी भीड़ थी जो पहले ही उनके उपदेश द्वारा मसीह के प्रति परविर्तति हो चुकी थी। शाश्वत महमिा और धन्य पुरस्कार की आशा में, उन्होंने पूरे हृदय से उन्हें प्रोत्साहति करते हुए कहा:

'हे मसीह में प्रयि भाइयो और बच्चों! मेरे प्रभु यीशु मसीह को यह उचति लगा कि वे मुझे मेरे परशि्रम का फल दखिाएँ और मुझे पूर्व में वादा कयिा गया प्रतफिल प्रदान करें। हे अति प्रयि, मसीह के वशि्वास में दृढ़ और अटूट बने रहो। मैं अब बूढ़ा और थका हुआ हूँ; मैं शहीद के मुकुट में आनंदति हूँ, और प्रभु के पास जाने की लालसा करता हूँ; परन्तु तुम, उस परमेश्वर की कृपा में दृढ़ बने रहो जो तुमको मलिी है। आपके उत्पीड़क भय से आप मसीह के वशि्वास से न भटकें; धमकयिों से आप न डरा करें; चापलूसी में आप न फँसें; कसिी भी सम्मान या धन-संपत्ति के वादों से आप भटकें नहीं; बल्कि आने वाले जीवन में आप अनंत आनंद का अनुभव करें, जहाँ आपके लिए अकथनीय पुरस्कार प्रतीक्षा कर रहे हैं। मैं भी धन्य आशा में इन बातों के लिए तरसता हूँ, और उनके कारण मैं अपने उत्पीड़कों के क्रोध से नहीं डरता।

यह कहकर, लूसयिन ने अपनी आँखें स्वर्ग की ओर उठाईं और, सभी के सामने, परमेश्वर का धन्यवाद कयिा कि वह उसे पवति्र शहीदों के भाग के लिए योग्य समझ रहे थे और उसे अपने दोस्तों से अलग नहीं कर रहे थे। उन्होंने कहा:

'मैं तुझे धन्यवाद देता हूँ, हे प्रभु यीशु मसीह, जीवति परमेश्वर के पुत्र, जसिने मुझे धन्य डायोनसियिस और उनके साथ मृत्यु भोगने वालों का साथी बनाया है, और मुझे अपने दुखों में उनके बराबर बनाया है; मैं तुझसे वनिती करता हूँ, यह अनुग्रह कर कि मैं स्वर्ग के राज्य में उनके साथ रहूँ।'

यह कहकर, वह बेलोवक नगर से नकिल गया[4071] , न कि इसलिए कि वह यातनाओं से डरता था, बल्कि इसलिए कि, उत्पीड़क से भाग जाने की प्रभु की आज्ञा (मत्ती 10:23) के अनुसार, वह अपनी भेड़ों के लिए एक उदाहरण स्थापति कर सके। अपने धन्य साथयिों, पुरोहति मैक्सयिन और डकिन जूलयिन के साथ चलते हुए, उन्होंने पूरे सफर के दौरान धर्मोपदेशात्मक बातचीत और प्रार्थना करना बंद नहीं कयिा; अंतत; वह उस पहाड़ की चोटी पर पहुँचे जसिकी ओर वे जा रहे थे, जो शहर से तीन स्टेडयिम[4072] की दूरी पर पश्चमि से बहने वाली फारा नामक नदी के पास स्थति है। जब वह वहाँ पहुँचे, तो पहाड़ी पर बसा एक नगर की तरह, उन्हें छपिाया नहीं जा सकता था (मत्ती 5:14); क्योंकि वह पहाड़, नदी के ऊपर मनोरम रूप से उठता हुआ, दूर से दखिाई देता था। वहाँ, धन्य व्यक्ति, मानो कसिी सार्वजनकि मंच पर खड़े होकर, अपने शहीद होने के मुकुट की प्रतीक्षा करने का संकल्प कर लयिा।

उपरोक्त उत्पीड़क, नगर पहुँचकर संत लूसयिन को वहाँ न पाकर, यह पता लगाने लगे कि वह कहाँ गया था। उन्हें बताया गया कि वह नगर से बहुत दूर नहीं, लोगों को उपदेश दे रहा था; वे तुरंत तेज घोड़ों पर सवार होकर वहाँ रवाना हो गए और उस पहाड़ पर पहुँचे जहाँ ईश्वर का पुरुष लोगों और अपने शष्यिों के साथ ठहरा हुआ था। सबसे पहले, उन्होंने ईश्वर के पवति्र सेवकों, मैक्सयिन और जूलयिन को पकड़ लयिा, ताकि उनके कष्टों और मृत्यु के माध्यम से संत लूसयिन को डरा सकें और उसे मूर्तयिों की पूजा करने के लिए मजबूर कर सकें। उन्होंने पकड़े गए शहीदों को सख्त लहजे में मूर्तयिों के सामने झुकने का आदेश दयिा और उनमें डर पैदा करने की कोशशि करते हुए कहा:

'यदि तुम हमारे अमर देवताओं को बलदिान नहीं चढ़ाओगे, तो हम तुम्हें तुरंत तलवार से मार डालेंगे।'

लेकनि शहीदों ने, अपने वशि्वास में दृढ़ रहते हुए, नडिर होकर उत्तर दयिा:

'हम कभी भी मूर्तयिों की पूजा नहीं करेंगे, क्योंकि वे व्यर्थ हैं और मानव हाथों से बनी हैं: हम एक सच्चे प्रभु, जीवति परमेश्वर के पुत्र, यीशु मसीह को जान चुके हैं, जसिके लिए हम मरने को तैयार हैं।'

यह सुनकर, दुष्ट लोगों ने तुरंत उन्हें संत लूसयिन की उपस्थति में तलवार से काट डाला। इस प्रकार संतों ने प्रभु द्वारा उन्हें वादा कयि गए मुकुट प्राप्त कयि और उन्हें पवति्र शहीदों की पंक्ति में शामलि कर लयिा गया। संत लूसयिन, उनके इस पराक्रम पर आनंदति होकर और परमेश्वर की महमिा करते हुए, सभी के सामने कहा:

'हे मेरे प्रभु परमेश्वर, मैं आप में आनंदति और हर्षति हूँ, कि मैं देखता हूँ कि मेरे बच्चों ने आपकी महमिा का मुकुट प्राप्त करने में मुझसे पहले ही प्रवेश कर लयिा है।'

तब लैट्रनि, एरयिस और एंटोर, क्रोध और रोष के साथ, एकमत होकर उस धन्य व्यक्ति से कठोर शब्दों में बोले:

'क्या तुम ही नहीं हो जो जादू-टोने के द्वारा लोगों को शक्तशिाली सीज़र और रोमन सीनेट के आदेश की अवज्ञा करने और अमर देवताओं को अनुकूल बलदिान देने से इनकार करने के लिए बहका रहे हो?'

धन्य लूसयिन ने उत्तर दयिा:

[4071] अब फ्रांस में ब्यूवस (Beauvais) के नाम से जाना जाता है।

[4072] क्षेत्र का माप लगभग 690 फathom था।

मैं कोई जादूगर नहीं, बल्कि यीशु मसीह का सेवक हूँ; मुझे जादू-टोना नहीं, बल्कि दिव्य ज्ञान सिखाया गया है, और उसकी शक्ति से मैं परमेश्वर के लोगों को सत्य का मार्ग दिखाता हूँ, और उन्हें सिखाता हूँ कि वे बिना किसी बाधा के मेरे प्रभु यीशु मसीह का अनुसरण कैसे कर सकते हैं। वह स्वर्ग से पृथ्वी पर अपनी रचना को, अपने ही लहू के द्वारा, शत्रु की दासता से छुड़ाने आए; उन्हें मूर्तिपूजा—या यूँ कहें, राक्षसों की पूजा—से हटाने और उन लोगों को उद्धार देने के लिए जिन्हें अंधविश्वास के अंधकार से निकालकर सच्चे प्रकाश में लाया गया है: और यह उचित है कि वे अपने पूरे हृदय से केवल उसी के आगे झुकें, जिसने सभी की मुक्ति के लिए सूली पर चढ़ने और मृत्यु सहने की कृपा की।

उत्पीड़क विरोध करने लगे:

'तुम उसको ईश्वर कैसे मान सकते हो जिसे तुम न केवल मृत बल्कि सूली पर चढ़ाया गया भी कहते हो?'

संत लूसियन ने उन्हें उत्तर दिया:

'यद्यपि, तुम्हारे अविश्वास के कारण, तुम स्वर्ग के राजा के रहस्यों को सुनने के अयोग्य हो, तथापि, यहाँ इकट्ठा हुए विश्वासियों की भीड़ के लिए, मैं संक्षेप में बोलूँगा: सच्चे परमेश्वर, सच्चे परमेश्वर के पुत्र, जो सनातन काल से पिता के साथ वास करते आए हैं, ने युगों के अंत में, मानव जाति को, जो आदम के अपराध के परिणामस्वरूप नाश हो रही थी, नया करने की इच्छा से, परम पवित्र कुँवारी से अक्षुण्ण और अकथनीय रूप से जन्म लेने की कृपा की, ताकि वह एक ही व्यक्ति में दो स्वभावों वाला, एक मसीह, सच्चा परमेश्वर और सच्चा मनुष्य हो, सच्चा पुत्र, जो दिव्य और मानवीय दोनों है। और वह, अपनी दिव्यता में अकथनीय और पिता के साथ सदा निवास करने वाले, हमारे लिए दृश्यमान हुए, और अपनी मानवीय प्रकृति के अनुसार, हमारे लिए दुःख सहने के अधीन हुए: क्योंकि वह हमारे उद्धार के लिए, मृत्यु तक, यहाँ तक कि क्रूस पर मृत्यु तक, परमेश्वर पिता के प्रति आज्ञाकारी बने (देखें फिलिप्पियों 2:8). यदि परमेश्वर के पुत्र ने मनुष्य का पुत्र बनने की इच्छा न की होती और यदि उसने नश्वर का रूप न लिया होता, तो न तो मानव जाति को परमेश्वर से क्षमा मिलती, और न ही नश्वर अमरत्व के वस्त्र से परिधानित होते।

धन्य लूसियन के ये और कई अन्य शब्दों ने यातना देने वालों को और भी अधिक क्रोध से भर दिया, और उन्होंने कहा:

'तुम पहले ही बुढ़ापे की दहलीज पर पहुँच चुके हो, और अब तुम्हारे लिए इस बचकाने व्यर्थ की बात को छोड़ने का समय आ गया है; यही कारण है कि तुम बिना हिचकिचाए अपनी मृत्यु को आमंत्रित करने की हिम्मत करते हो, और क्यों तुम इस बात से भयभीत नहीं हो कि तुम्हें बड़ी व्यर्थता से बहकाया जा रहा है और अत्यधिक बकबक तुम्हारे विवेक को छीन रही है।' हम तुम्हें सच बता रहे हैं: यदि तुम तुरंत पश्चाताप नहीं करते, यदि तुम अपना पागलपन और दुस्साहस नहीं छोड़ते, और यदि तुम अमर देवताओं को अनुकूल बलिदान नहीं चढ़ाते, तो हम तुरंत तुम्हारी वृद्धावस्था को निर्दयता से भयंकर यातनाओं में डाल देंगे।

तब यातना देने वाले बैठ गए और धमकाते हुए उससे पूछना शुरू किया:

'तुरंत हमें अपना नाम और जन्मस्थान बताओ।'

मसीह के सिपाही ने उनसे उत्तर दिया:

मेरे माता-पिता ने मेरा नाम लुसियस रखा था, लेकिन पवित्र बपतिस्मा में—जिसके द्वारा मैं मसीह में अनंत जीवन के लिए पुनर्जीवित हुआ—मेरा नाम बदलकर लुसियन कर दिया गया। मैं रोमन मूल का हूँ; इस वंश को पूरे विश्व में सम्मान दिया जाता है। लेकिन मैं इस बात का घमंड नहीं करता कि मैं एक रोमी हूँ, बल्कि इस बात का कि मैं अपने प्रभु यीशु मसीह का सेवक हूँ, जिसे आप मुझ में स्पष्ट रूप से देख सकते हैं: क्योंकि मेरे प्रभु यीशु मसीह के अलावा मेरे लिए कोई और जीवन या महिमा नहीं है, और उसके लिए मरना लाभ है (देखें फिलिप्पियों 1:21)।

तब यातना देने वालों ने कहा:

'हम सही थे: तुम एक जादूगर और अपने श्रोताओं को बहकाने वाले हो; सबसे बढ़कर, तुम एक घमंडी आदमी हो, क्योंकि तुम निर्लज्जता से बोलना बंद नहीं करते और अपनी बुढ़ापे की भी परवाह नहीं करते। यदि, तथापि, आप एक रोमी हैं, तो आपने इतनी मूर्खता से रोम के देवताओं की पूजा से मुख मोड़ क्यों लिया, जिनकी पूजा सीज़र, संपूर्ण रोमन सीनेट और संपूर्ण विश्व करता है?

संत लूसियन ने उत्तर दिया:

मसीह की कृपा से, जिनमें मेरा बपतिस्मा हुआ और जिन्हें मैंने सच्चे ईश्वर के रूप में जाना है, मैंने अपने विश्वास में न केवल शैतान और मूर्तियों का, बल्कि उसके सभी कार्यों का भी त्याग कर दिया है। फिर भी आप प्रभु मसीह के

वषिय में मेरे वचनों और मेरे उपदेश को न तो सुनना चाहते हैं और न ही मन में रखना चाहते हैं, क्योंकि आपके अवशि्वास ने आपको और आपके सीज़र को, उसकी सीनेट के साथ, अंधा कर दयिा है, जनिसे आपको ऐसा आदेश मलिा है कि हम, तर्कशील प्राणी के रूप में, हमें शैतान को बलदिान चढ़ाना चाहएि और मानव हाथों से नरि्मति नरि्जीव मूर्तयिों के सामने अपना सरि झुकाना चाहएि।

लैट्रनि, एरयिस और एंटोर, अपने देवताओं और सीज़र का अपमान और सहन न कर सके, उन्होंने संत पर हाथ डाल दयिा, उन्हें बाँध दयिा और सैनकिों के हवाले कर दयिा; और उन्होंने शहीद को पसार कर, क्रूर कोड़ों से बहुत देर तक नरि्दयता से पीटा। इन यातनाओं को सहते हुए, मसीह का यह सपिाही अपने दुखों से वचिलति नहीं हुआ और न ही धमकयिों से डर गया, बल्कि मिसीह के वशि्वास में दृढ़ रहा और अपने आत्मा की शक्ति से अपने अंगों को मजबूत कयिा, जो वृद्धावस्था और घावों से कमजोर हो गए थे। चेहरे और मन दोनों में अडगि रहते हुए, उसने कभी भी ऊँचे स्वर में मसीह के नाम का प्रचार करना बंद नहीं कयिा, यह कहते हुए:

'मैं अपने हृदय, अपने वशि्वास और अपने होठों से मसीह, परमेश्वर के पुत्र की स्तुति करना कभी बंद नहीं करूंगा।'

उसके यातना देने वालों ने, अब और भी अधकि क्रोधति होकर, आदेश दयिा कि पवत्रि शहीद का जीवन तलवार से समाप्त कर दयिा जाए; जसि पर एक सैनकि ने अपनी तलवार खींची, संत की गर्दन—जो पहले से ही काटे जाने के लिए तैयार की गई थी—पर वार कयिा और उनका सबसे सम्मानति सरि काट दयिा। और जब पवत्रि देह सरि कटने के बाद भी हलि रहा था, तो सभी—यहाँ तक कि हत्यारे भी—इस बात के गवाह थे कि स्वर्ग से एक महान प्रकाश उस पर चमका; और प्रकाश के साथ ही, ऊपर से एक आवाज सुनाई दी:

'हे अच्छे सेवक लूसयिन, जो मेरे लिए अपना रक्त बहाने से नहीं डरा, आनन्दति हो। आओ और तुम्हें वादा कयिा गया मुकुट प्राप्त करो, और स्वर्ग में संतों के साथ अपनी जगह लो: आओ और स्वर्गदूतों के साथ तुम्हारे लिए तैयार की गई शाश्वत महमिा के धाम का वारसि बनो।'

यह आवाज़ संत के लिए नहीं बोली गई थी—क्योंकि उन्हें ईश्वर द्वारा वादा कएि गए पुरस्कार पर हमेशा दृढ़ वशि्वास था—बल्कि उनके चारों ओर खड़े लोगों के लिए बोली गई थी, ताकि वे हमारे प्रभु यीशु मसीह में अपने वशि्वास को और मजबूत कर सकें, एक ऐसा वशि्वास जसिे संत लूसयिन इतने लंबे समय से उनमें पैदा करते आ रहे थे। यह सब एक सब्बाथ के दनि, उपरोक्त पहाड़ पर, शहर से तीन स्टेडयिम दूर हुआ। यह देखकर और सुनकर, लोग—वशि्वासी और अवशि्वासी दोनों—बड़े भय से ग्रस्त हो गए। कुछ लोग वहाँ से भाग गए, जबकि अन्य अपने आप को शैतान के जालों से मुक्त पाकर आनंदति होकर चकति रह गए; हालाँकि, प्रकट हुई रोशनी के वैभव को नहिारने में असमर्थ , वे उस स्थान से थोड़ी दूरी पर पीछे हट गए। तब संत लूसयिन, यद्यपि शरीर से मृत थे, उन्होंने चमत्कारकि रूप से ईश्वर से गति की शक्ति प्राप्त की, जीवति की तरह जमीन से उठे और अपने पैरों पर खड़े हो गए; तब, अपने सबसे सम्मानति सरि को हाथों में लेकर, वह बनिा कसिी बाधा के चला, जो उसके भीतर वास करने वाले पवत्रि आत्मा की कृपा और स्वर्गदूतों की सहायता से नरि्देशति हो रहा था, और दृढ़ कदमों से, मानो वह जीवति देह हो, उसने अपना पवत्रि सरि लेकर अपनी यात्रा शुरू की, ठीक वैसे ही जैसे उसके मत्रि, संत डायोनसियिस ने पेरसियिों के शहर में कयिा था। लगभग तीन स्टेडयिम चलने और उपर्युक्त नदी फारा के पानी को पार करने के बाद, ईश्वर के उस पुरुष ने अपने दफ़न के लिए चुनी हुई जगह पर पहुँचकर ज़मीन पर लेटकर प्रभु में चैन पाया।

धर्मनष्ठि लोग, जो शहीद के उपदेश द्वारा मसीह के धर्म में परविर्तति हुए थे, आए और उन्होंने उनके पवत्रि शरीर पर सुगंधति तेलों से अभषिेक कयिा, उसे एक साफ़ सफ़ेद कपड़े में लपेटा, और स्वर्गदूतों की उपस्थति के बनिा नहीं, बल्कि बड़े सम्मान के साथ उसे दफ़नाया: क्योंकि जब उस सम्मानति शरीर को दफनाया जा रहा था, तो सांसारकि सुगंधों के साथ ही एक और अद्भुत और अकथनीय सुगंध को महसूस कयिा जा सकता था। वहाँ उपस्थति सभी लोग चकति रह गए और एक-दूसरे से पूछने लगे:

'यह क्या है?'

तब उन्होंने कहा:

'महमिा तेरी हो, हे प्रभु यीशु मसीह, क्योंकि तूने हमें ऐसी सुगंध सूंघने का सौभाग्य दयिा है जो हमारी नाक ने पहले कभी नहीं सूंघी! महमिा तेरी हो, हे उद्धारकर्ता मसीह: क्योंकि हम इस सुगंध से इतने आनंदति हुए हैं कि हमें वशि्वास है कि अब हमें कसिी भी अच्छी वस्तु से वंचति नहीं कयिा जाएगा!'

और जब वे यह कह ही रहे थे, तो दव्यि सुगंध उन्हें लगातार मलिती रही। इससे, पवत्रि स्वर्गदूतों की उपस्थति नस्संदेह पहचानी गई, क्योंकि वे शहीद के दुख के आरंभ से लेकर उसकी मृत्यु और दफन तक लगातार उसके साथ रहे थे। एक सम्मानजनक अंतमि संस्कार करने के बाद, भक्तपूर्ण शोक मनाने वालों ने टूटे दलिों से यह कहते हुए ज़मीन पर सरि झुकाया:

'हे यीशु मसीह, हम वश्विास करते हैं कि आप परमेश्वर के सच्चे पुत्र हैं, जो पता और पवत्रि आत्मा के साथ स्वर्ग में राज्य करते हैं, जैसा कि हमने अपने कानों से सुना है और आपके पवत्रि शहीद लूसयिन से अपने हृदयों में वश्विास करना सीखा है।'

शवदाह के लिए पड़ोसी कस्बों और गांवों से इकट्ठा हुई लोगों की भीड़ ने यह देखकर, और जो बाद में आए थे उन्होंने उन लोगों से यह वृत्तांत सुनकर जो इसकी गवाह थे, अपने हृदय में गहराई से प्रभावति हुए; और उसी दनि, लगभग पाँच सौ आत्माएँ हमारे प्रभु यीशु मसीह, परमेश्वर के पुत्र, पर वश्विास करने लगीं, और इससे पहले, उस देश में संत लूसयिन की शक्षिा के माध्यम से, दोनों लगिों और सभी उम्र के लगभग तीस हजार लोग मसीह के धर्म में परविर्तति हो चुके थे; अपनी मूर्तयिों को त्यागकर, उन्होंने एक सच्चे परमेश्वर की त्रमिूर्त में परमपता, अजन्मे परमेश्वर, और उनके एकमात्र पुत्र, साथ ही पवत्रि आत्मा का भी स्वीकार कयिा। बाद में, कुछ नव-धर्मयिों ने उत्साह के वश में, शहीद के मकबरे के ऊपर एक चर्च का नर्मिाण कयिा, ईश्वर की महमिा के लिए और उनके सेवक, संत लूसयिन के सम्मान में। पवत्रि शहीदों मैक्सयिन और जूलयिन के शरीर उस पहाड़ पर दफनाए गए थे जहाँ उन्हें मार डाला गया था, लेकनि बाद में, जैसे-जैसे ईसाइयों की संख्या बढ़ी, उन्हें वहाँ से हटाकर धन्य लूसयिन के शरीर के बगल में सुलाया गया। और हमारे प्रभु यीशु मसीह ने अपने पवत्रि शहीदों के मध्यस्थता द्वारा वहाँ बहुत सारी आशीषें प्रदान कीं। जसि प्रकार उन्होंने अपने दुख-क्लेश में एक ही वश्विास, एक ही प्रेम और एक ही स्वीकारोक्त साझा की, उसी प्रकार—हमारा वश्विास है—कि शाश्वत आनंद में वे एक ही नविास और शाश्वत राज्य का उत्तराधकिार साझा करते हैं। हम अपने सृष्टकिर्ता का धन्यवाद करते हैं कि उनके ये तीन गवाहों ने, त्रमिूर्त की स्वीकारोक्त करके, शहादत के माध्यम से पूर्णता प्राप्त की; जनिका हम श्रद्धापूर्वक सम्मान करते हैं, यह जानते हुए कि उनके द्वारा अंधों को दृष्ट प्रदान की जाती है, लंगड़ों को चलने के लिए स्वतंत्र कयिा जाता है; दुष्टात्माओं को बाहर नकिाला जाता है, और हमारे प्रभु यीशु मसीह की कृपा से, उनकी पवत्रि प्रार्थनाओं के द्वारा वभिन्नि प्रकार की बीमारयिों से कई चंगे होते हैं, और पता और पवत्रि आत्मा के साथ, उसी की महमिा और स्तुत युगानुयुग होती रहे, आमीन।

17 जून

4 जून (पुराने कैलेंडर के अनुसार)

हमारे पवत्रि पता मट्रिोफान, कांस्टेंटनिोपल के पैट्रआर्क की स्मृत

4 जून को स्मरणोत्सव

हमारे पवत्रि पता मट्रिोफान का नधिन महान कॉन्स्टेंटाइन – पहले ईसाई सम्राट[4073] के शासनकाल में हुआ था। वे डोमेतयिस के पुत्र थे, जो शाही वंश के रोमन थे। यह डोमेटीयस, जन्हिें डोमेटीयन के नाम से भी जाना जाता है, प्रोबस का भाई था, जसिने एक बार रोमन सम्राट[4074] के सहिासन पर अधकिार कयिा था। एक ववेकी व्यक्त होने के नाते, डोमेटीयस ने जल्द ही मूर्तपिूजा की मथि्या को पहचान लयिा, झूठे पगन देवताओं का त्याग कर दयिा और सच्चे ईश्वर – हमारे प्रभु यीशु मसीह – में वश्विास करने लगा। और चूँकि उस समय रोम मूर्तपिूजक दुष्टता से भरपूर था और वहाँ ईसाइयों पर क्रूर अत्याचार कयिा जाता था, डोमेटीयस, साम्राज्य की राजधानी छोड़कर, अपने दो बेटों, प्रोवस और मट्रिोफान के साथ बज़िान्टयिम पहुँचे। उस समय, धर्मपरायण और पवत्रि व्यक्त टिाइटस (जन्हिें ट्राट या तोरात के

[4073] सम्राट कॉन्स्टेंटाइन महान, लगभग 306–337।

[4074] प्रोव या प्रोब ने 276 से 282 तक शासन कयिा।

नाम से भी जाना जाता है)[4075] बज़िान्टयिम के बशिप थे; उनकी देखरेख में डोमेटयिस और उनके बेटों ने नविास कयिा, उन्हें ईसाई धर्म और प्रभु की व्यवस्था सखिाई गई और एक सदाचारी जीवन जीने के लिए नर्दिेशति कयिा गया। यह देखकर कि डोमेटीयस ने पूरे दलि और आत्मा से मसीह से लगाव बनाए रखा था और वह प्रभु के लिए परश्रिम करने के लिए उत्कट उत्साह से भर गया था, बशिप ने उसे पुरोहति वर्ग में शामलि कयिा, और उसे एक प्रेस्बटिर के रूप में नयिुक्त कयिा। जब टाइटस ने डोमेतयिस को शक्षिति कयिा, तो उनका नधिन हो गया, और डोमेतयिस उनके उत्तराधकिारी होकर बशिप की पदवी पर आसीन हुए[4076] , और धन्य बशिप डोमेतयिस की मृत्यु के बाद, उनके पुत्र प्रोव[4077] बशिप की पदवी पर उनके उत्तराधकिारी बने। प्रोव के नधिन के बाद, डोमेटीयस के पुत्र और प्रोव के भाई – संत मट्रिोफान[4078] – को बज़िान्टयिम के बशिप पद पर पदोन्नत कयिा गया; अब हम उन्हीं के बारे में बात करेंगे।

[4079]उस समय, सम्राट कॉन्स्टेंटनि महान थ्रेस के क्षेत्र में आए और बज़िान्टयिम में ठहरे। वहाँ संत मट्रिोफान को देखकर, सम्राट को उनके साथ वार्तालाप से यह एहसास हुआ कि वह ईश्वर के एक महान पुरुष थे, और वे संत के सदाचारी जीवन और उनकी बुद्धमित्ता से अत्यंत चकति हुए। उनसे बहुत स्नेह होने और उनके दैवीय प्रेरति वचनों का आनंद लेने की इच्छा से, उन्होंने उन्हें अपने साथ रोम ले गए।

थोड़ी ही देर बाद, सम्राट कॉन्स्टेंटनि ने अपनी राजधानी रोम से बज़िान्टयिम ले जाने का नर्णिय लयिा। वे इस शहर से, उसकी सुंदरता और उसकी अनुकूल स्थति, दोनों के कारण बहुत प्रभावति हुए। यह बाल्कन प्रायद्वीप के दक्षणि-पूर्वी कोने में बोस्फोरस के तट पर स्थति है, जो ब्लैक सी को भूमध्य सागर और मार्मारा सागर से जोड़ता है। भूमि और समुद्र मार्ग से इस शहर तक जाने के लिए शानदार मार्ग थे, और आसपास का पूरा ग्रामीण इलाका वभिन्नि प्रकार की उपज से भरपूर था। कॉन्स्टेंटाइन इस सब से इतना प्रभावति हुआ कि उसने साम्राज्य की राजधानी यहीं स्थानांतरति करने का फैसला कयिा। सम्राट ने नई राजधानी को सबसे भव्य इमारतों से सजाया और इसका नाम न्यू रोम रखा।

हालाँकि, इसके संस्थापक के बाद, यह शहर अधकितर कॉन्स्टेंटनिोपल, यानी कॉन्स्टेंटनि का शहर, के नाम से जाना जाता था, जबकि सम्राटों के नविास के रूप में इसे त्ज़ारग्राद भी कहा जाता था। शाही राजधानी को बाइजेंटाइम में स्थानांतरति करने के बाद, कॉन्स्टेंटाइन यहाँ सेंट मट्रिोफन को पुराने रोम से भी लाए, उन्हें अपना आध्यात्मकि पति बनाया, और नकियिा में पहले सार्वभौमकि परषिद[4080] में एकत्रति बशिपों से उनके लिए पैट्रआर्क का पद दलिाने हेतु मध्यस्थता की। इस प्रकार मट्रिोफन कॉन्स्टेंटनिोपल के पहले पैट्रआर्क बने।

अपनी उन्नत आयु और नाजुक स्वास्थ्य के कारण, मट्रिोफान स्वयं नकियिा परषिद में उपस्थति नहीं हुए। उनकी जगह, उन्होंने अपने कोरेपस्किोपस[4081] अलेक्जेंडर को भेजा – एक सम्मानति, पवत्रि और वृद्ध व्यक्ति जिन्होंने थ्रेस और इलरियि[4082] में चर्च के लाभ के लिए बहुत प्रयास कयिा था। परषिद में, उन्होंने अपने पैट्रआर्क, मट्रिोफान की जगह ली और एरयिस का वरिोध कयिा।

इस सार्वभौमकि परषिद के समापन के बाद, धर्मपरायण सम्राट कॉन्स्टेंटनि महान ने परषिद में उपस्थति सभी पवत्रि बशिपों से वनिती की कि वे उनके साथ कॉन्स्टेंटनिोपल चलें, ताकि वे वहाँ के बीमार और मृत्युशय्या पर पड़े पैट्रआर्क मट्रिोफान से मलि सकें। एक रविवार को, धर्मगुरुगण सम्राट के साथ मलिकर मट्रिोफान से मलिने गए और उनसे लंबी बातचीत की। अपनी बातचीत के दौरान, सम्राट ने संत से कहा:

[4075] संत टाइटस ने 242 से 272 तक बज़िान्टयिम के बशिप के रूप में कार्य कयिा।

[4076] डोमेतयिस 272 से 303 तक बज़िान्टयिम के बशिप थे।

[4077] प्रोव ने 303 से 315 तक बशिप के रूप में कार्य कयिा।

[4078] संत मट्रिोफान, कॉन्स्टेंटनिोपल के पहले पैट्रआर्क, ने 315 से 325 तक कॉन्स्टेंटनिोपल का पद संभाला।

[4079] थ्रेस बाल्कन प्रायद्वीप के पूर्वी सरि पर स्थति था और इसकी सीमा ब्लैक सी और मरमरा सागर से लगती थी। आज, यह पूर्वी रुमेलयिा है, जो तुर्की का एक प्रांत है।

[4080] यह परषिद 325 में हुई और इसका आयोजन एरयिस की वधिर्मति की नदिा करने के लिए कयिा गया था, जसिने यह सखिाया था कि परमेश्वर का पुत्र पति के समान सार का नहीं, बल्कि केवल समान सार का था, और वह एक सृजति प्राणी था, यद्यपि वह सभी अन्य प्राणयिों से ऊपर था। इस परषिद में रोमन साम्राज्य के वभिन्नि देशों से आए 318 बशिपों ने भाग लयिा था।

[4081] एक कोरेपस्किोपस एक ग्रामीण बशिप था जो एक शहर के बशिप के अधीन था।

[4082] इल्यूरयिा एक प्रांत था जसिमें एड्रयिाटकि सागर का पूरा पूर्वी तट और उससे परे के क्षेत्र शामलि थे। आज, यह प्रांत अल्बानयिा, डलमेशयिा और बोस्नयिा के अनुरूप है।

'अत्यंत सम्माननीय पिता! मैं देख सकता हूँ कि आप वृद्धावस्था और बीमारी से थके हुए हैं। अत; मैं आपसे विनती करता हूँ, हमें बताएं कि आपका उत्तराधिकारी बनने के लिए कौन योग्य है?'

ये शब्द सुनते ही संत मित्रोफान ने सम्राट को आँखों में आनंद के आँसू लिए उत्तर दिया:

'सत्य कहता हूँ, अब यह पवित्र आत्मा ही आपके मुख से बोल रहा है। वास्तव में, जब मैं सात दिन पहले इस पर मनन कर रहा था, तो प्रभु ने मुझे प्रकट किया कि दिस दिनों में मैं इस संसार से चला जाऊँगा। और जब मैं अपना जीवन समाप्त कर लूँ, तो मेरे सहकर्मी मंत्री अलेक्जेंडर को मेरे उत्तराधिकारी के रूप में सिंहासन पर बैठने दें – वह वास्तव में चुनाव और पवित्र आत्मा के वरदान के योग्य हैं। उनके बाद, पॉल, जो वर्तमान में एक रीडर[4083] हैं, सिंहासन के उत्तराधिकारी होंगे।

तब, अलेक्जेंड्रिया के धर्मगुरु[4084] , धन्य अलेक्जेंडर को देखकर, उन्होंने उससे कहा:

'भाई! आप भी एक उत्कृष्ट उत्तराधिकारी छोड़कर जाएँगे।'

और, अपने आर्चडीकन, अथेनासियस का हाथ पकड़कर, उन्होंने कहा:

'देखो, मसीह का एक पराक्रमी योद्धा; वही तुम्हारा उत्तराधिकारी होगा[4085] , और वह न केवल मेरे भाई अलेक्जेंडर के साथ मिलकर एरियन की अधर्मीता के विरुद्ध दृढ़ खड़ा रहेगा, बल्कि वह महान कार्यों में भी उत्कृष्ट होगा, ताकि वह, साहसी पॉल के साथ मिलकर, कई कष्टों का सामना करे।'

इस प्रकार संत ने भविष्य की भविष्यवाणी की, और प्रभु के प्रकट होने के दस दिन बाद, वे जून के चौथे दिन, अपने जन्म के दिन से कुल एक सौ सत्रह वर्ष की आयु में शांतिपूर्वक परलोक सिधार गए। अब संत अनंत जीवन में वास करते हैं, महान महापुजारी के सिंहासन के सामने खड़े हैं, जो स्वर्गों से होकर गए हैं—मसीह हमारे उद्धारकर्ता; उन्हें सदा के लिए महिमा हो। आमीन।

कॉन्टाकियन, स्वर 4:

आपने मसीह के विश्वास का स्पष्ट रूप से प्रचार किया, और उसे बनाए रखकर, आपने अपने विश्वासियों के झुंड को सचमुच बढ़ाया: इसलिए, स्वर्गदूतों के साथ, मित्रोफान, आप आनंदित होते हैं, हम सभी के लिए मसीह से अनवरत प्रार्थना करते हुए।

एक और कोंटाकियन, स्वर 4:

आपने शिशु अवस्था से ही स्वयं को एक योग्य पात्र साबित किया, क्योंकि परमेश्वर ने आपको एक पवित्र व्यक्ति के रूप में चुना था; आप उनके प्रति आनंदपूर्वक पुकार उठे: 'हे मसीह, आप पिता और आत्मा के समान हैं।'

पवित्र शहीद कोंकॉर्डियस का कष्टकथा

4 जून को स्मरणोत्सव

सम्राट एंटोनिनिस[4086] के शासनकाल के दौरान, रोम शहर में ईसाइयों के खिलाफ इतना भयंकर उत्पीड़न शुरू किया गया कि कोई भी - जब तक कि वे देवताओं को बलिदान नहीं देते थे - कुछ भी खरीद या बेच नहीं सकता था। उस समय, रोम शहर में कॉनकॉर्डियस नाम का एक व्यक्ति रहता था। वह एक कुलीन परिवार से था। कॉन्कोर्डियस के पिता, गॉर्डियन,

---

[4083] संत मित्रोफान के बाद, संत अलेक्जेंडर वास्तव में कॉन्स्टेंटिनोपल के पैट्रिआर्क बने, और उनके बाद संत पॉल, जिन्होंने 341 से 350 तक, कुछ अवरोधों के साथ, पैट्रिआर्कल सिंहासन पर आसीन रहे।

[4084] संत अलेक्जेंडर ने 312 से 326 तक अलेक्जेंड्रिया का सिंहासन संभाला।

[4085] संत अलेक्जेंडर के बाद, संत अथेनासियस वास्तव में 373 तक अलेक्जेंड्रिया के पैट्रिआर्क बने। उन्हें एरियनों और एरियन-समर्थक सम्राटों के हाथों बहुत उत्पीड़न सहना पड़ा। कई मौकों पर वह शहर छोड़कर पश्चिम में शरण लेने के लिए भागा; कभी-कभी उसे एरियनों द्वारा अलेक्जेंड्रिया से निष्कासित कर दिया जाता था। कॉन्स्टेंटिनोपल के पैट्रिआर्क सेंट पॉल का भी यही हश्र हुआ।

[4086] रोमन सम्राट एंटोनिनिस, जिन्हें मूर्तिपूजकों द्वारा शेम, यानी धर्मपरायण के नाम से जाना जाता था, ने 138 से 161 तक शासन किया।

पादरी का पवत्रि पद धारण करते थे। कॉन्कोर्ड्यिस नामक पुत्र होने पर, गॉर्ड्यिन ने उसे पवत्रि धर्मग्रंथों की समझ और मसीह के वशि्वास में शक्षिति कयिा। इसलएि, रोमन बशिप पयिस – जन्हिोंने सम्राट मार्कस ऑरेलयिस के शासनकाल में मसीह के लएि शहादत दी थी[4087] – द्वारा कॉनकॉर्ड्यिस को सबडीकन के रूप में नयिुक्त कयिा गया था। इस धन्य व्यक्तनि े अपने पतिा के साथ मलिकर दनि-रात उपवास और प्रार्थना में स्वयं को समर्पति कर दयिा; इसके अलावा, उन्होंने गरीबों और सभी जरूरतमंदों को उदारतापूर्वक दान दयिा। अपनी ओर से, उन्होंने प्रभु से प्रार्थना की कि वह उन्हें ईसाइयों के खलिाफ शुरू कएि गए उत्पीड़न की क्रूरताओं से बचने का अवसर प्रदान करें।

एक दनि, धन्य कोंकॉर्ड्यिस ने अपने पतिा से कहा:

'हे स्वामी! यदि आपको मेरी योजना से कोई आपत्तनिहीं है, तो मुझे अपना आशीर्वाद दें कि मैं संत यूटकियिस के पास जाऊँ और उनके साथ कुछ समय तक रहूँ, जब तक कि हमारे शत्रु, सम्राट एंटोननिस का क्रोध शांत न हो जाए।'

इस अनुरोध के जवाब में कॉन्कॉर्ड्यिस के पतिा ने कहा, 'हमारे लएि यहीं रहना बेहतर है, मेरे बेटे, ताकि हम भी प्रभु से शहादत का मुकुट प्राप्त कर सकें।'

धन्य ने उत्तर दयिा:

'मैं हमारे प्रभु मसीह की इच्छा अनुसार कहीं भी शहीद का मुकुट प्राप्त कर सकता हूँ; अत; मुझे अपनी योजना को अंजाम देने की अनुमतदिें।'

इन शब्दों के बाद, उनके पतिा ने उन्हें जाने दयिा, और कोंकॉर्ड्यिस अपने रश्तिेदार यूटकियिस के पास गए, जो उस समय ट्रेबुला शहर के पास सालारयिन रोड पर अपनी संपत्तपिर थे[4088] ।

परम धन्य यूटकियिस ने बड़ी प्रसन्नता से कोंकॉर्ड्यिस का स्वागत कयिा और परमेश्वर का धन्यवाद करने लगा, और वे उस स्थान पर एक साथ रहे, तथा उपवास और प्रार्थना में लगे रहे। वहाँ वभिन्नि प्रकार की बीमारयिों से पीड़ति बहुत से लोग उनके पास आए। वे प्रभु यीशु मसीह के नाम पर प्रार्थना करके उन पर चंगाई का वरदान देते थे – और इस प्रकार, लोगों में उनकी ख्यातदिूर-दूर तक फैल गई। टूसयिा के एपार्क, टॉर्क्वाटस[4089] , जो उस समय स्पोलेटो नगर[4090] में नविास कर रहे थे, ने उनके बारे में सुना। उन्होंने धन्य कोंकॉर्ड्यिस को अपने पास बुलाया, और सबसे पहले संत से उनका नाम पूछा।

'मैं एक ईसाई हूँ,' कोंकॉर्ड्यिस ने उत्तर दयिा।

'मैं आपका नाम पूछ रहा हूँ,' बशिप ने फरि कहा, 'आपके मसीह का नहीं।'

"मैंने तुम्हें पहले ही बता दयिा है," संत कोंकॉर्ड्यिस ने उत्तर दयिा, "कि मैं एक ईसाई हूँ और मसीह की गवाही देता हूँ।"

'अमर देवताओं को बलदिान अर्पति करो,' एपार्क ने कहा, 'और तुम हमारे मत्रि बन जाओगे; मैं तुम्हें पतिा के समान मानूँगा और सम्राट एंटोननिस—मेरे स्वामी—से प्रार्थना करूँगा कि वे तुम्हें देवताओं का पुरोहति नयिुक्त करें।'

'तुम्हारे देवता तुम्हारे साथ रहें,' संत कोंकॉर्ड्यिस ने उत्तर दयिा।

'मेरी बात सुनो और अमर देवताओं को बलदिान चढ़ाओ,' एपार्क ने उसे मनाना जारी रखते हुए कहा।

'तुम्हें मेरी बात माननी चाहए,ि' संत कोंकॉर्ड्यिस ने उत्तर दयिा, 'और प्रभु यीशु मसीह को बलदिान चढ़ाओ, ताकि तुम अनंत यातना से बच सको। यदि तुम ऐसा नहीं करोगे, तो आने वाले जीवन में तुम्हें दंडति कयिा जाएगा और अवनिाशी आग में यातना सहनी पड़ेगी।'

तब एपार्क ने उसे डंडों से पटिवाकर आम कालकोठरी में फेंकने का आदेश दयिा।

[4087] मार्कस ऑरेलयिस ने 161 से 180 तक रोमन शाही सहिासन पर शासन कयिा।

[4088] रोम के पूर्व में मध्य इटली में स्थति साबनि क्षेत्र के तीन छोटे शहर ट्रेबुला के नाम से जाने जाते थे। यह देखते हुए कि पाठ में बाद में उल्लेख है कि कैसे संत कोंकॉर्ड्यिस ने टस्कुलम के बशिप को अपने पास बुलाया, जो स्पोलेटो में रहते थे, उम्ब्रयिा प्रांत में, यह मानना चाहए ि कि यहाँ ट्रेबुला के रूप में संदर्भति शहर साबनिी क्षेत्र के उत्तरी भाग में स्थति था, जो रोम के उत्तर-पूर्व में स्थति एक प्रांत, उम्ब्रयिा से बहुत दूर नहीं था।

[4089] रोमनों द्वारा मध्य इटली के पश्चमि में, रोम के उत्तर में स्थति एक प्रांत, एट्रूरयिा के नविासयिों को 'टुस्की' कहा जाता था। इस प्रकार, टुसयिा का बशिप एट्रूरयिा का शासक था।

[4090] स्पोलेटा, जसिे अब स्पोलेटो कहा जाता है, मध्य इटली में, प्राचीन उम्ब्रयिा में, एट्रूरयिा की सीमा पर एक शहर है। यह संभावना है कि उम्ब्रयिा और एट्रूरयिा एक ही शासक के अधीन थे।

उस रात, धन्य यूटकियिस संत एम्फमिस, बशिप के साथ, कॉनकॉर्ड्यिस के पास आए। एम्फमिस टॉर्क्वाटस का मत्रि था और उसने उससे उस कैदी को थोड़े समय के लिए अपने हवाले करने की वनिती की। और इस प्रकार कोंकॉर्ड्यिस को उस रात जेल से रहिा कर दयिा गया और उसने अम्फमिस के साथ काफी समय बतिाया। इस दौरान, अम्फमिस ने कोंकॉर्ड्यिस को पादरी का पद दयिा, और साथ रहते हुए, उन्होंने उपवास और प्रार्थना में अपना समय समर्पति कयिा।

कुछ समय बीत जाने के बाद, टॉर्क्वाटस ने कॉनकॉर्ड्यिस को बुलवाया और उससे पूछा:

'तुमने अपने जीवन के साथ क्या करने का नर्णिय लयिा है?'

'मेरा जीवन मसीह है, जन्हिें मैं हर दनि स्तुत का बलदिान अर्पति करता हूँ, जबक तुम गेहेना में जलोगे,' कॉन्कॉर्ड्यिस ने एपार्क से कहा।

तब टॉर्क्वाटस ने संत को खंभे से बांधने का आदेश दयिा। लेकनि संत ने खुशी से कहा:

'महमिा तेरी हो, हे प्रभु यीशु मसीह!'

'महान ईZeus[4091] को बलदिान अर्पति करो,' एपार्क ने ज़ोर देकर कहा।

'मैं एक बहरे और गूंगे पत्थर को बलदिान नहीं चढ़ाऊँगा,' धन्य कोंकॉर्ड्यिस ने उत्तर दयिा, 'क्योंक मेरा प्रभु यीशु मसीह मेरे साथ है, जसिकी सेवा मेरी आत्मा करती है!'

इसके बाद, एपार्क ने क्रोध में आकर कॉन्कॉर्ड्यिस को एक तंग कालकोठरी में कैद कर दयिा; उसने आदेश दयिा क उसके हाथों और गर्दन पर लोहे की बेड़यिाँ डाल दी जाएँ, और कसिी को भी उसकी कोठरी में प्रवेश करने से रोक दयिा, क्योंक वह संत को भूखा-भूखा मारना चाहता था।

लेकनि धन्य कोंकॉर्ड्यिस, जेल में होने के बावजूद, नरिाश नहीं हुए; इसके बजाय, उन्होंने आनंद के साथ सर्वशक्तमिान ईश्वर का धन्यवाद करना शुरू कर दयिा:

'महानतम में परमेश्वर की महमिा, और पृथ्वी पर शांत, और मनुष्यों में सद्भावना,' उन्होंने गाया।

आधी रात को, प्रभु का स्वर्गदूत उसके पास प्रकट हुआ और कहा:

'डरो मत, बल्क अपने वशि्वास में दृढ़ रहो, क्योंक मैं तुम्हारे साथ हूँ।'

तीन दनि बाद, राज्यपाल ने रात में अपने दो रक्षकों को उसके पास भेजा और उन्हें आज्ञा दी:

– 'जाओ और कैदी से कहो क उसे हमारे देवताओं को बलदिान चढ़ाना होगा; अन्यथा, उसका सरि काट दयिा जाएगा।'

रक्षक ज़्यूस देवता की एक मूर्त लेकर कॉन्कोर्ड्यिा के पास आए और उससे पूछा:

'क्या तुमने सुना है क राज्यपाल ने क्या आदेश दयिा है?'

'मुझे इस बारे में कुछ भी नहीं पता,' संत ने उत्तर दयिा।

'देवता ज़ीउस को बलदिान चढ़ाओ,' कवच-वाहकों ने कहना जारी रखा, 'अन्यथा तुम्हारा सरि काट दयिा जाएगा!'

तब धन्य कोंकॉर्ड्यिस ने ईश्वर का धन्यवाद करते हुए कहा:

'महमिा तेरी हो, हे प्रभु यीशु मसीह।' और उसने ज़्यूस के मुँह पर थूक दयिा।

यह देखकर, एक सैनकि ने अपनी तलवार खींची और संत का सरि काट दयिा; और इस प्रकार धन्य कोंकॉर्ड्यिस ने प्रभु की गवाही देते हुए अपनी अंतमि सांस ली[4092] ।

बाद में, दो पुरोहति और कुछ धर्मपरायण पुरुष कालकोठरी में आए; उन्होंने संत के शरीर को लेकर, उसे स्पोलेटो शहर से बहुत दूर नहीं, प्रचुर झरनों से सचिति एक स्थान पर दफनाया। यहाँ, शहीद की कब्र पर, दानवों के वश में आए और वभिन्नि बीमारयिों से पीड़ति लोग संत कोंकॉर्ड्यिस की प्रार्थनाओं के द्वारा चंगा होने लगे, जो हमारे प्रभु यीशु मसीह के सामने खड़े हैं, जो पति और पवत्रि आत्मा के साथ युगानुयुग राज्य करते हैं। आमीन।

[4091] ज़ीउस, जन्हिें रोमन पौराणकि कथाओं में जुपटिर के नाम से जाना जाता है, को प्रमुख देवता, देवताओं और मनुष्यों के पति के रूप में पूजति कयिा जाता था; वह स्वर्ग और पृथ्वी, गर्जना और बजिली, हवाओं और बारशि के स्वामी थे।

[4092] यह लगभग 175 का समय था।

पवत्रि शहीदों फ्रोंटेशयिस, सेवेरनिस, सेवेरयिनस और सलिानस का कष्टकथा

4 जून को स्मरणोत्सव

संत फ्रोंटासयिस, सेवेरनिस, सेवेरयिन और सलिानस को पेट्रागोरयिा के पहले बशिप, Fronton[4093] द्वारा ईश्वर का वचन प्रचार करने के लिए भेजा गया था। जब वे प्रचार कर रहे थे, तो हेगेमोन स्क्वरिीडोन ने उन्हें पकड़ लयिा, जसिने उनसे पूछताछ की:

'मुझे बताओ: तुम कहाँ से आए हो, और तुम्हारे नाम क्या हैं? क्योंकि तुम न केवल देवताओं को बलदिान चढ़ाने में असफल रहे हो, बल्कि तुमने कई अन्य लोगों को भी ऐसा करने से रोका है और यहाँ तक कि देवताओं के मंदरिों को भी नष्ट कर दयिा है। मुझे बताओ, तुम ऐसी चीजें कसि अधकिार से करते हो?'

उन्होंने उसे उत्तर दयिा:

'हेगेमोन, जब आप दैवीय सद्गुण से अपरचिति हैं, तो आप हमसे प्रश्न क्यों करते हैं? क्या तुम पहले से ही सही को नष्ट करने का प्रयास नहीं कर रहे हो? तो, अपनी योजना को अंजाम देने से पहले, इस पर वचिार करो: तुम्हारी आत्मा और शरीर ने कसिने बनाया? क्योंकि विधिर्मी मूर्तयिाँ मानव हाथों का काम हैं और वे न तो स्वयं को लाभ पहुँचा सकती हैं और न ही दूसरों की मदद कर सकती हैं, कसिी चीज़ को बनाना तो दूर की बात है।

'मुझे दखिता है,' स्क्वरिीडोन ने कहा, 'कि तुम अभद्र और बहुत बोलने वाले हो, तुमने अपने शकि्षक से हर तरह की व्यर्थ की बातें सीखी हैं।'

सेवेरनिस और सेवेरयिन ने उत्तर दयिा, "हमारे शब्द सत्य से भरे हैं, फरि भी आप मूर्तयिों की पूजा करते हैं, जो केवल राक्षसों द्वारा स्थापति पत्थर हैं; वे बहरे, गूंगे और खोखले हैं।"

'अपनी बहस बंद करो,' स्क्वरिाइडन ने बीच में टोकते हुए कहा, 'और अगर तुम जीवति रहना चाहते हो, तो देवताओं को बलदिान चढ़ाओ।'

फ्रोंटासयिस ने उत्तर दयिा, 'हमारा इनाम मसीह के लिए जीना और मरना है!'

उसके बाद, हेगेमोन सलिानस की ओर मुड़ा, जो साल्तेरी, मधुर घंटयिों और लीर बजाने में नपिुण था, और उससे पूछा:

'और तुम, युवक, देवताओं को बलदिान क्यों नहीं चढ़ाते?'

'मैंने स्वयं को तैयार कयिा है,' संत सलिान ने उत्तर दयिा, 'अपने प्रभु यीशु मसीह को अपना बलदिान चढ़ाने के लिए, जन्हिोंने बपतस्मिा की कृपा से, पाप की अशुद्धि से संसार को शुद्ध कर दयिा है।'

'उसने इसे कसि प्रकार शुद्ध कयिा है?' राज्यपाल ने पूछा।

सलिान ने उत्तर दयिा:

'मेरे प्रभु यीशु मसीह ने अपने शष्यिों से कहा: *"इसलयि जाओ और सब जातयिों के लोगों को चेला बनाओ, और उन्हें पति, पुत्र और पवत्रि आत्मा के नाम से बपतस्मिा दो"* (मत्ती 28:19), *"जो वश्विास करता है और बपतस्मिा लेता है, वह उद्धार पाएगा, परन्तु जो वश्विास नहीं करता, वह दोषी ठहराया जाएगा"* (मरकुस 16:16)। इस प्रकार, हेगेमोन, आप भी, यदि आप मसीह में वश्विास करते हैं और बपतस्मिा लेते हैं, तो आप उद्धार पाएंगे; परन्तु यदि आप वश्विास नहीं करते हैं, तो आप दोषी ठहराए जाएंगे।

क्रोधति होकर, राज्यपाल ने उन्हें शहर के बाहर फांसी के स्थान पर ले जाने और सबसे क्रूर यातनाएं देने का आदेश दयिा। यातना देने वालों ने हमारे उद्धारकर्ता के कांटों के मुकुट की नकल में, शहीदों के सरिों में लोहे के कील ठोंके, और उन्हें एक स्तंभ से ठोक दयिा। उनमें से प्रत्येक के सरि में नौ कीलें थीं। फरि भी, यातना देने वालों का क्रूर क्रोध मसीह के योद्धाओं को उनसे दूर नहीं कर सका। जब राज्यपाल को पता चला कि वह इन यातनाओं से संतों पर वजिय प्राप्त नहीं कर सकता, तो उसने उनके बारे में अपना अंतमि नर्णिय लयिा - उसने उनके सरि कलम करने का आदेश दयिा। तब पवत्रि शहीदों ने, जमीन पर घुटने टेककर और अपनी आत्माओं को ईश्वर के हवाले कर, जल्लादों के सामने अपनी गर्दनें पेश कीं और मसीह के नाम की गवाही के लिए शहीद हो गए। नष्ठिाहीन सैनकिों ने शहीदों के सरि काटकर उनके शरीरों को अपमानति करने के लिए जमीन पर फेंक दयिा और उनके सम्मानति अवशेषों को बनिा दफनाए छोड़ दयिा। लेकनि उसी क्षण दव्यि शक्ति ने नम्निलखिति चमत्कार कयिा।

[4093] पेट्रैगोरयिम का बशिप आवास पेरजियिम के नाम से भी जाना जाता था। पेरजियिम नगर दक्षणिी गॉल में स्थति था।

पवत्रि आत्मा की अचानक प्रेरणा से, संतों के शरीरों में जान आ गई; और प्रत्येक ने पास में पड़े अपने सरि को उठाया, बनिा कसिी मानवीय सहायता के अपने पैरों पर खड़ा हो गया और इस प्रकार इल नामक नदी की ओर चल पड़ा। वहाँ पानी में प्रवेश करने के बाद, शहीदों के पुनर्जीवति शरीर पानी पर इस प्रकार चले जैसे कि सूखी भूमि पर। फरि नदी पार करके, चमत्कार को हैरानी से देख रहे कई लोगों की आँखों के सामने, वे एक ऊँची पहाड़ी पर चढ़ गए। वहाँ वे सर्व पवत्रि कुँवारी मरयिम के चर्च पहुँचे, जहाँ बशिप, संत फ्रोंटन, प्रार्थना कर रहे थे। पवत्रि शहीदों ने चर्च में प्रवेश कयिा और घुटने टेककर अपना सरि बशिप के पैरों में रख दयिा, जबकि अपने शरीर को जमीन पर क्रूस के आकार में फैला दयिा, जसिके बाद वे एक बार फरि नर्जिीव हो गए। तब संत फ्रोंटन ने, पुरोहति एनीयनस के साथ और एक बड़ी भीड़ की उपस्थति में, फ्रोंटासयिस, सेवेरनिस और सलिानस को उक्त चर्च में सम्मान और भजनों के साथ दफनाया। जहाँ तक सेवेरयिन का सवाल है, एक धर्मनष्ठि महलिा के अनुरोध पर, उन्होंने उसे सम्मान के साथ उसके पवत्रि साथयिों से बहुत दूर नहीं, उसकी संपत्ति पर स्थति एक अन्य स्थान पर दफनाया।

पवत्रि शहीदों ने रोमन सम्राट क्लॉडयिस[4094] के शासनकाल में यातनाएँ भोगीं, और अपने कर्मों तथा दृढ़ स्वीकारोक्ति द्वारा हमारे प्रभु यीशु मसीह की महमिा की, जनिके लिए, पति और पवत्रि आत्मा के साथ, युगानुयुग सम्मान और महमिा हो। आमीन।

हमारे पूजनीय पति ज़ोसमिा, बेबीलोन के बशिप का जीवन।

4 जून को स्मरणोत्सव

आदरणीय जोसमिा, जन्हिें कलिकिोस के नाम से जाना जाता था (क्योंकि वे सलिसिियिा के मूल नविासी थे[4095]), ने अपनी युवावस्था में ईश्वर से प्रेम करना शुरू कर दयिा। संसार का त्याग कर, वे सनिाई पर्वत[4096] गए, वहाँ उन्होंने मठवासी संन्यास की शपथ ली और उपवास तथा प्रार्थना में स्वयं को समर्पति कर दयिा। हालाँकि, वे सनिाई पर अधकि समय तक नहीं रुके। शांति और एकांत की तलाश में, ज़ोसमिा ने, जब वह अभी भी युवा था, माउंट सनिाई को छोड़कर लीबयिा के रेगस्तिानों[4097] के लिए प्रस्थान कयिा, और वहाँ अम्मोनयिक नामक एक एकांत स्थान पर बस गया। यहाँ वह पूर्ण एकांत में रहता था, और एकमात्र ईश्वर को प्रसन्न करने में स्वयं को समर्पति कर दयिा। एक दनि, उसने उस रेगस्तिान में एक वृद्ध को देखा, जो एक खुरदरी बाल वाली कमीज़ पहने हुए थे। उनके पास जाकर, जोसमिा ने वृद्ध के सामने झुककर, और रीति के अनुसार, उनका आशीर्वाद लेना चाहा। लेकनि वृद्ध ने उसे चेतावनी देते हुए कहा:

'ज़ोसमिा, तुम यहाँ क्यों आए हो? चले जाओ, क्योंकि तुम्हें यहाँ नहीं ठहरना चाहिए।'

यह सोचकर कि बूढ़े संत उसे लंबे समय से जानते थे, ज़ोसमिा ने उनके सामने झुककर आशीर्वाद माँगा और कहा:

'मैं आपसे वनिती करता हूँ, पतिाजी, मुझ पर कृपा करें! बताइए, आप मुझे कैसे जानते हैं?'

वृद्ध ने उत्तर दयिा:

'दो दनि पहले, एक अद्भुत रूप वाला व्यक्ति मेरे सामने प्रकट हुआ और कहा: "देखो, माउंट सनिाई का एक भक्षिु, जसिका नाम जोसमिा है, तुम्हारे पास आएगा; उसे इस रेगस्तिान में रहने की अनुमति मत देना। मैं उसे मस्रि में स्थति बेबीलोन की चर्च सौंपना चाहता हूँ।"'

[4094] रोमन सम्राट क्लॉडयिस ने 41 से 54 ईस्वी तक शासन कयिा।

[4095] सलिसिियिा एशयिा माइनर का एक क्षेत्र है, जो इसके दक्षणि-पूर्वी भाग में स्थति है, सीरयिा से सटा हुआ है और भूमध्य सागर के दक्षणिी तट पर फैला हुआ है।

[4096] वास्तव में, माउंट सनिाई ग्रेनाइट चट्टानों से बने पहाड़ों का एक समूह है, जो ऊँची और खुरदरी घाटयिों से घरिा हुआ है। यह लाल सागर की प्रसद्धि खाड़यिों के लगभग केंद्र में स्थति है, जो मलिकर सनिाई प्रायद्वीप का नरि्माण करती हैं। यह तीन पर्वत श्रृंखलाओं से मलिकर बना है। मध्य कटक की दक्षणि-पूर्वी चोटी प्रसद्धि सनिाई वधिान का स्थल थी। 4वीं शताब्दी ईस्वी से, माउंट सनिाई तपस्वयिों के लिए एक पसंदीदा गंतव्य बन गया और मठों से भरा हुआ था।

[4097] लीबयिा उत्तरी अफ्रीका में, मस्रि के पश्चमि में एक प्रांत है। भूमध्य सागर से सटे, लीबयिा का एक हस्सिा आबाद था, जबकि इसका दूसरा हस्सिा, जो भीतरी इलाकों तक फैला हुआ था, कुछ नखलस्तिानों के साथ एक रेगस्तिान था। यह प्रसद्धि सहारा रेगस्तिान का सबसे पूर्वी सरिा है, जो मस्रि से लेकर लगभग अटलांटकि महासागर के तटों तक फैला हुआ है।

यह कहकर, तपस्वी ज़ोसमिा से एक पत्थर की दूरी पर पीछे हट गया और ईश्वर की ओर हाथ उठाकर प्रार्थना करने लगा। उसने लगभग दो घंटे तक प्रार्थना की; फरि, अपनी प्रार्थना समाप्त करने के बाद, वह बूढ़ा एक बार फरि ज़ोसमिा के पास आया और उसे पतिा की तरह गले लगाकर, उसके गाल पर चूम लयिा और कहा:

'मेरे प्रयि पुत्र, तुम्हारा यहाँ आना अच्छा हुआ। सचमुच, ईश्वर तुम्हें मेरे पास इसलएि लाए हैं कि तुम मेरे शरीर को धरती में सौंप दो, क्योंकि मैं प्रभु के पास जा रहा हूँ।'

तब ज़ोसमिा ने वृद्ध से पूछा:

'पतिाजी, आप इस स्थान पर कतिने वर्षों से रह रहे हैं?'

और वृद्ध ने उत्तर दयिा:

'मुझे यहाँ आए पैंतालीस साल हो गए हैं।'

तपस्वी के इन शब्दों पर उसका चेहरा आग की तरह दमक उठा। एक बार फरि जोसमिा की ओर मुड़कर, वृद्ध ने कहा:

'मेरे बच्चे, तुझ पर शांति बिनी रहे; मेरे लएि प्रार्थना करना!'

और इन शब्दों के बाद, वह ज़मीन पर लेट गए और चुपचाप प्रभु ईश्वर के पास चल बसे।

धन्य जोसमिा ने एक कब्र खोदी और महान तपस्वी के पवत्रि शरीर को दफनाया; वहाँ दो दनि रहने के बाद, वह परमेश्वर की महमिा करते हुए सनिाई पर्वत पर लौट आए।

सनिाई में अपने दूसरे प्रवास के दौरान, एक डाकू उसके पास आया और इन शब्दों के साथ उससे वनिती करने लगा:

'Abba[4098] , मुझ पर दया करो; मुझे संन्यासी मुंडन प्रदान करो, ताकि मैं मौन में अपने पापों के लएि शोक मना सकूँ। मैंने कई हत्याएँ की हैं, और अब मैं अपने अपराधी और पापी जीवन पर पश्चाताप कर चुका हूँ, और मैं अपने अनगनित दुष्कृत्यों के लएि रोते हुए और हार्दकि पश्चाताप करते हुए अपने शेष दनि बतिाना चाहता हूँ।'

आदरणीय जोसमिा ने उस व्यक्ति को उपदेश देकर उसे संन्यासी का वस्त्र पहनाया; लेकनि कुछ समय बीत जाने के बाद, उन्होंने उस पश्चातापी डाकू को अपने पास बुलाया और कहा:

'मेरे बेटे, मेरी बात मानो, तुम्हारे लएि यहाँ रहना असंभव है। अगर कसिी अधकिारी को पता चल गया कि तुमने हमारे यहाँ शरण ली है, तो वे तुम्हें पकड़ लेंगे। इसके अलावा, जसिने तुमने अन्याय कयिा है, वह तुम्हें पहचान कर तुम्हारा नाम उजागर कर सकता है। इसलएि, मेरी बात सुनो, और मैं तुम्हें एक और अधकि दूरस्थ मठ में ले जाऊँगा।'

[4099]भक्षिु ने आदरणीय के परामर्श को स्वीकार कर लयिा, और पवत्रि वृद्ध उसे गाज़ा के पास स्थति अबा डोरोथेयस के मठ (cenobium) में ले गए। उस मठ में उसे बसाने के बाद, ज़ोसमिा सनिाई पर्वत लौट आए।

वह भाई बाबा डोरोथेयस के मठ में नौ साल तक रहा। लेकनि फरि, भजन संहति का अध्ययन करने और मठवासी परश्रिमों में अनुभव प्राप्त करने के बाद, वह एक बार फरि आदरणीय जोसमिा के पास लौटा और उनसे कहा:

'पतिाजी, मुझ पर दया करें – मुझे मेरे गृहस्थ वस्त्र वापस दे दें, और मुझसे मेरी संन्यासी की पोशाक ले लें।'

सम्माननीय ने उदास स्वर में उससे पूछा:

'क्यों, मेरे बच्चे?'

तब भक्षिु ने उत्तर दयिा:

'पाँच वर्षों से, पतिाजी, जैसा कि आप स्वयं जानते हैं, मैं मठ में रहा हूँ, उपवास और हर तरह के संयम का अभ्यास करते हुए, नम्रता, मौन और ईश्वर के भय के साथ परश्रिम करते हुए, और ईश्वर की अनंत दया और मेरे अनगनित पापों की क्षमा की आशा में सभी का आज्ञापालन करते हुए। और फरि भी, मेरे नरिंतर तपस्यापूर्ण प्रयासों और परश्रिमों के

[4098] 'अब्बा' एक सीरयिाई शब्द है जसिका अर्थ है 'पतिा'। यह उपाधि आमतौर पर मठों के प्रमुखों के साथ-साथ वरषि्ठ भक्षिुओं को दी जाती थी। एक नवसखिुआ भक्षिु, जो अपनी आध्यात्मकि प्रशक्षिण के लएि एक अनुभवी वरषि्ठ के मार्गदर्शन में होता था, वह भी उन्हें इसी शब्द – 'अब्बा' से संबोधति करता था।

[4099] गाज़ा शहर भूमध्य सागर के पूर्वी तट पर, फ़लिस्तिीन के सबसे दक्षणिी छोर पर, मस्रि से ज़्यादा दूर नहीं स्थति है; यह कभी कनानी लोगों की दक्षणिी सीमा हुआ करता था। रोमन शक्ति के चरम के दौरान, गाज़ा फलिस्तिीन में एक प्रमुख व्यापारकि केंद्र था; इसने कुछ समय बाद भी, यहां तक कि बाइजेंटाइन साम्राज्य के युग में भी, यह दर्जा बनाए रखा। लेकनि जैसे-जैसे समय बीतता गया, यह कभी-समृद्ध शहर अपना सारा महत्व खो बैठा, और अब केवल रेतीले टीले और दयनीय खंडहर ही इस बात की गवाही देते हैं कि कभी यहां एक महान शहर हुआ करता था।

बावजूद, मैं हमेशा अपने सामने एक बच्चे को देखता हूँ जो मुझसे कहता है: 'तुमने मुझे क्यों मारा?' मैं यह दृश्य न केवल अपनी नींद में, बल्कि जागते हुए भी देखता हूँ: जब मैं चर्च में खड़ा होता हूँ, जब मैं पवित्र रहस्यों में भाग लेता हूँ, और जब मैं भोजनशाला में भाइयों के साथ भोजन करता हूँ। मुझे एक घंटे के लिए भी चैन नहीं मिलता: जब मैं चल रहा होता हूँ, तब भी मैं अपने सामने एक बच्चे को देखता हूँ जो मुझसे हमेशा यही कहता है: 'तुमने मुझे क्यों मारा?' इसलिए मैंने निर्णय लिया है, पिताजी, उस जगह जाने का जहाँ मैंने अपने अपराध किए हैं, ताकि मुझे गिरफ्तार करके मुकदमे के लिए लाया जा सके। मुझे उस बच्चे की बेरहमी से हत्या के लिए मरना ही होगा।

इस प्रकार, पूजनीय पिता से सांसारिक कपड़े लेकर, वह भिक्षु संसार में निकल पड़ा। जब वह डियोस्पोलिस शहर[4100] पहुँचा, तो उसे गिरफ्तार कर लिया गया, और अगले ही दिन तलवार से उसका सिर कलम करके उसे मार डाला गया। इस प्रकार वह अपने रक्त से अपने पाप धोकर प्रभु परमेश्वर के पास चला गया।

इस घटना के कुछ ही समय बाद, रेवरेंड ज़ोसिमा, मरुभूमि के सन्नाटे और शांति में रहने की एक अदम्य इच्छा से ग्रस्त होकर, एक बार फिर से माउंट सिनाई छोड़ने का संकल्प लिया। और इस प्रकार, अपने शिष्य जॉन को साथ लेकर, रेवरेंड उनके साथ पोर्फिरियस[4101] नामक मरुभूमि के लिए रवाना हो गए। इस रेगिस्तान से यात्रा करते समय, उनकी मुलाकात दो संन्यासियों से हुई: उनमें से एक गालाटिया[4102] का मूल निवासी था और उसका नाम पॉल था, जबकि दूसरा मेलेटिन[4103] के क्षेत्र से था और उसका नाम थियोडोर था; उसने अबा यूथिमियस द ग्रेट के मठ में अपने मठवासी संकल्प लिए थे। दोनों तपस्वी भैंसे की खाल से बने वस्त्र पहने हुए थे। आदरणीय जोसिमा अपने शिष्य के साथ उन संन्यासियों के पास, लगभग दो पोप्रीश्ची[4104] की दूरी पर, बस गए और वहाँ दो साल तक रहे।

लेकिन फिर आदरणीय जोसिमा के शिष्य, जॉन को एक साँप ने काट लिया: उसका पूरा शरीर साँप के विष से भर गया, उसकी आँखों, नाक, कानों और त्वचा के सभी छिद्रों से खून फूट पड़ा, और जॉन की मृत्यु हो गई।

धन्य जोसिमस गहरे दुख से व्याकुल हो गए और ऊपर वर्णित दो तपस्वियों के पास गए। जब उन्होंने उन्हें इतने गहरे शोक में देखा, तो जोसिमस के कुछ कहने से पहले ही, उन्होंने उन्हें सांत्वना देते हुए कहा:

'क्या बात है, अब्बा जोसिमा? क्या आपका भाई मर गया है?'

जोसिमा, उनकी सूझबूझ से चकित होकर, उन्हें अपने शिष्य की मृत्यु के हालात के बारे में बताया, जो पहले से ही संतों को ज्ञात थे।

तब दोनों तपस्वी उठे और ज़ोसिमा के साथ भाई जॉन के पास गए। मृतक को ज़मीन पर लेटा हुआ देखकर, उन्होंने कहा:

'शोक मत करो, अबा ज़ोसिमा – ईश्वर आपकी मदद करेंगे।'

और इन शब्दों के बाद, उन्होंने मृतक को संबोधित करते हुए ज़ोर से पुकारा:

'भाई जॉन, उठो, क्योंकि तुम्हारे बाबा तुम्हें बुला रहे हैं।'

मृत व्यक्ति तुरंत जीवित हो उठा और ज़मीन से उठ खड़ा हुआ। फिर बुज़ुर्गों ने साँप को ढूँढ़ निकाला और उसे दो टुकड़ों में फाड़ दिया; इसके बाद उन्होंने पूजनीय ज़ोसिमा से कहा:

'अब्बा, हम आपको ईश्वर की इच्छा की झूठी घोषणा नहीं करते: सिनाई पर्वत पर जाओ; क्योंकि ईश्वर आपको मिस्र में स्थित बेबीलोन की कलीसिया के एपिस्कोपेट का दायित्व सौंपना चाहते हैं।'

यह सुनकर, पूज्य जोसिमा ने पवित्र मरुभूमि के संतों का आशीर्वाद लिया और अपने शिष्य जॉन को साथ लेकर एक बार फिर से सिनाई पर्वत लौट आए।

[4100] डियोस्पोलिस - एक फ़िलिस्तीनी शहर, जो यरूशलेम से जोपा (याफ़ो) तक जाने वाले उत्तरी मार्ग पर स्थित था।

[4101] बेशक, यह फोनीशिया में पोर्फिरिगोन शहर के पास, माउंट कार्मेल (टॉलेमाइस के दक्षिण में) के समीप स्थित मरुभूमि प्रतीत होती है। यह मरुभूमि, और विशेष रूप से माउंट कार्मेल, संतों से भरी हुई थी।

[4102] गलातिया – एशिया माइनर का एक छोटा, पहाड़ी लेकिन उपजाऊ प्रांत, जो बिथिनिया, पोंटस और कैपैडोसिया के बीच स्थित था। इसका नाम गालाटियनों से पड़ा था – जो गैलिक या सेल्टिक मूल के युद्धप्रिय जनजातियाँ थीं।

[4103] मेलिटिनि – लघु आर्मेनिया के उत्तरी भाग में एक क्षेत्र था, जो यूफ्रेटिस नदी से बहुत दूर नहीं था। सम्राट ट्राजन (98–117 ईस्वी) के शासनकाल के दौरान, यहाँ इसी नाम का एक बस्ती एक बड़े कस्बे के आकार तक बढ़ गया।

[4104] 'पॉपलश्चे' दूरी की एक इकाई है; यह 690 सैज़ेन के बराबर थी। इस प्रकार दो 'पॉपलश्चे' 1,380 सैज़ेन या 2 वर्स्ट के बराबर होते थे।

कुछ समय बीत जाने के बाद, माउंट सिनाई के मठाध्यक्ष[4105] ने धन्य जोसिमस को दो अन्य भिक्षुओं के साथ माउंट सिनाई के मठों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए अलेक्जेंड्रिया[4106] भेजा। अलेक्ज़ेंड्रिया के पैट्रिआर्क को इन धन्य वृद्धों से लगाव हो गया और उन्हें शहर में ही रखकर उन्होंने उन्हें बिशप नियुक्त किया: एक को हेलीओपोलिस[4107] , दूसरे को लियोनटोपोलिस[4108] , और ज़ोसीमस को मिस्र के बेबीलोन में। क्योंकि प्राचीन काल में दो बाबेल थे: पहला – सबसे प्रसिद्ध और सबसे पुराना – खाल्डीयों के देश में स्थित था[4109] , और वहीं नबूकदनेसर और सभी खाल्डीय राजाओं ने शासन किया; जबकि दूसरा – कम प्रसिद्ध और आकार तथा जनसंख्या में छोटा – मिस्र में स्थित था। इस शहर की स्थापना प्राचीन बेबीलोन के बसने वालों द्वारा नदी नील के किनारे पर की गई थी, जिन्होंने अपनी नई बस्ती का नाम अपने पीछे छोड़े हुए स्वदेश के नाम पर रखा।

इसी मिस्र के बाबेल में था जहाँ परम पूजनीय जोसिमा ने, ईश्वर की इच्छा से और मरुस्थल के संतों की भविष्यवाणी के अनुसार, बिशप का पद ग्रहण किया और मसीह के झुंड का चरवाहा बनना शुरू किया। उन्होंने पवित्र चर्च का अच्छी तरह से शासन किया, और अपने शब्दों, कर्मों और पवित्रता के माध्यम से झुंड के लिए एक उदाहरण स्थापित किया (1 तीमु. 4:12)। वे काफी समय तक बेबीलोन की कलीसिया के प्रमुख रहे और उन्होंने कई लोगों को मोक्ष के मार्ग पर मार्गदर्शन किया। हालाँकि, जब संत परिपक्व वृद्धावस्था में पहुँचे, तो अपनी शारीरिक दुर्बलता को भांपते हुए और अपने निकट मृत्यु की आशंका से, उन्होंने बिशप का पद त्याग दिया और एक बार फिर अपने पूर्व निवास, माउंट सीनाई लौट आए। यहाँ, कुछ समय रहने के बाद, संत प्रभु में सुलाए गए[4110] और अब पवित्र धर्मगुरुओं की संगति में हमारे प्रभु, यीशु मसीह के सामने खड़े हैं; महिमा सदा के लिए उनकी हो। आमीन।

18 जून

5 जून (पुराने कैलेंडर के अनुसार)

पवित्र शहीद और टायर के बिशप, संत डोरोथेयस की स्मृति

5 जून को स्मरणोत्सव

धर्मद्रोही रोमन सम्राट डायोक्लेटियन[4111] के शासनकाल में, संत डोरोथेयस टायर शहर के बिशप[4112] थे। जब उस धर्मद्रोही सम्राट ने ईसाइयों के खिलाफ एक क्रूर उत्पीड़न शुरू किया, तो डोरोथेयस अपने पद को छोड़कर अज्ञात स्थानों पर छिप गए। हालाँकि, 306 से 337 तक शासन करने वाले सम्राट कॉन्स्टेंटाइन द ग्रेट के सिंहासनारोहण के साथ, जब चर्च में शांति लौटी, तो संत डोरोथियस एक बार फिर टायर में अपने पद पर लौट आए और उन्होंने सफलतापूर्वक वचन के झुंड का मार्गदर्शन किया, और कई लोगों को मूर्तिपूजा की भ्रांति से दूर ईश्वर की ओर ले गए। डोरोथेयस का

[4105] माउंट सिनाई के मठ एक ही प्रमुख - माउंट सिनाई के अबा - के अधिकार के अधीन थे।

[4106] अलेक्ज़ेंड्रिया मिस्र और उत्तरी अफ्रीकी प्रांतों का प्रमुख शहर था। इसकी स्थापना सिकंदर महान ने निचले (उत्तरी) मिस्र में, नील नदी के मुहाने पर की थी। रोम के बाद, अलेक्ज़ेंड्रिया को दुनिया का सबसे प्रमुख शहर माना जाता था और यह व्यापार, उद्योग और विशेष रूप से, मूर्तिपूजक शिक्षा का केंद्र था; ईसाई धर्म के शुरुआती सदियों में, यह ईसाई प्रबोधन का एक प्रमुख केंद्र था। 5वीं शताब्दी से, अलेक्ज़ेंड्रिया के बिशप को पैट्रिआर्क की उपाधि मिली, और मिस्र, लीबिया और उत्तरी अफ्रीका के सभी चर्च उनके अधिकार के अधीन थे। सिनाई प्रायद्वीप, अपने मठों के साथ, अलेक्ज़ेंड्रिया के पैट्रिआर्क के अधिकार क्षेत्र में भी आ गया। आज, अलेक्ज़ेंड्रिया (जो तुर्की और अरबी में इस्कंदरुन के नाम से जाना जाता है) भूमध्यसागर के सबसे महत्वपूर्ण व्यापारिक केंद्रों में से एक है, जिसकी आबादी लगभग 2,30,000 है।

[4107] हेलिओपोलिस – अफ्रीका में एक शहर; यह नील नदी के दाहिने किनारे, उसकी एक पूर्वी शाखा पर, निचले मिस्र के दक्षिण में स्थित है।

[4108] लियोनटोपोलिस – मध्य मिस्र का एक शहर।

[4109] कलदेआ मेसोपोटामिया में, टाइग्रिस और यूफ्रेटिस नदियों के किनारे स्थित था।

[4110] उनकी मृत्यु छठी शताब्दी के अंत में हुई।

[4111] डायोक्लेटियन ने 284 से 305 तक रोमन साम्राज्य के पूर्वी भाग पर शासन किया।

[4112] टायर फिनिसिया में भूमध्य सागर के तट पर स्थित था।

जीवन सम्राट जूलियिन द एपोस्टेट[4113] के समय तक जारी रहा। सिंहासन पर बैठने पर, जूलियिन ने शुरू में ईसाइयों पर गुप्त रूप से अत्याचार कियि, और अपने विचारों वाले प्रांतीय गवर्नरों को हर संभव तरीके से ईसाइयों पर अत्याचार करने और उन्हें सताना का आदेश दियि। तब संत डोरोथेयस ने, यह देखकर कि विश्वासियों पर एक नया उत्पीड़न शुरू हो रहा था, एक बार फिर टायर के चर्च के पद को छोड़ दियि, और इस प्रकार अपने उत्पीड़क के हाथों से बच निकिले: क्योंकि प्रभु ने आज्ञा दी थी कि उत्पीड़क के खुले हमलों के आगे आत्मसमर्पण न करें, बल्कि उनसे बचें; उन्होंने कहा: *'जब वे तुम्हें एक नगर में सताएँ, तो दूसरे नगर को भाग जाओ'* (मत्ती 10:23)।

इस प्रकार, टायर छोड़कर डोरोथियिस एशियिा माइनर आए, लेकिन यहाँ भी वे मूर्तिपूजकों से नहीं बच सके, क्योंकि ईश्वर उन्हें शहीद के मुकुट के लिए बुला रहे थे। उन्हें 'Uds[4114] ' शहर में एक निर्दयी राजा के गुंडों ने पकड़ लियि। वहाँ विभिन्न यातनाएँ सहने के बाद, उन्होंने अपने कष्टों के बीच, अपना धन्य आत्मा प्रभु के हाथों में सौंप दी, और एक सौ और seven[4115] वर्ष की आयु तक जीवित रहे।

धर्मनिरपेक्ष और आध्यात्मिक दोनों विषियों में पूर्णता प्राप्त करने के बाद, संत डोरोथियिस ने ग्रीक और लैटिन में कई कृतियाँ छोड़ीं—जो ईसाइयों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण थीं—क्योंकि वह दोनों भाषाओं में अत्यधिक निपुण थे। अन्य बातों के अलावा, उन्होंने नबियों और प्रेरितों के जीवन, साथ ही अन्य अत्यधिक उपयोगी कृतियों और कथाओं की रचना की[4116] । और अब, स्वयं जीवन की पुस्तक में अंकित हो चुके, वे उन संतों के साथ स्वर्गीय निवासों में वास करते हैं जिनके जीवन का उन्होंने अपने सांसारिक जीवन के दौरान वृत्तांत लिखा था।

कॉन्टाकियिन, स्वर 5:

इन सद्गुणों, सूर्य से भी अधिक तेज दिव्य शिक्षाओं और धन्य कष्टों से प्रकाशमान होकर, हे डोरोथियिस, तूने पृथ्वी को प्रकाशित कियि, मूर्तिपूजा और भयंकर विधर्मों के अंधकार को दूर कियि। इसी कारण, हम हर्ष के साथ तेरी स्मृति का उत्सव मनाते हैं।

हमारे पूजनीय पिता अनुबियिस, मिस्र के कन्फेशर और हर्मिट, का निधिनोत्सव

5 जून को स्मरणोत्सव

आदरणीय अनुवियिस, जिनके पास हमारे ईश्वर मसीह के प्रति महान विश्वास और प्रेम था, जन्म से मिस्र के निवासी थे। दुष्ट मूर्तिपूजकों द्वारा भड़काए गए ईसाइयों के उत्पीड़न के दौरान, उन्होंने बहादुरी से मूर्तिपूजकों के सामने मसीह की गवाही दी, जिसके लिए उन्हें यातनाएँ दी गईं। लेकिन, ईश्वर की व्यवस्था से, वह मूर्तिपूजकों के हाथों से छूटकर रेगिस्तान में चला गया; तपस्या में परिश्रम करते और ईश्वर को प्रसन्न करते हुए, वह वहाँ तब तक भटकता रहा जब तक कि वह वृद्धावस्था में नहीं पहुँच गया। उनका निधन निम्नलिखित परिस्थितियों में हुआ।

ईश्वर की व्यवस्था से, एक बार तीन संन्यासी—अब्बा सुर, यशायाह और पॉल—मिस्र की भूमि को पानी देने वाली नील नदी के किनारे एक स्थान पर एक साथ आए। एक-दूसरे से यह पूछने पर कि वे कहाँ जा रहे हैं, उन्हें एहसास हुआ कि तीनों का इरादा एक ही था; क्योंकि उनमें से प्रत्येक अब्बा अनूबियिस के पास जा रहा था। जहाँ संन्यासी मिले थे, उस स्थान से अनूबियिस के मठ तक की यात्रा में तीन दिन लगे और यह नदी के किनारे-किनारे थी; इसके अलावा, उन्हें धारा के विपरीत, ऊपर की ओर नाव चलानी पड़ी। और इस प्रकार वे साधु किनारे पर बैठ गए, यह देखने के लिए इंतजार करते हुए कि क्या उस दिशा में कोई नाव दिखाई देगी, ताकि वे उस पर चढ़ सकें और उस क्षेत्र में पहुँच सकें जहाँ पूजनीय अनुवियिस रहते थे। लेकिन जब बहुत देर तक कोई नाव नहीं दिखाई दी, तो वे निराश हो गए और एक-दूसरे से कहने लगे:

[4113] जूलियिन द अपोस्टेट 361 से 363 तक सम्राट था।

[4114] उद्स या उद्स का शहर एशियिा माइनर के मिसियिा प्रांत में स्थित था। वर्ना शहर अब प्राचीन उद्स के स्थल पर स्थित है।

[4115] यह लगभग 362 का समय था।

[4116] यह निश्चित रूप से ज्ञात नहीं है कि संत डोरोथियिस ने कौन से विशिष्ट कार्य लिखे; ऐसा माना जाता है कि उन्होंने 'सिनॉप्सिस' लिखा, जो पैगंबरों और प्रेरितों के जीवन के वृत्तांतों का एक संग्रह है; लेकिन सभी विद्वान इस विचार से सहमत नहीं हैं।

'आओ हम प्रभु से प्रार्थना करें कि अपनी दया से, वह हमारी इच्छा पूरी करें और हमें हमारे यात्रा की बाधा को पार करने में मदद करें।'

तब यशायाह और पौलुस ने अब्बा सूरा से कहा:

'विशेष रूप से प्रार्थना करें, पिताजी, क्योंकि हमारा विश्वास है कि आपके द्वारा ईश्वर हमारी मांगी हुई वस्तु हमें प्रदान करेंगे।'

सुरा ने उन्हें प्रार्थना में अपने साथ घुटने टेकने का आदेश दिया, जबकि वह स्वयं एक क्रॉस के आकार में जमीन पर लोट गया और प्रभु के सामने मुंह के बल गिर पड़ा। जब, अपनी प्रार्थना समाप्त करने के बाद, बुजुर्ग जमीन से उठे, तो उन्होंने किनारे के पास एक नाव को लंगर डालकर खड़ा देखा। प्रसन्न होकर, उन्होंने प्रभु का धन्यवाद किया और उसमें चढ़ गए। प्रस्थान करते ही, नाव हवा से चलती हुई और परमेश्वर की अदृश्य शक्ति के मार्गदर्शन से, धारा के विपरीत ऊपर की ओर चली। यह इतनी तेजी से चली कि एक ही घंटे में वह उतनी दूरी तय कर गई, जिसे तय करने में अन्यथा तीन दिन की कठिन नौकायन लगती।

जब नाव अनुवी के मठ के सामने वाले किनारे पर लंगर डालने लगी, तो पादरी किनारे पर उतर गए। उसी क्षण, यशायाह ने कहा:

'प्रभु, हमें वह व्यक्ति दिखा दो जिसके पास हम जा रहे हैं, ताकि वह हमारे स्वागत के लिए बाहर आकर हम में से प्रत्येक को अपने हृदय के रहस्य प्रकट कर दे!'

तब फादर पॉल ने उनसे कहा:

'प्रभु ने मुझे प्रकट किया है कि तीन दिनों में, वह बाबा अनुवियस को इस संसार से घर बुला लेंगे।'

इसके बाद, वे नदी के किनारे से मठ की ओर चल पड़े, और जब वे नदी से थोड़ी दूरी पर चले गए, तो पूजनीय अनुवियस उन्हें मिलने के लिए बाहर आए और, उन्हें नमस्कार करते हुए, कहा:

'प्रभु धन्य हों, जिन्होंने मुझे अब देह में आप लोगों को देखने का अनुग्रह प्रदान किया है, ठीक वैसे ही जैसे मैंने आप लोगों को पहले आत्मा में देखा था।'

उन्हें अपनी कोठरी में गर्मजोशी से स्वागत करते हुए, उन्होंने उनमें से प्रत्येक को उनके पुण्य कार्यों के बारे में बताना शुरू किया, जो केवल ईश्वर को ही ज्ञात थे – अर्थात्, कि कैसे प्रत्येक ने पूर्ण एकांत में जीवन व्यतीत किया, अपने प्रभु, मसीह प्रभु को प्रसन्न करते हुए, और प्रत्येक को प्रभु से क्या अनुग्रह प्राप्त हुआ था।

इसके बाद, अब्बा इसैया ने अनुबियस से कहा:

'चूँकि प्रभु ने हमें, आदरणीय पिता, यह प्रकट किया है कि तीन दिनों में वे आपको इस क्षणिक जीवन से ले जाएँगे, हम आपसे विनती करते हैं कि आप हमें मरुभूमि में अपने श्रम और पराक्रमी कार्यों के बारे में भी बताएँ, जिनसे आपने परमेश्वर को प्रसन्न किया है। यह मत सोचो कि तुम घमंड में पड़ जाओगे: क्योंकि, जब तुम इस संसार से प्रस्थान करोगे, तो तुम आने वाली पीढ़ियों के लिए अपने ईश्वर-प्रसन्न जीवन का एक उदाहरण छोड़ जाओगे, ताकि कोई तुम्हारे उदाहरण का अनुसरण कर सके।

तब उस वृद्ध ने उनके बारे में निम्नलिखित बातें बताईं:

– मुझे याद नहीं कि मैंने कुछ भी महान या गौरवशाली किया हो। यह एकमात्र बात है जो मैंने अपने ईश्वर की कृपा से अपनी स्मृति में संजोई है: जब से मैंने मसीहियों पर हो रहे अत्याचार के दौरान अपने यातनादाताओं के सामने हमारे उद्धारकर्ता का नाम स्वीकार किया, तब से मेरे होठों से एक भी झूठा शब्द नहीं निकला है। क्योंकि, एक बार सत्य का स्वीकार करने के बाद, मैं बाद में कोई झूठ बोलना नहीं चाहता था; और एक बार स्वर्गीय वस्तुओं से प्रेम करने के बाद, मैं अपने शेष जीवन में किसी भी सांसारिक वस्तु से प्रेम नहीं करना चाहता था। इसमें मुझे परमेश्वर की कृपा से सहायता मिली, क्योंकि प्रभु ने मुझे ऐसी शक्ति प्रदान की कि मैं कभी भी कोई सांसारिक आशीर्वाद न चाहूँ। पवित्र स्वर्गदूत मेरे लिए आवश्यक भोजन ले आए। और मेरे प्रभु ने पृथ्वी पर जो कुछ भी घटित होता है, उसमें से मुझसे कुछ भी नहीं छिपाया। साथ ही, मेरा हृदय हमेशा उनके साथ मिलन की लालसा से भरा रहता था। मैं अपने सभी विचारों को प्रभु मसीह की ओर निर्देशित करता था, जिससे मेरी आत्मा प्रेम करने लगी थी, और मैं—ताकि मैं हमेशा अपनी आत्मा की आँखों से उन्हें देख सकूँ और उनके चिंतन में आनंदित हो सकूँ—दिन हो या रात, सोया नहीं करता था। मैं निरंतर परमेश्वर के स्वर्गदूत को भी देखती हूँ, जो मेरे साथ रहता है और मुझे इस युग के सभी शासकों को दिखाता है। मेरे मन का प्रकाश कभी मद्धिम नहीं हुआ। – मैंने प्रभु से जो कुछ भी माँगा, वह मुझे तुरंत मिल गया। बार-बार मैंने स्वर्गदूतों की सेनाओं को

परमेश्वर के सामने खड़ा देखा; मैंने पवित्र शहीदों और स्वीकार करने वालों के चेहरों को, संतों और सभी धर्मपरायण लोगों की सभाओं को, और सबसे ऊपर उनों को देखा, जनिका पृथ्वी पर रहते हुए, हृदय और वशि्वास की सरलता में, एकमात्र कार्य प्रभु की हमेशा महमिा करना और आशीर्वाद देना था। मैंने शैतान और उसके स्वर्गदूतों को भी देखा, जन्हिें अनंत अग्नमिें डाल दयिा गया था। और फरि, उनके वपिरीत, मैंने धर्मी लोगों को अनंत आनंद का आनंद लेते देखा।

आदरणीय अनुवयिस ने तीन दनिों के दौरान, उनसे मलिने आए पादरयिों को यह और इसी प्रकार की बहुत सी बातें सुनाईं; उन्होंने यह अहंकार से नहीं, बल्कि अपने श्रोताओं के लाभ के लिए कहा। क्योंकि उन्होंने आए हुए लोगों की वनितयिों से प्रेरति होकर, बड़ी वनिम्रता से कहा। तीसरे दनि के अंत में, उन्होंने शांतपिूर्वक और आनंदपूर्वक अपनी आत्मा ईश्वर को सौंप दी; और जैसे ही उनकी आत्मा उनके शरीर से अलग हुई, पवित्र स्वर्गदूतों की सेना तुरंत प्रकट हुई, उन्होंने संत की आत्मा को लयिा और उसे स्वर्ग की ऊँचाइयों तक उठाना शुरू कर दयिा। उसी समय, हवा में सबसे मधुर स्वर्गदूतों के भजन सुनाई देने लगे। इस प्रकार पूजनीय अनुवीयस ने पृथ्वी से स्वर्गीय नविासों में प्रवेश कयिा, उन्होंने मूर्तपिूजकों के समक्ष मसीह के नाम की गवाही दी और इसके लिए यातनाएँ सहन कीं[4117] । अब वह हमारे प्रभु यीशु मसीह के गवाहों की संगतमिें स्वर्गीय स्वर्गदूतों के समक्ष महमिामय हैं, जन्हिें पतिा और पवित्र आत्मा के साथ, युगानुयुग महमिा और आदर प्राप्त होता है। आमेन।

हमारे पूजनीय पतिा थयिोडोर तपस्वी की स्मृति

5 जून को स्मरण कयिा जाता है

हमारे पूजनीय पतिा थयिोडोर अपने युवा काल से ही एक नपुंसक थे। उन्होंने संसार का त्याग कयिा, संन्यासी की शपथ ली और जॉर्डन के रेगस्तिान में चले गए। ईश्वर को प्रसन्न करने के लिए उत्सुक, उन्होंने वहाँ कड़ी मेहनत की, जसिके लिए उन्हें ईश्वर से चमत्कार करने का वरदान मलिा। एक अवसर पर, उन्हें कॉन्स्टेंटनिोपल की यात्रा करनी पड़ी। समुद्र पर पहुँचने पर, उन्होंने एक जहाज को रवाना होने के लिए तैयार पाया और उसमें सवार हो गए। यात्रा के दौरान, जहाज रास्ता भटक गया और लंबे समय तक भटकता रहा, जसिसे जहाज पर सवार सभी लोगों का भोजन और पानी खत्म हो गया। नावकि और जहाज पर मौजूद सभी लोग हैरान और गहरे नरिाश थे। तब पूजनीय थयिोडोर ने अपने हाथ आकाश की ओर उठाकर, लोगों को उनकी मुसीबतों से बचाने वाले ईश्वर से भक्तपिूर्वक प्रार्थना की। फरि, एक प्रार्थना के साथ, उन्होंने समुद्र के पानी पर क्रॉस का चह्नि बनाया और नावकिों से कहा:

'ईश्वर धन्य हो! जतिना पानी चाहिए, उतना नकिालो।'

कुछ पानी नकिालने पर, उन्होंने उसका स्वाद चखा और पाया कि समुद्र का पानी कड़वे से नदी के पानी की तरह मीठा हो गया था। इसके बाद, उन्होंने और सभी ने अपने पात्र समुद्र के मीठे पानी से भर लिए, और ईश्वर की स्तुति करने के बाद, उन्होंने बुजुर्ग के सामने जमीन पर सरि झुकाया। लेकनि रेवरेंड फादर ने कहा:

'मुझे क्षमा करें, मेरे स्वामयिों! सर्वशक्तमिान ईश्वर का यह चमत्कार मेरे लिए नहीं, बल्कि आपके लिए हुआ है, जो पानी की कमी के कारण दुखी थे। क्योंकि ईश्वर ने, आपकी पीड़ा और गहन शोक को देखकर, आप पर दया की और खारे समुद्र के पानी को मीठे नदी के पानी में बदल दयिा।'

थोड़ी ही देर बाद, पवित्र संन्यासी की प्रार्थनाओं से, जहाज़ उस बंदरगाह पर तेज़ी से पहुँच गया जसिके लिए वह जा रहा था। इन पूजनीय पतिा थयिोडोर ने कई अन्य चमत्कार भी कए, और फरि ईश्वर के पास चले गए[4118] ।

कएिव के मेट्रोपॉलटिन, धन्य कॉन्स्टेंटनि की मृत्यु की कथा

5 जून को स्मरणोत्सव

[4117] प्रतष्ठिति अनुवयिस की मृत्यु चौथी शताब्दी में हुई।

[4118] आदरणीय थयिोडोर छठी शताब्दी में रहे और उन्होंने धर्मप्रचार का कार्य कयिा।

कएिव के महाप्रसि के सहिासन को धन्य इगोर[4119] से छीनकर इज्यास्लाव म्स्तस्लिावचि[4120] , जो व्लादमिीर मोनोमाख[4121] के पोते थे, द्वारा जब्त कएि जाने के तुरंत बाद, उनके परम पावन कएिव के मेट्रोपॉलटिन माइकल द्वतिीय[4122] प्रभु के पास चले गए । यह घटना इगोर की हत्या से कुछ समय पहले हुई। माइकल के उत्तराधकिारी के रूप में, महाप्रभु इज्यास्लाव ने एक अत्यंत वद्विान भकि्षु, दार्शनकि क्लेमेंट[4123] को चुना, जन्हिोंने पहले ही स्कीमा ग्रहण कर ली थी। इज्यास्लाव इस भकि्षु को स्मोलेंस्क से लाया था, और वह बहुत उत्सुक था कि उसका अभषिेक कीव में रूसी बशिपों द्वारा कयिा जाए, क्योंकि बहुत अधकि दूरी के कारण, वह उसे सार्वभौमकि पैट्रआिर्क का आशीर्वाद प्राप्त करने के लएि कॉन्स्टेंटनिोपल नहीं भेजना चाहता था (जैसा कि पहले प्रथा थी)। इज्यास्लाव ने रूसी बशिपों की एक परषिद बुलाई और उन्हें स्कीमा-भकि्षु क्लेमेंट को कीव का मेट्रोपॉलटिन नयिुक्त करने का आदेश दयिा। हालाँकि, सभी बशिप इस बात से सहमत नहीं थे, क्योंकि वे कॉन्स्टेंटनिोपल के पैट्रआिर्क के आशीर्वाद के बनिा उन्हें नयिुक्त करने की हम्मित नहीं कर सके। फरि भी कुछ ऐसे बशिप भी थे, जो राजकुमार को खुश करना चाहते थे, उन्होंने रोम के पोप संत क्लेमेंट की अवशेष का उपयोग करके क्लेमेंट को बशिप के रूप में अभषिकि्त कयिा, जसि संत व्लादमिीर ने खेरसोनोस से कीव लाया था। इस परषिद और क्लेमेंट के बशिप के रूप में अभषिेक का वर्णन संत नफिॉन के जीवन के वृत्तांत में, 8 अप्रैल के दनि, अधकि वस्तिार से कयिा गया है (इन धन्य नफिॉन ने इस अवैध अभषिेक को मंजूरी नहीं दी थी)।

इज्यास्लाव म्स्तस्लिावचि के बाद, कीव का सहिासन मोनोमाख के पुत्र जॉर्ज व्लादमिीरोवचि[4124] को मलिा। वह क्लेमेंट को कीव का मेट्रोपॉलटिन नहीं चाहते थे, क्योंकि उनका अभषिेक अवैध रूप से हुआ था। ठीक इसी समय, महाप्रसि के अनुरोध पर, महाधर्माध्यक्ष कॉन्स्टेंटनि[4125] कोंस्टेंटनिोपल से कीव आए, जन्हिें परम पावन सार्वभौमकि पैट्रआिर्क ने भेजा था; अब हम उन्हीं के बारे में बात करेंगे। पैट्रआिर्क द्वारा उन्हें दएि गए अधकिार के तहत, इस कोंस्टेंटनि ने क्लेमेंट को बशिप के पद और मेट्रोपॉलटिन के पद से हटा दयिा, और इसी तरह उन सभी को मंत्रालय से हटा दयिा जन्हिें क्लेमेंट ने कसिी न कसिी आध्यात्मकि पद पर नयिुक्त कयिा था।

कुछ वर्षों बाद, कीव के महा राजकुमार जॉर्ज व्लादमिीरोवचि मोनोमाख का नधिन हो गया। तब रूसी राजकुमारों के बीच महा राजकुमार के सहिासन और मेट्रोपॉलटिन के पद दोनों को लेकर बड़ी कलह उत्पन्न हुई: क्योंकि कुछ लोग कन्स्टेंटनि को अपना चरवाहा मानते थे, जबकि अन्य मेट्रोपॉलटिन क्लेमेंट की बहाली की मांग कर रहे थे; वशिेष रूप से, दविंगत ग्रैंड प्रसि इज़यिास्लाव म्स्टस्लिावचि के पुत्र, म्स्टस्लिाव इज़यिास्लावचि[4126] , जो व्लादमिीर मोनोमाख के परपोते थे, ने कांस्टेंटनि के बजाय क्लेमेंट का समर्थन कयिा। उन्होंने इस प्रकार कहा:

'मैं नहीं चाहता कि कॉन्स्टेंटनि कीव का मेट्रोपॉलटिन बने, क्योंकि कई लोगों ने क्लेमेंट का समर्थन करने के लएि मेरे पतिा को शापति कयिा था।'

परणिामस्वरूप, रूसी राजकुमारों को दोनों मेट्रोपॉलटिन—क्लेमेंट और कॉन्स्टेंटनि—को उनके पदों से हटाने के लएि मजबूर होना पड़ा। फरि राजकुमारों ने कॉन्स्टेंटनिोपल में परम पावन पैट्रआिर्क को एक अनुरोध भेजा, जसिमें उनसे एक नया मेट्रोपॉलटिन भेजने का अनुरोध कयिा गया। सर्वपवत्रि पैट्रआिर्क ने, रूसी राजकुमारों के बीच के कलह और ववािद को समाप्त करने की इच्छा से, थयिोडोर नामक एक नए मेट्रोपॉलटिन को कीव भेजा। तब धन्य कॉन्स्टेंटनि, राजकुमारों के बीच के कलह को देखकर और इस उथल-पुथल से बचने की इच्छा से, नए मेट्रोपॉलटिन के कीव में आगमन से पहले ही पद त्याग कर दयिा। कीव छोड़ने के बाद, कोंस्टेंटनि चेर्नगिोव के लएि रवाना हो गए। वहाँ वे घातक रूप से बीमार पड़ गए। यह भांपते हुए कि उनका अंत नकिट है, उन्होंने एक पत्र लखिा, उस पर मुहर लगाई और उसे चेर्नगिोव के बशिप

[4119] इगोर ओलेगोवचि ने (1146 में) महज दो सप्ताह तक कीव पर शासन कयिा। उन्हें चर्च द्वारा संत घोषति कयिा गया था। – उनका पर्व दविस 5 जून है।

[4120] इज्यास्लाव म्स्तस्लिावचि 1146 से 1149 तक; फरि 1150 से 1154 तक कीव के ग्रैंड प्रसि थे।

[4121] व्लादमिीर वसेवोदोवचि मोनोमाख ने 1114 से 1125 तक कीव पर शासन कयिा।

[4122] मेट्रोपॉलटिन माइकल द्वतिीय ने 1131 से 1146 तक कीव का पद संभाला।

[4123] क्लेमेंट ने 1147 से 1164 तक कीव मेट्रोपोलसि का प्रशासन संभाला।

[4124] जॉर्जी (या यूरी) व्लादमिीरोवचि डोलगोरुकी ने कीव में तीन बार महान राजकुमार के सहिासन पर कब्जा कयिा: पहली बार 1149 से 1160 तक; दूसरी बार 1150 के अंत में; और तीसरी बार 1154 से 1157 तक।

[4125] मेट्रोपॉलटिन कॉन्स्टेंटनि ने 1155 से 1158 तक कीव के मेट्रोपोलसि का शासन कयिा।

[4126] मस्तस्लिाव इज्यास्लावचि ने 1158 में कीव का सहिासन संभाला; फरि 1168 में।

एंथनी को सौंप दिया; साथ ही, कांस्टेंटिन ने एंथनी से एक गंभीर शपथ ली कि उनकी मृत्यु के बाद, मुहर तोड़कर पत्र पढ़ने पर, वह उसमें लिखा सब कुछ पूरा करेगा।

41274128जैसे ही धन्य मेट्रोपॉलिटन कॉन्स्टेंटिन का निधन हो गया, बिशप एंथनी, मेट्रोपॉलिटन द्वारा सील किया गया पत्र लेकर चेर्निहिव के राजकुमार स्वियातोस्लाव ओल्गोविच के पास रवाना हो गए। वहाँ पत्र की मुहर खोलने के बाद, एंथनी ने उसे सभी की उपस्थिति में पढ़ा।

और उस पत्र में कुछ अद्भुत और भयानक लिखा था, अर्थात्:

– मेरी मृत्यु के बाद, मेरे शरीर को दफ़नाना नहीं, बल्कि, मेरे पैरों में रस्सियाँ बाँधकर, मुझे शहर से बाहर खींच ले जाओ और कुत्तों के खाने के लिए फेंक दो; मैंने पाप किया है; मेरी वजह से विद्रोह खड़ा हो गया है; इस पर प्रभु का हाथ मुझ पर पड़े; मुझे कष्ट भोगने दो, ताकि प्रभु अपने लोगों से कलह और झगड़े को दूर कर दें।

यह सुनकर सभी भय और आतंक से ग्रस्त हो गए। तब राजकुमार ने बिशप से कहा:

'जैसा आपको उचित लगे, वैसा ही करें।'

बिशप, न तो मेट्रोपॉलिटन के आदेश को अनदेखा करने की हिम्मत कर सके और न ही अपनी कसम तोड़ने की, उसने पत्र में दिए गए सभी आदेशों का पालन किया: उसने मृतक के शव को शहर से बाहर खींचकर उसे खेत में फेंक दिया। और मेट्रोपॉलिटन का शरीर तीन दिनों तक बिना दफनाए पड़ा रहा; इस अद्भुत घटना को देखकर सभी भय और आतंक से भर गए।

तीसरे दिन, राजकुमार स्वियातोस्लाव ओलगोविच, जो ईश्वर के भय से भरे हुए थे (क्योंकि उस भयानक घटना के बाद उन पर महान भय और आतंक छा गया था), ने आदेश दिया कि ईश्वर के बिशप के शरीर को, जिसे बाहर फेंक दिया गया था, उचित सम्मान के साथ दफनाया जाए। और उन्होंने उनके शरीर को बड़े सम्मान के साथ शहर में लाया, और उसे रेड टेरेम में, पवित्र उद्धारकर्ता के चर्च में रख दिया, जहाँ नए शहीद, धन्य इगोर, कीव के राजकुमार, जिन्हें कीव के लोगों ने मार डाला था, को दफनाया गया था।

उन दिनों, जब कांस्टेंटिन का सम्माननित शरीर चेर्निगोव शहर से बाहर फेंका गया, तो कीव में सूरज फीका पड़ गया और ऐसा प्रचंड तूफान उठा कि धरती भी काँप उठी; गरज गूँजी और बिजली चमकी, जिससे कीव के सभी लोग बड़े भय और निराशा से भर गए। उसी क्षण, बिजली की एक ही चिंगारी गिरी और आठ लोगों की मौत हो गई – दो पुरोहित, दो डिकन और चार आम लोग।

रॉस्टिस्लाव म्स्तिस्लाविच, कीव के राजकुमार[4129] , व्लादिमीर मोनोमाख के पोते, उस समय विश्गोरोड के पास पोवारी में थे; एक तूफान ने उनके पास लगाई गई तंबू को नष्ट कर दिया। भयभीत और मेट्रोपॉलिटन की मृत्यु की याद में (जिसे चेर्निगोव के राजकुमार ने एक संदेशवाहक के माध्यम से उन्हें सूचित किया था), उन्होंने एक विशेष दूत को कीव, सेंट सोफिया चर्च और अन्य गिरिजाघरों में भेजा, सभी चर्चों में पूरी रात जागरण आयोजित करने का अनुरोध लेकर।

उन्होंने कहा, 'यह एक दंड है, जो प्रभु ने हमारे पापों के कारण हम पर भेजा है।'

ये सभी भय और आतंक केवल कीव तक ही सीमित थे; हालाँकि, चेर्निहिव में उन दिनों सूरज चमकदार रूप से चमका और वहाँ ऐसा कोई भय नहीं था। रात में, धन्य मेट्रोपॉलिटन कॉन्स्टेंटिन के शरीर के ऊपर, जो शहर की दीवारों के बाहर फेंक दिया गया था, तीन अग्नि स्तंभ, जो चमकते हुए आकाश तक पहुँच रहे थे, दिखाई दिए।

धन्य कॉन्स्टेंटिन के पवित्र शरीर को दफनाए जाने के बाद, कीव में पूर्ण शांति लौट आई; जो कुछ हुआ था, उसे देखकर सभी चकित थे और उन्होंने परमेश्वर की महिमा की, जिसकी महिमा हमसे, अब और युगों-युगों तक होती रहे। आमीन।

[4127] धन्य कॉन्स्टेंटिन का 1159 में निधन हो गया।

[4128] स्वियातोस्लाव ओल्गोविच ने 1137 से 1165 तक शासन किया।

[4129] रॉस्टिस्लाव म्स्तिस्लाविच ने 1154 में (केवल एक सप्ताह के लिए); फिर 1158 से 1167 तक कीव पर शासन किया।

पवत्रि शहीदों: मार्शयिन, नकिैंडर, हाइपरकयिस, अपोलोनयिस, लयिोनडिास, एरयिस, गोरगयिस, सेलनियिस, इरनिीअस और पाम्वोन का शहीद वृत्तांत

5 जून को स्मरण कयिा जाता है

मसीह के पवत्रि शहीदों, मार्शयिन और नकिैंडर, अपने साथयिों के साथ, मस्रि के मूल नविासी थे। मसीह में उनके वशि्वास के लिए, उन्हें प्रांतीय राज्यपाल के आदेश पर गरिफ्तार कयिा गया, और उन्हें मसीह का त्याग करने और मूर्तयिों की पूजा करने के लिए मजबूर कयिा गया, लेकनि उन्होंने ऐसा करने से इनकार कर दयिा। फरि पहले उन्हें बुरी तरह पीटा गया, फरि उनकी पसलयिों को मोमबत्तयिों से झुलसाया गया, और अंत में, उन्हें लटका कर लोहे के पंजों से तब तक खुरचते रहे जब तक कि उनके मांस के टुकड़े जमीन पर गरिने नहीं लगे। इसके बाद, मुश्कलि से जीवति, उन्हें कैद कर दयिा गया, लेकनि कालकोठरी में प्रभु का एक स्वर्गदूत उनके पास आया और उन्हें चंगा कर दयिा। कई दनि बीत जाने के बाद, वे अच्छे स्वास्थ्य के साथ कालकोठरी से बाहर नकिले और एक बार फरि मुकदमे के लिए प्रांतीय राज्यपाल के सामने पेश हुए। इन चमत्कारों को देखकर, कई वधिर्मी सच्चे परमेश्वर के प्रति वशि्वास में परविर्तति हो गए। राज्यपाल के मुकदमे में, पवत्रि शहीदों को एक बार फरि कारावास की सजा सुनाई गई, और वहाँ, भूख और प्यास से पीड़ति होकर, वे मर गए[4130] .

19 जून

6 जून (पुराना तरीका)

हमारे पूजनीय पति वसि्सारयिन का जीवन।

6 जून को स्मरणोत्सव

वसि्सारयिन, हमारे पुरखों में महान, मस्रि में पैदा हुए और वहीं पले-बढ़े; अपनी जवानी से ही वह ईश्वर से प्रेम करते थे, और ईश्वर की कृपा का प्रकाश उनके हृदय में चमकता था। उन्होंने स्वयं को हर पापी अशुद्धि से शुद्ध रखा, और इस बात का ध्यान रखा कि पवत्रि बपतस्मिा में प्राप्त हुए आध्यात्मकि वस्त्र का अपमान न हो।

संत वसिारीयोन ने यरूशलेम के पवत्रि स्थानों की यात्रा की; वहाँ उन्होंने आदरणीय गेरासमिस को देखा, जो यॉर्डन नदी के कनिारे उपवास और एकांत का जीवन व्यतीत कर रहे थे, और जनिकी सेवा एक शेर करता था। उन्होंने वहाँ वभिन्नि स्थानों पर रहने वाले कई अन्य तपस्वयिों को भी देखा, जो बाद में अपने गुणों के लिए प्रसद्धि हुए; उनके साथ बातचीत करते हुए, संत वसिारयिन को अपनी आत्मा के लिए बहुत लाभ हुआ।

अपने देश लौटने पर, वसिारीयोन को पेलुसयिम के इसडिोर के रूप में एक आध्यात्मकि पति मलि; अक्सर उनसे मलिने जाने पर, उन्हें सद्गुणों की शकि्षा दी गई और एक कठोर जीवन जीने के लिए प्रोत्साहति कयिा गया; अंत में, अपनी सारी संपत्ति—जो उन्हें अपने माता-पति से वरिासत में मलिी थी—गरीबों और मठों में बाँटने के बाद, वसि्सारयिन ने संसार का त्याग कर दयिा और मठवासी संन्यास की शपथ ली।

एक सुनसान जगह पर चले जाने के बाद, वसि्सारयिन ने मौन का व्रत लयिा; अनेक कठोर परशि्रमों से स्वयं को थकाते और तपस्या के कष्टों से अपने शरीर को दंडति करते हुए, वह, शरीर में रहते हुए भी, अदेह प्राणयिों के समान हो गया। उनका उपवास अद्वतिीय था: कभी-कभी वे पूरे सप्ताह कुछ नहीं खाते थे, जबकि अन्य समय में वे चालीस दनिों तक बनिा भोजन या पानी के रहते थे। एक अवसर पर, कांटों के बीच एक खुली जगह में खड़े होकर, उन्होंने अपने हाथ और आँखें स्वर्ग की ओर उठाईं और अपना मन भी वहीं लगाया, और वे चालीस दनि और रातों तक बनिा हलि-डुले प्रार्थना में खड़े रहे। उन चालीस दनिों के दौरान, वह उस स्थान से नहीं हलिा, उसने कुछ भी नहीं चखा, कसिी से एक शब्द भी नहीं कहा,

---

[4130] पवत्रि शहीदों की मृत्यु का सटीक वर्ष अज्ञात है। उनकी उत्कृष्टता फलिारेट ('संतों के जीवन', जून, पृ. 31) उनके नधिन का समय मैक्समिस के शासनकाल में बताते हैं, जसिने वर्ष 305 में सीरयिा और मस्रि पर सर्वोच्च अधकिार ग्रहण कयिा और अपने अधीन क्षेत्रों में क्रश्चियिनों का क्रूरतापूर्वक उत्पीड़न कयिा। उसने 305 से 312 तक शासन कयिा।

वह झपकी नहीं लिया, प्राकृतिक कमजोरी से थकान का शिकार नहीं हुआ, न ही उसका मन सांसारिक किसी भी चीज़ पर भटका; बल्कि, अदेह प्राणियों की तरह, उसने अपनी आध्यात्मिक दृष्टि पूरी तरह से ईश्वर की ओर केंद्रित कर ली। इसके लिए, संत को ईश्वर द्वारा महान अनुग्रह का पात्र माना गया: उन्हें चमत्कार करने का वरदान मिला, ताकि वे प्राचीन पवित्र भविष्यवक्ताओं के समान हो गए। इस प्रकार उनकी तुलना मूसा से की गई: जैसे मूसा ने एक बार, ईश्वर द्वारा बताई गई लकड़ी के माध्यम से, मरुभूमि में कड़वे पानी को मीठे पानी में बदल दिया था, ताकि वह इस्राएल की प्यास बुझा सकें (निर्गमन 17:6), उसी प्रकार आदरणीय वसिसारियन ने भी प्रार्थना और क्रॉस के चिह्न द्वारा समुद्र के पानी की कड़वाहट को अपने शिष्य की प्यास बुझाने के लिए मीठा कर दिया, जो प्यास से बेहोश हो रहा था; अर्थात्, जब संत अपने शिष्य के साथ सुनसान समुद्र तट पर चल रहे थे, तो शिष्य तीव्र गर्मी से थक गया और, बहुत प्यास लगने पर, उसने संत से कहा:

'पिताजी, मुझे बहुत प्यास लगी है।'

आदरणीय संत ने प्रार्थना करके और समुद्र पर क्रॉस का चिह्न बनाकर कहा:

'प्रभु के नाम पर, कुछ पानी निकालो और पियो।'

शिष्य ने अपने साथ रखे एक छोटे पात्र में समुद्र का कुछ पानी भर लिया; पानी का स्वाद चखने पर, उसे वह बहुत ही स्वादिष्ट[4131] और ठंडा लगा, मानो वह किसी जीवित झरने से बहकर आया हो; तृप्त होकर और खुद को ताज़ा कर लेने के बाद, शिष्य ने यात्रा के लिए पात्र में और पानी भर लिया। यह देखकर, बड़े संत ने शिष्य से कहा:

'तुमने पात्र में पानी क्यों भर लिया?'

शिष्य ने उत्तर दिया:

'मुझे क्षमा करें, पिताजी! मैंने यात्रा के लिए पानी लिया है ताकि मुझे फिर से प्यास न लगे।'

वरिष्ठ ने कहा:

'ईश्वर, जो इस स्थान में उपस्थित हैं, वे सर्वत्र उपस्थित हैं; और जैसे यहाँ, वैसे ही अन्यत्र भी, वे प्यासे को स्वादिष्ट जल दे सकते हैं।'

उस शिष्य का नाम दुला था।

आदरणीय वसिसारियन की तुलना यहोशू से की गई थी: जैसे यहोशू ने आमोरियों को हराते समय[4132] , सूर्य के मार्ग को रोका था (यहोशू 10:12–13), वैसे ही इस संत ने भी किया; अर्थात्, जब वह अपने शिष्य के साथ एक वृद्ध से मिलने जा रहा था, तो सूर्य पश्चिम में अस्त हो रहा था, फिर भी यात्रा अभी लंबी थी; तब उस वृद्ध ने परमेश्वर की ओर मुड़कर इस प्रकार प्रार्थना की:

'हे प्रभु, मैं तुझ से विनती करता हूँ, जब तक मैं अपने सेवक के पास न पहुँच लूँ, तब तक सूर्य को स्थिर रहने की आज्ञा दे।'

और ऐसा हुआ: जब तक वह आदरणीय पुरोहित उस वृद्ध के पास नहीं पहुँचे, तब तक सूर्य अस्त नहीं हुआ।

संत वसिलीयोन परमेश्वर के भविष्यवक्ता एलिया की तरह थे। जैसे कि, सूखे के दौरान, एलिया ने स्वर्ग से पृथ्वी पर प्रचुर वर्षा कराई (3 राजा 18:1–46), वैसे ही उस पूजनीय पिता ने यह चमत्कार एक बार नहीं, दो बार नहीं, बल्कि कई बार किया।

और एलीशा की तरह भी: जैसे उसने एलिया की ओढ़नी से यॉर्डन नदी के पानी को चीर दिया था (2 राजा 2:14–15), उसी प्रकार इसने भी अपनी प्रार्थना के द्वारा पानी को सूखे रास्ते में बदल दिया और पानी पर चला: उसने महान नदी नील को जैसे सूखी जमीन पर पार किया, और जहाँ भी उसके रास्ते में नदियाँ थीं, वह उन्हें जैसे सूखी जमीन पर पार कर गया।

एक बार, जब रेवरेंड स्केटे में ठहरे थे, तो एक दानव-ग्रस्त व्यक्ति को चर्च में लाया गया; उसके लिए चर्च में प्रार्थनाएँ की गईं, कि वह अशुद्ध आत्मा से मुक्त हो जाए; लेकिन दानव उसे नहीं छोड़ रहा था, क्योंकि वह अत्यंत उग्र था। और पुरोहितों ने एक-दूसरे से कहा:

[4131] जैसा कि सर्ववदित है, समुद्र का पानी आमतौर पर खारा होता है।

[4132] अमोरी कनान की भूमि में रहने वाली मूर्तिपूजक जनजातियों में से एक थे। हिब्रू से अनुवादित 'अमोरी' नाम का अर्थ है 'उच्च स्थानों के निवासी'; इन्हें पेरिज़ी – 'निम्न भूमि के निवासी' से विपरीत बताया गया है। मिस्र से यहूदियों के प्रस्थान से ठीक पहले, अमोरीयों ने जॉर्डन के पूर्वी क्षेत्र पर कब्जा कर लिया, जो बहुत उपजाऊ था। यहोशू ने अमोरीयों से लड़ा और पाँच अमोरी राजाओं को हराया (यहोशू 10:5–11)।

'हम इस भूतग्रस्त आदमी का क्या करें?'

और कुछ ने कहा:

'फादर वसिारीयोन के सवि कोई भी इस दानव को नहीं भगा सकता, लेकनि अगर हम उनसे ऐसा करने को कहेंगे, तो वे चर्च नहीं आएँगे; इसलिए, हम यह करें: कल सुबह जब वह सबसे पहले चर्च आएगा, तो हम उससे पहले आकर उस दानवग्रस्त व्यक्ति को उसकी जगह पर बठिा देंगे; फरि हम बुजुर्ग से कहेंगे: "सोए हुए को जगाओ।"'

पुरोहतिों ने ठीक वैसा ही कयिा।

जब पादरी चर्च में प्रवेश कए, तो उन्होंने देखा कि एक आदमी उनकी जगह पर बैठा है। उसे भगाना नहीं चाहकर, वे उनके बगल में खड़े हो गए। जैसे ही उन्होंने चर्च की सेवा पढ़ना शुरू कयिा, पुरोहतिों ने बुजुर्ग से कहा:

'फादर, सोए हुए को जगाओ।'

वस्सिारयिन, उस व्यक्ति के पास आकर, उसे एक धक्का देकर कहा:

'उठो और इस जगह को छोड़ दो।'

और तुरंत ही, संत के शब्दों से भगाया गया दानव उस आदमी से नकिल गया; वह उठ खड़ा हुआ और उसे उसके वश से मुक्त करने के लिए ईश्वर का धन्यवाद करने लगा; उस समय से, वह आदमी पूरी तरह से ठीक हो गया।

इस प्रकार, पुरोहतिों ने संत को राक्षस भगाने का चमत्कार करने के लिए प्रेरति कयिा, क्योंकि ये पूजनीय पति खुले तौर पर चमत्कार नहीं करना चाहते थे, कहीं ऐसा न हो कि लोगों द्वारा उनकी महमिा की जाए; वनिम्र होने और खुद को एक पापी मानने के कारण, वे मानवीय प्रशंसा से दूर रहते थे।

ऐसा हुआ कि स्केिट में एक भाई एक नश्चिति अपराध में पड़ गया, जसि पर पुरोहति ने उसे भाइयों के साथ संगति के अयोग्य समझकर चर्च छोड़ने का आदेश दयिा; पूजनीय वस्सिारयिन उठे और पापी के साथ बाहर गए, यह कहते हुए:

'मैं भी एक पापी हूँ।'

संत वसिारीयोन की नम्रता ऐसी थी।

उनके शष्यिों का कहना है कि चालीस वर्षों तक वे आराम करने के लिए पलंग पर नहीं लेटे; वे केवल थोड़ी देर के लिए ही सोते थे, और तब भी वे खड़े होकर या बैठकर ही सो जाते थे। परम पूज्य अपने शष्यिों को अक्सर जागृत रहने और हर तरह से शत्रु के प्रलोभनों से सावधान रहने के लिए प्रोत्साहति करते थे। वे कहते थे:

– एक भकि्षु को, यों कहए, एक आँख के समान होना चाहए, जैसे कि केरूबी और सेराफमि; और यदि कोई शांति से रहता है, प्रलोभन से मुक्त है, तो ऐसे व्यक्ति को और भी अधकि सतर्क रहना चाहए और परमेश्वर के सामने स्वयं को नम्र करना चाहए, कहीं ऐसा न हो कि अहंकारी होकर वे कसिी बड़े पाप में पड़ जाएँ; क्योंकि अहंकार के कारण, कई लोग शैतान के साथ संघर्ष में पड़ गए हैं ; कभी-कभी, हमारी कमजोरी के कारण, ईश्वर हमें परीक्षाएँ नहीं भेजते, कहीं हम पूरी तरह से नष्ट न हो जाएँ।

इस पवत्रि पति का जीवन आकाश के पक्षी के समान था, क्योंकि उसने कभी भी सांसारकि कुछ भी अर्जति नहीं कयिा, और न ही उसका अपना कोई कोठरी या कोई आश्रय था; वह रेगस्तिान में घूमता रहा, एक स्थान से दूसरे स्थान को जाता रहा: वह एक खोए हुए यात्री की तरह पहाड़ों और जंगलों से होकर गुज़रता था; वे अपने शारीरकि सुख-सुवधिाओं की बलि्कुल भी परवाह नहीं करते थे; वे न तो भोजन की परवाह करते थे और न ही कपड़ों की; उनके शरीर पर केवल एक बहुत ही मामूली सा वस्त्र था, जो मुश्कलि से उनका नंगापन ढकता था। यद्यपि दनि में उन्हें सूरज की गर्मी से और रात में ठंड से झुलसना पड़ता था, फरि भी वे शायद ही कभी कसिी छत के नीचे आश्रय लेते थे; वह एक पक्षी की तरह पहाड़ों में भटकता था, एकांत की तलाश में, अपने मन को एकमात्र ईश्वर की ओर उठाते हुए और अपने वचिारों को केवल उसी पर केंद्रति करते हुए। उसकी आँखों से लगातार आँसू बहते थे, और उसके हृदय की गहराई से बार-बार आहें सुनाई देती थीं, क्योंकि उसने अपने जीवन के सभी दनि आँसुओं में बतिाए, हमेशा रोता और वलिाप करता रहा। दीर्घायु प्राप्त कर, उन्होंने शाश्वत जीवन में प्रवेश कयिा[4133] और हमारे प्रभु मसीह यीशु में सभी संतों के साथ वलिाप से शाश्वत आनंद में चले गए, जनिका महमिा युगानुयुग होती रहे। आमीन।

[4133] आदरणीय वस्सिारयिन की मृत्यु चौथी शताब्दी के अंत या पाँचवीं शताब्दी की शुरुआत में हुई।

कॉन्टाकयिन, स्वर 2:

हे पूजनीय, स्वर्गीय शक्तियों का अनुकरण करते हुए, आपने एक पक्षी की तरह अपना जीवन जयिा, इस संसार की क्षणभंगुर चीजों को त्यागकर और राजा मसीह के स्वर्गीय आशीर्वादों की अनवरत इच्छा से प्रेरति होकर, आप उस तक पहुँचे, वसि्सारयिोन: हम सभी के लिए अनवरत प्रार्थना करें।

हमारे पूजनीय पति हलिारयिन नव के स्मरणोत्सव

6 जून को स्मरणोत्सव

धन्य हलिारयिन, कैपडोसयिा के पीटर ([4134]) के पुत्र थे, जो शाही मेज पर सेवा करते थे, और अपनी माता थयिोडोरा के — दोनों धर्मपरायण और ईश्वर-भयभीत लोग थे; अपनी युवावस्था में उन्हें पवत्रि धर्मग्रंथों की अच्छी शकि्षा मलिी थी। जब वे 20 वर्ष के हुए, तो सुसमाचार के वचनों का पालन करते हुए (मत्ती 10:37; लूका 14:26), ने अपने पति और माता, अपना घर और अपनी संपत्ति छोड़ दी, और बज़िेन्टयिम के पास हेसकियिस के मठ में एक भकि्षु बन गए। फरि वह डल्माटयिन मठ[4135] गया, जहाँ उसने महा दैवीय प्रतज्ञि ली और उस समय वहाँ रह रहे संत ग्रेगरी द डेकापोलटि के शष्यि बन गए; संत हलिारयिन ने आज्ञाकारति, मौन और महान वनिम्रता में स्वयं को समर्पति कर दयिा। उसे मठ के बगीचे में काम करने के लिए नयिुक्त कयिा गया और उसने इस कर्तव्य में दस साल तक परशि्रम कयिा; अपने नाम वाले संत, परम पूजनीय हलिारयिन महान के पुण्य और दैवीय जीवन का वृत्तांत पढ़कर, उन्होंने उपवास, पूरी रात प्रार्थना और अन्य सभी मठवासी तपस्या के अभ्यास के माध्यम से इस ईश्वर के संत की यथासंभव नकल करने का प्रयास कयिा: इसी कारण से उन्हें नया हलिारयिन कहा गया। अपनी आत्मा को सूर्य की भाँति शुद्ध और प्रबुद्ध करने के बाद, उन्हें परमेश्वर से अशुद्ध आत्माओं पर अधकिार प्राप्त हुआ, ताकि वे उन्हें भगा सकें।

संत ग्रेगरी द डेकापोलटि के वहाँ से अन्य स्थानों पर चले जाने के बाद, उस मठ के मठाधीश ने उनकी इच्छा के वरिुद्ध उन्हें पुरोहति नयिुक्त कर दयिा। कुछ वर्षों बाद, जब मठाधीश का नधिन हो गया, तो आदरणीय हलिारयिन को जब पता चला कि भाइयों ने उन्हें मठाधीश बनाना चाहते हैं, तो उन्होंने वहाँ से चले जाने का नश्चिय कयिा; इस उद्देश्य के लिए, वह कसिी को भी बताए बनिा, रात में गुप्त रूप से मठ से नकिल गया और बाइज़ेन्टयिम के लिए रवाना हो गया, इस उम्मीद में कि उसे वहाँ अपना गुरु, संत ग्रेगरी, मलि जाएगा; लेकनि वे रोम के लिए रवाना हो चुके थे और वहाँ से लौटने पर, वे माउंट ओलंपस[4136] पर बस गए थे। हालाँकि, हलिारयिन बाइज़ेन्टयिम में एक मठ में पहुँचे; डल्माटयिाई मठ के भकि्षुओं ने, यह जानकर, परम पावन पैट्रआिर्क नकिफिोरस[4137] से हलिारयिन को उनकी इच्छा के वरिुद्ध भी, अपना मठाधीश नयिुक्त करने का आग्रह करना शुरू कर दयिा। पैट्रआिर्क ने इसकी सूचना सम्राट को दी: सम्राट ने हलिारयिन को अपने समक्ष बुलाया और सम्राट तथा पैट्रआिर्क दोनों ने उन पर डल्माटयिाई मठ की मठाधीश पदवी स्वीकार करने का आग्रह कयिा। ज़ार और पैट्रआिर्क की इच्छा के वरिुद्ध जाने की हम्मित न करते हुए, हलिारयिन ने मठाधीश का पद स्वीकार कर लयिा और आठ वर्षों तक अपने सुपुर्द कएि गए झुंड का उत्साहपूर्वक पालन कयिा। इसके बाद, ग्रीक साम्राज्य का राजदंड जानवर-नुमा अत्याचारी लयिो द आर्मनियिन[4138] के हाथों में आ गया, जसिने प्रतमिा-भंजक वधिर्म[4139] से मसीह के चर्च को परेशान करना शुरू कर दयिा, और कई लोगों को अपने वधिर्मी सद्धिांतों को अपनाने के

[4134] कैपाडोसयिा एशयिा माइनर का एक क्षेत्र है।

[4135] डल्माटयिन मठ की स्थापना स्वयं संत इसाक ने (30 मई के जीवन प्रवष्टि देखें) मठाधीश डल्माटस के नाम पर की थी – जो इसाक के उत्तराधकिारी थे – जन्हिोंने 55 वर्षों तक मठ का प्रबंधन कयिा।

[4136] ओलंपस एशयिा माइनर में मसियिा क्षेत्र का एक पहाड़ है, जो फ्राइजयिा और बथिनियिा की सीमा पर स्थति है। यहाँ, अन्य चीजों के अलावा, 'एट सम्बिोले' मठ स्थति था, जो अपने नविासयिों के कठोर तपस्वी जीवन के लिए प्रसद्धि था।

[4137] नकिफिोरस प्रथम ने 806 से 815 तक पैट्रआिर्क के रूप में कार्य कयिा।

[4138] लयिो पंचम आर्मेनयिाई ने 813 से 820 तक शासन कयिा।

[4139] नकिोमेडयिा के बशिप कॉन्स्टेंटनि, जो आठवीं शताब्दी में रहते थे, को प्रतमिा-वरिोधी वधिर्म का संस्थापक माना जाता है। प्रतमिाओं की पूजा को मूर्तपिूजा समझने की अवचिारपूर्ण भूल करते हुए, प्रतमिा-वरिोधयिों ने क्रूर और नर्दियी उत्पीड़न के माध्यम से ऑर्थोडॉक्स चर्च से प्रतमिाओं की पूजा को समाप्त करने का प्रयास कयिा। इस वधिर्म के सबसे कट्टर रक्षक सम्राट थे: लयिो द इसौरीयन (जनिका शासन 717 से

लिए मजबूर किया; जिन्होंने उसकी आज्ञा नहीं मानी, उन्हें या तो यातना दी गई या दूर-दराज के देशों में निर्वासित कर दिया गया। उसके आदेश पर, पूजनीय हिलारियन को उनके मठ से सम्राट के सामने लाया गया, जिसने उन्हें विधर्मी सिद्धांत को स्वीकार करने के लिए मजबूर किया। मसीह के इस वीर सैनिक ने न केवल विधर्मी सम्राट की आज्ञा मानने से इनकार कर दिया, बल्कि साहसपूर्वक उसकी निंदा भी की, उसे नास्तिक और एक नया अपराधी कहकर, जिससे राजा का प्रचंड क्रोध उस पर भड़क उठा। दुष्ट राजा ने उस धन्य व्यक्ति पर कई घाव और विभिन्न यातनाएँ दीं, और फिर उसे कैद कर दिया। कुछ समय बाद, उसे एक बार फिर बुलाने और उसे बहुत यातना देने के बाद भी कुछ हासिल न होने पर, राजा ने उसे अपने समान विचारधारा वाले सहयोगी, पैट्रिआर्क थियोडोटास ([4140]) के हवाले कर दिया — जिन्हें कैसिटेरस उपनाम से जाना जाता था — जिन्होंने धर्मपरायणता के आधार पर परम पवित्र निकिफोरोस के निर्वासन के बाद पैट्रिआर्क का पद संभाला था। इस झूठे पैट्रिआर्क थियोडोटस ने उस पूजनीय संत के साथ वही किया जो राजा ने किया था: उसने संत को एक अंधेरी कोठरी में बंद कर दिया और कई दिनों तक भूख और प्यास से उसे पीड़ित किया, यह आदेश देते हुए कि उसे न तो रोटी दी जाए और न ही पानी। हालाँकि, उस मठ के भिक्षु जहाँ पूजनीय संत महाधर्माध्यक्ष के रूप में सेवा करते थे, राजा के पास आए और उससे विनती की:

'हे राजा, हमारे पिता को हमें लौटा दो; इसके बदले में, हम आपकी आज्ञा का पालन करने का वादा करते हैं।'

राजा इस वादे से प्रसन्न हुआ और उसने उनका मठाधीश उन्हें वापस कर दिया।

संन्यासी, मठ में लौटने के बाद, वहाँ एक वर्ष तक रहे; अपनी यातनाओं और भूख से थोड़ा सा विश्राम करने का समय भी मुश्किल से मिला था, कि संत ने एक बार फिर खुद को कष्टों में डाल लिया, क्योंकि राजा, जो भिक्षुओं के वादे के पूरे होने का इंतजार कर रहा था, को एहसास हुआ कि उसके साथ धोखा हुआ है[4141] , जिसके बाद उसने मठ में सैनिक भेजकर भिक्षुओं को दंडित किया, और पूजनीय पिता को पकड़कर एक बार फिर से कालकोठरी में बंद कर दिया; फिर उन्होंने उसे फनेया के मठ में भेज दिया[4142] और वहाँ आदेश दिया कि संत को सबसे तंग कालकोठरी में बंद कर दिया जाए। इस कालकोठरी में संत छह महीने तक कष्ट भोगते रहे, और उस मठ के क्रूर मठाधीश के हाथों हर तरह की कठिनाइयों और उत्पीड़नों को सहते रहे। फिर, राजा की आज्ञा से, उन्हें कॉन्स्टेंटिनोपल वापस लाया गया: यहाँ, एक बार फिर, उन्हें विभिन्न चापलूसी भरी विनतियों से प्रतिमा-विरोधी विधर्म को स्वीकार करने के लिए मनाया गया। लेकिन चूँकि मसीह के लिए यह पीड़ित विधर्मीयों की नहीं सुन रहा था, सम्राट ने उसे एक अन्य मठ में भेज दिया, जिसे कि[4143] के नाम से जाना जाता था; यहाँ वह दो साल और छह महीने तक एक तंग कालकोठरी में कष्ट भोगता रहा और विभिन्न यातनाएँ सहता रहा। वहाँ से, संत को फिर से सम्राट के सामने लाया गया और बुरी तरह पीटे जाने के बाद, प्रोटलिस्की[4144] शहर में निर्वासित कर दिया गया।

उस दुष्ट राजा ने, कई लोगों का संहार करने के बाद, स्वयं एक भयानक अंत देखा: उसे चर्च में ही अपने ही सैनिकों ने तलवारों से काट डाला, ठीक उसी जगह पर जहाँ उसने पहले मसीह की पवित्र प्रतिमा का अपमान करके उसे नीचे फेंका था; इस प्रकार उस अधर्मी व्यक्ति ने अपनी ही शापित आत्मा का विनाश कर लिया।

उनके उत्तराधिकारी, माइकल ट्रैवल[4145] ने आदेश दिया कि सभी विश्वासियों को उनके बंधन और कारावास से मुक्त कर दिया जाए। परम पूजनीय हिलारियन को भी अन्य लोगों के साथ जेल से रिहा कर दिया गया, लेकिन वह अपने मठ में वापस नहीं गया, क्योंकि मूर्तिभंजन की विधर्म अभी समाप्त नहीं हुई थी, और बिशप के पद विधर्मी झूठे शिक्षकों और झूठे चरवाहों के कब्जे में थे; इसके बजाय, वह एक विश्वासी और धार्मिक महिला के साथ रहा, जिसने अपनी संपत्ति पर उसके लिए एक एकांत स्थान प्रदान किया, उसके लिए एक बगीचे के साथ एक कोठरी का प्रबंध किया, और उसे उसकी ज़रूरत की हर चीज़ उपलब्ध कराई।

---

741 तक रहा) और कॉन्स्टेंटिन कॉप्रोन्यमस (741 से 775 तक)। इस विधर्म की निंदा सातवीं सार्वभौमिक परिषद में की गई थी, जो 787 में निकिया में आयोजित की गई थी।

[4140] थियोडोसस प्रथम कैसिटेर ने 815 से 821 तक पैट्रिआर्क के रूप में कार्य किया।

[4141] संन्यासियों ने स्पष्ट रूप से सम्राट के सभी फरमानों का पालन करने की कसम खाई थी; हालाँकि, वे बेशक, ऑर्थोडॉक्स धर्म के विपरीत किसी भी फरमान को लागू नहीं कर सकते थे।

[4142] फेनीव का मठ बिथिनियम और पोंटस के बीच स्थित था।

[4143] इस मठ का स्थान अज्ञात है।

[4144] प्रोटलि का शहर, या यूँ कहें कि प्रोटलि का शिविर; इसका स्थान अज्ञात है।

[4145] माइकल द्वितीय यातनादाता (लकवाग्रस्त) ने 820 से 829 तक शासन किया

उस समय, स्टुडियो के पूजनीय थियोडोर बंदीवास से लौटे और प्रभु में नधिन कर गए; उन्होंने भी ऑर्थोडॉक्सी के लिए वधिर्मियों के हाथों बहुत कष्ट सहे थे; पूजनीय हलिारयिन ने उनके पवत्रि आत्मा को स्वर्ग तक ले जाते हुए स्वर्गदूतों को देखा, जैसा कि थियोडोर के जीवनचरति में वर्णति है। जसि दनि स्टुडियो के संत थियोडोर का नधिन हुआ, उस दनि धन्य हलिारयिन अपने बगीचे में काम करते और दाऊद के भजन गाते हुए अचानक हवा में कुछ अद्भुत आवाजें सुनीं और एक अद्भुत सुगंध का अनुभव कयिा; आश्चर्यचकति होकर, वह यह देखने के लिए रुका कि यह कहाँ से आ रहा है; ऊपर देखने पर, उसने सफेद वस्त्रों में लपिटे, दीप्तमिान चेहरों वाले स्वर्गदूतों की एक भीड़ को देखा, जो भजन गाते हुए कसिी से मलिने जा रहे थे। यह सब देखकर, परम पुण्यशाली हलिारयिन, अत्यधकि भय से भरकर, जमीन पर गरि पड़े और उन्होंने एक आवाज सुनी जो कह रही थी:

'यह स्टूडियो मठ के मठाधीश थियोडोर की आत्मा है, जसिने पवत्रि प्रतमिाओं के लिए रक्तपात तक कष्ट सहे और अपने दुखों में अत्यंत साहसी था; अब वह मर गया है और स्वर्ग में भव्य रूप से आरोहण कर रहा है, जहाँ स्वर्गदूतों ने उसका स्वागत कयिा है।'

इतनी अद्भुत दृष्टि प्राप्त करने के बाद, पूजनीय हलिारयिन महान सांत्वना और आध्यात्मकि आनंद से भर गए; कई दनिों तक वे अपने आत्मा में आनंदति रहे, और उनका चेहरा एक स्वर्गदूत की तरह आनंद से चमक उठा।

आदरणीय हलिारयिन उस महलिा के साथ सात वर्षों से अधकि समय तक रहे। जब माइकल ट्रावला के बाद, उनके पुत्र थियोफलिस[4146] सहिासन पर बैठे, तो उन्होंने सभी कन्फेशर्स को इकट्ठा कयिा और फरि से, पछिले दुष्ट राजाओं के उदाहरण का पालन करते हुए, उन्हें मूर्तभिंजकता के लिए मजबूर करना शुरू कर दयिा; जो लोग उनकी आज्ञा का पालन नहीं करते थे, उन्हें क्रूरता से यातना दी गई। इस समय, पूजनीय हलिारयिन को भी गरिफ्तार कर सम्राट के सामने लाया गया; जब उन्हें प्रतमिाओं की पूजा त्यागने के लिए मजबूर कयिा गया, तो उन्होंने शाही आदेश के आगे समर्पण नहीं कयिा और एक बार फरि उन्हें कानून का दुष्ट उल्लंघनकर्ता बताया जो वशि्वास के सच्चे सद्धिांतों पर पाद चढ़ गया था; इसके लिए, संत को पीठ पर एक सौ सत्तर प्रहार कए गए और अफूसयिा द्वीप[4147] पर नर्विासति कर दयिा गया। संन्यासी के लिए यह काफी राहत की बात थी कि उन्हें यहाँ कसिी कालकोठरी में या बेड़यिों में नहीं रखा गया था, बल्कि एक कोठरी में रखा गया था, भले ही वह बहुत तंग थी। वे इस कोठरी में थियोफलिस की मृत्यु तक रहे। जब यह अधर्मी राजा मर गया, तो रानी थियोडोरा ने सभी कन्फेशर्स को राजधानी में इकट्ठा कयिा, ऑर्थोडॉक्स धर्म को बहाल कयिा और चर्चों में पवत्रि प्रतमिाएँ लाने का आदेश दयिा; तब ही पूजनीय हलिारयिन को रहिा कयिा गया। उन्होंने एक बार फरि से अपने डलमेशयिन मठ में मठाधीश का पद संभाला और अपने चमत्कारों के लिए प्रसद्धि हो गए। वहाँ तीन वर्ष तक रहने और अपने शष्यिों को उनकी आत्माओं के मोक्ष के अनुकूल मार्गदर्शन देने के बाद, वे प्रभु के पास चले गए[4148] । उनकी सम्मानति और पवत्रि आत्मा, ठीक उसी प्रकार जैसे उन्होंने थियोडोरा की आत्मा को देखा था, स्वर्गदूतों द्वारा स्वर्ग में उठा ली गई, और अब यह पति, पुत्र और पवत्रि आत्मा के महमिा के सहिासन के सामने खड़ी है, जो त्रमिूर्ति में एक परमेश्वर हैं, जन्हिें सदा के लिए महमिा दी जाती है। आमीन।

कॉन्टाकयिन, स्वर 2:

हे नवीन हलिारऑन, आपने धर्मपरायणता के लिए अनेक परीक्षाओं और दुखों को सहते हुए, जीवनदायनिी बाड़ें लगाकर अपने झुंड के चरागाहों की रक्षा की, एक चरवाहे के समान झुंड को अक्षुण्ण रखा, और अपने कर्मों की महानता में प्रकट हुए। इस प्रकार स्वर्गीय सयिोन के परमानंदमय जीवन में प्रवेश करके, हे पूजनीय, हमारे लिए प्रार्थना करें।

पवत्रि पूजनीय शहीदों आर्केलाइया, थेक्ला और सुसान्ना का कष्टकथा

6 जून को स्मरणोत्सव

[4146] थेओफलिस ने 829 से 842 तक शासन कयिा

[4147] अफूसयिा या ओफयिस द्वीप, कॉन्स्टेंटनिोपल के पास पासा लमिाणी की खाड़ी में स्थति था।

[4148] आदरणीय हलिारयिन का 845 में नधिन हो गया।

कुँवारीपन, जो संसार को जीतता है और सांसारकि वासनाओं को वश में करता है, सर्व-जननी हव्वा को अज्ञात था, क्योंकि परमेश्वर ने उससे कहा: *'तू पीड़ा में बच्चों को जन्म देगी; और तेरी इच्छा अपने पति के लिए होगी'* (उत्पत्ति 3:16)। हालाँकि कुँवारीपन इससे मुक्त है; यह वर्षों के बीतने के साथ फीका नहीं पड़ता, बल्कि हमेशा खिलता है और कुँवारीपन में जीवन यापन करने वालों के जीवन को सुशोभित करता है; कुँवारी मसीह की दुल्हन बन जाती है और अपने वधू-वर के स्वर्गीय महल में प्रवेश करती है।

इस सम्मानजनक और दैवीय उपहार - पवित्र कुँवारीपन - से धन्य आर्केलाइया सुसज्जित थीं, जिन्होंने स्वयं को मसीह के लिए वधू बनाया और स्वयं को संसार की विजेता साबित किया। वह रोम शहर के पास एक निश्चित स्थान पर, एक छोटे और गुमनाम मठ में रहती थीं, जैसा कि मसीहियों के लिए उन कठिन, मूर्तिपूजक समयों में मौजूद हो सकता था।

जब दुष्ट सम्राट डायोक्लेटियन[4149] ने रोम में ईसाइयों पर एक बड़ा उत्पीड़न शुरू किया, तो पवित्र कन्या आर्केलाया, अपने दो बहनों और मसीह में साथियों, थेकला और सुसन्ना के साथ, अपने उत्पीड़कों के उत्पीड़न से बचने के लिए रोम छोड़कर कैंपेनिया[4150] भाग गईं; वे सभी पुरुषों के कपड़े पहनने लगीं ताकि कोई भी उन्हें कुंवारी न समझ सके; वहाँ, नोला नामक एक शहर से बहुत दूर नहीं[4151] , पवित्र कुँवारियाँ एक एकांत और सुनसान जगह पर बस गईं, उन्होंने अपने दिन-रात परमेश्वर से उत्कट प्रार्थना में बिताए, स्वयं को विभिन्न धर्मार्थ कार्यों और बीमारों के उपचार के लिए समर्पित कर दिया, क्योंकि अपने शुद्ध और पवित्र जीवन के माध्यम से उन्हें चमत्कारी उपचार की कृपा प्राप्त हुई थी। उनके चेहरे विनम्र, सौम्य और फिर भी तेजस्वी थे, क्योंकि वे हमेशा अपने हृदय में प्रभु यीशु मसीह में आनंदित रहती थीं; पवित्रता और पवित्रता उनकी आँखों में झलकती थी। वे रेशमी कपड़े के साधारण और मोटे वस्त्र पहनते थे, और उनका रूप संन्यासियों और तपस्वियों जैसा था। उनके सिर के बाल पुरुषों की तरह छोटे कटे हुए थे, इसलिए कई लोग उन्हें महिलाएं समझने के बजाय पुरुष समझते थे। धीरे-धीरे, आसपास के क्षेत्र के लोग उनके चारों ओर इकट्ठा होने लगे, कुछ उपचार की तलाश में, तो कुछ आध्यात्मिक मार्गदर्शन की तलाश में; क्योंकि, उपचार के वरदान के अलावा, उनमें दैवीय प्रेरणा से सिखाने की क्षमता भी थी; उन्होंने न केवल शरीरों को बल्कि मानव आत्माओं को भी चंगा किया, और कई लोगों को मूर्तिपूजक दुष्टता से हटाकर मसीह के धर्म में परिवर्तित किया; उनकी ख्याति पूरे देश में फैल गई।

इन पवित्र कुंवारी कन्याओं की खबर कैंपेनिया के कमांडर, लियोन्टियस नामक व्यक्ति को मिली, क्योंकि ईसाइयों पर नजर रखने के लिए कई जगहों पर सैनिक तैनात थे; इन्हीं पवित्र कुंवारी कन्याओं के बारे में उन्होंने कमांडर को बताया। उसने आदेश दिया कि उन्हें पकड़कर सालर्नो शहर में उसके सामने लाया जाए[4152] , जहाँ उस समय ईसाइयों पर मुकदमा चलाया जा रहा था और उन्हें यातना दी जा रही थी। पवित्र कन्याओं को पूछताछ के लिए सलेर्नो ले जाया गया। वे समझ गईं कि प्रभु यीशु मसीह - उनके अमर और अविनाशी वधूवर - उन्हें शहादत के मुकुट के लिए बुला रहे थे, ताकि वे उन्हें अपने स्वर्गीय महल में स्वीकार कर सकें, जो न केवल कुँवारीपन से बल्कि उनके दुख के रक्त से, मानो शाही बैंगनी रंग से, सुसज्जित था। ईश्वर में महान साहस और विश्वास से परिपूर्ण, वे बिना किसी डर के यातना देने वाले के सामने उपस्थित हुईं और एक स्पष्ट आवाज़ में, उन्होंने उसे अपने बारे में पूरा सच बताया - कि वे कौन थीं और कहाँ से आई थीं; उन्होंने न तो अपने जीवन के मार्ग को छिपाया और न ही अपने ईसाई विश्वास को, और न ही इस तथ्य को छिपाया कि वे—कन्याएँ होने के नाते—मसीह से सगाईशुदा थीं और उन्होंने अपनी मृत्यु तक अपनी पवित्रता बनाए रखने का उनसे वादा किया था। गवर्नर लियोन्टियस ने उन्हें देखा और यह देखकर कि धन्य कन्या आर्केलाइया दूसरों से बड़ी और वाक्पटु थी, तथा यह भी ध्यान देते हुए कि उसका मुख विशेष रूप से धार्मिक था, उसने उसकी ओर मुड़कर कहा:

'सुनो, आर्केलाइया! किस अधिकार से तुम हर तरह के लोगों को—चाहे अच्छे हों या बुरे—अपने पास इकट्ठा करती हो और उन्हें नासरत के यीशु की उपासना करना सिखाती हो, जो स्वयं को बचा नहीं सके जब उन्हें यातना दी गई, और जो, और भी अधिक, किसी और की मदद नहीं कर सकते?' तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई किसी तरह के जादू-टोने में लिप्त होने और

[4149] डायोक्लेटियन ने 284 से 305 तक शासन किया

[4150] कैम्पेनिया प्राचीन इटली में स्थित था और इसकी सीमा पश्चिम में लैटियम, उत्तर में सैम्नियम, पूर्व में लुकेनिया और दक्षिण में टायर्रेनीयन सागर से मिलती थी। इसी इतालवी प्रांत में सबसे पहले (8वीं शताब्दी से) घंटियाँ ढलीं, इसीलिए चर्च के विधानों में उन्हें 'कैम्पानास' कहा जाता है (इससे पहले, हथौड़ों या लोहे की पट्टियों का उपयोग होता था)।

[4151] नोला शहर कैपुआ के दक्षिण में स्थित था; यह आज भी मौजूद है (अब इतालवी प्रांत कैसेरा में स्थित है) और इसकी आबादी लगभग 15,000 है।

[4152] सलेर्नो शहर टायर्रेनीयन सागर पर स्थित था; यह आज भी मौजूद है।

लोगों को बहकाने की; तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई, पुरुषों के वस्त्र धारण करके खुद को पुरुष के रूप में प्रस्तुत करने की, जबकि वास्तव में तुम एक दुष्ट और हानिकारक जादूगरनी हो? शायद तुमने इन दो कन्याओं को भी जादू सिखाया है; अगर मैं तुम्हें अभी नष्ट नहीं करती, तो तुम अपनी झूठी शिक्षाओं से सभी अनुभवहीन महिलाओं और पुरुषों को बहका दोगी।

इस पर पवित्र कन्या ने उत्तर दिया:

मैं मसीह की शक्ति से शैतान की शक्ति और अधिकार को रौंदती हूँ; और मैंने लोगों को वह सिखाया है जो अच्छा है – अर्थात्, कि वे एक सच्चे परमेश्वर को जान सकें, जिसने स्वर्ग, पृथ्वी, समुद्र और उनमें जो कुछ भी है, उसे बनाया है: और मेरे प्रभु यीशु मसीह, परमेश्वर के एकलौते पुत्र, के नाम पर पीड़ित सभी लोगों को मेरे द्वारा, उनके सेवक के माध्यम से, चंगाई प्रदान की जाती है; मैं पुरुष होने का दिखावा नहीं करती, क्योंकि मैंने अब स्वयं को एक कन्या और मसीह की दासी घोषित किया है; और मेरी ये दो बहनें प्रभु में अपने यौवन से ही मसीह के विश्वास में पाली गई हैं।

और राज्यपाल ने कहा:

'जो कोई भी राजा की आज्ञा की अवज्ञा करेगा, उसे क्रूर मृत्यु दी जाएगी।'

संत ने उत्तर दिया:

'हमारा एक राजा है – हमारे प्रभु यीशु मसीह, जिनके लिए हमने संसार और उसमें जो कुछ भी है, उसे तुच्छ जाना है; हम उनकी आज्ञा का पालन करते हैं और उसी से दया की प्रतीक्षा करते हैं जिसके पास स्वर्ग, पृथ्वी और अन्य सभी चीजें हैं।'

गवर्नर ने कहा:

'हमारे देवता सभी चीजों को धारण करते हैं और सभी पर शासन करते हैं; उनके कई नाम हैं: क्रोनस[4153] , ट्राइसमेगिस्टस[4154] , हर्मेस[4155] , एफ्रोडाइट[4156] , हेरा[4157] , एथेना[4158] , ज्यूस[4159] , जो सभी से ऊपर है। यह दिव्य शक्तियाँ ही पूरे ब्रह्मांड को धारण करती और संचालित करती हैं।'

युवती ने उत्तर दिया:

'तुम्हारे देव अंधे हैं, और अंधे ही उनकी पूजा करते हैं और उन पर विश्वास करते हैं।'

इगेमोन ने कहा:

'तुम्हारा ईश्वर एक है, और वह अपनी रक्षा करने में असमर्थ है, क्योंकि उसे सूली पर चढ़ाया गया, सिरका पिलाया गया, काँटों का मुकुट पहनाया गया, और भाले से भेदा गया।'

इस पर संत ने उत्तर दिया:

'हमारे ईश्वर ने यह सब हमारे उद्धार के लिए सहा, ताकि जो कोई भी उन पर विश्वास करता है वह नष्ट न हो बल्कि अनंत जीवन पाए; लेकिन आपके देवता न देखते हैं, न सुनते हैं, न बोलते हैं, और इसलिए न तो अपनी मदद कर सकते हैं और न ही दूसरों की।'

इन शब्दों के बाद, राज्यपाल, क्रोधित होकर, संत को भूखे शेरों के पास फेंकने का आदेश दिया, यह सोचकर कि वे उसे तुरंत ही चीर-फाड़ डालेंगे; लेकिन वे जानवर भेड़ों की तरह शांत हो गए और संत के पैरों तले लेट गए। उसने, अपनी ओर से, ईश्वर से प्रार्थना करते हुए इस प्रकार कहा:

'हे प्रभु परमेश्वर, पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा, जिन्होंने अब तक मेरे शरीर को हर अशुद्धि से शुद्ध रखा है! जैसे तूने अब जानवरों को वश में कर दिया है और मुझे उस राज्यपाल पर विजय पाने की शक्ति दी है, जो जानवरों से भी अधिक क्रूर है, वैसे ही हे तेरे सेवक, तू सदा मेरा अनवरत सहायक बन।'

[4153] क्रोनस – यूनानी पौराणिक कथाओं में, यूरेनस और गैया का सबसे छोटा बेटा, और टाइटन्स में से एक था। उसे फसलों और फसल कटाई का संरक्षक माना जाता था, इसीलिए उसे एक दरांती पकड़े हुए चित्रित किया जाता था।

[4154] ट्रिस्मेगिस्टस नाम जुपिटर या ज्यूस पर भी लगाया जाता था।

[4155] हेर्मेस – समृद्धि के देवता।

[4156] एफ्रोडाइट या वीनस – प्रेम और सुंदरता की देवी।

[4157] हेरा – विवाह और प्रसव की संरक्षक देवी।

[4158] एथेना या मिनर्वा – बुद्धि की देवी।

[4159] ज़ीउस या जुपिटर – प्राचीन यूनानी धर्म का सर्वोच्च देवता, जिसे अन्य देवताओं का पूर्वज और सभी अस्तित्व का स्रष्टा माना जाता है।

जब राज्यपाल ने देखा कि संत जानवरों से अप्रभावित रहीं, तो वह और भी अधिक क्रोधित हो गया और सैनिकों को आदेश दिया कि वे जानवरों को मार दें और पवित्र शहीद और उनकी सहेलियों को बाँधकर एक कालकोठरी में बंद कर दें। लेकिन कालकोठरी में, प्रभु का स्वर्गदूत पवित्र शहीदों के सामने प्रकट हुआ, जिसने उन्हें एक अकथनीय प्रकाश से प्रकाशित किया और कहा:

'हे मसीह की कन्याओं, डरो मत! तुम्हारी प्रार्थनाएँ परमेश्वर तक पहुँच गई हैं, और स्वर्ग में तुम्हारे लिए पहले से ही मुकुट तैयार कर दिए गए हैं।'

जब पहरेदारों ने कुंड में यह असाधारण प्रकाश देखा, तो वे भय और आतंक से भरकर कहने लगे:

'निश्चय ही, वह ईश्वर जिसे ये कन्याएँ स्वीकार करती हैं, सच्चा ईश्वर है।'

सुबह, राज्यपाल ने अपने सेवकों से कहा:

'उस जादूगरनी को मेरे सामने लाओ जिसने कल हर तरह की निन्दा करके मेरा और मेरे देवताओं का अपमान किया था।'

और तुरंत ही पवित्र शहीद आर्केलाया को अदालत के सामने लाया गया और उसने कहा:

'हे राज्यपाल, यह मैं नहीं, बल्कि आपके दुष्ट कर्म हैं जो आपको ईश्वर-निंदा और अपमान दिलाते हैं और आपके लिए एक ऐसी अग्नि तैयार करते हैं जिसे बुझाया नहीं जा सकता, जिसमें आप अपने देवताओं के साथ हमेशा के लिए पीड़ित होंगे; लेकिन यदि आप अनंत यातना से मुक्त होना चाहते हैं, तो मेरी बातों पर ध्यान दें जो आपकी आत्मा के कल्याण के लिए हैं और मेरी अच्छी सलाह स्वीकार करें: उस परमेश्वर पिता में विश्वास करो जिसने तुम्हें बनाया, , और उसके एकमात्र पुत्र, प्रभु यीशु मसीह में, और पवित्र आत्मा में जो पिता से निकलता है; यही एक परमेश्वर है, जो पृथ्वी और स्वर्ग में त्रित्व में महिमा प्राप्त है!

कमांडर ने इन शब्दों को उपहास और पागलपन समझकर, संत को डाँटते हुए कहा:

'यदि तुम मेरी आज्ञा मानोगी और मेरे देवताओं में विश्वास करोगी, तो तुम्हें धन और सम्मान का इनाम मिलेगा और तुम सबसे प्रतिष्ठित रोमन महिलाओं में अपना स्थान पाओगी; लेकिन यदि तुम मेरी आज्ञा नहीं मानोगी, तो मैं तुम्हें व्यभिचारियों द्वारा अपवित्र करवा दूँगा, फिर तुम्हें क्रूर यातनाओं से गुज़रवाऊँगा और अंत में, तुम्हें एक भयानक मृत्यु दूँगा; और मैं तुम्हारे शरीर को कुत्तों, जंगली जानवरों और पक्षियों के खाने के लिए छोड़ दूँगा।'

संत ने उत्तर दिया:

मेरे सहायक मेरे प्रभु यीशु मसीह हैं, जो मेरी आत्मा और मेरे शरीर दोनों के रक्षक हैं। वह मुझे उस अपवित्रता से बचाएंगे जिसकी तुम मेरे लिए तैयारी कर रहे हो, जैसे उन्होंने मुझसे पहले कई पीड़ित पवित्र कुंवारी कन्याओं को बचाया है; और मैं मृत्यु से भी नहीं डरती, क्योंकि मुझे अपने प्रभु से अनंत जीवन प्राप्त करने की आशा है, जो मुझे अनंत आनंद प्रदान करेंगे और मुझे अपने पवित्र स्वर्गदूतों में गिनेंगे।

इसके बाद, राज्यपाल ने संत को नग्न कर देने का आदेश दिया, उसके पवित्र कन्या शरीर को लोहे के औजारों से खुरचने और निर्दयता से पीटने का आदेश दिया; उसने यह भी आज्ञा दी कि उसके घावों पर इस उद्देश्य के लिए तैयार किया गया गर्म तेल और पिच डाला जाए; और संत का शरीर हड्डी तक खुरचकर जला दिया गया। वहाँ उपस्थित सभी लोग, पवित्र शहीद की पीड़ा देखकर, यह देखकर अत्यंत आश्चर्यचकित और विस्मित थे कि कैसे एक इतनी नाजुक कन्या इतनी क्रूर यातनाएँ सहन कर सकती है और जीवित रह सकती है। हालाँकि, संत ने स्वर्ग की ओर अपनी आँखें उठाकर और क्रूस के चिह्न में अपने हाथ उठाकर कहा:

'हे प्रभु, स्वर्ग से, अपने पवित्र सिंहासन की ऊँचाई से, अपनी विश्वासी दासी पर दृष्टि डालिए! अपनी कृपा की ओस से इस जलती हुई आग को बुझा दीजिए, और राज्यपाल द्वारा मुझे दी जा रही यातनाओं में मेरे शरीर को सांत्वना प्रदान कीजिए।'

संत के ये शब्द कहते ही उसके सिर के ऊपर एक प्रकाश चमका और एक आवाज़ सुनाई दी:

– डरो मत! मैं तुम्हारे साथ हूँ।

अधिकारी ने संत को अछूता देखकर क्रोध से दाँत पीसे।

उस स्थान के पास एक बड़ा पत्थर पड़ा था, जिसे कई आदमी बड़ी मुश्किल से हिला सकते थे; राज्यपाल ने आदेश दिया कि उसे उठाकर शहीद के ऊपर रख दिया जाए, ताकि वह उसके नीचे कुचल जाए। जब नौकरों ने राज्यपाल के आदेश को पूरा करना शुरू किया, तो प्रभु का स्वर्गदूत, जो उस पवित्र कन्या के साथ अदृश्य रूप से उपस्थित था, ने तुरंत पत्थर

को दूसरी दिशा में धकेल दिया, जिससे वह यातना देने वाले के नौकरों को कुचल गया, जबकि संत जीवित रही और ईश्वर की स्तुति करते हुए गाने लगी:

'धन्य हैं आप, हमारे पूर्वजों के प्रभु परमेश्वर, जो आप पर भरोसा करने वालों को बचाते हैं!'

यह देखकर लोगों ने पुकारा:

'महान है ईसाई ईश्वर, जिसकी यह कन्या घोषणा करती है!'

तब राज्यपाल ने कहा:

'अब हम इस जादूगरनी का क्या करें? वह हर यातना को सहन कर रही है; इसे ले जाओ और शहर से बाहर ले जाओ; इसके साथ उन दो दासियों को भी ले जाओ जो इसके पीछे हैं, और तीनों को तलवार से मार डालो।'

सैनिकों ने तुरंत पवित्र शहीदों को पकड़ लिया, उनके हाथ पीठ पीछे बाँध दिए, और उन्हें शहर से बाहर ले गए।

जब वे सभी निर्धारित स्थान पर पहुँचे, तो सैनिक पहले से ही पवित्र शहीदों के सिर काटने की तैयारी कर रहे थे; उसी क्षण उन्होंने स्वर्गदूतों को देखा और भय से ग्रस्त हो गए; जबकि पवित्र स्वर्गदूत, शहीदों का दुख देखकर, उनके शहीद आत्माओं को महिमा के साथ ग्रहण करने की तैयारी करने लगे। सैनिकों ने किसी तरह इन स्वर्गदूतों की उपस्थिति को भांप लिया, वे आतंकित हो गए, कांप उठे, और मानो अपना होश खो बैठे। लेकिन संत आर्केलाइया ने ईश्वर से प्रार्थना करने के बाद, सैनिकों से कहा:

'जो आदेश तुम्हें दिया गया है, उसे पूरा करो।'

सैनिकों ने उत्तर दिया:

'हम ऐसा करने की हिम्मत नहीं करतीं, महारानी, क्योंकि हम डर गई हैं।'

तब सभी कन्याएँ एक साथ उनसे कहने लगीं:

'यदि तुम आदेशों का पालन नहीं करोगे, तो तुम हमारा साथ नहीं दे पाओगे।'

यह सुनकर, सैनिकों ने अपनी तलवारें खींच लीं और उनके सिर काट दिए[4160] ।

इस प्रकार तीनों पवित्र शहीदों—आर्केला, थेक्ला और सुसन्ना, पवित्र कुंवारी—ने अपना पराक्रम पूरा किया, स्वर्गीय महल में प्रवेश किया और अब स्वर्गदूतों के साथ पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा, एक ईश्वर, जो त्रिमूर्ति में महिमामय हैं, के सामने खड़ी हैं, जिनकी महिमा युगानुयुग होती रहे। आमेन।

20 जून

7 जून (पुराने कैलेंडर के अनुसार)

उसी दिन, एन्क्रा के पवित्र शहीद थियोडोटस का स्मरण, जिनका 303 ईस्वी में तलवार से सिर कलम कर दिया गया था (उनके जीवन के लिए, 18 मई देखें

पवित्र पुरोहित-शहीद और रोम के पोप संत मार्केल, तथा उनके साथियों की शहादत

7 जून को स्मरणोत्सव

संत मार्सेलस जन्म से एक रोमन थे; उनके पिता का नाम बेनेडिक्ट था। वे संत मार्सेलिनस के बाद रोम के पोप बने और निर्दयी रोमन सम्राटों डायोक्लेटियन[4161] , के शासनकाल में पद पर रहे, मैक्सिमियन हर्क्यूलिस[4162] , दूसरे मैक्सिमियन, जिन्हें गैलेरियस[4163] के नाम से जाना जाता है, और मैक्सेंशियस[4164] ने पाँच साल और छह महीने की अवधि के

[4160] पवित्र शहीदों का 293 में अंत हुआ।

[4161] सम्राट डायोक्लेटियन ने 284 से 305 तक रोमन साम्राज्य के पूर्वी भाग पर शासन किया।

[4162] मैक्सिमियन हर्क्यूलिस ने 284 से 305 तक रोमन साम्राज्य के पश्चिमी आधे हिस्से पर शासन किया।

[4163] मैक्सिमियन गैलेरियस ने 305 से 311 तक पूर्व पर शासन किया।

[4164] मैक्सेंटियस ने 305 से 312 तक पश्चिम पर शासन किया।

लिए शासन किया। उन दिनों, रोम में निम्नलिखित घटनाएँ हुईं। सम्राट मैक्सिमियिन, जिन्हें हरक्यूलिस के नाम से जाना जाता था, को डायोक्लेटियिन ने अपने सह-शासक के रूप में नियुक्त किया था। अफ्रीकी प्रांतों[4165] से रोम लौटने के बाद और सम्राट डायोक्लेटियिन, जो पूर्व में देरी से फंसे थे, को खुश करने की इच्छा से, मैक्सिमियिन ने उनके सम्मान में रोम में पत्थर के थर्मल स्नानघर बनाना शुरू कर दिया, जो मूर्तिपूजकों को एक घृणित ठंडक प्रदान करते थे[4166]। रोमन सेनाओं में मसीह में विश्वास करने वाले बहुत से सैनिकों की पहचान करने के बाद, मैक्सिमियिन ने उन्हें उनके सैन्य पद से वंचित कर दिया और उन्हें वही श्रम सौंपा जो एक बार फिरौन ने मिस्र में इस्राएलियों पर थोपा था[4167], अर्थात्: उसने कुछ को ईंटें बनाने, कुछ को चूना बनाने, और कुछ को उपरोक्त स्नानागारों के निर्माण के लिए मिट्टी खोदने और पत्थर ढोने के लिए मजबूर किया। उसने यह सब रोम में रहने वाले ईसाइयों को डराने-धमकाने के लिए किया, क्योंकि वह जानता था कि कई रोमवासी—न केवल आम लोग बल्कि कुलीनों के सदस्य भी—ईसाई धर्म अपनाते थे, भले ही खुले तौर पर नहीं।

उस समय, रोम में फ्रैसन नाम का एक धनी और सम्मानित ईसाई रहता था। जब उसने देखा कि ईसाई कठोर श्रम के बोझ तले दबे हुए थे और भूख से मुरझा रहे थे, तो फ्रैसन ने अपनी निजी संपत्ति से गुप्त रूप से उनकी मदद करने की इच्छा की; इस उद्देश्य के लिए चार ईश्वर-भयभीत पुरुषों को चुनकर, उन्होंने उनके माध्यम से ईसाइयों को भोजन, वस्त्र और सभी आवश्यक वस्तुएँ उपलब्ध करवाईं। इन पुरुषों के नाम थे: सिसिनियस, सिरियाकस, स्मारागडस और लार्जियस।

जब धन्य पोप मार्सेलस को इस बात की जानकारी मिली, तो वह ईसाइयों को दी जा रही दान-राशि पर हृदय से बहुत प्रसन्न हुए; उन्होंने उपर्युक्त चारों पुरुषों को अपने पास बुलाया और उनसे फ्रासन की उदारता के बारे में सब कुछ जानने के बाद, मार्सेलस ने फ्रासन का बहुत-बहुत धन्यवाद किया, और सिसिनियस तथा साइरियिकस को रोमन चर्च के डिकन के रूप में नियुक्त किया।

एक रात, जब ये दोनों डीकन अपने कंधों पर संतों के लिए फ्रैसनो द्वारा भेजा गया भोजन ले जा रहे थे, तो उन्हें अधर्मी मूर्तिपूजकों ने पकड़ लिया और ट्रिबियून एक्जुपेरियस के सामने पेश किया। उन्हें उसके सामने लाया ही गया था कि ट्रिबियून ने उन्हें सार्वजनिक कालकोठरी में बंद करने का आदेश दिया; और तीसरे दिन, ने उनकी रिपोर्ट सम्राट मैक्सिमियिन को दी। सम्राट ने, बदले में, आदेश दिया कि उन्हें अन्य ईसाइयों के समान ही श्रम के लिए भेजा जाए, और इस प्रकार वे उन लोगों में शामिल हो गए जो एक पत्थर की इमारत के निर्माण के लिए रेत ढो रहे थे।

उन ईसाइयों में सटर्ननिस नाम का एक व्यक्ति था; अपनी अधिक उम्र के कारण, वह अपने लिए निर्धारित भारी बोझ नहीं उठा पा रहा था। तब धन्य डिकन सिसिनियस और सिरीकोस ने इस वृद्ध व्यक्ति की मदद करना शुरू कर दिया, और न केवल अपना बल्कि दूसरों का काम भी करने लगे; इस बीच वे अपने होठों से निरंतर ईश्वर की महिमा और स्तुति करते रहे। रक्षकों ने यह सब ट्राइब्यून को बताया, और उसने बारी-बारी से सम्राट को इसकी सूचना दी।

तब सम्राट ने आदेश दिया कि सिसिनियस को उसके सामने लाया जाए, और जब वह उसके सामने उपस्थित हुआ, तो उसने उससे पूछा:

'तुम्हारा नाम क्या है?'

'मैं एक पापी हूँ,' संत ने उत्तर दिया, 'और मेरा नाम सिसिनियस है; मैं हमारे प्रभु यीशु मसीह के सेवकों का सेवक हूँ।'

मैक्सिमियिन ने पूछा, 'ये कौन से भजन हैं जो आप गा रहे हैं?'

'अगर आपको हमारे द्वारा गाए जाने वाले भजनों का अर्थ पता होता,' संत ने उत्तर दिया, 'तो आप अपने स्रष्टा को भी जानते।'

इस पर सम्राट ने कहा:

[4165] मैक्सिमियिन के अधिकार क्षेत्र में अफ्रीका, हिस्पानिया और इटली शामिल थे।

[4166] यह ध्यान देने योग्य है कि प्राचीन मूर्तिपूजक रोमनों के 'थर्माई' केवल स्नानागार ही नहीं बल्कि विलासिता के स्थान भी थे।

[4167] इस्राएलियों को दबाने और कमजोर करने के उद्देश्य से, मिस्र के फिरौन ने उन्हें कठोर श्रम करने के लिए नियुक्त किया। एक अपेक्षाकृत कम अवधि में (यूसुफ की मृत्यु से मिस्र से प्रस्थान तक), इस्राएलियों ने मिस्रियों के लिए तीन शहर बनाए – पिथोम, रामोसेस और हेलीओपोलिस (निर्गमन 1:1–14)।

'लेकिन हमारे स्रष्टा कौन हैं, अगर हर्क्यूलसि[4168] , अजेय नहीं तो!'

पवित्र डकिन ससिीनयिस ने उत्तर दयिा:

'हमारे लिए, न केवल उसका नाम लेना, बल्कि उसके बारे में सुनना भी एक घृणास्पद कार्य है।'

सम्राट ने कहा, "दो में से एक चुनो: देवता हरक्यूलसि को बलदिान चढ़ाओ; अन्यथा, मैं तुम्हारे मांस को आग में जला दूँगा।"

'मैं लंबे समय से अपने ईश्वर, मसीह के लिए दुख सहने की इच्छा रखता हूँ,' संत ससिीनयिस ने उत्तर दयिा, 'ताकि मुझे शहादत का प्रतिष्ठित मुकुट प्राप्त हो सके।'

तब सम्राट, क्रोधित होकर, उसे यातना देने के लिए प्रांतीय राज्यपाल लाओडसियिस के हवाले कर दयिा।

बाद वाले ने संत को मामर्टाइन जेल[4169] में कैद कर दयिा, जहाँ शहीद सत्रह दनिों तक रहे। इस अवधि के अंत में, प्रांतीय गवर्नर ने आदेश दयिा कि संत ससिीनयिस डीकन को पूछताछ के लिए एक बार फिर उनके सामने लाया जाए।

क़ैदखाने से, कैदी को पहले जेलर अप्रोनयिानुस के सामने लाया गया। उसे देखकर अप्रोनयिानुस ने देखा कि उसका चेहरा एक अद्भुत दिव्य प्रकाश से दमक रहा था; उसी समय, उसने एक आवाज़ भी सुनी जो कह रही थी:

– *'आओ, हे मेरे पिता के धन्य लोगों, और संसार की उत्पत्ति से तुम्हारे लिए तैयार की हुई अपनी विरासत ग्रहण करो'* (मत्ती 25:34).

तब अपोनयिस, भय और आतंक से भरकर, संत ससिीनयिा के चरणों में गिर पड़ा और कहा:

– मैं मसीह के नाम पर आपसे विनती करता हूँ, जिनकी आप गवाही देते हैं, कि कृपया मुझे तुरंत बपतस्मिा दें और मुझे अपने मुकुट का सहभागी बना लें।

वहाँ तुरंत पानी लाया गया।

तब दीकन ससिनियिस ने अप्रोनयिस को धर्मशिक्षा[4170] प्रदान करने के बाद, जल का आशीर्वाद दयिा; फिर उन्होंने अप्रोनयिस को नग्न होकर जल से भरे पात्र में प्रवेश करने का आदेश दयिा और उससे पूछा:

'क्या आप परमेश्वर पिता, सर्वशक्तिमान में, और उनके एकमात्र पुत्र, हमारे प्रभु यीशु मसीह में, और पवित्र आत्मा में विश्वास करते हैं?'

उसने उत्तर दयिा:

'मैं विश्वास करता हूँ।'

'पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा आपको ज्ञान प्रदान करें,' संत ससिीनस ने कहा।

तब संत ने अप्रोनयिस को पानी से बाहर आने का निर्देश दयिा।

इसके बाद, ससिीनयिस ने नव-बपतस्मिा प्राप्त अप्रोनयिस को पोप संत मार्सेलस के पास ले गए। उन्होंने उस नव-प्रबुद्ध व्यक्ति पर पवित्र क्रिस्म का अभिषेक कयिा और पवित्र लिटिर्जी का अनुष्ठान करने के बाद, ससिीनस

[4168] हरक्यूलसि या हेराक्लेस प्राचीन ग्रीस का एक राष्ट्रीय नायक था। ग्रीक पौराणकि कथाओं के अनुसार, हरक्यूलसि ज्यूस और टायरनि्स के राजा एम्फट्रियिोन की पत्नी अल्केमेनी का पुत्र था। हरक्यूलसि को महान शारीरकि शक्ति प्राप्त थी, इसीलिए उसे जमि्नास्ट और ग्लैडएिटरों के संरक्षक देवता के रूप में माना जाता था।

[4169] ममर्टनि जेल रोम शहर के उत्तरी भाग में स्थित थी। इसका उद्देश्य मुख्य रूप से राजकीय अपराधयिों के लिए था, एक श्रेणी जसिमें ईसाई भी शामलि थे। परंपरा के अनुसार, पवित्र प्रेरति पतरस और पौलुस को इस कालकोठरी में कैद कयिा गया था। यह कालकोठरी आज भी अपने पुनर्स्थापति रूप में मौजूद है, और कालकोठरी का वह हस्सिा जहाँ प्रेरति पतरस और पौलुस को रखा गया था, उसे कैथोलकिों द्वारा एक पवित्र स्थान के रूप में वशिष सावधानी से संरक्षति कयिा जाता है।

[4170] कैटेकेससि – ऑर्थोडॉक्स धर्म की सच्चाइयों पर मौखकि शकि्षा, जो प्रारंभकि चर्च में बपतस्मिा का संस्कार प्राप्त करने के इच्छुक सभी को दी जाती थी। उन्हें चर्च में प्रवेश करने, पवित्र धर्मग्रंथों और उपदेशों को सुनने, और यहां तक कि लिटिर्जी के पहले और दूसरे भाग (प्रोस्कोमेडयिा और 'कैटेकुमेन की लिटिर्जी') में भाग लेने का अधकिार प्राप्त था, कैटेकुमेन को लिटिर्जी के तीसरे, सबसे महत्वपूर्ण भाग ('विश्वासयिों की लिटिर्जी') की शुरुआत से ठीक पहले चर्च छोड़ना आवश्यक था, जैसा कि डीकन के उद्घोष द्वारा घोषति कयिा जाता था, जसिे आज भी ऑर्थोडॉक्स चर्च में लिटिर्जी के उत्सव के दौरान संरक्षति रखा गया है। कैटेकुमेनेट की अवधि भनि्न-भनि्न होती थी; कई लोग अपने पूरे जीवन कैटेकुमेन बने रहते थे। जहाँ आवश्यक होता, वहाँ कैटेकुमेनेट की अवधि को घटाकर कुछ दनिों या कुछ घंटों तक कर दयिा जाता था (जैसे, उदाहरण के लिए, इस मामले में)। – कैटेकुमेनेट की धार्मकि रस्म आज भी ऑर्थोडॉक्स चर्च में की जाती है; इसमें बपतस्मिा के उम्मीदवार पर प्रार्थनाओं का पाठ करना और शैतान के विरुद्ध आह्वान करना शामलि है; साथ ही, उम्मीदवार शैतान का परित्याग करता है, स्वयं को मसीह के साथ एक करता है और धर्म-स्वीकृति (क्रीड) का पाठ करके अपने विश्वास की घोषणा करता है (यह शशिुओं के बपतस्मिा के दौरान धर्म-माता-पिता द्वारा कयिा जाता है)।

और अप्रोनयिनुस दोनों को, साथ ही वहाँ मौजूद सभी ईसाइयों को, हमारे प्रभु यीशु मसीह का परम पवत्रि शरीर और रक्त प्रदान कयिा।

उसी दनि दोपहर को, प्रांतीय राज्यपाल लाओडसियिस ने आदेश दयिा कि डकिन ससिीनयिस को पूछताछ के लिए उसके सामने लाया जाए। उसके साथ जेलर, धन्य अप्रोनयिन भी था – जो मसीह का एक नव-प्रबुद्ध सेवक था। लाओडसियिस के पास पहुँचकर, अप्रोनयिन ने उसे संबोधति करते हुए ज़ोर से पुकारा:

'शैतान तुम्हें ईश्वर के सेवकों के वरिुद्ध क्यों उकसाता है, और तुम्हें नरि्दोषों पर इतना दुख पहुँचाने की शक्षिा क्यों देता है?'

एप्रोनयिन के शब्दों से आश्चर्यचकति होकर, प्रांतीय राज्यपाल ने उससे कहा:

'मुझे ऐसा लगता है कि तुम भी ईसाई बन गए हो।'

'हाय, मैं कतिना दुखी मनुष्य हूँ,' धन्य अप्रोनयिन ने उत्तर दयिा, 'क्योंकि मैंने अपने दनि दुष्टता में बर्बाद कर दिए हैं, और अब तक सच्चे परमेश्वर को नहीं जाना।'

प्रांतीय राज्यपाल ने कहा, "वास्तव में, अब तुम अपने बाकी के दनि बर्बाद करोगे!"

फरि उसने उसका सरि कलम करने का आदेश दयिा, और कहा:

'यदि यिह नहीं मरेगा, तो और भी बहुत मारे जाएँगे।'

इसके बाद, सैनकिों ने संत अप्रोनयिस को शहर से बाहर ले गए। शहर से दो मलिारयिा[4171] दूर, सैनकिों ने सैलारयिन मार्ग[4172] पर संत अप्रोनयिन का सरि कलम कर दयिा; इस प्रकार नव-प्रबुद्ध अप्रोनयिन ने शहीद का ताज प्राप्त कयिा। जहाँ तक पवत्रि डकिन ससिीनयिन और उनके साथ उपर्युक्त एल्डर सैटरननिस का सवाल है, प्रांतीय गवर्नर ने उन्हें कैद करने का आदेश दयिा, और उनसे कहा:

'यदि तुम देवताओं को बलदिान नहीं चढ़ाओगे, तो मैं तुम्हें हर प्रकार की यातनाएँ देकर नष्ट कर दूँगा।'

जब ये संत जेल में थे, तो कई मूर्तपिूजक उनके पास आए और उन्होंने नडिर होकर उनसे बपतस्मिा ग्रहण कयिा। चालीस दनि बीत जाने के बाद, प्रांतीय राज्यपाल लाओडसियिस को इसकी जानकारी मलिी; उसने देवी टेलुरा के मंदरि में अपने न्यायालय के लिए एक स्थान तैयार करने का आदेश दयिा[4173] और वहाँ अपना आसन संभालने के बाद, लाओडसियिस ने बुजुर्ग सैटरननिस और डकिन ससिीनयिस को अपने सामने लाने का आदेश दयिा। मसीह के कैदयिों को उनके अत्याचारी के सामने नंगे पैर और लोहे की बेड़यिों में जकड़कर लाया गया।

तब प्रांतीय राज्यपाल ने पूछा, 'तो क्या तुमने आखरिकार ईसाई धर्म के व्यर्थ भ्रम को त्याग दयिा है? क्या तुम अब भी उन देवताओं की पूजा करने से इनकार करोगे जनि्हें हमारे राजा पूजते हैं?'

पवत्रि डकिन ससिीनयिस ने उत्तर दयिा, 'हम पापी, अपने प्रभु यीशु मसीह की आराधना करते हैं, और हम शैतान या कसिी नरि्जीव पत्थर के सामने कभी अपना सरि नहीं झुकाएंगे।'

तब लाओडकियस ने कहा:

'यहाँ वे काँसे के त्रपिाद लाओ जनि पर देवताओं के लिए धूप जलाई जाती है।'

तुरंत ही जलते हुए कोयलों वाले त्रपिाद लाए गए। यातना देने वाले ने संतों को मूर्तयिों के सामने धूप जलाने के लिए मजबूर करना शुरू कर दयिा।

पवत्रि वृद्ध सैटरननिस ने यातना देने वाले से कहा:

'प्रभु इन मूर्तपिूजक मूर्तयिों को धूल में मलिा दें।'

और तुरंत ही काँसे के त्रपिाद पघिलकर पानी की तरह बह गए।

[4171] मलियिारयिम एक रोमन मील या, अधकि सटीक रूप से, एक रोमन मील का पत्थर है, क्योंकि प्रत्येक मलियिारयिम के अंत में एक पत्थर का स्तंभ खड़ा होता था जो एक नशिान के रूप में काम करता था। एक मलियिारयिम 8 स्टेडयिम के बराबर होता था (एक स्टेडयिम 88 फathom के बराबर होता है), जो हमारे वर्स्ट के लगभग 1.5 के बराबर है। माइल के पत्थर पूरे इटली में बखिरे हुए थे; उन पर आमतौर पर नरि्माता या उस सम्राट के नाम की शलिालेख होती थी, जसिके शासनकाल में उन्हें खड़ा कयिा गया था। पहला माइल का पत्थर, जसिसे बाकी सभी पत्थर नकिले और जसि पर सभी सड़कें मलिती थीं, सैटर्न के मंदरि के पास स्थति था। रोम में खुदाई के दौरान इस पत्थर के अवशेष मलि थे।

[4172] सैलेरयिा प्राचीन रोम की सबसे महान सड़कों में से एक थी। यह टायबर नदी के कनिारे कुरयिा तक जाती थी, और लाटयिम, सैबनियिा आदि से होते हुए आर्डयिा तक जाती थी। इस सड़क का नाम इस तथ्य से पड़ा है कि सैबन्सि इसका उपयोग समुद्र तट से अपने देश तक नमक (vai) ले जाने के लिए करते थे।

[4173] टेलुरा या गैया – पृथ्वी और उर्वरता की ग्रीक-रोमन देवी।

वहाँ मौजूद दो सैनकि, पापयिास और मौरस, यह देखकर ज़ोर से चल्लिा उठे:

'सत्य कहता हूँ, प्रभु यीशु मसीह, जनिका ससिीनयिस और सैटरननिस सम्मान करते हैं, सच्चे परमेश्वर हैं।'

लाओदकियिा के प्रांतीय राज्यपाल, क्रोध से आग-बबूला होकर, ने पवत्रि शहीदों, सत्तारनिस और ससिीनयिस को खंभे पर लटकाने और रस्सयिों तथा गाँठदार डंडों से नरि्दयतापूर्वक पीटने का आदेश दयिा। इस प्रकार यातना दएि जाने के दौरान, संतों ने पुकार कर कहा:

'हे प्रभु यीशु मसीह, हम तेरा धन्यवाद करते हैं, कि तूने हमें अपने उन सेवकों के दुखों में सहभागी होने के योग्य समझा है, जनि्होंने तेरे लएि दुख सहे हैं।'

तब सैनकि पापयिास और मौरोस, संतों के कष्टों को देखकर, दूसरी बार प्रांतीय राज्यपाल को संबोधति करते हुए चल्लिाए:

'शैतान तुम्हें ईश्वर के सेवकों के वरिुद्ध क्यों उकसाता है, और तुम्हें यह सखिाता है कि तुम इन नरि्दोषों को बेरहमी से यातना दो?'

इन सैनकिों के प्रतकि्रोध से जलते हुए लाओडकियिस ने आदेश दयिा कि उनके मुँह पर पत्थर मारे जाएँ; संतों के होंठों को चकनाचूर करने के बाद, उसने उन्हें कैद कर दयिा। उसी समय, उसने अपने सेवकों को आदेश दयिा कि वे फांसी पर लटके शहीदों की बगलें मोमबत्तयिों से जला दें। लेकनि उन्होंने, इतनी बड़ी पीड़ा सहते हुए भी, प्रसन्न चेहरों के साथ परमेश्वर का धन्यवाद कयिा।

उसी दनि, यातना देने वाले ने संतों को मृत्युदंड सुनाया। परणिामस्वरूप, उन्हें फांसी के खंभे से उतारकर, नुमान्टयिन सड़क[4174] के रास्ते शहर से बाहर ले जाया गया और तलवार से सरि कलम कर दयिा गया।

उपरोक्त धार्मकि व्यक्ति, फ्रेसन ने, пресbyter जॉन के साथ मलिकर पवत्रि शहीदों के शरीरों को लेकर, उन्हें सलारयिन मार्ग पर अपनी ही जमीन में दफना दयिा।

जहाँ तक सैनकि पापयिास और मॉरस का सवाल है, जनि्हें कैद कयिा गया था, वे पवत्रि बपतस्मिा प्राप्त करने की बहुत इच्छा रखते थे; प्रभु से प्रार्थना करने के बाद, वे कसिी के ध्यान में आए बनिा, खुले दरवाजों से जेल से बाहर नकिल गए। तब वे परम पावन पोप मार्सेलस के पास आए, और उन्होंने उनसे पवत्रि बपतस्मिा प्राप्त कयिा। उनके बपतस्मिा के बाद, वे एक बार फरि उन सैनकिों के सामने आत्मसमर्पण कर दएि जो उनकी तलाश कर रहे थे, और पूछताछ के लएि प्रांतीय राज्यपाल के सामने लाए गए। उन्हें देखकर, प्रांतीय राज्यपाल ने कहा:

'अब मुझे पता चला कि तुम ईसाई हो।'

'हाँ, हम वास्तव में ईसाई हैं,' संत पापयिास ने उत्तर दयिा।

'इस व्यर्थ ईसाई भ्रम को त्यागो,' लाओदकियिस ने जारी रखा, 'और उन देवताओं की पूजा करो जनि्हें हमारे राजा पूजते हैं!'

संत मौरस ने लाओदकियिस से उत्तर दयिा, 'जो लोग अपनी आत्मा खो चुके हैं, उन्हें उनकी पूजा करने दो, यदि वे हमेशा के लएि नाश होना चाहते हैं।'

इस पर प्रांतीय गवर्नर लाओडसियिस ने कहा:

'यदि तुम अब हमारे अमर देवताओं को बलदिान नहीं चढ़ाओगे, तो तुम अपनी आत्मा खो दोगे। मेरी बात सुनो और जैसा मैं कहता हूँ वैसा करो, यदि तुम जीवति रहना चाहते हो।'

'उनके लएि बलदिान चढ़ाओ,' संत पापयिास ने उत्तर दयिा, 'यदि तुम अनंतकाल तक पीड़ति होना चाहते हो!'

इसके बाद, प्रांतीय राज्यपाल ने संतों को ज़मीन पर लटिाकर डंडों से बेरहमी से पटिवाने का आदेश दयिा। फरि भी, क्रूरतापूर्वक पीटे जाने के दौरान, उन्होंने नम्निलखिति शब्दों के अलावा कुछ नहीं कहा:

'हे प्रभु यीशु मसीह, अपने दासों की सहायता करो!'

तब लाओदकियिस ने आदेश दयिा कि संतों को टनि की छड़ों से पीटा जाए। जब उन्हें इस प्रकार लंबे समय तक पीटा जा रहा था, तो उन्होंने अपनी आत्माएँ ईश्वर के हाथों में सौंप दीं।

पुजारी जॉन ने रात में संतों के शरीरों को लेकर, उन्हें पहले शहीद हुए पवत्रि शहीदों ससिीनयिा और सैटरननिस की कब्र के पास सम्मानपूर्वक दफनाया (उन्होंने यह पवत्रि पोप मार्सेलस के आदेश पर कयिा)।

[4174] नुमान्टयिन मार्ग रोम से नुमान्टयिा शहर की ओर जाता था।

उस समय, सम्राट डायोक्लेटियिन रोम लौटे। प्रांतीय राज्यपाल, लाओडसियिस ने, पवत्रि शहीदों के बारे में सब कुछ डायोक्लेटियिन और मैक्समियिन को बताया, और उन्हें बताया कि कैसे उसने नरि्दयता से उन्हें यातना दी और मार डाला। सम्राट इस खबर से बहुत प्रसन्न हुए और उन्होंने प्रांतीय राज्यपाल की लगन की प्रशंसा की।

इस बीच, ऊपर उल्लेखति संत सरिकियिस, जनि्हें परम पावन पोप मार्सेलस द्वारा डीकन नयिुक्त कयिा गया था, उस समय संत ससिीनयिस के साथ जेल में थे; स्मारागडस और लार्जयिस, साथ ही मसीह के अन्य बंदी भी वहाँ बंद थे। वे सभी अपने-अपने नरि्धारति कठोर श्रम का पालन करते थे। उन्हें दनि में काम के लिए बाहर ले जाया जाता था, और रात में उन्हें फरि से तहखाने में बंद कर दयिा जाता था। ईश्वर ने धन्य सरिकियिस को रोगों को ठीक करने की कृपा प्रदान की; कई लोग उसके पास आए और अपने बीमारों को लाए, जनि्हें संत सरिअिकस ने ईश्वर से प्रार्थना करने के बाद चंगा कर दयिा; इस प्रकार अंधों को यहाँ दृष्टि वापस मलिी, लकवाग्रस्त ठीक हो गए, लोगों से दुष्ट आत्माएँ नकिल गईं, और संत की प्रार्थनाओं के माध्यम से, वभिन्नि प्रकार की बीमारयिों से पीड़ति लोगों पर चंगाई का वरदान मलिा।

सम्राट डायोक्लेटियिन की आर्टेमसियिा नामक एक बेटी थी। ईश्वर की अनुमति से, वह एक भूतहा दौरे में पड़ गई और एक अशुद्ध आत्मा द्वारा पीड़ति हुई। यह जानकर, डायोक्लेटियिन बहुत दुखी हुआ, इतना कि उस दनि, दुख के मारे उसने कुछ भी नहीं खाया। जब वह अपनी बेटी के कमरे में गया, जहाँ वह उस समय दौरे की पीड़ा में थी, तो राक्षस ने लड़की के होठों से चलि्लाकर कहा:

'मैं इस जगह को नहीं छोड़ूँगा, और मुझे डीकन सरियिाकस के सवि कोई भी बाहर नहीं नकिाल सकता।'

तब डयिोक्लेशयिन ने डीकन सरियिाकस को खोजने का आदेश दयिा, और जब उन्हें जेल में पाया गया और उनके दो दोस्तों, स्मारागडस और लार्जयिस के साथ सम्राट के सामने लाया गया, तो सम्राट ने उनसे अपनी बेटी के कमरे में जाकर उसे ठीक करने का आग्रह करना शुरू कर दयिा। संत सरियिकस, राजा की बेटी के कमरे में प्रवेश करते ही, उसे पीड़ा देने वाली अशुद्ध आत्मा से इन शब्दों में बोले:

'हमारे प्रभु यीशु मसीह के नाम पर, मैं तुझे आज्ञा देता हूँ: इस कन्या से नकिल जा।'

लेकनि राक्षस ने उसके होठों से उत्तर दयिा:

'यदि तुम चाहते हो कि मैं उसे छोड़ दूँ, तो मुझे एक और रहने की जगह दखिाओ जसिमें मैं प्रवेश कर सकूँ।'

'यह मेरा शरीर है,' संत सरियिकस ने उत्तर दयिा; 'अगर तुम कर सकते हो, तो इसमें प्रवेश करो!'

'मैं तुम्हारे शरीर में प्रवेश नहीं कर सकता,' राक्षस ने कहना जारी रखा, 'क्योंकि वह हर तरफ से बंद और सील कयिा हुआ है।'

तब संत सरियिकस ने उससे कहा:

'हमारे प्रभु यीशु मसीह के नाम पर, जनि्हें क्रूस पर चढ़ाया गया, इस कन्या से नकिल जा, ताकि वह पवत्रि आत्मा की सेवा के लिए एक शुद्ध पात्र बन सके।'

तब अशुद्ध आत्मा चलि्लाकर बोला:

'हे सरियिकस! यदि तुम मुझे यहाँ से नकिाल दोगे, तो मैं यह सुनश्चिति करूँगा कि तुम्हें फारस भेजा जाए[4175] ।'

इन शब्दों के साथ, अशुद्ध आत्मा नकिल गया। दानवों के कष्ट से मुक्त होकर, कन्या आर्टेमयिा ने संत से कहा:

'मैं आपसे उस ईश्वर के नाम पर वनिती करती हूँ, जसिकी आप आराधना करते हैं: मुझे बपतस्मिा दीजिए, क्योंकि मैं दूर से उस प्रभु को देखती हूँ, जसिका आप उपदेश देते हैं।'

वहाँ आर्टेमसियिा की माँ, महारानी सरिनिा खड़ी थीं, जो अपनी बेटी के ठीक होने और मसीह की शक्ति के प्रकट होने, दोनों पर अत्यधकि आनन्द से आनंदति हुईं (क्योंकि वह एक गुप्त ईसाई थीं)।

पानी तैयार करने के बाद, अगले दनि कन्या आर्टेमसियिा का, सम्राट डायोक्लेटियिन से गुप्त रूप से, पति और पुत्र और पवत्रि आत्मा के नाम पर बपतस्मिा हुआ।

उस समय से, संत सरियिकस को सम्राट डायोक्लेटियिन की कृपा प्राप्त हुई, जसिने उन्हें और उनके मत्रिों, स्मारागडस और लाग्रयिा को उनकी स्वतंत्रता प्रदान की और उन्हें रोम में उनके स्नानागार के पास एक घर भेंट कयिा, तथा उन्हें एक शांतपिूर्ण जीवन का वादा कयिा।

[4175] शैतान संत सरियिकस को फारस की यात्रा की संभावना से डराता है क्योंकि, उन दनिों, उचति सड़कों की कमी के कारण यात्रा आम तौर पर कठनि होती थी।

इस बीच, सम्राज्ञी सरिनिा ने अपनी बेटी को सखिाया कि वह पूरे दलि से मसीह से प्रेम करे और उनकी आज्ञा का बनिा चूके पालन करे।

कुछ ही समय बाद, फारस के राजा का एक संदेश डयिोक्लेटयिन के पास पहुँचा; इस संदेश में, फारस के राजा ने डयिोक्लेटयिन से डीकन सरिीको को उसके पास भेजने के लिए कहा, क्योंकि उसकी बेटी पर भूत सवार था, और दानव ने उसके होठों से चलि्लाकर कहा:

'रोमन डकिन सरियिाकस के सवि कोई मुझे बाहर नहीं नकिाल सकता।'

तब सम्राट ने अपनी पत्नी, सम्राज्ञी सरिनि से कहा कि वह सरियिाकस को बुलाए और उससे वनिती करे कि वह पशिाचग्रस्त राजकुमारी के पास फारस जाए।

जब संत सरियिकस को महारानी के समक्ष बुलाया गया और उन्होंने फारस के संदेश के बारे में जाना, तो उन्होंने कहा:

'मेरे प्रभु, यीशु मसीह के नाम पर, मैं बनिा कसिी हचिकचिाहट के जाऊँगा!'

सम्राज्ञी ने साइरयिाकस को उसकी ज़रूरत की हर चीज़ दी, जसिके बाद वह अपने दोस्तों, स्मारागडस और लार्जयिस के साथ फारस के लिए रवाना हो गया।

जब वह फारस पहुँचा और उसे राक्षस-ग्रस्त राजकुमारी के सामने लाया गया, तो शैतान ने उसके होठों से कहा:

'तो फरि, सरियिाकस, क्या मैंने तुम्हें यहाँ आने के लिए वैसे ही कष्ट नहीं दयिा, जैसा मैंने तुमसे कहा था?'

साइरयिाक ने उत्तर दयिा, 'मैं यहाँ अपने प्रभु, यीशु मसीह की कृपा से, तुम्हें यहाँ से भी भगाने के लिए आया हूँ। इसलिए, अशुद्ध आत्मा, मैं तुझे प्रभु यीशु मसीह के नाम पर आज्ञा देता हूँ: इस कन्या से नकिल जा और कभी उसकी ओर वापस मत लौटना।'

'लेकनि तुम, सरियिकस, थके हुए हो, और तुम्हें सबसे पहले अपनी यात्रा के बाद आराम करने की ज़रूरत है,' दानव ने कहा।

'सभी चीज़ों को नरि्धारति करने वाले ईश्वर की मदद से, मुझे कोई थकान महसूस नहीं हो रही है,' साइरयिाकस ने उत्तर दयिा।

'लेकनि जहाँ तक मेरी बात है,' दानव ने कहना जारी रखा, 'मैंने बलि्कुल वैसा ही कयिा जैसा मैं चाहता था: मैंने तुमसे फारस आने का वादा कयिा था, और तुम आ गए हो।'

'हे शक्तहिीन और शापति, तू अपनी मनमानी नहीं कर सकता; तू केवल वही कर सकता है जसिकी अनुमति हमारा स्रष्टा तुझे देता है।'

तब दानव ने कन्या को सताना शुरू कर दयिा। हालाँकि, संत स्यरयिाकस ज़मीन पर लोट कर गरि पड़े और आँसुओं के साथ ईश्वर से प्रार्थना करने लगे। इस बीच, दानव ने संत से पुकारा:

'यदि तुम मुझे यहाँ से भगा देते हो, तो मुझे एक ऐसा नविास दखिाओ जसिमें मैं प्रवेश कर सकूँ।'

संत ने उत्तर दयिा:

'हे पागल! ईश्वर की सृष्टि में तुम्हें अपने लिए कोई जगह नहीं मलिेगी, क्योंकि मेरे प्रभु यीशु मसीह की अजेय और सर्वशक्तमिान शक्ति तुम्हें हर जगह से भगा देगी।'

तब शैतान तुरंत उस युवती को छोड़कर भाग गया, और भागते समय यह कहते हुए आकाश में चीखें भर दीं:

'हे, जसिने मुझे भगाया, उसका नाम मेरे लिए कतिना भयानक है!'

उस समय से, वह कुँवारी स्वस्थ हो गई। उसका नाम जोबयिा था। वह मसीह में वशि्वास करने लगी और उसने पवत्रि बपतस्मिा ग्रहण कयिा। शाही परविार के कई लोग भी मसीह में वशि्वास करने लगे और बपतस्मिा ग्रहण कयिा, जनिकी कुल संख्या लगभग चार सौ थी। फारस के राजा ने संत सरियिकस को कई उपहार दिए। लेकनि उन्होंने कुछ भी स्वीकार नहीं कयिा, और वे केवल रोटी और पानी से ही संतुष्ट रहे। पचास-पाँच दनि फारस में रहने के बाद, वह फारस के राजा से एक धन्यवाद पत्र लेकर रोमन सम्राट के पास लौट आए, जसिे डायोक्लेटयिन ने सम्मानपूर्वक स्वीकार कयिा। सम्राज्ञी सरिनिा और उनकी बेटी आर्टेमसियिा, स्यरयिाकस की वापसी से अत्यंत प्रसन्न हुईं।

इसके कुछ ही समय बाद, डायोक्लेटियिन रोम से पूर्व की ओर रवाना हो गया, जबकि मैक्सिमियिन हर्क्यूलस मेडियोला[4176] गया, जहाँ दोनों ने अपने शाही खिताब त्याग दिए। तब (दूसरा मैक्सिमियिन), जिसे गैलेरियिस के नाम से जाना जाता था, जिसे डायोक्लेटियिन ने अपने बेटे के रूप में गोद लिया था और जिसे बाद में उसने अपनी बेटी — आर्टेमिया की बड़ी बहन, वैलेरिया — दी थी, वह रोम आया और उसने ईसाइयों पर अत्याचार करना और उन्हें मारना शुरू कर दिया। अन्य लोगों के साथ पवित्र डिकिन स्यरियाकस को गिरफ्तार करने के बाद – क्योंकि वह आर्टेमिशिया के कारण उससे नाराज़ था, जिसे स्यरियाकस ने ईसाई धर्म में परिवर्तित किया था – उसने उसे उसके दोस्तों, स्मरागडस और लार्जियिस के साथ कैद कर दिया; उसी समय, उत्पीड़क ने आदेश दिया कि सेंट सिरिकस को जहाँ भी वह जाए, नग्न और लोहे की जंजीरों से बँधा हुआ उसके सामने लाया जाए। उसने यह दूसरे ईसाइयों को डराने के लिए किया।

एक बार, जब यातना देने वाला एक निश्चित शहर की ओर जा रहा था, तो उसका सामना पोप, संत मार्सेलस से हुआ, जिन्होंने उससे जोर से कहा:

'तुम परमेश्वर के उन सेवकों को क्यों मार रहे हो जो तुम्हारे राज्य के लिए प्रार्थना करते हैं!'

तब उत्पीड़क, क्रोधित होकर, संत को बेरहमी से लाठी-डंडों से पिटवाने का आदेश दिया और उसे जानवरों का रखवाला नियुक्त कर दिया। इस प्रकार, संत मार्सेलस को जानवरों को खिलाने का काम सौंपा गया, और पहरेदारों ने यह सुनिश्चित किया कि वह अपने कर्तव्यों का पालन लगन से करे। जहाँ तक संत सिरिकस और उनके साथियों का सवाल है, सम्राट ने उन्हें अपने राज्यपाल, कार्पासियस को सौंप दिया, यह कहते हुए:

'इन जादूगरों को, जो लोगों को ईसाई धर्म में भटका रहे हैं, बलिदान चढ़ाने के लिए मनाओ; उन्हें ऐसा करने के लिए मजबूर करो, भले ही इसके लिए यातना देनी पड़े।'

कार्पासियस ने संत और उनके साथ मौजूद ईसाइयों को बंदी बनाकर कैद कर दिया; फिर, टेलुरा के मंदिर में न्यायपीठ पर बैठकर, उसने पवित्र शहीदों को पूछताछ के लिए बुलाया—डीकन सिरिकस, उनके मित्र, स्मराग्ड और लार्जियिस, और उनके साथ एक चौथा कैदी क्रिसिंटेंटीयस भी था, जिसे मसीह के नाम का प्रचार करने के लिए कैद किया गया था। कार्पास ने मसीहियों से ये शब्द कहे:

'तुम सम्राट की आज्ञा का पालन क्यों नहीं करते और हमारे अमर देवताओं को बलिदान क्यों नहीं चढ़ाते?'

सिरिकस और उनके मित्रों ने उत्तर दिया:

'हम स्वयं को उस परमेश्वर की बलि चढ़ाते हैं, जो सदा जीवित रहता है, और हमारे प्रभु यीशु मसीह की।'

करपास ने सिरिकस से कहा, 'तुम्हारी वृद्धावस्था ने तुम्हारे बाल सफेद कर दिए हैं; लेकिन अब मैं तुम्हारी वृद्धावस्था को यौवन में बदल दूँगा।'

यह शब्द सुनते ही उसने आदेश दिया कि कोयला पिघलाया जाए और संत के सिर पर डाल दिया जाए। हालाँकि, संत ने चिल्लाकर कहा:

'तेरा महिमा हो, हे प्रभु, कि तू हम अपने दासों को अपने स्वर्गीय राज्य के द्वार में प्रवेश करने के योग्य समझता है!'

क्रिस्पिनियिन के संबंध में, यातना देने वाले ने आदेश दिया कि उसे नग्न अवस्था में एक खंभे पर लटका दिया जाए, रस्सियों और डंडों से पीटा जाए, लोहे की पंजाओं से खुरच दिया जाए और आग से झुलसा दिया जाए। ऐसे ही यातनाओं को सहते हुए संत क्रिस्पिनियिन ने अपनी आत्मा त्याग दी, और इस पूरे समय ईश्वर का धन्यवाद करते रहे।

तब यातनाकर्ता ने आदेश दिया कि उसके शरीर को उठाकर कुत्तों द्वारा खाए जाने के लिए बिना दफनाए छोड़ दिया जाए, जबकि उसने अन्य पवित्र शहीदों को फिर से कैद कर लिया। लेकिन उपरोक्त पुरोहित जॉन ने रात में आकर गुप्त रूप से शहीद का शरीर उठा लिया और उसे अन्य शहीदों के साथ दफना दिया।

चार दिन बाद, यातनाकर्ता ने सिरिइकस को अकेले पूछताछ के लिए बुलाया और उससे पूछा:

'तुम अपनी वृद्धावस्था नरक में, भयानक यातनाओं को सहते हुए क्यों बिताना चाहते हो? देवताओं को बलिदान चढ़ाओ और तुम जीवित रहोगे।'

[4176] मेडियोलानम (अब मिलान) उत्तरी इटली में, लोम्बार्डी क्षेत्र का सबसे महत्वपूर्ण शहर है; इसकी स्थापना प्राचीन काल में, ईसा मसीह से कई शताब्दियों पहले हुई थी। ईसाई चर्च के इतिहास में, मेडिओलन को आर्चबिशप एम्ब्रोज़ (374 से 397 तक) का आसन माना जाता है, जिन्होंने एरियिन विधर्म का मुकाबला करने में बहुत उत्साह दिखाया (उनकी स्मृति को पवित्र चर्च 7 दिसंबर को मनाती है)।

संत ने उत्तर दिया, 'मैं अपने ईश्वर मसीह के लिए यातनाएँ सहने की तीव्र इच्छा रखता हूँ; जो सच्चे ईश्वर, अपने सृष्टिकर्ता को नहीं जानते, वे तुम्हारे देवताओं को बलिदान चढ़ाएँ।'

अपने क्रोध में, कार्पास ने संत को नग्न अवस्था में एक खंभे पर लटकाने और संत क्रिसैन्टियस के समान ही यातना देने का आदेश दिया, जिसमें रस्सियों और डंडों से पीटना, कीलों से खुरचना और आग से झुलसाना शामिल था।

इस बीच, मसीह के शहीद ने यह सब बहादुरी से सहते हुए, पुकारा:

'हे मेरे प्रभु यीशु मसीह, एक पापी पर दया करें! महिमा तेरी हो, हे परमेश्वर के पुत्र!'

कार्पासियस को यह एहसास हो गया था कि कोई भी यातना साइरियाकस को बलिदान चढ़ाने के लिए मजबूर नहीं कर सकती, इसलिए उसने यातना बंद करने का आदेश दिया; फिर उसने सम्राट को साइरियाकस और अन्य शहीदों के बारे में सब कुछ बताया। बदले में, सम्राट ने साइरियाकस और जेल में उसके साथ मौजूद सभी लोगों को मौत की सजा देने का आदेश दिया।

उसी कालकोठरी में जहाँ संत सिरियिकस को उनके दोस्तों के साथ रखा गया था, कुल इक्कीस ईसाई थे, जिनमें पुरुष और महिलाएँ दोनों शामिल थे। उन्हें शहर से बाहर ले जाकर, मूर्तिपूजकों ने सेंट सिरियिकस, स्मरागडस और लार्जियस के साथ उनका सिर कलम कर दिया। उसी रात, पादरी जॉन कुछ ईसाइयों के साथ उस स्थान पर आए; उन्होंने पवित्र शहीदों के शरीरों को लेकर उन्हें उसी जगह दफनाया जहाँ अन्य शहीदों के शरीर दफनाए गए थे।

उसी समय, डायोक्लेटियन की बेटी, धन्य राजकुमारी आर्टेमिसिया, जो उस समय रोम में थीं, को भी मसीह के नाम का इकरार करने के लिए यातना दी गई और मृत्युदंड दिया गया। उसे उसी दुष्ट उत्पीड़क, मैक्सिमियन के आदेश पर मृत्युदंड दिया गया। उस शापित व्यक्ति ने अपने ही रिश्तेदारों को भी नहीं बख्शा, क्योंकि आर्टेमिसिया उसकी पत्नी वैलेरिया की बहन थी, और डियोक्लेशियन के दत्तक पुत्र के रूप में, वह उसके लिए भी एक बहन थी।

संत सिरियिकस और उनके साथ कैद अन्य ईसाइयों की हत्या के बाद, उपर्युक्त कार्पासियस ने सम्राट से डायोक्लेटियन के स्नानागार के पास स्थित सिरियाकी लोगों का घर प्राप्त किया; यह घर डायोक्लेटियन द्वारा सिरियिकस को दिया गया था। इस घर में प्रवेश करने पर, कार्पासियस ने उसमें एक अत्यंत सुंदर झरना देखा, जिसे संत सिरियिकस ने बनवाया था और पोप मार्सेलस ने पवित्र किया था; इस झरने में कई मूर्तिपूजक, जो ईसाई धर्म में परिवर्तित हो गए थे, का बपतिस्मा हुआ था। ईसाइयों का मज़ाक उड़ाने और उनका अपमान करने के लिए, कार्पासियस ने उस घर को एक सार्वजनिक स्नानागार और व्यभिचार के अड्डे में बदल दिया, और वह स्वयं भी अक्सर वहाँ स्नान करता था—या यूँ कहें कि उसने स्वयं को अपवित्र किया—क्योंकि अपने दोस्तों के साथ वहाँ दावत करते समय, वह और उसके साथी घृणित कामुक पापों से स्वयं को अपवित्र करते थे।

एक अवसर पर, उसने अपने लिए वहाँ एक दावत तैयार करने का आदेश दिया और खाने, पीने, स्नान करने और व्यभिचार करने के लिए अपने उन्नीस दोस्तों के साथ वहाँ आया। और जब वे अपनी घृणित कृत्यों में लिप्त थे, तो वे सभी अचानक परमेश्वर की अदृश्य शक्ति से मारे जाकर गिर पड़े। सभी स्थानीय निवासी इस पर बहुत डर गए और उन्होंने उस घर को सील कर दिया, क्योंकि कोई भी उसमें प्रवेश करने की हिम्मत नहीं कर सका।

इस बीच, अधर्मी सम्राट मैक्सिमियन गैलेरियस रोम से पूर्व की ओर रवाना हुआ; उस समय शाही सिंहासन वर्ष 337 से महान कॉन्स्टेंटाइन के पास था (21 मई के अंतर्गत उनका जीवन देखें)। ठीक उसी समय, रोमन पुरोहित वर्ग, जो रात में इकट्ठा हुआ था, उस आँगन में गया जहाँ संत मार्सेलस को पशुओं की देखभाल के लिए नियुक्त किया गया था, और वहाँ से अपने महा-गड़रिये को बाहर ले आए।

रोमन सिंहासन पर जबरदस्ती कब्जा करने के बाद, मैक्सेंटियस ने अपने पूर्वजों की तरह ही ईसाइयों पर अत्याचार करना शुरू कर दिया।

उस समय, रोम में कुलीन सेनेटोरियल वंश की प्रिसिला और लूसिना नामक दो महिलाएँ रहती थीं। वे दोनों विधवाएँ और प्रभु यीशु मसीह की वफादार सेविकाएँ थीं, जिनकी वे बड़ी लगन से सेवा करती थीं। इन दोनों महिलाओं के पास काफी संपत्ति थी, जिसका उपयोग वे संतों की सभी ज़रूरतों में उनकी सहायता करने के लिए करती थीं।

उन्होंने अपनी संपत्तियों पर पवित्र शहीदों के शरीरों को दफनाने के लिए बहुत सुंदर समाधियाँ बनवाईं, क्योंकि उस समय अनगिनत ईसाइयों को मसीह के नाम का प्रचार करने के लिए मृत्युदंड दिया जा रहा था। प्रिस्का ने शहर से तीन स्टेडियम दूर, सालारियन मार्ग पर एक कब्र बनवाई, जबकि लुसिना ने सात स्टेडियम दूर, ओस्टियन मार्ग पर एक

कब्र बनवाई[4177] । रात के समय, गुप्त रूप से, उन्होंने शहीदों के शवों को इकट्ठा किया—जिन्हें विधर्मी कुत्तों, जंगली जानवरों और पक्षियों द्वारा खाए जाने के लिए फेंक देते थे—और उन्हें सम्मान के साथ उनकी कब्रों में दफनाया। और इस प्रकार, जब संत मार्सेलस को उनके पुरोहितों द्वारा उस आँगन से बाहर ले जाया गया जहाँ वे जानवरों को चारा खिला रहे थे, तो वे धन्य लुकिना के साथ उस स्थान पर चले गए जहाँ पवित्र शहीद सिरियाकस का, स्मरागडस और लार्जियस के साथ, सिर कलम किया गया था; उनके पवित्र अवशेषों को जमीन से खोदकर निकालने और उन्हें शुद्ध, सुगंधित लिनिन में लपेटने के बाद, उन्होंने उन्हें लुकिना के मकबरे में ले जाकर पत्थर के ताबूतों में सम्मानपूर्वक रख दिया।

उस समय, धन्य लुकिना ने अपनी कई जागीरों को रोम के चर्च को दान कर दिया; जहाँ तक रोम शहर के केंद्र में स्थित अपने सुंदर घर का सवाल है, उन्होंने उसे विश्वासियों को दान कर दिया ताकि वे इसे एक चर्च में बदल सकें। पोप ने निर्धारित धार्मिक अनुष्ठानों के अनुसार इस घर को पवित्र किया और वहाँ धर्मविधि का अनुष्ठान किया, ईश्वर को निर्मल बलिदान अर्पित करते हुए, दिन-रात उनकी स्तुति करते रहे। और इस प्रकार लुकिना का घर ईश्वर का घर और रोम में एक कैथेड्रल चर्च बन गया।

यह बात धर्मनिरपेक्ष सम्राट के ध्यान में आई। लुसिना पर क्रोधित होकर, उसने उसे एक बड़ी पापी के रूप में अपमानित करके शहर से निर्वासित करने का आदेश दिया, और आज्ञा दी कि उसकी सारी संपत्ति लूट ली जाए। उसने पोप मार्सेलस को भी अपनी अधर्मीता में शामिल होने के लिए मनाने का प्रयास किया, लेकिन इस प्रयास में वह पूरी तरह विफल रहा। यह जानकर कि उनके पूर्ववर्ती, मैक्सिमियिन ने संत मार्सेलस को पशुओं की देखभाल करने की सज़ा दी थी, उन्होंने संत के खिलाफ़ भी वही आदेश जारी किया। न केवल पोप बल्कि चर्च का भी अपमान करने की इच्छा से, उन्होंने लुकिना के सुंदर घर को—जो चर्च के लिए समर्पित किया गया था—एक पशु-शाला में बदल दिया और आदेश दिया कि वहाँ बहुत सारे जानवर रखे जाएँ। जहाँ तक पवित्र पोप मार्सेलस का प्रश्न है, उन्होंने यह आदेश दिया कि अपने शेष जीवन के लिए, अपनी मृत्यु तक, पहरे के अधीन, उन्हें उस इमारत में पशुओं की देखभाल करनी चाहिए।

इस प्रकार, मानव आत्माओं के इस सबसे पवित्र चरवाहे और मार्गदर्शक ने नौ महीने पशुओं की देखभाल करते हुए बिताए; ईश्वर के इस महान सेवक को, एक कैदी दास की तरह, अधर्मी मूर्तिपूजकों द्वारा तिरस्कार का पात्र बनाया गया। वह लगातार अपने काम में व्यस्त रहते थे, इसलिए पवित्र पोप मार्सेलस को बिल्कुल भी आराम या विश्राम नहीं मिलता था और उन्हें बुनियादी आवश्यकताओं की भारी कमी का सामना करना पड़ता था; उनके पास न तो पर्याप्त भोजन था और न ही कपड़े, क्योंकि पहरेदार किसी को भी उनके पास आने या उनके लिए कुछ लाने की अनुमति नहीं देते थे। उनके शरीर पर केवल एक ही कपड़ा था, जो एक काँटेदार बाल-कमीज़ थी। इस प्रकार के श्रम, कष्ट और बुनियादी आवश्यकताओं की कमी, साथ ही पशुओं की बदबू के कारण, संत मार्सेलस शरीर से बहुत कमजोर हो गए, बीमार पड़ गए और अपनी पीड़ित आत्मा को ईश्वर के हाथों में सौंप दिया[4178] । उसी पादरी जॉन ने, रात में उसके शरीर को उठाकर, उसे प्रिसिल्ला की कब्र तक ले गए और पादरियों को बुलाकर, वहाँ उनका सम्मानपूर्वक अंतिम संस्कार किया।

इस प्रकार रोम के परम पावन पोप मार्सेलस का जीवन समाप्त हुआ, जिन्होंने पहले अपने कई बच्चों को शहादत के पथ पर ईश्वर के पास भेजा था, और फिर, उनका अनुसरण करते हुए, स्वयं महान महापुजारी, हमारे प्रभु यीशु मसीह के सिंहासन के सामने पवित्र धर्मगुरुओं के साथ खड़े होने के लिए प्रस्थान किया, जिनका महिमा अब और अनंत काल तक होती रहे। आमेन।

पवित्र शहीदों सिरियाका, कैलेरिया और मैरी की स्मृति

7 जून को स्मरणोत्सव

[4177] ओस्टियन मार्ग रोम शहर के बंदरगाह ओस्टिया तक जाता था, जो टिबर नदी के मुहाने पर बना था। इस बंदरगाह के अवशेष आज भी देखे जा सकते हैं; तटीय रेत के जमाव के कारण, यह अब तट से एक घंटे की पैदल दूरी पर स्थित है।

[4178] पवित्र शहीद मार्सेलस, रोम के पोप, की मृत्यु वर्ष 310 में हुई। उन्होंने पाँच वर्ष और छह महीने (304 से 310 तक) रोमन चर्च का नेतृत्व किया। संत मार्सेलस के जीवन में उल्लेखित अन्य पुरुष और महिला शहीदों ने कुछ पहले, 305 और 306 में, कष्ट सहे।

मसीह की शहीदों, सरियिाका, कैलेरयिा (या वैलेरयिा) और मैरी, फलिस्तीन के केसरयिा शहर की मूल नविासी थीं[4179] । एक ईसाई द्वारा ईसाई धर्म में शक्षिति होने के बाद, उन्होंने घृणति मूर्तपिूजक बलदिानों का त्याग कर दयिा, मसीह की ओर मुड़ गईं और बपतस्मिा लयिा। फरि वे एक साधारण झोपड़ी में रहने लगे, मौन में जीवन यापन करते हुए ईश्वर से प्रार्थना करने लगे कि मूर्तपिूजा का मोह दूर हो जाए, मसीह का वशि्वास संसार भर में प्रकाशमान हो, और इस प्रकार मसीहयिों पर अत्याचार समाप्त हो जाए। जब वे इस प्रकार भक्ति और प्रार्थना में जीवन यापन कर रहे थे, तो मूर्तपिूजकों ने उस देश के शासक के सामने उनकी बदनामी की और उन्हें मसीह का त्याग करने तथा मूर्तयिों की पूजा करने के लिए मजबूर कयिा। लेकनि उन्होंने कसिी भी परस्थितिि में ऐसा करने से इनकार कर दयिा। इसलिए, उन्हें नर्दियतापूर्वक क्रूर यातनाएँ दी गईं, और उन यातनाओं के बीच उन्होंने अपनी आत्माएँ ईश्वर के हाथों में सौंप दीं।

पवत्रि शहीद संत मार्सेलनिस की स्मृति।

7 जून को स्मरण कयिा जाता है

परम पावन पोप कैउस[4180] के नधिन के बाद, पोप मार्सेलनिस का सहिासन पर आरोहण डायोक्लेटयिन और मैक्समियिन के शासनकाल में हुआ, यह ईसाइयों के सबसे कठोर उत्पीड़न का समय था, जब रोम में तीस दनिों के दौरान, दोनों लगिों के सत्रह हजार ईसाइयों को वभिन्नि प्रकार की यातनाएँ सहने के बाद मृत्युदंड दयिा गया। उस समय, पोप मार्सेलनिस को भी पकड़ लयिा गया और पूछताछ के लिए डयिोक्लेशयिन के सामने लाया गया। हालाँकि, क्रूर यातनाओं के डर से, उन्होंने एक मूर्तपिूजक वेदी पर धूप जलाई और वेस्टा और आइससि[4181] को बलदिान चढ़ाया। उन्हें पुरस्कृत करने की इच्छा से, सम्राट ने उन्हें कीमती वस्त्र पहनाए और उन्हें अपना मत्रि कहा।

इसके बाद, घर लौटने पर, मार्सेलनिस जोर-जोर से रोया और वलिाप करने लगा, ठीक वैसे ही जैसे प्रेरति पतरस ने मसीह का इनकार करते समय कयिा था (मत्ती 26:75)। मार्सेलनिस ने स्वयं को कोसना और फटकारना शुरू कर दयिा, क्योंकि यद्यपि उसने कई अन्य लोगों को वशि्वास में मजबूत कयिा था और उन्हें शहादत के लिए प्रेरति कयिा था, फरि भी वह स्वयं सबसे शर्मनाक तरीके से वशि्वास से भटक गया था। इस पर वचिार करते हुए, पोप ने अपने हृदय में अनुत्तरणीय दुख महसूस कयिा।

[4182]उस समय, कैम्पेनयिा के सनिुएसा नगर में एक प्रांतीय चर्च परषिद[4183] चल रही थी, जसिमें कुल एक सौ अस्सी बशिप और पुरोहति शामलि थे। मार्सेलनिस भी इस परषिद में पहुँचे। बालों वाली कमीज़ पहनकर, सरि पर राख छड़िककर और हृदय पश्चाताप से भरकर, वह पतिृगण के सामने परषिद कक्ष में प्रवेश कयिा और एक अभयिुक्त की तरह उनके सामने खड़ा होकर, सभी के सामने खुलकर अपना पाप स्वीकार कयिा। कड़वे आँसू बहाते हुए, उसने सम्माननीय पतिृगण से न्याय करने का आग्रह कयिा। हालाँकि, पतिृगण ने कहा:

[4179] फ़लिस्तीन में केसरयिा भूमध्य सागर के पूर्वी तट पर स्थति था। प्राचीन काल में, केसरयिा रोमन प्रशासकों का केंद्र और देश के सामाजकि एवं राजनीतकि जीवन का केंद्र था। – ईसाई चर्च के इतहिास में, फलिस्तीन का केसरयिा इस स्थान के लिए उल्लेखनीय है जहाँ, पहली बार, प्रेरति पतरस ने शतपति कोर्नेलयिुस को बपतस्मिा देकर अन्यजातयिों को मसीह की कलीसयिा में प्रवेश दयिा (प्रेरतिों के काम 10)। यहीं पर प्रेरति पौलुस का अंतमि मुकदमा भी हुआ था (प्रेरतिों के काम 25-27)। फलिस्तीन में एक और कैसरयिा था, जसिे वर्तमान वाले से अलग करने के लिए कैसरयिा फलिपिी के नाम से जाना जाता था। यह यॉर्डन नदी के स्रोत पर स्थति था।

[4180] सीज़ेरयिस ने 283 से 296 तक रोमन चर्च का शासन कयिा।

[4181] वेस्टा, या हेस्टयिा, को प्राचीन रोमनों और ग्रीकों द्वारा परविार के चूल्हे और बलदिान की अग्नि की संरक्षक देवी माना जाता था। कसिी भी महत्वपूर्ण कार्य को शुरू करने से पहले आमतौर पर उसे बलदिान दयिा जाता था, इसीलिए pagans ने कहावत बनाई: 'वेस्टा से शुरू करो'। रोम में, पैलाटनि पहाड़ी की ढलान पर एक बगीचे में देवी वेस्टा के सम्मान में एक मंदरि बनाया गया था। इस मंदरि में एक वेदी थी जसि पर देवी की पुजारनिों - वेस्टल वर्जनि - द्वारा नरिंतर आग जलाए रखी जाती थी। देवी वेस्टा के सम्मान में मुख्य त्योहार रोम में जून के महीने में मनाया जाता था। – आइससि – प्रजनन क्षमता की देवी। आइससि मूल रूप से एक प्राचीन मस्रि की देवी थीं, लेकनि ईस्वी की शुरुआती शताब्दयिों में उनका पंथ ग्रीस और इटली में फैल गया, जहाँ उनके सम्मान में कई मंदरि बनाए गए।

[4182] कैम्पेनयिा प्राचीन इटली का एक क्षेत्र था, जसिकी सीमा पश्चमि में लैटयिम, उत्तर में सैम्नयिम, पूर्व में लुकेनयिा और दक्षणि में टायर्रेनीयन सागर से लगती थी। इसी इतालवी क्षेत्र में सबसे पहले (8वीं शताब्दी से) घंटयिाँ ढाली गईं, यही कारण है कि चर्च के नयिमों में उन्हें 'कैम्पेनास' कहा जाता है।

[4183] यह परषिद लगभग 300 ईस्वी के आसपास हुई थी।

– अपने ही होठों से स्वयं को दोषी ठहराओ: पाप तुम्हारे होठों से आया है; तो दोषारोपण भी तुम्हारे ही होठों से हो। हम जानते हैं कि संत पतरस ने भी भय के कारण मसीह का इनकार किया था, लेकिन अपने पाप पर कड़वे पश्चाताप के बाद, उसने एक बार फिर अपने प्रभु की कृपा प्राप्त की।

तब मार्सेलिनिस ने अपने ऊपर निम्नलिखित दण्ड-निर्णय सुनाया:

– मैं स्वीकार करता हूँ कि मुझे उस पवित्र पद से वंचित कर दिया गया है, जिसके मैं अयोग्य हूँ। इसके लिए, मेरी मृत्यु के बाद, मेरे शरीर को उचित दफन न दिया जाए, बल्कि इसे कुत्तों के खाने के लिए फेंक दिया जाए; और जो कोई भी इसे दफनाने की हिम्मत करेगा, वह शापित हो।

तब परिषद की कार्यवाही समाप्त होने पर रोम लौटकर, मार्सेलिनिस ने डायोक्लेटियन से प्राप्त कीमती वस्त्र लेकर उसके पास गया और उन वस्त्रों को उसके सामने फेंककर, उसने उसकी निंदा की, उसके झूठे देवताओं की निंदा की, और खुद को एक घोर पापी कहा, और कड़वे आँसुओं से रोया। क्रोध से भरकर, सम्राट ने उसे यातनाएँ दीं और फिर मौत की सज़ा सुनाई। और इस प्रकार धन्य मार्सेलिनिस को तीन ईसाइयों—क्लॉडियस, साइरनस और एंटोनिस—के साथ शहर से बाहर सिर कलम किए जाने के लिए ले जाया गया। उनके पीछे पादरी मार्सेलस आए, जो बाद में पोप के रूप में उनका उत्तराधिकारी बने। उसे बुलाकर, मसीह के शहीद मार्सेलिनिस ने उसे विश्वास में दृढ़ रहने के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने अपने शरीर के बारे में यह भी कहा कि कोई भी उसे जमीन में दफनाने की हिम्मत न करे, बल्कि उसे कुत्तों को नोचने के लिए फेंक दिया जाए:

उन्होंने कहा, 'मैं मानव दफन का अयोग्य हूँ; मैं पृथ्वी में समाहित होने का अयोग्य हूँ, क्योंकि मैंने अपने प्रभु, स्वर्ग और पृथ्वी के सृष्टिकर्ता का परित्याग किया है!'

जब वे फाँसी के स्थान पर पहुँचे, तो पवित्र शहीद मार्सेलिनिस ने उन प्रभु मसीह से भक्तिपूर्वक प्रार्थना की, जो पश्चातापी पापियों को स्वीकार करते हैं, और स्वेच्छा से अपना गला काटने के लिए प्रस्तुत कर दिया, और मसीह के लिए मर गया, जिसे उसने पहले यातना के डर से नकार दिया था[4184] । उनके साथ, पहले उल्लेख किए गए तीन पुरुष—क्लोडियस, सिरिनि और एंटोनिनिस—का भी सिर कलम कर दिया गया, और उनके शवों को सड़क के किनारे बिना दफनाए छोड़ दिया गया। हालाँकि, कुछ दिनों के बाद, विश्वासियों ने रात के समय क्लोडियस, सिरिनि और एंटोनिनिस के शवों को उठाकर दफना दिया; लेकिन किसी ने मार्सेलिनिस के शव को उठाने और दफनाने की हिम्मत नहीं की, क्योंकि उसने शपथ ली थी कि उसके शव को दफनाने न दिया जाए; और मसीह के शहीद का सम्मानित शव सड़कों के किनारे छत्तीस दिनों तक पड़ा रहा। इस समय के बीत जाने के बाद, संत पतरस प्रेरित नए नियुक्त पोप मार्सेलस के सामने प्रकट हुए और कहा:

'तुमने अभी तक मार्सेलिनिस के शरीर को क्यों नहीं दफनाया?'

मार्सेलस ने उत्तर दिया, 'मुझे उसके शपथ का भय है, क्योंकि उसने अपनी देह को दफ़नाने न देने की शपथ ली थी।'

प्रेरित ने कहा, 'क्या तुम्हें याद नहीं कि लिखा है: "*जो अपना आप नीचा करता है, वह ऊँचा किया जाएगा*" (लूका 18:14)? तो जाओ, और उसका शरीर सम्मान के साथ दफ़ना दो।'

तब पोप मार्सेलिनिस ने शहीद के पवित्र अवशेषों को लिया और उन्हें प्रिस्किला की कब्र में दफना दिया – जो सालारियन मार्ग के पास है।

इस प्रकार पवित्र शहीद पोप मार्सेलिनिस का निधन हुआ, जिन्होंने उन अनेक लोगों के लिए पश्चाताप का एक आदर्श छोड़ा था जो उस समय इसी प्रकार के पाप में गिर गए थे (क्योंकि उन दिनों कई लोग यातना के डर से मसीह से मुंह मोड़ गए थे)। हम, तथापि, परमेश्वर की अनुपम दया का सदा और सर्वदा महिमामंडन करते हैं। आमीन।

21 जून

8 जून (पुराना संस्करण)

[4184] संत पोप मार्सेलिनिस की मृत्यु लगभग 300 ईस्वी में हुई।

हमारे पवित्र पिता एफ्रेम, एंटीयोकिया के पैट्रआर्क का जीवन

8 जून को स्मरण किया जाता है

संत एफ्रेम मूल रूप से पूर्व में सम्राटों अनास्तासियस[4185] और जस्टिन[4186] के शासनकाल के दौरान एक सैन्य कमांडर थे। बाद में उन्हें अंतीयक का पैट्रआर्क[4187] नियुक्त किया गया, एक धार्मिक व्यक्ति के रूप में जिन्होंने एक सदाचारी और ईश्वर-प्रसन्न जीवन जिया, गरीबों के प्रति अत्यंत दयालु और संकट तथा दुर्भाग्य में पड़े सभी लोगों के प्रति सहानुभूतिपूर्ण थे। उनके पैट्रआर्क के रूप में चुनाव ईश्वर की इच्छा से और उस एक पवित्र बिशप को हुए प्रकटवचन के माध्यम से हुआ, जो उस समय जीवित थे जब अंत्योखिया नगर को उसके विनाश के बाद पुनर्निर्मित किया जा रहा था।

उस समय, अंतीयक में विभिन्न विधर्मों और विधर्मियों—नेस्टोरियनों[4188] , यूटकियिनों[4189] और अन्य—के प्रसार के कारण, मसीह की दिव्यता के विरुद्ध अपमानजनक शब्द बोले गए और परमेश्वर की अति पवित्र माता के सम्मान को कलंकित किया गया; इसलिए, परमेश्वर का क्रोध अंतीयक नगर पर भड़का। मई के इक्कीसवे दिन, शुक्रवार को दोपहर के समय, यहाँ एक भयंकर भूकंप शुरू हुआ; उसी समय, आग ने पूरे शहर को अपनी चपेट में ले लिया। भूकंप ने पत्थर की इमारतों और शहर की दीवारों को नष्ट कर दिया; जबकि आग ने बाकी सब कुछ भस्म कर दिया; यह सभी को मानव जाति के पापों के लिए ईश्वर के महान क्रोध को दिखाने के लिए था। अंतियोक सोदोम और गमोरा जैसी हो गई थी[4190] , क्योंकि शहर का अधिकांश भाग नष्ट हो गया था, और उसके साथ ही अनगनित नागरिक मारे गए; उनमें से कुछ उन इमारतों के नीचे दबकर मर गए जो उन पर गिर गईं, जबकि अन्य आग में भस्म हो गए; अन्य लोगों के साथ, अंतीयोकिया के पैट्रआर्क, यूफ्रेसियस, एक गिरते हुए स्तंभ के नीचे दबकर मर गए[4191] । फिर, जो लोग जीवित बचे थे, उनके बीच रोना और तीखी विलाप शुरू हो गया; जबकि सभी पड़ोसी शहरों और क्षेत्रों के निवासी जो कुछ भी हुआ था, उसे लेकर बड़े भय और आतंक से ग्रस्त हो गए। यह दैवी क्रोध, जो अंफियालोपोलिस पर भयानक रूप से टूटा था, शहर से बहुत दूर रहे कुछ पवित्र पिताओं द्वारा आध्यात्मिक नेत्रों से पूर्व में ही देखा गया था (जैसे, उदाहरण के लिए, पवित्र थियोडोसियस महान, जो फिलिस्तीन में थे, और पवित्र ज़ोसिमास, जो फिलिस्तीन के सेज़ारिया में थे)। इसलिए, आँसुओं से भरी आँखों के साथ, उन्होंने ईश्वर से विनती करना शुरू कर दिया कि वह उस शहर को पूरी तरह से नष्ट न करें, जिस पर उनका न्यायसंगत क्रोध आया था।

इस भयानक भूकंप और विनाशकारी आग के बाद, सम्राट जस्टिन ने पूर्वी सेनाओं के कमांडर, धन्य एफ्रेम को, नए ढांचे के साथ शहर का पुनर्निर्माण करने के उद्देश्य से एंटिओक भेजा। एफ्रेम ने उन्हें सौंपा गया कार्य बड़ी लगन से पूरा किया।

वहाँ काम करने वालों में एक बिशप थे, जो उस समय किसी के लिए अज्ञात थे, जिन्होंने अपना बिशप का पद और उपाधि त्यागकर, एक भिखारी का भेष धारण करके, अन्य मजदूरों के साथ निर्माण कार्य में काम किया।

[4185] अनास्तासियस प्रथम ने 491 से 518 तक शासन किया।

[4186] जस्टिन प्रथम ने 518 से 527 तक शासन किया।

[4187] एफ्रेम ने 527 से 545 तक पैट्रआर्क के रूप में कार्य किया।

[4188] नेस्टोरियनवाद की स्थापना कॉन्स्टेंटिनोपल के बिशप नेस्टोरियस (जिन्होंने 428 से 431 तक बिशप के रूप में कार्य किया) ने की थी, जिन्होंने यह सिखाया कि यीशु मसीह सच्चे ईश्वर नहीं, बल्कि केवल एक मनुष्य, जोसेफ और मरियम के पुत्र हैं, जिन्हें उनके पवित्र जीवन के कारण ईश्वर की ओर से एक विशेष अनुग्रह प्रदान किया गया था और वे हमें अपनी स्वयं की उदाहरणीय योग्यता से नहीं, बल्कि केवल अपने उपदेश और अपने जीवन के उदाहरण के माध्यम से बचाते हैं। नेस्टोरियनवाद की निंदा तृतीय सार्वभौमिक परिषद में की गई थी, जो एफिसुस (431 में) में आयोजित की गई थी। परिषद की निंदा के बावजूद, नेस्टोरियन विधर्म फारस, भारत और चीन में 7वीं शताब्दी तक बना रहा।

[4189] यूतिखीवाद की स्थापना कॉन्स्टेंटिनोपल के एक आर्चिमांड्राइट यूटकीस ने की थी, जिसने यह सिखाया कि यीशु मसीह में केवल एक ही स्वभाव था - दिव्य - जबकि ऑर्थोडॉक्स चर्च ने हमेशा से यीशु मसीह में दो स्वभावों को स्वीकार किया है और करती रहेगी, जो एकसार और अविभाज्य हैं: दैवी और मानवीय; यूटकियिनों को मोनोफिज़िट्स (या 'एक स्वभाव वाले', ग्रीक μονος - 'एक' और φυσις - 'स्वभाव' से) के रूप में भी जाना जाता था। इस विधर्म की निंदा 451 में काल्सीडॉन में आयोजित चौथे सार्वभौमिक परिषद में की गई थी, लेकिन यह संत एफ्रेम (6ठी सदी) के समय और उससे भी बहुत बाद तक बनी रही।

[4190] सदोम और अमोरा जॉर्डन घाटी में स्थित फ़िलिस्तीनी शहर थे और वे अपनी दुष्टता के लिए जाने जाते थे, जिसके कारण उन्हें परमेश्वर द्वारा नष्ट कर दिया गया (उत्पत्ति 19:1-28 देखें)।

[4191] यूफ्रेशियस ने 523 से 527 तक पैट्रआर्क के रूप में कार्य किया।

एक दिन, कमांडर एफ्रेम को इस बिशप के बारे में निम्नलिखित प्रकटवाणी हुई। अपने श्रम से थके हुए, बिशप जमीन पर सोने के लिए लेट गए; तब उनके ऊपर स्वर्ग तक पहुँचता हुआ एक अग्नि का स्तंभ देखा गया। धन्य , एफ्रेम ने यह एक बार नहीं, दो बार नहीं, बल्कि कई बार देखा, और जो उन्होंने देखा उससे वे बहुत डरे हुए थे, क्योंकि वास्तव में यह चमत्कार भयानक और भय से भरपूर था।

इस बीच, राज्यपाल को यह नहीं पता था कि यह मजदूर एक बिशप था, क्योंकि उसके बाहरी रूप से यह कोई संकेत नहीं मिलता था कि वह कौन था। वह एक साधारण भिखारी जैसा दिखता था: उसका सिर हमेशा धूल से ढका रहता था, उसके कपड़े कीचड़ से सने फटे-पुराने चिथड़े थे, और उसका शरीर कठोर परिश्रम और अत्यधिक आत्म-त्याग से दुबला-पतला था। उस मजदूर को अपने पास बुलाकर, एफ्राइम ने उसे निजी तौर पर पूछताछ करना शुरू किया, यह पूछते हुए कि वह कौन था, कहाँ से आया था, और उसका नाम क्या था। उसने जवाब दिया:

'मैं इस शहर के सबसे गरीब निवासियों में से एक हूँ; चूँकि मेरे पास अपना भरण-पोषण करने के साधन नहीं हैं, मैं मजदूरी के लिए काम करता हूँ, और ईश्वर मेरा भरण-पोषण करता है।'

तब एफ्राइम, परमेश्वर की प्रेरणा से, उससे कहने लगा:

'मेरी बात मानो, जब तक तुम मुझे पूरा सच नहीं बता दोगे, मैं तुम्हें जाने नहीं दूँगा।'

अपनी पहचान छिपाने का कोई और साधन न होने पर, बिशप ने कमांडर से कहा:

'ईश्वर के सामने मुझे अपना वचन दो कि जब तक मैं जीवित हूँ, तुम मेरे बारे में किसी को कुछ नहीं बताओगे।'

एफ्राइम ने उससे गंभीरतापूर्वक यह वादा किया। फिर मजदूर ने कहा:

मैं एक बिशप था, लेकिन मैंने ईश्वर के लिए अपना बिशप पद त्याग दिया और यहाँ अजनबियों के बीच रहने आया; यहाँ मेहनत करके, मैं अपने काम से अपनी मामूली जीविका कमाता हूँ; लेकिन मैं आपको अपना नाम या वह शहर नहीं बताऊँगा जहाँ मैं बिशप था। आपको भी, जो दया आप पहले से ही दिखा रहे हैं, उसमें एक और दया का कार्य जोड़ना चाहिए। आने वाले दिनों में, प्रभु आपको इस अंतीयक के चर्च के बिशप के पद पर नियुक्त करेंगे – *'प्रभु और परमेश्वर की कलीसिया का चरवाहा होने के लिए, जिसे उन्होंने अपने ही लहू से अपने लिए मोल लिया'* (प्रेरितों के काम 20:28) – हमारे सच्चे परमेश्वर। इसलिए, जैसा कि मैंने आपसे कहा है, उदार दान-पुण्य करें और विधर्मियों का विरोध करते हुए, ऑर्थोडॉक्स धर्म के लिए दृढ़ रहें। ऐसे कर्मों से आप ईश्वर को प्रसन्न करेंगे।

यह कहकर, अज्ञात बिशप एफ्रेम से विदा हो गए।

इस बीच, धन्य एफ्रेम, यह सुनकर बहुत चकित हो गए और अपने आप से कहने लगे: 'परमेश्वर के कितने ही गुप्त सेवक हैं, जिन्हें केवल वही जानता है!'

जहाँ तक उस बिशप का सवाल है, वह अब और मजदूरों के बीच नहीं रहा, बल्कि किसी अन्य स्थान पर चला गया; वह लोगों द्वारा पहचाना जाना नहीं चाहता था, क्योंकि वह व्यर्थ मानवीय महिमा से दूर रहता था। उनकी भविष्यवाणी जल्द ही सच हो गई, क्योंकि कुछ दिन बीत जाने के बाद, धन्य एफ्रेम को ईश्वर की व्यवस्था द्वारा, महानगर एंटिओक का पैट्रिआर्क नियुक्त किया गया।

परम पावन पैट्रिआर्क एफ्रेम के धर्मपरायणता और साथ ही पवित्रता के प्रति उत्साह की सीमा निम्नलिखित से स्पष्ट होती है।

एक अवसर पर, उन्हें हिएरापोलिस के आसपास रहने वाले एक स्तंभवासी के बारे में सूचित किया गया[4192] – विशेष रूप से एफ्रेम को बताया गया कि यह स्तंभवासी सेवेरियन विधर्मीयों के साथ संबंध रख रहा था[4193] । तब ईश्वर के महान बिशप स्वयं उसके पास गए और आँसू भरी विनती करते हुए उससे निवेदन किया कि वह सेवेरियन की विधर्म को त्यागकर पवित्र, कैथोलिक और प्रेरितिक चर्च की संप्रदाय में शामिल हो जाए। स्तंभवासी ने पैट्रिआर्क से उत्तर दिया:

'मैं कभी भी आपकी चर्च में शामिल नहीं होऊँगा!'

[4192] हिएरापोलिस एशिया माइनर में फ्राइजिया क्षेत्र में स्थित था।

[4193] सेवेरियन्स ऐसे विधर्मी थे जिन्होंने मोनोफिज़िट विधर्म के एक संशोधित रूप को अपनाया था। हालांकि सेवेरियनों ने, मोनोफिसाइट विधर्मीयों की तरह, यीशु मसीह में केवल एक स्वभाव—दिव्य—को स्वीकार किया, फिर भी उन्होंने इसमें दिव्य और मानवीय गुणों के बीच एक भेद को स्वीकार किया; इस प्रकार, उन्होंने दावा किया कि पुनरुत्थान से पहले मसीह का शरीर, हमारे ही जैसे, नश्वर था। इस विधर्म का नाम अंकोई के पैट्रिआर्क सेवेरस (512–518) के नाम पर पड़ा था।

'तो फरि,' पैट्रआिर्क ने पूछा, 'आप कैसे चाहते हैं कि यह प्रमाणति हो कि हमारे प्रभु यीशु मसीह की कृपा से, प्रेरति कैथोलकि चर्च अवशि्वासयिों की त्रुटयिों से मुक्त है?'

पैट्रआिर्क को डराने की कोशशि करते हुए, स्तंभ-नविासी ने उत्तर दयिा:

'आदेश कीजिए, परम पावन, कि एक बड़ी आग जलाई जाए, और हम दोनों उसमें कदम रखें: जो भी आग से सही-सलामत और बनिा कसिी चोट के बाहर नकिलेगा, उसका धर्म ही सच्चा होगा; और हम सब उसी का अनुसरण करेंगे!'

पैट्रआिर्क ने स्तंभवासी को उत्तर दयिा:

'तुम्हें मुझसे एक पति की तरह सुनना चाहिए और अपनी सामर्थ्य से परे कुछ भी प्रयास नहीं करना चाहिए। लेकनि यदि तुम मेरी तुच्छता की सामर्थ्य से परे की चीज़ों की परीक्षा करना चाहते हो, तो मैं, परमेश्वर के सर्वशक्तमिान पुत्र की दया पर भरोसा करते हुए, वशि्वास करता हूँ कि तुम्हारी आत्मा के उद्धार के लिए वह यह कर दखिाएगा।'

इसके बाद, पैट्रआिर्क ने उपस्थति लोगों से कहा:

'प्रभु धन्य हों! लकड़ी यहाँ लाओ।'

जब बहुत सारी लकड़ियाँ लाई गईं, तो पैट्रआिर्क ने स्तंभ के पास एक वशिाल अलाव जलाने का आदेश दयिा, और फरि स्तंभ पर खड़े व्यक्ति से कहा:

'स्तंभ से उतर आओ, और जैसा तुमने कहा है, हम दोनों आग में चलें।'

इस बीच, स्तंभ-बंधक पुरुष पैट्रआिर्क के गहरे वशि्वास और ईश्वर में उनके दृढ़ भरोसे को देखकर चकति हो गया, और स्तंभ से नीचे नहीं उतरना चाहता था।

तब पुरोहति ने उससे कहा:

'क्या यह नर्णिय स्वयं आपने ही नहीं लयिा था? क्या इसी तरह से आपने ईश्वर की परीक्षा नहीं करना चाहा था? तो फरि, अब आप आग में क्यों नहीं जाना चाहते?'

तब पुरोहति ने अपना ओमोफोरीयम उतारकर चति के पास खड़े होकर स्वर्ग की ओर अपनी दृष्टि उठाई और ईश्वर से प्रार्थना की, कहते हुए: 'हे प्रभु यीशु मसीह, हमारे ईश्वर, जनि्होंने हमारे उद्धार के लिए सत्य में अवतार लेने और हमारे परम पवत्रि माता, ईश्वर की माता और सदा कुंवारी मरयिम से जन्म लेने की कृपा की!' अब हमें सच्चा वशि्वास दखिाओ।'

अपनी प्रार्थना समाप्त करने के बाद, पैट्रआिर्क ने अपना ओमोफोरीयॉन आग की लपटों के बीच फेंक दयिा।

हालाँकि आग लगभग तीन घंटे से जल रही थी और लकड़ी ज़ोरों से जल रही थी, फरि भी पादरी ने अपना ओमोफोरीयोन आग से नकिाल लयिा, जो पूरी तरह से सुरक्षति और बलि्कुल अछूता था।

– जो कुछ भी हुआ था, उससे चकति होकर, स्टाइलाइट ने महसूस कयिा कि सच्चा धर्म पैट्रआिर्क का ही था; इसलिए उसने अपनी दुष्टता का त्याग कर दयिा, सेवरस को शाप दयिा, पवत्रि कैथोलकि और प्रेरतिकि चर्च की ओर मुड़ गया, और परम पावन पैट्रआिर्क एफ्रेम के हाथों से मसीह के शरीर और रक्त के दैवीय रहस्यों का पवत्रि भोज ग्रहण कयिा, और ईश्वर की महमिा की।

ईश्वर के इस महान सेवक ने कई अन्य चमत्कार भी कए।

अपने झुंड का यथोचति रूप से चरवाहा करने के बाद, वे परमेश्वर के पास प्रस्थान कर गए[4194] , जनिकी उन्होंने अपने सांसारकि जीवन के दनिों में वशि्वास और सत्य के साथ सेवा की। वे अपने प्रभु की आनंद में प्रवेश कर गए हैं, और जसिे उन्होंने पृथ्वी पर भक्तपिूर्वक महमिामय कयिा, उसे अब वे स्वर्ग में सभी संतों के साथ महमिामय करते हैं। आमीन।

[4194] संत एफ्रेम का 545 में नधिन हो गया। संत समियिन चमत्कारकर्ता को उनके नधिन की सूचना स्वर्ग से मलिी थी; उनके नधिन के क्षण में, उन्होंने अपने प्राणों को स्वर्गदूतों द्वारा परमेश्वर के पास ले जाते हुए देखा (इस बारे में और ववरिण संत समियिन चमत्कारकर्ता के जीवन में, 24 मई के अंतर्गत पाया जा सकता है)। पैट्रआिर्क फोतउिस (जनि्होंने 857 से 867 तक; और फरि 877 से 886 तक कॉन्स्टेंटनिोपल के चर्च का नेतृत्व कयिा) संत एफ्रेम के बारे में गवाही देते हैं कि, यद्यपि वह मूल और भाषा से सीरयिाई थे, वह ग्रीक भाषा में भी नपिुण थे। संत एफ्रेम की लगभग सभी रचनाएँ मोनोफज़िट्सि के वरिुद्ध, यीशु मसीह के व्यक्तित्व और उनमें दो स्वभावों – दैवीय और मानवीय – के मलिन से संबंधति ऑर्थोडॉक्स सद्धिांत के बचाव में रची गई थीं।

हमारे पूजनीय पति जोसमि की स्मृति

8 जून को स्मरणोत्सव

आदरणीय जोसमि फोएनीशयि के मूल नविासी थे और उनका जन्म तटीय फोएनीशयिाई गाँव सन्डि में हुआ था, जो टायर शहर से बीस स्टेडयिम दूर स्थति है। भक्षिु जीवन के प्रत अपनी भक्त के द्वारा, जोसमि ने अपनी संयम, उपवास और अन्य गुणों के कारण, जो उनमें प्रकट हुए, ईश्वर से इतनी महान कृपा प्राप्त की क वह न केवल अंतरात्मा की कसी भी अशांत से मुक्त था, बल्क वह अपनी आध्यात्मकि आँखों से दूरस्थ भवष्यि को भी वर्तमान की तरह स्पष्ट रूप से देखता था। उनका मठ सन्डी गाँव के पास स्थति था, जहाँ उनका जन्म हुआ था।

एक अवसर पर, वह फलिस्तीन के सेज़ारयि में था, जहाँ उस समय बशिप आदरणीय जॉन थे, जन्हिें होज़ेवटि के नाम से जाना जाता था, जन्हिें यरूशलेम के पास, जेरको जाने वाले रास्ते पर स्थति होज़ेवटि मठ से, अपनी इच्छा के वरिुद्ध, अपने सदाचारी जीवन के कारण बशिप पद पर बुलाया गया था[4195] । उसी केसरयि नगर में एक कुलीन पैट्रसियिन रहते थे, जनिका नाम आर्केसलिॉस था[4196] – एक धार्मकि व्यक्त, जो सभी सद्गुणों से सुशोभति थे। आदरणीय जोसमिस उनके साथ ठहरे हुए थे, जन्हिें सम्मान और आनंद के साथ प्राप्त कयि गया था। ठीक उसी क्षण जब एक भूकंप से अंफ़योक़यि तबाह हो रही थी[4197] , वृद्ध अचानक वलिाप करने, कड़वे आँसू बहाने और अपने हृदय की गहराई से आहें भरने लगे; और उन्होंने बहुत सारे आँसू बहाए। तब, एक धूपदानी मंगाकर उसमें शुद्ध लोबान और जलते हुए कोयले डालकर उन्होंने उपस्थति सभी लोगों पर धूप दी; इसके बाद, उन्होंने जमीन पर क्रूस के आकार में लोटकर गहरी भक्त के साथ ईश्वर से प्रार्थना करना शुरू कर दयि। तब आर्केसलिॉस ने उनसे पूछा:

'तुम इतने गहरे दुख में क्यों हो?'

उसने ऊँचे स्वर में उत्तर दयि:

'अंफ़योक़ की भयानक तबाही और पतन की आवाज़ मेरे कानों में पड़ी है; वह आवाज़ अभी भी मेरे कानों में गूँज रही है।'

अर्केसलिॉस और उपस्थति अन्य लोग, आश्चर्य और भय से भरकर, उस सटीक घड़ी को नोट कर लयि जब पूजनीय व्यक्त ने बात की थी; और जल्द ही उन्हें स्पष्ट रूप से एहसास हो गया क जो कुछ भी वरष्ठि ने कहा था वह सच था, क्योंक ठीक उसी क्षण अंफ़यिालोपोलसि पर कब्ज़ा हो गया जब वरष्ठि ने आँसुओं से भरी आँखों के साथ प्रार्थना में मस्तक झुकाया और उस पतन की भवष्यिवाणी की थी। उस पूज्य ने और भी कई चमत्कार कएि; आइए हम यहाँ उनमें से कुछ का उल्लेख करें।

संयोग से, उपर्युक्त आर्केसलिॉस एक बार सधिा में पूज्यनीय के मठ में आए। यह मठ फलिस्तीन के सेज़रयि से पाँच सौ स्टेडयिम दूर स्थति था। उस समय, आर्केसलिॉस की पत्नी ने लापरवाही से अपनी ही आँख सुई से नकिाल ली थी और वह बहुत कष्ट झेल रही थी। जब बशिप, सेंट जॉन द होसेवाइट को इस बात की जानकारी मलिी, तो वह घाव की जाँच करने के लएि उसके पास दौड़े और देखा क उसकी पलकें झड़ गई थीं और उसकी आँख अपनी जगह से बाहर नकिल आई थी। तब उन्होंने उपस्थति एक चकित्सिक को आदेश दयि क वह एक स्पंज ले, उखड़ी हुई आँख को वापस उसकी जगह पर रखे, और फरि स्पंज को एक रूमाल से बाँध दे।

जब यह सब हो रहा था, एक संदेशवाहक तेज़ी से अर्केसलिस के पास यह बताने के लएि रवाना हुआ क उसके घर में क्या हुआ था। उस समय अर्केसलिस सडियि के मठ में थे, और परम पूजनीय ज़ोसमि से बातचीत कर रहे थे। अपने घर में हुई घटना के बारे में जानकर, अर्केसलिस जोर-जोर से रोने लगे और अपने बाल नोचने लगे। आदरणीय जोसमि ने उनसे रोने का कारण पूछा और उत्तर मलिने पर, वे अपनी भीतरी कोठरी में चले गए, जहाँ वे हमेशा की तरह प्रार्थना करते थे। कुछ ही देर बाद, वे एक प्रसन्न और आनंदति मुखमंडल के साथ आर्केसलिस के पास आए और कहा: 'खुशी-खुशी घर जाओ, क्योंक होज़ेवटि ने, ईश्वर की कृपा से, तुम्हारी पत्नी को ठीक कर दयि है; अब उसकी दोनों आँखें पूरी तरह से

[4195] यरूशलेम नदी के पश्चमिी तट पर, खजूर के पेड़ों से लदे बगीचों के बीच, एक बहुत उपजाऊ घाटी में स्थति था, और यही कारण है क इसे 'खजूरों का शहर' कहा जाता था। आज, प्राचीन यरूशलेम के स्थान पर रचिा नामक एक गरीब छोटा सा गाँव बसा है।

[4196] रोम में, पैट्रशियिन उच्चतम सामाजकि वर्ग थे, जो हमारे कुलीनों के समान थे।

[4197] यह 526 में अंतीयक में आए भूकंप का संदर्भ है।

स्वस्थ हैं; बीमारी से उसे कोई नुकसान नहीं हुआ है, क्योंकि होज़ेवटि द्वारा उसे चमत्कारिक रूप से ठीक कर दिया गया है।'

इन दोनों धर्मात्मा पुरुषों ने एक घंटे के भीतर ही ये दो चमत्कार कर दिखाए। संत जॉन बिशप ने उस महिला की उखड़ी हुई आँख को ठीक कर दिया, जबकि पूजनीय जोसिमा ने अपनी आध्यात्मिक दृष्टि से दूर से ही उस उपचार को देख लिया और आर्केसिलिस को इसकी सूचना दी।

एक दिन, पूज्य जोसिमा केसरिया के लिए रवाना हुए; वे अपने साथ एक गधा ले गए, जिस पर उन्होंने अपना सामान लाद रखा था। रास्ते में, उनकी मुलाकात एक शेर से हुई; गधे को पकड़कर, वह जानवर उसे लेकर रेगिस्तान में भाग गया। संत जोसिमा उस जानवर के पीछे-पीछे चले।

जब शेर ने गधे को खा लिया और तृप्त हो गया, तो वरिष्ठ उसके पास गए और मुस्कुराते हुए कहा:

'सुनो, मेरे मित्र! मेरे लिए चलना बहुत मुश्किल है, क्योंकि मैं अपनी वृद्धावस्था के कारण बहुत थका हुआ हूँ; मैं अपने बूढ़े कंधों पर वह बोझ नहीं उठा सकता जो मेरे गधे पर था; इसलिए, यदि तुम ज़ोसिमा से छुटकारा पाना चाहते हो, तो इस बोझ को खुद उठाओ, भले ही यह तुम्हारे स्वभाव के विपरीत हो; बाद में, तुम अपने स्वभाव के अनुरूप फिर से क्रूर और जंगली हो सकते हो।

तब सिंह, मानो अपनी स्वाभाविक क्रूरता भूल गया हो, संत को प्यार से सहलाने लगा और भेड़ के बच्चे की तरह कोमल हो गया, और अपने स्नेह से ही आज्ञाकारिता के संकेत देने लगा। संत ज़ोसिमा ने, उस पर वह बोझ रखकर जो गधे ने उठाया था, उसे सेसरिया के द्वारों तक ले गए; फिर, वहाँ बोझ उतारने के बाद, उन्होंने उस जानवर को फिर से रेगिस्तान में आज़ाद कर दिया। यहाँ, एक ओर, प्रभु की सर्वशक्तिमान शक्ति प्रिकट हुई, जो उग्र जानवरों को अपने सेवकों के प्रति आज्ञाकारिता में वश में कर रही थी, और दूसरी ओर, यह स्पष्ट रूप से दिखाया गया कि एक सदाचारी व्यक्ति, जो प्रभु की आज्ञाओं का पालन करता है और अपने परमेश्वर सृष्टिकर्ता की पूरी आत्मा से सेवा करता है, का सभी, यहां तक कि अतर्कशील प्राणियों द्वारा भी, पालन और सेवा की जाती है। और, अंत में, यह घटना फोइनिशिया के जोसिमा की पवित्रता को सभी के लिए निस्संदेह साबित करती है[4198] । इन सब के लिए हमारे परमेश्वर की महिमा हो, अब और हमेशा के लिए। आमीन।

पवित्र महान शहीद थियोडोर द स्ट्रैटेलेट्स के अवशेषों का स्थानांतरण[4199]

8 जून को स्मरण किया जाता है

संत थियोडोर महान शहीद ने नास्तिक रोमन सम्राट लिकिनियस[4200] के अधीन, हेराक्लिया[4201] शहर में मसीह के नाम पर यातनाएँ भोगीं, जहाँ संत एक सैन्य कमांडर के रूप में सेवा करते थे; उनकी शहादत की तारीख 8 फरवरी थी; आज, तथापि, हम उनकी पवित्र अवशेषों के हरेक्लिया नगर से उनके गृह नगर यूकैटा[4202] में स्थानांतरण का उत्सव मनाते हैं, उनकी आज्ञा के अनुसार, क्योंकि संत थियोडोर ने अपने सेवक उआर को निम्नलिखित वसीयत दी थी, जिसने शहीद के कष्टों को देखा था और उनका वर्णन किया था:

'मेरे शरीर को यूकैटा में, मेरे माता-पिता की संपत्ति पर दफना दो।'

जो कोई भी इस संत के बारे में अधिक विस्तृत जानकारी प्राप्त करना चाहता है, वह उनके कष्टों का विस्तृत वृत्तांत पढ़ सकता है, जो आठ फरवरी के अंतर्गत दिया गया है। यहाँ, हालांकि, हम केवल उस अद्भुत चमत्कार को याद करेंगे जो उनकी प्रतिमा के माध्यम से हुआ था। सिनाई के अनास्तासियस और दमिश्क के जॉन इस चमत्कार की गवाही देते हैं। चमत्कार इस प्रकार था।

[4198] संत ज़ोसिमा की मृत्यु छठी शताब्दी के मध्य में हुई थी।

[4199] स्ट्राटेलिइट्स, ग्रीक शब्द 'योद्धा' या 'कमांडर' से लिया गया; यह उपाधि सेंट थियोडोरेट को इसलिए दी गई क्योंकि, एक सांसारिक राजा के अधीन कमांडर के रूप में सेवा करते हुए, उन्होंने खुद को मसीह का एक सच्चा योद्धा, 'स्वर्गीय राजा का सबसे बहादुर कमांडर' साबित किया, जैसा कि पवित्र चर्च ट्रोपारियन में उनकी प्रशंसा करता है।

[4200] लिसिनियस ने 307 से 324 तक रोमन साम्राज्य के पूर्वी हिस्से पर शासन किया – सेंट थियोडोर की शहादत का वर्ष 319 माना जाता है।

[4201] हेराक्लिआ एशिया माइनर के एक उत्तरी प्रांत, पोंटस में स्थित था।

[4202] यूक़ेइटा शहर एशिया माइनर के उत्तरी भाग में, हेराक्लेया से बहुत दूर नहीं स्थित था; आज यह मार्सविन शहर है।

दमश्कि से चार हजार कदम दूर[4203] में कार्साटा नामक एक स्थान है; यहाँ पवत्रि महान शहीद थयिोडोर स्ट्रैटेलेट्स के सम्मान में एक चर्च बना था। जब सारसेनों ने इस स्थान पर कब्जा कर लयिा और वहाँ बस गए, तो उनमें से कई इस चर्च में प्रवेश करते थे और हर संभव तरीके से इसका अपमान करते थे; उदाहरण के लिए, वे अपने पशुओं को चर्च में ले आते, अपनी पत्नयिों और बच्चों के साथ प्रवेश करते, और वहाँ कामुक, पापपूर्ण कृत्य करते थे। उस चर्च की एक दीवार पर पवत्रि महा-शहीद थयिोडोर की एक चत्रिति प्रतमिा थी। एक दनि, जब कई सारासेन इस चर्च में इकट्ठा हुए थे और आपस में बातें कर रहे थे, तो उनमें से एक ने धनुष और तीर उठाया, नशिाना साधा, और संत की मूर्तपिर तीर चला दयिा; तीर संत के दाहनि कंधे में घुस गया, और तुरंत मूर्तसि खून बहने लगा जैसे कसिी जीवति व्यक्तसि बह रहा हो। इतना बड़ा चमत्कार देखकर सारासेन बहुत हैरान हो गए; हालाँकि, वे चर्च नहीं छोड़े, बल्कि अपनी प्रथा के अनुसार वहीं रहते और अशुद्ध कार्य करते रहे। कुल मलिाकर, इस चर्च में बीस सारासेन रहते थे, जनिमें से प्रत्येक की एक पत्नी और बच्चे थे; वे सभी चमत्कारकि घटना के तुरंत बाद एक भयानक मृत्यु से अचानक ग्रस्त होकर मर गए; जबकि वे सारासेन जो चर्च के बाहर रहते थे, वे उस समय स्वस्थ और सुरक्षति रहे।

सनिाई के अनास्तासयिस ने संत की इस प्रतमिा के बारे में बताया है, और कहा है कि उन्होंने इसे स्वयं देखा था और उस पर उस फोड़े से नकिले रक्त का एक दाग था।

प्रभु ने यह चमत्कार अधर्मी सरासनों के हृदय में भय उत्पन्न करने के लिए, और हम वशि्वासयिों को यह याद दलिाने के लिए कयिा कि हमें पवत्रि प्रतमिाओं की पूजा करनी चाहिए, क्योंकि हमारे परमेश्वर की अद्भुत कृपा उनमें वद्यिमान है और उनके माध्यम से कार्य करती है।

ट्रोपारयिन, स्वर 4:

हे सच्चे योद्धा और कष्ट-भोगी, आप स्वर्गीय राजा थयिोडोर के अति पराक्रमी सेनापति थे: क्योंकि आपने बुद्धमिानी से स्वयं को वशि्वास के हथयिारों से सुसज्जति कयिा, और आपने राक्षसों के दलों को पराजति कयिा, और आपने स्वयं को एक वजियी पीड़ति साबति कयिा। अत; हम वशि्वास में सदैव आपको धन्यवाद देते हैं।

कॉन्टाकयिन, स्वर 2:

अपने प्राणों के धैर्य से वशि्वास में सुसज्जति होकर, और परमेश्वर के वचन को हाथ में भाले के समान लेकर, हे अति महमिामय शहीद थयिोडोर, तुमने शत्रु को पराजति कयिा: उनके साथ, हम सभी के लिए मसीह हमारे परमेश्वर से अवरिाम प्रार्थना करो।

22 जून

9 जून (पुराना कैलेंडर)

इस दनि हम पवत्रि शहीदों: थेक्ला, मार्था और मैरी का स्मरण करते हैं, जन्हिोंने 346 वर्ष में फारस में यातनाएँ सहन कीं।

उसी दनि, 1427 में बेलोजेर्स्क के आदरणीय सरिील, मठाधीश का नधिन।

[4203] दमश्कि सबसे पुराना सीरयिाई शहर है, जसिका उल्लेख बाइबलि में इब्राहीम की कहानी (उत्पत्ति 14:15) में भी मलिता है; यह फलिस्तीन के उत्तर-पूर्व में, एंटी-लेबनान पहाड़ों के पूर्वी तलहटी में एक सुंदर और उपजाऊ मैदान में स्थति था। ईसाई चर्च के इतहिास में, दमश्कि सौल के मसीह में चमत्कारकि परविर्तन (प्रेरतिों के काम 9:1-22) के स्थल के रूप में उल्लेखनीय है। इसे 634 में अरबों ने जीता और 1516 में ओटोमन साम्राज्य में मलिा लयिा।

हमारे पवत्रि पति अलेक्जेंड्रयिा के आर्चबशिप सरिोपयिो की जीवन कथा

9 जून को स्मरण कयि जाता है

चर्च के महान शक्षिक – अलेक्जेंड्रयिा के संत सरिलि – स्वयं अलेक्जेंड्रयिा के मूल नविासी थे। वे कुलीन ईसाई माता-पति के घर पैदा हुए थे और अपनी माँ की ओर से, अलेक्जेंड्रयिा के प्रसद्धि थयिोफलिस, पैट्रआर्क के भतीजे थे[4204] । सरिोइल ने उस समय की सबसे उत्कृष्ट शक्षिा प्राप्त की: उन्होंने सभी सांसारकि हेलेनकि ज्ञान में पूर्ण महारत हासलि की, साथ ही दव्यि धर्मग्रंथों और ईसाई धर्मशास्त्र का भी गहन अध्ययन कयि। सरिलि के चाचा, पैट्रआर्क थयिोफलिस ने, अपने भतीजे की उत्कृष्ट क्षमताओं और पवत्रि जीवन शैली को पहचानकर, उसे अपने पुरोहति वर्ग में शामलि कर लयि, और युवा सरिलि को एक आर्चडीकन के रूप में नयिुक्त कयि। और इस प्रकार संत सरिलि चर्च के बगीचे में लगाया गया एक सुगंधति फूल की तरह थे, जो परम पवत्रिता से खलि रहे थे और मसीह की ईश्वर-प्रेरति शक्षिाओं से मसीह के चर्च को सुगंधति कर रहे थे।

थेओफलिस की मृत्यु पर, धन्य सरिलि को सर्वसम्मतसि पैट्रआर्कल सहिासन पर चुना गया[4205] और, पैट्रआर्क बनते ही, उन्होंने नोवाटयिनों के नामक वधिर्मयिों को शहर से तुरंत नकिाल दयि, जो फरीसयिों की तरह थे, जो मनुष्यों की दृष्टमिें स्वयं को धर्मी ठहराते थे और दावा करते थे कवि शुद्ध, धर्मी और कसिी भी पाप से मुक्त हैं। अपने कथति नर्दिोष जीवन के प्रतीक के रूप में, नोवाटयिनों ने सफेद वस्त्र पहनते थे और यह सखिाते थे कबिपतस्मिा के बाद घातक पाप में गरि गया व्यक्तकिो चर्च की संप्रदायकिता में प्रवेश नहीं दयि जाना चाहए। उन्होंने कहा कएिसे व्यक्तकि के घातक पाप के लए कोई क्षमा नहीं हो सकती, और केवल दूसरे बपतस्मिा के माध्यम से ही उनका पाप धुल सकता है।

[4206][4207][4208][4209]यह वधिर्म नोवाटयिन से उत्पन्न हुआ था, जो सम्राट डेसयिस के शासनकाल में रोम में एक पुरोहति था और पोप फैबयिन की शहादत के बाद, पोप के सहिासन पर कब्जा करने का प्रयास कयि। हालाँकि, अपनी सभी साज़शिों के बावजूद, वह अपने उद्देश्य में सफल नहीं हो सका, और धन्य कोर्नेलयिस को पोप के सहिासन पर चुना गया। कोर्नेलयिस से ईर्ष्या करके, नोवाटयिन ने उनके खलिाफ षड्यंत्र रचना शुरू कर दयि और हर संभव तरीके से उनका वरिोध कयि। उस समय, चर्च मूर्तपिूजकों के हाथों[4210] में भयंकर उत्पीड़न झेल रही थी, और कई वश्विासी, क्रूर यातनाओं

[4204] थेओफलिस ने 385 से 412 तक अलेक्जेंड्रयिा के पैट्रआर्क का पद संभाला। वे इतहिास में मुख्य रूप से जॉन क्रसिोस्टोम के प्रतअिपनी शत्रुता के लए जाने जाते हैं; महत्वाकांक्षा से प्रेरति होकर, उन्होंने कॉन्स्टेंटनिोपल के आर्चबशिप को अपने प्रभाव में लाने का प्रयास कयि, और इसलए, नेक्टारयिस की मृत्यु के बाद, जो 381 से 397 तक बाइज़ेंटाइन सहिासन पर रहे, उसने यह साजशि रची कउिस पद पर उसका वफादार व्यक्त, थयिोफलिस, चुना जाए। जब थयिोफलिस की योजनाओं के वपिरीत, संत जॉन क्रसिोस्टोम—जो पहले अंटीओक में एक पादरी थे—को राजधानी का बशिप चुना गया, तो थयिोफलिस ने उनसे रंजशि रखनी शुरू कर दी और वे क्रसिोस्टोम के वरिोधी गुट के एक स्तंभ बन गए। उन्होंने कॉन्स्टेंटनिोपल के संत के खलिाफ एक जटलि साज़शि में सक्रयि भाग लयि, जसिके परणिामस्वरूप बाद वाले को पदच्युत कर दयि गया और उन्हें दो बार राजधानी से नष्कासति कर दयि गया। डुब्ना की परषिद में, जसिे क्रसिोस्टोम के दुश्मनों ने उन्हें पदच्युत करने के उद्देश्य से बुलाया था, थयिोफलिस ने अध्यक्ष के रूप में अध्यक्षता की। आम तौर पर, क्रसिोस्टोम के साथ उसके संबंध इस तरह के थे कउिन्होंने उसके नाम पर एक काला साया डाल दयि। हालाँकि, अन्य मामलों में, थयिोफलिस एक काफी बुद्धमिान धर्मगुरु थे और उन्होंने अलेक्जेंड्रयिा के चर्च के लए बहुत अच्छा काम कयि।

[4205] संत सरिलि 412 से 444 तक अलेक्जेंड्रयिा के पैट्रआर्क रहे।

[4206] रोमन सम्राट डेसयिस ने 249 से 251 तक शासन कयि।

[4207] रोम के बशिप फैबयिन ने 236 से 250 तक रोम की सी (See) का पद संभाला।

[4208] फेबयिन की जनवरी 250 में शहादत हुई, और उनका पद अगले वर्ष के जून तक खाली रहा, क्योंकउित्पीड़न की कठोरता ने एक नए पोप के चुनाव को रोक दयि था। कहा जाता है कडिसियिस ने टप्पिणी की थी कवि रोम में एक नए बशिप के बजाय साम्राज्यीय सहिासन के कसिी नकली दावेदार को देखना बेहतर समझते। रोमन चर्च में इस एक साल की रक्तिता की अवधि के दौरान, नोवाटयिन—जो अपनी वाक्पटुता और वद्विता के साथ-साथ अपने कठोर जीवन शैली के लए भी जाने जाते थे—का बहुत प्रभाव था और वे बशिप चुने जाने की उम्मीद कर सकते थे। हालाँकि, ये उम्मीदें पूरी नहीं हुईं।

[4209] संत कॉर्नेलयिस 251 से 252 तक रोम के पोप थे।

[4210] यह ईसाइयों का सातवाँ सामान्य उत्पीड़न था। यह मुख्य रूप से बशिपों और पुरोहति वर्ग के खलिाफ नर्दिेशति था। इस उत्पीड़न के शकिारों में रोम के फैबयिन, एंटओिक के बाबलिस और यरूशलेम के अलेक्जेंडर शामलि थे, जबकअिन्य पवत्रि पुरुषों (जैसे कार्थेज के साइप्रयिन, ओरजिन, ग्रेगरी द वंडरवर्कर और अलेक्जेंड्रयिा के डायोनसियिस) के लए यह अवधनिर्विासन और अन्य कष्टों से चह्निति थी। हालांकि, इस उत्पीड़न का मुख्य उद्देश्य ईसाइयों को मारना नहीं, बल्कउिन्हें अपने धर्म को त्यागने के लए मजबूर करना था। इस उद्देश्य के लए, उन्हें यातना, कारावास और भूखमरी का सामना करना पड़ा, और ऐसी परीक्षाओं के सामने, कई लोग दृढ़ नहीं रह सके।

के भय से, कायरतापूर्वक मूर्तियों को बलदिान चढ़ा रहे थे; बाद में, पश्चाताप के साथ आगे आकर, उन्होंने आँसुओं के साथ अपने पाप का स्वीकारोक्ति किया। उनके पश्चाताप को देखकर, संत पोप कॉर्नेलियस ने उन्हें पवित्र चर्च की संगति में पुनःस्वीकार कर लिया, ठीक वैसे ही जैसे मसीह ने जोर-जोर से रोने वाले पतरस को स्वीकार किया था। इस बीच, पुरोहित नोवाटियन ने पोप का विरोध किया, यह दावा करते हुए कि जिन्होंने मसीह का परित्याग कर दिया था और राक्षसों को बलदिान चढ़ाया था, उनके लिए मसीह की कलीसिया के झुंड में बने रहना अयोग्य था[4211] । ऐसा करते हुए, उसने पवित्र पोप के खिलाफ अपमानजनक शब्द कहे, और उन्हें मूर्तिपूजकों का साथी बताया। उसने स्वयं पोप के साथ संप्रभुता तोड़ ली और कुछ समान विचारधारा वाले अनुयायी पाकर, रोम में स्वयं को दूसरा पोप घोषित कर दिया[4212] : इस प्रकार नोवाटियन संप्रदाय का विभाजन उत्पन्न हुआ[4213] ।

बाद में, नोवाटियन संप्रदाय का विभाजन दूर-दूर तक फैल गया, जो अलेक्जेंड्रिया तक पहुँच गया, जहाँ यह सेंट सिरिल के समय तक बना रहा। यहाँ नोवाटियनों ने ऑर्थोडॉक्स (सही आस्था) के विरुद्ध कई कार्य किए। उदाहरण के लिए, उन्होंने उन लोगों का पुनःबपतिस्मा दिया जो इस फूट में बहक गए थे, जिनका पहले कैथोलिक चर्च में बपतिस्मा हो चुका था, और उन्होंने पुनर्विवाह की अनुमति नहीं दी, जिसे वे व्यभिचार का पाप कहते थे। उन्होंने अन्य अनुचित नवाचार भी पेश किए।

अपने पैट्रिआर्काट की शुरुआत से ही, संत सिरील ने इन विधर्मीयों को, उनके बिशप थियोपेम्प्टस के साथ, अलेक्जेंड्रिया से निष्कासित कर दिया। फिर उन्होंने मानव जाति के दुश्मनों - अशुद्ध आत्माओं - के खिलाफ हथियार उठाए, जिन्हें उन्होंने उनके बिलों से भगा दिया।

[4214][4215]अलेक्जेंड्रिया से 120 स्टेडियम[4216] दूर कोनोप नामक एक गाँव था। इसके पास ही मैनुफनि नामक एक स्थान था (जो पहले एक गाँव हुआ करता था)। यहाँ एक प्राचीन मूर्तिपूजक पूजा स्थल था, जो पहले राक्षसों का निवास स्थान था: यह स्थान सभी के दिलों में दहशत पैदा करता था, और पैट्रिआर्क थियोफिलिस ने इसे राक्षसों से मुक्त करने और ईश्वर की महिमा के लिए इसे पवित्र करने का इरादा किया था। लेकिन, अन्य चिंताओं में व्यस्त होने के कारण, वह अपना इरादा पूरा नहीं कर सके। अलेक्जेंड्रिया के पैट्रिआर्क के रूप में थियोफिलिस के बाद सेंट सिरिल, ने अपने चाचा और पूर्ववर्ती की इच्छा को पूरा करने का संकल्प लिया, और उन्होंने ईश्वर से भक्तिपूर्वक प्रार्थना की कि वह उन्हें दिव्य सहायता और मैनुफनि से अशुद्ध आत्माओं को हराने और भगाने की शक्ति प्रदान करें। और इस प्रकार प्रभु का स्वर्गदूत उस संत को एक दर्शन में दिखाई दिया, और उसने उसे शहीदों साइरस और जॉन की पवित्र अवशेषों को मैनुफनि ले जाने की आज्ञा दी, ताकि उस स्थान से राक्षसों की शक्ति को भगाया जा सके। संत सिरिल ने ठीक वैसा ही किया –

[4211] शुरुआत में नोवाटियन ने पापियों के प्रति कोई असहिष्णुता नहीं दिखाई; कार्थेज के बिशप साइप्रियन गवाही देते हैं कि वह उस पत्र के लेखक थे जिसमें रोमन पादरी वर्ग ने स्वीकार किया था कि यदि पापी घातक संकट में हों तो उन्हें चर्च में प्रवेश दिया जा सकता है। लेकिन कोर्नेलियस के निर्विवाद होने के बाद, वह एक गुट का नेता बन गया, जो पूरी तरह से अलग दृष्टिकोण रखता था। नोवाटियन ने यह सिखाना शुरू कर दिया कि, यद्यपि पश्चाताप करने वाले धर्मत्यागी दैवीय दया में स्वीकार किए जा सकते थे—और इसलिए उन्हें पश्चाताप के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता था—फिर भी चर्च के पास उन्हें पापमुक्ति देने का कोई अधिकार नहीं था और उसे उन्हें हमेशा के लिए संप्रभुता से बहिष्कृत कर देना चाहिए; अन्यथा, वह अपना ईसाई चरित्र और अपनी विशेषाधिकार खो देगी।

[4212] नोवाटियन का बिशप के रूप में अभिषेक छोटे कस्बों के तीन बिशपों द्वारा किया गया था, जिन्हें उनके समर्थकों ने बेबुनियाद बहानों पर बुलाया था और उन्होंने रात के खाने के बाद, शाम को उन पर अपना हाथ रखा।

[4213] पश्चिम में नोवाटियानिज़्म के कई अनुयायी हुए, और इसके सिद्धांत पहले से भी अधिक कठोर हो गए। समुदाय से आजीवन बहिष्कार की सज़ा, जो मूल रूप से केवल उन लोगों पर लागू होती थी जिन्होंने आस्था का त्याग किया था, बाद में उन सभी पर बढ़ा दी गई जिन्होंने बपतिस्मा के बाद विभिन्न गंभीरता के पाप किए थे। साथ ही, नोवाटियनों ने 'काफ़िर' नाम अपनाया, जिसका अर्थ है 'पवित्र लोग'। उन्होंने चर्च से उनके पास आने वाले लोगों का पुनःबपतिस्मा दिया, क्योंकि वे चर्च के साथ सहभागिता को अपवित्र और उसके संस्कारों को, परिणामस्वरूप, अमान्य मानते थे। कुछ नोवाटियनों ने पुनर्विवाह की निंदा की, और इसे व्यभिचार के बराबर माना। जहाँ तक सुसमाचार के प्रमुख सत्यों का सवाल है, नोवाटियन दृढ़ता से रूढ़िवादी थे और बने रहे, और उनमें से कई ने अपने विश्वास के लिए मृत्यु तक कष्ट सहे।

[4214] कोनोप नील नदी के मुहाने पर स्थित था, जिसके नाम पर ही इसका नाम 'कोनोपियस' रखा गया था। अलेक्जेंड्रिया की स्थापना से पहले, कोनोप इस क्षेत्र का सबसे महत्वपूर्ण शहर था, लेकिन मिस्र की इस राजधानी के उदय के साथ, इसकी महत्वता कम होने लगी, और जब तक ईसाई धर्म का आगमन हुआ, तब तक यह शहर गायब हो चुका था - उसकी जगह बाद में एक तुच्छ गाँव बस गया।

[4215] पवित्र शहीदों साइरस और जॉन की अवशेषों के स्थानांतरण के वृत्तांत के अनुसार (नीचे, 28 तारीख को देखें), यह स्थान कोनोप से दो पोप्रीश्चा, यानी लगभग दो वर्स्ट, की दूरी पर स्थित था।

[4216] एक स्टेडियम 87½ सैज़ेन के बराबर होता है। इस प्रकार 120 स्टेडियम 21 वर्स्ट के बराबर होते हैं।

उन्होंने संतों के अवशेष मैनुफनि लाए और उनके सम्मान में वहाँ एक चर्च का नर्िमाण कयिा। अशुद्ध आत्माएँ तुरंत वहाँ से भगा दी गईं, और वह स्थान शहीदों के अवशेषों के माध्यम से चंगाई का स्रोत बन गया।

[4217]इस प्रकार अलेक्जेंड्रयिा के उपनगरों से अदृश्य राक्षसों को भगाने के बाद, संत ने स्वयं शहर को दृश्यमान राक्षसों, अर्थात् मसीह-द्वेषी यहूदयिों से पूरी तरह मुक्त करने के लिए हर संभव प्रयास कयिा। वे उस शहर में लंबे समय से अनगनित संख्या में रहते आए थे। अलेक्जेंडर महान के समय और अलेक्जेंड्रयिा की स्थापना[4218] के बाद से ही यहूदयिा से आए काफी संख्या में प्रवासी वहाँ बस गए थे, और वे एक वशिाल समुदाय बन गए थे। मसीह और उनके नाम को धारण करने वालों से घृणा करते हुए, वे खुलेआम और गुप्त रूप से ईसाइयों पर हर प्रकार की दुष्टता और कष्ट पहुँचाते थे। ऊपर उल्लेखति नोवाटयिन वधिर्मी शहर के लिए एक अभशिाप थे, लेकनि यहूदी कहीं अधकि दुष्ट और हानकिारक दुश्मन थे; उन्होंने न केवल शहर के भीतर कलह भड़काया, बल्कि कई हत्याओं और रक्तपात को भी उकसाया। यहूदी सनिेगॉगों के नेताओं को बुलाने के बाद, परमेश्वर के पवत्रि ने उन्हें अपने लोगों को ऐसे दुष्ट कर्मों से रोकने के लिए समझाया। लेकनि यहूदी बुजुर्गों ने न केवल पवत्रि की बातों पर ध्यान नहीं दयिा, बल्कि अपनी दुष्टता और भी बढ़ा दी।

शहर में एक बड़ा और सुंदर चर्च था, जसिे सेंट अलेक्जेंडर चर्च के नाम से जाना जाता था, जसिका नाम इसके संस्थापक, बशिप अलेक्जेंडर[4219] के नाम पर रखा गया था। एक दनि, यहूदयिों ने युद्ध के लिए तैयार होने की तरह खुद को हथयिारबंद कर लयिा, और जैसे ही रात हुई, उन्होंने ईसाई घरों के बीच सड़कों पर शोर और हंगामा मचाया, और चल्लिाने लगे: 'सेंट अलेक्जेंडर चर्च में आग लग गई है'।

यह पुकार सुनकर, ईसाई एक के बाद एक अपने घरों से उस कथति आग की ओर दौड़े, उसे बुझाने के इरादे से। और इस प्रकार नर्िदयी यहूदयिों ने - जैसे ही वे ईसाई अपने दरवाजों से बाहर नकिले - तुरंत उन्हें तलवारों से काट डाला, या भाले या चाकुओं से वार कयिा - संक्षेप में, हाथ में जो भी आया उससे उन्हें मार डाला। और उस रात कई ईसाई मारे गए।

जैसे ही दनि का उजाला हुआ, महामहमि पैट्रआिर्क सरिलि को हुई कत्लेआम की जानकारी मलिी। मारे गए लोगों के शोक से उबरने के बाद, उन्होंने यहूदयिों के खलिाफ न्याय की मांग शुरू कर दी। लेकनि शहर का एपार्क, ओरेस्ट्स, यद्यपि आस्था से एक ईसाई था, फरि भी उसने संत के प्रति शत्रुता पाल रखी थी और हत्यारों का बचाव करके यहूदयिों की सहायता की। तब संत सरिलि स्वयं ईसाइयों की एक बड़ी भीड़ के साथ यहूदयिों के जमावड़े की ओर बढ़े और सभी यहूदयिों को शहर से नकिाल दयिा, उनके घरों में लूटपाट की और उनकी सनिेगॉग (प्रार्थनालय) को जला दयिा।

[4217] सनिेगॉग यहूदयिों के लिए धार्मकि सभा का स्थान है। ये खुले आकाश के नीचे बने ढांचे थे जो सामूहकि यहूदी पूजा के संचालन के लिए नर्िधारति थे। कानून के अनुसार, यह पूजा तंबू (Tabernacle) में और बाद में यरूशलेम के मंदरि में की जानी थी। लेकनि बेबीलोन के नर्िवासन के दौरान, मंदरि नष्ट हो गया, और इसलिए सभा के लिए वशिेष स्थानों की आवश्यकता उत्पन्न हुई। इस प्रकार सनिेगॉग का अस्तत्वि हुआ। सनिेगॉग कसिी भी ऐसे स्थान पर स्थापति कयि जा सकते थे जहाँ सच्चे यहूदी उपासकों की पर्याप्त संख्या हो। परणिामस्वरूप, यीशु मसीह और प्रेरतिों के समय में भी, वे उन सभी जगहों पर व्यापक रूप से फैले हुए थे जहाँ यहूदी रहते थे। एक सनिेगॉग की बनावट और एक मंदरि की बनावट में कुछ समानताएँ थीं। सनिेगॉग के केंद्रीय कक्ष में एक अलमारी होती थी जहाँ मूसा की व्यवस्था की पांडुलपियिाँ रखी जाती थीं, जन्हिें पढ़ने के लिए मंडली के सामने प्रस्तुत कयिा जाता था। सनिेगॉग के केंद्र में एक नीचा मंच या उपदेश-मंच होता था। कुछ सीटें दूसरों से ऊँची होती थीं और वे बुजुर्गों, यानी समुदाय के वृद्ध या प्रभावशाली सदस्यों के लिए आरक्षति होती थीं। बुजुर्गों ने एक परषिद बनाई जो सनिागॉग पर सर्वोच्च अधकिार रखती थी। इस परषिद के अध्यक्ष को सनिागॉग का प्रमुख या शासक कहा जाता था (मरकुस 5:22; प्रेरतिों के काम 13:15)। सनिेगॉग के नेताओं के पास कानून तोड़ने वालों को समुदाय से नष्किासति करने और उन्हें कोड़े मारने का अधकिार था। सनिेगॉग में वभिन्नि कानूनी मामले भी सुने जाते थे।

[4218] मैसेडोनयिा के राजा सकिंदर महान, जसिने पूरे सभ्य पूर्व को अपने शासन के अधीन कर लयिा था, ईसा पूर्व चौथी शताब्दी के अंत में रहते थे। मस्रि में अलेक्जेंड्रयिा शहर की स्थापना उन्होंने ईसा पूर्व 332 में यूनानी शासन को मजबूत करने के लिए की थी। पूर्व के सबसे अमीर और सबसे समृद्ध शहरों में से एक बन जाने के बाद, इसकी स्थापना के तुरंत बाद ही यह अन्य देशों से, और अन्य लोगों के साथ-साथ, उस समय की यहूदी आबादी की कतारों से, फलिस्तीन से उद्यमी बस्तयिों को आकर्षति करने लगा। अलेक्जेंड्रयिा के यहूदयिों ने एक काफी महत्वपूर्ण बस्ती बनाई, और यहूदी बस्ती बहुत घनी आबादी वाली थी। फलिो, पहली शताब्दी ईसा पूर्व में रहने वाले एक यहूदी लेखक, का कहना है कि उनके समय में मस्रि में दस लाख से अधकि यहूदी थे, मुख्य रूप से अलेक्जेंड्रयिा में। यरूशलेम पर कब्जा करने के बाद, टॉलेमी प्रथम ने अलेक्जेंड्रयिा में एक बड़ी यहूदी बस्ती बसाई और उन्हें यूनानयिों के साथ समान अधकिार प्रदान कयि। रोमनों ने उनके लिए इन अधकिारों की पुष्टि की, और अगस्टस ने शाही प्रफिेक्ट के अधकिार के तहत यहूदी मामलों का प्रबंधन करने के लिए एक वशिेष यहूदी परषिद स्थापति की। हालाँकि, कैलगिुला के अधीन, उन्होंने अपने अधकिांश वशिेषाधकिार खो दयि।

[4219] बेशक, संत अलेक्जेंडर, जो 312 से 326 तक अलेक्जेंड्रयिा के बशिप थे, एरयिन वधिर्म का वरिोध करने वाले ऑर्थोडॉक्स के पहले पैरोकारों में से एक थे।

इस पर संत के प्रतिक्रोध से जलता हुआ एपार्क ने संत के करीबी रिश्तेदारों के साथ-साथ महाधर्माध्यक्ष के समर्थक अन्य प्रमुख नागरिकों को भी नुकसान पहुँचाना शुरू कर दिया। इस प्रकार, उसने व्याकरणकार[4220] यरक्स को चौक में निर्विस्त्र करके निर्दयता से यातना दी। एपार्क और पैट्रिआर्क के बीच बड़ी असहमति थी। क्योंकि परम पावन पैट्रिआर्क ने ईसाइयों की रक्षा की, जबकि एपार्क यहूदियों का पक्ष लेता था। उनमें से प्रत्येक ने पृथक रूप से सम्राट थियोडोसियस द्वितीय[4221] को लिखा, जब तक कि बाद वाले ने यहूदियों को शहर में रहने से रोकने का एक फरमान जारी नहीं कर दिया।

उस समय, शहर की सड़कों पर अक्सर दंगे और विद्रोह भड़क उठते थे, जिनके दौरान अशांति में शामिल नहीं रहे कई लोगों की जान चली जाती थी। अलेक्ज़ेंड्रिया में दार्शनिक थियोन की बेटी, हिपाटिया नाम की एक युवती रहती थी। वह एक धर्मनिष्ठ और सदाचारी महिला थी और अपनी ईसाई बुद्धिमत्ता के लिए प्रसिद्ध थी, उसने अपने दिन पवित्रता और ब्रह्मचर्य में बिताए, और अपनी कुँवारी अवस्था बनाए रखी। अपने युवा काल से ही उन्हें उनके पिता थियोन ने दर्शनशास्त्र सिखाया था, और उन्होंने ज्ञान में इतनी अधिक महारत हासिल की थी कि वे उस समय के सभी दार्शनिकों से आगे निकल गई थीं, जैसा कि टोलेमाइस के बिशप सिसीनियस ([4222]) और सुइडास ने उनके बारे में बताया, जिन्होंने उनकी बहुत प्रशंसा की। वह शादी नहीं करना चाहती थी, आंशिक रूप से ज्ञान की खोज और किताबों के अध्ययन के लिए खुद को बिना किसी बाधा के समर्पित करने की इच्छा से, लेकिन सबसे बढ़कर उसने मसीह के प्रति प्रेम के कारण अपनी कुँवारी अवस्था को बनाए रखा। ज्ञान के प्रेमी दूर-दूर से सबसे बुद्धिमान कन्या हाइपैटिया को देखने और उनके बुद्धिमान वचन सुनने के लिए अलेक्ज़ेंड्रिया में उमड़ पड़े, जिससे वह कई लोगों की शिक्षिका बन गईं। उन्हें सभी धार्मिक और धर्मनिरपेक्ष अधिकारियों के साथ-साथ पूरे लोगों द्वारा सम्मानित किया गया, और कई लोग उनके बुद्धिमान परामर्श की तलाश में उनकी ओर मुड़े। एपार्क और पैट्रिआर्क के बीच सुलह कराना चाहकर, वह विनम्रता और नम्रता से दोनों के पास गईं और अपने बुद्धिमानी भरे शब्दों से उन्हें शांति बनाने के लिए मना लिया। सर्व पवित्र पैट्रिआर्क स्वयं एपार्क के साथ सुलह करने का अवसर ढूंढ रहे थे, लेकिन बाद वाला, अपने गुस्सैल स्वभाव के कारण, सुलह की बात सुनने तक को तैयार नहीं था। एक दिन, जब हाइपैटिया कहीं से रथ में घर लौट रही थीं, तो शांति से घृणा करने वाले विद्रोहियों ने उन पर हमला कर दिया; उन्होंने उन्हें रथ से बाहर खींच लिया, उनके कपड़े फाड़ डाले और उन्हें पीट-पीट कर मार डाला। लेकिन उनकी पशुवत क्रूरता इस अत्याचार पर ही नहीं रुकी; अपने गुस्से की अंधाधुंध में, उन्होंने उस युवती के मृत शरीर का अपमान किया। उसे टुकड़ों में काटने के बाद, उन्होंने इसे किनारोन नामक स्थान पर जला दिया[4223] ।

[4224]जब शहरवासियों को इस घटना की जानकारी मिली, तो सभी—और विशेष रूप से जो शिक्षा से प्रेम करते थे—हाइपैटिया के लिए गहरा दुख महसूस करने लगे। संयोग से, इस विद्रोह की खबर माउंट नाइट्रियन के भिक्षुओं तक पहुँची। वे इस विद्रोह के निर्दोष पीड़ितों के लिए शोक और करुणा से भर गए और पाँच सौ तक पुरुषों के एक समूह में इकट्ठा होकर, पैट्रिआर्क की रक्षा करने की इच्छा से, रेगिस्तान से शहर में आए। संयोग से, उनकी मुलाकात कहीं पर उस एपार्क से हो गई, जो रथ में सवार होकर उनकी ओर आ रहा था। शासक को देखते ही, भिक्षुओं ने उस पर चिल्लाना शुरू कर दिया, उसे डाँटते हुए और उसे एक हेलेन और मूर्तिपूजक कहने लगे, क्योंकि वह पहले हेलेनिक धर्म का अनुयायी था[4225] और हाल ही में कॉन्स्टेंटिनोपल में बपतिस्मा लिया था। संघियों में से एक ने एपार्क पर पत्थर फेंका और उसके सिर पर लगा दिया। जब एपार्क के आसपास खड़े लोगों के चिल्लाने पर भीड़ जमा हो गई, तो संघी उससे पीछे हट गए; हालाँकि, एपार्क के नौकरों ने संघियों में से एक, अम्मोनियस नामक व्यक्ति को पकड़ लिया। एपार्क को, यह संदेह होने पर कि

[4220] व्याकरणज्ञ – शिक्षक। यह पद केवल साक्षरता के शिक्षकों को ही नहीं, बल्कि उन लोगों को भी संदर्भित करता था, जो शब्द के पूर्ण अर्थ में, शास्त्रीय ग्रीक साहित्य के पूरे शरीर का गहन ज्ञान रखते थे – और उन्होंने वाक्य संरचना और विषय-वस्तु, दोनों के संदर्भ में इसकी आलोचनात्मक रूप से पढ़ाई की थी।

[4221] थियोडोसियस द्वितीय, या युवा, ने पूर्व में 408 से 450 तक शासन किया।

[4222] यहाँ उल्लेखित टोलेमाइडा, ऊपरी मिस्र (थेबाइड) में, नील नदी के तट पर स्थित थी।

[4223] किनारोन कैथेड्रल स्क्वायर के पास एक शहर जिले का नाम है।

[4224] माउंट नाइट्रिया अलेक्ज़ेंड्रिया के दक्षिण में, नील नदी के पश्चिम में, लीबिया के रेगिस्तान के पास स्थित था। इस पहाड़ का नाम इसके पास की झीलों में नाइट्रे की प्रचुरता के कारण पड़ा। मिस्र के अन्य रेगिस्तानी क्षेत्रों में, माउंट नाइट्रिया संन्यासियों का एक पसंदीदा ठिकाना था।

[4225] ग्रीक लोगों को हेलेन कहा जाता था। उनका धर्म मानव-रूपवाद (anthropomorphism) की एक जीवंत अभिव्यक्ति थी, यानी मानव स्वभाव के सभी गुणों और दोषों के साथ-साथ मानव प्रतिभा के विभिन्न रूपों का देवताकरण। ग्रीक देवता मनुष्य के शारीरिक और आध्यात्मिक स्वभाव के विभिन्न गुणों और अभिव्यक्तियों के प्रतीक थे।

मठाधीश ने भिक्षुओं को उसके खिलाफ भड़काया था, बहुत क्रोध आया और उसने अम्मोनियस को क्रूर यातनाएँ दीं, जिसके परिणामस्वरूप उसकी मृत्यु हो गई। यह जानकर, परम पावन मठाधीश बहुत दुखी हुए और शहीद के शरीर को वापस मंगवाकर उसे सम्मान के साथ दफनाया।

इस बीच, शहर से निष्कासित किए गए यहूदियों ने तमाशों और खेलों के लिए एक स्थल बनाया; मसीह का मज़ाक उड़ाने और ईसाइयों का अपमान करने के लिए, उन्होंने एक लंबा सलीब खड़ा किया और एक ईसाई युवक को पकड़कर, उसके हाथ फैलाकर उसे सूली पर चढ़ा दिया। उन्होंने उसे क्रूस पर कीलों से नहीं ठोंका, बल्कि रस्सियों से बाँध दिया और उसे लंबी-लंबी गालियाँ दीं, उस पर हँसे और थूकते रहे। अपनी उपहास-प्रहसन समाप्त करने के बाद, उन्होंने उसे तब तक पीटा जब तक कि वह क्रूस पर ही मर नहीं गया, और इस प्रकार मसीह का शहीद मसीह के दुखों का अनुकरण करने वाला बन गया। यहूदियों द्वारा की गई इस नई अमानवीय घटना के बारे में जानकर, संत सिरिल ने सम्राट को एक पत्र लिखा, जिसमें उन्होंने जो कुछ भी हुआ था, उसके सभी हालात बताए – और सम्राट ने, भले ही तुरंत नहीं, फिर भी एक न्यायपूर्ण फरमान जारी किया। इस आदेश के अनुसार, उपरोक्त अत्याचार को भड़काने वाले यहूदी नेताओं को मृत्युदंड दिया गया, जबकि राज्यपाल को पद से हटा दिया गया।

इसके बाद, मसीह के संत सिरिल ने, ईसाई नाम के शत्रुओं के कलह, द्वेष और शत्रुता पर विजय प्राप्त कर, मसीह के भेड़ों के झुंड का, जो उन पर सौंपा गया था, सफलतापूर्वक पालन-पोषण किया।

लेकिन जब अलेक्जेंड्रिया में वर्णित अशांति शांत हो गई, तो संपूर्ण ज्ञात दुनिया में नेस्टोरियस की विधर्म से और भी बड़ी उथल-पुथल मच गई, और संत सिरिल को एक नया – और भी बड़ा – कारनामा करने के लिए बुलाया गया। कॉन्स्टेंटिनोपल के चर्च में, पैट्रिआर्क सिसिनियस[4226] की मृत्यु के बाद — जो एटिकस[4227] के उत्तराधिकारी थे — नेस्टोरियस[4228] को पैट्रिआर्क के पद पर पदोन्नत किया गया, जिन्हें एंटिओक[4229] से स्थानांतरित किया गया था; एक ऐसे व्यक्ति को, जिसे माना जाता था कि वह आस्था में दृढ़ और अपने जीवन में सदाचारी था, लेकिन अंतर्मन में एक गुप्त विधर्मी था। उसने विश्वासियों के बीच विधर्मी शिक्षा के बीज बोए, जैसे गेहूं में खरपतवार, पहले व्यक्तिगत रूप से नहीं,

---

[4226] संत सिसिनियस ने 426 से 427 तक कॉन्स्टेंटिनोपल के बिशप का पद संभाला।

[4227] संत एटिकस 406 में कॉन्स्टेंटिनोपल के बिशप बने और 425 तक इस पद पर रहे।

[4228] नेस्टोरियस ने 428 से 431 तक कॉन्स्टेंटिनोपल की सी (See) का पद संभाला। राजधानी के बिशप के रूप में चुने जाने से पहले, वह अंकोना (Antioch) में एक प्रेस्बिटर थे (नीचे देखें)। वह अपने तपस्वी जीवन शैली के लिए प्रसिद्ध थे और उन्होंने मठवासी संन्यास की शपथ लेकर चर्च में अपनी सेवा शुरू की। इसके अलावा, नेस्टोरियस को विद्वता का शौक था और वह अपनी प्रभावशाली और गूंजदार वाक्पटुता के लिए प्रसिद्ध था; फिर भी, उसी समय, उस पर घमंड और महत्वाकांक्षा का आरोप लगाया गया, और कहा जाता था कि महिमा के प्रति उसके प्रेम ने उसे अपने जीवन में दिखावटी भक्ति और अपने उपदेशों में एक भड़कीले अंदाज़ का सहारा लेने के लिए प्रेरित किया। जो भी हो, कॉन्स्टेंटिनोपल के बिशप पद पर चुने जाने से पहले उनकी अच्छी प्रतिष्ठा थी। उनकी व्यक्तिगत प्रसिद्धि के अलावा, यह तथ्य कि वह अत्यधिक सम्मानित जॉन क्रिसोस्टोम के ही चर्च से आए थे, ने कॉन्स्टेंटिनोपल में उनके नाम के प्रति विशेष विश्वास जगाया। राजधानी का बिशप बनने के बाद, नेस्टोरियस ने शुरू में खुद को धर्मपरायणता का एक उत्साही समर्थक साबित किया। अपने अभिषेक के दिन कैथेड्रल में उपदेश देते हुए, उन्होंने सम्राट से कहा: 'मुझे विधर्मियों से मुक्त एक भूमि दो, और मैं बदले में तुम्हें स्वर्ग का राज्य दूँगा।' इन शब्दों का जोरदार समर्थन हुआ, लेकिन बाद की घटनाओं ने दिखाया कि नेस्टोरियस स्वयं ऑर्थोडॉक्सी में दृढ़ नहीं थे और भेड़ की खाल में भेड़िया थे।

[4229] सीरिया में एंटिओक, सीरिया के सबसे पुराने और सबसे अमीर शहरों में से एक है, और इसकी राजधानी है; यह ओरोंटेस नदी पर स्थित है, जहाँ से यह भूमध्य सागर में मिलती है, वहाँ से लगभग 10 वर्स्ट दूर; इसकी स्थापना ईसा मसीह से 300 साल पहले सेल्यूकस निकिटर द्वारा की गई थी और इसका नाम उनके पिता, एंटिओकस के नाम पर रखा गया था। अंतीयक का ईसाई चर्च के लिए एक विशेष महत्व था, यह यरूशलेम के बाद ईसाई धर्म का दूसरा महान केंद्र और अन्यजातियों के बीच ईसाई चर्चों की जननी थी। 'ईसाई' नाम सबसे पहले प्रभु यीशु के अनुयायियों को अंतीयकिया में दिया गया था; यहीं पर ईसाई मिशनों की शुरुआत भी हुई, क्योंकि यहीं से प्रेरित पौलुस और बरनबास अपनी पहली धर्म-प्रचार यात्रा पर निकले और वहीं लौटे (प्रेरितों के काम 13:1–4, 14:26)। उनकी दूसरी यात्रा भी वहीं से शुरू हुई, हालांकि इस अवसर पर वे एक साथ नहीं निकले (प्रेरितों के काम 15:39-40)। वहीं पर प्रेरित पौलुस की दूसरी यात्रा समाप्त हुई और उनकी तीसरी यात्रा शुरू हुई (प्रेरितों के काम 18:22-23)। इसके बाद के वर्षों में, विधर्मी विवादों को सुलझाने के लिए अंतीयक में कई उल्लेखनीय परिषदें आयोजित की गईं। प्राचीन काल से, अंतीयक की कलीसिया को अलेक्जेंड्रिया, यरूशलेम और रोम की कलीसियाओं के साथ विशेष विशिष्टाधिकार प्राप्त थे। प्राचीन काल से ही, वहाँ एक विशिष्ट धर्मशास्त्रीय विद्यालय विकसित हो गया था, जिसकी विशेषता एक संयमित, तर्कसंगत दृष्टिकोण, दैवी प्रकटीकरण की सुसंगत प्रगति की स्पष्ट व्याख्या, और पवित्र धर्मग्रंथ की व्याख्या के लिए ऐतिहासिक-व्याकरणिक पद्धति का परिचय (यानी ऐतिहासिक और व्याकरणिक संदर्भों के उपयोग के माध्यम से) था। इस स्कूल की उत्पत्ति का श्रेय एंटिओकियाई पादरी लूसियन और उनके समकालीन डोरोथियस को जाता है, जो तीसरी शताब्दी में रहते थे। इसके बाद के प्रमुख व्यक्तियों में जॉन क्रिसोस्टोम, मोप्सुएस्टिया के बिशप थियोडोर, साइरस के थियोडोरेट और अन्य शामिल थे। नेस्टोरियस भी इसी स्कूल से संबंधित था, लेकिन उसने इसके तर्कसंगत और संयमित सिद्धांतों को चरम तक ले गया और, अवतार के रहस्य को हमारी समझ के करीब लाने के अपने प्रयास में, विधर्म में पड़ गया।

बल्कि अपने समान विचारधारा वाले अनुयायियों के माध्यम से। उसका विधर्म मसीह परमेश्वर और परमेश्वर की अति पवित्र कुँवारी माता के प्रति अपमानजनक भाषा का प्रयोग करने में निहित था; क्योंकि वह नीच व्यक्ति यह दावा करता था कि मसीह, जो केवल एक मनुष्य थे, कुँवारी मरियम से पैदा हुए थे, न कि ईश्वर, क्योंकि एक स्त्री का गर्भ ईश्वर को धारण नहीं कर सकता, बल्कि केवल एक पुरुष को ही कर सकता है। नेस्टोरियस की शिक्षा के अनुसार, वचन ईश्वर (लोगोस) केवल अनुग्रह से गर्भधारण के क्षण से ही मनुष्य यीशु के साथ एकजुट हुए और उनमें एक मंदिर की तरह निवास करते थे। इसी कारण, नेस्टोरियस ने पवित्र कन्या मरियम को 'ईश्वर की माता' नहीं कहा, बल्कि 'मसीह की माता' कहा। नेस्टोरियस का धर्मद्रोह उसके साथ रहे अनुयायियों—बिशप डोरोथियस और पुरोहित अनास्तासियस, जिन्हें वह अपने साथ एंटिओक से लाया था—द्वारा लोगों में फैला।

[4230]एक अवसर पर, एक पर्व के दिन, अनास्तासियस ने कॉन्स्टेंटिनोपल के कैथेड्रल चर्च में लोगों को उपदेश देते हुए, परम पवित्र कुँवारी मरियम के संदर्भ में 'थियोटोकोस' - अर्थात् ईश्वर की माता - शब्द के उपयोग की आलोचना की। उन्होंने ही यह दावा किया कि कुँवारी मरियम को ईश्वर की माता नहीं कहा जा सकता, क्योंकि वह एक मानव थीं; आखिर ईश्वर मानव देह से कैसे जन्म ले सकता है? इस उपदेश ने चर्च में हंगामा और हलचल मचा दी। अनास्तासियस पर विधर्म के आरोपों की बौछार हो गई।

जब नेस्टोरियस से स्वयं इस मामले पर पूछताछ की गई, तो उसने खुलेआम अपना पागलपन प्रकट करना शुरू कर दिया और मसीह ईश्वर तथा उनकी परम पवित्र माता के विरुद्ध अपनी ईश्वरनिंदा का विष उगलने लगा।

'मैं,' उसने कहा, 'उस महिला को, जिसने अपने ही स्वभाव के एक देहधारी मनुष्य को जन्म दिया, ईश्वर की माता नहीं कह सकता, क्योंकि वह पवित्र आत्मा द्वारा दिव्य वचन के वास के लिए तैयार की गई एक कुटिया थी। इसलिए उसे मसीह की माता कहना अधिक उपयुक्त है। इस पद से हम उस संबंध को दर्शाते हैं जो उसका उस से है, जिसमें दिव्यता निवास करती थी।'

और इस प्रकार लोगों में विवाद और कलह उत्पन्न हो गया: कुछ लोगों ने इस विधर्म का विरोध किया और नेस्टोरियस के साथ किसी भी प्रकार का संचार करने से इनकार कर दिया, जबकि अन्य, इसके विपरीत, विधर्मी अनुमानों से बहक गए और विधर्मियों की शिक्षाओं को अपना लिया। इस विधर्म ने केवल कॉन्स्टेंटिनोपल ही नहीं बल्कि पूरी दुनिया को हिला दिया, क्योंकि अधर्मी नेस्टोरियस ने अपने समान विचारधारा वाले अनुयायियों के साथ मिलकर अपने सिद्धांत के बचाव में कई ग्रंथ लिखे, जिन्हें उसने पड़ोसी शहरों, दूर-दराज के देशों और रेगिस्तानों में मठाधीशों[4231] के बीच भेजा। इससे उसने ईसाइयों के बीच उतनी ही कलह पैदा की जितनी पहले अधर्मी एरियस ने भड़काई थी, जिसने मसीह के वस्त्र को फाड़ दिया था[4232] , क्योंकि कई पुरोहित और आम लोग नेस्टोरियस के पदचिन्हों पर चले, ठीक वैसे ही जैसे पहले कई लोग एरियस के पदचिन्हों पर चले थे।

अलेक्जेंड्रिया के पैट्रिआर्क संत सिरिल, नेस्टोरियस की विधर्मी शिक्षाओं और उनके उपदेश की सफलता के बारे में जानकर, आत्मा में गहराई से प्रभावित हुए और हमारे ईश्वर मसीह तथा परमेश्वर की अति पवित्र माता के एक वफादार सेवक और पराक्रमी योद्धा के रूप में, मसीह के शत्रु के विरुद्ध हथियार उठाए और परमेश्वर तथा अति पवित्र थिओटोकोस के सम्मान की रक्षा में दृढ़ खड़े रहे। उन्होंने स्वयं को मसीह के झुंड का एक सच्चा चरवाहा साबित किया, सतर्कता से अपने झुंड की रखवाली की और भेड़िये के खिलाफ लड़े। शुरुआत में, संत सिरील ने नेस्टोरियस को दयालुता से लिखा, और उसे झूठे सिद्धांतों को त्यागने तथा सच्चे धर्म को स्वीकार करके मसीह की कलीसिया में मचाई गई हलचल को समाप्त करने के लिए समझाया[4233] । फिर, जब उन्होंने देखा कि नेस्टोरियस सुधर नहीं रहा था, तो उन्होंने उसे एक

[4230] 'परमेश्वर की माता, अति पवित्र कुँवारी मरियम' की उपाधि, जिस पर अनास्तासियस और नेस्टोरियस ने हमला किया था, का उपयोग पिछले शताब्दी में सेसरिया के यूसेबियस, महात्मा अथेनासियस, ग्रेगरी महान, नाइसा के ग्रेगरी और अन्य लोगों द्वारा किया गया था; इसका यह अर्थ नहीं था कि परम पवित्र कुँवारी ने उद्धारकर्ता को दिव्य स्वभाव प्रदान किया था, बल्कि यह केवल एक व्यक्ति में ईश्वरत्व और मानवता के मिलन की पुष्टि करता था, 'क्योंकि परमेश्वर के पुत्र ने मानव का व्यक्तित्व नहीं, बल्कि केवल मानवीय स्वभाव ग्रहण किया'।

[4231] संयोग से, नेस्टोरियस के प्रवचनों की प्रतियां मिस्र के भिक्षुओं के बीच प्रचलित थीं, और परिणामस्वरूप उनमें से कई ने परम पवित्र कुंवारी को 'ईश्वर की माता' कहना बंद कर दिया।

[4232] अलेक्जेंड्रिया के बिशप अलेक्जेंडर ने प्रभु को एक सपने में अपने वस्त्र फाड़े हुए देखा। जब उन्होंने प्रकट हुए व्यक्ति से पूछा: 'प्रभु, आपके वस्त्र किसने फाड़े हैं?', तो उन्हें यह उत्तर मिला: 'उन्मत्त और अधर्मी एरियस ने'। थोड़ी ही देर बाद, एरियस ने प्रभु यीशु मसीह के व्यक्तित्व के संबंध में अपनी विधर्मी शिक्षा प्रस्तुत की।

[4233] सिरिल ने 430 के अपने ईस्टर पत्र में नेस्टोरियस को यह चेतावनी दी।

कठोर पत्र लिखा, जिसमें उसकी गलती को उजागर किया। संत सिरिल ने कॉन्स्टेंटिनोपल के चर्च के पुरोहितों और शाही दरबार[4234] को भी लिखा, और उनसे नेस्टोरियस की शिक्षाओं से भटकने न जाने का आग्रह किया। उन्होंने प्राचीन रोम के पोप सेलेस्टाइन[4235] और अन्य पैट्रिआर्क[4236] को एक पत्र लिखा, जिसमें उन्होंने नेस्टोरियस की विधर्म के बारे में सूचित किया और उनसे नेस्टोरियस को पश्चाताप करने के लिए समझाने का आग्रह किया। इसके अलावा, उन्होंने विभिन्न देशों और शहरों के सभी अधिकारियों और बिशपों को पत्र भेजे, जिनमें उन्होंने सभी को नेस्टोरियस की विधर्म से भटकने के प्रति आगाह किया। चूंकि इस विधर्म ने कई भिक्षुओं सहित अन्य लोगों को गुमराह कर दिया था, इसलिए उन्होंने उन लोगों को भी लिखा, जिसमें उन्होंने उन्हें इस विधर्म के आत्मा-विनाशकारी नुकसान को समझाया और उससे धोखा खाने से रोका। संक्षेप में, संत सिरिल इस भेड़िये के खिलाफ पुकारना तब तक बंद नहीं हुए जब तक कि उन्होंने उसे मसीह के झुंड से पूरी तरह से भगा नहीं दिया।

इस बीच, नेस्टोरियस न केवल सिरिलियस के पत्रों के जवाब में सुधार करने में विफल रहा, बल्कि अपने अनुयायियों के साथ मिलकर और भी भयानक भ्रांतियों में पड़ गया। वास्तव में, उसके एक समर्थक, बिशप डोरोथियस ने, स्वयं नेस्टोरियस की उपस्थिति में, कैथेड्रल में उपदेश-पीठ पर खड़े होकर जोर से घोषणा की:

'यदि कोई कुँवारी मरियम को परमेश्वर की माता कहता है, तो वह धिक्कारित हो।'

इसके बाद, नेस्टोरियस ने स्वयं कॉन्स्टेंटिनोपल के चर्च के उन पुरोहितों और भिक्षुओं को यातनाएँ देना शुरू कर दिया जो उसका विरोध करते थे और उसकी विधर्म में विश्वास नहीं रखते थे। साथ ही, वह संत साइरिल के विरुद्ध आग-बबूला हो उठा, अहंकार और घमंड से उनके खिलाफ खड़ा हो गया और उन्हें विधर्मी कहने लगा, जबकि वह स्वयं एक विधर्मी था। बाद में उस पवित्र और धर्मात्मा व्यक्ति के खिलाफ कई अन्यायपूर्ण और झूठे अपमानजनक आरोप गढ़कर, उसने उन्हें लोगों के बीच फैलाया, और सिरिल के नाम का अपमान और अवमानना की। लेकिन अलेक्जेंड्रिया के पवित्र पिता ने इन अपमानजनक आरोपों पर कोई ध्यान नहीं दिया और केवल मानव आत्माओं के मोक्ष में ही लगे रहे।

सिरिल के प्रयासों के बावजूद, अशांति और उथल-पुथल जारी रही, और नेस्टोरियन विधर्म दिन-ब-दिन बढ़ता गया, और अधिक से अधिक पैर पसारने लगा। कई बिशप पहले ही इस आत्मा-विनाशकारी विधर्मी शिक्षा से प्रभावित हो चुके थे और नेस्टोरियस के अनुयायी बन चुके थे। संयोग से, उन्हें अंटाकिया के पैट्रिआर्क जॉन '[4237] ' से कुछ समर्थन मिला, जो नेस्टोरियस की बातों से सहमत तो नहीं थे, फिर भी उन्होंने सिरिल से उसके शब्दों को बहुत अधिक महत्व न देने का अनुरोध किया। हालाँकि, इससे उस आग को बुझाया नहीं जा सका जो भड़क चुकी थी। इस उथल-पुथल को समाप्त करने का केवल एक ही उपाय बचा था: एक सार्वभौमिक परिषद बुलाना। नेस्टोरियस के विरोधी और उसके समर्थक, दोनों ही समान रूप से परिषद के बुलाए जाने के लिए उत्सुक थे, और प्रत्येक पक्ष को उम्मीद थी कि उसका अपना सिद्धांत ही हावी होगा। और इस प्रकार थियोडोसियस द्वितीय ने, आम अनुरोधों के आगे झुकते हुए, ऐसी ही एक परिषद बुलाने का निर्णय लिया[4238] ।

[4234] संत सिरिल ने दो विशेष ग्रंथ लिखे, एक सम्राट थियोडोसियस द्वितीय को, और दूसरा सम्राज्ञियों पुलकेरिया और यूडोक्सिया को, जिनमें से पहली सम्राट की बहन और दूसरी उनकी पत्नी थीं।

[4235] सेलेस्टिन प्रथम 422 से 432 तक रोम के बिशप थे।

[4236] अर्थात् एंटिओक और यरूशलेम के पैट्रिआर्क।

[4237] जॉन प्रथम, अंत्योखिया के पैट्रिआर्क, ने 423 से 440 तक अंत्योखिया का सिंहासन संभाला।

[4238] एकुमेनिकल परिषद बुलाने के फरमान पर न केवल थियोडोसियस ने, बल्कि पश्चिमी सम्राट वैलेंटाइनियन तृतीय ने भी हस्ताक्षर किए, जिन्होंने 423 से 455 तक शासन किया।

एशिया माइनर में एफ़िसुस शहर[4239] को परिषद के स्थल के रूप में नामित करने के बाद, उन्होंने साम्राज्य के सभी मेट्रोपॉलिटिन और बिशपों को 431 ईस्वी में पेंटेकोस्ट तक वहाँ इकट्ठा होने का निमंत्रण दिया। साथ ही, उन्होंने व्यक्तिगत रूप से साम्राज्य के प्रतिनिधि के रूप में परिषद में भाग लेने के लिए कोमिति[4240] कैंडिडियनस को एफ़िसुस भेजा।

नेस्टोरियस ईस्टर (19 अप्रैल) के ठीक बाद 16 बिशपों के साथ एफ़िसुस पहुँचे; पवित्र पेंटेकोस्ट के ठीक पहले, संत सिरिल पचास मिस्र के बिशपों के नेतृत्व में पहुँचे। एशिया के पड़ोसी शहरों से लगभग 40 बिशप आए Minor[4241] । पोप सेलेस्टाइन, बीमारी और वृद्धावस्था के कारण, उपस्थित नहीं हो सके और उन्होंने अपने तथा 'पूरे पश्चिमी परिषद' के प्रतिनिधियों के रूप में दो बिशप और एक प्रेस्बिटिर भेजे, जिन्हें संत सिरिल के निर्णय का पालन करने के निर्देश दिए गए थे। कुल मिलाकर लगभग 200 बिशप एकत्रित हुए, लेकिन एंटिओक के जॉन और अन्य सीरियाई बिशप—जिनमें से अधिकांश नेस्टोरियस के पक्ष में थे—उपस्थित नहीं हुए। परिषद में एकत्रित बिशप 21 जून तक उनकी व्यर्थ प्रतीक्षा करते रहे और, कोई खबर न मिलने पर, अंततः अपनी कार्यवाही शुरू की (21 जून 431)। अपने धर्मप्रांत की गरिमा के नाते, संत किरिल ने इस परिषद की अध्यक्षता की, जिसमें यरूशलेम के जुवेनाल और एफेसस के मेमनोन उनके सह-अध्यक्ष के रूप में कार्यरत थे। लेकिन अधर्मी नेस्टोरियस ने परिषद के आयोजन का विरोध किया और इस बहाने से उपस्थित नहीं हुआ कि वह अंतिओकिया के जॉन और सीरियाई बिशपों के आगमन का इंतजार करेगा। परिषद के पितरों ने उसे तीन बार उपस्थित होने के लिए आमंत्रित किया, लेकिन उसने जिद पर इनकार कर दिया। तब उन्होंने नेस्टोरियस के लेखों की जांच की और सावधानीपूर्वक जांच के बाद, उन्हें विधर्मी घोषित कर दिया। संत सिरिल ने परिषद के समक्ष नेस्टोरियस और अन्य लोगों को लिखे अपने पत्र प्रस्तुत किए, जिनमें उन्होंने उस विधर्मी के अधर्मी अनुमानों का पर्दाफाश किया था, और साथ ही अलेक्जेंड्रिया में पहले आयोजित स्थानीय परिषद के आदेश भी प्रस्तुत किए। परिषद के पितृगण उस संत की शिक्षा से सहमत हुए, उन्होंने उन्हें ईश्वर-भक्त और धर्म-ज्ञानी के रूप में स्वीकार किया, और अलेक्जेंड्रिया की स्थानीय परिषद के फैसले का समर्थन किया।

इस बीच, अंतिओक के जॉन सीरियाई बिशपों के साथ एफेसस पहुँचे। हालात के बारे में जानने पर, उन्होंने नेस्टोरियस के बचाव में एक अलग परिषद बुलाई, जिसमें नेस्टोरियस और उनके सभी समर्थकों ने भाग लिया। कैंडिडियन, जो विधर्म से प्रभावित था, ने इस अवैध परिषद का समर्थन किया, और इसमें संत किरिल पर अपोलिनारियन विधर्म[4242] का अन्यायपूर्ण आरोप लगाया गया, जो मसीह की सच्ची मानवता से इनकार करता था और यह दावा करता था कि मसीह के पास आत्मा नहीं थी, बल्कि उनमें दिव्यता निहित थी। उस पवित्र पुरुष पर ऐसा आरोप लगाकर और झूठी बदनामी करके, नेस्टोरियस के अनुयायियों ने सम्राट को भी उनके खिलाफ करने की कोशिश की। पहले तो वे अपने उद्देश्य में सफल हो गए। सम्राट ने उनकी बदनामी पर विश्वास कर लिया और आदेश दिया कि संत सिरिल को, एफेस के धन्य मेमनोन, बिशप के साथ, कैद किया जाए[4243] । लेकिन बाद में, मामले की विस्तार से जांच करने और एक ओर धर्मनिष्ठ सिरिल की निर्दोषता और दूसरी ओर उसके दुश्मनों के घोर झूठ और द्वेष को देखने के बाद, थियोडोसियस ने पवित्र और

[4239] एफ़िसुस – एशिया माइनर प्रांत इकोनियम का प्रमुख शहर, कैस्ट्रस (अब कुचुक मेंडेरेस) के मुहाने के पास; यह एशिया माइनर में सभी व्यापार का केंद्र था। यह कभी डायना के प्रसिद्ध मंदिर के लिए प्रसिद्ध था। ईसाई इतिहास में, एफ़िसुस उस स्थान के रूप में जाना जाता है जहाँ प्रेरित और संत जॉन द थियोलोजियन ने अपने जीवन के अंतिम वर्ष बिताए थे। परिणामस्वरूप, एफ़िसुस में चर्च को प्रेरितों तक अपनी वंशावली का पता रखने वाली संस्था के रूप में बहुत सम्मान दिया जाता था, और 5वीं शताब्दी में एफ़िसुस के बिशपों को पैट्रिआर्कात्मक अधिकार प्रदान किए गए, जिन्हें उन्होंने बनाए रखा, हालांकि लंबे समय तक नहीं।

[4240] कोमीटेस – एक साथी। यह नाम सम्राटों के अनुचर दल के सदस्यों को दिया जाता था। उस समय, कोमीटेस की उपाधि साम्राज्य के सर्वोच्च पदाधिकारियों को प्रदान की जाने वाली एक मानद उपाधि बन गई थी।

[4241] इन बिशपों के प्रमुख एफेसस के बिशप मेमनोन थे, जिनके पद को उस समय पैट्रिआर्कात्मक अधिकार प्राप्त थे। बाद में, एफेसस के बिशप, जो क्षेत्र के मेट्रोपॉलिटिन की उपाधि धारण करते थे, कॉन्स्टेंटिनोपल के पैट्रिआर्क के अधीनस्थ हो गए।

[4242] अपोलीनारिस सीरिया में लाओडिकिया के बिशप थे (मृत्यु 390)। शुरुआत में वह नाइसीन धर्मविश्वास के प्रमुख समर्थकों में से एक थे; लेकिन बाद में, एरियन विधर्म के खिलाफ संघर्ष में, वह विपरीत चरम पर चले गए। इस धारणा से आगे बढ़ते हुए कि एक पूर्ण ईश्वर और एक पूर्ण मनुष्य एक ही व्यक्तित्व में एक नहीं हो सकते, और यह कि यदि मसीह एक पूर्ण मनुष्य होते, तो वे पाप से मुक्त नहीं रह सकते थे और उद्धार को पूरा नहीं कर सकते थे, – अपोलिनारिस ने यह सिखाया कि मसीह में मानव स्वभाव के केवल दो भाग थे - शरीर और आत्मा - जबकि तीसरा भाग, आत्मा, उनके भीतर की दिव्यता द्वारा ग्रहण कर लिया गया था। इस विधर्म की 362 में अलेक्जेंड्रिया की परिषद में निंदा की गई थी।

[4243] संत सिरिल और मेमनोन के साथ-साथ, नेस्टोरियस को भी सम्राट के आदेश पर गिरफ्तार कर लिया गया। यह कार्रवाई दर्शाती है कि थियोडोसियस ने दो विरोधी गुटों के प्रमुख प्रतिनिधियों को हटाकर, दोनों पक्षों के बीच सुलह और समझौता करने की उम्मीद की थी। मामले की परिस्थितियों की अधिक विस्तृत समझ ने उन्हें इस उपाय को रद्द करने और सिरिल और मेमनोन को रिहा करने के लिए प्रेरित किया।

वीर धर्मगुरु और उनके अनुयायी मेमनोन को उनके पदों पर बहाल कर दिया, और बाद वाले की सहनशीलता और नम्रता की प्रशंसा की; जबकि उन्होंने विधर्मियों को नियंत्रित करने का आदेश दिया।

इस प्रकार, संत सिरिल ने एफ़िसुस में नेस्टोरियस के विचारों की जाँच करने के लिए एकत्रित हुए पवित्र पिताओं के प्रमुख के रूप में फिर से अपनी जगह ली। इस परिषद में, धर्म की यह सिद्धांत स्थापित किया गया कि हमारे प्रभु यीशु मसीह, जो परम पवित्र कुँवारी मरियम से अवतारित हुए थे, सच्चे ईश्वर हैं, और यह कि परम पवित्र कुँवारी मरियम, जिन्होंने उन्हें जन्म दिया, ईश्वर की सच्ची माता हैं। जब यह निर्णय लोगों को घोषित किया गया, तो सभी विश्वासियों के बीच बहुत खुशी हुई, और एफ़िसुस शहर के सभी नागरिकों ने गंभीरता से उद्घोष किया—जैसा कि उन्होंने एक बार पहले नहीं किया था, जब उन्होंने कहा था: 'महान है एफ़िसुस की आर्टेमिस'[4244] —बल्कि पूरी तरह से अलग शब्दों के साथ: 'महान है परम पवित्र कुँवारी मरियम, ईश्वर की माता'। नेस्टोरियस को एक विधर्मी और ईश्वर-निन्दक के रूप में दोषी ठहराया गया और न केवल उसके पद से हटा दिया गया, बल्कि उसे मसीह की कलीसिया से बहिष्कृत कर शाश्वत नरक में भेज दिया गया। बाद में, अंऊookिया के जॉन ने सीरियाई बिशपों के साथ मिलकर इस परिषद के निर्णय से सहमति व्यक्त की। सम्राट ने, अपनी ओर से, नेस्टोरियस को सबसे दूरस्थ भूमि, जिसे Oasis[4245] के नाम से जाना जाता है, में निर्वासित कर दिया। वहाँ, बिना पश्चाताप के रहते हुए, अधर्मी नेस्टोरियस ने अपनी जीवनलीला भयानक यातना में समाप्त की। वास्तव में, जब वह जीवित था, तो कीड़ों ने उसकी ईश्वरनिंदा करने वाली जीभ को खा डाला।

मसीह की माता के विरुद्ध विधर्मी नेस्टोरियस की निन्दा ऑर्थोडॉक्सी के लिए कितनी घृणित थी, यह निम्नलिखित घटना से स्पष्ट होता है, जिसे आदरणीय जॉन ने अपनी कृति *द स्पिरिचुअल पास्चर*[4246] में वर्णित किया है: 'एक बार,' वे लिखते हैं, 'हम कोलोमन मठ[4247] के पुरोहित, अबा सिरियिकस के पास गए, और उन्होंने हमें निम्नलिखित बात बताई: 'एक बार मैंने सपने में देखा कि मेरी कोठरी के दरवाजों के बाहर एक तेजस्वी, अत्यंत सुन्दर कुंवारी खड़ी थी, जो बैंगनी वस्त्रों में लिपटी हुई थी, और उसके साथ दो दीप्तिमान पुरुष थे। और मुझे एहसास हुआ कि यह हमारी माता, , परमेश्वर की सबसे पवित्र कुंवारी माता थीं, और उनके साथ जो पुरुष थे वे संत जॉन बपतिस्मादाता और संत जॉन द थियोलोजियन थे। तुरंत मैं अपनी कोठरी से बाहर निकला और झुककर उनसे अपनी कोठरी में आकर उसे आशीर्वाद देने का आग्रह किया, लेकिन उन्होंने ऐसा नहीं किया। मैंने उनसे बहुत देर तक विनती की, कहकर: 'हे माता! अपनी इस विनम्र और लज्जित दासी को अपने से दूर न करें।' और मैंने उनके सामने कई अन्य प्रार्थनाएँ भी कीं। तब, मेरी सच्ची प्रार्थना देखकर, उन्होंने मुझसे कहा:

'तुम्हारी कोठरी में मेरा शत्रु है; तो फिर तुम यह इच्छा कैसे व्यक्त कर सकते हो कि मैं तुम्हारे पास आऊँ?'

ये शब्द कहकर, वह चली गईं। अपनी नींद से जागने पर, मैं रोने और शोक करने लगा, यह सोचते हुए कि क्या मैंने अपने विचारों में सर्व-शुद्ध कुँवारी के विरुद्ध किसी भी तरह से पाप किया था; क्योंकि मेरी कोठरी में मेरे सिवा कोई और नहीं था। खुद की पूरी तरह से जाँच करने पर, मुझे ऐसा कुछ भी नहीं मिला जिससे मैंने उनकी अवज्ञा की हो। यह देखकर कि दुख मुझे खा रहा था, मैंने अपनी पीड़ा से थोड़ी देर के लिए ध्यान हटाने के लिए एक किताब उठाई और पढ़ने लगा। यह

[4244] यह प्रेरितों के काम (प्रेरितों के काम 19:24-28) में वर्णित एक प्रसिद्ध घटना का संदर्भ है। यह घटना प्रेरितों के समय में स्वयं एफेसस में हुई थी, जहाँ उस समय आर्टेमिस (या डायना, शिकार की देवी) का प्रसिद्ध मंदिर था और जहाँ इस देवी का नाम विशेष पूजा का विषय था। प्रेरितों के कामों में दिए गए विवरण के अनुसार, जब प्रेरित पौलुस और बरनबास एफ़िसुस आए और वहाँ मूर्तियों की व्यर्थता के बारे में उपदेश दिया, तो कारीगरों ने, जो डायना के मंदिर के मॉडल बनाने में अपने लिए एक लाभदायक व्यापार पाते थे, प्रेरितों के खिलाफ एक लोकप्रिय विद्रोह भड़काया, भीड़ चिल्ला रही थी: 'महान है एफेस की आर्टेमिस!' हालाँकि, इस अशांति को अधिकारियों ने शांत कर दिया।

[4245] उपरी मिस्र (थेबाइड) के पश्चिम में स्थित लीबियाई रेगिस्तान का मरुद्यान ओएसिस के नाम से जाना जाता है; इसे महान लीबियाई मरुद्यान भी कहा जाता था। वहाँ प्राचीन काल से एक यूनानी बस्ती मौजूद थी, जो निर्वासन का स्थान भी था।

[4246] आध्यात्मिक चरागाह (ग्रीक: लिमोनार) भिक्षु जॉन मॉस्कस (मृत्यु 622) की एक रचना है; यह 7वीं शताब्दी की शुरुआत में लिखी गई थी और इसमें फिलिस्तीन, मिस्र और सीरिया के तपस्वियों के संक्षिप्त वृत्तांत शामिल हैं।

[4247] 'लव्रा' शब्द का उपयोग उन मठों के लिए किया जाता था जो भिक्षुओं की बड़ी संख्या और उनके महत्व के लिए विशिष्ट थे। 'लव्रा' - ग्रीक शब्द से - का अर्थ है किसी शहर का एक हिस्सा या एक गली; यह कोशों (सेलों) की एक पंक्ति का नाम था, जो एक बाड़ या दीवार से घिरी होती थी और शहर की गलियों की तरह एक चर्च या मठाधीश के आवास के चारों ओर व्यवस्थित होती थी। लव्रा में भिक्षु तपस्वी जीवन जीते थे और अपने-अपने कोठरी में रहकर तपस्या करते थे, वे सप्ताह के पहले और आखिरी दिनों में दिव्य सेवाओं के लिए ही एक साथ इकट्ठा होते थे, जबकि बाकी दिनों में मौन का पालन करते थे। भिक्षु जीवन के इस क्रम का पालन कई लव्रा में और विशेष रूप से, उपरोक्त कोलोमानोवा लव्रा में किया जाता था। यह मठ जॉर्डन नदी और मृत सागर के पास, जॉर्डन के रेगिस्तान में स्थित था।

यरूशलेम के धन्य पुरोहित इसिचियस की एक किताब थी[4248] , जिसे मैंने उनसे कुछ समय के लिए उधार लिया था। किताब पढ़ने के बाद, मैंने इसके अंत में अधर्मी नेस्टोरियस के दो शब्द देखे और तब मुझे एहसास हुआ कि अपनी कोठरी में मैं पवित्रतम माता का कितना बड़ा शत्रु था। फिर, उठकर, मैं वह किताब उस व्यक्ति के पास ले गया जिसने मुझे दी थी और उससे कहा:

'भाई, अपनी पुस्तक वापस ले लो; मुझे इससे लाभ की अपेक्षा अधिक हानि हुई है।'

उसने मुझसे पूछा कि उसकी किताब ने मुझे लाभ की बजाय हानि कैसे पहुँचाई। और मैंने उसे उस दर्शन के बारे में बताया जो मुझे हुआ था। तब, दिव्य उत्साह से भरकर, उसने पुस्तक से नेस्टोरियस के दो शब्दों को काटकर आग में जला दिया, और कहा: 'मेरी कोठरी में हमारी माता - ईश्वर की माता और सदा-कन्या मरियम - का कोई शत्रु न रहे।'

और हमें यह उल्लेख करने में चूक नहीं करनी चाहिए कि मिसीह के संत सिरिल—जो ईश्वर के महान सेवक थे—अपनी अपार पवित्रता के बावजूद अपने भीतर कुछ लज्जास्पद और धर्मनिष्ठा के विपरीत संजोए हुए थे, ताकि हम उनके चमत्कारिक सुधार के साक्षी बन सकें। उन्होंने जॉन क्रिसोस्टोम से बिना किसी कारण के नाराज़गी जताई—एक संत दूसरे संत के विरुद्ध। यह हमारे लिए कोई आश्चर्य की बात नहीं होनी चाहिए, क्योंकि पूर्णता केवल परमेश्वर के लिए ही उपयुक्त है; जहाँ तक मनुष्यों का सवाल है, कोई भी अपने आप में पूर्ण नहीं हो सकता, जब तक कि उन्होंने मसीह से *'उसकी परिपूर्णता से हम सभी ने अनुग्रह पर अनुग्रह प्राप्त किया है'* ([4249] , यूहन्ना 1:16) *प्राप्त न किया हो*; इसीलिए संत भी, मनुष्यों के रूप में, मानवीय कमजोरियों के अधीन हैं। संत सिरिल में भी ऐसी ही एक कमजोरी थी, विशेष रूप से जॉन क्रिसोस्टोम के साथ उनके संबंधों में: वह उस संत से न केवल उनके जीवनकाल में, बल्कि उनकी मृत्यु के बाद भी नाराज़ थे, और उन्हें संतों में शामिल करके स्मरण करने से इनकार कर दिया। सिरिल का गुस्सा द्वेष से नहीं, बल्कि अज्ञानता से उत्पन्न हुआ था। एक ओर, अपने चाचा, पैट्रिआर्क थियोफिलिस से, और दूसरी ओर, उन लोगों से जिन्होंने क्रिसोस्टोम के प्रति शत्रुता रखी थी, उन्होंने इस सार्वभौमिक दिग्गज के खिलाफ कई अन्यायपूर्ण बदनामी सुनी थी और, अपनी भोली-भाली प्रकृति के कारण, उन्होंने झूठ को सच मान लिया। क्योंकि लिखा है: *'भोला-भाला हर बात पर विश्वास करता है'* (नीतिवचन 14:15)। कॉन्स्टेंटिनोपल के पैट्रिआर्क एटिकस, जो नेस्टोरियस से पहले रहे, ने अपने पत्रों में उनसे आग्रह किया कि वे संत जॉन क्रिसोस्टोम के नाम को चर्च के डिप्टिाइक्स (ecclesiastical diptychs)[4250] में शामिल करें, यानी, उन पुस्तकों में जिनमें संतों के नाम होते हैं। अटिकस स्वयं पहले जॉन क्रिसोस्टोम के विरोधियों में से एक थे, लेकिन बाद में, इस पवित्र व्यक्ति की निर्दोषता और साथ ही उनके प्रति अपने पाप को महसूस करते हुए, उन्होंने पश्चाताप किया। अर्साकियस के बाद कॉन्स्टेंटिनोपल के पैट्रिआर्की सिंहासन पर बैठने पर, उन्होंने क्रिसोस्टोम को डिप्टिचि में शामिल किया और, जब तक वह जीवित थे, उन्होंने संत सिरिल को पत्रों में प्रोत्साहित किया, जिसमें उन्होंने उनसे भी ऐसा ही करने का आग्रह किया। लेकिन बाद वाले ने उनकी बात नहीं मानी, क्योंकि वह थियोफिलिस[4251] द्वारा बुलाई गई जॉन के खिलाफ पहले की परिषद के महत्व को कम नहीं करना चाहते थे।

इसी तरह, पेलूसियम के संत इसिडोर[4252] – जो सिरिल्लुस के रिश्तेदार और काफी उम्र के व्यक्ति थे – ने, क्रिसोस्टोम को संतों की सूची से बाहर करने के कारण संत सिरिल्लुस के प्रति कई लोगों के आक्रोश को देखकर, निडर होकर उन्हें लिखा और जॉन क्रिसोस्टोम की निंदा के परिस्थितियों की निष्पक्ष जांच करने का आग्रह किया।

[4248] चेज़ सैटरडे पर यरूशलेम के पादरी, संत इसिचियस की स्मृति दिवस होता है।

[4249] इवेंजेलिस्ट यूहन्ना के सुसमाचार के एक प्रसिद्ध अंश का संदर्भ: (यूहन्ना 1:16), अर्थात्, यीशु मसीह में अनुग्रह के वरदानों की परिपूर्णता से, हम सभी ने परमेश्वर के अनुग्रह का प्रचुर कार्य प्राप्त किया है।

[4250] डिप्टिख़िस छोटी लकड़ी, हड्डी या धातु की पट्टियाँ थीं जिन्हें रस्सियों से एक साथ बाँधा जाता था, जो प्राचीन यूनानियों और रोमनों के बीच स्मारक पुस्तकों के रूप में काम करती थीं। ईसाई चर्च में, डिप्टिख़िस प्राचीन काल से स्मारक पुस्तकें रही हैं, जिनमें बिशपों, शहीदों और सामान्य रूप से सभी संतों के नाम दर्ज किए जाते थे।

[4251] यह संभवतःकालसेडोन से बहुत दूर नहीं, डुब्ना में आयोजित परिषद को संदर्भित करता है, जिसकी अध्यक्षता थियोफिलिस ने की थी, जिसमें सेंट जॉन क्रिसोस्टोम को दोषी ठहराया गया और पदच्युत कर दिया गया था।

[4252] पेलुसियम के संत इसिडोर, जो अपने जीवन की कठोर तपस्या के लिए प्रसिद्ध एक प्रसिद्ध तपस्वी थे, मिस्र के शहर पेलुसियम के पास रहते थे। उनकी मृत्यु लगभग 436 ईस्वी में हुई। उनकी रचनाओं से यह स्पष्ट होता है कि वह चर्च के महान धर्मगुरुओं में से एक थे। उनकी कृतियों में पत्र शामिल हैं, जिनमें से अधिकांश पवित्र धर्मग्रंथों पर टीकाएँ हैं। हालांकि, कई पत्र विभिन्न समकालीनों को प्रोत्साहित और अनुशासित करने के उद्देश्य से, साथ ही संघर्ष में पड़े लोगों को सुलह कराने के उद्देश्य से लिखे गए थे। कहा जाता है कि संत इसिडोर के पत्रों की कुल संख्या 10,000 तक पहुँच गई थी, लेकिन आज तक केवल लगभग 2,090 ही बचे हैं।

'पक्षपात दूरदर्शितिहीन होता है, जबकि घृणा कुछ भी नहीं देखती,' पेलुसियोट ने संत सिरिल को लिखे अपने एक पत्र में लिखा। 'इसलिए, यदि आप इन दोनों दोषों से मुक्त होना चाहते हैं, तो जल्दबाजी में निर्णय न लें, बल्कि तथ्यों को एक निष्पक्ष परीक्षण के अधीन करें; क्योंकि स्वयं ईश्वर, जो होने से पहले सब कुछ जानता है, ने भी मानवता के प्रति अपने प्रेम में स्वर्ग से उतरकर सोदोम की पुकार को देखा (उत्पत्ति 18:20), और हमें यह सिखाया कि सभी कार्यों को सावधानीपूर्वक जांच-पड़ताल के बाद किया जाए। क्योंकि एफ़िसुस की परिषद में आपके साथ जो कई लोग थे, वे उपहास करते हुए कहते हैं कि आप ईसा मसीह के लिए जो आवश्यक है, उसे ईसाई मान्यता के अनुसार खोजने के बजाय अपनी निजी दुश्मनी को बढ़ावा दे रहे हैं। वे आपके बारे में कहते हैं कि आप थियोफिलिस के भतीजे हैं, और आप उसके आत्मा से प्रभावित हैं। जिस प्रकार थियोफिलिस ने ईश्वर-धारी और ईश्वर-प्रेमी यूहन्ना पर खुलेआम अपना क्रोध उतारा, उसी प्रकार यह व्यक्ति भी घमंड करना चाहता है, यद्यपि प्रतिवादी की परिस्थितियों में बहुत बड़ा बदलाव आ गया है, क्योंकि यूहन्ना पहले ही निर्वासन का दंश झेल चुका है और अब जीवित नहीं है।"

एक अन्य पत्र में, पेलूसियम के संत इसिडोर ने सिरील को इस प्रकार लिखा: 'दिव्य धर्मग्रंथ के उदाहरण मुझे भयभीत करते हैं और मुझे वह लिखने के लिए विवश करते हैं जो लिखा जाना चाहिए। क्योंकि यदि मैं एक पिता हूँ, जैसा कि आप स्वयं कहते हैं, तो मुझे उस निन्दा का भय है जिसके लिए एली को अपने पापी बेटों को धर्म के मार्ग पर रखने में विफल रहने के कारण दण्डित किया गया था[4253] ; लेकिन यदि, जैसा कि मैं अधिक सत्य जानता हूँ, मैं आपके सामने एक पुत्र हूँ, जो उस महान मार्क की समानता लिए हुए है, – तो मैं उस दंड से भयभीत हूँ जिसके अधीन योनातान को अपने पिता को रोकने में विफल रहने के लिए किया गया था, जिसने एक जादूगरनी को खोजा था[4254] । क्योंकि, चूँकि वह उसे रोक सकता था, वह उस व्यक्ति से पहले युद्ध में मारा गया जिसने पाप किया था। इसलिए, इससे पहले कि मुझे भी दोषी ठहराया जाए, और इससे पहले कि ईश्वर आपको दोषी ठहराए, इस कलह को समाप्त करें, और अपने अपमान का वह प्रतिशोध जीवित चर्च पर न थोपें जो मनुष्यों को दिया जाना चाहिए – धर्मपरायणता के बहाने, इसके भीतर शाश्वत कलह न पैदा करें[4255] ।

और एक अन्य अंश में, संत ने सिरिल को इस प्रकार लिखा: 'आप मुझसे पवित्र व्यक्ति जॉन के निर्वासन की परिस्थितियों के बारे में पूछते हैं: लेकिन मैं इस पर विस्तार से नहीं लिखूँगा, कहीं ऐसा न हो कि मैं दूसरों की निंदा करने वाला और दोषी ठहराने वाला व्यक्ति दिखूँ, क्योंकि संत के खिलाफ लोगों द्वारा किए गए अनगिनत अन्याय हर हद से बढ़ गए हैं। मैं आपको संक्षेप में मिस्र के क्रूर स्वभाव की याद दिलाऊंगा, जो आपके पास ही स्थित है[4256] : इसने मूसा का त्याग कर दिया, फिरौन के सामने आत्मसमर्पण कर दिया, नम्र लोगों पर घाव किए, मजदूरों को कड़वा कर दिया, शहरों की स्थापना की और मजदूरों को मजदूरी देने में विफल रहा[4257] । ऐसे कर्मों में संलग्न होकर, उसने अधर्मी थियोफिलिस को

[4253] बेशक, महायाजक एली भी थे, जो भविष्यवक्ता शमूएल के समय में रहते थे। वे अपनी दयालुता के लिए जाने जाते थे, लेकिन उनकी दयालुता कमजोरी के कगार पर थी। यह विशेष रूप से उनके बेटों, याजकों होफ़नी और फिनेहास के प्रति उनके रवैये में स्पष्ट था, जिन्होंने स्वयं को तंबू में विभिन्न प्रकार के अन्यायपूर्ण कृत्य करने की अनुमति दी। कमजोर इच्छाशक्ति वाले एली ने ईश्वर की बार-बार चेतावनियों के बावजूद इस पर कोई उचित ध्यान नहीं दिया। फिर ईश्वर का न्याय एली के घर पर आने में देर नहीं हुई। फिलिष्टियों के साथ युद्ध छिड़ गया, और जब युद्ध के दौरान, एली के बेटों द्वारा वाचा का संदूक इस्राएली सेना के पास ले जाया गया, तो एक बड़ी विपत्ति आई: एली के बेटे मारे गए, संदूक पकड़ लिया गया, और एली, यह सुनकर, अपनी कुर्सी से गिर पड़ा और मर गया (1 शमूएल 4:1–22)।

[4254] योनातान यहूदियों के राजा शाऊल का पुत्र था। जब परमेश्वर ने शाऊल से अपना मुख फेर लिया और फिलिष्टियों से युद्ध के दौरान, युद्ध के परिणाम के बारे में उसे कोई दर्शन नहीं दिया, तो उसने अंधविश्वास की ओर मुड़ने का निश्चय किया और इसाखार कुल के एक छोटे से शहर एन्डोर में रहने वाली एक जादूगरनी के पास गया। वहाँ उसने शमूएल की आत्मा को बुलाया और अपने भविष्य के बारे में जानने की कोशिश की। इसके बाद हुई लड़ाई में, साऊल की सेना हार गई, और उसके तीन बड़े बेटों को उसकी आँखों के सामने ही मार डाला गया; साऊल स्वयं अपनी तलवार पर गिरकर आत्महत्या कर ली।

[4255] क्रिसोस्टोम की मृत्यु के बाद, उनके संबंध में काफी असहमति थी। जहाँ कॉन्स्टेंटिनोपल और अलेक्जेंड्रिया के चर्चों के आधिकारिक प्रतिनिधियों ने उन्हें संत के रूप में मान्यता नहीं दी, वहीं अन्य चर्चों—जैसे रोम और एंटिओक के चर्चों में—उन्हें डिप्टिाइक्स में शामिल किया गया और संतों में गिना गया। फिर भी, पहले दो चर्चों के भीतर भी क्रिसोस्टोम के कई समर्थक थे जो अपने आधिकारिक प्रतिनिधियों की राय से सहमत नहीं थे और उन्हें एक संत मानते थे। इससे विवाद और असहमति पैदा हुई। कॉन्स्टेंटिनोपल में, जॉन क्रिसोस्टोम के समर्थकों को जोहानिट्स के नाम से जाना जाता था। यह विभाजन वहाँ 438 ईस्वी तक हल नहीं हुआ।

[4256] मध्यसागर के तट पर स्थित, और यूनानी मूल का शहर होने के कारण, अलेक्ज़ेंड्रिया को यहाँ, एक तरह से, प्रामाणिक प्राचीन मिस्र के बाहर माना जाता है।

[4257] यहाँ मिस्र के फिरौन के समय में दासों - पिरामिड और अन्य मिस्र की संरचनाओं के निर्माताओं - और, संयोग से, यहूदियों पर किए गए बड़े अत्याचार का उल्लेख है। पीठ तोड़ने वाले काम से थके हुए, उन्हें खराब भोजन दिया जाता था और अपने काम के लिए उन्हें कोई भुगतान नहीं मिलता था।

जन्म दिया, जो सोने को ईश्वर मानता है[4258] ; अपने समान विचारधारा वाले अनुयायियों के साथ, उसने संत जॉन के विरुद्ध विद्रोह किया – एक ऐसा व्यक्ति जो ईश्वर से प्रेम करता था और उनके बारे में उपदेश देता था। इसके बावजूद, दाऊद का घर स्थापित और बढ़ाया जा रहा है, जबकि शाऊल का घर, जैसा कि आप देख सकते हैं, फीका पड़ रहा है[4259] "।

ये थे पेलूसियम के संत इसिडोर द्वारा संत सिरिल को लिखे गए लेख। उन पर इतना प्रभाव पड़ा कि उन्हें पढ़कर उन्हें अपने पाप का एहसास हुआ। विशेष रूप से, जब उसे निम्नलिखित दृष्टि दिखाई दी, तो उसने अपने पाप को पूरी तरह से महसूस किया और पूरी तरह से पश्चाताप किया। उसे ऐसा लगा कि वह एक अत्यंत सुंदर स्थान पर था, जो अकथनीय आनंद से भरा हुआ था। वहाँ उन्होंने अद्भुत पुरुषों – अब्राहम, इसहाक और याकूब – और पुराने तथा नए नियमों के अन्य संतों को देखा। उसी समय, उन्होंने एक विशाल और प्रकाशमान मंदिर देखा, जिसकी सुंदरता का वर्णन मानव भाषा नहीं कर सकती, और उसमें मधुर स्वरों का गायन सुना। इस मंदिर में प्रवेश करके और इसकी सुंदरता तथा वैभव को देखकर, सिरिल ने भीतर महिमा के प्रकाश में, स्वर्ग के सर्वपवित्र माता को, स्वर्गदूतों की भीड़ से घिरी हुई, देखा। ईश्वर की माता के चारों ओर खड़े लोगों में, सम्मान के स्थान पर, संत जॉन क्राइसोस्टोम थे, जो ईश्वर के एक स्वर्गदूत की तरह अद्भुत प्रकाश से दमक रहे थे और अपने हाथ में अपने लेखन की एक पुस्तक पकड़े हुए थे; अद्भुत पुरुषों की एक भीड़ ने उन्हें घेरा हुआ था, मानो वे सेवक हों। वे सभी हथियारबंद थे, जैसे किसी हमले की तैयारी कर रहे हों। और इस प्रकार, जब सिरिल ने परमेश्वर की माता के चरणों में गिरकर उनकी आराधना करना चाहा, तो संत जॉन, अपने साथियों के साथ, तुरंत उस पर झपट पड़े, उसे परमेश्वर की अति पवित्र माता के पास आने से रोकते हुए और उस अद्भुत चर्च से बाहर निकालते हुए। सिरिल, जॉन के प्रति उनके क्रोध को देखकर और यह महसूस करते हुए कि उसे चर्च से बाहर निकाला जा रहा है, भयभीत हो गया। लेकिन अचानक उसने परम पवित्र कुँवारी मरियम को जॉन से यह कहते हुए सुना, कि वह सिरिल को क्षमा कर दे और उसे चर्च से बाहर न निकाले, क्योंकि उसने उससे दुष्टता से नहीं बल्कि अज्ञानता के कारण पाप किया था। लेकिन जॉन सिरिल को माफ करने के लिए तैयार नहीं थे। तब परमेश्वर की अति पवित्र माता ने कहा: 'मेरे लिए उसे माफ कर दो, क्योंकि उसने मेरे सम्मान के लिए बहुत परिश्रम किया है - उसने मनुष्यों के बीच मेरा गौरव बढ़ाया है और मुझे परमेश्वर की माता कहा है।'

जब परमेश्वर की अति पवित्र माता ने ये शब्द कहे, तो यूहन्ना तुरंत मान गया और परमेश्वर की माता से बोला:

'हे माता, आपकी मध्यस्थता से, मैं उसे क्षमा करता हूँ।' फिर, मैत्रीपूर्ण ढंग से सिरिल के पास जाकर, उन्होंने उसे गले लगाया और चूमा, और इस प्रकार वे उस दर्शन में एक-दूसरे से मेल-मिलाप कर गए।

इस दर्शन के बाद, संत सिरिल ने अक्सर पश्चाताप करना शुरू कर दिया और स्वयं को कोसने लगे कि उन्होंने तब तक ईश्वर के ऐसे पुरुष के प्रति व्यर्थ में क्रोध पाल रखा था। फिर, सभी मिस्र के बिशपों को इकट्ठा करके, उन्होंने संत जॉन क्राइसोस्टोम के सम्मान में एक भव्य समारोह आयोजित किया और उन्हें चर्च के रजिस्टरों में महान संतों के समूह में दर्ज किया। इस प्रकार, उस पवित्र पुरुष सिरिल पर लगा दाग—जो संत जॉन के साथ मतभेद में थे—दूर हो गया, क्योंकि ईश्वर की अति पवित्र माता स्वयं अपने सेवकों के बीच की शत्रुता को दूर कर चुकी थीं। उस समय से लेकर, जब तक संत सिरिल जीवित रहे, उन्होंने संत जॉन क्राइसोस्टोम की प्रशंसा के शब्दों से उनकी स्तुति की।

संत सिरिल ने अपने जीवन का शेष समय महान कार्य करते हुए बिताया, न केवल अपनी मुक्ति के लिए बल्कि दूसरों की मुक्ति के लिए भी चिंता की, और कई लोगों को धर्म के मार्ग पर मार्गदर्शन दिया। ईश्वर-प्रसन्न संत संत सिरिल के जीवन की एक घटना के बारे में एक कहानी बताई जाती है। उस समय मिस्र के निचले हिस्से में एक वृद्ध रहते थे, जो अपने पवित्र जीवन के लिए प्रसिद्ध थे। इसके बावजूद, एक अनपढ़ और साधारण व्यक्ति होने के कारण, वह एक गलत विश्वास पर अड़ा रहा; अर्थात्, अपनी अज्ञानता के कारण, उस वृद्ध ने दावा किया कि मेल्चीजेदेक परमेश्वर का पुत्र था[4260] । इस तर्क की सूचना उनकी पवित्रता सिरिल को दी गई, और बाद वाले ने उस वृद्ध को अपने पास आने के

[4258] अलेक्जेंड्रिया के धर्मप्रांत में सिरिल के पूर्ववर्ती, उनके चाचा थियोफिलिस, अपनी लालच के लिए कुख्यात थे, जैसा कि संत जॉन क्रिसोस्टोम (14 नवंबर) के जीवन से स्पष्ट है।

[4259] यह एक रूपक अभिव्यक्ति है – जो उनके मृत्युपरान्त धर्मी क्रिसोस्टोम की विजय की ओर संकेत करती है, जिन्हें कई चर्चों में एक संत के रूप में मान्यता मिली और जिनके बहुत सारे अनुयायी और प्रशंसक हैं।

[4260] सालेम के राजा और सर्वोच्च परमेश्वर के याजक मेल्कीजेदक का उल्लेख उत्पत्ति की पुस्तक (14:18) में मिलता है (तुलना करें भजन संहिता 109:3; इब्रानियों 5:6, 10, 6:20, 7:1, 10, 11, 15)। जब अब्राहम एलम के राजा और उसके सहयोगियों के खिलाफ अपनी मुहिम से विजयी होकर लौटा, जिन्होंने लूत को लूट लिया था, तो मेल्कीजेदक ने उसे रोटी और दाखरस के साथ मिला और परमप्रभु परमेश्वर के नाम पर उसे आशीष

लिए आमंत्रित किया। यह जानते हुए कि बूढ़े चमत्कार करते थे और ईश्वर को इतने प्रिय थे कि ईश्वर उनकी हर प्रार्थना स्वीकार करते थे – और यह कि मेल्चीजेदेक के बारे में उनकी गलत धारणा केवल उनकी सादगी के कारण थी – पैट्रिआर्क ने उन्हें सही मार्ग पर लाने के लिए निम्नलिखित बुद्धिमानी का सहारा लिया। बूढ़े को सौम्य स्वर में संबोधित करते हुए, उन्होंने कहा:

'अब्बा, मैं आपसे विनती करता हूँ कि आप एक दुविधा को सुलझाने में मेरी मदद करें: एक ओर, तर्क मुझे इस निष्कर्ष पर ले जाता है कि मेल्कीज़ेदेक परमेश्वर का पुत्र है; दूसरी ओर, कुछ मुझे बताता है कि यह अनुचित है और वह एक साधारण मनुष्य और परमेश्वर का याजक है। और इस प्रकार मैं संदेह और भ्रम में हूँ, यह न जानता कि क्या निष्कर्ष निकालूँ। इसीलिए मैंने जानबूझकर आपको बुलाया है, ताकि आप इस मामले में ईश्वर से प्रार्थना करें, उनसे प्रार्थना करें कि वे आपको सत्य प्रकट करें। और जो कुछ भी ईश्वर आपको प्रकट करें, मुझे बताने से इनकार न करें।"

अपने ईश्वरीय जीवन पर भरोसा करते हुए, वृद्ध ने संत सिरिल को साहसपूर्वक उत्तर दिया:

'महाधर्माध्यक्ष महोदय, कृपया मुझे तीन दिनों के लिए एकांत में जाने की अनुमति दें; जिसके बाद मैं इस बारे में ईश्वर से पूछूँगा और जो कुछ मुझे प्रकट होगा, वह आपको बताऊँगा।'

तब, अपने कोठरी में जाकर तीन दिन तक वहाँ बंद रहने के बाद, बुजुर्ग ने ईश्वर से मेल्कीसेदेक के बारे में सत्य प्रकट करने के लिए प्रार्थना की। अपनी प्रार्थना स्वीकार होने पर, वह संत सिरिल के पास आए और कहा:

'मेलकीजेज़ेक एक मनुष्य है, न कि परमेश्वर का पुत्र। और यह बात आप जान लीजिए, महाशय, कि वास्तव में ऐसा ही है।'

संत सिरिल इस बात से बहुत प्रसन्न हुए कि उन्होंने उस वृद्ध की आत्मा को बचा लिया था और, उसे धन्यवाद देकर, उसे विदा कर दिया। उस वृद्ध के जाने के बाद, उन्होंने सभी को यह उपदेश देना शुरू कर दिया कि मेलकीजेदेक एक मनुष्य है, न कि परमेश्वर का पुत्र। इस प्रकार परमेश्वर के सेवक ने उस अज्ञानी व्यक्ति को बुद्धिमानी से सच्चे मार्ग पर मार्गदर्शन किया।

छत्तीस वर्ष तक अलेक्जेंड्रिया के पैट्रिआर्कल सिंहासन पर आसीन रहने, अपने सम्पूर्ण जीवन में उस समय प्रचलित समस्त विधर्मों से मसीह की कलीसिया को शुद्ध करने, तथा अनेक धर्मोपकारी ग्रंथ लिखने के उपरांत[4261] ,

---

दी। अब्राहम ने इस आशीष को इतना मान दिया और उसे इतनी श्रद्धा से ग्रहण किया कि उसने मेल्कीजेदेक को अपनी सारी लूट का दसवां हिस्सा दे दिया। मेलकीज़ेदेक की पहचान एक रहस्य बनी हुई है। सबसे अधिक संभावना है कि वह उस समय फिलिस्तीन में रहने वाली आमोरी जनजाति से था, क्योंकि उनके बीच वह राजा और महायाजक दोनों था। सेलम को बाद के जेबूस और फिर यरूशलेम के समान माना जाता है (भजन संहिता 75:3)। यह अनुमान लगाया जा सकता है कि मेल्कीजेदेक एक असाधारण व्यक्ति थे, जो पूरे फिलिस्तीन में प्रसिद्ध थे, और सच्चे परमेश्वर के सेवक थे। पवित्र शास्त्र ने उनके बारे में विवरण छिपाए हुए हैं, और उन्हें मसीह के एक प्रकार के रूप में प्रस्तुत किया है। राजा और भविष्यवक्ता दाऊद ने भी परमेश्वर के पुत्र के बारे में बात करते हुए मेल्कीजेदेक के पुरोहितत्व के प्रकारात्मक महत्व की ओर इशारा किया: *'तुम मलेकीज़ेदेक की व्यवस्था के अनुसार सदा के लिए याजक हो'* (भजन संहिता 109:4)। लेकिन मलेकीज़ेदेक का प्रकारात्मक महत्व प्रेरित पौलुस द्वारा इब्रानियों के नाम अपने पत्र में (इब्रानियों 7:1–28) विशेष रूप से स्पष्ट और विस्तार से प्रकट किया गया है।

[4261] अलेक्जेंड्रिया के संत सिरिल की रचनाओं को उनकी सामग्री के अनुसार व्याख्यात्मक, अपोलोजेटिक (ईसाई धर्म के बचाव में), डॉगमैटिक और नैतिक रूप में वर्गीकृत किया गया है। सिरिल के व्याख्यात्मक कार्यों में, सबसे उत्कृष्ट उनकी लूका के सुसमाचार पर की गई व्याख्या है, जो अपनी संक्षिप्तता और शास्त्र के शब्दों की व्याख्या में प्रदर्शित सटीकता के लिए विशिष्ट है। इब्रानियों और कोरिन्थियों को लिखी गई पत्रियों पर उनकी व्याख्याएँ भी उल्लेखनीय हैं। पुरानी वाचा पर उनकी टीकाओं में, गीतों के गीत पर उनके स्पष्टीकरणों का विशेष उल्लेख किया जाना चाहिए, उसके बाद यशायाह और लघु भविष्यवक्ताओं पर उनकी टीकाओं का स्थान आता है। जूलियन के विरुद्ध संत सिरिल का प्रबंध उत्कृष्ट है; इसे जूलियन द्वारा, मूर्तिपूजक दार्शनिकों की सहायता से, मूर्तिपूजा के बचाव में और ईसाई धर्म के विरुद्ध लिखे गए कार्य का खंडन करने के लिए रचा गया था। सिरिल के अधिकांश धर्मशास्त्रीय कार्य नेस्टोरियन विवाद के संबंध में लिखे गए थे। इनमें नेस्टोरियस के खिलाफ पाँच पुस्तकें शामिल हैं। यहाँ, अलेक्जेंड्रिया के संत, नेस्टोरियस का नाम लिए बिना, उनके सिद्धांतों का खंडन करते हैं। पवित्र त्रिमूर्ति पर विस्तृत कार्य, जिसे 'द ट्रेजरी' के नाम से जाना जाता है, धन्य फ़ोटियस (कॉन्स्टेंटिनोपल के पैट्रिआर्क) का कहना है कि यह अपनी गहनता के लिए विशिष्ट था और इसका उद्देश्य एरियस और यूनोमियस की विधर्मी शिक्षाओं का खंडन करना था। यह स्पष्टता में सभी से श्रेष्ठ है। पवित्र त्रिमूर्ति पर दो अपेक्षाकृत संक्षिप्त धर्मशास्त्रीय ग्रंथ और अवतार पर एक ग्रंथ धर्मोपदेशात्मक शिक्षा के रूप में हैं: ये कृतियाँ जिस सटीकता के साथ उन्होंने रूढ़िवादी सिद्धांत को प्रस्तुत किया है, उसके लिए महत्वपूर्ण हैं। यहाँ पवित्र आत्मा के वास पर शिक्षण विशेष ध्यान का पात्र है। मानव-रूपवाद के विरुद्ध प्रबंध संत सिरिल द्वारा कुछ मिस्र के भिक्षुओं के लिए लिखा गया था, जो अज्ञानता के कारण ईश्वर की कल्पना मानव रूप में करते थे। संत सिरिल ने कई प्रवचन रचे। आत्मा के प्रस्थान पर उनका प्रवचन एक पश्चातापी हृदय की भावना की गहराई और शरीर से अलग हुई आत्माओं की स्थिति पर उनके चिंतन, दोनों के लिए उल्लेखनीय है। इसे ईसाइयों के लिए अत्यधिक शिक्षाप्रद होने के कारण स्लावोनिक भजन संहिता और ग्रीक घड़ी की पुस्तक में शामिल किया गया है।

संत सरिलि प्रभु में नदि्रति हुए[4262] । उनके नधिन के समय, सवयं परमेश्वर की अतपिवत्रि माता उनके पास खड़ी थीं, क्योंकि उन्होंने उनके लिए नष्ठिापूर्वक परश्रिम कयिा था और उनके सम्मान के लिए वीरतापूर्वक प्रयास कयिा था। उन्हें सन्त क्रसिोस्टोम की पंक्तमिें सही रूप से गनिा जाता है, और उनके साथ, कभी न खत्म होने वाले प्रेम से जलते हुए, वह ईश्वर मसीह और परमेश्वर की परम पवत्रि माता दोनों के सामने खड़े हैं, उनकी महमिा में नविास करते हुए, उनके सहिासन के पास, और सर्वदा के लिए परम धन्य कुँवारी और उनसे जन्मे सच्चे ईश्वर की सतुतकिरते हुए। आमेन।

कॉन्टाकयिन, स्वर 6:

हे धन्य सरिोइल, आपने उद्धारकर्ता के स्रोतों से हमें धर्मशास्त्रीय शकि्षा की अथाह गहराइयों का प्रकटीकरण कयिा, वधिर्म को वश में कयिा, और झुंड को कलह से अछूता बचाया। हे पूजनीय, आप सभी राष्ट्रों के लिए एक शकि्षक हैं, जो दवि्यता का प्रकटीकरण करते हैं।

कुश के आदरणीय अलेक्जेंडर, मठाधीश की स्मृति।

9 जून को स्मरणोत्सव

ये आदरणीय व्यक्तवि ोलोग्दा नगर के मूल नविासी थे और उन्होंने अब्बॉट डायोनसियिस[4263] के अधीन कामेन्नी मठ[4264] में संन्यास की शपथ ली। मानवीय महमिा से बचते हुए, वह इस मठ से नकिल गया, कुबेन्स्कोये झील के पास स्थति कुश्ता नामक नदी पर आया, और रोस्तोव के आर्चबशिप डायोनसियिस[4265] के आशीर्वाद से, परमेश्वर की अतपिवत्रि माता और उनकी सम्मानति तथा गौरवशाली नदि्रोपमृत्यु को समर्पति एक चर्च का नरि्माण कयिा। यारोस्लाव के राजकुमार दमित्रिी और समियिन[4266] , संत के बारे में यह जानकर, बहुत प्रसन्न हुए और उन्होंने चर्च और मठ की जरूरतों के लिए उन्हें एक बड़ी राशप्रिदान की; और राजकुमार दमित्रिी की मृत्यु के बाद, उनकी पत्नी, राजकुमारी मारयिा, ने संत के कार्यों को देखकर, अपने पतकिी स्मृतमिें, मठ के रखरखाव के लिए उन्हें एक दान दयिा, एक गाँव और उसके कसिानों के साथ। इसके बाद, संत अलेक्जेंडर ने अपने प्रयासों को दोगुना कर दयिा। मठ समुदाय के साथ मलिकर, उन्होंने सवयं भूमजिोती और भरपूर फसल काटी।

आदरणीय संत अपने जन्म से 60 वर्ष, 2 महीने और 2 दनि जीवति रहे और 1439 में, June[4267] के 9वें दनि, वे शाश्वत जीवन में वलिीन हो गए। वे मध्यम कद के, बहुत दुबले-पतले शरीर वाले थे; उनका सरि औसत आकार का, चेहरा गोल, आँखें कोमल, दाढ़ी मोटी और गोल, छाती तक लंबी थी, और उनके बाल गहरे सुनहरे रंग के थे जनिमें सफेद धब्बे थे।

23 जून

10 जून (पुराने तरीके से)

[4262] संत सरिलि का 27 जून 448 को नधिन हो गया।

[4263] माउंट अथोस पर संन्यास ग्रहण करने वाले एक भकि्षु डायोनसियिस, स्पैसो-कामेंस्की मठ में कठोर अथोनाइट नयिम शुरू करने और अपने जीवन के उदाहरण से, कई लोगों को इस एकांत मठ की ओर आकर्षति करने के लिए जाने जाते हैं। आदरणीय अलेक्जेंडर ने उनसे ही अपना संन्यास ग्रहण कयिा था।

[4264] कामनी या कामेंस्की मठ, अब वोलोग्दा गवर्नरेट में स्थति कुबेन्स्कोये झील के एक सुनसान द्वीप पर स्थति था।

[4265] स्पसोकामनेनी मठ के मठाधीशों में से एक, डायोनसियिस को 1418 में रोस्तोव के आर्चबशिप के पद पर पदोन्नत कयिा गया था।

[4266] राजकुमार दमित्रिी वासलिीवचि यारोस्लाव के राजकुमार नहीं थे, बल्कि ज़ाओज़ेरो या कुबेन्स्कोये के राजकुमार थे, और उनका नविास एक छोटा बस्ती थी—जो अब कुबेन्स्कोये उस्टयि गाँव है—जो आदरणीय अलेक्जेंडर के मठ से तीन वर्स्ट की दूरी पर स्थति है; हालांकि, यारोस्लाव के राजकुमार दमित्रिी के भाई, समियिन वासलिीवich थे, जनिकी मृत्यु लगभग 1320 में हुई थी।

[4267] आदरणीय अलेक्जेंडर की पूजा 16वीं शताब्दी में शुरू हुई। उनके अवशेष कुश्त्स्की मठ में रखे गए हैं, जसिे 1838 में स्पासोकाम्योई मठ से जोड़ दयिा गया था।

हमारे पवत्रि पति वासयिन, लोडयिम के बशिप का जीवन[4268]

10 जून को स्मरणोत्सव

अब उन संतों के जीवन का वर्णन करना, जन्हिोंने ईश्वर की सहायता से, साहसपूर्वक सांसारकि इच्छाओं के वरिुद्ध युद्ध लड़ा, और उनकी स्मृतकिो आने वाली पीढ़ियों तक पहुँचाना, दो कारणों से लाभदायक है। पहला, संतों के वीर कर्मों को याद करके, हम वश्विास करते हैं कसिंत भी हमारे लिए परमेश्वर के समक्ष मध्यस्थता करते हैं; दूसरा, संतों के कर्मों और साहस का वर्णन करके, हम स्वयं और दूसरों को इन कर्मों का अनुकरण करने के लिए प्रेरति करते हैं। इसी को ध्यान में रखते हुए, हम लोडयिम के बशिप और कन्फेशर, संत वासयिन के जीवन और कार्यों का संक्षेप में वर्णन करने का प्रयास करेंगे; ईश्वर के इस सेवक के माध्यम से, हम उनके कार्यों का ववरिण प्रस्तुत करेंगे, जसिके लिए उन्हें स्वर्ग के राज्य का सहभागी बनने के योग्य माना गया।

छोटी उम्र से ही, यह पवत्रि व्यक्तएिक ऋषथि—बेशक, उनकी उम्र के लहिाज से नहीं, बल्कउिनकी बुद्धि और सद्गुण के लहिाज से। उनके पति, सेरजयिस, जो सरिक्यूज़ क्षेत्र के शासक थे[4269] , हेलेनकि मूर्तपिूजा का पालन करते थे।

उसने अपने पुत्र को पैगन दर्शन का अध्ययन करने के लिए रोम भेजा, ताकिवह सत्ता में अपने पति का उत्तराधकिारी बन सके और लोगों का एक कुशल शासक बन सके। स्वाभावकि रूप से बुद्धमिान और ववेकी, वासयिन ने दर्शन के अध्ययन में लगन से मन लगाया और अपनी पढ़ाई में उत्कृष्टता हासलि की। उस समय, उसने मसीह के नाम और ईसाइयों के जीवन के बारे में सुना[4270] और तुरंत अपने पूरे दलि से हेलेनकि दर्शन को आत्मा को बचाने वाली मसीही बुद्धि के लिए बदलने की इच्छा की; इसलिए, वह इस बात पर वचिार करने लगा कअिपने पति के उन सेवकों में से कसिके सामने (जनिके हवाले उसे कयिा गया था) वह अपने दलि का राज़ खोल सकता है।

हालाँकि, प्रभु, अपने योद्धा को उसके लिए नर्धिारति कार्य से बहुत देर तक दूर नहीं रखना चाहते थे, उन्होंने एक धर्मनष्ठि पुरोहति को सपने में तीन बार उस युवक वासयिन की ईसाई बनने की इच्छा और इरादे का खुलासा कयिा। जागने के बाद, उस पुरोहति ने रोम नगर के सभी वद्यिालयों का दौरा करना शुरू कर दयिा, और उस युवक को खोजने का प्रयास करने लगा जसिे प्रभु ने उसे सपने में दखिाया था। अंतत; एक लंबी खोज के बाद, उस पुरोहति ने ईश्वर की सहायता से उस युवक को ढूंढ लयिा जसिकी वह तलाश कर रहा था और उससे पूछा कवि‍ह कहाँ का रहने वाला है, उसके माता-पति कौन हैं, और वह रोम में क्यों रह रहा है।

जब उस लड़के वासयिन ने अपने बारे में सब कुछ वस्तिार से बताया, तो पुरोहति उसके बुद्धमिानी भरे और समझदारी भरे जवाबों से चकति रह गया, और उसे एहसास हुआ कयिही वह युवक था जसिकी वह तलाश कर रहा था।

एक प्यार करने वाले पति की तरह, पुरोहति ने उस युवक को गले लगा लयिा और उसे चूमा; फरि वह उसे घर ले गया, जहाँ उसने उसे ईश्वर से प्राप्त दर्शन के बारे में बताया; इसके बाद, उन्होंने दोनों ने ईश्वर की स्तुतकिी। तुरंत बाद, वासयिन पुरोहति के पैरों पर गरि पड़ा और उससे जल्द से जल्द उसे ईसाई बनाने की वनिती करने लगा। सबसे पहले, पादरी ने उस युवक को पवत्रि वश्विास के सत्यों की शक्षिा देना शुरू कयिा और उसे ईसाई धर्म के संस्कारों के बारे में समझाया। जब उस युवक ने यह शक्षिा सुनी, तो वह गहराई से प्रभावति हुआ और मसीह के प्रतप्रिेम से भर गया। तब पुरोहति ने उसे '[4271] ' (पवत्रि अभषिेक) के बारे में नर्देश दयिा और सखिाया कपिवत्रि बपतस्मिा के दौरान उसे अपना

[4268] लोडयिा या लावदा मेडओिलन के पास स्थति था (नीचे, पृष्ठ 384 देखें)

[4269] सरिक्यूज़ ससिलिी द्वीप के पूर्वी तट पर पहली ग्रीक बस्तयिों में से एक थी, जसिकी स्थापना 8वीं शताब्दी ईसा पूर्व में हुई थी; बाद में यह द्वीप का सबसे बड़ा और सबसे अमीर शहर बन गया।

[4270] बाद के वृत्तांत से यह स्पष्ट है कसिंत वासयिन ने अपने बचपन में ही ईसाइयों के बारे में सुना था (हागयिोग्राफी बताती है कवि‍ासयिन ने, एक शशिु होते हुए भी, जमीन पर क्रॉस का चह्नि बनाया था); लेकनि रोम में, वासयिन ईसाई धर्म से और भी अच्छी तरह से परचिति हो गए और उन्हें ईसाइयों के जीवन-यापन के तरीके को प्रत्यक्ष रूप से देखने का अवसर मलिा।

[4271] प्रारंभकि चर्च में, बपतस्मिा की तैयारी कर रहे सभी लोगों को आमतौर पर पहले एक अवधि के लिए कैटेकेससि (शक्षिण) से गुजरना पड़ता था - यानी, ईसाई धर्म की सच्चाइयों पर मौखकि शक्षिण। कैटेकुमेन को दैवीय धर्मवधि के केवल पहले (प्रोस्कोमेडयिा) और दूसरे (कैटेकुमेन की धर्मवधि) भागों में भाग लेने की अनुमतथि; तीसरे भाग (वश्विासयिों की धर्मवधि) से पहले, कैटेकुमेन को चर्च छोड़ना होता था, जैसा कि

आचरण कैसे रखना चाहिए। उस समय से, वासियन अपने सबसे पुराने दासों में से एक के साथ, जो हर बात में उसके प्रति वफादार था, अक्सर सम्मानित पुरोहित से मिलने जाने लगा, ताकि वह अपने आध्यात्मिक गुरु के ईश्वर-प्रेरित होठों से ईसाई ज्ञान प्राप्त कर सके।

अपने धर्मोपदेश-काल के बाद, वासियन ने एक तपस्वी जीवन जीना शुरू कर दिया: दिन में वह उपवास करता और प्रार्थना करता था, जबकि रात में वह अपना समय या तो प्रार्थना में या किताबें पढ़ने में बिताता था, और केवल थोड़ी देर ही सोता था। उसे दिए गए भोजन में से, वह केवल एक तिहाई खाता था, जबकि शेष दो-तिहाई वह गरीबों में बाँट देता था।

इस बीच, काफी समय बीत चुका था; आखिरकार, वासियन के बपतिस्मा का समय आ गया। वासियन, अपने वफादार सेवक के साथ, पादरी के घर के लिए रवाना हुए, जहाँ पवित्र बपतिस्मा संपन्न हुआ। जब वासियन, बपतिस्मा की प्रथा के अनुसार, पवित्र बपतिस्मा के कुंड में उतरे, तो उन्होंने एक अत्यंत सुंदर मुख वाले युवक को देखा, जो सूर्य की तरह चमक रहा था; यह युवक बपतिस्मा में सहायता कर रहा था और वे वस्त्र पकड़े हुए था जिन्हें नव-बपतिस्मित व्यक्ति कुंड से बाहर निकलने के बाद पहनने वाला था। धन्य वासियन ने उससे पूछने की हिम्मत की:

'तुम कौन हो? तुम कहाँ से आए हो?'

युवक ने उत्तर दिया, 'मुझे तुम्हारे पास बहुत पहले भेजा गया था, ताकि मैं तुम्हारे पवित्र उद्देश्य को पूरा करने में तुम्हारी मदद करूँ और उस उद्देश्य के विपरीत सब कुछ दूर भगा दूँ।'

यह कहकर वह युवक अदृश्य हो गया। उसके जाने के बाद, कमरा एक अद्भुत सुगंध से भर गया जो आधे घंटे तक बनी रही, जिससे वहाँ मौजूद सभी लोग यह सोचने लगे कि वे पृथ्वी पर नहीं बल्कि स्वर्ग में हैं।

उनके पवित्र बपतिस्मा के बाद, वासियन ने और भी अधिक कठोर जीवन जीना शुरू कर दिया, अपने युवा शरीर को कष्ट देकर उसे अपनी आत्मा के अधीन कर दिया। गवर्नर सेरजियस ने वासियन को अपनी आँखों का तारा मानकर उसकी रक्षा करने का आदेश दिया था, लेकिन वासियन के गुप्त[4272] से अनजान रक्षक और नौकर, उसके असामान्य संयम को देखकर बहुत हैरान, यहाँ तक कि चिंतित हो गए; वे इस बात से हैरान थे कि वह इतना कम भोजन और पानी क्यों लेता था, अपनी रातें बिना नींद के क्यों बिताता था, उसका चेहरा क्यों पीला पड़ता जा रहा था और उसका शरीर क्यों क्षीण हो रहा था। यह सब देखकर, वे एक-दूसरे से हैरानी से पूछने लगे: 'हमारे स्वामी खुद को इतना क्यों थका रहे हैं?'

लेकिन सबसे बड़े नौकर ने, जो संत वासियन के प्रति वफादार था और उसका रहस्य जानता था, उनसे कहा: 'इस पर आश्चर्यचकित न हों, क्योंकि दार्शनिक शिक्षा केवल ऐसे शिष्यों द्वारा ही समझी जा सकती है जिन्होंने सभी वासनाओं का त्याग कर दिया है और जीवन को बनाए रखने के लिए आवश्यक चीजों से ही संतुष्ट हैं। इसलिए, जान लो कि हमारे स्वामी ने, परम ज्ञान का अध्ययन करने की इच्छा से, अपने ऊपर ऐसी तपस्या और अनिद्रा थोपी है।"

लेकिन नौकर इस जवाब से संतुष्ट नहीं थे; इसके अलावा, उन्हें याद आया कि वासियन, जब एक शिशु था, तो कभी-कभी रेत में क्रॉस का निशान बनाता था या पुआल को क्रॉस के आकार में व्यवस्थित करता था, जिसके लिए उसकी दाई अक्सर उससे नाराज़ हो जाती थी। अंततः विभिन्न पूछताछों और वासियन के ठिकाने पर नजर रखने के बाद, नौकरों को संदेह होने लगा कि उनके स्वामी ने ईसाई धर्म अपना लिया है और वे अपने जीवन को ईसाई शिक्षाओं के अनुसार जी रहे हैं। इससे उन्हें काफी भ्रम और डर हुआ, क्योंकि वे वासियन के पिता, सर्जियस के क्रोध से डरते थे। उन्हें अंततः निम्नलिखित अवसर पर यकीन हो गया कि वासियन एक ईसाई था।

एक दिन, पूरी रात की प्रार्थना सभा और रात की मेहनत के बाद, वह धन्य युवक, थका-हार कर, गहरी नींद में सो गया। सोते समय, वह प्रार्थना के शब्द बोलने लगा, त्रिमूर्ति में एक ईश्वर का आह्वान करते हुए, और उनसे प्रेम करने वालों को वादा की गई महिमा के मार्ग पर चलने के लिए मार्गदर्शन मांगने लगा। उनकी प्रार्थना के बाद, ऊपर से एक आवाज़ सुनाई दी: 'हे मसीह के सबसे वफादार योद्धा, वासियन, आनंदित हो और हर्षित हो! तुम्हारी प्रार्थना ईश्वर द्वारा स्वीकार कर ली गई है, और स्वर्ग में तुम्हारे लिए सबसे अच्छी जगह तैयार कर दी गई है।'

इस घटना के बाद, नौकर अंततःइस बात से आश्वस्त हो गए कि वासियन एक ईसाई था; इसलिए, वे एक-एक करके, चुपके से अपने पूर्व स्वामी, गवर्नर सेरजियस के पास साइरेक्यूज़ लौट चले, अपने साथ एक ऐसी खबर लेकर जो उनके लिए अप्रिय थी; उन्होंने गवर्नर को सूचित किया कि उनके बेटे, वासियन ने ईसाई धर्म अपना लिया था।

डीकन की उद्घोषणा से सूचित किया जाता था: 'कैटेकुमेन, प्रस्थान करें।' कैटेकुमेनेट की अवधि भिन्न होती थी: यह कुछ दिनों या हफ्तों से लेकर कई महीनों और यहां तक कि वर्षों तक चलती थी।

[4272] अर्थात्, यह महसूस किए बिना कि वह एक ईसाई था।

सर्गीयस, एक मूर्तपिूजक होने के कारण, इस बात से बहुत दुखी हुआ और यह सोचने लगा कि वह अपने बेटे को ईसाई धर्म से कैसे दूर कर सकता है: दया से या धमकियों से।

धीरे-धीरे, वसियिन के सभी नौकर रोम छोड़ गए; केवल एक बूढ़ा और वफादार नौकर उसके साथ रहा, जो एक ईसाई भी था। जो लोग चले गए थे, उनकी जगह लेने के लिए वसियिन के पिता नए नौकर भेजना चाहते थे ताकि वे वसियिन को रोम से ले आकर उसके पास ला सकें।

उस समय, संत वासियिन को रात में, मुर्गी के पहले बाँग देने पर, संत जॉन द इवैंजेलस्टि, द थियोलोजियिन के चर्च में प्रवेश करना पड़ा[4273] । वहाँ, अपनी प्रथा के अनुसार प्रार्थना करते हुए, उन्होंने एक सज्जन व्यक्ति को देखा, जो सफेद बालों से सुशोभति था, जसिने उनसे नम्निलखिति कहा:

'हे मसीह के वश्विासयोग्य स्वीकारकर्ता, जान लो कि तुम्हें अपने वश्विासयोग्य सेवक के साथ यहाँ से रावेना नगर[4274] के लिए प्रस्थान करना चाहिए, क्योंकि तुम्हारे पिता, जन्हिोंने तुम्हें देह में जीवन दिया, तुम्हारी आत्मा के उद्धार में बाधा डालना चाहते हैं; यहाँ से भाग जाओ, कहीं ऐसा न हो कि वह तुम्हें सही मार्ग से भटका दें। इसी कारण, दयालु ईश्वर, जो अपने सेवकों को कभी नहीं छोड़ते, ने मुझे, अपने प्रेरति को, यह सूचति करने के लिए भेजा है, ताकि आपके पिता द्वारा भेजे गए लोग, आपको यहाँ पाकर, आपको इस स्थान से भागने से न रोक सकें।'

इन शब्दों के बाद, संत जॉन द थियोलोजियिन ने वासियिन से विदा ली।

धन्य वासियिन, प्रेरति के प्रकट होने से उसका हृदय अत्यंत हर्षति हो गया, और वह ईश्वर से प्रार्थना में कई बार झुकने लगा, उनसे यह निवेदन करते हुए कि वे उसे अपनी सहायता से वंचति न करें। अपनी प्रार्थना के बाद, वासियिन ने जो कुछ भी उसने देखा और सुना था, वह सब अपने सेवक को सुनाया। अगली सुबह, उन्होंने अपना सारा सामान गरीबों में बाँट दिया और अपने आध्यात्मकि पिता, गॉर्डयिन से आशीर्वाद प्राप्त करने के बाद, वे उस शाम रोम से नकिलकर रावेना के लिए रवाना हो गए।

कई दनिों की यात्रा के बाद, संत वासियिन ने दो शावकों वाली एक हरिण देखी; शकिारियों द्वारा पीछा कए जाने से वे जानवर पहले ही थक चुके थे और बेहोश हो रहे थे। शकिारी हरिन के लगभग पर थे। यह देखकर, संत को हरिण और उसके शावकों पर दया आ गई और उन्होंने उससे कहा: 'हमारे प्रभु यीशु मसीह के नाम पर, मैं तुम्हें आज्ञा देता हूँ कि बनिा कसिी डर के मेरे पास आओ।'

जैसे ही हरिणी ने उसके शब्दों को समझ लिया हो, वह तुरंत वश में हो गई, रुक गई, और अपने शावकों के साथ बनिा कसिी डर के संत के पास आ गई। वासियिन ने उसे अपने हाथ से सहलाना शुरू कर दिया, मानो वह कोई ऐसा जानवर हो जो लंबे समय से उससे परचिति हो; हरिणी ने, अपनी ओर से, उसके पैरों को चाटा।

जब हरिण का पीछा कर रहे शकिारी वहाँ पहुँचे और उन्होंने देखा कि वह यात्री के सामने भयभीत होकर खड़ी थी जबकि वह उसे अपने हाथ से सहला रहा था, तो वे बहुत हैरान हो गए, और यह सोचने लगे कि उस जानवर की जंगलीपन इतनी जल्दी वनिम्रता में कैसे बदल गया। यह देखकर, शकिारियों में से एक, जो स्वभाव से क्रूर और कटु था, ने अपने साथियों से कहा: 'मूर्खों! हम यहाँ क्यों ठहरे हुए हैं, और हम अपना शकिार क्यों नहीं ले जा रहे हैं?'

यह कहकर, उसने संत के हाथों से मादा हरिण को छीनना शुरू कर दिया।

संत वासियिन ने शकिारी से कहा, 'यह मैं नहीं हूँ, बल्कि सर्वशक्तमिान ईश्वर तुम्हें आज्ञा देते हैं, इस जंगली जानवर या उसके शावक को कसिी भी प्रकार की हानि मत पहुँचाओ।'

क्रोध और अभद्रता से, शकिारी ने ईश्वर के संत का हाथ हटाने की हम्मित की; लेकनि तुरंत ही, इतने अभद्र कृत्य के लिए, एक राक्षस ने उस क्रूर शकिारी पर हमला कर दिया और उसे बुरी तरह से पीड़ति करने लगा। पीड़ा से, वह जमीन पर गरि पड़ा, एक भयानक चीख नकिाली, उसके मुंह से झाग नकिलने लगा और, अकड़कर, मृतक समान हो गया। तब शेष शकिारी भय से कांप उठे और आतंकति हो गए; वे संत के चरणों में गरि पड़े, और उन्हें डर था कि कहीं उनके साथ भी ऐसा ही न हो, इसलिए वे आँसुओं के साथ क्षमा याचना करने लगे। वासियिन ने उन्हें उस स्थान से चले जाने का आदेश

[4273] प्रारंभकि ईसाइयों ने, प्राचीन यहूदियों के उदाहरण का अनुसरण करते हुए, रात को चार भागों (प्रत्येक तीन घंटे का) में वभिाजति किया, जन्हिें पहरे कहा जाता था। तीसरी पहर के दौरान होने वाले मुर्गे की बाँग को मुर्गे की बाँग या रोस्टर की बाँग कहा जाता था।

[4274] रावेना एड्रयिाटकि सागर के तट पर स्थति सज़ि-डैन्यूबयिन गॉल के रूप में जाने जाने वाले क्षेत्र में थी। प्रकृति और मानवीय प्रतभिा ने इस शहर को एक मजबूत, लगभग अभेद्य कलि में बदल दिया था, यही कारण था कि रावेना को इटली का प्रहरी माना जाता था। रोमन सम्राटों ने, होनोरयिस (395–423) से शुरू होकर, इसे अपनी सत्ता का केंद्र चुना।

दयिा, जबकि उन्होंने स्वयं प्रार्थना करने के लिए क्रॉस का चह्न बनाया और अपना पूरा मन ईश्वर में लगाकर प्रार्थना करने लगे: 'हे ईश्वर, सभी चीजों के अद्भुत सृष्टकिर्ता, हे दयालु ईश्वर – पतति मानव जाति के उद्धारकर्ता, जो मृतकों के वनिाश में नहीं बल्कि जीवतिों के उद्धार में आनंदति होते हैं: उसे क्षमा करें जो दुर्भाग्य में पड़ा है, जसिने अज्ञानता के कारण पाप कयिा है और आपकी दया को उकसाया है!'

संत ने ऐसे और इसी प्रकार के हार्दकि शब्दों से प्रार्थना की। अपनी प्रार्थना से उठकर, वे ज़मीन पर पड़े उस आदमी के पास गए, उसका दाहनिा हाथ पकड़ा, और उसके भीतर के राक्षस से कहा: 'शैतान! जसिने तुम्हें स्वर्ग की ऊँचाइयों से पाताल में गरिाया, वह तुम्हें आज्ञा देता है कि तुम तुरंत ईश्वर की प्रतमिा—इस मनुष्य—को छोड़ दो और अपने लिए तैयार कए गए टार्टारस में चले जाओ[4275] , जहाँ तुम्हें अनंतकाल तक यातनाएँ दी जाएँगी।"

संत ने ये शब्द मुश्कलि से ही बोले थे कि मानव जाति के शत्रु ने उस आदमी को छोड़ दयिा था, जसिे उसने इतने कम समय में इतनी बुरी तरह से पीड़ा दी थी कि वह आदमी लगभग मौत के दरवाजे पर था। जब शकिारी को होश आने लगा, तो वह अपनी आँखों से कुछ भी नहीं देख पा रहा था और जमीन पर नष्क्रयि पड़ा था।

संत ने एक बार फरि ईश्वर से प्रार्थना की और प्रार्थना करने के बाद शकिारी की आँखों पर क्रॉस का चह्न बनाया, जो तुरंत खुल गईं, जसिसे शकिारी फरि से देख सका। फरि वासयिन ने उसके पूरे शरीर पर क्रॉस का चह्न बनाया और उसे उठने का आदेश दयिा, और शकिारी उठ खड़ा हुआ, स्वस्थ, मानो उसे कोई नुकसान ही न हुआ हो।

अन्य शकिारी, जो थोड़ी दूरी पर खड़े थे, इस चमत्कारकि घटना को वस्मिय से नहिार रहे थे; फरि वे संत के पास आए और उनके सामने झुक गए। वह व्यक्ति जो ठीक हो गया था, उनके साथ झुका; उसने संत से क्षमा मांगी और अपने उपचारक को हार्दकि धन्यवाद दयिा। इसके बाद, सभी अपने-अपने रास्ते चले गए: शकिारी घर लौट गए, हरिण और उसके शावक मुक्त कर दिए गए, और संत वासयिन स्वयं, अपने सेवक के साथ, अपनी यात्रा पर नकिल पड़े।

रेवेना शहर पहुँचने पर, वासयिन शहर के बशिप, उर्सस, से मलिने गए, जो उनके रश्तिेदार थे। बशिप अपने रश्तिेदार को देखकर बहुत खुश हुए, और उससे भी ज़्यादा खुश हुए जब उन्हें पता चला कि वह मसीह में वश्वास करते थे और मसीह के प्रति प्रेम के कारण, उन्होंने सब कुछ त्याग दयिा था और भटकने लगे थे। वासयिन के अनुरोध पर, बशिप ने उनके लिए शहर के बाहर, संत अपोलनिारसि द होली मार्टायर के चर्च के पास एक शांत स्थान नर्धिारति कयिा, जो रावेना के पहले बशिप थे, जन्हिें प्रमुख प्रेरति संत पतरस द्वारा नयिुक्त कयिा गया था और जन्हिोंने मसीह के नाम के लिए वेस्पासयिन के शासनकाल में शहादत दी थी[4276] । इस चर्च में, वासयिन के लिए एक बहुत उपयुक्त स्थान मलिा: यहाँ, एकांत में रहते हुए और संसार तथा सभी सांसारकि चीजों का त्याग करके, वह ईश्वर की लगन से सेवा करने में सक्षम था, और उसने स्वयं को उपवास और प्रार्थना के लिए समर्पति कर दयिा।

प्रभु ने शीघ्र ही अपने सेवक को महमिामय कयिा: उन्होंने उसे प्रार्थना के द्वारा शारीरकि रोगों को और दैवीय प्रेरति शक्षिाओं के द्वारा आध्यात्मकि दुर्बलताओं को ठीक करने की अद्भुत कृपा प्रदान की। इन सब के लिए, उन्होंने अपने आस-पास के सभी लोगों का सम्मान, प्रेम और ख्याति अर्जति की।

उस समय, राजा वैलेंटाइनयिन[4277] की ओर से रावेना शहर के राज्यपाल और उस शहर के सभी नागरकिों के लिए एक फरमान आया: वथिमिनयिस नामक शहर के न्यायाधीश को मृत्युदंड दयिा जाए; ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि बदनाम करने वालों ने वथिमिनयिस पर राजा के सामने गंभीर अपराधों का झूठा आरोप लगाया था, जनिका उसने कथति तौर पर ارتكاب कयिा था। वथिमिनयिस को बाँधकर उस स्थान पर ले जाया गया जहाँ उसका सरि कलम कयिा जाना था। वहाँ उसे संत वासयिन याद आए और उसने अपने आप से कहा: 'हे परमेश्वर के सेवक, वासयिन! ईश्वर द्वारा तुम्हें प्रदान की गई कृपा से, मेरी सहायता करो!'

शहर का राज्यपाल स्वयं और लोगों की एक बड़ी भीड़ वथिमिनयिस की मृत्यु का साक्षी बनने के लिए उत्सुक होकर उपस्थति थी। और इस प्रकार वथिमिनयिस ने सरि कलम करवाने के लिए अपनी गर्दन झुका ली थी, जबकि जल्लाद, दोधारी तलवार पकड़े हुए, उसे जोर से वथिमिनयिस की गर्दन पर वार करने के लिए उठा रहा था। लेकनि उसी क्षण, एक अप्रत्याशति घटना घटी। तलवार जल्लाद के हाथ से फसिलकर कुछ दूरी पर गरि गई। जल्लाद ने तलवार को फरि से उठाया और पहले से भी ज़्यादा कसकर पकड़कर वथिमिनयिस का सरि काटने के लिए उठाई; लेकनि जैसे ही उसने उसे

[4275] 'टार्टारस' नाम से प्राचीन यूनानयिों का तात्पर्य पृथ्वी के भीतर गहराई में स्थति एक अंधेरी खाई से था।

[4276] सम्राट वेस्पेसयिन ने 70 से 79 तक शासन कयिा।

[4277] सम्राट वैलेंटाइनयिन द्वतिीय ने 383 से 392 तक शासन कयिा।

घुमाया, तलवार एक बार फरि से, ठीक पहले की तरह, उसके हाथ से फसिलकर कुछ दूरी पर गरि गई। फाँसी देने वाले ने गुस्से में तलवार को फरि से पकड़ लयि, लेकनि एक बार फरि वही हुआ। इस चमत्कार को देखकर सभी हैरान रह गए। शहर के राज्यपाल ने यह सोचकर कि फाँसी देने वाला मलिने वाले इनाम के कारण सजा पाए हुए व्यक्ति को बचा रहा है, उस फाँसी देने वाले को हटा दयि और वथिमिनीस का सरि काटने का आदेश दूसरे को दयि। लेकनि दूसरे जल्लाद के साथ भी वही हुआ: तीन बार एक अदृश्य शक्ति उसकी पकड़ से तलवार छीनकर बहुत दूर गरि गई। इसके बाद, शहर का राज्यपाल, जो घटी घटना से हैरान और डर भी गया था, ने उस दंडति व्यक्ति को फांसी के स्थान से ले जाने का आदेश दयि, और वह भी इसलिए क्योंकि लोग वथिमिनयिस की रहिाई की मांग कर रहे थे, क्योंकि ईश्वर की शक्ति उसे मृत्यु से बचा रही थी।

वथिमिनयिस को कैद कर लयि गया, और राजा को यह खबर भेजी गई कि दो जल्लाद भी उस दंडति व्यक्ति का सरि नहीं काट पाए थे। यह खबर मलिते ही, राजा की ओर से तुरंत एक उदार फरमान जारी हुआ – वथिमिनयिस को मृत्युदंड से छूट देने और उसके अपराध को माफ करने का।

वथिमिनयिस ने इसे गुप्त नहीं रखा; बल्कि उसने अपने दैवी मध्यस्थ, संत वासयिन के बारे में बताया, जिन्हें उसने अपनी प्रार्थनाओं में मदद के लिए पुकारा था। जेल से रहिा होने के बाद, वह संत के पास गया और उनके पैर चूमकर उनका धन्यवाद कयि; लेकनि ईश्वर के उस पवित्र पुरुष ने उसे केवल ईश्वर का ही धन्यवाद करने का आदेश दयि, जिन्होंने उसे मृत्यु से बचाया था। उस समय से, नगर के सभी लोग संत का बहुत सम्मान करने लगे, उन्हें ईश्वर का एक देवदूत मानने लगे और मदद के लिए उनकी शरण में आने लगे।

पुरोहति वर्ग और शहर के कुलीनों ने मलिकर बशिप से संत वासयिन को पुरोहति पद स्वीकार करने के लिए मनाने को कहा, क्योंकि तब रक्तहीन बलदिान के उत्सव के दौरान वासयिन द्वारा अर्पति ईश्वर-प्रसन्न करने वाली प्रार्थना का ईश्वर के समक्ष अधकि वज़न होता। इस प्रकार, ईश्वर का सेवक, यद्यपि अपनी इच्छा से नहीं, पुरोहति पद पर अभषिक्ति हुआ, और वह कुछ समय तक इसी पद पर रहा।

उस समय, वासयिन का वफादार सेवक, जो उनके साथ रोम से आया था, का नधिन हो गया। संत वासयिन ने उसकी आत्मा की शांति के लिए रक्तहीन बलदिान करना शुरू कर दयि। सेवक के नधिन के सातवें दनि, लटिर्जी के दौरान, रेवरेंड फादर ने, नव-नधिन आत्मा की शांति के लिए गंभीरता से प्रार्थना करते हुए, स्वर्ग से एक आवाज सुनी जसिने उन्हें सूचति कयि कि मृतक की आत्मा को ईश्वर की दया प्राप्त हुई थी और उसे संतों में गनि लयि गया था। वासयिन ने यह खबर वथिमिनयिस को बताई, जो चर्च में लटिर्जी में शामलि थे, और फरि दोनों ने दविंगत आत्मा के उद्धार पर आत्मा में आनंद मनाया।

लगभग इसी समय, लगिुरयि के लोदी नगर में[4278] एक बशिप का नधिन हो गया। इस नगर के नविासयिों ने स्वयं पर तीन दनि का उपवास लगाया और प्रभु से आग्रहपूर्वक प्रार्थना की, उनसे एक योग्य पुरुष भेजने का अनुरोध करते हुए, जो बशिप के पद पर आसीन होकर मसीह की कलीसयि का सफलतापूर्वक शासन कर सके।

सामूहकि उपवास और प्रार्थना के इस दौरान, कैथेड्रल चर्च के एक पुरोहति, क्लेमेंट नामक एक धार्मकि और सम्मानति व्यक्ति, जो अपनी चर्च की ड्यूटी के बाद सो गया था, को सपने में एक तेजस्वी व्यक्ति दखिाई दिए और उन्होंने कहा: 'तुम सब जान लो कि ईश्वर ने तुम्हारे लिए बशिप के रूप में पादरी वासयिन को नयिुक्त कयि है, जो रावेना शहर में रहते हैं और ईश्वर के वरदानों से संपन्न हैं।'

जागने के बाद, क्लेमेंट ने तुरंत चर्च के पुरोहतिों और सामान्य लोगों में से सबसे सम्मानति लोगों को बुलाया, और उन्हें वह सब बताया जो प्रभु ने उन्हें दर्शन में बताया था। फरि उन्होंने प्रतषि्ठति लोगों को चुना और उन्हें संत वासयिन के पास एक अनुरोध के साथ रावेना भेजा – कि वे लोडयिम में उनके पास आएं और बशिप का पद स्वीकार करें।

जहाँ तक संत वासयिन का प्रश्न है, दूतों के रावेना पहुँचने से पहले ही, ईश्वर ने उन्हें एक रात्रकिालीन दर्शन में उनके आगमन का पता दे दयि और उन्हें मना करने के लिए नहीं, बल्कि उनके साथ जाने के लिए आज्ञा दी।

सुबह के समय लोद के दूत संत के पास आए और उन्हें उन आदेशों की जानकारी दी जो उन्हें दिए गए थे। संत ने दूतों से ये शब्द कहे: 'ईश्वर ने मनुष्य को अमर बनाया, ताकि वह हमेशा अपने स्रष्टा की इच्छा और आज्ञाओं का पालन

[4278] इटली में लगिुरयि उस क्षेत्र का नाम था जहाँ लगिुरयिन रहते थे, जो सेल्टकि मूल की एक जनजाति थी। लगिुरयि का सीमावर्ती क्षेत्र गॉल था।

कर सके। लेकिन मनुष्य ने स्वर्ग में दी गई ईश्वर की आज्ञा का उल्लंघन किया, जिससे उसने स्वयं को नश्वर बना लिया, और उसी प्रकार अपनी संतानों को भी नश्वर बना दिया। इसलिए, मनुष्य को अपने ईश्वर की इच्छा का विरोध नहीं करना चाहिए या उनकी आज्ञाओं को तोड़ना नहीं चाहिए, बल्कि सभी को पूरे हृदय से उस कार्य को करने का प्रयास करना चाहिए जो ईश्वर को प्रसन्न करे और उनके द्वारा आज्ञा दी गई हो। इसी कारण, मैं भी—सम्मान की इच्छा से नहीं, बल्कि अपने साथी विश्वासियों की आवश्यकताओं के लिए, ईश्वर की आज्ञा से—अपने ऊपर डाले गए जुए को स्वीकार करने से इनकार नहीं करता।"

यह कहने के बाद, संत वासियन ने यात्रियों को उनकी कठिन यात्रा के बाद विश्राम करने के लिए आमंत्रित किया। लेकिन दूत, यद्यपि पादरी की सहमति से प्रसन्न थे, आराम करने के लिए रुकने का कोई इरादा नहीं रखते थे; बल्कि, वे इस अनमोल खजाने को जल्द से जल्द अपने शहर में प्रस्तुत करना चाहते थे, अपनी वापसी यात्रा पर निकलने के लिए उत्सुक थे, और संत से बिना देरी के उनके साथ चलने का आग्रह किया; इस प्रकार, उसी शाम, पादरी और दूत अपनी यात्रा पर निकल पड़े।

जब वे लोडिया पहुँचे, तो पूरा शहर अपने ईश्वर-प्रदत्त चरवाहे का स्वागत करने के लिए खुशी और हर्ष के साथ बाहर आया।

उस क्षण, भीड़ में एक आदमी था जो लकवाग्रस्त था और बोल नहीं सकता था। भीड़ के साथ, यह बीमार आदमी, हालांकि बिड़ी कठिनाई से, संत के पास गया और ईश्वर के सेवक के पवित्र दाहिने हाथ को चूमा। तुरंत उसका शरीर बलवान हो गया; उसकी जीभ सुन्न पड़ गई, और वह ईश्वर की महानता का गुणगान करने लगा। लोगों की खुशी और भी बढ़ गई जब उन्होंने देखा कि ईश्वर ने उन्हें कितना पवित्र चरवाहा और चमत्कारी कार्य करने वाला प्रदान किया था।

संत वासियन के बिशप पद पर अभिषेक के लिए, मिलान के बिशप संत एम्ब्रोस, और संत वासियन के पूर्वोक्त संबंधी, रावेना के उर्स, लोडिया पहुँचे। जनवरी के पहले दिन, ईश्वर द्वारा चुने गए व्यक्ति, वासियन का बिशप के रूप में अभिषेक हुआ, जिससे पूरे शहर में बहुत खुशी और उत्सव का माहौल छा गया।

बिशप बनने के बाद, संत वासियन ने अपने झुंड को वचन और कर्म से, लेकिन मुख्य रूप से अपने सदाचारी जीवन के उदाहरण द्वारा, उपदेश देना शुरू कर दिया। उन्होंने पवित्र आत्मा में संत अम्ब्रोज़ के प्रति बहुत प्रेम दिखाया, और अम्ब्रोज़ से भी बदले में वही प्रेम प्राप्त किया, जो उन्होंने एक-दूसरे को भेजे जाने वाले अक्सर, स्नेहपूर्ण पत्रों में व्यक्त किया।

कुछ समय बीत जाने के बाद, मसीह के पवित्र सेवक, वासियन ने, शहर के पूर्वी उपनगरों में पवित्र प्रेरितों को समर्पित एक भव्य चर्च का निर्माण किया, और मिलान के संत एम्ब्रोस और कोमाना के फिलिक्स[4279] (इस समय तक रावेना के उर्सस प्रभु के पास जा चुके थे) को इस चर्च के अभिषेक के लिए आमंत्रित किया।

जब बिशप चर्च का अभिषेक कर रहे थे, तो अभिषेक के लिए इकट्ठी हुई भीड़ में एक राक्षस के वश में आई एक युवती थी, जिसके मुँह से शैतान ज़ोर से चिल्लाने लगा: 'हे ईश्वर के लोगों, तुम मेरे खिलाफ़ अन्याय से क्यों उठ खड़े हुए हो? तुम तीनों ने अजेय हथियारों से अकेले मेरे खिलाफ़ खुद को क्यों लैस कर लिया है? क्या यह तुम्हारे लिए पर्याप्त नहीं है कि तुमने हमसे तुममें से किसी को भी नुकसान पहुँचाने की शक्ति छीन ली है? अब तुम हमें उन लोगों से भी भगा रहे हो जिन पर हमारा अधिकार था। अगर तुम मुझे यहाँ से भगा दोगे, तो मैं अपने साथ दो या दो से अधिक (दैत्यों) को ले जाऊँगा और किसी और जगह चला जाऊँगा जहाँ तुम नहीं आ सकते।"

शैतान की चीख सुनकर, मसीह के सेवक घुटनों के बल गिर पड़े और प्रभु से और भी अधिक लगन से प्रार्थना करने लगे। जब वे प्रार्थना कर रहे थे, तो राक्षस, उनकी प्रार्थनाओं की शक्ति का सामना न कर सका, और उस युवती को ज़मीन पर पटक कर, एक भयानक चीख के साथ उससे बाहर निकल गया। तब पवित्र संत उस युवती के पास गए और उसे ज़मीन से उठाया—अब वह स्वस्थ हो चुकी थी—और उसे उसके माता-पिता के पास वापस कर दिया, और उन्हें आज्ञा दी कि वे अपनी बेटी को राक्षसी यातना से मुक्ति दिलाने के लिए प्रभु का धन्यवाद करें।

चर्च के अभिषेक के बाद, ईश्वर के सम्मान में एक भोज का आयोजन किया गया, जिसमें पवित्र बिशपों ने ईश्वर के चर्च के लिए लाभकारी मामलों पर चर्चा की। भोज और मैत्रीपूर्ण बातचीत के बाद, आगंतुक बिशप अपने-अपने गंतव्यों के लिए रवाना हो गए, और संत वासियन ने सम्मानपूर्वक उन सभी को विदा किया।

[4279] कोमाना शहर एशिया माइनर के उत्तर-पूर्व में पोंटस प्रांत में स्थित था। आज, गुमेनेक गाँव इस शहर के स्थान पर स्थित है।

एक दनि, फसल काटने के समय, एक छोटा लड़का फसल काटने वालों के बीच बंडल इकट्ठा कर रहा था; उसे एक साँप ने काट लयिा और उसकी मृत्यु हो गई। उसके माता-पति, उसकी मृत्यु पर बेसुध होकर रोते हुए, उसे दफनाने के लिए पवत्रि प्रेरतिों के सम्मान और महमिा में धन्य वासयिन द्वारा नव-नरि्मति चर्च में ले आए, जहाँ, संयोग से, उस समय स्वयं ईश्वर के बशिप, वासयिन, मौजूद थे। वह अक्सर इस चर्च में आते थे और वहाँ दैवीय अनुष्ठान का अनुष्ठान करते थे। जब पारंपरकि अंतमि संस्कार का भजन गाया जा रहा था, तो माता-पति का अपने बेटे के लिए रोना भजन गाने वालों की आवाज़ों को दबाने लगा। ईश्वर के बशिप ने, रो रहे लोगों पर दया करके, सभी को चर्च छोड़ने का आदेश दयिा; फरि, अकेले रहकर, उन्होंने आँसुओं के साथ ईश्वर के सामने ज़मीन पर सरि झुकाया और उनसे वनिती की कि प्रभु लड़के की आत्मा को उसके शरीर में वापस आने का आदेश दें। जब संत प्रार्थना कर रहे थे, तो मृतक लड़के का शरीर पहले धीरे-धीरे, और फरि और अधकि हलिने लगा। संत अपनी प्रार्थना से उठे, लड़के का हाथ पकड़ा और उसे खड़े होने का आदेश दयिा। वह लड़का, जैसे नींद से जागा हो, अपनी आँखें खोलकर अपनी माँ को पुकारने लगा और खड़ा हो गया। लड़के को सुनकर उसके माता-पति और चर्च के बाहर खड़ी भीड़ इतनी प्रसन्न हुई कि वे वहीं नहीं ठहर सके; उन्होंने तुरंत चर्च के दरवाजे खोल दिए और पवत्रि स्थल में प्रवेश कर गए। मृतकों में से जीवति हुए लड़के को देखकर, सभी चकति और वस्मिति हो गए; वे संत के सामने साष्टांग दंडवत हो गए और आनंदपूर्वक उनके हाथों और वस्त्रों को चूमने लगे। सर्वशक्तमिान ईश्वर का धन्यवाद करने और एक उपदेश देने के बाद, संत ने सभी को शांतसि वदिा कर दयिा।

कुछ वर्षों बाद, मसीह के सेवक संत एम्ब्रोज़ गंभीर रूप से बीमार पड़ गए। पवत्रि आत्मा में अपने प्रयि भाई, अपने पति और मत्रि की बीमारी के बारे में जानकर, ईश्वर के बशिप वासयिन, उस बीमार व्यक्तसि मलिने के लिए मलिान की ओर तेजी से रवाना हुए। वहाँ, अंब्रोज़ को उनके शय्यासन पर देख कर, वे उनके सेवा-टहनी करने, उनके साथ प्रार्थना करने और मसीह में आशा देकर उन्हें सांत्वना देने के लिए वहीं ठहर गए।

संत अम्ब्रोज़ को एक दर्शन हुआ: उन्हें ऐसा प्रतीत हुआ कि उन्होंने हमारे प्रभु यीशु मसीह को एक तेजस्वी मुखमंडल के साथ अपनी ओर आते और उन पर दयालुता से मुस्कुराते हुए देखा।

संत अम्ब्रोज़ ने यह दृष्टि अपने बगल में खड़े संत वासयिन को सुनाई। तब वासयिन ने, यह महसूस करते हुए कि संत अम्ब्रोज़ के प्रस्थान का समय नजदीक आ रहा था, एक ही समय में रोना और आनंदति होना शुरू कर दयिा। वह इस बात पर प्रसन्न था कि वह पवत्रि व्यक्तमिसीह के पास जा रहे थे, जो उन्हें बुला रहे थे; फरि भी वह इस अस्थायी जीवन में अपने प्रयि मत्रि को खोने के कारण रोया: लेकनि उसे मसीह में दृढ़ आशा थी कि वह आने वाले जीवन में उनसे मलिेंगे और पदानुक्रमों की कतारों में दविंगत लोगों के साथ एक साथ रहेंगे।

संत एम्ब्रोज़ के नधिन के बाद, वासयिन और मेडयिोलानम के सभी नविासयिों ने संत के लिए शोक मनाया और उनके पवत्रि शरीर को सम्मान के साथ दफनाया। इसके बाद, वासयिन अपने शहर लौट आए, जहाँ उन्होंने प्रभु के सामने एक नरि्मल बलदिान अर्पति करना शुरू कर दयिा, और आम्ब्रोस की आत्मा की शांतकि लिए प्रार्थना की, यद्यपि उन्हें पूरी तरह से वशि्वास था कि उनकी आत्मा संतों के साथ वशि्राम कर रही थी; फरि भी न तो प्रार्थना, न नरि्मल बलदिान, और न ही संतों के लिए प्रार्थनाएँ कभी व्यर्थ होती हैं। यदि किसी संत के लिए प्रार्थना कसिी भी तरह से उसका भला नहीं कर सकती, तो वह प्रार्थना करने वाले के हृदय में लौट आती है – यह बाद वाले के लिए लाभदायक होगी, जैसा कि दाऊद कहते हैं: *'मेरी प्रार्थना मेरे ही हृदय में लौट आई'* (भजन संहति 34:13)।

काफी लंबा समय बीत जाने के बाद, संत वासयिन को चर्च के काम से फरि से मेडओिलन की यात्रा करनी पड़ी। जब वह शहर में प्रवेश कयिा, तो उसने चौक में एक तौलने वाले को देखा जो अपनी तराजू पर वभिन्नि सामानों की तौल कर रहा था। यह तौलने वाला अधर्मी था; वह कई लोगों को ठगता था और इसी तरह अपने लिए लाभ कमाने की कोशशि करता था। संत ने तराजू पर एक दानव को देखा, जो एक छोटे इथयिोपयिाई के रूप में था, और वह तराजू को एक तरफ खींच रहा था, जसिका फायदा वह अधर्मी तौलने वाला उठा रहा था। संत ने अपने साथयिों से पूछा: 'क्या तुम कुछ अजीब देख रहे हो?' उन्होंने उत्तर दयिा कि उन्हें कुछ भी असाधारण नहीं दखिाई दे रहा है। तब संत ने प्रार्थना की कि अन्य लोगों की आँखें भी खुल जाएँ, ताकि वे भी वही देख सकें जो उन्होंने देखा था, एक नश्चिति गवाही के रूप में। और वास्तव में, पुरोहति क्लेमेंट और डकिन एल्वोनयिस की आध्यात्मकि आँखें खुल गईं: उन्होंने वही देखा जो परमेश्वर के बशिप ने देखा था, अर्थात्, एक छोटा इथयिोपयिाई जो तराजू पर बैठा था और तोलने वाले के आदेशों का पालन कर रहा था। उन्होंने संत को वह बताया जो उन्होंने देखा था और दाऊद के वचनों की पुष्टि की, जो कहते हैं: *'मनुष्यों के पुत्र व्यर्थ हैं; यदि उन्हें तुला पर रखा जाए, तो वे सब मलिकर शून्य से भी हल्के हैं'* (भजन संहति 61:10)। संत ने तुलाकार को बुलाया और उससे पूछा:

'तुम कसि अन्यायपूर्ण तरीके से वजन बढ़ाते हो और व्यापारियों को धोखा देते हो?'

'मैं कोई अन्याय नहीं करता,' तराजू वाले ने जवाब दयिा, और शपथ लेकर पुष्टि की कि उसकी तराजू सटीक थी।

तब संत ने तराजू पर नरक के उस इथयिोपयिाई की ओर इशारा कयिा और कहा:

'यह इथयिोपयिाई तुरंत तुममें प्रवेश कर जाएगा, तुम्हारे शरीर को कुचल देगा और भयानक यातनाओं से तुम्हारी आत्मा को फाड़ देगा।'

अधर्मी तौलने वाला भय से कांप उठा और, पश्चाताप में संत के चरणों में गरि पड़ा, और अपने धोखे को त्यागने का वादा कयिा। संत ने उसे पवत्रि शास्त्र से उपदेश दयिा और उसे धोखे से प्राप्त की गई सारी संपत्ति गरीबों में बांटने का आदेश दयिा। इसके बाद, संत ने प्रार्थना से दुष्टात्मा को तराजू से भगा दयिा और अपने रास्ते चल पड़े।

अपने नगर लौटने पर, ईश्वर के इस पुरुष ने ईश्वर की सेवा करने और अपने झुंड की देखभाल करने के अपने सामान्य कर्तव्यों को फरि से शुरू कयिा। उन्होंने पाँच वर्षों तक एक बशिप के रूप में सेवा की और ninety[4280] वर्ष की आयु में प्रभु के पास शांतपूर्वक चल बसे, जनिकी उन्होंने वफादारी और सच्चाई से सेवा की थी। उनके वफादार अनुयाययिों ने अपने चरवाहे को सम्मान के साथ उसी प्रेरतिकि चर्च में दफनाया था जसिे उन्होंने बनवाया था, और उन्होंने ऐसे पति को खोने पर बहुत रोया। संत का नधिन पश्चमि में होनोरयिस[4281] के शासनकाल में और पूर्व में आर्कैडयिस के पुत्र थयिोडोसयिस[4282] के शासनकाल के दौरान हुआ। अपने जीवनकाल में और वशिेष रूप से उनकी मृत्यु के बाद, वह चमत्कारी थे: उनके ताबूत से, उनकी पवत्रि प्रार्थनाओं और हमारे प्रभु यीशु मसीह की कृपा से, बीमारों पर चमत्कारकि रूप से चंगाई का वरदान मलिा, जनिके प्रति पिता और पवत्रि आत्मा के साथ, महमिा और सम्मान अर्पति कयिा जाता है, अब और हमेशा के लिए। आमीन।

पूज्य थयिोफानेस की स्मृति।

10 जून को स्मरणोत्सव

संत थयिोफेनेस का जन्म मूर्तपिूजक माता-पति के घर हुआ था। जब वह युवक बना, तो उसने एक कुंवारी से ववािह कयिा, लेकनि उसकी मृत्यु कुछ ही समय बाद हो गई; हालाँकि, थयिोफानेस मसीह में वश्विास करने लगा और बपतस्मिा ग्रहण कयिा। इसके बाद, सब कुछ पीछे छोड़कर, वह उस शहर के पास एक झोपड़ी में चला गया और वहाँ काफी समय तक रहा, जो भी उसके पास आते थे उन्हें ईश्वर की आज्ञाओं का पालन करने और एक पवत्रि जीवन जीने की शक्षिा देता था। एक ऐसी वेश्या के बारे में जानकर जसिने अपनी सुंदरता से कई लोगों को भटका दयिा था, संत थयिोफानेस अपनी तपस्या-स्थली से नकिल आए और अच्छे कपड़े पहनकर अपने पति से नौ लीटर सोना मांगा, मानो वह उस महलिा को अपनी पत्नी बनाना चाहता हो। फरि वे वेश्या के पास गए, उसे सोना दयिा और उसे अपना आचरण बदलने के लिए मनाकर उसका बपतस्मिा कराया। इसके बाद, संत थयिोफेंस ने अपनी झोपड़ी के पास एक और झोपड़ी बनाई, जहाँ उन्होंने उस महलिा को बंद कर दयिा। और उन्होंने उसे, जो पहले पाप का पात्र थी, पवत्रि आत्मा का नविास स्थान बना दयिा – जबकि उन्होंने सोना गरीबों में बाँट दयिा। दोनों ने प्रभु को प्रसन्न कयिा और, उसी दनि, स्वर्गीय नविासों के लिए प्रस्थान कर गए[4283] ।

प्रूसयिा के बशिप, संत थमिोथी हयिरोमार्टर की स्मृति

10 जून को स्मरणोत्सव

[4280] संत वासयिन की मृत्यु लगभग 409 में हुई।

[4281] सम्राट होनोरयिस ने 395 से 423 तक पश्चमि पर शासन कयिा।

[4282] सम्राट थयिोडोसयिस द्वतीय ने 408 से 450 तक पूर्व पर शासन कयिा।

[4283] संत थयिोफेंस की मृत्यु चौथी शताब्दी के उत्तरार्ध में हुई।

बत्थिनियि, फ्रीजयि और लडियि की सीमाओं पर स्थति प्रुसा नगर में[4284] , ओलंपस पर्वत के पास[4285] , संत थमिोथी बशिप के रूप में सेवा करते थे; अपने जीवन की पवत्रिता और उनकी पवत्रिता के कारण, उन्हें ईश्वर से चमत्कार करने का वरदान प्राप्त हुआ। ऐसा हुआ कि एक अवसर पर उन्होंने एक वशिाल सर्प को मार डाला था, जसिने एक सरू के पेड़ के नीचे एक गुफा में अपना आवास बना लयि था और जो जानवरों और लोगों को बहुत नुकसान पहुँचा रहा था। संत ने इस सर्प को उस कपड़े को इसके मुँह में फेंककर मार डाला, जसिसे दव्यि वेदी पर पवत्रि रोटी (लैंब) को ढका जाता है। एक अन्य अवसर पर, उन्होंने अरीता नामक एक राजा को ठीक कयि, जो एक गंभीर बीमारी से पीड़ति था और पहले ही मृत्यु के द्वार पर था। इसी तरह, उन्होंने न केवल एक रानी को मृतकों में से जीवति कर दयि, बल्कि उसे मूर्तपिूजा के अंधकार से हटाकर सच्चे वशि्वास की रोशनी में भी ला दयि। इसके अलावा, संत तीमथयिुस ने, ईश्वर द्वारा उन्हें प्रदान की गई कृपा से, वभिन्नि बीमारयिों को ठीक कयि और मसीह की शक्ति से कई अन्य चमत्कार कए। अपने उपदेश के माध्यम से, उन्होंने अपने पूरे झुंड को ज्ञान प्रदान कयि और कई अवशि्वासयिों को मसीह के प्रति परविर्तति कयि। जब सम्राट जूलयिन[4286] ने रोमन सहिासन संभाला—एक ऐसा व्यक्ति जो मसीह से मुंह मोड़ चुका था, मूर्तयिों की पूजा करने लगा था, और परमेश्वर की कलीसयि पर एक क्रूर उत्पीड़न शुरू कर दयि था— – संत थमिोथी ने परमेश्वर के वचन का प्रचार करने, वशि्वासयिों को मजबूत करने और मूर्तपिूजकों को उनकी गलतयिों से अवगत कराने में वशिेष उत्साह के साथ परशि्रम करना शुरू कर दयि। संत के बारे में सुनकर, अधर्मी सम्राट जूलयिन ने उन्हें पकड़कर अपने सामने लाने का आदेश दयि – और ने बाद में उन्हें कैद कर दयि। बड़ी संख्या में लोग संत के पास आते थे, जन्हिें वे सच्चे ईश्वर, मसीह के बारे में उपदेश देते थे। जूलयिन को यह सूचना मलिी कि क्रशि्चयिन बशिप, जो कालकोठरी में बंद था, अपने पास आने वालों को अपना वशि्वास सखिा रहा था। तब जूलयिन ने उसे यीशु मसीह के नाम के बारे में सखिाने से रोकने का आदेश भेजा। लेकनि संत थमिोथी ने उस अधर्मी और अधर्मी राजा की आज्ञा का पालन नहीं कयि, और नडिर होकर वह करते रहे जो एक ईसाई बशिप के रूप में उनके लिए उचति था, अर्थात् लोगों को सखिाना। जब सम्राट जूलयिन को एक बार फरि पता चला कि संत तीमथयिुस नडिर होकर मसीह के बारे में उपदेश दे रहे थे, तो वह आग-बबूला हो गया और संत का सरि कलम करने के लिए एक जल्लाद को उनकी कोठरी में भेज दयि[4287] । पवत्रि शहीद के धन्य नधिन के बाद, वशि्वासयिों ने उनके पवत्रि शरीर को उठाया और उन्हें सम्मान के साथ दफनाया। वभिन्नि रोगों से अनेक चमत्कारी उपचारों का श्रेय उनके ताबूत को दयि जाता था, हमारे ईश्वर मसीह की महमिा के लिए[4288] ।

पवत्रि शहीदों अलेक्जेंडर और एंटोननिा का कष्टकथा

10 जून को स्मरण कयि जाता है

ईसाइयों पर हुए एक अत्याचार के दौरान, जब अत्याचार शुरू होने के कुछ समय बाद मसीह में बहुत सारे वशि्वासयिों को वभिन्नि यातनाओं के बाद मार डाला गया था, तब क्रोडामना शहर की रहने वाली एंटोननिा नाम की एक ईसाई युवती को पकड़कर क्रूर राज्यपाल फस्टिस के सामने लाया गया[4289] । अपने धार्मकि और सदाचारी जीवन के कारण, प्रभु ने उन्हें शहादत भोगने के योग्य समझा, ताकि वे धूर्त शैतान को लज्जति कर उस पर वजिय प्राप्त कर सकें।

जब कुंवारी एंटोननिा को क्रूर शासक फस्टिस के सामने लाया गया, तो उसने उसे कई चालाक शब्दों से लुभाना शुरू कर दयि, और उससे कहा: 'लेडी एंटोननिा, मैं तुम्हें, एक शुद्ध और पवत्रि कुंवारी को, देवी आर्टेमसि[4290] की पुजारीनी बनाना चाहता हूँ, तुम्हें कई उपहार और सम्मान देना चाहता हूँ, और तुम्हें अपनी सभी संपत्तयिों की प्रबंधक बनाना चाहता हूँ।'

[4284] बथिनियि, फ्राइजयि और लडियि एशयि माइनर के क्षेत्र थे।

[4285] माउंट ओलंपस एशयि माइनर के उत्तर-पूर्वी कोने में, फ्रीजयि, मसियि और बथिनियि की सीमाओं पर स्थति था।

[4286] जुलीयन द एपोस्टेट ने 361 से 363 तक शासन कयि।

[4287] संत तमिोथी का नधिन चौथी शताब्दी के उत्तरार्ध में हुआ।

[4288] संत थमिोथी के पूजनीय अवशेष कॉन्स्टेंटनिोपल में उनके नाम पर बने चर्च में रखे गए थे, जो मेलान्डेस गेट (कॉन्स्टेंटनिोपल के 12वें जलि में) के पास बनाया गया था।

[4289] क्रोडाम्नस का शहर एशयि माइनर में थ्रेस के क्षेत्र में स्थति था।

[4290] आर्टमिसि या डायना – प्रकाश और चंद्रमा की ग्रीक-रोमन देवी।

संत एंटोनिया फिस्ट के प्रस्ताव के जवाब में काफी देर तक चुप रहीं, लेकिन फिर उन्होंने कहा: 'तुम मुझे व्यर्थ के उपहार क्यों वादा करते हो? इसके बजाय यह बेहतर होगा कि तुम स्वयं, फिस्ट, मेरे साथ अपनी संपत्ति साझा करो, ताकि मैं अपने प्रभु यीशु मसीह में विश्वास के माध्यम से अनंत आशीर्वादों का खजाना प्राप्त कर सकूँ।'

'यह मुझसे दूर रहे,' फिस्ट ने आपत्ति जताई, 'कि मैं तुम्हारी बातों पर विश्वास करूँ; देवता मुझे इससे बचाएँ, कि मैं ऐसे ईश्वर—या यूँ कहूँ, ऐसे मनुष्य—पर विश्वास करूँ जिसे क्रूस पर ठोक दिया गया और जिसने उस पर प्राण त्याग दिए!'

संत एंटोनिया ने फिस्ट को उत्तर दिया:

'मैं इस तथ्य को नहीं छिपाता कि हमारे प्रभु यीशु मसीह को क्रूस पर ठोक दिया गया था और, उनकी मृत्यु के बाद, एक कब्र में रखा गया था; लेकिन मैं उनके बारे में यह भी प्रचार करता हूँ कि वे तीसरे दिन मरे हुओं में से जी उठे और अब परमेश्वर अपने पिता के दाहिने हाथ पर विराजमान हैं, जैसा कि हमारी पुस्तकों में लिखा है: *"प्रभु ने मेरे प्रभु से कहा: "मेरे दाहिने हाथ पर तब तक बैठो जब तक मैं तुम्हारे शत्रुओं को तुम्हारे पैरों के नीचे आसन न बना दूँ"* (भजन संहिता 109:1)।

'तुम्हारा सारा लंबा-चौड़ा भाषण झूठ है,' फिस्ट ने कहा। 'तुम मेरी आज्ञा मानकर हमारे देवताओं को बलिदान क्यों नहीं चढ़ाती, ताकि तुम संसार में मौजूद सभी आशीर्वादों का आनंद ले सको?'

'मैं ऐसे निर्जीव देवताओं की पूजा नहीं करूँगी,' पवित्र कन्या ने उत्तर दिया, 'क्योंकि वे राक्षस हैं, जैसा कि मेरे प्रभु की व्यवस्था में लिखा है: *"क्योंकि अन्य जातियों के सब देवता मूरतियाँ हैं, परन्तु यहोवा ने आकाश बनाया"* (भजन संहिता 95:5)।

'तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई,' फिस्ट चिल्लाया, 'हमारे देवताओं को राक्षस कहने की?'

'हाँ, मैं उन्हें यही कहती हूँ,' संत एंटोनिया ने उत्तर दिया, 'क्योंकि उनमें कोई शक्ति नहीं है; आपको उनसे कोई मदद नहीं मिलेगी – सचमुच, वे देवता नहीं, बल्कि राक्षस हैं।'

संत एंटोनिया के ये शब्द सुनते ही फिस्ट क्रोध से आग-बबूला हो गया और सैनिकों को आदेश दिया कि वे उसके गालों पर ज़ोर से चप्पड़ मारें, ताकि वह इतनी दबंग न रहे। फिर उसने उससे फिर से ये शब्द कहे:

'मैं देवताओं की कसम खाकर कहता हूँ कि, यदि तुम राजा की आज्ञा का पालन नहीं करोगी, तो मैं तुम्हें सबसे क्रूर यातनाएँ देने के बाद, तुम्हें एक वेश्यालय में ले जाने का आदेश दूँगा – और इस प्रकार तुम्हें सबसे बड़ी अपमानित करने के लिए अभिशप्त करूँगा।' इसलिए, ए , मैं तुम्हें तीन दिन का समय देता हूँ कि तुम विचार करो कि क्या तुम मेरे आदेश का पूरी तरह से अवज्ञा करोगे, या तुम पश्चाताप करना और देवताओं को बलिदान चढ़ाना चाहते हो। क्योंकि कई लोग जो तुम्हारे धर्म के अनुयायी थे, उन्होंने शुरू में ठीक तुम्हारी तरह ही व्यवहार किया, लेकिन बाद में उन्होंने अपना मन बदल लिया और हमारे देवताओं की पूजा की।

तब संत एंटोनिया ने राज्यपाल से कहा:

'तुम जो चाहो करो, हे अधर्मी यातनाकर्ता!'

इसके बाद, संत को चार सैनिकों की हिरासत में रख दिया गया, जिनके साथ वह हृदय में आनंद और प्रसन्न मुख के साथ कालकोठरी की ओर चल पड़ी। हालाँकि, राज्यपाल ने जेलर के प्रमुख को गुप्त रूप से बुलाकर उसे आदेश दिया कि वह पवित्र कन्या को कोई हानि नहीं पहुँचाए, बल्कि उसे दयालु शब्दों से ईसाई धर्म त्यागने और मूर्तियों को बलिदान चढ़ाने के लिए मनाए, क्योंकि, जैसा कि फिटस ने आगे कहा, ईसाइयों को उनके धर्म से मुँह मोड़ने के लिए मजबूर करना बहुत मुश्किल है। जब जेलर के कप्तान ने संत को कालकोठरी में डाल दिया, तो वह उसके पास गया और इन शब्दों से उसे मनाने लगा:

'हे पवित्र कन्या एंटोनिया, तुम क्यों जिद पर अड़ी हो? तुम अपना मन क्यों नहीं बदलतीं? हमारे देवताओं को बलिदान चढ़ाओ, ताकि तुम्हें आने वाले कष्टों से बचाया जा सके।'

लेकिन संत ने उससे कुछ नहीं कहा, इसलिए जेलर यह देखकर बहुत हैरान और चकित हुआ कि पवित्र कन्या ने उसे एक शब्द भी क्यों नहीं उत्तर दिया। और संत एंटोनिया, जमीन पर घुटने टेककर, दिन-रात प्रभु ईश्वर से प्रार्थना करती रहीं, और इस पूरे समय बिना भोजन के रहीं।

संत अंटोनिया के कालकोठरी में तीन दिन बिताने के बाद, अचानक एक ज़ोरदार गरज की आवाज़ गूँजी: कालकोठरी के बोल्ट टूट गए और दरवाज़े अपने आप खुल गए; भीतर, एक तेज रोशनी ने पूरी कालकोठरी को रोशन कर दिया, और स्वर्ग से एक आवाज़ सुनाई दी, जो इस प्रकार थी:

'उठो, एंटोनिना, और कुछ भोजन लो; कुछ रोटी खाओ और कुछ पानी पियो; साहसी बनो और दुष्ट शासक फिस्ट से बिल्कुल भी मत डरो, क्योंकि मैं तुम्हारे साथ हूँ।'

संत ने अपनी प्रार्थनाएँ समाप्त करके कहा:

'आमेन।'

तब, वह घुटनों से उठी, उसने कुछ रोटी खाई और कुछ पानी पिया, और थोड़ी देर के लिए सोने लेट गई।

अगले दिन भोर होते ही, राज्यपाल अपने सिंहासन पर बैठ गया और कहा: 'उस अभिमानी महिला को मेरे सामने लाओ, ताकि हम उसके विचार जान सकें।'

सैनिकों ने राज्यपाल की आज्ञा का पालन करते हुए संत को उसके सामने ले आए। जब पवित्र कन्या को अदालत में ले जाया जा रहा था, तो उसने अपनी आँखें आकाश की ओर उठाईं और प्रार्थना की।

'मैं तुझसे धन्यवाद करती हूँ, हे प्रभु मेरे परमेश्वर, कि तू मुझ पर अपनी इच्छा पूरी कर रहा है; मैं तुझसे विनती करती हूँ – मृत्यु तक भी मुझे न छोड़।'

और अचानक स्वर्ग से एक आवाज़ सुनाई दी, जो घोषणा कर रही थी:

'निडर होकर अपने रास्ते पर चली जाओ, क्योंकि मैं तुम्हारे साथ हूँ!'

जब पवित्र कन्या एंटोनिया को न्यायाधीश की पीठ के सामने लाया गया, जहाँ फिस्ट बैठा था, तो वह हँस पड़ी।

फिस्ट ने, यह देखकर कि वह हँसी थी, उससे पूछा:

'तुम क्यों हँसी?'

संत ने उत्तर दिया:

– मैं तुम्हें अपने हँसने का कारण बताऊँगी, क्योंकि मैं देखती हूँ कि वह सिंहासन जिस पर तुम बैठे हो, वह जल्द ही नष्ट हो जाएगा, और तुम नष्ट हो जाओगे – इसीलिए मैं हँसी।

शासक ने जब देखा कि वह उसका मज़ाक उड़ा रही है, तो उसने उसे कोड़े लगाने का आदेश दिया। परन्तु संन्यासिनी ने अपनी आध्यात्मिक आँखें स्वर्ग की ओर उठाकर इस प्रकार प्रार्थना की: 'मैं तुझसे धन्यवाद करती हूँ, हे प्रभु मेरे परमेश्वर, कि तूने मुझे, जो एक दीन और पापी हूँ, अपने संतों के भाग में सहभागी होने के योग्य समझा; इस अधर्मी मनुष्य को, जो निर्दोषों का रक्त बहाता है, बिना किसी विलंब के नरक की गहराइयों में डाल दे, ताकि वह अपने झूठे देवताओं की शक्तिहीनता को पहचान जाए, जिनमें वह अपनी सारी आशा रखता है।'

ये शब्द सुनकर, मानव रक्त का प्यासा राज्यपाल और भी अधिक क्रोधित हो गया और सैनिकों से कहा: 'यह दुष्ट और अभद्र महिला न केवल हमारे देवताओं का अपमान करने की हिम्मत करती है, बल्कि हम पर भी धमकी देती है; इसलिए, उसे कलंकित करने के लिए वेश्यालय ले जाओ।'

फिर सैनिकों ने संत को पकड़कर एक अलग घर में ले गए। अलग कमरे में अकेली रह गई संत अंटोनिना ने परमेश्वर से भक्तिपूर्वक प्रार्थना करना शुरू किया। उसी क्षण, प्रभु का दूत राज्यपाल के एक सैनिक, तेईस वर्षीय अलेक्ज़ेंडर नामक व्यक्ति के सामने प्रकट हुआ। उसके सामने प्रकट होकर, दूत ने कहा:

'प्रशासक के पास जाओ और उससे कहो कि वह तुम्हें एंटोनिना की उपस्थिति में जाने दे। जब तुम उसके पास जाओ, तो उसे अपनी चोगा पहना दो और उसे उस घर से निकल जाने दो, ताकि वह दुष्ट प्रशासक उसे पहचान न सके।'

मसीह के पराक्रमी योद्धा ने, स्वर्गदूत के आदेश का पालन करते हुए, शासक के पास जाकर उससे विनती की: 'मुझे एंटोनिना के पास जाने की अनुमति दें; और यदि मैं उसे मना सकूँ, तो उसे आज़ाद कर दें, लेकिन अगर नहीं, तो आप उसके साथ जैसा चाहें वैसा करें।'

शासक ने उसकी विनती मान ली और उससे कहा: 'तुम उसके साथ जो चाहो, करो।' तब अलेक्ज़ेंडर उस कमरे में गया जहाँ वह पवित्र कन्या थी, उसके पैरों पर गिर पड़ा, और उससे इस प्रकार बोलने लगा: 'प्रभु की सेविका, कन्या अंटोनिया! प्रभु ने मुझे तुम्हारे पास यह प्रकट करने के लिए भेजा है (जैसा कि उन्होंने मुझे बताया है) कि तुम्हारी कुँवारी अवस्था सुरक्षित रहेगी।"

संत भयभीत हो गईं। लेकिन अचानक एक तेज प्रकाश से कमरा भर गया और एक आवाज़ सुनाई दी: 'डरो मत, एंटोनिना! जिसने तुम्हें इस पराक्रम के लिए बुलाया है, वह उदार और परम दयालु है – और वही इस अलेक्ज़ेंडर को भी उसी शहीद के पराक्रम के लिए बुला रहा है। उसका चोगा पहन लो, अपना सिर झुका लो, अपना चेहरा छिपा लो, और यहाँ से निकल जाओ ताकि गवर्नर तुम्हें इस भेष में पहचान न सके। मैं तुम्हें इतनी अच्छी तरह छिपा दूँगा कि वह तुम्हें पहचान भी नहीं पाएगा!"

तब संत एंटोनिना ने अलेक्ज़ेंडर का चोगा उससे लेकर पहन लिया, अपना सिर ढक लिया, और घर से बाहर निकलकर राज्यपाल को अपने हाथ से इशारा किया, मानो कह रही हो: 'जो चाहो, कर लो।' इस प्रकार मसीह की पवित्र कुँवारी हिरण की तरह जालों से बचकर, अपनी मुक्ति की खुशी मनाते हुए अपने रास्ते चली गई। हालाँकि, राज्यपाल यह सोचकर कि अलेक्ज़ेंडर ही घर से निकल गया है, उसने अँटोनिना के पास चार और सैनिक भेजे, और उनसे कहा: 'उसके पास जाओ और उसके साथ जो चाहो करो; और जब तुम उसे अपवित्र कर लो, तो उसे बाहर ले आओ, ताकि उसे बहुत अपमान सहना पड़े और हम सब उस पर हँस सकें।'

सैनिकों ने राज्यपाल के आदेश का पालन करते हुए उस कुंवारी को अपवित्र करने के लिए अंदर गए, लेकिन उसे नहीं पाया; उन्होंने केवल अलेक्ज़ेंडर को देखा। बहुत हैरान होकर, उन्होंने उससे पूछा, 'तो वह औरत कहाँ है? तुम अकेले क्यों हो?'

तब उन्होंने उसे पकड़ लिया, राज्यपाल के पास ले आए और कहा, 'हमने उस कमरे में केवल उसे ही पाया; वह युवती वहाँ नहीं है।'

शासक भी जो हुआ उससे बहुत हैरान था और उसने अलेक्ज़ेंडर से पूछना शुरू किया: 'हमसे बताओ, हे विश्वासघाती धोखेबाज, तुझे हमसे धोखा करने की हिम्मत कैसे हुई? वह दुष्ट वेश्या कहाँ है? तुमने उस पर कलंक लगाया, और फिर, उसे अपनी चादर में लपेटकर, उसे अपनी पत्नी बनाने की इच्छा से जाने दिया; लेकिन ऐसा नहीं होगा, और तुम मेरे क्रोध से नहीं बचोगे।'

जब अलेक्ज़ेंडर ने राज्यपाल को कोई जवाब नहीं दिया, तो राज्यपाल ने बहुत देर तक विचार किया, और फिर उसे बेरहमी से पीटने और यातना देने के लिए लटकाने का आदेश दिया। जब शासक की आज्ञा का पालन हो रहा था और संत अलेक्ज़ेंडर को कोड़े मारे जा रहे थे, तो शासक ने उनसे फिर पूछा: 'वह दुष्ट स्त्री कहाँ है जिसके साथ तुम्हारा संबंध था?' लेकिन अलेक्ज़ेंडर ने फिर कोई उत्तर नहीं दिया, बस अपनी दृष्टि स्वर्ग की ओर टिकाए रखा।

और अचानक स्वर्ग से एक आवाज़ सुनाई दी, जो शासक से कह रही थी:

'क्रूर फिस्ट, तुम एक निर्दोष व्यक्ति को क्यों यातना दे रहे हो?'

यह आवाज़ सुनकर, राज्यपाल ने संत के यातना बंद करने का आदेश दिया; उसने शहीद को पेड़ से उतारकर जेल भेज दिया, और साथ ही पवित्र कन्या एंटोनिना की हर जगह तलाश करने का आदेश दिया।

पाँच दिन बाद, राज्यपाल ने फिर से अलेक्ज़ेंडर को न्याय के लिए अपने सामने लाने का आदेश दिया, और उससे पूछताछ करने लगा:

'तुम्हारा क्या निर्णय है? क्या तुम देवताओं को बलिदान दोगे, या नहीं?'

संत अलेक्ज़ेंडर ने राज्यपाल को उत्तर दिया:

'क्या मैं अपना मन बदल सकता हूँ, हे दुष्ट और क्रूर यातना देने वाले!'

'और वह औरत कहाँ है जिसे तुम देखने गए थे?' फिस्ट ने पूछा।

'मुझे नहीं पता कि वह कहाँ है,' अलेक्ज़ेंडर ने जवाब दिया।

इस बीच, जब वे इस प्रकार बात कर रहे थे, प्रभु यीशु मसीह स्वयं संत कुंवारी अन्तोनिना को प्रकट हुए और कहा:

'साहस रखो और वहाँ जाओ जहाँ वह अन्यायपूर्ण और क्रूर शासक था।'

तब संत गईं और, निर्भीक होकर शासक के सामने प्रकट होकर, उससे कहा:

'दुष्ट और क्रूर फिस्ट, क्या तुम मुझे ही नहीं ढूंढ रहे हो? मैं यहाँ हूँ, स्वयं तुम्हारे सामने आई हूँ, तुम्हें शर्मिंदा करने और तुम्हारी शक्ति को नष्ट करने के लिए।'

संत को देखकर, फिस्ट क्रोध से आग-बबूला हो गया और सैनिकों को उसे फांसी देने, बुरी तरह पीटने और पूछने का आदेश दिया:

'क्या तुम कुंवारी हो, या नहीं?'

फरि भी संत ने भारी प्रहारों के बावजूद एक भी कराह नहीं निकाली। जब उसे पेड़ से उतारा गया, तो शासक स्वयं उससे पूछने लगा: क्या वह अभी भी कुंवारी थी, या नहीं? तब पवत्रि शहीद ने शासक से उत्तर दयिा:

'हे दुष्ट और क्रूर यातना देने वाले! हम ईसाई तेरी अशुद्ध वासना के दास कतई नहीं हैं, क्योंकि प्रभु और हमारे ईश्वर ने अपनी कृपा से मुझे कुंवारी ही रखा है।'

फसि्ट ने आश्चर्य से उसकी ओर देखा और कहा:

'यदि तुम अभी भी कुंवारी हो, तो अलेक्जेंडर के साथ आगे आओ, हमारे देवताओं को बलदिान चढ़ाओ, और तुम सुरक्षति रहोगी।'

शासक के प्रस्ताव के जवाब में, मसीह के पवत्रि शहीदों, अलेक्जेंडर और कन्या एंटोननिा ने शासक को एक स्वर में उत्तर दयिा:

'ऐ क्रूर फसि्ट, कोई भी यातना नहीं है, जसिसे तुम हमसे तुम्हारे घृणति देवताओं की पूजा करवा सको, जनिके पास न तो ववि ेक है और न ही शक्ति।'

पवत्रि शहीदों के इस उत्तर के बाद, राज्यपाल ने आदेश दयिा कि उनके हाथ काट दिए जाएँ। तब मसीह के वीर और कुलीन योद्धाओं ने अपने हाथ काटे जाने के लिए आगे बढ़ा दिए और कहा:

'सबसे पहले, हे दुष्ट और क्रूर यातनाकर्ता, यह जान ले कि कोई यातना हमारी धार्मकि आस्थाओं पर वजिय प्राप्त नहीं कर सकती – हमारे साथ जो चाहें करें!'

योद्धाओं ने अपनी तलवारें खींचीं और पवत्रि शहीदों के हाथ काट दिए। उन्होंने, हालांकि, जैसे कि उन्हें कोई दर्द महसूस नहीं हो रहा हो, प्रभु की महमिा की और, फरि शासक की ओर मुड़कर, उससे कहा:

'क्रूर और अत्यंत नीच शासक! हम उन यातनाओं को बलि्कुल भी महसूस नहीं करते जो तुमने हम पर दी हैं; परन्तु हे शासक, तुम्हें—जसिके हम दास हैं, हमारे प्रभु—शीघ्र ही अग्नि की gehenna (नरक) में डाल देंगे, जहाँ तुम अनंतकाल तक बनिा रुके पीड़ा सहोगे।'

पवत्रि शहीदों के इन फटकार भरे शब्दों को सुनकर, राज्यपाल क्रोध से आग-बबूला हो गया और एक गहरी खाई खोदने का आदेश दयिा; लेकनि पहले, उसने पवत्रि पीड़तिों को फांसी पर लटकाया और तब तक पीटा जब तक कि वे अपने ऊपर पड़ने वाले प्रहारों का दर्द महसूस न करने लगे। उसने यह भी आदेश दयिा कि गड्ढे में लकड़ी और झाड़यिाँ इतनी मात्रा में डाली जाएँ कि वह कनिारों तक भर जाए, ताकि पवत्रि शहीदों को उसमें जदिा जलाया जा सके। इस बीच, क्रूर पटिाई के बावजूद, उन्हें बलि्कुल भी दर्द महसूस नहीं हुआ, मानो यह उनके अपने शरीर न हों जो ऐसी यातनाएँ झेल रहे हों, बल्कि वे प्रभु यीशु मसीह की स्तुति करते रहे। यह देखकर, राज्यपाल ने उन्हें नए-नए यातनाओं से पीड़ा पहुँचाने का आदेश दयिा, और जलती हुई मोमबत्तयिों से उनकी पसलयिों को झुलसाया। तब पवत्रि शहीदों अलेक्जेंडर और एंटोननिा ने राज्यपाल से ऊँचे स्वर में कहा: 'दुष्ट फसि्ट! हम अपने प्रभु यीशु मसीह के प्रेम के लिए अपने दुखों को सहते हैं, यह दृढ़ वशि्वास रखते हुए कि इस अस्थायी जीवन के बाद, आने वाले जीवन में हमें स्वर्ग के राज्य में एक शाश्वत पुरस्कार मलिेगा, जबकि प्रभु और हमारे परमेश्वर आपको जल्द ही वनिाश के हवाले कर देंगे क्योंकि आपने उनके नरि्दोष सेवकों को इतना अधकि दुख सहने के लिए मजबूर कयिा!'

ये शब्द सुनते ही, फसि्ट क्रोध के मारे अपने सेवकों को यह आदेश देने लगा: 'गड्ढे में लकड़ी में आग लगा दो, ताकि इन लोगों को तुरंत आग में फेंका जा सके।'

जब सैनकिों द्वारा राज्यपाल का आदेश पूरा कर दयिा गया, तो क्रूर यातना देने वाले ने उन्हें आदेश दयिा कि वे पवत्रि शहीदों पर कोयला डालें और उन्हें जलती हुई खाई में फेंक दें। साथ ही, उसने आदेश दयिा कि लिकड़ी के ऊपर सूखा कोयला डाला जाए, ताकि शहीद पूरी तरह से जल जाएं और उनकी हड्डयिाँ भी राख हो जाएं। एक बार जब फांसी का आदेश पूरा हो गया, तो राज्यपाल ने गड्ढे को मटि्टी से भरने का आदेश दयिा, यह कहते हुए: 'ताकि उनकी पत्नयिाँ उनकी हड्डयिाँ इकट्ठा न कर सकें, जैसा कि ईसाइयों में रवािज है!'

फसि्ट के आदेश पर, पवत्रि शहीदों को आग में फेंक दयिा गया और गड्ढा भर दयिा गया। फरि फसि्ट अपने घर लौट आया, लेकनि वह न तो कुछ खा सकता था और न ही पी सकता था और वह गूंगा हो गया, क्योंकि पवत्रि स्वर्गदूतों द्वारा उसके वरिुद्ध भेजी गई एक दुष्ट आत्मा ने उसे सात दनिों तक सताया। शैतान के हाथों सात दनिों तक चली गंभीर यातनाओं के बाद, राज्यपाल की मृत्यु हो गई। इस प्रकार उनकी मृत्यु हो गई, और उन क्षेत्रों में ईसाइयों का उत्पीड़न

समाप्त हो गया। पवत्रि शहीदों अलेक्जेंडर और एंटोननिा का धन्य नधिन[4291] के मई महीने के तीसरे दनि, शनविार को, दनि के नौवें घंटे पर, हमारे प्रभु यीशु मसीह के शासनकाल में हुआ, जन्हिें सदा के लिए सम्मान और महमिा प्राप्त है। आमीन।

24 जून

11 जून (पुराने कैलेंडर के अनुसार)

संत बार्थोलोम्यू प्रेरति का जीवन और कष्टकथा

11 जून को स्मरण कयिा जाता है

संत बार्थोलोम्यू प्रेरति मसीह के बारह प्रेरतिों में से एक थे। पवत्रि आत्मा प्राप्त करने के बाद, जो प्रेरतिों पर आग की जीभों के रूप में अवतरति हुआ (प्रेरतिों के काम 1:13, 2:1–4), संत बार्थोलोम्यू को प्रेरति फलिपि के साथ, सीरयिा और एशयिा माइनर में सुसमाचार का प्रचार करने के लिए लॉटरी द्वारा चुना गया था। इस प्रकार वे दोनों चल पड़े – कभी-कभी साथ में उपदेश देते, कभी-कभी अलग-अलग रास्तों से वभिन्नि नगरों में जाते, और कभी-कभी फरि से एक साथ मलिकर लोगों को यीशु मसीह में वश्विास के द्वारा मुक्ति की ओर ले जाते।

एशयिा माइनर में सुसमाचार का प्रचार करते समय, संत फलिपि कुछ समय के लिए संत बार्थोलोम्यू से अलग हो गए और लडियिा तथा मसियिा के जंगली और वद्रिोही नविासयिों को मसीह के धर्म में परविर्तति कयिा[4292] । उस समय, पड़ोसी नगरों में मसीह का प्रचार कर रहे संत बार्थोलोम्यू को प्रभु से आज्ञा मलिी कि वे संत फलिपि की सहायता के लिए जाएँ। उनके साथ मलिकर, संत बार्थोलोम्यू ने अपने प्रेरतिीय श्रम और कार्यों में एकता के साथ काम कयिा। फलिपि का अनुसरण उनकी बहन, कुंवारी मरयिमना ने भी कयिा, और वे सभी मलिकर मानव जाति के उद्धार के कार्य में लग गए। जब वे सीरयिा और मसियिा के शहरों में परमेश्वर का वचन प्रचार करते हुए यात्रा कर रहे थे, तो उन्होंने अवश्विासयिों के हाथों कई परीक्षाओं, पटिाइयों और कष्टों को सहा; उन्हें कैद कयिा गया और पत्थर मारे गए, लेकनि सभी उत्पीड़नों के बावजूद, परमेश्वर की कृपा से, वे मसीह के वश्विास को फैलाने के लिए आगे आने वाले कार्यों के लिए जीवति रहे।

लडियिा के एक गाँव में, वे मसीह के प्रयि शष्यि, संत जॉन द थयिोलोजयिन से मलिे, और उनके साथ फ्रीजयिा की भूमि के लिए रवाना हो गए। हायरापोलसि[4293] शहर में प्रवेश करने पर, उन्होंने वहाँ मसीह का उपदेश दयिा। यह शहर मूर्तयिों से भरा हुआ था, जनिकी इसके सभी नविासी पूजा करते थे; अन्य झूठे देवताओं के बीच एक वशिाल एकडिना[4294] भी था, जसिके लिए एक वशिेष मंदरि बनाया गया था; उसके लिए वहाँ भोजन लाया जाता था, और अनेक प्रकार के बलदिान चढ़ाए जाते थे; कट्टरपंथयिों ने अन्य सरीसृपों और वषिैले साँपों की भी पूजा की। संत फलिपि ने, सबसे पहले और सबसे प्रमुख रूप से, अपनी बहन के साथ मलिकर प्रार्थना के माध्यम से उस वषिैले साँप के खलिाफ युद्ध छेड़ा, जसिमें उन्हें उस समय उनके साथ मौजूद संत जॉन द थयिोलोजयिन की सहायता मलिी। प्रार्थना के माध्यम से, एक साथ—जैसे भाले से—उन्होंने उस इचडिना को परास्त कयिा और मसीह की शक्ति से उसे मार डाला। इसके बाद, जॉन द थयिोलोजयिन उनसे अलग हो गए, और उन्हें हएिरापोलसि में परमेश्वर का वचन प्रचार करने के लिए छोड़ गए, जबकि वे स्वयं अन्य शहरों में गए, और पवत्रि सुसमाचार को दूर-दूर तक फैलाया। संत फलिपि, बार्थोलोम्यू और मरयिमना के साथ, हेरापोलसि

[4291] पवत्रि शहीदों का नधिन 3 मई 313 को हुआ, लेकनि उनके जीवन का वृत्तांत 10 जून के अंतर्गत सूचीबद्ध है क्योंकि प्रोलॉग्स में यही तारीख दी गई है। उनके पवत्रि अवशेषों को बाद में कॉन्स्टेंटनिोपल ले जाया गया और मैक्समिस के मठ में स्थापति कयिा गया।

[4292] लडियिा और मसियिा एशयिा माइनर के उत्तर-पश्चमिी क्षेत्र हैं।

[4293] हएिरापोलसि का शहर (ग्रीक में 'पवत्रि शहर' के लिए) एशयिा माइनर के फ्राइजयिा क्षेत्र में स्थति था। हएिरापोलसि में कभी एक बशिप थे जन्होंने 325 में प्रथम सार्वभौमकि परषिद में भाग लयिा था। आज, वहाँ केवल खंडहर बचे हैं, और यह स्थान कोढ़ियों के लिए एक आश्रय के रूप में काम करता है।

[4294] इचडिना एक जहरीला साँप है, जसिकी लंबाई एक हाथ से भी अधकि होती है; इसके काटने से अत्यधकि खतरा होता है और अधकिांश मामलों में इससे तुरंत मृत्यु हो जाती है।

में रहे, और मूर्तपिूजा के अंधकार को दूर करने के लिए पूरी लगन से प्रयास करते रहे, ताकि सत्य के ज्ञान का प्रकाश उन लोगों पर चमक सके जो भटक गए थे; और वे इसके लिए दिन-रात परिश्रम करते रहे, अविश्वासियों को परमेश्वर का वचन सिखाते हुए, अज्ञानी लोगों को समझाते हुए और खोए हुए लोगों को सच्चे मार्ग पर ले जाते हुए।

उस नगर में स्टैक्स नाम का एक व्यक्ति रहता था, जो चालीस वर्षों से अंधा था। पवित्र प्रेरितों ने प्रार्थना की शक्ति से उसकी शारीरिक आँखें खोल दीं, और मसीह के उपदेश द्वारा, उन्होंने उसकी आत्मा की अंधापन दूर कर दिया । स्टैकी को बपतिस्मा देने के बाद, संत उसके घर में ठहरे। और पूरे शहर में यह खबर फैल गई कि अंधा स्टैकी अपनी दृष्टि वापस पा गया है। लोगों की भीड़ उसके घर पर इकट्ठा होने लगी। पवित्र प्रेरितों ने उन सभी को, जो उनके पास आए, यीशु मसीह में विश्वास का उपदेश दिया। वहाँ कई बीमार लोगों को भी लाया गया, और पवित्र प्रेरितों ने प्रार्थना द्वारा उन सभी को चंगा किया और दुष्ट आत्माओं को निकाल दिया, जिससे बहुत से लोग मसीह पर विश्वास करने लगे और बपतिस्मा लिया।

शहर के राज्यपाल, निकानोर नामक व्यक्ति की पत्नी को साँप ने काट लिया था और वह बीमार होकर मृत्यु के कगार पर थी। जब उसने स्टैचियस के घर पर ठहरे हुए पवित्र प्रेरितों के बारे में सुना, और यह भी कि वे एक ही शब्द से हर तरह की बीमारियों को ठीक कर देते थे, तो उसने अपने पति की अनुपस्थिति में अपने सेवकों को आदेश दिया कि वे उसे उनके पास ले जाएँ और उसे दोहरा चंगापन मिला: सांप के डंकन से शारीरिक चंगाई और दैवीय भ्रम से आध्यात्मिक चंगाई; क्योंकि, पवित्र प्रेरितों द्वारा उपदेश पाकर, वह मसीह में विश्वास करने लगी। जब शहर का राज्यपाल घर लौटा, तो उसके नौकरों ने उसे बताया कि उसकी पत्नी को स्टैचियस के घर ठहरे हुए कुछ विदेशियों ने मसीह में विश्वास करना सिखाया था। क्रोधित होकर, निकानोर ने प्रेरितों को तुरंत गिरफ्तार करने और स्टैचियस के घर को जला देने का आदेश दिया – जिसे पूरा किया गया। एक बड़ी भीड़ इकट्ठा हो गई, और पवित्र प्रेरित फिलिप और बरथोलोमियुस, साथ ही पवित्र कन्या मारियमने को, पीटते और अपमानित करते हुए शहर में घसीटा गया; अंत में, उन्हें जेल में डाल दिया गया। इसके बाद, नगरपालक ने मसीह के प्रचारकों का न्याय करने के लिए न्यायाधीश की कुर्सी पर बैठ गया; और मूर्तियों के सभी पुरोहित और नाश हुए सांप के पुरोहित उसके चारों ओर इकट्ठा हो गए, उन्होंने पवित्र प्रेरितों के खिलाफ शिकायतें करते हुए कहा: 'पालक! हमारे देवताओं पर हुए अपमान का बदला लो, क्योंकि जब से ये परदेशी आए हैं, हमारे शहर में हमारे महान देवताओं की वेदियाँ वीरान हो गई हैं, और लोग उन्हें अपनी पारंपरिक बलिदानें चढ़ाना भूल गए हैं; हमारी प्रसिद्ध देवी, एकडिना, नष्ट हो गई है, और पूरा शहर अराजकता से भर गया है। इन जादूगरों को मार डालो!"

तब नगरपाल ने यह सोचकर कि उनमें कोई जादू-टोना है, संत फिलिप के कपड़े उतारने का आदेश दिया; लेकिन जब उन्होंने उन्हें नंगा कर दिया, तो उन्हें कुछ भी नहीं मिला। उन्होंने संत बरथोलोम्यू के साथ भी ऐसा ही किया – और उनके कपड़ों में भी उन्हें कुछ नहीं मिला। जब वे उसी इरादे से मरियम के पास पहुँचे, कि उसे नग्न कर उसके कुँवारी शरीर को उजागर करें, तो वह अचानक उनकी आँखों के सामने एक अग्नि की लपट में बदल गई, और दुष्ट पुरुष भयभीत होकर उससे भाग गए। राज्यपाल ने पवित्र प्रेरितों को सूली पर चढ़ाने की सज़ा सुनाई।

संत फिलिप सबसे पहले पीड़ित हुए। उनके पैरों में छेद करके और उनमें रस्सियाँ डालकर, उनके अत्याचारियों ने उन्हें एचडिना के मंदिर के द्वार के सामने उल्टा सूली पर चढ़ा दिया, और साथ ही उन पर पत्थर भी बरसाए। फिर उन्होंने संत बार्थोलोम्यू को मंदिर की दीवार पर सूली पर चढ़ा दिया। और अचानक एक बड़ा भूकंप आ गया: पृथ्वी फट गई और नगरपालक को सभी पुरोहितों और अविश्वासियों की भीड़ सहित निगल गई। जो भी जीवित बचे थे - विश्वासी और विधर्मी दोनों - वे बड़े भय से ग्रस्त हो गए और रोते हुए पवित्र प्रेरितों से दया करने तथा अपने एकमात्र सच्चे ईश्वर से प्रार्थना करने का आग्रह करने लगे कि पृथ्वी उन्हें भी उसी प्रकार न निगल जाए जैसे उसने दूसरों को निगला था। वे जल्दी से सूली पर चढ़ाए गए प्रेरितों को सूली से उतारने लगे। संत बार्थोलोम्यू को बहुत ऊँचा नहीं लटकाया गया था, और उन्हें जल्द ही उतार लिया गया। लेकिन फिलिप को क्रूस से इतनी जल्दी नहीं उतारा जा सका, क्योंकि उन्हें बहुत ऊँचा लटकाया गया था और, सबसे बढ़कर, क्योंकि यह ईश्वर की विशेष इच्छा थी, ताकि उनका प्रेरित, इन कष्टों और क्रूस पर अपनी मृत्यु के माध्यम से, पृथ्वी से स्वर्ग में चला जाए, जिसकी ओर उनके पैर उनके पूरे जीवन में मुड़े हुए थे। इस प्रकार लटके हुए, संत फिलिप ने अपने शत्रुओं के लिए ईश्वर से प्रार्थना की, कि प्रभु उनके पापों को क्षमा करें और सत्य के ज्ञान के लिए उनके मन को प्रबुद्ध करें। प्रभु ने उनकी प्रार्थना सुनी और तुरंत पृथ्वी को आज्ञा दी कि वह एचडिना के नगरपालक और पुरोहितों को छोड़कर, उन पीड़ितों को बाहर निकाल दे जिन्हें उसने जीवित निगल लिया था। तब, एक स्वर में, उन्होंने सभी ने मसीह की शक्ति की स्वीकारोक्ति की और उसकी महिमा की, तथा बपतिस्मा लेने की अपनी इच्छा

व्यक्त की। जब उन्होंने संत फलिपि को सूली से उतारने का प्रयास कयि, तो उन्होंने देखा कि वह पहले ही अपनी पवित्र आत्मा परमेश्वर को सौंप चुके थे, और उन्होंने उन्हें मृत पाया। उनकी अपनी बहन, संत मरयिमना, जो पूरे समय अपने भाई फलिपि के दुख और मृत्यु को देख रही थी, ने जब उसके शरीर को पेड़ से उतारा गया तो उसे प्यार से गले लगाया और चूमा, और इस बात पर प्रसन्न हुई कि फिलिपि मसीह के लिए पीड़ा सहने के योग्य समझा गया था[4295] । संत बार्थोलोम्यू ने प्रभु में विश्वास करने वालों सभी का बपतस्मि दयि और स्टैक्ससि को उनका बशिप नयिुक्त कयि। नव-धर्मप्राप्तयिों ने पवित्र प्रेरति फलिपि के शरीर को सम्मान के साथ दफनाया। जसि स्थान पर पवित्र प्रेरति का रक्त बहाया गया था, वहाँ तीन दनिों के भीतर एक बेल उग आई, यह इस बात का संकेत था कि संत फलिपि, मसीह के नाम पर बहाए गए अपने रक्त के लिए, अब अपने प्रभु के राज्य में अपने प्रभु के साथ अनंत आनंद का अनुभव करते हैं।

प्रेरति फलिपि के दफन के बाद, संत बार्थोलोम्यू और धन्य कुंवारी मारअिम्ने कई दनिों तक हएिरापोलसि में रहे, उन्होंने मसीह के विश्वास में नव-स्थापति चर्च को मजबूत कयि, और फरि दोनों अपने-अपने रास्ते चले गए। संत मारअिम्ना लकिोनयि की ओर चली गईं और वहाँ, परमेश्वर के वचन का सफलतापूर्वक प्रचार करते हुए, उन्होंने शांतपिूर्वक प्रभु के पास प्राण त्याग दए[4296] । जहाँ तक पवित्र प्रेरति बार्थोलोम्यू का प्रश्न है, वह भारत की भूमकि लिए रवाना हुए, जहाँ वे काफी समय तक रहे, यीशु मसीह के प्रचार में परश्रिम करते हुए, कस्बों और गांवों में यात्रा करते हुए और उनके नाम पर बीमारों को चंगा करते हुए। अपने प्रचार के माध्यम से कई मूर्तपिूजकों को प्रबुद्ध करने और चर्चों की स्थापना करने के बाद, उन्होंने मत्ती का सुसमाचार उनकी भाषा में अनुवाद कयि, जसिे वे अपने साथ लाए थे, और उन्हें दे दयि। उन्होंने उन्हें हब्रिू में लखिा हुआ सुसमाचार भी दयि, जसिे सौ साल बाद एक ईसाई दार्शनकि पंतैनो[4297] अलेक्जेंड्रयि ले आए। भारत से, संत बार्थोलोम्यू ग्रेटर आर्मेनयि के लिए रवाना हुए[4298] । वहाँ पहुँचने पर, मूर्तयिाँ—या यूँ कहें कि उनमें वास करने वाले राक्षस—चुप हो गए, इससे पहले कि वे ज़ोर से चल्लिा रहे थे कि बार्थोलोम्यू उन्हें सता रहा है और जल्द ही उन्हें भगा देगा। और वास्तव में, अपोस्तल के आने मात्र से न केवल मूर्तयिों से बल्कि लोगों से भी अशुद्ध आत्माएँ नकिल जाती थीं; और इस कारण, कई लोग मसीह की ओर मुड़ गए।

उस देश का राजा, पॉलमियिस, जसिकी एक बेटी पस्सिनी थी, जसिके मुँह से दानव ने पुकार कर कहा: 'बार्थोलोम्यू, तुम हमें यहाँ से भी भगा रहे हो!'

यह सुनकर, राजा ने आदेश दयि कि बार्थोलोम्यू को तुरंत ढूंढा जाए; और जब मसीह के प्रेरति भूतग्रस्त लड़की के पास आए, तो दानव तुरंत उससे भाग गया, और राजकुमारी चंगी हो गई। इसके बाद, राजा संत का धन्यवाद करना चाहता था, इसलिए उसने सोने, चांदी, मोतयिों और अन्य कीमती उपहारों से लदे ऊँट संत के पास भेजे। हालाँकि, प्रेरति, जो आध्यात्मकि गरीबी से परपिूर्ण थे (देखें मत्ती 5:3), उन्होंने भेजी गई किसी भी चीज़ को अपने पास नहीं रखा, बल्कि सब कुछ राजा को इन शब्दों के साथ वापस भेज दयि: 'मैं इन चीज़ों की खोज नहीं करता, बल्कि मैं मानव आत्माओं की खोज करता हूँ; और यदि मैं उन्हें जीता कर स्वर्गीय नविासों में ले जाऊँ, तो मैं प्रभु के सामने एक महान व्यापारी बनूँगा।'

इन शब्दों से प्रभावति होकर राजा पॉलमियिस अपने पूरे परविार सहति मसीह में विश्वास करने लगा; उसे स्वयं पवित्र प्रेरति ने रानी, उसकी चंगी हुई बेटी, अनेक कुलीनों और जनता के बहुत से लोगों के साथ बपतस्मि दयि: क्योंकि उस समय दस या उससे अधकि शहरों ने राजा के उदाहरण का अनुसरण करते हुए पवित्र बपतस्मि प्राप्त कयि।

यह देखकर, मूर्तपिूजक पुरोहति पवित्र प्रेरति के वरिुद्ध क्रोधति हो गए, और इस बात से गहराई से दुखी हुए कि उनके देवता नष्ट हो रहे थे, मूर्तपिूजा समाप्त हो रही थी, और उनके मंदरि—जनिसे वे अपनी आजीवकिा कमाते थे—बरबाद हो रहे थे। वे राजा के भाई अस्त्यजसि के पास गए और उन्हें बारथोलोम्यू को मारने और अपने देवताओं का अपमान करने का बदला उससे लेने के लिए उकसाया। एक उपयुक्त अवसर का लाभ उठाते हुए, अस्त्यजसि ने पवित्र प्रेरति को

[4295] संत फलिपि प्रेरति (बारहों में से एक) का पर्व 14 नवंबर को मनाया जाता है।

[4296] संत मारयिमने का पर्व 17 फरवरी को मनाया जाता है

[4297] पैंटेन (जो 3वीं शताब्दी में रहते थे) अलेक्जेंड्रयिाई स्कूल के प्रसदि्ध शकि्षकों में से एक थे, जहाँ चर्च के कई फादरों ने अपनी ईसाई शकि्षा प्राप्त की।

[4298] महान आर्मेनयि – कूरा नदी और टग्रिसि तथा यूफ्रेटसि नदयिों के उद्गम के बीच एक पहाड़ी देश; इसे लघु आर्मेनयि के वपिरीत महान आर्मेनयि कहा जाता था – यह यूफ्रेटसि और गलास नदयिों के उद्गम के बीच का क्षेत्र था, जो पोंटस के मथि्रडिैट्स के राज्य का हस्सिा था, और 70 ईस्वी से, – रोमन साम्राज्य का हस्सिा बन गया।

गरिफ्तार कर लिया और अल्बाना नगर[4299] में उन्हें उल्टा सूली पर चढ़ा दिया। हालाँकि, पवित्र प्रेरित ने मसीह के लिए आनंदपूर्वक कष्ट सहे और, सूली पर लटके हुए, परमेश्वर का वचन प्रचार करना कभी बंद नहीं किया; उन्होंने विश्वासियों को उनके विश्वास में मजबूत किया, और अविश्वासियों से सत्य को जानने और राक्षसों के अंधकार से मसीह के प्रकाश की ओर मुड़ने का आग्रह किया। यह सहन न कर पाने पर, यातना देने वाले ने आज्ञा दी कि प्रेरित की खाल उधेड़ दी जाए; फिर भी संत ने, इन यातनाओं को बड़ी धैर्यता से सहते हुए, मौन नहीं adopted, बल्कि सभी को ईश्वर के बारे में सिखाना और उनकी स्तुति करना जारी रखा। अंत में, यातना देने वाले ने संत बार्थोलोम्यू का सिर उनकी खाल के साथ काट डालने का आदेश दिया। तब उनके ईश्वर की वाणी बोलने वाले होंठ मौन हो गए, जबकि उनका शरीर, सिर कट जाने के बाद, क्रूस पर लटका रहा, उनके पैर ऊपर की ओर मुड़े हुए थे, मानो यह प्रेरित के स्वर्ग आरोहण का संकेत दे रहा हो। इस प्रकार मसीह के प्रेरित, बार्थोलोम्यू का निधन हुआ; कई बीमारियों और परीक्षाओं के बाद, वह वेदनाहीन विश्राम में, अपने प्रभु[4300] के आनंद में प्रवेश कर गए। पवित्र प्रेरित के निधन के समय उपस्थित विश्वासियों ने उनके शरीर, सिर और त्वचा को क्रूस से उतारकर, उन्हें एक टिन के अवशेष पात्र में रखकर, ग्रेटर आर्मेनिया के उसी शहर, अल्बान में दफना दिया[4301] । और प्रेरितों की अवशेषों के माध्यम से रोगियों पर चमत्कारी उपचार हुए, जिसके परिणामस्वरूप कई अविश्वासियों ने मसीह की कलीसिया में धर्मांतरण किया।

हालाँकि, काफी समय बाद, उस भूमि पर नियंत्रण रखने वाले क्रूर उत्पीड़क, मूर्तिपूजा के अंधेपन में, संतों के अवशेषों के माध्यम से किए गए चमत्कारों के बारे में दूसरों से सुनने और स्वयं देखने के बाद भी, ईश्वर की शक्ति को स्वीकार करने के इच्छुक नहीं थे, उन्होंने उन पवित्र अवशेषों को उनकी टिन की संदूक में लेकर समुद्र में फेंक दिया। टिन का वह पवित्र अवशेष-पात्र, एक हल्की नाव की तरह पानी पर तैरता हुआ, लिपारी द्वीप पर आकर ठहर गया।[4302] स्थानीय बिशप, अगथोन, को एक सपने में प्रकट हुए दर्शन से पता चला कि संत के अवशेष उनके द्वीप पर बहकर आ गए हैं, और वह पादरियों और सभी लोगों के साथ समुद्र तट पर गए। पवित्र प्रेरित के अवशेष देखकर, बिशप और वहाँ मौजूद सभी लोग यह देखकर बहुत आश्चर्यचकित हुए कि टिन का अवशेष-पात्र पानी में डूबा नहीं था, बल्कि एक नाव से भी अधिक आसानी से इतनी लंबी समुद्री यात्रा तय कर आया था। और सभी ने उस परमेश्वर की महिमा की, जो ऐसे अद्भुत और चमत्कारिक कार्य करता है। पवित्र अवशेषों से भरा वह संदूक लेकर, वे भजन-कीर्तन के साथ, बहुत आनन्द से उसे अपने चर्च[4303] तक ले गए।

यह लापरवाही होगी यदि हम संत बार्थोलोम्यू प्रेरित से संबंधित निम्नलिखित वृत्तांत का उल्लेख न करें, जो पूज्य जोसेफ गीतकार के जीवन में पाया जाता है।

एक दिन थेस्साली में रहते हुए, पूज्य जोसेफ ने एक पुण्यशील व्यक्ति से, जिसे वह जानते थे, संत बार्थोलोम्यू प्रेरित की अवशेषों का एक अंश प्राप्त किया। उन्हें कॉन्स्टेंटिनोपल के पास स्थित अपने मठ में लाने के बाद, और वहाँ संत प्रेरित बार्थोलोम्यू को समर्पित एक विशेष चर्च का निर्माण करने के बाद, जोसेफ ने उनके पवित्र अवशेषों के उस अंश को सम्मानपूर्वक उसमें स्थापित किया। पवित्र प्रेरित के प्रति महान प्रेम और विश्वास रखते हुए, उन्हें अक्सर स्वप्न में उन्हें देखने की कृपा प्राप्त होती थी और इसलिए वे पवित्र प्रेरित के पर्व को स्तुति के भजनों से सजाना चाहते

[4299] अल्बान (या अल्बानोपोलिस, अबरनोपोलिस भी) – कैस्पियन सागर के पश्चिमी तट पर एक शहर – वर्तमान बाकू।

[4300] संत बार्थोलोम्यू प्रेरित का निधन 71 ईस्वी में हुआ।

[4301] इस मामले में, रोस्तोव के संत दिमित्री की जीवनी के लेखक ने गलती से अल्बान शहर को ग्रेटर आर्मेनिया के क्षेत्र में रख दिया है। अल्बान (आधुनिक बाकू), जहाँ प्रेरित बार्थोलोम्यू ने शहादत प्राप्त की, ऐतिहासिक रूप से कभी भी महान आर्मेनिया के क्षेत्र में स्थित नहीं था, बल्कि जैसा कि इसके नाम से ही स्पष्ट है, यह कॉकेसियन अल्बानिया का एक शहर था। – *'द एबीसी ऑफ फेथ' से एक टिप्पणी*।

[4302] लिपारी इटली और सिसिली के बीच स्थित ईओलियन द्वीपसमूह के द्वीपों में से एक है।

[4303] सम्राट अनास्तासियस के शासनकाल में, लगभग 508 में, संत प्रेरित बार्थोलोम्यू के अवशेष अल्बान से मेसोपोटामिया के दारा शहर में स्थानांतरित कर दिए गए थे। जब 574 में, फ़ारसियों ने इस शहर पर कब्ज़ा कर लिया, तो दारा के कुछ ईसाइयों ने प्रेरित के पवित्र अवशेषों को लेकर उन्हें लेकर काला सागर के तटों पर भाग गए, जहाँ उनके दुश्मनों ने उनका पीछा किया, जिन्होंने पूजनीय अवशेषों को समुद्र में फेंक दिया; लेकिन वे डूबे नहीं, और चमत्कारिक रूप से लिपारी द्वीप पर बहकर आ गए। बाद में, अरबों ने इस द्वीप पर कब्जा कर लिया, जिन्होंने प्रेरित बार्थोलोम्यू के अवशेषों को बिखेर दिया, लेकिन वे चमत्कारिक रूप से फिर से एक साथ इकट्ठा हो गए; संत बार्थोलोम्यू एक भिक्षु के सामने प्रकट हुए और उस स्थान का संकेत दिया जहाँ उन्हें पाया जा सकता था। इसके बाद, पवित्र प्रेरित के अवशेषों को 9वीं शताब्दी में नेपोलिटिन शहर बेनेवेंटो में स्थानांतरित कर दिया गया, जहाँ से उन्हें (कम से कम पवित्र अवशेषों का एक हिस्सा) 10वीं शताब्दी में रोम ले जाया गया। पवित्र प्रेरित के अवशेषों को लिपारी द्वीप पर स्थानांतरित करने की घटना का चर्च 25 अगस्त को स्मरण करता है।

थे; हालाँकि, वह ऐसा करने में संकोच कर रहे थे, उन्हें संदेह था कि यह पवित्र प्रेरित को प्रसन्न करेगा, और उन्होंने ईश्वर और ईश्वर के प्रेरित से विनम्रतापूर्वक प्रार्थना की कि वह उन्हें यह प्रकट करें और उन्हें संत बार्थोलोम्यू के योग्य स्तोत्र रचने के लिए दिव्य ज्ञान प्रदान करें। परम पूज्य जोसेफ ने चालीस दिनों तक उपवास और आँसुओं के साथ प्रार्थना की, और जब प्रेरित की स्मृति का दिन नज़दीक आया, तो पर्व की पूर्व संध्या पर उन्होंने देखा कि संत बार्थोलोम्यू श्वेत वस्त्र धारण करके पवित्रस्थान में प्रकट हुए थे, और उन्होंने वेदी का परदा हटा दिया था, और उन्हें आगे आने का इशारा कर रहे थे। जब आदरणीय जोसेफ पास आए, तो पवित्र प्रेरित ने सिंहासन से पवित्र सुसमाचार उठाया और उसे जोसेफ की छाती पर रख दिया, और कहा: 'सर्वशक्तिमान ईश्वर का दयालु हाथ तुम्हें आशीर्वाद दे, और स्वर्गीय ज्ञान का जल तुम्हारी जीभ पर बरसे: तुम्हारा हृदय पवित्र आत्मा का मंदिर हो, और तुम्हारे भजन ब्रह्मांड को मधुर बना दें।'

इस प्रकार पवित्र प्रेरित बऽलोलोमियुस ने कहा, और वे अदृश्य हो गए; जबकि आदरणीय जोसेफ, अपने भीतर ज्ञान की कृपा को महसूस करते हुए, अवर्णनीय आनंद और कृतज्ञता से भर गए। उस समय से, उन्होंने चर्च के भजन और कैनन की रचना करना शुरू कर दिया, जिनसे उन्होंने न केवल संत बार्थोलोम्यू प्रेरित, बल्कि कई अन्य संतों के पर्व के दिनों को भी सजाया; हालाँकि, सबसे बढ़कर, उन्होंने परमेश्वर की अति पवित्र माता और संत निकोलस को कई कैननों से सम्मानित किया। उन्होंने भजनों से पवित्र चर्च को समृद्ध रूप से सुसज्जित किया, जिसके लिए उन्हें 'भजनकार' (hymnographer) की उपाधि दी गई। इन सबके लिए, हमारे उद्धारकर्ता मसीह की महिमा हो, पिता और पवित्र आत्मा के साथ, युगों-युगों तक। आमीन।

कुछ लोगों का मानना है कि बार्थोलोम्यू वही व्यक्ति हैं जिन्हें फिलिप ने मसीह के पास लाया था (यूहन्ना 1:45)। वास्तव में, ऐसा माना जाता है कि मसीह के इस प्रेरित का नाम नथनेल था, जबकि उनके उपनाम से—या यूँ कहें कि उनके पिता के नाम पर—उन्हें बार्थोलोम्यू, यानी 'फोलोमेउस का पुत्र' कहा जाता था। क्योंकि 'बार' शब्द का अनुवाद हिब्रू में 'पुत्र' के रूप में किया गया है, ठीक वैसे ही जैसे एक अन्य अंश में प्रभु मसीह ने प्रेरित पतरस से कहा: *'धन्य है तू, योना का पुत्र सिमोन'* (मत्ती 16:17), यानी योना का पुत्र। और यरीहो का अंधा आदमी बार्टीमियस कहलाता था, यानी टिमीयस का पुत्र। इसी प्रकार बार्थोलोम्यू की भी व्याख्या की जाती है: कि उन्हें उनके पिता के नाम पर बार्थोलोम्यू कहा जाता था – फोलोमेउस का पुत्र; क्योंकि 'फोलोमेउस' यहूदियों में एक प्राचीन और अक्सर इस्तेमाल किया जाने वाला नाम था, जबकि यह माना जाता है कि बार्थोलोम्यू का वास्तविक नाम नथनेल था। यह अनुमान निम्नलिखित आधारों पर आधारित है। सबसे पहले, सुसमाचार में कहीं भी बार्थोलोम्यू के प्रेरित बनने के आह्वान का कोई उल्लेख नहीं है, जब तक कि कोई नाथनाएल नाम को उसका न माने। दूसरी बात, पहले तीन सुसमाचार लेखक—मत्ती, मार्क और लूका, जो बरथोलोम्यू के बारे में लिखते हैं, नाथनेल के बारे में कुछ नहीं कहते, जबकि सुसमाचार लेखक यूहन्ना, जो नाथनेल के बारे में लिखते हैं, बरथोलोम्यू के बारे में कुछ नहीं कहते; और जब वह जी उठे उद्धारकर्ता के प्रकट होने पर मछली पकड़ने की घटना के बारे में बात करते हैं, तो वह नाथनेल का नाम उन लोगों में लेते हैं जो प्रेरितों के करीब थे – विशेष रूप से, वह कहते हैं: *'शिमोन पतरस, थोमा, नथनेल और ज़ेबेदी के पुत्र एक साथ थे'* (यूहन्ना 21:2)। हालांकि, कुछ टीकाकार इससे असहमत हैं, और प्रोलॉग के अनुसार मानते हैं कि शिमोन कट्टरपंथी वही व्यक्ति हैं जो नथनेल हैं, जबकि अन्य का मानना है कि नथनेल मसीह के सत्तर शिष्यों में से एक थे।

कॉन्टाकियन, स्वर 4:

हे प्रभु के प्रेरित बार्थोलोमियुस, आप ब्रह्मांड के महान सूर्य के समान प्रकट हुए हैं, जो शिक्षाओं और अद्भुत चमत्कारों से प्रकाशमान हैं; मैं आपको प्रकाश-वाहक के रूप में सम्मानित करता हूँ।

प्रेरित सेंट बरनबास का जीवन और कष्ट।

11 जून को स्मरणोत्सव

प्रेरति संत बरनबास सत्तर प्रेरतिों में से एक हैं: उनका मूल नाम जोसेफ था, लेकनि बाद में उन्हें बरनबास कहा जाने लगा, जैसा कि हम समय आने पर बताएँगे। उनका जन्म साइप्रस द्वीप पर[4304] यहूदी माता-पति के यहाँ हुआ था, जो लेवी गोत्र के थे; ईश्वर के प्राचीन महान भवष्यिवक्ताओं – मूसा, हारून और शमूएल – का भी संबंध लेवी गोत्र से था।

बर्नाबास के पूर्वज फलिस्तीन में हो रहे युद्धों के कारण फलिस्तीन से साइप्रस द्वीप चले गए थे। उनके माता-पति बहुत अमीर थे और यरूशलेम के पास उनका एक गाँव था, जो बगीचों और वभिन्नि प्रकार के फलों से भरपूर था और एक बड़ी इमारत से सुसज्जति था, क्योंकि वहीं उनका घर था। क्योंकि जब से पवत्रि भवष्यिवक्ता यशायाह ने लखिा था: 'वे घर बनाकर उनमें रहेंगे, क्योंकि वे प्रभु द्वारा धन्य कए हुए वंशज होंगे' (यशायाह 65:21–23), दूर के देशों में रहने वाले यहूदी, इन शब्दों के आध्यात्मकि अर्थ को न समझते हुए, यरूशलेम में अपने घर बनाने का प्रयास करते थे; इसी कारण से, बरनबास के माता-पति के भी यरूशलेम के पास अपना घर और अपना गाँव था।

जब जनिके बारे में हम बात कर रहे हैं, उनका जन्म हुआ, तो उन्होंने उनका नाम यूसुफ रखा और उन्हें धर्मग्रंथों के अध्ययन में पाला; और जब वह लड़का वयस्क हो गया, तो उन्होंने उसे यरूशलेम में उस समय के सबसे प्रसद्धि शक्षिक, गमलीएल के पास भेज दयिा, ताकि वह बरनबास को यहूदी धर्मग्रंथों और परमेश्वर की पूरी व्यवस्था की अधकि गहन समझ सखिा सके। यहाँ, यूसुफ अपने साथयिों में एक साऊल को गनिता था, जसिे बाद में पौलुस कहा गया; और उन दोनों ने एक ही शक्षिक, गमलीएल के अधीन अध्ययन कयिा, जो ज्ञान, धर्मग्रंथों की समझ और एक सदाचारी जीवन में पारंगत थे।

हर दनि, सुबह और शाम, यूसुफ़ सोलोमन के मंदरि जाता और वहाँ ईश्वर से वनिम्रतापूर्वक प्रार्थना करता, अपनी जवानी के दनिों को बार-बार उपवास और महान संयम में बताता था; अपनी कुँवारीपन की पवत्रिता को बनाए रखने की इच्छा से, वह दुष्ट युवकों की संगत से बचता था और कसिी भी परस्थितिमिें वे शब्द सुनना नहीं चाहता था जनिसे एक युवक का मन भ्रमति हो सकता था; लेकनि, अपने आप पर कड़ी नजर रखते हुए, वह दनि-रात प्रभु की व्यवस्था का लगातार अध्ययन करता था।

उस समय, हमारे प्रभु यीशु मसीह, अपनी देहधारण के तीस वर्ष बाद, जब उन्होंने स्वयं को संसार के सामने प्रकट करना शुरू कयिा, तो गलील से आए; यहाँ उन्होंने मंदरि में उपदेश दयिा और कई महमिामय चमत्कार कए; सभी उस पर अचंभति थे; लोग उसके पवत्रि मुखमंडल को नहिारने और उसके दव्यि वचनों को सुनने के लए चारों ओर से उसके पास उमड़ पड़े, जो शहद और छत्ते के शहद से भी मीठे थे। युवा यूसुफ ने भी उसे देखा और, उसके परम पवत्रि होठों से नकिली शक्षिाओं को सुनकर, उसके हृदय में गहरी भावना जागी और उसने उसके द्वारा कए गए चमत्कारों पर अत्यंत अचंभति होकर देखा; जब उसने देखा कि कैसे उन्होंने भेड़ों के तालाब पर (यूहन्ना 5:1–15) अपने वचन से लकवे के आदमी को चंगा कयिा, और मसीह के कई अन्य अद्भुत कार्यों के साक्षी बनकर, यूसुफ प्रभु के प्रतिहार्दकि प्रेम से भर गया; और, उनके पास आकर, वह उनके पैरों पर लोट गया; उस क्षण, जोसेफ ने प्रभु से प्रार्थना की कि वह उसे आशीष दे और अपने शष्यिों में से एक के रूप में स्वीकार कर ले। परन्तु प्रभु, जो मानव हृदयों के रहस्यों को देखता है, यह देखकर कि योसेफ का हृदय दव्यि प्रेम से जल रहा था, ने कृपापूर्वक उसे आशीष दी और उसे अपना अनुयायी बनने से नहीं रोका। योसेफ पहले अपनी चाची, मरयिम, जो यूहन्ना (जनि्हें बाद में मरकुस कहा गया) की माता थीं, के घर भागा और उससे कहा: ' ' 'आओ और उसको देखो जसिे हमारे पूर्वज देखने के लए तरसते थे; क्योंकि एक नबी, गलील के नासरत का यीशु, मंदरि में उपदेश दे रहा है और बड़े-बड़े चमत्कार कर रहा है, इसलए बहुत से लोग उसे लंबे समय से प्रतीक्षति मसीहा मानते हैं।'

जैसे ही उस स्त्री ने यह सुना, वह तुरंत सब कुछ छोड़कर मंदरि की ओर दौड़ी; प्रभु यीशु मसीह को देखकर, वह उनके चरणों में गरि पड़ी और वनिम्रता से बोली: 'प्रभु! यदि मैं आपकी दृष्टि में अनुग्रह पाई हूँ, तो अपनी दासी के घर आइए, ताकि अपनी उपस्थतिि से आप मेरे पूरे घर को आशीष दें।"

उसके वश्विास को देखकर, प्रभु उसके घर में गए और उसे तथा उसके घर में उपस्थति सभी को आशीष दी। प्रभु का मैरी द्वारा बड़े सम्मान और बहुत आनन्द और श्रद्धा के साथ स्वागत कयिा गया; उस समय से, जब भी प्रभु यरूशलेम आते, तो वे हमेशा अपने शष्यिों के साथ मैरी के घर जाते थे।

[4304] साइप्रस द्वीप भूमध्य सागर के उत्तर-पूर्वी कोने में स्थति था।

जब प्रभु यरूशलेम से गलील को लौटने के लिए रवाना हुए, तो यूसुफ अन्य चेलों के साथ उनके पीछे चल पड़ा। और जब प्रभु अपने प्रेरितों को *'इस्राएल के घराने के खोए हुए भेड़ों' के पास* प्रचार करने के लिए भेजना चाहते थे (मत्ती 10:6), उन्होंने देखा कि उनमें से बहुत कम थे, और इसलिए उन्होंने कहा: *'कटनी तो बहुत है, पर मजदूर कम हैं'* (मत्ती 9:37); इसी कारण, प्रभु ने संसार को अन्य सत्तर शिष्यों को प्रकट किया, जिन्हें उन्होंने हर नगर और गाँव में अपने सामने दो-दो करके भेजा (लूका 10:1)। प्रभु के इन सत्तर शिष्यों में संत जोसेफ भी थे, जो पहले शिष्यों में से एक थे, जिनका नाम पवित्र प्रेरितों द्वारा बरनबास रखा गया—अर्थात्, 'सन्त्वना का पुत्र'—क्योंकि, दुनिया में आए मसीहा के बारे में अपने उपदेश के माध्यम से, उन्होंने उन लोगों को सांत्वना दी जो मसीहा के आगमन का बेसब्री से इंतजार कर रहे थे। जिस प्रकार ज़ेबेदी के बेटों को 'गरज के पुत्र' कहा गया था (मरकुस 3:17), क्योंकि उनकी उपदेश-वाणी गरज की तरह संपूर्ण ब्रह्मांड में गूँजने वाली थी, उसी प्रकार इस संत जोसेफ को भी 'सांत्वना का पुत्र' कहा गया, क्योंकि उनके प्रेरितीय कार्यों से परमेश्वर के चुने हुओं को महान आनंद मिलने वाला था। और संत क्रिसोस्टोम, उनके नाम परिवर्तन का कारण बताते हुए कहते हैं (प्रेरितों के काम 11:1–30): 'मेरे विचार में उन्हें यह नाम उनके पुण्य के कारण मिला, क्योंकि वे सांत्वना के पुत्र बनने में पूरी तरह से सक्षम थे।'

प्रभु के स्वर्ग आरोहण के बाद, पवित्र प्रेरित यरूशलेम में एक साथ रहते थे, जैसा कि प्रेरितों के काम की पुस्तक में लिखा है: *'जो विश्वास कर चुके थे, उनकी भीड़ एक हृदय और एक प्राण की थी; और कोई भी अपनी किसी संपत्ति को अपना नहीं कहता था, बल्कि उनके पास सब कुछ साझा था। उनमें कोई भी ज़रूरतमंद नहीं था; क्योंकि जो भी ज़मीन या मकानों के मालिक थे, वे उन्हें बेच देते थे, बिक्री से प्राप्त धन लाते थे, और उसे प्रेरितों के पैरों तले रख देते थे'* (प्रेरितों के काम 4:32–35)। उस समय, प्रेरित बरनबास के नाम से जाने जाने वाले संत जोसेफ ने यरूशलेम के पास उपर्युक्त गाँव बेचा, जो उन्हें अपने माता-पिता से विरासत में मिला था; उसने बिक्री से प्राप्त धन को प्रेरितों के चरणों में ला दिया, और अपने लिए कुछ भी नहीं रखा, क्योंकि वह परमेश्वर में धनी होना चाहता था, जिसमें वह वास्तव में धनी था, जैसा कि इन शब्दों से प्रमाणित होता है: *'वह एक भला मनुष्य था, और पवित्र आत्मा और विश्वास से भरपूर था'* (प्रेरितों के काम 11:24)। बर्नाबास अक्सर सऊल से मिलता था, और प्रभु यीशु मसीह के विषय में धर्मग्रंथों से उसके साथ बहस करता था, तथा सऊल को पवित्र विश्वास में लाने के लिए अपनी पूरी कोशिश करता था; लेकिन सऊल अपनी पारंपरिक मान्यताओं का एक बहुत ही उत्साही रक्षक था; और इसलिए उसने संत बरनबास का एक भ्रामक व्यक्ति कहकर उपहास उड़ाया, यहाँ तक कि प्रभु यीशु मसीह के विरुद्ध अपमानजनक शब्द बोले, उन्हें एक बढ़ई, एक नीच पदवी वाले व्यक्ति का पुत्र कहा, जिसने एक शर्मनाक मृत्यु भोगी थी। जब यहूदियों ने पहले शहीद संत स्तेफन को मार डाला, उसके बाद सऊल ने कलीसिया का उत्पीड़न करना शुरू कर दिया, *'घर-घर जाकर, पुरुषों और महिलाओं को घसीटकर बाहर निकालता और उन्हें जेल में डाल देता था'* (प्रेरितों के काम 8:3), संत बरनबास उनके लिए बहुत रोए और परमेश्वर से उत्कट प्रार्थना की, अपने पवित्र हाथ उठाकर, कि वह साउल की आत्मा की आँखें खोल दे ताकि वह सत्य को जान सके; वह बहुत चाहता था कि साउल मसीही विश्वास में उसका मित्र बने, जैसे कि गमलीएल के स्कूल में वह उसका मित्र था।

बर्नाबास के आँसू और प्रार्थनाएँ व्यर्थ नहीं गईं; जब परमेश्वर की दया का समय आया, तो दमिश्क के मार्ग पर प्रभु की स्वर्गीय वाणी से बुलाए जाने के बाद सऊल मसीह के प्रति परिवर्तित हो गया[4305] । और भेड़िया भेड़ में बदल गया; मसीह के नाम का निन्दक प्रभु यीशु मसीह की महिमा करने लगा; पूर्व उत्पीड़क चर्च का रक्षक बन गया; क्योंकि पवित्र बपतिस्मा ग्रहण करने के बाद, सऊल तुरंत यहूदी सिनागॉगों में गया और यीशु के बारे में प्रचार करना शुरू कर दिया, यह कहते हुए कि वह परमेश्वर का पुत्र है, और दमिश्क में रहने वाले यहूदियों को फटकारते हुए। जब साउल यरूशलेम लौटा, 'तो *वह चेलों के पास आकर मिलना चाहता था, परन्तु सब उसे डरते थे और विश्वास नहीं करते थे कि वह चेला है'* (प्रेरितों के काम 9:26)। तब संत बरनबास, उससे मिलकर, कहने लगे: 'हे सौल, तुम कब तक यीशु मसीह के महान नाम का अपमान करते रहोगे और उनके विश्वासयोग्य सेवकों का सतावोगे? तुम कब तक उस अद्भुत रहस्य का विरोध करोगे, जिसकी भविष्यद्वाणी पुराने समय से भविष्यवक्ताओं ने की थी, और जो अब हमारे उद्धार के लिए पूरा हो गया है?'

तथापि सऊल उसके पैरों पर गिर पड़ा और आँसुओं के साथ बोला: 'सत्य के शिक्षक, बरनबास, मुझे क्षमा कर! अब मुझे एहसास हो गया है कि मसीह के बारे में आपने जो कुछ भी मुझसे कहा वह सब सच है; उसी का, जिसे मैं पहले

[4305] सौल के धर्मांतरण की कहानी प्रेरितों के काम 9:1–19 में वर्णित है। दमिश्क का शहर फिलिस्तीन के उत्तर-पूर्व में, एंटी-लेबनान पर्वतमालाओं के पूर्वी तल पर स्थित है।

लकड़हारे का पुत्र कहकर निंदा करता था, मैं अब ईश्वर का पुत्र, एकमात्र पुत्र, पिता के सार का और उनकी अनंतता का सहभागी स्वीकार करता हूँ, *'जो पिता की महिमा का प्रतिबिंब और उनके अस्तित्व का सटीक प्रतिनिधित्व है'* (इब्रानियों 1:3), इन अंतिम दिनों में *'स्वयं को* दीन करके *दास का रूप धारण किया'* (फिलिप्पियों 2:7), एक पूर्ण मनुष्य बनकर, परमेश्वर की माता, अति पवित्र कुँवारी मरियम से जन्म लिया, और स्वेच्छा से पीड़ा और क्रूस को सहन किया; फिर तीसरे दिन मरे हुओं में से जी उठे, आप अपने प्रेरितों के सामने प्रकट हुए, स्वर्ग में आरोहण किए और परमेश्वर पिता के दाहिने बैठ गए; वे जीवितों और मरे हुओं का न्याय करने के लिए अपनी महिमा में फिर आएँगे, और उनके राज्य का कोई अंत नहीं होगा'।

पहले एक ईश्वर-निन्दक और उत्पीड़क रहे उस मनुष्य से ये वचन सुनकर, संत बरनबास चकित रह गए; आनंद के आँसुओं से अभिभूत होकर, उन्होंने सऊल को गले लगा लिया और कहा:

'हे साऊल, तुझे ऐसे दैवीय प्रेरित वचन बोलने के लिए किसने सिखाया है? किसने तुझे यह स्वीकार करने के लिए मनाया है कि यीशु नासरी परमेश्वर का पुत्र है? तुझे दिव्य सिद्धांतों का ऐसा पूर्ण ज्ञान कहाँ से मिला है?'

तब साऊल ने आँसुओं और पश्चात्तापी हृदय के साथ उत्तर दिया: 'प्रभु यीशु मसीह स्वयं, जिनका मैंने, एक पापी ने, अपमान और उत्पीड़न किया था, उन्होंने मुझे यह सब सिखाया; क्योंकि वे मुझ पर नित्यकृत पर प्रकट हुए, और आज भी मैं अपने कानों में उनकी दिव्य आवाज़ सुनता हूँ। जब ऊपर से एक अद्भुत प्रकाश मुझ पर चमका और मैं डर के मारे ज़मीन पर गिर पड़ा, तो मैंने एक आवाज़ सुनी जो कह रही थी: *'हे साऊल, हे साऊल! तू मुझे क्यों सता रहा है?'* और मैं, भय और आतंक में, कह उठा:

'प्रभु, आप कौन हैं?'

और उसने मुझे कोमलता और दया से उत्तर दिया: *'मैं यीशु हूँ जिसे तुम सता रहे हो।'*

उसकी दीर्घ सहनशीलता से गहराई से चकित होकर और प्रार्थना करने के बाद, मैंने कहा:

'प्रभु, आप मुझसे क्या करवाना चाहते हैं?'

तब उसने मुझे वह सब कुछ सिखाया जो मैंने तुमसे कहा है (प्रेरितों के काम 9:3-6)।

इन बातों के बाद, संत बरनबास ने सौल का हाथ पकड़कर उसे प्रेरितों के पास ले जाकर कहा:

'यह वही मनुष्य है जो हमें सताया करता था; अब वह हम में से एक है। जो कभी हमारा विरोधी था, अब हमारे प्रभु में हमारे विश्वास को साझा करता है; जो कभी हमारा शत्रु था, अब मसीह की दाख की बारी में हमारा मित्र और सहकर्मी है। देखो, मैं तुम्हारे सामने एक नम्र मेमने को प्रस्तुत करता हूँ जो कभी एक क्रूर जानवर था।'

यह सुनकर, साऊल ने प्रेरितों से कहा कि उसने मार्ग में प्रभु को कैसे देखा था, और उसने उससे क्या कहा था; उसने उन्हें यह भी बताया कि उसने दमिश्क में मसीह के नाम के लिए कैसे परिश्रम किया था।

जब प्रेरितों ने यह सब सुना, तो वे चकित हुए, आनन्दित हुए, और परमेश्वर की महिमा करने लगे। और साऊल उनके साथ था; वह उनके साथ यरूशलेम में आता-जाता रहा, मसीह के नाम के लिए परिश्रम करता रहा और यहूदियों तथा यूनानियों दोनों को निर्भय होकर उत्तर देता रहा। हालाँकि, वे इस बात से बहुत हैरान थे कि कैसे एक ऐसा आदमी जो हाल ही तक यीशु के नाम का प्रचार करने वालों सभी का उत्पीड़न कर रहा था, अब स्वयं यीशु के बारे में प्रचार कर रहा था; और उन्होंने उसे मार डालना चाहा। अविश्वासियों का इरादा भांपकर, भाइयों ने साऊल को यरूशलेम से काइसारिया ले जाकर उसके मूल देश तर्cyc[4306] भेज दिया, ताकि वह वहाँ प्रभु यीशु मसीह का प्रचार कर सके।

उस समय, सीरिया के अंतीयक में, जो एक बड़ा और प्रसिद्ध शहर था, हमारे प्रभु यीशु मसीह में पवित्र विश्वास फैलना शुरू हो गया। क्योंकि जब पवित्र प्रथम शहीद स्तेफन को मार डाला गया, तो उसी दिन यरूशलेम की कलीसिया के विरुद्ध एक बड़ा सताव उत्पन्न हुआ, जिससे प्रेरितों के सिवाय सब विश्वासी यहूदिया और सामरिया के प्रदेशों में बिखर गए; तब जो लोग बिखर गए थे, उनमें से कुछ *'फ़ीनिसिया, साइप्रस और अंफ़ीपोलिस तक* गए *और यहूदियों के सिवा किसी और को वचन का प्रचार नहीं किया'* (प्रेरितों के काम 11:19); लेकिन बाद में उन्होंने यूनानियों को भी प्रभु यीशु का प्रचार करना शुरू कर दिया; *'और प्रभु का हाथ उन पर था, और जो विश्वास लाए, उनकी बड़ी संख्या प्रभु की ओर मुड़ी'* (प्रेरितों के काम 11:21)। यरूशलेम की कलीसिया ने यह सुना; इसलिये प्रेरितों ने संत बरनबास को अँटीओक, सीरिया में भेजा, ताकि वह वहाँ जो कुछ हुआ था, उसके बारे में और अधिक जान सके और नए विश्वासियों को दृढ़ कर सके। वहाँ जाकर, परमेश्वर

[4306] टारस प्राचीन काल में एशिया माइनर के सिलिसिया क्षेत्र में स्थित एक प्रमुख शहर था। इस शहर के अवशेष आज भी संरक्षित हैं।

की कृपा देखकर, वह बहुत आनन्दित हुआ और प्रभु के वचन से सभी को सांत्वना दी, और उन सभी को प्रभु में दृढ़ रहने के लिए प्रोत्साहित किया। जब संत बरनबास वहाँ थोड़े समय के लिए प्रचार कर रहे थे, तो बहुत से लोग प्रभु के पास आए। चूंकि शिष्यों की संख्या दिन-प्रतिदिन बढ़ रही थी, जबकि शिक्षक कम थे, इसलिए बड़ी फसल के लिए मजदूरों की कमी थी, संत बरनबास कुछ समय के लिए अंतीयक छोड़कर तर्cyc के लिए रवाना हुए, ताकि वे अपने मित्र सऊल को वहाँ ढूंढ सकें; उसे पाकर, वह उसे अंतीयक ले आया; और उन दोनों ने लोगों के हृदयों को मसीह परमेश्वर की ओर मोड़ने के लिए परिश्रम किया, यहूदियों और यूनानियों दोनों को मसीह में विश्वास की ओर ले आए। वे एक पूरे वर्ष तक अंतीयक में रहे, मंदिर में इकट्ठा होकर लोगों को सिखाते रहे। यहीं पर उनके शिष्यों को पहली बार मसीही कहा जाने लगा।

एक वर्ष बीत जाने के बाद, बरनबास और सऊल ने यह रिपोर्ट करने के लिए यरूशलेम लौटने का निर्णय लिया कि कैसे परमेश्वर का अनुग्रह अंतीयक में कार्य कर रहा था। उसी समय, अंतीयकियों में से प्रत्येक ने अपनी-अपनी सामर्थ्य के अनुसार बरनबास और सऊल के साथ यहूदिया में रहने वाले अपने दरिद्र और निर्धन भाइयों के लिए आवश्यक सभी वस्तुएँ भेजीं; क्योंकि उस समय यहूदिया में संत अगबस की भविष्यवाणी के अनुसार एक बड़ा अकाल पड़ा था: यह अगबस सत्तर प्रेरितों में से एक भी था[4307] । पर्याप्त दान इकट्ठा करने के बाद, अंतीयक के लोगों ने उन्हें बरनबास और सऊल के द्वारा बुजुर्गों के पास भेजा।

जब बरनबास और साउल—जिन्हें अब पौलुस कहा जाता था—यरूशलेम पहुँचे, तो उन्होंने अंतीयक में विश्वासियों की संख्या में वृद्धि की घोषणा करके और उनके द्वारा लाई गई उदार दानराशि देकर कलीसिया को बहुत आनन्दित किया।

उस समय, यरूशलेम की कलीसिया में अचानक बड़ा उथल-पुथल मच गया, क्योंकि *'राजा हेरोदेस ने कलीसिया के कुछ लोगों पर हाथ फेरा* (प्रेरितों के काम 12:1), और *'ज़ेबेदी के पुत्र याकूब, जो योहन का भाई था, को तलवार से मार डाला'* (प्रेरितों के काम 12:2)। यह देखकर कि यह यहूदियों को भाया, उसने पतरस को गिरफ्तार करने का आदेश दिया और उसे जेल में डाल दिया, जहाँ से प्रेरित पतरस को एक पवित्र स्वर्गदूत ने बाहर निकाला। इस पूरे समय, जब तक यरूशलेम में उत्पीड़क द्वारा मसीही कलीसिया के लिए पैदा किया गया उथल-पुथल शांत नहीं हो गया, बर्नबास और सऊल ने उपर्युक्त मरियम, जो बर्नबास की चाची थीं, के घर में शरण ली, जिनके पास संत पतरस भी तब आए थे जब एक स्वर्गदूत उन्हें जेल से बाहर ले आया था। तब बरनबास और सऊल, यरूशलेम में अपना काम पूरा करके, मरियम के पुत्र यूहन्ना, जिसे मरकुस भी कहा जाता था, को साथ लेकर एक बार फिर अंताकिया लौट आए। जब उन्होंने सभी ने अंफ़ियाक़िया में पर्याप्त समय बिताया, और उपवास, प्रार्थना, दिव्य अनुष्ठान के उत्सव और परमेश्वर के वचन के प्रचार को समर्पित रहे, तो पवित्र आत्मा ने उन्हें अन्यजातियों के पास प्रचार करने के लिए भेजना उचित समझा। पवित्र आत्मा ने अंतीयक में भविष्यद्वक्ताओं और शिक्षकों से कहा: *'बर्नाबास और सौल को उस काम के लिए मेरे लिए अलग करो जिसके लिए मैंने उन्हें बुलाया है। तब, उपवास और प्रार्थना करने के बाद, उन्होंने उन पर हाथ रखा और उन्हें भेज दिया'* (प्रेरितों के काम 13:2, 3)। वे पहले सेलेucia गए[4308] , जहाँ से वे साइप्रस के लिए नौका द्वारा रवाना हुए और सलामिस में ठहरे[4309] । वे जहाँ भी गए, उन्होंने परमेश्वर का वचन प्रचार किया; उनके साथ उनके सेवक के रूप में उपर्युक्त यूहन्ना, जिन्हें बाद में मरकुस कहा गया, मरियम का पुत्र, था। द्वीप के पार फापोस[4310] तक यात्रा करने के बाद, वे गवर्नर सर्जियस की उपस्थिति में एक यहूदी जादूगर और झूठे नबी एलीमास नामक व्यक्ति से मिले, जो बहुत बुद्धिमान था। वहाँ उन्होंने गवर्नर को पवित्र विश्वास से प्रबुद्ध किया, जबकि जादूगर एलीमास, जिसने उनका विरोध किया था, वचन की शक्ति से अंधा हो गया। पाफोस से चलकर वे पम्फुलीया में पेरगा पहुँचे। उनका सेवक यूहन्ना, जिसे मरकुस भी कहा जाता था, ने मसीह के नाम का प्रचार करने के लिए वे जो महान कष्ट सह रहे थे, उसे देखकर (क्योंकि वे मृत्यु से बिल्कुल भी नहीं डरते थे), अपनी कम उम्र के कारण उनके साथ यात्रा करने से डर गया; इसलिए, उन्हें छोड़कर, वह अपनी माँ के

[4307] जिस अकाल की भविष्यवाणी अगबस भविष्यवक्ता ने की थी, वह वास्तव में वर्ष 44 में सम्राट क्लॉडियस के शासनकाल में फलिस्तीन में हुआ था (प्रेरितों के काम 11:28)। उस समय के कई धर्मनिरपेक्ष लेखक, जैसे कि जोसेफस, स्वेटोनियस, टैसाइटस और अन्य, उस समय फलिस्तीन में फैले भीषण अकाल की गवाही भी देते हैं। बाद में, जब प्रेरित पौलुस केसरिया में थे, तो अगबस ने यह भी भविष्यवाणी की कि उन्हें बेड़ियों में जकड़ा जाएगा (प्रेरितों के काम 21:10-11)। पवित्र चर्च 8 अप्रैल को पवित्र भविष्यवक्ता अगबस का स्मरणोत्सव मनाती है।

[4308] सेल्यूकिया सीरिया में भूमध्य सागर के तट पर एक तटीय शहर था, जो ओरोंटेस नदी के मुहाने से बहुत दूर नहीं, और एंटिओक से 25 वर्स्ट की दूरी पर था। इस शहर की स्थापना मसीह से 300 साल पहले सीरियाई राजा सेल्यूकस निकिटर ने की थी।

[4309] सलामिस शहर साइप्रस द्वीप के पूर्वी हिस्से में स्थित था। माना जाता है कि इसके खंडहर फामागुस्टा गाँव के पास स्थित हैं।

[4310] पाफोस का शहर सालामिस से साइप्रस के विपरीत तट पर स्थित था। पाफोस द्वीप की राजधानी और प्रोकॉन्सल का आवास था।

पास यरूशलेम लौट गया। बर्नबास और पौलुस, पर्गा से होकर, पिसीदिया के अन्तियोकिया (सीरिया के महान अन्तियोकिया से एक अलग शहर) आए। वहाँ से भगाए जाने के बाद, उन्होंने अपने पैरों की धूल झाड़ी और इकोनियम[4311] गए; परन्तु यहाँ भी यहूदियों और अन्यजातियों ने उन्हें पत्थर मारने का यत्न किया; और जब उन्हें यह पता चला, तो वे लिकाओनिया[4312] के नगरों, लिस्त्रा और derbe और आसपास के क्षेत्रों में भाग गए, और वहाँ सुसमाचार का प्रचार किया । वहाँ उन्होंने जन्म से लंगड़ा एक व्यक्ति को चंगा किया, जो कभी चल नहीं पाया था; प्रेरितों ने उसे खड़ा किया, जिससे वह स्वतंत्र रूप से चलने में सक्षम हो गया। हालाँकि, लोगों ने उन्हें देवता समझकर, उनके लिए बलिदान चढ़ाने का निश्चय किया; ऐसा करते हुए, उन्होंने बरनबास को 'ज़ीउस'[4313] और पौलुस को 'हेर्मिस'[4314] कहा, और पवित्र प्रेरितों को लोगों को उनके लिए बलिदान न चढ़ाने के लिए मनाने में बहुत कठिनाई हुई। बाद में, यहूदियों द्वारा भड़काए जाने पर, वही लोग पवित्र प्रेरितों के विरुद्ध उठ खड़े हुए: उन्होंने पौलुस पर पत्थर चलाए, और लोग उसे मृत समझकर शहर के बाहर घसीट ले गए; लेकिन वह उठ खड़ा हुआ, शहर में प्रवेश किया, और अगली सुबह वह और बरनाबा शहर छोड़कर दर्बे के लिए रवाना हो गए। उस नगर में सुसमाचार का पर्याप्त प्रचार करने और वहाँ कई लोगों को मसीह के प्रति परिवर्तित करने के बाद, पवित्र प्रेरित उसी नगरों और गाँवों से होते हुए सीरिया के अंतीयक के लिए अपनी वापसी यात्रा पर निकल पड़े। अपने पूरे सफर में उन्होंने शिष्यों के मन को मजबूत किया, उन्हें विश्वास में बने रहने के लिए प्रोत्साहित किया और यह सिखाया कि हमें बहुत सी कठिनाइयों के द्वारा परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना चाहिए। सभी कलीसियाओं में बुज़ुर्गों को नियुक्त करने और उपवास करते हुए प्रार्थना करने के बाद, उन्होंने अपने शिष्यों को उसी प्रभु के हवाले कर दिया, जिस पर उन्होंने अपना विश्वास रखा था। पर्गा में रहकर और वहाँ प्रभु का वचन प्रचार करने के बाद, प्रेरित वहाँ से अत्तालिया[4315] के लिए रवाना हुए, फिर सीरिया के अंतीयक के लिए समुद्र-यात्रा की, जहाँ से उन्हें पवित्र आत्मा द्वारा अन्यजातियों को प्रभु का वचन प्रचार करने के लिए भेजा गया था। शहर में पहुँचकर और सभी विश्वासियों को एक साथ इकट्ठा करके, उन्होंने उन्हें वह सब कुछ बताया जो परमेश्वर ने उनके साथ किया था, और कि उन्होंने कितने गैर-यहूदियों को मसीह के पास लाया था, और वे काफी समय तक अंतीयक में रहे।

थोड़ी ही देर बाद, यहूदी विश्वासी और यूनानी विश्वासी के बीच खतना के विषय पर विवाद खड़ा हो गया, क्योंकि कुछ यहूदी कह रहे थे कि जब तक कोई मूसा की व्यवस्था के अनुसार खतना नहीं कराता, वह उद्धार नहीं पा सकता। यूनानी विश्वासी, हालाँकि, खतने को एक बड़ा बोझ मानते थे। बर्नाबास और पौलुस ने यहूदियों का विरोध किया और खतना के खिलाफ यूनानियों का बचाव किया। लेकिन जब इस मामले पर विवाद और बहस बिना रुके जारी रही, तो बर्नाबास और पौलुस के लिए यह आवश्यक हो गया कि वे खतना के बारे में उनसे परामर्श करने के लिए, एक बार फिर अंतीयक की कलीसिया से यरूशलेम में प्रेरितों और बुज़ुर्गों के पास जाएँ। इसके अलावा, बरनबास और पौलुस को प्रेरितों को यह बताने की आवश्यकता थी कि परमेश्वर ने *'अन्यजातियों के लिए विश्वास का द्वार खोल दिया है'* (प्रेरितों के काम 15:4)। बर्नाबास और पौलुस, (अंतियकिया की) कलीसिया द्वारा भेजे गए, फिनिसिया और सामरिया से होकर गए, और हर जगह अन्यजातियों के परिवर्तित होने की सुसमाचार सुनाते गए, जिससे विश्वासियों को बहुत आनंद हुआ।

जब वे यरूशलेम पहुँचे, तो पवित्र प्रेरितों और बुज़ुर्गों ने प्रेम से उनका स्वागत किया; और जब बर्नबास और पौलुस ने यह बताया कि परमेश्वर ने अन्यजातियों के बीच उनके द्वारा कौन-कौन से अद्भुत चिन्ह और चमत्कार किए थे, तो सब लोग आनंद से उनकी बात सुनने लगे। जहाँ तक खतना का प्रश्न था, प्रेरितों ने परामर्श करके यह निर्णय लिया कि विश्वासियों के लिए इसे हमेशा के लिए समाप्त कर दिया जाए, न केवल यूनानियों के बीच बल्कि यहूदियों के बीच भी, क्योंकि नए अनुग्रह के प्रकाश में यह अनावश्यक था। साथ ही, प्रेरितों ने यह आवश्यक समझा कि वे अपने ओर से कुछ ईसाइयों को बरनबास और पौलुस के साथ अंतीयकिया, हेलनिस्टिक विश्वासियों के पास भेजें; इस उद्देश्य के लिए उन्होंने बार्साबस के नाम से जाने जाने वाले यहूदा और सिलास को चुना, जो भाइयों में बहुत प्रतिष्ठित पुरुष थे, और उन्होंने इस प्रकार लिखा: *'अंतियोकिया, सीरिया और किलिकिया के प्रेरितों, बुज़ुर्गों और भाइयों की ओर से अन्यजाति भाइयों को:*

[4311] इकोनियम – एशिया माइनर का एक शहर। अब कोन्या के नाम से जाना जाता है।

[4312] लिकाओनिया – एशिया माइनर का एक क्षेत्र।

[4313] ज़्यूस, या जुपिटर, ग्रीको-रोमन धर्म का सर्वोच्च देवता था।

[4314] हर्मीस, या मर्करी, को प्राचीन यूनानियों और रोमनों द्वारा व्यापार और उद्योग का संरक्षक माना जाता था।

[4315] अटालिया शहर एशिया माइनर के पम्फिलिया प्रांत में, पेरगा के पास, भूमध्यसागरीय तट से अधिक दूर नहीं स्थित था। आज, 800 की आबादी वाला अंताल्या गाँव इस स्थल पर स्थित है।

नमस्कार। चूँकि हमने सुना है कि हम में से कुछ लोग निकलकर तुम्हें अपने शब्दों से परेशान कर रहे हैं और तुम्हारे मन को अस्थिर कर रहे हैं, यह कहते हुए कि तुम्हें ख़तना कराना चाहिए और व्यवस्था का पालन करना चाहिए—जिसके लिए हमने उन्हें अधिकृत नहीं किया था— हमने, एकत्र होकर, सर्वसम्मति से यह निर्णय लिया है, कि कुछ लोगों को चुनकर, उन्हें हमारे प्रिय बर्नबास और पौलुस के साथ तुम्हारे पास भेजें, जो हमारे प्रभु यीशु मसीह के नाम के लिए अपना प्राण जोखिम में डाल चुके हैं। इसलिए, हम यहूदा और सिलास को भेजते हैं, जो स्वयं जाकर तुम्हें यही बातें समझा देंगे। क्योंकि पवित्र आत्मा और हम दोनों को यही उचित लगा है कि हम तुम पर इन आवश्यक बातों के सिवा और कोई बोझ न लादें: कि तुम मूरतों के बलिदान किए हुए खाने, और लोहू, और घुटन से मरे हुए जानवरों के मांस, और व्यभिचार से दूर रहो; और जो कुछ तुम स्वयं नहीं चाहते कि तुम्हारे साथ किया जाए, वही तुम भी दूसरों के साथ न करो। यदि तुम इन बातों का पालन करोगे, तो भला करोगे। विदा!" (प्रेरितों के काम 15:23–29)।

इस संदेश के साथ, पवित्र प्रेरित बरनाबास और पौलुस यहूदा और सिलास के साथ यरूशलेम से अंताकिया की यात्रा पर निकल पड़े। उस समय, उपर्युक्त यूहन्ना, जिन्हें मरकुस कहा जाता था, जो बर्नबास की चाची मरियम का पुत्र था, संत पौलुस के पास जाने की हिम्मत न करते हुए, पश्चाताप और आँसुओं के साथ अपने चाचा, संत बर्नबास के पास गया, इस बात पर पछताते हुए कि जब वे अन्यजातियों को उपदेश दे रहे थे तो वह उन्हें छोड़कर चला गया था: यूहन्ना ने संत बरनबास से उसे फिर से साथ ले चलने का आग्रह करना शुरू कर दिया, और प्रभु के लिए सभी प्रकार के कष्टों और यहाँ तक कि मृत्यु का भी निडर सामना करने का वादा किया: बरनबास उसे अपने भतीजे के रूप में अपने साथ ले लिया। वे सभी मिलकर अंतीयक पहुँचे। विश्वासियों को इकट्ठा करने के बाद, प्रेरितों ने उन्हें वह पत्र दिया; उसे पढ़ने के बाद, वे सभी बहुत प्रसन्न हुए। उनकी ओर से यहूदा और सिलास ने अपने वचनों से भाइयों को सांत्वना दी और प्रभु में उन्हें दृढ़ किया। कुछ समय बाद, यहूदा यरूशलेम लौट गया, परन्तु सिलास वहीं ठहरा। इस बीच, पौलुस और बरनबास अन्तियोकिया में ठहरे, और दूसरों को प्रभु का वचन सिखाते और प्रचार करते रहे।

इसके कुछ समय बाद, पौलुस ने बरनाबा से कहा, 'हमारे भाइयों से फिर मिलना चाहिए; हम उन सभी नगरों में जाना चाहिए जहाँ हमने प्रभु का नाम प्रचार किया है, यह देखने के लिए कि भाइयों का हाल कैसा है।'

संत बरनबास इस बात से सहमत हो गए। हालाँकि, बरनबास अपने साथ जॉन, जिन्हें मार्क के नाम से जाना जाता है, अपने भतीजे को ले जाना चाहते थे; लेकिन पौलुस इसके खिलाफ था, और कहने लगा, 'हम एक ऐसे डरपोक युवक को अपने साथ क्यों लें, जिसने पहले पम्फुलीया में हमें छोड़ दिया था, और उस मिशन पर हमारे साथ जाने से इनकार कर दिया था, जिस पर हमें भेजा गया था, और जिसने हमें छोड़कर अपने लोगों के पास लौट गया था?'

उनके बीच इस बात पर विवाद हो गया, क्योंकि बरनबास यूहन्ना को साथ ले जाना चाहता था, जबकि पौलुस ऐसा नहीं चाहता था; इसलिए वे अलग हो गए, और प्रत्येक ने अपना-अपना मार्ग चुन लिया।

यह सब परमेश्वर की इच्छा के अनुसार हुआ, ताकि वे अलग-अलग रास्ते जाकर अधिक आत्माओं को बचा सकें। जहाँ दो महान शिक्षकों के जाने का इरादा था, वहाँ एक महान शिक्षक का उपदेश देना काफी था; लेकिन अलग-अलग प्रचार करके, प्रत्येक चर्च को एक विशेष लाभ पहुँचाता - एक देश में एक, और दूसरा दूसरे में, विभिन्न लोगों को मसीह के धर्म में परिवर्तित करते हुए। संत पौलुस, संत सिलास को अपने साथ लेकर, डर्बे और लूस्त्रे के लिए रवाना हो गए, जबकि संत बरनबास अपने भतीजे यूहन्ना के साथ साइप्रस के लिए समुद्र मार्ग से गए[4316] ।

साइप्रस द्वीप - अपने स्वदेश - पहुँचने पर, संत बरनबास ने काफी परिश्रम किया, क्योंकि उन्होंने वहाँ कई लोगों को मसीह के प्रति परिवर्तित किया। साइप्रस में विश्वासियों की संख्या बढ़ाने के बाद, बरनबास रोम के लिए रवाना हो गए और, जैसा कि कुछ लोग कहते हैं, रोम में मसीह का उपदेश देने वाले पहले व्यक्ति थे। बाद में मेडिओलानम[4317] शहर में बिशप की सीट स्थापित और पुष्ट करने के बाद, बर्नबास एक बार फिर साइप्रस लौट आए। जब वह वहाँ सालामिस

[4316] प्रेरितों के काम 15:36–41, 16:1। कुछ लोग यह भी मानते हैं कि पवित्र प्रेरित बरनबास, साइप्रस द्वीप और अन्य स्थानों पर उपदेश देने के बाद, पवित्र प्रेरित पौलुस से फिर से मिल गए और उनके मिशनरी कार्यों में भाग लिया; यह भी माना जाता है कि बर्नबास ही वह भाई था जिसे प्रेरित पौलुस ने टाइटस के साथ मिलकर कोरिन्थियों के पास भेजा था, जिसकी प्रेरित पौलुस के अनुसार सुसमाचार फैलाने के काम के लिए सभी कलीसियाओं में प्रशंसा की जाती है (2 कुरिन्थियों 8:18)।

[4317] मेडियोलानम या मिलान, लोम्बार्डी प्रांत में स्थित एक इतालवी शहर है। ईसाई चर्च के इतिहास में, यह 4वीं शताब्दी में जीने वाले पश्चिमी चर्च के सबसे प्रसिद्ध पिता और शिक्षक, संत एम्ब्रोस की महाधर्म-सेवा का स्थल होने के लिए जाना जाता है। पवित्र चर्च उनकी स्मृति को 4 दिसंबर को मनाती है।

शहर में मसीह के बारे में सखिा रहे थे, तो सीरयिा से कुछ यहूदी आए और उन्होंने उनका वरिोध करना शुरू कर दयिा और लोगों को भड़काया, यह दावा करते हुए कि बर्नबास जो कुछ भी उपदेश दे रहे थे वह परमेश्वर और मूसा की व्यवस्था के वपिरीत था; इन यहूदयिों ने बर्नबास के सम्मानति नाम का अनेक अपमान कयिा और उसे मार डालने की साजशि रची, और बहुतों को उसके वरिुद्ध भड़काया। प्रेरति ने, अपने शहीद होने की मृत्यु की पूर्वदृष्टि से, उस नगर में रहने वाले सभी वशि्वासयिों को बुलाया; उन्हें वशि्वास और अच्छे कामों में पूरी तरह से शकि्षति करने और मसीह के नाम का साहसपूर्वक अंगीकार करने के लिए उन्हें प्रोत्साहति करने के बाद, उन्होंने दैवीय अनुष्ठान मनाया और सभी को पवत्रि रहस्य प्रदान कयि। फरि, अपने साथी मरकुस को एक तरफ ले जाकर, उन्होंने उससे कहा: 'आज मैं अपने जीवन का अंत करूँगा, और अवशि्वासी यहूदयिों के हाथों मृत्यु भोगूँगा, जैसा प्रभु ने मुझसे कहा है; परन्तु तुम, मेरा शरीर लेकर, जो तुम्हें नगर के बाहर पश्चमि की ओर मलिेगा, उसे दफ़ना देना और मेरे मत्रि, प्रेरति पौलुस के पास जाना; उसे मेरे बारे में जो कुछ भी तुम जानते हो, सब बता देना।'

संत बरनबास के पास मत्ती के अनुसार सुसमाचार था, जो उन्होंने स्वयं अपने हाथ से लखिा था; उन्होंने संत मार्क को यह वसीयत दी कि वह उन्हें उसी सुसमाचार के साथ दफनाए। फरि, अपने चचेरे भाई संत मार्क को अंतमि चुंबन देकर, बरनबास यहूदी सभा की ओर चल पड़े। जब उन्होंने वहाँ भवष्यिद्वाणी की पुस्तकों से मसीह के बारे में बोलना शुरू कयि, तो सीरयिा से आए यहूदयिों ने उनके वरिुद्ध उठ खड़े हुए, अन्य यहूदयिों को भी भड़काया, और उन पर अपनी हत्यारी हाथ रखकर उन्हें शहर के पश्चमिी भाग में ले जाकर पत्थर मारे; फरि, एक चति बनाकर, उन्होंने पवत्रि प्रेरति का शरीर उस पर जलाने के लिए फेंक दयि। लेकनि जब संत मार्क बाद में अन्य भाइयों के साथ गुप्त रूप से यहाँ आए, तो उन्होंने पाया कि पवत्रि प्रेरति बरनबास का शरीर आग से बलि्कुल भी क्षतग्रिस्त हुए बनिा सुरक्षति था; उसे लेकर, उन्होंने इसे शहर से पाँच स्टेडयिम दूर स्थति एक गुफा में दफनाया, और, प्रेरति की इच्छानुसार, उनके सीने पर सुसमाचार[4318] रखा। फरि वे प्रेरति पौलुस की तलाश में नकिल पड़े; एफसिुस[4319] में उन्हें पाकर, उन्होंने उन्हें पवत्रि प्रेरति बरनबास की मृत्यु के बारे में सब कुछ बताया; संत पौलुस ने बार्नबास की मृत्यु पर शोक मनाया, और मार्क को अपने पास ही रखा।

सलामसि् शहर में संत बरनबास की हत्या के बाद, यहूदयिों द्वारा वशि्वासयिों पर एक बड़ा उत्पीड़न शुरू हो गया; इसलिए, हर कोई उस शहर से भाग गया और जहाँ भी हो सका, छपि गया। उस समय से, वह स्थान जहाँ प्रेरति बरनबास के पवत्रि अवशेषों को रखा गया था, वह वस्मिृति में चला गया। कई साल बाद, जब मसीह का वशि्वास पृथ्वी के छोर तक फैल गया था, जब ग्रीक-रोमन साम्राज्य पर ईसाई राजाओं का शासन था, और जब साइप्रस द्वीप धर्मपरायणता और धर्मनषि्ठा से जगमगा रहा था, तब प्रभु को उस स्थान को महमिामय करना उचति लगा जहाँ प्रेरति बरनबास की अवशेषें रखी गई थीं। इस स्थल पर कई अद्भुत चमत्कार होने लगे। इस प्रकार, पहले एक बीमार व्यक्ति जो वहाँ रात बति चुका था, स्वस्थ हो गया। एक अन्य बीमार व्यक्ति के साथ भी ऐसा ही हुआ। जब वशि्वासयिों को इस बात का पता चला, तो वे जानबूझकर उस स्थान पर आते, वहाँ रात बतिाते और अपनी बीमारयिों से चंगा हो जाते थे। इस प्रकार, वह स्थान दूर-दूर तक प्रसद्धि हो गया; परणिामस्वरूप, वहाँ कई दुर्बल और लकवाग्रस्त लोगों को लाया गया; सभी को अपनी बीमारयिों से पूर्ण रूप से चंगाई मलिी और वे अच्छे स्वास्थ्य के साथ अपने घर लौट गए। भूत-प्रेत बाधति लोगों को भी यहाँ लाया जाता था, और तुरंत ही अशुद्ध आत्माएँ लोगों से ऊँची आवाज़ में चलि्लाते हुए भाग जाती थीं। यहाँ लंगड़ों को चलने की क्षमता वापस मलि गई, अंधों को दृष्टि प्राप्त हुई, और वास्तव में कोई भी व्यक्ति किसी भी बीमारी से पीड़ति था, वह वहाँ ठीक हो जाता था। सालामसि नगर के नविासयिों ने इस पर बहुत प्रसन्नता व्यक्त की, यद्यपि वे यह नहीं जानते थे कि इसी स्थान पर इतने बड़े चमत्कार क्यों हो रहे थे, क्योंकि किसी को भी प्रेरतिों के अवशेषों के बारे में कुछ भी पता नहीं था; इसलिए, उन्होंने उस स्थान को 'स्वास्थ्य का स्थान' कहा। लेकनि यह जानना आवश्यक है कि पवत्रि प्रेरति के पूजनीय अवशेष कैसे खोजे गए।

[4318] प्रेरति सेंट बरनबास की मृत्यु लगभग 62 ईस्वी में हुई।

[4319] एफ़सिुस एशयिा माइनर में एक शहर है, जो स्मर्ना और मलिेटस के बीच, कैस्ट्रस नदी पर स्थति है, और यह उस स्थान के पास है जहाँ यह इकारयिन सागर में मलिती है।

एक दुष्ट वधिर्मी, पीटर द व्हाइट, उपनाम क्नेफयिस, जो पवत्रि पतिाओं के चौथे सार्वभौमकि परषिद[4320] के वरिोधी थे, जो काल्सेडन शहर[4321] में हुई थी, और यूटकियिन वधिर्म के रक्षक, साथ ही अपोलनियिन वधिर्म[4322] के सहयोगी थे, ज़ेनो[4323] के शासनकाल के दौरान, उसने चालाकी से अंत्योखयिा के पैट्रआिर्काट का सहिासन हथयिा लयिा और अपनी झूठी शक्षिाओं से मसीह की कलीसयिा को बहुत नुकसान पहुँचाया। लेकनि वह अपने लिए नरि्धारति अंत्योखयिा के धर्मप्रांत से संतुष्ट नहीं था, जसिके भीतर उसने ईसाइयों का उत्पीड़न और दमन कयिा, उन्हें कई यातनाओं से गुज़ारा; उसने प्राचीन काल से स्वतंत्र रहे साइप्रस द्वीप को अपने नयिंत्रण में लाने का प्रयास कयिा, ताकि वह वहाँ अपनी झूठी शक्षिाओं का प्रचार कर सके और उसका वरिोध करने वालों को सता सके (यह ध्यान देने योग्य है कि साइप्रस के लोगों ने, जो ऑर्थोडॉक्स ईसाई थे, उसके इस वधिर्मी दावे को खारजि कर दयिा कि ईश्वरत्व ने क्रूस पर पीड़ा सहन की थी)।

लेकनि उसने हर तरह से उन्हें अपने पक्ष में करने की कोशशि की, यह कहते हुए: 'चूंकि परमेश्वर का वचन अंताकयिा से साइप्रस आया है, इसलिए साइप्रस की कलीसयिा को अंताकयिा के पैट्रआिर्क के अधीन होना चाहिए।'

इन सबके कारण, साइप्रस के आर्चबशिप, जनिका नाम एम्फमिस था, बहुत दुखति हो गए, क्योंकि वह जानते थे कि पीटर, जो राजा की कृपा प्राप्त कर रहे थे, बहुत आसानी से जो कुछ भी चाहते थे, वह कर सकते थे। और वास्तव में, कुछ ही समय बाद साइप्रस में एक शाही फरमान आया, जसिमें साइप्रस के आर्चबशिप को एक परषिद में अंओक के पैट्रआिर्क के सामने जवाब देने के लिए कॉन्स्टेंटनिोपल की यात्रा करने का आदेश दयिा गया था, जहाँ वे साइप्रस द्वीप को अंओक के डायोसीस के अधकिार क्षेत्र में रखने की मांग कर रहे थे।

आर्चबशिप को समझ नहीं आ रहा था कि क्या करें, क्योंकि वह राजा की आज्ञा की अवज्ञा करने की हम्मित नहीं कर सकते थे, फरि भी उन्हें कॉन्स्टेंटनिोपल जाने से डर लग रहा था। यद्यपि उनका जीवन पवत्रि था, उनमें वाक्पटुता का वरदान नहीं था और उन्हें डर था, , कि वे अपने वरिोधयिों से ववािद में हार जाएंगे। इसलिए, उन्होंने उपवास करना और प्रार्थना करना शुरू कर दयिा, और आँसू भरी आँखों से स्वयं ईश्वर से मदद, सुरक्षा और सही सलाह की वनिती करने लगे।

एक रात, जब अंफमि प्रार्थना के महान श्रम से झपकी ले रहे थे, तो एक दव्यि पुरुष उनके सामने प्रकट हुए, जो एक उज्ज्वल, पवत्रि वस्त्र पहने हुए थे और स्वर्गीय प्रकाश से दमक रहे थे। उस आगंतुक ने कहा: 'आर्चबशिप, आप इतने दुखी और परेशान क्यों हैं? न डरो, क्योंकि तुम्हें अपने वरिोधयिों के हाथों कोई हानि नहीं होगी।'

यह कहकर, वह व्यक्ति अचानक गायब हो गया। आर्चबशिप, अपनी नींद से जागकर, भय से भर गए; फरि उन्होंने प्रार्थना करने के लिए खुद को ज़मीन पर क्रूस के आकार में लोट लयिा और बहुत आँसू बहाते हुए इस प्रकार प्रार्थना करने लगे: 'हे प्रभु यीशु मसीह, जीवति परमेश्वर के पुत्र! अपने चर्च को न छोड़ें, बल्कि अपने पवत्रि नाम की महमिा के लिए उसे अपनी सहायता प्रदान करें। यदि यह दर्शन आप से आया है, तो कृपया इसे एक बार फरि देखने की व्यवस्था करें, मैं आपसे वनिती करता हूँ, और तीसरी बार भी, ताकि मैं, एक पापी, पूरी तरह से आश्वस्त हो सकूँ कि आप, मेरे सहायक, मेरे साथ हैं!"

अगली रात, आर्चबशिप को वही दर्शन हुआ; वही तेजस्वी पुरुष उन्हें दखिाई दिए और उन्होंने कहा: 'मैं तुम्हें पहले ही बता चुका हूँ कि तुम्हें अपने दुश्मनों से कोई भी नुकसान नहीं होगा; इसलिए, कुछ भी डरने की आवश्यकता नहीं है, कॉन्स्टेंटनिोपल जाओ।'

यह कहकर, वह आकृति गायब हो गई।

[4320] चौथा सार्वभौमकि परषिद 451 में हुआ था और इसे कॉन्स्टेंटनिोपल के आर्चमिांड्राइट, यूटकिस की वधिर्म की नंदिा करने के लिए बुलाया गया था, जसिने दावा कयिा था कि यीशु मसीह में मानवीय स्वभाव पूरी तरह से दैवीय स्वभाव में वलिीन हो गया था, और इसलिए उन्होंने उनमें केवल एक ही स्वभाव - दैवीय - को पहचाना।

[4321] काल्सेडोन, या काल्सेडोन, मूल रूप से प्रोपोंटसि (मार्मारा सागर) के तट पर एक मेगारीन बस्ती थी। ईसाई सम्राटों के अधीन, काल्सेडोन एशयिा माइनर के बथिनियिा प्रांत की राजधानी थी।

[4322] लाओडकियिा के बशिप अपोलनिारसि ने गलत रूप से यह सखिाया कि परमेश्वर के पुत्र ने, देह धारण करने के बाद, एक पूर्ण मानव स्वभाव ग्रहण नहीं कयिा, बल्कि केवल एक मानव आत्मा और शरीर ग्रहण कयिा, जबकि उनके मानव मन की जगह उनकी दव्यिता ने ले ली थी। इस वधिर्म की नंदिा 381 में कॉन्स्टेंटनिोपल में आयोजति दूसरे सार्वभौमकि परषिद में की गई थी।

[4323] ज़ेनो ने 474 से 491 तक शासन कयिा।

आर्चबशिप एंफमिस ने, एक बार फरि से ईश्वर का धन्यवाद करने और जो उन्होंने देखा था उसे कसिी से न बताने के बाद, प्रार्थना पर प्रार्थना और आँसू पर आँसू बहाए, कि उन्हें यह दर्शन तीसरी बार मलिें और यह प्रकट हो कि आगंतुक कौन थे।

तीसरी रात, वही व्यक्ति प्रकट हुआ और कहा: 'तुम मेरे उन शब्दों पर वशि्वास करने से कतिनी देर तक इनकार करोगे, जो आने वाले दनिों में पूरे होंगे? बनिा कसिी डर के शाही शहर जाओ, क्योंकि तुम वहाँ से महमिा में लौटोगे, अपने दुश्मनों से कसिी भी तरह का नुकसान उठाए बनिा; स्वयं ईश्वर, मेरे, अपने सेवक के लिए, तुम्हारे रक्षक होंगे।'

तब महाधर्माध्यक्ष ने उस साक्षात रूप से कहने का साहस कयिा: 'मैं आपसे वनिती करता हूँ, हे प्रभु, मुझे बताइए कि आप कौन हैं, जो मुझसे ये वचन बोल रहे हैं?'

उसने उत्तर दयिा: 'मैं बरनबास हूँ, हमारे प्रभु यीशु मसीह का एक शष्यि, जसिे पवत्रि आत्मा ने उनके चुने हुए पात्र, पवत्रि प्रेरति पौलुस के साथ, अन्यजातयिों को परमेश्वर का वचन प्रचार करने के लिए भेजा था। और ताकि आप मेरे शब्दों की सच्चाई पर वशि्वास कर सकें, यह आपके लिए एक संकेत है: शहर से पश्चमि की ओर पाँच स्टेडयिम दूर जाएँ, और 'चंगा करने की जगह' (The Place of Healing) नामक स्थान पर (क्योंकि वहाँ, मेरे लिए, ईश्वर चमत्कारकि रूप से बीमारों को ठीक करते हैं), सींग वाले पेड़ के नीचे जमीन खोदें: वहाँ आपको एक गुफा और एक संदूक मलिेगा जसिमें मेरे अवशेष रखे हैं; आपको सुसमाचार भी मलिेगा, जो मैंने स्वयं अपने हाथ से लखिा था, जसिे मैंने पवत्रि सुसमाचार प्रचारक और प्रेरति मत्ती की प्रतलिपि बिनाकर लखिा था। और जब आपके वरिोधी, जो इस चर्च को अपने अधकिार में लाने का इरादा रखते हैं, यह कहना शुरू करें कि अंतीयक प्रेरतिों की धर्मपीठ है, तो उनका खंडन करें और कहें: 'मेरा शहर भी प्रेरतिों की धर्मपीठ है, क्योंकि मेरे शहर में एक प्रेरति वशि्राम करते हैं।'

जब संत बरनबास ने यह बात आर्चबशिप से कही, तो वह तुरंत अदृश्य हो गए। आर्चबशिप, जो महान आनंद से भर गए थे और उन्होंने परमेश्वर का बहुत ही वनिम्रता से धन्यवाद कयिा, उन्होंने पुरोहतिों, शहर के नेताओं और सभी लोगों को बुलाया, और उन्हें अपने द्वारा अनुभव कए गए तीनहरे साक्षात्कार और पवत्रि प्रेरति बरनबास के वचनों के बारे में सब कुछ बताया; फरि वे पवत्रि क्रूस को लेकर भजन गाते हुए उस स्थान की ओर चल पड़े। जब वे नरि्धारति स्थान पर पहुँचे, तो उन्होंने पेड़ के नीचे जमीन खोदना शुरू कर दयिा, जैसा कि प्रेरति ने दर्शन में कहा था; ऊपरी मट्टिी हटाने के बाद, उन्हें पत्थरों से सीलबंद एक गुफा मलिी; पत्थर हटाने पर, उन्होंने एक अवशेष-पात्र देखा और एक महान और अकथनीय सुगंध को महसूस कयिा; और अवशेष-पात्र खोलने पर, उन्होंने उसमें संत बरनबास प्रेरति के पवत्रि अवशेष, पूरे और अक्षुण्ण, देखे, और उन्होंने उनके सीने पर रखी हुई सुसमाचार भी देखी[4324] । बड़े आनंद और हर्ष के बीच, उन्होंने ईश्वर की स्तुति की और पवत्रि अवशेषों की श्रद्धापूर्वक पूजा की, उन्हें वशि्वास और प्रेम से छुआ। उस समय, कई चमत्कार हुए: जो भी कसिी भी बीमारी से पीड़ति थे, वे पवत्रि अवशेषों को छूने के बाद ठीक हो गए। इसके बाद, आर्चबशिप एम्फमिस, प्रेरतिों के अवशेषों वाली संदूक को उस स्थान से हटाने का साहस नहीं कर सके, उन्होंने इसे टनि से सील कर दयिा और पुरोहतिों को संदूक के पास रहने तथा प्रेरतिों की कब्र के सामने दनि-रात भजन-गायन करने का आदेश दयिा। वे स्वयं कॉन्स्टेंटनिोपल के लिए रवाना हो गए; के समक्ष उपस्थति होकर, उन्होंने अपने वरिोधयिों को उसी प्रकार उत्तर दयिा जैसा उन्हें प्रेरति बरनबास द्वारा सखिाया गया था। सम्राट ज़ेनो इस बात से अत्यंत प्रसन्न हुए कि उनके शासनकाल में इतनी बड़ी आध्यात्मकि धरोहर की खोज हुई थी, और उन्होंने तुरंत यह आदेश दयिा कि साइप्रस द्वीप पादरी के अधीन न हो, बल्कि अपने स्वयं के आर्चबशिप द्वारा स्वतंत्र रूप से शासति हो; उन्होंने यह भी आदेश दयिा कि साइप्रस के आर्चबशिप अपने बशिपों की नयिुक्ति करें।

पवत्रि प्रेरति बर्नबास की अवशेषों के लिए साइप्रस द्वीप को ऐसी स्वतंत्रता प्रदान की गई: उस समय से, साइप्रस का धर्माध्यक्षीय आसन, अन्य पैट्रआर्कात्मक आसनों की तरह, एक प्रेरतिकि आसन कहलाने लगा। जहाँ तक साइप्रस के धर्माध्यक्ष धन्य एंथपिस का सवाल है, उन्हें राजा और पूरे धार्मकि परषिद द्वारा महान सम्मानों से सम्मानति कयिा गया। राजा ने प्रेरति की छाती पर मलिी सुसमाचार की पुस्तक की मांग की: उसे प्राप्त करने पर, उसने उसे सोने और कीमती पत्थरों से सजाया और उसे अपनी चर्च के शाही कक्ष में रख दयिा; आर्चबशिप को, उसने उस स्थान पर एक भव्य चर्च के नरि्माण के लिए बहुत सारा सोना दयिा जहाँ प्रेरति बरनबास के पवत्रि अवशेष मलिे थे।

[4324] संत प्रेरति बरनबास की पवत्रि अवशेष 485 और 488 के बीच खोजी गई थीं।

इस प्रकार महाधर्माध्यक्ष महिमा और सम्मान के साथ अपने धर्मप्रांत लौट आए, और उचित समय पर उन्होंने प्रेरित के नाम पर एक भव्य और सुंदर चर्च का निर्माण किया; उन्होंने पवित्र प्रेरित की पवित्र अवशेषों को दाहिनी ओर पवित्र वेदी में स्थापित किया, और मसीह की महिमा के लिए, पवित्र प्रेरित बरनबास की स्मृति को जून के ग्यारहवें दिन (जिस दिन उनके पवित्र अवशेष मिले थे) स्थापित किया, हमारे परमेश्वर, जो पिता और पवित्र आत्मा के साथ महिमामय हैं, अब और सदा-सदा के लिए। आमीन।

कॉन्टाकियन, स्वर 3:

आप प्रभु के सबसे वफादार सेवक और सत्तर प्रेरितों में से प्रथम थे: आपने पॉल के साथ मिलकर अपने उपदेश को प्रकाशित किया, सभी को मसीह उद्धारकर्ता का प्रचार करते हुए; इसी कारण हम आपकी दैवीय स्मृति, बरनबास, भजनों के साथ मनाते हैं।

25 जून

12 जून (पुराना कैलेंडर)

इसी दिन, 1447 में, नोवगोरोड के चमत्कार करने वाले, कोनेव के परमपूज्य आर्सेनियस का निधन हुआ।

इस दिन, 1492 में माल्स्क के परमपूज्य ओनूप्रियस का निधन हुआ।

उसी दिन, हम वोल्गोदा के पूजनीय ओनुफ्रियस और ऑक्सेनटियस का स्मरण करते हैं, जो पंद्रहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध और सोलहवीं शताब्दी के पूर्वार्ध में रहे और जिन्होंने धर्म-प्रचार का कार्य किया।

उसी दिन, पर्टोमिनिस्क के पूज्य वासियन और योनाह की स्मृति, जो 1561 में श्वेत सागर में डूब गए थे।

हमारे पूजनीय पिता ओनूप्रियस महान का जीवन

12 जून को स्मरण किया जाता है

आदरणीय पाफनुटियस[4325] , जो मिस्र के रेगिस्तान के एक मठ में तपस्वी के रूप में रहते थे, ने हमें एक वृत्तांत दिया है कि उन्होंने रेगिस्तान में आदरणीय ओनूप्रियस महान और अन्य रेगिस्तान के पिताओं से कैसे भेंट की। वे अपना वृत्तांत इस प्रकार शुरू करते हैं:

[4325] संत डेमेट्रियस ऑफ रोस्तोव टिप्पणी करते हैं, 'यह निश्चित रूप से ज्ञात नहीं है,' कि आदरणीय पाफनुटियस में से किसने वास्तव में आदरणीय ओनुपhrius को रेगिस्तान में पाया, क्योंकि चर्च के इतिहासों और पैट्रिकॉन में हमें पाफनुटियस नामक कई संत मिलते हैं।' एक अन्य पाफनुटियस मिस्र के प्रांतों में से एक, थेबाइड के पहाड़ी क्षेत्र का बिशप था, जिसने अधर्मी रोमन सम्राट मैक्सिमियिन (305–311) के शासनकाल में उत्पीड़न झेला, उस समय उसकी दाहिनी आँख निकाल दी गई थी। बाद में, महान कॉन्स्टेंटाइन (306–337) के शासनकाल के दौरान, उन्होंने (325 में) निकिया शहर में आयोजित प्रथम सार्वभौमिक परिषद में भाग लिया। जब पवित्र पिताओं ने एक कानून बनाने का प्रयास किया जिसमें यह निर्धारित किया गया था कि पुरोहितों और डिकनों की पत्नियाँ नहीं होनी चाहिए, तो वह परिषद के बीच में खड़े हुए और ऊँचे स्वर में उद्घोषणा की: 'चर्च के सेवकों पर कोई भारी बोझ या जुआ न डालो।' और पाफनुटियस ने इस मामले पर सभी पवित्र पिताओं का बहुत आग्रहपूर्वक विरोध किया, भले ही वह स्वयं अपनी माँ के गर्भ से कुंवारा था। कोई भी उसके खिलाफ कुछ नहीं कह सका, और इसलिए यह मामला प्रत्येक व्यक्ति के विवेक पर छोड़ दिया गया; अत; पूर्वी चर्च के पुरोहित और डिकिन आज भी धन्य विवाह बंधन में बंधते हैं। ग्रीक इतिहासकार इसे इस प्रकार वर्णित करते हैं: सॉक्रैटिस (पुस्तक 1, अध्याय 8), सोजोमेन (पुस्तक 1, अध्याय 22) और नाइसफिोरस (पुस्तक 8, अध्याय 19)। रोमन मेनोलॉजी में इस पाफनुटियस की स्मृति 11 सितंबर को पड़ती है; रूसी मेनोलॉजीज़ में, साथ ही प्रोलागूज़ में, उनका कहीं भी उल्लेख नहीं है। एक अन्य पाफनुटियस शहीद थे, जिन्होंने मिस्र के रेगिस्तानों में भी काम किया, डायोक्लेटियिन (284–305) के शासनकाल में पीड़ा सहन की, और एक खजूर के पेड़ पर सूली पर चढ़ाए गए। उनका वृत्तांत मिस्र के एक शहर, अलेक्जेंड्रिया के लिए 25 सितंबर के प्रोलॉग में मिलता है; वह आदरणीय यूफ्रोसीन के पिता थे, जिनकी स्मृति 25 सितंबर को मनाई जाती है। एक अन्य पाफनुटियस, जो भी मिस्र का था, वही था जिसने वेश्या थाइस को पश्चाताप के लिए प्रेरित किया; उसकी स्मृति 8 अक्टूबर को मनाई जाती है। एक अन्य पाफनुटियस अलेक्जेंड्रिया के पूजनीय मकारियस के शिष्य थे, जिन्होंने बताया कि कैसे एक लकड़बग्गा अपने अंधे शावक को उपचार के लिए पूजनीय मकारियस के पास ले आया। एक अन्य थे पाफनुटियस, जिन्हें केफ़ल उपनाम से जाना जाता था, जिनका उल्लेख रूफिनस (एक चौथी सदी के इतिहासकार) की पुस्तक *प्रोवर्ब्स ऑफ द फादर्स* और पल्लैडियस

एक दनि, जब मैं अपने मठ में मौन व्रत का पालन कर रहा था, मुझे भीतरी रेगस्तिान[4326] में जाने की इच्छा हुई, यह देखने के लिए कि क्या वहाँ कोई ऐसा संन्यासी है जो प्रभु की सेवा मुझसे भी अधकि लगन से करता हो। उठकर, मैं अपने साथ थोड़ी सी रोटी और पानी लेकर चल पड़ा; मैं कसिी से एक शब्द भी बोले बनिा अपने मठ से नकिल गया और सीधे रेगस्तिान के बीचों-बीच पहुँच गया। मैं चार दनि तक बनिा कोई रोटी खाए और बनिा पानी पिए चला, और एक गुफा पर पहुँचा, जो चारों ओर से घरिी हुई थी और जसिमें केवल एक छोटी सी खड़िकी थी। मैं एक घंटे तक खड़िकी के पास खड़ा रहा, इस उम्मीद में कि मठ की प्रथा के अनुसार, कोई मेरे स्वागत के लिए मसीह के नाम पर गुफा से बाहर आएगा; लेकनि जब कसिी ने मुझसे बात नहीं की और न ही दरवाज़ा खोला, तो मैंने खुद दरवाज़ा खोला, अंदर गया और आशीर्वाद दयिा। गुफा के अंदर मैंने एक बूढ़े आदमी को बैठे देखा, मानो सो रहा हो। मैंने एक बार फरि उसे अपना आशीर्वाद दयिा और उसे जगाने के इरादे से उसके कंधे को छुआ, लेकनि उसका शरीर मट्टिी की धूल जैसा था; उसे अपने हाथों से छूकर मुझे एहसास हुआ कि उसकी मृत्यु कई साल पहले हो चुकी थी। दीवार पर कुछ कपड़े लटके हुए देखकर, मैंने उन्हें छुआ; और वे मेरे हाथ में धूल की तरह थे। फरि मैंने अपना लबादा उतारा और उससे मृतक के शरीर को ढक दयिा; फरि, अपने हाथों से रेतीली जमीन में एक गड्ढा खोदकर, मैंने उस तपस्वी के शरीर को पारंपरकि भजन-गायन, प्रार्थना और आँसुओं के साथ दफनाया। बाद में, थोड़ी सी रोटी खाकर और कुछ पानी पीकर, मैं फरि से ताकतवर हो गया और उस बूढ़े आदमी की कब्र के पास रात बतिाई।

अगली सुबह, एक प्रार्थना करने के बाद, मैं भीतरी रेगस्तिानों में और आगे की अपनी यात्रा पर नकिल पड़ा; कई दनिों तक चलने के बाद, मैं एक और गुफा पर पहुँचा; उसके पास मानव की आवाज़ें सुनकर, मैंने सोचा कि शायद कोई उस गुफा में रहता था; मैंने दरवाज़ा खटखटाया; लेकनि, कोई जवाब न मलिने पर, मैं गुफा के अंदर गया; वहाँ कोई न पाकर, मैं बाहर आ गया, यह सोचते हुए कि ईश्वर के सेवकों में से कोई एक, जो उस समय रेगस्तिान में गया था, शायद वहीं रहता था। मैंने उस ईश्वर के सेवक का वहाँ इंतजार करने का नर्णिय लयिा, क्योंकि मैं उसे देखना चाहता था और प्रभु के बारे में उससे बात करना चाहता था; और मैं पूरे दनि वहाँ इंतजार करता रहा, और इस पूरे समय दाऊद के भजन गाता रहा। वह जगह मुझे बहुत सुंदर लगी: वहाँ एक खजूर का पेड़ था जसि पर फल लगे हुए थे, और वहाँ पानी का एक छोटा सा झरना बहता था; मैं उस जगह की सुंदरता को देखकर बहुत चकति हुआ और चाहता था कि काश मैं भी वहाँ रह सकूँ, अगर मेरे लिए संभव होता।

जैसे ही दनि ढलने लगा, मैंने अपनी ओर एक भैंसों का झुंड आते हुए देखा; मैंने परमेश्वर के सेवक को भी जानवरों के बीच चलते हुए देखा (वह तपस्वी तमिोथी थे[4327])। जब झुंड मेरे पास आया, तो मैंने एक नग्न आदमी देखा, जो अपनी नग्नता को केवल अपने बालों से ढके हुए था। जब वह उस जगह पहुँचा जहाँ मैं खड़ा था और उसने मुझे देखा, तो उस आदमी ने मुझे कोई आत्मा या भूत समझ लयिा, और प्रार्थना करने लगा, क्योंकि उस जगह बहुत सारी अशुद्ध आत्माएँ उसे प्रकटयिों से लुभा रही थीं, जैसा कि उसने बाद में मुझे खुद बताया।

मैंने उससे कहा:

'यीशु मसीह, हमारे ईश्वर के सेवक, तुम डर क्यों रहे हो? मेरी ओर और मेरे पैरों के नशिानों को देखो, और जान लो कि मैं भी तुम्हारे ही जैसे एक इंसान हूँ; खुद महसूस करो कि मैं भी मांस और रक्त का हूँ।'

मुझे देखकर और यह जानकर कि मैं वाकई एक इंसान था, वह सुस्त पड़ गया और ईश्वर का धन्यवाद करके बोला:

'आमीन।'

की *लाउसाइका* (अध्याय 91) में मलिता है, जो अस्सी वर्षों तक एक ही वस्त्र पहनते थे। प्रोलॉग्स में कई अन्य पाफनुतयिसों के वृत्तांत भी शामलि हैं; उदाहरण के लिए, 25 नवंबर को संन्यासी पाफनुतयिस का एक वृत्तांत है, जसिने एक कप शराब पीकर एक डाकू को बचाया; मार्च के 9वें दनि संन्यासी पाफनुतयिस का एक वृत्तांत है, जसिने ईश्वर से प्रार्थना की कि वह उसे बताए कि वह कसिकी तरह दखिता है; और उसे यह प्रकट हुआ कि वह गाँव के बुजुर्ग जैसा दखिता था; इसी पाफनुटयिस के बारे में, उसी महीने की 27 तारीख को, एक कहानी है कि वह एक बांसुरीवादक जैसा था। जहाँ तक उस पाफनुटयिस का सवाल है जसिने परम पूज्य ओनुफhrius को पाया था, हमें इस बारे में कोई जानकारी नहीं है।

[4326] कई तपस्वयिों के लिए मस्रि नविास का एक सामान्य स्थान था। नचिले और मध्य मस्रि दोनों में मठवासी बस्तयिाँ पाई जाती थीं। नील नदी के पार देश के अंदर गहरे स्थति, नचिले मस्रि में स्थति नत्रियिन मरुभूमि, मस्रि में वशिेष रूप से प्रसद्धि थी। आंतरकि या स्कैटकि रेगस्तिान सामुदायकि मठों के रेगस्तिान से कई दनिों की यात्रा के बाद पड़ता था। यह एक जंगली, रेतीला रेगस्तिान था जहाँ झरने बहुत कम ही मलिते थे; यहाँ कोई पक्के रास्ते नहीं थे - रास्ता तारों की गतसिे नर्दिेशति होता था।

[4327] उनकी स्मृति उसी दनि मनाई जाती है।

तब वह मेरे पास आया, मुझे चूमा, मुझे अपनी गुफा में ले गया और खाने के लिए मुझे कुछ खजूर दिए; उसने मुझे झरने का ताज़ा पानी भी दिया, और मेरे लिए खुद उसका स्वाद चखा; फिर उसने मुझसे कहा:

'तुम यहाँ कैसे आए, भाई?' मैंने भी बदले में अपने विचार और इरादे उसके सामने रखे और जवाब दिया:

'मसीह के सेवकों को इस रेगिस्तान में परिश्रम करते देखने की इच्छा से, मैं अपने मठ से निकलकर यहाँ आया; और ईश्वर ने मुझे मेरी इच्छा पूरी करने से वंचित नहीं किया, क्योंकि उन्होंने मुझे आपकी पवित्रता को निहारने की कृपा प्रदान की।'

तब मैंने उससे पूछा:

'पिताजी, आप यहाँ कैसे आए? आप इस रेगिस्तान में कितने सालों से रह रहे हैं, आप क्या खाते हैं, और आप नग्न क्यों रहते हैं तथा कोई कपड़े क्यों नहीं पहनते?'

तब उसने मुझे अपने बारे में यह बताया: 'पहले मैं थेबाइड के एक कोएनोबिया[4328] में रहता था, वहाँ मैं मठवासी जीवन जीता था और लगन से ईश्वर की सेवा करता था। मैं एक बुनकर था। लेकिन मेरे मन में एक विचार आया: 'मठ छोड़ दो और अकेले रहो, मेहनत करो और प्रयास करो ताकि तुम ईश्वर से एक बड़ा इनाम प्राप्त कर सको; क्योंकि अपने हाथों के फल से तुम न केवल अपना पेट भर सकते हो, बल्कि गरीबों को भी खिला सकते हो और यात्रा कर रहे भाइयों को विश्राम दे सकते हो।' इस विचार को प्रेम से मानते हुए, मैं भ्रातृत्व छोड़कर नगर के पास एक कुटिया बनाकर रहने लगा और अपना शिल्प अभ्यास करने लगा; मुझे हर चीज़ पर्याप्त थी, क्योंकि अपने हाथों की मेहनत से मैंने अपने लिए आवश्यक सब कुछ जुटा लिया था; मेरे पास मेरे हाथों के बने उत्पाद लेने के लिए बहुत से लोग आते थे और वे मेरे लिए आवश्यक सभी चीजें लाते थे; मैंने राहगीरों को आश्रय दिया, और साथ ही बचे हुए सामान को गरीबों और ज़रूरतमंदों में बाँटा। लेकिन हमारे उद्धार का शत्रु, शैतान—जो हमेशा सभी से युद्ध में रहता है—मेरे जीवन के तरीके से ईर्ष्यालु हो गया; मेरी सारी मेहनत को नष्ट करने की इच्छा से, उसने एक महिला को मेरे पास आने और मुझसे कुछ कपड़ा बनाने के लिए कहने की प्रेरणा दी; उसके लिए तैयार कर दिया। फिर उसने मुझसे और कपड़े तैयार करने के लिए कहा; और हमारे बीच बातचीत शुरू हुई, और हिम्मत बढ़ गई; पाप करना शुरू करने के बाद, हमने अधर्म को जन्म दिया; और मैं उसके साथ छह महीने तक रहा, और इस पूरे समय पाप करता रहा। लेकिन अंत में मैंने अपने मन में सोचा कि मृत्यु मुझे आज या कल आ घेरेगी, और मैं अनंतकालिक यातनाओं को सहूँगा। और मैंने अपने आप से कहा: 'हाय, मेरी आत्मा! तेरे लिए यहाँ से भाग जाना बेहतर है, ताकि तू पाप से और साथ ही साथ अनंतकालिक यातनाओं से भी बच सके!'

तो, सब कुछ पीछे छोड़कर, मैं चुपके से वहाँ से भाग आया और इस रेगिस्तान में आ गया; इस जगह पर पहुँचकर, मुझे यह गुफा, एक झरना और बारह टहनियों वाली एक खजूर की लता मिली; हर महीने, उन टहनियों में से एक पर इतना फल लगता है कि वह मुझे तीस दिनों तक जीवित रखने के लिए पर्याप्त है। जब महीना समाप्त होता है, और उसके साथ ही एक टहनी का फल भी खत्म हो जाता है, तो दूसरी टहनी पक जाती है। इस प्रकार, ईश्वर की कृपा से, मैं अपना जीवन यापन करता हूँ, और मेरी गुफा में और कुछ भी नहीं है। और मेरे कपड़े, लंबे समय में घिस-घिसकर, टुकड़े-टुकड़े हो गए हैं; कई वर्षों के बाद (क्योंकि मैं अब तीस साल से इस रेगिस्तान में रह रहा हूँ), मेरे बाल लंबे हो गए हैं, जैसा कि आप देख सकते हैं; यह मेरे कपड़े का काम देते हैं, जो मेरे नंगेपन को ढकते हैं।'

संन्यासी से यह सब सुनकर (जैसा कि पाफनुटियस बताता है), मैंने उससे पूछा:

'पिताजी! इस स्थान पर अपने तपस्वी जीवन की शुरुआत में क्या आपको कोई कठिनाइयाँ हुईं या नहीं?'

उसने मुझसे उत्तर दिया:

'मैंने राक्षसों के अनगिनत हमलों को सहा। कई बार उन्होंने मुझसे लड़ाई की, लेकिन वे मुझ पर हावी नहीं हो सके, क्योंकि ईश्वर की कृपा ने मेरी मदद की; मैंने क्रॉस के चिह्न और प्रार्थना से उनका विरोध किया। दुश्मन के हमलों के अलावा, शारीरिक बीमारी ने भी मेरे तपस्या के प्रयासों में बाधा डाली; क्योंकि मुझे पेट दर्द से बहुत तकलीफ होती थी, इतनी कि मैं तेज दर्द से जमीन पर गिर पड़ता था; मैं अपनी रोज़ की प्रार्थनाएँ नहीं कह पाता था, बल्कि, अपनी गुफा में लेटे हुए और जमीन पर तड़पते हुए, मैंने बड़ी मुश्किल से गाया, और मेरे पास गुफा से बाहर निकलने की बिल्कुल भी ताकत नहीं थी। मैंने दयालु ईश्वर से प्रार्थना की कि वे मेरी बीमारी के कारण मुझे मेरे पापों की क्षमा प्रदान करें । एक दिन,

[4328] किनोवियि (ग्रीक शब्द 'साझा' और 'जीवन' से) सामुदायिक मठों को दिया गया नाम है, जिसमें भाइयों को मठ के खर्च पर रखा जाता है और बदले में, वे मठ की सामान्य भलाई के लिए अपनी मेहनत देते हैं।

जब मैं जमीन पर बैठा था और पेट दर्द से बहुत पीड़ित था, मैंने अपने सामने एक धर्मी व्यक्ति को खड़ा देखा, जिसने मुझसे कहा:

'तुम्हें क्या हुआ है?'

मैं मुश्किल से जवाब दे सका:

'मैं अपने पेट की तकलीफ से पीड़ित हूँ, सर।'

उसने मुझसे कहा:

'मुझे दिखाओ कि कहाँ दर्द हो रहा है।'

मैंने उसे दिखाया। फिर उसने अपना हाथ बढ़ाया और अपनी हथेली को दर्द वाली जगह पर रखा; मैं तुरंत ठीक हो गया। फिर उसने मुझसे कहा:

'अब जब तुम ठीक हो गए हो, तो पाप मत करना, कहीं तुम्हारी हालत और बिगड़ न जाए, बल्कि अब से लेकर समय के अंत तक अपने प्रभु परमेश्वर की सेवा करना।'

उस समय से, ईश्वर की कृपा से, मैं बीमारी से मुक्त रहा हूँ, और उनकी दया की महिमा और स्तुति करता हूँ।

मैंने उस पूजनीय पिता के साथ (पाफनुटियस कहते हैं) लगभग पूरी रात इसी तरह की बातचीत में बिताई; सुबह, मैं अपनी नियमित प्रार्थना के लिए उठा।

जब दिन चढ़ा, तो मैंने उस पूजनीय पिता से विनती करनी शुरू कर दी कि मुझे या तो उनके पास या आस-पास कहीं और रहने की अनुमति दे दें। लेकिन उन्होंने मुझसे कहा: 'भाई, तुम यहाँ शैतानी हमलों को सहन नहीं कर पाओगे।' इसी कारण, उन्होंने मुझे अपने साथ रहने की अनुमति नहीं दी। मैंने उनसे अपना नाम भी बताने के लिए कहा। और उन्होंने कहा: 'मेरा नाम टिमोथी है। मुझे याद रखना, प्रिय भाई, और हमारे ईश्वर मसीह से मेरे लिए प्रार्थना करना, कि वह मुझ पर अंत तक अपनी दया दिखाएँ, जिसके लिए वह मुझे योग्य समझते हैं।'

पाफनुटियस कहते हैं, 'मैं उनके पैरों पर गिर पड़ा, उनसे मेरे लिए प्रार्थना करने का आग्रह किया। उन्होंने मुझसे कहा: "हमारे प्रभु यीशु मसीह आपको आशीष दें, आपको शत्रु के हर प्रलोभन से बचाएं, और आपको सही मार्ग पर अगुवाई करें, ताकि आप बिना किसी बाधा के पवित्रता प्राप्त कर सकें।"'

मुझे आशीर्वाद देने के बाद, पूजनीय तिमोथी ने मुझे शांतिपूर्वक विदा किया। मैंने अपनी यात्रा के लिए अपने साथ ले जाने हेतु उनके हाथों से कुछ खजूर लिए, अपने पात्र में कुएँ से कुछ पानी भरा, और फिर, पवित्र वृद्ध को प्रणाम करके, उनसे विदा लिया, और ईश्वर की महिमा की तथा उनका धन्यवाद किया कि उन्होंने मुझे अपने ऐसे सेवक को देखने, उनके वचन सुनने और उनका आशीर्वाद प्राप्त करने के योग्य समझा।

कुछ दिनों बाद वहाँ से लौटते समय, मुझे एक सुनसान मठ मिला और मैं वहाँ आराम करने और कुछ समय बिताने के लिए ठहर गया। मैंने दुख के साथ अपने मन में सोचा: मैंने किस प्रकार का जीवन जिया है? मेरे कर्म क्या हैं? उस महान ईश्वरपुरुष के जीवन और कर्मों की तुलना में मेरा जीवन तो एक छाया भी नहीं कहा जा सकता, जिसे मैंने अभी-अभी देखा था। मैंने ऐसे ही चिंतन में कई दिन बिताए, उस धर्मात्मा के ईश्वर की सेवा में अनुकरण करने की इच्छा करते हुए। ईश्वर की कृपा से, जिन्होंने मुझे अपनी आत्मा की परवाह करने के लिए प्रेरित किया था, मैं एक अविश्वसनीय मार्ग से आंतरिक मरुभूमि के लिए एक बार फिर निकलने में संकोच नहीं किया - वह रास्ता जहाँ माज़िक्स के नाम से जाने जाने वाला एक बर्बर लोग रहता था। मैं यह जानने के लिए बहुत उत्सुक था कि क्या प्रभु की सेवा करने वाला कोई और ऐसा तपस्वी था। मैं उसे खोजने के लिए बहुत उत्सुक था, ताकि मैं उसके माध्यम से अपनी आत्मा को लाभ पहुँचा सकूँ।

मैंने जो मरुभूमि की यात्रा आरंभ की थी, उस पर निकलते समय मैं अपने साथ थोड़ी सी रोटी और पानी ले गया, जो केवल थोड़े ही समय तक चला। जब मैंने सारी रोटी और पानी समाप्त कर लिया, तो मैं दुखी हो गया, क्योंकि मेरे पास कोई भोजन नहीं था; फिर भी, मैंने हिम्मत जुटाई और बिना खाए-पिए चार दिन और चार रातें चला, जिससे मेरा शरीर बहुत कमजोर हो गया; मैं ज़मीन पर गिर पड़ा और मृत्यु की प्रतीक्षा करने लगा। फिर मैंने एक पवित्र, सुंदर और तेजस्वी पुरुष को अपनी ओर आते देखा; उसने अपना हाथ मेरे मुँह पर रखा और वह अदृश्य हो गया। तुरंत मुझे अपनी शक्ति वापस आती हुई महसूस हुई, जिससे मुझे खाने या पीने की कोई इच्छा नहीं हुई।

उठकर मैं एक बार फिर भीतरी रेगिस्तान में निकल पड़ा और बिना खाए-पिए चार दिन और चार रातें और यात्रा की; लेकिन जल्द ही मैं भूख और प्यास से फिर से कमजोर होने लगा। मैंने स्वर्ग की ओर अपने हाथ उठाकर प्रभु से

प्रार्थना की, और एक बार फिर मैंने उसी व्यक्ति को देखा, जो मेरी ओर आया, उसने अपने हाथ से मेरे होंठों को छुआ और मेरी दृष्टि से ओझल हो गया। इससे मुझे नई शक्ति मिली और मैं अपनी यात्रा पर चल पड़ा।

अपनी यात्रा के सत्रहवें दिन, मैं एक बहुत ऊँचे पहाड़ पर पहुँचा; यात्रा से थका हुआ, मैं थोड़ा आराम करने के लिए पहाड़ की तलहटी में बैठ गया। उसी क्षण, मैंने एक आदमी को अपनी ओर आते देखा, जो एक बहुत ही भयानक दृश्य था; वह पूरी तरह से एक जानवर की तरह बालों से ढका हुआ था, और उसके बाल बर्फ की तरह सफेद थे, क्योंकि वह उम्र के कारण सफेद बालों वाला था। उसके सिर और दाढ़ी के बाल बहुत लंबे थे, जो जमीन तक पहुँचते थे और उसके पूरे शरीर को एक वस्त्र की तरह ढकते थे, जबकि उसकी कमर रेगिस्तानी पौधों की पत्तियों से कसी हुई थी । जब मैंने उस आदमी को अपनी ओर आते देखा, तो मैं डर गया और पहाड़ की चोटी पर स्थित एक चट्टान पर भाग गया। वह, हालांकि, पहाड़ की तलहटी में पहुँचकर छाँव में बैठ गया, आराम करने का इरादा रखता था, क्योंकि वह गर्मी और वृद्धावस्था से बहुत थका हुआ था। पहाड़ की ओर देखते ही उसने मुझे देखा और मेरी ओर मुड़कर कहा: 'मेरे पास आओ, हे ईश्वर के मनुष्य! मैं भी तुम्हारे ही समान एक मनुष्य हूँ; मैं इस मरुभूमि में ईश्वर की खातिर प्रयास करते हुए रहता हूँ।'

मैं (पाफनुटियस कहता है), यह सुनकर, उसकी ओर दौड़ा और उसके पैरों पर गिर पड़ा। तब उसने मुझसे कहा:

'उठो, मेरे पुत्र! क्योंकि तुम भी परमेश्वर के सेवक और उनके संतों के मित्र हो; और तुम्हारा नाम पाफनुतियुस है।'

[4329]मैं खड़ा हो गया। फिर उन्होंने मुझे बैठने के लिए कहा, और मैं खुशी-खुशी उनके बगल में बैठ गया। मैंने उनसे विनम्रतापूर्वक अपने नाम और अपने जीवन का वर्णन करने का आग्रह करना शुरू कर दिया—कि उन्होंने रेगिस्तान में तपस्या कैसे की और वे वहाँ कितने समय से रह रहे थे। मेरे लगातार आग्रह के आगे झुकते हुए, उन्होंने अपने बारे में अपना वृत्तांत इस प्रकार शुरू किया: 'मेरा नाम ओनुफ्रियस है; मैं साठ वर्षों से इस रेगिस्तान में रहता हूँ, पहाड़ों में भटकता हुआ; मैंने एक भी व्यक्ति को नहीं देखा है, और अब मैं केवल आपको देख रहा हूँ। मैं थेबाइड के क्षेत्र में हर्मोपोलिस शहर के पास स्थित एरिटी नामक एक सम्मानित मठ में रहता था। उस मठ में सौ भाई रहते हैं; वे सभी एक-दूसरे के साथ पूर्ण सामंजस्य में रहते हैं, हमारे प्रभु यीशु मसीह के प्रेम में एकजुट और सामंजस्यपूर्ण जीवन जीते हैं। वे अपना भोजन और वस्त्र साझा करते हैं; वे शांति में एक मौन, तपस्वी जीवन जीते हैं, प्रभु की दया की महिमा करते हुए। अपनी युवावस्था में, एक नवसिखुआ के रूप में, मुझे वहाँ पवित्र पिताओं द्वारा प्रभु के प्रति उत्कट विश्वास और प्रेम में शिक्षित किया गया था, और मैंने मठवासी जीवन के नियम भी सीखे। मैंने उन्हें परमेश्वर के पवित्र भविष्यवक्ता एलिया के बारे में बात करते सुना—अर्थात्, कि परमेश्वर द्वारा समर्थित होकर, वह उपवास करते हुए रेगिस्तान में रहे—और मैंने प्रभु के पवित्र अग्रदूत, यूहन्ना के बारे में भी सुना, जिनके समान कोई मनुष्य कभी नहीं हुआ (मत्ती 11:11), इस्राएल के सामने उनके प्रकट होने के दिन तक मरुभूमि में उनके जीवन के विषय में। यह सब सुनकर, मैंने पवित्र पिता से पूछा: 'तो फिर इसका क्या अर्थ है: कि जो मरुभूमि में परिश्रम करते हैं वे परमेश्वर की दृष्टि में आपसे बड़े हैं?'

उन्होंने मुझसे उत्तर दिया: 'हाँ, मेरे बच्चे, वे हमसे बड़े हैं; क्योंकि हम हर दिन एक-दूसरे को देखते हैं, और हम आनंद के साथ मिलकर चर्च के भजन गाते हैं; यदि हम खाना चाहते हैं, तो हमारा भोजन पहले से ही तैयार रहता है, ठीक उसी तरह, जैसे यदि हम पीना चाहते हैं, तो पानी तैयार रहता है; यदि हम में से कोई बीमार पड़ जाए, तो उसे भाइयों से सांत्वना मिलती है, क्योंकि हम ईश्वर के प्रेम के लिए एक साथ रहते हैं, एक दूसरे की मदद करते हैं और सेवा करते हैं; लेकिन जो लोग रेगिस्तान में रहते हैं वे इन सब से वंचित हैं। यदि रेगिस्तान में रहने वालों में से किसी पर कोई विपत्ति आती है, तो उसकी बीमारी में उसे कौन सांत्वना देगा, शैतान की शक्ति द्वारा आक्रमित होने पर उसकी मदद और सेवा कौन करेगा, उसे अपना हौसला बढ़ाने और मार्गदर्शन देने के लिए कोई व्यक्ति कहाँ मिलेगा, जबकि वह अकेला है? यदि उसके पास भोजन नहीं है, तो वह उसे बिना कठिनाई के कहाँ प्राप्त करेगा; इसी तरह, यदि उसे प्यास लगे, तो उसे पास में पानी नहीं मिलेगा। वहाँ, मेरे बच्चे, समुदाय में रहने वाले हम लोगों की तुलना में परिश्रम अतुलनीय रूप से अधिक है; जो लोग मरुभूमि का जीवन अपनाते हैं, वे अधिक उत्साह के साथ ईश्वर की सेवा करना शुरू करते हैं, अपने ऊपर और भी कठोर उपवास थोपते हैं, खुद को भूख, प्यास और दोपहर की गर्मी के हवाले कर देते हैं; वे उदारतापूर्वक रात की ठंड को सहते हैं, अदृश्य शत्रु की युक्तियों का दृढ़ता से विरोध करते हैं, हर तरह से उस पर विजय प्राप्त करने का प्रयास करते हैं, और उत्साह के साथ स्वर्ग के राज्य की ओर ले जाने वाले संकीर्ण और दुखद मार्ग पर चलने का प्रयत्न करते हैं। इसी कारण, ईश्वर

[4329] या एराटी।

उनके पास पवित्र स्वर्गदूत भेजते हैं, जो उनके लिए भोजन लाते हैं, चट्टान से पानी निकालते हैं, और उन्हें इतनी शक्ति देते हैं कि उनके विषय में भविष्यवक्ता यशायाह के वचन पूरे होते हैं, जो कहते हैं: *'परन्तु जो यहोवा की आशा रखते हैं, वे अपना बल नया करेंगे; वे उकाब के पंखों पर उड़ेंगे; वे दौड़ेंगे और थकेंगे नहीं; वे चलेंगे और चकराएंगे नहीं'* (यशायाह 40:31)। भले ही उनमें से किसी को स्वर्गदूतों का दर्शन न भी प्राप्त हो, फिर भी वे ईश्वर के स्वर्गदूतों की अदृश्य उपस्थिति से वंचित नहीं रहते, जो ऐसे तपस्वी की हर राह में रक्षा करते हैं, उसे शत्रु की निंदाओं से बचाते हैं, उसके पुण्य कार्यों में उसकी सहायता करते हैं, और तपस्वी की प्रार्थनाएँ ईश्वर के समक्ष अर्पित करते हैं। यदि किसी संन्यासी पर शत्रु द्वारा कोई अप्रत्याशित हमला होता है, तो वह परमेश्वर की ओर अपने हाथ उठाता है, और तुरंत स्वर्ग से सहायता भेजी जाती है, और उसके हृदय की पवित्रता के लिए सभी हमले दूर भगा दिए जाते हैं। क्या तुमने नहीं सुना, मेरे बच्चे, कि धर्मग्रंथ में क्या कहा गया है, कि परमेश्वर उन्हें अनदेखा नहीं करते जो उन्हें खोजते हैं, क्योंकि दीनों को सदा के लिए भुलाया नहीं जाएगा, और न ही दरिद्रों की आशा अंत तक नाश होगी (भजन संहिता 9:19)? और फिर: 'परन्तु वे अपनी संकट में यहोवा को पुकारे, और वह उन्हें उनके कष्टों से छुड़ा लिया' (भजन संहिता 106:6): क्योंकि प्रभु प्रत्येक व्यक्ति को उनके द्वारा किए गए श्रम के अनुसार पुरस्कृत करते हैं। 'धन्य है वह मनुष्य जो पृथ्वी पर प्रभु की इच्छा करता है और उनके लिए परिश्रम करता है: स्वर्गदूत ऐसे व्यक्ति की सेवा करते हैं, भले ही वह अदृश्य रूप से हो; वे उसके हृदय को आत्मिक आनंद से प्रसन्न करते हैं और जब तक वह देह में रहता है, हर घड़ी उस मनुष्य को बल देते हैं।'

यह सब मैंने—नम्र ओनूप्रियस ने—अपनी मठ में पवित्र पिताओं से सुना, और इन शब्दों ने मेरे हृदय को मीठा कर दिया, क्योंकि वे मेरे लिए शहद से भी मीठे थे, और मुझे ऐसा लगा कि मैं किसी दूसरी दुनिया में हूँ; क्योंकि मेरे भीतर मरुस्थल में जाने की एक अदम्य इच्छा उत्पन्न हुई। रात में उठकर थोड़ी सी रोटी लेकर—जो मुश्किल से चार दिन के लिए काफी थी—मैं मठ से निकल पड़ा, अपनी सारी आशाएँ ईश्वर में रखकर; मैं पहाड़ की ओर जाने वाली सड़क पर चल पड़ा, मेरा इरादा वहाँ से रेगिस्तान में जाने का था। जैसे ही मैंने रेगिस्तान में प्रवेश करना शुरू किया, मैंने अपने सामने प्रकाश की एक तेज किरण देखी। भयभीत होकर, मैं रुक गया और मठ में लौटने के बारे में सोचने लगा। इस बीच, प्रकाश की किरण मेरे और करीब आ गई, और मैंने उसमें से एक आवाज सुनी जो कह रही थी: 'डरो मत! मैं वह देवदूत हूँ जो तुम्हारे जन्म के दिन से तुम्हारे साथ चला आ रहा है, क्योंकि मुझे परमेश्वर द्वारा तुम्हारी देखभाल के लिए नियुक्त किया गया है; प्रभु की आज्ञा मुझे मिली है कि मैं तुम्हें इस मरुभूमि में लाऊँ। प्रभु के सामने पूर्ण और हृदय से नम्र बनो, आनन्दपूर्वक उनकी सेवा करो, और मैं तब तक तुम्हें नहीं छोड़ूँगा जब तक सृष्टिकर्ता मुझे तुम्हारी आत्मा को ले जाने का आदेश न दें।'

प्रकाश की एक तेज किरण के भीतर से ये शब्द कहने के बाद, स्वर्गदूत मेरे आगे चल पड़ा, और मैं आनंद के साथ उसका अनुसरण करता गया। लगभग छह या सात मिलियारिया[4330] की यात्रा करने के बाद, मैंने एक काफी विशाल गुफा देखी; उसी क्षण, स्वर्गदूत की प्रकाश किरण मेरी दृष्टि से ओझल हो गई। गुफा के पास पहुँचकर, मैं यह पता लगाना चाहता था कि वहाँ कोई है या नहीं। प्रवेश द्वार के पास जाकर, मैंने भिक्षुओं के बीच प्रचलित रीति के अनुसार पुकारा: 'मुझे आशीर्वाद दीजिए!'

और मैंने एक वृद्ध को देखा, जिसका रूप सम्मानजनक और गरिमामय था; ईश्वर की कृपा और आध्यात्मिक आनंद उसके चेहरे और उसकी दृष्टि में झलक रहा था। इस वृद्ध को देखकर, मैं उसके पैरों पर गिर पड़ा और उसके सामने झुक गया। लेकिन उन्होंने मुझे अपने हाथ से उठाया, मुझे चूमा और कहा: 'क्या यह आप हैं, भाई ओनुफ्रियस, प्रभु में मेरे सह-सेवक? अंदर आओ, मेरे बच्चे, मेरे निवास में। ईश्वर तुम्हारा सहायक हो; अपनी बुलाहट में बने रहो, ईश्वर के भय में अच्छे कर्म करते रहो।'

गुफा में प्रवेश करके, मैं बैठ गया और कई दिनों तक उनके साथ रहा; मैंने उनसे उनके गुणों को सीखने का प्रयास किया, जिसमें मैं सफल हुआ, क्योंकि उन्होंने मुझे संन्यासी जीवन का नियम सिखाया। जब वृद्ध ने देखा कि मेरी आत्मा इस हद तक प्रबुद्ध हो गई थी कि मैं समझ गया था कि प्रभु यीशु मसीह को कौन से कर्म प्रसन्न करते हैं; और यह भी देखकर कि मैं रेगिस्तान के छिपे हुए शत्रुओं और भयों के विरुद्ध निडर संघर्ष के लिए दृढ़ हो गया था, वृद्ध ने मुझसे कहा:

[4330] मिलीरियम एक रोमन मील है, या, अधिक सटीक रूप से, एक रोमन मील का पत्थर है, क्योंकि प्रत्येक मिलीरियम के अंत में एक पत्थर का स्तंभ खड़ा होता था जो एक निशान के रूप में काम करता था। एक मिलीरियम 8 स्टेडियम के बराबर होता था (एक स्टेडियम 88 फathom के बराबर होता है), जो लगभग *हमारे* 1.*12 वर्स्ट के* बराबर है / *सड़क के पत्थर पूरे इटली में बिखरे हुए थे; उन पर आमतौर पर निर्माता या उस सम्राट के नाम की अंकित होती थी, जिसके शासनकाल में उन्हें खड़ा किया गया था। पहला मील का पत्थर, जिससे बाकी सभी पत्थरों को मापा जाता था और जिस पर सभी सड़कें मिलती थीं, रोम में सैटर्न के मंदिर के पास स्थित था। रोम में खुदाई के दौरान इस पत्थर के अवशेष पाए गए थे।*

'उठो, मेरे बच्चे; मैं तुम्हें भीतरी रेगिस्तान में स्थित एक और गुफा तक ले जाऊँगा; वहाँ अकेले रहो और स्वयं को प्रभु को समर्पित करो; क्योंकि प्रभु ने तुम्हें यहीं इसलिए भेजा है—ताकि तुम भीतरी रेगिस्तान के निवासी बनो।'

यह कहकर, उन्होंने मेरा हाथ पकड़ा और मुझे रेगिस्तान के बिलकुल बीचों-बीच ले गए: हम चार दिन और चार रात तक चलते रहे। आखिरकार, पांचवें दिन, हमें एक छोटी गुफा मिली। तब उस संत ने मुझसे कहा: 'यह वही जगह है जिसे ईश्वर ने तुम्हारे तपस्या कार्यों के लिए तैयार किया है।' और वह संत तीस दिनों तक मेरे साथ रहे, मुझे सदाचार का उपदेश देते रहे; और जब तीस दिन पूरे हो गए, तो मुझे ईश्वर के हवाले कर, वे अपने तपस्या कार्यों के स्थान पर लौट गए। तब से, वह साल में एक बार मेरे पास आने लगे; जब तक उनका प्रभु के पास बुलावा नहीं हुआ, तब तक वे हर साल मुझसे मिलने आते रहे; और अंतिम वर्ष, अपनी परंपरा के अनुसार, वे मेरे पास रहते हुए प्रभु के पास बुला लिए गए; और मैं बहुत रोया और उनके शरीर को अपने निवास के पास दफना दिया।

तब मैं, विनम्र पाफनुतियुस, उससे पूछा: 'आदरणीय पिताजी! क्या आपने मरुभूमि में अपने आगमन की शुरुआत में बहुत परिश्रम किया था?'

धन्य वृद्ध ने मुझसे उत्तर दिया: 'मेरे प्रिय भ्राता, मुझ पर विश्वास करो कि मैंने इतने कठिन श्रम किए हैं कि मैं अपने जीवन में कई बार निराश हो गया, और स्वयं को मृत्यु के समीप समझा: क्योंकि मैं भूख और प्यास से थक गया था; जिस क्षण मैं रेगिस्तान में पहुँचा, उसी क्षण से मेरे पास खाने-पीने के लिए कुछ भी नहीं था, सिवाय शायद उस समय के जब संयोग से मुझे कोई रेगिस्तानी जड़ी-बूटी मिल जाती थी, जो मेरे भोजन का काम देती थी; मेरी प्यास केवल स्वर्ग की ओस से ही बुझती थी; दिन में सूरज की गर्मी से मैं झुलस जाता था, जबकि रात में ठंड से कांपता था: मेरा शरीर स्वर्ग की ओस की बारिश जैसी बूंदों से ढका रहता था; मैंने और क्या-क्या नहीं सहन किया, इस दुर्गम रेगिस्तान में मैंने और कौन-सी कठिनाइयाँ और कारनामे नहीं किए? इन सभी कष्टों और कारनामों को गिनाना असंभव है, और वास्तव में यह उचित भी नहीं है कि कोई व्यक्ति ईश्वर के प्रेम के लिए निजी तौर पर क्या करता है, उसे प्रकट करे। लेकिन दयालु ईश्वर ने, यह देखकर कि मैंने खुद को पूरी तरह से तपस्या के प्रयासों के लिए समर्पित कर दिया था, खुद को भूख और प्यास के हवाले कर दिया था, अपने स्वर्गदूत को मुझे देखने और मेरे शरीर को बनाए रखने के लिए हर दिन थोड़ी सी रोटी और पानी लाने का आदेश दिया। इस प्रकार मैं तीस वर्षों तक स्वर्गदूत द्वारा पोषित हुआ। उन तीस वर्षों के अंत में, ईश्वर ने मुझे अधिक प्रचुर आहार प्रदान किया, क्योंकि मेरी गुफा के पास मुझे बारह टहनियों वाला एक खजूर का पेड़ मिला; प्रत्येक टहनी पर दूसरों से अलग-अलग फल लगे – एक पर एक महीने में, दूसरे पर दूसरे महीने में, जब तक कि सभी बारह महीने बीत नहीं गए। जब एक महीना समाप्त होता है, तो उस शाखा का फल भी समाप्त हो जाता है; जब दूसरा महीना शुरू होता है, तो दूसरी शाखा पर फल उगना शुरू हो जाता है। इसके अलावा, ईश्वर की आज्ञा से, मेरे पास जीवित जल का एक स्रोत बहता था। और इस प्रकार, पिछले तीस वर्षों से, मैं ऐसी प्रचुरता में रह रहा हूँ, कभी-कभी स्वर्गदूत से रोटी प्राप्त करते हुए, और अन्य समय में रेगिस्तानी जड़ों वाली खजूर का स्वाद चखते हुए, जो ईश्वर की व्यवस्था से, मुझे शहद से भी अधिक मीठी लगती हैं; और मैं इस झरने का पानी पीता हूँ, और परमेश्वर का धन्यवाद करता हूँ; परन्तु सबसे बढ़कर, मैं परमेश्वर के वचन की मिठास से पोषित और तरोताज़ा होता हूँ, जैसा कि लिखा है: *'मनुष्य केवल रोटी ही से नहीं, □□□□ हर एक वचन से जीवित रहेगा जो परमेश्वर के मुख से निकलता है'* (मत्ती 4:4)। भाई पाफनुतियुस! यदि आप पूरे मन से परमेश्वर की इच्छा पूरी करते हैं, तो आपको परमेश्वर से वह सब कुछ मिलेगा जिसकी आपको आवश्यकता है; क्योंकि पवित्र सुसमाचार में कहा गया है: *'इसलिए यह कहते हुए चिन्ता मत करो, "हम क्या खाएँगे? या हम क्या पिएँगे? या हम पहनने के लिए क्या पहनें?' क्योंकि ये सब बातें तो परमेश्वर के बिना के लोग खोजते हैं, और तुम्हारा स्वर्गीय पिता जानता है कि तुम्हें इन सब चीज़ों की ज़रूरत है। परन्तु पहिले परमेश्वर के राज्य और उसकी धार्मिकता की खोज करो, और ये सब बातें तुम्हें मिल जाएँगी"* (मत्ती 6:31–33)।

पाफनुतीयस कहते हैं, 'जब ओनुफ्रियस यह सब कह रहे थे, तो मैं उनके अद्भुत जीवन-यापन के तरीके पर अत्यंत चकित हुआ। तब मैंने उनसे फिर पूछा: 'पिताजी, आप सब्बाथ और प्रभु के दिन मसीह के परम पवित्र रहस्यों को कैसे ग्रहण करते हैं?'

उसने मुझसे उत्तर दिया: 'प्रभु का स्वर्गदूत मेरे पास आता है, अपने साथ मसीह के सबसे शुद्ध रहस्यों को लाता है और उन्हें मुझे प्रदान करता है। और स्वर्गदूत दिव्य परमप्रसाद लेकर केवल मेरे पास ही नहीं आता, बल्कि उन अन्य मरुभूमि के तपस्वियों के पास भी आता है जो ईश्वर के लिए मरुभूमि में रहते हैं और कभी किसी दूसरे मानव का मुख नहीं देखते; जब वह परमप्रसाद प्रदान करता है, तो वह उनके हृदयों को अकथनीय आनंद से भर देता है। यद्यपि हालाँकि इन

मरुस्थलवासियों में से कोई भी किसी मनुष्य को देखना चाहे, तो देवदूत उसे ले जाकर स्वर्ग में उठा ले जाता है, ताकि वह संतों को देख सके और आनंदित हो सके; और ऐसे मरुस्थलवासी की आत्मा प्रकाश के समान प्रबुद्ध हो जाती है, और पवित्र आत्मा में आनंदित होती है, क्योंकि उसे स्वर्गीय आशीर्वादों को देखने के लिए योग्य समझा गया है; और तब तपस्वी उन सभी कष्टों को भूल जाता है जो उसने रेगिस्तान में उठाए हैं। जब वह तपस्वी अपनी जगह लौटता है, तो वह प्रभु की और भी अधिक लगन से सेवा करने लगता है, इस आशा में कि उसे स्वर्ग में वह प्राप्त होगा जो उसे देखने का सौभाग्य मिला है'।

ऑनूप्रियस (पाफनुटियस के अनुसार) ने मुझसे उस पहाड़ की तलहटी में इन सब बातों के बारे में कहा जहाँ हम मिले थे। मैं भी उस पूजनीय पिता के साथ ऐसी बातचीत से अत्यंत प्रसन्न हुआ और भूख और प्यास से भरी अपनी यात्रा की सभी कठिनाइयों को भूल गया। आत्मा और शरीर से बल पाकर, मैंने कहा: 'धन्य है वह मनुष्य जिसे आपको देखने, हे पवित्र पिता, और आपके सुंदर और अति मधुर वचन सुनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है!' तब उन्होंने मुझसे कहा: 'चलो भाई, उठो और मेरे निवास पर चलते हैं।'

और उठकर, हम चल पड़े।

मैं (पाफनुटियस कहता है) उस पूजनीय वृद्ध की कृपा देखकर विस्मित हुए बिना नहीं रह सका; दो या तीन मिलिया चलने के बाद, हम संत की पवित्र गुफा पर पहुँचे। उस गुफा के पास एक काफी बड़ा खजूर का पेड़ था, और वहाँ जीवन-दायक जल का एक छोटा सा झरना बहता था। गुफा के पास रुककर, आदरणीय संत ने प्रार्थना की। अपनी प्रार्थना समाप्त करने के बाद, उन्होंने कहा, 'आमीन।'

फिर वे बैठ गए और मुझे अपने पास बैठने का आमंत्रण दिया। और हमने परस्पर ईश्वर की दया के बारे में बातें कीं।

जैसे ही दिन ढलने लगा और सूरज पश्चिम में अस्त हो रहा था, मैंने हमारे बीच कुछ ताज़ा रोटी पड़ी देखी, और कुछ पानी तैयार किया हुआ था। और उस धन्य व्यक्ति ने मुझसे कहा: 'भाई, अपने सामने रखी रोटी चखो, और पानी पियो, ताकि तुम बल पाओ; क्योंकि मैं देखता हूँ कि तुम भूख और प्यास और यात्रा की कठिनाइयों से थके हुए हो।'

मैंने उनसे उत्तर दिया: 'मेरे प्रभु के जीते जी! मैं अकेले न तो कुछ खाऊँगा और न ही कुछ पियूँगा, बल्कि केवल आपके साथ ही खाऊँगा और पियूँगा।'

लेकिन वह बूढ़ा खाने के लिए राज़ी नहीं हुआ; मैंने बहुत मिन्नतें कीं और बड़ी मुश्किल से उसे अपनी बात मानने के लिए राज़ी कर पाया; हमने हाथ फैलाकर रोटी ली, उसे तोड़ा और खाया; हम तृप्त हो गए, और कुछ रोटी बची भी रह गई; फिर हमने पानी पिया और ईश्वर का धन्यवाद किया; और हमने पूरी रात ईश्वर से प्रार्थना करते हुए बिताई।

जब दिन का उदय हुआ, तो मैंने देखा कि प्रातःकालीन भजनों के बाद उस पूजनीय की मुखमंडल का रंग बदल गया था, और मैं इससे बहुत भयभीत हो गया। यह जानकर उन्होंने मुझसे कहा: 'डरो मत, भाई पाफनुटियस, क्योंकि ईश्वर, , जो सभी पर दयालु हैं, ने तुम्हें मेरे पास भेजा है ताकि तुम मेरे शरीर को विश्राम दे सको; इसी दिन मैं अपना सांसारिक जीवन समाप्त करूँगा और अपने मसीह के साथ शाश्वत शांति में अनंत जीवन के लिए प्रस्थान करूँगा।'

तब जून का बारहवाँ दिन था; और पूजनीय ओनूपhrius ने मुझसे, पाफनुतियुस से, कहा: 'प्रिय भाइयो! जब आप मिस्र लौटें, तो सभी भाइयों और सभी ईसाइयों को मुझसे याद दिलाना।'

मैंने (पाफनुटियस कहता है) उनसे कहा: 'पिताजी! आपके देहांत के बाद, मैं आपकी जगह यहीं रहना चाहूँगा।'

लेकिन आदरणीय व्यक्ति ने मुझसे कहा: 'मेरे बच्चे! तुम्हें परमेश्वर ने इस मरुस्थल में भेजा है, यहाँ तपस्या करने के लिए नहीं, बल्कि परमेश्वर के सेवकों को देखने, लौटने, और भाइयों को मरुस्थलवासियों के पुण्य जीवन के बारे में बताने के लिए, उनके आत्माओं के लाभ के लिए और हमारे परमेश्वर मसीह की महिमा के लिए। तब जाओ, मेरे बच्चे, मिस्र, अपने मठ और अन्य मठों में, और उन्हें वह सब बताओ जो तुमने रेगिस्तान में देखा और सुना है; उन्हें वह भी बताओ जो तुम अभी देखना और सुनना बाकी है; और अपनी ओर से, प्रभु की सेवा करते हुए, अच्छे कामों में स्वयं को समर्पित कर दो।"

जब आदरणीय पिता ने यह कहा, तो मैं उनके चरणों में गिर पड़ा, और कहने लगा: 'मुझे आशीर्वाद दीजिए, अति सम्माननीय पिता, और मेरे लिए प्रार्थना कीजिए, कि मैं परमेश्वर की कृपा प्राप्त कर सकूँ; मेरे लिए प्रार्थना कीजिए, कि मेरा उद्धारकर्ता मुझे आने वाले युग में आपको देखने का सौभाग्य दे, जैसे उसने मुझे इस जीवन में आपको देखने का सौभाग्य दिया है।'

रेवरेंड ओनुफ्रियस ने मुझे जमीन से उठाते हुए मुझसे कहा: 'मेरे पुत्र पाफनुतियस! ईश्वर तुम्हारी प्रार्थना को अस्वीकार न करें, बल्कि ईश्वर इसे स्वीकार करें; ईश्वर तुम्हें आशीर्वाद दें और अपने प्रेम में तुम्हें स्थिर करें, और ईश्वर के दर्शन के लिए तुम्हारी आध्यात्मिक आँखों को प्रबुद्ध करें; वह आपको हर विपत्ति और विरोधी के जालों से बचाए, और आप जिस अच्छे काम को आरंभ कर चुके हैं, उसे वह जारी रखे; उनके स्वर्गदूत आपके सभी मार्गों में आपकी रक्षा करें (भजन संहिता 90:11), वे आपको अदृश्य शत्रुओं से बचाएं, ताकि वे किसी भयानक परीक्षा के समय में परमेश्वर के सामने आपकी निंदा न कर सकें।"

इसके बाद, पूजनीय पिताजी ने मुझे प्रभु में अंतिम चूम दिया; फिर वे आँसुओं और हार्दिक आहों के साथ प्रभु से प्रार्थना करने लगे। घुटने टेककर और काफी देर तक प्रार्थना करने के बाद, वे जमीन पर लेट गए और अपने अंतिम शब्द बोले: 'हे मेरे प्रभु, मैं अपनी आत्मा तेरे हाथों में सौंपता हूँ!' जब उन्होंने ये शब्द कहे, तो स्वर्ग से उन पर एक अद्भुत प्रकाश चमका, और इस प्रकाश की किरणों में, रेवरेंड फादर, जिनका चेहरा आनंद से दमक रहा था, ने अपनी अंतिम साँस ली[4331] । और तुरंत ही हवा में स्वर्गदूतों की आवाज़ें सुनाई दीं, जो ईश्वर की स्तुति और आराधना कर रहे थे; क्योंकि पवित्र स्वर्गदूतों ने, रेवरेंड फादर की आत्मा को ग्रहण करके, उसे आनंदपूर्वक प्रभु के पास ले गए।

जहाँ तक मेरी बात है (पाफनुटियस बताता है), मैं उनके पवित्र शरीर पर रोने और विलाप करने लगा, इस बात पर शोक मनाते हुए कि मैंने उस व्यक्ति को इतनी अप्रत्याशित रूप से खो दिया था जिसे मैंने हाल ही में पाया था। तब, अपने कपड़े उतारकर, मैंने उनकी भीतरी परत फाड़ी और उससे संत के शरीर को ढक दिया, और बाहरी वस्त्र को फिर से पहन लिया, ताकि भाइयों के पास नग्न न लौटूँ। मुझे एक बड़ा पत्थर मिला जिसमें, ईश्वर की कृपा से, एक खोखला स्थान बन गया था जो ताबूत जैसा दिखता था; इस पत्थर में मैंने ईश्वर के महान सेवक का पवित्र शरीर रखा, और अवसर के अनुरूप भजन-गायन किया। फिर, कई छोटे पत्थर इकट्ठा करके, मैंने संत के शरीर को उनसे ढक दिया।

इस सब के बाद, मैंने ईश्वर से प्रार्थना करनी शुरू कर दी, उनसे उस स्थान पर रहने की अनुमति देने का अनुरोध करते हुए; मैं गुफा में प्रवेश ही करने वाला था कि मेरी आँखों के सामने ही गुफा ढह गई; जिस खजूर के पेड़ ने संत का पोषण किया था, वह उखड़ गया, और जीवन-दायी जल का स्रोत सूख गया; यह सब देखकर मुझे एहसास हुआ कि वहाँ मेरा रहना ईश्वर की इच्छा नहीं थी।

उस जगह को छोड़ने का इरादा कर, मैंने पिछले दिन की बची हुई रोटी खाई और पात्र में रखा पानी भी पी लिया; फिर, अपने हाथ आसमान की ओर उठाकर और अपनी आँखें आकाश की ओर टिकाकर, मैंने एक बार फिर प्रार्थना करना शुरू कर दिया। तब मैंने उसी आदमी को देखा जिसे मैंने पहले रेगिस्तान में यात्रा करते समय देखा था; वह वही आदमी था जिसने मुझे मजबूत करके मुझसे आगे चल दिया था।

जब मैं उस स्थान से निकला, तो मेरी आत्मा गहरे दुख से भर गई, इस बात पर पछतावा करते हुए कि मुझे आदरणीय ओनूफ्रियस को देह में अधिक समय तक देखने की कृपा नहीं मिली थी। लेकिन फिर मेरी आत्मा इस बात पर आनंदित हुई कि मुझे उनके पवित्र सान्निध्य का आनंद लेने और उनके होठों से आशीर्वाद प्राप्त करने की कृपा मिली थी; और इस प्रकार मैं ईश्वर की स्तुति करते हुए आगे बढ़ता गया।

चार दिन की यात्रा के बाद, मैं एक पहाड़ की चोटी पर बसी एक ख़ास कुटिया में पहुँचा, जिसमें एक गुफ़ा थी; उसमें प्रवेश करने पर, मुझे वहाँ कोई नहीं मिला; कुछ देर बैठने के बाद, मैं अपने मन में सोचने लगा: 'क्या इस कुटिया में कोई रहता है, जहाँ ईश्वर मुझे लाए हैं?'

जब मैं यह सोच ही रहा था, तभी एक पवित्र पुरुष आए, जिनके बाल उम्र के कारण सफेद हो गए थे; उनका रूप अद्भुत और तेजस्वी था; उन्होंने विलो की टहनियों से बुने हुए वस्त्र पहन रखे थे। मुझे देखकर उन्होंने कहा:

'क्या आप ही, भाई पाफनुतियस हैं, जिन्होंने पूजनीय ओनुफrius के शरीर को अंतिम संस्कार के लिए विदा किया था?'

यह जानकर कि उन्हें मेरे बारे में ईश्वर से कोई प्रकटवाणी प्राप्त हुई है, मैं उनके चरणों में गिर पड़ा। उन्होंने मुझे सांत्वना देते हुए कहा: 'उठो, भाई! ईश्वर ने तुम्हें अपने संतों का मित्र बनने के योग्य समझा है; क्योंकि मैं ईश्वर की कृपा से जानता हूँ कि तुम्हें मेरे पास आना ही था। मैं तुम्हें, प्रिय भ्राता, अपने बारे में एक बात बताऊँगा: कि मैंने इस मरुभूमि

[4331] संत ओनुफrius की मृत्यु चौथी शताब्दी में हुई थी।

में साठ वर्ष बिताए हैं और इस पूरे समय में, मेरे पास कभी कोई मनुष्य नहीं आया, सिवाय उन भाइयों के जो मेरे साथ यहाँ रहते हैं।"

जब हम एक-दूसरे से बात कर रहे थे, तो संत के समान तीन अन्य बुज़ुर्ग भी आ गए। और वे तुरंत मुझसे कहने लगे: 'भाई, हमें आशीर्वाद दो!' आप भाई पाफनुटियस हैं, प्रभु में हमारे सहकर्मी। आपने संत ओनुपhrius के शरीर को अंतिम संस्कार दिया। आनंदित हो, भाई, कि तुम्हें परमेश्वर की महान कृपा को देखने के लिए योग्य ठहराया गया है। प्रभु ने हमें आपके बारे में बताया है, कि आप आज हमारे पास आएँगे। प्रभु ने आपको आज्ञा दी है कि आप एक दिन हमारे साथ रहें। अब हम इस रेगिस्तान में साठ साल से हैं, हम में से प्रत्येक अलग-अलग रहता है; लेकिन शनिवार से रविवार तक हम यहाँ इकट्ठा होते हैं। हमने अब तक कोई और व्यक्ति नहीं देखा है, जब तक कि आज अकेले आपको नहीं देखा।'

जब हमने आदरणीय पिता ओनुफ्रियस और अन्य संतों के बारे में बात कर ली, तो दो घंटे बाद उन बड़ों ने मुझसे कहा: 'भैया, थोड़ी रोटी लो और तरोताज़ा हो जाओ, क्योंकि तुम दूर से आए हो; हमारे लिए तुम्हारे साथ आनंद मनाना उचित है।'

हम उठ खड़े हुए, हमने ईश्वर से एकजुट होकर प्रार्थना की और अपने सामने पाँच रोटी देखीं जो शुद्ध आटे की बनी थीं, बहुत स्वादिष्ट, नरम और गरम, जैसे अभी-अभी पकी हों। फिर उन बुज़ुर्गों ने धरती के कुछ फल लाए। हम सब एक साथ बैठकर उन रोटियों को खाने लगे। और बुज़ुर्गों ने मुझसे कहा: 'जैसा हमने तुम्हें बताया था, हम इस रेगिस्तान में साठ वर्ष से वास कर रहे हैं, और हमेशा, ईश्वर की आज्ञा से, हमें केवल चार रोटियाँ ही मिलती थीं; लेकिन अब, तुम्हारे आगमन के अवसर पर, हमें पाँचवीं रोटी भेजी गई है।' हम नहीं जानते कि ये रोटी कहाँ से आती हैं, लेकिन हम में से प्रत्येक, अपनी गुफा में प्रवेश करने पर, वहाँ हर दिन एक रोटी पाता है। हालाँकि, जब हम प्रभु के दिन की पूर्व संध्या पर यहाँ इकट्ठा होते हैं, तो हमें यहाँ चार रोटी मिलती हैं, हम में से प्रत्येक के लिए एक।"

उस भोजन का सेवन करने के बाद, हम उठे और प्रभु का धन्यवाद किया।

इस बीच, दिन ढलने लगा था; रात जल्द ही होने वाली थी; शनिचर की शाम को प्रार्थना के लिए निकिलकर, हम रविवार की सुबह तक बिना सोए, प्रार्थना करते हुए पूरी रात जागे रहे।

जब सुबह हुई, तो मैंने उन संतों से विनती करनी शुरू कर दी कि वे मुझे अपनी मृत्यु तक उनके साथ रहने दें। लेकिन उन्होंने मुझसे कहा: 'ईश्वर की इच्छा नहीं है कि तुम इस मरुभूमि में हमारे साथ रहो; तुम्हें मिस्र जाना चाहिए, ताकि तुम मसीह-प्रेमी भाइयों को जो कुछ तुमने देखा है, वह सब हमारी स्मृति के लिए और सुनने वालों के लाभ के लिए बता सको।'

जब उन्होंने यह कहा, तो मैंने उनसे विनती करनी शुरू कर दी कि वे मुझे अपने नाम बताएं। लेकिन वे मुझे बताने को तैयार नहीं थे। मैंने बहुत समय तक बड़ी गंभीरता से उनसे विनती की, लेकिन मेरी प्रार्थना सफल नहीं हुई: उन्होंने मुझसे केवल इतना कहा: 'ईश्वर, जो सब कुछ जानते हैं, वे हमारे नाम भी जानते हैं। हमारे लिए प्रार्थना करना, ताकि हमें परमेश्वर के स्वर्गीय निवासों में एक-दूसरे से मिलने का सौभाग्य प्राप्त हो। प्रिय, संसार के प्रलोभनों और मोह से बचने के लिए अपनी पूरी कोशिश करना, कहीं ऐसा न हो कि तुम उन पर काबू न पा सको; क्योंकि उन्होंने बहुतों को विनाश की ओर ले जाया है।"

उन पूजनीय पिताओं से ये वचन सुनकर, मैं उनके चरणों में गिर पड़ा और, उनका आशीर्वाद प्राप्त कर, ईश्वर की शांति के साथ अपनी यात्रा पर निकिल पड़ा। उन पिताओं ने मुझे कुछ घटनाओं की भविष्यवाणी की जो वास्तव में घटित हुईं।

उस स्थान को छोड़कर, मैं एक दिन तक भीतरी रेगिस्तान की ओर चला; एक गुफा तक पहुँचकर, जिसके पास जीवन का जल झरता था, मैं वहाँ विश्राम करने के लिए बैठ गया और उस स्थान की सुंदरता से चकित हो गया; क्योंकि वह स्थान अत्यंत सुंदर था; झरने के चारों ओर फलदार वृक्ष लगे थे, जो फलों से लदे हुए थे। थोड़ी देर विश्राम करने के बाद, मैं खड़ा हुआ और उन पेड़ों के बीच घूमने लगा, उनके फलों की भरमार देखकर चकित हो रहा था और मन ही मन सोच रहा था कि आखिर किसने यह सब यहाँ लगाया होगा। यहाँ वास्तव में विभिन्न प्रकार के फलदार पेड़ थे, जैसे: खजूर, सिट्रॉन, बड़े लाल सेब, अंजीर, आड़ू और अंगूर की बेलें[4332] , जो बड़े गुच्छों से लदी हुई थीं; यहाँ कई अन्य फलदार पेड़ भी उगे थे;

[4332] यह ध्यान देने योग्य है कि मिस्र, विशेष रूप से नील नदी के किनारे स्थित क्षेत्रों में, वनस्पतियों से अत्यंत समृद्ध था। वहाँ निम्नलिखित पौधे प्रचुर मात्रा में उगते थे: खजूर के पेड़, अकेशिया, अंजीर के पेड़, कपास, गन्ना, नील और अन्य।

उनके फल शहद से भी मीठे थे; उनसे एक अद्भुत सुगंध आती थी, जबकि वहाँ बहता हुआ झरना उन सभी बागानों को पानी देता था। यह सब देखकर, मैंने सोचा कि यह अवश्य ही ईश्वर का स्वर्ग होगा।

जब मैं उस स्थान की महान सुंदरता पर विस्मित हो रहा था, मैंने रेगिस्तान के पार दूर से चार सुंदर युवक मुझे की ओर आते हुए देखे: उन युवकों ने भेड़ की खाल का कमरबंद बाँध रखा था। मेरे पास आकर उन्होंने कहा: 'खुश हो जाओ, भाई पाफनुटियस!'

मैं मुँह के बल ज़मीन पर गिरि पड़ा और उनके सामने झुक गया।

उन्होंने भी मुझे उठाने में मदद की, मेरे बगल में बैठ गए और बातचीत करने लगे। इन युवकों के चेहरे ईश्वर की कृपा से दमक रहे थे; मुझे ऐसा लगा कि वे मनुष्य नहीं, बल्कि स्वर्ग से उतरे हुए स्वर्गदूत थे। वे युवक मेरे आगमन से अत्यंत प्रसन्न हुए और पेड़ों से कुछ फल तोड़कर मुझे चखने के लिए दिए; और उनके प्रेम के कारण मेरा हृदय आनंदित हुआ। मैं सात दिन तक उनके साथ रहा, और उन पेड़ों के फल खाकर जीवित रहा। अन्य बातों के अलावा, मैंने उनसे पूछा, 'आप यहाँ कैसे आए? आप कहाँ से हैं?'

उन्होंने मुझसे उत्तर दिया: 'भाई! चूँकि स्वयं ईश्वर ने आपको हमारे पास भेजा है, हम आपको अपने जीवन के बारे में बताएँगे। हम ऑक्सिरिंकोस शहर[4333] से आए हैं; हमारे माता-पिता उस शहर के मजिस्ट्रेट थे; हमें शास्त्रीय शिक्षा देना चाहकर, उन्होंने हमें एक स्कूल में भेजा, जहाँ हमने जल्द ही बुनियादी साक्षरता (पढ़ना) सीख ली। जब हमने अधिक उन्नत अध्ययन में प्रगति करना शुरू किया, तो हम सभी में एक ही विश्वास साझा होने लगा, क्योंकि प्रभु हमारे साथ थे: हमने उच्चतम आध्यात्मिक ज्ञान का अध्ययन करने का संकल्प लिया। उस समय से, प्रतिदिन एकत्रित होकर, हमने एक-दूसरे को ईश्वर की सेवा में खुद को समर्पित करने के लिए प्रोत्साहित किया; हमारे हृदयों में अच्छे इरादों के साथ, हम कहीं एक शांत, एकांत स्थान खोजने और वहाँ कई दिनों तक प्रार्थना में रहने की इच्छा रखते थे, ताकि हम अपने बारे में परमेश्वर की इच्छा जान सकें। हम में से प्रत्येक ने थोड़ी-सी रोटी और पानी लिया, जो सात दिनों तक चलने के लिए पर्याप्त था; फिर हम शहर से निकल गए। कई दिनों तक चलने के बाद, हम रेगिस्तान पहुँचे; रेगिस्तान में प्रवेश करते ही, हम भय से भर गए, क्योंकि हमने अपने सामने स्वर्गीय महिमा से दमकते हुए एक तेजस्वी पुरुष को देखा; उसने हमारा हाथ पकड़कर हमें, जैसा कि आप देख सकते हैं, इस स्थान पर ले आया; फिर उसने हमें एक व्यक्ति के हवाले कर दिया, जो अब वृद्ध हो चुका है और प्रभु की सेवा करता है। और इस प्रकार हम अब छह साल से यहाँ हैं। हम उस वृद्ध के साथ एक साल रहे, इस दौरान उन्होंने हमें प्रभु की सेवा कैसे करें, यह सिखाया और समझाया। उस साल के बीत जाने के बाद, हमारे पिता प्रभु में निधन हो गए, और तब से हम यहाँ अकेले रह रहे हैं। देखो, प्रिय भाई, हमने तुम्हें बता दिया है कि हम कौन हैं और कहाँ से आए हैं। उन सभी छह वर्षों के दौरान, हमने इन बगीचे के पेड़ों के फल के अलावा न रोटी खाई है और न ही कोई अन्य भोजन; हम में से प्रत्येक अन्य से अलग, मौन में रहता है। जब सब्त का दिन आता है, तो हम सभी इस स्थान पर इकट्ठा होते हैं, एक-दूसरे को देखते हैं और प्रभु में सांत्वना पाते हैं। दो दिन—शब्बात और रविवार—साथ बिताने के बाद, हम में से प्रत्येक अपनी-अपनी जगह लौट जाता है।'

उनसे यह सब सुनकर, मैंने, पाफ़नुतियस ने, विनम्रतापूर्वक उनसे पूछा: 'तो फिर, आप सब्बाथ और रविवार को हमारे उद्धारकर्ता, मसीह के परम पवित्र शरीर और रक्त के दिव्य रहस्यों में कहाँ भाग लेते हैं?'

उन्होंने मुझसे उत्तर दिया: 'इसीलिए हम हर शनिवार और रविवार को यहाँ इकट्ठा होते हैं, क्योंकि परमेश्वर द्वारा भेजा गया एक पवित्र स्वर्गदूत हमारे पास आता है और हमें पवित्र सहभागिता प्रदान करता है।'

मैं, हालांकि, यह सुनकर अत्यंत प्रसन्न हुआ, और चाहता था कि मैं शनिवार तक उनके साथ ही रहूँ, ताकि मैं पवित्र स्वर्गदूत को देख सकूँ और उसके हाथों से दिव्य परमप्रसाद ग्रहण कर सकूँ। और मैं शनिवार तक वहीं रहा। वे भी मेरे लिए एक ही स्थान पर रहे, और अपनी-अपनी कोठरियों में अलग-अलग नहीं गए। और हमने उन दिनों को परमेश्वर की महिमा और प्रार्थना में, बगीचे के फल खाकर और कुएँ का पानी पीकर बिताया। जब सब्त का दिन आया, तो मसीह के सेवकों ने मुझसे कहा: 'प्रिय भाई, तैयार हो जाओ, क्योंकि अब परमेश्वर का स्वर्गदूत आएगा और हमारे लिए दिव्य परमप्रसाद लाएगा। जो कोई भी उनके हाथों से पवित्र भोज प्राप्त करने के योग्य समझा जाता है, उसे अपने सभी पापों

[4333] ऑक्सिरिंकोस शहर ऊपरी थेबाइड में स्थित था। यह अपने निवासियों की धार्मिकता के लिए प्रसिद्ध था; इतिहासकार रुफिनस (जो चौथी शताब्दी में रहते थे) के अनुसार, यहाँ दस हजार से बीस हजार तक कुंवारी कन्याएँ रहती थीं। आज यह बेनेज़ेच नामक गाँव है।

से क्षमा मिल जाती है और वह दुष्टात्माओं के लिए एक भय बन जाता है, ताकि शैतान का प्रलोभन उसके पास भी न आ सके।'

जब वे मुझसे यह कह ही रहे थे, मुझे एक अद्भुत सुगंध आई, मानो बहुत सारे धूप जलाने से आई हो, और मैं बहुत चकित हो गया, क्योंकि मैंने पहले कभी ऐसी अद्भुत सुगंध नहीं सूंघी थी। मैंने युवकों से पूछा:

'ऐसी अकथनीय सुगंध कहाँ से आती है?'

उन्होंने उत्तर दिया:

'प्रभु का स्वर्गदूत मसीह के परम पवित्र रहस्यों के साथ आ रहा है।'

तुरंत प्रार्थना करने के लिए उठकर, हमने गाना शुरू किया और राजा मसीह, हमारे ईश्वर की महिमा की। अचानक, स्वर्ग से एक प्रकाश हम पर चमका; हमने परमेश्वर के स्वर्गदूत को ऊपर से उतरते हुए देखा, जो बिजली की तरह चमक रहा था। मैं डर के मारे ज़मीन पर लोट गया। लेकिन उन युवकों ने मुझे उठाया और मुझसे डरने के लिए नहीं कहा। फिर मैंने परमेश्वर के स्वर्गदूत को हमारे सामने एक सुंदर युवक के रूप में खड़ा देखा; उसकी सुंदरता का वर्णन करना मुश्किल था; उसके हाथ में दिव्य उपहारों से भरा पवित्र प्याला था। भगवान के उन सेवकों ने एक-एक करके उसके पास आकर पवित्र परमप्रसाद ग्रहण किया। उनके बाद, मैं भी—एक पापी और अयोग्य—बड़ी भयभीत और विस्मित होकर, फिर भी साथ ही साथ अकथनीय आनंद के साथ, पास गया, और मुझे स्वर्गदूत के हाथों से मसीह के परम पवित्र रहस्यों को ग्रहण करने का योग्य समझा गया। परमप्रसाद ग्रहण के समय, मैंने स्वर्गदूत के ये शब्द सुने:

'प्रभु यीशु मसीह का शरीर और लहू, हमारे परमेश्वर, आपके लिए अक्षय भोजन, अनंत आनंद और अनंत जीवन हों।'

हमने उत्तर दिया:

'आमेन।'

पवित्र भोज के बाद, हमें उस अति महिमामय देवदूत से आशीर्वाद मिला। फिर, हमारी आँखों के सामने, वह स्वर्ग में उड़ गया, जबकि हम, जमीन पर गिरकर, ईश्वर के सामने झुक गए, और हम पर उनकी महान दया के लिए उनका धन्यवाद करने लगे। हमारे हृदय इतनी बड़ी प्रसन्नता से भर गए थे कि मुझे ऐसा लगा जैसे मैं पृथ्वी पर नहीं बल्कि स्वर्ग में हूँ; उस महान प्रसन्नता से मैं, मानो, आनंद की अवस्था में था। फिर परमेश्वर के उन पवित्र सेवकों ने कुछ सब्जियाँ लाकर मुझे अर्पित कीं, और बैठकर हमने उनका स्वाद चखा।

इस बीच, सब्बाथ समाप्त हुआ और रात हो गई; हमने इसे बिना सोए, भजन गाते और परमेश्वर की महिमा करते हुए बिताया। रविवार को हमें सब्बाथ के समान ही परमेश्वर की कृपा मिली; क्योंकि परमेश्वर का स्वर्गदूत उसी प्रकार और उसी रूप में हमसे मिला, और हमें पवित्र सहभागिता देकर, हमारे हृदयों को महान आनंद से भर दिया। जहाँ तक मेरी बात है, मैंने हिम्मत करके परमेश्वर के स्वर्गदूत से निवेदन करना शुरू किया कि मुझे अपने जीवन के अंत तक परमेश्वर के पवित्र सेवकों के साथ वहाँ रहने की अनुमति दे। लेकिन उसने मुझसे कहा: 'यह परमेश्वर को भाता नहीं कि तुम यहाँ रहो; वह तुम्हें आज्ञा देता है कि तुम तुरंत मिस्र जाओ और सभी भाइयों से वह सब कहो जो तुमने रेगिस्तान में देखा और सुना है, ताकि बाकी भाइयों को भी एक अच्छा जीवन जीने और हमारे ईश्वर मसीह को प्रसन्न करने का प्रयास करने के लिए प्रेरणा मिले। विशेष रूप से, सभी को सम्माननीय ओनूप्रियस के पवित्र जीवन और धन्य नधिन के बारे में विस्तार से बताओ, जिसे तुमने चट्टान में दफनाया था। भाइयों को वह सब कुछ बताओ जो तुमने उनके अपने मुख से सुना। धन्य हो तुम, क्योंकि तुम्हें परमेश्वर के ऐसे अद्भुत और महान कार्यों को देखने का योग्य ठहराया गया है, जो उनके संतों के माध्यम से प्रकट हुए हैं। प्रभु पर भरोसा रखो, कि वह आने वाले युग में तुम्हें भी उन संतों में गिनेगा जिन्हें तुमने देखा है और जिनसे तुमने बात की है। अब अपने मार्ग पर जाओ, और परमेश्वर का शान्ति तुम्हारे साथ हो।'

यह कहकर, स्वर्गदूत स्वर्ग में आरोहण कर गया।

जहाँ तक मेरी बात है (पाफनुटियस बताता है), मैं स्वर्गदूत के शब्दों से इतना विस्मित और साथ ही आनंदित हो गया कि मैं अपने पैरों पर खड़ा नहीं रह सका और जैसे बेहोश होकर जमीन पर गिर पड़ा। परमेश्वर के पवित्र सेवकों ने मुझे उठाया और सांत्वना दी; फिर, मुझे कुछ सब्जियाँ देकर, उन्होंने मेरे साथ खाया और परमेश्वर का धन्यवाद किया।

अंत में, संतों को विदा कहकर मैं अपनी यात्रा पर चल पड़ा। उन सदाचारी युवकों ने मुझे यात्रा के लिए कुछ सब्जियाँ दीं और पाँच मिलियारी तक मेरे साथ चले। मैंने उनसे विनम्रतापूर्वक अपने नाम बताने का आग्रह किया। उन्होंने कहा: पहले का नाम जॉन था, दूसरे का – एंड्रयू, तीसरे का नाम हेराक्लामवोन था, और चौथे का थियोफिलिस; और उन्होंने मुझे

अपने नाम भाइयों को बताने का नरि्देश दयिा ताकि उन्हें याद कयिा जा सके। बदले में, मैंने उनसे अपनी प्रार्थनाओं में मुझे याद रखने के लिए कहा। फरि, प्रभु में एक बार फरि से आपसी चुंबन के बाद, हम अलग हो गए; वे अपने नविास पर लौट गए, जबकि मैं मस्रि की ओर चल पड़ा।

जब मैं रेगस्तिान के लिए रवाना हुआ, तो मैं एक ही समय में दुखी और प्रसन्न था; मुझे दुख हुआ क्योंकि मुझे परमेश्वर के ऐसे महान संतों के दर्शन और मधुर वार्तालाप से वंचति कर दयिा गया था, जनिके योग्य पूरी दुनयिा भी नहीं थी; फरि भी मैं इस बात पर प्रसन्न हुआ कि मुझे उनके आशीर्वाद और स्वर्गदूत को देखने, तथा स्वर्गदूत के हाथों से पवत्रि सहभाग प्राप्त करने का योग्य समझा गया।

मैं तीन दनि तक पैदल चला; फरि मैं एक संन्यास-आश्रम में पहुँचा, जहाँ मैं दो भाइयों से मलिा जो एकांत जीवन जी रहे थे। मैं दस दनि उनके साथ रहा और मैंने उन्हें वह सब कुछ बताया जो मैंने रेगस्तिान में देखा और सुना था । उन्होंने मुझे बहुत भावुकता और आनंद के साथ सुना; फरि उन्होंने कहा: 'सचमुच, फादर पाफनुटयिस, आपको ईश्वर की महान दया प्राप्त हुई है, क्योंकि आपने ईश्वर के इतने महान सेवकों को देखा है।'

उन दोनों भाइयों ने अत्यंत पुण्यपूर्ण जीवन जयिा और वे पूरे हृदय से ईश्वर से प्रेम करते थे; उन्होंने मेरे मुख से जो कुछ भी सुना, उसे सब कुछ लखि लयिा। उन्हें वदिा कहने के बाद, मैं अपने मठ चला गया। जहाँ तक मेरे वृत्तांत के अभलिेख की बात है, उन्होंने उसे स्केटे में रहने वाले सभी पवत्रि पतिा और भाइयों को भेज दयिा; जनि सभी ने इसे पढ़ा और सुना, उन्होंने इससे महान आध्यात्मकि लाभ प्राप्त कयिा और परमेश्वर की महमिा की, जो अपने सेवकों पर अपनी महान दया दखिाते हैं। फरि उन्होंने मेरे कहे हुए की इस रकिॉर्ड को चर्च में रख दयिा, ताकि जो कोई भी चाहे वह इसे पढ़ सके, क्योंकि यह अत्यंत शकि्षाप्रद था और ईश्वरीय चतिन सखिाता था। जहाँ तक मेरी, दीन दास पाफनुटयिस की बात है, मुझे ईश्वर से ऐसी कृपा प्राप्त हुई है (जसिका मैं कतई योग्य नहीं हूँ), मैं सभी को, मौखकि रूप से और लखिति रूप में, वह प्रचार करता हूँ, जसिका प्रचार करने की आज्ञा मुझे ईश्वर की महमिा के लिए, ईश्वर के संतों की स्मृति में, और अपनी आत्मा के उद्धार की खोज करने वालों के लाभ के लिए दी गई थी। हमारे प्रभु यीशु मसीह की कृपा और शान्ति तुम सभ पर हो, हमारे पवत्रि और आदरणीय पतिाओं की प्रार्थनाओं के द्वारा जनि्होंने उन्हें प्रसन्न कयिा, अब और युगानुयुग। आमीन।

कॉन्टाकयिन, स्वर 3:

हे ईश्वर-ज्ञानी, परम पवत्रि आत्मा के तेज से प्रकाशति होकर, आपने इस जीवन की व्यर्थताओं का त्याग कयिा; मरुभूमि में पहुँचकर, हे आदरणीय पतिा, आपने परमेश्वर और सभी चीजों के सृष्टकिर्ता को आनंदति कयिा। इसी कारण, हे धन्य, मसीह, महान दाता, आपको महमिामय बनाते हैं।

माउंट अथोस के हमारे पूजनीय पतिा पीटर का जीवन।

12 जून को स्मरणोत्सव

आदरणीय पीटर यूनानी मूल के थे, पेशे से एक सैनकि और पद से एक कमांडर थे। उन्होंने नम्निलखिति अवसर पर संन्यासी की शपथ ली।

एक बार, पीटर को अन्य सैनकिों के साथ, सीरयिा[4334] भेजा गया था ताकि एक युद्ध[4335] में लड़ सकें। ग्रीक सेना को दुश्मन ने हरा दयिा; पीटर को कैदी बना लयिा गया[4336] और कई अन्य कैदयिों के साथ, उसे अरब[4337] ले जाया गया, फरात नदी[4338] के पास स्थति समाना शहर में। वहाँ उसे कैद कर दयिा गया और भारी लोहे की बेड़यिों में जकड़ दयिा गया। कारावास

[4334] सीरयिा – भूमध्य सागर के पूर्वी तट पर एक क्षेत्र।

[4335] अरबों के साथ।

[4336] वर्ष 667 में।

[4337] अरब – एशयिा का एक वशिाल दक्षणि-पश्चमिी प्रायद्वीप, जो फारस की खाड़ी द्वारा एशयिाई मुख्यभूमि से अलग है और सीरयिाई अरब रेगस्तिान के मैदानों द्वारा मुख्यभूमि से जुड़ा है।

[4338] एशयिा की सबसे बड़ी नदी, जो टाइग्रसि के साथ मलिकर, इसकी प्रमुख जल प्रणाली बनाती है।

में रहते हुए, जब वह अपने अतीत पर गहराई से विचार कर रहा था, तो पीटर को याद आया कि उसने अक्सर संसार त्यागने और संन्यास ग्रहण करने के बारे में सोचा था। तब उसे एहसास हुआ कि ईश्वर ने उसे इस कठोर बंदी जीवन से दंडित किया था क्योंकि उसने अपने शुभ इरादों को पूरा करने का प्रयास नहीं किया था। अपनी लापरवाही पर पश्चाताप करते और अपने पूर्व जीवन पर गहराई से शोक व्यक्त करते हुए, पतरस ने उन कष्टों को धैर्यपूर्वक सहन किया, जो उसकी दृष्टि में, वह पूरी तरह से पाने का हकदार था।

कारावास में लंबा समय बिताने और किसी भी मनुष्य से मुक्ति की कोई आशा न रखने के बाद, पतरस ने सर्वशक्तिमान परमेश्वर से उत्कट प्रार्थनाएँ करना शुरू कर दिया, जो मनुष्यों के लिए अज्ञात अपने तरीकों से, उसे जेल से मुक्त कर सकते थे, ठीक वैसे ही जैसे उन्होंने एक बार आदम को नरक से छुड़ाया था। (1 पतरस 3:18–19) और जैसे उसने प्रेरित पतरस को भी छुड़ाया था, जिसे हेरोदेस ने कैद किया था (प्रेरितों के काम 12:1–25)। साथ ही, पतरस ने महान चमत्कार करने वाले संत निकोलस, जो संकट में पड़े लोगों के त्वरित सहायक हैं, से अपने लिए परमेश्वर के सामने शक्तिपूर्वक मध्यस्थता करने का आह्वान किया: पतरस ने परमेश्वर की कृपा से, लंबे समय से संत निकोलस के प्रति महान विश्वास और प्रेम रखा था और अक्सर मदद के लिए उनकी ओर मुड़ते थे। पतरस ने अपनी प्रार्थना में यह व्रत जोड़ा: यदि उसे उसके बंधनों से मुक्त कर दिया गया, तो वह कभी भी संसार में वापस नहीं लौटेगा, न ही अपने घर ही जाएगा, बल्कि तुरंत उस स्थान के लिए निकल पड़ेगा जहाँ भी ईश्वर उसे अपना संन्यासी जीवन पूरा करने के लिए भेजेंगे। उन्होंने संकल्प लिया कि, यदि ईश्वर उन्हें उनके बंधनों से मुक्त कर दें, तो वे रोम के लिए निकल पड़ेंगे ताकि वहाँ, पवित्र प्रधान प्रेरित पतरस की कब्र पर, उनका मुंडन हो सके और वे संसार त्याग की प्रतिज्ञा कर सकें। इसके लिए प्रार्थना करते हुए, संत पीटर ने स्वयं पर उपवास लगाया: वे केवल हर दो या तीन दिनों में एक बार खाते थे, और तब भी केवल थोड़ी मात्रा में, और अंत में पूरे एक सप्ताह तक भोजन से परहेज़ किया। जैसे ही वह सप्ताह समाप्त हुआ, मसीह के पवित्र सेवक, संत निकोलस, संत पतरस को एक सपने में दिखाई दिए और कहा: 'मैंने तुम्हारी प्रार्थना सुनी है, तुम्हारे हृदय की आह को ग्रहण किया है, और दयालु और परोपकारी ईश्वर के सामने तुम्हारे लिए मध्यस्थता की है। लेकिन चूँकि आप स्वयं भी उसकी आज्ञाओं का पालन करने में तत्पर नहीं थे, वह आपको आपके बंधनों से बहुत जल्द मुक्त नहीं करना चाहता, बल्कि आपके उद्धार के लिए जो सबसे अच्छा है, उसकी व्यवस्था कर रहा है। हालाँकि, दयालु प्रभु के आश्वासन के अनुसार, जिसने हमें पवित्र सुसमाचार में इन शब्दों के साथ आशा दी है: *'माँगो, तो तुम्हें दिया जाएगा... खटखटाओ, तो तुम्हारे लिए खोला जाएगा'* (लूका 11:9), प्रार्थना करना बंद न करना और दया के द्वार पर दस्तक देना, ताकि प्रभु, अपनी दया में, आपको आपके बंधनों से मुक्त कर सकें और आपके लिए जेल के दरवाजे खोल सकें। प्रार्थना में धैर्य रखें, ईश्वर की दया की प्रतीक्षा करें।"

यह कहने के बाद, संत निकोलस ने कैदी पतरस को भोजन से अपने शरीर को मजबूत करने की हिदायत दी, और फिर अदृश्य हो गए। अपनी नींद से जागने और भोजन करने के बाद, पतरस ने एक दृढ़ उद्धार की आशा के साथ, दिन-रात और भी अधिक लगन से प्रार्थना करना शुरू कर दिया, और अपने सहायक, संत निकोलस का अथक रूप से आह्वान करता रहा।

कुछ समय बीत जाने के बाद, संत निकोलस एक बार फिर संत पतरस के सपने में एक ऐसे व्यक्ति के भेष में प्रकट हुए जो दुखी प्रतीत हो रहा था, और उन्होंने उन्हें कोमल और नम्र शब्दों में संबोधित किया: 'मैं, मेरे भाई, निश्चिंत रहो, तुम्हारे लिए ईश्वर की दया की याचना करना बंद नहीं किया है, लेकिन मैं नहीं जानता कि किन कारणों से या किन उद्देश्यों के लिए प्रभु तुम्हारी मुक्ति में देरी कर रहे हैं। हालाँकि, उसकी दया से निराश न हो: दयालु प्रभु हमारे भले के लिए हमारी प्रार्थनाओं की पूर्ति में देरी करते हैं, कहीं ऐसा न हो कि कोई व्यक्ति अपनी माँगी हुई वस्तु को बहुत जल्दी प्राप्त कर ले और उसकी कृपा की उपेक्षा कर दे। साथ ही, प्रभु तुम्हारे और उन अन्य लोगों के लिए प्रार्थनाएँ चाहते हैं जो उनकी कृपा प्राप्त कर चुके हैं। मैं आपको उस महान मध्यस्थ के बारे में बताऊँगा, जिन्हें यदि आप मदद के लिए पुकारेंगे, तो वे आपका वकील होंगे, और मेरा मानना है कि यदि हम आपके लिए एक साथ प्रार्थना करें, तो मानवता के प्रेमी हमें सुनेंगे।'

पतरस ने संत निकोलस से पूछा, 'तब, हे पवित्र प्रभु, आपके लिए परमेश्वर के पास अधिक सहजता से मध्यस्थता कौन कर सकता है? क्योंकि आपकी मध्यस्थता से सारी दुनिया का उद्धार होता है: वास्तव में, संपूर्ण ईसाई जाति, आप की ओर मुड़कर, आपके द्वारा अपने कष्टों से मुक्ति प्राप्त करती है।'

संत निकोलस ने पूछा, 'पतरस, क्या तुम धर्मनिष्ठ सिमीओन को जानते हो, जिन्हें परमेश्वर-स्वीकारकर्ता के नाम से जाना जाता है, क्योंकि उन्होंने प्रभु मसीह को तब अपनी बाहों में लिया था जब उन्हें उनके जन्म के चालीसवें दिन मंदिर में लाया गया था?'

'हाँ, हे परमेश्वर के पवित्र जन,' पतरस ने उत्तर दिया, 'वह धर्मी पुरुष जिसे पवित्र सुसमाचार (लूका 2:25–36) में उल्लेखित किया गया है।'

'आओ, तुम और मैं दोनों मिलकर उनसे प्रार्थना करें,' संत निकोलस ने कहना जारी रखा, 'और फिर जो कुछ भी अधूरा रह गया है, उसका एक अच्छा अंत होगा: धर्मी सिमीओन के पास परमेश्वर के सामने बड़ी शक्ति और साहस है, जो परमेश्वर की अति पवित्र माता, कुँवारी माता, और संत यूहन्ना अग्रदूत के साथ उनके सिंहासन के पास खड़े हैं।'

यह कहकर, संत निकोलस विदा हो गए।

हालाँकि, पतरस जागकर, एक बार फिर से भक्तिपूर्ण प्रार्थना और अनंत विनती में लग गया, और संत निकोलस तथा ईश्वर-स्वीकारकर्ता संत सिमोन से अपनी सहायता के लिए आने का आह्वान करने लगा।

जब परम कृपालु ईश्वर, अपने महान संतों की विनतियों से प्रेरित होकर, उस पीड़ित को उसके बंधनों से मुक्त करने के लिए कृपा करने को उद्यत हुए, तो, दैवी इच्छा से, मसीह के संत, संत निकोलस, पीटर के सामने तीसरी बार प्रकट हुए—पहले की तरह सपने में नहीं, बल्कि वास्तविकता में, और अकेले नहीं, बल्कि संत सिमिओन ईश्वर-स्वीकारकर्ता के साथ।

'हौसला रखो, हे भाई पतरस,' संत ने कहा, 'और अपना दुःख त्यागकर, हमारे साझा मध्यस्थ और मेरे सह-प्रार्थक को अपनी मनचाही बातें बताओ, और ईश्वर के नाम पर उसकी धन्यवाद करो।'

पतरस ने अपनी आँखें उठाकर देखा तो उन्होंने संत सिमोन को एक गौरवशाली रूप में, एक दिव्य प्रकाश से घिरे हुए, हाथ में एक सुनहरी राजदंड लिए और पुराने नियम के पुरोहित के एपोड[4339] से परिधानित देखा। इस अद्भुत संत को देखकर पतरस भय और श्रद्धा से भर गया। लेकिन संत सिमोन ने उससे कहा: 'क्या तुमने ही भाई निकोलस से विनती की थी कि वे तुम्हें तुम्हारे बंधनों से मुक्त करें?'

पीटर भय के मारे संत सिमोन को उत्तर देने के लिए मुश्किल से अपना मुँह खोल सका:

'यह मैं ही हूँ, ईश्वर का सेवक, – जिसने तुम्हें ईश्वर के समक्ष अपना मध्यस्थ भी बनाया है।'

'क्या तुम अपना व्रत पूरा करोगे,' संत सिमोन ने उससे कहा, 'कि एक भिक्षु बनोगे और एक सदाचारी जीवन जियोगे?'

पीटर ने उत्तर दिया, 'हाँ, प्रभु, ईश्वर की मदद से मैं इसे पूरा करूँगा।'

संत ने कहा:

'यदि आप ऐसा करने का वादा करते हैं, तो आप बिना किसी बाधा के यहाँ से जा सकते हैं और जहाँ चाहें जा सकते हैं: कोई भी बाधा आपको यहाँ नहीं रोक सकती।'

तब पतरस ने संत को अपने पैर दिखाए, जो लोहे में जकड़े हुए थे, और जैसे ही संत सिमियोन ने अपने सुनहरे दंड से बेड़ियों को छुआ, लोहा तुरंत ही पिघल गया, जैसे आग में मोम पिघलता है। इसके बाद, पीटर अपने पैरों पर खड़ा हो गया और, जब उसने देखा कि जेल का दरवाज़ा खुला हुआ है, तो वह बाहर निकल गया और संत सिमियिन और निकोलस के पीछे चल पड़ा। जब वे शहर से बाहर पहुँच चुके थे, तो पीटर ने अपनी स्थिति पर विचार करते हुए कहा:

'क्या मैं जो कुछ भी देख रहा हूँ वह एक सपने में हो रहा है?'

तब संत सिमियोन, उसकी ओर मुड़कर, बोले:

'तुम ईश्वर की उस दया को, जो तुम्हारे प्रति इतनी स्पष्ट रूप से प्रकट हो रही है, सपना क्यों समझ रहे हो? क्या तुम यह स्पष्ट रूप से नहीं देख सकते कि तुम कहाँ हो और किसका अनुसरण कर रहे हो?'

यह कहकर, संत सिमोन ने पतरस को संत निकोलस के हवाले कर दिया, और पतरस संत के पीछे चल पड़ा। जब दिन हुआ, तो संत निकोलस ने पतरस से पूछा:

'क्या तुमने यात्रा में अपना पेट भरने के लिए कुछ लिया है?'

[4339] एफोद – महायाजक का बाहरी वस्त्र, जो सोने, महीन सूती कपड़े और ऊन के दो टुकड़ों से बुना हुआ होता था, और तीन रंगों में होता था: नीलम, बैंगनी और स्कारलेट; कंधों पर कपड़े के टुकड़ों को दो कंधे के पट्टों से जोड़ा गया था, जिन पर बारह पत्थरों पर इज़राइल के कबीलों के नाम चमकते थे; नीचे, एफ़ोद के सिरों को रिबन से बांधा गया था। जहाँ तक याजकों का सवाल है, उनका एफ़ोद सादे लिनिन का बना होता था।

– नहीं, महोदय, मैंने कुछ भी नहीं लिया है, – पीटर ने उत्तर दिया। तब सेंट निकोलस ने उससे उस स्थान के पास ही एक सब्जी के खेत में जाने के लिए कहा और कहा:

'वहाँ तुम एक आदमी को देखोगे जो तुम्हें कुछ फल देगा। यात्रा के लिए जितना चाहो ले लो और मेरा अनुसरण करना।'

पीटर को वास्तव में सब्जी के बगीचे में एक आदमी मिला जिसने उसे फल दिए; उन्हें लेकर, पीटर ने एक बार फिर संत निकोलस का अनुसरण किया, और उनकी संगत में वह जल्द ही ग्रीक भूमि पर पहुँच गया। फिर संत निकोलस ने पीटर से कहा: 'देखो, भाई, अब तुम अपनी ही भूमि में हो, और तुम्हारे पास अपना व्रत पूरा करने का समय है। इसे जल्द पूरा करो, नहीं तो तुम खुद को फिर से समारा के कालकोठरी में पाओगे।"

इन शब्दों के बाद, मसीह के संत सेंट निकोलस अदृश्य हो गए। पतरस ने ईश्वर और अपने मध्यस्थों – सेंट निकोलस और सेंट समियिन – की स्तुति करने के बाद तुरंत अपनी योजना को अंजाम देने की इच्छा व्यक्त की। वह अपने रिश्तेदारों से मिलने घर नहीं गया, बल्कि *'परमप्रभु के प्रति अपनी प्रतिज्ञाएँ पूरी करने'* (नीतिवचन 7:14) और अपनी दुख की घड़ियों में जो कुछ भी उसने कहा था, उसे पूरा करने के लिए पुराने रोम[4340] की ओर चल पड़ा। मसीह के संत निकोलस ने, पीटर को अपनी सुरक्षा में लेकर, उसे कभी नहीं छोड़ा; और जैसे उन्होंने अरब से ग्रीस तक की पीटर की यात्रा के दौरान अदृश्य रूप से साथ दिया था, वैसे ही ग्रीस से इटली तक की उसकी यात्रा के दौरान भी वे अदृश्य रूप से उसके साथ रहे। संत निकोलस लगातार उस पर नजर रखते थे, एक प्यार करने वाले पिता या एक दयालु शिक्षक की तरह उस पर दया दिखाते हुए, एक चौकस और हमेशा मौजूद रक्षक के रूप में।

जैसे ही पतरस रोम पहुँचे, संत निकोलस रात में एक सपने में पोप के सामने प्रकट हुए, उस व्यक्ति का हाथ पकड़े हुए और उसे पोप को दिखाते हुए; उन्होंने विस्तार से बताया कि कैसे उन्होंने उसे समारा की जेल से मुक्त कराया था, और यह भी बताया कि इस व्यक्ति ने पवित्र प्रमुख प्रेरित पतरस की कब्र पर संन्यास का व्रत लेने का संकल्प लिया था। संत ने उस व्यक्ति का नाम भी बताया और पोप को आज्ञा दी कि वे उसे स्वीकार करें और जल्द ही उसकी इच्छा पूरी करें। जागने पर और उस दर्शन पर विचार करने के बाद, पोप दिव्य लिटिर्जी (पवित्र बलि) का अनुष्ठान करने के लिए प्रमुख प्रेरित संत पीटर के चर्च में गए, इस उम्मीद में कि वे उस व्यक्ति को व्यक्तिगत रूप से देख सकें जिसे उन्होंने अपने सपने में देखा था। लेकिन चूँकि रविवार था, चर्च में एक बड़ी भीड़ जमा हो गई थी, और इसलिए पोप उस बड़ी भीड़ में उस व्यक्ति को ढूँढ़ नहीं सके जिसकी वह तलाश कर रहे थे। फिर, लंबे समय तक खोजने के बाद, पोप ने ज़ोर से पुकारा:

'पीटर, जो ग्रीस की भूमि से आया था, जिसे संत निकोलस ने समारा की जेल से मुक्त किया था – मेरे पास आओ।'

पीटर तुरंत भीड़ से बाहर निकला, पोप के पास गया और उनके पैरों पर गिरते हुए कहा:

'मैं यहाँ हूँ, आपका सेवक, परम पावन।'

पीटर ने पोप से अपनी हैरानी व्यक्त की कि उन्होंने उसे नाम से, पीटर, कहा था, जबकि पोप न तो उसे जानते थे और न ही कभी देखा था, और पीटर ने खुद अपनी रिहाई के बारे में किसी को कुछ नहीं बताया था।

इस पर पोप ने उत्तर दिया:

'पतरस, इस पर आश्चर्य मत करो – महान संत निकोलस ने मुझे तुम्हारे बारे में सब कुछ बता दिया है।'

इसके बाद, पोप ने पीटर का प्रेमपूर्वक स्वागत किया और जैसा कि उन्होंने वादा किया था, उसे प्रेरित की कब्र पर मुंडन संस्कार दिया। मुंडन संस्कार के बाद, पोप ने पीटर को काफी समय तक अपने पास रखा, उसे मोक्ष के मार्ग पर सिखाते और निर्देश देते रहे; और फिर, ईश्वर की आज्ञा से, उन्होंने उसे इन शब्दों के साथ रोम से विदा कर दिया:

'जाओ, मेरे बच्चे, जहाँ भी ईश्वर तुम्हें ले जाना चाहें। उनकी कृपा तुम पर बनी रहे, जो तुम्हारे मार्गदर्शन करे और तुम्हें शैतान की चालों से बचाए।'

धन्य पतरस, पोप के चरणों में गिरकर, कहने लगा:

'विदा, आदरणीय पिता; विदा, मसीह के शिष्य और मेरे संरक्षक, संत निकोलस के साथी; और मेरे लिए प्रार्थना करना, एक पापी के लिए।'

[4340] यह नाम इटली में टिबर नदी पर स्थित रोम को दिया गया था, जिसे न्यू रोम, यानी कॉन्स्टेंटिनोपल से अलग करने के लिए कहा जाता था।

पोप का आशीर्वाद प्राप्त करने और सभी पुरोहितों से विदा लेने के बाद, पीटर ईश्वर की मध्यस्थता में विश्वास करते हुए और ग्रीस की भूमि पर लौटने की इच्छा के साथ रोम से निकल पड़े। जब वे समुद्र तट पर पहुँचे, तो उन्होंने पूर्व की ओर जा रही एक नाव देखी; वे उसमें चढ़ गए और प्रस्थान कर गए। हवा अनुकूल थी, और यात्रा सुचारू रूप से शुरू हुई।

वे बिना रुके बहुत समय तक नौकायन करते रहे, और केवल रोटी की कमी ने ही नाविकों को एक गाँव के पास लंगर डालने के लिए मजबूर किया। फिर नाविक रोटी बनाने के लिए गाँव के एक घर में गए, और वहाँ उन्होंने घर के मालिक और उसके पूरे परिवार को बीमार पाया। वहाँ उन्होंने कुछ रोटी पकाई और उसे चखने के बाद, अपने ही एक साथी से कहा: 'यह गर्म रोटी ले जाओ और इसे नाविक और पुरोहित के लिए जहाज पर वापस ले जाओ।'

पिता के बारे में सुनकर, घर के मालिक ने नाविकों से पूछा कि कौन सा पिता उनके साथ यात्रा कर रहा था। नाविकों ने उसे बताया कि रोम का पीटर नाम का एक भिक्षु उनके साथ यात्रा कर रहा था।

तब घर के मालिक ने नाविकों से कहा, 'मैं आपसे विनती करता हूँ, महाशयगण, कृपया उस पिता से कहिए कि वे हमारे इस कष्ट में हमारे लिए प्रार्थना करने और हमें आशीर्वाद देने के लिए मेरे घर आएँ। क्योंकि आप देख सकते हैं कि हम इस भयानक बीमारी से लगभग मर रहे हैं।'

नाविकों ने जाकर पादरी को इस बारे में बताया। पहले तो, विनम्रता के कारण और अपने ऊपर ध्यान आकर्षित नहीं करना चाहने से, पीटर ने उस व्यक्ति के पास जाने से इनकार कर दिया; लेकिन फिर, उनकी विनतियों से प्रेरित होकर और करुणा से भरकर – क्योंकि वह जानता था कि उस व्यक्ति की मृत्यु वास्तव में निकट थी – वह चल पड़ा। घर में प्रवेश करते ही, उसने कहा: 'इस घर पर और इसमें रहने वालों पर शांति हो' (तुलना करें मत्ती 10:12)। पतरस के शब्दों पर, घर का स्वामी तुरंत अपनी गंभीर बीमारी से चंगा हो गया और, फिर से स्वस्थ महसूस करते हुए, वह अपनी बिस्तर से उठकर जैसे नींद से जागा हो, धन्यवाद के आँसुओं के साथ संत के पैरों पर गिर पड़ा और उन्हें चूमने लगा। जो भी इस चमत्कारी उपचार के गवाह बने, वे चकित हो गए और उन्होंने ईश्वर की स्तुति की। मेज़बान, जो स्वस्थ हो चुका था, ने पूजनीय संत का हाथ पकड़ा और उन्हें उन सभी बिस्तरों पर ले गया जहाँ बीमार पड़े थे। पूजनीय संत ने प्रत्येक बीमार पर सूली का चिह्न बनाया, और वे अपनी बीमारियों से ठीक हो गए। इसके बाद, संत पतरस जहाज़ पर वापस दौड़े, जहाँ उपस्थित सभी लोग ईश्वर के एक महान सेवक के रूप में उनके सामने नतमस्तक हो गए। ठीक हुआ व्यक्ति, अपने पूरे परिवार के साथ, रोटी, शराब और तेल लेकर, उन्हें मिली चंगाई के लिए रेवरेंड को धन्यवाद देने जहाज़ पर आया। संत ने उनकी भक्ति की प्रशंसा की, लेकिन उन्हें यह निर्देश दिया कि वे धन्यवाद उन्हें नहीं बल्कि ईश्वर को दें; और उन्होंने भेंटें स्वीकार नहीं कीं। तब वह आदमी, रोते हुए संत के पैरों पर गिर पड़ा और कहा: 'हे मसीह के प्रिय सेवक, यदि आप हमारे हाथों से यह छोटी सी भेंट स्वीकार नहीं करते हैं, तो हमारे घर में कोई खुशी नहीं होगी।'

इसी समय, नाविकों ने भी पादरी पिता से उपहार स्वीकार करने का आग्रह किया। तब कहीं जाकर पादरी पिता अनिच्छा से उन्हें स्वीकार करने के लिए सहमत हुए; बाद में, अपना आशीर्वाद देने के बाद, उन्होंने उस व्यक्ति और उसके साथ आए लोगों को विदा कर दिया, और स्वयं उनमें से कुछ का स्वाद भी चखे बिना, वे भेंटें नाविकों को दे दीं। यात्रा के बाकी समय के लिए, रेवरेंड का भोजन शाम को रोटी का एक टुकड़ा था, और उनका पेय समुद्र का (कड़वा) पानी था, जिसे प्रभु ने उनके लिए मीठे पानी में बदल दिया।

एक बार, पूजनीय पीटर को झपकी आ गई और, एक दर्शन में, उन्होंने परम पवित्र देवी, ईश्वर की कुंवारी माता को स्वर्गीय महिमा के प्रकाश से सूर्य से भी अधिक चमकते हुए देखा; और उनके बगल में संत निकोलस खड़े थे, जो सम्मानपूर्वक उनके सामने झुके हुए थे। संत निकोलस ने पीटर की ओर इशारा करते हुए ईश्वर की माता से कहा: 'हे देवी! आपने अपने सेवक को उसके भारी बंधनों से मुक्त करने की कृपा की है; आप स्वयं उसे वह स्थान दिखाएँ जहाँ वह अपना जीवन समाप्त कर सके।"

'माउंट अथोस पर[4341] ,' ईश्वर की माता ने उत्तर दिया, 'उसे विश्राम मिलेगा। यह स्थान मेरा हिस्सा है, जो मुझे मेरे पुत्र और ईश्वर ने दिया है, ताकि जो लोग सांसारिक कलह को त्यागकर अपनी पूरी क्षमता से आध्यात्मिक संघर्षों

[4341] माउंट अथोस (अथोस), जिसका ग्रीक में अर्थ 'पवित्र पर्वत' है, एक संकीर्ण, पहाड़ी प्रायद्वीप है जो द्वीपसमूह (एजियन सागर) में आगे बढ़ा हुआ है, और यह ग्रीक पूर्व के लिए मठवासी जीवन के केंद्र के रूप में जाना जाता है। प्राचीन काल में यहाँ मठवासी जीवन का उदय हुआ, हालांकि यह सीरिया और फिलिस्तीन की तुलना में कुछ बाद की बात है। रूसी चर्च के लिए, 17वीं सदी तक अथोस का बहुत महत्व था। यहीं पर रूसी मठवाद के जनक, परम आदरणीय एंथनी ने अपने संन्यास की शपथ ली थी; यहीं से संत थियोडोसियस ने अपने (पेचेरस्क) मठ के लिए स्टुडाइट

को अपनाते हैं, और वशि्वास और प्रेम से मेरा नाम पुकारते हैं, वे इस क्षणकि जीवन को बनिा दुख़ के जएिं और, अपने दैवीय कर्मों के लएि, अनंत जीवन का वारसि बनें। मैं उस स्थान से बहुत प्रेम करती हूँ और भक्षिुओं की संख्या बढ़ाना चाहती हूँ, जनिसे मेरे पुत्र और ईश्वर की दया कभी दूर नहीं होगी, बशर्ते वे उद्धार करने वाले आज्ञाओं का पालन करें। मैं उस पहाड़ पर दक्षणि और उत्तर की ओर मठों का प्रसार करूँगा, और साधु इस पहाड़ पर एक समुद्र से दूसरे समुद्र तक का अधकिार रखेंगे, और उनका नाम पूरे ब्रह्मांड में महमिामय होगा – मैं माउंट अथोस पर उपवास में धैर्यपूर्वक परशि्रम करने वालों की रक्षा करूँगा।'

परम पूज्य पतरस को यह दर्शन मलिा। अपनी नींद से जागने पर, उन्होंने मसीह ईश्वर, उनकी परम पवत्रि माता, और महान संत नकिोलस का धन्यवाद और स्तुतकिी। जहाज़, अनुकूल हवा के साथ, तेज़ी से चल रहा था। लेकनि जैसे ही वे माउंट अथोस के कनिारे के पास पहुँचे, जहाज़ रुक गया, भले ही हवा पालों को भर रही थी और पानी गहरा था। तब नावकिों ने एक-दूसरे से भयभीत होकर पूछना शुरू कर दयिा: 'इसका क्या मतलब है?'

पीटर ने उनकी हैरानी देखकर कहा:

'बच्चों, मुझे बताओ, इस जगह का क्या नाम है?'

नावकिों ने उससे कहा, 'यह माउंट अथोस है।'

संत ने उनसे कहा, 'मुझे लगता है कयिह जहाज मेरी ही खातरि रुक गया है। मुझे कनिारे ले जाओ और वहीं छोड़ दो। अगर तुम ऐसा नहीं करोगे, तो तुम यहाँ से आगे नहीं बढ़ पाओगे।'

नावकि, ईश्वर की इच्छा के वरिुद्ध जाना नहीं चाहकर, बहुत दुख के साथ पवत्रि पति से वदिा हुए। वे तट के पास पहुँचे और संत को जहाज से बाहर नकिालकर, उन्हें वहाँ छोड़ दयिा, और रोते-बलिखते हुए कहने लगे:

'आज हम एक महान सुरक्षा और मदद से वंचति हो गए हैं।'

'ईश्वर दयालु है,' संत ने उन्हें सांत्वना दी, 'वह सर्वत्र है और सभी चीजों को पूरा करता है; वह आपका साथी होगा और आपको हर बुराई से बचाएगा।'

यह कहने के बाद, पूज्य ने नावकिों को प्रभु के नाम पर वदिाई दी, जहाज पर पवत्रि क्रॉस का चह्नि लगाया, उन सभी को आशीर्वाद दयिा, और उन्हें शांतसि वदिा कयिा। वे स्वयं चट्टानी क्षेत्रों की ओर चल पड़े, कई दलदलों, दरारों और जंगलों से होते हुए, जब तक कउिन्हें रहने के लएि एक बहुत ही अँधेरी गुफा नहीं मलि गई, जहाँ कई रेंगने वाले जीव और यहाँ तक करिाक्षस भी थे। यह कहना असंभव है कसिम्माननीय पादरी ने वहाँ राक्षसों के हाथों कतिनी परीक्षाएँ झेलीं, या उन्होंने कतिनी वपित्तयिाँ सहन कीं। यहाँ, शक्षिा के लएि, हम केवल उनमें से कुछ का ही स्मरण करेंगे।

उपरोक्त गुफा में बस जाने के बाद, आदरणीय पीटर ने दनि-रात प्रार्थना में बतिाए, और दो सप्ताह तक पूरी तरह से भोजन से परहेज़ कयिा। शैतान ऐसी तपस्या सहन नहीं कर सका: उसने अपनी सारी सेना इकट्ठी की और उन्हें तीरों और धनुषों, तलवारों और भालों से युद्ध के लएि तैयार कर, एक भयानक और प्रचंड चीख के साथ गुफा में घुस पड़ा, ताकि संत को बाहर नकिाल सके। तब कुछ राक्षसों ने अपने धनुष तानकर संन्यासी को तीरों से धमकाया, जबकि अन्य भाले लहरा रहे थे; कुछ ने अपनी तलवारें म्यान से नकिालकर उसकी पसलयिों को भेदने का इरादा कयिा, जबकि अन्य इतनी ज़ोर से बड़े-बड़े पत्थर फेंक रहे थे कि धरती हलि गई और गुफा ढहने के खतरे में पड़ गई। रेवरेंड फादर, जनिके बचने की कोई उम्मीद नहीं थी, बस दोहराए: 'अगर मेरे ईश्वर की यही इच्छा है, तो मैं यहीं मर जाऊँगा।'

तब, उन्होंने स्वर्ग की ओर अपनी आँखें उठाईं और अपने हाथ उठाकर पुकारा: 'हे परमेश्वर की अतपिवत्रि माता, कुँवारी मरयिम, हे मेरी स्वामनिी, मेरी सहायता करो।'

जैसे ही राक्षसों ने ईश्वर की माता का नाम सुना—जो उनके लएि भयानक और भयंकर था, परन्तु हमारे लएि मधुर और अनुग्रहकारी है—वे शोर मचाते हुए गायब हो गए, जबकि संत, ऊँचे स्वर में प्रभु यीशु मसीह का नाम पुकारते हुए—'हे प्रभु यीशु मसीह, मुझे न छोड़ो' – ने भाग रहे दुष्टात्माओं को जैसे चाबुक या गुलेल से भगा दयिा। उस समय से, दुष्टात्माओं की चालाकयिाँ कुछ समय के लएि रुक गईं, और संत पतरस, शांतसि रहते हुए, परमेश्वर और परमेश्वर की अतपिवत्रि माता की महमिा करने लगे। पहाड़ पर अपने प्रवास की शुरुआत में, आदरणीय पति का भोजन रोटी था, जसिे उन्होंने जहाज़ ' ' से थोड़ी मात्रा में लयिा था, और बाद में, जब रोटी खत्म हो गई, तो उस पहाड़ पर उगने वाले रेगस्तिानी

नयिम अपनाया था, जो फरि, एक वंशावलीकार के अनुसार, अन्य मठों में फैल गया; यहीं, समृद्ध मठों की पुस्तकालयों में, माउंट अथोस की यात्रा करने वाले हमारे संतों (जैसे कसिोरा के संत नीलस) ने उस समय उपलब्ध सबसे व्यापक धार्मकि शक्षिा प्राप्त की।

अनाज और जंगली पेड़ों के फल थे। इस प्रकार संत पतरस ने तब तक अपना जीवन यापन किया जब तक कि एक स्वर्गदूत ने उनके लिए स्वर्ग से मन्ना लाना शुरू नहीं कर दिया, इस विषय पर हम बाद में चर्चा करेंगे। फिलहाल, हालांकि, आइए क्रम से आगे बढ़ें।

उपरोक्त शत्रु आक्रमण के पचास दिन बाद, शैतान, अपनी विशाल सेना के साथ, ठीक वैसे ही जैसे उसने पहली बार किया था, मसीह के अजेय योद्धा पर हमला करने के लिए निकल पड़ा; इस उद्देश्य के लिए, शैतान ने उस पहाड़ पर मौजूद हर जानवर और हर रेंगने वाले जीव को उस गुफा में आने के लिए मजबूर कर दिया जहाँ वह पूजनीय रहता था; और उनके साथ, उसने स्वयं और अपने साथियों को भी वहाँ पहुँचाया, जिन्होंने खुद को भी विभिन्न जानवरों और जीवों में बदल लिया था। तब एक भयानक और डरावना दृश्य सामने आया: कुछ जानवर संत के पैरों तले रेंग रहे थे, कुछ भयानक आवाज़ में फुफकार रहे थे, जबकि कुछ, अपने जबड़े खोलकर संत पर झपट रहे थे, ऐसा लग रहा था मानो वे उन्हें जीवित ही निगल जाना चाहते हों। सम्माननीय पिता ने, स्वयं को क्रॉस के चिह्न से सुरक्षित करके और हमारे ईश्वर मसीह तथा परमेश्वर की अति पवित्र माता के नाम का आह्वान करके, उनकी शक्ति को नष्ट कर दिया और उन्हें अपने से बहुत दूर भगा दिया, तथा अपने उद्धारकर्ता ईश्वर की स्तुति और आनंद मनाया।

रेवरेंड ने अपने जीवन का पहला वर्ष एक तपस्वी के रूप में राक्षसों के साथ बार-बार संघर्ष करते हुए बिताया। इसके बाद, शैतान ने रेवरेंड को अन्य तरीकों से प्रलोभित करना शुरू कर दिया।

इस प्रकार, उसने पीटर के उन युवा सेवकों में से एक का रूप धारण कर लिया, जिन्होंने दुनिया में उनके सैन्य कमांडर रहते हुए उनकी सेवा की थी; इस युवक के भेष में, शैतान रेवरेंड फादर के पास आया और घृणा से भरकर, संत को चूमने की इच्छा से उन पर झपट पड़ा। तब, रोते हुए, उन्होंने कहना शुरू किया: 'हमने सुना है, हमारे प्रभु, कि आपको युद्ध में बंदी बना लिया गया था, सिमारा ले जाया गया और वहाँ एक भयानक कालकोठरी में कैद कर दिया गया था, और कैसे ईश्वर ने, हमारे पवित्र पिता निकोलस की प्रार्थनाओं के द्वारा, आपको उस कालकोठरी से मुक्त किया और आपको ग्रीस की भूमि पर लाया।' यह जानकर, हम सब—आपका परिवार—रोते-बिलखते हुए आपको ढूंढने निकले, कई कस्बों और गांवों में घूम-घूम कर आपके बारे में पूछते रहे। जब आपको न पाया, और यह न जानते हुए कि आप कहाँ थे, हमने संत निकोलस से आँसुओं के साथ प्रार्थना की, कि वह हमें बताएँ कि आप—हमारे सबसे कीमती खजाने—कहाँ ठहरे हुए थे। संत निकोलस, जो सभी के त्वरित सहायक हैं, ने हमारी प्रार्थनाओं को ठुकराया नहीं, बल्कि उन्होंने आपके बारे में सब कुछ हमें बता दिया, और हम, आपके सेवक, आनंदित हुए। जहाँ तक मेरी बात है, मैं किसी और से पहले आपके पास दौड़ा, और आप उठकर अपने घर लौट आए, ताकि जो कोई भी आपका चेहरा देखना चाहता है, वह आपको देख सके और उस ईश्वर की महिमा कर सके, जिसने चमत्कारिक रूप से आपको बंधन और कैद से मुक्त किया। जहाँ तक मौन का प्रश्न है, दुखी न हों, क्योंकि वहाँ भी मठ और संन्यासियों के मौन के लिए उपयुक्त स्थान हैं, और आप अपनी इच्छानुसार किसी भी मठ में निवास कर सकते हैं। इसके अलावा, आप स्वयं निष्पक्ष होकर निर्णय करें: ईश्वर अधिक किसका पक्ष लेते हैं – रेगिस्तान या पहाड़ी घाटियों में एक तपस्वी का जीवन, जो केवल स्वयं तपस्वी के लिए ही लाभदायक है, या एक ईश्वर-प्रसन्न और ईश्वर-प्रेरित व्यक्ति का जीवन, जो अपने उपदेश के माध्यम से कई लोगों को ईश्वर की ओर मोड़ता है और उन्हें मोक्ष के मार्ग पर मार्गदर्शन करता है? निस्संदेह, दूसरा बेहतर है, जैसा कि स्वयं ईश्वर पवित्र धर्मग्रंथ में गवाही देते हैं: 'तुम व्यर्थ की चीज़ों से कीमती चीज़ें निकालोगे,' वे कहते हैं, 'और तुम मेरे मुख के समान होगे' (देखें यिर्म. 15:19)। क्योंकि आप जानते हैं कि हमारे नगर में बहुत से लोग अपनी वासनाओं की गहराई में डूबे हुए हैं और उन्हें पश्चाताप के लिए बुलाने वाले ऐसे पुरुष की आवश्यकता है। हे स्वामी, यदि आप आकर उन्हें ईश्वर की ओर मोड़ते हैं, तो आपको ईश्वर से और भी बड़ा प्रतिफल मिलेगा। फिर आप हम अपने सेवकों का, जो आपसे पूरे हृदय से प्रेम करते हैं, हमसे मुँह फेरकर और मरुभूमि में छिपकर, तिरस्कार क्यों करते हैं?"

दैत्य ने ये और कई समान शब्द आँसुओं के साथ कहे, जिससे संत कुछ चकित रह गए और आँसुओं भरी आँखों से उससे कहा: 'मुझे यहाँ न तो किसी मनुष्य ने, न किसी स्वर्गदूत ने, बल्कि स्वयं परमेश्वर और परमेश्वर की अति पवित्र माता ने लाया है; और जब तक वे मुझे इस स्थान को छोड़ने का आदेश नहीं देते, मैं यहाँ से नहीं जाऊँगा।'

लेकिन दानव, ईश्वर और ईश्वर की माता का नाम सुनते ही, तुरंत ही अदृश्य हो गया। संत दानव की चालाकी से चकित तो हुए, लेकिन, खुद को क्रॉस के चिह्न से सुरक्षित करके और अपना मन ईश्वर में केंद्रित करके, वे शांत रहे।

सात साल बाद, उस धूर्त शत्रु ने एक बार फिर स्वयं को एक तेजस्वी देवदूत में बदल लिया और हाथ में खींचा हुआ हथियार लेकर गुफा के पास खड़ा होकर, चिल्लाया:

'पतरस, मसीह के सेवक, मेरे पास आओ, और मैं तुम्हें शुभ समाचार दूँगा।'

'तुम कौन हो,' संत ने उत्तर दिया, 'जो मुझे शुभ समाचार देना चाहते हो?'

'मैं प्रभु का महादूत हूँ,' चालाक धोखेबाज़ ने उत्तर दिया, 'जो तुम्हारे पास भेजा गया हूँ। दृढ़ रहो, हौसला रखो, आनंदित और प्रसन्न रहो, क्योंकि परमेश्वर ने तुम्हारे लिए एक गौरवशाली सिंहासन और एक न मुरझाने वाला मुकुट तैयार किया है। अब, हालाँकि, इस जगह को छोड़ दो और दुनिया में निकल जाओ ताकि बहुतों को लाभ पहुँचा सको। क्योंकि तुम्हारे पास का जल का स्रोत भी ईश्वर की आज्ञा से सूख गया है, ताकि वे सभी जानवर जो तुम्हें डराते थे, प्यास से मर जाएँ।

यह कहकर, धूर्त शत्रु ने ईश्वर की अनुमति से, धारा के प्रवाह को रोकने के लिए एक और राक्षस भेजा। लेकिन संत पतरस ने, विनम्र बुद्धिमानी से, शैतान के चापलूसी भरे शब्दों का इस प्रकार उत्तर दिया:

'मैं कौन हूँ—एक बदबूदार कुत्ते से बढ़कर कुछ नहीं—कि प्रभु का महादूत मुझ पर प्रकट हो?'

'प्रभु के सेवक, इस पर आश्चर्य मत करो,' दानव ने उत्तर दिया। 'इस क्षण तुमने मूसा, एलिय, दानियेल और योब को भी पीछे छोड़ दिया है: तुमने मूसा और एलिय को विनम्रता में; दानियेल को—उन साँपों और जानवरों के द्वारा जिनके मुँह तुमने बंद कर दिए; और योब को—अपने धैर्य से; इसलिए स्वर्ग में तुम्हें महान कहा जाएगा। 'उठो और देखो—पानी पहले ही सूख चुका है—दुनिया में पड़े मठों में जाओ; मैं तुम्हारे साथ रहूँगा और, तुम्हारे द्वारा, मैं कई लोगों को बचाऊँगा,' सर्वशक्तिमान प्रभु कहते हैं।

संत ने दानव से उत्तर दिया, 'यह तुम्हें ज्ञात हो जाए कि मैं इस स्थान को तब तक नहीं छोड़ूँगा जब तक मेरी सहायिका—परमेश्वर की अति पवित्र माता—और मेरी कष्टों में प्रबल मध्यस्थ—संत निकोलस—मुझे ऐसा करने का निर्देश न दें।'

दैत्य, ईश्वर की माता और संत निकोलस के नाम सुनते ही तुरंत गायब हो गया। संत ने, शैतान की चालाकी और उसके साथ उसकी शक्तिहीनता को पहचानते हुए, ईश्वर की ओर मुड़कर कहा: 'हे प्रभु यीशु मसीह, मेरे ईश्वर! यह मेरा शत्रु एक गरजते हुए सिंह की तरह मँडराता है, मुझे निगलने की खोज में (देखें 1 पतरस 5:8), परन्तु आप अपने शक्तिशाली हाथ से अपनी दास, मुझे ढालते हैं। मैं आपको धन्यवाद देता हूँ, क्योंकि आपने मुझे नहीं छोड़ा; मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ, हे परम कृपालु प्रभु, अंत तक मुझे न छोड़ें।'

उस रात बाद में, एक सपने में, ईसाइयों की शीघ्र सहायिका, दयालु महिला, सर्वपवित्र कुँवारी मरियम, संत निकोलस के साथ मिलकर पूजनीय पीटर के सामने प्रकट हुईं और कहा:

'अब शैतान की युक्तियों से मत डरो, क्योंकि प्रभु तुम्हारे साथ है। प्रभु का स्वर्गदूत सुबह तुम्हारे पास आएगा और तुम्हें खाने के लिए मन्ना लाएगा, क्योंकि परमेश्वर ने उसे आज्ञा दी है कि वह तुम्हारे जीवन के बाकी दिनों तक हर चालीस दिन पर तुम्हारे पास तुम्हें खिलाने के लिए लाए।'

संत पतरस को मन्ना दिखाते हुए, परमेश्वर की अति पवित्र माता ने कहा:

'यह भोजन तुम्हें जीवन भर हर चालीस दिन पर दिया जाएगा।'

यह कहकर और संत पतरस को शांति का चिन्ह देकर, परमेश्वर की माता उनके पास से चली गईं। पतरस, हालाँकि, प्रणाम करके उस स्थान को चूमने लगा जहाँ परमेश्वर की माता और संत निकोलस के पैर खड़े रहे थे। सुबह, परमेश्वर का स्वर्गदूत प्रकट हुआ, ठीक वैसे ही जैसे परमेश्वर की माता ने भविष्यवाणी की थी, उसने पतरस को स्वर्गीय भोजन लाकर दिया, और उसे दे देने के बाद, वह चला गया। तब पतरस ने परमेश्वर और परमेश्वर की अति पवित्र माता का धन्यवाद किया; फिर उसने स्वर्गदूत के हाथों से लाया गया मानना चखा, और उससे इतना बल मिला कि वह चालीस दिनों तक बिना भोजन के रह सका। उसके बाद, हर चालीस दिनों में, देवदूत आदरणीय संत को मन्ना लाता था, और संत पतरस चालीस दिनों तक उसी पर जीवित रहते थे। इस प्रकार पूजनीय पिता ने मौन, उपवास और प्रार्थना में 53 वर्ष व्यतीत किए। इस समय के दौरान, शैतान की सभी चालाकियाँ—जिन्होंने शुरुआत में पतरस को विशेष रूप से परेशान किया था—बंद हो गईं: प्रकट होने वाली आकृतियाँ, भ्रम और भय ईश्वर की मदद से उनसे दूर हो गए। इतने वर्षों तक पहाड़ पर रहने के बाद, पूजनीय पिता ने कोई मानव चेहरा नहीं देखा, उनके पास अपने शरीर के नग्न भाग को ढकने के लिए कोई कपड़ा नहीं था, और उनके पास वह कुछ भी नहीं था जिसकी मानव स्वभाव को आवश्यकता होती है; केवल आकाश ही उनका आश्रय था, और पृथ्वी ही उनका बिस्तर। गर्मियों में वह सूरज की तपिश से झुलस जाता था; सर्दियों में ठंड से जम जाता था: उसने यह सब ईश्वर के प्रेम और आने वाले पुरस्कार के लिए सहन किया।

जब प्रभु ने लोगों को अपने सेवक को प्रकट करने की कृपा की, तो उनकी विशेष व्यवस्था से निम्नलिखित घटना घटी। एक शिकारी, अपना धनुष और तीर-थैला लेकर, माउंट अथोस पर शिकार के लिए निकल पड़ा। चट्टानी इलाकों और गहरी घाटियों से होते हुए, जिनके बीच ऊँची और अनगिनत पहाड़ियाँ थीं, वह उस स्थान पर पहुँचा जहाँ पूजनीय पीटर ने एक दैवीय जीवन व्यतीत किया था। जैसे ही शिकारी उस स्थान के पास पहुँचा, उसने जंगल से एक बड़ा हिरण निकलते देखा, जो मस्ती में उछलता हुआ उससे आगे दौड़कर दूर चला गया। उस शानदार हिरण को देखकर, शिकारी ने उसका पीछा किया और पूरे दिन उसे मारने की कोशिश करता रहा, जब तक कि ईश्वर की इच्छा से, वह हिरण आदरणीय संत की गुफा तक नहीं पहुँच गया, जिसके ऊपर वह अचल खड़ा रहा। शिकारी ने हिरण पर नज़र बनाए रखी, और फिर उसने उस जानवर के दाईं ओर एक नग्न आदमी देखा, जिसकी मोटी दाढ़ी और घने बाल उसकी कमर तक आ रहे थे, और उसका शरीर एक जानवर की तरह उनमें ढका हुआ था। उस पूजनीय को देखकर, शिकारी बहुत डर गया और घबराहट में वापस भागा। तब संत पीटर ने, यह देखकर कि शिकारी पीछे भाग रहा था, ऊँचे स्वर में उसे पुकारा, और कहा: 'भाई! तुम क्यों डर रहे हो और मुझसे दूर भाग रहे हो? आखिरकार, मैं भी तुम्हारी ही तरह एक इंसान हूँ, न कि कोई दैवीय आत्मा, जैसा तुमने सोचा था। वापस आओ और मेरे पास आओ, और मैं तुम्हें अपने बारे में सब कुछ बताऊँगा, क्योंकि तुम्हें यहाँ प्रभु ने भेजा है।'

शिकारी ने वह आवाज़ सुनकर रुक गया और डर से काँपते हुए, उस पादरी के पास गया जिसने उसे पुकारा था। संत ने शिकारी को आश्वस्त किया, उसे गले लगाया, और प्रभु के नाम पर उसे चूमा; फिर, बैठकर, उन्होंने उससे बात करना शुरू किया, और अपने बारे में सब कुछ विस्तार से बताने लगे: कि कैसे, जब वह एक सैन्य कमांडर था, तो उसे युद्ध में पकड़ लिया गया था; कैसे उसे समारा के कालकोठरी में रखा गया था; कैसे, संत निकोलस और संत समियिन द गॉड-रसीवर की मध्यस्थता से, उसे अपनी बेड़ियों से मुक्त कर दिया गया था; कैसे वह रोम गया था और वहाँ से लौट आया था; कैसे वह इस पहाड़ पर बस गया था; और कैसे उसने संघर्ष किया, उसने क्या खाया, और उसने अकेलेपन में कितने साल बिताए—संक्षेप में, उसने शिकारी को अपना पूरा जीवन सुनाया। संत की कथा सुनकर शिकारी चकित रह गया; वह विस्मय से भर गया और गहरी भावना के साथ बोला: 'अब मुझे समझ आया कि प्रभु ने आपकी कृपा से मुझ पर कृपा की है: उन्होंने मुझे अपने छिपे हुए सेवक - आप, फादर - को देखने का सौभाग्य दिया है। आज से, मैं हमेशा आपके साथ रहूँगा, हे ईश्वर के सेवक।'

'ऐसा न हो, मेरे बच्चे,' जवाब में पूजनीय पिता ने कहा। 'पहले अपने घर लौट जाओ और खुद को परखो: क्या तुम तपस्या और संन्यास के अभ्यासों को पूरा कर सकते हो? और इस प्रकार खुद को परखो: मांस, शराब, पनीर और मक्खन, और सबसे बढ़कर अपनी पत्नी से परहेज़ करो; अपनी संपत्ति गरीबों को दे दो; लगन से प्रार्थना करो और उपवास करो, और एक पश्चात्तापी हृदय से खुद को परखो। इस तरह एक साल बिताओ, और जब यह समाप्त हो जाए, तो मेरे पास आओ, और जो कुछ भी ईश्वर को भाए, उसे तुम्हें पूरा करना है।"

यह कहने के बाद, संत ने शिकारी को एक प्रार्थना और एक आशीर्वाद प्रतिज्ञा के रूप में दिया। फिर, उसे उसके लोगों के पास वापस भेजते हुए, उन्होंने विदाई की सलाह के रूप में उससे कहा: 'मेरे बच्चे! शांति से जाओ, और जो रहस्य तुम्हें सौंपा गया है, उसे किसी को मत बताना: एक ऐसा खजाना जिसे बहुत से लोग जानते हैं, चुराया जा सकता है।'

शिकारी ने संत को प्रणाम किया और विदा ली, और ईश्वर की स्तुति और धन्यवाद करते हुए कहा कि उन्होंने उसे अपने ऐसे सेवक को देह में देखने और उससे बात करने का योग्य समझा। घर लौटने पर, शिकारी ने वह सब कुछ किया जो संत ने उससे कहा था।

एक साल बाद, शिकारी अपने दो भिक्षुओं और अपने भाई के साथ जहाज़ से रवाना हुआ और उस जगह के सामने लंगर डाल दिया जहाँ संत पीटर रहते थे। उतरकर, वे सीधे ऊपरी रेगिस्तान की ओर बढ़ गए। जहाँ संत रहते थे, उस स्थान के रास्ते में, उत्कट प्रेम से प्रेरित होकर, शिकारी दूसरों से आगे निकल गया और गुफा की ओर दौड़ पड़ा। उसने पादरी को जमीन पर मृत पड़ा पाया: उनके हाथ उनकी छाती पर क्रॉस के चिह्न में जुड़े हुए थे, उनकी आँखें धीरे से बंद थीं, और उनके शरीर का बाकी हिस्सा सम्मानपूर्वक और साफ-सुथरे तरीके से व्यवस्थित था[4342] । यह देखकर शिकारी भयभीत हो गया और, पूजनीय पिताजी के शव के पास खड़ा होकर, जोर-जोर से रोने लगा। जब शिकारी के साथी पहुँचे और उन्होंने इतने अद्भुत शव को और अपने दोस्त को उस पर रोते हुए देखा, तो उन्होंने पूछा: 'यह कौन मरा हुआ आदमी है जिसे तुमने पाया है, और तुम उसके लिए इतनी जोर से क्यों रो रहे हो?'

[4342] संत पीटर का लगभग 734 में निधन हुआ।

तब, आँसुओं और ससिकयिों के बीच, शकिारी ने उन्हें पादरी की जीवन कहानी वसि्तार से सुनाई, ठीक वैसे ही जैसे उसने पछिली गर्मयिों में स्वयं पादरी की जुबानी सुनी थी। स्वर्गीय पादरी के चमत्कारी कार्यों की कथा को सुनने वालों के हृदय को छू गई: वे कड़वी आँसू बहाते हुए रो पड़े, और इस बात पर पछताए कि वे ईश्वर के इतने महान सेवक को उनके जीवति रहते हुए देखने और उनसे बात करने के योग्य नहीं ठहराए गए थे। शकिारी का भाई, जो एक अशुद्ध आत्मा के वश में था, ईश्वर के संत की अवशेषों को छूते ही तुरंत ठीक हो गया। दानव ने उसे ज़ोर से चीखते हुए ज़मीन पर फेंक दयिा: 'हे पीटर! क्या यह पर्याप्त नहीं था कि तुमने मुझे मेरे बलि से बाहर नकिाल दयिा; अब तुम मुझे मेरे वर्तमान नविास से भी बाहर नकिाल रहे हो!'

इन शब्दों के साथ, वह उस मृतप्राय पड़े आदमी के होठों से नकिले धुएँ की तरह गायब हो गया। कुछ ही देर बाद, वह शरीर और आत्मा से स्वस्थ होकर उठा और अपने भाई से कहा: 'मैं तुम्हारा धन्यवाद करता हूँ, मेरे भाई, क्योंकि तुम मुझे मेरे ही भले के लिए यहाँ लाए हो।' तब, उस पूज्य व्यक्ति की अवशेषों के सामने प्रणाम करके, वह स्वस्थ हुआ व्यक्ति उन्हें आनंद और कृतज्ञता से चूमने लगा। इसके बाद, ईश्वर के सेवक के पवत्रि अवशेषों को लेकर, वे उन्हें तट पर ले गए और अपनी नाव पर रखकर, मैसेडोनयिाई शासन के अधीन एक काफी प्रसद्धि गाँव में ले गए; संन्यासी की अवशेषों से नकिली अनेक चंगाइयों के बारे में सुनकर, शहर के बशिप ने अपने पुरोहतिों के साथ मलिकर संत पीटर के जीवन-दायक अवशेषों को लयिा, उन्हें सम्मानपूर्वक अपने बशिप-नविास ले गए और उन्हें सुगंधति तेलों के साथ एक कीमती अवशेष-पात्र में रखकर चर्च में स्थापति कर दयिा, परम पवत्रि त्रमिूर्ति, पति, पुत्र और पवत्रि आत्मा - ईश्वर, जनि्हें सारी सृष्टि सदा, अब और हमेशा, और युगों-युगों तक महमिा देती है, के प्रति तीन दनि और तीन रातों की सार्वजनकि स्तुति के बाद। आमीन।

कॉन्टाकयिन, स्वर 2:

मानव समाज से अलग होकर, आप चट्टानी गुफाओं और दरारों में रहे; दैवीय इच्छा और प्रेम से, पतरस, आपने अपने प्रभु से मुकुट प्राप्त कयिा: हमारे उद्धार के लिए अनवरत प्रार्थना करें।

26 जून

13 जून (पुराना संस्करण)

इस दनि, मास्को के पूजनीय एंड्रोनकिॉस का 1395 में नधिन हुआ।

पवत्रि शहीद अक्वलिनिा का कष्टकथा

13 जून को स्मरण कयिा जाता है

फलिस्तीनी शहर वब्लिोस[4343] में, जहाँ पवत्रि प्रेरतिों के समय से ही ईसाई रहते आए हैं, यूटोलमयिस नाम का एक ईसाई रहता था, जसिके पुण्यपूर्ण ववािह को प्रभु ने अक्वलिनिा नाम की एक पुत्री के जन्म से धन्य कयिा। लड़की के जन्म के चार महीने बाद, उसकी माँ उसे बशिप यूफेलयिस के पास ले गईं, जनि्होंने शशिु पर अभषिेक कयिा और उसके ऊपर क्रॉस का चहि्न बनाया; फरि, दो महीने बाद, उन्होंने उस कन्या का बपतस्मिा कयिा। अपने दूसरे वर्ष में, अक्वलिनिा ने अपने पति को खो दयिा, जो स्वर्गीय धाम को चले गए थे, और वह अपनी माँ की देखभाल में रह गई; उसकी माँ ने अपनी बेटी का पालन-पोषण कयिा, और उसमें एक धार्मकि, ईसाई जीवन के सद्धिांतों को स्थापति कयिा; सात वर्ष की आयु तक, उस छोटी लड़की ने इन शकि्षाओं को पहले ही पूरी तरह से आत्मसात कर लयिा था। जैसे-जैसे वह बड़ी हुई, अक्वलिनिा पवत्रि आत्मा से अधकि से अधकि परपिूर्ण होती गई, मसीह की कृपा से सुसज्जति हुई, और वह इससे इतनी परपिूर्ण हो गई थी कि, अपनी युवावस्था के कोमल और अभी भी अपरपिक्व वर्षों में, उसने सभी के लिए मूर्ति पूजा का

[4343] बाइब्लोस, या बाइब्लस, फनिसिया का एक शहर है।

आदेश देने वाले अधर्मी राजाओं के फरमानों को साहसपूर्वक—जैसे कि यह कोई मामूली बात हो—परास्त कर दिया। अब हम इसी के बारे में बात करेंगे।

जब अक्विलिना, जो निरंतर प्रार्थना में ईश्वर को पुकारती थी, दस वर्ष की हुई, तो यह डियोक्लेशियन के शासन का सातवां वर्ष था[4344] ; उस समय, एक वोलुसियन नामक व्यक्ति, जो मनुष्य से अधिक शैतान की संतान था, ने फिलिस्तीन के प्रदेश पर अधिकार कर लिया। सभी अस्तित्वमान की सृष्टि के सच्चे ईश्वर को स्वीकार करने से इनकार करते हुए, वोलुसियन ने अतृप्त द्वेष के साथ उद्धारकर्ता मसीह के भक्तपूर्ण अनुयायियों पर अत्याचार करना शुरू कर दिया – और मसीह के कई पराक्रमी योद्धाओं को, जिन्होंने साहसपूर्वक अपने दुखों को सहन किया, अमर मुकुट प्रदान किए गए।

उन दिनों, परमेश्वर के ज्ञान से परिपूर्ण धन्य कन्या अक्विलिना, अक्सर अपने साथियों को इस उपदेश के साथ संबोधित करती थीं:

'तुम बहरी और निर्जीव मूर्तियों की पूजा करके क्या लाभ पाते हो? क्या तुम नहीं जानते कि जो लोग उन पर श्रद्धापूर्वक पूजा करते हैं, वे स्वयं को व्यर्थ, हानिकारक, शैतानी आशा से धोखा देते हैं? ये मृत और शक्तिहीन देवता हैं; क्या वे कोई आशीर्वाद दे सकते हैं?'

'तो फिर आप किस ईश्वर की पूजा करती हैं?' अकिलिना के साथियों ने उससे पूछा।

उसने उत्तर दिया:

'मैं उस एक ईश्वर की पूजा और आराधना करती हूँ, जो पूजनीय है, जिसने स्वर्ग, पृथ्वी, समुद्र और उनमें जो कुछ भी है, उसे बनाया है। आरंभ से ही, उसने उन सभी पर अपना अनुग्रह किया है जो उस पर विश्वास करते हैं और अपनी आशा उसी में रखते हैं, और सर्वशक्तिमान के रूप में, वह उन पर अपनी कृपा बरसाएगा जो संसार के अंत तक उसकी प्रार्थना करेंगे।'

अकीलिना के साथियों ने आपत्ति जताई, 'हमने सुना है कि जिसे ईश्वर की आप बात कर रही हैं, वह तो यहूदियों द्वारा सूली पर चढ़ा दिया गया था।'

'मृत्यु का उस पर कोई अधिकार नहीं है,' संत ने उत्तर दिया, 'क्योंकि न केवल वह स्वयं पुनर्जीवित हुए, बल्कि उन्होंने मृतकों को भी जिलाया, उन्हें अपने बहुमूल्य रक्त से मुक्ति प्रदान की। जब उन्होंने देखा कि मानव जाति सच्चे मार्ग से भटक गई है, तो उन्होंने अवतार लेने, मनुष्य बनने की कृपा की, ताकि शैतान की धोखाधड़ी को नष्ट करके और हम पर अनुग्रह और सत्य प्रदान करके, वे सुसमाचार का प्रचार कर सकें और पतित मानव जाति को मोक्ष के मार्ग पर स्थापित कर सकें।

'लेकिन वह कौन है जिसके बारे में वे कहते हैं कि उसे सूली पर चढ़ाया गया था?' अकीलिना के साथियों ने उससे जवाब देने के लिए लगातार दबाव डाला।

'सभी का उद्धारकर्ता, जिसने मानव जाति से प्रेम किया,' उसने उत्तर दिया। 'उसने स्वेच्छा से दुख सहन किया ताकि जल और आत्मा के द्वारा[4345] , वह पुराने मनुष्य को नए में बदल सके; वह केवल पृथ्वी पर रहने वालों को बचाने के लिए ही नहीं, बल्कि अधोलोक में बंद लोगों को भी मृत्यु के बंधनों से मुक्त करने के लिए क्रूस पर चढ़ा; तीसरे दिन अपने

[4344] डायोक्लेटियन (284–305) के शासनकाल के दौरान, ईसाइयों के खिलाफ चार फरमान जारी किए गए थे। पहला फरवरी 303 में घोषित किया गया था। इस फरमान में चर्चों को नष्ट करने और पवित्र पुस्तकों को जलाने का आदेश दिया गया था; साथ ही, ईसाइयों से उनके नागरिक अधिकार, सम्मान, कानून का संरक्षण और उनके पद छीन लिए गए; ईसाई दासों ने अपनी स्वतंत्रता का अधिकार खो दिया यदि किसी भी साधन से इसे प्राप्त करने के बाद, वे ईसाई बने रहे। इसके तुरंत बाद, एक दूसरा फरमान जारी किया गया, जिसमें सभी चर्च नेताओं और अन्य पुरोहितों को कैद करने का आदेश दिया गया; इस प्रकार, यह फरमान केवल पुरोहितों पर ही लागू हुआ; उन पर सम्राट के सामने सीरिया और आर्मेनिया में विद्रोह भड़काने का आरोप लगाया गया, जो ईसाइयों की दुर्भाग्य से, पहले फरमान के प्रकाशन के बाद शुरू हुआ था। उसी वर्ष, 303 में, एक तीसरा फरमान जारी किया गया: दूसरे फरमान के तहत कैद किए गए सभी लोगों को प्रतिरोध करने पर यातना की धमकी देकर बलिदान करने के लिए मजबूर किया जाना था। अंत में, 304 में, अंतिम, चौथा फरमान जारी किया गया, जिसमें ईसाइयों के बड़े पैमाने पर उत्पीड़न की घोषणा की गई। इसी फरमान के परिणामस्वरूप ईसाइयों के रक्त का सबसे अधिक प्रवाह हुआ: यह पूरे आठ साल, 311 तक लागू रहा, जब सम्राट गैलेरियस ने एक विशेष फरमान द्वारा ईसाई धर्म को एक 'अनुमत धर्म' घोषित किया। डायोक्लेटियन का उत्पीड़न अंतिम था; इसमें, लगभग तीन शताब्दियों के संघर्ष के बाद, ईसाई धर्म ने मूर्तिपूजा पर एक निर्णायक विजय प्राप्त की।

[4345] अर्थात्, बपतिस्मा के जल के द्वारा, जो नया जीवन देता है, और पवित्र आत्मा की कृपा के द्वारा, जो उस जीवन में मनुष्य को बल देती है (देखें यूहन्ना 3:5–6)।

पुनरुत्थान के द्वारा, उसने एक अटल सत्य के रूप में यह घोषणा की कि उसकी दूसरी आगमनी पर, सभी के लिए मरे हुओं में से पुनरुत्थान होगा।

'लेकिन यदि,' पूछने वालों ने अकीलिना से हैरानी से पूछा, 'जिसके बारे में आप बात कर रही हैं, उसने संसार पर इतनी बड़ी आशीषें प्रदान की हैं, तो यहूदी, जो उसके अपने लोग हैं, उसे ईश्वर के रूप में सम्मान क्यों नहीं देते?'

पवित्र कन्या ने समझाया, 'यह लोग हमेशा सही रास्ते से भटक जाता है; इसकी आत्मा अपनी हठधर्मिता में विद्रोही और दुर्भावना से अंधी है, इसलिए यह आमतौर पर सत्य और धार्मिकता को अस्वीकार कर देता है; इसीलिए यहूदियों ने उस व्यक्ति को अस्वीकार कर दिया जिसने उनके लिए अच्छा किया था, और उसे सूली पर चढ़ाने के लिए पिलातुस के हवाले कर दिया।'

प्रांतीय राज्यपाल का एक दास, जिसका नाम निकोदेमस था, ने धन्य अक्विलिना और उसकी सहेलियों के बीच अक्सर ऐसी बातें सुनी थीं; उसने अंततः अपने स्वामी को बताया कि शहर में एक युवती रहती है जो देवताओं को—जिन्हें वह तुच्छ समझती थी— और जो बाद वालों की पूजा के संबंध में राजाओं के फरमानों की अवज्ञा करती थी; इसके अलावा, एक सूली पर चढ़ाए गए ईश्वर के बारे में उपदेश देकर, वह कुछ लोगों को उनके पूर्वजों के धर्म से हटा रही थी। यह सुनकर, प्रांतीय राज्यपाल ने उस युवती को पकड़ने के लिए अपने सेवकों को भेजा। पवित्र शहीद अक्विलिना को प्रांत पर वोलुसियन के शासन के दूसरे वर्ष में और अपने जीवन के बारहवें वर्ष में कष्ट सहने के लिए ले जाया गया। जब उसे अधर्मी न्यायाधिकरण के सामने लाया गया, तो वोलुसियन ने उस पर अपनी दृष्टि डालते हुए पूछा:

'क्या यह तुम ही नहीं जो शाही फरमानों का उल्लंघन कर रही हो, दूसरों को गुमराह कर रही हो ताकि वे हमारे देवताओं का सम्मान न करें बल्कि सूली पर चढ़ाए गए मनुष्य की पूजा करें?' क्या तुम्हें राजाओं के उस आदेश का पता नहीं है, जिसके अनुसार यीशु के नाम का प्रचार करने वालों को हर प्रकार की यातनाएँ दी जाएँ, जिसका अंत मृत्युदंड से होता है? इसलिए, सूली पर चढ़ाए गए को त्याग दो और अमर देवताओं को वह सम्मान और बलिदान अर्पित करो जिसके वे हकदार हैं, ताकि हमें तुम्हें यातनाएँ देने के लिए विवश न होना पड़े।

संत अक्विलिना ने उत्तर दिया, 'यदि तुम, एम्फपिटस[4346] , मुझे कष्टदायक यातनाओं को देते हो, तो तुम मुझे एक अक्षय मुकुट प्रदान करोगे, जिसे मैं अपने उद्धारकर्ता से प्राप्त करने की आशा करती हूँ, क्योंकि मैं उनके नाम की घोषणा करती हूँ, जिसे मैं कभी नहीं त्यागूँगी, यहाँ तक कि सबसे भयानक यातनाओं में भी नहीं।' इसलिए विलंब न करो – मेरे लिए जो भी यातनाएँ तुम्हें उचित लगें, उन्हें रचो, और तुम स्वयं देखोगे कि विश्वास से सुसज्जित मैं तुम्हारी यातनाओं से नहीं डरती।

तब वोलुसियन ने पवित्र कन्या को धीरे-धीरे समझाना शुरू किया:

'तुम्हारी कोमल युवावस्था और सुंदरता को देखकर मुझे तुम पर दया आती है, क्योंकि अगर मैंने तुम्हें यातनाएँ दीं, तो तुम्हारे नाजुक अंग तुरंत चूर-चूर हो जाएँगे; क्रूर यातना देने वाले, भयंकर यातना के बाद, तुम्हें एक कड़वी मृत्यु की सजा देंगे, और तुम अपनी जवानी में ही अपनी जान गंवा दोगी, और जिसे ईसाई ईश्वर की तुम घोषणा करती हो, वह तुम्हारी किसी भी मदद में काम नहीं आएगा।'

'मैं आपकी दया नहीं मांगती,' संत अक्विलिना वोलुसियानु ने उत्तर दिया, 'आप, यह सोचकर कि आप मुझ पर दया दिखा रहे हैं, मुझे सच्चे ईश्वर से दूर करने की कोशिश करके मुझे और भी अधिक नुकसान पहुंचा रहे हैं।' मैं आपसे विनती करती हूँ, मुझ पर दया न करें, बल्कि मेरे साथ अत्यंत निर्दयी क्रूरता से पेश आएं; और फिर, मेरी सहनशीलता के माध्यम से, आप सीखेंगे कि जो मसीह में अपनी आशा रखते हैं, वे कभी पराजित नहीं होते।

एन्फपिट ने, यह महसूस करते हुए कि कोई भी मनाने का प्रयास इस मसीह की दासी को यीशु की गवाही से मुँह मोड़ने के लिए मजबूर नहीं कर सकता, आदेश दिया कि उसके चेहरे पर थप्पड़ मारा जाए, और कहा:

'यहाँ तुम्हारा यातना-काल शुरू होता है—क्या यह तुम्हें मीठा और सुखद लगता है?'

अक्विलिना ने कहा, "अमानवीय यातनाकर्ता! चूँकि तुमने ईश्वर की छवि में रची गई किसी की गाल पर मारने की हिम्मत की है, यह जान लो: वह जिसकी छवि मैं धारण करती हूँ, अपने न्याय के दिन तुम्हें इसके लिए क्षमा नहीं करेंगे।"

न्यायाधीश ने कहा, 'मेरा मानना है कि हमारे महान देवता, जो अब संपूर्ण विश्व की मुक्ति अपने हाथों में रखते हैं, आने वाले युग में भी सभी की मुक्ति को अपनी शक्ति में रखेंगे।'

[4346] अर्थात् एक प्रांतीय गवर्नर।

यह कहकर, उसने युवती के कपड़े उतारने का आदेश दिया और, उसे लटिकाकर, दो सैनकिों को उसे पीटने का हुक्म दिया, और इस यातना के साथ ये शब्द कहे:

'अक्वलिनिा, अब तुम्हारा ईश्वर कहाँ है, जसिके बारे में तुमने कहा था कि वह अपने न्याय के दनि मुझे क्षमा नहीं करेगा? उसे यहाँ आने दो और तुम्हें मेरी पकड़ से छुड़ाए।'

तब वोलुशयिन ने कोड़ों से मारने वालों को रुकने का आदेश दिया और संत अक्वलिनिा से कहा:

'मेरी सुनो, जो तुम्हारा भला चाहता है: अपनी मूर्खता छोड़ दो और, यदि तुम अपने कष्टों से मुक्त होना चाहती हो, तो ईसाई वधिर्म का त्याग करो: क्या उनमें से एक भी जो उस पर अपनी आशा रखता था—जसिे स्वयं ने भी तब नहीं बचाया जब उसे सूली पर चढ़ाया गया था—मेरे हाथों से बनिा चोट के बच पाया है?' यीशु की पूजा करने वालों में से हमारे राजाओं ने कसिे पृथ्वी पर जीवति रहने दिया है?

'क्या तुम्हें सच में लगता है, हे नर्दियी जल्लाद,' संत अक्वलिनिा ने उत्तर दिया, 'कि मुझे उन यातनाओं का अनुभव नहीं हो रहा है जो मुझ पर दी जा रही हैं? यह जान लो: मेरा ईश्वर मुझे वह शक्ति और धैर्य प्रदान करेगा जो तुम्हारे पति, शैतान, की उकसावे पर मेरे वरिुद्ध रची गई तुम्हारी सभी चालाकयिों से कहीं अधकि होगा।'

धन्य कन्या के ऐसे साहस से चकति वोलुसयिन ने उससे कहा:

'मैं तुम्हें वचिार करने के लिए कुछ दनि दूँगी, ताकि, वविेकपूर्ण नर्णिय का उपयोग करते हुए, तुम देवताओं की पूजा कर सको और इस प्रकार अपने जीवन को बचा सको, साथ ही साथ राजाओं से एक योग्य पुरस्कार भी प्राप्त कर सको।'

'वचिार करने के लिए आप मुझे कतिने दनि दे रहे हैं?' संत अक्वलिनिा ने पूछा।

'जतिना चाहो,' वोलुसयिन ने उत्तर दिया।

'तो मैं आपसे वनिती करता हूँ,' शहीद ने कहा, 'कि मुझे ऐसे वचिारों को पालने के लिए एक क्षण भी न दें: बचपन से ही मुझे केवल एक ईश्वर की पूजा करना सखिाया गया है, उसी की ओर मुड़ना सखिाया गया है जो स्वर्ग में नविास करता है और पृथ्वी पर अपने बच्चों पर दयालु दृष्टि से देखता है।'

युवती के ईश्वर के प्रति अटूट प्रेम को देखकर, वोलुसयिन ने अपने मन में कहा: 'मेरी नसीहतें और प्रयास व्यर्थ हैं!' और अपने क्रोध में, उसने आदेश दिया कि संत के सरि में लाल-गरम लोहे की सलाखें घुसा दी जाएँ, जो उसके कानों को भेद दें। जब लाल-गरम सलाखें युवती के मस्तष्कि से होकर गुज़रीं, तो उसका मस्तष्कि पदार्थ, उसके रक्त के साथ, उसकी नाक के छदि्रों से बह नकिला। फरि भी इतनी बड़ी पीड़ा में भी, शहीद ने ईश्वर से प्रार्थना की: 'हे मेरे प्रभु, यीशु मसीह! आपने जो मेरे बचपन से मेरा मार्गदर्शन कयिा है, जनि्होंने अपने सत्य की करिणों से मेरे हृदय के गुप्त वचिारों को प्रकाशति कयिा है, और जनि्होंने अपनी शक्तशिाली और अजेय शक्ति से शैतान के खलिाफ लड़ाई में मुझे मजबूत कयिा है, आपने जो वशि्वासयिों को सच्ची और महान बुद्धमित्ता की गहराइयों का प्रकटीकरण कयिा है, मेरे संघर्ष को उसके नष्किर्ष पर पहुँचाएँ और मेरी कुँवारीपन के दीपक को अवनिाशी रूप से जलते रहें, ताकि, बुद्धमिान कुँवारयिों के साथ, मैं आपके शुद्ध महल में प्रवेश कर सकूँ और वहाँ आपको महमिा अर्पति करने के योग्य समझी जाऊँ, जो मेरी इच्छाओं की पूर्ति हैं।"

इस प्रार्थना के बाद, असीम पीड़ा से ग्रस्त संत अक्वलिनिा, मृतक की भाँति जमीन पर गरि पड़ीं। अंफपिैट ने, यह सोचकर कि वह वास्तव में मर गई है, उसे कुत्तों द्वारा नोचे जाने के लिए शहर से बाहर फेंकने का आदेश दिया; उसने शहीद को उचति दफन के भी योग्य नहीं समझा, क्योंकि उसने शाही आदेशों का उल्लंघन कयिा था और रोमन देवताओं का अपमान कयिा था। और संत अक्वलिनिा वहाँ सारा दनि सड़क के कनिारे पड़ी रहीं। आधी रात को, प्रभु का स्वर्गदूत उस धन्य कन्या के पास प्रकट हुआ और उसे छूकर कहा: 'उठो और स्वस्थ हो जाओ! जाओ और वोलुसयिन को फटकारो, क्योंकि परमेश्वर के सामने न तो वह स्वयं कुछ है और न ही उसके इरादे।'

तुरंत संत अक्वलिनिा बनिा कसिी चोट के उठ खड़ी हुईं और ईश्वर की स्तुति करते हुए बोलीं: 'हे मेरे जीवन के स्रष्टा, मैं आपको धन्यवाद देती हूँ, जो मेरे स्वास्थ्य को पुनर्स्थापति करते हैं और अपने सेवकों को दुष्टता से बचाते हैं; हे प्रभु, आप शाश्वत हैं, और आप के सवि कोई अन्य ईश्वर नहीं है। मैं वनिम्रतापूर्वक आपसे एक ही बात मांगती हूँ: जब मैं अपने दुःखों की परीक्षा पूरी कर लूँ, तो मुझे अपनी महमिा के मुकुट से सजाएँ, और, आपके वचनों के पूर्ण होने की आनंद-उल्लास में, मैं तब उन संतों के बीच आपकी स्तुति करूँगी जनि्होंने आपके नाम की गवाही के लिए दुःख उठाया है।"

प्रभु ने अपने वनिम्र सेवक की प्रार्थना को स्वर्ग से उत्तर दिया: 'जाओ—जो तुम माँगती हो वह पूरा होगा।' यह सुनकर, वह धन्य कन्या अनुत्तरनीय आनंद की अनुभूति के साथ नगर की ओर चल पड़ी। जब वह नगर के द्वारों पर पहुँची,

तो वे अपने आप खुल गए; प्रभु के स्वर्गदूत के मार्गदर्शन में, संत अक्वलिनिा वोलुसयिानुस के महल पहुँची और बनिा कसिी बाधा के प्रवेश कर, सोए हुए अम्फपिेते के सामने खड़ी हो गई। वह जागते ही उसे वहाँ खड़ी देखी; भयभीत होकर उसने अपने क्यूबकिुलाarii[4347] को बुलाया और उनसे पूछा: 'यह मेरी आँखों के सामने कौन खड़ी है?'

क्यूवकिुलारयिों ने अपने दीपक उठाकर उत्तर दयिा: 'नस्संदेह, यह अक्वलिनिा है, जसिे यातनाओं से मरने के बाद आपने कुत्तों को खलिा देने का आदेश दयिा था।'

एम्फीपेट क्यूवकिुलरीज़ को सुनकर और भी अधकि भयभीत हो गया, फरि भी उसने आदेश दयिा कि उस युवती को सुबह तक हरिासत में रखा जाए।

प्रातकाल, वोलुसयिानस ने सेंट अक्वलिनिा को फरि से न्याय के लिए अपने सामने पेश होने का आदेश दयिा। उन्होंने कन्या से पूछकर शुरुआत की:

'क्या यह तुम हो, अक्वलिनिा?'

'क्या हो सकता है कि तुम, अधर्मी, जनिकी आध्यात्मकि आँखें तुम्हारे पतिा शैतान द्वारा अंधी कर दी गई हैं, अब अपनी शारीरकि आँखों से भी नहीं देख सकतीं?' बदले में धन्य कन्या ने पूछा।

'नस्संदेह, मैं, प्रभु की दासी जो आपके सामने खड़ी है, अक्वलिनिा ही हूँ।'

गहराई से उलझन में, अपनी आँखें मलते हुए, अम्फपिैटस ने अपने आप से तर्क दयिा: 'उसके मस्तष्कि के उसके जलते सरि से बह जाने के बावजूद, अगर वह मरी नहीं है, तो कौन सी यातना उसे नुकसान पहुँचा सकती है?'

यह सोचकर, उसने तलवार से कन्या का सरि कलम करने के संबंध में नम्निलखिति आदेश जारी कयिा: 'अकीलनिा, अधर्मी ईसाई वधिर्म की रक्षक, भले ही आयु में युवा हो, फरि भी एक महान जादूगरनी है जो अमर देवताओं का सम्मान नहीं करती और राजा की आज्ञाओं का पालन नहीं करती—हमने, लंबे समय तक और बड़ी लगन से, उसे समझाया है; फरि भी हम उसे उसके पागलपन से नहीं हटा सके, अत; अनेक यातनाओं के बाद, जनिका इस जादूगरनी पर कोई भी प्रभाव नहीं पड़ा, हम यह आदेश देते हैं कि उसे शहर के बाहर सरि कलम करके मौत की सज़ा दी जाए।"

मृत्युदंड के बाद, संत अक्वलिनिा को फांसी के स्थान पर ले जाया गया; जब वे वहाँ पहुँचीं, तो उस धन्य कन्या ने प्रार्थना के लिए समय माँगा। स्वर्ग की ओर अपनी दृष्टि उठाकर, शहीद ने इन शब्दों के साथ प्रार्थना की:

'हे सर्वशक्तमिान प्रभु और मेरे ईश्वर! मैं आपको धन्यवाद देती हूँ कि आपने मुझे मेरे संघर्ष के अंत तक पहुँचाया: मैं आपकी महमिा करती हूँ, हे मेरे ईश्वर और सर्व के स्रष्टा, कि मैंने अपने दुख के मार्ग को व्यर्थ नहीं पूरा कयिा है; मैं सभी चीजों के स्रष्टा, आपको धन्यवाद देती हूँ, क्योंकि आपने यातना देने वाले को लज्जति कयिा है और मुझे अमर मुकुट का योग्य समझा है; मेरी आत्मा को शांति से ग्रहण करें, – ताकि सांसारकि को पीछे छोड़कर, मैं स्वर्गीय को प्राप्त कर सकूँ।"

धन्य की प्रार्थना के उत्तर में, स्वर्ग से एक आवाज आई: 'आओ, हे चुनी हुई कन्या, जसिने यातना देने वाले के क्रोध को वश में कयिा है और अपने पराक्रम से, शैतान के डंक को कुंद कर दयिा है; और अपने लिए तैयार कए गए पुरस्कार को प्राप्त करो।'

और तुरंत, उस आवाज़ के बाद, मसीह की पवत्रि शहीद मृत्यु की नींद में सो गईं, इससे पहले कि जल्लाद ने अपनी तलवार उनके सरि पर उठाई होती। जल्लाद, यद्यपि उसने यह देखा, फरि भी अम्फपिाट की आज्ञा की अवहेलना करने और पहले से ही मृतक का सरि अपनी तलवार से काट डालने की हम्मित नहीं की; घाव से, खून के बजाय दूध बहने लगा। फांसी के स्थान पर मौजूद ईसाइयों ने शहीद की अवशेषों को एक अतुलनीय खजाने के रूप में लयिा: उन्होंने अवशेषों पर कीमती इत्र लगाकर उन्हें ताज़े कफ़न में लपेटा, और उन्हें वविलोस शहर के भीतर ही एक कब्र में सम्मानपूर्वक दफना दयिा। और पवत्रि शहीद अक्वलिनिा के मकबरे से कई बीमारों को चंगाई का वरदान मलिा, हमारे परमेश्वर मसीह की महमिा के लिए, जो पतिा और पवत्रि आत्मा के साथ सदा-सदा महमिामय हैं। आमीन[4348] .

[4347] अर्थात्, कोषाध्यक्ष।

[4348] पवत्रि शहीद अक्वलिनिा का नधिन 283 ईस्वी में 13 जून को हुआ। उनकी पवत्रि अवशेष, या उनका एक हस्सिा, कॉन्स्टेंटनिोपल ले जाया गया, और उनके नाम से समर्पति चर्च में उनके पर्व का भव्य रूप से उत्सव मनाया जाता था। बाद वाला चर्च 532 में, जस्टनियिन के शासनकाल के दौरान जलकर राख हो गया, लेकनि बाद में इसे फरि से बनाया गया। इस चर्च का उल्लेख 12वीं सदी के एक श्लोक प्रस्तावना में मलिता है।

कॉन्टाकयिन, स्वर 2:

हे सर्वसम्मानति अक्वलिनि, अपनी कुँवारीपन के सद्गुणों द्वारा अपनी आत्मा को शुद्ध करके, तुम शहादत के माध्यम से ऊँचाइयों पर चढ़ीं, अपने वधूवर, मसीह के प्रेम से भेदी होकर, जनिके सामने तुम अब स्वर्गदूतों के साथ खड़ी होकर आनंदति हो; उनके साथ, हम सभी के लिए प्रार्थना करना बंद न करना।

हमारे पवत्रि पति त्रफिलियिस, ल्यूकोसयिा के बशिप का जीवन

13 जून को स्मरण कयिा जाता है

कॉन्स्टेंटनिोपल के मूल नविासी, संत ट्रायफलियिस ने बेरटिस[4349] में अपनी सांसारकि शकि्षा प्राप्त की, जबकि धर्मपरायणता में उनके गुरु ट्रमिाइथस के बशिप, संत स्पाइरडिॉन थे। संत त्रफिलियिस को स्वयं प्रभु द्वारा बशिप के रूप में चुना और नयिुक्त कयिा गया था: इस महान पद से सम्मानति होने से पहले ही, वह एक दर्शन में सम्राट कॉन्स्टैंटयिस के सामने इस प्रकार प्रकट हुए मानो वह पहले से ही एक बशिप हों, जैसा कि संत स्परिडिॉन के जीवन में इस प्रकार वर्णति है।

कांस्टेनटाइन महान की मृत्यु के बाद, ग्रीको-रोमन साम्राज्य की शक्ति उनके बेटों के पास चली गई; साम्राज्य के वभिाजन के बाद, उनमें से सबसे बड़े, जसिका नाम कांस्टैंटयिस था[4350] , को पूर्व के प्रशासन का जमि्मा सौंपा गया। एक अवसर पर, उन्हें एंटओिक[4351] का दौरा करना पड़ा, और वहाँ वे अचानक इतने गंभीर रूप से बीमार पड़ गए कि उनकी बीमारी चकित्सिकों के प्रयासों को नाकाम कर गई। तब, डॉक्टरों से उम्मीद छोड़कर, बीमार राजा ने शरीर और आत्मा के चकित्सिक, ईश्वर से प्रार्थना की: उसने उपचार के लिए उनसे वनिम्रतापूर्वक नविेदन कयिा, और देखो, एक सपने में उसने एक देवदूत को देखा जसिने उसे संतों का एक पूरा समूह दखिाया, और उनमें से दो दूसरे पंक्तयिों से, मानो उनके नेताओं और कमांडरों के रूप में, अलग खड़े थे: तब देवदूत ने राजा से कहा कि केवल वही उसे उसकी बीमारी से मुक्ति दिला सकते हैं। जागने पर और उस दर्शन पर वचिार करने पर, राजा यह नहीं पहचान सका कि उसके सामने प्रकट होने वाले बशिप वास्तव में कौन थे: और वास्तव में, वह उन लोगों को कैसे पहचान सकता था जनिके नाम और जन्म स्थान उसके लिए अज्ञात थे? खासकर जब यह ध्यान में रखा जाए कि धार्मकि पोशाक में दखिाए गए उन लोगों में से एक तब तक बशिप नहीं था और उसे बाद में ही बशिप बनना था। राजा लंबे समय तक हैरान रहा और अंततः इस बुद्धमिानी भरे नर्णिय पर पहुँचा: उसने सभी पड़ोसी शहरों से बशिपों को बुलाया और उन दो लोगों को खोजने की कोशशि की जो उसे दृष्टि में दखिाई दिए थे, लेकनि वे नहीं मलि सके। फरि राजा ने और भी दूर-दराज के देशों से कई बशिपों को बुलाया, लेकनि जनि लोगों की वह तलाश कर रहा था, वे उनमें भी नहीं मलि। इसके बाद, उन्होंने अपने साम्राज्य के सभी प्रांतों में एक फरमान जारी कयिा, जसिमें वहां रहने वाले बशिपों को अपने सामने उपस्थति होने का आदेश दयिा गया। यह फरमान—या यूँ कहें कि राजा

[4349] प्राचीन काल में, बेरटिस एक फनिशियिाई बंदरगाह था; बाद में यह मस्रियिों के हाथों में चला गया, इससे पहले कि एंटओिकस तृतीय ने इसे टॉलेमी वंश से छीन लयिा। 140 ईसा पूर्व में, इसे सीरियिाई डायोडोटस ट्रायफोन ने नष्ट कर दयिा था, लेकनि रोमन सम्राट ऑगस्टस के अधीन इसका पुनर्नरि्माण कयिा गया। सीज़र क्लॉडयिस ने शहर को बहुत सजाया, और सम्राट थयिोडोसयिस द्वतिीय ने इसे एक मेट्रोपॉलटिन सहिासन बनाया। बाद के सम्राटों के अधीन, बेरटिस अपने वाक्पटुता, राजनीति और सबसे बढ़कर, कानून के स्कूल के लिए प्रसद्धि था। आज, बेरटि ही बेरूत है, जो सीरिया के तुर्की-एशियिाई वलियत (गवर्नरेट) की राजधानी है।

[4350] कांस्टेंटनि महान के पुत्र कांस्टेंटयिस को उनके पति की मृत्यु के बाद पूर्व, एशिया और मस्रि के प्रशासन का जमि्मा सौंपा गया था; 351 में, अपने भाई कांस्टेंस के हत्यारे मैग्नेंटयिस को हराने के बाद, उसने पूरे रोमन साम्राज्य को अपने शासन के अधीन कर लयिा। उसने या तो मूर्तपिूजक मंदरिों को नष्ट कर दयिा या उन्हें चर्चों में बदलने के लिए ईसाइयों को सौंप दयिा; कई मौकों पर उन्होंने मृत्युदंड की सजा के तहत मूर्तपिूजा पर प्रतबिंध लगाने वाले कानून जारी कए। हालाँकि, एरयिन वधिर्म के प्रति अपनी सहानुभूति के कारण, कॉन्स्टैंटयिस ने उस समय के धार्मकि ववािद को बहुत बढ़ा दयिा: उन्होंने रूढ़वािदी बशिपों को सताया, उन्हें उनके पदों से हटा दयिा और यहाँ तक कि उन्हें कैद भी कर दयिा; उनके शासन के दौरान, एरयिनों ने राज्य में उच्चतम पदों पर कब्जा कर रखा था। कोंस्टैंटयिस की 361 में अपने चचेरे भाई जूलयिन के खलिाफ अभयिान के दौरान मृत्यु हो गई, जसिे गॉल की सेनाओं ने सम्राट घोषति कयिा था, जहाँ कोंस्टैंटयिस ने स्वयं उसे मुख्य सेनापति नियिुक्त कयिा था। नाज़यिान्ज़स के ग्रेगरी के अनुसार, अपनी मृत्यु से पहले, कोंस्टैंटयिस ने रूढ़वािदी लोगों पर अत्याचार करने के लिए पश्चाताप कयिा था।

[4351] सीरिया का सबसे पुराना शहर, एंटओिक, लेबनान और टॉरस की पर्वत श्रृंखलाओं के बीच ओरोन्टसि नदी पर स्थति है; इसकी स्थापना ईसा मसीह से 300 साल पहले हुई थी।

का अनुरोध—साइप्रस की सीमाओं तक पहुँचा[4352] और ट्रमिाइथस के स्परिडिॉन तक पहुँचा, जन्हिें ईश्वर ने राजा के साथ हुई सारी घटनाओं के बारे में बता दयिा था। अपनी तैयारयिाँ करने के बाद, संत स्पाइरडिोन सम्राट के पास रवाना हुए, अपने साथ अपने शष्यि ट्राइफलियिस को ले गए, जनिके साथ उन्हें एक दर्शन में सम्राट के सामने प्रस्तुत कयिा गया था; जैसा कि पहले ही उल्लेख कयिा गया है, उस समय संत ट्राइफलियिस अभी तक बशिप नहीं थे। एंटओिक पहुँचने पर, यात्री सम्राट से मलिने गए। संत स्परिडिॉन साधारण कपड़े पहने हुए थे; उनके हाथों में खजूर की टहनी वाला लाठी था, और उनके सरि पर सबसे साधारण, लगभग भखिारी जैसी, माइट्र (धर्मगुरु का मुकुट) थी; उनकी छाती पर एक मट्टिी का पात्र लटका हुआ था जसिमें, यरूशलेम के नविासयिों की प्रथा के अनुसार, वह पवत्रि क्रूस से पवत्रि तेल लाते थे। इसलए, जब वह राजा के कक्ष में प्रवेश कयिा, तो महल के एक नौकर ने, पवत्रि बशिप को एक साधारण भखिारी समझकर, न केवल उनका मज़ाक उड़ाया और उन्हें आगे बढ़ने से मना कर दयिा, बल्कि उनके गाल पर थप्पड़ भी मारा। द्वेषरहति होने के कारण, संत स्पाइरडिोन ने प्रभु की आज्ञा का पालन करते हुए, उस व्यक्ति को अपना दूसरा गाल भी थप्पड़ मारने के लिए थमा दयिा जसिने उन्हें मारा था। उस व्यक्ति को यह एहसास होते ही कि उसके सामने एक बशिप खड़े हैं, उसने अपने अपराध को समझा और वनिम्रता से क्षमा याचना की, जो उसे मलि गई। संत स्परिडिॉन के राजा के सामने आते ही राजा उन्हें पहचान गया, उसे वह दर्शन याद आ गया जो उसे एक बार हुआ था: अपनी सीट से उठकर, राजा ईश्वर के सेवक के पास गया और उसके सामने झुक गया, और आँखों में आँसू लिए बशिप से अपनी बीमारी से ठीक होने के लिए प्रभु से प्रार्थना करने को कहा। ईश्वर के उस पुरुष ने राजा के सरि पर अपना हाथ रखा, और राजा तुरंत स्वस्थ हो गया; संत की प्रार्थनाओं के माध्यम से प्रभु द्वारा प्रदान कएि गए अपने चंगा होने की खुशी में, राजा ने संत का बहुत सम्मान कयिा और पूरे दनि उनकी संगति में आनंदपूर्वक बतिाया, और अपने अच्छे चकित्सिक के लिए एक दावत का आयोजन कयिा। हालाँकि, संत ट्रायफलियिस राजा की भव्यता से बहुत चकति थे—कमरों की सुंदरता, अपने कुलीनों से घरि बैठे राजा का राजसी रूप, नौकरों के शानदार वस्त्र, और दरबारी जीवन की अन्य समृद्ध और असाधारण भव्यता को देखकर। यह देखकर, संत स्पाइरडिॉन ने अपने शष्यि से कहा: 'भाई, तुम आश्चर्यचकति क्यों हो? क्या राजा का गर्व और महमिा उसे अन्य ईसाइयों से अधकि धर्मी बनाता है? क्या राजा सबसे नीचले भखिारी की तरह नहीं मरता और, उसकी तरह, पृथ्वी पर वापस नहीं आता? क्या वह सभी के साथ नष्पिक्ष और भयानक न्यायाधीश के सामने नहीं खड़ा होगा? तो फरि आप क्षणकि को शाश्वत क्यों मानते हैं और तुच्छ चीज़ों को आश्चर्य का वषिय क्यों बनाते हैं, जबकि आपको अमूर्त और शाश्वत के लिए प्रयास करना चाहिए, और केवल अटूट स्वर्गीय महमिा से प्रेम करना चाहिए?"

कुछ समय बाद, संत त्रफिलियिस को साइप्रस द्वीप पर ल्यूकोसयिा शहर का बशिप नयिुक्त कयिा गया; फरि भी, बशिप होने के बावजूद, उन्होंने अपने पतिा और शकि्षक, संत स्पाइरडिोन के साथ संपर्क बनाए रखना बंद नहीं कयिा: अपनी आध्यात्मकि उन्नति के लिए, संत त्रफिलियिस अक्सर उनसे मलिने जाते थे, जैसा कि नम्निलखिति वृत्तांत से स्पष्ट है। एक अवसर पर, संत स्पाइरडिोन, बशिप संत ट्रायफलियिस के साथ, ट्रमिाइथस से करिनयिा शहर की यात्रा कर रहे थे। जब वे माउंट पेंटाडाक्टलिोस से गुज़र रहे थे, तो वे पारम्निा नामक एक स्थान पर पहुँचे, – एक अत्यंत प्राकृतकि सुंदरता वाला स्थान, जो बागों और दाख की बगानों से भरपूर था – संत ट्रायफलियिस, आसपास के परदृिश्य से मोहति होकर, स्वयं पैरमिना में एक दाख की बगान का मालकि बनना चाहते थे; उन्होंने अपने मन में देर तक इस बात पर वचिार कयिा कि वह इस इच्छा को कैसे पूरा कर सकते हैं। यह बात संत स्पाइरडिॉन की सूक्ष्मदर्शी दृष्टि से छुपी न रह सकी: अपने शष्यि के वचिारों को भांपते हुए, उन्होंने कहा: 'ट्राइफलियिस, तुम नरिंतर व्यर्थ की बातों में क्यों उलझे रहते हो, ऐसे खेतों और दाख की बगानों को प्राप्त करने की इच्छा रखते हो, जनिका वास्तव में कोई मूल्य नहीं है और जो अपनी मायावी कीमत से मानव हृदयों को धोखा देते हैं? स्वर्ग में हमारा एक अवनिाशी वारसि है – एक ऐसा मंदरि जो हाथों से नहीं बना; उसी की खोज करो, और इस बीच, ईश्वर पर ध्यान करते हुए, स्वर्गीय आशीर्वादों में आनंद लो, जो एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति तक नहीं जाते, बल्कि हमेशा उसी के साथ रहते हैं जो उनका स्वामी बनता है।'

इस प्रकार के नरि्देश संत ट्रायफलियिस की आत्मा के लिए बहुत लाभकारी थे, जसिसे बाद में अपने जीवन में वह प्रेरति पौलुस की तरह, अनगनित दव्यि वरदानों से परपिूर्ण, मसीह के एक चुने हुए पात्र बन गए।

[4352] साइप्रस द्वीप भूमध्य सागर के उत्तर-पूर्वी छोर पर, प्राचीन फनिसिया के तटों के पास स्थति है; इसकी स्थापना मसीह से 300 साल पहले हुई थी।

ग्रीक इतिहासकार, निकिफ़ोरस[4353] और सोज़ोमेन[4354] , संत ट्रायफिलियस और संत स्पिरिडोन दोनों के बारे में निम्नलिखित भी बताते हैं। एक अवसर पर, चर्च की आवश्यकताओं के जवाब में, साइप्रस में द्वीप के सभी बिशपों की एक परिषद बुलाई गई: सेंट स्पाइरिडॉन और सेंट ट्रायफिलियस इस परिषद में उपस्थित थे – बाद वाले एक विद्वान और पढ़े-लिखे व्यक्ति थे, क्योंकि उन्होंने अपनी युवावस्था में बेरिटस में अध्ययन में बहुत समय बिताया था; इसलिए, परिषद के पिताओं ने सेंट ट्रायफिलियस से चर्च में लोगों को एक उपदेश देने के लिए कहा। अपने प्रवचन के दौरान, उन्हें लकवाग्रस्त व्यक्ति से कहने वाले मसीह के शब्दों का उद्धरण करना था, जो संत मरकुस सुसमाचारकर्ता द्वारा दर्ज किए गए थे: *'उठ, अपना बिस्तर उठा ले'* (मरकुस 2:11); हालाँकि, संत ट्राइफिलियस ने सुसमाचार के शब्दशः शब्दों को बदल दिया, और 'बिस्तर' को 'पलंग' कहा: 'उठ और अपना बिस्तर उठा ले'। संत स्पिरिडॉन, मसीह के शब्दों में इस बदलाव को सहन न कर सके, ने ट्रायफिलियस से कहा: 'क्या तुम सचमुच उस व्यक्ति से बेहतर हो जिसने "बिस्तर" कहा, कि तुम उसके शब्दों से शर्मिंदा हो?'

इसके बाद, उन्होंने सभी के सामने खुलेआम चर्च छोड़ दिया। और संत स्पाइरिडॉन के इस कार्य में कुछ भी निंदनीय नहीं था: एक अनपढ़ व्यक्ति होने के नाते, उन्होंने अपनी फटकार से, अपनी वाक्पटुता पर घमंड करने वाले, त्रिफिलियस को शर्मिंदा किया, और उसे विनम्रता और नम्रता सिखाई।

संत ट्रायफिलियस ने अपने जीवन से ईश्वर को प्रसन्न किया, जैसा कि चर्च द्वारा उनके सम्मान में रचित पूजा-गीतों से प्रमाणित होता है: ये पुष्टि करते हैं कि संत ट्रायफिलियस में एक दयालु आत्मा, शुद्ध विचार, द्वेष से मुक्त हृदय और सच्चा विश्वास था, सच्चा प्रेम, ब्रह्मचर्य के उत्कृष्ट कार्य, अनुग्रह और पश्चाताप के आँसू, और ऐसा उपवास जिसने निराकार प्राणियों को भी चकित कर दिया – क्योंकि, पड़ोसी देशों में यात्रा करते हुए, उन्होंने पाप से अंधे हुए लोगों को सूर्य की किरणों की तरह मसीह की शिक्षा से प्रकाशित किया।

प्रेम और सत्य में अपनी भेड़ों का चरवाहा बनकर, वह यहाँ से प्रस्थान कर गए, ताकि वहाँ स्वर्ग में, पदानुक्रमों के समूह के बीच, वे हमारे उद्धारकर्ता मसीह के समक्ष खड़े हो सकें, जिनका यश युगानुयुग हो। आमीन[4355] .

कॉन्टाकियन, स्वर 8:

अपने जीवन की पवित्रता के द्वारा, आपने कुँवारी, ट्राईफिलिया की पवित्रता को अपनाया; आप ल्यूकोसिया के प्रधान पुरोहित के रूप में प्रकट हुए, और उनके लिए दिव्य ज्ञान के सूचक और शिक्षक बन गए। इसी कारण हम आनंदपूर्वक आपको पुकारते हैं: आनंदित हो, हे पवित्र धर्मगुरुओं की शोभा।

27 जून

14 जून (पुराना संस्करण)

पैगंबर सेंट एलिशा का जीवन और चमत्कार

14 जून को स्मरणोत्सव

[4353] निकिफोरस कैलिस्टोस, हागिया सोफिया मठ के एक भिक्षु, का लगभग 1350 में निधन हो गया।

[4354] सोजोमेन, 5वीं शताब्दी के एक चर्च-संबंधी इतिहासकार।

[4355] ल्यूकोसिया के बिशप के रूप में सेवा करते हुए, संत ट्रायफिलियस ने अपनी माँ द्वारा प्रदान किए गए धन से एक मठ बनवाया; वे लगभग 370 ईस्वी में एक सम्मानित वरिष्ठ के रूप में निधन हो गए। उनका हस्ताक्षर सार्डिका के स्थानीय परिषद (347) के कार्यों में दिखाई देता है। पवित्र जेरोम, पश्चिमी चर्च के पिता (मृत्यु 420), संत ट्रायफिलियस के बारे में कहते हैं: 'साइप्रस के बिशप ट्रायफिलियस, अपने युग के सबसे वाक्पटु और कॉन्स्टेंटियस के शासनकाल में सबसे प्रसिद्ध थे। मैंने गीतों के गीत पर उनकी टीकाएँ पढ़ी हैं; कहा जाता है कि उन्होंने कई अन्य कृतियाँ भी रचीं जो हमें प्राप्त नहीं हुईं।" संत ट्रायफिलियस ने अपने गुरु, ट्रिमिथस के संत स्पाइरिडोन की एक जीवनी लिखी। 12वीं शताब्दी की शुरुआत में, हमारे रूसी मठाधीश डेनियल ने पवित्र स्थलों की यात्रा के दौरान साइप्रस द्वीप पर संत ट्रायफिलियस के अवशेष देखे।

पवत्रि नबी एलीशा रूबेन कुल के शफ्फात के पुत्र थे[4356] । उनका जन्म अबेल-मेहोला नगर में हुआ था[4357] (3 राजा 19:16) और वे एक महान चमत्कार करने वाले थे। उनके जन्म के साथ ही चमत्कारकि घटनाएँ जुड़ी हुई थीं: यरूशलेम से दूर स्थति शीलो नगर में एक सुनहरी बछड़ी खड़ी थी, जसिे इस्राएलयिों ने, मूर्तपिूजा में भटक जाने के बाद, ईश्वर के रूप में पूजा और बलदिान चढ़ाए। इलाइशा के जन्म के क्षण भर में, यह नर्जिीव गाय इतनी ज़ोर से गर्जयी कि उसकी गर्जना यरूशलेम में भी सुनी जा सकी। जब सभी इस पर अत्यंत चकति थे, तो पवत्रि आत्मा से परपिूर्ण एक याजक ने कहा: 'आज परमेश्वर का एक महान भवषि्यवक्ता पैदा हुआ है, और वह मूर्तयिों को नष्ट करेगा और शक्तशिाली लोगों को कुचल देगा!'

[4358]जब एलशिा वयस्क हो गए, और उन्होंने परमेश्वर की अधकि महमिा के लिए कुँवारी पवत्रिता में अपना जीवन व्यतीत कयिा, तब परमेश्वर ने उन्हें भवषि्यद्वक्ता के कार्य के लिए बुलाया। यह बुलावा इस प्रकार हुआ। एक दनि, एलशिा बारह जोड़ों बैलों से खेत जोत रहे थे। पवत्रि नबी एलयिा, जो उस समय होरेब पर्वत पर ईश्वर से वार्तालाप कर रहे थे, को ईश्वर से आज्ञा मलिी कि वे एलशिा को उनकी जगह पर एक नबी के रूप में अभषिेक करें। और इस प्रकार, जब एलीशा खेत में थे, तो पवत्रि भवषि्यवक्ता एलयिा उनके पास आए, अपना ओढ़ना उन पर डाल दयिा[4359] , और प्रभु की इच्छा उन्हें बताकर, उन्हें एक भवषि्यवक्ता नयिुक्त कयिा और उनसे अपने पीछे चलने का आदेश दयिा। एलशिा ने तुरंत सब कुछ छोड़ दयिा और परमेश्वर के पवत्रि नबी, एलयिा, का पूरे दलि से अनुसरण करने के लिए तैयार हो गया; उसने केवल अपने पतिा और माता को वदिा कहने के लिए थोड़ी देर के लिए घर जाने की अनुमतिमांगी। घर पर, उसने उस जोड़ी बैलों को ले लयिा जनिसे वह स्वयं हल चलाता था, उन्हें ज़बिाह कर दयिा, हल को लकड़ी की तरह काट दयिा, उसे आग में डाल दयिा, और उस पर मांस भूनकर आने-जाने वालों और पड़ोसयिों के लिए दावत तैयार की; जसिके बाद, अपने पतिा और माता को चूमकर, एलीशा तुरंत एलयिा के पीछे हो लयिा और उनकी सेवा करने लगा, और उनसे ईश्वर के रहस्य सीखे; ईश्वर की कृपा से, वह एक पैगंबर बना, जो अपने गुरु और मार्गदर्शक – संत एलयिा से कम महान नहीं था। जब परमेश्वर को यह उचति लगा कि वे अपने सेवक एलयिा को आग की रथ में एक आँधी के साथ स्वर्ग में उठा लें (2 राजा 2:1–15) और उसे स्वर्ग में ले जाएँ, तो एलयिा ने एलशिा से पूछा कि वह परमेश्वर से क्या वरदान चाहता है, जसिके लिए एलयिा स्वयं अपनी प्रार्थना के द्वारा मध्यस्थता करेगा।

उसने कहा, "माँगो, मैं तुम्हारे लिए क्या कर सकता हूँ, इससे पहले कि मुझे तुमसे उठा लयिा जाए।"

एलशिा ने कुछ भी सांसारकि या अस्थायी नहीं माँगा, क्योंकि उसने ईश्वर के लिए सब कुछ त्याग दयिा था और आत्मा में दीन था, जो सभी चीजों को कुछ भी नहीं समझता था, उसे पृथ्वी पर कुछ भी नहीं चाहिए था; उसने एलयिा से न तो शरीर के स्वास्थ्य के लिए और न ही लंबी आयु के लिए मांगा, क्योंकि, शाश्वत जीवन की वरिासत की आशा में, वह इस अस्थायी जीवन में लंबा प्रवास नहीं चाहता था, बल्कि उसने पवत्रि आत्मा की उस कृपा की याचना की, जो पवत्रि एलयिा पर अवतरति थी।

उसने कहा, 'ऐसा हो कि भवषि्यवाणी का वरदान और चमत्कार करने का वरदान, जो आप में है, मुझमें उसका दोगुना हो जाए! ताकि मैं उन लोगों को उपदेश दे सकूँ जो भवषि्यवाणी के वचन के द्वारा भटक गए हैं और baal की उपासना की ओर मुड़ गए हैं, चमत्कारों से अपनी शकि्षाओं की पुष्टि करूँ, और इस प्रकार उन्हें एक सच्चे परमेश्वर की ओर वापस मोड़ सकूँ।'

एलयि्याह ने एलीशा की वनिती मान ली, परन्तु एक शर्त पर, और उससे कहा, 'यदि तू मुझे तुझ से उठाए जाते देखे, तो तेरे लिए ऐसा ही होगा।' और देखो, जैसे ही वे आगे बढ़ रहे थे और बातें कर रहे थे, अचानक आग की एक रथ और आग के घोड़े प्रकट हुए, जन्हिोंने उन्हें एक-दूसरे से अलग कर दयिा, और एलयिा एक आँधी में स्वर्ग में उठा लिए गए। एलशिा ने यह देखा और चल्लिाया: 'हे मेरे पतिा, हे मेरे पतिा! हे इस्राएल के रथ और हे घोड़सवार!'[4360]

[4356] अन्य ववरिणों के अनुसार, वह मनश्शेह के वंश से थे।

[4357] अबेल-मेहोला नगर यॉर्डन नदी से बहुत दूर नहीं स्थति था।

[4358] होरेब अरब रेगस्तिान में एक पहाड़ है, जो उसी पर्वत श्रृंखला की पश्चमिी चोटी है, जसिका पूर्वी भाग माउंट सनिाई है।

[4359] मलिोथ – एक बाहरी वस्त्र, एक चोगा।

[4360] अन्य राष्ट्रों के राजा युद्ध में घोड़ों और रथों का उपयोग करते थे। इसलिए, एलशिा ने महान एलयिा को 'इज़राइल का रथ' और 'घुड़सवार' कहा, क्योंकि वह अकेले ही दुश्मनों को मार गरिाने और अपने साथयिों को वजिय प्रदान करने के लिए पर्याप्त था (धन्य थयिोडोर, प्रश्न 8)।

अंत में, जब एलीशा उस अग्नमिय रथ को, जो एलयिा के साथ दूर ऊँचाइयों में गायब हो गया था, और नहीं देख सके, तो वे उनके लिए पिता की तरह रोने लगे और अपने वस्त्र फा दिए। लेकिन तब उसने एलयिा द्वारा ऊपर से गरिाया गया एक चोगा देखा, जो उस पर आ पड़ा, और उसने इसे एलयिा की वशिेष आत्मा प्राप्त करने के संकेत के रूप में स्वीकार कयिा, और उसके लिए अपने दुख में सांत्वना पाई। उन्होंने इसे एक महान खजाने की तरह, या एक कीमती शाही बैंगनी चोगा की तरह अपने पास रखा - और इस चोगा से उन्होंने ठीक वैसे ही एक चमत्कार कयिा जैसे पहले एलयिाह ने कयिा था। यॉर्डन नदी पार करने की इच्छा से, उन्होंने चोगा से पानी पर प्रहार कयिा - पानी दो भागों में बंट गया, और एलीशा सूखी जमीन पर पार हो गए। यरहिो में रहने वाले भवष्यिद्वक्ता के शष्यि, जन्हिोंने इस चमत्कार को देखा, इस बात से आश्वस्त हो गए कि एलयि्याह की आत्मा एलशिा पर अवतरति हुई थी; और वे उसके पास आकर उसके सामने झुक गए।

अपनी ओर से, संत एलीशा यरीहो आए और कुछ समय के लिए वहाँ ठहरे। शहर के नविासी उनके पास आए और उन्होंने कहा, 'जैसा कि आप स्वयं देख सकते हैं, हमारे शहर का स्थान अच्छा है; लेकिन पानी खराब है, और इसके कारण भूमि बंजर है!'

एलशिा ने उनसे एक नया पानी का घड़ा लाने और उसमें नमक डालने को कहा। जब उन्होंने ऐसा कर लयिा, तो उन्होंने वह घड़ा लयिा और उस स्थान पर गए जहाँ से झरने नकिलते थे; वहाँ उन्होंने नमक डाल दयिा और कहा:

'परमेश्वर की यह वाणी है: "मैंने इस जल को स्वास्थ्यप्रद बना दयिा है; यह अब मृत्यु या बाँझपन का कारण नहीं बनेगा।"'

इसके बाद, एलशिा यरीहो से बेतेल नगर के लिए रवाना हुआ, जसिके नविासी—ईश्वर से मुंह मोड़ चुके इस्राएली—मूर्तपिूजा कर रहे थे। जब वह नगर के पास पहुँचा, तो वहाँ सड़क पर खेल रहे कुछ छोटे बच्चों ने उसे देखा; जब उन्होंने उसका गंजा सरि देखा, तो वे उस पर हँसने और चल्लिाने लगे: 'हट जा, गंजे! हट जा, गंजे!'

जब एलीशा वहाँ से गुज़र रहे थे, तो उन्होंने पीछे मुड़कर देखा और जब उन्होंने देखा कि वे उनका पीछा कर रहे थे, और अभी भी उनका मज़ाक उड़ाते और चल्लिाते हुए, तो उन्होंने उन्हें ईश्वर के नाम पर शाप दयिा। और देखो, जंगल से दो मादा भालू नकिल आईं और उन लड़कों में से बयालीस को फाड़-फाड़ डाला; बाकी मुश्कलि से शहर में भागकर बच गए। इस दंड द्वारा, परमेश्वर के भवष्यिवक्ता ने, धर्मी न्याय में, उन बच्चों को उनकी उपहास उड़ाने के लिए दंड दयिा और उनके जीवन को समाप्त कर दयिा, ताकि वे वयस्क होकर दुष्ट पुरुष न बन सकें; जबकि उनके माता-पिता को उनकी मूर्तपिूजा के लिए दंडति कयिा गया और उन्हें ईश्वर के भय में अपने बच्चों को पालने और ईश्वर के सेवकों का सम्मान करना सखिाने का एक कड़वा पाठ मलिा। बेतेल से, एलशिा कर्मेल पर्वत गए[4361] और वहाँ से सामरयिा लौट आए।

उस समय, इस्राएलयिों और मोआबयिों के बीच युद्ध छड़ि रहा था। मोआब का राजा, जसिकी भूमि भेड़ों के झुंडों से भरपूर थी, परंपरागत रूप से इस्राएल के राजा को एक वार्षकि श्रद्धांजलि भेजता था जसिमें एक लाख मेमने और एक लाख भेड़ें उनके ऊन के साथ शामलि होती थीं[4362] । हालाँकि, इस्राएल के राजा अहब की मृत्यु के बाद, मोआब के राजा मोशा ने इस्राएल के राज्य से अलग हो गया और प्रथागत श्रद्धांजलि भेजना बंद कर दयिा।

उस समय, यहोराम, आहाब का पुत्र यहोराम, जसिने सामरयिा में इस्राएल पर राज्य कयिा और अपने पिता के दुष्टतापूर्ण मार्ग पर चलना जारी रखा, ने अपनी सेनाएँ इकट्ठी कीं और यरूशलेम से यहूदा के धर्मपरायण राजा यहोशापात तथा अपने अधीन एदोम के राजा को सहायता के लिए बुलाकर एदोमी मरुभूमि के रास्ते मोआबयिों के वरिुद्ध प्रस्थान कयिा। ईश्वर की व्यवस्था से, पवत्रि नबी एलशिा भी उनकी कतारों में थे। सात दनिों तक तीनों राजा अपने-अपने सेनापतयिों के साथ मार्च करते रहे, और न तो मनुष्यों के लिए और न ही पशुओं के लिए पानी था; सभी प्यास से बेहाल हो रहे थे। इस्राएल के राजा यहोराम ने एक आह भरते हुए कहा:

'यहोवा ने हमें—तीनों राजाओं को—एकत्र कयिा है, ताकि हमें मोआबयिों के हाथ में सौंप दे।'

तब यहूदा के राजा ने पूछा:

'क्या यहाँ सेना में कोई भवष्यिवक्ता नहीं है जसिसे हम यहोवा से पूछताछ कर सकें?'

[4361] कारमेल – इस्साखार के कुल में एक पहाड़; भवष्यिवक्ता एलयिा वहाँ अक्सर ठहरते थे (3 राजा 18:19)।

[4362] रुनो – ऊन, खाल।

इज़राइल के राजा के एक सेवक ने बताया कि शिफ़ट का पुत्र एलिशा सेना में था; उसने भविष्यवक्ता एलिया के हाथों पर पानी डालकर उनकी सेवा की थी[4363] । तब यहूदा के राजा यहोशापात ने एलिशा के पक्ष में कहा:

'यहोवा का वचन इस मनुष्य पर स्थिर है।'

और इस प्रकार वे तीनों राजा पवित्र एलिशा के पास आए और उनसे अपने लिए प्रभु से प्रार्थना करने को कहा, कि वह उन्हें यह प्रकट कर दे कि उनके लिए क्या लिखा है।

पर पवित्र एलीशा ने इस्राएल के राजा योराम से उत्तर दिया:

'मेरा तुमसे क्या काम? अपने पिता आहाब और अपनी माता यिज़बेल के भविष्यद्वक्ताओं के पास जाओ, और उनसे पूछो कि तुम्हारे लिए क्या लिखा है।'

तब इस्राएल के राजा योराम ने नम्रता से उससे कहा:

'क्या प्रभु ने सचमुच हम तीनों राजाओं को केवल मोआबियों के हवाले करने के लिए इकट्ठा किया है?'

एलिशा ने उससे उत्तर दिया:

'मैं उस सेनाओं के प्रभु का आह्वान करता हूँ, जिनके सामने मैं खड़ा हूँ, उन्हें अपना गवाह मानकर: यदि यहूदा के धर्मी राजा यहोशापात का सम्मान न होता, तो मैं तुम्हें, एक मूर्तिपूजक को, देखने की भी इच्छा न करता।'

इसके बाद, एलिशा ने एक गायक को उसके पास लाने की मांग की[4364] । और देखो, जब यहूदा का वह लेवीय गायक, जो दाऊद की भजन-संग्रह गाने में निपुण था, आकर गाने लगा, तो यहोवा का आत्मा एलिशा पर उतर आया, और उसने भविष्यद्वाणी करते हुए कहा:

'गहरे-गहरे खन्दक खोदो, क्योंकि यहोवा का वचन है: तुम न तो वर्षा देखोगे और न पवन, परन्तु खंदकों में पानी भर जाएगा, जिसे तुम और तुम्हारे पशु पियोगे, और यहोवा स्वयं मोआबियों को तुम्हारे हाथ में देगा, और तुम उनकी शक्ति पर विजय पाओगे और उनके सब किलेबंदी नगरों को उजाड़ दोगे; तुम सब फलदार वृक्षों को काट डालोगे और हर जल स्रोत को पत्थरों और मिट्टी से बंद कर दोगे, और मोआब के सारे देश को उजाड़ दोगे।'

और भविष्यवक्ता के वचन सब सच हुए। दूसरे दिन भोर होते ही, जब यरूशलेम का परमेश्वर-भक्त राजा यहोशापात, अपनी रीति के अनुसार, याजकों के हाथों द्वारा परमेश्वर को बलिदान चढ़ा रहा था, लोगों ने एदोमी मार्ग पर पानी बहते देखा, जो पहले उस स्थान तक पहुँचा जहाँ यहोशापात की सेनाएँ तैनात थीं, और आसपास के क्षेत्र में फैलकर घाटी की सभी खाइयों और दर्रों को भर दिया; और सारा देश पानी से भर गया और गीला हो गया। लोगों ने अपनी प्यास बुझाई और, अपनी ताकत वापस पाकर, मोआबियों पर चढ़ गए और उन्हें करारी हार दी; उन्होंने पूरे देश को कैद कर लिया और, नबी की आज्ञा पर, उसे उजाड़ दिया, और इसके बाद विजय प्राप्त कर अपने देश लौट आए।

एक बार, भविष्यवक्ता के एक शिष्य की विधवा ने एलिशा से दुखित होकर कहा: 'तुम्हारे सेवक—मेरे पति—की मृत्यु हो गई है; और तुम जानते हो कि वह परमेश्वर का भय मानने वाला व्यक्ति था। अब एक लेनदार आ रहा है, जिसके बहुत बड़े कर्जदार मेरे पति थे, और उसे यहाँ मेरे पास कुछ भी नहीं मिलता जो वह ले जाए, क्योंकि मेरे पास बिल्कुल कुछ भी नहीं है; और इसलिए वह मेरे दो बेटों को अपने लिए काम करने के लिए ले जाना चाहता है—वे बेटे जो मेरी विधवा-जीवन में मुझे सांत्वना देने के लिए बचे हैं और जो मेरी आँखों के तारों की तरह मुझे प्यारे हैं।'

इस प्रकार विधवा ने परमेश्वर के भविष्यवक्ता से विलाप करते हुए पुकारा। कुछ विवरणों के अनुसार, यह विधवा ओबद्याह नामक भविष्यवक्ता की पत्नी थी, जो अहब के घर का व्यवस्थापक था। उसने रानी यिज़बेल की तलवार से

[4363] 'उसने एलिय्याह के हाथों पर पानी डाला', अर्थात् वह भविष्यवक्ता एलिय्याह का स्थायी परिचारक था, और इसलिए एक ऐसा भविष्यवक्ता था जिस पर पूर्ण भरोसा किया जा सकता था, जैसा कि यहूदा के राजा यहोशापात ने एलिशायह के बारे में कहा था (2 राजा 3:12), जाहिर तौर पर वह पहले से ही उसके बारे में सुन चुके थे।

[4364] यह तथ्य कि भविष्यवक्ता एलिशा ने एक प्रकटवाणी प्राप्त करने के लिए अपनी आत्मा को तैयार करने या राजा यहोराम (2 राजा 3:13–14) के प्रति अपने क्रोध से अपनी आत्मा को शांत करने के लिए तार वाले वाद्ययंत्रों का सहारा लिया, जिसके बाद 'यहोवा का हाथ उस पर था' (तुलना करें 1 राजा 18:16; यर. 1:9), को पहली बात, प्राचीन काल में ज्ञात एक प्रथा के रूप में देखा जाता है – संगीत का उपयोग (देखें 1 शमूएल 16:16) आत्मा का बाहरी दुनिया से ध्यान हटाने, उसे शांत करने और उसे उत्तेजित करने के लिए; दूसरा, भविष्यद्वक्ताओं के विद्यालयों में संगीत (भजन गाने के साथ) का उपयोग, जिससे भविष्यवक्ता एलिशा का घनिष्ठ संबंध था। धन्य थियोडोरेट के अनुसार, 'पुरोहित, मूसा की व्यवस्था के अनुसार, तुरहियों का उपयोग करते थे, जबकि लेवियों ने वीणाओं का उपयोग किया, झंकारियों, सिबिलों और अन्य वाद्ययंत्रों का उपयोग करते थे। इनके उपयोग में, वे दाऊद के आध्यात्मिक और मधुर गायन का भी उपयोग करते थे। नबी ने इन गायकों में से एक को बुलाने का आदेश दिया। और जब गायक ने गाया, तो आत्मा की कृपा ने संकेत दिया कि क्या किया जाना है' (4 राजा पर प्रश्न 12)।

परमेश्वर के सौ भविष्यवक्ताओं को छिपाया था और उन्हें अपने खर्च पर सहारा दिया, जिसके कारण वह अपनी सारी संपत्ति खर्च कर बैठा और साहूकारों का कर्जदार हो गया[4365] । मरते समय उसने अपनी पत्नी और बच्चों को ईश्वर की कृपा पर सौंप दिया और उन्हें प्रभु में दृढ़ आशा रखने का आदेश दिया। पवित्र भविष्यवक्ता एलिशा ने विधवा और उसके बच्चों पर दया करके उससे पूछा:

'मैं तुम्हारे लिए क्या करूँ? बताओ, तुम्हारे घर में अब क्या है?'

उसने उत्तर दिया:

'तेरे दास के घर में तेल के एक पात्र के सिवा और कुछ नहीं है, जिसमें थोड़ा सा तेल है।'

तब एलिशा ने उससे कहा:

'जाओ, अपने पड़ोसियों से जितने भी खाली पात्र मिल सकें, उतने मँगवा लो, और अपने बेटों के साथ घर में बंद हो जाओ, और अपनी मशक से तेल इन सभी पात्रों में डालो, और वे भर जाएँगे।'

विधवा ने परमेश्वर के पुरुष की आज्ञा के अनुसार किया। उसने अपने पड़ोसियों से खाली पात्र इकट्ठे किए, उन्हें अपने घर में रख दिया, अपने बेटों के साथ घर के अंदर बंद हो गई, और अपने घड़े से उधार लिए हुए पात्रों में तेल डालने लगी; उसके बेटों ने अपनी माँ की मदद करते हुए उन्हें बर्तन थमाए और उन्हें भर दिया, और तेल उसके घड़े से सूखा नहीं, बल्कि जैसे किसी झरने से बह रहा हो, वैसे ही बहता रहा। जब सभी बर्तन भर गए, तो उस स्त्री ने अपने बेटों से कहा, 'एक और बर्तन लाओ।'

लेकिन बच्चों ने कहा कि और कोई खाली पात्र नहीं बचा, और विधवा के घड़े से तेल का बहाव रुक गया। विधवा, जो बड़ी प्रसन्नता से भर गई थी, परमेश्वर के पुरुष के पास दौड़ी और उसे इस चमत्कार के बारे में बताया। तब एलिशा ने उसे कहा कि वह जाकर तेल बेच दे और अपने पति का कर्ज चुका दे, और जो कुछ बचे, उससे अपने बेटों के साथ जीवन यापन करे।

ऐसा हुआ कि पवित्र भविष्यवक्ता एलिशा शूनेम[4366] नगर से होकर जा रहे थे। वहाँ, एक धनी स्त्री ने उन्हें रोटी खाने के लिए अपने घर आमंत्रित किया और बड़ी आतिथ्य-सत्कार के साथ परमेश्वर के पुरुष की सेवा की। नबी एलिशा को अक्सर कर्मेल से यॉर्डन, या गिलगाल, या यरीहो की यात्रा करते समय उस नगर से होकर गुजरना पड़ता था, और वहां से कर्मेल लौटना होता था; उस महिला के निमंत्रण के बाद, वह नियमित रूप से रोटी खाने के लिए उसके घर आते थे, क्योंकि वह धार्मिक और सदाचारी थी। एक दिन, उस स्त्री ने अपने पति से कहा: 'मुझे पूरा विश्वास है कि जो परमेश्वर का पुरुष अक्सर हमारे यहाँ से होकर जाता है, वह एक पवित्र पुरुष है। आओ, हम उसके लिए एक छोटा ऊपरी कमरा तैयार करें, और वहाँ एक बिस्तर, एक मेज़, एक कुर्सी और एक दीवान लगा दें, ताकि जब वह अपनी यात्रा से हमारे यहाँ आए, तो वह विश्राम कर सके।'

और उन्होंने वैसा ही किया। और जब भी वह पवित्र नबी उस नगर में आता, तो वह उस कमरे में ठहरता था। एक दिन, उसके लिए तैयार किए गए कमरे में आराम करते हुए, ईश्वर के पुरुष ने सोचा कि वह इस आतिथ्यपूर्ण और सदाचारी महिला का एहसान कैसे चुका सकते हैं। उन्होंने अपने सेवक गेहाज़ी को उस महिला को अपने पास बुलाने का आदेश दिया। जब वह आई, तो ईश्वर के पुरुष ने उससे कहा:

'आपने हमारी इतनी अच्छी देखभाल की है; मैं इसका बदला कैसे चुकाऊँ? क्या आप राजा, या राजकुमार, या किसी सेनापति से कोई निवेदन करना चाहती हैं?'

उसने उत्तर दिया:

'मुझे उनसे कोई निवेदन नहीं करना है, क्योंकि मैं अपने ही लोगों के बीच रहता हूँ।'

जब वह महिला चली गई, तो संत ने गेहाजी की ओर मुड़कर उससे पूछा कि वह उस महिला की दया का बदला कैसे चुका सकता है। गेहाजी ने उत्तर दिया:

'इस स्त्री के कोई संतान नहीं है, और उसका पति बूढ़ा है; ईश्वर से प्रार्थना करो कि वह उसे एक पुत्र दे, जो उसकी वंशावली को आगे बढ़ाए।'

[4365] 3 राजा 18 और आगे। लेनदार का विधवा के बच्चों को दासता में बेचने का इरादा कानून की पत्री (लैव. 25:39; निर्ग. 21:2) और जीवन की कठोर वास्तविकताओं (मत्ती 18:25) द्वारा उचित ठहराया गया था।

[4366] सोनम या सुनेम नगर इस्साखार कुल में स्थित था (यहोशू 19:18), गिल्बुअ की पहाड़ियों के सामने (1 शमूएल 28:4), कार्मेल के पास।

ईश्वर के पुरुष ने ऐसा ही कयि। उन्होंने उस स्त्री के लिए ईश्वर से बड़ी आस्था और लगन के साथ प्रार्थना की और उनसे एक संदेश प्राप्त करने के बाद, उन्होंने आदेश दयि कि उसे दूसरी बार उनके पास बुलाया जाए। जब वह आई और द्वार पर खड़ी हो गई, तो ईश्वर के पुरुष ने उससे कहा कि वह गर्भधारण करेगी और एक पुत्र को जन्म देगी। वह महिला उसके सामने झुक गई और जैसे आनंद के मारे विश्वास न कर पा रही हो, उसने संत से आश्वासन देने का आग्रह कयि। संत ने उसे उनके अचूक वचन पर दृढ़ता से विश्वास करने के लिए मनाया। वह महिला सचमुच गर्भवती हुई और जब समय आया, तो उसने एक पुत्र को जन्म दयि, जिसे उसने स्तनपान कराया। एक दिन, जब लड़का बड़ा हो गया, तो गर्मियों की फसल काटने के मौसम में, वह अपने पिता के पास खेत में गया जहाँ फसल काटी जा रही थी। वहाँ थोड़ी देर रहने के बाद, उसे सिरदर्द होने लगा और वह चिल्लाया: 'मेरा सिर दुख रहा है, मेरा सिर दुख रहा है!'

उसके पिता ने एक नौकर को आदेश दयि कि वह अपने बीमार बेटे को घर ले जाए। घर पर, बीमार लड़का दोपहर तक ही अपनी माँ की गोद में लेटा रहा, और फिर उसकी मृत्यु हो गई[4367] । उसकी माँ ने शव को उठाया, उसे पैगंबर के कक्ष में ले गई, उसे बिस्तर पर लिटाया, दरवाज़े बंद कर दिए, बाहर निकली और अपने पति को बुलाया। अपने बेटे की मौत के बारे में उसे कुछ बताए बिना, उसने उससे कहा, , कि वह उसके लिए एक नौकर और एक गधा भेजे, क्योंकि उसे कर्मेल में परमेश्वर के पुरुष के पास जाना था, जहाँ से वह जल्द ही लौट आएगी।

उसके पति ने उससे पूछा, 'तुम उसके पास क्यों जा रही हो? निश्चय ही आज न तो अमावस्या है और न ही सब्बाथ?'

(उन दिनों, लोग परमेश्वर की स्तुति करने और पवित्र नबी एलीशा से उपदेश प्राप्त करने के लिए कारमेल पर्वत पर इकट्ठा होते थे।) पत्नी ने उत्तर दयि कि यद्यपि तो यह सब्बाथ था और न ही नवचंद्रमा, फिर भी उसे जाना ही था – और वह उस पवित्र पुरुष से मिलने के लिए जल्दी से चल पड़ी। जैसे ही वह कार्मेल पर्वत के पास पहुँची, परमेश्वर के पुरुष ने उसे आते हुए देखकर अपने सेवक गेहाजी से कहा:

'वह शुनेमी स्त्री है। उसके स्वागत के लिए दौड़ और पूछ: "क्या तू कुशल है? क्या तेरा पति कुशल है? क्या तेरा पुत्र कुशल है?"' उसने गेहाजी से कहा, जो उसे मिलने के लिए बाहर आया था:

'वे कुशल हैं।'

लेकिन जब वह पहाड़ पर पवित्र पुरुष के पास आई, तो वह उसके पैरों पर गिर पड़ी। गेहाजी उसे उससे दूर धकेलने ही वाला था, लेकिन एलीशा ने कहा:

'उसे अकेला छोड़ दो, क्योंकि उसका प्राण गहरे शोक में है; परन्तु यहोवा ने मुझे यह न बताकर कि वह शोकग्रस्त है, छिपा रखा है।'

उस स्त्री ने कहा:

'क्या मैंने अपने स्वामी से पुत्र माँगा था? क्या यह आप ही नहीं थे, जिन्होंने मेरे लिए परमेश्वर से उसकी याचना की थी? क्या मैंने यह नहीं कहा था, "मुझे धोखा न दें"? और अब मेरा पुत्र मर गया है।'

ईश्वर के पुरुष ने उस पर दया की और अपना लाठी गेहाजी को देते हुए उसे जल्दी से जाकर लाठी को मृत लड़के पर रखने का आदेश दयि। लेकिन मृतक लड़के की माँ इससे संतुष्ट नहीं हुईं और पवित्र नबी से चिपककर कहने लगीं: 'जिस प्रकार प्रभु जीवित हैं और आपकी आत्मा जीवित है, मैं आपको नहीं छोड़ूँगी।' तब पवित्र एलिशा उठे और उनके साथ चले गए। गेहाज़ी, उससे पहले वहाँ पहुँचकर, छड़ी लड़के के मुख पर रख दिया, परन्तु लड़के में कोई जीवन का लक्षण नहीं दिखा। तब गेहाज़ी लौट आया और परमेश्वर के पुरुष से मिलकर कहने लगा, 'लड़का जीवित नहीं हुआ।' अन्त में, पवित्र भविष्यवक्ता एलिशा स्वयं नगर में पहुँचे और स्त्री के घर में प्रवेश करके ऊपरी कक्ष में चले गए। वहाँ, उसके बिस्तर पर, मृत लड़का पड़ा था। पवित्र एलिशा ने दरवाज़े बंद कर दिए और, प्रभु से प्रार्थना करने के बाद, लड़के पर लेट गए, अपने होंठ उसके होंठों पर, अपनी आँखें उसकी आँखों पर रख दीं, और अपने हाथ उसके हाथों पर तथा अपने घुटने उसके घुटनों पर रखकर उस पर फूँक मारी – और लड़के का शरीर गर्म होने लगा। नबी उठे, कमरे में इधर-उधर टहले, और एक बार फिर लड़के पर लेट गए। यह सात बार हुआ, जिसके बाद लड़के ने अपनी आँखें खोल दीं। एलीशा ने गेहाजी को बुलाया और उससे कहा कि वह लड़के की माँ को बुला लाए। जब वह आई, तो एलीशा ने उससे कहा:

'अपने बेटे को ले जाओ!'

[4367] धर्मनिष्ठ महिला के पुत्र की बीमारी संभवतःलू लगने के कारण थी (जुडिथ 8:2–3; भजन संहिता 120:6)।

वह स्त्री परमेश्वर के पुरुष के पैरों पर गिर पड़ी, और अपने जीवित पुत्र को लेकर आनंदित हुई और God[4368] की स्तुति करने लगी।

इसके बाद, परमेश्वर के भविष्यवक्ता एलीशा गिलगाल आए, वह स्थान जहाँ प्राचीन काल में इस्राएलियों ने प्रतिज्ञात देश के रास्ते में यॉर्डन नदी पार की थी। यहाँ भविष्यवक्ता एलीशा लंबे समय तक रहे। और फिर उस देश में अकाल पड़ा। पैगंबर के साथ उनके शिष्य थे, जो शुद्धता और गरीबी में, नए अनुग्रह के संतों की तरह, उनका अनुकरण करते हुए रहते थे। ईश्वर के पुरुष और उनके शिष्य एक विशेष रूप से सुनसान जगह पर ठहरे हुए थे। एलीशा ने अपने सेवक को आग पर एक बड़ा बर्तन रखने और पैगंबर के शिष्यों, जिनकी संख्या सौ पुरुष थी, के लिए शोरबा पकाने का आदेश दिया। एक शिष्य सब्जियाँ इकट्ठा करने के लिए खेतों में गया और उसे एक जंगली फल मिला, जो देखने में अंगूर जैसा था, जिसे कोलोकिंथिदा कहा जाता था; वह बहुत कड़वा था, इसीलिए उसे 'पृथ्वी की पित्त' के नाम से भी जाना जाता था। यह फल स्वास्थ्य के लिए अत्यंत हानिकारक है, हालांकि इसका उपयोग दवा में किया जाता है; फिर भी, इसे बड़ी मात्रा में खाने से मृत्यु हो जाती है। इकट्ठा करने वाले को इस फल के पूरे खतरे का पता नहीं था और इसलिए उसने अपने कपड़े इससे भर लिए और इसे पकाने के लिए बर्तन में डाल दिया। जब भोजन शिष्यों को परोसा गया और उन्होंने खाना शुरू किया, तो उन्होंने तुरंत कड़वाहट चखी और वे बीमार पड़ गए।

वे भयभीत होकर एलिशा की ओर मुड़कर चिल्लाए, 'हे परमेश्वर के मनुष्य, इस कलश में मृत्यु!' और उन्होंने खाना बंद कर दिया, क्योंकि आगे खाना असंभव था।

एलिशा ने कड़ाही में थोड़ा आटा डालने का आदेश दिया (भोजन को सामान्य करने के लिए नहीं, बल्कि अपने चमत्कार को छिपाने के लिए) – भोजन स्वादिष्ट और हानिरहित हो गया, और जो लोग इसे खाए वे तृप्त और स्वस्थ हो गए।

उस समय, बाअल-शलीशा के नगर का एक धर्मनिष्ठ व्यक्ति[4369] पवित्र नबी एलीशा के पास आया और पहली जौ की फसल से बीस छोटे जौ के रोटी लाया। परमेश्वर के पुरुष ने आज्ञा दी कि ये रोटी उपस्थित लोगों में बाँट दी जाएँ। लेकिन उसके सेवक ने कहा कि ये छोटे रोटी सौ लोगों के लिए पर्याप्त नहीं होंगे।

एलिशा ने उससे उत्तर दिया:

'इन्हें सबको बाँट दो; उन्हें खाने दो; क्योंकि यहोवा का यह वचन है: वे सब तृप्त होंगे, और कुछ बचेगा भी।'

और वास्तव में, सौ आदमी तृप्त हो गए, और जैसे प्रभु ने भविष्यवक्ता के द्वारा कहा था, बहुत से टुकड़े बच गए।

[4370]उस समय, सीरिया के राजा का एक प्रसिद्ध सेनापति, नामान नामक व्यक्ति, कोष्ठरोग से पीड़ित हो गया: वह अपनी बहादुरी और सैन्य जीतों के लिए प्रसिद्ध था, और इसलिए राजा द्वारा बहुत सम्मानित किया जाता था। लंबे समय तक बीमार रहने के बाद, नामान को कोई ऐसा डॉक्टर नहीं मिला जो उसे ठीक कर सके। एक दिन, सीरियाई सैनिकों ने इस्राएल के देश से एक लड़की को बंदी बनाकर लाया और उसे नामान की पत्नी की सेवा में दे दिया। उस लड़की ने अपने माता-पिता से पवित्र भविष्यवक्ता एलिशा और उनकी प्रार्थनाओं के द्वारा किए गए महान चमत्कारों के बारे में सुना था, और उसने अपनी मालकिन को, जिसकी वह सेवा करती थी, इस बारे में बताया।

लड़की ने कहा, 'काश मेरे स्वामी उस परमेश्वर के भविष्यवक्ता के पास जाते जो सामरिया में है, तो वह उन्हें उनके कोढ़ से चंगा कर देते!'

नामान की पत्नी ने उस लड़की की बातें बिल्कुल वैसी ही अपने पति को बता दीं। नमान अपने राजा के पास गया और उससे इज़राइल के देश, सामरिया में—ईश्वर के नबी के पास—चंगा होने के लिए जाने की अनुमति मांगी। राजा ने न केवल उसे जाने की अनुमति दी, बल्कि उसे यहोराम, आहाब के पुत्र, जो इस्राएल का राजा था, के पास ले जाने के लिए एक

[4368] मृत बच्चे को जीवित करने में भविष्यवक्ता के कार्य सार में ज़रेफ़थ की विधवा के पुत्र को जीवित करने में भविष्यवक्ता एलियाह के कार्यों के समान हैं (3 राजा 17:19-23)। नबी एलीशा ने 'अपनी इंद्रियों को मृतक की इंद्रियों पर लागू किया, ताकि मृतक जीवितों के जीवन में सहभागी हो सके, जो स्पष्ट रूप से आध्यात्मिक अनुग्रह के कार्य द्वारा संभव हुआ, जो जीवन प्रदान करता है' (धन्य थियोडोर, प्रश्न 18)। यह चमत्कार प्रभु यीशु मसीह के पुनरुत्थान का पूर्वसंकेत था। (2 राजा 4:8–37 का वृत्तांत महा शनिचर को संध्या के समय बारहवें पैरिया के रूप में पढ़ा जाता है)।

[4369] बाल-शलीशा (तुलना करें 1 शमूएल 9:4) – एक नगर, जो संभवतः एप्रैम के कुल में था।

[4370] कोढ़ संक्रामक रोगों में सबसे भयानक और घृणित है; यह मुख्य रूप से गर्म जलवायु वाले देशों में, विशेष रूप से मिस्र, फिलिस्तीन, सीरिया, अरब, भारत और सामान्यतः पूर्व में प्रचलित है। जैसे-जैसे यह रोग बढ़ता है, त्वचा सफेद हो जाती है, फिर सूज जाती है, सूख जाती है, और बदबूदार मवाद और छाले से ढक जाती है; बाद में, अंग गिर जाते हैं, और अधिकांश मामलों में, इस रोग से पीड़ित व्यक्ति अंततः भयानक पीड़ा में मर जाता है।

पत्र भी दिया। नेहेम्याह, परमेश्वर के पुरुष के लिए उपहार—चाँदी के दस टैलेंट, सोने के छह हजार सिक्के और दस जोड़े बढ़िया वस्त्र—लेकर इज़राइल के देश में पहुँचे और राजा योराम को अपने राजा का पत्र सौंपा। पत्र में लिखा था:

'आपको जो पत्र मिलने वाला है, उससे जान लीजिए कि मैंने अपना सेवक नामान आपके पास भेजा है, ताकि आप उसे उसके कोढ़ से चंगा कर दें।'

इज़राइल का राजा योराम, अरामी राजा का पत्र पढ़कर बहुत व्याकुल हो गया; उसने अपने वस्त्र फाड़े और कहा:

'क्या मैं परमेश्वर हूँ, जो मार भी सकता हूँ और जिला भी सकता हूँ, कि उसने अपनी कुष्ठरोग से मुक्ति पाने के लिए मुझे एक कोठरी भेजा है? क्या तुम नहीं देखते कि वह मुझ पर युद्ध छेड़ने का बहाना ढूँढ रहा है?'

पवित्र नबी एलिशा को जब पता चला कि राजा बहुत दुखी है और उसने अपने कपड़े फाड़ लिए हैं, तो उन्होंने उसे संदेश भेजा: 'आप दुखी क्यों हैं, और आपने अपने कपड़े क्यों फाड़े हैं? नामान तुरंत आएँ और जानें कि इस्राएल में परमेश्वर का एक नबी है।'

नामान अपने घोड़ों और रथों के साथ आया और एलीशा के घर के द्वार पर ठहरा। पवित्र भविष्यवक्ता ने, अपने भेजे हुए एक सेवक के द्वारा, उससे कहा:

'जाओ, यॉर्डन नदी में सात बार डुबकी लगाओ, और तेरा शरीर पहले जैसा हो जाएगा, और तू शुद्ध हो जाएगा[4371]।'

नामान को नबी की बातों से बुरा लगा और वह यह कहते हुए चल दिया: 'मुझे तो उम्मीद थी कि वह स्वयं मेरे पास आएगा, मेरे पास खड़ा होगा, अपने परमेश्वर का नाम पुकारेगा, मेरे कुष्ठ रोग से ग्रस्त अंगों पर अपना हाथ रखेगा और मुझे मेरे कुष्ठ रोग से शुद्ध कर देगा; लेकिन इसके बजाय वह मुझे यरदन जाने की आज्ञा दे रहा है। क्या दमिश्क की नदियाँ—अबना और फार्पर[4372] —यॉर्डन और पूरे इस्राएल के सभी जल से बेहतर नहीं हैं? क्या मैं उनमें स्नान करके शुद्ध नहीं हो सकता?'

तब नामान बड़े क्रोध में सामरिया से लौट चला। परन्तु रास्ते में उसके दासों ने उसे परमेश्वर के पुरुष की आज्ञा मानने की सलाह दी, और कहा, 'यदि भविष्यवक्ता ने तुझसे कोई बहुत कठिन काम करने को कहा होता, तो क्या तू वैसा न करता? फिर भी उसने तुमसे केवल इतना ही कहा है: 'जाओ और यॉर्डन नदी में डुबकी लगाओ, और तुम शुद्ध हो जाओगे,' और फिर भी तुम यह भी करने को तैयार नहीं हो।"

नामान ने अपने दासों की बात मानी, जॉर्डन नदी पर गया, अपने रथ से उतरकर परमेश्वर के पुरुष द्वारा बताई गई विधि के अनुसार नदी में सात बार डुबकी लगाई, और तुरंत ही उसका शरीर साफ़ हो गया, और वह नदी से एक जवान आदमी की तरह तंदुरुस्त और स्वस्थ होकर बाहर निकला। और नामाँ अपने सारे दल के साथ पवित्र एलिशा के पास लौट आया; और उसके सामने खड़ा होकर, उसने कहा:

'अब मैं जान गया हूँ कि सारी पृथ्वी पर इस्राएल के सिवा कोई परमेश्वर नहीं है; इसलिये, अपने दास से ये उपहार स्वीकार करें जो मैं आपके लिए लाया हूँ।'

और इसके साथ ही उसने परमेश्वर के पुरुष को सोना, चाँदी और वस्त्र भेंट किए। परन्तु पवित्र एलिशा ने उससे कहा:

'जिस प्रभु की मैं सेवा करता हूँ, उसकी कसम, मैं आपसे कुछ भी नहीं लूँगा।'

नामान ने तब पैगंबर से जो वह लाया था उसे स्वीकार करने का आग्रह करना शुरू किया, लेकिन वह अडिग रहे और कुछ भी नहीं लिया।

तब नामान ने संत की ओर मुड़कर एक अनुरोध किया, और कहा:

[4371] जब नामान भविष्यवक्ता एलिशा के घर पहुँचा, 'उसने, व्यवस्था के अधीन रहने वाले के रूप में व्यवस्था का पालन करते हुए, नामान को कोढ़ी के रूप में स्वीकार करने से इनकार कर दिया (व्यवस्था के अनुसार, लेव. 13:14), लेकिन उसे यॉर्डन नदी में सात बार स्नान करने का आदेश दिया' (धन्य थियोडोर, प्रश्न 19)।

[4372] आम सहमति के अनुसार, सीरियाई नदियाँ अवना और फारफार एंटी-लेबनान पर्वतमालाओं से निकलती थीं और दमिश्क को सिंचित करती थीं।

'अपने सेवक को कुछ मिट्टी ले जाने दें[4373] , जितनी दो जोड़ी गधों पर लादी जा सके; जब मैं इसे घर ले जाऊँगा, तो मैं इस्राएल के परमेश्वर, प्रभु के लिए एक वेदी बनाऊँगा, क्योंकि अब से आपका सेवक एक सच्चे परमेश्वर के सिवा किसी अन्य देवता को बलिदान नहीं चढ़ाएगा'[4374] ।

पवित्र एलिशा ने उन्हें वह लेने की अनुमति दे दी जो उन्होंने माँगा था और उन्हें शांति से विदा कर दिया। जब नामान परमेश्वर के पुरुष, एलीशा, से चला गया, तो उसके दास गेहाजी ने मन में यह सोचना शुरू किया: 'देखो, मेरे स्वामी ने अरामी नामान के लिए कितनी बड़ी खुशी लाई है, फिर भी उसने उसके हाथ से एक भी उपहार स्वीकार नहीं किया; मैं उसके पीछे जाऊँगा, उससे मिलूँगा और उससे कुछ लूँगा।'

तो वह उठकर नामान के पीछे-पीछे दौड़ा। नामान ने जब देखा कि गेहाजी उससे मिलने के लिए तेजी से आ रहा है, तो वह अपने रथ से उतरकर उससे मिलने के लिए बाहर आया। जब वे मिले, तो गेहाजी ने उसे नमस्ते करने के बाद नामान से कहा:

'मेरे स्वामी ने मुझे यह बताने के लिए भेजा है कि परमेश्वर के दो भविष्यवक्ताओं के शिष्य अभी-अभी उनसे पर्वत एफ्राइम से आए हैं, और वह आपसे अनुरोध करते हैं कि आप उन्हें एक प्रतिभा चाँदी और दो वस्त्र दें।'

नामान ने कहा:

'दो प्रतिभाएँ ले लो।'

और तुरंत उसने चाँदी को दो थैलों में भरने का आदेश दिया, और गेहाजी को उपहार ले जाने के लिए अपने दो दास दिए, और इसके अतिरिक्त उसे कपड़ों के दो सेट भी दिए। गीज़ी, उन सेवकों के साथ संध्या के समय घर लौटकर, उनसे उपहार ले लिए और उन्हें वापस भेज दिया, और उन वस्तुओं को घर में छिपा दिया, जबकि वह स्वयं अपने स्वामी के पास गया।

संत एलीशा ने उससे पूछा:

'गेहाजी, तुम कहाँ से आए हो?'

गिआज़ी ने उत्तर दिया:

'तुम्हारा दास कहीं नहीं गया है।'

तब संत एलिशा ने उससे कहा:

'क्या मेरा मन तुम्हारे साथ नहीं गया, और यह नहीं देखा कि वह आदमी अपने रथ से उतरकर तुमसे मिलने आया, और तुमने उससे चाँदी और वस्त्र कैसे लिए? और क्या मैं यह नहीं जानता कि तुम इस चाँदी से अपने लिए जैतून के बाग़, दाख की बारी, भेड़ें और बैल, दास और दासियाँ खरीदने का इरादा रखते हो?' इसी कारण नामान का कोढ़ तुझ पर और तेरी संतति पर सदा के लिए लगा रहेगा।

और गेहाज़ी एलिशा के पास से कुष्ठरोग से ढका हुआ और बर्फ़ की तरह सफ़ेद निकल गया।

एक दिन भविष्यवक्ताओं के शिष्यों ने एलिशा से कहा:

'जिस निवास में हम आपके पास रहते हैं, वह हमारे लिए बहुत तंग है; आइए, हम यॉर्डन नदी तक चलें और प्रत्येक एक लट्ठा लाए, और वहाँ अपना एक निवास बनाएं।'

संत ने उन्हें जाने दिया। शिष्यों में से एक ने विनम्रतापूर्वक उनसे कहा, "आइए, पिताजी, अपने सेवकों के साथ चलिए।" परमेश्वर के पुरुष उठे और उनके साथ चले गए। जब वे यरदन पर आए और पेड़ काटने लगे, तो एक आदमी की कुल्हाड़ी उसके हाथ से फिसलकर पानी में जा गिरी, और वह चिल्ला उठा, 'हाय मेरे स्वामी! मैंने यह कुल्हाड़ी एक मित्र से उधार ली थी।'

[4373] नबी से नामान का अनुरोध—कि उसे इज़राइल की भूमि की कुछ मिट्टी दी जाए—यह यहोवा के प्रति नामान की गहरी श्रद्धा से समझाया जाता है: नामान अपनी पूजा की भूमि की मिट्टी को ही पवित्र मानता था, और उसने यहोवा के नबी, एलिशा के आशीर्वाद से पवित्र की गई मिट्टी का एक हिस्सा लिया।

[4374] इसके अलावा, सीरियाई नामान ने परमेश्वर के भविष्यवक्ता से कहा कि, एक शाही सेवक के रूप में, वह अपने स्वामी के साथ रेम्मन के मंदिर में जाने और वहाँ राजा के साथ झुकने के लिए बाध्य था, जो मूर्ति के सामने अपनी बाँह पर झुककर जमीन पर लोट जाता था; और अब नामान ने एलिशा से पूछा कि क्या प्रभु रमाह के मंदिर में झुकने के लिए उसे क्षमा कर देंगे। एलिशा ने उसे आश्वासन दिया, और वह चल पड़ा (2 राजा 5:18–19)।

परमेश्वर के पुरुष ने उससे पूछा कि कुल्हाड़ी कहाँ गिरी थी, और जब उसने वह जगह बताई, तो एलीशा ने एक लकड़ी का टुकड़ा काटकर पानी में फेंका, और कुल्हाड़ी पानी की सतह पर तैरने लगी। संत ने लकड़हारे से कहा कि उसे उठा ले, और उसने अपना हाथ बढ़ाया और उसे उठा लिया। उस पवित्र पुरुष को इतनी महान शक्ति प्रदान की गई थी कि वह लोहे के प्राकृतिक भार को भी कम कर सकता था, ताकि लोहे की कुल्हाड़ी पानी पर एक पेड़ से गिरी पत्तियों की तरह तैरने लगी।

पवित्र नबी एलिशा ने दूर की घटनाओं को इतनी स्पष्टता से देखा कि ऐसा प्रतीत होता था मानो यह सब उनके सामने ही हो रहा हो। सीरिया का राजा, जो इस्राएलियों से युद्ध में था, ने कई बार अपने सलाहकारों से इस्राएल के राजा के लिए घात लगाने के बारे में सलाह ली थी, और घात के लिए तैनात सैनिकों के दल के इंतजार करने के लिए एक या दूसरे स्थान को निर्धारित किया था।

लेकिन पवित्र एलिशा ने यह पूर्वानुमान लगाते हुए, इस्राएल के राजा को चेतावनी देने के लिए संदेश भेजते थे, कहते हुए: 'सावधान रहो, इस स्थान से होकर मत गुज़रना, क्योंकि सीरियाई वहाँ घात लगाए हुए हैं।'

राजा यह पता लगाने के लिए लोगों को भेजेगा कि क्या यह सच है, और एक बार जब वह इस बात से निश्चित हो जाता, तो वह सावधानी बरतता और उस स्थान के पास जाने से बचता; इसके बजाय, वह अपने ही सैनिकों को भेजेगा, जो सीरियाई लोगों पर आश्चर्यजनक हमला करेंगे और उन्हें मार गिराएंगे। यह कई मौकों पर हुआ। जब अराम के राजा ने यह सुना, तो वह बहुत परेशान हो गया; और उसने अपने अधिकारियों को बुलाकर उनसे कहा, 'तुम मुझे यह क्यों नहीं बताते कि मेरा भेद अराम के राजा को कौन बता रहा है और मुझे उसके हाथों में सौंप रहा है?' उनमें से एक ने उत्तर दिया, 'हे हमारे स्वामी राजा, यह हम नहीं हैं; यह हम नहीं कर रहे हैं!' लेकिन इस्राएलियों के पास एलीशा नाम का एक नबी है, जो इस्राएल के राजा से तुम्हारे शयनकक्ष में कही गई बातें भी कह देता है।'

राजा ने कहा:

'उस नबी को ढूंढो कि वह कहाँ है। मैं सैनिकि भेजकर उसे पकड़वा लूंगा और यहाँ ले आऊंगा।'

सैनिकों ने पूछताछ करने पर उसे बताया कि एलीशा दोथान में ठहरे हुए थे[4375] । राजा ने वहाँ घुड़सवार सेना, रथ और सैनिकों की एक बड़ी टुकड़ी भेजी, जो रात में पहुँचकर शहर को घेर लिया। सुबह-सुबह, एलिशा के सेवक ने घर से बाहर निकलकर देखा कि सीरियाई सेना अपने घोड़ों और रथों के साथ बड़ी संख्या में नगर को घेर रही थी; और वह दौड़कर एलिशा के पास गया और चिल्लाया:

'हम क्या करें, मेरे स्वामी?'

संत एलिशा ने उत्तर दिया:

'डरो नहीं: हमारे साथ वालों की संख्या उनसे अधिक है।'

और एलिशा ने प्रार्थना करके परमेश्वर से कहा:

'हे प्रभु! अपने दास की आँखें खोल दें, ताकि वह आपकी शक्ति देख सके।'

और परमेश्वर ने एलीशा के सेवक की आँखें खोल दीं, और उसने देखा कि सारा पहाड़ आग के घोड़ों और रथों से भरा हुआ था जो एलीशा के चारों ओर थे। संत एलीशा अपने सेवक के साथ सीरियाई लोगों से मिलने के लिए शहर से बाहर गए, और वे उनकी ओर आए। एलीशा ने प्रभु से प्रार्थना करते हुए कहा:

'हे प्रभु, इस सेना को अंधा कर दे।'

और प्रभु ने, जैसा कि एलीशा ने माँगा था, उन्हें अँधा कर दिया। तब एलीशा ने उनसे कहा:

'यह रास्ता नहीं है, और यह वह नगर नहीं है जहाँ तुम्हें जाना है; परन्तु मेरे पीछे चलो, और मैं तुम्हें उस मनुष्य के पास ले चलूँगा जिसे तुम ढूंढ रहे हो।'

और वह उन्हें सामरिया ले गया। जब वे सामरिया पहुँचे, तो एलिशा ने परमेश्वर से प्रार्थना करके कहा:

'हे प्रभु, इनकी आँखें खोल दे ताकि ये देख सकें कि वे कहाँ हैं।'

और यहोवा ने उनकी आँखें खोल दीं, और उन्होंने देखा कि वे सामरीया में हैं। इस्राएल के राजा ने, उनके आगमन के बारे में जानकर और उन्हें देखकर, पवित्र एलीशा से पूछा:

[4375] दोफाथमि – गिदोन से मिस्र तक के व्यापार मार्ग पर, सामरिया के उत्तर में एक नगर; यहीं पर यूसुफ को एक बार बेचा गया था (उत्पत्ति 37:17, 25)।

'पिताजी, क्या हमें उन्हें मार नहीं देना चाहिए?'

लेकिन संत ने उत्तर दिया:

'नहीं, उन्हें मार डालो नहीं, क्योंकि न तो तुम उन्हें यहाँ ले आए हो, और न ही तुमने उन्हें अपने हथियारों से बंदी बनाया है; बल्कि उनके लिए एक भोज करो, ताकि वे अपने स्वामी के पास लौट जाएँ।'

राजा ने उनके लिए एक भव्य दावत तैयार की, और उन्होंने खाया-पिया, और उन्हें उनके राजा के पास वापस भेज दिया गया; और उसके बाद उन्होंने इस्राएल के देश में सीरिया के हमले बंद कर दिए।

काफी समय बीत गया, और सीरिया के राजा बेन-हदद ने इस्राएल के राजा यहोराम के विरुद्ध युद्ध छेड़ दिया। उसने अपनी पूरी सेना इकट्ठी की और इस्राएल के राजाओं की राजधानी समरिया की घेराबंदी कर दी, जहाँ उस समय पवित्र नबी एलिशा ठहरे हुए थे। शहर में एक भीषण अकाल पड़ गया, इतना कि सबसे गरीब निवासी अपने ही बच्चों को खा रहे थे। एक दिन, जब इस्राएल का राजा नगर की दीवार के पास से गुजर रहा था, तो एक स्त्री उसके पास आई और उससे पुकार कर बोली:

'मेरे स्वामी, मेरे राजा, मेरी मदद करें!'

राजा ने उत्तर दिया:

'यदि प्रभु तुम्हारी सहायता नहीं करते, तो मैं तुम्हारी कैसे सहायता करूँ? क्या मैं तुम्हें खलिहान से भोजन दूँ या चक्की से? परन्तु मुझे बताओ, तुम्हें क्या चाहिए?'

उसने दूसरी महिला के खिलाफ अपनी शिकायत शुरू करते हुए कहा:

उस स्त्री ने मुझसे कहा: "आओ, आज हम तुम्हारे बेटे को खाएं और कल मेरे बेटे को।" इसलिए हमने मेरे बेटे को उबालकर खा लिया। अगले दिन मैंने उससे कहा: "आओ, अब तुम्हारे बेटे को भी खाएं," लेकिन उसने अपने बेटे को छिपा लिया।

इज़राइल के राजा ने उस स्त्री से ऐसा भयानक वृत्तांत सुनकर अपने वस्त्र फाड़े और ईश्वर के भविष्यवक्ता एलीशा पर बहुत क्रोधित हुआ, क्योंकि उसने अपनी सलाह से उसे सीरिया के राजा के आगे समर्पण न करने और नगर उसके हवाले न करने, बल्कि ईश्वर की सहायता की प्रतीक्षा करने के लिए मना लिया था।

राजा ने अपने क्रोध में कहा, 'परमेश्वर मुझ पर दंड डाले और मेरी सज़ा बढ़ा दे, यदि आज एलीशा का सिर उसके कंधों पर बना रहा!'

और तुरन्त एक जल्लाद नबी का सिर कलम करने के लिए भेजा गया। परन्तु परमेश्वर का पुरुष घर पर था, और इस्राएल के बुज़ुर्ग उसके साथ थे।

उसने बुज़ुर्गों से कहा, 'क्या तुम जानते हो कि हत्यारे आहाब के पुत्र राजा यहोराम, जिसने नहूम को अन्याय से मार डाला था, ने अभी मुझे सिर कलम करने के लिए एक जल्लाद भेजा है? लेकिन तुम दरवाज़े अच्छी तरह बंद कर दो और जब तक उसका मालिक आकर न पहुँच जाए, तब तक उसे अंदर मत आने देना, क्योंकि उसके मालिक के पैरों की आहट सुनाई दे रही है, क्योंकि वह पहले ही उसके पीछे आ रहा है।"

संत के बोलते ही राजा आ गया और जल्लाद को रोक दिया; क्योंकि, अपने दुष्ट निर्णय पर पछतावा कर, राजा स्वयं संदेशवाहक के पीछे दौड़ा था ताकि उस क्रूर आदेश को अमल में लाने से रोका जा सके; क्योंकि राजा पैगंबर एलिशा की पवित्रता और उनकी निर्दोषता, और इस्राएल के राज्य तथा कई लोगों के लिए किए गए उनके सभी अच्छे कामों को जानता था। पैगंबर की उपस्थिति में प्रवेश करते हुए, राजा ने कहा:

'देखो, प्रभु ने हम पर कितनी बड़ी विपत्ति भेजी है! तो फिर मैं उनसे क्या आशा रख सकता हूँ? मैं नगर को सीरिया के राजा के हवाले कर दूँगा और उसके अधीन हो जाऊँगा, कहीं ऐसा न हो कि हम सब भूख से मर जाएँ; उसके अधीन होकर जीवित रहना, उसके विरुद्ध लड़कर भूख से मरने से बेहतर है।'

लेकिन पवित्र एलिशा ने राजा और वहाँ उपस्थित सभी लोगों की ओर मुड़कर कहा:

'प्रभु का वचन सुनो! यहोवा का यह वचन है: कल इसी घड़ी, समरिया के फाटकों पर[4376] , एक शेकेल में एक माप गेहूँ का आटा और एक शेकेल में दो माप जौ बेचा जाएगा।'

[4376] नबी राजा और लोगों के बुजुर्गों को रोटी की आने वाली असाधारण सस्ती कीमत के बारे में बताते हैं, विशेष रूप से: 'समरिया के फाटकों पर' - उन फाटकों पर जहाँ, पूर्व में, व्यापार सहित सभी सार्वजनिक जीवन केंद्रित था।

अधिकारियों में से एक, जो राजा के सबसे निकट था और जिस पर राजा टेक लगाए हुए था, ने इलिशा से उत्तर दिया: 'भले ही यहोवा आकाश खोल दे, परन्तु जो तुम कह रहे हो वह कभी नहीं होगा।'

संत एलिशा ने उससे उत्तर दिया:

'तुम स्वयं इसे अपनी आँखों से देखोगे, लेकिन तुम उस रोटी का स्वाद नहीं चखोगे।'

कुछ शांत होने पर, राजा अपने तंबू में गया। और उसी रात, जब संत एलिशा नगर की मुक्ति के लिए प्रभु परमेश्वर से प्रार्थना कर रहे थे, परमेश्वर ने सीरियाई सेना पर भारी भ्रम भेज दिया: अरामियों ने हथियारों का एक बड़ा शोर और घोड़ों की हिनहिनाहट सुनी, मानो कोई बड़ी सेना इकट्ठी हो, और उन्होंने एक-दूसरे से कहा कि यह हित्तियों और मिस्रियों के राजा हैं, जिन्हें इस्राएल के राजा ने अपनी सेनाओं के साथ अपनी सहायता के लिए भेजा था।

वे बड़े भय से चिल्लाए, 'चलो यहाँ से भाग चलें, भाग चलें!'

और उसी रात, वे अपने राजा के साथ, अपना जीवन बचाकर, अपने तंबू, घोड़े, गधे और शिविर में जो कुछ भी उनके पास था, सब कुछ पीछे छोड़कर भाग गए। उसी रात, शहर के द्वार पर चार कोढ़ी बैठे थे, और जब वे आपस में इस मामले पर चर्चा कर रहे थे, तो उन्होंने कहा: 'हम यहाँ मरने का इंतज़ार क्यों कर रहे हैं? अगर हम शहर में गए तो भूख से मर जाएँगे, और अगर यहीं रुके तो भी मर ही जाएँगे; तो क्यों न हम सीरियाई शिविर की ओर चलें? और अगर वे हमें नहीं बख्शेंगे, तो भूख की असहनीय यातनाओं को सहने से तो तलवार से मरना ही बेहतर है।'

और, सहमत होकर, वे सीरियाई शिविर की ओर चल पड़े, जो अभी भी रात के अंधकार में डूबा हुआ था। शिविर में प्रवेश करने पर, उन्हें वहाँ एक भी व्यक्ति नहीं मिला; और शिविर के केंद्र तक चलकर जब उन्होंने किसी को नहीं देखा, तो वे बहुत हैरान हो गए। वे एक तंबू में घुसे, खाया-पिया, उसमें से चाँदी, सोना और कपड़े ले लिए, और निकलकर उन्हें छिपा लिया। लौटकर, वे दूसरे तंबू में घुसे और उसमें से जो कुछ भी चाहा और जितना उठा सकते थे, ले लिया, और उसे फिर से छिपा लिया। इसके बाद, वे एक-दूसरे से सलाह-मशविरा करने लगे और कहने लगे, 'हम गलत कर रहे हैं; आज खुशखबरी का दिन है, फिर भी हम चुप हैं: और अगर हम भोर तक यहाँ रुके तो हम एक बड़ा पाप करेंगे; इसलिए, चलो शहर की ओर जल्दी चलते हैं और शाही दरबार को सूचित करते हैं।'

वे नगर की ओर दौड़े और नगर के द्वार पर पहुँचकर रक्षकों से कहा: 'हम सीरियाई शिविर गए और वहाँ एक भी व्यक्ति नहीं देखा, न ही किसी मानव की आवाज़ सुनी; वहाँ केवल बँधे हुए घोड़े और गधे बचे थे, और तंबू अभी भी अपनी जगह पर खड़े थे, जो धन-संपत्ति से भरे हुए थे।'

उन्होंने तुरंत यह सब राजा को बता दिया। राजा रात में उठा, अपने दरबारियों को इकट्ठा किया और उनसे परामर्श करने लगा; और संदेह से भरकर, उसने उनसे कहा, 'मैं तुम्हें वह विश्वासघाती योजना बताऊँगा जो सीरियाई लोगों ने हमारे खिलाफ बनाई है।' उन्हें पता चल गया है कि हम अकाल से पीड़ित हैं; इसलिए, शिविर छोड़कर वे ग्रामीण इलाकों में कहीं छिप गए हैं, और उनका इरादा है कि जब हम भूख से तंग आकर शहर से बाहर निकलेंगे, तो वे हमें जिंदा पकड़ लेंगे और हमारे शहर में घुस आएँगे।"

राजा के सेवकों ने सलाह दी कि किसी को जाँच-पड़ताल के लिए भेजा जाए। दो घुड़सवार भेजे गए; सीरियाई शिविर में पहुँचने पर और वहाँ किसी को न पाकर, वे सीरियाइयों के निशानों पर चलते हुए यॉर्डन नदी तक पहुँच गए। पूरा रास्ता उन कपड़ों और हथियारों से पटा पड़ा था जिन्हें सीरियाई, बड़े भय से भागते हुए, पीछे छोड़ गए थे। दूत लौट आए और उन्होंने राजा और लोगों को सब कुछ बता दिया। लोग शहर से बाहर निकल पड़े और उन्होंने पूरे सीरियाई शिविर को लूट लिया; और जौ का एक माप और गेहूँ के दो माप एक शेकेल में बिक रहे थे, ठीक वैसे ही जैसे प्रभु ने भविष्यवक्ता के द्वारा कहा था। उपर्युक्त प्रतिष्ठित व्यक्ति, जिस पर राजा का सहारा था, को उससे आदेश मिला कि वह व्यवस्था बनाए रखने के लिए शहर के द्वार पर खड़ा रहे। और देखो, जब उसने लोगों को फाटकों पर भीड़ जमा करने से रोकने की कोशिश की, तो भीड़ ने उसे कुचल डाला और रौंद-रौंद कर मार डाला, ठीक वैसे ही जैसे परमेश्वर के पुरुष एलीशा ने भविष्यवाणी की थी, जब इस अधिकारी ने, भविष्यवक्ता के द्वारा रोटी की प्रचुरता के विषय में कहे गए प्रभु के वचन पर अविश्वास करते हुए, आपत्ति जताई थी: 'भले ही यहोवा आकाश खोल दे, यह नहीं होगा' (1 शमूएल 6 आदि)।

ईश्वर का यह महान पुरुष अन्य अद्भुत भविष्यसूचक वरदानों और कार्यों के लिए भी प्रसिद्ध था, जैसा कि राजाओं की पुस्तकों में विस्तार से वर्णित है। उन्होंने इस्राएल के देश में सात साल के अकाल की भविष्यवाणी की (2 राजा 8:10)। सीरिया के राजा बेन-हदद की मृत्यु की पूर्वदृष्टि प्राप्त करने के बाद, उन्होंने भविष्यवाणी की कि सीरिया का राज्य हज़ेल के हाथों में चला जाएगा। इस्राएल के राजकुमारों में से एक - यहोआ को राजा के रूप में अभिषेक करने के बाद

(2 राजा 9:3), उन्होंने उसे अधर्मी, मूर्तपूिजक आहाब के घराने का संहार करने के लिए प्रेरति कयिा। यहू ने दो मूर्तपूिजक राजाओं को मार डाला: इज़ेबेल के पुत्र यहोराम और यहूदा का अहज्या, जो धर्मनष्ठि राजा यहोशापात के पोते थे, जो अपने दादा के वपिरीत, दुष्टता में भटक गए थे। उसने अहाब की दुष्ट पत्नी और योराम की माँ यजेबेल को मार डाला, और बाल के सभी पुरोहतिों और भवष्यिवक्ताओं को भी मार डाला। इन सभी कार्यों में उसे पवत्रि नबी एलीशा के आशीर्वाद और प्रार्थनाओं से सहायता मलिी। यहू की मृत्यु के बाद, उसके पुत्र यहोआहाज़ ने इस्राएल पर शासन कयिा, और उसके बाद यहू के पोते यहोआश ने शासन कयिा। यहोआश के शासनकाल में, सामरीया में रहने वाला परमेश्वर का एक मनुष्य, जो पहले से ही बहुत बूढ़ा था, बीमार पड़ गया। इज़राइल का राजा योआश उसके पास आया और उस पर रोते हुए कहा:

'पतिाजी, पतिाजी, इस्राएल की रथ और उसके घोड़े!'

एलशिा ने उससे कहा:

'एक धनुष और कुछ तीर लो, पूर्व की ओर, सीरयिा की तरफ खुलने वाली खड़िकी खोलो, और एक तीर लगाकर धनुष तानों।'

राजा ने वैसा ही कयिा जैसा उससे कहा गया था। तब परमेश्वर के पुरुष ने अपने हाथ राजा के हाथों पर रखकर कहा, 'तीर को सीरयिा की ओर चला।'

और राजा ने तीर छोड़ा। नबी ने कहा:

'यह तीर प्रभु के उद्धार का तीर है, और तुम सीरयिा को परास्त करोगे।'

और फरि उसने राजा को आज्ञा दी कि वह धनुष और तीर अपने हाथों में ले ले। राजा ने वैसा ही कयिा। नबी ने उससे कहा:

'तीर को जमीन पर मारो।'

राजा ने तीन बार जमीन पर तीर मारा और रुक गया। परमेश्वर के पुरुष ने उससे कहा, क्रोधति होकर:

'अगर आप पाँच या छह बार मारते, तो आप सीरयिा को हमेशा के लिए हरा देते; लेकनि अब आप उन्हें केवल तीन बार ही पराजति करेंगे'[4377] .

राजा से इस प्रकार भवष्यिवाणी करने के बाद, संत एलशिा का नधिन हो गया और उन्हें सम्मान के साथ दफनाया गया[4378] ।

नबी एलीशा ने न केवल अपने जीवनकाल में चमत्कार कयि, बल्कि अपनी मृत्यु के बाद भी उन्होंने खुद को एक चमत्कार करने वाले के रूप में साबति कयिा। उनकी मृत्यु के एक साल बाद, एक मृतक व्यक्ति को दफनाने के लिए शहर से बाहर ले जाया जा रहा था। उसी क्षण, मोआबयिों की एक भीड़ दखिाई दी, जो इस्राएल की भूमि पर छापा मार रही थी। मृतक को ले जा रहे लोगों ने दूर से दुश्मन को देख लयिा और लाश को पास की एक गुफा में फेंक दयिा। यह वही गुफा थी जसिमें पैगंबर एलीशा के अवशेष रखे थे। जैसे ही मृतक का शरीर पैगंबर की हड्डयिों को छुआ, वह तुरंत जीवति हो उठा; फरि वह गुफा से बाहर नकिला और शहर में चला गया[4379] ।

[4377] प्रश्न: 'नबी एलीशा ने धनुष और तीर के माध्यम से भवष्यि की वजिय की भवष्यिवाणी क्यों की?' (2 राजा 13:15), इस पर धन्य थयिोडोरेट (प्रश्न 42) उत्तर देते हैं: 'वे शब्दों की तुलना में कर्मों के माध्यम से व्यक्त की गई भवष्यिवाणयिों पर अधकि वश्विास करते थे। इस मामले में, प्रतीकात्मक कृत्य ने सीधे तौर पर उस युद्ध और वजिय की वास्तवकिता को व्यक्त कयिा जसिका यह संकेत दे रहा था। एलीशा द्वारा राजा के हाथों पर अपने हाथ रखना (2 राजा 13:16) ने शायद सीरयिाई लोगों के खलिाफ आने वाले संघर्ष में इस्राएल के राजा को भवष्यिवक्ता की प्रार्थनापूर्ण सहायता—और परणिामस्वरूप, प्रभु की भी—का संकेत दयिा। शॉट की दशिा पूर्व की ओर होना उन सीरयिाई लोगों का संकेत था जन्होंने इस्राएल के राज्य में यॉर्डन के पूर्व के शहरों और क्षेत्रों पर कब्जा कर लयिा था (2 राजा 10:33)।

[4378] पवत्रि नबी एलीशा का नधिन बहुत वृद्धावस्था में, लगभग 100 वर्ष की आयु में हुआ। उन्होंने अपनी भवष्यिवाणी की सेवा अहाब के शासनकाल में (3 राजा 19:19) - लगभग 900 ईसा पूर्व - शुरू की और जोआश के शासनकाल में, 9वीं शताब्दी के 30 के दशक में नधिन हो गया। धन्य जेरोम के अनुसार, भवष्यिवक्ता का मकबरा सामरयिा के पास कहा जाता था (देखें 2 राजा 5:9, 6:32)। धन्य जेरोम के समय में, भवष्यिवक्ता एलीशा की पवत्रि अवशेषों का उपयोग सेबास्टे या सामरयिा में पवत्रि भवष्यिवक्ताओं ओबद्याह और यूहन्ना बपतस्मिादाता की अवशेषों के साथ मलिकर दुष्टात्माओं को भगाने के लिए कयिा जाता था; ये जूलयिन के शासनकाल में जला दी गईं, लेकनि वश्विासयिों द्वारा आग से अवशेषों को बचाया गया, और उनका एक हस्सिा अलेक्जेंड्रयिा में स्थानांतरति कर दयिा गया। कॉन्स्टेंटनिोपल में, एक चर्च को पवत्रि नबी को समर्पति कयिा गया था, जबकि फिलिस्तीन में, सेंट जॉन ऑफ़ डेमास्कस ने उनके सम्मान में एक कैनन रचति कयिा। 14 जून को पवत्रि नबी एलीशा के सम्मान में पर्व का दनि सबसे प्राचीन है और यह पूर्व और पश्चमि के सभी लोगों के लिए सामान्य है।

[4379] धन्य थयिोडोरेट के अनुसार, भवष्यिवक्ता के मृत्युपरान्त चमत्कार का नम्निलखिति महत्व था: 'उनकी मृत्यु के बाद भी, भवष्यिवक्ता ने एक मृतक को जीवति कर दयिा जसिे उनके सामने लाया गया था, ताकि यह चमत्कार भी उनके शक्षिक के वपिरीत, उन्हें प्राप्त हुई वशिष कृपा

[4380]इस प्रकार, मृत्यु के बाद भी, परमेश्वर ने अपने सेवक एलिशा की महिमा की। इन सब के लिए, हमारे परमेश्वर को महिमा, सम्मान और आराधना हो, अब और हमेशा और युगानुयुग। आमीन[4381] ।

ट्रोपारियन, स्वर 4:

देहधारी एक स्वर्गदूत, भविष्यद्वक्ताओं की नींव, मसीह के आगमन का दूसरा अग्रदूत, महिमामय एलिया, जो उच्च से एलीशा की कृपा के लिए भेजा गया था, दुर्बलताओं को दूर करने और कुष्ठरोगियों को शुद्ध करने के लिए: इसलिए वह उन पर चंगाई प्रदान करता है जो उसका सम्मान करते हैं।

कॉन्टाकियन, स्वर 2:

हे धन्य एलीशा, आप परमेश्वर के भविष्यवक्ता के रूप में प्रकट हुए, और आपने एक विशेष अनुग्रह प्राप्त किया जो वास्तव में आपके योग्य था: क्योंकि आप एलिया के साथी थे; हमारे सभी के लिए मसीह हमारे परमेश्वर से उनके साथ अविराम प्रार्थना करें।

हमारे पवित्र पिता मेथोडियस, कांस्टेंटिनोपल के पैट्रिआर्क का जीवन।

14 जून को स्मरणोत्सव

सिसिली के मूल निवासी[4382] , मसीह के संत मेथोडियस ने अपनी युवावस्था में संन्यासी की शपथ ली और सदाचार के जीवन में उत्कृष्टता प्राप्त की। आइकन-विरोधी, आर्मेनियाई लियो[4383] के शासनकाल के दौरान, उन्होंने कॉन्स्टेंटिनोपल के पैट्रिआर्क, परम पावन निकिफ़ोरस के अधीन अपोक्रीसारियस[4384] का पद संभाला। पैट्रिआर्क निकिफ़ोरस ने संत मेथोडियस को रोम के पोप[4385] के पास चर्च-संबंधी मामलों के संबंध में एक ही कमीशन के साथ भेजा; यहाँ, रोम में, वह जानबूझकर काफी समय तक रुके रहे, क्योंकि अधर्मी लियो ने, परम पावन निकिफोरस को पैट्रिआर्कात्मक सिंहासन से हटाकर, उनकी जगह मेलिसिया के विधर्मी मूर्तिभंजक थियोडोटस को स्थापित कर दिया

की गवाही दे सके।' इसके अलावा, इस चमत्कार का अस्थायी उद्देश्य शायद इज़राइल को अपने दुश्मनों से लड़ने के लिए प्रेरित करना था, जबकि इसका शाश्वत और आवश्यक उद्देश्य मृतकों के सार्वभौमिक भविष्य के पुनरुत्थान की सच्चाई की गवाही देना था। विशेष रूप से, यह ईश्वर के पवित्र सेवकों की अवशेषों की ऑर्थोडॉक्स चर्च द्वारा की जाने वाली पूजा की वैधता को दर्शाता है। इस प्रकार, ईश्वर की शक्ति, जो भविष्यवक्ता एलिशा पर उनके जीवनकाल के दौरान विराजमान थी, इस चमत्कार के माध्यम से उनके अवशेषों को प्रदान की गई।

[4380] लोगों पर प्रदान की गई भविष्यवाणियों, चमत्कारों और दया के कार्यों की बहुतायत के अलावा, भविष्यवक्ताओं के स्कूलों के विकास और उन्नति में भविष्यवक्ता एलिशा ने बहुत बड़ा योगदान दिया (2 राजा 2:1–25, 3:1–27, 5:1–27, आदि), और इसमें कोई संदेह नहीं है कि अधिकांश भविष्यवक्ता इन्हीं विद्यालयों से निकले थे—जिनकी संख्या राजाओं के दिनों में बहुत अधिक थी—और जिन्होंने आंशिक रूप से मौखिक रूप से और आंशिक रूप से लिखित रूप में, लोगों के बीच विश्वास और धार्मिकता को बनाए रखा।

[4381] सिरिक के पुत्र यीशु, नबी एलिशा की प्रशंसा में निम्नलिखित कहते हैं: *'एलियाह की आत्मा से परिपूर्ण होकर, एलिशा अपने दिनों में राजकुमार के सामने नहीं डरा, और कोई भी उस पर हावी नहीं हो सका; कोई भी चीज़ उस पर विजय प्राप्त नहीं कर सकी, और उसकी मृत्यु के बाद भी उसका शरीर भविष्यवाणी करता रहा; जैसे उसने अपने जीवनकाल में चमत्कार किए, वैसे ही उसकी मृत्यु के बाद भी उसके कार्य अद्भुत थे'* (सीर. 48:12–16)। नए नियम में, प्रभु स्वयं एलिशा को परमेश्वर का एक महान भविष्यवक्ता बताते हैं, जो अपने चमत्कारों और चंगाइयों के माध्यम से परमेश्वर की व्यवस्था के बुद्धिमान तरीकों को प्रकट करते हैं। *उन्होंने अपने देशवासियों के अविश्वास की निंदा करते हुए कहा, 'भविष्यवक्ता एलिशा के समय में इस्राएल में बहुत से कोढ़ी थे, और उन में से एक भी शुद्ध नहीं हुआ, सिवाय अराम के नामान के'* (लूका 4:23-27)।

[4382] सिसिली भूमध्य सागर के सबसे बड़े द्वीपों में से एक है; यह मेसिना जलडमरूमध्य द्वारा मुख्यभूमि से अलग है।

[4383] लियो पंचम अर्मेनियाई ने 813 से 820 तक शासन किया।

[4384] 'अपोक्रीसियरीज़' शासक के दरबार में सबसे महत्वपूर्ण चर्चों के बिशप के अस्थायी या स्थायी प्रतिनिधि होते थे, जो अपने चर्च और उसके प्रतिनिधियों तथा सर्वोच्च प्राधिकरण के बीच सभी संबंधों की देखरेख करते थे।

[4385] रोम, रोमन साम्राज्य की राजधानी, मध्य इटली में स्थित है और नदी टिबर के मुहाने पर इसके दोनों किनारों पर फैला हुआ है।

था, जिन्हें कैसटिरस के नाम से जाना जाता था[4386] . सम्राट लियो और झूठे पैट्रआर्क थियोडोटस की मृत्यु के बाद, संत मेथोडियस पुराने रोम से नए रोम लौटे[4387] । प्रेस्बटिर (पादरी) के पद पर, उन्होंने धर्मनिष्ठा और भक्ति के साथ प्रभु की सेवा की, और उस समय विशेष रूप से प्रबल हो चुकी मूर्तिभंजन की विधर्म से अथक रूप से संघर्ष किया: लियो द आर्मेनियन के बाद, माइकल वाल्वोस या ट्रावलोस, जो एक अन्य मूर्तिभंजक विधर्मी था, ने शाही सिंहासन संभाला[4388] ; उनके समय के पैट्रआर्क (धर्मगुरु) अधर्मी पुरुष थे। और धन्य मेथोडियस ने एक महान कार्य किया, उन्होंने विधर्मियों से बहस की और उन्हें शर्मिंदा किया। ऐसी गतिविधियों के लिए, अधर्मी राजा ने संत मेथोडियस को यातना और कारावास का शिकार बनाया, जैसा कि ग्रीक जोनारास[4389] द्वारा बताया गया है: वह बताता है कि माइकल ट्रावलोस ने, अपने शासन के आरंभ में, खुद को एक दयालु शासक के रूप में दिखाया: उन्होंने उन कई पवित्र पिताओं को उनके बंधनों और कारावास से मुक्त कर दिया, जिन्हें लियो द आर्मेनियन ने प्रतिमाओं की पूजा करने के लिए कैद किया था; लेकिन फिर, काफी समय बीत जाने के बाद, माइकल ने इस पुण्य कार्य को, जो पाखंड से प्रेरित था, रद्द कर दिया, और, अपनी दुर्भावनापूर्ण दुष्टता को छिपाए बिना, ऑर्थोडॉक्स के खिलाफ एक उत्पीड़न शुरू कर दिया। वह सेंट मेथोडियस और सार्डिस के बिशप यूथिमियस के खिलाफ क्रोधित हो गया – और उन कई अन्य लोगों का तो जिक्र ही क्या, जिन्होंने उसके हाथों बहुत कष्ट सहे। उसने यूथिमियस को प्रतिमाओं की पूजा करने के लिए निर्वासित कर दिया, और संत मेथोडियस को 'Akrit[4390] ' में एक कालकोठरी में कैद कर दिया। ज़ोनारस स्वयं माइकल ट्राउलोस की दुष्टता का वर्णन इस प्रकार करते हैं: उन्होंने कहा, हर बात में, वह राजा Kopronymus[4391] की नकल करते थे; यहूदियों को खुश करने के लिए, उन्होंने सब्बाथ पर उपवास का आदेश दिया; मृतकों के पुनरुत्थान में विश्वास न करते हुए, माइकल ने मृत्यु के बाद एक धन्य जीवन की आशा का मज़ाक उड़ाया; उसने पवित्र भविष्यवक्ताओं की भविष्यवाणियों का उपहास किया, यह दावा किया कि राक्षस मौजूद नहीं थे, और घृणित कामुक कृत्यों को पाप नहीं माना: विश्वासघाती यहूदा को एक संत के रूप में सम्मानित करते हुए, माइकल का मानना था कि बिद वाला बच जाएगा। वह विद्वितापूर्ण शिक्षा से नफरत करता था और माता-पिता को रोकता था कि वे अपने बच्चों को ऑर्थोडॉक्स स्कूलों में न भेजें, ताकि वे पवित्र धर्मग्रंथों का अध्ययन करके उसके पागलपन का भंडाफोड़ न कर सकें, बल्कि अज्ञानी और अनपढ़ रहकर उसके विधर्मी भ्रम का अनुसरण करें। ज़ोनारास ऐसा कहता है। संत मेथोडियस ने एक बुद्धिमान चरवाहे के रूप में, जो दिव्य धर्मग्रंथों, ऑर्थोडॉक्स सिद्धांतों और पवित्र पिताओं की परंपराओं में पारंगत थे, अधर्मी ज़ार का साहसपूर्वक विरोध किया; इसके लिए, सत्य के एक स्वीकारोक्तिकर्ता के रूप में, उन्होंने न केवल बेड़ियाँ और कालकोठरियाँ, बल्कि घाव भी सहन किए।

माइकल ट्रावलोस की मृत्यु पर, उनका पुत्र थियोफिलस[4392] सिंहासन पर बैठा – जो न केवल सिंहासन का बल्कि अपने पिता के धर्मद्रोह का भी उत्तराधिकारी था। थियोफिलस ने पवित्र प्रतिमाओं के प्रति श्रद्धापूर्ण भक्ति के कारण कई लोगों को यातनाएँ दीं; हालाँकि, शिक्षा के शौकीन होने के नाते, उन्होंने कॉन्स्टेंटिनोपल के स्कूलों को, जो चलन से बाहर हो गए थे, पुनर्स्थापित किया और वहाँ पढ़ाई फिर से शुरू करने का आदेश दिया। उन्होंने संत मेथोडियस को भी कैद से मुक्त किया, जैसा कि यूनानी इतिहासकार माइकल ग्लाइकोस ने वर्णन किया है: 'एक अभूतपूर्व,' वे कहते हैं, 'और चमत्कारी तरीके से, ईश्वर ने मेथोडियस को उसके अंधकारमय कालकोठरी से मुक्त किया।' थियोफिलस, ज्ञान के प्रति अपने प्रेम के कारण, अक्सर अपना समय किताबें पढ़ने में बिताते थे; एक दिन सम्राट के हाथों में एक किताब आई, जिसके विषय-वस्तु को समझना उन्हें कठिन लगा; उनके एक दरबारी ने थियोफिलस को बताया कि मेथोडियस, जो अक्रिट की एक कोठरी में कैद थे, किताबों के कठिन अंशों को समझाने की अपनी क्षमता के लिए प्रसिद्ध थे। राजा ने तुरंत संदेश

[4386] थेओडोर प्रथम कैसटिर 815 से 822 तक पैट्रआर्क थे।

[4387] अर्थात् त्सारग्राड या कॉन्स्टेंटिनोपल।

[4388] माइकल द्वितीय हकला 820 से 829 तक राज किया।

[4389] जॉन ज़ोनारस एक बीजान्टिन इतिहासकार और कैनोनिस्ट थे, जो सम्राट अलेक्सियस कोम्नेनस (1080–1118) के समकालीन थे। ज़ोनारस की साहित्यिक रचनाओं में सबसे प्रमुख रचना धार्मिक कैननों के पूरण पाठ पर उनकी टीका है। ज़ोनारास की एक अन्य प्रमुख कृति उनकी *एपिटोमे ऑफ हिस्ट्रीज़* है – जो दुनिया की रचना से लेकर सम्राट जॉन कोम्नेनोस (1118) के सिंहासनारोहण तक के विश्व इतिहास का एक कालानुक्रमिक विवरण है। इसके अलावा, ज़ोनारास ने पत्र, संतों के जीवनचरित, भजन आदि भी लिखे।

[4390] संभवतःकेप अक्रिट के पास।

[4391] कॉन्स्टेंटाइन कोप्रोन्यमस ने 741 से 778 तक शासन किया।

[4392] थियोफिलस ने 829 से 842 तक शासन किया।

भेजकर संत मेथोडियस को मठ से अपने पास बुलाया; उनसे मिलकर और बातचीत करके, उसे एहसास हुआ कि संत मेथोडियस एक बुद्धिमान व्यक्ति थे, और उसने उनके प्रति सम्मान के कारण उन्हें रिहा कर दिया।

अपनी स्वतंत्रता पुनःप्राप्त करने के बाद, संत मेथोडियस ने एक बार फिर विधर्मियों के साथ मौखिक संघर्ष में भाग लिया, यह सिखाते हुए कि पवित्र प्रतिमाओं को वह सम्मान और पूजा मिलनी चाहिए जिसके वे हकदार थे; इस प्रकार एक बार फिर प्रतिमा-भंजकों का क्रोध उन पर टूट पड़ा: ऑर्थोडॉक्सी की रक्षा में संत मेथोडियस की गतिविधियाँ सम्राट के ध्यान में आईं, जो इस ईश्वर-पुरुष से बहुत क्रोधित हुए, हालांकि उन्होंने अपनी नाराज़गी को अधिक अनुकूल क्षण तक छिपाए रखा। उस समय, ग्रीक सारसेन्स के साथ युद्ध में थे[4393] , और सम्राट के स्वयं सेना के साथ उपस्थित होना आवश्यक था। दलों के लिए रवाना होते समय, ज़ार अपने साथ संत मेथोडियस को आंशिक रूप से, ऐसा कह सकते हैं, प्रार्थना के लिए, और आंशिक रूप से धर्मग्रंथों पर चर्चा और उलझन भरे प्रश्नों के समाधान के लिए ले गए, जिनकी व्याख्या करने में, जैसा कि ज़ार ने पता लगाया था, संत मेथोडियस निपुण थे। हालांकि, वास्तव में, ज़ार ने ईश्वर के उस पुरुष को इस डर से अपने साथ ले लिया कि, यदि संत मेथोडियस राजधानी में ही रह जाते, तो मूर्तिभंजकों के खिलाफ जन आक्रोश उत्पन्न हो सकता था: लोग रेवरेंड फादर को एक पवित्र और विद्वान व्यक्ति के रूप में पसंद करते थे, जो न केवल आध्यात्मिक मामलों में बल्कि नागरिक शासन में भी पारंगत थे; यही कारण था कि राजा ने उसे अपनी अनुपस्थिति में राजधानी में नहीं छोड़ा, बल्कि अपने साथ ले गया। लेकिन अब, ईश्वर की अनुमति से, इसमाइलियों ने यूनानियों को हरा दिया, और राजा की लगभग पूरी सेना का सफाया कर दिया, जिससे वह अपनी रेजिमेंट के कुछ ही बचे हुए लोगों के साथ बड़ी मुश्किल से बच पाया; फिर उस दुष्ट राजा ने संत मेथोडियस पर वह क्रोध उतारा जो वह अब तक अपने दिल में पाल रहा था:

'इसीलिए ईश्वर ने हमारे शत्रुओं को विजय प्रदान की,' थियोफिलिस ने कहा, 'क्योंकि हममें मूर्तिपूजक हैं।'

इस पर, संत मेथोडियस ने उत्तर दिया:

'प्रभु, जिनके पवित्र प्रतिमा को ईसाइयों ने अपवित्र किया था, उनसे क्रोधित हुए और हमारे शत्रुओं को हम पर विजय प्राप्त करने दी।'

क्रोध से भरकर, राजा ने एक क्रूर कोड़े की सज़ा देन[4394] के बाद, संत मेथोडियस को एक द्वीप पर निर्वासित कर दिया: वहाँ उसने उन्हें दो डाकुओं के साथ एक गहरी कब्र गुफा में कैद करने का आदेश दिया, जहाँ धूप की किरण भी नहीं पहुँचती थी। इस प्रकार संत मेथोडियस एक जीवित मृत व्यक्ति बन गए, जैसे योनह (यूनस) मछली के पेट में, पृथ्वी के गर्भ में वास करते हुए और ईश्वर का धन्यवाद करते हुए। एक मछुआरे को उसे भोजन लाने का काम सौंपा गया था, और वह भी इतना मामूली राशन, जो उसे भूख से मरने से बचाए रखे; उसके यातना देने वालों ने इस ईश्वर-पुरुष के जीवन को लंबा खींचना चाहा, और साथ ही, उस कब्र में उसके कष्ट को भी।

संत मेथोडियस की कैद के दौरान, राजा थियोडोरस ने दो पवित्र कन्फेशर, थियोडोर और थियोफेनेस को पवित्र प्रतिमाओं की पूजा करने के लिए यातना दी: पवित्र प्रतिमाओं की पूजा की गवाही देने वाला एक शिलालेख उनके चेहरों पर लाल-गरम लोहे से दागा गया, जिसके बाद राजा ने शहीदों को निर्वासन में भेज दिया। उनका मार्ग उस द्वीप के पास से होकर गया जहाँ संत मेथोडियस एक कब्र-गुफा में कैद होकर दुखी हो रहे थे। जब उन्हें एक मछुआरे से मिलने का मौका मिला जो कैदी को खाना खिला रहा था, तो उन पवित्र कन्फेशर्स ने उससे ईश्वर के उस पुरुष के बारे में सब कुछ विस्तार से जाना । संत मेथोडियस को नहीं देख पाने के कारण, क्योंकि उन्हें उनके निर्वासन स्थल तक ले जा रहे लोग बहुत सख्त थे, थियोडोर और थियोफेंस ने उनके लिए निम्नलिखित अभिवादन लिखा, जिसे उसी मछुआरे ने गंतव्य तक पहुँचाने का जिम्मा लिया:

'उसके लिए जो जीवित है परन्तु ताबूत में मृतक की तरह बैठा है, उसके लिए जो सांसारिक है परन्तु स्वर्गीय लोकों में भटकता है, और उसके लिए जो बेड़ियाँ पहने है, लिखो बेड़ियों वाले, जिनके "चेहरे पर निशान हैं"।'

[4393] सारासेन – जिन्हें अन्यथा अरब कहा जाता है।

[4394] थेओफिलिस ने आदेश दिया कि संत मेथोडियस को गालों पर मारा जाए, और उनका जबड़ा इतना बुरी तरह टूट गया कि संत मेथोडियस को जीवन भर के लिए एक कुरूप दाग रह गया। पात्रकीय के रूप में सेवा करते समय, संत मेथोडियस ने अपने कफन के सिरों में चीरे लगा दिए और उन्हें अपने जबड़े के चारों ओर बांध लिया ताकि निशान छिप जाए; कन्फेशर के सम्मान में, सभी भिक्षुओं ने, उनके उदाहरण का पालन करते हुए, चीरे वाले कफन पहनना शुरू कर दिया।

मछुआरे द्वारा भेजा गया यह अभिवादन पढ़ने और उससे पवित्र कष्ट-सहने वालों के कारनामों के बारे में जानने के बाद, संत मेथोडियस ने उस ईश्वर का धन्यवाद किया, जिसने उन्हें इतनी हिम्मत दी थी। फिर उन्होंने बारी-बारी से उनके अभिवादन का निम्नलिखित पत्र से उत्तर दिया: 'जो अपनी मृत्यु से पहले दफनाया गया और बेड़ियों में जकड़ा गया है, वह उन कैदियों को नमस्कार करता है, जिनमें से प्रत्येक का "चिह्नित चेहरा" है, और जिनका दुख जीवन की पुस्तक में अंकित है।'

संत मेथोडियस राजा थियोफिलिस की मृत्यु तक अपनी कब्र में रहे, और जब एक ताबूत ने वास्तव में मृत व्यक्ति को ग्रहण किया[4395] , तो दूसरा ताबूत, उस व्हेल की तरह जिसने भविष्यवक्ता योना को अपने पेट से बाहर उगल दिया था, ने दुनिया को 'जीवित मृत व्यक्ति' प्रदान किया[4396] । जब मृत्यु ने कब्र की उँगली से थियोफिलिस की आँखों पर मुहर लगा दी और उसके अधार्मिक होठों को बंद कर दिया, उसकी ईश्वर-निंदा करने वाली जीभ को चुप करा दिया, तब उस महिमामय स्वीकारकर्ता ने दिन का उजाला देखा और एक बार फिर धर्मोपदेश करने के लिए अपने होठ खोले। थियोफिलिस की मृत्यु के बाद, उनके पुत्र माइकल तृतीय सिंहासन पर बैठे; हालाँकि, चूँकि वह अभी भी नाबालिग थे, उनकी माँ थियोडोरा ने उनकी ओर से शासन किया[4397] । रजवाड़े की पहली चिंता चर्च की शांति थी, जो मूर्तिभंजन द्वारा पूरी तरह से बाधित हो गई थी: पहले मूर्तिभंजक सम्राट, लियो द इसाउरियन[4398] के दिनों से थियोफिलिस की मृत्यु तक एक सौ बीस साल बीत चुके थे; इस दौरान, ईसाइयों द्वारा मसीह की प्रतिमा का अपमान किया गया था, और परिणामस्वरूप एक क्रोधित ईश्वर ने ईसाई साम्राज्य पर काफी विपत्तियाँ लाई थीं। इन वर्षों के दौरान, सारासेनों ने कई ईसाई क्षेत्रों पर विजय प्राप्त कर, उनके कई निवासियों को बंदी बनाकर अपने क्षेत्र में ले गए। इसी समय, ग्रीक-रोमन साम्राज्य दो राज्यों में विभाजित हो गया: हालाँकि, पहले, नए रोम के सम्राट—या ग्रीक सम्राट—ने पुराने रोम पर भी शासन किया था, ताकि पूर्व और पश्चिम एक ही ग्रीक सम्राट के राजदंड के अधीन एकजुट रहे। हालाँकि, मूर्तिभंजन की विधर्म के उदय के परिणामस्वरूप, जिसके साथ अनगिनत धर्म-स्वीकारकों पर क्रूर और खूनी अत्याचार भी हुआ, पश्चिम ने ग्रीक राजाओं के अधिकार से अलग होकर अपना खुद का राजा नियुक्त कर लिया। परिणामस्वरूप, यूनानी राजा को केवल ग्रीस पर शासन करने के लिए मजबूर होना पड़ा, और वह भी संपूर्ण ग्रीस पर नहीं, क्योंकि पवित्र नगर यरूशलेम सहित फिलिस्तीन, सीरिया, अरब, और साथ ही अपने अधीनस्थ क्षेत्रों सहित मिस्र पर सारासेनों का कब्जा हो गया था। ईश्वर ने ईसाइयों के पापों के कारण यह सब होने दिया, जो धर्मपरायणता से भटककर विधर्म की ओर चले गए थे और पवित्र प्रतिमाओं का अपमान किया था। इस अंतिम परिस्थिति को ध्यान में रखते हुए, दैवीय प्रेरित मन से संपन्न धर्मनिष्ठ रानी थियोडोरा ने ईसाई साम्राज्य से शापग्रस्त मूर्तिभंजनवाद की कुप्रथा को जड़ से उखाड़ फेंकने और धर्मसमर्थन की स्थापना करने के लिए हर संभव प्रयास किया, पवित्र चर्च, जो मसीह की वधू है, के एक कीमती आभूषण के रूप में पवित्र प्रतिमाओं की पूजा को बहाल किया। उन्होंने आदेश दिया कि भक्ति के सभी स्वीकारकर्ताओं को उनके बंधन और कारावास से मुक्त किया जाए, और निर्वासन में रहने वालों को वापस बुलाया जाए, ताकि वे कॉन्स्टेंटिनोपल में परिषद में भाग ले सकें, जो पवित्र प्रतिमाओं को उचित सम्मान के साथ चर्चों में बहाल करेगी। इस आदेश द्वारा, संत मेथोडियस को भी अपनी कब्र-सी जेल से रिहा कर दिया गया। हालाँकि, पैट्रिआर्कल सिंहासन पर, एक पवित्र स्थान में विधिवंस की घृणा की तरह, झूठे पैट्रिआर्क जॉन, जिन्हें एनीअस के नाम से जाना जाता था, का कब्ज़ा था[4399] , – एक विधर्मी और जादूगर, जिसे राजा थियोफिलिस ने सिंहासन पर बिठाया था; और चूंकि पवित्र पिताओं ने उसके साथ कोई संगति करने से इनकार कर दिया था, धर्मपरायण रानी थियोडोरा ने उपर्युक्त झूठे पादरी को पदच्युत कर दिया और उसे अंगूर के बाग से जंगली सूअर की तरह चर्च से बाहर निकाल दिया। ईश्वर की कृपा से, सभी ऑर्थोडॉक्स ईसाइयों के अकथनीय आनंद के लिए, पवित्र कन्फेशर मेथोडियस को पैट्रिआर्क के रूप में सिंहासन पर स्थापित किया गया।

संत मेथोडियस का यह पदोन्नयन, जो मानवीय पसंद की तुलना में ईश्वर की पसंद से अधिक हुआ था, का पूर्वानुमान आदरणीय जॉन द ग्रेट द्वारा पहले ही दे दिया गया था, जैसा कि उनके जीवन-चरित में इस प्रकार वर्णित है: अगाव्रोन मठ के मठाधीश यूस्ट्रैटियस ने एक बार आदरणीय जॉन से पूछा:

[4395] अर्थात्, ज़ार थियोफिलिस।

[4396] अर्थात्, संत मेथोडियस।

[4397] ८४२–८५५। माइकल तृतीय मद्यपान करने वाला ८५५ से ८६७ तक राज करता था।

[4398] लियो तृतीय इसाउरियन ने 716 से 741 तक शासन किया।

[4399] वह 832 से 842 तक पैट्रिआर्क थे।

'पिताजी, पवित्र प्रतिमाओं को कब तक पैरों तले रौंदा जाएगा (और यह स्थिति कब तक बनी रहेगी), जब तक कि चर्चों को बहाल नहीं किया जाता, उत्पीड़क संख्या में बढ़ रहे हैं, और मसीह के झुंड को जंगली जानवरों द्वारा चीर-फाड़ किया जा रहा है?'

पवित्र पिता ने उत्तर दिया:

'भाई, थोड़ा और इंतज़ार करो, और तुम ईश्वर की शक्ति का प्रकटीकरण देखोगे: मेथोडियस नाम का एक व्यक्ति चर्च का प्रभार संभालेगा; दिव्य आत्मा से प्रबुद्ध होकर, वह चर्च का सत्य में नेतृत्व करेगा, विधर्मों को जड़ से उखाड़ फेंकेगा, चर्च को रूढ़िवादी सिद्धांतों पर स्थापित करेगा, और मन की शांति और एकता लाएगा; जबकि जो लोग उसका विरोध करेंगे, वे सर्वोच्च के दाहिने हाथ से नम्र किए जाएँगे,

आदरणीय इओआन्नशियिस की यह भविष्यवाणी संत मेथोडियस में स्पष्ट रूप से पूरी हुई। ज़ार थियोफिलिस की मृत्यु पर, उन्हें कॉन्स्टेंटिनोपल के पैट्रिआर्क के रूप में नियुक्त किया गया, एक ऐसे व्यक्ति के रूप में जो इस उच्च पद के योग्य थे, धर्मपरायणता के एक मजबूत स्तंभ और भक्ति के एक अटूट रक्षक के रूप में, शहादत से सुसज्जित मसीह के एक सैनिक के रूप में, जिसकी परमेश्वर द्वारा पूर्व-सूचना दी गई थी और एक दूरदर्शी व्यक्ति द्वारा महान एपिस्कोपल मंत्रालय के लिए भविष्यवाणी की गई थी। संत मेथोडियस ने धर्मपरायण सम्राज्ञी थियोडोरा के साथ मिलकर कॉन्स्टेंटिनोपल में एक स्थानीय परिषद बुलाई, जिसने आइकनोक्लास्टों के खिलाफ नाइसीया में कॉन्स्टेंटाइन और आइरीन के शासनकाल के दौरान बुलाई गई सातवीं सार्वभौमिक परिषद के धर्मशास्त्रीय फरमानों की पुष्टि की[4400] । जिन लोगों ने इस सार्वभौमिक परिषद की मान्यताओं को स्वीकार नहीं किया, उन्हें संत मेथोडियस के अधीन बुलाई गई स्थानीय परिषद ने दूसरे शाप (anathema) के अधीन किया। ऑर्थोडॉक्स को आनंद देने और चर्च में शांति बहाल करने, तथा उथल-पुथल और अशांति को शांति में बदलने के बाद, परिषद के पिताओं ने, बड़ी गंभीरता के साथ, महा-व्रत के पहले सप्ताह के दौरान पूजनीय प्रतिमाओं को प्रभु के चर्च में लाया। और न केवल कॉन्स्टेंटिनोपल में, बल्कि स्वर्ग के नीचे उन सभी स्थानों में जहाँ ऑर्थोडॉक्स ईसाई रहते थे, वहाँ भी बहुत आनंद हुआ।

जबकि हर जगह ऑर्थोडॉक्स ईसाई इस आध्यात्मिक उत्सव का जश्न मना रहे थे, उन लोगों के दिलों में ईर्ष्या खा रही थी जिनकी आत्माओं में प्रतिमा-विरोधी विधर्म गहराई से जड़ें जमा चुका था: ऐसे थे उपर्युक्त, पदच्युत झूठे पैट्रिआर्क एनीयस और उसका भाई एरेबोर, जो सेनेटर का पद रखते थे और शाही परिषद में बैठते थे; ऐसे ही कुछ अन्य उच्च-पदस्थ कुलीनों और निम्न पद के पुरुषों में भी थे। क्या करें यह न जानते हुए, उन्होंने दुर्भावना से, परम पावन मेथोडियस पर बदनामी फैलाने का एक तरीका सोचा। सोने के बदले में, विधर्मी एक कुलीन महिला को काम पर रखे, जो उनके विचारों से सहमत थी – उसका बेटा स्मर्ना में इपाटस[4401] था – ताकि वह उनके निर्देशों पर रानी और युवा राजा के शिक्षकों के पास जाकर उन्हें सूचित कर सके कि नव-नियुक्त पैट्रिआर्क मेथोडियस ने कथित तौर पर उसके साथ व्यभिचार किया था। निंदकों ने ऐसा इसलिए किया, क्योंकि उन्होंने यह गणना की थी कि यदि वे लोगों के बीच पादरी के बारे में दुर्भावनापूर्ण अफवाहें फैलाकर उन्हें बदनाम करने में सफल हो जाते, तो उनके लिए पवित्र प्रतिमाओं की पूजा का बचाव करने वाले संत मेथोडियस की शिक्षाओं और स्वयं प्रतिमाओं, दोनों की निंदा करना आसान हो जाएगा। उस महिला ने, विधर्मियों द्वारा उकसाए जाने पर, रानी और युवा राजा के शिक्षकों के पास जाकर सभी के सामने संत मेथोडियस पर खुलेआम बदनामी की और एक पूरी तरह से निर्दोष पति के खिलाफ शिकायत दर्ज कराई। यह सुनिश्चित करने के लिए कि उसकी बदनामी को सच माना जाए, उसने आँसू बहाए, मानो उसे नव-नियुक्त पैट्रिआर्क ने बलात्कार किया हो। वे प्रधान पादरी के इस आचरण पर हैरान रह गए, जिससे एक बड़ा घोटाला खड़ा हो गया था; तुरंत ही पूरे शहर में अफवाहें फैल गईं, जिससे ऑर्थोडॉक्स लोगों में खलबली मच गई और अधर्मी लोगों को खुशी और विजय मिली। विधर्मी लोगों ने ऑर्थोडॉक्स का मज़ाक उड़ाते हुए कहा: 'तुम्हारा पाट्रिआर्क इसी तरह का है; इसी आदमी का तुम अनुसरण करते हो।'

जब यह बदनामी स्वयं परमपावन मेथोडियस तक पहुँची, तो वे सोचने लगे कि यह कहाँ से उत्पन्न हुई होगी। फिर भी, निर्मल अंतःकरण होने के कारण, वे इस अन्यायपूर्ण विपत्ति पर अंतर्मन में प्रसन्न हुए; साथ ही, पैट्रिआर्क को लोगों के बीच इतनी बड़ी परीक्षा देखकर और ईसाई धर्मद्रोहियों द्वारा ऑर्थोडॉक्स का उपहास उड़ाया जाना देखकर दुःख हुआ। तो फिर, इस महान संत, जो कर्म में निर्दोष और हृदय से शुद्ध थे, जिन्होंने अपनी माँ के गर्भ से ही अपने शरीर

[4400] यह वर्ष 787 का था।

[4401] मुख्य कौंसल।

की अछूती पवित्रता बनाए रखी थी, उन्होंने क्या किया? वे झूठे आरोप से अपनी सफाई करने की तुलना में, चर्च से कलंक हटाने और विधर्मियों के झूठे मुँह को बंद करने के अधिक इच्छुक थे, पैट्रआर्क ने, अपनी ही लज्जा का बलिदान करते हुए, उस रोग को प्रकट करने का संकल्प लिया, जिससे वह पीड़ित थे—जो अब तक किसी को भी ज्ञात नहीं था—और जो स्पष्ट रूप से प्रमुख की कामुक, पापपूर्ण संभोग में संलग्न होने की अक्षमता को प्रदर्शित करता था। ज़ार के दरबार को संदेश भेजकर, पैट्रआर्क ने स्वयं और उक्त महिला के बीच के मामले की जाँच के लिए एक निष्पक्ष सुनवाई का अनुरोध किया। सम्मानित पुरुषों से बनी अदालत के सामने उपस्थित होकर, पैट्रआर्क ने—उस निर्लज्ज महिला के साथ बहस नहीं करना चाहकर, अपनी बेगुनाही का अकाट्य प्रमाण देने की इच्छा रखते हुए, और इस बात से भी आश्वस्त होकर कि उस समय की आवश्यकता अपनी स्वाभाविक संकोच को त्यागने की थी, जिसका पालन उनके पद के व्यक्ति के लिए विशेष रूप से अनिवार्य था— – परम पावन मेथोडियस ने अपने शरीर के 'निजी अंग' को उजागर किया, जो बीमारी से ग्रस्त था, ताकि उसकी 'देह' मानो सुन्न हो गई हो; और सभी ने महसूस किया कि उस महिला की बदनामी कितनी झूठी थी, क्योंकि उन्होंने देखा कि इतना बीमार व्यक्ति कामुक पाप करना असंभव था। और ऑर्थोडॉक्स ने इस बात पर आनंद मनाया कि कलीसिया के भीतर का प्रलोभन नष्ट हो गया था और धार्मिकता के पुत्रों के विरुद्ध की गई बदनामी दूर हो गई थी। हालाँकि, विधर्मी लज्जित हो गए और उनके अधर्मी मुँह बंद हो गए; उनकी बीमारी उन्हीं के सिर पर आ पड़ी, और उनका उपहास स्वयं उनके लिए लज्जा और विनाश लेकर आया।

जब न्यायाधीशों ने परम पावन मेथोडियस से पूछा कि वह कैसे बीमार पड़े, तो उन्होंने अपनी बीमारी का खुलासा करते हुए उसका कारण भी बताया, जिसके बारे में उन्होंने अब तक किसी से बात नहीं की थी: उन्होंने कहा, 'जब, उनकी परम पावनता पैट्रआर्क निकिफोरस ने मुझे रोम में पोप के पास भेजा और मैं कुछ समय के लिए वहाँ रहा, उस समय, शरीर के धोखेबाज, शैतान के दूत के काम करने से, एक प्रबल सांसारिक इच्छा, जो सांसारिक अंगों के उत्तेजना के साथ मिली हुई थी, मुझ पर आई; कई दिनों और रातों तक मैं इस कामुक जुनून से जूझता रहा, उपवास और जागरण से खुद को थका दिया और हर तरह के श्रम से खुद को कष्ट दिया; और चूँकि यह जुनून फिर भी मुझे नहीं छोड़ रहा था और मुझे लगा कि मैं पहले ही गिरने के करीब आ गया हूँ, मैं पवित्र प्रमुख प्रेरित पतरस के सामने आँसुओं में लोट गया, खुद को उनकी सहायता के लिए सौंपते हुए और उनसे राहत माँगी: मैंने उनसे विनती की कि ईश्वर द्वारा उन्हें प्रदान की गई अनुग्रह-पूर्ण शक्ति से, वे मुझे इस कामुक संघर्ष से मुक्त करें और इस प्रकार मेरे शरीर—जो पवित्रता के लिए समर्पित है—को अपवित्र होने से बचाएं। जब, अपने दुःख में, मैं थोड़ी देर के लिए सो गया, तो पवित्र प्रेरित पतरस मुझे दिखाई दिए और उन्होंने अपने दाहिने हाथ से मेरे गुप्तांगों को छुआ; उस स्पर्श से मुझे तीव्र पीड़ा हुई – मानो किसी ने उस हिस्से को आग से जला दिया हो; मैं ज़ोर से कराह उठा। तब प्रेरित पतरस मुझसे बोले: 'अब से, तुम्हें शरीर के पापी संघर्ष का अनुभव नहीं होगा।' 'मैं तुरंत अपनी नींद से जाग गया और मैंने खुद को उस चोट के साथ पाया जो तुम पहले ही देख चुके हो।'

संत मेथोडियस का यह वृत्तांत उनके न्यायाधीशों को प्रभावित कर गया: उन्होंने उन्हें निर्दोष पाया; जहाँ तक उस महिला का सवाल है, उन्होंने उसे दंडित करने का आदेश दिया ताकि वह यह खुलासा करे कि उसे ईश्वर के निर्दोष और पवित्र बिशप पर बदनामी करने की शिक्षा किसने दी थी। और तुरंत जल्लाद उसे यातना देने के लिए ले जाने के लिए प्रकट हुए; लेकिन वह, खींची हुई तलवार, तैयार की गई आग और काँटों से ढकी तीखी लाठियाँ देखकर, बहुत डर गई और, मामला अमल में आने से पहले, उसने सच उगल दिया: उसने उन सभी के नाम बताए जिन्होंने उसे काम पर रखा था और उसे सिखाया था, अपने भड़काऊ लोगों से मिली सोने की बड़ी मात्रा का खुलासा किया, और उस जगह का संकेत दिया जहाँ वह उसके घर में छिपा हुआ था। न्यायाधीशों ने उस महिला के घर पर भरोसेमंद अधिकारियों को भेजा; वे गए और, वास्तव में, महिला द्वारा बताए गए स्थान पर सोना पाया, जिसे वे न्यायाधीशों के पास वापस ले आए। न्यायाधीशों ने महिला और उन लोगों दोनों को मृत्युदंड सुनाया जिन्होंने उसे संत मेथोडियस पर बदनामी करना सिखाया था। हालाँकि सर्वपवित्र पैट्रआर्क, स्वभाव से ही प्रभु के एक वफादार और सच्चे अनुयायी होने के नाते, न केवल मृत्युदंड को लागू होने से रोका, बल्कि अपने दुश्मनों को उनकी प्रतीक्षा कर रही सज़ा से भी बचा लिया; उन्होंने उन पर केवल एक ही दंड लगाया: कि सभी प्रमुख पर्वों के दिनों में वे ब्लाचेर्ना में स्थित परमेश्वर की अति पवित्र माता के चर्च[4402] से संत सोफिया के कैथेड्रल तक, जली हुई मोमबत्तियाँ लेकर, सुव्यवस्थित तरीके से आएँ, और वहाँ, चर्च के द्वार पर, शाप-वचन सुनें, जिसे विधिवत पूरा किया गया। तब ईश्वर-निंदा करने वाले, विधर्मी मुँह चुप हो गए, और ईश्वर की कृपा से, प्रार्थना और ईश्वर के

[4402] ब्लाखेर्ना – कॉन्स्टेंटिनोपल का एक जिला।

सेवक, उनकी पवित्रता पैट्रआर्क मेथोडियस के अथक उत्साह के द्वारा कॉन्स्टेंटिनोपल में प्रतिमा-भंजक विधर्म का पूर्ण विनाश हो गया, जो उन पर थोपी गई अनावश्यक कष्ट-परिस्थिति से और भी अधिक महिमा के साथ उभरे।

उसके शत्रुओं को वह नहीं मिला जो दाऊद पापियों के लिए परमेश्वर से माँगता है: *'उनके मुँह पर लज्जा लिख दे, ताकि वे तेरा नाम खोजें, हे प्रभु'* (भजन संहिता 82:17)। दुष्टता से अंधा और कठोर हृदय होकर, उन्होंने अपने पिछले दुष्ट कृत्यों में नए, और भी अधिक गंभीर कृत्य जोड़ दिए। उपर्युक्त झूठे पैट्रआर्क जॉन, जिन्हें एनीयस के नाम से भी जाना जाता है, जो इस सभी बुराई का सूत्रधार था, को एक निश्चित मठ में श्रद्धांजलि अर्पित करने भेजा गया; वहाँ अपने प्रवास के दौरान, मसीहा उद्धारकर्ता, परमेश्वर की अति पवित्र माता और पवित्र स्वर्गदूतों की पवित्र मूर्तियों को देखकर—जिन्हें मूर्तिकला-विरोधी विनाश के बाद भक्तिपूर्ण रक्षकों द्वारा बहाल किया गया था—एनीअस ने अपने डिकिन को उन पवित्र मूर्तियों की आँखें निकालने का आदेश दिया। डीकन ने आदेश का पालन किया। यह बात धर्मपरायण महारानी थियोडोरा को बताई गई। ईश्वर मसीह के प्रति उत्साही, उसने पहले तो स्वयं उस नकली पादरी की आँखें निकालने का आदेश दिया था, लेकिन फिर, कुछ सेनेटर्स की विनतियों से प्रभावित होकर, उसने पहली सज़ा को कोड़ों की सज़ा से बदल दिया: महारानी ने आदेश दिया कि उस नकली पादरी को, जो अनगिनत यातनाओं और कई मौतों का पात्र था, कठोर चाबुक से दो सौ कोड़े लगाए जाएँ; क्योंकि अपने शासनकाल के दौरान उसने कई ऑर्थोडॉक्स ईसाइयों को यातना देकर मार डाला था और, कैद में रहते हुए भी, पवित्र प्रतिमाओं का अपमान करना बंद नहीं किया था।

तथापि, उनकी पवित्रता पैट्रआर्क मेथोडियस ने, मसीह की प्रतिमा के लिए सहन किए गए सभी धार्मिक उथल-पुथल और कई दुर्भाग्यों के बाद, उन्होंने अपने शेष जीवन को चर्च के नेतृत्व में शांति और और सौम्यता के साथ बिताया, कॉन्स्टेंटिनोपल में पैट्रआर्कल सिंहासन को अपने दैवीय मुखमंडल और देवदूत-सदृश जीवन से सुशोभित किया, मसीह के आध्यात्मिक भेड़ों के झुंड का सत्य की ओर मार्गदर्शन किया और उन्हें दैवीय प्रेरित शिक्षाओं के चरागाहों पर पोषित किया। उनके प्रभाव में, पवित्र प्रतिमाओं की पूजा बढ़ी, जिसमें वास्तव में उन पर चित्रित आकृतियों का सम्मान किया जाता था; साथ ही, उन्होंने यह सुनिश्चित किया कि कॉन्स्टेंटिनोपल में, ईश्वर के संतों की पवित्र अवशेषों को एक बार फिर वह सम्मान मिले जिसके वे हकदार थे; प्रतिमा-विरोधियों के शासनकाल के दौरान, पवित्र अवशेषों का भी प्रतिमाओं की तरह ही अपमान किया गया – उन पर थूक दिया गया, उन्हें पैरों तले रौंदा गया, तिरिस्कारपूर्वक सड़कों पर घसीटा गया, दलदलों और गोबर के ढेरों में फेंक दिया गया, और कभी-कभी जलाकर या डुबोकर नष्ट कर दिया गया; केवल वे अवशेष ही सुरक्षित रहे जिन्हें धर्मनिष्ठ लोगों ने अधर्मी लोगों के हाथों से बचाने के लिए जल्दबाजी में जमीन में दफना दिया था। इन सबके कारण ईश्वर के पवित्र संतों की अवशेषों का कोंस्टेंटिनोपल में उल्लेख ही समाप्त हो गया; इसी कारण, संत क्रिस्टोथियस ने कोंस्टेंटिनोपल को पवित्र अवशेषों से एक बार फिर समृद्ध करने और ऑर्थोडॉक्सों को उन्हें सम्मानित करने का सही तरीका सिखाने के लिए हर संभव प्रयास किया। सबसे पहले, उन्होंने पूज्य थियोडोर द स्टुडाइट की अवशेषों को, उनके मूल दफन स्थल से राजधानी में भव्यता के साथ स्थानांतरित किया, जो ईश्वर के पास उनके जाने के अठारह साल बाद भी अपरिवर्तित रहे थे। फिर उन्होंने कोंस्टेंटिनोपल में पैट्रआर्क निकिफोरस के पवित्र अवशेष स्थानांतरित किए, जो उनकी कैद के स्थान पर पड़े थे; पैट्रआर्क मेथोडियस द्वारा अपने स्वामी के अवशेषों का यह स्थानांतरण—जिनके लिए उन्होंने अपोक्रीसियारिस के रूप में सेवा की थी और जिन्होंने उन्हें रोम भेजा था—का वर्णन 13 मार्च को विस्तार से किया गया है। अंत में, उन्होंने अपने श्रम-क्लान्त, दीर्घ-सहनशील और पवित्रता-पवित्र शरीर को अक्षय अवशेषों के रूप में कॉन्स्टेंटिनोपल के चर्चों के लिए एक कीमती खजाने के रूप में तैयार किया: वह पहले ही अपने अंत के करीब थे, जिसकी उन्होंने स्वयं भविष्यवाणी की थी और जिसके बारे में उन्हें आदरणीय इओआन्नशियिस से एक भविष्यवाणी मिली थी। प्रारंभ में ही अपने पैट्रआर्काट की भविष्यवाणी करने के बाद, उन्होंने बाद में अपने निधन की भी भविष्यवाणी की। पवित्र आत्मा द्वारा दूरदर्शिता से संपन्न दोनों ने एक-दूसरे के निधन का पूर्वानुमान लगाया था, जैसा कि आदरणीय इओआन्नशियिस के जीवन में वर्णित है। माइकल के शासन के पाँचवें वर्ष में, संत मेथोडियस, जो पैट्रआर्क थे, ने परम आदरणीय इओआनिकियस के प्रभु के पास जल्द ही प्रस्थान की भविष्यवाणी करते हुए, अपने सभी पुरोहितों के साथ उनके पास अंतिम आशीर्वाद और प्रार्थनाएँ लेने आए। आदरणीय इओनिकियस ने संत मेथोडियस के साथ लंबी बातचीत करने और उनके साथ आए लोगों को ऑर्थोडॉक्स धर्म में शिक्षित करने के बाद, पैट्रआर्क मेथोडियस से भविष्यवाणी की कि वे भी, अपने निधन के समय, जल्द ही क्षणिक जीवन से शाश्वत जीवन में प्रवेश कर जाएँगे; फिर, प्रार्थना और अंतिम विदाई के बाद, वे अलग हो गए। पैट्रआर्क अपने निवास पर लौट गए, जबकि परम पूजनीय इओनिकियोस अपनी कोठरी में प्रार्थना करते हुए और अपने प्रस्थान की तैयारी करते हुए रहे। पैट्रआर्क के

प्रस्थान के तीसरे दनि, हमारे परम पूजनीय और ईश्वर-वाहक पति इओनकियिोस प्रभु के पास चले गए (4 नवंबर); सात महीने बाद, 14 जून को, परम पावन पैट्रआिर्क मेथोडयिस[4403] भी प्रभु के पास चले गए। इस प्रकार आदरणीय इओनकियिोस की भवष्यिवाणी पूरी हुई, कि पैट्रआिर्क अपने नधिन के बाद उनके पीछे अनंतकाल में जाने में देरी नहीं करेंगे।

परम पावन मेथोडयिस के नधिन के बाद, कोंस्टेंटनिोपल की संपूर्ण चर्च में महान शोक और वलिाप छा गया, जो एक ऐसे महान पति और संपूर्ण वशि्व के लिए एक प्रकाशस्तंभ से वंचति हो गई थी; उन्हें जीवन और मंत्रालय में इतनी उच्च प्रतष्ठिा वाले बशिप के अनुरूप सम्मान के साथ दफनाया गया। संत मेथोडयिस ने चार साल और तीन महीने तक मसीह की कलीसयिा का मार्गदर्शन कयिा, और फरि उस जीवन में प्रवेश कयिा जो समय के अधीन नहीं है; पवत्रि धर्मगुरुओं में गनि जाने वाले, वे मुख्य चरवाहे और महान महापुजारी, जो स्वर्ग में प्रवेश कर चुके हैं, हमारे प्रभु यीशु मसीह, उन सभी संतों द्वारा महमिामंडति ईश्वर, के समक्ष उपस्थति हुए; उन्हीं को, हम पापयिों की ओर से, पति और पवत्रि आत्मा के साथ, अब और हमेशा और युगों-युगों तक सम्मान और महमिा मलि। आमीन।

कॉन्टाकयिन, स्वर 2:

पृथ्वी पर आपने एक देहहीन के समान परशि्रम कयिा, और स्वर्ग का उत्तराधकिार प्राप्त कयिा, मेथोडयिस, क्योंकि आपने पृथ्वी के छोर तक प्रतमिाओं की पूजा को स्पष्ट कयिा: क्योंकि, दूसरों से अधकि परशि्रम और कष्ट सहने के बाद भी, आपने मसीह की प्रतमिाओं को अस्वीकार करने वालों को नडिरता से फटकारना बंद नहीं कयिा।

28 जून

15 जून (पुराना संस्करण)

उसी दनि, संतों में हमारे पति, मॉस्को और सर्व रूस के मेट्रोपॉलटिन, चमत्कार करने वाले योना की स्मृति।

पवत्रि भवष्यिवक्ता आमोस का स्मरणोत्सव।

१५ जून को स्मरणोत्सव

पवत्रि भवष्यिवक्ता आमोस, यहूदा देश के बेतलेहेम के पास स्थति टेकोआ नगर के नविासी, एक वनिम्र और गरीब परविार से थे: उन्होंने अपना समय भेड़ों का चरवाहा बनकर बतिाया। लेकनि प्रभु, जो धनी और शक्तशिाली लोगों पर नहीं, बल्कि नम्र और गरीब लोगों पर दृष्टि रखते हैं, ने उन्हें, जैसे उन्होंने मूसा और दाऊद को बुलाया था, उनके झुंडों की देखभाल से भवष्यिवाणी के कार्य के लिए बुलाया (देखें नरि्गमन 3:1–22, 1 शमूएल 16:1–23)। उसने उसे यहूदा के देश को छोड़कर इस्राएल के देश में जाने की आज्ञा दी, ताकि वहाँ, अपनी भवष्यिद्वाणी की शकि्षा के द्वारा, वह लोगों को—जो मूर्तपिूजा के द्वारा भ्रष्ट हो गए थे—पश्चाताप की ओर ले जा सके। यह ध्यान देने योग्य है कि सुलैमान (954 ईसा पूर्व) की मृत्यु के बाद जेरोबोआम (953–931 ईसा पूर्व), इस्राएल के दस गोत्रों के साथ, सोलोमन के पुत्र रेहोबोआम (954–937 ईसा पूर्व), जो यरूशलेम में शासन करता था, से अलग हो गया: वद्रिोह करने वाले जनजातयिों ने इस्राएल का एक अलग राज्य बनाया, जसिका पहला राजा यरोबाम था (3 राजा 12:1–33)। इस यरोबाम के दनिों से, इस्राएलयिों ने परमेश्वर की सच्ची उपासना से मुंह मोड़कर मूर्तयिों की पूजा की। यरोबाम, इस्राएलयिों पर अपनी शक्ति को मजबूत करने की कोशशि में और इस डर से कि वे मंदरि में त्योहारों के लिए यरूशलेम की यात्रा के दौरान यहूदी राजा से फरि से मलि सकते हैं, उसने उसे उखाड़ फेंका और मार डाला, और दो सुनहरे बछड़े बनाए – क्योंकि वह अपने प्रजाजनों की मूर्तपिूजा की प्रवृत्ति को जानता था – यहाँ तक कि उनके पूर्वजों ने भी, मस्रि से लाल सागर के पार होकर जंगल में पहुँचने

[4403] वे 847 में नधिन हो गए; उन्होंने चर्च का नेतृत्व 4 वर्ष और 3 महीने तक कयिा। संत मेथोडयिस ने धर्म में परविर्तति होने वालों के लिए नयिम बनाए, जन्हिें चर्च ने मार्गदर्शन के रूप में अपनाया: ववािह से संबंधति तीन संस्कार, पश्चाताप के नयिम और कई चर्च भजन; संत मेथोडयिस ने कई पादरीय उपदेश भी छोड़े।

पर, अपनी सुनहरी बालियाँ गलाकर अपने लिए एक बछड़ा बना लिया था (निर्गमन 32:1–35)। उपरोक्त सुनहरे बछड़ों को बनाने के बाद, येरोबोआम ने उनमें से एक को दान में और दूसरे को बेतेल में स्थापित किया – जो उसके राज्य के नगर थे; साथ ही, उसने इस्राएलियों को आज्ञा दी कि वे यरूशलेम न जाएँ, बल्कि स्वर्ण बछड़ों की पूजा करें और उनके सम्मान में भव्य उत्सव मनाते हुए बलिदान चढ़ाएँ; और राजा ने लोगों से कहा: *'हे इस्राएल, देखो, ये तुम्हारे देवता हैं जिन्होंने तुम्हें मिस्र से निकाला'* (1 राजा 12:28)।

इस प्रकार येरोबोआम ने इस्राएलियों को भटका दिया। और यद्यपि प्रभु ने अपने पवित्र भविष्यद्वक्ताओं को इस्राएलियों के पास भेजा ताकि उन्हें फटकारें और उन्हें सही मार्ग पर वापस लाएं, केवल कुछ ही पश्चाताप करके सच्चे ईश्वर के पास लौटे; जबकि अन्य लोग सच्चे ईश्वर और सुनहरे बछड़ों दोनों की पूजा करते थे। इन नबियों में, प्रभु ने अपने सेवक, पवित्र आमोस को भयानक चेतावनियों के साथ भेजा। ईश्वर का यह नबी वाणी में सरल और अकुशल था, परन्तु समझ में नहीं: क्योंकि वही पवित्र आत्मा जिसने सभी नबियों के माध्यम से काम किया, वह उसमें भी कार्यरत था और उसके होठों के द्वारा बोलता था। संत आमोस ने यहूदा के राजा उज्जीय (८०९–७५८ ईसा पूर्व) के शासनकाल के दौरान अपनी भविष्यवाणी की सेवा का निर्वहन किया, जिसकी राजधानी यरूशलेम थी, और इस्राएल के राजा येरोबोअम के अधीन, जिसकी राजधानी सामरिया थी; लेकिन यह वही येरोबोअम नहीं था जिसने यहूदा के राजदंड से अलग होकर सोने के बछड़े बनाए थे, बल्कि एक और था, जो बाद में रहा[4404] ; हालांकि, अपने ही नाम के पूर्ववर्ती की तरह, वह एक मूर्तिपूजक था जो सुनहरे बछड़ों की सेवा करता था। नबी आमोस ने इन राजाओं के दिनों में, फिलिस्तीन में भयानक भूकंप से दो साल पहले भविष्यवाणी करना शुरू किया, जिसका कारण, प्राचीन लेखकों के अनुसार, निम्नलिखित था: यहूदा के राजा उज्जीयाह, जिन्हें अजारीयाह[4405] के नाम से भी जाना जाता है, ने अपने अहंकार में मंदिर के पवित्र स्थल में प्रवेश करने और पुरोहितों की रस्म के अनुसार धूपदान पर धूप जलाने की हिम्मत की; जब पुरोहितों ने इसका विरोध किया, तो उसने उन्हें मृत्यु की धमकी दी, और उसी क्षण यरूशलेम और पूरे फिलिस्तीन में एक भयानक भूकंप शुरू हो गया, जिससे न केवल कई इमारतें नष्ट हो गईं, बल्कि कुछ पहाड़ भी अपनी जगह से हट गए[4406] , और मंदिर की छत ऊपर से फट गई, और बनी दरार से, सूर्य की एक किरण राजा के चेहरे पर पड़ी; तुरंत बाद राजा का माथा और उसका पूरा शरीर कोढ़ से ढक गया। इस प्रकार प्रभु ने अपने वेदी के खिलाफ हिंसा और अपने याजकों पर होने वाले अपमान को बर्दाश्त नहीं किया।

अपने नाम से जुड़ी पुस्तक में विस्तार से वर्णित अपने भविष्यवाणी के वचनों में, पवित्र आमोस ने न केवल इस्राएल पर बल्कि पड़ोसी देशों, शहरों और लोगों पर भी ईश्वर की ओर से आने वाली भयानक विपत्तियों की चेतावनी दी: सीरिया, फिलिस्तीनियों, टायर, एदोम, अम्मोनियों और मोआबियों, और विशेष रूप से इस्राएलियों पर, क्योंकि उन्होंने परमेश्वर को जानने के बाद उनसे मुंह मोड़ लिया था। प्रभु को उन मूर्तिपूजकों के पापों से उतनी अधिक क्रोध नहीं आता जो उसे नहीं जानते, जितना कि उन लोगों के पापों से जो उसे जान चुके हैं और जिन्होंने उसकी कृपाओं का आनंद लिया है। और प्रभु ने इस्राएल के कृतघ्न लोगों पर कौन-सी कृपाएँ नहीं कीं?! उन्हें मिस्र की दासता से छुड़ाया, उन्हें सूखी भूमि पर चलने के समान समुद्र के पार ले गए, मरुभूमि में भूखों पर मन्ना की वर्षा की, प्यासे लोगों के लिए चट्टान से पानी निकाला, उनके सामने से अन्य जातियों को भगाया, और उन्हें दूध और शहद से बहने वाली प्रतिज्ञात भूमि में बसाया। फिर भी उन्होंने बछड़ों के आकार में बनी सुनहरी मूर्तियों के सम्मान में गंभीर उत्सव मनाए, यह कहते हुए: 'हे इस्राएल, देख, ये तेरे देवता हैं!' ये उत्सव विशेष भव्यता और विशेष रूप से बेतेल में, उस ऊँचे पहाड़ पर मनाए जाते थे जहाँ सुनहरा बछड़ा खड़ा था। इसलिए, यही वह स्थान था जहाँ पवित्र आमोस सबसे अधिक बार आते थे और लोगों से अपनी आवाज़ उठाकर बात करते हुए, उन्हें ईश्वर की आने वाली सजाओं की चेतावनी देते थे, उनसे अपनी अधर्मी प्रवृत्ति को छोड़ने की विनती और आग्रह करते थे; फिर भी, बहुत कम लोगों ने उस नबी की बात सुनी। उस समय, बेतेल में एक याजक था जो उपर्युक्त बछड़े की सेवा करता था; चूंकि परमेश्वर के भविष्यवक्ता आमोस मूर्ति की निंदा कर रहे थे, बछड़े को चढ़ाए गए बलिदानों की निन्दा कर रहे थे और उपासकों पर परमेश्वर के भयानक न्याय की ओर इशारा करके लोगों को उनके दुष्ट उत्सवों से दूर कर रहे थे, इसलिए याजक ने इज़राइल के राजा यरोबाम के पास उनकी बदनामी की: उसने रिपोर्ट किया, 'आमोस,

---

[4404] ईसा पूर्व 789–737

[4405] अर्थात् कुष्ठरोगी।

[4406] संयोग से, यहूदी इतिहासकार जोसेफस फ्लावियस (मृत्यु दूसरी शताब्दी ईस्वी में) बताते हैं कि मंदिर के पश्चिम में आए एक भूकंप के कारण एक पहाड़ का आधा हिस्सा टूट गया; जब यह चार स्टेडियम तक पूर्व की ओर लुढ़का, तो इसने अपने रास्ते में पड़े शाही बगीचों को दफन कर दिया।

इस्राएल के घराने में तुम्हारे वरिुद्ध वद्रिोह भड़का रहा है; यह देश उसके सारे वचन नहीं सह सकता, क्योंकि आमोस इस प्रकार कहता है: "जेरोबोआम तलवार से मारा जाएगा, और इस्राएल नश्चिय ही अपने देश से बंदी होकर ले जाया जाएगा।'"

इस बदनामी के साथ, याजक अमाज्या ने राजा का नबी आमोस के प्रति क्रोध भड़काने की कोशशि की, लेकनि राजा ने याजक की बातों पर कम ध्यान दयिा: यद्यपि वह मूर्तपिूजक था, फरि भी वह परमेश्वर के पुरुष का बहुत सम्मान करता था और उसे कोई हानि पहुँचाना नहीं चाहता था। पुजारी को यह एहसास हो गया था कि वह राजा को परमेश्वर के पुरुष के वरिुद्ध नहीं कर सकता, इसलिए उसने स्वयं उस पर क्रूर अत्याचार करना शुरू कर दयिा: कई मौकों पर उसने पवत्रि आमोस को पीटा और बेतेल से भगा दयिा, और उसे सुनहरे बछड़े के सम्मान में होने वाले त्योहारों में शामलि होने तथा लोगों को त्योहार की बलदिानों और धूमधाम से हटाने से रोक दयिा; फरि भी पवत्रि नबी ने याजक के प्रतबिंधों या उसके द्वारा दए गए घावों पर कोई ध्यान नहीं दयिा; वह बेतेल लौट आता और एक बार फरि लोगों को उपदेश और प्रोत्साहन के भवष्यिसूचक शब्दों से संबोधति करता, और एक बार फरि पुरोहति उसे पकड़ लेता और पटिाई करता। एक अवसर पर, दुष्ट पुरोहति ने संत आमोस से वनिती भरे स्वर में कहा: 'हे द्रष्टा! जाकर यहूदा देश में शरण ले; वहाँ अपना भोजन खा और वहाँ भवष्यिवाणी कर, परन्तु बेतेल में फरि भवष्यिवाणी न करना, क्योंकि यह राजा का पवत्रि स्थान और राजमहल है।'

और आमोस ने अमाज्याह से कहा: 'मैं न तो कोई भवष्यिद्वक्ता हूँ, और न ही कोई भवष्यिद्वक्ता का पुत्र; मैं एक गड़रयिा था और अकर्मन के अंजीर इकट्ठा करता था[4407] । परन्तु यहोवा ने मुझे भेड़ों की रखवाली करने से उठा लयिा और मुझसे कहा: "जा, मेरे लोगों इस्राएल को भवष्यिद्वाणी कर।" अब यहोवा का वचन सुन। तुम कहते हो, 'इज़राइल के वरिुद्ध भवष्यिवाणी मत करो, और इसहाक के घराने के वरिुद्ध बात मत करो।' इसलयि यहोवा यों कहता है: 'जब अश्शूरयिों का देश इज़राइल में प्रवेश करेगा, तब वे उसे घेर लेंगे और उजाड़ डालेंगे; वे उसके नगरों को नष्ट कर देंगे और इस नगर को भी ले लेंगे; तब, तेरी आँखों के सामने, नर्लिज्ज सैनकि तेरी पत्नी को व्यभचिार द्वारा अपवत्रि कर देंगे; क्योंकि तू भी परमेश्वर की सर्वद्रष्टा आँखों के सामने इस्राएल की पथभ्रष्टता में सहभागी हुआ है, और तूने इन लोगों को सोने के बछड़े, तेरे देवता, के अपवत्रि मंदरि में घृणति कर्म करने सखिाया है; तेरे पुत्र और पुत्रयिाँ तेरी आँखों के सामने तलवार से मरेंगे, और तू स्वयं परदेश में नाश हो जाएगा; जबकि इस्राएल अपने देश से बंदी होकर ले जाया जाएगा' (देखें आमोस 7:12–17)।

संत आमोस के इन शब्दों ने याजक के भीतर प्रचंड क्रोध जगा दयिा, और उसने दया के बनिा परमेश्वर के भवष्यिवक्ता को पीटना शुरू कर दयिा; अंत में, याजक के बेटे, क्रूर उज्जीयाह ने, गुस्से के एक दौरे में, संत आमोस को अपनी पूरी ताकत से भौंहों के बीच एक भारी लाठी से मारा और उसे घातक रूप से घायल कर दयिा। लेकनि वह तुरंत नहीं मरा: बमुश्कलि जीवति, उन्हें यहूदा के देश ले जाया गया, जहाँ, कुछ दनिों बाद, वे अपने स्वदेश, टेकोआ नगर में नधिन कर गए[4408] ; वहाँ उन्हें उनके पूर्वजों के साथ दफनाया गया। जो कोई भी संत आमोस की भवष्यिवाणयिाँ पढ़ना चाहता है, वह उन्हें उनकी पुस्तक में पा सकता है; लेकनि हम अब, और हमेशा, और युगानुयुग, परमेश्वर की महमिा करते हैं, जनि्होंने उन्हें ज्ञान प्रदान कयिा। आमीन।

कॉन्टाकयिन, स्वर 4:

हे नबी, महमिामय आमोस, आपने पवत्रि आत्मा से अपने तेजस्वी हृदय को शुद्ध करके, स्वर्ग से भवष्यिवाणी का वरदान प्राप्त कयिा, और सर्वभूमि में ऊँचे स्वर से पुकारा: 'यह हमारा ईश्वर है, और उसका कोई सानी नहीं।'

पवत्रि शहीद डुला का कष्टकथा

१५ जून को स्मरणोत्सव

[4407] साइकोमोर अंजीर के पेड़ होते हैं जो, उनके फल से आंका जाए तो, अंजीर परविार की एक नम्नि श्रेणी से संबंधति हैं।
[4408] लगभग 783 ईसा पूर्व

उस समय, जब शैतान के पुत्र उसकी सेवा कर रहे थे, और मूर्तपिूजक जादू-टोना और भ्रम और भी प्रबल हो रहे थे, सलिसिया पर मैक्समिस[4409] के राज्यपाल रहते हुए, मसीह के एक सेवक, डुला[4410] नामक एक व्यक्ति, जो उसी सलिसिया के क्षेत्र का रहने वाला था, को इस राज्यपाल के सामने लाया गया और दोषी ठहराया गया। वह एक धर्मी और ईश्वर-भयभीत व्यक्ति था, और लोगों की गवाही के अनुसार, उसने एक सदाचारी जीवन जीने और हर बात में सत्य को बनाए रखने का प्रयास किया।

एक दिन, राज्यपाल को यह सूचना दी गई कि डुला ईसाई धर्म का एक स्वीकारकर्ता था, और उसके बाद मसीह के सेवक को तुरंत जेल में डाल दिया गया; जिस पर नोटरी[4411] ने राज्यपाल से कहा:

'राज्यपाल, आपके आदेश के अनुसार, आपके सैन्य कमांडरों ने सलिसिया प्रांत के पूरे क्षेत्र में Zephyr[4412] शहरों तक छानबीन की है, और इस दौरान उन्होंने अधर्मी ईसाई धर्म के एक अनुयायी को पकड़ा है; और वही है जिसे हम अब आपकी धर्मनिष्ठ और अति प्रतिष्ठित अदालत में प्रस्तुत करते हैं।'

इस पर राज्यपाल ने उत्तर दिया:

'जब मैं स्वयं इन शहरों का दौरा करूँगा, तो मैं आज्ञा दूँगा कि जो कैदी अभी कालकोठरियों में हैं, उन्हें मेरे सामने लाया जाए, और यात्रा के दौरान, विशेष रूप से इस उद्देश्य के लिए तैयार किए गए स्थानों पर, मैं उन्हें यातना दूँगा।'

और कुछ ही समय बाद वह ज़ेफ़ायर की भूमि के एक शहर, प्रेटोरीआडा[4413] , के लिए रवाना हो गया; वहाँ, राज्यपाल ने न्यायपीठ पर अपनी सीट लेने के बाद, सबसे पहले यह आदेश दिया कि धन्य डुला को उसके सामने लाया जाए। मसीह का सेवक, जब वह अपने यातना स्थल को जा रहा था, तब उसने प्रभु से इस प्रकार प्रार्थना की: 'हे प्रभु यीशु मसीह, परमेश्वर के पुत्र, सर्व अनुग्रह का स्रोत, – आपने एक बार अपने भविष्यवक्ता दाऊद के द्वारा कहा था: *"अपना मुँह खोल, और मैं उसे भर दूँगा"* (भजन संहिता 80:11); और आपकी सुसमाचार में आप कहते हैं: *'यह चिंता मत करो कि कैसे या क्या कहना है'* (मत्ती 10:19); – तो अपना पवित्र स्वर्गदूत भेजें और जब मैं बोलूँ तो मुझे वचन दें, ताकि जब मैं अत्यंत दुष्ट मैक्समिस के सामने खड़ा होऊँ, तो मैं उसकी दुष्टता का पर्दाफाश कर सकूँ; और यदि मुझे कष्ट सहना पड़े, तो मैं यातनाओं से नहीं डरूँगा, क्योंकि मैं आपको अपनी आँखों के सामने रखूँगा और स्वेच्छा से अपने शरीर को यातना के लिए सौंप दूँगा: क्योंकि यदि मैं अपने शरीर को जलाए जाने के लिए नहीं सौंपता, तो मैं किन-किन आशीषों की आशा कर सकता हूँ? मैं कौन सा मुकुट प्राप्त करूँगा? और तब मैं आपके सामने, हे प्रभु, कौन से घाव दिखा सकता हूँ, ताकि उन्हें देखकर आप मुझ पर अपनी दया दिखाएँ और मेरे पापों को क्षमा करें?'

जब डुला इस प्रकार प्रार्थना कर रहा था, तो सैनिकों ने उसका बाहरी वस्त्र उतार लिया और उसे बँधा हुआ राज्यपाल के सामने पेश किया।

और राज्यपाल मैक्समिस ने उससे कहा:

'मुझे बताओ, तुम्हारा नाम क्या है?'

संत ने उत्तर दिया:

'मैं मसीह का सेवक हूँ।'

इस पर राज्यपाल ने उत्तर दिया:

'हमें अपना असली नाम बताओ, अपना ईसाई नाम नहीं: वह नाम तुम्हें कोई औचित्य या राहत नहीं दे सकता।'

तब धन्य दुला ने कहा:

'क्या मैंने तुम्हारे सामने अपना नाम स्पष्ट रूप से नहीं बताया? मेरा असली नाम क्रिश्चियन है; जिस नाम से लोग मुझे बुलाते हैं वह दुला है – और मुझे यह नाम इसलिए दिया गया है क्योंकि मैं वास्तव में मसीह का सेवक हूँ।'

इस पर राज्यपाल ने उत्तर दिया:

[4409] सलिसिया – प्राचीन काल में एशिया माइनर का एक दक्षिण-पूर्वी क्षेत्र, जिसका नाम संभवतः सलिसियिनों की सेमेटिक जनजाति से पड़ा और अपनी उर्वरता के कारण यह प्रारंभिक चरण में ही यूनानी बस्तियों को आकर्षित कर गया।

[4410] ग्रीक में, इसका अर्थ 'दास' है।

[4411] एक नोटरी – एक अधिकारी जिसके कर्तव्यों में अन्य बातों के अलावा, अदालतों में कानून के सख्त प्रवर्तन को सुनिश्चित करना शामिल था, जबकि कनिष्ठ नोटरी ऐसे मामलों से संबंधित पत्राचार संभालते थे।

[4412] अर्थात् - ज़ेफ़िरियिा नामक सिलिशियिाई तटीय शहर के जिले तक।

[4413] प्रेटोरियाडा – वास्तव में सलिसिया के कस्बों में से एक, जो ज़ेफ़िरियिा शहर से बहुत दूर नहीं था।

'तुम्हें अभी तक न्याय-पीठ के भय या किसी भी यातना का अनुभव नहीं हुआ है; इसीलिए तुम हमसे इतनी निर्भीकता से बात कर रहे हो। अब, हमें बताओ: तुम किस देश से, किस गाँव से और किस परिवार से हो?'

संत ने उत्तर दिया:

'मैं सिलिसिया के इस क्षेत्र का निवासी हूँ, ज़ेफ़ायर शहर, प्रेटोरिया से; मैं एक कुलीन परिवार से आता हूँ और अपने शुरुआती वर्षों से ही एक ईसाई रहा हूँ।'

तब शासक ने कहा:

'यदि तुम कुलीन कुल के हो, तो तुम्हें अजेय राजाओं का आज्ञापालन करना चाहिए; अतःअब मंदिर जाओ और वहाँ देवताओं को सम्पूर्ण हृदय से बलिदान अर्पित करो, तब हम तुम्हें गौरवान्वित करेंगे, और महान राजाओं से महान तथा गौरवशाली सम्मान प्राप्त होगा।'

इस पर संत ने उत्तर दिया:

'आपका सम्मान और वह सारी शक्ति जो राजा मनुष्यों पर प्रदान करते हैं, आप पर और उन सभी पर बनी रहे जो सच्चे ईश्वर का सम्मान नहीं करते; परन्तु हे प्रभु मेरे परमेश्वर, यह सब मुझ से दूर कर दे, ताकि मैं हमारे प्रभु यीशु मसीह में विश्वास के सिवा किसी अन्य बात से समृद्ध न होऊँ।'

धन्य व्यक्ति के ये वचन सुनकर, राज्यपाल ने उसे ज़मीन पर लिटाकर लोहे की छड़ों से पीटने का आदेश दिया; उसी समय, उसने अपने सेवकों से कहा:

'उसे उसका पागलपन छोड़ने के लिए मनाओ।'

लेकिन संत डुला, प्रहारों को सहते हुए, उस क्षण प्रभु से पुकार उठे:

'मैं तुझे धन्यवाद देता हूँ, हे मसीह, कि तू मुझे अपने पवित्र नाम के लिए यह सब सहने के योग्य समझा है!'

शहीद के ये वचन सुनकर, मैक्सिमिस ने संत डुला को डाँटना शुरू किया, और उससे कहा:

'जब तुम घावों से ढके हुए हो, तो मसीह अब तुम्हारी कैसे मदद कर सकते हैं? या क्या तुम यह भी नहीं समझ सकते, तुम पागल?'

शहीद ने उत्तर दिया:

– क्या हमारे विश्वास के शिक्षक, पवित्र प्रेरित पौलुस ने यह नहीं कहा कि कोई भी *'यदि वह अनुचित रूप से प्रतिस्पर्धा करता है' तो* उसे मुकुट नहीं दिया जा सकता (2 तीमु. 2:5)?

तब राज्यपाल ने उससे पूछा:

'तो, चूंकि तुम्हें अब यातनाएँ दी जा रही हैं, क्या तुम्हें बाद में मुकुट का योग्य माना जाएगा?'

संत ने उत्तर दिया:

'मैं अब तुम्हारे पिता, शैतान, से लड़ रहा हूँ, और यदि मैं शैतान के दल पर विजय प्राप्त कर लूँ—अर्थात् तुम पर, जो उस दानव का सेवक हो—तो मुझे स्वर्ग में एक अक्षय मुकुट प्राप्त होगा।'

यातना देने वाले ने कहा:

'तुम इस तरह पागलपन क्यों कर रहे हो, एक सूली पर चढ़ाए गए मनुष्य में विश्वास करके?'

इस पर संत डुला ने उत्तर दिया:

'क्या बेहतर है: पत्थर और लकड़ी की मूर्तियों में विश्वास करना, जो मानव हाथों का काम हैं, या जीवित ईश्वर-पुरुष और सच्चे प्रभु में, जिन्हें अपनी ही इच्छा से हमारे लिए सूली पर चढ़ाया गया था?'

तब मैक्सिमिस ने कहा:

'हे अधर्मी! क्या तू सोचता है कि महान देवता अपोलो[4414] मानव हाथों का काम है?'

इस पर संत ने उत्तर दिया:

'तुमने अपोलो को उस नाम से सही कहा है, क्योंकि इसका अर्थ है "विनाशक"[4415] : उस पर अपना मन लगाकर, तुम अपनी आत्मा का नाश करते हो, और केवल अपनी ही नहीं, बल्कि उन लोगों की भी जिन्हें तुम उसकी पूजा करने के लिए मजबूर करते हो; लेकिन यह जान लो: स्वर्ग में रहने वाला सच्चा ईश्वर उन लोगों की आत्माओं का हिसाब तुम्हारे

[4414] ग्रीक पौराणिक कथाओं में, अपोलो प्रकाश का देवता है, विशेष रूप से सूर्य के प्रकाश का, जिसके सभी लाभकारी और हानिकारक प्रभावों सहित।

[4415] 'एपोलो' शब्द ग्रीक क्रिया-विशेषण … से लिया गया है, जिसका अर्थ है 'नष्ट करना' या 'मारना'।

हाथों से लेगा, जिन्हें तुमने मूर्तियों की पूजा करने के लिए मजबूर करके नष्ट कर दिया है। जहाँ तक उस दुष्ट अपोलो की बात है—मैं अब तुम्हें बताऊँगा: वह, ठीक वैसे ही जैसे तुम अब हो, असंयमी था और एक ही पत्नी, जिसका नाम डैफ्नी[4416] था, के प्रति अशुद्ध प्रेम में डूबा हुआ था; उसने उसे बहुत सोना दिया, पर उससे वह नहीं पाया जिसकी उसने प्रतिज्ञा की थी। तो मैं आपसे पूछता हूँ: बताइए, वह किस प्रकार का देवता है, यदि कामुक प्रेम में डूबा होने के कारण, वह उस महिला की कृपा भी नहीं जीत सका जिसे वह इतना प्रिय मानता था? तो फिर, आप उसमें कोई आशा कैसे रख सकते हैं? सचमुच, तुम दोनों के बीच यह सारी बातें हास्यास्पद हैं, और इसका बहुत कुछ तो रोने के भी योग्य है: सच बताओ, क्या यही अपोलो है जिसकी तुम देवता के रूप में पूजा करते हो, जिसे तो एक घृणित वेश्या, जो हर तरह की अशुद्धि से भरी थी, ने तुच्छ समझकर उसके मुँह पर थूक दिया था? क्या तुम देखते नहीं कि तुम्हारे दुष्ट कर्म विलाप के योग्य हैं!

यह सुनकर, मैक्सिमिस ने उन सेवकों से कहा जो शहीद को पीट रहे थे:

'उसे पेट के बल लिटा दो और पेट पर वार करो।'

तब सैन्य रक्षक के सेनापति अथानासियस ने संत से कहा:

'राज्यपाल की आज्ञा मानो – क्या तुम महसूस नहीं कर सकते कि तुम्हारा पूरा शरीर घावों से ढका हुआ है?'

इस पर संत ने उत्तर दिया:

तुम्हारे लिए बेहतर होगा कि तुम मेरी सलाह मानो, हे शैतान के सलाहकार और उसके सेवक, और खुद को और अपने सेनापति को सलाह दो 'वेश्या डाफ्ने को यथाशीघ्र कैसे मनाया जाए कि वह आपके देवता अपोलो के साथ व्यभिचार में रहने और उसकी इच्छा पूरी करने के लिए राज़ी हो जाए, ताकि वह, प्रेम से उत्तेजित होकर और अपनी इच्छा पूरी न होने के कारण, क्रूर मृत्यु से न मरे - क्योंकि मेरा एक ही सलाहकार है - हमारे प्रभु यीशु मसीह।'

तब यातना देने वाले ने एक लोहे की प्लेट लाने का आदेश दिया और अपने सेवकों से कहा:

'इसे आग पर लाल-गरम कर दो और हमारे देवताओं का अपमान करने वाले इस धृष्ट व्यक्ति को उस पर रख दो।'

यह सुनकर, धन्य ने कहा:

'तुम्हारा अपोलो, जो गेहेना में है, तुम्हारा धन्यवाद करता है कि तुमने उस आग को और भी भड़काया है जिसमें वह अब पीड़ित है; वह इसका बदला यह देकर चुकाएगा कि तुम्हें भी उसके साथ घोर अंधकार में डाल दिया जाए – और फिर मैं भी तुम पर हँसूँगा, हे अपोलो के अधर्मी उपकारी।'

जब उस धन्य पुरुष को यातना देने वाले, उसे आग में झोंककर मार डालने की हद तक आ पहुँचे, फिर भी कुछ हासिल नहीं कर पाए थे, और न तो ईश्वर के सेवक को चापलूसी भरी सलाह से धोखा दे सके और न ही यातनाओं के माध्यम से उसे मसीह में अपने विश्वास से इनकार करने के लिए मना सके, तो राज्यपाल ने सैनिकों को आदेश दिया कि वे पहले से ही इतना यातनाग्रस्त संत को एक अलग कोठरी में ले जाएँ और उसे वहाँ पूरी तरह से अकेला, बिना किसी देखभाल के छोड़ दें – और इसके साथ ही उन्होंने कहा:

'कोई भी धर्मद्रोही ईसाई उसे धन्य न कहे, क्योंकि उसने हमारे देवताओं की अवैध रूप से निंदा की है, और अब वह महान यातनाओं को झेल रहा है।'

लेकिन संत डुला उसी कालकोठरी में रहे, निरंतर ईश्वर की स्तुति करते हुए और प्रार्थना करते हुए कि वह उन्हें शहादत का महान कार्य करने की कृपा प्रदान करें।

पाँच दिनों के बाद, मैक्सिमिस ने फिर से न्यायाधीश की कुर्सी पर बैठकर पूछा:

'क्या दुष्ट ईसाई सिद्धांत का वह दुर्भावनापूर्ण अनुयायी अभी भी जीवित है? उसे यहाँ लाओ!' सैन्य कमांडर अथेनासियस ने उत्तर दिया:

'वह अपने धर्म को मानने में बहुत दृढ़ है और, इसके अलावा, इतना सतर्क है कि ऐसा लगता है मानो उसके शरीर पर एक भी घाव नहीं है।'

और इसके साथ ही, उन्होंने शहीद को लाने का आदेश दिया। राज्यपाल ने, जब देखा कि संत डुला का पूरा शरीर अक्षुण्ण था और उनका चेहरा दीप्तिमान था, तो सैनिकों से कहा:

'हे नीच रक्षकगण! क्या मैंने तुम्हें आदेश नहीं दिया था कि तुम उससे न मिलो और न ही उसकी देखभाल करो?'

[4416] ग्रीक पौराणिक कथाओं में, डेफ्नी नदी के देवता लैडोन और गैया (पृथ्वी) की बेटी थी, और अपोलो और ल्यूसिपिस दोनों उसे पसंद करते थे। ल्यूसिपिस ने एक लड़की का भेष धारण करके डेफ्नी का उसके दोस्तों के बीच पीछा किया, लेकिन अपोलो ने उसे मार डाला। डैफ्नी की माँ, गैया, ने तब उसे एक लॉरेल के पेड़ में बदल दिया।

इस पर, मुख्य नोटरी पगिासयिस ने उत्तर दयिा:

'हम आपकी शान की कसम खाते हैं कि, आपके आदेश के अनुसार, हमने उसे कालकोठरी के सबसे भीतरी हस्सि में रखा था और हर समय उसके गले में हर्क्यूलसि की लोहे की मूर्त[4417] , जसिका वजन तीन सौ लीटर[4418] था, लटकी रहती थी; कि वह अब पूरी तरह से चोट-मुक्त कैसे है—यह हम में से कोई नहीं जानता।'

तब पवत्रि शहीद ने कहा:

'मूर्ख राज्यपाल! यह मेरे मसीह हैं जन्हिोंने मुझे चंगा कयिा है और मेरे शरीर को वह स्वास्थ्य और शक्ति दी है जसिसे मैं उन यातनाओं को भी सहन कर सकूँ जनिका तुम मुझे अब एक बार फरि से देने वाले हो; और उन्होंने यह इसलएि कयिा ताकि तुम जान सको कि हमारा ईश्वर वह चकित्सिक हैं जो अद्भुत तरीके से उन लोगों को चंगा करते हैं जो उन पर अपनी आशा रखते हैं – और यह भी ताकि मुझे शहादत का वशिष मुकुट प्राप्त हो, जबकि तुम अनंतकाल की वशिष यातना के अधीन हो जाओगे; क्योंकि यदि तुमने अपने अपोलो के लएि ऐसे यातनाएँ सहन की होतीं, तो क्या तुम्हारा ईश्वर तुम्हें ठीक वैसे ही चंगा कर पाता जैसे मेरे मसीह ने मुझे चंगा कयिा?

इस पर राज्यपाल ने क्रोधति होकर उत्तर दयिा:

'चूँकि यह आदमी दुष्टता से हमारे देवताओं का अपमान करना बंद नहीं करता, तो इसके सरि पर तेल डालो और इसे आग लगा दो।'

इस पर शहीद ने कहा:

'यदि तुम मेरे मस्तष्कि को जला दोगे, तो उससे तुम्हें क्या हासलि होगा? तुम्हारे लएि बेहतर होगा कि तुम कोई और यातनाएं सोचो।'

तब राज्यपाल ने आदेश दयिा कि शहीद की नाक के छद्रिों में बड़ी मात्रा में सरसों के दाने डाले जाएँ।

तब संत डुला ने घोषणा की:

– मैं आज भी तुम्हारी इन सभी यातनाओं पर हँसता हूँ!

इसके बाद, राज्यपाल ने अपने नौकरों को आदेश दयिा कि वे संत की रीढ़ की हड्डी पर लोहे के पंजों से जतिनी जोर से हो सके प्रहार करें, साथ ही उनके घावों पर तेज सरिका डालें और उन्हें मट्टिी के तीखे टुकड़ों से रगड़ें।

जब यह सब मैक्समि के आदेश पर हो रहा था, तब पवत्रि शहीद ने इस प्रकार प्रार्थना की:

'हे प्रभु यीशु मसीह! अपने सेवक के साथ खड़े रहो; देखो, *"हलवालों ने मेरी पीठ पर हल चलाया है, और लंबी-लंबी खुरपयिाँ खींची हैं"* (भजन संहति 128:3)।'

तब राज्यपाल ने उससे कहा:

'अब आओ, मान जाओ और हमारे देवताओं की पूजा करो!'

इस पर, संत डुला ने उत्तर दयिा:

'तुम्हारे देवता, और वशिष रूप से एफ्रोडाइट[4419] और आर्टेमसि[4420] , तुम्हारी और तुम्हारी दुष्टता की मदद करें; लेकनि अगर तुम चाहो, तो मैं तुम्हें अपनी अन्य देवयिों और उनकी सारी नर्लिज्जता के बारे में बताऊँगा।'

उसके बाद, हेगेमोन ने अपने नौकरों को आदेश दयिा:

'उसकी जबड़े तोड़ दो ताकि वह देवताओं का अपमान न कर सके, और उसकी पंडिलयिाँ तोड़कर उसे ऐसी हालत में छोड़ दो कि वह एक भी शब्द न बोल सके।'

इस पर पवत्रि शहीद ने उत्तर दयिा:

'हे सबसे अधकि अधर्मी राज्यपाल! जब मैं तुम्हें सत्य बता रहा हूँ तो तुम मुझे क्यों पीट रहे हो—कि तुम्हारी एफ्रोडाइट और अन्य देवयिों ने अपना जीवन घृणति कामवासनाओं में बतिाया, व्यभचिार, और यहाँ तक कि यह तय करने

[4417] हरक्यूलसि, या हेराक्लेस। हेराक्लेस – एक राष्ट्रीय ग्रीक नायक – को प्राचीनों द्वारा शारीरकि ताकत और शक्ति का आदर्श माना जाता था।

[4418] एक लीटर 72 ज़ोलोटनकि के बराबर था। परणिामस्वरूप, शहीद के गले में लटका वज़न 5 पूड से अधकि था।

[4419] एफ्रोडाइट – प्रेम की देवी वीनस का यूनानी नाम। उनके सम्मान में, जन्हिें एफ्रोडाइसयिा के नाम से जाना जाता था, उत्सव ग्रीस और एशयिा माइनर के कई हस्सिों में आयोजति कएि जाते थे।

[4420] आर्टमिसि – ग्रीक पौराणकि कथाओं के अनुसार, ज्यूस और लेटो की बेटी – प्रकाश और चंद्रमा की देवी थीं; इसलएि, प्रकाश की देवी के रूप में, उन्हें धनुष और तीरों के साथ, और रात की देवी के रूप में, मशाल के साथ चत्रिति कयिा गया था।

के लिए कि उनमें से कौन सबसे वासनापूर्ण थी, उन्होंने एक बार एक चरवाहे, Paris[4421] , को अपना न्यायाधीश नियुक्त किया था; और जब तुम्हारी घृणित देवियों के सबसे घिनौने कर्मों के बारे में बताया जाता है तो तुम क्यों क्रोधित हो जाते हो?

केवल मेरा ईश्वर ही सत्य है: उसने मनुष्य बनने का चुनाव किया और क्रूस पर चढ़ाया गया, फिर दफनाया गया; तीन दिनों के बाद वह पुनर्जीवित हुआ और परमेश्वर पिता के दाहिने हाथ पर बैठ गया, ताकि वह बाद में आग लेकर आए – तुम्हारे सभी देवताओं को भस्म करने के लिए!

यह सुनकर, राज्यपाल ने संत से कहा:

'क्या तुम देखते नहीं, नीच, कि तुम्हारे भी दो देवता हैं?' धन्य ने उत्तर दिया:

'दो ईश्वर होने की बात करके पाप न करो और न ही भटक जाओ: जिस ईश्वर की हम पूजा करते हैं वह त्रिमूर्ति है।'

तब राज्यपाल ने कहा:

'तो, फिर, तुम्हारे तीन देवता हैं?'

शहीद ने उत्तर दिया:

– मैं त्रिमूर्ति की गवाही देता हूँ और उसका सम्मान करता हूँ: मैं पिता में विश्वास करता हूँ, मैं पुत्र की गवाही देता हूँ, और मैं पवित्र आत्मा की उपासना करता हूँ।

इसके बाद, राज्यपाल ने कहा:

'मुझे बताओ, ऐसा कैसे है कि तुम एक ईश्वर में विश्वास करते हो, फिर भी तीन की स्वीकारोक्ति करते हो?'

इस पर पवित्र शहीद ने उत्तर दिया:

यद्यपि तुम देहधारी मनुष्य हो और *'परमेश्वर की आत्मा की बातें'* (1 कुरिन्थियों 2:11) नहीं समझते, तथापि, उपस्थित लोगों के लिए, मैं तुम्हारे प्रश्न का उत्तर दूँगा। जैसे तुम, एक मनुष्य होने के नाते, वाणी और श्वास रखते हो, वैसे ही सर्वशक्तिमान परमेश्वर पिता के पास उनका वचन और उनकी परम पवित्र आत्मा है; हमारे इस परमेश्वर ने आदि में मनुष्य को बनाया और उसे अपनी समानता में सम्मानित किया, उसमें जीवन की श्वास फूँकी, और उसे स्वर्ग में बसाया; परन्तु जब शैतान, जो अब तुम्हारे द्वारा अपनी इच्छा पूरी कर रहा है, ने मनुष्य को परमेश्वर की आज्ञा तोड़ने के लिए मजबूर किया—जैसे कि वह अब तुम्हारे द्वारा कर रहा है— – और इस प्रकार उसे ईश्वर की आज्ञाओं की अवज्ञा करने पर मजबूर कर दिया – तब ईश्वर ने, अपनी हाथों की रची गई सृष्टि को पुनर्स्थापित करने और उसे सही मार्ग पर ले जाने की इच्छा से, अपने पुत्र, अर्थात् वचन को पृथ्वी पर भेजा; और इस प्रकार, ईश्वर का यह वचन परम पवित्र कुँवारी में वास किया और उनसे जन्म लिया – उनके द्वारा, ईश्वर पिता ने संसार को मोक्ष प्रदान किया।

इसके बाद, राज्यपाल ने पूछा:

'क्या कोई शब्द किसी मानव को जन्म दे सकता है?'

संत ने उत्तर दिया:

'तुम परमेश्वर के रहस्यों को नहीं समझते। लेकिन यदि तुम सर्वशक्तिमान परमेश्वर की शक्ति को जानते, तो तुम यह महसूस करते कि जिसने मनुष्य को धूल से बनाया और पृथ्वी को जल पर स्थापित किया, जिसने स्वर्गों को स्थापित किया और सारी सृष्टि की रचना की - वह कोई और नहीं बल्कि मसीह ही है। लेकिन चूँकि मानव स्वभाव ईश्वरत्व को नहीं देख सकता, इसलिए दयालु प्रभु ने मानव जाति के लिए अपने प्रेम के कारण, मनुष्य का रूप धारण किया और स्वयं पर मानव स्वभाव को ग्रहण किया, ताकि—जिस प्रकार एक ही आदि पुरुष के द्वारा मृत्यु संसार में आई—उसी प्रकार एक ही पुरुष, हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा, मरे हुओं का पुनरुत्थान हो सके। (रोमियों 5:13)।

तब राज्यपाल ने कहा:

'तुम क्या कह रहे हो? क्या वास्तव में मृतकों का पुनरुत्थान होगा?' इसके उत्तर में पवित्र शहीद ने कहा:

'हाँ, होगी; क्योंकि यदि मृतक पुनर्जीवित नहीं होते हैं तो परमेश्वर दुनिया का न्याय और कैसे करेगा?'

मैक्सिमिस ने कहा:

[4421] ग्रीक पौराणिक कथाओं के अनुसार, पेरिस के माता-पिता ने उसे बचपन में ही उसकी किस्मत पर छोड़ दिया था। हालाँकि, उसका पालन-पोषण चरवाहों ने किया था। एक दिन, तीन देवियाँ – एफ्रोडाइट, हेरा और एथेना – उसके पास आईं और उससे यह विवाद सुलझाने के लिए कहा कि उनमें से कौन सबसे सुंदर है। पेरिस ने एफ्रोडाइट को उन सभी में सबसे सुंदर माना।

'मैं नहीं चाहता कि तुम मुझसे ये झूठे शब्द बोलो; इसलिए, यह मान लो: जैसे हम मरते हैं, वैसे ही हम मृत पड़े रहेंगे।'

'आपने सत्य कहा है,' शहीद ने उत्तर दिया, 'कि आप मरे हुए हैं, क्योंकि आप मृत मूर्तियों में विश्वास करते हैं, और इसलिए आप जीवन के पुनरुत्थान में कभी प्रवेश नहीं करेंगे, बल्कि केवल न्याय और अनंत यातना के पुनरुत्थान में प्रवेश करेंगे; परन्तु यह उचित है कि सब लोग मसीह के न्याय-सिंहासन के सामने उपस्थित हों और जो कुछ उन्होंने किया है, उसका हिसाब दें (2 कुरिन्थियों 5:10)।

तब यातना देने वाले ने सिपाहियों को आज्ञा दी कि वे शहीद को लोहे की बेड़ियों से बाँध दें और उसे कालकोठरी में बंद कर दें।

अगली सुबह जल्दी, मैक्सिमिस ने फिर से परमेश्वर के सेवक, डुला को अदालत के सामने लाने का आदेश दिया, और जब शहीद उपस्थित हुआ, तो उसने उससे कहा:

'हे दुष्ट, हमारे देवताओं की निंदा करने से तुझे क्या लाभ?'

इस पर धन्य ने उत्तर दिया:

'जब मैं तुम्हारे देवताओं की निंदा करता हूँ तो मुझे अपने ईश्वर से बड़ा इनाम मिलता है; लेकिन ईश्वर की सजा तुम्हें तुम्हारे जीवित रहते ही मिल जाएगी।'

तब मैक्सिमिस, संत को बलिदान से अपवित्र करने की इच्छा से, पास खड़े सेवकों से बोला:

'बलि का मांस और शराब उसके मुँह में डाल दो।'

इसके बाद, धन्य ने कहा:

'भले ही तुम अपना पूरा अधर्मी वेदी धोकर उसका सारा मांस और शराब मेरे मुँह में डाल दो, तब भी तुम ईश्वर के सेवक को जरा भी अपवित्र नहीं कर सकते।'

यह सुनकर, यातना देने वाले ने पुकारा:

'यहाँ देखो, हे नीच मनुष्य, तुमने तो पहले ही हमारे वेदियों की बलिदानों का स्वाद चख लिया है!'

पवित्र शहीद ने उत्तर दिया:

'इन सब से मुझे जरा भी अपमानित नहीं किया जा सकता, हे घृणित और पागल शासक।'

तब राज्यपाल ने आदेश दिया कि संत को एक पेड़ से लटका दिया जाए और उसके शरीर की खाल को मांस तक उधेड़ दिया जाए, जबकि उसके जबड़े, आसपास के मांस के साथ, पूरी तरह से फाड़े जाएं।

इसके बाद, पवित्र शहीद ने कहा:

'हे पागल, क्या तू नहीं जानता कि तेरे पिता, शैतान ने तुझे यह करना सिखाया है?'

जब शहीद के शरीर को हड्डी तक चीर दिया गया और उसके जबड़े फाड़े गए, तो राज्यपाल ने उसे वापस जेल में फेंकने का आदेश दिया; फिर, सिलिसिया के तारसस के लिए रवाना होते हुए[4422] , मैक्सिमिस ने आदेश दिया कि कैदी को भी उसके साथ ले जाया जाए। जब वे लगभग बीस स्टेडियम[4423] चल चुके थे, तो पवित्र शहीद डुला ने, क्रॉस का चिह्न बनाकर, अपनी पीड़ित आत्मा को प्रभु के हवाले कर दिया, और उसे एक शव की तरह ले जाया गया। जब वे तारस से चौदह स्टेडियम दूर थे, तो टीकाकार[4424] ने राज्यपाल को बताया कि दुला, जिसने देवताओं का अपमान किया था, पहले ही मर चुका था और उसका मृत शरीर अब ले जाया जा रहा था: उसके साथ क्या किया जाए? राज्यपाल ने आदेश दिया कि शरीर को एक गहरी खाई में फेंक दिया जाए, ताकि वह बिना दफनाए रह जाए। हालाँकि, सैनिकों ने संत के शरीर को उठाया और उसे ज़ेफायरथि की भूमि की ओर बहने वाली नदी में फेंक दिया। और जब वह शव प्रेटोरनडा शहर से ज्यादा दूर नहीं, एक निश्चित गाँव तक बह गया, और वहाँ किनारे पर आ गया, तो स्थानीय चरवाहों के कुत्तों ने संत के शव की गंध सूंघ ली; उनमें से एक कुत्ता, उसकी रखवाली करते हुए, किसी भी पक्षी को शहीद के शव को छूने नहीं दिया; जबकि एक दूसरे कुत्ते ने चरवाहे का चोगा अपने मुँह में उठा लिया, उसे लाकर शहीद के अवशेषों पर ओढ़ दिया। यह देखकर, चरवाहों ने गाँव और शहर के सभी लोगों को बताया, और तुरंत ही विश्वासियों की भीड़ पवित्र शहीद के अवशेषों के लिए निकल पड़ी और उन्होंने उन्हें श्रद्धापूर्वक प्राप्त किया, उस ईश्वर का धन्यवाद करते हुए, जिन्होंने उन्हें इतने कीमती खजाने से वंचित नहीं किया

[4422] टारस, एशिया माइनर के एक क्षेत्र सिलिसिया का प्रमुख शहर है; यह ईसाई चर्च में विशेष रूप से संत पॉल द अपोस्टल के जन्मस्थान के रूप में जाना जाता है (प्रेरितों के काम 22:3)।

[4423] हमारे माप के अनुसार, दौड़ के मैदान की लंबाई लगभग 690 फाथम है।

[4424] कोमेंतारसियिस – जेलों का प्रमुख।

था। पवित्र शहीद के शरीर को श्रद्धापूर्वक लेने के बाद, उन्होंने उसे सम्मान के साथ दफनाया, और हमारे प्रभु यीशु मसीह की महिमा की, जो पिता और पवित्र आत्मा के साथ सदा-सदा महिमामय हैं। आमीन।

पूजनीय दुला, कष्ट-सहनेवाले की स्मृति

15 जून को स्मरणोत्सव

ईश्वर के धन्य सेवक दुला मिस्र के एक कोएनोबियम ([4425]) में एक भिक्षु थे। उनकी दृष्टि में हमेशा विनम्रता और नम्रता झलकती थी, फिर भी ज्ञान में वे महान और गौरवशाली थे।

ईश्वर के इस सेवक को, जिसे सभी ने सताया और बदनाम किया, वह आत्मा में सदैव आनंदित और प्रसन्नचित्त रहता था। वह जिन्होंने उसे अपमानित किया, उन्हें निर्दोष मानता था, और उनके लिए ईश्वर से प्रार्थना करता था—कि प्रभु इसे उनके पाप के रूप में न गिनें। सभी दोष शैतान पर मढ़ते हुए—कि वही भाइयों को परेशान कर रहा था—और साहसपूर्वक उसके खिलाफ खुद को लैस करते हुए, धन्य दुला ने धैर्य, प्रार्थना और दया के माध्यम से उसकी सभी चालाकियों पर विजय प्राप्त की। ऐसे धैर्य में, ईश्वर के इस तपस्वी ने बीस वर्षों तक दृढ़ता से अपने हृदय में नम्रता और विनम्रता को पोषित किया।

हालाँकि, शैतान, यह न जानकर कि अंततः उस धन्य व्यक्ति को और कैसे उकसाया जाए, ने उनके बारे में एक ऐसा चालाक झूठ फैलाया; इस मामले में, उसने न केवल आदरणीय दुला पर, बल्कि पूरे भाईचारे पर भी हमला किया, जिससे सभी मौन साधु दुखी और बेचैन हो गए; अर्थात्, उसने एक ऐसे भाई को, जिसे ईश्वर का कोई भय नहीं था, चर्च में चोरी-छिपे घुसकर वहाँ के सभी पवित्र पात्र चुराने के लिए राज़ी किया। यह सब करने के बाद, उस भिक्षु ने चोरी का माल छिपा दिया और अपने कोठरी में खुद को बंद कर लिया, मानो वह पहले वहाँ से निकला ही न हो।

जब सुबह की प्रार्थना का समय आया, तो पैरा-इक्लेसियार्क[4426] ने, मोमबत्ती जलाने के लिए चर्च में प्रवेश करते ही देखा कि चर्च के सभी बर्तन चोरी हो गए थे; वह तुरंत जाकर इस बात की सूचना एबॉट[4427] को दी। फिर, प्रथा के अनुसार, उन्होंने घंटी[4428] बजाई, और पूरी सामुदायिक सुबह की प्रार्थना के लिए चर्च में इकट्ठा हो गई।

मैटिन्स के अंत में, मठाधीश और पैरेक्लेसियार्क ने भ्राताओं को सूचित किया कि पात्र चोरी हो गए थे – और सभी इस बात से बहुत दुखी हुए। ऐसा हुआ कि उस समय, बीमारी के कारण, धन्य दुला सुबह की सेवा में शामिल नहीं हुए थे; और कुछ भ्राताओं ने कहा:

'भाई डुला के सिवा और कोई उन्हें चुरा नहीं सकता था, इसलिए वह चर्च नहीं आया होगा; अगर उसने यह चोरी न की होती, तो वह किसी और से पहले आधी रात की प्रार्थना में आता, जैसा कि उसका रिवाज था।'

तो उन्होंने उसे चर्च में लाने के लिए भेजा; भेजे गए लोग चले गए और उसे ढूंढ लिया, हालाँकि वह बीमार था, फिर भी प्रार्थना में खड़ा था; उस धन्य व्यक्ति को पकड़कर, वे उसे जबरदस्ती चर्च में खींच ले गए। फिर संत दुला ने उनसे पूछा:

'भाइयो, यह क्या है, और जब मैं अपनी इच्छा से पवित्र पिता के पास जा सकता था, तो तुम मुझे जबरदस्ती क्यों खींच रहे हो?'

लेकिन उन्होंने, उसे धर्मनिंदा और अपमानजनक शब्दों से गाली देते हुए, कहा:

'हे धर्मनिंदा करने वाले, जीवन के अयोग्य! क्या इतने वर्षों तक हमें परेशान करना तुम्हारे लिए पर्याप्त नहीं था? अब तुमने हमारी आत्माओं का भी अपमान किया है।'

[4425] किनोवियि – (ग्रीक 'साझा' और 'जीवन' से व्युत्पन्न) सभी सामुदायिक मठों के लिए सामान्य शब्द है, यानी वे जहाँ भाई-बंधु न केवल अपना भोजन बल्कि मठाध्यक्ष के निर्देशानुसार मठ से जीवन की सामान्य सभी आवश्यक वस्तुएँ प्राप्त करते हैं, जबकि वे अपनी ओर से अपनी सारी मेहनत और उससे प्राप्त मजदूरी मठ की सामान्य आवश्यकताओं के लिए समर्पित करते हैं।

[4426] पराएक्क्लसिआर्च – एक सेक्सटन जो चर्च में दीपक जलाता है।

[4427] अब्बा – 'पिता'; पूर्व में सामुदायिक मठों के मठाध्यक्षों को इसी प्रकार संबोधित किया जाता था।

[4428] बेलि ('पीटने' शब्द से) – एक लकड़ी या धातु का तख्ता जिसे ध्वनित किया ठोकर के माध्यम से भक्तों को पूजा के लिए चर्च बुलाने के लिए बजाया जाता है। हमारे देश में, बेलि की जगह घंटियों ने ले ली है, लेकिन ग्रीस में वे आज भी मौजूद हैं, विशेष रूप से बड़ी तुर्की आबादी वाले क्षेत्रों में, जहाँ घंटियों का उपयोग करने की अनुमति नहीं है।

इस पर उन्होंने उत्तर दिया:

'भाइयो, यदि मैंने आप लोगों के विरुद्ध कोई पाप किया हो तो मुझे क्षमा करें।'

तब वे उसे संन्यास में बूढ़े हो चुके पिता-पुरोहितों के मुखिया और संपूर्ण मंडली के सामने ले आए, और कहा:

'यह एक ऐसा व्यक्ति है जिसने, शुरू से ही, हमें परेशान किया है और हमारे समुदाय के नियमों को तोड़ा है।'

और प्रत्येक ने उस पर निंदा करना शुरू कर दिया। एक ने कहा:

'मैंने उसे चोरी-छिपे हरी सब्जियाँ खाते देखा।'

एक और ने कहा:

'मैंने उसे मठ से रोटी चुराते और उसे मठ के बाहर बाँटते देखा।'

एक और ने उस पर इस तरह बदनामी की:

'मैंने उसे गुप्त रूप से महंगी शराब पीते देखा।'

इसी तरह, दूसरों ने भी उस पर झूठे तौर पर किसी न किसी दोष का आरोप लगाया।

यह सब सुनकर, मठाधीश और उनके साथ मौजूद पादरियों ने इस बदनामी पर विश्वास कर लिया और निर्दोष दुला से पूछा कि जो कुछ भी उनके बारे में कहा जा रहा है, वह सब सच है या नहीं; विशेष रूप से, उन्होंने चोरी के बारे में उनसे पूछताछ की, और यह पूछा कि उन्होंने चर्च के बर्तन कहाँ छिपाए थे जिन्हें उन्होंने चुराया था।

संत डुला ने अपनी रक्षा में, पहले तो यह कहा कि इस मामले में उसकी कोई गलती नहीं है; लेकिन फिर, जब उन्होंने उस पर विश्वास नहीं किया, तो वह चुप हो गया और केवल इतना कहा:

'मुझे क्षमा करें, हे पवित्र पिताओं, मैं एक पापी हूँ।'

तब मठाधीश ने आदेश दिया कि उसके संन्यासी के वस्त्र उतार दिए जाएँ और उसे सामान्य व्यक्ति के कपड़े पहना दिए जाएँ; और ऐसा करते हुए, उसने कहा:

'ऐसा व्यवहार संन्यासी वर्ग के योग्य नहीं है।'

जब धन्य डुला से भिक्षु वस्त्र उतार दिए गए, तो वह जोर-जोर से रोया और, स्वर्ग की ओर देखते हुए, ऊँचे स्वर में पुकारा:

'हे प्रभु यीशु मसीह, परमेश्वर के पुत्र, मैंने आपके पवित्र नाम के लिए यह भेष धारण किया था, परन्तु अब, मेरे पापों के कारण, यह मुझसे छीन लिया गया है।'

इसके बाद, मठाधीश ने आदेश दिया कि संत को बेड़ियों में जकड़कर व्यवस्थापक के हवाले कर दिया जाए; व्यवस्थापक ने, संत के कपड़े उतारकर, उन्हें बैल की खाल की रस्सियों से बुरी तरह पीटना शुरू कर दिया, और उनसे पूछा कि क्या चोरी के बारे में उनके बारे में जो कुछ कहा जा रहा था, वह सब सच था।

डुला ने, भले ही उसकी आँखों में आँसू थे, फिर भी अपनी मासूमियत में मुस्कुराते हुए कहा:

'मुझे क्षमा करो, मैंने पाप किया है।'

तब व्यवस्थापक, उसे मुस्कुराते और ऐसे शब्द बोलते देख, उससे और भी अधिक क्रोधित हो गया; उसने उसे एक कालकोठरी में डाल दिया और उसके पैरों में बेड़ियाँ डाल दीं; और उसने नगरपालिका को एक पत्र भी लिखा, जिसमें चोरी और भाई दुला के बारे में सूचित किया – और यह पत्र तुरंत उसे भेज दिया।

नगरपाल ने पत्र पढ़ते ही तुरंत अपने कठोर नौकरों को डुला को एक चोर के रूप में लाने के लिए भेज दिया। और सैनिकों ने परमेश्वर के सेवक को पकड़कर, उसे बिना काठी की सवारी पर बिठाया और उसकी गर्दन में लोहे के बोझ लटकाकर, उसे अपमानित करते हुए शहर में घुमाया।

जब धन्य दुला को अदालत में लाया गया, तो नगरपालिका ने उससे पूछा:

'तुम कहाँ के हो, तुम्हारा नाम क्या है, और तुम भिक्षु क्यों बने? तुमने चर्च के बर्तन कैसे चुराए, और उन्हें कहाँ छिपाया?'

लेकिन मसीह के कष्ट-भोगी ने राज्यपाल के किसी भी प्रश्न का उत्तर नहीं दिया, सिवाय यह कहने के कि:

'मैंने पाप किया है; मुझे क्षमा करो।'

तब राज्यपाल, क्रोधित होकर, संत को नग्न जमीन पर लिटाने का आदेश दिया, और अपने चार नौकरों को उसे बैल की खाल से निर्दयता से पीटने का हुक्म दिया।

जब धन्य डुलू को इस प्रकार बिना किसी दया के लंबे समय तक पीटा जा रहा था, तो उन्होंने अंततःअपने चेहरे पर मुस्कान के साथ नगर के मजिस्ट्रेट से कहा:

– 'मुझे मारो, मुझे मारो,' उन्होंने कहा, 'और तुम मेरे चुराए चाँदी को और भी शुद्ध बना दोगे।' इस पर राज्यपाल ने उत्तर दिया: 'तुम मूर्ख, मैं तुम्हारे शरीर और पसलियों पर चाँदी को बर्फ से भी अधिक शुद्ध कर दूँगा।'

और उसने तुरंत आदेश दिया कि उसके पेट के नीचे लाल-गरम कोयले डाले जाएँ, और उसके घावों पर नमक मिलाकर सिरका डाला जाए।

पास खड़े लोग भी उस धन्य पुरुष की सहनशक्ति देखकर चकित हो गए और उससे कहने लगे:

'हमें बताओ कि तुमने पवित्र पात्र कहाँ छिपाए हैं, और तुम्हें आज़ाद कर दिया जाएगा।'

लेकिन मसीह के शहीद ने उत्तर दिया:

'मेरे पास न तो चाँदी है और न ही वे बर्तन जो खोए हैं।' तब राज्यपाल ने, संत को उसके यातनाओं से मुक्त कर, उसे जेल भेजने का आदेश दिया।

[4429]अगली सुबह, इस नगर के बुज़ुर्ग ने मठ को संदेश भेजा कि मिठाध्यक्ष सभी भिक्षुओं के साथ उसके पास आएं; और अगले दिन, सभी के इकट्ठा होने पर, वे सब राज्यपाल के पास गए।

और उसने उनसे कहा: 'मैंने तुम्हारे भाई, जिस पर तुम चोरी का आरोप लगा रहे हो, को कई, विविध और कठोर यातनाएँ दी हैं, और मुझे उसमें कुछ भी गलत नहीं मिला है।'

भिक्षुओं ने उत्तर दिया: 'महाराज, चोरी के अलावा, इस दुष्ट व्यक्ति ने और भी कई बुराइयाँ की हैं; परन्तु ईश्वर के वास्ते हमने अब तक उसके साथ सहन किया, इस आशा में कि वह अपनी बुरी आदत से मुँह फेर लेगा, फिर भी वह इससे भी बदतर हालत में पड़ गया है।'

तब नगरपालिका ने उनसे कहा, 'तो फिर मैं उसके साथ क्या करूँ?'

भिक्षुओं ने उत्तर दिया: 'जैसा कानून आदेश देता है, वैसा ही करो,'

नगर अधिकारियों ने उत्तर दिया, 'हमारा कानून आज्ञा देता है कि एक धर्मद्रोही व्यक्ति के हाथ काट दिए जाएँ।'

भिक्षुओं ने उत्तर दिया: 'उसे कानून के अनुसार पीड़ा सहने दो और उसके कर्मों के अनुसार दंड प्राप्त करने दो।'

तब राज्यपाल ने शहीद को अपने सामने लाने का आदेश दिया और सभी के सामने उससे पूछताछ करने लगा:

'हे नीच और हठी मनुष्य,' उसने कहना शुरू किया, 'जिस चोरी के आरोप में तुम पर मुकदमा चलाया जा रहा है, उसके बारे में हमें सच बताओ, और तुम्हें मृत्युदंड से छूट मिल जाएगी।'

इस पर, निर्दोष दुला ने उत्तर दिया:

'क्या आप चाहते हैं, राज्यपाल, कि मैं उस चीज़ का इकरार करूँ जो मैंने नहीं की है? मैं अपने खिलाफ झूठ बोलना नहीं चाहता, क्योंकि हर झूठ शैतान से आता है।'

और फिर उन्होंने जारी रखा:

'जिस मामले को लेकर आप मुझसे अब पूछताछ कर रहे हैं, मैं स्वयं को पूरी तरह निर्दोष मानता हूँ।'

तब राज्यपाल ने, यह देखकर कि वह धन्य पुरुष अपना दोष स्वीकार नहीं कर रहा था, जबकि भिक्षुओं ने मांग की कि उसे कानून के अनुसार दंडित किया जाए, आदेश दिया कि उसके हाथ काट दिए जाएँ।

उसके बाद, निर्दोष वृद्ध डुलू को उस स्थान पर ले जाया गया जहाँ दोषियों को मृत्युदंड दिया जाता था।

उस क्षण, वह भिक्षु जो वास्तव में चोरी का अपराधी और पवित्र पात्रों का चोर था, पश्चाताप से भर गया और अपने आप से कहने लगा: 'क्या होगा अगर मैंने जो कुछ भी चुराया है, वह सब अब या बाद में मिल जाए? भले ही मेरा यह दुष्ट कर्म अभी के लिए अनदेखा रह जाए, पर यह निश्चित रूप से परमेश्वर के धर्मी न्याय के दिन उजागर हो जाएगा; तो फिर मैं, एक दीन-हीन मनुष्य, क्या करूँगा? मैं इस घोर पाप के लिए क्या उत्तर दूँगा—कि मैंने पात्र चुराए और एक निर्दोष भाई को यातनाएँ दीं?'

[4429] 'लावरा', सख्त मायने में, एक दीवार से घिरा हुआ शहर का एक हिस्सा है। हालाँकि, बहुत पुराने समय से, यह नाम बड़े और महत्वपूर्ण मठों पर भी लगाया जाता रहा है। इस तरह के मठों को सबसे पहले फिलिस्तीन में 'लावरा' कहा जाने लगा, जहाँ विभिन्न खानाबदोश जनजातियों, विशेष रूप से बेदुइनों, के हमलों के डर से भिक्षुओं को यथासंभव बड़ी संख्या में इकट्ठा होने और अपने आवासों को दीवारों से घेरने के लिए मजबूर किया गया था।

और वह मठ के मठाधीश के पास दौड़ा और कहा: 'अब्बा, आइए हम तुरंत शहर के राज्यपाल के पास चलें, ताकि भाई के हाथ न कटें और वह अपने दुखों से न मर जाए, क्योंकि पवित्र पात्र मिल गए हैं।'

और तुरंत ही बाबा ने राज्यपाल को संदेश भेजा, और शहीद को मृत्युदंड होने से पहले ही रिहा कर दिया गया।

जब उसे मठ में वापस लाया गया, तो उसकी बेगुनाही सभी के सामने स्पष्ट हो गई, और यह बात सभी के लिए स्पष्ट हो गई कि चोरी किसी दूसरे भिक्षु ने की थी; और भाइयों ने आदरणीय डुले के पैरों पर गिरकर उनसे विनती करना शुरू कर दिया: 'हमें क्षमा करें, क्योंकि हमने आपके खिलाफ पाप किया है।' उन्होंने रोते हुए उनसे उत्तर दिया: 'मुझे क्षमा करें, हे पितृवर और भाइयो; मैं आप सभी का बहुत आभारी हूँ कि आपके द्वारा मुझे दी गई इस अल्पकालीन पीड़ा के कारण, मैं अनंत यातना से मुक्त हो जाऊँगा, और ईश्वर की दया से, मुझे महान आशीर्वादों का पात्र माना जाऊँगा; और वास्तव में, जब भी मैंने मेरे विरुद्ध आपके अन्याय और आरोप सुने, तो मैं आत्मा में प्रसन्न हुआ, इस आशा में कि जब प्रभु अपनी महिमा में आएँगे और हृदय की बातें प्रकट करेंगे, तो मैं अपने पापों के महान लज्जा से मुक्त हो जाऊँगा; किन्तु, सबसे बढ़कर, मैं अब इस बात की प्रसन्नता मानता हूँ कि मुझे अन्याय से पीड़ा दी गई है: क्योंकि मैं जानता हूँ कि परमेश्वर ने उनके लिए क्या-क्या आशीषें तैयार की हैं जो उसके लिए दुःख सहते हैं; मेरा एकमात्र दुःख आपके लिए है: हे प्रभु, आप मेरे साथ इतनी अन्यायपूर्ण व्यवहार करने को आपके विरुद्ध पाप न मानें, और अब मैं दयालु परमेश्वर से केवल यही प्रार्थना करता हूँ कि वह आपको क्षमा प्रदान करें।'

इसके बाद, पूज्य डुला, तीन दिन और जीवित रहने के बाद, प्रभु के पास चले गए, लेकिन किसी को उनकी मृत्यु का पता नहीं चला। जो भाई आधी रात की प्रार्थना के लिए भिक्षुओं को जगाने के लिए नियुक्त किया गया था, वह एक बार पूज्य व्यक्ति के कक्ष में गया, लेकिन, खटखटाने पर, कोई उत्तर नहीं मिला। दूसरी और तीसरी बार खटखटाने पर भी कोई जवाब न मिलने पर, वह जाकर एक दूसरे भाई को बुला लाया; अपने साथ एक मोमबत्ती लाकर, उन्होंने दरवाज़ा खोला और सेल में प्रवेश किया, तो उन्होंने माननीय फादर को घुटने टेके हुए पाया: ऐसा लग रहा था कि वह प्रार्थना में झुके हुए हैं, लेकिन उनकी आत्मा पहले ही ईश्वर के पास चली गई थी, क्योंकि प्रार्थना करते और घुटनों के बल पड़े हुए उन्होंने अपनी आत्मा प्रभु को सौंप दी थी।

उसे छूने की हिम्मत न करते हुए, ये दोनों भाई उसे वैसे ही वहीं छोड़कर चले गए और मठ के प्रमुख को यह सूचित किया कि भाई डुला का निधन हो गया है। सुबह की प्रार्थना सभा के अंत में, प्रमुख स्वयं आए और उस धन्य व्यक्ति को मृत देखकर, उनका शरीर तैयार करके दफनाने के लिए चर्च लाने का आदेश दिया।

जब उनके पवित्र शरीर को दफनाने के लिए तैयार करके चर्च लाया गया, तो घंटी बजाई गई—ताकि सभी संन्यासियों को अपने भाई के निधन का पता चल सके—और वे सभी इकट्ठा हुए और संत के पवित्र शरीर को छुआ, जैसे कि वह किसी शहीद का हो। उस समय, मठाधीश ने पड़ोसी मठ को संदेश भेजा, और उस मठ के मठाधीश से कहा कि वे अपने भाइयों के साथ आएं, ताकि वे सभी अपने भाई को, जिसने अन्याय से पीड़ा झेली थी, सम्मान के साथ दफना सकें।

भिक्षु, मृतक के करीब आने के लिए धक्का-मुक्की कर रहे थे, जिससे वे एक-दूसरे के रास्ते में आ रहे थे और एक-दूसरे को धक्का दे रहे थे; इसलिए, मठ के मठाधीश ने जल्द ही आदेश दिया कि धन्य आत्मा का शरीर चर्च के अंदर ले जाया जाए और उसके दरवाजे बंद कर दिए जाएं, जबकि वे दूसरे मठ के मठाधीश के अपने भिक्षुओं के साथ आने का इंतजार करते रहे, ताकि इस प्रकार दोनों मठों के भिक्षु एक साथ इकट्ठा हो सकें।

लगभग नौ बजे, जब पड़ोस के मठ के मठाधीश अपने भिक्षुओं के साथ पहले ही आ चुके थे और सभी इस प्रकार इकट्ठा हो गए थे, तो उन्होंने चर्च के ताले खोलने और शव को भीड़ के बीच में रखने का आदेश दिया, ताकि सभी उसे देख सकें और शव को उपयुक्त भजनों के साथ उचित अंतिम संस्कार दिया जा सके। लेकिन जब वे शव के पास पहुँचे, तो उन्होंने देखा कि वह वहाँ नहीं था: केवल कपड़े और चप्पलें बची थीं[4430] – और सभी बहुत हैरान और भयभीत हो गए। तब दोनों मठों के मठाधीशों ने भाइयों से कहा: 'हे भाइयो, क्या तुम देखते हो कि दीर्घ-सहयता, नम्रता, दया और विनम्रता क्या कुछ हासिल कर सकती है? देखो, अब हमारा भाई न केवल आत्मा में बल्कि शरीर में भी हमसे अलग हो गया है, अदृश्य रूप से देवदूतों के हाथों किसी अन्य स्थान पर ले जाया गया, क्योंकि हम उसके पवित्र शरीर को छूने के अयोग्य सिद्ध हुए, और उसे यह सम्मान प्रभु ने उसकी दीर्घकालीन सहनशीलता के कारण प्रदान किया, जिसे उसने नम्रता और दयालुता के

[4430] सैंडल प्राचीन यूनानियों और रोमनों द्वारा पहने जाने वाले एक प्रकार के जूते थे। वे फेल्ट, चमड़े, कॉर्क और यहां तक कि लकड़ी से बने होते थे, और हमारे आधुनिक जूतों जैसे दिखते थे; लेकिन उनकी विशिष्ट विशेषता एक पट्टा था जो पैर के चारों ओर उंगलियों के ऊपर से लपेटा जाता था; इसके साथ एक पट्टा जुड़ा होता था जो बड़ी उंगली और दूसरी उंगली के बीच से गुजरता था।

साथ, हृदय की विनम्रता में सहन किया; हम उसे एक पापी और पृथ्वी पर रहने के अयोग्य समझते थे, फिर भी वह एक संत और स्वर्गदूतों के साथ स्वर्गीय जीवन का योग्य सिद्ध हुआ; और अब हम लज्जित हैं, जबकि वह महिमामय हुआ है; अब हम नम्र हुए हैं, जबकि उसे प्रभु मसीह द्वारा मुकुट पहनाया जा रहा है। 'इसलिए आइए हम धैर्य और नम्रता, विनम्रता और दया सीखने का प्रयास करें, इस दीर्घ-सहिष्णु शहीद को अपना आदर्श मानकर।'

जब दोनों मठों के मठाधीशों ने ये शब्द कहे, तो सभी भिक्षु जोर-जोर से रो पड़े और उसी क्षण उन्होंने अपने आत्मा के लाभ और हमारे ईश्वर मसीह की महिमा के लिए, जो परमपिता और पवित्र आत्मा के साथ, अब और हमेशा और युगों-युगों तक महिमामय हैं, पवित्र और सम्माननीय शहीद ड्यूल का पर्व हर साल मनाने का संकल्प लिया। आमीन।

पवित्र शहीदों वीटा, मोडेस्टा और क्रिसेन्शिया का शहीद वृत्तांत

15 जून को स्मरणोत्सव

सम्राट डायोक्लेटियन के शासनकाल में[4431] , वैलेरियन के राज्यपालत्व में, जिसने ईसाइयों का उत्पीड़न किया, सिसिली में गलिस नामक एक कुलीन और धनी नागरिक का बारह वर्षीय पुत्र विटस नामक एक लड़का रहता था। यह गलिस हेलेनिक मूर्तिपूजा का अनुयायी था; लेकिन उसके पुत्र, धन्य विट को, पवित्र आत्मा की चमत्कारिक कृपा से ऊपर से ज्ञान प्राप्त हुआ, और अपने बाल्यकाल में ही वह उस एक सच्चे ईश्वर को जान गया जिसने स्वर्ग और पृथ्वी की रचना की; उस पर विश्वास करके, उसने दिन-रात, एक बाल-कपड़े का चोगा पहनकर, निरंतर उससे प्रार्थना की। उस युवा लड़के को स्वर्ग से एक दिव्य आवाज़ सुनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ: 'तुम्हारी प्रार्थना सुनी गई है! मैं तुम पर अपनी दया लुटाऊँगा!'

उस अद्भुत स्वर के बाद, उस लड़के को ईश्वर द्वारा चमत्कार करने की शक्ति प्रदान की गई। और उसने लोगों के रोगों को ठीक किया, अविश्वासियों को सच्चे ईश्वर को जानने के लिए प्रोत्साहित किया, और सभी को धर्म का मार्ग सिखाया। क्योंकि सर्वशक्तिमान ईश्वर ने इस लड़के के शब्दों और कर्मों के माध्यम से स्वयं की महिमा करना चाहा, ताकि मूर्तिपूजक दुष्टता को लज्जित किया जा सके। प्रभु ने विटस को असाधारण ज्ञान और चमत्कार करने का वरदान प्रदान किया, ताकि वह अपने युवा काल में ही वचन और कर्म में एक शक्तिशाली व्यक्ति बन सकें, और इस प्रकार पवित्रजनों में अद्भुत परमेश्वर की महिमा हो सके।

जब गवर्नर वैलेरियन को कई मूर्तिपूजकों की बदनामी और निंदा के परिणामस्वरूप इस पवित्र युवक के बारे में पता चला, तो उसने विटस के पिता को बुलाया और उससे कहा: 'यह क्या है? मैंने सुना है कि आपका बेटा उसी ईश्वर की पूजा करता है जिसे ईसाई पूजते हैं? लेकिन यदि तुम उसे सुरक्षित और सलामत देखना चाहते हो, तो उसे इस भ्रम से दूर करने की पूरी कोशिश करो।'

गलिस, घर लौटकर, अपने पुत्र को समझाने लगा कि वह अपने देवताओं के सम्मान में की जाने वाली प्राचीन हेलेनिक पूजा को न छोड़े। लेकिन धन्य युवक विट ने अपने पिता से उत्तर दिया: 'मैं उस एक के सिवाय किसी अन्य ईश्वर को नहीं जानता जो अनंत काल से विद्यमान है, जिसकी आत्मा जल के ऊपर मंडराती थी और प्रकाश को अंधकार से अलग करती थी (उत्पत्ति 1:2-4)। मैं उस ईश्वर की सेवा करता हूँ जिसने स्वर्ग और पृथ्वी की रचना की; वह पवित्र प्रभु यीशु मसीह, स्वर्गदूतों के राजा हैं। मैं इसी ईश्वर की गवाही देता हूँ और अपने जीवन के सभी दिनों तक देता रहूँगा।'

अपने पुत्र के शब्दों से पिता विट को बहुत क्रोध आया और उन्होंने लड़के को कोड़े मारने का आदेश दिया, यह कहते हुए:

'तुम्हें ऐसा बोलना किसने सिखाया? क्या तुम नहीं जानते कि अगर राज्यपाल को इस बात का पता चल गया, तो तुम मर जाओगे?'

लड़के ने, पिटाई सहते हुए, उत्तर दिया:

'मसीह ने मुझे यह सिखाया है; मैं उनका सेवक हूँ, और मैं राज्यपाल के क्रोध से बिल्कुल भी नहीं डरता।'

तब गलिस ने अपने बेटे के शिक्षक, जिसका नाम मॉडेस्ट था, को बुलाया और उससे कहा:

'देख कि यह लड़का अपनी बातों में कभी मसीह का नाम न ले।'

[4431] सम्राट डायोक्लेटियन ने 281 से 305 तक शासन किया।

लेकिन संत वटि ने अपने पिता की आज्ञा की अवहेलना की और लगातार अपने हृदय और अपने होठों पर मसीह का नाम धारण किया, और प्रभु मसीह द्वारा एक स्वदूत के साक्षात्कार से उसे सांत्वना मिली; क्योंकि एक दर्शन में प्रभु का स्वदूत उसके पास प्रकट हुआ, यह कहते हुए:

'डरो मत, बल्कि यीशु मसीह के नाम पर निडर होकर बोलो। मुझे तुम्हारा रक्षक नियुक्त किया गया है; मैं तुम्हारे जीवन के अंत तक तुम्हारी रक्षा करूँगा। ईश्वर की इस दया को जानो: जो कुछ भी तुम उनसे माँगोगे, वह तुम्हें दिया जाएगा।'

यह पवित्र युवक इस दैवीय दर्शन से सांत्वना और आनंदित हुआ और उसने और भी अधिक उत्साह के साथ प्रभु के नाम का प्रचार और महिमा करना शुरू कर दिया।

हालाँकि संत के पिता अपने इकलौते बेटे को लेकर बहुत परेशान थे; इसलिए, वटि के पिता ने अपनी चापलूसी भरी बातों से उसे राक्षसों की सेवा में लगा देने की कोशिश की। लेकिन संत वटि ने अपने पिता से कहा:

'आप मुझे किन देवताओं की पूजा करने का आदेश दे रहे हैं?'

उसके पिता ने उत्तर दिया:

'क्या तुम नहीं जानते, मेरे बेटे, हमारे देवताओं को: ज्यूस[4432] , हरक्यूलिस[4433] , जूनो[4434] , मिनर्वा[4435] , वेस्टा[4436] , अपोलो[4437] और अन्य जिन्हें राजा और राजकुमार पूजते हैं?'

संत ने अपने पिता को उत्तर दिया:

– जिनके बारे में आप बात करते हैं, वे निर्जीव मूर्तियाँ हैं, जो मानव हाथों द्वारा बनाई गई हैं; उनके मुँह हैं, फिर भी वे गूंगे हैं; उनकी आँखें हैं, फिर भी वे अंधे हैं; उनके हाथ और पैर हैं, फिर भी वे बेसुध हैं। मैं, हालाँकि, एक जीवित और सर्वशक्तिमान परमेश्वर में विश्वास करता हूँ, क्योंकि *'उसमें हम जीते और चलते हैं'* (प्रेरितों के काम 17:28); मैं सभी सृष्टि के स्रष्टा और पालनकर्ता, पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा में विश्वास करता हूँ; मैं मानव जाति के एकमात्र उद्धारकर्ता और मुक्तिदाता, परमेश्वर के पुत्र को स्वीकार करता हूँ, जिन्होंने हमारे पापों के लिए यातनाएँ सहन कीं; उनके लहू के द्वारा हमें उद्धार मिला है।

पिता ने आँसू भरी आँखों से लड़के से कहा:

'हे मेरे प्रिय पुत्र! अपने पिता की सुनी-समझी और बुद्धिमानी भरी सलाह मानो और उस मूर्खतापूर्ण आस्था से मुंह मोड़ लो, जिससे तुम व्यर्थ में एक अज्ञात मृत व्यक्ति का सम्मान करते हो; मुंह मोड़ लो, कहीं ऐसा न हो कि राज्यपाल अपने क्रोध में तुम्हें नष्ट कर दे और इस प्रकार मेरे हृदय का कष्ट और बढ़ जाए।'

धन्य वटि ने उत्तर दिया:

– ओह, काश आप भी, पिताजी, जान पाते कि वह कौन है और क्या है, जिसे आप तिरस्कारपूर्वक एक मृत व्यक्ति कहते हैं! ओह, काश आप भी, पिताजी, मेरे साथ उसकी पूजा करते! क्योंकि वही मसीह है, जीवते परमेश्वर का पुत्र, परमेश्वर का मेमना, जिसने संसार के पापों को अपने ऊपर ले लिया।

गलिस ने कहा:

'जहाँ तक उस मसीह का सवाल है जिसे आप ईश्वर कहते हैं, मैं जानता हूँ कि यहूदिया पर शासन करने वाले पिलातुस के आदेश से, उसे कोड़ों से पीटा गया, सूली पर चढ़ाने की सज़ा दी गई, और यहूदियों तथा पिलातुस के सेवकों द्वारा सूली पर चढ़ाया गया।'

पवित्र युवक ने उत्तर दिया:

'हाँ, पिता जी, आपने बिल्कुल सही कहा। लेकिन इस मामले में एक बड़ा, अद्भुत और पवित्र रहस्य है।'

गलिस ने पूछा:

[4432] ज़ीउस या डीईआई – प्राचीन यूनानी धर्म का सर्वोच्च देवता।

[4433] हरक्यूलिस या हेराक्लीस – प्राचीन ग्रीस का राष्ट्रीय नायक। हरक्यूलिस को महान शारीरिक शक्ति का धनी माना जाता था।

[4434] जूनो को प्राचीन यूनानियों और रोमनों द्वारा पारिवारिक जीवन की देवी और संरक्षक माना जाता था।

[4435] मिनर्वा या एथेना – बुद्धि की देवी।

[4436] वेस्टा या हेस्टिया – वह देवी जो पारिवारिक चूल्हे और बलिदान की अग्नि की अधिष्ठात्री थी।

[4437] एपोलो (ग्रीक से) – 'विनाशक'; प्राचीन यूनानियों के बीच, उन्हें प्रकाश की शक्तियों के संरक्षक और अंधकार के विजेता के रूप में माना जाता था।

'अगर हमें सच बोलना है, तो इसे रहस्य नहीं, बल्कि एक फांसी कहना अधिक सटीक होगा।'

परम धन्य ने उत्तर दिया:

'पिताजी, मेरी बात नम्रता से सुनें, और सत्य को जानें; प्रभु यीशु मसीह को मृत्यु के हवाले करना और सूली पर चढ़ाना ही हमारा उद्धार है; और जान लें कि वे चाहे मुझे कितनी भी यातनाएँ क्यों न दें, कोई भी मुझे उनसे मेरे प्रेम से कभी अलग नहीं कर सकता।'

तब गलिास ने अपने पुत्र के लिए मन में शोक करते हुए बातचीत समाप्त कर दी।

उस युवक में निवास करने वाले ईश्वर की कृपा से, कई चमत्कार हुए, अर्थात्: अंधों को दृष्टि प्राप्त हुई, बीमार चंगे हो गए, और लोगों से निकल भागे राक्षसों ने उस युवक की महान पवित्रता की गवाही दी।

यह सब राज्यपाल वैलेरियन से छिपाया नहीं जा सका। अपने न्यायिक आसन पर बैठकर, उसने सभी की उपस्थिति में फादर विटोव से कहा:

'कुलीन गलिास! अब मेरे लिए यह निश्चित हो गया है कि तुम्हारा पुत्र, पूरे दिल से, तथाकथित मसीह का सम्मान करता है, जिसे यहूदिया में सूली पर चढ़ाया गया था; वह इस मसीह की पूजा करता है, जबकि हमारे देश के देवताओं की निंदा करता है; इसलिए, उसे न्याय के लिए हमारे सामने पेश होना चाहिए: तो उसे यहाँ लाओ।'

जब उस जवान को उस अधर्मी न्यायाधिकरण के सामने लाया गया, तो राज्यपाल ने उससे कहा:

'तुम हमारे अमर देवताओं को बलिदान क्यों नहीं चढ़ाते? क्या तुमने शाही फरमानों के बारे में नहीं सुना है – कि जो कोई भी सूली पर चढ़ाए गए की पूजा करने की हिम्मत करता है, उसे विभिन्न प्रकार की यातनाओं के बाद मृत्युदंड दिया जाएगा?'

पवित्र आत्मा से परिपूर्ण वह धन्य युवक राज्यपाल से बिलकुल भी नहीं डरा; उसने क्रॉस का चिह्न बनाते हुए उत्तर दिया:

– मैं राक्षसों की पूजा नहीं करना चाहता, न ही पत्थर या लकड़ी की मूर्तियों का सम्मान करूँगा, क्योंकि मेरे पास जीवित परमेश्वर है, जिसकी मेरी आत्मा सेवा करती है।

संत के पिता, गलिास, अपने रिश्तेदारों और परिचितों की ओर मुड़कर, बड़े विलाप के साथ चिल्लाए:

'मेरे साथ रोओ, मेरे मित्रों,' उसने विनती की, 'क्योंकि मैं देखता हूँ कि मेरा एकमात्र पुत्र बर्बाद हो रहा है!'

तब संत विट ने अपने पिता का विरोध करते हुए ऊँचे स्वर में पुकारा:

'मैं नष्ट नहीं हो रहा हूँ, बल्कि मुझे धार्मिकों और परमेश्वर के संतों के समूह में गिने जाने के योग्य समझा जा रहा है।'

हालाँकि, वैलेरियन ने संत से कहा:

'अब तक मैं आपके कुलीन जन्म और आपके पिता के प्रति अपने सम्मान के कारण खुद को रोकता रहा हूँ; अब तक मैंने तुम पर अपराधियों के लिए जारी शाही फरमान लागू नहीं किए हैं; लेकिन अब, यह महसूस कर लेने के बाद कि तुम अपनी अवज्ञा में हठी हो गए हो, मैं कानून के अनुसार तुम्हें यातना देना शुरू करूँगा, ताकि, अपनी सज़ा पाकर, तुम अपनी हठ छोड़ दो।

यह कहकर, राज्यपाल ने आदेश दिया कि धन्य युवक को लाठियों से पीटा जाए।

संत को बहुत देर तक पीटा गया। फिर यातना देने वाले ने संत से कहा:

'अब मेरी बात सुनो और देवताओं को बलिदान चढ़ाओ।'

शहीद ने उत्तर दिया:

'मैं तुम्हें पहले ही बता चुका हूँ, राज्यपाल, कि मैं मसीह, परमेश्वर के पुत्र की पूजा करता हूँ।'

तब राज्यपाल, और भी अधिक क्रोधित होकर, ने संत को लोहे की छड़ों से पीटने का आदेश दिया। लेकिन जैसे ही राज्यपाल के नौकरों ने ऐसा करने के लिए हाथ बढ़ाया, उनके हाथ सूख गए; उसी तरह, राज्यपाल का अपना हाथ, जिससे वह अपने नौकरों को निर्देश दे रहा था, अचानक विकृत और सूख गया, जिससे वह दर्द से चीख उठा, और कहा: 'हाय मेरे भाग्य!' मैंने अपना हाथ बर्बाद कर लिया है और अब बहुत कष्ट सह रहा हूँ।' फिर उसने संत विट के पिता से कहा: 'तुम्हारे पास एक बेटा नहीं, बल्कि एक जादूगर है।'

हालाँकि संत विट ने ऊँचे स्वर में पुकारा:

'मैं कोई जादूगर नहीं, बल्कि अपने प्रभु सर्वशक्तिमान यीशु मसीह का सेवक हूँ, जिन्होंने मृतकों को जलाया, पानी पर सूखी भूमि की तरह चला, उफनते समुद्र को शांत किया, और मानव जाति को प्रभावित करने वाली हर तरह की ﻉﻼﺝ बीमारियों को ठीक किया; अब वह अपनी सर्वशक्तिमान शक्ति से वही सब कुछ करते हैं। मैं उसका सेवक हूँ, और इसलिए मैं उसकी आज्ञाओं का पालन करने का प्रयास करता हूँ। जहाँ तक उन देवताओं का सवाल है जिनकी आप पूजा करते हैं, मुझे बताइए, उनके पास क्या शक्ति है? यदि वे ऐसा कर सकते हैं तो उन्हें आपका हाथ ठीक करने दें।

इगेमोन ने कहा:

'और क्या तुम मेरा हाथ चंगा कर सकते हो?'

संत ने उत्तर दिया:

'मैं प्रभु यीशु मसीह के नाम में कर सकता हूँ।'

तब राज्यपाल ने कहा, 'तो मुझे भी ठीक कर दो, ताकि मुझे यकीन हो जाए कि तुम कोई जादूगर नहीं, बल्कि सच्चे ईश्वर के सेवक हो, जैसा तुम कहते हो।'

तब पवित्र शहीद ने स्वर्ग की ओर अपनी दृष्टि उठाकर कहा:

'हे स्वर्ग में हमारे पिता, हे ईश्वर! मुझे, अपने इस अयोग्य सेवक को, यहाँ उपस्थित लोगों के लिए सुनवाई दें, ताकि वे हमारे प्रभु यीशु मसीह, आपके पुत्र, सच्चे और सर्वशक्तिमान परमेश्वर में विश्वास करें, जो पवित्र आत्मा के साथ आपके साथ राज्य करते हैं। यह अनुग्रह करें कि, आपके एकमात्र पुत्र के नाम के लिए, हाकिम का हाथ चंगा हो जाए।

संत के इस प्रार्थना को समाप्त करते ही वैलेरियन का हाथ चंगा हो गया और जैसा पहले था, वैसा ही हो गया। तब राज्यपाल ने उस लड़के को उसके पिता के हवाले कर दिया और कहा, 'अपने बेटे को अपने साथ घर ले जाओ और उसे देवताओं को बलिदान चढ़ाने के लिए मनाओ, कहीं वह नष्ट न हो जाए।'

अपने पुत्र को घर ले आने के बाद, गलिस ने उसे बहुत चापलूसी करके अपनी दुष्टता के आगे झुकने के लिए मनाना शुरू कर दिया: उसने भोजों का आयोजन किया और गायकों के मंडली इकट्ठा किए; विटिस के सामने, सुरम्य संगीत वाद्ययंत्र बजाए गए, तालियाँ और लीर गूँज उठे; सुंदर कन्याएँ संत की आँखों के सामने नाचीं, और युवक मस्ती कर रहे थे; दुनियावी, प्रेमपूर्ण गीत गाए गए, और कई प्रलोभन भरे शब्द बोले गए, ताकि इन सबके द्वारा युवा विटि का हृदय व्यर्थता में आकर्षित हो जाए; लेकिन उस लड़के की आत्मा, अडॉल्फिनि की तरह दृढ़, किसी भी चीज़ से अडिग रही; क्योंकि उसके हृदय में ईश्वर के प्रति ऐसा प्रेम था जो सभी सांसारिक प्रेम पर विजय प्राप्त करता था; वह अपनी आँखों के सामने गाए जा रहे किसी भी गीत पर ध्यान नहीं देता था; न ही उसने अपनी आँखों के सामने हो रहे दृश्य पर एक पल भी नज़र डाली; स्वर्ग पर अपनी निगाहें टिकाकर, उसने अपने हृदय की गहराई से एक आह भरते हुए कहा: 'हे मेरे प्रभु, हे मेरे परमेश्वर, एक टूटे और कुचले हुए हृदय को तुच्छ न समझ!'

तब गलिस ने अपने पुत्र के लिए एक कक्ष तैयार करने का आदेश दिया; उसने उसे हर प्रकार की संपदा से भर दिया; उसने फर्श पर सुंदर कालीन बिछाए; पर्दे मोतियों से सजे हुए थे, और बिस्तर और पूरा कक्ष भव्य वैभव से भरा हुआ था; उसने अपने बेटे को इस कक्ष में बंद कर दिया और सबसे सुंदर कन्याओं को उसे लुभाने के लिए उसकी सेवा करने का आदेश दिया। लेकिन उस पवित्र और धर्मात्मा युवक ने घुटने टेककर प्रभु से इन शब्दों में प्रार्थना की: 'अब्राहम के परमेश्वर, इसहाक के परमेश्वर, याकूब के परमेश्वर, और आपके प्रिय पुत्र, मेरे प्रभु यीशु मसीह के परमेश्वर और पिता! मेरी ओर देखो और मुझ पर दया करो; अपनी शक्ति से मुझे बल दो, ताकि दुष्ट और अधर्मी साँप मुझ पर, आपके सेवक पर, अपनी इच्छा पूरी न कर सके, और ताकि अन्यजाति आपके विश्वासी सेवक का उपहास न करें और न कहें, 'उनका परमेश्वर कहाँ है?'"

जब संत इन शब्दों से प्रार्थना कर रहे थे, तो अचानक कक्ष में एक अकथनीय प्रकाश चमक उठा, और बारह दीप्तिमान चेहरे, जो दीपक की तरह अग्निमय थे, दिखाई दिए; उन चेहरों से एक अकथनीय सुगंध भी आई; यह सुगंध हवा में इतनी फैल गई कि पूरे घर में भर गई, जिससे संत विटा के पिता, अपने पूरे परिवार के साथ, चकित और कांप गए, और चिल्ला उठे: 'यह एक बड़ा चमत्कार है। 'यह सुगंध कहाँ से आ रही है, जो हमने पहले कभी अपने देवताओं के मंदिरों में नहीं सूंघी?' फिर उन्होंने कहा: 'देवता मेरे घर में मेरे पुत्र के पास आए हैं।' और उन्होंने उस सुगंध के स्रोत की सावधानीपूर्वक खोज शुरू कर दी। अपने पुत्र के कक्ष के द्वार के पास पहुँचकर और उसमें प्रवेश करके, उसने गरुड़ के पंखों जैसे पंखों वाले स्वर्गदूतों के चेहरे देखे; ये चेहरे अकथनीय भलाई से भरे थे, उज्ज्वल रूप से चमक रहे थे, और गा रहे थे: *'पवित्र, पवित्र, पवित्र है प्रभु'* (यशायाह 6:3)।

उस तीव्र तेज से गलिास की आँखें तुरंत चकरा गईं, क्योंकि उसकी आँखें अशुद्ध थीं, स्वर्ग में छिपी स्वदूतों की रोशनी को देखने के लिए अयोग्य थीं; क्योंकि यह प्रकाश केवल वे ही देख सकते हैं जिनकी आत्मा की आँखें शुद्ध हों।

जब धन्य वटि ने देखा कि उनके पिता नेत्रहीन हो गए हैं, तो वे अपने प्रति स्वाभाविक प्रेम से प्रेरित हुए और उनके लिए ईश्वर से प्रार्थना करने लगे कि उन पर दया की जाए। जब उन्होंने अपनी प्रार्थना समाप्त की, तो उन्होंने यह जोड़ा: 'हे प्रभु, मेरी इच्छा न हो, बल्कि आपकी; जैसा आप स्वयं चाहें, वैसा ही हो।'

हालाँकि गलिास, अपनी आँखों में तीव्र दर्द के कारण, सबके सुनने के लिए चिल्लाया: 'हाय मेरे भाग्य! मैंने अपनी आँखों की रोशनी खो दी है। मैं एक गंभीर बीमारी से पीड़ित हूँ!'

उसके पूरे घर के सभी सदस्य, पुरुष और महिला नौकर, अपने स्वामी को आँखों की पीड़ा से बहुत दुखी देखकर इतनी जोर से रोए कि उनकी चीखें पड़ोसी घरों में सुनी जा सकती थीं; और इस प्रकार पूरे शहर को जल्द ही पता चल गया कि हिलास के साथ क्या हुआ था। इसके बाद, कई नागरिक उसके घर पर आने लगे; हेगेमोन वैलेरियन भी जल्दबाजी में वहाँ आए। यह देखकर कि गिलास अंधा हो गया था, अपने दासों के सहारे टिका हुआ था और दर्द से कराह रहा था, वैलेरियन ने पूछा: 'उसकी दृष्टि कैसे चली गई?' उसने जवाब दिया: 'मैंने अपने बेटे के कक्ष में पंखों वाले देवताओं को देखा; उनकी आँखें तारों जैसी थीं, और उनके चेहरे बिजली जैसे थे; उनकी किरणों को सहन न कर पाने के कारण, मैंने अपनी आँखों को चोट पहुँचाई और अपनी दृष्टि खो दी।'

वेलेरियन ने कहा: 'निस्संदेह, वे देवता जिन्हें आपने देखा है, बहुत शक्तिशाली हैं; इसलिए, आपको उनसे प्रार्थना करनी चाहिए कि वे आपका इलाज करें।'

तब, अंधे गलिास का हाथ पकड़कर वैलेरियन उसे ज़ीउस के मंदिर में ले गया। वहाँ, गलिास ने इन शब्दों के साथ प्रार्थना की: 'हे ज़ीउस, सर्वशक्तिमान देवता! यदि आप मेरी आँखों को ठीक कर दें, तो मैं आपको अनगिनत बलिदान चढ़ाऊँगा; मैं आपको सुनहरे सींगों वाला एक बछड़ा बलिदान करूँगा; और हे देवी वेस्टा, मैं आपके लिए भी पवित्र कुंवारी लड़कियाँ लाऊँगा, यदि मुझे आपकी सहायता मिले।"

इस प्रकार हिलास ने अपने व्यर्थ देवताओं से प्रार्थना की, लेकिन न केवल उसे उनसे कोई उपचार मिला, बल्कि इसके विपरीत उसे और भी अधिक दर्द महसूस हुआ। हालाँकि, संत वटिस प्रभु के सामने घुटने टेककर, अपने पिता के लिए अपने ऊपरी कमरे में इस प्रकार प्रार्थना करने लगे: 'हे प्रभु, जिन्होंने अंधे टोबिट[4438] को दृष्टि प्रदान की, मेरे पिता पर भी दया करें, यदि वह आपको जान जाए।'

अंततः गलिास को उसके सेवकों द्वारा, जो अभी भी ठीक नहीं हुआ था, मूर्तिपूजक मंदिर से उसके अपने घर ले जाया गया; जब वह उस ऊपरी कमरे में प्रवेश किया जहाँ संत वटि ईश्वर की स्तुति का बलिदान अर्पित कर रहे थे, तो वह वटि के पैरों पर गिर पड़ा और कहा:

'प्रिय पुत्र! मुझे चंगा कर!'

संत वटिस ने उत्तर दिया:

'क्या तुम ठीक होना चाहते हो, पिताजी?'

गलिास ने उत्तर दिया:

'हाँ, मैं इसकी बहुत इच्छा रखता हूँ।'

संत ने उससे कहा:

'यदि तुम चंगा होना चाहते हो, तो ज़ीउस, हरक्यूलिस, जूनो, मिनर्वा, वेस्टा और अपोलो का त्याग करो।'

गलिास ने उत्तर दिया:

'मैं उन्हें कैसे त्याग सकता हूँ?'

संत वटि ने कहा:

'उन्हें देवता मत कहो, बल्कि राक्षस कहो; अब तक जिन मूर्तियों को तुमने सम्मानित किया है, उनकी पूजा मत करो, बल्कि उन्हें कुछ भी नहीं, आत्मा रहित और बेकार चीजें समझो। और अगर तुम दिल से ऐसा करने का वादा करते हो, तो तुम्हारी आँखें ठीक हो जाएँगी और तुम्हारी दृष्टि तुरंत वापस आ जाएगी।'

[4438] तोबित – एक धर्मनिष्ठ इस्राएली जो अपने परिवार के साथ अस्सyrian राजा सनहेरीब के अधीन निनवे में बंदी बना लिया गया था। अंधापन से उसके ठीक होने की कहानी उसके नाम से जुड़ी बाइबिल की पुस्तक में पाई जा सकती है।

गलिास ने कहा:

'मैं देवताओं का त्याग करता हूँ और आप द्वारा बताई गई हर बात का पालन करने का वादा करता हूँ।'

संत ने कहा:

'मैं जानता हूँ कि तुम्हारा हृदय कठोर हो गया है और तुम्हारे शब्द सत्य नहीं हैं; परन्तु मैं यहाँ उपस्थिति लोगों के लिए, उनके विश्वास के हेतु, तुम पर अपने प्रभु की शक्ति दिखाऊँगा, ताकि वे विश्वास करें और मेरे प्रभु यीशु मसीह के नाम का महिमा करें, भले ही तुम इसके योग्य नहीं हो।'

यह कहने के बाद, संत ने अपने पिता की बीमार आँखों पर अपना हाथ रखा और ईश्वर से इन शब्दों में प्रार्थना की: 'हे प्रभु यीशु मसीह, जिन्होंने जन्म से अंधे आदमी की आँखें खोलीं (यूहन्ना 9:6-7), प्रकृति को पार करते हुए, मेरे पिता की आँखें भी खोलें, भले ही वह अपने अविश्वास के कारण इसके लायक नहीं है; परन्तु यह अपने पवित्र नाम की महिमा के लिए करें, ताकि आपके शत्रु देखकर लज्जित हों, और जो कोई भी आपके नाम को जानता और प्रेम करता है, वह महिमामय हो जाए।'

जब संत इस प्रकार प्रार्थना कर रहे थे, तो अंधे आदमी की आँखों से पपड़ी ऐसे गिर गई जैसे कि पिरतें छिलकती हों; वह चंगा हो गया और अपनी आँखों से स्पष्ट रूप से देख सका। लेकिन कुछ ही समय बाद, सच्चे परमेश्वर को जानने और उससे मिली चंगाई के लिए धन्यवाद देने के बजाय, उसने अपने उपकारी की निंदा करना शुरू कर दिया, और अपने बेटे से कहा: 'मुझे तुम्हारे ईश्वर ने नहीं बल्कि मेरे देवताओं ने चंगा किया है, जिनकी मैं सेवा करता हूँ और जिन्हें मैं बलिदान चढ़ाने का वादा किया था।'

और उसने अपने दुष्ट देवताओं की महिमा की, और सबके सामने खुलेआम घोषणा की: 'मैं अपने देवताओं का धन्यवाद करता हूँ जिन्होंने मुझे चंगा किया है!' उनके मंदिरों की ओर जाते हुए, उसने जैसा वादा किया था, वैसे ही उन्हें घृणित धन्यवाद-बलिदान चढ़ाना शुरू कर दिया; ऐसा करते समय, उसका हृदय शैतान द्वारा इतना कटु और दुर्भावना से इतना अंधा हो गया कि उसने अपने बेटे के प्रति अपने स्वाभाविक प्रेम को घृणा में बदल दिया, और अपने ही बेटे, उस पवित्र और मासूम युवक को, मार डालने का इरादा कर लिया। परन्तु प्रभु, जो अपने सेवकों की रक्षा करते हैं, ने उसे बचाने के लिए अपना स्वर्गदूत भेजा; क्योंकि प्रभु का स्वर्गदूत, एक सुंदर और तेजस्वी युवक के रूप में, उस रात विटिस के शिक्षक, उपर्युक्त मोडेस्टस के पास प्रकट हुआ, जो मसीह में विश्वास करने वाला और आयु में वृद्ध था, और उससे कहा:

'लड़के को ले जाओ और उसके साथ समुद्र की ओर चल पड़ो; तट पर तुम्हें एक छोटी नाव मिलेगी; उसमें चढ़ जाओ और तुम उस देश में पहुँच जाओगे जिसे मैं तुम्हें दिखाऊँगा।'

मोडेस्ट ने देवदूत से कहा:

'प्रभु! मुझे वह मार्ग नहीं पता जिस पर मुझे जाना है।'

देवदूत ने उत्तर दिया: 'मैं तुम्हारा मार्गदर्शन करूँगा!'

और तुरंत मॉडेस्ट उठा, अपने युवा सेवक विटिस को ले लिया, और अपनी पालक क्रिसैन्टिया, जो मसीह की एक वफादार सेविका थी, को भी साथ ले लिया, और उन्हें मार्ग दिखा रहे स्वर्गदूत का अनुसरण करते हुए, उनके साथ समुद्र की ओर चल पड़ा।

जब वे समुद्र तट पर पहुँचे, तो उन्होंने प्रभु द्वारा तैयार की गई एक नाव पाई। और स्वर्गदूत ने संत विटिस से, जैसे कि उसकी परीक्षा लेते हुए, कहा: 'तुम किस देश में जाओगे?' संत विटिस ने उत्तर दिया: 'जहाँ भी प्रभु हमें ले जाएँगे, हम वहाँ बड़े उत्साह से जाएँगे।'

देवदूत ने पूछा, 'क्या तुम्हारे पास कोई पारिश्रमिक है?' युवक ने उत्तर दिया, 'जिसकी हम सेवा करते हैं, वह तुम्हें पुरस्कृत करेगा।' फिर, नाव पर चढ़कर, वे सिसिली से प्रस्थान कर गए; थोड़ी देर नौकायन करने के बाद, वे लूसानिया नामक इतालवी प्रांत के अल्लेक्टोरिया नामक स्थान पर पहुँचे। जब वे तट पर पहुँचे और उतर गए, तो प्रभु का स्वर्गदूत, जो नाव में एक युवक के रूप में उनके साथ था, तुरंत अदृश्य हो गया।

फिर वे अपनी यात्रा पर चल पड़े और सिलिर नामक एक नदी पर पहुँचे, जो लुकानिया की भूमि से निकलकर समुद्र में मिलती है; इस नदी के पास वे एक सुंदर, फैले हुए पेड़ के नीचे विश्राम करने के लिए रुके। उन्हें यह जगह बहुत पसंद आई और वे वहीं बस गए; ईश्वर ने उन्हें भोजन प्रदान किया। जैसे प्राचीन काल में, ईश्वर की आज्ञा से, एक काग ने निर्जन स्थान में संत एलियाह को भोजन खिलाया था (3 राजा 17:4), वैसे ही एक चील ने इन संतों को भी भोजन खिलाया, जो

प्रतदिनि उनके लिए भोजन लाता था। और संत वटिस द्वारा कई अद्भुत चमत्कार होने लगे; ईश्वर की कृपा से, जो अपने सेवकों को महमिामय बनाता है, उनका नाम उस पूरे प्रदेश में प्रसद्धि हो गया। वटिस द्वारा ईश्वर की शक्ति से लोगों से नकिाले गए राक्षस चल्लिा उठे: 'वटिस, हमारा तुझसे क्या लेना-देना! क्या तू हमें नष्ट करने के लिए समय से पहले आ गया है?'

लोग अपने बीमारों को लेकर संत के पास आते थे; और उन्होंने प्रार्थना और क्रॉस के चह्नि द्वारा उन सभी को चंगा कयिा, तथा उन्हें सच्चे ईश्वर के ज्ञान और उसकी आज्ञाओं के पालन का उपदेश दयिा। और कई अवश्विासयिों ने मसीह की ओर मुड़कर पवत्रि बपतस्मिा ग्रहण कयिा।

उस समय, राजा डायोक्लेटयिन का पुत्र एक दानव के वश में था; और दानव ने उसके मुँह से पुकार कर कहा: 'मैं तब तक इस जगह को नहीं छोड़ूँगा जब तक लुकानयिा का वटि यहाँ नहीं आ जाता।'

और राजा ने कहा:

'हम उस आदमी को कहाँ पा सकते हैं?'

दानव ने उत्तर दयिा: 'तुम्हें वह सलिारा नदी के कनिारे मलिेगा।'

तुरंत राजा ने लुसयिानयिा में सशस्त्र सैनकि भेजे, और उन्हें आदेश दयिा कि वे वटि को बनिा देरी के वापस ले आएं। जब सैनकि उस नरि्दष्टि स्थान पर पहुंचे, तो उन्होंने मसीह के सेवक को नदी के कनिारे ईश्वर से प्रार्थना करते हुए पाया, और उससे पूछा:

'क्या तुम वटि हो?'

संत ने उत्तर दयिा:

'हाँ, मैं ही हूँ।'

सैनकिों ने कहा:

'सम्राट डायोक्लेटयिन आपकी उपस्थतिि चाहते हैं।'

संत वटिस ने उत्तर दयिा:

'मैं एक कम-ज्ञात और तुच्छ युवक हूँ; मैं सम्राट के कसिी काम कैसे आ सकता हूँ?'

सैनकिों ने उत्तर दयिा:

'उनका पुत्र एक राक्षस द्वारा पीड़ति है, और इसी कारण वे आपकी उपस्थतिि चाहते हैं।'

संत वटिस ने कहा:

'तो चलिए, प्रभु के नाम पर।'

और वह सैनकिों के साथ रोम की यात्रा पर नकिल पड़ा; संत मॉडेस्टस उसके साथ गए; जबकि धन्य क्रसिैन्शयिा दूर से उनका अनुसरण करती रहीं।

रोम पहुँचने पर, सैनकिों ने डायोक्लेटयिन को सूचति कयिा कि वटिस आ गया है; डायोक्लेटयिन ने आदेश दयिा कि उसे उसके सामने लाया जाए।

जब संत सम्राट के सामने उपस्थति हुए, तो बादशाह उस युवक की सुंदरता से चकति रह गया: संत वटिस वास्तव में एक सुंदर युवक थे; उनका चेहरा मानो स्वर्गदूत जैसा था, उनकी आँखें सूर्य की करिणों जैसी थीं, क्योंकि वह मसीह की कृपा से परपिूर्ण थे। और डायोक्लेटयिन ने उनसे कहा: 'क्या तुम वटिस हो?'

लेकनि संत ने उसे कोई उत्तर नहीं दयिा।

तब सम्राट ने मोडेस्टस से संत के बारे में जानने के इरादे से प्रश्न करना शुरू कयिा। लेकनि मॉडेस्टस, जो उम्र में काफी वृद्ध था, अपनी सादगी के कारण सम्राट को उपयुक्त उत्तर नहीं दे सका। इस कारण सम्राट ने मॉडेस्टस को अपमानजनक शब्दों से गाली दी और उसे भगा देने का इरादा कयिा; तब संत वटि ने अपना मुँह खोला और डायोक्लेटयिन से कहा:

'तुम इस बूढ़े से इतनी अभद्रता से क्यों पूछताछ कर रहे हो, जैसे वह कोई जवान हो? तुम्हें उसका सम्मान करना चाहिए, कम से कम उसकी सफेद दाढ़ी के लिए ही सही।'

तथापि सम्राट ने संत वटिस से उत्तर दयिा:

'तुम्हारी यह हम्मित कहाँ से आई है कि तुम हमसे गुस्से में बात करने की हम्मित करते हो, हमारी गरमिा का अपमान करते हो?'

संत ने उत्तर दिया:

'हममें कोई क्रोध नहीं है, क्योंकि हमें हमारे प्रभु मसीह से दया की आत्मा प्राप्त हुई है, और हम कबूतर के नम्र स्वभाव का अनुसरण करते हैं। क्योंकि हमारे गुरु स्वभाव से ही भले थे, शक्ति में महान थे, और अपने स्वभाव में , द्वेष से रहित, विनम्र और नम्र थे; इसलिए उनके शिष्यों को भी हृदय से नम्र और विनम्र होना चाहिए, न कि उग्र और क्रोधित, जैसा कि आप हमें कहते हैं।

जब संत इस प्रकार बोल ही रहे थे, तभी अचानक राजा के पुत्र के मुँह से एक राक्षस चिल्लाया, और कहा:

'हे विट! समय से पहले तुम मुझे इतनी क्रूरता से क्यों सता रहे हो!'

लेकिन संत ने राक्षस को कोई उत्तर नहीं दिया। और डायोक्लेटियन ने संत से कहा:

'क्या आप मेरे पुत्र को ठीक कर सकते हैं?'

संत ने उत्तर दिया, 'तुम्हारा पुत्र ठीक हो सकता है, लेकिन मैं उसे चंगा नहीं कर सकता: ईश्वर के पुत्र मसीह, जिनके सेवक मैं हूँ, यदि वे चाहें, तो वे मुझे, अपने सेवक को, उसके द्वारा, आसानी से दानव के कष्ट से मुक्त कर सकते हैं, क्योंकि वे सर्वशक्तिमान हैं।'

तब डियोक्लेटियन ने संत से अपने बेटे को ठीक करने की विनती की। भूतग्रस्त लड़के के पास जाकर, संत ने उसके सिर पर अपना हाथ रखा और कहा: 'हमारे प्रभु यीशु मसीह के नाम पर, अशुद्ध आत्मा, इस ईश्वर की सृष्टि से निकल जा!'

और तुरंत ही राक्षस सम्राट के पुत्र से बाहर निकल गया, लेकिन उपस्थित लोगों को नुकसान पहुँचाए बिना नहीं; क्योंकि, ईश्वर की अनुमति से, उसने अचानक उन कई अविश्वासियों को मार डाला जिन्होंने शब्द या विचार में संत विटिस का मज़ाक उड़ाया था – और उनके घृणित आत्माओं को, अपने शिकार के रूप में, नरक में ले गया।

सम्राट अपने पुत्र को स्वस्थ देखकर और उपस्थित कई लोगों के मारे जाने पर बहुत हैरान हुआ; लेकिन यीशु मसीह के नाम की शक्ति को पहचानने और एक सच्चे परमेश्वर की महिमा करने के बजाय, वह मन ही मन यह सोचने लगा कि वह विटिस को अपनी दुष्टता में कैसे फँसाए। डायोक्लेटियन संत की सुंदरता से भी मोहित हो गया था; उसने चापलूसी से उससे कहना शुरू किया, कहने लगा: 'मेरे प्रिय विटिस, मेरी बात सुनो और मेरे साथ देवताओं को बलिदान चढ़ाओ; तब मैं तुम्हें अपना आधा राज्य दूँगा; मैं तुम्हें सोने, चाँदी और कीमती वस्तुओं से पुरस्कृत करूँगा; मैं तुम्हें शाही वस्त्र पहनाऊँगा, और तुम मेरे सच्चे, सबसे करीबी दोस्त बन जाओगे।'

संत विट ने उत्तर दिया:

'मुझे तुम्हारे राज्य या तुम्हारे धन-संपत्ति की कोई आवश्यकता नहीं है, क्योंकि मेरे पास प्रभु और मेरा परमेश्वर है; यदि मैं उनकी निष्ठापूर्वक सेवा करूँ, तो वह मुझे स्वर्ग के राज्य में अमरत्व के अक्षय और सबसे तेजस्वी वस्त्र से पुरिधानित करेंगे।'

डायोक्लेटियन ने कहा, 'विट, ऐसा मत बोलो, बल्कि अपनी जान बचा; देवताओं को बलिदान चढ़ा, कहीं ऐसा न हो कि तू अनेक यातनाओं के बाद एक कड़वी मृत्यु से नष्ट हो जा।'

संत ने उत्तर दिया:

'मैं उन यातनाओं को सहने की बहुत इच्छा रखता हूँ जिनसे तुम मुझे डरा रहे हो; तब मैं उस मुकुट को और भी शीघ्र प्राप्त कर लूँगा जिसका प्रभु ने अपने चुने हुओं से वादा किया है।'

तब डियोक्लेशियन ने आदेश दिया कि संतों विटिस और मॉडेस्टस को एक अंधेरी और बदबूदार कालकोठरी में बंद कर दिया जाए; उसने आज्ञा दी कि उनमें से प्रत्येक पर दस-दस पूड वज़न की भारी बेड़ियाँ डाल दी जाएँ, और दरवाज़ा और खिड़की को उसकी शाही अंगूठी से सील कर दिया जाए, ताकि कोई भी उन्हें रोटी या पानी न दे सके, – यातना देने वाले का इरादा उन्हें भूख और प्यास से नष्ट करने का था।

जब संतों को कालकोठरी में बंद कर दिया गया, तो वहाँ अचानक एक प्रकाश चमक उठा; यह प्रकाश जेल के रक्षकों ने देखा, जो दीवार में एक दरार से झाँक रहे थे। हालाँकि संत विट ने ज़ोर से ईश्वर से पुकारा और कहा: 'हे ईश्वर, हमारी सहायता के लिए आओ और हमें इन बंधनों से मुक्त करो, जैसे तुमने तीन युवकों को आग की भट्टी से बचाया था (दानियेल 3) और जैसे तुमने सुसन्ना को दुष्ट झूठे गवाहों से बचाया था' (दानियेल 13:1–64)।

जब संत इस प्रकार प्रार्थना कर रहे थे, तो कालकोठरी की नींव हलि गई, एक और भी बड़ी रोशनी चमक उठी, और एक अकथनीय सुगंध पूरे स्थान में फैल गई। हमारे प्रभु यीशु मसीह उन्हें दखिाई दिए और कहा: 'हौसला रखो, वटि, साहसी बनो, और दृढ़ रहो, क्योंकि मैं हमेशा तुम्हारे साथ हूँ।'

ये वचन कहने के बाद, प्रभु अदृश्य हो गए। तुरंत ही पवत्रि बंदयिों, वटिस और मोडेस्टस, की बेड़यिाँ गरि पड़ीं और मानो धूल में बदल गईं। तब संत उठे और गाने लगे: *'इस्राएल के परमेश्वर प्रभु धन्य हों, क्योंकि उन्होंने अपने लोगों का ध्यान रखा है और उनका उद्धार कयिा है'* (लूका 1:68)।

उसी समय, स्वर्गदूतों की आवाज़ें भी उनके साथ गाती हुई सुनी जा सकती थीं; जेल के रक्षकों ने एक अकथनीय प्रकाश देखकर और स्वर्गदूतों की आवाज़ें सुनकर, भय और आतंक से भरकर ऐसे गरि पड़े मानो मृत हों। फरि, होश में आने पर, वे डरते-डरते राजा के पास भागे और उन्होंने उसे वह सब कुछ बताया जो उन्होंने देखा और सुना था। हालाँकि, राजा ने यह सब ईसाइयों की प्रशंसा समझकर, सार्वजनकि प्रदर्शन के आयोजक को बुलाया और उसे उसी सुबह एक तमाशे के लिए जगह तैयार करने का आदेश दयिा, जसिमें वह कैदयिों को जानवरों के सामने फेंककर खावाना चाहता था। इस पर उसने कहा: 'मैं देखूँगा कि क्या मसीह उन्हें मेरे हाथों से छुड़ा सकते हैं।'

अगली सुबह, मसीह के पवत्रि सेवकों को फांसी के स्थान पर ले जाया गया। संत वटि ने अपने शक्षिक, धन्य मोडेस्टस को प्रोत्साहति कयिा: 'डरो मत, पतिाजी; साहसी बनो; शैतान के हथयिारों से मत डरना, क्योंकि हमारा मुकुट पास आ रहा है।'

जहाँ तक उस भीड़ का सवाल है जो तमाशा देखने के लिए इकट्ठा हुई थी, वहाँ पाँच हज़ार पुरुष थे, और महलिाओं और बच्चों की संख्या तो अनगनित थी।

और डायोक्लेटयिन ने संत वटिस से कहा:

'वटिस! अब तुम कहाँ हो?'

लेकनि संत ने अपने यातनाकर्ता का उत्तर दिए बनिा, अपनी आँखें स्वर्ग की ओर उठाईं।

तब सम्राट ने उससे फरि कहा:

'अब तुम कहाँ हो, वटिस?'

संत ने उत्तर दयिा:

– मैं स्वयं को मृत्युदंड के स्थान पर देखता हूँ; पर जो कुछ तुम करना चाहते हो, जल्दी करो।

डायोक्लेटयिन ने उससे कहा:

'अपना जीवन बचा लो, वटि, और महान देवताओं को बलदिान चढ़ाओ।'

संत ने उत्तर दयिा:

'तुम्हें कोई भलाई न मलि, शैतान, लालची भेड़यि, आत्माओं के बहकाऊ: मैं तुम्हारे पागलपन पर हैरान हूँ, क्योंकि यद्यपि तुमने ईश्वर की शक्ति देखी है, फरि भी तुमने ईश्वर को नहीं पहचाना, और तुम्हें अपने शब्दों से मुझे मेरे ईश्वर से दूर करने में शर्म नहीं आती। लेकनि मैंने तुम्हें एक से अधकि बार बताया है कि मैं तुम्हारे देवताओं - या यूँ कहो, राक्षसों - को बलदिान नहीं चढ़ाऊँगा; फरि भी तुम एक बार फरि नर्लिज्जता से मुझे अपनी दुष्ट सलाह देते हो। अगर कोई कुत्ते से कहे, 'हट जा', तो वह शर्म से चला जाता है; लेकनि तुम्हें शर्म नहीं आती। मेरे पास मसीह है, मेरा परमेश्वर, जसिकी मैं अब तक सेवा करता आया हूँ और जसिे मैं अपने हृदय से स्तुति का बलदिान चढ़ाता हूँ; मेरे लिए अब केवल एक ही बात बची है – कि मैं स्वयं उसके लिए एक जीवति बलदिान बनूँ।

तब सम्राट क्रोध से आग-बबूला हो गया, और शहीदों पर जंगली जानवर छोड़ने के बजाय, उसने तुरंत एक जलती भट्टी और एक बड़ा पात्र तैयार करने का आदेश दयिा, और हुक्म दयिा कि उसमें टनि, गंधक और तारकोल पघिलाया जाए; फरि उसने आदेश दयिा कि केवल वीटा को ही उस उबलते और बुलबुलेदार पात्र में फेंक दयिा जाए, यह कहते हुए: उसने कहा, 'आओ देखें कि क्या उसका ईश्वर उसकी मदद करेगा!'

संत वटि ने, स्वस्तकि का चह्नि बनाते हुए, समुद्र की तरह उबल रहे उस कड़ाहे के बलिकुल बीच में कदम रखा। और तुरंत ही प्रभु का स्वर्गदूत संत के सामने प्रकट हुआ, उसने आग की शक्ति छीन ली और कड़ाहे की गर्मी और उबाल को ठंडा कर दयिा; और पवत्रि शहीद प्रभु के भजन गाते हुए और कहते हुए, जैसे बपतस्मिा के कुंड के बीच में खड़े हों, वैसे खड़े रहे: 'हे ईश्वर, जन्हिोंने मूसा और हारून के द्वारा इस्राएलयिों को मस्रि के कड़वे बंधन से मुक्ति दलिाई, अपने पवत्रि नाम की महमिा के लिए हम पर भी अपनी दया दखिाइए।'

तब, राजा की ओर देखते हुए, उसने कहा: 'मैं तुम्हारा, डियोक्लेटियिन, और तुम्हारे सेवकों का धन्यवाद करता हूँ, कि उन्होंने मेरे लिए इतना आरामदायक स्नान तैयार किया; यहाँ साबुन भी होना चाहिए।'

जो भी लोग यह सब हो रहा था, उसे देख रहे थे, वे सब एक ज़ोरदार आवाज़ में चिल्ला उठे: 'हमने कभी ऐसा चमत्कार नहीं देखा! सचमुच, इस युवक का ईश्वर वास्तविक और महान है!'

और संत उस कड़ाही से बाहर निकले, उनके शरीर पर चोट का एक भी निशान नहीं था; इसके विपरीत, उनका शरीर, जो बर्फ की तरह शुद्ध था, और भी अधिक सफेद हो गया था; और उन्होंने गाते हुए कहा: 'हे प्रभु, तूने मुझे आग में परखे जाने वाले सोने की तरह परखा है; तूने मुझे आज़माया और मुझमें कुछ भी गलत नहीं पाया' (भजन संहिता 16:3)।

तब उसने इन शब्दों से राजा को डाँटना शुरू किया: 'हे शैतान, अपने पिता सताने के साथ लज्जित हो जा, यह देखकर कि मेरे प्रभु, उनके सेवक पर, कितनी महान शक्ति प्रकट करते हैं!'

तथापि राजा, और भी अधिक क्रोध से भरकर, आज्ञा दी कि एक भयंकर, विशाल और उग्र सिंह लाया जाए, जिसकी दहाड़ को ही लोग सहन नहीं कर सकते थे। और राजा ने संत से कहा:

'क्या तुम्हारी जादू-टोना सचमुच इस पर भी काबू पा लेगी?'

लेकिन शहीद ने उत्तर दिया:

'हे मूर्ख और निर्बुद्धि मनुष्य! क्या तुम्हें अभी तक मसीह की शक्ति का एहसास नहीं हुआ, जो मुझमें वास करते हैं, जिनका स्वर्गदूत मुझे जल्द ही तुम्हारे यातनादायक हाथों से छुड़ा लेगा?'

जब सिंह संत की ओर बढ़ा, तो विटि ने क्रॉस का चिह्न बनाया, और तुरंत ही सिंह उसके पैरों पर गिर पड़ा और उनके पैरों को चाटने लगा। और संत विटि ने सम्राट से कहा:

'यहाँ, एक जानवर भी मेरे ईश्वर का सम्मान करता है, फिर भी तुम अपने सृष्टिकर्ता को स्वीकार करने से इनकार करते हो; लेकिन अगर तुम अभी भी उस पर विश्वास करो, तो तुम बच जाओगे।'

सम्राट ने उत्तर दिया:

'उस पर विश्वास करो, तुम और तुम्हारा परिवार।'

संन्यासी ने तथापि मुस्कुरा कर कहा:

'आपने सही कहा है, क्योंकि मैं और मेरा पूरा परिवार पवित्र बपतिस्मा के जल से पुनर्जन्म पाकर हमारे ईश्वर के राज्य में जीवन का मुकुट प्राप्त करने की आशा रखते हैं।'

उस समय, लगभग एक हजार पुरुष मसीह में विश्वास करने लगे। तब राजा ने शहीद से कहा:

'विटि, ऐसा क्यों है कि आग भी और जंगली जानवर भी तुम्हें किसी भी तरह नुकसान नहीं पहुँचा सकते? किस जादू-टोने से तुम उन्हें वश में करते हो और लोगों को चकित करते हो, जिससे बहुत से लोग तुम्हारी जादू पर विश्वास करने लगे?'

शहीद ने उत्तर दिया:

मैं आग या जानवरों को किसी भी जादू-टोने से वश में नहीं करता; बल्कि यह सब मेरे ईश्वर, मसीह की शक्ति से होता है; आग और जानवर, ईश्वर की रचनाएँ होने के नाते, अपने स्रष्टा की आज्ञा का पालन करते हैं, न कि मेरी, और अपने स्रष्टा का सम्मान करते हैं, जबकि वे तुम्हें बहुत शर्मिंदा करते हैं: क्योंकि आग, एक निर्जीव प्राणी होने के नाते, और जानवर, एक मूक प्राणी होने के नाते, उस ईश्वर को जानते हैं जिसने उन्हें बनाया; फिर भी तुम, एक तर्कशील आत्मा होते हुए भी, ईश्वर को जानने से इनकार करते हो, और इस प्रकार तुम स्वयं को एक निशब्द और निर्जीव प्राणी से भी बदतर साबित करते हो।

तब सम्राट ने पवित्र शहीदों विटिस और मॉडेस्टस को यातना वृक्ष पर लटकाने का आदेश दिया, साथ ही संत क्रिस्पिनिया को भी, जो विटिस की शिष्या थीं। उस स्थान पर आकर, उन्होंने खुद को एक ईसाई होने का स्वीकारोक्ति किया और राजा को उसकी अधर्मीता और संतों पर दिए गए यातना के लिए फटकारा; तब यातना देने वाले ने आदेश दिया कि संतों के नग्न शरीर को लोहे के औजारों से खुरचा जाए। इस पर, संत विटि ने राजा से कहा: 'जब आप एक महिला को यातना देते हैं तो आप अपनी शक्ति को कमजोर और हास्यास्पद दिखाते हैं।'

और संतों को निर्दयता और क्रूरता से यातना दी गई, जिससे खुरचने से उनका मांस छिल गया, उनकी हड्डियाँ नंगी हो गईं, और उनकी अंतड़ियाँ दिखाई देने लगीं। और संत विटि ने प्रभु से पुकारा: 'हे ईश्वर, हमें बचाओ और अपनी शक्ति से हमें मुक्ति दो।' और तुरंत ही पृथ्वी हिल उठी, और गरज और बिजली चमकने लगी; मूर्तिपूजक मंदिर ढह गए; इस प्रक्रिया में, उपस्थित लोगों में से कई अविश्वासियों की मृत्यु हो गई: कुछ गिरती हुई इमारतों के मलबे में दब गए,

अन्य पर गरज और बजिली गरि पड़ी; राजा स्वयं, भय से ग्रस्त होकर, मृत्युदंड के स्थान से भाग गया, अपना चेहरा पीटते हुए और चल्लिाते हुए: 'हाय मेरी कस्मित, मैं तो एक ऐसे छोटे से लड़के से हार गया!' प्रभु का स्वर्गदूत, पवत्रि शहीदों को यातना के वृक्ष से मुक्त करने के बाद, उन्हें लुकानयि में सलिास नामक नदी पर ले गया, और उन्हें उसी वृक्ष के नीचे रख दयिा जसिके नीचे वे पहले ससिीली से आते समय वशि्राम कर चुके थे।

जब संत उस पेड़ के नीचे बैठे थे, तो उस क्षेत्र में रहने वाले कई ईसाई उनके चारों ओर इकट्ठा हो गए। तब संत वटि ने ईश्वर से प्रार्थना करते हुए कहा: 'हे प्रभु यीशु मसीह, जीवति परमेश्वर के पुत्र! हमारी आत्माओं को शांतपिूर्वक अपने पास ग्रहण करो; और जो तेरी महमिा के लिए हमारे दुःखों की स्मृतकिा सम्मान करना चाहते हैं—उन्हें इस संसार के सभी बुराइयों से बचा और उन्हें सुरक्षति रूप से अपने स्वर्गीय राज्य में ले जाओ।"

जब संत इस प्रकार प्रार्थना कर रहे थे, तो स्वर्ग से एक आवाज आई, जसिमें कहा गया: 'तुम्हारी प्रार्थना सुनी गई है!'

तब संत ने अपने पास खड़े ईसाइयों से मुड़कर कहा: 'भाइयो, हमारे शरीरों को यहीं दफना दो; और हम, अपनी मृत्यु के बाद, प्रभु से तुम्हारे लिए प्रार्थना करेंगे, कि तुम अपने उद्धार के लिए जो कुछ भी माँगो, वह तुम्हें प्राप्त हो, और मसीह तुम्हें शैतान की शत्रुता से बचाए।'

इन शब्दों के बाद, पवत्रि शहीदों ने एक ही समय पर आनंदपूर्वक अपने प्राण ईश्वर के हाथों में सौंप दिए[4439] । फरि वशि्वासयिों ने उनके पवत्रि शरीरों को उठाया, उन्हें सुगंधति कफ़न में लपेटा, और उसी स्थान पर सम्मानपूर्वक दफनाया (जसिे मारयिाने कहा जाता है)। संत वटि ने रोम में डायोक्लेटयिन के शासनकाल के दौरान, पंद्रहवें दनि जून को संत मॉडेस्टस और क्रसिैन्शयिस के साथ पीड़ा सहन की, जबकि हम ईसाइयों के लिए यह हमारे प्रभु यीशु मसीह के शासनकाल के दौरान था, जन्हिें सदा के लिए सम्मान और महमिा प्राप्त होनी चाहिए। आमीन।

धन्य जेरोम का जीवन

१५ जून को स्मरण कयिा जाता है

धन्य जेरोम का जन्मस्थान स्ट्रडिॉन का छोटा सा शहर था, जो डल्मेशयिा और पैनोनयिा की सीमा पर स्थति था[4440] । पश्चमिी चर्च के इस महान पति का जन्म का सटीक दनि अज्ञात है[4441] , ठीक उसी तरह जैसे उनका सांसारकि नाम भी अज्ञात है: सबसे अधकि संभावना है कि उनका नाम उनके पति के सम्मान में यूसेबयिस रखा गया था। माना जाता है कि धन्य जेरोम के माता-पति धनी नर्विासयिों की श्रेणी से थे[4442] ; वे ईसाई थे और उन्होंने अपने सबसे बड़े बेटे को पूरी तरह से ईसाई पालन-पोषण दयिा। 'मुझे,' धन्य जेरोम ने बाद में अपने बारे में कहा, 'पालने से ही कैथोलकि धर्म के दूध से पोषति कयिा गया था, और चर्च के प्रति मेरी नष्ठिा और भी अधकि थी क्योंकि मैं कभी भी वधिर्मी नहीं रहा।' जेरोम ने अपनी प्रारंभकि शक्षिा घर पर प्राप्त की; उनके शक्षिक, अपनी कठोर प्रकृति के बावजूद, अपने प्रतभिाशाली छात्र में सीखने का प्रेम जगाने में सफल रहे। बाद में, अपनी शक्षिा पूरी करने के लिए, उनके माता-पति ने धन्य जेरोम को रोम भेज दयिा। उस समय की प्रथा के अनुसार, पाठ्यक्रम में तर्क और, मुख्य वषियों के रूप में, व्याकरण और वाक्पटुता शामलि थी; धन्य जेरोम ने कुछ दार्शनकिों की शक्षिाओं से भी खुद को परचिति कयिा, लेकनि उन्होंने वाक्-कला के अध्ययन में बहुत समय लगाया; वह प्रसद्धि कानूनी वक्ताओं को सुनने के लिए अदालतों में जाते थे। यहीं रोम में, अपनी युवावस्था के दौरान, जेरोम ने अपनी पुस्तकालय का नर्माण शुरू कयिा, जो उनके बाकी जीवन भर उनके लिए आराम का एक बड़ा स्रोत बनी रही।

[4439] पवत्रि शहीदों का नधिन लगभग 303 ईस्वी में हुआ। पवत्रि शहीद वटिस के अवशेष कभी पेरसि (सेंट-डेनसि में) रखे गए थे, फरि उन्हें वेस्टफेलयिा के कोर्वे में स्थानांतरति कर दयिा गया; वे अब प्राग में प्रदर्शन पर हैं।

[4440] कस्बे का सटीक स्थान नर्धिारति करना मुश्कलि है, क्योंकि धन्य जेरोम के दनिों में ही इसे गोथों द्वारा नष्ट कर दयिा गया था।

[4441] इस मुद्दे को सुलझाने का प्रयास करने वाले वद्विानों ने धन्य जेरोम के जन्म के लिए वभिन्नि तथियिों का सुझाव दयिा है: 331, 342 और 346।

[4442] यानी, वे दास थे जन्हिें बाद में मुक्त कर दयिा गया था। धन्य जेरोम के माता-पति की संपत्ति इस तथ्य से स्पष्ट होती है कि वह पूरे यूरोप और सीरयिा में व्यापक यात्राएं करने में सक्षम थे, और अपने साथ चुनदिा लेखकों का एक पुस्तकालय ले जाते थे: बेशक, इस सब के लिए पर्याप्त वत्तिीय संसाधनों की आवश्यकता थी।

दुनिया की राजधानी में, प्रलोभनों और मोह के बीच बिताया गया समय जेरोम की आत्मा पर एक दुखद छाप छोड़ गया: उसने स्वयं स्वीकार किया कि 'अपनी युवावस्था की अनिश्चित भटकन के दौरान' उसने रोम में एक अनैतिक जीवन जिया - एक ऐसी परिस्थिति जिसके लिए उसे बाद में बहुत आँसू और कड़वे पछतावे झेलने पड़े। हालाँकि, भक्ति के मार्ग से ये विचलन बचपन से ही उसकी आत्मा में बोई गई ईश्वर की चिंगारी को बुझा नहीं सके। उसने अपने धर्म-भाइयों के साथ अपनी प्रार्थनापूर्ण सहभागिता को कभी नहीं तोड़ा; इसके अलावा, रविवार को वह, पैमाकियस और अन्य साथियों के साथ, आमतौर पर रोम के उपनगरों में स्थित शहीदों के मकबरों का दौरा करता था; जब, इन दौरों के दौरान, जेरोम को अंधेरी कैटाकॉम्ब्स (भूमिगत कब्रगाह) में उतरना पड़ता था[4443] , तो उसे ऐसा महसूस किए बिना नहीं रह पाता मानो वह जीवित ही कब्र में उतर रहा हो।

यहाँ रोम में, अपनी शिक्षा पूरी करने से पहले ही, जेरोम ने अपना जीवन बदलने और एक नया, शुद्ध और अच्छा जीवन शुरू करने का संकल्प लिया। उन्होंने शायद बपतिस्मा के माध्यम से अपने संकल्प को पुख्ता करने में कोई समय बर्बाद नहीं किया[4444] ; धन्य जेरोम के बपतिस्मा की सटीक तारीख अज्ञात है, लेकिन यह एक उचित अनुमान है, जिसमें काफी निश्चितता है, कि उनका बपतिस्मा तब हुआ था जब वे लगभग बीस वर्ष के थे, और यह संस्कार उन्हें या तो पोप लिबेरियस[4445] द्वारा या उनके पुरोहितों में से किसी एक द्वारा दिया गया था। रोम छोड़ने के बाद, धन्य जेरोम ने अपने सहपाठी और पालक भाई बोनोसस के साथ गॉल के माध्यम से एक लंबी यात्रा की। इस यात्रा के दौरान, जेरोम ने अपने शब्दों में, 'राइन नदी के अर्ध-जंगली किनारों पर पहली बार ईश्वर की सेवा करने की इच्छा महसूस की'; अर्थात्, ब्रह्मचर्य और गरीबी के संकल्पों वाले मठवासी जीवन की आकांक्षा उनके भीतर जागने लगी।

लगभग 372 ईस्वी में, धन्य जेरोम गॉल की अपनी यात्रा से स्ट्रिडॉन लौट आए। उनके माता-पिता पहले ही मर चुके थे, और वह परिवार की संपत्ति, अपनी बहन और अपने छोटे भाई पावलिसियानस की देखभाल के लिए रह गए थे - जो उनसे बीस साल छोटा था। संभावना है कि इन जिम्मेदारियों ने जेरोम को दुनिया से अलग होने के अपने इरादे को पूरी तरह से साकार करने से रोका, और उन्होंने साधु जीवन की अपनी लालसा को आंशिक रूप से ही पूरा किया, समय-समय पर एक्विलिया[4446] में रहकर, जहाँ एक छोटा अर्ध-साधु मंडल बन गया था, जिसमें एक-दूसरे और धन्य जेरोम के करीबी लोग शामिल थे। लेकिन यह समूह अप्रत्याशित रूप से भंग हो गया, जिसके कारणों का जेरोम केवल परोक्ष रूप से उल्लेख करता है। फिर जेरोम पूर्व की ओर रवाना हुआ, मुख्य रूप से यरूशलेम के साथ-साथ सीरिया और मिस्र के तपस्वियों से मिलने के लिए। इस यात्रा पर, धन्य जेरोम के साथ उनके मित्र, एक्विलियन मंडल के पूर्व सदस्य थे: इनोसेंट, निकिया, हेलिओडोरस, इवा और इवाग्रियस। हालाँकि, बाद वाले (इवा) केवल उनके साथ अपने पैतृक नगर एंटिओक तक ही यात्रा किए। उन्होंने थ्रेस, बिथिनिया, पोंटस, गलाटिया, कैपैडोसिया और सिलिसिया से होकर अपनी यात्रा की। लंबी यात्रा की कठिनाइयों ने, उनके तपस्वी प्रयासों के साथ मिलकर, इन धर्मनिष्ठ तीर्थयात्रियों की शक्ति को सो लिया। जब वे अंत्योकिया पहुँचे, जहाँ उन्हें एवार्जियस के घर पर गर्मजोशी से स्वागत मिला, तो जेरोम बीमार पड़ गया, जबकि इनोसेंट, धन्य पिता के बड़े दुख के कारण, मर भी गया; इवा भी मर गई। इस दुख ने जेरोम की बीमारी को और बढ़ा दिया, जो काफी लंबे समय तक चली, सबसे अधिक संभावना है कि 374 के वसंत तक। स्वस्थ होने के बाद, जेरोम ने स्वयं को पवित्र शास्त्र के अध्ययन में समर्पित कर दिया, एक ऐसा जुनून जो उनमें पहले ही जाग गया था[4447] ; इस उद्देश्य के लिए, उन्होंने प्रसिद्ध

[4443] कैटाकॉम्ब (कैटाकुम्बे) भूमिगत मार्ग और गुफाएँ हैं जो एक अनियमित नेटवर्क में व्यवस्थित होती हैं: रोम, नेपल्स, सिराक्यूज़ और माल्टा द्वीप के पास कैटाकॉम्ब पाए जाने के लिए जानी जाती हैं। रोम के आसपास की कैटाकॉम्ब विशेष रूप से विशाल हैं; वास्तव में, यदि उन्हें एक ही सीधी रेखा में फैलाया जाए, तो उनकी लंबाई इतालवी प्रायद्वीप के बराबर होगी। प्रारंभिक शताब्दियों के ईसाइयों के लिए, कैटाकॉम्ब पूजा के लिए एक गुप्त स्थान और मृतकों के लिए एक कब्रिस्तान के रूप में काम करते थे: ऐसा माना जाता है कि, इस उद्देश्य के लिए, ईसाइयों ने मिट्टी के बर्तन बनाने की मिट्टी निकालने के दौरान बने पुराने, परित्यक्त भूमिगत मार्गों का उपयोग किया; ईसाइयों ने केवल उनका उपयोग जारी रखा और उनका विस्तार किया।

[4444] उस समय, बपतिस्मा को स्थगित करना प्रथा थी – अधिकांश मामलों में बपतिस्मा के माध्यम से अपने पिछले जीवन के पापों का प्रायश्चित करने की इच्छा से, और आंशिक रूप से अपने शुरुआती वर्षों में बपतिस्मा की शपथों को तोड़ने के डर से, जब किसी की इच्छाशक्ति अभी मजबूत नहीं हुई होती थी और वह पापी प्रलोभनों के प्रति संवेदनशील होता था।

[4445] लिबेरियस ने 352 से 356 तक रोम के बिशप का पद संभाला।

[4446] अक्विलिया – उस समय वर्णित उत्तरी इटली का एक बड़ा और प्रसिद्ध नगर, जो पन्नोनिया, नोरिकम, इस्त्रिया और डल्माटिया जाने वाली सड़कों का संगम था।

[4447] रोम में अपनी शिक्षा पूरी करने के तुरंत बाद, उन्होंने ओबद्याह नबी की पुस्तक पर एक टीका लिखी।

अपोलनिारसि द्वारा दिए गए पवत्रि शास्त्र की व्याख्या पर व्याख्यानों में भाग लिया[4448] । न ही उन्होंने रेगस्तिान में जाने के अपने इरादे को त्यागा, जहाँ वे अपने प्रियजनों की मृत्यु के बाद विशेष रूप से आकर्षति महसूस कर रहे थे, और यह भावना तब और भी प्रबल हो गई जब हेलीओडोरस और निकिउस अब अपनी यात्रा जारी नहीं रखना चाहते थे। 374 में, जेरोम ने 'सीरियाई थेबाइड' - कलसेडोनियन रेगस्तिान (सीरिया के पूर्व में) में बसने का फैसला किया।

वह लगभग पाँच साल तक वहाँ रहे, शायद एक मठ में रहते थे और कभी-कभी एकांतवास के लिए उसे छोड़ देते थे; जबकि वे सामुदायिक जीवन को मंजूरी देते थे और दूसरों को इसकी सिफारिश करते थे, धन्य जेरोम, जैसा कि उनकी *जीवन-चरित्र: पॉल द हरमिट* से पता चलता है, साथ ही साथ उन तपस्वियों का भी विशेष सम्मान करते थे, जो लगभग श्रद्धा के बराबर था, जो रेगस्तिान के दूरदराज के हिस्सों में अकेले बसकर पहाड़ी गुफाओं में आश्रय लेते थे; कभी-कभी वे कई वर्षों तक किसी दूसरे इंसान का चेहरा नहीं देखते थे, और केवल जंगली जानवर और बिच्छू ही उनकी एकांतता को भंग करते थे। उपरोक्त कृति में, धन्य जेरोम अन्य बातों के अलावा, दो संन्यासियों का उल्लेख करते हैं जिन्हें उन्होंने स्वयं काल्सेडोनियन रेगस्तिान में देखा था: उनमें से एक ने 30 वर्षों तक केवल जौ की रोटी पर जीवन यापन किया और कीचड़ भरा पानी पिया; दूसरे का एकमात्र आहार खजूर था, जिनमें से पाँच रोज़ाना उस पुराने जलाशय के तल में फेंक दी जाती थीं जहाँ वह रहता था। प्रार्थना, कठोर उपवास, वंचित रहने और शारीरिक श्रम के माध्यम से शरीर को दंडित करते हुए, धन्य जेरोम ने अपने मरुभूमि के एकांत में स्वयं को पूरी तरह से पवित्र शास्त्र के अध्ययन के लिए समर्पित कर दिया, और इसके लिए उसने अपनी खुद की पुस्तकालय और अंटीओक में पास में रहने वाले दोस्तों, मुख्य रूप से इवाग्रियस, की पुस्तकालयों से आवश्यक पुस्तकों का उपयोग किया। साथ ही, एक यहूदी धर्म परिवर्तनकर्ता के मार्गदर्शन में, उन्होंने हिब्रू भाषा का अध्ययन शुरू किया, जिसमें मुख्य रूप से पुराने नियम की पुस्तकें लिखी गई हैं; धन्य जेरोम के लिए, यह बाद वाला प्रयास विनिम्रता के एक साधन के रूप में भी काम करता था: अक्षरमाला सीखने की विनिम्र करने वाली प्रकृति और हिब्रू भाषा के शब्दों में संगीतात्मकता की कमी—जो धन्य जेरोम को बहुत आकर्षक नहीं लगती थी, जिन्होंने शास्त्रीय साहित्य के उत्कृष्ट प्रतिनिधियों के अध्ययन के माध्यम से अपनी शैली को निखारा था—इस उद्देश्य के पूरी तरह से अनुरूप थे। निम्नलिखित उल्लेखनीय सपना, जिसका वर्णन उन्होंने इस प्रकार किया है, संभवतःधन्य जेरोम के जीवन के इसी दौर का है:

'एक दयनीय आदमी,' वह कहता है, 'मैं सीसेरो पढ़ने से ठीक पहले उपवास किया करता था। कई सारी रातों की जाग-जाग कर, अपने अतीत के पापों की याद से मेरे हृदय की गहराइयों से निकली आँसुओं के बाद, मैं आमतौर पर प्लॉटस की ओर मुड़ता था। यदि होश में आकर मैं भविष्यवक्ताओं को पढ़ने लगता, तो उनकी कठोर भाषा मुझे झिझिका देती, और चूंकि मेरी अंधी आँखों से कोई प्रकाश नहीं दिखता था, मैं सोचता कि दोष मेरी आँखों का नहीं, बल्कि सूर्य का है। जब वह प्राचीन साँप मुझे इस प्रकार लुभा रहा था, तो उपवास के लगभग आधे रास्ते में ही मेरे दुबले-पतले शरीर को एक बुखार ने जकड़ लिया, जिसके बीज मुझमें पहले से ही मौजूद थे; और बिना किसी राहत के, उसने मेरे दुर्भाग्यपूर्ण अंगों पर इतनी बेरहमी से भोजन किया कि मेरी खाल मुश्किल से मेरी हड्डियों से चिपकी रह गई। इस बीच, मेरी दफ़न की तैयारियाँ पहले ही चल रही थीं, और मेरी आत्मा की जीवन-दायक ऊष्मा मेरी छाती की मद्धम गर्माहट में मुश्किल से धधक रही थी, जबकि मेरा

[4448] लाओदिकिया के बिशप अपोलिनारिस ने स्वयं को केवल ईश्वर के पुत्र के संबंध में एरियन सिद्धांतों का खंडन करने तक ही सीमित नहीं रखा (एरियनवाद पर चर्चा के लिए नीचे देखें), बल्कि उन्होंने उनके विपरीत सिद्धांत स्थापित करने का प्रयास किया; यही प्रयास उन्हें विधर्म की ओर ले गया। इस प्रकार, एरियनों द्वारा दिए गए विशेष जोर के विपरीत—जो परमेश्वर के पुत्र को एक सृजित प्राणी मानते हुए मसीह में एक पूर्णतःमानवीय स्वभाव की मान्यता पर ज़ोर देते थे—अपोलीनारिस ने प्रभु यीशु के मानवीय व्यक्तित्व को नकार दिया। मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से, निकेन धर्मविश्वास की यह शिक्षा—कि मसीह में पूर्ण दिव्यता और पूर्ण मानवता का मिलन हुआ—उसे अविश्वसनीय लगी: उसने तर्क दिया कि दो सार, अपनी सभी गुणों को बनाए रखते हुए, कभी भी एक में नहीं मिल सकते। ईश्वर-मानव की अवधारणा भी उसे धर्मशास्त्रीय दृष्टिकोण से अकल्पनीय लगी: पाप पूर्ण मानवता से जुड़ा है; यदि मसीह में पाप की कल्पना की जाए, भले ही एक मात्र संभावना के रूप में, तो उसके लिए उद्धार का कार्य असंभव हो जाएगा। इसलिए, अपोलिनारिस ने, मानव स्वभाव को शरीर, पशु या जीवनदायिनी आत्मा (प्यक्न) और आध्यात्मिक आत्मा, आत्मा (नोइस) में विभाजित करने में यूनानी दार्शनिक प्लेटो का अनुसरण करते हुए, यह माना कि मसीह ने, अवतार के समय एक मानव शरीर और आत्मा धारण करने के बाद, मानव की विशिष्ट आत्मा को धारण नहीं किया, – मानव आत्मा – क्योंकि बाद वाला अनिवार्य रूप से स्वतंत्रता, और उसके साथ पाप की प्रवृत्ति को भी दर्शाता है; अपोलिनारिस के अनुसार, मसीह में मानव आत्मा को दिव्य लोगोस (Divine Logos) ने प्रतिस्थापित कर दिया था, जो पशु आत्मा की सभी बुरी प्रवृत्तियों पर सर्वोच्च शासन करता था। अपोलीनारिस की मृत्यु 390 में हुई। अपोलीनारिस के धर्मद्रोह को 362 में अलेक्ज़ेंड्रिया की परिषद द्वारा निंदा किया गया था। 375 में, जब अपोलीनारिस ने चर्च से अलग होकर अपना खुद का संप्रदाय बनाना शुरू कर दिया, तो उसे रोम की परिषद द्वारा निंदा किया गया; इस निंदा को दूसरी सार्वभौमिक परिषद द्वारा दोहराया गया।

पूरा शरीर ठंडा पड़ रहा था; और अचानक मैं आत्मा में दिव्य न्यायाधीश की न्याय-पीठ के सामने ले जाया गया, जहाँ स्वदूत दर्शकों से प्रकाश की ऐसी बाढ़ और महिमा का ऐसा तेज निकल रहा था कि, जमीन पर लोटकर, मैं अपनी आँखें भी नहीं उठा सका। जब मुझसे पूछा गया कि मैं कौन हूँ, तो मैंने उत्तर दिया कि मैं एक ईसाई हूँ।

'तुम झूठ बोल रहे हो,' पूछने वाले ने उत्तर दिया, 'तुम सिसेरो के अनुयायी हो, ईसाई नहीं; क्योंकि जहाँ तुम्हारा खजाना है, वहाँ तुम्हारा हृदय भी होगा।'

– तुरंत मैं लकवाग्रस्त हो गया, और कोड़ों की चोटों के नीचे (क्योंकि उन्होंने आदेश दिया था कि मुझे कोड़ा मारा जाए) मैं अपने विवेक की आग से और भी अधिक पीड़ित हुआ, उस प्रसिद्ध पद के बारे में सोचते हुए: 'पाताल में, कौन तेरा धन्यवाद करेगा?' लेकिन मैं चिल्लाने लगा, और कोड़ों की चोटों के बीच, ज़ोर से चिल्लाते हुए, मैंने कहा: 'हे प्रभु, मुझ पर दया करो, मुझ पर दया करो!'

अंत में, मेरे पास खड़े लोग न्यायाधीश के पैरों पर घुटने टेककर गिर पड़े, उनसे विनती करने लगे कि वे मेरी जवानी पर दया करें और मुझे अपनी गलती पर पश्चाताप करने का मौका दें, और बाद में यदि मैं कभी भी विधर्मी साहित्य की किताबें पढ़ूँ तो मुझे यातनाओं में डाल दें। मैं स्वयं, जो इस घातक संकट में इससे भी अधिक का वादा करने को तैयार था, पश्चाताप करने लगा और, उनके नाम का स्मरण करते हुए, कहा: 'हे प्रभु, यदि मैंने कभी उन्हें पढ़ा, तो आप मुझे बहिष्कृत कर दें!'

यह शपथ लेने के बाद रिहा होकर, मैं वायु के उच्चतम लोक में लौट आया और, सभी को आश्चर्यचकित करते हुए, अपनी आँखें खोलीं, जो आँसुओं की ऐसी बाढ़ से लबालब थीं कि मेरे भय ने तो अविश्वासियों को भी विश्वास दिला दिया। और वास्तव में, यह कोई सपना या महज नींद नहीं थी, जिससे हम अक्सर धोखा खाते हैं। वह न्यायालय जिसके सामने मैं खड़ा था, वह भयंकर न्यायपीठ जिससे मैं डरता था, वही मेरी गवाह है; काश मुझे फिर कभी उस न्यायपीठ के सामने न लाया जाए। मैं स्वीकार करता हूँ कि पिटाई से मेरे कंधे नीले पड़ गए थे, कि जागने पर भी मैं वही प्रहार महसूस कर सकता था, और यह कि अब से मैं दिव्य धर्मग्रंथों को पहले की तुलना में कहीं अधिक उत्साह से पढ़ता हूँ, जितने उत्साह से मैं पहले मानव-निर्मित पुस्तकें पढ़ता था।"

कालसेडोनियाई मरुभूमि से, धन्य जेरोम ने अपने निकटतम लोगों के साथ पत्राचार के माध्यम से संपर्क बनाए रखा, जिसका उपयोग उन्होंने उन्हें तपस्या के कार्यों के लिए उत्साहपूर्वक बुलाने के साधन के रूप में किया। इस संबंध में, पुजारी इलिओडोरस को लिखा धन्य जेरोम का पत्र विशेष रूप से प्रसिद्ध हो गया है; निम्नलिखित भावुक शब्दों में, वह अपने मित्र से संसार को त्यागने का आग्रह करता है: 'बिनती दूर करो, लाड़-प्यार दूर करो! जब मैंने तुमसे विनती की तो तुमने मुझे अनसुनी कर दिया; शायद जब मैं तुम्हारी निंदा करूँगा तो तुम मेरी बात मानोगे। अरे नपुंसक योद्धा! तुम अपने विश्वासघाती घर में क्या कर रहे हो? देखो, स्वर्ग से तुरही की ध्वनि गूँज रही है! देखो, सशस्त्र नेता संसार को वश में करने के लिए बादलों से उतर रहा है! देखो, उसके मुख से निकलने वाली दोधारी तलवार सभी बाधाओं को नष्ट कर देती है। और क्या तुम अपने कमरे से बाहर निकलकर युद्ध में, छाया से धूप में कदम रखते हो? देखो, तुम्हारे ही वक्ष में मौजूद शत्रु मसीह को मारने का प्रयास कर रहा है... भले ही तुम्हारा नन्हा भतीजा तुम्हारे गले में लटका हो, भले ही तुम्हारी माँ, बिखरे बालों और फटे कपड़ों में, तुम्हें वे स्तन दिखा रही हो जिनसे उसने तुम्हें दूध पिलाया था, भले ही तुम्हारा पिता दहलीज पर पड़ा हो – सूखी आँखों से उसके शरीर पर पैर रखो और क्रूस के झंडे की ओर दौड़ो! ऐसे मामले में, एकमात्र सच्चा पुत्रभक्ति क्रूर होने में ही निहित है।'

चौथी शताब्दी के 60 के दशक की शुरुआत में, अंतीयक में एक ही समय में दो बिशप प्रकट हुए: मेलेटियस और पॉलिनस। 358 में ऑर्थोडॉक्स और एरियन दोनों की सहमति से चुने गए[4449] — क्योंकि दोनों पक्ष उन्हें अपना समर्थक

[4449] एरियस – एक विधर्मी (मृत्यु 386), जिसने अपमानजनक रूप से यह दावा किया कि हमारे प्रभु यीशु मसीह, परमेश्वर का पुत्र, परमेश्वर नहीं है, जो पिता के समतत्त्व का है, बल्कि एक सृजित प्राणी है, और इसलिए शाश्वत नहीं है, यद्यपि सभी सृजित प्राणियों में सबसे उत्तम है। ईसाई चर्च के इतिहास में अरिअनिज़्म के नाम से जाना जाने वाला यह संप्रदाय, निकिया में प्रथम सार्वभौमिक परिषद (325 ईस्वी) में निंदित किया गया था, जिसके धर्मगुरुओं ने परमेश्वर पुत्र की परमपिता परमेश्वर के साथ एकसारता के बारे में ईसाई धर्म का सही सिद्धांत इस प्रकार प्रस्तुत किया: 'हम विश्वास करते हैं... एक ही प्रभु यीशु मसीह में, परमेश्वर के पुत्र, एकमात्र जनमे, पिता से जनमे, अर्थात् पिता के सार से, परमेश्वर से परमेश्वर, प्रकाश से प्रकाश, सच्चा ईश्वर सच्चे ईश्वर से, उत्पन्न, निर्मित नहीं, पिता के समतत्त्व का, जिसके द्वारा स्वर्ग और पृथ्वी में सभी वस्तुएँ सृजित हुईं'; परिषद के पिताओं ने स्वयं इस विधर्म को निंदा किया। लेकिन निकिन धर्म-सूत्र ने एरियनवाद के कारण उत्पन्न हुए चर्च संबंधी उथल-पुथल को समाप्त नहीं किया: एरियन बिशप, जो काफी संख्या में परिषद में उपस्थित थे, ने केवल राज्य प्राधिकरण के डर से परिषद की आस्था की परिभाषा पर अपने हस्ताक्षर किए, जो परिषद के रूढ़िवादी सदस्यों की ही मान्यताओं को मानता था; परिषद के समापन के

मानते थे — मेलेटियस ने वास्तव में ऑर्थोडॉक्स की उम्मीदों पर खरा उतरा, और खुले तौर पर घोषणा की कि वह पहले सार्वभौमिक परिषद के पिताओं द्वारा निर्धारित[4450] परमेश्वर के पुत्र के सिद्धांत का पालन करते थे। हालांकि, यह देखते हुए कि मेलेटियस को एरियनों की सहायता के बिना नहीं चुना गया था, ऑर्थोडॉक्स कट्टरपंथियों, जो अंफियालोपोलिस के महान धर्मगुरु यूस्टैथियस की स्मृति का स्नेहपूर्वक सम्मान करते थे, जिन्हें एरियन की साजिशों के कारण अन्यायपूर्ण रूप से पदच्युत कर दिया गया था, ने 362 में बिशप के रूप में अभिषिक्त हुए पुरोहित पॉलिनिस के नेतृत्व में मेलेटियस से अलग हो गए। स्थिति तब और जटिल हो गई जब 376 में, एक तीसरे बिशप, अपोलिनारियन विटालियस[4451] , को उसी शहर एंटिओक में स्थापित किया गया। गुटों के बीच असहमति पवित्र त्रिमूर्ति के व्यक्तियों की गरिमा और समानता के प्रश्न पर केंद्रित धर्मशास्त्रीय विवादों से और बढ़ गई। जहाँ एक ओर पॉलिनिस ने पवित्र त्रिमूर्ति के सिद्धांत को व्यक्त करने के लिए पश्चिम में विकसित सूत्र को अपनाया – कि पवित्र त्रिमूर्ति में 'एक हीप्पोस्टेसिस[4452] तीन व्यक्तियों में' है – वहीं मेलेटियस ने, पूर्वी प्रथा का पालन करते हुए, 'एक ऊर्जा'[4453] और 'तीन हीप्पोस्टेसिस'[4454] को मान्यता दी। मूलतः दोनों सूत्रों के प्रस्तावकों का आशय एक ही था; उन्होंने एक ही विचार को मात्र अलग-अलग शब्दों में व्यक्त किया[4455] । ये विवाद, जो एंटिओक में मेलेटियन विभाजन और एरियन अशांति से उत्पन्न हुए, पड़ोसी कालसेडोनियन मरुभूमि में भी फैल गए, जहाँ धन्य जेरोम एक तपस्वी के रूप में रह रहे थे। पोप दामासस को लिखे एक पत्र में[4456] , उन्होंने उपर्युक्त कारणों से उनके मरुभूमि एकांत में आई बाधा पर निम्नलिखित शब्दों में शोक व्यक्त किया: 'अथक शत्रु ने मेरा पीछा मरुभूमि तक भी किया है, ताकि अब, अपने एकांत जीवन में, मैं मरुभूमि में बसने से पहले की तुलना में और भी भयंकर संघर्ष सहन करूँ। एक ओर, शांति के रक्षकों द्वारा समर्थित एरियन पागलपन उग्र रूप से फैल रहा है। दूसरी ओर, अंतीयक में चर्च, जो तीन गुटों में विभाजित है[4457] , मुझे भी अपने पाँत में शामिल करना चाहती है।" जैसे-जैसे समय बीतता गया, अंतीयक में संघर्ष और भी तीव्र होता गया, और इसके साथ ही धन्य जेरोम को होने वाली पीड़ा भी बढ़ गई। दामासुस को लिखे अपने पत्रों के दो साल बाद, प्रेस्बिटर मार्क को लिखे एक पत्र में, वे धन्य पिता अन्य बातों के अलावा कहते हैं: 'वे मुझे विधर्मी क्यों कहते हैं जबकि मैं पश्चिम और मिस्र से सहमत हूँ? मुझे रेगिस्तान का एक भी कोना नहीं दिया गया है। हर दिन मुझसे मेरे धर्म के बारे में पूछताछ की जाती है, मानो मैं इसके बिना ही पुनर्जीवित हो गया हूँ। मैं वही स्वीकार करता हूँ जो वे चाहते हैं - इससे उन्हें नाराज़गी होती है; मैं हस्ताक्षर करता हूँ - वे मुझे विश्वास नहीं करते। उनकी एकमात्र इच्छा मुझसे छुटकारा पाने की है। मैं जाने को तैयार हूँ।' और वास्तव में, कुछ ही समय बाद, धन्य जेरोम ने रेगिस्तान छोड़कर एंटिओक के लिए रवाना हो गए, शायद अपने मित्र इवाग्रियस के पास रहने के लिए। एंटिओक में, धन्य जेरोम पॉलिनिस के समुदाय में शामिल हो गए; यह पॉलिनिस ही थे जिन्होंने उन्हें पादरी के रूप में नियुक्त किया था। उक्त अवधि के दौरान, शांति की तलाश कर रहे धन्य पिता के लिए अंतीयक में उनका प्रवास सुखद नहीं रहा होगा। इसलिए वह वहाँ अधिक समय तक नहीं रुके; चर्च के डॉक्टर के रूप में नाज़ियांज़स के ग्रेगरी[4458] की प्रसिद्धि से आकर्षित होकर, धन्य जेरोम कॉन्स्टेंटिनोपल

तुरंत बाद, राज्य अधिकारियों को अपने पक्ष में करने में सफल होने के बाद, अरिअन नेताओं ने, उनके समर्थन से, सच्चे धर्म के रक्षकों के खिलाफ एक भयंकर संघर्ष में भाग लिया; चौथी शताब्दी के मध्य तक, उन्होंने अपने विरोधियों पर लगभग पूर्ण बाहरी विजय प्राप्त कर ली थी, जो नाइसीन धर्म-सत्य के पवित्र ध्वज के नीचे एकजुट हुए थे।

[4450] पिछली टिप्पणी देखें।

[4451] अर्थात्, जो लाओदीकिया के अपोलिनारिस की विधर्मी भ्रांति में साझा था; ऊपर, पृ. 451 देखें।

[4452] इसके अलावा, इस शब्द को सार – 'ousia' के अर्थ में समझा गया था।

[4453] अर्थात् सार।

[4454] अर्थात्, व्यक्तित्व।

[4455] जैसा पश्चिमी लोग करते हैं, वैसे ही हम भी करते हैं, – संत ग्रेगरी द थियोलोजियन कहते हैं (नीचे देखें) – भक्तिपूर्वक घोषणा करते हैं कि एक ही सार और तीन हाइपोस्टेसीस हैं; लेकिन चूंकि उनकी वर्णमाला की कमी के कारण ओउसिया और हाइपोस्टेसीस के लिए कोई अलग शब्द नहीं है, इसलिए वे त्रि-सार को स्वीकार करने वाले नहीं दिखने के लिए प्रसोन (व्यक्ति) शब्द का प्रयोग करने के लिए मजबूर हैं। क्या इस पर विवाद खड़ा करने से ज्यादा हास्यास्पद या दयनीय कुछ हो सकता है?'

[4456] दामासुस ने 366 से 384 तक रोम के बिशप का पद संभाला।

[4457] अर्थात्, बिशप मेलेटियस, पॉलिनिस और विटालिस के समर्थक

[4458] संत ग्रेगरी द थियोलोजियन – चर्च के एक महान फादर और सार्वभौमिक शिक्षक – का जन्म लगभग 329 में अरिज़ि (कैपाडोसिया के एक छोटे से शहर नाज़ियानज़स के दक्षिण में एक गाँव) में हुआ था। अपने शुरुआती बचपन में, संत ग्रेगरी ने एक सपना देखा जिसने उन पर गहरा प्रभाव डाला और उनके भविष्य के जीवन के मार्ग का पूर्वाभास दिया: सुंदर कन्याओं के रूप में ब्रह्मचर्य और पवित्रता उनके सामने प्रकट हुईं, और उन्हें उनका अनुसरण करने के लिए आमंत्रित किया। संत ग्रेगरी ने कैपाडोसिया के सेज़ारिया में अपनी माध्यमिक शिक्षा प्राप्त की, जहाँ उनकी

के लिए रवाना हो गए, जहाँ उस समय संत ग्रेगरी बशिप थे। बाद में, धन्य जेरोम ने एक से अधकि अवसरों पर याद कयिा कि वे संत ग्रेगरी के कतिने ऋणी थे, जनि्होंने उन्हें धर्मग्रंथों के अध्ययन में मार्गदर्शन दयिा था। यहाँ कॉन्स्टेंटनिोपल में, धन्य जेरोम की मुलाकात ईसाई धर्मशास्त्री और दार्शनकि ग्रेगरी ऑफ नस्सिा से हुई, जनि्होंने उन्हें वधिर्मी यूनोमयिस के खलिाफ अपनी हाल ही में लखिी गई प्रबंध-रचना पढ़कर सुनाई, जो पवत्रि त्रमिूर्तकि ऑर्थोडॉक्स सद्धिांत से भटक गया था।

381 के अंत के करीब, धन्य जेरोम ने मेहमाननवाज़ कॉन्स्टेंटनिोपल छोड़ दयिा और रोम के लिए रवाना हो गए, जो उनके अपने शब्दों में, 'चर्च संबंधी आवश्यकता' से प्रेरति था: यह मान लयिा जाना चाहिए कि धन्य जेरोम को पोप डेमासस द्वारा एक परषिद के लिए रोम बुलाया गया था ताकि दुर्भाग्यपूर्ण मेलेटयिन वभिाजन को संबोधति कयिा जा सके, जो मेलेटयिस की मृत्यु के बाद भी एंटओिक की कलीसयिा में समाप्त नहीं हुआ था। कॉन्स्टेंटनिोपल में दूसरे सार्वभौमकि परषिद[4459] में, मेलेटयिस की मृत्यु पर फ्लेवयिन को उनका उत्तराधकिारी चुना गया; हालाँकि, पोप ने पश्चमिी बशिपों के साथ मलिकर पॉलनिस का समर्थन कयिा, जो मेलेटयिस के समय में अंफयिालोपोलसि के बशिप थे। पूर्वी और पश्चमिी चर्चों के बीच इसी असहमति[4460] के कारण दामासस द्वारा परषिद बुलाई गई। धन्य जेरोम, पौलनिस और एपफिानयिस के साथ रोम पहुँचे, जनिसे उनकी मुलाकात कॉन्स्टेंटनिोपल में हुई थी, जहाँ वे रोम जाते समय रुके थे। रोम में, धन्य जेरोम को तुरंत पोप और परषिद का सचवि नयिुक्त कयिा गया। अन्य बातों के अलावा, परषिद के धर्मगुरुओं ने धन्य जेरोम को अपोलनिारसि की वधिर्मी त्रुटयिों के वरिुद्ध एक वश्विास-पत्र का मसौदा तैयार करने का कार्य सौंपा। सामान्य रूप से, पोप दामासस के अधीन, वशिेष रूप से शुरुआत में, धन्य जेरोम की स्थति बिहुत प्रभावशाली थी। पोप, जो पवत्रि धर्मग्रंथ के अध्ययन में शोध में लगे हुए थे, धन्य जेरोम के मार्गदर्शन पर नर्भिर थे, और साथ ही उन्हें उसी अध्ययन को जारी रखने के लिए प्रोत्साहति भी करते थे।

पहली मुलाकात बेसलि द ग्रेट से हुई। बाद में, अपनी शक्षिा पूरी करने के लिए, उन्होंने फलिस्तीन के सेज़रयिा, अलेक्ज़ेंड्रयिा और एथेंस की यात्रा की। एथेंस में उनका प्रवास, जो काफी लंबा था, ने संत ग्रेगरी के हृदय में सबसे प्रयि यादें छोड़ दीं; यहीं पर वे बेसलि द ग्रेट के दोस्त बने, और दोनों दोस्तों के लिए 'सर्फि दो रास्ते थे - स्कूल और ईसाई चर्च'; यहीं पर उनकी मुलाकात भावी सम्राट जूलयिन से भी हुई, जो बाद में ईसाई धर्म से apostas (धर्मत्याग) करने के लिए कुख्यात हुआ। जूलयिन ने संत ग्रेगरी पर एक घृणति छाप छोड़ी। लगभग 357 ईस्वी में, संत ग्रेगरी ने दुखी मन से 'स्वर्ण एथेंस' को छोड़ दयिा; कॉन्स्टेंटनिोपल होते हुए, वह अपने देश पहुँचे, जहाँ उनका बपतस्मिा हुआ। 359 में, मसीह के जन्म के दनि, ग्रेगरी को, उनकी हैरानी के लिए, उनके पति, नाज़यिान्ज़ुस के बशिप, ग्रेगरी द एल्डर द्वारा एक प्रेस्बटिर (पादरी) के रूप में नयिुक्त कयिा गया। जब ग्रेगरी द थयिोलोजयिन के पति ने भोलेपन में अर्ध-एरयिन धर्म-वश्विास पर हस्ताक्षर कर दिए और इस प्रकार ऑर्थोडॉक्स मंडली को अपने खलिाफ कर लयिा, तो संत ग्रेगरी ने उन्हें बशिप से सुलह करा दी। इस बीच, तब तक केसेरयिा के बशिप बन चुके बेसलि द ग्रेट ने अपने दोस्त ग्रेगरी को लगभग मजबूर कर दयिा कि वह सासमि नामक छोटे से शहर का बशिप बनने के लिए अभषिेक स्वीकार कर लें। हालाँकि, संत ग्रेगरी, बशिप का पद संभालते हुए, अपने वृद्ध पति के साथ उनके वकिार और सहायक के रूप में तब तक रहे जब तक कि उनके पति का नधिन नहीं हो गया, जो 373 या 374 की शुरुआत में हुआ। इसके तुरंत बाद, संत ग्रेगरी की माँ, नॉना, का भी नधिन हो गया; उनके भाई और बहन पहले ही मर चुके थे। तब संत ग्रेगरी तपस्या का जीवन जीने के लिए सेल्यूकयिा में संत थेकला के मठ में चले गए, जसिसे उन्हें पहले अपने परविार के प्रति कर्तव्यों के कारण दूर रहना पड़ा था। सेल्यूकयिा से, संत ग्रेगरी को ऑर्थोडॉक्स ईसाइयों द्वारा कॉन्स्टेंटनिोपल बुलाया गया ताकि वे ऑर्थोडॉक्सी का बचाव कर सकें, जसिे एरयिनों द्वारा सताया जा रहा था। मई 381 में, जब सम्राट थयिोडोसयिस के आदेश पर दूसरी सार्वभौमकि परषिद बुलाई गई, तो संत ग्रेगरी को सम्राट और लोगों की इच्छानुसार, कॉन्स्टेंटनिोपल के बशिप के रिक्त पद के लिए चुना गया; परषिद के धर्मगुरुओं ने इस चुनाव को मान्यता दी। इसके तुरंत बाद, परषिद के अध्यक्ष, एंटओिक के मेलेटयिस का नधिन हो गया, और उनकी जगह स्वाभावकि रूप से राजधानी के नव-नर्विाचति बशिप, यानी संत ग्रेगरी ने ले ली। उनके और परषिद के पतिरों के बीच असहमति - मुख्य रूप से उन उपायों को लेकर कि एंटीओक में मेलेटयिन वभिाजन को कैसे समाप्त कयिा जाए - ने संत ग्रेगरी को अपने पैतृक देश में रहने के लिए मजबूर कर दयिा, जहाँ उन्होंने अपना समय एकांत में बतिाया और खुद को साहत्यिकि कार्यों के लिए समर्पति कर दयिा; वही 389 में उनका नधिन हुआ। संत ग्रेगरी अपने पीछे एक महत्वपूर्ण रचना संचय छोड़ गए: 45 प्रवचन, 243 पत्र और कवतिाओं का एक संग्रह। संत ग्रेगरी के प्रवचनों और उनके कुछ पत्रों ने परम पवत्रि त्रमिूर्ति और प्रभु यीशु मसीह के व्यक्तित्व से संबंधति ऑर्थोडॉक्स सद्धिांत के स्पष्टीकरण पर महत्वपूर्ण प्रभाव डाला।

[4459] 381 में, सम्राट थयिोडोसयिस महान के शासनकाल के दौरान।

[4460] एक पश्चमिी बशिप (सार्डनियिा के बशिप लुसफिर) द्वारा नयिुक्त होने के कारण, पॉलनिस ने हमेशा पश्चमि के साथ घनष्ठि संबंध बनाए रखे। इसलिए, मेलेटयिस की मृत्यु के बाद जब परषिद में उनके उत्तराधकिारी का प्रश्न उठा, तो परषिद के पतिाओं ने पश्चमिी समर्थन प्राप्त पॉलनिस को नहीं, बल्कि अंऽookयिा के चर्च के एक पुरोहति, फ्लेवयिन को चुना; क्योंकि, जैसा कि उन्होंने सही कहा, पूर्वी चर्च के मामलों में, पूर्वी ही प्रभारी होना चाहिए, न कि पश्चमि।

रोम में अपने प्रवास के शुरुआती वर्षों के दौरान, धन्य जेरोम को उनके तपस्वी जीवन, उनके ज्ञान और उनकी वाक्पटुता के लिए सार्वभौमिक सम्मान और व्यापक ख्याति प्राप्त थी: इतना कहना ही काफी है कि धन्य पिता को खुले तौर पर पोप डमासस का रोम के सिंहासन का उत्तराधिकारी नामित किया गया था। लेकिन जल्द ही, धन्य जेरोम घोर घृणा का विषय बन गए। उनके इस दृढ़ दावे ने कि संसार और देह का पूर्ण त्याग के बिना ईसाई पूर्णता प्राप्त नहीं की जा सकती, न केवल異教徒ों को बल्कि कई ईसाइयों को भी दूर कर दिया। उस समय समाज के कुछ भ्रष्ट सदस्यों ने इस स्थिति का फायदा उठाकर उस तपस्वी पर पाखंड का आरोप लगाया, और उनके खिलाफ तरह-तरह की बदनामी और आरोप फैलाए। कई लोग उस गहरे सम्मान से भी परेशान थे, जिससे धन्य जेरोम ओरिजिन[4461] के प्रति देखते थे। ऐसी शत्रुता, जिसने धन्य जेरोम के स्पष्ट गुणों को भी उनके खिलाफ कर दिया[4462] , विशेष रूप से कुँवारीपन के संरक्षण पर जूलिया यूस्टोचियम को लिखे उनके पत्र के बाद तीव्र हो गई। यह पत्र वर्ष 383 का है। इसमें, धन्य जेरोम अपने समय के रोमन ईसाई समाज, और विशेष रूप से पुरोहित वर्ग, की नैतिक पतन और धार्मिक पाखंड की निंदा करते हैं और उसका उपहास उड़ाते हैं। उस पत्र ने सचमुच सभी रोमन ईसाइयों को धन्य जेरोम के विरुद्ध कर दिया, और यह और भी अधिक इसलिए हुआ क्योंकि सभी मूर्तिपूजक, धर्मत्यागी और ईसाई नाम के प्रति घृणा रखने वाले सभी लोगों ने इस पत्र की उत्साहपूर्वक नकल की, क्योंकि इसने सभी वर्गों, सभी पदों के ईसाइयों को बदनाम कर दिया, सभी व्यवसायों और संपूर्ण चर्च को, उन्हें सबसे शर्मनाक अपमान के अधीन करते हुए'[4463] ।

उपरोक्त पत्र से उत्पन्न इस आक्रोश के तूफ़ान के बीच, धन्य जेरोम को धर्मनिष्ठ मित्रों की संगति में कुछ सांत्वना मिली, जो उनके प्रति अनुकूल थे और उन्हें बहुत मान-सम्मान देते थे। इस छोटे से समूह में शामिल थे: पामैकियस, एक कुलीन[4464] ; ओशियन्स, धन्य जेरोम का सहपाठी जो बाद में धन्य ऑगस्टीन का मित्र बना[4465] ; मार्सेलिनस, एक

[4461] ओरिजिन – अलेक्जेंड्रिया की चर्च के प्रसिद्ध शिक्षक, जो अपनी बुद्धि और विद्वता की गहराई के लिए अपने युग के एक आश्चर्य थे। चर्च के कई सबसे प्रतिष्ठित धर्मगुरुओं ने ओरिजिन की धर्मशास्त्रीय कृतियों और उपलब्धियों को सर्वोच्च सम्मान दिया; फिर भी बाद में, उनके जीवित रहते हुए, उन्हें अलेक्जेंड्रिया की दो स्थानीय परिषदों में एक विधर्मी घोषित कर दिया गया, और 543 में कॉन्स्टेंटिनोपल की परिषद में उनकी मृत्यु के बाद भी ऐसा ही किया गया। हालांकि उन्होंने अपने गैर-पारंपरिक विचारों को अपरिवर्तनीय सत्य के रूप में प्रस्तुत नहीं किया, फिर भी ओरिजिन ने ईसाई चर्च के सिद्धांत के कई सत्यों पर गलत विचार रखे, यही कारण है कि कुछ लोगों ने सबसे बुनियादी ईसाई धर्मसिद्धांतों में उनकी दृढ़ता को संदिग्ध माना। आत्माओं के पूर्व-अस्तित्व के गैर-पारंपरिक सिद्धांत को विकसित करते हुए, उन्होंने मसीह के संबंध में त्रुटिपूर्ण विचार रखे, यह मानते हुए कि ईश्वर ने समान गरिमा के एक निश्चित संख्या में आध्यात्मिक प्राणियों को बनाया था, जो दिव्यता को समझने और उसकी तरह बनने में सक्षम थे; इन सृजित आत्माओं में से एक दिव्यता की ओर इतनी तीव्रता से आकर्षित हुई कि वह दिव्य वचन के साथ अविभाज्य रूप से एक हो गई या उसकी सृजित पात्र बन गई; ओरिजिन के अनुसार, यह मानव आत्मा है जिसके माध्यम से परमेश्वर वचन पृथ्वी पर अवतार ले सके, क्योंकि उनके गलत दृष्टिकोण में, दिव्यता का प्रत्यक्ष अवतार अकल्पनीय है। परमेश्वर वचन के अवतार और संसार तथा मनुष्य की सृष्टि के बारे में एक विधर्मी दृष्टिकोण का पालन करते हुए, ओरिजिन ने मसीह की मृत्यु को भी एक गैर-पारंपरिक अर्थ में समझा, इसे आध्यात्मिक जगत में आध्यात्मिक रूप से दोहराई जाने वाली और वहाँ स्वर्गदूतों की मुक्ति पर प्रभाव डालने वाली घटना माना, जबकि उद्धार के कार्य को हमारी प्रकृति में निहित साधारण शक्तियों का बहुत अधिक श्रेय दिया। ओरिजिन पुनरुत्थान और आने वाले जीवन पर अपने शिक्षण के कुछ पहलुओं में भी गलत थे, उदाहरण के लिए, इस विश्वास में कि शैतान का उद्धार हो सकता है; और पवित्र धर्मग्रंथ की अपनी व्याख्या में, उन्होंने रहस्यमय अर्थ पर बहुत अधिक जोर दिया, जिससे धर्मग्रंथ के ऐतिहासिक अर्थ को नुकसान पहुँचा। हालाँकि, किसी भी स्थिति में, चर्च के प्रति ओरिजिन की सेवाएँ अधिक महत्वपूर्ण हैं और उनकी त्रुटियों से कहीं अधिक हैं। अपने स्कूलों में, उन्होंने चर्च के कई उल्लेखनीय फादरों और शिक्षकों को शिक्षित किया, जिनमें से कुछ का मूर्तिपूजक धर्म से ईसाई धर्म में धर्मांतरण उनके कारण ही हुआ; यह एक ऐसा विश्वास था जिसके साथ उन्होंने ज्ञान और दर्शन को सामंजस्य स्थापित करने का प्रयास किया। विशेष रूप से पवित्र धर्मग्रंथ के अध्ययन पर उनके कार्य उल्लेखनीय हैं – इसकी व्याख्या और, सबसे बढ़कर, प्रामाणिक पाठ की बहाली और शुद्धिकरण; इसी तरह ईसाई धर्म का अपने शत्रुओं और विधर्मियों के खिलाफ बचाव करने के उद्देश्य से ओरिजिन की रचनाएँ भी उतनी ही उल्लेखनीय हैं। डेसियस के अधीन उत्पीड़नों के दौरान, ओरिजिन ने मसीह के एक साहसी स्वीकारकर्ता के रूप में ख्याति अर्जित की; वह वर्ष 254 में टायर में सत्तर वर्ष की आयु में मृत्यु हो गए।

[4462] इस प्रकार, उदाहरण के लिए, पोप डेमासस के कहने पर धन्य जेरोम द्वारा पवित्र धर्मग्रंथों के लैटिन अनुवाद का आवश्यक और उपयोगी संशोधन, ने तीव्र शत्रुता को जन्म दिया, क्योंकि इसने ईसाइयों को पवित्र धर्मग्रंथों के कई परिचित और प्रिय अंशों से वंचित कर दिया, जो, यद्यपि वे पवित्र पुस्तकों की मूल भाषा की तुलना में गलत तरीके से अनुवादित थे, फिर भी वे लंबे समय के उपयोग के कारण उनके लिए प्रिय हो गए थे।

[4463] इसी तरह धन्य जेरोम के पूर्व मित्र रुफिनस ने बाद में उन्हें उनके दुर्भाग्यपूर्ण पत्र के लिए फटकारा।

[4464] अर्थात्, कुलीन वंश का व्यक्ति।

[4465] पश्चिमी चर्च के एक प्रसिद्ध फादर (मृत्यु 430)।

नोटरी[4466] ; एक बहुत उच्च पदस्थ व्यक्ति[4467] ; और पादरी डोमनिऑन। धन्य जेरोम ने इन मित्रों, जिनके नाम बताए गए हैं, की तुलना दानियेल, अनानियाह, अजर्याह और मिशाएल से की (दानियेल 1:1–21)। इस समूह में निम्नलिखित कुलीन, धार्मिक और शिक्षित महिलाएँ भी शामिल थीं: मेलानिया, अल्बिना और उनकी बेटी मार्सेलिया, लेह, असेला, साथ ही पाउला और उनकी बेटियाँ: ब्लेसिला, यूस्टोचिया, पॉलिन और रूफिना; धन्य जेरोम को बाद वाला परिवार विशेष रूप से प्रिय था। उस समय के चरम नैतिक पतन को देखते हुए, रोम की कुलीन और प्रतिष्ठित महिलाएं जो उनसे प्रभावित हुईं, उन पर धन्य जेरोम का लाभकारी प्रभाव विशेष रूप से महत्वपूर्ण था: उन्होंने सर्वोत्तम ईसाई जीवन का एक उदाहरण प्रस्तुत किया, जो अपने आप में ही सब कुछ कह देता था; अपने समर्पित अनुयायियों के समूह के लिए धन्य जेरोम का मार्गदर्शन, उनके लिए पवित्र धर्मग्रंथों को पढ़ना और उनक करना, तथा उन्हें तपस्वी जीवन जीने, अपनी कुँवारी अवस्था या विधवापन बनाए रखने का संकल्प लेने के लिए मनाने का प्रयास करना था।

384 में, धन्य जेरोम के उच्च-पदस्थ संरक्षक, पोप डेमासस की मृत्यु हो गई; उनके उत्तराधिकारी सिरिसियिस बने - एक ऐसे व्यक्ति जो उतने प्रबुद्ध नहीं थे और जिन्होंने धन्य जेरोम की गतिविधियों को अस्वीकृति की दृष्टि से देखा। निंदकों की जीभें अब बेकाबू हो गई थीं, इसलिए धन्य पिता को, दामासुस की मृत्यु के लगभग सात महीने बाद और रोम में अपने तीन साल के प्रवास के बाद, शहर छोड़ने के लिए मजबूर होना पड़ा। वह अपने छोटे भाई पौलिनियिस और पादरी विंसेंटियिस के साथ वहाँ से रवाना हुए। अपने मित्रों को, जो उसे बंदरगाह तक छोड़ने आए थे, अलविदा कहने के बाद, धन्य जेरोम भारी मन से 'शाश्वत नगर' को हमेशा के लिए छोड़ने के लिए जहाज पर चढ़ गए। इस दुखद विदाई के दौरान धन्य जेरोम के लिए एकमात्र सांत्वना यह विचार था कि 'भले ही उसे एक झूठे आरोप की शर्म सहनी थी, वह यह महसूस कर गया था कि निंदा के माध्यम से ही स्वर्ग का राज्य प्राप्त होता है'... 'और मसीह की न्याय-सिंहासन के सामने यह प्रकट हो जाएगा कि प्रत्येक व्यक्ति ने कैसे जीवन यापन किया है'।

धन्य जेरोम पवित्र भूमि की यात्रा करने के इरादे से रोम से रवाना हुए। रास्ते में, वे अन्य स्थानों के अलावा, साइप्रस द्वीप पर रुके, जहाँ वे सालामिसा के बिशप, संत एपिफानियिस के अतिथि थे, और अंतीयक में, बिशप पॉलिनिस के आतिथ्यपूर्ण आँगन में। यहीं अंᱛᱷओक में पॉल और यूस्टोचिया, धर्मपरायणता के लिए अपने मूल रोम से सभी संबंध तोड़कर, धन्य जेरोम से जुड़ीं। अंतियोकिया से तीर्थयात्री पवित्र भूमि के लिए एक साथ रवाना हुए: पॉल और यूस्टोचिया, साथ में युवा कुंवारी, और जेरोम विंसेंटियिस, पॉलिनियिनस और भिक्षुओं के एक छोटे समूह के साथ। उन्होंने ज़रेफ़ाथ में पवित्र भविष्यवक्ता एलिया के मीनार का दौरा किया (1 शमूएल 17:9) और टायर में उस स्थान की रेत को चूमा जहाँ पवित्र प्रेरित पौलुस घुटने टेकने गए थे (प्रेरितों के काम 21:3-5); केसरिया में, उन्होंने शतदल कौर्नलियिुस के घर (प्रेरितों के काम 10:1–48) और फिलिप 'सुसमाचार प्रचारक' के घर के छोटे कमरों को देखा, जहाँ, पवित्र प्रेरितों के दिनों में, उसकी चार कुंवारी बेटियाँ एक बार रहती थीं (प्रेरितों के काम 21:8–9)। यरूशलेम में, तीर्थयात्रियों ने श्रद्धापूर्वक मसीह के क्रूस, उनके मकबरे और कोड़ों के स्तंभ को चूमा; उन्होंने यरूशलेम में प्रभु यीशु मसीह की स्मृति से पवित्र हुए सभी स्थानों का भी दौरा किया। यरूशलेम से, राहेल का मकबरा[4468] पार करते हुए, तीर्थयात्री बेथलहम[4469] पहुँचे। यहाँ,

---

[4466] शासक के दरबार का सचिव।

[4467] बाद में, सम्राट होनोरियस के अनुरोध पर, मार्सेलिनस ने 410 में कार्थेज परिषद की अध्यक्षता की, जिसे डोनाटियों को ऑर्थोडॉक्स के साथ सुलह कराने के लिए बुलाया गया था।

[4468] पैट्रिआर्क याकूब ने अपनी प्रिय पत्नी राहेल को एप्रथ, यानी बेथलहम के रास्ते में दफनाया, और उसकी कब्र पर एक स्मारक बनाया (उत्पत्ति 35:18–19)। राहेल की कब्र बाद की कई शताब्दियों तक अच्छी तरह जानी जाती रही (1 शमूएल 10:2)। स्थानीय यहूदी और मुसलमान आज भी राहेल के मकबरे का बहुत सम्मान करते हैं। सूखे के समय अरब लोग यहाँ गंभीर प्रार्थनाओं के लिए इकट्ठा होते हैं।

[4469] पुरानी वाचा में बेतलेहेम को यहूदी राजा, दाऊद के जन्मस्थान के रूप में और नई वाचा में यीशु मसीह के जन्मस्थान के रूप में जाना जाता है। यह यरूशलेम से दो घंटे की यात्रा दक्षिण में स्थित था और दो पहाड़ियों पर बसा है, जिनकी ढलानों पर अंगूर के बाग़ प्रचुर मात्रा में हैं, जबकि उनके तल पर अच्छी तरह से संवारा हुआ अनाज का खेत फैला हुआ है। 'बेथलहम' नाम स्वयं शायद इसी उर्वरता से उत्पन्न हुआ है; हिब्रू में, इसका अर्थ है 'रोटी का घर'। प्राचीन काल में इसे एप्रैम कहा जाता था (मीका 5:2), जिसका हिब्रू में अर्थ है 'फल देना'। उद्धारकर्ता मसीह के जन्म के बाद से, बेतलहम सभी ईसाइयों के लिए एक पवित्र स्थान बन गया है। पैलेस्टाइन पर ओटोमन विजय (15वीं सदी) से पहले, बेथलहम कई मौकों पर पूरी तरह से नष्ट हो गया था, और उस समय तक यह पूरी तरह से खंडहर में बदल चुका था, जिससे यह केवल 19वीं सदी की शुरुआत में ही उबर पाया। आज यह अरबों की आबादी वाला एक छोटा सा शहर है, जिनमें से आधे ऑर्थोडॉक्स और आधे कैथोलिक हैं। जिस गुफा या तᱷᱵᱷ पर प्रभु यीशु मसीह का जन्म हुआ था, उस स्थान पर एक चर्च खड़ा है; गुफा इसके वेदी के नीचे स्थित है; इसकी दीवारें और फर्श संगमरमर से ढके हुए हैं। गुफा में एक खांचा, जिसे पाँच चाँदी के दीयों से रोशन किया गया है, को उद्धारकर्ता के जन्मस्थान के रूप में पूजित किया जाता है। फर्श में एक चाँदी का तारा जड़ा है, जिस पर लैटिन में अंकित है: *Hic de Virginie Maria Jesus Christus natus est* – 'यहाँ, कुँवारी मरियम से, यीशु मसीह

उद्धारकर्ता मसीह के जन्मस्थान पर, पाउला ने पवित्र आनंद में उद्घोष किया: 'क्या मैं, एक नीच पापी, उस खलिहान को चूमने की योग्य हूँ जिसमें प्रभु एक छोटे बच्चे के रूप में रोए थे - उस गुफा में प्रार्थना करने की जहाँ कन्या मरियम ने शिशु मसीह को जन्म दिया था? यह मेरे प्रभु का जन्मस्थान है; यहाँ मैं रहूँगी, क्योंकि उद्धारकर्ता ने इसे चुना है।'

बेथलहम के बाद, तीर्थयात्रियों ने 'चरवाहों को सुसमाचार सुनाने वाले स्वर्गदूत' के चैपल का दौरा करने के बाद, गाजा और हेब्रोन होते हुए मृत सागर[4470] के लिए प्रस्थान किया; फिर, बेथेल, शिलोह और नासरत[4471] होते हुए यॉर्डन नदी का दौरा करने के बाद, वे गलीलियाई सागर[4472] और टाबर पर्वत[4473] पहुँचे। फिलिस्तीन से तीर्थयात्री मिस्र[4474] के लिए रवाना हुए, जहाँ उन्होंने अलेक्जेंड्रिया में पूरे एक महीने बिताए; यहाँ धन्य जेरोम ने अंधे डिडिमिस को सुना, जो अलेक्जेंड्रिया के धर्मशिक्षण विद्यालय में एक शिक्षक थे, जो पवित्र शास्त्रों के ज्ञान के लिए प्रसिद्ध थे और ओरिजिन की कुर्सी के उत्तराधिकारी थे[4475] । जब यात्री नाइट्रियन रेगिस्तान[4476] पहुँचे, तो बिशप इसिडोर ने 'अनगिनत संतों की भीड़' के साथ उनका स्वागत किया। नाइट्रियन संन्यासियों के साथ समय बिताने के बाद, तीर्थयात्री 386 के पतझड़ में बेथलहम लौट आए।

बेथलहम में ही रहने का निर्णय लेने वाले तीर्थयात्रियों के लिए आवास की व्यवस्था करने हेतु, पाउला ने मठों का निर्माण शुरू किया – एक महिलाओं के लिए और एक पुरुषों के लिए; बाद वाले मठ के मठाधीश धन्य जेरोम थे; पाउला ने बाद में दो और मठ बनाए। निर्माण कार्य लगभग तीन साल तक चला; इस दौरान पाउला कुंवारी कन्याओं के साथ और धन्य जेरोम भिक्षुओं के साथ काफी असुविधाजनक ठिकाने में रहे। मठों के अलावा, पाउला ने एक अतिथि गृह बनवाया जहाँ बेथलहम आने वाले तीर्थयात्रियों को मुफ्त आवास मिल सकता था; उनमें से बड़ी संख्या में गॉल जैसे ईसाई दुनिया के दूर-दराज के हिस्सों से भी पवित्र भूमि पिर उमड़ पड़े, ब्रिटेन, आर्मेनिया, पोंटस, इथियोपिया और भारत। अतिथि गृह सभी तीर्थयात्रियों के लिए खुला था, सिवाय विधर्मी के; 'जोसेफ और मरियम,' धन्य जेरोम कहते हैं, 'यदि वे फिर से बेथलहम आते, तो उन्हें रहने के लिए जगह की कमी नहीं होती।' उनकी व्यापक और उदार परोपकारिता ने अंततः पाउला की अपार व्यक्तिगत संपत्ति को भी समाप्त कर दिया, इसलिए धन्य जेरोम को मठ का समर्थन करने के लिए, अपने भाई पॉलिनियन

का जन्म हुआ'। इस स्थान से कुछ ही कदमों की दूरी पर एक खोह है, जिसे उस अस्तबल के स्थान के रूप में पहचाना जाता है जिसमें मसीह को रखा गया था। गुफा के उत्तर-पश्चिम में एक संकरा भूमिगत मार्ग फैला है, जिसमें वेदियाँ और प्रार्थना-गृह हैं, साथ ही वह गुफा भी है जहाँ धन्य जेरोम को दफनाया गया था।

[4470] मृत सागर – फिलिस्तीन के दक्षिण-पूर्वी भाग में एक अंतर्देशीय खारी झील; मृत सागर लिसान प्रायद्वीप द्वारा दो बेसिनों में विभाजित है; यह भूमध्य सागर के स्तर से 394 मीटर नीचे स्थित है। मृत सागर का पानी खारेपन से इतना संतृप्त है कि उसमें मछलियाँ जीवित नहीं रह सकतीं, और पानी का विशिष्ट गुरुत्व इतना अधिक है कि इसमें गिरने वाले कार्बनिक पदार्थ डूबते नहीं हैं। मृत सागर के आसपास की भूमि एक बड़े क्षेत्र में नमक से ढकी हुई है; परंपरा के अनुसार, मृत सागर का स्थल कभी सिद्दीम की उपजाऊ घाटी था, जिसमें सदोम और गमोरा के शहर स्थित थे।

[4471] नज़रेथ – जिसका हिब्रू में अर्थ 'शाखा' या 'घेरा हुआ स्थान' है – दक्षिणी गलील में एक छोटा सा शहर है, जो उद्धारकर्ता के आगमन से पहले इतना अज्ञात था कि इसका उल्लेख पुराने नियम के पवित्र धर्मग्रंथों में कभी नहीं मिलता है। लेकिन नए नियम के युग के आगमन के साथ, नाज़रेथ गलील का सबसे प्रसिद्ध स्थान बन गया, क्योंकि उद्धारकर्ता के जीवन की कई घटनाएँ इससे जुड़ी हुई हैं: नाज़रेथ परमेश्वर की माता की वधू, धर्मी यूसुफ का जन्मस्थान था; यहीं पर परम पवित्र थियोटोकोस को सुसमाचार सुनाया गया था; यहीं पर, मिस्र से पवित्र परिवार की वापसी के बाद, उद्धारकर्ता ने अपना बचपन और यौवन बिताया; और यहीं पर प्रभु मानव जाति के लिए अपनी सार्वजनिक सेवा शुरू करने के बाद तब तक रहे, जब तक कि उन्होंने निवासियों के अविश्वास के कारण नासरत को छोड़कर कफरनौम का रुख नहीं किया। नसरत में अपना अधिकांश जीवन बिताने के कारण, यीशु मसीह को नासरी के नाम से जाना जाता था (मत्ती 2:33)।

[4472] गलील की झील, या गेनेसरत झील, प्रभु यीशु मसीह के उपदेश देने के लिए पसंदीदा स्थानों में से एक थी; यह प्रभु के वहाँ बार-बार आने के लिए यादगार है (उदाहरण के लिए देखें, मत्ती 4:13–17, 23–25, 8:23–24, 9:1–8, 13:1)।

[4473] ताबोड़ पर्वत फिलिस्तीन के उत्तरी भाग में, गलील में स्थित है; चर्च की परंपरा ने लंबे समय से ताबोड़ पर्वत को रूपांतरण का पर्वत माना है।

[4474] मिस्र – दुनिया के सबसे पुराने राज्यों में से एक – नदी नील के दोनों किनारों पर अफ्रीका की एक संकीर्ण तटीय पट्टी पर स्थित है।

[4475] धन्य जेरोम, अपने बचपन की घटनाओं का वर्णन करते हुए, डिडिमिस के बारे में निम्नलिखित कहते हैं: जब प्रसिद्ध तपस्वी संत एंथनी, एरियनों से लड़ने के लिए संत अथेनासियस द्वारा बुलाए जाने पर अलेक्जेंड्रिया पहुँचे, तो डिडिमिस ने महान तपस्वी से भेंट की: बाद वाले ने, डिडिमिस की बुद्धि और पवित्र धर्मग्रंथ के ज्ञान से चकित होकर, उनसे पूछा, 'क्या तुम्हें इस बात का दुख है कि तुम अंधे हो?' और जब डिडिमिस ने स्वीकार किया कि उसकी अंधापन उसके लिए एक भारी परीक्षा थी, तो एंथनी ने टिप्पणी की: 'यह अजीब है कि तुम एक ऐसे उपहार के खोने पर शोक करते हो जो मक्खियों और चींटियों के पास है, और उस ज्ञान के होने पर प्रसन्न नहीं होते जो केवल संतों और प्रेरितों को ही प्रदान किया गया था।'

[4476] नाइट्रियन मरुभूमि मिस्र में संतों के रहने के लिए एक पसंदीदा स्थान था; यह स्कैटिक मरुभूमि के दक्षिण में स्थित है।

को अपनी व्यक्तगित वरिासत बेचने के नरि्देशों के साथ डल्माटयिा भेजने के लिए मजबूर होना पड़ा। धन्य जेरोम स्वयं जन्म गुफा के बगल में स्थति एक गुफा में रहते थे। उनके भोजन में रोटी और खाने योग्य जड़ी-बूटयिाँ शामलि थीं, और उनका पेय पानी था; वास्तव में, उपवास के दनिों में, ये धन्य पति यह मामूली भोजन भी केवल सूर्यास्त के बाद ही लेते थे। वे अपने मठ के भक्षिुओं का मार्गदर्शन करते थे, और साथ ही पाउला और यूस्टोचयिा के भक्तपिूर्ण अनुष्ठानों और अध्ययन की देखरेख भी करते थे; वास्तव में, पवत्रि धर्मग्रंथ के वभिन्नि अस्पष्ट अंशों के बारे में उनके लगातार सवाल उन्हें भी बहुत मुश्कलि में डाल देते थे। धन्य जेरोम अपने कार्य दविस का एक हस्सिा लड़कों को पढ़ाने के लिए भी समर्पति करते थे। लेकनि उनका मुख्य कार्य, पहले की तरह, पवत्रि शास्त्र का अध्ययन और पत्राचार था। सुल्पसियिस सेवेरस[4477] , जो छह महीने तक धन्य जेरोम के साथ उनकी गुफा में रहे, गवाही देते हैं कि धन्य पति दनि में ही नहीं बल्कि रात में भी लगभग बनिा आराम कएि, हमेशा पढ़ने या लखिने में व्यस्त रहते थे। यहाँ गुफा में, धन-संपत्ति की परवाह कएि बनिा, धन्य जेरोम ने अपने लिए एक वशिाल पुस्तकालय जमा कयिा, जसिमें मुख्य रूप से ओरजिन, डडिमिस, आइरेनयिस और सेसरयिा के यूसेबयिस की कृतयिाँ शामलि थीं। धन्य जेरोम के मुख्य कार्य, पवत्रि धर्मग्रंथों का अध्ययन और व्याख्या करने के साथ-साथ, उन्होंने खुद को हब्रिू भाषा के अध्ययन में भी समर्पति कर दयिा, जसि उन्होंने बेथलहम में जारी रखा: उन्होंने यह अध्ययन बारी-बारी से रब्बी बरानीना और लड्डिा या टबिेरयिास के एक रब्बी के साथ कयिा, जनिमें से बाद वाले अपने पाठों के लिए भारी शुल्क लेते थे। पुरानी वाचा की पवत्रि पुस्तकों की मूल भाषा से खुद को परचिति कराने की अपनी इच्छा के अलावा, धन्य जेरोम को हब्रिू के अध्ययन में यहूदयिों द्वारा ईसाइयों का मज़ाक उड़ाने को खंडन करने की इच्छा से भी प्रेरणा मलिी: बाद वालों का दावा था कि जनि धर्मग्रंथों के अंशों का ईसाई संदर्भ देते थे, उनका मूल पाठ में कथति रूप से एक अलग अर्थ था।

बेलेज्ड जेरोम का बेथलहम में समय उनके साहत्यिकि करयिर की शुरुआत का प्रतीक था। यह वशिेष रूप से पहले दस वर्षों के लिए सच है। बाद में, बुखार के दौरे और सार्वजनकि आपदाओं के डर ने—जन्हिोंने पूरे पूर्व को हूण आक्रमण की आशंका में कांपते हुए जकड़ लयिा था[4478] —बेलेज्ड जेरोम के बेथलहम में शांतपिूर्ण प्रवास में बाधा डाली। लेकनि उनकी वाद-ववािद रचनाओं ने उन्हें बहुत कष्ट पहुँचाया; वे उन्हें यहाँ, बेथलहम में दुनयिा से अलग-थलग रहते हुए भी, छोड़ नहीं सके, और उन्होंने उन्हें बड़ी लगन से जारी रखा। धन्य जेरोम या तो उन लोगों की नदिा करते थे जो चर्च की शक्षिाओं के वपिरीत वचिार व्यक्त करते थे, या फरि अपने वचिारों का बचाव करते थे जब उन पर उन लोगों द्वारा हमला कयिा जाता था जो कसिी वशिेष चर्च-सम्बंधी मुद्दे पर धन्य पति से असहमत थे। इस प्रकार, धन्य जेरोम ने एक स्वतंत्र-चतिक भक्षिु, जोवनियिन के वरिुद्ध खंडन की तीन पुस्तकें रचीं; उन्होंने बाद वाले की शक्षिा में नम्निलखिति त्रुटयिों की ओर इशारा कयिा:

1) कि कुँवारीपन, वधिुरता और ववािह स्वयं में समान रूप से तटस्थ और समान रूप से ईश्वर को प्रयि हैं;

2) कि बपतस्मिा के जल में जो वास्तव में पुनर्जन्म लेते हैं, वे पापरहति हो सकते हैं;

3) कि उपवास और भोजन का सेवन, जब ईश्वर को धन्यवाद के साथ कयिा जाए, तो समान नैतकि पुण्य रखते हैं।

वर्ष 399 में, धन्य जेरोम ओरजिन के संबंध में प्रसद्धि ववािद में फंस गए, जो लगभग पाँच वर्षों तक चला। इस ववािद के दौरान, जसिने धन्य जेरोम को अत्यधकि कष्ट पहुँचाया, वह प्रसद्धि अलेक्जेंड्रयिाई शक्षिक के प्रशंसक से उनके त्रुटयिों के एक उत्साही आलोचक बन गए; इस ववािद ने धन्य जेरोम और रुफनिस के बीच, जो कभी दोस्त थे, एक नरि्णायक दरार पैदा कर दी। हालाँकि इससे धन्य जेरोम को काफी कष्ट हुआ, फरि भी धन्य ऑगस्टीन के साथ उनका पत्राचार अधकि सफल रहा: जेरोम ने ऑगस्टीन को अपना गलत दृष्टकिोण छोड़ने के लिए मना लयिा, जसिके अनुसार सेप्टुआजंटि के अस्तत्वि को देखते हुए, वह पवत्रि शास्त्रों का हब्रिू भाषा से अनुवाद करना अनावश्यक मानते थे। दूसरी

[4477] सुल्पसियिस सेवेरस (मृत्यु 410 या 429), अक्वटिेन के मूल नवािसी, प्रारंभ में एक वकील थे; अपनी पत्नी की मृत्यु के बाद, वे 392 में बेज़यिर्स के पास एक मठ में सेवानवृित्त हो गए; वहां से, 409 में, वे मार्सेई चले गए। वे सेंट मार्टनि ऑफ़ टूर्स के साथ अपने घनष्ठि संबंध के लिए जाने जाते हैं, जनिके जीवन का उन्होंने वस्तिार से वर्णन कयिा, हालांकि पूरी तरह से सटीक नहीं। इसके अलावा, उन्होंने *हस्टिोरयिा* या *क्रोनकिा सैक्रा* नामक एक दो-खंडों वाली कृति लिखी, जसिमें दुनयिा की रचना से लेकर 409 ईस्वी तक की घटनाओं का वर्णन है; वे दो संवादों के लेखक भी हैं।

[4478] धन्य जेरोम का ओशयिन्स को लखिा एक पत्र, जसिकी तारीख 395 है, प्राप्त हुआ है, जसिमें उन्होंने अन्य बातों के अलावा यह बताया है कि पूरा पूर्व हूण आक्रमण की आशंका से कांप रहा था। धन्य जेरोम को अपने भक्षिुओं और भक्षिुणयिों के लिए जोपा में जहाज तैयार रखने के लिए मजबूर होना पड़ा, ताकि वे पवत्रि भूमि पर हूणों के हमले की स्थति में भाग सकें। हूण पहले से ही एंटओिक की घेराबंदी कर रहे थे, और अफवाह थी कि उनका इरादा इसके खजाने की तलाश में यरूशलेम पर चढ़ाई करना था।

ओर, धन्य ऑगस्टीन ने धन्य जेरोम को गलातियों के लिए पत्र के अध्याय 2 की आयत 11-15 की अपनी व्याख्या को मौन रूप से त्यागने के लिए मनाया, जहाँ धन्य जेरोम ने प्रमुख प्रेरितों के कार्यों को एक ऐसी बेईमानी की रोशनी में चित्रित किया था जो उनकी उच्च गरिमा को नीचा दिखाती थी और पवित्र धर्मग्रंथ के अधिकार को कमजोर करती थी।

धन्य जेरोम प्रमुख रूप से एक विद्वान व्यक्ति थे और उन्होंने अपनी साहित्यिक कृतियों के रूप में एक समृद्ध विरासत छोड़ी। उनकी विषय-वस्तु और चरित्र के अनुसार, इन कृतियों को चार श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है:

1) धर्मशास्त्रीय और विवादात्मक;

2) नैतिक और तपस्वी;

3) पवित्र धर्मग्रंथ की व्याख्या पर कृतियाँ; और

4) ऐतिहासिक कृतियाँ।

उनकी डॉगमैटिक और विवादात्मक कृतियों में शामिल हैं: 'पेलगियनों के विरुद्ध एक प्रवचन'[4479] (415 के अंत में लिखा गया); 'धन्य मरियम की सदा-कुँवारीता पर हेल्विडियस के विरुद्ध एक ग्रंथ' (रोम में, 383); 'जोवनियिन के विरुद्ध' (बेथलहम में, 392 में) और 'विगिलियिंट के विरुद्ध'[4480] । इस प्रकार के कई कार्य ओरिजिनिस्ट विवादों से भी प्रेरित थे: 'एपिस्टल टू थियोफिलिस ऑफ़ अलेक्जेंड्रिया', 'अगेंस्ट जॉन, बिशप ऑफ़ जेरूसलम'[4481] (398–399)। 'रूफिनस की पुस्तकों के विरुद्ध क्षमायाचना की दो पुस्तकें'[4482] ' (402), 'रूफिनस के प्रबंध पर तीसरी पुस्तक या अंतिम उत्तर' (402)। एंटिओक की कलीसिया में फूट के कारण उत्पन्न विवादों में धन्य जेरोम की जबरन भागीदारी ने इस पुस्तक के लेखन को जन्म दिया: 'एक रूढ़िवादी ईसाई और एक लूसीफेरियन के बीच विवाद' (379 में, एंटिओक में)। विशुद्ध रूप से सैद्धांतिक कृतियों के उनके अनुवादों में, ओरिजिन की 'ऑन द प्रिंसिपिल्स' (399) और डिडिमस की 'ऑन द होली स्पिरिट' का ब्लेस्ड जेरोम द्वारा किया गया अनुवाद विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

धन्य जेरोम की नैतिक और तपस्वी गतिविधि का मुख्य रूप से उनके पत्रों में अभिव्यक्ति मिली; इनमें से, 120 निर्विवाद प्रामाणिकता वाले पत्र संरक्षित हैं। धन्य पिता के निम्नलिखित पत्र विशेष रूप से शिक्षाप्रद हैं: इलिओडोरस को लिखा 14वां पत्र, जिसमें संन्यासी जीवन की प्रशंसा की गई है; वर्जिनिटी के व्रत को बनाए रखने पर यूस्टोचियम को लिखा 22वां पत्र; पल्लवी मंत्रालय के आदर्श के चित्रण के संबंध में मठाधीशों के गुणों पर नेपोशियन को लिखा 52वां पत्र; और पाउलिनस को लिखा 58वां पत्र, जिसमें एक भिक्षु के लिए निर्देश दिए गए हैं। यहाँ ब्लेस्ड जेरोम द्वारा संकलित तपस्वियों के जीवन के विवरण भी शामिल हैं: थेब्स के पॉल (376), मठवासी मल्खुस और संत हिलारियन (दोनों लगभग 379 में लिखे गए); पत्र 103 यूस्टोचियम को बेथलेहेम की जेरोम की साथी पाउला की जीवनी है।

लेकिन धन्य जेरोम ने अपने अध्ययन के पसंदीदा क्षेत्र: पवित्र धर्मग्रंथों से संबंधित अपने कार्यों के माध्यम से ईसाई दुनिया में एक वास्तव में अमर विरासत अर्जित की। इस प्रकार के धन्य जेरोम के कार्यों को इस प्रकार विभाजित किया जा सकता है:

1) व्याख्यात्मक,

2) भाषाशास्त्रीय, और

3) व्याख्यात्मक। ब्लेस्ड जेरोम की निम्नलिखित कृतियाँ परिचयात्मक श्रेणी में आती हैं:

1) 'यहूदी नामों पर' – यह निबंध, जो जोसेफस, फिलो और ओरिजिन के प्रभाव में रचा गया था, में पवित्र शास्त्र की पुरानी और नई नियम की पुस्तकों में पाए जाने वाले विभिन्न विशेष नामों की एक रहस्यमय और रूपकात्मक भावना में व्याख्या दी गई है, जिन्हें वर्णानुक्रम में व्यवस्थित किया गया है। 380 में, धन्य जेरोम ने 'यहूदी स्थानों के स्थान और

[4479] पेलाजियस (5वीं सदी के एक विधर्मी) ने मूल पाप पर चर्च की शिक्षा को खारिज कर दिया, और इसे आदम द्वारा दिया गया पहला बुरा उदाहरण मात्र माना, न कि आदम के पतन के बाद मानव स्वभाव में अंतर्निहित पाप की प्रवृत्ति के रूप में; साथ ही, उन्होंने अनुग्रह के उस सिद्धांत को भी खारिज कर दिया जो ईश्वर द्वारा मनुष्य पर प्रदान की गई एक विशेष शक्ति है; उन्होंने अनुग्रह को प्रकृति और इतिहास में सभी अच्छी चीजों का ईश्वर का प्रकटीकरण समझा, जिसकी शुरुआत अस्तित्व के तथ्य से होती है और मसीह के माध्यम से परम सत्य के प्रकटीकरण पर समाप्त होती है।

[4480] उन्होंने संतों और शहीदों की पूजा, मठवासी जीवन के महिमीकरण, अवशेषों की पूजा और अच्छे कर्मों, उपवास और दान को दी जाने वाली अत्यधिक महत्वता का विरोध किया। सामान्य रूप से, उन्होंने अपने समय में मौजूद सभी प्रकार के चर्च-संबंधी और धार्मिक जीवन का विरोध किया, और सच्चे और झूठे में कोई अंतर नहीं किया।

[4481] ओरिजिन का अनुयायी।

[4482] अपोलाजी – απολογία – रक्षा।

नामों पर पुस्तक' नामक एक ग्रंथ लिखा, जो फलिस्तीन की स्थलाकृति और पुरातत्व के अध्ययन के लिए अत्यधिक महत्व का कार्य है। 'उत्पत्ति की पुस्तक पर यहूदी प्रश्न' – धन्य जेरोम की इसी प्रकार की एक और कृति – उत्पत्ति की पुस्तक के सबसे कठिन अंशों पर आलोचनात्मक टिप्पणियों से मिलकर बनी है, जो 'इटालिक', हिब्रू और ग्रीक सेप्टुआजिंट ग्रंथों के तुलनात्मक अध्ययन पर आधारित हैं। धन्य जेरोम की निम्नलिखित कृतियाँ भाषा-विज्ञान संबंधी प्रकृति की हैं: बाइबिल के तथाकथित 'इटालिक' लैटिन अनुवाद का संशोधन—जो उनके समय में उपलब्ध सेप्टुआजिंट संस्करणों पर आधारित था—जिसका लैटिन चर्च में व्यापक रूप से उपयोग किया जाता था, लेकिन जिसमें बहुत सारी त्रुटियाँ थीं। धन्य जेरोम ने यह कार्य 383 में पोप डेमासस के आदेश पर शुरू किया; सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण, उन्होंने चार सुसमाचारों और नए नियम की शेष पुस्तकों का संशोधन करना शुरू किया; पुराने नियम की पुस्तकों में से, उन्होंने भजन संहिता का संशोधन किया। पोप डेमासस के आदेश पर, भजन संहिता को तुरंत धार्मिक अनुष्ठानों में शामिल कर दिया गया और इसे 'रोमन भजन संहिता' के नाम से जाना जाने लगा[4483] । धन्य जेरोम द्वारा संशोधित नए नियम की पुस्तकें, आज भी पश्चिमी कैथोलिक चर्च में उपयोग की जाने वाली बाइबिल का हिस्सा हैं। जबकि बेथलहम में रहते हुए, धन्य जेरोम ने पहले ही पुराने नियम की पुस्तकों के लिए 'इटालिक पाठ' का संशोधन पूरा कर लिया था; उन्होंने यह कार्य एक बार फिर से भजन संहिता के साथ शुरू किया, जिसे उन्होंने ओरिजिन की हेक्साप्ला के आधार पर संशोधित किया। उन्होंने बाद वाली पांडुलिपि का खोज कीसेरिया में की, जहाँ तीसरी शताब्दी में ओरिजिन रहे थे।[4484] इस भजनसंग्रह को 'गैलिक भजनसंग्रह' के नाम से जाना जाता है, क्योंकि इसका उपयोग सबसे पहले गैलिक चर्च में हुआ था और बाद में इसे पश्चिमी चर्च में अपनाया गया। इसी प्रकार, धन्य जेरोम ने पुराने नियम की अन्य सभी पुस्तकों को सुधार दिया, लेकिन धन्य पिता स्वयं के अनुसार, 'एक व्यक्ति की दुष्टता के कारण', यह काम, यॉब की पुस्तक को छोड़कर, बिना किसी सुराग के खो गया है।

हिब्रू, 'काल्डीय', लैटिन और ग्रीक में अच्छी तरह से निपुण होने और ओरिजिन की हेक्साप्ला जैसे महत्वपूर्ण संसाधन अपने पास होने के कारण, धन्य जेरोम ने सभी पवित्र पुराने नियम की पुस्तकों का उनकी मूल भाषाओं से एक स्वतंत्र लैटिन अनुवाद करने का कार्य आरंभ किया; वह इटाला पाठ की कमियों को सुधारना चाहते थे। धन्य जेरोम ने यह कार्य लगभग 390 ईस्वी में शुरू किया और 405 ईस्वी में इसे पूरा किया, जिसके समय तक गैर-पवित्रग्रंथीय पुस्तकों - बारूक, 1 और 2 मैकाबियस, और सिरिक के पुत्र यीशु की बुद्धि को छोड़कर, संपूर्ण पुराना नियम अनुवादित हो चुका था। लगभग सभी पुस्तकों का अनुवाद हिब्रू मूल से किया गया था; केवल तोबित और यहूदित का अनुवाद 'खलदीय भाषा' से, और एस्तेर और दानियेल की पुस्तकों के कुछ हिस्सों का अनुवाद ग्रीक से किया गया था। धन्य जेरोम का अनुवाद त्रुटियों से रहित नहीं है, क्योंकि इसे बहुत जल्दबाजी में किया गया था: उदाहरण के लिए, तोबित की पुस्तक का अनुवाद एक ही दिन में किया गया था, और सोलोमन की पुस्तकों का अनुवाद तीन दिनों में; फिर भी, अपनी कमियों के बावजूद, धन्य जेरोम का अनुवाद अपनी सुंदरता, अभिव्यक्ति और प्रस्तुति की सटीकता के मामले में आज भी बेजोड़ है। इसलिए यह आश्चर्य की बात नहीं है कि ग्रेगरी महान के अधीन[4485] , यह अनुवाद लैटिन चर्च में आम उपयोग में आ गया, और 13वीं शताब्दी से इसे वल्गेट के नाम से जाना जाने लगा, यानी, एक ऐसा अनुवाद जो पूरे लोगों में व्यापक रूप से प्रचलित था।

धन्य जेरोम के व्याख्यात्मक कार्यों को अनुवादों (ओरिजिन के प्रवचनों के अनुवाद – यिर्मियाह नबी पर 14, यहेजकेल पर 14, गीतों के गीत पर 2, और सुसमाचार प्रचारक लूका पर 39) और उनके अपने कार्यों में विभाजित किया गया है; इनमें शामिल हैं: मत्ती के सुसमाचार पर एक भाष्य (398 ईस्वी), संत पॉल के गलातियों, एफिसियों, तीतुस और फिलिमोन को लिखे पत्रों पर, साथ ही प्रकाशितवाक्य की पुस्तक पर एक भाष्य। कई व्यक्तिगत व्याख्याएं उनके पत्रों में बिखरी हुई हैं। धन्य जेरोम की व्याख्याएँ अधिकांशतः भाषा-विज्ञान संबंधी व्याख्याएँ हैं, जो अक्सर रहस्यमय और रूपकात्मक प्रकृति की चर्चाओं का रूप ले लेती हैं; वे इसलिए भी मूल्यवान हैं क्योंकि इन व्याख्याओं में ओरिजिन, अपोलिनारिस और डिडिमस की अब खो चुकी कृतियों से संरक्षित अंश शामिल हैं।

[4483] हालांकि, यह शब्द केवल 16वीं सदी तक ही प्रचलन में था,

[4484] ओरिजिन की हेक्साप्ला पुराने नियम के पवित्र धर्मग्रंथों की पुस्तकों की एक सूची है, जो छह स्तंभों में विभाजित है (इसीलिए इसका नाम पड़ा): पहले स्तंभ में हिब्रू अक्षरों में हिब्रू पाठ था; दूसरे में – वही पाठ ग्रीक प्रतिलिपि में; तीसरे में – अक्विला का अनुवाद; चौथे में – सिम्माख का; पांचवें में – LXX की टीकाएं; और छठे में – थियोडोशियन का। LXX अनुवाद के साथ टिप्पणियां थीं जो हिब्रू पाठ से इसके मतभेदों को दर्शाती थीं।

[4485] 590 से रोम के बिशप।

धन्य जेरोम के ऐतिहासिक कार्य निम्नलिखित तक ही सीमित हैं: 'यूसेबियस ऑफ सेसरिया का क्रॉनिकल' का एक लैटिन अनुवाद, साथ ही इसमें एक मामूली संशोधन और वर्ष 378 तक इसकी निरंतरता, और 'प्रसिद्ध पुरुषों की सूची'। प्राचीन काल से संरक्षित सीमित ऐतिहासिक सामग्री को देखते हुए, पहला ग्रंथ काफी महत्व रखता है। दूसरा ग्रंथ, जो मुख्य रूप से यूसेबियस ऑफ़ सेसरिया के लेखन के आधार पर संकलित है, ईसाई साहित्य के संपूर्ण संग्रह का एक व्यवस्थित ऐतिहासिक अवलोकन प्रदान करता है, और इसका समापन थियोडोसियस द यंगर के शासन के 14वें वर्ष पर होता है। रचनाओं पर जानकारी के साथ-साथ लेखकों की जीवनियाँ भी शामिल हैं: इस सर्वेक्षण में, धन्य जेरोम मुख्य रूप से व्याख्यात्मक रचनाओं पर ध्यान केंद्रित करते हैं, जिनमें उन्होंने अपनी रचनाओं को भी शामिल किया है।

धन्य जेरोम ने अलारिक की गोथिक सेनाओं के आक्रमण (410 में) के तहत रोम के पतन को देखा। 'शाश्वत शहर', जो सदियों से राज्य शक्ति का जीवंत प्रतीक रहा था, 'आतंक, उथल-पुथल, अकाल और दरिद्रता, आग और खून-खराबे' का स्थान बन गया। इसके 'भव्य चर्च राख और मलबा बनकर रह गए'। रोम के उन भयानक दिनों में, धन्य जेरोम के करीबी लोग मर गए: मार्सेलिना और पैमाकियस। जब रोम के पतन की खबर धन्य जेरोम तक पहुँची, तो यह उन पर अचानक गरज की तरह टूटी और उन्हें गहरे दुख से भर दिया; इस दुख को उन्होंने अपने पत्रों में व्यक्त किया। उन्होंने पूछा, 'किसने विश्वास किया होता कि रोम, जो पूरे विश्व पर विजयों पर स्थापित था, विनाश का शिकार हो सकता है? कि वह, राष्ट्रों की जननी, उनके कब्रिस्तान में भी बदल सकती है? कि पूर्व की दुनिया के शासक के युवा पुरुषों और कुंवारी लड़कियों की भीड़ से पूर्व के सभी देश, मिस्र और अफ्रीका भर सकते हैं? ताकि बेतलेहेम का पवित्र नगर, दिन-प्रतिदिन यह देखने के लिए विवश हो जाए कि कैसे वे पुरुष और महिलाएँ, जो कभी ऐश्वर्य और वैभव में रहते थे, भिखारियों की तरह उसकी दीवारों पर उमड़ पड़े?" धन्य जेरोम, उनकी मदद करने में असमर्थ, उनके दुख में शरीक हुए, और उनके साथ आँसू बहाए। लेकिन ये आँसू उस पीड़ा की तुलना में राहत देने वाले थे जो उनकी आँखों से तब छलकने लगीं जब उन्हें पहली बार रोम के पतन और इस विश्व-कंपकंपा देने वाली घटना के साथ आए भयावह दृश्यों की खबर मिली: 'मेरी आवाज़,' वे प्रिंसिपिया को उनकी माँ मार्सेलिया की मृत्यु के संबंध में लिखे एक पत्र में कहते हैं, 'घुट रही है, और मेरी सिसकियाँ मुझे इन शब्दों को लिखवाना मुश्किल बना रही हैं। एक ऐसे शहर पर कब्ज़ा करना जिसने कभी पूरी दुनिया को जीता था; इतना ही नहीं, बल्कि तलवार के घाट उतरे जाने से पहले ही वह भूख से मर गया, और उन्हें बंदी बनाने के लिए मुश्किल से ही कुछ पुरुष मिले। भूखे लोगों का क्रोध घृणित नरभक्षण की ओर मुड़ गया: लोग एक-दूसरे के अंग फाड़ रहे थे; एक माँ ने भी अपने ही शिशु को नहीं बख्शा।' वर्ष 411 में, इस वृद्ध तपस्वी को एक नई परीक्षा का सामना करना पड़ा: बेदुइन अरबों के क्रूर आक्रमण से स्वयं बेथलहम दहशत से कांप उठा, और केवल ईश्वर की दया से ही धन्य जेरोम का समुदाय विनाश से बच गया। इस प्रकार, इन विपत्तियों के बीच, अपने सभी मित्रों के बाद जीवित रहकर, धन्य जेरोम ने दुखपूर्ण एकांत में अपने दिन बिताए। उनका रूप ही उनके द्वारा सहन किए गए कारनामों, कठिनाइयों और नुकसानों की गवाही देता था: उनका माथा, गहरी झुर्रियों से भरा, लंबे समय से सफेद बालों से घिरा हुआ था; उनकी कमजोर, धँसी हुई आँखों और पीले, दुबले-पतले चेहरे पर कई आँसुओं के निशान थे। धन्य जेरोम के उदास वृद्धावस्था में एकमात्र आशा की किरण बेथलहम में युवा पाउला का आगमन था—जो पाउला और अल्बिना (एक मूर्तिपूजक पुजारी की ईसाई पत्नी) की पोती थी—जो अपनी बेटी मेलानिया के साथ आई थी। शायद उन्होंने ही मरते हुए बुजुर्ग की आँखें बंद की थीं। धन्य जेरोम की मृत्यु का सटीक वर्ष अज्ञात है। हालाँकि, प्रोस्पर ऑफ़ अक्विटेन की एक गवाही बची हुई है, जिसमें कहा गया है कि धन्य जेरोम का निधन 30 सितंबर 420 को हुआ था। वे शायद एक काफी लंबी और गंभीर बीमारी के बाद निधन हो गए थे[4486] ; उन्हें मसीह के जन्मस्थान के पास एक गुफा में पाउला और यूस्टोचियम के पास दफनाया गया था। 642 में, धन्य जेरोम के अवशेषों को बेथलहम से रोम ले जाया गया और मैगियोरे में हमारी लेडी के चर्च में रखा गया; उनका वर्तमान ठिकाना अज्ञात है। केवल उनका पूजनीय हाथ ही बचा है, और इसे रोम में पियाज़ा फार्नेसे के पास उनके नाम पर स्थित चर्च में रखा गया है।

उसी दिन, अनास्तासियोपोलिस के बिशप, पूजनीय थियोडोर साइकोट के अवशेषों का स्थानांतरण किया गया (उनका जीवन 22 अप्रैल को देखें

[4486] इस बात से यह अनुमान लगाया जा सकता है कि वर्ष 420 के अंतिम नौ महीनों में धन्य जेरोम का एक भी पत्र प्राप्त नहीं होता है: जाहिर है, बीमारी ने उन्हें लिखने की क्षमता से वंचित कर दिया था।

29 जून

16 जून (पुराने कैलेंडर के अनुसार)

इसी दिन, पवित्र शहीद तिग्रीयस पुरोहित और शहीद यूट्रोपियस पाठक की स्मृति मनाई जाती है, जिन्होंने 5वीं शताब्दी की शुरुआत में कॉन्स्टेंटिनोपल में यातनाएँ सहन कीं।

उसी दिन, मेडिन (कलुगा) के पूजनीय टिकॉन की स्मृति।

हमारे पवित्र पिता अद्भुतकार तिकोन, अमाफ़ुंट के बिशप का जीवन

16 जून को स्मरण किया जाता है

संत टिकॉन का जन्म साइप्रस द्वीप के अमाफंट नगर ([4487]) में धर्मनिष्ठ ईसाई माता-पिता के यहाँ हुआ था। बहुत कम उम्र से ही, उनके माता-पिता ने उन्हें ईसाई भक्ति में पाला; उन्होंने उन्हें पवित्र ग्रंथों को पढ़ना सिखाया, जिसके लिए उन्हें चर्च के पुरोहित वर्ग में स्वीकार किया गया और चर्च पाठक के रूप में नियुक्त किया गया। अपने जीवन की पवित्रता के कारण, बाद में उन्हें अमाफ़ुंटे के बिशप, संत मेमनन द्वारा में एक डीकन के रूप में अभिषेक किया गया। जब बिशप मेमनन का निधन हो गया, तो अमाफ़ुंटे के ईसाइयों की सर्वसम्मति से संत टिकॉन को उनका उत्तराधिकारी चुना गया और साइप्रस के आर्चबिशप, संत एपिफानियस द्वारा[4488] में अभिषेक किया गया।

उस समय, साइप्रस द्वीप पर अभी भी कई मूर्तिपूजक थे जो प्राचीन मूर्तिपूजा से चिपके हुए थे।

मसीह के संत, संत टिकॉन ने एम्फंट के निवासियों को मूर्तिपूजा की भ्रांतियों से दूर करने और उन्हें मसीह परमेश्वर के ज्ञान की ओर ले जाने का महान कार्य हाथ में लिया; इस महान कार्य में प्रभु ने उनकी सहायता की, क्योंकि शैतान की शक्ति से एक बड़ी भेड़-बकरियों का झुंड छीनकर, संत ने उन्हें ऑर्थोडॉक्स कैथोलिक चर्च की झोपड़ी में ला दिया, और बकरियों को मसीह की भेड़ों में बदल दिया। संत टिकोन ने अमाफंट के आसपास की मूर्तियों को भी नष्ट कर दिया, और उन्होंने इन मूर्तियों के मंदिरों को उखाड़ फेंका और ध्वस्त कर दिया, जो राक्षसों का निवास स्थान थे।

प्रभु द्वारा सौंपी गई भेड़ों के झुंड का धर्मपरायणता से पालन करने के बाद, संत टिकोन बहुत वृद्धावस्था में दिवंगत हो गए। अपने कई चमत्कारों के लिए, जो न केवल उनके जीवनकाल में बल्कि उनकी मृत्यु के बाद भी हुए, संत टिकोन को 'चमत्कार-कर्ता' कहा जाता है।

संत टिकॉन को श्रेय दी जाने वाली कई चमत्कारों में से, उनकी दिव्य शक्तियों के केवल दो वृत्तांत आज तक सुरक्षित हैं[4489] । पहला चमत्कार, जो संत टिकॉन ने एक लड़के रहते हुए किया था, इस प्रकार था। संत टिकॉन के पिता, जो रोटी बना कर और बेच कर अपने परिवार का भरण-पोषण करते थे, अपने बेटे को रोटियाँ बेचने के लिए बाहर भेजते थे। लेकिन सेंट टिकॉन रोटी मुफ्त में गरीबों को दे देते थे। जब उनके पिता को यह पता चला, तो वे दुखी हुए और अपने बेटे पर गुस्सा होकर उसे डाँटने लगे। उस धर्मपरायण लड़के ने अपने पिता से कहा:

'पिताजी, आप ऐसे क्यों दुखी हैं, मानो आपने कुछ खो दिया हो? मैंने रोटी ईश्वर को उधार दी है, और पवित्र ग्रंथों में लिखा है: "जो ईश्वर को देता है, उसे सौ गुना मिलता है।"'

'यदि आप वहाँ लिखे पर विश्वास नहीं करते हैं, तो चलो अनाजघर चलते हैं, और वहाँ आप स्वयं देखेंगे कि ईश्वर अपने कर्जदारों का कैसे चुका करता है।'

यह कहकर वह अपने पिता के साथ अनाजघर में गया, और जब वे दरवाज़ा खोलने गए, तो उन्होंने देखा कि जो कमरा पहले खाली था, वह अब शुद्ध गेहूँ से भर गया था। ऐसा चमत्कार देखकर संत टिकॉन के पिता बहुत चकित हुए और

[4487] अमाफ़ुंट – अब साइप्रस द्वीप पर लिमिसोल शहर।

[4488] संत एपिफानियस – साइप्रस द्वीप के आर्चबिशप – का 403 ईस्वी में निधन हो गया; यह पवित्र व्यक्ति ईश्वर-प्रेरित शिक्षण की शक्ति और चमत्कार तथा भविष्यवाणी के वरदान से जगमगा उठे। – उनका पर्व दिवस 12 मई को है।

[4489] संत टिकॉन के जीवन और चमत्कारों के बारे में विस्तृत जानकारी (जैसा कि रोस्तोव के संत डेमेट्रियस लिखते हैं) आज तक संरक्षित नहीं रह सकी है, क्योंकि कई मुस्लिम आक्रमणों और समय के साथ, जिस प्रकार कई चर्च सुनसान हो गए, उसी प्रकार उनके भीतर के धार्मिक अभिलेख भी खो गए।

घुटनों के बल गरिकर, ईश्वर के सामने झुक गए, और उनका धन्यवाद कयिा; उस समय से, वह अपने बेटे से नाराज़ होना बंद हो गए और उन्होंने उसे जतिनी मर्जी हो उतनी रोटी गरीबों में बांटने से नहीं रोका।

संत टकिॉन द्वारा कयिा गया एक और चमत्कार इस प्रकार था:

एक वशिेष दाख की बारी में, माली जब अंगूर की बेलों से सूखी टहनयिों की छँटाई कर रहे थे, तो उन्होंने उन्हें बेकार समझकर फेंक दयिा। हालाँकि, संत टकिॉन ने इन टहनयिों को इकट्ठा कयिा और उन्हें अपने बगीचे में लगा दयिा। जैसे ही उन्होंने उन्हें लगाया, उन्होंने प्रभु से प्रार्थना की कि वह अंगूर की बेल की इन टहनयिों को नम्निलखिति चार गुण प्रदान करें: पहली, कि सूखी टहनयिाँ जमीन में जड़ पकड़ लें, जड़ें जमाएँ और बढ़ें; दूसरी, कि अंगूर की बेल की टहनयिाँ अंगूरों से लदी रहें; तीसरी, कि अंगूर मीठे और स्वास्थ्य के लिए लाभदायक हों; चौथा, कि उसकी अंगूर की बेलें कसिी भी अन्य से पहले पककर तैयार हो जाएँ। जब सेंट टकिॉन अगले सुबह बगीचे में गए, तो उन्होंने देखा कि उनकी प्रार्थना स्वीकार हो गई थी: सूखी टहनयिों ने जमीन में जड़ें पकड़ ली थीं और उनमें कलयिाँ फूट आई थीं; और जब वे उसी गर्मी में बढ़ने लगे, तो वे असामान्य और अस्वाभावकि रूप से अत्यधकि फलदायी साबति हुए; और जब अन्य अंगूरों के बागों में अंगूर अभी भी पक रहे थे, तब संत टकिॉन के बागों के अंगूर पूरी तरह से पके हुए, स्वाद में सुखद और स्वास्थ्य के लिए अत्यधकि फायदेमंद थे।

इन अंगूरों में ऐसी चमत्कारी शक्ति नि केवल संत टकिोन के जीवनकाल में, बल्कि उनके नधिन के बाद भी थी; हर साल, इनके फल अन्य अंगूर के बागों की तुलना में पहले पकते थे, इसलिए 16 जून - संत टकिोन के पर्व के दनि - इन अंगूरों से नकिाली गई शराब का उपयोग करके धर्मवधिि में यूखरस्ति की संस्कार मनाई जाती थी। केवल इन दो चमत्कारों से ही यह स्पष्ट है कि संत टकिोन एक चमत्कार करने वाले और ईश्वर के एक महान संत थे।

संत टकिोन की सेवा में यह भी वर्णति है कि उन्होंने भवष्यिवाणी करते हुए अपनी मृत्यु के समय का पूर्वानुमान लगाया और दूसरों को इसकी सूचना दी[4490] ।

इस चमत्कार करने वाले टकिॉन की ऐसी पवत्रिता के लिए, महमिा हमारे परमेश्वर को हो, अब और हमेशा और युगों-युगों तक। आमीन[4491] ।

ट्रोपारयिन, स्वर 1:

हे तपस्वी, देह में एक स्वर्गदूत और चमत्कार-कर्ता, आप प्रकट हुए हैं, हमारे ईश्वर-वाहक पति तकिोन: उपवास, जागरण और प्रार्थना के द्वारा, आपने दव्यि वर प्राप्त कए हैं, और वश्विास के साथ आपके पास आने वालों के रोगों और आत्माओं का उपचार कयिा है। उसकी महमिा हो जसिने आपको शक्ति दी, उसकी महमिा हो जसिने आपको मुकुट पहनाया, उसकी महमिा हो जो आपके माध्यम से सभी चंगाइयाँ करता है।

कॉन्टाकयिन, स्वर 3:

पवत्रि और ईश्वर-प्रसन्न तपस्या में नविास करके, आपने परमपति की शक्ति प्राप्त की, मूर्तयिों के मोह को ध्वस्त करने, लोगों को बचाने, दुष्टात्माओं को भगाने, और दुर्बलताओं को ठीक करने के लिए: इसी कारण हम आपको ईश्वर के मत्रि, धन्य टकिॉन के रूप में सम्मानति करते हैं।

लुखोव के चमत्कार-कर्ता हमारे पूजनीय पति टकिॉन की स्मृति

16 जून को स्मरणोत्सव

[4490] भजन 7, पद 2, और भजन 8, पद 1।

[4491] संत टकिॉन यूनानी सम्राट आर्कैडयिस (395–408) और उनके पुत्र थयिोडोसयिस के शासनकाल में रहते थे।

[4492]हमारे पूजनीय पिता टिकॉन लिटिल रूस, लिथुआनियाई क्षेत्रों के मूल निवासी थे, और उन्होंने वहाँ सैन्य सेवा की। लैटिनों के अत्याचार को सहन न कर पाने के कारण, वे मास्को के शाही शहर में चले गए और वहाँ एक धार्मिक जीवन जीने लगे। बाद में, अत्यधिक विनम्रता के कारण, उन्होंने अपने सामान को गरीबों में बाँट दिया, संन्यासी की शपथ ली और नदी के किनारे बस गए। वहाँ उन्होंने एक तपोवन की स्थापना की, कई शिष्यों को एकत्रित किया और ईश्वर की महिमा के लिए उपवास और संयम में स्वयं को समर्पित कर दिया। अपनी महान विनम्रता के कारण, उन्होंने अपने जीवन के अंत तक पुरोहित का पद स्वीकार नहीं किया। ईश्वर के पास अपने प्रस्थान की पूर्व सूचना पाकर और अपने शिष्यों को उनके आध्यात्मिक लाभ के लिए आवश्यक सभी बातें सिखा देने के बाद, आदरणीय व्यक्ति ने शाश्वत निवासों के लिए प्रस्थान किया[4493] ।

आदरणीय के निधन के कई वर्षों बाद, उनके अवशेष खोजे गए[4494] और उनके माध्यम से कई चमत्कार होने लगे। बाद में, श्रद्धालुओं के उत्साह के कारण, आदरणीय के तपस्या स्थल पर एक पवित्र मठ स्थापित किया गया, जो ईश्वर की कृपा से आज भी मौजूद है।

30 जून

17 जून (पुराना कैलेंडर)

पवित्र शहीदों मैनुएल, सावेल और इस्माइल का शहीदत्व

17 जून को स्मरणोत्सव

पवित्र शहीद मैनुएल, सावेल और इस्माइल जन्म से भाई थे और फारस की भूमि से आए थे[4495] । उनके माता-पिता प्रतिष्ठित लोग थे, लेकिन एक ही आस्था के नहीं थे: उनके पिता फारसी मूर्तिपूजक धर्म का पालन करते थे, जबकि उनकी माँ एक धर्मनिष्ठ ईसाई थीं। अपने शुरुआती वर्षों से ही, उन्होंने अपने बच्चों को ईसाई भक्ति में पाला - ठीक वैसे ही जैसे, उनके शिशु अवस्था में, उन्होंने उन्हें अपने दूध से पोषित किया था और ईश्वर के भय में पाला था; और धन्य पुरोहित यूनोइकोस ने इन पवित्र भाइयों को बपतिस्मा दिया और उन्हें ईश्वर का वचन सिखाया। जब वे वयस्क हुए, तो उन्हें सेना में भर्ती कर लिया गया। फिर भी, फारसी राजा अलामुन्दर[4496] को अपनी शारीरिक शक्ति समर्पित करते हुए, उन्होंने हर समय अपनी आत्मा से स्वर्गीय राजा, हमारे प्रभु यीशु मसीह की सेवा की, और अपने अच्छे कर्मों के द्वारा उन्हें प्रसन्न करने के लिए हर संभव प्रयास किया।

एक अवसर पर, उन्हें उनके राजा द्वारा ग्रीको-रोमन सम्राट जूलियन द एपोस्टेट[4497] के पास एक शांति संधि करने के उद्देश्य से भेजा गया था। जूलियन ने शुरू में उन्हें सम्मान के साथ स्वागत किया और, हर संभव दया दिखाते हुए, पूरे समय उनके साथ मैत्रीपूर्ण व्यवहार किया; लेकिन फिर, यह जानने पर कि वे ईसाई थे, वह उन पर क्रोध से भर गया, और सभी लोगों के सामान्य रीति-रिवाजों और कानूनों के विपरीत, उसने इन भाइयों को मसीह में उनके विश्वास के लिए यातनाओं का शिकार बनाया और उन्हें सबसे कठोर यातनाओं के बाद मौत की सजा दे दी।

उनकी शहादत इस प्रकार हुई।

[4492] लुख नदी, जो क्लाज़्मा नदी की बाएँ तट की एक सहायक नदी है, वर्तमान कोस्त्रोमा और व्लादिमीर प्रांतों से होकर बहती है और इसका स्रोत युर्येव जिले में है।

[4493] आदरणीय टिकॉन का 16 जून 1503 को निधन हो गया।

[4494] लगभग 1566 में एबॉट कॉन्स्टेंटिन ने उनके अवशेषों को अपरिवर्तनीय पाया, और तब से उनकी स्मृति मनाई जाती रही है।

[4495] उस समय, फारसी साम्राज्य ने टायग्रिस, फारसी की खाड़ी और कैस्पियन सागर के बीच एक विशाल क्षेत्र पर कब्जा किया हुआ था।

[4496] अलमुन्दार, एक फारसी राजा के रूप में, इतिहास में पूरी तरह से अज्ञात है; कुछ लोगों का मानना है कि वह फारसी सेनापतियों में से एक था।

[4497] जूलियन, कॉन्स्टेंटियस का बेटा और कॉन्स्टेंटाइन महान का भाई, 331 ईस्वी में पैदा हुआ था; उसे शुरू में ईसाई धर्म में पाला गया था, लेकिन 355 में सीज़र बनने पर, उसने खुले तौर पर ईसाई धर्म का परित्याग कर दिया, जिसके लिए उसे 'धर्मत्यागी' की उपाधि दी गई।

एक दनि, उस अधर्मी सम्राट ने बथिनिया में ओर्जया ट्रायगॉन[4498] नामक स्थान की यात्रा करने का नश्चिय कया, क्योंक वहाँ जल्द ही एक अधर्मी मूर्तपूिजक त्योहार होने वाला था। जब वह जहाज से कॉन्स्टेंटनिोपल से कालसेडोन[4499] पहुँच गया और उस स्थान पर पहुँचा जसिका हमने उल्लेख कया है, तो उसने वहाँ इकट्ठी हुई लोगों की बड़ी भीड़ के साथ तुरंत अपने घृणति उत्सव करना शुरू कर दया, मूर्तयिों की पूजा करते हुए और राक्षसों को अनगनित बलदिान चढ़ाते हुए: – और इस प्रकार यहाँ गायन, संगीत और ढोल की थाप के साथ अखंड भोज शुरू हो गया – और दुष्ट मूर्तपूिजक देवताओं के सम्मान में, उस समय यहाँ कई घृणति और अत्याचारपूर्ण कृत्य कए गए।

लेकनि मसीह के सेवक, मैनुएल, साउल और इसहाक, सम्राट के साथ वहाँ मौजूद होकर, इस अधर्मी उत्सव को देखना भी नहीं चाहते थे; एक बार मस्ती करने वालों से अलग होकर और थोड़ी दूरी पर खड़े होकर, उन्होंने इन लोगों के भ्रम और भूल पर रोया और वलिाप कया, और प्रभु परमेश्वर से प्रार्थना की – अपने लिए, क वे मूर्तपूिजक बलदिानों के साथ संबंध में अशुद्ध न हो जाएँ, और उन सभी के लिए जो भूल में थे, क प्रभु उन्हें सत्य के ज्ञान की ओर ले जाएँ।

'हे प्रभु,' उन्होंने प्रार्थना की, 'इन लोगों को बुराई से उत्पन्न इतनी बड़ी तबाही में रहने न दें, और अपनी बुद्धमिान प्राणयिों को इतनी पागलपन की स्थतिि में रहने न दें; – क्योंक यहाँ वे उन पत्थरों और पेड़ों से भी अधकि मूर्ख हैं जनिकी वे पूजा करते हैं: कम से कम, उनकी लकड़ी की मूर्तयिाँ, जो नर्जीव और बेसुध प्राणी हैं, यह नहीं जानतीं क उनके सामने क्या हो रहा है; परन्तु ये लोग, जनि्हें आपने एक तर्कशील आत्मा से सम्मानति कया है और जो आपकी छवि और समानता में बनाए गए हैं, न तो देखते हैं और न ही समझते हैं क वे क्या कर रहे हैं या वे कसिको दव्यि श्रद्धांजल दे रहे हैं: वे अंधकार में चलते हैं, भटक गए हैं, और अनंत वनिाश की ओर बढ़ रहे हैं।

जबक संत दूर खड़े होकर इस प्रकार रो रहे थे और प्रार्थना कर रहे थे, सम्राट ने बलदिान चढ़ाने वालों और उनके साथ भोज करने वालों को देखकर, और अपने बगल में फारसी दूतों को न पाकर, आज्ञा दी क उन्हें ढूंढकर उसके पास बुलाया जाए, ताक वे भी उसके साथ आनंद मना सकें। तब राजा के एक कोषाध्यक्ष ने, उन्हें अलग खड़ा हुआ देखकर, उन्हें शाही भोज में बुलाना शुरू कया: उसने सोचा क वे भी मूर्तपूिजक दुष्टता से संबंधति हैं। लेकनि मसीह के सेवकों ने उन्हें आमंत्रति करने वाले राजा के कोषाध्यक्ष को एक स्वर में उत्तर दया:

'हमसे दूर हो जाओ: हम उस वश्विास को नहीं त्यागेंगे जसिमें हम अपने बचपन से पले-बढ़े हैं, और इसलिए हम अपने प्रभु को नहीं छोड़ेंगे और न ही तुममें रहने वाले राक्षसों की पूजा करेंगे; और ऐसा कभी न हो क हिम इस स्पष्ट भ्रम में भागीदार बनें: हम इतने पागल या मूर्ख नहीं हैं क हिम जीवति ईश्वर, हमारे सृष्टकिर्ता, को ठुकरा दें और एक नर्जीव सृष्ट की पूजा शुरू कर दें। न ही हमने इतना लंबा सफर तय कया और यहाँ इस लिए आए क हिम अपने धर्म को त्याग दें, बल्क फारसी और ग्रीक-रोमन राज्यों के बीच शांत स्थापति करने के लिए आए हैं। और आपका राजा, साथ ही जो लोग उनके वचिारों से सहमत हैं, यह अच्छी तरह जानते हैं क वे हमें न तो भटका पाएंगे और न ही हमें उनके अधर्मीपन की ओर मोड़ने के लिए मना सकेंगे, भले ही वे हमें आग और यातनाओं में डाल दें और हमारे जीवन तक छीन लें।

तब कोषाध्यक्ष, संतों से हटकर, ये बातें जूलयिन को बताने गया, जो उन पर तुरंत क्रोध और रोष से भर उठा; फरि भी, उसने उस समय उन्हें यातनाएँ न देने का नश्चिय कया, कहीं ऐसा न हो क इससे उसके अधर्मी उत्सवों में खलल पड़ जाए, बल्क उसने इसे सुबह तक के लिए टाल दया और केवल यह आदेश दया क ईश्वर के सेवकों को जेल में बंद कर दया जाए।

जहाँ तक उनकी बात है, जब वे कालकोठरी की ओर जा रहे थे, तो उन्होंने प्रभु के लिए इस प्रकार गाया:

– *'आओ, हम यहोवा के लिए गीत गाएँ; हम उद्धार की चट्टान परमेश्वर के लिए जयजयकार करें; हम धन्यवाद के साथ उसकी उपस्थति में आएँ; हम गीतों के साथ उसके लिए जयजयकार करें'* (भजन संहति 94:1-2)।

और फरि:

– *'हमारे परमेश्वर के समान महान परमेश्वर कौन है!'* (भजन संहति 76:14)। हम तो उसकी प्रजा हैं और उसके हाथों का काम हैं, और हम सदा उसी को पुकारते रहेंगे।

अगले दनि, जूलयिन ने न्यायपीठ पर बैठकर फारसी दूतों को अपने सामने बुलाने का आदेश दया और उनसे इस प्रकार कहना शुरू कया:

[4498] माना जाता है क ट्रगिोन वास्तव में कालसेडोन के पास मूर्तयिों को समर्पति एक मंदरि था।

[4499] चल्केडोन बथिनिया में, बोस्फोरस के दक्षणिी छोर पर, बज़िान्टयिम के सामने स्थति एक शहर है।

– 'हे सज्जनो, तुम्हें तुम्हारे राजा ने हमारे प्रति विफादार और अनुकूल मन से हमारे पास भेजा है, ताकि हमारे दोनों राज्यों के बीच सभी द्वारा लंबे समय से प्रतीक्षित शांति को बहाल किया जा सके। लेकिन यह शांति हमारे बीच केवल प्रेमपूर्ण सामंजस्य और पारस्परिक मित्रता के माध्यम से ही बहाल हो सकती है। फिर भी, आपके और हमारे बीच कैसा सामंजस्य हो सकता है, और हमारे प्रति आपका प्रेम कहाँ है, यदि कल आपने उन्हीं देवताओं के सम्मान में उत्सव मनाने और उसका आनंद लेने में हमारे साथ शामिल होने से इनकार कर दिया, जिन्हें आप फारसी भी पूजते हैं[4500] ? आखिरकार, फारसी भी हमारी ही तरह सूर्य, चंद्रमा और सितारों—सबसे तेजस्वी अग्निमय शक्ति—और हमारे अन्य देवताओं का सम्मान करते हैं; तो फिर, आपने हमारे साथ उनके सम्मान करने से और उनकी उपासना में भाग लेने से इनकार क्यों किया—अगर केवल इतना ही था कि हमारे शांति के शर्तें और भी मजबूत और अधिक स्थायी हो सकें? लेकिन यदि आप हमारे देवताओं का तिरस्कार करते हैं और उनका अपमान करते हैं, और यदि आप हमसे सहमत नहीं हैं, तो इसका अर्थ है कि आप हमारे पास शांति स्थापित करने के लिए नहीं, बल्कि उसे भंग करने और शत्रुता तथा युद्ध को फिर से शुरू करने के लिए आए हैं।

इस पर संतों ने उत्तर दिया:

'हम अपने राजा की ओर से शांति की शर्तें तय करने के लिए आपके पास आए हैं, ताकि आपके सैनिक हमारी सीमाओं को न पार करें, और न ही हमारे सैनिक आपकी, कहीं ऐसा न हो कि हम एक-दूसरे के देशों को तबाह कर दें; और ताकि हमारे व्यापारी हमेशा आपके राज्य में आ-जा सकें, और आपके व्यापारी हमारी भूमि में; और यह कि दोनों ही बिना किसी नुकसान के घर लौट सकें; 'हमें इन्हीं शर्तों पर आपके पास भेजा गया है, और देवताओं पर चर्चा करने के लिए बिल्कुल भी नहीं। हर कोई जिस देवता की पूजा करना चाहे, और जैसे भी चाहे, करने दे। क्योंकि राज्यों के बीच युद्ध कभी भी आस्था के कारण नहीं होता; बल्कि, शहरों, क्षेत्रों और उनकी सीमाओं और हदों को लेकर हमेशा कलह, झगड़े और लड़ाइयाँ होती हैं। फिर भी आप, शांति की सभी बातों को—जिसके लिए हमें आपके पास भेजा गया था—एक तरफ रखकर, अन्य विषयों पर बात करना शुरू कर रहे हैं, ऐसे विषय जिन पर न तो आपको और न ही हमें चर्चा करनी चाहिए। क्योंकि आप हमसे अपनी साम्राज्य की भलाई के बारे में, न ही हमारी राज्य के बारे में, जो आपके राज्य से सटा हुआ है, शांतिपूर्ण संबंधों के बारे में बात कर रहे हैं, बल्कि आप लगातार हमसे देवताओं के बारे में सवाल कर रहे हैं और आस्था के मामलों पर उपदेश दे रहे हैं। यदि आपकी इच्छा है, तो यह जान लीजिए: यद्यपि हम जन्म से फ़ारसी हैं, परन्तु विश्वास से मसीही हैं, जिन्हें हमारी माता ने धर्मपरायणता में पाला-पोसा और हमारे आध्यात्मिक पिता, एक्कणोइकोस नामक पुरोहित ने, हमें सच्चे विश्वास की शिक्षा दी। और हमारे देश में पहले भी कई लोग रहे हैं जिन्होंने हमें हमारे प्रभु यीशु मसीह से हटाकर मूर्तिपूजा की ओर मोड़ने की कोशिश की, लेकिन वे इसमें सफल नहीं हुए: हमारे प्रभु की कृपा से हम अपने विश्वास की घोषणा में अडिग और स्थिर बने रहे; अब हम प्रभु की सहायता में भी अपनी आशा रखते हैं - कि यहाँ कोई भी हमें हमारे पवित्र विश्वास से नहीं हटाएगा, और कोई भी हमें राक्षसों की सेवा की ओर मोड़ने के लिए मना नहीं लेगा, जो वास्तव में व्यर्थ है और हर तरह के भ्रम, त्रुटि और मिथ्या से भरी है।

तब यातना देने वाले ने क्रोध से भरकर उनसे कहा:

'यह कैसे हो सकता है कि तुम, जो साधारण और अज्ञानी लोग हो – जो हमारी भाषा भी नहीं जानते – इतनी निर्लज्जता और इतने मूर्खतापूर्ण शब्दों के साथ हमारे उस विश्वास का अपमान करने की हिम्मत करते हो, जिसे हम, शिक्षित लोग जिन्होंने सभी विद्वितापूर्ण ज्ञान में पूर्णता हासिल की है, मानते हैं?' हम भी आपके उपदेशों से परिचित हैं। आखिरकार, आप जानते हैं कि मैंने भी आपके ईसाई ग्रंथों का अध्ययन किया है, लेकिन यह देखकर कि उनमें झूठ के सिवा और कुछ भी नहीं है और कोई सच्चाई नहीं है, मैंने उन्हें तुरंत खारिज कर दिया, ताकि उनमें लिखी गई बातों की अस्पष्टता के कारण किसी भी भ्रम में न पड़ जाऊँ। और जो लोग आपकी पुस्तकों में विश्वास करते हैं और उनके अनुसार आचरण करते हैं, उनमें से किसने कभी स्वयं को गौरवशाली और पूर्ण साबित किया है, और उसने अपने जीवन में कौन से वीरतापूर्ण कार्य किए हैं? इसलिए मैं तुम्हें सलाह देता हूँ: इस बचकाने और झूठे तर्क को त्याग दो और इसके बजाय उस बात पर विश्वास करो जिसे महानतम दार्शनिक लंबे समय से सिखाते आ रहे हैं। यदि, हालाँकि, तुम मेरी सद्भावनापूर्ण सलाह

[4500] अपने दार्शनिक और धार्मिक विश्वासों के मामले में, जूलियन एक समिश्रणवादी था; यानी, उसने सभी धार्मिक शिक्षाओं में से वही चुना जो उसे पसंद था और जो आम तौर पर उसकी विश्वदृष्टि के अनुरूप था; वह एक सर्वोच्च ईश्वर में विश्वास करता था, लेकिन उसने उसे मिथ्रास या पूर्वी संप्रदाय के सूर्य देवता के रूप में पहचान लिया; और जैसा कि अच्छी तरह से ज्ञात है, फारसी भी अपने प्रमुख देवता के रूप में सूर्य की पूजा करते थे।

स्वीकार करने को तैयार नहीं हो, तो, तुम्हारी इच्छा के विरुद्ध, तुम उन यातनाओं को सहोगे जिनका मैं तुम्हें तुरंत शिकार बनाऊँगा।

इस पर संतों ने उत्तर दिया:

'हमने अपने प्रभु से यह सीखा है कि शरीर को मारने वालों से न डरें, और न ही यह सोचें कि हमें उन लोगों का उत्तर देना चाहिए जो हमें पीड़ा पहुँचाना चाहते हैं; क्योंकि पवित्र आत्मा स्वयं हमारी पीड़ा में हमें बल देंगे और हमें उत्तर देने के लिए वचन और निर्भयता प्रदान करेंगे। हम, तथापि, आपसे पूछेंगे: आप हममें क्या पागलपन देखते हैं—आप जो स्वयं को सभी मनुष्यों में सबसे बुद्धिमान मानते हैं? और वास्तव में, कौन अधिक मूर्ख है – वह जिसने सच्चे ईश्वर और सभी चीजों के सृष्टिकर्ता को जान लिया है और उसे भक्तिपूर्वक पूजता है, या वह जो जीवित ईश्वर से मुंह मोड़कर निर्जीव प्राणियों, पत्थरों और पेड़ों, या उनके समान किसी भी चीज़ की पूजा करता है? सचमुच, वह पागल है जो परमेश्वर के बजाय एक निर्जीव वस्तु का सम्मान करता है; परन्तु वह बुद्धिमान है जो जीवित परमेश्वर की सेवा करता है। क्योंकि यह, सबसे बढ़कर, मानव मन का कार्य है: अपने सृष्टिकर्ता, सभी उपहारों के दाता को जानना, उस पर विश्वास करना, और उसकी निष्ठापूर्वक सेवा करना; परन्तु अपने सृष्टिकर्ता और कल्याणकर्ता को न जानना—और अपनी आत्मा-विनाशकारी शैतान के लिए परिश्रम करना—मूर्खता की पराकाष्ठा है। और आपके प्राचीन दार्शनिक, जो ऐसे हानिकारक भ्रम में फँसे हुए थे, केवल बुद्धिमान प्रतीत होते थे, लेकिन वास्तव में मनुष्यों में सबसे मूर्ख थे – पवित्र प्रेरित के शब्दों में: *'बुद्धिमान होने का दावा करते हुए, वे मूर्ख बन गए'* (रोमियों 1:22), और उनके मूर्ख हृदय अंधकारमय हो गए; और तुम उन्हीं जैसे हो गए हो, यदि उनसे भी बदतर नहीं: क्योंकि जहाँ वे अपनी मूर्खता में बने रहे, सच्चे धर्म के बारे में कुछ नहीं जानते थे और उन्होंने पहले कभी इसकी घोषणा भी नहीं की थी, वहीं तुम, जो पवित्र बपतिस्मा से प्रबुद्ध होकर और ईसाई धर्म में पाले गए हो, हमारे ईश्वर मसीह से मुँह मोड़ गए हो; और अब, प्रभु में जो सच्चा विश्वास रखते हैं, वे तुम्हें ईसाई के बजाय यूनानी, और एक धार्मिक व्यक्ति के बजाय एक अधर्मी और अधार्मिक व्यक्ति कहते हैं।

शहीदों के शब्दों से गहराई से उत्तेजित होकर, जूलियन, जो असीम क्रोध से भर गया था, ने आदेश दिया कि उन्हें तुरंत क्रूरतापूर्वक यातना दी जाए। सबसे पहले, उन्हें नग्न कर दिया गया और, जमीन पर लिटाकर, उनकी पीठ और पेट पर कठोर कोड़ों से निर्दयता से पीटा गया; फिर उन्हें यातना स्थल पर लटका दिया गया, उनके हाथ और पैर एक पेड़ पर ऊँचाई पर कीलों से ठोक दिए गए, और उनके पूरे शरीर को लोहे के कांटों से खुरच दिया गया। लेकिन मसीह के शहीदों ने, इन भयानक यातनाओं को बहादुरी से सहते हुए, अपनी आँखें स्वर्ग की ओर उठाईं और प्रभु से प्रार्थना करते हुए, उनसे इस प्रकार पुकारा:

'हे प्रभु! आप, जिन्हें एक बार विश्वासघाती यहूदियों ने स्वयं वृक्ष पर कीलों से ठोंका था और जिन्होंने, क्रूस पर अपने कष्ट और मृत्यु के द्वारा, संसार के पापों को मिटा दिया, – हम पर दृष्टि डालो, जो अब वृक्ष पर घायल लटके हुए हैं; और चूंकि हमारी प्रकृति कमजोर है, हमें स्वर्ग से अपनी सहायता भेजो और हमें हमारे दुखों से राहत प्रदान करो, क्योंकि केवल आपकी आशा में ही हमने इस शहीद के कार्य को करने का साहस किया है। ये यातनाएँ कितनी क्रूर और भयानक हैं – हे प्रभु, आप स्वयं जानते और देखते हैं; फिर भी, हे सबसे प्रिय यीशु, आपके प्रेम के कारण, वे हमें प्रिय हैं!

जब संत इस प्रकार प्रार्थना कर रहे थे, तब प्रभु का स्वर्गदूत अचानक उनके सामने प्रकट हुआ; फिर भी केवल पवित्र शहीद ही उसे देख सकते थे, जबकि अधर्मी लोगों की अंधाधुंध आँखें इसके योग्य नहीं थीं। इस स्वर्गदूत ने पीड़ितों को सांत्वना देकर उनके दुखों में इतनी शांति प्रदान की कि ऐसा लगा मानो उन्हें अब अपने घावों का दर्द महसूस नहीं हो रहा था और, ऐसा प्रतीत हुआ, जैसे उन्होंने ये सभी यातनाएँ कभी झेली ही न हों। तब जूलियन ने पवित्र शहीदों को पेड़ से उतारने का आदेश दिया, और जब उन्हें उतार लिया गया, तो उसने उनसे इस तरह कहा, मानो उनका मज़ाक उड़ा रहा हो:

'देखो, मैं तुम्हें कितनी दया दिखा रहा हूँ, तुम्हें इससे भी बड़े कष्टों में नहीं डाल रहा। मुझे उम्मीद है कि इस मामूली सज़ा के बाद, तुम अब हमारे साथ सहमत हो जाओगे।'

लेकिन पवित्र शहीदों ने, उसके शब्दों में चापलूसी को पूरी तरह समझते हुए, उससे और भी अधिक साहस के साथ उत्तर दिया:

'हे मसीह के शत्रु, यह मत सोचो और न ही आशा करो कि हम प्रभु में अपने विश्वास का त्याग करेंगे। तो आगे बढ़ो और हमारे शरीरों को यातना दो, यदि तुम हमें और अधिक यातना देना चाहते हो: हम कुछ भी सहन करने के लिए तैयार

हैं। चाहे तुम हमें घावों, , आग, तलवार, या इससे भी अधिक भयानक किसी चीज़ के हवाले करो – हम इन सब को यातना के बजाय आनंद मानेंगे: हम इसे सब यीशु के लिए, जिन्होंने हमसे प्रेम किया है, प्रसन्नता से सहन करेंगे!

तब दुष्ट जूलियन ने, यह देखकर कि मैनुअल, भाइयों में सबसे बड़े होने के नाते, बाकी लोगों की तुलना में और भी निडरता से बोल रहा था, उसे एक तरफ ले जाने का आदेश दिया; जबकि वह स्वयं, शेष दो भाइयों—सावेल और इस्माइल—से बातचीत शुरू करके, उनसे चालाकी से बात करने लगा, और कहने लगा:

'यद्यपि तुम एक ही माता-पिता की संतान हो, पर तुम किसी भी तरह से एक जैसे स्वभाव के नहीं हो: तुम्हारा सबसे बड़ा भाई तो तुम्हारा भाई कहलाने के भी योग्य नहीं है, क्योंकि वह जिद्दी, क्रोधित, निर्लज्ज, बहुत बोलने वाला और बहस करने वाला है; और, अपनी मूर्खता पर अडिग रहते हुए, वह तुम्हें भी अपने साथ खींचता है और तुम्हें अपने लिए सबसे अच्छा चुनने से रोकता है; जबकि तुम, जैसा कि मैं देख सकता हूँ, अच्छे, सौम्य स्वभाव के हो, झगड़ालू नहीं, और, आम तौर पर, समझदार हो। इसलिए, अब मेरी अच्छी सलाह मानो – अपने भाई को उसके व्यर्थ भ्रम और मूर्खतापूर्ण विरोध में मरने दो – हमारे देवताओं को एक बलिदान चढ़ाओ, और फिर तुम उन्हें, और हमसे भी, महान दया प्राप्त करोगे – समृद्ध उपहार और सम्मान।

हालाँकि संतों ने, इन चापलूसी भरे शब्दों को सुनने की इच्छा भी न रखते हुए, ज़ोर-ज़ोर से जूलियन की गद्दारी की निंदा करनी और उसके पागलपन का अपमान करना शुरू कर दिया।

तब जूलियन, एक बार फिर क्रोध से उबलकर, ने उन्हें यातना स्थल पर ले जाने और उनकी पसलियों को जलती हुई मोमबत्तियों से झुलसाने का आदेश दिया। शहीदों ने, तथापि, इन यातनाओं को वीरतापूर्वक सहन किया, हर समय प्रभु की महिमा करते हुए अपने यातनाकर्ता को फटकारते रहे। तब जूलियन ने मैनुएल को दूसरी बार अपने सामने लाने का आदेश दिया और—चापलूसी और धमकियों के बीच—एक बार फिर उसे मूर्तियों की पूजा करने के लिए मजबूर करने लगा। अंत में, यह देखकर कि वह मसीह की अपनी स्वीकारोक्ति में चट्टान की तरह अडिग था, उसने उसे ठीक वैसे ही यातना देना शुरू कर दिया जैसे उसने अपने भाइयों को दी थी: उसने आदेश दिया कि प्रत्येक शहीद के सिर में एक लोहे का कील ठोका जाए, और उनके हाथों और पैरों के कीलों से तेज कांटे ठोक दिए जाएँ; और फिर, जबकि वे पहले से ही बहुत बुरी तरह घायल थे, उसने आदेश दिया कि उनकी कलगी तलवार से काट दी जाए और उनके शरीर जला दिए जाएँ।

और इस प्रकार पवित्र शहीदों को फाँसी के स्थान पर ले जाया गया – एक स्थान जिसे कॉन्स्टेंटिनोवो कहा जाता था – जहाँ, अपना रक्त बहाने से पहले, उन्होंने प्रभु से यह अंतिम प्रार्थना की:

हे निष्पाप ईश्वर, जो अनंत हैं, जिन्होंने शून्य से सभी चीज़ों को अस्तित्व में लाया, जिन्होंने अंतिम दिनों में हमारे उद्धार के लिए स्वयं को नम्र किया, एक दास के रूप में मनुष्यों के बीच बसने, और हमें पाप के बंधनों से मुक्त करने तथा अपने राज्य के उत्तराधिकारी बनाने के लिए क्रूस का दुख सहने, – अपने सेवकों को शान्ति में ग्रहण कर और हमें उन लोगों में गिन जिन्होंने प्राचीन काल से तुझे प्रसन्न किया है; क्योंकि, तेरे पवित्र नाम के लिए, हम स्वेच्छा से इस तलवार के घाव और इस वर्तमान जीवन से अपने प्रस्थान को स्वीकार करते हैं, – और तेरी ओर मुड़ते हैं, हे सर्व-दयालु प्रभु, इन लोगों को, जो शैतान द्वारा दास बनाए गए हैं, जो इतनी बड़ी संख्या में हम पर घेरा डालते हैं, ज्ञान और समझ का प्रकाश प्रदान कर, ताकि सत्य को जानकर, वे केवल तेरी ही सेवा करें और तुझ से अनंतकाल का उद्धार प्राप्त करें।

जब पवित्र शहीद इस प्रकार प्रार्थना कर रहे थे, तो ऊपर से एक आवाज सुनाई दी:

'आओ, ताकि तुम महिमा का मुकुट प्राप्त करो, क्योंकि तुमने बहादुरी से अपना कार्य पूरा किया है।'

पवित्र शहीदों का सिर 17 जून को कलम किया गया।

लेकिन जब दुष्ट सेवकों ने अपने अधर्मी राजा की एक और आज्ञा—मसीह के यातना-भोगियों के शरीरों को जलाने की—को पूरा करने का प्रयास किया, तो तुरंत, ईश्वर की आज्ञा से, पृथ्वी काँप उठी, और जहाँ संतों का शव पड़ा था वह स्थान गहराई में धँस गया; और इस प्रकार बनी खाई में शहीदों के शव समा गए और छिप गए, ताकि उनके अत्याचारियों के दुष्ट हाथ उन्हें फिर छू न सकें और आग की शक्ति उन्हें राख में न बदल सके; – और सभी सेवक डरकर भाग गए।

तब वहाँ खड़े बहुत से लोग, ऐसा चमत्कार देखकर, मसीह पर विश्वास करने लगे और यूनानी विधर्म को त्यागकर, मसीही समुदाय में शामिल हो गए।

दो दिन बीत जाने के बाद, जब ईसाई उस स्थान पर दिन-रात प्रभु से अविराम प्रार्थना कर रहे थे, तब भूमि फिर से फट गई और संतों के शरीरों को सतह पर ले आई; और देखो, एक अकथनीय सुगंध दूर-दूर तक फैल गई।

तब वशि्वासयिों ने, परम आनंद से भरकर, प्रेमपूर्वक संतों के शरीरों को उठाया और उन्हें उस अद्भुत स्थान पर सम्मानपूर्वक दफनाया; इसके बाद, पवत्रि शहीदों की कब्र से सभी रोगयिों के लिए प्रचुर मात्रा में चंगाई होने लगी।

और दुष्ट धर्मत्यागी जूलयिन को कुछ ही समय बाद एक उल्लेखनीय और भयानक मृत्यु मलिी।

फ़ारसी राजदूतों—पवत्रि शहीदों मैनुएल, सावेल और इस्माइल—की हत्या के बाद, वह अपनी पूरी सेना के साथ फ़ारस के लिए रवाना हो गया[4501] । उसे राक्षसों ने अपने जादूगरों—झूठे नबयिों—के माध्यम से गुमराह कयिा, जन्हिोंने उसकी जीत और फ़ारसयिों के अधीन होने की भवष्यिवाणी की थी। अपने दूतों के कत्लेआम की खबर सुनकर फारस का राजा गहरे दुख और महान क्रोध से भर गया: यह जानकर कि कानून तोड़ने वाला जूलयिन उसके खलिाफ मार्च कर रहा था, उसने भी अपनी पूरी सेना को इकट्ठा कयिा और अपने राज्य की सीमा पर मोर्चा संभालकर अपने घमंडी दुश्मन से लड़ने की तैयारी की। और जब दोनों सेनाएँ आमने-सामने आईं, तो एक भयंकर युद्ध छड़ि गया। लेकनि जल्द ही फ़ारसयिों ने बढ़त बना ली और रोमन सेना को हरा दयिा, इस प्रकार जूलयिन की सारी शक्ति को कुचल दयिा।

यही उस युद्ध के दौरान था जब अधर्मी जूलयिन पर ईश्वर का प्रकोप पड़ा: उस अधर्मी सम्राट को एक अदृश्य हाथ ने मार गरिाया और वह बड़ी पीड़ा में मर गया, और अंत में उन सभी फारसयिों के लिए एक उपहास बन गया जनिके खलिाफ वह इतनी गर्व से मार्च कर गया था, अपनी व्यर्थ आशा के साथ - उन राक्षसों की प्रसन्नता के लिए जनिमें वह वशि्वास करता था और जनि पर वह इतना भरोसा करता था।

इस प्रकार क्रूर उत्पीड़न और यातनाओं से मुक्त होकर, ईसाइयों ने अपने उद्धारकर्ता, मसीह परमेश्वर की महमिा की, जनिके लिए हम भी, परमपति और पवत्रि आत्मा के साथ, अब और हमेशा और युगों-युगों तक सम्मान और महमिा अर्पति करते हैं। आमीन[4502] ।

कॉन्टाकयिन, स्वर 2:

हे सर्व-धन्य, मसीह के वशि्वास से घायल, इस प्याले को भक्तपिूर्वक पीकर, आपने फारस के अत्याचार और अहंकार को पृथ्वी पर पटक दयिा; आप जो त्रमिूर्ति के समान संख्या में हैं, हम सभी के लिए प्रार्थना करें।

जुलाई

1 जुलाई

18 जून (पुराना कैलेंडर)

पवत्रि शहीदों लयिोन्टयिस, हाइपैटयिस और थयिोडुलस का कष्टकथा

18 जून को स्मरणोत्सव

वेस्पासयिन के शासनकाल में[4503] , रोम में हैड्रयिन नामक एक सेनेटर रहता था – एक क्रूर, नर्दियी व्यक्ति, जो हर प्रकार के बुरे कामों में नपिुण था। उसने सुना कि ईसाई, मूर्तपिूजा की बलदिानों से घृणा करते हुए, रोमनों और यूनानयिों द्वारा पूजे जाने वाले देवताओं का अपमान करते थे, क्योंकि वे केवल एक सच्चे ईश्वर – मसीह – को ही मानते थे, जनिके धर्म में उन्होंने कई लोगों को दीक्षति कयिा; अपने व्यर्थ देवताओं के प्रति उत्साह से भरकर, एड्रयिन राजा के पास

[4501] जैसा कि अच्छी तरह से ज्ञात है, जूलयिन ने 5 मार्च 363 को फारसयिों के खलिाफ एक अभयिान शुरू कयिा।

[4502] इन संतों का गंभीर स्मरणोत्सव बहुत प्राचीन है; उनके नधिन के तीस साल बाद, 395 में थयिोडोसयिस महान ने कॉन्स्टेंटनिोपल में उनके सम्मान में एक चर्च बनवाया, जबकि भकि्षु जर्मनस, जो बाद में पैट्रआर्क बने (मृत्यु 740), ने उनकी स्मृति में एक कैनन रचा।

[4503] 70 से 79 तक शासन कयिा।

गया और उससे ईसाइयों को मूर्तियों की पूजा करने के लिए मजबूर करने, और जो देवताओं की पूजा करने से इनकार करते हैं उन्हें यातना देने और मारने का अधिकार देने का अनुरोध किया। राजा ने हैड्रियन को फिनिसिया की भूमि में हेगेमोन[4504] नियुक्त किया, जिसे मसीह में सभी विश्वासियों को सताने का अधिकार दिया गया। जब एड्रियन, रोम छोड़कर, पहले ही फिनिसिया के पास पहुँच रहा था, तो उसे पता चला कि ट्रिपोली[4505] शहर में एक सैन्य कमांडर, लियोन्टियस था, जो पूर्वजों के कानूनों का उल्लंघन कर रहा था; अर्थात्, प्राचीन देवताओं की निंदा करके, उसने लोगों को उनकी पूजा न करने या उन्हें बलिदान न चढ़ाने की शिक्षा दी, जिससे वह अपने कई श्रोताओं को मूर्तियों की पूजा से दूर कर रहा था। हैड्रियन ने तुरंत ट्राइब्यून[4506] हाइपैटियस को सैनिकों के एक दल[4507] के साथ ट्रिपोली भेजा, और उसे निर्देश दिया कि वह लियोन्टियस को पकड़कर उसके आगमन तक उसे हिरासत में रखे।

मसीह के एक सेवक, लियोन्टियस ग्रीस का मूल निवासी था; लंबा, मजबूत और मर्दाना, वह युद्ध में अपनी बहादुरी के लिए प्रसिद्ध था, जिसमें उसने कई जीत हासिल कीं; इस कारण से, लियोन्टियस सैनिकों के बीच प्रसिद्ध और सम्मानित था। इसके अलावा, स्वाभाविक रूप से बुद्धिमान, व्यापक जीवन अनुभव और विद्वतापूर्ण शिक्षा के स्वामी, लियोन्टियस परामर्श और शासन के पुरुष थे। यह जानते हुए कि केवल एक ही सच्चा ईश्वर, प्रभु यीशु मसीह हैं, लियोन्टियस ने अपना पूरा जीवन उनकी सेवा में समर्पित कर दिया, न केवल वचन में बल्कि कर्म में भी विश्वास करते हुए। गरीबों के प्रति दयालु, वह भूखे को भोजन कराता, नग्न को वस्त्र पहनाता, और अजनबियों को आश्रय देता था; संक्षेप में, उसने हर अच्छे कार्य से स्वयं को सुसज्जित किया, जिसके लिए प्रभु ने उसे विजय का मुकुट प्रदान कर सम्मानित किया।

जब सेना का काफिला त्रिपोली के पास पहुँचा, तो ट्रिब्यून हाइपैटियस अचानक और अकस्मात बुखार से बीमार पड़ गए, जिसका कारण उन्होंने अपने सैनिकों को इस प्रकार समझाया:

'मैं जानता हूँ कि यह बीमारी मुझ पर क्यों आई है: देवता मुझसे नाराज़ हैं क्योंकि, इस यात्रा पर निकलते समय, मैंने उनके योग्य बलिदान नहीं चढ़ाया; अब, वे मुझे इस बीमारी से दंडित कर रहे हैं।'

जब उन्होंने देखा कि ट्रिब्यून वास्तव में एक गंभीर बीमारी से पीड़ित था, तो सैनिकों ने उसके प्रति सहानुभूति व्यक्त की और उसके दुख में भागीदार बने; तीन दिन बीत गए, और बीमार व्यक्ति ने कुछ भी नहीं खाया, क्योंकि उसकी बीमारी घड़ी-घड़ी बिगड़ती जा रही थी, और जानलेवा साबित होने की आशंका थी। तीसरे और चौथे दिन की रात को, प्रभु का स्वर्गदूत ट्रिब्यून के पास एक दर्शन में प्रकट हुआ और कहा:

'यदि तुम ठीक होना चाहते हो, तो अपने सैनिकों के साथ मिलकर तीन बार स्वर्ग की ओर पुकारो: "हे लियोन्टियस के ईश्वर, मेरी सहायता करो!" यदि तुम ऐसा करोगे, तो तुम तुरंत ठीक हो जाओगे।'

तेजी से उठकर अपनी आँखें खोलते हुए, उस भीतरी ज्वर से ग्रस्त ट्रिब्यून ने उस पवित्र देवदूत को देखा, जो बर्फ़ जैसे सफ़ेद वस्त्रों में, एक सुंदर युवक के रूप में उसके सामने खड़ा था।

उसने देवदूत से कहा, 'मुझे तो सैनिकों के साथ लियोन्टियस को पकड़ने और हेगेमोन एड्रियन के आने तक उसे हिरासत में रखने के लिए भेजा गया है, फिर भी आप मुझसे लियोन्टियस के देवता से मदद मांगने को कह रहे हैं।'

जैसे ही उसने ये शब्द कहे, स्वर्गदूत उस बीमार ट्रिब्यून की दृष्टि से ओझल हो गया; भयभीत होकर, ट्रिब्यून ने अपने बगल में सो रहे मित्रों को जगाया और उनसे कहा:

'जो मैंने देखा है, वह सुनो: मैं जैसे ही अपनी पहली नींद में गया, एक तेजस्वी युवक मेरे सामने प्रकट हुआ और उसने हम सभी को मिलकर देवता लियोन्टियस से प्रार्थना करने की सलाह दी, और इसके बदले में ठीक होने का वादा किया। जागने पर, मैंने उस युवक को अपनी आँखों से देखा, जिसके बाद वह जल्द ही गायब हो गया।'

उसके दोस्तों ने कहा, 'यह कोई बहुत मुश्किल काम नहीं है, हम सब ऐसा करेंगे, बशर्ते कि आप ठीक हो जाएँ।'

ट्रिब्यून के दोस्तों में से एक, थियोडुलस नाम का, इस दर्शन से विशेष रूप से चकित था और उसने उस युवक की सटीक शक्ल-सूरत के बारे में उस बीमार व्यक्ति से विस्तार से पूछा; ट्रिब्यून ने बड़ी सहजता से उसकी जिज्ञासा को शांत कर दिया। और थियोडुलस का हृदय उस ईश्वर लियोन्टियस के प्रति प्रेम से भर गया, जिसे वह पहले नहीं जानता था। जब सैनिक, अपनी नींद से जागकर, उस बीमार ट्राइब्यून के चारों ओर इकट्ठा हुए और उससे उस दर्शन के बारे में

[4504] हेगेमोन – एक प्रांतीय गवर्नर।

[4505] त्रिपोली – एक बंदरगाह वाला तटीय फिनिशियाई शहर; यह लेबनान की सबसे ऊँची चोटी के तल पर स्थित था।

[4506] ट्राइब्यून – 1,000 सैनिकों के एक दस्ते का कमांडर।

[4507] स्पिरा – एक कंपनी (प्रेरितों के काम 10:1) या एक रेजिमेंट (प्रेरितों के काम 21:31)।

सुना जो उसे हुआ था, तो वे सभी, बिना किसी अपवाद के, अपने पैरों पर खड़े हो गए, और, आकाश की ओर देखते हुए, उस पीड़ित व्यक्ति के साथ मिलकर चिल्लाए:

'लियोन्टियस के ईश्वर, हमारी सहायता करो!'

तुरन्त ही वह ट्रिब्यून उठ खड़ा हुआ, बिलकुल स्वस्थ, मानो वह कभी बीमार ही न हुआ हो; दोपहर के भोजन का समय हो गया, और वह ट्रिब्यून अपने मित्रों के साथ खाने, पीने और आनंद करने लगा। उस ट्रिब्यून पर घटित चमत्कार ने थियोडुलस को और भी अधिक आश्चर्य से भर दिया – वह अलग बैठकर, मौन में विचार कर रहा था:

– लियोन्टियस कौन है, और लियोन्टियस का ईश्वर कौन है?

इस बीच, उसके मित्रों ने थियोडुलस को भोज में शामिल होने का निमंत्रण दिया, लेकिन उसने भोजन की बजाय भूख को प्राथमिकता देते हुए एक भी निवाला चखने से इनकार कर दिया। हालाँकि, जब उसने देखा कि शराब के नशे में सैनिक हेगेमोन के आदेश भूल चुके थे, तो थियोडुलस ने उनसे कहा:

'सुनो: हैड्रियन कल या परसों हमसे मिल जाएगा, फिर भी हमारा इरादा उस व्यक्ति को खोजने का नहीं है जिसे हमें पकड़ने का आदेश मिला है; यदि तुम चाहो, तो ट्रिब्यून और मैं तुमसे पहले शहर जाकर उस व्यक्ति की तलाश करेंगे जिसे हमें ढूंढने भेजा गया है।'

ट्रिब्यून को अपने साथ चलने के लिए मना लेने के बाद, थियोडुलस और हाइपैटियस दोनों शहर की ओर रवाना हो गए।

जैसे ही वे उस पहाड़ की चोटी पर चढ़े जहाँ त्रिपोली स्थित था, लियोन्टियस उनसे मिलने बाहर आया और इन शब्दों से उनका अभिवादन किया:

'भ्रातियों, प्रभु में आनन्दित हो!'

'खुश हो जाओ, भाई!' ट्रिब्यून और थियोडुलस ने उत्तर दिया।

"तुम यहाँ किसे खोजने आए हो?" लियोन्टियस ने पूछा।

उन्होंने कहा, 'सम्राट वेस्पेसियन को पता चला है कि इस शहर में लियोन्टियस नाम का एक व्यक्ति रहता है—एक कुलीन, बुद्धिमान, सदाचारी व्यक्ति और एक बहादुर योद्धा; हमें यह पता लगाने के लिए भेजा गया है कि वह कहाँ रहता है; हमारे पीछे हेगेमोन एड्रियन आ रहे हैं, जिन्हें सम्राट ने इस पूरे फिनिशियाई क्षेत्र के प्रशासन का कार्य सौंपा है; हेगेमोन स्वयं देवताओं द्वारा प्रिय माने जाने वाले लियोन्टियस को देखना चाहते हैं, ताकि वे उन्हें बड़े सम्मान के साथ सम्राट के पास भेज सकें; और संपूर्ण रोमन सीनेट लियोन्टियस को देखना चाहता है, क्योंकि सभी युद्ध में उनकी वीरता, शासन में उनकी कुशलता, उनकी धार्मिकता और उनके कई अन्य गौरवशाली कार्यों से परिचित हैं।

यह सुनकर, धन्य लियोन्टियस ने कहा:

'मैं देखता हूँ कि आप अजनबी हैं और नहीं जानते कि इस शहर में क्या हो रहा है। 'मेरे साथ चलो; अपनी यात्रा से आराम करो, और मैं तुम्हें लियोन्टियस दिखाऊंगा, जिसे तुम अपने देवताओं का मित्र कहते हो; सच्चाई यह है कि, वह उन देवताओं का मित्र कतई नहीं है जिन्हें तुम पूजते हो, बल्कि उसे एक ईसाई, प्रभु यीशु में विश्वास करने वाला जानो!' हाइपैटियस और थियोडुलस ने आपस में कहा:

'यह आदमी कौन है जो लियोन्टियस को ईसाई कह रहा है? क्या वह शायद उसका रिश्तेदार है?'

तब उन्होंने उस आदमी से पूछा, जिसे वे नहीं जानते थे:

'मेरा नाम क्या है?'

उसने उत्तर दिया, 'जहाँ तक मेरे नाम का प्रश्न है, वह धर्मग्रंथों में लिखा है: *"तू सर्प और साँप पर पैर रखेगा; तू सिंह और अजगर को रौंदेगा"* (भजन संहिता 90:13), क्योंकि मुझे सिंह—शैतान, अदृश्य शत्रु—और सर्प—शासक, दृश्य शत्रु—को रौंदना है; मुझे उन पर विजय प्राप्त करनी है, ठीक वैसे ही जैसे मैं साँपों और बेसिलिस्कों, उसके सलाहकारों, राक्षसों के उत्साही सेवकों पर करता हूँ। और जब मैं सिंह की पूरी सेना पर विजय प्राप्त कर लूँगा, तो वही कर्म मेरा नाम प्रकट कर देगा।"

ये शब्द ट्राइब्यून और थियोडुलस को पहेली जैसे लगे; उनका अर्थ समझने की कोशिश करते हुए, वे उस असाधारण व्यक्ति के पीछे-पीछे हैरानी में उसके घर तक चले गए। संत लियोन्टियस ने उनके लिए भोजन बनाकर उनकी मेजबानी की। उसे चखने के बाद, उन्होंने अपने मेज़बान से कहा:

'सज्जन, हम आपकी आतिथ्य से बहुत प्रसन्न हैं! हम पर अपनी कृपा पूरी कीजिए—हमें वह लियोन्टियस दिखाइए, जिसे हम ढूंढ रहे हैं। जब एड्रियन आएगा, तो हम उसे बताएंगे कि आपने हमारे लिए कितना कुछ किया है, और इसके लिए वह आपको बहुत सम्मान देगा, ताकि आप राजा के दोस्तों की संगति में आ सकें।'

संत ने उत्तर दिया, 'मैं ही लियोन्टियस हूँ, जिसे आप ढूंढ रहे हैं, मैं यीशु मसीह का वह सैनिक हूँ जिसे पकड़ने के लिए हैड्रियन ने आपको भेजा था।'

तब ट्राइब्यून और थियोडुलस लियोन्टियस के पैरों पर गिर पड़े, और कहने लगे:

'हे सर्वोच्च ईश्वर के सेवक! हमारे पापों को क्षमा करें और अपने ईश्वर से हमारे लिए शीघ्र मध्यस्थता करें, ताकि वह हमें भी मूर्तिपूजक दुष्टता और क्रूर दानव हैड्रियन से मुक्त कर दें, क्योंकि हम ईसाई बनना चाहते हैं।'

तब उन्होंने उसे बताया कि कैसे एक स्वर्गदूत उस बीमार व्यक्ति के पास आया था और कैसे लियोन्टियस द्वारा ईश्वर का आह्वान करने के बाद ट्रिब्यून की बीमारी ठीक हो गई थी।

मसीह की शक्ति के इस प्रकट होने को देखकर, संत लियोन्टियस आनंद से भर गए; उन्होंने खुद को ज़मीन पर क्रूस के आकार में लोट दिया, और आँसुओं के साथ ईश्वर से प्रार्थना करने लगे:

– हे प्रभु परमेश्वर, *'जो चाहता है कि सभी लोग बचें और सत्य के ज्ञान तक पहुँचें* (1 तीमु. 2:4), इस घड़ी हम पर दृष्टि डालें: आपने उन लोगों को, जिनका मुझे अनुसरण करना था, मेरे पीछे चलने के लिए प्रेरित किया है; मुझे, अपनी भेड़ को, संरक्षित करें, और मुझे और उन सभी को अपनी दया के प्रकाश से प्रकाशित करें। उन पर अपने पवित्र आत्मा का अनुग्रह उंडेलें, उनमें एक शुद्ध हृदय बनाएँ, और उन्हें अपने पवित्र चिह्न से अंकित करके, उन्हें अपने अजेय योद्धा बनाएँ – उन्हें शत्रु, शैतान और उसकी सेवकों के विरुद्ध हथियार दें और उन्हें बलवान करें। हे प्रभु, ये आपके सेवक अदृश्य सर्प और दृश्य, दुष्ट जानवर, हैड्रियन का सिर कुचलें।

संत लियोन्टियस की प्रार्थना के बाद, एक प्रकाशमान बादल ट्रिब्यून हाइपैटियस और उनके मित्र थियोडुलस पर उतरा और उन्हें वर्षा से स्नान दिया, जबकि संत लियोन्टियस ने बपतिस्मा ग्रहण कर रहे लोगों पर परम पवित्र त्रिमूर्ति—पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा—के नाम का उच्चारण किया।

इस चमत्कारी बपतिस्मा के बाद, उन्होंने ईश्वर की स्तुति करते हुए कहा:

'महिमा तेरी हो, हे मेरे ईश्वर! तू जो अपने प्रेम करने वालों की प्रार्थनाओं पर ध्यान देता है और अपने भय करने वालों की इच्छाओं को पूरा करता है!'

नए बपतिस्मा प्राप्त करने वालों को सफेद वस्त्र पहनाने के बाद, संत लियोन्टियस ने आदेश दिया कि उनके आगे जलती हुई मोमबत्तियाँ ले जाई जाएँ। उसी क्षण, बाकी सैनिक, जो मार्च में पीछे रह गए थे, शहर में पहुँचे; उन्होंने लियोन्टियस के साथ-साथ अपने ट्राइब्यून और थियोडुलस के बारे में पूछताछ की। जब सैनिकों ने उन्हें पाया, तो वे जलती हुई मोमबत्तियों और हाइपैटियस और थियोडुलस द्वारा पहने गए सफेद परिधानों को देखकर पूरी तरह से चकित और हैरान रह गए। यह जानकर कि बाद वाली ईसाई धर्म अपनाकर बपतिस्मा ले चुकी थी, सैनिक पहले तो हैरान रह गए, और फिर उन्होंने अपना आक्रोश व्यक्त करना शुरू कर दिया; उसी समय, हाइपैटियस और थियोडुलस के बपतिस्मा की खबर शहर के कुछ नागरिकों तक पहुँची; उन्होंने यह नारा लगाते हुए दंगा भड़काया:

'जो हमारे देवताओं का अपमान करते हैं, उन्हें जला दो!'

शहर में कलह और उथल-पुथल मच गई: कुछ लोग लियोन्टियस और उसके नेतृत्व वाले अन्य ईसाइयों का बचाव कर रहे थे, जबकि अन्य उन्हें मौत की सजा देना चाहते थे; फिर भी, वे हेगेमोन के आने का इंतजार कर रहे थे, और अपने आप ईसाइयों को कोई नुकसान पहुँचाने की हिम्मत नहीं कर रहे थे।

दो दिन बाद, हेगेमोन एड्रियन शहर के पास पहुँचे; उनसे मिलने आए नागरिकों ने उन्हें लियोन्टियस और उसके नेतृत्व वाले अन्य ईसाइयों के बारे में सब कुछ बताया।

उन्होंने कहा, 'एक व्यक्ति, जिसका नाम लियोन्टियस है और जो विश्वास से एक ईसाई है, अपनी ही जानी-पहचानी जादुई तरकीबों से सभी को हमारे देवताओं से दूर कर रहा है। साथ ही, वह एक ऐसे व्यक्ति की महिमा करता है जिसे यहूदियों ने उकसावे के बाद मार डाला था, और जिसे पिलातुस ने कोड़े मारने के बाद सूली पर चढ़ा दिया था।' अंत में, इसी लियोन्टियस ने जादू-टोने के द्वारा शाही सैनिकों को भी बहका दिया है, उन्हें गलीलियाई धर्म अपनाने के लिए मना लिया है; और अब तीन दिनों से वह उन्हें—पहले उन्हें सफेद वस्त्र पहनाकर—अपने घर में बिना किसी निकलने के रास्ते के कैद करके रखे

हुए है, और उनके साथ मलिकर वह अपने मसीह की महमिा करता है, जसिे कभी सूली पर चढ़ाया गया था, और हमारे देवताओं का अनगनित अपमानजनक शब्द कहकर उन पर नदिा करता है।

हैड्रयिन ने तुरंत लयिोन्टयिस, ट्राइब्यून हाइपैटयिस और थयिोडुलस को गरिफ्तार करने के लिए सैनकि भेजे, और आदेश दयिा कि उन्हें उनके मुकदमे तक कैद में रखा जाए। तब, शहर में प्रवेश करने पर, हेगेमोन ने आराम का एक दनि घोषति कयिा। जेल में रहते हुए, संत लयिोन्टयिस ने अपने साथयिों को ईसाई धर्म में अथक रूप से शकि्षति कयिा और उन्हें आगे आने वाली शहादत के लिए मजबूत कयिा, भवषि्य के पुरस्कार की ओर इशारा करते हुए; उन्होंने पूरी रात प्रार्थना और भजन गाने में बतिाई, ईश्वर की महमिा करते हुए। अगली सुबह, गवर्नर न्यायालय में अपनी सीट पर बैठ गया, जब पवत्रि कैदयिों को पूछताछ के लिए कालकोठरी से बाहर लाया गया।

'क्या तुम लयिोन्टयिस हो?' राज्यपाल ने संत लयिोन्टयिस से पूछा।

'मैं हूँ,' उत्तर मलिा।

'तुम्हारा पद क्या है,' राज्यपाल ने पूछना जारी रखा, 'और तुमने अपनी जादू-टोने से इन सैनकिों को—जो कभी हमारे राजा के वफादार सेवक थे—कैसे बहकाया कि वे अब तुम्हारे ईश्वर की सेवा करें?'

'मैं,' संत लयिोन्टयिस ने समझाया, 'अपने मसीह का एक सपिाही हूँ; मैं उस सच्चे प्रकाश का पुत्र हूँ *"जो संसार में आने वाले हर मनुष्य को प्रकाशति करता है"* (यूहन्ना 1:9), और जो कोई भी इस प्रकाश के पास आता है वह ठोकर नहीं खाएगा (यूहन्ना 11:9–10)। अब हाइपैटयिस और थयिोडुलस जानते हैं कि जसिि प्रकाश का मैं उल्लेख करता हूँ, उसका स्रोत, उसका कार्य और उसकी पूर्ति स्वयं मसीह हैं, जो परमेश्वर के पुत्र और बनिा आरंभ वाले परमेश्वर हैं, जो पति के समतुल्य हैं, प्रकाश से प्रकाशमान, परमेश्वर से परमेश्वर; उसे जान लेने के बाद, उन्होंने आपके देवताओं को त्याग दयिा है, जो लकड़ी, पत्थर या मूक जानवरों की हड्डयिों से बने हैं; ये नष्क्रयि और शक्तहिीन देवता आसानी से नष्ट हो जाते हैं।

संत लयिोन्टयिस के नडिर भाषण से क्रोधति होकर, राज्यपाल ने अपने सेवकों को उसे पीटने का आदेश दयिा। जैसे ही वह पटिाई सहन कर रहा था, उसने अपनी आँखें स्वर्ग की ओर उठाईं, जहाँ से उसे मदद की उम्मीद थी, और राज्यपाल से कहा:

'मूर्ख यातनाकर्ता! तुम, मुझे पीड़ा पहुँचाने की सोचकर, वास्तव में स्वयं को और भी अधकि पीड़ा पहुँचा रहे हो, क्योंकि तुम्हारा अपना हृदय तुम्हें भीतर ही भीतर खाए जा रहा है।'

लंबी पटिाई के बाद, राज्यपाल ने सेंट लयिोन्टयिस को वापस जेल ले जाने का आदेश दयिा; फरि वह हाइपैटयिस और थयिोडुलस की ओर मुड़ा:

'तुमने बचपन से रचे-बसे पतिृसत्तात्मक रीति-रिवािजों को क्यों त्याग दयिा और अपने सैन्य सम्मानों को क्यों छोड़ दयिा, जसिसे राजा को दुख हुआ?'

'हमें,' संतों ने उत्तर दयिा, 'स्वर्ग के राजा से एक बेहतर इनाम मलिा है: उन्होंने हमें *"ईश्वर का भोजन, जो स्वर्ग से उतरता है"* (यूहन्ना 6:33), और मसीह के पार्श्व से बहे मदरिा का प्याला प्रदान कयिा है।'

'इतनी घोर और बेतुकी बातें,' हेड्रयिन ने कहा, 'तुम्हें अधर्मी लयिोन्टयिस ने सखिाई हैं, लेकनि मैं तुमसे कहता हूँ: राजा की इच्छा पूरी करो। क्या तुम उसके आदेश को नहीं जानते – कि देवताओं का सम्मान करने वाले सैनकिों को महान सम्मान और पुरस्कार दएि जाएँ, और जो उनसे मुंह मोड़ते हैं, उन्हें क्रूर यातनाओं के अधीन करके मृत्युदंड दयिा जाए?

'हमारा सैन्य सम्मान स्वर्ग में है,' संतों हाइपैटयिस और थयिोडुलस ने आपत्ति जताई, 'और इसलिए हमारे साथ जो चाहो करो; नीच देवताओं के एक उत्साही रक्षक के रूप में, तुम हम जैसे नर्दिोषों पर युद्ध छेड़ रहे हो; लेकनि जल्द ही तुम्हारा जीवन भी नष्ट हो जाएगा—तुम्हारे दनि गनि-चुने हैं।'

क्रोधति होकर एड्रयिन ने ट्रबि्यून को नग्न कर के यातना वृक्ष पर लटकाने और उसके शरीर को लोहे की पंजाओं से खुरचने का आदेश दयिा। जहाँ तक थयिोडुला की बात है, उसने उसे जमीन पर लटिाकर बेरहमी से पीटने का आदेश दयिा। संतों ने इन सभी यातनाओं को धैर्यपूर्वक सहन कयिा; संत लयिोन्टयिस की शकि्षा को याद करते हुए, उन्होंने केवल नम्निलखिति प्रार्थना का उच्चारण कयिा: *'हे प्रभु, [मुझे] बचाओ, क्योंकि कोई धर्मी नहीं है'* (भजन संहति 11:1)।

जब यातनाकर्ता ने देखा कि संत मसीह में अपने विश्वास पर दृढ़ और अडिग रहे, तो उसने उन्हें तलवार से सिर कलम करके मौत की सज़ा सुनाई। जब उन्हें मृत्यु के घाट उतारने के लिए ले जाया जा रहा था, तो संत हाइपैटियस और थियोडुलस ने गाया:

– हे प्रभु, तू हमारा शरणस्थान है! हम अपनी आत्माओं को तेरे हाथों में सौंपते हैं।

उन्होंने आनन्दपूर्वक मसीह के लिए अपनी गर्दनें तलवार के नीचे रखीं और सिर कटने के बाद, प्रभु के पास चले गए ताकि उनके दाहिने हाथ से उनके लिए तैयार किया गया मुकुट प्राप्त कर सकें।

इसके बाद, संत लियोन्टियस को एक बार फिर राज्यपाल की अदालत में लाया गया।

'लियोन्टियस, अपनी जान बचा,' राज्यपाल ने उससे कहा, 'ताकि तुम उस भयानक यातना को न झेलो, जो ट्रिब्यून और थियोडुलस ने झेली, जिन्हें तुमने भटकाया था।' मेरी आज्ञा मानो, देवताओं को बलिदान चढ़ाओ, और तब तुम्हें न केवल मुझसे, बल्कि स्वयं राजा और रोमन सीनेट से भी बड़ा सम्मान मिलेगा, क्योंकि राजा और कुलीनों को तुम्हें देखने की बहुत इच्छा है।"

'मैं नहीं चाहता,' संत लियोन्टियस ने उत्तर दिया, 'कि मैं तुम्हारे राजा का चेहरा देखूँ, जो मेरे ईश्वर का शत्रु और घृणास्पद है। बेहतर होगा, यदि तुम चाहो, तो तुम, हैड्रियन, मेरे मसीह के मित्र बन जाओ; और यदि तुम ऐसा बनोगे, तो मैं तुम्हें दिखाऊँगा कि तुम्हें अनंत जीवन में कौन-सा सम्मान, धन-संपत्ति और मोक्ष प्राप्त होगा।'

एक दुष्ट हँसी के साथ, एड्रियन ने पूछा:

'क्या तुम स्पष्ट रूप से चाहते हो कि मैं भी वही मुक्ति प्राप्त करूँ जो ट्राइब्यून और थियोडुलस को मिली? तुम मूर्ख मनुष्य! या क्या तुम नहीं जानते कि वे किस दंड से नष्ट हुए?'

'वह दंड,' संत ने आपत्ति जिताई, 'कोई दंड नहीं है, बल्कि जीवन का सर्वोत्तम, शांति और आनंद है: अब वे आनंदित हैं, क्योंकि उन्होंने स्वर्गदूतों की पंक्तियों में अपनी जगह बना ली है।'

'मैं जो कह रहा हूँ, उसे ध्यान से सुनो,' राज्यपाल ने संत लियोन्टियस से कहा: 'कौन सा होश-हवास में आदमी इस सौर प्रकाश और महान देवताओं डिया, अपोलो, नेपच्यून, वीनस और बाकी देवताओं को केवल इसलिए ठुकरा देगा, ताकि वह अपने जीवन का अंत एक शर्मनाक और पीड़ादायक मृत्यु में करे?' सचमुच, आपके जादू से मोहित लोगों के अलावा कोई नहीं!

'क्या तुमने शासक से नहीं सुना,' संत लियोन्टियस ने इगेमोन से पूछा, 'पवित्रशास्त्र के वचन: *"क्योंकि जातियों के सब देवता मूरतियाँ हैं"* (भजन संहिता 95:5), *"जो उन्हें बनाते हैं वे उनके समान होंगे, और जो उन पर भरोसा करते हैं वे भी वैसे ही होंगे"* (भजन संहिता 134:18); सभी समझदार लोगों में से कौन एक बहरे पत्थर या एक निर्जीव वस्तु जैसा बनना चाहेगा—जो वास्तव में आपके देवता हैं—ताकि उनकी बलि चढ़ाकर वे अनंतकालिक मृत्यु में नष्ट हो जाएँ?

अपने प्रचंड क्रोध में, यातना देने वाले ने चार बलवान सेवकों को उस शहीद को, जो जमीन पर लोट रहा था, बिना किसी दया के पीटने का आदेश दिया, जबकि एक विशेष उद्घोषक को यह पुकारना था:

'जो हमारे देवताओं का अपमान करते हैं और राजाओं की आज्ञाओं की अवहेलना करते हैं, वे इसी प्रकार की मृत्यु से नष्ट हो जाएँगे।'

उन्होंने उस पवित्र शहीद को तब तक पीटा जब तक कि मारने वाले थक नहीं गए। लेकिन संत लियोन्टियस ने यातना देने वाले से कहा:

'भले ही तुम मेरे पूरे शरीर को एक ही घाव में बदल दो, फिर भी तुम मेरे मन को नहीं जीतोगे, और न ही मेरी आत्मा के स्वामी बनोगे।'

तब राज्यपाल ने संत को यातना वृक्ष पर लटकाने और उसके पूरे शरीर, पसलियों और पिंडली की हड्डियों को तेज लोहे के औजारों से खुरचने का आदेश दिया। उन्होंने पवित्र शहीद को बहुत देर तक खुरचा; अपनी भयानक पीड़ा में, उन्होंने अपनी आँखें स्वर्ग की ओर उठाईं और ईश्वर से इस प्रार्थना के साथ संबोधित किया:

'हे मेरे ईश्वर, तू ही मेरी आशा है; मुझे बचा ले!'

तब यातना देने वाले ने जल्लादों से कहा:

'उसे पेड़ से उतारो; मैं जानता हूँ कि तब वह हमारे देवताओं से राहत देने की विनती करने के लिए अपनी आँखें स्वर्ग की ओर उठाता है।'

यह सुनकर, संत लियोन्टियस ने राज्यपाल से जोरदार और क्रोधित स्वर में कहा:

'तुम अपने देवताओं सहति वनिष्ट हो जाओ, हे खतरनाक और नीच यातनाकर्ता! मैं अपने ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि वह मुझे वह साहस और शक्ति दे कि मैं तुम्हारे द्वारा दी जा रही भयंकर यातनाओं को सहन कर सकूँ।'

यातना देने वाले ने उसे फिर से लटकाने का आदेश दिया, लेकिन इस बार उल्टा, उसके गले में एक भारी पत्थर बाँधकर। संत लियोन्टियस लंबे समय तक इसी स्थिति में रहे, और जोर से प्रार्थना करते रहे:

'हे प्रभु यीशु मसीह, जिन्होंने अपनी सेवक हाइपैटिया और थियोडुलस को तब शक्ति दी जब उन्होंने आपके परम पवित्र नाम का अंगीकार किया, मुझे भी, आपके इस दीन और पापी सेवक को शक्ति दें, ताकि मैं इन यातनाओं को सह सकूँ। हे मेरी आशा, मुझे न छोड़िए!'

'मैं जानता हूँ, लियोन्टियस, कि तुम हमारे देवताओं के मित्र बन जाओगे,' राज्यपाल ने कहा।

'मैं सर्वोच्च ईश्वर का सेवक हूँ,' शहीद ने उत्तर दिया, 'और तुम अपने देवताओं के सेवक हो, जिनके साथ तुम और तुम्हारे सैनिक नाश हो जाओगे।'

दिन भर संत लियोन्टियस ने ऐसे यातनाएँ सहन कीं; जब शाम हुई और सूर्य पश्चिम में अस्त होना शुरू हो गया था, तो राज्यपाल ने आदेश दिया कि संत लियोन्टियस को यातनाओं के वृक्ष से उतारकर सुबह तक एक कालकोठरी में फेंक दिया जाए। पूरी रात, सेंट लियोन्टियस ने बंदी अवस्था में गाया: *'प्रभु मेरा प्रकाश और मेरा उद्धार है; मैं किससे डरूँगा?'* (भजन संहिता 26:1)।

प्रभु का एक स्वर्गदूत उसके पास प्रकट हुआ और कहा:

'हौसला रखो, लियोन्टियस! प्रभु परमेश्वर, जिसकी तुम निष्ठापूर्वक सेवा करते हो, ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है, ताकि मैं निरंतर तुम्हारे साथ रहूँ।'

और संत प्रसन्न हुए और अपने प्रभु, अपने परमेश्वर में आनंदित हुए। सूर्य उदय हुआ, और फिर से हैड्रियन, न्यायपीठ पर अपना स्थान ग्रहण करके, संत लियोन्टियस को अपने सामने बुलवाया।

उसने पूछा, 'तो फिर, लियोन्टियस, तुमने क्या निर्णय लिया है?'

'मैं,' संत ने उत्तर दिया, 'एक ही निष्कर्ष पर पहुँचा हूँ: आपके व्यर्थ शब्दों पर कोई ध्यान न दूँ; मैंने पहले भी कई बार कहा है, और मैं अब इसे दोहराऊंगा: मैं कभी भी अपने ईश्वर, जो स्वर्ग, पृथ्वी, समुद्र और उनमें भरी सभी चीज़ों का सृष्टिकर्ता है, को नहीं छोड़ूंगा; प्रभु यीशु मसीह, जो परमेश्वर के पुत्र हैं, जिन्होंने हमारे उद्धार के लिए क्रूस के कष्ट सहे; मैं अपनी आशा केवल उन्हीं में रखता हूँ।

'मेरी बात सुनो, लियोन्टियस!' राज्यपाल ने आग्रह किया, 'देवताओं को बलिदान चढ़ाओ; मैं तुम्हारे देवताओं की कसम खाता हूँ कि, अगर तुम ऐसा करोगे, तो तुम्हें राजा से बहुत सम्मान और प्रचुर धन मिलेगा।'

संत लियोन्टियस ने पूछा, 'पृथ्वी पर कौन सा सम्मान और कौन सी संपत्ति मुझे तुम्हारी बात मानने और अपने ईश्वर का त्याग करने के लिए मना सकती है? यह पूरी दुनिया प्रभु मसीह के योग्य नहीं है, जिन्हें मैं पूरे दिल से प्रेम करता हूँ, जिनके लिए मैं कष्ट सहता हूँ और कुछ भी सहने को तैयार हूँ; लेकिन मैं तुम्हारे देवताओं को बलिदान नहीं चढ़ाऊँगा।'

अंततः यह महसूस कर लेने के बाद कि मसीह के इस अजेय योद्धा को हराना असंभव था—अर्थात्, उसे मूर्तिपूजक दुष्टता को अपनाने के लिए मनाना—राज्यपाल ने संत लियोन्टियस पर निम्नलिखित मृत्युदंड सुनाया:

'लियोन्टियस, जिसने न केवल राजा की आज्ञा का पालन करने और देवताओं को बलिदान चढ़ाने से इनकार कर दिया, बल्कि अपने पूर्वजों के देवताओं का अपमान भी किया, हम आदेश देते हैं कि उसे यातना वृक्ष पर चारों दिशाओं में उसके अंगों को फैलाकर लटका दिया जाए और तब तक पीटा जाए जब तक कि वह पीड़ा में अपनी अंतिम सांस न ले ले।'

संत लियोन्टियस को जमीन में गाड़े गए चार खंभों से बाँधकर फैला दिया गया; फिर चार बलवान योद्धाओं ने उसे लंबे समय तक और क्रूरता से पीटा, जब तक कि अपनी पीड़ा में, उसने अपनी पवित्र आत्मा को ईश्वर के हाथों में नहीं सौंप दिया; उनके शरीर को, शहर के बाहर फेंक दिया गया, विश्वासियों द्वारा ले जाया गया और त्रिपोल्स्काया के बंदरगाह के पास सम्मानपूर्वक दफनाया गया।

पवित्र शहीद लियोन्टियस की इस पीड़ा का वर्णन मसीह के सेवक 'करि द नोटरी' ने किया था, जिन्होंने इस यातना को अपनी आँखों से देखा था; उन्होंने सब कुछ टिन की पट्टियों पर लिख दिया, जिन्हें उन्होंने ईसाइयों की आने वाली पीढ़ियों के लिए शहीद की अवशेषों के बगल में उनके ताबूत में रख दिया, ताकि जो कोई भी इसे पढ़े या सुने, वह अपने हाथ स्वर्ग की ओर उठाए और परमेश्वर की महिमा करे, जिसने अपने सेवक को ऐसी वीरता के लिए बल दिया। संत लियोन्टियस ने

रोम में वेस्पासियिन के शासनकाल के दौरान 18 जून को अपना शहादत पूर्ण कयिा, और हमारे प्रभु यीशु मसीह की कलीसयिा में, जनिका महमिा पतिा और पवत्रि आत्मा के साथ युगानुयुग हो। आमीन[4508] ।

कॉन्टाकयिन, स्वर 3:

आपने अपनी चतुराई से यातना देने वालों को लज्जति कयिा, और यूनानयिों की अधर्मी पूजा का पर्दाफाश कयिा; हे ईश्वर-ज्ञानी शहीद, धर्म के शकि्षक, आप सभी के लिए दैवीय समझ वाले पुरुष के रूप में प्रकट हुए। इसी कारण हे अतंबिुद्धमिान लयिोन्टयिस, हम प्रेम से आपकी स्मृतंि का सम्मान करते हैं।

2 जुलाई

19 जून (पुराना कैलेंडर)

संत जूड प्रेरति, प्रभु के देह-भाई की स्मृतंि

19 जून को स्मरणोत्सव

संत जूड प्रेरति प्रभु के बारह प्रेरतिों में से एक थे। वे दाऊद और सुलैमान के वंशज थे। संत जूड का जन्म गलील के नासरत नगर में धर्मी जोसेफ के घर हुआ था, जनिके साथ बाद में परम पवत्रि कुंवारी मरयिम का सगा ववािह हुआ था। यह नश्चिति रूप से ज्ञात नहीं है कि यहूदा की माँ कौन थीं। कुछ के अनुसार, वह सलोमे[4509] थीं – बराकीयाह के पुत्र हग्गै की बेटी, जो संत जकरयिाह के भाई थे, जो संत योहन बपतस्मिा देने वाले और प्रभु के अग्रदूत के पतिा थे। यह यहूदा संत जेम्स द जस्ट, यरूशलेम के चर्च के पुरोहति[4510] का भाई था। संत जूड द अपोस्टल को आम तौर पर यहूदा, जेम्स का पुत्र, यानी अपोस्टल जेम्स का भाई[4511] कहा जाता है। उसने वनिम्रता के कारण यह नाम अपनाया, क्योंकि वह स्वयं को देह के अनुसार प्रभु का भाई कहलाने के लिए अयोग्य समझता था, और यह बात और भी अधकि सच थी क्योंकि उसने प्रभु के सामने पाप कयिा था, पहली बात तो अपने अवश्विास के कारण, और दूसरी बात अपने भाइयों के प्रतिं प्रेम की कमी के

[4508] कॉन्स्टेंटनिोपल की परषिद, जो पैट्रआिर्क मेनास (636–552) के अधीन हुई थी, में संत लयिोन्टयिस शहीद का उल्लेख है; फोनीशयिन शहर त्रपिोली में उनके नाम एक चर्च समर्पति कयिा गया था। कॉन्स्टेंटनिोपल में, संत लयिोन्टयिस का पर्व दो स्थानों पर भव्य रूप से मनाया जाता था – उनके नाम पर बनी चर्च में और कामरडियिा के पास।

[4509] इस सलोमी को वृद्ध सलोमी से अलग समझना चाहिए – जो बेथलहम की नविासी थीं (जन्हिें प्रभु की दादी के रूप में जाना जाता है); यह सलोमी परम पवत्रि कुँवारी मरयिम और धर्मी यूसुफ की रश्तिेदार थीं; उनकी कथा के लिए मसीह का जन्म – 25 दसिंबर देखें।

[4510] कहा जाता है कि संत याकूब प्रेरति, जो देह में प्रभु के भाई थे, मस्रि की ओर पलायन के दौरान अपने पतिा यूसुफ, सदा कुंवारी मरयिम और शशिु यीशु के साथ गए थे। उद्धारकर्ता के स्वर्गारोहण के बाद, उन्हें यरूशलेम की कलीसयिा का बशिप नयिुक्त कयिा गया; दव्यि लटिर्जी की रचना करने वाले वे पहले व्यक्तथिे। वह 61 या 62 ईस्वी में यहूदयिों द्वारा चर्च की बालकनी से फेंके जाने के बाद मर गए; उनके नाम से जुड़ा पत्र उन्हें ही लखिा हुआ माना जाता है। इस पवत्रि प्रेरति का पर्व दविस 23 अक्टूबर है।

[4511] हालांकि, कुछ लोग प्रभु के भाई यहूदा और याकूब के पुत्र यहूदा (जकि्र लूका 6:16 और प्रेरतिों के काम 1:13 में है) के बीच अंतर करते हैं, और सुसमाचार में वर्णति नम्निलखिति ववािरण को बाद वाले प्रेरति का मानते हैं। अपने शष्यिों के साथ अपने अंतमि वदिाई भाषण के दौरान, प्रभु ने, उन्हें परमपतिा परमेश्वर के पास अपने प्रस्थान की घोषणा करने के बाद, उन्हें सांत्वना देते हुए कहा: *'मैं तुम्हें अनाथों की तरह नहीं छोड़ूँगा; मैं तुम्हारे पास आऊँगा। थोड़ी देर और, और संसार मुझे फरि नहीं देखेगा; परन्तु तुम मुझे देखोगे, क्योंकि मैं जीवता हूँ, और तुम भी जीवोगे। उसी दनि तुम जानोगे कि मैं अपने पतिा में हूँ, और तुम मुझ में, और मैं तुम में। जो मेरी आज्ञाओं को रखता है और उनका पालन करता है, वह मुझ से प्रेम करता है; और जो मुझ से प्रेम करता है, उससे मेरा पतिा भी प्रेम करेगा; और मैं उससे प्रेम करूँगा और स्वयं को उस पर प्रकट करूँगा'* (यूहन्ना 14:18–21); तब यहूदा ने प्रभु से कहा: *'प्रभु! ऐसा क्यों है कि आप स्वयं को हम पर प्रकट करना चाहते हैं और संसार पर नहीं?'* (यूहन्ना 14:22)। इस प्रश्न से यह स्पष्ट है कि प्रेरति यहूदा ने अभी तक यहूदयिों की मसीहा के बारे में एक सांसारकि राजा होने की प्रयि धारणा को नहीं छोड़ा था, और उसने प्रभु के प्रतज्ञिात प्रकट होने को एक दृश्य, संवेदी प्रकट होने के अर्थ में समझा था, जो एक सांसारकि राजा और वजिेता की महमिा में होता है। अपने उत्तर में, प्रभु ने उसे स्पष्ट कर दयिा कि वह एक सांसारकि राजा नहीं है, और यह कि अपने राज्य में उसकी प्रकटता कोई दृश्यमान, बाहरी, शारीरकि प्रकटता नहीं, बल्कि एक आंतरकि, आध्यात्मकि प्रकटता है – वश्विासयिों के साथ उसका रहस्यमय मलिन (यूहन्ना 14:23)।

कारण। कि यहूदा ने अविश्वास के कारण पाप किया, इसकी गवाही संत योहन द थियोलोजियन देते हैं, जो कहते हैं: *'क्योंकि उसके अपने भाइयों ने भी उस पर विश्वास नहीं किया'* (योहन 7:5)।

सुसमाचार के इस अंश की व्याख्या करते हुए, संत थियोफिलिक्ट[4512] 'मसीह के भाई' का अर्थ यहाँ यूसुफ के पुत्र समझते हैं। विशेष रूप से, वे कहते हैं:

– उन्हें – अर्थात् मसीह को – उनके ही भाइयों, यूसुफ के बेटों (जिनमें यहूदा भी था) द्वारा भी अपमानित किया गया; तो फिर, उनमें उनकी अविश्वासिता कहाँ से उत्पन्न हुई? – उनकी अपनी दुष्ट इच्छा और ईर्ष्या से, क्योंकि यह रिश्तेदारों का स्वभाव है कि वे अपनों से परायों की अपेक्षा अधिक ईर्ष्या करते हैं।

इसलिए इससे यह स्पष्ट है कि यहूदा ने अपने अविश्वास के कारण अपने प्रभु के विरुद्ध पाप किया।

लेकिन यहूदा ने, इसके अलावा, मसीह के प्रति भाइयों जैसा प्रेम नहीं दिखाया, जैसा कि परमेश्वर के भाई याकूब के जीवन में लिखा है। जब यूसुफ मिस्र से लौटने पर अपने बच्चों में अपनी भूमि का बँटवारा करने लगे— —जो उनकी पहली पत्नी से जन्मे थे, तो उन्होंने प्रभु यीशु को, जो परम पवित्र कुँवारी मरियम से अलौकिक और अक्षुण्ण रूप से जन्मे थे और जो तब भी एक छोटे लड़के थे, एक हिस्सा देना चाहा। लेकिन यूसुफ के तीन बेटों ने मसीह को अपनी विरासत में हिस्सा के रूप में स्वीकार करने से इनकार कर दिया, क्योंकि उनका जन्म किसी दूसरी माँ से हुआ था; केवल चौथे बेटे - संत याकूब - ने ही उन्हें अपने हिस्से के सह-स्वामी के रूप में स्वीकार किया, और इसलिए बाद में उन्हें परमेश्वर का भाई कहा गया। अपने अतीत के पापों—अपने अविश्वास और अपने भाई प्रेम की कमी—से अवगत, यहूदा ने खुद को ईश्वर का भाई कहने की हिम्मत नहीं की, बल्कि केवल खुद को याकूब का भाई बताया, जैसा कि वह अपनी पत्री में लिखते हैं: *'यहूदा, यीशु मसीह का दास, याकूब का भाई'* (यहूदा 1:1–25)।

याकूब के पुत्र यहूदा के नाम के अलावा, प्रेरित यहूदा के अन्य नाम भी हैं। सुसमाचार लेखक मत्ती उन्हें लेबाएउस और थदाएउस कहते हैं। ये नाम प्रेरित यहूदा को एक कारण से दिए गए थे, अर्थात्: 'लेबाएउस' शब्द का अर्थ है 'हार्दिक'। प्रेरित यहूदा के मामले में, यह नाम यह दर्शाता है कि वह—यहूदा—अज्ञानता के कारण मसीह परमेश्वर के विरुद्ध अपराध करने के बाद, जब यह बात उससे साबित हो गई कि यीशु ही सच्चे मसीहा—मसीह परमेश्वर—थे, तो उसने पूरे हृदय से स्वयं को उनके साथ जोड़ लिया।

प्रेरित यहूदा को थदाएउस भी कहा जाता है, जिसका अर्थ है 'जो स्तुति करता है', क्योंकि उन्होंने मसीह परमेश्वर की महिमा की और उनकी गवाही दी तथा कई राष्ट्रों में सुसमाचार का प्रचार किया।

पवित्र प्रेरित यहूदा के जीवन और सेवा के बारे में हमें बहुत कम ज्ञात है। केवल इतना ज्ञात है कि, डोमिशियिन के शासनकाल के अंत के आसपास[4513] , यहूदा के दो पोते, जो अपने हाथों से खेत जोत रहे थे, को विधर्मियों के झूठे आरोपों पर, दाऊद के वंशज और प्रभु के रिश्तेदार होने के नाते, सम्राट के सामने लाया गया; लेकिन जब सम्राट को यह विश्वास हो गया कि वे उसके लिए कोई राजनीतिक खतरा नहीं थे, तो उन्हें रिहा कर दिया गया।

[4514]प्रेरित जूड ने, अन्य 'प्रभु के भौतिक भाइयों' की तरह, मंत्रालय में कई परिश्रम किए, और मसीह के सुसमाचार का प्रचार किया। प्रभु यीशु मसीह के स्वर्ग में आरोहण के तुरंत बाद, प्रेरित यहूदा ने, सामान्य रूप से मसीह के सभी प्रेरितों की तरह, सुसमाचार का प्रचार करने के लिए प्रस्थान किया। चर्च के इतिहासकार निकिफ़ोरस[4515] की गवाही के अनुसार, 'दिव्य यहूदा—इस्करियोती नहीं, बल्कि एक और, जो थदाए और लेबाएवस नामों से जाना जाता था, जो यूसुफ का पुत्र और याकूब का भाई था, जिसे यरूशलेम में मंदिर की छत से फेंक दिया गया था—ने सुसमाचार का प्रचार किया और मसीही धर्म का प्रसार किया, सबसे पहले यहूदिया, गलील, समारिया और ईदोमिया, फिर अरब, सीरिया और मेसोपोटामिया में, और अंत में एदेसा शहर पहुँचे, जो राजा अबगर का था[4516] , जहाँ सत्तर प्रेरितों में से एक अन्य थदेउस ने पहले ही सुसमाचार का प्रचार कर दिया था। यहाँ प्रेरित यहूदा ने उस थदा के द्वारा अधूरे छोड़े गए कार्य को पूरा किया और उसमें सुधार किया।

[4512] बुल्गारिया में ओहरडि के आर्चबिशप, धन्य थियोफिलैक्ट, अपनी चार सुसमाचारों पर की गई व्याख्या के लिए जाने जाते हैं, जिसमें वे काफी हद तक संत जॉन क्राइसोस्टोम का अनुसरण करते हैं। उनकी मृत्यु लगभग 1085 में हुई।

[4513] रोमन सम्राट डोमिशियिन ने 81 से 96 तक शासन किया।

[4514] इस पवित्र प्रेरित थदेयस का पर्व दिवस 21 अगस्त, और साथ ही 4 जनवरी को भी है।

[4515] निकिफ़ोरस कैलिस्टोस चौदहवीं सदी के एक ग्रीक इतिहासकार थे जिन्होंने हमें अपनी *चर्च का इतिहास* (History of the Church) दी है।

[4516] परंपरा के अनुसार, यीशु मसीह ने अपनी छवि, जो मानव हाथों से नहीं बनी थी, इस अबगर के पास भेजी। एदेसा मेसोपोटामिया का एक शहर है।

कहा जाता है कि पवित्र प्रेरित यहूदा ने फारस में भी ईसाई धर्म का प्रचार किया, जहाँ से उन्होंने ग्रीक भाषा में अपना पत्र लिखा। इस पत्र को लिखने का कारण यह था कि अधर्मी लोग विश्वासियों के समुदाय में चुपके से घुस आए थे; वे परमेश्वर की कृपा को अन्याय का अवसर बना रहे थे और, ईसाई स्वतंत्रता के बहाने, हर प्रकार के घृणित कृत्यों में लिप्त थे। इस संक्षिप्त पत्र में कई गहरे विचार और शिक्षाप्रद उपदेश हैं। इसमें आंशिक रूप से धर्मशास्त्रीय शिक्षाएँ शामिल हैं: पवित्र त्रिमूर्ति के रहस्य पर, यीशु मसीह के अवतार पर, अच्छे और बुरे स्वर्गदूतों के बीच अंतर पर, और भविष्य के अंतिम न्याय पर; और आंशिक रूप से नैतिक शिक्षा: पापी अशुद्धता से बचने का आग्रह – शारीरिक पाप, ईश्वरनिंदा, घमंड, अवज्ञा, ईर्ष्या, घृणा, विश्वासघात और धोखा; प्रेरित सभी को अपनी बुलावा, विश्वास, प्रार्थना और प्रेम में दृढ़ रहने की सलाह देते हैं; वे उन्हें भटक गए लोगों के धर्म-परिवर्तन की परवाह करने और विधर्मियों से स्वयं को बचाने की सलाह देते हैं, जिनके भ्रष्ट तरीकों का उन्होंने स्पष्ट रूप से वर्णन किया है, यह घोषित करते हुए कि ये विधर्मी सदोम के निवासियों की तरह ही नाश हो जाएँगे (यहूदा 1:7)।

इसके अलावा, अपने पत्र में, पवित्र प्रेरित यहूदा कहते हैं कि केवल मूर्तिपूजा से ईसाई धर्म में परिवर्तित हो जाना उद्धार के लिए पर्याप्त नहीं है, बल्कि विश्वास के साथ-साथ ईसाई धर्म के अनुरूप और उद्धार के योग्य अच्छे कार्य भी करने चाहिए, और वे उदाहरण के रूप में परमेश्वर द्वारा दंडित किए गए स्वर्गदूतों और मनुष्यों का उल्लेख करते हैं। ईश्वर ने स्वर्गदूतों को अंधकार में शाश्वत बेड़ियों में बाँध दिया है और उन्हें अपने अंतिम न्याय के लिए रख रहा है क्योंकि उन्होंने अपनी गरिमा का पालन नहीं किया (यहूदा 1:6)। जहाँ तक उन लोगों का प्रश्न है जिन्हें परमेश्वर ने मिस्र से बाहर निकाला था, उन्हें उसने जंगल में नाश कर दिया क्योंकि वे अकुपट में पड़ गए, परमेश्वर के कानून के अनुसार नहीं जिए (यहूदा 1:5)। इस प्रकार, अपने पत्र में, प्रेरित यहूदा हमारे लिए कुछ ही शब्दों में महान सच्चाइयाँ प्रकट करते हैं।

पवित्र प्रेरित यहूदा ने सुसमाचार का प्रचार करते हुए, लोगों को मसीह के धर्म में परिवर्तित करते हुए और उन्हें मोक्ष के मार्ग पर मार्गदर्शन करते हुए कई विभिन्न देशों की यात्रा की। इस सेवा के दौरान, वह अरारात (Ararat) के देशों में पहुँचे और वहाँ, कई लोगों को मूर्तिपूजा से दूर कर उन्हें ईसाई बनाया। इससे, प्रेरित ने मूर्तिपूजक पुरोहितों को दृढ़ता से नाराज़ कर दिया: उन्होंने उसे पकड़ लिया और विभिन्न यातनाओं के बाद, उसे एक क्रूस पर लटका दिया और तीरों से भेद दिया। इस प्रकार पवित्र प्रेरित यहूदा ने अपना पराक्रम और अपना जीवन समाप्त किया, और वह मसीह परमेश्वर के पास चले गए, ताकि वे स्वर्ग में उनसे अनंत पुरस्कार का मुकुट प्राप्त कर सकें[4517] ।

ट्रोपारियन, स्वर 1:

हे यहूदा, मसीह के संबंधी, मार्गदर्शक और दृढ़ शहीद, हम आपको पवित्र रूप से स्तुति करते हैं, क्योंकि आपने प्रलोभन पर विजय प्राप्त की और विश्वास को बनाए रखा: अत; आज जब हम आपकी सर्व-पवित्र स्मृति का उत्सव मनाते हैं, हम आपकी प्रार्थनाओं के द्वारा पापों की क्षमा प्राप्त करते हैं।

कॉन्टाकियन, स्वर 2:

आप प्रेरित पौलुस के साथी के रूप में प्रकट हुए, और उनके द्वारा आपने हमें दिव्य अनुग्रह का उपदेश सुनाया, धन्य जूडा, रहस्यमय वचन के पुरुष; इस कारण हम आपसे पुकारते हैं: हम सभी के लिए प्रार्थना करना बंद न करें।

[4517] प्रेरित सेंट जूड की मृत्यु लगभग 80 ईस्वी में हुई। – सम्राट बेसिल के चंद्र कैलेंडर के अनुसार, सेंट जूड मेसोपोटामिया के एडेसा में थे, जहाँ उन्होंने अवगर को चंगा किया, और बाद में अराट शहर में क्रूस पर रहते हुए एक तीर से भेदे गए; स्लावोनिक प्रोलॉग के अनुसार, प्रेरित जूड ने अराद द्वीप पर कष्ट सहे। अराद नामक एक शहर और एक द्वीप है, लेकिन वे मेसोपोटामिया में नहीं, बल्कि फिनिसिया में हैं। आर्मेनियाई परंपरा के अनुसार, प्रेरित जूड लगभग 60 ईस्वी में आर्मेनिया पहुँचे और अरक्स नदी पर स्थित आर्टशाट शहर में वहाँ प्रेरित बार्थोलोम्यू से मिले; उन्होंने कई लोगों को ज्ञान दिया और 72 ईस्वी में ग्रेटर आर्मेनिया के ओरमिया में सूली पर चढ़ाया गया - जो अब उरमिया है। ऐसी स्थिति में, अराट को अरारat पर्वत के पास खोजना चाहिए। (सेंट सर्जियस का मासिक जर्नल, खंड 2, 19 जून का प्रवेश)।

दूसरा कोंटाकयिन, स्वर 2:

आपने स्वयं को दृढ़ मन का चुना हुआ शष्यि, और मसीह की कलीसयिा का अटूट स्तंभ सद्धि कयिा: आपने अपनी जीभ से मसीह का वचन प्रचार कयिा, एक परमेश्वर में वश्विास की घोषणा करते हुए; उस द्वारा महमिामय होकर, आपने चंगा करने का वरदान प्राप्त कयिा, ताकि आप तक आने वालों की दुर्बलताओं को दूर कर सकें, हे अतप्रिशंसनीय प्रेरति यहूदा।

हमारे पूजनीय पति पैसयिस महान का जीवन

१९ जून को स्मरणोत्सव

इस संसार का व्यर्थ मोह—जो क्षणभंगुर और क्षणकि है— – जो इसकी लालसा करते हैं उन्हें अपनी ओर खींचती है, और उन्हें तुच्छ सांसारकि आनंद के लिए, अपने इरादों और भावनाओं में भटकने और अपने मन से सांसारकि जुनून से चपिके रहने के लिए मजबूर करती है, और इतनी हद तक कि ये संसार के प्रेमी कभी-कभी न केवल उन्हें वादा कए गए स्वर्गीय जीवन को तुच्छ समझने लगते हैं, बल्कि – हाय! – सच्चे जीवन के स्वयं स्रष्टा से मुंह मोड़ लेते हैं और आने वाले आशीर्वादों की अपेक्षा सांसारकि और लौककि आशीर्वादों के लिए अधकि प्रयास करते हैं, इस प्रकार स्वेच्छा से अपने लिए एक क्रूर और अनंत मृत्यु तैयार करते हैं; इसी तरह, स्वर्ग में स्थति शाश्वत खजाना, उसे प्राप्त करने की आशा रखने वालों में उसके लिए एक अपार लालसा जगाता है और उनके हृदयों को एक वशिष दव्यि और अनुपम मठिास से भर देता है: हमारे लिए प्रतज्ञि कयिा गया स्वर्गीय राज्य ऐसे लोगों को शाश्वत आनंद, उनके श्रम के प्रतफिल, और तपस्वयिों के गौरवशाली उत्सव पर चतिन करने के लिए प्रेरति करता है; यह वचिार उन्हें इस राज्य को प्राप्त करने के लिए इतना प्रेरति करता है कि वे न केवल सभी क्षणभंगुर और व्यर्थ चीजों से घृणा करने लगते हैं, बल्कि अपने ही जीवन को भी नहीं बख्शते, मसीह के लिए, सुसमाचार के शब्दों (मत्ती 10:39) के अनुसार, उसके लिए अपनी आत्मा तक त्याग देने के लिए, और वे उसके लिए सभी सांसारकि सुखों और आनंदों की अपेक्षा मृत्यु को प्राथमकिता देते हैं। उन मामलों में जहाँ, उत्पीड़न के बंद होने के बाद, धर्मपरायण तपस्वयिों को शहीद के रूप में मृत्यु प्राप्त नहीं हुई, वे इसे कसिी अन्य तरीके से सहन करने के लिए लालायति थे: वे अपने शरीर को दंडति करने का दीर्घकालकि, फरि भी उनके लिए आवश्यक, कार्य हाथ में लेते हैं, और ऐसा करते हुए स्वाभावकि रूप से लगातार बीमारी सहते हैं: प्रतदिनि उपवास करके और अनेक तपस्या के कार्यों द्वारा स्वयं को दंडति करके, वे अदृश्य राक्षसों से लड़ते हैं, और शरीर में रहते हुए भी, वे इन अदेह शत्रुओं का वरिोध करने के लिए स्वयं को अथक रूप से प्रेरति करते हैं।

ऐसे महमिामय और ईश्वर-प्रसन्न लोगों में एक व्यक्ति था, जसिके बारे में मैं[4518] और अब बताना चाहता हूँ, उसके जन्म, युवावस्था और अद्भुत जीवन का वर्णन करते हुए: उस व्यक्ति का नाम पैसयिस था। और जब कोई भी उनके बारे में कुछ अत्यंत गौरवशाली और अलौककि सुने, तो वह मुझे वश्विास करे, और कोई यह न सोचे कि मैं, सम्मान के लिए, इस पवत्रि पति के वृत्तांत में कुछ जोड़ रहा हूँ: वह सभी मानवीय महमिा से बहुत ऊपर हैं और स्वर्ग लोक में पवत्रि स्वर्गदूतों द्वारा उनकी स्तुति की जाती है, इसलिए उन्हें हम जैसे नीच और पापी लोगों से कसिी प्रशंसा की आवश्यकता नहीं है। परन्तु मैं उनके बारे में उन लोगों के लाभ के लिए बोलूँगा जो सुनते हैं और उनके गुणों का अनुकरण करना चाहते हैं। और मैं वही बताऊँगा जो मैंने अपनी आँखों से और कानों से देखा और सुना है।

इसलिए, मैं इस पूजनीय व्यक्ति के प्रशंसनीय और शकि्षाप्रद जीवन का वर्णन उनके शशिुकाल से ही शुरू करूँगा।

यह गौरवशाली और धन्य पुरुष मस्रि में जन्मा और वहाँ रहा, जहाँ कभी ईश्वर के महान नबी और द्रष्टा मूसा का जन्म हुआ था; जैसा कि पवत्रि शास्त्र हमें बताता है, मूसा को ईश्वर के समीप होने और अपने महान चमत्कारों के कारण अत्यधकि महमिामय माना गया। लेकनि मस्रि दूसरी बार भी गौरवान्वति हुआ – आदरणीय पैसयिस के जीवन के माध्यम से, जो वहाँ जन्मे थे और अपने सम्मानति नाम तथा अनेक गुणों से उस भूमि को समृद्ध कयिा।

[4518] यानी, इस जीवनी के लेखक - जॉन कोलोव, जन्हिें कोलोव उपनाम से जाना जाता था, जसिका अर्थ है 'कद में छोटा' - मस्रि में एक भक्षिु के रूप में रहते थे। उनकी मृत्यु लगभग 430 ईस्वी में कोल्ट्सुम (अब सूएज़) शहर के पास एक मरुभूमि की कोठरी में हुई। - उनका पर्व दविस 9 नवंबर है।

धन्य पैइसयिस के माता-पति सच्चे वशि्वास वाले और प्रभु का भय मानने वाले लोग थे। उन्होंने ईश्वर की आज्ञाओं के पालन में नषि्कलंक जीवन जयिा और हर प्रकार के अच्छे कर्मों के द्वारा केवल प्रभु को प्रसन्न करने का प्रयास कयिा।

उनके सात बच्चे थे, जनि सभी को उन्होंने आज्ञाकारी बनाकर पाला, यह सुनश्चिति करने का प्रयास करते हुए कि वे हर बात में अपने माता-पति का अनुकरण करें।

परम पूज्य के माता-पति हर तरह से संपन्न थे और उन्होंने सभी जरूरतमंदों को दान दयिा। उनके हाथ उदारता से हमेशा फैले रहते थे, और जो कुछ भी उन्होंने गरीबों को दयिा, वह ईश्वर के उपहारों के रूप में उन्हें प्रचुर मात्रा में वापस मलिा।

लेकनि चूँकि कोई भी मनुष्य मृत्यु से बच नहीं सकता, इसलिए पूजनीय के पति भी इस जीवन से चल बसे, और अपनी धर्मपरायण पत्नी को बच्चों की देखभाल के लिए छोड़ गए; इनमें सबसे छोटा लड़का पैसयिस था, और उसकी वजह से उसकी माँ को बहुत दुख सहना पड़ा।

एक रात, जब उस लड़के की माँ सो रही थीं, तो उन्हें एक दर्शन हुआ: प्रभु का एक स्वर्गदूत प्रकट हुआ और कहा:

'नराश्रितों के पति, परमेश्वर ने मुझे तुम्हारे पास यह पूछने के लिए भेजा है कि तुम अपने बच्चों के लिए इतना शोक क्यों मनाती हो और उनके लिए नरिंतर इतनी बड़ी पीड़ा में क्यों रहती हो?' क्या आप ही एकमात्र हैं जो उनकी परवाह करते हैं, जबकि ईश्वर उनके बारे में बलि्कुल भी नहीं सोचते? इसलिए, अब से, अपना दुख त्याग दें और अपने एक पुत्र को सर्वोच्च ईश्वर को समर्पति कर दें – उसके द्वारा, प्रभु का सबसे पवत्रि और सदा-महमिामय नाम महमिामय होगा।'

संत की माता ने स्वर्गदूत को उत्तर दयिा:

'मेरे सभी पुत्र प्रभु के हैं, और यदि उनमें से कोई उसे प्रसन्न करता है, तो वह उसे अपने पास ले जाए।'

तब स्वर्गदूत ने पैसयिस का हाथ पकड़कर कहा:

'यह परमेश्वर को भाता है।'

'इसके बजाय बड़े बेटों में से किसी एक को ले लो,' वृद्ध महलिा ने कहा।

लेकनि देवदूत ने उससे उत्तर दयिा:

– हे शुभ महलिा! क्या तुम नहीं जानती कि ईश्वर की शक्ति आमतौर पर कमजोरों में प्रकट होती है? इसलिए, इस सबसे छोटे को ईश्वर ने चुना है, और वह उन्हें प्रसन्न करेगा।

यह कहकर, देवदूत गायब हो गया।

संत की माँ, अपनी नींद से जागकर, ऐसी दैवीय दृष्टि से चकति हो गईं और प्रभु का इस प्रकार धन्यवाद कयिा:

'हे प्रभु, आपकी दया हम पर और आपके सेवक पैसयिस पर बनी रहे!'

तब, एक काफी लंबी प्रार्थना के बाद, वह अपने बेटे को एक पुरोहति के रूप में नयिुक्त कराने के लिए चर्च ले गई। धन्य युवक पैसयिस, पुरोहति वर्ग में प्रवेश करने के योग्य समझा गया, ने सदाचारी पुरुषों का अनुकरण करना शुरू कर दयिा; और जैसे-जैसे वह उम्र और समझ में बढ़ता गया, वैसे-वैसे वह ईश्वर की कृपा में भी बढ़ता गया: दनि-प्रतदिनि उसका हृदय ईश्वर के प्रति अटूट प्रेम से प्रज्वलति होता गया, और वह स्वयं अधीरता से जल रहा था - मानो जल्द से जल्द संन्यास की दीक्षा प्राप्त कर सके; और इस प्रकार, – जब समय आया, और वह अभषिेक के साथ सम्मानति हो सका और, मठवासी क्रम में, एक अधकि परपिूर्ण जीवन शुरू कर सका – वह, ईश्वर की कृपा से नर्दिेशति, एक नर्दिोष मेमने की तरह, रेगस्तिान में आश्रम के लिए नकिल पड़ा और वहाँ, आध्यात्मकि शकि्षा के लिए, वचन के झुंड के चरवाहे – धन्य पामवा[4519] – के साथ बसना चाहा; उनके गुरु ने उन्हें प्रेम और आनंद के साथ स्वीकार कयिा और उन्हें पवत्रि संन्यासी वस्त्र पहनाया। धन्य पाम्वा को पूर्वज्ञान का वरदान प्राप्त था: स्वर्ग से प्राप्त प्रकटवाणी द्वारा, वे जानते थे कि पैइसयिस के साथ क्या होने वाला है और इसलिए उन्होंने उन्हें ईश्वर की कृपा का एक चुना हुआ पात्र माना, जसिने उन्हें हर अच्छे कार्य में मार्गदर्शन कयिा।

सबसे बढ़कर, धन्य पैइसयिस ने अपने कर्तव्यों को लगन से नभिाया, अपने पति की बनिा सवाल के आज्ञा मानी और हर बात में उनकी इच्छा का पालन कयिा, और साथ ही सबसे कठोर जीवन जयिा और, कदम-दर-कदम, अपने हृदय

[4519] उनका पर्व दविस 16 जनवरी है।

में सद्गुणों में और अधिक पूर्णता की ओर बढ़ते गए। हमारे पूजनीय पिता पाम्वा ने, यह देखकर कि उन्होंने स्वयं को पूरी तरह से उपवास के लिए समर्पित कर दिया था, और उन्हें और भी महान कार्यों के लिए प्रोत्साहित करने की इच्छा से, एक बार उनसे कहा:

'मेरे पुत्र पैसियस, एक नवोदित भिक्षु को अपने सभी इंद्रियों को ठोकरों और प्रलोभनों से सावधानीपूर्वक बचाना चाहिए, और सबसे बढ़कर अपनी आँखों को किसी भी जिज्ञासु दृष्टि से बचाना चाहिए; किसी के चेहरे पर सीधे नहीं देखना चाहिए, बल्कि अपनी दृष्टि को लगातार नीचे की ओर रखना चाहिए, जबकि मन से ऊँचाइयों की ओर देखते हुए, आंतरिक नेत्रों से ईश्वर की अनुपम कृपा का चिंतन करना चाहिए, सर्वशक्तिमान प्रभु की महिमा करनी चाहिए और उनकी स्तुति करनी चाहिए।

और इस प्रकार धन्य पैइसियस, ऐसे शिक्षाप्रद संवादों से निर्देशित होकर और ईश्वर के प्रति और भी अधिक प्रेम से प्रेरित होकर, यह संकल्प कर लिया कि जो कुछ भी उनसे कहा गया था, उसे अक्षरशःपालन करेंगे – और वास्तव में, – पूरे तीन वर्षों तक उन्होंने दूसरों के चेहरों पर न देखने की आज्ञा का कड़ाई से पालन किया, और स्वयं को पवित्र धर्मग्रंथों के अध्ययन के लिए लगन से समर्पित कर दिया, निरंतर ईश्वर के वचन और उनकी शिक्षाओं पर ध्यान देते हुए, जो जल की तरह, उनकी आत्मा को लगातार ताज़गी प्रदान करती थीं; और वह, दाऊद के शब्दों में, पानी के सोते के पास लगाई गई एक बगीचे की तरह था, जो बढ़ता, फलता-फूलता और समय पर मीठे फल देता था; क्योंकि वह ईश्वर से इस भजन-संगीतपूर्ण संबोधन के लिए तरसता था: *'तेरे वचन मेरे गले के लिए कितने मीठे हैं! 'मेरे मुँह के लिए शहद से भी मीठा'* (भजन संहिता 118:103); प्रेरितों की आज्ञा का पालन करते हुए, उन्होंने अखंड प्रार्थना की, और उपवास तथा जागरण द्वारा उन्होंने अपने शरीर को वश में किया, उसे आत्मा के अधीन कर दिया, और अपने हृदय की गहराई में, एक खजाने के रूप में, उन्होंने अपने सभी सद्गुणों को संजोया।

सम्मानित वृद्ध पामवा, उसे फलते-फूलते देखकर, परमेश्वर में उसके सदाचारी जीवन पर आनंदित हुए: एक पिता की तरह उसकी देखभाल करते हुए, उन्होंने उसे धार्मिकता के और भी महान कार्यों की ओर निर्देशित किया; और परमेश्वर को भाने वाले हर काम और ज्ञान में उसे भक्तिपूर्वक शिक्षित करके, उन्होंने जल्द ही उसे संतों में सबसे निपुण बना दिया।

जब संत पाम्वा के लिए अपने स्वर्गीय विरासत के लिए प्रस्थान करने का समय आया, जिसके लिए वे बहुत लालायित थे, तो इस सम्मानित पिता ने धन्य पैसियस को आशीर्वाद दिया और उनके बारे में कई भविष्यसूचक शब्द कहे, और वे शाश्वत धन्य जीवन में प्रवेश कर गए, ताकि वहाँ वे वे अनिर्वचनीय आशीर्वाद प्राप्त कर सकें जिनका वे लंबे समय से इंतजार कर रहे थे।

'जहाँ तक मेरी, विनम्र जॉन की बात है' (इस जीवनी के लेखक कहते हैं), 'मैं पूजनीय पैसियस के साथ रहा: हर मामले में एक समान होने के कारण, हमने अपना जीवन एक साथ बिताया; हम सभी से दूर रहकर और प्रार्थना तथा दैनिक जीवन दोनों में वही नियम अपनाकर, जैसा कि हमने अपने पिता से प्राप्त किया था, हम एक-दूसरे का सहारा बने रहे, और केवल अपनी आत्माओं के उद्धार की चिंता करते रहे। लेकिन कुछ समय बाद, धन्य पैइसियस ने तपस्या और जीवन के एक उच्चतर रूप की इच्छा की, और इस प्रकार हमें अलग होना पड़ा।

अत्यधिक कठोर तपस्या के उत्साह से भरकर, वह पूरे सप्ताह भोजन नहीं करता था; शनिवार और रविवार को वह केवल नमक के साथ रोटी खाता और पानी पीता था, जबकि अन्य दिनों में, भौतिक रोटी के बजाय, वह आध्यात्मिक रोटी से जीवित रहता था; वह अक्सर दिव्य प्रेरित यिर्मयाह की भविष्यवाणी वाली पुस्तक पढ़ते थे, और कई मौकों पर यह पवित्र भविष्यवक्ता, उनके सामने प्रकट होकर, उन्हें उन भविष्यवाणियों के रहस्यों को समझाते थे जो उनके समझ से परे थे, और गूढ़ अंतर्दृष्टियों से उनके मन को प्रतिज्ञा की गई आशीर्वादों की प्राप्ति की ओर प्रेरित करते थे; लेकिन, निरंतर आगे बढ़ते हुए – जीवन के और अधिक कठोर तरीके की ओर – पैसियस ने अपने मूल तपस्वी प्रयास को त्याग दिया और एक नया प्रयास चुना: अब वह पूरे दो सप्ताह तक उपवास करेगा, और केवल उनके बीत जाने के बाद ही वह, जैसा कि पहले कहा गया है, नमक के साथ थोड़ी सी रोटी और पानी खाएगा, उतना ही जितना आवश्यक था। और इस उपवास या उनके दैवीय जीवन के बारे में कोई नहीं जानता था, सिवाय केवल ईश्वर के, जो सभी मानवीय रहस्यों को जानता है, जिसके लिए जो अभी भी छिपा है वह भी प्रकट हो जाता है; इसके अलावा, उन्होंने मौन के तपस्वी अभ्यास को अपनाने की इच्छा की, ताकि एकांत में वे एकमात्र प्रभु मसीह से प्रार्थना कर सकें, उनके और भी करीब आ सकें, और उनके प्रकाश से प्रबुद्ध हो सकें।

जॉन कोलोव आगे कहते हैं, 'उनकी इस इच्छा के बारे में जानकर, मुझे गहरे दुख के साथ एहसास हुआ कि हमें अलग हो जाना चाहिए। लेकिन, यह जानने की इच्छा से कि उनका यह इरादा ईश्वर की ओर से था या केवल मानवीय हठ से, मैंने उनसे कहा:

'भाई पैसियस, मैं देख सकता हूँ कि आप मौन जीवन का तपस्वी अभ्यास अपनाना चाहते हैं; ईमानदारी से मेरी बात मानिए कि मैं भी यही सोच रखता हूँ, लेकिन मुझे संदेह है, मैं निश्चित नहीं हूँ – कि यह विचार ईश्वर की ओर से आया है या नहीं; तो आइए हम उदार ईश्वर से प्रार्थना करें – हो सकता है कि हमारे प्रभु स्वयं, अपनी इच्छानुसार, हमारे जीवन का प्रबंध करें और हमें यह प्रकट करें कि हमें साथ रहना है या अलग हो जाना है।

पैसियस ने मुझसे उत्तर दिया:

'तुमने ठीक कहा, मेरे प्रिय; जैसा तुमने कहा है, वैसा ही करें।'

तो, प्रार्थना करने के लिए उठकर, हमने सारी रात प्रभु से भक्तिपूर्वक प्रार्थना की। और दयालु प्रभु, हमारी विनती को अनसुना न करना चाहकर, हमें एक संदेश के साथ अपना पवित्र स्वर्गदूत भेजने, जो सुबह हमें प्रकट होकर कहने लगा:

'प्रभु तुम्हें तुम्हारे जीवन में अलग कर रहे हैं; इसलिए, तुम, जॉन, यहाँ रहकर दूसरों के उद्धार के मार्गदर्शक बनो; और तुम, पैसियस, मसीह के सेवक, यहाँ से रेगिस्तान के पश्चिमी भाग में जाओ, क्योंकि प्रभु ने कहा है कि भिक्षुओं का एक बड़ा दल तुम्हारे पास इकट्ठा होगा, और, उनकी आज्ञा से, वहाँ एक मठ की स्थापना होगी, और तुम्हारे द्वारा उनका नाम महिमामय होगा।

यह कहकर, स्वर्गदूत चला गया। जहाँ तक हमारी बात है (यूहन्ना कहते हैं), हमने धन्यवाद दिया और प्रभु की आराधना की, और, उनकी आज्ञा से, अपने-अपने रास्ते चले गए: मैं अपनी पुरानी जगह पर ही रहा, जबकि धन्य पाइसियस रेगिस्तान के पश्चिमी भाग की ओर और आगे निकल पड़े; वहाँ उन्होंने पहाड़ में एक गुफा खोदी और उसमें रहने लगे, और वहाँ, पूर्ण पवित्रता और अनेक तपस्या के कार्यों के द्वारा, वे परमेश्वर के इतने निकट आ गए कि मसीह स्वयं उन्हें प्रकट हुए, उन्हें सिखाया और सदाचार में उनकी शिक्षा दी – जैसा कि यह सब समय आने पर वर्णित किया जाएगा।

एक दिन, जब पवित्र पाइसियस अपनी गुफा में ईश्वर की स्तुति के भजन गाते हुए बैठे थे, तो उद्धारकर्ता उनके सामने प्रकट हुए और कहा:

'तुम्हें शान्ति मिले, हे मेरे प्रिय सेवक!'

भय और भक्ति से अभिभूत होकर, वह उठ खड़ा हुआ और बोला:

'हे मानव जाति के प्रेमी, उद्धारकर्ता मसीह, मैं आपका दास हूँ; और हे प्रभु, आपने मुझ पर इतनी महान दया क्यों दिखाई है कि आप अब मेरी अयोग्यता तक उतरने की कृपा की है?'

इस पर प्रभु ने उत्तर दिया:

'क्या तुम इस मरुभूमि को देखते हो - यह कितनी विशाल और विस्तृत है? तुम्हारे लिए, मैं इसे तपस्वियों से भर दूँगा जो मेरे नाम का महिमामंडन करेंगे।'

तब परमेश्वर के चुने हुए संत, पैसियस, ज़मीन पर गिर पड़े और कहा:

हे प्रभु! सभी वस्तुएँ आपके शक्तिशाली हाथ का पालन करती हैं, और जो कुछ भी आप चाहते हैं, वह घटित होता है: अतः मैं आपकी दया की याचना करता हूँ—मुझे समझने की कृपा करें—कि इस मरुभूमि में परिश्रम करने वालों के लिए आवश्यक और अपेक्षित सभी चीज़ें कहाँ से आएँगी?

प्रभु ने उत्तर दिया:

'मेरी बात मानो, जो तुम्हें सत्य कहता हूँ: यदि मैं उनमें प्रेम देखूँ—जो सभी सद्गुणों की जननी है—और यदि वे मेरी सभी आज्ञाओं का पालन करें, तो उन्हें किसी भी बात की चिंता न करने दो: मैं स्वयं उनकी देखभाल करूँगा।'

तब पैसियस ने प्रभु से एक बार फिर पूछा:

'मैं एक बार फिर आपकी दया से पूछूँगा: वे शत्रु के जालों से बिना किसी बाधा के कैसे गुजरेंगे और राक्षसों के प्रबल प्रलोभनों से कैसे बचेंगे?'

इस पर प्रभु ने उत्तर दिया:

'यदि वे मेरी आज्ञाओं का पालन करते हैं, जैसा कि मैंने आपसे कहा है, नम्रता, धार्मिकता और एक विनम्र हृदय के साथ, तो मैं न केवल उन्हें शत्रु के सभी हमलों और चालाक युक्तियों से ऊपर उठाऊँगा, बल्कि मैं उन्हें स्वर्ग का राज्य उनकी विरासत के रूप में भी प्रदान करूँगा।'

यह कहने के बाद, उद्धारकर्ता महिमा में स्वर्ग में आरोहण कर गए।

संत पैइसियस, जिनका हृदय ईश्वर के भय से और भी अधिक गहराई से भर गया था, उद्धारकर्ता के स्वर्ग से उनके पास अवतरण पर अविराम चिंतन करने लगे।

लेकिन ईर्ष्या के पिता और मानवता के घृणित—शत्रु, शैतान—ने जब देखा कि पैइसियस, बड़ी चतुराई से उसकी सभी कपटी जालों से बचते हुए, उसकी योजनाओं के लिए अभेद्य था और उसकी सभी बदनामियों से ऊपर बना रहा, तो वह उसके प्रति और भी अधिक द्वेष से भर गया; लेकिन, परमेश्वर द्वारा प्रदान की गई दिव्य शक्ति के कारण उसके पास पहुँचने में असमर्थ, उसने अंततः मसीह के सेवक को अपनी जालों में फँसाने के लिए अन्य चालाकियाँ रचनी शुरू कर दीं। लालच के सुनहरे चारे से उसे फँसाने की सोचकर, शैतान ने दान के माध्यम से ईश्वर के संत को लोभ के जाल में फँसाने का प्रयास किया, ताकि—एक बार वह निर्लिप्तता से भटक जाए—तो द्वेष की उग्र आत्माओं के लिए उस पर हमला करना आसान हो जाए।

और इस प्रकार मानव जाति का कपटी शत्रु एक निश्चित मिस्र के राजकुमार के पास गया—जो धन-संपत्ति का स्वामी और ईश्वर-भयभीत व्यक्ति था; वह उसके पास एक स्वर्गदूत के रूप में प्रकट हुआ और कहा:

'प्रिय, उठो और मरुभूमि में जाओ; वहाँ तुम्हें पैसियस नाम का एक व्यक्ति मिलेगा—एक सर्वथा निर्धन, फिर भी ईश्वर द्वारा चुना हुआ पात्र, जो गुणों और दैवीय अनुग्रह से भरपूर है; जब तुम उससे मिलो, तो इस वरिष्ठ पर बिना किसी रोक-टोक के सोना प्रदान करो, ताकि उसके पास अन्य मरुभूमिवासियों की आवश्यकताओं की पूर्ति के साधन हों।'

राजकुमार, शैतान की इस धोखाधड़ी को पहचानने में असफल रहा, लेकिन यह सोचकर कि यह वास्तव में एक देवदूत है, उसने अपने सोने और चांदी का एक हिस्सा और भिक्षुओं के लिए आवश्यक कई अन्य चीजें लीं, और संत से मिलने के लिए निकल पड़ा। लेकिन पैसियस के भीतर वास करने वाली दैवी शक्ति ने उसे शैतान की इन चालों का खुलासा कर दिया, जो राजकुमार के दान के बहाने, धन के प्रेम के जाल में संत को फँसाना चाहता था - और धर्मपरायण व्यक्ति पैसियस, तुरंत उठकर, राजकुमार से मिलने के लिए बाहर गए।

जब संत उससे मिले, तो राजकुमार ने उनसे तपस्वी पैसियस के बारे में पूछा: 'वह कौन है, और वह कहाँ रहता है?' पैसियस ने, अपनी ओर से, राजकुमार से पूछा:

'तुम पैसियस को क्यों ढूंढ रहे हो? तुम्हें उससे क्या काम है?'

राजकुमार ने उत्तर दिया:

'मैं उसके साथ सोना, चाँदी और जीवन की सभी आवश्यक वस्तुएँ बाँटने आया हूँ, ताकि वह यह सब भिक्षुओं में बाँट सके।'

तब संत ने राजकुमार से कहा:

'हे मसीह के प्रेमी! जान लो कि सोना और चाँदी उन लोगों के किसी काम के नहीं जो इस रेगिस्तान में रहना चाहते हैं, और यहाँ बसे हुए कोई भी व्यक्ति आपकी संपत्ति में से कुछ भी लेना नहीं चाहेगा; इसलिए, दुखी मत हो, बल्कि घर लौट जाओ, क्योंकि ईश्वर आपकी अच्छी मंशा को स्वीकार करेगा। और यदि आप जो लाए हैं उसे बेसहारा लोगों में बाँटना चाहते हैं, तो मिस्र के शहरों में वास्तव में कई ज़रूरतमंद, गरीब, बेसहारा, अनाथ और विधवाएँ हैं - उनकी देखभाल करें - और आपको ईश्वर से एक बड़ा इनाम मिलेगा!

राजकुमार ने संत के शब्दों पर विश्वास करके घर लौट आया और जैसा उसे निर्देश दिया गया था, वैसा ही किया: उसने अपनी संपत्ति बेसहारा, गरीब और ज़रूरतमंदों में बाँट दी।

लेकिन जब आदरणीय पैसियस अपनी गुफा में प्रवेश कर रहे थे, तो शैतान उनके सामने प्रकट हुआ और कहा:

'हे पैसियस! अब मैं तेरा क्या करूँ, क्योंकि तू मेरी सभी चालाकियों को विफल कर रहा है? मैं इसके बजाय दूसरों पर हमला करूँगा; मैं तेरे पास फिर कभी नहीं लौटूँगा, क्योंकि तूने मुझे हरा दिया है।'

इसके बाद, उस धन्य व्यक्ति ने मसीह की शक्ति से अशुद्ध आत्मा को बाँध दिया और उसे अपने से दूर भगा दिया – और शैतान लज्जित होकर पीछे हट गया, और फिर कभी इतनी निर्लज्जता से संत के पास आने की हिम्मत नहीं की।

इसके तुरंत बाद, पूजनीय पतिा रेगस्तिान के सबसे भीतरी हस्सि के लिए रवाना हो गए; फरि भी, जब उनका शरीर वहाँ था, आत्मा में वे स्वर्गीय सेनाओं के साथ, सभी के प्रभु के सामने खड़े थे; वहाँ, अदेह प्राणयिों के समान बनकर, उन्होंने स्वयं को और भी कठोर जीवन के लिए समर्पति कर दयिा और, इसके लिए, उन्हें पृथ्वी पर रहते हुए ही दव्यि रहस्यों का चतिक बनने के योग्य माना गया; क्योंकि उनमें वास करने वाला पवत्रि आत्मा, स्वर्ग में धर्मी लोगों की अनंत वजिय को प्रकट करने में प्रसन्न था।

एक दनि, प्रार्थना करते समय, पैसयिस को ऐसा लगा मानो पंखों पर उड़कर वह पहले ही स्वर्ग में पहुँच गया हो: सबसे पहले, उसने उन सुंदर स्वर्गीय नविासों को देखा, जो अकथनीय प्रकाश और आनंद से परपिूर्ण थे; उसने प्रथमजन और शाश्वत वजियी लोगों की कलीसयिा को भी देखा; और वहाँ दव्यि रहस्यों के अदेह भोजन में भाग लेने के लिए योग्य समझा जाने पर, उसे परहेज़ और उपवास का परम वरदान प्राप्त हुआ। सप्ताह में एक बार – वशिेष रूप से प्रभु के पुनरुत्थान के रवविार को – संचार प्राप्त करने के बाद, ऊ , अगले रवविार तक पूरी तरह से बनिा भोजन के रहते थे: इस प्रकार, ईश्वर की कृपा की शक्ति से, उनकी प्रकृति सृष्टकिर्ता द्वारा समृद्ध हुई।

– 'जहाँ तक मेरा सवाल है,' उनके जीवनचरति के लेखक कहते हैं, 'ईश्वर के वचन पर हर वशि्वासी मेरा वशि्वास करे, क्योंकि मेरे पास एक वशि्वसनीय साक्षी के रूप में ईश्वर का वचन है। क्या यह स्वयं नहीं कहता कि सभी चीजें ईश्वर की आज्ञा के अधीन हैं? और चूँकि यह सच है, तो हर कोई जो मैं बताता हूँ उसे सत्य माने।' – मसीह के शरीर और रक्त के दव्यि रहस्यों में भाग लेने के बाद, पूजनीय पैसयिस कभी-कभी सत्तर दनिों तक शारीरकि भोजन के बनिा रहते थे; और इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है, क्योंकि दव्यि अनुग्रह में एक अनुपम शक्ति है, और इसलिए यह (पैसयिस) के भीतर क्षयशील भोजन से मलिने वाले पोषण की तुलना में जीवन को बेहतर ढंग से बनाए रख सकता था। जो लोग अपनी देहधर्मी प्रकृति के अनुसार जीते हैं, उनके शरीर को, कमजोर न पड़ने के लिए, अपना पोषण बनाए रखने हेतु पोषक तत्वों की आवश्यकता होती है; लेकनि जो लोग, अदेह प्राणयिों की तरह, प्राकृतकि से परे एक जीवन में उत्कृष्ट हैं, – उन्हें जीवन-दायक शक्ति यह अनुग्रह प्रचुर मात्रा में प्रदान करती है, जसिके आगे मानव स्वभाव समर्पण कर देता है, और वे अब देहकि भोजन से नहीं बल्कि आध्यात्मकि पोषण से ही अधकि जीवति रहते हैं। सर्वशक्तमिान सृष्टकिर्ता, हमारे ईश्वर, जानते हैं कि पृथ्वी पर सात सोए हुए युवकों के जीवन को तीन सौ वर्षों और उससे भी अधकि समय तक कैसे संरक्षति रखा जाए, और वास्तव में वे स्वर्गीय नविासों में एलयिाह के जीवन को अंतमि दनि तक संरक्षति रखते हैं। – लेकनि इस पर बस इतना ही – आइए हम धन्य पैसयिस के बारे में बात करें।

बहुत से लोग—सर्फि भक्षिु ही नहीं बल्कि आम लोग भी—इस पूजनीय पतिा के पास उमड़ पड़े, वे उनकी उपस्थति में रहना चाहते थे; मधुमक्खयिों के झुंड की तरह उनके चारों ओर इकट्ठा होकर, वे सभी उनकी आध्यात्मकि मधु की मठिास से तृप्त होने के लिए तीव्रता से लालायति थे। उन्होंने, सर्वव्यापी दैवी स्रोत से अनुग्रह ग्रहण करते हुए—जो इंद्रयिों को ज्ञात कसिी भी शहद या शहद के छत्ते से भी अधकि मीठा था—उन पर यह आध्यात्मकि पेय, अकथनीय मठिास से परपिूर्ण, उंडेला; जसिसे दनि-प्रतदिनि उनके चारों ओर इकट्ठा होने और बढ़ने वाले भाइयों की संख्या में बहुत वृद्धि हुई; वे सभी, इस संसार के सांसारकि मोह-माया को त्यागकर, सुसमाचार के अनुसार मसीह का जूआ अपने कंधों पर उठा लिए। इन भाइयों में से, पूजनीय पतिा ने कुछ को मौन के तपस्वी अभ्यास के लिए अलग रखा, ताकि वे प्रार्थना में उत्कटता के माध्यम से नजिी तौर पर ईश्वर से संवाद कर सकें; अन्य लोगों को उन्होंने आज्ञा दी कि वे बाकी लोगों के साथ मलिकर प्रभु की सेवा करें और भाइयों के साथ सामंजस्य में आज्ञाकारी बने रहें तथा सामान्य श्रम में भाग लें; जबकि एक तीसरे समूह को उन्होंने कोई धंधा सीखने के लिए अलग रखा, ताकि वे न केवल अपने हाथों की मेहनत से अपना भरण-पोषण कर सकें, बल्कि भूखे और गरीबों को भी खलिा सकें, और अन्य बेसहारा भाइयों और यात्रयिों की प्रेमपूर्वक देखभाल कर सकें। हालाँकि, उनका मुख्य उपदेश यह था: कोई भी अपनी मर्जी से कुछ न करे, बल्कि सब कुछ अनुभवी पतिाओं की आज्ञा और नर्णिय के अनुसार हो। अपने चारों ओर इकट्ठा होने वाले भाइयों के लिए पूजनीय पतिा का यही उपदेश और यही शक्षिा थी; जहाँ तक पूजनीय पतिा के अपने मौन जीवन का सवाल है, उसका वस्तिार से वर्णन करना असंभव है, लेकनि अनेक बातों में से कम से कम कुछ कहा जाए।

कुछ समय बीत जाने के बाद, रेवरेंड फादर ने देखा कि उनके पास आने वाले भाइयों के कारण उनका मौन जीवन लगातार बाधति हो रहा था, तो उन्हें यह एक बोझ लगने लगा, क्योंकि वे स्वयं मौन के तपस्वी अभ्यास का सख्ती से पालन करना चाहते थे; इसलिए, उन्होंने उस गुफा को छोड़ने का नश्चिय कयिा जहाँ वे पहले रहते थे, और साथ ही अपने भाइयों की देखभाल भी छोड़ दी। और इस प्रकार, सभी की अनभज्ञिता में, वह उस स्थान को छोड़कर रेगस्तिान के और भी

दूरदराज के हिस्सों के लिए निकल पड़े; वहाँ, एक जगह, उन्हें एक गुफा मिली, वे उसमें बस गए, और तीन साल तक वहीं रहे। इस दौरान, उसके सिर के बाल काफी बढ़ गए और इतने लंबे हो गए कि, उन्हें कुछ कौशल से गुफा के ऊपर लगे एक खंभे से बाँधकर, वह एक पल के लिए भी सोए बिना, अपनी सारी रात की प्रार्थनाएँ कर पाता था; इस प्रकार, रात-दिन, उन्होंने स्वयं को कोई आराम नहीं दिया, पूरी तरह से श्रम को समर्पित कर दिया, और केवल उसी में शांति पाई, ईश्वर के प्रेम के लिए, जिसने उन्हें सदैव आलिंगन किया। इसी कारण प्रभु उसे प्रेम करते थे, और उस आदरणीय को एक से अधिक अवसरों पर एक दिव्य दर्शन और मसीह के दर्शन की अनुग्रह प्राप्त हुई, ठीक वैसे ही जैसे हमारे उद्धारकर्ता स्वयं पवित्र सुसमाचार में कहते हैं: *'जो मुझ से प्रेम रखेगा, उस से मेरा पिता भी प्रेम रखेगा; और मैं भी उस से प्रेम रखूंगा, और अपने आप को उस पर प्रगट करूंगा'* (यूहन्ना 14:21)।

एक बार, जब परम पूजनीय पैइसियस ईश्वर के प्रति विशेष रूप से तीव्र प्रेम से भर गए, और उनका पूरा मन भक्तिपूर्ण प्रार्थना के माध्यम से प्रभु में डूबा हुआ था, – जैसा कि पिछली बारों पर हुआ था – उद्धारकर्ता मसीह उन्हें प्रकट हुए; लेकिन पैसियस, उद्धारकर्ता के परम पवित्र मुखमंडल की तेजस्वी महिमा को निहारने में असमर्थ, भय और कांपने से भूमि पर गिर पड़ा। फिर भी, परोपकारी प्रभु ने उसकी ओर अपना हाथ बढ़ाया और (हे राजा मसीह, आपके संतों के लिए, आपकी अगणित प्रेम!), पैसियस को जमीन से उठाते हुए, उससे कहा:

'मेरी प्रिय, तुझ पर शान्ति हो; न डर, और न तेरा हृदय काँपे; क्योंकि मेरी भलाई तेरे कर्मों में बहुत प्रसन्न होती है, और तेरी मेहनत मुझे अतिशय प्रिय है; तब आनन्दित हो, और इसके लिए एक उपयुक्त पुरस्कार प्राप्त करो: देखो, मैं तुम्हें यह वरदान देता हूँ: जो कुछ भी तुम मेरे नाम पर मेरे पिता से माँगोगे, वह तुम्हें दिया जाएगा।"

और संत पैइसियस ने, प्रभु से इतनी बड़ी कृपा देखकर, हिम्मत करके कहा:

हे मसीह, मानव जाति के ईश्वर और प्रेमी! यदि, अपनी अथाह कृपा से, आप मुझे—जो अयोग्य और दीन हूँ—इतनी कृपा का पात्र समझते हैं, तो मैं विनम्रतापूर्वक आपसे प्रार्थना करता हूँ: आप स्वयं मेरा मार्गदर्शन करें और मुझे सिखाएँ कि मुझे किसके लिए और किन आवश्यकताओं के लिए प्रार्थना करनी चाहिए, क्योंकि मैं अपने सभी पाप आपके सामने देखता हूँ और अपनी कमियों के लिए हमेशा आपकी दया की याचना करता हूँ: मेरे अनेक पापों को क्षमा करें और अपनी दया से ढक दें, और यह अनुग्रह दें कि मैं अपना शेष जीवन पाप रहित व्यतीत करूँ, ताकि, निर्भय होकर मोक्ष के मार्ग पर चलकर, आपकी सहायता और मार्गदर्शन से, मैं बिना किसी बाधा के धन्य जीवन को प्राप्त करूँ; क्योंकि आपकी सहायता और मार्गदर्शन के बिना कौन कोई अच्छा काम कर सकता है और आपकी दया प्राप्त कर सकता है? और हमारे कौन से पुण्य कार्य, कौन सी मेहनत या पराक्रम, आपके इतने महान दया के योग्य हैं - भले ही हम आपके लिए मृत्यु को भी स्वीकार कर लें, क्योंकि हमारे लिए यह उचित है कि हम अपने जीवन को आपके, हमारे सृष्टिकर्ता और उद्धारकर्ता, के लिए अर्पित कर दें, जिन्होंने हम पापियों से इतनी दयालुता से प्रेम किया है? क्योंकि यदि आप—अमर ईश्वर—हम नश्वर मनुष्यों के लिए, अपना परम पवित्र रक्त बहाकर, हमारे लिए क्रूस, मृत्यु और कब्र को सहन कर गए, ताकि आपके पुनरुत्थान द्वारा आप हमें भी पुनरुत्थान का वरदान दे सकें, तो हमारे उद्धारकर्ता, आपके लिए हमें किसी मृत्यु को सहन करना चाहिए?

जब संत पैइसियस ने उद्धारकर्ता से अत्यंत हार्दिक भक्ति के साथ इस प्रकार बात की, तो प्रभु ने उन पर आशीर्वाद दिया और उनसे दूर हटकर महिमा में स्वर्ग में आरोहण किया। पैइसियस ने अपनी ओर से अपने प्रभु के समक्ष नमन किया, उनकी दयालु सहनशीलता के लिए स्तुति और धन्यवाद अर्पित किया।

हमारा निम्नलिखित वृत्तांत (इस जीवनी के लेखक के अनुसार) इस पूजनीय व्यक्ति के पवित्र विश्वास के प्रति महान उत्साह को प्रदर्शित करने का उद्देश्य रखता है; यह उत्साह एक बार निम्नलिखित प्रकार से प्रकट हुआ।

मिस्र के एक गाँव में एक वृद्ध रहते थे; – अपने जीवन-यापन के तरीके में वे अत्यंत सदाचारी व्यक्ति थे, लेकिन वे पवित्र धर्मग्रंथों से पूरी तरह अनभिज्ञ थे – और इस प्रकार, अपनी अज्ञानता के कारण, वे निम्नलिखित विधर्म में पड़ गए: उसने पवित्र त्रिमूर्ति को त्रिमूर्ति के रूप में नहीं, बल्कि द्वैत के रूप में बताया; अर्थात्, उसने पिता और पुत्र की स्वीकारोक्ति की, जबकि पवित्र आत्मा के बारे में चुप रहा, यह दावा करते हुए कि वह ईश्वर नहीं है। और स्वयं इस झूठ पर विश्वास करके, उसने दूसरों को अपनी यह विधर्म सिखाई; आम लोगों में से कई लोग, ईश्वर के अनुरूप उसका पुण्य जीवन देखकर, उसके अपमानजनक अनुमानों और शिक्षाओं का अनुसरण करने लगे। लेकिन मसीह परमेश्वर, जो सभी के लिए उद्धार तैयार करते हैं, वृद्ध की मेहनत और उनके तपस्या के कार्यों को व्यर्थ नहीं होने देना चाहते थे, उन्होंने धन्य पैसियस को उनका पता बता दिया और उन्हें वह गाँव और वह स्थान दिखा दिया जहाँ यह पवित्र वृद्ध रहता

था। पैसियस ने तुरंत बड़ी जल्दी से यात्रा की तैयारी शुरू कर दी: उसने अपने हाथों से कई टोकरियाँ बनाईं, प्रत्येक में तीन-तीन हैंडल लगाकर, और एक मुसाफिर तथा अपने हस्तशिल्प का विक्रेता बनकर उन टोकरियों के साथ बूढ़े के पास चल पड़ा; हालाँकि, संत के साथ रहने वाले कई भिक्षु—जो उनके झूठे उपदेशों और भ्रामक आस्था का पालन करते थे—यात्री और उसकी टोकरियों को देखकर, और यह न पहचानकर कि यह पैसियस है, यह पूछने लगे कि वह कौन है और कहाँ से आया है। इस पर उन्होंने उत्तर दिया कि वह अपनी हस्तशिल्प वस्तुएँ बेचने के लिए रेगिस्तान से आया है। उन्होंने उनसे टोकरी के बारे में भी पूछा: वे तीन हैंडल वाली क्यों बनाई गई थीं? और संत पैसियस ने हमेशा उनसे उत्तर दिया:

'चूँकि मैं परम पवित्र त्रिमूर्ति का सेवक हूँ और उनमें गहराई से डूबा हुआ हूँ, इसलिए मैंने अपनी टोकरियाँ तीन हैंडल के साथ पवित्र त्रिमूर्ति के स्वरूप में बनाई हैं, ताकि मैं न केवल अपने हृदय में विश्वास करूँ और अपने होठों से स्वीकार करूँ, बल्कि अपने हस्तशिल्प के माध्यम से भी, जो दैवीय व्यक्तियों की त्रैतत्विक प्रकृति का प्रतीक है, मैं पवित्र त्रिमूर्ति – पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा – की महिमा कर सकूँ; क्योंकि एक हैंडल परमेश्वर पिता की प्रतिमा के अनुसार, दूसरा परमेश्वर पुत्र की प्रतिमा के अनुसार, और तीसरा पवित्र आत्मा परमेश्वर की प्रतिमा के अनुसार बना है; और जैसे प्रत्येक टोकरी में तीन हैंडल होते हुए भी वह स्वयं एक होती है, वैसे ही पवित्र त्रिमूर्ति में तीन व्यक्ति होते हुए भी एक ही परमेश्वर है।

जब संत पैसियोस पवित्र त्रिमूर्ति के इस रहस्य पर संक्षेप में प्रकाश डाल रहे थे, तो वे पुरुष अपने तपस्वी गुरु के साथ विस्मित हो गए और उन्हें सुनने के लिए तैयार होकर कहने लगे:

'हे अद्भुत व्यक्ति, हमें सच्चे विश्वास के बारे में और बताइए, इसे और स्पष्ट रूप से समझाइए, और अपनी शिक्षाओं से हमें और मार्गदर्शन दीजिए—आपने जो कहा है, उससे आप हमें पहले ही बहुत चकित कर चुके हैं।'

और दिव्य पैसियस, पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होकर, एक अनुभवी मार्गदर्शक की तरह, धैर्य और दैवीय ज्ञान के साथ विधर्मी भ्रम और उसकी आत्मा-विनाशकारी हानि का खंडन करने लगे, और उत्साहपूर्वक उन्हें पवित्र, ऑर्थोडॉक्स और आत्मा-रक्षक विश्वास में शिक्षित करने तथा उन्हें सही मार्ग पर ले जाने लगे। और लंबे समय तक पूजनीय पैइसियस ने उनसे दिव्य शास्त्रों और दैवीय प्रेरित पुस्तकों से संवाद किया, उन्हें पवित्र त्रिमूर्ति में विश्वास करना और इस सत्य को भक्तिपूर्वक स्वीकार करना सिखाया, और उन्होंने उस वरिष्ठ और उनके साथ मौजूद सभी को उनके पूर्व भूल के लिए पश्चाताप की ओर ले गए; और इस प्रकार उन्हें ज्ञान प्रदान करने के बाद, वह प्रभु की स्तुति के भजन गाते हुए अपने मरुस्थल में लौट आए। जैसे ही वह मरुस्थल के पास पहुँचे, अचानक उनकी आँखों के सामने एक बड़ी रोशनी चमकी; और, चारों ओर देखने पर, उन्होंने पूरे मरुस्थल को स्वर्गदूतों के झुंड से भरा हुआ देखा ; आश्चर्यचकित होकर, वह सोचने लगा कि यह क्या हो सकता है, और उसने प्रभु से जो कुछ भी उसने देखा था, उसका अर्थ प्रकट करने के लिए कहा। और तुरंत ही उसके साथ आए पवित्र स्वर्गदूत ने कहा:

'ईश्वर ने तुम्हें यह सब इसलिए दिखाया है ताकि तुम जान सको कि, चाहे तुम उपस्थित हो या नहीं, स्वर्गदूत, उनकी आज्ञा से, इस मरुभूमि में रहने वाले संतों की रक्षा करते हैं, ठीक वैसे ही जैसे प्रभु स्वयं ने तुमसे वादा किया था।'

और पैसियस, सभी का प्रबंधक परमेश्वर को इसके लिए धन्यवाद देकर, अपनी कुटिया की ओर चल पड़ा।

निम्नलिखित वृत्तांत संत पैसियस के भविष्य-दर्शन के वरदान, अर्थात् उस दूरदर्शिता से संबंधित है, जिससे ईश्वर के इस सेवक को संपन्न किया गया था।

दिव्य और पवित्र पैइसियस की ख्याति दूर-दूर तक फैल गई, और कई सदाचारी लोग उनसे मिलने और उनसे बात करने के लिए उन्हें खोजते थे; उसी प्रकार धन्य पिमेन, यद्यपि उस समय बहुत युवा थे, संत पैइसियस को देखने की प्रबल इच्छा से भर गए थे। वह आदरणीय पॉल के पास गया और उनसे महान पैसियस के पास अपने साथ चलने का आग्रह करने लगा: पॉल आमतौर पर संत पैसियस से अक्सर मिलते थे। लेकिन इस अनुरोध के जवाब में, उन्होंने पिमेन से कहा:

'तुम अभी बहुत छोटे हो, और मुझे तुम्हें इस संत के पास ले जाने में संकोच हो रहा है; क्योंकि वह ईश्वर के एक महान सेवक हैं और मौन को पसंद करते हैं, और हम उनके पास यूँ ही नहीं आते, बल्कि विवेक से आते हैं, और तब भी हमेशा नहीं, बल्कि केवल उपयुक्त समय पर - आध्यात्मिक लाभ के लिए।'

इस पर, पिमेन ने उत्तर दिया:

'लेकिन मैं, पिताजी, आपके साथ उनके पास आकर, कोठरी के बाहर ही खड़ा रहूँगा, जबकि आप अकेले संत से मिलने के लिए अंदर जाएँगे—यह मेरे लिए बहुत बड़ी सांत्वना होगी, भले ही मैं केवल उनकी आवाज़ सुनूँ जो आपको बोल रही हो; लेकिन भले ही मुझे उनकी आवाज़ सुनने की कृपा न मिले, फिर भी, कम से कम मैं उनकी कोठरी को छू लूँगा; और

जब आप उनके पास से बाहर आएँगे, तो मैं आपके सम्मानित चरणों को भी छू लूँगा, जो उस कोठरी में प्रवेश कर चुके हैं, और उस मिट्टी का एक मुट्ठी भर लूँगा जिस पर संत के पैर पड़े हैं – और यह मेरे लिए बहुत बड़ी खुशी होगी।

धन्य पाउल, यह देखकर कि पिमेन यह सब बड़ी विनम्रता और सच्ची आस्था से कह रहा था, उसे अपने साथ ले गया और महान पैसियस के पास गया; संत की कोठरी में पहुँचने पर, पाउल अकेले अंदर गया, जबकि पिमेन बाहर ही रहा।

एक पिता की तरह प्यार से पॉल का स्वागत करते हुए, संत पैसियस ने उनसे युवा पिमेन के बारे में पूछा, जिसे उन्होंने भले ही अपनी शारीरिक आँखों से अभी तक नहीं देखा था, पर अपनी आध्यात्मिक आँखों से दूर से ही देख लिया था – और पॉल से कहा:

'तुम्हारा साथी, वह युवक, कहाँ है?'

पॉल ने उत्तर दिया:

'वह, पिताजी, सेल के बाहर ही रह गया है, क्योंकि वह आपसे मिलने के लिए अंदर आने से डरता और शर्मिंदा है!'

तब संत ने पिमेन को अंदर आने का आदेश देते हुए कहा:

'उन लोगों को हमारे पास आने से रोकना सही नहीं है जिनके लिए उद्धारकर्ता ने स्वर्ग की चढ़ाई को आसान बना दिया है; वास्तव में, उन्होंने पवित्र सुसमाचार में मनुष्यों से कहा: *"यदि तुम न फिरो और बालकों के समान न बनो, तो परमेश्वर के राज्य में कभी प्रवेश न करोगे"* (मत्ती 18:3)।

यह कहने के बाद, संत पैइसियस ने उस युवक को लिया और उसे अपनी ओर मुड़ाकर, उस पर आशीर्वाद दिया, और पॉल से कहा:

'मेरे प्रिय पॉल, मुझ पर विश्वास करो, कि यह लड़का बहुत से लोगों की आत्माओं को बचाएगा, और बहुत से लोग, उसकी बदौलत, स्वर्गीय निवास के योग्य माने जाएँगे; क्योंकि उसके साथ प्रभु का हाथ है, जो उसकी रक्षा करता है और उसे दिव्य मार्ग पर मार्गदर्शन देता है।'

यह कहने के बाद, संत पैइसियस ने पिमेन के सिर पर अपना हाथ रखा और उसे एक बार फिर आशीर्वाद दिया; और आत्मा के उद्धार के बारे में एक काफी लंबी बातचीत के बाद, उन्होंने उन्हें शांति से विदा कर दिया; जबकि वे स्वयं, मौन रूप से, अपनी सामान्य तपस्या में लगे रहे।

हालाँकि, अब समय आ गया है कि पूजनीय पैइसियस के गौरवशाली चमत्कारों का वर्णन किया जाए।

सीरिया के प्रदेशों में एक महान तपस्वी रहते थे – एक ऐसे पुरुष जो अनेक गुणों से युक्त थे; एक दिन, जब यह भिक्षु प्रार्थना में खड़े थे, तो उन्होंने अनजाने में खुद से पूछा: 'मैं उन लोगों में से किसके समान हूँ जिन्होंने ईश्वर को प्रसन्न किया है?' जैसे ही उन्होंने यह सोचा, ऊपर से एक स्वर्गीय आवाज सुनाई दी:

'मिस्र की भूमि पर जाओ, और वहाँ तुम्हें पैइसियस नाम का एक व्यक्ति मिलेगा, जिसमें तुम्हारे समान ही विनम्रता और ईश्वर के प्रति प्रेम है।'

यह सुनते ही, वह धर्मात्मा साधु तुरंत बड़ी शीघ्रता से यात्रा की तैयारी करने लगा, और, लंबी सड़क या कठिन परिश्रम की परवाह किए बिना, सीरिया से मिस्र के लिए सीधे निकल पड़ा; , माउंट नित्रिया[4520] पहुँचने पर, उसने पैसियस के बारे में पूछा: 'वह कहाँ है?' और चूँकि पैसियस का नाम पहले से ही दूर-दूर तक प्रसिद्ध था, उसे तुरंत वह जगह दिखा दी गई जहाँ वह रहता था; वास्तव में, पैसियस भी बूढ़े के आगमन से अनभिज्ञ नहीं था, बल्कि ईश्वर की कृपा से उसे इसकी सूचना मिल गई थी; और इस प्रकार, उठकर वह बूढ़े से मिलने के लिए निकल पड़ा। मरुभूमि में मिलने पर, उन्होंने स्नेहपूर्वक एक-दूसरे को गले लगाया और प्रभु का पवित्र चुंबन किया; फिर, पैसियस की कुटिया में जाकर प्रार्थना करने के बाद, वे बैठ गए और बातचीत करने लगे।

वरिष्ठ संत पैइसियस से पहले बोले; उन्होंने एक दुभाषिए के माध्यम से सीरियाक भाषा में बात की, क्योंकि वे मिस्र की भाषा नहीं बोल सकते थे। पैइसियस, जो एक मिस्रवासी थे, इस बात से बहुत दुखी हुए कि वे सीरियाक भाषा नहीं जानते थे, क्योंकि वे वरिष्ठ के ज्ञान का एक भी शब्द चूकना नहीं चाहते थे। और इस प्रकार, स्वर्ग की ओर अपनी दृष्टि उठाकर और अपना मन ईश्वर की ओर मोड़कर, उन्होंने अपने हृदय की गहराई से एक आह भरकर कहा:

'पुत्र, हे वचन परमेश्वर के, मुझे, अपने दास को, इस पवित्र वृद्ध के वचनों की शक्ति को समझने की कृपा प्रदान करें!'

[4520] मिस्र के उत्तरी भाग में, नील डेल्टा में।

और जैसे ही उसने यह कहा – 'ओह, ईश्वर की सहायता हमेशा हमारे कतिनी नकिट होती है!' – वह तुरंत ही उस वृद्ध की सयिाक भाषा की बातचीत समझने लगा और, दैवी आत्मा से प्रबुद्ध होकर, उसने स्वयं भी सयिाक भाषा में उससे बात करनी शुरू कर दी, और वे दोनों बनिा कसिी दुभाषयि के अपनी ईश्वर-प्रेरति बातचीत में मग्न हो गए, एक-दूसरे को अपनी तपस्या की कठनिाइयों के बारे में बताते हुए, जो ईश्वर ने उन्हें सौंपी थीं, और – कि उनमें से प्रत्येक को कतिने दव्यि उपहार प्रदान कयि गए थे।

इस प्रकार वे छह दनि तक एक साथ रहे, आध्यात्मकि मठिास का भोग करते हुए और अपने उद्धारकर्ता, ईश्वर में आनंदति होते रहे। अपनी आत्मा-उद्धारक वार्तालापों के समापन पर, जब वरष्ठि पहले ही घर लौटने वाले थे, तब संत पैसयिस ने उस समय उनके साथ मौजूद अपने सभी शष्यिों को बुलाया और उनसे कहा:

'हे प्रयि बच्चों, यह सम्माननीय पुरुष, सद्गुणों में परपिूर्ण, पवत्रि आत्मा की कृपा से परपिूर्ण है; अत; तुम सब आओ, ताकि तुम उनका आशीर्वाद प्राप्त करो, और शत्रु की सभी बदनामयिों से अपनी रक्षा के लिए उनकी प्रार्थनाओं को स्वीकार करो।'

जब पैसयिस ने यह कहा, तो उनके सभी शष्यिों ने उस सीरयिाई संन्यासी को उचति सम्मान देना और उनका आशीर्वाद प्राप्त करना शुरू कर दयिा। तब, पैसयिस के शष्यिों के लिए प्रभु से प्रार्थना करने, मसीह के नाम पर उन्हें स्नेहपूर्ण चुम्बन देने और पूरे भाईचारे से वदिा लेने के बाद, यह वृद्ध, पैसयिस और उनके शष्यिों के साथ, अपने देश के लिए रवाना हो गया।

वृद्ध के प्रस्थान के कुछ ही समय बाद, एक भाई, जो दूसरों से अलग रहता था, संत पैसयिस के पास आया; संत के शष्यिों ने उससे कहा:

'हे प्रयितम! हमारे यहाँ सीरयिा देश से आए ईश्वर के एक पुरुष, संतों में एक महान वृद्ध; वह मन और हृदय दोनों से प्रबुद्ध हैं और अपने आत्मा-रक्षक प्रवचनों से हमें बहुत प्रोत्साहति कयि है; वह अभी-अभी घर के लिए रवाना हुए हैं, और यदि आप उन्हें देखना चाहते हैं, तो देख सकते हैं: क्योंकि वह अभी दूर नहीं गए हैं और अभी हमारे पास कहीं हैं; – इसलिए, उनसे मलिने के लिए पूरी कोशशि करें, ताकि आप उनके आशीर्वाद के योग्य माने जाएँ।"

और उस भाई ने तुरंत ही वृद्ध के पदचन्हिों पर चलने का नर्णिय लयि। लेकनि संत पैसयिस ने उससे कहा:

'मत जाओ: पूज्य वृद्ध पहले ही पथ के अस्सी पड़ाव से अधकि पार कर चुके हैं, क्योंकि बादल उन्हें ले जा रहे हैं।'

संत के यह कहने के बाद, सभी चकति रह गए और प्रभु की महमिा करने लगे, जो अपने संतों में अद्भुत हैं।

एक दनि, संत पैइसयिस को देखने की इच्छा से एक भाई उनके पास आया और उन्हें सोया हुआ पाया; और उनके सरि के पास उन्होंने अपने रक्षक देवदूत को खड़ा हुआ देखा, जो रूप में अत्यंत सुंदर था; और, आश्चर्यचकति होकर, उसने कहा: 'सचमुच, ईश्वर अपने प्रेमयिों की रक्षा करते हैं!' उस भाई ने सो रहे संत के पास जाने की हम्मित नहीं की, क्योंकि वह देवदूत की उपस्थति से डर गया था; और, ईश्वर का धन्यवाद करने के बाद, वह चला गया, क्योंकि उसे आदरणीय संत की उपस्थति में ईश्वर के देवदूत को देखने की कृपा मलिने से बहुत लाभ हुआ था।

संत पैसयिोस के एक शष्यि ने, उनके आदेश का पालन करते हुए, अपनी हस्तशल्पि वस्तुएँ बेचने के लिए मस्रि की ओर प्रस्थान कयि; रास्ते में उसकी मुलाकात एक यहूदी से हुई जो मस्रि ही जा रहा था, और वह उसके साथ चल पड़ा। रास्ते में, यहूदी ने भक्षिु की सादगी को देखकर अपनी दुष्ट जीभ से वषि उगलना शुरू कर दयि—वह वषि जो वह अपने हृदय में देह के सर्प से पालता था—और भक्षिु से अन्य बातों के अलावा कहा:

'हे प्रयि! तुम उस साधारण, सूली पर चढ़ाए गए मनुष्य में इतना वश्विास क्यों करते हो, जबकि वह बल्कुिल भी अपेक्षति मसीहा नहीं था? कसिी और को आना है, पर वह नहीं।'

यहूदी द्वारा उससे और भी कई चालाक और आत्मा-भ्रष्ट करने वाले शब्द कहने के बाद, भक्षिु अपनी मानसकि कमजोरी और हृदय की सादगी के कारण यहूदी के बहकावे में आ गया: उसने उसकी बातों को सत्य मान लयि और एक बार तो यह भी कहा:

'शायद आप जो कह रहे हैं वह सच है।'

ओह, क्या धोखा और क्या अप्रत्याशति वपित्ति! क्योंकि इस भक्षिु ने (हाय मेरे लिए) तुरंत ही अपने बपतस्मिा की कृपा खो दी, जैसा कि नीचे वर्णति कयि जाएगा।

जब वह रेगस्तिान लौटा और आदरणीय पैइसयिस के पास आया, तो बड़े भाई मानो उसके लिए अप्राप्य हो गए: उन्होंने न केवल अपने शष्यि की ओर देखने से इनकार कर दयि, बल्कि हर मोड़ पर उससे मुंह मोड़ लयि और उत्तर में

एक भी शब्द नहीं कहा। और लंबे समय तक गुरुजी ने अपने शिष्य से इसी तरह परहेज़ किया, जबकि शिष्य इस पर गहराई से दुखी था और उसके हृदय में पीड़ा थी, क्योंकि वह जानता था कि संत पैसियस के सामने उसकी ओर से कोई दोष या उल्लंघन नहीं था। अंततः एक अनुकूल क्षण का लाभ उठाते हुए, भिक्षु ने पूजनीय के पास आकर उनके चरणों में गिरकर कहा:

'पिताजी, आप मुझसे अपना मान्यवर चेहरा क्यों मोड़ते हैं और अपने इस दीन शिष्य की अवहेलना क्यों करते हैं? और आप अब मेरे साथ ऐसा व्यवहार क्यों करते हैं जो आप पहले कभी नहीं करते थे—मुझसे ऐसे मुंह मोड़ते हैं जैसे मैं कोई नीच व्यक्ति हूँ?'

बड़े भैया ने उत्तर दिया:

'तुम कौन हो, आदमी? मैं तुम्हें नहीं जानता।'

भिक्षु ने उत्तर दिया:

'फादर, मुझमें ऐसा क्या अजीब है कि आप मुझे पहचान नहीं पा रहे हैं? क्या मैं आपका शिष्य नहीं हूँ?' – और इसके साथ ही उसने अपना नाम बताया।

तब वृद्ध ने उससे कहा:

'मेरा वह शिष्य एक ईसाई था और उसमें बपतिस्मा की कृपा थी, लेकिन तुम ऐसे नहीं हो; फिर भी, यदि तुम वास्तव में मेरे वही शिष्य हो, तो सचमुच बपतिस्मा की कृपा तुमसे चली गई है और तुमसे ईसाई होने का स्वरूप छीन लिया गया है। 'तो मुझे बताओ, तुम्हें क्या हुआ है? और मुझे उस प्रलोभन के बारे में बताओ जिसका तुमने सामना किया है, और तुमने अपने रास्ते में कौन सा आत्मा-विनाशकारी ज़हर ग्रहण किया है?'

'मुझे क्षमा करें, पिताजी,' भिक्षु ने उत्तर दिया, 'मैंने कुछ नहीं किया है।'

तब संत ने कहा:

'मेरे पास से चले जाओ, उन सभी के साथ जो प्रभु का त्याग कर चुके हैं; मैं तुमसे बात नहीं करना चाहता; क्योंकि यदि तुम पहले की तरह मेरे शिष्य होते, तो मैं तुम्हें पहले की तरह ही देखता।'

तब भिक्षु ने आह भरते हुए, दुख के आँसू बहाते हुए कहा:

'मैं ही आपका वही शिष्य हूँ, और कोई और नहीं, और मुझे नहीं पता कि मैंने क्या गलत किया है।'

इसके बाद, महान पैसियस ने उससे पूछा:

'तुम रास्ते में किससे बात कर रहे थे?'

'एक यहूदी के साथ,' भिक्षु ने उत्तर दिया, 'और किसी और के साथ नहीं।'

तब संत ने उससे कहा:

'यहूदी ने तुमसे क्या कहा, और तुमने उससे क्या कहा?'

संत के शिष्य ने उत्तर दिया:

– यहूदी ने मुझसे और कुछ नहीं कहा, सिवाय इसके कि मसीह, जिसकी तुम पूजा करते हो, सच्चे मसीह नहीं हैं, और यह कि उद्धारकर्ता अभी दुनिया में आना बाकी है; जिस पर मैंने उत्तर दिया, 'शायद तुम जो कह रहे हो वह सच है।'

तब वरिष्ठ ने उद्घोष किया:

'हे दुर्भाग्यशाली! इन शब्दों से बुरा या अधिक नीच और क्या हो सकता है, जिनके द्वारा तुमने मसीह और उनके दिव्य बपतिस्मा का परित्याग किया है? अब जाओ और अपनी किस्मत पर जैसा चाहो वैसे विलाप करो, क्योंकि मेरे पास तुम्हारे लिए कोई जगह नहीं है; परन्तु तुम्हारा नाम उन लोगों में लिखा है जिन्होंने मसीह का परित्याग किया है - उनके साथ तुम न्याय और यातना का सामना करोगे।'

वरिष्ठ के इन शब्दों के बाद, उनके शिष्य ने आह भरते और रोते हुए, अपनी आँखें स्वर्ग की ओर उठाईं और पूजनीय से विनती करते हुए पुकार लगाई:

'हे पिता, इस दीन आत्मा पर दया करें, और मेरी आत्मा को शांत दें! अपनी ही लापरवाही के कारण दिव्य ज्ञान से वंचित हो कर और दुष्ट राक्षसों के लिए आनंद और प्रसन्नता का स्रोत बन कर, अब मुझे समझ नहीं आता कि क्या करूँ; परन्तु मैं परमेश्वर और आपकी पवित्र प्रार्थनाओं में शरण लेता हूँ—इस दीन आत्मा को तुच्छ न समझिए, और हमारे प्रभु मसीह के समक्ष मेरे लिए मध्यस्थता कीजिए—ताकि वह एक बार फिर मुझ पर अपनी दया लौटा दें!

जब वह इस प्रकार प्रार्थना कर रहा था—अपने शब्दों से अधिक अपने आँसुओं से वृद्ध को प्रसन्न करते हुए—तो संत ने उसे देखकर करुणा से कहा:

'धैर्य रखो, मेरे बच्चे; अब हमें तुम्हारी ओर से मानवता से प्रेम करने वाले ईश्वर की उदारता का आह्वान करना होगा।'

यह कहकर, पूजनीय पिता प्रार्थना करने के लिए अलग हो गए और प्रभु से अपने उस शिष्य के पाप को क्षमा करने का आग्रह करने लगे, जिसने लापरवाही और सरल-मन की असावधानी से उनके विरुद्ध पाप किया था। और प्रभु, जो कभी तिरस्कार नहीं करते बल्कि हमेशा अपने सेवक की प्रार्थनाओं को स्वीकार करते हैं, दयालु हो गए और पापी को क्षमा कर दिया; और इस क्षमा का संकेत निम्नलिखित दर्शन था: पूज्य पिता ने पवित्र आत्मा की कृपा को एक कबूतर के रूप में उस शिष्य के पास लौटते और उसके मुँह में प्रवेश करते हुए देखा; उसी समय, उन्होंने पापी भिक्षु से एक काले धुएँ के रूप में दुष्ट आत्मा को निकलते और हवा में फैलते हुए देखा।

यह देखकर, पूजनीय पिता को विश्वास हो गया कि प्रभु ने उस भाई को क्षमा कर दी है और, उसकी ओर मुड़कर, कहा:

'हे मेरे बच्चे, मेरे साथ मिलकर हमारे ईश्वर मसीह की महिमा और धन्यवाद करो, क्योंकि अशुद्ध, निन्दा करने वाला आत्मा तुमसे दूर हो गया है, और उसकी जगह पवित्र आत्मा तुममें प्रवेश कर गया है, जो तुम्हें बपतिस्मा की अनुग्रह को पुनर्स्थापित कर रहा है; और इसलिए, अब से सावधान रहना कि आलस्य और लापरवाही के कारण, तुम फिर से शत्रु के जालों में न फँसो और पाप करके, गेहेना की आग का वारिस न बनो।

यह संत पैसियोस के चमत्कारों में से एक था; लेकिन आइए हम कथा को जारी रखें और उनके अन्य गौरवशाली कार्यों के बारे में बात करें।

एक बार, जॉन नामक एक वृद्ध संत पैसियोस के पास आए; उन्होंने कई साल रेगिस्तान में उपवास के तपस्वी अनुशासन का अभ्यास करते हुए बिताए थे। यह भाई बहुत भूखा था और उसे भोजन की आवश्यकता थी। रेवरेंड फादर ने अपने आत्मा में यह महसूस करते हुए कि जॉन बहुत भूखा था, अपने शिष्य से कहा:

'जल्दी करो और हमारे लिए भोजन तैयार करो, और कुछ खाना लाओ ताकि हम पिता जॉन के साथ खा सकें।'

जब भोजन तैयार हो गया, तो परम पावन पैसियस ने जॉन को भोजन का निमंत्रण देते हुए कहा:

'आपके लंबे उपवास के कारण, अब आपको भोजन की आवश्यकता है; इसलिए, भोजन करें और अपनी शक्ति पुनः प्राप्त करें।'

इस पर जॉन ने उत्तर दिया:

'मुझे क्षमा करें, फादर; अब उपवास का समय है, और मेरे अनेक पापों के कारण, मेरे लिए उपवास करना ही उचित है।'

तब उस वृद्ध ने, जॉन के संयम को देखकर, तुरंत अपने पैरों पर खड़े हो गए और, स्वर्ग की ओर देखते हुए, अपने हृदय की गहराई से कहा:

'हे प्रभु, अपने सेवक जॉन पर कृपा दृष्टि डालो, जो आपके नाम के लिए अपनी शक्ति से परे परिश्रम कर रहा है!'

जब पैसियस इस प्रकार प्रार्थना कर रहे थे – उनके पुण्यों के प्रभाव से – तो जिस व्यक्ति के लिए वे यह प्रार्थना कर रहे थे, उस पर ईश्वर की ओर से एक महान और गौरवशाली प्रकाश प्रवाहित हुआ; – और देखो, यूहन्ना, जैसे समाधि की अवस्था में, ने एक सुंदर युवक को अपने हाथों में भोजन और पेय पकड़े हुए देखा जो उन्हें उसकी भूख मिटाने के लिए उसे दे रहा था; और जब वह होश में आया, तो वह बड़ी मिठास से भर गया, जैसे कि वह किसी शानदार दावत से पूरी तरह तृप्त हो गया हो, और उसे वृद्ध द्वारा दिए गए भोजन की अब और आवश्यकता नहीं थी, क्योंकि वह पहले ही दिव्य आहार से तृप्त हो चुका था; परन्तु, परमेश्वर और उनके पवित्र सेवक पैसियस को धन्यवाद देने के बाद, वह अपने रेगिस्तान के एकांतवास में लौट आया और उपवास में अपनी लगन को दोगुना कर दिया, लगातार अपने आप से कहता रहा:

'मैंने अत्यंत मधुर रूप से खा लिया है; अत; मैं उत्साह के साथ उपवास करूँगा।'

इस प्रकार यह धन्य जॉन, संत पैसियस की प्रार्थनाओं से बल प्राप्त कर, अपने उपवास में सफल हुआ।

'जब मैं कभी-कभी पूजनीय पैसियस के साथ बैठता था,' धन्य जॉन कोलोव लिखते हैं, 'तो कुछ भिक्षु उनके पास आते थे, जो अपनी आत्मा के लिए लाभकारी शब्द सुनना चाहते थे, और अक्सर उनसे पूछते थे:

'हमें बताइए, पिताजी, हमारे उद्धार के बारे में – हमें प्रभु के लिए कैसे जीना चाहिए?'

इस पर वरिष्ठ उत्तर देते थे:

'ईश्वर की आज्ञाओं का पालन करो और पितरों की परंपराओं को संरक्षित रखो।'

एक अन्य अवसर पर, भिक्षुओं ने उनसे पूछा:

'हमें बताइए, पिताजी, कुछ और जो हमारी आत्माओं के लिए लाभदायक हो।'

ईश्वरभक्त पुरुष ने अपनी सूक्ष्मदृष्टि से उनके विचारों को देखकर प्रत्येक को बताया कि वह क्या सोच रहा था, और साथ ही उन्हें समझाया कि उनके विचारों में कौन से अच्छे थे और कौन से बुरे, तथा ये विचार उनके हृदय में किस स्रोत से उत्पन्न हुए थे।

ये भिक्षु, वृद्ध की अंतर्दृष्टि से अत्यंत चकित होकर, मुझसे (जैसा कि जॉन कोलोव बताते हैं) निजी तौर पर कहा:

'सचमुच, फादर जॉन, अबा पैइसियस ने हमारे हृदय के सभी रहस्य हमें प्रकट कर दिए हैं, और जो केवल ईश्वर को ही ज्ञात था, उन्होंने उसे हमारे भीतर स्पष्ट रूप से देखा।'

जिस पर मैंने उत्तर दिया:

'हमने भी कई बार उनकी इस अंतर्दृष्टि का अनुभव किया है; यदि आप मुझ पर विश्वास करते हैं, तो मैं आपको सच बताऊँगा, क्योंकि मेरा इरादा उनके बारे में केवल सत्य बोलने का है: क्योंकि हम सच्चे न्यायाधीश से डरते हैं, जो पवित्र सुसमाचार में कहते हैं: *"अपने शब्दों से तुम निर्दोष ठहरोगे, और अपने शब्दों से तुम दोषी ठहरोगे"* (मत्ती 12:37)। *'मैं तुम्हें बताता हूँ कि न्याय के दिन लोगों को उनके बोले हुए हर व्यर्थ वचन का हिसाब देना होगा'* (मत्ती 12:36)। 'इसलिए मैं आपसे एक ऐसी बात कहता हूँ जो न तो झूठी है और न ही व्यर्थ—हर वह बात जो मैंने अक्सर अपने मन में सोची और दूसरों से छिपाकर गुप्त रूप से की, फादर पैसियस, जब भी मैं उनसे मिलने आता, वे मुझसे इन सबके बारे में बात करते, मानो वे मेरे साथ कोठरी में हों और मैं जो कुछ भी कर रहा था, वह सब देख रहे हों।'

भिक्षुओं ने मुझसे यह सुनकर आश्चर्यचकित होकर कहा:

'*"वह अपने लोगों को बल और सामर्थ्य देता है"* (भजन संहिता 67:36)।'

और इसके बाद वे चले गए, और प्रभु की महिमा करने लगे उस महान अनुग्रह के लिए जो उनके सेवक, संत पैइसियस पर प्रदान किया गया था।

आइए हम इस बात पर भी चर्चा करें कि पूजनीय की प्रार्थनाएँ कितनी शक्तिशाली थीं, और कैसे वे ईश्वर से भटक गए एक बड़े पापी को वापस उसकी ओर लाने और उसे मोक्ष के मार्ग पर लाने में सक्षम थीं।

इज़ाक नामक एक भाई ने, अपने हृदय की प्रेरणाओं का अनुसरण करते हुए, मौन के अपने तपस्वी जीवन को त्यागने का निर्णय लिया और शहर के पास बस गया; और चूँकि वह अपनी हस्तकला बेचने के लिए अक्सर इस शहर में आता था, वह बहुत जल्द विनाश के जाल में फँस गया: एक यहूदी महिला उससे कुछ खरीदने के लिए आई जो वह बेच रहा था; लेकिन उसने, उसके चेहरे पर नज़र डालते ही, उसकी सुंदरता को देखा और तुरंत उसके प्रति एक अशुद्ध विचार से ग्रस्त हो गया; इसी तरह, उस महिला ने, यह देखकर कि वह अभी भी एक जवान आदमी था, उस पर अपनी नज़र गड़ा दी, और उनके बीच हुई बातचीत के बाद, वे एक-दूसरे के प्रति शैतानी प्रेम से भर गए। इस प्रकार, कुछ ही समय में, शैतान की सहायता से, वह भिक्षु उस दुष्ट महिला के जाल में फंस गया और, पाप को गर्भ में धारण करके, उसने अन्याय को जन्म दिया: उसने संन्यासी जीवन त्याग दिया, उससे विवाह कर लिया और – ओह, क्या त्रासदी! इससे भी बुरी बात यह थी कि उस दुर्भाग्यपूर्ण व्यक्ति ने इस महिला के प्रेम में न केवल अपना संन्यासी जीवन बल्कि अपना धर्म भी त्याग दिया; वह यहूदी धर्म में परिवर्तित हो गया और, उनके पुराने नियम के कानून का पालन करते हुए, यहूदियों के बीच रहता था, उनका स्थायी साथी था, और हमारे उद्धारकर्ता मसीह की निंदा करता था, ठीक वैसे ही जैसे यहूदी करते हैं: इज़ाक ने हर तरह से अपनी दुष्ट और अशुद्ध पत्नी की इच्छा का पालन किया, जो मसीह के प्रति द्वेष और उनके परम पवित्र नाम के प्रति घृणा से इतनी ग्रस्त थी कि वह अक्सर अपने दुर्भाग्यपूर्ण पति का सिर अपनी गोद में रखती, उसका मुँह खोलती, और एक छोटी टहनी से उसके दाँत खींचती, और ऐसा करते हुए कहती: 'उसके दाँतों में ईसाई संस्कार का कोई भी अंश न बचे'—क्योंकि इस दुष्ट पत्नी का मानना था कि ईसाइयों के लिए, दिव्य संस्कार दाँतों में लंबे समय तक रहता है;—और उसके पति ने उसकी दुष्टता के आगे समर्पण कर दिया और सचमुच हमारे प्रभु मसीह के शत्रु बन गए। हे अधर्म! लेखक कहते हैं, 'मैं जानता हूँ कि जो कोई भी यह सुनेगा, वह अपने हृदय में दुखी होगा, परन्तु मैं परमेश्वर की दीर्घ सहनशीलता, मानवजाति के प्रति उनके महान प्रेम, और उनकी असीम दिव्य कृपा पर आश्चर्यचकित हूँ, जो न केवल धर्मी से प्रेम करता है, बल्कि पापियों पर भी दया दिखाता है, और एक गुप्त आगम के द्वारा उनके हृदयों को स्पर्श

करता है, ठीक वैसे ही जैसे सूर्य की एक किरण, चारों ओर से बंद एक मंदिर में एक छोटे से छेद से होकर, उसे पूरी तरह से प्रकाशित कर देती है। हालाँकि, अब मैं रुकी हुई कथा पर वापस आता हूँ।

वह दुष्ट भिक्षु, जो संन्यासी जीवन और ईसाई धर्म से मुँह मोड़ चुका था और अपने विनाशकारी अविश्वास के कारण नरक की गहराइयों में गिर गया था, काफी लंबे समय के बाद—चूँकि वह इस दुष्टता में गिर गया था—धीरे-धीरे, मानो, होश में आने लगा और पश्चाताप से पीड़ित होकर, अपने विनाश की पूरी सीमा को महसूस करने लगा। उस समय, रेगिस्तान के कुछ भाई, जहाँ यह धर्मत्यागी भिक्षु, इसाक, पहले अपना तपस्या जीवन व्यतीत करता था, उन्हें अपने काम से शहर जाना पड़ा। ईश्वर की व्यवस्था से, उन भिक्षुओं को उस घर के पास से गुजरना पड़ा जहाँ वह, भटक कर, अपनी यहूदी पत्नी के साथ रहता था; उन्हें आते देख, उसे तुरंत अपने हृदय में गहरा दुख हुआ, उसे अपना पूर्व जीवन और पवित्र भाइयों की धार्मिक संगति याद आ गई; घर से बाहर निकलकर उनका स्वागत करते हुए, उसने उनसे पूछना शुरू किया कि वे कहाँ से हैं, कौन हैं, और वहाँ क्यों आए हैं। उन्होंने उससे उत्तर दिया:

'हम नाइट्रियन मरुभूमि[4521] से हैं, महान पैसियोस के शिष्य हैं, और हम यहाँ काम से आए हैं।'

तब, एक गहरी आह भरकर, उसने उन्हें अपने बारे में सब कुछ बता दिया और बड़ी विनम्रता से उनसे निवेदन करने लगा कि वे उसकी प्रार्थना महान संन्यासी तक पहुँचा दें, ताकि वे उसके लिए प्रभु से मध्यस्थता कर सकें, और उनकी प्रार्थनाओं के द्वारा वह शत्रु के जाल से मुक्त हो सके। भिक्षुओं ने, अपने हृदय में उनके प्रति गहरी करुणा महसूस करते हुए, उनके अनुरोध को पवित्र वृद्ध तक पहुँचाने का वादा किया, और उन्होंने वास्तव में ऐसा किया: घर लौटने पर, उन्होंने यह सब धन्य पिता को सुनाया। वृद्ध ने, उनकी बात सुनकर, अपने हृदय की गहराई से एक गहरी आह भरी और कहा:

'हाय मेरे प्रिय बच्चों, मनुष्य कितनी बार महिलाओं के कारण दिव्य अनुग्रह खो देते हैं! हमें प्राचीन पितरों द्वारा लिखित पवित्र पुस्तकों में ऐसे पुरुषों के उदाहरण मिलते हैं; क्योंकि शत्रु, जो मानवता के विरुद्ध युद्ध छेड़ता है, उसके पास महिलाओं से अधिक शक्तिशाली कोई हथियार नहीं है; इस हथियार का उपयोग करके, विरोधी ने महान पुरुषों को भी आसानी से हरा दिया: महान दाऊद और उनके परपोते और पोते को याद करो; – इसीलिए हमें भी हमेशा सतर्क रहना चाहिए और प्रभु से ऐसी धोखेबाजी से बचाए जाने के लिए हमेशा प्रार्थना करनी चाहिए।

यह कहने के बाद, वृद्ध ने अपने प्रार्थना कक्ष में खुद को बंद कर लिया और प्रार्थना में खड़े होकर, प्रभु से इस प्रकार पुकारने लगे:

हे प्रभु यीशु मसीह, परमेश्वर के पुत्र और वचन! अपने हाथों के काम को तुच्छ न समझें, और उस भिक्षु को अनंतकाल के लिए विनाश की गहराई में न जाने दें, बल्कि अपनी स्वर्गीय निवास से दयालुता से निहारें और उन प्रार्थनाओं को तुच्छ न समझें जो मैं आपको अर्पित करता हूँ: उसके लिए इस विनती को स्वीकार करें जो आपसे भटक गया था और अब पश्चाताप करके लौट आया है: मैं आपकी दया से प्रार्थना करता हूँ – उसे पश्चाताप के लिए बुलाएँ।

जब संत ने कुछ समय तक इस प्रकार प्रार्थना की और निरंतर ईश्वर की उदारता का आह्वान किया, तो ईश्वर की दया उनकी विनतियों से प्रेरित हुई; क्योंकि उद्धारकर्ता अपने प्रेमियों की प्रार्थनाओं को तुच्छ नहीं समझते। प्रभु स्वयं पवित्र वृद्ध के पास प्रकट हुए, और जो सर्वज्ञ हैं, उन्होंने उससे पूछा:

'तुम दिन-रात किसके लिए मुझसे पुकार रहे हो? क्या यह उस दुर्भाग्यशाली के लिए नहीं है जो मुझसे मुँह मोड़कर अब शत्रुओं के पास चला गया है—वह शापित व्यक्ति जो कभी एक भिक्षु था, पर अब यहूदी बन गया है? क्या तुम इसी व्यक्ति के लिए प्रार्थना नहीं कर रहे हो, मेरे प्रिय पैइसियस?'

बर्खुर्दार ने प्रभु से उत्तर दिया:

'मैं उसी के लिए आपकी दया की भीख माँगता हूँ, हे परोपकारी प्रभु। आपकी उन कृपाओं को देखकर, जो सभी को उद्धार की ओर बुलाती हैं और पापी की मृत्यु की कामना नहीं करतीं, बल्कि उसके धर्म-परिवर्तन की प्रतीक्षा करती हैं—आपकी इन कृपाओं के लिए, मैंने उसकी ओर से आपकी करुणा की भीख माँगने का साहस किया है: हे परम दयालु चरवाहे, भटकते हुए भेड़ को वापस बुलाएँ; उसे अपने झुंड में वापस लाएँ और उस पर दया करें।

इस प्रार्थना के उत्तर में, प्रभु ने उससे कहा:

[4521] नित्रियिन मरुभूमि में मठवाद की स्थापना संत एंथनी के समकालीन, संत एम्मोन ने की थी। नित्रिया में ही, संत एम्मोन ने एक मठ की स्थापना की, जबकि एंथनी ने स्केट्स (sketes) की स्थापना की नींव रखी। चौथी शताब्दी के अंत तक, यहाँ 50 तक मठ हो गए थे, जो संत पाचोमियस के नियम के अनुसार संगठित थे। नाइट्रिया के दक्षिण में स्कैटकि मरुभूमि थी, जहाँ कई भिक्षु रहते थे।

'हे मेरे प्रयि! तुम्हारी धार्मकिता महान है: तुम मेरे प्रेम का अनुकरण करते हुए, पापयिों के उद्धार की परवाह करते हो; अत; दुखी न हो: जो तुमने माँगा है, वह तुम्हें दयिा जाएगा।'

यह कहने के बाद, प्रभु स्वर्ग में आरोहण कर गए। कुछ ही समय बाद, वह दुष्ट यहूदी स्त्री, जो ईश्वर के क्रोध से पीड़ति थी, मर गई। इसहाक, अपनी ओर से, एक बार फरि से रेगस्तिान लौट आए और, पूजनीय पति के सामने उपस्थति होकर, उनके पवत्रि चरणों में गरि पड़े, और रोते हुए अपने पापों का इक़रार करने लगे; अपने लौटने और पश्चाताप से उन्होंने पूजनीय पति और उस रेगस्तिान के सभी संतों को बहुत प्रसन्न कयिा। महान पति से उपदेश प्राप्त करने के बाद, इस भक्षिु ने एक बार फरि से अपने पूर्व वश्विास को अपना लयिा और स्वदूत समान स्वरूप में नए सरि से परधिान धारण कयिा; और उसने अपने पापों पर रोते और वलिाप करते हुए, महान तपस्या में परश्रिम कयिा; और इस प्रकार अपने सभी दनि पश्चाताप में, सदाचारपूर्वक और परमेश्वर को प्रसन्न करने वाले होकर बतिाए, और वह प्रभु के पास चला गया। और यह सब पापी को परम पूज्य पैइसयिस की प्रार्थनाओं से प्राप्त हुआ: उसने पश्चाताप कयिा और उद्धार पाया; जबकि हम पर, जो इन गौरवशाली कृत्यों को सुनते हैं, यह कर्तव्य है कि हम मसीह परमेश्वर की महमिा करें और उनकी स्तुति करें, जन्होंने अपने सेवक को इतना गौरवान्वति कयिा।

आदरणीय पैसयिस के शष्यिों में एक वृद्ध थे जनिकी आदतें और व्यवहार पूरी तरह से सांसारकि थे; और जब भक्षिु शक्षिा के लिए आदरणीय के पास आते और उनके ईश्वर-प्रेरति वचनों को सुनते, – वह बूढ़ा भी उनके साथ सुनता था, परन्तु उसे उससे कोई लाभ नहीं होता था, क्योंकि उसके भीतर अच्छी तरह से संवारा हुआ और उपजाऊ मट्टिी का अभाव था; बल्कि, उसका हृदय पत्थर की तरह कठोर हो गया था, और इसलिए दव्यि उपदेशों का अच्छा बीज उसके भीतर जड़ नहीं पकड़ सकता था या फल-फूल नहीं सकता था: कभी-कभी तो वह संत के शब्दों का अपमान भी करता था; क्योंकि, आदरणीय की उपस्थति से हटकर, वह वृद्ध कभी-कभी, अन्य भ्राताओं की उपस्थति में, संत पैसयिोस के प्रवचनों का अपमान करने लगता था, और केवल संसारयिों और अधर्मी लोगों के अनुरूप भ्रष्ट और ईश्वर-नन्दिा करने वाली झूठी बातें बोलता था – और कुछ भक्षिु उससे सुनी गई ईश्वर-नन्दिा से भटक गए। काफी समय बीत जाने के बाद, भ्रातृगण, अब उनके भ्रष्ट करने वाले शब्दों को सुनना नहीं चाहकर, फरि भी स्वयं इस बात को पवत्रि पति को बताने का साहस न करते हुए, एक ईश्वर-प्रेमी और सदाचारी तपस्वी के पास गए और उस दुर्भावनापूर्ण वरष्ठि की शकिायत की; जसि पर वह तपस्वी उनके साथ महान पैसयिस के पास चल पड़ा।

उसी क्षण, जब संत अकेले ईश्वर के ध्यान में मग्न थे, एक दैवीय स्वर सुना गया:

'यह जान लो, पति: जो एल्डर आपके शष्यिों के साथ है, वह प्रलोभन पैदा कर रहा है और अन्य भाइयों को गुमराह कर रहा है; इसलिए, उसके अव्यवस्थति आचरण को समाप्त कयिा जाना चाहिए और उसे आज्ञाओं के माध्यम से सुधारना चाहिए।'

इस आवाज़ पर, संत पैसयिोस ने उत्तर दयिा:

'मैंने ऐसा बहुत पहले ही कर दयिा होता, अगर मुझे पता होता कि मैं उसे सुधार सकता हूँ। लेकनि चूंकि शैतान उसे नष्ट करने के लिए तैयार है और, उसके सामने प्रकट होकर, अपनी चालाकी से उसे अपने जाल में फंसाता है, इसलिए मैं उससे कुछ भी कठोर नहीं कह सकता, कहीं वह मेरे शब्दों को कड़वाहट से न ले ले और उन्हें अपमान समझ बैठे: क्योंकि उस स्थति में वह भाइयों की संगत और मरुभूम छोड़कर दुनयिा में वापस चला जाएगा; तब मैं उसके वनिाश का कारण बनूँगा और परमेश्वर के सामने उत्तरदायी ठहरूँगा, क्योंकि मैं एक भाई को शत्रु द्वारा पीड़ति होते हुए नहीं देख सकता; बल्कि, मुझे उसके लिए प्रार्थना करनी चाहिए, कि प्रभु उसे ऐसी पीड़ा से चंगा करें।

यह कहकर, उन्होंने उस वरष्ठि के लिए प्रार्थना करना शुरू कर दयिा, और तुरंत देखा कि एक ईश्वर-नन्दिक और नर्लिज्ज आत्मा उससे नकिलकर जा रही थी। तब, उस ईश्वर-प्रेमी तपस्वी के साथ, भाई पति के पास आए; लेकनि इससे पहले कि वे उस अव्यवस्थति बड़े भाई के बारे में बात कर पाते, वह स्वयं उनके पीछे आ गया और, पवत्रि पति के चरणों में गरिकर, अपने आँसुओं से उन्हें धोने लगा, पश्चाताप करते हुए और क्षमा माँगते हुए, और अपने तरीकों को सुधारने का वादा करते हुए। उसके बाद, वह नम्र और आज्ञाकारी हो गया: वह आदरणीय पति के होठों से नकिलने वाले ईश्वर-प्रेरति प्रवचनों को आनंदपूर्वक सुनता था और उनकी शक्षिाओं से जो कुछ भी सीखा था, उसे व्यवहार में लाने के लिए हर संभव प्रयास करता था। और जल्द ही वह सद्गुणों में कई लोगों से आगे नकिल गया और एक अनुभवी तपस्वी बन गया – यह सब संत पैसयिस की मदद और प्रार्थनाओं से संभव हुआ, जन्होंने ईश्वर से उसकी महान दया करने का आग्रह कयिा था।

लेकिन अब बस इतना ही; हम संत पैसियस के अन्य गौरवशाली कार्यों को चुपचाप नहीं छोड़ सकते: इसलिए आइए उनके अनगिनत चमत्कारों के बारे में कुछ शब्द कहें, क्योंकि इन सभी अद्भुत कार्यों का विस्तार से वर्णन करना असंभव है; चूंकि हम पहले ही इनके बारे में काफी विस्तार से बात कर चुके हैं, हम बाकी सभी के बारे में चुप रहेंगे।

एक बार, दो युवा भाई रेगिस्तान में संत पैसियोस के पास आए और, पूज्य के आदेश पर, उनके मठ में पहले से मौजूद भाइयों के साथ रहने लगे; पैसियोस स्वयं, अपने शिष्य के साथ, अपने मठ से दूर, रेगिस्तान में अलग रहते थे।

काफी समय तक, उन दोनों भाइयों ने आज्ञाकारिता के तपस्वी अनुशासन का अभ्यास किया; अंत में, वृद्ध के पास जाकर, उन्होंने उससे रेगिस्तान में अकेले, संन्यासियों की तरह रहने की अनुमति देने के लिए कहना शुरू किया। सम्माननीय पिता ने, उनके तपस्वी जीवन के प्रति तीव्र इच्छा को देखकर और यह महसूस करते हुए कि वे रेगिस्तान के विशेष मौन के लिए सक्षम थे, उनकी इच्छा को स्वीकार कर लिया और उन्हें मठ से जंगल में एकांतवास के जीवन में जाने का आशीर्वाद दिया। और इन दोनों भाइयों ने, मरुस्थल में मौन साधना के लिए उपयुक्त एक स्थान पाकर, वहाँ बस गए और ईश्वर को प्रसन्न करने वाला जीवन जिया, तथा दुष्ट आत्माओं के सभी प्रलोभनों पर कुशलता से विजय प्राप्त की। हालाँकि, अदृश्य शत्रु, जो सभी अच्छे लोगों से हमेशा ईर्ष्या करता है और मसीह के सेवकों के विरुद्ध विभिन्न और अनेकों छल-कपट रचने में कुशल है, ने इन दो संतों पर भी अपनी विश्वासघात फैला दी और उन्हें धोखा देने के लिए निम्नलिखित योजना बनाई: मरुभूमि के एक तपस्वी, जो सांसारिक संपत्ति से मठवासी वैराग्य में अभी पूर्ण नहीं हुआ था, की अपनी झोपड़ी का थोड़ा-सा सामान चोरी हो गया। यह तपस्वी, जो अभी भी कमजोर दिल का था और इसलिए चोरी हुए सामान के कारण दुखी था, चोर की तलाश में निकल पड़ा लेकिन उसे नहीं ढूंढ सका; एक प्रसिद्ध दूरदर्शी वृद्ध के बारे में सुनकर, और इस उम्मीद में कि वह उसे चोरी का माल और चोर दोनों खोजने में मदद कर सकते हैं, वह उनसे मिलने के लिए निकल पड़ा: वह आदरणीय पैसियस के पास जाने की हिम्मत नहीं कर सका, इस डर से कि वे उसे लालच के लिए फटकार लगा सकते थे।

दूरदर्शी के आवास पर पहुँचने पर, भिक्षु ने उससे विनती करनी शुरू कर दी कि वह बताए कि चोरी की गई वस्तुएँ कहाँ हैं और वास्तव में उन्हें किसने चुराया है। लेकिन वरिष्ठ, जो परमेश्वर की कृपा से दूरदर्शिता के वरदान से वास्तव में प्रबुद्ध नहीं हुए थे, बल्कि एक दुष्ट आत्मा द्वारा सिखाए गए अनुसार, राक्षसों की शक्ति से सब कुछ देख रहे थे, – उन्होंने उन दो भिक्षुओं पर आरोप लगाया जो हाल ही में रेगिस्तान में बसे थे:

'चोर इन्हीं भिक्षुओं ने किया है,' तथाकथित दूरदर्शी ने कहा, 'एक बार जब तुम इन मौन साधकों को पकड़ लो, तो तब तक उन्हें मत छोड़ना जब तक वे तुमसे सब कुछ वापस न कर दें।'

यह सुनकर, वह तपस्वी तुरंत उस मरुभूमि के मठ के लिए रवाना हो गया; मठाधीश के पास जाकर उसने एक मजबूत पहरे की मांग की, और आगे बढ़कर, संयोग से, उन दो मौन साधुओं पर टूट पड़ा; उसने उन्हें बदमाश समझकर पकड़ लिया और पीटते हुए घसीटता हुआ मठ में ले आया; जहाँ उन्हें अपमानपूर्वक कैद कर दिया गया था। मठाधीश ने, बुजुर्गों के साथ मिलकर, उस दूरदर्शी व्यक्ति की बात पर विश्वास कर, उन भिक्षुओं को चोर घोषित कर दिया और उन्हें उनकी मठ की उपाधि से वंचित कर दिया तथा चोरी की गई वस्तुओं के बारे में जानकारी निकालने के लिए उन्हें पीट-पीट कर यातनाएँ देने लगे। तथापि, आदरणीय पैसियस ने ईश्वर की कृपा से जो कुछ भी हुआ था, उसे जान लिया और उस समय अन्याय से पीड़ित उन दो भाइयों पर दया करके, उठे और अपनी कुटिया से उस मठ के लिए प्रस्थान किया। उनके आगमन की खबर तुरंत दूर-दूर तक फैल गई, क्योंकि मिरुभूमिवासियों के बीच पैसियस से अधिक प्रसिद्ध कोई नाम नहीं था, जिनकी दैवीय जीवन के लिए सर्वत्र प्रशंसा की जाती थी। उनका स्वागत करने के लिए, पड़ोसी मठों और आश्रमों के भाई एकत्रित हुए; यहाँ तक कि बुजुर्ग भी उनसे मिलने आए। उनमें वह वरिष्ठ भी आया था, जिसे शैतान ने बहका कर खुद को एक द्रष्टा बताने के लिए प्रेरित किया था। और जब सभी पिता और भाइयों ने संत को मसीह के नाम पर स्नेहपूर्ण चुंबन अर्पित कर दिया, तो हमारे महान पिता पैसियस ने उनसे पूछा:

'तुमने उन दो युवा भिक्षुओं—मरुभूमिवासियों को कहाँ भेजा है?'

भाई चुप रहे। फिर उनमें से कुछ ने उत्तर दिया, कहने लगे:

'फादर, वे चोर हैं, और अपने दुष्ट कर्मों के कारण वे अब एक कालकोठरी में बंद हैं।'

इस पर संत ने उनसे कहा:

'किसने कहा कि वे चोर थे?'

तब भाइयों ने दूरदर्शी वृद्ध की ओर इशारा करते हुए उत्तर दिया:

'इन्हें चोरों के रूप में पहचानने वाले यही सूक्ष्मदर्शी पिता थे।'

तब महान पैसियस ने बुजुर्ग से पूछा:

'क्या जो आपने उनके बारे में कहा वह सच है?'

उसने उत्तर दिया:

'मैंने जो कहा है वह सत्य है: यह मुझे ईश्वर ने प्रकट किया था।'

इसके बाद, संत पैसियस ने कहा:

'यदि आपकी दिव्यदृष्टि ईश्वर की ओर से होती, न कि शैतानी छल से, तो शैतान आपके होठों पर दिखाई नहीं देता।'

यह सुनकर सभी भयभीत हो गए: क्योंकि सभी के लिए यह स्पष्ट था कि पैसियस के होठों से निकले शब्द सत्य थे; और वे सभी उस भ्रामित दृष्टा को डाँटने लगे, उसे रेवरेंड से क्षमा माँगने के लिए आग्रह करने लगे; और वह, लज्जा से अभिभूत होकर, संत के सम्मानित चरणों में गिर पड़ा, यह कहते हुए:

'पिताजी, मुझे क्षमा करें और मेरे लिए प्रार्थना करें, जो धोखा खा गया हूँ।'

और जैसे ही संत ने उसके लिए प्रार्थना की, सबके सामने ही, उस धोखे में पड़े आदमी के मुंह से एक व्यर्थ और कपटी दानव निकला; एक विशाल जंगली सूअर का रूप धारण करके, वह बड़े क्रोध से पूजनीय पिता पर टूट पड़ा, मानो अपने दांतों से उन्हें चीर-फाड़ डालना चाहता हो। लेकिन धन्य पिता ने, अशुद्ध आत्मा को निकालकर, उसे गर्ता में भेज दिया। और जो वरिष्ठ पहले शैतान के छल से भ्रमित हो गए थे, उन्होंने उससे निकलती छल की दैवीय शक्ति को महसूस किया, और वास्तव में अपनी आँखों से देखा भी; भय से भरकर और काँपते हुए, वे जमीन पर गिर पड़े, पैसियस के पैरों पर लोट गए, और आँसुओं के साथ उनसे पूर्ण क्षमा की याचना करने लगे। इसी तरह, अन्य भाइयों ने, जो धोखे के आगे झुककर निर्दोषों के प्रति अन्याय कर बैठे थे—वे सभी संत के सामने प्रणाम करके उनसे क्षमा याचना करने लगे। और उन दो युवा भिक्षुओं को कोठरी से बाहर लाया गया, और सभी लोग उन्हें देखकर भावुक होकर रो पड़े, जबकि जिन्होंने उनके साथ अन्याय किया था, वे उनसे प्रार्थना करने लगे। तथापि, पूज्य पैइसियस ने सभी को चेतावनी दी कि वे ऐसे शैतानी धोखों से सावधान रहें और उन लोगों की झूठी भविष्यवाणियों पर विश्वास न करें जो पवित्र और दूरदर्शी दिखने की कोशिश करते हैं। निजी तौर पर, उन्होंने लावरा के मठाधीश को बताया कि चोरी की गई वस्तुएँ कहाँ छिपाई गई थीं, लेकिन जिन्होंने उन्हें चुराया था, उनके बारे में कुछ नहीं कहा। फिर, सभी को क्षमा करने और उनके लिए प्रार्थना करने के बाद, वे अपनी कुटिया में लौट आए।

उसी समय और उन्हीं मिस्र के रेगिस्तानों में, ईश्वर के एक अन्य सेवक, आदरणीय पॉल, अपने तपस्या के कार्यों में चमक उठे; उनकी प्रार्थनाओं के द्वारा, प्रभु ने लोगों पर भी महान दया दिखाई।

आदरणीय पैसियस, एक दिन उनसे मिलने की इच्छा लेकर, उनके पास गए, और वे परमेश्वर के दो स्वर्गदूतों और मसीह के दो योद्धाओं की तरह मिले, जिन्होंने अदृश्य शत्रुओं को बड़ी शक्ति से पराजित किया और उस में एक-दूसरे की मदद की। और वे दोनों किसी भी शत्रु की चालाकी के लिए अभेद्य, एक किले के समान थे, और उन्होंने पवित्र आत्मा से परिपूर्ण शब्दों में एक-दूसरे से संवाद किया – साथ ही उन्होंने मौन के मीठे फल का भी आनंद लिया; अपने वृद्धावस्था में वे प्रतिदिन युवाओं के योग्य पराक्रमी कार्यों की योजना बनाते थे, प्रत्येक बार मानो नए सिरे से प्रयास करना शुरू करते हुए, और मानो एक और भी अधिक पूर्ण जीवन जीने का संकल्प लेते हुए।

महान पैसियस उम्र में पॉल से बड़े थे, जबकि धन्य पॉल देखने में गरिमामय लेकिन दिल से दयालु थे; और आदरणीय पैसियस ने कहा:

'जब हम इस जीवन में हैं, तो प्रभु नहीं चाहते कि हमारे शरीर कमजोर और सुस्त हो जाएँ, और यह हमारे लिए शर्म और अपमान का कारण होगा यदि, हमारी मृत्यु के समय, हम सुस्त पाए जाएँ।'

जब पूजनीय पैइसियस ने यह कहा, तो धन्य पॉल ने सुनकर उत्तर दिया:

'हे प्रमुख चरवाहे, मैं पहले से ही आपकी प्रशंसनीय और अच्छी सलाह का पालन कर रहा हूँ कि मैं आलस्य में न पड़ूँ, और मुझे ईश्वर पर भरोसा है कि, आपकी पवित्र प्रार्थनाओं के माध्यम से, वह मुझे आपकी इच्छानुसार अपना जीवन जीने में मदद करेंगे।'

काफी समय तक एक साथ रहने और एक-दूसरे को अपनी शिक्षाओं से उपदेश देने के बाद, पूजनीय पैइसियस और धन्य पॉल ने प्रभु में एक प्रेमपूर्ण चुंबन का आदान-प्रदान किया, और शरीर से तो अलग हुए पर आत्मा से नहीं। पूजनीय पॉल अपनी पुरानी जगह पर ही रहे, जबकि संत पैइसियस अपनी कोठरी में लौट गए।

ये दोनों पवित्र संत चमत्कारी, वासनाओं के उपचारक, आत्माओं को बचाने के कार्य में अनुभवी मार्गदर्शक, सभी के लिए मध्यस्थ, प्रत्येक व्यक्ति के मोक्ष के लिए वकील, और सलाहकार थे—कर्म और वचन में शक्तिशाली पुरुष, जो सभी के लिए एक अच्छा उदाहरण थे; क्योंकि आदरणीय पॉल के मठवासी श्रम अत्यधिक धन्य थे, जबकि धन्य पैसियस के कई अलौकिक तपस्वी कारनामे, जो उन्होंने गुप्त रूप से किए थे - हालांकि सभी नहीं, बल्कि उनमें से कुछ ही - लगभग सभी को ज्ञात थे; और वे जानबूझकर इसलिए जाने जाते थे ताकि जो लोग इन कारनामों के बारे में सुनते थे, वे सर्वशक्तिमान ईश्वर को धन्यवाद देने के लिए प्रेरित हों, और जो लोग प्रयास कर रहे थे, वे और भी अधिक उत्साह के लिए प्रेरित हों: क्योंकि कोई भी मानवीय शब्द उनके आध्यात्मिक जीवन की पूर्ण ऊँचाई को पर्याप्त रूप से व्यक्त नहीं कर सकता; क्योंकि उन्होंने प्रभु की बहुत सेवा गुप्त रूप से की, और नहीं चाहते थे कि उनके अच्छे काम दूसरों को पता चलें - और यह, बेशक, उनकी महान विनम्रता के कारण था। और जब उनके किसी भाई ने उनसे पूछा: 'सभी गुणों में सबसे श्रेष्ठ कौन सा है?' - तो वे उत्तर देते: 'वह जो गुप्त रूप से किया जाए और जिसके बारे में कोई न जाने।' वे निम्नलिखित सद्गुण का भी बहुत सम्मान करते थे: अपनी इच्छा के बजाय, हर बात में दूसरों की इच्छा के अनुसार काम करना। अपने संपूर्ण सदाचारी जीवन में, रेवरेंड फादर ने प्रत्येक कार्य के लिए उपयुक्त समय निर्धारित किया - और उसका कड़ाई से पालन किया। मौन के लिए उनका एक समय था, बोलने के लिए एक समय था, पीछे हटने और अपनी कोठरी में खुद को बंद करने के लिए एक समय था, और भाइयों के पास जाकर आत्मा के लिए लाभकारी विषयों पर उनसे बातचीत करने के लिए एक समय था। इस प्रकार, मौन में, रेवरेंड फादर ने दैवीय चिंतन के माध्यम से ईश्वर के समीप आत्मा को पहुँचाया, जबकि भाइयों के साथ संगति में उन्होंने अपने पड़ोसी की मुक्ति की खोज की; और सबसे अद्भुत बात यह थी कि वे बुद्धिमानी से जानते थे कि अपनी सद्गुणों को कैसे छिपाना है, ताकि उनके साथ रहने वाले सभी लोग उनके जीवन को न जान सकें। जब भी भाई-बंधु किसी काम के लिए उनकी प्रशंसा करने लगते, तो वे उस काम को एक तरफ रख देते और कोई दूसरा काम करने लगते, ताकि सभी उनका पहला काम जल्द से जल्द भूल जाएँ। 'जब मैंने,' पूजनीय पैसियस के जीवन के लेखक कहते हैं, 'उनसे पूछा, "आप ऐसा व्यवहार क्यों करते हैं?" '—उन्होंने मुझे खुशी से जवाब दिया: 'ताकि मेरा पिछला पराक्रम निर्दोष बना रहे; क्योंकि,' उन्होंने आगे कहा, 'मानवीय प्रशंसा एक बड़ी दुर्भाग्य है, और जो कोई भी इसके लिए परिश्रम करता है, उसे अपने लिए बहुत कम लाभ मिलता है, और ऐसे लोगों में से बहुत कम ही बचते हैं, क्योंकि व्यर्थ मानवीय महिमा उन्हें बहुत नुकसान पहुँचाती है; और सचमुच हमारे प्रभु ने कहा था:

– *'तुम्हारा दाहिना हाथ जो कुछ करता है, वह तुम्हारा बायाँ हाथ न जाने'* (मत्ती 6:3)।

इन शब्दों और पूजनीय की शिक्षा को याद करते हुए, (जॉन जारी रखते हैं), मैं अपनी कथा के अंत पर आता हूँ।

परिपक्व वृद्धावस्था को प्राप्त कर – अपने जीवन में महान और सद्गुणों से प्रकाशित – हमारे आदरणीय पिता पैसियस ने यहाँ अपने कार्यों का अंत किया, और प्रभु ने उन्हें शाश्वत विश्राम और स्वर्गीय आनंद के लिए बुलाया। उनके शरीर को अनेक संन्यासियों द्वारा सम्मानपूर्वक दफनाया गया, जबकि उनकी आत्मा स्वर्गीय और अमर जीवन की ओर उड़ान भर गई।

कुछ समय बाद, धन्य पॉल, अपने सबसे दूरस्थ रेगिस्तान में, इस सांसारिक जीवन से परलोक सिधार गए; वे एक कालातीत जीवन में प्रवेश कर, संतों के तेज में संत पैसियस के बगल में अपना स्थान ग्रहण कर गए – ताकि, जिस प्रकार उन्होंने मठवासी तपस्या में एक साथ परिश्रम किया था, उसी प्रकार उनके धन्य आत्माएँ भी एक साथ, , अनंत विश्राम का आनंद ले सकें। उनके सम्मानित शरीर एक-दूसरे से बहुत देर तक अलग नहीं रहे: ईश्वर की व्यवस्था से, उन्हें भी जल्द ही एक साथ सुलाया गया - और ऐसा इस प्रकार हुआ।

हमारे पूजनीय पिता इसिडोर, जो माउंट पेलसियम पर अपने मठ में उपवास कर रहे थे, ने महान पैसियस के निधन के बारे में सुनकर, एक जहाज पर सवार होकर उस स्थान पर चले गए जहाँ हमारे पूजनीय पिता का पवित्र शरीर दफनाया गया था; उन्होंने इसे सम्मान और श्रद्धा के साथ जमीन से निकाला और इसे दफन के कपड़ों में लपेटा, उन्होंने इसे एक अवशेष पात्र में रख दिया, इस इच्छा के साथ कि वे इसे किसी भी धन-संपत्ति से अधिक कीमती, एक महान खजाने के रूप में अपने मठ को समृद्ध करें – और इस अवशेष पात्र को अपनी नाव पर ले जाकर, वे प्रभु का गायन और स्तुति करते हुए, बड़ी खुशी के साथ प्रस्थान कर गए। लेकिन जैसे ही वह उस रेगिस्तान के पास से नहीं गुज़रा जहाँ संत पॉल का पवित्र

शरीर वशि्राम कर रहा था, अचानक जहाज़, मानो कसिी चमत्कारी शक्तदि्वारा रोका गया हो, रुक गया और उस भूमकिी ओर मुड़ गया जहाँ संत पॉल का रेगस्तिान था। नावकिों ने उस स्थान से दूर जाने की कोशशि में बहुत समय तक कड़ी मेहनत की, लेकनि कोई फायदा नहीं हुआ; वे दो दनिों तक इसी तरह मेहनत करते रहे और, यह नहीं जानते कफिरि से कैसे रवाना हों, वे बहुत परेशान थे। हालाँकि, पूजनीय इसडिोर, यह महसूस करते हुए कजिहाज का रुकना ईश्वर की इच्छा का काम था, उन्होंने नावकिों को आदेश दयिा कवि जहाज को wherever it wished (जहाँ भी वह चाहे) चलने दें – और जहाज, एक अदृश्य हाथ के मार्गदर्शन में, उस सुनसान तट की ओर चल पड़ा जहाँ संत पॉल का शरीर पड़ा था, और वहाँ रेत पर अटक गया।

जब जहाज पर सवार सभी लोग इस पर शोक मना रहे थे और सोच रहे थे ककि्या हुआ, तभी जेरमयिाह नाम का एक बूढ़ा व्यक्तरिेगस्तिान से उस तट पर आ गया; जहाज पर सवार लोगों को संबोधति करते हुए, उसने कहा:

'हे प्रयिजनों! आप अपनी शक्तसि्से अधकि क्यों परशि्रम कर रहे हैं? क्या आप यह नहीं देख सकते कआिदरणीय पैसयिस अपने प्रयि, आदरणीय पॉल को बुला रहे हैं? वे उनके साथ आपके देश में ले जाया जाना और एक ही स्थान पर वशि्राम करना चाहते हैं; अत; शीघ्रता से जाकर उनका शरीर लाओ।'

यह सुनकर, आदरणीय इसडिोर और उनके साथ मौजूद सभी लोग परम आनंदति हो गए; और, जहाज से उतरकर, उन्होंने सम्माननीय पति जेरमयिा से पूछा:

'संत पॉल का शरीर कहाँ वशि्राम कर रहा है?'

फरि वह उन्हें एक दूरस्थ रेगस्तिान में ले गया और उन्हें पूज्य पॉल का ताबूत दखिाया। वहाँ से उनके पवत्रि अवशेष—जो सोने या कसिी भी कीमती पत्थर से भी अधकि कीमती थे—लेकर वे उन्हें संत पैसयिस के अवशेषों के पास ले गए; और जैसे ही वे जहाज पर चढ़े, वह तुरंत अपने आप ही चल पड़ा और, अरे चमत्कार! यह अपने नरि्धारति मार्ग पर बहुत तेज़ी से चली और तुरंत पेलूसयिम के बंदरगाह पर पहुँच गई। तब पूजनीय इसडिोर ने दोनों पवत्रि पति – पैसयिस और पॉल – की पवत्रि अवशेषों को कनिारे पर ले आए; वे भजन और आध्यात्मकि स्तोत्रों का जाप करते हुए उन्हें अपने मठ ले गए, और उन्हें उस चर्च में स्थापति कयिा जसिे उन्होंने बनवाया था; और वहाँ अद्भुत चमत्कार हुए: अशुद्ध आत्माओं से पीड़ति और कसिी भी अन्य बीमारी से ग्रस्त लोग—जैसे ही उन्होंने उनके पवत्रि अवशेषों को छुआ, वे तुरंत ठीक हो गए: अशुद्ध आत्माएँ बाहर नकिल गईं, और इन महान ईश्वर के संतों की प्रार्थनाओं द्वारा हर दुर्बलता तुरंत दूर हो गई।

मैं, जॉन, जसिे कोलोव के नाम से जाना जाता है, ने यह उन लोगों के लाभ के लिए लखिा है जो इसे पढ़ते और सुनते हैं – पति, पुत्र और पवत्रि आत्मा की महमिा के लिए, जो त्रमिूर्तमिें एक ईश्वर हैं, जनि्हें सारी महमिा, सम्मान और पूजा अर्पति है, अब और हमेशा, और अनंत काल तक। आमीन।

योद्धा शहीद संत ज़ोसमिा का कष्टकथा

19 जून को स्मरणोत्सव

उस समय जब सम्राट ट्राजन[4522] रोमन साम्राज्य पर शासन करते थे, यूनानी, जैसा कसि्ववदिति है, अभी भी मूर्तपिूजा और महान आध्यात्मकि अंधापन में डूबे हुए थे - और इसलिए, उनके शासनकाल के दौरान, जल्द ही परमेश्वर की कलीसयिा के वरिुद्ध एक भयंकर उत्पीड़न शुरू हो गया।

[4523]उस समय, यूनानयिों के बीच डोमशियिन नाम का एक प्रसद्धि व्यक्तरिहता था - पसिीडयिा के एंटओिक का राज्यपाल[4524] ; एक बार सम्राट ट्राजन के समक्ष आकर, उसने ईसाइयों पर अधकिार दएि जाने का अनुरोध कयिा, ताकि जो भी देवताओं को बलदिान देने से इनकार करें, उन्हें कठोर यातनाओं के माध्यम से ऐसा करने के लिए मजबूर कयिा जा सके। सम्राट से ऐसा अधकिार प्राप्त करके और स्वयं को शैतान के कवच में ढालकर, वह एक शेर की तरह उन लोगों पर क्रोध से भड़क उठा, जनि्होंने अंत तक मसीह में अपने वशि्वास को दृढ़ता से बनाए रखने का संकल्प लयिा था । एक दनि

[4522] वे 89 से 117 तक शासन करते थे।

[4523] थ्रेस में, पोंटस के पास; यह शहर, संयोग से, अपोलो को समर्पति एक मंदरि का घर था, जसिमें उसकी एक वशिाल मूर्तथिी। बाइज़ेंटाइन युग के दौरान, इसे सोज़ोपोलसि के नाम से जाना जाता था। आज, यह सडिज़ेबोली नामक एक तुच्छ छोटा शहर है।

[4524] पसिीडयिा – एशयिा माइनर के दक्षणि में एक क्षेत्र, जो सलिसियिा के समीप था।

सोज़ोपोल के क्षेत्र से गुज़रते हुए, वह अपोलोनिया नामक एक शहर में पहुँचा। इस शहर में ज़ोसीमा नाम का एक ग्रीक योद्धा रहता था, जो लंबे समय से ईसाई धर्म का अनुयायी बनने की इच्छा रखता था। राज्यपाल के आगमन और आने वाले उत्पीड़न के बारे में सुनकर, उसने अपना सैन्य कवच उतार दिया और पवित्र चर्च में शामिल होने का संकल्प लिया; मसीह के धर्म में शिक्षित होकर और पवित्र बपतिस्मा ग्रहण करने के बाद, उसने ईसाई सद्गुणों के लिए प्रयास करना शुरू कर दिया और पवित्रता तथा ब्रह्मचर्य, उपवास और प्रार्थना का अभ्यास किया।

कुछ दिनों बाद, जब राज्यपाल डोमिशियन उस शहर में पहुँचे, तो मूर्तिपूजकों में से एक उनके पास आया और कहा:

'इस शहर में ज़ोसिमा नाम का एक सैनिक रहता है, जो सम्राट और आपके अधिकार का तिरस्कार करता है; उसने सम्राट ट्राजन द्वारा प्रदान किया गया सैन्य पद त्याग दिया है और अपने हथियार फेंक दिए हैं; वह खुद को ईसाई कहता है और हमारे देवताओं को कुछ नहीं समझता; वह शाही कानूनों से भी घृणा करता है और शाही अधिकार का तिरस्कार करता है।'

यह सुनकर, राज्यपाल ने कहा:

'इस जोसिमा को यहाँ अदालत में लाओ।'

तब शाही रक्षकों ने, राज्यपाल के आदेश पर, ज़ोसिमा के पास जाकर उसे पकड़ लिया और अदालत के सामने पेश कर दिया। राज्यपाल ने उसे देखकर पूछा:

'क्या तुम जोसिमा हो?'

मसीह के सिपाही ने उत्तर दिया:

'मैं जोसिमा हूँ, अपने प्रभु यीशु मसीह का सेवक।'

इसके बाद, राज्यपाल ने कहा:

'सबसे पहले, मुझे बताओ कि तुम्हारा पद क्या है, और फिर तुम बता सकते हो कि तुम किसके सेवक हो।'

संत ने उत्तर दिया:

'पदवी के अनुसार मैं आपके सांसारिक राजा का सैनिक था, लेकिन मैंने आपके सबसे हानिकारक देवताओं का त्याग कर दिया और स्वर्ग के राजा, मसीह, सच्चे ईश्वर का सैनिक बन गया।'

डोमिशियन ने कहा, 'हे अधर्मी, मसीह का नाम तुम्हारी कोई मदद नहीं करेगा; बल्कि तुम्हारे लिए बेहतर होगा कि तुम देवताओं को बलिदान चढ़ाओ, और हमारे राजा ट्राजन—जिन्होंने तुम्हें सैन्य पद से सम्मानित किया था—के खिलाफ तुम्हारा पाप क्षमा कर दिया जाएगा।'

तब संत ने कहा:

'मैं किसी भी परिस्थिति में तुम्हारे देवताओं को बलिदान नहीं चढ़ाऊँगा।'

इसके बाद, डोमिशियन ने आदेश दिया कि मसीह के सैनिक को जेल ले जाया जाए।

अगली सुबह, संत को, उसकी पीठ पर हाथ बँधे हुए, एक बार फिर न्याय के स्थान पर लाया गया, और हेगेमोन ने उसे यातना वृक्ष पर लटकाने का आदेश दिया। जब शहीद को लटकाया गया, तो डोमिशियन ने उससे कहा:

'दुष्ट ज़ोसिमा, देवताओं को बलिदान चढ़ा, नहीं तो अब तेरे शरीर का हर अंग क्रूर यातनाओं का शिकार होगा।'

इस पर संत ने उत्तर दिया:

'न तो शब्द और न ही घाव मुझे तुम्हारे देवताओं को बलिदान चढ़ाने के लिए मना पाएँगे।'

तब राज्यपाल ने अपने क्रूर सैनिकों को पवित्र शहीद को निर्दयता से पीटने का आदेश दिया। जब उन्होंने संत ज़ोसिमा को यातना देना शुरू किया, तो उन्होंने राज्यपाल से कहा:

'तुम्हारे सेवक व्यर्थ में परिश्रम कर रहे हैं, क्योंकि प्रभु मुझे बल देते हैं, और मुझे मेरे ऊपर किए गए घावों से कोई पीड़ा नहीं होती।'

और उन्होंने संत को लंबे समय तक यातना दी, यहाँ तक कि जिमीन पहले ही उनके खून से सनी हुई थी। अंत में, शहीद ने प्रभु से जोर से पुकारा:

हे सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर, जो अपनी महिमा के सिंहासन पर विराजमान हैं, जिन्होंने स्वर्गों को बनाया, पृथ्वी की नींव डाली और जल को एक स्थान में इकट्ठा किया, – हमारी आशा और आपके सेवकों की आशा, मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ, मेरी सुनिए, और मुझे यातनाओं की धमकियों या स्वयं यातनाओं से पराजित होने न दें, ताकि जो कोई भी आपके नाम पर विश्वास नहीं करता, वह मेरे द्वारा आपको, एकमात्र सच्चे ईश्वर को जान सके!

जब संत प्रार्थना कर रहे थे, अचानक स्वर्ग से एक आवाज़ सुनाई दी:

– हौसला रखो, जोसिमो, क्योंकि मैं तुम्हारे साथ हूँ, और कुछ भी तुम पर हावी नहीं होगा।

और यह आवाज़ डोमशियिन और उसके साथ मौजूद सभी ने सुनी,

और उनमें से कुछ ने तो यह भी कहा:

'महान है यह जादूगर!'

लेकिन अन्य लोगों ने कहा:

'यह कोई जादूगर नहीं, बल्कि मसीह, उसके ईश्वर का सेवक है, और सचमुच महान है ईसाई ईश्वर, जिसे अभी यह आवाज़ भेजी गई है!'

तब राज्यपाल ने चार सैनिकों को आज्ञा दी कि वे संत को ज़मीन पर क्रूस के आकार में फैला दें; लेकिन मसीह के लिए पीड़ित, जो पहले से ही थका हुआ था, ने अपनी आँखें आकाश की ओर उठाईं और कहा:

'हे प्रभु मेरे परमेश्वर, जो मनुष्यों के विचारों को जानता है, ईसाइयों की आशा, संकट में पड़े लोगों का शरण और सांत्वना है! मुझे शैतान के सेवक डोमशियिन की घातक चालाकियों से बचा, ताकि यहाँ मौजूद सभी लोग आपको जान जाएँ, कि आप जीवित परमेश्वर हैं, जो सभी युगों से पहले से मौजूद हैं, और कि आप अनंत काल से मौजूद हैं।'

और उस समय, वहाँ इकट्ठा हुए बहुत से लोग, शहीद के महान धैर्य को देखकर चकित हो गए और मसीह में विश्वास करने लगे; लेकिन राज्यपाल, यह सब देखकर और इस बात से डरकर कि हर कोई ईसाई धर्म अपना सकता है, लज्जित हुआ, क्रोध से आग-बबूला हो गया और दाँत पीसने लगा, यह सोचते हुए कि वह मसीह के इस सेवक को कैसी क्रूर मृत्यु दे सकता है। अंत में, उसने एक तांबे का अंगीठी लाने और उसके नीचे भयंकर आग जलाने का आदेश दिया, ताकि शहीद को जिंदा जलाया जा सके। जब अंगीठी भयंकर रूप से जल रही थी, तो उसने पवित्र शहीद को नग्न होकर उस पर लिटाने का आदेश दिया। और जैसे ही ज़ोसिमो ने, क्रॉस का चिह्न बनाकर, अंगीठी पर चढ़ा, प्रभु ने तुरंत आग को ओस में बदल दिया; क्योंकि अपने स्वर्गदूतों के माध्यम से वे शहीद की सहायता के लिए आए। और जब वहाँ मौजूद सभी लोग यह सोच रहे थे कि शहीद भयानक आग में जलकर मर गया है, तब प्रभु के स्वर्गदूतों ने उस संत को चिता से उठा लिया और सभी के सामने, चिता के पास, उसे जीवित और आग की लपटों से पूरी तरह से अछूता उतार दिया। ऐसा चमत्कार देखकर लोगों ने सच्चे ईश्वर की स्तुति की, जिन्होंने अपने पवित्र स्वर्गदूतों को भेजकर अपने सेवक को ऐसी आग से बचाया था; और तब कई लोग ईसाई धर्म में परिवर्तित हो गए। हालाँकि, राज्यपाल अपने न्यायाधीश की कुर्सी से उठकर शर्मिंदगी के साथ घर चला गया, और साथ ही यह आदेश भी दिया कि शहीद को ले जाकर पहरे में रखा जाए।

थोड़ी ही देर बाद, राज्यपाल डोमशियिन, कोनोनेया शहर के लिए रवाना होते समय[4525] , ने शहीद ज़ोसिमिस को हथकड़ी में जकड़कर अपने सामने लाने का आदेश दिया, ताकि उसे वहाँ यातनाओं से मार डाला जा सके। उस नगर में पहुँचने और न्यायाधीश की कुर्सी पर बैठने पर, उसने आदेश दिया कि शहीद को नुकीले कीलों से जड़ी लोहे की चप्पलें पहनाई जाएँ, और उसे जवान, बिना काबू में आए घोड़ों से बाँध दिया जाए ताकि वह उनका पीछा कर सके। हालाँकि, कीलों से जड़ी लोहे की जूतियों में उन घोड़ों से बँधे संत इतनी तेज़ी से भागे कि ऐसा लगा कि वे घोड़ों से भी तेज़ दौड़ रहे हैं: क्योंकि प्रभु उनके साथ थे, उनकी मदद कर रहे थे। दौड़ते समय, संत ने इस प्रकार कहा:

'हे प्रभु परमेश्वर, जो मेरे पैरों को हिरण की शीघ्रता प्रदान करते हैं, मुझे अंत तक धैर्य प्रदान करें!'

इगेमोन ने शहीद में ऐसा धैर्य देखकर, उसे एक कालकोठरी में फेंकने और न तो भोजन और न ही पानी देने का आदेश दिया, ताकि वह भूख और प्यास से मर जाए। तीन दिन बाद, जब संत बिना भोजन या पानी के रहे, दो सुंदर युवक कालकोठरी में आए; उनमें से एक के पास ताज़ा रोटी थी, जबकि दूसरे के पास एक पात्र में पानी था; और उन्होंने संत से कहा:

'यह कीमती उपहार स्वीकार करो, जो तुम्हारे प्रभु परमेश्वर ने तुम्हें भेजा है।'

मसीह के शहीद ने उसे लेकर खाया-पिया, और अपनी शक्ति पुनःप्राप्त कर, प्रभु को पुकारा:

'मैं तुझसे धन्यवाद करता हूँ, हे प्रभु, कि तूने मुझ पर दया की है और मुझे तुच्छ नहीं समझा, बल्कि मुझे अपनी स्वर्गीय रोटी और जल से तृप्त किया है; मैं तेरी महिमा की सदा और सदा के लिए स्तुति और प्रशंसा करता हूँ, आमीन।'

[4525] पिसिडिया में, फारस के रास्ते पर।

अगले दिन, राज्यपाल ने एक बार फिर न्यायपीठ पर अपनी सीट संभाली और मसीह के शहीद को अपने सामने लाने का आदेश दिया। संत एक तेजस्वी मुखमंडल के साथ प्रकट हुए; फिर भी उस क्षण उनका मन पूरी तरह से प्रभु पर केंद्रित था। राज्यपाल यह देखकर चकित रह गया कि इतनी यातनाओं के बाद भी शहीद के मुखमंडल पर बिल्कुल भी कोई बदलाव नहीं आया था, और उसने उससे कहा:

'हे ज़ोसिमा, चूँकि अब ऐसा लगता है कि तुम्हें होश आ गया है, तो देवताओं को बलिदान चढ़ाओ, ताकि तुम्हें अब और घाव न सहने पड़ें या क्रूर मृत्यु न भोगनी पड़े।'

इस पर संत ने उत्तर दिया:

'यदि तुम चाहो, तो अपने जैसे राक्षसों को बलिदान चढ़ाओ; परन्तु मैं, जैसा कि मैंने पहले कहा है, केवल अपने एकमात्र ईश्वर की ही सेवा करता हूँ।'

इसके बाद, क्रोधित राज्यपाल ने शहीद को एक बार फिर से पेड़ पर लटकाने का आदेश दिया, और उससे कहा:

'क्या तुम देखते नहीं, नीच, तुम्हें कितनी यातनाएँ दी जा रही हैं? क्या तुम फिर भी मेरी आज्ञा नहीं मानोगे और देवताओं को बलिदान नहीं दोगे?'

इस पर संत ने उत्तर दिया:

'जो जीवित ईश्वर से प्रेम करता है, वह इन यातनाओं को कुछ भी नहीं समझता।'

और राज्यपाल ने आदेश दिया कि शहीद के शरीर को लोहे की कंघियों से खुरचा जाए। हालाँकि, पवित्र शहीद ने इन सभी यातनाओं को सहते हुए, ऊँचे स्वर में ईश्वर से पुकारा:

'अब, पहले से कहीं ज़्यादा, मैं प्रकाश के स्रष्टा, मसीह, आपकी कृपा को पहचानता हूँ, क्योंकि आपने मुझे यह सब साहसपूर्वक सहने और अपने कष्टों को शब्दों में भी प्रकट न करने के लिए शक्ति दी है, ताकि मेरे कष्टों के माध्यम से वे आपकी दिव्यता की शक्ति को और भी स्पष्ट रूप से समझ सकें।'

जब संत ने ये शब्द कहे, तो राज्यपाल ने आदेश दिया कि उसे यातना के वृक्ष से उतारकर एक बार फिर उसके सामने लाया जाए; जब ऐसा किया गया, तो उसने उससे कहा:

'तुमने अपने मसीह के लिए बहुत यातनाएँ सहन की हैं, और फिर भी तुम्हें कोई राहत नहीं मिली है; इसलिए, आगे आओ और देवताओं को बलिदान चढ़ाओ, कम से कम अब तो।'

इस पर संत ने उत्तर दिया:

'हे डोमशियिन, सबसे क्रूर, अमानवीय और अत्यंत दुष्ट यातनाकर्ता! स्वर्गीय ईश्वर से डर, अपने भ्रम को त्याग और मूर्तियों को देवता मत कह: क्योंकि वे राक्षस हैं, देवता नहीं।'

तब राज्यपाल ने कहा:

'क्या तुम, मनुष्यों में सबसे अधर्मी, हमारे देवताओं को राक्षस कहने की हिम्मत करते हो – उन देवताओं को जिन्हें पूरी दुनिया निश्चित दिनों पर सम्मानित करती है?'

इस पर शहीद ने उत्तर दिया:

'जिन उत्सवों का अब तुम्हारे देवताओं को अर्पण किया जाता है, उनका प्रतिफल नरक में तुम्हें, तुम्हारे राजा को और उन सभी को मिले जो उन पर विश्वास करते हैं।'

इसके बाद, राज्यपाल ने फिर आदेश दिया कि संत ज़ोसीमस को यातना वृक्ष पर लटका दिया जाए और उसके पेट को जलती हुई मोमबत्तियों से झुलसा दिया जाए।

तब शहीद ने शासक से कहा:

'मेरे पेट को ही नहीं, बल्कि मेरे पूरे शरीर को जला दो—और फिर भी तुम मुझ पर कभी विजय नहीं पाओगे, क्योंकि मसीह, जो मुझे बल देते हैं, मेरे साथ हैं: मैं तो तुम्हारे हाथों मरने की भी लालसा करता हूँ, क्योंकि यदि मैं उनके लिए मरूँ तो यह मसीह के सामने मेरी महिमा है।'

शहीद के साथ और क्या किया जाए, यह न जानकर, राज्यपाल ने अंततः उसे मृत्युदंड सुनाया, अर्थात् कुल्हाड़ी से उसका सिर कलम कर दिया जाए। जब संत ज़ोसीमस को फांसी के स्थान पर ले जाया जा रहा था, तो उन्होंने प्रभु से इस प्रकार प्रार्थना की:

'हे प्रभु मेरे परमेश्वर! मुझ पापी पर दृष्टि डालिए, और मेरी आत्मा को उन लोगों के साथ ग्रहण कीजिए जिन्होंने प्राचीन काल से आपको प्रसन्न किया है, क्योंकि आप अब से अनंत युगों तक मेरी महिमा और मेरी स्तुति हैं।'

जब शहीद उस स्थान पर पहुँचे जहाँ आमतौर पर फांसी दी जाती थी, तो उन्हें एक तलवार से सरि कलम कर दयिा गया, और उन्होंने अपने मसीह के लिए अपना सम्मानति सरि बलदिान कर दयिा। यह घटना 19 जून को कोनोनेस्की शहर में हुई – उस समय जब रोम में ट्राजन का शासन था, जबकि हमारे प्रभु यीशु मसीह का हम ईसाइयों पर शासन था – महमिा और सामर्थ्य युगानुयुग उनके ही लिए हो, आमीन।

हमारे पूजनीय पति जॉन द हरमिट की स्मृति

19 जून को स्मरण कयिा जाता है

हमारे पूजनीय पति जॉन ने संसार त्यागकर, मठवासी जीवन को समर्पति कर दयिा और, मरुस्थल में एकांत में रहने की इच्छा से, यरूशलेम के पास फलिस्तीन में बस गए; यहाँ उन्होंने अपने जीवन के सभी दनि परमेश्वर को प्रसन्न करने वाले तरीके से - उपवास और प्रार्थना में बतिाए।

उनके पवत्रि जीवन का नम्निलखिति वृत्तांत 'लमिोनार'[4526] नामक पुस्तक में पाया जाता है, जसिे, जैसा कि सर्ववदिति है, हमारे पूजनीय पति जॉन और सोफ्रोनीयस (बाद में यरूशलेम के पैट्रआर्क) द्वारा संकलति कयिा गया था:

हम, जॉन और सोफ्रोनीयस को, अस्कालोन में स्थति पवत्रि चर्च के पुरोहति और संरक्षक, बाबा डायोनसियिस ने[4527] , बाबा जॉन तपस्वी के बारे में बताया, कि यह व्यक्ति अपने जीवन में महान और परमेश्वर को अत्यंत प्रयि थे। वह यरूशलेम से बीस पोप्रीश्च की दूरी पर, सेकुस्ता गाँव के पास रहता था; अपनी गुफा में, इस वृद्ध के पास हमारी परम पवत्रि माता, परमेश्वर की माता और सदा कुंवारी मरयिम की एक प्रतमिा थी; उसमें उन्हें अपने बाहों में शाश्वत शशिु मसीह, हमारे परमेश्वर को धारण करते हुए दखिाया गया था। और यह कहा जाना चाहिए कि जब भी यह वृद्ध कसिी यात्रा पर नकिलने वाले होते थे—चाहे अपने रेगस्तिान की गहराइयों में, या पवत्रि क्रूस और पवत्रि समाधि का सम्मान करने के लिए यरूशलेम, या वास्तव में जब भी वे यरूशलेम के कसिी अन्य पवत्रि स्थल का दौरा करना चाहते थे; या जब भी वह सनिाई पर्वत पर या उन पवत्रि शहीदों से प्रार्थना करना चाहता था जनिकी अवशेष यरूशलेम से दूर थीं – क्योंकि यह वृद्ध संतों का सम्मान करना बहुत पसंद करता था, इतना कि वह कभी-कभी एफ़सिुस तक भी यात्रा कर जाता था – संत जॉन द थयिोलोजयिन के मकबरे पर, और अन्य समयों में यूकैटा में आदरणीय थयिोडोर के पास, और यहाँ तक कि इसौरयिा की सेल्यूकयिा में सेंट थेकला के पास भी[4528] – संक्षेप में, वह जहाँ भी तीर्थयात्रा पर जाता था, वह हमेशा अपनी कोठरी में परमेश्वर की अति पवत्रि माता की इस प्रतमिा के सामने एक मोमबत्ती[4529] रखता था और, रीति के अनुसार उसे जलाकर प्रार्थना में खड़ा होकर, परमेश्वर से अपनी यात्रा को आशीर्वाद देने की वनिती करता था। और परमेश्वर की अति पवत्रि माता की प्रतमिा को नहिारते हुए, वह हमेशा उनसे इस प्रकार वनिती करता था:

'हे सर्वशुद्ध देवी, ईश्वर की माता, जैसे ही मैं एक लंबी और कठनि यात्रा पर नकिल रहा हूँ, स्वयं अपने तेल के दीपक की रक्षा करना, और, मेरी प्रार्थना का उत्तर देते हुए, इसे तब तक जलते रहना, जब तक मैं वापस न आ जाऊँ; और मैं, आपकी सहायता के साथ, अपनी नयिोजति यात्रा पर नकिलूँगा।'

तब जाकर वह अपनी यात्रा पर नकिलता था, और एक महीने, दो, या तीन, और कभी-कभी पाँच या छह महीने तक रास्ते में रहता था; और अपनी वापसी पर, उसे हमेशा दीपक भरा और जलता हुआ मलिता था, ठीक वैसे ही जैसे उसने नकिलते समय छोड़ा था, और वह कभी बुझा हुआ नहीं मलिा।

इस पूजनीय फादर जॉन के बारे में, वही कतिाब, *लमिोनेर*, यह भी बताती है कि एक दनि जब वह उस गाँव के आसपास टहल रहे थे जहाँ उनकी गुफा स्थति थी, तो उनकी मुलाकात एक बड़े शेर से हुई। उस स्थान पर रास्ता बहुत संकरा था: यह दो काँटों की बाड़ों के बीच से गुजरता था – जनिसे कसिान आमतौर पर अपने खेतों की बाड़ लगाते थे। और रास्ता इतना संकरा था कि, इन काँटों भरी बाड़ों के कारण, मुश्कलि से ही कोई पैदल व्यक्ति गुजर सकता था, और वह भी

[4526] *लमिोनार* (जसिका अर्थ है 'घास का मैदान' या 'चरागाह') यूनानी संन्यासी जॉन मॉस्कस (मृत्यु 622) द्वारा रचति एक बहुत ही व्यापक संतों के जीवन पर आधारति ग्रंथ है। अपनी मृत्यु से पहले, जॉन ने यह कृति अपने मित्र सोफ्रोनीयस, जो भवषि्य के पैट्रआर्क थे, को सौंपी, जन्हिोंने बाद में इसे लोगों के बीच प्रसारति कयिा। मूल रूप से, यह ईसाई तपस्वयिों के जीवन के वभिन्नि वृत्तांतों का एक संग्रह था।

[4527] अश्कलॉन फलिस्तीन के सबसे पुराने शहरों में से एक है, जो भूमध्य सागर के तट पर स्थति है।

[4528] सलिसिियिा में इसौरयिा की सेल्यूकयिा; इसकी स्थापना सेल्यूसडि राजशाही के संस्थापक सेल्यूकस प्रथम नकिेटर ने की थी।

[4529] कैंडलि एक कांच का कटोरा है जसिमें तेल जलाया जाता था और इसे प्रतमिाओं के सामने रखा जाता था।

बनिा कसिी बोझ के। और इस प्रकार, जैसे-जैसे जॉन और शेर एक-दूसरे के करीब आए, बुजुर्ग ने शेर को रास्ता न देने का फैसला कयि; और रास्ते की संकीर्णता के कारण शेर भी हट नहीं सका, इसलिए वे एक-दूसरे से गुजर नहीं सके। तब सहि ने, यह देखकर कि ईश्वर का पुरुष पीछे मुड़ना नहीं चाहता था और अपने सही मार्ग पर चलने का इरादा रखता था, बूढ़े के बाईं ओर अपने पछिले पैरों पर खड़ा हो गया और अपने शरीर के वजन से झाड़ी को हटा दयि, जसिसे उस धर्मी पुरुष के लिए रास्ता साफ हो गया; और इस प्रकार बूढ़ा सहि के पास से गुज़रा, उसकी पीठ सहि की रीढ़ से छू रही थी; जसिके बाद बूढ़ा और शेर दोनों अपने-अपने रास्ते चले गए।

एक बार एक भाई अब्बा जॉन के पास आया; उनकी गुफा में कुछ भी न देखकर उसने उनसे कहा:

'अब्बा, आपकी ज़रूरतों को पूरा करने के लिए कुछ भी नहीं होते हुए भी आप यहाँ कैसे रहते हैं?'

वरषि्ठ ने उत्तर दयि:

'मेरे बच्चे, यह गुफा एक आध्यात्मकि अधगि्रहण है – यह देती भी है और ले भीती भी है: यह काम देती है, और वह सब कुछ ले लेती है जसिकी आवश्यकता है।'

यह ईश्वर-भक्त पति, अपने तपस्यापूर्ण प्रयासों और परशि्रमों में काफी लंबा समय बतिाने के बाद, प्रभु के पास चले गए और उन संतों में गनि गए जो हमारे ईश्वर, त्रमिूर्त मिें एक, पति, पुत्र और पवत्रि आत्मा के समक्ष खड़े हैं; उन्हें सदा-सदा महमिा हो, आमीन।

उसी दनि, 1462 में शेनकुर्स्क के पूजनीय बरलाम का नधिन हुआ।

3 जुलाई

20 जून (पुराने कैलेंडर के अनुसार)

हमारे पति लेवकयिस वज्ञिाता का जीवन, जो संतों में गनि जाते हैं।

हमारे पति लेवकयिस वद्विान् का जीवन

20 जून को स्मरण कयि जाता है

मूर्तपिूजक युग में, जब मूर्तपिूजक रोमन सम्राट पूर्व और पश्चमि पर शासन करते थे[4530] , तब अलेक्जेंड्रयि में यूडसियिस नाम का एक कुलीन व्यक्त रिहता था; यद्यपि वह ज्ञान की कलाओं में अनपढ़ था, वह आध्यात्मकि शकि्षा के माध्यम से बुद्धमिान था - अच्छे कर्मों से सुशोभति। यूडसियिस ने ईश्वर के भय और प्रेम में अपना जीवन व्यतीत कयि; उन्होंने उपवास और प्रार्थना के अभ्यास को उदार दान-पुण्य के साथ जोड़ा। उनका एक ही पुत्र था, जसिके बारे में हम अब बात करने जा रहे हैं, जसि उसके माता-पति ने यूट्रोपयिस का नाम दयि था, लेकनि बाद में ईश्वर द्वारा उसका नाम बदलकर ल्यूकयिस रख दयि गया।

जब लड़का दस साल का था, तो उसकी माँ, यूफ्रोसीन का नधिन हो गया। फरि यूडसियिस अपने बेटे को साथ लेकर धन्य हर्मयिास के मठ में गया, जो अलेक्जेंड्रयि की सीमाओं के भीतर स्थति था और धन्य एबॉट नकितिास के अधीन था; वहाँ यूडसियिस ने स्वयं मठवासी संन्यास की शपथ ली, जबकि उसके बेटे को धर्मग्रंथों के अध्ययन के लिए सौंपा गया। एक तेज-तर्रार लड़का जो सब कुछ जल्दी और बनिा ज्यादा मेहनत के समझ जाता था, यूट्रोपयिस ने ईश्वर की मदद से अपनी पढ़ाई में इतनी बड़ी सफलता हासलि की कि वह इस मामले में कई अन्य लोगों से आगे नकिल गया। इसके अलावा, वह वनिम्र, नम्रता और आज्ञाकारति से भरपूर था; उसने मठ में रहने वाले सभी की सेवा उत्साह के साथ की, और सभी

[4530] अन्य स्रोत सेंट लेवकयिा के जन्म को ईसाई ग्रीक-रोमन सम्राटों के समय, वशिेष रूप से थयिोडोसयिस महान (379–395) के शासनकाल में बताते हैं।

यूट्रोपयिस से प्यार करते थे - कुछ उसके अच्छे चरत्रि और आज्ञाकारिता के लिए, तो अन्य उसकी वद्विता और ज्ञान के लिए, जो उसे पवत्रि आत्मा द्वारा प्रदान कयिा गया था।

जब यूट्रोपयिस केवल सत्रह वर्ष का था, तब धन्य मठाध्यक्ष नकिति प्रभु के पास चले गए; इसके बावजूद, भाइयों ने आपस में परामर्श करने के बाद, उस युवक से, जसिने अभी मठवासी संन्यास की शपथ नहीं ली थी, अपने मठाध्यक्ष बनने के लिए कहा। लेकनि उसने जदि करके मना कर दयिा; इसके अलावा, उसके पति, यूडकियिोस ने उसे फटकार लगाई और इतनी कम उम्र में उस बोझ को अपने ऊपर लेने से मना कयिा, जसिे उठाने की वह अभी अभ्यस्त नहीं था; उन्होंने यूट्रोपयिस को सलाह दी कि वह खुद को नेतृत्व के अयोग्य, मार्गदर्शन की आवश्यकता वाले एक युवा के रूप में प्रस्तुत करे। इस प्रकार हर्मयिास का मठ सात वर्षों तक बनिा कसिी मठाध्यक्ष के रहा, क्योंकि भ्राताओं ने स्वयं का नेतृत्व कसिी और को सौंपना नहीं चाहा: इसलिए, धन्य यूट्रोपयिस की पूरी अनचि्छा और इस तथ्य के बावजूद कि उनका मुंडन नहीं हुआ था, भ्राताओं ने, उनके सदाचारी जीवन के उदाहरण से प्रेरति होकर, फरि भी उन्हें अपने बीच मठाध्यक्ष के रूप में माना। जब यूट्रोपयिस पच्चीस वर्ष का हुआ, तो भ्रातुओं ने एकत्र होकर उससे कहा:

'तुम हमारी ज़रूरत और हमारी वनितयिों दोनों को क्यों अनदेखा कर रहे हो? तुम हमारे नेता क्यों नहीं बनना चाहते? हमारे धन्य पति नकिति के नधिन को अब सात साल हो गए हैं, और हम एक मठाधीश के बनिा हैं, और हर कोई अपनी मनमानी कर रहा है। सावधान रहो, कहीं ऐसा न हो कि मठ में कोई भेड़यिा घुस आए और परमेश्वर के झुंड को बखिेर दे, और तुम्हें हमारे वनिाश के लिए उत्तरदायी ठहराया जाए; क्योंकि हम चाहते हैं कि हमारे पति केवल तुम ही बनो, और कोई और नहीं: हम सभी तुम्हारा पवत्रि जीवन देखते हैं, हम तुम्हारे अच्छे चरत्रि और परमेश्वर द्वारा तुम्हें प्रदान की गई बुद्धि को जानते हैं।

इस पर, धन्य यूट्रोपयिस ने भाइयों से उत्तर दयिा:

'हे आदरणीय पतिाओं और भाइयों, आप उस चीज़ के लिए लगातार मुझे क्यों वनिती करते हैं जसिे मैं पूरी तरह से पूरा करने में असमर्थ हूँ? मैंने संन्यास की शपथ नहीं ली है और न ही कोई धार्मकि पद धारण कयिा है – तो फरि मैं आपका पति कैसे बन सकता हूँ, जबकि ईश्वर के घर में आपको उपदेश देने का मेरा कोई अधकिार भी नहीं है? मैं आपके बीच के बुज़ुर्गों को कैसे समझा-बुझा सकता हूँ, जबकि मैं स्वयं अभी भी जवान हूँ?

तब उन्होंने उस पर संन्यास ग्रहण करने और पुरोहति नयिुक्त होने के लिए दबाव डालना शुरू कर दयिा, लेकनि उसने कसिी भी हालत में उनकी इच्छाओं को पूरा करने से इनकार कर दयिा। यह सच है कि, अपने दलि में, यूट्रोपयिस मठवासी जीवन के लिए तरसता था, लेकनि वह यह शपथ लेने से डरता था कि भाई-बंधु फरि उसे मठाधीश बनने के लिए मजबूर कर देंगे; इस प्रकार, बनिा दीक्षा लिए ही, उसने एक सच्चे भक्षिु का उदाहरण प्रस्तुत कयिा।

उस समय रोम में मूर्तपिूजक कोमोडस का शासन था। उसने फलिपि ([4531]) को अलेक्जेंड्रयिा का एपार्क नयिुक्त कयिा; उसकी पुत्री यूजेनयिा, ईसाई धर्म अपनाने के बाद, पुरुष का भेष धारण कर तपस्या का जीवन जी रही थी, जसिका अंत उसकी शहादत में हुआ। फलिपि, यद्यपि आम तौर पर ईसाइयों के प्रति दयालु था, फरि भी, सम्राट के आदेश पर, उसने शहर से ईसाइयों, संतों, पुरोहतिों और भक्षिुओं को नकिाल दयिा, हालांकि, उसने उन्हें उपनगरों में स्वतंत्र रूप से बसने और वहां मठ और चर्च बनाने की अनुमति दी। उस समय, उस क्षेत्र के ईसाई बशिप संत हेलीयस थे, जो अलेक्जेंड्रयिा से थोड़ी दूरी पर स्थति हेलीओपोलसि शहर में रहते थे। अलेक्जेंड्रयिा के उपनगरों में, उपर्युक्त बशिप ने एक मठ की स्थापना की, जसिे संत थयिोडोर की देखभाल के लिए सौंपा गया था। मठ के अलावा, उसी क्षेत्र में एक चर्च भी था, जो पूरे क्षेत्र में प्रसद्धि था, और जो परमेश्वर की अति पवत्रि माता और सदा कुंवारी मरयिम को समर्पति था; उनके पर्व के दनिों में, ईसाई न केवल अलेक्जेंड्रयिा से बल्कि पड़ोसी कस्बों और देशों से भी यहाँ उमड़ पड़ते थे। इसलिए, जब परम पवत्रि कुँवारी मरयिम के स्वर्गारोहण का पर्व नकिट आया, तो कई लोग उनकी चर्च के लिए रवाना हुए; और धन्य यूडसियिस, हर्मयिस के मठ को छोड़कर, उसी प्रकार अपने पुत्र यूट्रोपयिस के साथ पर्व पर गए। संयोग से उसी दनि, और उसी पर्व के लिए, पवत्रि बशिप हेलीउस हेलीओपोलसि से पुरोहतिों और लोगों की एक बड़ी भीड़ के साथ रवाना हुए; यूडसियिस और यूट्रोपयिस बशिप के पीछे चल रही भीड़ में शामलि हो गए। बशिप का इरादा पहले अपने द्वारा स्थापति मठ में जाने का था, जसिका संचालन अभमिानी थयिोडोर द्वारा कयिा जाता था, ताकि वे उत्सव शुरू होने तक वहाँ आराम कर सकें। जब वह मठ के पास पहुँचा, तो उसे रास्ते में एपार्क की बेटी, धन्य यूजेनयिा से मुलाकात हुई; वह पुरुष के वेश में

[4531] प्रमुख।

थी और उसके साथ दो ख़सरे थे। बशिप को लोगों से घरिा हुआ देखकर, वह भीड़ में कसिी से बशिप के बारे में पूछने के लिए आगे बढ़ी और धन्य यूट्रोपयिस के साथ बशिप के बारे में बातचीत शुरू कर दी। उसने उसे ईश्वर के बशिप के बारे में वसि्तार से सब कुछ बताया, जैसा कि धन्य यूजेनयिा के जीवन से स्पष्ट है, और फरि उसे बशिप के पास ले गया, जनि्हें यूट्रोपयिस अपने जीवन की पवत्रिता और वद्विान मन के लिए जानते थे।

जब धन्य यूडसियिस बशिप द्वारा स्थापति मठ में वशि्राम कर रहे थे, तो उन्हें सोते समय एक रात्रकिालीन दर्शन में एक दव्यि प्रकटवाणी प्राप्त हुई, जसिमें यह भवषि्यवाणी की गई थी कि वे जल्द ही मर जाएँगे, और उनका पुत्र एक बशिप बनेगा जो इटली के व्रोंटसियिोपोलसि में मूर्तयिों को नष्ट करेगा[4532] , और उस भूमकिो पवत्रि बपतस्मिा के माध्यम से प्रबुद्ध करेगा। उसी क्षण, उन्होंने एक आवाज़ सुनी जो उनसे कह रही थी:

'यूडसियिस, यूडसियिस, प्रभु के वशि्वासयोग्य सेवक! अब से, तुम्हारा नाम यूडसियिस नहीं रहेगा, बल्कि यूडसियिस, अर्थात्, कोमल सांत्वनादाता रहेगा; और तुम्हारे पुत्र का नाम यूट्रोपयिस नहीं रहेगा, बल्कि ल्यूकयिस, अर्थात्, "जसि पर प्रभु का आत्मा आया है" रहेगा।'

जागते ही, एव्डकि्लसि ने तुरंत अपने बेटे को बुलाया और उसे उस दर्शन के बारे में बताया जसिने ईश्वर की इच्छा प्रकट की थी:

'देख, मेरे पुत्र, मेरे प्रस्थान का समय नकिट आ रहा है – इस व्यर्थ संसार से धोखा न खा; प्रभु ने मुझे आपके वषिय में यह प्रकट कयिा है कि आपको पादरी की सेवा के लिए योग्य माना जाएगा, क्योंकि प्रभु चाहते हैं कि आपके द्वारा व्रुन्टसियिोपोलसि को उसके मूर्तपिूजक पूजा स्थलों से शुद्ध कयिा जाए; और आपका नाम अब यूट्रोपयिस नहीं, बल्कि लेवकी होगा; इस प्रकार प्रभु ने आपका नाम बदला है, जैसे उन्होंने मेरा नाम यूडकियिोस के स्थान पर यूडकि्लयिोस रखा था।

यह सुनकर, संत ल्यूकयिोस – जो यूट्रोपयिस भी थे – ने स्वयं को क्रूस के चहि्न में भूमि पर प्रणाम कयिा और ईश्वर की आराधना की, और उन्हें यह धन्यवाद का प्रार्थना अर्पति की:

'धन्य हैं आप, हमारे पूर्वजों के परमेश्वर, अब्राहम, इस्हाक और याकूब, क्योंकि आप उन पर आशा रखने वालों की उपेक्षा नहीं करते, और न ही आप अपने दीन सेवकों से अपनी दया छपिाते हैं, जबकि आपने मुझ पर दया की है, यद्यपि मैं इसके योग्य नहीं हूँ: इसलिए मैं स्वर्ग और पृथ्वी के प्रभु की स्तुति और महमिा करता हूँ, क्योंकि आप ही प्रभु हैं जनि्होंने मानव जाति से प्रेम कयिा है; सदैव और अनंतकाल तक महमिा आपको हो।

जब संत प्रार्थना कर रहे थे, तो चर्च के ऊपर स्वर्ग से एक आवाज़ सुनाई दी:

– लेवकी, लेवकी! आत्मा से उज्ज्वल और हृदय से शुद्ध, देखो, तुम्हारा नाम स्वर्ग में लखिा है और तुम्हारी स्मृति जीवन की पुस्तक से मटिाई नहीं जाएगी।

यह आवाज़ संत बशिप एलयिस और कुछ भाइयों ने सुनी, जनि्होंने बनिा सोए प्रार्थना में रात बतिाई थी। लेकनि कोई भी यह समझ नहीं सका कि यह वास्तव में कसिके लिए थी।

जैसे ही सुबह हुई, हर्मटिेज मठ के भाइयों ने बशिप के पास आकर कहा:

'महाधर्माध्यक्ष, जानिए कि हम सात वर्षों से अधकि समय से एक मठाधीश के बनिा हैं, और हम में से प्रत्येक अपनी मनमर्जी से जीता है। हमने माननीय यूट्रोपयिस से एक से अधकि बार हम पर अधकिार संभालने के लिए कहा है; वह हमारे मठ में ही पले-बढ़े हैं, और उनकी पवत्रिता हम में से प्रत्येक से बढ़कर है; आज्ञाकारति के कार्यों में उनसे कोई तुलना नहीं कर सकता; वह हमेशा उपवास और प्रार्थना, पुस्तकें पढ़ने और लखिने में लगे रहते हैं; संक्षेप में, हम उन्हें सभी अच्छे कार्यों में प्रयासरत देखते हैं। इसीलिए हम चाहते थे कि वह हमारे पति हों, ताकि हम उनके पदचनि्हों पर चल सकें; फरि भी वह हमारी प्रार्थना को अनसुनी करते हुए, अपनी सहमति देने से इनकार कर देते हैं। हम आपसे वनिती करते हैं, महोदय, कि आप उन्हें उनकी इच्छा के वरिुद्ध भी, हमारे मठाध्यक्ष नयिुक्त करें।

'मैं भी,' बशिप ने उत्तर दयिा, 'वही सोच रहा था जो तुम अब कह रहे हो; हालाँकि, थोड़ी देर रुको – मैं उसे हमारी इच्छा के आगे झुकने के लिए मनाने की कोशशि करूँगा।'

इसके बाद, बशिप चर्च में चले गए, क्योंकि पवत्रि अनुष्ठान का समय हो गया था। उन्होंने अम्बो पर खड़े आर्चडीकन को मंडली को यह घोषणा करने का नरि्देश दयिा:

[4532] अब ब्रनि्डसिी।

'क्या यहाँ लेवकयिा नाम का कोई व्यक्ति मौजूद है?'

सभा में कसिी ने भी इस पुकार का जवाब नहीं दयिा, क्योंकि वहाँ उस नाम का कोई नहीं था। जब महादीकन ने दो-तीन बार सभा से पुकारा, तो संत लेवकयिस ने, यह देखकर कि लोगों में उसके अलावा कोई और लेवकयिस नहीं है, उत्तर दयिा, और कहा:

'मैं पापी लेवकयिस हूँ!'

सब लोग उसे देखकर चकति रह गए, और हैरानी से बोले:

'क्या तुम यूडोक्सयिा के पुत्र यूट्रोपयिस हो?'

संत लेवकी ने उत्तर दयिा:

'मेरे पति से पूछो; वे मेरे नाम के बारे में मुझसे ज्यादा बता सकेंगे।'

तब उन्होंने धन्य यूडकिलयिस, सत्तानबे वर्ष के एक सम्माननीय वृद्ध, को बीच में लाया, और उससे पूछा:

'आपके पुत्र का असली नाम क्या है?'

जब उन्होंने यह परमेश्वर की इच्छा समझी कि उनके और उनके पुत्र के बारे में रहस्य प्रकट होना चाहिए, तो उन्होंने अपना दर्शन वस्तिार से सुनाया; अन्य बातों के अलावा, उन्होंने बताया कि कैसे परमेश्वर की आवाज़ ने दो बार, एक सपने में और वास्तवकिता में, उनके पुत्र का नाम ल्यूकयिोस रखा था। यह सुनकर सभी ने आनंद के साथ ईश्वर की स्तुति की और संत लेवकयिस के पास जाकर उन्हें बड़े सम्मान से अभवािदन कयिा। इसके बाद, बशिप ने संत लेवकयिस से पुरोहति पद के साथ मठाधीश का पद स्वीकार करने का आग्रह कयिा। उन्होंने मना कर दयिा, जबकि लोगों ने उद्घोष कयिा:

'लेवकयिस न केवल एक पुरोहति और मठाधीश, बल्कि एक बशिप बनने के भी योग्य हैं!'

और सेंट ल्यूकयिस की अनचि्छा के बावजूद, उन्हें अभषिक्ति करके मठाध्यक्ष पद पर स्थापति कर दयिा गया। इसके बाद, सभी ने उनकी चर्च में परमेश्वर की परम पवत्रि माता के नद्रिोत्सव का उत्सव आनंदपूर्वक मनाया।

मठ का प्रभार संभालने पर, संत लेवकयिस ने अपने कार्यों को दोगुना कर दयिा और अपने भीतर नविास करने वाले पवत्रि आत्मा की कृपा से चमत्कार कए। एक दनि, एक पतिसत्ताग्रस्त इथयिोपयिाई, जसिे पहले ही पवत्रि बपतस्मिा के लए धर्मोपदेश दयिा जा चुका था, उसके पास लाया गया। उसकी पीड़ा को देखकर, संत लेवकयिस ने दानव से कहा:

'हे शैतानी आत्मा, इस मनुष्य को पीड़ा देना बंद कर!'

दैत्य, काँपते हुए, पीड़ा में चल्लिाने लगा:

'अगर मैं उसे छोड़ दूँ, तो मैं कहाँ जाऊँगा? मेरे पास इससे बेहतर कोई घर नहीं है।'

'अशुद्ध आत्मा,' संत ल्यूकयिस ने अपना आदेश दोहराया, 'ईश्वर की इस रचना को छोड़ दे और फरि कभी इसमें प्रवेश करने की हम्मित मत करना; अपमानति और लज्जति होकर, उस व्यक्ति से बाहर नकिल आओ जसिे तू अब तक मानवता के प्रति इतनी घृणा से सताता रहा है, उसे अपनी अंधेरी शक्ति की जंजीरों से बाँधकर।' इसके बजाय उन लोगों में प्रवेश करो जो हमारे प्रभु यीशु मसीह में वश्विास नहीं करते और उनके जीवन-दायक क्रूस की उपासना नहीं करते।

एक भयानक चीख के साथ, दानव एक काले पक्षी के रूप में उस आदमी के मुंह से बाहर नकिला; ऐसा करते ही, वह चल्लिाया:

'लेवकी, हे ईश्वर के सेवक, मेरा तुझसे क्या लेना-देना? तू मुझे उस नविास से क्यों नकिाल रहा है जसिे मैंने अपने लए चुना है? मैं एक गोरे चेहरे और साधारण रूप वाले मनुष्य में प्रवेश नहीं करना चाहता था, बल्कि मैं एक काले रंग के, आँखों को नापसंद आने वाले इथयिोपयिाई में प्रवेश कयिा, इस आशा में कि कोई मुझे ऐसे नविास से बाहर नहीं नकिालेगा।'

शैतान को क्रॉस के चह्नि से भगाने के बाद, संत लेवकी ने उस आदमी को जमीन से उठाया, उसे स्वस्थ कर दयिा, और बाद में उसे बपतस्मिा की कृपा प्रदान की। हालाँकि, शैतान मस्रि में चला गया, जहाँ उसने एक वशिाल सांप का रूप ले लयिा; वह एक नश्चिति शहर की सड़कों पर रेंगता हुआ गया, और रास्ते में मलि पैगनों और यहूदयिों को असाधारण क्रूरता से मारता गया – पुरुष, महलिाएं और बच्चे; उसने जानवरों को भी नहीं बख्शा। संत लेवकी, अपने आत्मा में शैतान के हत्यारे क्रोध को पूर्व में देख कर, मस्रि की ओर तेजी से बढ़े; संत के शहर में आने का आभास होते ही, शैतान खुद को समुद्र में फेंक दयिा, और पीछे सड़कों पर लाशों का ढेर छोड़ गया। शहर में प्रवेश करने और अपने मृतकों के शोक में रोते हुए लोगों की भीड़ को देखकर, संत लेवकी ने पूछा:

'इतनी वलिाप का कारण क्या है?'

तब उन्होंने उसे बताया कि कैसे शहर में अचानक एक साँप प्रकट हुआ था, जिसने कई लोगों को मार डाला था, और कैसे, उसके आने से ठीक पहले, वह खुद को समुद्र में फेंक दिया था, जहाँ वह गायब हो गया। संत लेवकी ने पानी मंगवाया, उसे पवित्र किया, और मृतकों पर छिड़कना शुरू कर दिया, उनसे कहते हुए:

'सर्वेस्पर सबाओथ के नाम पर उठो – तुम मृत्यु की बेड़ियों से बँधे नहीं हो, बल्कि केवल शैतान के विष से पीड़ित हो; फिर भी तुम साँप की शक्ति से खुद को मुक्त नहीं कर पा रहे हो, जो तुम्हारी दुष्टता और तुम्हारे हृदयों की अंधता के कारण तुमसे अधिक शक्तिशाली है। तो मेरे परमेश्वर की शक्ति से उठो, और उसी की महिमा करो जिसने तुम्हें बनाया है।

जब वे यह कह ही रहे थे, तो संत ल्यूकियस ने अपनी लाठी से शवों को छुआ। और तुरंत, जैसे कोई जाग गया हो, वे सब उठ खड़े हुए और संत के पैरों से लिपटकर बोले:

जिस ईश्वर को प्रणाम करना उचित है, वह कोई और नहीं बल्कि पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा हैं, जिनका प्रचार आप, हे ईश्वर के सेवक और हमारे पिता, करते हैं।'

जो भी मृतकों में से जीवित हुए थे, वे सब मसीह पर विश्वास करने लगे, और उनके साथ, लगभग तीन हजार पुरुष ईसाई धर्म में परिवर्तित हुए; उन सभी का, अपनी पत्नियों और बच्चों के साथ, बपतिस्मा हुआ, और वे हमारे प्रभु यीशु मसीह की महिमा करने लगे, जिन्होंने अपने संत ल्यूकियस के द्वारा इतने अद्भुत चमत्कार किए थे।

कुछ वर्षों बाद, अलेक्जेंड्रिया के राज्यपाल फिलिप, अपनी पवित्र पुत्री यूजेनिया के उदाहरण से प्रेरित होकर, अपने पूरे परिवार सहित मसीह में विश्वास करने लगे; कुछ समय बाद, उन्होंने पद से इस्तीफा दे दिया और एक ईसाई बिशप बन गए। बिशप फिलिप की शहादत के बाद, संत ल्यूकियस को सर्वसम्मति से उनका उत्तराधिकारी चुना गया। इस बीच, अलेक्जेंड्रिया में फिलिप के बाद पहले टेरेंटियस और फिर सैटरनिनस गवर्नर रहे। ईसाई धर्म का शत्रु होने के कारण, उसने अपने मूर्तिपूजक सलाहकारों के साथ मिलकर यह साजिश रची कि पहले उनके बिशप, संत ल्यूकियस को मारकर, अलेक्जेंड्रिया में ईसाइयों पर कैसे अत्याचार शुरू किया जाए: सैटरनिनस ने देखा कि वह कई लोगों को मूर्तिपूजा से ईसाई धर्म में परिवर्तित कर रहे थे। और इस प्रकार राज्यपाल ने अपनी बुरी योजना को अंजाम देने के लिए एक अनुकूल समय की तलाश करना शुरू कर दिया। अलेक्जेंड्रिया के निवासियों में से विश्वासियों ने, यह जानकर, आपस में इस बारे में सलाह-मशविरा किया कि वे राज्यपाल को कैसे मार सकते हैं। फिर संत ल्यूकियस ने सभी ईसाइयों को अपने पास बुलाया, उन्हें अपनी विद्रोही योजना को छोड़ने के लिए मनाया और उन्हें ईश्वर से प्राप्त एक दर्शन के बारे में बताया:

'हे प्रियजनो, जानो कि मेरे प्रभु मुझे एक दर्शन में प्रकट होने के लिए कृपालु हुए और उन्होंने मुझे तुम्हारे लिए एक अन्य बिशप नियुक्त करने का आदेश दिया, ताकि मैं पश्चिम में वृन्टसियोपोलिस जा सकूँ, क्योंकि उस नगर को ईसाई ज्ञान की आवश्यकता है।'

यह सुनकर, ईसाइयों ने रोते हुए संत के चरणों में गिरना शुरू कर दिया, और कहने लगे:

'हे पवित्र पिता! हमें अनाथ न छोड़िए – उन लोगों से अलग न होइए जिन्हें आपने ईश्वर की ओर मोड़ा है; अपनी मृत्यु तक हमें न छोड़िए।'

संत लेवकियस ने उत्तर दिया, 'तुम सभी जानते हो, कि मेरे यौवन के दिनों में भी प्रभु ने मेरे पिता, यूडक्लियोस को यह प्रकट किया था कि मैं, यद्यपि अयोग्य हूँ, यह पवित्र पद प्राप्त करूँगा और मैं एक मूर्तिपूजक नगर में जाऊँगा, ऐसे लोगों के बीच जो परमेश्वर को नहीं जानते। यह हमारे प्रभु की इच्छा है कि, मेरे माध्यम से, उनके इस अयोग्य सेवक के द्वारा, इन लोगों को पवित्र चर्च में लाया जाए। यही कारण है कि प्रभु ने मुझे आज्ञा दी है कि मैं आपके लिए एक अन्य पिता नियुक्त करूँ, जब तक मैं अपने सामने रखा गया कार्य पूरा करने के लिए जाता हूँ। जहाँ तक एपार्क सैटरनिनस का प्रश्न है, जान लो कि ईसाइयों को सताने की उसकी दुष्ट योजना सफल नहीं होगी, क्योंकि उसके दिन गिने-चुने हैं और उसका विनाश निकट है: मेरे यहाँ से प्रस्थान करते ही, उसका घर ढह जाएगा, और वह तथा उसके पूरे परिवार के लोग मलबे के नीचे दब जाएँगे।

यह कहकर और रो रहे ईसाइयों को सांत्वना देकर, उन्होंने बिशप पद के योग्य एक पुरुष को चुना; इस प्रकार संत ल्यूकियस के स्थान पर एक अन्य बिशप की नियुक्ति हुई। – अपने दो डिकिन, यूसेबियस और डायोनिसियस, और पाँच शिष्यों को साथ लेकर, संत ल्यूकियस शहर से बंदरगाह के लिए रवाना हुए। पत्नी और बच्चों को छोड़कर, पाँच हज़ार की संख्या वाले सभी ईसाइयों ने अपने बिशप को रोते-बिलखते विदा किया।

– 'पिताजी,' उन्होंने पुकारा, 'आप अपने ही बच्चों को छोड़कर हमें क्यों जा रहे हैं?'

पलटकर उन्हें रोते हुए देखकर, संत ल्यूकयिस स्वयं गहरे भावुक हो गए, उनकी आँखें आँसुओं से भर आईं, और, स्वर्ग की ओर अपने हाथ उठाकर, उन्होंने कहा:

'हे प्रभु, मेरे ईश्वर, यीशु मसीह, यदि आपकी इच्छा हो, तो मुझे अपने इन लोगों से अलग न करें, जिनकी सेवा के लिए आपने मुझे नियुक्त किया है!'

जैसे ही उन्होंने यह प्रार्थना समाप्त की, स्वर्ग से एक आवाज़ गूँजी, जिसे सभी ईसाइयों ने सुना:

'लेवकी! प्रभु की आज्ञा को नज़रअंदाज़ मत करो, बल्कि जहाज़ पर चढ़ो और जहाँ भी तुम्हें जाने की आज्ञा दी गई है, वहाँ शांतिपूर्वक प्रस्थान करो।'

संत लेवकी ने अपने साथ चल रहे लोगों से कहा, 'भाइयों, क्या तुम प्रभु की इच्छा सुनते हो? तो जान लो कि मैं अपनी मर्ज़ी से तुमसे विदा नहीं हो रहा हूँ।'

सभी को विदा कहकर, वह जहाज़ पर चढ़ा और समुद्र यात्रा के लिए निकल पड़ा। हालाँकि, अलेक्जेंड्रिया में, संत की भविष्यवाणी के अनुसार, एपार्क का घर अचानक ढह गया, जिसमें एपार्क और अंदर मौजूद सभी लोग मारे गए।

पंद्रह दिनों के बाद, जहाज़ एड्रियिनोपोलिस पहुँचा—थ्रेस वाला नहीं, बल्कि प्राचीन मिस्र वाला; यहाँ संत ल्यूकयिस थोड़ी देर के लिए रुके, और दो प्रेस्बिटर, लियो और सविनस को अपने साथ ले लिया। एक और जहाज मिल जाने पर, उसने तय किराया चुकाकर उसमें सवार हो गया और हाइड्रंटम के लिए रवाना हो गया, जहाँ वह एक डल्माटियाई जहाज पर चढ़ा, जिससे वह व्रुंटिसियोपोलिस के क्षेत्र में पहुँचा। उतरने के बाद, संत ल्यूकयिस अपने पुरोहितों के साथ शहर के लिए रवाना हो गए। रास्ते में, उनकी मुलाकात अपने सैनिकों के साथ ट्रिब्यून[4533] आर्मालयिन से हुई; संत ल्यूकयिस ने उनमें से एक से पूछा:

'इस शहर का शासक कौन है?'

'क्या तुमने महान अंटिओकस, इस भूमि के स्वामी के बारे में नहीं सुना है?' सैनिक ने उत्तर दिया।

'आपके स्वामी अंटिओकस किस धर्म का पालन करते हैं?' सेंट लेवकी ने फिर पूछा।

यह प्रश्न सुनकर, ट्रिब्यून और सैनिक हँस पड़े और बोले:

'क्या सूर्य और चंद्रमा के अलावा, जो ब्रह्मांड को प्रकाशित करते हैं, कोई और धर्म या कोई और देवता है? क्या सभी कान बादलों में उनकी गड़गड़ाहट की आवाज़ नहीं सुनते? सूर्य से निकलने वाली बिजली से तेज़ क्या है? चंद्रमा से अधिक चमकदार क्या है, जो अपने विभिन्न चरणों के माध्यम से मौसम में आने वाले बदलावों की भविष्यवाणी करता है?'

'बेचारे, अज्ञानी प्राणियों!' संत लेवकी ने एक आह भरते हुए कहा। 'दिव्य ज्ञान अभी तक तुम तक नहीं पहुँचा है, और इसलिए तुम नहीं जानते कि सूर्य और चंद्रमा ईश्वर की रचनाएँ हैं और प्रभु की आज्ञा का पालन करते हैं, अपना अनवरत चक्र पूरा करते हुए। और उन्हें देवता नहीं कहा जाना चाहिए: उनमें कुछ भी दिव्य नहीं है; वे एक जगह पर भी नहीं ठहर सकते, बल्कि लगातार चल रहे हैं, उगते और अस्त होते हैं, कभी बादल से तो कभी रात के अंधकार से ढक जाते हैं, और कभी दिखाई देते हैं, तो कभी दृष्टि से ओझल हो जाते हैं। और उनकी रोशनी शाश्वत प्रकाश—अर्थात् ईश्वर, जिसकी हम पूजा करते हैं—से उतनी ही भिन्न है, जितनी कोई सृष्टि अपने स्रष्टा से भिन्न होती है। हमारा ईश्वर, जिसने सूर्य, चंद्रमा, आकाश और पृथ्वी तथा उनमें मौजूद सभी चीज़ों को बनाया है, वही सच्चा प्रकाश है, जो उन सभी को प्रकाशित करता है जो उस पर विश्वास करते हैं। उसने सूर्य और चंद्रमा की किरणों को बनाया, और उन्हें आकाश के नीचे रहने वाले लोगों की सेवा करने की आज्ञा दी – दिन में सूर्य चमके, और रात में चंद्रमा। और यदि आप अदृश्य प्रकाश – हमारे ईश्वर – को जान लेते, तो आप कभी भी दृश्यमान स्वर्गीय पिंडों के सामने सिर नहीं झुकाते।

'यह कैसी रोशनी है,' ट्रिब्यून आर्मालेऑन ने पूछा, 'जिसके बारे में आप बात कर रहे हैं, यह कहते हुए कि वह हमारी आँखों से अदृश्य है?'

'मसीह, परमेश्वर का पुत्र,' संत ल्यूकयिस ने समझाया, 'जो पवित्र आत्मा के द्वारा कुँवारी मरियम से जन्मे।'

और उन्होंने उन्हें मसीह के बारे में सब कुछ बताया – कि उनका जन्म कैसे हुआ, वे लोगों के बीच कैसे रहे, उन्होंने अपनी इच्छा से कैसे दुख उठाया, मरे, तीसरे दिन पुनर्जीवित हुए, स्वर्ग में आरोहण किया, परमपिता परमेश्वर के दाहिने हाथ पर विराजमान हुए, और कैसे वे पूरी दुनिया का न्याय करने आएँगे, प्रत्येक व्यक्ति को उनके कर्मों के अनुसार

[4533] ट्रिब्यून सैनिकों के एक दस्ते का कमांडर होता है।

पुरस्कृत करने के लिए। सैनिक संत लेवकियस की शिक्षा को गहरी भावना के साथ सुन रहे थे; उनके शब्दों को सत्य मानकर, वे उनके सामने जमीन पर गिर पड़े, यह कहते हुए:

'हे पिता, हम आपसे विनती करते हैं, हमें अनन्त जीवन का भागीदार बनाएं!'

घोषणा के बाद, उन्होंने उनका बपतिस्मा दिया; नए धर्मांतरितों की संख्या सत्तासठ पुरुष थे। उनके और पुरोहितों के साथ, संत ल्यूकियस शहर में प्रवेश किया। इस प्रकार मसीह की शिक्षा के प्रकाश द्वारा व्रुंटसियोपोलिस के ज्ञानोदय की नींव रखी गई।

राजकुमार एंटिओकस ने यह जानकर कि ट्राइब्यून आर्मालेऑन अपने सैनिकों सहित मसीह में विश्वास करने लगा है, उसे बुलाया और पूछा:

'क्या जो मैं तुम्हारे बारे में सुन रहा हूँ, अर्मालेऑन, वह सच है? कि तुम और तुम्हारे अधीन सैनिक ईसाई बन गए हैं?'

अर्मालियोन चुप रहा। फिर अंटिओकस ने गुस्से से कहा:

'तुम मुझे जवाब क्यों नहीं देते?'

'क्या तुम्हें,' ट्रिब्यून ने पूछा, 'सिर्फ इसलिए मुझ पर गुस्सा आना चाहिए क्योंकि मैं अब एक ईसाई हो गया हूँ?'

एंटीओकस ने पलटकर कहा, 'मैं आपसे बिना किसी क्रोध के पूछ रहा हूँ: हमें बताइए, आपको ईसाई धर्म की शिक्षा किसने दी? हम सभी आपको अपने धर्म में एक बुद्धिमान व्यक्ति के रूप में जानते थे, जो अब तक ईसाई धर्म को अस्वीकार करते थे, और अब हम हैरान हैं कि आप ईसाई कैसे बन गए।'

'अब तक,' अर्मालियन ने उत्तर दिया, 'मैं अंधा था और नश्वरता की छाया में भटकता था; लेकिन अब, ईश्वर की कृपा से प्रबुद्ध होकर, मुझे दृष्टि प्राप्त हुई है और मैं शाश्वत जीवन की आशा में निवास करता हूँ।'

– 'यह अनंत जीवन क्या है जिसके बारे में आप बात कर रहे हैं?' एंटिओकस ने पूछा।

'यदि आप चाहें, तो आप इसे जान सकते हैं,' ट्रिब्यून ने कहा। 'यदि आप वास्तव में हमें यह दिखाएँ,' एंटिओकस ने तर्क दिया, 'तो बेशक मैं देखना और समझना चाहता हूँ; हालाँकि, मुझे नहीं लगता कि इस वर्तमान जीवन के अलावा कोई और जीवन है, और न ही मेरा मानना है कि सूर्य और चंद्रमा के अलावा कोई अन्य प्रकाश या ईश्वर मौजूद है।'

'सूर्य और चंद्रमा,' अर्मालेऑन ने कहा, 'देवता नहीं हैं, बल्कि ईश्वर की सृष्टि हैं, जिन्हें प्रभु ने स्वर्ग में स्थापित किया है, किसी को उनकी सेवा के लिए आकर्षित करने के उद्देश्य से नहीं, बल्कि ताकि वे—पृथ्वी को प्रकाशित करके—तर्कशील प्राणी, यानी मनुष्य, जो पृथ्वी पर रहता है, उसकी सेवा कर सकें।'

अंतियोकुस ने ट्रिब्यून के शब्दों को आश्चर्य से सुना और उससे पूछा:

'तुम्हें यह ज्ञान किसने दिया?'

उसने कहा, 'मुझे अलेक्जेंड्रिया के ल्यूकियस नामक एक व्यक्ति से ज्ञान मिला, जो हाल ही में यहाँ आए थे।'

उस समय, संत ल्यूकियोस व्रुंटसियोपोलिस के पश्चिमी द्वारों के सामने स्थित रंगशाला में शहर के बाहर थे; वहाँ वे लोगों को ईसाई धर्म की शिक्षा दे रहे थे, और जो प्रभु यीशु के पास आ रहे थे, उन्हें बपतिस्मा दे रहे थे। अंटिओकस ने उन्हें बुलाया, और सम्मानपूर्वक उनसे अपने पास आने का निमंत्रण दिया। ईश्वर के बिशप को देखकर, उन्होंने उनसे कहा:

'यदि आप चाहते हैं कि हम उस ईश्वर पर विश्वास करें जिनका आप प्रचार करते हैं, तो उनसे प्रार्थना करें कि वे हमारी भूमि पर वर्षा भेजें, जो हमें अब दो वर्षों से नहीं मिली है। सूखे के कारण, हमारी भूमि मुरझा गई है और अपनी पूर्व उर्वरता खो चुकी है, जिसके कारण लोग गरीबी और अभाव में जीवन यापन कर रहे हैं।'

संत ल्यूकियस ने अपने पुरोहितों और सभी नव-बपतिस्मा प्राप्त ईसाइयों को इकट्ठा किया, और प्रभु परमेश्वर से एक उत्कट सामूहिक प्रार्थना की; और तुरंत आकाश बादलों से ढक गया, जिससे एक मूसलाधार बारिश हुई जिसने उस देश की पूरी भूमि को पानी से सिक्त कर दिया। तब अंटिओकस के नेतृत्व में पूरा शहर मसीह पर विश्वास करने लगा, और इकसठ सौ लोग बपतिस्मा ग्रहण कर चुके थे, और सभी ने हमारे परमेश्वर मसीह की महिमा की। शहर के केंद्र में परमेश्वर की परम पवित्र माता और सदा कुंवारी मरियम को समर्पित एक चर्च बनाया गया; बपतिस्मा देने वाले योहन को समर्पित एक और चर्च ठीक उसी स्थान पर बनाया गया जहाँ लोगों का बपतिस्मा हुआ था। इस प्रकार, संपूर्ण व्रुंटसियोपोलिस पवित्र विश्वास के प्रकाश से प्रकाशित हो गया।

जब संत ल्यूकयिस नव-धर्मपरविर्तितों को धर्म में शकि्षति और सुदृढ़ कर रहे थे, तब वे गंभीर रूप से बीमार पड़ गए और एक दव्यि प्रकटोक्ति के माध्यम से उन्हें पता चला कि उनकी बीमारी घातक थी। उन्होंने एंटओिकस को अपने पास बुलाया और उसे नर्दिेश दयिा कि उनके शरीर को उसी स्थान पर दफनाया जाए जहाँ उनका जहाज पहली बार तट पर लगा था। फरि, अपने हाथ उठाकर, उन्होंने अपने झुंड के लिए प्रार्थना की, उन सभी पर अपना अंतमि आशीर्वाद दयिा, और उन्हें शांति की कामना के साथ वदिाई दी; जसिके बाद वे प्रभु के पास चले गए, और पूरे शहर ने उनका शोक मनाया[4534] । संत के पवत्रि शरीर को लेकर, एंटओिकस ने उसे उचति सम्मान के साथ उस स्थान पर ले जाया जहाँ संत, अलेक्जेंड्रयिा से आकर, जहाज से उतरने वाले थे। वहाँ संत ल्यूकयिस के नाम पर एक चर्च का नर्मिाण करने के बाद, एंटओिकस ने ईश्वर के सेवक के पवत्रि अवशेषों को उसमें रख दयिा। और उनके मकबरे से पति, पुत्र और पवत्रि आत्मा की महमिा के लिए कई चमत्कार हुए – ईश्वर, जो त्रमिूर्ति में महमिामय है, जसिकी सारी सृष्टि द्वारा युगों-युगों तक स्तुति, धन्यवाद और आराधना हो। आमीन।

पैटारा के बशिप, संत मेथोडयिस ह्यरोमार्टर की स्मृति।

20 जून को स्मरणोत्सव

ईश्वर के सेवक मेथोडयिस, जन्हिोंने अपने युवा काल से ही स्वयं को प्रभु की सेवा के लिए समर्पति कर दयिा था, पवत्रि आत्मा प्राप्त करके एक योग्य पात्र साबति हुए; इसके लिए, दव्यि चुनाव द्वारा, उन्हें बशिप के पद के लिए योग्य माना गया, और वे लसिियि क्षेत्र के पतारा शहर[4535] की आध्यात्मकि झुंड के प्रमुख चरवाहे बने। संत मेथोडयिस ने ईश्वर भक्ति से अपने झुंड का मार्गदर्शन कयिा, और उन्हें कोमल शकि्षा के माध्यम से पूर्णता की ओर ले गए। संत मेथोडयिस के धर्मप्राचीन काल में, ओरजिन का वधिर्म उत्पन्न हुआ[4536] , जसिने कई लोगों को धोखा दयिा; इसे बढ़ता हुआ देखकर, संत मेथोडयिस ने एक उत्कृष्ट चरवाहे के रूप में, अपने नन्दिा-वचनों से उस वधिर्म को आग की तरह जला दयिा – ज्ञान और दैवीय अनुग्रह से परपिूर्ण शकि्षा के माध्यम से, उन्होंने वशि्वासयिों पर मंडरा रहे वधिर्मी अंधकार को दूर कयिा। उनकी दव्यि प्रेरति शकि्षाएँ बजिली की तरह पूरे ब्रह्मांड में फैल गईं, और उनके उपदेशों की आवाज़

[4534] कुछ स्रोत संत लेवकयिा की मृत्यु को 5वीं शताब्दी का मानते हैं।

[4535] एशयिा माइनर में।

[4536] ओरजिन – अलेक्जेंड्रयिा की चर्च के प्रसद्धि शकि्षक, अपनी बुद्धि और ज्ञान की गहराई के लिए अपने युग की एक अद्भुत प्रतभिा। चर्च के कई सबसे प्रतष्ठिति पतिाओं ने ओरजिन की धार्मकि कृतयिों और उपलब्धियों को सर्वोच्च सम्मान दयिा; फरि भी बाद में, उनके जीवति रहते हुए, उन्हें अलेक्जेंड्रयिा की दो स्थानीय परषिदों में एक वधिर्मी घोषति कर दयिा गया और, उनकी मृत्यु के बाद, 543 में कॉन्स्टेंटनिोपल की परषिद में भी ऐसा ही कयिा गया। हालांकि उन्होंने अपने गैर-पारंपरकि वचिारों को अपरविर्तनीय सत्य के रूप में प्रस्तुत नहीं कयिा, फरि भी ओरजिन ने ईसाई चर्च के सद्धिांत के कई सत्यों पर गलत वचिार रखे, यही कारण है कि कुछ लोगों ने सबसे बुनयिादी ईसाई धर्मसद्धिातों में उनकी दृढ़ता को संदग्धि माना। आत्माओं के पूर्व-अस्तत्वि के गैर-पारंपरकि सद्धिांत को वकिसति करते हुए, उन्होंने मसीह के बारे में एक गलत दृष्टकिोण अपनाया, यह मानते हुए कि ईश्वर ने समान गरमिा वाले एक नश्चिति संख्या में आध्यात्मकि प्राणयिों को बनाया था, जो दव्यिता को समझने और उसकी तरह बनने में सक्षम थे; इन सृजति आत्माओं में से एक दव्यिता की ओर इतनी तीव्रता से आकर्षति हुई कि वह दव्यि वचन के साथ अवभिाज्य रूप से एक हो गई या उसकी सृजति वाहनिी बन गई; ओरजिन की दृष्टि में, यह मानव आत्मा है जसिके माध्यम से परमेश्वर वचन पृथ्वी पर अवतार ले सके, क्योंकि उनकी गलत राय में, दव्यिता का प्रत्यक्ष अवतार अकल्पनीय है। परमेश्वर वचन के अवतार और संसार तथा मनुष्य की सृष्टि के एक वधिर्मी दृष्टकिोण पर अड़े रहकर, ओरजिन ने मसीह की मृत्यु को भी एक गैर-पारंपरकि अर्थ में समझा, इसे आध्यात्मकि जगत में आध्यात्मकि रूप से दोहराई जाने वाली और वहाँ स्वर्गदूतों की मुक्ति पर प्रभाव डालने वाली घटना के रूप में माना, जबकि उद्धार के कार्य को हमारी प्रकृति को प्रदान की गई साधारण शक्तियों का बहुत अधकि श्रेय दयिा। पुनरुत्थान और आने वाले जीवन पर अपने शकि्षण के कुछ पहलुओं में भी ओरजिन गलत थे, उदाहरण के लिए, इस दृष्टकिोण में कि शैतान का उद्धार हो सकता है; और पवत्रि धर्मग्रंथ की अपनी व्याख्या में, उन्होंने रहस्यमय अर्थ पर बहुत अधकि जोर दयिा, जसिसे धर्मग्रंथ के ऐतहिासकि अर्थ को हानि पहुँची। हालाँकि, कसिी भी मामले में, चर्च के प्रति ओरजिन की सेवाएँ अधकि महत्वपूर्ण हैं और उनकी त्रुटयिों से कहीं अधकि हैं। अपने स्कूलों में, उन्होंने चर्च के कई उल्लेखनीय फादरों और शकि्षकों को शकि्षति कयिा, जनिमें से कुछ का मूर्तपिूजक धर्म से ईसाई धर्म में धर्मांतरण उनके कारण ही हुआ; यह एक ऐसा वशि्वास था जसिके साथ उन्होंने ज्ञान और दर्शन को सामंजस्य स्थापति करने का प्रयास कयिा। वशिेष रूप से पवत्रि धर्मग्रंथ के अध्ययन पर उनके कार्य उल्लेखनीय हैं – इसकी व्याख्या और, सबसे बढ़कर, प्रामाणकि पाठ की बहाली और शुद्धकिरण; इसी तरह ईसाई धर्म का अपने शत्रुओं और वधिर्मयिों के खलिाफ बचाव करने के उद्देश्य से ओरजिन की रचनाएँ भी उल्लेखनीय हैं। – डेसयिस के अधीन उत्पीड़न के दौरान, ओरजिन ने मसीह के एक साहसी स्वीकारकर्ता के रूप में ख्याति अर्जति की; वह 254 ईस्वी में टायर में सत्तर वर्ष की आयु में नधिन कर गए।

तुरही की ध्वनि की तरह सारी पृथ्वी पर गूँज उठी। इसलिए, अदृश्य शत्रु उस उत्साह को सहन नहीं कर सका, जिससे संत मेथोडियस धर्मपरायणता और मसीह की कलीसिया के लिए अपने महान कार्यों में प्रेरित थे; उसने अपने दृश्यमान सेवकों को पवित्र बिशप के विरुद्ध कर दिया—वे मूर्तिपूजक; उसकी उकसावे पर, मूर्तिपूजकों ने ईश्वर के सेवक को यातनादायक मृत्यु देने का निश्चय किया, जिसने पहले ही, अपने कष्टों से भी पहले, स्वयं को 'जीवन-प्रद संयम' में लपेट लिया था। मसीह के पवित्र संत को पकड़कर, विधर्मियों ने तलवार से उनका माननीय सिर काट दिया। और संत मेथोडियस एक बेहतर जीवन में प्रवेश कर गए; जिन्होंने पहले परमेश्वर के मेमने की सेवा की थी, उन्हें परमेश्वर को एक जीवित बलिदान के रूप में अर्पित किया गया, और फिर उन्हें स्वयं एक मेमने की तरह वध कर दिया गया। इस प्रकार धर्मपरायणता के उस अच्छे तपस्वी को, जिसने विधर्मों के विरुद्ध लड़ाई लड़ी और मूर्तिवादियों के सामने निडर होकर मसीह की गवाही दी, यहाँ तक कि अपने रक्त का बहाव और शहीद की मृत्यु भी हुई, जो ऑरेलियन[4537] के शासनकाल के दौरान हुई, दोहरा मुकुट पहनाया गया। आमीन[4538] ।

ट्रोपारियन, स्वर 1:

हे ईश्वर-ज्ञानी संत मेथोडियस, आपका रक्त, जैसे हाबिल का, पृथ्वी से गुप्त रूप से ईश्वर के पास पुकार लगाता है, क्योंकि आपने स्पष्ट रूप से ईश्वर के अवतार का उपदेश दिया; इसके द्वारा आपने ओरिजिन के संप्रदाय को खारिज कर दिया, और स्वर्गीय महल में प्रवेश कर गए हैं। हमारे ईश्वर मसीह से प्रार्थना करें कि वे हमारी आत्माओं को बचाएँ।

कॉन्टाकियन, स्वर 4:

हे पवित्र त्रिमूर्ति के रहस्य-वाहक, और मन की दैवी आज्ञाओं के प्रचारक, और ऑर्थोडॉक्स विश्वास के स्तंभ, मेथोडियस, आपने विधर्मियों की झूठी शिक्षाओं का पर्दाफाश किया और, सच्चे विश्वास के लिए, अपने रक्त के द्वारा एक पवित्र शहीद बने; और अब, स्वर्गदूतों के साथ मसीह के सामने खड़े होकर, प्रार्थना करें कि हम उद्धार पा सकें।

पवित्र शहीदों अरिस्टोक्लीस, डिमिट्रियन और अथेनासियस का स्मरणोत्सव

20 जून को स्मरणोत्सव

पवित्र शहीद अरिस्टोक्लीस, जो साइप्रस के तमास शहर के रहने वाले थे, एक कैथेड्रल के पुरोहित थे। सम्राट मैक्सिमियन[4539] के दिनों में, जब ईसाइयों के खिलाफ एक बड़ा उत्पीड़न शुरू हुआ, तो संत अरिस्टोक्लीस रेगिस्तान में चले गए, जहाँ वे एक पहाड़ी की गुफा में छिप गए: वहाँ, जब वह प्रार्थना कर रहे थे, तो एक बार उन्हें सूर्य से भी अधिक तेज प्रकाश ने आच्छादित कर लिया, और स्वर्ग से एक आवाज सुनाई दी जिसने उन्हें साइप्रस द्वीप पर सालामिज़ की मेट्रोपोलिस जाने और वहाँ मसीह के नाम की घोषणा करने के लिए शहादत प्राप्त करने का आदेश दिया। प्रकाश और दैवीय आवाज़ के प्रकट होने से प्रोत्साहित होकर, वह यातनाओं के अपने भय को त्यागकर, तुरंत उस स्थान के लिए रवाना हो गया जहाँ जाने का उसे आदेश मिला था। रास्ते में, जो एक जंगल से होकर जाता था, वह संत प्रेरित बरनबास के चर्च में गया और वहाँ उसे डीकन डेमेट्रियस और पाठक अथेनासियस मिले, जिन्होंने उसे प्रेम से स्वागत किया। उनकी बातचीत के दौरान, संत अरिस्टोक्लीज़ ने उन्हें सलामिज़ शहर की अपनी यात्रा का कारण बताया और अपने द्वारा देखे गए दर्शन का वर्णन किया। यह सुनकर, डिमिट्रियन और अथानासियस में अरिस्टोक्लीज़ के साथ चलने की एक अदम्य इच्छा जागृत हुई, ताकि वे भी मसीह के लिए मर सकें। जब वे सालामिस नगर पहुँचे, तो वे एक ऊँची जगह पर खड़े हो गए,

---

[4537] 270–275. हालाँकि, यह अधिक संभावित है कि सेंट मेथोडियस की मृत्यु बाद में, 310 और 312 के बीच हुई।

[4538] संत मेथोडियस की बची हुई लिखित कृतियाँ निम्नलिखित से संबंधित हैं: 1) मूर्तिपूजा के विरुद्ध पवित्र विश्वास की रक्षा; 2) विश्वास के सिद्धांतों की व्याख्या, विशेष रूप से ओरिजिन की त्रुटियों के विरुद्ध; 3) नैतिक शिक्षा; और 4) पवित्र धर्मग्रंथ की व्याख्या।

[4539] मैक्सिमियन गैलेरियस ने 305 से 311 तक शासन किया।

जहाँ सभी उन्हें देख सकें, और उन्होंने ऊँचे स्वर में यीशु मसीह के बारे में प्रचार करना शुरू कर दिया, और मसीह की महिमा करते हुए मूर्तिपूजक देवताओं, उन मूर्ख मूर्तियों की निंदा की; मूर्तिपूजकों ने तुरंत प्रचारकों को पकड़ लिया और पूछताछ के लिए उन्हें राज्यपाल के सामने ले आए। जब राज्यपाल को यह पता चला कि वे ईसाई थे और उन्होंने पवित्र विश्वास के प्रति उनके अटूट समर्पण को देखा, तो उन्होंने पादरी अरिस्टोकलीज़ को तलवार से सिर कलम करने का आदेश दिया; जबकि संतों डेमेट्रियन और अथानासियस को, बहुत यातनाओं के बाद, जलाने की सज़ा दी गई; लेकिन जब ये पवित्र पुरुष आग में जीवित और सुरक्षित रहे, तो राज्यपाल ने उन्हें भी तलवार से सिर कलम करने की सज़ा सुनाई। इस प्रकार मसीह के शहीदों[4540] ने शहीद का मुकुट धारण कर अपने अंत को प्राप्त किया।

पवित्र शहीदों इना, पिन्ना और रिम्मा के अवशेषों का स्थानांतरण

20 जून को स्मरण किया जाता है

ये पवित्र शहीद उत्तरी देशों से, बर्बरों की भूमि[4541] से आए थे। वे प्रेरित एंड्रयू के शिष्य थे और उन्होंने कई बर्बर लोगों को मूर्तियों की पूजा से हटाकर मसीह के प्रति विश्वास में परिवर्तित किया। इसके लिए, उन्हें गिरफ्तार कर बर्बरों के शासक के सामने लाया गया, जिसने उन्हें विभिन्न प्रलोभनों और चापलूसी भरे वादों से लुभाने की कोशिश की; लेकिन वे उन्हें दिए गए सम्मानों के आगे नहीं झुके और मसीह में अपने दृढ़ विश्वास के लिए, उन्हें बेरहमी से पीटा गया। चूँकि उस समय कड़ाके की सर्दियाँ थीं और नदियाँ इतनी मोटी बर्फ से जमी हुई थीं कि कोई भी व्यक्ति बर्फ पर चलकर उन्हें पार कर सकता था, इसलिए नदी के बीच में बर्फ पर सीधे खड़े पेड़ रखे गए और उन्हें मजबूती से बाँध दिया गया, और पवित्र शहीदों को उनसे बाँध दिया गया। जब पेड़ों के भार से बर्फ़ पिघलने लगी, तो पानी उनकी गर्दन तक पहुँच गया, और उसी अवस्था में उन्होंने अपना पवित्र प्राण प्रभु को सौंप दिया। तब कुछ ईसाइयों ने उनके शरीरों को दफ़ना दिया, लेकिन बाद में बिशप[4542] ने उन्हें कब्र से बाहर निकाला और, उन्हें अपने कंधों पर उठाकर, ने उन्हें अपनी चर्च में सुला दिया। उनकी मृत्यु के सात साल बाद, पवित्र शहीदों ने उसी बिशप को दर्शन दिए और उन्हें अपने अवशेषों को एलिक्स नामक स्थान पर, एक सूखे अभयारण्य[4543] में स्थानांतरित करने का आदेश दिया।

4 जुलाई

21 जून (पुराना तरीका)

पवित्र शहीद जूलियन ऑफ़ टारसस की स्मृति

21 जून को स्मरणोत्सव

एक मूर्तिपूजक सेनेटर और एक ईसाई माँ के पुत्र, संत जूलियन का जन्म सिलिसिया के[4544] शहर अनाज़ार्बस में हुआ था। अपने पति की मृत्यु के बाद, संत जूलियन की माँ अनाज़ार्बस से सिलिसिया के तारस शहर में चली गईं[4545] । वहाँ

[4540] लगभग 306

[4541] सम्राट बेसिल के मेनोलॉजियन में कहा गया है कि ये पवित्र शहीद स्कैथिया के मूल निवासी थे, इसके उत्तरी सीमाओं से; हालाँकि, प्रो. ई. गोलुबिंस्की के अनुसार (रूसी चर्च का इतिहास, खंड I, पहला भाग, 2वीं संस्करण, पृ. 31 और टिप्पणी 2) वे डोरियन गोथिया से आए थे, जो आज के क्रीमिया में बालाक्लावा और सुदाक के बीच एक संकीर्ण तटीय पट्टी पर स्थित था।

[4542] सम्राट बेसिल के कैलेंडर के स्लावोनिक संस्करण में, इस बिशप का नाम गोडला है, और गोडला नाम गोथिक है।

[4543] एलीक्स आज की अलुश्ता है, जो यल्टा से 42 वर्स्ट उत्तर-पूर्व में काला सागर तट पर स्थित है। 'शुष्क बंदरगाह' का अर्थ समुद्री बंदरगाह है।

[4544] सिलिसिया एशिया माइनर में एक दक्षिण-पूर्वी रोमन प्रांत है।

[4545] तार्सस सिलिसिया के दक्षिणी भाग में, सिडनस नदी के किनारे एक बड़ा और घनी आबादी वाला शहर है, जो वहां से ज्यादा दूर नहीं भूमध्य सागर में मिल जाती है। आज भी, तार्सस एक काफी महत्वपूर्ण शहर बना हुआ है।

उन्होंने युवा जूलियन को ईसाई धर्म में बपतिस्मा दिया और उसका पालन-पोषण किया, जिसमें उन्होंने न केवल अकादमिक विषयों बल्कि विश्वास की सच्चाइयों और ईसाई भक्ति के सिद्धांतों को भी सिखाया।

जब जूलियन 18 वर्ष का हुआ, तो सम्राट डायोक्लेटियन द्वारा ईसाइयों पर एक कठोर उत्पीड़न शुरू किया गया[4546] । अन्य ईसाइयों के साथ, संत जूलियन को गिरफ्तार कर परीक्षण के लिए राज्यपाल मार्शियन के सामने लाया गया[4547] । फिर भी, क्रूर यातनाओं, न तो धमकियों, और न ही उपहारों और सम्मानों के वादों ने उस धर्मनिष्ठ युवक को मूर्तिपूजक बलिदान चढ़ाने या मसीह का त्याग करने के लिए राजी कर सका। पूरे एक साल तक, जूलियन को सिलिसिया भर में एक शहर से दूसरे शहर ले जाया गया, हर जगह उसे यातनाएँ दी गईं, लेकिन वह, एक हीरे की तरह[4548] , यीशु मसीह में अपने विश्वास की गवाही पर दृढ़ रहा। जब संत जूलियन को एजिया नगर[4549] लाया गया, तो वहाँ के अधर्मी मूर्तिपूजकों ने पवित्र शहीद का मुँह जबरदस्ती खोलकर उसमें मूर्तिपूजा में चढ़ाया हुआ मांस और खून डाल दिया, ताकि वे मसीह के पवित्र और शुद्ध सेवक को अपनी अधर्मी बलिदानों से अपवित्र कर सकें। इसके बाद, संत जूलियन को जेल में डाल दिया गया। उनकी धर्मनिष्ठ माँ, जो हर जगह जूलियन के साथ आई थीं, वहाँ उनके पास आईं और प्रभु से अपने बेटे को उसके शहीद होने के समय में मजबूत बनाने के लिए विनती करने लगीं। जब यातना देने वालों ने संत जूलियन की माँ को पकड़ लिया और उसे अदालत के सामने लाया, तो उसने राज्यपाल से अपने बेटे से तीन दिनों के लिए जेल में मिलने की अनुमति देने का अनुरोध किया, ताकि वह उसे मूर्तियों की पूजा करने के लिए मना सके। राज्यपाल ने उसे बिना किसी बाधा के जेल में अपने बेटे से मिलने की अनुमति दे दी। और वह, जेल में उसके साथ दिन-रात बिताते हुए और एक माँ के प्यार से उससे बात करते हुए, उसे आँसुओं के साथ प्रोत्साहित करती रही कि वह इन अस्थायी यातनाओं को अंत तक सहन करे, ताकि वह शहीदों के राज्य में प्रभु द्वारा शाश्वत आशीर्वादों के लिए योग्य समझा जाए।

तीन दिन बाद, संत जूलियन और उनकी माँ को मुकदमे के लिए राज्यपाल के सामने लाया गया। यह मानकर कि माँ ने पहले ही अपने बेटे को मूर्तियों को बलिदान चढ़ाने के लिए मना लिया है, राज्यपाल ने इस मनाने के लिए उनकी प्रशंसा की; लेकिन उन्होंने, ऊँचे स्वर में और निडर होकर, यीशु मसीह के नाम का प्रचार करना शुरू कर दिया और मूर्तिपूजक नास्तिकता की निंदा की। इसी प्रकार, संत जूलियन ने निडर होकर यीशु मसीह – एकमात्र सच्चे ईश्वर – की महिमा की और मूर्तिपूजक बहुदेववाद की निंदा की। तब, क्रोधित होकर, राज्यपाल ने आदेश दिया कि दोनों – माँ और बेटे – को यातना दी जाए। बहुत यातनाओं के बाद, संत की माँ के पैर काट दिए गए—वे ही पैर जिनसे वह तारस से अपने बेटे के पीछे-पीछे चली आई थी; जहाँ तक पवित्र शहीद जूलियन का सवाल है, उन्हें रेत और विभिन्न जहरीले सरपटों से भरे एक बोरे में डालकर समुद्र में फेंक दिया गया। इस प्रकार संत जूलियन ने अपने दुखों का अंत किया। कुछ समय बाद, उनकी धर्मपरायण माता भी पीड़ा में मर गईं, और दोनों ने हमारे ईश्वर मसीह से विजय का मुकुट प्राप्त किया।

संत जूलियन का शरीर लहरों के सहारे किनारे पर आ गया, जहाँ उसे अलेक्ज़ेंड्रिया की एक धर्मपरायण विधवा ने पाया, जिसने उसे सम्मानपूर्वक दफनाया। बाद में, जूलियन के पवित्र अवशेषों को अंतीयक ले जाया गया[4550] । सेंट जॉन क्राइसोस्टोम[4551] ने, अंतीयक में एक पुरोहित के रूप में सेवा करते हुए, पवित्र शहीद जूलियन की स्मृति को एक प्रशंसा-गीत से सम्मानित किया।

कॉन्टाकियन, स्वर 2:

आओ हम सभी आज जूलियन की योग्य रूप से प्रशंसा करें, जो धर्मपरायणता के अजेय योद्धा, सत्य के समर्थक और रक्षक थे, और उनसे पुकारें: हमारे सभी के लिए मसीह हमारे ईश्वर से प्रार्थना करें।

[4546] डायोक्लेटियन ने 284 से 305 तक शासन किया।

[4547] हेगेमोन – एक क्षेत्रीय गवर्नर

[4548] एडामेंट (हीरा) – एक ऐसा पत्थर जो इतना कठोर होता है कि वह स्वयं को नुकसान पहुँचाए बिना अन्य पत्थरों को खरोंच सकता है। धार्मिक साहित्य में, यह नाम कई ऐसे संतों को दिया जाता है जो अपने अटूट विश्वास के लिए प्रसिद्ध हैं।

[4549] एगे – सिलिसिया के तटीय शहरों में से एक।

[4550] एंटीओक – सीरिया का सबसे पुराना शहर, जो ओरोंटेस नदी पर स्थित है, और यह उस स्थान से लगभग 10 वर्स्ट दूर है जहाँ यह भूमध्य सागर में मिलती है।

[4551] संत जॉन क्रिसोस्टोम – चौथी और पाँचवीं शताब्दी के एक प्रसिद्ध चर्च फादर; उनका पर्व दिवस 13 नवंबर है।

आदरणीय पादरी जूलियिस और डकिन जूलियिन के जीवन

21 जून को स्मरण कयिा जाता है

संत जूलियिस और जूलियिन का मूल स्थान मरिमडिोनयिा की भूमि थिा[4552] । वे दोनों भाई थे और, बचपन से ही, उन्हें ईसाई भक्ति में पाला गया और धर्मग्रंथों में एक ठोस शिक्षा दी गई। वयस्क होने पर, उन्होंने कुँवारी पवित्रता का जीवन जयिा, उपवास और प्रार्थना के द्वारा ईश्वर की सेवा की, और दनि-रात प्रभु की व्यवस्था का अध्ययन कयिा। ऐसे ईश्वर-प्रसन्न जीवन के लिए, उन्हें धार्मकि पदों से सम्मानति कयिा गया: जूलियिस को एक प्रेस्बटिर और जूलियिन को एक डीकन नयिुक्त कयिा गया; और वे मसीह की कलीसयिा में अच्छे कर्मों से प्रकाशमान होते हुए दो दीपक की तरह थे और इस प्रकार स्वर्गीय पति की महमिा कर रहे थे। उस समय, पवित्र वशि्वास के गेहूं के बीच, मूर्तपिूजक भ्रम की अभी भी बहुत सारी खरपतवार मौजूद थीं। यद्यपि उस समय पूर्व और पश्चमि पहले से ही ईसाई राजाओं के शासन में थे, और हर जगह धर्मपरायणता फल-फूल रही थी, फरि भी हेलेनकि अधर्मीपन अभी पूरी तरह से समाप्त नहीं हुआ था, वशिेष रूप से गांवों में, जहाँ लोग, अपनी मूर्खतापूर्ण अंधता में, अभी भी प्राचीन मूर्तपिूजा से चपिके हुए थे। और इस प्रकार ईश्वर के प्रति उत्साह से परपिूर्ण मसीह के ये दो सेवक, धर्मनष्ठि सम्राट थयिोडोसयिस द्वतिीय[4553] से मलिने के लिए कॉन्स्टेंटनिोपल पहुँचे और उनसे एक शाही फरमान जारी करने का अनुरोध कयिा, ताकि वे बनिा कसिी बाधा के पूरे ग्रीक-रोमन साम्राज्य में मूर्तयिों को नष्ट कर सकें, मूर्तपिूजक पूजास्थलों को ध्वस्त कर जला देने, मूर्तयिों के सम्मान में लगाए गए बाग-बगीचों में जाने; और उनकी जगह पर ईश्वर के चर्च बनाने और यीशु मसीह के नाम की महमिा फैलाने की अनुमति दी। सम्राट ने उन्हें इसके लिए एक चार्टर द्वारा पुष्टि की गई अनुमति दी, जसिके साथ एक आदेश संलग्न था कि आसपास के जलिों और कस्बों में हर जगह, धर्मप्रांत के सभी राज्यपालों को (प्रांतीय गवर्नरों, राजकुमारों, वभिन्नि गणमान्य व्यक्तयिों और शहर के मजस्ट्रिेटों) को सभी आस-पास के क्षेत्रों और शहरों में हर मामले में जूलियिस और जूलियिन का पालन करना था, और उन्हें ईश्वर के चर्चों के नर्मिाण के लिए आवश्यक सभी चीजें प्रदान करनी थीं। उन्हें उपदेश देने, और चर्चों के नर्मिाण और प्रतष्ठिा के लिए परम पवित्र पैट्रआर्क का आशीर्वाद भी प्राप्त हुआ। और इस प्रकार मसीह के ये दो पवित्र योद्धा, दो प्रेरतिों की तरह, यूनानी-रोमन साम्राज्य के देशों की ओर नकिल पड़े, मूर्तपिूजकों को यीशु मसीह का नाम प्रचार करते हुए, और कई लोगों को मसीह परमेश्वर की ओर मोड़ते हुए, न केवल वचन से बल्कि चमत्कारों से भी उनके वशि्वास को मजबूत करते हुए; क्योंकि परमेश्वर ने उन्हें बीमारों को चंगा करने और दुष्टात्माओं को भगाने का अनुग्रह और शक्ति प्रदान की थी – और हर जगह उन्होंने मूर्तपिूजक मंदरिों को उजाड़ दयिा और मूर्तयिों को नष्ट कर दयिा। जनि स्थानों में यूनानयिों ने अपने क्रोध में उनका वरिोध कयिा, वहाँ संतों ने राज्यपालों और नगर के मजस्ट्रिेटों को शाही फरमान प्रस्तुत करके और उनसे सहायता प्राप्त करके अपना कार्य कयिा। उन्होंने कई चर्च न केवल शाही खजाने के धन से, बल्कि सच्चे वशि्वास वाले ईसाइयों के उदार दानों से भी बनाए: क्योंकि हर जगह, ऐसे शक्षिकों, प्रबोधकों और चमत्कार करने वालों को देखने वाले सभी ने पवित्र उद्देश्य के लिए अपनी संपत्ति का बलदिान करते हुए, कोई खर्च नहीं कयिा। इस प्रकार वे पूर्व और पश्चमि में घूमे, और लगभग सौ चर्चों का नर्मिाण कयिा। जहाँ तक उन्होंने जो चमत्कार कए, वे अनगनित हैं, इसलिए उन्हें वस्तिार से बताना असंभव है; केवल कुछ का ही उल्लेख कयिा जा सकता है।

एक बार, जब ववािह में पवित्र भाइयों के प्रयासों से एक चर्च का नर्मिाण हो रहा था, तो एक मजदूर ने लापरवाही से लोहे के औजार से अपने बाएं हाथ का अंगूठा काट लयिा, जसिसे बहुत सारा खून बहने लगा , और वह आदमी थका और दर्द से, जैसे मृत हो, गरि पड़ा। यह देखकर संतों ने कटी हुई उंगली को उठाया, उसे उसके टुकड़े पर रखा, घाव वाले हस्सि पर क्रॉस का चन्हि बनाया, और उंगली तुरंत अपने टुकड़े पर जुड़ गई, और घाव भर गया। संतों ने उस आदमी को, जो अब पूरी तरह से ठीक और स्वस्थ था, जमीन से उठाया और उसका लोहे का औजार उसके हाथों में वापस रख दयिा, यह कहते हुए:

'हौसला रखो और पति, पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम पर परश्रिम करो।'

[4552] अर्थात् एश्ना द्वीप।

[4553] सम्राट थयिोडोसयिस द्वतिीय ने 408 से 450 तक शासन कयिा।

एक अन्य अवसर पर, संत मलिान के धर्मप्रांत[4554] में, गाव्डयिन नामक एक शहर के पास थे। वहाँ, एक नश्चिति गाँव को उसके मूर्तपिूजक पूजा स्थलों से शुद्ध करने के बाद, उन्होंने स्वयं एक चर्च बनाने के लिए परश्रिम कयिा (यह उनके द्वारा बनाए गए चर्चों की संख्या में नन्यिानवेवाँ था)। बहुत से वश्विासयिों ने इस नर्मिाण कार्य में उनके साथ काम कयिा, और उनकी मदद की। संयोग से कुछ लोग उस जगह से गुजर रहे थे। चर्च के नर्मिाण में लगे लोगों को देखकर, उन्होंने आपस में यह तय कयिा कि नर्मिाणकर्ता उन्हें रोक लेंगे और, भले ही वे न चाहें, उन्हें काम में भाग लेने के लिए मना लेंगे[4555] । और चूँकि उनके लिए इस जगह से गुज़रना असंभव था, उन्होंने यह कयिा: उन्होंने अपने ही एक आदमी को एक गाड़ी में, जैसे वह मृत हो, लटिा दयिा, यह दखिावा करते हुए कि वे कसिी मृत व्यक्ति को दफ़नाने के लिए ले जा रहे हैं। जैसे ही वे चर्च के नर्मिाण स्थल के ठीक पास पहुँचे, पवत्रि भाइयों ने उनसे इन शब्दों में संबोधति कयिा:

'बच्चो! हमारे काम में हमारी मदद करो।'

जसि पर उन्होंने उत्तर दयिा:

'हम देरी नहीं कर सकते, क्योंकि हम एक मृतक को दफनाने ले जा रहे हैं।'

'क्या तुम झूठ बोल रहे हो, बच्चों?' संत जूलयिस ने पूछा।

'नहीं, फादर,' उन्होंने जवाब दयिा।

'तो जैसा तुम कहो, वैसा ही हो,' संत जूलयिन ने उनसे कहा।

और वे लोग अपने रास्ते चल पड़े। थोड़ा आगे जाने पर, उन्होंने उस आदमी से उठने के लिए कहा जसिने मरने का नाटक कयिा था। लेकनि वह नहीं उठा; इसलिए उन्होंने यह सोचकर कि वह सो रहा है, उसे और जोर से हलिाना शुरू कर दयिा कि शायद जाग जाए। हालाँकि, उन्हें जल्द ही एहसास हो गया कि वह वास्तव में मर चुका था। यह चमत्कार दूर-दूर तक फैल गया, और हर कोई भय और आतंक से भर गया, इसलिए उस समय से आगे कसिी ने भी संतों से झूठ बोलने की हम्मित नहीं की।

इसके कुछ समय बाद, संत जूलयिस द प्रेसीबटिर ने एक बार अपने भाई, संत जूलयिन से कहा:

'भाई, तुम यहाँ रुको और इस नन्यिानवेवें चर्च का नर्मिाण करो, जब तक कि मैं एक और जगह की तलाश में जाता हूँ जहाँ हम सौवाँ चर्च बना सकें, ताकि पृथ्वी पर सौ चर्च बनाने के बाद, ईश्वर की कृपा से, हमें स्वर्ग में, हाथों से न बने हुए, शाश्वत चर्च में स्थानांतरति कयिा जा सके।'

यह कहकर जूलयिस चल पड़े। लगभग दो मील की दूरी तय करने के बाद, वे मुकोरोस नामक एक झील पर पहुँचे। झील बहुत बड़ी थी; उस पर उन्होंने एक बड़ा, बहुत सुंदर द्वीप देखा, जसि पर कोई नहीं रहता था। दूर से द्वीप को देखते हुए, संत इस बात पर वचिार करने लगे कि वे उस पर कैसे पहुँच सकते हैं। और चूँकि पास में कोई नाव नहीं थी, वह प्रार्थना में खड़ा हो गया और घुटने टेककर प्रार्थना करने लगा, और कहा:

'हे सर्वशक्तमिान प्रभु परमेश्वर, यीशु मसीह! अपनी सर्वशक्तमिान शक्ति से, यह अनुग्रह करें कि मेरा यह चोगा[4556] , जो मैं पहनता हूँ, मेरे लिए एक नाव का काम करे, ताकि मैं उस पर खड़ा होकर और आपके दाहनिे हाथ के मार्गदर्शन से, पानी में डूबे बनि उस द्वीप को पार कर सकूँ।'

इस प्रकार प्रार्थना करने के बाद, उन्होंने अपनी चोगा़ पानी पर बछिाया और, क्रॉस का चहि्न बनाकर, उस पर कदम रखा – और वह चोगा़, एक नाव की तरह, पानी में डूबा नहीं। संत ने अपने हाथों में अपना दंड पकड़े हुए और एक पतवार की तरह पानी में उसे चलाते हुए, मयलोट की चमत्कारी नाव को चलाया और उस द्वीप पर पहुँचे। द्वीप पर पैर रखते ही, वे इसके चारों ओर घूमे और इसकी सुंदरता से बहुत प्रसन्न हुए। द्वीप के बीच में, संत जूलयिस ने एक वशिाल चट्टान देखी जो एक बड़े क्षेत्र को ढक रही थी। उन्होंने उस पर अपना सौवाँ चर्च बनाने का फैसला कयिा, जो बारह पवत्रि प्रेरतिों को समर्पति था। लेकनि वह द्वीप साँपों और सभी प्रकार के वषिैले सरीसृपों से भरा हुआ था, इसीलिए कोई भी उसके पास आने की हम्मित नहीं करता था। संत उस चट्टान पर चढ़े, एक छोटे से पेड़ से एक क्रॉस बनाया और उसे चट्टान की एक छोटी दरार में स्थापति कर दयिा। फरि ईश्वर से प्रार्थना करने के बाद, उन्होंने यीशु मसीह के नाम पर सभी साँपों और सरीसृपों को अपने पास बुलाया – और वे बड़ी संख्या में उनके चारों ओर इकट्ठा हो गए। संत ने उनसे कहा:

[4554] मेडयिोलन – अब मलिान – इटली में।

[4555] उस समय की प्रथा के अनुसार, नर्मिाण स्थल के आसपास के सभी लोगों से चर्च के नर्मिाण में भाग लेने की अपेक्षा की जाती थी। इस प्रथा के तहत, यात्रयिों ने यदि उन्हें आमंत्रति कयिा गया होता, तो नर्मिाणकर्ताओं की मदद करने से इनकार नहीं कर सकते थे।

[4556] मलिोट – एक बाहरी वस्त्र, एक कोट या रेनकोट।

'तुम इस स्थान पर काफी समय से रहे हो; अब, परम पवित्र त्रमिूर्तः—पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा—के नाम पर, मैं तुम्हें आदेश देता हूँ कि इस द्वीप को छोड़ दो और ईश्वर के घर तथा मसीह के सेवकों के लिए, जो यहाँ निवास करने का इरादा रखते हैं, इस स्थान को खाली कर दो।'

संत के ये शब्द कहते ही, सभी साँप और रेंगने वाले जीव, मानो उनके शब्दों को समझ गए हों, तुरंत उनके आदेश का पालन कर गए; और, एक साथ इकट्ठा होकर, वे द्वीप के पश्चिमी हिस्से में चले गए; फिर, झील में कूदकर, वे तैरकर दूसरी तरफ, कमुंकनि नामक एक पहाड़ पर चले गए और वहाँ घोंसले बनाकर बस गए, जबकि द्वीप सरपटों से मुक्त हो गया। संत, पहली बार की तरह ही वापस पार करके, आसपास के ईसाई बस्तियों की ओर बढ़े; उनसे मदद और आवश्यक सभी चीजें प्राप्त करने के बाद, वे अपने मजदूरों के साथ नाव से द्वीप पर लौट आए; फिर, बारह पवित्र प्रेरितों को समर्पित एक चर्च का नींव पत्थर रखने के बाद, उन्होंने उसका निर्माण शुरू किया।

उस समय, उनके भाई, संत जूलियन ने, गव्डयिन शहर के पास चर्च का निर्माण पूरा करने के बाद, अपने भाई जूलियस के लिए वहाँ एक मकबरा बनवाने का निश्चय किया, और उसका निर्माण शुरू कर दिया। संत जूलियस, यह जानकर कि चर्च का निर्माण पूरा हो गया है, उसे देखने और साथ ही अपने भाई से मिलने के लिए निकल पड़े। जब वे वहाँ पहुँचे, तो उनके भाई ने इन शब्दों के साथ उनका स्वागत किया:

'देखो, भाई, ईश्वर की सहायता और आपकी प्रार्थनाओं से, चर्च का निर्माण पूरा हो गया है; केवल आपके लिए कब्र का निर्माण अभी भी चल रहा है, ताकि आपके देहांत के बाद आपका शरीर वहीं विश्राम कर सके।'

लेकिन भविष्यवाणी के वरदान से संपन्न संत जूलियस ने संत जूलियन से कहा:

'जल्दी करो और इस ताबूत का निर्माण पूरा करो, क्योंकि तुम्हें स्वयं इसमें विश्राम करना होगा।'

और इस प्रकार हुआ। जब ताबूत तैयार हो गया, तो संत जूलियन द डीकन प्रभु के पास चले गए। संत जूलियस ने अपने भाई के शरीर को सम्मानपूर्वक दफनाने के बाद एक बार फिर द्वीप पर लौट आए, जहाँ उन्होंने प्रेरितों को समर्पित चर्च का निर्माण जारी रखा। चर्च का निर्माण पूरा करने के बाद, उसने उसमें अपने लिए एक कब्र बनवाई, क्योंकि वह अपनी उम्र में काफी आगे होने के कारण अपनी निकट मृत्यु का पूर्वाभास कर रहा था। उस समय, मेडियोलानम में, राजा ने उस प्रांत के पूरे प्रशासन के लिए अव्डेंशियस नामक एक सेनेटर को राज्यपाल नियुक्त किया था—जो कुलीन वंश का, सदाचारी और धार्मिक व्यक्ति था। संत जूलियन के बारे में सुनकर, वह और उसके परिवार वाले ईश्वर के पुरुष, पादरी जूलियन से मिलने और उनके द्वारा निर्मित चर्च को देखने के लिए मुकोरोस द्वीप की यात्रा करना चाहते थे; इसलिए, एक जहाज पर सवार होकर वे चल पड़े। द्वीप पर पहुँचने पर, अव्डेनटियस को संत से आशीर्वाद प्राप्त करने और आध्यात्मिक मामलों पर उनसे वार्ता करने का सम्मान मिला; उन्होंने चर्च भवन का भी निरीक्षण किया; इसके बाद, उन्होंने संत से ये शब्द कहे:

'पिताजी! यदि आप कुछ और बनाना चाहते हैं, तो मुझे बताइए, और मैं अपनी संपत्ति से आपकी सहायता करूँगा, क्योंकि मैं जो कुछ भी आवश्यक हो, उसमें आपकी सेवा करने के लिए प्रसन्नतापूर्वक तैयार हूँ।'

संत ने उत्तर दिया:

'मेरे बच्चे! हमें अब और कुछ भी बनाने की ज़रूरत नहीं है; बस इतना बाकी है कि मैं तुम्हारे लिए अपनी कब्र के बगल में एक कब्र बना दूँ, क्योंकि तुम्हारी मृत्यु के बाद तुम्हारा शरीर इसी चर्च में विश्राम करेगा।'

अवेन्तीयस ने उत्तर दिया:

'फादर, आपका मकबरा यहीं हो; मैंने तो अपने लिए पहले ही मेडओिलानम में एक मकबरा तैयार कर लिया है।'

'मेरे बच्चे, मुझ पर विश्वास करो,' संत जूलियस ने उससे कहा, 'तुम्हारा शरीर मेरे बगल में ही दफनाया जाएगा, और किसी और जगह पर नहीं।'

संत से लंबी बातचीत करके और उनका आशीर्वाद प्राप्त कर, अवदेन्टियस मेडओिलानम लौट आए। कुछ ही समय बाद, संत जूलियस प्रभु के पास चले गए और उन्हें उनके ताबूत में दफनाया गया, जिससे उनकी प्रार्थनाओं के द्वारा, कई बीमारों को स्वास्थ्य लाभ मिला। संत जूलियस के निधन के बाद, उनकी जगह धर्मपरायण पुरोहित एलियाह ने ली। कुछ वर्षों बाद, मेडियोलानम के बिशप अव्डेन्टियस का भी निधन हो गया और उन्हें मेडियोलानम में उनके ताबूत में सुला दिया गया; लेकिन ठीक अगली सुबह उन्हें अपने ताबूत के बाहर लेटा हुआ पाया गया, ऐसा नहीं था कि किसी ने उन्हें बाहर फेंका हो, बल्कि ऐसा लगता था कि उन्हें बाहर ले जाया गया और सावधानी से वहां लिटा दिया गया हो। उसके शरीर को उसी ताबूत में वापस रखा गया, लेकिन दूसरी बार भी वह फिर से ताबूत के बाहर पड़ा मिला; तीसरी बार भी ऐसा ही हुआ।

वे उसे कहीं और दफ़नाना चाहते थे, लेकिन उसके दफ़न के लिए कोई उपयुक्त स्थान नहीं मिल सका। तब उनके घर वालों को संत जूलियस द्वारा अव्डेनटियस से कही गई बात याद आई, कि उन्हें उनके अपने शरीर के पास के अलावा किसी और जगह दफ़नाया नहीं जाएगा; और इस प्रकार उन्होंने अव्डेनटियस के शरीर को मुकोरोस द्वीप पर ले जाया। धन्य एलियाह, क्रॉस, धूपदान और मोमबत्तियों के साथ, एपार्क के शरीर को प्राप्त किया और, उचित सम्मान के साथ, उसे पूजनीय जूलियस की कब्र के बगल में दफनाया।

इस प्रकार संत की भविष्यवाणी पूरी हुई, हमारे ईश्वर मसीह की महिमा के लिए, जो पिता और पवित्र आत्मा के साथ सदा-सदा महिमामय हैं। आमीन।

5 जुलाई

22 जून (पुराना तरीका)

सामोसटा के बिशप संत यूसेबियस का जीवन और शहादत

22 जून को स्मरणोत्सव

संत यूसेबियस सामोसाटा शहर के बिशप थे[4557] , जो एंटिओक के पैट्रिआर्क के अधिकार क्षेत्र में था। वे दृढ़ आस्था वाले, धर्मपरायण, ईश्वर के प्रति उत्साह से परिपूर्ण, और ऑर्थोडॉक्स (सही आस्था) की स्वीकारोक्ति में दृढ़ और अटूट थे, ठीक उसी समय जब एरियस[4558] का बढ़ता हुआ विधर्म बड़ा नुकसान पहुँचा रहा था, और ईश्वर की अत्यधिक परेशान चर्च तूफान के दौरान समुद्र के बीच एक जहाज की तरह डोल रही थी।

पवित्र और महान सम्राट कॉन्स्टेंटाइन (जो 306 से 337 तक शासन करते थे) की मृत्यु के बाद, उनके पुत्र कॉन्स्टेंटियस[4559] ने अपने साम्राज्य के पूर्वी भाग में सिंहासन संभाला; एक एरियन के रूप में, उन्होंने हर तरह से एरियनों का समर्थन करना और उनके हितों को बढ़ावा देना शुरू कर दिया। परिणामस्वरूप, उनके शासनकाल के दौरान, ऑर्थोडॉक्सों को एरियनों के हाथों गंभीर उत्पीड़न और अत्याचार सहना पड़ा, जिनसे सेंट यूसेबियस स्वयं भी ऑर्थोडॉक्स धर्म के प्रति अपने उत्साह के कारण काफी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा।

नीचे वर्णित घटना के बाद संत यूसेबियस का मसीह की कलीसिया के प्रति उत्साह सभी को ज्ञात हो गया।

जब अंफ़ियालोकी के एरियन पादरी यूडोक्सियस ने धन के लिए कॉन्स्टेंटिनोपल के सिंहासन पर कब्ज़ा कर लिया[4560] , तो इस अवसर पर यूडोक्सियस के उत्तराधिकारी के रूप में एक पादरी चुनने के लिए अंफ़ियालोकी में सभी सीरियाई बिशपों की एक परिषद बुलाई गई। चूंकि न केवल ईसाई लोगों के बीच बल्कि बिशपों के बीच भी बहुत कम ऑर्थोडॉक्स विश्वासी थे, और कई ने अधर्मी सम्राट का अनुसरण करते हुए एरियनवाद अपना लिया था, इसलिए नव-निर्वाचित पैट्रिआर्क का सिद्धांतगत रुख ऑर्थोडॉक्स चर्च के लिए अत्यधिक महत्व का होना निश्चित था। संत यूसेबियस ने इसका ध्यान रखा; परिषद में, उन्होंने अध्यक्षता करने वाले बिशपों के बीच एक प्रमुख स्थान लिया। आर्मेनिया के सेबास्टे के बिशप मेलेटियस को, जो निकिया के प्रथम सार्वभौमिक परिषद के धर्मविश्वास पर दृढ़ता से अड़े थे, एक रूढ़िवादी विश्वासी के रूप में अच्छी तरह से जानते हुए, यूसेबियस ने सभी को सलाह दी कि इस बिशप को पैट्रिआर्केट के लिए चुना जाना चाहिए। एरियनों ने, मेलेटियस की ऑर्थोडॉक्स (सही आस्था) की अनभिज्ञता के कारण और उसे एक समानधर्मा मानकर, यूसेबियस की सलाह पर तुरंत अमल किया। उन्होंने मेलेटियस के संबंध में एक संयुक्त

[4557] सामोसाटा – सीरियाई प्रांत कोमाजेन की राजधानी; यह यूफ्रेटिस नदी के पश्चिमी तट पर स्थित थी, जिसे अब सामसट के नाम से जाना जाता है।

[4558] एरियस ने इस बात से इनकार किया कि पिरमेश्वर का पुत्र परमेश्वर पिता के समान सार का था; उसने यीशु मसीह को एक सृजित प्राणी माना और उसकी दिव्य पूर्णता को स्वीकार नहीं किया। एरियन विधर्म को पहले (325) और दूसरे (381) सार्वभौमिक परिषदों में निर्णायक रूप से निंदा किया गया था।

[4559] कॉन्स्टेंटियस (द्वितीय) ने 337 से 361 तक शासन किया।

[4560] यूडोक्सियस ने 357 से 358 तक एंटिओक के और 360 से 370 तक कॉन्स्टेंटिनोपल के पैट्रिआर्क के रूप में कार्य किया।

प्रस्ताव तैयार कयिा, उसे अपने हस्ताक्षरों से प्रमाणति कयिा, और उसे सुरक्षति रखने के लिए संत यूसेबयिस को सौंप दयिा। तब, इस चुनाव के लिए सम्राट की सहमतमिलने पर, बशिपों की ओर से चुनाव के बारे में एक संदेश संत मेलेटयिस को भेजा गया, और उन्हें अंtयोओक लाया गया, जहाँ उनका बड़े आनंद के साथ स्वागत कयिा गया। पैट्रआर्क के रूप में, संत मेलेटयिस ने अपने अनुयाययिों को सबसे बढ़कर एक अच्छा और सदाचारी जीवन जीने की शक्षिा देना शुरू कयिा: इस तरह उन्होंने हठी दलि वालों के लिए ऑर्थोडॉक्सी का मार्ग सुगम करने का प्रयास कयिा। संत को उम्मीद थी कदिुष्ट रीतरिविाजों को सुधारकर और काँटों को जड़ से उखाड़कर, वह अपने अनुयाययिों के बीच ऑर्थोडॉक्सी के बीज बड़ी सफलता के साथ बो सकेंगे। जल्द ही, लोगों ने यह जानना चाहा कउिनके नए ई के पैट्रआर्क कसि धर्मशास्त्र का पालन करते हैं, और इसलिए उन्होंने पैट्रआर्क से इस बारे में पूछना शुरू कर दयिा। इस अवसर पर, संत मेलेटयिस ने चर्च में लोगों को एक उपदेश दयिा, जसिमें उन्होंने नकियिा के प्रथम सार्वभौमकि परषिद में पुष्टकिए गए ऑर्थोडॉक्स वश्विास की प्रशंसा की, और पुत्र को पतिा के समान सार का, अकल्पति और सभी सृष्टका सृष्टकिर्ता होने की घोषणा की। इस सार्वजनकि उपदेश के बाद, अरअिनों में भ्रम छा गया और वे बहुत क्रोधति हो गए, जबकऑर्थोडॉक्स प्रेरतिीय सहिासन पर ऐसे ऑर्थोडॉक्स बशिप को देखकर प्रसन्न हुए। क्रोधति होकर, एरयिनों ने पैट्रआर्क को उनके पदभार संभालने के 30वें दनि चर्च से बाहर नकिाल दयिा और हर जगह उनकी नदिा करने लगे, उन्हें संप्रदाय-वरिोधी सेबेलीउस[4561] का अनुयायी कहने लगे। फरि, उनके अनुरोध पर, राजा ने मेलेटयिस को कैद की सजा सुनाई और रात के समय उन्हें अंtयोकयिा से नर्विासन पर भेज दयिा। उनकी जगह, एरयिनों ने यूज़ो नामक एक एरयिन को अंफ़यिालोपोलसि के बशिप पद पर चुना।

सामोसता के संत यूसेबयिस ने, अंतीयक के चर्च में वधिर्मयिों द्वारा मचाई गई हलचल को देखकर, और नए आर्चबशिप मेलेटयिस के साथ अरअिनों द्वारा कएि जा रहे अन्याय को देखकर, कसिी को बताए बनिा अंतीयक छोड़ दयिा और अपने शहर लौट गए। मेलटियिस के प्रस्थान के बाद, एरयिनों को याद आया कयिूसेबयिस के पास मेलटियिस के चुनाव संबंधी वह फरमान था, जसि पर बशिपों के हस्ताक्षर थे। यह जानकर, वे काफी भ्रम में पड़ गए, उन्हें डर था कऐिसा प्रतीत होगा कउिन्होंने अपनी मर्जी से एक आर्चबशिप चुना और फरि तुरंत ही उसे नकिाल दयिा। इसलिए, एरयिनों ने उस समय अंतीयक में मौजूद राजा से वनिती करना शुरू कर दयिा कवि यूसेबयिस के पास एक दूत भेजे और उससे अपने सुपुर्द कएि गए फरमान को वापस मंगाए। राजा ने तुरंत फरमान वापस लेने के लिए यूसेबयिस के पास एक दूत भेजा। बशिप के आवास पर पहुंचने पर, दूत ने राजा का आदेश सुनाया, जसिके जवाब में संत यूसेबयिस ने कहा:

'मैं उस सामान्य नर्णिय को, जो मुझे सौंपा गया है, तब तक नहीं सौंपूंगा जब तक कवि सभी जो इसे मुझे सौंपने वाले थे, एक साथ (एक परषिद में) इकट्ठा नहीं हो जाते।'

दूत खाली हाथ लौट आया, जसि पर राजा बहुत क्रोधति हो गया और उसने फरि से एक कड़ा आदेश लखिकर भेजा कयिदि बशिप नर्णिय सौंपने से इनकार करते हैं, तो उनका दाहनिा हाथ काट दयिा जाए। राजा ने संत को डराने के लिए यह आखरिी बात लखिी थी, लेकनि उसने दूत को इसे अंजाम देने का आदेश देने की हम्मित नहीं की। जब राजा का दूत बशिप तक पहुँचा और उसे वह धमकी भरा संदेश दखिाया, तो संत यूसेबयिस ने उसे पढ़कर तुरंत अपना दाहनिा और बायाँ दोनों हाथ काटने के लिए आगे कर दएि, और कहा:

'मेरा दाहनिा हाथ ही नहीं, बल्कबिायाँ हाथ भी काट दो; फरि भी, मैं अरीयों की दुर्भावना और अराजकता को दोषी ठहराने वाला नर्णिय नहीं दूँगा।'

एक बार फरि, दूत बनिा कसिी फैसले के लौट आया और राजा को सब कुछ बता दयिा। पवत्रि बशिप की प्रतक्रियिा सुनकर राजा उनकी नडिरता और दृढ़ता से बहुत चकति हुआ, जसिके लिए उसने बाद में कई लोगों के सामने यूसेबयिस की प्रशंसा की।

कुछ वर्षों बाद, दुष्ट राजा कॉन्स्टैंटयिस की मृत्यु हो गई, जसिके बाद जूलयिन द एपोस्टेट[4562] सहिासन पर आ गया। इस राजा ने शुरू में संत मेलेटयिस को कैद से मुक्त कर अंटीओक के सहिासन पर बहाल कयिा, लेकनि बाद में उन्हें एक बार फरि नर्विासति कर दयिा।

[4561] तीसरी सदी के एक वधिर्मी, सेबेलीयन ने यह दावा करके पवत्रि त्रमिूर्तकि रूढ़विादी सद्धिांत को वकिृत कयिा कईश्वर का केवल एक ही व्यक्तत्वि है: पतिा के रूप में, वह स्वर्ग में; पुत्र के रूप में, पृथ्वी पर; और पवत्रि आत्मा के रूप में, सृष्टमिें।

[4562] जूलयिन द एपोस्टेट ने 361 से 363 तक शासन कयिा।

जूलियिन के शासनकाल में, मसीह की कलीसयिा को कॉन्स्टैंटयिस के शासनकाल की तुलना में और भी बड़े अत्याचार सहने पड़े। एरयिन वधिर्म, जो दुनयिा भर के सभी वशि्वासयिों के बीच भ्रम पैदा कर रहा था, मूर्तपिूजकों के उत्पीड़न से और भी बढ़ गया। सम्राट ने स्वयं खुले तौर पर मसीह का परत्यिाग कर दयिा और मूर्तयिों को बलदिान चढ़ाना शुरू कर दयिा। मसीह की कलीसयिा और ईसाइयों के वरिुद्ध एक उत्पीड़न शुरू कयिा गया, जो मुख्य रूप से पुरोहति वर्ग के वरिुद्ध नर्दिेशति था। इन उत्पीड़नों के कारण कई ऑर्थोडॉक्स चर्च (उस समय) अपने पुरोहतिों के बनिा रह गए, और बशिप की गद्दीयां बशिपों के बनिा रह गईं, जनिमें से कुछ को मृत्युदंड दयिा गया, जबकि अन्य को भगा दयिा गया—या तो कॉन्स्टैंटयिस के शासनकाल में एरयिनों द्वारा, या जूलियिन के शासनकाल में मूर्तपिूजकों द्वारा। स्थतिि इतनी भयावह थी कि, यदि प्रभु जूलियिन के जीवन और शासन का अंत न करते, तो शायद ही कोई चर्च अपने पादरयिों के साथ अक्षुण्ण रह पाता।

इतने उग्र समय में, संत यूसेबयिस ने अपने बशिप के पद को छपिाकर सैन्य वेश धारण कयिा और इस वेश में सीरयिा, फनिीशयिा और फलिस्तीन में घूमकर ईसाइयों को ऑर्थोडॉक्स (सही) वशि्वास में मजबूत कयिा। जहाँ भी उन्हें बनिा मंत्रयिों के कोई चर्च मलिा, वहाँ उन्होंने पुरोहतिों, डकिनों और अन्य पादरयिों का अभषिेक कयिा; और हर जगह उन्होंने केवल उन्हीं को बशिप के रूप में नयिुक्त कयिा जन्हिोंने एरयिस के संप्रदाय को अस्वीकार कयिा और ऑर्थोडॉक्स आस्था को अपनाया। के लिए मसीह का ऐसा उत्साह, ऐसा परशि्रम, ऐसी लगन और देखभाल था जो परमेश्वर के महान बशिप, यूसेबयिस ने उस समय मसीह की कलीसयिा के लिए दखिाई!

जूलियिन की अपमानजनक मृत्यु के बाद, धर्मपरायण और मसीह-प्रेमी सम्राट जोवयिन[4563] सहिासन पर आरूढ़ हुए, जनिके शासनकाल में संत मेलेटयिस को उनके पद पर पुनर्स्थापति कयिा गया। इस समय, संत यूसेबयिस और अन्य ऑर्थोडॉक्स बशिपों ने मूर्तपिूजकों के भय के बनिा, नडिर होकर अपने अनुयाययिों का शासन करना शुरू कर दयिा। संत यूसेबयिस की सलाह पर, मेलेटयिस ने अंतीयक में एक स्थानीय परषिद बुलाई, जसिमें 27 बशिप शामलि थे; उनमें यूसेबयिस पदक्रम में केवल मेलेटयिस से ही पीछे थे। इस परषिद में लाओदकियिा के बशिप पेलगयिस भी उपस्थति थे, जनिके नर्दिोष और पवत्रि जीवन के बारे में नम्निलखिति वर्णति है।

अपनी युवावस्था में, पेलगयिस को उसके माता-पति ने ववािह करने के लिए मनाया था, लेकनि जब उसे दुल्हन के कमरे में ले जाया गया, तो उसने अपनी दुल्हन को अपनी कुँवारीपन की पवत्रिता बनाए रखने के लिए मना लयिा। इस प्रकार, ववािह के आवरण में, वह अपनी पत्नी के साथ अक्षुण्ण कुँवारीपन में, एक भाई की तरह बहन के साथ रहा। इसके अलावा, वह कई अन्य गुणों से भी वशिषि्ट थे, जसिके लिए उन्हें ईश्वर और मनुष्यों द्वारा संत की पदवी से सम्मानति कयिा गया। पेलैजयिस ने संत मेलेटयिस और संत यूसेबयिस के प्रति बहुत प्रेम दखिाया और वे उनके समान वचिारधारा वाले मत्रि और उनके साथ-साथ धर्मपरायणता के समर्थक भी थे। उपरोक्त अंफ़योकयिा के स्थानीय परषिद में, पवत्रि पतिाओं ने सभी को ईसाई धर्म के अनुसार पति के साथ पुत्र की एकसारता (consubstantiality) तथा प्रथम सार्वभौमकि परषिद में स्थापति सद्धिांत की घोषणा करने और उसे बनाए रखने का आदेश दयिा। अरअिनों ने इस नर्णिय को स्वीकार कर लयिा और अपने हस्ताक्षर कर दए, हालांकि उन्होंने ऐसा पाखंडपूर्वक और केवल अस्थायी रूप से, रूढ़विादी राजा को खुश करने के लिए, और मुख्य रूप से रूढ़विादी बशिपों—संत मेलेटयिस, यूसेबयिस और पेलाजयिस—के डर से कयिा, जन्हिें राजा बहुत सम्मान देता था। धर्मपरायण सम्राट चर्च के इन स्तंभों को उनकी धर्मपरायणता और पवत्रि जीवन के लिए बहुत सम्मान देते थे, और वह हर बात में उनकी सलाह मानते थे; इसीलिए धर्मद्रोही उनसे डरते थे, जो उनसे डरकर चर्च में शामलि हो गए।

धर्मपरायण राजा जोवयिन की मृत्यु के बाद, जनिका शासन केवल थोड़े समय तक रहा, वैलेंस सहिासन पर बैठा[4564] और वधिर्मी एक बार फरि से अपने वधिर्म पर लौट आए, जैसे कुत्ते अपनी उल्टी पर लौटते हैं[4565] , सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण रूप से, उसकी एरयिन पत्नी, डोमनीका के माध्यम से राजा को एरयिनवाद की ओर भटकाकर। ऑर्थोडॉक्स चर्च पर एक बार फरि से अत्याचार शुरू हो गया, और उसके बशिपों को नर्वािसति कर दयिा गया। सेंट मेलेटयिस को आर्मेनयिा, सेंट पेलैजयिस को अरब, और सेंट यूसेबयिस को थ्रेस में कैद की सज़ा दी गई।

[4563] जोवयिन ने 363 से 364 तक रोमन साम्राज्य पर शासन कयिा।

[4564] सम्राट वैलेंस ने 364 से 378 तक शासन कयिा।

[4565] यह तुलना 2 पतरस 2:22 से ली गई है।

संध्या तक यूसेबियस के निर्वासन के संबंध में अन्यायपूर्ण राजा का अन्यायपूर्ण आदेश सामोसाटा पहुँचा दिया गया। यह जानकर, संत यूसेबियस ने राजा के दूत को बुलाया और उससे कहा:

'आज चुप रहो और अपनी मुलाकात का कारण किसी को मत बताना, कहीं ऐसा न हो कि लोग जान जाएँ और अपनी ईर्ष्या में तुम्हारे खिलाफ उठ खड़े हों और तुम्हें मार डालें; तब तुम्हारी मौत का दोष मुझ पर लगेगा।'

यह कहने के बाद, संत यूसेबियस ने अपनी संध्या की प्रार्थना की और उस रात, अपने एक वफादार सेवक को यह रहस्य बताया। जैसे ही सभी सो गए, संत अपने सेवक के साथ बिशप के आवास से निकल गए; सेवक ने उनके पीछे बिशप का मुकुट और पुस्तक उठा रखी थी। जब यात्री यूफ्रेटिस नदी तक पहुँचे, जो शहर की दीवारों के पास से बहती है, तो वे ज्यूग्मा शहर की ओर नाव से जाने के लिए एक नाव पर चढ़ गए। संत ने तुरंत नौकरों को रवाना होने का आदेश दिया; पूरी रात कड़ी मेहनत करने के बाद, उन्होंने अगले दिन यात्रियों को ज्यूग्मा शहर पहुँचा दिया। सामोसाटा के लोगों ने, यह जानकर कि पवित्र बिशप उन्हें छोड़ गए थे, जोर-जोर से रोना और विलाप करना शुरू कर दिया, और साथ ही यह पूछने लगे कि क्या किसी को पता है कि संत कहाँ गए हैं। एक निवासी ने संत को नाव पर चढ़ते देखा था और उन्होंने यह आदेश सुना था कि उन्हें ज्यूग्मा शहर ले जाया जाए, जिसे उन्होंने लोगों को सुनाया। तुरंत, कई निवासी नावों पर सवार हो गए, संत के पीछे भागे, और ज्यूग्मा में उनसे मिल गए। संत के सामने खड़े होकर, वे बहुत रोए और उन्हें अपने शहर लौटने के लिए मनाने की कोशिश करने लगे। संत ने मना कर दिया। इसके बाद, उन्होंने उनके सामने विनती के हर संभव तरीके आजमाए, हर संभव बात कही, उनके पैरों पर गिर पड़े, और उन्हें अपने आँसुओं से भिगो दिया, यह सब इसलिए ताकि वे अपने धर्मप्रांत में लौट आएं। संत यूसेबियस ने उन्हें प्रेरित के निम्नलिखित वचनों की याद दिलाई: *'हर आत्मा उच्चतर शक्तियों के अधीन रहे, क्योंकि परमेश्वर के सिवा कोई अधिकार नहीं है; और जो अधिकार हैं, वे परमेश्वर द्वारा स्थापित हैं। इसलिए, जो कोई भी अधिकार का विरोध करता है, वह परमेश्वर की आज्ञा का विरोध करता है। और जो विरोध करते हैं, वे अपने ऊपर न्याय लाएंगे'* (रोमियों 13:1–2)।

प्रेरित के इन शब्दों का हवाला देते हुए, संत ने कहा:

'मेरे लिए राजा की आज्ञा का विरोध करना असंभव है, और वास्तव में आपके लिए राजा की इच्छा का विरोध करना सुरक्षित नहीं है।'

इसके बाद, जो लोग आए थे उन्हें एहसास हुआ कि वे संत को वापस आने के लिए मना नहीं सकते, और इसलिए उन्होंने उन्हें यात्रा के लिए सामान देना शुरू कर दिया—एक ने सोना, दूसरे ने चांदी, कुछ ने कपड़े, और अन्य ने दास दिए—जैसे कि वह एक लंबी यात्रा पर जा रहे हों। संत यूसेबियस ने दी गई चीज़ों में से बहुत कम ही स्वीकार किया। विदा लेते समय, संत ने उनसे ऑर्थोडॉक्स धर्म और प्रेरितों के सिद्धांतों पर दृढ़ रहने का आग्रह किया; उन्होंने सभी के लिए ईश्वर से प्रार्थना की और, सभी को आशीर्वाद देने के बाद, थ्रेस की ओर अपनी यात्रा पर निकल पड़े, जहाँ उन्हें निर्वासन की सजा दी गई थी।

जब संत यूसेबियस इस्त्रा में थे, उन्हें खबर मिली कि गोथों ने थ्रेस पर आक्रमण कर दिया है और वे देश को लूट-खसूट रहे हैं। इसलिए, संत आगे नहीं बढ़े, बल्कि इस्त्रा में ही रुके रहे, जहाँ वे दुष्ट राजा वैलेंस की मृत्यु तक रहे। अरियनों ने यूसेबियस के उत्तराधिकारी के रूप में सामोसाटा में अरियन बिशप इव्नोमियस को नियुक्त किया।

जब एवनोमियस अपने अनुयायियों का प्रभार संभालने के लिए सामोसाटा शहर में प्रवेश किया, तो शहर का एक भी निवासी—न तो अमीर और न ही गरीब, न तो कलाकार और न ही किसान, न तो पुरुष और न ही महिला, न तो बूढ़ा और न ही जवान—उससे मिलने बाहर नहीं आया: पूरा शहर, रूढ़िवादी होने के कारण, उस विधर्मी बिशप का सम्मान नहीं करना चाहता था, न ही उसका आशीर्वाद लेना चाहता था, और न ही उसे देखना चाहता था। एवनोमियस ने शाही फरमान द्वारा धर्मप्रांत का प्रभार संभाला और कैथेड्रल चर्च में सेवा का आयोजन करना शुरू कर दिया। लोग उस चर्च के साथ-साथ बिशप के निवास में भी जाना बंद कर दिए, क्योंकि वे विधर्मी बिशप को पसंद नहीं करते थे। परिणामस्वरूप, एवनोमियस लगातार अकेला रहता था, सिवाय उन लोगों के जो उसके साथ आए थे। उसके बारे में कहा जाता है कि, यद्यपि वह आस्था के मामलों में एक विधर्मी था, फिर भी वह सभी के प्रति सौम्य, शांत, विनम्र और दयालु था। उनके अच्छे चरित्र के बारे में निम्नलिखित कहानी बताई जाती है।

एक अवसर पर, वह सार्वजनिक स्नानागार में स्नान करने गया, और नौकरों ने उस देश की प्रथा के अनुसार, उसके पीछे दरवाज़े बंद कर दिए ताकि जब तक बिशप स्नान कर रहे हों, कोई और अंदर न आ सके। एवनोमियस ने, यह महसूस करते हुए कि कई लोग स्नान करने की इच्छा से दरवाज़े पर खड़े थे, नौकरों को दरवाज़े खोलने और उन सभी को

अंदर आने देने का आदेश दिया जो उसके साथ स्नान करना चाहते थे। जो लोग स्नानागार में प्रवेश किए, उन्होंने बिशप को गर्म टब में बैठे देखा, और वे बैठना नहीं चाहते थे, बल्कि उनके सामने खड़े हो गए, इस प्रकार उन्होंने उनका सम्मान किया। बिशप ने उन्हें उसी टब में आने के लिए आमंत्रित किया जिसमें वह बैठे थे, लेकिन जो लोग आए थे उन्होंने मना कर दिया। तब बिशप को एहसास हुआ कि वे उनके कारण ही वहां खड़े थे और स्नान नहीं करना चाहते थे। इससे उन्हें बहुत दुख हुआ; वह टब से बाहर निकले और सम्माननित नहीं होना चाहते हुए स्नानागार से चले गए। स्नानागार में बचे हुए लोगों ने तुरंत फव्वारे का पानी निकाल दिया, क्योंकि वे उसे विधर्मी के स्नान से अपवित्र मानते थे, और विधर्मी की उपस्थिति से घृणा करते हुए, उन्होंने फव्वारे को अच्छी तरह से धोया; केवल तब, नया पानी गर्म करने के बाद, उन्होंने अपने लिए एक फव्वारा तैयार किया। यह जानकर, एवनोमियस को पूरी तरह यकीन हो गया कि वह सामोसाटा के लोगों को अपने पक्ष में नहीं कर सकता; उसने अपना बिशप पद छोड़ दिया और शहर छोड़कर चला गया।

एवनोमियस के प्रस्थान के बाद, एरियनों ने सामोसाटा में बिशप लूसियस को स्थापित किया, जो उनके ही विधर्मी मत का एक व्यक्ति था, एक स्पष्ट भेड़िया और मसीह के झुंड का शत्रु। शहर के नागरिकों ने इस बिशप का कोई सम्मान नहीं किया, ठीक वैसे ही जैसे उन्होंने पहले वाले (यूनोमियस) का नहीं किया था, और वह केवल उन्हीं लोगों के साथ रहता था जो उसके साथ आए थे, क्योंकि कोई भी ऑर्थोडॉक्स बिशप के पास नहीं गया। जहाँ तक मसीह की भेड़ों का सवाल है, यद्यपि वे अपने चरवाहे (यूसेबियस) के बिना थे, फिर भी उन्होंने उसकी शिक्षा को अच्छी तरह याद रखा और पवित्र विश्वास को निष्कलंक बनाए रखा। ऑर्थोडॉक्स (सही आस्था वाले) द्वारा विधर्मी बिशप को किस हद तक तुच्छ समझा जाता था, यह निम्नलिखित घटना से देखा जा सकता है:

एक दिन, लड़कों का एक समूह सड़क पर गेंद से खेल रहा था (जैसा कि बच्चे अक्सर करते हैं), और उसे एक-दूसरे को पास कर रहे थे। उसी समय, बिशप वहाँ से गुजर रहे थे। संयोग से, गेंद बिशप के घोड़ों और रथ के नीचे गिर गई। यह देखकर, बच्चों ने ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाना शुरू कर दिया: 'गेंद विधर्म से दूषित हो गई है, गेंद विधर्म से दूषित हो गई है...' यह चिल्लाहट सुनकर, बिशप ने अपने एक नौकर को यह पता लगाने के लिए भेजा कि बच्चे क्या कर रहे थे और वे इतनी ज़ोर से चिल्ला क्यों रहे थे। बच्चों ने आग जला रखी थी और वे गेंद को लपटों के बीच उछाल रहे थे, यह सोचकर कि यह आग गेंद को विधर्म से शुद्ध कर देगी। इस प्रकार, न केवल वयस्क बल्कि छोटे बच्चे भी उस बिशप के विधर्म से घृणा करते थे, जो एक पवित्र स्थान में विरानता की घृणित वस्तु के समान था (देखें दानियेल 9:27)। यह जानने पर, ल्यूक ने एवनोमियस की नम्रता का अनुसरण नहीं किया, बल्कि क्रोधित हो गए और कई पुरोहितों को दूर-दराज के स्थानों पर निर्वासित कर दिया। उन्होंने यूसेबियस के भतीजे—धन्य अंटिओकस, जो एक अत्यंत योग्य पुरोहित, धर्मपरायण और दैवीय रूप से प्रेरित, विद्वतापूर्ण ज्ञान में निपुण थे—को आर्मेनिया निर्वासित कर दिया; और प्रभु के सेवकों में सबसे प्रसिद्ध डीकन इवोल्कियस को उन्होंने ओएसिस रेगिस्तान में निर्वासित कर दिया। इस कारण, सामोसाटा नगर पर महान शोक और दुख छा गया।

दुष्ट राजा वैलेंस की भयानक मृत्यु के बाद, धर्मपरायण राजा ग्राटियन[4566] ने सिंहासन संभाला। उन्होंने तुरंत उन सभी बिशपों और अन्य पुरोहितों को रिहा कर दिया जिन्हें उनके ऑर्थोडॉक्स धर्म के लिए निर्वासित किया गया था, और को आदेश दिया कि उनके पूर्व सिंहासन उन्हें वापस कर दिए जाएं। तब निम्नलिखित लौट आए: संत मेलेटियस एंटिओक में, संत पेलैजियस लाओडिसिया में, और संत यूसेबियस सामोसटा में। यूसेबियस के साथ-साथ, एरियन लूसियस द्वारा निर्वासित सभी लोग भी सामोसता लौट आए, जिनमें आर्मेनिया के याजक एंटिओकस और ओएसिस के डिकन इवोल्कियस शामिल थे। ऑर्थोडॉक्स के लिए, यह बड़ी खुशी का कारण था; अधर्मी लोगों के लिए, यह बड़ी शर्म की बात थी। अपने पूर्व धर्मप्रांत में लौटने पर, यूसेबियस ने अन्य बिशपों के साथ, और विशेष रूप से संत मेलेटियस के साथ एकता में, चर्च के पुनर्गठन का काम शुरू किया। सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण, उन्होंने एरियन बिशपों को पदच्युत किए जाने के बाद से खाली पड़े बिशप के पदों पर ऐसे पुरुषों को नियुक्त करने का प्रयास किया जो ऑर्थोडॉक्स धर्म में योग्य और दृढ़ थे। उन्हें बिशप के पद पर नियुक्त करते समय, संत ने निम्नलिखित बिशपों की नियुक्ति की: सम्माननीय अक्काकियोस को वरिया में, सदाचारी थियोडोटस को हिएरापोलिस में, अपने नाम वाले यूसेबियस को चल्कीस में, इज़िडोरे को सिरिस के लिए; और एडेसा में, पवित्र बिशप वर्सास के निधन के बाद, उन्होंने कन्फैसर यूलोगियस को सिंहासन पर स्थापित किया। ईश्वर-भक्त बिशप मारनिस के साथ, जिन्हें एरियन शहर डोलिकिनिा के लिए चुना गया था, संत यूसेबियस स्वयं वहाँ गए,

[4566] ग्रेटियन ने 375 से 383 तक रोमन साम्राज्य के पश्चिमी हिस्से पर शासन किया।

जहाँ वे चर्च को विधर्म से शुद्ध करना चाहते थे और नव-नर्विाचति ऑर्थोडॉक्स बशिप को सहिासन पर बठिाना चाहते थे। जब यूसेबयिस शहर में प्रवेश कयि, तो एक एरयिन महलि ने छत से उन पर एक मटका फेंका, जसिसे संत का सरि फट गया। इस घाव से, संत यूसेबयिस बीमार पड़ गए और प्रभु के पास चले गए। मरते समय, उन्होंने उपस्थति सभी लोगों से वनिती की कि वे उस महलि से कोई बदला न लें या उसे कोई हानि नि पहुँचाएँ, जसिने उनकी बीमारी का कारण बनी थी। इस मामले में, संत ने अपने प्रभु के उदाहरण का अनुसरण कयि, जनि्होंने उन्हें सूली पर चढ़ा रहे लोगों के लिए प्रार्थना की, और कहा: *'पति, उन्हें क्षमा कर, क्योंकि वे नहीं जानते कि वे क्या कर रहे हैं'* (लूका 23:34); और संत स्तेफन का भी, जनि्होंने उन लोगों के लिए प्रार्थना की जो उन्हें पत्थर मार रहे थे[4567] ।

[4568]इस प्रकार, ईश्वर के महान सेवक यूसेबयिस के पुत्र, उपर्युक्त धन्य एंटओिकस, ने एरयिनों के हाथों शहादत प्राप्त की, और उन्होंने परमपति के समरूप और सह-शाश्वत, ईश्वर के पुत्र के लिए दुख सहन कयि। उनके पवत्रि शरीर को सामोसाटा शहर वापस लाया गया, जहाँ पूरे ईसाई समुदाय के आँसुओं और वलिाप के बीच उन्हें सम्मानपूर्वक दफनाया गया। उपरोक्त धन्य एंटओिकस, जो संत यूसेबयिस की बहन के पुत्र थे, को उनका उत्तराधकिारी नयिुक्त कयि गया। सामोसता की कलीसयि धर्मपरायणता में फलती-फूलती रही, जो पवत्रि त्रमिूर्त मिें एक परमेश्वर, अर्थात् पति, पुत्र और पवत्रि आत्मा की भक्तपिूर्वक महमिा करती थी; अत; हम उन पर, अब और अनंतकाल तक, सम्मान, महमिा, धन्यवाद और आराधना अर्पति करते हैं। आमीन।

कॉन्टाकयिन, स्वर 4:

पुरोहतित्व में ईश्वर-भक्त जीवन जीकर और शहादत के मार्ग पर चलकर, हे संत यूसेबयिस, आपने मूर्तपिूजक बलदिानों को समाप्त कयि; परन्तु हमारे परमेश्वर मसीह के समक्ष साहस रखने वाले के रूप में, प्रार्थना करें कि हमारी आत्माएँ उद्धार पाएँ।

पवत्रि शहीदों ज़नि ोन और ज़ीना की स्मृति।

22 जून को स्मरणोत्सव

पवत्रि शहीद ज़नि ोन अरब के फलिाडेल्फयि[4569] के मूल नविासी थे, जसिे प्राचीन काल में ईमा के नाम से जाना जाता था। ज़ीना उनकी दासी थी और मसीह में अपने वश्विास के लिए कष्ट सहने के लिए उत्सुक थी। सम्राट मैक्समिनिस के शासनकाल के दौरान प्रांत पर शासन करने वाले मैक्समिनिस के राज्यपालत्व के समय, संत ज़नि ोन[4570] ने अपना सारा धन-संपत्ति गिरीबों में बाँट दयि और अपने दासों को मुक्त कर दयि। जब उसने उस महान सम्मान के बारे में सुना, जसिसे हेगेमोन ने मूर्तयिों का सम्मान कयि था, तो वह अपने सेवक के साथ उनके पास गया, जैसा कि ज़ीना स्वयं चाहता था; क्योंकि वह अपने स्वामी को छोड़ना नहीं चाहता था और अपनी इच्छा से उनके साथ गया। संत ज़ीनो राज्यपाल के सामने उपस्थति हुए और यह देखकर कि वह वास्तव में झूठे देवताओं की पूजा में बहुत लगा हुआ था और स्वयं मूर्तयिों की सेवा में उत्साहपूर्वक समर्पति था, उन्होंने उसकी नदिा की। तब राज्यपाल ने तुरंत आदेश दयि कि संत को बैल की खाल की रस्सयिों से कोड़ा मारा जाए। इस यातना के दौरान, ज़नि ोन ने अपनी बाह् फैलाई और अपनी कोहनी से मूर्तपिूजक मंदरि की दीवार पर वार कयि, जसिसे वह नष्ट और ध्वस्त हो गया। इसके लिए, उसे पहले फांसी दी गई, और उसके शरीर की नर्दियता से खाल उधेड़ दी गई, उसके घावों पर सरिका और नमक मला गया; बाद में, उसके पैरों को चार कुंदों से एक खंभे में ठोंक दयि गया। संत ज़नि ोन के सेवक ज़ीना, अपने स्वामी के यातना स्थल पर आए और उनसे वनिती करने लगे कि वे उन्हें अस्वीकार या परत्यिाग न करें। यह जानकर, शासक ने आदेश दयि कि ज़ीना के पैरों को भी कोठरी में कस दयि जाए। जब दोनों पवत्रि शहीदों को पूछताछ के लिए राज्यपाल के सामने लाया गया और उन्होंने मसीह का त्याग करने से

[4567] संत स्टीफन महादीकन का पर्व 27 दसिंबर को मनाया जाता है।

[4568] संत यूसेबयिस शहीद की मृत्यु लगभग 380 में हुई।

[4569] उनकी उत्कृष्टता फलिारेट की व्याख्या के अनुसार ('संतों के जीवन', जून, पृ. 165), 'अरबयिाई फलिाडेल्फयि' से तात्पर्य पलेस्टाइन में पेरेया के उत्तरी भाग या ट्रांसजॉर्डन क्षेत्र से था, जसिे डेकापोलसि के नाम से जाना जाता था।

[4570] सम्राट बेसलि के मेनोलोजयिन और ग्रीक सनिैक्सारयिन के अनुसार, ज़नि ोन एक सैनकि था।

इनकार कर दिया, तो उन्हें बेरहमी से पीटा गया; इसके अलावा, संत ज़िनोन की छाती और उस जगह को जहाँ उसका दिल था, लाल-गरम लोहे की छड़ों से झुलसाया गया। इसके बाद, संतों को एक पेड़ से लटका दिया गया, उनके पैरों से भारी पत्थर बांध दिए गए, और उनके मांस को आग से झुलसाया गया; फिर उन्हें आग के एक गड्ढे में फेंक दिया गया और लपटों पर तेल डाल दिया गया। हालाँकि, चूँकि पवित्र शहीद चमत्कारिक रूप से सुरक्षित रहे और आग से उनके बाल भी झुलसे नहीं, इसलिए अंत में उनकी गर्दन तलवार से काट दी गई[4571] । उनका स्मरणोत्सव काइपारसिया में सेंट जॉर्ज चर्च में मनाया जाता है[4572] ।

इस दिन, पवित्र शहीद गैलाक्शियन, जो समुद्र में डूब गए थे, और जुलियाना, जिन्हें उनके पुत्र सैटरनिस के साथ फांसी पर जला दिया गया था, के लिए स्मरणोत्सव मनाया जाता है।

6 जुलाई

23 जून (पुराने कैलेंडर के अनुसार)

संत अग्रिप्पिना शहीद की स्मृति

23 जून को स्मरणोत्सव

पवित्र कुँवारी अग्रिप्पिना का जन्म और पालन-पोषण प्राचीन रोम में हुआ था। कम उम्र से ही उन्होंने स्वयं को ईश्वर को समर्पित कर दिया था और प्रेरित के शब्दों में, वह *'उद्धार पाने वालों के बीच मसीह की सुगंध'* (2 कुरिन्थियों 2:15) थीं। एक सुगंधित सेब या सुगंधित फूल की तरह, अपने पवित्र और सदाचारी जीवन के द्वारा उन्होंने विश्वासियों के हृदयों में मिठास और सुगंध लाई, और इस प्रकार वासनाओं की दुर्गंध को दूर किया। उन्होंने अपने आत्मा को कुंवारी की पवित्रता से सुसज्जित किया और स्वयं को मसीह के लिए वधू के रूप में अर्पित कर दिया, जिनके लिए, वैलेरियन के शासनकाल में[4573] , उन्होंने अपने वधू-वर मसीह के प्रति प्रेम के कारण, यातनाओं के भय के बिना, साहस और धैर्य के साथ कई घावों को सहन किया। उसके शरीर पर लाठियों से इतनी बुरी तरह प्रहार किया गया कि उसकी हड्डियाँ टूट गईं, जिसके बाद उसे नग्न कर दिया गया और बेड़ियों में जकड़ दिया गया। लेकिन प्रभु का स्वर्गदूत, एक अदृश्य हाथ से, उसके बंधन खोल गया और उसे बल दिया, और उसने, सभी दुष्टता पर विजय प्राप्त करके, अपने यातनाओं के बीच अपना आत्मा परमेश्वर को सौंप दिया[4574] । मसीह की दासियों, वासा, पाउला और अगथोनिकि ने, गुप्त रूप से पवित्र शहीद का शरीर ले लिया और उसे लेकर रोम छोड़ दिया। एक स्थान से दूसरे स्थान की यात्रा करते और एक लंबी यात्रा के बाद, वे सिसिली के क्षेत्र में पहुँचे, जहाँ उन्होंने पवित्र देह को गुप्त रूप से दफनाया। जैसे ही सिसिली को पवित्र शहीद के सम्मानित अवशेषों को प्राप्त करने के योग्य माना गया, यह तुरंत अंधकारमय, दैवीय दुष्टता से मुक्त हो गया और संत एग्रिप्पिना की प्रार्थनाओं के द्वारा एगारियनों से सुरक्षा प्राप्त हुई। इस प्रकार, जब अगारियों ने उस शहर पर घेराबंदी कर दी जहाँ पवित्र शहीद का चर्च था और उसे जीतने की हिम्मत की, तो वे तुरंत पूर्ण विनाश के हवाले हो गए।

शहीद के पवित्र ताबूत से, विश्वास के साथ आए सभी बीमारों और कोढ़ियों को हमारे ईश्वर, मसीह की कृपा से, पवित्र शहीद की प्रार्थनाओं द्वारा हर प्रकार की दुर्बलता से चंगाई मिली। आमीन।

कॉन्टाकियन, स्वर 4:

आपके तेजस्वी कर्मों का उत्सव मनाने का दिन आ गया है, और दिव्य कलीसिया, आपका सम्मान करते हुए, आनंदपूर्वक आपसे पुकारती है: हर्षित हो, कन्या और शहीद, अति सम्मानित अग्रिप्पिना।

[4571] पवित्र शहीदों की मृत्यु वर्ष 304 में मैक्सिमियन हर्क्यूलिस के शासनकाल में हुई, जो 286 से 305 तक डायोक्लेटियन के सह-शासक थे।
[4572] साइपारसियिस या साइपारसिस – कॉन्स्टेंटिनोपल में स्थान।
[4573] सम्राट वैलेरियन ने 253 से 259 तक रोमन साम्राज्य पर शासन किया।
[4574] पवित्र शहीद अग्रीपिना की मृत्यु तीसरी शताब्दी के मध्य में हुई।

थेओफलिस का पश्चाताप

23 जून को स्मरणोत्सव

ग्रीक क्षेत्रों पर फारसी आक्रमण[4575] से ठीक पहले, सलिसिया के दूसरे धर्मप्रांत में, अदाना शहर[4576] में, शहर के पवित्र कैथेड्रल चर्च का एक व्यवस्थापक रहता था, जसिका नाम थयिोफलिस था। वह एक सदाचारी और पवित्र जीवन जीता था, चर्च की संपत्ति का न्यायसंगत और बुद्धमिानी से प्रबंधन करता था, और मामलों को धर्मपरायणता से और ईश्वर की इच्छा के अनुसार संचालति करता था। बशिप के लिए, वह वह आँख था जो सब कुछ देखती थी और वह दाहनिा हाथ था जो सभी कार्यों और आदेशों को पूरा करता था। अपने सद्गुणों के कारण, उन्हें न केवल उनके बशिप, बल्कि संपूर्ण पुरोहति वर्ग और नगर के सभी नविासयिों द्वारा भी बहुत प्यार कयिा जाता था; क्योंकि वह अनाथों के लिए एक पति, वधिवाओं के लिए एक पालनहार, गरीबों के लिए एक उदार आश्रय, उत्पीड़तिों के रक्षक और असहायों के सहायक थे; संक्षेप में, ऐसा कोई नहीं था जसिे उसने अपने दुख में, वचन और कर्म दोनों से सांत्वना न दी हो। इन सब के लिए, हर कसिी ने थयिोफलिस को एक पति के रूप में सम्मानति कयिा, एक उपकारी के रूप में उससे प्रेम कयिा, और उसकी प्रशंसा की।

जब, ईश्वर की इच्छा से, अदाना के बशिप का इस सांसारकि जीवन से नधिन हो गया, तो उस शहर के सभी धर्मपरायण नविासी, हर पद के, सबसे बड़े से लेकर सबसे छोटे तक, थयिोफलिस के प्रति उनके कई अच्छे कार्यों के कारण सच्चे ईसाई प्रेम से प्रेरति होकर, और उनके शुद्ध और नर्दिोष जीवन से भी परचिति होकर, उन्हें सर्वसम्मति से अपना बशिप चुना। फरि उन्होंने इस संबंध में एक लखिति सूचना के साथ कुछ वशिेष रूप से सम्मानति नागरकिों को सलिसिया के मेट्रोपॉलटिन के पास भेजा। पत्र पढ़ने के बाद, मेट्रोपॉलटिन ने उनके चुनाव को मान्यता देने के लिए सहमति दे दी: थयिोफलिस उन्हें व्यक्तगित रूप से एक सदाचारी और ईश्वर-भयभीत व्यक्ति के रूप में जाना जाता था, जो धर्मप्रांत का शासन करने में सक्षम, और सभी मामलों में कुशल और अनुभवी था। उन्होंने तुरंत आदेश दयिा कि उसे अदन की चर्च के बशिप के रूप में अभषिेक के लिए उनके पास बुलाया जाए।

लेकनि थयिोफलिस, जब उन्हें मेट्रोपॉलटिन के फैसले की जानकारी मलिी, तो वे उनके पास नहीं जाना चाहते थे, और उन्होंने जदि करके बशिप का पद स्वीकार करने से इनकार कर दयिा। नागरकिों और संपूर्ण पुरोहति वर्ग ने बहुत देर तक, आँसू बहाते हुए, उनसे उनके बशिप बनने की वनिती की, लेकनि कोई फायदा नहीं हुआ। फरि उन्होंने मेट्रोपॉलटिन को एक और याचकिा भेजी, जसिमें उनसे थयिोफलिस को उनकी इच्छा के वरिुद्ध भी, उनके बशिप के रूप में नयिुक्त करने का अनुरोध कयिा गया।

अंततःअपने अधकिारपूर्ण आदेश से जब उसे जबरदस्ती बुलाया गया, तो मेट्रोपॉलटिन ने उसे खुशी और प्रेम से स्वीकार कयिा और तुरंत उसे बशिप नयिुक्त करना चाहा। लेकनि थयिोफलिस उनके पैरों पर लोट गया और आँसू भरी आँखों से उनसे वनिती करने लगा कि उस पर इतना बड़ा बोझ न डालें।

'मैं अपने पापों को जानता हूँ!' उसने कहा, 'मैं बशिप के पद के लायक नहीं हूँ।'

जब वह लंबे समय तक इस प्रकार महानगरपति के चरणों में पड़ा रहा, रोते हुए और क्षमा की भीख मांगता रहा, तो पवित्र बशिप ने उसे वचिार करने के लिए तीन दनि का समय दयिा, ताकि परस्थितियिों पर वचिार करने के बाद, वह बशिप का पद स्वीकार करने के लिए सहमत हो जाए और उन कई लोगों की वनितयिों को नज़रअंदाज़ न करे जो उसे अपना चरवाहा बनाने के लिए उत्सुक थे।

जब तीन दनि बीत गए, तो महाधर्माध्यक्ष ने थयिोफलिस को एक बार फरि बुलाया और उससे आग्रह करने तथा वनिती करने लगे कि वह धर्माध्यक्षीय पद को अस्वीकार न करे; ऐसा करते हुए, उन्होंने उसके जीवन की पवित्रता और प्रशासन में उसकी कुशलता की प्रशंसा की, और उसे इस पद के योग्य घोषति कयिा। लेकनि थयिोफलिस फरि से उनके पैरों पर गरि पड़ा और, भरपूर आँसू बहाते हुए, यह कहते रहे:

'मैं बशिप पद के लायक नहीं हूँ!'

[4575] सातवीं शताब्दी की शुरुआत में, राजा खुसरव के शासनकाल में।

[4576] अदाना – एशयिा माइनर के एक यूनानी क्षेत्र सलिसिया का एक छोटा शहर।

जब उन्होंने देखा कि वह अडिग रहा, और न तो आज्ञाओं और न ही धमकियों के आगे झुका, तो मेट्रोपॉलिटन ने अंततः उसे अपनी मर्जी पर छोड़ दिया। एक अन्य व्यक्ति को बिशप के रूप में अभिषिक्त करने के बाद—जिसे वह योग्य भी मानते थे—उन्होंने उसे अदाना भेज दिया, और थियोफिलिस को उसकी देखभाल में सौंप दिया ताकि वह पहले की तरह ही ओइकनोमोस के रूप में अपने कर्तव्यों का पालन करता रहे।

जब नए बिशप ने कुछ समय तक अपना पद संभाल लिया, और थियोफिलिस अपने सामान्य कर्तव्यों का पालन करता रहा, तो शैतानी ईर्ष्या से प्रेरित कुछ शत्रुओं ने गुप्त रूप से बिशप के पास उस व्यवस्थापक की बदनामी करनी और उस पर कई अनुचित कृत्यों का आरोप लगाना शुरू कर दिया।

शुरुआत में, बिशप ने उनकी बदनामी पर कोई ध्यान नहीं दिया और उस पर कोई भरोसा नहीं किया, क्योंकि वह जानते थे कि उनका व्यवस्थापक एक सदाचारी व्यक्ति है और हर तरह से निर्दोष है। लेकिन चूँकि उन्होंने ईर्ष्या के कारण अपनी बदनामी बंद नहीं की— —और लगभग हर दिन थियोफिलिस पर विभिन्न अपमानजनक आरोप लगाए, तो धीरे-धीरे बिशप उनके शब्दों से प्रभावित होने लगे, उनकी बदनामी सुनने और उन पर भरोसा करने लगे।

कुछ समय बाद, उन्होंने थियोफिलिस को उनके प्रबंधक के कर्तव्यों से मुक्त कर दिया, ताकि वह अब बिशप के आवास या चर्च की संपत्ति में कुछ भी प्रबंध न करें, बल्कि घर पर ही चुपचाप और शांति से रहें तथा अपने श्रम से विश्राम करें; प्रबंधक का पद किसी और को सौंप दिया गया।

अपनी जिम्मेदारियों और इस जीवन के व्यर्थ के दिखावे से मुक्त होकर, थियोफिलिस ने स्वयं को एकमात्र सच्चे ईश्वर की सेवा में समर्पित कर दिया। लेकिन, थियोफिलिस के ईश्वर-भक्त और निश्चिंत जीवन को सहन न कर पाकर, शैतान—जो मानव जाति का शत्रु है—ने अपनी सारी चालाकियों से लैस होकर उसके विरुद्ध हथियार उठा लिया और उसे परेशान करने लगा, कभी अपने ही विचारों के माध्यम से, तो कभी दूसरे लोगों के माध्यम से, चुपचाप उससे फुसफुसाता हुआ: 'बिशप ने तुम्हारी महान परिश्रमों को भूलकर तुम्हारा अपमान किया है; उसने तुम्हें नीचा दिखाया है, तुम्हारे स्थान पर एक ऐसे व्यक्ति को तरजीह दी है जो तुमसे भी बदतर, अकुशल और अयोग्य है; उसने तुम्हें लोगों के उपहास और तिरस्कार के सामने ला खड़ा किया है।'

और थियोफिलिस ने, पहले-पहले धीरे-धीरे, इन शैतानी बदनामियों और विचारों पर ध्यान देना शुरू कर दिया, और फिर अपने मन में या अपने दोस्तों के साथ उन पर और अधिक विचार करने लगा, और कड़वाहट से विलाप करने लगा। अंत में, शत्रु की चालाकी उसे उस बिंदु पर ले आई जहाँ, ईश्वर में अपने आदी भरोसे को भूलकर, वह निराशा और दुःख में मुरझाने लगा और हताशा में पड़ गया। उसे ऐसा लगने लगा कि हर कोई उस पर हँस रहा है और उसका मज़ाक उड़ा रहा है, कि अब कोई भी उसका सम्मान नहीं करता; वह घर से बाहर निकलने और लोगों के बीच जाने से शर्मिंदा होने लगा। उसके हृदय में कलीसिया की संपत्ति पर अपने पूर्व अधिकार और नियंत्रण की एक अदम्य लालसा भड़क उठी; वह दिन-रात इसी के बारे में सोचता रहा, ऐसे विचारों से खुद को पीड़ा देता रहा और इस पर मनन करता रहा कि वह अपनी पूर्व स्थिति कैसे फिर से हासिल कर सकता है, ताकि उसके दुश्मन अब उसकी अपमानित होने पर प्रसन्न न हों।

इस इच्छा और अन्य ईश्वर को अप्रिय लगने वाले विचारों के कारण, ईश्वर की कृपा उसके हृदय से हट गई; इसके बिना, वह अंततः पूर्ण निराशा में डूब गया और जादू-टोने तथा राक्षसों से सहायता मांगने लगा। प्रारंभ में बिशप का पद स्वीकार करने से इनकार करने के बाद, अब उसने कहीं कम अधिकार की आकांक्षा की। इस प्रकार ईश्वर ने उसे ऐसा होने दिया क्योंकि उसने अपने हृदय में दुष्ट विचारों और शैतानी परामर्श को आश्रय दिया था।

उस नगर में एक यहूदी रहता था, जो विनाश का पुत्र, एक प्रसिद्ध जादूगर, तंत्र-मंत्र करने वाला और धोखेबाज़ था। वह शैतान का सच्चा सेवक था और उसने कई लोगों को विनाश की ओर धकेल दिया। थियोफिलिस रात में उस जादूगर के घर के लिए निकल पड़ा और वहाँ पहुँचकर उसने द्वार पर खटखटाना शुरू कर दिया। जादूगर यह देखने के लिए बाहर आया कि कौन खटखटा रहा था और थियोफिलिस को देखकर वह भय से भर गया। हैरान (क्योंकि वह उसे पहचान गया था), उसने उसे घर के अंदर आने के लिए कहा और जब थियोफिलिस अंदर आ गया, तो उससे पूछा:

'हे स्वामी, आपने आधी रात को मेरे जैसे नीच और अयोग्य व्यक्ति के पास आने की झंझट क्यों की?'

थेओफिलिस ने उत्तर में उसके पैरों पर गिर पड़े और विनती करते हुए कहा:

'यदि आप मदद कर सकते हैं, तो मेरी मदद करें और मेरे इस बड़े दुःख में मुझे अकेला न छोड़ें।'

फिर उसने जादूगर को सब कुछ विस्तार से बताया: कि कैसे बिशप ने उसे उसके पद से हटाकर दुखी किया था, कैसे उसे लोगों के तिरस्कार के सामने ला खड़ा किया था, और उसे पद से हटाते समय उससे बदतर आदमी को तरजीह दी थी;

उसने जादूगर से वादा किया कि अगर वह उसकी मदद करेगा और उसका पूर्व सम्मान बहाल करेगा तो उसे भारी इनाम देगा। तब ईश्वर-द्वेषी यहूदी जादूगर ने उससे कहा:

'इसके लिए दुखी न हों, मेरे स्वामी, बल्कि प्रसन्नचित्त होकर और अच्छी आशा के साथ घर लौटें; अगले ही दिन रात के इसी समय मेरे पास आएँ, और मैं आपको अपने स्वामी के पास ले जाऊँगा, और वह हर तरह से आपकी मदद करेंगे।'

जादूगर का यह उत्तर सुनकर, उस समय का दुर्भाग्यशाली थियोफिलिस बहुत प्रसन्न हुआ और एक ऐसी आशा से भरकर घर लौट गया जो उसकी बर्बादी का कारण बनने वाली थी।

एक दिन बीता और फिर रात हो गई। आधी रात को, जादूगर के आदेश पर, थियोफिलिस उसके सामने प्रकट हुआ। जादूगर उसे हिप्पोड्रोम - वह जगह जहाँ घुड़दौड़ होती थी - ले गया और उससे कहा:

'यदि तुम कोई दर्शन देखो, या कोई आवाज़ सुनो, तो डरना मत और क्रॉस का चिह्न बनाना मत; क्रॉस लोगों के किसी काम का नहीं है: यह एक ईसाई धोखा है जो उपहास के योग्य है।'

थेओफिलिस हर बात से सहमत हो गया और उसने वादा किया कि वह खुद को क्रूस की आड़ में नहीं छिपाएगा; जिस पर जादूगर ने तुरंत उसे एक दर्शन में, विभिन्न चमकीले परिधानों में सजे और हाथों में जलती मोमबत्तियाँ पकड़े हुए, अजीब और असाधारण आकृतियों की एक भीड़ दिखाई। वे राक्षस थे; वे अपने स्वामी, शैतान की स्तुति कर रहे थे; जबकि अंधकार का राजकुमार गर्व और मायावी महिमा में उनके बीच बैठा था। फिर उस शापित यहूदी जादूगर ने थियोफिलिस का हाथ पकड़ा, उसे इस विनाशकारी सभा में ले गया और उसके साथ राजकुमार के पास पहुंचा।

'तुम इस आदमी को यहाँ हमारे पास क्यों लाए हो?' अँधेरे के राजकुमार ने जादूगर से पूछा।

'मेरे स्वामी,' ईश्वर-द्वेषी यहूदी ने उत्तर दिया, 'मैं उसे आपके पास इसलिए लाया हूँ क्योंकि उसके बिशप ने उसके साथ बहुत बड़ा अन्याय किया है, और वह आपकी मदद चाहता है।'

'मैं उस व्यक्ति की मदद कैसे कर सकता हूँ जो अपने ईश्वर का दास है? यदि वह सचमुच मेरा दास बनना चाहता है और मेरे सेवकों की कतार में शामिल होना चाहता है, तो मैं उसकी इस तरह मदद करूँगा कि उसे पहले से कहीं अधिक शक्ति और सम्मान प्राप्त होगा, और वह स्वयं बिशप से भी अधिक शक्तिशाली हो जाएगा।'

'क्या तुम सुन रहे हो कि राजकुमार क्या कह रहा है?' तब जादूगर ने थियोफिलिस से पूछा।

'मैं उसे सुन रहा हूँ,' उसने जवाब दिया, 'और मैं वही करूँगा जो वह मुझसे कहेगा।'

ये शब्द कहने के बाद, वह तुरंत घुटनों के बल गिर पड़ा, शैतान के सामने झुक गया और उसके पैरों को चूमने लगा।

'इस आदमी से तथाकथित मरियम के पुत्र का परित्याग करवाओ,' शैतान ने जादूगर से कहा, 'और उससे स्वयं मरियम का भी परित्याग करवाओ, क्योंकि मैं उनसे दोनों से अत्यधिक घृणा करता हूँ। उससे कहो कि वह अपना परित्याग अपने ही हाथ से लिखे और मुझे प्रस्तुत करे। उसके बाद, वह मुझसे जो चाहे मांगे, उसे वह मिल जाएगा।'

यह सुनकर थियोफिलिस ने उत्तर दिया:

'मैं आपके हर आदेश का पालन करूँगा, मेरे स्वामी, बशर्ते मुझे वह मिले जिसकी मैं इच्छा करता हूँ।'

ये शब्द सुनते ही, मानव जाति का धूर्त शत्रु, शैतान, अपने दैवीय हाथ उसकी ओर बढ़ाया और थियोफिलिस को गले लगाकर उसकी दाढ़ी पर हाथ फेरने और उसे चूमने लगा, अपने अशुद्ध होंठ थियोफिलिस के मुँह पर चिपकाते हुए।

'खुश हो जाओ, मेरे सच्चे और वफादार दोस्त,' उसने उससे कहा।

और दुष्ट थियोफिलिस ने, शैतान के साथ अपनी दोस्ती की पुष्टि करते हुए, हमारे उद्धारकर्ता मसीह और परमेश्वर की पवित्रतम माता का त्याग कर दिया; उसने अपना त्याग-पत्र एक पर्चे पर लिखकर[4577] , जिसे जादूगर ने पहले से तैयार किया था, उस पर मुहर लगाई और उसे अंधकार के राजकुमार को सौंप दिया। इसके बाद, उन्होंने एक-दूसरे को दोस्ती में गले लगाया, चूमना-चाटना किया, और अपने-अपने रास्ते चले गए: अँधेरे का राजकुमार, अपने सेवकों के साथ, अदृश्य हो गया और नरक में अपने निवास में चला गया; जबकि थियोफिलिस और यहूदी हिप्पोड्रोम से लौट आए, दोनों ही अपनी-अपनी बर्बादी पर प्रसन्न थे।

अगली सुबह, ऐसा प्रतीत होता है कि शैतान की साज़िशों के बजाय, ईश्वर की कृपा से, बिशप जाग उठा और उसे अपने पद से हटाने पर पछताया। उसने उसे बिशप के आवास पर एक बार फिर बुलाने के लिए लोगों को भेजा, उसे बड़े

[4577] कागज बनाने की कला ज्ञात होने से पहले, लोग विशेष रूप से तने हुए चमड़े या मिस्र की reed की पत्तियों पर लिखते थे, जिन्हें पापिरस कहा जाता था। ऐसे चमड़े या reed की पत्तियों पर लिखी पांडुलिपियों को 'chartiae' कहा जाता था।

सम्मान के साथ उसके पूर्व पद पर बहाल कयिा, उसे दोगुना सम्मान प्रदान कयिा, और उसे चर्च की संपत्ति और उसके सभी मामलों पर और भी अधकि अधकिार दएि। इसके अलावा, पुरोहतिों और नागरकिों की उपस्थतिि में, बशिप ने थयिोफलिस से क्षमा मांगी।

उसने कहा, 'भाई, मुझे क्षमा करो, मुझे क्षमा करो, क्योंकि मैंने आपके पद पर एक अयोग्य व्यक्ति को नयिुक्त करके आपके पवत्रि स्थल का अपमान करके आपके वरिुद्ध पाप कयिा है। अब मैं उसे हटा रहा हूँ, और मैं आपसे वनिती करता हूँ कि आप एक बार फरि से व्यवस्थापक का पद संभालें।'

उस क्षण से, थयिोफलिस ने अपना पूर्व सम्मान और अधकिार फरि से प्राप्त कर लयिा, उसे सभी से अधकि सम्मान दयिा जाने लगा, और वह सभी प्रबंधक के मामलों का प्रभारी था। न केवल पुरोहति वर्ग और नागरकिों ने उसे बड़े सम्मान से सम्माननति कयिा और श्रद्धापूर्वक उसकी आज्ञा मानी, बल्कि बशिप स्वयं भी उसका सम्मान करने लगे, जबकि उसके पूर्व शत्रु शर्म से चुप हो गए और वनिम्रतापूर्वक उसकी कृपा प्राप्त करने लगे।

उस समय, एक दुष्ट और चालाक जादूगर अक्सर थयिोफलिस से मलिने आता था।

'आप देखिए, मेरे स्वामी,' उसने कहा, 'कि कैसे मेरे राजकुमार और मैंने आपकी इच्छानुसार आपकी सहायता की, और आपने कतिनी जल्दी हमारी सहायता स्वीकार की।'

'वास्तव में मैंने कयिा है,' थयिोफलिस ने उत्तर दयिा, 'और मैं आपसे हृदय से धन्यवाद करता हूँ।'

ऐसी वधिर्म में थोड़े समय तक जीवन व्यतीत करने के बाद, थयिोफलिस, मानो, एक नींद से जागने और होश में आने लगा, और उसे अपनी बर्बादी का एहसास हुआ। हमारे सृष्टकिर्ता और उद्धारकर्ता, मसीह परमेश्वर, जो पापयिों की मृत्यु नहीं चाहते बल्कि कृपापूर्वक उनके पश्चाताप की प्रतीक्षा करते हैं[4578] , ने थयिोफलिस के पूर्व पुण्य जीवन और परश्रिमों, उनके अनेक परोपकारी कार्यों, गरीबों और वधिवाओं के प्रति उनकी देखभाल, अनाथों के पालन-पोषण, उत्पीड़तिों के रक्षण, मदद मांगने वालों सभी की सहायता, और उनके असंख्य शुभ कार्यों को याद कयिा। अपनी अकथनीय दया के द्वारा अपनी सृष्टि की अवहेलना न करते हुए, प्रभु ने उस पर अपनी दया दखिाई, क्योंकि ऐसा कोई पाप नहीं है जो मानव जाति के प्रति उनके प्रेम पर वजिय प्राप्त कर सके: अपनी गुप्त और दैवीय प्रेरणा के द्वारा, उन्होंने थयिोफलिस के हृदय में पश्चाताप और परविर्तन का वचिार बोया।

होश में आकर, थयिोफलिस इस बात पर वचिार करने लगा कि उसने क्षणकि और तुच्छ मानवीय सम्मान के लिए मसीह ईश्वर और परमेश्वर की परम पवत्रि माता का परत्यिाग करके कतिना बड़ा और भयानक पाप कयिा था। वह अपनी आत्मा में कष्ट भोगने लगा, अपने मन में शोक करने और पश्चाताप करने लगा, अपने हृदय की गहराई से भारी आहें भरते हुए, अपनी छाती पर हाथ मारते हुए, जोर-जोर से रोते और ससिकते हुए।

इस बीच, उस देश के शासक ने यहूदी जादूगर को पकड़ लयिा, उसे उसकी जादू-टोने और दुष्टता के कई कृत्यों के लिए एक वैध अदालत द्वारा मृत्युदंड सुनाया गया, और उसे उसके अपराधों के अनुरूप दंड मलिा: उसे जदिा जला दयिा गया।

जहाँ तक थयिोफलिस की बात है, वह दनि-रात रोता और वलिाप करता रहा, उसका दलि टूट गया था, वह न तो खाना खा रहा था और न ही पानी पी रहा था और कसिी से बात भी नहीं करना चाहता था। अकेले खुद को बंद करके, वह शोक मनाता और दुखी रहता था।

'हाय, मैं दुर्भाग्यशाली! हाय, मैं वनिाश के गर्त में गरि गया!' वह चल्लिाया। 'मैंने क्या कर डाला? मैं कसि वनिाश में गरि गया हूँ? मोक्ष पाने के लिए अब मैं कहाँ जाऊँ? दया की भीख कसिसे माँगूँ? मसीह, ईश्वर से? लेकनि मैंने उनका त्याग कर दयिा है। ईश्वर की माता से? लेकनि मैंने उन्हें भी ठुकरा दयिा है। मैं शैतान का दास बन गया हूँ और अपनी ही कलम से अपनी दासता पर मुहर लगा दी है। कौन उसके हाथों से मेरा पांडुलपि छीन सकता है? कौन मेरी मदद करेगा और मुझे उसकी शक्ति से मुक्त करेगा? मैंने उस नीच और अधर्मी जादूगर के पास जाकर, उस पर अपना भरोसा रखकर, और उसके साथ मलिकर खुद को शाश्वत अग्नि के लिए क्यों दोषी ठहराया? मुझे इस क्षणकि सम्मान से क्या लाभ हुआ? इस व्यर्थ दुनयिा का अहंकार और समृद्धि क्या हैं? हाय मेरे भाग्य! मैं, यह दीन-हीन, खो गया हूँ! हाय मेरे भाग्य! मैं भटक गया हूँ और एक ऐसे जाल में फँस गया हूँ जसिसे मुझे नहीं पता कि मैं कैसे बचूँगा! हाय मेरे भाग्य! मैंने स्वयं को शाश्वत प्रकाश से वंचति कर लयिा है और अंधकार में वास करता हूँ! क्या मैं तब बेहतर नहीं था जब मुझे व्यवस्थापक की सेवा से

[4578] देखिए यहेजकेल 18:21–23

नकिाल दयिा गया था? क्या मैं तब बेहतर नहीं था जब मैं नशि्चति और मौन में रहता था? मैंने अस्थायी और व्यर्थ मानवीय सम्मान और खोखली महमिा के लिए अपनी बेचारा आत्मा को नरक में क्यों धकेलना चाहा? अपने वनिाश के लिए मैं स्वयं ही दोषी हूँ! मैंने स्वयं ही अपनी हत्या की है; मैं ही अपनी बेचारा आत्मा का गद्दार हूँ! हाय मुझ पर! मैंने क्या खो दयिा है! हाय मुझ पर! मैं कतिना धोखा खा गया हूँ! हाय मुझ पर! अब मैं क्या करूँ? हाय मेरे भाग्य! न्याय के दनि मैं ईश्वर को क्या उत्तर दूँगा, जब सब कुछ स्पष्ट और प्रकट हो जाएगा, जब धर्मी लोगों को मुकुट पहनाया जाएगा, जबकि मैं, यह दीन-हीन, शैतान के साथ दंडति कयिा जाऊँगा, जसिे मैंने खुद को बेच दयिा है! तब मैं कसिसे मेरी मदद की वनिती करूँगा? तब कौन मुझ पर दया करेगा? सचमुच, कोई नहीं! हाय मेरी दीन और दुर्भाग्यपूर्ण आत्मा! तुमने खुद को नरक की कैद में कैसे सौंप दयिा? तुमने अपना वनिाश कैसे कयिा? तुमने कतिना भयानक पतन झेला है! तुमने खुद को कनि लहरों में झोंक दयिा है! अब तुम कसि बंदरगाह में शरण लोगे? या कसि पवत्रि स्थान में भागोगे? हाय मेरी आत्मा! हाय मुझे! तुम पर क्या वपित्ति आ पड़ी है!

लंबा समय रोने और नराशिा में अपने आत्मा को दुख और शोक से पीड़ा पहुँचाने के बाद, थयिोफलिस ने धीरे-धीरे परमेश्वर की दया में अपनी आशा रखना शुरू कर दयिा।

उसने अपने आप से कहा, 'मैंने सर्व-पवत्रि कुँवारी मरयिम से जन्मे अपने प्रभु यीशु मसीह का त्याग कर दयिा है, और मैं उनकी ओर मुड़ने की हम्मित नहीं करता। लेकनि, यद्यपि मैंने ईश्वर की उस माता का भी त्याग कर दयिा है जन्हिोंने उन्हें जन्म दयिा, तथापि मैं उनकी ओर ही मुड़ूँगा; मैं अपनी पूरी आत्मा और पूरे हृदय से उनकी दया पर स्वयं को अर्पति करूँगा।' मैं परमेश्वर की अति पवत्रि माता के पवत्रि चर्च में जाऊँगा, उनकी प्रतमिा के सामने गरिूँगा, और वहाँ उनकी प्रार्थना में तब तक रहूँगा जब तक कि मैं उन्हें प्रसन्न न कर लूँ और परमेश्वर की दया के लिए उनकी मध्यस्थता का पात्र न बन जाऊँ।

उसने अपनी बात जारी रखते हुए कहा, 'लेकनि मैं अपनी घृणति जीभ से उससे मुंह मोड़ चुका हूँ, तो मैं उससे प्रार्थना करना कसि जीभ से शुरू करूँ? मैं अपना पाप-स्वीकार कैसे शुरू करूँ? कसि दलि, कसि अंतरात्मा और कसि आशा के साथ मैं अपनी अधार्मकि जीभ को प्रार्थना के लिए हलिाऊँ? मुझे नहीं पता। मैं अपने अनगनित पापों के लिए क्षमा कैसे माँगूँ? मुझे डर है कि कहीं स्वर्ग से आग बरसकर मुझे, एक दीन आत्मा को, भस्म न कर दे, या कि धरती फटकर मुझे जीवति ही न नगिल ले, और मुझे नरक की खाई में न डाल दे। लेकनि अंत तक नराश न हो, हे मेरी आत्मा; हौसला रख और उस बुराई से छुटकारा पाने का प्रयास कर जो तुझे कैदी बनाये हुए है; मसीह की माता की शरण में भाग, और तू लज्जति नहीं होगी।

नगर के एक सुनसान हस्सि में परमेश्वर की अति पवत्रि माता को समर्पति एक छोटा सा चर्च था, जहाँ केवल पर्व-दविसों पर ही प्रार्थना सभाएँ होती थीं। इसी चर्च में थयिोफलिस प्रार्थना करने के लिए एकांत में बैठना चाहता था, पहले उसने एक प्रबंधक के रूप में अपने सभी कर्तव्यों से मुक्ति पा ली थी और सभी बाधाओं तथा सांसारकि चतिाओं को दूर कर लयिा था। इस चर्च में खुद को बंद करके और परम पवत्रि माता ईश्वर की पूजनीय प्रतमिा के सामने नतमस्तक होकर, वह उनकी प्रार्थना करने लगा, तीव्र वलिाप करते और ससिकयिाँ भरते हुए। इन सब बातों का कसिी को पता नहीं था, सविाय उनके वफादार सेवक यूटकियिन के, जसिने आगे चलकर थयिोफलिस के जीवन का वर्णन कयिा।

थेओफलिस चालीस दनि और चालीस रात चर्च में रहे, उपवास करते हुए, अपने पापों का इकबालयिा बयान देते हुए, पश्चाताप करते हुए, और दनि-रात परम पवत्रि ईश्वर की माता की प्रतमिा के सामने नतमस्तक होकर अखंड प्रार्थना करते रहे। चालीस दनिों के अंत में, जब वह आधी रात को प्रार्थना कर रहा था, हमारे प्रभु की परम धन्य माता प्रकट हुईं—जो संपूर्ण वश्वि का सच्चा उद्धार, मानव जाति का आश्रय, और ईश्वर के बाद हमारी एकमात्र आशा हैं।

उसने उससे कहा, 'हे मनुष्य! तुम इतनी नर्लिज्जता से मुझे क्यों सता रहे हो, चलि्ला-चलि्ला कर मुझसे अपनी मदद की भीख क्यों मांग रहे हो? क्योंकि तुमने स्वयं मेरे पुत्र और मुझे त्याग दयिा है!' मैं तुम्हारी ओर से अपने पुत्र और ईश्वर से कैसे वनिती करूँ, कि वह तुम्हें, शैतान के एक सेवक को, माफ कर दे, जसिने अपनी हस्तलपिि के माध्यम से स्वयं को उसके हवाले कर दयिा है? जब मैं तुम्हारे लिए प्रार्थना करना चाहूँ, तो मैं कसि आँखों से प्रभु के परम तेजस्वी मुख पर नज़र डालूँगी? मैं भी अपने पुत्र और ईश्वर पर कए गए इस अपमान को सहन नहीं कर सकती। हे मनुष्य, मैं तुम्हें उन पापों के लिए माफ कर सकती हूँ जो तुमने मेरे सामने कए हैं, क्योंकि मैं ईसाई जाति से बहुत प्यार करती हूँ, वशिेषकर उन लोगों से जो सच्चे वश्वि ास और गर्मजोशी से, दौड़ते हुए मेरी ओर आते हैं और मेरे मंदरि में प्रार्थना करते हैं: मैं हर तरह से उनकी मदद करती हूँ, उन्हें अपनी बाहों में लेती हूँ और उनकी प्रार्थनाएँ सुनती हूँ। लेकनि मेरे पुत्र पर तुम जो अपमान और अन्याय करते हो, जसिे तुम अपने पापों द्वारा दूसरी बार सूली पर चढ़ा रहे हो—इसे मैं न तो देख सकता हूँ और न ही

सुन सकता हूँ। उसकी दया का आह्वान करने के लिए आपको बहुत परिश्रम, कई वीरतापूर्ण कार्यों और हार्दिक पश्चाताप की आवश्यकता होगी। यद्यपि वह परम दयालु है, वह एक ही समय में एक धर्मी न्यायाधीश और एक भयानक प्रतिशोधी भी है, जो प्रत्येक व्यक्ति को उनके कर्मों के अनुसार पुरस्कृत करता है।

ईश्वर की माता के दर्शन से आनंदित होकर, थियोफिलस ने कुछ हिम्मत जुटाई।

'हे मेरी परम धन्य माता!' उसने पुकारा, 'मानव जाति की रक्षक, उन लोगों का आश्रय और मोक्ष जो आपसे शरण लेते हैं! मैं जानता हूँ, मैं सचमुच जानता हूँ, कि मैंने कितनी गंभीर रूप से पाप किया है और आपके और उस ईश्वर के क्रोध को भड़काया है जिसे आपने जन्म दिया। परन्तु मैं ऐसे बहुत से लोगों के उदाहरण देखता हूँ, जिन्होंने मुझसे पहले, आपके पुत्र और हमारे परमेश्वर के क्रोध को भड़काया, फिर भी उन्हें अपने पश्चाताप और स्वीकारोक्ति के कारण उनके पापों की क्षमा दी गई। यदि पश्चाताप न होता, तो आपके पुत्र ननिदि के लोगों को कैसे क्षमा कर सकते थे? (यूहन्ना 2:1–11, 3:1–10) यदि पश्चाताप न होता, तो वह वेश्या राहाब को कैसे बख्श सकता था? (यहोशू 6:24) यदि पश्चाताप न होता, तो दाऊद, जो पहले ही उपहार प्राप्त कर चुका था, व्यभिचार और हत्या (2 शमूएल, अध्याय 11) में गिरने के बाद, न केवल क्षमा कैसे पा सकता था, बल्कि उसे भविष्यवाणी का वरदान भी कैसे वापस मिल सकता था? यदि पश्चाताप नहीं होता, तो पवित्र प्रमुख प्रेरित पतरस, चर्च के स्तंभ, जिन्हें परमेश्वर से स्वर्ग के राज्य की कुंजियाँ मिली थीं (मत्ती 16:19), जब उन्होंने प्रभु से न एक बार, न दो बार, बल्कि तीन बार इनकार किया, और फिर वे जोर-जोर से रोने लगे (लूका 22:56–62)। यदि पश्चाताप न होता, तो प्रभु एक डाकू – एक कर वसूलने वाले – को एक प्रचारक कैसे बना सकते थे? (मत्ती 9:9) यदि पश्चाताप नहीं होता, तो संत पौलुस कैसे एक उत्पीड़क से मसीह के चुने हुए पात्र बन गए? (प्रेरितों के काम 9:1-20) यदि पश्चाताप नहीं होता, तो प्रभु कर-संग्रहकर्ताओं के प्रमुख ज़काईयस (लूका 19:1-10) को कैसे स्वीकार कर सकते थे? यदि पश्चाताप न होता, तो व्यर्थ-पुत्र लौटने के बाद फिर से अपने पिता का प्रिय कैसे बन पाता? (लूका 15:11–32) यदि पश्चाताप न होता, तो वेश्या मसीह के पैरों तले रोते हुए अपने अनेक पापों के लिए क्षमा कैसे पाती? (लूका 7:36–50) यदि पश्चाताप न होता, तो चोर के लिए स्वर्ग कैसे खुलता? (लूका 23:39–43) यदि पश्चाताप न होता, तो प्रेरित ने कोरिन्थ में पापी को स्वीकार करने का आदेश कैसे दिया होता? (1 कुरिन्थियों 5; 2 कुरिन्थियों 2:1–8) यदि पश्चाताप न होता, तो जादूगर साइप्रियन—जो पूरी तरह से शैतान के समान हो गया था, जो अपनी जादू-टोने के लिए गर्भवती महिलाओं के गर्भ को चीरता था, और जिसे बाद में धर्मी जस्टिना द्वारा मसीह में परिवर्तित किया गया था—न केवल अपनी महान दुष्टता के लिए क्षमा प्राप्त कर पाता, बल्कि शहीद के मुकुट का पात्र भी नहीं माना जाता? पश्चाताप के इतने महान उदाहरणों को देखकर, और उन्हें ढकने वाली ईश्वर की असीम दया को निहारते हुए, मैं भी, एक पापी, हे सर्व-दयामयी देवी, पश्चातापपूर्वक आपकी दया की ओर मुड़ने का साहस करता हूँ: मेरी ओर सहायता का हाथ बढ़ाएँ और अपने पुत्र और हमारे ईश्वर से प्रार्थना करें कि वे मेरे घोर पापों को क्षमा करें।

जब थियोफिलस ने ये वचन कहे, तब परमेश्वर की अति पवित्र कुँवारी माता, पापियों की सच्ची शरण, निराश लोगों की आशा और उनसे प्रार्थना करने वालों की शीघ्र सहायिका ने उससे कहा:

'हे मनुष्य, स्वीकार कर कि मेरा पुत्र, जिसे मैंने जन्म दिया और जिसे तूने त्याग दिया है, वास्तव में जीवित परमेश्वर का पुत्र, मसीह है, जो जीवितों और मृतकों का न्याय करने आएगा; और तब मैं उसके पास तेरे लिए मध्यस्थता करूँगी, और वह तेरा पश्चाताप स्वीकार करेगा।'

'हे परम धन्य देवी,' थियोफिलस ने उत्तर दिया, 'मैं, जो अयोग्य और दीन हूँ, यह कैसे हिम्मत करूँ कि अपने नीच और अशुद्ध होंठ खोलूँ, जिनसे मैंने, एक तुच्छ और व्यर्थ सम्मान के लिए, आपके पुत्र और अपने ईश्वर, और उनके पवित्र क्रूस का परित्याग किया, मेरी आत्मा की रक्षक, और उनके पवित्र बपतिस्मा से, और अपनी ही लिखावट से, जो मैंने शैतान को दी थी, अपनी अस्वीकृति पर मुहर लगाई, जिससे मैंने इनकार किया।

'बस स्वीकार करो,' परमेश्वर की अति पवित्र माता ने उससे कहा, 'और उसकी दया पर संदेह न करो; वह मानव जाति के प्रति प्रेममय और दयालु है, और जो सच्चे मन से पश्चाताप करते हैं, उनके आँसुओं को स्वीकार करता है: मानव जाति के उद्धार के लिए, उसने मुझसे अवतार लेना उचित समझा और, परमेश्वर होते हुए भी, मनुष्य बन गया।'

तब थियोफिलस ने भय और लज्जा, नम्रता और एक पश्चात्तापी हृदय के साथ, अपना मुँह खोला और ऊँचे स्वर में घोषणा की:

'मैं विश्वास करता हूँ, स्वीकार करता हूँ और त्रिमूर्ति में से एक, हमारे प्रभु यीशु मसीह, जीवते परमेश्वर के पुत्र, की महिमा करता हूँ, जो सभी युगों से पहले पिता से शब्दों से परे तरीके से उत्पन्न हुए, जो युगों के अंत में स्वर्ग से उतर

आए और हमारे उद्धार के लिए पवित्र आत्मा के द्वारा और आप, परम पवित्र कुँवारी मरियम, परमेश्वर की सच्ची माँ, से देहधारी हुए। पूर्णतःईश्वर और पूर्णतःमानव, उन्होंने अपनी स्वैच्छिक इच्छा से हमारे पापों के लिए पीड़ा सहने का चुनाव किया और जीवन-दायक क्रूस के वृक्ष पर अपने अति पवित्र हाथ फैलाए: सच्चे चरवाहे के रूप में, उन्होंने अपनी भेड़ों के लिए अपना जीवन दे दिया, उन्हें दफनाया गया और वे पुनर्जीवित हुए, और आप, हे सर्वशुद्ध कुँवारी, से प्राप्त देह में स्वर्ग में आरोहण किया, और जीवितों और मृतकों का न्याय करने के लिए महिमा में फिर आएँगे। मैं यह सब अपने हृदय और होठों से स्वीकार करता हूँ, और मैं उनकी, अपने ईश्वर की, आराधना करता हूँ। लेकिन मैं आपसे विनती करती हूँ, हे माता! इस दीन आत्मा को तिरिस्कार न करें; मेरे पापी निवेदन को अनसुना न करें; इस दीन प्राणी को न छोड़ें, जो दुष्ट शत्रु द्वारा बहकाया गया और विनाश में फेंका गया है! परन्तु उस से मेरी मध्यस्थता करो जिसे तुमने जन्म दिया, कि वह मेरे बड़े-बड़े पापों को क्षमा करे और मुझे विनाश से बचाए, ताकि मैं भी, उन सभी के साथ जिन्होंने क्षमा प्राप्त की है, हमारे परमेश्वर, जिन्हें तुमने जन्म दिया, और हे परम धन्य कुँवारी, तुम्हारी भी असीम दया का गायन और महिमा करूँ!

उसके पाप के प्रायश्चित के रूप में उसके ये शब्द स्वीकार करते हुए, परमेश्वर की अति पवित्र माता—दया की धारा, खोए हुए लोगों की शरण, परमेश्वर के समक्ष हमारे लिए सच्ची और अनवरत मध्यस्थ, और हमारे उद्धार की प्रतिज्ञा—ने उसे इस प्रकार उत्तर दिया:

'मसीह में तुम्हारे बपतिस्मा के लिए तुम्हारे पश्चाताप पर भरोसा करते हुए, और तुम पर दया करते हुए (क्योंकि मुझे सभी दुखी लोगों के प्रति बहुत करुणा है), मैं अपने पुत्र और अपने परमेश्वर के पास जाऊँगी और उनसे प्रार्थना करूँगी कि वे तुम्हारे पश्चाताप को स्वीकार करें।'

यह कहकर, सर्वपवित्र कुँवारी अदृश्य हो गईं, और दिन निकलने लगा था।

हे, उस पापी के लिए वह रात कितनी धन्य थी, जिसके दौरान उसे परमेश्वर की परम पवित्र माता का ऐसा दर्शन और उनसे लंबी बातचीत करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ!

इस दर्शन के बाद अपने दुख से कुछ राहत और आशा का नवीनीकरण प्राप्त करके, थियोफिलस ने परमेश्वर की अति पवित्र माता की प्रतिमा के सामने और तीन दिन रोते और प्रार्थना करते हुए बिताए, उसे निहारते हुए, उसके सामने साष्टांग दंडवत करते हुए, अपना सिर जमीन पर टिकाते हुए, और यह आशा करते हुए कि प्रभु परमेश्वर की माता की प्रार्थनाओं के द्वारा उसे बचाएंगे। जब तीन दिन बीत गए, तो हमारी आशा और शरण—प्रभु की निर्मल माता—एक बार फिर उनके सामने प्रकट हुईं। इस बार, आनंदित मुख और अपनी चमकती आँखों से थियोफिलस को निहारते हुए, उन्होंने कहा:

'हे ईश्वर के मनुष्य! तेरा पश्चाताप दयालु प्रभु परमेश्वर के अनुग्रह में आ गया है; उन्होंने मेरी खातिर तेरे आँसू स्वीकार किए हैं और तेरी प्रार्थनाएँ सुनी हैं। अब स्वयं ध्यान रखना कि आज से लेकर अपने मरने के दिन तक तू उसी में सच्चे विश्वास को बनाए रखे।'

'सत्य कहती हूँ, मैं इसे संरक्षित करूँगा, हे मेरी अति धन्य माता,' थियोफिलस ने उत्तर दिया, 'और मैं आपकी आज्ञा का उल्लंघन नहीं करूँगा। ईश्वर के बाद, आप मेरी ढाल और मेरी मध्यस्थ हैं, और आप पर ही मैं अपना सारा भरोसा और आशा रखता हूँ।' मैं जानती हूँ, मैं अच्छी तरह जानती हूँ, हे मेरी अति कृपालु माता, कि मनुष्यों के पास आप के सिवाय कोई अन्य सहायक या रक्षक नहीं है; आप पर भरोसा करने वाला कोई भी लज्जित नहीं हुआ है, और आप के द्वारा ईश्वर से प्रार्थना करने वाला कोई भी परित्यक्त नहीं हुआ है। इसलिए मैं भी, एक पापी, आप की उस अक्षय कृपा से विनती करता हूँ, जो हमारी दुर्बलताओं को चंगा करती है: मेरे लिए, जो भटक गया हूँ और बुराई की गहराई में गिर गया हूँ, अपनी दया के द्वार खोलें, और आज्ञा दें कि वह शापित पांडुलिपि मुझे वापस मिल जाए, जिसे मैंने, धोखा खाकर, शैतान को दे दिया था: यह मेरी आत्मा को बहुत कष्ट देती है, और जब तक यह पांडुलिपि शैतान के कब्जे में है, मैं अपने महान दुख से कोई सांत्वना नहीं पा सकता।

जैसे ही उसने ये शब्द बोले, परम पवित्र कन्या अदृश्य हो गईं; तथापि, थियोफिलस पहले की तरह, तीन और दिनों तक उत्कट प्रार्थना में लगा रहा। फिर, अपनी मेहनत से थककर, वह सो गया और, एक सपने में, उसने परमेश्वर की परम पवित्र माता को अपनी पांडुलिपि युक्त एक पट्टी लाते हुए देखा। खुशी से जागने पर, उन्होंने परम पवित्र कन्या को नहीं देखा, बल्कि अपनी छाती पर अपना पांडुलिपि सीलबंद और सुरक्षित पाया। खुशी और भय के मारे, उसका शरीर और भी कमजोर हो गया, और वह, मानो, आधा मृत हो गया। जब वह बाद में होश में आया, तो उसने दयालु प्रभु मसीह और ईश्वर की कृपामयी माता, उसकी सहायक और मध्यस्थ, का कितनी भक्ति से धन्यवाद किया!

अगली सुबह (यह रविवार का दिन था), वह गिरजाघर गया, जहाँ बिशप पूजा का अनुष्ठान कर रहे थे। पवित्र सुसमाचार के पाठ के बाद, वह बिशप के पास गया, जो मंडली पर आशीर्वाद दे रहे थे, और रोते हुए उनके पैरों पर गिर पड़ा, और सुनने की विनती करने लगा, क्योंकि वह सभी उपस्थित लोगों के सामने अपना पश्चाताप प्रकट करना चाहता था। फिर उसने विस्तार से वह सब कुछ बताया जो उसके साथ हुआ था: कि कैसे '' के पद से हटाए जाने ने उसे दुखी किया था; कैसे, अपने दुख में, उसने मसीह ईश्वर और परमेश्वर की अति पवित्र माता का त्याग कर दिया था और, अपने ही हाथों, खुद को शैतान के हवाले कर दिया था; कैसे बाद में, उपवास, प्रार्थना और रोते हुए, उसने परमेश्वर की अति पवित्र माता को देखा, उनसे बात की, अपने पापों की क्षमा प्राप्त की, और कैसे उसकी पांडुलिपि अंततः उसे वापस कर दी गई। लोगों और बिशप की उपस्थिति में यह सब जोर से और विस्तार से बताने के बाद, थियोफिलिस ने बिशप को वह सील किया हुआ चार्टर सौंप दिया जो उसने शैतान को दिया था, और उनसे विनती की कि वे आदेश दें कि इसे जोर से पढ़ा जाए, ताकि सभी उसके पाप के बारे में जान सकें और ईश्वर की दया की महिमा कर सकें, जिसके लिए ईश्वर की माता ने मध्यस्थता की थी। पत्र की मुहर खोलने के बाद, बिशप ने उसे एक डीकन को दे दिया, जो वेदी पर चढ़ा और उसे पढ़ने लगा। और हर कोई इस भयानक घटना पर चकित रह गया।

इस प्रकार, सभी पुरोहितों और मंडली—पुरुष, महिलाएँ और छोटे बच्चे—सभी ने जान लिया कि थियोफिलिस के साथ क्या हुआ था: कैसे वह गिरा और फिर से उठा, और कैसे उसे अपना पांडुलिपि वापस मिल गया। बिशप ने लोगों की ओर मुड़कर, ज़ोर से कहा:

– आओ, हे सभी विश्वासियों, हम परम धन्य और सच्चे परमेश्वर, प्रभु यीशु मसीह की महिमा करें! आओ, हे भक्तिमान और परमेश्वर से प्रेम करने वालों, और इन अद्भुत चमत्कारों को देखो! आओ, हे मसीह के प्रेमियों, और यह समझो कि हमारे परम दयालु प्रभु पापियों की मृत्यु नहीं चाहते, बल्कि उनके पश्चाताप की प्रतीक्षा करते हैं! आओ और देखो, सच्चे विश्वासियों, हार्दिक पश्चाताप, आहों और आँसुओं से कितना कुछ हासिल किया जा सकता है! आप में से कौन, हे पिताओं और भाइयों, दयालु परमेश्वर के महान और अगणनीय धैर्य पर आश्चर्यचकित नहीं होगा! कौन उनकी असीम दया और मानव जाति के प्रति प्रेम से, जो हम पापियों में प्रकट हुआ है, चकित नहीं होगा! सचमुच एक चमत्कार! नबी मूसा को चालीस दिन के उपवास के बाद परमेश्वर से व्यवस्था की पट्टियाँ मिलीं (निर्गमन 24:18, 31:18), जबकि हमारे भाई थियोफिलिस को चालीस दिन के उपवास के बाद अपना पांडुलिपि मिला, जो परमेश्वर की शक्ति और परमेश्वर की माता के मध्यस्थता द्वारा शैतान से छीन ली गई थी! आओ, हम भी, हे बच्चों, प्रभु का धन्यवाद-गीत गाने में उनके साथ शामिल हों, जिन्होंने निर्मल माता के मध्यस्थता द्वारा उनके पश्चाताप को दयापूर्वक स्वीकार किया, जो मानवजाति के लिए परमेश्वर तक जाने का एक सेतु हैं, निराशों की आशा, दुखियों का आश्रय, सच्चा द्वार, जो पापियों के लिए अपनी दया खोलता है जो उस पर दस्तक देते हैं और हमारी प्रार्थनाओं को हमारे ईश्वर के समक्ष लाता है, जो उनसे ही उत्पन्न हुए हैं। मैं और क्या कहूँ, उनकी और उनके पुत्र की महिमा करने के लिए मैं कौन सा गीत गाऊँ? सचमुच, हे प्रभु, आपके कार्य अद्भुत हैं, और आपके चमत्कारों की प्रशंसा करने के लिए कोई भी शब्द पर्याप्त नहीं हैं! सचमुच, *'हे प्रभु, आपके कार्य कितने विविध हैं! तुमने ये सब बुद्धि से बनाए हैं'* (भजन संहिता 103:24)। सचमुच, अब सुसमाचार के वचन दोहराना उचित है: *'सबसे अच्छा वस्त्र ले आओ और उसे पहना दो, और उसकी अँगुली में अँगूठी और उसके पाँवों में जूते पहना दो; और एक मोटा बछड़ा ले आओ और उसे वध कर डालो; आओ, हम खाएँ और आनंद मनाएँ; क्योंकि* यह—हमारा भाई थियोफिलुस—*मर गया था और जीवित हो उठा है; खो गया था और मिल गया है"* (लूका 15:22-24)। जब बिशप ऐसा कह रहे थे, तो थियोफिलिस उनके पैरों में रो रहा था; बिशप ने अपना हाथ बढ़ाकर उसे जमीन से उठा लिया। थेओफिलुस, उठकर, उससे पांडुलिपि को जला देने की विनती करने लगा, लेकिन बिशप ने उसे स्वयं ऐसा करने का आदेश दिया, जो थेओफिलुस ने सभी के सामने किया। उस अधर्मी दस्तावेज़ को जलते हुए देखकर, लोगों ने लंबे समय तक आँसुओं के साथ पुकारा:

'हे प्रभु, दया करें।'

अंत में, लोगों से चुप रहने को कहने के बाद, बिशप ने दैवीय अनुष्ठान जारी रखा और, इसके पूरा होने पर, थियोफिलिस को मसीह के शरीर और रक्त के सबसे शुद्ध और जीवन-दायक रहस्यों का प्रशासन दिया। और तुरंत ही थियोफिलिस का चेहरा सूर्य के समान चमक उठा। जो भी उसके मुखमंडल में आए परिवर्तन को देखने आए थे, उन्होंने परम धन्य परमेश्वर की महिमा की, जो पश्चातापी पापियों को धर्मी ठहराता और पवित्र करता है।

इन सब के बाद, थियोफिलिस उस सर्वपवित्र कन्या मरियम के चर्च में गए, जहाँ उन्होंने पश्चाताप के आँसुओं के साथ उपवास किया था, उन्हें उनकी एक पवित्र दृष्टि प्राप्त हुई थी, और उनके पापों की क्षमा मिली थी: वहाँ उन्होंने

अपने कार्यों के बाद थोड़ी देर विश्राम किया। तीन दिन बाद, यह महसूस करते हुए कि उनका अंत निकट आ गया है, उन्होंने अपनी संपत्ति के संबंध में एक वसीयत बनाई, और आदेश दिया कि सब कुछ गरीबों में बाँट दिया जाए। तब वहाँ उपस्थित भाइयों से विदा लेकर, उसने अपनी धर्मी आत्मा को परमेश्वर और परमेश्वर की माता के हाथों में सौंप दिया। उसे उसी स्थान पर, जहाँ उसने पश्चाताप किया था, परम पवित्र कन्या के पवित्र चित्र के नीचे दफनाया गया।

और मसीह परमेश्वर और परमेश्वर की अति पवित्र माता की दया उनमें महिमामय हुई; उन्हीं को, उनके पुत्र के साथ, हम पापियों द्वारा सम्मान, महिमा, आराधना और धन्यवाद अर्पित हो, जिन्हें उनकी सहायता की सदैव आवश्यकता है, अब और हमेशा और युगों-युगों तक।

'जहाँ तक मेरी बात है, मैं नम्र और पापी यूटकियिन (इस वृत्तांत के लेखक का कहना है), धन्य थियोफिलिस के घर में पला-बढ़ा और, उनकी मध्यस्थता से, पवित्र कैथोलिक चर्च का सदस्य बनने के लिए योग्य समझा गया, – अपने प्रभु की पीड़ा और शोक में उनकी सेवा कर चुका, और उनका सर्वत्र अनुसरण कर चुका, उनके पश्चाताप को अपनी आँखों से देखकर और उसका वृत्तांत उनके ही मुख से अपने कानों से सुनकर: – मैंने यह सब धर्मपरायण लोगों के लाभ के लिए, और हमारे परमेश्वर मसीह की महिमा के लिए, जो युगानुयुग महिमामय हैं, सत्यपूर्वक और निष्ठापूर्वक दर्ज किया है। आमीन।

व्लादिमीर की परमेश्वर की माता की चमत्कारी प्रतिमा का पर्व

व्लादिमीर में परमेश्वर की माता की चमत्कारी प्रतिमा का पर्व[4579]

23 जून को स्मरणोत्सव

1480 में, महा हॉर्ड के नास्तिक खान अख्मत ने ग्रैंड प्रिंस जॉन वासिलीविच[4580] के खिलाफ युद्ध छेड़ने के लिए एक विशाल सेना के साथ उग्रा नदी की ओर चढ़ाई की। मॉस्को पर घेराबंदी का खतरा मंडरा रहा था। तब महाप्रिंस, सर्व रूस के मेट्रोपॉलिटन जेरोंटियस[4581] और अपने आध्यात्मिक पिता, रोस्तोव के आर्चबिशप वासियन[4582] की प्रार्थनाओं और आशीर्वादों से लैस होकर, उग्रा नदी पर तातारों के खिलाफ मार्च किया; दोनों संतों ने महाप्रिंस से आग्रहपूर्वक विनती की कि वे ऑर्थोडॉक्स धर्म की रक्षा के लिए विधर्मियों के खिलाफ बहादुरी से लड़ें[4583] । बहुत समय तक, सेनाएँ निर्णायक कार्रवाई किए बिना एक-दूसरे का सामना करती रहीं। अंतत; परमेश्वर की अति पवित्र माता की मध्यस्थता से, एक अद्भुत चमत्कार हुआ: तातारों पर भय छा गया, और, एक-दूसरे से डरते हुए, वे किसी के पीछा किए बिना भाग गए। इस प्रकार, परम दयालु ईश्वर ने, परमेश्वर की अति पवित्र माता की प्रार्थनाओं के द्वारा, ईसाइयों को रक्तपात के बिना उनके शत्रुओं पर एक असाधारण विजय प्रदान की, और अपनी संपत्ति – मास्को शहर और पूरे रूस को बचाया। जब

[4579] इस दिन (23 जून), मॉस्को में कैथेड्रल ऑफ़ द डॉर्मिशन से स्रेटेंस्की मठ तक एक भव्य जुलूस निकाला जाता है, जिसमें चमत्कारी व्लादिमीर आइकन को ले जाया जाता है। एक समान जुलूस, जिसे सबसे पहले स्थापित किया गया था, 26 अगस्त को 1395 में तैमूरलंग के आक्रमण से रूस की मुक्ति की स्मृति में आयोजित किया जाता है; ईश्वर की माता के भयानक साक्षात्कार से भयभीत होकर, तमरलेन उसी दिन और उसी घड़ी रूसी क्षेत्र से चला गया, जब मस्कोवी लोग कुचकोवो मैदान में घुटने टेककर ईश्वर की माता की चमत्कारी प्रतिमा का अभिवादन कर रहे थे, जिसे ग्रैंड प्रिंस वासिली दिमित्रीविच के आदेश पर व्लादिमीर से मास्को लाया गया था, जिन्होंने शत्रु के विरुद्ध संघर्ष में अपने हथियारों की तुलना में ईश्वर की शक्ति पर अधिक भरोसा किया था। जिस स्थान पर प्रतिमा का स्वागत किया गया था, वहाँ परमेश्वर की माता के चमत्कारी हस्तक्षेप की स्मृति में तथाकथित सेरेन्स्की मठ की स्थापना की गई, जहाँ उपर्युक्त धार्मिक जुलूस आयोजित किए जाते हैं।

[4580] 1462 से 1505 तक महान राजकुमार।

[4581] उन्होंने 1473 से 1489 तक मॉस्को मेट्रोपोलिस का पद संभाला।

[4582] जनवरी 1506 से रोस्तोव के आर्चबिशप; 1515 में निधन हुआ।

[4583] मेट्रोपॉलिटन ने उग्रा पर उनके शिविर में महाप्रिंस को एक परिषद पत्र लिखा, जिसमें उन्हें मसीह-द्वेषी दुश्मन के खिलाफ दृढ़ रहने के लिए कहा गया। लेकिन विशेष साहस और स्पष्टवादिता के साथ, रोस्तोव के संत वासियन ने महा राजकुमार को अख्मत के साथ शांति न करने के लिए प्रोत्साहित किया, जैसा कि 'कुछ धोखेबाजों' ने उन्हें सलाह दी थी, बल्कि 'अगारियों की अधर्मी भाषा' का साहस के साथ सामना करने के लिए कहा, अपने पूर्वज दिमित्री का अनुकरण करते हुए, 'जो चालाक भेड़िया मामई के खिलाफ खड़ा हुआ था'।

ग्रैंड प्रंसि इवान वासलीवचि, अपने पुत्र ग्रैंड प्रंसि जॉन[4584] और अपनी पूरी सेना के साथ मॉस्को लौटे, तो सभी लोग असाधारण आनंद से भर गए, और इस गौरवशाली मुक्ति के लिए ईश्वर और परम पवित्र मसीह की माता की स्तुति करने लगे[4585] । उस समय से, परमेश्वर द्वारा रक्षित मास्को शहर में परमेश्वर की परम पवित्र माता की प्रतिमा, जिसे व्लादिमीर प्रतिमा के नाम से जाना जाता है, के सम्मान में एक नया पर्व स्थापित किया गया; इसलिए, इस दिन, 23 जून को, संपूर्ण विश्व के उद्धारकर्ता, हमारे परमेश्वर मसीह, और उनकी परम पवित्र माता के प्रति महिमा और कृतज्ञता के लिए एक शोभायात्रा आयोजित की जाती है।

ट्रोपारियन, स्वर 4:

आज मास्को का सबसे गौरवशाली नगर, सर्वोच्च रानी से सूर्योदय की भाँति, आपकी चमत्कारिक प्रतिमा प्राप्त करके, उज्ज्वल रूप से चमक रहा है; और अब, जब हम उसकी ओर दौड़ रहे हैं, तो हम प्रार्थना में आपसे इस प्रकार पुकारते हैं: हे अद्भुत सर्वोच्च रानी, परमेश्वर की माता! हमारे परमेश्वर मसीह से प्रार्थना करें, जो आपके द्वारा अवतरित हुए, कि वे इस नगर को, और सभी ईसाई नगरों तथा देशों को, शत्रु की सभी युक्तियों से अक्षुण्ण बचाएँ, और हमारी आत्माओं को बचाएँ, क्योंकि वे दयालु हैं।

कॉन्टाकियन, स्वर 8:

हे विजयी सेनापति, हे ईश्वर द्वारा चुनी गई, क्योंकि हे देवी, हे ईश्वर की माता, आपकी पवित्र प्रतिमा के आगमन से हम बुराई से मुक्त हुए हैं, हम आनंदपूर्वक आपके मिलन का पर्व मनाते हैं, और अपनी परंपरा के अनुसार, हम आपको पुकारते हैं: हे अविवाहित वधू, आनंदित हो।

7 जुलाई

24 जून (पुराना संस्करण)

इसी दिन हम पवित्र शहीदों, रक्त के सात भाइयों—ओरेन्टियस, फर्नासियस, इरोस, फर्मस, फर्मिनियस, करियाकस और लोंगिनस, जो ब्लैक सी (काला सागर) के तटों पर डियोक्लेटियन और मैक्सिमियन के अधीन सैनिक थे और जिन्होंने यातनाएँ सहन कीं—की स्मृति मनाते हैं।

प्रभु के अग्रदूत और बपतिस्मादाता संत योहन के जन्म के लिए सिनाक्सारियन

24 जून को स्मरण किया जाता है

जब धर्म की अस्त-न-हुई सूर्य – हमारे उद्धारकर्ता – ने संसार पर प्रकाश डालना चाहा, और पहले ही स्वर्गों को झुकाकर, सबसे पवित्र कुँवारी गर्भ में निवास किया, उसी क्षण उनके अग्रदूत – संत यूहन्ना अग्रदूत – का जन्म एक बाँझ गर्भ से होने वाला था: पूर्ववर्ती के रूप में, यह उनका कर्तव्य था कि वे प्रभु के आगमन से पहले प्रचार करें और कहें: *'मेरे बाद वह आ रहा है जो मुझसे शक्तिशाली है'* (मरकुस 1:7)।

और इस प्रकार, जब संत एलिजाबेथ के प्रसव का समय आया, तो उसने अपनी वृद्धावस्था में, एक ऐसे गर्भ से एक पुत्र को जन्म दिया था जिसने बहुत पहले ही संतान को जन्म देना बंद कर दिया था, ठीक वैसे ही जैसे प्राचीन काल में सारा ने इसहाक को जन्म दिया था। इस प्रकार एक चमत्कार के बाद दूसरा चमत्कार हुआ: कुँवारी के मसीह को जन्म

[4584] 1498 से महान राजकुमार; 1509 में कैद में रहते हुए मृत्यु हो गई।

[4585] इस चमत्कार के रूसी वंशावलीकारों ने लिखा, 'अपने हथियारों से पैदा होने वाले डर की तुच्छ डींग न बजाओ, नहीं, यह हथियार नहीं थे, न ही मानवीय बुद्धि, बल्कि स्वयं प्रभु हैं जिन्होंने अब रूस को बचाया है।' **इस दिन, वर्कॉल्स के पवित्र और धर्मी आर्टेमियस का निधन दिवस है (उनके जीवन के लिए 20 अक्टूबर देखें)**। इस दिन, पवित्र शहीदों यूस्टोचियस, गैसियस, उरवान और अन्य लोगों का स्मरण दिवस है, जिन्होंने चौथी शताब्दी की शुरुआत में एन्किरिया शहर में मैक्सिमियन के अधीन यातनाएं झेलीं।

देने से पहले, अपनी आयु में वृद्ध हो चुकी एलजिाबेथ ने मसीह के अग्रदूत को जन्म दयिा, ताकि जो लोग एक वृद्ध महलिा से अलौककि जन्म के साक्षी बनें, वे एक कुँवारी से अलौककि जन्म पर वशि्वास कर सकें और अपने आप से कह सकें: 'ईश्वर का सर्वशक्तमिान दैहकि हस्त, वृद्ध महलिा की बाँझपन को ठीक करने के बाद, अक्षुण्ण कुँवारी को एक पवत्रि माता बनाने के लिए पर्याप्त शक्तशिाली है।' यही कारण है कि संसार के उद्धारकर्ता के चमत्कारकि जन्म से पहले अग्रदूत के चमत्कारकि जन्म हुआ। यह इसलिए आवश्यक था ताकि, एक चमत्कार के माध्यम से, संसार दूसरे चमत्कार को ग्रहण करने के लिए तैयार हो सके: एक वृद्ध माँ को देखकर, लोग उस सदा-कुँवारी को देखने में बेहतर सक्षम हो गए जनि्होंने पुत्र को जन्म दयिा था; वृद्ध एलजिाबेथ से इस अद्भुत जन्म का साक्षी बनकर, वे कुँवारी से मसीह के 'अजीब' जन्म की खबर के लिए तैयार हो गए। क्योंकि दोनों ही घटनाओं में, सर्वशक्तमिान परमेश्वर की इच्छा से, जसिके अधीन सारी सृष्टि है, *'जन्म का क्रम प्रकृति के नयिमों पर हावी हो गया'*[4586] ।

जब एलजिाबेथ ने मसीह के अग्रदूत को जन्म दयिा, तो उसके सभी रशि्तेदार, पड़ोसी और परचिति, इस जन्म के बारे में सुनकर उसके साथ आनंदति हुए, क्योंकि प्रभु ने उस पर महान दया दखिाई थी – उसने उससे 'बाँझपन का कलंक' दूर कर दयिा था। इस प्रकार परमेश्वर के दूत, महादूत गब्रयिल के वचन पूरे हुए, जनि्होंने जकर्याह से कहा था: *'तुम्हारी पत्नी एलज़िाबेथ तुम्हारे लिए एक पुत्र को जन्म देगी, और उसके जन्म पर बहुत लोग आनन्दति होंगे'* (लूका 1:13–14)। उस समय, जकर्याह के रशि्तेदारों और उद्धारकर्ता मसीह की प्रबल प्रतीक्षा से भरे लोगों दोनों ने आनन्द मनाया। क्योंकि यद्यपि वे परमेश्वर के पुत्र के अवतार के रहस्य से अनभजि्ञ थे, जो पहले ही हो चुका था, फरि भी पवत्रि आत्मा से प्रेरति उनकी आत्माएँ, अग्रदूत के जन्म की घटना से ही रहस्यमय तरीके से आनंदति हो उठीं, और उन्होंने इस घटना में, मानो, एक नशि्चति आश्वासन देखा कि वे लंबे समय से प्रतीक्षति मसीहा की प्रतीक्षा करेंगे।

पूर्वदूत के जन्म के आठवें दनि, पुरोहति और ज़कारयिास के रशि्तेदार शशिु के खतना समारोह में भाग लेने के लिए उनके घर आए; वे उसे उसके पति के नाम पर – ज़कारयिास – नाम देना चाहते थे। लेकनि शशिु की माँ इस बात के लिए सहमत नहीं हुईं; एक नबी पति होने और एक नबी को जन्म देने के कारण, संत एलजिाबेथ स्वयं भवषि्यवाणी के वरदान से संपन्न थीं और, भवषि्यवाणी की अंतर्दृष्टि से नर्दिेशति होकर, उन्होंने इस बात पर जोर दयिा कि उनके बेटे को वह नाम दयिा जाए जो देवदूत ने आज्ञा दी थी: वह यह बात अपने पति से नहीं सुन सकती थीं, – क्योंकि ज़कार्याह मंदरि से अपने घर लौटे, मानो उनकी जीभ बँध गई हो, और वे अपनी पत्नी को यह नहीं बता सके कि उन्होंने स्वर्गदूत को देखा था, जसिने उन्हें एक पुत्र के गर्भधारण की सूचना दी थी और उसका नाम यूहन्ना रखने का आदेश दयिा था। इस प्रकार, पवत्रि आत्मा द्वारा नर्दिेशति होकर, पवत्रि माता ने शशिु का नाम भवषि्यद्वाणी के अनुसार यूहन्ना रखा – ठीक उसी तरह जैसे उसने पहले भवषि्यद्वाणी के अनुसार अपने पास परमेश्वर की माता के आगमन को पहचाना था, जब उसने कहा था: *'और यह मुझ पर क्यों कयिा गया, कि मेरे प्रभु की माता मेरे पास आई?'* (लूका 1:43)।

तब याजकों और रशि्तेदारों ने इशारों से जकरयिा से पूछना शुरू कयिा कि वह बच्चे का क्या नाम रखना चाहता है। उसने एक पट्टी माँगी और उस पर लखिा: *'उसका नाम यूहन्ना है'* (लूका 1:63)। और तुरंत जकरयिा का मुँह खुल गया और उसकी जीभ मूकता के बंधन से मुक्त हो गई, और वह परमेश्वर की महमिा करते हुए बोलने लगा। वे सभी उन अनेक चमत्कारों को देखकर चकति थे - वे इस बात से हैरान थे कि एक वृद्ध महलिा ने बच्चे को जन्म दयिा था, और यह भी कि पति, जो गूंगा था, अपनी पत्नी से अपने पुत्र के नाम पर सहमत हो गया, और यह कि उस गूंगे व्यक्ति ने, नाम लखिते ही, बोलना शुरू कर दयिा और अपनी जीभ से वही उच्चारति कयिा जो उसने अपने हाथ से लखिा था, – मानो 'योहान' नाम उसके पति के होठों की चाबी हो, जो ज़कार्याह द्वारा वह नाम लखिने के बाद, परमेश्वर की महमिा करने के लिए खुले। ज़कार्याह के वचन सुनकर, सभी चकति रह गए और और भी अधकि वस्मिति हो गए, और उन्होंने यहूदयिा के ऊपरी प्रदेश, अर्थात् हेब्रोन[4587] के पवत्रि शहर की सीमाओं के भीतर, जहाँ ज़कार्याह का घर स्थति था, में जो कुछ भी उन्होंने देखा और सुना था, सब कुछ बत।

[4586] यह अभव्यिक्त थियोटोकोस पर धर्मशास्त्रीय प्रबंध से ली गई है।

[4587] हेब्रोन (जसिे अब अरबों द्वारा अल-खलील कहा जाता है) फलिस्तिीन के दक्षणि में स्थति एक शहर है, जो एशयिा के सबसे प्राचीन शहरों में से एक है। यह अब्राहम के समय से ही एक प्राचीन शहर के रूप में जाना जाता था और, फ्लावयिस (एक यहूदी इतहिासकार जो ईसाई युग की शुरुआत में रहते थे) के अनुसार, उनके समय में ही इसे 2,300 साल पुराना माना जाता था। यह शहर लंबे समय से यहूदयिों द्वारा पवत्रि माना जाता रहा है, क्योंकि यह अब्राहम और सारा, इसहाक और रेबेका, और याकूब और लेहा की कब्रों का स्थल है। कॉन्स्टेंटनि द ग्रेट के दनिों में, अब्राहम की दफन गुफा के ऊपर एक चर्च बनाया गया था, जसिे मुसलमानों ने बाद में मस्जदि में बदल दयिा है। यह शहर स्वयं यरूशलेम से एक हजार फीट

यह शहर, अपने आसपास के क्षेत्र के साथ, योशुआ के दिनों से ही हारून के याजक कुल के लिए अलग रखा गया था। यह यरूशलेम से आठ घंटे की यात्रा पर और बेतलहम से थोड़ी आगे ऊँची भूमि पर स्थित था। इसे 'पहाड़ी शहर' कहा जाता था क्योंकि यह ऊँचे पहाड़ों पर बसा था; इसके अलावा, इसके आसपास के क्षेत्र को 'पहाड़ी देश' के नाम से जाना जाता था, जैसा कि धन्य कुँवारी मरियम की अपनी चचेरी बहन एलिजाबेथ के पास यात्रा के सुसमाचार वृत्तांत में वर्णित है: *'उन दिनों मरियम उठकर* (गलील के नासरत से) *शीघ्रता से पहाड़ी प्रदेश में, यहूदा के एक नगर,* अर्थात् हेब्रोन को *गई, और जकर्याह के घर में जाकर एलिज़ाबेथ का नमस्कार किया'* (लूका 1:39–40)।

इस प्रकार, उपरोक्त सभी आश्चर्यजनक और चमत्कारिक घटनाएँ यहीं हेब्रोन में, यहूदा के कुल के पहाड़ी प्रदेश के बीच में घटीं। और जिन्होंने भी इन घटनाओं के बारे में सुना, वे बहुत आश्चर्यचकित हुए और सोचने लगे: *'यह बच्चा बड़ा होकर क्या होगा?'* (लूका 1:66)।

और प्रभु का हाथ उस नवजात शिशु के साथ था, जो उसमें परमेश्वर की कृपा के काम को बढ़ा रहा था और उसे हेरोद की तलवार से बचा रहा था। क्योंकि यूहन्ना के चमत्कारिक जन्म की खबर हेरोद तक भी पहुँची, और वह इस पर बहुत चकित हुआ, और अपने मन में कहने लगा, *'यह बच्चा क्या बनेगा!'* जब हमारे प्रभु यीशु मसीह का जन्म यहूदिया के बेतलहम में हुआ, और पूर्व के[4588] से मगोग आए और यहूदियों के नवजात राजा के बारे में पूछताछ करने लगे, तो हेरोद ने बेतलहम में सैनिक भेजकर वहाँ के सभी नर बच्चों को मार डालने का आदेश दिया, – उसे जकरियाह के पुत्र यूहन्ना की भी याद आई, जिसके बारे में उसने कई अद्भुत बातें सुनी थीं, और वह सोचने लगा: 'क्या वही यहूदियों का भावी राजा नहीं है?' इसलिए, द्वेष से भरकर, उसने उसे भी मारने का निश्चय किया, और इस उद्देश्य के लिए उसने जानबूझकर हत्यारों को हेब्रोन में जकरियाह के घर भेजा। हालाँकि, भेजे गए लोगों को संत योहन नहीं मिला।

जब बेतलेहेम में बच्चों का वह निर्दयी कत्लेआम शुरू हुआ, तो बेतलेहेम की चीखें और विलाप दाऊद के नगर से थोड़ी दूरी पर स्थित हेब्रोन तक पहुँच गए; और वहाँ उन्हें बेतलेहेम में रोने का कारण पता चला। संत एलिजाबेथ, लड़के जॉन को अपने साथ लेकर, तुरंत ही रेगिस्तान के सबसे ऊँचे पहाड़ों की ओर तेजी से चल पड़ीं (उस समय, संत जकरियाह यरूशलेम में अपनी बारी की सेवा पूरा कर रहे थे)। पहाड़ों में छिपकर, संत एलिजाबेथ ने आँसुओं के साथ ईश्वर से प्रार्थना की, और उनसे अपने और लड़के की रक्षा करने का आग्रह किया। और जब, पहाड़ों की ऊँचाइयों से, उन्होंने सैनिकों को आते देखा, तो उन्होंने चट्टानी चट्टान की ओर मुड़कर पुकारा:

'हे परमेश्वर के पर्वत! इस माँ और उसके बच्चे को आश्रय दो!'

और तुरंत पहाड़ फट गया, एलिजाबेथ और उसके पुत्र यूहन्ना को अपने भीतर ले लिया, और इस प्रकार उन्हें उन हत्यारों से छिपा दिया जो उन पर घिर रहे थे। इसलिए सैनिकों ने, जब उन्हें वह नहीं मिला जिसकी वे तलाश कर रहे थे, तो खाली हाथ उस व्यक्ति के पास लौट गए जिसने उन्हें भेजा था। तब हेरोदेस ने मंदिर में जकरियाह के पास एक सिपाही भेजा और उससे कहा, 'मुझे अपना पुत्र दे दो।'

संत जकरियाह ने उत्तर दिया:

'मैं अब इस्राएल के प्रभु परमेश्वर की सेवा करता हूँ, परन्तु जहाँ मेरा पुत्र इस समय है, वह मुझे नहीं पता।'

हेरोद को बहुत क्रोध आया और उसने फिर से एक सैनिक ज़करियाह के पास भेजा और उससे कहा कि अगर उसने अपने बेटे को नहीं सौंपा, तो वह खुद मर जाएगा। और सैनिक उसके पास जानवरों की तरह क्रूर होकर आए, जो उस अधर्मी राजा की आज्ञा को पूरा करने के लिए तैयार थे, और उन्होंने परमेश्वर के याजक से क्रोध में कहा:

'तुमने अपने पुत्र को कहाँ छिपाया है? उसे हमें सौंप दो, क्योंकि राजा ने आज्ञा दी है कि यदि तुम अपने पुत्र को नहीं सौंपोगे तो तुम्हें तुरंत मार डाला जाएगा।'

ज़करियाह ने साहसपूर्वक उत्तर दिया:

'तुम मेरे शरीर को तो मार डालोगे, परन्तु प्रभु मेरी आत्मा को ग्रहण करेगा।'

की ऊँचाई पर, एक गहरी और संकरी घाटी में स्थित है, जो दोनों ओर से पहाड़ों से घिरा हुआ है। पूरी घाटी और पहाड़ियों की ढलान बागानों से ढकी हुई है - जैतून, अंजीर, खुबानी, अनार और अंगूर। वर्तमान में, इस कस्बे की आबादी लगभग 10,000 है, जो कांच बनाने, कृषि, फल उगाने और शराब बनाने में लगे हुए हैं।

[4588] प्राचीन काल में, 'मगी' शब्द का अर्थ उन बुद्धिमान पुरुषों से था जो प्रकृति की छिपी हुई शक्तियों, खगोलीय पिंडों और इसी तरह की अन्य चीजों का ज्ञान रखते थे। मसीह की पूजा करने आए मगी, ऐसा प्रतीत होता है, फारस के थे। वे ज्योतिषी थे, यानी वे तारों की सेवा करते थे और खगोलीय पिंडों का अवलोकन करते थे। स्पष्ट रूप से, वे सदाचार वाले लोग भी थे, इसीलिए उन्हें ईश्वर से विशेष प्रकटीकरणों के योग्य माना गया।

और तुरंत ही हत्यारों ने, उस नरि्दयी आदेश का पालन करते हुए, उस संत पर क्रूरता से हमला कयिा और उसे चर्च और वेदी के बीच मार डाला (मत्ती 23:35)। उनका बहा हुआ खून संगमरमर में समा गया और पत्थर की तरह कठोर हो गया, जो हेरोद के अपराध और उसकी शाश्वत नदिा का गवाह है।

इस बीच, यूहन्ना के साथ परमेश्वर द्वारा छपिाई गई एलज़िाबेथ पहाड़ की दरार में रही। वहाँ, परमेश्वर की आज्ञा से, उनके लिए एक गुफा बनी; उसके पास एक झरना नकिला और एक खजूर का पेड़ उगा, जो फलों से लदा हुआ था। जब भी भोजन का समय आता, तो वह पेड़ झुक जाता; और जब वे फल खा-पचाकर तृप्त हो जाते, तो वह फरि से सीधा हो जाता।

ज़कार्याह की हत्या के चालीस दनि बाद, संत एलजिाबेथ का उपर्युक्त गुफा में नधिन हो गया। उस समय से, संत जॉन का पालन-पोषण एक स्वर्गदूत द्वारा तब तक कयिा गया जब तक वह वयस्क नहीं हो गए, और उन्हें इस्राएल के लोगों के सामने प्रकट होने के दनि तक सुरक्षति रखा गया। इस प्रकार ईश्वर के हाथ ने संत योहन की रक्षा और संरक्षण कयिा; वे प्रभु के मुख के सामने, एलयिाह की आत्मा और सामर्थ्य में, उस की आने वाली राह तैयार करें, जो मानव जाति को बचाने आ रहा है। इन सब के लिए, मसीह, हमारे ईश्वर और उद्धारकर्ता, पिता और पवत्रि आत्मा के साथ, युगानुयुग महमिान्वति हों। आमीन।

ट्रोपारयिन, स्वर 4:

हे मसीह के आगमन के भवष्यिवक्ता और अग्रदूत, हम आपको प्रेम से सम्मानति करते हुए भी, आपको यथोचति रूप से प्रशंसा करने में असमर्थ हैं: क्योंकि आपको जन्म देने वाली की बाँझपन और आपके पिता की मौनता, आपके गौरवशाली और सम्मानजनक जन्म से दूर हो गई है, और परमेश्वर के पुत्र का अवतार संसार में घोषति हो गया है।

कॉन्टाकयिन, स्वर 3:

आज, बाँझ स्त्री मसीह के अग्रदूत को जन्म देती है, और उसमें हर भवष्यिवाणी की पूर्ति है; क्योंकि भवष्यिद्वक्तों ने उसकी भवष्यिवाणी की थी, और जॉर्डन में उस पर अपना हाथ रखकर, उसे परमेश्वर के वचन के भवष्यिद्वक्ता, प्रचारक और अग्रदूत के रूप में प्रकट कयिा गया।

प्रभु के भवष्यिवक्ता, अग्रदूत और बपतस्मिादाता सन्त यूहन्ना के जन्म पर सन्त जॉन क्राइसोस्टोम के वचन

24 जून को स्मरणोत्सव

यह पर्व और सार्वभौमकि आनंद का अति उपयुक्त दनि है, जसि पर गब्रयिल की सेवा और जकरयिाह का याजकत्व मेरे मन में आया है, और मैं उस पर मनन करता हूँ जसि उसके अवश्विास के कारण मौन की सज़ा दी गई थी। आपने सुसमाचार-लेखक लूका को यह कहते सुना होगा कि कैसे धर्मी जकरयिाह, जब *'याजकों की प्रथा के अनुसार, पर्से उसे प्रभु के मंदरि में धूप जलाने का भाग मलिा, तो वह परमेश्वर के मंदरि में प्रवेश कयिा, जबकि लोगों की सारी भीड़ धूप जलाने के समय बाहर प्रार्थना कर रही थी।* और देखो, *प्रभु का एक स्वर्गदूत उसे दखिाई दयिा, जो धूप के वेदी के दाहनिी ओर खड़ा था। जब जकर्याह ने उसे देखा, तो वह घबरा गया, और उस पर भय छा गया। परन्तु स्वर्गदूत ने उससे कहा, 'ज़ेखर्याह, डर न कर, क्योंकि तेरी प्रार्थना सुन ली गई है, और तेरी पत्नी एलज़िबेथ तुझसे एक पुत्र को जन्म देगी, और उसका नाम यूहन्ना रखना'* (लूका 1:9–13)।

ओह, क्या अजीब और रहस्यमय चमत्कार है! ज़कारयिाह का स्वर्गदूत पर आपत्ति जताना सही था। उसने अपने लिए सांत्वना के लिए एक चीज़ माँगी थी, पर उसे दूसरी मलिी; उसने लोगों के लिए प्रार्थना की, पर उसे एक पुत्र का पिता कहा गया; उसने पापों की क्षमा माँगी, पर उसे यह वादा मलिा कि उसकी पत्नी की बाँझ कोख ठीक हो जाएगी। ज़कारयिाह एलज़िाबेथ के गर्भवती होने की इच्छा से भी अधकि पापयिों की आत्माओं के चंगा होने की इच्छा रखता था। ज़कारयिाह का चकति और भयभीत होना स्वाभावकि था, और जैसे ही उन्होंने स्वर्गदूत को देखा, उन्होंने अपने मन में कहा: 'इस

मनुष्य का आना अजीब है, उसका वचन अजीब है! यह कौन है जो नडिर होकर पवत्रि मन्दरि में प्रवेश करता है? यह कौन है जो धूप के वेदी के दाहनि ओर खड़ा है? यह कौन है जो एक ऐसे रूप में चमकता है जैसा मैंने पहले कभी नहीं देखा? यह कौन है? मैंने न तो कभी पंखों वाला आदमी देखा है, और न ही मानव रूप में कोई पक्षी; तो फरि, यह कौन है जो मेरे मन में भय भर रहा है? यह कौन है—जसिके होठों पर प्रकाश है, जो महान बातों की बात करता है जबकि उसके होंठ सीले रहते हैं? यह कौन है—मेरी सेवा का प्रहरी? वह कौन है जो मेरी मध्यस्थता में बाधा डाल रहा है? बाहर प्रार्थना कर रहे लोग स्वर्ग के राजा का उत्तर लेकर मेरे आने का इंतज़ार कर रहे हैं, फरि भी यह व्यक्ति मुझे भीतर ही रोक रहा है; मेरे माध्यम से उन्होंने राजा से प्रार्थना की, अपने पापों की क्षमा याचना की; इसीलिए मैं प्रार्थना करता हूँ, लोगों की इच्छा पूरी करने के लिए, अपनी भेड़ों के काम को प्रदर्शति करने के लिए; अत; हे जो भी तू हो, जो मुझे डरा रहा है, रुक जा! यदि आप ईश्वर द्वारा भेजे गए देवदूत हैं, तो मेरे कार्य में मेरी सहायता करें; बाहर रो रहे लोगों पर दया करें; जो शोक मना रहे हैं, उनके साथ शोक करें। लोगों को क्या लाभ होगा यदि मेरा एक पुत्र हो जाए? क्या उपयोग है यदि एलजिाबेथ किसी बच्चे का पालन-पोषण करे? क्या लाभ है यदि मैं एक उत्तराधिकारी छोड़ जाऊँ? ओ मेरे भय, जो भी तू है, मुझसे दूर हो जा! हम बूढ़े हो गए हैं; संतानोत्पत्ति का समय बीत चुका है; विवाह की कामना मुरझा चुकी है; समय ने जोश को ठंडा कर दिया है; हम दोनों मलिन के लिए मृतक समान हैं; जवानी नहीं खिली—तो फरि बुढ़ापा कैसे फल देगा?

ज़ेचरियाह ने यही सोचा। लेकिन स्वर्गदूत उससे कहता है, जैसा कि आपने अभी सुना: 'डरो मत, ज़ेचरियाह'; अपने विचारों से परेशान मत हो; मैं प्रकाश का स्वर्गदूत हूँ, अँधेरे का नहीं; मैं गब्रियल हूँ, स्वर्ग के राजा की सेवा में राजकुमारों में से एक; मैं एक आज्ञा का पालन कर रहा हूँ – मैं अपनी मर्जी से कुछ नहीं करता; मुझे यह तुम्हें प्रकट करने के लिए भेजा गया है, तुम्हें हानि पहुँचाने के लिए नहीं; मैं एक रूप धारण किए हुए हूँ, न कि तुम्हारे सामने नग्न प्राणी के रूप में प्रकट हुआ हूँ; जिसने मुझे भेजा है, वह तुम्हारे प्राणों को बचाता है; डरो मत, क्योंकि मुझे तुम्हें शुभ समाचार देने के लिए भेजा गया है, न कि चिकित करने के लिए; तुम वृद्धावस्था, और सफेद बालों वाली बाँझपन, और एक बाँझ गर्भ पर विजय प्राप्त करोगे; और अपनी इच्छा से कौन जन्म देता है? यह परमेश्वर का उपहार है, न कि कोई मानवीय आविष्कार; क्या तुमने प्रभु के वचन नहीं सुने: 'मैं मनुष्य का सृष्टा हूँ, *और वही जो मनुष्य के भीतर उसकी आत्मा को नेतृत्व करता है*' (जकर्याह 12:1)। क्या तुम विश्वास नहीं करते, जकर्याह? और आदम कैसे बनाया गया, हव्वा कैसे बनी, इसहाक कैसे पैदा हुआ? अब्राहम अपनी आज्ञाकारिता में चूका नहीं; फरि भी तुम, याजक, विश्वास नहीं करते! क्या परमेश्वर का हर वचन शक्तिहीन है, ज़ेकार्याह? तुम अपने वृद्धावस्था के कारण आपत्ति करते हो, हे वृद्ध पुरुष—तुम देह के क्षय को परमेश्वर से भी अधिक शक्तिशाली मानते हो। यदि तुमने अब्राहम के उदाहरण को न देखा होता, तो तुम्हें गंभीर संदेह होते; तुम प्रकृति की मदद पर भरोसा करते हो, और इस सच्चे दैवीय वादे पर विश्वास नहीं करते, बल्कि संदेह करते और बहस करते हो? तुम थोड़ा माँगते हो, और बहुत कुछ प्राप्त करते हो। आप केवल यहूदी लोगों के लिए प्रार्थना करते हैं, जबकि मैं आपको उस एक की शुभ-सूचना देता हूँ जो सभी राष्ट्रों को उद्धार के लिए तैयार करेगा।

ज़कारियाह ने यह सुनकर, अपनी दृष्टि को थोड़ा हटाते हुए, स्वर्गदूत से उत्तर दिया: 'हे स्वर्गदूत, तुम क्या कहते हो? क्या मेरी पत्नी पुत्रवती होगी? और फरि—क्या मैंने इसके लिए प्रार्थना की है, या क्या मैं अपनी बारी में धूप जलाता हूँ ताकि मैं लोगों के सामने अपनी प्रजनन क्षमता का प्रचार कर सकूँ? मैं पापों की क्षमा के लिए प्रार्थना करता हूँ; क्या मैं, इसके अलावा, बाँझपन के इलाज की कामना करूँ? मैं लोगों के लिए राहत चाहता हूँ; निस्संदेह एलज़िाबेथ के लिए यह कोई बोझ नहीं है? मैं घायलों के ठीक होने के लिए प्रार्थना करता हूँ; निस्संदेह मुरझाए हुए स्तनों को दूध से भरपूर करने के लिए नहीं? आप क्या कह रहे हैं, देवदूत? क्या मेरी पत्नी को पुत्र होगा? और बाहर प्रार्थना करने वालों को इससे क्या लाभ है? निश्चय ही, यह सुनकर वे मुझे पत्थर नहीं मारेंगे, यह कहते हुए कि मैं न तो उनके लिए और न ही मोक्ष की सामान्य भलाई के लिए, बल्कि केवल अपने लिए महापुजारी बन रहा हूँ; कि मैंने कोई आशीर्वाद नहीं, बल्कि एक पुत्र स्वीकार किया है? मैं अब संतान के बारे में नहीं सोचता; दूर हो जाओ! मेरी अब यह इच्छा नहीं है; जिसके लिए मैंने प्रार्थना की थी, वह मुझे नहीं मिला; और अब तुम मुझे एक बात के बजाय दूसरी बात समझा रहे हो; क्या समय के साथ वृद्धावस्था खत्म नहीं हो गई है? हम लाठी के बिना नहीं चल सकते, और अब हमें संतान पैदा करना शुरू करने का आदेश कैसे दिया जाता है? वृद्धावस्था प्रकृति को अस्वीकार करती है; यह मामला आस्था से परे है; हम कब्र की ओर देख रहे हैं, और क्या हमें एक दाई रखनी चाहिए? नहीं, मैं अब बच्चों के बारे में बिल्कुल नहीं सोचता; मैं लोगों की मोक्ष, जनजाति की खुशी, हमारे दुश्मनों के वश में होने और शहर की समृद्धि की कामना करता हूँ, न कि किसी बच्चे के रोने, उसके लपेटने और खिलाने की; मैं इस पर दूसरी बार भी विचार नहीं करता। मैं एक प्राकृतिक पुत्र का पिता कैसे बन सकता हूँ? वृद्धावस्था

मुझसे आस्था छीन लेती है; यह मामला प्रकृति से परे है; मैं एक लाठी के सहारे ऐसे चलता हूँ मानो वह एक घोड़ा हो, और तुम मुझे विवाह शय्या की ओर धकेलते हो, जबकि मेरा पूरा शरीर एक ताबूत बन गया है? मैं इस बात से कैसे आश्वस्त हो सकता हूँ, मुझसे कहो, हे महान गैब्रियल? मुझसे कहो, मैं इस बात से कैसे आश्वस्त हो सकता हूँ? देखो, मेरे अंग कांप रहे हैं; देखो, अपने वृद्धावस्था में हम दोनों पृथ्वी की ओर ताक रहे हैं। यदि एक जवान और दूसरा बूढ़ा होता, तो कही गई बात में कुछ आशा होती; अब हमारे दोनों शरीर दुर्बल हैं; हम फसल काटने के समय पके हुए अनाज की बालियों की तरह मृत्यु की दरांती के सिवा और कुछ की उम्मीद नहीं करते; हे प्रभु गब्रियल, यदि आप इस सब में सत्य बोलते हैं, तो मुझे पहले से कोई संकेत दें, मुझे वादे किए गए चमत्कार का प्रमाण दें। मैं इस बात का आश्वस्त कैसे हो सकता हूँ? अगर काठी पर फूल नहीं फूटा होता तो हारून विश्वास नहीं करते; अगर मूसा का हाथ सफेद नहीं हो गया होता तो वे आश्वस्त नहीं होते; अगर गीदोन के ऊन पर ओस नहीं पड़ी होती तो वे नहीं समझते; अगर हिजकियाह के लिए सूरज पीछे नहीं लौटा होता तो वे इसे स्वीकार नहीं करते; मैं इस बात से कैसे आश्वस्त हो सकता हूँ? मुझे एक संकेत दें, और मैं एक जवान व्यक्ति की तरह आनंदित होऊँगा; मुझे एक संकेत दें ताकि एलिजाबेथ, सारा की तरह, व्यर्थ में न हँसे; मैं इस बात का आश्वस्त कैसे होऊँ, महादूत संदेशवाहक? आपके मेरे लिए शब्द कैसे स्पष्ट हो सकते हैं? यदि मैं दूसरा अब्राहम हूँ, यदि अब्राहम की विशेषताएँ मेरी भी हों, तो मेरे घर में प्रवेश करो, और मैं तुम्हारे लंबे सफर के बाद तुम्हारे पैर धोऊँगा, और तुम्हें रहस्य से भरा भोजन परोसूँगा; एलिजाबेथ चर्च के प्रतीक के रूप में तीन सेतस आटा गूंथेगी; बछड़े से प्रार्थना करो कि वह तुम्हें एक पुत्र दे। हे स्वर्ग से हमें महिमामय शुभ समाचार लाने वाले, मैं इस बात का आश्वस्त कैसे होऊँ? हे देवदूत, आप मेरे पुत्र के नाम की भविष्यवाणी क्यों करते हैं और उस व्यक्ति के गुणों का वर्णन क्यों करते हैं जो अभी अस्तित्व में भी नहीं है? मुझे वह दिखाओ जो प्रकृति से परे है, ताकि मैं उस पर विश्वास कर सकूँ जो प्रकृति के विपरीत है। यदि आकाश एक तम्बू बन जाए, और मैं नया हो जाऊँ; यदि समुद्र बदल जाए, और मेरी पत्नी एलिज़ाबेथ माँ बन जाए; यदि सूर्य को रोका जाए, और सूखी स्तनों से दूध निकले; यदि चंद्रमा आकाश से गिर जाए, और बाँझ गर्भ भीग जाए। मैं इस बात का विश्वास कैसे करूँ? *'मुझे यह कैसे पता चलेगा? क्योंकि मैं बूढ़ा हूँ और मेरी पत्नी भी काफी वृद्ध है'* (लूका 1:18)।

तब स्वर्गदूत ने ज़कारिया से कहा: तुम परमेश्वर से एक गारंटी की मांग कर रहे हो। क्या तुम कमज़ोरी को प्रभु के वादे से ज़्यादा मज़बूत मानते हो? क्या तुम अच्छी खबर लाने वाले से उसके बोलना पूरा होने से पहले ही सवाल करने से नहीं डरते? तुम कहते हो, 'मैं इसे लेकर कैसे आश्वस्त हो सकता हूँ?' क्या तुम्हें मिस्र में फिरौन को डराने के लिए भेजा जा रहा है? ज़ेकरयाह, तुम कहते हो, 'मुझे इसकी कैसे निश्चय हो सकता है?' क्या परमेश्वर कोई अलौकिक कार्य नहीं करता? तुम प्रकृति से एकरूपता की मांग करते हो, फिर भी दिव्य आश्चर्यों को देखने में असफल रहते हो। मुझे बताओ, ज़ेकरयाह, पृथ्वी के स्तंभ किस पर स्थापित हैं? स्वर्ग का गुंबद किससे टिका हुआ है? बादलों के भंडार कहाँ बनते हैं? बारिश की बूँदें कहाँ बनती हैं? बर्फ के फाहे कहाँ बनते हैं? सूर्य के मार्ग को कौन निर्देशित करता है? चंद्रमा के क्षय को कौन सीमा देता है? तारों की भीड़ को कौन गिन सकता है? तूफ़ान के दौरान रेत से समुद्र को कैसे रोका जाता है? गर्म धाराएँ कैसे मिलती हैं? कोहरा कैसे बनता है? गर्भ में मानव कैसे बनता है? और ऐसा क्यों है कि स्त्रीलिंग, पुल्लिंग से कमजोर साबित होता है? 'मैं इस बात का विश्वास कैसे करूँ?' तुम कहते हो, ज़कारियाह। तुम प्रकृति के नियमों की तलाश करते हो; ईश्वर का कार्य कहाँ है? क्या तुम यह विश्वास नहीं करते कि एक बाँझ महिला जन्म दे सकती है? तो फिर, अगर तुम सुनो कि एक कुँवारी सभी अपेक्षाओं के विपरीत जन्म देती है तो क्या होगा? और क्या पूर्व का अविश्वास विश्वास बन सकता है? और क्या अब अविश्वास को बाँझपन के कारण दंडित किया जाता है, ताकि आप कुँवारी के संबंध में चमत्कार पर संदेह न करें: *'तुम चुप रहोगे और बोल नहीं पाओगे'* (लूका 1:20)। हे दयालु दंड, जो और भी शीघ्रता से सुधार लाता है! दूत संदेह करने वाली आवाज़ को होश में लाता है, अहंकारी जीभ को रोकता है: *'उसने इशारों से उनसे बात की, और मूक बना रहा।'* सुसमाचार लेखक ने भी इसे अच्छी तरह से दर्ज किया है – *'रुक गया'*; मौन उस आवाज़ की प्रतीक्षा कर रहा है जो अभी जानी है: जकरियाह जॉन की प्रतीक्षा कर रहे हैं, बूढ़ा अपने पुत्र की प्रतीक्षा कर रहा है, याजक नबी की प्रतीक्षा कर रहा है। इसी से स्वर्गदूत कहते हैं: चूँकि तुम, एक अविश्वासी के रूप में, परमेश्वर से एक संकेत चाहते हो, तो अपने ही शरीर में कोड़े की मार का संकेत स्वीकार करो: *'तुम चुप रहोगे और तब तक बोल नहीं पाओगे जब तक यह दिन पूरा नहीं हो* जाता'। जहाँ विरोध का हथियार है, वहाँ प्रतिशोध है; जहाँ जल्दबाज़ी भरी धृष्टता है, वहाँ एक सुधारात्मक लगाम है; जहाँ अभद्रता थी, वहाँ दंड है। ज़ेकरयाह, परमेश्वर ने चाहा कि तुम इस चमत्कार के अग्रदूत बनो: स्वर्ग के राजा की सेनाओं का सेनापति, और संसार के पाप से मुक्ति का अग्रदूत, जन्म ले रहा है। चूँकि तुमने अपने शरीर की दुर्बलता को प्रभु के वचन पर हावी होने दिया है, इसलिये तुम *'उस दिन तक मौन रहोगे और बोल नहीं पाओगे*

जब तक यह पूरा नहीं हो जाता, क्योंकि तुमने मेरे वचन पर विश्वास नहीं किया, जो समय आने पर पूरे होंगे'। क्या तुम देखते हो कि विश्वास के बिना, जो कुछ भी किया जाना चाहिए, वह पूरा नहीं होता?

जैसे ही ज़कार्याह ने ये वचन सुने, वह अपने अविश्वास के दंड स्वरूप, तुरंत मौन होकर मंदिर से निकल गया। अरे आश्चर्य! वह दूसरों को छुटकारा दिलाने के लिए भीतर गया था, परन्तु स्वयं दण्डित होकर निकला; धार्मिक अगारबत्ती चढ़ाते समय, वह निर्वासन का चिह्न लिए हुए था। लोग उनसे कुछ अच्छा सुनने का इंतजार कर रहे थे, लेकिन उन्होंने इशारा किया: 'मुझसे कोई न पूछे; मुझे प्रभु के क्रोध का भय है।' हे अद्भुत कर्म! ज़कारिया मौन हो गए, और एलिज़ाबेथ को समृद्धि मिली; जीभ मौन हो गई, और गर्भ धारण कर लिया; गर्भ की बीमारी जीभ में चली गई; वाणी मौन हो गई, और अजन्मा शिशु मुक्त हो गया; ज़कारिया मौन हैं, और यूहन्ना आनंद से कूदता है।

जैसे ही बाँझ स्त्री ने कुँवारी को देखा, और प्रभात की किरण ने सूर्य को परखा, वैसे ही यूहन्ना अपनी माँ के गर्भ में ही प्रबलता से उछला, और प्रकृति की सुस्ती पर ताना मारा: 'मैं,' वह कहता है, 'प्रभु का अग्रदूत हूँ; तो फिर मैं अपने साथी बंदियों की तरह बेड़ियों में क्यों जकड़ा हूँ?' मैं जन्म के क्षण को शीघ्र करूँगा; मैं प्रसव का इंतजार नहीं करूँगा, कहीं ऐसा न हो कि मैं अपनी गति खो दूँ, कहीं ऐसा न हो कि प्रभु को बंदी दास द्वारा रोक लिया जाए, कहीं ऐसा न हो कि प्रकृति का क्रम व्यवस्था का उल्लंघन बन जाए; मैंने उस एक को पहचान लिया है जो उपस्थिति हैं, और मैं इस मौन को सहन नहीं कर सकता; मैंने उसको पहचान लिया है जिसने मुझे उसके सामने भेजकर, उसके आगमन का मार्ग तैयार करने के लिए भेजा है; मैं प्रकृति के बंधनों को हिला दूँगा, क्योंकि मैं उपदेश देने के लिए आतुर हूँ। हे अद्भुत कर्म और चमत्कार! जो स्वर्ग के स्वर्गदूत नहीं जानते थे, वह गर्भ में वहन किया गया यूहन्ना जान गया और अपनी माँ से कह दिया। उन्हें सिंहासनों द्वारा नहीं देखा गया, और आने वाले परमेश्वर, जिन्हें गर्भ में धारण किया गया था, उनसे पहले नहीं आए; उन्होंने अपनी योजना का रहस्य अधिपतियों से छिपाया, परन्तु उसे गर्भ में धारण किए हुए एक को प्रकट किया; और वह शुभ समाचार जिसके साथ महादूत परमेश्वर की माता के पास आए, वह उसके भीतर कूदते शिशु से प्रेरित था। हमारी जाति के उद्धारकर्ता, गर्भ में ही रहते हुए, अपने मित्र यूहन्ना के पास आए; और यह स्पष्ट था कि सृष्टिकर्ता अपनी सृष्टि का अभिवादन कर रहे थे, कि राजा एक योद्धा के तम्बू में वास कर रहे थे, कि प्रभु एक दास के घर में प्रवेश कर रहे थे। योहन ने गर्भ के भीतर से उस एक को देखा जो गर्भ में था, और प्रकृति की सीमाओं से परे जाने का प्रयास किया, यह कहते हुए: 'मैं प्रकृति से सीमित किसी प्रभु को नहीं जानता, न ही मैं जन्म के समय का इंतजार करूंगा; मुझे जन्म के लिए गर्भ में नौ महीने की आवश्यकता नहीं है; मुझे इस वर्तमान बंदी की आवश्यकता नहीं है; और मुझे उन बंधनों से मुक्त क्यों नहीं होना चाहिए जो मुझे बांधते हैं? मैं आऊँगा और इस अद्भुत घटना के महत्व की संक्षेप में घोषणा करूँगा; मैं दिव्य आगमन की मुहर हूँ; मैं परमेश्वर के अवतरित वचन की कोख हूँ; मैं तुरही बजाऊँगा, और अपने पिता की जीभ को वाक्पटु बनाऊँगा; मैं तुरही बजाऊँगा, और अपनी माँ की निर्जीव कोख को पुनर्जीवित करूँगा। मैं, अग्रदूत, अपने उपदेश के साथ आगे बढ़ूँगा, और उपस्थिति सभी को घोषणा करूँगा: *'देखो, परमेश्वर का मेमना, जो जगत का पाप उठा ले जाता है'* (यूहन्ना 1:29)। यूहन्ना की भूमिका, या यूँ कहें कि उसका संदेश, यही है।

'जब एलिजाबेथ के प्रसव का समय पूरा हुआ, तो उसने एक पुत्र को जन्म दिया। जब उसकी पड़ोसिनों और संबंधियों ने यह सुना, ... तो वे उसके साथ आनन्दित हुए' (लूका 1:57–58)। क्योंकि यह एक चमत्कार था कि एलिज़ाबेथ ने अपनी वृद्धावस्था में और एक लंबे समय से बाँझ गर्भाशय से जन्म दिया; यह न केवल सांसारिक पिता पर, बल्कि परमेश्वर वचन पर भी निर्भर था। महादूत गब्रियल स्वयं इसकी गवाही देते हैं, जब उन्होंने ज़कार्याह से कहा: 'देख, *तेरी पत्नी एलिज़ाबेथ तुझसे एक पुत्र को जन्म देगी, और तू उसका नाम रखना: यूहन्ना; और वह ... अपनी माता के गर्भ से ही पवित्र आत्मा से भर जाएगा; और वह इस्राएल के बहुत से लोगों को उनके प्रभु परमेश्वर की ओर फेर देगा; और वह उसके सामने एलियाह की आत्मा और सामर्थ्य में जाएगा'* (लूका 1:13, 15-17)।

ओह, एक भिन्न, अद्भुत स्वभाव के पुत्र का जन्म! यह अद्भुत और असामान्य था, क्योंकि सामान्यतः कोई भी व्यक्ति प्रसव की पीड़ा के माध्यम से ही जन्म देता है – और जो जन्म देती है वह प्रसव की पीड़ाओं के बीच ही ऐसा करती है। तो फिर एलिजाबेथ का दुख क्या था, जब एक अनुभवहीन दाई के बजाय पवित्र आत्मा उपस्थित था, जब यह प्रकृति के बोझ के बजाय अनुग्रह का काम था? सुनिए! यह प्रसव आनंद की तुलना में तुच्छ था। – यूहन्ना को उसके जन्म के बाद अनुग्रह नहीं मिला, बल्कि, अपनी माँ के गर्भ में ही पवित्रता के वस्त्र पहनकर, वह एक अद्भुत अग्रदूत बन गया, जैसा कि स्वर्गदूत ने कहा: *'वह अपनी माँ के गर्भ से ही पवित्र आत्मा से भर जाएगा... और एलियाह के आत्मा और सामर्थ्य में उसके सामने जाएगा'* (लूका 1:15, 17)। कौन किससे पहले होगा? यूहन्ना प्रभु मसीह से पहले होंगे;

इसीलिए उन्हें अग्रदूत कहा जाता है, जैसा कि उद्धारकर्ता के बारे में यूहन्ना के अपने शब्दों से सुना जा सकता है: *'मेरे बाद एक मनुष्य आ रहा है जो मुझसे श्रेष्ठ है, क्योंकि वह मुझसे पहले था'* (यूहन्ना 1:30)। **'मेरे बाद'** – समय के लिहाज़ से; **'मुझसे पहले'** – सिंहासन के लिहाज़ से।

गैब्रियल ने यह क्यों कहा कि यूहन्ना तिशबी एलियाह की आत्मा और शक्ति में मसीह राजा से पहले है? ध्यान से सुनें! इल्याह का अर्थ 'ईश्वर' है। चूंकि यूहन्ना के भीतर ईश्वर था – वह अपनी माता के गर्भ से ही पवित्र आत्मा से भरपूर था, और ईश्वर आत्मा है – प्रभु ने बहुत पहले ही नबी के माध्यम से उनके बारे में कहा था: *'देखो, मैं अपना दूत भेजता हूँ जो मेरे सामने मार्ग तैयार करेगा'* (मला. 3:1, तुलना करें मरकुस 1:2) और वह बहुतों को भूल से सत्य की ओर मोड़ेगा; इसी कारण यूहन्ना प्रभु से पहले एलियाह की आत्मा और सामर्थ्य में आता है, क्योंकि यूहन्ना में एलियाह के समान कई लक्षण थे।

बेशक, पुत्र का जन्म होता है, और ध्यान फिर से पिता पर लौट आता है। जब ज़करियाह से पूछा गया कि वह बच्चे को क्या नाम देना चाहते हैं, *तो उन्होंने एक पट्टी माँगी और लिखा: "उसका नाम यूहन्ना है।"* स्वर्गदूत के शब्दों पर विश्वास न करने के कारण, अब वह उस दिव्य दर्शन के बारे में लिखने, और अपने लेखन के माध्यम से प्रचार करने के लिए विवश है; जो पहले कानों से सुनी बात को स्वीकार नहीं करता था, वह अब अपने हाथ से गवाही देता है, जो हुआ था उसके बारे में लिखता है। और, उसे एक नाम देने के बाद, उसने अपनी वाणी वापस पा ली: इस प्रकार *'वे सब चकित रह गए। और तुरंत उसका मुँह खुल गया और उसकी जीभ का बंधन छूट गया, और वह बोलने लगा, और परमेश्वर का धन्यवाद करने लगा'* (लूका 1:63–64)।

हे अद्भुत और चमत्कारकि चमत्कार! पुत्र का नाम लिखा गया, और पिता के बंधे होंठ खुल गए; उसका नाम यूहन्ना रखा गया, और उसे नाम देने वाले की जीभ ठीक हो गई। क्या आप देखते हैं कि उसने एक उपयुक्त व्याख्या देते हुए कोई गलती नहीं की, और न ही हमने की है? देखो, सबसे धर्मी का नाम बंधे होंठों को खोलता है और अचल जीभ को गति में लाता है। इस प्रकार योहन उद्घोषक प्रकट हुआ, क्योंकि उसका नाम ही एक स्वर को जगाता है: 'मैं *जंगल में पुकारने वाले की आवाज़ हूँ: "प्रभु का मार्ग तैयार करो; उसकी राहें सीधी करो"* (मत्ती 3:3)। हे आश्चर्य! वचन स्थिर रहता है, और आवाज़ उसकी घोषणा करती है; प्रभु आते हैं, और सेवक उनके आगे चलता है। इसलिए हम आनन्द मनाएँ और हर्षित हों कि एलिज़ाबेथ ने जन्म दिया है और ज़करियाह ने बोल दिया है; कि बाँझ स्त्री ने एक शिशु को जन्म दिया है, और वृद्ध पुरुष ने पुकारा है; कि मोम की पट्टी की खोज की गई, और याजक की जीभ खुल गई और उसकी आवाज़ लौट आई; कि अग्रदूत प्रकट हो गया है और सारी दुनिया ने आनन्द मनाया है।

यहाँ कोई यह उम्मीद कर सकता है कि उपदेश समाप्त हो जाएगा, लेकिन ज़करियाह ऐसा नहीं होने देते, और उद्घोष करते हैं: *'इस्राएल के परमेश्वर का धन्यवाद हो, क्योंकि उसने अपनी प्रजा का ध्यान रखा है और उनका उद्धार किया है'* (लूका 1:68)। अद्भुत कार्य! ज़करियाह क्या कह रहे हैं? गूंगेपन से चंगा होने के बाद, ज़करियाह ने पहली बार पुकारा: *'धन्य है प्रभु!' इसका क्या अर्थ है? ज़करियाह मृत था, और उसे जीवित कर दिया गया। वह स्वभाव से मृत नहीं था, बल्कि उसने मृत्यु के समान एक अवस्था को सहा था। उसे एक ताबूत की तरह मौन में रखा गया था, और जीभ के बंधनों से, जैसे कफ़न से, बाँध दिया गया था; वह जीवन में लौट आया, याजकीय जीवन का श्वास लेना बंद कर चुका था, और लोगों के शोक और दुख को वहन कर चुका था। जब किसी पुरोहित को विश्राम के लिए ले जाया जाता है, तो जिनके लिए उसने मध्यस्थता की, वे सभी शोक मनाते हैं। इस रूपक पुनरुत्थान के बाद, जकरियाह ने पहली बार पुकारा, 'धन्य हो इस्राएल का परमेश्वर* प्रभु'। हे जकरियाह! यदि तुमने उस आध्यात्मिक महापुरुष को नहीं देखा होता, यदि तुमने उस आध्यात्मिक बीजारोपणकर्ता को नहीं पहचाना होता, यदि तुमने वह वरदान नहीं पाया होता, तो तुम दाता को धन्य नहीं कहते। पर जकरियाह ने उस वरदान के योग्य एक भविष्यसूचक गीत के साथ परमेश्वर की स्तुति की। हम भी यह उद्घोष करें: 'मसीहियों का परमेश्वर, प्रभु धन्य हो, जिसने अपने लोगों का दर्शन किया और उन्हें उद्धार दिया है।' उसकी महिमा और सामर्थ्य अब और सदा के लिए, और युगानुयुग तक हो। आमीन।

8 जुलाई

25 जून (पुराना संस्करण)

पवत्रि शहीद फेवरोनयिा का जीवन और कष्ट-संहार

25 जून को स्मरणोत्सव

[4589]दुष्ट सम्राट डायोक्लेटयिन के शासनकाल में, रोम में अम्फीमस नामक एक गवर्नर रहता था, जसिका उपनाम '[4590] ' था। उसकी एक बेटा, लाइसमिैक्स था, जसिकी सगाई सेनेटर प्रॉस्फोरस के सुंदर बेटी से हुई थी। गंभीर रूप से बीमार पड़ने पर, अम्फीमस ने अपने भाई सेलनिस को बुलाया और उससे कहा:

'मेरे भाई! मैं इस जीवन को त्यागने वाला हूँ और अपना पुत्र तुम्हारे हवाले करता हूँ; मेरी जगह उसकी देखभाल का भार उठाओ, और वह तुम्हारा पुत्र हो। जब मैं मर जाऊँ, तो उसे उसकी मंगेतर, प्रोस्फोरस की बेटी से तुरंत ववािह करा देना।'

अपने भाई के शब्द सुनकर, सेलनिस ने जैसा उसने कहा था वैसा ही सब कुछ करने का वादा कयिा। हालाँकि, अम्फमि तीन दनि बाद ही चल बसे। अम्फमि की मृत्यु के बाद, डायोक्लेटयिन ने लाइसमिैखस और उनके चाचा सेलनिस को बुलाया और उन्हें नजिी तौर पर मलिने के बाद, लाइसमिैखस से कहा:

'तुम्हारे पति की मुझमें नष्ठिा को ध्यान में रखते हुए, मैं तुम्हें उनके स्थान पर एपार्क नयिुक्त करना चाहता था; लेकनि मेरे ध्यान में यह बात आई है कि तुम ईसाई धर्म के प्रति लगाव रखते हो। इसलिए मैंने अपना इरादा तब तक के लिए रोक दयिा है जब तक यह स्पष्ट नहीं हो जाता कि तुम्हारे बारे में जो कहा जाता है वह सच है या नहीं। इस बीच, एक परीक्षा के रूप में, मैंने आपको पूर्व में ईसाई धर्म का उन्मूलन करने के लिए भेजने का नर्णिय लयिा है; और जब आप अपना मशिन पूरा करके हमारे पास लौटेंगे, तो हम आपको एपार्क के पद से पुरस्कृत करेंगे।

लाइसमिैक्स राजा की बातों का वरिोध करने की हम्मित नहीं कर सका, क्योंकि वह बहुत युवा था, लगभग बीस वर्ष का था। लेकनि उसका चाचा, सेलनिस, डायोक्लेटयिन के पैरों पर गरि पड़ा और कहा:

'हे महान और अमर राजा, मैं आपसे वनिती करता हूँ, लसिीमाकस को कुछ दनिों के लिए यहाँ रहने दें ताकि वह प्रॉस्फोरस की बेटी से ववािह कर सके; और जब उसका ववािह हो जाए, तो मैं भी उसके साथ जाऊँगा, और हम दोनों मलिकर वह सब कुछ करेंगे जैसा आपका दैवीय आदेश हमें आज्ञा देगा।'

तब राजा ने उन दोनों से कहा:

'पहले, वहाँ जाओ जहाँ मैं तुम्हें भेजता हूँ और ईसाइयों का संहार करो; और जब तुम अपना सौंपा गया काम पूरा कर लो, तो यहाँ वापस आओ—तब मैं भी लसिमिाकस की शादी का जश्न तुम्हारे साथ मनाऊँगा।'

यह सुनकर, वे एक और शब्द कहने की हम्मित नहीं कर सके और आज्ञाकारी होकर राजा के अधीन हो गए; उसका फरमान और अपनी सेनाएँ प्राप्त करके, वे पूर्व की ओर प्रस्थान कर गए।

लाइसमिैखस अपने साथ अपने रश्तिेदार, कोमति[4591] प्राइमा को ले गया, जो उसकी माँ की बहन का बेटा था, और उसे सेना का कमांड सौंप दयिा।

पूर्व में पहुँचने पर, वे Palmyra[4592] के क्षेत्र में रुके, और वहाँ के सभी ईसाइयों को वभिन्नि क्रूर यातनाएँ देने लगे: कुछ को जदिा जला दयिा गया, दूसरों को जानवरों के सामने फेंक दयिा गया ताकि वे उन्हें नोच-नोच कर खा जाएँ, जबकि कुछ अन्य को तलवार से काट-काट कर उनके शरीर कुत्तों के सामने फेंक दए गए। सेलनिस, लाइसमिैखस का चाचा,

---

[4589] सेनेटर सीनेट का सदस्य होता है, यानी बुज़ुर्गों की परषिद; बाद में, सेनेटर की उपाधि एक मानद उपाधि बन गई।

[4590] एपार्क – नगर का राज्यपाल, प्रांतीय राज्यपाल।

[4591] कोमीट्स – सम्राट का साथी या एक उच्च-पदस्थ अधकिारी; यह शब्द उन लोगों के लिए प्रयुक्त होता था जो उनके अनुचर दल का हस्सिा थे।

[4592] पामीरा – सीरयिा का एक शहर जो कभी दमश्कि और यूफ्रेटसि नदी के बीच एक मरुस्थल में स्थति था। इस शहर की स्थापना स्वयं सुलैमान ने की थी। यह नबूकदनेजर के अधीन तबाह कर दयिा गया था, लेकनि जल्द ही, भूमध्य सागर और यूफ्रेटसि घाटी के बीच अपनी अनुकूल स्थति के कारण, इसे फरि से बनाया गया और यह एक महत्वपूर्ण व्यापारकि केंद्र बन गया। रोमन शासन के तहत, पामरि और उसका प्रांत कभी एक स्वतंत्र राज्य हुआ करता था, लेकनि बाद में इस पर रोमनों ने वजिय प्राप्त कर ली: वजिताओं ने इस प्रक्रयिा में शहर को नष्ट कर दयिा; हालाँकि, सम्राट डायोक्लेटयिन के शासनकाल के दौरान इसे फरि से बनाया गया। अरब काल में, शहर को एक बार फरि नष्ट कर दयिा गया और यह एक दयनीय छोटे से गाँव में बदल गया।

अत्यंत कठोर और अमानवीय था। सेलनिस की क्रूरता देखकर कई लोगों में भय छा गया। हालाँकि, लसिीमachus ईसाइयों के प्रति बहुत दयालु था, क्योंकि उसकी माँ एक ईसाई थी, और उससे ही वह मसीह को जानने लगा था। एक रात उसने अपने रश्तिेदार, कोमटिा प्रमिस को बुलाया और उससे कहा:

'प्रयि प्रमि, तुम जानते हो कि मेरे पति वश्विास से एक हेलेन थे[4593] और एक पैगन के रूप में मरे, लेकनि मेरी माँ एक ईसाई के रूप में मरीं और, अपने जीवनकाल में, उन्होंने मुझे एक ईसाई बनाने का प्रयास कयिा। लेकनि, मेरे पति और राजा से डरकर, मैं ऐसा खुले तौर पर नहीं कर सका और अपनी माँ से वादा कयिा कि मैं एक भी ईसाई को नहीं मारूँगा और मसीह का मत्रि बनने का प्रयास करूँगा। अब, हालाँकि, मैं देखता हूँ कि मेरा चाचा सेलनि क्रूरता से ईसाइयों को यातना दे रहा है और मार रहा है - और इससे मेरी आत्मा को बहुत पीड़ा होती है; क्योंकि मैं गुप्त रूप से ईसाइयों को बख्शना चाहता हूँ और उन लोगों को रहिा करना चाहता हूँ जो बेड़यिों में जकड़े हुए हैं, ताकि वे भाग सकें और जहाँ भी हो सके छपि सकें।

काउंट उसकी मदद करने के लिए राज़ी हो गया, और उन्होंने एक-दूसरे के साथ एक समझौता कयिा, जसिमें उन्होंने ईसाइयों को न मारने की कसम खाई। जैसे ही उन्हें कोई ईसाई चर्च या मठ मलिता, वे तुरंत वहाँ एक गुप्त संदेश भेजते, जसिमें उत्पीड़क के आगमन की चेतावनी दी जाती और उन्हें छपि जाने की सलाह दी जाती। इसके अलावा, काउंट ने अपने वचिारों से सहमत सैनकिों को आदेश दयिा कि वे यातना देने के लिए ईसाइयों को न पकड़ें, और आज्ञा दी कि जिन्हें पकड़ लयिा गया है, उन्हें मुक्त कर दयिा जाए।

काफी समय तक पामयरा में रहने के बाद, सेलनिस, कई ईसाइयों को यातना देने के बाद, सविापोल जाने की इच्छा रखता था—जो अस्सरियिाई क्षेत्रों के भीतर स्थति एक शहर था[4594] , जो रोम के अधीन एक प्रांत का हस्सिा था। इस शहर में 50 ननों का एक मठ था, जसिकी अधष्ठिात्री, व्रएिना, धन्य अधष्ठिात्री और डकिन[4595] प्लाटोनडिा की शष्यिा थी, और वह अपनी गुरु के नयिमों का सख्ती से पालन करती थी। प्लाटोनडिा का नयिम इस प्रकार था। शुक्रवार को, बहनों में से कोई भी काम नहीं करती थी, बल्कि वे सभी सुबह से शाम तक चर्च में इकट्ठा होकर प्रार्थना करती थीं या पवत्रि धर्मग्रंथ पढ़ती थीं। शुरुआत में, डकिनेस प्लेटोनडिा स्वयं सुबह 3 बजे तक बहनों को पढ़कर सुनाती थीं, और फरि वह कतिाब व्रएिना को दे देती थीं, और उसे शाम तक पढ़ने का नर्दिेश देती थीं। बाद में व्रएिना ने भी बल्कि‌ुल यही प्रथा अपनाई; अपने मार्गदर्शक की मृत्यु के बाद मठ का नेतृत्व संभालने के बाद, उसने हर मामले में उनकी नकल की।

एबेस व्रएिना के अधीन, दो छोटी लड़कयिों—प्रोक्ला और फेब्रोनयिा—को पादरी जीवन के लिए पाला-पोसा और तैयार कयिा गया। प्रोक्ला 25 वर्ष की थी, और फेवरोनयिा 20 वर्ष की। फेवरोनयिा व्रएिना की भतीजी थी—यानी, , उसके भाई की बेटी—और वह इतनी अद्भुत सुंदरता से दमकती थी कि कोई भी कलाकार उसके चेहरे की तेजस्वी भव्यता को पूरी तरह से चत्रिति नहीं कर सकता था। यह सुंदरता व्रएिना को बहुत परेशान कर रही थी, और वह इस बात पर बहुत वचिार करती थी कि वह फेवरोनयिा को दुनयिा के प्रलोभनों से दूर, पवत्रि कैसे रख सकती है। कन्वेंट की सभी बहनें दनि में केवल एक बार, शाम को भोजन करती थीं, और वह भी बहुत कम मात्रा में; लेकनि व्रएिना ने फेवरोनयिा को अगले दनि तक उपवास करने का आदेश दयिा, ताकि वह पूरे दनि बनिा भोजन के रहे और केवल अगले दनि की शाम को ही भोजन करे – उसे उम्मीद थी कि, इस तरह के संयम के कारण, फेवरोनयिा की सुंदरता फीकी पड़ जाएगी। फेवरोनयिा, अपने शरीर को कष्ट देना चाहती थी, उसने ऐसी कठोर तपस्या करने की भरसक कोशशि की; वह कभी भी तृप्त होकर न खाती और न ही पीती, बल्कि प्यास और भूख से, और कई कष्टों और तपस्या के कार्यों द्वारा, वह अपने शरीर को बेरहमी से थकाती थी, और इसके अलावा, वह नींद से भी परहेज़ करती थी। उसका बस्तिर बनिा कसिी बछिौने के एक खाली तख्ते का था; यह ढाई हाथ लंबा और डेढ़ हाथ चौड़ा था; अत्यधकि उपवास से थकी हुई फेवरोनयिा इस तख्ते पर, या खुले ज़मीन पर सो जाती थी,

---

[4593] अर्थात्, यह ग्रीको-रोमन मूर्तपिूजक धर्म का पालन करता था।

[4594] असरियिा सीरयिा के पूर्व में, मेसोपोटामयिा के मैदान के ऊपरी, उत्तरी भाग में स्थति था।

[4595] एक डीकोनेस चर्च की महलिा मंत्री होती है। डीकोनेसों के कर्तव्य इस प्रकार थे: वे महलिाओं को बपतस्मिा के लिए तैयार करती थीं, उन्हें यह सखिाती थीं कि बपतस्मिा देने वाले द्वारा पूछे जाने पर उन्हें कैसे और क्या जवाब देना चाहिए और बपतस्मिा के बाद उनका आचरण कैसे होना चाहिए; वे महलिाओं के बपतस्मिा के दौरान बशिप की सहायता करती थीं और उनकी ओर से, ललाट को छोड़कर शरीर के अन्य अंगों पर अभषिेक करती थीं; वे चर्च के उस दरवाजे पर पहरा देती थीं जसिसे महलिाएँ चर्च में प्रवेश करती थीं, महलिाओं को उनकी सीटों पर बठिाती थीं और यह सुनश्चिति करती थीं कि वे ठीक से व्यवहार करें, बशिप और प्रेस्बटिरों की महलिाओं के साथ होने वाली बातचीत के दौरान उपस्थति रहती थीं, और महलिाओं के लिए धर्मार्थ कार्यों का आयोजन करती थीं। प्रारंभकि शताब्दयिों में, डीकोनेस को पुरोहति वर्ग में गनिा जाता था, और बाद में उन्हें एक वशिेष अभषिेक के माध्यम से उनके पद पर नयिुक्त कयिा जाता था; बाद में, अभषिेक पर प्रतबिंध लगा दयिा गया, और अंततःडीकोनेस की सेवा ही समाप्त हो गई।

और तब भी केवल कुछ ही क्षणों के लिए। और जब शैतान उसे नींद से उत्पन्न दृश्यों से प्रलोभित करने का प्रयास करता, तो वह तुरंत उठ जाती, जमीन पर गिर पड़ती, खुद को क्रूस के आकार में लोट देती, और ईश्वर से कड़वी आँसुओं के साथ प्रार्थना करती कि वह उसे शैतान से बचाए; फिर, पवित्र शास्त्र की पुस्तकें उठाकर, वह उन्हें लगन से पढ़ती और उनसे आध्यात्मिक आनंद प्राप्त करती। फेवरोनिया स्वभाव से इतनी जिज्ञासु और तीव्र बुद्धि वाली थी कि स्वयं व्रिएन भी उसकी बुद्धि पर बहुत आश्चर्य करती थी।

शुक्रवार को, जब सभी नन चर्च में ईश्वर का वचन सुनने के लिए इकट्ठा होती थीं, तब एब्बेस व्रिएन्ना फेवरोनिया को पवित्र शास्त्र पढ़ने का निर्देश देती थीं। और चूंकि धर्मपरायण महिलाएं अक्सर ननों के साथ चर्च में आध्यात्मिक उपदेश सुनने आती थीं, इसलिए व्रिएन्ना ने फेवरोनिया को पर्दे के पीछे से पढ़ने का निर्देश दिया, ताकि वह इन महिलाओं के रूप-रंग या आभूषणों को न देख सके, जिन्हें उसने पहले कभी नहीं देखा था। और धन्य फेवरोनिया की अच्छी ख्याति पूरे शहर में फैल गई – हर जगह उसके ज्ञान और बुद्धिमत्ता, उसकी सुंदरता और अच्छे चरित्र की प्रशंसा की गई, क्योंकि वह कोमल, विनम्र, पवित्र और हर सद्गुण से सुशोभित थी।

सेनेटोरियल वंश की इरिया नामक एक महिला ने पवित्र कन्या के इन सभी गुणों के बारे में सुना और फेवरोनिया को देखने तथा उससे बात करने की तीव्र इच्छा से भर गई। यह महिला हेलेनिक धर्म की अनुयायी थी; वह कम उम्र की थी और केवल सात महीने तक अपने पति के साथ रहने के बाद ही विधवा हो चुकी थी; अपने पति की मृत्यु के बाद, वह अपने माता-पिता के घर में रहती थी, जो भी हेलेनिक संप्रदाय के अनुयायी थे। कन्वेंट पहुँचने पर, उसने द्वारपाल के माध्यम से एबेस व्रिएना को फेवरोनिया से मिलने की अपनी इच्छा बताई। जब व्रिएना उससे मिलने के लिए बाहर आईं, तो इरिया उनके पैरों पर गिर पड़ी और उन्हें पकड़कर, एबेस से विनती करने लगी:

'मैं आपसे उस ईश्वर की शपथ दिलाती हूँ, जिसने स्वर्ग और पृथ्वी की रचना की है, कि आप मुझे, एक अधर्मी महिला को, जो अब तक मूर्तियों और राक्षसों का खिलौना रही हूँ, ठुकराएँ नहीं – मुझे हमारी बहन फेवरोनिया के साथ शिक्षाप्रद बातचीत से वंचित न करें, ताकि वह मुझे मोक्ष के मार्ग पर मार्गदर्शन कर सकें।' तब मुझे आशा है कि मैं मसीह, सच्चे ईश्वर में, वह प्राप्त करूँगी जो ईसाइयों के लिए तैयार किया गया है। इसलिए, मुझे इस युग की व्यर्थता और मूर्तिपूजक दुष्टता से बचाएँ, क्योंकि मेरे माता-पिता मुझे दूसरी शादी के लिए मजबूर कर रहे हैं, जबकि मैं फेवरोनिया के साथ शिक्षाप्रद और आत्मा-पोषक वार्तालापों में अपना समय बिताकर एक नया जीवन शुरू करना चाहती हूँ: अज्ञानता के कारण दुष्टता में जीए गए मेरे अब तक के वर्ष मेरे लिए काफी हैं।

जब वह बोल रही थी, तो इरिया ने अपनी आँसुओं से मठ-प्रमुख की चरणों को धोया, और उससे दया दिखाने की विनती की।

व्रीएना ने उसकी बात सुनकर कहा:

'प्रभु मेरी गवाह हैं, लेडी इरिया, कि किन्या फेवरोनिया को मेरी देखभाल में तब लिया गया था जब वह महज दो साल की थी, और अब अठारह साल हो गए हैं जब से वह बिना कभी बाहर निकले मठ में रह रही है, उसने न तो दुनिया के पुरुषों और न ही महिलाओं को देखा है, न ही उनके कपड़े और आभूषण, और न ही दुनिया की कोई भी चीज़। यहाँ तक कि उसकी दूध माँ को भी अब तक उसे देखने की अनुमति नहीं दी गई है, और यद्यपि उसने मुझसे कई बार उसे देखने और उससे बात करने की विनती की है, मैंने उसे अनुमति नहीं दी है। लेकिन अब, आपके उत्साह को देखकर और ईश्वर के प्रति आपके प्रेम को पहचानकर, और आपके मोक्ष की आशा करते हुए, मैं आपको उसके पास ले जाऊँगी; लेकिन पहले आपको अपने सांसारिक कपड़े उतारकर एक नन की पोशाक पहननी होगी।"

इएरिया ने तुरंत और खुशी-खुशी इस शर्त को पूरा किया, और व्रिएना उसे फेव्रोनिया के पास ले गई। इरिया को उसकी साधु वेशभूषा में देखकर, फेवरोनिया ने सोचा कि कोई भटकती हुई नन उनके पास आ गई है; इसलिए, वह उसके सामने जमीन पर झुक गई और उसे गले लगाकर, मसीह में एक बहन के रूप में चूम लिया। वृएना ने, अपनी ओर से, उन दोनों को बैठने और पवित्र धर्मग्रंथों के शिक्षाप्रद पाठ में संलग्न होने का निर्देश दिया। तब फेब्रोनिया ने किताबें लेकर इरिया को पढ़कर सुनाना शुरू किया, और जो कुछ भी पढ़ा गया उससे इरिया इतनी गहराई से प्रभावित हुई कि वह पूरी रात जागती रही। इस प्रकार, वे दोनों जागते हुए पवित्र धर्मग्रंथों को पढ़ने में लगे रहे, और फेब्रोनिया को किताबें पढ़ते-पढ़ते न तो थकान हुई, और न ही इरिया को सुनते-सुनते। इस दौरान, इरिया ने इतने आँसू बहाए कि जमीन भी उन आँसुओं से भीग गई; क्योंकि, विश्वास से एक ग्रीक होने के नाते, उसने पहले कभी ऐसी शिक्षाप्रद बातें नहीं सुनी थीं।

जब सुबह हुई, तो हएिरयिा बड़ी मुश्कलि से खुद को मठी की अधष्ठिात्री की आज्ञा मानने और अपने घर लौटने के लएि तैयार कर सकी। फवरोनयिा को आँसुओं के साथ वदिा कहकर, वह अपने माता-पतिा के पास चल दी। हालाँकि, फवरोनयिा ने मठी की अधष्ठिात्री की सहायक, थोमेइस से पूछा:

'मैं आपसे वनिती करती हूँ, मेरी मालकनि, मेरी माँ, मुझे बताइए कि वह भटकती हुई नन कौन थी, जो इतनी ज़ोर से रोई, मानो उसने कभी ईश्वर के वचन न सुने हों।'

'क्या तुम्हें नहीं पता कि तुम कसिसे बात कर रही थीं?' फोमाइदा ने जवाब दयिा।

फेवरोनयिा ने उत्तर दयिा:

'मैं एक ऐसी घुमंतू नन को कैसे जान सकती हूँ जसिे मैंने कभी देखा ही नहीं?'

तब फोमाइदा ने उससे कहा:

'वह बहन और कोई नहीं बल्कि इरयिा है, हमारे शहर की एक कुलीन महलिा।'

फेवरोनयिा ने कहा, "तुमने मुझे यह पहले क्यों नहीं बताया?" "मैं उससे ऐसे बात कर रही थी जैसे वह मेरी अपनी बहन हो।"

फोमाइदा ने कहा:

'यह हमारी मदर सुपीरयिर का आदेश था।'

इन शब्दों के बाद, फेवरोनयिा चुप हो गई – और उसने इरयिा के लएि अपने पूरे दलि से ईश्वर से प्रार्थना करनी शुरू कर दी, कि ईश्वर उसे सच्चे मार्ग पर लाए और उसे अपने चुने हुए झुंड में स्वीकार कर लें।

जहाँ तक इरयिा की बात है, घर लौटने पर उसने फेवरोनयिा से जो कुछ भी सुना था, वह सब बता दयिा और अपने माता-पतिा को ग्रीक वधिर्म को त्यागने और एकमात्र सच्चे ईश्वर - यीशु मसीह - को जानने के लएि मनाने लगी। उन्होंने अपनी बेटी की बुद्धमिानी भरी सलाह मानी, मसीह में वश्विास कयिा और अपने पूरे परविार के साथ बपतस्मिा लयिा। इस प्रकार संत फेवरोनयिा की प्रार्थनाओं और शक्षिाओं का उन पर प्रभाव पड़ा।

थोड़ी ही देर बाद, फेवरोनयिा गंभीर रूप से बीमार पड़ गईं। इरयिा उनके पास आई और बीमारी के दौरान उनकी देखभाल की। अचानक, यह खबर फैल गई कि सेलनि और लाइसमैक्स ईसाइयों को सताने के लएि शहर की ओर आ रहे थे। तब सभी ईसाई, जसिमें पुरोहति और पादरी, और यहाँ तक कि खुद बशिप भी, डर के मारे सब कुछ छोड़कर शहर से भाग गए, और जहाँ भी उन्हें जगह मलिी, वहाँ छपि गए।

यह सुनकर, व्रीएना मठ की ननयिाँ उसके पास आईं और कहा:

'हमारी माता और माँ, हमें क्या करना चाहएि? शकिारी जानवर—धर्महीन अत्याचारी—शहर के पास आ रहे हैं, और सभी वश्विासी ईसाई यातनाओं के डर से भाग गए हैं।'

व्रीएना ने, अपनी ओर से, उनसे पूछा:

'तो फरि, आप क्या सोचती हैं, और आपका क्या इरादा है?'

उन्होंने उत्तर दयिा:

'हमें आदेश दो, हे हमारी माता, कि हम भी शरण लें, ताकि हम अपनी आत्माओं को बचा सकें।'

इस पर, वरिएिना ने टप्पिणी की:

'तुमने अभी तक लड़ाई नहीं देखी है, फरि भी तुम भागने के बारे में सोच रही हो; वीरता का समय अभी नहीं आया है, फरि भी तुम पहले से ही पराजति होना चाहती हो; नहीं, मेरी बच्चयिों, मैं तुमसे वनिती करती हूँ, ऐसा मत करो; आइए हम यहाँ ही रहें, यातनाओं को सहें, और मसीह के लएि मरें, जो हमारे लएि मरे, ताकि हम हमेशा के लएि उनके साथ जी सकें।' ये शब्द सुनकर, बहनें चुप हो गईं। लेकनि अगले दनि, एफेरयिा नाम की एक बहन ने दूसरों से कहा:

'मैं जानती हूँ कि फेवरोनयिा की वजह से ही मदर एब्रेस हमें भागने नहीं देंगी – मुझे लगता है कि वह सरि्फ अपने लएि हम सबको नष्ट करना चाहती हैं; लेकनि चलो हम फरि से उनके पास चलते हैं, और मैं सभी की ओर से उन्हें बताऊँगी कि क्या करना है।'

यह सुनकर, कुछ नन एफेरयिा से सहमत हो गईं, जबकि अन्य ने आपत्ति करना शुरू कर दयिा; लेकनि अंत में, वे सभी एक समझौते पर पहुँच गईं और मदर सुपीरयिर के पास चली गईं। व्रएिना ने, यह समझते हुए कि वे क्यों आई थीं, एफेरयिा से पूछा:

'तुम क्या चाहती हो, बहन?'

उसने उत्तर दिया:

'हम आपसे विनती करते हैं, हमारी माता, हमें आने वाली विपत्तियों से भाग जाने दें, क्योंकि बिशप और संपूर्ण पुरोहित वर्ग चले गए हैं। याद कीजिए, हे हमारी माता, कि हममें युवा कुंवारी लड़कियां भी हैं, जिनके लिए हमें डरना चाहिए, कहीं ऐसा न हो कि वे अधर्मी सैनिकों द्वारा पकड़े जाने पर अपनी पवित्रता खो दें और ईश्वर से अपना पुरस्कार गँवा बैठें। हमें इस बात का भी भय है कि हम यातनाओं को सहन नहीं कर पाएँगे और मसीह का परित्याग कर अपनी आत्मा का नाश कर देंगे। हमें आज्ञा दो कि हम अपनी बहन, बीमार फेवरोनिया को भी अपने साथ ले जाएँ, ताकि हम उसे भी यहाँ से छिपा सकें।

यह सुनकर, फेवरोनिया ने कहा:

'जिस मसीह जीवित हैं, जिनकी मैं स्वयं को वधू मानती हूँ और जिन्हें मैं अपनी आत्मा अर्पित करती हूँ, उनकी कसम, मैं इस स्थान को नहीं छोड़ूँगी, बल्कि यहीं मरूँगी और दफ़नाई जाऊँगी।'

तब व्रिएना, एफेरिया की ओर मुड़कर, बोली:

'सावधान रहो कि तुम क्या कर रहे हो, बहनों में भ्रम पैदा कर रहे हो – देखो, मैं उस बात की दोषी नहीं हूँ जो तुम मेरे बारे में सोचते हो।'

फिर, दूसरों की ओर मुड़कर, उसने कहा:

'तुम में से हर एक अपने हिसाब से फैसला करे।'

तब सभी बहनें, आगे आने वाले कष्टों के भय से, अबायसा और फेवरोनिया से विदा लेकर, रोती-बिलखती और छाती पीटती हुई, मठ से चली गईं। हालाँकि फेवरोनिया की समकक्ष और सहपाठी, प्रोकला ने उसे गले लगाकर चूमा, और रोते हुए कहा:

'मेरे लिए प्रार्थना करना, मेरी मालकिन और मेरी बहन।'

फेवरोनिया ने उसका हाथ पकड़कर उसे जाने न देते हुए, विनती की:

'ईश्वर का भय मानो, मेरी बहन प्रोकला; हमें छोड़कर मत जाओ। तुम देख सकती हो कि मैं बीमार हूँ और जल्द ही मर जाऊँगी। हमारी माँ विरिएना मुझे अकेले दफना नहीं सकतीं – इसलिए रुक जाओ और उन्हें मुझे अंतिम विदाई देने में मदद करो।'

तब प्रोक्ला ने उत्तर दिया:

'ठीक है, मेरी बहन, मैं तब तक यहीं रहूँगी जब तक तुम मुझे रहने को कहोगी।'

लेकिन जब शाम हुई, तो प्रोकला ने अपना वचन तोड़ा और गुप्त रूप से मठ से भाग गई। केवल व्रिएना और फोमाइदा ही फेवरोनिया के साथ रह गईं।

एबेस व्रिएना, सुनसान मठ को देखकर, भारी मन से चर्च में प्रवेश किया, जमीन पर गिर पड़ीं और जोर-जोर से रोने लगीं।

फ़ोमाइदा ने उसे सांत्वना देने की कोशिश करते हुए कहा:

'रुकिए, मेरी स्वामिनी और माता। क्योंकि ईश्वर दुख और क्लेश के बीच भी *"राहत"* (1 कुरिन्थियों 10:13) लाने में सक्षम हैं। वह हमें उन विपत्तियों को सहने में मदद करेंगे जो हम पर आई हैं (सिरिकुरिअस 2:10)। सोचिए: क्या कभी ऐसा कोई रहा है जिसने ईश्वर में विश्वास किया और उसे लज्जित होना पड़ा, या कोई जो ईश्वर के भय में जिया और उसे उसकी सहायता से वंचित रहना पड़ा?

व्रीएना ने उत्तर दिया:

'हाँ, मेरी मालकिन फोमाइदा, यह सच है; लेकिन मैं फेवरोनिया का क्या करूँ? मैं उसे कहाँ छिपाऊँ और सुरक्षित रखूँ? मैं यह कैसे सहन करूँगी कि बिर्बर लोग उसे कैदी बनाकर ले जाएँ?'

तब फोमाइदा ने कहा:

जो मृतकों को जीवित करता है, प्रभु, फेव्रोनीया को बल प्रदान कर सकता है और उसे बर्बरों से सुरक्षित रख सकता है; मैं आपसे विनती करती हूँ, मेरी माता और स्वामिनी, शोक करना और रोना बंद करें; आइए हम बीमार फेव्रोनीया के पास चलें – हम उसे सांत्वना देंगे और उसे बल प्रदान करेंगे।

जब वे फेव्रोनिया के पास पहुँचे, तो व्रिएिन्ना फिर से कड़वे आँसुओं में फूट पड़ी। फेव्रोनिया ने, हालांकि फोमाइदा की ओर देखकर पूछा:

'हमारी माता व्रएिना के आँसुओं का क्या मतलब है?'

उसकी ओर मुड़कर फोमाइदा ने उत्तर दयिा:

'ये तुम्हारे लएि एक माँ के आँसू हैं, क्योंकि तुम जवान और खूबसूरत हो। जल्द ही क्रूर अत्याचारी हमारे पास आएँगे और हमें बहुत कष्ट देंगे: वे हमें, बूढ़ी औरतों को, तुरंत मार डालेंगे, लेकनि तुम्हें, एक सुंदर चेहरे वाली युवती को, वे छोड़ देंगे, ताकि वे तुम्हें दुनयिा के प्रलोभनों से बहका सकें - और हमें डर है कि चापलूसी भरे शब्दों और हसिा से वे तुम्हारी पवत्रिता को नष्ट कर देंगे और तुम्हें तुम्हारे स्वर्गीय वधूवर द्वारा तुम्हारे लएि तैयार की गई दुल्हन की कोठरी से वंचति कर देंगे।

तब फेवरोनयिा ने कहा:

'मैं आपसे वनिती करती हूँ कि आप मेरे लएि प्रभु से प्रार्थना करें, कि वे मेरी नम्रता पर दृष्टि डालें – मेरी दुर्बलता को बल दें और मुझे धैर्य प्रदान करें, जैसा वे अपने उन सभी सेवकों को प्रदान करते हैं जो उन्हें पूरे हृदय से प्रेम करते हैं।'

इस पर, थॉमडिा ने उत्तर दयिा:

'मेरी बेटी, फेवरोनयिा! तुम्हारी परीक्षा का समय समीप आ रहा है। यदि दुष्ट यातना देने वाले तुम्हें चापलूसी भरे शब्दों, सोने, चांदी और कीमती वस्त्रों, या इस संसार के कसिी भी व्यर्थ प्रलोभन से लुभाएँ, तो सतर्क और चौकस रहना; उनकी वनितयिों पर ध्यान न देना, कहीं ऐसा न हो कि तुम अपने पछिले श्रमों का प्रभु से मलिने वाला पुरस्कार खो बैठो। सावधान रहना कि तू शैतान का उपहास और मूर्तयिों का खलिौना न बन जाएँ। याद रखना कि कुँवारीपन से अधकि गौरवशाली कुछ भी नहीं है, और कुँवारयिों के लएि एक बड़ा इनाम इंतज़ार कर रहल । क्योंकि कुँवारयिों का वरा अमर है, और वह उन सभी को अमरत्व प्रदान करता है जो उससे प्रेम करते हैं। इसलएि, मेरी बेटी, उसको प्राप्त करने का प्रयत्न करो जसिके लएि तुमने अपना पूरा जीवन समर्पति कयिा है। अपना ध्यान रखना, मेरी बेटी, कहीं तुम अपनी आनंद की प्रतज्ञिाओं को न खो बैठो – अर्थात्, बपतस्मिा की कृपा और संन्यास की मुंडन संस्कार। क्योंकि प्रभु भयानक होंगे जब वे अपनी महमिा के सहिासन पर बैठकर सभी का न्याय करेंगे और प्रत्येक को उनके कर्मों के अनुसार पुरस्कृत करेंगे।

ये शब्द सुनकर, फेवरोनयिा आत्मा में दृढ़ हो गई और साहसपूर्वक शैतान के साथ एक वीरतापूर्ण युद्ध में प्रवेश करने की तैयारी करने लगी। फरि उसने थोमाइस से कहा:

'आपने बहुत अच्छा कयिा, मेरी स्वामनिी, कि आपने अपने सेवक को वश्विास में दृढ़ कयिा और मेरी आत्मा को इस वीर संघर्ष के लएि तैयार कयिा। यह जान लो: यदि मैंने अपने वधूवर के लएि मरने की इच्छा न की होती, तो मैं अन्य बहनों के साथ मलिकर इस भयानक परीक्षा से बचने के लएि भाग गई होती। लेकनि चूँकि मैं अपने स्वर्गीय वधूवर से अपने पूरे हृदय से प्रेम करती हूँ—जनिके साथ मैंने अपनी आत्मा को सगाई में बाँधा है और जनिके लएि मैंने अपना शरीर समर्पति कयिा है—मैं शहादत के मार्ग से उनके पास जाने की हम्मित करती हूँ, यदि वे मुझे अपने नाम के लएि दुख सहने और मरने के योग्य समझें।

व्रीएना ने फेवरोनयिा से ये शब्द सुनकर उससे कहा:

'मेरी बेटी, फेवरोनयिा!' मेरी तुम्हारे लएि की गई मेहनत और चतिाओं को याद करो; याद करो कि दो साल की उम्र से ही मैंने तुम्हें तुम्हारी दूध माँ की बाहों से अपने संरक्षण में ले लयिा था – और आज तक कसिी भी सामान्य व्यक्ति ने तुम्हारा चेहरा भी नहीं देखा है। अब तक मैंने तुम्हारी रक्षा अपनी आँख के तारे की तरह की है। लेकनि अब मैं तुम्हारा क्या करूँ, और तुम्हारी रक्षा कैसे करूँ? मुझे अब कुछ समझ नहीं आ रहा। अपना रक्षण कर, कहीं तू मेरे बुढ़ापे को दुख न दे, कहीं तू उन परश्रिमों को व्यर्थ न कर दे, जन्हिें मैंने, तेरी आध्यात्मकि माँ ने, तेरी परवरशि के लएि कयिा है। याद कर उन कष्ट-सहने वालों को, जन्हिोंने तुझसे पहले, मसीह के लएि बहादुरी और साहस से दुख सहे और अब उनसे अपना मुकुट प्राप्त कयिा है; उनमें न केवल पुरुष थे, बल्कि महलिाएँ और बच्चे भी थे। लवियिा और लयिोनडिा को याद करो—वे गौरवशाली बहनें जन्हिोंने साहसपूर्वक मसीह के लएि अपने प्राण न्योछावर कर दएि। लवियिा और लयिोनडिा के लएि, एक तलवार से मारी गई और दूसरी आग में फेंकी गई, दोनों एक साथ अपने स्वर्गीय वरा के महल में प्रवेश कर गईं। बारह वर्षीय कन्या यूट्रोपयिा को याद करें, जसिे उसकी माँ के साथ यातना देकर मार डाला गया था। क्या आप हमेशा उसकी आज्ञाकारति और धैर्य से चकति नहीं हुए हैं? आप जानते हैं कि कैसे न्यायाधीश ने, उसे उसके बंधनों से मुक्त करने के बाद, तीरों से डराने की कोशशि की, यह सोचकर कि वह उनसे भाग जाएगी। लेकनि तब उसने अपनी माँ की आवाज़ सुनी जो उससे कह रही थी, 'मेरी बेटी, यूट्रोपयिा, स्थरि खड़ी रहो'—और वह कन्या एक अडगि स्तंभ की तरह स्थरि खड़ी रही

जब तक कि तीरों ने उसके पूरे शरीर को भेद नहीं दिया; फिर वह प्रभु को अपनी आत्मा सौंपते हुए ज़मीन पर गिर पड़ी। यह कन्या सादी और अनपढ़ थी; परन्तु तुमने स्वयं पवित्र धर्मग्रंथों का अच्छी तरह से अध्ययन किया है और कई लोगों के लिए एक अच्छे शिक्षक रहे हो। तो विचार करो, कि तुम्हें अपने प्रभु के लिए कितनी वीरता से खड़ा होना चाहिए।

वे एक-दूसरे से इस और इससे भी बहुत कुछ बात करते रहे, जब तक कि रात बीत नहीं गई और दिन नहीं चढ़ आया।

जब सूरज निकला, तो शहर में बड़ा हड़कंप मच गया। सेलिनिस और लाइसिमाखुस शहर में प्रवेश कर चुके थे, और उनके सैनिकों ने पहले ही कई ईसाइयों को पकड़कर जेल में डालना शुरू कर दिया था। कुछ यूनानियों ने सेलिनिस को शहर के भीतर स्थित मठ के बारे में बताया। सेलिनिस ने तुरंत सभी ननों को पकड़ने के लिए सैनिक भेज दिए। सैनिकों ने मठ पहुँचकर उसे चारों ओर से घेर लिया और कुल्हाड़ियों से दरवाज़े तोड़कर, जंगली जानवरों की तरह अंदर घुस पड़े। वे व्रिएना को पकड़कर, उस वृद्ध महिला को अपनी तलवारों से मार डालने का इरादा कर रहे थे। लेकिन फेब्रोनिया ने खतरा देखकर सैनिकों के पैरों तले गिर पड़ी और ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाने लगी:

'मैं ईश्वर की कसम खाकर आपसे विनती करती हूँ – पहले मुझे मार डालिए, ताकि मैं अपनी स्वामिनी की मृत्यु का साक्षी न बनूँ।'

जब फेब्रोनिया इस प्रकार पुकार रही थी, काउंट प्रिमि आ पहुँचे; उन्होंने गुस्से में सैनिकों को भगा दिया और व्रिएना से पूछा:

'तो फिर, इस मठ में रहने वाली बाकी नन कहाँ हैं?'

व्रीएना ने उत्तर दिया:

'वे सभी डर के मारे भाग गई हैं।'

तब काउंट ने कहा:

'ओह, काश तुम भी उनके साथ भाग गई होतीं! लेकिन अभी भी तुम ऐसा करने और जहाँ चाहो वहाँ भागने के लिए स्वतंत्र हो – मैं तुम्हें यह अनुमति देता हूँ।'

यह कहकर, वह कन्वेंट से निकल गया और अपने सैनिकों को साथ ले गया। जब वह लाइसिमाकस के प्राटोरियम पहुँचा, तो लाइसिमाकस ने उससे पूछा:

'क्या यह सच है, जैसा हमें बताया गया है, कि पास में एक ईसाई मठ है?'

'यह सच है,' काउंट ने कहा।

तब, लाइसिमैक्स को एक तरफ ले जाकर, उसने निजी तौर पर उससे कहा:

'उस कन्वेंट से लगभग सभी नन भाग गई हैं, और मुझे वहाँ दो वृद्ध नन और एक युवा नन के अलावा कोई नहीं मिला। इसके अलावा, मुझे आपको एक अद्भुत बात बतानी है जो मैंने उस कन्वेंट में देखी: मैंने एक युवा नन को देखा, जिसकी सुंदरता इतनी अधिक थी कि मैंने पहले कभी इतनी खूबसूरत महिला नहीं देखी थी। ईश्वर मेरी गवाही है कि मैं आपसे सच कह रहा हूँ। जब मैंने उसे देखा, तो मैं उसके मुखमंडल की भव्यता से चकित रह गया, और यदि वह इतने साधारण वस्त्रों में न होती, तो मैं उसे आपकी पत्नी बनने के योग्य समझता, मेरे स्वामी।"

इस पर लिसिमाखुस ने उत्तर दिया:

'यदि मैं अपनी माता की आज्ञा का उल्लंघन करके ईसाई रक्त नहीं बहाना चाहता, और हर तरह से ईसाइयों को बख्शना चाहता हूँ—तो फिर मैं मसीह की वधूओं का बहकाने वाला कैसे हो सकता हूँ? मैं ऐसा कभी नहीं करूँगा; लेकिन मैं आपसे, मेरे स्वामी, एक प्रार्थनापूर्वक निवेदन करता हूँ: उन वृद्ध ननों और कन्वेंट की उस युवा नन को ले जाइए और कहीं छिपा दीजिए, ताकि वे मेरे चाचा सेलिनिस के हाथों में न पड़ें और उन्हें यातना न दी जाए।

जब वे एक-दूसरे से इस तरह बात कर रहे थे, तो कन्वेंट में तैनात सबसे क्रूर सैनिकों में से एक ने, उनकी बातचीत सुनकर, तुरंत सेलिनि के पास जाकर उसे बताया कि उन्हें कन्वेंट में एक बहुत ही सुंदर कन्या मिली है, और काउंट लाइसिमाकस को उसे अपनी पत्नी बनाने की सलाह दे रहा था।

क्रोध से भरकर सेलिनि ने तुरंत सैनिकों को वहाँ मिली ननों की रखवाली के लिए भेज दिया, ताकि वे भाग न सकें। फिर उसने अपनी कुछ सबसे करीबी और सबसे भरोसेमंद नौकरों को उस युवती को देखने और उसका नाम पता लगाने के लिए भेजा। वे गए और लौटने पर उन्होंने सेलिनि को बताया कि आसमान के नीचे निस्संदेह कोई भी महिला उनकी देखी हुई युवती की सुंदरता का मुकाबला नहीं कर सकती। यह सुनते ही सेलिनि ने तुरंत एक नगर-घोषक को पूरे नगर में यह घोषणा

करने के लिए भेजा कि अगले सुबह सभी निवासी, दोनों लिंगों और सभी उम्र के, युवा कन्या फेवरोनिया के पराक्रम को देखने के लिए इकट्ठा हों।

यह सुनकर, शहर और आसपास के गांवों के सभी लोग इस तमाशे को देखने के लिए बड़ी संख्या में इकट्ठा हुए, ताकि वे संत फेवरोनिया के पराक्रम के साक्षी बन सकें। जैसे ही सुबह हुई, अत्याचारी ने अपने सबसे क्रूर सैनिकों को मठ भेज दिया और उन्हें आदेश दिया कि वे उस पवित्र कन्या को वहां से न्यायस्थल पर ले आएं। मठ पहुंचने पर, सैनिकों ने निर्दयता से फेवरोनिया को पकड़ लिया और उसकी गर्दन पर बेड़ियां डालकर उसे मठ से बाहर घसीट लिया।

तब व्रिएना और फोमाइदा ने अपनी शिष्या को आँसुओं से सींचते हुए गले लगा लिया और जोर-जोर से रोने लगीं तथा सैनिकों से विनती करने लगीं कि उन्हें फेवरोनिया से थोड़ी देर बात करने की अनुमति दे दें; सैनिक मान गए। एक बार फिर, व्रिएना और फोमाइदा ने सैनिकों से विनती करना शुरू किया कि उन्हें भी अपने साथ ले जाया जाए ताकि वे वही यातना झेल सकें जो फेवरोनिया का इंतज़ार कर रही थी; क्योंकि बुज़ुर्ग नन को डर था कि उनके सहारे के बिना, वह अकेले ही उन यातनाओं से डर सकती है।

लेकिन सैनिकों ने कहा:

'हमें तुम्हें अदालत के सामने लाने का आदेश नहीं मिला है, बल्कि केवल फेवरोनिया को लाने का मिला है।'

और इस प्रकार व्रिएना और फोमाइदा ने फेव्रोनिया के विश्वास को मजबूत करना शुरू कर दिया।

व्रीएना ने उससे इस प्रकार कहा:

'देखो, मेरी बेटी फेव्रोनिया, तुम अब एक शहीद की यात्रा पर निकल रही हो। जान लो कि दिव्य वर तुम्हारी पीड़ा को देखेगा, और स्वर्गदूतों की सेना ने तुम्हारे लिए पहले ही विजय का ताज तैयार कर रखा है, यदि तुम अंत तक साहसपूर्वक अपनी पीड़ा सहन करो। सावधान रहना कि तू यातनाओं से न डरें और राक्षसों के लिए उपहास का पात्र न बन जाएँ। जब वे तुम्हारे शरीर को घावों से चीर-फाड़ने लगें, तो उस पर रहम मत करना, क्योंकि भले ही हम ऐसा न चाहें, कुछ समय बाद यह ताबूत में रखा जाएगा और राख में बदल जाएगा। यहाँ मैं तेरी अच्छी या बुरी खबर का बेसब्री से इंतजार करूँगी और कड़वे आँसू बहाऊँगी। इसलिए, मेरी बेटी—मैं तुझसे विनती करती हूँ—कि मुझे तेरी अच्छी खबर मिले। काश कोई मुझे यह अच्छी खबर सुनाए कि फेवरोनिया ने मसीह के लिए शहादत पाई है और शहीदों की कतार में शामिल हो गई है!

इस पर, धन्य फेवरोनिया ने व्रिएन्ना को उत्तर दिया:

'माँ, मुझे विश्वास है, कि जैसे मैंने अब तक आपके आज्ञाओं का कभी उल्लंघन नहीं किया है, वैसे ही अब मैं आपके निर्देश और आज्ञा का दृढ़ता से पालन करूँगी। और लोग देखेंगे और चकित होंगे, और वे व्रिएन के श्रम की प्रशंसा करेंगे, कहते हुए: "देखो, सचमुच यह व्रिएन की ही रोपाई और अंकुर है—वह महान बूढ़ी महिला!" क्योंकि मैं एक महिला के शरीर में एक पुरुष की आत्मा की शक्ति का प्रदर्शन करूँगी; और आप मेरी प्रार्थना करें और मुझे आगे आने वाले कार्य को करने से न रोकें।

तब थोमाइस ने उससे कहा:

'जिस प्रकार प्रभु जीवित हैं, मेरी बहन फेवरोनिया, मैं भी तुम्हारे पदचिह्नों पर चलूँगी। मैं सांसारिक वस्त्र धारण करूँगी और लोगों के बीच खड़ी होकर, मैं तुम्हारे पराक्रम को देखूँगी।'

जब सैनिक फेवरोनिया को उत्साहित करने लगे और उसे खींचकर ले जाने ही वाले थे, तब उसने उन पवित्र वृद्ध महिलाओं से कहा:

'मैं आपसे विनती करती हूँ, मेरी माताओं, इस यात्रा के लिए मुझे आशीर्वाद दें और मेरी प्रार्थना करें।'

और व्रिएना ने स्वर्ग की ओर अपने हाथ उठाकर ऊँचे स्वर में प्रार्थना करना शुरू किया:

'हे प्रभु यीशु मसीह, जो एक बार अपनी दासी थेकला को उनके दुःखों के समय में पौलुस के रूप में प्रकट हुए थे, अब अपने परीक्षण के समय अपनी विनम्र दासी फेवरोनिया को भी प्रकट हों, और उन्हें स्वर्ग से अदृश्य रूप से बल प्रदान करें, ताकि उनके द्वारा भी आपका पवित्र नाम महिमामय हो।'

इस प्रकार प्रार्थना करने के बाद, व्रिएना ने आँसुओं से भरी आँखों से फेवरोनिया को गले लगा लिया और उसे चूमकर जाने दिया। हालाँकि, सैनिकों ने पवित्र कन्या को पकड़ लिया और उसे उसके यातनाकर्ता, सेलिनिस के पास ले गए।

अपनी प्रिय आध्यात्मिक बेटी के साथ थोड़ी दूर तक चलने के बाद, व्रिएना रोती-बिलखती मठ में लौट आईं; और, चर्च में जमीन पर गिर पड़ीं, और फव्रोनिया के लिए ईश्वर से प्रार्थना करते हुए पुकारीं। जहाँ तक थोमाइस की बात है,

उसने गरिजाघर में व्रएिना को रोते हुए छोड़ दयिा, और एक सामान्य महलिा के वस्त्र धारण कर फेवरोनयिा के पीछे-पीछे मृत्युदंड के स्थान पर चली गई। जो महलिाएँ हर शुक्रवार को फेवरोनयिा की शास्त्रीय शक्षिाएँ सुनने के लएि मठ में आती थीं, वे भी वहाँ गईं; वे अपने सीने पीटते हुए, अपने शक्षिक से वंचति होने के गहरे दुख से अभभिूत होकर, आँसुओं में सार्वजनकि अपमान के स्थान पर दौड़ पड़ीं। यह खबर भी इरयिा तक पहुँची कि फेवरोनयिा को सार्वजनकि अपमान के स्थान पर ले जाया गया था, और वह इतनी ज़ोर से रोई कि उसके माता-पतिा और घर का हर कोई दंग रह गया और पूछने लगा:

'तुम्हें क्या हुआ, इरयिा?'

'मेरी बहन फेवरोनयिा को सार्वजनकि अपमान के स्थान पर ले जाया गया है; मेरे गुरु को मसीह के लएि पीड़ति होने भेजा गया है,' इरयिा ने अपनी ससिकयिों के बीच जवाब दयिा।

इरयिा के माता-पतिा ने उसे सांत्वना देने की कोशशि की, लेकनि वह और भी ज़ोर से रो पड़ी और उनसे बोली:

'मुझे अकेला छोड़ दो – मैं अपनी बहन और अपनी शक्षिकिा, फेवरोनयिा के लएि रोना बंद नहीं करूँगी।'

जब उसने ऐसा कहा, तो उसके माता-पतिा भी फूट-फूट कर रो पड़े, और पूरे घर में संत फेवरोनयिा के लएि वलिाप गूँज उठा; लेकनि इरयिा ने अपने माता-पतिा से सार्वजनकि अपमान के स्थान पर जाने की मन्नितें करनी शुरू कर दीं, और उन्होंने उसका रास्ता नहीं रोका। अपने साथ कई पुरुष और महलिा दासों को लेकर, वह रोते हुए फांसी के स्थान पर चली गई और वहां आंसुओं में डूबी हुई बड़ी संख्या में महलिाओं से मलिीं; उनमें थॉमेस भी थीं, जो सांसारकि वस्त्रों में चल रही थीं। उन्हें पहचानकर, इरयिा उनके बगल में चलने लगीं, और दोनों, बहुत सारे आंसू बहाते हुए, नर्धिारति स्थान पर पहुंच गईं। वहाँ एक वशिाल भीड़ जमा हो चुकी थी, और न्यायाधीश पहले से ही अपनी-अपनी जगह पर वरिाजमान थे। जब सब कुछ तैयार हो गया, तो सेलनिस और लाइसमिैक्स ने आदेश दयिा कि संत फेवरोनयिा को उनके सामने लाया जाए। संत उनके सामने अपनी पीठ पर बंधे हाथों और गर्दन में जंजीरों में जकड़ी हुई प्रकट हुईं; यह देखकर, उपस्थति लगभग सभी लोग फूट-फूट कर रो पड़े और कड़वाहट भरे वलिाप और कराह में डूब गए। यातना देने वाले सेलनि ने चुप्पी का इशारा करते हुए, लाइसमिाकस से कहा:

'इस महलिा से पूछताछ करो और उसके जवाब सुनो।'

और लाइसमिाखस ने फेब्रोनयिा से पूछताछ करना शुरू कयिा। सबसे पहले उसने उससे पूछा:

'बताओ, तुम्हारा दर्जा क्या है – क्या तुम दासी हो, या एक स्वतंत्र महलिा?'

'हाँ, मैं एक दासी हूँ,' फेब्रोनयिा ने उत्तर दयिा।

'तो कसिकी?'

'मसीह की,' पवत्रि कन्या ने नडिरता से स्वीकार कयिा।

लाइसमिाकस ने उससे फरि पूछा:

'तुम्हारा नाम क्या है?'

और फेवरोनयिा ने उत्तर दयिा:

'मैं खुद को एक वनिम्र ईसाई कहती हूँ।'

लाइसमिाखुस ने फरि पूछा:

'हम आपका नाम जानना चाहते हैं।'

फेवरोनयिा ने जवाब दयिा, 'मैं आपको पहले ही बता चुकी हूँ कि मैं एक ईसाई हूँ, लेकनि अगर आप वह नाम जानना चाहते हैं जो मुझे जन्म के समय दयिा गया था, तो मैं आपको बता दूँगी: मेरी माँ ने मेरा नाम फेवरोनयिा रखा था।'

तब यातनाकर्ता सेलनि ने लाइसमिाकस को पूछताछ बंद करने का आदेश दयिा और स्वयं उस पवत्रि कन्या से मुखातबि हुआ।

'फेवरोनयिा, मैं देवताओं को साक्षी मानकर कहता हूँ कि मैं तुम्हारे साथ बात करने के लएि झुकना नहीं चाहता था; लेकनि चूँकि तुम्हारी कोमलता और तुम्हारे चेहरे की सुंदरता ने तुम पर मेरे क्रोध को शांत कर दयिा है, मैं अब तुमसे एक दंडति महलिा के रूप में नहीं, बल्कि अपनी बेटी के रूप में पूछूँगा। तो सुनो, मेरी बेटी: देवता साक्षी हों कि मैं तुमसे सच कह रहा हूँ। तुम मेरा भतीजा लाइसमिाकस को मेरे साथ यहाँ बैठे देख सकती हो; उसके पतिा, एम्फीमस—जो अब दविंगत हैं—और मैंने उसके लएि पत्नी के रूप में महान संपत्ति वाली एक कुलीन कन्या, सेनेटर प्रोस्फोरस की बेटी का चयन कयिा था, और उसकी सगाई पहले ही उससे कर दी थी। अब, यदि तुम देवताओं के सामने अपना दोष स्वीकार कर लो, तो हम

प्रोस्पोरस की बेटी से विवाह-संबंध तोड़ देंगे और तुम्हारे साथ एक नया विवाह-संबंध तय करेंगे। और तुम लिसिमाकस की पत्नी बन जाओगी और, उसकी पत्नी के रूप में, उसके दाहिने हाथ पर बैठोगी, ठीक वैसे ही जैसे मैं अभी यहाँ बैठा हूँ। आप देख सकती हैं कि वह आपकी ही तरह सुंदर है। इसलिए मेरी बात मानिए, मानो मैं आपका पिता हूँ; बदले में, मैं आपको कुलीन और धनी बना दूँगा, और आपको कभी गरीबी नहीं देखनी पड़ेगी। मेरी न तो कोई पत्नी है और न ही कोई संतान – और जो कुछ भी मेरे पास है, वह सब मैं तुम्हें देता हूँ – और तुम्हें अपनी सभी संपत्तियों की स्वामिनी बनाता हूँ। मैं यह सब तुम्हारा दहेज मेरे स्वामी लाइसिमाकस को दूँगा, और मैं आप दोनों का पिता बनूँगा। तब, यह देखकर कि तुम्हें कितना बड़ा सम्मान मिला है, सभी महिलाएँ तुम्हारी प्रशंसा और सम्मान करेंगी; हमारा वीर राजा भी तुम पर प्रसन्न होगा और अपनी ओर से तुम दोनों को कई पुरस्कार देगा, क्योंकि उसने लिसिमेकस को रोम का राज्यपाल नियुक्त करने का वादा किया है। अब तुमने वह सब कुछ सुन लिया है जो मैंने तुमसे कहा है। तो मुझे बताओ कि तुम हमारे देवताओं से मुंह नहीं मोड़ोगी; ऐसा करके तुम मेरी आत्मा को बहुत प्रसन्न करोगी। लेकिन अगर तुम मेरी सलाह नहीं मानोगी, तो मैं देवताओं की कसम खाती हूँ कि तुम तीन घंटे भी नहीं जियोगी। इसलिए अपने लिए चुन लो कि तुम क्या चाहती हो, और हमें बताओ।

इस पर, संत फेवरोनिया ने सेलिनस को उत्तर दिया:

'न्याय करो! स्वर्ग में मेरा एक महल है, जो मानव हाथों से नहीं बना है, जहाँ एक ऐसा विवाह होता है जो हमेशा के लिए अटूट है, और मेरी दहेज में संपूर्ण स्वर्गीय राज्य है। एक अमर वर होने के कारण, मैं एक नश्वर और नाशवान मनुष्य के साथ स्वयं को जोड़ना नहीं चाहती। जहाँ तक आप मुझे जो वादा करते हैं, मैं उसे सुनना भी नहीं चाहती।' नहीं, न्यायाधीश, खुद को परेशान मत कीजिए! आप चापलूसी या प्रलोभन से कुछ भी हासिल नहीं कर पाएंगे, और न ही आप मुझे धमकियों से डरा पाएंगे।

यह उत्तर सुनकर सेलिनि को बहुत गुस्सा आया और उसने सैनिकों को आदेश दिया कि वे उसके कपड़े फाड़ दें, फिर उसे एक पतली, छोटी सी चादर से लपेट दें, और उसे लगभग नग्न, सबके सामने प्रदर्शन के लिए रख दें; उसे उम्मीद थी कि पवित्र कन्या, खुद को ऐसी बेइज्जती में देखकर, अपनी बेइज्जती से शर्मिंदा होगी और अपनी हठधर्मी पर पछताएगी। सैनिकों ने तुरंत सेलिनि के आदेशों का पालन किया और शहीद को, लगभग पूरी तरह से नग्न, सभी के सामने खड़ा कर दिया।

तब सेलिनि ने उससे कहा:

'अब तुम मुझसे क्या कहोगी, फेवरोनिया? तुम देखती हो कि तुम्हारी किस्मत में क्या अपमान लिखा है, जबकि तुम बड़ी-बड़ी नेमतों का आनंद ले सकती थीं।'

इस पर फेवरोनिया ने अपने यातनाकर्ता से कहा:

'यह जान लो, न्यायाधीश: भले ही तुम मुझसे ये कपड़े ही नहीं, बल्कि यह फटा-पुराना वस्त्र भी उतार दो, और मुझे पूरी तरह नग्न छोड़ दो, मैं इस लज्जा को कुछ भी नहीं समझूँगी। क्योंकि मनुष्य और स्त्री का एक ही स्रष्टा है; उसकी खातिर मैं न केवल नग्नता की लज्जा सहने को तैयार हूँ, बल्कि मैं तलवार से कटने और आग में जलने की भी इच्छा रखती हूँ। ओह, काश वह जिसने मेरी खातिर स्वेच्छा से अनगिनत दुख सहे, मुझे अपने लिए दुख सहने की अनुमति दे!

सेलिनि ने कहा, "हे लज्जाहीन, हर अपमान के योग्य!" "मैं देखता हूँ कि तुम अपनी सुंदरता पर गर्व करते हो, और इसलिए नग्नता के अपमान को शर्म नहीं मानते, क्योंकि तुम्हें उम्मीद है कि लोगों के बीच नग्न खड़े होकर अपनी सुंदरता से महिमा प्राप्त करोगे।"

संत ने उससे उत्तर दिया:

'मसीह मेरी गवाही हैं कि, आज के दिन तक, मैंने किसी पुरुष का चेहरा भी नहीं देखा है, जैसे संसार में से किसी ने भी मेरा चेहरा नहीं देखा है। निश्चय ही अब, जब मैं तुम्हारी शक्ति में हूँ, क्या मुझे निर्लज्ज होना चाहिए? नहीं, तुम निर्लज्ज हो, जो एक कन्या के शरीर को सभी के सामने उजागर कर रहे हो। लेकिन मुझसे बताओ, हे पागल न्यायाधीश: यदि कोई पहलवान ओलंपिक खेलों में प्रवेश कर[4596] ता है, तो क्या वह अपने प्रतिद्वंद्वी को हराने तक नग्न कुश्ती नहीं करता? ठीक उसी तरह, शत्रु से लड़ने के लिए यहाँ आकर और अपने शरीर पर घावों और आग की उम्मीद करते हुए, मैं कपड़े

[4596] यह, बेशक, दक्षिणी ग्रीस में स्थित ओलंपिया नामक शहर में हर चार साल में आयोजित होने वाली कुश्ती और दौड़ प्रतियोगिताओं को संदर्भित करता है। ये प्रतियोगिताएं यूनानी राष्ट्रीय समारोहों के रूप में होती थीं।

पहनकर उन्हें कैसे सहन कर सकती हूँ? क्या घाव नग्न शरीर को ही नहीं लगते? और इसलिए मैं नग्न निकलती हूँ, ताकि यातनाओं की परवाह न करते हुए, मैं शैतान – तुम्हारे पिता – को हरा सकूँ।

तब सेलिन ने अपने सेवकों से कहा:

'चूँकि यह महिला स्वयं यातना चाहती है और कहती है कि वह न तो आग से और न ही घावों से डरती है, इसलिए उसे ज़मीन पर लिटा दो, उसके नीचे आग जला दो, और चार सैनिकों को उसकी रीढ़ की हड्डी पर डंडों से मारने दो।'

तुरंत योद्धाओं ने आज्ञा के अनुसार संत को यातना देना शुरू कर दिया। उन्होंने उसे बहुत देर तक पीटा, जिससे उसके शरीर से खून की धाराएँ बहने लगीं। और यह सुनिश्चित करने के लिए कि उसके नीचे जलती आग बुझ न जाए, उसके यातना देने वालों ने उस पर तेल डाल दिया, ताकि लिपटें और बड़ी हो जाएँ और शहीद को और भी ज़ोर से झुलसा सकें। जब संत को इस तरह यातना दी जा रही थी, तो भीड़ में से कई लोग सेलिना से पुकारने लगे:

'इसे माफ कर दो, हे दयालु न्यायाधीश, इस युवती को माफ कर दो!'

लेकिन उसने उनकी विनतियों पर कोई ध्यान नहीं दिया और पवित्र कन्या को और भी क्रूरता से यातना देने का आदेश दिया; फिर, अपना क्रोध कुछ शांत होने पर, उसने यातना बंद करने का आदेश दिया। सैनिक फिर्रोनिया को छोड़ गए और, यह मानकर कि वह पहले ही मर चुकी है, उसे चिता से अलग फेंक दिया।

फोमाइदा, फेवरोनिया के भयानक कष्ट को देखकर, आत्मा और शरीर से विक्षिप्त हो गई और इरिया के पैरों तले जमीन पर गिर पड़ी। यह देखकर, इरिया ने जोर से पुकारा:

'हाय रे मेरी बहन फेवरोनिया! हाय रे मेरी शिक्षिका! अब मैं तुम्हारी शिक्षाएँ नहीं सुनूँगी। और मैं न केवल तुम्हें, बल्कि फोमाइदा को भी खो दूँगी; क्योंकि वह भी, तुम्हारे लिए शोक में, मर रही है।'

ज़मीन पर लेटी फेवरोनिया ने इरिया की बातें सुनीं और पास खड़े लोगों से विनती करने लगी कि वे थकी-हारी फोमाइदा के चेहरे पर पानी डालें। उन्होंने उसकी बात मानी, और फोमाइदा होश में आकर अपने पैरों पर खड़ी हो गई।

जब सेलिन ने देखा कि फिर्रोनिया अभी भी जीवित है, तो उसने उपहास करते हुए ये शब्द कहे:

'तो, फेवरोनिया, क्या कहती है? तुम्हारा पहला शहादत का कार्य तुम्हें कैसा लगा?'

फिर्रोनिया ने जवाब दिया, 'देखो, तुम्हारी कोशिशों के बावजूद, मैं अजेय रह गई हूँ, क्योंकि मैं सभी यातनाओं का तिरस्कार करती हूँ।'

फिर सेलीन ने अपने नौकरों को आदेश दिया:

'उसे एक पेड़ से लटका दो और उसकी पीठ को लोहे की कंघियों से खुरच दो; फिर उसके घावों को आग से दाग दो ताकि उसकी हड्डियाँ तक झुलस जाएँ।'

यातना देने वालों ने तुरंत इस आदेश को अमल में लाना शुरू कर दिया। ऐसी पीड़ा के बीच, फेब्रोनिया ने अपनी आँखें आकाश की ओर उठाईं और प्रभु से प्रार्थना करने लगी:

'मेरी सहायता करो और इस घड़ी अपनी दासी को तुच्छ न समझो।'

और इन शब्दों के बाद, वह चुप हो गई।

जब उसके शरीर को बेरहमी से घिसा जा रहा था और आग से झुलसाया जा रहा था, तो तमाशा देखने आए कई लोग ऐसी भयानक यातना देखकर सहन नहीं कर सके और मुँह फेर लिया; हालाँकि, अन्य लोग न्यायाधीश से विनती करने लगे कि वह उस युवा और पूरी तरह से मासूम कन्या को क्षमा कर दे। फिर सेलिन ने अपने सेवकों को यातना बंद करने का आदेश दिया। फिर उसने पेड़ से लटकी फेवरोनिया से कुछ प्रश्न पूछने शुरू किए, लेकिन वह चुप रही। क्रूरता से आग-बबूला होकर, यातना देने वाले ने आदेश दिया कि उसे पेड़ से उतारकर जमीन में गाड़े गए खंभे से बांध दिया जाए – फिर उसने कहा:

'चूंकि यह दुष्ट महिला मुझसे जवाब देने से इनकार कर रही है, इसकी जीभ काट दो और उसे आग में फेंक दो।'

यह सुनते ही, पवित्र शहीद ने तुरंत अपनी जीभ बाहर निकाली और सैनिक को आदेश का पालन करने का इशारा किया। लेकिन जैसे ही सैनिक ने उसकी जीभ को काटने के लिए छुआ, वहाँ खड़ी भीड़ ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाने लगी, अपने देवताओं के नाम पर न्यायाधीश से विनती करने लगी और उससे अपना आदेश वापस लेने की मिन्नतें करने लगी। लोगों की विनती मानते हुए, सेलिन ने आदेश दिया कि उसकी जीभ न काटी जाए, बल्कि इसके बजाय उसके दाँत उखाड़े जाएँ। तुरंत, यातना देने वालों में से एक ने एक लोहे का औजार उठाया और शहीद के दांत एक-एक करके उखाड़ने लगा। जब उसने 17

दांत उखाड़ लिए, तो सेलनि ने यातना बंद करने का आदेश दयिा। इस बीच, संत के मुंह से खून की धाराएं बह रही थीं, और वह अपनी क्रूर पीड़ा से पूरी तरह थक चुकी थीं। एक डॉक्टर को बुलाया गया, जसिने खून बहना बंद कर दयिा।

तब सेलनि ने संत से एक बार फरि पूछताछ करना शुरू कयिा और उन्हें ये शब्द कहकर संबोधति कयिा:

'कम से कम अब, फेब्रोनयिा, क्या तुम न्यायालय की मांग के आगे झुककर देवताओं में अपने वशि्वास की घोषणा करोगी?'

संत ने उत्तर दयिा:

'हे[4597] , तुझ पर शाप हो, हे शैतान की शापति दासी जो दुष्टता में बूढ़ी हो गई है! तू कतिनी देर तक मेरे रास्ते में खड़ी रहेगी, मेरे वधू-वर, मसीह के पास जाने से मुझे रोकेगी? जल्दी से मुझे इस नश्वर शरीर से मुक्त कर दे, क्योंकि मेरा वधू-वर तो पहले से ही मेरा इंतज़ार कर रहा है।'

इस पर सेलनि ने फेवरोनयिा से कहा:

'अब मैं आदेश देती हूँ कि तुम्हारे शरीर को टुकड़े-टुकड़े कर दयिा जाए, और तलवार तथा आग के हवाले कर दयिा जाए। क्योंकि मैं देखती हूँ कि तुम अपनी जवानी पर नरि्लज्जता से घमंड करती हो। लेकनि इससे तुम्हें कोई लाभ नहीं होगा; तुम्हारा घमंड तुम्हारे लिए और भी बड़ी बुराई और अत्यंत कष्टदायक यातनाएँ लाएगा।'

पवत्रि शहीद, अत्यधकि यातनाओं से थककर, और कुछ नहीं कह सकीं, लेकनि उनकी खामोशी ने उनके यातनाकर्ता के क्रोध को और भड़का दयिा: क्रूर सेलनि ने आदेश दयिा कि फेब्रोनयिा के कन्या स्तनों को काट दयिा जाए। भीड़ चलि्लाई, न्यायाधीश से उस कन्या को क्षमा करने और अपने आदेश को रद्द करने की वनिती करने लगी। लेकनि यातना देने वाले पर क्रोधति सेलनिस ने उससे कहा:

'हे हमारे देवताओं के घृणति शत्रु, तुम वलिंब क्यों कर रहे हो? जो आज्ञा तुम्हें दी गई है, उसे तुम क्यों नहीं पूरा करते?'

तब नौकर ने एक ब्लेड लेकर पवत्रि शहीद का दाहनिा स्तन काटना शुरू कर दयिा। उसने, हालांकि, अपनी आँखें स्वर्ग की ओर उठाकर, ऊँचे स्वर में ईश्वर से प्रार्थना की, यह कहते हुए:

'हे प्रभु मेरे ईश्वर, उन यातनाओं को देखो जनि्हें मैं सह रही हूँ, और मेरी आत्मा को अपने हाथों में ग्रहण करो।'

यह कहकर, वह चुप हो गई और फरि कुछ नहीं बोली। जब दोनों स्तनों को काटकर जमीन पर फेंक दयिा गया, तो सेलनि ने आग लाने का आदेश दयिा और स्तनों को काटे जाने वाली जगह पर बने घावों को उसी से दाह करने का आदेश दयिा। इसी तरह, उसने शहीद के गर्भ को जलाने का आदेश दयिा, ताकि उसकी आंतों का सारा मांस भस्म हो जाए। यह देखकर, बहुत से लोग, इतनी यातना का गवाह बनने में असमर्थ, दृश्य से मुंह मोड़ गए और जोर-जोर से डायोक्लेटयिन और उसके देवताओं को कोसा।

उस समय, थोमाइस और हएिरयिा ने व्रएिना को हुई सारी घटना की सूचना देने के लिए एक दासी को मठ भेजा। संदेशवाहक की बात सुनकर, व्रएिना आध्यात्मकि आनंद और हर्ष से भर गईं, और आँखों में आँसू लिए उन्होंने इस प्रकार ईश्वर से पुकारना शुरू कर दयिा:

'हे प्रभु यीशु मसीह, हमारे ईश्वर, अपनी दासी फेब्रोनयिा की सहायता के लिए आओ!'

तब, जमीन पर गरिकर, वह रोते-रोते बोली:

'अब तुम कहाँ हो, फेब्रोनयिा? तुम कहाँ हो, मेरी कोमल बेटी? तुम कहाँ हो, मसीह की सेवक? तुम कहाँ हो, मठ की शोभा?'

अंत में, जमीन से उठकर और अपने हाथ स्वर्ग की ओर उठाकर, वह चलि्लाई:

'हे प्रभु! अपनी इस दीन दासी पर दृष्टि डालो, और उसके संघर्ष में उसकी सहायता करो! यह अनुग्रह करो कि मैं उसे एक शहीद के रूप में देखूँ, जो परलोक सधिार गई है और पवत्रि शहीदों में गनिती की गई है।'

उसी क्षण, नष्पिादन के स्थान पर नम्निलखिति हुआ: यातना देने वाले सेलनि ने आदेश दयिा कि फेब्रोनयिा को उस खंभे से खोल दयिा जाए जसिसे उसे बाँधा गया था; संत को खोल दयिा गया, और, अपने पैरों पर खड़ा न हो पाने के कारण, वह तुरंत जमीन पर गरि पड़ी। यह देखकर, काउंट प्रमि ने चुपचाप लाइसमिकस से कहा:

'यह युवती इतनी क्रूर यातना क्यों सह रही है? क्या यातना समाप्त करने का समय नहीं आ गया है?'

[4597] अनाथेमा का अर्थ है बहष्किार। यह बहष्किृत व्यक्ति को ईश्वर के न्याय के हवाले करने का कार्य है।

लाइसमिाकस ने उत्तर दयिा:

'रुक जाओ, भाई, क्योंकि उसका दुख उन कई लोगों के लिए लाभदायक होगा जो उसे देख रहे हैं। और मुझे वशि्वास है कि यह दुख मेरा भी उद्धार होगा।' मैंने अपनी माँ से बहुत कुछ सुना है, जो बताती थीं कि कैसे शहीदों ने अपने साहस से कई लोगों को मोक्ष के मार्ग पर पहुँचाया। इस कन्या को भी अपना बलदिान अंत तक सहना चाहिए, ताकि वह मुझे और कई अन्य लोगों को बचा सके।

उस क्षण, फेब्रोनयिा को ज़मीन पर गरिता देख, हएिरयिा ने सेलनिस को संबोधति करते हुए ज़ोर से पुकारा:

'हे अमानवीय यातनाकर्ता! क्या इस मासूम कन्या को उन पहली यातनाओं के हवाले करना तुम्हारी क्रूरता के लिए पर्याप्त नहीं था? क्या तुम्हें अपनी ही माँ याद नहीं, जो स्वयं भी एक नारी की देह वाली थी? क्या तुम्हें स्वयं उन स्तनों से पोषण नहीं मलिा, जन्हिें तुमने काटने का आदेश दयिा है? क्या तुम्हें सरि्फ इसलिए कसिी महलिा के स्तन का दूध पयिा गया था ताकि तुम महलिाओं पर ऐसी क्रूर नरि्दयता ढा सको? मैं हैरान हूँ कि तुम्हारे क्रूर और अमानवीय स्वभाव को कुछ भी वश में नहीं कर सकता। लेकनि यह जान लो: जसि तरह तुमने इस कन्या पर कोई दया नहीं दखिाई, उसी तरह स्वर्ग का राजा भी तुम पर कोई दया नहीं करेगा।

तो इरयिा चल्लिाई। सेलनि, उसकी बातें सुनकर, एक बार फरि क्रोध से भर उठा और सैनकिों को भीड़ से इरयिा को पकड़ने का आदेश दयिा, ताकि उसे तुरंत यातना दी जा सके। आदेश सुनकर, इरयिा खुशी-खुशी स्वयं सैनकिों से मलिने चली गई, भीड़ के बीच से अपना रास्ता बनाते हुए; ऐसा करते हुए, उसने दोहरायाः

'हे मेरी स्वामनिी फेब्रोनयिा के प्रभु ईश्वर! मुझे, अपनी दीन दासी को, उसके साथ स्वीकार करो।'

लेकनि इससे पहले कि वह न्याय के स्थान पर पहुँचती, सेलनिस के मत्रिों ने उसे सलाह देनी शुरू कर दी कि वह इरयिा को लोगों की आँखों के सामने — उसके कुलीन जन्म को ध्यान में रखते हुए — यातना न दे।

वे बोले, 'हमें डर है कि यहाँ इकट्ठी हुई भीड़, उसे दुखी देखकर, उसके साथ-साथ पीड़ति होना चाहेगी, और फरि हमें पूरे शहर से नपिटना पड़ेगा।'

सेलनि ने उनकी सलाह मानी और इरयिा को यातना देने का आदेश नहीं दयिा, बल्कि बस गुस्से में उसकी ओर मुड़कर चल्लिायाः

'सुन, इरयिा! मैं देवताओं की कसम खाकर कहता हूँ कि अपने अभद्र और नरि्लज्ज शब्दों से तुम फेवरोनयिा पर और भी अधकि यातना ला रही हो।'

यह कहकर, उसने तुरंत संत फेवरोनयिा के दोनों हाथ काट देने का आदेश दे दयिा। एक नौकर ने शहीद के दाहनिे हाथ के नीचे लकड़ी का एक टुकड़ा रखा और कुल्हाड़ी से वार कर उसे काट दयिा; उसी तरह, उसने फेवरोनयिा का बायाँ हाथ भी काट दयिा। इतने से संतुष्ट न होकर, क्रूर यातना देने वाले ने शहीद की दाहनिी टांग को काटने का आदेश दयिा। जल्लाद ने संत की टांगों के नीचे लकड़ी का एक खंड रखा और अपने हाथों में कुल्हाड़ी लेकर, घुटने के ठीक ऊपर बड़ी ताकत से वार कयिा, लेकनि शहीद की टांग को काट नहीं सका; फरि उसने दूसरी बार वार कयिा, लेकनि फरि भी वह सफल नहीं हुआ। यह देखकर भीड़ भय और भ्रम में चल्लिाने लगी, और हर कोई यातना देने वाले की क्रूरता से आक्रोशति हो गया। जल्लाद ने उसकी टांग पर तीसरी बार वार कयिा, और तब कहीं जाकर वह मुश्कलि से उसे काट सका। फेवरोनयिा इस भयंकर यातना से पूरी तरह काँप रही थी और, यद्यपि वह पहले से ही मौत की कगार पर थी, फरि भी, जहाँ तक उसकी शक्ति थी, उसने अपनी दूसरी टांग आगे बढ़ाई, और उसे भी काटे जाने के लिए फाँसी के तख्ते पर रख दयिा। यह देखकर, सेलनि ने कहा:

'देखो इस नरि्लज्ज स्त्री में कतिनी बड़ी शक्ति है।'

फरि, अपने परचिारक की ओर मुड़कर, उसने बड़े क्रोध से कहा:

'उसकी दूसरी टांग भी काट दो।'

नौकर ने तुरंत यह आदेश पूरा कयिा।

तब लाइसमिैखस अपनी कुर्सी से उठकर सेलनि से बोला:

'क्या तुम सच में इस बेचारी कन्या को और अधकि पीड़ा देना चाहते हो? चलो इस जगह से चलें, क्योंकि दोपहर के भोजन का समय हो गया है।'

लेकनि दुष्ट सेलनिस ने उत्तर दयिा:

'मैं देवताओं की कसम खाती हूँ कि मैं उसे जीवित नहीं छोड़ूँगी, बल्कि तब तक यहीं रहूँगी जब तक वह मर नहीं जाती।'

फिर भी शहीद की आत्मा कई घंटों तक उसके शरीर से नहीं निकली; फिर सेलिनिस ने अपने हथियार-वाहकों से पूछा:

'क्या यह निर्लज्ज महिला अभी भी जीवित है?'

'हाँ, वह अभी भी ज़िंदा है,' उन्होंने जवाब दिया, 'उसकी आत्मा अभी भी उसके भीतर वास करती है।'

तब सेलिनि ने आदेश दिया कि शहीद का पवित्र सिर काट दिया जाए।

एक योद्धा ने एक हाथ में तलवार उठाकर, दूसरे हाथ से शहीद के बाल पकड़ लिए और उसे भेड़ की तरह पीठ के बल दबा दिया, और फिर उसका सिर काट दिया। तुरंत बाद, सेलिनि उठकर खाने चला गया; लाइसिमैखस उसके साथ रोते हुए चला।

संत फेवरोनिया की शहादत के बाद, लोगों में विश्वासियों ने उनके पवित्र अवशेष ले जाने की इच्छा जताई। लेकिन लाइसिमैखस ने उनकी रक्षा के लिए सैनिक नियुक्त किए, ताकि शहीद के शरीर का एक भी अंग चोरी न हो सके। जहाँ तक उसकी बात है, अपने महान दुःख और शोक के कारण खाने के इच्छुक न होकर, वह सेलिनिस के साथ अपने शयनकक्ष में बंद हो गया और वहाँ फेवरोनिया की हत्या पर कड़वा रोया।

लाइसिमैक्स का विलाप देखकर सेलिनिस भी दुखी हो गया और उसने भी खाने से इनकार कर दिया; लेकिन उठकर, वह महल के कमरों में घूमने लगा, और अत्यधिक कष्ट महसूस करने लगा। हालाँकि, जब उसने संयोग से अपनी आँखें ऊपर, आकाश की ओर उठाईं, तो वह अचानक बड़े भय और आतंक से ग्रस्त हो गया, और वह चुप हो गया। तब, एक गाय की तरह गर्जना करते हुए और ऊँचे स्वर में चिल्लाते हुए, उसने उस कक्ष में एक संगमरमर के स्तंभ से अपना सिर टकराया; खोपड़ी फटने के कारण, वह फर्श पर मृत पड़ा रह गया। सेलिनिस के नौकरों और सैनिकों में एक चीख मच गई, और हड़कंप मच गया। उनकी चीखें सुनकर, लाइसिमैखस अपने शयनकक्ष से बाहर आया; और अपने चाचा को जमीन पर मृत पड़ा हुआ देखकर वह हैरान और भयभीत हो गया। होश संभालने के बाद, उसने चीखें बंद करने का आदेश दिया और पूछना शुरू किया:

'यह कैसे हुआ?'

उपस्थित लोगों ने उन्हें जो कुछ उन्होंने देखा था, बताया।

हैरानी से सिर हिलाते हुए, लाइसिमाकस ने कहा:

'महान है ईसाई ईश्वर! वह वास्तव में पूजा के योग्य है, क्योंकि उसने निर्दोष रक्त का बदला ले लिया है!'

यह कहकर, उसने सेलिनिस के शव को शहर से बाहर ले जाकर हेलेनिक रीति-रिवाज के अनुसार दफनाने का आदेश दिया। फिर लाइसिमैक्स ने कोमिटि प्राइमस को बुलाया और उससे कहा:

'मैं तुम्हें ईसाई ईश्वर की कसम देता हूँ—मेरे दिए गए आदेश की अवज्ञा मत करना। फेवरोनिया के शरीर के लिए सड़न-रोधी लकड़ी का ताबूत तैयार करने में शीघ्रता करो, और संदेशवाहकों को भेजो कि वे पवित्र शहीद के अंतिम संस्कार के लिए ईसाइयों को बुलाएँ: उन्हें बिना किसी डर के इकट्ठा होने दो, क्योंकि सेलिनि पहले ही मर चुका है।' अब, मेरे प्रिय प्रिमि, तुम मेरी इच्छा जानते हो। सैनिकों का एक दल लो, और फेवरोनिया के शरीर के सभी कटे हुए अंगों को इकट्ठा करके उन्हें मठ ले जाओ; ऐसा करते समय, यह सुनिश्चित करो कि संत के शरीर का एक भी अंग खोया या गुम न हो। और यह कि कुत्ते उस जमीन को न चाटें जिस पर शहीद का खून गिरा था – इसके लिए, उसे साफ झाड़ने का आदेश दो, फिर उसे इकट्ठा करके अवशेषों के साथ मठ ले जाओ।

काउंट ने तुरंत सैनिकों को बुलाया और लाइसिमैक्स की इच्छानुसार, उन्हें शहीद के शरीर को मठ ले जाने का आदेश दिया; जबकि उन्होंने स्वयं उसके शरीर के अलग-अलग हिस्सों—उसका सिर, हाथ, पैर, स्तन और दांत—को इकट्ठा किया, उन्हें अपनी चोगे में लपेटा, और लोगों की एक बड़ी भीड़ के साथ उनके पीछे चल पड़े। कन्वेंट पहुँचने पर, काउंट ने थोमेस और हेरिया को छोड़कर किसी को भी अंदर नहीं जाने दिया।

कन्वेंट की अधीक्षिका, आदरणीय वृद्ध वीरिएना, फेवरोनिया के निर्जीव और क्षत-विक्षत शरीर और उसके कटे हुए अंगों को देखकर अत्यधिक दुःख और दया से अभिभूत हो गईं, और मृतक की भाँति जमीन पर गिर पड़ीं। काउंट ने कन्वेंट पर सैन्य पहरा लगाकर लाइसिमिकस के पास लौट गया।

कई घंटे बीत जाने के बाद ही व्रएिना को होश आया। जमीन से उठकर, वह शहीद के शव पर झपट पड़ी और उसे गले लगाकर, चीख पड़ी:

'हाय रे मेरी बेटी फेवरोनयिा, अब तुझे तेरी माँ की आँखों से दूर कर दयिा गया है। अब बहनों को कौन पवत्रि धर्मग्रंथ पढ़कर सुनाएगा? तेरे हाथों में जो कतिाबें थीं, उन्हें अब कौन खोलेगा?'

उसी क्षण, एफेरयिा के साथ गई सभी ननज़ी कन्वेंट लौट आईं और आँसू भरी आँखों से, पवत्रि शहीद फेवरोनयिा के शरीर के सामने ज़मीन पर सरि झुकाया।

धन्य हएिरयिा ने भी पवत्रि शहीद की अवशेषों के सामने कड़के आँसू बहाते हुए पुकारा:

'मैं उन पवत्रि चरणों के सामने सरि झुकाऊँगी जन्हिोंने साँप के सरि को कुचल दयिा; मैं उन पवत्रि घावों को चूमूँगी जो मेरे आत्मा पर अनुग्रह और चंगाई की धाराएँ बहाते हैं; मैं उसकी माथा पर प्रशंसा के हार का मुकुट चढ़ाऊँगी जसिने अपने पराक्रम की महानता से, संपूर्ण नारी जातकिो मुकुट पहनाया है।'

और सभी बहनें शहीद की अवशेषों पर रो पड़ीं। तब, उन्हें धोने के बाद, उन्होंने उन्हें उस तख्ते पर रखा जसि पर संत अपने जीवनकाल में थोड़ी देर वश्रिाम करती थीं; शहीद के शरीर को इस तख्ते पर रखने के बाद, उन्होंने सभी कटे हुए अंगों को घावों पर वापस रख दयिा और भजन गाते हुए, पूजनीय अवशेषों को चर्च में ले गए।

जैसे ही शाम हुई, व्रएिना ने मठ के द्वार खोलने का आदेश दयिा ताकजिो भी चाहे वे चर्च में प्रवेश कर सकें और शहीद को देखकर उस ईश्वर की महमिा कर सकें, जसिने उन्हें उनके दुःखों में इतनी महान हम्मित और धैर्य प्रदान कयिा था। और लोगों की एक बड़ी भीड़ आई। लसिीमाकस भी काउंट प्रमि के साथ वहाँ आए; क्योंकउिन्होंने काउंट से कहा:

'मैं अपने पता की सभी प्रथाओं और मूर्तयिों की पूजा का त्याग करता हूँ; मैं अपना सारा धन त्यागता हूँ, और मैं जाकर मसीह के साथ एक हो जाऊँगा।' इस पर काउंट ने उत्तर दयिा:

'और मैं भी वही करूँगा जो तुमने कयिा है। डायोक्लेटयिन और उसका शासन नष्ट हो जाएँ – मैं अब उसकी सेवा नहीं करूँगा, बल्कसिब कुछ पीछे छोड़कर, मैं मसीह की सेवा करूँगा।'

इस प्रकार, एक-दूसरे से सहमत होकर, वे दोनों प्राटोरयिन महल[4598] से नकिल गए और संत फेवरोनयिा के अवशेषों वाले मठ में चले गए।

उस नगर का बशिप भी पुरोहतिों, पादरयिों और भक्षिुओं की भीड़ के साथ वहाँ आया; और उन्होंने आँसुओं और आध्यात्मकि आनंद के साथ ईश्वर की स्तुतमिें सर्व-रात्रजिागरण मनाया।

जब दनि चढ़ा, तो उन्होंने शहीद के शरीर के लएि एक खूबसूरती से तैयार कयिा हुआ ताबूत लाया और श्रद्धापूर्वक उनके पवत्रि शरीर को उसमें रख दयिा; फरि उन्होंने उनका प्रत्येक कटा हुआ अंग उनके बगल में रख दयिा, जबकि उनके दाँत उनकी छाती पर रख दएि गए। इसके बाद, उन्होंने अवशेषों पर मूर्रा और सुगंधति तेलों से अभषिेक कयिा और प्रभु की महमिा करते हुए और धन्यवाद देते हुए उन्हें चर्च में दफना दयिा। और संत की कब्र से बीमारों को चंगाई का वरदान मलिा, जसिसे बहुत से यूनानी मसीह में वश्विास करने लगे और उन्हें बपतस्मिा दयिा गया। लसिीमाकस और प्रमिस ने भी पवत्रि बपतस्मिा ग्रहण कयिा। इसी समय, उन्होंने अपने पदों को त्याग दयिा और दुष्ट डायोक्लेटयिन के पास लौटने से इनकार कर दयिा; इसके बजाय, संसार को त्यागकर, वे आर्चमैंड्राइट मार्सेलस के पास गए और मठवासी संकल्प लएि; अपने श्रम और तपस्या के प्रयासों के माध्यम से ईश्वर को प्रसन्न करने वाला जीवन जीने के बाद, दोनों ने शांतपिूर्वक अपना जीवन समाप्त कयिा और मसीह के पास चले गए।

इसी तरह, इरयिा नामक कुलीन महलिा ने अपनी सारी संपत्तव्रिएिना के मठ को वरिासत में देकर, नम्निलखिति अनुरोध के साथ महाधर्मप्राचारकिा के पास गई।

उसने कहा, 'मैं आपसे वनिती करती हूँ, मेरी माँ, मुझे संत फेवरोनयिा के स्थान पर अपनी बेटी के रूप में स्वीकार करें, और मैं आपकी सेवा करूँगी, हर बात में आपका आज्ञापालन करूँगी, ठीक वैसे ही जैसे फेवरोनयिा ने आपकी सेवा की।'

यह कहकर, उसने अपने सभी कीमती महलिा परधिान उतार दएि और उन्हें चर्च को सजाने के लएि दे दयिा; अपनी ओर से, संसार का त्याग करके, वह एक नन बन गई।

पवत्रि शहीद फेवरोनयिा के सम्मान में उत्सव हर साल 25 जून को एबेस व्रएिना के कॉन्वेंट में मनाया जाता था, यह वही दनि था जसि दनि संत ने मसीह के लएि अपना वीर कर्म कयिा था। और हर साल पर्व के दनि, एक अद्भुत चमत्कार

[4598] प्रेटोरीयन महल प्रांत के राज्यपाल, यानी प्रफिेक्ट का महल था।

होता था: पूरी रात की प्रार्थना के दौरान, जब बहनें भजन गा रही होती थीं, तो पवित्र शहीद उनके बीच चर्च में प्रकट हो जातीं और अपनी पुरानी जगह पर आ जातीं। जब ऐसा पहली बार हुआ, तो सभी ननयिों ने उनके बीच संत को देखकर वस्मिय से भर गईं, जबकि व्रएिना ने ज़ोर से पुकारा:

'मेरी बेटी, फेवरोनयिा आ रही है!'

यह देखकर, वह एक माँ की तरह उसे गले लगाने के इरादे से खुशी-खुशी उसकी ओर दौड़ी। लेकनि संत तुरंत अदृश्य हो गईं। उस समय से, जब वह प्रकट होती थीं, तो कोई भी उन्हें छूने या उनसे एक भी शब्द कहने की हम्मित नहीं करता था; लेकनि हर बार वे उन्हें भक्ति और आश्चर्य से नहिारते थे; और संत को देखकर वे अपने भीतर महान आनंद महसूस करते थे और अपने दलिों में गहराई से भावुक हो जाते थे, और अनैच्छकि रूप से आँसू बहाते थे। तीन घंटे तक संत गायकों के बीच खड़ी रहीं, जो सभी को दखिाई दे रही थीं, और फरि एक बार फरि अदृश्य हो गईं।

उस शहर के बशिप ने संत फेवरोनयिा को सर्वोच्च सम्मान दयिा: उन्होंने शहीद के सम्मान में एक चर्च की स्थापना की, जसिे बनाने में उन्होंने छह साल बतिाए। चर्च का नर्मिाण और सजावट पूरी करने के बाद, संत फेवरोनयिा के पर्व के दनि उन्होंने चर्च को पवित्र करने के लिए पड़ोसी बशिपों को इकट्ठा कयिा और शहीद के पवित्र अवशेषों को उसमें स्थानांतरति करने की इच्छा व्यक्त की। सारी रात की प्रार्थना सभा संपन्न होने के बाद, बशिप, पुरोहतिों की पूरी मंडली के साथ, मठ आए और प्रार्थना करने के बाद, संत की कफ़नबंद को खोला और उनके पवित्र अवशेषों को देखा, जो सूर्य की करिण की तरह अलौककि सुंदरता से दमक रहे थे। यह देखकर सभी ननहाओं ने वलिाप करते हुए रोना शुरू कर दयिा, इस बात का शोक मनाते हुए कि उनसे इतना अनमोल खजाना छीना जा रहा था। लेकनि जब बशिप ने उसे लेने के लिए अवशेष-पात्र को छुआ, तो तुरंत एक गरज के साथ बजिली चमकने की आवाज़ हुई, इतनी ज़ोर की हर कोई डर के मारे ज़मीन पर गरि पड़ा। एक घंटे बाद, बशिप ने एक बार फरि अवशेष-पेटकिा को छूने का साहस कयिा; लेकनि अचानक इतना भूकंप आया कि पूरा शहर हलि गया। तब सभी को एहसास हुआ कि पवित्र शहीद नहीं चाहती थीं कि उनके अवशेषों को उनके दफन स्थल से हटाया जाए। बशिप बहुत दुख से भर गए और अब वे अवशेष-पेटकिा को छूने की हम्मित नहीं कर सके, बल्कि वे व्रएिना से वनिती करने लगे:

'मेरी बात सुनो, मेरी बहन—तुम जानती हो कि मैंने इस चर्च का नर्मिाण कतिनी लगन से कयिा है, पवित्र शहीद की महमिा और सम्मान के लिए, एक ऐसा कार्य जसिमें पूरे छह साल लगे। और फरि भी पवित्र शहीद ने मेरी प्रार्थनाओं पर ध्यान देने की कृपा नहीं की और अपने सम्मान में बनी चर्च में स्थानांतरति होने से इनकार कर दयिा है। अत; मैं आपसे वनिती करता हूँ: कृपया अपने हाथों से उनके कटे हुए अंगों में से कम से कम एक अंग उठाकर हमें दे दें, ताकि मेरी मेहनत व्यर्थ न जाए।"

व्रीएना ने अपना हाथ बढ़ाया और संत के हाथों में से एक को छुआ, उसे बशिप को भेंट करने के इरादे से – लेकनि मठ-प्रमुख का हाथ एक अदृश्य शक्ति से पीछे खचि गया और मानो नर्जिीव हो गया। फरि व्रीएना, आँसू बहाते हुए, संत को जीवति मानकर उनसे इस प्रकार बात करने लगी:

'मैं आपसे वनिती करती हूँ, मेरी बेटी, पवित्र शहीद फेवरोनयिा, मुझ पर, अपनी माँ पर, क्रोध न करें; उन कष्टों को याद करें जो मैंने आपके लिए उठाए हैं, और अपनी वृद्धावस्था में मुझे अपमानति न करें।'

जब उसने यह कहा, तो उसका हाथ मुक्त हो गया।

इसके बाद, व्रएिना ने फरि से शहीद से आँसुओं में कहा:

'हम पर अपना आशीर्वाद बनाए रखें, हमारी माता, और हमारी यह वनिती स्वीकार करें।'

यह कहकर, उसने एक बार फरि अपना हाथ बढ़ाया, अपने सीने पर पड़े शहीद के दाँतों में से एक को उठाया, उसे बशिप को दे दयिा, और तुरंत अवशेष-पात्र बंद कर दयिा।

बशिप ने खुशी-खुशी उस दाँत को स्वीकार कयिा, उसे एक सुनहरी पात्र में रखा और अन्य बशिपों, अपने पुरोहतिों और सभी लोगों के साथ, लोगों के बीच मोमबत्तयिों और धूपदानों के साथ, भजन-कीर्तन करते हुए, प्राप्त उपहार को लेकर नव-समर्पति चर्च में लौट आए। इस उपहार को चर्च के भीतर लाने के बाद, बशिपों ने इसे पवित्र कर दयिा। उस दनि, नव-पवित्र चर्च में, पवित्र शहीद की प्रार्थनाओं के माध्यम से कई बीमारों का चंगा होना हुआ: लंगड़ों के पैरों में ताकत वापस आई और वे चलने लगे, अंधों को दृष्टि प्राप्त हुई, और जनि पर राक्षसों का साया था, वे उनसे मुक्त हो गए; जो कोई भी कसिी भी बीमारी से पीड़ति था, जैसे ही उन्होंने शहीद की अवशेषों से लयिा गया वह छोटा सा अंश , अपने होठों से

छुआ और उसे चूमा, वह तुरंत ठीक हो गया और अच्छे स्वास्थ्य के साथ, आनंदति होकर और ईश्वर का धन्यवाद करते हुए घर लौट गया।

संत फेवरोनिया को समर्पति नए चर्च के अभषिेक के बाद, पूजनीय एबेस व्रएिना दो साल और जीवति रहीं; और, जब उनकी धन्य नधिना नकिट आ गई, तो उन्होंने थोमाइस को एबेस के रूप में अपना उत्तराधकिारी नयिुक्त कयिा, जसिके बाद वे प्रभु के पास चली गईं।

'जहाँ तक मेरी बात है,' इस जीवनी की लेखकिा, एब्बेस थोमाइस कहती हैं, 'हमारी माता व्रएिना के नधिन के बाद, मैंने पवत्रि शहीद फेवरोनिया के जीवन और कष्टों का वर्णन लखिा, जैसा मैंने उन्हें अपनी आँखों से देखा था; और जहाँ तक लाइसमिाकस की बात है, मैंने वही लखिा जो मैंने उनके अपने होठों से सुना था। मैंने यह सब उन लोगों के लाभ के लएि लखिा है जो इसे पढ़ते और सुनते हैं, हमारे ईश्वर मसीह की महमिा के लएि, जो पति और पवत्रि आत्मा के साथ महमिामय हैं, अब और सदा और युगानुयुग। आमीन।

कॉन्टाकयिन, स्वर 6:

फेवरोनिया ने पुकारा, 'हे मेरे सबसे प्रयि वर, हे मसीह, आपके पदचन्हिों पर चलना मेरे लएि कठनि नहीं है; क्योंकि आपके प्रेम की मठिास ने मेरी आत्मा को आशा से भर दयिा है; और आपकी दया की सुंदरता ने मेरे हृदय को मधुर बना दयिा है, जसिसे मैं आपके लएि दुख के प्याले को पीने में सक्षम हुई हूँ: कि आप मुझे योग्य समझें कि मैं मठ में बुद्धमिान कुँवारयिों के साथ आपके बारे में आनंद मना सकूँ। इसलएि, हे पूजनीय कष्ट-सहने वाले, जैसे हम आपके श्रम-कर्मों के पराक्रमों का सम्मान करते हैं, हम आपसे वनिती करते हैं: प्रार्थना करें कि मठ के द्वार हमारे लएि भी बंद न हों।

पवत्रि और वशि्वासयोग्य राजकुमार पीटर और राजकुमारी फेवरोनिया की स्मृति, मठवाद में डेवडि और यूफ्रोसनि, मुरोम के चमत्कार-कर्ता

25 जून को स्मरणोत्सव

यह धर्मनष्ठि राजकुमार पीटर[4599] एक धर्मनष्ठि और पवत्रि परविार[4600] से थे; उनका पालन-पोषण मुरोम शहर[4601] में ऑर्थोडॉक्स धर्म और पवत्रिता में हुआ था और उन्होंने सभी मामलों में कठोर न्याय का पालन करते हुए अपने साम्राज्य पर शासन कयिा। जब समय आया, तो उन्होंने धर्मपरायण राजकुमारी फेवरोनिया से ववािह कयिा, जो स्वयं भी एक भक्तपिूर्ण परविार से थीं[4602] और जन्हिें धर्मपरायणता में पूरी तरह प्रशक्षिति कयिा गया था। इस प्रकार, पवत्रि और धर्मी दोनों होने के नाते, धन्य पीटर और फेवरोनिया ने पवत्रिता और ब्रह्मचर्य को अपनाया और वे हमेशा दयालु, न्यायप्रयि और वनिम्र रहे। उन्होंने अन्याय के शकिार लोगों को उनके उत्पीड़कों के अत्याचार से मुक्ति दलिाई; उन्होंने संतों और पुरोहतिों का उचति सम्मान कयिा, उन्हें भौतकि सहायता प्रदान की; उन्होंने गरीबों के प्रति महान करुणा दखिाई; और उन्होंने लगन से उपवास और संयम का पालन कयिा। प्रभु के वचन के अनुसार, नम्रों की पृथ्वी का वारसि बनने[4603] और धर्मी लोगों के अनंत आनंद को प्राप्त करने की इच्छा रखते हुए, उन्होंने अपने अच्छे कर्मों के द्वारा अन्य सभी मामलों में भी मसीह को अत्यधकि प्रसन्न कयिा। बाद में एक सम्मानति वृद्धावस्था प्राप्त करने के बाद, धन्य पीटर बीमार पड़ गए और उन्होंने संन्यास की शपथ ली, तथा संन्यास का नाम दाऊद प्राप्त कयिा। इसके बाद, थोड़ी देर बीमार रहने के बाद, वे दृढ़ वशि्वास के साथ स्वर्ग के राज्य में ईश्वर के पास चले गए। इसी तरह, संत राजकुमारी फेवरोनिया ने अपनी सच्ची इच्छा को पूरा करते हुए, मठवासी संस्कार ग्रहण कएि, और उन्हें यूफ्रोसीन नाम मलिा, और

[4599] संत पीटर – मुरोम के राजकुमार डेवडि, मुरोम के राजकुमार यूरी व्लादमिीरोवचि के दूसरे पुत्र थे। उन्होंने 18 दसिंबर 1203 को अपने बड़े भाई, व्लादमिीर यूरीयेवचि के बाद मुरोम के राजकुमार के रूप में पदभार संभाला।

[4600] मुरोम के राजकुमारों के पूर्वज, राजकुमार कॉन्स्टेंटनि स्वयितोस्लावचि को संत घोषति कयिा गया है; उनका पर्व 21 मई को मनाया जाता है।

[4601] प्राचीन काल में, मुरोम उत्तरी रोस्तोव-सुज़दल क्षेत्र का केंद्र था; आज यह व्लादमिीर गवर्नरेट में एक जलिा शहर है।

[4602] कविदंती है कि संत राजकुमारी फेवरोनिया जन्म से एक साधारण कसिान लड़की थीं, जो रयिाज़ान प्रांत के लास्कोवाया गाँव के एक 'पेड़ पर चढ़ने वाले मधुमक्खी पालक' की बेटी थीं।

[4603] Mf.5

अपने पति की तरह, अटूट विश्वास और निर्मल अंतरात्मा के साथ, उन्होंने अपना प्राण ईश्वर के हाथों में सौंप दिया[4604]। इस प्रकार, दोनों पवित्र जीवनसाथियों को नम्र लोगों का देश विरासत में मिला, जिसकी वे अपनी जवानी से ही लालसा करते थे। धन्य राजकुमार पीटर की मृत्यु के बाद, कुलीनों और बोयारों ने उन्हें एक पिता के रूप में शोक मनाया; शहर के लोगों ने उन्हें अपने मध्यस्थ और रक्षक के रूप में; और गरीब विधवाओं और जिनके पास जीविकोपार्जन का साधन नहीं था, उन्होंने उन्हें अपना पालनहार और सहायक के रूप में शोक मनाया। राजकुमार और राजकुमारी के पवित्र शरीरों को पूरे नगरवासियों ने भक्तिपूर्वक विदाई दी और मुरोम नगर में एक ही ताबूत में दफनाया। आज तक, उनके पवित्र अवशेषों के माध्यम से, संत उन लोगों के लिए ईश्वर की महिमा हेतु चमत्कार करते हैं जो श्रद्धापूर्वक उनकी ओर मुड़ते हैं[4605]।

ट्रोपारियन, स्वर 8:

क्योंकि आप एक धार्मिक जड़ की अति सम्मानित शाखा थे, धन्य पतरस, जिन्होंने भक्ति में सुचारू रूप से जीवन व्यतीत किया; इसी प्रकार आपकी बुद्धिमान पत्नी, फेवरोनिया ने भी, संसार में रहते हुए ईश्वर को प्रसन्न किया, और धार्मिक जीवन की पात्र मानी गईं; उनके साथ प्रभु से प्रार्थना करें कि वे आपके स्वदेश को अक्षुण्ण रखें, ताकि हम आपको अनवरत सम्मानित कर सकें।

कॉन्टाकियन, स्वर 8:

इस संसार के नियम और इसकी क्षणिक महिमा के बारे में सोचते हुए, हे पतरस, आपने अपनी बुद्धिमान पत्नी फेवरोनिया के साथ इस संसार में एक ईश्वरीय जीवन जिया, जिन्होंने दान और प्रार्थना द्वारा परमेश्वर को प्रसन्न किया। इसलिए, मृत्यु के बाद भी आपके समाधि में अविभाज्य रूप से एक साथ लेटे हुए, आप अदृश्य चंगाई प्रदान करते हैं; और अब मसीह से प्रार्थना करें कि वह उस नगर और लोगों को सुरक्षित रखे जो आपको महिमामय करते हैं।

9 जुलाई

26 जून (पुराना तरीका)

उसी दिन, हमारे पवित्र पिता डियोनिसियस, सुज़दाल के आर्चबिशप, जिनका 1384 में निधन हुआ, का स्मरणोत्सव।

परमेश्वर की अति पवित्र माता की चमत्कारी प्रतिमा, जिसे टिख्विन प्रतिमा के नाम से जाना जाता है, का प्रकट होना

26 जून को स्मरणोत्सव

[4604] संत राजकुमार पीटर और राजकुमारी फेवरोनिया का निधन एक ही दिन, 25 जून 1228 को हुआ; हालाँकि, उनकी उत्कृष्टता फिलारेट के अनुसार, उनका निधन 25 अप्रैल 1228 को हुआ था, और 25 अप्रैल को उनके निधन का दिन तथा 25 जून को उनके अवशेषों की खोज का दिन माना जाता है। उनका सम्मान 16वीं शताब्दी की शुरुआत में शुरू हुआ, और 1547 की मॉस्को परिषद में यह आदेश दिया गया कि उनकी स्मृति का स्थानीय रूप से पालन किया जाए। बाद में (शायद 1552 के बाद से) यह उत्सव व्यापक हो गया।

[4605] 'धन्य डेविड और यूफ्रोसीन,' उनकी उत्कृष्टता फिलारेट कहते हैं, 'अपने जीवनकाल में, ईसाई विवाह का एक आदर्श थे, जो अटूट संघ के संबंध में सुसमाचार की आज्ञा के लिए सभी कठिनाइयों को सहन करने के लिए तैयार थे। और आज भी, उनकी प्रार्थनाओं के माध्यम से, वे विवाह करने वालों पर स्वर्गीय आशीर्वाद प्रदान करते हैं। यह उनके परलोक के कई वृत्तांतों से प्रमाणित होता है।"

संसार की सृष्टि के 6891वें वर्ष में, और परमेश्वर के वचन के अवतार के 1382वें वर्ष में, महान राजकुमार दमित्रि इवानोविच[4606] के शासनकाल में, सर्व-रूस के परम पवित्र मेट्रोपॉलिटन पमिन[4607] और नोवगोरोड के आर्चबिशप अलेक्सियस के अधीन, रूस में परमेश्वर की परम पवित्र माता का सबसे सम्मानित प्रतिमा प्रकट हुआ, जिसमें उनके बाएं हाथ पर उनके शिशु, हमारे शाश्वत प्रभु यीशु मसीह की छवि अंकित थी। यह प्रकटमान निम्नलिखित परिस्थितियों में हुआ।

वेलिकी नोवगोरोद की सीमाओं के भीतर, वरांगियन सागर[4608] से थोड़ी दूरी पर, महान झील नेवो[4609] के पानी पर मछली पकड़ने वाले मछुआरे मछली पकड़ रहे थे। और जब वे मछली पकड़ रहे थे, तो अचानक स्वर्ग से उन पर एक तेजस्वी प्रकाश किरण चमकने लगी... ऊपर देखकर, उन्होंने एक अद्भुत चमत्कार देखा: पानी के ऊपर हवा में, अदृश्य हाथों द्वारा ले जाया जा रहा, सबसे पवित्र वर्जिन मैरी का एक आइकन था, जो सूर्य की तरह चमक रहा था। मछली पकड़ने वालों ने, ऐसी अद्भुत दृश्य का साक्षी बनकर, पहले तो भय से भर गए, लेकिन फिर आनंद से। वे अपना काम छोड़कर अपने सामने इस अद्भुत चमत्कार को निहारने लगे, यह देखने की इच्छा से कि पवित्र प्रतिमा कहाँ जा रही है और कहाँ रुकेगी। लेकिन ईश्वर ने उनकी यह इच्छा पूरी नहीं की - और पवित्र प्रतिमा जल्द ही उनकी दृष्टि से ओझल हो गई और अदृश्य हो गई।

उसके बाद, परमेश्वर की अति पवित्र माता का प्रतिमाचित्र नोवगोरोड की उन्हीं सीमाओं के भीतर, व्यामोचेत्स गाँव में, ओयात् नदी पर[4610] , टिक्विन[4611] से सौ पोप्रीश्ची[4612] की दूरी पर प्रकट हुआ। यहाँ यह स्थानीय निवासियों के सामने हवा में तैरता हुआ और एक अकथनीय प्रकाश से चमकता हुआ प्रकट हुआ। ऐसे असाधारण चमत्कार को देखकर, गाँव वाले इकट्ठा हो गए और विस्मय से भरकर, अपनी आँखों के सामने चमत्कार को देखकर चकित रह गए; फिर उन्होंने परमेश्वर की अति पवित्र माता से भक्तिपूर्वक प्रार्थना करना शुरू कर दिया। उसी क्षण, स्वर्ग की रानी की चमत्कारिक प्रतिमा स्वर्ग से पृथ्वी पर लोगों के पास उतरी। व्योंमोचेनटिसिया के निवासियों ने स्वर्ग की रानी की प्रतिमा का बड़े आनंद के साथ स्वागत किया और तुरंत उनके सम्मान में एक चैपल का निर्माण शुरू कर दिया, जिसमें उन्होंने वह छवि स्थापित की जो उन्हें भेजी गई थी; बाद में, परम पवित्र माता परमेश्वर के गौरवमय जन्म के स्मरणोत्सव के लिए इस चैपल की जगह पर एक चर्च का निर्माण किया गया। यहाँ, व्यमोचेनत्सिया गाँव में, यह प्रतिमा कुछ समय तक रही, और इस पर आस्था लेकर आए कई बीमार लोगों को स्वास्थ्य प्रदान करती रही।

[4613]लेकिन कुछ ही समय बाद, इसे एक अदृश्य हाथ ने वहाँ से उठा लिया और हवा में ले जाकर कोज़ेला गाँव में प्रकट किया, जो टिक्विन से बीस पोप्रीश्ची दूर, पाशा नदी के पास स्थित है। यह ठीक उसी तरह प्रकट हुआ जैसे उपरोक्त गाँव में हुआ था। उसे एक अद्भुत प्रकाश से दमकता हुआ देखकर, उस गाँव के सभी निवासी आश्चर्य और भक्ति से भरकर उसके चारों ओर इकट्ठा हो गए, और उन्होंने परम पवित्र देवी से विनम्रतापूर्वक प्रार्थना की कि वह उन पर अपनी कृपा करें और उन्हें अपनी प्रतिमा प्रदान करें। और उनकी प्रार्थना स्वीकार हुई। प्रतिमा आकाश से उतरकर जमीन पर आई, और स्थानीय निवासियों ने, बारी-बारी से, उसके सम्मान में एक चैपल का निर्माण किया, जिसकी जगह पर बाद में परमेश्वर की अति पवित्र माता के मध्यस्थता के स्मरणोत्सव में एक चर्च का निर्माण किया गया।

लेकिन इस स्थान पर भी, परमेश्वर की अति पवित्र माता ने अपनी प्रतिमा को अधिक समय तक रहने की अनुमति नहीं दी: कुछ समय बीत जाने के बाद, इसे एक बार फिर से अदृश्य रूप से वहां से ले जाया गया और यह अपनी अनुग्रह-पूर्ण उपस्थिति के साथ कई अन्य स्थानों पर गई। इन सभी स्थानों पर, जो चमत्कारी प्रतिमा की उपस्थिति से चिह्नित और पवित्र थे, श्रद्धालुओं की भक्ति ने पहले चैपल के निर्माण और बाद में चर्चों के निर्माण की ओर प्रेरित किया।

[4606] दमित्रि तृतीय इओआनोविच ने 1363 से 1389 तक ग्रैंड प्रिंस की उपाधि से मॉस्को पर शासन किया।

[4607] पमिन ने 1382 से 1389 तक, एक अंतराल (1385 और 1388 के बीच) के साथ, रूसी मेट्रोपोलिस का शासन किया।

[4608] उस समय बाल्टिक सागर को वरांगियन सागर के नाम से जाना जाता था। 'वरांगियन' नाम प्राचीन वरांगियनों से लिया गया था, जो आज के स्वीडन के तटों पर रहते थे।

[4609] झील नेवो को अब झील लादोगा के नाम से जाना जाता है।

[4610] ओयात स्विर् नदी की बाएँ तट की दक्षिणी सहायक नदी है, जो ओनेगा झील से निकलकर अपनी पूर्वी ओर से लादोगा झील में मिलती है।

[4611] टिख्विन – नोवगोरोड गवर्नरेट का एक कस्बा।

[4612] पॉप्रिश्चे लंबाई की एक इकाई है। प्राचीन रूस में, एक पॉप्रिश्चे लगभग 656 आधुनिक साज़ेन के बराबर था।

[4613] पाशा एक नदी है जो स्वीर नदी के मुहाने पर लादोगा झील में मिलती है। यह सेंट पीटर्सबर्ग और नोवगोरोड प्रांतों से होकर बहती है, ओयत और तिक्विन्स्काया नदियों के बीच में।

इस प्रकार पवित्र प्रतिमा चमत्कारिक रूप से एक स्थान से दूसरे स्थान पर गई, जो हवा में एक हल्के बादल की तरह तैरती रही, जब तक कि यह अंततः टिख्वीन नदी के किनारे टिख्वीन शहर के पास आकर ठहर गई[4614] ।

यह अंतिम प्रकट होना बिल्कुल पहले वालों की तरह ही हुआ। पूजनीय प्रतिमा, एक बादल की तरह, हवा में उड़ी और फिर हवा में अद्भुत ढंग से लटकी हुई ठहर गई। ईश्वर की माता की प्रतिमा का ऐसा अद्भुत और अलौकिक जुलूस था! टिख्वीन शहर और आसपास के गांवों के लोगों की एक बड़ी भीड़, इस महान चमत्कार से आकर्षित होकर, प्रकट होने के स्थान पर उमड़ पड़ी; उनके साथ क्रॉस और आइकन (मूर्ति) उठाए हुए पादरी भी आए। उन्होंने चमत्कारी आइकन के सामने लंबे समय तक प्रार्थना की, भजन और पवित्र गीत गाए; फिर, लोगों के साथ मिलकर, वे चिल्लाने लगे:

– हमारे पास आओ, हे रानी, हमारे पास आओ, हे सर्वोच्च देवी; हम पर दृष्टि डालो, अपने अयोग्य सेवकों पर; हम पर मानवता के लिए अपने प्रेम की कृपाएँ प्रदान करो; स्वर्ग से हम पर आओ और हमें, जो पाप से अंधे हो गए हैं, अपनी दिव्य उपस्थिति से प्रकाशित करो।

जैसे ही उन्होंने इतनी लगन से प्रार्थना की और बहुत आँसू बहाए, पवित्र प्रतिमा स्वर्ग से उतरकर उनके हाथों में आ गई और उन्होंने उसे श्रद्धा और आनंद के साथ ग्रहण किया। प्रतिमा को लगन से चूमने और उसके सामने कई प्रार्थनाएँ करने के बाद, पड़ोसी गाँवों के निवासियों ने तुरंत चैपल के लिए पेड़ काटने शुरू कर दिए। उसी दिन, उन्होंने चैपल के लकड़ी के ढांचे के लिए तीन मालाएँ बनाईं और उन्हें प्रतिमा के चारों ओर रख दिया। जब रात हुई, तो इकट्ठी हुई भीड़ अपने-अपने घरों को चली गई, और कुछ लोगों को चमत्कारी प्रतिमा के पास छोड़ गई ताकि वे पूरी रात निरंतर प्रार्थना करते रहें।

जो लोग रुके रहे, उन्होंने वाकई पूरी रात प्रार्थना की, लेकिन सुबह तक, रात भर की चौकसी से थककर, वे झपकी लेने लगे। और जब वे सो रहे थे, एक अद्भुत चमत्कार हुआ। चमत्कारी प्रतिमा, चैपल की नींव के साथ, मानो ईश्वर की इच्छा से, अपनी मूल जगह से दूसरी जगह ले जाई गई। इसके साथ ही, चैपल के निर्माण के लिए तैयार किए गए सभी लट्ठे भी एक अन्य स्थान पर ले जाए गए; और केवल लट्ठे ही नहीं, बल्कि उनके टुकड़े भी – हर एक चीज़, सबसे छोटे टुकड़े तक – एक अदृश्य हाथ द्वारा ले जाई गई, ताकि पहरा देने वालों में से किसी ने इसे न देखा और न ही सुना। जब वे जागे, तो उन्होंने न तो परम पवित्र ईश्वर की माता की प्रतिमा, न ही चैपल की नींव, और न ही उसके लिए लकड़ी अपने पूर्व स्थान पर पाई, और वे बड़े दुख और भय से भर गए।

अगली सुबह, स्थानीय निवासी ईश्वर की माता की पूजनीय प्रतिमा की पूजा करने और उनके सम्मान में एक चैपल बनाने के लिए एक बार फिर इकट्ठा हुए। लेकिन उस स्थान पर जहाँ उन्होंने प्रतिमा रखी थी और चैपल बनाना शुरू किया था, कुछ भी न पाकर, वे भय से भर गए और प्रतिमा के पास रात बिताने वालों से पूछने लगे:

'इसका क्या मतलब है?'

उन्होंने बताया कि कैसे उन्होंने पूरी रात प्रार्थना में बिताई थी, कैसे वे सुबह की ओर थोड़ी देर के लिए सो गए थे, और कैसे, जागने पर, उन्हें न तो प्रतिमा मिली, न ही पेड़, और न ही लकड़ी के टुकड़े, जो सब बिना किसी निशान के गायब हो गए थे। फिर हर कोई बहुत दुख से भर गया, इस बात का शोक मनाते हुए कि वे इतने अनमोल आध्यात्मिक खजाने से वंचित हो गए थे। वे रोते-बिलखते हुए ईश्वर से अपनी विनती करने लगे और इस प्रकार पुकारने लगे:

– हे प्रभु, मानवता के प्रेमी! हमें एक बार फिर वह दिव्य उपहार प्रदान करो, जिसे तुमने इतनी प्रेमपूर्वक और महिमामय रूप से रूसी भूमि पर भेजा था; हमसे यह अनमोल खजाना मत छीनो, जिससे हम अपनी आध्यात्मिक गरीबी को समृद्ध करने की आशा करते हैं। हे देवी, दयालु माता! हे प्रभु, आप हम जैसे अयोग्य बच्चों से कहाँ चले गए? कल, आपके हमारे पास आने से, आपने हमारे हृदयों को महान आनंद से भर दिया था; लेकिन अब, आपके जाने से, आपने हमें अनंत दुख में डुबो दिया है, हमें आँसुओं और विलाप में छोड़ दिया है। लेकिन एक बार फिर हमें दर्शन दीजिए, हे हमारे प्रकाश, और हमारे दुख को आनंद में बदल दीजिए।

यह प्रार्थना अर्पित करने के बाद, वे उस पहाड़ी और आसपास के ओक के जंगल में हर दिशा में बिखर गए, कभी आकाश को, कभी जमीन को निहारते हुए, और प्रतिमा को खोजने का प्रयास करते रहे। और उनकी यह सच्ची खोज व्यर्थ नहीं गई। जल्द ही उन्होंने पूर्व से, टिख्विंका नदी के दूसरी ओर, पहाड़ से लगभग दो स्टेडियम की दूरी पर स्थित एक दलदली, जंगली सुनसान जगह से निकलती एक अद्भुत रोशनी देखी। प्रकाश को देखकर, लोग तुरंत उसकी ओर भागे

[4614] टिख्विंका स्यास नदी की एक सहायक नदी है, जो दक्षिण-पूर्व से लादोगा झील में मिलती है।

और वहाँ उन्हें परमेश्वर की परम पवित्र माता का प्रतिमा चित्र मिला, साथ ही चैपल की नींव और उसके सभी लट्ठे और उनसे निकली छीलन भी वहीं थी। पहाड़ पर बनी लकड़ी की कुटिया पूरी तरह से अक्षुण्ण बनी हुई थी, ठीक वैसे ही जैसे इसे पहले बनाया गया था, जबकि पवित्र प्रतिमा कुटिया के अंदर उसकी पूर्वी ओर, हवा में तैरती हुई पाई गई, क्योंकि इसे दीवार से नहीं बाधा गया था। यह देखकर, जिन्होंने प्रतिमा को पाया था, वे उसके सामने साष्टांग दंडवत हो गए, और आनंद के आँसू बहाते हुए परमेश्वर और उनकी परम पवित्र माता की स्तुति करने लगे।

वे पुकार उठे, 'महिमा हो आपको, हे हमारे ईश्वर मसीह, महिमा हो आपको, हे परमेश्वर की अति पवित्र माता, कि आपने हमें, अपने दासों को, नहीं त्यागा! हम आपसे विनती करते हैं—अंत तक हमें न छोड़िए, बल्कि हमेशा हमारे साथ रहिए, और अपने पुत्र के झुंड को बचाइए और उसकी रक्षा कीजिए।'

प्रार्थना करने के बाद, सभी लोगों ने चैपल का निर्माण पूरा किया, और फिर, सबसे योग्य पुरुषों को चुनकर, उन्हें महानगर नोवगोरोड में उनकी उत्कृष्टता आर्चबिशप अलेक्सियस और नोवगोरोड के राज्यपाल के पास भेज दिया, जो प्रतिमा के गौरवशाली प्रकट होने की खबर लेकर गए थे, जो स्वर्गदूतों द्वारा हवा में ले जाई गई थी और एक अज्ञात स्रोत से उनके पास आई थी।

टिखविन में घटित महान चमत्कार के वृत्तांत को सुनकर, आर्चबिशप और शहर के गवर्नर चकित रह गए और, आध्यात्मिक आनंद से भरकर, उन्होंने ईश्वर और उनकी परम पवित्र माता की स्तुति की। उन्होंने तुरंत मॉस्को के ग्रैंड प्रिंस, दिमित्री इओआनोविच को इस चमत्कारिक घटना की सूचना दी, जिससे वह भी आध्यात्मिक आनंद से भर गए। इसके बाद, उनकी उत्कृष्टता अलेक्सियस ने टिक्विन के लिए कई पुरोहितों और डिकन को नियुक्त किया और उन्हें उन लोगों के साथ भेज दिया जो उनके पास आए थे, उन्हें एक एंटीमेंशन और नदी टिक्विनिका पर परमेश्वर की परम पवित्र माता के डोर्मिशन को समर्पित एक चर्च के निर्माण और अभिषेक के लिए अपना आशीर्वाद दिया। टिख्विका पहुँचकर और चमत्कारिक प्रतिमा के सामने प्रार्थना करने के बाद, उन्होंने बड़ी लगन से चर्च का निर्माण शुरू कर दिया। जब उन्होंने चर्च का निर्माण पूरा किया, तब सर्वशुद्ध कुँवारी मरियम के सोपान का पर्व नज़दीक आ रहा था। उस पर्व के दिन चर्च का अभिषेक करने का इरादा रखते हुए, उन्होंने सेxton को पड़ोसी गांवों—लगभग बीस या उससे अधिक की संख्या में—भेजा ताकि वह ईसाइयों को चर्च के अभिषेक के दिन की घोषणा कर सके और उन्हें उपवास और प्रार्थना के माध्यम से आगामी उत्सव के लिए खुद को तैयार करने के लिए प्रेरित कर सके।

वह सेxton, जिसका नाम जॉर्ज था, एक धर्मी जीवन जीने वाला, धर्मपरायण और परमेश्वर को प्रिय व्यक्ति था। जब, सोमोनी पर्व की पूर्व संध्या पर, वह चर्च लौट रहा था और जंगल के एकांत में उससे तीन स्टेडियम की दूरी तय कर चुका था, तो उसने एक असाधारण सुगंध महसूस की, मानो धूप और सुगंधित पदार्थों की भीड़ से आ रही हो; क्योंकि पवित्र आत्मा की कृपा ने उसी स्थान को सुगंधित कर दिया था जहाँ परमेश्वर की अति पवित्र कुंवारी माता प्रकट होने वाली थीं।

जॉर्ज चकित रह गया और यह सोचने लगा कि इस दूर-दराज, सुनसान जंगल में इतनी असाधारण सुगंध कहाँ से आ सकती है। अचानक, उसने परमेश्वर की अति पवित्र माता को एक गिरी हुई चीड़ की लकड़ी पर बैठे हुए देखा, और उनके दाहिने हाथ में एक रक्तिम राजदंड था, जिस पर वे सहारा लिए हुए प्रतीत हो रही थीं। उसके सामने एक तेजस्वी पुरुष खड़ा था, जो सफेद वस्त्र पहने हुए था और रूप में मायरा के संत निकोलस जैसा दिख रहा था। इस अद्भुत साक्षात्कार को देखकर, सेxton भय और आतंक से भर गया और मृतक की भाँति जमीन पर गिर पड़ा। तब माँ के सामने खड़े संत उसके पास आए, उसे छुआ और कहा:

'उठो, और डरो मत!'

जॉर्ज भक्ति और आनंद के मिश्रित भावों से उठा, घुटने टेक लिए और छाती पर हाथ जोड़कर उस अद्भुत दृश्य को निहारने लगा।

और फिर देवदार के पेड़ पर विराजमान परम पवित्र कन्या ने उससे कहा:

'जॉर्ज! मेरी चर्च में जाओ और पुरोहितों तथा सभी लोगों से कहो कि वे उस लोहे का क्रॉस न लगाएँ, जिसे वे लगाना चाहते हैं; इसके बजाय वे लकड़ी का लगाएँ: यही मेरी इच्छा है।'

सेक्सटन ने हिम्मत जुटाकर भयभीत स्वर में धन्य कन्या से कहा:

'मेरी मालिक और स्वामिनी! वे मेरी बात पर विश्वास नहीं करेंगे!'

लेकिन परमेश्वर की माता के सामने खड़े संत ने उससे कहा:

'यदि वे तुम्हारा विश्वास नहीं करेंगे, तो उन्हें विश्वास दिलाने के लिए एक संकेत दिया जाएगा।'

इन शब्दों के बाद, परम पवित्र कुँवारी और उनके सामने खड़े संत अदृश्य हो गए। तब सेxton को अंततःवश्विास हो गया कि उसे परम पवित्र कुँवारी मरयिम और महान चमत्कार करने वाले संत नकिोलस का एक चमत्कारी दर्शन मलिा था। तुरंत जमीन पर गरिकर, उसने ईश्वर का धन्यवाद कयिा, जन्हिोंने उसे ऐसा गौरवशाली साक्षात्कार देखने के लिए योग्य समझा था।

चर्च में लौटने पर, सेxton ने पुरोहतिों और सभी लोगों को वह सब कुछ बताया जो उसने देखा और सुना था, लेकनि उन्होंने उस पर वश्विास नहीं कयिा और मजदूरों को चर्च पर एक लोहे का क्रॉस लगाने का आदेश दयिा। लेकनि जब पुरोहतिों के आदेश पर एक मजदूर ने क्रॉस उठाया और गरिजाघर की छत पर चढ़कर उसे खड़ा करना शुरू कयिा, तो अचानक एक बड़ी आंधी और तेज हवा चलने लगी। हवा का एक झोंका लोहे का क्रॉस उठाए हुए आदमी को मानो हाथों से उठाकर ले गया और उसे जमीन पर रख दयिा, उसे बलि्कुल भी चोट नहीं आई, जैसे वह कसिी ऊँचाई से गरिा ही न हो, बल्कि अपनी मर्जी से जमीन पर उतर आया हो। यह अद्भुत चमत्कार देखकर, पुरोहति और उपस्थति सभी लोग बहुत डर गए; और, सेxton के शब्दों पर वश्विास करके, उन्होंने ईश्वर और उनकी परम पवित्र माता की स्तुति की, और संत नकिोलस का भी सम्मान कयिा। इसके बाद, तुरंत एक लकड़ी का क्रूस बनाकर, उन्होंने उसे चर्च के ऊपर स्थापति कयिा, और बड़ी खुशी और हर्ष के साथ चर्च के अभषिेक और साथ ही परमेश्वर की परम पवित्र माता के स्वर्गारोहण के उत्सव का जश्न मनाया। तब परमेश्वर की अतपिवित्र माता की प्रतमिा के माध्यम से कई चमत्कार हुए, और वभिन्नि बीमारयिों से पीड़ति लोग चंगे हो गए। ऐसा न केवल समारोह के दौरान ही हुआ, बल्कि बाद में भी हुआ।

टखि्विकिा नदी पर चर्च के अभषिेक के बाद, सभी लोग उस स्थान पर गए जहाँ जॉर्ज को एक चमत्कारी दर्शन मलिा था। प्रार्थना करने के बाद, उन्होंने वहाँ संत नकिोलस को समर्पति एक चैपल की स्थापना की, और उस गरि हुए चीड़ के पेड़ से, जसि पर परमेश्वर की परम पवित्र माता जॉर्ज को प्रकट हुई थीं, उन्होंने एक क्रॉस बनाया और उसे सभी लोगों की पूजा और श्रद्धा के लिए चैपल में स्थापति कयिा। बाद में इस चैपल में भी कई चमत्कार हुए, ठीक वैसे ही जैसे सर्व पवित्र वर्जनि मैरी को समर्पति उपरोक्त चर्च में हुए थे।

उसके बाद सात साल बीत गए, और फरि, चर्च के मंत्रयिों की लापरवाही के कारण और ईश्वर की अनुमति से, माँ ऑफ गॉड के टकि्विनि चर्च में एक जलती हुई मोमबत्ती के कारण आग लग गई। पूरा चर्च राख हो गया, लेकनि परम पवित्र की चमत्कारी प्रतमिा सुरक्षति रह गई: ईश्वर की एक अदृश्य शक्ति द्वारा, इसे आग से बाहर नकिाल लयिा गया और यह उस स्थान से बहुत दूर नहीं, आधा पोपरीश्चा की दूरी पर[4615] , जुनपिर की झाड़यिों के बीच पाई गई। उसी समय, मरुस्थल में स्थति चैपल में आग लग गई, जो भी लपटों में घरि गया और जलकर राख हो गया; लेकनि गरिते हुए चीड़ के पेड़ से बना और चैपल में खड़ा एक क्रॉस, उसी तरह अदृश्य रूप से आग से बाहर नकिल गया और चैपल से थोड़ी दूरी पर, जुनपिर की झाड़यिों के बीच खड़ा पाया गया।

जलकर खाक हो चुकी चर्च की जगह पर, एक और लकड़ी की चर्च बनाई गई, और बाद में ठीक उसी स्थान पर रेगस्तिान में एक नया चैपल बनाया गया; इसके बाद, सर्व-शुद्ध की पवित्र प्रतमिा को चर्च में स्थापति कयिा गया, और देवदार की क्रॉस को चैपल में रखा गया। लेकनि पाँच साल बाद, चर्च में रात के समय फरि से आग लग गई और वह पूरी तरह से जलकर खाक हो गया; फरि भी, ईश्वर की माता की चमत्कारी प्रतमिा, जलने के बाद भी हरे-भरे झाड़ की तरह[4616] , राख के बीच अक्षुण्ण और पूरी तरह से अछूती मलिी। मरुभूमि में स्थति चैपल भी जलकर राख हो गया, हालांकि किसी को नहीं पता कि कैसे, फरि भी उसमें स्थापति चमत्कारी क्रॉस भी सुरक्षति रहा। इन असाधारण चमत्कारों को देखकर सभी चकति रह गए और उन्होंने ईश्वर तथा उनकी परम पवित्र माता की स्तुति की। फरि उन्होंने बड़ी लगन के साथ तीसरी बार एक चर्च का नरि्माण शुरू कयिा, उन दो चर्चों की जगह पर जो जलकर राख हो गए थे; यह फरि से एक लकड़ी की संरचना थी, लेकनि पहले दो की तुलना में अधकि वशिाल और भव्य थी। यह नया बना चर्च सौ से अधकि वर्षों तक खड़ा रहा, जब तक कि पूरे रूस के धर्मपरायण राजकुमार, वासलिी इओआनोवचि[4617] के शासनकाल तक।

परम पवित्र कुँवारी मरयिम के प्रति महान उत्साह और प्रेम से प्रेरति होकर, महा राजकुमार वासलिी ने लकड़ी के चर्च के स्थान पर टकि्विकिा पर एक पत्थर का चर्च बनाने का आदेश दयिा। उसके भेजे गए पैसों से, जल्द ही एक

[4615] यानी, 328 साज़ेन (656:2) की दूरी पर।

[4616] मूसा ने यहूदी लोगों के नेता के रूप में अपनी नयिुक्ति से पहले, होरेब पर्वत पर एक जलती हुई लेकनि न जलने वाली झाड़ी देखी। यह सबसे पवित्र कुंवारी मरयिम का प्रतीक थी, जन्हिोंने अपने पुत्र के जन्म के बाद भी अपनी कुंवारीपन नहीं खोया।

[4617] इवान द टेरबिल के पति, वासलिी चतुर्थ इवानोवचि, ने 1505 से 1533 तक शासन कयिा।

पत्थर का बरामदा बना दिया गया, और जब निर्माणकर्ताओं ने उसे चूना-पानी लगाना शुरू किया, तो ईश्वर की अकथनीय लीला से, वह इमारत ढह गई और निर्माणकर्ताओं को—जो संख्या में बीस थे—मलबे के नीचे दफन कर दिया। पुरोहितों और कामगारों की देखरेख करने वालों के साथ-साथ पूरे समुदाय ने पत्थरों के नीचे दबे निर्माणकर्ताओं के लिए गहरा शोक मनाना शुरू कर दिया; क्योंकि उन्हें लगा कि वे सभी कुचलकर मर गए थे। वे दुख और विलाप करते हुए, मारे गए लोगों के शवों को खोजने की आशा में पत्थरों को हटाने लगे। लेकिन तीन दिनों की मेहनत के बाद, सभी पत्थरों को हटा देने पर, उन्होंने उन्हें सभी जीवित और सुरक्षित पाया। इस प्रकार वे ईश्वर की दया और परमेश्वर की परम पवित्र माता की मध्यस्थता से बचे रहे। इस अद्भुत चमत्कार को देखने वालों के हृदय आनंद से भर गए, और सभी ने मसीह ईश्वर और उनकी परम पवित्र माता का धन्यवाद किया। फिर वे अपने काम पर लौट आए और जल्द ही, उन्होंने चर्च के लिए एक सुंदर बरामदा बना दिया।

जब नई चर्च का निर्माण पूरा हो गया, तो ग्रैंड ड्यूक के अनुरोध पर, नवगोरोड के आर्चबिशप, परम पावन सेरापियन, इसे समर्पित करने के लिए आए; चर्च को समर्पित करने के बाद, उन्होंने परम पवित्र माता ईश्वर की चमत्कारी प्रतिमा को विधिवत उसमें स्थापित किया।

कुछ समय बीत जाने के बाद, महा राजकुमार वासिली इओनोविच भी तिख्विन्का पहुँचे। धन्य कुँवारी मरियम के प्रति अपने प्रेम से प्रेरित होकर, वे परमेश्वर की अति पवित्र माता की चमत्कारी प्रतिमा को देखना और चूमना चाहते थे, साथ ही इसके सामने प्रार्थना करना और नव-निर्मित चर्च को देखना भी चाहते थे। उस समय, उनकी उत्कृष्टता मकरियुस वेलिकी नोवगोरोड के आर्चबिशप थे; ईश्वर की इच्छा से, उन्हें बाद में मॉस्को के मेट्रोपॉलिटन के पद पर पदोन्नत किया गया[4618] । उन्होंने इस यात्रा में महाप्रसि का साथ दिया और उनके साथ तिख्विका पहुँचे। वहाँ उन्होंने परम पवित्र थिओटोकोस की प्रतिमा के सामने भक्तिपूर्वक प्रार्थना की, कई सेवाएँ और विनती-प्रार्थनाएँ कीं, और फिर प्रस्थान किया – आर्चबिशप नोवगोरोड के लिए, और महा राजकुमार मॉस्को के लिए।

उनके पुत्र, इवान वासिलीविच[4619] , की सिफारिश पर, उन्होंने मॉस्को के ग्रैंड ड्यूकल सिंहासन पर आसीन हुए, और ज़ार के रूप में ताज पहनने वाले पहले व्यक्ति बने। अपने पिता की तरह, उनकी भी तिख्विन्का में परमेश्वर की परम पवित्र माता की चमत्कारी प्रतिमा के प्रति गहरी आस्था थी, और, ठीक वैसे ही जैसे धर्मपरायण राजकुमार वासिली इवानोविच ने अपने समय में किया था, वह भी वहाँ अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करने गए। चर्च का संचालन धर्मनिरपेक्ष पुरोहितों और डिकिन द्वारा किया जाता देख, और यह कि उसके चारों ओर कई गाँव बसे हुए थे, ज़ार जॉन वासिलीविच ने इसे अनुचित समझा और वहाँ एक मठवासी समुदाय स्थापित करने का संकल्प लिया। मॉस्को के मेट्रोपॉलिटन मकारी, नोवगोरोड के आर्चबिशप पिमेन, और अपने स्वयं के राजकुमारों और बोयारों से परामर्श करने के बाद, उन्होंने आदेश दिया कि आसपास के सभी गांवों और चर्च से जुड़े पुरोहितों को चर्च से बहुत दूर किसी अन्य स्थान पर स्थानांतरित कर दिया जाए, जबकि भिक्षुओं को चर्च में बसकर मठ की स्थापना शुरू करनी थी। और इस प्रकार, कुछ ही समय बाद, ज़ार के खर्च पर, तिख्विन पर एक मठ का निर्माण किया गया, जो पूरी तरह से पत्थर से बना था और पत्थर की दीवारों से घिरा हुआ था। वहाँ एक सामूहिक आवास स्थापित किया गया, ठीक वैसे ही जैसे अन्य महान और प्रसिद्ध मठों में होता है। नव-स्थापित मठ के पहले मठाधीश सिरिल थे; उनके नेतृत्व में, परम पवित्र माता परमेश्वर की प्रतिमा से जुड़े चमत्कारों से आकर्षित होकर, कई संतों ने अपने एकांतवासों को छोड़कर तिख्विन मठ आना शुरू कर दिया।

मठ का निर्माण चल ही रहा था, तब यहाँ आने वालों में सबसे पहले के भिक्षुओं में से एक थे भिक्षु अब्राहम, जो पहले तिख्विन मठ से लगभग पाँच सौ पोपरीश दूर, ग्रेट लेक्स पर स्थित सेरगिव मठ में एक भिक्षु के रूप में रहते थे। जैसा कि उन्होंने स्वयं बताया, वह लंबे समय से बीमार थे और पहले से ही मृत्यु की तैयारी कर रहे थे। उस समय, उनके आध्यात्मिक पिता, मार्टिरीअस—जो ईश्वर के प्रति समर्पित व्यक्ति थे—ने परम पवित्र माता के चमत्कारी तिख्विन आइकन और इसके माध्यम से रोगियों को प्राप्त होने वाले प्रचुर उपचारों के बारे में बहुत कुछ सुनकर, अब्राहम को परम पवित्र माता से तिख्विन जाने और वहाँ उनकी चमत्कारी प्रतिमा के सामने प्रार्थना करने का व्रत लेने की सलाह दी। उस बीमार व्यक्ति ने तुरंत यह व्रत लिया, और वह अपनी गंभीर बीमारी से तुरंत ही ठीक हो गया; इस प्रकार मृत्यु के द्वार से वापस आकर, वह तुरंत अपने बिस्तर से पूरी तरह स्वस्थ होकर उठा, और परमेश्वर की स्तुति और महिमा करने

[4618] उन्होंने 1542 से 1564 तक मॉस्को के मेट्रोपॉलिटन पद पर कार्य किया।

[4619] ज़ार इवान चौथे वासिलीविच, जिन्हें भयानक के नाम से जाना जाता है, जो पहले राज्याभिषिक्त हुए और जिन्होंने ज़ार की उपाधि धारण की, ने 1533 से 1584 तक शासन किया।

लगा। उनके गुरु, मार्टरियिस, भी अपने शष्यि के शीघ्र स्वस्थ होने को देखकर और परमेश्वर की माता के अद्भुत चमत्कार पर वस्मिति होकर, अत्यंत प्रसन्न हुए। उन्होंने अब्राहम को सलाह दी कि वह अपने इरादे में देरी न करे, बल्कि परम पवत्रि थओटोकोस (ईश्वर-जननी) को कयिा गया व्रत पूरा करने के लिए तुरंत ही तक्विनिका के लिए रवाना हो जाए।

अब्राहम तुरंत रवाना हो गया और, टक्विस्की मठ पहुँचने पर, उसने श्रद्धापूर्वक अपना वादा पूरा कयिा। आनंद के आँसुओं के साथ, उसने परमेश्वर की माता की पवत्रि प्रतमिा के सामने साष्टांग प्रणाम कयिा, उसे अपने होठों से चूमा और पूरे हृदय से उसकी पूजा की। सर्व पवत्रि कन्या को धन्यवाद देने के बाद, उन्होंने वहाँ मौजूद सभी लोगों को स्वर्ग की रानी द्वारा उन पर दखिाई गई दया के बारे में बताया। उस समय, नोवगोरोड के आर्चबशिप पमिैन, तख्विनिका नदी पर मठ के नर्मिाण कार्य की देखरेख कर रहे थे; उन्हें भी अव्रामी के चमत्कारी उपचार की खबर मलिी। संत आनंद से भर गए और उन्होंने प्रभु और उनकी माता, परम पवत्रि कन्या मरयिम की स्तुति की। वे अव्राम को उसके गुरु, मार्टरियिस के पास वापस नहीं भेजना चाहते थे, लेकनि उन्होंने उसे चर्च की चाबयिाँ सौंप दीं ताकि ईश्वर की माता द्वारा उसे दखिाई गई अकथनीय दया के लिए कृतज्ञता स्वरूप, वह उनकी चर्च में सबसे पहले प्रवेश करे और सबसे आखरिी में नकिले, सेवाओं की शुरुआत से पहले इसे खोलें और उनके समापन पर इसे बंद करें।

इस बीच, वृद्ध मार्टरियिस, अव्रामयिा को वदिा करने के बाद, इस बात पर दुखी होने लगे कि वे स्वयं सबसे पवत्रि एक की प्रतमिा की पूजा करने के लिए उनके साथ नहीं गए थे, और अंततः उन्होंने यह संकल्प लयिा कि जैसे ही उनका शष्यि लौटेगा, वे टक्विनिका जाएँगे। जब तक वे उनका लंबे समय तक इंतजार करते रहे, वृद्ध को उनकी चति होने लगी - और फरि उन्होंने एक सपने में नम्निलखिति दर्शन देखा। टख्विनि की दशिा में, मार्टरियिस की आँखों के सामने आग का एक बड़ा स्तंभ उभरा; जसिके शखिर पर परमेश्वर की परम पवत्रि माता की एक प्रतमिा खड़ी थी, जो सूर्य की तरह चमक रही थी और टख्विनि मठ में रखी प्रतमिा जैसी ही थी। तब मार्टरियिस पर उस प्रतमिा को चूमने की एक प्रबल इच्छा हावी हो गई। वह इसी मनोभाव में जागा, और उसी समय टक्विनि के पास परमेश्वर की परम पवत्रि माता की चमत्कारी प्रतमिा को देखने और उसे चूमने की उसकी इच्छा और भी प्रबल हो गई। वह तुरंत नकिल पड़ा, सब कुछ पीछे छोड़कर तेजी से तक्विनि की ओर बढ़ गया। मठ पहुँचने और परम पवत्रि माता की प्रतमिा को देखने पर, मार्टरियिस ने श्रद्धापूर्वक उसके सामने प्रणाम कयिा और आनंद के आँसू बहाए। उसी क्षण, उसने अपने शष्यि को भी पूर्ण स्वास्थ्य में देखा; इसके बाद, वह अपने मठ में लौटना नहीं चाहता था, बल्कि टक्विनि मठ में ही रहा ताकि वह हर दनि परम पवत्रि कुंवारी मरयिम की चमत्कारी प्रतमिा का ध्यान कर सके।

लेकनि कुछ समय बीत जाने के बाद, मरयिम के आइकन के चमत्कारकि प्रतरिूप को साथ लेकर, मरयिम परमेश्वर की इच्छा से टक्विनि से चालीस पोपरीश्ची दूर एक अन्य सुनसान स्थान पर चले गए, जहाँ उपर्युक्त अब्राहम ने एक बार आकाश में तारों से बना एक क्रॉस देखा था, जो पूरे क्षेत्र को रोशन कर रहा था। वहाँ जाकर, धन्य मार्टरियिस अपने साथ सर्वपवत्रि कन्या के चमत्कारी प्रतमिा की एक प्रति ले गए और वहाँ मौन में रहे, दनि-रात ईश्वर की सेवा करते रहे; वह जहाँ भी जाते, हमेशा अपने साथ ईश्वर की माता के चमत्कारी प्रतमिा की प्रति को साथ रखते थे। और इस प्रकार हुआ कि एक दनि वह खुद को टवर शहर में पाया, जहाँ, धर्मपरायण ज़ार और ग्रैंड प्रसि जॉन वासलीवचि, कज़ान के ज़ार के आदेश पर, समियिन[4620] उस समय नविास कर रहे थे। जब वरष्ठि शहीद इस शहर में समियिन के साथ ठहरे हुए थे, तब समियिन का बेटा, जॉन, जो लंबे समय से बीमार था, की मृत्यु हो गई। तब पूजनीय मार्टरियिस ने अपने साथ लाई गई परमेश्वर की माता की प्रतमिा को मृत लड़के पर रखा, और लड़का तुरंत जीवति हो उठा। समियिोन परम आनंद से भर गया और उसने प्रभु परमेश्वर तथा उनकी अति पवत्रि माता का धन्यवाद कयिा। बाद में, धन्य मार्टरियिस का धन्यवाद करने के लिए, उसने रेगस्तिान में उसके लिए एक पत्थर का चर्च बनवाया और उसके बगल में एक मठ की स्थापना की।

लेकनि अब हम टक्विनि मठ और टक्विनिका में प्रकट हुई परमेश्वर की परम पवत्रि माता की चमत्कारी प्रतमिा की ओर चलें, ताकि हम उसके अन्य चमत्कारों का वर्णन कर सकें।

टख्विकिा नदी पर पूजनीय प्रतमिा के प्रकट होने और मठ की स्थापना के बीच 177 वर्ष का समय बीत गया, इस दौरान चर्च सामान्य पुरोहतिों की देखरेख में था। इस समय के दौरान पवत्रि प्रतमिा द्वारा कई चमत्कार कए गए, और

[4620] यह, बेशक, कज़ान के ख़ान, समियिन बेकबुलातोवचि को संदर्भति करता है, जो एक बपतस्मिा प्राप्त तातार था। एक समय (1574 में), इवान द टेरबिल ने उसे अपनी जगह पर ज़ार के सहिासन पर बठिाया था, हालाँकि, समियिन को केवल नाम का ज़ार माना जाता था। चार साल बाद, उसे मास्को से नर्विासति कर दयिा गया और उसे ट्वर और टॉर्जोक का शासन सौंपा गया।

इस पर विश्वास के साथ आने वाले सभी लोगों को इसने कई उपचार प्रदान किए – लेकिन भविष्य की पीढ़ियों के निर्माण के लिए इन चमत्कारों को उसके समकालीनों में से किसी ने भी दर्ज नहीं किया; और इस प्रकार हम इन चमत्कारों के बारे में कुछ भी जानने के अवसर से वंचित रह गए हैं। लेकिन मठ स्थापित होने के बाद भी, प्रतिमा द्वारा किए गए कुछ ही चमत्कारों को दर्ज किया गया, आंशिक रूप से सादगी के कारण और आंशिक रूप से लापरवाही से – और जो थोड़ा बहुत हमें मिला है, वह वैसा ही है जैसे फसल काटने के बाद खेत में रह गए अनाज के कान, या अंगूर की तुड़ाई के बाद गलती से छूट गए अंगूर के कुछ गुच्छों की तरह।

थेओफिलिस नामक एक व्यक्ति, जो चार साल और छह महीने से अंधा था, ने परम पवित्र ईश्वर माता की प्रतिमा के सामने प्रार्थना की, उसे ठीक हो गया, और उसकी दृष्टि वापस आ गई। यह 1581 में हुआ।

उसी वर्ष, चरालाम्पियोस नामक एक युवा लड़का, जो एक राक्षस के वश में था, जब उसे परम पवित्र की प्रतिमा के सामने लाया गया तो वह अशुद्ध आत्मा से मुक्त हो गया।

ज़कारियास, एक अंधा आदमी जो पाँच साल से रोशनी नहीं देख पाया था, उसे पवित्र प्रतिमा के सामने लाए जाने पर तुरंत ही चंगा हो गया।

सम्राटीय शहर मास्को में रहने वाले क्लेमेंट नामक एक व्यक्ति की पत्नी परास्केवा नाम की एक महिला बीमार पड़ गई थी। वह पूरे एक साल से बिस्तर पर पड़ी थी और उठ नहीं पा रही थी; पूरे शरीर में तीव्र दर्द के कारण उसकी दृष्टि चली गई थी, और उसका दिमाग सुन्न हो गया था। उसके पति ने उसकी बीमारी का हर इलाज कर लिया था और अपनी पत्नी के ठीक होने की उम्मीद छोड़ चुका था। लेकिन फिर उसने सुना कि टिख्विन में परमेश्वर की अति पवित्र माता का एक चमत्कारी चित्र था, जिससे उन सभी को चंगाई मिलती थी जो आस्था के साथ उसकी ओर मुड़ते थे। आशा से भरकर, उसने अपनी पत्नी को परम पवित्र माता ईश्वर की प्रतिज्ञा करने के लिए मनाना शुरू कर दिया कि वह जाकर उनकी टिख्विन प्रतिमा की पूजा करेगी। उसने अपने पति की आज्ञा मानी और ऐसी ही प्रतिज्ञा की। और जैसे ही उसने अपने व्रत के शब्द बोले, वह तुरंत अपनी बिस्तर से उठ खड़ी हुई, मानो नींद से जाग उठी हो, और वह अपनी गंभीर बीमारी से ठीक हो गई। उसी समय, उसके शरीर के सभी अंग मजबूत और स्वस्थ हो गए - केवल उसकी दृष्टि ही ठीक नहीं हुई।

तब उसका पति और उसकी स्वस्थ हुई पत्नी तुरंत ही टिख्विन के लिए रवाना हो गए, और उन्होंने परम पवित्र थिओटोकोस को किया गया अपना व्रत मिलकर पूरा किया। महा-व्रत के पहले शनिवार को टिख्विन मठ पहुँचने पर, वे सीधे सड़क से चर्च में परम पवित्र थिओटोकोस की प्रतिमा के पास गए और पवित्र प्रतिमा के सामने प्रार्थना सेवा अर्पित करते हुए प्रार्थना की। रविवार की सर्व-रात्रि प्रार्थना के दौरान, जब वे चर्च में खड़े होकर प्रार्थना करते रहे, तो पत्नी के संबंध में एक नया चमत्कार हुआ: परमेश्वर की अति पवित्र माता की कृपा से, उसने अपनी दृष्टि वापस पा ली और इस प्रकार वह पूरी तरह से स्वस्थ हो गई। चर्च में मौजूद सभी लोगों ने, ऐसा चमत्कार देखकर, भावनाओं से भरे आँसुओं के साथ ईश्वर और उनकी परम पवित्र माता की स्तुति की। चंगी हुई महिला और उसके पति, पवित्र प्रतिमा के सामने कई कृतज्ञतापूर्ण प्रार्थनाएँ करने के बाद, आनंदपूर्वक अपने घर लौट गए। यह 1583 में हुआ था।

1586 में, जॉर्ज नामक एक अंधे व्यक्ति को परमेश्वर की परम पवित्र माता की टिख्विन प्रतिमा के सामने लाया गया। परमेश्वर की परम पवित्र माता के संरक्षण के पर्व पर चमत्कार करने वाली प्रतिमा के सामने प्रार्थना करते समय, वह अपनी दाहिनी आँख से देखने लगा। और बिना किसी सहायता के, वह मसीह ईश्वर और उनकी परम पवित्र माता की दृष्टि के वरदान और अपनी एक आँख के ठीक होने के लिए स्तुति करते हुए घर चला गया।

कुछ दिनों बाद, एंड्रयू नाम का एक व्यक्ति माँ ईश्वर की चमत्कारी प्रतिमा के पास मठ में लाया गया; वह लकवाग्रस्त था, और साथ ही बहरा और गूंगा भी था, और वह पंद्रह वर्षों से इन बीमारियों से पीड़ित था। जब सर्व-शुद्ध की प्रतिमा के सामने उसके ठीक होने के लिए प्रार्थना की गई, तो उसे तुरंत पूर्ण स्वास्थ्य प्राप्त हुआ: उसकी सुनने की शक्ति लौट आई, उसका मूकत्व दूर हो गया, और उसके सभी अंगों में ताकत और चपलता वापस आ गई, और वह एक पूरी तरह से स्वस्थ व्यक्ति की तरह खड़ा हो गया।

मावरा नाम की एक महलिा के मामले में भी इसी तरह का चमत्कार हुआ, जो उस्टे नदी पर रहती थी[4621] । वह अंधी थी और सत्रह वर्षों से पूरी तरह से प्रकाश नहीं देख पा रही थी। जब उसे परम पवत्रि थओिटोकोस की चमत्कारी प्रतमिा के सामने लाया गया, तो उसकी दृष्टि तुरंत वापस आ गई। यह 1587 में हुआ था।

उसी वर्ष 4 मार्च को, जॉर्ज नाम का एक छोटा लड़का वेलकिी नोवगोरोड से टकि्वनि मठ में लाया गया; छह वर्षों से वह एक अशुद्ध आत्मा के वश में था और परणिामस्वरूप बहुत कष्ट सह चुका था। जब उसे परम पवत्रि थओिटोकोस की प्रतमिा के सामने लाया गया, तो अद्भुत प्रतमिा, ' ' से नकिलने वाली अनुग्रह की रोशनी को सहन न कर पाने वाला दुष्ट आत्मा, उस बीमार लड़के से नकिल गया, और सूरज के सामने अंधकार की तरह गायब हो गया, और लड़का पूरी तरह से स्वस्थ हो गया।

जुलीयाना नाम की एक वधिवा को आँखों की इतनी गंभीर बीमारी हो गई थी कि वह अंधी हो गई थी और दो साल तक वह ईश्वर की रोशनी नहीं देख सकी। टखि्वनि के पास सर्व पवत्रि थओिटोकोस की चमत्कारी प्रतमिा और उसके माध्यम से लोगों को प्राप्त अकथनीय उपचारों के बारे में सुनकर, जुलयिाना सर्व पवत्रि थओिटोकोस में गहरी आस्था से भर गईं और उनकी प्रतमिा के सामने जाकर पूजा करने का संकल्प लयिा। और उसी क्षण, स्वर्गीय देवी ने उसी के अपने घर में ही उसकी दृष्टि वापस कर दी। तुरंत, जल्द से जल्द परमेश्वर की परम पवत्रि माता का धन्यवाद करने की इच्छा से, वह, अब देखने में सक्षम, बनिा कसिी सहायता के परमेश्वर की परम पवत्रि माता के टकि्वनि मठ गई और वहाँ अपना व्रत पूरा करने के बाद, उसने सभी को उस परमेश्वर की दया के बारे में बताया जो उस पर प्रकट हुई थी। यह वर्ष 1589 की बात है।

लगभग उसी समय, अकदिनि नाम का एक लंगड़ा आदमी, जो दो साल से अपनी मुड़ी हुई टाँगों के कारण बलि्कुल चल नहीं पा रहा था, वह घुटनों के बल रेंगते हुए परम पवत्रि माता ईश्वर की चमत्कारी प्रतमिा तक पहुँचा; और जैसे ही उसने उसके सामने प्रार्थना की, उसकी टाँगें तुरंत सीधी हो गईं और वह ठीक हो गया; सबके सामने ही, वह अपने पैरों पर खड़ा हो गया और मसीह ईश्वर तथा उनकी परम पवत्रि माता का धन्यवाद करते हुए चलने लगा।

उसी वर्ष, 10 अगस्त को, योना नामक एक अंधा युवक, जसिे वेलकिी नोवगोरोड से पवत्रि मठ में लाया गया था, ने परम पवत्रि माता ईश्वर की प्रतमिा के सामने अपनी दृष्टि प्राप्त की।

एक अन्य युवक, जसिका नाम मैक्सिमि था, जो एक अशुद्ध आत्मा से ग्रस्त था, को रास्ते में ही परम धन्य ईश्वर की माता से स्वर्गीय सहायता प्राप्त हुई, जब उसके माता-पतिा उसे परम पवत्रि की प्रतमिा की पूजा के लिए ले जा रहे थे: ईश्वर की शक्ति से, अशुद्ध आत्मा उससे बाहर नकिल गई, और जब वह टकि्वनि् मठ पहुँचा, तो उसने सभी को उसके लिए हुए चमत्कार के बारे में बताया। तब सभी ने ईश्वर और परमेश्वर की अतपिवत्रि माता का धन्यवाद कयिा। यह 1591 में हुआ था।

एलेना नाम की एक महलिा, जो दो साल और छह महीने से पूरी तरह से अंधी थी, यहाँ तक कि वह रोशनी भी नहीं देख सकती थी, उसने रवविार को, लटिर्जी के दौरान, जब 'इट इज़ मीट...' भजन गाया जा रहा था, तब सर्वपवत्रि थओिटोकोस के चमत्कारी प्रतमिा के सामने अपनी दृष्टि वापस पाई।

1593 में, मारयिा नाम की एक अन्य महलिा ने भी अपनी दृष्टि वापस पाई; उसे सर्व पवत्रि थयिोटोकोस के नदि्रोत्सव के पर्व पर सर्व पवत्रि थयिोटोकोस की चमत्कारी प्रतमिा के पास लाया गया था।

इसी तरह, क्लेमेंट नाम का एक व्यक्ति - जो वभिन्नि चांदी के बर्तन बनाता था - अपनी आँखों की बीमारी के कारण अपनी दृष्टि खो बैठा था - वह परम पवत्रि माता ईश्वर की प्रतमिा के सामने प्रार्थना करने के बाद ठीक हो गया।

एक अन्य अंधा व्यक्ति, फलिपि नामक, जसिने पाँच वर्षों से प्रकाश नहीं देखा था, उसे ऑर्थोडॉक्सी सप्ताह के दौरान टकि्ख्वनि मठ में लाया गया; वहाँ सबसे पवत्रि परमेश्वर की माता की प्रतमिा के सामने खड़े होकर प्रार्थना करते समय, उसने अपनी दृष्टि पूरी तरह से वापस पा ली और सब कुछ स्पष्ट रूप से देखने लगा। यह 1596 में लटिर्जी के दौरान हुआ, जब पवत्रि भेंटों को वेदी की मेज से पवत्रि सहिासन पर ले जाया जा रहा था।

उसी वर्ष, करिलि नाम का एक व्यक्ति, जो एक आँख से नेत्रहीन था, मास्को से आया और सर्वशुद्ध माता के आइकन के सामने प्रार्थना करते हुए उसने अपनी दृष्टि वापस पा ली। उस अवसर पर उसने अपने बारे में यह बताया। एक

[4621] यारोस्लाव प्रांत में यारोस्लाव नदी का मुहाना, वेक्सा नदी के साथ मलिकर, कोतोरोस्ट नदी का उद्गम बनाता है, जो वोल्गा की बाएं कनिारे की एक सहायक नदी है, जसिमें यह यारोस्लाव में ही मलिती है।

गंभीर बीमारी से ग्रस्त होने और लगातार सरिदर्द से पीड़ति रहने के कारण, वह दोनों आँखों से अंधा हो गया था; आधे साल तक उसने कोई रोशनी नहीं देखी और अपनी बीमारी से बलि्कुल भी राहत नहीं मलिी, भले ही उसके प्रयिजनों ने उसकी हर संभव देखभाल की थी। वह पहले ही पूरी तरह से ठीक होने की हर उम्मीद छोड़ चुका था, तभी अचानक उसकी पत्नी को सोते समय एक दर्शन हुआ, जसिमें उसने ये शब्द सुने:

'अपने पति को टकि्वनि में परमेश्वर की परम पवत्रि माता की चमत्कारी प्रतमिा के पास जाने दो। वहाँ उसे स्वास्थ्य लाभ मलिेगा। यदि, हालाँकि, वह नहीं गया, तो वह और भी बड़ी पीड़ा सहन करेगा।'

चौंककर जागते ही, उसकी पत्नी ने तुरंत अपने पति को उस दर्शन के बारे में बताया। उसने तुरंत परम पवत्रि ईश्वर माता से भक्तपिूर्वक प्रार्थना करना शुरू कर दयिा और ऐसा करते हुए, उसने स्वर्ग की रानी, परम पवत्रि ईश्वर माता से, उनकी प्रतमिा की पूजा करने के लिए टकि्ख्वनि जाने का व्रत लयिा; उसी क्षण, उसे अपनी बीमारी से राहत मलिी: वह अपनी आँखों से रोशनी देखने लगा और यहाँ तक कि पूरी तरह से स्वस्थ हो गया। लेकनि, अपने व्रत को दनि-प्रतदिनि टालते हुए, वह धीरे-धीरे उसे भूल गया, और इस प्रकार अपने वादे को नभिाने में वफिल रहा। इस लापरवाही के लिए, ईश्वर का दंड एक बार फरि उस पर पड़ा: क्योंकि कुछ समय बीत जाने के बाद, उसकी बीमारी वापस आ गई, और वह दूसरी बार दोनों आँखों से अंधा हो गया। तब, अपने अधूरे व्रत को याद करते और अपने पाप का एहसास करते हुए, वह बीमार व्यक्ति रोने, ससिकने और पश्चाताप करने लगा, और एक बार फरि से परमेश्वर की परम पवत्रि माता से प्रार्थना करने लगा, और उनसे यह आश्वासन दयिा कि वह पहले कयिा गया व्रत पूरा करेगा। स्वर्ग की परम धन्य रानी की दया से, वह दूसरी बार ठीक हो गया, हालांकि इस बार उसे केवल एक आँख की रोशनी वापस मलिी, जबकि दूसरी आँख अंधी ही रह गई । अपने व्रत की पूर्ति में अधकि देरी कएि बनिा, वह तुरंत टकि्वनि के लिए रवाना हो गया, और वहाँ, एक आँख से पवत्रितम की प्रतमिा को देखकर, उसके सामने प्रार्थना करने के बाद दूसरी आँख की दृष्टि वापस पा ली।

उसी वर्ष, 1596, 9 दसिंबर को, दो पुरुषों: ग्रगिोरी और मखिाइल के नेतृत्व में तेईस पुरुष मठ में पहुँचे। सर्वपवत्रि परमेश्वर की माता की चमत्कारी प्रतमिा के सामने एक धन्यवाद सेवा संपन्न करने के बाद, उन्होंने अपने बारे में नम्निलखिति बातें बताईं। वे आर्कटकि महासागर में बहुत दूर समुद्री जानवरों का शकिार कर रहे थे। जब वे एक सुनसान जगह पर पहुँचे, तो समुद्र में अचानक आए तूफान के कारण वे वहाँ बहुत लंबे समय तक फँसे रहे। उनके पास भोजन का भंडार लगभग खत्म हो गया था, और भूख से तड़पते हुए, वे सभी लंबे समय तक भूखे रहने के कारण मृत्यु के कगार पर थे। और इसलिए, जब वे मृत्यु की प्रतीक्षा कर रहे थे, तो उनमें से प्रत्येक ने ईश्वर से प्रार्थना करना शुरू कर दयिा, और अपने पापों के लिए क्षमा मांगी। उसी क्षण, उन्हें टकि्वकिा में परमेश्वर की अति पवत्रि माता की चमत्कारी प्रतमिा याद आई और उन्होंने उस प्रतमिा से भक्तपिूर्वक प्रार्थना करना शुरू कर दयिा। उसी रात, उनमें से एक, प्रार्थना करते समय थोड़ी देर के लिए झपकी लेने पर, उसके पास 'त्वरति सहायकिा' - सर्वपवत्रि कुँवारी मरयिम - आईं, जन्होंने उसे आदेश दयिा कि वह अपने सभी साथयिों से कहे कि वे वहाँ उगने वाली एक वशिेष जड़ी-बूटी खाएँ, जब तक कि उनके लिए समुद्र पार करके अपने घरों को लौटना सुरक्षति न हो जाए। उसने यह दर्शन अपने साथयिों को सुनाया, और जब उन्होंने उस जड़ी-बूटी का स्वाद चखा जसिे उसने बताया था, तो उन्हें वह रोटी की तरह ही स्वादषि्ट और पेट भरने वाली लगी। और वह जड़ी-बूटी उनके लिए वैसी ही थी जैसी कभी रेगस्तिान में इस्राएलयिों के लिए माननना था, और उन्होंने तब तक उस पर गुज़ारा कयिा जब तक तूफान शांत नहीं हो गया, यानी बीस दनिों तक।

थोड़ी ही देर बाद, एलेना नाम की एक महलिा टकि्वनि पहुँची और उसने अपने बारे में नम्निलखिति बातें बताईं। वह तीन साल से अंधी थी, लेकनि एक दनि, परम पवत्रि थयिोटोकोस में अपने वशि्वास से प्रेरति होकर, उसने माँ ईश्वर की टकि्वनि प्रतमिा तक ले जाए जाने का अनुरोध कयिा; और रास्ते में ही, उसने अचानक अपनी दृष्टि वापस पा ली और बनिा कसिी सहायता के मठ पहुँच गई, जहाँ उन्होंने उसकी चमत्कारी प्रतमिा के सामने माँ ईश्वर को अपनी कृतज्ञ पूजा अर्पति की।

इसी तरह, मामांत नामक एक व्यक्ति, जो बेलोजेर्स्क क्षेत्र[4622] से आया था, ने कहा कि वह लंबे समय से अंधा था, लेकनि जैसे ही उसने टकि्वनि जाने और सर्व पवत्रि थओिटोकोस की चमत्कारी प्रतमिा की पूजा करने का संकल्प लयिा, उसकी दृष्टि तुरंत पूरी तरह से वापस आ गई। यह वर्ष 1597 की बात है।

[4622] बेलोजेर्स्क क्षेत्र बेलोये झील पर स्थति था, जो अब नोवगोरोड गवर्नरेट के उत्तर-पूर्वी कोने में स्थति है। यहाँ एक अलग रयिासत थी, जो 14वीं शताब्दी के मध्य से मॉस्को के राजकुमार के अधीन थी।

एक और व्यक्ति, जिसका नाम डायोमेड्स था, उसी क्षेत्र से उसी वर्ष परम पवित्र माता ईश्वर की मठ में आया, और उसने यह भी बताया कि वह पूरे एक साल से लकवाग्रस्त था, लेकिन फिर, टिक्विन में परम पवित्र माता ईश्वर की चमत्कारी प्रतिमा को याद करते हुए, उसने मन ही मन उनसे प्रार्थना करना शुरू कर दिया और पवित्र प्रतिमा के दर्शन करने और उसकी पूजा करने का व्रत लिया: तुरंत ही वह स्वस्थ हो गया और, बिना किसी देरी के, अपना वादा पूरा किया।

उसी वर्ष, पिमेन नामक एक व्यक्ति, जो एक क्रूर राक्षस के वश में था, को उसके रिश्तेदारों ने जंजीरों में बाँधकर तिक्विन भेजा; और जब वे अभी आधे रास्ते में ही थे, तो वह परम पवित्र की दया से चंगा हो गया: राक्षस उससे दूर चला गया, और वह पूरी तरह से स्वस्थ होकर पहुँचा और अपने उपचारकर्ता की श्रद्धापूर्वक पूजा की। यह 9 दिसंबर को हुआ था।

कोद्रत नामक एक व्यक्ति को सिरदर्द होने लगा, उसकी दृष्टि चली गई, और वह डेढ़ साल तक रोशनी नहीं देख सका; टिक्विन के पास ईश्वर की माता की चमत्कारी प्रतिमा के बारे में सुनकर, उसने भक्तिपूर्वक प्रार्थना की और उसकी पूजा करने के लिए वहाँ जाने का व्रत लिया। और जैसे ही उसने अपने व्रत के शब्द बोले, उसे तुरंत अपनी दृष्टि वापस मिल गई। लेकिन यात्रा को बाद के लिए टालने के कारण, वह जल्द ही अपने वादे को पूरी तरह से भूल गया और अपनी उपचारक - परमेश्वर की अति-पवित्र कुंवारी माता - का धन्यवाद करने नहीं गया। अपनी दृष्टि वापस पाने के दस साल बाद, वह ठीक पहले की तरह ही फिर से अंधा हो गया। फिर भी, इसके बावजूद, जब तक उसे सपने में चेतावनी नहीं मिली, तब तक उसे अपने व्रत का स्मरण नहीं आया। क्योंकि उसने अपने सोने में एक व्यक्ति को उससे बात करते हुए देखा:

'सर्व पवित्र की प्रतिमा की पूजा करने के लिए टिक्विन जाओ; यदि तुम नहीं गए और अपना व्रत पूरा नहीं किया, तो तुम्हारी दृष्टि वापस नहीं आएगी।'

जागने पर, उसे अपना व्रत याद आया और उसे अपने अपराध का एहसास हुआ; वह तुरंत एक मार्गदर्शक के साथ ईश्वर की माता के टिक्विन मठ के लिए रवाना हो गया। जब उसे परम पवित्र थिओटोकोस की चमत्कारी प्रतिमा के सामने ले जाया गया और उसने पूरे दिल से उसके सामने प्रार्थना की, तो वह ईश्वर की परम पवित्र माता की दया से तुरंत चंगा हो गया।

जॉन नामक एक व्यक्ति को, जो लंबे समय से गंभीर रूप से बीमार था और मृत्यु के करीब था, मसीह के संत, संत निकोलस, एक सपने में दिखाई दिए और उससे कहा:

'यदि तुम स्वस्थ होना चाहते हो, तो परम पवित्र माता ईश्वर को व्रत करो कि तुम टिक्विनिका में उनकी चमत्कारी प्रतिमा के दर्शन करने जाओगे।'

जागने पर, उस व्यक्ति ने तुरंत आँसुओं के साथ परम पवित्र माता से प्रार्थना करना शुरू कर दिया और उनकी प्रतिमा की पूजा करने का व्रत लिया; उसी क्षण, वह पूरी तरह से स्वस्थ हो गया और अपना वादा पूरा करने के लिए मठ के लिए रवाना हो गया। यह 1596 में हुआ था।

उसी वर्ष, मारिया नाम की एक अंधी महिला, जिसने दस वर्षों से दिन का उजाला नहीं देखा था, को मठ में लाया गया; सर्व पवित्र परमेश्वर की माता की प्रतिमा के सामने प्रार्थना करने के बाद, उसने अपनी दृष्टि वापस पा ली।

एक अन्य महिला, यूडोकीया नाम की, जो झील ओनेगा के तट पर रहती थी[4623] , जो एक राक्षस के वश में थी और पक्षाघात से पीड़ित थी, साथ ही उसका एक हाथ सूखा हुआ था, वह अपने घर में ही तुरंत अपने राक्षस के वश से और पक्षाघात से ठीक हो गई, जैसे ही उसने परम पवित्र की प्रतिमा की पूजा करने जाने का वादा किया: अशुद्ध आत्मा उससे निकल गया, और उसके अंग, जो पहले लकवाग्रस्त थे, में फिर से ताकत और स्वास्थ्य आ गया; केवल उसका हाथ ही ठीक नहीं हुआ था, ताकि वह अपना वादा न भूल जाए। जब वह टिक्विन मठ पहुँची और उसकी प्रतिमा के सामने परमेश्वर की माता से प्रार्थना की, तब उसका हाथ ठीक हो गया। यह 1603 में हुआ था।

जॉन नामक एक लंगड़ा और अंधा व्यक्ति ने परम पवित्र थिओटोकोस की प्रतिमा की पूजा करने का व्रत लिया और अपने ही घर में चंगा हो गया: उसकी दृष्टि वापस आ गई और उसके पैर सीधे हो गए; फिर वह 1 मार्च 1606 को परम पवित्र थिओटोकोस का धन्यवाद करने के लिए टिक्विन मठ आया।

[4623] ओनेगा झील वर्तमान ओलोनेत्स गवर्नरेट की सीमाओं के भीतर, लादोगा झील के उत्तर-पूर्व में स्थित है।

इसी तरह, वभिन्नि बीमारियों से पीड़ति कई अन्य लोगों को भी ठीक होने का आशीर्वाद तुरंत मलि गया, जैसे ही उन्होंने टक्विकिा नदी पर स्थति परम पवत्रि माता ईश्वर की चमत्कारी प्रतमिा की पूजा करने का संकल्प लयिा। टख्विनि के इतहिासकार कहते हैं, 'हम जानते हैं कि इस पवत्रि प्रतमिा द्वारा अद्भुत चमत्कार कभी बंद नहीं हुए हैं, और जो भी श्रद्धा के साथ आए हैं, उनके लिए ये हमेशा एक झरने से नकिलने वाले जीवति जल की तरह बहे हैं। इस प्रकार, कई अंधों को दृष्टि वापस मलिी; भूत-प्रेत बाधति लोग शैतानी यातना से मुक्त हुए; बधरिों को सुनने का वरदान मलिा; लकवाग्रस्त लोगों के अंगों में शक्ति लौट आई; मूक लोगों की जीभ का बंधन छूट गया; लंगड़े लोग हरिण की तरह कूद पड़े; और सरिदर्द से पीड़ति लोग ठीक हो गए। दूर-दराज के देशों में भी, वभिन्नि रोगों से पीड़ति लोगों को, जैसे ही वे इस चमत्कारी प्रतमिा के सामने मन्नतें मांगते, इसकी त्वरति सहायता से वंचति नहीं रखा जाता था। संक्षेप में, जब भी वे वशि्वास के साथ ईश्वर की माता की शरण में दौड़कर आते, तो सभी को उनकी आवश्यकता के अनुसार त्वरति सहायता मलिती थी।

धर्मनष्ठि ज़ार और ग्रैंड प्रंसि वासलिी इओआनोवचि शुइस्की[4624] के शासनकाल के दौरान, हमारे पापों के कारण, रूसी भूमि में महान उथल-पुथल मची थी, आंशकि रूप से आंतरकि संघर्षों से और आंशकि रूप से बाहरी शत्रुओं के हमलों से। हर जगह रूसी रक्त बहाया गया। शाही शहर मास्को पड़ोसी अन्य धर्मों के लोगों के हाथों में था, जबकि वेलकिी नोवगोरोड, अपने पूरे प्रांत के साथ, वारांगयिनों के नयिंत्रण में था[4625] । उस समय, टक्विन मिठ भी वारांगयिनों के शासन के अधीन था और उन्हें उनके हाथों बहुत उत्पीड़न सहना पड़ा। लेकनि फरि, ईश्वर की दया और स्वर्गीय राजा की सर्वशक्तमिान मदद से, बखिरी हुई रूसी सेनाओं ने एक ही मलिशियिा में इकट्ठा होकर, अन्य धर्मों के लोगों के हाथों से मॉस्को के शाही शहर को छीन लयिा, और धार्मकि ज़ार और ग्रैंड प्रंसि मखिाइल फेडोरोवचि[4626] ने वहाँ सहिासन संभाला। उन्होंने वरांगयिनों से लड़ने के लिए अपनी सेना को वेलीकी नोवगोरोद के क्षेत्र में भी भेजा, और वहाँ, उस्टे नदी के कनिारे, रूसी सेनाओं और वरांगयिन अग्रमि दस्तों के बीच एक लड़ाई हुई। वारंगयिन योद्धा पराजति होकर भाग खड़े हुए; तसर की सेना ने उन्हें टक्विकिा नदी पर पकड़ लयिा और कुछ को मार डाला तथा अन्य को बंदी बना लयिा।

वारंगयिन योद्धाओं की इस पराजय की खबर सुनते ही, वेलकिी नोवगोरोद में तैनात और वहाँ कई वारंगयिन रेजमिेंटों का नेतृत्व करने वाले वारंगयिन गवर्नर क्रोध और आक्रोश से भर उठा। इस हार का बदला रूसी लोगों से लेने की इच्छा से, उसने नोवगोरोद में तैनात अपनी रेजमिेंटों को टक्विनि मठ और आसपास के सभी गांवों को पूरी तरह तबाह और लूटपाट करने के लिए भेज दयिा। यह सुनकर, स्थानीय नविासी अपनी पत्नयिों और बच्चों के साथ मठ की शरण में आ गए और भक्षिुओं तथा कुछ ज़ार के योद्धाओं के साथ मलिकर, वरांगयिनों से बचने के लिए उसकी मजबूत पत्थर की दीवारों के पीछे शरण ले ली। साथ ही, उन सभी ने अपनी आशा दीवारों की ताकत में नहीं बल्कि अजेय दीवार की मदद और मध्यस्थता में और उन सभी की सुरक्षा में रखी जो उस पर भरोसा करते हैं - ईश्वर की परम पवत्रि कुंवारी माता।

वारांगयिन के आने में देर नहीं लगी; मठ की दीवारों के पास पहुँचकर, उन्होंने इसे चारों ओर से घेर लयिा और उस पर हमला करना शुरू कर दयिा। मठ के भीतर बंद लोग बहुत डर गए, – और जबकि कुछ लोग दीवारों पर वरांगयिों से लड़ रहे थे, अन्य, भक्षिुओं के साथ चर्च में इकट्ठा होकर, उसकी चमत्कारी प्रतमिा के सामने आँसुओं के साथ परमेश्वर और परमेश्वर की अति पवत्रि माता से भक्तपिूर्वक प्रार्थना कर रहे थे, रात भर जागते रहे और अति पवत्रि माता से ऑर्थोडॉक्स ईसाइयों की मदद करने का आग्रह कर रहे थे। और यह मदद देर से नहीं आई।

उसी रात, मारयिा नाम की एक महलिा, प्रार्थना करते-करते झपकी ले गई और उसने सपने में सर्वधन्य कुँवारी मरयिम को देखा, जो उसके सामने प्रकट होकर बोलीं:

'मठ में सभी को बता दो: वे मेरी प्रतमिा ले लें और मठ की दीवारों के चारों ओर इसके साथ घूमें, और फरि वे अपने ऊपर ईश्वर की दया देखेंगे।'

जागते ही उस महलिा ने चर्च में मौजूद सभी लोगों को यह दर्शन सुनाया। वे परम आनंद और उच्च से सहायता की आशा से भर गए, और, प्रार्थना के साथ परमेश्वर की परम पवत्रि माता की चमत्कारी प्रतमिा को लेकर, वे इसे मठ की दीवार तक ले गए; एक प्रार्थना-यात्रा करते हुए, वे मठ के चारों ओर घूमने लगे, और परमेश्वर की परम पवत्रि माता से आँसुओं के साथ पुकारने लगे:

[4624] झूठे दमित्रिी प्रथम के तख्तापलट के बाद बोयारों द्वारा चुने गए वासलिी शुइस्की ने 1606 से 1610 तक शासन कयिा।

[4625] यहाँ 'वारांगयिन' शब्द स्वीडनवासयिों को संदर्भति करता है।

[4626] सभी रूस की ओर से ज़ेम्स्की सोबोर द्वारा ज़ार चुने गए मखिाइल फेदोरोवचि रोमानोव ने 1613 में सहिासन संभाला और 1645 तक शासन कयिा।

'हे स्वर्ग की रानी, अपने सेवकों की दुर्दशा देखो; अतःहमें घेरे हुए शत्रुओं से बचाओ, और अपनी शक्ति दिखाओ, ताकि हमारे सभी शत्रु यह जान जाएँ कि आप, हमारी मध्यस्थ, हमारे साथ हैं।'

उसी क्षण, शत्रुओं पर एक महान भय छा गया: वे भ्रम में पड़ गए और सभी मठ से भाग गए, भले ही कोई उनका पीछा नहीं कर रहा था।

लेकिन कुछ समय बीत जाने के बाद, वरांगियनों ने और भी अधिक बल के साथ मठ पर चढ़ाई की, और उसे घेरकर, एक बार फिर से उस पर घेराबंदी कर दी और मठ पर बार-बार हमले किए। घेराबंदी के दौरान, मठ के भीतर दोनों लिंगों के काफी लोग थे: तंग रहने की परिस्थितियों और इस तथ्य को देखते हुए कि पुरुष और महिलाएं एक साथ रह रहे थे, हर किसी ने पवित्र स्थान के लिए उपयुक्त पवित्रता का पालन नहीं किया, और वासनाएं एक चिंगारी से आग पकड़ने वाली सूखी घास की तरह भड़क उठीं। इस वजह से, मठ पर ईश्वर का प्रकोप पड़ा, और प्रभु ने उससे अपनी सहायता वापस ले ली। तब, ईश्वर की अनुमति से, मठ को घेरने वाले दुश्मन और अधिक शक्तिशाली होने लगे, जबकि मठ के रक्षक निरंतर लड़ाइयों से थक गए थे। मठ में सभी पर पहले ही निराशा छा चुकी थी, और उन्होंने घेराबंदी करने वालों के हाथों अपने निकटवर्ती विनाश की उम्मीद करनी शुरू कर दी थी। तब वे सभी कड़वी विलाप के साथ परम पवित्र की चमत्कारी प्रतिमा के पास उमड़ पड़े और आँसुओं से भरकर, उसके सामने पुकारने लगे:

हे परमेश्वर की अति पवित्र कुँवारी माता, आप हमारी दीनता को देखती हैं! हम आँसुओं के साथ आपके अति पवित्र प्रतिमा के समक्ष आते हैं और विनम्रतापूर्वक आपसे प्रार्थना करते हैं: हे अति पवित्र माता, अपने मठ को न छोड़िए, जिसे आपने स्वयं अपनी चमत्कारी प्रतिमा के प्रकट होने से यहाँ स्थापित किया है! हे माता, आप देख रही हैं कि हमारे शत्रुओं द्वारा हम पर कितना भयंकर आक्रमण हो रहा है। अत; हे सर्वशक्तिमान, हमें, अपनी शरण के बिना न छोड़िए, क्योंकि हमें आप के सिवा और कहीं से भी कोई सहायता की आशा नहीं है।

उस समय, मार्टिनियिन, सोलोवेत्स्की मठ का एक भिक्षु—एक धार्मिक और ईश्वर-भयभीत व्यक्ति—मठ में ठहरा हुआ था। सर्वशुद्ध ने उसे एक दर्शन में संत-पुरुषों—चमत्कार करने वाले संत निकोलस, खुटिन के आदरणीय बरलाम और सोलोवेत्स्की के जोसिमा—से घिरी हुई अवस्था में प्रकट होकर कहा:

'मेरी सहायता इस स्थान से हट गई है क्योंकि कई लोगों ने अपने अपवित्र कर्मों से इसे अपवित्र कर दिया है।'

मार्टिनियिन भयभीत होकर अपनी नींद से जागा और आँसुओं से भरी आँखों से, उसने अपनी दिव्यदृष्टि का वर्णन मठ के अधीक्षकों को सुनाया। सोलोवेत्स्की के भिक्षु का वृत्तांत सुनकर, अधीक्षकों ने तुरंत उन सभी को ढूंढ निकाला जिन्होंने अशुद्ध वासना के आगे झुककर मठ को अपवित्र किया था, और उन्हें बाहर निकाल दिया; तब उन्होंने चर्च के प्रांगण को शुद्ध किया और बहुत सी प्रार्थनाएँ करते हुए, भरपूर आँसू बहाते हुए और परम पवित्र माता से क्षमा और मध्यस्थता के लिए विनती करते हुए, परमेश्वर और परमेश्वर की परम पवित्र माता को प्रसन्न करना शुरू किया, ताकि वे अपने शत्रुओं के हाथ में न पड़ जाएँ। और दयालु प्रभु ने, अपनी परम पवित्र माता की मध्यस्थता से, मरते हुए लोगों के प्रति अपने धर्मी क्रोध को दया में बदल दिया; और उस समय से, घेराबंदी में फंसे लोग मजबूत हो गए और अपनी शक्ति पुनःप्राप्त कर ली, जबकि उनके दुश्मन कमजोर होने लगे। अंत में, अपनी ताकत इकट्ठा करके और सर्वपवित्र की सहायता में अपनी आशा रखकर, घेराबंदी में फंसे लोग अचानक मठ की दीवारों के पीछे से निकले और, अपने दुश्मनों पर टूट पड़े, बहादुरी से उनसे लड़ने लगे। ईश्वर की परम पवित्र माता की प्रार्थनाओं के द्वारा दिव्य सहायता उनके साथ थी, और प्रभु ने उन्हें उनके शत्रुओं पर विजय प्रदान की; क्योंकि यद्यपि वे संख्या में कम थे, उन्होंने कई हज़ार शत्रुओं को भागने पर मजबूर कर दिया और उनमें से कुछ को बंदी बना लिया।

हालाँकि, उसके बाद भी, वरांगियनों ने पवित्र मठ को शांति से नहीं छोड़ा। अपनी अपमान का बदला लेना चाहकर, उन्होंने एक और भी बड़ी सेना इकट्ठी की और एक बार फिर मठ के पास पहुँचे: उसे चारों ओर से घेरने के बाद, उन्होंने उसकी दीवारों पर बार-बार और प्रचंड हमले किए और उनके नीचे भूमिगत खाई खोदना शुरू कर दिया। फिर सर्व-पवित्र एक बार फिर उपरोक्त मार्टिनियिन को एक रात्रि-दर्शन में प्रकट हुईं और उससे कहा:

'नेताओं से कहो कि वे मेरे घर से सूअरों को भगा दें, क्योंकि उन्होंने चारों ओर की ज़मीन खोद डाली है और मठ के दरवाज़ों की दहलीज़ को पहले ही कमज़ोर कर दिया है।'

परम पवित्र कन्या मरियम मठ में ग्रेगरी नामक एक अन्य व्यक्ति को भी इसी प्रकार प्रकट हुईं, और उन दोनों—मार्टिनियिन और ग्रेगरी—ने मठ में उपस्थित सभी लोगों को ईश्वर की माता के वचन सुनाए।

उसी रात, प्रभु ने शत्रुओं को एक भयानक दर्शन भेजा: उन्होंने मास्को से कई चमकदार झंडे लिए हुए, जिन पर क्रॉस बना था, मार्च करते हुए सशस्त्र योद्धाओं की एक भीड़ देखी। यह सोचकर कि ये मठ में शरण लेने वालों की मदद के लिए ज़ार की रेजिमेंटें आ रही हैं, वरांगियनों में दहशत छा गई और वे भागना चाहते थे। हालाँकि, अपनी सुरंगों के माध्यम से मठ और उसकी दीवारों को नुकसान पहुँचाने की उम्मीद में, वे कुछ देर के लिए हिचकिचाए।

इस बीच, घेराबंदी में फंसे लोग, मार्टिनियन और ग्रेगरी को दिए गए दर्शन से मजबूत होकर, ईश्वर की माता की चमत्कारी प्रतिमा के सामने प्रार्थना करने के बाद, पहले की तरह ही हथियारबंद होकर मठ से बाहर निकले और अपने दुश्मनों पर टूट पड़े। अब ऊपर से अदृश्य सहायता ने उनकी मदद की, ठीक वैसे ही जैसे पहले की थी: ऑर्थोडॉक्स की सहायता करते हुए, प्रभु ने दुश्मन की रेजिमेंटों में भ्रम पैदा कर दिया, और उन पर एक बड़ा भय और कांपना छा गया। अपनी घबराहट में, वे भाग खड़े हुए और, आतंक में एक-दूसरे से धक्का-मुक्की करते हुए, एक-दूसरे को ही गिराने लगे, उनका पीछा कुछ दिखाई देने वाले योद्धाओं ने नहीं बल्कि अनगिनत अदृश्य योद्धाओं ने किया। तब ऑर्थोडॉक्स योद्धाओं ने, अपने दुश्मनों को भागते हुए देखकर, और भी अधिक साहस जुटाया और नए जोश के साथ उनका पीछा किया, उन्हें तनों की तरह काटते हुए और कुछ को बंदी बनाते हुए; जहाँ तक खाइयों में पड़े दुश्मनों का सवाल है, मठ से निकली सेना ने कुछ को अपनी तलवारों से काट डाला और दूसरों को ज़िंदा दफ़न कर दिया। जब युद्ध समाप्त हुआ, तो पकड़े गए वरांगियों ने बताया कि पिछली रात उन्होंने मठ की सहायता के लिए एक विशाल सेना को आते देखा था, और वही सेना बाद में मठ की दीवारों के पीछे से निकलकर बड़ी ताकत के साथ उनका पीछा कर रही थी। वारंगियनों से यह वृत्तांत सुनकर, ऑर्थोडॉक्स ईसाइयों ने आँसुओं से भरी आँखों के साथ ईश्वर और परमेश्वर की परम पवित्र माता का धन्यवाद किया। यह शानदार विजय 1614 में, प्रभु के मूल्यवान और जीवन-दायक क्रूस के उत्थान के पर्व के दिन ही हुई।

अगले वर्ष, वेलिकी नोवगोरोद में तैनात वरांगियन गवर्नर, टिक्विन मठ के खिलाफ क्रोध से जल रहा था—जहाँ उसके इतने सारे सैनिक मारे गए थे—उसने एक बार फिर एक मजबूत मिलिशिया इकट्ठी की और उसे टिक्विन भेजकर आदेश दिया कि मठ को बिना किसी दया के जमीन-दोस्त कर दिया जाए, और परमेश्वर की परम पवित्र माता की प्रतिमा को टुकड़ों में काटने का, तथा उनकी चर्च के पत्थरों को हवा में बिखेर देने का आदेश दिया। इस आदेश की खबर टिक्विन मठ तक पहुँच गई। वहाँ मौजूद सभी लोग बड़े भय से ग्रस्त हो गए और परमेश्वर की परम पवित्र माता की चमत्कारी प्रतिमा को लेकर मॉस्को भाग जाने वाले थे। लेकिन चमत्कारी प्रतिमा अपने स्थान पर अडिग बनी रही, इसलिए जब पुरोहितों ने एक प्रार्थना का जाप करते हुए इसे उठाने की कोशिश की, तो वे ऐसा नहीं कर सके। इस चमत्कार ने कायरों को होश में ला दिया, और उन्हें एहसास हुआ कि सर्वशुद्ध कुंवारी मरियम मठ छोड़ने के उनके इरादे को मंजूरी नहीं देती थीं। स्वर्ग की रानी की सर्वशक्तिमान मदद में अपनी सारी आशा रखते हुए, वहाँ मौजूद सभी लोग मठ में बंद हो गए और दुश्मनों के आने का इंतजार करने लगे। लेकिन ऑर्थोडॉक्स की शीघ्र मध्यस्थ और अपने मठ की सदा सतर्क रक्षक ने वारांगियनों को मठ तक पहुँचने भी नहीं दिया और एक अद्भुत दृष्टि से उनका रास्ता रोक दिया। वारंगियनों को ऐसा प्रतीत हुआ कि एक विशाल और सुसज्जित सेना उनकी ओर लड़ाई के लिए तैयार होकर बढ़ रही थी। ऐसी अजेय सेना का सामना करने की कोई आशा न देखकर, वे भयभीत होकर भाग खड़े हुए, जिससे भगदड़ मच गई और वे एक-दूसरे के पैरों तले कुचल दिए गए। उस समय से, वारंगियनों ने फिर कभी टिक्विन मठ[4627] के पास जाने की हिम्मत नहीं की। इस प्रकार, सर्व पवित्र कन्या मरियम ने महिमा के साथ, एक से अधिक अवसरों पर अपने मठ को उसके शत्रुओं से बचाया; और न केवल उन्होंने अपने मठ को उनके हाथों से बचाया, बल्कि उन्होंने जल्द ही वेलिकी नोवगोरोड को, उसके सभी क्षेत्रों के साथ, वरांगियन के जुए से मुक्त कराया और इसे रूस के ऑर्थोडॉक्स सम्राट को सौंप दिया। और उनकी प्रार्थनाओं के द्वारा, पूरे रूसी साम्राज्य में शांति और सुकून आया।

जब ऊपर वर्णित विपत्तियाँ समाप्त हो गईं, और मठ, पूरे रूसी देश के साथ, आई हुई शांति का आनंद ले रहा था, तब ईश्वर को उस पर प्रकोप करना उचित लगा—जो वरांगियनों के हमलों और आग से बचा रहा था—ताकि उसके

[4627] इस चमत्कारी विजय के लगभग एक साल बाद, ज़ार के दूत स्वीडिश लोगों के साथ एक शांति संधि करने के लिए टिक्विन मठ पहुँचे। ईश्वर की माता के चमत्कारी आइकन की एक प्रति बनाकर, दूत मठ से 50 वर्स्ट की दूरी पर लादोगा शहर के पास स्थित स्टोल्बोवो गाँव के लिए रवाना हुए; स्वीडिश दूत भी वहाँ पहुँचे। यहीं, 10 फरवरी 1617 को, स्टोलबोवो की संधि संपन्न हुई, जिसमें रूसी लोगों द्वारा लाई गई चमत्कारिक टिक्विन प्रतिमा की प्रतिलिपि उनकी ओर से शांति की मुख्य प्रतिज्ञा के रूप में रखी गई। बाद में इस प्रतिमा को मास्को ले जाया गया और डॉर्मिशन कैथेड्रल में स्थापित किया गया; बाद में, स्वीडिशों के खिलाफ युद्ध में भाग लेने वाले नोवगोरोड के लोगों की विनम्र प्रार्थनाओं के बाद, इसे नोवगोरोड भेज दिया गया और सेंट सोफिया कैथेड्रल में स्थापित किया गया, जहाँ यह आज भी मौजूद है।

नविासयिों को होश में लाया जा सके और उन्हें सभी अशुद्धयिों से शुद्ध कयिा जा सके। ईश्वर द्वारा यह भयंकर प्रकोप मठ समुदाय को चमत्कारकि रूप से पहले से ही बता दयिा गया था। यह इस प्रकार हुआ।

टख्विनि में नकिति नाम का एक भखिारी रहता था, जसिने ईश्वर को प्रसन्न करने के लिए, पवत्रि मूर्खता का तपस्वी अभ्यास अपना रखा था। और उसी के पास—न कि किसी सपने में, बल्कि दनि-दहाड़े—जेल्टोवोडस्क के पूजनीय मकरयिस प्रकट हुए और कहा:

'जाओ और मठाध्यक्ष तथा भ्राताओं से कहो कि उन्हें बड़ी सावधानी से संयम का पालन करना चाहिए, और सबसे बढ़कर मठ में कोई भी नशीली चीज़ नहीं रखनी चाहिए, क्योंकि नशा सभी बुराइयों का कारण है। इसके अलावा, उन्हें मठ में, चर्च की सेवाओं के अलावा, ऐसे लोगों को प्रवेश न दें जो भ्राताओं के बीच प्रलोभन पैदा कर सकते हैं, और वशिेष रूप से महलिाओं को। उन्हें यह भी बताओ कि वे ईश्वर और परमेश्वर की अति पवत्रि माता से भक्तपिूर्वक प्रार्थना करें, ताकि मठ पर आग द्वारा ईश्वर के भयानक दंड को टाल सकें।

तब नकिति, जसिने संत को नहीं पहचाना था, ने उनसे पूछा कि वे कौन हैं।

आगंतुक ने उत्तर दयिा:

'मैं जेल्टोवोडस्क का मक□□□अस हूँ, और मैं यहाँ परमेश्वर की परम पवत्रि माता की चमत्कारी प्रतमिा के पास आया हूँ।'

यह कहकर वह अदृश्य हो गया। तब नकिति मठाध्यक्ष और भाइयों के पास गया और उन्हें अपने द्वारा देखे गए दर्शन के बारे में बताया। लेकनि उन्होंने उस पर वश्विास नहीं कयिा और उस पर इस तरह हँसे जैसे वह कोई पवत्रि मूर्ख हो। कुछ दनि बीत गए - और अचानक, बनिा कसिी स्पष्ट कारण के, एक कोठरी में आग लग गई; लपटें तेजी से फैल गईं और सभी इमारतों को अपनी चपेट में ले लयिा, जसिसे पूरा मठ आग की लपटों में घरि गया। आग इतनी भयंकर थी कि न केवल लकड़ी की संरचनाएं राख हो गईं, बल्कि कई पत्थर की इमारतें भी आग में ध्वस्त हो गईं। तब संन्यासयिों को एहसास हुआ कि जेल्टोवोडस्क के पूजनीय मकारयिस वास्तव में पवत्रि मूर्ख नकिति ही थे, और वह उनके माध्यम से उन्हें ईश्वर के प्रकोप के बारे में चेतावनी दे रहे थे, जो उन पर मंडरा रहा था। पश्चाताप करने के बाद, उन्होंने पूजनीय व्यक्ति द्वारा कही गई हर बात का पालन करना शुरू कर दयिा, और उन्होंने परम पवत्रि थओिटोकोस से अपने पापों के लिए क्षमा याचना करते हुए, भक्तपिूर्वक प्रार्थना की। और स्वर्ग की रानी की दया से, कुछ समय बीत जाने के बाद, मठ को एक बार फरि से भव्य रूप से बहाल कयिा गया, और यह आज भी अक्षुण्ण खड़ा है, एक लली की तरह फल-फूल रहा है और परम पवत्रि थओिटोकोस की चमत्कारी प्रतमिा द्वारा कए गए चमत्कारों से महमिामय हो रहा है। क्योंकि आज भी, जो लोग वश्विास के साथ मठ में आते हैं, वे प्रतमिा के सामने जो माँगते हैं, वह उन्हें प्राप्त होता है और उन्हें अपने रोगों से चमत्कारी रूप से स्वास्थ्य लाभ मलिता है[4628] ।

इन सभी चमत्कारों के बारे में हमें बात करने की कोई आवश्यकता नहीं है: ये प्रभु परमेश्वर और उनकी परम धन्य माता की महमिा के लिए परम पवत्रि कन्या के मठ में दर्ज हैं।

ईश्वर की अति पवत्रि माता की चमत्कारी प्रतमिा को टक्विनि में कहाँ से लाया गया था, इसका कोई वश्विसनीय ववरिण उपलब्ध नहीं है। प्राचीन पांडुलपियिों में कहा गया है कि ईश्वर की इच्छा से यह ग्रीस, कॉन्स्टेंटनिोपल से रूसी साम्राज्य में आई थी, ग्रीक सम्राट जॉन पालेओलोगस[4629] के शासनकाल में, तुर्कों के हाथों कॉन्स्टेंटनिोपल के पतन से 70 वर्ष पहले[4630] । यह नम्निलखिति परस्थितियिों से स्पष्ट था।

जसि समय परमेश्वर की परम पवत्रि माता की चमत्कारी प्रतमिा टक्विनि में कई महान चमत्कारों के माध्यम से महमिामय होने लगी, उसी समय कुछ नोवगोरोड के व्यापारी, जो धर्मपरायण पुरुष थे, साम्राज्यकि शहर

[4628] ईश्वर की माता की तक्विनि प्रतमिा रूस में ईश्वर की माता की सबसे प्रसदि्ध और पूजनीय प्रतमिाओं में से एक है। हर साल हजारों लोग इस चमत्कारी प्रतमिा की पूजा करने के लिए तक्विनि आते हैं। रूसी राजकुमारों और ज़ारों ने अपने दान से मठ को समृद्ध कयिा और स्वयं भी प्रतमिा की पूजा करने के लिए वहाँ यात्रा की। दोनों राजधानयिों में, कई कस्बों और मठों में, और यहां तक कि ग्रामीण पैरशि चर्चों में भी, इस प्रतमिा की प्रतयिां हैं जो अपने चमत्कारों के लिए प्रसदि्ध हैं। टक्विनि मठ में, इस चमत्कारी प्रतमिा को लेकर मठ के परसिर के चारों ओर साल में 24 बार एक जुलूस नकिाला जाता है। आइकन पर लगे कीमती आभूषणों का मूल्य लगभग 70,000 रूबल तक है।

[4629] यह, बेशक, जॉन पंचम पलाइओलोगोस को संदर्भति करता है, जन्हिोंने 1379 से 1391 तक शासन कयिा।

[4630] तुर्कों ने 1453 में कॉन्स्टेंटनिोपल पर कब्जा कर लयिा।

कॉन्स्टेंटिनोपल में पहुँचे। उनसे बातचीत करते हुए, कॉन्स्टेंटिनोपल के महाधर्माध्यक्ष ने उनके पास रहे चमत्कारी प्रतिमा को याद किया, जो किसी तरह गायब हो गई थी और शाही शहर से चली गई थी, और उनसे पूछा:

'क्या आपने ऐसी किसी प्रतिमा के बारे में कुछ सुना है?'

तब उन्होंने उसे निम्नलिखित बात बताई, और एक गंभीर शपथ के साथ अपनी बात की पुष्टि की कि जो कुछ भी वे कह रहे थे वह सच था:

उन्होंने कहा, 'ईश्वर की माता की एक चमत्कारी प्रतिमा, वायुमार्ग से महान रूस में आई - ईश्वर ही जाने कहाँ से - और वेलीकी नोवगोरोद की सीमाओं के भीतर विभिन्न स्थानों पर प्रकट हुई, जो उससे एक सौ अस्सी पोप्रीश्ची की दूरी पर है, और एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाती रही; अंतत; यह अपनी पूरी महिमा के साथ टिख्वनि नदी पर प्रकट हुई, जहाँ इसने अद्भुत और अकथनीय चमत्कार किए - वहाँ यह आज भी चर्च में मौजूद है।

यह वृत्तांत सुनकर और यह महसूस करके कि टिख्वनि नदी पर प्रकट हुई यह प्रतिमा वास्तव में वही थी जिसके बारे में वह पूछताछ कर रहा था, पैट्रआर्क ने अपने हृदय की गहराई से आह भरना और टिख्वनि प्रतिमा के बारे में और अधिक विस्तार से पूछना शुरू कर दिया। तब उन्होंने स्वयं यह वर्णन किया कि कैसे वही प्रतिमा एक बार समुद्र मार्ग से शाही शहर से भव्य रूप से प्रस्थान कर गई थी, उस दिशा में जहाँ ईश्वर को प्रसन्न था, और कैसे, कुछ समय बीत जाने के बाद, यह एक बार फिर शाही शहर में लौट आई, कैसे इससे श्रद्धालुओं के लिए कई चमत्कार और आशीर्वाद बहे, और कैसे, एक शक्तिशाली सहायक के रूप में इसके सामने की गई प्रार्थनाओं के माध्यम से, दुश्मनों पर विजय और सफलताएँ प्राप्त हुईं।

'लेकिन अब,' उन्होंने कहा, 'हमारे अहंकार, एक-दूसरे से नफरत और अन्य अन्यायों के कारण, वह निश्चित रूप से एक बार फिर हमसे चली गई हैं और कभी वापस नहीं आएंगी।'

गहरी भावना के साथ यह सब कहने के बाद, पैट्रआर्क नोवगोरोड के व्यापारियों के साथ चर्च में गए और उन्हें वह स्थान और अवशेष-पात्र दिखाया जहाँ परमेश्वर की परम पवित्र माता का आइकन खड़ा था। यदि कोई पश्चिमी द्वार से चर्च में प्रवेश करता, तो वह स्थान चर्च के दाहिने स्तंभ के पास था; वहाँ पहले से ही एक और प्रतिमा रखी हुई थी, हालांकि वह कुछ छोटी थी, और एक शाश्वत दीपक जल रहा था।

यह सुनकर और स्वयं देखकर, नोवगोरोड के पुरुष बहुत आश्चर्यचकित हुए और उन्होंने प्रभु परमेश्वर और उनकी परम पवित्र माता की महिमा की, जिन्होंने अपनी परम पवित्र प्रतिमा के माध्यम से विभिन्न देशों में कई चमत्कार किए थे। वे लंबे समय तक पैट्रआर्क से परमेश्वर की अति पवित्र माता की प्रतिमा के बारे में बात करते रहे और परमेश्वर की माता द्वारा किए गए चमत्कारों को एक-दूसरे को सुनाया: उन्होंने ग्रीस में हुए चमत्कारों के बारे में बताया, जबकि उन्होंने रूसी भूमि को चकित करने वाले चमत्कारों के बारे में बताया। और रूसी पुरुष परम पवित्र की चमत्कारी प्रतिमा के बारे में मिली खबर को सुनकर बहुत प्रसन्न हुए।

जब वे कॉन्स्टेंटिनोपल से निकलकर रूसी भूमि पर पहुँचे, तो तसरग्राद में उन्होंने जो सुना था, उसकी खबर पूरे रूस में फैल गई; और ईसाई एकता के पैट्रआर्क द्वारा परमेश्वर की माता की चमत्कारी प्रतिमा के बारे में पूछे गए प्रश्न, साथ ही चमत्कारों का उनका विवरण जो इसके माध्यम से प्रकट हुए थे, साथ ही उस स्थान का भी उल्लेख था जहाँ कॉन्स्टेंटिनोपल में प्रतिमा स्थापित रही थी। उस समय से, हर कोई इस बात से आश्वस्त हो गया कि यह पवित्र प्रतिमा वही थी जो त्सारग्राद से आई थी। इसलिए, कॉन्स्टेंटिनोपल के उदाहरण का पालन करते हुए, टिख्वनि मठ में पश्चिमी द्वारों से चर्च में प्रवेश करते ही दाईं ओर पहले स्तंभ के पास परम पवित्र माता परमेश्वर की चमत्कारी प्रतिमा के लिए एक स्थान निर्धारित किया गया – वहाँ यह आज भी खड़ी है, और कई अथाह चमत्कार करती रहती है।

और चूँकि टिख्वनि में ईश्वर की माता की यह चमत्कारी प्रतिमा कुछ लोगों द्वारा 'ओडिजिट्रिया' और 'रोमन' या 'लिडियन' प्रतिमा के नाम से जानी जाती है, इसलिए यह उल्लेख करना उचित होगा कि कॉन्स्टेंटिनोपल में दो प्रतिमाएँ थीं, जो अपने चमत्कारों के लिए विशेष रूप से प्रसिद्ध थीं, जिनमें से एक को 'ओडिजिट्रिया' और दूसरी को 'रोमन' या 'लिडियन' कहा जाता था। इस प्रकार, 'ओडिजिट्रिया' एक प्रतिमा है, और 'रोमन' दूसरी। हम यहाँ इन दोनों प्रतिमाओं का संक्षेप में वर्णन करेंगे, ताकि सभी को इनके बारे में जानकारी हो सके।

परम पवत्रि ईश्वर माता के चमत्कारी प्रतमिा, जसिे 'ओडजिट्रियिा' के नाम से जाना जाता है

26 जून को स्मरण कयिा जाता है

ईश्वर की माता की प्रतमिाओं की सूची और चत्रिों के लिए, देखें परम पवत्रि ईश्वर की माता की चमत्कारी प्रतमिा, जसिे 'ओडजिट्रियिा' के नाम से जाना जाता है।

पवत्रि आत्मा के प्रेरतिों पर अवतरति होने के कुछ समय बाद, पवत्रि प्रेरति और सुसमाचार लेखक लूक, जो एक कुशल प्रतमिाकार थे, ने एक तख्ते पर परम पवत्रि , हमारी माता, ईश्वर की माता की एक प्रतमिा बनाई, और उसे स्वयं परम पवत्रि कुँवारी के पास लाए। आइकन पर अपने ही चेहरे का चत्रि देखकर, परम पवत्रि कन्या ने अपने बारे में अपनी पूर्व भवष्यिवाणी को याद कयिा और कहा: 'क्योंकि इस से अब से सब पीढ़ियाँ मुझे धन्य कहेंगी' (लूका 1:48)। फरि, आइकन की ओर इशारा करते हुए, उन्होंने घोषणा की: 'मेरी कृपा इस आइकन के साथ हो।' और परमेश्वर की परम पवत्रि माता के ये वचन वास्तव में पूरे हुए: परम धन्य कुँवारी के अनुग्रह से, उस प्रतमिा से अनेक और अकथनीय चमत्कार सचमुच हुए, और रोगयिों को आरोग्य प्राप्त हुआ।

बाद में, सुसमाचार लेखक लूका ने इस प्रतमिा को अंतीयक[4631] के शासक थयिोफलिस को भेजा, जो उन लोगों में से थे जो मसीह में वश्विास करने आए थे और जनिके लिए लूका ने अपना सुसमाचार और प्रेरतिों के काम की पुस्तक लखिी थी। अंतयिोकयिा में, इस प्रतमिा को न केवल थयिोफलिस द्वारा, बल्कि वहाँ के सभी ईसाइयों द्वारा भी उचति श्रद्धा से सम्मानति कयिा गया।

उसके बाद कई साल बीत गए, और पवत्रि प्रतमिा को अंतीयक से नकिालकर पहले यरूशलेम और फरि कॉन्स्टेंटनिोपल ले जाया गया। ग्रीक साम्राज्य की इस राजधानी में इसके स्थानांतरण की घटना नम्निलखिति परस्थितियिों में हुई।

बाइज़ेंटाइन सम्राट थयिोडोसयिस द यंगर[4632] की पत्नी, सम्राज्ञी यूडोक्सयिा, स्थानीय पवत्रि स्थलों पर पूजा करने के लिए पवत्रि भूमि में आईं, उन्होंने सुसमाचार लेखक लूक द्वारा बनाई गई परम पवत्रि ईश्वर माता की प्रतमिा ली और इसे सम्राट की बहन, धन्य पल्केरयिा को उपहार के रूप में भेजा, जैसा कि बाद वाली की जीवनी में दर्ज है। पुलकेरयिा ने उस चमत्कारी प्रतमिा को खुशी और प्रेम से स्वीकार कयिा और उसे परम पवत्रि ईश्वर माता के चर्च में स्थापति कयिा, जसिे उसने ब्लाचर्ना में बनवाया था[4633] । उस समय से, यह प्रतमिा शाही शहर की एक बड़ी शोभा बन गई, क्योंकि इसके माध्यम से कई तरह के चमत्कार और बीमारों का उपचार हुआ। कुछ समय बाद, इस प्रतमिा को 'ओडगिट्रियिा' नाम दयिा गया, जसिका अर्थ है 'मार्गदर्शक'। यह नाम तब स्थापति हुआ जब स्वयं परमेश्वर की माता दो अंधे पुरुषों के सामने प्रकट हुईं, उन्हें ब्लाचेर्ना में अपने चर्च में चमत्कारी प्रतमिा तक ले गईं, जहाँ प्रार्थना करने के बाद, उन्होंने अपनी दृष्टि वापस पा ली।

हेराक्लयिस के शासनकाल में[4634] , यूनानी साम्राज्य पर एक ही समय में फारसयिों और सीथयिनों ने हमला कयिा। फारसी राजा खुसरू के सेनापति सरिवर[4635] और एक सीथयिन राजकुमार ने एक बड़ी सेना के साथ स्वयं कॉन्स्टेंटनिोपल पर चढ़ाई की और शहर की घेराबंदी कर दी, जसिसे वह बाकी दुनयिा से कट गया और उन्होंने इसे एक नर्णिायक प्रहार करने की तैयारी की। तब कॉन्स्टेंटनिोपल के पैट्रआर्क सेर्जयिस ने, परम पवत्रि ईश्वर की माता के वस्त्र और 'ओडगिट्रियिा' के चमत्कारी प्रतमिा को वशिेष श्रद्धा के साथ लेकर, उन्हें और अन्य पवत्रि प्रतमिाओं को शहर की दीवारों के चारों ओर घुमाना शुरू कयिा, और प्रभु ईश्वर तथा उनकी परम पवत्रि माता से प्रार्थनाएँ करने लगे। और ईश्वर

[4631] अंतयिोक सीरयिा में ओरोन्टसि नदी पर स्थति एक शहर है।

[4632] सम्राट थयिोडोसयिस द्वतिीय युवा 408 से 450 तक शासन कयिा।

[4633] ब्लाचेर्ना कॉन्स्टेंटनिोपल का एक जलिा है, जो शहर के पश्चमिी कोने में स्थति है। बीजान्टनि साम्राज्य के स्वर्ण युग के दौरान, यह अपनी पवत्रि स्थलों के लिए पूरे पूर्व में प्रसद्धि था; व्लाचेर्ना वशिेष रूप से लेओ द ग्रेट (457–474) द्वारा नर्मिति 'चर्च ऑफ द मदर ऑफ गॉड' (ईश्वर की माता का चर्च) के लिए प्रसद्धि था; उनके शासनकाल के दौरान, पवत्रिभूमि से लाए गए ईश्वर की परम पवत्रि माता के पवत्रि वस्त्र इसी चर्च में रखे गए थे; उनका ओमोफोरीयॉन और उनकी कमरपट्टा का एक हस्सिा भी यहाँ सोने की जड़त वाले अवशेष-पात्र में रखा गया था।

[4634] सम्राट हेराक्लयिस ने 610 से 641 तक शासन कयिा।

[4635] यह, बेशक, ससानदि वंश के खसरू द्वतिीय को संदर्भति करता है; उन्होंने 590 से 621 तक शासन कयिा।

की कृपा से, परमेश्वर की अतिपवित्र माता के मध्यस्थता द्वारा, यूनानियों को बर्बर लोगों से अपने शाही शहर की एक चमत्कारिक मुक्ति प्राप्त हुई। जब पैट्रिआर्क और पुरोहितों ने, परम पवित्र कुँवारी के प्रतिमा के सामने प्रार्थना करने के बाद, ईश्वर की माता की पोशाक को खाड़ी के पानी में उतारा, तो समुद्र में तूफान आ गया और आगे बढ़ रहे दुश्मनों के जहाजों को डुबो दिया; उसी समय, ज़मीन पर मौजूद हमलावरों में भ्रम फैल गया और इसलिए उन्हें ग्रीक सैनिकों ने बिना किसी बड़ी कठिनाई के खदेड़ दिया। शाही शहर पर प्रकट हुई परम पवित्र की इस अद्भुत मध्यस्थता की स्मृति में, यह स्थापित किया गया है कि महा-उपवास के पांचवें शनिवार को वार्षिक रूप से एक कृतज्ञता अकैथिस्ट का गायन किया जाना चाहिए।

हालाँकि, जब प्रतिमा-भंजक विधर्म हावी हो गया और अधर्मी राजाओं ने प्रतिमाओं और उनकी पूजा करने वालों के खिलाफ उत्पीड़न भड़काया, तो ऑर्थोडॉक्स पादरी वर्ग के कुछ सदस्यों ने रात के समय चुपके से ब्लाचेर्ना के चर्च से 'ओडिगिट्रिया' प्रतिमा को हटा दिया और इसे पैंटोक्रैटर मठ ले गए[4636] । वहाँ उन्होंने इसे चर्च की दीवार के भीतर छिपा दिया; फिर, प्रार्थना करने के बाद, उन्होंने प्रतिमा के सामने एक दीपक जलाया और इसे ढक दिया ताकि प्रतिमा-भंजकों द्वारा इसकी अपवित्रता न हो सके।

इस प्रकार यह चमत्कारी प्रतिमा कई वर्षों तक वहीं रही, जब तक कि विधर्म के सभी समर्थक नष्ट नहीं हो गए। और जब चर्च में शांति लौट आई और पवित्र प्रतिमाओं के खिलाफ शत्रुतापूर्ण अभियान समाप्त हो गया, तो सुसमाचार लेखक ल्यूक द्वारा बनाई गई और बाद में ओडिगिट्रिया नामक परम पवित्र ईश्वर माता की पूजनीय प्रतिमा का पता लगाने के लिए एक लंबी खोज शुरू हुई। अंततः दैवीय प्रकटोक्ति द्वारा, मठ में पैंटोक्रैटर चर्च की दीवार के भीतर प्रतिमा छिपी हुई मिली; इसके अलावा, उन्होंने देखा कि इसके सामने जलाया गया दीपक बुझा नहीं था। चमत्कारी प्रतिमा की इस खोज के बारे में जानकर सभी विश्वासी परम आनंदित हुए, और प्रार्थना तथा भजन-कीर्तन के साथ उन्होंने इसे ब्लाचेर्ना की चर्च में इसके पूर्व स्थान पर भव्यता से वापस ले जाया।

लिडिस, या रोम में परमेश्वर की अतिपवित्र माता के चमत्कारी प्रतिमा पर

26 जून को स्मरणोत्सव

प्रमुख प्रेरित संत पतरस और धर्मशास्त्री संत यूहन्ना, अन्य प्रेरितों की तरह सुसमाचार का प्रचार करने के लिए पृथ्वी के दूर-दराज के कोनों में निकलने से पहले, यरूशलेम के निकटवर्ती नगरों में मसीह का उपदेश दिया। और जब वे लिद्दा नगर में थे[4637] , जिसे बाद में डायोस्पोलिस कहा गया, और वहाँ उन्होंने कई लोगों को मसीह में परिवर्तित किया, तो उन्होंने वहाँ परम पवित्र कुँवारी मरियम के नाम पर एक चर्च की स्थापना की। चर्च के निर्माण के लिए परिस्थितियाँ अनुकूल थीं। उस समय, मसीह की कलीसिया में शांति और सुकून आ गया, क्योंकि पहले शहीद, स्तेफन की शहादत के तुरंत बाद यहूदिया में मसीहियों पर अत्याचार बंद हो गया। इसमें इस तथ्य से भी मदद मिली कि रोमन सम्राट टिबेरियस[4638] , जिन्होंने हमारे प्रभु मसीह के बारे में बहुत कुछ सुना था, ने आदेश दिया कि मसीहियों पर अत्याचार नहीं किया जाना चाहिए। प्रेरितों के काम की पुस्तक ईसाई चर्च के लिए इस शांति की अवधि का वर्णन इस प्रकार करती है: *'यहूदिया, गलील और सामरिया के सभी मंडलों में शांति थी; वे सुसज्जित हो रहे थे और प्रभु के भय में चल रहे थे'* (प्रेरितों के काम 9:31)। लिद्दा में एक चर्च स्थापित करने के बाद, प्रेरित पतरस और यूहन्ना यरूशलेम के लिए रवाना हुए और उन्होंने परम पवित्र कुँवारी मरियम से विनती की कि वह लिद्दा आकर अपने नाम पर बना चर्च देखें, उसे आशीर्वाद दें और अपनी उपस्थिति से उसे पवित्र करें, ताकि परम पवित्र कुँवारी से जन्मे परमेश्वर को वहाँ अर्पित की गई प्रार्थनाएँ उनके सिंहासन तक पहुँच सकें। चेलों के निवेदन पर, परम पवित्र कुँवारी ने कहा: 'लैद्दा को आनन्दपूर्वक लौट जाओ: मैं तुम्हारे साथ वहाँ रहूँगी।' लिद्दा लौटने पर, उन्होंने चर्च में, इमारत को सहारा देने वाले पत्थर के खंभों में से एक पर, परम पवित्र कुँवारी का एक चित्र देखा—जो हाथ से बना हुआ नहीं, बल्कि ईश्वर की इच्छा से अंकित था—जिसमें उनके चेहरे की एक सुंदर छवि और वे सभी सम्मानजनक वस्त्र दिखाए गए थे जो वह आमतौर पर पहनती थीं। यह देखकर, प्रेरितों ने इस

[4636] अर्थात् सर्वशक्तिमान प्रभु; मठ शहर के बाहरी इलाके में स्थित था।

[4637] फ़िलिस्तीन में एक शहर, यरूशलेम के उत्तर-पश्चिम में, जाफ़ा जाने वाले रास्ते पर।

[4638] सम्राट टिबेरियस ने ईस्वी 14 से 37 तक शासन किया।

चमत्कारकि और मानव-नरि्मति न होने वाली प्रतमिा के सामने सरि झुकाया और परमेश्वर के वचन का धन्यवाद कयिा, जो सदा-कुँवारी से अवतारति हुए थे। तब परमेश्वर की अतपिवत्रि माता लदि्दा में आईं; अपनी प्रतमिा और मसीह यीशु में वशि्वास करने वाले अपने भक्तों की भीड़ को देखकर, वह आत्मा में आनंदति हुईं और अपनी प्रतमिा को चमत्कार करने की कृपा और शक्तपि्रदान की।

कई वर्षों बाद, जूलयिन द एपोस्टेट[4639] ने रोमन सीज़र्स के सहिासन पर आसीन होकर मसीह की कलीसयिा पर एक भयंकर उत्पीड़न शुरू कयिा। लद्दा में परम पवत्रि की चमत्कारी प्रतमिा के अस्तत्वि के बारे में जानकर, उसने अपने एक रशि्तेदार, जसिका नाम भी जूलयिन था, को उस प्रतमिा को मटिाने के आदेश के साथ वहाँ भेजा। और फरि एक अद्भुत चमत्कार हुआ। जब राजमस्त्रियिों ने अपनी छेनी से छवकिो मटिाने की कोशशि की, तो रंग और ब्रश के नशिान पत्थर के स्तंभ में गहरे तक समाते हुए प्रतीत हुए, और राजमस्त्रियिों के सभी प्रयासों के बावजूद छवअिक्षुण्ण बनी रही। लंबे समय तक बनिा कुछ हासलि कएि मेहनत करने के बाद, वे उस पवत्रि छवकिो मटिाने में असमर्थ होकर पीछे हट गए। इस अद्भुत चमत्कार की खबर दुनयिा के कोने-कोने में फैल गई - और तब से, बड़ी संख्या में श्रद्धालु परम पवत्रि परमेश्वर की माता की चमत्कारी छवकिी पूजा करने के लएि लड्डिा आने लगे।

[4640]कई वर्षों बाद, धन्य जर्मनस, जो बाद में कॉन्स्टेंटनिोपल के पैट्रआिर्क बने[4641] , वहां के पवत्रि स्थलों का सम्मान करने के लएि फलिस्तीन के लएि रवाना हुए। यरूशलेम का दौरा करने और वहां पवत्रि सेपल्चर और अन्य पवत्रि स्थानों का सम्मान करने के बाद, वह फरि लड्डिा पहुंचे। वहाँ, परमेश्वर की अतपिवत्रि माता के चमत्कारी प्रतमिा को श्रद्धांजलअिर्पति करने के बाद, उन्होंने एक प्रतमिाकार को लकड़ी की पट्टी पर प्रतमिा की एक सटीक प्रतलिपिि बनाने का काम सौंपा। जब प्रतमिाकार ने उन्हें सौंपा गया कार्य पूरा कर लयिा, तो जर्मनस ने यह प्रतलिपिि प्राप्त की और, प्रतमिा को अपने साथ कॉन्स्टेंटनिोपल ले जाकर, इसे हमेशा अपने पास एक अनमोल खजाने के रूप में रखा, और इसके सामने दैनकि प्रार्थनाएँ अर्पति कीं। बाद में, अनास्तासयिस के नाम से जाने जाने वाले आर्टेमयिस के शासनकाल के दौरान, वह ईश्वर की इच्छा से शाही शहर के पैट्रआिर्क चुने गए।

लेकनि लयिो द इसाउरयिन[4642] , जो अनास्तासयिस के बाद शाही सहिासन पर चढ़ा और खुद को एक उत्साही मूर्तभिंजक घोषति कर दयिा, ने ऑर्थोडॉक्स के खलिाफ एक उत्पीड़न शुरू कयिा और एक अपमानजनक तरीके से परम पावन पैट्रआिर्क जर्मनस को पैट्रआिर्कल सहिासन से हटा दयिा। चर्च और अपने पैट्रआिर्कल आवास से नष्किासति होने के बाद, संत जर्मनस अपने साथ दो पवत्रि प्रतमिाएँ ले गए: एक मसीहा की, और दूसरी परमेश्वर की अतपिवत्रि माता की वह प्रतमिा, जसिे प्रतमिाकार ने लड्डिा में मूल प्रतमिा से उनकी खातरि नकल कयिा था। फरि, नरि्वासन के लएि जहाज पर चढ़ने से पहले, उन्होंने पोप, परम पावन ग्रेगरी[4643] को एक पत्र लखिा, जसिमें उन्होंने आइकन-वरिोधी ज़ार द्वारा अपने अन्यायपूर्ण नष्किासन और ऑर्थोडॉक्स के उत्पीड़न की सूचना दी। यह पत्र लखिने के बाद, उसने उद्धारकर्ता के आइकन की मजबूत लकड़ी की पट्टकिा में एक छेद कयिा और सील कएि हुए पत्र को उसके अंदर रख दयिा, तथा उसके लखिे जाने की तारीख और समय को नोट कयिा। फरि, छेद को सील करने के बाद, उसने आँसुओं से भरी आँखों के साथ स्वयं आइकन को चूमा और दो बार कहा:

'स्वामी! स्वामी! स्वयं को और हम सबको बचाइए!'

यह कहने के बाद, उन्होंने प्रतमिा को समुद्र में फेंक दयिा, और वह, लहरों पर तैरते हुए, एक ही दनि में प्राचीन रोम पहुँच गई। उसी रात, परम पावन पोप को परमेश्वर से उद्धारकर्ता की प्रतमिा के रोम में शीघ्र आगमन के बारे में एक प्रकटवाणी मलिी। इसलएि, अगले ही दनि, जैसे ही सूर्य उदय हुआ, पोप अपने पुरोहतिों को साथ लेकर एक नाव पर सवार हुए और मोमबत्तयिों तथा धूपदानों के साथ, प्रभु यीशु की प्रतमिा से मलिने के लएि नदी टायबर से होते हुए समुद्र की ओर चल पड़े। जब वे नदी के मुहाने पर पहुँचे जहाँ से यह समुद्र में मलिती है, तो उन्होंने प्रतमिा को पानी पर चलती हुई देखा; श्रद्धापूर्ण भय और आध्यात्मकि आनंद से भरकर, वे इसके सामने झुक गए। उसी क्षण, पोप ग्रेगरी ने पवत्रि प्रतमिा की ओर मुड़कर कहा:

[4639] जुलीयन द एपोस्टेट ने 361 से 363 तक सहिासन पर शासन कयिा।

[4640] बेशक, सम्राट अनास्तासयिस द्वतिीय, जन्हिोंने 713 से 715 तक शासन कयिा।

[4641] संत हरमन ने 715 से 730 तक कॉन्स्टेंटनिोपल में पैट्रआिर्क का पद संभाला।

[4642] लयिो तृतीय इसाउरयिन ने 716 से 741 तक शासन कयिा।

[4643] संत ग्रेगरी ने 715 से 731 तक रोम में पोप का सहिासन संभाला।

'हे प्रभु, यदि आप हम जैसे अयोग्यों के पास आए हैं, तो हम आपसे विनती करते हैं: जैसे आप महिमा से जल पर चले थे, वैसे ही हमारे हाथों पर चढ़ आइए, क्योंकि हम अपनी अयोग्यता के भय से, आपको छूने की हिम्मत नहीं करते।'

जैसे ही उन्होंने ये शब्द कहे, प्रतिमा तुरंत ऊपर उठ गई और एक पक्षी की तरह हवा में उड़ते हुए संत के हाथों में आ गिरी। उन्होंने, उसे आँसुओं से चूमकर और यथोचित सम्मान देकर, - पुरोहितों के साथ और भजन-गायन के साथ - उसे रोम ले गए और उसके साथ शहर में जुलूस निकाला, ताकि सभी उस दिव्य प्रतिमा को देख सकें। फिर उन्होंने इसे प्रमुख प्रेरित, संत पीटर के महान चर्च में स्थापित किया। वहाँ उसने उस प्रतिमा से पैट्रिआर्क की पत्र निकाला, जो पानी से बिल्कुल भी प्रभावित नहीं हुआ था, और उसे पढ़ने पर उसे उस दुष्ट प्रतिमा-विरोधी सम्राट द्वारा कॉन्स्टेंटिनोपल में की गई सभी कार्रवाइयों का पता चला। पत्र से, परम पावन पोप को यह भी पता चला कि प्रतिमा एक ही दिन में समुद्र मार्ग से कॉन्स्टेंटिनोपल से उनके पास आई थी; और, ईश्वर की स्तुति करने के बाद, उन्होंने यह सभी उपस्थित लोगों को सुनाया; जिस पर सभी ने ईश्वर की अकल्पनीय शक्ति की स्तुति करना शुरू कर दिया। पूरे पूर्व में मूर्तिभंजन की कुरीति के प्रचलन और परम पावन जर्मनस के निर्वासन पर शोक व्यक्त करते हुए, पोप ने उस अधर्मी सम्राट को एक साहसी पत्र लिखा, जिसमें उन्होंने उसकी दुष्टता की निंदा की। हालाँकि, वह प्रतिमा रोम में ही रही, और उससे वहाँ कई चमत्कार हुए, जिससे बीमारों और दुर्बल लोगों को स्वास्थ्य लाभ मिला।

इस बीच, परम पावन जर्मनस ने देखा कि मूर्तिभंजनवादियों ने मूर्तियों का अपमान और अपवित्रता करना शुरू कर दिया था, उन्हें टुकड़ों में काट रहे थे, उन्हें आग में फेंक रहे थे और कीचड़ में डुबो रहे थे, और दूसरी ओर, महसूस करते हुए कि मृत्यु नजदीक आ रही है, ने अपने निर्वासन स्थल से रोम के पैट्रिआर्क को दूसरा पत्र लिखा, जिसमें उन्होंने उन्हें पूर्व में हो रहे सभी अत्याचारों के बारे में सूचित किया। फिर उन्होंने लद्दा में बनी परम पवित्र ईश्वर माता की प्रतिमा के पैनल में एक छेद किया, और उसमें अपना पत्र रख दिया, तथा इसके लिखे जाने की तारीख और समय अंकित किया। प्रतिमा को चूमने के बाद, संत ने कड़वी रोते हुए पुकार लगाई:

'जाओ, हे माता, हेरोद से मिस्र भागने के लिए नहीं[4644] , बल्कि दानव-सदृश मूर्ति-भंजकों से रोम भागने के लिए: वहाँ ऑर्थोडॉक्स आपकी प्रतिमा की रक्षा करेंगे और उसे अपमानित किए जाने के लिए दुष्टों के हाथों में नहीं सौंपेंगे।

इसलिए, आपकी सम्मानित प्रतिमा इस विशाल समुद्र को पार कर जाए, आपकी सहायता और कृपा से: क्योंकि आपने अपनी बाहों में उसे धारण किया था जिसने स्वर्ग, पृथ्वी और समुद्र की रचना की। जहाँ तक हमारी बात है, जो पवित्र प्रतिमाओं के लिए कष्ट सहते हैं, जिनके माध्यम से हम आपकी और आपके दिव्य पुत्र की आराधना और सम्मान करते हैं, हमें धर्मी लोगों के निवासों में, अब्राहम की गोद में विश्राम प्रदान करें।'

इन शब्दों के साथ, परम पावन जर्मन ने प्रेमपूर्वक प्रतिमा को चूमा और उसे समुद्र में उतारा।

और प्रतिमा गरुड़ की उड़ान से भी तेज़ी से चल पड़ी, और एक ही दिन में रोम पहुँच गई। उसी रात, रोम के पैट्रिआर्क को स्वर्ग की रानी की प्रतिमा के रोम आगमन के बारे में ईश्वर से एक दिव्य दर्शन मिला। इसलिए, वे अपनी नींद से जागकर, संपूर्ण पुरोहित वर्ग के साथ उसे मिलने के लिए निकल पड़े, ठीक वैसे ही जैसे उन्होंने पहले उद्धारकर्ता की प्रतिमा का स्वागत करने के लिए मोमबत्तियों और धूपदानों के साथ टिबर नदी में नाव से किया था। जब वे टायबर नदी के मुहाने पर पहुँचे, तो उन्होंने परमेश्वर की परम पवित्र माता की प्रतिमा को अपनी ओर तैरते हुए देखा, वह सपाट नहीं बल्कि सीधी खड़ी थी, मानो वह उस पर अंकित छवि के अनुरूप खड़ी हो। पोप ने उसकी ओर अपने हाथ फैलाए, और प्रतिमा अपने आप हवा में उठकर उनके हाथों में आ गई। परम पावन ने बड़ी प्रसन्नता से प्रतिमा को ग्रहण किया और उसे चूमकर, ईश्वर के अद्भुत चमत्कारों पर विस्मित होकर, रोम लौट आए। फिर उन्होंने पैट्रिआर्क हर्मन द्वारा बनाई गई गुहा खोली और वहाँ पाया गया संदेश पढ़कर उन्हें एहसास हुआ कि प्रतिमा को केवल एक दिन पहले ही समुद्र में फेंका गया था और इस प्रकार वह एक ही दिन में उनके पास पहुँच गई थी। परम पावन हर्मन—ऑर्थोडॉक्स चर्च के उस महान दिग्गज, जिनका निर्वासन में निधन हो गया था—के लिए शोक व्यक्त करने के बाद, पोप ने, परम पवित्र ईश्वर माता की पूजनीय प्रतिमा को लेकर, संपूर्ण शहर में एक भव्य जुलूस निकाला, ठीक वैसे ही जैसे उन्होंने उद्धारकर्ता की प्रतिमा के साथ किया था, और फिर इसे संत पीटर द एपोस्टल के चर्च में ले जाकर पवित्र स्थल में स्थापित कर दिया। उस समय से, रोम में इस प्रतिमा से विभिन्न चमत्कार हुए, और बीमारों को स्वास्थ्य लाभ मिला।

[4644] यह, बेशक, हेरोद महान के बारे में है, जो मसीह के जन्म के वर्ष में यहूदिया का राजा था; यहूदियों के नवजात राजा को मारने की उसकी साज़िशों से बचने के लिए, परमेश्वर की माता, अपने पुत्र यीशु और अपने मंगेतर यूसुफ के साथ, मिस्र भाग गईं।

उसके बाद कई और साल बीत गए, जिसके दौरान कॉन्स्टेंटिनोपल में मूर्तिभंजन सम्राट और पैट्रिआर्क उग्रता से शासन करते रहे। लेकिन फिर वे सभी अपमान में नष्ट हो गए - और धर्मनिष्ठ सम्राट माइकल[4645] ने बाइज़ेंटाइन सिंहासन संभाला; जब वह अभी भी नाबालिग था, तब राज्य का शासन शुरू में उसकी धर्मपरायण माँ, सम्राज्ञी थियोडोरा[4646] द्वारा किया जाता था। उनके शासन के तहत, प्रतिमा-भंजक विधर्म को पूरी तरह से समाप्त कर दिया गया और ऑर्थोडॉक्सी की विजय हुई।

उस समय, परमेश्वर की परम पवित्र माता की प्रतिमा, जिसे परम पावन पैट्रिआर्क जर्मनस अपने निर्वासन स्थल पर ले गए थे, और जिसे बाद में वहाँ से रोम ले जाया गया और संत पतरस प्रेरित के बेसिलिका के वेदी में रखा गया था, चर्च में उपस्थित सभी लोगों की आँखों के सामने हिलने और डोलने लगी, हालाँकि वहाँ मौजूद किसी ने भी उसे नहीं छुआ था। यह घटना बार-बार हुई, कभी-कभी शाम की प्रार्थना के दौरान, कभी-कभी सुबह की प्रार्थना के दौरान, और कभी-कभी तो लिटिर्जी के दौरान भी। रोम के सभी लोग भय से भर गए और इस अजीब चमत्कार को देखकर बहुत हैरान हुए। उस समय रोम के प्रधान धर्मगुरु परम पावन पोप सेरजियस थे[4647] – और एक दिन, जब वे सेंट पीटर्स बेसिलिका में दिव्य धर्मविधि का अनुष्ठान कर रहे थे, जिसमें बड़ी संख्या में पुरोहित सह-अनुष्ठान कर रहे थे, तो परमेश्वर की अति पवित्र माता की प्रतिमा अचानक एक बार फिर से जोरदार गति से हिलने और डोलने लगी। यह देखकर, उपस्थित सभी लोग भय से भर गए और जोर-जोर से और भक्तिपूर्वक चिल्लाने लगे: 'हे प्रभु, दया करें!'

इस प्रकार, ईश्वर की दया का आह्वान करके, वे प्रतिमा के डोलने को रोकने में सफल हो गए। लेकिन फिर वह प्रतिमा, एक बार फिर से हिलने लगी, उस जगह से उठ खड़ी हुई जहाँ वह खड़ी थी और हवा में उड़ गई। उस क्षण, चर्च में मौजूद सभी लोग आह्वान करते हुए वेदी के चारों ओर इकट्ठा हो गए और मूर्ति को पकड़ने के लिए अपने हाथ फैलाने लगे, इस डर से कि वह जमीन पर गिरकर टूट न जाए – लेकिन वे अपनी मंशा में सफल नहीं हो सके, क्योंकि मूर्ति हिवा में बहुत ऊँचाई पर ले जाई जा रही थी। धीरे-धीरे, मानो चर्च से होकर गुजर रही हो, यह अदृश्य दैवीय हाथों द्वारा ले जाए जाते हुए निकास की ओर बढ़ी। परम पावन पोप, संपूर्ण पुरोहित वर्ग और मंडली के साथ, इस अद्भुत चमत्कार को निहारते हुए, विस्मय और श्रद्धा के साथ प्रतिमा के पीछे-पीछे चले। टायबर नदी तक पहुँचने पर, प्रतिमा उसके जल पर उतर आई और समुद्र की ओर बहती हुई चली गई। सभी लोग और पोप किनारे-किनारे चले और, प्रतिमा को विदा होते देख, आँसू बहाते हुए उसे विदाई दी। इस दौरान, परम पावन पोप सेरजियस ने पुकार लगाई: 'हाय हम पर, हमारी रानी और मालकिन, हाय हम पर!' हे दिव्य जहाज़, आप हमसे कहाँ जा रही हैं? जैसे आपकी पवित्र प्रतिमा एक बार जल पर हमारे पास आई थी, वैसे ही अब वह उसी मार्ग से हमसे विदा हो रही है। आपकी यह अद्भुत विदाई हमें भय और कंपन से भर देती है: हमें डर है कि हम भी कॉन्स्टेंटिनोपल में हुई -विवादियों या अन्य विधर्मी लोगों द्वारा की गई उसी प्रकार की उत्पीड़न का सामना करेंगे, जिसके कारण आपकी पवित्र प्रतिमा वहाँ से प्रस्थान कर गई थी। हे सर्व-शुद्ध, मसीह की कलीसिया को त्रस्त करने वाले ये तूफ़ान और विधर्मी उथल-पुथल कब तक जारी रहेंगे?"

पोप ने ये और भी कई शब्द कहे जब उन्होंने लोगों के साथ मिलकर उस चमत्कारी प्रतिमा को तब तक विदाई दी जब तक कि वह तेज समुद्री धारा से बहकर उनकी दृष्टि से ओझल नहीं हो गई। इसके बाद, परम पावन पोप ने आदेश दिया कि घटित चमत्कार को इतिहास की पुस्तकों में दर्ज किया जाए, ताकि आने वाली सभी पीढ़ियों के लिए इसकी एक स्मृति बनी रहे।

इस बीच, पवित्र प्रतिमा समुद्र में बहती हुई कॉन्स्टेंटिनोपल पहुँच गई और शाही महलों के पास उसके बंदरगाह में आकर ठहर गई। वहाँ मौजूद भक्तिमय पुरुषों ने इसे उठाया और धर्मपरायण महारानी थियोडोरा के पास ले गए। पवित्र प्रतिमा प्राप्त करने और यह जानने पर कि यह बंदरगाह पर मिली थी, थियोडोरा ने कहा कि यह शायद उन प्रतिमाओं में से एक थी जिन्हें प्रतिमा-विरोधियों ने पत्थरों से बांधकर समुद्र में फेंक दिया था: अब वे रस्सियाँ जिनसे इसे बाँधा गया था, ढीली पड़ गई थीं या सड़ गई थीं, और इसलिए प्रतिमा पानी की सतह पर तैर आई थी। अन्य लोगों की भी रानी की ही राय थी।

थोड़ी ही देर बाद, धर्मपरायण ज़ार माइकल और परम पावन पैट्रिआर्क मेथोडियस ने रोम के लिए विशेष दूत भेजे—जिनमें पुरोहित और आम लोग दोनों शामिल थे—जो पोप के लिए पत्र ले जा रहे थे, जिसमें उन्हें प्रतिमा-विरोधी

[4645] सम्राट माइकल तृतीय 842 में सिंहासन पर चढ़े, लेकिन 855 से स्वतंत्र रूप से राज्य करना शुरू किया; उन्होंने 867 तक शासन किया।

[4646] सम्राट थियोफिलस (824–842) की पत्नी थियोडोरा ने 842 से 855 तक राज्य पर शासन किया, जब तक उनका बेटा माइकल नाबालिग था।

[4647] बेशक, पोप सेरजियस द्वितीय (844 से 847 तक)।

वधिर्म की जांच और नदिा करने के लिए एक परषिद हेतु कॉन्स्टेंटनिोपल आने का नमिंत्रण दयिा गया था। रोम पहुँचकर पोप को पत्र सौंपने पर, दूतों ने प्रेरतिों के राजकुमार और सभी ऑर्थोडॉक्स ईसाइयों को महान आनंद से भर दयिा, क्योंकि उन्होंने देखा कि मूर्तभिंजन की वधिर्म का शासन समाप्त हो गया था। फरि वे स्वयं तब सांत्वना पाए जब उन्हें वहां उद्धारकर्ता और परमेश्वर की माता की प्रतमिाओं के माध्यम से हुए महान चमत्कारों के बारे में पता चला: कि कैसे, परम पावन पोप ग्रेगरी के दनिों में – पहले एक, फरि दूसरा – उन्होंने परम पावन पैट्रआिर्क जर्मनस द्वारा भेजे जाकर समुद्र मार्ग से रोम की यात्रा की थी; और कैसे, हाल ही में, परमेश्वर की अतपिवत्रि माता की प्रतमिा, जसि स्थान पर इसे स्थापति कयिा गया था, वहां से अपने आप उठकर एक बार फरि रोम से प्रस्थान कर गई थी। इन सभी चमत्कारकि घटनाओं को दर्ज करने के बाद, उन्होंने परम पवत्रि माता परमेश्वर की प्रतमिा के रोम से प्रस्थान के दनि को चह्निति कयिा और फरि, कॉन्स्टेंटनिोपल पहुँचने पर, उन्होंने जो कुछ भी सुना था, वह सब सम्राट, सम्राज्ञी और पैट्रआिर्क मेथोडयिस को सुनाया। फरि उन्होंने बंदरगाह पर मलिी प्रतमिा को याद कयिा और आश्चर्य कयिा: 'क्या यह प्रतमिा हम तक रोम से आई होगी?'

शीघ्र ही, पोप के वशिेष दूत परषिद में रोम के बशिप का प्रतनिधित्वि करने के लिए कॉन्स्टेंटनिोपल पहुँचे। उन्हें समुद्र तट पर मलिी परम पवत्रि ईश्वर की माता की प्रतमिा दखिाई गई, और उन्होंने तुरंत इसमें वही चमत्कारी छवि पहचान ली जो हाल ही में उनसे दूर चली गई थी। यह सब जब उन्होंने पूरे लोगों को बताया, तो वे सभी महान आनंद और आश्चर्य से भर गए। फरि उन्होंने उस दनि के अभलिेखों की जाँच की जसि दनि प्रतमिा रोम से प्रस्थान की थी और उनसे देखा कि प्रतमिा एक ही दनि में कॉन्स्टेंटनिोपल पहुँच गई थी। तब पैट्रआिर्क ने, समस्त पुरोहति वर्ग के साथ, सम्राट और सकि्लाइट की उपस्थति में, उस चमत्कारी प्रतमिा को लयिा और लोगों के साथ मलिकर उसे भक्तपिूर्वक चाल्कोप्रैटयिा[4648] ले गए, जहाँ उन्होंने इसे परमेश्वर की अतपिवत्रि माता के चर्च में स्थापति कयिा, और परमेश्वर द्वारा भेजे गए इस अद्भुत उपहार पर आनंदति हुए। उस समय से, ईश्वर की माता की इस चमत्कारी प्रतमिा को 'रोमन' प्रतमिा के नाम से जाना जाने लगा, क्योंकि यह रोम से कॉन्स्टेंटनिोपल तक नौका द्वारा आई थी।

माता परमेश्वर के लिए ट्रोपारयिन, उनकी टकि्ख्वनि प्रतमिा के सम्मान में, स्वर

आज, हे सर्वोच्च देवी, सबसे तेजस्वी सूर्य की भाँति, आपकी सर्व-सम्माननति प्रतमिा हम पर चमक उठी है, और अपनी दया की करिणों से संसार को प्रकाशति कर रही है; और महान रूस, इसे स्वर्ग से एक दव्यि उपहार के रूप में श्रद्धापूर्वक प्राप्त करके, हे परमेश्वर की माता और सर्व की स्वामनिी, तुझे महमिामंडति करता है, और मसीह हमारे परमेश्वर की, जो तुझसे उत्पन्न हुए, आनन्दपूर्वक महमिा करता है। हे देवी, ईश्वर की रानी और माता, उनसे प्रार्थना करो कि वे सभी ईसाई नगरों और देशों को शत्रु की सभी युक्तयिों से सुरक्षति रखें, और उन लोगों को बचाएँ जो उन पर वशि्वास के साथ आराधना करते हैं, तथा हे नरि्दोष कन्या, आपकी अतपिवत्रि प्रतमिा को भी बचाएँ।

कॉन्टाकयिन, स्वर 8:

आओ हम स्वर्ग की रानी, कुँवारी मरयिम के पास शीघ्रता से चलें, मसीह हमारे परमेश्वर का धन्यवाद करते हुए, और आदरपूर्वक उनके चमत्कारकि प्रतमिा-चत्रि के सामने दण्डवत करें, और उनसे पुकारें: हे माता मरयिम, इस भूमि को अपने पवत्रि प्रतमिा के अद्भुत दर्शन से धन्य करके, , हमारे वशि्वासी सम्राट को शांति और समृद्धि में बचाइए, और सभी ईसाइयों को, जो स्वर्गीय जीवन के वारसि हैं। क्योंकि हम वशि्वासपूर्वक आपसे पुकारते हैं: हे कुँवारी, आनंदति हो, हे संसार के उद्धार।

हमारे पूजनीय पति डेवडि ऑफ़ थेस्सालोनकिी की स्मृति

26 जून को स्मरणोत्सव

[4648] चल्कोप्रैटयिा – कॉन्स्टेंटनिोपल का एक जलि।

धन्य डेवडि का जन्म पूर्व में हुआ था और, एक चमकते हुए तारे की तरह, उन्होंने पूरी दुनिया को प्रकाशित किया: कम उम्र से ही संयम का अभ्यास करते हुए, वे लोगों के सामने इस तरह प्रकट हुए जैसे कि वे देह में एक स्वर्गदूत हों। थिस्सलुनीके शहर[4649] के तीन वर्स्ट दूर बसने के बाद, संत डेवडि ने अपने लिए एक बादाम के पेड़ के नीचे एक तंबू बनाया; वहाँ, एक मधुर पक्षी की तरह, उन्होंने उनके पास आने वाले सभी लोगों को महान लाभ के शब्दों से सांत्वना दी। उनका मन सदैव दिव्य ऊँचाइयों की ओर निर्देशित था: इसके कारण, उन्हें चमत्कार करने का वरदान प्राप्त हुआ और वे चर्च के एक तेजस्वी स्तंभ बन गए, जो अपने अद्भुत संकेतों से सभी को प्रकाशित करते थे। कभी ठंड और कभी तीव्र गर्मी को बहादुरी से सहते हुए, वह एक तरह से अविचल हो गया था। और चूँकि उसने अपने भीतर कामुक इच्छाओं की आग को बुझा दिया था, इसलिए इस दुनिया की आग भी उसे जला नहीं सकी। एक अवसर पर, उन्होंने अपने हाथों में एक जलता हुआ कोयला लिया, उस पर धूप रख दी, और राजा के सामने उसे अर्पित करने के लिए उपस्थित हुए; फिर भी आग से उनके हाथों को बिल्कुल भी नुकसान नहीं हुआ। यह देखकर, राजा चकित रह गया और ईश्वर के संत के चरणों में झुक गया। वास्तव में, अपने जीवन और किए गए चमत्कारों के माध्यम से, संत डेवडि ने लोगों को बहुत आश्चर्यचकित किया, जिन्होंने संत को देखकर, परमेश्वर की महिमा की, जो अपने संतों में अद्भुत हैं। एक लंबे और गौरवशाली जीवन के बाद, संत डेवडि शांतिपूर्वक परमेश्वर[4650] के पास चले गए, जिन्हें उन्होंने अपने युवा दिनों से प्रेम किया था।

कॉन्टाकियन, स्वर 1:

हे सदा-खिलते बगीचे, जो सद्गुणों के फल देता है, तू बगीचे के वृक्ष पर एक गीत-गाने वाली चिड़िया की तरह प्रकट हुआ; परन्तु उससे भी बढ़कर, तूने प्रभु के जीवन-वृक्ष को अपने हृदय में ग्रहण किया, जिसे परमेश्वर-ज्ञानी ने संवारा था, जिसके द्वारा तू हमें अनुग्रह से पोषित करता है: हमारे लिए सदा प्रार्थना करना, हे सर्व-धन्य दाऊद।

10 जुलाई

27 जून (पुराना कैलेंडर)

हमारे पूजनीय पिता सैंपसन आतिथ्यशील का जीवन।

27 जून को स्मरणोत्सव

महान शहीद, जिनकी ख्याति दूर-दूर तक फैली हुई थी, का जन्म प्राचीन रोम के गौरवशाली शहर में हुआ था; उनके माता-पिता धनी और कुलीन थे, और उनका वंश राजसी रक्त से जुड़ा हुआ था। सभी सांसारिक ज्ञान में पूरी तरह से पारंगत होने के बाद, सैमसन ने चिकित्सा की कला भी सीखी, आवश्यकता या लाभ के लिए नहीं - क्योंकि वह अपनी संपत्ति से पूरी तरह से संतुष्ट था - बल्कि आंशिक रूप से इसलिए ताकि वह आलसी न रहे, और आंशिक रूप से चिकित्सा ज्ञान के अपने ज्ञान के माध्यम से, ईश्वर की मदद से, गरीबों की सेवा करने के उद्देश्य से। शहीद ने अपनी कला की शक्ति से कई असाध्य रोगों से पीड़ित लोगों को ठीक किया। इसके अलावा, उसकी चिकित्सा कला को ईश्वर की कृपा से भी सहायता मिली, जो चंगा करने का वरदान देती है और उसे उसके पुण्य जीवन और ईश्वर में उसके विश्वास के कारण प्राप्त हुई थी। दुनियावी ज्ञान के अलावा, सैम्पसन को दिव्य धर्मग्रंथों की समझ भी थी; उन्होंने पवित्र पुस्तकों को पढ़ने में बहुत समय लगाया और विश्वास और आशा से प्रेरित होकर, मसीह के प्रेम में दृढ़ हुए।

[4649] थेस्सालोनिकी – मैसेडोनिया में एक बहुत ही महत्वपूर्ण, प्राचीन शहर, जो थेस्सालोनिकी या फर्मेआ की बड़ी खाड़ी के अंदर स्थित है, जो एजियन सागर (द्वीपसमूह) का एक हिस्सा है। प्रेरित पौलुस ने थिस्सलुनीके में ईसाई धर्म का प्रचार किया, जिसके बारे में उन्होंने दो पत्र लिखे। अपने व्यापार और धन के मामले में, यह बीजान्टिन साम्राज्य के सबसे महत्वपूर्ण शहरों में से एक था। वर्तमान में, यह शहर, जिसे थिस्सालोनिकी के नाम से जाना जाता है, कॉन्स्टेंटिनोपल के बाद यूरोपीय तुर्की का प्रमुख वाणिज्यिक केंद्र है, जिसकी जनसंख्या बहुत बड़ी है।

[4650] सेंट डेवडि का निधन जस्टिनियन और थियोडोरा के शासनकाल के दौरान, लगभग 540 में हुआ।

जब संत शमिशोन के माता-पिता का निधन हो गया और वे विशाल संपत्तियों के स्वामी बन गए, तब संत न केवल अपनी दया के कार्य जारी रखे, गरीबों का निःशुल्क उपचार करते रहे, बल्कि उन्होंने अपनी अस्थायी और नश्वर संपत्ति को अक्षय और शाश्वत संपत्ति में बदलना भी शुरू कर दिया, सुसमाचार (मत्ती 6:20) के वचनों का पालन करते हुए।; साथ ही, ईश्वर की आज्ञा के अनुसार, गरीबों को उदारतापूर्वक दान देकर, उन्होंने अपना धन दोनों हाथों से खर्च किया, गरीबों और बेसहारों की हर ज़रूरत को पूरा करने का प्रयास करते हुए, और उनके सांसारिक भूख-प्यास को शांत करके अपने लिए अक्षय खजाने हासिल करने की इच्छा रखते हुए। इस प्रकार उन्होंने अपने पूरे जीवन में कार्य किया, क्योंकि जन्म से ही उनमें दया निहित थी, और उनके पालन-पोषण के दौरान यह उनके हृदय में और भी प्रबल हो गई। एक अधिक साधारण और सरल जीवन जीने की इच्छा से, शमिशोन ने अपने कई दासों को मुक्त कर दिया, और केवल एक को आवश्यक सेवाओं के लिए अपने पास रखा। वास्तव में, उसे इतने सारे दासों की क्या ज़रूरत थी, जबकि वह स्वयं प्रभु का एक सच्चा और ईमानदार सेवक बन गया था? इस प्रकार, उसने अपनी सारी संपत्ति का त्याग कर दिया, जिसके साथ वह एक प्रकार की बेड़ी की तरह बंधा हुआ था, और अपनी कमर कसने के लिए एक वस्त्र और एक रस्सी से संतुष्ट था। आत्मिक धन-संपत्ति से अपनी आत्मा को समृद्ध करने की इच्छा रखते हुए, उसने संसार और उसमें मौजूद सभी चीजों को ठुकरा दिया, और मसीह के उदाहरण का अनुसरण करते हुए, एक घुमक्कड़ बन गया: अपने रिश्तेदारों और परिचितों को पीछे छोड़कर, वह प्राचीन रोम से निकल गया और एक रेगिस्तान में बस गया, ठीक वैसे ही जैसे पुराने दिनों में भविष्यवक्ता एलियाह ने किया था।

लेकिन ईश्वर ने, कई लोगों के भले के लिए, अपने विश्वासयोग्य सेवक को नए रोम, यानी कॉन्स्टेंटिनोपल ले गए; यहाँ, एक छोटा सा चैपल पाकर, संत सैम्पसन ने उसमें निवास कर लिया, यात्रियों और भिखारियों को विश्राम देते हुए और हर तरह से उनकी सेवा करते हुए। ऐसा करते हुए, संत सैम्पसन ने न केवल अपने चिकित्सा कौशल से उनका इलाज किया, बल्कि उन्हें भोजन और आवास प्रदान करने का भी प्रयास किया। उन्होंने यह सब इतनी लगन से किया कि दिया का गुण सभी को उनके स्वभाव का ही हिस्सा प्रतीत होने लगा। जैसे सूर्य का स्वभाव प्रकाश की किरणें बिखेरना है, और आग का स्वभाव उससे स्पर्श करने वाली किसी भी चीज़ को जला देना है, वैसे ही संत सैम्पसन का गरीबों, बीमारों और यात्रियों के प्रति उत्साह और प्रेम मानो उनके स्वभाव में ही निहित था। और ईश्वर, जो अपने लिए किए गए पड़ोसी के प्रति दया के कार्यों को अपनी कृपा के बिना नहीं छोड़ते, और जो पड़ोसी को दी गई भीख को स्वयं के लिए अर्पित भेंट के रूप में स्वीकार करते हैं, ने संत सैम्पसन की बीमारों के लाभ के लिए देखभाल और परिश्रम पर विशेष शक्ति प्रदान की: अनिर्वचनीय बीमारियों से पीड़ित सभी लोगों, जिन्हें उन्होंने अपने घर में आश्रय दिया, को चमत्कारिक रूप से स्वास्थ्य लाभ मिला। लेकिन संत ने ईश्वर द्वारा प्रदत्त चमत्कार करने का वरदान चिकित्सा कौशल के आवरण में छिपा रखा था, क्योंकि वे अपनी विनम्रता के लिए प्रसिद्ध थे और स्वयं के लिए लोगों से कोई महिमा या सम्मान प्राप्त नहीं करना चाहते थे। लेकिन एक दीपक को मुट्ठी के नीचे नहीं छिपाया जा सकता, जैसे पहाड़ पर बसा एक नगर छिपा नहीं रह सकता; उसी प्रकार संत सैम्पसन, पुण्यों के प्रकाश से दमकते हुए और ईश्वर के प्रति पूर्ण भक्ति के पर्वत पर चढ़कर, सभी के बीच प्रसिद्ध हो गए। कॉन्स्टेंटिनोपल के पैट्रिआर्क ने भी उनके बारे में सुना और उन्हें अपनी उपस्थिति में बुलाकर एक पादरी नियुक्त कर दिया, भले ही संत ऐसा नहीं चाहते थे।

संत के गुणों और एक चिकित्सक के रूप में उनकी असाधारण कुशलता की खबर सम्राटीय दरबार तक भी पहुँच गई। यह निम्नलिखित परिस्थितियों में हुआ।

सम्राट जस्टिनियन[4651] गंभीर रूप से बीमार पड़ गए और एक भयंकर, अचिकित्सीय रोग से भयंकर पीड़ा झेली। चिकित्सकों को बुलाया गया, लेकिन सम्राट की जांच करने के बाद, वे अपनी प्रथा के अनुसार आपस में बहस करने लगे; लंबे समय तक उन्होंने केवल अपने शब्दों से सम्राट को झूठी आशा दी, लेकिन वास्तव में वे उसकी बीमारी का इलाज करने या उसके कष्ट को कम करने में असमर्थ थे। ग्रीको-रोमन साम्राज्य के सभी क्षेत्रों से कुशल चिकित्सकों को बुलाया गया, लेकिन कोई भी राजा को उस क्रूर बीमारी से ठीक नहीं कर सका। राजा उन पर क्रोधित हो गया और उसने उन सभी को अपनी दृष्टि से दूर भगा देने का आदेश दिया; और वह स्वयं सभी उपचार के स्रोत और सभी सृष्टि के स्रष्टा, प्रभु ईश्वर की ओर मुड़ गया: केवल उसी को उसने अपना जीवन सौंप दिया, और केवल उसी से, आँसुओं के साथ, उसने अपने लिए मदद माँगी। और ईश्वर ने राजा की गंभीर और अश्रुपूरित प्रार्थना को ठुकराया नहीं। थोड़ी देर के लिए सो

[4651] ग्रीक-रोमन सम्राट जस्टिनियन ने 527 से 565 तक शासन किया।

जाने पर, उसने एक दर्शन में अपने सामने उज्ज्वल वस्त्रों में सजे अनेक चिकित्सकों को खड़ा देखा। फिर एक दिव्य युवक, उसके पास आकर, उसे प्रत्येक चिकित्सक को दिखाने लगा, और उसका पद तथा आयु बताने लगा; उनमें से, उसने राजा को एक व्यक्ति दिखाया, जिसका चेहरा विनम्र और बाल सफेद थे, जो पुरोहित के वस्त्रों में था; उसकी ओर इशारा करते हुए, उस तेजस्वी युवक ने राजा से कहा: 'हे राजा, आपको आपकी घातक बीमारी से ठीक करने वाला यही है, और कोई और नहीं।'

नींद से चौंककर जागने पर, राजा बहुत प्रसन्न हुआ और उसने ईश्वर का धन्यवाद किया, जिन्होंने उसे ठीक होने की आशा की एक किरण प्रदान की थी। फिर, अपने सपने में देखे गए उस व्यक्ति की छवि को याद करते हुए, उसने आदेश दिया कि सभी चिकित्सकों को एक बार फिर उसके पास बुलाया जाए। जब वे उसके सामने उपस्थित हुए, तो उसने उन्हें देर तक देखा, अपने सपने में देखे गए व्यक्ति को उनके बीच खोजता रहा; और, ऐसा कोई व्यक्ति न पाकर, वह फिर से दुखी हो गया और शोक करने लगा। तब, ईश्वर की मदद की आशा कभी न छोड़ते हुए, उन्होंने फिर से उस चिकित्सक की तलाश का आदेश दिया जिसे उन्होंने अपने सपने में देखा था। ऐसा करते हुए, उस व्यक्ति के लक्षणों का वर्णन करने के बाद, राजा ने उस व्यक्ति को उदार इनाम देने का वादा किया जो इस व्यक्ति को खोजने में उसकी मदद करेगा। कई लोगों ने राजा द्वारा वर्णित चिकित्सक की तलाश की लेकिन उसे नहीं ढूंढ सके। अंत में, राजा के एक नौकर, जिसे राजा स्वयं जानते थे और जो संत सैम्पसन का मित्र था, को याद आया कि संत, जो रोगियों को ठीक करने वाले थे, अपने चेहरे के लक्षणों में राजा द्वारा वर्णित उपचारक से बहुत मिलते-जुलते थे। उसने राजा को यह बात बताई, और राजा ने आदेश दिया कि संत को सम्मान के साथ उसके सामने लाया जाए।

जब संत राजा की उपस्थिति में आए, तो राजा ने उन्हें देखकर तुरंत पहचान लिया कि यह वही व्यक्ति था जिसे उसने अपने सपने में देखा था। आनंदित होकर, वह तुरंत अपने सिंहासन से उठ खड़ा हुआ और संत के पास जाकर, न केवल उनके होंठों को, बल्कि उनके सिर और हाथों को भी चूम लिया, और कहा:

'सचमुच, पिताजी, आप ही वे हैं जिन्हें प्रभु परमेश्वर ने मुझे एक सपने में प्रकट किया था, और आपके माध्यम से मुझे स्वास्थ्य प्रदान करने का वादा किया था।'

यह कहकर, वह उसे अपने शयनकक्ष में ले गया और उसके बगल में बैठकर, उसे निहारकर आनंदित हुआ; उसी समय, उसने संत के हाथों को अपनी आँखों से लगाकर उन्हें आँसुओं से चूमा, इस आशा में कि उनसे उसे आरोग्य प्राप्त होगा।

धन्य शिमिशोन, राजा की ओर से इतनी महान विनम्रता देखकर, दुखी हो गए और उससे विनम्रता से कहा:

'ऐ राजा, ऐसा मत करो; ऐसी असीम विनम्रता से स्वयं को नम्र मत करो, कहीं ऐसा न हो कि तुम मुझे घमंड के पाप में डाल दो: क्योंकि तब धर्मी न्यायाधीश द्वारा मेरी निंदा का दोष तुम पर पड़ेगा। मैं एक दरिद्र और पापी होते हुए, जो स्वयं अपने पापों के उपचार के लिए प्रभु की दयालु क्षमाशीलता का आकांक्षी है, अन्य मनुष्यों से किस प्रकार श्रेष्ठ हूँ?' केवल आपका प्रभु में निर्देशित महान विश्वास, और उसकी दया में आपकी प्रबल आशा ही स्वर्ग के राजा मसीह को दया दिखाने के लिए प्रेरित करेगी, और वह आपको चंगा कर देगा: क्योंकि वह जो चाहे वह कर सकता है।

यह कहने के बाद, शिमिशोन ने राजा के शरीर के प्रभावित हिस्से को अपने हाथ से छुआ, औषधि लगाने का बहाना करते हुए, और इस प्रकार परमेश्वर द्वारा उस पर प्रदान की गई चमत्कारिक चंगाई के वरदान को छिपाना चाहता था। और जैसे ही उसने अपने हाथ से प्रभावित हिस्से को छुआ, राजा को अचानक अपनी बीमारी से राहत महसूस हुई, और जल्द ही वह पूरी तरह से ठीक हो गया।

अपना पूरा स्वास्थ्य पुनःप्राप्त करने पर, राजा न केवल अपने ठीक होने पर बल्कि इतने महान और धर्मपरायण व्यक्ति को देखने के योग्य समझे जाने पर भी बहुत प्रसन्न हुआ। फिर, संत को उचित रूप से धन्यवाद देना चाहकर, उसने उन्हें बहुत सारा सोना और चाँदी भेंट की। लेकिन संत ने राजा से कहा:

हे राजा, मेरे पास कभी बहुत सारा सोना, चाँदी और संपत्ति थी, लेकिन मैंने स्वर्ग के शाश्वत आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए, सब कुछ मसीह के लिए पीछे छोड़ दिया। लेकिन यदि आप मुझ पर अपनी कृपा दिखाना चाहते हैं, तो ईश्वर के लिए और अपनी ही मुक्ति के लिए, यह करें: मेरी झोपड़ी के बगल में एक घर बनाएं, जहाँ मैं बीमारों और यात्रियों की देखभाल कर सकूँ, जिनकी सेवा करने का मैं आदी हूँ। इस तरह, आप भी अपने लिए ईश्वर से एक शाश्वत पुरस्कार प्राप्त करेंगे, और आप मेरे बुढ़ापे को सहारा देंगे।"

संत के ये वचन सुनकर, राजा ने इस अनुरोध को एक वनिती के बजाय अपने लिए एक उपहार माना, और ठीक वैसे ही एक अतथिि गृह और एक अस्पताल बनाने का आदेश दयिा, जैसा कि पूजनीय ने चाहा था। जब इमारत बनकर तैयार हो गई, तो राजा ने वहाँ सांत्वना पाने वाले यात्रयिों और इलाज करा रहे बीमारों की ज़रूरतों के लिए इसमें वभिन्नि संपत्तयिाँ आवंटति कर दीं।

इसके बाद, कई वर्षों तक, संत सैम्पसन ने यात्रयिों की सेवा और बीमारों का इलाज करने के अपने कार्य को समर्पति कयिा। इन गतविधियिों में लगे रहने के दौरान, वे वृद्धावस्था तक पहुँचे: उनका शरीर कमजोर हो गया था, वे थोड़े बीमार पड़ गए और मृत्यु के करीब पहुँच गए। फरि भी, जब उसकी आत्मा उसके शरीर से अलग हुई, तो उसका चेहरा दीप्तमिान रहा, और वह मृत्यु की संभावना से बलि्कुल भी दुखी नहीं हुआ, जैसा कि अन्य आत्माएँ आमतौर पर होती हैं—जो सांसारकि और भौतकि दुखों से भरी होती हैं, कई पापों से घरिी होती हैं, और इसलिए मृत्यु से डरती हैं।

संत जानते थे कि उन्हें कौन बुला रहा था, कनि परश्रिमों से और कसि शांतपिूर्ण वश्रिामस्थल पर, और वहाँ उनकी धन्य आत्मा का क्या सांत्वनाएँ प्रतीक्षा कर रही थीं, क्योंकि हर मजदूर अपने वेतन का पात्र है (लूका 10:7)। इस प्रकार, संत सैम्पसन की ईश्वर-प्रसन्न आत्मा स्वर्गीय पर्वतीय क्षेत्रों के लिए प्रस्थान कर गई[4652] ; जबकि उनके शरीर को सम्मानपूर्वक पवत्रि शहीद मोकयिास के चर्च में दफनाया गया, जनिके कुल से ईश्वर के इस महान सेवक का मांसल जन्म हुआ था, और जो पवत्रि शहीद के सद्गुण के आध्यात्मकि उत्तराधकिारी थे।

ईश्वर के एक महान सेवक के रूप में, संत अपने जीवनकाल में ही नहीं बल्कि मृत्यु के बाद भी अपने द्वारा कएि गए चमत्कारों के लिए प्रसदि्ध हुए। यहाँ हम उनके कुछ मृत्यु उपरांत चमत्कारों को याद करेंगे।

एक बार कॉन्स्टेंटनिोपल में आग लग गई, जो सेंट सोफयिा चर्च[4653] से शुरू हुई। आग इतनी भयंकर थी कि कोई भी उसे बुझाने के लिए कुछ नहीं कर सका। लपटें तेजी से फैलीं और शहर को सजाने वाले अधकिांश शानदार महलों और इमारतों को पहले ही अपनी चपेट में ले चुकी थीं। यह आग पूजनीय सैम्पसन के हॉस्पसि तक भी पहुँच गई। फरि भी, भले ही लपटों ने इसे चारों ओर से घेर लयिा था, उन्होंने इसे बलि्कुल भी नहीं छुआ, और यह आग के बीच एक न जलने वाली झाड़ी की तरह खड़ा रहा। उसी समय, कई लोगों ने पूजनीय सैम्पसन को देखा, जो अतथिि-गृह के प्रांगण के चारों ओर तेजी से घूम रहे थे और क्रोधति होकर लपटों को उससे दूर भगा रहे थे – और आग, मानो संत के तेज से भयभीत होकर और उनके आदेश का पालन करते हुए, अतथिि-गृह से पीछे हटकर दूसरी जगह चली गई। तब अचानक गरज हुई और आकाश में एक बादल दखिाई दयिा; तुरंत बाद, एक जोरदार मूसलाधार बारशि शुरू हो गई, जसिने संत की प्रार्थनाओं के माध्यम से पूरे आग को बुझा दयिा।

उनकी मृत्यु के बाद भी, संत ने अपने जीवनकाल की तरह ही हर तरह की बीमारयिों से उपचार प्रदान करना जारी रखा।

संयोग से, एक कुलीन व्यक्ति थियिोडोरेट, जो स्पैथारयिोस[4654] का पद धारण करता था, कसिी ज़रूरी काम से अपने घर की सीढ़यिों से नीचे दौड़ता हुआ जा रहा था, जब वह ठोकर खाकर अपने पैर के एक जोड़ को चोटलि कर बैठा। उसके पैर में अचानक तेज दर्द होने लगा, और वह बस्तिर पर लेट गया। तीन दनिों तक, अपनी तीव्र पीड़ा के कारण, वह खा या पी नहीं सका, सो नहीं सका, और न ही एक शब्द बोल सका – और मानो गूंगा हो गया था। फरि भी, अपनी पीड़ा सहते हुए, वह होश में रहा और उसने अपने हृदय में परमेश्वर और उनके संत, सेंट सैम्पसन से, मदद के लिए पुकारते हुए, वनिम्रता से प्रार्थना की। तीन दनि बीत जाने के बाद, जब रात हुई, तो स्पैथेरयिस थयिोडोरेट ने संत सैम्पसन को अपने पैरों के पास खड़ा देखा; अपने घायल पैर को छूते हुए, संत ने कहा:

'उठो, क्योंकि अब तुम्हें और कष्ट नहीं सहना पड़ेगा।'

और यह कहने के बाद, संत दृष्टि से ओझल हो गए।

थयिोडोरेट को तुरंत पूरी तरह से ठीक महसूस हुआ और उसने खुशी-खुशी ज़ोर से ईश्वर का धन्यवाद करना शुरू कर दयिा, यह कहते हुए:

'सत्य में, संत सैम्पसन ईश्वर के महान सेवक हैं!'

[4652] यह 530 में हुआ था।

[4653] कॉन्स्टेंटनिोपल में स्थति कैथेड्रल। इसे सम्राट जस्टनियिन के शासनकाल में पुनर्नरि्मति कयिा गया था। अपनी उत्कृष्ट वास्तुकला और भव्य सजावट के साथ, यह दुनयिा की बेहतरीन इमारतों में शुमार है।

[4654] स्पैथारयिोस – एक स्क्वायर; एक दरबारी पद।

तब, अपनी टांग को छूकर और यह देखकर कि वह पूरी तरह से स्वस्थ हो गई थी, वह खड़ा हो गया और चलने लगा। और जब सुबह हुई, तो वह पूजनीय संत के मकबरे पर गया और वहाँ नमन करने के बाद, उसने वहाँ मौजूद सभी लोगों को उस चंगाई के बारे में बताया जो उसे मिली थी।

कॉन्स्टेंटिनोपल में लियो नाम का एक और कुलीन व्यक्ति, घोड़े पर सवार होते समय, अपनी टांग एक पत्थर की दीवार से टकरा बैठा: एक घाव हो गया, और वह गंभीर रूप से बीमार पड़ गया, और उसकी हालत दिन-ब-दिन बिगड़ती जा रही थी। उसके घर वालों ने उस बीमार व्यक्ति को रक्तमोक्षण करने के लिए एक डॉक्टर को बुलाने की सलाह दी। और इस प्रकार, जैसे ही चौथा दिन नज़दीक आया—वह दिन जब डॉक्टर को मरीज से मिलने आना था—उपरोक्त थियोडोरेट, जो पहले अपनी बीमारी से ठीक हो चुका था, को रात में एक दिव्य दर्शन हुआ। उसने देखा कि तीन पुरुष उस बीमार कुलीन व्यक्ति के घर में प्रवेश कर रहे हैं; उनमें से एक में उसने संत सैम्पसन को पहचान लिया, जिसे वह अपनी बीमारी के दौरान देख चुका था, जबकि उसे लगा कि अन्य दो दानवीर चिकित्सक कोस्मास और डैमियन थे। थियोडोरेट ने उनसे पूछा:

'तुम कहाँ जा रहे हो?'

उन्होंने, प्रेम से उसकी ओर देखते हुए, उत्तर दिया:

'अभिजात लियो के पास।'

इस पर थियोडोरेट ने उनसे कहा:

'क्या आप जानते हैं, मेरे स्वामियों, कि वह एक गंभीर बीमारी से पीड़ित है, और आज डॉक्टर उसके घायल पैर का इलाज करने आने वाले हैं?'

तब संतों ने थियोडोरेट से कहा:

'ऐसा न हो – हम शुक्रवार को फिर उसके पास आएँगे और उसे ठीक कर देंगे।'

जागते ही थियोडोरेट तुरंत उस बीमार व्यक्ति के पास गया और उसे अपने दर्शन के बारे में बताया। लियो ने उसकी बातों पर विश्वास किया और डॉक्टरों को स्वीकार नहीं किया, बल्कि, अपनी सारी आशा ईश्वर में रखकर, लगातार प्रार्थना करते हुए शुक्रवार का इंतजार करने लगा। और वास्तव में, जब शुक्रवार आया, तो उसका बीमार पैर अचानक ठीक हो गया और दूसरे पैर जितना ही स्वस्थ हो गया, जिसके लिए किसी भी तरह के चिकित्सा उपचार की आवश्यकता नहीं पड़ी। स्वस्थ महसूस करते हुए, लियो तुरंत पूजनीय सैम्पसन की कब्र के पास गया और अपने साथ आए लोगों के साथ मिलकर उन्हें धन्यवाद दिया।

कई चमत्कारों के माध्यम से अपने प्रिय सैम्पसन की महिमा करते हुए, ईश्वर ने आदरणीय की ताबूत से निकलने वाले चंगाई वाले तेल के प्रवाह के माध्यम से भी उनकी महिमा की; वास्तव में, हर तरह की बीमारियों से पीड़ित लोग, इस तेल का अभिषेक करने पर, स्वस्थ हो गए। उपरोक्त कुलीन व्यक्ति लियो ने भी इस तेल की उपचार शक्ति का स्वयं अनुभव किया। ऐसा हुआ कि अपनी बीमारी से ठीक होने के बाद, वह फिर से पूरे शरीर से बीमार पड़ गया, और वह अपने बिस्तर पर इस तरह पड़ा था जैसे लकवाग्रस्त हो, उसके शरीर का हर अंग अचल था। लेकिन जब उनके पूरे शरीर पर संत की कफ़न से बहने वाले मुर्रा से अभिषेक किया गया, तो वह तुरंत ठीक हो गए। एक अन्य अवसर पर, उन्हें आँखों की बीमारी थी, लेकिन संत सैम्पसन की कफ़न से मुर्रा से अपनी आँखों पर लेप लगाने के बाद, वह एक बार फिर स्वस्थ हो गए।

रेवरेंड फादर द्वारा बार-बार प्रदान की गई चंगाइयों के प्रति कृतज्ञता स्वरूप, कुलीन व्यक्ति लियो ने रेवरेंड फादर के अतिथि गृह की देखभाल स्वयं करने का दायित्व लिया, जो तब तक कुछ हद तक जीर्ण-शीर्ण हो चुका था, और उसने अपनी स्वयं की संपत्तियों से पर्याप्त धनराशि प्रदान की ताकि उसकी विभिन्न आवश्यकताओं की पूर्ति हो सके।

यहाँ यह उल्लेखनीय है कि उस समय आश्रम का प्रमुख एक एनेसियस नामक आलसी व्यक्ति था, जो अपने कर्तव्यों में लापरवाह था और बीमारों तथा यात्रियों की आवश्यकताओं पर बहुत कम ध्यान देता था। एक रात, पूजनीय सैम्पसन उसे सपने में नहीं, बल्कि वास्तविकता में दिखाई दिए, और उन्होंने अपने दंड से उस पर प्रहार करना शुरू कर दिया, और क्रोधित होकर उससे कहा: 'तुम अपने कर्तव्यों में लापरवाह क्यों हो और यात्रियों तथा बीमारों की जरूरतों का ध्यान क्यों नहीं रखते?'

इस पिटाई के परिणामस्वरूप, एनेसियस इतना बीमार पड़ गया कि उसकी आवाज़ चली गई और वह गूंगा हो गया; संत की लाठी से लगे घावों के कारण उसका शरीर भी नीला पड़ गया। अगली सुबह जब कई लोग उसके पास आने लगे, तो एनेसियस उनसे कुछ नहीं कह सका, बल्कि केवल अपने शरीर की ओर इशारा किया, जो मारपीट से नीला पड़ गया था;

फरि, एक कागज़ की पर्ची और एक लाठी लेकर, उसने उस पर लखिा कि कैसे संत ने उसे उसकी आलस्य और लापरवाही के लिए दंडति कयिा था। यह जानने पर कि क्या हुआ था, कुलीन व्यक्ति लियो उस बीमार व्यक्ति से मलिने आया। जब उन्होंने देखा कि उसके शरीर पर पटिाई के कारण पूरी तरह से चोट के नशिान थे, तो उन्होंने आँसुओं के साथ पूजनीय सैम्पसन से प्रार्थना करना शुरू कर दयिा।

'हे ईश्वर के पवत्रि सेवक,' उन्होंने प्रार्थना की, 'आप मेरे वशि्वास और आपके प्रति मेरी भक्ति को जानते हैं; अब मेरी प्रार्थना स्वीकार करें: यहाँ आपके सामने एनेशयिस है, जसिे आपने दंडति कयिा है और जसिने चमड़े के पर्चे पर अपने साथ हुई घटना लखिकर, अपने पाप और आपके द्वारा दी गई चेतावनी, दोनों का स्वीकारोक्ति की है। उसे उसकी बीमारी से चंगा कर दें, ताकि ईश्वर के नाम की महमिा के लिए आपका चमत्कार सर्वत्र प्रसद्धि हो जाए।"

जब कुलीन व्यक्ति लियो ने इस प्रकार प्रार्थना की, तो एनेसयिोस की जीभ खुल गई और उसका मुँह खुल गया, और उसने वसि्तार से वह सब कुछ बताया जो उसके साथ हुआ था; उस समय से, वह पूरी तरह से सुधर गया।

बाद में, कुछ धर्मनष्ठि लोगों ने आपस में सलाह-मशवरिा करने के बाद, पैट्रआर्क के पास जाकर उनसे छात्रावास और चर्च को पवत्रि करने के लिए कहा। ऐसा वास्तव में कयिा गया भी। यात्रयिों को आराम और बीमारों की देखभाल के लिए, नव-नरि्मति चर्च के बगल में एक अलग घर और एक अस्पताल स्थापति कयिा गया।

[4655]कुछ समय बाद, अतथि गिृह का नरि्माता यूस्ट्रैटयिस था, जसिने बीमारों और यात्रयिों की कोई परवाह नहीं की और वह कंजूस भी था। एक अवसर पर, उसने कई दनिों तक बीमारों से अभ्यंग तेल रोक दयिा, और इसके लिए उसे ईश्वर द्वारा दंडति कयिा गया, वह आँखों की बीमारी से ग्रस्त हो गया। उनके एक दोस्त, जसिका नाम लयिो था—वह जो हमने पहले बताया था वह नहीं, बल्कि एक और जो उसी नाम का था और धर्मशाला में सेवा करता था—ने उनसे कहा:

'बीमारों और यात्रयिों को उनका तेल का उचति हस्सिा दो, और तुम्हारी आँखें ठीक हो जाएँगी; लेकनि अगर तुम मेरी बातों पर वशि्वास नहीं करते, तो मैं जो कहा है, उसके प्रमाण के लिए एक लखिति बयान दूँगा।'

यह कहकर, उसने यूस्ट्राटयिस को नम्निलखिति लखिा:

'मैं, लयिो, पवत्रि चमत्कार करने वाले सैम्पसन में अपना वशि्वास रखकर और उन पर अटूट आस्था बनाए रखते हुए, स्वयं को आपके लिए एक जमानतदार के रूप में प्रस्तुत करता हूँ, यह प्रमाणति करते हुए कि यदि आप गरीबों और यात्रयिों के लिए पर्याप्त तेल प्रदान करते हैं, तो आपकी आँखों की बीमारी ठीक हो जाएगी; क्योंकि संत सैम्पसन आपके स्वास्थ्य के लिए मध्यस्थता करेंगे।'

यह प्रतज्ञिा स्वीकार करने और बीमारों तथा यात्रयिों के लिए आवश्यक तेल देने का वादा करने के बाद, उसी दनि यूस्ट्रैटयिस की आँखों की बीमारी ठीक हो गई। लेकनि चूँकि वह स्वभाव से कंजूस था, उसने फरि से कोई तेल देने से इनकार कर दयिा। और इस प्रकार, एक रात, पूजनीय सैम्पसन उसे क्रोधति होकर दखिाई दिए और कहा:

'मेरी चेतावनयिों को अनदेखा करके तुम मुझे क्यों परख रहे हो?'

इस दृश्य से भयभीत होकर, यूस्ट्राटयिस ने भोर होते ही अपने मत्रि लयिो को बुलाया और उसे तेल की एक बड़ी मात्रा दे दी, और उससे सेंट सैम्पसन से अपनी खातरि प्रार्थना करने तथा ईश्वर के पवत्रि पुरुष से अपने पापों की क्षमा याचना करने के लिए कहा।

राजा के एक सलाहकार, बार्दा नामक कुलीन वंश का एक व्यक्ति, एक फोड़े से बीमार पड़ गया, जसिके कारण उसकी छाती पर बड़े और ﻉﻼﺝ घाव हो गए। वह लंबे समय तक अपनी बीमारी से भयंकर पीड़ा सहता रहा। इस बीच, पवत्रि शहीद मोकयिस का पर्व का दनि आ गया: मरीज का इलाज कर रहे डॉक्टर और उसके पूरे घर वाले सभी लोग पूरी रात की प्रार्थना सभा के लिए पवत्रि शहीद के चर्च में गए; जबकि वह बीमार व्यक्ति अपने बस्तिर पर पड़ा था, वह इस बात से गहराई से दुखी था कि वह पर्व के दनि चर्च नहीं जा सका और पवत्रि शहीद के उस चर्च में रखी गई आदरणीय सैम्पसन की चमत्कारी अवशेष-पेटी की पूजा नहीं कर सका। उसी क्षण, एक आदरणीय वृद्ध उसके सामने प्रकट हुए और कहा:

'उठो!'

इस पर उस बीमार व्यक्ति ने उत्तर दयिा:

'मैं कैसे उठ सकता हूँ? इस गंभीर बीमारी से मेरे शरीर के सभी अंग कमजोर पड़ गए हैं।'

लेकनि उस वृद्ध ने फरि कहा:

[4655] बल्डिर – एक वरषि्ठ भकि्षु।

'मैं तुझसे कहता हूँ – उठ और संत मोकयिास शहीद के चर्च में जा, जनिका पर्व आज मनाया जा रहा है: वहाँ तू संत सैम्पसन की कफ़न के सामने प्रार्थना करेगा।'

यह कहकर, वह वृद्ध गायब हो गया।

बीमार व्यक्ति ने, अचानक अपने अंगों में ताकत महसूस करते हुए, धीरे-धीरे अपने बिस्तर से उठना शुरू कर दिया। उसी समय, उसने देखा कि उसके घावों का दर्द खत्म हो गया था। जब उसने अपने घावों से चिकित्सा पट्टी और प्लास्टर हटाए, तो उसने देखा कि घाव पूरी तरह से भर गए थे। आनंदित होकर, उस कुलीन व्यक्ति ने अपने उत्सव के कपड़े पहने और चर्च गया। उसे अप्रत्याशित रूप से ठीक हुआ देखकर, चर्च में मौजूद सभी लोग चकित रह गए और उन्होंने ईश्वर की स्तुति की। उस समय यह प्रथा थी कि यदि कोई किसी भी बीमारी से पीड़ित हो जाता, तो वे खुद को सेंट सैम्पसन के अस्पताल ले जाने का आदेश देते और वहाँ, अपने विश्वास के द्वारा, स्वस्थ हो जाते। इस प्रकार, जब एक पादरी के नौकर को सूजन की बीमारी हो गई, तो पादरी ने उसे सेंट सैम्पसन के अस्पताल भेज दिया। वहाँ कई दिनों तक रहने और अपनी बीमारी से कोई राहत न मिलने पर, वह नौकर अपने मालिक के घर लौट आया। उसे देखते ही, उस पादरी को उसके अविश्वास पर बहुत क्रोध आया और उसने उसे एक बार फिर से अस्पताल भेज दिया, यह आदेश देते हुए कि वह संत की कब्र से बहने वाले पवित्र तेल को मांगे और उससे अपना अभिषेक करे। दास गया, सेंट सैम्पसन अस्पताल में रात बिताई और वहाँ से स्वस्थ होकर लौट आया। उस दास ने अपने ठीक होने के बारे में इस प्रकार बताया: 'उस रात मैंने सपने में संत सैम्पसन को मुझ पर प्रकट होते देखा; उन्होंने मेरे पेट पर अपना हाथ रखकर मुझसे कहा: "यहाँ से जाओ, तुम पहले से ही ठीक हो।" मैं तुरंत जाग गया और खुद को ठीक महसूस किया।'

चर्च के एक मंत्री की पत्नी, इरीना, उसी बीमारी से पीड़ित थी। सोते समय एक दर्शन में, उसने संत सैम्पसन को देखा, जो पवित्र अनमरसैनिक कोस्मास और डेमियन के साथ उसके पास आए और उसे छुआ। इसके बाद, वह स्वस्थ हो गई।

ये और भी कई चमत्कार और चंगाईयाँ आदरणीय सैम्पसन की प्रार्थनाओं के द्वारा हुईं, जिससे परमेश्वर, जो अपने संतों में अद्भुत हैं, महिमामय हुए; उसी को हम भी सम्मान और महिमा, आराधना और धन्यवाद अर्पित करते हैं, अब और हमेशा और युगों-युगों तक।

ट्रोपारियन, स्वर 8:

हे पूजनीय पिता, आपने अपने धैर्य से अपना प्रतिफल अर्जित किया है, जिन्होंने प्रार्थना में अथक बने रहे, गरीबों से प्रेम किया और उनकी आवश्यकताओं को पूरा किया: परन्तु हे दयालु और धन्य सैम्पसन, हमारे परमेश्वर मसीह से प्रार्थना करें, कि हमारी आत्माएं बच सकें।

कॉन्टाकियन, स्वर 8:

हे सर्व-दुःखों के चिकित्सक और अनुकूल मध्यस्थ, हम आपके दैवीय तीर्थस्थल पर आते हैं, हे परमेश्वर-ज्ञानी और पूजनीय सैंसन; प्रेम में एकत्रित होकर, भजनों और स्तोत्रों में आनंदित होकर, हम मसीह की महिमा करते हैं, जिन्होंने आपको उपचार की ऐसी कृपा प्रदान की है।

संत सेवरस का स्मरणोत्सव[4656]

27 जून को स्मरणोत्सव

ट्यूडर के देश में[4657] , दो पहाड़ों के बीच, इंटरोकलिया नामक एक घाटी में, हमारी परम पवित्र माता, ईश्वर की माता और सदा कुंवारी मरियम को समर्पित एक चर्च था। वहाँ के पुरोहित सेवेरस थे, जो एक अद्भुत और ईश्वर-प्रसन्न

[4656] यह विवरण सेंट ग्रेगरी द डायलॉजिस्ट की पुस्तक ('डायलॉग्स', अध्याय 12) से लिया गया है।

[4657] यह क्षेत्र मध्य इटली के वैलेरिया प्रांत में, रेएट और अमेरटेरियम के पहाड़ों के बीच स्थित था।

जीवन वाले व्यक्ति थे। स्थानीय निवासियों में से एक, बीमार पड़कर मृत्यु के समीप पहुँच गया, और उसने जल्दी से संदेशवाहकों को पुरोहित के पास भेजा कि वह तुरंत उसके पास आएँ, उसके द्वारा किए गए पापों का इकबालिया बयान सुनें और उसके निधन से पहले उसे उन पापों से मुक्त कर दें। उस समय, सेवेरस अपनी दाख की बारी में थे, जहाँ वे बेलों की छँटाई कर रहे थे। दूतों का अनुरोध सुनकर, उन्होंने उनसे कहा:

'तुम अकेले ही आगे जाओ; मैं थोड़ी ही देर में तुमसे मिल जाऊँगा।'

लेकिन फिर, यह देखकर कि इकट्ठा करने के लिए अभी भी बहुत सारी बेलें बाकी थीं, उन्होंने थोड़ी देर और इंतजार करने का फैसला किया ताकि वे बची हुई फसल को इकट्ठा कर सकें। अपना काम खत्म करने के बाद, वे उस बीमार व्यक्ति से मिलने के लिए निकल पड़े। रास्ते में, उनकी मुलाकात उन लोगों से हुई जो उस बीमार व्यक्ति के साथ थे, और उन्होंने उनसे कहा:

'पिताजी, आप देर क्यों कर गए? लेकिन अब और चिंता मत कीजिए, क्योंकि वह आदमी तो पहले ही मर चुका है।'

यह सुनकर, पादरी भय से कांप उठा और जोर-जोर से रोने लगा, और खुद को मृतक का हत्यारा कहने लगा। बिना रुके रोते हुए, वह उस घर तक पहुँचा जहाँ मृतक का शव पड़ा था और, आँसुओं में, बिस्तर के सामने जमीन पर गिर पड़ा, सिसकते हुए और अपना सिर फर्श पर पटकते हुए; उसी समय, वहाँ मौजूद सभी लोगों के सामने, उसने उस आदमी की मृत्यु के लिए खुद को दोषी ठहराया। जब वह इस तरह रो रहा था, तो मृतक अचानक जीवित हो उठा। यह देखकर, वहाँ मौजूद लोग घटित चमत्कार से बहुत चकित हुए और मृतक के पुनरुत्थान पर आनंद से रो पड़े। फिर उन्होंने पूछा:

'तुम कहाँ थे? और तुम्हारी आत्मा, तुम्हारे शरीर से अलग होकर, फिर से उसमें कैसे लौट आई?'

उसने उत्तर दिया:

'कुछ इथियोपियाई[4658] , जो सबसे भयानक और घमंडी थे, जिनके नथनों और कानों से आग निकल रही थी, ने मुझे पकड़ लिया और मुझे निश्चित अंधेरी जगहों पर घसीट कर ले गए, जो आतंक और भय से भरी थीं। लेकिन अचानक एक अत्यंत तेजस्वी युवक प्रकट हुआ, जो अन्य प्रकाशमान पुरुषों के साथ हमारी ओर आ रहा था; मुड़कर उसने मुझे खींचकर ले जा रहे लोगों से अधिकारपूर्वक कहा: 'इसे वापस करो, क्योंकि पादरी सेवेरस उसके लिए रो रहा है; इस व्यक्ति के आँसुओं के कारण, प्रभु इस मृतक को एक बार फिर शरीर में जीवन प्रदान करेंगे।'

यह वृत्तांत सुनकर, सेवरस अकथनीय आनंद के साथ ज़मीन से उठ खड़ा हुआ और ईश्वर का धन्यवाद किया। फिर उन्होंने उस पुनर्जीवित व्यक्ति को परमेश्वर के सामने पश्चाताप करने का तरीका सिखाया, उसका पाप-स्वीकार सुना, उसे उसके पापों से मुक्त किया, और मसीह का दिव्य शरीर और रक्त प्रदान किया। इसके बाद, वह पुनर्जीवित व्यक्ति और सात दिन तक जीवित रहा, और परमेश्वर से अविराम प्रार्थना करता रहा; आठवें दिन, वह आनंदपूर्वक परमेश्वर के पास चला गया।

तो आइए हम विचार करें कि परमेश्वर ने अपने पुरोहित सेवेरस से कैसे प्रेम किया; क्योंकि वह उसे दुख नहीं पहुँचाना चाहता था, बल्कि उसने संत की प्रार्थना को शीघ्र सुना और उसकी विनती को स्वीकार किया। यह भी प्रकट करता है कि पुरोहित सेवेरस ने परमेश्वर प्रभु से अपने पूरे हृदय से प्रेम किया और अपने जीवन भर उनकी निष्ठापूर्वक सेवा की। प्रभु की सेवा करके, अपने सांसारिक श्रम के अंत में वे संतों की सेना के साथ दिव्य महिमा के सिंहासन के सामने प्रकट हुए, और उन्होंने पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा, त्रिमूर्ति में एक परमेश्वर की महिमा की, जिसकी महिमा हम सदा और सदा के लिए करते हैं। आमीन।

11 जुलाई

28 जून (पुराना कैलेंडर)

इस दिन हम पूजनीय पितरों सेर्गीयस और हरमन, वलाम के चमत्कारकारियों का स्मरण करते हैं, जिनका निधन लगभग 1353 में हुआ।

[4658] पवित्र ग्रंथों में, 'इथियोपियन' शब्द का प्रयोग अक्सर दुष्टता की अंधकारमय आत्माओं के लिए किया जाता है, जो प्रकाशमान दैवीय शक्तियों के विरोधी हैं।

पवत्रि शहीदों साइरस और जॉन की पूजनीय अवशेषों का स्थानांतरण

28 जून को स्मरण कयिा जाता है

ये पवत्रि शहीद, साइरस और जॉन, ने महानगर अलेक्जेंड्रयिा से बारह स्टेडयिम दूर स्थति कोनोपे नगर में, डायोक्लेटयिन के शासनकाल में[4659] , जनवरी के 31वें दनि मसीह के नाम पर यातनाएँ सहन कीं। उनकी शहादत के बाद, ईसाइयों ने चुपके से उनके पवत्रि शरीरों को ले जाकर सम्मानपूर्वक दफनाया। इन पवत्रि शहीदों के चमत्कारी अवशेष उनके शहीद होने के बहुत समय बाद मलि; वे ठीक उसी समय मलि जब ऑर्थोडॉक्स ईसाइयों ने मूर्तपिूजक यूनानयिों को हराकर बनिा कसिी डर के हर जगह चर्च बनाना शुरू कर दयिा था।

वशिेष रूप से, सम्राट थयिोडोसयिस महान के समय से ईसाइयों ने बनिा कसिी डर के चर्च बनाना शुरू कर दयिा। मस्रि के रेगस्तिानों में परशि्रम करने वाले पवत्रि पतिाओं की प्रार्थनाओं के द्वारा पश्चमिी राजा मैक्समिस[4660] और उसकी सभी सेनाओं को हराने के बाद, सम्राट थयिोडोसयिस महान[4661] ने मदद के अनुरोध के साथ इन पतिाओं के पास वशिेष दूत भेजे। मस्रि में रहने वाले पवत्रि पतिाओं में से एक, सेनूफयिस, का वशिेष उल्लेख कयिा जाना चाहए; वह अपने चमत्कारों के लए प्रसद्धि था और एक तपस्वी आश्रम में रहता था। इस संत के संबंध में, सम्राट ने अलेक्जेंड्रयिा के पैट्रआर्क थयिोफलिस को लखिा, और उनसे सेनुफयिस को कॉन्स्टेंटनिोपल में उनके पास भेजने के लए कहा, ताकि वे अपने दुश्मनों के खलिाफ संघर्ष में उनके आशीर्वाद और प्रार्थनाओं से मजबूत हो सकें। सम्राट की इच्छा को पूरा करते हुए, थयिोफलिस स्वयं आदरणीय फादर सेनूफयिस से मलिने के लए आश्रम के लए रवाना हुए और उनसे सम्राट थयिोडोसयिस से मलिने के लए कॉन्स्टेंटनिोपल जाने का आग्रह कयिा। हालाँकि, सेनूफयिस कसिी भी हालत में अपनी कुटयिा छोड़ने के लए तैयार नहीं थे। अंतत; पैट्रआर्क के लगातार नविेदन के बाद, सेनुफयिस ने अपना खलमसि (चलामी) और लाठी ली, उन्हें पूर्व की ओर उठाया; फरि, स्वर्ग की ओर अपनी दृष्टि उठाकर, उन्होंने कहा:

'हे सेनाओं के प्रभु ईश्वर! मैं वनिम्रतापूर्वक आपसे प्रार्थना करता हूँ: इस खलामी और इस दंड को वह शक्ति प्रदान करें जो, अपनी दया में, आपने मुझे प्रदान की होती यदि मैं स्वयं वहाँ गया होता।'

ये शब्द प्रार्थना करने के बाद, सेनुफयिस ने पादरी को खद्दी और लाठी देते हुए कहा:

'इन चीज़ों को मेरी जगह राजा के पास भेजो और उसे लखिो कि, युद्ध के दौरान, वह यह चोगा पहने, छड़ी हाथ में ले, और दुश्मनों के खलिाफ अपनी रेजमिेंट के आगे बहादुरी से मार्च करे; और वह ईश्वर की शक्ति को देखेगा।'

पैट्रआर्क ने राजा को चोगा और लाठी भेज दी और उस आदरणीय के वचन उसे सुना दिए।

राजा ने, श्रद्धापूर्वक भेजी गई वस्तुएँ प्राप्त करके और पादरी के शब्दों के अनुसार सब कुछ करके, अपने शत्रुओं पर एक शानदार वजिय प्राप्त की। इस वजिय की स्मृति में, और पादरी सेनुफयिस की यादगार के रूप में, अलेक्जेंड्रयिा शहर के नविासयिों ने राजा की एक मूर्ति एक ऊँचे चबूतरे पर खड़ी करवाई; मूर्ति में, राजा मठवासी चोगा पहने हुए थे और उनके हाथ में एक लाठी थी; और हर साल अलेक्जेंड्रयिा शहर के नविासी उस वजिय के दनि का भक्तपिूर्वक उत्सव मनाते थे, और ईश्वर का धन्यवाद करते थे।

इसी समय से, ईसाई धर्म के लगातार बढ़ते प्रसार के कारण, श्रद्धालुओं ने अलेक्जेंड्रयिा और पूरे मस्रि में चर्च बनाना शुरू कर दयिा। और जब पैट्रआर्क थयिोफलिस कोनोपा में पवत्रि प्रेरतिों को समर्पति एक बड़ा चर्च बनाना चाहते थे, तो इन पवत्रि चमत्कारी कार्यकर्ताओं, साइरस और जॉन के अवशेष मलि। यह थयिोडोसयिस की मृत्यु के बाद, उनके पुत्र आर्काडयिस के शासनकाल में हुआ। उन अवशेषों के स्थानांतरण का वर्णन सरिील के जीवन में दर्ज है।

[4662]कोनोपा से 'दो पोप्रीश्चा' दूर मैनुफनि नामक एक स्थान था (जो पहले एक गाँव था)। यहाँ एक प्राचीन मूर्तपिूजक पूजा स्थल था, जो राक्षसों का नविास स्थान रहा था; यह स्थान सभी में आतंक फैलाता था, क्योंकि वहाँ कई अशुद्ध आत्माएँ नविास करती थीं। पैट्रआर्क थयिोफलिस, जब वे जीवति थे, उस दानवों के स्थान ' ' को शुद्ध करके ईश्वर की महमिा के लए पवत्रि करना चाहते थे; लेकनि, अन्य चतिाओं में व्यस्त होने और अपने जीवन के अंत के करीब

[4659] उन्होंने 284 से 305 तक रोमन साम्राज्य के पूर्वी भाग पर शासन कयिा।

[4660] कठोर रूप से कहें तो, साम्राज्य के सहिासन का दावेदार।

[4661] उन्होंने 379 से 395 तक शासन कयिा।

[4662] ईश्वर के पवत्रि पुरुषों, साइरस और जॉन की अवशेषों का स्थानांतरण लगभग 412 में हुआ।

होने के कारण, संत अपने इस इरादे को पूरा नहीं कर सके। अलेक्जेंड्रिया के पैट्रिआर्क के रूप में थियोफिलस के उत्तराधिकारी, संत सिरिल ने, थियोफिलस के इरादे को पूरा करने का संकल्प लिया और ईश्वर से विनम्रतापूर्वक प्रार्थना की कि वह उन्हें स्वर्गीय सहायता और मैनुफिन से अशुद्ध आत्माओं को हराने और भगाने की शक्ति प्रदान करें। और देखो, प्रभु का स्वर्गदूत एक दर्शन में उसके पास प्रकट हुआ, और उसे पवित्र शहीदों साइरस और जॉन की पूजनीय अवशेषों को मैनुफिन ले जाने की आज्ञा दी, ताकि उस स्थान से राक्षसों की शक्ति को भगाया जा सके। संत सिरिल ने ठीक वैसा ही किया: उन्होंने संत साइरस और जॉन की अवशेषों को मैनुफिन ले गए और उनके सम्मान में वहाँ एक चर्च का निर्माण किया। कुछ ही समय बाद, अशुद्ध आत्माएँ वहाँ से हमेशा के लिए चली गईं, और वह स्थान शहीदों के अवशेषों के माध्यम से प्रदान की गई चंगाई का स्रोत बन गया।

यहाँ संक्षेप में इन पवित्र चमत्कारी कार्यकर्ताओं, साइरस और जॉन द्वारा किए गए चमत्कारों का उल्लेख करना उचित है।

उनकी पवित्रता यूलोजियस, अलेक्जेंड्रिया के पैट्रिआर्क[4663] के समय में, शहर के गवर्नर जूलियन के पुत्र अम्मोनियस की गर्दन पर कुछ दर्दनाक फोड़े थे जो अंदर की ओर बढ़ रहे थे, जिन्हें डॉक्टरों द्वारा स्क्रूफला या स्ट्रूमा[4664] कहा जाता था; जैसे-जैसे ये फोड़े दिन-ब-दिन बड़े और अधिक सूजते गए, वे उसकी गर्दन पर भारी बोझ बन गए और उसके जीवन के लिए खतरा बन गए; कई कुशल चिकित्सकों को बुलाया गया, लेकिन मरीज को उनसे कोई राहत नहीं मिली। गहराई से दुखी, पिता और पुत्र ने उन चिकित्सकों को विदा कर दिया और मदद के लिए पवित्र चमत्कार करने वालों, साइरस और जॉन की ओर रुख किया; उसने उनके पवित्र अवशेषों के सामने आँसुओं के साथ प्रार्थना करना शुरू कर दिया, उनसे अपने बेटे को स्वास्थ्य प्रदान करने का अनुरोध करते हुए। संतों ने एक दर्शन में प्रकट होकर उस युवक को सबसे पहले धन और महिमा की चिंताओं को त्यागने और विनम्रता के प्रतीक के रूप में, उनके चर्च की धूल झाड़ने की आज्ञा दी; फिर, रोटी के साथ मिलाई गई मोम की पट्टी बनाकर, उन्होंने उसे रोगी की गर्दन और कंठ पर लगाने का आदेश दिया। और जैसे ही यह सब हो गया, फोड़े तुरंत ठीक हो गए, और अम्मोनियस इन पवित्र, निस्वार्थ उपचारकों की प्रार्थनाओं से स्वस्थ हो गया।

कुछ समय बाद, वही अम्मोनियस, संतों की नसीहतों को भूलकर, अहंकारी हो गया और एक और बीमारी से फिर से बीमार पड़ गया, जो उसकी अवज्ञा की सजा थी। उसे पेट की बीमारी हो गई, और उसकी बीमारी इतनी गंभीर थी कि, उसके कारण, वह भोजन या पानी कुछ भी ग्रहण करने में पूरी तरह से असमर्थ था; जो कुछ भी वह अपने मुँह में डालता, वह वापस उल्टी हो जाता। तब वह फिर से मदद के लिए अपने प्रसिद्ध चिकित्सकों, पवित्र शहीदों साइरस और जॉन के पास गया, और आँसुओं के साथ उनसे प्रार्थना करने लगा। ये संत, एक दर्शन में उसके सामने प्रकट हुए, पहले तो उन्होंने उसके घमंड के लिए उसे फटकारा, फिर उसे अपने कीमती वस्त्र उतारने और एक बोरा का कपड़ा पहनने का आदेश दिया; फिर, पानी के पात्र लेकर, उन्होंने उसे बीमार भाइयों और गरीबों की प्यास बुझाने के लिए ठंडा पानी ले जाने का आदेश दिया। जब अम्मोनियस ने यह सब ईमानदारी से कर लिया, तो संत तुरंत उसके सामने प्रकट हुए और उसे उनके दीपक का तेल और उनकी कब्र पर जलती मोमबत्तियों का मोम लेने, एक लेप बनाने और उसे अपने पेट पर लगाने के लिए निर्देश दिया। यह सब करने के बाद, अम्मोनियस स्वस्थ हो गया।

अलेक्जेंड्रिया का थियोडोर नाम का एक व्यक्ति, जो लंबे समय से दोनों आँखों से अंधा था, उसे मानुफिन में, चर्च और पवित्र कष्ट-भोगियों के जीवन-दायक अवशेषों के पास लाया गया; वहाँ उसने अपनी अंधापन से मुक्ति के लिए भक्तिपूर्वक प्रार्थना की। संतों एक दर्शन में उसके सामने प्रकट हुए और उसे आज्ञा दी कि वह जाकर उनके चर्च के पास बहने वाले झरने पर स्नान करे। वह गया, उसने अपना चेहरा धोया, और जब उसने तौलिये से अपना चेहरा पोंछा, तो उसे तुरंत दृष्टि वापस मिल गई और उसने महसूस किया कि मोतियाबिंद उसकी आँखों से उतरकर, छिलकों की तरह, तौलिये पर गिर गया था। थियोडोर आनंदपूर्वक चर्च लौट आया, और तौलिये पर अपनी अंधापन के निशान सभी को दिखा रहा था।

एक और व्यक्ति, जिसका नाम कैलोस था—एक नाम जो उसके सुंदर चरित्र और जीवन शैली के अनुरूप था[4665] — अनायास सीढ़ियों से गिर पड़ा, जिससे उसकी पिंडली कई टुकड़ों में टूट गई और वह बहुत कष्ट सहने लगा। इस आदमी ने मदद के लिए कई डॉक्टरों से संपर्क किया, लेकिन उन्हें उनसे कोई राहत नहीं मिली। फिर वह दृढ़ विश्वास के साथ इन

[4663] यू□गियस ने 579 से 607 तक पैट्रिआर्क के रूप में कार्य किया।

[4664] संभवतः त्वचा पर कार्बंकल्स या दर्दनाक ट्यूमर जैसी कोई चीज़।

[4665] 'Kalos' ग्रीक शब्द से 'सुंदर'।

नस्विार्थ उपचारकों, साइरस और जॉन, के पास गया; उनके दीपक के तेल से अपने पैर पर मालशि करने पर, मरीज तुरंत ठीक हो गया।

माइउमा का एक इज़डिोर[4666] यकृत की बीमारी से पीड़ति था, जो सड़ने लगी, रक्त में बदल गई, सूजन हो गई और खून के साथ खांसी के रूप में बाहर नकिली। चूंकि इस व्यक्ति को कसिी भी चकित्सिक से कोई राहत नहीं मलिी, वह इन पवत्रि कष्ट-भोगयिों की सर्व-उपचारात्मक अवशेषों की ओर मुड़ गया। संत उसे सपने में नहीं बल्कि साक्षात दखिाई दएि, और उन्होंने उसे चखने के लएि नींबू का एक टुकड़ा दयिा; जब उसने उनके हाथों से नींबू लयिा, तो वह नहीं जानता था कि वह यह कसिसे प्राप्त कर रहा है: उसने सोचा कि यह शहीदों की पवत्रि अवशेषों की पूजा करने आई भीड़ में से कोई व्यक्ति है। जब उस बीमार व्यक्ति ने जो कुछ उसे दयिा गया था, वह खा लयिा, तो उसके पेट में तुरंत मरोड़ उठने लगी, और उसने एक बड़ा कीड़ा उगल दयिा जो उसके जगिर को खा रहा था; फरि संत, जो नस्विार्थ उपचारक थे, अदृश्य हो गए। उस समय से स्वस्थ हो जाने के बाद, इसडिोर ने ईश्वर और उनके पवत्रि सेवकों का धन्यवाद कयिा।

फलिोपोनस शहर के एक मजस्टि्रेट, मीना[4667] , एक तेज बुखार से पीड़ति थे; इस बीमारी को पेट के सख्त हो जाने ने और बढ़ा दयिा था, जसिसे उनके प्राकृतकि कार्य बंद हो गए थे। बीमार व्यक्ति द्वारा मुँह से ली गई सभी दवाओं ने न केवल उसे कोई राहत नहीं दी, बल्कि पेट के अंदर ही रहकर उसके पेट की स्थति को और भी बगिाड़ दयिा। यह आदमी दो सप्ताह तक पीड़ति रहा; उसकी बीमारी इतनी गंभीर थी कि वह पहले ही डॉक्टरों की मदद से नराश हो चुका था। पवत्रि नःशुल्क चकित्सिकों साइरस और जॉन को याद करते हुए, मीना ने आदेश दयिा कि उसे उसके बस्तिर पर ही मैनुफनि में, उनके चमत्कारी अवशेषों के पास ले जाया जाए। जब वह अवशेषों के सामने आँसू भरी प्रार्थना कर रहा था, तो वह झपकी ले गया और सो गया; तब संत उसके सामने प्रकट हुए और उसे खाने के लएि एक अंजीर दयिा। जागने पर, उसने वह अंजीर अपने बस्तिर पर, अपने पास पाया; उसने उसे खा लयिा, और तुरंत उसका पेट का रोग ठीक हो गया और वह स्वस्थ हो गया।

एक अन्य मीना, प्राचीन अशेएल[4668] की तरह हल्का और तेज़ कदमों वाला, *'मैदान में हरिण की तरह'* (2 शमूएल 2:18), अपनी टाँगों में इतनी गंभीर रूप से बीमार पड़ गया कि वह पूरी तरह चल नहीं सकता था और लंबे समय तक बस्तिर पर पड़ा रहा, क्योंकि उसकी टाँगें बुरी तरह सूज गई थीं। इस मीना ने आदेश दयिा कि उसे उसके बस्तिर सहति पवत्रि चमत्कार-कर्ता साइरस और जॉन के पास ले जाया जाए। और जब उन्होंने संतों की पवत्रि अवशेषों के सामने जलते दीपक के तेल से अपने पैरों पर अभषिेक कयिा, तो वह तुरंत स्वस्थ होकर उठ खड़ा हुआ और चलने में सक्षम हो गया, क्योंकि उसके पैर पूरी तरह से ठीक हो गए थे; इन सब के लएि उसने परमेश्वर और उनके पवत्रि सेवकों का धन्यवाद कयिा।

थयिोडोरा नाम की एक महलिा ने एक बार पानी पीते समय, बनिा ध्यान दएि, एक छोटा सा मेंढक नगिल लयिा; और वह मेंढक उसके गर्भ में बढ़ने लगा। शुरू में, मेंढक ने थयिोडोरा को थोड़ी तकलीफ दी, क्योंकि वह छोटा था; लेकनि जब वह बड़ा हो गया, तो उससे इतनी तेज पीड़ा होने लगी कि उस महलिा को अपनी भीषण पीड़ा के कारण दनि-रात कोई राहत नहीं मलिती थी। वह ज़ोर से चीखी और ज़मीन पर लोट गई, लेकनि कोई भी उसकी मदद नहीं कर सका, और न ही कोई यह पता लगा सका कि उसकी बीमारी क्या थी; कई लोगों ने सोचा कि उसे एक राक्षस द्वारा पीड़ा दी जा रही थी। अंत में, उसे इन पवत्रि चमत्कार करने वालों, साइरस और जॉन के सामने लाया गया; वे रात में उसके सामने प्रकट हुए और उसे खाने से पहले बड़ी मात्रा में पानी पीने का आदेश दयिा। उस महलिा ने जैसा कहा गया था वैसा ही कयिा; तुरंत ही उसके पेट में मरोड़ उठने लगी, और उसने एक बड़ा सा मेंढक उगल दयिा और वह स्वस्थ हो गई। यह सब देखने वाले चकति रह गए और उन्होंने ईश्वर और उनके पवत्रि संतों की स्तुति की।

थयिोडोरा के बाद, थयिोडोर नामक एक व्यक्ति मदद के लएि संतों के पास गया। इस थयिोडोर ने गलती से दुष्ट लोगों द्वारा दयिा गया जहर पी लयिा था और बहुत कष्ट सह रहा था, उसे डॉक्टरों से कोई राहत नहीं मलि रही थी। जब यह थयिोडोर अपनी बीमारी से ठीक होने के लएि आँसुओं के साथ प्रार्थना कर रहा था, तो संत उसे एक दर्शन में दखिाई दएि और उन्होंने उसे एक वशिेष जानवर खाने का आदेश दयिा, जसिे ग्रीक में 'स्कोपेन्ड्रा' ([4669]) कहा जाता है। दृश्य से जागने

[4666] मायूमा – फलिस्तीन का एक बंदरगाह शहर, जो उस देश के प्राचीन शहर गाजा के लएि बंदरगाह के रूप में कार्य करता था, जो यरूशलेम से अधकि दूर नहीं स्थति है। यह संत कोस्मास की बशिप मंत्रालय की स्थली के रूप में जाना जाता है।

[4667] मस्रि के शहरों में से एक।

[4668] असाएल – दाऊद की बहन सरोया का पुत्र, सैन्य कमांडर योआब का भाई, और दाऊद के प्रमुख कमांडरों में से एक।

[4669] एक प्रकार का छपिकली।

पर, थियोडोर ने क्रॉस का चह्नि बनाया, क्योंकि उसे लगा कि यह एक शैतानी प्रकटकिरण था; फिर उसने एक बार फिर संतों से अपनी बीमारी से उबरने के लिए प्रार्थना करना शुरू कर दिया। अगली रात, संत फिर से थियोडोर के सामने प्रकट हुए और उसे वही करने का आदेश दिया; लेकिन इस बार भी उसने संतों पर अपना विश्वास नहीं किया, क्योंकि उस जानवर को उपचारक के बजाय जहरीला माना जाता था। और तीसरी बार संत उसके सामने प्रकट हुए, लेकिन एक बार फिर थियोडोर ने उनकी बात पर ध्यान नहीं दिया, यह सोचकर कि यह एक शैतानी भ्रम था। अंतत; चौथी रात को, संत थियोडोर को सपने में नहीं बल्कि वास्तविकता में दिखाई दिए; उन्होंने थियोडोर के प्रति अपनी सहानुभूति व्यक्त की और उससे कहा:

'तुम हमारी बातों पर विश्वास क्यों नहीं करते? जल्दी से उठो और हमारे कुएँ पर जाओ; वहाँ, जो भी खाने योग्य मिले उसे खा लो; वही तुम्हारे लिए एक सच्ची दवा होगी।'

संतों के प्रकट होने की सच्चाई पर विश्वास करके, थियोडोर भोर होते ही झरने के लिए रवाना हुआ और वहाँ उसे ज़मीन पर एक छोटा खीरा पड़ा मिला; थियोडोर ने उसे उठाया और आनंदपूर्वक उसका स्वाद चखा; और जैसे ही वह खीरे का आखिरी टुकड़ा अपने मुँह में डालने वाला था, उसने उसमें स्कोप्ड्रा नामक एक जानवर का आखिरी हिस्सा देखा – क्योंकि वह पहले ही खीरे के अंदर उस जानवर का लगभग पूरा हिस्सा खा चुका था; भयभीत होकर, उसने बची हुई खीरा ज़मीन पर फेंक दी, जिसके बाद वह उल्टी करने लगा और खीरे और उस जीव के साथ, अपने अंदर का सारा ज़हर बाहर निकाल दिया। इसके बाद, थियोडोर को फिर से पूरी तरह से ठीक महसूस हुआ और, चर्च जाकर, अपने उपचारकों की पवित्र अवशेषों के सामने कृतज्ञता से सिर झुकाया।

मैरी नाम की एक महिला बेबीलोन से मानुफिन में पवित्र चमत्कारी संतों के अवशेषों के पास आई। वह अपने आठ वर्षीय पुत्र को साथ लाई थी, जिसके मुँह से एक राक्षस की चालाकी से उसकी जीभ फाड़ दी गई थी; लड़के की जीभ लंबाई में एक स्पैन[4670] की थी, जो एक सामान्य मानव जीभ से कहीं बड़ी थी, और उसका स्वरूप अत्यंत अजीब था: वह मोटी, काली, बदबूदार थी, उसे देखने वाले सभी लोग उससे घृणा करते थे, और उससे लगातार काला लार टपकता रहता था। यह लड़का गलती से संतों के अवशेषों के पास जमीन पर गिर गया और उसकी जीभ वहाँ के संगमरमर से टकरा गई; तुरंत ही उसकी जीभ, जो शैतान की चालाकी से मुक्त हो गई थी, अपनी सही जगह पर वापस आ गई और अपने सामान्य आकार में आ गई, और इस प्रकार लड़का ठीक हो गया।

मिस्र का एक यूजीन नामक व्यक्ति, जो व्रणरोग से पीड़ित था, उसे संतों के अवशेषों के पास लाया गया; इस बीमारी से उसका पूरा शरीर सूजा हुआ था और उसका पेट बहुत फूला हुआ था। संतों इस यूजीन को एक स्वप्न में प्रकट हुए, उन्होंने अपने हाथों से उसके पेट को छुआ और कहा:

'यूजीन! उठो और अच्छे स्वास्थ्य के साथ अपने घर लौट जाओ।'

यूजीन उठ खड़ा हुआ, और तुरंत सूजन के पूरे भार से मुक्त हो गया तथा पूर्ण रूप से स्वस्थ हो गया। पवित्र वेतनहीन सेवकों साइरस और जॉन के कई चमत्कारों में से इन कुछ को याद करते हुए, हम मसीह परमेश्वर की महिमा करें, जिन्होंने उन पर ऐसा अनुग्रह किया, जो पिता और पवित्र आत्मा के साथ सदा-सदा महिमा प्राप्त करते हैं। आमीन।

ट्रोपारियन, स्वर 5:

हे मसीह हमारे परमेश्वर, जिन्होंने अपने पवित्र शहीदों के चमत्कारों के द्वारा हमें एक अभेद्य दीवार प्रदान की है, उनकी प्रार्थनाओं द्वारा राष्ट्रों की सभाओं को नष्ट करो और राज्यों के राजदंडों को मजबूत करो, क्योंकि केवल आप ही भले और मानवजाति के प्रेमी हैं।

कॉन्टाकियन, स्वर 3:

हे पवित्र संतों, जिन्होंने दैवीय अनुग्रह से चमत्कारों का वरदान प्राप्त किया है, आप संसार में अनवरत रूप से चमत्कार करते हैं, अपनी मध्यस्थता से हमारे सभी विकारों को अदृश्य रूप से चंगा करते हैं, हे ईश्वर-ज्ञानी साइरस, महिमामय यूहन्ना के साथ: क्योंकि आप वास्तव में दैवीय चिकित्सक हैं।

[4670] एक 'प्यादी' 4 या 5 'वर्शकी' के बराबर था।

आदरणीय पॉल का स्मरणोत्सव

28 जून को स्मरणोत्सव

आदरणीय पॉल कोरथि नगर के नविासी थे[4671] , जो ईसाई माता-पति के घर पैदा हुए थे; भक्त में पले-बढ़े और अपने युवा काल से ही ईश्वर से प्रेम करने वाले, वे एक मठ में गए और वहाँ उन्होंने मठवासी संकल्प ग्रहण कयि; उन्होंने तपस्या के जीवन में बहुत परश्रिम कयि और वे एक अनुभवी तपस्वी थे। कामवासना के दानव ने इस पॉल पर अपनी नज़र गड़ाई; एक रात, जब पूजनीय पॉल प्रार्थना में खड़े थे, दानव उनके सामने प्रकट हुआ और कहा:

'यदि तुम अपनी कामुक वासना को, भले ही एक बार ही क्यों न हो, शांत नहीं करते, तो मैं तुमसे एक भयंकर युद्ध करूँगा!'

लेकनि पॉल ने यीशु मसीह के नाम पर दानव को डांटा और उसे क्रॉस के चह्नि से भगा दयि।

तब राक्षस ने एक वेश्या को मना लयि कि वह अपना नवजात शशिु पादरी के पास ले आए; शशिु को पादरी के बस्तिर पर रखकर, उस महलि ने उनसे कहा:

'मैंने तुम्हारे द्वारा इस बच्चे को गर्भ में धारण कयि और जन्म दयि।'

महाधर्माध्यक्ष ने उस शशिु को आनंदपूर्वक स्वीकार कयि। हालाँकि, वधिर्मी लोग महाधर्माध्यक्ष के पास आए, उन्होंने उनके हाथ पीठ में बाँध दिए और शशिु को महाधर्माध्यक्ष के बस्तिर से बाँधकर, उन्हें उपहास के बीच नगर में ले गए। लोगों के बीच खड़े होकर और अपने हाथ से संकेत करते हुए, पॉल ने कहा:

'भाइयो, सुनो! आओ हम इस शशिु से पूछें, और उसे बताने दें कि उसका पति कौन है।'

(बच्चा केवल कुछ दनि का था।) और पौलुस ने बच्चे से कहा:

'बताओ, तुम्हारे पति कौन हैं?'

शशिु ने अपने लपेटने के कपड़े फाड़े, और अपने हाथ से एक लोहार की ओर इशारा करते हुए कहा:

'यह मेरा पति है, भक्षिु पॉल नहीं।'

यह सुनकर लोग उस बुजुर्ग के सामने झुक गए और उनसे क्षमा मांगने लगे।

उस समय से, ईश्वर ने आदरणीय को चंगा करने का वरदान दयि। पॉल बीमारों पर अपने हाथ रखता, और वे स्वस्थ हो जाते थे।

[4672]सत्तर वर्ष से अधकि जीवति रहने के बाद, आदरणीय पादरी प्रभु ईसा मसीह के पास चले गए, जनिकी उन्होंने अथक सेवा की, और संतों में गनि गए; उनके साथ, वे त्रमिूर्ति में एक परमेश्वर की महमिा करते हैं, जनिकी महमिा हमें सदा के लिए भेजी जाती है। आमीन।

12 जुलाई

29 जून (पुराने कैलेंडर के अनुसार)

आज हम हॉर्ड के राजकुमार, रोस्तोव के चमत्कार-कर्ता, आदरणीय पीटर (मृत्यु 29 जून 1290) का स्मरण करते हैं।

पवत्रि, महमिामय और सर्व-स्तुत्य प्रधान प्रेरति पतरस का जीवन, कर्म और कष्ट

29 जून को स्मरण कयि जाता है

[4671] कोरथि, ग्रीस के शहरों में सबसे पुराना, प्राचीन अर्गोलीस के उत्तरी भाग में, कोरथि की खाड़ी के तट पर स्थति था।

[4672] संत पौलुस की मृत्यु की सटीक तारीख अज्ञात है।

प्रथम-बुलाए गए प्रेरति एंड्रयू के भाई, पवत्रि प्रेरति पतरस—जो प्रभु यीशु मसीह द्वारा बुलाए जाने से पहले, शमिोन, समिोन के कुल के यहूदी योना के पुत्र नाम से जाने जाते थे—फलिस्तिीन के एक तुच्छ और अल्पज्ञात गलीलयिाई शहर बेतसैदा के मूल नविासी थे। उन्होंने पवत्रि प्रेरति बरनबास के भाई अरस्टिोबुलस की बेटी से ववािह कयिा और उनसे एक पुत्र और एक पुत्री हुई। शमिोन एक साधारण और अनपढ़ व्यक्ति थे; ईश्वर के भय से परपिूर्ण, उन्होंने प्रभु की सभी आज्ञाओं का पालन कयिा, 'अपने सभी कर्मों में नर्दिोष होकर उनके सामने चलते हुए'। शमिोन का पेशा मछली पकड़ना था; एक गरीब आदमी के रूप में, अपने हाथों की इस मेहनत से, वह अपने परविार का भरण-पोषण करता था, अपनी पत्नी, बच्चों, सास और अपने वृद्ध पति योना का पालन-पोषण करता था।

हालाँकि, समिोन के भाई एंड्रयू ने इस वदि्रोही संसार के व्यर्थतावाद से मुँह मोड़कर ब्रह्मचर्य का मार्ग चुना: वह यॉर्डन नदी पर संत यूहन्ना बपतस्मिादाता के पास गया, जो पश्चाताप का प्रचार कर रहे थे (मत्ती 3:1–17), और उनका शष्यि बन गया। अपने गुरु की मसीह—मुक्तदिाता—के बारे में गवाही सुनकर, और वशिेष रूप से, जब उन्होंने प्रभु की ओर अपनी उंगली से इशारा करते हुए कहा: *'देखो, परमेश्वर का मेमना'* (यूहन्ना 1:29–36), तो एंड्रयू ने यूहन्ना को छोड़ दयिा और बपतस्मिा देने वाले के एक अन्य शष्यि के साथ मलिकर प्रभु के पदचन्हिों पर चल पड़ा, और उनसे पूछा:

'रब्बी, आप कहाँ रहते हैं?'

'आओ और देखो,' उद्धारकर्ता ने उत्तर दयिा।

वे गए और उन्होंने देखा कि वह कहाँ रहता था, और उस दनि उसके साथ रहे (यूहन्ना 1:38–39)।

अगली सुबह, अन्द्रयिास अपने भाई शमिोन के पास गया और उससे कहा:

'हमने मसीहा, मसीह को पा लयिा है।'

और वह उसे यीशु के पास ले आया। यीशु ने उस पर दृष्टि करके कहा:

'तू योना का पुत्र शमिोन है; तुझे केफास कहेंगे, जसिका अर्थ है "पत्थर" (पतरस)'[4673] (यूहन्ना 1:41–42)। और तुरंत संत पतरस प्रभु के प्रति प्रेम से भर गए, और उन्होंने उन पर सच्चे मसीह के रूप में वश्विास कयिा, जो संसार के उद्धार के लिए परमेश्वर द्वारा भेजे गए थे। फरि भी उसने अपना घर नहीं छोड़ा और न ही अपना धंधा त्यागा, और अपने परविार की रोज़मर्रा की ज़रूरतों को पूरा करता रहा; इसमें, अपने बूढ़े पति के लिए समिोन की कभी-कभी उसके भाई एंड्रयू द्वारा मदद की जाती थी; इस प्रकार वे प्रभु द्वारा प्रेरतिीय सेवा के लिए बुलाए जाने तक इसी तरह रहे।

एक दनि, जब यूहन्ना बपतस्मिा देने वाले को कैद कर दयिा गया था, तब प्रभु यीशु मसीह गलील की झील (जसिे तबिेरयिास की झील या जेनेसरत झील के नाम से भी जाना जाता है) के पास से गुजर रहे थे, और उन्होंने पतरस और अन्द्रयिास को अपनी जालें झील में डालते हुए देखकर उनसे कहा:

'मेरे पीछे चलो, और मैं तुम्हें मनुष्यों के मछुआरे बनाऊँगा' (मत्ती 4:18–20)।

प्रभु उन्हें वास्तव में कसि प्रकार के मछुआरे बनाना चाहते थे? उन्होंने मछलयिों के चमत्कारी शकिार के माध्यम से इसकी पूर्वछाया दखिाई। समिोन पतरस की नाव में चढ़कर, मसीह ने उसे अपना जाल डालने का आदेश दयिा, जसि पर पतरस ने उत्तर दयिा:

'हे स्वामी! हमने सारी रात परश्रिम कयिा और कुछ भी नहीं पकड़ा; परन्तु तेरे वचन पर मैं जाल डालूँगा।'

जब उन्होंने ऐसा कयिा, तो उन्होंने इतनी बड़ी संख्या में मछलयिाँ पकड़ीं कि जाल फाटने लगा, जो प्रेरतिों के आध्यात्मकि मछली पकड़ने का पूर्वाभास था—प्रेरतिों को परमेश्वर के वचन के जाल से उद्धार के लिए कई राष्ट्रों को पकड़ना था। यह चमत्कार देखकर, शमिोन पतरस यीशु के सामने घुटनों के बल गरि पड़े और कहा:

'हे प्रभु, मुझसे दूर हो जाओ! क्योंकि मैं एक पापी मनुष्य हूँ।'

वह और उसके साथी, जो इस पकड़ का हस्सिा थे, उन्होंने पकड़ी गई मछलयिों को देखकर वस्मिति हो गए। पतरस के, प्रभु से उससे दूर जाने के लिए कहने के जवाब में, उद्धारकर्ता ने इसके वपिरीत, उसे अपना अनुसरण करने के लिए बुलाया:

'चलो, मेरे पीछे चलो – अब से तुम लोगों को जीवन के लिए पकड़ोगे, जैसे तुम पहले मृत्यु के लिए मछलयिाँ पकड़ते थे।'

[4673] कफिा एक सीरयिाई शब्द है जसिका अर्थ 'पत्थर' है; ग्रीक शब्द पीटर ('पेत्रा' - चट्टान, पत्थर) का भी यही अर्थ है।

उस समय से, पवत्रि प्रेरति पतरस ने मसीह का अनुसरण कयिा, जैसे उनके भाई अन्द्रयिास और अभी-अभी बुलाए गए अन्य शष्यिों ने कयिा। प्रभु को प्रेरति पतरस की हृदय की सादगी से प्रेम था: उन्होंने शमिोन के नम्र घर का दौरा कयिा, जहाँ, अपने हाथ के स्पर्श से, उन्होंने शमिोन की सास को ठीक कयिा, जो बुखार से बीमार पड़ी थी। और जब, सुबह, प्रभु उठे और प्रार्थना करने के लिए एक सुनसान जगह पर चले गए, तो पतरस और उसके साथी, प्रभु के बनिा एक घंटा भी नहीं रह सकते थे, उनके पीछे हो लिए, अपने प्रयि शक्षिक को बड़ी लगन से खोजते हुए; और, उन्हें पाकर, उन्होंने उनसे कहा:

'प्रभु, सब आपको ढूँढ़ रहे हैं' (मरकुस 1:30–37)।

और पवत्रि प्रेरति पतरस प्रभु से कभी भटक नहीं गए, बल्कि उनके पास ही बने रहे, और उनका दर्शन तथा उनके 'शहद से भी मीठे' वचनों में आनंदति होते रहे। वे प्रभु के कई महान चमत्कारों के प्रत्यक्षदर्शी थे, जो स्पष्ट रूप से मसीह को परमेश्वर के पुत्र के रूप में इंगति करते थे, जनि पर उन्होंने बनिा कसिी संदेह के वश्विास कयिा। और जैसे उसने हृदय से 'सत्य में' वश्विास कयिा, वैसे ही उसने होठों से 'मोक्ष के लिए' स्वीकार कयिा। जब प्रभु केसरयिा फलिपिी के प्रदेश में आए[4674] , तो उन्होंने अपने शष्यिों से पूछा:

'लोग मुझसे, मनुष्य के पुत्र से, कौन कहते हैं?'

उन्होंने उत्तर दयिा:

'कुछ कहते हैं यो◌ाह्न्ना बपतस्मिा देनेवाला; अन्य, एलयिा; और अन्य, यर्मियाह या भवष्यिद्वक्ताओं में से कोई एक।'

उसने उनसे कहा:

'पर तुम क्या कहते हो कि मैं कौन हूँ?'

शमिोन पतरस ने उत्तर दयिा:

'तू मसीह है, जीवते परमेश्वर का पुत्र।'

प्रभु ने प्रेरति के इस सच्चे बयानी को एक आशीर्वाद और एक वादे से पुरस्कृत कयिा; उन्होंने संत पतरस से कहा:

धन्य है तू, हे योना के पुत्र शमिोन, क्योंकि यिह बात तुझ पर न तो मांस ने और न रक्त ने, परन्तु स्वर्ग में मेरे पतिा ने प्रगट की है; और मैं तुमसे कहता हूँ: तुम पतरस हो, और इसी चट्टान पर मैं अपनी कलीसयिा की स्थापना करूँगा, और नरक के द्वार उस पर हावी नहीं होंगे; और मैं तुम्हें स्वर्ग के राज्य की कुंजयिाँ दूँगा; और जो कुछ भी तुम पृथ्वी पर बँधवाओगे, वह स्वर्ग में बँधा रहेगा; और जो कुछ भी तुम पृथ्वी पर खोलोगे, वह स्वर्ग में खुला रहेगा[4675] ।

प्रभु के प्रति उत्कट प्रेम से जलते हुए, पवत्रि प्रेरति पतरस ने चाहा कि उन पर कोई बुराई न आए; इसलिए, जब प्रभु ने अपने दुखों की भवष्यिवाणी की, तो उन्होंने अज्ञानता में उन्हें डाँटते हुए कहा:

'प्रभु, अपनी पर कृपा करें! ऐसा कभी न हो!'

यद्यपि प्रेरति के ये वचन प्रभु यीशु को भाए नहीं—जो वशिेष रूप से अपनी पीड़ा के द्वारा मानव जाति को वनिाश से छुड़ाने आए थे—फरि भी वे प्रभु के प्रति एक उत्कट प्रेम से प्रेरति थे; उन्होंने प्रेरति की द्वेष की कमी को भी प्रकट कयिा: प्रभु की फटकार, 'मेरे सामने से दूर हो, शैतान![4676] तुम मेरे लिए एक ठोकर हो', प्रेरति को कोई क्रोधति चड़िचड़िाहट महसूस नहीं हुई और वह मसीह उद्धारकर्ता से पीछे नहीं हटा, बल्कि डांट को प्रेम से सुनकर, प्रभु का और भी अधकि

[4674] यह शहर यॉर्डन नदी के स्रोत के पास स्थति था; इसका नर्मिाण हेरोद के पुत्र फलिपि ने सीज़र टबिेरयिस के सम्मान में कयिा था – इसलिए इसका यह नाम पड़ा।

[4675] यहाँ, 'चट्टान' का अर्थ नश्चिति रूप से प्रेरति पतरस से नहीं है, बल्कि उस वश्विास से है जसिकी उन्होंने घोषणा की थी, या स्वयं प्रभु से है; स्वर्ग के राज्य की कुंजयिाँ प्रदान करने का वचन बाद में प्रभु द्वारा, उनके पुनरुत्थान के बाद, सभी प्रेरतिों को दोहराया गया था (यूहन्ना 20:21-23)।

[4676] शैतान एक सीरयिाई शब्द है जसिका अर्थ है 'वरिोधी'; संकीर्ण अर्थ में, यह पवत्रि धर्मग्रंथ में बुरी आत्माओं के राजकुमार को दर्शाने के लिए प्रयुक्त शब्द है (1 थस्सि. 2:18); हालाँकि, व्यापक अर्थ में, 'शैतान' शब्द सामान्य रूप से परमेश्वर की इच्छा के कसिी भी वरिोधी को दर्शाता है, भले ही वह केवल एक नश्चिति भोलेपन या समझ की कमी के कारण ही क्यों न हो, जैसा कि हम यहाँ प्रेरति संत पतरस के मामले में देखते हैं।

उत्साह के साथ अनुसरण कयिा (मत्ती 16:13–23)। एक अवसर पर, कई शष्यिों ने, प्रभु के शब्दों[4677] को समझने में असमर्थ, उनके बारे में बात की:

'कतिने अजीब शब्द! इसे कौन सुन सकता है?'

और फरि वे उद्धारकर्ता से मुँह फेर गए और अब उनके साथ नहीं चले। तब प्रभु यीशु ने बारहों से कहा:

'क्या तुम भी जाना चाहते हो?'

शमिोन पतरस ने उसे उत्तर दयिा:

'हे प्रभु! हम कसिके पास जाएँ? आपके पास अनन्त जीवन के वचन हैं, और हम वशि्वास कर चुके हैं और जान चुके हैं कि आप मसीह हैं, जीवते परमेश्वर के पुत्र' (यूहन्ना 6:53–58)।

प्रभु के प्रति ऐसा वशि्वास और ऐसा उत्साह रखते हुए, पवत्रि प्रेरति पतरस ने पानी पर उनके पास आने की अनुमति माँगने की हम्मित की[4678] । प्रभु ने इसे मना नहीं कयिा। तब पवत्रि प्रेरति पतरस, नाव से बाहर कदम रखते हुए, 'यीशु के पास जाने के लिए पानी पर चला'। लेकनि, पवत्रि आत्मा प्राप्त करने से पहले अपने वशि्वास में अभी पूर्ण दृढ़ता न होने के कारण, वह, 'तेज हवा देखकर डर गया और डूबने लगा, और चल्लिाया:

'प्रभु! मुझे बचाओ।'

यीशु ने तुरन्त अपना हाथ बढ़ाया, उसे थाम लयिा, और उससे कहा:

'हे अल्पवशि्वासी, तू क्यों संदेह कर गया?' (मत्ती 14:28–31)।

प्रभु, जन्हिोंने पवत्रि प्रेरति को डूबने से बचाया, ने उन्हें उनके अवशि्वास से भी बचाया जब उन्होंने उनसे कहा[4679] :

– 'मैंने तुम्हारे लिए प्रार्थना की है कि तुम्हारा वशि्वास कमजोर न हो जाए' (लूका 22:31–32)।

दो अन्य शष्यिों, याकूब और यूहन्ना के साथ, पवत्रि प्रेरति पतरस को यह सौभाग्य प्राप्त हुआ कि उन्हें tabor पर्वत पर प्रभु के रूपांतरण की महमिा दखिाई गई, और उन्होंने स्वयं अपने कानों से परमपति परमेश्वर की वह वाणी सुनी, जो स्वर्ग से प्रभु यीशु के लिए आई थी। पवत्रि प्रेरति अपने पत्र में इसका उल्लेख इस प्रकार करते हैं:

– हम तुम्हें हमारे प्रभु यीशु मसीह की सामर्थ्य और आगमन का प्रचार करते हैं, और यह कोई चतुराई से रची गई कहानयिों के पीछे न चलकर, बल्कि उसकी महमिा के प्रत्यक्षदर्शी बनकर करते हैं। क्योंकि उसे परमेश्वर पति से महमिा और सम्मान प्राप्त हुआ, जब महमिामय तेज से एक स्वर उसके पास आया, जो कह रहा था, 'यह मेरा प्रयि पुत्र है, जसिमें मैं प्रसन्न हूँ।' और जब हम उसके साथ पवत्रि पर्वत पर थे, तब हमने स्वर्ग से यह स्वर आते हुए सुना।[4680]

जब प्रभु अपनी स्वेच्छा से कष्ट सहने और क्रूस पर मृत्यु के समीप पहुँचे, तब पवत्रि प्रेरति पतरस ने केवल वचन में ही नहीं, बल्कि कर्म में भी प्रभु के प्रति अपनी उत्सुकता प्रदर्शति की, यह कहते हुए:

'हे प्रभु, मैं तेरे साथ जेल और मृत्यु तक जाने को भी तैयार हूँ' (लूका 22:33), परन्तु कर्म में भी, अपनी तलवार खींचकर महायाजक के दास मल्खुस का कान उड़ा दयिा (यूहन्ना 18:10)। यद्यपि परमेश्वर ने, अपनी बुद्धि में, प्रेरति पतरस को हमारे प्रभु, उद्धारकर्ता मसीह का तीन बार इनकार करने की अनुमति दी, वह सच्चे पश्चाताप और कड़वे रोने के साथ फरि से उठ खड़ा हुआ और बहाल हो गया (मत्ती 26:69-75)। सभी प्रेरतिों में प्रथम, संत पतरस को, जी उठे प्रभु यीशु मसीह को देखने का अनुग्रह मलिा, जैसा कि पवत्रि सुसमाचार लेखक लूका वर्णन करते हैं: 'प्रभु सचमुच जी उठे हैं और समिोन पर प्रगट हुए हैं' (लूका 24:34); पवत्रि प्रेरति पौलुस भी इसी के वषिय में लखिते हैं: मसीह 'शास्त्र के वचन के अनुसार तीसरे दनि मरे हुओं में से जी उठे और पहलि केफ़ास पर, फरि बारहों पर प्रगट हुए' (1 कुरन्थियिों 15:4–5)। प्रभु को देखकर संत पतरस आनंद से भर गए, क्योंकि उन्हें उनके पाप के लिए प्रभु से अनुग्रहपूर्ण क्षमा प्राप्त हुई थी। उन्होंने अंततः उद्धारकर्ता के प्रति अपने प्रेम की तीन बार की स्वीकारोक्ति से प्रभु के प्रति अपने तीन बार के इनकार का प्रायश्चति कयिा, और प्रभु के प्रश्न का तीन बार उत्तर दयिा:

'योना के पुत्र समिोन, क्या तू मुझ से प्रेम करता है?'

'हे प्रभु, आप सब कुछ जानते हैं; आप जानते हैं कि मैं आपसे प्रेम करता हूँ।'

[4677] मसीह के शरीर और रक्त को ग्रहण करने के संस्कार पर। (यूहन्ना 6:53–58)।

[4678] जैसे प्रभु स्वयं गेननेसर झील की उफनती लहरों के पार अपने शष्यिों के पास आए (मत्ती 14:22–27)।

[4679] अपने कष्टों से पहले अपने शष्यिों के साथ अंतमि भोज में।

[4680] 2 पतरस 1:16–18; तुलना करें मत्ती 17:1–27; मरकुस 9 और उसके बाद; लूका 9 और उसके बाद।

और उद्धारकर्ता मसीह ने पतरस को उसकी प्रेरितीय गरिमा में बहाल किया, उसे झुंड का चरवाहा बनाया और स्वर्ग के राज्य की कुंजियाँ सौंपीं (यूहन्ना 21:15-17)।

हमारे प्रभु यीशु मसीह के स्वर्गारोहण के बाद, संत पतरस, प्रेरितों में अग्रणी के रूप में, परमेश्वर के वचन के पहले शिक्षक और प्रचारक बने, और उन्होंने एक ही घंटा में तीन हजार विश्वासियों को मसीह की कलीसिया में शामिल किया (प्रेरितों के काम 2:14-41)। ऐसा करते हुए, उन्होंने बड़ी चमत्कारिक शक्ति का भी प्रदर्शन किया। जब वह संत यूहन्ना के साथ प्रार्थना करने के लिए मंदिर में प्रवेश कर रहा था, तब संत पतरस ने जन्म से लंगड़ा एक आदमी को देखा, जो सुंदर द्वार नामक मंदिर के द्वार पर बैठा था। जब उसने पतरस और यूहन्ना को देखा, तो उसने उनसे भीख माँगी। पतरस और यूहन्ना ने उस पर ध्यान से देखते हुए कहा:

'हमारी ओर देखो।'

और उसने उन पर ध्यानपूर्वक निहारते हुए उनसे कुछ पाने की आशा की। लेकिन पतरस ने कहा:

'मेरे पास चाँदी या सोना नहीं है; परन्तु जो कुछ मेरे पास है, वही मैं तुम्हें देता हूँ: नासरत के यीशु मसीह के नाम पर उठो और चलो।'

और दाहिना हाथ पकड़कर उसे उठा दिया; और उसी घड़ी उसके पैर और टखने मजबूत हो गए, और वह उछलकर खड़ा हो गया, और चलने लगा, और उनके साथ मंदिर में चला गया, चलते-चलते और उछलते-उछलते परमेश्वर की स्तुति करने लगा।

इस चमत्कार और पवित्र प्रेरित पतरस के उपदेश के द्वारा, लगभग पाँच हजार लोग मसीह पर विश्वास करने लगे (प्रेरितों के काम 3:1–26; 4:4)। संत पतरस ने यरूशलेम के रहने वाले हनानियाह और उसकी पत्नी सप्फिरा को पवित्र आत्मा से झूठ बोलने और बेईमानी करने के कारण मार डाला (प्रेरितों के काम 5:1–10)। लिद्दा में[4681] , उन्होंने एनेयास को चंगा किया, जो आठ वर्षों से लकवाग्रस्त और बिस्तर पर पड़ा था, और उससे कहा:

'हे एनेया, यीशु मसीह तुम्हें चंगा करता है!' (प्रेरितों के काम 9:32–34)

योपा में[4682] ने ताबिता नाम की मरे हुए लड़की को जिलाया (प्रेरितों के काम 9:36-42)। और केवल उसके हाथों और उसके शब्दों ने ही चमत्कार नहीं किए, बल्कि उसकी परछाईं ने भी चंगाई दी: 'यहाँ तक कि वे बीमारों को बाहर गलियों में ले जाकर बिस्तरों और चौकियों पर लिटा देते थे, ताकि जब पतरस आता था तो कम से कम उसका साया ही उन में से कुछ पर पड़ जाए' (प्रेरितों के काम 5:15)। – और जब राजा हेरोदेस ने (यरूशलेम में) कलीसिया के कुछ सदस्यों पर 'उन्हें हानि पहुँचाने' के लिए हाथ रखा और, यूहन्ना के भाई याकूब को तलवार से मार डालने के बाद[4683] , ने संत पतरस को पकड़कर दो बेड़ियों से बाँधकर जेल में डाल दिया, प्रभु का स्वर्गदूत रात में उसे उसके बंधनों से छुड़ाकर जेल से मुक्त कर दिया (प्रेरितों के काम 12:1–10)। प्रमुख प्रेरित पतरस ने ही सबसे पहले अन्यजातियों के लिए विश्वास का द्वार खोला, और उन्होंने केसरिया में रोम के शताध्यक्ष कुलनियुस का बपतिस्मा दिया[4684] । यह घटना स्वर्ग से उतरती एक चादर के दर्शन के बाद हुई, जो चार-पाँव वाले जानवरों और सरपटों से भरी थी, और एक आवाज ने पतरस को आज्ञा दी कि वह इन सभी प्राणियों को वध करे, उन्हें खाए, और जिसे परमेश्वर ने शुद्ध किया है, उसे अशुद्ध न माने; यह दर्शन मसीही धर्म में अन्यजातियों के परिवर्तन का संकेत था (प्रेरितों के काम 10:1–48)। पवित्र प्रेरित पतरस ने सामरी जादूगर शिमोन को फटकार लगाई, जिसने पाखंडपूर्वक बपतिस्मा ग्रहण किया था और धन के बदले पवित्र आत्मा का वरदान खरीदने का प्रयास किया था:

'तेरा चाँदी का धन,' प्रेरित ने जादूगर से कहा, 'तेरे लिए शाप बन जाए, क्योंकि तूने सोचा कि तू धन से परमेश्वर का वरदान प्राप्त कर सकता है: इसमें तेरा कोई भाग या हिस्सा नहीं है, क्योंकि तेरा मन परमेश्वर के सामने सीधा नहीं है;

[4681] लिद्दा – फिलिस्तीन में एक शहर, वर्तमान रमला के पास, जो पहले अरिमाथेआ के नाम से जाना जाता था।

[4682] योप्पा – एशिया के सबसे पुराने शहरों में से एक, भूमध्य सागर के उत्तर-पश्चिमी तट पर, केसरिया और गाजा के बीच।

[4683] जेबेदी का पुत्र याकूब, बारह प्रेरितों में से एक और सुसमाचार लेखक यूहन्ना का भाई। सन्त याकूब 44 ईस्वी में यहूदियों के राजा हेरोदेस अग्रिप्पा द्वारा किए गए उत्पीड़न के दौरान शहीद होने वाले प्रेरितों में से पहले थे। उनका पर्व दिवस 30 अप्रैल है।

[4684] यह, बेशक, फिलिस्तीन में स्थित सीज़रिया की ओर इशारा करता है, जो भूमध्य सागर के तट पर है; इस शहर का पुनर्निर्माण हेरोद महान द्वारा किया गया था, जिन्होंने सीज़र अगस्टस के सम्मान में इसका नाम सीज़रिया रखा था। प्रेरित पौलुस इस स्थान पर आए थे (प्रेरितों के काम 9:29–30, 18:28, 21:8); उन्होंने यहाँ एक कैदी के रूप में दो साल बिताए (प्रेरितों के काम 23:33, 24:27, 25:4); प्रेरित फिलिप यहाँ रहते थे (प्रेरितों के काम 21:8); और हेरोदेस अग्रीपा की मृत्यु यहीं हुई, जो एक स्वर्गदूत के प्रहार से गिर पड़े और कीड़ों ने उन्हें खा लिया (प्रेरितों के काम 12:19–33)।

इसलिए इस पाप से पश्चाताप करो और परमेश्वर से प्रार्थना करो: शायद तुम्हारे हृदय का इरादा क्षमा किया जाए, क्योंकि मैं तुम्हें कटु पित्त से भरा और अधर्म से बँधा हुआ देखता हूँ (प्रेरितों के काम 8:18–23)।

यहाँ उल्लिखित पवित्र प्रेरित पतरस के अन्य कर्म पवित्र सुसमाचार और पवित्र प्रेरितों के कामों की पुस्तक में अधिक विस्तार से दिए गए हैं, जिन्हें विश्वासियों के निर्माण के लिए चर्चों में लगातार पढ़ा जाता है। इसलिए, संक्षिप्तता के लिए, प्रेरित संत पतरस से संबंधित पवित्र धर्मग्रंथों की इन पुस्तकों से सब कुछ विस्तार से उद्धृत करने की कोई आवश्यकता नहीं थी; ये पुस्तकें ऑर्थोडॉक्स ईसाइयों को अच्छी तरह से ज्ञात होनी चाहिए। जहाँ तक संत पतरस प्रेरित के और भी सुसमाचार प्रचार के कारनामों और परिश्रमों का सवाल है, जो बहुत कम लोगों को ज्ञात हैं, संत समियिन मेटाफ्रastes[4685] निम्नलिखित कहते हैं।

यरूशलेम से[4686] संत पतरस केसरिया स्ट्रैटोनिका[4687] गए, जहाँ उन्होंने अपने साथ आए पुरोहितों में से एक को बिशप नियुक्त किया; सीडोन[4688] में कई लोगों को चंगा करने और वहाँ एक बिशप नियुक्त करने के बाद, वे बेरूत[4689] पहुँचे, जहाँ उन्होंने इसी तरह एक बिशप नियुक्त किया; फिर वे विला आए, और वहां से फिनिसिया के त्रिपोली[4690] गए, जहां वे मार्सन नामक एक बुद्धिमान व्यक्ति के साथ रुके, जिन्हें उन्होंने उस शहर में विश्वासियों के बिशप के रूप में नियुक्त किया। त्रिपोली से वे ऑर्फोशिया गए; फिर एंट्राडा, फिर अराडोस द्वीप, और आगे वलेनिया, पैंट और लाओदिकिया[4691] गए; वहाँ उन्होंने कई बीमारों को चंगा किया, भूत-प्रेत ग्रस्त लोगों से अशुद्ध आत्माओं को निकाला, और विश्वासियों की एक मंडली इकट्ठी की, जिसके लिए उन्होंने एक बिशप नियुक्त किया। लाओदिकिया से, संत पतरस सीरिया के एक शहर अंत्योखिया गए[4692] , जहाँ साइमन जादूगर उसे पकड़ने के लिए रोमन सम्राट क्लाउडियस द्वारा भेजे गए सैनिकों से छिपि रहा था[4693] ; पवित्र प्रेरित पतरस के आगमन की खबर मिलते ही, साइमन यहूदिया के शहरों में भाग गया। अंतीयक में, पवित्र पतरस ने कई बीमार लोगों को चंगा किया और, त्रिमूर्ति में एक ईश्वर के बारे में उपदेश देने के बाद, बिशप नियुक्त किए: सिसिली के सिराक्यूज़ के लिए मार्शियन[4694] और टौरोमेनियम के लिए पैंक्रैटियस[4695] । अंतियोक से, संत पतरस कैपाडोसिया के टिनियन गए[4696] ; वहाँ से वे गलाटिया के अंकीरा गए[4697] , जहाँ उन्होंने एक मृतक को जीवित कर दिया, एक चर्च की स्थापना की, कई लोगों को धर्मोपदेश दिया और बपतिस्मा दिया, और उनके लिए एक बिशप नियुक्त किया। अंकीरा से निकलकर, वे पोंटस के सिनोप[4698] के लिए रवाना हुए, और वहां से पोंटस के क्षेत्र के केंद्र में स्थित अमासिया आए। फिर, पफ्लागोनिया के गैंग्रा[4699] , होनोरियाडिस और बिथिनिया के क्लॉडियोपोलिस[4700] , और निकोमेडिया का दौरा

[4685] एक 10वीं सदी के चर्च संबंधी लेखक

[4686] फ़िलिस्तीन का प्रमुख शहर, जो अब सीरिया में (उस्मानी साम्राज्य के भीतर) दमिश्क विलियत (शासनक्षेत्र) का एक प्रांतीय शहर है, यह यहूदी पहाड़ियों की तीन उप-श्रेणियों: अक्रा, सियोन और मोरिय्याह की ढलानों पर कद्रोन धारा के किनारे स्थित है। यरूशलेम हर ईसाई के लिए पुराने और नए नियम के इतिहास की महान घटनाओं के केंद्र के रूप में प्रिय है – ईसाई चर्चों की जननी के रूप में, जहाँ से सुसमाचार का वचन पूरे ब्रह्मांड में फैला।

[4687] कैसरिया स्ट्रैटोनिका वही है जो फिलिस्तीन की कैसरिया है।

[4688] सidon भूमध्य सागर के तट पर स्थित एक फ़िनिशियाई शहर है, जिसके किनारे फ़िनिशिया बसा हुआ है।

[4689] बेरटिस या बेरटि - एक फिनिशियन शहर, जो प्राचीन काल में प्रबोधन और शिक्षा के केंद्र के रूप में प्रसिद्ध था; आज, बेरटि, जिसे बेरूत के नाम से जाना जाता है, सीरिया के एशियाई-तुर्की विलियत (प्रशासनिक क्षेत्र) की राजधानी है और एक महत्वपूर्ण वाणिज्यिक केंद्र के रूप में कार्य करता है।

[4690] बाइब्लोस और त्रिपोली फोएनीशिया के शहर हैं।

[4691] लाओडिकिया – एशिया माइनर में फ्रीजिया क्षेत्र की राजधानी।

[4692] सीरिया – भूमध्य सागर के पूर्वी तट पर एशियाई तुर्की का एक क्षेत्र।

[4693] क्लाउडियस – 41 से 54 ईस्वी तक सम्राट।

[4694] सिसिली – भूमध्य सागर का सबसे बड़े द्वीपों में से एक, जो अब इटली के साम्राज्य का हिस्सा है।

[4695] टॉरोमेनिया – माउंट टॉरस के पास सिसिली के पूर्वी तट पर एक महत्वपूर्ण शहर – जिसका नाम इसी पहाड़ के नाम पर पड़ा है।

[4696] कैपाडोसिया – आर्मेनिया और सिलिसिया की सीमा पर एशिया माइनर का एक क्षेत्र।

[4697] गलातिया – एशिया माइनर में एक विशिष्ट प्रांत, जो पश्चिम में फ्रीजिया, दक्षिण में लिकोनिया और कैपाडोसिया, पूर्व में पोंटस, और उत्तर में बिथिनिया और फाफ्लागोनिया से सटा हुआ है।

[4698] पोंटस – एशिया माइनर का एक उत्तर-पूर्वी क्षेत्र।

[4699] पाफ्लागोनिया – एशिया माइनर के उत्तरी भाग में एक ऊबड़-खाबड़ पहाड़ी क्षेत्र।

[4700] बिथिनिया – एशिया माइनर का एक क्षेत्र जो उत्तर में ब्लैक सी से सटा हुआ है।

करने के बाद, पवत्रि प्रेरति नकिीया[4701] में रुके। ईस्टर के पर्व के लिए यरूशलेम जाने का इरादा रखते हुए, वे नकियि से वापस मुड़ गए, पसिनिुंत और फरि कैपाडोसयि और सीरयि की यात्रा करते हुए। एक बार फरि अंतीयक का दौरा करने के बाद, वे अंततःयरूशलेम पहुँचे। वहाँ उनके प्रवास के दौरान, मसीह में उनके परविर्तन के तीन वर्ष बाद, पवत्रि प्रेरति पौलुस उनसे मलिने आए, जैसा कि वे स्वयं गलातयिों के नाम अपने पत्र में वर्णन करते हैं:

'तीन वर्ष बाद, मैं पतरस से मलिने यरूशलेम गया और पंद्रह दनि तक उसके साथ रहा' (गला. 1:18)।

उस समय चर्च के नयिम स्थापति करने के बाद, संत पौलुस उस कार्य में लग गए जसिके लिए उन्हें बुलाया गया था; जबकि पवत्रि प्रेरति पतरस ने एक बार फरि अंताकयि का दौरा कयि, जहाँ उन्होंने एवोदयिुस को बशिप नयिुक्त कयि; बाद में फ्राइजयि के एक शहर सनिाद[4702] पहुँचने के बाद, वे वहाँ से नकिोमेडयि[4703] के लिए रवाना हुए; वहाँ उन्होंने प्रोकोरुस को बशिप नयिुक्त कयि, जन्हिोंने बशिप का पद प्राप्त करने पर, संत यूहन्ना द थयिोलोजयिन के पदचन्हिों पर चलना शुरू कर दयि। नकिोमेडयि से हेलस्पोंट पर स्थति इलयिन नगर[4704] आकर, पवत्रि प्रेरति ने वहाँ शताध्यक्ष कोर्नेलयिस को बशिप नयिुक्त कयि और यरूशलेम लौट आए। वहाँ, प्रभु यीशु मसीह ने संत पतरस को एक दर्शन में प्रकट होकर कहा:

'हे पतरस, उठ और पश्चमि की ओर जा; क्योंकि तेरी शक्षिा से उसकी बुद्धि बढ़ने का समय आ गया है; और मैं तेरे संग रहूँगा।'

उस समय, समिोन जादूगर[4705] को पहले ही उन सैनकिों द्वारा पकड़ लयि गया था जो उसकी तलाश कर रहे थे और उसे अपने कर्मों की सजा भुगतने के लिए रोम[4706] लाया गया था। लेकनि उसने अपनी जादुई चालाकी से कई लोगों के दमिाग को धुंधला कर दयि और उन्हें इतना धोखा दयि कि वह न केवल सजा से बच नकिला, बल्कि कई लोग उसे एक देवता के रूप में पूजने भी लगे। शैतान का यह अग्रदूत अपनी जादू-टोने से सम्राट क्लाउडयिस को इतना चकति कर गया कि उस जादूगर की एक मूर्ति बनाकर टबिर नदी पर बने दो पुलों के बीच स्थापति की गई, जसि पर यह शलिालेख अंकति था: 'साइमन, पवत्रि देवता को'। जस्टनि और आइरेनयिस ने इस बारे में वस्तिार से लखिा है। जहाँ तक हमारी बात है (समियिोन मेटाफ्रastes कहते हैं), आइए हम अपने वषिय पर वापस लौटें। महान पतरस ने भाइयों को वह दर्शन बताया जो उन्होंने देखा था, उनसे वदिा ली और, चर्चों का दौरा करते हुए, एक बार फरि अंतीयक पहुँचे, जहाँ उन्हें पवत्रि प्रेरति पौलुस मलिे। वहाँ उन्होंने बशिप नयिुक्त कए: तार्सस के उर्वान[4707] , एड्रयिानोपल में लुकयि के एफाफ्रॉडटिस, स्मyrna के अपेल्स (जो पॉलीकार्प का भाई था), और एफेसस के फगिेलस[4708] ; बाद वाले के बारे में कहा जाता है कि, सही रास्ते से भटककर,

---

[4701] नकिाया बथिनियि (पछिले नोट को देखें) में एस्केनयि झील के पूर्वी छोर पर स्थति है; यह कभी एक समृद्ध व्यापारकि शहर और यहाँ तक कि राजाओं का सहिासन भी था। यह ईसाई चर्च के इतहिास में प्रथम (325 में) और सप्तम (787 में) सार्वभौमकि परषिदों के स्थल के रूप में उल्लेखनीय है।

[4702] फ्रीजयि एशयि माइनर का एक क्षेत्र है जो उत्तर में गलातयि, और दक्षणि में पसिीडयि और पम्फलियि के बीच स्थति है। इसका सुसमाचार प्रचार संत पौलुस प्रेरति द्वारा कयि गया था।

[4703] नकिोमेडयि – बथिनियि में एक शहर।

[4704] हेलेस्पोंट उस जलडमरूमध्य का नाम था जो थ्रेसयिन प्रायद्वीप को एशयि (ट्रॉयड, लघु फ्रीजयि) से अलग करता था।

[4705] संत जस्टनि द मार्टायर की गवाही के अनुसार, सामरी गाँव गटिाह या टटिन से आए साइमन द मैगस ने अलेक्जेंड्रयि में दर्शनशास्त्र का अध्ययन कयि और बाद में एक जादूगर के रूप में प्रसद्धि हो गया, जो खुद को ईश्वर की एक महान शक्ति बताता था। 'उस समय, रोमन और ग्रीक वृत्तांतों के अनुसार, ग्रीको-रोमन दुनयि के वभिन्नि देशों में जादूगर, काल्डीयन, गणतिज्ञ और मन्त्र-वाचक के रूप में जाने जाने वाले लोगों की एक बड़ी संख्या प्रकट हुई, जो उन रहस्यमयी शक्तियों का कुछ ज्ञान रखते थे जनिकी प्रकृति तब भी अच्छी तरह से समझी नहीं गई थी, और उन्होंने खुद को असाधारण व्यक्तियों के रूप में प्रस्तुत कयि; और कुछ बीमारियों को ठीक करके, मन्त्रों के माध्यम से, भवषि्यवाणी, तंत्र-मंत्र, ठगी और वभिन्नि अन्य तरकीबों द्वारा, उन्होंने अज्ञानी जनसमूह पर इतना प्रभाव डाला कि वे अपने पीछे भीड़ खींच लाए और उन्हें कुछ असाधारण माना जाने लगा।" साइमन द मैगस भी इसी श्रेणी के लोगों में आता है।

[4706] रोम – रोमन साम्राज्य की राजधानी – मध्य इटली में, लाटयिम क्षेत्र में, टायबर नदी के दोनों कनिारों पर स्थति है, जहाँ यह समुद्र में मलिती है।

[4707] तार्सस – एक समय में एशयि माइनर के दक्षणि-पूर्व में, भूमध्य सागर के पास, सड्निस नदी पर स्थति एक बड़ा और घनी आबादी वाला शहर था, जो सलिसियि प्रांत की राजधानी था। आज भी यह 40,000 नविासयिों के साथ एक महत्वपूर्ण वाणज्यिकि केंद्र है।

[4708] एफ़सिुस – एक तटीय व्यापारकि केंद्र और एशयि माइनर के योपयि प्रांत की राजधानी; यह बाद में प्रेरति जॉन द थयिोलोजयिन के मंत्रालय का केंद्र बन गया; 431 में यहाँ तीसरी सार्वभौमकि परषिद आयोजति की गई थी; आज, एफ़सिुस तुर्की का एक गरीब गाँव आयसुल्लुक है।

वह साइमन के साथ संप्रदाय में शामिल हो गया। अंतियोकिया से, संत पतरस मैसेडोनिया गए[4709] , जहाँ उन्होंने बिशपों की भी नियुक्ति की: फिलिप्पियों के लिए ओलंपस[4710] , थिस्सलुनीकियों के लिए जेसन[4711] , और कोरिन्थियों के लिए सिलास[4712] , जिन्हें उन्होंने पवित्र प्रेरित पौलुस के साथ ठहरा हुआ पाया। हेरोडियन को पत्रास का बिशप नियुक्त करने के बाद, संत पेत्रुस ने सिसिली के लिए समुद्रयात्रा की और टौरोमेनियम पहुँचने पर, उन्होंने महान वाक्पटुता वाले पैंक्रैटियस के साथ थोड़े समय के लिए ठहरे; वहाँ उन्होंने एक मैक्सिमिस नामक व्यक्ति को उपदेश दिया, उसका बपतिस्मा किया और उसे बिशप नियुक्त किया, और फिर रोम पहुँचे।

रोम में, प्रेरित संत पतरस चौकों में और लोगों के घरों में प्रतिदिन एक ईश्वर – सर्वशक्तिमान पिता – और एक प्रभु यीशु मसीह, जो परमेश्वर के पुत्र हैं, सच्चे परमेश्वर जो सच्चे परमेश्वर से उत्पन्न हुए हैं, और एक पवित्र आत्मा, जीवन-दायक प्रभु के बारे में उपदेश देते थे; और उन्होंने पवित्र बपतिस्मा के द्वारा मूर्तिपूजा के भ्रम से मुक्ति दिलाकर, बहुतों को मसीह के धर्म की ओर आकर्षित किया। यह सब देखकर, जादूगर सिमोन चुप नहीं रहा और न ही संत पतरस के प्रति अपनी द्वेषभावना को छिपाया – उसने प्रेरित के उपदेश को, जो उसकी महिमा को ध्वस्त कर रहा था, एक अपमान माना; और जादूगर ने अपने कपटपूर्ण शब्दों और कर्मों से प्रेरित के सच्चे उपदेश का खुलेआम विरोध करना शुरू कर दिया – बिना किसी शर्म के, उसने शहर के बीचों-बीच संत पतरस का खंडन किया। जादूगर ने लोगों को बहकाया, उनके भीतर अजीब कल्पनाएँ जगाकर; उसने अपने सामने और पीछे प्रेत-छायाएँ दिखाईं, और लोगों से कहा कि ये मृतकों की आत्माएँ हैं; उसने मृतकों में से जी उठे लोगों को भी दिखाया, जो उसके सामने ऐसे झुकते थे मानो वह कोई देवता हो; उसने लंगड़ों को चंगा किया, और उन्हें चलने-फिरने तथा दौड़ने की क्षमता वापस दी। लेकिन यह सब वास्तविकता नहीं, बल्कि एक भ्रम था, जैसा कि पौराणिक प्रोथियस[4713] का था, जो विभिन्न तरीकों से अपना रूप बदलता था: कभी-कभी दो चेहरों के साथ प्रकट होता, कभी-कभी, थोड़ी ही देर बाद, एक बकरी, एक सांप या एक पक्षी में बदल जाता, और अन्य समयों में आग का रूप धारण कर लेता; संक्षेप में, मूर्खों को बहकाने के लिए हर रूप धारण करता। लेकिन प्रभु के महान प्रेरित के लिए साइमन के कर्मों पर एक नज़र डालना ही काफी था – और तुरंत ही साइमन का जादू गायब हो गया।

जहाँ तक जादूगर साइमन के विरुद्ध पवित्र प्रेरित पतरस के संघर्ष का प्रश्न है, मेटाफ्रैस्टस के अलावा, प्रोलाग और ग्रेट मेनायोन-चेती में निम्नलिखित का उल्लेख मिलता है।

जब संत पतरस रोम आए और उन्हें पता चला कि साइमन, जो खुद को मसीह कहता था, लोगों की आँखों के सामने बड़े चमत्कार कर रहा था, तो वे सच्चे ईश्वर के प्रति उत्साह से जलते हुए साइमन के घर के लिए रवाना हो गए, जिसके द्वार पर उन्होंने लोगों की एक बड़ी भीड़ पाई; वे प्रेरित को घर में प्रवेश करने से रोक रहे थे। तब संत पतरस ने कहा:

'तुम मुझे उस धोखेबाज़ जादूगर के पास जाने से क्यों रोक रहे हो?'

'वह कोई जादूगर नहीं है,' भीड़ ने उत्तर दिया, 'बल्कि एक शक्तिशाली देवता है; उसने अपने द्वार पर एक पहरेदार नियुक्त किया है जो मनुष्यों के विचारों को जानता है।'

यह कहकर, उन्होंने पवित्र प्रेरित को द्वार पर लेटे एक काले कुत्ते की ओर इशारा किया, और कहा:

'यह कुत्ता उन सभी को मार डालता है जो साइमन के बारे में झूठ सोचते हैं।'

[4709] ट्रॉय – एक तटीय शहर, जहाँ से यूरोप के लिए समुद्र पार की एक छोटी यात्रा थी। – मैसेडोनिया – उत्तर-पश्चिम में द्वीपसमूह से सटे एक तटीय क्षेत्र।

[4710] फिलिप्पी का शहर, जिसके ईसाइयों को प्रेरित संत पौलुस ने अपना पत्र लिखा था, मैसेडोनिया में, स्ट्रिमोन नदी पर, एजियन सागर से बहुत दूर नहीं स्थित था; यह उस क्षेत्र के सबसे प्रसिद्ध शहरों में से एक था, इसीलिए प्रेरितों के काम की पुस्तक का लेखक इसे उस क्षेत्र के उल्लेखनीय शहरों में सबसे प्रमुख बताता है (प्रेरितों के काम 16:12); फिलिप्पी में चर्च की स्थापना संत पौलुस प्रेरित ने अपनी दूसरी धर्मप्रचार यात्रा के दौरान की थी।

[4711] मैसेडोनिया का एक शहर।

[4712] कोरिंथ – एथेंस के पश्चिम में, एक जलसंधि पर, प्राचीन काल में अपने व्यापक व्यापार के लिए प्रसिद्ध, और उस समय रोमन गवर्नर का केंद्र।

[4713] प्रोटेउस – एक भविष्य बताने वाला, समुद्र में रहने वाला बूढ़ा व्यक्ति, जो समुद्र के देवता पोसाइडन के अधीन पौराणिक ग्रीक देवताओं में से एक था, और जो देवी एम्फिट्राइट के सीलों के झुंड की देखभाल करता था। कहा जाता है कि वह फोरोस या कोर्पाफोस द्वीप पर रहता था, जहाँ वह समुद्र तटीय चट्टानों की छाया में आराम करने के लिए पानी से बाहर निकल आता था। उससे भविष्यवाणी प्राप्त करने के लिए, उसे बल या चालाकी से पकड़ना और थामना पड़ता था, क्योंकि वह विभिन्न रूप धारण कर लेता था, और इस तरह अक्सर उन लोगों को चकमा दे देता था जो उसकी भविष्यवाणियों का इंतजार कर रहे होते थे।

'मैं उसके बारे में सच बोलता हूँ,' संत पतरस ने पुष्टि की, 'साइमन शैतान का है।'

तब, कुत्ते के पास जाकर, प्रेरित ने कहा:

'जाकर साइमन से कहो: मसीह के प्रेरित पतरस तुम्हारे घर में प्रवेश करना चाहते हैं।'

कुत्ता गया और मानव भाषा में बोलकर संत पतरस प्रेरित की आज्ञा साइमन तक पहुँचाई। जो भी कुत्ते को बोलते सुनने वाले थे, वे भय से भर गए। साइमन ने उसी कुत्ते को यह कहकर वापस भेजा:

'पीटर को अंदर आने दो।'

जब पवित्र प्रेरित घर में प्रवेश किए, तो साइमन ने लोगों के सामने, संत पतरस के सामने ही, अपनी जादू-टोना करना शुरू कर दिया। हालाँकि, पवित्र प्रेरित ने मसीह की शक्ति से महान चमत्कार किए। वे वास्तव में क्या थे? इन कई चमत्कारों में से, प्राचीन ग्रीक चर्च के इतिहासकार एगेसिपस, जो प्रेरितों के समय के आसपास रहते थे[4714] , निम्नलिखित महान चमत्कार को याद करते हैं। रोम में, शाही वंश की एक कुलीन विधवा का बेटा कम उम्र में ही मर गया; और उसकी माँ उसके लिए बेइंतहा रोई; जो लोग उस पर तरस खाते थे, उन्होंने उन लोगों को याद किया जो रोम में आए थे—पतरस और साइमन जादूगर—और कैसे उन्होंने मृतकों को जीवित किया था; और इसलिए कुछ लोगों ने पतरस को मृतक के पास आने के लिए बुलाया, जबकि अन्य लोगों ने साइमन को बुलाया। कई कुलीन और आम लोग उस युवक के अंतिम संस्कार के लिए इकट्ठा हुए। और संत पतरस ने साइमन जादूगर से कहा, जो सभी लोगों के सामने अपनी शक्ति का घमंड कर रहा था:

'हम में से जो भी इस मृतक को जीवित कर देगा, उसकी शिक्षा को सत्य माना जाएगा।'

लोगों ने प्रेरित के निर्णय को मंजूरी दे दी। लेकिन साइमन, अपनी जादुई चालाकी पर भरोसा करके, लोगों से बोला:

'अगर मैं इस मृतक को जीवित कर दूँ, तो क्या तुम पतरस को मार डालोगे?'

'हम तुम्हारी आँखों के सामने इस जीवित आदमी को जला देंगे!' लोगों ने चिल्लाकर कहा।

मृतक की तख्ती के पास जाकर, सिमोन ने अपनी जादू-टोना शुरू किया और राक्षसों की मदद से, मृतक के सिर को हिलाने में कामयाब हो गया। तुरंत, भीड़ चिल्लाने लगी कि वह युवक जीवित है - कि उसे मृतकों में से जिला दिया गया है। वे संत पतरस को बिना किसी देरी के खंभे से बाँधकर जलाना चाहते थे। लेकिन प्रेरित ने अपने हाथ से इशारा करके चुप्पी की मांग की; और जब चुप्पी छा गई, तो उन्होंने कहा:

'यदि वह युवक सचमुच जीवित है, तो उसे उठने दो, बोलने दो और चलने दो; लेकिन जब तक आप यह नहीं देखते, तब तक इस बात पर संदेह न करें कि साइमन अपनी जादू-टोने से आपको धोखा दे रहा है।'

सिमोन ने बहुत देर तक शव-शय्या के चारों ओर घूमकर दैवीय शक्ति का आह्वान किया, लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ; फिर वह शर्म के मारे भागना चाहता था; लेकिन भीड़ ने उसे रोक लिया। और सेंट पीटर, जो सच्चे चमत्कार करने वाले थे, जिन्होंने ताबिथा को मृतकों में से जीवित कर दिया था और कई अन्य शानदार चमत्कार किए थे, थोड़ी दूरी पर खड़े होकर, उन्होंने अपनी आँखें और हाथ स्वर्ग की ओर उठाए, और प्रार्थना करना शुरू कर दिया:

'हे प्रभु यीशु मसीह, जिन्होंने हमें आपके नाम पर मरे हुओं को जिलाने की आज्ञा दी है, मैं आपसे विनती करता हूँ, इस युवक को जीवित कर दें, ताकि यहाँ इकट्ठा हुए लोग जान जाएँ कि आप ही सच्चे परमेश्वर हैं और आपके सिवा और कोई नहीं है, जो पिता और पवित्र आत्मा के साथ युगानुयुग जीवते और राज्य करते हैं। आमीन।'

इस प्रार्थना के बाद, उन्होंने मृतक से पुकारा:

– युवक! उठ जा – मेरे प्रभु यीशु मसीह तुम्हें चंगा कर रहे हैं और मरे हुओं में से जिला रहे हैं।

और उसी घड़ी मरे हुए ने अपनी आँखें खोलकर उठ खड़ा हुआ और बोलने लगा।

एगेसिपस के इस वृत्तांत को मार्सेलस द रोमन ने पूरक बनाया है, जो शुरू में साइमन द मैगस का शिष्य था, जिसे बाद में पवित्र प्रेरित पतरस द्वारा पवित्र विश्वास और पवित्र बपतिस्मा के माध्यम से ज्ञान प्रदान किया गया। पवित्र

[4714] एगेसिपस *मेमोराबिलिया* के लेखक थे, जो पाँच पुस्तकों की एक रचना थी, जो अब उपलब्ध नहीं है। उनके जीवन और कार्य के बारे में जानकारी, यद्यपि बहुत खंडित है, 'चर्च इतिहास के पिता' कहे जाने वाले सेसरेया के बिशप यूसेबियस द्वारा प्रदान की गई है। वे बताते हैं कि हेगेसिपस यहूदी मूल का एक ईसाई था जो दूसरी शताब्दी में रहता था; वह कोरिथ और रोम की यात्रा पर गया, जहाँ उसने बहुत लंबे समय तक निवास किया, वहाँ कई बिशपों से मिला और उनके साथ सिद्धांतगत मामलों पर चर्चा की। एगेसिपस की मृत्यु कोमोडस (180–192) के शासनकाल में हुई। एगेसिपस के कार्य की सामग्री और प्रकृति के बारे में कुछ निश्चित कहना मुश्किल है; केवल इतना ही कहा जा सकता है कि पूरी संभावना है, यह ऐतिहासिक और व्याख्यात्मक प्रकृति का था, जो ग्नॉस्टिक विधर्म के खिलाफ निर्देशित था।

शहीदों नीरो और आर्चलियिस को लखि अपने पत्र में, मार्सेलस पवत्रि प्रेरति द्वारा मृतकों में से जीवति कएि गए युवक के बारे में बताते हैं:

वह युवक, संत पतरस के चरणों में गरिकर, चलि्लाया:

'मैंने प्रभु यीशु को स्वर्गदूतों को आज्ञा देते देखा कि वे मुझे तुम्हारी मध्यस्थता से मेरी वधिवा माँ के पास वापस ले जाएँ।'

तब सारी भीड़ चलि्लाने लगी:

'ईश्वर केवल एक ही है, और वह वही है जसिकी पतरस ने गवाही दी!'

जादूगर समिोन अपनी शैतानी शक्ति का उपयोग करके अपना सरि कुत्ते के सरि में बदलकर भाग गया; फरि भी, लोगों ने उसे पकड़ लयिा, कुछ उसे पत्थर मारना चाहते थे, और कुछ उसे जलाना चाहते थे। लेकनि पवत्रि प्रेरति पतरस ने इसका वरिोध करते हुए कहा:

'हमारे प्रभु और स्वामी ने हमें बुराई का बदला बुराई से चुकाने की आज्ञा नहीं दी है – उसे जाने दो; उसे जहाँ वह चाहे वहाँ जाने दो: उसने पर्याप्त अपमान, नदिा और यह एहसास झेला है कि उसका जादू-टोना शक्तहिीन है।'

मार्सेलस बताते हैं, 'एक बार जब साइमन को रहिा कर दयिा गया, तो वह मेरे पास आया, यह मानते हुए कि मुझे उस चमत्कारकि घटना के बारे में कुछ भी पता नहीं है। साइमन ने एक वशिाल कुत्ते को लोहे की ज़ंजीर से मेरे घर के दरवाज़े से बाँध दयिा और मुझसे कहा:

उसने कहा, 'मैं देखूँगा कि क्या पीटर हमेशा की तरह तुम्हारे पास आता है।'

और एक घंटे बाद, संत पतरस दरवाज़े पर आए, कुत्ते को खोल दयिा, और उससे कहा:

'जाकर साइमन जादूगर से कहो: उन लोगों को राक्षसी शक्ति से बहकाना बंद कर दे, जनिके लएि मसीह ने अपना लहू बहाया।'

कुत्ता गया और, मानो कोई इंसान हो, उसने प्रेरति के शब्द साइमन तक पहुँचाए। यह सुनकर (मार्सेलस कहते हैं), मैं संत पतरस से मलिने के लएि दौड़ा और उन्हें सम्मानपूर्वक अपने घर में स्वागत कयिा; जहाँ तक साइमन और कुत्ते की बात है, मैंने उन्हें बाहर नकिाल दयिा। हालाँकि, कुत्ते ने कसिी और को नुकसान नहीं पहुँचाया, वह खुद सीमोन पर झपट पड़ा और उसे अपने दाँतों से पकड़कर ज़मीन पर पटक दयिा। खड़िकी से यह सब देखकर, संत पतरस ने मसीह के नाम पर कुत्ते को सीमोन के शरीर को छूने से मना कर दयिा। उस कुत्ते ने जादूगर के शरीर को छुए बनिा, उसके सारे कपड़े फाड़ डाले, जसिसे वह पूरी तरह से नग्न रह गया। यह देखकर, भीड़ ने साइमन पर चलि्लाते हुए उसका मज़ाक उड़ाया और उसे गालयिाँ दीं; और फरि उसे कुत्ते के साथ शहर से बाहर नकिाल दयिा गया। ऐसी लज्जा और अपमान के कारण, साइमन ने पूरे एक साल तक रोम में अपना चेहरा नहीं दखिाया – जब तक कि क्लॉडयिस के उत्तराधकिारी, नीरो ([4715]), एक अधर्मी शासक, ने दुष्ट लोगों से उस दुर्भावनापूर्ण जादूगर की प्रशंसा सुनी; नीरो ने साइमन को खोजा, उसे बहुत पसंद कयिा, और उसे एक दोस्त के रूप में अपने करीब खींच लयिा।

इसके अलावा, प्रोलॉग और ग्रेट मेनायोन भी समिोन द मैगस के बारे में नम्निलखिति का उल्लेख करते हैं।

समिोन द मैगस ने आदेश दयिा कि उसकी तलवार से गर्दन काट दी जाए, और तीसरे दनि फरि से जी उठने का वादा कयिा; लेकनि अपनी जगह, उसने तलवार के नीचे एक नर भेड़ को रख दयिा, जसिमें उसने मनुष्य के रूप में प्रकट होने की क्षमता प्रदान की थी; इस प्रकार जादूगर की जगह उस नर भेड़ की गर्दन काट दी गई। हालाँकि, संत पतरस ने दुष्ट भ्रम को भगाकर, साइमन के झूठ का पर्दाफाश कर दयिा: सभी ने देखा कि सरि कलम कयिा गया साइमन नहीं बल्कि एक नर भेड़ था।

जहाँ तक जादूगर पर संत पीटर की अंतमि वजिय का सवाल है, जसिके कारण जादूगर का पतन हुआ, सभी ववरिण नम्निलखिति बातों पर सहमत हैं।

पवत्रि प्रेरति पतरस को कसिी भी तरह से हराने में असमर्थ, और अब शर्म और अपमान को सहन न कर पाते हुए, जादूगर ने स्वर्ग में आरोहण करने की कसम खाई। अपनी सेवा में लगे सभी राक्षसों को इकट्ठा करके, साइमन ने अपने सरि पर लौरल का हार पहनकर, रोम शहर के केंद्र में एक ऊंची इमारत पर आया; उस पर चढ़कर, उसने इमारत की ऊंचाई से लोगों से गुस्से में बात करना शुरू कर दयिा:

[4715] सम्राट 54–68 ईस्वी।

'चूंकि तुम, रोमनों, आज भी अपनी मूर्खता पर अड़े हो और, मुझे त्यागकर, पीटर का अनुसरण करते हो, मैं भी तुम्हें त्याग दूँगा; मैं अब इस शहर की रक्षा नहीं करूँगा, बल्कि मैं अपने स्वर्गदूतों को आज्ञा दूँगा कि वे तुम्हारी आँखों के सामने मुझे अपनी बाहों में उठा लें, और मैं स्वर्ग में अपने पिता के पास चढ़ जाऊँगा, जहाँ से मैं तुम्हारे ऊपर बड़ी-बड़ी सज़ाएँ भेजूँगा क्योंकि तुमने मेरी बातों पर ध्यान नहीं दिया और मेरे कामों पर विश्वास नहीं किया।"

यह कहकर, जादूगर ने तालियाँ बजाईं और हवा में कूद पड़ा; राक्षसों के सहारे, वह हवा में उड़ने लगा, ऊपर की ओर उठता गया। लोग, हालांकि, बड़ी हैरानी में, एक-दूसरे से कहने लगे:

'यह ईश्वर का कार्य है – देह में हवा में उड़ना!'

तब महान प्रेरित पतरस ने परमेश्वर से ऊँचे स्वर में प्रार्थना करना शुरू किया, ताकि सभी सुन सकें:

'हे प्रभु यीशु मसीह, मेरे परमेश्वर! इस जादूगर के छल को उजागर कर, कहीं ऐसा न हो कि जो तुझ पर विश्वास करते हैं, वे भटक जाएँ!'

और फिर वह चिल्लाया:

– 'हे राक्षसों! मैं तुम्हें मेरे ईश्वर के नाम की आज्ञा देता हूँ: उसे और आगे मत ले जाओ, बल्कि उसे वहीं छोड़ दो जहाँ वह अभी हवा में है।'

और तुरंत ही राक्षसों ने प्रेरित की आज्ञा का पालन करते हुए, साइमन को हवा में लटका हुआ छोड़ दिया; और वह शापित जादूगर धरती पर गिर पड़ा, ठीक वैसे ही जैसे शैतान को एक बार स्वर्ग से फेंका गया था, और गिरकर चकनाचूर हो गया। इस दृश्य को देखने के लिए उपस्थित लोग बहुत देर तक चिल्लाते रहे:

'महान है वह ईश्वर जिसका प्रचार पतरस ने किया, और सचमुच उसके सिवाय कोई दूसरा ईश्वर नहीं है!'

जहाँ तक उस गिरे हुए जादूगर का सवाल है, यद्यपि वह बुरी तरह घायल था, परन्तु ईश्वर की व्यवस्था से वह जीवित था, ताकि वह शापित राक्षसों और अपनी अपनी शक्तिहीनता को पहचान सके, लज्जित हो सके, और सर्वशक्तिमान ईश्वर की शक्ति को समझ सके। अपने अंग-प्रत्यंग टूटने के कारण, वह जमीन पर पड़ा था, और उसे अकथनीय यातनाएँ हो रही थीं; और अगली सुबह, पीड़ा में, उसने अपनी अशुद्ध आत्मा को बाहर निकाल दिया, और उसे राक्षसों के हाथों सौंप दिया, जो उसे नरक में उनके पिता शैतान के पास ले गए। जहाँ तक संत पतरस का सवाल है, साइमन के पतन के बाद, वे एक ऊँची जगह पर खड़े हुए और अपने हाथ से चुप्पी का संकेत देकर, लोगों को सच्चे ईश्वर के बारे में सिखाने लगे; और अपने लंबे प्रवचन के माध्यम से उन्होंने कई लोगों को ईसाई धर्म में परिवर्तित किया।

अपने मित्र की शर्मनाक मृत्यु के बारे में जानकर, सम्राट नीरो संत पतरस पर अत्यधिक क्रोधित हो गया और उसे मारना चाहता था। लेकिन, जैसा कि संत मेटाफ्रास्टस बताते हैं, क्रोधित सम्राट ने संत प्रेरित पतरस के खिलाफ अपने दुर्भावनापूर्ण इरादे को तुरंत नहीं बल्कि कई साल बाद ही पूरा किया। साइमन द मैगस की मृत्यु के बाद, संत पतरस रोम में अधिक समय तक नहीं रुके; कई लोगों को धर्मांतरित और बपतिस्मा देने, चर्च को मजबूत करने और लिनस को बिशप नियुक्त करने के बाद, वे रोम से टार्रासिना[4716] के लिए रवाना हो गए, जहाँ उन्होंने एफाफ्रोडिटस (ऊपर उल्लेख किए गए व्यक्ति से अलग) को बिशप नियुक्त किया।

स्पेन के एक शहर सिरिमियम में पहुँचने और वहाँ एपेनेटस को बिशप नियुक्त करने के बाद, वे अफ्रीका में कारथेज चले गए, जहाँ उन्होंने क्रिस्केन्स को बिशप नियुक्त किया। मिस्र पहुँचने पर, उन्होंने वहाँ बिशप नियुक्त किए: रूफस को सात द्वारों वाली थीब्स में, और सुसमाचार लेखक मार्क को अलेक्जेंड्रिया में। फिर, दिव्य प्रकाशन द्वारा, वह परमेश्वर की माता, सर्व पवित्र कुँवारी मरियम के निद्रोत्सव के दिन यरूशलेम में थे, और एक बार फिर मिस्र लौट आए। अफ्रीका होते हुए, वह रोम पहुँचे, जहाँ से वह मेडिओलानम[4717] गए, और फिर फोтика गए, जहाँ उन्होंने बिशपों और पुरोहितों का अभिषेक किया। ब्रिटेन[4718] की यात्रा करने के बाद, वह वहाँ लंबे समय तक रहे, और उन्होंने कई लोगों को ईसाई धर्म की ओर आकर्षित किया। ब्रिटेन में, पवित्र प्रेरित पतरस को एक स्वर्गदूत का दर्शन हुआ, जिसने उनसे कहा:

[4716] टैरासिना या टैराकोन – पिरेनीस और आयरिश प्रायद्वीप के बीच स्पेन के पूर्वी तट पर, टुल्सिज नदी पर स्थित एक प्राचीन आइबेरियन बस्ती।

[4717] यह संभवतः गॉल में स्थित था।

[4718] ब्रिटानिया नाम से, प्राचीनों का मूल रूप से तात्पर्य जर्मन सागर और अटलांटिक महासागर के बीच गॉल के उत्तर में स्थित सभी द्वीपों से था। ब्रिटानिया शब्द का उपयोग मुख्य रूप से इनमें से सबसे बड़े द्वीप के लिए किया जाता था, जिसका स्वदेशी नाम अल्बियन था।

'पतरस! इस जीवन से तुम्हारे प्रस्थान का समय समीप आ गया है। तुम्हें रोम जाना चाहिए, जहाँ सूली पर मृत्यु भोगकर, तुम प्रभु मसीह से एक योग्य पुरस्कार प्राप्त करोगे।'

ईश्वर का धन्यवाद करने के बाद, संत पतरस प्रकट होने के कई दिनों बाद तक ब्रिटेन में रहे, उन्होंने चर्चों को मजबूत किया और बिशपों, पुरोहितों और डिकन्स की नियुक्ति की। नीरो के शासन के बारहवें वर्ष में, वह रोम पहुँचे और क्लीमेंट को चर्च के प्रशासन में सहायता करने के लिए बिशप नियुक्त किया, हालांकि क्लीमेंट ने ऐसा बोझ अपने ऊपर लेना नहीं चाहकर मना कर दिया। प्रेरित की उपदेशों पर ध्यान देते हुए, क्लेमेंट ने, एक आज्ञाकारी पुत्र की तरह, मसीह के जुए के नीचे अपनी गर्दन झुकाई और, अपने शिक्षक और अन्य पवित्र पुरुषों के साथ, परमेश्वर के वचन की रथ को खींचा। और रोम में कई कुलीन और प्रतिष्ठित पुरुष और महिलाएं विश्वास और पवित्र बपतिस्मा द्वारा प्रबुद्ध हुए। अब सम्राट नीरो की दो असाधारण सुंदर पत्नियाँ थीं, जिन्हें वह अपनी सभी अन्य रखेलियों से अधिक प्यार करता था। पवित्र विश्वास को अपनाने के बाद, उन्होंने एक पवित्र जीवन जीने का संकल्प लिया और सम्राट की कामुक इच्छाओं के आगे झुकने से इनकार कर दिया। हालाँकि वह—एक अत्यंत नर्सिज्ज और अतृप्त व्यभिचारी—इस बात से सभी विश्वासियों की कीसिया पर, और विशेष रूप से प्रेरित पतरस पर क्रोधित हो गया—जो उपर्युक्त महिलाओं के मसीह के प्रति परिवर्तित होने के लिए जिम्मेदार था, जिन्होंने पवित्र जीवन जीना शुरू कर दिया था (सम्राट को अपने प्रिय मित्र साइमन द मैगस की मृत्यु भी याद आई)—और उसने संत पतरस को मृत्युदंड देने के लिए ढूँढ़ना शुरू कर दिया। उपरोक्त चर्च इतिहासकार एगेसिपस बताते हैं कि जब संत पतरस को मारने के लिए ढूंढा जा रहा था, तो विश्वासियों ने उनसे, बहुत से लोगों की खातिर, छिप जाने - रोम छोड़कर चले जाने का आग्रह किया। प्रेरित किसी भी परिस्थिति में इसके लिए सहमत नहीं हुए, क्योंकि वे मसीह के लिए दुख सहने और मरने की इच्छा रखते थे; जबकि विश्वासियों ने रोते हुए प्रेरित से अपने जीवन की रक्षा करने का आग्रह किया, जो पवित्र चर्च के लिए बहुत आवश्यक था, जो अविश्वासियों के बीच आपदा की लहरों से जूझ रहा था। अपने पूरे झुंड की आँसुओं भरी विनतियों के आगे झुकते हुए, संत पतरस ने शहर के बाहर छिपने का वादा किया, और अगली रात, सामूहिक प्रार्थना के बाद सभी को अलविदा कहकर, वे अकेले चल पड़े। और जब वे शहर के द्वार पर पहुँचे, तो उन्होंने प्रभु यीशु मसीह को शहर में अपनी ओर आते हुए देखा; उनके सामने झुकते हुए, संत पतरस ने पूछा:

'प्रभु, आप कहाँ जा रहे हैं?'

प्रभु ने उत्तर दिया, 'मैं रोम जा रहा हूँ ताकि मुझे फिर से सूली पर चढ़ाया जाए,' और वे अदृश्य हो गए।

हैरान रह गए प्रेरित को एहसास हुआ कि मसीह, जो अपने सेवकों में वैसे ही पीड़ित होते हैं जैसे अपने सच्चे अंगों में, रोम में अपने ही शरीर में भी पीड़ा सहना चाहते थे। इसलिए, वह फिर से विश्वासियों के पास लौट आए और सैनिकों द्वारा उन्हें मृत्यु के घाट उतारने के लिए ले जाया गया। संत मेटाफ्रास्टस कहते हैं कि संत पतरस को अकेले नहीं, बल्कि विश्वासियों की एक भीड़ के साथ लिया गया था, जिनमें क्लेमेंट, हेरोडियन और ओलंपस शामिल थे; उनके यातनाकर्ता ने उन्हें तलवार से सिर कलम करने और पवित्र प्रेरित पतरस को सूली पर चढ़ाने की सजा सुनाई। सजा पाए हुए पुरुषों को पकड़ने के बाद, सैनिकों ने उन्हें फांसी के स्थान पर ले गए; उन्होंने सम्राट के रिश्तेदार होने के कारण क्लेमेंट को छोड़ दिया और उसे मुक्त कर दिया; लेकिन हेरोडियन और ओलंपस, जो प्रेरित पतरस के साथ रोम आए थे, को कई विश्वासियों के साथ तलवार से मार डाला गया। हालाँकि, संत पतरस ने अपने जल्लादों से विनती की कि वे उसे उल्टा सूली पर चढ़ाएँ, इस प्रकार अपने प्रभु का सम्मान किया, जिन्हें अपनी इच्छा से सूली पर चढ़ाया गया था - वह सूली पर चढ़ाए जाने के तरीके में उनसे समान नहीं होना चाहते थे, बल्कि उनके चरणों में सिर झुकाना चाहते थे। इस प्रकार प्रभु के महान प्रेरित, संत पतरस का, क्रूस पर अपनी मृत्यु के माध्यम से ईश्वर की महिमा करते हुए निधन हुआ: अपने हाथों और पैरों में ठोक दिए गए कीलों से महान यातना सहते हुए, उन्होंने 29 जून[4719] को अपना निर्दोष आत्मा ईश्वर के हाथों में सौंप दिया। उनके

[4719] संत पेत्रुस प्रेरित का निधन 67 ईस्वी में, संत पौलुस प्रेरित के साथ ही हुआ। संत पेत्रुस प्रेरित को वैटिकन हिल पर दफनाया गया था, जबकि संत पौलुस प्रेरित को रोम के पास, ओस्टियन मार्ग के पास दफनाया गया था। रोमन चर्च की परंपरा के अनुसार, दोनों प्रेरितों की खोपड़ियाँ रोम में लेटेरन बेसिलिका में रखी गई हैं; संत पीटर का शरीर संत पीटर बेसिलिका में विश्राम करता है, जबकि संत पॉल का शरीर ओस्टियन वे पर उनके उपनगरीय चर्च में स्थित है। – संत पतरस प्रेरित से, पवित्र चर्च के पास एक कीमती विरासत के रूप में उनकी दो पत्रिकाएँ हैं; इनमें से, पहली लगभग 65 ईस्वी में बेबीलोन में लिखी गई थी, और दूसरी रोम में उनकी मृत्यु से कुछ समय पहले लिखी गई थी। इन पत्रों में, प्रेरित संत पतरस ईसाइयों से आग्रह करते हैं कि वे एक सख्त, पवित्र और संयमित जीवन जिएँ, जो उनके उच्च बुलावे के योग्य हो, और उन्हें मूर्तिपूजा के प्रलोभनों और भविष्य के झूठे शिक्षकों की शिक्षाओं से भटकने के खिलाफ चेतावनी देते हैं।

शष्यि, संत क्लेमेंट ने, प्रेरति के शरीर का अनुरोध करने के बाद, उसे क्रूस से उतार लयिा, उसे छपिा दयिा, और शेष वशि्वासयिों और पवत्रि पुरुषों को बुलाकर, उसे सम्मान के साथ दफनाया; इसी प्रकार, हेरोडयिन, ओलंपस और अन्य वशि्वासयिों, जन्हिोंने उनके साथ कष्ट सहे थे, के शवों को सम्मानपूर्वक दफनाया गया, और मसीह परमेश्वर की महमिा की गई, जो पतिा और पवत्रि आत्मा के साथ सदा-सदा महमिामय है। आमीन।

पवत्रि, महमिामय और सर्व-स्तुत्य प्रधान प्रेरति पौलुस का जीवन, कर्म और शहादत

29 जून को स्मरणोत्सव

पवत्रि प्रेरति पौलुस, जन्हिें प्रेरतित्व प्राप्त करने से पहले शाऊल के नाम से जाना जाता था[4720] , जन्म से यहूदी थे, बन्यिामीन गोत्र के; उनका जन्म कीलकियिा के तार्सस में कुलीन माता-पतिा के यहाँ हुआ था, जो पहले रोम में रहते थे लेकनि बाद में कीलकियिा के तार्सस में आ गए थे[4721] , और उन्हें रोमन नागरकि होने का सम्मान प्राप्त था; इसी कारण से, पौलुस को भी एक रोमन नागरकि कहा जाता था। वह पहले शहीद संत स्टीफन के रश्तिेदार थे और (संभवतःउनके साथ) उन्हें उनके माता-पतिा द्वारा यरूशलेम में मूसा की व्यवस्था का अध्ययन करने के लिए भेजा गया था; वहाँ वे यरूशलेम में प्रसद्धि शकि्षक गमलीएल के शष्यिों में से एक थे। उनके सहपाठी और मत्रि बरनबास थे, जो बाद में मसीह के प्रेरति बने। साउल ने पूर्वजों की व्यवस्था का गहराई से अध्ययन कयिा, उसका एक महान अनुयायी बन गया, और फरीसयिों के दल में शामलि हो गया (जो सभी पारंपरकि और बाहरी रूप से धार्मकि चीजों के लिए कट्टर उत्साही थे)।

उस समय, यरूशलेम और आसपास के नगरों और क्षेत्रों में, पवत्रि प्रेरति मसीह का सुसमाचार फैला रहे थे; और वे अक्सर फरीसयिों और सदूकयिों (जो परंपरा को अस्वीकार करते थे और आत्मा की अमरता में वशि्वास नहीं करते थे) और सभी यहूदी धर्मशास्त्रयिों और व्यवस्था के शकि्षकों के साथ लंबे ववािदों में लगे रहते थे, जो लगातार मसीह के प्रचारकों से नफरत करते थे और उनका उत्पीड़न करते थे। साऊल भी पवत्रि प्रेरतिों से घृणा करता था; वह मसीह के वषिय में उपदेश सुनना भी पसंद नहीं करता था, उसने बरनबास (जो पहले ही मसीह का प्रेरति बन चुका था) का मज़ाक उड़ाया, और प्रभु मसीह के वरिुद्ध अपमानजनक बातें कीं। और जब पवत्रि प्रथम शहीद स्तेफन को यहूदयिों द्वारा पत्थर मारे जा रहे थे, तो शाऊल न केवल अपने ही कुल के एक व्यक्तकि नर्दिोष रूप से बहते हुए रक्त पर कोई दया नहीं दखिाया, बल्कि उसने हत्या को भी मंजूरी दी और स्तेफन को पत्थर मार रहे यहूदयिों के कपड़ों की रखवाली की। इसके बाद, यहूदी महापुजारयिों और बुज़ुर्गों से अनुमतिप्राप्त करके, उसने चर्च (वशि्वासयिों की सभा) पर और भी अधकि क्रूरता से अत्याचार कयिा, घरों में घुसकर पुरुषों और महलिाओं को पकड़कर उन्हें जेल भेज दयिा। यरूशलेम में वशि्वासयिों को सताने से संतुष्ट न होकर, और प्रभु के शष्यिों के वरिुद्ध धमकयिाँ और हत्या की साजशिें रचते हुए, वह दमश्कि के लिए रवाना हुआ[4722] , और उसने महायाजक से सभा-घरों के लिए पत्र लिए थे, ताकि वहाँ भी, जो कोई भी मसीह में वशि्वास

[4720] साउल एक हब्रिू नाम है जसिका अर्थ है 'इच्छति' या 'प्रार्थना कयिा गया'; पौलुस एक रोमन नाम है जसिका अर्थ है 'छोटा'। कुछ वद्विानों का मानना है कि वह एक लंबे समय से प्रतीक्षति, पहला जन्मा पुत्र था और एक रोमन नागरकि के रूप में, अपने पतिा के नाम के बाद, उसे जन्म के समय ही दोनों नाम मलि थे। हालांकि, रोस्तोव के संत दमित्रिी, संत जॉन क्राइसोस्टोम, एम्ब्रोज़ और अन्य लोगों की राय का पालन करते हुए, मानते हैं कि साउल का नाम उनके बपतस्मिा के क्षण में ही पॉल रखा गया था। हालाँकि, प्रेरतिों के काम की पुस्तक में, इस बात का कोई उल्लेख नहीं है कि यह नाम परविर्तन कब या क्यों हुआ।

[4721] तार्सस – एक समय में दक्षणि-पूर्वी एशयिा माइनर का एक बड़ा और घनी आबादी वाला शहर, सलिसियिा प्रांत की राजधानी, जो भूमध्य सागर से बहुत दूर नहीं, सडिनस नदी पर स्थति था। आज भी, यह 40,000 की आबादी के साथ एक महत्वपूर्ण वाणज्यिकि केंद्र बना हुआ है।

[4722] दमश्कि दुनयिा के सबसे पुराने शहरों में से एक है। राजा दाऊद के समय में ही, यह एक स्वतंत्र राज्य की राजधानी थी; मसीह के जन्म से पहले ही, यह रोमन शासन के अधीन आ गया था। प्रभु के शष्यिों द्वारा, जो स्तेफन पर पत्थर फेंके जाने के बाद बखिर गए थे, यहाँ ईसाई धर्म की स्थापना की गई थी। दमश्कि के सनिेगॉग (यहूदी प्रार्थनाघर) यरूशलेम के महापुजारी के अधकिार के अधीन थे; नागरकि अधकिारयिों ने यहूदयिों के धार्मकि मामलों में हस्तक्षेप नहीं कयिा। दमश्कि में, लोग आज भी उस घर को दखिाते हैं जहाँ प्रेरति पौलुस का बपतस्मिा हुआ था, और उस जगह को भी जहाँ से उन्हें दीवार से नीचे उतारा गया था। 1516 में, दमश्कि को ओटोमन साम्राज्य में शामलि कर लयिा गया; आज यह 200,000 की आबादी वाला एक बहुत समृद्ध और अमीर शहर है। यह यरूशलेम के उत्तर-पूर्व में, लगभग 200 वर्स्ट दूर, सीरयिा में, एंटी-लेबनान पहाड़ों की तलहटी में स्थति है।

करता हुआ मिले, चाहे पुरुष हों या महिलाएँ, उन्हें बाँधकर यरूशलेम ले आ सके। यह घटना टिबेरियस के शासनकाल के दौरान हुई[4723] ।

[4724]जब साऊल दमश्क के पास पहुँचा, तो अचानक स्वर्ग से एक प्रकाश उसके चारों ओर चमक उठा (इतना अचानक, इतना तीव्र और इतना चकाचौंध करने वाला कि वह जमीन पर गिर पड़ा), और उसी क्षण उसने एक आवाज़ सुनी जो उससे कह रही थी: 'साऊल, साऊल! तू मुझे क्यों सता रहा है?' वह आश्चर्य से भरकर पूछा, 'प्रभु, आप कौन हैं?' प्रभु ने उत्तर दिया, 'मैं वही यीशु हूँ, जिन्हें तुम सता रहे हो; काँटों के खिलाफ पैर पटकना तुम्हारे लिए कठिन है' (प्रेरितों के काम 9:5)। साउल, भय से काँपते हुए, पूछा, 'प्रभु, आप मुझसे क्या करवाना चाहते हैं?' और प्रभु ने कहा, 'उठकर नगर में जा; वहाँ तुझे बताया जाएगा कि तुझे क्या करना है' (प्रेरितों के काम 9:4-6)।

साल के साथ यात्रा कर रहे सैनिक भी भय से भर गए; एक असाधारण प्रकाश से चकाचौंध होकर, वे स्तब्ध खड़े रह गए: उन्होंने साल से बात करती हुई वह आवाज़ सुनी, परन्तु किसी को देखा नहीं।

प्रभु की आज्ञा से, साउल जमीन से उठ खड़ा हुआ, और यद्यपि उसकी आँखें खुली थीं, वह किसी को नहीं देख सका: उसकी शारीरिक आँखों पर अँधापन छा गया था, लेकिन उसकी आध्यात्मिक आँखें देखने लगी थीं।

सौल के साथी और सहायक उसे हाथ से थामकर दमश्क में ले गए; वहाँ वह तीन दिन तक कुछ भी न देखता रहा, और पश्चाताप की भावना में न तो कुछ खाया और न पिया, बल्कि यह प्रार्थना करता रहा कि प्रभु अपनी इच्छा उसे प्रकट करें।

दामास्कस में पवित्र प्रेरित अननियस[4725] थे, जिन्हें प्रभु ने एक दर्शन में प्रकट होकर आज्ञा दी कि वे साऊल को खोजें, जो यहूदा नामक एक व्यक्ति के घर में ठहरे हुए थे, और उस पर हाथ रखकर उसकी शारीरिक आँखें खोलें, और पवित्र बपतिस्मा के द्वारा उसकी आध्यात्मिक आँखें खोलें।

प्रेरित ने उत्तर दिया: 'प्रभु, मैंने बहुतों से इस मनुष्य के विषय में सुना है, कि उसने यरूशलेम में आपके पवित्र जनों[4726] को कितना कष्ट पहुँचाया है; और यहाँ भी उसे महापुजारियों से अधिकार मिला हुआ है कि वह आपके नाम का आह्वान करनेवालों को सबको बंद कर दे।' परन्तु प्रभु ने उससे कहा: 'जा, क्योंकि वह मेरी चुनी हुई पात्र है, जो मेरी आज्ञा का प्रचार राष्ट्रों, राजाओं और इस्राएल के पुत्रों के सामने करेगा। और मैं उसे दिखाऊँगा कि उसे मेरे नाम के कारण कितना दुख सहना होगा'[4727] ।

संत अनन्ययाह, प्रभु की आज्ञा से निकलकर, जब साऊल को पाया, तो उस पर हाथ रखा: और तुरंत, मानो उसकी आँखों से पर्दा उठ गया हो, वह अचानक देखने लगा; और उठकर, बपतिस्मा लिया और पवित्र आत्मा से भर गया, जिसने उसे प्रेरितीय सेवा के लिए समर्पित किया, और उसका नाम साउल से पौलुस रखा गया, और उसने तुरंत ही यहूदी सभा-घरों में यीशु के विषय में प्रचार करना आरंभ किया, कि वह परमेश्वर का पुत्र है[4728] ।

और जो कोई भी यह सुन रहा था, वे चकित रह गए (मसीह की कलीसिया के उत्पीड़क के इस हृदय परिवर्तन पर) और कहने लगे:

'क्या यह वही आदमी नहीं है जो यरूशलेम में इस नाम के पुकारने वालों को सताता था? और क्या वह इसी उद्देश्य से यहाँ नहीं आया है, कि उन्हें गिरफ्तार करके मुख्य याजकों के पास ले जाए?' (प्रेरितों के काम 9:21)

[4723] टिबेरियस ईस्वी 14 से ईस्वी 37 तक एक रोमन सम्राट था। यीशु मसीह को उनके शासनकाल के दौरान ही सूली पर चढ़ाया गया था।

[4724] 'To go against the grain' – एक लोक कहावत है जो एक अजेय, दिव्य शक्ति का विरोध करने के प्रयासों की व्यर्थता को व्यक्त करती है।

[4725] अनानियस – यहूदी मूल के एक ईसाई, जिन्हें बाद में दमश्क का बिशप नियुक्त किया गया, जिन्होंने एलेउथेरोपोलिस (यरूशलेम और गाजा के बीच) में पत्थर मारकर शहादत प्राप्त की। – उनका पर्व दिवस 1 अक्टूबर है।

[4726] 'आपके संत' – इस प्रकार ईसाइयों को पहली बार बुलाया गया था, क्योंकि मसीह में उनकी पवित्रता, उनका निर्दोष जीवन और उनके आपसी प्रेम के कारण।

[4727] 'अन्यजातियों के सामने' – उन्हें इस बात का संकेत देने के लिए सामने रखा गया है कि पौलुस मुख्य रूप से उनके बीच उपदेशक होगा। 'मैं उसे बताऊँगा' – यह अननियस के लिए प्रभु के आश्वासन के शब्द हैं; इनका अर्थ है: जाओ, डरो मत: अब कोई भी मसीही साऊल के हाथों पीड़ित नहीं होगा; इसके विपरीत, वह स्वयं मेरे नाम के लिए पीड़ित होगा।

[4728] 'उस पर हाथ रखा' – यह उसके बपतिस्मा से पहले ही उस पर प्रभु की कृपा के प्रदान किए जाने का संकेत है: पौलुस से संबंधित सब कुछ, यद्यपि एक मनुष्य के द्वारा किया गया था, वास्तव में परमेश्वर स्वयं ने ही पूरा किया था। – 'उसकी आँखों से पर्दा उठ गया': यह केवल पौलुस की आंतरिक अनुभूति थी; उसे ऐसा प्रतीत हुआ मानो उसकी आँखों से पर्दा उठ गया हो। उसके तुरंत बाद दमश्क में उसका प्रचार, उसके उत्साही स्वभाव और मसीह में विश्वास को पूरे मन से स्वीकार करने को दर्शाता है।

पर सऊल वशि्वास में दनि-प्रतदिनि अधकि दृढ़ होता गया और दमशि्क में रहने वाले यहूदयिों को नरिुत्तर कर दयिा, यह साबति करते हुए कि यह व्यक्ति मसीह (अर्थात् वादा कयिा गया मसीहा) है। अंत में यहूदी उससे भर-भरकर क्रोधति हो गए; उन्होंने उसे मार डालने का नशि्चय कयिा और दनि-रात नगर के द्वारों पर पहरा देते रहे, ताकि वह उनसे भाग न सके। यीशु के चेलों ने, जो अननयिस के साथ दमशि्क में थे, यहूदयिों की पौलुस को मारने की साज़शि के बारे में जानकर, उसे ले लयिा और रात में शहर की दीवार से सटे एक घर की खड़िकी से एक टोकरी में उतार दयिा। दमशि्क छोड़ने के बाद, वह सीधे यरूशलेम नहीं गया, बल्कि पहले अरब गया[4729] , जैसा कि वह स्वयं गलातयिों के नाम अपने पत्र में लखिते हैं: *'उस समय मैंने कसिी मनुष्य से परामर्श नहीं कयिा, और न ही मैं अपने से पहले के प्रेरतिों से मलिने यरूशलेम गया, बल्कि मैं अराबयिा में गया, और फरि दमशि्क लौट आया। फरि, तीन वर्ष बाद, मैं पतरस से मलिने यरूशलेम गया'* (गला. 1:16–18)।

यरूशलेम पहुँचने पर, संत पौलुस प्रभु के शष्यिों के साथ जुड़ना चाहते थे, लेकनि वे उनसे सतर्क थे, और यह वशि्वास नहीं कर रहे थे कि वह भी पहले से ही प्रभु के शष्यि थे। लेकनि प्रेरति सेंट बरनबास, उसे देखकर और मसीह के प्रति उसके परविर्तन से आश्वस्त होकर, प्रसन्न हुआ और उसका हाथ पकड़कर प्रेरतिों के पास ले गया; और पौलुस ने उन्हें बताया कि उसने मार्ग में प्रभु को कैसे देखा था, और प्रभु ने उससे क्या कहा था, और कैसे उसने—पौलुस ने—दामास्कस में यीशु के नाम से नडिर होकर प्रचार कयिा था। और पवति्र प्रेरतिों में आनंद भर गया और उन्होंने प्रभु मसीह की महमिा की। जहाँ तक संत पौलुस का प्रश्न है, उन्होंने यरूशलेम में भी यहूदयिों और हेलेनसि्टों से प्रभु यीशु के नाम को लेकर ववािद कयिा[4730] , यह साबति करते हुए कि यीशु ही भवष्यिद्वक्ताओं द्वारा बताये गए मसीह हैं।

एक दनि, जब वह मंडली में खड़ा होकर प्रार्थना कर रहा था, तो पौलुस अचानक और अनैच्छकि रूप से समाधि में पड़ गया[4731] और उसने प्रभु को देखा। प्रभु ने उससे कहा: *'जल्दी करो और यरूशलेम से तुरंत नकिल जाओ, क्योंकि [यहाँ] वे मेरी गवाही तुम्हारे द्वारा स्वीकार नहीं करेंगे।'* लेकनि पौलुस ने कहा: *'प्रभु! वे जानते हैं कि मैं तुझ पर वशि्वास करने वालों को कैद कयिा करता था और सभा-घरों में उन्हें मारता था, और जब तेरे गवाह स्तेफन का रक्त बहाया जा रहा था, तब मैं वहाँ खड़ा था , और उसके वध की सहमति देता था और उसे पत्थर मारने वालों के वस्त्रों की रखवाली करता था।'* और प्रभु ने उससे कहा, *'चल; मैं तुझे दूर-दूर अनाड़ी लोगों के पास भेजूँगा।'* (प्रेरतिों के काम 22:18–20)। इस दर्शन के बाद, संत पौलुस, यद्यपि वह कुछ और दनिों के लिए यरूशलेम में रहना चाहते थे, प्रेरतिों को देखकर और उनसे बात करके सांत्वना पाते हुए भी, ऐसा नहीं कर सके: वे यहूदी जनिके साथ उन्होंने मसीह के बारे में बहस की थी, वे क्रोधति हो गए और उन्हें मार डालना चाहते थे। यह जानकर, यरूशलेम के मसीहयिों ने उसे काइसारयिा तक पहुँचाया[4732] और वहाँ से उसे समुद्र मार्ग से तर्cyc (उसके गृह नगर) भेज दयिा, जहाँ वह कुछ समय तक अपने देशवासयिों को परमेश्वर का वचन प्रचार करता रहा।

बाद में, पवति्र आत्मा द्वारा प्रेरति होकर, बरनबास इस स्थान पर आए और पौलुस को अपने साथ सीरयिा के एंटीओक ले गए, यह जानते हुए कि उन्हें अन्यजातयिों का प्रेरति बनने के लिए बुलाया गया था; वहाँ एक पूरे वर्ष तक यहूदी सभाघरों में उपदेश देते हुए, उन्होंने कई लोगों को मसीह के पास लाया और उन्हें मसीही कहा[4733] । एक वर्ष बीत जाने के

[4729] अरब में उनके प्रवास का ववरिण पूरी तरह से अज्ञात है। उन्होंने शायद स्वयं को धर्मग्रंथ के अध्ययन के लिए समर्पति कर दयिा और प्रभु द्वारा उन्हें सौंके गए नए कार्य के लिए तैयारी की।

[4730] 'हेलेनसि्ट' शब्द मूर्तपिूजक दुनयिा के वभिन्नि देशों में रहने वाले उन यहूदयिों के लिए इस्तेमाल कयिा जाता था जो उस समय की सामान्य प्रचलति भाषा, ग्रीक बोलते थे।

[4731] 'उत्कर्ष' (या 'समाधि') होने की एक असाधारण अवस्था है, जो कसिी व्यक्ति के नयिंत्रण से परे होती है, जसिमें, पूरी तरह से जागते हुए, बाहरी दुनयिा उनकी शारीरकि इंद्रयिों से, जैसे कि, अलग हो जाती है, जबकि उनकी आंतरकि इंद्रयिाँ अदृश्य, आध्यात्मकि दुनयिा की अभव्यिक्तयिों के लिए खुल जाती हैं, जो ईश्वर उन्हें एक दर्शन में प्रदान करना चुनते हैं; प्रेरति पतरस भी ऐसी ही अवस्था में थे।

[4732] कैसरयिा – प्राचीन काल में, रोमन साम्राज्य के कई शहरों का नाम। यहाँ, बेशक, यह फलिसि्तीन के केसरयिा से संबंधति है, जसिे स्ट्रैटन ने सीज़र ऑगस्टस के सम्मान में भूमध्य सागर पर, यरूशलेम से लगभग 100 वर्स्ट उत्तर-पश्चमि में बनाया था, जो यहूदयिा के रोमन गवर्नरों का केंद्र था; इसे हेरोद ने कलिबंदी और सजाया था, और एक समय में इसमें एक उत्कृष्ट बंदरगाह था; आज यह खंडहरों का ढेर है। पैलेस्टाइन में एक और सेज़रयिा भी थी, जो लेबनान पर्वत के तल पर स्थति थी, जसिे गलील के टेट्रार्क फलिपि ने सम्राट टबिेरयिस के सम्मान में बनवाया था, और यह सेज़रयिा फलिपिी के नाम से जानी जाती थी (प्राचीन काल में इसे वानसाई कहा जाता था)।

[4733] 'ईसाई' नाम प्रभु के अनुयायियों के बीच उत्पन्न नहीं हुआ था, जो आमतौर पर एक-दूसरे को भाई, शष्यि या वशि्वासी कहते थे; यह शब्द पहली बार चर्च के बाहर इस्तेमाल कयिा गया था और सबसे अधकि संभावना है कि यह नाम प्रभु के अनुयायियों को एंटओिक के मूर्तपिूजकों ने

बाद, दोनों पवत्रि प्रेरति, बरनबास और पौलुस, यरूशलेम लौट आए और उन्होंने पवत्रि प्रेरतिों को बताया कि परमेश्वर की कृपा ने अंतीयक में क्या-क्या कयि था, और उन्होंने यरूशलेम में मसीह की कलीसयि को बहुत आनन्दति कयि[4734] । साथ ही, उन्होंने यहूदयि में रहने वाले गरीब और ज़रूरतमंद भाइयों के लाभ के लिए अंतीयकयि में उदार दाताओं से भरपूर दान लाए[4735] , क्योंकि उस समय, क्लॉडयिस के शासनकाल के दौरान[4736] , एक बड़ी अकाल पड़ी थी, जसिकी भवष्यिवाणी सत्तर प्रेरतिों में से एक, संत अगबस को पवत्रि आत्मा के एक वशिष प्रकट होने द्वारा की गई थी[4737] ।

यरूशलेम छोड़कर, बरनबास और पौलुस अंताकयि लौट आए। जब उन्होंने वहाँ उपवास और प्रार्थना करते हुए, दव्यि लटिर्जी का अनुष्ठान करते हुए और परमेश्वर के वचन का प्रचार करते हुए कुछ समय बतिाया, तो पवत्रि आत्मा ने उन्हें अन्यजातयिों के पास प्रचार करने के लिए भेजना उचति समझा[4738] । पवत्रि आत्मा ने अंतयिोकयि में कलीसयि के बुज़ुर्गों से कहा: *'बरनाबा और सऊल को उस काम के लिए अलग करो जसिके लिए मैंने उन्हें बुलाया है'* (प्रेरतिों के काम 13:2)। फरि पुरोहति ने उपवास और प्रार्थना करके उन पर हाथ रखा और उन्हें भेज दयि[4739] ।

पवत्रि आत्मा से प्रेरति होकर, बरनबास और पौलुस सेलूकयि गए[4740] और वहाँ से साइप्रस द्वीप (प्रेरति बरनबास का मूल स्थान) के लिए जहाज से रवाना हुए। वहाँ, सलामसि में[4741] , उन्होंने यहूदी सनिागॉगों में परमेश्वर का वचन प्रचार कयि और पूरे द्वीप में पफोस[4742] तक यात्रा की, जहाँ उन्होंने एक एलाइमास नामक व्यक्ति को पाया (एक जादूगर), यहूदी मूल का एक झूठा नबी, जसिका नाम बार-येशु था, जो स्थानीय प्रोकॉन्सल सेर्गयिस पॉलस की सेवा में था, जो वविेकशील व्यक्ति था और, जैसा कि प्रतीत होता था, उस पर उसका प्रभाव था। प्रोकॉन्सल ने बरनबास और सऊल को बुलवाया और उनसे परमेश्वर का वचन सुनना चाहा और उनकी शकि्षा सुनी। पर जादूगर एलमिास, उनका वरिोध करते हुए, उस उप-राज्यपाल को वश्विास से भटकाने की कोशशि करने लगा। परन्तु पवत्रि आत्मा से परपिूर्ण सन्त पौलुस ने जादूगर की ओर अपनी दृष्टि स्थरि करके कहा: *'हे सब छल और सब दुष्टता से भरपूर, हे शैतान के पुत्र, हे सभ धर्म के शत्रु! क्या तू प्रभु के सीधे मार्ग से लोगों को भटकाना बंद नहीं करेगा? और अब, देख, प्रभु का हाथ तुझ पर है: तू कुछ*

दयि था, जन्होंने बहुत बड़ी संख्या में वश्विासयिों से मलिकर उन्हें एक यहूदी संप्रदाय मानना बंद कर दयि और ईसाई धर्म को एक अलग दर्जा दयि।

[4734] 'यरूशलेम में कलीसयि' से तात्पर्य ईसाइयों की सामान्य उपासना सभा से है; इमारतों के रूप में चर्च बाद में बने। पवत्रि प्रेरति जेसन और सोसपिटर लगभग नश्चिति रूप से पहले थे जन्होंने सेंट स्टीफन प्रथम शहीद के नाम पर केर्कीरा द्वीप (अब कोर्फू, अल्बानयि के पास आयोनयिन द्वीपों में से एक) पर एक सुंदर चर्च का नरि्माण कयि।

[4735] इसने गैर-यहूदयिों से बने मसीह के चर्च और यहूदयिों के चर्च के बीच पहला मलिन चह्निति कयि, जसिमें भाईचारे के प्रेम को भक्तपिूर्वक व्यक्त कयि गया; साथ ही, इसने गैर-यहूदयिों के चर्च में परमेश्वर की महान कृपा का साक्ष्य भी प्रस्तुत कयि।

[4736] क्लाउडयिस सीज़र, कैलगिुला का उत्तराधकिारी, ईस्वी 41 से ईस्वी 54 तक रोमन सहिासन पर रहा; इस अवधि के दौरान रोमन साम्राज्य के वभिन्नि क्षेत्रों में कई बार अकाल पड़ा।

[4737] संत अगथा का पर्व 8 अप्रैल को मनाया जाता है।

[4738] 'पवत्रि आत्मा को यह उचति लगा', अर्थात्, कलीसयि की सामान्य सभा के दौरान, जब दव्यि सेवा चल रही थी, जसिमें यूखरस्ति का उत्सव भी शामलि था, सेवा में भाग लेने वाले एक या अधकि भवष्यिद्वक्ताओं ने पवत्रि आत्मा की प्रेरणा व्यक्त की – कि बरनबास और सौल को अन्यजातयिों को उपदेश देने के लिए अलग कयि जाए। या शायद प्रेरति बरनाबा और पौलुस ने स्वयं सभा को अपनी बुलावा समझाई, और सभा ने उन्हें वदिा कयि। इस प्रकार संत पौलुस की पहली प्रेरतिकि यात्रा शुरू होती है। वह इसके लिए एक असाधारण प्रकटोक्ति - तीसरी स्वर्ग में उनके आरोहण (2 कुरन्थियिों 12:1–5) - द्वारा तैयार कयि गए थे। बेशक, ईश्वर की सर्वशक्तमिानता के लिए, पौलुस की आत्मा को उसके शरीर से अस्थायी रूप से हटाना कोई बड़ी बात नहीं थी; लेकनि यह समझना कठनि है (जैसा कि सेंट जॉन क्राइसोस्टोम ने कहा है) कि एक जीवति व्यक्ति में आत्मा को शरीर से इस तरह अलग करने की आवश्यकता क्या थी—एक ऐसी अलगाव जो सबसे पवत्रि पुरुषों में भी अभूतपूर्व था। 'आत्मकि जगत, जसिमें पौलुस को उठा लयि गया था, स्थान की सीमाओं से परे होने के कारण, सर्वत्र वदियमान है; और इसलिए केवल यह आवश्यक है कि मानव आत्मा में इसके साथ संचार की क्षमता खोल दी जाए, और वह, बनिा स्थान बदले हुए शरीर में रहते हुए भी, स्वर्ग में—देवदूतों और धन्य आत्माओं की संगति में हो सकता है' (इनोसेंट ऑफ चेरसन)।

[4739] इस अवसर पर एक वशिष उपवास और प्रार्थना का पालन यह दर्शाता है कि यरूशलेम की कलीसयि ने अन्यजातयिों को उपदेश देने के लिए पौलुस और बरनबास के मशिन को वशिष महत्व की बात माना।

[4740] सेलुसयि ओरोन्टेस नदी पर एक छोटा बंदरगाह शहर है, उस स्थान पर जहाँ यह नदी समुद्र में मलिती है।

[4741] सलामसि – एक तटीय शहर जहाँ प्रेरतिों ने उतरने का स्थान बनाया।

[4742] पाफोस – साइप्रस द्वीप की राजधानी और राज्यपाल का केंद्र, सलामज़ि के वपिरीत तट पर स्थति था: स्पष्ट रूप से, प्रेरतिों ने पूरे द्वीप की यात्रा की और, नश्चिति रूप से, मसीह के बारे में प्रचार कयि।

समय के लिए अंधा हो जाएगा और सूरय को नहीं देख पाएगा।' और अचानक उस पर अंधकार और घोर अँधेरा छा गया, और वह इधर-उधर टटोलता हुआ अपने मारगदरशक को खोजने लगा" (प्रेरितों के काम 13:10-11)।

और अचानक उस जादूगर पर अँधेरा और घोर अँधेरा छा गया, और वह इधर-उधर टटोलता हुआ अपना मार्गदर्शक खोजने लगा।

तब उस प्रांतपाल ने जो हुआ था, उसे देखकर वशि्वास कयिा, और प्रभु की शकि्षा पर चकति हुआ। और बहुत से लोग भी उसके साथ वशि्वास करने लगे, और वशि्वासयिों की संख्या बढ़ गई।

पाफोस से नौकायन करके पौलुस और उसके साथी पम्फुलीया के पर्ग में पहुँचे, और पर्ग से पसिीदयिा के अन्ताकयिा गए[4743] । वहाँ उन्होंने मसीह के वषिय में प्रचार कयिा, और जब उन्होंने बहुतों को वशि्वास में ला लयिा, तो ईर्ष्यालु यहूदयिों ने नगर के प्रमुख लोगों को, जो मूर्तपिूजा के प्रतसिमर्पति थे, उकसाया और उनकी मदद से पवत्रि प्रेरतिों को नगर और उसके आसपास से नकिाल दयिा।

प्रेरतिों ने वहाँ अपने पैरों की धूल झाड़कर इकोनयिम गए[4744] और वहाँ कुछ समय रहने के बाद, उन्होंने नडिर होकर प्रचार कयिा और अपने हाथों से कएि गए चनि्हों और अद्भुत कार्यों के द्वारा, न केवल अपने प्रचार से बल्कि यहूदयिों और अन्यजातयिों की एक बड़ी भीड़ को वशि्वास में लाया; वहाँ उन्होंने पवत्रि कन्या थकि्ला को भी धर्मांतरति कयिा और उसे मसीह के लिए सगाई कर दी। लेकनि अवशि्वासी यहूदयिों ने अन्यजातयिों और उनके शासकों को प्रेरतिों का वरिोध करने और उन पर पत्थर चलाने के लिए भड़काया। यह जानकर, प्रेरति लकिोनयिा के शहरों - ल्यूसट्रा और डर्बे - और उनके आसपास के क्षेत्रों में चले गए[4745] ।

लस्ट्रियिा में सुसमाचार का प्रचार करते समय, उन्होंने जन्म से लंगड़े एक आदमी को चंगा कयिा, जो कभी चला ही नहीं था; उन्होंने उसे मसीह के नाम पर खड़ा कयिा, और वह तुरंत खड़ा हो गया और चलने लगा। यह चमत्कार देखकर लोगों ने लकिाओनयिाई भाषा में अपनी आवाज़ उठाई और कहा, *'देवता मानव रूप में हमारे पास आ गए हैं'* (प्रेरतिों के काम 14:11). और उन्होंने बरनबास को 'ज़ीउस' और पौलुस को 'हेर्मसि' कहा[4746] ; और बैल लाकर और मालाएँ पहनाकर, वे प्रेरतिों को बलदिान चढ़ाना चाहते थे। लेकनि बरनबास और पौलुस (यह सुनकर) अपने वस्त्र फाड़े और लोगों के पास आकर चलि्ला उठे: *'हे मनुष्यों! तुम यह क्या कर रहे हो? हम भी तुम्हारे ही समान मनुष्य हैं* (प्रेरतिों के काम 14:15)। और उन्होंने उन्हें एक ईश्वर के वषिय में प्रचार कयिा, जसिने स्वर्ग, पृथ्वी, समुद्र और उनमें की सब वस्तुओं को बनाया, जो आकाश से वर्षा और उचति समय देता है, और लोगों के हृदय भोजन और आनन्द से भर देता है। और यह कहते हुए, वे बड़ी मुश्कलि से लोगों को उन पर बलदिान न चढ़ाने के लिए मना सके। जब वे लकिाओनयिा के लुस्त्रे में ठहरे हुए थे और उपदेश दे रहे थे, तो कुछ यहूदी अँतयिोकयिा और इकोनयिम से आए और लोगों को प्रेरतिों से मुँह मोड़ने के लिए मनाने लगे, यह दावा करते हुए कि वे सत्य नहीं बोल रहे थे, बल्कि झूठ बोल रहे थे, और, मामले को और भी बगिाड़ने के लिए, उन्होंने भोले-भाले लोगों को भड़काया; क्योंकि मुख्य प्रचारक सेंट पॉल पर पत्थर चलाया गया और उन्हें मृत समझकर शहर से बाहर घसीट दयिा गया था।

लेकनि वह (वशि्वासयिों की मदद से), खड़ा होकर, शहर में लौट गया; और दूसरे दनि वह बर्नबास के साथ डर्बे के लिए रवाना हुआ। उस शहर में सुसमाचार का प्रचार करके और काफी संख्या में शष्यि बनाकर, वे लistra, इकोनयिम और अंतीयक से होकर वापस यात्रा करते हुए शष्यिों के वशि्वास को मज़बूत करते और उन्हें वशि्वास में दृढ़ रहने के लिए

[4743] पसिीडयिा में एंटओक, एक रोमन उपनवेिश; यहीं पर पौलुस और बरनाबा ने पहली बार अन्यजातयिों को सुसमाचार का प्रचार कयिा। इसे सीरयिा में एंटओक या सेल्यूकयिा के एंटओक से अलग कयिा जाना चाहिए। बाद वाले को सेल्यूसीड साम्राज्य के संस्थापक, सेल्यूकस नकिेटर द्वारा, मसीह से 300 साल पहले ओरोंटेस नदी के कनिारे, समुद्र से 30 वर्स्ट (लगभग 33 कलिोमीटर) दूर, कई ग्रीक उपनवेिशों में से एक के रूप में स्थापति कयिा गया था; यह जल्द ही सीरयिा के सबसे बड़े और सबसे प्रसदि्ध शहरों में से एक और इसकी राजधानी बन गया। ईसाई चर्च में, इसका स्थान यरूशलेम के बाद दूसरे नंबर पर था; इसके प्रमुखों को पैट्रआर्क की उपाधि प्रदान की गई थी, और उनकी सीट अब दमशि्क में है। स्वयं एंटओक अब एक गरीब तुर्की शहर - अंताकया है।

[4744] इकोनयिम – एशयिा माइनर में, पसिीडयिन एंटओक के दक्षणि-पूर्व में, माउंट टॉरस की तलहटी में स्थति; एक ऐसा शहर जो कभी लाइकोनयिा के डायोसीस का प्रमुख केंद्र था।

[4745] लकिाओनयिा – एशयिा माइनर का एक क्षेत्र, जो पसिीडयिा का पड़ोसी था; ल्यस्ट्रि और डर्बे – इसके भीतर के छोटे शहर, जो आयकॉनयिम के दक्षणि-पूर्व में थे।

[4746] ज्यूस और हर्मीस (या जुपटिर और मर्करी) – मूर्तपिूजक देवताओं के नाम, प्रमुख देवता और उनका दूत, जो कभी-कभी उनके साथ रहता था, व्यापार का संरक्षक, और मनुष्यों तथा देवताओं के बीच मध्यस्थ था।

प्रोत्साहति करते रहे। प्रत्येक कलीसयिा के लिए बुजुर्ग नयिुक्त करके, उन्होंने उपवास करते हुए प्रार्थना की और उन्हें उसी प्रभु के सुपुर्द कयिा जसि पर उन्होंने वशि्वास कयिा था।

तब, पसिीदयिा से होकर वे पम्फुलीया[4747] आए, और पेरगा में प्रभु का वचन प्रचार करके वे अत्तालयिा[4748] उतर गए, और वहाँ से वे सीरयिा के अंताकयिा को जहाज़ से गए, जहाँ से उन्हें मूल रूप से पवत्रि आत्मा द्वारा अन्यजातयिों के पास प्रभु का वचन प्रचार करने के लिए भेजा गया था। और जब वे अन्तयिोकयिा में पहुँचे, तो उन्होंने वशि्वासयिों को इकट्ठा कयिा और उन्हें सब कुछ बताया जो परमेश्वर ने उनके साथ कयिा था, और कतिने अफ्रीकयिों को मसीह के पास लाया गया था।

कुछ समय बाद, खतना के वषिय पर अंतीयक में यहूदी वशि्वासी और हेलेनस्टिों के बीच एक ववािद उत्पन्न हुआ: कुछ का तर्क था कि खतने के बनिा उद्धार पाना असंभव है, जबकि अन्य खतने को एक बोझलि आवश्यकता मानते थे। इसलिए प्रेरति पौलुस के लिए, बरनबास के साथ, वृद्ध प्रेरतिों और बुजुर्गों से मलिने यरूशलेम जाना आवश्यक हो गया - ताकि वे खतना के संबंध में उनकी राय लें और, साथ ही, उन्हें यह सूचति करें कि परमेश्वर ने अन्यजातयिों के लिए वशि्वास का द्वार खोल दयिा है; इस बाद वाली खबर ने यरूशलेम में पूरी भ्रातृत्व को बहुत प्रसन्न कयिा।

यरूशलेम में, परषिद की बैठक में, पवत्रि प्रेरतिों और बुजुर्गों ने नए अनुग्रह के तहत पुराने नयिम के खतना को अनावश्यक घोषति कर उसे पूरी तरह से समाप्त कर दयिा, और केवल यह आज्ञा दी कि वे मूर्तयिों को बलदिान कए गए भोजन से, यौन अनैतकिता से बचें, और वे कसिी भी तरह से अपने पड़ोसी को ठेस न पहुँचाएँ, और इस नर्णिय के साथ उन्होंने यहूदा और सलिास के साथ पतरस और बरनबास को यरूशलेम से अंतीयकयिा भेज दयिा।

अंत्योखयिा पहुँचने पर, प्रेरति कुछ समय वहाँ रहे और फरि अन्यजातयिों के पास फरि से नकिल पड़े, और वे अलग हो गए: यहूदा यरूशलेम लौट गया; बरनाबास, अपने चचेरे भाई मार्कस को साथ लेकर, साइप्रस के लिए रवाना हो गए; जबकि पौलुस, सलिास को चुनकर, सीरयिा और किlikia गए, और वहाँ के नगरों में घूमते हुए, उन्होंने वशि्वासयिों को दृढ़ कयिा। देर्बे और लूस्त्र में पहुँचकर, उसने अपने शष्यि तीमुथयिुस का लूस्त्र में खतना कयिा, केवल यहूदी धर्म अपनाने वाले मसीहयिों की बड़बड़ाहट को शांत करने के लिए[4749] , और उसे अपने साथ ले लयिा। वहाँ से वह फ्राइजयिा और गलातयिा के प्रदेश के लिए नकिल पड़ा; फरि वह मसियिा में आया और बथिुनयिा के लिए आगे बढ़ने का इरादा कयिा[4750] , लेकनि यह पवत्रि आत्मा को अच्छा नहीं लगा[4751] । क्योंकि जब पौलुस अपने साथयिों के साथ त्रोआस में था[4752] , तो उसे रात में यह दर्शन हुआ: एक मकदूनयिाई मनुष्य, जो उसके सामने खड़ा था, ने उससे वनिती की, *'मकदूनयिा आकर हमारी सहायता कर'* (प्रेरतिों के काम 16:9)। इस दर्शन से पौलुस ने समझ लयिा कि प्रभु उन्हें मैसेडोनयिा में प्रचार करने के लिए बुला रहे थे। और त्रोआस से नौकायन करके, वे समोत्रैकी द्वीप पर पहुँचे, और अगले दनि नेपोलसि[4753] में, और वहाँ से मैसेडोनयिा के सबसे नकिट शहर फलिप्पिी गए, जो एक रोमन उपनगरीय बस्ती थी। फलिप्पिी में, उन्होंने सबसे पहले ईसाई धर्म की शकि्षा दी और लydia नाम की एक महलिा का बपतस्मिा दयिा, जो बैंगनी (गहरे लाल या लाल रंग के कपड़े और परधिान) की व्यापारी थी; उसने उन्हें अपने और अपने घर वालों के साथ रहने के लिए आग्रह कयिा।

एक दनि, जब पौलुस अपने शष्यिों के साथ प्रार्थना सभा के लिए जा रहे थे, तो उनका सामना भवष्यिवाणी करने की आत्मा से ग्रस्त एक दासी से हुआ, जो अपनी भवष्यिवाणयिों के द्वारा अपने मालकिों के लिए बहुत सा लाभ कमाती थी। पौलुस और उसके साथयिों के पीछे-पीछे वह चलि्लाने लगी, *'ये पुरुष परमप्रभु परमेश्वर के सेवक हैं, जो हमें उद्धार का मार्ग बताते हैं'* (प्रेरतिों के काम 16:17)।

[4747] पसिीडयिा और पम्फलियिा – एशयिा माइनर के क्षेत्र, लाइकोनयिा के दक्षणि-पश्चमि में।

[4748] अब अदालयिा के नाम से जाना जाने वाला, पर्गा के दक्षणि-पूर्व में पम्फलियिा का एक तटीय शहर।

[4749] तमिोथी एक यहूदी महलिा (जो ईसाई धर्म में परविर्तति हो गई थी) और एक मूर्तपिूजक का पुत्र था, और वह स्वयं एक सच्चा ईसाई था, जसिे भाइयों ने स्वीकार कयिा था; उसकी सहमतसि, पौलुस ने उसे 'यहूदयिों के लिए' खतना कराया, क्योंकि वे एक अख्तयिा न कए हुए व्यक्तसि, जसिका पतिा एक मूर्तपिूजक था, परमेश्वर का वचन सुनने के लिए कभी भी सहमत नहीं होते।

[4750] फ्रासयिा और गलातयिा एशयिा माइनर के भीतरी क्षेत्र हैं; मसियिा और बथिुनयिा इसके उत्तर-पश्चमिी क्षेत्र हैं।

[4751] प्रेरतिों के कामों के लेखक ने यह नर्दिष्ट नहीं कयिा है कि वे बाहरी थे या आंतरकि, लेकनि प्रेरतिों ने उन्हें स्पष्ट रूप से पवत्रि आत्मा के प्रत्यक्ष कार्यों के रूप में पहचाना।

[4752] ट्रॉय – एक तटीय शहर जहाँ से यूरोप के लिए समुद्र पार थोड़ी ही दूरी थी। – मैसेडोनयिा – उत्तर-पश्चमि में द्वीपसमूह से सटा एक तटीय क्षेत्र।

[4753] थ्रेस में एक तटीय शहर, पहला यूरोपीय शहर, जसिे अब कावाना के नाम से जाना जाता है।

वह कई दनिों तक ऐसा ही करती रही।

पौलुस, इस पर क्रुद्ध हो क[4754] , उसकी ओर मुड़ा और यीशु मसीह के नाम पर आत्मा को आज्ञा देकर उसे उससे नकिाल दयिा।

तब उसके मालकिों ने, यह देखकर कि उनकी लाभ की आशा चली गई है, पौलुस और सलिास को पकड़कर नगर अधकिारयिों के पास ले गए और कहा, *'ये यहूदी होकर हमारे नगर को उकसा रहे हैं और ऐसे रीति-रिवाजों का प्रचार कर रहे हैं जिन्हें हम रोमी न तो स्वीकार कर सकते हैं और न ही अपना सकते हैं'* (प्रेरतिों के काम 16:20-21)।

न्यायाधीशों ने प्रेरतिों के कपड़े उतारकर उन्हें कोड़े लगवाने का आदेश दयिा; और उन पर बहुत मारपीट करने के बाद, उन्हें जेल में डाल दयिा। वहाँ, आधी रात को, जब पौलुस और सलिास प्रार्थना कर रहे थे, तो जेल में ऐसा भूकंप आया कि जेल के सब द्वार खुल गए और सबकी बेड़यिाँ ढीली हो गईं। यह देखकर, कारागारपाल मसीह पर वशि्वास करने लगा; उसने प्रेरतिों को अपने घर ले जाकर उनके घाव धोए, और तुरंत ही अपने पूरे घर-परविार सहति बपतस्मि लयिा, और उन्हें भोजन कराया। और प्रेरति फरि से जेल में लौट गए।

अगले दनि, नगर अधकिारयिों को यह एहसास हुआ कि उन्होंने नरि्दोष लोगों को क्रूरता से सज़ा दी है, और उन्होंने जेल में अधकिारयिों को यह आदेश देकर भेजा कि प्रेरतिों को आज़ाद कर दें - उन्हें जहाँ वे चाहें वहाँ जाने दें।

पर पौलुस ने उनसे कहा, *'हम, जो रोमी नागरकि हैं, को बनिा मुकदमे के सार्वजनकि रूप से पीटा गया और जेल में डाल दयिा गया, और अब वे हमें चोरी-छपि छोड़ रहे हैं? नहीं, वे स्वयं आकर हमें बाहर नकिालें'* (प्रेरतिों के काम 16:37)।

और दूतों ने लौटकर पौलुस के वचन अपने अधकिारयिों को सुनाए; अधकिारी यह देखकर घबरा गए कि जिन्हें उन्होंने पीटा था, वे रोमी नागरकि नकिले; और आकर उनसे वनिती करने लगे कि वे जेल और उस नगर को छोड़ दें। जेल से नकिलने के बाद, वे पहले लydia के घर गए, जहाँ वे पहले ठहरे थे, और वहाँ इकट्ठे हुए वशि्वासयिों को आनंद पहुँचाया। उनसे वदिा लेकर, वे एम्फ़ीपोलसि और अपोलोनयिा के लिए रवाना हो गए, और वहाँ से थस्सिलुनीके गए[4755] ।

थेस्सालोनकिा में, जब उन्होंने पहले ही कई लोगों को सुसमाचार की ओर आकर्षति कर लयिा था, तो ईर्ष्यालु यहूदयिों ने कुछ नीच लोगों को इकट्ठा करके, जेसन के घर पर धावा बोल दयिा, जहाँ मसीह के प्रेरति ठहरे हुए थे। जब उन्हें वहाँ प्रेरति नहीं मलि, तो उन्होंने जेसन और कुछ भाइयों को पकड़ लयिा और उन्हें नगर अधकिारयिों के सामने घसीट लाए, और उन पर यह आरोप लगाया कि वे सीज़र के शत्रु हैं, जो कसिी और को राजा मानते थे – अर्थात् यीशु को। और जेसन बड़ी मुश्कलि से इस कष्ट से बच नकिला।

जहाँ तक पवत्रि प्रेरतिों का प्रश्न है, ये शत्रुतापूर्ण पुरुषों से बच नकिलने में सफल होकर, वे रातों-रात थस्सिलुनीके से चले गए और बेरयिा पहुँचे[4756] ; लेकनि वहाँ भी, यहूदयिों की दुर्भावनापूर्ण ईर्ष्या ने संत पौलुस को कोई राहत नहीं दी; जब थस्सिलुनीके के यहूदयिों को पता चला कि पौलुस बेरयिा में भी परमेश्वर का वचन प्रचार कर रहे थे, तो वे वहाँ भी आ गए, लोगों को भड़काया और उन्हें पौलुस के वरिुद्ध कर दयिा। पवत्रि प्रेरति को उस स्थान को भी छोड़ने के लिए मजबूर होना पड़ा, मृत्यु के व्यक्तगित भय के कारण नहीं, बल्कि भाइयों के आग्रह पर, ताकि वह कई लोगों के उद्धार के लिए अपना जीवन सुरक्षति रख सके; और भाइयों ने उसे समुद्र तक वदिा कयिा। जहाँ तक उसके साथयिों, सलिास और तीमुथयिुस का सवाल है, प्रेरति उन्हें बरियिा में नए वशि्वासयिों को वशि्वास में मजबूत करने के लिए छोड़ गया, क्योंकि वह जानता था कि यहूदाई केवल उसकी जान के दुश्मन थे। वह स्वयं एक जहाज पर सवार होकर एथेन्स के लिए रवाना हो गया[4757] ।

[4754] पौलुस एक अशुद्ध आत्मा द्वारा इस स्वीकारोक्ति से नाराज़ था, क्योंकि वह परमेश्वर और मानवता के शत्रु की गवाही पर अपनी शक्षिा आधारति नहीं करना चाहता था, ठीक वैसे ही जैसे प्रभु स्वयं ने भी दुष्ट आत्माओं की स्वीकारोक्तयिों को स्वीकार नहीं कयिा (मरकुस 1:24–25, 34; मरकुस 3:11–12, आदि)।

[4755] एम्फ़िपोलसि – मैसेडोनयिा के पहले जलि का मुख्य शहर, फलिपि्पी के दक्षणि-पश्चमि में; अपोलोनयिा – (अब एरसिो शहर) एम्फ़िपोलसि के दक्षणि-पश्चमि में, एथोस प्रायद्वीप के उत्तरी भाग में; थस्सिलुनीके (या थस्सिलुनीकी) – मैसेडोनयिा के 2वें जलि का मुख्य शहर, एजयिन सागर पर, अब तुर्की में एक महत्वपूर्ण वाणज्यिकि शहर और मैसेडोनयिाई व्यापार के लिए एक व्यापारकि केंद्र है।

[4756] बेरीया – थ्रेसलॉनीकी के दक्षणि-पश्चमि में एक शहर।

[4757] एथेंस – ग्रीस की राजधानी, उस समय ग्रीक वज्ञिान, कला और व्यापार का केंद्र। कविदंती के अनुसार, इसकी स्थापना लगभग 1550 ईसा पूर्व में हुई थी; अपने लंबे इतहिास के दौरान, यह एक राज्य, एक गणराज्य और एक डची की राजधानी रह चुकी है; 15वीं शताब्दी में, इसे तुर्कों ने जीत लयिा था; 19वीं शताब्दी में, इसे उनसे मुक्त कराया गया और यह ग्रीस के राज्य की राजधानी बन गई।

एथेन्स में, शहर में भरे हुए मूर्तियों को देखकर पौलुस बहुत दुखी हुआ, और इतने सारे आत्माओं के नाश पर शोक मनाया। उसने यहूदियों को सनिागॉग में और, दनि-प्रतदिनि, सार्वजनकि चौराहों पर यूनानियों और उनके दार्शनकिों को उपदेश देना शुरू कर दयिा। उसके श्रोताओं ने उसे एरेओपैगस ले गए (जैसा कि मूर्तपिूजक मंदरि के पास सार्वजनकि मुकदमों के स्थान को कहा जाता था)। वे उसे आंशकि रूप से उस सभा में उससे कुछ नया सुनने के लिए, और आंशकि रूप से (जैसा कि संत क्रसिोस्टोम का माननना है) उसे आज़माने, यातना देने और मृत्युदंड देने के लिए ले गए, यदि वे उससे मृत्युदंड के योग्य कुछ सुनते।

हालाँकि, संत पौलुस, शहर में पहले एक वेदी पर 'एक अज्ञात देवता के लिए' शब्द अंकति देख चुके थे, इस वषिय पर अपना भाषण शुरू कयिा और उन्हें अब तक अज्ञात रहे सच्चे ईश्वर का उपदेश देने लगे, यह कहते हुए: *'यही परमेश्वर, जसिे तुम बनिा जाने पूजते हो, मैं तुम्हें प्रचार करता हूँ'* (प्रेरतिों के काम 17:23)।

और उसने उनसे परमेश्वर—जो सारी सृष्टि का सृष्टकिर्ता है—और मन-परविर्तन, और न्याय, और मरे हुओं के जी उठने के वषिय में बात करना आरंभ कयिा।

मृतकों के पुनरुत्थान के बारे में सुनकर, सुनने वालों में से कुछ ने उपहास कयिा, जबकि अन्य इसके बारे में और अधकि सुनना चाहते थे। और पौलुस को दोषी न पाये जाने के कारण उनकी सभा से बनिा दंडति हुए चला गया: और परमेश्वर का वचन , जो उसने उन पर प्रचार कयिा था, आत्माओं को जीतने में प्रभावहीन नहीं रहा: क्योंकि कुछ मनुष्यों ने, उसके साथ मलिकर, मसीह पर वश्विास कयिा; उनमें एरओिपागोस का दयिोनीसयिुस और दामारसि नाम की एक कुलीन स्त्री, और अन्य कई लोग थे, जनि्हें बपतस्मिा दयिा गया।

एथेन्स से प्रस्थान करके, पौलुस कोरन्थि[4758] आया और वहाँ अक्वलिा नामक एक यहूदी के यहाँ ठहरा; सलिास और तीमुथयिुस भी मैसेडोनयिा से उसके पास आए, और उन्होंने मलिकर मसीह के वषिय में प्रचार कयिा। अब अक्वलिा, अपनी पत्नी प्रस्किल्लिा के साथ, पेशे से तम्बू बनाने वाले थे; पौलुस इस व्यवसाय से परचिति थे, और उन्होंने उनके साथ मलिकर काम कयिा, अपने और अपने साथयिों का खर्च अपनी मेहनत से उठाया, जैसा कि वे स्वयं थस्सिलुनीकयिों को लखि अपने पत्र में कहते हैं: *'हमने कसिी का अनाज मुफ़्त में नहीं खाया, बल्कि दनि-रात कड़ी मेहनत की ताकि हम आप में से कसिी पर भी बोझ न बनें'* (2 थस्सि. 3:8)। और फरि: *'मेरे ये ही हाथ मेरी और मेरे साथयिों की ज़रूरतों की पूर्ति करते रहे हैं'* (प्रेरतिों के काम 20:34)।

और हर सब्बाथ पर वह यहूदियों से सभा-घरों में तर्क-वतिर्क करता था, यह साबति करते हुए कि यीशु ही मसीहा हैं। लेकनि चूँकि वे लगातार उसका वरिोध करते रहे और उसे अपमानति करते रहे, उसने अपने वस्त्र झाड़ते हुए उनसे कहा: *'तुम्हारा लहू तुम्हारे सरि पर रहे; मैं नर्दिोष हूँ; अब से मैं अन्यजातयिों के पास जा रहा हूँ'* (प्रेरतिों के काम 18:6)।

और जब उसने कोरन्थि छोड़ने का नश्चिय कयिा, तो प्रभु ने रात में दर्शन में उसे कहा, *'डरो नहीं, पर बोलो और चुप न रहो; क्योंकि मैं तेरे संग हूं, और कोई तुझे हानि न पहुंचाएगा; क्योंकि इस नगर में मेरे बहुत लोग हैं'* (प्रेरतिों के काम 18:9-10)।

और पौलुस कोरन्थि में एक साल और छह महीने तक रहा, यहूदियों और यूनानियों को परमेश्वर का वचन सखिाता रहा; और कई लोग वश्विास करने लगे और बपतस्मिा ग्रहण कयिा, यहाँ तक कि सभा-घर के अध्यक्ष क्रस्पिस ने भी अपने पूरे घर-परविार सहति प्रभु पर वश्विास कयिा और बपतस्मिा ग्रहण कयिा। लेकनि कुछ यहूदी जो वश्विास नहीं लाए थे, उन्होंने पॉल पर भीड़ में हमला कयिा और उसे उप-राज्यपाल गैलयिो (जो दार्शनकि सेनेका के भाई थे[4759]) की अदालत में पेश कयिा, लेकनि उसने पॉल का न्याय करने से इनकार कर दयिा, कहते हुए: 'यदि उसने कोई बुरा काम या दुष्टता की हो, तो मैं तुम्हारी बात सुनने का कारण पाता और उसका न्याय करता; परन्तु तुम्हारे धर्म-शक्षिा और तुम्हारे व्यवस्था-वषिय के ववािद में, मैं न्यायकर्ता बनना नहीं चाहता'

और उसने उन्हें अदालत से भगा दयिा। इसके बाद, संत पौलुस, वहाँ कुछ समय रहने के बाद, भाइयों से वदिा लेकर अपने साथयिों के साथ सीरयिा के लिए रवाना हो गए। अक्वलिा और प्रस्किल्लिा उनके पीछे चले गए, और रास्ते में वे सभी

[4758] कोरथि – एथेंस के पश्चमि में, एक संकरे भू-भाग पर, जो प्राचीन काल में अपने व्यापक व्यापार के लिए प्रसदि्ध था, और उस समय रोमन गवर्नर का केंद्र था।

[4759] सेनेका का जन्म स्पेन में हुआ था; मसीह के जन्म के कुछ ही समय बाद, वह रोम पहुँचे, जहाँ उन्होंने एक दार्शनकि के रूप में ख्याति प्राप्त की और सम्राट नीरो के शक्षिक बने, जसिने बाद में उन्हें मृत्युदंड सुनाया; सेनेका ने अपनी जान ले ली, इस प्रकार मृत्युदंड को पूरा कयिा।

एफेसुस[4760] में रुके। वहाँ, प्रभु का वचन प्रचार करते हुए, पवित्र प्रेरित पौलुस ने कई चमत्कार किए; और न केवल उनके हाथ चमत्कारी थे, जो एक स्पर्श से हर अक्षमता को ठीक कर देते थे, बल्कि उनके रूमाल और पगड़ी भी, जो उनके शरीर के पसीने से सने हुए थे, उसी चमत्कारी शक्ति से युक्त थे: क्योंकि जब उन्हें बीमारों पर रखा जाता था, तो वे तुरंत उन्हें चंगा कर देते थे और लोगों से अशुद्ध आत्माओं को निकाल देते थे। यह देखकर, कुछ घूमते हुए यहूदी भूत-प्रेत भगाने वालों ने दुष्टात्माओं से ग्रस्त लोगों पर प्रभु यीशु का नाम लेने का साहस किया, यह कहते हुए: 'हम तुम्हें उसी यीशु के नाम पर शपथ दिलाते हैं, जिसे पौलुस प्रचार करता है।' पर दुष्टात्मा ने उन्हें उत्तर दिया: 'मैं यीशु को जानता हूँ, और मैं पौलुस को भी जानता हूँ, पर तुम कौन हो?'

और दुष्टात्मा से ग्रस्त वह आदमी उन पर झपट पड़ता; और उन पर हावी होकर, उसने उन पर ऐसा काबू पा लिया कि वह उन्हें पीटता और घायल करता, इस कदर कि वे उस ग्रस्त आदमी के हाथ से मुश्किल से, अध-नंगे, बचकर निकल पाते। यह बात एफ़ेसुस के सभी यहूदियों और यूनानियों को मालूम हो गई, और उन सब पर भय छा गया; और प्रभु यीशु का नाम महिमामान हुआ, और बहुत लोग उस पर विश्वास करने लगे। वास्तव में, जादू-टोना करने वालों में से भी बहुत से लोग, पवित्र विश्वास को अपनाने के बाद, अपनी जादू की किताबें इकट्ठी कर लाए; और उनका मूल्य निकालने पर, उन्हें 50,000 ड्रैक्मा का पाया गया[4761] , और उन्होंने उन सभी किताबों को सार्वजनिक रूप से जला दिया। इस प्रकार प्रभु का वचन बढ़ता और बल पकड़ता गया।

पौलुस, अपनी ओर से, यरूशलेम जाने की तैयारी कर रहे थे और उन्होंने कहा, *'जब मैं वहाँ का काम पूरा कर लूँगा, तो मुझे रोम भी देखना है'* (प्रेरितों के काम 19:21)।

लेकिन उस समय आर्टेमिस के मंदिर के छोटे बूत बनाने वाले चाँदीगरों द्वारा भड़काए गए एफ़िसुस में एक बड़ा दंगा भड़क उठा। दंगा शांत होने के बाद, सेंट पॉल, जो तीन साल तक एफ़िसुस में रहे, मैसेडोनिया के लिए रवाना हो गए; वहाँ से वे त्रोआस गए, जहाँ वे सात दिन तक रहे।

सप्ताह के पहले दिन, जब विश्वासियों ने भोजन-भंग के लिए इकट्ठा किया था, तो पौलुस ने उनसे लंबी बात की, क्योंकि वह दूसरे दिन उन्हें छोड़ने वाला था, और उसने कई दीयों से रोशन एक ऊपरी कमरे में आधी रात तक अपना प्रवचन जारी रखा। सुनने वालों में यूतीखुस नाम का एक जवान आदमी था, जो खिड़की की चौखट पर बैठा था, गहरी नींद में पड़ गया और अपनी नींद में डगमगाकर तीसरी मंज़िल से गिर पड़ा; उसे बेहोश उठाया गया। संत पौलुस नीचे आए, उस पर झपट पड़े और उसे गले लगाकर कहा, *'घबराओ नहीं, क्योंकि उसकी आत्मा उसमें है'* (प्रेरितों के काम 20:10)।

और फिर से पौलुस ऊपरी कमरे में गए; उन्होंने उस युवक को, जो अभी भी जीवित था, लाया और उन्हें बहुत सांत्वना मिली। पौलुस ने भोर तक लंबी बात की, और विश्वासियों से विदा लेकर चले गए।

मिलिटस पहुँचने पर[4762] , पौलुस ने एफेसस में संदेश भेजकर कलीसिया के बुज़ुर्गों को अपने पास बुलाया, क्योंकि वह स्वयं वहाँ नहीं जाना चाहते थे, कहीं ऐसा न हो कि उसकी यात्रा में देरी हो जाए, क्योंकि वह पेंटेकोस्त के दिन तक यरूशलेम में पहुँचने के लिए जल्दी में था।

और जब एफ़िसुस के बुज़ुर्ग प्रेरित के पास इकट्ठा हो गए, तो उन्होंने उन्हें एक प्रोत्साहन का वचन दिया और, अन्य बातों के अलावा, कहा: *'इसलिए अपने विषय में और उस सारी भेड़-बकरियों के झुंड के विषय में सावधान रहो, जिनके लिए पवित्र आत्मा ने तुम्हें निरीक्षक नियुक्त किया है, ताकि तुम परमेश्वर की कलीसिया का चरवाहा बनो, जिसे उसने अपने ही लहू से मोल लिया है'* (प्रेरितों के काम 20:28)। और उन्होंने उन्हें यह भी भविष्यवाणी की कि उनके चले जाने के बाद, क्रूर भेड़िये उनके बीच में आकर झुंड को न बख्शेंगे। उन्होंने उनसे अपनी आगामी यात्रा के बारे में कहा: *'और अब, आत्मा के प्रेरित होकर मैं यरूशलेम जाता हूँ यह न जानते हुए कि वहाँ मेरा क्या होगा; पर पवित्र आत्मा हर नगर में गवाही देता है कि बेड़ियाँ और क्लेश मेरे लिए इंतज़ार कर रहे हैं। परन्तु मैं किसी भी बात की परवाह नहीं करता, और न ही अपना जीवन अपने लिए कीमती समझता हूँ जब तक कि मैं आनन्द के साथ अपना मार्ग और वह सेवकाई पूरी कर लूँ जो मुझे प्रभु यीशु से मिली है'* (प्रेरितों के काम 20:22-24)। फिर उसने कहा: *'और अब, देखो, मैं जानता हूँ कि तुम में से कोई भी*

[4760] एफ़िसुस – एक तटीय व्यापारिक केंद्र और आयोनिया के एशिया माइनर प्रांत की राजधानी; यह बाद में प्रेरित जॉन द थियोलोजियन की गतिविधियों का केंद्र बन गया; 431 में यहाँ तीसरी सार्वभौमिक परिषद आयोजित की गई थी; आज, एफ़िसुस तुर्की का एक गरीब गाँव आयसुल्लुक है।

[4761] एक ड्रैक्मा का मूल्य लगभग 20 कोपेक था; परिणामस्वरूप, चांदी में 10,000 रूबल मूल्य तक की किताबें जला दी गईं।

[4762] मिलिटिस – एफ़ेसस के दक्षिण में एक तटीय शहर, जो कभी समृद्ध था और कई उपनिवेशों का संस्थापक था, अब एक साधारण गाँव है।

फरि कभी मेरा चेहरा नहीं देखेगा" (प्रेरतिों के काम 20:25)। तब वे बहुत रो पड़े। उन्होंने पौलुस की गर्दन पर बाँहें डालकर उसे चूमा, और वे उसके उन वचनों के कारण वशिेष रूप से दुखी हुए कि वे फरि कभी उसका चेहरा नहीं देखेंगे। और वे उसे जहाज तक साथ ले गए। उसने सभी को अंतमि चूमन देकर जहाज पर चढ़कर रवाना हो गया।

और तटवर्ती प्रदेशों और द्वीपों दोनों में कई नगरों से होकर यात्रा करने, तथा सर्वत्र वशि्वासयिों का भ्रमण करके उन्हें प्रोत्साहति करने के बाद, वह पतौलेमाइस[4763] में उतर आया; वहाँ से वह काइसारयिा स्ट्रैटोनकिा[4764] आया, और पवत्रि प्रेरति फलिपि के घर में रहने लगा।

एक अवसर पर, अगबस नामक एक भवषि्यवक्ता संत पौलुस के पास आए; उन्होंने पौलुस का कमरबंद लेकर, अपने हाथ और पैर बाँध लिए और कहा: *'पवत्रि आत्मा इस प्रकार कहते हैं: "जसि मनुष्य का यह कमरबंद है, उसे यहूदयिों द्वारा यरूशलेम में इसी प्रकार बाँधा जाएगा और अन्यजातयिों के हवाले कर दयिा जाएगा"* (प्रेरतिों के काम 21:11)।

जब भाइयों ने यह सुना, तो वे रो-रोकर पतरस से वनिती करने लगे कि वह यरूशलेम न जाए; पर पतरस ने उनसे कहा: *'तुम क्या कर रहे हो? तुम क्यों रो रहे हो और मेरा हृदय क्यों तोड़ रहे हो? मैं न केवल बंदी बनने के लिए तैयार हूँ, बल्कि प्रभु यीशु के नाम के लिए यरूशलेम में मरने को भी तैयार हूँ* (प्रेरतिों के काम 21:13)।

और भाइयों ने चुप हो कर कहा, 'प्रभु की इच्छा पूरी हो!'

इसके बाद, पवत्रि प्रेरति पौलुस अपने शषि्यों के साथ यरूशलेम गए (जनिमें एफ़सिुस का ट्रोफ़मिोस भी था, जो एक अन्यजाति था और मसीह के पास आया था) और उन्हें संत याकूब और वशि्वासयिों की पूरी मंडली द्वारा गर्मजोशी से स्वागत कयिा गया[4765] ।

उस समय एशयिा से यहूदी[4766] पेंटेकोस्ट के पर्व के लिए यरूशलेम आए थे; वे पौलुस के लगातार शत्रु थे और जहाँ भी जाते, उसके वरिुद्ध उपद्रव मचाते थे। शहर में एफेसस के त्रोफमिोस के साथ पतरस को देखकर, उन्होंने यहूदी महापुजारयिों, शास्त्रयिों और बुज़ुर्गों के पास पतरस के वरिुद्ध यह शकिायत की कि वह मूसा की व्यवस्था को उलट रहा था, खतना करने से रोक रहा था, और सूली पर चढ़ाए गए यीशु के वषिय में हर जगह प्रचार कर रहा था; और उन्होंने पतरस के वरिुद्ध एक-दूसरे को भड़काया , उसे पकड़ने की कोशशि करते हुए। और जब उन्होंने पर्व के दनि सोलोमन के मंदरि में संत पौलुस को देखा, तो उन्होंने अचानक उनके वरिुद्ध एक बदनामी रची, सारी भीड़ को भड़काया और उन पर हाथ डालने के लिए टूट पड़े, यह पुकारते हुए: 'हे इस्राएल के लोगों, हमारी सहायता करो! 'यह वही आदमी है जो हर जगह लोगों, व्यवस्था और इस स्थान (मंदरि) के वरिुद्ध सखिाता है; वास्तव में, उसने तो गैर-यहूदयिों को भी मंदरि में लाया है और इस पवत्रि स्थान को अपवत्रि कयिा है' (वे सोचते थे कि पौलुस और त्रोफमिोन ने उसे मंदरि में लाया था)।

इन चीखों पर, पूरा शहर हलचल में आ गया, और एक भीड़ इकट्ठी हो गई; दंगाइयों ने पौलुस को पकड़ लयिा, उसे मंदरि से बाहर घसीट लयिा, और जल्दी से दरवाज़े बंद कर दिए: वे पौलुस को मारना चाहते थे, लेकनि मंदरि के अंदर नहीं, ताकि पवत्रि स्थान को अपवत्रि न करें।

उसी समय, सेनापति को यह खबर मलिी कि सारा यरूशलेम हंगामा में है। वह तुरंत अपने सैनकिों और शतकों को इकट्ठा करके मंदरि की ओर दौड़ा; दंगाइयों ने, सेनापति और सैनकिों को देखकर, पौलुस को पीटना बंद कर दयिा। तब सेनापति ने उसे पकड़वाया और दो लोहे की ज़ंजीरों से बाँधने का आदेश दयिा; फरि उसने उससे पूछना शुरू कयिा कि वह कौन है और उसने क्या कयिा है।

[4763] टॉलेमाइडा – फोनीशयिा के दक्षणि में, फलिस्तीन की सीमाओं के भीतर एक प्राचीन तटीय शहर; अब सेंट-जीन-डी-एकर, जसिने 1799 में बोनापार्ट की घेराबंदी का सफलतापूर्वक सामना कयिा।

[4764] केसरयिा, ऊपर देखें।

[4765] याकूब, प्रभु का भाई, जो अपनी पहली पत्नी से यूसुफ मंगनीकार का सबसे बड़ा पुत्र था; वह मस्रि की ओर भागने के दौरान यूसुफ और धन्य कुँवारी मरयिम के साथ शशिु यीशु के साथ गया; उनके पुनरुत्थान के बाद, प्रभु ने उसे एक वशिेष व्यक्तगित दर्शन देकर सम्मानति कयिा (1 कुरन्थियिों 15:7); मसीह के स्वर्गारोहण के बाद, उन्हें मुख्य प्रेरतिों द्वारा यरूशलेम की कलीसयिा के पहले बशिप के रूप में नयिुक्त कयिा गया था, जन्हिें यह पद स्वयं प्रभु द्वारा प्रदान कयिा गया था; और, अपने आध्यात्मकि जीवन के कारण, वे स्वयं प्रेरतिों के उच्च सम्मान में थे, उन्होंने प्रेरतिों की परषिद की अध्यक्षता की, और, यरूशलेम में अपना पूरा जीवन बतिाने के बाद, यहाँ तक कि उपाधि भी प्राप्त की 'धर्मनष्ठि'। – उनका पर्व दविस 23 अक्टूबर है।

[4766] एशयिा – यह एशयिा माइनर के पश्चमिी प्रांतों – मसियिा, लडियिा और कैरयिा, यानी भूमध्य सागर के पूरे पश्चमिी तट का नाम था, जो एक प्रोकोन्सल के प्रशासन के अधीन था।

हालाँकि भीड़ ने कमांडर से पौलुस को मार डालने का आग्रह किया। लेकिन लोगों के बीच मची अफरा-तफरी और शोर-शराबे के कारण, कमांडर यह बिल्कुल भी पता नहीं लगा सका कि पौलुस वास्तव में किस बात का दोषी था, और उसने उसे किले में ले जाने का आदेश दिया। एक बड़ी भीड़ कमांडर और सैनिकों के पीछे-पीछे यह चिल्लाते हुए चल रही थी कि पौलुस को मार डाला जाए। जब वे किले में जाने वाले ऊपरी बरामदे तक पहुँचे, तो पौलुस ने कमांडर से लोगों को कुछ शब्द कहने की अनुमति देने के लिए कहा; कमांडर ने उसकी विनती मान ली। और पौलुस सीढ़ियों पर खड़ा होकर भीड़ की ओर मुड़ा और हिब्रू में ऊँचे स्वर से बोला, "*हे पुरुषो, भाइयो और पितिवर्ग! अब मेरी सफाई सुनो*" (प्रेरितों के काम 22:1)।

और उसने उनसे मूसा की व्यवस्था के प्रति अपने पूर्व उत्साह के बारे में बताना शुरू किया, और यह कि कैसे दमिश्क के मार्ग पर, वह स्वर्ग से एक प्रकाश से चकित हो गया था, और कैसे उसने प्रभु को देखा था, जिसने उसे अन्यजातियों के पास भेजा था।

लेकिन भीड़, अब उससे और सुनने को तैयार नहीं थी, और सेनापति को संबोधित करते हुए चिल्लाने लगी: 'ऐसे आदमी को पृथ्वी से दूर करो! क्योंकि उसे जीवित नहीं रहना चाहिए!'

इस प्रकार चिल्लाते हुए, वे अपना लबादा उतारकर और क्रोध से उन्मत्त होकर धूल उड़ाते हुए, जोर देकर मांग करने लगे कि पौलुस को मार डाला जाए। अधिकारी ने उसे किले में ले जाने का आदेश दिया और उससे यह पता लगाने के लिए कि लोग उसके विरुद्ध इतने क्रोधित क्यों थे, उसे कोड़े लगवाने वाला था। लेकिन जब पौलुस को पट्टियों से एक स्तंभ से बाँधा गया, तो उसने उसके पास खड़े शताधिकारी से कहा:

'क्या तुम्हारे लिए एक रोमी नागरिक को, बिना मुकदमे के, कोड़े मारना उचित है?' (प्रेरितों के काम 22:25)

यह सुनकर, शतपति ने आकर सेनापति को यह कहकर सूचित किया:

'देख, तू क्या करने जा रहा है! यह आदमी एक रोमी नागरिक है।'

तब सेनापति पास आकर पॉल से पूछा:

उसने कहा: 'मुझे बताओ, क्या तुम रोमी नागरिक हो?'

उसने उत्तर दिया:

'हाँ।'

हजार-आदमी के कमांडर ने कुछ झिझकते हुए कहा:

'मैंने इस नागरिकता के लिए बहुत सारा पैसा चुकाया है।'

और उसने तुरंत ही उसे उसकी बेड़ियों से मुक्त कर दिया।

अगले दिन, सेनापति ने मुख्य पुरोहितों और सम्पूर्ण महासभा को बुलाया, और संत पौलुस को उनके सामने लाया।

पौलुस ने सनेहद्रिन पर दृष्टि टिकाकर कहा:

'हे पुरुषों और भाइयो! मैं आज के दिन तक परमेश्वर के सामने निर्मल अंतकरण से जीता आया हूँ' (प्रेरितों के काम 23:1)।

यह सुनकर, महायाजक अनानियस ने अपने सामने खड़े लोगों को पॉल के मुँह पर मारने का आदेश दिया…

तब पतरस ने उससे कहा:

'हे चूना-पोती दीवार, परमेश्वर तुझे मार डालेगा! तू तो व्यवस्था के अनुसार न्याय करता है, पर व्यवस्था के विरुद्ध मुझ पर मारने का आदेश देता है[4767] ' (प्रेरितों के काम 23:3)।

[4767] प्रेरित पौलुस की कठोर फटकार इस तथ्य से समझी जा सकती है कि यदि वह अपनी कमजोर होती दृष्टि के कारण महायाजक को पहचानने में असफल रहा, या उसके सामने जो व्यक्ति था वह वही महायाजक नहीं था जिसे वह पहले जानता था। इस घोर और निराधार अनादीपन की निंदा करके, पौलुस ने यीशु मसीह के उदाहरण का अनुसरण किया, जिन्होंने इसी तरह उस निंदा के अन्याय की निंदा की थी जो पहले उन पर लगाई गई थी। हमने अभी-अभी प्रेरित पौलुस की कमजोर दृष्टि का उल्लेख किया है - वास्तव में, यह एक ऐसी बीमारी थी जिसकी वह अक्सर शिकायत करते थे; यह ठीक वही 'देह में काँटा' (2 कुरिन्थियों 12:7) था जिससे वह पीड़ित थे। प्रभु ने प्रेरित की आँखों की सूजन को दमिश्क के रास्ते पर अपने चमत्कारिक प्रकट होने के एक अमिट चिह्न के रूप में छोड़ दिया; पतरस ने स्वयं कहा कि उस प्रकाश की अचानक भव्यता के कारण उसकी दृष्टि चली गई थी, इसलिए वह अपनी आँखें खोलकर भी किसी को नहीं देख सकता था, और भले ही बाद में उसकी दृष्टि वापस आ गई हो, फिर भी कुछ कमजोरी बनी रह सकती थी: जलते हुए सीरियाई सूरज के नीचे दोपहर की यात्रा, उस प्रकाश की चमक जो उस दोपहर के प्रकाश से भी बढ़कर थी, और प्रेरित पर आई अंधापन - ये सभी उसकी आँखों में सूजन और कमजोरी का कारण बन सकते थे; मरुभूमि और दमिश्क में उसका ठहराव, जहाँ कई लोग आँखों की बीमारियों से पीड़ित हैं, ने दृष्टि की इस कमजोरी को बनाए रखा होगा, और कभी-कभी इसे और भी बढ़ा दिया होगा। गलातियों के नाम अपने पत्र में पौलुस के शब्द: 'तुमने मेरे शरीर की कष्ट को तुच्छ नहीं जाना, और न ही उससे मुंह मोड़ा... मैं तुम्हारी

सभा में कुछ सदूकी और कुछ फरीसी देखकर, पौलुस ने ऊँचे स्वर से कहा:

'भाइयो और पिता लोगो! मैं एक फरीसी हूँ, और मेरा पिता भी फरीसी था; मैं मरे हुओं के जी उठने की आशा रखने के कारण आज मुकदमे में खड़ा हूँ' (प्रेरितों के काम 23:6)।

जब उसने यह कहा, तो फरीसियों और सदूकियों में विवाद छिड़ गया, और सभा दो दलों में बँट गई: क्योंकि सदूकी कहते हैं कि न पुनरुत्थान है, न स्वर्गदूत, न आत्मा, जबकि फरीसी इन दोनों को मानते हैं। एक बड़ा शोर मच गया। फरीसियों ने कहा:

'हमको इस मनुष्य में कोई दोष नहीं मिलता।'

तथापि सदूकियों ने विपरीत बात पर जोर दिया, और बड़ी बहस चलती रही।

कमांडर को यह डर था कि सभा पॉल को फाड़ डालेगी, इसलिए उसने सैनिकों को आदेश दिया कि वे उसे उनके बीच से निकालकर किले में ले जाएँ।

अगली रात, प्रभु संत पौलुस के पास प्रकट हुए और कहा:

'हौसला रख, पौलुस; क्योंकि जैसे तूने यरूशलेम में मेरी गवाही दी है, वैसे ही तुझे रोम में भी गवाही देनी है' (प्रेरितों के काम 23:11)।

जब दिन हुआ, तो कुछ कट्टर यहूदी एक सभा के लिए इकट्ठा हुए और उन्होंने पौलुस को मार डालने तक न खाने-पीने की कसम खाई। यह पता चला कि चालीस से अधिक पुरुषों ने यह कसम खाई थी। यह जानकर, कमांडर ने पॉल को सशस्त्र सैनिकों के एक बड़े दल के साथ सीज़रिया में राज्यपाल फेलिक्स के पास भेजा।

यह जानकर, महायाजक हनानियाह, सनाहेड्रिन के बुज़ुर्गों के साथ, स्वयं केसरिया गए और राज्यपाल के सामने पौलुस पर बदनामी की, उसका अपमान करते हुए और उसकी मृत्यु की सज़ा की ज़िद करते हुए; परन्तु वे कुछ भी हासिल नहीं कर सके, क्योंकि उसमें मृत्युदंड के योग्य कोई अपराध नहीं मिला। तथापि, राज्यपाल यहूदियों को प्रसन्न करना चाहकर, पौलुस को हिरासत में रखे रहा।

दो साल बीत गए। फेलिक्स के बाद पोर्सियस फेस्टस राज्यपाल बने। मुख्य याजकों ने उनसे पतरस को यरूशलेम भेजने के लिए कहा। लेकिन उन्होंने यह योजना बुरी नीयत से बनाई थी: वे रास्ते में मसीह के प्रेरित को मारने की उम्मीद कर रहे थे। और जब फेस्टस ने पौलुस से पूछा कि क्या वह मुकदमे के लिए यरूशलेम जाना चाहता है, तो पौलुस ने उत्तर दिया: *'मैं सीज़र के न्यायालय के सामने खड़ा हूँ, जहाँ मेरा न्याय होना चाहिए। मैंने यहूदियों के प्रति कोई अन्याय नहीं किया है, जैसा कि आप स्वयं अच्छी तरह जानते हैं। क्योंकि यदि मैं दोषी हूँ और मैंने मृत्युदंड के योग्य कोई काम किया है, तो मैं मरने से इनकार नहीं करता; लेकिन यदि उनके द्वारा मेरे खिलाफ लगाए गए आरोपों में कुछ भी नहीं है, तो कोई भी मुझे उनके हवाले नहीं कर सकता। मैं सीज़र की अदालत में अपील करता हूँ* (प्रेरितों के काम 25:10-11)।

तब फेस्तूस ने अपने परिषद्-सदस्यों से परामर्श करने के बाद पौलुस से कहा:

'तुम ने सीज़र के पास अपील की है; सीज़र के पास ही जाना होगा।'

कुछ दिनों बाद, राजा अग्रिप्पा[4768] फेस्तूस को बधाई देने के लिए कैसरिया आए और पौलुस के बारे में जानकर, उसे देखना चाहा। और जब पौलुस को राजा अग्रिप्पा और राज्यपाल फेस्तूस के सामने लाया गया, तो उसने उन्हें प्रभु यीशु मसीह के विषय में विस्तार से बताया कि कैसे वह उस पर विश्वास करने लगा था, राजा अग्रिप्पा ने उससे कहा:

'तुमने मुझे लगभग ईसाई बनने के लिए राज़ी कर ही लिया है।'

पौलुस ने उत्तर दिया:

'मैं परमेश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि, चाहे वे थोड़े हों या बहुत, न केवल आप बल्कि जो भी आज मेरी बात सुन रहे हैं, वे सब मेरे समान हो जाएँ, सिवाय इन बेड़ियों के' (प्रेरितों के काम 26:29)।

गवाही देता हूं कि यदि संभव होता, तो तुम अपनी आँखें भी निकालकर मुझे दे देते' (गलातियों 4:14-15) स्पष्ट रूप से उनकी दृष्टि की कमजोरी का उल्लेख करते हैं, जिसमें कभी-कभी तीव्र दर्द उठता था और जिसके साथ सिरदर्द भी होता था। यही कारण है कि, जिस महापुजारी ने उनके साथ अन्याय किया था, उसे फटकार लगाने के बाद भी, पौलुस के पास यह बताने का पर्याप्त कारण था कि वह यह नहीं पहचान पाए कि उनका आरोप लगाने वाला वही महापुजारी था।

[4768] राजा अग्रिप्पा वास्तव में अग्रिप्पा द्वितीय थे, जो हेरोद अग्रिप्पा प्रथम के पुत्र थे, जो हेरोदियन वंश के अंतिम राजा और सीरिया के कुछ क्षेत्रों के शासक थे।

इन बातों के बाद, राजा, राज्यपाल और उनके साथी उठ खड़े हुए; एक ओर हटकर उन्होंने आपस में वचिार-वमिर्श कयिा और नर्णिय लयिा:

'इस मनुष्य ने न तो मृत्यु की और न ही बंधन में डालने की कोई योग्य बात की है।'

तब अग्रप्पिा ने फस्तूस से कहा:

'यदि उसने सीज़र के पास अपील न की होती, तो उसे रहिा कर दयिा गया होता।'

इस प्रकार उन्होंने पौलुस को सीज़र के पास रोम भेजने का नर्णिय लयिा, और उसे तथा कुछ अन्य कैदयिों को जूलयिस नामक राजा के रक्षक दल के एक शताब्दी के हवाले कर दयिा; और उसने, कैदयिों और पौलुस की ज़म्मिेदारी लेते हुए, उन्हें एक जहाज पर चढ़ा दयिा, और वे सभी रवाना हो गए।

वपिरीत हवाओं के कारण उनकी यात्रा बहुत खतरनाक थी; लेकनि जब वे क्रीट के द्वीप के पास पहुँचे और 'गुड हार्बर' नामक जगह में प्रवेश कयिा, तो पवत्रि पौलुस ने, जो कुछ होने वाला था उसे पूर्व में ही जानकर, सलाह दी कि वे जहाज के साथ वहाँ सर्दयिाँ बतिाएँ; लेकनि शताब्दी ने जहाज के नावकि और कप्तान पर पौलुस की बातों की तुलना में अधकि भरोसा कयिा। जब वे खुले समुद्र में नकिल आए, तो उनके वरिुद्ध एक प्रबल आंधी उठ खड़ी हुई; एक बड़ी आंधी आई, और इतनी घनी धुंध छा गई कि पूरे 14 दनिों तक उन्होंने न तो दनि में सूरज देखा और न ही रात में तारे, और उन्हें यह भी नहीं पता था कि वे कहाँ थे, क्योंकि वे लहरों के सहारे इधर-उधर उछाले जा रहे थे; और अपनी नराशिा में उन्होंने उन सभी दनिों में कुछ भी नहीं खाया था और पहले ही मृत्यु की आशंका कर रहे थे। जहाज़ पर 276 लोग सवार थे। पौलुस उनके बीच खड़ा हुआ और उन्हें इस प्रकार सांत्वना देने लगा:

'हे पुरुषो! तुम्हें मेरी बात माननी चाहिए थी और क्रीट से प्रस्थान नहीं करना चाहिए था; तब तुम इन कठनिाइयों और इस हानि से बच जाते। परन्तु अब मैं तुम्हें हयिाव रखने के लिए कहता हूँ, क्योंकि तुम में से किसी की भी जान नहीं जाएगी, केवल जहाज की ही जाएगी। क्योंकि परमेश्वर का एक स्वर्गदूत, जसि का मैं हूँ और जसिकी मैं सेवा करता हूँ, कल रात मुझ पर प्रकट हुआ और कहा: 'डरो मत, पौलुस! तुझे कैसर के सामने खड़ा होना ही होगा, और देख, परमेश्वर ने तेरे साथ नौका में सवार सबको तुझ पर अनुग्रह कयिा है।' इसलयि, हे पुरुषो, हयिाव रखो, क्योंकि मुझे परमेश्वर पर वश्विास है कि जैसा मुझ से कहा गया है, वैसा ही होगा' (प्रेरतिों के काम 27:21–25)।

और पौलुस ने उन सब को कुछ खाने के लिए प्रोत्साहति कयिा, और कहा:

'इससे तुम्हारी जान बचेगी; क्योंकि तुम्हारे सरि का एक भी बाल नष्ट न होगा' (प्रेरतिों के काम 27:36)।

यह कहकर, उसने कुछ रोटी लीं, सभी के सामने परमेश्वर का धन्यवाद कयिा, उसे तोड़ा, और खाने लगा। तब वे सब भी हौसला पाकर खाने लगे।

जब दनि हुआ, तो उन्होंने एक भूमि देखी, पर यह नहीं पहचान सके कि वह कौन-सी जगह थी, इसलिए उन्होंने जहाज को कनिारे की ओर मोड़ दयिा। जैसे ही वे पास पहुँचे, जहाज एक रेतीले तट पर अटक गया; उसका अगला हस्सिा फँस गया और हलिने-डुलने लगा, जबकि उसका पछिला हस्सिा लहरों की तेज़ी से टकरा रहा था। सैनकिों ने आपस में सभी कैदयिों को मार डालने की सलाह की, ताकि कोई तैरकर भाग न जाए; लेकनि शतपति, पौलुस को बचाना चाहकर, उन्हें इस योजना से रोक दयिा और तैरने वालों को पहले पानी में कूदकर कनिारे तक पहुँचने का आदेश दयिा; और, उन्हें देखकर, बाकी लोग भी तैरने लगे, कुछ तख्तों पर, अन्य जहाज के माल में से जो कुछ भी उन्हें मलिा, उस पर, और वे सभी बनि कसिी चोट के कनिारे पहुँच गए और समुद्र से बच गए।

तब उन्हें पता चला कि इस द्वीप का नाम 'Melita[4769] ' था। इसके नविासयिों, जो परदेशी थे, ने उन पर बहुत दया दखिाई; क्योंकि हाल ही में हुई बारशि और ठंड के कारण, उन्होंने आग जलाई ताकि समुद्र में भीगे हुए लोग अपना शरीर सेंक सकें।

इस बीच, पौलुस ने बहुत सारी सूखी लकड़ियाँ इकट्ठी कीं और उन्हें आग में डाल रहा था; उसी क्षण, गर्मी से बाहर नकिली एक वषिैली साँप उसके हाथ से चपिक गई। जब स्थानीय लोगों ने उसके हाथ से लटके साँप को देखा, तो उन्होंने एक-दूसरे से कहा:

'नश्चिय ही यह आदमी एक हत्यारा है, क्योंकि समुद्र से बच नकिलने के बाद भी ईश्वर उसे जीवति रहने नहीं देता।'

[4769] मेलटिा – वर्तमान माल्टा, ससिलिी के दक्षणि में एक द्वीप; प्रेरति पौलुस के वहाँ ठहरने की एक कविदंती आज भी माल्टा में जीवति है।

लेकिन पौलुस ने साँप को आग में झाड़ दिया और उसे कोई हानि नहीं हुई। उन्होंने उम्मीद की थी कि उसे खुजली हो जाएगी, या वह अचानक मर जाएगा; लेकिन जब उन्होंने काफी देर तक इंतजार किया और देखा कि उसे कोई हानि नहीं हुई, तो उन्होंने अपना मन बदल लिया और कहा कि वह एक देवता है।

द्वीप के राज्यपाल, पब्लियस नामक व्यक्ति ने, समुद्र से बचाए गए लोगों को अपने घर में ठहराया और तीन दिनों तक उनका आतिथ्य सत्कार किया। उस समय, उसके पिता बुखार और पेट दर्द से पीड़ित होकर बीमार पड़े थे। पौलुस उसके पास गया, प्रभु से प्रार्थना की, और उस बीमार आदमी पर हाथ रखकर उसे चंगा कर दिया। इस घटना के बाद, द्वीप पर अन्य बीमार लोग पवित्र प्रेरित के पास आए और चंगे हो गए।

तीन महीने बाद, समुद्र से बचे हुए सभी लोग प्रेरित के साथ वहाँ से एक अलग जहाज पर रवाना हुए, और सीरेक्यूज़[4770] पहुँचे, वहाँ से रेगिा, फिर पुटेओली[4771] गए, और अंत में रोम पहुँचे। और जब रोम में रहने वाले भाइयों को पौलुस के आगमन का समाचार मिला, तो वे एप्पीय चौक और तीन सरायों[4772] तक उससे मिलने के लिए बाहर आए। उन्हें देखकर पौलुस का हौसला बढ़ा और उसने परमेश्वर का धन्यवाद किया।

रोम में, जिसे सैनिक-सदस्य ने यरूशलेम से कैदियों को साथ लाया था, उसने उन्हें सेनापति के हवाले कर दिया, जबकि पौलुस को एक सैनिक के पहरे के साथ अलग रहने की अनुमति दी गई।

और पौलुस पूरे दो वर्ष रोम में रहा, और जो कोई भी उसके पास आता था, वह उसे स्वागत करता, परमेश्वर के राज्य का प्रचार करता और हमारे प्रभु यीशु मसीह के विषय में निडरता से और बिना किसी रोक-टोक के सिखाता था।

यहाँ तक प्रेरितों के काम की पुस्तक में, जो संत लूकस ने लिखी है, पौलुस के जीवन और परिश्रम के बारे में वर्णन है; जहाँ तक उनके अन्य परिश्रमों और कष्टों की बात है, वे स्वयं अपनी दूसरी कुरिन्थियों को लिखी पत्र में इस प्रकार वर्णन करते हैं (दूसरों की तुलना में वे थे): *'परिश्रम में अधिक, घावों में अतुलनीय, कैदखानों में अधिक, और मृत्यु के समीप कई बार। पाँच बार मुझे यहूदियों से चालीस कोड़े एक कम मिले; तीन बार मुझे डंडों से पीटा गया; एक बार मुझे पत्थर मारे गए; तीन बार मेरा जहाज टूटा; मैं रात-दिन [समुद्र की] गहराइयों में रहा; मैं कई बार यात्रा कर चुका हूँ* (2 कुरिन्थियों 11:23–26)।

पैदल चलकर पृथ्वी की चौड़ाई और लंबाई को नापने, और समुद्रों को जहाज़ द्वारा पार करने के बाद, प्रेरित पौलुस ने स्वर्ग की ऊँचाइयों का भी अनुभव किया, जब उन्हें तीसरे स्वर्ग में उठा लिया गया था। क्योंकि प्रभु ने, अपने प्रेरित को उसकी कई पीड़ादायक कठिनाइयों में, जो उसने अपने पवित्र नाम के लिए सहनीं, सांत्वना देते हुए, उसे स्वर्गीय आनंद दिखाया जिसे किसी ने भी कभी नहीं देखा था, और वहाँ उसने ऐसे अकथनीय वचन सुने जिन्हें कोई भी मनुष्य बयान नहीं कर सकता।

फिलिस्तीन के केसरिया के बिशप और धार्मिक घटनाओं के इतिहासकार यूसेबियस पैम्फिलस, इस बात का वर्णन करते हैं कि कैसे पवित्र प्रेरित ने अपने जीवन और सेवकाई के अन्य पराक्रमों को पूरा किया[4773] ।

रोम में दो साल की कैद के बाद, संत पौलुस को सभी आरोपों से बरी कर दिया गया और उन्हें रिहा कर दिया गया, और उन्होंने परमेश्वर का वचन प्रचार किया, कभी रोम में और कभी अन्य पश्चिमी देशों में।

और सेंट सिमियन मेटाफ्रैस्टेस[4774] लिखते हैं कि, रोम में अपनी कैद के बाद, प्रेरित ने मसीह के सुसमाचार के प्रचार में कई और वर्षों तक परिश्रम किया: रोम छोड़कर, वह स्पेन, गॉल और पूरे इटली से होकर यात्रा करते हुए, मूर्तिपूजा के भ्रम से लोगों को हटाकर उन्हें मसीह की ओर ले जाने के लिए आस्था के प्रकाश से अविश्वासियों को प्रकाशित करते रहे। जब वह स्पेन में थे, तो एक कुलीन और धनी महिला ने, प्रेरित की मसीह के बारे में उपदेश के बारे में सुनकर, स्वयं प्रेरित पौलुस को देखना चाहा और अपने पति, प्रोबस को, पवित्र प्रेरित से उनके घर आने के लिए कहने के लिए मना लिया ताकि वे उनका गर्मजोशी से स्वागत कर सकें। और जब संत पौलुस उनके घर में प्रवेश किए, तो उसने

[4770] सिरिक्यूज़ – सिसिली के दक्षिण-पूर्वी तट पर एक तटीय शहर, माल्टा से 18 मील दूर।

[4771] रेजियो – अब रेजियो, दक्षिणी इटली में, मेसिना के सामने, सिसिली के उत्तर-पूर्वी तट पर।

[4772] पुटेओली – अब पोज़ुओली, नेपल्स के पास एक तटीय शहर। एपियन स्क्वायर – रोम से लगभग 60 वर्स्ट दूर एक छोटा शहर। द थ्री इन्स – रोम से 15 वर्स्ट दूर एक गाँव।

[4773] पम्फिलियो के यूसेबियस – फिलिस्तीन में केसरिया के बिशप (268–340), एक चर्च इतिहासकार जो अपने समय की कई महान घटनाओं से निकट रूप से जुड़े थे।

[4774] सिमोन मेटाफ्रास्टेस – संतों के जीवन के संग्रहकर्ता और संकलक, सम्राट कॉन्स्टेंटिन VII के सचिव; उनकी मृत्यु लगभग 940 में हुई।

उनके मुख पर दृष्टि डाली और उनके ललाट पर सोने के अक्षरों में 'पौलुस, मसीह का प्रेरित' लिखा देखा। और यह देखकर (जो कोई और नहीं देख सकता था), वह आनंद और भय से प्रेरित के चरणों में गिर पड़ी, मसीह को सच्चा ईश्वर स्वीकार करते हुए और पवित्र बपतिस्मा का अनुरोध करते हुए। और वह पहली थीं जिन्हें बपतिस्मा दिया गया (उनका नाम ज़ेंथिप्पे था), उनके बाद उनके पति प्रोब, उनके पूरे परिवार, शहर के गवर्नर फिलोथियस, और वहाँ के कई अन्य लोगों को भी बपतिस्मा दिया गया।

पश्चिम के इन सभी देशों में यात्रा करके, उन्हें पवित्र विश्वास के प्रकाश से प्रकाशित करते हुए, और अपने निकटवर्ती शहादत की पूर्वदृष्टि रखते हुए, पवित्र प्रेरित एक बार फिर रोम लौट आए, जहाँ से उन्होंने अपने शिष्य, संत तीमथियुस को लिखा, और कहा: *'क्योंकि मैं अब बलिदान के रूप में ढाला जा रहा हूँ, और मेरा प्रस्थान का समय आ गया है। मैंने अच्छा संघर्ष किया है, मैंने दौड़ पूरी कर ली है, मैंने विश्वास बनाए रखा है; और अब मेरे लिए धार्मिकता का मुकुट रखा हुआ है, जिसे प्रभु, वह धर्मी न्यायी, उस दिन मुझे प्रदान करेंगे'* (2 तीमु. 9:6–8)।

चर्च के इतिहासकारों ने पवित्र प्रेरित पौलुस की शहादत के समय के बारे में विभिन्न विवरण दिए हैं। निकिफोरस कैलिकिस्टस[4775] अपनी इतिहास की पुस्तक 2, अध्याय 36 में लिखते हैं कि संत पॉल ने संत प्रेरित पतरस के साथ उसी वर्ष और उसी दिन कष्ट सहे, जादूगर साइमन के कारण, जिसे उन्होंने पतरस को वश में करने में मदद की थी। हालाँकि, अन्य लोग बताते हैं कि पतरस की मृत्यु के एक पूरे वर्ष बाद, पौलुस ने उसी 29 जून के दिन यातनाएँ भोगीं जिस दिन एक वर्ष पहले संत पतरस को सूली पर चढ़ाया गया था। पौलुस की मृत्यु का कारण यह बताया गया है कि मिसीह के उपदेश के माध्यम से, उन्होंने कुंवारी लड़कियों और महिलाओं को एक पवित्र और शुद्ध जीवन जीने के लिए प्रोत्साहित किया। हालाँकि, इन विवरणों में कोई बड़ी विसंगति नहीं है: क्योंकि संत पीटर के जीवन-चरित्र में (सिमियोन मेटाफ्रastes के अनुसार) यह कहा गया है कि संत पीटर ने जादूगर साइमन की मृत्यु के तुरंत बाद कष्ट नहीं सहे, बल्कि कई साल बाद, नेरो की दो प्रिय रखेलियों, एलेक्ज़ेंड्रा और एलेक्ज़ेंड्रिना, के कारण, जिन्हें प्रेरित पीटर ने मसीह धर्म अपनाने के लिए प्रेरित किया था और पवित्र जीवन जीना सिखाया था। और चूँकि संत पॉल भी पतरस के साथ ही रोम और आसपास के क्षेत्रों में रहते थे, इसलिए यह काफी संभव है कि दोनों घटनाएँ घटीं—अर्थात्, कि संत पॉल ने रोम में अपने पहले प्रवास के दौरान साइमन द मैगस से निपटने में संत पतरस की सहायता की, और, दूसरी बार रोम पहुँचने पर, उन्होंने फिर से संत पतरस के साथ मिलकर मानव जाति के उद्धार के लिए सेवा की, और पुरुषों तथा महिलाओं को एक पवित्र और शुद्ध जीवन जीने की शिक्षा दी। और इस प्रकार, पवित्र प्रेरितों ने दुष्ट सम्राट नीरो का क्रोध भड़काया, जो एक व्यभिचारी जीवन जीता था[4776] , जिसने दोनों को मृत्युदंड सुनाया, और पतरस को एक विदेशी होने के नाते सूली पर चढ़ाकर मृत्युदंड दिया, और पौलुस को, एक रोमन नागरिक होने के नाते (जिसे अपमानजनक मृत्यु के अधीन नहीं किया जा सकता था), सिर कलम करके, यद्यपि बिल्कुल उसी वर्ष नहीं, तो बिल्कुल उसी दिन फांसी दी गई। जब पौलुस का सम्मानित सिर धड़ से अलग किया गया, तो घाव से दूध के साथ खून बहा। विश्वासियों ने, उनके पवित्र शरीर को लेकर, उसे संत पतरस के साथ उसी स्थान पर सुला दिया।

इस प्रकार मसीह का चुना हुआ पात्र, राष्ट्रों का शिक्षक, संसार का प्रचारक, स्वर्गीय ऊँचाइयों और स्वर्ग की आशीषों का प्रत्यक्षदर्शी, स्वर्गदूतों और मनुष्यों दोनों के लिए आश्चर्य का स्रोत, महान तपस्वी और कष्ट सहने वाले, जिसने अपने शरीर पर अपने प्रभु के घावों को वहन किया, पवित्र प्रधान प्रेरित पौलुस का निधन हुआ। और दूसरी बार, अब अपने शरीर के बिना, तीसरे स्वर्ग में आरोहण किया और त्रिमूर्ति की ज्योति के सामने अपने मित्र और सहकर्मी, पवित्र प्रधान प्रेरित पतरस के साथ खड़े हुए,[4777] , जो संघर्षशील कलीसिया से विजयी कलीसिया में पहुँच चुके

[4775] निकिफ़ोरस कैलिस्टोस – एक यूनानी चर्च इतिहासकार; उनकी 23 पुस्तकों वाली *चर्च इतिहास* विशेष रूप से उल्लेखनीय है, जिनमें से पहली 18 पुस्तकें सुरक्षित हैं, जबकि शेष के केवल अंश ही बचे हैं; उनकी मृत्यु 1350 में हुई।

[4776] नीरो – रोमन सम्राट (54–68 ईस्वी) – ने अपनी क्रूरता, यहाँ तक कि अपने सबसे करीबी रिश्तेदारों और विशेष रूप से ईसाइयों के प्रति, अपने ऊपर अपमान लाया। साथ ही, वह विद्वानों, कवियों और गायकों का संरक्षक था, और स्वयं ओलंपिक खेलों में भाग लेता था। अहंकारी, विलासी और असंयमी, उसने अपने खिलाफ एक साजिश को जन्म दिया और उसे अपनी जान लेने के लिए मजबूर होना पड़ा।

[4777] संत पौलुस प्रेरित ने हमें अपनी पत्रीयों में अपने अन्य सहकर्मियों के नाम बताए हैं। उन्होंने प्रेमपूर्वक उनकी सहायता की, और वह स्वयं उनसे इतने प्रसन्न थे, कि हमें उनके जीवन के इस वृत्तांत में कम से कम कुछ लोगों का उल्लेख तो करना ही चाहिए, जिन्हें वह स्वयं कृतज्ञतापूर्वक याद करते हैं। उदाहरण के लिए, वह लूका का उल्लेख करते हैं, जिनकी सुसमाचार के लिए सभी कलीसियाओं में प्रशंसा की गई थी और, इसके अलावा, उन्हें दान के उद्देश्य से पौलुस के साथ जाने के लिए कलीसियाओं द्वारा चुना गया था (2 कुरिन्थियों 8:18-19); और तीमुथियुस, जिन्होंने प्रेरित की तरह प्रभु के काम के लिए परिश्रम किया, और जिनके समान उत्साही पौलुस को कोई नहीं मिला। तिमोथी सुसमाचार का प्रचार करने में उसकी सेवा ऐसे करता है जैसे एक पुत्र अपने पिता की सेवा करता है (1 कुरिन्थियों 16:10; फिलिप्पियों 2:19–22); वह तिकीकोस

थे, उत्सव मनाने वालों के आनंदपूर्ण धन्यवाद, गायन और उल्लास के बीच; और अब वे पिता और पुत्र और पवित्र आत्मा, त्रिमूर्ति में एक परमेश्वर की महिमा करते हैं, जिन्हें हम पापियों द्वारा भी, अब और हमेशा और युगों-युगों तक सम्मान, महिमा, आराधना और धन्यवाद अर्पित किया जाता है। आमीन।

ट्रोपारियन, स्वर 4:

हे संसार के प्रेरितों और शिक्षकों में प्रमुख, सभी के प्रभु से प्रार्थना करो कि वे संसार को शांति और हमारी आत्माओं को महान दया प्रदान करें।

कॉन्टाकियन, स्वर 2:

हे दृढ़ और दैवीय रूप से प्रेरित प्रचारकों, हे प्रभु, आपने अपने प्रेरितों में से प्रमुखों को अपने धन्य लोगों के आनंद और विश्राम में स्वीकार किया है; क्योंकि आपने उनके दुखों और मृत्यु को सभी सांसारिक धन-संपत्ति से अधिक कीमती माना है, जो केवल हृदय को जानते हैं।

13 जुलाई

30 जून (पुराना कैलेंडर)

जुलाई

पवित्र, महिमामय और सर्व-स्तुत्य बारह प्रेरितों का पर्व: ज़ेबेदी का पुत्र याकूब (30 अप्रैल), यूहन्ना (26 सितंबर), फिलिप (14 नवंबर), बार्थोलोमियुस (11 जून), थोमा (6 अक्टूबर), मत्ती (16 नवंबर), अल्फाउस का पुत्र याकूब (9 अक्टूबर), यहूदा (थदायू) (19 जून), सीमोन कट्टर (10 मई) और मत्तीआस (9 अगस्त)

30 जून को स्मरणोत्सव

पतरस (उत्सव दिवस 29 जून), ज़ेबेदी (30 अप्रैल), बार्थोलोमियुस (11 जून), अल्फाउस का पुत्र याकूब (9 अक्टूबर), (10 मई

एक बहुत ही प्राचीन पर्व। इसका उल्लेख चौथी शताब्दी से ही मिलता है।

का उल्लेख एक प्रिय भाई और प्रभु में एक विश्वासयोग्य सेवक के रूप में करता है, जो हार्दिक सांत्वना लाने में सक्षम है (इफिसियों 6:21–22); प्रिस्किल्ला और अक्विला, मसीह यीशु में उसके सहकर्मी (रोमियों 16:3); एपाफ्रोदितुस, उसका प्रिय सहकर्मी और मसीह का वफादार सेवक (कुलुस्सियों 1:7); अरीस्तार्खुस, मरकुस और युस्टुस, परमेश्वर के राज्य के लिए उसके सहकर्मी और उसकी आनन्द का स्रोत (कुलु. 4:10–11); तीतुस, सामान्य विश्वास में एक सच्चा पुत्र, जिसे पौलुस ने क्रीत में जो अधूरा रह गया था उसे पूरा करने का काम सौंपा, और जिसने अपने आगमन, अपनी आनन्द और विश्वासियों के प्रति अपनी दयालुता से उसे सांत्वना दी: 'वह मेरा साथी और सहकर्मी है' (तीतुस 1:4-5; 2 कुरिन्थियों 7:6, 13, 15, 8:23); सोसथेनेस, जो बाद में कोलोन के बिशप बने (1 कुरिन्थियों 1:1)। अंत में, हम सिलास को याद करें, जो प्रेरित पौलुस की इच्छानुसार (प्रेरितों के काम 17:13-15), तिमोथी के साथ, सभी खतरों के बीच बेरिया में भाइयों को विश्वास में मजबूत करने के लिए ही रुके रहे। और ऐसे भी कई अन्य थे जिनके नाम तो नहीं बताए गए, लेकिन उन्हें केवल उनके प्रेम के कार्यों के लिए याद किया जाता है।

14 जुलाई

1 जुलाई (पुराना तरीका)

पवत्रि शहीदों कोस्मास और डैमयिन का दुख-संताप

1 जुलाई को स्मरणोत्सव

हमारे प्रभु मसीह ईश्वर के देह में महमिामय हो जाने के बाद, मसीह के पवत्रि शहीदों के कर्म एक अतअिद्भुत घटना के रूप में सर्वत्र प्रसद्धि हो गए; क्योंकउिनमें उद्धारकर्ता की शक्तप्रिकट हुई; और संतों द्वारा अपने यातना देने वालों के प्रतदिखाया गया साहसी प्रतरिोध, उनके अजेय धैर्य के साथ, सभी के लिए आश्चर्य का स्रोत था। ऐसे शहीदों में ये दोनों थे, जो प्राचीन रोम में एक ही माता-पति से पैदा हुए और ईसाई भक्तके सद्धिांतों में पले-बढ़े - रक्त से भाई - पवत्रि कष्ट-सहने वाले कोस्मास और डैमयिन, जनिके बारे में हम अब बात करेंगे।

चकित्सिा की कला सीखने के बाद, इन पवत्रि भाइयों ने सभी प्रकार के रोगों का सफलतापूर्वक इलाज कयिा, और हर बात में उन्हें स्वयं परमेश्वर की कृपा से सहायता मलिी। जसि भी बीमार व्यक्तया जानवर पर उन्होंने अपना हाथ रखा, वह तुरंत पूर्ण स्वास्थ्य को प्राप्त कर लेता था। इन कुशल उपचारकों ने अपने उपचारों के लिए कसिी से भी कोई भुगतान स्वीकार नहीं कयिा, जसिके कारण उन्हें 'अनुकूलति चकित्सिक' (the unpaid physicians) उपनाम दयिा गया। उन्होंने जनि लोगों को ठीक कयिा, उनसे केवल एक, सबसे कीमती इनाम माँगा: मसीह में वश्विास। और वास्तव में, न केवल रोम में ही, बल्कआिसपास के उन कस्बों और गांवों में भी जहाँ वे बीमारों को ठीक करने के लिए जाते थे, उन्होंने कई लोगों को मसीह के धर्म में परविर्तति कयिा। चंगा करने की कृपा के अलावा, उन्होंने उदार दान के माध्यम से लोगों के लिए अच्छा काम कयिा। उनके पास एक बड़ी संपत्तथिी, जो उनके पूर्वजों द्वारा संचति की गई थी और उनके माता-पति से उन्हें वरिासत में मलिी थी, जसिे उन्होंने बेचकर गरीबों और ज़रूरतमंदों में बाँट दयिा; उन्होंने भूखों को भोजन दयिा और नंगों को कपड़े दिए; संक्षेप में, उन्होंने सभी गरीबों और बेसहारों पर दया दखिाई। जब वे बीमारों को ठीक करते थे, तो वे आमतौर पर उनसे कहते थे:

'हम तो बस अपने हाथ तुम्हारे ऊपर रखते हैं, और अपनी शक्तसि कुछ नहीं कर सकते; परन्तु यह सर्वशक्तमिान एक सच्चे परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह की शक्तहै जो सब कुछ करती है; यदतिुम उस पर वश्विास करो और संदेह न करो, तो तुम तुरन्त चंगे हो जाओगे।'

और वास्तव में, जो वश्विास करते थे वे चंगे हो जाते थे।

इस प्रकार, हर दनि मूर्तपिूजक दुष्टता से मुँह मोड़कर, बहुत से लोग मसीह के पास आने लगे।

ये पवत्रि चकित्सिक एक रोमन गाँव में रहते थे (जहाँ उनके माता-पति की संपत्तथिी)। वहाँ अपना घर बसाकर, उन्होंने पूरे आसपास के क्षेत्र को पवत्रि वश्विास से प्रकाशति कयिा।

इस बीच, दानव, संतों के ऐसे गुणों से प्रकाशमान जीवन से ईर्ष्या करके, ने अपने कुछ दूतों को राजा के पास भेजकर नर्दिोषों पर झूठी नदिा करने के लिए उकसाया। उस समय रोम में कैरनिस[4778] का शासन था। नदिा करने वालों की बात सुनकर उसने तुरंत उन संतों के रहने वाले गाँव में सैनकि भेजे, यह आदेश देकर कपरिोपकारी चकित्सिक कोस्मास और डेमयिन को गरिफ्तार कर उसके सामने पूछताछ के लिए पेश करें।

जब राजा के सैनकि उस गाँव में पहुँचे जहाँ संत रहते थे और उन्होंने कोस्मास और डैमयिन के बारे में पूछना शुरू कयिा, तो वश्विासयिों ने संतों के चारों ओर इकट्ठा होकर उनसे राजा का क्रोध शांत होने तक थोड़ी देर के लिए कहीं छपि जाने की वनिती की। लेकनि संतों ने न केवल इस सलाह पर ध्यान देने से इनकार कर दयिा; बल्कइिसके वपिरीत, उनका इरादा स्वयं उन सैनकिों से मलिने जाने का था जो उनकी तलाश में थे, क्योंकवि मसीह के नाम के लिए प्रसन्नतापूर्वक पीड़ा सहन करना चाहते थे। हालाँकि, जब कई वश्विासी उनके चारों ओर इकट्ठा हुए और आँसू भरी वनितयिों के साथ, उन्हें अपने जीवन की रक्षा करने के लिए कहा—अपने लिए नहीं, बल्कदिूसरों के उद्धार के लिए—तो संतों ने, हालांकि अनचि्छा से, उनकी बात मानी। फरि वश्विासयिों ने संतों को लयिा और उन्हें एक गुफा में छपिा दयिा।

[4778] सम्राट कैरनिस ने 283 से 284 तक शासन कयिा।

इस बीच, सैनकिों ने संतों की हर जगह अच्छी तरह से तलाशी लेने के बाद भी उन्हें न पाकर, अपने क्रोध और नरिाशा में उस गाँव के कुछ धर्मनष्ठि पुरुषों को पकड़ लयिा, उन्हें हथकड़ी पहना दी और रोम ले गए।

यह जानकर, संत कोस्मास और डैमयिन तुरंत गुफा से बाहर नकिले और सैनकिों के पीछे दौड़े; जब वे रास्ते में उनसे मलि गए, तो उन्होंने उनसे कहा:

'इन नर्दिोष लोगों को छोड़ दो, और हमारी जगह हमें ले जाओ, क्योंकि हम ही वे लोग हैं जन्हिें पकड़ने का तुम्हें आदेश दयिा गया है।'

इस प्रकार, सैनकिों ने उन लोगों को रहिा कर दयिा और संतों कोस्मास और डेमयिन को हथकड़ी पहनाकर रोम ले गए। वहाँ संतों को एक कालकोठरी में हथकड़यिों में जकड़कर रखा गया, जहाँ वे सुबह तक रहे। प्रातकाल, सम्राट ने सार्वजनकि प्रदर्शनों के लिए नर्धिारति क्षेत्र में स्थति अपने सामान्य न्यायकि दरबार में लोगों के सामने अपनी सीट ली; पवत्रि कैदयिों कोस्मास और डैमयिन को अपने सामने लाने का आदेश देने के बाद, सम्राट ने उनसे ऊँचे स्वर में कहा:

क्या तुम ही हमारे पूर्वजों के देवताओं का वरिोध करते हो और कसिी जादुई चाल से लोगों और पशुओं की बीमारयिों को मुफ्त में ठीक करते हो, और साधारण लोगों को देवताओं और अपने पूर्वजों के कानूनों से मुंह मोड़ने के लिए लुभाते हो? परन्तु अब, अपने भ्रम को त्यागो और मेरी अच्छी सलाह मानो; आगे आओ और देवताओं को बलदिान चढ़ाओ, जन्हिोंने अब तक इस क्षण तक तुम्हें सहन कयिा है। देवता, यद्यपि तुमसे रुष्ट हैं, फरि भी उन्होंने बुराई का बदला बुराई से नहीं दयिा है - यद्यपि वे ऐसा कर सकते थे - बल्कि उन्होंने धैर्यपूर्वक तुम्हारे उनके पास लौटने की प्रतीक्षा की है।

मसीह के पवत्रि सेवकों ने, मानो, एक स्वर में राजा को उत्तर दयिा, कहते हुए:

'हमने कसिी को भी भटकाया नहीं है; हम कसिी जादू-टोने को नहीं जानते, और न ही हमने कसिी को कोई हानि पहुँचाई है, बल्कि हम अपने उद्धारकर्ता और प्रभु यीशु मसीह की शक्ति से बीमारयिों को ठीक करते हैं, जैसा कि उन्होंने आज्ञा दी थी, कहते हुए: *"बीमारों को चंगा करो, कोढ़यिों को शुद्ध करो"* (मत्ती 10:8)। हम यह नश्शिुल्क करते हैं, क्योंकि उद्धारकर्ता ने यही आज्ञा दी है, कहते हुए: *'तुमने मुफ्त में पाया है; मुफ्त में दो'* (मत्ती 10:8)। क्योंकि हम धन-दौलत नहीं चाहते, बल्कि मानव आत्माओं के उद्धार की कामना करते हैं; और हम गरीबों और बीमारों की सेवा उसी प्रकार करते हैं जैसे हम स्वयं मसीह की सेवा करेंगे, क्योंकि वह उनके लिए कए गए दया के कार्यों को स्वयं अपने ऊपर ले लेते हैं, और जो भलाई करते हैं उनसे कहते हैं: *'क्योंकि मैं भूखा था और तुमने मुझे भोजन दयिा; मैं प्यासा था और तुमने मुझे पानी पलिाया; मैं अजनबी था, और तुमने मेरा स्वागत कयिा; मैं नग्न था, और तुमने मुझे वस्त्र दए; मैं बीमार था, और तुमने मेरी देखभाल की; मैं जेल में था, और तुम मेरे पास आए* (मत्ती 25:35-36)। हम स्वर्ग के राज्य के अनंत जीवन में उससे पुरस्कार प्राप्त करने की आशा में, उसके इन आज्ञाओं को पूरा करने का प्रयास करते हैं। परन्तु हम उन देवताओं की पूजा करने के लिए कभी भी सहमत नहीं होंगे जन्हिें आप मानते हैं। आप और जो आपसे सहमत हैं, वे उनकी पूजा कर सकते हैं! हम, हालाँकि, यह अच्छी तरह जानते हैं कि वे देवता नहीं हैं। हे राजा, यदि आप चाहें, तो हम आपको सुठ्ठी सलाह देंगे, ताकि आप एक सच्चे परमेश्वर, सभी के सृष्टकिर्ता को जान सकें, *'क्योंकि वह अपने सूर्य को दुष्टों और भलों पर उदय होने की आज्ञा देता है, और धर्मी और अधर्मी दोनों पर वर्षा भेजता है'* (मत्ती 5:45), – हमारे लिए, उनके परम पवत्रि नाम की महमिा के लिए: मूर्खतापूर्ण और नर्जिीव मूर्तयिों से मुंह मोड़ो – और उनकी सेवा करो!

सम्राट करनि ने संत को इस प्रकार उत्तर दयिा:

'मैंने तुम्हें प्रभावशाली भाषण देने के लिए नहीं बुलाया है, बल्कि देवताओं को बलदिान चढ़ाने के लिए बुलाया है।'

'हम अर्पति करते हैं,' संतों ने उत्तर दयिा, 'एक रक्तहीन बलदिान – अपनी आत्माएँ – हमारे एकमात्र ईश्वर को, जन्हिोंने हमें शैतान के फंदे से छुड़ाया है और संपूर्ण जगत के उद्धार के लिए अपने एकलौते पुत्र को दे दयिा है। हमारा यह ईश्वर न तो सृष्ट है, बल्कि सर्व का सृष्टकिर्ता है; जबकि आपके देवता तो केवल मानवीय कल्पनाएँ और के कारीगरों की कारीगरी हैं; और यदि मनुष्यों में आपके लिए इन देवताओं को बनाने की कला न होती, तो आपकी पूजा करने के लिए कोई न होता!

'शाश्वत देवताओं को क्रोधति मत करो,' करनि ने कहा, 'बल्कि बलदिान चढ़ाओ और उनकी पूजा करो, कहीं ऐसा न हो कि तुम पहले से तैयार की गई यातनाओं को भोगो।'

'हे करनि, तेरा और तेरे देवताओं का लज्जति होना हो,' पवत्रि आत्मा से परपिूर्ण मसीह के सेवकों ने कहा। 'चूँकि तुम्हारा मन उस ईश्वर से मुँह मोड़ता है जो हमेशा से है और हमेशा जीवति रहेगा, और इसके बजाय उन नरिर्थक मूर्तयिों

की ओर मुड़ता है जो कभी मौजूद नहीं थीं, तो तुम्हारा चेहरा तुम्हारे शरीर पर बदल जाए और अपनी जगह से मुड़ जाए—तुम्हारी अपनी लज्जा के लिए और ताकि तुम अपने ही अनुभव से समझ सको कि हमारा ईश्वर सर्वशक्तिमान है!'

जब संत ये वचन बोल रहे थे, तो करिन का चेहरा अचानक बदल गया और उसकी गर्दन इस तरह मुड़ गई कि उसका चेहरा उसके कंधों पर आ गया, और वह अपनी गर्दन घुमा नहीं सकता था; वास्तव में, कोई भी उसकी मदद नहीं कर सकता था। इस प्रकार वह मुड़ी हुई गर्दन और चेहरे के साथ सिंहासन पर बैठ गया। इस बीच, यह सब देखने वाले लोग ज़ोर से चिल्लाए:

'महान है ईसाई ईश्वर, और उसके सिवाय कोई दूसरा ईश्वर नहीं है!'

उस समय, कई लोग मसीह में विश्वास करने लगे और उन्होंने पवित्र चिकित्सकों से राजा को चंगा करने का आग्रह किया। राजा ने स्वयं भी उनसे यही आग्रह किया, यह कहते हुए:

'अब मैं सचमुच जानता हूँ कि आप सच्चे परमेश्वर के सेवक हैं। इसलिए, मैं आपसे विनती करता हूँ—चूँकि आप पहले ही कई लोगों को चंगा कर चुके हैं—कि मुझे भी चंगा करें, ताकि मैं भी विश्वास कर सकूँ कि उस एक के सिवा कोई और परमेश्वर नहीं है जिसकी आप प्रचार करते हैं, जिसने स्वर्ग और पृथ्वी की रचना की।'

संतों ने उत्तर दिया, 'यदि आप उस ईश्वर को जान जाएँ जिन्होंने आपको जीवन और राज्य दिया है, और आप पूरे हृदय से उस पर विश्वास करें, तो वह आपको चंगा कर देंगे।'

राजा ने ऊँचे स्वर में घोषणा की, 'मैं आप में विश्वास करता हूँ, हे प्रभु यीशु मसीह, सच्चे परमेश्वर, मुझ पर दया करें और मेरे पूर्व अज्ञान को मेरे विरुद्ध न रखें!'

जब राजा ने ये शब्द कहे, तो उसकी गर्दन सीधी हो गई, उसका चेहरा अपनी पूर्व की अवस्था में लौट आया, और वह अपनी कुर्सी से उठकर, अपनी आँखें आकाश की ओर उठाकर, हाथ उठाकर, सभी लोगों के साथ परमेश्वर का धन्यवाद करने लगा, और इस प्रकार कहने लगा:

'धन्य हैं आप, हे मसीह, सच्चे परमेश्वर, जिन्होंने अपने इन पवित्र सेवकों के द्वारा मुझे अंधकार से प्रकाश में लाया है।'

इस प्रकार चंगा हो जाने पर, राजा ने पवित्र सेवकों कोस्मास और डामियन को उपहार देकर सम्मानित किया और उन्हें शांति से विदा किया।

रोम छोड़कर, संत अपने गाँव के लिए रवाना हुए। उस गाँव और पड़ोसी गाँवों के निवासियों ने, रोम में संतों द्वारा किए गए सभी कार्यों के बारे में सुनकर, ईश्वर के इन सेवकों से मिलने के लिए बाहर आए और उन्हें खुशी, हर्ष और प्रभु मसीह की महिमा करते हुए स्वागत किया। इस बीच, अपने रिवाज़ के अनुसार, संत एक बार फिर से पड़ोसी कस्बों और गांवों में घूमे, बीमारों को ठीक किया और सभी को पवित्र विश्वास में शिक्षा दी, और फिर से अपने गांव लौट आए। मानव जाति का शत्रु—शैतान—अपनी प्रारंभिक योजनाओं से संतों को नुकसान पहुँचाने में विफल रहने और उन्हें जीवितों के बीच से मिटाने में असमर्थ होने के बाद, एक और योजना बनाई। उस देश में एक बहुत प्रसिद्ध चिकित्सक था, जिससे इन संतों, कोस्मास और डैमियन ने, मूल रूप से चिकित्सा की कला सीखी थी। इन्हीं डॉक्टर को मानव जाति के शत्रु—जो ईश्वर के संतों की महिमा सहन नहीं कर सकता था—ने संतों से ईर्ष्या करना सिखाया। चापलूसी से संतों को अपने पास बुलाकर, वह उन्हें औषधीय पौधे इकट्ठा करने के बहाने एक पहाड़ पर ले गया, जबकि उसके हृदय में एक काईन-जैसा विचार था: '[4779] '। संतों को बहुत दूर ले जाने के बाद, उसने उनमें से प्रत्येक को अलग-अलग पौधे इकट्ठा करने के लिए कहा। फिर, पहले एक पर हमला करके, उसने उसे पत्थर मारकर हत्या कर दी, और बाद में दूसरे को भी उसी तरह मार डाला; अंत में, संतों के शवों को लेकर, उसने उन्हें वहाँ मौजूद एक कुएँ के पास छिपा दिया[4780] ।

इस प्रकार मसीह के पवित्र शहीदों, निःशुल्क चिकित्सकों कोस्मास और डामियन ने अपना अंत पाया और हमारे प्रभु और उद्धारकर्ता मसीह से शहादत के मुकुट के योग्य ठहरे, जिनके लिए पिता और पवित्र आत्मा के साथ, अब और हमेशा के लिए महिमा और स्तुति अर्पित की जाती है। आमीन।

[4779] काइन आदम और हव्वा का सबसे बड़ा पुत्र था। पाप की अवस्था में जन्मा पहला बच्चा होने के कारण, काइन उदास और दुर्भावनापूर्ण था, और ईर्ष्या के कारण उसने अपने शांत स्वभाव वाले भाई हाबिल को मार डाला (उत्पत्ति 4:1–16)। यही घटना है जिसका उल्लेख संतों की जीवनी में किया गया है।

[4780] संत कोस्मास और डैमियन, जो निस्विार्थ चिकित्सक थे, का 284 में निधन हो गया।

हमारे पूजनीय पिता पीटर की स्मृति

1 जुलाई को स्मरण किया जाता है

आदरणीय पीटर का जन्म और पालन-पोषण कॉन्स्टेंटिनोपल में हुआ था। वह प्रतिष्ठित और अमीर माता-पिता के पुत्र थे। उनके पिता, जिनका नाम कॉन्स्टेंटाइन था, एक पैट्रिसियन[4781] के पद पर थे और एक सैन्य कमांडर के रूप में सेवा करते थे। अपने युवा काल से ही, पीटर ने खुद को अध्ययन के प्रति पूरी लगन से समर्पित कर दिया; उन्होंने विशेष रूप से दर्शनशास्त्र में महारत हासिल की, साथ ही सभी सांसारिक विज्ञानों का भी अध्ययन किया। वयस्क होने पर उन्होंने विवाह कर लिया और अपने पिता की मृत्यु के बाद, उन्हें अपने पिता का सम्मानजनक पैट्रिसियन पद प्राप्त हुआ। उन्हें धर्मपरायण सम्राज्ञी आइरीन और उनके पुत्र कॉन्स्टेंटिन[4782] के शासनकाल के दौरान पैट्रिसियन नियुक्त किया गया था। जब निकिफ़ोरस[4783] ने शाही सिंहासन संभाला और यूनानियों और बुल्गारों के बीच युद्ध छिड़ गया, तो पीटर को सभी रेजिमेंटों का कमांडर-इन-चीफ नियुक्त किया गया और वह अपने सैनिकों के साथ बुल्गारों के खिलाफ़ चल पड़ा। उस महान युद्ध के दौरान, ग्रीक सेना ने शुरू में बुल्गारियाई सेना को पराजित कर दिया; लेकिन बाद में, दैवीय व्यवस्था से, बुल्गारियाई सेना अपनी पराजय से उबरकर ग्रीक सेना को करारी हार देने में सफल रही और अपने ही सम्राट निकिफोरस की हत्या कर दी।

उसी क्षण, धन्य पतरस को पचास यूनानी राजकुमारों के साथ बुल्गारियाई लोगों ने पकड़ लिया और यातना तथा मृत्यु की सजा सुनाकर एक अंधकक्ष में बंद कर दिया। और इस प्रकार, जब वह अपनी मुक्ति के लिए परमेश्वर से भक्तिपूर्वक प्रार्थना कर रहा था, तब मसीह की छाती पर विश्राम करते हुए संत जॉन द थियोलोजियन मध्यरात्रि में उसके सामने प्रकट हुए, उसे उसकी कैद से मुक्त किया और रोम ले आए। उस समय से, पीटर ने अपना पूरा जीवन ईश्वर की सेवा के लिए समर्पित कर दिया; सभी सांसारिक चीजों की निरर्थकता को महसूस करते हुए, वह ओलंपस पर्वत पर चले गए[4784] ; वहाँ, एक दैवीय रूप धारण करके, उन्होंने जॉन द ग्रेट के साथ तपस्या का जीवन जिया, और हर सद्गुण में उत्कृष्ट रहे।

वहाँ चौंतीस साल रहने के बाद, अपनी पत्नी और बेटे की मृत्यु के बाद, पतरस कॉन्स्टेंटिनोपल पहुँचे। यहाँ उन्होंने पहले कुछ समय उस चर्च में बिताया जिसे उन्होंने स्थापित किया था, जिसे इवांड्रियस का चर्च के नाम से जाना जाता है। फिर वे एक एकांत, शांत स्थान पर चले गए, जहाँ उन्होंने अपने लिए एक छोटा सा कोठरीनुमा आवास बनाया और आठ साल तक वहाँ रहे, उन्होंने अपने तपस्वी जीवन भर बाल-कपड़ा पहना और नंगे पांव रहे। उन्होंने उपवास, जागरण और अन्य मठवासी तपस्या के अभ्यासों द्वारा स्वयं को पूरी तरह से थका दिया।

इतना पुण्यपूर्ण और ईश्वर-प्रसन्न जीवन जीने के बाद, पूजनीय पीटर प्रभु में निद्रित हो गए और संतों की पंक्ति में शामिल हो गए, जो सदा और अनंत काल तक पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा की महिमा करते हैं। आमीन।[4785]

संत पोतिस का बलिदान

1 जुलाई को स्मरण किया जाता है

सम्राट एंटोनिनस[4786] के शासनकाल में, जब पूरे देश में ईसाइयों पर अत्याचार चरम पर था, सार्डिनिया में[4787] एक हिलास नामक व्यक्ति रहता था, जो मूर्तिपूजक दुष्टता का आदी था। उसका एकमात्र बेटा था, पोटिस नाम का तेरह वर्षीय लड़का। पोटिस पर ईश्वर की बुद्धि का प्रकाश हुआ – जो *'शिशुओं के होठों से'* स्तुति प्राप्त करते हैं (भजन

[4781] रोमनों में, 'पैट्रिशियन' मूल रोमन नागरिकों के पूर्ण-अधिकार वाले, स्वतंत्र-जन्मे बच्चे थे। रोम में लगभग सौ पैट्रिशियन परिवार माने जाते थे। पैट्रिशियन आमतौर पर उच्चतम सरकारी पदों पर रहते थे।

[4782] कांस्टेंटिन छठे (सातवें) पोर्फ्योजेनिटिस ने 780 से 797 तक शासन किया। उनकी माता, आइरीन ने 797 से 802 तक शासन किया।

[4783] निकिफ़ोरस प्रथम ने 802 से 811 तक शासन किया।

[4784] माउंट ओलंपस एशिया माइनर में, फ्रीजिया और बिथिनिया की सीमाओं पर स्थित था।

[4785] संत पीटर की मृत्यु लगभग 865 में हुई।

[4786] सम्राट एंटोनिनस पियस ने 138 से 161 तक शासन किया।

[4787] सार्डिनिया भूमध्य सागर के द्वीपों में से एक है; यह अब इटली के साम्राज्य का हिस्सा है।

संहति 8:3) – और पवत्रि आत्मा की कृपा से इतना प्रकाशति हुआ कि वह अपने सृष्टकिर्ता को जान गया और केवल उन्हीं को अपनी प्रार्थना और पूजा अर्पति करने लगा, जबकि निर्जीव मूर्तयिों को तुच्छ समझता था। पढ़ना जानने के कारण, पोटति ने ईसाई पवत्रि धर्मग्रंथों को पाया और उन्हें पढ़ने के बाद, वह आध्यात्मकि ज्ञान और समझ से भर गया। ईसाइयों में शामलि होने के लिए अपने पति को गुप्त रूप से छोड़ने के बाद, उसने पवत्रि बपतस्मिा ग्रहण कयिा और घृणति मूर्तपिूजक बलदिानों से मुंह मोड़ लयिा। पोतटिस के पति, हलिास, , ने जब देखा कि उसका बेटा मूर्तयिों की पूजा नहीं कर रहा था, तो वह बहुत दुखी हुआ और उसे अपने साथ देवताओं को बलदिान देने के लिए धीरे-धीरे मनाने लगा।

पवत्रि युवक ने हलिास की वनितयिों का उत्तर देते हुए कहा, 'पताजी, आप मेरे प्रति कठिोर शब्द कह रहे हैं, और मुझे राक्षसों को बलदिान चढ़ाने का आदेश दे रहे हैं! यदि आप वास्तव में मुझसे, अपने पुत्र से, वैसे ही प्रेम करते हैं जैसे एक पति को करना चाहिए, तो मुझे उस बात की सलाह दें जो बचाए, न कि उस बात की जो आत्मा का नाश करे। काश कि आप भी, सत्य को जानकर, इस घृणति भ्रम से मुँह मोड़ लें और उस एक ईश्वर की सेवा करना शुरू कर दें जो स्वर्ग में वास करता है और सभी चीजों को धारण करता है—सभी सृष्टि का स्रष्टा!

उसके पति ने गुस्से में आकर उसे एक अलग कमरे में बंद कर दयिा और आदेश दयिा कि घर में कोई भी उस लड़के को रोटी या पानी देने की हम्मित न करे।

उसने धमकी दी, 'देखेंगे कि तुम्हारा ईश्वर, जसिका तुम सम्मान करते हो, तुम्हें भोजन और पानी दे पाता है या नहीं!'

इस बीच, पवत्रि युवक पोतटि घुटने टेककर ईश्वर से इस प्रकार प्रार्थना करने लगा:

– *'हे प्रभु, जो मुझसे झगड़ते हैं, उनसे झगड़; जो मुझसे लड़ते हैं, उन्हें परास्त कर'* (भजन संहति 34:1)। मैं आपकी सेवा करना चाहता हूँ, हे मेरे प्रभु यीशु मसीह, जन्हिोंने मानव जाति के उद्धार के लिए स्वर्ग से पृथ्वी पर अवतरण की कृपा की। अपने दीन दास की प्रार्थना पर दृष्टि डालें और मेरी भूख में मुझे बल दें, जैसे आपने अपने भवष्यिवक्ता दानयिेल को तब बल दयिा था जब उसे सहिों के बलि में फेंका गया था। आपने अपनी पवत्रि सुसमाचार में कहा है: *'धन्य हैं वे जो धार्मकिता के लिए भूखे और प्यासे हैं, क्योंकि उन्हें तृप्त कयिा जाएगा... धन्य हैं वे जो धार्मकिता के कारण सताए जाते हैं, क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है* (मत्ती 5:6, 10)। अत; मुझ पर भी कृपा करें, जो यहाँ कैद हूँ और आपकी धार्मकिता के लिए भूख और प्यास से पीड़ति हूँ!

संत कई दनिों तक उसी जेल में रहे, जहाँ उनके पति ने उन्हें भूख और प्यास से पीड़ति कयिा, फरि भी ईश्वर ने उन्हें आध्यात्मकि भोजन से बलवान और पवत्रि आत्मा की कृपा से पोषति कयिा, जसिसे उनका चेहरा सूर्य के समान दमकने लगा। प्रभु में आनंदति होकर, उन्होंने कहा: 'हे प्रभु, मैं तुझे धन्यवाद देता हूँ, कि तूने मुझे, अपने अयोग्य सेवक को, अपनी आध्यात्मकि आशीर्वादों से तृप्त करने की कृपा की है, जनिकी जतिनी अधकि प्राप्ति होती है, उतनी ही अधकि इच्छा होती है।' मैं आपसे वनिती भी करता हूँ, हे दयालु और कृपालु ईश्वर, देवदूतों और महादूतों के ईश्वर, जो पापी की मृत्यु नहीं चाहते, बल्कि यह चाहते हैं कि वह लौट आए और जीवति रहे—मेरी प्रार्थना सुनें जब मैं अपने पति के लिए पूरे हृदय से पुकारता हूँ: उन्हें अपने सत्य का ज्ञान और वश्विास की समझ प्रदान करें; उसका मन खोलें, ताकि वह आपको, अपने स्रष्टा को जान सके, और केवल आपकी ही सेवा कर सके, न कि यूनानी बहुदेववाद की। ईसाई जाति का शत्रु—शैतान—उस पर न प्रसन्न हो, बल्कि आपकी सर्वशक्तमिान शक्ति, जो भटके हुए को मोक्ष की ओर ले जाती है, उसकी द्वारा महमिामय हो।

जब संत इन शब्दों से प्रार्थना कर रहे थे, तब प्रभु का स्वर्गदूत उन्हें दखिाई दयिा, उसने उन्हें बल दयिा और कहा:

'तुम्हें जो कुछ भी माँगना हो, वह मलिेगा! परमेश्वर, जसि पर तुम पूरे मन से वश्विास करते हो, वह हमेशा तुम्हारे साथ है, और तुम उससे जो कुछ भी माँगोगे, वह तुम्हें मलिेगा। लेकनि यह भी जान लो कि मानव आत्माओं के वनिाशक—शैतान ने—तुम्हारे वरिुद्ध एक षड्यंत्र रचा है। इसलिए, तुम्हें *'परमेश्वर का पूरा कवच'* (इफसियिों 6:11) धारण करना चाहिए, ताकि तुम उसकी युक्तयिों का वरिोध कर सको।

ये वचन कहने के बाद, प्रकाश का स्वर्गदूत प्रस्थान कर गया।

इस बीच, संत ईश्वर से प्रार्थना करते रहे, यह कहते हुए:

'हे प्रभु, जब मैं पुकारूँ तो मेरी सुन; मुझ पर दया कर और मेरी सुन' (भजन संहति 26:11)।

कुछ समय बीत जाने के बाद, अंधकार का दूत अचानक झूठी रोशनी के तेज में पोटटिस के पास प्रकट हुआ और उससे कहा:

– 'देख, हे कोमल युवक, मैं तेरे पास इसलिये नहीं आया हूँ कि तू भूख और प्यास से शरीर और आत्मा में दुर्बल हो जा, बल्कि इसलिये कि तू अपने पिता की आज्ञा मान और उनके साथ भोजन करके तृप्त हो जा। मैं मसीह हूँ, जिसने तुझ पर दया की है; तेरे आँसू देखकर, मैं तुझसे मिलने आया हूँ।'

पवित्र युवक पोटटि ने प्रलोभक से उत्तर दिया, "'*मेरे पास से दूर हो जा, शैतान*'" (मत्ती 16:23), सत्य के शत्रु। 'तू परमेश्वर के दास को धोखा नहीं देगा: तू मसीह नहीं, बल्कि मसीह-विरोधी है।'

यह कहकर, संत ने प्रार्थना करना शुरू किया, और कहा:

– हे प्रभु यीशु मसीह! इस घृणित शत्रु को मुझसे दूर भगा दो और उसे उस गहरी खाई में फेंक दो जिसमें वह अपने सेवकों के साथ दण्डित है!

तब शैतान, अपना झूठा दैवीय रूप त्यागकर, पंद्रह कोहनी लंबा एक विशालकाय दैत्य बन गया, और फिर एक बार फिर एक बड़े बैल में बदलकर भयानक स्वर में गर्जने लगा। संत ने, हालाँकि, खुद को क्रूस के चिह्न से सुरक्षित कर लिया था, और उससे कहा:

'दुष्ट आत्मा, मसीह के योद्धाओं को परीक्षा में डालना बंद कर! तू उसको डरा नहीं सकता जिसे क्रूस की शक्ति द्वारा छुटकारा मिला है!'

और शैतान तुरंत ही गायब हो गया, लेकिन उसकी आवाज़ दूर से सुनाई दी, जो कह रही थी:

'अरे, एक छोटे से लड़के ने मुझे हरा दिया! हाय, अब मैं कहाँ विश्राम करूँगा? मैं अपने तीर किस पर चलाऊँगा? अगर मैं किसी बूढ़े के पास जाऊँ, तब भी मैं उससे उतनी आसानी से पराजित नहीं होता जितना इस लड़के से हुआ। लेकिन मैं जाऊँगा और सम्राट एंटोनिस की एकमात्र बेटी में प्रवेश करूँगा, और उस पर मैं अपनी शक्ति का प्रदर्शन करूँगा!' जहाँ तक तुम्हारा सवाल है, पोटटि, मैं राजा को तुम्हारे विरुद्ध भड़काऊँगा, और उसे तुम्हें भयानक यातनाओं में नष्ट करना सिखाऊँगा!

'शत्रु,' संत पोटटिस ने उत्तर दिया, 'तुम मुझे चाहे जो भी यातनाएँ दो, मैं हर जगह तुम पर विजय प्राप्त करूँगा; यह मैं नहीं हूँ जो विजयी होऊँगा, बल्कि मेरे प्रभु यीशु मसीह हैं!'

तब शैतान चिल्लाता हुआ भाग गया:

'हाय मुझ पर, क्योंकि मुझे एक युवक ने हरा दिया है!'

इसके बाद, पोटटिस के पिता, गिलास, उसे जेल से बाहर निकालकर, उससे कहा:

'मेरे बेटे, देवताओं को बलिदान चढ़ाओ, क्योंकि सम्राट ने आदेश दिया है कि जो कोई भी देवताओं को बलिदान नहीं चढ़ाएगा, उसे भयानक यातनाओं के बाद मौत की सज़ा दी जाएगी, या जानवरों के आगे फेंक दिया जाएगा ताकि वे उसे नोच-नोच कर खा जाएँ। मुझे तेरी चिंता है, क्योंकि तू मेरा एकलौता बेटा है; मैं अपना वारिस खोना नहीं चाहता।'

'किस देवता को,' संत ने पूछा, 'मैं बलिदान दूँ, ताकि मैं उनके नाम जान सकूँ?'

उसके पिता ने कहा, "क्या तुम ज़ीउस[4788] , एरिस[4789] और मिनिर्वा[4790] को नहीं जानते?"

लड़के ने उत्तर दिया, 'जिस दिन मैं पैदा हुआ था, मैंने कभी नहीं सुना कि ये देवता थे, बल्कि मूर्तियाँ थीं।' 'हे पिता, काश आप जान पाते कि ईसाई ईश्वर कितना महान है, जिसने स्वयं को नम्र बनाकर हमें बचाया – तब आप उस पर विश्वास करते, क्योंकि वही एक सच्चा ईश्वर है जिसने स्वर्ग और पृथ्वी की रचना की; अन्य सभी देवता मूर्तिपूजक राक्षस हैं।'

'ये शब्द तुम्हें कहाँ से मिले हैं जो तुम बोलते हो?' गिलास ने पूछा।

'जिसकी मैं सेवा करता हूँ, वही मेरे होठों से बोलता है,' संत ने उत्तर दिया, 'क्योंकि उसने अपनी सुसमाचार में कहा है: "*यह चिंता मत करो कि कैसे या क्या कहना है; क्योंकि उस घड़ी तुम्हें क्या कहना है, वह तुम्हें दिया जाएगा*" (मत्ती 10:19)।'

[4788] ज्यूस – प्राचीन यूनानी धर्म का सर्वोच्च देवता, जिसे अन्य देवताओं और मानव जाति का पूर्वज माना जाता है।

[4789] एरिस या मंगल – युद्ध के देवता।

[4790] मिनिर्वा या एथेना – बुद्धि की देवी।

'क्या तुम यातनाओं से नहीं डरते, मेरे बच्चे?' गलिास ने पूछा। 'तुम क्या करोगे जब तुम्हें राज्यपाल के सामने पेश कयिा जाएगा, जो तुम्हें क्रूर यातनाओं से गुज़ारने के लिए ले जाएगा?'

'हे पिता,' पवित्र युवक मुस्कुराते हुए बोला, 'आपने एक मूर्खतापूर्ण बात कही है! हमारे आत्माओं के उद्धारकर्ता, मेरे प्रभु यीशु मसीह - वे अपने दास, मुझे, बल देंगे। हे पिता, क्या आप नहीं जानते कि प्रभु के नाम में, दाऊद नामक एक नहित्थे युवक ने एक पत्थर से शक्तिशाली गोलयिाथ को मार गरिाया[4791] और अपनी तलवार खींचकर उसका सरि काट दयिा?

'अपने ईश्वर की आशा में, क्या तुम सभी कष्ट सहने के लिए तैयार हो?' गलिास ने पूछा।

संत ने उत्तर दयिा:

'मैं वश्विास करता हूँ कि मेरा सृष्टकिर्ता, पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा—त्रमिूर्ति में एक ईश्वर—मुझे न केवल सभी यातनाओं को साहसपूर्वक सहने की शक्ति देंगे, बल्कि बिना किसी भय के उनके लिए मरने की शक्ति भी देंगे। और आप भी, पिता जी, उस ईश्वर में वश्विास करें जिनके बारे में मैं आपसे बात कर रहा हूँ, और तब आप उद्धार पाएँगे। क्योंकि वे देवता जिनके आप अब प्रणाम करते हैं, कुछ भी नहीं हैं, और उन्होंने कभी किसी को नहीं बचाया, न ही वे कुछ करने में सक्षम रहे हैं। और नर्जिीव तांबे, पत्थर या लकड़ी के आगे झुकने का क्या फायदा, जो जब जमीन पर गरिते हैं, तो फरि से नहीं उठ सकते, बल्कि टुकड़े-टुकड़े हो जाते हैं और टूटते समय कोई आवाज नहीं करते, क्योंकि वे बहरे और असंवेदनशील हैं। जिन नामों से आप अपनी मूर्तियों को पुकारते हैं, वे प्राचीन काल में सबसे नीच और कानून तोड़ने वाले लोगों को दिए जाते थे, जो दैवीय जादू-टोना करते थे और हर तरह के दुष्ट कर्मों में लिप्त रहते थे - ऐसे लोग जो हर सज़ा के हक़दार थे। आज भी, राज्य के कानून ऐसे लोगों को दोषी ठहराते हैं और उन्हें मृत्युदंड देते हैं। आपके उन देवताओं की शापति आत्माएँ अब नरक की शाश्वत, न बुझने वाली आग में अनंतकाल तक पीड़ति हो रही हैं। उसी आग में, जो अब उन देवताओं की मूर्तियों की पूजा करते हैं, वे भी अनंतकाल तक पीड़ति होंगे। लेकिन हमारा परमेश्वर—जो युगानुयुग जीवति रहता है—सभी चीज़ों को एक अच्छे अंत की ओर नर्दिेशति करता है, सभी दृश्य और अदृश्य प्राणियों पर शासन करता है, और स्वर्ग और पृथ्वी पर सभी चीज़ों पर राज करता है। वह स्वर्ग के अपने राज्य में उन लोगों को सचमुच महमिामय बनाएगा जो उस पर वश्विास करते हैं और वफादारी से उसकी सेवा करते हैं। इसके अलावा, वह पृथ्वी पर भी उनके नामों को महमिामय करता है, और उन्हें अद्भुत अनुग्रह से समृद्ध करता है, जिसकी शक्ति से वे चिन्ह और अद्भुत कार्य करते हैं। क्योंकि वह कहता है: *'जो वश्विास करेंगे, उनके साथ ये चिन्ह होंगे: वे मेरे नाम पर दुष्टात्माओं को नकिालेंगे; वे नई-नई भाषाएँ बोलेंगे; वे साँपों को उठा लेंगे; और यदि वे कोई घातक वस्तु पीएँ, तो वह उन्हें कोई हानि नहीं पहुँचाएगी; वे बीमारों पर हाथ रखेंगे, और वे चंगे हो जाएँगे'* (मरकुस 16:17–18)।

ये शब्द सुनकर, गलिास चकति हो गया और उसने कहा:

'अब मुझे एहसास हो गया है कि इस लड़के के होठों से बोलने वाला ईसाई परमेश्वर—जिसके बारे में मैंने पहले कभी नहीं सुना था—ही सच्चा परमेश्वर है। अगर इस लड़के के भीतर कोई दैवीय शक्ति न होती, तो वह ये शब्द अपने दिल से नहीं बोल सकता था। लेकिन, जैसा मैं देखता हूँ, परमेश्वर स्वयं मेरे बेटे के होठों से बोल रहे हैं।'

आह भरते और रोते हुए, गलिास ने कहा:

'हाय, मैं पापी हूँ! यह जवान लड़का, मेरा बेटा, मुझ बूढ़े आदमी से कहीं ज़्यादा बुद्धमिान है। वह बचपन में ही सच्चे परमेश्वर को जान गया, जबकि मैं, सालों से बूढ़ा होते हुए भी, अब तक उसे नहीं जान पाया। लेकिन अब मैं अपने दिल से वश्विास करता हूँ और अपने होठों से यह स्वीकार करता हूँ कि मसीही परमेश्वर के सिवा कोई और परमेश्वर नहीं है, और न ही उसकी तरह कोई और है!'

इस प्रकार, मसीह में वश्विास करने के बाद, गलिास ने अपने पुत्र, पवित्र युवक पोतटिस के मार्गदर्शन में, पवित्र बपतस्मिा ग्रहण कयिा। संत पोतटिस ने, प्रेरतिों के कार्यों का अनुकरण करते हुए, अपने पिता के बपतस्मिा के बाद, अपनी मातृभूमि—सार्डनियिा—छोड़ दी और एपरिस के रूप में जाने जाने वाले क्षेत्र में आए[4792] , जहाँ उन्होंने मसीह

[4791] यह दाऊद के फलिस्तिीनी वशिालकाय गोलयिाथ के खलिाफ एकलौते हाथ से लड़े गए प्रसद्धि पराक्रम को संदर्भति करता है (अधकि जानकारी के लिए, 1 शमूएल 17:32–51 देखें)।

[4792] 'एपरिस' शब्द का उपयोग मूल रूप से प्राचीन यूनानयिों द्वारा सामान्य रूप से मुख्यभूमि को दर्शाने के लिए कयिा जाता था, जो द्वीपों के वपिरीत था; बाद में, यूनानयिों ने 'एपरिस' नाम का उपयोग उस क्षेत्र को संदर्भति करने के लिए कयिा जो उत्तर में इल्यूरयिा, पूर्व में थेस्सालीि और दक्षणि में एटोला और अकारनानयिा से घरिा हुआ था। आज, एपरिस तुर्कों के पास है।

के नाम का प्रचार कयि। वहाँ से वे फरि वैलेरयि शहर गए। वहाँ करियिाकयि नाम की एक महलि रहती थी, जो सेनेटर अगथोन की पत्नी थी, जो कुष्ठ रोग से बहुत पीड़ति थी, और कोई भी चकित्सिक उसे उसके रोग से ठीक नहीं कर सका। उसके घर के दरवाजे पर पहुँचकर, संत पोटटिस एक भखिारी के रूप में वहाँ बैठ गए। संयोग से, उस घर से एक नपुंसक बाहर नकिला; संत पोटटिस ने उससे एक गलिास पानी माँगा।

नपुंसक ने संत से कहा, 'क्या तुम पानी माँगने यहाँ आए हो?'

'मुझे प्यास लगी है,' संत ने उत्तर दयि, 'इस घर के पानी की नहीं, बल्कि आत्माओं के उद्धार की, ताकि मेरे प्रभु यीशु मसीह की कृपा इस घर में प्रकट हो।'

नपुंसक संत के शब्दों से चकति होकर, उनसे पूछा:

'तुम कहाँ से हो, युवक, और तुम्हारा नाम क्या है?'

संत पोतटि ने उत्तर दयि, 'मैं, तुम्हारी ही तरह, पृथ्वी से जन्मा हूँ; मेरा नाम पोतटि है; मैं अपने प्रभु यीशु मसीह का सेवक हूँ, जो उन आत्माओं का उद्धारकर्ता है जो उन पर वशि्वास करते हैं और शारीरकि रोगों का उपचार करने वाला है।' उन्होंने कुष्ठरोगयिों को स्वच्छ कयि, लकवाग्रस्त लोगों को उनके बस्तिरों से उठाया, अंधों को दृष्टि प्रदान की, और एक ही शब्द से मृतकों को जीवति कर दयि।

"यदि तुम उसके सेवक हो," उस नपुंसक ने पूछा, "तो क्या तुम कोढ़ियों को चंगा कर सकते हो?"

'जहाँ वशि्वास है,' संत ने उत्तर दयि, 'वहाँ चंगाई होगी, क्योंकि मेरे प्रभु, मसीह प्रभु, हर उस व्यक्ति को जो उनसे वशि्वास के अनुसार माँगता है, प्रदान करते हैं।'

'क्या आप हमारी मालकनि को कुष्ठ रोग से ठीक कर सकते हैं?' यूनास ने पूछा।

'यदि वह मसीह, मेरे ईश्वर, में वशि्वास करती है, तो वह चंगी हो जाएगी,' संत ने उत्तर दयि।

'यदि आप उसे ठीक कर दें,' Eunuch ने कहा, 'तो आप उसकी सारी संपत्ति के मालकि हो जाएँगे।'

'मुझे न चाँदी चाहए, न सोना और न ही उसकी संपत्ति,' संत ने उत्तर दयि, 'बल्कि मैं केवल उसकी आत्मा को मेरे ईश्वर, मसीह की ओर मोड़ना चाहता हूँ।'

इसके बाद, खसासे ने अपनी मालकनि को सब कुछ बता दयि, और संत पोतटि को उसके सामने लाया गया। उसके शयनकक्ष में प्रवेश करते ही, संत ने कहा:

'मेरे प्रभु यीशु मसीह का शान्ति इस घर पर हो!'

करियिाकयि ने संत से कहा, "मैं आपसे वनिती करती हूँ, मुझे चंगा कीजए, यदि आप वास्तव में मुझे चंगा कर सकते हैं।"

'जसि ईश्वर का मैं प्रचार करता हूँ, उस पर वशि्वास करो और पवत्रि बपतस्मि ग्रहण करो,' संत ने उत्तर दयि, 'और तब तुम चंगी हो जाओगी।'

'मुझे वशि्वास करना सखिाएँ,' उस महलि ने कहा।

इसके बाद, संत ने उसे मसीह ईश्वर के बारे में उपदेश देना शुरू कयि, और उसे मोक्ष का सच्चा मार्ग दखिाया। उनकी बात सुनने के बाद, उस महलि ने संत से कहा:

'मैं वशि्वास करती हूँ कि उस एक के सविाय कोई दूसरा ईश्वर नहीं है, जसिके बारे में आप मुझसे बात कर रहे हैं, और मुझे उम्मीद है कि वह मुझे चंगा कर देगा; जहाँ तक आपकी बात है, आप जो चाहें करें।'

तब संत पोतटि घुटने टेककर आँसुओं के साथ प्रार्थना करने लगे:

'हे प्रभु यीशु मसीह, स्वर्गदूतों के राजा, मानव आत्माओं के उद्धारकर्ता! आपने अपने शष्यिों से कहा: *"कोढ़ियों को शुद्ध करो, मृतकों को जलिाओ"* (मत्ती 10:8): हे प्रभु, अपने दास, मुझे भी सुनो, और इस स्त्री को चंगा करो; उनकी आत्मा में आपकी कृपा प्रकट हो, ताकि अन्यजाति जान सकें कि आप ही सच्चे ईश्वर हैं और आपके सवि कोई और ईश्वर नहीं है।

ये शब्द प्रार्थना करने के बाद, संत ने उसके बपतस्मि के लिए एक तारीख तय की।

और देखो, जब वह स्त्री बपतस्मिा के कुंड में उतरी और बपतस्मिा लयिा, तो वह तुरन्त अपनी कोढ़ से शुद्ध हो गई और कुंड से पूरी तरह स्वस्थ होकर नकिली, उसका शरीर एक जवान मनुष्य के समान था[4793] । यह देखकर, करियिाके के पतअिगथोन और उसके सारे घर वालों ने मसीह में वशि्वास कयिा और बपतस्मिा लयिा। और कई नागरकिों ने—लगभग आधा शहर—उन्हें देखकर, पवत्रि वशि्वास को अपनाया और परमेश्वर की स्तुतकिरते हुए कहा:

'सत्य में, इस युवक के द्वारा जसिने हमें मूर्तपिूजा के अंधकार से बाहर नकिाला है, हमने एक महान प्रकाश देखा है।'

संत पोटटिस ने उनसे कहा, 'देखो, तुमने परमेश्वर की महानता देखी है, इसलएि अब उसकी आज्ञाओं का पालन करो और तुम अनंत मोक्ष प्राप्त करोगे!'

तब, उस नगर को छोड़कर, संत पोतटिस गारगरा नामक एक सुनसान पहाड़ के लएि रवाना हुए, और वहाँ वे जंगली जानवरों के बीच ऐसे रहे मानो वे भेड़ हों; क्योंकि, दैवीय आज्ञा से, जानवर उनकी आज्ञा मानते थे और उनका अनुसरण करते थे।

उस समय, सम्राट एंटोननिस की पुत्री अग्नयिा पर एक राक्षस सवार हो गया और उसे बहुत कष्ट दयिा। सम्राट, गहरे दुख में, अपनी बेटी के लएि अपने देवताओं से प्रार्थना करने लगे, उन्हें व्रत लेने लगे और इस प्रकार कहने लगे:

'हे देवताओं: Apollo[4794] , ज्यूस, अर्फ़ान, मेरी बेटी को ठीक करो, और मैं तुम्हें सुनहरे सींग वाले बैल बलदिान के रूप में चढ़ाऊँगा!'

लेकनि उस राक्षस ने कन्या के ओठों से चलि्लाकर कहा:

'मैं तब तक इस जगह से नहीं जाऊँगा जब तक कि माउंट गारगारा पर रहने वाला पोटटिस यहाँ नहीं आ जाता।'

तब सम्राट ने तुरंत अपने एक प्रतष्ठिति व्यक्ति, गेलासयिस नामक, को चालीस योद्धाओं के साथ उस पहाड़ पर पोटटि को खोजने के लएि भेजा।

रवाना होकर गरगरा मरुभूमि में पहुँचने पर, दूतों ने मसीह के सेवक को पहाड़ पर बैठे पाया और संत के चारों ओर जानवरों की भीड़ को देखा। सैनकिों को बहुत डर सता गया और वे भागना चाहते थे, क्योंकि जानवर उन पर झपटने के इरादे से उनकी ओर मुड़ रहे थे। लेकनि संत ने जानवरों को डाँटते हुए कहा:

'अपने-अपने स्थान पर लौट जाओ, और कसिी को कोई हानि नि पहुँचाओ।'

और तुरंत ही जानवर बखिर गए।

तब संत ने गेलासयिस से कहा:

'तुम इतनी बड़ी सेना लेकर मेरे खलिाफ क्यों आए हो?'

'क्या तुम पोतटि हो?' गेलासयिस ने संत से पूछा।

'मैं अपने प्रभु यीशु मसीह का एक पापी सेवक हूँ,' संत ने उत्तर दयिा।

गेलासयिस ने कहना जारी रखा, "सम्राट एंटोननिस आपकी उपस्थतिि चाहते हैं, इसलएि हमारे साथ उनके पास चलएि।"

'एक ईसाई एक अधर्मी सम्राट के कसिी काम का कैसे हो सकता है,' संत ने आपत्ति जताई।

लेकनि सैनकिों ने संत को पकड़ लयिा और उसे रोम में सम्राट के पास ले आए। बाद वाले ने उससे पूछा:

'आपकी वंशावली क्या है?'

'मैं एक ईसाई हूँ,' संत ने उत्तर दयिा, 'और मेरे माता-पतिा भी ईसाई हैं।'

'क्या तुम्हें हमारे शाही फरमानों की खबर नहीं है,' एंटोननिस ने पूछा, 'जनिके अनुसार जो कोई भी हमारे देवताओं की पूजा नहीं करता है, उसे मौत की सज़ा दी जाती है?'

'वास्तव में, यही मेरी इच्छा है—मेरे ईश्वर, मसीह के लएि मरना,' संत ने उत्तर दयिा।

[4793] यह ध्यान देने योग्य है कि कोढ़, जसिसे करियिाके को संत पोतटिस ने ठीक कयिा था, एक अत्यंत घातक रोग है। यह गर्म जलवायु में, वशिेष रूप से मस्रि, फरि फलिस्तीन, सीरयिा, अरब, भारत और अन्य जगहों पर प्रचलति है; यह बीमारी रोगी के पूरे शरीर में घातक ट्यूमर से ढक जाने पर प्रकट होती है जो दनि-ब-दनि बड़े होते जाते हैं; परणिामस्वरूप, रोगी का शरीर सुन्न हो जाता है और सड़ जाता है। कुष्ठ रोग को एक असाध्य रोग माना जाता है। ईश्वर की अनुमतसि, पुराने नयिम के धर्मी व्यक्तयिॉब इससे पीड़ति थे। उनकी स्मृति को पवत्रि चर्च 6 मई को मनाती है।

[4794] प्राचीन यूनानयिों द्वारा अपोलो को भवषि्य का नबी, भाग्य, ओराकल और कवति का देवता माना जाता था।

'मैंने तुम्हारे बारे में अफवाहें सुनी हैं,' सम्राट ने अपनी बात जारी रखते हुए कहा, 'कि तुम मेरी बेटी को ठीक कर सकते हो, और अगर तुम ऐसा करते हो, तो मैं तुम्हें बहुत सम्मान दूँगा।'

'तो फिर आपके देवता उसे क्यों नहीं ठीक करते?' संत ने सम्राट से पलटकर कहा।

सम्राट ने पूछा, "तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई मुझसे इतनी अभद्रता से बात करने की?"

'यदि मैं आपकी बेटी को ठीक कर दूँ,' पोटिटे ने एंटोनिनस से उत्तर दिया, 'तो क्या आप उस ईश्वर पर विश्वास करेंगे जिस पर मैं विश्वास करता हूँ?'

सम्राट ने विश्वास करने का वादा किया।

संत ने कहा, 'मैं जानता हूँ कि आपका हृदय दुष्टता में कठोर हो गया है और आप विश्वास नहीं करेंगे, लेकिन मैं यह अपने ईश्वर की शक्ति से यहाँ इकट्ठा हुए लोगों के लिए करूँगा, ताकि वे देखें, विश्वास करें और प्रभु यीशु मसीह के नाम का गौरव करें।'

इसके बाद, सम्राट की बेटी को लाया गया और संत के सामने पेश किया गया।

'तो फिर, पोटिटे,' शैतान ने सन्त से वशीभूत लड़की के होठों से कहा, 'क्या मैंने तुम्हें नहीं बताया था कि तुम अपनी इच्छा के विरुद्ध भी सम्राट के सामने आएँगे?'

संत ने कन्या के मुख पर फूँक मारते हुए, दानव से कहा:

'मेरे प्रभु यीशु मसीह, जीवते परमेश्वर के पुत्र, जिनके अधीन स्वर्ग, पृथ्वी और पाताल लोक में हर सृष्टि है, वे तुम्हें, अशुद्ध आत्मा, मना करते हैं और आज्ञा देते हैं कि तुम उनके इस प्राणी से निकल जाओ। अब तुम्हारा उस पर कोई अधिकार नहीं है।'

इन शब्दों के साथ, संत ने अपनी दाहिनी मुट्ठी से युवती के चेहरे पर प्रहार किया; और तुरंत ही सभी ने उसके मुँह से एक भयानक सर्प को निकलते हुए देखा। उससे निकलकर, वह सर्प गायब हो गया। यह देखकर, वहाँ मौजूद लोग भय से भर गए और कहने लगे:

'सत्य में, इस युवक का ईश्वर महान है!'

और वहाँ उपस्थित कई लोग मसीह पर विश्वास करने लगे। सम्राट स्वयं, यह देखकर, चकित हो गया और कहा:

'ओह, ईसाई जादू-टोने में कितनी बड़ी शक्ति है!'

'मूर्ख राजा,' संत ने जवाब दिया, 'धिक्कार है तुम पर, क्योंकि यद्यपि तुमने ईश्वर की महानता देखी है, फिर भी तुम उस पर विश्वास नहीं करते!'

सम्राट ने कहा, 'मैं अपने देवताओं का धन्यवाद करता हूँ, जिन्होंने मेरी बेटी को ठीक किया है।'

'आप झूठ बोल रहे हैं, सम्राट,' संत ने उत्तर दिया, 'यह आपके देवता नहीं थे, बल्कि मेरे प्रभु यीशु मसीह थे जिन्होंने आपकी बेटी को चंगा किया!'

'बस करो अपनी बात,' सम्राट ने कहना जारी रखा, 'मेरे देवताओं को बलिदान चढ़ाओ, और मैं तुम्हें अपने सेवकों में एक महत्वपूर्ण और सम्मानित व्यक्ति बना दूँगा। मैं तुम्हें सोना, चाँदी और दौलत दूँगा।'

संत पोटिटे ने उत्तर दिया:

'तुम्हें कोई सुख नहीं मिलेगा, सम्राट। तुम मुझे वह सब कुछ देने का वादा कर रहे हो जिसे मैं धरती की धूल के समान मानता हूँ। स्वर्ग में मेरे पास अक्षय और अकथनीय धन-संपत्ति है, जिसे मेरे प्रभु यीशु मसीह ने उन सभी के लिए तैयार किया है जो उनसे प्रेम करते हैं। लेकिन तुम्हारा सोना, चाँदी और तुम्हारी सारी धन-संपत्ति आग में नष्ट हो जाएगी!'

सम्राट ने पलटकर कहा, "क्या तुम फिर से मुझसे इतनी अभद्रता से बात कर रहे हो?"

'हाँ, मैं आपसे नहीं डरता,' संत ने उत्तर दिया, 'क्योंकि मेरे प्रभु यीशु मसीह मुझे आपके हाथों से छुड़ाने के लिए पर्याप्त शक्तिशाली हैं।'

सम्राट ने कहना जारी रखा, 'तुम मेरा अपमान और अवमान कर रहे हो, लेकिन तुम्हारी जवानी के कारण मैं तुम्हें माफ करने को तैयार हूँ और तुम्हें देवताओं को बलिदान चढ़ाने की सलाह देता हूँ, ताकि मैं तुरंत तुम्हारा यातना-दंड न दूँ।'

'अपने आप को बचाओ,' संत ने उत्तर दिया, 'क्योंकि तुम्हारा एक भयानक नरक इंतज़ार कर रहा है, और तुम स्वयं अपने राज्य के साथ विनाश को प्राप्त करोगे; तुम अपने पिता, शैतान के साथ, न बुझने वाली आग में जलोगे।'

इसके बाद, क्रोध और आक्रोश से भरे सम्राट ने संत पोतिटिस के कपड़े उतारकर लाठियों से बेरहमी से पिटवाने का आदेश दिया।

संत ने, पिटाई सहते हुए, कहा:

'मैं आपकी धन्यवाद करता हूँ, हे प्रभु, कि आपने मुझे अपने नाम के लिए दुख सहने योग्य समझा!'

सम्राट ने शहीद से पूछा, "पोटिस, तुम्हें क्या चाहिए? मरना, या देवताओं को बलिदान चढ़ाना ताकि तुम सुरक्षित और अक्षुण्ण रह सको?"

पोटिस ने पूछा, 'आप मुझे किन देवताओं को बलिदान चढ़ाने का आदेश दे रहे हैं?'

तब सम्राट ने यातनाएँ बंद करने का आदेश देकर पोटिस से पूछा:

'क्या तुम महान देवताओं ज़ीउस, अर्फ़ान और मिनर्वा को नहीं जानते?'

मुस्कुराते हुए, संत पोटिस ने कहा:

'आओ देखें कि वे किस तरह के देवता हैं, और फिर मैं वैसा ही करूँगा जैसा आप आज्ञा दें।'

तब सम्राट ने खुशी-खुशी संत को मूर्तियों के मंदिर में ले जाया; लेकिन जैसे ही संत ने वहाँ सर्वोच्च ईश्वर से प्रार्थना की, मूर्तियाँ गिर पड़ीं और छोटे-छोटे टुकड़ों में टूट गईं। फिर संत ने कहा:

'यदि वे सच्चे देवता हैं, तो वे गिर क्यों हैं, और गिरने के बाद वे फिर से क्यों नहीं उठते, और न ही अपनी मदद करते हैं? ... तो जान लो, हे सम्राट, मेरे ईश्वर की शक्ति कितनी महान है!'

शर्म और गुस्से से भरकर सम्राट ने शहीद को भारी बेड़ियों में जकड़कर एक कालकोठरी में फेंकने का आदेश दिया।

जब संत, कालकोठरी में बंद, ईश्वर से प्रार्थना कर रहे थे, तो एक तेजस्वी देवदूत उनके सामने प्रकट हुआ, जिसने उन्हें बल और सांत्वना दी। उन्हें बांधने वाली भारी लोहे की बेड़ियाँ मोम की तरह पिघल गईं; आधी रात को कालकोठरी प्रकाश से भर गई, और एक अकथनीय सुगंध उससे चारों ओर फैल गई। रखवाले उस सुगंध को सूंघकर बहुत चकित हुए और एक-दूसरे से पूछने लगे कि यह कहाँ से आ रही है। तब वे कालकोठरी की खिड़की से झाँककर देखा, तो उन्होंने एक अद्भुत प्रकाश देखा; जब उन्होंने देखा कि संत अपनी बेड़ियों से मुक्त हो गए थे, आनंदित हो रहे थे, ईश्वर की स्तुति कर रहे थे और देवदूत से बात कर रहे थे, तो वे भय और आतंक से भर गए। भोर होते ही वे सम्राट के महल के लिए रवाना हो गए ताकि उसे सब कुछ बता सकें। तब सम्राट ने उस तमाशे के लिए एक जगह तैयार करने का आदेश दिया; उसने उद्घोषकों को यह घोषणा करने का भी आदेश दिया कि लोग उस स्थान पर इकट्ठा हों। जब इस प्रकार एक बड़ी भीड़ इकट्ठा हो गई, तो सम्राट आया और अपने न्याय के सामान्य स्थान पर अपनी सीट पर बैठकर, शहीद को कालकोठरी से बाहर निकालकर मुकदमे के लिए अपने सामने पेश करने का आदेश दिया। उस स्थान पर लाए जाने पर, शहीद ने क्रॉस का चिह्न बनाया और, एक तेजस्वी दृष्टि के साथ, सम्राट के सामने खड़े हो गए। इस बीच, एंटोनिनस, क्रोध से जलते हुए और संत पर भयभीत कर देने वाली दृष्टि से घूरते हुए, ने पूछा:

'पोटिस, तुम्हारी राय में, इस समय तुम खुद को कहाँ पाते हो?'

'मैं अपने ईश्वर की धरती पर हूँ,' पोटिस ने उत्तर दिया।

'अब तेरा विनाश निकट है,' सम्राट ने कहना जारी रखा, 'और कौन सा देवता तुम्हें मेरे हाथ से बचाएगा?'

'सम्राट, तेरे मुख पर लज्जा हो, क्योंकि एक कुत्ते में भी तुझसे अधिक समझ होती है। क्योंकि एक कुत्ता, किसी के हाथ से रोटी पाकर, उस व्यक्ति से लिपटता है, जबकि तू, मेरी ईश्वर से अपनी बेटी का उपचार पाकर, उसी का अपमान कर रहा है!'

तब सम्राट ने संत को एक पेड़ पर नग्न लटका कर मोमबत्तियों से झुलसाने और फिर उसके शरीर को लोहे के पंजों से खुरचने का आदेश दिया। अपने कष्टों को शांतचित्त होकर सहते हुए, मानो उसका अपना शरीर यातनाओं में न हो, संत ने सम्राट को फटकारते हुए कहा:

'सम्राट, तुम्हारी धमकियाँ कहाँ हैं? तुमने यातनाओं से मुझे हराने का घमंड किया था, फिर भी मैं इन यातनाओं को सहते हुए कोई पीड़ा महसूस नहीं कर रहा हूँ।' इसलिए, देखो और समझो कि यह मेरा शरीर नहीं, बल्कि तुम्हारा हृदय है जिसे ये यातनाएँ पीड़ा पहुँचा रही हैं, क्योंकि मैं अपने धैर्य से उन पर विजय प्राप्त करता हूँ और, उन्हीं के कारण, और भी अधिक आनंदित होता हूँ।"

सम्राट लज्जित होकर और भी अधिक क्रोधित हो गया और आदेश दिया कि शहीद को पेड़ से उतारकर जानवरों के खाने के लिए फेंक दिया जाए। लेकिन जब जानवर संत पर टूटे, तो वे उसके पास आए, उसके सामने गिर पड़े और उसके पैरों को चाटने लगे, जबकि संत ने राजा को पुकारा:

'अब तुम क्या कहोगे, हे नीच यातनाकर्ता? क्या तुमने अभी तक मेरे ईश्वर मसीह की शक्ति नहीं देखी?'

तब सम्राट ने जानवरों को पीछे हटाने का आदेश देकर जल्लादों से कहा:

'इस दुर्भाग्यशाली को टुकड़ों में काट दो और उन्हें कुत्तों के खाने के लिए बखिर दो!'

और देखो, जब जल्लादों ने अपनी कुल्हाड़ियाँ हाथ में लेकर संत को काटना शुरू किया, तो - ईश्वर की चमत्कारी शक्ति से - संत का मांस पत्थर या लोहे की तरह कठोर हो गया, जिससे कुल्हाड़ियों से उसे कोई चोट नहीं लगी, बल्कि जल्लाद खुद ही उनसे घायल हो गए। यह सब देखकर दर्शक चकित रह गए, और कई लोगों ने—लगभग दो हज़ार—उस क्षण प्रभु मसीह पर विश्वास किया और चिल्ला उठे, कहते हुए:

– सचमुच, वही ईश्वर जो कभी पतरस और पौलुस के माध्यम से कार्य करता था, जिन्होंने इस नगर में दुख उठाया, इस युवक में कार्य कर रहा है!

यह देखकर और लोगों की आवाज़ सुनकर, यातनाकर्ता काँप उठा और एक हार्दिक कराह के साथ कहा:

– 'अहो, इस नीच ईसाई की जादू-टोना कितनी महान है!'

तब उसने एक लोहे की कड़ाही तैयार करने, उसमें तेल पिघलाने, शहीद को उसमें रखने और जलाने का आदेश दिया; उसने टिन पिघलाकर शहीद के शरीर पर डालने का भी आदेश दिया। लेकिन संत, मानो वे किसी ठंडी जगह पर हों, प्रसन्न हुए, ईश्वर की स्तुति की और सम्राट से कहा:

'मैं आपके शाही सम्मान की शपथ देता हूँ, इस पिघले हुए टिन को मुझ पर और डालिए, क्योंकि मुझे इससे बहुत ठंडक महसूस हो रही है!'

सम्राट यह सोचकर हैरान था कि वह पोतटिस पर और भी कौन-सी क्रूर यातना दे सकता है। और इस प्रकार, संत को तवे से उठाकर, उसने एक लंबा लोहे का कील लाने का आदेश दिया और, उसे लाल-लाल गर्म करके, आज्ञा दी कि उसे शहीद के सिर में ठोक दिया जाए। जब यह आदेश पूरा किया जा रहा था, तो दैवीय शक्ति से ऐसा हुआ कि शहीद, अपने सिर में लाल-लाल गर्म कील लगने के बाद भी, जीवित, स्वस्थ और सुरक्षित रहा; जबकि वे कष्ट जो शहीद को महसूस करने चाहिए थे, वे सम्राट के सिर पर पड़े; और बाद वाला, एक तेज सिरदर्द से पीड़ित होकर, शहीद से चिल्लाकर बोला, कहता हुआ:

'हे मसीह के सेवक, मुझ पर दया करो और मुझे इस बीमारी से मुक्ति दो। अब मैं तुम्हारे ईश्वर की शक्ति को पहचानता हूँ!'

'आपके देवता आपको स्वस्थ करें,' संत ने उत्तर दिया।

इस बीच, सम्राट अपनी चिकित्सा के लिए शहीद से विनती करता रहा।

शहीद ने कहा, 'तुम्हारी बेटी यहाँ आने तक तुम्हारा इलाज नहीं होगा, क्योंकि मेरे मसीह ने उसे पूरी तरह से ठीक कर दिया है।'

सम्राट की बेटी को तुरंत बुलाया गया। शहीद के पैरों पर गिरते हुए, उसने कहा:

'मैं आपसे विनती करती हूँ, हे ईश्वर के सेवक, मुझे आपके सर्वशक्तिमान ईश्वर के नाम पर बपतिस्मा दीजिए, जिनका आप प्रचार करते हैं!'

संत ने तुरंत एक बपतिस्मा का कुंड तैयार करने का आदेश दिया और, पूरे लोगों की उपस्थिति में, उन्होंने स्वयं सम्राट की बेटी का बपतिस्मा दिया, क्योंकि उस समय एक पुरोहित को खोजना मुश्किल था, क्योंकि पुरोहित उत्पीड़न के कारण छिप गए थे। तब, सम्राट की पुत्री के बपतिस्मा के बाद, शहीद ने अपने हाथ उठाकर सम्राट के स्वास्थ्य के लिए ईश्वर से प्रार्थना की, और सम्राट तुरंत स्वस्थ हो गया। लेकिन—अहो, मूर्तिपूजा की अंधता और पागलपन!—सच्चे ईश्वर को जानने और उसे धन्यवाद देने के बजाय, उस अधर्मी सम्राट ने अपने नीच देवताओं का धन्यवाद करना शुरू कर दिया, यह कहते हुए:

'मैं तुम्हारा धन्यवाद करता हूँ, अपोलो, मार्स और मिनर्वा, मुझे ठीक करने के लिए!'

तब संत ने सम्राट की कड़ी निंदा करते हुए उसे—जो पूरी तरह से दैवीय भ्रम के हवाले हो चुका था—उसके पागलपन और क्रूरता के लिए फटकारा। हालाँकि, सम्राट, एक भूतहा व्यक्ति की तरह क्रोधित होकर, ने आदेश दिया कि संत की जीभ काट दी जाए और उसकी आँखें निकाल दी जाएँ। लेकिन मसीह के शहीद ने अपनी जीभ कट जाने के बाद भी बोलना जारी रखा, और ईश्वर की महिमा की:

'मैं हर समय प्रभु का धन्यवाद करूंगा; उसकी स्तुति सदा मेरे मुख में रहेगी' (भजन संहिता 33:2), मैं उसी का धन्यवाद करूंगा जिसने मेरे मुख में एक नया गीत रखा है, और *'मैं प्रभु का भजन गाऊंगा, जिसने मुझ पर अनुग्रह किया है'* (भजन संहिता 12:6), आनंद और प्रसन्नता के साथ।

उसी समय, उसने सम्राट से कहा:

'हे दुष्ट मनुष्य, मेरी जीभ काटकर तूने क्या हासिल किया? तुझे उम्मीद थी कि मेरी जीभ के साथ मेरे मुँह से शब्द भी छिन जाएँगे, लेकिन यहाँ तू देखता और सुनता है कि मैं अपने परमेश्वर मसीह की कृपा से बोलता हूँ, जो तुझे उसी प्रकार पराजित करेगा, जैसे उसने प्राचीन काल में फिरौन को पराजित किया था (निर्ग. 14:1–32)।'

तब सम्राट, यह देखकर कि वह पराजित और लज्जित हो गया है, यह सोचकर असमंजस में पड़ गया कि अब शहीद के साथ और क्या करे। लोगों की निंदा से बचने की इच्छा से, उसने अंततः शहीद का सिर तलवार से कलम करने का आदेश दिया।

इस प्रकार, मसीह के पवित्र शहीद पोटिटस ने, एक युवक रहते हुए ही, मसीह के लिए अपनी आत्मा अर्पित कर दी[4795] और अब स्वर्ग में अमर जीवन में उनके साथ राज्य करते हैं। पवित्र शहीद पोटिटस की प्रार्थनाओं के द्वारा, हम भी हमारे प्रभु यीशु मसीह की कृपा से इस धन्य जीवन के योग्य ठहरें, जिसे महिमा पिता और पवित्र आत्मा के साथ, अब और युगानुयुग होती रहे। आमीन।

१५ जुलाई

2 जुलाई (पुराने कैलेंडर के अनुसार)

इसी दिन, 1431 में कीव और सम्पूर्ण रूस के मेट्रोपॉलिटन, संत फोतिउस का निधन हुआ।

ब्लाचेर्ना के चर्च में परम पवित्र कुंवारी मरियम के पवित्र वस्त्र की स्थापना की कथा[4796]

2 जुलाई को स्मरण किया जाता है

धर्मपरायण बीजान्टिन सम्राट लियो महान[4797] और उनकी पत्नी वेरिना के शासनकाल के दौरान, दो धर्मपरायण पुरुष – पद में सेनेटर, भाई गैल्विन और कैंडिड – कॉन्स्टेंटिनोपल में रहते थे। एक-दूसरे से सलाह-मशविरा करने के बाद, उन्होंने सम्राट से पवित्र स्थानों की पूजा करने के लिए यरूशलेम की यात्रा की अनुमति मांगी; अनुमति मिलने पर, वे अपनी यात्रा पर निकल पड़े। फिलिस्तीन पहुँचने पर, वे नासरत[4798] घूमने और सर्वशुद्ध कुँवारी मरियम के पवित्र घर को देखने की इच्छा से गलील गए, जिसमें उन्होंने – महादूत की घोषणा और पवित्र आत्मा की प्रेरणा से – शब्दों से परे तरीके से परमेश्वर के वचन को गर्भ में धारण किया था। वहाँ पहुँचकर और अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करने के बाद, वे पास के एक छोटे से गाँव में रात रुक गए, क्योंकि दिन लगभग समाप्त हो चुका था। दैवीय व्यवस्था से, उन्हें एक वृद्ध, अविवाहित यहूदी महिला के घर में आश्रय मिला, जो एक सदाचारी जीवन जीती थी। जब उनके लिए वहाँ शाम का भोजन तैयार हो रहा था, तब उन्होंने आवास के अंदर एक अलग कमरा देखा जिसमें कई मोमबत्तियाँ जली हुई थीं, धूप जल रही थी, और हवा में एक सुगंधित खुशबू फैली हुई थी (क्योंकि परमेश्वर की परम पवित्र माता का पवित्र वस्त्र वहाँ छिपा हुआ था)। उस कमरे के पास कुछ बीमार लोग भी पड़े हुए थे। यह देखकर, गैल्विन और कैंडिड इस अजीब परिस्थिति से चकित हो गए, और

[4795] संत पोतिटस की शहादत दूसरी शताब्दी के मध्य में हुई थी।

[4796] ब्लाखेर्ना कॉन्स्टेंटिनोपल में बंदरगाह के पास समुद्र तट पर एक स्थान है। इसका नाम एक प्रसिद्ध स्कैथियन कमांडर के नाम पर पड़ा, जिसका उपनाम ब्लाखेर्ना था, और जिसे ठीक उसी स्थान पर मार दिया गया था जहाँ बाद में परमेश्वर की माता को समर्पित एक अत्यंत सुंदर चर्च का निर्माण किया गया था।

[4797] लियो प्रथम (महान) ने 457 से 474 तक शासन किया।

[4798] नज़रथ गलील में एक छोटा सा शहर है, जो अपनी पवित्र संबंधों के कारण ईसाइयों के लिए प्रिय है (यही वह शहर है जहाँ हमारे प्रभु यीशु मसीह ने अपना बचपन बिताया था)।

उन्होंने अनुमान लगाया कि वहाँ पुराने नियम का कोई अनुष्ठान किया जा रहा है। तब उन्होंने उस धर्मपरायण महिला से अपने साथ रात्रि का भोजन करने के लिए कहा, और उससे पूछा कि उस कमरे में क्या था, जो मोमबत्तियों से प्रकाशित और धूपदानों से सुगंधित था, और बीमार उसके पास क्यों लेटे थे? पहले तो वह महिला उस वस्तु के बारे में चुप रही जिसे वह छिपा रही थी, लेकिन वह उससे उत्पन्न चमत्कारों के बारे में चुप नहीं रह सकी, और पूछने वालों से कहा:

'माननीय सज्जनो! देखिए, ये सभी बीमार लोग जिन्हें आप यहाँ लेटे हुए देख रहे हैं, वे अपने रोगों से मुक्ति की प्रतीक्षा कर रहे हैं; क्योंकि इस स्थान में अंधे अपनी दृष्टि वापस पा लेते हैं, लंगड़े सीधे हो जाते हैं, लोगों से भूत-प्रेत निकल जाते हैं, बहरे सुनने लगते हैं, गूंगे बोलने लगते हैं, और यहाँ हर प्रकार के असाध्य रोग शीघ्रता से ठीक हो जाते हैं।'

यह सुनकर, गैल्वनि और कैन्डाइड ने उस महिला से और गहराई से पूछना शुरू किया कि इस स्थान को ऐसी कृपा और चमत्कारिक शक्ति क्यों प्रदान की गई है। महिला ने, अभी भी सच छिपाते हुए, जवाब दिया:

'हमारे यहूदी लोगों में एक परंपरा है कि ईश्वर इसी स्थान पर हमारे एक प्राचीन पूर्वज के सामने प्रकट हुए थे, और उसी समय से यह स्थान दैवीय अनुग्रह से परिपूर्ण है, और यहाँ चमत्कार होते हैं।'

उस महिला के शब्द सुनकर, गैल्वनि और कैन्डाइड के हृदय में सत्य जानने की और भी तीव्र लालसा जागृत हुई, ठीक वैसे ही जैसे प्राचीन ल्यूक और क्लेओपास के साथ हुआ था, जिन्होंने कहा था: 'क्या हमारे हृदय हमारे भीतर आग की तरह नहीं जल उठे?' (लूका 24:32), और उन्होंने उस महिला से कहा:

'हे धर्मनिष्ठ महिला! हम आपसे जीवित ईश्वर की शपथ देते हुए निवेदन करते हैं कि हमें सत्य बताइए! क्योंकि हमने कॉन्स्टेंटिनोपल से यह लंबा सफर केवल इसीलिए तय किया है कि हम फिलिस्तीन के सभी पवित्र स्थानों को देख सकें और वहाँ ईश्वर के समक्ष अपनी प्रार्थनाएँ अर्पित कर सकें। और इस प्रकार ई , चूँकि हमने सुना है कि आपके घर में भी एक पवित्र और चमत्कारी स्थान है, हम इसके बारे में और जानना चाहते हैं: इसे कैसे समर्पित किया गया था, और किस कारण से वहाँ चमत्कार होते हैं?

तब, ईश्वर का नाम लेकर, उस महिला ने अपनी आत्मा की गहराई से एक आह भरी और, अपनी आँखों से आँसू बहाते हुए, गैल्वनि और कैन्डाइड से कहा:

'अत्यंत प्रतिष्ठित सज्जनगण! वह दैवीय रहस्य जिसे आप अब मुझसे प्रकट करवाने पर मजबूर कर रहे हैं, आज तक किसी को भी ज्ञात नहीं था। लेकिन चूँकि मैं देखती हूँ कि आप धर्मनिष्ठ और ईश्वर-भयभीत पुरुष हैं, मैं आपको यह गुप्त रहस्य बताऊँगी, इस आशा में कि जो कुछ आप मुझसे सुनेंगे, उसे आप अपने तक ही रखेंगे और किसी को नहीं बताएँगे। यहाँ मेरे पास सर्व-शुद्ध कुँवारी मरियम का चोगा है, जिन्होंने प्रभु मसीह को जन्म दिया था। जब उन्हें इस पृथ्वी से स्वर्ग ले जाया गया, तो मेरी एक पूर्वज—एक विधवा—उनके अंतिम संस्कार में उपस्थित थीं; स्वयं परमेश्वर की सर्व-शुद्ध माता की इच्छानुसार, वह पवित्र चोगा उन्हें सौंप दिया गया था; उसने उस वस्त्र को प्राप्त कर, अपने पूरे जीवन भर श्रद्धापूर्वक रखा; जब वह मरणासन्न थी, तो उसने उस वस्त्र को अपनी ही कुल की एक कुंवारी को संरक्षण के लिए सौंप दिया, और उससे शपथ ली कि वह न केवल परमेश्वर की अति पवित्र माता के उस पवित्र वस्त्र को, बल्कि अपनी कुँवारी अवस्था को भी पवित्रता में बनाए रखेगी। उस कन्या ने भी अपने जीवन भर उस वस्त्र को सर्वोच्च सम्मान दिया; और जब वह अपने अंत के समीप पहुँची, तो उसने उस वस्त्र को अपनी वंश की एक अन्य पवित्र और सदाचारी कन्या को सौंप दिया। इस प्रकार, कई वर्षों के दौरान, वह पवित्र वस्त्र एक कुंवारी से दूसरी कुंवारी के पास जाता हुआ, मेरे इन विनम्र हाथों में आया; यह भाग्य मेरे हिस्से आया, जो अविवाहित रहकर पवित्रता में बूढ़ी हुई हूँ। और चूँकि अब मेरे परिवार में कोई ऐसी कुँवारी नहीं है जिसे मैं यह रहस्य सौंप सकूँ, मैं आपको इसके बारे में बता रहा हूँ, ताकि आप जान लें कि यहाँ उस पवित्र वस्त्र के कारण चमत्कार होते हैं, जिसे मैं अपने भीतरी कक्ष में रखता हूँ। मैं आपसे विनती करती हूँ कि आप यह रहस्य यरूशलेम में या कहीं और, जहाँ भी आप हों, किसी को न बताएँ।

ईश्वर की परम पवित्र माता की वस्त्र के बारे में सुनकर, गैल्वनि और कैंडिड विस्मय और अकथनीय आनंद से भर गए; आँखों में आँसू लिए, उन्होंने वस्त्र के बारे में बताई गई गुप्त बात को बनाए रखने का वादा किया। इसके बाद, उन्होंने उस महिला से विनती की कि उन्हें उस कमरे में पवित्र वस्त्र के साथ रहने दिया जाए, और वे सारी रात प्रार्थना करते रहे, और उस महिला ने उन्हें ऐसा करने से मना नहीं किया।

कमरे में प्रवेश करते ही उन्होंने सम्मान के स्थान पर रखी एक रिलिक्वरी देखी, जिसमें पवित्र कफ़न था; उन्होंने इसके चारों ओर जलते छोटे दीपक भी देखे और एक तीव्र, सुगंधित खुशबू से प्रभावित हुए। फिर वे भक्तिपूर्वक झुकते हुए और आँखों में आँसू लिए, ईश्वर और ईश्वर की माता के प्रति प्रार्थनाएँ करने लगे। वे दोनों इस एक ही विचार में

एकमत थे कि यह अनमोल खजाना शाही शहर में जाना चाहिए। इसके बाद, आपस में सहमत होकर, उन्होंने ताबूत की चौड़ाई, लंबाई और ऊँचाई मापी और उसकी पूरी बनावट को स्मृति में संजो लिया – साथ ही उस लकड़ी का प्रकार भी, जिससे वह बना था। प्रातःहोते ही, उन्होंने अपनी प्रार्थनाएँ कीं और उस पवित्र तीर्थस्थल से चले गए, और उस महिला का धन्यवाद किया कि उसने उन्हें पवित्र वस्त्र के सामने पूरी रात बिताने की अनुमति दी। उन्होंने वहाँ मौजूद भिखारियों में उदारतापूर्वक दान बाँटा और उस महिला के साथ यरूशलेम की अपनी यात्रा पर निकल पड़े। उन्होंने उस महिला से वादा किया कि वे अपनी वापसी की यात्रा पर परमेश्वर की परम पवित्र माता की पवित्र पोशाक की पूजा करने के लिए फिर से उसके पास आएँगे।

फिर यरूशलेम जाकर, जीवन-दायक क्रूस और प्रभु के मकबरे को पूजने तथा यरूशलेम के आसपास के सभी पवित्र स्थलों का दर्शन करने के बाद, गैल्विन और कैन्डाइड ने एक बढ़ई को बुलाया और उसे एक पुराने लकड़ी के टुकड़े से, उनके द्वारा बताई गई आकृति और आकार की एक अवशेष-पेटिका बनाने का निर्देश दिया। जब संदूक बन गया, तो गैल्विन और कैन्डाइड ने इसके लिए सोने की कढ़ाई वाला आवरण खरीदा और फिर से महिला के घर के लिए रवाना हो गए।

जब वे उस महिला के घर पहुँचे, तो उन्होंने उसे सोने की कढ़ाई वाला आवरण दिखाया और उससे विनती की कि वह उसे परमेश्वर की परम पवित्र माता के पवित्र वस्त्र वाले संदूक को ढकने के लिए उपयोग करे। फिर उन्होंने उस महिला से फिर से अनुरोध करना शुरू किया कि वह उन्हें, पहली बार की तरह, संदूक के सामने पूरी रात प्रार्थना में जागने की अनुमति दे। उसकी अनुमति मिलने पर, वे रिलिक्विरी के सामने, मुँह ज़मीन की ओर करके, साष्टांग प्रणाम कर पड़े और अपने आँसुओं से मिट्टी को भीग दिया, तथा परम पवित्र कुँवारी मरियम से विनती करने लगे कि वह उन्हें उस रिलिक्विरी को छूने से न रोके जिसमें पवित्र वस्त्र था, ताकि वे उसे अपने साथ ले जा सकें। जब आधी रात हो गई और सभी सो रहे थे, तो उन्होंने बड़ी हिचकिचाहट से संदूक उठाया, उसे घर से बाहर ले गए और अपने रथ में छिपा दिया। उसकी जगह, उन्होंने कमरे में वह संदूक लाया जिसे उन्होंने यरूशलेम में पुरानी लकड़ी से पहले वाले की नकल बनाकर बनाया था; उसे ठीक उसी स्थान पर रखकर, उन्होंने इसे सोने की कढ़ाई वाले घूंघट से ढक दिया और भोर तक प्रार्थना करते रहे। जैसे ही दिन चढ़ा, उन्होंने उस धर्मनिष्ठ महिला का धन्यवाद किया, उससे विदा ली, और गरीबों को दान देने के बाद, अपनी यात्रा पर निकल पड़े।

अपने वापसी के सफर पर, वे अकथनीय आनंद से भरकर तेजी से चले। कॉन्स्टेंटिनोपल पहुँचने पर, उन्होंने सबसे पहले अपने साथ लाई गई परमेश्वर की परम पवित्र माता की चोगा के बारे में किसी को नहीं बताया, क्योंकि वे उस अनमोल खजाने को खुद से भी छिपाकर रखना चाहते थे। फिर उन्होंने अपने घर में संतों पतरस और मरकुस प्रेरितों को समर्पित एक छोटा सा चर्च बनाया, और उसमें - खुले में नहीं, बल्कि एक छिपी हुई जगह पर - उस पवित्र वस्त्र वाली अवशेष-पेटिका को रख दिया। लेकिन जब उन्हें एहसास हुआ कि उसके माध्यम से हो रहे चमत्कारों के कारण वे परमेश्वर की माता की पोशाक को छिपा नहीं सकते, तो वे सम्राट लियो महान और उनकी पत्नी, सम्राज्ञी वेरीना के पास गए, और उन्होंने उन्हें, साथ ही कॉन्स्टेंटिनोपल के पैट्रिआर्क, परम पावन जेनाडियस[4799] को, सब कुछ बताया जो हुआ था।

अकथनीय आनंद से भरकर, वे दोनों गैल्विन और कैंडिडस के घर और उनके चर्च गए। वहाँ, उस पवित्र संदूक को खोलकर, उन्होंने उसमें परमेश्वर की परम पवित्र माता का पवित्र वस्त्र देखा, जो इतने वर्षों में नष्ट नहीं हुआ था, और उन्होंने श्रद्धा और भय के साथ उसे छुआ, उसे अपने होठों से और अपने हृदय में प्रेमपूर्वक चूमा। तब, उसे वहाँ से लेकर, उन्होंने एक सार्वजनिक उत्सव के बीच, ब्लाचेर्ना में परमेश्वर की परम पवित्र माता के चर्च में भव्यता के साथ ले जाया और उसे वहाँ सोने, चाँदी और कीमती पत्थरों से सुसज्जित एक अवशेष-पात्र में स्थापित किया। इसके बाद, उन्होंने यह आदेश दिया कि परम पवित्र मसीह की माता के वस्त्र की प्रतिष्ठा का उत्सव प्रतिवर्ष जुलाई के दूसरे दिन, परम धन्य कुँवारी मरियम और उनसे जन्मे हमारे ईश्वर मसीह के सम्मान और महिमा में मनाया जाए, जो पिता और पवित्र आत्मा के साथ युगानुयुग महिमामय हैं। आमीन[4800] .

[4799] जेनाडियस ने 468 से 471 तक पैट्रिआर्क के रूप में कार्य किया।

[4800] बाइज़ेंटाइन इतिहासकार निकिफ़ोरस (जो 1295 से 1360 तक जीवित थे) के अनुसार, ब्लाचेर्ने के चर्च में न केवल एक सुनहरी ताबूत में परमेश्वर की माता का एक वस्त्र रखा था, बल्कि उनका ओमोफोरीयॉन और उनकी कमरपट्टा का एक हिस्सा भी था। रूसी तीर्थयात्री भी इसकी गवाही देते हैं। 14वीं शताब्दी में रहे नोवगोरोड के स्टीफन कहते हैं: 'हम ब्लाचेर्ने गए, जहाँ (ईश्वर की माता का) चोगा, कमरबंद और सिर पर पहना हुआ सिर का ढक्कन रखा है, और वे वेदी में सिंहासन पर एक सीलबंद अवशेष-पात्र में रखे हैं'। इस बात की पुष्टि डीकन अलेक्ज़ेंडर और डीकन

ट्रोपारयिन, स्वर 8:

हे परमेश्वर की सदा-कुँवारी माता, मानव जाति की रक्षक, अपने परम पवित्र शरीर के वस्त्र और कमरबंद के द्वारा, आपने अपने नगर को एक राजसी अलंकरण प्रदान किया है, जो आपके बिना बीज के जन्म के द्वारा अक्षुण्ण बना रहता है; क्योंकि आपके द्वारा प्रकृति और समय दोनों का नवीनीकरण होता है। इसलिए हम आपसे विनती करते हैं कि आप अपने नगर को शांति और हमारी आत्माओं को महान दया प्रदान करें।

कॉन्टाकयिन, स्वर 4:

हे ईश्वर-धन्य और पवित्र एक, आपने सभी विश्वासियों को अक्षयत्व का वस्त्र प्रदान किया है—आपका पवित्र चोगा, जिससे आपने अपने पवित्र शरीर को ढका, जो समस्त मानवजाति का आवरण है। हम इस वस्त्र को प्रेम से धारण करने का उत्सव मनाते हैं, और हम श्रद्धापूर्वक आपसे पुकारते हैं, हे पवित्र एक: हे कुँवारी, आनन्दित हो, ईसाइयों की स्तुति।

हमारे पवित्र पिता जूवेनल, यरूशलेम के पैट्रिआर्क की स्मृति

2 जुलाई को स्मरणोत्सव

[4801]संत जुवेनाल ने धर्मपरायण सम्राट थियोडोसियस द्वितीय के शासनकाल में यरूशलेम के पैट्रिआर्काई का पदभार संभाला[4802] । उनके पैट्रिआर्क के कार्यकाल के दौरान, महान दिग्गज, पवित्र फादर, फिलिस्तीन में परिश्रम कर रहे थे: यूथिमियस, थियोडोसियस, जॉर्डन के गेरासिमस, जिनकी सेवा एक शेर करता था, और कई अन्य। हालाँकि, उस समय चर्च में विधर्मियों के कारण उथल-पुथल मची हुई थी। तभी नेस्टोरियन विधर्म[4803] का उदय हुआ, जिसने परम पवित्र कुँवारी मरियम के विरुद्ध धर्मनिंदा की, और एफ़िसुस नगर[4804] में पवित्र पिताओं का तीसरा सार्वभौमिक परिषद बुलाया गया, जिसमें जुवेनाल ने, अलेक्जेंड्रिया के पैट्रिआर्क संत सिरिल[4805] और अन्य पवित्र पिताओं के साथ मिलकर,

---

इग्नासियस भी करते हैं, जो 14वीं शताब्दी के दूसरे भाग में रहते थे – ब्लाचेर्ना का चर्च 19 जनवरी 1434 को जलकर राख हो गया था। आज, इसके केवल कुछ छोटे अवशेष ही दिखाई देते हैं। ईश्वर की माता के वस्त्रों के हिस्से अब विभिन्न स्थानों पर हैं: एक हिस्सा मास्को में डॉर्मिशन कैथेड्रल में है (यह हिस्सा प्रिसि वासिली गोलित्सिन द्वारा वहां स्थानांतरित किया गया था), एक अन्य हिस्सा चर्च ऑफ द एनन्यूएंसमेंट में है, जिसे 14वीं शताब्दी में प्राप्त किया गया था सुज़दल के आर्चबिशप डायोनिसियस; इसके अलावा, रोम में लैटरन बेसिलिका में वर्जिन मैरी के चोगा का एक टुकड़ा प्रदर्शित है। परंपरा के अनुसार, ईश्वर की परम पवित्र माता की ब्लाचेर्ना में पोशाक की स्थापना का पर्व सम्राट लियो प्रथम के शासनकाल के दौरान, अर्थात् 5वीं शताब्दी के मध्य में स्थापित किया गया था, लेकिन इसे 860 में, पैट्रिआर्क फोतिउस (857–867; 877–886) और सम्राट माइकल III (855–867), आस्कॉल्ड और डिर के साथ शांति की समाप्ति और कॉन्स्टेंटिनोपल से रस लोगों की वापसी को चिह्नित करने के लिए, स्थापित किया गया था। वे 25 जून को कॉन्स्टेंटिनोपल से पीछे हट गए, और मंगलवार, 2 जुलाई को, ब्लाचेर्ना में एक भव्य अनुष्ठान के बाद, पैट्रिआर्क और सम्राट ने यह स्थापित किया कि उस दिन परम पवित्र ईश्वर की माता की पोशाक की प्रतिष्ठा के सम्मान में एक भव्य उत्सव आयोजित किया जाना चाहिए; जिस समय परमेश्वर की माता के पवित्र वस्त्र को सम्राट मार्सियन द्वारा निर्मित और सम्राट लियो प्रथम द्वारा पुनर्स्थापित चर्च से तथाकथित ग्रेट चर्च में स्थानांतरित किया गया था।

[4801] काल्सेडोन – मूल रूप से प्रोपोंटिस (मारमारा सागर) के तट पर एक मेगारीन बस्ती थी; बाद में एशिया माइनर के एक प्रांत बिथिनिया की राजधानी बनी।

[4802] थेओडोसियस द्वितीय (युवा) ने 408 से 450 तक शासन किया।

[4803] नेस्टोरियन विधर्म की स्थापना कॉन्स्टेंटिनोपल के बिशप नेस्टोरियस ने की थी, जिन्होंने यह गलत शिक्षा दी कि कुँवारी मरियम से ईश्वर का जन्म नहीं हुआ था, बल्कि मनुष्य यीशु का हुआ था, जिनमें उनके पृथ्वी पर जीवन के दौरान मानवता अनुग्रह से परिपूर्ण तरीके से दिव्यता के साथ एकजुट हो गई थी। इसलिए उन्होंने ईश्वर की माता को 'ईश्वर की माता' के बजाय 'मसीह की माता' कहा। नेस्टोरियस की विधर्म को 431 में एफ़िसुस में आयोजित तीसरे सार्वभौमिक परिषद में निंदा किया गया था।

[4804] एफ़िसुस एशिया माइनर में स्थित एक शहर था, जो स्मिर्ना और मिलेटस के बीच बसा था। ईसाई चर्च के इतिहास में, एफ़िसुस को संत पौलुस प्रेरित के तीसरे मिशनरी प्रवास के दौरान उपदेश देने का स्थल माना जाता है।

[4805] सिरिल प्रथम ने 412 से 444 तक पैट्रिआर्क के रूप में कार्य किया।

नेस्टोरियस और उसके वधिर्म की नदिा की। सम्राट थयिोडोसयिस की मृत्यु के बाद, जब मार्सयिन और पुलकेरिया[4806] सहिासन पर आसीन हुए, एक नया संप्रदाय उत्पन्न हुआ – डयिोस्कोरस और यूटचिस[4807] का – जसिने अपमानजनक रूप से दावा कयिा कि मसीह में एक ही स्वभाव था। तब कल्कडिोनयिा शहर में पवत्रि पतिाओं का चौथा सार्वभौमकि परषिद[4808] आयोजति कयिा गया, और संत जुवेनाल इस परषिद में पवत्रि पतिाओं के बीच, तारों के बीच प्रातःतारे की तरह, भक्ति के साथ चमके – और वधिर्मी अंधवशि्वास के अंधकार को दूर कयिा। हालाँकि, जब परषिद का समापन हो गया, और जूवेनल फलिस्तिीन में अपने पैट्रआर्कल सहिासन पर लौट रहे थे, तब थयिोडोसयिस नाम का एक नशि्चति वधिर्मी—जो अत्यंत कपटी स्वभाव का व्यक्ति था—यूतखिीय वधिर्म का अनुयायी बनकर एक भक्षिु के भेष में आ गया। उसने चल्सेडोन के पवत्रि परषिद की नदिा की, यह दावा करते हुए कि उसने कथति तौर पर ऑर्थोडॉक्स वशि्वास के धर्मशास्त्र को अस्वीकार कर दयिा था और नेस्टोरियस की शक्षिाओं को पुनर्जीवति कर दयिा था, और उसने चर्च के बारे में कई अन्य झूठ भी फैलाए। एवाग्रयिस के अनुसार[4809] , इस वधिर्मी को अलेक्जेंड्रिया के अपने मठ से[4810] उसके अवशि्वास और दुष्ट कर्मों के कारण नष्किासति कर दयिा गया था, और वह अधर्मी डयिोस्कोरस के साथ मलि गया। लेकनि उसकी वशि्वासघात और दुर्भावना के कारण, थयिोडोसयिस को बुरी तरह पीटा गया, और फरि, एक वद्रिोही के रूप में, उसे एक ऊंट पर बठिाकर अपमानति होकर शहर में घुमाया गया। बाद में फलिस्तिीन पहुँचने पर, उसने ईश्वरनदिा करने वाले वधिर्म को फैलाकर चर्च के भीतर अशांति मचिाना शुरू कर दयिा। उस समय, सम्राज्ञी यूडोक्सयिा—जो धर्मपरायण सम्राट थयिोडोसयिस द्वतिीय की पत्नी थीं और अपने पति की मृत्यु के बाद पवत्रि स्थानों की तीर्थयात्रा पर नकिली थीं—फलिस्तिीन में थीं।

[4811]इस वधिर्मी, थयिोडोसयिस ने, पहले सम्राज्ञी यूडॉक्सयिा को काल्सेडोन परषिद को अस्वीकार करने के लिए मनाया, और फरि, अपने वधिर्म के माध्यम से, कई अनुभवहीन भक्षिुओं को नुकसान पहुँचाया, और उन्हें अपने अनुयायी बना लयिा। उनके द्वारा गुमराह कएि गए भक्षिुओं की भीड़ के साथ, उन्होंने पैट्रआर्क जुवेनाल के खलिाफ वद्रिोह भड़काया, और उनसे कैलसीडोन परषिद की नदिा करने की मांग की। लेकनि चूँकि जुवेनाल ने ऐसा करने से इनकार कर दयिा, उन्हें उनके पद से हटा दयिा गया और वे सम्राट मार्सयिन के पास कॉन्स्टेंटनिोपल चले गए। इस बीच, संप्रदायकि थयिोडोसयिस, महारानी यूडोक्सयिा के समर्थन से और संप्रदायवाद से अंधे भक्षिुओं पर भी भरोसा करके, पैट्रआर्क के सहिासन पर आसीन हो गया और ऑर्थोडॉक्स ईसाइयों को बहुत कष्ट पहुँचाया। जहाँ तक उन बशिपों और पुरोहतिों का सवाल है जन्हिोंने उसके साथ कोई संप्रभुता (communion) रखने से इनकार कर दयिा, उसने कुछ को पदच्युत कर दयिा और दूसरों को यातना और मृत्यु के अधीन कर दयिा, उनकी संपत्ति लूट ली और उनके घरों को तबाह कर दयिा।

उन्होंने स्कथिोपोलसि के बशिप सेवेरयिन के साथ भी यही कयिा, जन्हिोंने उनके वधिर्मी सद्धिांतों को स्वीकार करने से इनकार कर दयिा था। सेवेरयिन को उनके पद से हटाने के बाद, थयिोडोसयिस ने उन्हें मार डाला।

परणिामस्वरूप, पूरा फलिस्तिीन भयानक उथल-पुथल में पड़ गया, और पवत्रि शहर यरूशलेम, मानो, बर्बर लोगों द्वारा कब्जा कर लयिा गया और तबाह कर दयिा गया। उस समय, फलिस्तिीन के पवत्रि धर्मगुरु, ऐसे उत्पीड़न और चर्च के उजाड़ पर शोक मनाते हुए – और इसके अलावा उत्पीड़क के हाथों से डरकर – सबसे दूरस्थ रेगस्तिानों में शरण ले गए, और वधिर्म के उन्मूलन तथा चर्च के भीतर शांति की शीघ्र बहाली के लिए ईश्वर से आँसू भरी प्रार्थना करने लगे।

[4806] सम्राट मार्सयिन ने 450 से 457 तक शासन कयिा।

[4807] कॉन्स्टेंटनिोपल के आर्चमैंड्राइट यूटकिस को यूटकियिन या मोनोफज़िटि संप्रदाय के संस्थापक के रूप में जाना जाता है। यीशु मसीह के व्यक्तित्व में दैवीय और मानवीय स्वभावों के बीच नेस्टोरियन भेद के वपिरीत, यूटकिस ने यह सखिाया कि यीशु मसीह में मानवीय स्वभाव दैवीय स्वभाव में पूरी तरह से समा गया था और इसलिए, उनमें केवल एक ही स्वभाव - दैवीय - को पहचाना जाना चाहिए।

[4808] चौथा सार्वभौमकि परषिद 451 में आयोजति कयिा गया था।

[4809] एवाग्रयिस – एंटओक के एक वकील और *चर्च इतहिास* के लेखक, जो 431 से 494 की अवधि को कवर करता है। वह 537 से 594 तक जीवति थे।

[4810] अलेक्जेंड्रिया – प्राचीन काल में एक प्रसद्धि शहर, जसिकी स्थापना सकिंदर महान ने भूमध्य सागर के तट पर, नील नदी के मुहाने पर की थी। प्राचीन काल में, अलेक्जेंड्रिया रोम के बाद दुनिया का दूसरा सबसे महत्वपूर्ण शहर था और यह व्यापार, उद्योग और वशिेष रूप से, मूर्तपिूजक शक्षिा का केंद्र था; जबकि ईसाई धर्म के शुरुआती सदयिों में, यह ईसाई प्रबोधन का एक प्रमुख केंद्र था। – आज, अलेक्जेंड्रिया भूमध्यसागर के सबसे कलिबंद बंदरगाह शहरों और सबसे महत्वपूर्ण व्यापारकि केंद्रों में से एक है।

[4811] थयिोडोसयिस ने 20 महीनों (दसिंबर 451 से अगस्त 453 तक) के लिए (अवैध रूप से) पैट्रआर्क के रूप में कार्य कयिा।

उस समय यरूशलेम की कलीसिया के पुरोहितों में अथानासियस नामक एक डकिन था, जो वचन में अत्यंत नपिुण और धार्मकिता का उत्साही रक्षक था। यह देखकर कि विधर्मी और झूठे पैट्रआर्क थियोडोसियस चर्च की पैट्रआर्कल सीट पर 'पवत्रि स्थान में वरिानता की घृणा' (मत्ती 24:15) की तरह खड़े थे, अथेनासियस उनके पास गए और ऊँचे स्वर में चल्लिाकर कहा:

'थेओडोसियस, इस पवत्रि नगर को इतने सारे हत्याकांडों से भरना बंद कर! मसीह के वरिुद्ध युद्ध करना बंद कर और डाकू की तरह उनकी भेड़-बकरियों को दव्यि अड्डे से भगाना बंद कर!'

अथानासियस के ये शब्द कहते ही उसे थियोडोसियस के गुंडों ने तुरंत पकड़ लयिा, चर्च से बाहर घसीट लयिा और वभिन्नि यातनाओं और अनगनित पटिाई के बाद, कुल्हाड़ी से वार करके उसकी हत्या कर दी। उसके शरीर को पैरों में रस्सी बाँधकर पूरे शहर में घसीटा गया और अंत में टुकड़े-टुकड़े होने के लिए कुत्तों के सामने फेंक दयिा गया।

इस बीच, फलिस्तिीन पर शासन करने के लिए सम्राट द्वारा नयिुक्त राज्यपाल डोरोथयिस उस समय यरूशलेम में नहीं थे, क्योंकि वे मोआबयिों के खलिाफ युद्ध में थे[4812] । पवत्रि नगर में हो रही सभी घटनाओं के बारे में जानकर, डोरोथयिस अपनी सेना के साथ यरूशलेम लौट आए। लेकनि झूठे पैट्रआर्क थियोडोसियस और महारानी यूडोक्सिया के अंगरक्षकों ने, बाद वाली के आदेशों पर, राज्यपाल के सामने शहर के दरवाजे बंद कर दिए, और उसे शहर में प्रवेश करने की अनुमति नहीं दी; उन्होंने तब तक उसे अंदर नहीं आने दयिा जब तक उसने वश्विास के मामलों में उनके साथ एकमत रहने का वादा नहीं कयिा। इस प्रकार, यह झूठा पैट्रआर्क थियोडोसियस, चर्च के भीतर अशांति फैलाते हुए, बीस महीने तक यरूशलेम के पैट्रआर्केट के सहिासन पर रहा, जब तक कि सम्राट की ओर से कमांडर को उसे गरिफ्तार करने और एक वद्रिोही और हत्यारे के रूप में मुकदमे के लिए कॉन्स्टेंटनिोपल भेजने का आदेश नहीं मलिा। हालाँकि, सम्राट के आदेश के बारे में पहले से ही जानकारी मलि जाने पर, थियोडोसियस गुप्त रूप से माउंट सनिाई[4813] भाग गया, जहाँ वह छपिकर रहा।

उस समय, परम पावन पैट्रआर्क जुवेनाल, जन्हिें उनके सद्गुणों के लिए कॉन्स्टेंटनिोपल में सम्राट मार्सयिन, पुलकेरयिा और कॉन्स्टेंटनिोपल के परम पावन पैट्रआर्क द्वारा अत्यधकि सम्मानति कयिा जाता था, सम्राट की अनुमति से यरूशलेम के लिए रवाना हुए, पैट्रआर्कल सहिासन को फरि से संभाला और जो कुछ भी बाधति हो गया था, उसे व्यवस्थति करने और सुधारने लगे। मरुस्थल के संतों को उनके लौटने की खबर मलिते ही वे अत्यंत हर्षति हुए और प्रत्येक अपने-अपने मठ में लौट गया। हालाँकि, सम्राज्ञी यूडोक्सिया, उपर्युक्त थियोडोसियस द्वारा यूटकियिसवाद के भ्रम में पड़कर, इस भ्रम की स्थति में थी कि वह कसि धर्म को अपनाए। फरि उसने एंटओिक में सम्मानति समियिन द स्टाइलाइट के पास एक दूत भेजा, उनसे उचति सलाह और मार्गदर्शन मांगने के लिए। उन्होंने महारानी को एक पत्र लखिा, जसिमें उन्हें परम पवत्रि ऑर्थोडॉक्स पैट्रआर्क जुवेनाल के साथ सुलह करने और उनके धर्मपरायण उपदेशों का पालन करने का नर्दिेश दयिा। सम्राज्ञी ने तुरंत ऐसा कयिा और सार्वजनकि रूप से वधिर्म का परत्यिाग कर कैथोलकि चर्च की सदस्य बनीं। यह देखकर, वधिर्मी थियोडोसियस द्वारा पहले गुमराह कए गए अनगनित लोगों की भीड़—सामान्य लोग और मठाधीश दोनों—ने सम्राज्ञी के उदाहरण का अनुसरण करते हुए ऑर्थोडॉक्सी को अपना लयिा।

इसके बाद, संत जुवेनल ने अपने जीवन के शेष समय को शांति से बतिाया, और अपने शब्दों, अपने जीवन और अपने पादरीय सतर्कता के माध्यम से पवत्रि चर्च को समृद्ध कयिा। प्रोलॉग में उनके बारे में नम्निलखिति भी दर्ज है।

जब मार्सयिन और पुलकेरयिा ने ब्लाचेर्ना में परम पवत्रि कुँवारी मरयिम के सम्मान में एक चर्च बनवाया, तो उन्होंने संत जुवेनाल को लखिा, और उनसे पूछा कि क्या वह जानते हैं कि ईश्वर की माता का शरीर कहाँ दफनाया गया था। पैट्रआर्क ने उत्तर दयिा कि वह नहीं जानते; लेकनि उन्हें एक प्राचीन और सच्ची परंपरा याद आई कि कैसे परमेश्वर की माता के शरीर को दफनाया गया था, कैसे पवत्रि प्रेरतिों ने तीन दनिों तक स्वर्गदूतों का गायन सुना था, और कैसे तीन दनि बीत जाने के बाद, प्रेरति पेत्रुस ने दफन के समय मौजूद नहीं रहे एक शष्यि के लिए परमेश्वर की माता की कब्र खोली थी; फरि भी उन्हें परमेश्वर की माता का शरीर नहीं मलिा, बल्कि केवल दफन के वस्त्र ही मलि।

[4812] मोआबयिों का वास मृत सागर के पूर्व में, अर्नोन नदी के दोनों कनिारों पर, फलिस्तिीन में था। उन्होंने अपना नाम लोत के पुत्र मोआब से लयिा था, जो उसकी सबसे बड़ी बेटी के माध्यम से हुआ (उत्पत्ति 19:30–37)।

[4813] सनिाई पर्वत पत्थरीले अरब के रेगस्तिानों में स्थति था; इस्राएलयिों ने मस्रि से प्रस्थान के तीसरे महीने में वहाँ पहुँचकर डेरा डाला। यहीं पर ईश्वर ने दस आज्ञाओं में वर्णति कानून दयिा। – ईसाई युग में, कई संन्यासी इस पहाड़ पर रहते थे। 5वीं शताब्दी में, सनिाई का पूरा रेगस्तिानी क्षेत्र, अपने उजाड़ परदृिश्य के बावजूद, आश्रमों से भरा हुआ था। माउंट सनिाई को वर्तमान में अरबों द्वारा जेबेल टूर सनिा के नाम से जाना जाता है।

यह सुनकर, सम्राट और सम्राज्ञी ने एक बार फिर से पादरी को लिखा, उनसे विनती करते हुए कि वे कम से कम उन्हें दफ़न वस्त्रों सहित मसीह की माता की सीलबंद कब्र भेज दें – और पादरी ने वैसा ही किया।

संत जुवेनाल, जिन्होंने पवित्र मंत्रालय में कुल अड़तीस वर्ष तक सेवा की[4814] , शांतिपूर्वक निधन कर गए और अब स्वर्गीय धर्मगुरुओं के साथ हमारे प्रभु यीशु मसीह, महान महापुजारी, के महिमा के सिंहासन के सामने खड़े हैं, जिनकी महिमा युगानुयुग होती रहे। आमीन।

16 जुलाई

3 जुलाई (पुराने कैलेंडर के अनुसार)

इस दिन हम 12वीं सदी के, गुफाओं के पूजनीय अनातोलीयस का स्मरण करते हैं।

इस दिन हम हमारे पवित्र पिता कॉन्स्टेंटिनोपल के पैट्रिआर्क एंथनी का भी स्मरण करते हैं, जिनका निधन वर्ष 458 में हुआ था।

इस दिन हम 13वीं सदी के यारोस्लाव के धर्मी राजकुमार बेसिल और कॉन्स्टेंटिन का भी स्मरण करते हैं।

इस दिन, पवित्र शहीदों डायोमेड्स, यूलाम्पियस, एस्क्लेपियोडोٹس और गोलिन्धुखा की स्मृति दिवस है, जिन्होंने दूसरी शताब्दी में ट्राजन के अधीन यातनाएँ सहन कीं।

इस दिन, हम यारेंग के चमत्कार करने वाले पूजनीय जॉन और लोंगिनस का भी स्मरण करते हैं, जो व्हाइट सी में डूब गए थे और लगभग 1544–1545 में समुद्र के किनारे पाए गए थे।

आज, 1589 में मास्को के धन्य मूर्ख जॉन का निधन हुआ।

इस दिन, कोज़ेओज़ेरो (खोज्यूग) के पूज्य निकोडेमस का निधन हुआ, जिनका निधन 1640 में हुआ था।

इस दिन, मॉस्को के मेट्रोपॉलिटन, संत फिलिप के अवशेषों का स्थानांतरण

पवित्र शहीद हायसिंथ का कष्टकथा

3 जुलाई को स्मरणोत्सव

सम्राट ट्राजन[4815] के शासनकाल में, रोम में ईसाइयों का एक भयंकर उत्पीड़न हुआ। उस समय, एक फरमान जारी किया गया था जिसके अनुसार रोमन सम्राट के अधिकार के अधीन सभी लोगों को देवताओं को बलिदान चढ़ाने के लिए बाध्य किया गया; जो ऐसा करने से इनकार करते थे, उन्हें यातनाएँ दी जाती थीं।

उस समय, कापाडोसिया के सेज़ारिया का एक बीस वर्षीय उत्कृष्ट युवक, जिसका नाम हायसिंथ था[4816] , शाही महलों में रहता था। सम्राट के शयनकक्ष के परिचारक के पद पर रहते हुए, हायसिंथ हमेशा सम्राट की उपस्थिति में रहता था। विश्वास और पवित्र जीवन दोनों में एक सच्चा ईसाई होने के नाते, हायसिंथ गुप्त रूप से प्रभु मसीह की सेवा करता था, और पवित्रता, संयम, नम्रता और हर प्रकार के अच्छे कार्यों द्वारा खुद को विशिष्ट बनाता था।

एक अवसर पर, दुष्ट मूर्तियों के सम्मान में एक त्योहार आयोजित किया गया था; इस अवसर पर, सम्राट ट्राजन ने सार्वजनिक रूप से मूर्तियों को बलिदान चढ़ाया। युवकों में सबसे सुंदर, हायसिंथ, सम्राट के साथ मूर्तिपूजक मंदिरों में नहीं गया, बल्कि महल में ही रहकर एक छोटे, एकांत कमरे में चला गया और वहाँ एकमात्र सच्चे ईश्वर से भक्तिपूर्वक प्रार्थना करने लगा। यह बात हायासिंथ की ही उम्र के एक युवक ने देखी, जो शाही कोषाध्यक्ष के पद पर था— उर्विसियस नाम का एक युवक। हायासिंथ की प्रार्थना सुनकर, उर्विसियस ने जाकर सम्राट को बताया कि हायासिंथ, सम्राट के आदेश का उल्लंघन करते हुए, किसी यीशु मसीह से प्रार्थना कर रहा था और उसे ईश्वर कह रहा था।

[4814] जुवेनल ने 420 से 458 तक पैट्रिआर्क के रूप में कार्य किया।

[4815] सम्राट ट्राजन ने 98 से 117 तक शासन किया।

[4816] कैपाडोसिया – एशिया माइनर का एक क्षेत्र।

उस समय, सम्राट ट्राजन पूरे लोगों की उपस्थिति में एक घृणित भोज कर रहे थे। उन्होंने हायसिंथ को अपने सामने लाने का आदेश दिया और उसे मूर्तियों को बलिदान किया हुआ मांस दिया, और उसे खाने का आदेश दिया।

मसीह के पराक्रमी योद्धा याकिन ने, स्वस्तिक का चिह्न बनाते हुए, सम्राट से कहा:

'एक ईसाई के रूप में, मेरे लिए अपवित्र भोजन करना अनुचित है; मैं ईमानदारी से कामना करता हूँ कि आप भी मूर्तियों की पूजा, इस दानवी दावत और अपनी घृणित बलिदानों को त्यागकर, सच्चे परमेश्वर को जानें और केवल उसी की सेवा करें।'

सम्राट के साथ भोज में शामिल होने वाले सभी लोग, और साथ ही उसकी सेवा में लगे लोग, उस युवक हायसिंथ की हिम्मत देखकर चकित रह गए और उससे क्रोधित हो गए; लेकिन सम्राट ने उससे कहा:

'याकिन, तेरी जवानी तुझे घमंडी बनाती है, और तू, जो कि अयोग्य है, मुझसे यह सिखाने की हिम्मत करता है—कि मैं हमारे पूर्वजों के देवताओं की सेवा न करूँ, बल्कि किसी ऐसे मसीह की पूजा करूँ जिसे न तो हमने कभी जाना है और न ही हमारे पूर्वजों ने!'

'तुम उसे नहीं जानते क्योंकि तुम उसे जानने के अयोग्य हो, उस सच्चे परमेश्वर को, जिसने स्वर्ग, पृथ्वी, समुद्र और उनमें जो कुछ भी है, उसे बनाया, जिसने मानव जाति पर स्वर्गीय देह प्रदान किए और मनुष्य को अपनी ही प्रतिमा में गढ़ा। तुम अपने बारे में सही कहते हो जब तुम कहते हो कि तुम उसको नहीं जानते जिसे तुम्हारे पूर्वज, क्रोध के पुत्र होकर, नहीं जानते थे। मैं, हालांकि, धर्मपरायण और मसीह-प्रेमी माता-पिता से जन्मा और पाला गया था और मुझे अपने ईश्वर की उपासना और सेवा करना सिखाया गया था।

सम्राट संत के उत्तर से क्रोधित हो गया और अपने नौकरों को उसे मुँह पर मारने का आदेश दिया।

मसीह के शहीद पर टूट पड़ते हुए, नौकरों ने न केवल उसके होठों पर बल्कि गालों पर भी बेरहमी से पिटाई करनी शुरू कर दी; और जब वह ज़मीन पर गिर पड़ा, तो उन्होंने उसे पैरों तले कुचलते हुए कहा:

'तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई सम्राट को इतनी अभद्रता से उत्तर देने की?'

तब सम्राट ने उन्हें संत को पीटना बंद करने का आदेश दिया; क्रूर पिटाई और पैरों तले कुचले जाने के कारण संत उठ नहीं पा रहे थे, और वे जमीन पर पड़े रहे। इस बीच, ट्राजन ने आदेश दिया कि संत के मुँह में बलि का भोजन जबरदस्ती ठूँस दिया जाए। लेकिन मसीह के पवित्र शहीद ने अपने होंठों और दाँतों को कसकर बंद कर लिया और मूर्तिपूजक बलि के अपवित्र भोजन को स्वीकार करने से इनकार कर दिया। तब सम्राट ने आदेश दिया कि संत को लोहे की बेड़ियों में बाँधा जाए, उसके पैरों को हत्थे में कसा जाए, और उसे कैद कर दिया जाए।

अगली सुबह, लोगों के साथ उसी घृणित त्योहार का उत्सव जारी रखते हुए, सम्राट ने आदेश दिया कि यातना के सभी उपकरण एक प्रमुख स्थान पर प्रदर्शित किए जाएं और शहीद हायसिंथ को पूछताछ के लिए कालकोठरी से बाहर लाया जाए। जब हायसिंथ को उसके सामने लाया गया, तो ट्राजन ने उससे पूछा:

'युवक! क्या तुम हमारे आदेश का पालन करोगे, या तुम अभी भी अपनी अवज्ञा पर अड़े हो? मुझे पूर्वाभास है कि तुम्हारा अहंकारी मन तुम्हें अत्यंत कष्टदायक यातनाओं की ओर ले जाएगा; तुम्हारे लिए बेहतर होगा कि तुम मेरा कहना मानो और देवताओं को बलिदान चढ़ाओ, यदि तुम क्रूर यातना में नष्ट नहीं होना चाहते!'

लेकिन मसीह का सेवक, जो शरीर और आत्मा से अडिग था, और ईश्वर की सहायता पर भरोसा करता था, उसने ट्राजन से कहा:

'मैं एक ईसाई हूँ; मैं मसीह का सम्मान करता हूँ, मैं उनकी उपासना करता हूँ, और मैं उन्हें एक जीवित बलिदान—स्वयं को—समर्पित करता हूँ। लेकिन मैं तुम्हारे राक्षसों को बलिदान नहीं चढ़ाऊँगा; मैं तुम्हारी धमकियों से नहीं डरता, क्योंकि मैं यातनाओं का तिरिस्कार करता हूँ, और तुम मुझे, मसीह के एक सेवक को, अपनी दुष्टता स्वीकार करने के लिए मजबूर नहीं कर सकते; तुम मुझे इस क्षणिक सांसारिक अस्तित्व के लिए शाश्वत जीवन त्यागने का प्रलोभन नहीं दोगे! मेरे साथ जो चाहो सो करो!

तब सम्राट, क्रोध से भरकर, ने पहले आज्ञा दी कि ज़मीन पर लोट रहे उस पवित्र युवक को निर्दयता से लंबे समय तक पीटा जाए; और फिर, उसे यातना के स्थान पर लटकाकर, उसने आज्ञा दी कि उसके मांस को लोहे के पंजों से नोचा जाए। शहीद ने, बहादुरी से यातनाओं को सहते हुए, सम्राट से पुकारा:

मैं एक ईसाई हूँ; मैं मसीह का सेवक हूँ, और मैं उनसे मुँह नहीं मोड़ूँगा। तुम, मसीह के लिए मुझे यातनाएँ देकर, मेरे ऊपर एहसान कर रहे हो। और भी अधिक क्रूर यातनाएँ सोचो, क्योंकि मैं अपने प्रभु मसीह के लिए और भी अधिक तीव्र

पीड़ा सहना चाहता हूँ, जब तक कि—मेरे प्रभु मसीह की सहायता से, जो उनके परम पवित्र नाम का आह्वान करने वालों सभी की सहायता करते हैं—मैं अपनी सहनशीलता से तुम्हारी क्रूरता पर विजय प्राप्त न कर लूँ!

इस बीच, सातवाँ घंटा आ गया था। इस दृश्य को देखने वाली भीड़ शहीद के धैर्य से बहुत चकित थी। तब सम्राट ने संत को लज्जा के स्तंभ से उतारने और उन्हें बाँधकर वापस जेल ले जाने का आदेश दिया, और रक्षकों को सख्त हिदायत दी कि वे उन्हें मूर्तियों को चढ़ाया गया भोजन और पेय छोड़कर कुछ भी न दें, ताकि भूख और प्यास से मजबूर होकर वे उसे ग्रहण करें। रक्षकों ने सम्राट की आज्ञा का कड़ाई से पालन किया: वे हर दिन मूर्तिपूजक बलिदानों से भोजन और पेय लाते और उन्हें संत को उनकी कोठरी में पेश करते थे। लेकिन जब वे अगली सुबह लौटे, तो उन्होंने सब कुछ जस का तस पाया, क्योंकि पवित्र शहीद उन मूर्तिपूजा की बलिदानों की ओर नज़र भी नहीं उठाना चाहते थे, उन्हें एक घृणित घृणा मानते हुए; और कई दिनों तक वह बिना भोजन या पानी के रहे, ईश्वर से अखंड प्रार्थना करते रहे; संत ने आत्मा में आनंद मनाया, मानो वह किसी भव्य दावत में हो, क्योंकि वह पवित्र आत्मा की कृपा से पोषित हो रहे थे।

इस बीच, ट्राजन ने अपने सेवकों को भेजकर पहरेदारों से पूछा कि क्या हायसिंथ ने बलिदानों से लाया गया भोजन और पेय खाया या पिया था, या नहीं। पहरेदारों ने उत्तर दिया:

– वह उसके पास लाई गई चीज़ों पर एक उंगली भी नहीं रखता, लेकिन भोजन और पानी से वंचित होने पर भी वह प्रसन्न होता है और अपने ईश्वर से प्रार्थना करता है।

यह सुनकर, ट्राजन रक्षकों पर क्रोधित हो गया, और उसे संदेह हुआ कि कोई जाकिन के लिए दूसरी खाने की चीज़ें ला रहा था और रक्षकों को मौत की धमकी दे रहा था। लेकिन रक्षकों ने गंभीरता से गवाही दी कि कोई बाहरी व्यक्ति संत की कोठरी में प्रवेश नहीं किया था; उन्होंने उसे आश्वासन दिया कि उन्होंने कोठरी पर चौकस पहरा दिया था, और किसी को भी उसके पास आने की अनुमति नहीं दी थी।

जब शहीद की कैद का अड़तीसवां दिन आया, तो एक पहरेदार, अपनी आदत के अनुसार, तहखाने में गया, और अपने साथ मूर्तियों को बलिदान करके अर्पित किया गया भोजन शहीद को खिलाने के लिए ले गया। और वहाँ उसने कालकोठरी के भीतर एक अकथनीय प्रकाश देखा और पवित्र शहीद के पास दो स्वर्गदूत खड़े थे, जिनमें से एक संत के शरीर को एक तेजस्वी वस्त्र से ढक रहा था, जबकि दूसरा उनके सिर पर एक अद्भुत मुकुट रख रहा था। यह देखकर, पहरेदार बहुत डर गया; उसने जो कुछ उठा रखा था, वह गिरा दिया, दौड़कर सम्राट के पास गया, और उसे जो कुछ उसने देखा था, वह बता दिया। सम्राट ने इस बात पर विश्वास नहीं किया और यह मानकर कि यह सब जादू-टोने से किया गया कोई धोखा है, उसने मसीह के लिए कष्ट सहने वाले को और भी क्रूर यातनाओं से गुजारने का फैसला किया।

दो दिन बाद, सार्वजनिक अदालत में बैठे ट्राजन ने कैदी को यातना देने के लिए कालकोठरी से बाहर लाने का आदेश दिया, यह कहते हुए:

'मैं देखूँगा कि मसीह उसकी कैसे मदद करते हैं; क्या वह उसे मेरे हाथों से छुड़ाएगा?'

लेकिन जब सम्राट के सेवक कालकोठरी में दाखिल हुए, तो उन्होंने उस युवक को प्रभु में निधन कर चुके पाया[4817]; उन्होंने अत्यंत तेजस्वी स्वर्गदूतों को भी देखा जिन्होंने युवकों का रूप धारण कर रखा था और जो शरीर के चारों ओर खड़े थे; उनके हाथों में मोमबत्तियाँ थीं, जबकि कालकोठरी एक अकथनीय प्रकाश और सुगंध से भर गई थी। डर के मारे, नौकर अंधाकुंड से भाग गए और उन्होंने जो देखा था, उसकी सूचना सम्राट को दी।

शर्म और गुस्से से भरकर, सम्राट ने नौकरों के एक समूह को मृतक के शव को कालकोठरी से बाहर ले जाने के लिए भेजा। कालकोठरी में प्रवेश करने पर, उन्होंने वहां मृत शरीर के अलावा और कुछ नहीं देखा, जिसे वे फिर कालकोठरी से बाहर ले आए। तब सम्राट ने शहीद के पवित्र शरीर को शहर के बाहर ले जाकर किसी सुनसान जगह पर फेंक देने का आदेश दिया, ताकि जिंगली जानवर, कुत्ते और पक्षी उसे खा जाएँ; साथ ही, उन्होंने पहरेदारों को पास में ही रहने का आदेश दिया, ताकि ईसाई गुप्त रूप से संत के शरीर को वहाँ से न ले जाएँ।

इस प्रकार पवित्र शहीद का शरीर वहाँ लंबे समय तक सुरक्षित रहा, क्योंकि उसकी रक्षा परमेश्वर के एक स्वर्गदूत द्वारा की जा रही थी।

एक रात, शहीद के एक रिश्तेदार, धर्मी पुरोहित तीमथियुस के पास एक स्वर्गदूत प्रकट हुआ, और उसने उसे शहीद का शरीर ले जाने की आज्ञा दी। वह अपने घर के कुछ विश्वासियों के साथ, रात होते ही उस सुनसान स्थान के लिए

[4817] संत हायसिंथ की शहादत दूसरी शताब्दी की शुरुआत में हुई थी।

रवाना हो गया। चूँकि किसी ने उसे रोका नहीं, उसने शहीद का पवित्र शरीर उठा लिया, उसे अपने घर के एक भीतरी कक्ष में रख दिया, और उसे सुगंधित तेलों से महकती एक स्वच्छ कफ़न में लपेट दिया। इसके बाद, वह पुरोहित प्रतिदिन संत के शरीर वाले अवशेष-पात्र के पास एक दीपक जलाता और धूप जलाता था।

इसके बाद, πρεσβύτιρ तीमथियुस, कई वर्षों तक जीवित रहने और अपनी मृत्यु के निकट पहुँचने पर, ने पवित्र शहीद के अवशेष एक धर्मपरायण विधवा को सौंप दिए, जो अपने जीवन में पवित्र और अपनी आयु में सम्माननीय थी। उसने, उस अनमोल खजाने को खुशी से स्वीकार करते हुए, उसे अपने घर में सम्मान के साथ रखा, और इसी प्रकार प्रतिदिन धूपदान जलाकर धूप अर्पित करती थी; और पवित्र अवशेषों से एक सुगंध निकलती थी, जो पूरे घर में फैल जाती थी। इस महिला ने संत के अवशेषों के बारे में किसी को कुछ नहीं बताया, क्योंकि पूरा शहर मूर्तिपूजा में लीन था; वह अकेली ही दिन-रात मसीह के शहीद के अवशेषों के सामने आँसुओं के साथ प्रार्थना करती थी।

बहुत समय बीत जाने के बाद, जब वह विधवा अपने जीवन के अंत के करीब थी, तो ऐसा हुआ कि एक कुलीन व्यक्ति दरिद्रता के कारण अपनी दृष्टि खो बैठा। वह बीमार व्यक्ति पूरे एक साल से रोशनी नहीं देख पाया था और उसे डॉक्टरों से कोई मदद नहीं मिल पा रही थी। पवित्र शहीद हायसिंथ, उसे एक सपने में प्रकट होकर, कहा:

'हे मनुष्य! क्या तुम अपनी बीमारी से ठीक होना और अपनी अंधापन से मुक्त होना चाहते हो?'

बीमार व्यक्ति ने उस आकृति से पूछा, 'तुम कौन हो, जो मुझसे इस तरह बात कर रहे हो?'

'मैं,' संत ने उत्तर दिया, 'सभी बीमारियों का उपचार करने वाला, हायसिंथ, मसीह का सेवक हूँ।'

'मैं आपसे विनती करता हूँ,' बीमार आदमी ने कहना जारी रखा, 'मेरी सारी संपत्ति ले लो, बस मुझे रोशनी देखने दो, क्योंकि अँधेरे में बैठकर, मैं बहुत दुखी और पीड़ित हूँ।'

संत हैसिंथ ने उत्तर दिया, 'मेरा ईश्वर तुम्हें निःशुल्क चंगा कर देगा, बस मेरी आज्ञा का पालन करो, अर्थात्: मेरे शरीर को, जो तुम्हारे पास रहने वाली उस विधवा के पास दफ़न है, मेरे गृह-नगर, कैपाडोसिया के शहर केसरिया में भेज दो; और मेरी कब्र के पास जल रहे दीपक के तेल से अपनी आँखों पर लेप लगाओ – तब तुम्हारी दृष्टि वापस आ जाएगी।

उस आदमी ने, अपने सपने में जो देखा था उस पर विश्वास करके, अपने बिस्तर से उठा, एक सुरक्षा दल के साथ विधवा के घर के लिए रवाना हुआ, और उसे उस दिव्य दर्शन और शहीद की आज्ञा के बारे में बताया। तब विधवा ने उस आदमी को भीतर के कमरे में ले गई जहाँ संत का शरीर पड़ा था और उसे दीपक का तेल दे दिया; जब उस आदमी ने अपने अंधे आँखों पर उस तेल का लेप लगाया, तो उसकी दृष्टि तुरंत वापस आ गई, लेकिन उसने संत की आज्ञा का पालन करने में देरी की।

कुछ समय बीत जाने के बाद, अँधेरा एक बार फिर उसकी आँखों पर छा गया, और वह अंधा हो गया। फिर, अपने मार्गदर्शक के साथ, वह पवित्र शहीद की अवशेषों के लिए एक बार फिर रवाना हुआ, और उपचार के लिए उनसे विनती करने लगा। जैसे ही वह उस चैपल में प्रवेश किया जहाँ संत की अवशेषें रखी थीं, उसने ऊपर से एक आवाज सुनी जो उससे बात कर रही थी:

'जिसने अपवित्र किया है, वह स्वयं अब अपवित्र हो गया है।'

तब, संत की अवशेषों के सामने गिर पड़कर, उसने कहा:

'हे ईश्वर के सेवक, अब मुझे दृष्टि प्रदान करें, और मैं तुरंत वैसा ही करूँगा जैसा आपने मुझे आज्ञा दी है!'

फिर, उठकर, उसने अपनी आँखों पर एक बार फिर दीपक के तेल का लेप लगाया और अपनी दृष्टि पूरी तरह से वापस पा ली, क्योंकि न केवल उसकी शारीरिक आँखें खुलीं, बल्कि उसकी आत्मा की आँखें भी खुलीं: मसीह में विश्वास करने के बाद, वह पवित्र बपतिस्मा के माध्यम से प्रबुद्ध हुआ।

उल्लेखित विधवा तब तक पहले ही निधन कर चुकी थी; इसलिए, नव-प्रबुद्ध ईसाई ने संत की अवशेषों वाली तिजोरी लेकर उसे सील कर दिया, और उसे विश्वसनीय लोगों के साथ कैपैडोसिया के केसरिया भेज दिया; साथ ही, उसने तिजोरी के साथ भेजे गए लोगों को यह निर्देश दिया कि जब वे शहर के पास पहुँचें तो खच्चरों (जो तिजोरी ले जा रहे थे) को अकेले आगे जाने दें; – जहाँ भी वे रुकें, वहाँ अवशेषों को स्थापित कर दिया जाना था, क्योंकि यह संत की आज्ञा थी।

जब अवशेषों के साथ भेजे गए विश्वासी पुरुष सेज़रिया शहर के पास पहुँचे और खुद को सेबेस्टियन गेट्स के नाम से जाने जाने वाले द्वारों के पास पाया, तो उन्होंने खच्चरों को उनके साथियों के बिना आगे बढ़ने दिया। किसी के मार्गदर्शन के बिना, खच्चर उस घर के पास पहुँचे जहाँ शहीद का जन्म हुआ था। लेकिन इस समय तक उनके माता-पिता का निधन हो चुका था। फिर उस शहर के सभी विश्वासियों ने एकत्रित होकर शहीद की अवशेषों के आगमन पर परम आनंद से भर गए;

बाद में, उन्होंने हमारे प्रभु यीशु मसीह की महमिा करते हुए, उन पवत्रि अवशेषों को उस घर के भीतर संगमरमर के एक अवशेष-पात्र में सम्मानपूर्वक स्थापति कयिा। मसीह के शहीद हायसथि की मृत्यु रोम में जुलाई के तीसरे दनि हुई, वे भूख और प्यास से पीड़ति थे, फरि भी वशि्वास, प्रार्थना और पवत्रि आत्मा की कृपा से जीवति रहे – उस समय जब ट्राजन अधर्मी लोगों पर शासन करता था, जबकि हमारे प्रभु यीशु मसीह मसीहयिों पर राज्य करते थे, जनिका महमिा हो, पति और पवत्रि आत्मा के साथ, अब और सदा-सदा के लिए। आमीन।

कॉन्टाकयिन, स्वर 6:

हे ख्रीस्त, उसने अपनी आत्मा में जीवन के वृक्ष के रूप में आपका वशि्वास प्राप्त कयिा; आपका शहीद एडेन के स्वर्ग का सबसे सम्मानति था; अपनी आत्मा से साँप के प्रलोभन के वृक्ष को नडिर होकर नष्ट करते हुए, उसे आपकी महमिा से मुकुटति कयिा गया, हे परम दयालु।

हमारे पूजनीय पति अलेक्जेंडर, नदि्रारहति के मठ के संस्थापक का जीवन

3 जुलाई को स्मरणोत्सव

हमारे पवत्रि और पूजनीय पति अलेक्जेंडर का जन्म एशयिा में हुआ था। अपनी युवावस्था में ही, वे शकि्षा प्राप्त करने के लिए कॉन्स्टेंटनिोपल गए, जहाँ, लगन से अध्ययन करने के बाद, उन्होंने वजि्ञान के वषियों का पर्याप्त ज्ञान प्राप्त कयिा। परपिक्वता प्राप्त करने पर, वह सैन्य सेवा में शामलि हो गया और बाद में एक ईcommander-in- बन गया। अपने आधकिारकि कर्तव्यों से अवकाश के समय, उसे दव्यि धर्मग्रंथों की पुस्तकें पढ़ना पसंद था, क्योंकि वह सदाचारी, ईमानदार, दृढ़, ईश्वर-भयभीत, और पवत्रिता तथा संयम से सुसज्जति था। पुराने और नए नयिम को पढ़ने के बाद, उन्होंने मसीह के सबसे पवत्रि होठों से बोले गए सुसमाचार के शब्दों में गहराई से उतर गए: *'यदि तुम सदि्ध होना चाहते हो, तो जाओ, अपनी संपत्ति बेच दो और गरीबों को दे दो, और तुम्हारे लिए स्वर्ग में खजाना होगा; और आओ, मेरा अनुसरण करो'* (मत्ती 19:21)। इस पर मनन करते हुए और मसीह के वचन पर दृढ़ वशि्वास रखते हुए, उसने अपनी संपत्ति बेचना शुरू कर दयिा—जो कि अपने उच्च सरकारी पद के कारण बहुत थी—और उससे प्राप्त धन को बेसहारा और गरीबों में बाँटने लगा; उसने तो पहले ही संसार और सभी सांसारकि चीजों को त्यागने और मसीह के पदचनि्हों पर चलने का संकल्प ले लयिा था। उसने सुना था कि सीरयिा में पवत्रि पुरुष रहते थे, जो मठों में एक ईश्वरीय जीवन जीते थे, और वह वहाँ जाना चाहता था। अपना सैन्य कमांडर का पद त्यागकर, अपने मत्रिों, घर और नौकरों को पीछे छोड़कर, और सांसारकि मामलों की सभी चतिाओं को भुलाकर, वह सीरयिा के लिए नकिल पड़ा। जब वह उस मठ में पहुँचा जहाँ परम पूज्य एलयिाह मठाधीश थे, तो उसने इस पति से उसे मठीय समुदाय में स्वीकार करने का आग्रह कयिा। भकि्षु समुदाय में शामलि होने के बाद, वह चार साल तक इस मठ में रहा, उसने जो भी कर्तव्य सौंपे गए थे, उन्हें पूरे उत्साह से नभिाया और इसके अलावा, उपवास, दनि-रात प्रार्थना और पुस्तकों के अध्ययन में खुद को समर्पति कर दयिा। सबसे बढ़कर, वह दाऊद की भजन-संग्रह की समझ प्राप्त करने के लिए लालायति था; वह भजन-संग्रह के प्रत्येक श्लोक के अर्थ को समझना चाहता था। जब भी वह भ्रमति होता, तो वह जो बात नहीं समझ पाता था, उसके बारे में अनुभवी लोगों से पूछता और ईश्वर से ईमानदारी से प्रार्थना करता कि वह दव्यि शास्त्रों को समझने के लिए उसके मन को प्रबुद्ध करें, जो उसे पवत्रि आत्मा की कृपा से प्राप्त हुआ, ताकि बाद में, ईश्वर के वचन को पढ़ते समय, उसे अपने हृदय में पूर्ण आनंद और कोमलता मलिी। जब उन्होंने देखा कि सभी मठों में भाई-बंधु भोजन और वस्त्रों को लेकर अत्यधकि चतिति थे, तो उन्होंने सुसमाचार में मसीह के उन वचनों को याद कयिा, जो भोजन, पेय और वस्त्रों के लिए अत्यधकि चतिा करने से मना करते हैं, और यहाँ तक कि हमें कल की चतिा न करने की आज्ञा देते हैं। उन्हें दृढ़ और अटूट वशि्वास था कि प्रभु, वह पालनहार जो पक्षयिों को खलिाता है और खेतों की घास को वस्त्र पहनाता है, वह नश्चिय ही उन लोगों को अपनी देखभाल के बनिा नहीं छोड़ेगा जो उसके लिए परश्रिम करते हैं, क्योंकि वह उन्हें खलिाने और वस्त्र पहनाने के लिए पर्याप्त शक्तशिाली है, बशर्ते कि वे पहले परमेश्वर के राज्य और उसकी धार्मकिता को खोजें। ऐसे वचिारों से प्रेरति होकर, पूजनीय अलेक्जेंडर ने अपने पास रखी सुसमाचार उठाई, अब्बा एलयिा के पास गए और उनसे कहा:

'फादर, क्या सुसमाचार में लखिा सब कुछ सच है?'

यह प्रश्न सुनकर, पूजनीय एलियाि चकति हो गए और, अपनी उलझन में, उन्होंने सोचा कि जिसिने उनसे पूछा था, वह शैतान के कसिी प्रकार के अवशि्वास से भटक गया था। प्रश्न का उत्तर दिए बनिा, वे बैठ गए और अपना सरि झुका लयिा; उसी क्षण, भाई उनके पास आए।

'भाइयो,' पूजनीय एलियाह ने उनसे कहा, 'हम अपने भाई अलेक्जेंडर के लिए प्रार्थना करें, जो शत्रु के जालों में फँस गया है।'

और उठकर, उन्होंने आँसुओं के साथ प्रार्थना की; फरि, अलेक्जेंडर की ओर मुड़कर, उन्होंने उससे कहा:

'तुम्हारे मन में ऐसा संदेहपूर्ण वचिार कहाँ से आया, कि तुम पवत्रि सुसमाचार में लखिी बात पर वशि्वास नहीं करते?'

'नहीं, पतिाजी, मैं अवशि्वास नहीं करता,' अलेक्जेंडर ने उत्तर दयिा, 'लेकनि मैं केवल यह पूछ रहा हूँ कि पवत्रि सुसमाचार में लखिा सब कुछ सच है या नहीं।'

'सचमुच, यह सब सत्य है,' सभी भाइयों ने उत्तर दयिा, 'और इसमें कोई संदेह नहीं हो सकता।'

तब अलेक्जेंडर ने उनसे कहा:

'अगर वहाँ लखिा सब कुछ सच है, तो हम उसे व्यवहार में क्यों नहीं लाते?'

भाइयों ने उत्तर दयिा, 'एक कमजोर व्यक्ति के लिए सब कुछ पूरा करना असंभव है।'

यह उत्तर सुनकर, अलेक्जेंडर, जसिका हृदय उत्साहति हो उठा और जो अपनी पूर्व जीवन—जसिे सुसमाचार के वचनों के प्रति पूर्ण आज्ञाकारति में नहीं जयिा गया था—को व्यर्थ समझता था, ने रेगस्तिान में जाने का नशि्चय कयिा, ताकि वहाँ वह सुसमाचार के अनुसार अधकि आसानी से जी सके। आदरणीय एलयिा का आशीर्वाद लेकर और भाइयों से स्नेहपूर्वक वदिा लेकर, वह प्रभु में अपनी आशा रखकर नकिल पड़ा, और अपने साथ पवत्रि सुसमाचार के सवि कुछ भी नहीं ले गया। वे सात वर्ष तक रेगस्तिान में रहे, उन्हें सांसारकि मामलों की कोई चति नहीं थी। रेगस्तिान में ईश्वर की दविय व्यवस्था द्वारा उनका पालन-पोषण कैसे हुआ, यह नम्निलखिति वृत्तांत में प्रकट होगा।

मरुभूमि में अपने सात साल के प्रवास को पूरा करने के बाद, आदरणीय अलेक्जेंडर को पता चला कि जहाँ वह ठहरे हुए थे, उसके पास ही एक गाँव था जो मूर्तपिूजकों का था जो राक्षसों की सेवा करते थे। ईश्वर के प्रति उत्साह से भरकर, वे इस गाँव में गए और वहाँ के मूर्तपिूजक मंदरि में आग लगा दी। यह देखकर, नविासी जलते हुए मंदरि की ओर दौड़े और वहाँ उन्होंने पूजनीय अलेक्जेंडर को पाया। उन्होंने उस मंदरि से, जसिे उन्होंने आग लगाई थी, al , दूर नहीं हटे, बल्कि जानबूझकर मूर्तपिूजक नविासयिों के वहाँ इकट्ठा होने का इंतजार कयिा, क्योंकि वह उनसे यह छपिाना नहीं चाहते थे कि उन्होंने क्या कयिा था। जब उन्होंने मंदरि जलाने के बारे में उनसे पूछना शुरू कयिा, तो उन्होंने स्वीकार कयिा और कहा कि उन्होंने ही इसे आग लगाई थी। यह सुनते ही वे उस पर टूट पड़े और उसे मारने की कोशशि करने लगे, लेकनि ईश्वर ने अपने सेवक की रक्षा की। कुछ नविासी इस बात से सहमत नहीं थे कि अलेक्जेंडर को मार दयिा जाए और इसलिए उन्होंने उन लोगों को रोक लयिा जो उस पर टूट पड़े थे, और इस बात पर जोर दयिा कि आग लगाने वाले को शहर की अदालत के सामने पेश कयिा जाए। बाद में, जब हर कोई अपने जोश में शांत हो गया, तो संत ने अपनी आवाज़ उठाई और कहा:

'हे लोगों! अपनी भूल को समझो, सत्य को पहचानो, स्वयं को अनंतकाल की नदिा से बचाओ; मैं तुम्हें स्वर्ग के राज्य का प्रचार करता हूँ।'

और, प्रेरति की तरह, उन्होंने उनके बीच उद्धार का वचन प्रचार करना शुरू कर दयिा। कुछ ने उनकी शकि्षा सुनी, जबकि अन्य ने उनके शब्दों पर ध्यान देने से इनकार कर दयिा और उन्हें शहर की अदालत में ले गए। उस समय उस शहर का गवर्नर रावल था। जब उसने रेवरेंड द्वारा दी गई दैवीय शकि्षा सुनी, तो उसने अपनी मूर्तपिूजक कतिाबों के आधार पर इस शकि्षा का खंडन करने का प्रयास करते हुए, उनसे लंबी बहस की, और संत को यातना की धमकयिों से डराया। अंतत; यह मान लेने के बाद कि माननीय अलेक्जेंडर अपने व्यवहार में वनिम्र और अपने उत्तरों में बुद्धमिान थे, और जो सद्धिांत वे प्रचार करते थे वह अवविादनीय था, रावुल ने उन्हें कोई हानि नहीं पहुँचाई। इसके वपिरीत, प्रभु ने ऐसा प्रबंध कयिा कि इस नगरपालक ने अलेक्जेंडर को अकेले अपने नविास पर आमंत्रति कयिा, ताकि वह नजिी तौर पर उनसे बातचीत कर सके, और सबसे पहले उससे पूछा:

'मुझे सच बताओ: तुम ईसाई अपने जीवन को इतनी तुच्छता से कसि आधार पर देखते हो?'

इस प्रश्न पर, रेवरेंड ने रावुल को उत्तर दयिा:

'आप गलत हैं; हम अपने जीवन का तिरस्कार नहीं करते, बल्कि स्वयं को हमेशा के लिए अमर बनाए रखने का प्रयास करते हैं। सच्चा जीवन अनंतकाल तक जीने में है; केवल अस्थायी रूप से जीना जीवन नहीं, बल्कि मृत्यु है।' यह अस्थायी, नश्वर जीवन है जिसे हम भविष्य के शाश्वत, अमर जीवन के लिए तुच्छ समझते हैं, क्योंकि हमारे लिए लिखा है: *'जो कोई* इस युग में *अपनी आत्मा खो देता है, वह* 'शाश्वत जीवन में *उसे बचाएगा*' (मत्ती 10:39)।

इस पर, रवल ने उससे कहा:

'और इस सांसारिक जीवन के समाप्त होने के बाद, तुम कहाँ होने की आशा करते हो?'

संत ने उन्हें स्वर्ग के राज्य और धर्मात्माओं के लिए तैयार की गई अनंत आशीर्वादों के बारे में उपदेश देना शुरू कर दिया। अविश्वासी मूर्तिपूजक को, संत के शब्द एक कथा जैसे लगे; फिर भी, इसके बावजूद, वह इस शिक्षा को सुनने के लिए और भी उत्सुक था, जो उसके लिए नई थी, और उसने पवित्र विश्वास की उत्पत्ति के बारे में और पूछा। तब आदरणीय संत ने, उन्हें ईश्वर के ज्ञान का उपदेश देते हुए और मानव जाति के प्रति ईश्वर की कृपा को प्रकट करते हुए, संसार की सृष्टि से लेकर, क्रूस और मसीह की स्वैच्छिक मृत्यु के माध्यम से, पुनरुत्थान और स्वर्ग में महिमामय आरोहण तक प्रभु के कर्मों का वर्णन करना शुरू किया। बातचीत दिन-रात चलती रही। वार्तालाप करने वालों ने न तो भोजन लिया और न ही पानी पिया, और न ही उन्हें नींद का ज़रा भी मन हुआ। जब बातचीत पवित्र नबी एलिया पर आई—कि कैसे, उनके वचन पर, आकाश बंद हो गया था, और कैसे, उनकी प्रार्थना से, बलिदानों पर आग बरसी, कुछ ऐसा जो बाअल के पुरोहित अपनी मूर्तियों से नहीं मांग सकते थे—रबुल, यह सुनकर, हँसा और कहा:

'तुम्हारी ये सारी ईसाई कल्पनाएँ महज़ मनगढ़ंत बातें हैं। मैं तुम्हें एक अच्छी सलाह देता हूँ: हमारे देवताओं को बलिदान चढ़ाने में हमारे साथ शामिल हो जाओ; वे दयालु हैं और अज्ञानता में उनके मंदिर को जलाकर उन्हें क्रोधित और अपमानित करने के लिए तुम्हें माफ कर देंगे।'

संत ने उत्तर दिया:

'यदि जिन्हें तुम देवता कहते हो, वे सचमुच देवता हैं, तो उन्होंने भविष्यवक्ता एलियाह के दिनों में अपने ही पुरोहितों की बात क्यों नहीं सुनी, जब वे दिन भर उनसे पुकारते रहे और उन्होंने बलिदानों पर स्वर्ग से आग नहीं भेजी?' परन्तु परमेश्वर के सेवक एलियाह ने स्वर्ग में वास करने वाले हमारे एकमात्र परमेश्वर से केवल एक बार प्रार्थना की (3 राजा 18:23–39), और तुरंत स्वर्ग से आग बरसी और उसने न केवल लकड़ी और बलिदान को, बल्कि पानी और पत्थरों को भी भस्म कर दिया, और धरती को भी आग लगा दी; और फिर उन पचास मनुष्यों पर, जो नबी को पकड़ने आए थे, ऊपर से आग बरसी और उन्हें उनके सैनिकों सहित भस्म कर दिया (2 राजा 1:1–18)।

राबुल हँसा और कहा:

'अगर सचमुच ऐसा हुआ था, तो तुम, जो अपने आप को अपने ईश्वर का सेवक कहते हो, भी वैसा ही करो। यहाँ हमारे सामने बहुत सारे तख्त और सूखी लकड़ी पड़ी है; अपने ईश्वर से प्रार्थना करो, ठीक वैसे ही जैसे एलियाह ने किया था, कि स्वर्ग से आग बरसकर इसे जला दे। तब मैं भी कहूँगा कि उस ईश्वर के सिवा कोई और ईश्वर नहीं है जिसमें ईसाई विश्वास करते हैं।'

संत ने कहा:

'पहले अपने देवताओं से प्रार्थना करो; उन्हें यह करने दो।'

राबुल ने उत्तर दिया:

'मेरे देवताओं के सामने न तो मेरी शक्ति है और न ही मेरी हिम्मत; अपने ईश्वर से प्रार्थना करो।'

तब संत अलेक्ज़ेंडर, यह याद करते हुए कि सुसमाचार के अनुसार, जो विश्वास करता है उसके लिए सब कुछ संभव है (मरकुस 9:23), परमेश्वर में दृढ़ विश्वास और भरोसे के साथ, प्रार्थना करने के लिए उठ खड़े हुए; और जैसे ही उन्होंने अपने हाथ उठाए और प्रार्थना करना शुरू किया, स्वर्ग से तुरंत आग बरस पड़ी और वह चटाइयों और झाड़ियों पर गिरकर उन्हें आग की लपटों में घेर लिया। यह देखकर, रावुल भयभीत हो गया और उसे डर लगा कि आग उस पर भी गिर सकती है और उसे भी भस्म कर सकती है, जैसे यह नबी एलिया के समय पचास आदमियों को भस्म कर चुकी थी। और रावुल ने ऊँचे स्वर में पुकारा और कहा:

'निश्चय ही, ईसाई ईश्वर महान है!'

और वह इस चमत्कार को लोगों को बताना चाहता था, लेकिन संत ने उसे किसी को भी न बताने के लिए सख्त मनाही कर दी। इसलिए रवल चुप रहा और जब तक पूजनीय अलेक्ज़ेंडर जीवित थे, इसे अपने तक ही सीमित रखा। हालाँकि, उनके

नधिन के बाद, उसने इस चमत्कार की घोषणा बशिपों और भक्षिुओं के सामने की, और ईश्वर के नाम पर अपने कथन की सच्चाई की पुष्टि की।

आदरणीय अलेक्जेंडर द्वारा कए गए चमत्कार के बाद, शहर के गवर्नर रावुल ने संत अलेक्जेंडर की संगति में पूरा एक सप्ताह बताया, जहाँ उन्हें आस्था के सत्यों की शक्षिा दी गई और मोक्ष के सही मार्ग पर मार्गदर्शन कया गया; फर उन्होंने पवत्रि बपतस्मिा के माध्यम से ज्ञान प्राप्त करने का अनुरोध कया, क्योंकि पवत्रि ईस्टर का सबसे गौरवशाली दनि नजदीक आ रहा था। लेकनि शैतान, जो मानव मोक्ष का शत्रु है, ने इस पवत्रि कार्य के पूर्ण होने में बाधा डालने का प्रयास कया और रावुल के मन में यह वचिार डाला कि उसे शहर के भीतर नहीं, बल्कि शहर के बाहर स्थति एक चर्च में पवत्रि बपतस्मिा ग्रहण करना चाहए। वे वहाँ नगर के कई नवािसयिों, अपनी पत्नयिों और बच्चों के साथ चल पड़े। जब वे इस चर्च पहुँचे, तो उन्होंने वहाँ एक युवती को पागलपन के भयानक दौरे में देखा। रावुल डर गया और बोला:

'मैं ईसाई नहीं बनना चाहता। देवता इस युवती को ईसाई धर्म अपनाने के लए दंडति कर रहे हैं। मुझे डर है कि मेरे साथ भी ऐसा ही कुछ हो सकता है।'

यह कहकर वह चर्च से मुड़ गया और वापस लौटने ही वाला था। लेकनि संत ने उसे रोक लया और कहा:

'तुम शैतान के प्रलोभन के आगे क्यों झुक रहे हो? यह कन्या अपने पापों के लए, ईश्वर की अनुमति से, दंडति की जा रही है। उसने ईश्वर के सामने अपनी कुँवारीपन की रक्षा करने की कसम खाई थी, लेकनि उसने अपनी कसम तोड़ दी और इसी कारण वह राक्षसों के हाथों पीड़ति है, उसे शैतान के हवाले कर दया गया है ताकि उसकी आत्मा बच सके। और यह साबति करने के लए कि यह सच है, स्वयं उस युवती के पास जाओ और उससे पूछो।"

रावुल उस भूतग्रस्त लड़की के पास गया और उसके अपने ही मुँह से उन पापों का एक गूँजता हुआ स्वीकारोक्ति सुना, जनिके कारण ईश्वर ने शैतान को उसमें प्रवेश करने और उसे पीड़ा देने की अनुमति दी थी। इसके बाद, रावुल ने सभी संदेहों को त्याग दया और संत से उसे बपतस्मिा देने के लए कहा। जब उनका बपतस्मिा हो गया और वे पवत्रि जल-कुंड से बाहर नकिले, तो जसि सफेद वस्त्र को, ईसाई रीति के अनुसार, उनके बपतस्मिा के लए तैयार कया गया था, वह ऊपर से नीचे तक गोलाकार घेरे के भीतर लाल क्रॉस से ढका हुआ पाया गया, मानो उसे सनिाबर से रंगा गया हो। इस चमत्कार को देखकर सभी चकति रह गए, और रवल के लए वहाँ आए पुरुषों और महलिाओं ने स्वयं बपतस्मिा लेने का अनुरोध कया। संत अलेक्जेंडर, यह सुनश्चिति करना चाहते हुए कि वे वास्तव में मसीह में वश्विास करते हैं, उनसे कहा:

'तुम्हें अपने वश्विास को सद्धि करना होगा। चलो हम शहर में चलते हैं, और यदि तुम में से कसिी के घर में मूर्तयिाँ हैं, तो वे उन्हें शहर के केंद्र में लाएँ और अपने ही हाथों से उन्हें टुकड़े-टुकड़े कर दें; केवल तभी उन्हें पवत्रि बपतस्मिा के योग्य माना जाएगा।'

वे सभी ऐसा करने के लए सहमत हो गए और, शहर में पहुँचने पर, उन्होंने अपने घरों से मूर्तयिों की एक बड़ी संख्या बाहर नकिाली और उन्हें शहर के केंद्र में तोड़-फोड़ दया, जसिके बाद पूरा शहर पवत्रि बपतस्मिा से प्रबुद्ध हो गया। रेवरेंड कुछ समय तक शहर में रहे, और उन्होंने नव-बपतस्मिा प्राप्त लोगों को पवत्रि वश्विास में दृढ़ कया। जब उन्होंने देखा कि वे धार्मकिता में दृढ़ हो गए हैं और इसके लए ईश्वर की स्तुति कर रहे हैं, तो उन्होंने रवल से कहा:

'अब तक तुम दूध पर पोषति हुए हो, परन्तु अब तुम्हें ठोस भोजन से स्वयं को पोषति करना चाहए। यदि तुम में से कोई मसीही जीवन में सद्धि होना चाहता है, तो उसे मसीह के वचनों पर ध्यान देना चाहए। वह कहते हैं: *"अपना सामान बेच दो और दान कर दो। 'अपने लए स्वर्ग में एक ऐसा खज़ाना जमा करो जो कभी खत्म न हो'* (लूका 12:33), 'पहले *परमेश्वर के राज्य और उसकी धार्मकिता की खोज करो, और ये सब बातें तुम्हें अतरिक्ति रूप से मलि जाएँगी*' (लूका 12:31, मत्ती 6:33)।

जब रवल ने यह सुना, तो उन्होंने कहा:

– मैं इतना उत्तम ईसाई नहीं बन सकता। अगर मैं सब कुछ बेचकर दान कर दूँ, तो मेरा बड़ा परविार मेरा भरण-पोषण कैसे करेगा, और कोई चंता कए बनिा जीवन की आवश्यक चीज़ें कैसे प्राप्त कर सकता है? अगर आप मुझे इस बात का यकीन दलिाना चाहते हैं, तो करके दखिाएँ कि आप बनिा कसिी चंता के, कम से कम एक दनि के लए भी मेरा और मेरे पूरे परविार का भरण-पोषण कर सकते हैं। मुझे नहीं पता कि आप यह कैसे कर सकते हैं, जब आप स्वयं एक भखिारी हैं और आपके पास कुछ भी नहीं है, यहाँ तक कि एक दनि के भोजन के लए भी पर्याप्त नहीं। यदि आप यह शहर में नहीं कर सकते, तो आप रेगस्तिान में क्या करेंगे जब हम सब कुछ पीछे छोड़कर आपका अनुसरण करेंगे?

हालाँकि, संत ने ईश्वर में दृढ़ वश्विास रखते हुए, दृढ़ता से कहा:

'अपने घर-बार को ले जाओ, और अगर चाहो तो अपने जान-पहचान के दोस्तों को भी, और उन्हें लोगों से दूर किसी भी रेगिस्तान में पूरे एक दिन के लिए ले जाओ; मैं भी तुम्हारे साथ रहूँगा; तुम में से किसी के पास न कोई रोटी हो, न एक छोटा सा टुकड़ा भी, और न ही कोई और भोजन। यदि ईश्वर तुम्हें भोजन नहीं कराता, जैसा उसने पहले मरुभूमि में इस्राएलियों को कराया था, तो तुम मेरे शब्दों पर विश्वास नहीं करोगे।"

रावुल मान गया। सुबह होते ही, वह अपने परिवार और दोस्तों को साथ लेकर आदरणीय अलेक्जेंडर के साथ एक दुर्गम रेगिस्तान की ओर चल पड़ा, यह देखने की इच्छा से कि उनके शब्दों का पालन में क्या परिणाम होता है। वे पूरे दिन चलते रहे, और जब वे दो पहाड़ों के बीच एक ऐसी जगह पर रुके जहाँ कहीं से भी कोई रास्ता नहीं जाता था, तो दिन का ग्यारहवाँ घंटा हो चुका था। और संत अलेक्जेंडर ने, जैसा कि उनका रिवाज था, संध्या का पाठ करना शुरू कर दिया, जबकि भूख से पहले ही थके हुए रावुल और उसके साथियों ने सोचा कि वे अब खाना खाने वाले हैं। जब संत ने अपनी प्रार्थना समाप्त कर ली, तो उन्होंने अपने पास आते हुए एक आदमी को देखा—एक साधारण किसान जो पशुओं को चरा रहा था, और उसके दोनों ओर लटके बड़े बोरे लदे हुए थे, जिनमें ताज़ा, गर्म रोटी और बगीचे तथा सब्ज़ी के खेत के फल थे। और आदरणीय ने रावुल से कहा:

'यह भोजन लो, और अविश्वासी न बनो, बल्कि विश्वासी बनो।'

उन्होंने खुशी-खुशी लाया गया भोजन स्वीकार कर लिया, और रवुल, अपने दोस्तों के साथ चकित होकर, बोला:

'इतनी सारी सामग्री वाला आदमी इस रेगिस्तान में कैसे आ गया? हम तो दिन भर चलकर बड़ी मुश्किल से यहाँ पहुँचे हैं, जबकि उसे यहाँ इस समय पहुँचने के लिए बस आधी रात को अपना घर छोड़ना पड़ा होगा। और अगर वह सचमुच आधी रात को ही निकला था, तो ये रोटी अभी भी गर्म क्यों हैं, मानो अभी-अभी भट्टी से निकाली गई हों?'

यह देखकर चकित होकर, उन्होंने उनके पास आए आदमी से पूछा:

'तुम कहाँ से हो, और तुम्हें यहाँ किसने भेजा है?'

उस आदमी ने जवाब दिया, 'मेरे प्रभु ने मुझे आप लोगों के पास इसलिए भेजा है ताकि आप भूखे न रहें।'

लेकिन जैसे ही वे इस आदमी से कुछ और कहने वाले थे, वह अपने साथ आए सभी जानवरों के साथ तुरंत गायब हो गया, क्योंकि वह एक साधारण आदमी के भेष में ईश्वर का एक स्वर्गदूत था। उन सब पर भय छा गया, और फिर वे सब उस आदरणीय व्यक्ति के वचनों पर, और उससे भी अधिक मसीह के वचनों पर विश्वास करने लगे, कि जो प्रभु के लिए परिश्रम करते हैं उन्हें किसी भी बात की चिंता नहीं करनी चाहिए, बल्कि हर बात में परमेश्वर की व्यवस्था पर भरोसा रखना चाहिए। तब, परमेश्वर का धन्यवाद करने के बाद, उन्होंने भोजन किया और वहीं रात बिताई, और अगले दिन वे शहर लौट आए। इस चमत्कार के बाद, यह स्पष्ट हो गया कि जब वेरेनबले अलेक्जेंडर सात वर्षों तक रेगिस्तान में रहे, तो उन्होंने सांसारिक मामलों की कोई चिंता किए बिना किसी पर जीवन यापन किया था। इस चमत्कार से, शहर के राज्यपाल रावल को बहुत बल मिला और, बिना किसी और हिचकिचाहट के, उन्होंने खुद को ईश्वर के ध्यान में समर्पित करने का संकल्प लिया। सबसे पहले, उन्होंने अपने पद से इस्तीफा दे दिया, और फिर अपनी संपत्ति बेचना शुरू कर दिया और अपनी पत्नी और बेटियों की सहमति से (क्योंकि उनका कोई बेटा नहीं था), उसकी आय गरीबों में बाँटने लगे, और अपने जीवन-यापन के लिए केवल पर्याप्त धन ही अपने पास रखा। उनकी पत्नी और बेटियों ने एक मठ की स्थापना की और वहाँ पूरे मन से ईश्वर की सेवा करके, उन्होंने ईश्वर की कृपा प्राप्त की; जबकि रावुल ने अपनी सारी संपत्ति दान कर दी और अपने दासों को मुक्त कर दिया, और मरुभूमि में चले गए, जहाँ से कई वर्षों के बाद, उन्हें बुलाया गया और एडसा शहर का बिशप नियुक्त किया गया[4818] । वे कई वर्षों तक बिशप के पद पर रहे और एक प्रकाश की तरह अपने अनुयायियों को ज्ञान का प्रकाश दिया। लेकिन आइए हम परम पूजनीय अलेक्जेंडर के वृत्तांत पर वापस लौटें।

आदरणीय अलेक्जेंडर ने जब देखा कि वह शहर जिसे उन्होंने पवित्र विश्वास से प्रकाशित किया था, प्रभु की कृपा से फल-फूल रहा था और समृद्धि प्राप्त कर रहा था, तो वह अपने आत्मा में आनंदित हुए; फिर भी उनका हृदय उन्हें रेगिस्तान की ओर खींच रहा था। नगरवासी उन्हें अपना बिशप बनाना चाहते थे और उन्होंने उनसे इस पद को स्वीकार करने का आग्रह किया। जब उन्होंने इनकार कर दिया और चुपके से निकल भागने की कोशिश की, तो उन्होंने अपने पिता और शिक्षक को खो न दें, इस लिए दिन-रात नगर के द्वारों पर पहरा दिया। लेकिन पूजनीय पिता, प्राचीन समय के पवित्र प्रेरित पौलुस की तरह, अपने कुछ शिष्यों द्वारा एक टोकरी में दीवार से नीचे उतार दिए गए (देखें 2 कुरिन्थियों 11:32),

[4818] उत्तरी मेसोपोटामिया में, फरात नदी पर एक शहर।

और उस सन्नाटे के लिए मरुभूमि में चले गए जिसे वे बहुत पसंद करते थे। वे दो दिन तक मरुभूमि में चलते रहे, और रास्ते में उन्हें कुछ डाकुओं का अड्डा मिला। डकैतों ने उसे पकड़ लिया और अपने नेता के सामने ले आए। लेकिन रेवरेंड फादर ने अपने ईश्वर-प्रेरित शब्दों से न केवल डाकुओं के गिरोह के उग्र और पशु-सदृश नेता को वश में कर लिया, बल्कि उसके क्रूर हृदय में करुणा भी जगा दी, जिससे वह मसीह में विश्वास करने लगा और कुछ ही दिनों बाद पवित्र बपतिस्मा के माध्यम से प्रबुद्ध हुआ। उसे बपतिस्मा देने के बाद, रेवरेंड फादर ने उससे पूछा:

'आपने अपने बपतिस्मा से पहले अपने हृदय में ईश्वर से क्या माँगा?'

नए बपतिस्मा पाए हुए व्यक्ति ने उत्तर दिया, 'मैंने प्रार्थना की थी कि प्रभु, बपतिस्मा के कुंड में मेरे पापों को शुद्ध करने के बाद, यथाशीघ्र मेरी आत्मा को मुझसे ले लें।'

'तुम्हारी जो प्रार्थना है, वह स्वीकार की जाएगी,' संत ने उससे कहा।

आठवें दिन, जब नव-बपतिस्मा प्राप्त व्यक्ति पवित्र बपतिस्मा के कुंड में शुद्ध होकर, सच्चे पश्चाताप के और भी कई आँसुओं से अपने पाप धो चुका था, तो वह प्रभु के पास चला गया। यह देखकर, अन्य डाकुओं ने भी पवित्र विश्वास को अपनाया और बपतिस्मा ग्रहण करने के बाद, गहरे पश्चाताप का जीवन जीना शुरू कर दिया; और कुछ ही समय बाद, डाकुओं का वही निवास एक मठ में बदल गया, जहाँ डाकू संन्यास ग्रहण कर और उत्साही तपस्वी बनकर भिक्षुओं के रूप में रहते थे। रेवरेंड फादर कुछ समय तक उनके साथ रहे और मठ के नियम स्थापित करके तथा उनके लिए एक अनुभवी अधिष्ठाता नियुक्त करने के बाद, मानव आत्माओं के उद्धार का आनंद लेते हुए सबसे गहरी निर्जनता में चले गए। वह दो दिन तक चलता रहा और फरात नदी तक पहुँचा। नदी पार करने के बाद, उसे एक पेड़ मिला जिसके अंदर एक बहुत बड़ा खोखला स्थान था, और उसने इस पेड़ के खोखले स्थान को अपना निवास स्थान चुन लिया। दिन के समय वे पहाड़ों और सुनसान जंगलों में घूमते थे, और रात में अपने आवास पर लौट आते थे। यह पूछने की कोई आवश्यकता नहीं है कि वे क्या खाते थे, क्योंकि, जैसा कि कहा गया है, रवुला और उनके साथियों ने रेगिस्तान में रहते हुए ईश्वर से रोटी माँगी थी। वे इस स्थान पर बहुत समय तक रहे। दिव्य प्रेरणा से, भाई उसके पास आने और उसके बगल में बसने लगे, जो उसके दैवीय जीवन शैली का अनुकरण करना चाहते थे। आदरणीय की यहाँ की वास-स्थली बीस वर्ष तक चली। इस समय के दौरान, फरात नदी के तट पर एक महान मठवासी समुदाय स्थापित किया गया, जहाँ भाइयों की भीड़ इकट्ठा हो गई। यहाँ विभिन्न देशों - ग्रीस, रोम, सीरिया और मिस्र से - चार सौ तक भाई थे। ईश्वर ने इस झुंड को इकट्ठा किया और इसे अच्छे चरवाहे, आदरणीय अलेक्जेंडर के हवाले कर दिया। लेकिन और भी आश्चर्य की बात क्या है? भोजन और वस्त्रों की थोड़ी व्यवस्था के साथ, भाइयों की इतनी बड़ी संख्या ने हर दिन सभी चीजों में पूर्ण संतुष्टि पाई। और वे अगले दिन के लिए कुछ भी नहीं छोड़ते थे, बल्कि जो भी भिखारी और यात्री उनके पास आते थे, उन्हें सब कुछ बाँट देते थे। ईश्वर की कृपा हर दिन अपने सेवकों के लिए भोजन भेजती थी। इस मठ में, जो अपनी तरह का पहला था, 'जागरूक लोगों' का एक नया क्रम स्थापित किया गया, जैसा पहले कभी नहीं देखा गया था। आदरणीय अलेक्जेंडर ने सबसे पहले यह आदेश दिया कि भाइयों को दिन में सात बार चर्च जाकर परमेश्वर की महिमा करनी चाहिए, भविष्यवक्ता के वचनों के अनुसार, जिन्होंने कहा: *'मैं दिन में सात बार तेरे न्याय के लिये तेरी स्तुति करता हूँ'* (भजन संहिता 118:164)। फिर, उसी भविष्यवक्ता के अन्य शब्दों की ओर अपना ध्यान मोड़ते हुए: *'धन्य है वह मनुष्य जो ... दिन-रात उसकी व्यवस्था पर मनन करता है!'* (भजन संहिता 1:1–2), पूज्यनीय ने विचार किया कि क्या वास्तव में किसी व्यक्ति के लिए भविष्यवक्ता के वचन को पूरा करना, दिन-रात ईश्वर की स्तुति की व्यवस्था का अध्ययन करना संभव था। उन्होंने खुद से कहा, यदि यह संभव नहीं होता, तो पवित्र आत्मा ने भविष्यवक्ता के होठों द्वारा ये शब्द नहीं बोले होते। और इसलिए उन्होंने अपने मठ में एक ऐसा अनुशासन स्थापित करने का संकल्प लिया, जिसके द्वारा चर्च में दिन-रात, अनवरत और अखंड भजन-गायन होता रहे। 'यदि,' उन्होंने कहा, 'मांस की कमजोरी के कारण यह एक व्यक्ति के लिए अपनी कोठरी में असंभव है, तो यह चर्च में कई लोगों द्वारा, घड़ी के हिसाब से बारी-बारी से करना संभव है।' इस प्रकार उन्होंने अपने मन में चिंतन किया, परन्तु परमेश्वर की ओर से कोई संकेत पाए बिना ऐसा कार्य आरंभ करने का साहस नहीं किया। और मसीह के वचनों को याद करते हुए: *'माँगो, तो तुम्हें दिया जाएगा; खटखटाओ, तो तुम्हारे लिए खोला जाएगा'* (मत्ती 7:7), उन्होंने प्रभु से विनम्रतापूर्वक प्रार्थना करना शुरू कर दिया कि वह उन्हें प्रकट करें कि क्या उनका इरादा उन्हें भाता है और क्या ऐसा अभ्यास उनके लिए स्वीकार्य होगा, ताकि, जैसे स्वर्ग में स्वर्गदूत करते हैं, वैसे ही पृथ्वी पर भी लोग, जो स्वर्गदूतों के मठ के मठवासी क्रम में, चर्च में—जो पृथ्वी पर स्वर्ग है—निवास करते हैं, कर सकें। – भजनों के गायन के माध्यम से दिन-रात ईश्वर की

महमिा कर सकें। तीन वर्षों तक, हर रात, रेवरेंड फादर ने इसके लिए प्रार्थना की, और बार-बार आत्म-कोड़ाकशी करके स्वयं को कष्ट दयिा।

अंतत; प्रभु एक दर्शन में उसे प्रकट हुए और कहा:

'जो तुम चाहते हो, उसे आरंभ करो—यह मुझे प्रसन्न करता है।'

और आदरणीय फादर ने अपने भाइयों में से कुछ सबसे आध्यात्मकि रूप से उन्नत लोगों को प्रभु के प्रकट होने के बारे में बताया, लेकनि उन्होंने अपने नाम पर इसके बारे में नहीं बताया, इस मामले में पवत्रि प्रेरति पॉल के उदाहरण का अनुसरण करते हुए, जन्हिोंने अपने बारे में कहा: *'मैं मसीह में एक ऐसे मनुष्य को जानता हूँ जो... तीसरे स्वर्ग तक उठा लयिा गया था'* (2 कुरन्थियिों 12:2)। इसके बाद, रेवरेंड फादर ने परमेश्वर द्वारा इच्छति और आशीषति अनुष्ठान स्थापति कयिा। उन्होंने भाइयों को दनि और रात के घंटों के अनुसार चौबीस समूहों में वभिाजति कयिा, ताकि प्रत्येक व्यक्त, अपने समूह का समय जानकर, उस समय गायन के स्थान पर उपस्थति हो सके। दाऊद की भजन-संग्रह को गाने के लिए नयिुक्त कयिा गया था; इन्हें दो-स्वर सामंजस्य में, बनिा जल्दबाजी के, छंद-दर-छंद गाया जाना था, सवािय उन समयों के जब नयिमति चर्च सेवाएं आयोजति की जा रही थीं। इन सेवाओं के दौरान, भजन-गायन की नव-स्थापति व्यवस्था को नलिंबति कर दयिा गया था। इस प्रकार, मठ की चर्च में, दनि-रात परमेश्वर की अखंड महमिा होती थी, और यही कारण है कि यह मठ 'नद्रिाहीन मठ' के नाम से जाना जाने लगा। आदरणीय व्यक्त ने भजन-गायन के लिए, प्रत्येक दनि के लिए प्रणामों की एक नश्चिति संख्या भी स्थापति की, जो उस संख्या के अनुरूप थी जतिनी बार प्रभु हमें पापी को क्षमा करने की आज्ञा देते हैं - सत्तर बार सात, जो चार सौ नन्यिानवे के बराबर है। इसके अलावा, उन्होंने यह आदेश दयिा कि हर चर्च और मठ की सेवा के समापन पर, और हर काम के बाद, नम्निलखिति का पाठ कयिा जाए: *'महानतम में परमेश्वर की महमिा हो, और पृथ्वी पर शांत, और मनुष्यों में सद्भावना।'* अपने मठ में यह व्यवस्था स्थापति करने के बाद, रेवरेंड फादर ने इस पर वचिार कयिा कि परमेश्वर की सेवा के लिए और क्या आवश्यक है। और भजन संहति के वचनों को याद करते हुए: *'मैं दुष्टों को तेरे मार्ग सखिाऊँगा, और अधर्मी तेरी ओर फरिेंगे'* (भजन संहति 50:15), उन्होंने यह नश्चिय कयिा कि मनुष्य को न केवल अपनी ही मुक्त के लिए, बल्कि दूसरों की, वशिेषकर अधर्मीपन में जी रहे लोगों की मुक्त के लिए भी चति करनी चाहिए। और चूँकि उस समय उन प्रदेशों में मूर्तपिूजा व्यापक रूप से फैली हुई थी, इसलिए उन्होंने कुछ भाइयों को मसीह के संदेश के साथ भेजने का नश्चिय कयिा। इस कार्य के लिए, उन्होंने सबसे वद्विान और पवत्रि वश्विास के लिए वशिेष रूप से उत्साही सत्तर लोगों को चुना, जो मसीह के उन चेलों की संख्या के बराबर थे जनिके बारे में पवत्रि सुसमाचार लेखक लूका लखिते हैं: *'प्रभु ने और भी सत्तर लोगों को नयिुक्त कयिा, और उन्हें अपने से पहले दो-दो करके उन सब नगरों और स्थानों में भेज दयिा जहाँ वह स्वयं जाने वाला था'* (लूका 10:1)। मसीह के सुसमाचार का प्रचार करने के लिए शष्यिों की यह संख्या चुनने और उनके लिए प्रार्थना करने के बाद, मसीह के अनुयायी अलेक्जेंडर ने उन्हें जोड़ों में पड़ोसी मूर्तपिूजक गांवों में भेज दयिा। आदरणीय पति की प्रार्थनाओं के द्वारा ईश्वर की कृपा उन पर थी। उनकी मेहनत व्यर्थ नहीं गई। उन्होंने कई मूर्तपिूजकों को मसीह के धर्म में परविर्तति कयिा।

फरात नदी के कनिारे बीस वर्ष व्यतीत करने के बाद, आदरणीय अलेक्जेंडर ने देखा कि उनका मठ पूरी तरह से स्थापति हो चुका था और वहाँ जागते रहने वालों का क्रम तथा तपस्वी जीवन से संबंधति सभी नयिम दृढ़ता से स्थापति हो गए थे, तो वे आत्मा में आनंदति हुए और प्रभु का बहुत धन्यवाद कयिा। इसके बाद, मानव आत्माओं के मोक्ष के लिए महान उत्साह से प्रेरति होकर, उन्होंने फारस की भूम की यात्रा करने का संकल्प लयिा, जहाँ मूर्तपिूजक दुष्टता गहराई से जमी हुई थी। यात्रा पर अपने साथ चलने के लिए भ्रातृत्व में से एक सौ पचास पुरुषों को चुनकर, बाकी लोगों को अनुभवी वृद्ध ट्रॉफमि के हवाले कर दयिा, जन्हिें उन्होंने मठाधीश नयिुक्त कयिा, और भ्रातृत्व को शांत और आशीर्वाद प्रदान कर, वह अपने लिए अलग रखे हुए भाइयों के समूह के साथ फरात नदी पार कर गया और रेगस्तिान से होते हुए फारस की सीमाओं की ओर चल पड़ा, और अपने साथ पवत्रि पुस्तकों के सवािय कुछ भी नहीं लयिा। और अपनी यात्रा के दौरान, उन्होंने भाइयों के साथ गरिजाघर की तरह ही, दनि-रात नर्धिारति समय पर बदलते हुए, दो-स्वरों में भजनों का अखंड गायन कभी बंद नहीं कयिा। अपने साथ यात्रा कर रहे भाइयों के धैर्य की परीक्षा लेने के लिए, उन्होंने उन्हें रेगस्तिान से होकर ले जाया, जहाँ जंगली बेर के अलावा कोई आहार नहीं मलिता था, जन्हिें वह नयित समय पर उन्हें खाने की अनुमत देते थे। कुछ अधीर लोगों ने शकिायत करना शुरू कर दयिा, ठीक वैसे ही जैसे अतीत में इस्राएलयिों ने मूसा के खलिाफ शकिायत की थी। उन्होंने रेवरेंड से कहा:

'तुम हमें इस रेगस्तिान में हमें भूखा-भूखा मार डालने के लिए ले आए हो।'

और वे पहले से ही गुप्त रूप से मठ में लौटने की साजशि रच रहे थे। ऐसे तीस आदमी थे। ईश्वर से प्राप्त एक प्रकटोक्ति के द्वारा उनके वचिारों को भांपते हुए, पूज्य ने उनकी अवश्विास की कमी के लिए उन्हें फटकारा और उन्हें वापस मुड़ने का आदेश दयिा, जबकि अन्य लोगों से उन्होंने ऊँचे स्वर में कहा:

'भाइयो, मुझ पर वश्विास करो, कि आज ही प्रभु हमारे लिए भरपूर भोजन भेजेंगे और हमारे अवश्विास को लज्जति करेंगे।' आखरिकार वे फारसी क्षेत्र की सीमाओं के पास पहुँचे, जहाँ यूनानी-रोमन राजाओं ने शहर बसाए थे—जो बड़े तो नहीं, लेकनि कलिबंदी कए हुए थे—जनिमें अवश्विासयिों से रक्षा के लिए चौकयिाँ भी थीं। जब रेवरेंड फादर और उनके भाई इन शहरों के पास रेगस्तिान में से गुजर रहे थे, तो अचानक, ईश्वर की आज्ञा से, उन शहरों के सैन्य कमांडर—जन्हिें ट्राइब्यून कहा जाता था—उससे मलिने के लिए बाहर आए, उनके पास पर्याप्त मात्रा में रोटी और अन्य वभिन्नि खाद्य पदार्थ थे, और उन्होंने संत से अपने शहरों में आने और उन्हें ज्ञान देने का आग्रह कयिा, क्योंकि वहाँ राक्षसों के कई सेवक रहते थे। कृतज्ञतापूर्वक अपने लिए प्रस्तुत भोजन का स्वाद चखने, और जनि लोगों का वश्विास कमज़ोर और अधीर साबति हुआ उन्हें मठ वापस भेजने के बाद, संत उन शहरों में गए और ईश्वर की कृपा से, थोड़े ही समय में सुसमाचार के प्रचार के माध्यम से सभी को मसीह में परविर्तति कर दयिा। इन नगरों में से एक में, लोग उसकी शक्षिाओं को स्वीकार करने के लिए अनचि्छुक थे, वशिेष रूप से जब उन्होंने दान और उदार परोपकार पर उसकी शक्षिा सुनी। तब अमीरों ने उससे कहा:

'तुम हमें गरीब बनाने आए हो।'

इसलिए आदरणीय संत उनसे चले गए, और ईश्वर ने उन्हें सूखे की सजा दी। तीन साल तक बारशि नहीं हुई जब तक कि उन्होंने अपने पाप को नहीं स्वीकार कयिा। उन्होंने रेवरेंड की तलाश शुरू कर दी; एंटओक में उन्हें पहले ही पाकर, उन्होंने उनसे अपने पाप को क्षमा करने की वनिती की। इस पश्चाताप के बाद, चौथे वर्ष में, मूसलाधार बारशि ने पृथ्वी को पानी दयिा, और पृथ्वी के फलों की प्रचुरता हुई और आत्माएँ प्रभु की ओर मुड़ीं। मरुभूमि में और आगे यात्रा करते हुए, पूजनीय पति पल्माइरा नामक एक शहर में पहुँचे, जसिे स्वयं सुलैमान ने उसी मरुभूमि में बसाया था। इस शहर में, यद्यपि नविासी खुद को ईसाई कहते थे, वे यहूदी मूल के थे और अभी भी पुराने नयिम का पालन करते थे। जब उन्होंने अलेक्जेंडर और उसके भाइयों को आते देखा, तो उन्होंने उसके सामने शहर के द्वार बंद कर दिए।

उन्होंने कहा, 'इतने सारे भक्षिुओं का भरण-पोषण कौन कर सकता है?' और उन्होंने उन्हें अंदर नहीं आने दयिा।

लेकनि पादरी ने परमेश्वर का धन्यवाद कयिा और कहा:

'मनुष्य पर भरोसा करने से यहोवा में शरण लेना उत्तम है' (भजन संहति 117:8)। भाइयो, हयिाव न छोड़ो! परमेश्वर ने हम पर अप्रत्याशति रूप से कृपा की है।

और वास्तव में: जब वे शहर से कुछ दूरी पर चले गए थे, तो वहाँ के पास रहने वाले अवश्विासयिों ने, जनिके हृदय प्रभु द्वारा स्पर्शति हुए थे, रोटी और हर प्रकार की सांसारकि वस्तुओं के साथ उनसे मलिने के लिए बाहर आए, और उन्होंने उनका भोज कराया और उनकी ज़रूरतों को पूरा कयिा। वहाँ से, आदरणीय महोदय अंतीयकयिा के लिए रवाना हुए। इस प्रकार ईश्वर ने बहुतों के भले के लिए उनका मार्गदर्शन कयिा। और जब वे अंतीयकयिा के पास पहुँचे, तो प्रथागत अखंड भजन-गायन करते हुए, उस नगर के बशिप थयिोडोतस को उनके आगमन की सूचना मलिी; और अलेक्जेंडर का नाम पहले से ही सर्वत्र महमिामय और सम्मानति हो रहा था। हालाँकि, शैतान ने कुछ दुष्ट और ईर्ष्यालु लोगों को भड़काया, जन्होंने बशिप के पास आदरणीय और उनके भाइयों की बदनामी की, यह दावा करते हुए कि वे जो कुछ भी करते थे—चाहे उनका उपवास हो या उनकी प्रार्थना—सब पाखंड से, व्यर्थ की महमिा के लिए, और केवल लोगों के सामने दखिावा करने के लिए कयिा जाता था। धर्मप्राचार्य, झूठी बदनामी को परखने में असफल रहे, और उन्होंने अपने कई सेवकों को उन बदनाम करने वालों के साथ भेजा ताकि वे अलेक्जेंडर और उसके साथयिों को अपमानपूर्वक शहर से बाहर नकिाल दें; लेकनि, पृथ्वी के स्वर्गदूतों के उस कुलीन मुखमंडल—आदरणीय अलेक्जेंडर—के नेतृत्व में, वे पहले ही अपनी परंपरागत भजन-गायन के साथ शहर में प्रवेश कर चुके थे, इसलिए धर्मप्राचार्य द्वारा भेजे गए लोग उनसे शहर के भीतर ही मलि गए। डकैतों की तरह, उन्होंने उन पर हमला कयिा; एक-एक को पकड़कर, उन्होंने उन्हें बुरी तरह पीटा और शहर से बाहर घसीट लयिा, साथ ही अपने नेता के रूप में आदरणीय अलेक्जेंडर पर और भी गहरे घाव और अपमान कयिा। हालाँकि, आदरणीय व्यक्ति और उनके भाइयों ने इस बात पर प्रसन्नता व्यक्त की कि उन्हें नर्दिोष होकर पीड़ा सहने के योग्य समझा गया था। आदरणीय को पता था कि यह शैतान के उकसावे से हुआ था, ताकि अच्छे काम और उससे बहुतों को होने वाले लाभ में बाधा डाली जा सके। उनका उत्साह बढ़ गया, और एक बार फरि, रात के अँधेरे में चुपके से, वे अपने भाइयों के

साथ शहर में प्रवेश कर गए; वहाँ कुछ जर्जर, खाली स्नानागार पाकर, उन्होंने उनके भीतर भजन-कीर्तन किया। अगले दिन, बिशप को इस बात की जानकारी हुई। यद्यपि उनका क्रोध अभी शांत नहीं हुआ था, फिर भी वे पहले से ही दया की ओर झुके हुए थे, क्योंकि वे न केवल ईश्वर से बल्कि लोगों से भी डरते थे, क्योंकि अंताकिया के सभी नागरिक अलेक्जेंडर के आगमन पर प्रसन्न थे, जिन्हें वे सभी एक महान भविष्यवक्ता मानते थे, और वे बिशप पर उस अपमान और चोट के लिए बहुत क्रोधित थे जो उसने पूजनीय पिता और उनके भाइयों पर की थी। अंततःबिशप स्वयं दयालु हो गए और उन्होंने अलेक्जेंडर और उनके भाइयों को शहर में रहने का आशीर्वाद दे दिया। खाली स्नानागार ही उनका आवास बन गए। लेकिन कुछ ही समय बाद, बिशप के आशीर्वाद और सहमति से, नागरिकों ने पूजनीय पिता के लिए एक चर्च बनाया और एक मठ स्थापित किया। इसके बाद, बहुत से लोग, अपने चर्चों में जाना छोड़कर, रेवरेंड अलेक्जेंडर के यहाँ चर्च सेवाओं के लिए इकट्ठा होने लगे, ताकि वे उनसे उनकी मधुर शिक्षा सुन सकें, जिससे वे उनके पास आने वालों को उपदेश देते थे। रेवरेंड के लिए सभी के हृदय में प्रेम से जलता था। उनकी और उनके भाइयों की ज़रूरत की हर चीज़ रोज़ाना उनके पास लाई जाती थी। फिर भी वे दिन में केवल एक बार, नौवें घंटे के बाद खाते थे, और बाकी सब गरीबों में बाँट देते थे, और अगले दिन के लिए कुछ भी नहीं रखते थे। गरीबों से प्रेम करने वालों की दया से ईश्वर उन्हें लगातार भोजन और उनकी सभी आवश्यक चीजें भेजते रहे। कुछ समय बाद, रेवरेंड ने अपनी मठ में एक अस्पताल और एक अतिथि गृह बनाने की इच्छा व्यक्त की, और बिशप का आशीर्वाद लेने के बाद, उन्होंने अपनी इच्छानुसार उनका निर्माण करवाया। हालाँकि वह स्वयं, एक भिखारी होने के नाते, कुछ भी नहीं रखता था, फिर भी धनी लोग अपने खजाने से उसे सब कुछ प्रदान करते थे: वे सभी खुशी-खुशी उसे वह सब कुछ देते थे जो वह माँगता था और जो कुछ भी वह उन्हें करने के लिए कहता था, उसे वे हमेशा उत्साह के साथ पूरा करते थे। आदरणीय फादर स्वयं बीमारों की देखभाल करते थे और यात्रियों को रहने की व्यवस्था देते थे, तथा ईश्वर-प्रेमी लोगों से प्राप्त दान में से उन्हें उनकी हर ज़रूरत की चीज़ उपलब्ध कराते थे, जिन्हें ईश्वर ने परोपकार की ओर प्रेरित किया था। वे अपने हाथ रखने से बीमारों को ठीक करते थे, जिसमें महान शक्ति का प्रदर्शन होता था। और उन्होंने ईश्वर की स्तुति की, जिसने उनके माध्यम से चमत्कार किए। रेवरेंड ने देखा कि बिशप अपने पद के अनुरूप अपने मामलों का संचालन नहीं कर रहे थे; उन्होंने देखा कि शहर का राज्यपाल और अन्य उच्च-पदस्थ अधिकारी अन्यायपूर्ण ढंग से काम कर रहे थे, और, एलियाह के उत्साह से भरकर और साथ ही नम्रता से परिपूर्ण होकर, उन्होंने निडरता और साहस के साथ उनकी फटकार लगाई, और उन्हें परमेश्वर के वचन से सत्य की शिक्षा दी। वे सभी के लिए एक शिक्षक और मार्गदर्शक थे। लेकिन हर कोई उनके उत्साह से खुश नहीं था, खासकर सत्ता में बैठे लोग। पादरी वर्ग के कुछ सदस्य, यद्यपि वे उनके सदाचारी जीवन से चकित थे, उनसे गहराई से नफरत करते थे और बिशप को उनके खिलाफ भड़काया। इसलिए, बिशप ने अपने सबसे दुर्भावनापूर्ण उप-डीकन, जिसका नाम मल्खुस था, को कई नौकरों के साथ उस आदरणीय संत के पास भेजा, ताकि उसे शहर से बाहर निकाल दिया जाए। जब मल्खुस पहुँचा, तो उसने क्रोध में संत के चेहरे पर जोर से थप्पड़ मारा और कहा:

'इस नगर से निकल जा, हे दुष्ट!'

लेकिन पूजनीय ने, एक कोमल मेमने की तरह, नम्रतापूर्वक उत्तर दिया, केवल सुसमाचार के शब्दों का उपयोग करते हुए:

'सेवक का नाम मलखुस था' (यूहन्ना 18:10)।

और जब उप-डीकन माल्च और उसके साथ आए सेवक महात्मा पर और भी अधिक अपमान करने और उन्हें शहर से बाहर निकालने का प्रयास कर रहे थे, तो उसी समय लोग इकट्ठा हो गए और बहुत हंगामा मच गया; क्योंकि ' ' में हर कोई पवित्र पिता और उनके भाइयों का बचाव कर रहा था, इसलिए माल्च और उसके साथी मुश्किल से भीड़ के शोर से बच पाए। बिशप का क्रोध और भी भड़क उठा, और उन्होंने सैन्य कमांडर से सलाह ली, जो संत से भी नाराज़ था। इसके बाद, उन्होंने उस पूजनीय संत को मठ से, लोगों से गुप्त रूप से, रात के समय निकाल दिया, और उन्हें काल्सिड्स में निर्वासित कर दिया; उन्होंने उनके भाइयों को भी तितर-बितर कर दिया, और सभी जहाँ-तहाँ हो सके, भाग गए। कुछ समय बीत जाने के बाद, आदरणीय अलेक्जेंडर को वापस एंटिओक लाया गया, क्योंकि एंटिओक के सभी नागरिक उनके लिए दुखी थे और उन्होंने बिशप और राज्यपाल के खिलाफ शिकायत की। लेकिन आदरणीय व्यक्ति, अपने भाइयों को न पाकर, स्वयं वहां रहना नहीं चाहते थे और जाने का इरादा कर रहे थे। यह जानकर, नागरिकों ने उसके जाने के डर से शहर के द्वारों पर पहरा बिठा दिया, क्योंकि वे उससे बहुत प्यार करते थे और चाहते थे कि वह उनके बीच रहे और उनके साथ रहे। हालाँकि, माननीय ने, अंᳬoओक छोड़ने का मन बनाकर, अपने संन्यासी के वस्त्र बदल लिए और फटे-पुराने कपड़े पहनकर

और भीखारियों का भेष धारण कर, रात के समय शहर से निकल गए। वे कई दिनों तक पैदल चले और करिनिफिनी के मठ पहुँचे। इस मठ में उन्हें वही जीवन-पद्धति मिली जिसे उन्होंने नदी यूफ्रेट्स के किनारे अपने मठ में स्थापित किया था; इस पर आश्चर्यचकित होकर और यह अनुमान लगाते हुए कि उनके किसी शिष्य ने ही इस पद्धति को यहाँ लाया होगा, उन्होंने ईश्वर का धन्यवाद किया कि उन्होंने उन्हें इस भूमि पर भी उनके श्रम का फल दिखाया। जब भाइयों को पता चला कि यह अलेक्जेंडर है, तो वे उनके आगमन पर बहुत प्रसन्न हुए, क्योंकि उनका नाम हर जगह प्रसिद्ध था और वे उन्हें देखने के लिए लंबे समय से उत्सुक थे।

इस मठ में कुछ समय रहने के बाद, रेवरेंड फादर वहां से कॉन्स्टेंटिनोपल के लिए रवाना हुए। ईश्वर उन्हें वहां कई लोगों के उद्धार के लिए बुला रहे थे। इस मठ के चौबीस भाई उनके साथ गए। कॉन्स्टेंटिनोपल पहुँचने पर, वह सेंट मीना के चर्च में बस गए, और भाई उनके चारों ओर इकट्ठा होने लगे। कुछ ही वर्षों में, विभिन्न राष्ट्रों—ग्रीक, रोमन और सीरियाई—से लगभग तीन सौ भाई इकट्ठा हो गए थे। इस प्रकार, वहाँ एक बड़ा मठ स्थापित किया गया, और उसमें 'ऑल-नाइट विजिल' (सारी रात की प्रार्थना) की संप्रदाय की स्थापना की गई। ईश्वर की दिव्य व्यवस्था की देखभाल से मठ के लिए आवश्यक सभी चीजें प्रदान की गईं, जैसा कि आगे से स्पष्ट होगा। कुलीन वंश के कुछ पुरुषों ने, भिक्षुओं के इस जीवन को सुनकर और देखकर—जो विनम्र होने के साथ-साथ सभी सांसारिक चिंताओं से भी मुक्त था, जो दिन-रात केवल ईश्वर की महिमा के लिए समर्पित थे और सांसारिक किसी भी चीज़, यहाँ तक कि आने वाले कल की भी चिंता नहीं करते थे, ने जानबूझकर कुछ लोगों को इस मठ में कुछ दिनों के लिए ठहरने और यह देखने के लिए भेजा कि भिक्षु अपना दैनिक भोजन कहाँ से प्राप्त करते थे। आदरणीय अलेक्जेंडर ने इस इरादे को पहले ही भांप लिया था, और भेजे गए लोगों की उपस्थिति में अपने एक शिष्य से कहा:

'जाओ और मठ के द्वार पर खड़े व्यक्ति को ले आओ।'

भाई गया और उसने एक आदमी को देखा जिसके पास ताज़े, गर्म रोटी के बड़े-बड़े बंडल थे, और वह उसे और रोटी को फादर के पास ले आया। सम्माननीय पिताजी ने, सभी के सामने, उससे पूछना शुरू किया: वह कौन था और उसने ये रोटी कहाँ से लाई थीं। उन्होंने यह इसलिए नहीं पूछा क्योंकि वह स्वयं नहीं जानते थे – क्योंकि ईश्वर से कुछ भी छिपा नहीं था – बल्कि उन कायर लोगों को शर्मिंदा करने के लिए जो उनके जीवन-यापन और आजीविका की जाँच करने आए थे। जब उससे पूछा गया, तो वह बोलने लगा:

'मैं एक बेकर हूँ। आज जब मैं ओवन से रोटी निकाल रहा था, तो एक तेजस्वी व्यक्ति मेरे सामने प्रकट हुआ—कद में लंबा और रूप में सुंदर—और उसने हुक्म देते हुए कहा: "इन सभी रोटियों को सर्वोच्च के सेवकों के पास ले जाओ।"' भयभीत होकर, मैंने उससे कहा, 'मुझे नहीं पता कि उन्हें कहाँ ले जाऊँ।' और उसने कहा, 'मेरे पीछे चलो,' और मैं उसके पीछे चल पड़ा। जब वह मुझे इस मठ के द्वार तक ले गया, तो वह मेरी दृष्टि से ओझल हो गया।

रेवरेंड उठे और उन्होंने ईश्वर का धन्यवाद किया, और ईश्वर में उनका विश्वास तथा ईश्वर की उन पर महान कृपा सभी के लिए ज्ञात हो गई। रेवरेंड इतने सूक्ष्मदर्शी थे कि वे भाइयों द्वारा किया गया सब कुछ, यहाँ तक कि उनके विचारों को भी जानते थे। जब अवसर मिलता, तो वे निजी तौर पर उनके पापों के लिए फटकार लगाते और अपराधियों को पिता के समान हाथ से सुधारते थे। वे बीमारों की भी देखभाल करते थे; उनकी सेवा के लिए, उन्होंने भाइयों में से चार को नियुक्त किया और उन्हें निर्देश दिया कि वे बीमारी में जिनकी आवश्यकता हो, उनके लिए हर दिन एक गर्म पेय तैयार करें। और नियुक्त किए गए लोग इस कार्य को करते थे। एक दिन ऐसा हुआ—या शायद ईश्वर की इच्छा से, आदरणीय की ईश्वर में अटूट आस्था को प्रदर्शित करने के लिए—कि परिचारक बीमारों के लिए गर्म पेय तैयार करना भूल गए। यह जानकर, रेवरेंड फादर ने एक परिचारक को बुलाया और पूछा कि उन्होंने पेय क्यों नहीं गर्म किया; लेकिन उस परिचारक ने, उस सूक्ष्मदर्शी फादर से अपने कर्म छिपाने की मंशा से, उनसे कहा कि उनके पास जलाने के लिए लकड़ी नहीं थी। तब रेवरेंड फादर ने उससे कहा:

'तुमने आज सुबह जलाने की लकड़ी के बारे में मुझे क्यों नहीं बताया? क्या तुम सच में मुझे आजमा रहे हो? खैर, अब आगे बढ़ो: पीने का पानी अब गरम हो गया है।'

अस्पताल पहुँचने पर, भाई ने वास्तव में आग के बिना उबलता और बुलबुले करता हुआ पानी से भरा एक बड़ा पात्र पाया। और सभी ने इस चमत्कार और पूजनीय की आस्था पर आश्चर्य व्यक्त किया।

उस समय, कलीसयिा नेस्टोरयिस की वधिर्मति से परेशान थी[4819] , और शत्रुओं ने लोगों में यह अफवाह फैलाई कि आदरणीय अलेक्जेंडर एक वधिर्मी थे, क्योंकि उन दनिों में भक्ति को वधिर्म माना जाता था, जबकि वधिर्म को भक्ति माना जाता था, क्योंकि उस समय कई लोग वधिर्मी थे, जनिमें स्वयं पैट्रआिर्क नेस्टोरयिस भी शामलि थे। आदरणीय अलेक्जेंडर को वधिर्मयिों के न्याय के समक्ष लाया गया, और जब उनसे उस वधिर्म के बारे में पूछा गया, जसिमें वे नरि्दोष थे, तो उन्होंने एक भजन के शब्दों में उत्तर दयिा:

'राजकुमार मलिकर मेरे वरिुद्ध षड्यंत्र रचते हैं, परन्तु आपका दास आपके नयिमों पर मनन करता है। आपके प्रगट वचन मेरी शान्ति हैं– मेरे परामर्शदाता' (भजन संहति 118:23-24)।

जैसे ही उन्होंने ये शब्द कहे, एक दानव प्रकट हुआ और चलि्लाया: 'तुम मुझे समय से पहले क्यों सता रहे हो?' – और फरि वह नज़रों से ओझल हो गया। भजन से ये शब्द कहने के बाद, संत ने उसे परखने वालों से और कुछ नहीं कहा, बल्कि अपनी नज़रें नीचे करके, जैसे भेड़ के बाल काटने वाले के सामने मेमना चुप रहता है, वैसे ही चुप रहे। न्यायाधीश क्रोधति हो गए और उसे अपनी उपस्थति से भगा दयिा। जब भीड़ के बीच, शैतान के सेवकों ने उस पर हाथ डालकर उसे नुकसान पहुँचाने की कोशशि की, तो वह, परमेश्वर के कवच से सुरक्षति, उनके बीच से बनिा कसिी नुकसान के नकिल गया और अपने मठ पहुँच गया, जहाँ भाइयों ने उसके लिए कई प्रार्थनाएँ की थीं। तब शत्रु ने एक बार फरि उस पर चढ़ाई की और वधिर्मयिों को उसके वरिुद्ध भड़काया; उन्होंने न केवल उसे बल्कि कई भाइयों को भी हथकड़ी, कैद और पटिाई से पीड़ति कयिा; फरि भी, इस सब ने पूजनीय के लिए एक गौरवशाली मुकुट और शत्रु के लिए अपमान तैयार कयिा। जब वधिर्म का तूफान थम गया, तो आदरणीय संत ने अपने जीवन का शेष समय शांति से बतिाया; ईश्वर को प्रसन्न कर और कई आत्माओं को मोक्ष का मार्ग दखिाकर, वे अत्यधकि वृद्धावस्था में प्रभु के पास चले गए[4820] , पचास वर्षों तक मठवासी जीवन जीने के बाद, और सम्मान के साथ दफनाए गए। उनकी कब्र पर चमत्कार हुए: आदरणीय अलेक्जेंडर की प्रार्थनाओं द्वारा, हमारे प्रभु यीशु मसीह की कृपा से, लोग हर तरह की बीमारयिों से चंगा हो गए, जनिके प्रति पति और पवत्रि आत्मा के साथ, अब और हमेशा और युगों-युगों तक सम्मान, महमिा, धन्यवाद और आराधना हो। आमीन।

पवत्रि शहीदों मोकयिास और मार्क का कष्टकथा

3 जुलाई को स्मरण कयिा जाता है

इन पवत्रि शहीदों को पकड़कर एपार्क[4821] मैक्समिनिस के हवाले कर दयिा गया, जनि्होंने पहले उन्हें मूर्तयिों को बलदिान चढ़ाने के लिए मनाने की कोशशि की, और फरि उन्हें मौत की धमकी देने लगे। जब उन्हें वेदी की ओर ले जाया जा रहा था, तो एक छोटा बच्चा उनके सामने आ गया और उन्हें आगे बढ़ने से रोक दयिा। इसके लिए, मूर्तपिूजकों ने बच्चे को अपने कंधों पर उठा लयिा और उसे एक पट्टे से मारना शुरू कर दयिा[4822] , और उस पर एक सौ दस क्रूर प्रहार कयिे। फरि बच्चे ने एपार्क से कहा:

'एपार्क! तुम मुझे बुरा सखिा रहे हो।'

पवत्रि शहीदों ने मूर्तयिों को बलदिान चढ़ाने से इनकार कर दयिा, वे मसीह में अपने वशि्वास और उस वशि्वास की स्वीकारोक्ति में दृढ़ रहे, और उनकी कलहटें तलवार से काट दी गईं। संत मोकयिस के साथ मृत्युदंड के स्थान पर उनकी पत्नी और बच्चे भी गए, जो रो रहे थे, लेकनि उन्होंने उनसे न रोने को कहा; मृत्युदंड के स्थान पर खड़े होकर जब संत मार्क का सरि कलम कयिा गया, तो उसका सरि उनकी पत्नी ने ग्रहण कयिा[4823] ।

[4819] नेस्टोरयिन वधिर्म इस दावे पर आधारति था कि सर्वपवत्रि कुँवारी मरयिम ने ईश्वर को जन्म नहीं दयिा, बल्कि केवल एक मनुष्य को जन्म दयिा, जसिके साथ—उनसे अलग—परमपति से शाश्वत रूप से उत्पन्न ईश्वर का वचन एकीकृत था; इसके अलावा, यह एकता केवल नैतकि थी। नेस्टोरयिस की वधिर्मता को 431 में एफ़सिुस के सार्वभौमकि परषिद में नदिा कयिा गया, जसिमें मसीह यीशु में दो स्वभावों के मलिन के प्रश्न का नम्निलखिति प्रकार से समाधान कयिा गया: 'दोनों स्वभाव - दविय और मानवीय - मसीह में अवभिाज्य रूप से और बनिा कसिी मश्रिण के एकजुट हैं'।

[4820] लगभग 430।

[4821] ग्रीको-रोमन साम्राज्य में, 'एपार्क' की उपाधि प्रांतीय गवर्नरों द्वारा धारण की जाती थी।

[4822] कमरबंद एक पट्टा या जालीदार फीता होता है जसिका उपयोग काठी कसने के लिए कयिा जाता है।

[4823] संत मोकयिास और मार्क की शहादत की तारीख अज्ञात है।

17 जुलाई

4 जुलाई (पुराने कैलेंडर के अनुसार)

इसी दनि, हम धर्मी महा राजकुमार एंड्रयू बोगोल्यूबस्की की स्मृत मिनाते हैं, जनिकी हत्या 1174 में की गई थी।

हमारे पवत्रि पति एंड्रयू, क्रीट के आर्चबशिप की स्मृत[4824]

4 जुलाई को स्मरणोत्सव

संत एंड्रयू का जन्म दमश्कि शहर में हुआ था[4825] और वे जन्म से सात वर्ष की आयु तक गूंगे थे। जब, अपने माता-पति के साथ, उन्होंने चर्च में मसीह के शरीर और रक्त का पवत्रि भोज ग्रहण कयि, तो पवत्रि भोज के दौरान उनका गूंगापन दूर हो गया और वे बोलने लगे। मसीह, जो परमेश्वर के सच्चे पुत्र हैं, जन्हिोंने इस पूर्व में मूक युवक के होठों के माध्यम से स्वयं की महमिा की, ने दखिाया कि सबसे पवत्रि रहस्यों में कतिनी महान शक्त छिपी हुई है। पवत्रि भोज के माध्यम से वाणी का वरदान प्राप्त करने के बाद, धन्य एंड्रयू को पवत्रि धर्मग्रंथों की शक्षिा के लिए सौंपा गया, और चौदह वर्ष की आयु में उसे ईश्वर की सेवा करने के लिए पवत्रि नगर यरूशलेम ले जाया गया। उसे स्वीकार करने पर, यरूशलेम के परम पवत्रि पैट्रआर्क ने उसे पुरोहति वर्ग में शामलि कयि और, उचति समय पर, उसे — एक बुद्धमिान व्यक्त के रूप में — एक नोटरी[4826] नयिुक्त कयि। संत एंड्रयू ने अत्यंत सदाचारी जीवन जयि, उन्होंने ब्रह्मचर्य, संयम और नम्रता का अभ्यास कयि, इतना कि स्वयं पैट्रआर्क भी उन पर चकति थे; वह ईश्वर को प्रयि थे और सभी से प्रयि थे।

[4827]कई वर्षों बाद, सम्राट कॉन्स्टेंटनि द बीअर्डेड के शासनकाल में, कॉन्स्टेंटनिोपल में पवत्रि पतिाओं की छठी सार्वभौमकि परषिद[4828] का आयोजन मोनोथेलट्सि ([4829]) की दुष्ट वधिर्म से लड़ने के लिए कयि गया था - इस वधिर्म के बारे में और ववरिण पूजनीय मैक्समिस द कन्फेसर के जीवन में पाए जा सकते हैं। इस परषिद में, उस समय के यरूशलेम के परम पावन पैट्रआर्क थयिोडोर ने धन्य एंड्रयू को भेजा, जो उस समय आर्चडीकन के पद पर थे, क्योंकि पैट्रआर्क स्वयं कॉन्स्टेंटनिोपल की परषिद में यात्रा करने में असमर्थ थे, क्योंकि उस समय यरूशलेम मुस्लमि शासन के अधीन था। पवत्रि आत्मा की कृपा से, जसिसे वह परपिूर्ण थे, धन्य एंड्रयू उस समय पवत्रि पतिाओं और स्वयं सम्राट के बीच प्रसद्धि हुए। उन्होंने उनमें न केवल वद्विवतापूर्ण ज्ञान और ऑर्थोडॉक्स चर्च के सद्धिांतों का गहरा ज्ञान, बल्कि एक पवत्रि और ईश्वर-प्रसन्न जीवन भी पहचाना। मूर्तविादयिों के वरिुद्ध, उन्होंने स्वयं को मसीह का एक पराक्रमी सैनकि साबति कयि और धर्मपरायणता का उत्साहपूर्वक समर्थन करते हुए, पवत्रि पतिाओं की परषिद को बहुत सहायता प्रदान की।

[4830]परषिद समाप्त होने के बाद, संत एंड्रयू यरूशलेम लौट आए और वहाँ रहे, अपनी सामान्य धार्मकि गतविधियिों को जारी रखते हुए: पैट्रआर्क के नर्दिेशों पर अनाथों की देखभाल करना, यात्रयिों को भोजन कराना और बीमारों की सेवा

[4824] क्रीट (या कैंडयि) – भूमध्यसागरीय द्वीपों में सबसे बड़ा; यह एजयिन सागर के दक्षणि में, भूमध्यसागर के पूर्वी भाग में स्थति है। यह अब तुर्की का हस्सिा है।

[4825] दमश्कि एक प्राचीन सीरयिाई शहर है, जसिका उल्लेख बाइबल में इब्राहीम की कहानी (उत्पत्त 14:15) में भी मलिता है; यह फलिस्तिीन के उत्तर-पूर्व में, एंटी-लेबनान पहाड़ों के पूर्वी तलहटी में एक सुंदर और उपजाऊ मैदान में स्थति था। – ईसाई चर्च के इतहिास में, दमश्कि सौल के मसीह में चमत्कारकि परविर्तन (प्रेरतिों के काम 9:1-22) के स्थल के रूप में उल्लेखनीय है। इसे 634 में अरबों ने जीत लयि था; 1516 से, इसे ओटोमन साम्राज्य में शामलि कर लयि गया था।

[4826] सचवि।

[4827] कांस्टेंटनि चौथे (पोगोनाटस) ने 668 से 685 तक शासन कयि।

[4828] 680 में,

[4829] मोनोथेलटिकि वधिर्म का यह मानना था कि, यद्यपि वे यीशु मसीह में दो स्वभावों को मानते थे, फरि भी उन्होंने उनमें केवल एक इच्छा को स्वीकार कयि।

[4830] जस्टनियिन द्वतीय ने 685 से 695 तक शासन कयि।

करना। इन सभी में वह इतने उत्साही और परश्रिमी थे जैसे कि वह स्वयं मसीह की सेवा कर रहे हों। बाद में, सम्राट जस्टनियिन द्वतिीय के शासनकाल में, एंड्रयू को क्रीट का आर्चबशिप नयिुक्त कयिा गया। वहाँ वे दुनयिा के लिए एक प्रकाशस्तंभ थे, जनि्होंने अपनी दैवीय प्रेरति शकि्षा और अपने सदाचारी जीवन से मसीह की कलीसयिा को प्रकाशति कयिा। एक अजेय तपस्वी के रूप में, जो राक्षसों से भयभीत थे (क्योंकि वह उन्हें भगा देते थे), एंड्रयू वधिर्मयिों के लिए एक आतंक थे। न केवल अदृश्य दुश्मन, बल्कि दृश्यमान दुश्मन भी, उनकी प्रार्थनाओं से दूर भाग जाते थे।

एक अवसर पर, सराकनिें जहाज से आकर क्रीट द्वीप पर हमला कयिा और ड्रुमेओस नामक एक शहर की घेराबंदी कर ली, जहाँ ईसाइयों ने अपने चरवाहे, संत एंड्रयू के साथ खुद को घेर लयिा था। लेकनि सारासेन व्यर्थ में लड़े और अपमानति होकर पीछे हट गए, उन्हें हथयिारों से नहीं बल्कि संत की प्रार्थनाओं से पीछे धकेला गया—जो कसिी भी हथयिार से कहीं अधकि शक्तशिाली थीं—क्योंकि उन्होंने उन्हें आँसुओं के साथ ईश्वर के समक्ष अर्पति कयिा और अपने दुश्मनों को उनसे ऐसे गरिा दयिा जैसे वे तीर हों। उनकी प्रार्थनाओं में महान शक्ति थी: उनके माध्यम से, सूखे और शुष्कता की अवधि के दौरान, उन्होंने बारशि कराई जसिने क्रीट क्षेत्र को पानी दयिा और उसे उपजाऊ बना दयिा।

मसीह के प्रेरति, संत एंड्रयू ने कई दैवीय रूप से प्रेरति कृतयिाँ लखिीं, जनिमें 'ग्रेट कैनन' शामलि है, जसिे ग्रेट लेन्ट के पाँचवें सप्ताह के गुरुवार को गाया जाता है, साथ ही अन्य कैनन भी लखिे। उन्होंने चर्च को भजनों से सजाया और परमेश्वर की अति पवत्रि कुंवारी माता को अनेक स्तुतयिों से सम्मानति कयिा[4831] । एक अवसर पर, कुछ धार्मकि आवश्यकताओं के लिए, वे कॉन्स्टेंटनिोपल गए, जहाँ उन्होंने कई लोगों के लिए महान सेवा प्रदान की। हर कोई उनकी उपस्थति और उनके मधुर शब्दों से प्रसन्न हुआ, और उनके आत्माओं का नरि्माण हुआ। इसीलिए अपने आत्माओं के उद्धार की तलाश में सभी लोग उनके पास आते थे। कॉन्स्टेंटनिोपल से क्रीट लौटने का इरादा रखते हुए, संत ने अपने नधिन की पूर्व सूचना पा ली और मसीह में अपने प्रयि मत्रिों से कहा कि वह फरि कभी क्रीट नहीं देख पाएंगे। अंतमि चुंबन से उन्हें वदिा कहने के बाद, वे एक जहाज पर सवार हो गए और समुद्र यात्रा पर नकिल पड़े। माइटलिनि द्वीप पहुँचने पर, वे बीमार पड़ गए, और इरसि नामक स्थान पर, उन्होंने अपनी आत्मा ईश्वर के हाथों में सौंप दी[4832] ।

धन्य एंड्रयू ने उन्हें सौंपी गई आध्यात्मकि भेड़ों की झुंड की सम्मानपूर्वक देखभाल की और वे उन पवत्रि धर्मगुरुओं में गनि गए जो पति, पुत्र और पवत्रि आत्मा, त्रमिूर्ति में एक परमेश्वर के सहिासन के सामने खड़े हैं, जनिका महमिा युगानुयुग होती रहे। आमीन।

कॉन्टाकयिन, स्वर 2:

हे पूजनीय एंड्रयू, परमेश्वर के मधुर भजनों का स्पष्ट रूप से प्रचार करके, तुम त्रमिूर्ति के प्रकाश से जगमगाते हुए संसार के सबसे उज्ज्वल दीपक के रूप में प्रकट हुए। अतः हम सभी तुमसे पुकार लगाते हैं: हम सभी के लिए प्रार्थना करना बंद न करना।

पवत्रि और धर्मी मार्था का जीवन[4833]

4 जुलाई को स्मरणोत्सव

संत धर्मपरायण मार्था का जन्म एंटओिक शहर में हुआ था। उनके माता-पति धर्मनष्ठि ईसाई थे। उन्होंने उन्हें शादी करने के लिए कहा, लेकनि उन्होंने, कुँवारी जीवन जीने की इच्छा से, मना कर दयिा; हालाँकि, संत यूहन्ना बपतस्मिादाता के चर्च में एक दैवीय दर्शन ने उन्हें अपने माता-पति के आगे झुकने और शादी करने के लिए मजबूर कर

[4831] क्रीट के आर्चबशिप, संत एंड्रयू, धार्मकि और शकि्षाप्रद प्रकृति के 20 तक प्रवचनों के लेखक हैं। उन्होंने जो धार्मकि भजन रचे, उनमें सबसे महत्वपूर्ण 'ग्रेट पेनटिेंशयिल कैनन' है, जसिे 'ग्रेट लेंट' के पहले सप्ताह के 'वेस्पर्स' के दौरान कुछ भागों में गाया जाता है, और पांचवें सप्ताह के गुरुवार को 'मैटनि्स' में पूरा गाया जाता है।

[4832] क्रीट के आर्चबशिप सेंट एंड्रयू का 712 में नधिन हो गया।

[4833] यह ध्यान देने योग्य है कि पवत्रि और धर्मी मार्था, संत समियिन द स्टाइलाइट की माता, का नधिन इस महीने के पांचवें दनि हुआ था; लेकनि चूंकि मेनायोन में उनके लिए सेवा इस, चौथे, दनि के लिए नरि्धारति है, और इसी तरह इस दनि का सनैक्सारयिन प्रोलॉग में पढ़ा जाता है, इसलिए उनका जीवन जुलाई के चौथे दनि के अंतर्गत रखा गया है।

दयिा। एक दव्यि वरदान से, जसिकी उसे पहले से ही चेतावनी दी गई थी (जैसा कि समिोन चमत्कारकर्ता के जीवन में वसि्तार से वर्णति है) – संत यूहन्ना अग्रदूत का साक्षात्कार – मार्था के गर्भ में एक पुत्र, संत समिोन, का संयोग हुआ। अपने पति के साथ कुछ वर्ष जीवन व्यतीत करने के बाद, वह वधिवा हो गई और उसने अपने बच्चे का पालन-पोषण अत्यंत सावधानी से कयिा, तथा संत जॉन द बैपटसि्ट की आज्ञा के अनुसार उसके लालन-पालन की कड़ाई से नगिरानी रखी। मार्था हमेशा अपने बेटे के लिए ईश्वर से प्रार्थना करती थी कि वह उसे अपनी सेवा में स्वीकार कर लें, ठीक वैसे ही जैसे उन्होंने एक बार भवष्यिवक्ता अन्ना से सैमुअल को स्वीकार कयिा था।

एक दनि, जब मार्था इस बात पर वचिार कर रही थी कि जब वह लड़का वयस्क होगा तो उसका क्या होगा, तब उसे एक स्वप्न में नम्निलखिति दर्शन हुआ। उसे ऐसा प्रतीत हुआ मानो उसके पंख हों और वह ऊँचाई में उड़ रही हो, बच्चे को अपनी बाहों में थामे हुए और उसे प्रभु को भेंट स्वरूप अर्पति कर रही हो, यह कहते हुए:

'हे मेरे बच्चे, यह वही आरोहण है जसिे मैं देखना चाहती थी!'

मेरा स्रष्टा मुझे शांति से जाने दे, क्योंकि मुझे अपने गर्भ का फल उसे समर्पति करने के योग्य समझा गया, और मैंने उसकी दृष्टि में अनुग्रह पाया है!"

धन्य मार्था ने इस दर्शन को, ठीक वैसे ही जैसे उसने अपने पछिले प्रकाशनों को संजोया था, अपने हृदय में संजोया और ईश्वर का धन्यवाद कयिा। वह नरिंतर ईश्वर के घर में रहती थीं, चर्च के नयिमों से कभी भटकती नहीं थीं – इसीलिए वह चर्च के पास रहती थीं; वह गायन सुनने के लिए चर्च में सबसे पहले पहुँचती थीं और सबसे आखरिी में नकिलती थीं। उनका एक धार्मकि रविाज था कि वे पवत्रि चर्चों में, जहाँ भी उत्सव की प्रार्थना सभाएँ होती थीं, उनमें शामलि होती थीं; वे पूरी रात की प्रार्थना सभा के दौरान बड़ी एकाग्रता और हृदय की पश्चाताप के साथ खड़ी रहती थीं, आँसू बहाती थीं, और अक्सर मसीह के शरीर और रक्त के दव्यि रहस्यों को ग्रहण करती थीं। वह पवत्रि सहभागति कतिनी पवत्रिता से ग्रहण करती थी, इसका प्रमाण इस बात से मलिता है कि दिव्यि ग्रहण करने के बाद, उसका चेहरा एक अद्भुत प्रकाश से प्रकाशति हो उठता था, ठीक वैसे ही जैसे एक समय में मूसा का चेहरा प्रकाशति हो गया था। हर रात अपने घर में, जैसे ही आधी रात होती, मार्था प्रार्थना करने के लिए उठती थीं, जो वह हृदय की गहराई से करती थीं, उनका चेहरा आँसुओं से भीगा रहता था; उनका पूरा मन ईश्वर में लीन रहता था, जन्हिें वह अपनी आत्मा की सारी शक्ति से प्रेम करती थीं; वह गरीबों के प्रति अकथनीय रूप से दयालु थीं, भूखे को भोजन कराती थीं और नग्न को वस्त्र पहनाती थीं। वह अक्सर अस्पतालों में जाती थीं, अपने हाथों से बीमारों की सेवा करती थीं, और अपने श्रम के फल से मरणासन्न लोगों को दफ़न के लिए आवश्यक वस्त्र प्रदान करती थीं। इसी तरह, वह बपतसि्मा लेने वालों को अपने हाथों से बनाए हुए सफेद वस्त्र देती थी। वह इतनी कोमल, वनिम्र और द्वेष से रहति थी कि कोई भी उसे कभी गुस्से में, कसिी से बहस करते हुए या दुखी नहीं देख पाया। इसके अलावा, वह अपने होठों को व्यर्थ की बातों से बचाती थी, और केवल आवश्यक बातें ही करती थी। वह मौन से बहुत प्रेम करती थी, क्योंकि यह मन को ईश्वर पर मनन करने का प्रशक्षिण देता है; उसके होठों से कभी कोई व्यर्थ, झूटा या अधार्मकि शब्द नहीं सुना गया, बल्कि अपने हृदय के अच्छे भंडार से वह अपने मुख द्वारा भलाई प्रकट करती थी। संत मार्था क्रोधति लोगों के बीच शांति स्थापति करने वाली, बुरी तरह जीवन यापन करने वालों को समझाने वाली, और सभी के लिए - न केवल महलिाओं, बल्कि पुरुषों के लिए भी - एक पवत्रि, धर्मपरायण और ईश्वर-प्रसन्न जीवन का आदर्श थीं। उन्हें कई अन्य गुणों से भी परपिूर्ण कयिा गया था, जनिका वसि्तार से वर्णन नहीं कयिा जा सकता। उसके धार्मकि जीवन का पर्याप्त प्रमाण पूजनीय समिोन की महान पवत्रिता है, जसिे उसने जन्म दयिा, क्योंकि यह उचति था कि ऐसी महलिा ऐसे पुत्र की माँ हो।

जब पूजनीय समिोन पहले से ही दविनोगोर्स्क स्तंभ ([4834]) पर तपस्या कर रहे थे, तो मार्था ने अपनी आधी रात की प्रार्थना के बाद, हल्की नींद में यह दृष्टि देखी। संत योहन बपतसि्मा देने वाले, पवत्रि प्रेरति तमिोथी के साथ, उसके सामने प्रकट हुए; ईश्वर और परमेश्वर की अति पवत्रि माता के बाद, मार्था की उनमें वशिेष आस्था थी और वह प्रतदिनि वशि्वास के साथ प्रार्थना करती थी – और उन्होंने उससे कहा:

'मैं हर समय परमेश्वर के समक्ष तुम्हारे लिए मध्यस्थता करता हूँ और तुम्हें कभी न छोड़ूँगा।'

तब मार्था, भक्ति और आनंद से भरकर, इस दर्शन से जाग उठी; उसने श्रद्धापूर्वक ईश्वर की स्तुति की और यह बात अपने पुत्र, पूजनीय समिोन को सुनाई, जसिके पास वह कभी-कभी मलिने आती थी। जब वह पहुँची और पूजनीय

[4834] पवत्रि पर्वत, जहाँ संत समियिन द स्टाइलाइट एक तपस्वी के रूप में रहते थे, सीरयिा और सेलेउकयिा में एंटओिक के पास स्थति था।

संत के स्तंभ के पास हर प्रकार की बीमारियों से पीड़ित लोगों की भीड़ को देखा, जो उपचार की आशा में वहाँ इकट्ठा हुए थे, और पूजनीय संत की प्रार्थनाओं से हो रहे अनेक चमत्कारों को देखा, तो मार्था ने अपने मन को घमंड से भरने नहीं दिया, बल्कि उसने यह सब विशेष श्रद्धा के साथ देखा, कहीं हमारे उद्धार का शत्रु किसी भी तरह से अपने जाल अपने पुत्र के सामने न बिछा दे; इसलिए उसने आँसुओं के साथ ईश्वर से प्रार्थना की, कि वह उसके पुत्र को शत्रु की चालाकियों से बचाए। उसी समय, उसने पादरी से कहा:

'मेरे बच्चे! इन सब के लिए, परमेश्वर की महिमा करना उचित है, जो तुम्हारे द्वारा काम करते हैं। लेकिन तुम्हें अपनी दुर्बलता को याद रखना चाहिए और अपने दिल की बहुत सावधानी से रक्षा करनी चाहिए!'

रेवरेंड ने अपनी माता की उपदेशों को आनंदपूर्वक सुना और उनके ईश्वर-भक्त जीवन से अपनी आत्मा में आनंदित होकर, ईश्वर का धन्यवाद किया।

जब धन्य मार्था कई वर्षों तक अनेक सद्गुणों में जीवन व्यतीत कर चुकी थीं और अंततःईश्वर को प्रसन्न कर चुकी थीं, तो अपने निधन से एक वर्ष पूर्व, आधी रात को ईश्वर से प्रार्थना करते हुए, वह समाधि की अवस्था में पहुँच गईं और उन्होंने हाथों में मोमबत्तियाँ लिए हुए आनंदित स्वर्गदूतों की एक भीड़ देखी, जो उनसे कह रहे थे:

'एक वर्ष के भीतर, हम तुम्हें, देह से मुक्त होकर, प्रभु द्वारा तुम्हारे लिए तैयार किए गए विश्राम के स्थान पर ले जाएँगे।'

वही बात परम पूजनीय सिमोन को भी प्रकट हुई। इसके अलावा, उनके एक भाई को निम्नलिखित दर्शन हुआ:

उसने परमेश्वर की अति पवित्र माता, कुँवारी मरियम को, एक सिंहासन पर महिमा में विराजमान देखा, जबकि धन्य मार्था, अपनी बाहें क्रूस के आकार में उनकी ओर उठाए हुए, एक सुनहरे क्रूस में बदल गई थी और सूर्य की किरणों जैसी रोशनी से चमक रही थी, और वह उनके सामने खड़ी थी। वह पूरी तरह से एक अत्यंत तेजस्वी क्रूस के रूप में प्रकट हुईं; केवल उनका चेहरा ही क्रूस के ऊपर देखा जा सकता था। यह दर्शन पूजनीय सिमोन को सुनाया गया। उन्होंने कहा कि यह उनकी धन्य माता की निकट मृत्यु का संकेत था।

जैसे ही संत मार्था के दैवी जीवन का अंतिम वर्ष समाप्त होने को आया, वह अपने पुत्र, परमपूज्य सिमोन से मिलने आईं; सिमोन ने उनसे कहा:

'मेरी माता, मुझे आशीर्वाद दीजिए, जैसे अब्राहम ने इसहाक को आशीर्वाद दिया था!'

'मैं ठीक इसी लिए यहाँ आई हूँ,' संत ने उत्तर दिया, 'ताकि मैं आपका आशीर्वाद और आपके प्रार्थनाएँ प्राप्त कर सकूँ। मेरे जीवन में केवल तीन महीने बचे हैं, और मैं अपने प्रभु परमेश्वर के पास चली जाऊँगी, जिसने आपको मेरी कोख से जन्म दिया था।' ईश्वर आपको अपना आशीर्वाद और अनुग्रह प्रदान करें, ताकि आप अपने द्वारा आरंभ किए गए इस साहसी प्रयास को सफलतापूर्वक पूरा कर सकें, और ईश्वर आपको अपने राज्य में प्रवेश प्रदान करें।

जब उसने ये शब्द कहे, तो धन्य मार्था गहरी भावना से रो पड़ी। वहाँ इकट्ठा हुए भाइयों ने भी रोया, क्योंकि वे यह सुनकर बहुत दुखी हुए कि तीन महीनों में वे मार्था का चेहरा फिर नहीं देख पाएँगे। भाइयों ने कहा:

'तुम्हारी आत्मा जीवित रहे और प्रभु की स्तुति करे!'

उसने, अपनी ओर से, अपने शब्दों की पुनःपुष्टि करते हुए दोहराया:

'यदि जैसा मैंने कहा है, वैसा नहीं हुआ, तो मुझे, अपनी दासी को, झूठी समझ लेना।'

'अब हम आपकी आशीर्वाद मांगते हैं,' सम्माननीय सिमोन ने उससे कहा, 'क्योंकि आपके ये शब्द हमारे हृदयों के लिए पीड़ादायक हैं।'

संत ने उत्तर दिया, 'प्रभु तुझे धन्य करें, और जो तुझे धन्य कहते हैं, वे धन्य हैं।'

ये शब्द सुनते ही, वहाँ मौजूद सभी लोग उसके सामने झुक गए। उसने भी उनके सामने झुककर अंतीयक में अपने घर लौट आई।

अगले दिन, उनकी माता के निधन के बाद, परम पूज्य सिमोन ने भाइयों में सबसे अनुभवी लोगों को बुलाया और उनसे कहा:

'निश्चय ही, मेरी स्वामिनी और माता के इस संसार से प्रस्थान का समय निकट आ गया है। कल रात मैंने एक दर्शन में अपने सामने एक सिंहासन देखा, जिस पर मेरी माता विराजमान थीं; हम सभी उनके चारों ओर खड़े थे, और वे हमें भजन के आरंभिक वचन शिक्षाप्रद ढंग से सुना रही थीं: *"धन्य है वह मनुष्य जो दुष्टों की सलाह पर नहीं चलता"* (भजन संहिता 1:1) और उस भजन संहिता के अन्य अंश। जब वह बोल रही थीं, तो उन्होंने हमें वैसे ही संबोधित किया जैसे एक माँ

अपने बच्चों को करती है, और उन्होंने उत्साहवर्धक कई अन्य शब्द कहे। फिर वह उठीं और अपने हाथों में एक तेजस्वी क्रूस थामे हमारे सामने चर्च की ओर चल पड़ीं, जबकि हम, भावुक भजन संहिताएँ गाते हुए, उनका अनुसरण कर रहे थे।

इसके बाद, अपने निधन से ठीक कुछ दिन पहले, मार्था अंतिम विदाई के लिए एक बार फिर पूजनीय सिमीओन के पास आईं। इस अवसर पर, उन्होंने उन्हें अपने जीवन भर में प्राप्त हुए सभी दैवीय प्रकाशनों के बारे में बताया; उन्होंने उन्हें अपने कार्यों और कर्मों के बारे में भी सूचित किया, जिन्हें उन्होंने ईश्वर के नाम की महिमा के लिए गुप्त रूप से किया था। उन्होंने वह रात वहीं बिताई। एक स्वप्निल दृष्टि में, उसे ऐसा प्रतीत हुआ मानो उसे स्वर्ग की ऊँचाइयों तक उठा लिया गया हो और उसने एक अद्भुत और अत्यंत तेजस्वी कक्ष देखा, जिसकी सुंदरता का वर्णन कोई भी शब्दों में नहीं कर सकता था। जब वह उस कक्ष में चल रही थी और मानव हाथों से न बनी उस इमारत को देखकर विस्मित हो रही थी, तब उसने परम पवित्र कुँवारी मरियम को दो तेजस्वी स्वर्गदूतों के साथ देखा, जिन्होंने उससे पूछा:

'तुम आश्चर्यचकित क्यों हो?'

उसने, भय और आनंद दोनों के साथ ईश्वर की माता के सामने श्रद्धापूर्वक सिर झुकाकर, उत्तर दिया:

'हे देवी, मैं इस बात पर आश्चर्यचकित हूँ कि मैंने अपने पूरे जीवन में पृथ्वी पर ऐसा अद्भुत कक्ष कभी नहीं देखा है।'

'आपके विचार में, यह कक्ष किसके लिए तैयार किया गया है?' सबसे पवित्र ने पूछा।

'मुझे नहीं पता, मेरी मालकिन,' मार्था ने उत्तर दिया।

तब परमेश्वर की माता ने उससे कहा:

'क्या तुम नहीं जानतीं कि यह विश्राम-स्थल, जिसे तुम्हारे पुत्र ने तैयार किया है और जिसमें तुम अब से अनंतकाल तक वास करोगी, तुम्हारे लिए ही तैयार किया गया है?'

यह कहकर, परम पवित्र ने स्वर्गदूतों को आज्ञा दी, और उन्होंने कक्ष के बीच में एक अद्भुत सिंहासन स्थापित किया; फिर उन्होंने संत से कहा:

'यह महिमा तुम्हें प्रदान की गई है, क्योंकि तुमने प्रभु के भय में ईश्वर को प्रसन्न करने वाला जीवन जिया है। क्या तुम कुछ और भी अधिक गौरवशाली देखना चाहती हो?' तब ईश्वर की माता ने मार्था से पूछा।

यह कहकर, उन्होंने उसे अपने पीछे चलने का आदेश दिया। स्वर्ग के सर्वोच्च लोकों में आरोहण करते हुए, परमेश्वर की माता ने उसे पहले कक्षों में से सबसे अद्भुत और अतुलनीय रूप से सबसे उज्ज्वल कक्ष दिखाया, जो स्वर्गीय महिमा से भरा था, जिसकी सुंदरता को मानव मन समझ नहीं सकता और जीभ व्यक्त नहीं कर सकती।

'और यह कक्ष,' परम पवित्र ने कहा, 'तुम्हारे पुत्र ने तैयार किया है, और उसने तीसरे कक्ष की नींव रखना पहले ही शुरू कर दिया है।'

इन शब्दों के साथ, उन्होंने उसे उगते सूरज की ओर ले जाया और ऊँचाई से स्वर्गीय निवास दिखाए, और उनमें आनंद मनाते हुए पुरुषों और महिलाओं के गायकों के समूह को दिखाया।

'ये स्थान,' उस देवी ने कहा, 'मेरे पुत्र द्वारा उन लोगों को प्रदान किए गए हैं, जिन्होंने प्रभु की आज्ञाओं का पालन करते हुए पवित्रता और धार्मिकता से जीवन व्यतीत किया, और उत्साहपूर्वक उदार दान दिया; और इसी कारण से वे स्वयं भी प्रभु की दया के योग्य माने गए: *"क्योंकि दयालु धन्य हैं, क्योंकि उन्हें दया मिलेगी"* (मत्ती 5:7).

संत मार्था का यह दर्शन था, जिसे उन्होंने अपने पुत्र को सुनाया।

यह रविवार का दिन था, और मार्था ने मसीह के शरीर और रक्त के परम पवित्र दिव्य रहस्यों को ग्रहण किया; उसका चेहरा ईश्वर की कृपा से और उस अकथनीय आध्यात्मिक आनंद से दमक रहा था, जिससे वह अपनी मृत्यु और मोक्ष के बारे में जानकर परिपूर्ण हो गई थी। धन्य मार्था ने वह पूरा दिन और उसके बाद की रात आंशिक रूप से अपने पूजनीय पुत्र के साथ कई दैवीय प्रेरित और हार्दिक वार्तालापों में, और आंशिक रूप से ईश्वर से उत्कट, अश्रुपूर्ण प्रार्थनाओं में बिताई। सोमवार को, अपने पुत्र और उसके सभी शिष्यों को अपना शांति-संदेश, आशीर्वाद और अंतिम विदाई देने के बाद, वह उनके कड़वे विलाप के बीच उनसे विदा हो गईं और चमत्कार के पर्वत से तीन स्टेडियम दूर स्थित तिछोंटि नामक गाँव के लिए रवाना हो गईं, जहाँ संत जॉन द बैपटिस्ट का चर्च था। वहाँ उन्होंने प्रचुर प्रार्थनाएँ कीं, जिसके बाद उनका शरीर कमजोर होने लगा। इस गाँव के निवासी धन्य मार्था का बहुत सम्मान करते थे; इसलिए, उन्होंने उनसे अपनी मेहनत से विश्राम करने के लिए कहा। और वास्तव में, वह उस दिन और उसके बाद वाली रात उनके साथ विश्राम करती रहीं, इस दौरान उनका शरीर और भी कमजोर हो गया। फिर, मंगलवार को, उन्हें गाड़ी से अंतीयक ले जाया

गया, शहर के उपनगर डैफ्नी में उनके घर। अपने हृदय में परमेश्वर से प्रार्थना करते हुए, भरपूर आँसू बहाते हुए और अपनी मुक्ति के लिए अटूट आशा रखते हुए, उन्होंने[4835] को जुलाई के पांचवें दिन अपना पवित्र आत्मा परमेश्वर के हाथों में सौंप दिया। जब वह मरणासन्न थीं, तो उन्होंने वसीयत की कि उनके शरीर को उस स्थान पर दफनाया जाए जहाँ यात्रियों और भिखारियों को आराम दिया जाता है। लेकिन उनके पूजनीय पुत्र, सिमोन ने, अपनी माता के निधन के बारे में ईश्वर से प्रकटवाणी प्राप्त करने और अपने कुछ शिष्यों को भेजने के बाद, उनके शरीर को चमत्कार के पर्वत पर अपने निवास स्थान पर ले गए, ताकि उसे उनके स्तंभ के पास दफनाया जा सके। संत मार्था के बारे में यह भी कहा जाता है कि जब उनकी पवित्र आत्मा प्रभु के पास प्रस्थान कर गई, तो उनके पवित्र शरीर के पास खड़े कुछ लोगों ने उनका चेहरा आनंद से मुस्कुराते हुए देखा, और उनके होठों से ये शब्द निकलते सुना:

'मुझे परमेश्वर से महान अनुग्रह मिला है और मैं अकथनीय प्रकाश और आनंद में वास करती हूँ।'

उसके आसपास के लोग, विस्मय से भरकर, सोचने लगे कि संत को यह अनुग्रह प्रभु से उनके पुत्र के कारण प्राप्त हुआ था। लेकिन इन विचारों के जवाब में, संत ने कहा कि उन्हें अपने बेटे के लिए नहीं बल्कि अपने सदाचारी जीवन के लिए महिमामंडित किया गया था, क्योंकि उन्होंने प्रभु के लिए संयम और उपवास के श्रम में बहुत धैर्य दिखाया था, उन्होंने उत्साहपूर्वक उनके आज्ञाओं के मार्ग पर चला था, और उन्होंने परमेश्वर की माता, जिन्होंने प्रभु को जन्म दिया, से पूरे दिल से प्रेम किया था।

संत मार्था के पवित्र शरीर को शुक्रवार को अंफ़ियालोपोलिस के उपनगर डाफ्ने से दिवंगत पर्वत पर बड़े सम्मान के साथ ले जाया गया। अंफ़ियालोपोलिस के लोगों की एक बड़ी भीड़, धूपदान और मोमबत्तियाँ लिए पुरोहितों के साथ, ईश्वर की एक महान सेविका के रूप में उनके साथ चल पड़ी। उनके शरीर को उठाए हुए लोगों ने गवाही दी कि उन्हें इसे उठाते समय कोई वजन महसूस नहीं हुआ। जबकि मृतकों के शरीरों का स्वाभाविक रूप से वजन होता है, यह पवित्र शरीर किसी तरह असामान्य रूप से हल्का था, और ऐसा लग रहा था मानो यह हवा में तैर रहा हो। भीड़ में से एक युवक, सम्मानित नागरिक एंटनी का पुत्र, जिसका नाम सेरजियस था, इस भव्य जुलूस और ताबूत के चारों ओर उमड़ती भीड़ को देखकर—कुछ उत्सुकता से ताबूत उठाने के लिए अपने कंधे पेश कर रहे थे, तो कुछ पवित्र शरीर को छूना चाहते थे—अपने मन में मुस्कुराया, यह तर्क देते हुए:

'एक मृत शरीर को छूने से क्या लाभ?'

और वह वहाँ से चला गया। और देखो, वह तुरंत एक गंभीर बीमारी में पड़ गया, यहाँ तक कि वह बोल भी नहीं पाया; उसकी यह बीमारी तीस दिन तक चली, और उसे केवल संत की कफ़न के पास ही स्वास्थ्य लाभ मिला - जैसा कि नीचे बताया जाएगा।

जब पूज्य शरीर को उनके स्तंभ के पास स्थित रेवरेंड सिमियिन के मठ में लाया गया, तो उन्होंने संपूर्ण-रात्रि जागरण करना शुरू किया। उसी रात, मार्था सिमियिन के दो शिष्यों के सामने उज्ज्वल वस्त्रों में और दीप्तिमान मुख के साथ प्रकट हुई। शिष्य यह जानते हुए कि उसकी मृत्यु हो गई थी, बहुत डरे हुए थे। लेकिन उसने उनसे कहा:

'डरो मत, क्योंकि प्रभु ने मुझे मृतकों में नहीं, बल्कि जीवितों में गिना है। मैं तुम्हें शैतान के विरुद्ध मदद करने आई हूँ, ताकि उसे परास्त करने के बाद, तुम अनंत जीवन प्राप्त कर सको।'

यह कहकर वह अदृश्य हो गई। जब सब्त का दिन आया, तो पड़ोसी गांवों और बस्तियों से एक बड़ी भीड़, पुरोहितों और पादरियों के साथ, संत के अंतिम संस्कार के लिए इकट्ठी हुई। उन्होंने देखा कि ताबूत में संत का चेहरा मृत्यु की पीलापन से रहित था, बल्कि हमेशा की तरह युवा, सुंदरता से दमकता और अनुग्रह से प्रकाशमान था। ना ही उसके शरीर से सड़ने की वह गंध आ रही थी जो मृतकों के लिए सामान्य होती है, भले ही उसके निधन को चार दिन बीत चुके थे। निर्धारित भजनों के गायन के साथ, उनकी आज्ञा के अनुसार, संत सिमोन के स्तंभ के पैर में उनके शरीर को सम्मान के साथ दफनाया गया, ताकि वह हमेशा अपनी माँ की कब्र देख सकें। जब सब्बाथ बीत जाने के बाद, उन्होंने रविवार की प्रार्थना सभा शुरू की, तो भीड़ में से एक व्यक्ति, जिसका नाम जॉन था, जो चर्च में पाठक के रूप में सेवा करता था, ऊँघ गया और उसने संत मार्था को, जिनका चेहरा दमक रहा था, उस स्तंभ की सीढ़ियाँ चढ़ते हुए देखा जहाँ परम पूजनीय सिमियिन खड़े थे; और उनकी कफन के ऊपर उसने छह-पंखों वाले प्राणियों द्वारा खींचा गया करूबों का रथ देखा। बाद में उसने यह दृष्टि परम पूजनीय को शपथ लेकर बताई।

[4835] संत मार्था का निधन वर्ष 551 में हुआ।

'धन्यवाद कर, मेरे बच्चे,' पूज्य ने जॉन से कहा, 'उस ईश्वर का, जिसने तुझे करूबों के रथ का दर्शन दिया है। जहाँ तक मेरी और अपनी माँ की बात है, हम पाप में गर्भ में आए और पाप में ही जन्मे हैं और हम ईश्वर की दया की प्रार्थना करते हैं।'

इसके बाद, उपर्युक्त सेरजियस के पिता और माता—जिन्होंने संत मार्था के अंतिम संस्कार के जुलूस का मज़ाक उड़ाया था और जिसके परिणामस्वरूप उन्हें अचानक बीमारी हो गई थी—रविरेन्ड सिमियिन के पास आए; रोते और प्रार्थना करते हुए, उन्होंने उनसे अपने बेटे को ठीक करने की विनती की, जैसे वह कई अन्य लोगों को उनकी बीमारियों से ठीक करते हैं।

संत ने उनसे कहा, 'जाओ, अपने बेटे से उसकी बीमारी का कारण पूछो: वह अब बोल सकता है, क्योंकि अब वह बेहतर महसूस कर रहा है।'

तब उसके माता-पिता घर लौट आए और उन्होंने अपने बेटे से उसकी बीमारी के बारे में पूछा।

उसने उत्तर दिया:

'यह गंभीर बीमारी मुझ पर इसलिए आई है क्योंकि मैंने संत मार्था के पवित्र शव के सम्मानपूर्वक अंतिम संस्कार के दौरान उनका अपमान किया था; मैंने उनसे अपनी नज़रें हटा लीं और उनके ताबूत को अपने कंधों पर उठाने से इनकार कर दिया।'

तब उसके माता-पिता ने अपने बेटे को एक गाड़ी में बिठाया और उसे चमत्कारी पहाड़ पर स्थित पूज्यनीय के पास ले गए। पूज्यनीय ने उन्हें उसकी माँ की कफ़न के पास उपचार मांगने का निर्देश दिया। और देखो, जब उन्होंने उसकी पवित्र कफ़न पर आँसुओं के साथ प्रार्थना की, तो बीमार लड़का तुरंत पूरी तरह से स्वस्थ होकर खड़ा हो गया, मानो वह कभी बीमार ही न हुआ हो।

उस पूज्य महिला के दफ़नाए जाने के बाद, भाइयों ने उनकी कब्र के ऊपर एक दीपक जलाने की प्रथा शुरू की, ताकि संत के सम्मान में वह दिन-रात जलता रहे। कुछ समय बाद, लापरवाही के कारण, भाइयों ने दीपक जलाना बंद कर दिया। इस बीच, यह देखकर, आदरणीय सिमियोन चुप रहे और दीपक के बारे में कोई निर्देश नहीं दिया, कहीं उनके शिष्य यह न सोचें कि उन्होंने अपनी माँ को उनकी मृत्यु के बाद अत्यधिक सम्मान दिया था।

उस समय, मठ का व्यवस्थापक गंभीर रूप से बीमार पड़ गया, इतना कि वह मृत्यु के कगार पर था। आधी रात को, संत मार्था उस बीमार व्यक्ति के सामने प्रकट हुईं और कहा:

'तुम मेरा दीपक क्यों नहीं जलाते? जान लो कि मुझे दीपक जलाने की कोई आवश्यकता नहीं है, क्योंकि मुझे मेरे स्वर्गीय ईश्वर से शाश्वत प्रकाश प्राप्त हुआ है; फिर भी, जब तुम मेरे ताबूत के पास दीपक जलाते हो, तो तुम वह अपने ही उद्धार के लिए करते हो, क्योंकि तुम इससे मुझे प्रभु के सामने तुम्हारे लिए मध्यस्थता करने के लिए प्रेरित करते हो।'

जैसे ही उसने ये शब्द कहे, संत ने अपने दाहिने हाथ में एक अत्यंत चमकदार मोती जैसा कुछ थाम रखा था - जो मसीह के जीवन-दायक शरीर का एक कण था; इस कण से बीमार व्यक्ति को छूते हुए, उसने कहा:

'इससे आप जीवित रहें और स्वस्थ रहें।'

ये शब्द कहने के बाद, वह अदृश्य हो गईं। हालाँकि, बीमार व्यक्ति तुरंत उठ खड़ा हुआ, वह स्वस्थ हो गया था, और संत के मकबरे पर चला गया; उस पर खुद को झोंकते हुए, उसने अपने आँसुओं से जमीन को भिगो दिया, एक ओर अपनी लापरवाही के लिए क्षमा माँगते हुए, और दूसरी ओर अपने ठीक होने के लिए धन्यवाद देते हुए। इसके बाद, उसने संत के मकबरे के सामने एक अटूट दीपक जलाने की व्यवस्था की। संत की कब्र पर कई अन्य चमत्कार भी हुए: अंधों को दृष्टि प्राप्त हुई, लोगों से दुष्टात्माएँ निकल गईं, और पवित्र तथा धर्मी मार्था की प्रार्थनाओं द्वारा और हमारे प्रभु यीशु मसीह की कृपा से, सभी प्रकार की बीमारियों से शीघ्र स्वास्थ्य लाभ मिला, जिनका महिमा हो, पिता और पवित्र आत्मा के साथ, अब और युगानुयुग। आमीन।

कॉन्टाकियन, स्वर 2:

हे सम्माननीय मार्था, प्रभु के समक्ष प्रार्थना करते हुए, परमेश्वर की अति पवित्र कुंवारी माता को गीत और स्तुति अर्पित करते हुए, तुमने पवित्र बालक, चमत्कारी सिमोन, जो संपूर्ण संसार का प्रकाश है, को जन्म दिया; उनसे हमारे सभी के लिए सदा प्रार्थना करो।

पवत्रि शहीदों थयिोडोٹس और थयिोडोटीया का कष्टकथा।

4 जुलाई को स्मरण कयिा जाता है

मसीह के पवत्रि शहीदों, थयिोडोटस और थयिोडोशयिा को अधर्मी सम्राट ट्राजन[4836] के आदेश पर मसीह की गवाही देने के कारण गरिफ्तार कयिा गया था। उन्हें सच्चे ईश्वर का परत्यिाग करने और मूर्तयिों को बलदिान चढ़ाने के लिए मजबूर कयिा गया, लेकनि वे नहीं झुके। इसके लिए उन्हें वभिन्नि प्रकार की यातनाएँ दी गईं, जसिके बाद उन्हें उसी कालकोठरी में कैद कर दयिा गया जहाँ मसीह के पवत्रि शहीद, हायसथि को रखा गया था। संत ने उन्हें मसीह के वश्विास में शक्षिति करना और मजबूत करना शुरू कर दयिा, और जेल के रक्षकों ने इसकी सूचना सम्राट ट्राजन को दी। जब संत हायसथि का नधिन हो गया, तो संत थयिोडोटस और थयिोडोटा को कालकोठरी से बाहर नकिालकर सम्राट के सामने पेश कयिा गया। सम्राट ने उन्हें मूर्तयिों को बलदिान कएि गए भोजन को खाने के लिए मजबूर करना शुरू कर दयिा, लेकनि उसकी मांग मानने के बजाय, उन्होंने मूर्तपिूजा के अधर्मी भ्रम की नदिा की। इसके बाद, उन्हें फांसी दी गई और उनके शरीरों पर मोमबत्तयिाँ जलाई गईं; फरि, पेड़ से उतारने के बाद, उनकी कलगी तलवार से काट दी गई। उनकी मृत्यु के बाद, पवत्रि शहीदों को अनंत जीवन और धन्य वश्राम प्राप्त हुआ, जबकि उनके सम्मानति शरीर उसी स्थान पर दफनाए गए जहाँ उन्होंने शहादत दी थी[4837] ।

संत थयिोडोर, सरिोएने के बशिप, पवत्रि शहीद का कष्टकथा

4 जुलाई को स्मरण कयिा जाता है

पवत्रि शहीद थयिोडोर सम्राट डायोक्लेटयिन ([4838]) के शासनकाल में सरिन ([4839]) नगर में रहते थे, जो लीबयिा ([4840]) में स्थति था और जहाँ से सरिन का शमिोन ([4841]) उत्पन्न हुआ था। वे लेखन में अत्यंत नपिुण थे और इस कला में महान पारंगतता प्राप्त कर उन्होंने चर्चों को अपनी हस्तलखिति अनेक पुस्तकें प्रदान कीं। परणिामस्वरूप, उसके अपने बेटे लेय ने हेगेमोन[4842] दवि्लियिानुस के पास उसकी शकियत की, यह दावा करते हुए कि इन पुस्तकों को रखने से वह कई लोगों को देवताओं की पूजा से हटाकर मसीह में वश्विास की ओर ले जा रहा था। इस आरोप के परणिामस्वरूप, संत थयिोडोर को हेगेमोन के सामने लाया गया, और कई ईसाई उनके पीछे-पीछे चले आए, जनिमें संत लूसयिस और हरिोय भी शामलि थे। उन्हें अपनी कतिाबें सौंपने का आदेश दयिा गया; लेकनि उन्होंने इस मांग का पालन नहीं कयिा, और जब उन्हें मसीह का त्याग करने का आदेश दयिा गया तो उन्होंने समर्पण भी नहीं कयिा। इसके लिए, उन्हें टनि की छड़ों से बुरी तरह पीटा गया। इसके बाद, वह गया और मूर्तपिूजक वेदयिों को नष्ट कर दयिा। फरि उसे एक पेड़ से लटका दयिा गया और उसके पूरे शरीर को एक आरी से खुरच दयिा गया, जबकि उसके घावों पर सरिका, नमक और मट्टिी के बर्तनों के तीखे टुकड़े मल दएि गए; अंत में, उसकी जीभ को एक ब्लेड से काट दयिा गया और उसे जेल ले जाया गया। पवत्रि महलि ई[4843] से अपनी कटी हुई जीभ लेकर, संत थयिोडोर ने उसे अपनी छाती पर रख दयिा, और सभी ने देखा कि कैसे एक कबूतर, कालकोठरी की खड़िकी से उड़कर, संत को छू गया । यह देखकर, लूसयिस नामक एक पगान मसीह में वश्विास करने लगा, और पवत्रि

[4836] सम्राट ट्राजन ने 98 से 117 तक रोमन साम्राज्य पर शासन कयिा।

[4837] पवत्रि शहीदों थयिोडोडोटस और थयिोडोशयिा की मृत्यु का वर्ष अज्ञात है, लेकनि उनकी शहादत का स्थान रोम शहर था।

[4838] सम्राट डायोक्लेटयिन ने 284 से 305 तक रोमन साम्राज्य पर शासन कयिा।

[4839] करिेने शहर प्राचीन रोमन अफ्रीकी प्रांत करिेनेका में स्थति था और यह भूमध्य सागर के उत्तरी तटों के पास था।

[4840] लीबयिा अफ्रीका में एक देश है, जो मस्रि के पश्चमि में स्थति है।

[4841] मसीहा के दुख-कष्ट के सुसमाचार वृत्तांत से सरेन का शमिोन जाना जाता है। जब यीशु मसीह, गोलगोथा जाते समय, क्रूस के बोझ के मारे थकान से गरि पड़े, तो वह बोझ शमिोन पर डाल दयिा गया, जसिने इसे सूली पर चढ़ाने की जगह तक उठाया (मत्ती 27:32; मरकुस 15:21; लूका 23:26)।

[4842] गवर्नर प्रांत का शासक होता है।

[4843] यहाँ संदर्भति 'सम्माननीय महलिाएँ' पवत्रि शहीद लूसयिा और हेरोनयिा हैं।

शहीद स्वस्थ हो गया; लेकिन इसके बाद थोड़ी ही देर तक जीवित रहने के बाद, वह स्वर्ग सिधार गया[4844] , और उसकी आत्मा कबूतर के साथ ही उसके शरीर से प्रस्थान कर गई।

इस बीच, राज्यपाल को जब पता चला कि लूसियस ईसाई धर्म में आस्था रखने लगा है, तो उसने संत लूसियस, हिएरोस और साइप्रियन के साथ-साथ उन सभी को, जिन्हें संत थियोडोर ने बपतिस्मा दिया था, मृत्युदंड देने का आदेश दिया। इसके बाद, लूसियस का बपतिस्मा हुआ और उसने राज्यपाल डिग्नियन को स्वयं ईसाई धर्म में परिवर्तित कर दिया। फिर वे दोनों क्रीट से साइप्रस द्वीप के एक अन्य राज्यपाल के पास एक साथ नाव से गए, जो ईसाइयों को यातनाएँ दे रहा था, और लुसियस ने, डिग्नियन को बताए बिना, खुद को अपने अत्याचारियों के हवाले कर दिया। वह गया और मूर्तिपूजक वेदियों को नष्ट कर दिया, जिसके लिए उसकी तलवार से सिर कलम कर दी गई। डिग्नियन ने उनके शरीर को ले जाकर उसे ठीक से दफनाया। इन पवित्र शहीदों की स्मृति पेरगा में स्थित सेंट थियोडोर के चर्च में मनाई जाती है[4845] ।

पवित्र शहीद साइप्रिलि उसी शहर की रहने वाली थीं जहाँ संत थियोडोर रहते थे। शादी के बाद, वह अपने पति के साथ लगभग दो साल तक रहीं और उनकी मृत्यु के बाद, 28 साल तक विधवा रहीं। भयंकर सिरदर्द से पीड़ित और अपने माता-पिता की चिंता में, वह संत थियोडोर बिशप के पास गई—जिन्हें मसीह में अपने विश्वास की घोषणा करने के लिए पहले ही कैद किया जा चुका था—इस उम्मीद में कि वह अपनी बीमारी से ठीक हो जाएगी। उसके द्वारा चंगा किए जाने के बाद, उसने उपर्युक्त महिलाओं, लूसिया और हेरोनिया के साथ, उसकी मृत्यु तक उसकी सेवा की; और जब उसकी मृत्यु हो गई, तो उसके खिलाफ इगमेन के पास एक शिकायत दर्ज की गई। इगमेन के सामने पेश होकर, उसने मसीह की गवाही दी और जब उसे मूर्तियों को बलिदान देने के लिए मजबूर किया गया तो उसने मना कर दिया, यह कहते हुए:

'ऐसी बलिदान मेरी स्वेच्छा से दी गई बलिदान नहीं होगी।'

तब जल्लादों ने उसे आग पर पकड़कर उसका हाथ जला दिया, और बाद में उसे एक पेड़ से लटका दिया और उसके शरीर को खुरचना शुरू कर दिया; उसके घावों से खून बह रहा था, जबकि उसके स्तनों से दूध निकल रहा था। इन यातनाओं के बीच, पवित्र शहीद ने अपनी आत्मा ईश्वर को सौंप दी।

हमारे पूजनीय पिता यूथिमियस, सुज़दाल के चमत्कारिक संत की अवशेषों की खोज

4 जुलाई को स्मरणोत्सव

[4846]सुज़दल शहर में स्थित हमारे प्रभु यीशु मसीह के दिव्य रूपांतरण को समर्पित मठ में, आदरणीय आर्चिमांड्राइट यूथिमियस चमत्कारिक और कई अन्य मठाधीशों के निधन के बाद, उसी मठ के भिक्षुओं में से कॉन्स्टेंटिन नाम का एक आर्चिमांड्राइट था। उनके कार्यकाल के दौरान, 1501 में, ईश्वर की इच्छा से, आग लग गई और मठ नष्ट हो गया। बाद में, कॉन्स्टेंटिन को चिंता होने लगी कि शायद उसने धन्य यूथिमियस को किसी तरह से दुख पहुँचाया था, या उनके आज्ञाओं या मठ में स्थापित रीति-रिवाजों का उल्लंघन किया था, और आग लगने का यही कारण था। लेकिन धन्य यूथिमियस एक भिक्षु के सपने में प्रकट हुए और उससे कहा:

'भाई! आर्चिमांड्राइट कॉन्स्टेंटिन से कह दो कि मैं उससे कोई बैर नहीं रखता।'

जागने पर, यह भिक्षु आर्चिमांड्राइट कॉन्स्टेंटिन के पास गया और उसे वह सब बताया जो उसने अपने सपने में देखा था। यह सुनकर, कॉन्स्टेंटिन ने प्रसन्नता व्यक्त की कि उसे क्षमा कर दिया गया है और उसने ईश्वर की स्तुति की, जो अपने सेवक, पूजनीय यूथिमियस के माध्यम से अद्भुत कार्य करते हैं। इसके कुछ समय बाद, कुछ धर्मपरायण

[4844] संतों के कृत्यों के अनुसार, पवित्र शहीद थियोडोर का निधन वर्ष 310 में हुआ था।

[4845] ग्रीक प्रस्तावना के अनुसार, पवित्र शहीदों का स्मरणोत्सव पेरगा में नहीं, बल्कि रेजियम में होता है। रेजियम, जिसे अब रेडोनियो के नाम से जाना जाता है, इटली में एपेनाइन प्रायद्वीप के दक्षिण-पश्चिमी सिरे पर, मेसिना जलडमरूमध्य के तट पर स्थित है।

[4846] यह, बेशक, उद्धारकर्ता और सेंट यूथिमियस के मठ को संदर्भित करता है, जिसकी स्थापना लगभग 1352 में सुज़दल के राजकुमार बोरिस कॉन्स्टेंटिनोविच के अनुरोध पर और उनके धन से, सुज़दल शहर के पास कामेनट्सा या कामेन्नी नदी के किनारे पर आदरणीय यूथिमियस द्वारा की गई थी। मठ की स्थापना का वर्णन आदरणीय यूथिमियस के जीवन में किया गया है, जो 1 अप्रैल के अंतर्गत दर्ज है।

लोगों ने मठ को जलकर खाक हो चुके सेलों के पुनर्निर्माण के लिए आवश्यक सामग्री दान की, और आर्चमैंड्राइट कॉन्स्टेंटिन ने उन्हें पहले की ही योजना के अनुसार फिर से बनाया।

जब आर्चमिांड्राइट कॉन्स्टेंटिन का निधन हो गया, तो मठ में उनकी जगह उसी मठ के एक भिक्षु, सिरिल नामक एक आर्चमिांड्राइट ने ले ली, जो बाद में रोस्तोव के आर्चबिशप बने। आध्यात्मिक और सांसारिक दोनों मामलों में एक बुद्धिमान व्यक्ति होने के नाते, सिरील ने यह सुनिश्चित करने के लिए हर संभव उपाय किया कि मठ के सामुदायिक जीवन के नियमों या रीति-रिवाजों में से किसी का भी उल्लंघन न हो। चर्च के संबंध में एक उत्तम विचार उनके मन में आया , और उन्होंने भाइयों से एक नया चर्च बनाने के बारे में परामर्श करना शुरू कर दिया, जो पिछले वाले से बड़ा था; क्योंकि यद्यपि मठ में उनका एक पत्थर का चर्च था, वह छोटा था और, इसके अलावा, वह पहले ही जीर्ण-शीर्ण हो चुका था, क्योंकि उसे स्वयं धन्य यूथिमियस ने बनाया था[4847] । यह सब सर्वशक्तिमान ईश्वर की दिव्य योजना का कार्य था, ताकि सुसमाचारों में कही गई उनकी यह बात पूरी हो सके: *'पहाड़ पर स्थित नगर छिपा नहीं रह सकता'* (मत्ती 5:14), और: *'कोई भी दीपक जलाकर उसे पात्र से नहीं ढाँकता और न ही उसे बिस्तर के नीचे रखता है'* (लूका 8:16; मत्ती 5:15)। इसी प्रकार, यह दीपक, पूजनीय यूथिमियस, इतने वर्षों तक भूमिगत छिपा नहीं रह सकता था। जब एक बड़े चर्च के निर्माण का काम पहले ही शुरू हो चुका था और मजदूर इसके दाहिने ओर एक खाई खोद रहे थे, तो उन्हें तीन पत्थरों से अस्तरित और तख्तों से ढका हुआ एक ताबूत मिला[4848] । इस खोज से हैरान होकर, मजदूरों ने आर्किमंड्राइट सिरिल को इसके बारे में बताया। तब उन्होंने घंटी बजाने का आदेश दिया[4849] । तुरंत ही, भाई-बंधु बड़ी खुशी से आनंदित होकर ताबूत के चारों ओर इकट्ठा हो गए। इसके बाद, आर्चमिांड्राइट कुछ भाइयों को साथ लेकर बिशप सिमियिन के पास गए और उन्हें इस अद्भुत चमत्कार के बारे में बताया। यह वृत्तांत सुनकर, बिशप सिमियिन ने इस चमत्कार के लिए परमेश्वर की महिमा की और निम्नलिखित शब्द कहे।

'"हे प्रभु, तूने ये बातें बुद्धिमानों और समझदारों से छिपा दीं और छोटे बच्चों पर प्रगट कीं" (मत्ती 11:25)।'

कुछ ही समय बाद, वह सभी पुरोहितों के साथ मठ आए और धन्य यूथिमियस की ताबूत के सामने झुककर उस ईश्वर का धन्यवाद किया, जो अपने संतों को महिमान्वित करता है। फिर उन्होंने ताबूत खोला और देखा कि संत का चेहरा दमक रहा था और उनके पहने हुए कपड़े ऐसे दिख रहे थे मानो उन्हें कल ही पहनाया गया हो। क्या अद्भुत चमत्कार है! कितने ही वर्ष बीत गेल[4850] , और न केवल परम आदरणीय संत का शरीर क्षय से अछूता रहा, बल्कि उनके वस्त्र भी क्षय से अछूते रहे! आदरणीय पिता के अवशेषों को चूमने के बाद, जब अंतिम संस्कार के भजन और स्तोत्र गाए जा रहे थे, उन्हें प्रभु और हमारे उद्धारकर्ता यीशु मसीह के दिव्य रूपांतरण के चर्च की दीवार में स्थापित किया गया, जहाँ वे आज भी मौजूद हैं। यह 1507 के 4 जुलाई को हुआ था। हमारे परमेश्वर की महिमा हो, अब और हमेशा और युगों-युगों तक।

18 जुलाई

5 जुलाई (पुराने कैलेंडर के अनुसार)

इसी दिन, हम इरिनोपोलिस के चमत्कार करने वाले, परम पूजनीय लैम्पाड का स्मरण करते हैं।

इसी दिन, 1422 में, रेडोनज़ के आश्चर्यकारक, पूजनीय सर्जियस के अवशेषों की खोज हुई।

माउंट अथोस के हमारे पूजनीय पिता अथानासियस का जीवन

5 जुलाई को स्मरण किया जाता है

[4847] यह चर्च लगभग 1352 में अभिषिक्त किया गया था; परिणामस्वरूप, इसके निर्माण के बाद 150 से अधिक वर्ष बीत चुके थे।

[4848] आदरणीय यूथिमियस ने स्वयं इन तीन पत्थरों को रूपांतरण चर्च की नींव में काटकर उन्हें भविष्य के वेदी के उत्तरी द्वार के पास, पवित्र वेदी के समीप, अपनी ताबूत रखने के लिए एक स्थान में ढाला, जहाँ बाद में उन्हें दफनाया गया।

[4849] मठों में, 'बेल' उस तख्ते का नाम था जिसे भिक्षुओं को चर्च या भोजन के लिए बुलाने हेतु बजाया जाता था।

[4850] आदरणीय यूथिमियस का 1 अप्रैल 1405 को निधन हो गया; परिणामस्वरूप, उनके निधन के दिन और उनके अवशेषों की खोज के बीच सौ से अधिक वर्ष बीत गए।

ट्रेबज़िॉन्ड नगर[4851] ने परम पूज्य अथानासयिस[4852] को, जो अमर प्रशंसा के योग्य पुरुष थे, नश्वर मानव जीवन में जन्म दयिा। बज़िान्टयिम (कॉन्स्टेंटनिोपल[4853]) ने उनके अध्ययन में पोषण कयिा, जबकि कैसिरिया[4854] में स्थति मठ और माउंट एथोस[4855] ने उन्हें ईश्वर को प्रसन्न करने वाला फल के रूप में प्रस्तुत कयिा। अथानासयिस के माता-पति कुलीन और धार्मकि लोग थे। उनके पति अंकोना[4856] से थे, और उनकी माँ कोल्चसि[4857] से थीं। वे ट्रेबज़िॉन्ड में रहते थे। अथानासयिस के पति उनके जन्म से पहले ही मर गए थे, और उनकी माँ, अथानासयिस को जन्म देने और पवत्रि बपतस्मिा द्वारा उनका पुनर्जन्म करने के बाद, अपने पत के बाद ईश्वर के पास चली गईं। बच्चे को उसके पवत्रि बपतस्मिा पर अव्रामयिस नाम दयिा गया था। माता-पति की मृत्यु के बाद, लंगोटों में लपिटे उस बच्चे को, जो पूरी तरह से अनाथ हो गया था, एक कुलीन नन ने अपने संरक्षण में ले लयिा और उसका पालन-पोषण कयिा। अपने बाल्यकाल में ही, अव्रामयिा ने ऐसे संकेत दखिाए जो इस बात का पूर्वाभास दे रहे थे कि वयस्क होने पर वह कसि प्रकार का जीवन जएिगा। एक छोटे बच्चे के रूप में, वह एक समझदार और सुसंस्कृत व्यक्ति की तरह व्यवहार करता था, इतना कि जब वह अपने साथयिों के साथ बच्चों के खेल खेलता भी था, तो वे अव्रामयिा को राजा या कमांडर नहीं, बल्कि मठाधीश (अबॉट) चुनते थे। वास्तव में, बचपन से ही वह संन्यासी जीवन का आदी हो गया था; उसे पालने वाली नन को लगातार प्रार्थना और उपवास में लगे देख, उसने एक लड़के के लिए जहाँ तक संभव था, उपवास करके और प्रार्थना करके उसकी नकल करने का प्रयास कयिा। तब की प्राथमकि स्कूल मानी जाने वाली शक्षिा ग्रहण करते समय भी वह अपने साथयिों से आगे था। इस प्रकार, शरीर और मन दोनों से वकिसति होकर, अव्रामयि ने अपने बाल्यकाल से वदिा ली। – उस समय, वह नन, जो उसके लिए माँ जैसी थीं, का नधिन हो गया। अव्रामयि, जो अब दूसरी बार अनाथ हो चुका था, ने उनके नधिन का शोक उसी प्रकार मनाया जैसे वह अपनी ही माँ के नधिन का शोक मनाता। तब वह आगे की पढ़ाई के लिए बज़िान्टयिम जाना चाहता था। परमेश्वर, जो अनाथों की परवाह करते हैं, ने उसकी इच्छा इस प्रकार पूरी की। उस समय, धार्मकि सम्राट रोमानस[4858] ग्रीस पर शासन कर रहे थे। उन्होंने महल के एक खसास[4859] को व्यापार कर एकत्र करने के लिए ट्रेबज़िॉन्ड भेजा। सुंदर और बुद्धमिान युवक अव्रामयिस से मलिने के बाद, ख़ास ने उसे अपने साथ बज़िान्टयिम ले गया और वहाँ उसकी दार्शनकि शक्षिा का जम्मिा अथानासयिस नामक एक उत्कृष्ट शक्षिक को सौंप दयिा। शष्यि जल्द ही ज्ञान में अपने गुरु के बराबर हो गया।

[4851] यह एशयिा माइनर के उत्तर-पूर्वी क्षेत्र में, पोंटस में, गसिा नदी के पश्चमि में, समुद्र तट पर स्थति था।

[4852] अथानासयिस – ग्रीक से अनुवादति, इसका अर्थ है 'अमरत्व'।

[4853] बाइज़ेन्टयिम – बोस्फोरस के यूरोपीय कनिारे पर 658 ईसा पूर्व में स्थापति एक मेगारीय उपनविेश; गोल्डन हॉर्न, जो अपनी प्राकृतकि वशिषताओं और ब्लैक सी को मार्मारा सागर से जोड़ने वाली संकरी जलडमरूमध्य पर अपनी प्रभुत्वशाली स्थति के लिए उल्लेखनीय एक खाड़ी है, ने एक व्यापार और उद्योग केंद्र के रूप में इसकी महत्वता सुनश्चिति की। सम्राट कॉन्स्टेंटाइन महान ने, बज़िान्टयिम के स्थान के लाभों को पहचानते हुए, (330 में) रोमन साम्राज्य की राजधानी यहाँ स्थानांतरति कर दी, जसिके कारण बज़िान्टयिम ने वशि्व-ऐतहिासकि महत्व प्राप्त कर लयिा; इसने अतीत के साथ अपने संबंध तोड़ लिए और इसे कॉन्स्टेंटनिोपल, यानी नया रोम के नाम से जाना जाने लगा।

[4854] नीचे देखें, संत माइकल मेलेन का जीवन।

[4855] माउंट अथोस (अथोस), ग्रीक में एजयिन ओरोस - पवत्रि पर्वत - एक संकीर्ण, पहाड़ी प्रायद्वीप है जो द्वीपसमूह (एजयिन सागर) में आगे बढ़ा हुआ है, और यह ग्रीक पूर्व के लिए मठवासी जीवन का केंद्र के रूप में जाना जाता है। प्राचीन काल में यहाँ मठवाद का उदय हुआ, हालांकि यह सीरयिा और फलिस्तीन की तुलना में कुछ बाद हुआ। रूसी चर्च के लिए, रूस में ईसाई धर्म की लगभग शुरुआत से लेकर 17वीं सदी तक, अथोस का बहुत महत्व था: यहीं पर रूसी मठवाद के पति, सेंट एंथनी ने अपने संन्यास का संकल्प लयिा था; यहीं, महान मठों के पुस्तकालयों में, हमारे संतों ने, जो अथोस की यात्रा पर आए थे, उस समय की सबसे व्यापक धार्मकि शक्षिा प्राप्त की (उदाहरण के लिए, सेंट नील ऑफ सोरा, †1508)। यहाँ वशिष अनुवादक और प्रतलिपिि बनाने वाले थे जो ऑर्थोडॉक्स रूस को भक्ति-प्रधान ग्रंथों के हस्तलखिति अनुवाद उपलब्ध कराते थे। – ऑर्थोडॉक्स पूर्व के सबसे पूजनीय पवत्रि स्थलों में से एक के रूप में, माउंट अथोस पर हर साल रूस, बाल्कन प्रायद्वीप और तुर्की के एशयिाई क्षेत्रों से हजारों पुरुष तीर्थयात्रयिों द्वारा यात्रा की जाती है (महलिाओं को मठ में प्रवेश की मनाही है)। गहरी घाटयिों और चट्टानी उभारों को छोड़कर, लगभग पूरा पहाड़ हरी-भरी वनस्पतयिों से ढका हुआ है: यहाँ नींबू, संतरे और नाशपाती के पेड़ उगते हैं, जनिके बीच-बीच में अखरोट, जैतून और शाहबलूत के पेड़ होते हैं; पूरे खेतों में अंगूर की वभिन्नि कस्मिों की खेती की जाती है, और यहाँ बीस से अधकि समृद्ध मठ, कई तपस्थल और सैकड़ों व्यक्तगित सेल हैं – ग्रीक, रूसी, मोल्डोवन, बुल्गेरयिाई और अन्य।

[4856] संभवतः यह पसिडियिन एंटओिक से था, जसिका नाम एशयिा माइनर में पसिडियिा क्षेत्र के नाम पर रखा गया था, जहाँ यह शहर स्थति था।

[4857] कोल्चसि – यूक्सनि सागर (ब्लैक सी) के दक्षणि में स्थति एक देश, जो कॉकेसस, इबेरयिा और आर्मेनयिा के बीच था।

[4858] रोमन द्वतिीय, 957–963।

[4859] प्राचीन काल में, नपुंसक वे पुरुष थे जो शाही दरबारों में खजाने और शाही कोषागार के संरक्षक के रूप में, और वशिष रूप से राजा, रानयिों और राजकुमारयिों के शयनकक्षों में रक्षक के रूप में सेवा करते थे। अधकिांशत; नपुंसक खतना कएि हुए पुरुष होते थे। बीजान्टनि दरबार में, नपुंसक का पद एक अत्यंत सम्मानति पद था।

उन वर्षों में, बज़िान्टियम में ज़ेफ़निज़र नाम का एक सैन्य गवर्नर रहता था; उसने अव्राम के एक रश्तिेदार का अपने बेटे से ववािह करा दयिा था, और अव्राम से मलिने के बाद, उसे अपने घर में ले लयिा। हालाँकि युवा अव्राम एक ऐसे अमीर घर में रहता था जो स्वादष्टि व्यंजनों से लबालब भरा था, फरि भी उसने उस तपस्वी आत्म-संयम को नहीं छोड़ा, जसिकी वह उस नन के मार्गदर्शन में आदी हो गया था जसिने उसका पालन-पोषण कयिा था। शाही भोजन के सुखों से बचते हुए, अव्राम ने राज्यपाल की मेज पर खाने से इनकार कर दयिा, लेकनि अपनी भूख—और वह भी केवल आवश्यकता के कारण—कच्ची जड़ी-बूटियों और सब्जयिों से शांत करता था। वह हमेशा सतर्क रहने का प्रयास करता था; इसलिए, स्वाभावकि नींद पर काबू पाने और उनींदापन को दूर करने के लिए, वह एक पात्र पानी से भरकर उसमें अपना चेहरा डुबो देता था; हर तरह से खुद को थकाकर, अव्राम ने अपने शरीर को वश में कयिा और उसे अपनी आत्मा के अधीन कर दयिा। इतने पुण्य जीवन और अपनी असाधारण बुद्धकि के कारण, अव्राम सभी का प्रयि था और वह लोगों के साथ-साथ स्वयं सम्राट के भी परचिति हो गया। अंतत; अव्राम को उनके पूर्व शक्षिक, अथानासयिस के बराबर दर्जे पर राज्य स्कूल में एक शक्षिक के रूप में नयिुक्त कयिा गया। हालाँकि, चूँकि अव्राम की शक्षिा अथानासयिस की तुलना में अधकि लोकप्रयि थी—इसीलिए अथानासयिस की तुलना में अधकि छात्र उनके चारों ओर इकट्ठा हो गए—बाद वाले, , अपने पूर्व छात्र से ईर्ष्या करने लगे और उससे नफरत करने लगे। यह जानने पर, धन्य अव्रामयिस ने अपने शक्षिक को कोई दुख नहीं पहुँचाने की इच्छा से जल्द ही अपने शक्षिण पद से इस्तीफा दे दयिा; वह उपर्युक्त वोवोद के घर में रहने लगा, और अपने सामान्य तपस्या के कार्यों में स्वयं को समर्पति कर दयिा। इसके बाद, सम्राट ने राज्य की आवश्यकताओं के अनुसार, वोवोद को ईजयिन[4860] सागर के लिए समुद्र यात्रा करने का आदेश दयिा। वॉयवोड, जो अव्रामयिस का बहुत बड़ा प्रशंसक था, उसे अपने साथ ले गया जब वह ज़ार के आदेश पर समुद्र यात्रा पर नकिला। वे अवदिा तक नौकायन करके गए, और वहाँ से लमिन पहुँचे। वहाँ, माउंट अथोस को देखकर, अव्रामयिस को वह बहुत पसंद आ गया और उसने वहाँ बसने पर वचिार कयिा। जब वे सम्राट का काम पूरा करके घर लौटे, तो दैवीय व्यवस्था से, माउंट एथोस के पास कमिन मठ से सम्माननीय माइकल, जो मेलेन के नाम से जाने जाते थे, कॉन्स्टेंटनिोपल पहुँचे। जब अव्रामयिस को पूजनीय पतिाजी के धार्मकि जीवन के बारे में पता चला, तो वह अति प्रसन्न हुआ और उनसे मलिने के लिए नकिल पड़ा। उसे बड़े भाई के साथ बातचीत से बहुत आनंद मलिा; और उनकी दव्यि प्रेरति शक्षिाओं का पालन करते हुए, अव्रामयिस में एक भक्षिु के रूप में ईश्वर की सेवा करने के लिए संसार को त्यागने की और भी तीव्र इच्छा जागृत हुई। उसने अपना इरादा और इच्छा पूजनीय माइकल को बताई, और उन्हें अपने बारे में बताया—कि वह कहाँ से आया था, उसके माता-पति कौन थे, उसकी परवरशि कैसी हुई थी, और वह कमांडर के घर में क्यों रह रहा था। यह भांपते हुए कि अव्रामयिस पवत्रि आत्मा का पात्र बनेगा, पूजनीय व्यक्ति को उस पर बहुत स्नेह हो गया और उन्होंने उसे मोक्ष के बारे में वस्तिार से उपदेश दयिा, और उसके हृदय में ईश्वर के वचन के बीज बोए, जैसे उपजाऊ भूमि में, ताकि वह सद्गुणों की सौ गुना फसल उगा सके। जब वे आध्यात्मकि बातचीत में व्यस्त थे, तब रेवरेंड माइकल से उनके भतीजे नकिफिोरस, जो पूर्व का एक सैन्य कमांडर था, से भेंट हुई, जो बाद में यूनानी सम्राट[4861] बना। अपने रेवरेंड चाचा के साथ अपनी बातचीत के दौरान, उसने युवा अवरमयिस को देखा और बड़े से पूछा कि वह कौन था। संत ने उसे अव्राम के बारे में सब कुछ बताया, जसिमें यह भी शामलि था कि वह भक्षिु बनना चाहता था; उस समय से अव्राम नकिफिोरस को जाना जाने लगा। कुछ दनिों बाद, आदरणीय माइकल कॉन्स्टेंटनिोपल से अपने मठ लौट आए; हालाँकि, अव्राम अब सांसारकि जीवन की भाग-दौड़ को सहन नहीं कर सकता था, बल्कि सभी सांसारकि चीजों को तुच्छ समझकर और मठ जीवन की लालसा तथा आदरणीय माइकल के प्रति अपने प्रेम से प्रेरति होकर, उनसे मलिने के लिए दौड़ पड़ा। कमिन मठ पहुँचने पर, वह पवत्रि वृद्ध माइकल के चरणों में गरि पड़ा, और आँसू भरी वनिती करने लगा कि वह उसे संन्यासी का वस्त्र पहनाकर मसीह के आध्यात्मकि भेड़ों के चुने हुए झुंड में शामलि कर लें। आदरणीय माइकल ने अव्राम का गर्मजोशी से स्वागत कयिा: न तो उन्होंने उसकी वनिती को पूरा करने में देरी की और न ही उसे परीक्षा अवधकि लिए भेजा, बल्कि आदरणीय माइकल ने तुरंत अव्राम का मुंडन कर दयिा और उसे अथानासयिस नाम दयिा, एक पहले से ही अनुभवी तपस्वी के रूप में, क्योंकि उन्होंने उसमें ईश्वर के प्रति गहरा प्रेम देखा था। हालांकि उस मठ में मुंडन के बाद भक्षिुओं द्वारा बाल-कपड़ा पहनने की प्रथा नहीं थी, फरि भी धन्य माइकल ने अथानासयिस को एक बाल-कपड़ा पहनाया - जैसे कि वे मसीह के एक वीर योद्धा को उसके शत्रुओं के वरिुद्ध

[4860] या द्वीपसमूह।

[4861] नकिफ़ोरस द्वतिीय फोकास – 963 से 969 तक सम्राट।

कवच पहनाकर लैस कर रहे हों; अथेनासियस ने पवित्र वरिष्ठ से निवेदन किया कि उसे सप्ताह में केवल एक बार भोजन करने का कार्य सौंप दें। लेकिन बुद्धिमान गुरु ने अपने शिष्य की बात को बीच में ही काटते हुए, उसे तीसरे दिन भोजन करने का आदेश दिया। अथानासियस ने अपने लिए सौंपी गई सभी मठवासी और चर्च संबंधी कर्तव्यों को लगन से निभाया, और साथ ही अपने मठवासी श्रम में भी अथक रहे। जहाँ तक मठवासी कार्य से मुक्त समय की बात है, उन्होंने उसे अपने आध्यात्मिक पिता के निर्देशों पर, पवित्र ग्रंथों की प्रतिलिपि बनाने में समर्पित किया। ऐसी लगन के लिए, अथानासियस पूरे ब्रदरहुड में प्रिय थे; इस प्रकार, चार वर्षों के दौरान, उन्होंने खुद को मठ जीवन में परिपूर्ण साबित कर दिया। – इसके बाद, माननीय पिता ने उन्हें मठ से 'पोप्रश्चे' दूर, रेगिस्तान में स्थित एक कोठरी में मौन जीवन जीने का आदेश दिया[4862] ; साथ ही, वरिष्ठ ने उसे उपवास के बारे में निम्नलिखित निर्देश दिया: तीसरे दिन भोजन न करना, जैसा कि वह तब तक करता आ रहा था, बल्कि दूसरे दिन सूखी रोटी खाना और थोड़ा पानी पीना; प्रभु और परमेश्वर की माता के सभी पर्वों पर, और रविवार को, उन्होंने उसे आज्ञा दी कि वह शाम से लेकर दिन के तीसरे घंटे तक प्रार्थना और परमेश्वर की महिमा में जागकर रहे।

कुछ समय बाद, पूर्व का उपर्युक्त कमांडर, निकिफोरस – जो परम पूजनीय माइकल के भतीजे थे – शाही कर्तव्य पर रहते हुए और मठ के पास से गुजरते हुए, अपने पूजनीय चाचा माइकल से मिलने आए; अपनी बातचीत के दौरान, उन्होंने अव्रामियस को याद किया और पूछा:

'फादर, वह युवक अव्रामियस कहाँ है जिसे मैंने आपको साम्राज्यिक शहर में देखा था?'

'वह तुम्हारे उद्धार के लिए ईश्वर से प्रार्थना कर रहा है,' बड़े ने उत्तर दिया। 'वह अब एक भिक्षु है और उसका नाम अव्राम से बदलकर अथानासियस रख दिया गया है।'

संयोग से, निकिफोर अपने भाई, कुलीन[4863] लियो के साथ था। अथानासियस के सदाचारी जीवन के बारे में सुनकर, उन्होंने दोनों ने उनसे मिलने की अनुमति मांगी, और चूंकि बड़े संन्यासी को कोई आपत्ति नहीं थी, वे उस स्थान के लिए रवाना हो गए जहाँ अथानासियस मौन में रह रहे थे। उन्हें देखते ही अथेनासियस ने आध्यात्मिक ज्ञान से परिपूर्ण संवाद शुरू कर दिया, क्योंकि उनके होठ पवित्र आत्मा की कृपा से सराबोर थे। वे उनके शब्दों से इतने प्रसन्न हुए कि उन्होंने हमेशा उनके साथ रहने की इच्छा व्यक्त की, यदि वे अपने कर्तव्यों और सांसारिक चिंताओं से खुद को मुक्त कर सकें। इसके बाद वे आदरणीय माइकल के पास लौटे और उन्होंने उनसे कहा:

'हम आपको धन्यवाद देते हैं, पिताजी, कि आपने हमें अपने झुंड के खेत में छिपाया हुआ खजाना दिखाया।'

इस बीच, वृद्ध ने अथेनासियस को बुलाकर उन्हें निर्देश दिया कि वे आगंतुकों को एक बार फिर आत्मा के उद्धार पर उपदेश दें। और संत के होठों के माध्यम से प्रभु की कृपा इस प्रकार काम किया कि उनके शब्द सुनने वाले दया से भर गए, उनके हृदय टूट गए, और वे रो पड़े। वास्तव में, वरिष्ठ स्वयं अथेनासियस के होठों से निकलने वाली शिक्षा की कृपा को देखकर चकित रह गए। उस समय से, सैन्य कमांडर निकिफोरस और कुलीन लियो धन्य अथेनासियस के बहुत प्रिय हो गए। और, निजी तौर पर उनके साथ अलग होकर, निकिफोरस ने अपना इरादा उनके सामने प्रकट करते हुए कहा:

'पिताजी, मैं संसार के कोलाहल से अलग हो जाना चाहता हूँ और इस जीवन की चिंताओं से मुक्त होकर, मठवास में मौन होकर ईश्वर की सेवा करना चाहता हूँ।' यह इच्छा और संकल्प मुझमें मुख्य रूप से आपके दैवीय प्रेरित शब्दों के प्रभाव से ही जड़ें जमा चुके हैं, और मुझे यह आशा है कि आपकी पवित्र प्रार्थनाओं की सहायता से, मैं वह प्राप्त कर सकूँ जो मैं चाहता हूँ।' धन्य अथानासियस ने उनसे उत्तर दिया:

– हे पुत्र! अपनी आशा ईश्वर में रखो – और वह तुम्हारे लिए तुम्हारी इच्छानुसार सब कुछ व्यवस्थित कर देगा।

इस प्रकार, लंबी बातचीत के बाद, निकिफोर और लियो अपनी आत्माओं को महान लाभ पहुँचाकर फिर से अपनी यात्रा पर निकल पड़े।

आदरणीय माइकल का इरादा था कि वे अथानासियस को अपना उत्तराधिकारी बनाकर मठाधीश नियुक्त करें, क्योंकि वे स्वयं बूढ़े हो गए थे और अपने जीवन के अंत के करीब थे। यह जानकर, अथेनासियस, यद्यपि वह अपने प्रिय

[4862] 'पॉप्रचि' दूरी की एक इकाई है जो लगभग 690 फथॉम के बराबर होती है।

[4863] सम्राट कॉन्स्टेंटाइन द ग्रेट के समय तक, यह केवल कुलीन जन्म के व्यक्तियों, मुख्य रूप से सीनेटरों के वंशजों के लिए आरक्षित था; कुलीन वर्ग, अपनी वंशावली के नाते, सार्वजनिक भूमि के उपयोग और निजी कानून के मामलों में विभिन्न विशेषाधिकारों का आनंद लेते थे; हालाँकि, सम्राट कॉन्स्टेंटिन ने कुलीन पद को एक व्यक्तिगत सम्मान बना दिया, जो उच्च-पदस्थ अधिकारियों को प्रदान किया जाता था और वंशानुगत नहीं था।

पिता से अलग नहीं होना चाहता था, फिर भी नेतृत्व के बोझ के डर से और स्वयं को पादरी के पद के लिए अयोग्य समझकर वहाँ से भाग गया; वह अथोस पर्वत पर घूमता रहा, मरुभूमि के संतों से मिलता रहा, और उनके सदाचारी जीवन के उदाहरण से भक्ति के महान कार्यों के लिए प्रेरित हुआ। चट्टानों की दरारों में कुछ भाइयों को एक-दूसरे के पास रहते हुए पाकर, वह उनके बीच बस गया और उनके कठोर जीवन शैली का अनुकरण करने लगा। उन्हें शरीर की कोई चिंता नहीं थी; उनके पास न तो आश्रय था, न भोजन, न ही कोई संपत्ति, लेकिन ईश्वर के लिए वे स्वेच्छा और खुशी से ठंड और गर्मी, और भूख दोनों को सहते थे।

वे उस निर्जन स्थान में उगने वाली जंगली सब्जियों से अपनी भूख मिटाते थे, और केवल नियत समय पर थोड़ा सा ही खाते थे। उस समय, पूजनीय माइकल मेलेन का निधन हो गया। उनके निधन की खबर सुनकर, अथानासियस उनके लिए वैसे ही रोया जैसे एक बेटा अपने पिता के लिए रोता है। उसे यह भी पता चला कि सैन्य कमांडर निकिफिोरस, अपने भाई, कुलीन लियो के साथ, फिर से उस जगह से होकर गुजरेंगे, और उसे डर था कि वे फिर से उसकी तलाश शुरू कर देंगे। इसलिए वह तपस्वियों से अलग हो गया, क्योंकि वे शेष मठवासी समुदाय में जाने जाते थे और अक्सर मिलने आते थे; इस डर से कि मिलने आने वाले उसे पहचान सकते हैं, अथानासियस ग्रीक में 'तुज़िगा' के नाम से प्रसिद्ध एक दूरस्थ मठ के लिए निकल पड़ा। वहाँ मठ के बाहर मौन में रहने वाले एक वृद्ध व्यक्ति को पाकर, उसने उससे उसे आश्रय देने के लिए कहा; और नाम से पहचाने न जाने के लिए, उसने अपना नाम अथेनासियस के बजाय बरनबास रख लिया।

इस बीच, बूढ़े ने उससे पूछा, कहते हुए:

'तुम कौन हो, भाई? तुम कहाँ से आए हो, और यहाँ क्यों आए हो?'

'मैं एक नाविक था,' अथानासियस ने उत्तर दिया, 'और मुसीबत में पड़ने के बाद, मैंने ईश्वर से संसार त्यागने और अपने पापों पर पश्चाताप करने का व्रत लिया। 'इसी कारण से, मैंने पवित्र संन्यासी जीवन अपनाया है और, ईश्वर के मार्गदर्शन में , मैं यहाँ आपकी पवित्रता के पास आया हूँ, आपकी संगति में रहने और मोक्ष के मार्ग पर आपका मार्गदर्शन प्राप्त करने की इच्छा से। मेरा नाम बरनबास है।'

अथेनासियस की बात पर विश्वास करके, बड़े भाई ने उसे आश्रय दे दिया, और वहाँ अपने शेष समय में बरनबास बड़े भाई के साथ रहा, और हर बात में उनकी आज्ञा एक पिता की तरह मानी। कुछ समय बीत जाने के बाद, उसने बड़े भाई से कहा:

'पिताजी, कृपया मुझे पढ़ना सिखाना शुरू करें, ताकि मैं कम से कम कुछ हद तक भजन संहिता पढ़ सकूँ। जब मैं संसार में रहता था, तो मुझे जहाज पर नौकायन करने के अलावा और कुछ नहीं पता था।'

तब धन्य अथेनासियस ने यह दिखावा किया कि वह निरक्षर है, ताकि जो लोग उसे ढूंढने आएँ वे उसे पहचान न सकें। तब उस वृद्ध ने उसके लिए एक वर्णमाला लिखी और उसे ऐसे सिखाया मानो वह कोई साधारण व्यक्ति हो जिसे पहले कभी कुछ नहीं सिखाया गया हो। इस बीच, बर्नबास ने यह दिखावा किया कि वह वर्णमाला को समझ या याद नहीं कर पा रहा था। वह लंबे समय तक ऐसा ही करता रहा, जबकि बड़े भाई उसके लिए दुखी थे; और कभी-कभी, नाराज़ होकर, वे उसे गुस्से में भगा देते थे। हालाँकि, बर्नबास विनम्रता से कहता था:

'पिताजी, मुझे भगा न दें, क्योंकि मैं मूर्ख और दुष्ट हूँ; परन्तु परमेश्वर के वास्ते, मुझ पर धीरज रखें और अपनी प्रार्थनाओं से मेरी सहायता करें, ताकि प्रभु मुझे समझ दे।'

[4864]इसके बाद, शिष्य धीरे-धीरे लिखे हुए अक्षरों को समझने लगा, और इससे वृद्ध को आशा हुई कि शिष्य एक दिन साहित्यिक ज्ञान में पारंगत हो जाएगा। उस समय, सबसे प्रसिद्ध पूर्वी सैन्य कमांडर निकिफिोरस, यह जानकर कि अथानासियस कमिन मठ से भाग गया था, बहुत दुखी हुआ और इस बात पर विचार करने लगा कि वह उसे कैसे ढूंढ सकता है। उसने एथोस के न्यायाधीश को पत्र लिखा, जिसमें उसे माउंट एथोस की यात्रा करने और अथानासियस के बारे में गहन पूछताछ करने का निर्देश दिया। पत्र पढ़ने के बाद, न्यायाधीश तुरंत पवित्र पर्वत के लिए रवाना हो गया और, एथोस मठों के सभी मठाधीशों के प्रमुख—प्रोटोस—को बुलाकर, उसने उससे भिक्षु अथेनासियस के बारे में पूछताछ की, और उसे उसके चेहरे की बनावट, उम्र और साहित्यिक कौशल के बारे में बताया, जैसा कि निकिफिोरस ने उसे सूचित किया था। प्रोटोस ने निश्चित रूप से कहा:

[4864] थेस्सालोनिकी – मैसेडोनिया का एक शहर।

'आप जैसा आदमी जिसकी तलाश कर रहे हैं, वह कभी इस पहाड़ पर नहीं आया है; हालाँकि,' उसने आगे कहा, 'मैं निश्चित रूप से नहीं कह सकता।' यहाँ जल्द ही एक परिषद आयोजित होने वाली है, जिसमें इस पहाड़ पर रहने वाले सभी लोगों का उपस्थित होना अनिवार्य है। और इसलिए, यदि आप जिस भिक्षु की तलाश कर रहे हैं, वह इस पहाड़ पर कहीं भी है, तो वह निश्चित रूप से परिषद में दूसरों के बीच उपस्थित होगा, और उस समय हम उसे पहचान लेंगे।"

न्यायाधीश थ्रेसलॉनिकी लौट आए।

उस समय, माउंट अथोस पर यह प्रथा थी कि भाई साल में तीन बार तथाकथित कैरीज़ मठ में तीन विशेष पर्वों के दिनों पर इकट्ठा होते थे: मसीह का जन्म, ईस्टर और परमेश्वर की परम पवित्र माता का निद्रोपवेश। इन समयों पर एकत्रित होकर, भिक्षु एक साथ उत्सव मनाते थे, मसीह के शरीर और रक्त के दैवी रहस्यों को ग्रहण करते थे और एक सामूहिक भोजन साझा करते थे। जब मसीह के जन्म का पर्व आया और मठों तथा एकांतवासों से पिता और भाई इकट्ठा हो गए, तो वह वृद्ध—एक शिक्षक जो खुद को बरनबास कहता था—अपने शिष्य के साथ प्रकट हुआ। प्रोटोस ने भाइयों पर ध्यान से दृष्टि डाली, निकिफोरस द्वारा दिए गए विवरण से मेल खाने वाले एक भिक्षु की तलाश में। ऐसे ही एक भिक्षु को देख कर, उन्होंने उसका नाम पूछा; और जब उन्होंने सुना कि उसका नाम बरनबास है, तो उन्हें संदेह हुआ - क्योंकि जिस भिक्षु की वह तलाश कर रहे थे, उसका नाम अथानासियस था। हालाँकि, प्रोटोस ने भिक्षु की पहचान पढ़ने और लिखने के कौशल से करने का फैसला किया। और इसलिए, जब पढ़ने का समय आया और एक किताब प्रस्तुत की गई, तो प्रोटोस ने बर्नबास नामक भिक्षु को सभा के सामने निर्धारित अंश पढ़ने का आदेश दिया। लेकिन बर्नबास ने यह दावा करते हुए मना कर दिया कि वह अनपढ़ और निरक्षर है। यह देखकर वरिष्ठ मुस्कुराए और धीरे से हँसते हुए, आदेश देने वाले से कहा:

'Abba[4865] , उसे जाने दो – वह एक अनुभवहीन भाई है और अभी केवल प्रथम भजन के अक्षरों और अंशों को जोड़ना सीख रहा है।'

लेकिन प्रोटोस ने ज़ोर दिया, और उसे धमकी देकर पढ़ने का आदेश दिया। तब धन्य अथानासियस, यह समझते हुए कि अब वह और अधिक छिपि नहीं सकता, और धमकी से विवश होकर, ईश्वर द्वारा स्थापित प्राधिकरण का पालन किया और अपनी पूरी क्षमता से पढ़ना शुरू कर दिया – जिससे उसकी गूंजती आवाज़ और असाधारण अभिव्यक्ति सामने आई, जिससे जो भी सुने वे सभी चकित रह गए। वरिष्ठ आश्चर्यचकित और स्तब्ध रह गए, उन्होंने वह देखा और सुना जिसकी उन्हें उम्मीद नहीं थी, और अपनी ही शिक्षा पर उन्हें शर्म आई; फिर भी, उसी समय वे प्रसन्न हुए, और ईश्वर को आँसुओं के साथ धन्यवाद देने लगे कि उन्हें इतने विद्वान व्यक्ति का शिक्षक बनने के लिए योग्य समझा गया। तब अथेनासियस को पहचाना गया, और सभी ने उसे सम्मान के साथ व्यवहार किया; और ज़िरोपोतामोस क्षेत्र के सबसे सम्मानित पिताओं में से एक, पौलुस नामक, ने भाइयों से अथेनासियस के बारे में भविष्यद्वाणी की:

'यह भाई, जो हमसे बाद में इस पहाड़ पर आया है, ने सद्गुणों में हमसे बढ़कर प्रदर्शन किया है और स्वर्ग के राज्य में महिमा में हममें से सबसे प्रमुख होगा। वह मोक्ष के मार्ग पर कई लोगों के लिए एक पिता और मार्गदर्शक होगा।'

इसके बाद, प्रोटोस ने अथेनासियस को सूचित किया कि निकिफोरस और उनके भाई लियो उन्हें ढूंढ रहे थे। अथेनासियस ने प्रोटोस से विनती की कि वे उनके ठिकाने का पता न बताएं, कहीं ऐसा न हो कि उन्हें पवित्र पहाड़ छोड़ने के लिए मजबूर होना पड़े। तब प्रोटोस ने, यह महसूस करते हुए कि ऐसे व्यक्ति का खो जाना अथोस के लिए एक बड़ी क्षति होगी, उसे खोजने वालों को उसकी लोकांतरण का पता न बताने का वादा किया। जहाँ तक अथानासियस की बात है, उन्होंने उसे लाव्रा से तीन पोप्रीष्चा दूर स्थित एक सुनसान कोठरी में एकांत में चुपचाप रहने का आदेश दिया[4866] । यहाँ, एकांत में ईश्वर के लिए परिश्रम करते हुए, पूजनीय अथानासियस ने अपने हाथों से अपनी आजीविका अर्जित की। वे

[4865] अब्बा – पिता।

[4866] लावरा – ग्रीक शब्द से, एक शहर का एक हिस्सा; एक गली – विशेष रूप से, शहर के भीतर गली के रूप में अभ्यस्त की निवास के चारों ओर व्यवस्थित कोशिकाओं की एक पंक्ति, जो बाड़ या दीवार से घिरी होती है। लवरा में भिक्षु तपस्वी जीवन जीते थे और अपने-अपने कोठरी में तपस्या में लगे रहते थे, सप्ताह के पहले और आखिरी दिनों में दैवीय सेवा के लिए एकत्र होते थे, जबकि बाकी दिनों में सख्त मौन का पालन करते थे; लवरा में जीवन अन्य मठवासी समुदायों की तुलना में बहुत कठिन था। प्राचीन काल से, 'लव्रा' शब्द का प्रयोग बड़े और महत्वपूर्ण मठों के लिए किया जाता रहा है। यह सबसे पहले मिस्र में और बाद में फिलिस्तीन में प्रकट हुआ। वर्तमान में, हमारे देश में 'लव्रा' नाम का उपयोग विशेष रूप से एक सम्मान के रूप में किया जाता है।

कतिाबें लखिते थे, क्योंकि वे एक सुलेखक और तेज लेखक थे; छह दनिों के भीतर, सामान्य मठवासी नयिमों की अवहेलना कएि बनिा, उन्होंने संपूर्ण भजन संहति की प्रतलिपि तैयार की; कतिाबों की प्रतलिपि लिखिने के बदले में, संतों ने उन्हें रोटी प्रदान की।

जब आदरणीय अथानासयिस मौन में रह रहे थे, उस समय उपर्युक्त लयिो, नकिफिोरस का भाई, जो पहले से ही पश्चमि में एक सैन्य कमांडर था, क्रूर स्कैथयिनों पर ईश्वर और परमेश्वर की अति पवित्र माता की मदद से मलिी जीत के बाद युद्ध से लौटते हुए, अपने दुश्मनों पर मलिी इस जीत के लिए मसीह ईश्वर और उनकी अति पवित्र माता का धन्यवाद करने के लिए माउंट अथोस पर आया। धन्यवाद की प्रार्थना के बाद, लयिो ने उत्सुकता से अथानासयिस के बारे में पूछा और, उनके ठकिाने का पता चलने पर, वह उन्हें उनकी मौन कुटयिा में मलिने के लिए नकिल पड़ा। अथेनासयिस को देखकर लयिो अत्यंत प्रसन्न हुआ; उसने उसे गर्मजोशी से गले लगाया और खुशी के मारे रो भी पड़ा। उसने अथेनासयिस के ईश्वर-प्रेरति शब्दों का आनंद लेते हुए, दनि-रात उसके साथ वार्तालाप कयिा। कमांडर के अथेनासयिस के प्रति गिहरे स्नेह को देखकर, भक्षिुओं ने अथेनासयिस से अनुरोध कयिा कि वह लयिो से कैरी लाव्रा में भक्षिुओं के लिए एक नया, वशिाल चर्च बनवाने का प्रबंध करने के लिए कहें, क्योंकि पुराना चर्च पूरे समुदाय के लिए बहुत छोटा था। अथेनासयिस ने यह बात कमांडर को बताई। मसीह-प्रेमी कमांडर ने तुरंत और खुशी-खुशी चर्च के नरि्माण के लिए उन्हें बहुत सारा चाँदी और सोना दे दयिा। तब अथानासयिस और अन्य पादरयिों से वदिा लेकर, लयिो कॉन्स्टेंटनिोपल के लिए रवाना हो गया, जहाँ उसने अपने भाई नकिफिोरस को अथानासयिस के बारे में बताया। उस समय से, माउंट अथोस के पादरयिों ने अथानासयिस के साथ वशिेष सम्मान से पेश आना शुरू कर दयिा और उसकी प्रशंसा की; कई लोग आध्यात्मकि लाभ के लिए उसके पास आने लगे।

इस बीच, पूजनीय पति, जो मौन से प्रेम करते थे और जहाँ भी जाते थे मानव महमिा से दूर रहते थे, अपने नविास स्थान से हटकर पहाड़ी रेगस्तिान के भीतरी हस्सिों में भटकते रहे; ईश्वर के मार्गदर्शन में, वह अथोस के बलिकुल कनिारे, मेलाना नामक एक क्षेत्र में पहुँचे, जो एक वशिाल नरि्जन स्थान था और तपस्वयिों के अन्य आवासों से बहुत दूर स्थति था। चोटी पर एक खुला मैदान वाली पहाड़ी पर एक झोपड़ी बनाकर, अथानासयिस ने वहाँ तपस्या करना शुरू कर दयिा, और भक्ति के सर्वोच्च कार्यों के लिए प्रयास करने लगे। शुरुआत में, धूर्त शत्रु, शैतान, उस आदरणीय को भगाने की इच्छा से, इस नए नविास-स्थान को उनके लिए घृणति बनाने लगा, और उनके मन में जाने के लिए एक लगातार, और जसिे रोकना मुश्कलि था, ऐसा वचिार उत्पन्न कयिा। लेकनि उस अच्छे तपस्वी ने नम्निलखिति चतिन से अपने संदेहों पर वजिय प्राप्त की:

'मैं इस पूरे वर्ष यहाँ सहन करूँगा, और वर्ष के अंत में मैं वही करूँगा जो ईश्वर चाहेंगे।'

जब नरि्धारति समय बीत गया, वर्ष के अंतमि दनि तपस्वी पर जाने के लिए वशिेष रूप से प्रबल वचिार हावी हो गए, इसलिए उसने अपने आप से कहा:

'सुबह मैं यहाँ से चल जाऊँगा और कैरी लाव्रा लौट जाऊँगा।'

तब वह प्रार्थना करने के लिए उठे, उन्होंने तृतीय घंटा का पाठ कयिा, और अचानक एक दविय प्रकाश प्रकट हुआ और उन्हें घेरे हुए, और वचिारों का बादल तुरंत छंट गया। अकथनीय आनंद और आनंदोन्माद की भावना के साथ, संत ने दविय प्रेम से परपिूर्ण हृदय से आनंद के आँसू बहाए। उस समय से, पूजनीय अथानासयिस को पश्चाताप का वरदान मलिा और वे जब चाहें रोते थे। वे उस स्थान से उतना ही प्रेम करने लगे जतिना कि वे पहले उससे घृणा करते थे, और वे वहाँ ईश्वर की महमिा करते हुए रहे। उस समय, सम्राट द्वारा कमांडर नकिफिोरस को एक सेना के साथ क्रीट द्वीप[4867] भेजा गया था, जसि पर तब मुसलमानों ने कब्जा कर लयिा था । ग्रीक सेना की ताकत में कोई उम्मीद न रखकर, बल्कि पवित्र संतों की मध्यस्थता की कामना करते हुए, नकिफिोरस ने अपने एक वश्विस्त व्यक्ति को जहाज से माउंट अथोस भेजा, और अथोनाइट संतों की पूरी सभा को एक पत्र लखिा, जसिमें उन्होंने ईश्वर से प्रार्थना करने का अनुरोध कयिा, ताकि मुसलमानों के खलिाफ उसे ऊपर से मदद मलि सके। उन्होंने यह भी अनुरोध कयिा कि अथानासयिस को उनके पास भेजा जाए, क्योंकि उन्होंने अपने भाई लयिो से सुना था कि अथानासयिस माउंट अथोस पर रह रहे थे। कमांडर का पत्र पढ़ने के बाद, अथोनाइट संतों ने उसके लिए भक्तपिूर्वक प्रार्थना की; फरि, जब उन्होंने अथानासयिस को रेगस्तिान में पाया और उसे परषिद में बुलाया, तो उन्होंने उसे कमांडर के पास जाने का आदेश दयिा। शुरुआत में, अथेनासयिस जाने के लिए बलि्कुल

[4867] क्रीट, या कैंडयिा, पूर्वी भूमध्यसागर में, ईजयिन सागर के दक्षणि में स्थति, ग्रीक द्वीपों में सबसे बड़ा है।

अनच्छिुक था और बुजुर्गों की धमकयिों से ववशि होकर अनच्छिा से आज्ञा मानता था। एक सम्मानति बुजुर्ग, जसिे अथेनासयिस अपना शक्षिक मानता था और शष्यि की तरह उसका अनुसरण करता था, उसे उसके साथ भेजा गया। एक जहाज पर सवार होकर, वे क्रीट के लएि रवाना हुए। जब वे धर्मनष्ठि सैन्य कमांडर नकिफिोरस के सामने उपस्थति हुए, तो नकिफिोरस, अथानासयिस को देखते ही, उसकी ओर दौड़े, उसे गले लगा लयिा, उसे बार-बार चूमा और खुशी के मारे रो पड़े, तथा उसे अपने आध्यात्मकि पति के रूप में सम्मानति कयिा। हालाँकि, यह देखकर कि अथानासयिस अपने साथी—वरष्ठि—के साथ वैसा ही व्यवहार कर रहे थे जैसा एक शष्यि अपने गुरु के साथ करता है, नकिफिोरस उनकी वनिम्रता से चकति हो गए और बाहरी मामलों के सभी प्रबंधन को एक तरफ रखकर, उन्होंने अपना समय पूजनीय अथानासयिस के साथ आध्यात्मकि बातचीत में बतिाया। साथ ही, उन्होंने संसार को त्यागने और एक भक्षिु बनने के अपने लंबे समय से चले आ रहे व्रत को याद कयिा; और उन्होंने माननीय अथानासयिस से वनिती की कि वे पहले ठीक उसी रेगस्तिान में उन लोगों के लएि कोठरयिाँ स्थापति करें जो मौन का अभ्यास करते हैं, जहाँ वे स्वयं रहते थे। नकिफिोरस ने इन कोठरयिों का नर्मिाण करने के लएि अथानासयिस को चाँदी और सोना दयिा, लेकनि अथानासयिस, जो एक बेफक्रि और मौन जीवन पसंद करते थे, ने कोठरयिों के नर्मिाण की परेशानी लेने से इनकार कर दयिा और कमांडर के बहुत दुःख के बावजूद चाँदी और सोना लेने से मना कर दयिा। कुछ ही दनि साथ बतिाने और एक-दूसरे की संगत तथा मैत्रीपूर्ण बातचीत का आनंद लेने के बाद, वे अलग हो गए। अथानासयिस माउंट अथोस लौट आए, जबकि कमांडर युद्ध के लएि रवाना हो गए और, पवत्रि संतों की प्रार्थनाओं के माध्यम से, मुसलमानों को हराया और क्रीट को फरि से ग्रीस के साथ जोड़ दयिा। कुछ ही समय बाद, कमांडर नकिफिोरस ने फरि से अपने एक करीबी सहयोगी, मेथोडयिस (जो बाद में कमिन मठ के मठाधीश बने) को, सम्माननीय अथानासयिस के लएि सोना लेकर माउंट अथोस भेजा, जसिका उपयोग कोठरयिों के नर्मिाण के लएि कयिा जाना था। छह लीटर[4868] का सोना भेजा गया था।

धन्य अथानासयिस ने नकिफिोरस के ईश्वर के प्रति गहरे प्रेम और उसके शुभ इरादों को देखकर, और यह समझते हुए कि यह ईश्वर की इच्छा का कार्य था, सोना स्वीकार कयिा और नर्मिाण की देखरेख करने लगे। उपरोक्त स्थल को साफ करने के बाद, उन्होंने सबसे पहले नकिफिोर के लएि मौन में रहने हेतु कोठरयिाँ बनाईं, संत यूहन्ना बपतस्मिादाता को समर्पति एक चर्च का नर्मिाण कयिा, और फरि पहाड़ की तलहटी में परम पवत्रि कन्या मरयिम को समर्पति एक अत्यंत सुंदर चर्च का नर्मिाण कयिा। जब चर्चों पर काम शुरू हुआ, तो ईर्ष्यालु शत्रु ने इसे बाधति करना शुरू कर दयिा: चर्च बनाने वालों के हाथ अकड़ गए और पूरी तरह से अचल हो गए, इतना कि वे उन्हें अपने मुँह तक भी नहीं ले जा सकते थे। यह समझते हुए कि यह राक्षसों का काम था, रेवरेंड फादर ने ईश्वर से प्रार्थना की, दुष्ट की युक्तयिों को भगा दयिा, और इस प्रकार श्रमकिों के हाथों को उनके लकवा से मुक्त कर दयिा। महान पति के चमत्कारों की शुरुआत ऐसी ही थी। ईश्वर की परम पवत्रि माता के सम्मान में चर्च का नर्मिाण पूरा करने के बाद, रेवरेंड फादर ने इसके चारों ओर कोठरयिाँ बनाने का काम शुरू कयिा - संक्षेप में, एक सुंदर मठ का नर्मिाण कयिा; उन्होंने एक भोजनशाला और एक अस्पताल, एक अतथि गृह, फरि बीमारों और यात्रयिों के लएि एक स्नानागार का नर्मिाण कयिा, और मठ के लएि आवश्यक अन्य सभी इमारतों का बुद्धमिानी से प्रबंध कयिा; फरि उन्होंने भक्षिुओं का एक बड़ा समुदाय इकट्ठा कयिा, उन्हें सबसे प्राचीन फलिस्तिीनी मठों के मॉडल पर आधारति एक सख्त सामुदायकि नयिम प्रदान कयिा; वचन के इस नव-एकत्रति झुंड के लएि, पूजनीय अथानासयिस मठाध्यक्ष बने, जो परमेश्वर को प्रयि और परमेश्वर की अति पवत्रि माता की कृपा प्राप्त पुरुष थे: क्योंकि एक भक्षिु ने उन्हें उस मठ और उनकी कलीसयिा का भ्रमण करते देखा था, जसिे पूजनीय व्यक्ति ने स्थापति कयिा था; भक्षिु मत्ती, जन्हिें यह दर्शन मलिा था, एक तपस्वी थे जो मठ जीवन का नर्दिोष रूप से पालन करते थे और इसलएि उनके हृदय की आँखें शुद्ध और प्रबुद्ध थीं। सुबह की प्रार्थना सभा के दौरान मंडली में श्रद्धापूर्वक ध्यान और भय के साथ खड़े होकर, उन्होंने परम तेजस्वी कुंवारी को दो तेजस्वी स्वर्गदूतों के साथ चर्च में प्रवेश करते हुए देखा। उनमें से एक उनके आगे मोमबत्ती लेकर चल रहा था, जबकि दूसरा पीछे-पीछे चल रहा था; वह स्वयं, भाइयों के बीच से गुजरते हुए, उपहार बाँट रही थीं। गायन मंडली में गा रहे भाइयों को उसने प्रत्येक को एक सोने का सक्किा दयिा; चर्च के अंदर अन्यत्र खड़े लोगों को उसने प्रत्येक को बारह-बारह त्सात्स दएि; और बरामदे में खड़े लोगों को छह-छह दएि। मत्ती, जसिने यह सब देखा, उसे स्वयं भी उनके परम पवत्रि हाथों से छह त्सात्स प्राप्त करने का योग्य समझा गया। इस प्रकट होने के बाद, मैथ्यू पवत्रि फादर के पास गया और उनसे गायकों में एक जगह देने की वनिती

[4868] लत्रिा वजन की एक इकाई है जो 72 ज़ोलोटनकि के बराबर होती है (1 ज़ोलोटनकि ≈ 4.265 ग्राम)।

की, तथा संत को वह सब बताया जो उसने देखा था। यह समझते हुए कि यह परम पवित्र कुंवारी मरियम का आगमन था, पवित्र फादर परम आध्यात्मिक आनंद से भर गए। भाइयों के बीच सोने के सिक्कों के वितरण के संबंध में, उन्होंने निष्कर्ष निकाला कि ये उनकी योग्यता के अनुसार उन पर उनकी ओर से प्रदान की गई विभिन्न आशीर्वाद थीं: जिन्हें गाने के दौरान उत्कट प्रार्थना और ध्यान के साथ खड़े होने पर एक बड़ा पुरस्कार दिया गया, जबकि जिन्होंने कम ध्यान दिया उन्हें कम मिला। इसलिए जिसने इस दर्शन को देखा था, उसे छोटे लोगों में रखा गया, ताकि एक ओर, एक बड़े पुरस्कार के नुकसान से दुखी होकर, वह इस दर्शन को बता सके; और दूसरी ओर, ताकि वह सबसे योग्य लोगों के साथ अपनी समानता पर घमंड न करे, बल्कि छोटे लोगों के बीच विनिम्र बना रहे। इस घटना से यह स्पष्ट हो गया कि सिर्वपवित्र कुँवारी मरियम, आदरणीय अथेनासियस और उनके मठ के प्रति कितनी अनुकूल दृष्टि रिखती थीं। जहाँ तक आदरणीय के मठ की संरचना, उसके नियम, विधान और विनियमों का प्रश्न है, इसका सब कुछ विस्तार से वर्णन उनकी जीवनी के एक अलग खंड[4869] में किया गया है - जो कोई इच्छुक हो, वह उसे वहाँ पढ़ सकता है। हम, संक्षिप्त विवरण देते हुए, उनके सबसे उल्लेखनीय कार्यों पर ध्यान केंद्रित करेंगे (हालांकि वे सभी असाधारण हैं)।

[4870]आदरणीय अथेनासियस, यह सुनकर कि सेनापति निकिफिोरस, ज़ार रोमन के निधन के बाद, मुसलमानों पर अपनी बार-बार की जीत के कारण ग्रीस का ज़ार नियुक्त किया गया था, बहुत दुखी हुए, क्योंकि, भिक्षु बनने के अपने व्रत के अनुसार, उन्होंने मठ की देखभाल अपने ऊपर ले ली थी। (ज्ञात हो कि इस सम्राट निकिफिोरस को फोकास के नाम से भी जाना जाता था। लेकिन यह वही फोकास नहीं है जिसने सम्राट मॉरिसियस की हत्या की थी, और न ही वही निकिफिोरस है जो महारानी आइरीन के बाद सिंहासन पर चढ़ा और बुल्गारियाई लोगों के साथ युद्ध में मारा गया था, बल्कि यह एक और निकिफिोरस फोकास है - जो बाद के समय में रहा)। रेवरेंड, निकिफिोरस द्वारा अपना व्रत पूरा करने में असफल होने के दुख में, सब कुछ छोड़कर भाग जाने पर विचार करने लगे। जब वह भागने की तैयारी कर रहा था, तो उसने भाइयों से कहा कि वह मठ के मामलों को निपटाने के लिए सम्राट के पास जाना चाहता है। अपने साथ कुछ भाइयों को लेकर, वह वास्तव में अपनी यात्रा पर निकल पड़ा और, अदिरा पहुँचकर, उसने तीन भाइयों को अपने साथ रख लिया, जबकि बाकी को मठ वापस भेज दिया, यह कहते हुए:

'मेरे लिए इन तीनों के साथ कॉन्स्टेंटिनोपल जाना ही काफी है।'

जब वे चले गए, अथानासियस ने सम्राट को पत्र लिखे, जिसमें उन्होंने उसे ईश्वर से किए गए उसके वादों की याद दिलाई और उसके सबसे उत्तम इरादे के संबंध में उसके तुच्छ मन परिवर्तन के लिए फटकार लगाई, और अपनी पीड़ा व्यक्त की - अर्थात्, कि सम्राट के कारण उसने अपने ऊपर इतनी सारी चिंताएँ ले ली थीं। पत्र के अंत में उन्होंने निम्नलिखित जोड़ा:

'मैं तुम्हारे छल के लिए प्रभु मसीह के सामने दोषी नहीं हूँ। मैं ईश्वर के नव-संगृहीत झुंड को तुम्हारे हवाले करता हूँ; इसे जिसे चाहो सौंप दो। जहाँ तक मेरा सवाल है, मेरा मानना है कि यूथिमियस नेता बनने के योग्य हैं—एक ऐसे भिक्षु जो अपने जीवन और शिक्षा के लिए विख्यात हैं।'

यह लिखने के बाद, अथेनासियस ने अपने शिष्यों को यह नहीं बताया कि उन्होंने क्या लिखा था; इसके बजाय, पत्र पर मुहर लगाकर, उन्होंने तीन भाइयों में से एक को चुना, पत्र उसे सौंप दिया, और उसे सम्राट के पास भेज दिया। थोड़ी ही देर बाद, उन्होंने थियोडोसियस नामक एक और शिष्य को मठ में वापस भेजा, इस बहाने कि वह भाइयों से मिलकर मठ के कामकाज को देखे। वह स्वयं एंथनी नामक एक शिष्य के साथ रहे; उनके साथ, अथेनासियस साइप्रस के लिए रवाना हुए, जहाँ, 'पवित्र लोगों का मठ' के नाम से प्रसिद्ध एक मठ का दौरा करने के बाद, उन्होंने मठाध्यक्ष से उस मठ के सबसे पास के रेगिस्तान में रहने की अनुमति देने का आग्रह किया। अपनी मांग पूरी होने पर, वह ईश्वर के लिए मौन में रहने लगा, और पहले की तरह ही अपनी रोजी-रोटी कमाने के लिए अपने हाथों से काम करने लगा, अर्थात् किताबें नकल करके। जब वह भाई जिसको पत्र लेकर कॉन्स्टेंटिनोपल भेजा गया था, उसे सम्राट के हाथों में सौंपने गया, तो सम्राट ने पत्र लेकर बहुत प्रसन्नता व्यक्त की। लेकिन पत्र खोलकर पढ़ने के बाद, वह गहराई से दुखी हो गया, एक ओर तो परमेश्वर के सामने अपने स्वयं के पाप के कारण, और दूसरी ओर इसलिए कि आदरणीय अथानासियस मठ छोड़कर छिप गए थे, और उनका पता नहीं चल पा रहा था। और उस भाई ने, पत्र की सामग्री के बारे में जानकर, रोना और विलाप करना शुरू कर

[4869] संत अथेनासियस की एक विस्तृत जीवनी ग्रीक में ज्ञात है; उनके जीवन को महान मेनाइया-चेतिया में भी विस्तार से वर्णित किया गया है।
[4870] रोमन द्वितीय 957–963।

दिया, यह शोक मनाते हुए कि वह अपने पिता को खो चुका था। सम्राट ने तुरंत मठ को जवाब लिखा, जिसमें यूथिमियस को इसका अस्थायी नेतृत्व संभालने का निर्देश दिया गया। साथ ही, सम्राट ने अपने राज्य के सभी क्षेत्रों में आदरणीय अथानासियस की तलाश का आदेश भेजा। यह शाही फरमान साइप्रस द्वीप तक पहुँच गया और इसे लागू किया जाने वाला था। लेकिन इस बात की जानकारी पाकर, पूजनीय संत तुरंत एक शिष्य को साथ लेकर समुद्र तट पर चले गए; वहाँ, दैवीय कृपा से, उनकी मुलाकात एक जहाज से हुई, वे उस पर चढ़ गए, और अनुकूल हवा की मदद से, जल्द ही दूसरी किनारे पहुँच गए। आदरणीय संत इस दुविधा में थे कि किसि ओर मुड़ें। उनका इरादा यरूशलेम के पवित्र स्थानों की ओर जाने का था, लेकिन मुस्लिम आक्रमण के कारण वहाँ का रास्ता अवरुद्ध था। वे सम्राट द्वारा खोजे जाने के डर से यूनान की ओर मुड़ना भी नहीं चाहते थे। इस प्रकार, वे नहीं जानते थे कि किसि ओर जाएँ। जैसे ही रात हुई, पूजनीय पिता ने ईश्वर से परामर्श और मार्गदर्शन की प्रार्थना करना शुरू कर दिया। और देखो, उन्हें एक दैवीय प्रकटवाणी और आज्ञा मिली कि वे माउंट अथोस, अपने मठ में लौट आएं, क्योंकि उनके परिश्रम से उसे बाहरी और आंतरिक रूप से अपने अंतिम पूर्णता तक लाया जाना था, और उनकी शिक्षाओं के माध्यम से कई लोग बचेंगे। ईश्वर से यह दिव्य प्रकाश प्राप्त करने के बाद, पूजनीय पिता ने यह बात एंथनी को बताई, और वे तुरंत अपने पूर्व निवास पर भूमि मार्ग से लौटने के लिए निकल पड़े। कई दिनों तक चलने वाली लंबी यात्रा के कारण, एंथनी के पैर दर्द और सूजन से भर गए। वे बहुत ज़ोर से जल रहे थे, और वह बिल्कुल भी चल नहीं पा रहा था। तब पूजनीय पिता ने पास ही उग रही कुछ घास इकट्ठी की, उसे अपने हाथ में मसलकर अपने शिष्य के पैरों पर लगाया, उन्हें पेड़ की पत्तियों से ढक दिया, और अपनी ही पगड़ी से बाँध दिया; फिर उन्होंने उस बीमार व्यक्ति का हाथ पकड़ा, उसे उठा दिया, और एंथनी तुरंत चिल्ला उठा:

'महिमा तेरी हो, हे हमारे ईश्वर मसीह, मेरी पीड़ा दूर करने के लिए!'

वह पहले की तरह ही अपने रास्ते पर चलता रहा, उसके पैर अब ठीक हो चुके थे। उपर्युक्त भाई थियोडोतस, जिसे पूजनीय पिता ने भाइयों से मिलने भेजा था, मठ पहुँचा तो उसने पाया कि पिता की अनुपस्थिति के कारण सभी अनिश्चितता की स्थिति में थे, और उसका हृदय इस बात से गहराई से दुखी हुआ। अपने पिता की अनुपस्थिति को सहन न कर पाकर, वह साइप्रस के लिए निकल पड़ा, और हर जगह उनकी तलाश करने लगा। अतालिया में[4871] , दैवीय व्यवस्था से, उसकी मुलाकात उनसे सड़क पर हुई; एक-दूसरे को देखकर वे बहुत प्रसन्न हुए। मठ में भाइयों के बीच के कलह के बारे में सुनकर, उनके पिता की खुशी दुख में बदल गई। उन्होंने तुरंत थियोडोटस को लौरा वापस भेज दिया ताकि भाइयों को उनके आगमन की सूचना दे सके, जबकि वे स्वयं लैम्पडिया में स्थित मठ में प्रार्थना करने चले गए। वहाँ, एक ऐसे भाई को देखकर जो अपना होश खो चुका था और बकबक कर रहा था, अथेनासियस ने उस पर अपना हाथ रखा और उसे ठीक कर दिया। वहाँ थोड़ी देर तक उपदेश देने के बाद, वह अथोस के लिए रवाना हो गए और अपने मठ पहुँचे। जब भाइयों ने उन्हें देखा, तो उन्होंने सोचा कि वे सूर्य को देख रहे हैं और, अपनी प्रसन्नता में, उन्होंने कहा:

'महिमा तेरी हो, हे ईश्वर!'

सभी आगे आए, कुछ ने उसके हाथों को, कुछ ने उसके पैरों को, और कुछ ने उसके फटे-पुराने कपड़ों को चूमा। इसके बाद, पूजनीय पिता ने एक बार फिर से मठ का प्रभार संभाला, जैसा कि पहले करते थे, इसके उत्थान के लिए।

समय बीतने के साथ, मठ से संबंधित मामलों को निपटाने के लिए परम पावन पिता के लिए व्यक्तिगत रूप से सम्राट के पास जाना आवश्यक हो गया। इस प्रकार वे चल पड़े और कॉन्स्टेंटिनोपल पहुँचे। यह जानकर, सम्राट प्रसन्न भी हुए और लज्जित भी: प्रसन्न इसलिए क्योंकि वे माननीय पिता को देखना चाहते थे, और लज्जित इसलिए क्योंकि उन्हें अपने शाही परिधान में उनके सामने उपस्थित होना था; इसलिए, उन्होंने उनका स्वागत एक सम्राट के रूप में नहीं, बल्कि आम, साधारण लोगों में से एक के रूप में किया। उसका दाहिना हाथ पकड़कर और उसे चूमकर, वह उसे अपने महल के भीतरी कक्षों में ले गया, और अकेले साथ बैठकर, उन्होंने आनंद के आँसुओं के साथ सौहार्दपूर्ण बातचीत की।

सम्राट ने कहा, 'पिताजी, मैं जानता हूँ कि मैं ही आपके सभी श्रम और दुखों का कारण हूँ, क्योंकि मैंने ईश्वर के भय को अनदेखा किया है और अपना वचन पूरा करने में असफल रहा हूँ। लेकिन मैं आपसे विनती करता हूँ—जब तक आप मेरे पश्चाताप की प्रतीक्षा कर रहे हैं, तब तक मुझसे धैर्य रखें, जब ईश्वर मुझे 'उनके प्रति अपने वादों को पूरा करने' का अवसर प्रदान करेंगे।'

[4871] अटालिया – पम्फिलिया में एक शहर, जो लिसिया और सिलिसिया के बीच एशिया माइनर की एक संकीर्ण तटीय पट्टी है।

इस बीच, पादरी ने उन्हें ईश्वर-प्रेमी, धार्मिक, विनम्र, दयालु और उदार बनने के लिए प्रोत्साहित किया; और उन्हें अनंत जीवन में भविष्य के पुरस्कार की याद दिलाते हुए, उन्होंने उन्हें एक ईसाई सम्राट के लिए उपयुक्त सभी पुण्य कार्यों का निर्देश दिया। रेवरेंड कई दिनों तक कॉन्स्टेंटिनोपल में रहे, और अक्सर सम्राट के साथ सौहार्दपूर्ण बातचीत करते थे। उनके प्रस्थान के समय, सम्राट ने मठ को उसकी सभी आवश्यक वस्तुएँ प्रदान कीं। फिर उन्होंने एक फरमान जारी किया जिसमें यह प्रावधान था कि मिठ को लेम्नॉस द्वीप से सालाना दो सौ चवालीस ज़्लाट्निकि मिलेंगे। रेवरेंड सम्राट की उदार कृपा के साथ भाइयों के पास लौट आए।

जब रेवरेंड फादर सफलतापूर्वक भाइयों की भीड़ को मोक्ष के मार्ग पर मार्गदर्शन कर रहे थे, तो शैतान—जो हर अच्छी चीज़ का दुश्मन है—अपनी पूरी ताकत के साथ उनके खिलाफ उठ खड़ा हुआ और मसीह के इस बहादुर योद्धा के खिलाफ युद्ध के लिए खुद को हथियारबंद कर लिया। यह बात एक वरिष्ठ तपस्वी को प्रकट हुई, जो समाधि में डूबकर माउंट अथोस की ओर आते हुए एक दैवीय सेना को देख रहा था; इस सेना के आगे एक सेनापति खड़ा था, जो एक हजार सैनिकों के कप्तान जैसा था – भयानक और धमकी भरा, जो महान शक्ति का प्रदर्शन कर रहा था। उसने उपरोक्त सेना को विभाजित किया: उसने एक सौ राक्षसों को पूरे पहाड़ का चक्कर लगाने और भिक्षुओं को पकड़ने के लिए भेजा, जबकि वह स्वयं नौ सौ के साथ भयानक घृणा के साथ अथानासियस लावरा की ओर चल पड़ा। इस दृष्टि के प्रकट होने से पहले, उन पर निम्नलिखित बीमारी आई। जब वे, अपनी आदत के अनुसार, समुद्र तट के घाट पर अन्य श्रमिकों के साथ काम कर रहे थे, तो संयोग से एक विशाल पेड़ उनके पैरों पर गिर गया और उनके जोड़ और पिंडली की हड्डियाँ टूट गईं, जिससे संत तीन साल तक बिस्तर पर पड़े रहे। हालाँकि, बीमार होने के बावजूद, वह निष्क्रिय नहीं रहना चाहते थे, बल्कि उन्होंने कितिबें लिखीं और चालीस दिनों में पैटेरिकॉन पूरा किया। और वहाँ लेटे-लेटे, उन्होंने अदृश्य विरोधी के खिलाफ युद्ध छेड़ा और उस पर विजय प्राप्त कर, उसकी चालाकियों को दूर भगा दिया। तब दुश्मन, लावरा में असफल होने पर, गया और पवित्र पर्वत पर अन्य मठों में रहने वाले और तपस्वी जीवन जीने वाले वृद्ध, सरल-स्वभाव वाले संतों को भड़काया; उसने उनमें आदरणीय संत के कार्यों के बारे में निम्नलिखित अस्वीकृतिपूर्ण विचार डाले:

'अथानासियस पवित्र पर्वत पर हिंसा क्यों कर रहा है और प्राचीन कानूनों को क्यों उलट रहा है? उसने महँगी इमारतें बनवाई हैं, नए घाट बनाए हैं, नए जलाशय खोदे हैं, बैल खरीदे हैं, खेत जोते हैं, अंगूर के बाग लगाए हैं—संक्षेप में, उसने इस पर्वत को एक सांसारिक बस्ती में बदल दिया है।'

अपने बीच परामर्श करने के बाद, ये बुजुर्ग दिविंगत निकिफ़ोरस के उत्तराधिकारी सम्राट जॉन से मिलने के लिए कॉन्स्टेंटिनोपल के लिए रवाना हुए[4872] ; अथानासियस पर बदनामी फैलाते हुए, उन्होंने सम्राट से उन्हें माउंट अथोस से निष्कासित करने का आग्रह किया। एक दूत के माध्यम से सम्राट ने अथानासियस को बुलाया, जो तब तक अपनी बीमारी से ठीक हो चुके थे; उन्हें देखकर और उन पर ईश्वर की कृपा को भांपकर, सम्राट, उस तपस्वी से क्रोधित होने के बजाय, उनके प्रति स्नेह महसूस करने लगे; वे ईश्वर-प्रेरित पिता से बहुत प्रेम करने लगे, उनका सम्मान किया, और उन पर शाही कृपाएँ बरसाईं। उन्होंने सम्राट निकिफोरस द्वारा जारी पिछले फरमान की भी पुष्टि की, जिसमें यह प्रावधान था कि लिम्नोस द्वीप से दो सौ चौंतीस ज़्लाट्निकि का कर मठ को दिया जाए, और अथानासियस को सम्मान के साथ वापस भेज दिया। तब वे प्राचीन, सरल-स्वभाव वाले साधु, लज्जित होकर, अपनी साज़िशों पर पछत गए और, आदरणीय संत के पास आकर, उनसे क्षमा याचना करने लगे। विरोधी, शैतान, भी लज्जित हुआ और, और भी अधिक क्रोध से जलते हुए, एक बार फिर अपनी सेना के साथ पवित्र पिता की लावरा पर आक्रमण कर दिया। इस आक्रमण को धर्मी वृद्ध थॉमस ने देखा, जिनकी आध्यात्मिक आँखें शुद्ध थीं। तीसरे घंटे की प्रार्थना करने के बाद, वह समाधि में चला गया और उसने सभी पहाड़ों और पहाड़ियों, पेड़ों और झाड़ियों को छोटे-छोटे इथियोपियाई लोगों से भरा हुआ देखा, जो क्रोधित और शत्रुता से जलते हुए, एक-दूसरे को युद्ध और लड़ाई के लिए बुला रहे थे, और क्रूरता और उग्रता से चिल्ला रहे थे:

'हे मेरे मित्रों, हम इसे और कितनी देर तक सहन करेंगे? हम यहाँ बसे हुए लोगों को अपने दाँतों से फाड़ क्यों नहीं डालते? हम उन्हें यहाँ से तुरंत क्यों नहीं भगा देते? और हम उनके नेता, हमारे दुश्मन को, और कितनी देर तक बर्दाश्त करेंगे? क्या तुम यह नहीं देख सकते कि उसने हमें यहाँ से कैसे भगा दिया है और हमारी जमीनों पर कब्जा कर लिया है?!'

जब वे इस प्रकार बात कर ही रहे थे, कि परम पूजनीय अथानासियस अपनी कोठरी से बाहर निकले। उन्हें देखते ही इथियोपियाई काँप उठे और हक्के-बक्के रह गए। लेकिन, उन्होंने उन पर धावा बोल दिया, उन्हें मारते, घायल करते

[4872] जॉन त्समिस्किस 969–976।

और पीछे धकेलते हुए; उन्होंने तब तक उन्हें पीटना बंद नहीं किया जब तक कि वे सभी लावरा से बहुत दूर नहीं भाग गए। जब वृद्ध थॉमस ने यह दृष्टि रेवरेंड फादर को बताई, तो वे तुरंत प्रार्थना करने के लिए उठे और आँसुओं के साथ ईश्वर से अपने झुंड को दुश्मन के पंजे से बचाने की विनती की। और सचमुच, अपनी प्रार्थना के द्वारा, रेवरेंड फादर ने अदृश्य जानवरों को लोहे की छड़ी से इस तरह मार गिराया और भगा दिया। वे, भले ही भाग गए हों, फिर भी थोड़ा-थोड़ा करके लौट आए और अपनी चालाकियों से शत्रुता भड़काना बंद नहीं किया। एक भिक्षु में, उन्होंने परम पावन पिता के प्रति इतना घृणा भर दी कि वह उन्हें देखना भी नहीं चाहता था; और, राक्षसों के प्रभाव में, उसके भीतर इतना द्वेष बढ़ गया कि उसने हत्या का प्रयास भी किया। अपनी तलवार तैयार करके और तेज करके, उसने परम पावन पिता को मारने का एक उपयुक्त अवसर तलाशा। एक रात, जब सभी सो रहे थे और रेवरेंड फादर अपनी कोठरी में प्रार्थना में जाग रहे थे, तो हत्यारा संत की कोठरी के पास इस बहाने से आया कि उसे उनसे कुछ बहुत महत्वपूर्ण बात करनी है; साथ ही, उसने एक खींची हुई तलवार हाथ में पकड़ रखी थी; उसने नडिर होकर दरवाज़े पर दस्तक दी, और कहा:

'मुझे आशीर्वाद दीजिए, फादर!'

और उसकी आवाज़ याकूब की थी, लेकिन उसके हाथ एसाव के थे[4873] । हालाँकि, पादरी पिता, हाबिल की तरह धर्मी होने के कारण, यह नहीं जानते थे कि काइन बाहर खड़ा था, जो उन्हें मृत्यु के घाट उतारने के लिए बुला रहा था[4874] — उन्होंने अपनी कोठरी के अंदर से पूछा:

'तुम कौन हो?'

और उसने दरवाज़ा थोड़ा सा खोला।

हालाँकि, हत्यारा पादरी की आवाज़ से चौंककर, काँपता हुआ ज़मीन पर गिर पड़ा। ईश्वर, जो अपने भक्त की रक्षा करते हैं, ने हत्यारे पर अचानक आतंक मंडरा दिया: उसके हाथ सुन्न पड़ गए, उसकी तलवार ज़मीन पर गिर गई, और वह स्वयं पादरी के पैरों के पास ज़मीन पर पड़ा रहा, जैसे मृत हो। यह देखकर, पादरी हैरान और दंग रह गए, और उन्होंने उस आदमी को जमीन से उठा लिया। जैसे ही वह होश में आया, उसने भावुक स्वर में अपने पिता से कहा:

'मुझ पर दया करें, फादर, आपके हत्यारे बनने वाले ने! आपके खिलाफ मैंने जो द्वेष पाला, उसे क्षमा करें, और मेरे हृदय की दुष्टता को क्षमा करें!'

एक मोमबत्ती जलाने और जमीन पर रेजर की तरह तेज तलवार देखकर, अथानासियस को भिक्षु की योजना का एहसास हो गया:

उसने कहा, 'मेरे बेटे, तुम इस तलवार से मुझ पर ऐसे क्यों टूटे जैसे मैं कोई चोर हूँ?! लेकिन रोना बंद करो, चुप रहो, इस चीज़ को छिपा दो, जो हुआ है उसे किसी को मत बताना, और मेरे पास आओ—मैं तुम्हें चूमूँगा; और ईश्वर तुम्हारे इस अपराध को क्षमा करे!'

महात्मा की करुणा ऐसी थी! उस समय से, उन्होंने उस भाई से बहुत प्रेम किया। हालाँकि, वह भाई, अपने पाप को हमेशा याद करते हुए और पिता की करुणा और उसके प्रति प्रेम को देखते हुए, बिना रुके रोता रहा और जो हुआ था उसे छिपा नहीं सका, और अपने पाप का प्रायश्चित किया तथा महात्मा के सद्गुणों की प्रशंसा की। वह अत्यंत सच्ची पश्चाताप के साथ मर गया, और पूज्यनीय पिता उसके लिए ऐसे रोए जैसे किसी और के लिए नहीं रोए थे। और फिर एक अन्य भाई, जो पहले वाले की ही तरह पिता से नफरत करता था, पृथ्वी पर जीवित लोगों के बीच से उन्हें नष्ट करने का अवसर ढूंढने लगा। हालाँकि उसे यह नहीं पता था कि यह कैसे किया जाए, इसलिए वह दैवीय जादू-टोने और मंत्रों का सहारा लेने लगा; अपने पिता पर कई घातक मंत्र और टोने-टोटके आज़माने के बाद भी, वह पूरी तरह से असफल रहा। संयोग से, उसने एक भाई से पूछा:

'क्या जादू-टोना किसी व्यक्ति की मृत्यु का कारण बन सकता है?'

भाई ने उत्तर दिया कि कोई भी जादू-टोना एक ऐसे धार्मिक व्यक्ति को नुकसान नहीं पहुँचा सकता जो ईश्वर की भक्ति में जीवन व्यतीत करता हो। यह सुनकर, जादूगर ने अपने ही अंतरात्मा में खुद को कोसा। जब उसे बाद में पता चला कि उसके पिता ने उस भाई को माफ कर दिया था जिसने उसे मारने का इरादा किया था, तो वह उसकी द्वेषहीनता से चकित रह गया, वह गहराई से प्रभावित हुआ, उसे ईश्वर का भय सताने लगा, और वह पिता के पास जाकर उनके पैरों पर गिर

[4873] अर्थात्, इस भिक्षु ने पाखंड किया। तुलना करें उत्पत्ति 27:21–23।

[4874] तुलना करें उत्पत्ति 4:8।

पड़ा, और बड़े रोते हुए अपने पाप का इकबालयिा बयान देते हुए क्षमा याचना करने लगा, जो उसे क्षमाशील पतिा से मलि गई। उन लोगों के प्रतजिो उनके सामने पाप करते थे, आदरणीय अथानासयिस का यही रवैया था। इसके लिए, ईश्वर ने सर्वत्र उनकी महमिा की। वभिन्नि देशों से बहुत से भाई उनके झुंड में इकट्ठा हुए, न केवल ग्रीस से, बल्कि इटली से, स्वयं प्राचीन रोम से, कैलाब्रयिा[4875] , अमाल्फी[4876] , आइबेरयिा[4877] से भी, और—केवल आम लोगों में से ही नहीं, बल्कि अमीरों और कुलीनों में से भी। कई मठों के मठाधीश भी, अपना नेतृत्व त्यागकर, आदरणीय के मार्गदर्शन में आ गए। केवल मठाधीश ही नहीं, बल्कि बशिप भी, अपनी धर्मप्रांत और भेड़ों को छोड़कर, पवत्रि पतिा के झुंड में आ गए और उनकी भेड़ बनना चाहते थे। उनमें पैट्रआर्कों में महान नकिोलस—जन्हिें चैरटिन के नाम से भी जाना जाता था—एंड्रयू क्रसिोपोलीट, और अक्काकयिोस शामलि थे, जो अपने तपस्या द्वारा कई वर्षों तक चमकते रहे। इसी तरह, अजेय रेगस्तिानों में बूढ़े हो चुके तपस्वी, दैवीय कृपा से पतिा के पास आए और उनके मठ में नविास करने लगे, ताकि वे उनके सदाचारी जीवन के उदाहरण से प्रेरति हो सकें। उनमें से एक थे आदरणीय नकिफिोरस, जन्होंने कैलाब्रयिा के पहाड़ों में संत फैंटनिस के साथ तपस्या का जीवन जयिा। उन्हें एक दव्यि दर्शन हुआ, जसिमें फैंटनिस को थ्रेसलॉनीकी जाने और नकिफिोरस को माउंट अथोस पर आदरणीय अथानासयिस के पास जाने का आदेश दयिा गया, जनिके साथ वे नधिन करने और वहीं दफनाए जाने से पहले लंबे समय तक रहे। कुछ समय बाद, जब उनके अवशेषों को खोदकर नकिाला गया और कसिी अन्य स्थान पर स्थानांतरति कयिा गया, तो उनकी सूखी हड्डयिों से अत्यंत सुगंधति जल का एक स्रोत फूट पड़ा—जो दुनयिा की कसिी भी सुगंध से अलग था। ऐसे पवत्रि पतिा परमेश्वर द्वारा आदरणीय पतिा अथानासयिस के मार्गदर्शन में भेजे गए थे, जसिसे यह स्पष्ट रूप से स्पष्ट होता है कि उनका जीवन दूसरों की तुलना में कतिना अधकि दैवीय था। जैसे जड़ को उसकी शाखाओं से और पेड़ को उसके फलों से जाना जाता है, वैसे ही एक कुशल शक्षिक को उसके सफल शष्यिों से और एक अच्छे चरवाहे को उसकी अच्छी भेड़ों से जाना जाता है। लेकनि अब, अथानासयिस के चमत्कारों को संक्षेप में याद करने के बाद, उनके बारे में इस वृत्तांत को समाप्त करने का समय आ गया है। ईश्वर, जो अपने संतों को चमत्कारों के माध्यम से महमिामय करता है, ने इस महान ईश्वर-पुरुष को चमत्कार करने का अपना वरदान से वंचति नहीं रखा। सबसे पहले, आइए उनकी दूरदर्शता के बारे में बात करें।

एक बार, कड़ाके की ठंड पड़ गई। रेवरेंड फादर ने अपने एक नवोदति, थयिोडोर नामक, को बुलाया और उससे कहा:

'भाई, कुछ भोजन लो और सीज़रयिा (जैसा कि माउंट एथोस पर एक स्थान का नाम था) के लिए जल्दी करो। जब तुम समुद्र की ओर चलते हुए ट्रोकल के सामने पहुँचोगे, तो तुम्हें तीन व्यक्ति मलिेंगे, जो ठंड और भूख से थके हुए और मृत्यु के कगार पर हैं, जनिमें से एक भक्षिु है। उन्हें अपनी ताकत बहाल करने और ठंड से बचाने के लिए कुछ रोटी दो, और उन्हें यहाँ ले आओ।"

रवाना होते ही, थयिोडोर को सब कुछ बल्कुि वैसा ही मलिा जैसा कि पिता ने भवष्यिवाणी में बताया था, और सभी संत की दूरदर्शता को देखकर चकति रह गए। एक अवसर पर, रेवरेंड फादर को मठ संबंधी कार्यों के लिए कुछ भाइयों के साथ एक द्वीप की नौकायन करना आवश्यक लगा। हालाँकि, ईश्वर की अनुमति से, अदृश्य शत्रु, जो फादर और भाइयों को डुबाना चाहता था, ने एक भयानक हवा, तूफान और आँधी को भड़काया, और समुद्र की गहराई में जहाज को पलट दयिा, जसिसे सभी तुरंत पानी में डूब गए। लेकनि ईश्वर का दयालु हाथ, अपने सेवक को संकट से बचाने के लिए तत्पर होकर, उसी क्षण जहाज को उसकी पूर्व स्थति में वापस ले आया, तूफान को शांत कर दयिा, और संत ने खुद को जहाज के पछिले हस्सि में बैठे पाया, जो अपने भाइयों को अपनी ओर बुला रहे थे। पानी उन्हें जहाज की ओर ऐसे ले गया जैसे हथेली पर रखे गए हों। सम्माननीय फादर ने उन्हें एक-एक करके पानी से बाहर नकिाला और सभी को जीवति इकट्ठा कर लयिा। केवल साइप्रस का पतरस लापता था; उसे न देखकर, फादर का दलि चंति से भर गया और उन्होंने ज़ोर से पुकारा:

'मेरे पुत्र पीटर! तुम कहाँ हो?'

और जैसे ही पादरी ने पुकारा, पीटर गहराई से ऊपर आया और पानी उसे जहाज़ की ओर ले गया, जहाँ उसे पादरी की बाहों में ले लयिा गया। इस प्रकार रेवरेंड फादर और उनके भाई डूबने से बच गए; और दुष्ट शत्रु न केवल प्रसन्न

[4875] कैलाब्रयिा – टारेंटो से केप जैप्यगस तक फैला एक नम्नि-स्तर का प्रायद्वीप। मध्य युग में, बीजान्टनि लेखकों ने 'कैलाब्रयिा' नाम दक्षणिी इटली के पश्चमिी प्रायद्वीप पर लागू कयिा, जसिे पहले ब्रुटयिा के नाम से जाना जाता था।

[4876] अमाल्फी – सैलर्नो के खाड़ी पर सैलर्नो प्रांत में एक तटीय शहर; संभवतःचौथी शताब्दी में कॉन्स्टेंटाइन द ग्रेट द्वारा स्थापति।

[4877] आइबेरयिा – स्पेन।

नहीं हो सका, बल्कि उसे और भी अधिक लज्जा उठानी पड़ी। धन्य फादर ने हर जगह शत्रु को लज्जित किया, उस पर विजय प्राप्त की और उसे भगा दिया। उन्होंने भिक्षु मैथ्यू से राक्षस को भगा दिया, जिसे एक अशुद्ध आत्मा द्वारा क्रूरतापूर्वक पीड़ा दी जा रही थी। संत की प्रार्थनाओं के द्वारा, विनाशकारी पीड़ाओं से पीड़ित अन्य लोगों से भी अदृश्य यातना देने वालों को भगा दिया गया। पूजनीय पिता के पास चंगा करने की शक्ति भी थी और, बीमारों की सेवा करते हुए, उन्होंने अपने हाथों से कई लोगों को अद्भुत सहायता प्रदान की। उन्होंने कुष्ठ रोग से पीड़ित एक भाई को चंगा किया; उन्होंने एक अल्सर से पीड़ित दूसरे को भी स्वास्थ्य प्रदान किया। उन्होंने अपने हाथ से अल्सर पर तीन बार क्रॉस का चिह्न बनाकर एक तीसरे व्यक्ति को, जिसे कैंसर का अल्सर था, ठीक किया। उनकी प्रार्थनाओं के द्वारा, उन्होंने टिड्डियों के एक झुंड को भगा दिया जो द्वीप पर उतर आया था और बिना किसी अपवाद के सभी वनस्पतियों को खा रहा था। एक अवसर पर, जब वह और उनके भाई समुद्र पार नाव से जा रहे थे, तो पीने के पानी की कमी हो गई, जिससे भाई प्यास से बेहोश होने लगे; संत अथेनासियस ने समुद्र का पानी निकालने का आदेश दिया और उसे आशीर्वाद देकर मीठे पानी में बदल दिया, जिससे भाइयों ने अपनी प्यास बुझाई। गेरासिमिस नामक एक भाई, जब दाख की बारी में एक मजबूत, लंबी बेल की देखभाल कर रहा था, तो उसने—चूँकि उसमें बहुत शारीरिक शक्ति थी—इसे अपने नंगे हाथों से जमीन से उखाड़ फेंकने की इच्छा की। बेल को अपने हाथों से दो-तीन बार हिलाने के बाद भी, वह इसे उखाड़ नहीं सका, और इस प्रक्रिया में वह बुरी तरह घायल हो गया। उसका पेट फट गया, उसकी आंतें बाहर निकल आईं, और वह दर्द से बहुत तड़पा। हालाँकि, प्रार्थना और आदरणीय पिता द्वारा बनाए गए पवित्र क्रॉस के चिह्न से वह ठीक हो गया। वही गेरा سيم, ईश्वर को अपना गवाह मानते हुए, निम्नलिखित चमत्कार का भी वर्णन किया:

गेरा سيم ने कहा, 'जब मैं, रोटी तोड़ने का कर्तव्य निभा रहा था, तो मुझे पिता के पास जाकर एक विशेष मामले के बारे में उनसे पूछने की आवश्यकता महसूस हुई। ऐसा हुआ कि उस समय वे पवित्र प्रेरितों के चर्च में अकेले प्रार्थना कर रहे थे। मैं चर्च में गया और खिड़की से झाँककर देखा कि पूजनीय पिता प्रार्थना कर रहे थे, और उनका चेहरा एक अग्नि की लपट जैसा था। मैं डर गया और थोड़ा पीछे हट गया। एक पल इंतज़ार करने के बाद, मैंने फिर से देखा और देखा कि उनका चेहरा, जो आग जैसी दिखने वाली चीज़ से घिरा हुआ था, एक देवदूत के चेहरे की तरह चमक रहा था। डर के मारे, मैं चिल्लाया और कहा:

'हे पिताजी!'

उन्होंने, यह देखकर कि मैं डरा हुआ था और यह समझकर कि क्यों, मुझे जो कुछ मैंने देखा था, वह किसी को बताने से मना कर दिया।

गैरसिमि ने पूज्य के निधन के बाद भाइयों को यह बताया। एक भाई, जिसे मठाधीश ने एक सांसारिक गाँव में मिशन पर भेजा था, शत्रु के प्रलोभन से भटककर कामुक पाप में लिप्त हो गया और व्यभिचार किया। बाद में अपने पाप की गंभीरता को समझकर, वह मन में निराश हो गया और मठ लौटने पर आँसुओं और सिसकियों के साथ संत के चरणों में गिर पड़ा, अपने पाप और निराशा का इक़रार करते हुए। आदरणीय पिता ने, उन्हें कई सहायक उपदेश देकर और मानव जाति के प्रति ईश्वर के प्रेम पर निराश न होने के लिए आश्वस्त करके, उन्हें अपने मूल कार्यस्थल पर भाइयों के बीच बने रहने का आदेश दिया। इस बीच, पॉल नामक एक वृद्ध भिक्षु ने, उस भाई के पतन और पिता की दयालु क्षमा के बारे में जानकर, दोनों के विरुद्ध बड़बड़ाया: उसने उस भाई को ऐसा घृणित कृत्य करने की हिम्मत करने के लिए फटकारा, जिससे उसने ब्रह्मचर्य के व्रत का उल्लंघन किया था, और साथ ही पिताजी से उनके सामने कहा कि ऐसे पापी को क्षमा करना अनुचित है, बल्कि उसे अनेक और कठोर दंड झेलने चाहिए। तब उस नम्र पिता ने, उस बड़बड़ाने वाले पर एक कठोर दृष्टि डालते हुए, कहा:

'पौलुस! जो तू कर रहा है, उसमें सावधान रह! अपने भाइयों के पापों की जाँच-पड़ताल करने के बजाय अपनी ही रखवाली कर, क्योंकि यह लिखा है: *"जो समझता है कि वह खड़ा है, वह गिरने से सावधान रहे"* (1 कुरिन्थियों 10:12)।'

उस समय से, ईश्वर की अनुमति से, अदृश्य प्रलोभी ने पावल के हृदय को दुष्ट विचारों के तीरों से भेदना शुरू कर दिया और उसके शरीर को वासना की आग से जला दिया; और पावल को तीन दिन और तीन रातों तक कोई चैन नहीं मिला, वह कामुक पाप की इच्छा में पूरी तरह से डूब गया, यहाँ तक कि वह अपनी मुक्ति से भी निराश होने लगा। और सबसे बुरी बात यह थी कि वह अपने इस संघर्ष को अपने आध्यात्मिक पिता के सामने प्रकट करने से भी शर्मिंदा था। पवित्र आत्मा द्वारा यह जानकर, रेवरेंड फादर ने पौलुस को अपने पास बुलाया और कुछ मठ संबंधी मामलों पर उससे निजी तौर पर बात की। उनकी बातचीत के दौरान, उन्होंने धीरे-धीरे पॉल को अपने कामुक जुनून का इकरार करने के लिए प्रेरित किया। फिर

पॉल, पिता के पैरों पर गिरकर, उन्हें अपनी पीड़ा के बारे में बताया और राहत मांगी। रेवरेंड ने पॉल को यह निर्देश देते हुए कि वह पाप करने वाले भाई को निंदा न करे, उसे उसके कर्तव्यों पर वापस भेज दिया। वह एक कोषाध्यक्ष था। जहाँ तक स्वयं रेवरेंड की बात है, वे प्रार्थना में खड़े होकर आँसुओं के साथ उसके लिए परमेश्वर से विनम्रतापूर्वक प्रार्थना करने लगे, और उसी क्षण पॉल को अपनी वासना से मुक्ति मिल गई। उसे अपने सिर पर एक प्रकार की ठंडक महसूस हुई जो पूरे शरीर से होते हुए उसके पैरों तक दौड़ गई, और इस प्रकार उसके भीतर मांस की कामुक उत्तेजना शांत हो गई। मार्क नाम का एक और भाई, जो लैम्प्सैक्स का मूल निवासी था, उसी पापी शारीरिक वासना से बुरी तरह पीड़ित था; वह पिता के पास आया, उसने उन्हें अपनी वासना के बारे में बताया और प्रार्थना के माध्यम से उनकी मदद मांगी। कुछ दिनों बाद, उसने सपने में पिता को देखा, जिन्होंने उससे पूछा:

'भाई, कैसा महसूस कर रहे हो?'

'ज़मीन पर पेट के बल लेट जा,' उसके पिता ने कहा।

'ज़मीन पर पेट के बल लेट जाओ,' पुजारी ने कहा।

जब वह जमीन पर पेट के बल लेट गया, तो उसके पिता ने अपने पैर से उसकी कमर पर दबाव डाला। पैर के दबाव से उठते ही, उसने महसूस किया कि वह अपनी वासना से मुक्त हो गया है और उस घड़ी से उसे शांति मिली, और उसे फिर कभी कोई शारीरिक उत्तेजना महसूस नहीं हुई। हमारे पूजनीय पिताजी द्वारा अपने जीवनकाल में किए गए अनगिनत चमत्कारों में से इन कुछ का संक्षेप में वर्णन करने के बाद, अब हम उनके निधन के बारे में बताएँगे।

चूँकि, जैसा कि पहले ही उल्लेख किया जा चुका है, रेवरेंड फादर को देखने के लिए चारों ओर से भाइयों की एक बड़ी भीड़ इकट्ठा हो गई थी, इसलिए भाईचारे की पूरी सभा को समायोजित करने के लिए चर्च का विस्तार करना आवश्यक हो गया; इस कारण से, चर्च की दीवारों में बरामदे और पार्श्व-गिरिजाघर जोड़े गए। जबकि एक पार्श्व वेदी का निर्माण अभी पूरा नहीं हुआ था, ऐसा हुआ कि पिता को स्वयं वहाँ ऊपर जाकर चल रहे कार्य का निरीक्षण करने की आवश्यकता पड़ी – उससे पहले कि वह अपने सामने मौजूद कॉन्स्टेंटिनोपल की यात्रा पर निकलते; वह मठ से संबंधित मामलों पर सम्राट के पास जाने की तैयारी कर रहे थे। इसलिए, सबसे पहले, उन्होंने भाइयों को बुलाया, और उन्हें धन्य थियोडोर द स्टुडाइट का एक प्रवचन[4878] प्रस्तुत किया, साथ ही अपने वाक्पटु मुख से अपने उपयोगी उपदेश भी जोड़े। फिर, अपनी कोठरी में वापस जाकर, उन्होंने बहुत देर तक प्रार्थना की। इसके बाद, वह एक लबादा पहनकर अपनी कोठरी से बाहर निकला, उसके सिर पर उसके धन्य पिता माइकल मालेन का पवित्र मुकुट था, जिसे वह केवल प्रमुख पर्वों के दिनों में और मसीह के दिव्य रहस्यों को ग्रहण करने के दौरान ही पहनने का आदी था: और उस दिन वह वास्तव में एक पर्व मना रहे थे और उनका चेहरा परमेश्वर के स्वर्गदूत की तरह चमक रहा था। फिर उन्होंने अपने साथ छह भाइयों को लिया और उनके साथ काम पर निकल पड़े। जब वे पहले ही इमारत की चोटी पर पहुँच चुके थे, तो परमेश्वर की अनुग्रह की अकल्पनीय योजना के अनुसार, अंतिम मंजिल की छत ढह गई, जिससे वे सभी नीचे गिर गए और मिट्टी और पत्थरों के नीचे दब गए। उनमें से पाँचों ने तुरंत अपनी आत्मा ईश्वर को सौंप दी, जबकि पिता और उनके साथ एक राजमिस्त्री, जिसका नाम दानियिल था,

---

[4878] संत थियोडोर द स्टुडाइट ने कम उम्र में ही संन्यासी जीवन अपना लिया, और शुरुआत में अपने चाचा, संत प्लेटो (जिनका स्मरण 5 अप्रैल को किया जाता है), के मार्गदर्शन में काम किया, जो सातवें सार्वभौमिक परिषद में प्रतिमा पूजा के रक्षक थे। बाद में, संत थियोडोर कॉन्स्टेंटिनोपल में स्टुडियोन मठ के मठाध्यक्ष बने; उनके नेतृत्व में, मठ ने अभूतपूर्व ऊंचाइयों को छुआ। सम्राट कॉन्स्टेंटिन पोर्फ्योजेनिटिस की निंदा करने के लिए सेंट थियोडोर को दो बार कॉन्स्टेंटिनोपल से निर्वासित किया गया था, जिन्होंने अपनी पत्नी मारिया को अवैध रूप से तलाक दे दिया था और थियोडोटा के साथ एक अवैध विवाह करके अपने अपराध की गंभीरता को और बढ़ा दिया था। निर्वासन से स्टुडियोन मठ में लौटने पर, जब पवित्र प्रतिमाओं का उत्पीड़न शुरू हुआ, तो संत थियोडोर ने प्रतिमा-भंजकों की धमकियों की परवाह किए बिना, खुले तौर पर क्रूस के साथ जुलूसों का नेतृत्व किया। तब सम्राट लियो द आर्मेनियन ने उन्हें कैद में डाल दिया, जहाँ उन्हें नम और घुटन भरी कोठरियों में रखा गया और बार-बार क्रूरता से पीटा गया। माइकल द स्टैमरर के शासनकाल में, सेंट थियोडोर को कैद से रिहा कर दिया गया, लेकिन वे अपनी कैद से कमजोर पड़ चुके थे और अधिक समय तक जीवित नहीं रहे। वे 11 नवंबर 826 को 67 वर्ष की आयु में निधन कर गए (यह वही तारीख है जिस पर उनकी स्मृति मनाई जाती है)। सेंट थियोडोर की मृत्यु के क्षण में, डलमेशिया के पूजनीय हिलारियन ने स्वर्ग से उतरते हुए स्वर्गदूतों के एक समूह को देखा और एक आवाज सुनी: 'देखो, स्टुडियो के मठाधीश थियोडोर की आत्मा विजय प्राप्त कर स्वर्ग में आरोहण कर रही है, और स्वर्गदूतों का दल उसकी भेंट के लिए आ रहा है।' – संत थियोडोर ने प्रवचन, घोषणापत्र, पत्र, कैनन, स्टिचेरा, लघु-कविताएँ और जीवनियाँ के रूप में अनेक रचनाएँ पीछे छोड़ीं। सेंट थियोडोर के कार्यों का सबसे व्यापक रूसी संस्करण, जर्नल *क्रिश्चियन रीडिंग* के संपादकीय बोर्ड द्वारा, 1907 और बाद के वर्षों के लिए उस जर्नल के पूरक के रूप में किया गया था।

मलबे के बीच जीवति बचे रहे। फरि सभी ने पूजनीय पति की आवाज़ सुनी, जो तीन घंटे या उससे भी अधकि समय तक चल्लि रहे थे:

'हे प्रभु यीशु मसीह, मेरी मदद करो! महमि तेरी हो, हे परमेश्वर!'

भागकर गए भाइयों ने, रोते और पुकारते हुए, जतिने भी औजार उन्हें मलि सके, या अपने हाथों-पैरों से भी, पत्थरों और मट्टिी को हटाया। उन्होंने उस पति को बाहर नकिाला, जो प्रभु में पहले ही नजिामत पा चुके थे, और उनका शरीर सुरक्षति था; केवल उनकी दाहनिी टांग में चोट लगी थी। उसके पास से उन्होंने नर्मिाता डैनयिल को भी खोदकर नकिाला, जो बुरी तरह पटिने के बावजूद जीवति था, और उन दोनों को वहाँ से बाहर ले गए। हमारे पूजनीय पति अथानासयिस का नधिन ऐसा था, जो शायद कुछ लोगों को अपमानजनक लग सकता है, क्योंकि वह अपनी बस्तिर पर नहीं मरे, लेकनि *'प्रभु की दृष्टि में उसकी संतों की मृत्यु अनमोल है!'* (भजन संहति 115:6) इस परमेश्वर के मनुष्य के लिए, उसकी मृत्यु—जसिसे वह अच्छी तरह वाकफि था—उस साधन के रूप में साबति हुई जसिके द्वारा उसे शहीद का मुकुट मलिा। अपने आत्मा में इसकी पूर्वदृष्टि पाकर, उसने अपने सबसे करीबी शष्यि, एंथनी को, कुछ समय पहले ही इसकी भवष्यिवाणी कर दी थी:

उन्होंने कहा, 'मैं तुमसे वनिती करता हूँ कि तुम कोंस्टेंटनिोपल की यात्रा करो, जो हमें मठ की आवश्यकताओं के लिए करनी है। ईश्वर की इच्छा से, मैं अब इस सांसारकि राजा को नहीं देखूँगा।'

[4879]उनके नधिन के बाद, ईश्वर-भक्त और सम्मानति संन्यासी तीन दनिों तक बनिा दफ़नाए पड़े रहे, जब तक कि सभी पवत्रि पर्वत के मठों के प्रमुख एकत्रति नहीं हो गए और उन्होंने उनके लिए पूर्ण सम्मान के साथ अंतमि संस्कार का आयोजन कयिा। उनका पवत्रि शरीर न तो सड़ गया था, न सूजा था और न ही काला पड़ा था, और उनका चेहरा ऐसा दखि रहा था मानो कोई जीवति व्यक्ति सो रहा हो; न ही शव से आने वाली सामान्य दुर्गंध थी। हर कोई उनके लिए फूट-फूट कर रोया। और जब उनके लिए अंतमि संस्कार के भजन गाए जा रहे थे, तो उनके पैर के घाव से, प्रकृति के वपिरीत, खून बहने लगा। तीन दनि से मृत पड़े शव के घाव से खून बहते हुए कसिने देखा है? यह देखकर, कुछ सम्मानति बुज़ुर्गों ने इस खून को तौलयिों में इकट्ठा कयिा और आशीर्वाद के लिए एक महान पवत्रि तीर्थस्थल के रूप में स्वयं पर लगा लयिा। इस प्रकार पवत्रि पति का सम्मानति शरीर दफ़नाया गया। जहाँ तक पाँचों भाइयों के शवों का सवाल है, जो गरिी हुई चट्टानों के बीच मलिे थे, उन्हें पहले ही सम्मानपूर्वक दफनाया जा चुका था। डैनयिल, हालांकि बुरी तरह घायल था, कई दनिों तक जीवति रहा और एक आह भरते हुए, उसने उस दृष्टि को बयां कयिा जो उसे रेवरेंड फादर के नधिन से एक रात पहले हुई थी:

डैनयिल ने बताया, 'मैंने देखा, मानो सम्राट का एक तेजस्वी दूत प्रकट हुआ हो, जो पति को अपने पास बुला रहा था। और वास्तव में, पति, छह भाइयों के साथ मठ से नकिल गए—जनिमें मैं भी शामलि था—और दूत के पीछे चल दिए।' और इस प्रकार, जब हम सबसे भव्य शाही महल पहुँचे और दरवाज़ों के पास गए, तो पूजनीय पतिाजी और पाँच भाई शाही कक्ष में चले गए, जबकि मुझे बाहर छोड़ दयिा गया और मैं फूट-फूट कर रोने लगा। फरि मैंने अंदर से कसिी को मुझसे बात करते हुए सुना:

'व्यर्थ ही रो रहे हो, आदमी – जब तक वह पति जसिकी संगत में तुम आए हो, तुम्हें अनुमति न दे, तुम अंदर नहीं जा सकते।'

यह सुनकर, मैं और भी ज़ोर से रोने लगा और वनिती भरे स्वर में अपने पति को पुकारा। थोड़ी देर बाद, मेरे पति बाहर आए, उन्होंने मेरा दाहनिा हाथ पकड़ा और मुझे महल के अंदर ले गए, और मुझे राजा को देखने तथा उनके सामने झुकने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

इन शब्दों के साथ, दानयिेल ने अपनी आत्मा ईश्वर के हाथों में सौंप दी।

आइए हम पूज्य अथानासयिस के कुछ चमत्कारों को भी याद करें जो उनके नधिन के बाद हुए। उपर्युक्त एंथनी, जो पूज्य व्यक्ति के एक स्थायी शष्यि थे, संयोग से कुछ भाइयों के साथ मठ से संबंधति कार्यों के लिए गागरा क्षेत्र में थे। वहाँ यात्रा करते समय, शाम के समय उनकी मुलाकात एक ऐसे चरवाहे से हुई जो अपने भेड़ों की रखवाली कर रहा था, जसिके एकमात्र पुत्र को एक जंगली जानवर ने काट लयिा था और वह पहले ही मौत के कगार पर था। पति अपने पुत्र के लिए फूट-फूट कर रोया। पास से गुजर रहे भटकते संतों को देखकर, उसने उनसे अपने घर पर रुकने का आग्रह कयिा और,

[4879] इसके बाद 1000–1001 में

उनकी आतथ्यि-सत्कार करते हुए, उन्हें जो कुछ भी भोजन उसके पास था - रोटी और दूध - वह दे दयिा। भक्षिुओं ने उसकी सद्गुण से आश्चर्य व्यक्त कयिा कि उसने इतने दुख में भी अपनी आतथ्यि को नहीं त्यागा, और उन्होंने उसके शोक में सहानुभूति जताई। भक्षिुओं में एक भाई, जसिका नाम समियिोन था, था, जसिके पास पूजनीय पति के रक्त में सना हुआ एक कपड़ा था। समियिोन ने इस कपड़े का उपयोग बच्चे के घाव को बांधने के लिए कयिा, और बच्चा तुरंत गहरी नींद में चला गया और सुबह तक चैन से सोता रहा। भक्षिुओं ने भी वहीं रात बतिाई। सुबह, बच्चा स्वस्थ होकर, अपने घाव से ठीक होकर जागा, और उसने कुछ खाने के लिए माँगा। फरि वे सभी परमेश्वर की स्तुति करने लगे। एक अन्य अवसर पर, जब भाइयों में से एक को फरि से एक मठ संबंधी काम से भेजा गया, तो वह संयोग से एक धर्मनष्ठि ईसाई के घर, 'एलेक्ज़ेंड्रयिा' ( ) में प्रवेश कर गया, जहाँ एक महलिा लंबे समय से रक्तस्राव से पीड़ति होकर अपनी बस्तिर पर लेटी थी। घर के सभी पुरुष उसके लिए शोक मना रहे थे। उनके शोक का कारण जानने पर, भक्षिु ने कहा:

'मेरे पास एक कपड़े पर संत अथेनासयिस का खून है; यदि आप चाहें, तो हम खून से सने कपड़े को पानी में डुबोएंगे, नचिोड़ेंगे, और उस बीमार महलिा को वह पानी पलिाएंगे, और वह ठीक हो जाएगी।'

बीमार महलिा ने, भक्षिु के शब्द सुनकर, उससे आँसू भरी आँखों से वनिती की कि वह जल्द से जल्द अपना प्रस्ताव पूरा करे। फरि भक्षिु ने, संत के रक्त वाले पानी को तैयार करके, वह उसे दे दयिा। महलिा ने पानी लेकर कहा:

'संत अथेनासयिस, मेरी मदद करें!'

और उसने वह सब पी लयिा। तुरंत बाद, उसका खून बहना बंद हो गया, और वह स्वस्थ हो गई। एक अन्य अवसर पर, साधु समियिोन और जॉर्ज को कुछ मठ संबंधी कर्तव्य नभिाने के लिए जहाज से भेजा गया था। वे पेवकी घाट पर पहुँचे, जहाँ उन्होंने एक नावकि को मृत्युशय्या पर पाया, जो आठ दनिों से कुछ नहीं बोल रहा था, जसिके दोस्तों द्वारा शोक मनाया जा रहा था, और जसिने ठीक होने की उम्मीद छोड़ दी थी – उन्होंने संत के रक्त से रंगे हुए एक तौलयि को उस पर रखा। बीमार नावकि तुरंत, जैसे नींद से जाग उठा हो, अच्छे स्वास्थ्य के साथ अपने पैरों पर खड़ा हो गया। संत की कफ़न पर भी कई चमत्कार हुए। अर्थात्: लोगों से अशुद्ध आत्माएँ नकिल गईं, और जो लोग वश्विास के साथ आए और उनकी कफ़न पर जलते दीपक के तेल से स्वयं पर अभषिेक कयिा, वे वभिन्नि बीमारयिों से ठीक हो गए। आइए हम सदाचारी संन्यासी यूस्ट्राटयिस से जुड़ी नम्निलखिति घटना को भी याद करें। उनके आंतरकि अंग कसिी तरह से क्षतग्रिस्त हो गए थे, जसिके कारण उनका स्वाभावकि और आवश्यक मूत्र पानी की तरह नहीं, बल्कि खून की तरह बहता था। वह सात साल तक इस बीमारी से पीड़ति रहा और कई डॉक्टरों से इलाज कराने के बावजूद, वे उसकी मदद नहीं कर सके। डॉक्टरों से हार मानकर, उसने ईश्वर में अपना वश्विास रखा, प्रार्थना करते हुए कि आदरणीय पति अथानासयिस उसकी ओर से मध्यस्थता करें। जैसे ही वह इस उपचारकर्ता की ओर मुड़ा जो आरोग्य प्रदान करता है, उसे नम्निलखिति तरीके से उससे आरोग्य प्राप्त हुआ। – एक सपने में, उसे ऐसा लगा मानो वह भोजन कर रहा हो और उसने माननीय पति को मठाधीश की सामान्य जगह पर बैठे देखा, जसिके सामने पानी का एक भरा गलिास और अंगूर की एक थाली रखी थी। सम्माननीय फादर ने कुछ अंगूर लिए, उन्हें पानी में डाला, और उसे पीने के लिए यूस्ट्रैटयिस को दयिा। हालाँकि, यूस्ट्रैटयिस ने यह मान लयिा कि यह एक साधारण औषधीय उपाय था (जसिसे वह पहले ही त्याग कर चुका था), और उसने इसे स्वीकार करने से इनकार कर दयिा। तब फादर ने उससे कहा:

'डरो मत; इसे पी लो, और यह तुम्हारे स्वास्थ्य को बहाल कर देगा।'

तब यूस्ट्राटयिस ने उसे स्वीकार कर लयिा और पी लयिा; वह अपने सपने से जाग गया और, उस क्षण से ही, उसने अपनी बीमारी से पूरी तरह ठीक महसूस कयिा।

कन्तिु अब समय आ गया है कि परम पूज्य की जीवन, कर्म और चमत्कारों के इस वृत्तांत को समाप्त कयिा जाए, जसि एक पुस्तक के आधार पर संक्षेप में प्रस्तुत कयिा गया है, जो इस पवत्रि पुरुष की कथा को वस्तिार से वर्णति करती है।

अनंत महमिा और सम्मान परमेश्वर को अर्पति हो, जो अपने संतों में अद्भुत हैं और जन्हिोंने आदरणीय अथानासयिस के माध्यम से अपनी अद्भुत दया और शक्ति प्रकट की, अब और सदा के लिए और युगों-युगों तक। आमीन।

ट्रोपारयिन, स्वर 3:

स्वर्गदूतों के दल आपके देहधारी जीवन से चकति हुए, क्योंकि हे सर्वदा महिमामय, आप अपने शरीर सहति अदृश्य लोकों में आरोहण कयि, और दैवीय सेनाओं पर प्रहार कयिा; अत; अथानासयिस, मसीह ने आपको प्रचुर वरदानों से पुरस्कृत कयिा है: इसी कारण, हे पति, हमारी आत्माओं के उद्धार के लिए प्रार्थना करें।

कॉन्टाकयिन, स्वर 8:

अदृश्य प्राणयिों के एक सच्चे द्रष्टा और सत्य के एक वशि्वासयोग्य प्रचारक के रूप में, हे ईश्वर-वाहक, आपकी भेड़ें आपसे प्रार्थना करती हैं: अपने सेवकों के लिए अपनी मध्यस्थता को न रोकें, ताकि वे वपित्तयिों और परीक्षाओं से मुक्त हो सकें, क्योंकि वे आपसे पुकारती हैं: हर्षति हो, पति अथानासयिस।

19 जुलाई

6 जुलाई (पुराने कैलेंडर के अनुसार)

इसी दनि हम पवत्रि शहीदों इसावरा डकिन, इनोसेंट, फेलक्सि, हर्मयिस, बेसलि और पेरग्रिनि का स्मरण करते हैं, जो एथेंस के मूल नविासी थे और सम्राट नुमेरयिन (283–284) के शासनकाल में, मैसेडोनयिा के शहर अपोलोनयिा में सैन्य कमांडर ट्रपिोन्टयिस के हाथों मसीह के नाम के लिए यातनाएं सहते हुए शहीद हुए थे। दो नगरपालकों, रूफस और रूफनिस, का भी उनके साथ सरि कलम कर दयिा गया था।

इसी दनि, ओल्शान की राजकुमारी, कुंवारी सेंट जूलयिाना के पवत्रि अवशेषों की खोज हुई।

हमारे पूजनीय पति ससि्सोज़ महान की स्मृति

6 जुलाई को स्मरण कयिा जाता है

अपने युवा काल से ही ईश्वर से प्रेम करने वाले, आदरणीय ससिो ने क्रूस का भार उठाया और उत्साहपूर्वक मसीह का अनुसरण कयि, मस्रि के रेगस्तिानों में उपवास के तपस्वी अभ्यास के माध्यम से परशि्रम कयि; उन्होंने नम्रता और प्रार्थना के द्वारा अदृश्य शत्रुओं की भीड़ पर वजिय प्राप्त करते हुए, स्वर्गदूतों के समान जीवन जयि। उनके तपस्वी कार्यों का स्थल वह रेगस्तिानी पहाड़ था जहाँ आदरणीय एंथनी महान रहते थे, और धन्य ससिो ने स्वयं अपने जीवन को एंथनी के जीवन पर ही आदर्शति कयिा था। अपनी वनिम्रता और बुद्धमिानी के लिए, उन्हें ईश्वर से इतना अनुग्रह प्राप्त हुआ कि उन्होंने मृतकों को भी जीवति कर दयि, जैसा कि *पेटेरकिॉन*[4880] से स्पष्ट होता है, जहाँ संत ससिो के बारे में नम्निलखिति बताया गया है।

एक आम आदमी आशीर्वाद लेने के लिए अपने छोटे बेटे को साथ लेकर माउंट एंथनी पर बाबा ससिो के पास गया। रास्ते में ऐसा हुआ कि लड़का बीमार पड़ गया और मर गया; लेकनि उसका पति नरिाश नहीं हुआ, और आस्था के साथ मृत लड़के को बड़े संत के पास ले गया। सम्माननीय के सेल में प्रवेश करते ही, वह उनके पैरों पर गरि पड़ा, और अपने दविंगत पुत्र को भी उनके पैरों पर लटि दयि, मानो वह उनसे आशीर्वाद और प्रार्थना के लिए कह रहा हो। जब साधु ने अपनी प्रार्थना करके आशीर्वाद दे दयि, तो वह गृहस्थ बाहर चला गया, बच्चे को साधु के पैरों तले मृत अवस्था में पड़ा छोड़कर। साधु को यह एहसास नहीं हुआ कि बच्चा मर चुका था और यह सोचकर कि वह आशीर्वाद की प्रतीक्षा कर रहा है, उन्होंने उससे कहा:

'उठो, बच्चे, और यहाँ से चले जाओ।'

और वह मृतक लड़का तुरंत जीवति हो उठा और अपने पति के पीछे हो लयि।

[4880] एक पैटरिकिॉन, या 'पतिामहों की पुस्तक', संन्यासयिों के जीवन या उनके नैतकि उपदेशों के संक्षप्ति ववरिणों का एक संग्रह है।

तब वह आदमी, अपने बेटे को जीवित देखकर, उसके साथ बूढ़े के पास लौटा और झुककर उसे धन्यवाद दिया। बूढ़े ने, यह महसूस करते हुए कि उसने एक मृतक को जीवित कर दिया था, बहुत दुख हुआ, क्योंकि वह एक चमत्कार करने वाले के रूप में प्रसिद्ध नहीं होना चाहता था, और उसने उस आदमी को जो कुछ हुआ था, उसके बारे में अपनी मृत्यु के दिन तक कुछ भी न कहने की मनाही की।

एक बार भाइयों ने इस ईश्वर-प्रेरित पिता से पूछा:

'यदि कोई भाई पाप में पड़ जाए, तो क्या एक वर्ष उसका पश्चाताप करने के लिए पर्याप्त है?'

'यह कहने में कठोरता है,' वृद्ध ने उत्तर दिया।

तब भाइयों ने कहा:

'तो, क्या जिसने पाप किया है उसे केवल छह महीने तक पश्चाताप करना चाहिए?'

'यह बहुत लंबा समय है,' बुजुर्ग ने उत्तर दिया।

'शायद,' भाइयों ने फिर पूछा, 'चालीस दिन उसके पश्चाताप के लिए काफी हैं?'

'यह बहुत लंबा समय है,' बड़े भाई ने फिर से उत्तर दिया।

फिर उन्होंने कहा:

– मैं मानवता के प्रेमी, ईश्वर की दया में विश्वास करता हूँ, और यदि कोई व्यक्ति पूरे दिल से पश्चाताप करता है, तो ईश्वर तीन दिनों के भीतर उसका पश्चाताप स्वीकार कर लेंगे।

एक भाई ने फिर से वृद्ध से पूछा, कहता हुआ:

'मुझे क्या करना चाहिए, पिताजी, चूंकि मैं पाप में गिर गया हूँ?'

'अपने रास्ते सुधारो, मेरे बच्चे,' बुजुर्ग ने उत्तर दिया, 'और तुम बच जाओगे।'

'लेकिन पश्चाताप करने के बाद भी, मैं फिर से गिर गया,' भाई ने उत्तर दिया।

'एक बार फिर से अपने मार्ग सुधारो,' वृद्ध ने कहा।

भाई ने पूछा, 'यह गिरने और उठने का चक्र कब तक चलेगा?'

'जब तक तुम्हारा अंत नहीं आ जाता और तुम्हें या तो भलाई में या बुराई में नहीं पाता; इसलिए, मनुष्य को हमेशा पश्चाताप की अवस्था में रहना चाहिए, ताकि मृत्यु तुम्हें उसी अवस्था में पाए।'

इन पूजनीय पिताजी का अपोलोस नाम का एक शिष्य था। शत्रु की चालाकी की शक्ति के कारण, अन्य इच्छाओं और प्रलोभनों के बीच, वह पुरोहित का पद चाहने लगा। अपने सपनों में, राक्षस उसके सामने पवित्र पिता के भेष में प्रकट हुए, और उसे बिशप के रूप में नियुक्त कर रहे थे। जागने पर, उसने बूढ़े से विनती करना शुरू कर दिया कि वह उसे पादरी के रूप में नियुक्त होने के लिए शहर में बिशप के पास जाने का निर्देश दें। लेकिन बूढ़े ने उसे ऐसा करने से मना कर दिया और उसे समझाते हुए सलाह दी कि वह अपनी गरिमा से ऊपर का पद न मांगे। वरिष्ठ की निरंतर चेतावनियों और मार्गदर्शन से निराश होकर, अपोलोस चुपके से उनके पास से भाग गया और अलेक्जेंड्रिया में अपने रिश्तेदारों के यहाँ रहने चला गया, ताकि उनकी सहायता से वह अधिक शीघ्रता से पुरोहित का पद प्राप्त कर सके।

जब अपोलोस सड़क पर चल रहा था, तो उसका सामना एक ऐसे राक्षस से हुआ जो अथाह ऊँचाई का आदमी था। वह नग्न और काला था, उसका चेहरा भयानक, होंठ मोटे और पंजे लोहे के थे। यद्यपि उसका स्वरूप एक जानवर जैसा था, फिर भी वह एक ही समय में पुरुष और महिला दोनों जैसा दिखता था। दुर्गंध बिखेरते हुए, उस राक्षस ने अपोलोस की आँखों के सामने इतनी निर्लज्जता दिखाई कि उसका वर्णन करना भी असंभव है। राक्षस ने खुद को अपोलोस की गर्दन पर लपेट लिया, उसे अपनी बाहों में जकड़ लिया और बार-बार चूमा। अपोलोस ने खुद को क्रूस के चिह्न से बचाया और राक्षस की पकड़ से खुद को छुड़ाने के लिए संघर्ष किया। लेकिन राक्षस ने उससे कहा:

'तुम मुझसे क्यों भाग रहे हो? जान लो कि तुम मेरे हो, और मैं तुमसे प्रेम करता हूँ, क्योंकि तुम मेरी इच्छाओं को पूरा करते हो। इसीलिए मैं तुम्हारे पास आया हूँ, तुम्हारे साथ रहने के लिए, जब तक कि मैं तुम्हारी सभी इच्छाओं को पूरा नहीं कर देता।'

उसकी बदबू और निर्लज्जता को सहन न कर पाकर, अपोलोस ने अपनी आँखें आकाश की ओर उठाईं और ऊँचे स्वर में पुकार लगाई:

'हे ईश्वर, मेरे पिता सिसो की प्रार्थनाओं से, मेरी सहायता करो और मुझे इस विपत्ति से बचाओ!'

और फिर वह दानव, उससे थोड़ी दूरी पर पीछे हटकर, एक सुंदर नग्न महिला में बदल गया और उससे कहा:

'आओ और अपनी इच्छा को पूरा करो, क्योंकि तुमने अक्सर अपने मन के विचारों से मुझे तसल्ली दी है।'

बाद में राक्षस ने कहा, 'मैं तुम्हें एक पुरोहित और एक बिशप बनाना चाहता था, लेकिन उस सुख-प्रेमी वृद्ध, सिसो की प्रार्थनाएँ मुझे तुमसे दूर कर रही हैं।'

ये शब्द कहते ही वह दानव अदृश्य हो गया।

महान भय से ग्रस्त होकर, अपोलोस वृद्ध के पास लौट आया और, उनके पैरों पर गिरकर, उसने उन्हें वह सब कुछ बताया जो हुआ था और क्षमा मांगी। उसने भाइयों को यह भी बताया कि उसने शैतान की धोखाधड़ी के कारण कितनी पीड़ा झेली थी और कैसे पूजनीय पिता सिसोस की प्रार्थनाओं ने उसकी मदद की थी।

सचमुच, उनका प्रार्थना-बल राक्षसों को भगाने में शक्तिशाली था। इसने वृद्ध सिसोए के एक अन्य शिष्य, अब्राहम नामक व्यक्ति को सताने वाले अशुद्ध आत्मा को भी भगा दिया। सभी दुष्ट आत्माएँ उससे भाग गईं, और मसीह के इस बहादुर और अजेय योद्धा के पास आने की हिम्मत नहीं की।

आदरणीय सिसो साठ वर्षों तक रेगिस्तान में रहे। जब वे मरणासन्न थे (और उस समय उनके भाई उनके साथ थे), तो उनका चेहरा प्रकाश की तरह चमक उठा, और उन्होंने अपने भाइयों से कहा:

'देखो, अबा एंथनी आ गए हैं।'

फिर, थोड़ी देर रुकने के बाद, उन्होंने फिर से कहा:

'देखो, भविष्यवक्ताओं का समुदाय आ गया है।'

और एक बार फिर वह और भी अधिक तेजस्वी हो गया और कहा:

'देखो, प्रेरितों का समुदाय आ गया है।'

और उसका चेहरा दोगुनी चमक से दमक उठा, और वह अदृश्य आकृतियों से वार्तालाप करने लगा।

भाइयों ने उससे विनती करते हुए कहा:

– पिताजी, हमें बताइए: आप किससे वार्तालाप कर रहे हैं?

और उसने उनसे कहा:

– 'ये स्वर्गदूत हैं जो मुझे ले जाने आए हैं, लेकिन मैं उनसे प्रार्थना कर रहा हूँ कि वे मुझे थोड़ी देर के लिए छोड़ दें, ताकि मैं प्रायश्चित कर सकूँ।'

भाइयों ने उससे कहा, 'पिताजी, आपको पश्चाताप की कोई आवश्यकता नहीं है।'

इस पर वृद्ध ने उत्तर दिया:

'सचमुच, मुझे नहीं पता कि मैंने पश्चाताप करना शुरू भी किया है या नहीं।'

लेकिन सभी भाइयों को पता था कि वह सद्गुणों में परिपूर्ण था। इसके बाद, वह और भी अधिक चमक उठा, और उसका चेहरा सूर्य के समान हो गया, और सभी इससे डर गए। तब वृद्ध ने कहा:

'देखो, प्रभु आ रहे हैं; तुम सब देखो। वह कहते हैं: "मुझे रेगिस्तान से चुने हुए पात्र को ला दो!"'

इन शब्दों के साथ, पूज्य ने अपना प्राण प्रभु को सौंप दिया[4881] । उसी क्षण, बिजली की एक चमक दिखाई दी और चर्च एक मधुर सुगंध से भर गया।

अपना सांसारिक जीवन इतना धन्य अंत करने के बाद, पूजनीय सिसोय शाश्वत जीवन में प्रवेश कर गए। और अब वह मसीह के साथ वास करते हैं और उन्हें देखकर आनंदित होते हैं, उन पवित्र चेहरों के साथ जिन्हें उन्होंने अपनी मृत्यु के समय देखा था।

हमारे पूजनीय पिता सिसो की प्रार्थनाओं के द्वारा, हमारे प्रभु यीशु मसीह की कृपा से हम भी इस आनंद के योग्य ठहरें, जिनका महिमा युगानुयुग होती रहे। आमीन।

ट्रोपारियन, स्वर 1:

हे तपस्वी, देह में दूत, और चमत्कार करने वाले, हमारे ईश्वर-धारी पिता सिसोए, उपवास, जागरण और प्रार्थना के द्वारा आपने स्वर्गीय वर प्राप्त किए; आप विश्वास के साथ आने वालों को रोगों से चंगा करते हैं और उनकी आत्माओं

[4881] आदरणीय सिसोस महान की मृत्यु लगभग 429 में हुई।

को भी। उसकी महमिा हो जसिने आपको शक्त दी; उसकी महमिा हो जसिने आपको मुकुट पहनाया; उसकी महमिा हो जो आपके द्वारा सभी चंगाई करता है।

कॉन्टाकयिन, स्वर 4:

प्रयत्न करके, हे पूज्यनीय, आप पृथ्वी पर एक देवदूत के रूप में देखे गए, जो वशि्वासयिों के वचिारों को दव्यि चहि्नों से नरिंतर प्रकाशति करते थे: अत; वशि्वास द्वारा, हम आपको सम्मानति करते हैं, ससिोएस।

पवत्रि शहीद कुंवारी लूसयिा का कष्ट-सहन, रक्सि और अन्य लोगों के साथ।

6 जुलाई को स्मरण कयिा जाता है

पवत्रि शहीद लुसयिा ससिलिी[4882] की मूल नविासी थीं, जो कैपैडोसयिा[4883] के क्षेत्र की थीं। उन्हें वकिार रक्सि[4884] द्वारा बंदी बना लयिा गया था, जसिने उन्हें मूर्तयिों को बलदिान चढ़ाने के लिए मजबूर करना शुरू कर दयिा, लेकनि उन्होंने मना कर दयिा और मसीह की सेवकिा बने रहने की अपनी दृढ़ इच्छा व्यक्त की। वकिर उसकी दृढ़ता से प्रभावति हुआ, उसने उसे और उसकी दासयिों को रहिा कर दयिा, उसे एक अलग आवास प्रदान कयिा, और उसे एकांत में प्रार्थना में संलग्न होने की अनुमत दी। एक बार, जब वह युद्ध के लिए रवाना हो रहा था, तो उसने उससे अपने लिए ईश्वर से प्रार्थना करने को कहा, और उसकी प्रार्थनाओं के कारण वह युद्ध से वजियी होकर लौटा। बीस साल बाद, संत लूसयिा ने पादरी से उसे कैम्पेनयिा जाने देने के लिए कहा ताकि वह वहाँ मसीह के लिए शहादत प्राप्त कर सके। लेकनि वह उसे अकेले जाने नहीं देना चाहता था और अपना राज्य, अपना धन, अपनी पत्नी और बच्चों को पीछे छोड़कर, स्वयं उसके साथ चल पड़ा। जब वे कैम्पेनयिा पहुँचे, तो उन्हें उस समय के शासक गवर्नर[4885] ने पकड़ लयिा, और उनके आदेश पर, उनका सरि कलम कर दयिा गया। उनके साथ, अन्य पवत्रि शहीदों को भी यातनाएँ दी गईं, अर्थात्: एंथनी, लूसयिन, इसडिोर, डायोन, डायोर, क्यूटोनयिस, अरॉनस, पैपकिस और सैटर्न[4886] , और इन यातनाओं के बीच, नम्निलखिति का नधिन हो गया:[4887] .

संत कोइंटस की शहादत।

6 जुलाई को स्मरण कयिा जाता है

[4882] पवत्रि शहीद लुसयिा की पहचान यहाँ ससिलिी की लुसयिा के साथ भ्रमति होने के कारण की गई है, जनिका पर्व 13 दसिंबर को मनाया जाता है। सम्राट बेसलि के कैलेंडर में पूर्ववर्ती का ववरिण इस प्रकार शुरू होता है: 'मसीह की शहीद लुसयिा, ससिलिी की लुसयिा से अलग थीं' और इसी तरह।

[4883] ससिलिी में ऐसा कोई क्षेत्र नहीं है। स्पष्ट रूप से, यहाँ संदर्भति क्षेत्र कैम्पेनयिा के बजाय कैपाडोसयिा है, जो लैटयिम और लुकेनयिा के बीच, टायर्रेनीयन सागर के तट पर, सैम्नयिम के दक्षणि-पश्चमि में एपेनाइन प्रायद्वीप पर स्थति था।

[4884] संतों के कृत्यों के अनुसार, वह बर्बर राजा अवसेई था। यूनानी प्रस्तावनाओं में, हमारी स्लावोनकि संस्करण की तरह, उसे रेक्स कहा जाता है, जो लैटनि शब्द **rex* (*राजा) से लयिा गया है। ऐसा माना जाता है कि सामान्य संज्ञा *rex* का रूपांतरण वशिेष नाम रेक्स में हो गया था।

[4885] यह रोम नगर के प्रीफेक्ट, एलयिस डायोनसियिस थे। जैसा कि 'संतों के कृत्यों' में वर्णति है, संत लुसयिा और रक्सि की शहादत का स्थान रोम नगर था।

[4886] संतों के कृत्यों में लूसयिा और रक्सि के बाद सरि कलम कए गए नम्निलखिति पवत्रि शहीदों के नाम दए गए हैं: एंथनी, आइरेनयिस, थयिोडोर, डायोनसियिस, अपोलोनयिस, अपोमयिस, प्रोनकिस, कोटयिस, ओरयिन, पैपकिस, सैटरस, वक्टिर और नौ अनाम शहीदों के नाम; इस प्रकार, लूसयिस और रक्सि को छोड़कर, कुल 21 शहीद हुए। हालाँकि, नकिोडेमस के सनिाक्सारयिन में लूसयिस के साथ पीड़ति 15 व्यक्तयिों की सूची है, जसिमें रक्सि को शामलि नहीं कयिा गया है।

[4887] ये पवत्रि शहीदों ने 301 ईस्वी में डायोक्लेटयिन के शासनकाल में यातनाएँ झेलीं।

यह पवत्रि शहीद फ्रीजयि[4888] में पैदा हुए थे और वहाँ उन्हें ईसाई भक्त कि शक्षि दी गई थी। बाद में नेओलडि[4889] आकर, उन्होंने गरीबों को दान दयि और अशुद्ध आत्माओं से ग्रस्त लोगों को चंगा कयि। प्रांतीय राज्यपाल रूफस ने उसे मूर्तयिों को बलदिान करने के लिए मजबूर करना शुरू कर दयि, लेकनि वह तुरंत पागलपन के दौरे में पड़ गया, और संत ने उसे ठीक कर दयि। इसके लिए, रूफस ने उसे उपहारों से पुरस्कृत कयि और सम्मान के साथ उसे वदिा कर दयि। बाद में पर्गामम[4890] की सड़क पर यात्रा करते समय, संत कोइंट को कमि[4891] शहर के मूर्तपिूजकों ने पकड़ लयि, जन्हिोंने उन्हें यातना दी; लेकनि उसी क्षण अचानक एक भूकंप आ गया, जसिसे मूर्तपिूजक मंदरि ढह गए और मूर्तयिाँ जमीन पर गरि पड़ीं। तब यातना देने वालों ने अपनी यातना बंद कर दी, संत को बाँध दयि, और उसे उसी हालत में छोड़ दयि। थोड़ी ही देर बाद, शहर का नव-नयिुक्त गवर्नर, एक क्लेअर्कस, कमिी पहुँचा और उसने आदेश दयि कि संत कोइंट को पकड़ लयि जाए और उसकी पंडिलयिाँ कुचल दी जाएँ; लेकनि संत ठीक हो गए, उसके बाद दस साल और जीवति रहे, और कई चमत्कार करने के बाद, प्रभु के पास चले गए[4892] ।

पवत्रि शहीदों मरीना, मार्था, अवदफिैक्स, अव्वाकुम, करिकि, पादरी वैलेंटाइन, एस्टरयिस और कई अन्य की पीड़ा

6 जुलाई को स्मरण कयि जाता है

रोमन सम्राट क्लॉडयिस के शासनकाल में[4893] , एक कुलीन वंश का, धनी और वश्विास से ईसाई, मारनि नामक व्यक्त,ि अपनी पत्नी मार्था और अपने दो बेटों, ऑडफिैक्स और हबक्कूक के साथ, पवत्रि प्रेरतिों[4894] और अन्य संतों के समाधयिों का सम्मान करने के लिए फारस से रोम आया। रोम में रहते हुए, उन्होंने उन ईसाइयों से मलिना शुरू कर दयि जो बेड़यिों में जकड़े हुए थे और मसीह में अपने वश्विास के लिए फांसी दिए गए लोगों के शवों को दफनाने लगे। टायबर नदी[4895] पार करने के बाद, उन्हें वहाँ एक दूसरे शहर में, पवत्रि शहीद सरियिाकस मलि, जो कैद थे और जन्हिोंने मसीह के लिए पहले ही बहुत कष्ट सह लिए थे। उसके पास पहुँचने पर, उन्होंने उसके चरणों में प्रणाम कयि, और उससे उनके लिए प्रभु से प्रार्थना करने का आग्रह कयि; फरि उन्होंने अपनी संपत्त कि उपयोग करके, उनके पैर धोकर और उस पानी से स्वयं को छड़िककर, उसकी और उसके साथ बंद अन्य मसीह के बंदयिों की सेवा करनी शुरू कर दी। इस प्रकार संतों की सेवा करते हुए, वे वहाँ आठ दनि रहे।

उस समय, सम्राट क्लॉडयिस ने आदेश दयि कि जो भी ईसाई धर्म का अनुयायी पाया जाए, उसे बनिा मुकदमे के मौत की सज़ा दी जाए। इससे ठीक पहले, 260 ईसाइयों को गरिफ्तार कयि गया था; सम्राट के न्यायकि आदेश से, उन्हें धरती खोदने की सज़ा दी गई थी, और उनका कारावास का स्थान शहर के बाहर स्थति था, सलारयिन वे[4896] के नाम से जाने जाने वाले रास्ते पर, जहाँ मट्टिी के बर्तन बनाए जाते थे। सम्राट ने सैनकिों को आदेश दयि कि वे इन सभी ईसाइयों को सार्वजनकि तमाशे में तीरों से भेद दें, और उनके शवों को जला दें। जब मारनि और मार्था को अपने बेटों के साथ यह खबर मलिी, तो वे बहुत दुखी हुए और संत जॉन द प्रेस्बटिर के साथ पवत्रि शहीदों के फांसी स्थल के लिए रवाना हो गए, उन्होंने आग से जतिने शव नकिाल सके, चुपके से नकिाल लिए, उन्हें साफ लनिन में लपेटा और केकुमर नामक पहाड़ की ढलान

[4888] फ्रासयि एशयि माइनर में एक रोमन प्रांत का नाम था। इसकी उत्तरी सीमा बथिुनयि, पूर्वी सीमा गलाटयि और लकिोनयि, दक्षणिी सीमा पसिीडयि और कैरयि, और पश्चमिी सीमा लडियि और मसियि से मलिती थी।

[4889] नयिोलडि, या अधकि सही रूप से एओलडि, एशयि माइनर में आयोनयि और मसियि के बीच के क्षेत्र को दयि गया नाम था, जो पूर्व में लडियि से सटा हुआ था।

[4890] पर्गामोन शहर एशयि माइनर के उत्तर-पश्चमिी प्रांत मसियि में कैकस नदी पर एजयिन सागर के तट के पास स्थति था।

[4891] सीमा शहर एशयि माइनर के लडियि प्रांत के उत्तरी भाग में तट पर स्थति था।

[4892] पवत्रि शहीद कोइंट ने सम्राट ऑरेलयिन (270–275) के शासनकाल में यातनाएँ झेलीं, और वे लगभग 283 ईस्वी में शांतपिूर्वक नधिन कर गए।

[4893] यह, बेशक, सम्राट क्लॉडयिस द्वतिीय को संदर्भति करता है, जन्हिोंने 268 से 284 तक रोम पर शासन कयि।

[4894] पवत्रि प्रेरति पतरस और पौलुस भी रोम में शहीद हुए और वहीं दफनाए गए।

[4895] टायबर मध्य इटली की सबसे महत्वपूर्ण नदयिों में से एक है; इसके कनिारे, जहाँ यह समुद्र में मलिती है, उससे बहुत दूर नहीं, रोमन साम्राज्य की प्राचीन राजधानी, रोम शहर स्थति है।

[4896] सलेरयिन मार्ग रोम शहर के उत्तर-पूर्वी भाग में स्थति था और यह उत्तरी इटली की ओर जाता था।

पर सालारयिन सड़क के पास स्थति एक गुफा में दफना दयिा[4897] । इन पवत्रि शहीदों के शवों के साथ, उन्होंने एक नश्चिति साम्राज्यकि ट्रबि्यून[4898] , जसिका नाम ब्लास्टा था, का शव भी दफनाया, जसि मसीह के लिए मार दयिा गया था, और वे пресвитер जॉन के साथ कई दनिों तक वहीं रहे, अपना समय उपवास और प्रार्थना में बतिाते हुए। यह जानने पर, सम्राट क्लॉडयिस ने मारनिस और उसके साथयिों की खोज का आदेश दयिा, लेकनि वे नहीं मलि, क्योंकि वे छपि गए थे।

[4899]उस गुफा से लौटकर और उस कालकोठरी में पहुँचकर जहाँ पवत्रि शहीद सरिील को कैद कयिा गया था, उन्हें वहाँ नहीं मलिा, क्योंकि उनके आने से एक रात पहले उन्हें तलवार से मार डाला गया था और टबिर नदी में फेंक दयिा गया था। जब उन्हें पता चल गया कि संत का शरीर कहाँ फेंका गया था, तो वे रात होने तक इंतजार करने लगे और जब अँधेरा छा गया, तो उसे खोजने के लिए नकिल पड़े; उसे खोज लेने के बाद, उन्होंने उसे एक गुफा में, पोंटयिन की कब्र में दफना दयिा।

जब वे बाद में, अभी भी छाई हुई रात की अँधेरी में, टबिर नदी के उस कनिारे से गुज़रे, तो उन्हें एक घर के ऊपरी कमरे से गायन की आवाज़ें सुनाई दीं। ये ईसाई थे जो बशिप कैलकिस्टस के साथ इकट्ठा हुए थे और ईश्वर की महमिा करते हुए, पूरी रात की प्रार्थना सभा मना रहे थे। गाने वाले ईसाइयों की आवाज़ सुनकर, मारनि और उसके साथी बहुत प्रसन्न हुए और, घर के दरवाज़ों के पास जाकर, खटखटाने लगे; लेकनि अंदर मौजूद ईसाइयों ने उनके लिए दरवाज़ा खोलने से इनकार कर दयिा, क्योंकि उन्हें डर था कि मूर्तपिूजक उन पर हमला कर सकते हैं। तब संत कैलकिस्टस, बशिप, अपने साथयिों की ओर मुड़कर बोले:

'साहसी बनो; डरो मत। मसीह हमारे द्वार पर खटखटा रहे हैं। आइए हम इसे उनके लिए खोलें, क्योंकि वे हमें ऐसा करने के लिए बुला रहे हैं।'

ये शब्द कहने के बाद, बशिप स्वयं गए और दरवाज़ा खोला। जब मारनि, मार्था और उनके दो बेटों ने बशिप को देखा, तो वे उनके पैरों पर गरि पड़े और उनका आशीर्वाद माँगा। बशिप और सभी ईसाइयों ने उन्हें देखकर प्रसन्नता व्यक्त की; उन्होंने उन्हें ऊपर के कमरे में ले जाकर प्रेम से स्वागत कयिा, और फरि उनके साथ मलिकर प्रार्थना करने लगे। मारनि अपनी पत्नी और बेटों के साथ दो महीने तक उस स्थान पर रहे, दनि में छपिते और रात में प्रार्थना के लिए इकट्ठा होते रहे।

उस समय, सम्राट क्लॉडयिस ने आदेश दयिा कि एक सम्मानति व्यक्ति, वेलेंटाइन नामक एक पादरी—जसि मसीह की शकि्षाओं को मानने के लिए गरिफ्तार कयिा गया था और भारी बेड़यिों में जकड़ा गया था—को सार्वजनकि रंगमंच के पास स्थति महल में उसके सामने मुकदमे के लिए और पूछताछ के लिए लाया जाए। उन्होंने उससे कहा:

'ऐसा क्यों है कि हमारे बीच रहते हुए भी तुम हमारे साथ मेलजोल से नहीं रहते? मैं तुम्हारी ईसाई शकि्षाओं के बारे में काफी सुन चुका हूँ, और मुझे आश्चर्य है कि तुम, एक बुद्धमिान व्यक्ति होकर, अपने धर्म की व्यर्थ की कल्पनाओं के बहकावे में आ गए?'

'यदि तुम परमेश्वर की उस देन को जानते, जो हमारे वशि्वास में नहिति है,' धन्य पुरोहति वैलेंटाइन ने उत्तर दयिा, 'तो तुम स्वयं प्रसन्नतापूर्वक हमारे वशि्वास को अपना लेते, और तुम्हारी प्रजा झूठे देवताओं और मानव हाथों से नरि्मति

[4897] यहाँ 'गुफा' शब्द का तात्पर्य कैटाकॉम्ब के नाम से जानी जाने वाली रोमन भूमगित कब्रगाहों से है। ये जमीन के नीचे खोदे गए मार्ग थे, जनिकी दीवारों में कोष्ठक बनाए गए थे; मृतकों के शवों को ताबूतों के बनिा वहाँ रखा जाता था, जसिके बाद कोष्ठकों को पत्थरों से सील कर दयिा जाता था और संगमरमर की पट्टयिों से ढक दयिा जाता था। गलयिारों को रोशन करने के लिए, आलाओं पर दीपक लटकाए जाते थे और दीवारों में छेद कए जाते थे, जो हवा को हवादार करने का भी काम करते थे। उत्पीड़न के समय, यहीं पर उत्पीड़ति ईसाइयों ने पवत्रि शहीदों को दफनाया और उनकी स्मृति में आने वाले दनिों का जश्न मनाने के लिए इकट्ठा हुए। वे यहाँ धार्मकि सेवाएँ आयोजति करने के लिए भी इकट्ठा हुए और वशिेष रूप से यूखरस्ति की संस्कार का जश्न मनाने के लिए, जसिमें पवत्रि शहीदों की कब्रों के ऊपर रखी संगमरमर की पट्टयिाँ वेदी के रूप में काम करती थीं।

[4898] 'ट्रबि्यून' शब्द मूल रूप से रोमन आबादी के कबीलों, या वर्गों, के नेताओं को संदर्भति करता था; हालाँकि, बाद में इसका अर्थ वभिन्नि सार्वजनकि पदों के धारकों, मुख्य रूप से सैन्य इकाइयों के कमांडरों, से होने लगा, जो हमारे आज के कर्नल और कंपनी कमांडर के बीच के कसिी पद पर थे। यहाँ उल्लेखति पवत्रि शहीद व्लास्ट ऐसे ही एक कमांडर थे। उन्हें 'इम्पीरयिल' (शाही) कहा जाता है, शायद इसलिए क्योंकि वे तथाकथति प्राटोरयिन गार्ड से संबंधति थे, जो स्वयं सम्राट की सेवा करने के लिए बाध्य था।

[4899] यहाँ 'गुफा में एक कब्र' से, अनुमानतः कैटाकॉम्ब (भूमगित कब्रगाह) में एक कक्ष का अभपि्राय है। आमतौर पर, रोमन मृतकों को दीवारों के भीतर भूमगित गलयिारों में दफनाते थे, लेकनि अमीर लोग—जैसे, यह मानना चाहेगा कि यहाँ उल्लेखति पोंटयिन—कभी-कभी मार्गों से अलग, पूरे, अक्सर बहुत वशिाल कमरे बनवाते थे, जहाँ परविार के सभी सदस्यों को दफनाया जाता था। ईसाई धर्म अपनाने वाले अमीर लोग, उत्पीड़न के समय, अक्सर इन पारविारकि कब्रों में उन पवत्रि शहीदों के शवों को दफनाते थे, जनि्होंने मसीह के लिए अपना बलदिान दयिा था, और इसे अपने लिए एक बड़ा सम्मान और आशीर्वाद मानते थे।

मूर्तियों ( ) को त्याग देती, और एक सर्वशक्तिमान परमेश्वर पिता और यीशु मसीह की गवाही देती।' उनके पुत्र, जो सभी अस्तित्व का स्रष्टा है, जिसने स्वर्ग, पृथ्वी, समुद्र और उनमें जो कुछ भी है, सब कुछ बनाया।

इसके बाद, सम्राट के साथ खड़े लोगों में से एक, जो कानून प्रवर्तन अधिकारी था, ने पवित्र पुरोहित से ऊँचे स्वर में कहा:

'और आप देवताओं डीईआई[4900] और मर्करी[4901] के बारे में क्या सोचते हैं?'

'मैं और कुछ नहीं सोचता,' संत वैलेंटाइन ने कहा, 'सिवाय इसके कि वे दुष्ट और अधर्मी पुरुष थे जिन्होंने अपना जीवन दुष्टता, विकृतियों और सुख-भोग में बिताया। लेकिन अगर आप मुझे उनकी उत्पत्ति और उनके कर्मों के बारे में बताएँ, तो आप स्वयं देखेंगे कि वे किस हद तक अधर्मी थे।'

संत के इन शब्दों के बाद, कानून के रक्षक ने ज़ोर से कहा:

'यह आदमी देवताओं और रोमन साम्राज्य के शासकों का अपमान कर रहा है!'

सम्राट क्लॉडियस, इस बातचीत को धैर्यपूर्वक सुनने के बाद, फिर वैलेंटाइन से कहा:

'यदि मसीह ईश्वर हैं, तो आप मुझे उनके बारे में पूरा सच क्यों नहीं बताते?'

इस पर, पवित्र पुरोहित ने सम्राट से उत्तर दिया:

'हे राजा! मेरी बात सुनो, और तुम्हारी आत्मा का उद्धार होगा, तुम्हारा राज्य विस्तृत होगा, और तुम्हारे शत्रु नष्ट हो जाएँगे। तुम सभी पर विजय प्राप्त करोगे और यहाँ एक अस्थायी राज्य, तथा आने वाले जीवन में एक शाश्वत राज्य का आनंद उठाओगे। बस इतना करो: उन संतों के रक्त का पश्चाताप करो जिसे तुमने बहाया है, मसीह में विश्वास करो, और पवित्र बपतिस्मा ग्रहण करो।

ये वचन सुनकर, क्लॉडियस ने उपस्थित लोगों से कहा:

'रोमन नागरिकों और सभी लोगों, सुनो कि यह आदमी हमसे क्या अच्छी शिक्षा प्रचारित कर रहा है।'

[4902]लेकिन कैलपुरनीउस नामक एक ईसाई ने ऊँचे स्वर में उत्तर दिया:

'हे राजा, आप इस आदमी की व्यर्थ शिक्षाओं से भटक रहे हैं। आप स्वयं निर्णय करें कि क्या हमारे लिए उन देवताओं को त्यागना उचित है, जिनकी पूजा हमें बचपन से सिखाई गई है।'

प्रिफेक्ट के ये शब्द सुनने के बाद, सम्राट का हृदय द्रवित हो गया, और उसने संत वैलेंटाइन, пресвитер, को कैलपुर्नीयस के हवाले कर दिया, और उससे दुख के साथ कहा:

'उसकी बात धैर्यपूर्वक सुनो, और यदि उसका उपदेश निराधार सिद्ध हो, तो उसके साथ उस कानून के अनुसार व्यवहार करो जिसके द्वारा पवित्र वस्तुएँ चुराने वालों का न्याय किया जाता है; लेकिन यदि तुम पाओ कि उसकी सलाह ठोस और सच्ची है, तो हमें उसकी बात क्यों नहीं माननी चाहिए?'

एपार्क कैलपुर्नीयस ने संत वैलेंटाइन को लेकर, उन्हें अपनी पूर्व अधिकार-क्षेत्र के एक प्रमुख पदाधिकारी, अस्टेरियस नामक एक व्यक्ति के हवाले कर दिया, जो अपनी बुद्धिमत्ता के लिए प्रसिद्ध था, और उससे कहा:

[4900] डी या ज्यूस, जिन्हें अन्यथा जुपिटर के नाम से जाना जाता है, ग्रीक पौराणिक कथाओं के अनुसार, सबसे छोटे टाइटन, सैटर्न—जो पहले क्रीट द्वीप पर शासन करता था और बाद में पूरी दुनिया पर अपना प्रभुत्व जमाने का दावा करने लगा—और उसकी बहन रेया का पुत्र था। रेया से सैटर्न के कई बेटे और बेटियाँ हुईं, लेकिन उसने उनके जन्म के तुरंत बाद ही उन्हें निगल लिया, क्योंकि उसकी माँ, गैया ने भविष्यवाणी की थी कि उसे उसके अपने ही बच्चों द्वारा सिंहासन से उखाड़ फेंका जाएगा। शनि के सभी बच्चों में से, केवल ज्यूस को ही रिया ने इस भाग्य से बचाया था, और बाद में उन्होंने वास्तव में शनि को उखाड़ फेंका। ज्यूस को यूनानियों और रोमनों द्वारा देवताओं और मनुष्यों के पिता, स्वर्ग और पूरे ब्रह्मांड के एक शक्तिशाली और प्रबल शासक के रूप में पूजा जाता था, जो पृथ्वी पर गरज और बिजली भेजता था, और वह उनका प्रमुख देवता था। ग्रीक मिथकों में उन पर कई छोटी देवियों और यहां तक कि नश्वर महिलाओं के साथ शारीरिक संबंध होने का आरोप लगाया गया है, और अन्य देवताओं और देवियों की तरह उन पर भी विभिन्न मानवीय जुनून और दुर्गुणों का आरोप लगाया गया है।

[4901] मर्करी, जिसे हर्मीस के नाम से भी जाना जाता है, जो जुपिटर और उसकी बहन हेरा का पुत्र था; उसे ग्रीकों और रोमनों द्वारा देवताओं के दूत, ज्यूस की इच्छा के निष्पादक, देवताओं और मनुष्यों के बीच मध्यस्थ, वाक्पटुता के देवता, और विविध खोजों, आविष्कारों और शिल्पों के देवता के रूप में पूजा जाता था, उद्योग और व्यापार के देवता, जो कथित तौर पर केवल तब ही धन लाते हैं जब उनमें चालाकी, धोखा और यहां तक कि चोरी भी शामिल हो – इसलिए हर्मीस चोरी और धोखे के संरक्षक थे, जो हर तरह के झूठ और शपथ-उल्लंघन को मंजूरी देते थे।

[4902] ग्रीको-रोमन साम्राज्य में, 'एपार्क' शब्द विशेष रूप से प्रांतीय गवर्नरों के लिए प्रयुक्त होता था, हालांकि यह उपाधि कभी-कभी शहर के मजिस्ट्रेटों पर भी लागू की जाती थी।

'यदि तुम अपनी बातों से इस आदमी को हमारे विचार से सहमत कर सकते हो, तो मैं सम्राट को तुम्हारी बुद्धिमत्ता के बारे में बताऊँगा, और तुम उनके मित्र बन जाओगे।'

तब एस्टरियस ने पादरी वैलेंटाइन को अपने साथ ले जाकर अपने घर ले गए। जब संत वैलेंटाइन एस्टरियस के घर में प्रवेश किए, तो वे प्रार्थना करने के लिए घुटने टेककर इस प्रकार प्रार्थना करने लगे:

'हे सभी दृश्य और अदृश्य प्राणियों के ईश्वर, मानव जाति के स्रष्टा, जिन्होंने हमें शैतान की धोखाधड़ी से बचाने और हमें अंधकार से प्रकाश में लाने के लिए अपने पुत्र, हमारे प्रभु यीशु मसीह को भेजा, और जिन्होंने हमें यह कहते हुए अपने पास बुलाया: *'मेरे पास आओ, हे सब जो परिश्रमित और बोझिल हैं, और मैं तुम्हें विश्राम दूँगा'* (मत्ती 11:28), इस घर को अपनी ओर फेर दो और अंधकार के बाद प्रकाश प्रदान करो; यह आपको – पवित्र आत्मा के साथ एकता में परमेश्वर और मसीह – अनंत काल तक जान सके। आमीन।

जब संत ने यह प्रार्थना समाप्त कर ली, तो अस्टेरियस, जिसने उनके शब्द सुने थे, ने उनसे कहा:

'मुझे आश्चर्य है कि आप अपने मसीह को प्रकाश कहते हैं।'

'निश्चय ही,' संत वैलेंटाइन ने उत्तर दिया, 'हमारे प्रभु यीशु मसीह, जो पवित्र आत्मा और अति पवित्र कुँवारी मरियम से उत्पन्न हुए, सच्चा प्रकाश हैं जो संसार में आने वाले प्रत्येक व्यक्ति को प्रकाशित करता है (यूहन्ना 1:9)।'

'यदि वह हर एक व्यक्ति को प्रकाशित करता है,' एस्टेरियस ने उत्तर में कहा, 'तो मैं अभी परख करूँगा कि जो आप कह रहे हैं वह सच है या नहीं। मेरी एक बेटी है जो दो साल की उम्र से पहले अंधी हो गई थी, और यदि आप आपके मसीह के नाम पर उसकी दृष्टि वापस कर दें, तो मैं वही करूँगा जो आप कहेंगे।'

'मुझे उसे ला दो,' पवित्र पुरोहित ने कहा।

अस्तेरियस जल्दी से गया और अंधी लड़की को ले आया। तब संत वैलेंटाइन ने अपने हाथ उठाकर और अपनी आँखें स्वर्ग की ओर उठाकर, आँसुओं के साथ लंबी प्रार्थना की, और फिर अंधी लड़की की आँखों पर अपना हाथ रखा और कहा:

'हे प्रभु यीशु मसीह! अपने दास को प्रकाशित कर, क्योंकि तू ही सच्चा प्रकाश है।'

ये शब्द सुनते ही, उस युवती ने तुरंत अपनी दृष्टि वापस पा ली। यह देखकर, एस्टरियस और उसकी पत्नी संत के पैरों पर गिर पड़े और कहा:

'हम आपसे विनती करते हैं, हमारे साथ अपनी इच्छा के अनुसार करें, ताकि हम मसीह के सेवक बन सकें और हमारी आत्माओं का उद्धार हो।'

'तो यह करो,' संत वैलेंटाइन ने उत्तर दिया, 'जैसा मैं तुम्हें आज्ञा दूँगा। यदि तुम पूरे हृदय से मसीह पर विश्वास करते हो, तो अपने घर में सभी मूर्तियों को नष्ट कर दो, उपवास करो, अपने सभी देनदारों के कर्ज माफ कर दो, और पवित्र बपतिस्मा ग्रहण करो – तब तुम बच जाओगे।'

एस्टरियस और उसकी पत्नी खुशी-खुशी यह सब करने के लिए सहमत हो गए, और संत वैलेंटाइन ने उनके लिए तीन दिन के उपवास का आदेश देकर, उन्हें पवित्र विश्वास के सत्यों की शिक्षा देना शुरू कर दिया। और चूँकि एस्टरियस के अधिकार में कई कैदी थे, उसने उन सभी को उनकी बेड़ियों से मुक्त कर दिया और जेल से रिहा कर दिया। तीन दिन के उपवास के बाद, रविवार का दिन आया, और एस्टरियस को उसके पूरे परिवार—जिसमें 46 पुरुष और महिलाएँ शामिल थीं—के साथ बपतिस्मा दिया गया, जिसके बाद उसने बिशप, संत कैलिक्सटस को अपने घर आमंत्रित किया और उनका आशीर्वाद प्राप्त किया।

अस्तेरियस के बपतिस्मा के बारे में सुनकर, धन्य मारिनस, उनकी पत्नी मार्था, और उनके पुत्र ऑडिफैक्स और अब्बाकूम बड़ी खुशी से उनके घर आए, ईश्वर का धन्यवाद किया, और वहाँ बत्तीस दिन तक रहे।

इस बीच, सम्राट को जब यह पता चला कि एस्टरियस पादरी वैलेंटाइन की शिक्षाओं के माध्यम से मसीह के धर्म में परिवर्तित हो गया था और अपने पूरे परिवार के साथ बपतिस्मा ले चुका था, तो उसने तुरंत उसे और उसके पूरे परिवार को पकड़ने के लिए सैनिक भेजे; और सैनिक, अचानक आकर, एस्टरियस के घर में सभी को पकड़ लिया, जिनमें संत मारिनस अपनी पत्नी और बेटों के साथ थे, और उन्हें सम्राट के सामने लाया गया। बाद वाले ने आदेश दिया कि पादरी वैलेंटाइन, मारिनस, उनकी पत्नी और बेटों को दूसरों से अलग कर दिया जाए, जबकि उन्होंने अस्टरियस और उसके परिवार को,

बंधक बनाकर, ओस्टयिा नामक शहर में भेज दयिा[4903] , ताकि वहाँ उनका मुकदमा चलाया जा सके और उन्हें सज़ा दी जा सके।

संत एस्टरयिस और उनके साथ मौजूद सभी लोगों को ओस्टयिा शहर ले जाया गया और गेलासयिस नामक एक न्यायाधीश के हवाले कर दयिा गया, जसिने उन्हें देखकर सभी को जेल में डालने का आदेश दयिा। बीस दनि बीत जाने के बाद, उन्होंने उन्हें अदालत के सामने पेश करने का आदेश दयिा और उनसे कहा:

[4904]'क्या तुम जानते हो कि सम्राट और उनके सभी परषिद्-सदस्यों ने क्या आदेश दयिा है?'

'हम नहीं जानते,' संतों ने उत्तर दयिा।

न्यायाधीश ने कहा, 'यह आदेश दयिा गया है कि जो देवताओं की पूजा करते हैं वे जीवति रहेंगे और स्वतंत्र होंगे, जबकि जो उनकी पूजा करने से इनकार करते हैं, उन्हें वभिन्नि यातनाओं के बाद मृत्युदंड दयिा जाएगा।'

इस पर संत एस्टरयिस ने न्यायाधीश से कहा:

'जो उनके जैसे हैं, उन्हें देवताओं की पूजा करने दो, और उन्हें उनके साथ ही नष्ट होने दो; लेकनि हम स्वर्ग में वास करने वाले एक सच्चे, सर्वशक्तमिान ईश्वर के सामने सरि झुकाते हैं, और उसी को हम अपना बलदिान अर्पति करते हैं।'

ये शब्द सुनते ही न्यायाधीश क्रोध से आग-बबूला हो गया और तुरंत आदेश दयिा कि संत एस्टरयिस को फाँसी दी जाए और यातनाएँ दी जाएँ, और बाकी सभी को बेरहमी से लाठयिों से पीटा जाए। उस दनि पवत्रि शहीदों को ऐसी यातनाएँ देने के बाद, न्यायाधीश ने उन्हें वापस जेल में फेंकने का आदेश दयिा, यह कहते हुए:

'उनके लिए और भी कठोर यातनाएँ तैयार की जानी चाहिए।'

फरि उसने अगले दनि एक तमाशा आयोजति करने और सभी लोगों को इकट्ठा करने का आदेश दयिा। जब सुबह हुई, तो गेलासयिस तमाशे में पहुँचा, मुकदमे के लिए अलग रखी गई एक वशिेष जगह पर अपनी सीट ली, और संत एस्टरयिस और अन्य शहीदों को अपने सामने लाने का आदेश देकर, उनसे कहा:

'अपना मूर्खतापूर्ण भ्रम त्यागो और देवताओं को बलदिान चढ़ाने का व्रत लो, ताकि न तो तुम और न ही तुम्हारे साथ वाले यातनाओं में मारे जाओ।'

'हम सभी मसीह के लिए मरना चाहते हैं,' संत एस्टरयिस ने उत्तर दयिा, 'जैसे उन्होंने हमारे पापयिों के लिए मरकर, इस संसार के कलंकों से शुद्ध होकर, हम स्वर्ग के राज्य में प्रवेश के योग्य माने जाएँ, जसिकी हम इतनी लालसा करते हैं।'

यह उत्तर सुनकर गेलासयिस को बहुत क्रोध आया और उसने आदेश दयिा कि अस्टरयिस और उसके साथयिों को जानवरों के सामने फेंक दयिा जाए ताकि वे उन्हें नोच-नोच कर खा जाएँ। इसके बाद, पवत्रि शहीदों को सुनहरे मंदरि के पास एक स्थान पर ले जाया गया जसिे 'जानवरों का गड्ढा' कहा जाता था, क्योंकि वहाँ जानवर रखे जाते थे। जब संत गड्ढे में उतरे, तो उस वभिाजन को खोल दयिा गया जसिके पीछे जानवर रखे गए थे, और जानवर उन पर टूट पड़े। तब संत एस्टरयिस ने ज़ोर से चल्लिाकर कहा:

– हे सर्वशक्तमिान प्रभु परमेश्वर, जन्हिोंने अपने सेवक दानयिेल को सहिों की खाई में बचाया और भवष्यिवक्ता हबक्कूक के द्वारा उसकी मुलाकात की और उसे बल दयिा[4905] , हम अपने सेवकों पर भी अपने पवत्रि स्वर्गदूत के द्वारा कृपा करें।

जानवर, वभिाजन के पीछे से नकिलकर, कसिी भी पवत्रि शहीद को नुकसान नहीं पहुँचाया; बल्कि, उन्होंने संत एस्टरयिस और उनके साथयिों के सामने सरि झुकाया। यह देखकर, गेलासयिस ने लोगों की ओर मुड़कर कहा:

'क्या तुम देखते हो कि इन लोगों ने अपनी जादू-टोने की कला से इन जानवरों को वश में कर लयिा है?'

लेकनि लोगों में से कई ने कहा:

[4903] ओस्टयिा शहर रोम के दक्षणि-पश्चमि में, टायबर नदी के मुहाने पर, टर्रिेनीयन सागर के तट पर स्थति था। इसमें सम्राट क्लॉडयिस प्रथम द्वारा नर्मिति सबसे बड़ा और सबसे मजबूत बंदरगाह था।

[4904] सम्राट के इन सलाहकारों को सेनेटर या अधकि सामान्य रूप से, सक्लिटिक्सि कहा जाता था। वे सबसे प्रमुख शाही गणमान्य व्यक्तथि और सक्लिाइट, यानी शाही परषिद, का गठन करते थे।

[4905] दानयिेल के सहिों के बलि में छह दनिों तक रहने का वृत्तांत दानयिेल 14:28–42 में मलिता है, जबकि भवष्यिवक्ता हबक्कूक द्वारा उनके पास आने की कहानी उनकी जीवनी में सुनाई गई है, जो दसिंबर के दूसरे दनि आती है।

'यह ईश्वर है, जिसकी वे सेवा करते हैं, जो उनकी रक्षा करता है।'

इसके बाद, न्यायाधीश ने पवित्र शहीदों को गड्ढे से बाहर निकालने, एक बड़ी चिता तैयार करने, और उन्हें उसमें जलाने का आदेश दिया। जब विशाल चिता जला दी गई, तो संत एस्टरियस ने अन्य पवित्र शहीदों से कहा:

– साहसी बनो, डरो मत, क्योंकि वह जो तीन युवकों के साथ बेबीलोन की भट्टी में देखा गया था, अब हमारे बीच खड़ा है।

और जब पवित्र शहीदों को आग में फेंका गया, तो लपटें तुरंत बुझ गईं, गर्मी ठंडक में बदल गई और संत बाल-बाल बचे। तब न्यायाधीश ने, खुद को पराजित और लज्जित देखकर, पवित्र शहीदों को शहर से बाहर ले जाकर एक विशेष प्रकार की फांसी देने का आदेश दिया – कुछ के सिर कलम किए जाने थे, जबकि अन्य पर पत्थर फेंके जाने थे। इस प्रकार इन पवित्र शहीदों की शहादत समाप्त हुई।

जहाँ तक पवित्र शहीदों मरीना, मार्था, ऑडफैक्स और अबैकम का सवाल है, जिन्हें धन्य पुरोहित वैलेंटाइन के साथ रोम में छोड़ा गया था, सम्राट क्लॉडियस ने उन्हें मुकदमे के लिए अपने सामने लाने का आदेश दिया। सबसे पहले, उसने सेंट वैलेंटाइन को डंडों से बेरहमी से पीटने और फिर तलवार से उसका सिर कलम करने का आदेश दिया; इसके बाद, वह सेंट मरीना और उनके साथियों की ओर मुड़ा और उनसे कहा:

'तुम कहाँ से हो?'

'फारस से,' संतों ने उत्तर दिया।

उसने उनसे पूछा, 'तो फिर, आपने अपना देश क्यों छोड़ा और यहाँ क्यों आए?'

पवित्र संतों ने उत्तर दिया, 'हम पवित्र प्रेरितों के समाधियों का सम्मान करने और उन्हीं समाधियों पर प्रभु से प्रार्थना करने आए थे।'

इसके बाद, सम्राट ने कहा:

– यह सोना और चाँदी आपको कहाँ से मिली, क्योंकि मैंने सुना है कि आप धनी हैं?

संत मारिन और मार्था ने उत्तर दिया, 'हमने उन्हें अपनी संपत्ति से प्राप्त किया, जो फारस में हमारे पास प्रचुर मात्रा में थी और जिसे हमने बेच दिया। हमने बिक्री से प्राप्त आय का एक हिस्सा गरीबों में बाँट दिया, और एक हिस्सा अपने साथ यहाँ लाए—अपने लिए नहीं, बल्कि संतों की सेवा के लिए।' और ईरान में हम कितने धनी थे, यह आप हमारी कुलीन वंशावली से ही समझ सकते हैं। मेरे पिता, मारोमेउस, ईरानी राजा के बाद दूसरे स्थान पर थे, और यह, मेरी पत्नी, ईरान में प्रसिद्ध राजकुमार कुसिनीटस की बेटी है।

'तो फिर,' सम्राट ने पूछा, 'तुमने फारस में पूजे जाने वाले देशी देवताओं को क्यों त्याग दिया और यहाँ मृतकों को खोजने क्यों आए?'

'हम मसीह के सेवक हैं,' मारिन ने उत्तर दिया, 'और पवित्र प्रेरितों की उपासना करने आए हैं, जिनकी अमर आत्माएँ परमेश्वर के साथ वास करती हैं, ताकि वे हमारे परमेश्वर मसीह के सामने हमारे लिए मध्यस्थता कर सकें।'

क्लॉडियस ने पूछा, 'और वह सोना और चाँदी कहाँ है जो तुम फारस से लाए हो?'

'हमने इसे ईश्वर को दे दिया है,' संत मारिन ने उत्तर दिया, 'जिन्होंने इसे हमें कुछ समय के लिए दिया था।'

ये शब्द सुनते ही सम्राट क्रोध से आग-बबूला हो गया और उसने पवित्र शहीदों को अपने राज्यपाल, मस्सयिनस नामक व्यक्ति के हवाले कर दिया, और उससे कहा:

'यदि वे देवताओं को बलिदान नहीं चढ़ाते हैं, तो उन्हें विभिन्न यातनाएँ देकर मृत्युदंड दे दो।'

मस्सयिस, संतों को लेकर, रोमन देवी टेलुडा के मंदिर में न्याय-पीठ पर बैठ गया[4906] और, उन्हें यातना की सज़ा सुनाने के बाद, उसने यातना के सभी उपकरण उनके सामने बिछाने का आदेश दिया और उन्हें क्रूर यातनाओं की धमकी

[4906] टेलुडा या टेलस पृथ्वी माता की एक प्राचीन इतालवी देवी थीं, जिन्हें सेरेस के साथ प्रार्थनाओं में बुलाया जाता था। पृथ्वी के प्रतिनिधि के रूप में, टेलस की तुलना आकाश के देवता जुपिटर से की जाती थी। पृथ्वी की मातृ गर्भ का प्रतीक होने के कारण, जो बीजों को ग्रहण करती है और नया जीवन देती है, टेलस को सभी अस्तित्वमान चीजों की सृष्टा माना जाता था और अन्य देवियों की तुलना में एक माँ के रूप में उसकी आराधना की जाती थी। इसके अलावा, टेलस को विश्व व्यवस्था की आयोजक, समृद्धि प्रदान करने वाली और विवाहों की संरक्षक के रूप में भी माना जाता था, ठीक वैसे ही जैसे ग्रीक डेमीटर को। पृथ्वी की देवी के रूप में, टेलस का आह्वान भूकंप के दौरान भी किया जाता था। पिक्टिस के साथ युद्ध के दौरान 168 ईसा पूर्व में युद्ध के बीच आए एक भूकंप के बाद, कौंसल पी. सेम्प्रोनियस ने टेलस के सम्मान में एक मंदिर बनाने का संकल्प लिया, जिसे एस्क्विलिन पहाड़ी की पश्चिमी ढलान पर बनाया गया था; हालाँकि, यह मंदिर एलेउसिनियन ट्रायड—डेमेटेर (टेलस), डिओनिसिस और

देने लगा, ताकि उन्हें मूर्तियों को बलिदान चढ़ाने के लिए मजबूर किया जा सके। लेकिन संत उसकी इच्छा के आगे नहीं झुके, और इसलिए उसने यातनाएँ जारी रखीं। सबसे पहले, उसने संत मारिनस को जमीन पर लिटाकर लंबे समय तक डंडों से पीटने का आदेश दिया। पीटे जाने के दौरान, पवित्र शहीद ने ज़ोर से पुकारा, और केवल निम्नलिखित शब्द बोले:

'महिमा तेरी हो, हे प्रभु यीशु मसीह!'

तब उन्होंने अवदिफैक्स और अवक्कूम को भी डंडों से पीटना शुरू कर दिया। उस समय, उनकी माँ, संत मार्था, अपने बच्चों की पीड़ा को देखकर, उन्हें एक माँ के प्रोत्साहन के शब्दों से मजबूत किया, ताकि वे मसीह के लिए अपने दुखों को साहसपूर्वक सह सकें, जिन्होंने हमारे लिए महान पीड़ा सहन की। इसके बाद, यातना देने वाले ने आदेश दिया कि इन तीन शहीदों—पिता और उसके बेटों—को यातना के यंत्र पर लटका दिया जाए, लोहे की पंजों से उनके शरीर से मांस नोचा जाए, और उनकी पसलियों को आग से जलाया जाए। जब यह हो रहा था, तो पवित्र शहीदों ने प्रसन्न चेहरों के साथ पुकारा:

'हम तुझे धन्यवाद देते हैं, हे मसीह हमारे परमेश्वर, कि तूने हमें अपने नाम के लिए इन कष्टों को सहने के योग्य समझा है।'

तब मूसियस ने संतों को यातना के यंत्र से उतारकर उनके हाथ काट देने का आदेश दिया – जबकि मार्था उनका खून इकट्ठा कर रही थी और आनंदपूर्वक उससे स्वयं का अभिषेक कर रही थी – और फिर उनके कटे हुए हाथ उनकी गर्दनों में लटकाकर उन्हें पूरे रोम नगर में घुमाने का आदेश दिया। जब पवित्र शहीदों को नगर में घुमाया जा रहा था, तो एक उद्घोषक चिल्लाया, उनसे कहते हुए:

'देवताओं के विरुद्ध अपमानजनक शब्द न बोलो, क्योंकि इसी कारण तुम्हें दंडित किया जा रहा है।'

जवाब में, संतों ने जोर से पुकारा:

'वे देवता नहीं, बल्कि राक्षस हैं जो तुम्हें और तुम्हारे राजा को नष्ट कर देंगे।'

इतनी यातनाओं के बाद, पवित्र शहीदों को शहर से तेरह स्टेडियम दूर निम्फा काटावसी नामक स्थान पर ले जाया गया; और सेंट मारिनस, ऑडिफैक्स और अब्बाकुम के साथ उनका सिर कलम कर दिया गया, जबकि सेंट मार्था नदी[4907] में डूब गईं। फिलिकिता नामक एक ईसाई महिला ने गुप्त रूप से सिर कलम किए गए पवित्र शहीदों के शवों को ले लिया, और पानी में संत मार्था का शरीर भी पाया, और उन्हें अपने खेत में दफना दिया, हमारे प्रभु यीशु मसीह की महिमा करते हुए, जो पिता और पवित्र आत्मा के साथ युगानुयुग महिमामय हैं। आमीन।

20 जुलाई

7 जुलाई (पुराने कैलेंडर के अनुसार)

इस दिन, सन् 1407 में, संसार में यूदोसिया, मॉस्को की ग्रैंड डचेस, पूजनीय यूफ्रोसीन का निधन हुआ।

हमारे पूजनीय पिता थॉमस मेलेन की स्मृति

7 जुलाई को स्मरणोत्सव

संन्यास ग्रहण करने से पहले, पूजनीय थॉमस ने सेना में सेवा की और अपनी संपत्ति और बहादुरी के लिए प्रसिद्ध थे। अपनी शारीरिक शक्ति के लिए प्रसिद्ध, उन्होंने युद्ध में कई पराक्रमी कारनामे किए, और कई मौकों पर, उनकी बदौलत, उनके साथी जनजातियों ने अपने दुश्मनों पर विजय प्राप्त की। लेकिन, मसीह के प्रति प्रेम से प्रेरित होकर, थॉमस ने संसार और उसकी व्यर्थताओं का त्याग कर दिया और अपने ऊपर 'मसीह का हल्का जुआ'[4908] - यानी संन्यासी

कोरे को समर्पित एक मंदिर पहले ही 486 ईसा पूर्व में रोम में बना दिया गया था, जो ग्रीक शैली पर आधारित था और जिसे ग्रीक कलाकारों ने बनाया था।

[4907] पवित्र शहीदों मारिनस, मार्था और उनके पुत्रों का निधन वर्ष 269 में हुआ था। उनके अवशेष अब रोम में सेंट जॉन द बुशमैन चर्च में रखे गए हैं, जबकि सेंट वैलेंटाइन के अवशेष प्राक्सेडेस चर्च में हैं।

[4908] मत्ती 11:30।

जीवन - ले लिया। उन्होंने अपने प्रभु मसीह जैसे बनने का प्रयास किया, उन्होंने स्वयं को गरीबी के लिए समर्पित कर दिया और अपने भीतर विनम्रता का विकास किया; इस उद्देश्य के लिए, उन्होंने विभिन्न मठों में रहने वाले, अपने तपस्वी जीवन के लिए प्रसिद्ध, ईश्वर-भक्त तपस्वियों से मार्गदर्शन मांगा। जब अपने तपस्या के प्रयासों के लिए पूर्ण शांति की इच्छा से थॉमस ने रेगिस्तान में जाने का निर्णय लिया, तो रात के आकाश में उसके सामने अग्नि का एक स्तंभ चमका और स्वयं पवित्र नबी एलियाह प्रकट हुए, जिन्होंने उसे रेगिस्तान की गहराइयों का मार्ग दिखाया।

ऐसे साथियों के मार्गदर्शन में, थॉमस मालेआ नामक एक पहाड़ पर पहुँचे[4909] , जो उनके लिए वही बन गया जो एलियाह के लिए माउंट कार्मेल[4910] था। यहाँ उन्होंने एकांत में रहना शुरू कर दिया, केवल ईश्वर के साथ संवाद किया और दिव्य प्रकटनों तथा दर्शनों से धन्य हुए।

जिस प्रकार, संसार में रहते हुए, उसने साहसपूर्वक दृश्यमान शत्रुओं को पराजित किया था, उसी प्रकार अब, संसार से अलग होकर मरुभूमि में रहने के लिए, उसने अपनी अखंड प्रार्थना से, मानो एक तीखी तलवार से, अदृश्य दुष्ट आत्माओं के झुंड को मार गिराया और भगा दिया। और जैसे पहाड़ पर बसा एक शहर या आकाश में चमकता एक तारा मानव दृष्टि से नहीं छिप सकता, वैसे ही पूजनीय थॉमस भी मालेया के मरुस्थलीय पहाड़ पर लोगों से नहीं छिप सके, जिस पर वे अपनी पवित्रता के साथ एक तेजस्वी तारे की तरह चमके, और पृथ्वी को प्रकाशित किया।

जब लोगों को उस तपस्वी के बारे में पता चला, तो वह उन लोगों के लिए ज्ञान का प्रकाशक बन गए जिनके मन मेघले थे और उन लोगों के लिए सहायक बने जिन्हें उसकी सहायता की आवश्यकता थी, क्योंकि उसे ईश्वर से चमत्कार करने की शक्ति और चंगा करने की कृपा प्राप्त थी। उन्होंने चमत्कारिक रूप से हर तरह की बीमारियों को ठीक किया, अंधों को दृष्टि वापस दी, और लंगड़ों को ठीक से और आसानी से चलने की क्षमता प्रदान की; और एक अवसर पर, उनकी प्रार्थना के माध्यम से, एक सूखी जगह पर पानी का एक झरना फूट पड़ा। लेकिन थॉमस ने कई चमत्कार केवल अपने सांसारिक जीवन के दौरान ही नहीं किए; ईश्वर के पास जाने के बाद भी, उनके पूजनीय अवशेषों पर चमत्कार होते रहे। विश्वासियों को सभी प्रकार की बीमारियों और यहां तक कि ۱۷۶ बीमारियों से, साथ ही शैतानी कब्जे से भी असाधारण रूप से शीघ्र उपचार मिला – संत की प्रार्थनाओं और हमारे ईश्वर मसीह की कृपा, दोनों के माध्यम से[4911] ।

कॉन्टाकियन, स्वर 4:

तूने पुरुषार्थपूर्ण साहस से एक महान विजय प्रदर्शित की; दैवी प्रेम से प्रज्वलित होकर, तूने नश्वर राजा और उसकी सारी वैभवता को चुनौती दी, और सबसे छोटे पर्वत पर अपना वास स्थापित किया: जहाँ से तू राजाओं के राजा के पास स्वर्ग में आरोहण किया। थॉमस, हम सभी के लिए निरंतर प्रार्थना करना।

पवित्र शहीदों पेरेग्रिनस, लूसियन, पोम्पेयस, इसिचियस, पापियास, सटोरनिनस और जर्मनस की शहादत

7 जुलाई को स्मरणोत्सव

[4909] यह निश्चित रूप से ज्ञात नहीं है कि माउंट मालेया कहाँ स्थित था, जहाँ पर आदरणीय थॉमस एक तपस्वी के रूप में रहते थे और जिससे उन्हें अपना उपनाम मिला। कुछ लोग इसे लैकोनिया के पेलोपोनेस में स्थित मानते हैं, जहाँ एक केप मेलेया है; अन्य लोग इसे माउंट अथोस के पूर्वी हिस्से में स्थित माउंट मेलियोन के रूप में पहचानते हैं; अंत में, कुछ लोग इस पहाड़ को लेसबोस द्वीप पर मानते हैं, जहाँ भी एक केप मेलेया है।

[4910] माउंट कार्मेल आशेर और मनasseह की जनजातियों के क्षेत्रों के भीतर स्थित था; इसका उत्तरी सिरा भूमध्य सागर में निकला हुआ था, जबकि इसका दक्षिणी सिरा सामरिया के पहाड़ों से लगा हुआ था। यह पहाड़ भविष्यवक्ताओं एलिया और एलिशा का निवास स्थान था (1 राजा 18:1–46; 2 राजा 2:25, 4:25)।

[4911] आदरणीय थॉमस मालेन के जीवन की सटीक तिथियाँ अज्ञात हैं। ऐसा माना जाता है कि वह 10वीं शताब्दी से पहले ही रहते थे।

ये पवत्रि शहीद इटली के मूल नविासी थे और सम्राट ट्राजन[4912] के शासनकाल में उन्होंने यातनाएँ सहन कीं। जब ईसाइयों पर अत्याचार शुरू हुआ, तो वे एक जहाज पर सवार होकर डायराचयिम[4913] नामक शहर पहुँचे। उस शहर में, जब उन्होंने देखा कि पवत्रि बशिप एस्टयिस[4914] को एक क्रूस पर लटकाया गया था, मधु से लपिटाया गया था और कैसे ततैयाँ और मक्खयिाँ उसे डंक मार रही थीं, तो उन्होंने मसीह की उनकी स्वीकारोक्ति के लिए उनकी महमिा की। परणिामस्वरूप, यह पता चला कि वे ईसाई थे, और सैनकिों ने तुरंत उन्हें पकड़ लयिा। पड़ताल के दौरान, उन्होंने मसीह में अपने वशि्वास की गवाही दी, और एम्फीपेट[4915] एग्रकिोला के आदेश पर, उन्हें एक जहाज पर चढ़ाकर गहरे पानी में डुबो दयिा गया। इस प्रकार पवत्रि शहीदों[4916] का अंत हुआ। बाद में लहरों द्वारा उनके शरीर कनिारे पर आ गए और उन्हें वहां रेत में दफना दयिा गया। नब्बे साल बाद, पवत्रि शहीदों ने अलेक्जेंड्रयिा के बशिप को दर्शन दयिा और उनसे कहा: 'हमारे शरीर ले लो।'

तब बशिप ने संतों के शरीरों को सम्मानपूर्वक दफनाया और उनके दफन स्थल पर एक छोटा सा चर्च बनवाया।

पवत्रि शहीदों, आदरणीय एपक्टिेटस प्रेस्बटिर और अस्टयिन भक्षिु का जीवन और शहादत।

7 जुलाई को स्मरण कयिा जाता है

ईश्वर-वहिीन रोमन सम्राट डायोक्लेटयिन के शासनकाल में[4917] , रोमन साम्राज्य के पूर्वी प्रांतों में, एपक्टिेटस नामक एक सदाचारी व्यक्ति रहता था, जसिने एक संन्यासी जीवन व्यतीत कयिा। वह एक पादरी था जसिने अपने युवा काल से ही मसीह की सेवा करना शुरू कर दयिा था। उन्हें चमत्कार करने का वरदान प्राप्त था, जो परमेश्वर ने उनके पवत्रि जीवन के कारण उन्हें प्रदान कयिा था। वे हर प्रकार की बीमारयिों का इलाज करते थे; अंधों को दृष्टि लौटाते थे, कुष्ठरोगयिों को ठीक करते थे, लकवाग्रस्त लोगों को उनके बस्तिरों से उठाते थे, और दुष्ट आत्माओं को भगाते थे। इन चमत्कारों में से, जो उनकी पवत्रिता का प्रमाण थे, नम्निलखिति वशिेष ध्यान देने योग्य हैं।

एक बार, जब एपक्टिेटस एक गाँव के पास स्थति अपनी कोठरी में प्रार्थना और भक्तपिूर्ण ध्यान में लगे हुए थे, तो एक काउंट[4918] अपनी बेटी—एक पंद्रह वर्षीय युवती जो पूरी तरह से लकवाग्रस्त थी—को उनके पास लाया। अपनी बेटी के लिए चंगाई सुनश्चिति करने की इच्छा से, काउंट एपक्टिेटस के पैरों पर गरि पड़ा और उनसे इस प्रकार वनिती करने लगा:

'हे ईश्वर के पुरुष! मुझ पर दया करो और मुझे नराश मत करो। क्योंकि दयालु ईश्वर जसिकी आप सेवा करते हैं, वह कसिी को भी जो उसके पास आता है, अस्वीकार नहीं करता[4919] । यह मेरी एकमात्र पुत्री है; वह अब तीन वर्षों से बीमार है और एक भी अंग नहीं हलिा सकती। वह मुश्कलि से जदिा है, लेकनि मुझे दृढ़ वशि्वास है कि जसिने बारह वर्षों से रक्तस्राव से पीड़ति महलिा को चंगा कयिा था[4920] वही मेरी बेटी को भी चंगा कर सकता है। बस हमारे लिए प्रार्थना करें, हम पर दया करें; क्योंकि हम मसीह की कलीसयिा के बच्चे हैं और पवत्रि बपतस्मिा से प्रबुद्ध हुए हैं।

[4912] ट्रोजन ने 98 से 117 ईस्वी तक रोमन साम्राज्य पर शासन कयिा। 99 ईस्वी में, उन्होंने गुप्त समाजों पर प्रतबिंध लगाने वाले कानून को पुनः लागू कयिा। और चूँकि मूर्तपिूजक पहले ही ईसाइयों को एक गुप्त समाज का सदस्य मानने लगे थे, और चूँकि ईसाई पूजा सेवाएँ रात में और गुप्त रूप से होती थीं, इसलिए उन्होंने उपरोक्त कानून के उल्लंघनकर्ता के रूप में उन पर अत्याचार शुरू कयिा।

[4913] डायराकयिम शहर, जसिे एपफिाम्न और अब डुरेस के नाम से भी जाना जाता है, एड्रयिाटकि सागर के तट पर आज के अल्बानयिा में स्थति था।

[4914] पवत्रि शहीद अस्टयिास का पर्व 4 जून को मनाया जाता है।

[4915] रोमन साम्राज्य में, 'एम्फीपेट्स' प्रांतीय गवर्नरों को दए गए नाम थे।

[4916] इन पवत्रि शहीदों की मृत्यु की सटीक तारीख अज्ञात है।

[4917] सम्राट डायोक्लेटयिन ने 284 से 305 तक रोमन साम्राज्य के पूर्वी भाग पर शासन कयिा।

[4918] प्राचीन रोमनों में, 'कोमाइट्स' शब्द मूल रूप से कसिी प्रांत के सर्वोच्च अधकिारी के सहायकों के लिए प्रयुक्त होता था, और बाद में सम्राटों के सहायकों के लिए, जो उनकी सबसे नकिटवर्ती संगत बनाते थे। कांस्टैंटाइन महान (306–337) के समय से, यह पद सभी दरबारी और राजकीय अधकिारयिों के लिए उपाधि बन गया, भले ही वे शाही अनुचर मंडल के सदस्य न हों।

[4919] मत्ती 7

[4920] मत्ती 9:20–22

तब परमेश्वर के सेवक, एपक्टिेटस ने, परमेश्वर से प्रार्थना करने के बाद, लकवाग्रस्त कन्या को पवत्रि तेल से अभषिेक कयिा। और वह तुरंत चंगी हो गई और अपने पैरों पर खड़ी हो गई, जबकि उसके आसपास के सभी लोग परमेश्वर का धन्यवाद करने लगे। फरि रेवरेंड ने काउंट से कहा:

'हे प्रयि! यदि आप चाहते हैं कि आपके घर में कोई बीमार न पड़े, तो पहले अपने हृदय को उचति रीति से शुद्ध करके, हर रवविार को अपने पूरे घर के साथ मसीह के शरीर और रक्त के दैवीय रहस्यों को ग्रहण करें।'

इसके बाद, उन्होंने उन्हें शांति से वदिा कयिा।

एक अन्य अवसर पर, एक दानव-ग्रस्त व्यक्ति को उसके पास लाया गया। रेवरेंड ने उसे तीन दनिों तक अपने पास रखा, और अपनी प्रार्थनाओं के माध्यम से दानव को भयानक यातनाएँ दीं, और दानव ने इन शब्दों में अपनी दुर्दशा व्यक्त की:

'हाय! क्या यातना! मुझे यह क्यों सहना पड़ता है? क्या मेरे लिए फ्रीजयिा[4921] में, एक मूर्तपिूजक मंदरि में रहना और मूर्ख लोगों की भीड़ से दैनकि पूजा और बलदिान प्राप्त करना बेहतर नहीं होता? लेकनि अब, मैं अपनी कसिी गलती के बनिा, इस एक व्यक्ति के हाथों यातना सहने के लिए मजबूर हूँ।'

तीसरे दनि, पवत्रि पुरोहति ने दानव पर पाबंदी लगाई और उसे उस आदमी से बाहर नकिाल दयिा।

एक अन्य अवसर पर, एक कुलीन और धनी महलिा—एक मूर्तपिूजक—को संत के पास लाया गया; अपनी दृष्टि खोने के बाद, उसने वभिन्नि चकित्सिकों से व्यर्थ में ही उपचार की मांग की थी। उसने परमेश्वर के उस पुरुष से वनिती की कि वह अपने दाहनि हाथ से उसकी अंधी आँखों को छूए, क्योंकि उसने सुना था कि उसके पवत्रि हाथों द्वारा बीमारों के लिए कई चमत्कार कए गए थे और उन्हें आरोग्य प्रदान कयिा गया था। संत, उसकी सच्ची प्रार्थनाओं से प्रेरति होकर, जन्हिोंने उसके वश्विास को प्रकट कयिा, ने प्रभु यीशु मसीह का नाम लेते हुए अपना दाहनिा हाथ उसकी आँखों पर रखा, और उस स्त्री ने तुरंत अपनी दृष्टि वापस पा ली, और यह कहते हुए चल्लिाई:

'ईसाइयों के परमेश्वर, आपको महमिा!'

उस समय से, वह और उसका सारा घर मसीह के पास आ गए। लेकनि इस परमेश्वर के संत के सभी चमत्कारों का वर्णन करने में बहुत समय लगेगा; फरि भी, जो कहा गया है वह उनकी पवत्रिता को प्रदर्शति करने के लिए पर्याप्त है; इसलिए, अब अन्य ववरिणों पर जाने का समय है।

पास के एक शहर से, जाहरि तौर पर अपने नौकरों के साथ टहलने के दौरान संयोग से, अठारह साल का एक युवक, जसिका नाम एस्टयिन था, उस जगह पर आया जहाँ सम्माननीय रहते थे। वह एक अमीर कुलीन और एक मूर्तपिूजक का बेटा था। सच्चाई यह थी कि ईश्वर की इच्छा ही थी जसिने उसे उस आदरणीय के कक्ष तक पहुँचाया। वह यह जानना चाहता था कि वहाँ कौन रहता है, और, कक्ष में प्रवेश करने पर, उसने एक पवत्रि रूप वाले व्यक्ति को देखा, जसिने उसे स्नेहपूर्वक स्वागत कयिा और, अपने बगल में बठिाकर, पूछा:

'बेटा, तुम कहाँ से हो? और तुम्हारे माता-पति कौन हैं?'

युवक ने उत्तर दयिा:

'मेरे पति शहर के राज्यपाल हैं, और मेरी माँ सेनेटर जूलयिन की बेटी हैं।

मैं उनका एकमात्र संतान हूँ, और वे मुझसे इस तरह प्यार करते हैं जैसे मैं सबसे कीमती मोती हूँ।

तब संत ने उससे कहा:

– मेरे बच्चे, तुम यह कहकर बल्कुि सही हो कि तुम्हारे माता-पति तुम्हें मोतयिों में सबसे कीमती मोती की तरह प्यार करते हैं। फरि भी, वे केवल तुम्हें देखते हैं; वे वास्तव में तुम्हारे स्वामी नहीं हैं। क्योंकि तुम्हारी धन्य आत्मा कसिी भी मोती से अधकि कीमती है, और हमारे उद्धारकर्ता मसीह को प्रयि है, जन्हिोंने, जैसा कि मैं देखता हूँ, इसे अपनी सेवा के लिए चुना है। इसलिए, मेरे प्रयि बच्चे, मेरी बात सुनो! इस दृश्यमान, क्षणकि, व्यर्थ संसार की सभी चीज़ों को त्याग दो, ताकि तुम सभी संतों के साथ, आने वाले जीवन में अदृश्य, शाश्वत आशीर्वाद प्राप्त कर सको। क्योंकि इस संसार में हम जो कुछ भी देखते हैं वह नष्ट हो जाता है और जल्द ही समाप्त हो जाता है, जबकि परमेश्वर ने अपने प्रेम करने वालों और उनकी सेवा करने वालों के लिए जो कुछ तैयार कयिा है वह हमेशा के लिए बना रहता है, ठीक वैसे ही जैसे परमेश्वर स्वयं शाश्वत हैं। जो सोना और चांदी हम देख सकते हैं वे असली नहीं हैं, बल्कि लोगों के लिए केवल एक धोखा हैं। मैं,

---

[4921] फ्रीजयिा – एशयिा माइनर का एक क्षेत्र।

हालाँकि, आपको बताऊँगा कि वह सच्चा सोना क्या है, जिसे प्राप्त करना सार्थक है। हमारी ईसाई पवित्र पुस्तकों में यह उपदेश है: 'मैं तुम्हें सलाह देता हूँ कि तुम मुझसे आग में तपाया हुआ सोना खरीद लो, ताकि तुम धनी हो जाओ, और सफेद वस्त्र, ताकि तुम उन्हें पहन लो' और ताकि तुम नग्न न दिखाई दो[4922] । यह शुद्ध सोना हमारे प्रभु मसीह हैं, जो लोगों के हृदयों को दिव्य प्रेम से प्रज्वलित करते हैं। यदि तुम, मेरे बच्चे, उन्हें अपने हृदय में रखना चाहते हो, तो स्वर्गीय धन-संपत्ति तुरंत तुम्हारे लिए तैयार कर दी जाएगी, और तुम श्वेत वस्त्रों से परिधानित हो जाओगे; और ये वस्त्र हैं विश्वास, आशा और प्रेम; इनमें कवच की तरह लिपटकर, आप न केवल इस दृश्यमान संसार से ऊपर उठेंगे, बल्कि आप उस शैतान पर भी विजय प्राप्त करेंगे, जिसे आप एक देवता मानते हैं, और साथ ही उसके सभी सेवकों पर भी। इसके अलावा, प्रिये, आपको यह भी जानना चाहिए कि आपका वह पिता जिसने आपको देह में जन्म दिया आपका सच्चा पिता नहीं है, क्योंकि उसने आपको केवल एक नश्वर शरीर दिया, जो जल्द ही मर जाएगा। तुम्हारे सच्चे पिता तो सर्वशक्तिमान परमेश्वर हैं। उन्होंने तुम्हारी अमर आत्मा की सृष्टि करके उसे तुम्हारे शरीर में भेजा, जो उनकी ही आज्ञा से गर्भ में आया था। इस प्रकार, आपका एक पिता है—दृश्यमान—और दूसरा—अदृश्य। आपका दृश्यमान पिता नश्वर है, जो समय के उतार-चढ़ाव, विपत्तियों और कष्टों के अधीन है, और शक्तिहीन है। आपका अदृश्य पिता, हालांकि, अमर, शाश्वत है, और किसी भी प्रकार के कष्ट के अधीन नहीं है; वह सर्वशक्तिमान है और सभी चीजें उसके हाथ में हैं। उसने कहा – और आप अपनी माँ के गर्भ में बन गए। उसने आज्ञा दी – और आप अपनी माँ के गर्भ से बाहर आए। उसकी इच्छा से आप युवावस्था तक पहुँचे। और यदि बिच्चों को अपने सांसारिक माता-पिता का सम्मान करना चाहिए, तो उन्हें उस का कितना अधिक सम्मान करना चाहिए जिसने हमें अपनी ही छवि और समानता में बनाया, हमें बुद्धि और समझ दी, और हमें अपने हाथों के कार्यों पर शासन करने के लिए नियुक्त किया। दासों से, उसने अपनी दया से हमें अपना पुत्र, भाई और मित्र बनाया है। इसलिए, हमें उन्हें जानना, प्रेम करना, सम्मान देना और हमेशा उनकी आराधना करनी चाहिए—हमारे सच्चे पिता, जिन्होंने हम पर इतनी सारी आशीर्वादें प्रदान की हैं। इसी तरह, हमारी सच्ची माता वह नहीं है जो हमें इस संसार के लिए देह में जन्म देती है, बल्कि वह है जो हमें आध्यात्मिक रूप से अनंत जीवन में जन्म देती है। वे हमारे उद्धारकर्ता से सगाई में हैं, स्वर्गदूतों द्वारा सम्मानित, भविष्यद्वक्ताओं द्वारा सुसज्जित, प्रेरितों और शहीदों द्वारा महिमामंडित, और धर्मप्रचारकों द्वारा गौरवान्वित; उनके लिए, प्रभु मसीह ने एक स्वर्गीय निवास तैयार किया है। इस पवित्र माता को लोग कलीसिया कहते हैं। उसकी आवाज़ अपने बच्चों की देखभाल करने वाली कबूतर की आवाज़ है; उसके होठों से प्रेरितों की शिक्षा का मूर्रा टपकता है; उसकी आँखें सच्चा विश्वास और ईश्वर में अटूट आशा हैं; उसके हाथों से करुणा और प्रेम से किए गए पुण्य कार्यों का मूर्रा टपकता है; उसके दो पात्र दो नियम हैं। पुरानी, जिसमें भविष्यवक्ताओं ने उपदेश दिया, और नई, जिसमें प्रेरितों ने प्रचार किया; और पवित्र बपतिस्मा के द्वारा वह अपने बच्चों को अमर जीवन के लिए जन्म देती है। तो आओ, प्रिये संतान! इस सच्ची माता की छाती से दूध पियो; मेरी सलाह मानो – अपने माता-पिता की सांसारिक संपत्ति को त्याग दो, ताकि तुम परमेश्वर के पुत्रों के लिए तैयार किए गए शाश्वत खजाने के वारिस बन सको। सुनो, तुम्हारा सच्चा पिता मुझसे होकर तुमसे बात कर रहा है: *'अपने देश, अपने परिवार और अपने पिता के घर को छोड़कर [जाओ] उस देश में जिसे मैं तुझे दिखाऊँगा'* (उत्पत्ति 12:1), *'एक ऐसे देश में जो दूध और मधु से बहता हो'* (निर्गमन 3:8, 17) – भविष्यवक्ताओं, प्रेरितों और पवित्र पिताओं की शिक्षाओं के माध्यम से। और जब आप जो कुछ भी आपसे आज्ञा दी गई है, उसे पूरा कर लेंगे, तो आपको स्वर्गीय विरासत प्रदान की जाएगी, स्वर्गीय खजाने आपके लिए खोले जाएँगे, स्वर्गीय राज्य की महिमा आप पर प्रदान की जाएगी, आप स्वर्गदूतों की पंक्तियों और सभी संतों के चेहरों को देखेंगे, और आप उनके साथ एक प्रेमपूर्ण और प्रिये भाई के रूप में रहेंगे, और साथ ही एक पुत्र के रूप में ईश्वर के करीब होंगे।

उस ईश्वर-पुरुष से यह उच्च उपदेश सुनकर और उसकी सच्चाई पर विश्वास करके, वह समझदार युवक मन ही मन बहुत प्रभावित हुआ, परन्तु उस समय उसने उससे कुछ नहीं कहा, क्योंकि उसे अपने साथ मौजूद सेवकों से डर था कि वे उसकी बातें उसके माता-पिता तक पहुँचा सकते थे। इसलिए, उसने उस आदरणीय पुरुष को प्रणाम करके विदाई ले ली।

[4922] प्रकाशितवाक्य 3

अगली सुबह बहुत जल्दी, युवा एस्टयिन अकेले ही उस सम्मानति वृद्ध के पास दौड़ा, ठीक वैसे जैसे एक बुद्धमिान मधुमक्खी उस स्थान पर लौटती है जहाँ उसने कल मीठा शहद इकट्ठा कयिा था। प्रभु के पुरोहति की कुटयिा में प्रवेश कर, उसने इन शब्दों से अभविादन कयिा:

'नमस्कार, मसीह के प्रेरति, नए नयिम के सेवक!'

संत ने उत्तर दयिा:

'तुम्हें भी नमस्कार, हे सुन्दर युवक! मैं तुम्हें एक शहीद के वस्त्र पहने और कीमती रत्नों का मुकुट धारण कएि हुए देखता हूँ।'

जब वे बैठ गए और बातचीत करने लगे, तो वृद्ध ने कहा:

'मुझसे कहो, मेरे बच्चे, क्या वह बीज जो हमने कल तुम्हारे हृदय में ईश्वर की कृपा से बोया था, मुरझा गया है? क्या वह फल देगा? या क्या तुम्हारा हृदय अभी भी अवशि्वास के अंधकार में रहता है?'

एस्टयिन ने कहा:

'कल मैंने आपसे कहा था, हे पवत्रि पति, कि मैं अपने माता-पति का एकमात्र पुत्र हूँ और उन्हें बहुत प्रयि हूँ। मुझे उन्हें दुख पहुँचाने का डर है; क्योंकि यदि मैं खुले तौर पर ईसाई धर्म अपना लेता हूँ, तो वे अत्यधकि दुख से व्याकुल होकर या तो स्वयं को समुद्र में फेंक देंगे, या अपना दमिागी संतुलन खो देंगे, या कसिी अन्य प्रकार से अपनी जान ले लेंगे। लेकनि मैं यह नहीं चाहता कि जो मुझे मोक्ष प्रदान करेगा, वह मेरे माता-पति की मृत्यु और अनंत वनिाश का कारण बने। इसलिए, यदि आप मेरी बात मानने के लिए तैयार हैं, पतिाजी, तो मुझे गुप्त रूप से ईसाई बनाएं, और मुझे अब बपतस्मिा ग्रहण करने के लिए तैयार करें। और जब आप मुझ पर ईसाई रीति के अनुसार आवश्यक सभी अनुष्ठान कर लें, तो, मैं आपसे वनिती करता हूँ, मुझ पर दया करें: मुझे अपने साथ कसिी दूर देश ले चलें, जहाँ प्रभु आपको मार्गदर्शन दें, ताकि मेरी आँखें अपने माता-पति के आँसू न देखें, ताकि उनका दुख देखकर मेरा अंतकरण न डगमगाए, और ताकि उनके प्रति प्रेम के कारण मैं अपने स्वयं के उद्धार के कार्य को संकट में न डालूँ।

युवक से ये शब्द सुनकर, पवत्रि वृद्ध आत्मा में आनंदति हुए और उन्होंने उसे हर दनि उपवास करने और मूर्तयिों पर बलदिान कएि गए भोजन से अशुद्धि से बचने की आज्ञा दी; साथ ही, उन्होंने उसे उद्धारकर्ता मसीह, सच्चे ईश्वर से प्रार्थना करने का आदेश दयिा। युवा एस्टयिन ने इन आज्ञाओं को उत्साह के साथ पूरा कयिा। अपने परविार से गुप्त रूप से, वह हर दनि बूढ़े के पास जाता था और उनसे पवत्रि वशि्वास सीखता था। जब वह मसीह को अच्छी तरह जान गया और उन पर दृढ़ता से वशि्वास करने लगा, तो पवत्रि बूढ़े ने उसका बपतस्मिा दयिा।

[4923]कुछ ही समय बाद, एक रात, वे दोनों उस जगह से चले गए, और एस्टयिन ने यात्रा के लिए अपने साथ थोड़े से पैसे ले लिए। बंदरगाह पहुँचने पर, उन्हें वहाँ एक जहाज मलिा जो स्कैथयिन भूमि के लिए रवाना हो रहा था, और इस जहाज पर जगह पक्की करने के बाद, वे उसमें सवार हो गए। समुद्र में काफी लंबा समय बतिाने के बाद, वे कनिारे पर उतरे और डैन्यूब नदी के कनिारे, स्कैथयिन क्षेत्र के भीतर स्थति अल्मरिसि नामक एक शहर में प्रवेश कयिा। इस शहर के पास उन्हें रहने के लिए एक उपयुक्त एकांत स्थान मलिा और वहाँ एक छोटा सा घर बनाकर वे बस गए।

अस्टयिन के माता-पति, अपने प्रयि पुत्र को न देखकर, उसे हर जगह खोजने लगे; और, उसे न पाकर, व्यर्थ ही उसका नाम पुकारते हुए, जोर-जोर से रोने और वलिाप करने लगे। उसके पति ने पुकारा:

'अस्टयिन, मेरे प्यारे बच्चे, तुम अब कहाँ हो? अस्टयिन, मेरे सबसे प्यारे, मेरे इकलौते बेटे! तुम्हारा क्या हुआ? क्या कसिी जानवर ने तुम्हें अचानक खा लयिा, या पानी की गहराई ने तुम्हें नगिल लयिा? ओ मेरे बुढ़ापे के सहारे और मेरी आँखों की रोशनी! मुझे अब नहीं पता कि तुम्हें कहाँ खोजूँ, और न ही यह कि मुझे तुम्हें खोजने के लिए अपने नौकरों को कसि देश में भेजना चाहिए – मैं पूरी तरह से हतप्रभ हूँ!

इसी तरह, एस्टयिन की माँ, अपने कपड़े फाड़ते और अपने सीने पर हाथ मारते हुए, रोई और कहा:

'हे मेरे सबसे प्यारे बच्चे, एस्टयिन, मुझे तुमसे कसिने अलग कर दयिा! मुझे आश्चर्य है कि क्या यह ईसाई देवता नहीं थे जनि्होंने कसिी को भेजकर, धोखे से हमें तुमसे दूर कर दयिा। हाय मेरी दुर्भाग्यपूर्ण नसीब! हाय मेरी – मैं अनंत दुख से भर गई हूँ। मेरी सारी मेहनत और तुम्हारे जन्म व पालन-पोषण के दौरान सहे गए दुख सब व्यर्थ गए! मेरी कोख का फल

[4923] अब रामज़नि के नाम से जाना जाता है, जो डेन्यूब नदी की दक्षणिी शाखा पर स्थति है।

खो गया है; मेरी आशा और मेरा गौरव खो गया है! मैं यहाँ एक सुनसान शहर की तरह बैठी हूँ। अब तक मैं एक माँ थी, लेकिन अब मैं माँ नहीं रही, क्योंकि मुझे अपने एकमात्र प्रिय बच्चे से वंचित कर दिया गया है!

इस प्रकार एस्टियिन के माता-पिता लगातार बिना सांत्वना के रोते रहे। हालाँकि, मसीह के सेवक एपिक्टेटस और एस्टियिन ने अपना जीवन अल्मिरिस शहर के पास तपस्या में बिताया। उनका पवित्र, सदाचारी जीवन कोई रहस्य नहीं रहा, क्योंकि पवित्र पुरोहित एपिक्टेटस ने कई चमत्कारिक उपचार किए, और लोग बीमारों को लेकर उनके पास आने लगे।

एक दिन, एक कुलीन महिला अपने बेटे के साथ उनके पास आई, जिसे उसके नौकर उठाकर ला रहे थे, क्योंकि वह मूक, बधिर और लकवाग्रस्त था। उसकी उम्र लगभग पंद्रह साल थी। अपने बेटे को पवित्र वृद्ध के पैरों में लिटाकर, उस महिला ने उससे कहा:

'मुझे नहीं पता कि आप कहाँ से आए हैं, लेकिन मुझे विश्वास है कि यदि आप चाहें तो मेरे बेटे को ठीक कर सकते हैं। ऐसा लगता है कि आप नासरी के शिष्य हैं, जिनके बारे में हमने कई अद्भुत और चमत्कारिक बातें सुनी हैं। यदि आप वास्तव में उनके शिष्य हैं, तो हमारी मदद करें और हमें उन्हें जानना सिखाएँ, ताकि हम भी उनके सेवक बन सकें।'

संत ने उससे उत्तर दिया:

'यदि तुम, महिला, पूरे दिल से विश्वास करती हो कि केवल एक ही सच्चा ईश्वर है, जिसने हमारे लिए स्वर्ग और पृथ्वी और जो कुछ भी दिखाई देता है, उसे बनाया है, तो तुम्हारी प्रार्थना स्वीकार की जाएगी।'

यह कहने के बाद, उसने लड़के को ज़मीन से उठाने का आदेश दिया और, उसके चुप मुँह में तीन बार थूककर, पूछा:

'हमें बताओ, मेरे बच्चे, किसे ईश्वर पर विश्वास करना चाहिए? मनुष्यों द्वारा बनाई गई मूर्तियों पर, या यीशु मसीह पर, जिन्हें सूली पर चढ़ाया गया था और जो अब तुम्हारा इलाज कर रहे हैं?'

लड़के ने ऊँचे स्वर में पुकारा:

'आदरणीय पिताजी, विश्वास यीशु मसीह में करना चाहिए, जो हमेशा लोगों पर इतनी बड़ी आशीषें बरसाते हैं!'

यह चमत्कार देखकर, अल्मिरिया के नागरिकों ने ईश्वर की स्तुति की, और उस दिन दोनों लिंगों के एक हजार से अधिक आत्माएँ हमारे उद्धारकर्ता मसीह पर विश्वास करने लगीं। और ईश्वर की कृपा ने न केवल संत एपिक्टेटस के माध्यम से, बल्कि संत एस्टियिन के माध्यम से भी चमत्कार किए।

इस प्रकार, एक दिन, जब वह डैन्यूब नदी से पानी लाने गया, तो उसकी मुलाकात एक राक्षस-ग्रस्त व्यक्ति से हुई। एस्टियिन ने उस ग्रस्त व्यक्ति पर क्रॉस का चिह्न बनाया, और राक्षस तुरंत उससे भाग गया, यह पुकारते हुए:

'हे एस्टियिन! ईश्वर की इच्छा से, आपके विश्वास और आपके हृदय की पवित्रता ने हम पर महान शक्ति प्राप्त कर ली है!'

एक अन्य अवसर पर, जब वरिष्ठ द्वारा एक मिशन पर भेजे जा रहे थे, तो यात्रा के दौरान अस्टियिन ने एक आदमी को देखा जो एक ऊंची इमारत से गिरकर जमीन पर पड़ा था और मृतक की तरह पड़ा था, जबकि उसके माता-पिता उस पर रो रहे थे। उनके प्रति करुणा से प्रेरित होकर, धन्य अस्टियिन ने गुप्त रूप से इन शब्दों के साथ प्रार्थना की:

'हे प्रभु यीशु मसीह! आपने एक बार, अपने प्रेरित पौलुस के द्वारा, यूतीखुस—जो तीसरी मंज़िल के कमरे की खिड़की से गिर गया था—को मृत्यु के द्वार से जीवन में वापस लाया था (प्रेरितों के काम 20:9–12), और अपने प्रेरित पतरस के द्वारा, आपने आठ साल के लकवे से एनेयास को चंगा किया (प्रेरितों के काम 9:33-34), और उसी संत पतरस के द्वारा, आपने जन्म से लंगड़े एक आदमी के पैरों और टखनों को बल दिया और उसे चलने की शक्ति दी! (प्रेरितों के काम 3:2-8) तो अब, मेरे द्वारा, अपने इस अयोग्य सेवक के माध्यम से, इस मनुष्य को जीवन और स्वास्थ्य प्रदान करें!

इस प्रकार प्रार्थना करके, अस्तियोन उस व्यक्ति के पास गया जो वहाँ लेटा हुआ था और उसने प्रेरितीय वचन कहा:

– *'नज़रेथ के यीशु मसीह के नाम पर, उठ खड़ा हो और चल!'* (प्रेरितों के काम 3:6)

और उसका दाहिना हाथ पकड़कर, उसे उठा दिया; और वह जीवित और कुशल हो गया। चंगा हुआ मनुष्य, अपने माता-पिता के साथ, तुरन्त संतों के कोठरियों में गया, यह पुकारते और कहते हुए:

'केवल एक ही ईश्वर है – एपिक्टेटस और एस्टियिन का ईश्वर! सचमुच, केवल एक ही ईश्वर है – ईसाई ईश्वर! मैं इस स्थान को नहीं छोड़ूँगा – तो अब मुझे और मेरे माता-पिता को भी ईसाई बना दो।'

प्रभु के याजक एपक्टिेटस ने उन्हें उपदेश देकर सखिाया, और उन्हें उपवास करने तथा उस पवत्रि वरदान को ग्रहण करने के लिए तैयार रहने की आज्ञा दी, और कुछ समय बाद पवत्रि बपतस्मिा के द्वारा उन्हें ज्ञान का प्रकाश दयिा। हालाँकि, शैतान यह देखकर कि केवल एल्डर बल्कि उस युवक द्वारा भी उसे लज्जति कयिा जा रहा है, और वह उन मानवीय आत्माओं से वंचति हो रहा है जो पहले उसका शकिार हुआ करती थीं, ईर्ष्या से पीड़ति हो गया और अपनी चालाकी से हर संभव तरीके से उनका वरिोध करने के लिए खुद को सशस्त्र कर लयिा, परन्तु उसका कोई फायदा नहीं हुआ। फरि भी, उसे उस युवक को नुकसान पहुँचाने का एक अवसर मलि गया।

एक दनि, बूढ़े की आज्ञा के बनिा, एस्टयिन पानी भरने के लिए नदी पर गया। शत्रु ने, बूढ़े के आशीर्वाद से एस्टयिन को असुरक्षति देखकर, तुरंत, ईश्वर की अनुमति से, उसके मन में कुछ पापी वचिार डाले और उस युवक की आत्मा को कष्ट पहुँचाया। अपनी कुटयिा में लौटने पर, एस्टयिन अपने आध्यात्मकि पति के सामने इन वचिारों का इकरार करने में बहुत शर्मदिा था और, तीन दनिों तक, उन पर काबू पाने में असमर्थ होकर, उन वचिारों के आगे झुक गया। उसने उपवास कयिा, आँसुओं के साथ प्रार्थना की, और परशि्रम से अपने शरीर को थका दयिा, लेकनि अशुद्ध वचिार फरि भी उसे छोड़ नहीं रहे थे, मानो कोई अदृश्य धनुर्धर उसे उन वचिारों से तीरों की तरह घायल कर रहा हो। वृद्ध ने, उसकी व्यथति और दुखी काया को देखकर, उससे कहा:

'मेरे बच्चे, इसका क्या मतलब है कि मैं तुम्हें इतना असामान्य रूप से परेशान देख रहा हूँ? क्योंकि जो दुख मैं तुममें देख रहा हूँ, वह उन संतों का दुख नहीं है जो अपनी मुक्ति के लिए चंतिति रहते हैं, और जो इसलिए अपने चेहरों पर एक प्रकार का आंतरकि शोक प्रकट करते हैं।' मुझे ऐसा लगता है कि यह एक घातक दुख है, जैसा कि अहीथोफेळ, अबीसालोम के सलाहकार[4924] , और यहूदा, मसीह के वशि्वासघाती, को नष्ट कर गया था।

तब एस्टयिन ने बूढ़े से इन शब्दों में स्वीकार कयिा:

तीन दनि पहले, जब आप उन आदरणीय पुरुषों के साथ स्वर्ग के रहस्यों के बारे में बात कर रहे थे, मुझे कुछ पानी लाना था। मैं उन लोगों की उपस्थति में आपका आशीर्वाद माँगने में शर्मदिा था, और इसके अलावा, मैं आपकी बातचीत में बाधा नहीं डालना चाहता था। इस प्रकार, आपके बनिा, आपके आशीर्वाद के बनिा, मैं पानी लेने गया, और जब मैं रास्ते में था, तो बुरी सोचों का एक काला बादल मुझ पर छा गया। अब तीन दनि हो गए हैं जब से मैं उनसे जूझ रहा हूँ, और मैं उन्हें अपने मन से दूर नहीं कर पा रहा हूँ – इसीलिए मैं इतनी पीड़ा में हूँ।"

पवत्रि एल्डर ने उसे सख्त नज़रों से देखा और कहा:

'और तुम मेरे आदेश के बनिा अपनी कोठरी के दरवाज़े से बाहर क्यों नकिले? तुम मसीह के पुरोहति के आशीर्वाद के बनिा बाहर क्यों गए? क्या तुम नहीं जानते कि जवानों के लिए, अपने वरष्ठि का आशीर्वाद शैतान के खलिाफ एक अभेद्य दीवार, मजबूत कवच और एक अजेय हथयिार होता है?'

यह कहने के बाद, बूढ़े आदमी ने एस्टयिन को प्रार्थना करने के लिए क्रूस के आकार में जमीन पर लेटने का नर्दिेश दयिा; उसने स्वयं भी ऐसा ही कयिा, और आँखों में आँसू लिए, दोनों ने मलिकर ईश्वर से प्रार्थना करना शुरू कर दयिा। कुछ समय तक प्रार्थना करने के बाद , वे जमीन से उठे, और उसी क्षण अस्टयिन ने एक गहरे रंग का युवक देखा जो जलती हुई मोमबत्ती थामे हुए था और उससे दूर भागते हुए चल्लिा रहा था:

'एस्टयिन, तेरे स्वीकारोक्ति ने अब मेरी महान शक्ति को शर्मदिा कर दयिा है, और तेरी प्रार्थना ने मुझे असहाय छोड़ दयिा है।'

इस प्रकार पूज्य पादरी वहाँ रहे, और उन्होंने कई मानव आत्माओं को मूर्तपिूजा के भ्रम से हटाकर मसीह ईश्वर की ओर मोड़ा।

उस समय, उस देश का राज्यपाल, लाट्रोनअिन नामक एक व्यक्ति, अल्मरिसि नगर में आया। जब वह राज्य और सार्वजनकि मामलों के वभिन्नि कार्यों में व्यस्त था, तब मूर्तपिूजकों ने इन दो पवत्रि पुरुषों पर यह आरोप लगाया कि वे जादूगर थे जो अपने जादू-टोने से कई लोगों को बहका रहे थे और उन्हें देवताओं को बलदिान चढ़ाने से रोक रहे थे। राज्यपाल

[4924] अहीथोपेल – मूल रूप से दाऊद का एक करीबी मत्रि और सलाहकार; लेकनि अबशालोम के वद्रिोह के दौरान वह उसके पक्ष में चला गया और उसे दाऊद को तुरंत मार डालने के लिए उसका पीछा करने की सलाह दी; लेकनि चूँकि इस सलाह से अबशालोम का पतन हुआ, अहीथोपेल सेना छोड़कर अपने गृहनगर लौट आया और वहाँ फांसी लगा ली (2 शमूएल 17:1–20)। – यहूदा इस्करयिोती, जसिने यहूदयिों के पास प्रभु का वशि्वासघात कयिा, उसका भी उतना ही शर्मनाक अंत हुआ (मत्ती 27:3–5)।

ने तुरंत उन्हें गरिफ्तार करने और जेल में डालने का आदेश दयिा। बेड़यिों में जकड़े होने के दौरान, संतों ने अवरिाम प्रार्थना की और दाऊद के भजन गाए।

एक दनि, बड़े संत ने अपने शष्यि से कहा:

'मेरे प्रयि पुत्र! यदवि हमें पूछताछ के लएि बाहर ले जाएँ और हमारे नाम, वंश और मूलभूमकि बारे में पूछें, तो हम उन्हें कुछ उत्तर न देंगे, सविाय इसके कहिम ईसाई हैं, यही हमारा नाम, वंश और मूलभूमहिै, और हम सच्चे परमेश्वर के सेवक हैं।'

अगली सुबह, राज्यपाल ने मुकदमे के लएि शहर के केंद्र में एक स्थान तैयार करने का आदेश दयिा और उद्घोषकों के माध्यम से लोगों को वहाँ इकट्ठा होने के लएि बुलाया। वह स्वयं दनि के तीसरे घंटे पर वहाँ पहुँचे, अपनी सीट पर बैठे, और संतों को कालकोठरी से बुलाने के लएि भेजा। जब वे उसके सामने उपस्थति हुए, तो उन्हें देखकर वह वस्मिति हो गया, क्योंकि उसने उनके चेहरों को परमेश्वर की अनुग्रह की एक अद्भुत ज्योति से प्रकाशमान देखा, और वे दोनों ही अपने रूप-रंग से ही सम्मान के पात्र प्रतीत हो रहे थे। उस समय संत एपक्टिेटस साठ वर्ष के थे। वे लंबे कद के थे और उनकी लंबी दाढ़ी में सफेद धब्बे थे। इसी तरह, संत एस्टयिन लंबे और सुंदर थे, उनका चेहरा वशिेष रूप से पवत्रिता की सुंदरता से दमक रहा था। वे पैंतीस वर्ष के थे। उन्हें नहिारते हुए, शासक लगभग एक घंटे तक चुप रहा, उसके पास कहने के लएि शब्द नहीं थे; फरि, आखरिकार, उसने उनसे पूछा:

'बताइए, आपके नाम क्या हैं, आप कसि वंश से हैं, और आप कसि देश से यहाँ आए हैं?'

संतों ने उत्तर दयिा:

'हम ईसाई हैं!'

लेकनि शासक ने कहा:

'और मैं जानता हूँ कि तुम शापति ईसाई धर्म से हो – लेकनि हमें अपनी वंशावली और अपने देश के बारे में बताओ।'

संतों ने उसे एक बार फरि उत्तर दयिा:

'हम ईसाई हैं! हम एकमात्र परमेश्वर, हमारे प्रभु यीशु मसीह को जानते हैं, और हम केवल उसी की आराधना करते हैं; हम मूर्तपिूजा की घृणति कृत्यों से घृणा करते हैं और जो उन्हें प्रणाम करते हैं उनसे दूरी बनाए रखते हैं, भजनकार के साथ कहते हुए: *"जो ऐसे काम करते हैं और जो उन पर भरोसा करते हैं, वे उनके समान हों!"* (भजन संहति 113:16)।

यह सुनकर राज्यपाल बहुत क्रोधति हो गया और उसने आदेश दयिा कि उन्हें नग्न कर दयिा जाए और लंबी बेरहमी से पीटा जाए। हालाँकि, संतों ने प्रहार सहते हुए कहा:

'हे प्रभु यीशु मसीह, हमारे शक्षिक! आपकी इच्छा हम पर पूरी हो!'

गवर्नर ने उनकी दृढ़ता देखकर और भी अधकि क्रोधति हो गया और कहा:

'तुम्हारा मसीह कहाँ है, जसिे तुम नरिन्तर पुकारते हो? आओ, अब वह तुम्हारी सहायता करे; आओ, वह तुम्हें मेरे हाथों से छीन ले!'

लेकनि संतों ने दोहराया:

'हम मसीही हैं! हमारे ईश्वर की इच्छा हम पर पूरी हो!'

तब राज्यपाल और भी अधकि क्रोधति हो गया और उसने उन्हें उसी फाँसी के तख्ते पर लटकाने का आदेश दयिा जहाँ उन्हें यातना दी गई थी; उसने आज्ञा दी कि उनके शरीरों को लोहे की पंजों से खुरचा जाए और साथ ही उन्हें आग से जलाया जाए। लेकनि वे केवल यही पुकार रहे थे:

'हम मसीही हैं! हमारे ऊपर हमारे ईश्वर की इच्छा पूरी हो!'

संतों को दनि के सातवें घंटे के अंत तक इसी प्रकार यातनाएँ दी गईं, और फरि राज्यपाल ने उन्हें यातनाओं से उतारकर वापस कालकोठरी में ले जाने का आदेश दयिा। फाँसी देने वाले के एक नौकर, जसिका नाम वजिलियिंट था, ने संतों द्वारा अपने यातना के दौरान लगातार दोहराए जाने वाले शब्दों को सुनकर, और यह मानकर कि इन शब्दों में यातना के दौरान शारीरकि दर्द को खत्म करने की एक वशिेष जादुई शक्ति थी, उन्हें ठीक-ठीक याद कर लयिा और दनि-रात उन पर वचिार कयिा। तीन दनि बाद, उसने सभी के सामने जोर से चल्लिाना शुरू कर दयिा:

'मैं एक ईसाई हूँ; हमारे ईश्वर की इच्छा हम पर पूरी हो!'

इसके बाद, वह संतों को देखने के लएि कालकोठरी में गया, उनसे पवत्रि वश्विास सीखा, और कुछ ही दनिों बाद, अपने पूरे परविार के साथ, पवत्रि बपतस्मिा प्राप्त करने के योग्य समझा गया। जहाँ तक संतों का सवाल है, पहली यातना

के बाद, उन्होंने पाँच दिन कालकोठरी में बिताए और फिर पूछताछ के लिए एक बार फिर उन्हें बुलाया गया। राज्यपाल किसी भी तरह की मनाओ से उन्हें अपने अधर्मी विश्वास की ओर मोड़ने में असमर्थ था और इसलिए उसने उन्हें फिर से यातना देना शुरू कर दिया। सबसे पहले, उसने आदेश दिया कि उनके पिछले घावों पर सिरका और नमक मल दिया जाए; फिर उसने शहीदों को उबलते हुए पिघले हुए तारकोल से भरे एक बड़े पात्र में फेंक दिया। फिर भी संत उस उबलते हुए तारकोल के पात्र में, जैसे बपतिस्मा के कुंड में हों, सुरक्षित रहे और उन्होंने अपने पहले के शब्द दोहराए:

'हम मसीही हैं! हमारे ईश्वर की इच्छा हम पर पूरी हो!'

अधिकारी यह देखकर चकित रह गया कि वे उबलते हुए Cauldron में जीवित और सुरक्षित थे, और उसने कहा:

'ओह, ईसाई जादू की शक्ति कितनी महान है!'

इसके बाद, उसने उन्हें कड़ाही से निकालकर वापस कालकोठरी में फेंकने का आदेश दिया, और किसी को भी उनके पास जाने तथा उन्हें रोटी और पानी देने पर रोक लगा दी, ताकि वे भूख और प्यास से मर जाएँ। हालाँकि, संत तीस दिनों तक कालकोठरी में रहे, केवल परमेश्वर के वचन से पोषित और पवित्र आत्मा की कृपा से बलवान हुए।

जब पवित्र शहीदों से सार्वजनिक फांसी के स्थान पर, सभी लोगों की उपस्थिति में पूछताछ की जा रही थी और उनका न्याय किया जा रहा था, तो ईश्वर की व्यवस्था से पूर्वी देशों का एक व्यक्ति उस शहर में आ पहुँचा। वह एस्टियन को पहचान गया, क्योंकि वह उसके माता-पिता को अच्छी तरह जानता था, और इसलिए, अपने देश लौटने पर, वह एस्टियन के माता-पिता के पास गया और उनसे कहा:

'मैंने आपके पुत्र को स्किथिया के शहर अल्मिरिस में एक वृद्ध व्यक्ति, एपिक्टेटस के साथ देखा, जब दोनों को मसीह के लिए यातना दी जा रही थी।'

यह सुनकर, उसके माता-पिता आँसुओं में उस व्यक्ति से सच्चाई बताने की विनती करने लगे, और उसने शपथ लेकर अपनी बात की पुष्टि की। फिर अस्टियन के पिता ने कहा:

'यदि मुझे अपने प्रिय पुत्र को देखने की कृपा मिली, तो मैं तुरंत वही करूँगा जो वह मुझसे कहेगा और जो वह मुझे सिखाएगा!'

उसकी माँ ने भी कहा:

'यदि मुझे इस जीवन में अपने प्रिय बच्चे को फिर से देखना है, तो मैं सब कुछ पीछे छोड़ दूँगी और उसका अनुसरण करूँगी। यदि वह मुझे ईसाई बनने का आदेश देता है, तो मैं इनकार नहीं करूँगी, और उसके साथ मिलकर मैं मसीह के लिए न तो यातनाओं से और न ही मृत्यु से डरूँगी!'

इसके बाद, उन्होंने अपने घर और संपत्ति को अपने वफादार दोस्तों के हवाले कर दिया, जबकि वे स्वयं, कुछ पुरुष और महिला दासों के साथ, स्कैथिया के लिए रवाना हो गए। लेकिन अल्मिरिस शहर पहुँचने से पहले, पवित्र शहीदों एपिक्टेटस और एस्टियन ने इस प्रकार अपनी शहादत को पूरा किया।

तीस दिन बाद, जब वे अपनी कोठरी में भूख और प्यास से पीड़ित थे, राज्यपाल ने उन्हें एक बार फिर मुकदमे के लिए बुलाया और उनसे कहा:

'कई बार मैंने तुमसे तुम्हारे नाम, तुम्हारी वंशावली और तुम्हारे देश के बारे में पूछा है, और तुमने मुझे सच नहीं बताया है। मैं मानता हूँ कि तुम मानव रूप में राक्षस ही हो – क्योंकि उनका भी न कोई नाम होता है, न वंश। तो बताओ, तुम अवतारित राक्षसों! – क्योंकि मैं तुम्हें यही कहूँगा – क्या तुम हमारे देवताओं को बलिदान दोगे, या नहीं? अगर नहीं, तो मैं इसी क्षण तुम्हारे सिर काट दूँगा।"

संतों ने उत्तर दिया:

'हम ईसाई हैं, राक्षस नहीं, और हम मसीह के नाम से लोगों के शरीरों से राक्षसों को भगाते हैं। ओह, काश तुम भी अपने भीतर बसने वाले राक्षस से मुक्त होना चाहते! हम उसे मसीह, हमारे ईश्वर की शक्ति से तुमसे बाहर निकाल देते!'

तब राज्यपाल क्रोध से आग-बबूला हो गया और उसने पवित्र शहीदों के मुँह पर पत्थर मारने का आदेश दिया; और फिर, उन्हें डंडों से पीटने के बाद, उसने उन्हें तलवार से सिर कलम करने की सज़ा सुनाई।

जब संतों को शहर से बाहर फाँसी के स्थान पर ले जाया गया, तो उन्होंने जल्लादों से प्रार्थना के लिए समय माँगा; और, पूर्व की ओर मुड़कर, उन्होंने अपने हाथ आकाश की ओर उठाए, अपनी आँखें आकाश की ओर उठाईं, और लंबे समय तक ईश्वर से प्रार्थना की। इसके बाद, संत एपिक्टेटस ने अनुरोध किया कि पहले एस्टियन को फाँसी दी जाए, लेकिन बाद वाले ने उनसे कहा:

'पतिाजी, आपको यह सम्मान सबसे पहले प्राप्त करना चाहिए – शहादत का ताज पहनना चाहिए – क्योंकि आप प्रभु के पुरोहित, मेरे पिता और शिक्षक हैं, और मैं आपके बाद आऊँगा!'

संत एपिक्टेटस ने उत्तर दिया:

'सत्रह वर्षों से, मेरे बच्चे, ईश्वर की कृपा से, मैंने तुम्हें शुद्ध और निर्दोष रखा है। मैं अब कैसे अपने आपको इतने वर्षों की मेहनत को बर्बाद करने और तुम्हें मेरे बिना अकेला छोड़ने के लिए तैयार करूँ? क्या तुम नहीं जानते कि हमारे दुश्मनों की बेईमानी बहुत चालाक और देखने में लगभग असंभव है?' मुझे डर है कि मेरी मृत्यु देखकर तुम भयभीत हो जाओगे और शत्रु के उपहास का पात्र बन जाओगे। नहीं, मेरे बच्चे! मुझे अब्राहम की तरह बनने दो जो इसहाक को बलिदान के रूप में चढ़ा रहे हैं। तुम मुझसे पहले जाओ और शहीद का मुकुट पाने वाले पहले व्यक्ति बनो। मुझे विश्वास है कि संत माइकल, अन्य स्वर्गदूतों के साथ; अबेल, नबियों के साथ; पतरस, प्रेरितों के साथ; और दानियेल, धर्म-स्वीकारकों के साथ, आपको लेने के लिए बाहर गए हैं और आपका स्वागत करने तथा गंभीर भजनों के साथ, आपको हमारे उद्धारकर्ता मसीह के सिंहासन तक ले जाने के लिए प्रतीक्षा कर रहे हैं।

संत एस्टियिन ने कहा:

'हे पवित्र पिता, प्रभु की और आपकी इच्छा पूरी हो!'

इसके बाद, उन्होंने क्रॉस का चिह्न बनाया और कहा:

'हे प्रभु, आप मेरे रक्षक हैं! मैं अपनी आत्मा आपके हाथों में सौंपता हूँ!'

इन यातनाओं के साथ, उसने तलवार के नीचे अपना सिर झुकाया और मर गया[4925] । संत एपिक्टेटस, अपने शिष्य के शरीर से चिपके हुए, जल्लादों से विनती करने लगे कि जब तक वह उसी स्थिति में रहे, तब तक उसे मार डालें। और इस प्रकार, तलवार से प्रहारित होकर, वह मसीह के लिए मर गया। तथापि वहाँ उपस्थित सभी मूर्तिपूजकों और ईसाइयों ने देखा कि उनके पवित्र शरीर सूर्य की किरणों की तरह दमकने लगे, और एक अद्भुत सुगंध पूरे स्थान में फैल गई।

उस शाम देर से, उपर्युक्त विजिलियान्सियस ने अपने परिवार और अन्य ईसाइयों के साथ मिलकर, शहीदों के शवों को चुपके से ले लिया; उन्हें साफ कफ़न में लपेटकर और सुगंधित तेलों से अभिषिक्त करके, उन्होंने उन्हें एक चुनी हुई जगह पर सम्मानपूर्वक दफना दिया।

उसी रात, एक दुष्ट दानव राज्यपाल लाट्रोनिअनस के शरीर में प्रवेश कर गया; और राज्यपाल, सुबह-सुबह उठकर, अपनी आदत के अनुसार, उस कक्ष में आ गया जहाँ राज्य के मामलों पर चर्चा होती थी, और वह उन्मत्त होकर तरह-तरह की बकवास बोलने लगा; फिर, एक तलवार उठाकर, वह उपस्थित लोगों पर टूट पड़ा और उन पर वार करके उन्हें घायल करने लगा। उसे ऐसी उन्मत्त अवस्था में देखकर, उन्होंने उसे पकड़ लिया, उसके हाथों से तलवार छीन ली, और उसे पीटने लगे; फिर उन्होंने उसके हाथ-पैर बाँध दिए और उसे एक छोटे से कमरे में बंद कर दिया, जहाँ, दो दिन बाद, राक्षस द्वारा घुटन से मार डाले जाने पर उसकी भयानक मृत्यु हो गई।

पवित्र शहीदों की मृत्यु के बाद, एस्टियिन के माता-पिता समुद्र मार्ग से अल्मिरिस शहर पहुँचे। उस समय, संत एस्टियिन विजिलियिनस के सपने में प्रकट हुए और कहा:

'मेरे पिता और मेरी माता अब मुझे खोजने के लिए यहाँ आ रहे हैं। भाई, अपना प्रेम दिखाओ – घाट पर जाओ, उन्हें अपने घर ले आओ, उन्हें आश्वस्त करो और उनका सांत्वना दो: वे मेरे कारण महान दुःख से व्याकुल हैं। इसके अलावा, उन्हें उद्धार करने वाला विश्वास सिखाओ और उन्हें सच्चे ईश्वर की महानता का ज्ञान कराओ।'

विजिलिान्टियिस सीधे घाट पर गया और वहाँ उसने किनारे पर एक जहाज को लंगर डालते देखा, जिसमें से एस्टियिन के माता-पिता उतर चुके थे। वे वहाँ मिले लोगों से पूछ रहे थे कि क्या किसी ने एस्टियिन नाम के एक युवक को देखा है। विजिलिान्टियिस उनके पास गया और कहा:

'मैंने उसे देखा है और उसे अच्छी तरह जानता हूँ। पहले मेरे साथ चलो, मेरे घर पर आराम करो, और मैं तुम्हें उसके बारे में सब कुछ बताऊँगा।'

बड़ी खुशी के साथ, एस्टियिन के माता-पिता उस विजिलियिनस के साथ चले गए, जिसने उन्हें आमंत्रित किया था, और उसने उनका मन शांत करने के लिए हर संभव प्रयास किया। जब उन्होंने उनसे अपने बेटे के बारे में बताने का आग्रह किया, तो विजिलियिनस ने उन्हें बताया कि एस्टियिन हाल ही में इस शहर में था और कुछ दिन पहले ही एक सम्मानित बुजुर्ग

[4925] संत अस्टियिन (और एपिक्टेटस की भी) की मृत्यु लगभग 290 ईस्वी में हुई।

के साथ एक बहुत दूर की भूमि के लिए यहाँ से चला गया था, क्योंकि उसे सबसे प्रतिष्ठित राजा द्वारा उनके गौरवशाली शासन में भाग लेने के लिए सम्मानपूर्वक बुलाया गया था। इस प्रकार, धीरे-धीरे, विजिलिंटियम ने उन्हें एक अन्य, शाश्वत जीवन, स्वर्गीय निवासों, स्वर्ग के राज्य और अमर राजा, प्रभु मसीह, स्वर्गदूतों और मसीह के साथ शासन करने वाले संतों के दल के बारे में शिक्षा दी, जिनमें अब उनके पुत्र एस्टियन का नाम भी शामिल था। जहाँ तक एस्टियन के माता-पिता का सवाल है, पहले कभी न सुने शब्दों को सुनकर, वे चकित और भावुक हो गए, और उनके हृदय में एक आध्यात्मिक आनंद का अनुभव हुआ; और वे यह जानने के लिए और भी अधिक उत्सुक हो गए कि उनका प्रिय पुत्र कहाँ गया था। तब विजिलिन्टियस उन्हें पहले पवित्र शहीदों की कोठरी में ले गया और उन्हें उनके द्वारा छोड़ा गया पवित्र क्रूस और सुसमाचार दिखाया; फिर उसने उनसे सुसमाचार की शिक्षाओं के बारे में बात करना शुरू किया और उन्हें मसीह में विश्वास की ओर ले गया। इसके बाद, उन्होंने उन्हें पवित्र शहीदों एपिक्टेटस और एसुटियन के दुखों के बारे में बताया, कि कैसे उन्होंने मसीह के लिए अपनी जान दे दी थी, और उन्हें उस स्थान पर ले गए जहाँ संतों के शरीर दफनाए गए थे। जब वे वहाँ काफी देर तक रो चुके, ने उन्हें शाम को प्रार्थना शुरू करने और पूरी रात उसके साथ मसीह परमेश्वर से प्रार्थना करने का निर्देश दिया। आधी रात बीत चुकी थी, और भोर होने लगा था, जब अचानक उनके सामने बिजली की तरह एक तेज प्रकाश चमका और हवा में एक अद्भुत सुगंध फैल गई – पवित्र शहीद अकथनीय सुंदरता में उनके सामने प्रकट हुए। संत एस्टियन ने अपनी माँ को गले लगाकर प्यार से चूमा, और कहा:

'कितना अच्छा है कि तुम यहाँ आई हो, मसीह की शिष्या और मेरी माँ, मार्सेलिना!' (क्योंकि यही उसका नाम था)।

इसी प्रकार, संत एपिक्टेटस ने एस्टियन के पिता के सिर को गले लगाकर, उसे चूमा और कहा:

'प्रभु में आनन्दित हो, मेरे प्रिय भाई अलेक्जेंडर (क्योंकि यही उसका नाम था) – तुम्हें विश्वासियों में गिना गया है और अनन्त आनंद के योग्य पाया गया है।'

तब दोनों ने विजिलियिनस से कहा:

'हे प्रिय भाई, तुम भी आनन्दित होओ, क्योंकि धर्मग्रंथ का वचन तुम पर पूरा हुआ है: *"जो कोई पापी को उसके भटकने हुए मार्ग से फेर देता है, वह उसकी आत्मा को मृत्यु से बचाएगा और बहुत से पापों को ढाँपेगा"* (याकूब 5:20)।

उन्होंने उन्हें सांत्वना के और भी कई वचन कहे, और यह सब आध्यात्मिक मधुरता से परिपूर्ण था; और फिर, कुछ समय बाद, वे अदृश्य हो गए। एस्टियन के माता-पिता उस दर्शन को देखने और संतों के साथ अपनी मधुर बातचीत से अत्यंत आनंदित हुए; उन्होंने प्रार्थना में अपनी भावनाओं को व्यक्त किया और परमेश्वर का धन्यवाद किया कि उन्हें अपने पुत्र को स्वर्गीय महिमा में देखने के योग्य ठहराया गया, जिसे वे इतने लंबे समय से अपने हृदयों में दुख के साथ खोज रहे थे।

उस समय, स्कैथियनों की भूमि में इवेंजेलस नामक एक ईसाई बिशप थे। उत्पीड़न के दौरान, वे छिप गए थे, लेकिन शासक लैट्रोनअिनस की मृत्यु के बारे में जानने के बाद, वे बिना किसी डर के अल्मिरिसि शहर में ईसाइयों से मिलने और उन्हें विश्वास में मजबूत करने के लिए आए। विजिलिंटियस एस्टियन के माता-पिता को इस संत के पास ले आए और उन्हें उनके तथा पवित्र शहीदों के बारे में विस्तार से बताया। बिशप ने पवित्र शहीदों को महिमा देते हुए, एस्टियन के माता-पिता का, जो मसीह की ओर मुड़ चुके थे, प्रसन्नता से स्वागत किया और उन्हें पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम पर बपतिस्मा दिया। इसके बाद, अलेक्जेंडर और मार्सेलिना शहीदों की कब्र पर काफी समय तक उपवास और प्रार्थना करते रहे; फिर वे घर लौट आए और अपनी पूरी बड़ी संपत्ति बेचकर, अपना थोड़ा सा निर्वाह छोड़कर, बाकी पैसा गरीबों में बाँट दिया। उन्होंने अपने जीवन के अंत तक इसी तरह एक ईश्वरीय जीवन जिया।

इस प्रकार पवित्र शहीद-भिक्षु, एपिक्टेटस पादरी और भिक्षु एस्टियन, स्वर्ग में शहीद के मुकुट से विभूषित हुए। जब अलेक्जेंडर और मार्सेलिना, जो इस पृथ्वी से चल बसे थे, उनके साथ शामिल हुए, तो उन्हें भी हमारे प्रभु यीशु मसीह की कृपा से संतों के आनंद में एक हिस्सा मिला, जिन्हें पिता और पवित्र आत्मा के साथ, अब और हमेशा और युगों-युगों तक सम्मान और महिमा मिले। आमीन।

पवित्र शहीद सिरियाका का कष्टकथा

7 जुलाई को स्मरणोत्सव

[4926]सम्राट डायोक्लेटियन[4927] के शासनकाल में, डोरोथियस नामक एक ईसाई और उसकी पत्नी यूसेबिया, जो निःसंतान थे, ने ईश्वर से प्रार्थना की कि वह उन्हें संतान प्रदान करें, और यह वादा किया कि यदि उन्हें संतान हुई तो वे उसे ईश्वर को समर्पित कर देंगे। उनकी प्रार्थनाओं के उत्तर में, एक रविवार को उन्हें एक बच्ची का आशीर्वाद मिला, जिसका उन्होंने किरियाके नाम रखा और उसे पवित्र संस्कार में बपतिस्मा दिया। अपनी बेटी का पालन-पोषण ईसाई धर्म और सुदृढ़ शिक्षा में करते हुए, उन्होंने उसे पवित्र रखा ताकि, अपनी मंशा के अनुसार, वे उसे ईश्वर की सेवा के लिए समर्पित कर सकें। उस समय, ईसाइयों पर अत्याचार शुरू हो गया था[4928] , और धर्मनिष्ठ माता-पिता को उनकी बेटी के साथ सम्राट डायोक्लेटियन के हवाले कर दिया गया, जिन्होंने उन पर फैसला सुनाते हुए, पहले यह आदेश दिया कि उन्हें लंबे समय तक कोड़े मारे जाएं, और फिर डोरोथियस और यूसेबियस को माइटिलिनि क्षेत्र[4929] में राज्यपाल जस्टस के पास भेज दिया, जबकि किरियाके को निकोमेडिया[4930] सीज़र मैक्सिमियन[4931] के पास भेजा गया। बाद वाले ने संत से पूछताछ की और यह देखकर कि वह अपने विश्वास में दृढ़ और अटूट थी, उसे जमीन पर लिटाकर लंबे समय तक निर्दयता से कोड़े मारने का आदेश दिया। इस यातना के दौरान, क्यिरियाके ने प्रार्थना में स्वयं को समर्पित कर दिया, और इससे मैक्सिमियन क्रोधित हो गया, लेकिन पवित्र शहीद ने उससे कहा:

'मैक्सिमियन, खुद को धोखा मत दो! तुम मुझे कभी भी अपनी इच्छा के आगे झुकने के लिए मजबूर नहीं कर सकते, क्योंकि ईश्वर मेरे साथ है।'

इसके बाद, मैक्सिमियन ने संत क्यिरियाके को बिथिनिया के राज्यपाल हिलारियन के पास भेजा, जिसने उनसे पूछताछ करने के बाद उन्हें एक मूर्तिपूजक मंदिर में ले जाने का आदेश दिया; लेकिन संत ने प्रार्थना की, और उनकी प्रार्थना से एक भीषण भूकंप आ गया, जिससे मंदिर में रखी सभी मूर्तियाँ जमीन पर गिरकर चूर-चूर हो गईं; एक आंधी मंदिर में घुस आई और धूल को हवा में उड़ा ले गई; फिर आग की एक चमक ने राज्यपाल हिलारियन के चेहरे को झुलसा दिया, जिससे वह अपनी कुर्सी से गिर पड़ा और तुरंत मर गया। फिर उस क्षेत्र का एक और शासक, जो पहले वाले का सह-शासक था, आया; सब कुछ होने के बाद, उसने सेंट सिरिकस को खंभे से बांधकर जलाने की सज़ा सुनाई। उसके आदेश पर, एक बड़ा तवा लाल-गरम किया गया, और संत को उस पर फेंक दिया गया। वहाँ, प्रार्थना में अपने हाथ उठाकर, उन्होंने लंबी प्रार्थना की; और उसी क्षण, साफ गर्मियों के आकाश के सामने, स्वर्ग से एक बादल उतरा और आग की गर्मी को पूरी तरह से बुझा दिया, जिससे किरिकी पूरी तरह से सुरक्षित रह गईं। इसके बाद, राज्यपाल ने आदेश दिया कि संत क्यिरियाके को मुकदमे की जगह लाया जाए और विभिन्न जंगली जानवरों को उन पर छोड़ दिया जाए, लेकिन तब भी वह सुरक्षित रहीं, क्योंकि उन पर झपटने के बजाय, जानवर उनके पैरों तले लेट गए। यह देखकर, उपस्थित कई विधर्मी हमारे प्रभु यीशु मसीह में विश्वास करने लगे, जबकि संत को जेल में डाल दिया गया। कुछ समय बाद, राज्यपाल मुकदमे की जगह पर आए और न्यायाधीश की कुर्सी पर बैठकर उन्होंने उसे मौत की सजा सुनाई। संत क्यिरियाके ने उनसे प्रार्थना करने की अनुमति मांगी; उन्होंने लंबी प्रार्थना की और अपने साथ आए ईसाइयों को निर्देश देने के बाद, जमीन पर सिर झुकाया और शांतिपूर्वक परलोक सिधार गईं। जब सैनिक सज़ा को अंजाम देने आए, तो उन्होंने उसे पहले से ही मृत पाया और वे बहुत हैरान हो गए। उसी क्षण, स्वर्ग से एक आवाज़ सुनाई दी, जो उनसे कह रही थी:

[4926] ग्रीक में 'किरियाके' का अर्थ है 'प्रभु का' या 'प्रभु से संबंधित'।

[4927] डायोक्लेटियन ने 284 से 305 तक रोमन साम्राज्य पर शासन किया।

[4928] यह उत्पीड़न 303 में शुरू हुआ। इसकी शुरुआत डायोक्लेटियन के सह-शासक, सीज़र गैलेरियस ने की थी, जिसने डायोक्लेटियन को ईसाइयों के खिलाफ एक सामान्य फरमान जारी करने के लिए मनाया था। इस फरमान में ईसाई चर्चों को नष्ट करने, पवित्र शास्त्रों को जलाने, और ईसाइयों से सभी नागरिक अधिकारों और पदों को छीनने का आदेश दिया गया था। डायोक्लेटियन के अधीन उत्पीड़न की विशेषताएँ थीं, पहली, यातनाओं की क्रूरता, और दूसरी, शहीदों की बड़ी संख्या, जिनमें एक ही दिन में 10 से लेकर 1,000 या उससे अधिक लोगों को मौत की सजा दी गई।

[4929] यहाँ संदर्भित मिटिलिनि का क्षेत्र लेसबोस द्वीप है, जो एजियन सागर में एशिया माइनर के पश्चिमी मिसियन तट के पास स्थित है और इसका नाम इसकी राजधानी के नाम पर रखा गया था, जिसे बाद में मिटिलिनि के नाम से जाना गया।

[4930] निकोमेडिया – पूर्वी रोमन साम्राज्य की राजधानी, सम्राट डायोक्लेटियन का निवास, एशिया माइनर के उत्तर-पूर्वी भाग में प्रॉपोंटिस (मार्मारा सागर) के तट पर बिथिनिया क्षेत्र का एक भव्य शहर।

[4931] कुछ लोगों का मानना है कि पवित्र शहीद क्यिरियाके की मृत्यु वर्ष 303 में हुई, जबकि, उनकी उत्कृष्टता फिलारेट के अनुसार (जीवनी संतों की, जुलाई, पृष्ठ 60), उनकी मृत्यु वर्ष 289 में हुई; लेकिन यह ध्यान में रखते हुए कि संत क्यिरियाके के न्यायाधीश मैक्सिमियन गैलरीयस थे और उनकी शहादत निकोमेडिया में हुई थी, यह अधिक संभावना है कि उनकी मृत्यु 303 में, डायोक्लेटियन द्वारा शुरू किए गए उत्पीड़न की शुरुआत में ही हुई थी।

'हे भाइयो! जाओ और परमेश्वर के सभी महान कार्यों की घोषणा करो।'
तब सैनकि परमेश्वर की महमिा करते हुए लौट गए।

21 जुलाई

8 जुलाई (पुराने कैलेंडर के अनुसार)

आज के दनि हम उस्त्युग के धर्मी प्रोकोपयिस का स्मरण करते हैं।
इस दनि, सन् 1303 में उस्त्युग के धर्मी प्रोकोपयिस, जो मसीह के लिए एक पवत्रि मूर्ख थे, का नधिन हुआ।

पवत्रि महान शहीद प्रोकोपयिस का कष्टकथा

8 जुलाई को स्मरण कयिा जाता है

[493249334934]पवत्रि नगर यरूशलेम महान शहीद प्रोकोपयिस का जन्मस्थान था, जन्हिें उनके माता-पता ने प्रोकोपयिस नहीं बल्कि नीन नाम दयिा था; संत को बाद में, उनके बपतस्मिा के समय, स्वयं प्रभु मसीह से प्रोकोपयिस नाम मलिा, जैसा कि आगे स्पष्ट होगा। इसी प्रकार, उस समय यरूशलेम को अधर्मी मूर्तपिूजकों द्वारा यरूशलेम नहीं बल्कि एलयिा ( ) कहा जाता था। वेस्पासयिन के पुत्र टाइटस द्वारा यरूशलेम के वनिाश के बाद, जब कई वर्ष बीत गए थे, रोम के सम्राट हैड्रयिन, जन्हिें जन्म पर एलयिस नाम दयिा गया था, ने खंडहर हो चुके यरूशलेम की जगह पर शहर का पुनर्नर्मिाण करने की इच्छा से, उसका अपना नाम - एलयिा - रख दयिा और इस एलयिा को यरूशलेम कहने पर रोक लगा दी। वह ईसाई धर्म के प्रतगिहराई से शत्रुतापूर्ण था और उसने न केवल पृथ्वी से मसीह के सबसे पवत्रि नाम को मटिाने का प्रयास कयिा, बल्कि उस स्थान को भी पूर्णतःवस्मिृति में डालने की कोशशि की जहाँ मसीह ने यातनाएँ झेली थीं। इसीलिए उसने यरूशलेम का नाम 'एलयिा' रखा।

उस शहर में क्रस्टिोफ़र नाम का एक कुलीन व्यक्ति रहता था, जो सीनेट के वंश का था। वह स्वयं एक ईसाई था, लेकनि उसकी पत्नी थयिोडोसयिा एक मूर्तपिूजक थी। उनसे ही नीनयिस का जन्म हुआ; उसके जन्म के कुछ ही समय बाद, क्रस्टिोफ़र प्रभु के पास चला गया।

वधिवा होने के बाद थयिोडोसयिस ने लड़के का पालन-पोषण पैगन धर्म में कयिा और उसे मूर्तयिों की पूजा करना सखिाया, क्योंकि वह स्वयं राक्षसों की एक उत्साही सेवकिा थी। लड़का अपनी तीव्र बुद्धि के लिए प्रसद्धि था और अपनी माँ द्वारा हेलेनकि शक्षिकों के हवाले कए जाने के बाद, उसने जल्द ही सभी सांसारकि वज्ञिानों में महारत हासलि कर ली।

जब वह कशिोरावस्था में पहुँचा और वयस्कता की दहलीज पर था, तो उसकी माँ उसे सैन्य सेवा के लिए सम्राट के सामने प्रस्तुत करना चाहती थी। उस समय, अधर्मी रोमन सम्राट डायोक्लेटयिन[4935] , ओरोन्टसि नदी के तट पर, सीरयिा के एंटओिक में पहुँचा। यह जानकर, थयिोडोसयिा अपने बेटे के साथ अंtओक गईं और उसे सम्राट की सेवा के लिए प्रस्तुत कयिा। सम्राट ने, जब देखा कि वह युवक सुंदर और लंबा था, और उसकी शक्षिा के बारे में जानकर, उसे बहुत पसंद कयिा और उसे अपने सम्राटीय कक्षों में अपने साथ, अपने जैसे अन्य लोगों के साथ रहने का आदेश दयिा। कुछ ही समय बाद, सम्राट ने उसे एक सैन्य कमांडर नयिुक्त कयिा और उसे एक सेना के साथ मस्रि के शहर अलेक्जेंड्रयिा[4936]

[4932] सम्राट टाइटस ने 79 से 81 तक शासन कयिा।
[4933] वेस्पासयिन ने 70 से 79 तक रोमन साम्राज्य पर शासन कयिा।
[4934] हैड्रयिन ने 117 से 138 तक शासन कयिा।
[4935] डायोक्लेटयिन ने 284 से 305 तक शासन कयिा।
[4936] अलेक्जेंड्रयिा – प्राचीन काल में एक प्रसद्धि शहर, जसिकी स्थापना मस्रि में, भूमध्य सागर के तट पर, सम्राट सकिंदर महान (336–323 ईसा पूर्व) द्वारा की गई थी; यह ईसाई-पूर्व काल में शक्षिा और व्यापार के केंद्र के रूप में प्रसद्धि था; चौथी शताब्दी की शुरुआत से, यह ईसाई जीवन के सबसे महत्वपूर्ण केंद्रों में से एक और पैट्रआर्क का आसन बन गया।

भेजा ताकि वहाँ के ईसाइयों को सताया, प्रताड़ित और पीटा जा सके, और उनकी संपत्तियों को शाही खजाने के लिए जब्त किया जा सके। हालाँकि, नीनियास ने सम्राट से कहा:

'मैंने सुना है, महामहिम, कि ये लोग एक ईश्वर के पुत्र की, जिसका नाम मसीह है, पूजा करते हैं, और ये आत्मा में बहुत दृढ़, विद्रोही और अवज्ञाकारी हैं, जो अंत तक अपने विश्वास पर अडिग रहने को तैयार हैं। वे अपने मसीह को त्यागने के बजाय मरना पसंद करेंगे, और किसी भी परिस्थिति में वे हमारे देवताओं को बलिदान नहीं चढ़ाएंगे। इसलिए, मेरा मानना है कि हम उन्हें अपने धर्म में परिवर्तित करने में सफल नहीं होंगे।

यह सुनते ही सम्राट क्रोध से आग-बबूला हो गया और इस प्रकार मसीहा उद्धारकर्ता की निंदा करने लगा:

'उनका ईश्वर, जैसा कि वे स्वयं दावा करते हैं, उसकी कोई पत्नी नहीं थी। तो फिर, वह एक पुत्र को कैसे जन्म दे सकता था? और जिस पर ईसाई विश्वास करते हैं, वह एक स्त्री से पैदा हुआ था और एक अपराधी की तरह यहूदी लोगों द्वारा मृत्युदंड दिया गया; उसे पीटा गया, काँटों का मुकुट पहनाया गया, अपमानित किया गया, सूली पर चढ़ाया गया, उसे सिरका और पित्त पिलाया गया, और भयानक पीड़ा में मर गया। यदि वह ईश्वर होते, तो उन्होंने यहूदियों के हाथों से स्वयं को क्यों नहीं बचाया? और यदि उन्होंने अपनी मुसीबत के समय स्वयं की मदद नहीं की, तो क्या वह किसी और की मदद कर सकते हैं?

ऐसी धर्मनिंदा, और इससे भी बदतर बातें, विनाश के पुत्र द्वारा कही गईं! जैसा कि दैवीय पौलुस लिखते हैं, *'क्योंकि क्रूस का संदेश, जैसा कि नाश होने वालों के लिए मूर्खता है, परन्तु हम जो बच रहे हैं, उनके लिए यह परमेश्वर की सामर्थ्य है'* (1 कुरिन्थियों 1:18)। हालाँकि, नीनियस, सम्राट के शब्दों से प्रेरित होकर, अपने बताए गए मार्ग पर दो सैनिक दस्तों के साथ निकल पड़ा। लेकिन चूँकि उस समय सूरज असाधारण तीव्रता से तप रहा था, और सैनिक तथा उनके घोड़े गर्मी से थक गए थे, इसलिए उन्हें रात में यात्रा करनी पड़ती थी और दिन में आराम करना पड़ता था। जब वे सीरियाई शहर अपमेआ[4937] से गुज़र रहे थे, तो रात के तीसरे पहर में एक भूकंप आया; बिजली चमकी और गरज के साथ एक ज़ोरदार कड़क हुई, जिससे सभी सैनिक डर के मारे लगभग मर ही गए। हालाँकि, राज्यपाल ने स्वर्ग से एक आवाज़ सुनी जो उससे कह रही थी:

'नेनियस! क्या तुम भी मेरे खिलाफ आ रहे हो?'

नेनियस ने उत्तर दिया:

'हे प्रभु, आप कौन हैं? मैं आपको पहचान नहीं पा रहा हूँ!'

जैसे ही उसने यह कहा, हवा में एक क्रिस्टल की तरह चमकता हुआ एक क्रॉस प्रकट हुआ, और क्रॉस से एक आवाज़ सुनाई दी:

'मैं यीशु हूँ, सूली पर चढ़ाया गया, परमेश्वर का पुत्र!'

काँपते हुए, नीनियस ने कहा:

'सम्राट ने मुझसे कहा था कि जिसे ईश्वर की ईसाई पूजा करते हैं, उसकी कोई पत्नी नहीं थी; तो फिर आप ईश्वर के पुत्र कैसे हैं? यदि आप वास्तव में ईश्वर के पुत्र हैं, तो यहूदियों ने आपकी उपहास उड़ाने, आपको सूली पर चढ़ाने और आपको मृत्युदंड देने की हिम्मत कैसे की?'

और सूली से एक आवाज़ ने उससे उत्तर दिया:

'मैंने यह मानव जाति के लिए अपनी स्वेच्छा से सहन किया, ताकि पापियों को शैतान की शक्ति से मुक्ति दिला सकूँ, खोए हुए को ढूंढ सकूँ और मृतकों को जीवन दे सकूँ। और अगर मैं परमेश्वर का पुत्र नहीं होता, तो मैं मृत्यु के बाद जीवित रहकर आपसे कैसे बात कर सकता था?'

इसके बाद, क्रूस स्वर्ग में आरोहण कर गया, और तुरंत स्वर्ग से एक आवाज़ सुनाई दी:

'इस चिह्न से जो तुमने देखा है, अपने शत्रुओं को परास्त करो, और मेरी शांति तुम पर होगी!'

इस प्रकार नीनियस, ठीक वैसे ही जैसे एक बार शाऊल[4938] ने सड़क पर प्रभु के उसके पास प्रकट होने के द्वारा, एक उत्पीड़क से प्रभु यीशु मसीह के एक चुने हुए पात्र में बदल गया; और उस अद्भुत दर्शन और स्वयं प्रभु के साथ मीठे वार्तालाप से, उसने अपने हृदय में एक अकथनीय आनंद और आध्यात्मिक प्रसन्नता महसूस की।

[4937] अपामेया शहर सीरिया के दक्षिण-पश्चिमी भाग में, ओरोंटेस नदी के तट पर स्थित था।

[4938] सौल (बाद में महान प्रेरित पौलुस) के धर्मांतरण की कहानी प्रेरितों के काम 9:1-20 में पढ़ी जा सकती है। – पवित्र प्रेरित पौलुस का पर्व 29 जून को मनाया जाता है।

इसके बाद, नीनयिस अपनी सेना के साथ स्कथिोपोलसि[4939] आया और एक सुनार को बुलाकर उसे उस रात देखे गए समान एक क्रूस बनाने का आदेश दयिा। लेकनि सुनार ने मना कर दयिा, और कहा:

'मैं ऐसा नहीं कर सकता, क्योंकि यह ईसाइयों के नाम से जाने जाने वाले गलीलयिों का प्रतीक है। अगर सम्राट को इसके बारे में पता चल गया, तो मेरी भयानक मृत्यु होगी।'

ननियिस ने ज़ोर देकर कहा कि वह गुप्त रूप से क्रूस बना दे, और उससे यह शपथ ली कि वह न तो सम्राट को और न ही कसिी और को इसके बारे में बताएगा। तब उस सुनार ने, इस उद्देश्य के लिए राज्यपाल से पर्याप्त सोना और चाँदी लेकर, गुप्त रूप से राज्यपाल द्वारा नरि्दष्टि आकार और माप का एक क्रूस बना दयिा। जैसे ही क्रॉस बना, उस पर अचानक तीन आकृतयिों की छवयिाँ प्रकट हुईं, जो एक अदृश्य हाथ से अंकति की गई थीं, साथ ही एक हब्रिू शलिालेख भी था: ऊपर - इम्मानुएल[4940] , और दोनों ओर - माइकल और गैब्रयिल[4941] । यह देखकर, सोनार ने सोचा कि यह कसिने लखिा था, क्योंकि कमरे में उसके अलावा और कोई नहीं था। वह उस छवि को मटिाने के लिए एक वशिेष उपकरण का उपयोग करने ही वाला था, लेकनि ऐसा कर सका, क्योंकि उसका हाथ हलि नहीं रहा था और ऐसा लग रहा था मानो वह अकड़ गया हो। राज्यपाल ने, क्रूस को देखकर, कारीगर से पूछा कि ये चेहरे कसिके हैं और उन्हें वहाँ क्यों बनाया गया है। कारीगर ने शपथ ली, घोषणा करते हुए:

'जब मैंने अपना काम पूरा कर लयिा, तो ये चेहरे अपने आप प्रकट हो गए, और मुझे नहीं पता कि ये कसिके हैं। मैंने इन्हें मटिाने की कोशशि की, लेकनि नहीं कर सका – मेरा हाथ सुन्न हो गया था।'

तब नीनयिस को एहसास हुआ कि उस क्रूस में कोई दैवीय शक्ति निहिति थी; वह इसके सामने झुक गया, उसे चूमा, और एक बैंगनी कपड़े में लपेटकर, उसे अपने पास रख लयिा, और श्रद्धापूर्वक उसकी रक्षा करने लगा। अब उसने हथयिार ईसाइयों के खलिाफ नहीं, बल्कि बर्बर लोगों के खलिाफ उठाए, और मसीह की शक्ति से उन्हें पराजति कयिा, उनके देशों को वश में कर लयिा। वह सबसे अदृश्य दुश्मन—शैतान—के खलिाफ भी युद्ध में गया और उसे अपनी बहादुरी भरी पीड़ाओं से हराया, जो उसने मसीह के लिए सहन कीं।

उनका दुख इस प्रकार शुरू हुआ। जब वह अपने शहर यरूशलेम में था, जसिे तब एलयिा के नाम से जाना जाता था, तो नागरकिों ने उनसे हागारीयों[4942] द्वारा कए गए अन्याय का बदला लेने के लिए कहा। ये अगारयिन देश पर छापे मार रहे थे और शहर के चारों ओर मंडराते हुए, शहर की दीवारों के बाहर मलिे कसिी भी व्यक्ति का अपहरण कर लेते थे; सबसे बढ़कर, उन्होंने महलिाओं पर अत्याचार कयिा, जन्हिें वे पत्नयिाँ बना लेते थे। उन्होंने आसपास के गांवों में भी ऐसा ही कयिा। मसीह का एक पराक्रमी योद्धा, पवत्रि क्रूस की शक्ति से लैस, नडिर होकर अपनी सेना के साथ नकिल पड़ा और अगारयिों का पीछा करने लगा, और मन ही मन इस प्रकार प्रार्थना करने लगा:

'मेरी मदद करो, मेरी आशा, हमारे प्रभु मसीह!'

और स्वर्ग से एक आवाज़ उन्हें सुनाई दी:

'हौसला रख, नीनयिस, क्योंकि मैं, तेरा प्रभु परमेश्वर, तेरे साथ हूँ!'

यह आवाज़ सुनकर, कमांडर और भी नडिर हो गया और उसने दुश्मन को करारी हार दी, और उनके सभी बंदयिों को छीन लयिा: उस लड़ाई के दौरान, छह हज़ार अगारयिन मारे गए, जबकि नीनयिस के एक भी योद्धा को न तो चोट लगी और न ही कोई मारा गया। और नीनयिस ने दुश्मनों पर वजिय की खबर लेकर अपने दूतों को अपनी माँ के पास भेजा, जसिसे उसकी माँ को बहुत प्रसन्नता हुई। जब वह अपने लूट के माल के साथ वजियी होकर शहर लौटा तो उसने खुशी-खुशी उसका स्वागत कयिा, और जब वह घर में प्रवेश कयिा, तो उसने उससे कहा:

'हे मेरे प्रयि पुत्र! जब तुम युद्ध के लिए नकिले, तो मैंने एक धूपदान और धूप अपने हाथों में ली, देवताओं के सामने गई, और तुम्हारे लिए उनसे प्रार्थना की, कि वे तुम्हारी सहायता करें। और अब, उनकी सहायता से, तुम वजियी होकर लौटे हो! अत; उनके सामने जाओ और उनका धन्यवाद करो, ताकि वे आने वाले दनिों में भी तुम्हारी सहायता करते रहें।'

[4939] स्कैथोपोलसि शहर एशयिा माइनर में स्थति था।

[4940] इम्मानुएल, हब्रिू भाषा से, का अर्थ है 'ईश्वर हमारे साथ है'। यह नाम पवत्रि भवष्यिवक्ता यशायाह ने प्रभु यीशु मसीह को दयिा था (यशायाह 7:14)।

[4941] माइकल और गब्रयिल महादूत हैं।

[4942] अगारी लोग मुसलमान, अरब थे, जनिका नाम हागर, अब्राहम की उपपत्नी और इस्माइल की माँ के नाम पर रखा गया था, जनिकी संतान से अरब कबीला उत्पन्न हुआ।

नैनियास ने उससे उत्तर दिया:

'तुमने मेरे लिए प्रार्थना करके अच्छा किया, माँ, लेकिन यह मेरे ईश्वर थे जिन्होंने मेरी मदद की।'

तब उसकी माँ ने कहा:

'एक ही देवता के बारे में मत बोलो, मेरी संतान, कहीं अन्य देवता क्रोधित होकर तुमसे मुंह न मोड़ लें।'

तथापि नीनियास ने उससे कहा:

'माँ, मूर्तिपूजक बहुदेववाद के भ्रम में न रहो। वे स्वयं निर्जीव हैं, तो मेरी मदद कैसे कर सकते हैं? अगर उन्होंने मेरी मदद की है, तो चलो उनसे पूछते हैं – उनसे कहो कि वे हमें बताएं, और तब हम उनकी शक्ति से आश्वस्त होंगे।'

यह कहकर, वह अपनी माँ के शयनकक्ष में गया, जहाँ सोने और चाँदी की मूर्तियाँ थीं, और उन्हें संबोधित करते हुए कहा:

'मैं तुमसे कहता हूँ, हे झूठे देवताओं, बताओ: युद्ध में मेरी सहायता किसने की?'

लेकिन मूर्तियाँ चुप रहीं; वे मूक होकर कैसे उत्तर दे सकती थीं? तब नीनियस ने अपनी माँ से कहा:

'देखो माँ, ये किस तरह के देवता हैं। अगर ये एक शब्द भी नहीं बोल सकते, तो ये किसी की मदद कैसे कर सकते हैं?'

उसकी माँ ने उत्तर दिया:

'देवता आपसे इसलिए उत्तर नहीं देते क्योंकि आप उनसे उपहासपूर्वक पूछ रहे हैं।'

लेकिन नीनियस ने कहा:

'तो फिर, खुद उनसे पूछो – उन्हें तुम्हारा जवाब देना ही होगा, क्योंकि तुम उनके भक्त सेवक हो।'

तो, उन्हें बड़ी श्रद्धा से प्रणाम करते हुए और घुटने टेकते हुए, उसने कहा:

'हे सर्वशक्तिमान देवताओं! महान ज्यूस[4943] और आप, रानी हेरा[4944] , और समुद्र के स्वामी पोसीडॉन, और सूर्य-सदृश अपोलो[4945] , और आप, शहर की रक्षक पल्लस[4946] , और अन्य सभी देवताओं! मैं आपसे विनती करती हूँ, हमें बताइए: क्या आपने अपने सेवक, मेरे बेटे, की युद्ध में मदद की?'

लेकिन उनसे कोई उत्तर नहीं आया।

तब धन्य नीनियास, अपने हाथ में एक क्रॉस पकड़े हुए, दिव्य उत्साह से भर गया; उसने अपना बाहरी वस्त्र उतार दिया और अपनी माँ को मूर्तियों से दूर खींच लिया, और उन्हें तोड़ने लगा, उन्हें जमीन पर पटक कर और पैरों तले रौंद कर, और फिर, उन्हें टुकड़े-टुकड़े करने के बाद, उसने सोना और चाँदी गरीबों में बाँट दिया। यह देखकर उसकी माँ अत्यंत क्रोधित हो गई और अपने बेटे के प्रति अपने स्वाभाविक स्नेह को भूलकर, शीघ्रता से एंटिओक जाकर सम्राट डायोक्लेटियन के पास पहुँची और रोते हुए अपने बेटे की शिकायत की, जिसने न केवल उसके देवताओं को तोड़ दिया था, बल्कि उसे देवताओं से दूर खींचकर उसके प्रति उचित सम्मान दिखाने में भी विफल रहा था। हालाँकि, सम्राट ने उन्हें शांत करने की कोशिश की, और उनमें यह आशा जगाई कि, या तो दया या धमकियों के माध्यम से, वे उनके बेटे को देवताओं में उसके पुराने विश्वास पर वापस लाने में सक्षम हो सकते हैं।

सम्राट ने कहा, 'यदि, तथापि, वह धर्म में वापस नहीं आता है, तो उसे अपने अपराधों के लिए एक भयानक मृत्यु का सामना करना पड़ेगा, और आप मेरी अनुचर मंडली में से जिसे चाहें, अपने पुत्रों के रूप में चुन सकती हैं।'

और तुरंत सम्राट ने फिलिस्तीन के राज्यपाल को लिखा, इटली के मूल निवासी और एक क्रूर व्यक्ति, इयुस्टस ने पड़ोसी शहरों के कुलीनों की उपस्थिति में उसे निर्देश दिया कि वह ईसाई धर्म अपना चुके राज्यपाल थियोडोसियस के पुत्र नीनियास को देवताओं के पास लौटने के लिए कभी-कभी दोस्ताना, कभी-कभी धमकी भरे उपदेशों के साथ संबोधित करे; और यदि वह आज्ञा न माने, तो उसने आदेश दिया कि उसे निर्दयता से यातना दी जाए। इस पत्र में मसीह के विरुद्ध अपमानजनक शब्द थे।

[4943] ज्यूस – प्राचीन ग्रीक धर्म का सर्वोच्च देवता, जिसे अन्य देवताओं और मानव जाति का पूर्वज माना जाता है।

[4944] हेरा – क्रोनस और रिया की सबसे बड़ी बेटी – प्राचीन यूनानी पौराणिक कथाओं में प्रमुख पात्रों में से एक। उन्हें ज्यूस की पत्नी और देवताओं की रानी माना जाता था।

[4945] अपोलो, ग्रीक शब्द से, का अर्थ 'विनाशक' है। यूनानी आमतौर पर इस देवता को धनुष, तरकश और तीरों के साथ, अंधकार की शक्तियों के दुश्मन और विजेता के रूप में चित्रित करते थे।

[4946] पल्लाडा, या एथेना, को प्राचीन यूनानियों द्वारा विवाह और पारिवारिक कल्याण की देवी और संरक्षक माना जाता था।

अधिकारिणि जस्टस ने, शाही फरमान प्राप्त करने के बाद, फलिस्तीन के नगरों से चुने हुए पुरुषों को इकट्ठा किया और स्वयं एलिया की ओर उस राज्यपाल से मिलने के लिए रवाना हुआ, जिसे उसने अभिवादन के आदान-प्रदान के बाद शाही पत्र सौंप दिया। लेकिन जब राज्यपाल ने पत्र पढ़ा और उसमें हमारे प्रभु के विरुद्ध की गई अपमानजनक बातें देखीं, तो वह सहन नहीं कर सका; उसने पत्र को फाड़कर उसके टुकड़े हवा में बिखेर दिए, और कहा:

'मैं एक ईसाई हूँ; तुम, हालाँकि, वही करो जिसका तुम्हें आदेश दिया गया है।'

तब राज्यपाल ने कहा:

'मैं सम्राट से डरता हूँ, फिर भी मैं तुम्हें एक दोस्त मानता हूँ और तुम्हारी दया करता हूँ! मुझे समझ नहीं आ रहा कि क्या सोचूँ! लेकिन मेरी और इन सम्मानित लोगों की बात सुनो, और हमारी मौजूदगी में देवताओं को बलिदान चढ़ाओ। अगर तुम ऐसा नहीं करोगे, तो मेरे पास आदेश का पालन करने के अलावा कोई चारा नहीं होगा।'

तब नेनियस ने राज्यपाल से कहा:

'आपने इस संदर्भ में बलिदान का उल्लेख किया है: यहाँ मैं स्वयं को मेरे ईश्वर, मसीह के लिए बलिदान अर्पित करता हूँ।'

इन शब्दों के साथ, उन्होंने अपने पद के नाते मिली पट्टिका उतारकर राज्यपाल के चेहरे पर फेंक दी, स्वर्ग के राजा का सिपाही बनने के लिए शाही सेवा का त्याग कर दिया, और मूर्तिपूजक अविश्वास की निंदा की। राज्यपाल और उसके साथ आए लोग, क्रोध में आकर, उन्होंने उसे पकड़ लिया और फलिस्तीन के केसरिया ले गए[4947] — जिसे फिलिप्पी और सेबास्टे पनेआडा के नाम से भी जाना जाता है — जहाँ एक बार रक्तस्राव की समस्या से पीड़ित उस महिला के अनुरोध पर मसीह की एक मूर्ति स्थापित की गई थी, जिसे प्रभु के वस्त्र को छूकर चंगा किया गया था[4948] . वहाँ, राज्यपाल, जो सभी लोगों के लिए खुले स्थान पर विराजमान था, ने नीनियस को पूछताछ के लिए आगे लाया। उसे देखकर, नागरिक, जिनके मन मूर्तिपूजक दुष्टता से धुंधले हो गए थे, राज्यपाल पर इस तरह चिल्लाने लगे मानो वे नशे में या भूत-प्रेत से ग्रस्त हों:

'यह आदमी हमारे देवताओं का शत्रु और विनाशक है, जो सम्राट की आज्ञाओं का तिरस्कार करता है!'

गवर्नर, जो स्वयं ही एक अत्यंत क्रूर व्यक्ति था, भीड़ के शोर से और भी क्रूर हो गया। उसने तुरंत आदेश दिया कि नीनियास को नग्न कर दिया जाए और उसे यातना स्थल पर लटका दिया जाए, और फिर उसके शरीर को लोहे की पंजों से खुरच दिया जाए। परिणामस्वरूप, नीनियस का मांस टुकड़ों में गिर गया, और उसकी नंगी हड्डियाँ दिखाई देने लगीं। कुछ दर्शक, ऐसी पीड़ा देखकर, शहीद की जवानी पर तरस खा गए और उसके लिए रो पड़े। हालाँकि, शहीद ने, उनके आँसू देखकर, उनसे कहा:

'मेरे लिए नहीं रोओ, बल्कि अपनी आत्माओं के विनाश के लिए रोओ; क्योंकि जिनका भाग्य नर्क में अनंत तक पीड़ित होने का है, उनके लिए शोक करना चाहिए।'

तब, उन्होंने स्वर्ग की ओर अपनी आँखें उठाकर इस प्रकार प्रार्थना की:

'हे ईश्वर! शत्रु की लज्जा और अपने परम पवित्र नाम की महिमा के लिए, अपने सेवक को बल प्रदान करो!'

जब जल्लाद थक गए, तो राज्यपाल के आदेश पर शहीद को उसके यातनाओं से मुक्त कर दिया गया और एक कालकोठरी में डाल दिया गया। जेलर, जिसका नाम टेरेन्टियस था, ने नानियास द्वारा दिखाई गई एकमात्र दयालुता को याद करते हुए, उस पर तरस खाया, उसके लिए लेटने के लिए सूखा चारा बिछाया और उसे एक तौलिये से ढक दिया, जबकि शहीद कालकोठरी में मुश्किल से जीवित पड़ा था।

आधी रात को, शहर में एक भूकंप आया – यह ईश्वर थे जो अपने स्वर्गदूतों के साथ अपने सेवक से मिलने आए थे। कालकोठरी में एक असाधारण प्रकाश चमका; कालकोठरी के दरवाज़े अपने आप खुल गए, और वहाँ मौजूद सभी कैदियों की बेड़ियाँ उतर गईं। फिर दो स्वर्गदूत सुंदर युवकों के रूप में प्रकट हुए और शहीद से कहा:

'हम पर दृष्टि डालो।'

शहीद ने उनकी ओर देखते हुए कहा:

'तुम कौन हो?'

उन्होंने उत्तर दिया:

[4947] यह सेज़रिया यॉर्डन नदी के स्रोत पर स्थित थी। इसे फलिस्तीन में स्थित एक अन्य सेज़रिया से अलग समझना चाहिए, जो भूमध्य सागर के तट पर स्थित थी।

[4948] मत्ती 9:20–22।

'हम प्रभु द्वारा तुम्हारे पास भेजे गए स्वर्गदूत हैं।'

तब शहीद ने उनसे कहा:

'यदि तुम प्रभु के स्वर्गदूत हो, तो मेरी उपस्थिति में प्रभु की आराधना करो और क्रूस का चिन्ह बनाओ, ताकि मैं तुम पर विश्वास कर सकूँ।'

देवदूतों ने तुरंत वैसा ही किया जैसा उन्होंने कहा और कहा:

'इसलिए, विश्वास करो कि प्रभु ने हमें तुम्हारे पास भेजा है।'

शहीद ने कहा:

'मैं जानता हूँ कि जब तीन जवानों को बेबीलोन की भट्टी में डाला गया था, तो प्रभु का एक स्वर्गदूत[4949] , उन्हें आग की गर्मी से ठंडा करने के लिए भेजा गया था। लेकिन मैंने क्या किया है? या क्या मुझे आग में डाला गया है, ताकि मैं एक स्वर्गदूत की यात्रा के योग्य समझा जाऊँ?'

जब शहीद ने ये शब्द विनम्रता से कहे, तो प्रभु यीशु मसीह स्वयं अकस्मात् अकथनीय महिमा में उसके सामने प्रकट हुए; और, शहीद को छूकर, उन्होंने उसके घावों को चंगा किया और उसे पूरी तरह से स्वस्थ होकर उसके पैरों पर खड़ा कर दिया। फिर उन्होंने उसे पानी से बपतिस्मा दिया और कहा:

'अब से तुम्हें नीनियस नहीं कहा जाएगा, बल्कि प्रोकॉपियस कहा जाएगा[4950] । हियाव धर और बलवान हो, क्योंकि तुम महान कर्म करोगे और मेरी पिता के पास एक महान झुंड का नेतृत्व करोगे।'

प्रोकोपियस, आनंदित और विस्मित होकर, भूमि पर गिर पड़ा और प्रभु के सामने दण्डवत प्रणाम कर प्रार्थना करने लगा कि वह उसे उसकी यातनाओं में बल दे, ताकि वह भयंकर यातनाओं से न डरे। प्रभु ने उससे कहा:

'डरो नहीं – मैं तुम्हारे साथ हूँ!'

यह कहने के बाद, वह स्वर्ग में आरोहण कर गए।

जिस दिन प्रभु उसे प्रकट हुए, उसी दिन से संत प्रोकॉपियस ने अपने हृदय में एक अकथनीय आध्यात्मिक आनंद का अनुभव किया और वह स्वर्गीय आनंद से भर गया। और उसका शरीर इतना स्वस्थ हो गया कि उसके पूर्व घावों का कोई निशान भी नहीं बचा। उसने प्रभु में *अपना भरोसा रखा*, और *प्रभु ने* उसकी *मदद की*, *और* उसका *हृदय आनंदित हुआ* (*और* उसका शरीर *फल-फूल उठा*) (भजन संहिता 27:7)।

अगले दिन सुबह-सुबह, इस प्रकट होने के बाद, राज्यपाल ने एक सैनिक को यह देखने के लिए कालकोठरी में भेजा कि क्या शहीद अभी भी जीवित है। उसने यह मान लिया था कि वह आदमी पिछले दिन के क्रूर यातनाओं से पहले ही मर चुका था। कैदखाने के पहरेदार, तेरेंटियस ने उस सिपाही से कहा कि वह सारी रात सोया नहीं था और आधी रात को कैदखाने में कुछ असाधारण रूप से भयानक हुआ था: अर्थात्, एक भूकंप आया था, एक अद्भुत प्रकाश चमका था, दरवाज़े खुल गए थे, और कैदियों की बेड़ियाँ उतर गई थीं, और कुछ पुरुष, असाधारण प्रकाश से दमकते हुए, नीनियस से बात कर रहे थे। सैनिक, कालकोठरी की ओर झुककर, शहीद से चिल्लाया:

'क्या तुम जीवित हो, नीनियस?'

संत ने उत्तर दिया:

'मैं अपने ईश्वर की कृपा से जीवित और कुशल हूँ।'

सैनिक ने कहा:

'मैं तुम्हें नहीं देख सकता।'

संत ने उत्तर दिया:

'जो कोई भी ईश्वर के प्रकाश से भागता है और राक्षसों की सेवा करता है, वह अंधा है और अंधकार में चलता है, यह न जानते हुए कि वह कहाँ जा रहा है।'

फिर सैनिक राज्यपाल के पास गया और उसने जो सुना था, वह उसे बता दिया। तब राज्यपाल न्यायपीठ पर बैठ गया और उसने मसीह के शहीद को पूछताछ के लिए एक बार फिर बुलाया। सभी ने उसकी ओर देखा और उसका तेजस्वी

[4949] दानियेल 3:1–100

[4950] प्रोकोपियस – यूनानी शब्द से जिसका अर्थ है 'सफल'

चेहरा तथा स्वस्थ, पीला शरीर देखा, मानो उस पर कभी कोई घाव ही न आए हों। मुकदमे में उपस्थिति कई लोगों ने आश्चर्य से कहा:

'हे नेनिया के ईश्वर! हमारी मदद करो!'

हालाँकि, राज्यपाल अपने न्यायाधीश की कुर्सी से उठे और भीड़ को चुप रहने का इशारा करते हुए, ऊँचे स्वर में चिल्लाए:

'भाइयो! आप नेनिया को अच्छे स्वास्थ्य में देखकर आश्चर्यचकित क्यों हैं? देवताओं ने उस पर दया की है और अपने सेवक को स्वस्थ कर दिया है।'

तब संत ने उससे कहा:

'तुम यह कहने में सही हो कि मुझे ईश्वर की दया से चंगा किया गया है; लेकिन अगर तुम मानते हो कि यह चमत्कारी उपचार तुम्हारे देवताओं की शक्ति से हुआ है, तो चलो हम उनके मंदिर में चलते हैं यह पता लगाने के लिए कि किसि देवता ने वास्तव में मुझे चंगा किया है।'

गवर्नर, यह सोचकर कि शहीद देवताओं की पूजा करना चाहता था, अत्यंत प्रसन्न हुआ और उसने अदालत से मंदिर तक के रास्ते पर फूल बिछाने और मार्ग के किनारे सुंदर पर्दे लटकाने का आदेश दिया। इस बीच, एक उद्घोषक ने ऊँची जगह से पुकारा:

'नेनियस, कुलीन महिला थियोडोसिया का पुत्र, पश्चाताप कर चुका है, देवताओं की ओर लौट आया है, और उनके लिए बलिदान करने जा रहा है।'

यह सुनकर मूर्तिपूजक प्रसन्न हुए; लेकिन जो गुप्त रूप से मसीह के अनुयायी थे, वे दुखी हुए। अपनी पत्नियों और बच्चों के साथ लोगों की एक बड़ी भीड़ इस तमाशे को देखने के लिए इकट्ठा हुई।

गवर्नर संत प्रोकॉपियस और सभी कुलीनों के साथ गंभीरता से मूर्तिपूजक मंदिर की ओर बढ़ा। प्रवेश करने पर, संत ने गुप्त रूप से मसीह ईश्वर से प्रार्थना की, मूर्तियों के सामने हवा में क्रॉस का चिह्न बनाया, और कहा:

'मैं तुमसे कहता हूँ, अशुद्ध मूर्तियों, मेरे परमेश्वर के नाम और पवित्र क्रूस की शक्ति से डर जाओ: अपनी जगहों से हट जाओ और चकनाचूर हो जाओ, पानी की तरह बिखर जाओ!'

और सभी मूर्तियाँ तुरंत गिर पड़ीं, और उनके गिरने से एक बड़ा शोर मच गया। वे टुकड़े-टुकड़े हो गईं और, इससे भी अधिक आश्चर्यजनक रूप से, जिस भी सामग्री से वे बनी थीं, वह ईश्वर की आज्ञा से साधारण पानी में बदल गई, और पूरा मंदिर पानी से भर गया, जो मंदिर के दरवाजों से होकर एक बाढ़ की तरह बाहर निकल गया।

इस चमत्कार से सभी बहुत चकित हो गए, और कई लोगों ने पुकारा:

'ईसाई ईश्वर! हमारी मदद करो!'

जो कुछ हुआ था, उससे चकित राज्यपाल इतना भयभीत हो गया कि वह समझ नहीं पाया कि क्या करे; लेकिन फिर, होश में आने के बाद, उसने शहीद को जेल भेजने का आदेश दिया, जबकि वह स्वयं बहुत दुख के साथ घर चला गया।

शाम के देर से, उस कालकोठरी में जहाँ संत कैद थे, दो सैनिक दस्ते अपने दो कमांडरों, निकोस्ट्राटस और एंटिओकस के साथ पहुँचे, और संत से विनती की कि वे उन्हें स्वर्ग के राजा, मसीह की पंक्ति में शामिल कर लें। हालाँकि, संत प्रोकॉपियस ने जेलर से विनती करना शुरू कर दिया, टेरेंटियस से जेलखाने से थोड़ी देर के लिए बाहर निकलने की अनुमति देने का अनुरोध किया; रक्षक ने उसकी यह जानकर प्रार्थना मान ली कि जो व्यक्ति स्वेच्छा से मसीह के लिए पीड़ा सहने की इच्छा रखता है, वह भागेगा नहीं। रिहा होने के बाद, संत ने उन सैनिकों को उस शहर के बिशप, लियोन्टियस के पास ले जाया, जो उत्पीड़न के डर से छिपे रहे थे। उसे खोज लेने के बाद, प्रोकोपियस ने उससे सैनिकों का बपतिस्मा देने के लिए कहा, और वह स्वयं कुंड में लौट गया। उसी रात, बिशप ने उन सैन्य टुकड़ियों को कैटेकुमेनेट[4951] प्रदान किया,

---

[4951] कैटेकेसिस – ईसाई धर्म की सच्चाइयों पर मौखिक शिक्षा, जो प्रारंभिक चर्च में पवित्र बपतिस्मा का संस्कार प्राप्त करने के इच्छुक सभी को दी जाती थी। हालांकि कैटेकुमेन (baptism के इच्छुक लोगों) को पवित्र धर्मग्रंथ और उपदेश सुनने के लिए चर्च में प्रवेश करने, और यहां तक कि पूजा के पहले और दूसरे भाग ('प्रोस्कोमेडिया' और 'कैटेकुमेन की पूजा') में भाग लेने की भी अनुमति थी, कैटेकुमेन को लिटिर्जी के तीसरे, सबसे महत्वपूर्ण भाग ('विश्वासियों की लिटिर्जी') की शुरुआत से ठीक पहले चर्च छोड़ना आवश्यक था, जिसकी घोषणा डीकन द्वारा एक ऐसे उद्घोष से की जाती थी जो आज भी ऑर्थोडॉक्स चर्च में लिटिर्जी के उत्सव के दौरान संरक्षित है। कैटेकुमेनेट की अवधि भिन्न-भिन्न होती थी; कई लोग अपने पूरे जीवन कैटेकुमेन ही रहते थे। जहाँ आवश्यक होता था, वहाँ कैटेकुमेनेट की अवधि को घटाकर कुछ दिनों या कुछ घंटों तक कर दिया जाता था। – कैटेकुमेनेट की धार्मिक रस्म आज भी ऑर्थोडॉक्स चर्च में की जाती है; इसमें बपतिस्मा के उम्मीदवार पर निर्धारित

उनका बपतस्मिा दयिा, और उन्हें मसीह के शरीर और रक्त के दव्यि रहस्यों में प्रवेश कराया। जब वे बाद में कालकोठरी के पास पहुँचे, तो पवत्रि शहीद ने उन्हें पवत्रि वश्विास के सत्यों और यीशु मसीह के नाम की स्वीकारोक्ति के बारे में सखिाना शुरू कयिा, और उन्हें इतना मजबूत कयिा कि वे अपने कष्टों को नडिरता और साहस के साथ सहन कर सकें।

जब दनि चढ़ा और राज्यपाल, अपनी प्रथा के अनुसार, उस स्थान पर पहुँचा जहाँ सार्वजनकि मुकदमा होना था, तो वे सैनकि उसके सामने उपस्थति हुए। उन्होंने ऊँचे स्वर में मसीह की महमिा की, खुद को ईसाई घोषति कयिा और मसीह का अनुसरण करने के लिए पीड़ा और मृत्यु तक जाने की अपनी तत्परता व्यक्त की। हालाँकि, राज्यपाल ने जब इतने सारे सैनकिों को मसीह के लिए बहादुरी से अपनी मृत्यु को आमंत्रति करते देखा, तो वह आश्चर्य और भय से भर गया, और उसने लंबे समय तक उन्हें मसीह का परत्यिाग करने और देवताओं के पास लौटने के लिए मनाने की कोशशि की। जब उसने देखा कि वे अडगि रहे, तो उसने उन्हें तलवार से सरि कलम करके मौत की सजा सुनाई। और उन्हें शहर से बाहर फांसी के स्थान पर ले जाया गया, जहाँ बड़ी संख्या में जल्लाद सजा को अंजाम देने के लिए इकट्ठा हुए थे। संत प्रोकॉपयिस को भी बेड़यिों में जकड़कर वहाँ ले जाया गया, ताकि इतने बड़ी संख्या में सैनकिों की फांसी का दृश्य उसे डरा दे। लेकनि जब उन्होंने उनके पराक्रम को देखा, तो उनकी आत्मा प्रसन्न हुई, और उन्होंने मसीह ईश्वर से उनके लिए प्रार्थना की, कि वह उन्हें अंत तक मजबूत बनाए रखें और उनकी आत्माओं को अपने स्वर्गीय राज्य में स्वीकार करें। तब जल्लादों ने, अन्य अधर्मी सैनकिों के साथ, मसीह में वश्विास करने वालों के दो दस्तों को घेर लयिा और उन्हें अपनी तलवारों से काट डाला; उन दस्तों के दो कमांडर, नकिोस्ट्रैटस और एंटओिकस, भी मारे गए। इस प्रकार, राजा मसीह के नए सैनकिों ने, उनके लिए अपना जीवन बलदिान कर, पृथ्वी से स्वर्ग में वजियी रूप से प्रवेश कयिा। एक कुलीन परोपकारी, जसिका नाम यूलालयिस था, ने रात के समय, वश्विासयिों की भीड़ के साथ, शहीदों के शवों को इकट्ठा कयिा और उन्हें उचति तरीके से दफनाया; जबकि संत प्रोकॉपयिस बेड़यिों में जकड़े रहे।

जब मसीह के शहीद जेल में थे, तो बारह कुलीन महलिाएँ उनके पास आईं और एक छोटी सी खड़िकी से संत से कहा:

'हम मसीह की दासयिाँ हैं!'

यह बात राज्यपाल को बताई गई, और उसने तुरंत उन्हें जेल में डालने का आदेश दयिा; जेल में प्रवेश करते ही उन्होंने आनंदपूर्वक उद्घोष कयिा:

'हे प्रभु, हमें अपने स्वर्गीय महल में स्वीकार करें!'

क़ैदखाने में प्रवेश करते ही, वे संत प्रोकॉपयिस के सामने झुक गईं, जन्होंने उन्हें पवत्रि वश्विास, मसीह के प्रति दव्यि प्रेम और ईश्वर से उत्कट प्रार्थना के बारे में सखिाना शुरू कयिा।

कुछ समय बाद, राज्यपाल ने अपने दरबार के लिए अपनी सामान्य जगह पर अपना आसन संभाला और उन सदाचारी महलिाओं को कालकोठरी से बाहर नकिालकर अपने सामने न्याय के लिए पेश करने का आदेश दयिा। प्रोकोपयिस की माँ, थयिोडोसयिा, भी पूछताछ की जगह पर उपस्थति हुईं, यह देखने की इच्छा से कि पूछताछ के दौरान वे महलिाएँ खुद को कैसे प्रस्तुत करेंगी। जब उन्हें अदालत के सामने लाया गया, तो राज्यपाल ने उनसे कहा:

'क्या तुम देवताओं को बलदिान चढ़ाने के लिए राज़ी हो जाओगी, ताकि हम तुम्हारा सम्मान करें, या अपनी हठधर्मति पर अड़ी रहकर अपनी भयानक वनिाश को आमंत्रति करोगी?'

पवत्रि महलिाओं ने उत्तर दयिा:

'जसि सम्मान का आप हमें वादा करते हैं, वह स्वयं आपके लिए वनिाश लाए; जहाँ तक हमारी बात है, हम सूली पर चढ़ाए गए मसीह की दासयिाँ हैं, जन्होंने हमें वनिाश से बचाया है। सम्मान और महमिा उसी को मलि!'

क्रोधति राज्यपाल ने इन सभी महलिाओं को जमीन पर पेट के बल लटिाकर डंडों से बेरहमी से पीटने का आदेश दयिा। फरि उन्हें उनके यातना स्थल पर नग्न लटका दयिा गया, और उनकी पसलयिों को आग से झुलसाया गया, जबकि वे मसीह ईश्वर से प्रार्थना कर रही थीं और उनसे मदद की गुहार लगा रही थीं। फरि राज्यपाल ने उनके स्तन काट दिए, यह कहते हुए:

'क्या सूली पर चढ़ाया गया वह, जसिमें तुम अपनी आशा रखती हो, तुम्हारी सहायता करेगा?'

स्त्रयिों ने उत्तर दयिा:

प्रार्थनाओं का पाठ और शैतान के वरिुद्ध प्रार्थना करना शामलि है; साथ ही, उम्मीदवार शैतान का परत्यिाग करता है, स्वयं को मसीह के साथ जोड़ता है और धर्म-वश्विास का पाठ करके अपने वश्विास की घोषणा करता है (शशिु बपतस्मिा के मामले में, यह धर्म-पति और धर्म-माता द्वारा कयिा जाता है)।

'उसने तो पहले ही हमारी मदद कर दी है, जैसा कि आप खुद देख सकते हैं, हे मानव-द्वेषी यातनाकर्ता! हम महलिाएँ, आपके द्वारा हम पर थोपी गई यातनाओं की परवाह न करके, आपको, महान राज्यपाल को, परास्त कर रही हैं।'

यातना देने वाला और भी अधकि क्रोधति हो गया और उसने आदेश दयिा कि उनके जांघों को लाल-गरम लोहे से दागा जाए। उसने कहा:

'क्या तुम आग को जलता हुआ महसूस कर सकते हो, या नहीं?'

पवत्रि महलिाओं ने उत्तर दयिा:

'यह दर्द तुम्हें तब महसूस होगा जब तुम्हें नरक की न बुझने वाली आग में फेंका जाएगा। जहाँ तक हमारी बात है, हमारा सहायक हमारे साथ है—प्रभु, जसिे तुम वैसे ही नहीं देख सकते जैसे अंधा सूरज को नहीं देख सकता।'

जब पवत्रि महलिाएँ इस प्रकार कष्ट सह रही थीं, तब संत प्रोकॉपयिस की माता थयिोडोसयिा भीड़ में खड़ी थीं और उन महलिाओं के साहस और धैर्य को देखकर वे फूट-फूट कर रो पड़ीं। फरि, जब उनके मन में सच्चे ज्ञान का प्रकाश हुआ, तो वे ईश्वर के प्रति उत्साह से भर गईं और शासक के पास जाकर, उद्घोष कयिा:

'मैं भी मसीह परमेश्वर की दासी हूँ, जन्हिें सूली पर चढ़ाया गया था!'

यह परविर्तन पवत्रि महान शहीद प्रोकोपयिस की प्रार्थनाओं के कारण हुआ, जो शुरू से ही उनके लिए ईश्वर से प्रार्थना कर रहे थे।

गवर्नर और उसके आसपास के सभी लोग, साथ ही संपूर्ण जनता, ने जब नेनयिास की माता, कुलीन थयिोडोसयिा को नडिरता से मसीह में अपने वश्विास की घोषणा करते सुना, तो वे उस परविर्तन से अत्यंत चकति हुए जो उस पर आया था—कि वह अपनी उच्च पदवी, धन-संपत्ति और कुलीनता को कैसे अनदेखा कर सकती थी, और नर्भिय होकर यातनाओं का सामना कर सकती थी। गवर्नर ने उससे कहा:

'देओदोसयिा महारानी! कसिने आपको आपके पूर्वजों के देवताओं को त्यागने और ऐसे शब्द बोलने के लिए बहकाया है?'

जसि पर उसने उत्तर दयिा:

'मुझे बलि्कुल भी ऐसा नहीं लगता कि मुझे गुमराह कयिा गया है या धोखा दयिा गया है। पहले, मैं वास्तव में भ्रम में थी, राक्षसों द्वारा गुमराह की गई थी, जब मैंने स्वर्ग और पृथ्वी के सच्चे ईश्वर के बजाय, मानव हाथों की कृति—घृणति मूर्तयिों की पूजा की थी।'

गवर्नर ने यातना दी जा रही महलिाओं की ओर उंगली दखिाते हुए थयिोडोसयिा से कहा:

'क्या इन धोखेबाजों ने स्पष्ट रूप से तुम्हें बहकाया है?'

जसि पर उसने उत्तर दयिा:

'उन्होंने मुझे धोखा नहीं दयिा है, बल्कि अपने दुखों के माध्यम से मुझे सत्य जानना सखिाया है। वास्तव में, वे ऐसी यातना में कैसे स्थरि रह सकती थीं यदि उन्हें मजबूत करने वाला सच्चा ईश्वर न होता? इसलिए, धोखेबाज वे नहीं हैं, बल्कि आप स्वयं धोखेबाज हैं, जो लोगों को अंधकार और भ्रम में ले जा रहे हैं और उन्हें वनिाश की ओर खींच रहे हैं!'

शासक ने कहा:

'होश में आओ, थयिोडोसयिा, और देवताओं से क्षमा मांगो। और हम तुम्हारी ओर से उनसे प्रार्थना करेंगे, कि वे तुम्हारे इस पाप को क्षमा कर दें।'

लेकनि उसने उत्तर दयिा:

'मैं सूली पर चढ़ाए गए मसीह से अपनी पूर्व मूर्खता और मेरे द्वारा कए गए बुरे कर्मों के लिए क्षमा मांगती हूँ।'

क्रोधति शासक ने आदेश दयिा कि उसे उन महलिाओं के साथ कैद कर दयिा जाए जन्हिें यातनाएँ दी गई थीं।

जब थयिोडोशयिा कालकोठरी में दाखलि हुई, तो उसके बेटे, संत प्रोकॉपयिस ने उसे देखा और वह बहुत प्रसन्न हुआ – क्योंकि उसे पहले ही एक दर्शन में उसकी मसीह में धर्मांतरण का पता चल चुका था – और उसने खुशी से उससे कहा:

'मेरी मालकनि, मेरी माँ! आप यहाँ क्यों आई हैं, और आपने अपने देवताओं को क्यों त्याग दयिा है?'

उसने उत्तर दयिा:

'मेरे प्रयि बच्चे! अब मुझे सत्य का ज्ञान हो गया है। मैंने उन पवत्रि महलिाओं को देखा जो कष्ट झेल रही थीं और सोचा: ऐसी नाजुक महलिाओं के लिए इतनी भयंकर यातनाएँ सहना कैसे संभव हो सकता है, जब तक कि उन्हें उसी

मसीह द्वारा शक्ति नि मिली हो, जिसके लिए वे कष्ट झेल रही हैं? और यदि मसीह सर्वशक्तिमान ईश्वर नहीं होते, तो वे अपनी खातिर पीड़ितों को कैसे सहारा दे सकते थे? जब मैं इस पर विचार कर रही थी, तो मेरा हृदय गहराई से प्रभावित हुआ और मेरे मन में प्रकाश की एक किरण चमकी। मैंने देवताओं की तुच्छता को महसूस किया और इस विश्वास पर पहुँची कि सच्चे ईश्वर वही हैं जिनकी आप, पवित्र स्त्रियाँ और अन्य शहीदों ने घोषणा की है।

तब संत प्रोकॉपियस ने उससे कहा:

'धन्य हो तुम, मेरी स्वामिनी, मेरी माता, क्योंकि तुम्हें ईश्वर द्वारा ऐसा ज्ञान प्रदान किया गया है, और इसी के लिए तुम यहाँ, इस कालकोठरी में आई हो!'

और संत थियोडोसिया तहखाने में ही रहीं, पवित्र महिलाओं की सेवा करती रहीं। उन्होंने एक साफ कपड़े से उनके खूनी घावों को पोंछा और उनके छालों पर दवा वाले पट्टी लगाए, क्योंकि उन्हें चिकित्सा की कला में प्रशिक्षित किया गया था। और संत प्रोकॉपियस ने अपनी माता को पवित्र विश्वास सिखाया। उसी रात उसने उन्हें बिशप लियोन्टियस के पास ले जाकर पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम पर बपतिस्मा दिलवाया; फिर वह उनकी ज्ञान प्राप्ति के लिए आनंदित होकर परमेश्वर की महिमा करता हुआ कुंड में लौट आया।

इसके बाद, पवित्र स्त्रियों को थियोडोसियस के साथ, कालकोठरी से बाहर निकालकर अधर्मी न्यायालय के सामने लाया गया। राज्यपाल ने थियोडोसियस से कहा:

'हे कुलीन महिला, यह जान लो: मैं तुम्हें क्षमा कर रही हूँ और नहीं चाहती कि तुम्हें अपमान और यातना सहनी पड़े। इसलिए, होश में आओ और दयालु देवताओं को पुकारो, ताकि तुम्हें उनसे क्षमा और हमसे अधिक सम्मान मिल सके!'

संत ने उत्तर दिया:

'हे मूर्ख और निर्बुद्धि मनुष्य! क्या तुझे शर्म नहीं आती कि तू तराशी हुई मूर्तियों को "देवता" कहता है? यदि किसी व्यक्ति में यह महान सद्गुण है कि वह अच्छे कर्मों के द्वारा ईश्वर के समान बनने का यथासंभव प्रयास करे, तो तुम्हें भी अपने देवताओं—अपनी मूर्तियों—के समान होना चाहिए—अर्थात् अंधा, बहरा, मूक और अपने हाथ-पैरों को हिलाने में असमर्थ, ठीक वैसे ही जैसे तुम्हारे देवता हैं।

ये शब्द सुनते ही, उसका राज्यपाल क्रोध से आग-बबूला हो गया और उसने आदेश दिया कि उसके होंठों पर वार किया जाए; फिर, उसे ज़मीन पर पटक कर, उसने उसे डंडों से पिटवाया, और बाद में उसके शरीर को लोहे की पंजों से खुरचवाया। अन्य पवित्र स्त्रियों ने, उसकी पीड़ाओं को देखकर, उसके लिए ईश्वर से प्रार्थना की कि वह उसे बल दे, और भजन से निम्नलिखित छंद गाए, जैसा कि संत प्रोकोपियस ने उन्हें सिखाया था:

– *'आओ, हम यहोवा के लिए गीत गाएं; हम अपने उद्धार की चट्टान के लिए जयजयकार करें'* (भजन संहिता 94:1); *'ईश्वर हमारा शरणस्थान और बल हैं, संकट में हमें तुरंत मिलने वाली सहायता हैं'* (भजन संहिता 45:2)।

यह सुनकर राज्यपाल ने आदेश दिया कि पवित्र स्त्रियों के जबड़े सीसे की छड़ों से कुचल दिए जाएँ, और फिर इन शहीदों को, संत थियोडोसिया के साथ, एक ही लोहे की ज़ंजीर से बाँधकर शहर से बाहर ले जाया जाए और तलवार से मार डाला जाए।

वे महिलाएँ आनंद और प्रसन्नता के साथ अपनी मृत्यु की ओर बढ़ीं, मानो किसी विवाह भोज में जा रही हों; उन्होंने मसीह ईश्वर के लिए अपने प्राणों को बलिदान कर दिया और स्वर्गीय महल की अधिकारी मानी गईं।

उनकी मृत्यु के बाद, संत प्रोकॉपियस को एक बार फिर अदालत में लाया गया, और राज्यपाल ने शहीद से सिंह की तरह गरजते हुए कहा:

'क्या तुम इन इतने सारे प्राणियों के विनाश से संतुष्ट हो, हे दुष्ट मनुष्य?'

संत ने उत्तर दिया:

'मैंने उन्हें नष्ट नहीं किया, बल्कि उन्हें विनाश से बचाया और मृत्यु से जीवन में लाया।'

और राज्यपाल ने आदेश दिया कि उसे लोहे के दस्ताने से मुँह पर मारा जाए और उसके चेहरे को लोहे की पंजाओं से नोचा जाए, जिससे उससे खून बहने लगा और जमीन लाल हो गई। फिर शहीद को सीसे की छड़ों से पीठ पर पीटा गया, लेकिन ऐसी यातनाओं के बावजूद वह एक स्तंभ की तरह अडिग खड़ा रहा।

इसके बाद, राज्यपाल ने शहीद को जेल में डालने का आदेश देकर दुखी मन से घर चला गया: वह इस बात पर लज्जित और परेशान था कि वह मसीह के कष्ट-सहने वाले पर विजय प्राप्त नहीं कर सका था। दुख के मारे, उन्होंने उस

दनि कसिी से एक भी शब्द नहीं कहा; बाद में, उन्हें बुखार हो गया, वे बस्तिर पर पड़ गए, और उसी रात उनकी मृत्यु हो गई, और उन्होंने अपनी आत्मा उन राक्षसों को सौंप दी जनिकी उन्होंने इतनी लगन से सेवा की थी।

फरि भी, मसीह का उपदेश और अधकि व्यापक रूप से फैलता गया, और संत प्रोकॉपयिस की शक्षिाओं और चमत्कारों के कारण, हर दनि कई पुरुष और महलिाएँ ईसाई धर्म में शामलि हुए। जब वह जेल में था, तो कई लोग बीमारों को उसके पास लाए, और उसने उन्हें मसीह की कृपा से चंगा कयिा और लोगों से अशुद्ध आत्माओं को भगाया; और इसके माध्यम से, मूर्तपिूजक सच्चे ईसाई धर्म में परविर्तति हो गए।

गवर्नर जस्टस की मृत्यु के बाद, सम्राट डायोक्लेटयिन के आदेश पर, फ्लैवयिन नामक एक और गवर्नर, जो इटली का ही नविासी था लेकनि पहले वाले से भी अधकि नर्दियी था, फलिस्तीन पहुँचा। पैलेस्टाइन के केसरयिा में पहुँचने और शहीद प्रोकोपयिस के बारे में जानने पर, उसने तुरंत उसे मुकदमे के लिए अपने सामने पेश होने का आदेश दयिा और उससे उसके नाम, वंश और आस्था के बारे में पूछताछ की। हमारे ईश्वर, मसीह के खलिाफ ईश्वरनदिा करते हुए, इस दुष्ट व्यक्तनि े शहीद से कहा:

'मैं हैरान हूँ कतिुम ईसाई, जबकयिह मानते हो कतिुम्हारा ईश्वर एक महलिा से पैदा हुआ था और पुरुषों द्वारा सूली पर चढ़ाया गया था, फरि भी उसकी पूजा करते हो। क्या यह पागलपन नहीं है?'

मसीह के शहीद ने उत्तर दयिा:

4952– हे शासक, यदआिप मुझसे धैर्यपूर्वक सुनने को तैयार हैं, तो मैं आपको दखिाऊँगा कआिपकी अपनी पुस्तकें हमारे ईश्वर की गवाही देती हैं। सबसे पहले, मैं कहूँगा कि केवल एक ही सच्चा ईश्वर है, जो स्वभाव से अपरविर्तनीय, अचल, पूर्व-शाश्वत और शाश्वत है; जबकवि अनेक तथाकथति देवता, जो पीड़ा और परविर्तन के अधीन हैं, कसिी नश्चिति समय पर उत्पन्न हुए और, जैसा ककिुछ के बारे में कहा जा सकता है, उन्होंने पहले ही अपना दुखद अस्तत्वि समाप्त कर लयिा है। क्या आप अपने ही हर्मेस[4953] से परचिति नहीं हैं, जनि्हें ट्रस्मिेगस्टिस—अर्थात् 'त्रि-महान'—कहा जाता है, और साथ ही सुकरात[4954] से, जो यह मानते हैं कएिक ही ईश्वर है, न ककिई ईश्वर? सबसे पहले, सुनएि कहिर्मेस चकित्सिक एस्क्लेपयिाडेस[4955] को क्या लखिते हैं: 'सभी का प्रभु और सृष्टकिर्ता – जसिे हम ईश्वर कहते हैं – ने इस दृश्यमान और मूर्त संसार की रचना की। और चूँकउिनके द्वारा रचति पहला और एकमात्र संसार उन्हें सुंदर और हर भलाई से परपिूर्ण लगा, उन्होंने इसमें आनंद लयिा और इसे अपनी रचना के रूप में प्रेम कयिा।' 'तो देखो, हे शासक, तुम्हारा हर्मयिास केवल एक ही ईश्वर के अस्तत्वि को स्वीकार करता है, न ककिई के! और यदकिई देवता होते, तो एक भी, शाश्वत दव्यि स्वभाव नहीं होता, बल्कवि शिष्टि समयों पर प्रकट होने वाले कई स्वभाव होते।' क्योंकआिप कुछ देवताओं के बारे में कहते हैं कवि पहले से मौजूद थे, और दूसरों के बारे में कवि बाद में अस्तत्वि में आए; आपके पास एक देवता स्वर्ग का है, एक देवता समुद्र का, और वास्तव में सभी दृश्यमान चीजों के अपने संरक्षक देवता हैं। क्या इसी कारण से आपके सुकरात को एथेनयिनों ने ज़हर पीने की सज़ा नहीं दी थी, क्योंकउिन्होंने कई देवताओं के अस्तत्वि से इनकार कर दयिा था? और आपके ये अमर देवता—वशिेष रूप से देवताओं के पतिा ज़्यूस, जो एक पतिा-हत्यारा और अपनी ही सौतेली बहन की पत्नी थी—क्या वह क्रीट में नहीं रहता था? क्या उसका मकबरा आज भी वहाँ दखिाया नहीं जाता? और क्या आपका पोसाइडन डाकुओं का सरगना, एक शकिारी और वनिाशक नहीं था? और क्या उसकी कब्र कैलाब्रयिा में नहीं मलिती?[4956] तो फरि, आप अपने देवताओं को अमर कैसे कह सकते हैं, जब वे साधारण मनुष्यों की तरह मरे, जब उनकी कब्रें प्रदर्शन पर हैं, और जब रोमन और ग्रीक लेखक उनके सभी दुष्ट कर्मों से अच्छी तरह वाकफि हैं? ऐसे हैं आपके देवता, जनि्हें न केवल ईसाई बल्कउिनके अपने पूजक भी नदिा करते हैं और अपमानति करते हैं! यदि, तथापि, आपने मसीह उद्धारकर्ता, हमारे ईश्वर के बारे में कहा है कवि एक स्त्री से जन्मे और फरि सूली पर चढ़ाए गए, तो उनके बारे में उन रहस्यमय प्रकटीकरणों को सुनें जो आपके अपने ग्रंथों में पाए जाते हैं। क्योंकयिह आपकी

[4952] क्रीट द्वीप (या कैंडयिा) भूमध्य सागर के मध्य भाग में, एजयिन सागर के दक्षणि में स्थति है।

[4953] हर्मेस ट्राइसमेगस्टिस प्राचीन यूनानी इतहिास का एक अर्ध-पौराणकि पात्र है।

[4954] सुकरात – सबसे प्रसद्धि प्राचीन यूनानी दार्शनकि, जो ईसा पूर्व 5वीं शताब्दी में रहते थे।

[4955] अस्कलेपअिाडेस – एक प्रसद्धि प्राचीन यूनानी चकित्सिक।

[4956] कैलाब्रयिा इटली के दक्षणि-पश्चमिी भाग में एक जंगली, पहाड़ी क्षेत्र है।

भविष्यवक्ता, सबिलि के नाम से जानी जाने वाली[4957] (यही वह है जिनकी कतिाबें रोमन राजा टार्क्वनियिस[4958] ने ऊँचे दाम पर खरीदी थीं), ने अपनी दूसरी पुस्तक में मसीह के अवतार के बारे में इतनी स्पष्ट रूप से लखिा है: 'जब कुँवारी कन्या ईश्वर के वचन को जन्म देगी और, दनि दहाड़े, पूर्व से एक तारा प्रकट होगा—जो नश्वर प्राणयिों के लएि एक महान चमत्कार का अग्रदूत होगा—तब महान ईश्वर का पुत्र उनके पास एक मनुष्य के समान देह धारण करके आएगा। मगसि् उसको उपहार लाएँगे—सोना, लोहबान और शुद्ध गंधरस—और यह उसको प्रसन्न करेगा।' इसी प्रकार, मसीह के क्रूस के वषिय में, वही सबिलि कहती है: 'हे धन्य वृक्ष, जसि पर मसीह को फैलाया जाएगा! आप धरती पर नहीं, बल्कि स्वर्ग में रहने के योग्य हैं।" फरि वह दूसरी आत्मा के आगमन के बारे में कहती हैं: "स्वर्ग से महान राजा, सभी युगों के स्वामी आएँगे, जो सभी लोगों और पूरी दुनयिा का न्याय करेंगे। वशि्वासी और अवशि्वासी सभी उन्हें, एक सच्चे ईश्वर के रूप में, एक ऊँचे सहिासन पर वरिाजमान देखेंगे और वे प्रत्येक को उनके कर्मों के अनुसार पुरस्कृत करेंगे।" – यदि, इसके अलावा, आप डेल्फी के अपोलो[4959] , लीबयिा के अमोन[4960] , डोडोना[4961] और पेरगेमोन[4962] की भवष्यिवाणयिाँ सुनना चाहते हैं, तो उनकी पुस्तकें ध्यान से पढ़ें और आप उच्चतम ईश्वर, मसीह को जान जाएँगे, जनिके बारे में उन्होंने भवष्यिवाणी की थी और जो मानव जाति के उद्धार और नवीनीकरण के लएि आने वाले थे। जब आर्गोनाटों के नेता जेसन[4963] ने डेलफी के अपोलो से एथेंस में सबसे प्राचीन माना जाने वाले तीर्थस्थल के बारे में पूछा: 'बताओ, हे भवष्यिवक्ता, सूर्य-सदृश अपोलो, अंतमि दनिों में यह मंदरि कसिका होगा?' – अपोलो ने उत्तर दयिा: 'तुम अपने अनुष्ठान कर सकते हो, जनिसे तुम देवताओं का सम्मान करते हो, जबकि मैं एकमात्र ईश्वर की आराधना करता हूँ, जो स्वर्ग में राज करता है, जसिका शाश्वत वचन एक पवत्रि कुँवारी से गर्भ में धारण कयिा जाएगा। और एक अग्नि-धनुष से छोड़े गए तीर की तरह, यह पूरे ब्रह्मांड से होकर गुजरेगा, सभी को जीतकर और उन्हें पति के पास एक उपहार के रूप में लाएगा। यह मंदरि उसकी माता का होगा, और उसका नाम मरयिम होगा।' – और फरि, जब वट्टोस[4964] ने उसी अपोलो से उस देवता के बारे में पूछा, तो उसने उत्तर दयिा: 'केवल एक ही है जो मुझे दुख देगा - वह स्वर्ग का मनुष्य, जो, एक देवता होते हुए भी, पीड़ति होगा, भले ही दव्यिता स्वयं पीड़ति नहीं होगी। अपनी दव्यिता और अपनी मानवता में, वह पति से अमरत्व, जीवन और शक्ति प्राप्त करेंगे, जबकि अपनी माता से वह मृत्यु, क्रूस और कब्र प्राप्त करेंगे। उनकी आँखों से गर्म आँसू बहेंगे, और वह पाँच

[4957] प्राचीन यूनान में, 'सबिलि' शब्द से तात्पर्य घूमने-फरिने वाली भवष्यिवक्ता महलिाओं से था जो इच्छुक कसिी भी व्यक्ति को भवष्यि बताने और उसकी कस्मित का अनुमान लगाने की पेशकश करती थीं। सबिलिों की यह गतविधि वशिेष रूप से ईसा पूर्व 8वीं और 7वीं शताब्दी में फलती-फूलती थी - जो यूनान में महान सांस्कृतकि उत्थान का समय था। ग्रीक इतहिासकार एर्फर, फ्राइजयिा, हेलेस्पोंट और अन्य की सबिलिों का उल्लेख करते हैं। सबसे अधकि जानकारी कुमेनयिन सबिलि के बारे में उपलब्ध है, जो प्राचीन ग्रीक परंपरा के अनुसार, एक हजार साल तक जीवति रही और टार्क्वनियिस सुपरबस (जो मसीह से छह शताब्दी पहले रहते थे) की समकालीन थी। हागयिोग्राफी में इसी सबिलि का उल्लेख है। प्राचीन ग्रीक परंपरा के अनुसार, कुमेन सबिलि ने टारक्वनियिस को अपनी नौ पुस्तकें खरीदने का अवसर दयिा। उनमें से तीन पुस्तकें राजा द्वारा खरीदी गईं और कैपटिोलनि के मंदरि में पवत्रि ग्रंथों के रूप में रखी गईं।

[4958] पछिली टप्पिणी देखें।

[4959] हागयिोग्राफी अपोलो के ओरेकल (भवष्यिवाणी केंद्र) का उल्लेख करती है, जो डेल्फी में स्थति था (यह शहर दक्षणि-पश्चमिी फोकेस में, माउंट पार्नासस के तल पर स्थति था)। ग्रीक पौराणकि कथाओं के अनुसार, अपोलो ने स्वयं डेलफी को अपने मंदरि के स्थल के रूप में चुना, पहले वहाँ रहने वाले पायथन नामक राक्षस को मार डाला। यहाँ तथाकथति पाइथयिा द्वारा भवष्यिवाणयिाँ की जाती थीं।

[4960] लबियिा अफ्रीका का सबसे पुराना नाम था। लबियिा स्वयं दो मुख्य भागों: मार्मारकिी और साइरेनकिा में बँटा हुआ था; पहले वाले भाग, सव्वि ओएससि में, वही ऑरेकल (भवष्यिवाणी स्थल) था जसिका उल्लेख संजीवनी-ग्रंथ में थबियिन देवता अमुन के सम्मान में कयिा गया था।

[4961] डोडोना ज्यूस का सबसे पुराना तीर्थस्थल था, जसिमें एक भवष्यिवाणी केंद्र और एक पवत्रि ओक का पेड़ था। यह ग्रीक क्षेत्र थेस्साली में, स्कोटोसा शहर के पास स्थति था। प्राचीन यूनानी लेखकों के ववरिणों के अनुसार, यहाँ वृद्ध महलिाएँ ओक के पत्तों की सरसराहट, पेड़ के नीचे से बहती धारा की कलकल, और हवा में लहराती तार से टकराने वाले कांस्य के बर्तनों की आवाज़ों को एक काल्पनकि देवता की आवाज़ के रूप में व्याख्या करती थीं। यह ओरेकल तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व तक मौजूद था, जब पवत्रि ओक के पेड़ को काटा गया था।

[4962] परगामोन शहर एशयिा माइनर के मसियिा क्षेत्र में, सेलनिस और केटयिोस (अब बरगामा-चाय) नदयिों पर स्थति था। हागयिोग्राफी उस वशिाल वेदी को संदर्भति करती है जो यहाँ खड़ी थी, जसि राजा यूमेनेस द्वतिीय (196–157 ईसा पूर्व) ने गाउलों पर उपर्युक्त सम्राट द्वारा प्राप्त वजिय की स्मृति में ज्यूस को समर्पति कयिा था। 1870 के दशक के अंत में, जर्मन सरकार द्वारा यहाँ खुदाई की गई, जसिके कारण वेदी का पुनर्नर्मिाण कयिा गया। खुदाई से पता चलता है कि वेदी एक वशिाल वर्गाकार संरचना थी, जसिकी प्रत्येक भुजा 30 फathom तक लंबी थी।

[4963] प्राचीन यूनानी पौराणकि कथाओं के अनुसार, आर्गोनाट्स ऐसे नावकि थे जनि्होंने वदिेशी भूमि की अपनी पहली यात्रा पर जहाज 'आर्गो' से समुद्र यात्रा शुरू की थी।

[4964] संभवतःएक प्राचीन यूनानी सैन्य कमांडर।

रोटियों से पाँच हजार लोगों को खिलाएंगे। हर कोई उनके बारे में कहेगा: 'मसीह मेरे ईश्वर हैं, जिन्हें सूली पर चढ़ाया गया, जो मरे, कब्र से जी उठे और स्वर्ग में आरोहण कर गए।'

जब संत ने ग्रीक पुस्तकों से मसीह ईश्वर के बारे में गवाहियाँ उद्धृत कीं, तो शासक बहरे साँप की तरह वहाँ बैठा रहा, सत्य को सुनने या समझने के इच्छुक नहीं था। उसने संत से उपहास करते हुए कहा:

'आप हमें दैवीय मामलों की व्याख्या प्रशंसनीय ढंग से करते हैं, मानो आपके पास स्वर्गीय चाबियाँ और मुहरें हों! हालाँकि, इससे पहले कि मैं आपको यातना देना शुरू करूँ, मैं आपको अपनी व्यर्थ बातें बंद करने की सलाह देता हूँ; और, इस हास्यास्पद ईसाई धर्म को त्यागकर, हमारे साथ पुराने तरीके से विश्वास करने की कृपा करें, जैसा कि सम्राट ने आदेश दिया है। यदि, तथापि, तुम ऐसा करने से इनकार करते हो, तो तुम्हारी हठधर्मिता की सजा के रूप में तुम्हें भयंकर यातनाएँ दी जाएँगी। तब, अपनी इच्छा से, तुम वही करोगे जैसा तुमसे कहा जाता है!

पवित्र शहीद ने उत्तर दिया:

'यदि तुम उस सच्चे ईश्वर को जानना नहीं चाहते, जिसे तुम आध्यात्मिक नेत्रों से देख सकते हो, तो मनुष्यों के शरीरों को मारो और नष्ट करो; हमें अपने देवताओं के लिए काट-काट कर टुकड़े-टुकड़े कर दो, और मैं अपने ईश्वर को स्तुति का बलिदान चढ़ाऊँगा। तुम हमें पागल कहते हो, हम जो एकमात्र ईश्वर, जीवित और सच्चे ईश्वर को जानते हैं। क्या इसके विपरीत, तुम स्वयं पागल नहीं हो, यदि तुम मृतकों को बलिदान चढ़ाते हो और निर्जीव पत्थरों की पूजा करते हो? यदि वह पत्थर जिसे आप देवता के रूप में पूजते हैं, एक अच्छी चीज़ है, तो आप उसे काटकर और बाँटकर क्यों रखते हैं, और फिर, उसे कई हिस्सों में बाँटने के बाद, एक हिस्से को—जो किसी मनुष्य से कुछ मिलता-जुलता है—देवता क्यों कहते हैं, जिसे आप बलिदान चढ़ाते हैं? वही पत्थर के बाकी हिस्सों का, आप किसी तुच्छ काम के लिए उपयोग करते हैं या उन्हें दलदली जगह पर बिखेर देते हैं और पैरों तले रौंद देते हैं। आप लकड़ी के साथ भी ऐसा ही करते हैं। उसका एक हिस्सा काटकर उससे एक मूर्ति बनाकर आप उसकी पूजा करते हैं, जबकि पेड़ के बचे हुए हिस्से का आप कोई नीच उपयोग करते हैं या उसे आग में फेंक देते हैं। यदि कोई पत्थर या पेड़ देवता है, तो हर पत्थर या पेड़ को देवता के रूप में पूजा जाना चाहिए। लेकिन अगर न तो लकड़ी और न ही पत्थर ईश्वर है, तो आप एक सड़े हुए पेड़ और एक निर्जीव पत्थर से स्वास्थ्य और मोक्ष क्यों मांगते हैं? और यदि आप लोहे को ईश्वर कहें, तो लोहा भी आग की शक्ति के अधीन है और, गर्म होने पर, अपनी प्राकृतिक कठोरता खो देता है और नरम हो जाता है, ताकि उस पर हथौड़ों से प्रहार किया जा सके। क्या किसी देवता पर हथौड़े से वार किया जा सकता है? क्या आप आग को देवता नहीं कहेंगे? फिर भी वह केवल तब तक शक्तिशाली होती है जब तक उसके पास जलाने के लिए कुछ होता है; और यदि आप ईंधन नहीं डालते, तो उसकी शक्ति क्षीण हो जाती है, और पानी उसे पूरी तरह से बुझा देता है। ऐसी चीजें देवता कैसे हो सकती हैं, जब उनमें से एक दूसरे को नष्ट कर देती है?

राज्यपाल, संत के शब्दों को सहन न कर सका, और वहाँ मौजूद एक व्यक्ति, आर्केलाउस नामक व्यक्ति को, शहीद की गर्दन पर तलवार से वार करने का आदेश दिया; और संत ने तुरंत अपनी गर्दन तलवार के नीचे झुका दी, क्योंकि वह अपने प्रभु के लिए मरने को तैयार था। लेकिन जब आर्केलाउस ने दोनों हाथों से अपनी तलवार उठाकर संत की गर्दन पर एक ज़ोरदार वार करने ही वाला था, तो अचानक उसकी बाहों और पूरे शरीर में सारी ताकत चली गई; और ज़मीन पर गिरकर उसकी मृत्यु हो गई।

यह देखकर, राज्यपाल भयभीत हो गया और शहीद को लोहे की जंजीरों में बाँधकर कालकोठरी में ले जाने का आदेश दिया। उसके बाद छठे दिन, राज्यपाल ने शहीद को एक बार फिर अदालत में पेश किया और आदेश दिया कि उसे सांड की खाल की रस्सियों से पूरी ताकत से कोड़ा मारा जाए, उसके शरीर को लाल-गरम लोहे के कीलों से पीड़ा दी जाए, उसके घावों को जला दिया जाए, और उन पर सिरका और नमक मल दिया जाए।

तब गर्म कोयलों वाला एक तांबे का वेदी लाया गया। उन्होंने संत के दाहिने हाथ में धूप की माला रखी और उसे गर्म कोयलों के ऊपर रख दिया, यह सोचकर कि दर्द से वह अपना हाथ हटा देगा और धूप की माला आग में गिर जाएगी। उस स्थिति में, यह कहा जा सकता था कि उसने धूप की माला को आग में फेंककर देवताओं को बलिदान चढ़ाया था। संत का हाथ इस स्थिति में लगभग दो घंटे तक रखा गया; फिर भी वह, अपने विचारों को ईश्वर में गहराई से डुबोए हुए, अपने जलते हाथ पर कोई ध्यान नहीं दे रहा था, और आग वाला वेदी व्यर्थ ही वहीं खड़ा रहा। दर्शक इस पर चकित हो गए और मसीह की महिमा करने लगे, जबकि शासक और उसका स्वामी, शैतान, लज्जित महसूस करने लगा। संत ने स्वर्ग की ओर अपनी दृष्टि उठाकर कहा:

'तुम मुझे अपने दाहिने हाथ से थामे हो; तुम मुझे अपनी सलाह से मार्गदर्शन करते हो' (भजन संहिता 72:23-24)। हे प्रभु, तेरा दाहिना हाथ अपनी शक्ति में महिमामय है; हे प्रभु, तेरे दाहिने हाथ ने शत्रुओं को कुचल दिया है; यहोवा के दाहिने हाथ ने अपनी सामर्थ्य दिखाई है; यहोवा के दाहिने हाथ ने मुझे उठा लिया है!

इसके बाद, यातना देने वाले ने आदेश दिया कि शहीद के हाथ बाँध दिए जाएँ और उसे दो भारी पत्थरों से बाँधकर लटका दिया जाए। और इस स्थिति में संत लंबे समय तक लटके रहे: पत्थरों के वज़न से, उनके शरीर के जोड़ अपनी जगह से उखड़ गए । तब यातना देने वाले ने आदेश दिया कि शहीद को यातना के उपकरण से उतार लिया जाए, पत्थरों से मुक्त किया जाए, और एक आग भट्टी में, आग की लपटों के बीच, फेंक दिया जाए। जब वह भट्टी में प्रवेश किया, तो संत ने क्रॉस का चिह्न बनाया और ईश्वर से प्रार्थना की। तुरंत भट्टी से एक ज्वाला फूटी, जो पास खड़े सभी दुष्ट लोगों को झुलस गई, जबकि संत को कोई हानि नहीं हुई: उसके लिए आग ठंडक बन गई थी।

इस अद्भुत चमत्कार से सभी बहुत चकित हो गए, और राज्यपाल डरकर प्राटोरियम (अधिकारियों के आवास) में भाग गया। तब कुछ नागरिकों ने राज्यपाल पर चिल्लाना शुरू कर दिया:

'इस जादूगर को तुरंत मार डालो, क्योंकि अगर तुम ऐसा नहीं करोगे, तो पूरा शहर उसकी जादूगरी से ग्रस्त हो जाएगा।'

और तब राज्यपाल ने अंतिम मृत्युदंड सुनाया, और आज्ञा दी कि संत का सिर तलवार से काट दिया जाए। जब उन्हें फाँसी के स्थान पर ले जाया गया, तो संत ने प्रार्थना के लिए समय माँगा; और, पूर्व की ओर मुख करके, अपने हाथ स्वर्ग की ओर उठाकर और अपनी दृष्टि आसमान पर टिकाकर, उन्होंने शहर, लोगों, संकट में पड़े लोगों, बीमारों, अनाथों और विधवाओं के लिए प्रार्थना की, कि सभी दैवीय प्रावधान द्वारा संरक्षित रहें। सबसे बढ़कर, उन्होंने प्रार्थना की कि जल्द से जल्द मूर्तिपूजक दुष्टता की जगह ईसाई भक्ति ले ले, और मसीह की पवित्र कलीसिया सच्चे विश्वास के साथ समय के अंत तक बढ़े, फल-फूले और चमके। जैसे ही उन्होंने अपनी प्रार्थना समाप्त की, स्वर्ग से एक आवाज सुनाई दी, जिसने उनकी प्रार्थना को स्वीकार करने का वादा किया और स्वयं शहीद को स्वर्ग के राज्य का वारिस बनने के लिए बुलाया। फिर पवित्र शहीद प्रोकॉपियस ने प्रसन्नतापूर्वक अपनी सम्मानित कलीसिया को तलवार के नीचे झुका दिया और 8 जुलाई[4965] को प्रभु के लिए अपना जीवन अर्पित करते हुए उनका सिर कलम कर दिया गया। कुछ ईसाइयों ने रात के समय उनके पवित्र शरीर को उठाया, उसे एक साफ कपड़े में लपेटा, सुगंधित तेलों से अभिषेक किया, और उसे एक चुनी हुई जगह पर सम्मान के साथ दफनाया, और त्रिमूर्ति में एक परमेश्वर, पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा की महिमा की, जिनके लिए सभी सम्मान और महिमा उचित है, अब और हमेशा के लिए। आमेन।

कॉन्टाकियन, स्वर 2:

मसीह के प्रति दैवी उत्साह से परिपूर्ण और क्रूस की शक्ति से संरक्षित, तुमने, प्रोकोपियस, शत्रुओं की अस्थिरता और अहंकार को ध्वस्त किया, और पवित्र चर्च को ऊँचा उठाया, जो विश्वास में फल-फूल रही है और हमें प्रकाशित कर रही है।

उनके काज़ान आइकन के प्रकट होने के सम्मान में परम पवित्र कन्या मरियम का पर्व

8 जुलाई को स्मरणोत्सव

1579 में, इवान वासिलीविच द टेरिबिल के शासनकाल के दौरान, जिन्होंने ईश्वर की मदद से टाटार राज्य की राजधानी, काज़ान शहर को जीता था, ईश्वर की माता उस शहर में कुंवारी मत्रोना को सपने में प्रकट हुईं। उसने कहा कि जिस स्थान पर उनका घर था, वहाँ उनकी प्रतिमा जमीन में दबी हुई थी, और आदेश दिया कि इसकी सूचना शहर के धार्मिक और सांसारिक अधिकारियों को दी जाए। यह दर्शन एक से अधिक बार दोहराया गया। मैट्रोना ने अपनी माँ को इस बारे में बताया। लेकिन उसकी माँ ने अपनी छोटी बेटी की बातों पर कोई ध्यान नहीं दिया। अंत में, उस युवती ने माँ ईश्वर

[4965] महान शहीद प्रोकॉपियस की मृत्यु 303 में हुई।

की प्रतिमा को आग की किरणों से नहाई हुई देखा, और एक भयानक आवाज़ सुनाई दी: 'यदि तुम मेरे शब्दों को प्रकट नहीं करोगी, तो मैं किसी और जगह प्रकट हो जाऊँगी; लेकिन तुम बर्बाद हो जाओगी!' इस बार, माँ ने अपनी बेटी की विनती पर ध्यान दिया—नवीनतम दृष्टि से भयभीत होकर—और उसके साथ आर्चबिशप और प्रांतीय गवर्नरों के पास गईं। लेकिन उन्होंने उनकी बात पर विश्वास करने से इनकार कर दिया। इसलिए, घर लौटने पर, माँ ने स्वयं उस बताए गए स्थान पर जमीन खोदना शुरू कर दिया। अन्य लोग भी उनके साथ जुड़ गए, लेकिन वे कुछ भी नहीं ढूंढ सके। अंततः जब कुंवारी मैट्रोना ने स्वयं खुदाई शुरू की, तो परमेश्वर की अति पवित्र माता का आइकन मिला और उसे जमीन से बाहर निकाला गया। आइकन को बड़े सम्मान के साथ चर्च ले जाया गया और यह अपने चमत्कारों के लिए प्रसिद्ध हो गया[4966] ।

ट्रोपारियन, स्वर 4:

उत्साही मध्यस्थ, सर्वोच्च प्रभु की माता, अपने पुत्र, हमारे ईश्वर मसीह के पास हम सभी के लिए प्रार्थना करें, और उन सभी को मोक्ष प्रदान करें जो आपकी शक्तिशाली सुरक्षा में शरण लेते हैं। हे देवी, रानी और स्वामिनी, हम सभी के लिए मध्यस्थता करें, जो कष्टों, दुखों और बीमारियों में, अनेक पापों के बोझ तले दबे, आपके समक्ष खड़े हैं और एक पश्चात्तापी आत्मा और टूटे हुए हृदय से आपसे प्रार्थना करते हैं, तेरी अति पवित्र प्रतिमा के समक्ष आँसुओं के साथ, और जो अपनी आशा अटूट रूप से तुझ पर रखते हैं; सभी बुराइयों से मुक्ति प्रदान कर, जो सभी के लिए हितकर है, और हम सभी को बचा, हे परमेश्वर की कुँवारी माता: क्योंकि तू अपनी दासों के लिए दैवीय सुरक्षा है।

कॉन्टाकियन, स्वर 8:

हे लोगों, आओ, हम इस शांतिपूर्ण और शुभ शरणस्थली, शीघ्र सहायिका, तत्पर और हार्दिक उद्धार, कन्या के संरक्षण की ओर शीघ्र बढ़ें; प्रार्थना के लिए शीघ्रता करें, और पश्चाताप के लिए प्रयत्न करें: क्योंकि परमेश्वर की अति पवित्र माता हम पर अक्षय दया लुटाती हैं, हमारी सहायता के लिए आती हैं, और अपने सदाचारी और ईश्वर-भयभीत सेवकों को बड़ी विपत्तियों और बुराइयों से बचाती हैं।

22 जुलाई

9 जुलाई (पुराने कैलेंडर के अनुसार)

इसी दिन हम पवित्र धर्म-साक्षी सिरील का स्मरण करते हैं (उनके बारे में अधिक जानकारी के लिए 6 सितंबर देखें

पवित्र पुरोहित-शहीद और टौरोमेनियम के बिशप, संत पैंक्रेटियस की स्मृति

9 जुलाई को स्मरणोत्सव

संत पैंक्रेशियस अंतीयक के मूल निवासी थे। उनका जन्म उस समय हुआ था जब हमारे प्रभु यीशु मसीह *'पृथ्वी पर प्रकट हुए और मनुष्यों के बीच चले'* (बरुख 3:38), और यरूशलेम तथा आसपास के सभी प्रदेशों और नगरों में चमत्कार करते थे।

पैंक्रेटियस के पिता, जो अंतीयक में रहते थे, ने उनके महिमामय चमत्कारों के बारे में सुना और प्रभु को देखने के लिए कुछ दोस्तों और अपने पुत्र, युवा पैंक्रेटियस के साथ यरूशलेम के लिए रवाना हो गए। यह देखकर कि वह लोगों को कैसे सिखाते थे, हर तरह की बीमारियों को ठीक करते थे, और अनेक चिह्न और आश्चर्य करते थे, वह मसीह में परमेश्वर

[4966] इस आइकन के बारे में विस्तृत जानकारी के लिए, *ग्लोरी टू द मदर ऑफ गॉड* पुस्तक, मॉस्को, 1907 देखें।

के पुत्र के रूप में वशि्वास करने लगा और मसीह के कुछ पवत्रि प्रेरतिों, और सबसे बढ़कर पवत्रि प्रधान प्रेरति पतरस से परचिति हुआ; उस समय से, युवा पंक्राटयिस संत पतरस को जाने जाने लगे।

यरूशलेम में काफी समय तक रहने और मसीह को देखकर तथा उनके मीठे वचनों को सुनकर आनंदति होने के बाद, पैंक्रैटयिस के पति अपने दोस्तों के साथ अंतीयक लौट आए। मसीहा यीशु के स्वैच्छकि दुख और मृत्यु के बाद, तथा उनके पुनरुत्थान और स्वर्गारोहण के पश्चात्, प्रेरतिों में से एक अंतीयक आया – यह संत पतरस के वहाँ आने और पंक्राटयिस के पति तथा उनके पूरे परविार को बपतस्मिा देने से पहले की बात है। कुछ समय बाद, पैंक्रैटयिस के पति और माता दोनों प्रभु के पास चले गए, जबकि पैंक्रैटयिस ने अपने माता-पति से वरिासत में मलिी संपत्ति का त्याग कर दयिा और पोंटकि पहाड़ों में चले गए[4967] ।

वहाँ, एक गुफा में, पैंक्रैटयिस एकांत में रहते थे, उपवास और प्रार्थना करते थे, स्वयं को आत्म-ज्ञान के लिए समर्पति कर दयिा था और केवल ईश्वर के साथ संवाद करते थे। जब पवत्रि प्रेरति पतरस, यरूशलेम छोड़कर, मसीह के बारे में उपदेश देते हुए उन क्षेत्रों में यात्रा कर रहे थे, तो वे पोंटस में पैंक्रैटयिस से मलि और, उन्हें पहचानकर, उन्हें अपने साथ अंताकयिा ले गए, और फरि उनके साथ कलिकियिा गए, जहाँ वे पवत्रि प्रेरति पौलुस से मलि। यहाँ दोनों प्रेरतिों, पतरस और पौलुस ने, पारस्परकि सहमति से, बशिप नयिुक्त कए: क्रसिैन्शयिस को गलातयिा के लिए, मार्शयिन को सरिाक्यूज़ के लिए[4968] , और पैंक्रैटयिस को टौरोमेनयिम के लिए, जो ससिलिी का एक शहर है[4969] ।

अपने मंत्रालय के स्थान की ओर जाते समय, धन्य पंक्राटयिस ने ससिलिी जाने वाली एक जहाज पर सवार हुए। इस जहाज पर पंक्राटयिस के साथ दो जहाज के कप्तान, लाइकाओनडिस और रोमाइलस यात्रा कर रहे थे, जन्हिें उन्होंने परमेश्वर का वचन प्रचार कयिा, परमेश्वर के राज्य और हमारे उद्धार के रहस्यों के बारे में उपदेश दयिा। उन्होंने उन्हें मसीह में वशि्वास की ओर ले गए और पवत्रि बपतस्मिा के माध्यम से उन्हें प्रबुद्ध कयिा।

जब वे टौरोमेनयिम शहर पहुँचे, तो स्थानीय मूर्तयिों में रहने वाले राक्षस भ्रम में पड़ गए, और मूर्तयिाँ, पंक्राटयिस के आगमन से चकति होकर, गरिने और टुकड़े-टुकड़े होने लगीं। वहाँ ग्रीकों द्वारा पूजे जाने वाले देवता: फाल्कन, लसिीपस और स्कैमंड्रोन[4970] , जनिके लिए एक मंदरि समर्पति था, समुद्र तट के ठीक पास एक ऊँची पहाड़ी पर खड़े थे।

जैसे ही संत पैंक्रैटयिस इस मंदरि के पास पहुँचे, यह तुरंत दरार खा गया और, मानो कसिी भयानक भूकंप के कारण, सभी मूर्तयिों के साथ समुद्र में गरि गया। तब लोगों में भारी अफरा-तफरी मच गई।

शहर का राज्यपाल, बोनफिेस, भी वहाँ पहुँचा; संत पैंक्रेशयिस को देखकर और उनके उपदेश को सुनकर, वह मसीह में वशि्वास करने लगा और बपतस्मिा ग्रहण कयिा। मसीह के नाम की महमिा के लिए कए गए उनके परश्रिम से, एक महीने के भीतर एक चर्च का नरि्माण हो गया, जसिमें ईश्वर के बशिप ने अपनी सेवा शुरू की, और वे अपने चारों ओर इकट्ठा होने वाले लोगों को सखिाने और ज्ञान देने लगे, जो अपने बीमारों को साथ लाते थे: संत ने अपने उपदेशों की पुष्टि चह्निों और अद्भुत कार्यों से की, हर तरह की बीमारयिों को ठीक कयिा और दुष्टात्माओं को भगाया।

जब दनि-प्रतदिनि वशि्वासयिों की संख्या लगातार बढ़ती गई और लगभग पूरा शहर पवत्रि वशि्वास से प्रकाशति हो गया—जसिसे मसीह के नाम की महमिा पूरे देश में फैलने लगी—तो शैतान ने मसीहयिों के वरिुद्ध एक दुष्ट उत्पीड़क, अक्वलिनिस को भड़काया। मसीह और ईसाइयों के प्रति शत्रुता के कारण, वह सैनकिों के एक बड़े दल के साथ टौरोमेनयिम पर चढ़ा, उसका इरादा उसे नष्ट करने और वहाँ रहने वाले सभी ईसाइयों को तलवार के घाट उतारने का था।

जब इस समाचार से नागरकि भयभीत हो गए, तो परमेश्वर के उस पवत्रि पुरुष ने उन्हें सांत्वना देना आरंभ कयिा, और उन्हें वशि्वास दलिाया कि उनके शत्रुओं के हाथों उन्हें कोई हानि नहीं होगी। और जब दुश्मन शहर के पास पहुँचे, तो संत पैंक्रैटयिस, एक आध्यात्मकि योद्धा की तरह, अपने पुरोहतिों के साथ उनसे मलिने के लिए बाहर गए, अपने साथ एक अजेय हथयिार - मसीह का पवत्रि क्रूस और दो पवत्रि प्रतमिाएँ - उद्धारकर्ता मसीह और परमेश्वर की उनकी सबसे पवत्रि माता को लेकर। तुरंत, दुश्मनों पर एक बड़ा भय छा गया; वे, मानो, अंधकार में लपिट गए थे; ईश्वर की शक्ति

[4967] पोंटस – एक देश जो प्राचीन काल में एशयिा माइनर के उत्तर-पूर्वी भाग में स्थति था। आज, प्राचीन पोंटस के स्थल पर दो तुर्की वलियते (प्रांत) स्थति हैं: ट्रेबज़िॉन्ड और सविस।

[4968] सरिक्यूज़ – ससिलिी द्वीप के पूर्वी तट पर पहली प्राचीन यूनानी बस्तयिों में से एक, जसिे परंपरा के अनुसार, लगभग 753 ईसा पूर्व में कोरथियिों द्वारा स्थापति कयिा गया था; यह बाद में द्वीप पर सबसे बड़ा और सबसे अमीर शहर बन गया।

[4969] ससिलिी भूमध्य सागर के सबसे बड़े द्वीपों में से एक है और अब यह इटली के साम्राज्य का हस्सिा है।

[4970] फाल्कन, लसिीपस (या लस्सि) और स्कामंड्रोन प्राचीन यूनानी धर्म के गौण देवता हैं।

से वे भ्रम में पड़ गए, उनके मन मुरझा गए, और वे एक-दूसरे पर वार करने और एक-दूसरे को मारने लगे, जबकि कुछ ने तो अपनी तलवारों से खुद को भी भेद लिया। तब, जैसे ही वे होश में आए, उन्हें घेरने वाले अंधकार से बाहर निकले और देखा कि वे एक-दूसरे को मार रहे थे, उन्हें एहसास हुआ कि यह ईसाई शहर के खिलाफ उनकी शत्रुतापूर्ण कार्रवाइयों के लिए ईश्वर की सजा थी। जो लोग इस भाई-भ्रातृ युद्ध में बच गए, उन्होंने अपने हथियार फेंक दिए और स्वयं को मसीह के अजेय और वीर योद्धा, संत पैंक्रैटियस के सामने प्रस्तुत किया। वे क्षमा याचना करते हुए उनके पवित्र चरणों में गिर पड़े, और उनसे मसीही बनाने का आग्रह किया। और शहर के नागरिकों ने दोहरी खुशी का अनुभव किया: पहली बात, वे अपने दुश्मनों के भयंकर आक्रमण से मुक्त हो गए थे, और दूसरी बात, उनके दुश्मन विश्वास में उनके दोस्त बन गए थे। इसलिए, उस समय से, संत के शब्दों को और भी अधिक सम्मान के साथ स्वीकार किया गया, और उनके सभी आदेशों का पालन किया गया। और न केवल इस शहर को, बल्कि अन्य पड़ोसी कस्बों को भी पवित्र विश्वास द्वारा प्रबुद्ध किया गया।

लेकिन कई वर्षों बाद, जो संत पैंक्रैटियस ने मसीह के नव-प्रबुद्ध झुंड का मार्गदर्शन करते हुए बिताए थे, वहाँ बचे हुए कुछ विधर्मी—विशेषकर जो अपने भ्रम में दुर्भावनापूर्ण और हठी थे—अपने नेता आर्टगास्ट के साथ मिल गए और, एक उपयुक्त क्षण चुनकर, उन्होंने गुप्त रूप से ईश्वर के सेवक पर हमला किया और उसे पत्थरों से मार डाला। इस प्रकार संत पैंक्रैटियस, जो मसीह के प्रत्यक्षदर्शी और प्रेरितों के उत्तराधिकारी थे, ने एक महान कार्य किया, एक शहीद के रूप में अपना जीवन समाप्त किया[4971] और पवित्र प्रेरितों के साथ, अपने प्रभु मसीह के समक्ष उपस्थित हुए, ताकि वे अनंत काल तक उनका साक्षात दर्शन कर सकें।

कॉन्टाकियन, स्वर 4:

हे तौरोमेनियम के तेजस्वी तारे, पंक्रातिउस, तुम एक तारे के समान प्रकट हुए, और मसीह के लिए एक पवित्र शहीद के रूप में प्रकट हुए: अब जब तुम उनके सामने खड़े हो, तो उन लोगों के लिए प्रार्थना करो जो तुम्हारा सम्मान करते हैं, हे धन्य।

आदरणीय पितरों पटरम्यूफियस और कोप्रियस का जीवन और शहादत, और उनके साथ धर्मनिष्ठ अलेक्जेंडर

9 जुलाई को स्मरण किया जाता है

सम्राट Julian[4972] , जो पहले मसीह में विश्वास रखते थे लेकिन बाद में शैतान द्वारा भटक कर पुनःमूर्तिपूजक हो गए और शैतान के पुत्र बन गए, फारसियों के खिलाफ युद्ध पर निकले। पर्सिया जाते समय, उसने संतों का बहुत सारा रक्त बहाया और, एंटिओक में रहते हुए, एंटिओक के दो पुरोहितों, यूजीन और मकारियस को बंदी बना लिया, जिन्हें लंबे यातनाओं के बाद, उसने मौरीटानिया में निर्वासन में कैद कर दिया। उस समय, दो पवित्र पुरुष, पाटरमुफियस और कोप्रियस, मिस्र के रेगिस्तानों में रहते थे; वे पूर्ण सामंजस्य में थे और एक साथ ईश्वर की सेवा करते थे। पैटरमुफियस मठवासी तपस्या में बड़े और अधिक अनुभवी थे, तथा सदाचार में दृढ़ थे; कोप्रियस, हालांकि, पहले से छोटे होने के कारण, मठवासी जीवन में अभी पूरी तरह से स्थापित नहीं हुए थे और पैटरमुफियस को अपना मार्गदर्शक और आध्यात्मिक पिता मानते थे। उन्हें यातनाएँ दी जाने से पहले, कोप्रीय ने पादरी मुफिय को निम्नलिखित दृष्टि सुनाई, जो उन्होंने उस रात सपने में देखी थी।

'मैंने देखा,' उसने कहा, 'आकाश फट रहा था और एक तेजस्वी आकृति, जिसके हाथ में एक लाठी थी, मेरी ओर बढ़ रही थी। फिर मैंने दूसरी ओर से एक काला व्यक्ति आते देखा, जो आग जला रहा था और अपने चारों ओर धुआँ फैला रहा था। उस काले व्यक्ति ने अपना हाथ बढ़ाया और मुझे पकड़ लिया; धुएँ में खुद को पाकर, मैं एक बहुत ही भयानक दुविधा में

[4971] पवित्र शहीद संत पैंक्रैटियस की मृत्यु पहली शताब्दी के अंत या दूसरी शताब्दी की शुरुआत में हुई। उनके अवशेष अब रोम में, संत पैंक्रैटियस के सम्मान में बने एक उपनगरीय चर्च में रखे गए हैं (जिनका पर्व पश्चिमी चर्च में 12 मई को मनाया जाता है)।

[4972] सम्राट जूलियन अपोस्टेट ने 361 से 363 तक शासन किया।

था, खतरों ने मुझे हर तरफ से घेर रखा था, जबकि वह तेजस्वी व्यक्ति मुझसे बहुत दूर चला गया था। उसी क्षण, स्वर्ग से एक आवाज़ गूँजी: 'इस आदमी की संतान को चीर-फाड़ दिया जाएगा, लेकिन बाद में एक बार फिर से उसका अच्छा उपयोग किया जाएगा।' इस दर्शन के बाद, मैं चकराकर जाग गया।

'यह कोई अच्छा सपना नहीं है!' पैटरमुफियस ने कहा। 'मुझे डर है कि तुम जीवित ईश्वर से मुंह मोड़ बैठे हो।' देखो, दुष्ट सम्राट जूलियिन ने मसीह का त्याग कर दिया है और परमेश्वर की कलीसिया के विरुद्ध उत्पीड़न आरंभ कर दिया है। मुझे डर है कि हम भी यातनाओं के अधीन होंगे। सावधान रहना, मेरे बच्चे: यातनाओं के भय से मसीह का त्याग मत करना, और इनामों के वादों से बहक मत जाना। परमेश्वर का भय मानना, उसकी आज्ञाओं को याद रखना, और साहसी बनना।

इस दृष्टि के कुछ ही समय बाद, सम्राट जूलियिन एक बड़ी सेना के साथ मिस्र पहुँचा। यह सुनकर कि मिस्र के रेगिस्तानों में कई तपस्वी रहते थे, उसने वहाँ सैनिक भेजे ताकि वे जितने भी लोगों को ढूंढ सकें, उन्हें पकड़ लाएँ। तब उपर्युक्त संत, पाटरमुफियस और कोप्रियस को पकड़ लिया गया और पूछताछ के लिए यातना देने वाले के सामने लाया गया। और जूलियिन ने पूजनीय पाटरमुफियस से पूछा:

'तुम्हारी उम्र क्या है, बूढ़े आदमी?'

उसने उत्तर दिया:

'पृथ्वी पर मेरे इस क्षणिक जीवन के पचहत्तर वर्ष तो पहले ही बीत चुके हैं।'

कोपेरियिन की ओर देखते हुए, सम्राट ने कहा:

'अब तुम, छोटे वाले, मुझे बताओ, तुम्हारी उम्र क्या है?'

कोप्रीय ने उत्तर दिया: 'मैं पैंतालीस वर्ष का हूँ।'

तब सम्राट ने आदेश दिया कि वृद्ध पादरमुफियस को जेल ले जाया जाए, जबकि उन्होंने कोप्रिया को अपने पास रखा और उससे इस प्रकार कहा:

– 'हे मनुष्य, देवताओं को बलिदान अर्पित कर, ताकि तू उन यातनाओं से बच सके जो तेरा इंतज़ार कर रही हैं। उस धोखेबाज़ ईसाई धर्म को त्याग दे, जिससे तुझे कोई लाभ नहीं होता।' मैं भी कभी मसीह में विश्वास करता था, लेकिन मुझे इसमें कोई लाभ नहीं दिखा। अब, हालांकि, अमर देवताओं में विश्वास करके, मुझे उनसे कई महान अनुग्रह प्राप्त हुए हैं। मैं तुम्हें भी सलाह देता हूँ कि मसीह का त्याग करो और देवताओं को बलिदान चढ़ाओ; तब मैं तुम्हें अपने करीब लाऊँगा, और तुम्हें मुझसे कई अनुग्रह प्राप्त होंगे।"

कोप्रीय ने सम्राट की बात सुनी और उसकी साँसें रुक गईं। वह उस क्षण में खो गया और उसके भ्रामक वादों से बहककर, जूलियिन से कहने लगा:

'महामहिम, आप मुझे अच्छी शिक्षा दे रहे हैं! यह अच्छी बात है कि मुझे आप में एक शिक्षक और एक दयालु मार्गदर्शक मिला है।'

तब वह ज़ोर से चिल्लाया:

'अब से मैं जूलियिन का शिष्य हूँ, ईसाई नहीं, और जैसे मैं कभी धोखेबाज़ ईसाई धर्म का पालन करते हुए भटक गया था, वैसे ही अब मैं सब कुछ ठीक करने का प्रयास करूँगा - मैं देवताओं की पूजा करूँगा और बलिदान दूँगा।'

ये शब्द सुनकर सम्राट अति प्रसन्न हुआ और कहा:

'यह आदमी सभी से अधिक सुखी है क्योंकि वह हमारे पूर्वजों के प्राचीन देवताओं को जान गया है, जो संसार को शाश्वत जीवन प्रदान करते हैं!'

इन शब्दों के बाद, कोप्रियिन ने झुककर अपोलो की मूर्ति को बलिदान चढ़ाया; ईश्वर से मुंह मोड़कर, उसने अपने भीतर शैतान का स्वागत किया।

पवित्र स्वर्गदूत उससे दूर हो गए, जबकि राक्षसों ने उसे घेर लिया और प्रसन्न हुए।

यह जानकर कि कोप्रीज मसीह से मुँह मोड़ गया है, परम पूजनीय पाटरमुफियस को गहरा दुख हुआ; वे उसके लिए रोए और विलाप किए, और घुटनों के बल झुककर, इस प्रकार प्रार्थना की:

'हे सेनाओं के प्रभु, हे ईश्वर! इस पापी को नष्ट न करें जिसने आपकी आज्ञा का उल्लंघन किया है! उस परिश्रम को याद रखें जो उसने अपनी जवानी में आपके प्रति प्रेम से किया था; उसे अपनी उपस्थिति से दूर न करें, क्योंकि वह एक अपराधी के वचनों से भटक गया है। अपनी सृष्टि पर दया करें और अपने हाथों के काम को देखें!'

अगली सुबह, सम्राट अपने सिंहासन पर विराजमान हुआ, जबकि कोप्रीउस उसके दाहिनी ओर खड़ा था। उसने बैंगनी रंग का चोगा पहना हुआ था। जब सम्राट के आदेश पर पैटरमुफियस को पूछताछ के लिए लाया गया, तो कोप्रीउस ने उसे देखते ही कहा:

'आ गया वह धोखेबाज़ जिसने मुझसे मेरी खुशी छीन ली है।'

जब वह बूढ़ा दरबार में आया, तो कोप्रियस ने उस पर चिल्लाकर कहा:

'तो, पैटरमुफियस? देखो, मैं आनंद मना रहा हूँ, जबकि तुम रोने के लिए छोड़ दिए गए हो। मैं अब एक ईसाई नहीं हूँ, बल्कि जूलियन का अनुयायी हूँ।'

पैटरमुफियस ने उत्तर दिया:

'हाँ, मैं देखता हूँ कि आप आनंद मना रहे हैं, और इसलिए मैं आपके लिए रो रहा हूँ।'

तब सम्राट ने बुजुर्ग से कहा:

'रोओ मत, बल्कि देवताओं को बलिदान चढ़ाओ और उसके साथ आनंद मनाओ।'

पैटरमुफियस ने उत्तर दिया:

उसका आनंद अस्थायी है। अब वह आनंदित है, लेकिन आने वाले जीवन में वह रोएगा, जब तक कि वह पश्चाताप नहीं करता। दूसरी ओर, मैं अब रोता हूँ, लेकिन आने वाले जीवन में मैं आनंदित होऊँगा। यहाँ वह अपने बैंगनी वस्त्रों में घमंड करता है, लेकिन वहाँ वह नग्न पाया जाएगा; अब वह तृप्त है, लेकिन आने वाले जीवन में वह भूखा रहेगा। मैं, दूसरी ओर, अब भूखा हूँ, लेकिन आने वाले जीवन में मैं तब तृप्त हो जाऊँगा जब मेरे परमेश्वर की महिमा प्रकट होगी। अब वह तुम्हारे सामने खड़ा है, हे सांसारिक राजा, महिमा में अपने सेवकों के बीच, लेकिन वहाँ, स्वर्गीय राजा की उपस्थिति से, उसे बाहर निकाल दिया जाएगा और राक्षसों के साथ अग्निमय गेहन्ना में डाल दिया जाएगा।

यह कहकर, बुज़ुर्ग ने कोप्रिया के चेहरे की ओर देखा और घोषणा की:

'अब तुम केवल मवाद हो, जिसमें राक्षस आनंदित होते हैं। क्योंकि स्वर्गदूत तुमसे मुँह मोड़ चुके हैं। तुमने ईश्वर को त्याग दिया है और स्वयं को शैतान के वस्त्र पहना लिए हैं। तुमने सच्चे, शाश्वत जीवन से घृणा करने लगे हो, जबकि क्षणिक, झूठे जीवन से प्रेम करने लगे हो। लेकिन अपनी जवानी के कर्मों को याद करो, होश में आओ, उस भ्रम को त्याग दो जिसमें, हाय, तुम्हें ले जाया गया है, और मेरे पास आओ, मेरे बच्चे! एक बार फिर ईश्वर से प्रेम करो और उसी के सामने पश्चाताप करो जिसके विरुद्ध तुमने पाप किया है, और वह, अपनी दया में, तुम्हें स्वीकार कर लेगा और तुम्हारे पापों को क्षमा कर देगा।

जब वृद्ध ने ये शब्द कहे, तो कोप्रीज का हृदय करुणा से भर गया और, पश्चाताप से भरकर, वह ज़ोर से चिल्लाया:

'हाय मुझ पर, हाय मुझ पर, हाय मुझ पर!'

तब वह एक ओर झूलने लगा, फिर दूसरी ओर। बाद में, हिम्मत जुटाकर और आकाश की ओर देखते हुए, उसने कहा:

'अब मैं जूलियन नहीं रहा, बल्कि एक बार फिर मसीह का अनुयायी हूँ! मैंने परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन करके पाप किया है; मैंने अपने प्रभु का परित्याग करके अधर्म किया है; लेकिन प्रभु, इसी में आपकी कृपा प्रकट होती है, जब आप मुझ पर दया करते हैं, जिसने इतना गंभीर पाप किया है। हे मानवता के प्रेमी, मुझ पर दया करो। मैं अब एक मुरझाए हुए वृक्ष की तरह हूँ, जो न फल देता है और न ही जिसके पत्ते बचे हैं। अधर्मी लोगों के वचनों ने मुझे भटका दिया है, और एक शैतानी तूफ़ान मुझ पर हावी हो गया है। साँप मेरा उपहास उड़ाता है, और राक्षसों की सेनाएँ मुझ पर आनन्द मनाती हैं। स्वर्ग के तारे भ्रम में पड़ गए हैं; सूर्य और चंद्रमा ने मेरे महान पाप के कारण अपनी रोशनी छिपा ली है, जिससे मैंने परमेश्वर को दुखी किया है। परन्तु हे परमेश्वर के स्वर्गदूतो, हे धर्मी लोगों के दल, और हे सारी संसार के वासियो, इकट्ठे हो और मेरे पतन और मेरे मन के अन्धकार पर शोक करो। क्योंकि मैं धार्मिकता के सूर्य मसीह से वंचित हो गया हूँ, और मेरे भीतर विश्वास का प्रकाश बुझ गया है; मुझ से सारी आत्मिक सुन्दरता छीन ली गई है।

तब, सम्राट की ओर मुड़कर, कोप्रीज ने कहा:

'हे शैतान, तूने मुझे क्यों धोखा दिया? हे नियम-भंग करने वाले, तूने मुझे भी अपनी बर्बादी में क्यों घसीटा?'

और, अपना बैंगनी चोगा उतारकर, उसने उसे उसके सामने फेंक दिया, और कहा:

'तुम वही महिमा अपने लिए ले लो जो तुमने मुझे दी है, और मैं जो खो गया है उसे वापस ले लूँगा। मेरा ईश्वर दयालु है और वह मुझे, कम से कम, अपने *"ठेके के दासों"* में से एक बना देगा (लूका 15:19)।'

सम्राट ने, यह देखकर कि कोप्रयिन एक बार फिर मसीह की ओर मुड़ गया था, क्रोध से आग-बबूला हो गया और तुरंत एक बड़े लोहे के तवे को लाल-गरम करने का आदेश दिया। कोप्रयिन ने यह आज्ञा सुनकर कहा:

'आपने बहुत अच्छा किया, सम्राट! मुझे जला दो, मुझे टुकड़े-टुकड़े कर दो, ताकि मैं अनेक यातनाओं के माध्यम से अपने पतन का प्रायश्चित कर सकूँ। लेकिन सबसे पहले, मेरी जीभ को दंड दो, क्योंकि उसने मसीह का परित्याग करके सबसे पहले पाप किया था।'

तब सम्राट ने एक छोटे लोहे के चम्मच को आग में तपाकर लाल कर दिया और उसे कोप्रीउस की जीभ पर रख दिया। कोप्रीउस ने, कोयले की तरह लाल-लाल चम्मच को देखकर, संत पैटरम्यूटियस से कहा:

'पिताजी, मेरे लिए ईश्वर से प्रार्थना कीजिए, क्योंकि मुझे उस यातना के विचार से भय हो रहा है जो मेरा इंतजार कर रही है।'

वरिष्ठ ने उससे कहा:

'मेरे बच्चे, इसे आनंद से सहन करो, और प्रभु तुम्हारी मदद करेंगे!'

और अद्भुत यह था कि जिब चम्मच कोप्रियो की जीभ को छुआ, तो वह उसे बर्फ की तरह ठंडी लगी, और कोप्रियो की जीभ को बिल्कुल भी जलन नहीं हुई। तब सम्राट ने कहा:

'ये लोग जादूगर हैं; उन्हें लाल-गरम तवे पर ले जाओ।'

जब उन्हें ले जाया जा रहा था, तो कोप्रीज ने बूढ़े से कहा:

'मेरे लिए प्रार्थना करें, मेरे गुरु, क्योंकि मुझे इस यातना का बहुत भय है।'

वरिष्ठ ने कहा:

'डरो मत, मेरे बच्चे! साहसी बनो; उन तपस्या के कार्यों और परिश्रमों को याद करो जो तुमने अपने बचपन से ही रेगिस्तान में, ईश्वर की महिमा के लिए, बहादुरी से किए हैं। क्या तुम्हें याद है कि तुम पैंतीस दिनों तक बिना भोजन के रहे थे? क्या तुम्हें यह भी याद है कि मसीह के साथ सूली पर चढ़ाए जाने के बाद (गलातियों 2:19), तुम क्रूस के आकार में अपनी बाहें फैलाए बारह दिनों तक अचल खड़े रहे थे? क्या तुम भूल गए हो कि तुम कठोर पत्थरों और मिट्टी के बर्तनों के तीखे टुकड़ों पर लेटे थे? यदि तुमने मसीह के लिए अपने पूरे जीवन में यह सब स्वेच्छा से सहन किया, तो अब तुम इस यातना से क्यों डर रहे हो, जो केवल एक घंटा ही चलेगी?

कोप्रीय, इन शब्दों से आश्वस्त होकर, एक दीप्तिमान मुस्कान के साथ और बिना किसी भय के, बुजुर्ग के साथ तवे की ओर बढ़ा। जब वे उस पर चढ़े, तो पटरमुफ़ी ने कहा:

'भाई कोप्रीज, अपनी आँखें स्वर्ग की ओर उठाओ!'

कॉप्रयि, आकाश की ओर देखते हुए, बोला:

'मैं स्वर्गदूतों को आते हुए देख रहा हूँ, जिनके सिर ओस से ढके हैं। मैं आपसे विनती करता हूँ, पिताजी, उनसे कहिए कि वे मुझसे क्रोधित न हों क्योंकि मैंने मसीह का त्याग कर दिया है।'

और इस प्रकार वे दोनों तवे पर चढ़ गए और जैसे किसी घास के मैदान में हों, वैसे ही चलने लगे, अपने यातना देने वाले का मज़ाक उड़ाते हुए, क्योंकि तवा तुरंत ही पूरी तरह से ठंडा हो गया था। यह देखकर, यातना देने वाला और भी अधिक क्रोधित हो गया और उसने भट्टी को यथासंभव गर्म करने का आदेश दिया, ताकि शहीदों को उसमें फेंककर जलाया जा सके। जब भट्टी में आग भड़काई जा रही थी, तो राजा के एक सैनिक, जिसका नाम अलेक्जेंडर था, ने कोप्रयिस के पास आकर कहा:

'कोप्रयिस! पहले तुम देवताओं को बलिदान चढ़ाते थे, लेकिन अब तुम मना कर रहे हो। तो फिर हमारे पास लौट आओ, ताकि तुम आग से विनाश से बच सको।'

संत कोप्रयिस ने उनसे उत्तर दिया:

'हे भगवान, काश मेरा पहला पाप, जो मैंने मसीह से पहले किया था, आपकी दृष्टि में भूल जाता!' यदि समुद्र का सारा पानी और सभी नदियाँ, और झरने, और आकाश से गिरने वाली हर बूंद को एक साथ इकट्ठा किया जाए, तो भी वह मेरे पाप के दाग को धोने के लिए अपर्याप्त होगा। फिर भी मैं अपने दयालु प्रभु की दया से निराश नहीं हूँ।

कॉप्रयिास के शब्दों से दयालु हुए अलेक्जेंडर ने कहा:

'मैं भी उस राजा का सिपाही बनना चाहता हूँ जिसकी आप सेवा करते हैं!'

और फिर कोप्रयिा ने उन्हें सच्चे धर्म की शिक्षा दी और उन्हें मसीह के धर्म में परिवर्तित कर दिया।

जब भट्टी में आग भड़का दी गई और पवित्र शहीदों ने उसमें प्रवेश किया, तो अलेक्जेंडर उनके पीछे-पीछे यह कहते हुए चल पड़ा:

'मैं आपके साथ जाऊँगा, धन्य पतिरों! मसीह के वास्ते, मुझे भट्टी में ले चलिए!'

उन्होंने उसे बांहों से पकड़ लिया और साथ-साथ चले, लेकिन फिर अलेक्जेंडर उनकी पकड़ से छूट गया और अकेले आगे बढ़ गया। जब वे भट्टी के प्रवेश द्वार के पास पहुँचे, तो भट्टी से एक बड़ी लपट अलेक्जेंडर की ओर फूटी, लेकिन उसने उसे न जलाया, और अलेक्जेंडर ने लपट से مخاطب होकर कहा:

'यदि तुम मुझे जलाने के लिए परमेश्वर की आज्ञा से आए हो, तो इस पापी को जला दो!'

ये शब्द सुनते ही, आग दो भागों में बंट गई और दो दीवारों का रूप ले ली, जैसे एक बार लाल सागर के पानी ने किया था (निर्गमन, अध्याय 14), और बीच में उसके लिए एक रास्ता खोल दिया। और अलेक्जेंडर आग में बिना छुए प्रवेश कर गया, और वहाँ परमेश्वर के स्वर्गदूतों को देखकर उनसे कहा:

'मैं आपसे विनती करता हूँ, हे स्वामिनो, मुझे, एक पापी को, बचा लीजिए!'

देवदूतों ने उत्तर दिया:

'यही कारण है कि हमें परमेश्वर द्वारा तुम्हें बचाने के लिए यहाँ भेजा गया है।'

और वे उसकी आत्मा को प्रभु के पास ले गए, जबकि उसका मृत शरीर आग में पूरी तरह से सुरक्षित रहा। उसके बाद, पूजनीय पिता पैटरमुफियस और कोप्रस भी आग में बिना किसी नुकसान के प्रवेश किए, और ईश्वर की स्तुति करते हुए अलेक्जेंडर के शरीर के पास रहे।

जब भट्टी बुझ गई, तो संतों को आग से बिल्कुल अछूता और जीवित निकाल लिया गया, जबकि संत अलेक्जेंडर का शरीर भी आग से अछूता बाहर निकाला गया, और उससे एक अद्भुत सुगंध निकल रही थी। तब सम्राट ने आश्चर्य से कहा:

'हमारे देवता महान हैं, लेकिन मसीह कुछ भी नहीं है!'

तब उसने फिर से संतों को मूर्तियों की पूजा करने के लिए मजबूर करना शुरू कर दिया। लेकिन पूजनीय पाटरमुफियस ने उससे कहा:

'चूंकि तुम ईश्वर के नाम की महिमा करने के लिए नहीं बल्कि युद्ध में जा रहे हो, तुम वापस नहीं आओगे, बल्कि घातक रूप से घायल हो कर एक भयानक मृत्यु मरोगे।'

तब सम्राट बहुत क्रोधित हो गया और उसने उन्हें तलवार से सिर कलम करने का आदेश दिया।

और संतों को शहर से बाहर फाँसी के स्थान पर ले जाया गया। वहाँ, अपनी मृत्यु से पहले, वे प्रार्थना में परमेश्वर की ओर मुड़े, और देखो, स्वर्ग से एक आवाज गूँजी, जिसने पाटरमुफियस की प्रशंसा की, कोप्रियस को क्षमा किया, और उन दोनों को शाश्वत विश्राम के लिए बुलाया।

तब, वे आनंदपूर्वक तलवार के आगे अपना सिर झुकाकर मर गए, और प्रभु के लिए अपना जीवन बलिदान कर दिया।

जहाँ तक धर्मद्रोही जूलियन का सवाल है, जिसने फ़ारसियों के खिलाफ़ युद्ध छेड़ने के लिए प्रस्थान किया था, वह फ़ारसी सेनाओं से पराजित हो गया और, जैसा कि संत पैटरम्यूफ़ियस ने पूर्वानुमान लगाया था, वह अपनी भूमि पर वापस नहीं लौटा।

पवित्र शहीदों पाटरम्यूफियस और कोप्रियस, और उनके साथ संत अलेक्जेंडर का निधन, June[4973] के नौवें दिन हुआ। उस समय, अधर्मी जूलियन रोमनों पर शासन करता था, जबकि हमारे प्रभु यीशु मसीह मसीहियों पर शासन करते थे; उसी को, पिता और पवित्र आत्मा के साथ, सम्मान, महिमा और सामर्थ्य मिले, अब और हमेशा और युगों-युगों तक। आमीन।

पूजनीय पॅटरम्यूफियस की स्मृति

9 जुलाई को स्मरणोत्सव

[4973] पवित्र पूजनीय शहीदों पाटरमुफियस और कोप्रियस का निधन चौथी शताब्दी के उत्तरार्ध में हुआ।

कोप्रयिस के अनुसार, पैटरमुफयिस पहले एक मूर्तपिूजक था। वह डाकुओं के एक गरिोह का नेता था, चोरी करता था और यहाँ तक कि मृतकों के कपड़े भी उतार लेता था, हर तरह के अन्य दुष्ट कर्म और घृणति कृत्य करता था, और उसके दुष्कृत्यों की अफवाहें पूरे मस्रि देश में फैल गईं। उसका ईश्वर की ओर रूपांतरण नम्निलखिति कारण से हुआ।

एक रात, वह उस घर की छत पर चढ़ गया जहाँ ईश्वर को समर्पति एक कुंवारी रहती थी। उसका इरादा छत को तोड़कर, उसमें से घर में प्रवेश करके, अपनी योजनाबद्ध दुष्ट हरकत को अंजाम देने का था। हालाँकि, उसने चाहे जतिनी भी कोशशि की, वह छत को तोड़ नहीं सका और थककर वहीं सो गया।

अपने सपने में, उसने एक तेजस्वी पुरुष को देखा, जो राजा के वस्त्रों में सजे हुए थे, जन्हिोंने उससे कहा:

'आज से अपने दुष्ट कर्मों को छोड़ दो; मानव रक्त बहाना, चोरी करना और अन्य अन्याय करना बंद करो! पश्चाताप करो और ईश्वर को प्रयि लगने वाले कार्य करो; स्वर्गदूतों की सेवा अपने ऊपर ले लो और अपने शेष जीवन को सदाचार में बतिाओ, और मैं तुम्हें अपनी सेनाओं का नेता और राजकुमार बना दूँगा।'

पैटरमुफयिस ने वादा कयिा कि वह तुरंत और उत्साह के साथ इन आज्ञाओं का पालन करना शुरू कर देगा। तब साक्षात्कार ने उसे संतों की एक पूरी सेना दखिाई और उसे उन पर अधकिार करने की आज्ञा दी।

जब यह सपना अभी भी चल ही रहा था, रात बीत गई और दनि का उजाला हो गया। एक युवती घर की छत पर चढ़ी और वहाँ एक आदमी को सोया हुआ देखकर वह बहुत डर गई। हालाँकि, पैटरमुफयिस चौंककर जाग उठा और युवती को अपने सामने खड़ा देखकर वह एक तरह के स्तब्धता और हैरानी में पड़ गया। जब युवती ने उससे पूछना शुरू कयिा कि वह कौन है, कहाँ से आया है, और वहाँ कसि उद्देश्य से आया है, तो उसने उसके सवालों का कोई जवाब नहीं दयिा, बल्कि केवल उससे ईसाई चर्च का रास्ता दखिाने को कहा। युवती, अपने सामने परमेश्वर के कार्य को प्रकट होते हुए पहचानकर, उसे चर्च ले गई और उसे बुजुर्गों के सामने पेश कयिा।

प्रेस्बटिरों को देखकर, वह उनके पैरों पर गरि पड़ा, आँसू भरी आँखों से उनसे एक ईसाई बनाने और पश्चाताप के मार्ग पर ले जाने का अनुरोध करने लगा। हालाँकि, प्रेस्बटिरों ने उसे पहचान लयिा और हैरान रह गए, और उसके शब्दों पर वश्विास नहीं कयिा, क्योंकि वे उसकी वनितयिों में केवल चालाकी और धोखा देख रहे थे। लेकनि जब वह रोने लगा और अपनी वनितयिों पर अड़ा रहा, तो उन्होंने उससे कहा:

'यदि तुम एक बार और हमेशा के लिए अपने दुष्ट कर्मों से मुँह मोड़ लेते हो, एक अच्छा जीवन जीते हो और अच्छे कर्म करते हो, तो हम तुम्हें ईसाई समुदाय में स्वीकार कर लेंगे।'

उसने जो कुछ भी वे उससे कहेंगे, करने का वादा कयिा, और फरि पुरोहतिों ने उस पर कैटेकुमेनेट (catechumenate)[4974] की रस्म नभिाई और कुछ दनिों बाद उसे बपतस्मिा दयिा। बपतस्मिा के बाद, पैटरमुफयिस ने बुजुर्गों से उसे कोई आज्ञा देने के लिए कहा, जसिका पालन उसे मोक्ष के मार्ग पर बनाए रखेगा, और उन्होंने उसे भजन संहति 1 के पहले तीन छंदों को याद करने की शक्षिा दी। इन छंदों पर मनन करने के बाद, उसने कहा:

'मेरे उद्धार के लिए इतना ही काफी है।'

अपने बपतस्मिा के तीन दनि बाद, वह रेगस्तिान के लिए नकिल पड़ा और वहाँ बहुत समय तक रहा, अपने दनि-रात प्रार्थना और आँसुओं में बतिाते हुए, और वहाँ उगने वाली जड़ी-बूटयिों की जड़ों पर जीवन यापन करते हुए। फरि वह चर्च लौट आया, अब वह न केवल उन तीन छंदों को याद से पढ़ने का आदी हो गया था, बल्कि उन्हें अपने जीवन में उतारने का भी। पुराहतिगण, उस पर आए हुए इस बेहतर परविर्तन और उसकी असाधारण आत्म-अनुशासन को देखकर चकति रह गए, वे उसे अपने साथ रखना चाहते थे ताकि वे उसे पढ़ना सखिा सकें; लेकनि, उनके साथ एक सप्ताह रहने के बाद, वह रेगस्तिान में वापस चला गया और सात साल तक वहीं रहा, अब जड़ों और जड़ी-बूटयिों पर नहीं, बल्कि उस रोटी पर जीवति रहा जो सप्ताह में एक बार ईश्वर द्वारा उसे भेजी जाती थी। हर रवविार उसके सामने एक अदृश्य हाथ द्वारा शुद्ध रोटी रख दी जाती थी, और इस रोटी का धन्यवाद के साथ स्वाद चखने के बाद, वह अगले रवविार तक बनिा भोजन के रहता था और उसे भूख से कोई कमजोरी महसूस नहीं होती थी। ईश्वर ने उसे पुस्तकों को समझने का वरदान भी दयिा, और वह संपूर्ण दविय शास्त्र को कंठस्थ जानता था।

[4974] घोषणा पर एक टप्पिणी के लिए, महान शहीद प्रोकोपयिस का जीवन, 8 जुलाई देखें।

सात साल बाद, ईश्वर की आज्ञा से, आदरणीय पाटरमुफयिस कई लोगों के भले के लिए एक बार फरि से मरुभूमि से सभ्यता में लौटे, और अपने तपस्वी जीवन के माध्यम से कई लोगों को अपनी ओर आकर्षति कयिा। उनके शष्यिों ने हर तरह से उनके गुणों का अनुकरण कयिा।

एक युवक उसका शष्यि बनने की इच्छा से उसके पास आया। पूज्य ने उसे स्वीकार कर लयिा, उसे संन्यासी वस्त्र पहनाए—जसिमें एक रस्सी की कमीज़, एक हुड और एक बकरी का चमड़ा शामलि था, जसिे संन्यासी आमतौर पर 'मलिोट' या 'मलिोटार' कहते हैं—और उसे ईश्वर-प्रसन्न संन्यासी जीवन का ज्ञान दयिा।

रेवरेंड पैटरम्यूफयिस की प्रथा थी कि वे बीमारों से मलिते, उनके प्राण त्यागने के समय उपस्थति रहते और मृतकों को दफनाते थे, तथा उन्हें उनके अंतमि संस्कार के वस्त्र पहनाने का कार्य स्वयं अपने ऊपर लेते थे। मृतकों को दफनाने के मामले में वरष्ठि के ऐसे उत्साह को देखकर, उस युवक ने उनसे कहा:

'पतिाजी! मैं चाहता हूँ कि जब मैं मरूँ तो आप मुझे कपड़े पहनाएँ और मुझे दफ़नाएँ।'

पति ने उत्तर दयिा:

'मैं ऐसा ही करूँगा, मेरे बच्चे, और मैं तुम्हें तब तक कपड़े पहनाता रहूँगा जब तक तुम स्वयं न कहो: "बस।"'

कुछ ही समय बाद, वह युवा भक्षिु नधिन कर गया; वरष्ठि ने, रीति के अनुसार उसे अंतमि संस्कार के वस्त्रों में लपेटकर और उसका चेहरा ढककर, कहा:

'क्या यह तुम्हारी अंत्येष्टि के लिए पर्याप्त है, मेरे बच्चे, या क्या मैं कुछ और जोड़ूँ?'

तब मृतक ने, सभी को सुनाई देने वाली आवाज़ में, उत्तर दयिा:

'इतना ही काफी है, पतिाजी!'

वहाँ मौजूद सभी लोग इस चमत्कार से चकति रह गए और उन्होंने उस वरष्ठि की एक चमत्कारी व्यक्ति के रूप में प्रशंसा करना शुरू कर दयिा। लेकनि वह उनकी प्रशंसा सहन न कर सके और मृतक के अंतमि संस्कार के तुरंत बाद, सभी से गुप्त रूप से, रेगस्तिान में चले गए।

हालाँकि, कुछ समय बाद, साधु अपने उन भाइयों से मलिने के लिए एक बार फरि लौटे, जनिके लिए वे मठवासी जीवन में मार्गदर्शक थे। उस समय ईश्वर द्वारा उन्हें यह प्रकट कयिा गया कि एक भाई, जो एक गाँव के पास एक एकांती आश्रम में रहता था, घातक रूप से बीमार पड़ गया था, और पूज्यनीय उसे देखने के लिए जल्दी से चले गए। चूंकि वहाँ का सफर काफी लंबा था, इसलिए पूज्यनीय मार्ग में देरी हो गए। सूरज पहले ही ढल रहा था, और संत उस समय रात में उस गाँव का रास्ता नहीं लेना चाहते थे, प्रभु के वचन का पालन करते हुए: *'दनि में चलो, कहीं ऐसा न हो कि अँधेरा तुम पर छा जाए'* (यूहन्ना 12:35), और यह भी: *'जो दनि में चलता है, वह ठोकर नहीं खाता'* (यूहन्ना 11:9)। फरि, वश्विास की शक्ति से प्रेरति होकर, संत ने आधी डूब चुकी सूर्य की ओर मुड़कर ये शब्द कहे:

'हमारे प्रभु यीशु मसीह के नाम पर, हे सूर्य, अपने मार्ग में ठहर जा और तब तक प्रतीक्षा कर जब तक मैं गाँव में प्रवेश न कर लूँ।'

और सूर्य, जो आधा डूब चुका था, स्थरि हो गया और अपनी आधी रोशनी से ही चमकता रहा, जब तक कि संत गाँव में प्रवेश नहीं कर गए। उस गाँव के नविासयिों ने यह देखकर आश्चर्य कयिा कि सूर्य इतनी देर तक नहीं डूब रहा था, और वे गाँव के केंद्र में इकट्ठा होकर उस चमत्कार को नहिारने लगे। कुछ समय बीता, और उन्होंने रेगस्तिान से अपने गाँव में आदरणीय पाटरमुफयिस को आते देखा; और, उनसे मलिकर, उन्होंने उनसे सूर्य के चमत्कारकि रूप से रुकने का कारण पूछा। उन्होंने उनसे कहा:

'क्या तुम्हें प्रभु के वचन याद नहीं, जो सुसमाचार में हैं और हमें वश्विास रखने की शक्षिा देते हैं? *"यदि तुममें सरसों के दाने के बराबर भी वश्विास हो,"* तो तुम पहाड़ों को भी हलिा सकते हो (मत्ती 17:20)। जो व्यक्ति वश्विास से पहाड़ों को हलिा सकता है, वह उसी वश्विास से सूरज को उसके मार्ग में रोक भी सकता है।'

जब उन्होंने यह कहा, तो सभी को एहसास हुआ कि उनके लिए ही सूर्य रुक गया था; ठीक उसी समय सूर्यास्त हो गया था जब वह गाँव में प्रवेश कयिा था। तब, वस्मिति होकर, वे सभी उस बूढ़े के सामने झुक गए और उसके बीमार भाई से मलिने के लिए नकिलते समय उसका अनुसरण करने लगे। अपनी कोठरी में प्रवेश करते ही, पादरी ने पाया कि वह प्रभु में पहले ही नधिन कर चुके थे। उन्होंने एक प्रार्थना की, उनके पास गए, उनके शरीर को चूमा, और कहा:

'भाई, आपको क्या अधकि प्रसन्न करेगा—हमसे बछिुड़ने के बाद मसीह के साथ जीना, या थोड़ी देर और देह में हमारे साथ रहना?'

मृत व्यक्ति तुरंत जीवित हो उठा, उसने अपनी आँखें खोलीं, अपने बिस्तर पर बैठ गया और कहा:

'पिताजी, आपने मुझे फिर से जीवित क्यों कर दिया? मेरे लिए मसीह के पास जाकर उनके साथ रहना बेहतर है; मैं अब शरीर में जीना नहीं चाहता!'

तब वृद्ध ने उससे कहा:

'तो फिर चैन से रहो, और मेरे लिए प्रार्थना करना!'

और वह लेट गया और एक बार फिर विश्राम करने लगा।

उपस्थित सभी लोग विस्मित हो गए और उन्होंने कहा:

– सचमुच, यह ईश्वर का पुरुष है।

आदरणीय पादरी ने, मृतक के शरीर को दफ़नाने के लिए तैयार करने के बाद, पूरी रात भजन गाते हुए बिताई; और सुबह, उसे सम्मान के साथ सुलाने के बाद, वे वहाँ से चले गए।

एक अन्य अवसर पर, रेवरेंड एक अन्य भाई से मिलने गए जो भी घातक रूप से बीमार था। यह देखकर कि बीमार व्यक्ति अपने पापों के कारण मृत्यु से डरता था, उन्होंने उससे कहा:

'बेटा, तुम जाने के लिए तैयार क्यों नहीं हो? मुझे ऐसा लगता है कि तुम्हारा अंतरात्मा, तुम्हारा अभियोजक, तुम्हारे साथ वहाँ जाना चाहता है।'

बीमार व्यक्ति ने कहा:

'मैं आपसे विनती करता हूँ, पिताजी, मेरे लिए ईश्वर से प्रार्थना करें, कि वह मुझे पश्चाताप के लिए थोड़ा समय दे।'

बड़े भाई ने उत्तर दिया:

'अब तुम पश्चाताप के लिए समय माँग रहे हो, लेकिन बीते हुए समय का क्या? एक भिक्षु के रूप में अपने दिनों में तुमने क्या हासिल किया? न केवल तुम अपने पुराने घावों को भरने में असफल रहे, बल्कि तुमने उनमें और भी घाव जोड़ दिए।'

तथापि, उस बीमार ने आँसुओं के साथ बूढ़े से अपने लिए प्रभु से प्रार्थना करने का विनय करना नहीं छोड़ा। और तब बूढ़े ने कहा:

– यदि अब से तुम एक बुराई पर दूसरी बुराई नहीं जोड़ोगे, तो हम तुम्हारे लिए प्रार्थना करेंगे। प्रभु, जो मानवता से प्रेम करते हैं, भले और धैर्यवान हैं, और तुम्हें अपने पापों से शुद्ध होने के लिए कुछ समय देंगे।

यह कहकर, वह प्रार्थना करने के लिए घुटनों के बल बैठ गया; और अपनी प्रार्थना के बाद, वह उठा और उस बीमार से कहने लगा:

'प्रभु तुम्हें पृथ्वी पर और तीन वर्ष जीने का समय देते हैं – बस सच्ची पश्चाताप दिखाओ!'

और उसे हाथ से पकड़कर, पूजनीय पिता ने उसे उठा दिया, जो अब स्वस्थ था, और उसे अपने साथ रेगिस्तान में ले गए।

तीन साल बाद, वह उसके साथ भाइयों के पास लौटा और उसे परमेश्वर के स्वर्गदूत के रूप में उनके सामने प्रस्तुत किया। कई भाई रेवरेंड फादर के मीठे शब्दों को सुनने के लिए इकट्ठा हुए, और उन्होंने वहाँ उन्हें पश्चाताप के फलों के बारे में बताया। बातचीत मैटिन्स तक चलती रही, और इस बातचीत के दौरान वह भाई, अपने तीन साल के पश्चाताप के समय को पूरा कर चुका था, झपकी लेने लगा और बिना किसी बीमारी या डर के, अपनी आत्मा ईश्वर के हाथों में सौंप दिया, जैसे कि वह एक मीठी नींद में सो गया हो।

आदरणीय पाटरमुफियस के बारे में यह भी बताया जाता है कि उन्होंने कई मौकों पर नदी नील को पानी की सतह पर पार किया। और एक बार, जब भाईचारे के कई सदस्य एक ही कोठरी में इकट्ठा हुए थे और दरवाज़े बंद करके, आत्मा के उद्धार पर चर्चा कर रहे थे, तो संत उनके बीच खड़े हो गए, ठीक वैसे ही जैसे प्रभु मसीह एक बार प्रेरितों के बीच खड़े हुए थे। चमत्कार करने में आदरणीय पाटरमुफियस की महानता ऐसी थी, क्योंकि वे ईश्वर की कृपा से परिपूर्ण थे। उन्होंने ईश्वर की सेवा में कई वर्ष बिताए और फिर प्रभु के पास चले गए[4975] ।

[4975] आदरणीय पाटरमुफियस की मृत्यु चौथी शताब्दी में हुई।

आदरणीय कोप्रयिस की स्मृति

9 जुलाई को स्मरणोत्सव

संत कोप्रयिस, जो संत पैटरम्यूफयिस के प्रत्यक्षदर्शी और उनके चमत्कारों के वृत्तांतकार थे, ने प्रेस्बटिर (पादरी) का पद संभाला और उन्हें ईश्वर से चमत्कार करने की कृपा भी प्राप्त थी। वे मस्रि के उन्हीं क्षेत्रों में रहते थे, जहाँ वे लोगों के वभिन्नि रोगों को ठीक करते और दुष्ट आत्माओं को भगाते थे। एक बार, जब वह अपने चारों ओर इकट्ठा भाइयों से उनकी आत्माओं के लाभ के लिए बात कर रहे थे—उन्हें पूज्य पातरमुफयिस और अन्य संतों के जीवन के बारे में बता रहे थे—तो एक भाई, उनके बयानों पर वश्विास न करते हुए, ने उनकी बात पर ध्यान नहीं दयिा और झपकी लेने लगा। लेकनि जब वह सो रहा था, तो उसने संत कोप्रयिस के हाथों में सुनहरे अक्षरों में लखिी एक कतिाब देखी, जसिसे वह भाइयों को कुछ बता रहे थे। उनके बगल में सम्मानजनक रूप वाला एक तेजस्वी व्यक्तखिड़ा था, जसिके सरि पर सफेद बाल थे। उस व्यक्तनि े सो रहे भाई की ओर कठोर दृष्टसि े देखते हुए कहा:

'जो कहा जा रहा है उस पर तुम वश्विास क्यों नहीं करते, और बनिा सुने ही क्यों सो जाते हो!'

उस भाई ने, सपने से चौंककर जागते ही, तुरंत दूसरों को वह सब कुछ बताया जो उसने देखा था, और उस समय से उसने संत कोप्रयिस के सभी प्रवचनों को श्रद्धा और ध्यान से सुना।

एक दनि, कुछ भटकते हुए भक्षिु रेवरेंड फादर के पास उनकी आत्मा के मोक्ष पर प्रवचनों को सुनने के लिए ठहरे हुए थे। उसी समय, एक ग्रामीण रेत से भरा एक पात्र लेकर कोठरी के दरवाज़े पर आया और बड़े भैया के प्रवचन समाप्त होने का इंतज़ार करने लगा। भाइयों ने उस आदमी और रेत को देखकर बड़े भैया से पूछा:

'यह रेत यहाँ क्यों लाई गई है?'

वरष्ठि ने उत्तर दयिा:

'मेरे बच्चों, मुझे तुम्हें इसके बारे में नहीं बोलना चाहिए, कहीं ऐसा न हो कि मैं ईश्वर के कार्यों का बखान करने लगूँ और अपने श्रम का फल खो दूँ। लेकनि चूँकि मैं देखता हूँ कि आप हम तक पहुँचने के लिए एक लंबा और कठनि सफर तय करके आए हैं, मैं यह आपसे नहीं छपिाऊँगा; बल्कि, आपके लाभ के लिए, मैं आपको परमेश्वर के उन कार्यों के बारे में बताऊँगा जन्हिें उन्होंने हम पापयिों के माध्यम से करने की कृपा की है। हमारे पास स्थति उस गाँव की भूमि अत्यंत बंजर थी, और खेतों में बोया गया अनाज मुश्कलि से बोए गए बीज के बराबर ही उपज देता था। एक वशिेष प्रकार का कीड़ा अंकुरों को खा जाता था और मकई की बालयिों को पकने से पहले ही चट कर डालता था। उस गाँव के सभी नविासी मूर्तपिूजक थे, लेकनि ईश्वर की कृपा से, हमने उन सभी को पवत्रि धर्म में परविर्तति कयिा और उनका बपतस्मिा कयिा। ईसाई बनने के बाद, वे हमारे पास आए और हमसे वनिती करने लगे कि हम उनके लिए हमारे ईश्वर मसीह से प्रार्थना करें, ताकि वह उनकी भूमि को उपजाऊ बना दें। हमने उनसे कहा:

'हम प्रार्थना करेंगे, लेकनि तुम्हारा ईश्वर में अटूट वश्विास होना चाहिए।'

तब उन्होंने दृढ़ वश्विास बनाए रखने का वादा कयिा और, उसी जमीन से अपनी छाती में रेत भरकर जहाँ हमारे पापी पैर पड़े थे, मुझसे प्रभु के नाम पर इस रेत को उनके लिए आशीर्वाद देने के लिए कहने लगे, मानो यह बीज हो। मैंने उनसे कहा:

'जैसा तुम्हारा वश्विास है, वैसा ही हो!'

जब वे घर लौटे, तो उन्होंने उस रेत को अनाज के बीजों के साथ मलिाया और उसे खेतों में बो दयिा। और फरि अनाज की इतनी भरपूर फसल हुई जैसी मस्रि के कसिी भी हस्सि े में नहीं मलिती। तब से, हर साल कसिान हमारे पास आते हैं और हमें आशीर्वाद के लिए रेत लाते हैं। उनका वश्विास उन पर सच्चा उतरता है, और उनकी हमेशा फसल होती है।

आदरणीय कोप्रयिस, एक बार मनीकयि संप्रदाय के वधिर्मी ई[4976] के साथ धर्म के वषिय में सार्वजनकि बहस में उतरने के बाद, और यह देखकर कि वे अपने वनिम्र और सौम्य शब्दों से उस घमंडी और दंभी व्यक्तको परास्त नहीं

[4976] मनीकवाद एक वधिर्मी मथि्या सद्धिांत है, जो ईसाई धर्म और पारसी धर्म ज़राथुष्ट्र के तत्वों का मश्रिण है। मनीकवाद के संस्थापक मनीस थे, जो एक पारसी पुरोहति थे। मनीस ने उपदेश दयिा कि आदकिाल से ही दो स्वतंत्र राज्याधकिार क्षेत्र मौजूद हैं – अच्छाई और बुराई के – जो एक-दूसरे के साथ नरिंतर संघर्ष में हैं। मेनेस की शक्षिा के अनुसार, मनुष्य भी दो तत्वों - प्रकाश और अंधकार - के संयोजन से बना है और उसमें,

कर पा रहे थे, उन्होंने अपने धर्म की सच्चाई को कर्म के माध्यम से प्रदर्शित करने की इच्छा की। उसने एक बड़ी आग जलाने का आदेश दिया और उस विधर्मी को वहाँ आने के लिए बुलाया, ताकि यह स्पष्ट हो सके कि किसका धर्म सत्य है: 'जो जलता नहीं है,' संत ने कहा, 'वही सच्चा विश्वासी है।' मनीकियि ने उससे कहा:

'पहले तुम अंदर जाओ!'

संत आग में प्रवेश कर गए, लेकिन लपटें उनके सामने दोनों ओर से हट गईं, और वे आधे घंटे तक कोयलों पर इस तरह खड़े रहे जैसे घास पर हो, उन्हें कोई नुकसान नहीं हुआ; वे लपटों से बिना किसी चोट के बाहर निकले - आग ने उनके कपड़ों को भी नहीं छुआ था। यह देखकर लोग बहुत चकित हुए और उन्होंने मसीह ईश्वर की स्तुति की। विधर्मी ने, हालांकि, प्रवेश करने से इनकार कर दिया, लेकिन लोगों ने उसे आग में फेंक दिया और वह तुरंत ही उसमें जलने लगा। फिर भी, पूरी तरह से झुलस जाने के बाद, वह आग से कूदकर बाहर निकलने में कामयाब रहा और भाग गया। लोगों ने उसे पकड़ लिया और चिल्लाए:

'मूर्तिभंजक को जला दो!'

आदरणीय कोपेरियिन ने भीड़ के उत्साह को शांत किया और विधर्मी को, जो जलते अंगारे की तरह झुलसा हुआ था, मुक्त कर दिया।

उनके कोठरी के पास, एल्डर का एक छोटा सा बगीचा था; इस बगीचे में वे अनाज और फल उगाते थे, जो उनके पास आने वाले यात्रियों के लिए भोजन का काम करते थे। हालाँकि, एक मूर्तिपूजक रात में इस बगीचे में घुसा और जितना फल वह उठा सकता था, उतना चुरा ले गया; घर लौटने पर, उसने उसमें से कुछ को आग पर एक बर्तन में उबालना शुरू कर दिया। लेकिन तीन घंटे से अधिक समय बीत गया, बहुत सारी लकड़ी जल गई, और न तो फल पके थे, और न ही बर्तन का पानी गर्म हुआ था। इस असाधारण घटना से चोर बहुत हैरान हो गया, और अपने पाप को महसूस करते हुए तथा ईसाइयों में मसीह की शक्ति को पहचानकर, उसने जो कुछ भी चुराया था—और यहाँ तक कि जो कुछ पहले से ही बर्तन में था—सब लेकर वृद्ध के पैरों पर रख दिया, और अपने द्वारा किए गए चोरी का कबूलनामा किया। साथ ही, उसने बुजुर्ग से क्षमा मांगी और उनसे उसे ईसाई बनाने का आग्रह किया। ऐसा हुआ कि उस समय बुजुर्ग के पास कई तीर्थयात्री ठहरे हुए थे; वे सभी उस व्यक्ति के मसीह में चमत्कारिक परिवर्तन पर आनंदित हुए, उन फलों में से खाया और परमेश्वर का धन्यवाद किया। इन चमत्कारों के अलावा, पूजनीय कोप्रियिस ने मसीह की कृपा से कई अन्य चमत्कार किए और शांतिपूर्वक निधन किया[4977] । उन्हें हमारे प्रभु यीशु मसीह के राज्य में पूजनीय पाटरमुफियिस के साथ एक स्थान प्रदान किया गया, जिनके लिए पिता और पवित्र आत्मा के साथ युगानुयुग सम्मान और महिमा हो। आमीन।

हमारे पवित्र पिता थियोडोर, एडेसा के बिशप का जीवन

9 जुलाई को स्मरण किया जाता है

एदेसा नगर में[4978] एक सिमोन नामक व्यक्ति था, जिसकी पत्नी का नाम मरियम था। वे दोनों धर्मपरायण, ईश्वर-भयभीत थे, और उन्होंने ईश्वर की आज्ञाओं का निष्ठापूर्वक पालन किया। चूँकि वे धनी थे, इसलिए उन्होंने गरीबों को उदारतापूर्वक दान दिया। उनकी केवल एक बेटी थी, और वे बहुत अधिक एक पुत्र चाहते थे। इसलिए, वे उपवास और प्रार्थना करते हुए, एक पुत्र के लिए ईश्वर से प्रार्थना करते हुए, ईश्वर के विभिन्न चर्चों की यात्रा पर गए।

एक दिन पवित्र लेंट के दौरान, विशेष रूप से महा-लेंट के पहले सप्ताह के शनिवार को, जब पवित्र महा-शहीद थियोडोर टायरॉन की स्मृति मनाई जाती है, वे दोनों प्रातःकालीन प्रार्थना के लिए पवित्र प्रेरितों के चर्च में भेंटों के साथ आए। प्रार्थना सभा के दौरान, एक ही समय पर उन दोनों पर एक प्रकार की नींद छा गई, और प्रत्येक को, अलग-अलग,

---

मानो, दो आत्माएँ - एक अच्छी और एक बुरी - होती हैं, जो लगातार एक-दूसरे से लड़ती रहती हैं। – अपने दैनिक जीवन में, मनीकियों का जीवन अत्यंत तपस्वी जैसा था: वे ब्रह्मचर्य और निरंतर उपवास का उपदेश देते थे। – तीसरी और चौथी शताब्दी में मनीकवाद काफी व्यापक था।

[4977] प्रतिष्ठित कोप्रियिस का निधन चौथी शताब्दी में हुआ।

[4978] एडेसा (अब उरफा) शहर मेसोपोटामिया के उत्तरी भाग में, फरात नदी के किनारे स्थित था। – चौथी शताब्दी में, यहाँ संत एफ्रेम द सीरियन द्वारा एक धर्मशास्त्रीय विद्यालय की स्थापना की गई थी। 641 में एडेसा पर अरबों ने विजय प्राप्त की; 1098 में इसे काउंट बाल्डविन ने जीत लिया, जिसने इसे एडेसा की रियासत की राजधानी बना दिया; 1144 में इस पर तुर्कों ने विजय प्राप्त की और उस समय से यह एक के हाथ से दूसरे के हाथ में बदलती रही, जब तक कि 1637 में यह अंततः तुर्की के शासन में नहीं आ गई।

एक दर्शन मिला। उन्होंने संत पौलुस प्रेरित को संत थियोडोर टायरन महान शहीद के साथ चर्च में खड़े देखा। महान शहीद ने पवित्र प्रेरित से सिमोन और मरियम की ओर अपनी उंगली दिखाते हुए कहा:

'देखो, प्रभु के ये शिष्य, ईश्वर से एक पुत्र की प्राप्ति के लिए विनम्रतापूर्वक निवेदन कर रहे हैं। ईश्वर के समक्ष उनके लिए मध्यस्थता करो, ताकि उनकी प्रार्थना स्वीकार हो जाए और कलीसियाओं को उनकी भेंट तथा उनके दान का प्रतिफल मिले।'

और उन्होंने देखा कि प्रेरित ने उनके गोद में एक नर शिशु को रखा, यह कहते हुए:

'देखो, अब तुम्हारा एक पुत्र है!'

तब महा-शहीद ने कहा:

'उसका नाम थियोडोर हो, क्योंकि सचमुच यह शिशु God[4979] की ओर से एक उपहार होगा।'

इस दर्शन के बाद, और मैटिन्स के अंत में, उन्होंने एक-दूसरे को अपने-अपने दर्शन के बारे में बताया और इस बात पर आश्चर्यचकित हुए कि दोनों ने बिल्कुल एक ही चीज देखी थी। उन्होंने एक पुत्र के गर्भधारण के संकेत के रूप में इस घटना को देखकर ईश्वर का धन्यवाद किया, और आनंद के साथ घर लौट आए। जब मरियम गर्भवती हुईं, तो उन्होंने पूर्ण संयम का पालन किया, क्योंकि उन्होंने अपने भीतर उसी को धारण किया था जो पवित्र आत्मा का पात्र बनने वाला था।

जब समय आया, तो उनके यहाँ एक पुत्र हुआ, जिसका नाम उन्होंने महा शहीद की इच्छानुसार थियोडोर रखा, और जिसका उन्होंने बपतिस्मा कराया। बच्चा बड़ा हुआ, और उसके माता-पिता ने उसे स्कूल भेजा। लेकिन यह पता चला कि लड़का सीखने के लिए नहीं बना था - उसकी याददाश्त कमजोर थी और वह अपने पाठों को समझने में सुस्त था। हालाँकि, इसमें ईश्वर की विशेष व्यवस्था का काम था, जो चाहते थे कि लड़के को ज्ञान पुरुषों द्वारा नहीं, बल्कि प्रभु की कृपा से प्राप्त हो। लड़के को अक्सर उसके माता-पिता और उसके शिक्षकों द्वारा डाँटा जाता था, जबकि उसके साथी उसका मज़ाक उड़ाते थे; और कुछ समय बाद, उसने ईश्वर से मार्गदर्शन लेने का संकल्प लिया। वह अक्सर चर्च जाने लगा और भक्तिपूर्वक प्रार्थना करने लगा।

एक दिन, दिव्य प्रेरणा से प्रेरित होकर, रविवार को दिव्य अनुष्ठान से पहले, वह चर्च आया और पवित्र वेदी के नीचे छिप गया। किसी ने इस पर ध्यान नहीं दिया; बिशप ने दिव्य अनुष्ठान शुरू किया, जबकि लड़का थियोडोर वहीं सो गया और पूरी सेवा तक सोता रहा। और सोते समय उसे एक दर्शन हुआ। उसने एक छोटे लड़के को देखा, जो देखने में उसकी ही उम्र का था और जो सूरज की तरह चमक रहा था, उसने उसे शहद का रस पिलाया और उसके हाथों में एक गड़रिये की लाठी देकर उसे आशीर्वाद दिया। इस दर्शन के बाद, थियोडोर अपनी नींद से जागा और वेदी के नीचे से बाहर निकला। बिशप और वेदी में उनके साथ मौजूद लोग, उसे देखकर चकित हो गए और उन्होंने उससे पूछा कि वह वहाँ कैसे आया। उसने उन्हें अपने बारे में और अपने द्वारा देखे गए दर्शन के बारे में सब कुछ बता दिया। बिशप विस्मित हो गए और उन्होंने तुरंत उस युवक को अपने पुरोहित वर्ग में शामिल कर लिया, तथा उसे रीडर का पद सौंपा। उस समय से, थियोडोर तेज-तर्रार और एक उत्सुक शिक्षार्थी बन गया, जिसने अपनी बुद्धि से न केवल अपने समकालीनों बल्कि अपने से बड़े लोगों को भी पीछे छोड़ दिया।

वह धर्मनिरपेक्ष और धार्मिक दोनों तरह के विज्ञानों में निपुण था, जिनका उसने सोफ्रोनीउस नामक एक दर्शनशास्त्र शिक्षक के अधीन अध्ययन किया था, जो उस समय एडेसा में प्रसिद्ध थे और जिन्होंने थोड़े ही समय में थियोडोर को सभी विषयों की पूरी शृंखला सिखा दी।

जब थियोडोर अठारह वर्ष का हुआ, तो उसके पिता, सिमियन का निधन हो गया, और एक साल बाद, उसकी माँ, मैरी का भी निधन हो गया। फिर थियोडोर ने अपने माता-पिता से विरासत में मिली बड़ी संपत्ति को गरीबों में बाँट दिया, और अपनी विवाहित बहन के लिए केवल एक हिस्सा अलग रखा। इस बहन का एक बेटा, बेसिल था, जिसे एमेसा शहर में बिशप नियुक्त किया गया था और वह परम पूज्य थियोडोर के इस जीवन का लेखक था।

अपने माता-पिता की मृत्यु के बाद, बीस वर्ष की आयु में, धन्य थियोडोर यरूशलेम के लिए रवाना हुए। पवित्र सेपल्चर को नमन करने और सभी पवित्र स्थानों का भ्रमण करने के बाद, वह पूज्य सव्वस के मठ में पहुँचे, जिसका उस समय नेतृत्व बाबा जॉन कर रहे थे, और वहाँ एक दैवी जीवन शैली अपनाने के बाद, उन्होंने तपस्या में खुद को समर्पित

[4979] थियोडोर, जिसका ग्रीक में अर्थ है 'ईश्वर द्वारा दिया गया'।

कर दिया और सभी प्रकार के मठवासी कर्तव्यों को निभाया, तथा बारह वर्षों तक सभी मठवासी सेवाओं में लगन से भाग लिया। तब उन्होंने मठाधीश से विनती की कि उन्हें एक अलग कोठरी में अकेले, मौन में रहने की अनुमति दें, और जब उन्हें ऐसी एक कोठरी मिल गई, तो उन्होंने अपना समय मौन में, ईश्वर की सेवा करते हुए बिताया। उनके भोजन में सूर्यास्त के बाद एक छोटा सा रोटी का टुकड़ा और थोड़ा सा पानी होता था, और वह भी हर दिन नहीं। कभी-कभी वह दो या तीन दिनों तक बिना भोजन के रहता था; कई मौकों पर वह लंबे समय के लिए जॉर्डन के रेगिस्तान में चला जाता था, जहाँ वह बिना रोटी और पानी के दिन-रात बिताता था, लगातार प्रार्थना करता था जैसे वह निराकार हो, और फिर एक बार फिर अपनी कोठरी में लौट आता था। उन्होंने चौबीस साल ऐसे तपस्वी कारनामों में बिताए, और उनके इसी तपस्वी जीवन के बारे में उनके एक रिश्तेदार—एडेसा शहर के माइकल नामक एक युवक—ने सुना; वह उनके गुणों की नकल करने की इच्छा से थियोडोर के पास आया। थियोडोर ने उनका स्वागत किया, उनका मुंडन कराया, और उन्हें एक शिष्य, साथी तपस्वी और साथी के रूप में अपने पास रखा। माइकल ने अपनी ओर से टोकरियाँ, थालियाँ और अन्य वस्तुएँ बुनना सीख लिया, जिन्हें वह अपने गुरु के निर्देश पर बेचने के लिए पवित्र नगर यरूशलेम ले जाता था; फिर वह इन बिक्रियों से प्राप्त आय अपने आध्यात्मिक पिता, थियोडोर के पास ले आता था, जो उन्हें मठ में भेज देते थे ताकि मठ से मुफ्त में भोजन न लें।

उन दिनों, फिलिस्तीन और फिनिसिया अब यूनानी राजाओं के शासन में नहीं थे, बल्कि सारासेनों के शासन में थे[4980]; क्योंकि वहाँ के निवासियों के पापों के कारण, ईश्वर की अनुमति से, वे सारासेन राजाओं के अधीन थे। ईसाइयों ने भारी कर चुकाकर ही अपनी जान और धर्म की स्वतंत्रता बचाई रखी थी। फिर भी, उसी समय, प्रभु ने पवित्र सेपल्चर पर चिह्न और आश्चर्य करके विश्वासियों को सांत्वना दी, जिसने मसीह के निंदकों, एगारियों को चुप करा दिया। कई अरब बुजुर्ग मसीह की कब्र को देखने के लिए दूर-दूर से यरूशलेम आए, और वहाँ उन्होंने ईसाई धर्मगुरु और अन्य पवित्र पुरुषों को श्रद्धांजलि अर्पित की, साथ ही यरूशलेम के निवासियों के प्रति विभिन्न प्रकार की दयालुता दिखाई। उस समय, सारसेन राजा अद्रामेलेक, अपनी पत्नी सेइदा के साथ, बेबीलोन से यरूशलेम के लिए रवाना हुआ[4981] ताकि वह मसीह की कब्र और वहाँ हो रहे चमत्कारों को देख सके। अद्रमेलेख एक सौम्य व्यक्ति था जो ईसाइयों के साथ अन्याय नहीं करना चाहता था - हालाँकि वह उन पर कर तो लगाता था। उसे विद्वानों के साथ आस्था के मामलों पर चर्चा करना पसंद था, और वह अपनी ही लोगों की मान्यताओं के अनुसार बात करता था। जब वह अभी भी पवित्र नगर में था, तब आदरणीय थियोडोर के शिष्य और संबंधी, धन्य माइकल, उनकी आज्ञा पर अपनी हस्तशिल्प वस्तुएँ बेचने के लिए पवित्र नगर आए और शहर में स्थित आदरणीय सावस के मठ से संबंधित सराय में ठहरे। सबसे पहले वह पवित्र सेपल्चर और पवित्र गोलगोथा[4982] की पूजा करने गया, और फिर अपनी हस्तशिल्प के साथ बाज़ार गया। वहाँ उसकी मुलाकात रानी सेइदा के एक खसासे से हुई। सुंदर टोकरियाँ और थालियाँ देखकर, खसासे ने ऐसी खूबसूरत कारीगरी पर आश्चर्य व्यक्त किया और उससे कहा:

'मेरे साथ चलो, युवक – तुम्हें अपने सभी सामान के लिए अच्छी कीमत मिलेगी।'

माइकल एक कोमल मेमने की तरह उसका अनुसरण करते हुए नई मिस्र की महिला के घर के दरवाजे तक पहुँच गया[4983]। नपुंसक ने रानी को बताया कि एक भिक्षु कुछ बहुत ही सुंदर वस्तुएँ बेच रहा है, और रानी ने तुरंत आदेश दिया कि भिक्षु को उसके सामने लाया जाए। जब धन्य माइकल उसकी उपस्थिति में प्रवेश किया, तो उस दुष्ट महिला ने उस युवा भिक्षु के लिए एक अशुद्ध जुनून महसूस किया। वह वास्तव में, चेहरे से सुंदर और चाल-ढाल में गरिमामय था; उसकी ठोड़ी पर हल्की दाढ़ी उगनी शुरू हो रही थी, वह निरंतर उपवास के कारण दुबला और पीला पड़ा हुआ था, और, इसके अलावा, उसका बाहरी गरिमामय रूप उसकी सदाचारी आत्मा की आंतरिक सुंदरता को प्रतिबिंबित करता था। उस पर

[4980] सारासेन – अरब के निवासी। मूल रूप से, यह नाम एक खानाबदोश डाकू जनजाति को संदर्भित करता था, लेकिन बाद में ईसाई लेखकों ने इस शब्द को सामान्य रूप से सभी मुसलमानों पर लागू कर दिया।

[4981] बाबेल – दुनिया के सबसे पुराने शहरों में से एक, जिसे हम् के वंशज कुश के पुत्र निम्रोद ने बनाया था (उत्पत्ति 10:6–10)। बाबेल फरात नदी के दोनों किनारों पर, फारस की खाड़ी से बहुत दूर नहीं, स्थित था। यह भारत और फिनिसिया के बीच एक प्रमुख व्यापार मार्ग पर था और इसलिए यहाँ समुद्र और ज़मीनी मार्ग से बड़े पैमाने पर व्यापार होता था।

[4982] गोलगोथा यरूशलेम के पास (उसके उत्तर-पश्चिम में) स्थित एक पहाड़ी है। इसी पहाड़ी पर हमारे प्रभु यीशु मसीह को सूली पर चढ़ाया गया था। गोलगोथा एक हिब्रू शब्द है जिसका, हमारी भाषा में अनुवाद करने पर, अर्थ 'खोपड़ी' या 'खोपड़ी का स्थान' होता है। इस पहाड़ी को यह नाम या तो इसलिए दिया गया था क्योंकि इसका आकार खोपड़ी जैसा था, या क्योंकि यह यहूदियों के लिए फांसी का स्थान था। आज, चर्च ऑफ़ द होली सेपल्चर इसी स्थान पर स्थित है।

[4983] बाइबिल के इतिहास में एक समान घटना का उल्लेख मिलता है (उत्पत्ति 39:1–23)।

अपनी दृष्टि टिकाकर, रानी वासना से भर गई और उससे पूछने लगी कि वह कौन है और कहाँ से आया है। उसने उत्तर दिया:

'मैं संत सावा के मठ का एक विनम्र भिक्षु हूँ।'

रानी ने उससे कहा:

'मैं देख सकती हूँ, युवक, कि तुम पीले और दुबले हो; मुझे तुम पर दया आती है और मैं तुम्हारा कुछ भला करना चाहती हूँ। अगर तुम किसी के गुलाम हो, तो मैं तुम्हें आज़ाद कर दूँगी; अगर बंदी हो, तो मैं तुम्हारा फिरौती देकर छुड़ा लूँगी; अगर बीमार हो, तो मैं तुम्हारा इलाज करूँगी; अगर बेसहारा हो, तो मैं तुम्हें अमीर बना दूँगी।'

पवित्र माइकल ने, उसकी चापलूसी भरी बातें सुनकर, उसके कपटपूर्ण इरादों को भाँप लिया और अपना हृदय ईश्वर की ओर मोड़कर तथा अपनी आध्यात्मिक दृष्टि उनकी ओर उठाकर, इन शब्दों के साथ मौन रूप से प्रार्थना की:

'हे प्रभु, मानवजाति के प्रेमी, बंदियों के उद्धारकर्ता और निराशों की आशा! आपने अपने भविष्यवक्ता दानियेल को सिंहों के जबड़ों से बचाया (दानियेल 14:37–52), उसी प्रकार इस घोर सिंहनी से भी मुझे इसी घड़ी बचा लीजिए, जो मेरी आत्मा को निगलने और जीवित ही नरक में खींच ले जाने की साजिश रच रही है!'

तब उसने रानी से कहा:

– मैं कभी संसार के प्रति अपने प्रेम का दास था, लेकिन मेरे प्रभु मसीह ने अपनी कृपा से मुझे इससे मुक्त किया। मैं पाप का दास था, लेकिन मेरे प्रभु, जिन्होंने स्वयं सेवक का रूप धारण किया, ने मुझे स्वतंत्र किया। उन्होंने मुझे बीमार पाया, मेरी दुर्बलताओं को दूर किया, और मुझे पूरी तरह से स्वस्थ कर दिया। मैं गरीब और बेसहारा था, लेकिन परमेश्वर का पुत्र, जिसके पास असीम धन-संपत्ति है, मेरे लिए गरीब हो गया और मुझे शब्दों से परे धनी बना दिया, ताकि अब मुझे किसी चीज़ की कमी न हो और मुझे आपसे कुछ भी चाहिए नहीं। मेरे पास स्वयं धन-संपत्ति, स्वास्थ्य, स्वतंत्रता है और मेरे उद्धारकर्ता की दया से, मेरे पास हर तरह के कई आशीर्वाद हैं।

– हे युवक, यदि तुम मेरे मित्र बन जाओगे, तो तुम अनेक आशीषों का आनंद उठाओगे; बहुत से लोग तुमसे ईर्ष्या करेंगे, और तुम बहुतों के स्वामी बनोगे।

संत माइकल ने उत्तर दिया:

– मैं अपने प्रभु मसीह से प्रेम करता हूँ, जिन्होंने मुझसे प्रेम किया और मेरे लिए अपना जीवन दे दिया, और मैं उनसे अपनी पूरी आत्मा से प्रेम करना चाहता हूँ। मेरे मित्र स्वर्गीय स्वर्गदूतों के आदेश और सभी संतों की पंक्तियाँ हैं, जिन्होंने पृथ्वी पर स्वर्गदूतों के समान जीवन जिया। वे अकथनीय सुंदरता और वैभव से दमकते हैं, और मैं तुम्हारे साथ कोई लेन-देन नहीं करना चाहता।

तब रानी सेइदा ने उसे धमकाना शुरू किया:

'यदि तुम मेरी इच्छा पूरी नहीं करते, तो मैं तुम्हारे शरीर को यातनाओं में डाल दूँगा और उसे घावों से भरने का आदेश दूँगा।'

भिक्षु ने उत्तर दिया:

'मैं अपने प्रभु की इच्छा को पूरा करने का प्रयास करता हूँ; मैं किसी भी परिस्थिति में आपकी इच्छा का पालन नहीं करूँगा। यदि, तथापि, आप मेरे शरीर को यातना और कष्ट देते हैं, तो आप उससे केवल मेरी आत्मा के लिए अनंत आनंद सुनिश्चित करेंगे। जान लें कि न तो वादे मुझे आपकी इच्छा पूरी करने के लिए मजबूर कर सकते हैं, और न ही यातनाएँ मुझे डरा सकती हैं।'

रानी ने कहा:

– हे नीच मनुष्य! तू स्वयं कितनी ही ברכות से वंचित हो रहा है! तू मेरी इच्छा क्यों नहीं पूरी करेगा? क्या मैं सुन्दर नहीं हूँ? क्या मैं तुझे भाती नहीं, और क्या मैं तुझमें कामवासना नहीं जगाती?

रेवरेंड ने उत्तर दिया:

'तुम न केवल सुंदर नहीं हो, बल्कि तुम पूरी तरह से घृणित, कुरूप और नीच हो। तुम प्रेम की नहीं, बल्कि घृणा की पात्र हो!'

तब दुष्ट रानी, अत्यधिक क्रोध से भरकर, उस पवित्र भिक्षु को ज़मीन पर लिटाकर लाठियों से बेरहमी से पिटवाने का आदेश दिया। उसने उसे लंबे समय तक यातना दी, और फिर उसे ज़ंजीरों में जकड़कर निम्नलिखित पत्र के साथ राजा के पास भेजा:

'इस नीच भिक्षु ने मुझे घिनौनी गाली देकर अपमानित करने की हिम्मत की है। अगर तुमने उसकी जान बख्शी, तो तुम मुझे मृत पाएँगे।'

उसका पत्र पढ़कर, राजा ने उसे नाराज़ न करने के लिए उसकी इच्छा पूरी करने का निश्चय किया, लेकिन पहले वह स्वयं उस भिक्षु को देखना चाहता था और उसे अपने सामने लाने का आदेश दिया।

जब आदरणीय भिक्षु को राजा के सामने लाया गया, तो उसने राजा के सामने झुकने से इनकार कर दिया, जैसा कि राजा और कुलीनों के सामने पेश होने की प्रथा थी, बल्कि वह सीधा खड़ा रहा, और साहसपूर्वक अपने आंतरिक पराक्रम और अपने दुश्मनों के प्रति अवज्ञा का प्रदर्शन किया। राजा, क्रोध से उसे घूरते हुए, बोला:

'घमंडी संन्यासी! तूने जो दुस्साहस किया है, उसके लिए तेरे पास क्या जवाब है? लेकिन मुझे लगता है कि तेरे पास कहने को कुछ भी नहीं है!'

पैशन-बेयरर ने उत्तर दिया:

'एक राजा में, सबसे बढ़कर, तीन गुण होने चाहिए: ईश्वर का भय, न्याय, और दोषियों के प्रति दयालु सहनशीलता।'

ये शब्द सुनकर राजा शांत हो गया और माइकल को खोलने का आदेश देते हुए उससे पूछा कि वह कहाँ का रहने वाला है। उसने उत्तर दिया:

'मैं मूल रूप से एदेसा शहर का रहने वाला हूँ, और अब मैं सेंट सावस के मठ में एक भिक्षु हूँ।'

जब राजा ने उस अपराध के बारे में पूछा जिसके लिए उस पर आरोप लगाया गया था, तो संत ने उत्तर दिया:

'मेरे मामले में एक प्रसिद्ध दृष्टांत सच हो गया है: एक आदमी को संयोग से एक बेसिलिस्क मिला, एक ऐसा साँप जो एक ही नज़र में लोगों को मार देता है। उससे भागते हुए, वह एक शेर से मिला, और उसे ज़हरीले बेसिलिस्क, जो केवल अपनी आँखों से ही मारता है, के साथ रहने की तुलना में शेर के साथ रहना बेहतर लगा।'

राजा ने उपमा का अर्थ समझ लिया और उसकी निर्दोषता को स्वीकार कर लिया। वह उस युवक की सुंदरता और बुद्धिमत्ता, दोनों से प्रभावित हो गया, और वह उसे ईसाई धर्म त्यागकर अपने धर्म में परिवर्तित होने के लिए मनाना चाहता था।

उसके दरबार में एक यहूदी विद्वान था, जो बहुत बड़ा विद्वान और वाक्पटु व्यक्ति था, जिसे उसने अपने समक्ष बुलाया; और उसकी उपस्थिति में उसने भिक्षु से निम्नलिखित शब्दों में संबोधित करना शुरू किया:

'मैं तुम्हारी बुद्धि देखकर तुम्हारी दया करता हूँ और तुम्हारी जवानी को क्षमा करता हूँ। तो फिर, मेरी सलाह—या यूँ कहो, मेरे आदेश—पर ध्यान दो, मसीह की शिक्षाओं से मुंह मोड़ लो, ईसाई धर्म को त्याग दो और मेरे धर्म में शामिल हो जाओ। तब तुम मेरे लिए एक पुत्र के समान होगे, और मैं तुम्हें सभी राजकुमारों और शासकों से ऊपर रखूँगा और तुम्हें अपनी सभी संपत्तियों का प्रबंधक बना दूँगा।'

आदरणीय माइकल ने स्वर्ग की ओर अपनी दृष्टि उठाकर और हृदय की गहराई से आह भरते हुए कहा:

'हे मसीह, मेरे राजा, ऐसा कभी न हो कि मैं आपसे, अपने ईश्वर से, मुँह मोड़ूँ, भले ही मुझे अनगिनत यातनाएँ सहनी पड़ें।'

हालाँकि, उसने अद्रामेलेक से कहा:

'हे राजा! मैं पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा, एक, अविभाज्य ईश्वरता का सेवक हूँ। यही मेरा विश्वास है, और मैं अपने इस विश्वास से कभी विचलित नहीं होऊँगा, बल्कि हमेशा इसमें ही स्थिर रहूँगा!'

राजा ने उससे कहा:

'तो फिर? क्या तुम्हें फिर भी, उस तुच्छ पद पर बने रहना पसंद है जिसमें तुम हो?'

संत ने उत्तर दिया:

'ये मठीय वस्त्र मुझे आपकी शाही पोशाकों से कहीं अधिक सुशोभित करते हैं।'

राजा ने कहा:

'मैंने अपनी किताबों का गहराई से अध्ययन किया है, और मैंने आपका ईसाई धर्मग्रंथ भी पढ़ा है, जिसे आप सुसमाचार कहते हैं। लेकिन न तो वहाँ और न ही यहाँ मैंने कोई आज्ञा पाई है जो किसी को विवाह और मांस से घृणा करने के लिए बाध्य करे।'

संत ने उत्तर दिया:

'ईसाई जीवन के दो प्रकार हैं – संतों का जीवन और सामान्य लोगों का जीवन। सामान्य लोगों के लिए विवाह करना और मांस खाना उचित है: उनके लिए इसमें कोई पाप नहीं है, बशर्ते वे मसीह की अन्य आज्ञाओं का निष्ठापूर्वक पालन करें। लेकिन हमारे लिए, जिन्होंने संसार का त्याग किया है और ब्रह्मचर्य का व्रत लिया है, विवाह करना उचित नहीं है, क्योंकि अन्यजातियों के शिक्षक, प्रेरित पौलुस ने कहा है: *'अविवाहित पुरुष प्रभु के कामों में लगा रहता है, कि वह प्रभु को प्रसन्न कैसे कर सके; परन्तु विवाहित पुरुष संसार के कामों में लगा रहता है, कि वह अपनी पत्नी को प्रसन्न कैसे कर सके।'* (1 कुरिन्थियों 7:32–33); और फिर: जो विवाह करता है वह *'भला करता है'*, परन्तु जो विवाह नहीं करता वह *'और भी भला करता है'* (1 कुरिन्थियों 7:38)। अत; हमारे एकमात्र प्रभु यीशु मसीह को प्रसन्न करने की इच्छा से, हमने जीवन का बेहतर मार्ग – ब्रह्मचर्य – चुना है। हम मांस भी नहीं खाते, पर यह इसलिए नहीं कि हम इसे अपवित्र मानते हैं, बल्कि आत्म-संयम के लिए। पौलुस कहते हैं: *'परमेश्वर का राज्य खाने-पीने का विषय नहीं, बल्कि धार्मिकता और शान्ति का है'* (रोमियों 14:17) और अन्य अच्छे कर्मों के साथ-साथ पवित्रता से उपवास करना भी।

राजा ने कहा:

'पौलुस ने तुम्हें धोखा दिया है!'

लेकिन संत ने उत्तर दिया:

'उसने आपको धोखा नहीं दिया, बल्कि आपको भूल से मुक्त किया और उन आशीषों का मार्ग दिखाया, *"जिन्हें न तो किसी ने देखा है, न किसी ने सुना है, और न ही मनुष्य के हृदय में प्रवेश किया है, कि परमेश्वर ने उन लोगों के लिए क्या तैयार किया है जो उससे प्रेम करते हैं"* (1 कुरिन्थियों 2:9)। यदि, हे राजा, आप वास्तव में विरोधी मसीह के धोखेबाज़ और अग्रदूत को जानना चाहते हैं, तो ऐसा धोखेबाज़ मोहम्मद है, जिसने पूरे सारासेन जनजाति को गुमराह किया है और यहाँ तक कि फिरस पर भी अपनी दुष्टता का ज़हर उँडेल दिया है।

राजा के पास खड़े एक यहूदी ने संत माइकल से कहा:

'क्या तुम्हारा पौलुस यहूदी नहीं था?'

संत ने उत्तर दिया:

'यद्यपि वह एक यहूदी था, परन्तु प्रभु की आज्ञा से उसने पुरानी वाचा को समाप्त कर दिया और पुराने नियम में भविष्यद्वक्ताओं द्वारा बताई गई सच्ची अनुग्रह का प्रचार किया।'

यहूदी ने कहा:

'आप पौलुस से कैसे सीख सकते थे, जिसे आपने कभी देखा भी नहीं? आपके लिए मुझसे सीखना बेहतर होगा; आखिरकार, आप मुझे देख और सुन सकते हैं।'

माइकल ने कहा:

'यदि आप वैसे ही सिखाएँगे जैसे उन्होंने सिखाया था, तो मैं आपकी बात सुनूँगा। लेकिन यदि आप उनकी शिक्षा के विपरीत कुछ सिखाएँगे, तो मैं आपसे साँप की तरह भाग जाऊँगा, क्योंकि पितरस ने कहा: *"जो कोई उस सुसमाचार के सिवा कोई और सुसमाचार प्रचार करे, वह श्रापित हो"* (गलातियों 1:9)।'

ज़ार ने कहा:

'तुम पैगंबर मुहम्मद को क्यों स्वीकार नहीं करते? क्या उन्होंने सरासेंस, अरबों और फ़ारसियों को ईश्वर के बारे में उपदेश नहीं दिया? क्या उन्होंने मूर्तियों को नष्ट नहीं किया और सदाचारी जीवन शैली नहीं सिखाई?'

संत ने उत्तर दिया:

'अगर कोई किसी आदमी को एक अँधेरी कोठरी से निकालकर दूसरी अँधेरी कोठरी में बंद कर दे, तो क्या यह उस पर एहसान होगा? क्या उसने उसे एक अंधकार से दूसरे अंधकार में स्थानांतरित करके धोखा नहीं दिया है? यह वही है जो तुम्हारे मुहम्मद ने तुम्हारे साथ किया है। हालाँकि, हम जानते हैं कि प्रकाश की ओर ले जाने वाला केवल एक ही सच्चा और विश्वासयोग्य मार्ग है - मैं पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा में सच्चे विश्वास की बात कर रहा हूँ, जो त्रिमूर्ति में एक ईश्वर है।

ज़ार ने कहा:

'तुम खुद को बुद्धिमान और वाक्पटु समझते हो, लेकिन हम दो हैं और तुम अकेले हो, और जीत, बेशक, हमारी होगी।'

संत ने उत्तर दिया:

'तुम दो नहीं, बल्कि तीन हो, और तुम सब मसीह की शक्ति से एक के द्वारा पराजित हो जाओगे।'

राजा ने पूछा:

'तुम्हारे साथ दो लोग बात कर रहे हैं – मैं और यहूदी। तो फिर तुम हम दोनों को तीन कैसे कह सकते हो? हम में तीसरा कौन है?'

संत ने उत्तर दिया:

'तुम्हारे बीच, हालांकि अदृश्य, तुम्हारा शिक्षक खड़ा है – शैतान।'

राजा इन शब्दों से क्रोधित हो गया, लेकिन फिर भी उसने अपने क्रोध को नियंत्रित किया, इस उम्मीद में कि वह मसीह के योद्धा को अपनी बातों से हरा देगा, और उससे कहा:

'अपनी बकवास बंद करो और मेरे सामने झुक जाओ। स्वीकार करो कि मुहम्मद अल्लाह के पैगंबर और दूत हैं, और तुम मेरे लिए एक बेटे के समान हो जाओगे और तुम्हें हर तरह के सुखों का आनंद लेने का अवसर मिलेगा।'

संत ने उत्तर दिया:

'हे राजा, क्या आप ईश्वर और ईश्वर के वचन को स्वीकार करते हैं?'

राजा ने उत्तर दिया:

'हाँ, मैं करता हूँ!'

संत ने यहूदी से कहा:

'क्या तुम यह स्वीकार करते हो कि *"प्रभु के वचन से आकाश बना, और उनके मुख के प्राण से उनकी सारी सेना"* (भजन संहिता 32:6)?'

यहूदी ने उत्तर दिया:

'हाँ, ऐसा ही है!'

तब, मसीह की आत्मा से परिपूर्ण होकर, मसीह के प्रचारक ने उनसे कहा:

'यहाँ तुम स्वयं सत्य की गवाही देते हो, यद्यपि तुम उस प्रकार विश्वास नहीं करते जैसा तुम्हें करना चाहिए। जहाँ तक मेरी बात है, मैं किसी भी परिस्थिति में झूठी शिक्षाओं को नहीं सुनूँगा, बल्कि मैं अपनी कही बात पर कायम हूँ: मुहम्मद न तो कोई पैगंबर हैं और न ही ईश्वर के दूत, बल्कि एक धोखेबाज, एक झूठा और मसीह-विरोधी का अग्रदूत हैं। जहाँ तक तुम्हारा सवाल है, हे यहूदी, यह निश्चित रूप से जान लो कि मसीह पहले ही परम पवित्र कुँवारी के अपने निर्दोष जन्म के द्वारा संसार में आ चुके हैं, और इसलिए तुम्हारे पास उनके देह में जन्म लेने का इंतज़ार करने का कोई कारण नहीं है। जिसका तुम इंतज़ार कर रहे हो, वह घृणित मसीह-विरोधी होगा, जो पूरे ब्रह्मांड को भ्रम में डाल देगा, और धोखेबाज़ मुहम्मद इस मसीह-विरोधी का अग्रदूत है!

इस विवाद में उपस्थित फारसी और सारासेन संत के शब्दों से क्रोधित हो गए, जबकि ईसाई एक-दूसरे से कहते हुए आनंदित हुए:

'मसीह की कृपा से, भिक्षु विजयी हुआ है!'

हालाँकि राजा यहूदी से क्रोधित हो गया और उससे कहा:

'मैंने तुम्हें व्यर्थ ही अपना सहायक बनाया – मुझे तुमसे कोई मदद नहीं मिली!'

उसने उसे भगा दिया, कहते हुए:

'मैं उस भिक्षु को अकेले ही हरा दूँगा और उसे अपने पक्ष में कर लूँगा।'

और संत माइकल, आनंद से भरकर, बोले:

'देखो, एक तो पहले ही मेरे मसीह की शक्ति से पराजित हो चुका है और लज्जित होकर भाग गया है; दो और बचे हैं, परन्तु वे भी शीघ्र ही पराजित हो जाएँगे, क्योंकि मेरा मध्यस्थ अजेय और अविनाशी है!'

इसके बाद, राजा ने शहीद से कहा:

'भिक्षु, तुम्हारे पास एक विकल्प है: या तो मेरे सामने समर्पण करो और हमारे धर्म को स्वीकार करो, या अपने जीवन के चरम पर एक भयानक मृत्यु मरो।'

संत ने उत्तर दिया:

'हे राजा! मैं आपसे तीन में से एक बात का आग्रह करता हूँ: या तो मुझे मेरे वृद्ध के पास जाने दें, या मुझे अपनी इच्छानुसार किसी भी मृत्यु से मारकर मेरे मसीह के पास भेज दें, या फिर ईसाई बन जाएँ और हमारे साथ एकता स्थापित करें!'

राजा, उसके साहसी शब्दों को सहन न कर सका, और अत्यंत क्रोधित हो गया और आदेश दिया कि शहीद को नंगे पैरों गर्म कोयलों पर रखा जाए। हालाँकि, शहीद बिना किसी सहारे के गर्म कोयलों पर स्थिर खड़े रहे, उन्होंने मसीह के प्रति प्रेम से आग की गर्मी को बहादुरी से सहन किया, और यहाँ तक कि दाऊद के भजन भी गाए। वे लंबे समय तक इसी स्थिति में खड़े रहे, और अंत में राजा ने उन्हें कोयलों से हटाने और उनके लिए जहर का एक प्याला लाने का आदेश दिया। शहीद ने प्याला लिया, अंत तक धर्म-विश्वास – 'मैं एक ईश्वर में विश्वास करता हूँ' – का पाठ किया, क्रॉस का चिह्न बनाया, और बिना किसी हानि के जहर पी गया। राजा चकित रह गया और उसने मृत्युदंड पाए अपराधियों में से एक को कालकोठरी से लाकर उसे भी वही जहर देने का आदेश दिया। जब अपराधी ने जहर का प्याला पिया, तो वह तुरंत एक भयानक चीख के साथ प्राण त्याग गया, और उसका शरीर तुरंत सड़ने लगा, जबकि संत माइकल सुरक्षित और कुशल रहे। तब वहाँ मौजूद सभी ईसाई महान आनंद से भर गए और सर्वसम्मति से ईश्वर की स्तुति करने लगे।

हालाँकि, सारासेनों को गहरा शर्मिंदगी महसूस हुई और उन्होंने जो कुछ भी हुआ उसे अपने धर्म का अपमान मानते हुए, राजा से चिल्लाकर कहा कि वह या तो उस भिक्षु को मार डाले या सभी ईसाइयों के संहार का आदेश दे। राजा, सारासेनों को खुश करना चाहते हुए, ने शहीद को शहर से बाहर ले जाकर तलवार से सिर कलम करने का आदेश दिया। और इस प्रकार शहीद को मृत्युदंड के लिए बाहर ले जाया गया, जबकि सिरैसेन और ईसाइयों की भीड़ उसका अनुसरण करते हुए मृत्युदंड के स्थान तक गई। निर्धारित स्थान पर पहुँचने पर, शहीद ने पूर्व की ओर मुख किया और स्वर्ग की ओर अपनी आँखें तथा हाथ उठाकर इस प्रकार प्रार्थना की:

– सर्वशक्तिमान प्रभु, परम, अनादि, सदा विद्यमान, सभी प्राणियों के स्रष्टा, राजाओं के राजा और प्रभुओं के प्रभु! मैं इस पराक्रम को पूरा करने के लिए मुझे योग्य समझने हेतु आपका धन्यवाद करता हूँ। और अब मैं आपकी दया की याचना करता हूँ: शैतान का हाथ मुझ पर न पड़े, और वह मुझे विनाश की गहराइयों में न फेंके, बल्कि आपके पवित्र स्वर्गदूतों के द्वारा, मेरी आत्मा को ले जाएं और मुझे विश्राम के धाम में पहुंचाएं। हे प्रभु, मैं तुझ से प्रेम करता हूँ, और मैं तेरी स्तुति करता हूँ और पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा, एक परमेश्वर और राज्य की महिमा करता हूँ, क्योंकि तुझ ही महिमा युगानुयुग हो। आमीन।

इस प्रकार प्रार्थना करने और विश्वासियों से विदा लेने के बाद, उन्होंने तलवार के नीचे अपना सिर झुकाया और सिर कलम किए जाने पर उन्होंने प्राण त्याग दिए[4984] । इस बीच, ईसाइयों ने उस परमेश्वर की महिमा की, जिसने अपने शहीद को बल दिया था।

यरूशलेम में संत सावस के मठ के अतिथि गृह में रहने वाले भिक्षुओं ने शहीद के शरीर को मठ में ले जाने की इच्छा व्यक्त की, लेकिन यरूशलेम में रहने वाले ईसाइयों ने विरोध करते हुए कहा: 'यहाँ उन्होंने कष्ट सहे; यहाँ ही उन्हें विश्राम देना चाहिए, ताकि उनका शरीर एक पवित्र अवशेष बनकर श्रद्धालुओं पर आशीर्वाद बरसाए।' दूसरी ओर, भिक्षुओं ने तर्क दिया कि उनका पालन-पोषण रेगिस्तान में हुआ था, कि वह परम पूजनीय पिता सावा के शिष्य थे, और उन्हें मठ के अलावा कहीं और दफनाया नहीं जाना चाहिए। वे लंबे समय तक आपस में बहस करते रहे, और उनके विवाद की खबर स्वयं राजा तक पहुँच गई, जिन्होंने आदेश दिया कि शहीद के शरीर को भिक्षुओं द्वारा ले जाया जाए, जिन्होंने फिर उसे लेकर अतिथि गृह में रख दिया।

उसी दिन, रेवरेंड थियोडोर को संत माइकल के बारे में एक दर्शन हुआ और, चर्च में आकर, उन्होंने मठाधीश और भाइयों से कहा:

'आज हमारे भाई माइकल ने नगर में शहीद का पराक्रम किया है।'

मठाधीश ने तुरंत भाइयों को शहीद के शरीर को सम्मान के साथ मठ में ले जाने के लिए भेजा। वे गए और उसे रात में ही ले आए, ताकि सारसेन शहीद के शरीर का कोई अपमान न करें। लेकिन प्रभु ने अपने सेवक की अवशेषों पर एक चमत्कार किया: स्वर्ग से आग का एक स्तंभ उतरा और शहीद के शरीर को ले जाने वालों के आगे-आगे चलता रहा, उन्हें

[4984] संत माइकल की मृत्यु 8वीं शताब्दी की शुरुआत में हुई थी।

रोशन करते हुए। उस रात जाग रहे कुछ नगरवासियों ने भी देखा कि कैसे वह स्तंभ मठ की ओर बढ़ा और उस क्षेत्र को रोशन कर दिया।

आदरणीय थियोडोर शहीद से मिलने के लिए बाहर गए, और उन्होंने प्रचुर मात्रा में आँसू बहाए, जो आंशिक रूप से दुख और आंशिक रूप से आनंद के कारण थे। वे संत माइकल के लिए अपने शिष्य और संबंधी के रूप में विलाप कर रहे थे, और इस बात पर प्रसन्न थे कि उनके प्रिय सह-भिक्षु को शहीद के मुकुट का योग्य समझा गया था। इसी तरह, लाव्रा के मठाधीश, पूरे समुदाय के साथ, मोमबत्तियाँ और धूपदान लेकर शहीदों के सम्मान में भजन गाते हुए उनसे मिलने के लिए बाहर आए। इस प्रकार उन्होंने संत माइकल के शरीर को चर्च के अंदर ले गए।

उस समय, लावरा में जॉर्ज नाम का एक बीमार भिक्षु था, जो तीन साल से बिस्तर पर पड़ा था और जिसे पूजनीय माइकल अक्सर मिलने आते थे। इस लकवाग्रस्त व्यक्ति ने माइकल के निधन की खबर सुनी और चर्च जा रहे अपने भाइयों से विनती करने लगा कि उसे भी वहाँ ले जाएँ, ताकि वह उस शहीद को देख सके जो उसके लिए एक प्रिय भाई थे। लेकिन किसी ने उस पर ध्यान नहीं दिया, और सभी उसके पास से गुज़र गए। फिर, गहरे दुख से अभिभूत, वह बीमार व्यक्ति फूट-फूट कर रो पड़ा और बोला:

'भाई माइकल! यदि आपको परमेश्वर की कृपा प्राप्त हुई है और मसीह के सामने मध्यस्थता करने का साहस मिला है, तो मुझे, अपने मित्र को याद करना, और मेरी ओर से शक्ति के लिए प्रार्थना करना—मैं जो लकवाग्रस्त हूँ—ताकि मैं भी आकर आपको देख सकूँ और प्रभु में आपको चूम सकूँ।'

यह कहते ही वह तुरंत और अचानक बलवान महसूस करने लगा, और जो अपने बिस्तर पर लेटे हुए पलट भी नहीं पाता था, वह अच्छे स्वास्थ्य के साथ उससे उठ खड़ा हुआ। वह चर्च आया, शहीद के शरीर पर गिर पड़ा, और उसे आँसुओं से चूमते हुए कहा:

'सच्ची बात है, हे मेरे प्रिय भाइ, मसीह के सामने तुम्हारी बड़ी निर्भीकता है; सच्ची बात है, तुमने एक पीड़ित के प्रति पूर्ण प्रेम दिखाया है: तुमने अपने जीवनकाल में मुझ अयोग्य की बड़ी सेवा की, और मसीह के पास जाकर, तुमने अचानक मुझे अप्रत्याशित स्वास्थ्य प्रदान किया है।'

भाइयों ने, प्रथागत अंतिम संस्कार के भजन गाने के बाद, शहीद को उन पवित्र पूर्वजों की कब्र में सुला दिया जिन्होंने उनसे पहले पीड़ा झेली थी।

इस प्रकार पवित्र शहीद माइकल ने 9 जुलाई को अपना जीवन समाप्त किया। बाद में वे अक्सर पवित्र थियोडोर को रात्रिकालीन दर्शनों में शहीद के वस्त्रों और मुकुट से सुसज्जित तथा एक अकथनीय प्रकाश से दमकते हुए दिखाई दिए। उन्होंने कहा:

'पिताजी, मेरे लिए शोक मत करें, क्योंकि मुझे मेरे ईश्वर मसीह से दया प्राप्त हुई है, और आपके द्वारा मुझे दी गई शिक्षा के लिए आपके लिए भी एक पुरस्कार तैयार किया गया है।'

यहाँ पवित्र शहीद माइकल का वृत्तांत समाप्त होता है, और हम एक बार फिर आदरणीय थियोडोर के जीवन पर लौटते हैं।

प्रभु, जो सभी चीजों को भलाई के लिए निर्धारित करते हैं, अब यह नहीं चाहते थे कि धन्य थियोडोर जैसे दीपक को जंगल में छिपा रखा जाए, जो अपने सदाचारी जीवन के माध्यम से, कई लोगों को लाभ पहुँचा सकते थे और दुनिया के लिए एक प्रकाश के रूप में चमक सकते थे। इसलिए, उन्होंने उन्हें बिशप के उच्च पद पर नियुक्त किया।

लेंट के पवित्र और महान उपवास के दौरान, अंत्योखिया के सर्वधर्मगुरु पवित्र भूमि पर मसीह की जीवन-दायक कब्र का सम्मान करने और अपनी कलीसिया के मामलों का ध्यान रखने के लिए यरूशलेम पहुँचे। उस समय, यद्यपि यरूशलेम में दो धर्मगुरु थे, उनके अतिरिक्त यरूशलेम और अंतीयकिया के धर्मप्रांतों के कई बिशप भी थे; इसके अलावा, एदेसा नगर के पादरियों और सामान्य लोगों के कुछ विशिष्ट प्रतिनिधि एदेसा नगर के लिए एक बिशप की मांग करने यरूशलेम आए, क्योंकि वहाँ का बिशप निधन हो गया था। वे एक ऐसे व्यक्ति की तलाश करने लगे जो उस पद के योग्य हो, और देखो, यरूशलेम के परमधर्मपिता ने, परमेश्वर की आत्मा द्वारा निर्देशित होकर, धन्य थियोडोर को याद किया और कहा:

'मेरी राय में, कोई भी ऐसा दैवीय जीवन नहीं जीता है और, साथ ही, चर्च के मामलों को संभालने में संत सावvas के मठ के एक मठाधीश, मौनियों में सबसे अद्भुत, थियोडोर जितना सक्षम नहीं है।'

फ़लिस्तीनी पतृिगण संत थयिोडोर के बारे में पैट्रआिर्क के मूल्यांकन से पूरी तरह सहमत थे, क्योंकि फ़िलिस्तीन में हर कोई थयिोडोर के तपस्वी जीवन से अच्छी तरह वाकफ़ि था। पूरी परषिद प्रसन्न हुई, और तुरंत ही पैट्रआिर्क ने थयिोडोर को बुलाया और उन्हें बशिप के रूप में अभषिक्ति कयिा, हालांकि उन्होंने इस पद को अस्वीकार करते हुए रोया। उन्होंने उसे पारंपरकि चर्च के संस्कारों से गुजरने और पुरोहति के रूप में अभषिक्ति होने का नर्दिेश दयिा। एदेसा के दूत भी उनके लएि चुने गए बशिप पर प्रसन्न हुए, क्योंकि उन्होंने उसके ईश्वर-भक्त जीवन के बारे में सुना था और जानते थे कि वह उनके शहर का ही नविासी था।

जब महा गुरुवार – प्रभु के अंतमि भोज का दनि – आया, तो दोनों धर्मगुरुओं ने कई बशिपों के साथ मलिकर दव्यि लटिर्जी का अनुष्ठान कयिा, और उस अवसर पर पूजनीय थयिोडोर को बशिप के रूप में अभषिक्ति कयिा। अभषिेक के दौरान, सभी की आँखों के सामने एक महान चमत्कार हुआ। बर्फ से भी अधकि सफेद एक कबूतर चर्च के ऊपर मंडराने लगा और फरि अभषिेक हो रहे बशिप के सरि पर आकर बैठ गया। इस चमत्कार को देखने वाले पैट्रआिर्क, बशिप और पुरोहति चकति हो गए और उन्होंने ईश्वर की स्तुति करते हुए कहा:

'सत्य में, यह पुरुष बशिप के पद के योग्य है!'

एक बार अभषिेक पूरा हो जाने पर, आदरणीय थयिोडोर ईश्वर के एक स्वर्गदूत की तरह अनुग्रह से प्रकाशति हुए, और उनके पूरे स्वरूप ने उन्हें ईश्वर का सबसे परपिूर्ण वाहक प्रकट कयिा। पवत्रि और महान शनविार को, और साथ ही मसीह के पुनरुत्थान के सबसे गौरवशाली पर्व पर, उन्होंने दोनों धर्मगुरुओं के साथ सेवा की; और ब्राइट वीक के सोमवार को, वे पवत्रि संतों को अलवदिा कहने के लएि लाव्रा के लएि रवाना हो गए। वे दोनों प्रसन्न हुए और रोए: वे प्रसन्न हुए कि उनका भाई बशिप के पद के लएि योग्य समझा गया था, और रोए क्योंकि वे इतने महान पति के साथ घनष्ठि संगति से वंचति हो रहे थे। संत थयिोडोर अपने प्रयि मत्रिों, अपनी तपस्या की कुटयिा और उस एकांत को छोड़ते समय बहुत रोए; और, सभी को आँसुओं के साथ वदिा कहने के बाद, वे पवत्रि नगर लौट आए। फरि, थोमस सप्ताह के बाद, एदेसा के लोगों के अनुरोध पर, वे बनिा कसिी देरी के एदेसा के लएि रवाना हो गए। उनके साथ उनकी जीवनी के लेखक बेसलि थे, जो उनकी बहन के पुत्र और भतीजे थे। जब वे फरात नदी पर पहुँचे और कनिारे पर खड़े कएि गए तंबुओं में रात के लएि ठहरे, तो पूजनीय पति, इस बात पर वलिाप करते हुए कि उन्हें पवत्रि नगर और पवत्रि मठ छोड़ना पड़ा, भजनकार के ये शब्द बोले:

'बाबेल की नदयिों के कनिारे हम बैठकर रोए जब हम सय्यिोन को याद कएि' (भजन संहति 136:1)।

ये शब्द कहने के बाद, वह रोया और भागने का संकल्प लयिा, लेकनि एदेसा के लोगों ने, उनके इरादे को भांपते हुए, अपने चरवाहे को खोने से बचने के लएि पहरेदार तैनात कर दएि। और उसी रात माननीय पति को एक दर्शन हुआ। एक आकृति उनके सामने प्रकट हुई और कहा:

'उस आलसी दास के समान न बनो जसिने प्रभु द्वारा दयिा गया प्रतभिा (मैट. 25:18) को दफना दयिा था, बल्कि उस दास के समान बनो जसिे पाँच प्रतभिाएँ मलिीं और उसने दस प्राप्त कीं, जसिके लएि उसे दस नगरों का अधकिार दयिा गया था (लूका 19:16-17)।' तुम्हारे ऊपर रखा गया मसीह का जुआ उठाने से इनकार मत करो!

इस दर्शन के बाद, संत थयिोडोर ने कहा:

'प्रभु की इच्छा पूरी हो!'

और वह एदेसा के लोगों के साथ चल पड़ा, इस संकल्प के साथ कि वह अब अपनी नई सेवा को नहीं छोड़ेगा और न ही उसे मलिी कस्मित पर शोक करेगा।

जैसे ही वे एदेसा पहुँचे, पूरा शहर नए बशिप से मलिने के लएि बाहर आ गया, और ऑर्थोडॉक्स श्रद्धालुओं ने उन्हें अकथनीय आनंद के साथ स्वागत कयिा। संत थयिोडोर की आत्मा भी आनंद से भर गई जब उन्होंने एडेसा में कैथेड्रल चर्च को देखा, जो आकार और सुंदरता में यरूशलेम के पवत्रि सेपल्चर चर्च से ही कम था। सभी को आशीर्वाद देने के बाद, उन्होंने पवत्रि शहीदों गुरयिास, सामोनास और अवविस के पवत्रि अवशेष-पात्र के सामने प्रणाम कयिा, और उनकी आँखों में आँसू आ गए। इस प्रकार, मसीह के पवत्रि बशिप ने अपना पदभार संभाला – (उस समय, माइकल[4985] अपनी माँ थयिोडोरा के साथ ग्रीक साम्राज्य पर शासन कर रहे थे) – और परमेश्वर द्वारा उन पर सौंपी गई भेड़ों की झुंड का शब्द और कर्म दोनों से बड़ी लगन से पालन-पोषण करना शुरू कर दयिा: एक ओर, उन्होंने उन्हें दैवीय प्रेरति शकि्षाओं से

[4985] सम्राज्ञी थयिोडोरा ने 842 से 855 तक बाइज़ेंटाइन साम्राज्य पर शासन कयिा; उनके पुत्र माइकल (तृतीय) ने 855 से 867 तक शासन कयिा।

पोषति कयिा; और दूसरी ओर, अपने सदाचारी जीवन के उदाहरण से उन्हें मोक्ष के मार्ग पर मार्गदर्शन कयिा। और चूँकि उस शहर में कई वधिर्म थे - जनिमें , नेस्टोरयिन[4986] , सेवेरयिन[4987] , यूटकियिन[4988] , और मनखिीय[4989] शामलि थे - वह इस पर दुखी हुए और वधिर्मयिों से लड़ने के लिए काफी प्रयास कयिा, उन्हें दरदिों के रूप में मानते हुए। और ऑर्थोडॉक्स में, मसीह के पवत्रि सेवक ने आनंद का संचार कयिा, जबकि वधिर्मयिों में उन्होंने रोष जगाया; ऑर्थोडॉक्स इस बात पर प्रसन्न थे कि उन्हें ऐसा ईश्वर-ज्ञानी चरवाहा और शक्षिक मलिा, जबकि वधिर्मी दुखी थे और उन्होंने उनके वरिुद्ध बुराई की साजशि रची। लेकनि वह अडगि थे, और कोई भी हमला उनका साहस छीन नहीं सका। पापयिों को सच्चे धर्म को त्यादति करते देख उसे दुख होता था, लेकनि दूसरी ओर वह सदाचार वाले, धर्मपरायण पुरुषों को देखकर प्रसन्न होता था, और वह अक्सर एक मत्रि के रूप में नजिी तौर पर उनके साथ बातचीत का आनंद लेता था।

उस समय, एदेसा के पास, महान शहीद सेंट जॉर्ज के मठ के नकिट—जहाँ नन भी उपवास का जीवन जीती थीं—थेओडोसयिस नाम का एक स्तंभवासी रहता था, जसिे सभी सम्मान देते थे। वह एक कुलीन चरत्रि का व्यक्ति था, वृद्ध (उसकी उम्र सौ वर्ष से अधकि थी) और ईश्वर द्वारा दूरदर्शता के वशिेष वरदान से संपन्न था। आदरणीय बशिप थयिोडोर अक्सर उनसे मलिने आते थे और एक सच्चे मत्रि की तरह उनसे बात करके उनकी संगत में सांत्वना पाते थे। स्तंभवासी उनसे कहते थे:

'प्रभु के सेवक, अपने श्रम में थके नहीं, और प्रभु का जुआ तुम्हें भारी न लगे। सब कुछ तुम्हारे लिए भला होगा, और भले ही कई वधिर्मी तुम्हारे वरिुद्ध बुराई की साजशि रचें, वे अपनी योजनाओं में सफल नहीं होंगे। प्रभु उनकी योजनाओं को वफिल कर देंगे, और वे पराजति होंगे, लज्जति होंगे और चर्च के प्रांगणों से भगा दिए जाएँगे। स्तंभवासी के ये शब्द समय आने पर सच साबति हुए – इस बारे में बाद में और बताया जाएगा। हालाँकि, यहाँ यह उल्लेख करना उचति है कि बशिप का स्तंभवासी के साथ अक्सर आध्यात्मकि संवाद होता था, जसिके दौरान स्तंभवासी ने बशिप को बहुत सी उपयोगी सलाहें दीं। एक अवसर पर, उन्होंने उन्हें नम्निलखिति बातें बताईं।

स्तंभवासी ने कहा, 'इस शहर में कई साल पहले एडर नाम का एक व्यक्ति था, जो कुलीन, प्रतष्ठिति और बहुत अमीर था, ठीक प्राचीन धर्मनष्ठि योब की तरह। वह सभी के प्रति दयालु था, गरीबों को उदारतापूर्वक दान देता था, मठों को दान देता था, और अक्सर आध्यात्मकि मामलों पर चर्चा करने के लिए मेरे पास आता था। उसकी एक पत्नी और तीन बच्चे थे और वह एक धार्मकि व्यक्ति था, द्वेष से मुक्त, सौम्य, वनिम्र, कम उम्र का और अच्छे स्वास्थ्य वाला। एक बार वह मुझसे मलिने आया, जैसा कि उसका रवािज था, और मैंने देखा कि वह बहुत दुखी था। मैंने उससे कहा:

'तुम दुखी क्यों हो, मेरे आध्यात्मकि पुत्र?'

उसने, आँसू भरे चेहरे से, उत्तर दयिा:

[4986] नेस्टोरयिनवाद की स्थापना कॉन्स्टेंटनिोपल के बशिप नेस्टोरयिस (जो 428 से 431 तक बशिप रहे) द्वारा की गई थी, जन्होंने यह सखिाया कि यीशु मसीह सच्चे ईश्वर नहीं थे, बल्कि केवल एक मनुष्य, जोसेफ और मरयिम के पुत्र थे, जन्हें उनके जीवन की पवत्रिता के कारण ईश्वर से एक वशिेष अनुग्रह प्रदान कयिा गया था और जो हमें उनके उद्धारकारी पुण्यों के द्वारा नहीं, बल्कि केवल उनके उपदेशों और उनके जीवन के उदाहरण के माध्यम से बचाते हैं। नेस्टोरयिनवाद की नदिा एफ़सिुस में आयोजति तीसरे सार्वभौमकि परषिद (431 में) में की गई थी। परषिद की नदिा के बावजूद, नेस्टोरयिन वधिर्म कुछ स्थानों पर, वशिेष रूप से फारस, भारत और चीन में, 8वीं शताब्दी तक बना रहा।

[4987] सेवरयिस, अंताकयिा के पैट्रआिर्क (512 से 518 तक) – सेवरयिन वधिर्म के संस्थापक। सेवरयिनवाद मोनोफसिाइट वधिर्म का एक संशोधति रूप है (नम्निलखिति टप्पिणी देखें)। हालांकि सेवेरयिन, मोनोफसिाइट वधिर्तयिों की तरह, यीशु मसीह में केवल एक स्वभाव - दव्यि - को ही मानते थे, लेकनि उन्होंने इसमें दव्यि और मानवीय गुणों के बीच एक अंतर स्वीकार कयिा; इस प्रकार, उन्होंने दावा कयिा कि पुनरुत्थान से पहले मसीह का शरीर, हमारे अपने शरीर की तरह, नश्वर था।

[4988] कॉन्स्टेंटनिोपल के आर्चमिंड्राइट यूटकिस द्वारा स्थापति यूटकियिन संप्रदाय ने यह गलत शक्षिा दी कि यीशु मसीह में केवल एक ही दव्यि स्वभाव था, जबकि ऑर्थोडॉक्स चर्च ने हमेशा से यीशु मसीह में दो स्वभावों को स्वीकार कयिा है और करती है, जो एकसार और अवभाज्य हैं - दव्यि और मानवीय। यूतखिीयों को मोनोफज़िटि (या 'एक ही स्वभाव के पक्षधर') के नाम से भी जाना जाता था। इस वधिर्म की नदिा 451 में चाल्सीडोन में आयोजति चौथे सार्वभौमकि परषिद में की गई थी, लेकनि परषिद की नदिा के बाद भी यह कई शताब्दयिों तक एक कमजोर रूप में मौजूद रहा।

[4989] मनीकवाद एक वधिर्मी झूठा सद्धिांत है, जो ईसाई धर्म का फारसी धर्म ज़राथुष्ट्र के तत्वों के साथ मश्रिण है। मनीकवाद का संस्थापक मनीस था, जो एक फारसी पुरोहति था। मनीस ने सखिाया कि आदकिाल से ही दो स्वतंत्र क्षेत्र - अच्छाई और बुराई - मौजूद हैं, जो एक-दूसरे के साथ नरिंतर संघर्ष में हैं। मेनेस की शक्षिाओं के अनुसार, मनुष्य भी दो तत्वों - प्रकाश और अंधकार - के संयोजन से बना है और उसमें, मानो, दो आत्माएँ - एक अच्छी और एक बुरी - होती हैं, जो लगातार एक-दूसरे से लड़ती रहती हैं। - अपने दैनकि जीवन में, मनीकयिों ने अत्यधकि तपस्या की: उन्होंने ब्रह्मचर्य और नरिंतर उपवास का उपदेश दयिा। - 3वीं और 4वीं शताब्दी में मनीकवाद काफी व्यापक था।

'मैं अपनी माँ के गर्भ से नग्न ही निकला था, और मुझे नग्न ही कब्र में जाना है। मैं इस संसार की धन-संपत्ति या व्यर्थ की महिमा में से कुछ भी अपने साथ नहीं ले जाऊँगा।' दाऊद ने कहा: *"वह इकट्ठा करता है और नहीं जानता कि यह किसका होगा"* (भजन संहिता 38:7), *"उसकी महिमा उसके पीछे नहीं जाएगी"* (भजन संहिता 48:18)। एक मनुष्य अपनी संपत्ति अजनबियों के लिए छोड़ जाता है, और यह अन्यथा नहीं हो सकता। और प्रेरित कहते हैं: *'इस संसार का वर्तमान स्वरूप बीत रहा है'* (1 कुरिन्थियों 7:31)। मैं हमारे उद्धारकर्ता मसीह को यह कहते हुए सुनता हूँ: *'जो कोई अपनी सब कुछ त्याग नहीं करता, वह मेरा चेला नहीं हो सकता'* (लूका 14:33), और फिर: *'जो अपना क्रूस नहीं उठाता और मेरे पीछे नहीं आता, वह मेरे योग्य नहीं है'* (मत्ती 10:38)। इसलिए, हे पिता, ईश्वर के प्रेम के लिए, मैं सब कुछ पीछे छोड़ देना चाहता हूँ—अपनी पत्नी, अपने बच्चों और अपनी संपत्ति—और उस एक प्रभु के लिए जीना चाहता हूँ जिसने मुझे अस्तित्व में लाया। आप भी मुझे अपनी पितृ-आशीर्वाद दें और अपनी कोठरी से एक रोटी दें, और मेरे लिए प्रार्थना करें!

मैंने उनकी बातों पर आश्चर्य व्यक्त किया और उनसे कहा:

'मैं देखता हूँ कि आपका इरादा अच्छा है, लेकिन आप एक महान कार्य कर रहे हैं। जो अंत तक टिकेगा वह उद्धार पाएगा (मत्ती 24:13), इसलिए सावधान रहो, मेरे बच्चे, कहीं ऐसा न हो कि अंत में तुम्हें पछताना पड़े। कौन सी भी प्रतिज्ञा न करना, उसे करने और पूरा न कर पाने से बेहतर है। लेकिन यदि आप उसे पूरा करते हैं, तो निश्चित रूप से धन्य होंगे, क्योंकि आपने क्षणिक को शाश्वत के लिए बदल दिया है।

उन्होंने यह भी कहा:

'प्रभु की इच्छा पूरी हो!'

उसके बाद, मैंने उसके लिए प्रार्थना की और उसे एक रोटी देकर विदा कर दिया। और वह, विद्रोही दुनिया से जैसे किसी कालकोठरी से भागकर, यरूशलेम पहुँचा और मसीह की कब्र पर भक्तिपूर्वक प्रार्थना करने तथा सभी पवित्र स्थानों का दर्शन करने के बाद, संत सावस के मठ में गया और संन्यासी का व्रत लिया, तथा अपना नाम अदर से बदलकर अथानासियस रख लिया। उन्होंने एक सच्चे संन्यासी का जीवन जिया, ईश्वर को प्रसन्न किया, और उनके साथ रहने के लिए चल बसे। जहाँ तक उनकी सदाचारी पत्नी का सवाल है, उनके जाने के बाद, वह लंबे समय तक अपनी एकाकीपन पर शोक मनाती रहीं और ऐसा करते हुए, अक्सर उनसे इस तरह बात करती थीं मानो वह उन्हें अपने सामने देख सकती हों:

'हे मेरे स्वामी,' उसने कहा, 'आपने अपनी आत्मा को बचाने का प्रयास किया, जबकि मुझे आपके बच्चों की देखभाल के लिए अकेला छोड़ दिया। सर्वदर्शी ईश्वर इसे देखे और आप और मुझमें न्याय करे!'

कुछ समय बाद, एक रात, उसके पति उसे सपने में दिखाई दिए, उनका चेहरा दमक रहा था, वे चमकदार सफेद वस्त्रों में लिपटे हुए थे, और उन्होंने उससे कहा:

'रोना बंद करो और मेरे बारे में शिकायत करना बंद करो। मैं यहाँ हूँ, मैं बच्चों को अपने साथ ले जा रहा हूँ; तुम, अपनी ओर से, अपनी आत्मा को बचाने का प्रयास करो।' और यह आदमी मुझे उसी रूप में दिखाई दिया और कहा:

'तुम्हारे पास के मठ में, सबसे बड़ी मौन भिक्षुणी तीन दिनों में प्रभु के पास चली जाएगी; मेरी पत्नी के लिए वहाँ उसकी जगह लेने की व्यवस्था करो, ताकि वह अपनी कोठरी में उपवास और पूर्ण एकांत में रह सके। सबसे छोटा बच्चा तब तक उसके साथ रहे जब तक वह वयस्क न हो जाए। वह मेरे पदचिह्नों पर चलेगा और यरूशलेम में प्रेरितिक सिंहासन पर प्रतिष्ठित होगा।

इस प्रकट होने के बाद, तीसरे दिन उस मठ में वृद्ध मौन संन्यासिनी का निधन हो गया, और बाद में एडर के दोनों बच्चे भी मर गए। केवल एक बचा, सबसे छोटा बच्चा, जो भी मृत्युशय्या पर था। अपना पति खोने और अपने दो बच्चों की मौत के शोक में डूबी माँ, यह देखकर कि उसका अंतिम बच्चा भी मौत के कगार पर था, अपने गहरे दुख में फूट-फूट कर रोई; फिर, उस शिशु को अपनी बाहों में उठाकर, वह मेरे पास दौड़ी, हालाँकि मैं इसके लायक नहीं हूँ। रास्ते में ही, शिशु अपनी माँ की बाहों में ही मर गया, और माँ को समझ नहीं आया कि ऐसी दुखद स्थिति में क्या करे। संयोग से—या यूँ कहें कि दैवीय कृपा से—उसकी मुलाकात एक वेश्या से हुई, और माँ ने तुरंत मृत बच्चे को उसकी बाहों में रखकर उसके पैरों पर गिर पड़ी, और आँसुओं के साथ उससे बच्चे के लिए ईश्वर से प्रार्थना करने की विनती करने लगी। हालाँकि, वेश्या ऐसी विनती से चकित होकर कहने लगी कि वह एक स्पष्ट पापी है, जो कई अपराधपूर्ण और घृणित कर्मों की दोषी है, और इसलिए वह ईश्वर से प्रार्थना करने की हिम्मत भी नहीं कर सकती, न ही वह स्वर्ग की ओर अपनी आँखें उठा सकती है और न ही प्रार्थना के लिए अपना मुँह खोल सकती है। तथापि, वह माँ, मानो शोक से पागल हो गई हो, उसके पैरों

से लपिटी रहकर वनिती करती रही। तब वेश्या ने, अपना मुख पूर्व की ओर करके, हृदय की गहराई से एक आह भरी; अपने वक्ष पर हाथ मारते और जोर-जोर से रोते हुए, उसने इस प्रकार प्रार्थना करना शुरू कयिा:

'हे प्रभु, मैं अपने अनेक पापों के कारण स्वर्ग की ऊँचाइयों को देखने या अपने अशुद्ध होठों से तेरे पवत्रि नाम का उच्चारण करने की भी योग्य नहीं हूँ; परन्तु, उस प्राचीन स्त्री की नाईं जो तेरे पादों पर रोई थी (लूका 7:36–50), मैं मानवता के लिए आपके प्रेम से वनिती करती हूँ – अपनी भलाई से अब हम पर अपनी दया उंडेलिए! उस पापी ने अपने पापों के लिए क्षमा मांगी, जबकि मैं, अपने अनगनित अपराधों के लिए क्षमा मांगने की हम्मित न करते हुए, इस मासूम शशिु के लिए प्रार्थना करती हूँ, जैसा कि आपकी यह पवत्रि दासी मुझसे इतनी वनिती करती है। हे जीवन दाता, हे सर्व के उद्धारकर्ता! इस बच्चे को जीवन प्रदान करें। यदि मैं, एक कठोर और नर्दियी हृदय वाली महलिा, उसके प्रति दिया महसूस करती हूँ, तो आप, जो अपनी प्रकृति से ही मानवता के प्रति दियालु और प्रेममय हैं, अपनी सृष्टि पर कितिनी अधकि दया करेंगे!

हे ईश्वर की अनुपम कृपा! जब पापी ने इस प्रकार प्रार्थना की, तो बच्चा जीवति हो उठा। स्पष्ट है कि ईश्वर ने उस पापी महलिा की प्रार्थना सुनी, जसिने पश्चातापपूर्ण हृदय से प्रार्थना की और वनिम्रतापूर्वक अपने पापों का स्वीकार कयिा, और उसकी प्रार्थनाओं के माध्यम से, उसके भवष्यि में होने वाले धर्मांतरण और आने वाले पवत्रि जीवन की पूर्वदृष्टि रिखते हुए, मृत बच्चे को जीवति कर दयिा। माँ ने अपने बच्चे को जीवति देखकर अत्यधकि आनंदति हुई और ईश्वर की स्तुति की, जबकि पापी, ऐसे चमत्कार को देखकर भय से भर गई और एक शब्द भी बोलने में असमर्थ होकर, जोर-जोर से रोते हुए जमीन पर लोट गई। ईश्वर अपने कार्यों में कितिना अद्भुत है! उसने बच्चे को मृतकों में से जलिाया, शोकग्रस्त माँ को सांत्वना दी, वेश्या को सच्ची पश्चाताप की ओर प्रेरति कयिा, और एक संत की सेवा के लिए अपने लिए एक योग्य सेवक तैयार कयिा। – यह पुनर्जीवति बच्चा बाद में यरूशलेम का पैट्रआर्क बना।

जब यह सब सड़क पर हो रहा था, मैं स्तंभ से देख रहा था और दव्यि प्रकटवाक्य द्वारा, मैंने स्वर्ग से उतरती और प्रार्थना कर रहे पापी, मृत बच्चे और रोती हुई माँ पर चमकती एक तेज रोशनी देखी। अपने शष्यि को बुलाकर, मैंने उसे उन दोनों महलिाओं को लाने के लिए भेजा; और जब वे आईं, तो उन्होंने मेरे प्रश्नों के उत्तर में, प्रभु द्वारा मुझे प्रकट कएि गए वचन के अनुसार, मुझे सब कुछ वस्तिार से बताया। हालाँकि, अदर की पत्नी ने कहा:

'न्यायाधीश, माननीय पति, मेरे और मेरे पति, आपके आध्यात्मकि पुत्र, के बीच नर्णिय करें। मैंने कुंवारी होते हुए उससे ववािह कयिा, तीन बच्चों की माँ बनी, फरि भी वह, मेरी कसिी गलती के बनिा, अज्ञात स्थानों पर चला गया। जब मैंने बहुत समय आँसुओं में बतिाया, तो वह एक बार मुझे सपने में एक चमकदार चोगा पहने दखिाई दयिा, और कहा:

'देखो, मैं इन शशिुओं को अपने पास ले जा रहा हूँ; और तुम, यदि चाहो, तो अपनी आत्मा को बचा लो!'

उस दर्शन के बाद, मेरे दो बच्चे मर गए, और अब वह आखरिी वाले को भी ले जाना चाहता है और मुझे दुख और पछतावे में मरने के लिए छोड़ देना चाहता है। अगर वह यह सब आपके आदेश पर कर रहा है, तो फरि ईश्वर ही मेरे और आपके बीच फैसला करे!

मैंने उससे कहा:

'मेरी बेटी, शोक मत करो; तुम्हारा बेटा नहीं मरेगा, बल्कि जीवति रहेगा और उसे महान महमिा प्राप्त होगी। और तुम, अपने पति की सलाह पर, अपनी आत्मा को बचाने का ध्यान रखना। मेरे पास के मठ में तुम्हारे लिए एक एकांत कोठरी तैयार की गई है। मसीह की एक धर्मपरायण दासी, जो तपस्या में बूढ़ी हो गई थी, का नधिन हो गया है – उसकी जगह लो और उसका अनुकरण करो।

वह महलिा तुरंत मेरी बात मान गई, और फरि उस पापी ने, आँखों में आँसू लिए, वनिती करनी शुरू कर दी कि उसे भी एक पश्चातापी के रूप में स्वीकार कयिा जाए और पवत्रि तपस्वयिों में गनिा जाए।

कुछ समय बाद, सभी संपत्ति गरीबों में बाँटने के बाद, दोनों महलिाएँ पवत्रि तपस्वयिों के मठ में प्रवेश कर गईं, बहुत धर्मनष्ठि भक्षिुणयिाँ बन गईं, और अपने तपस्वी प्रयासों से परमेश्वर को प्रसन्न कयिा। जहाँ तक उस बच्चे का सवाल है जसिे मृतकों में से जलिाया गया था, जब वह वयस्क हुआ, तो वह फलिस्तिीन के लिए रवाना हो गया और, सेंट सावस के मठ में रहते हुए, उसे पता चला कि उसके पति ने वहाँ मठवासी जीवन जयिा था। उसने स्वयं वहाँ मठवासी संस्कार ग्रहण कएि और, अपने पति की कोठरी का अनुरोध करके, अपने लंबे समय के तपस्वी प्रयासों के माध्यम से फलिस्तिीनी संतों का सम्मान अर्जति कयिा। ईश्वर की इच्छा से, उन्हें यरूशलेम के पैट्रआर्कल सहिासन पर पदोन्नत कयिा गया;

उन्होंने सात वर्षों तक मसीह की कलीसिया का बुद्धिमानी से शासन किया, और फिर, निर्दोषता में अपना सांसारिक प्रवास पूरा करने के बाद, वे अपने शाश्वत निवास के लिए प्रस्थान कर गए।

स्तंभवासी के इस अद्भुत वृत्तांत ने मसीह के संत थियोडोर को बहुत सांत्वना दी, और उसने उस स्तंभवासी से पूछा:

'मुझे बताइए, आध्यात्मिक पिता, आप इस स्तंभ पर कितने समय से रह रहे हैं? और, मैं आपसे विनती करता हूँ, प्रभु के लिए, अपने जीवन के बारे में सब कुछ बिना कुछ छिपाए मुझे बताइए।'

तथापि, वृद्ध ने अपने हृदय की गहराई से आह भरते और आँखों में आँसू लिए हुए कहा:

'प्रभु के नाम की खातिर और सच्चे प्रेम से, मैं तुम्हें सब कुछ बताऊँगा, हे मसीह के वचन के झुंड के भले चरवाहे; परन्तु इसे तब तक गुप्त रखना जब तक प्रभु मुझे इस जीवन से न ले जाएँ। अपने यौवन के दिनों में, मैंने अपने बड़े भाई जॉन के साथ संसार का त्याग कर दिया था। तीन साल तक हम मठ में परिश्रम करते रहे, और फिर हमारे भीतर रेगिस्तान में एकांत जीवन जीने की इच्छा जागी। हमारे आध्यात्मिक पिता की सलाह पर, हम बाबेल के पास रेगिस्तान में चले गए और वहाँ एक-दूसरे के पास स्थित दो गुफाएँ पाकर, हम उनमें अकेले रहने लगे, प्रत्येक अपनी-अपनी गुफा में। हमारा भोजन रेगिस्तान में मिलने वाली हरी सब्जियों और जंगली फलों से होता था, और शनिवार तथा रविवार को हम एक साथ प्रार्थना करते और भजन गाते थे; संन्यासियों का परंपरागत भोजन एक साथ करने के बाद, हम अपने-अपने गुफाओं में लौट आते, अकेले प्रार्थना करते और ईश्वर का ध्यान करते थे। मरुभूमि में चलते समय, हम एक-दूसरे से मिलने से भी बचने की कोशिश करते थे, और केवल प्रभु का स्वर्गदूत ही था जो अक्सर हमारे एकांत में आता था और हमें सांत्वना देता था। एक बार, जब हम अलग-अलग जंगल में पौधे इकट्ठा करते हुए चल रहे थे, तो मैंने दूर से अपने भाई को देखा; जैसे ही वह चल रहा था, वह अचानक हैरानी से रुक गया, और फिर, एक पल के लिए खड़े रहने के बाद, उसने क्रॉस का चिह्न बनाया और अपने सामने की जगह पर इस तरह से कूद गया जैसे कि वह कोई जाल हो, और जल्दी से अपनी गुफा में भाग गया। मैं भी अपने भाई के व्यवहार से चकित था और यह देखने गया कि उसे भागने का क्या कारण बना। उस जगह के पास पहुँचने पर, मैंने बिखिरा हुआ बहुत सारा सोना देखा; तो, एक प्रार्थना करने और अपना लबादा उतारने के बाद, मैंने बिखिरा हुआ सोना उसमें इकट्ठा किया और अपने भाई से इस बारे में एक शब्द भी कहे बिना, बड़ी मुश्किल से उसे गुफा तक वापस ले जा सका। तब मैं नगर गया और बड़े कमरों तथा स्वच्छ जल के झरने वाला एक सुंदर, मजबूत मकान खरीदा। वहाँ मैंने एक चर्च और एक मठ स्थापित किया, चालीस भिक्षुओं को इकट्ठा किया, यात्रियों और रोगियों को आराम देने के लिए अतिथि गृह और अस्पताल की स्थापना की, तथा मठ के लिए पर्याप्त भूमि खरीदी। सब कुछ व्यवस्थित करने के बाद, मुझे एक बुद्धिमान व्यक्ति मिला जिसे मैंने उस मठ का मठाधीश नियुक्त किया। मठ स्थापित करने के सभी खर्चों को पूरा करने के बाद भी मेरे पास दो हजार ज़्लैट्निट्स बचे थे; इनमें से, मैंने मठ की ज़रूरतों के लिए मठाधीश को एक हज़ार दे दिए, और बाकी एक हज़ार गरीबों में बाँट दिए, और अपने लिए एक भी ज़्लैट्निक नहीं रखी। तब, मठाध्यक्ष और भाइयों से विदा लेकर, मैं अपने भाई को खोजने के लिए एक बार फिर से रेगिस्तान में लौट आया। जैसे ही मैं रेगिस्तान में चला, मेरे हृदय में एक घमंडी विचार उत्पन्न हुआ: 'मेरे भाई ने जो सोना पाया था, उसका उपयोग किसी अच्छे काम के लिए नहीं कर सका, जबकि मैंने कुछ महान और ईश्वर को प्रसन्न करने वाला कार्य किया है।' जब मैं इस पर विचार कर रहा था, तो मैं उस स्थान के पास पहुँचा जहाँ मेरा भाई रहता था, और उस पर मेरी श्रेष्ठता का घमंडी विचार मुझे छोड़ नहीं रहा था। और फिर प्रभु का स्वर्गदूत, जो मुझसे पहले भी मिल चुका था, मुझसे मिलने बाहर आया और मुझे एक कठोर दृष्टि से घूरते हुए, गुस्से में कहा:

'तुम अपने भाई के सामने घमंड क्यों करते हो और स्वयं को बड़ा क्यों समझते हो? मैं तुझसे सच कहूँगा: तेरी सारी पुरानी मेहनत, मठ स्थापित करने के तेरे सारे प्रयास, उस कार्य के सामने कुछ भी नहीं हैं जो तेरे भाई ने तब किया जब वह अपने द्वारा पाए गए सोने के ढेर पर कूदा था। उसने सोने पर नहीं, बल्कि उस महान खाई पर छलांग लगाई जो धनी आदमी और लाजरूज़ के बीच बनी थी (लूका 16:26–31); वह हल्के पंखों पर उड़कर पार चला गया, और अब्राहम की गोद उसकी प्रतीक्षा कर रही है। उसने परमेश्वर को प्रसन्न करने का प्रयास किया; तुमने, लोगों को प्रसन्न करने का। इसलिए, ईश्वर की दृष्टि में आपका भाई निस्संदेह आपसे श्रेष्ठ है, और आप किसी भी तरह से उसकी बराबरी नहीं कर सकते, भले ही आप खुद को उससे बेहतर समझते हों। इस अहंकार के कारण, आप इस जीवन में न तो उसे देखेंगे और न ही मुझे, और आपको ईश्वर को प्रसन्न करने के लिए बहुत आँसू बहाने होंगे।

यह कहकर, स्वर्गदूत मेरी दृष्टि से ओझल हो गया, और मैं उस गुफा की ओर भागा जहाँ मेरा भाई रहता था, लेकिन वहाँ मैंने उसे फिर नहीं देखा। मैं तब तक जोर-जोर से रोता रहा जब तक कि मैं पूरी तरह से थक नहीं गया, और फिर, सात दिन बाद, मैंने दूर से स्वर्गदूत की आवाज़ सुनी, जो मुझसे कह रही थी:

'तुम्हें एदेसा नगर जाना चाहिए और वहाँ, सेंट जॉर्ज के चर्च के पास, इस स्तंभ पर चढ़ना चाहिए और तब तक पश्चाताप में रहना चाहिए जब तक प्रभु तुम पर दया न करें।'

तो, मैं रोते हुए रेगिस्तान से निकल पड़ा और, यहाँ पहुँचकर, इस स्तंभ पर चढ़ गया। यहाँ हम उनचास वर्षों तक रहे, हमारे चारों ओर एक काले बादल की तरह मंडरा रहे विभिन्न विचारों से संघर्ष करते हुए, जबकि हमारा हृदय अवर्णनीय दुख से भरा हुआ था। मेरी पचासवीं वर्षगाँठ पर, एक शनिवार की देर शाम, मैंने अपने अंतर्मन में एक प्रकार की मधुर प्रबोधन की अनुभूति की, और उसके साथ ही विचारों का वह अँधेरा बादल जो मुझ पर भारी था, छँट गया। मैंने पूरी रात बिना सोए बिताई, ईश्वर से हार्दिक भक्ति के साथ प्रार्थना करते हुए और सांत्वना के आँसुओं से अपना चेहरा धोते हुए। जब रविवार की सुबह हुई और मैं तीसरे घंटे के प्रथागत भजन गा रहा था, तो एक पवित्र देवदूत अचानक मेरे सामने प्रकट हुआ और कहा:

'तुम्हें शान्ति और उद्धार मिले!'

मैं, इस दिव्य दर्शन से सांत्वना पाकर, ज़मीन पर गिर पड़ा और आँसुओं के बीच कहा:

'तुमने मुझे अपनी उपस्थिति से क्यों दूर कर दिया और मुझे मेरे भाई से क्यों अलग कर दिया? अब मैं कई प्रलोभनों का शिकार हो रहा हूँ!'

देवदूत ने मेरा हाथ पकड़कर मुझे उठाया और मुझसे कहा:

'तुम्हारे अहंकार के कारण, जिससे तुमने मन ही मन अपने भाई को तुच्छ समझा, मैं तुम्हारी दृष्टि से छिप गया; फिर भी मैंने तुम्हें पूरी तरह नहीं छोड़ा, बल्कि परमेश्वर की आज्ञा के अनुसार तुम्हारी रक्षा करते हुए, अदृश्य रूप से तुम्हारे साथ रहा। परन्तु अब, तुम्हारी नम्रता के कारण, प्रभु ने तुम्हें स्मरण किया है और मुझे इसलिये भेजा है कि मैं इस जीवन में और आने वाले जीवन में, खुले रूप से तुम्हारे साथ रहूँ। अब प्रभु द्वारा आपको विवेक का धन्य वरदान दिया जा रहा है, ताकि आप धर्मी और पापी में अंतर कर सकें, धर्मी में आनन्दित हों, और पापियों के लिए प्रार्थना करें, कि वे अपने पापी जीवन से मुँह फेरकर पश्चाताप करें। और आपका भाई जीवित है और हर समय प्रभु से आपके लिए प्रार्थना करता है, परन्तु आप उसे केवल आने वाले जीवन में ही देखेंगे।

'ईश्वर के बिशप, मैं अपने जीवन के बारे में आपको बस इतना ही बता सकता था!'

तब संत थियोडोर ने उनसे पूछा कि वे धर्मात्माओं को पापियों से कैसे पहचानते हैं। स्टाइलाइट ने उत्तर दिया:

– 'यदि कोई धर्मी और ईश्वर-भयभीत व्यक्ति इस स्थान से गुजरता है, तो मैं उस पर ईश्वर की कृपा को चमकते हुए देखता हूँ; उसके दोनों ओर पवित्र और तेजस्वी स्वर्गदूत चलते हैं, जबकि दूर में ऐसे राक्षस चलते हैं जो उसके पास आने की हिम्मत नहीं करते। लेकिन अगर कोई पापी मेरे पास से गुजरता है, तो मैं उसे घेरते हुए प्रसन्न राक्षसों का एक झुंड देखता हूँ, जबकि दूर एक देवदूत पापी के विनाश पर विलाप करते और रोते हुए चलता है। और जब राक्षस उस व्यक्ति को हमेशा के लिए नष्ट करने की कोशिश करते हैं, तो देवदूत, अपने हाथों में एक अग्नि-शस्त्र लेकर, उन्हें भगा देता है।

संत थियोडोर को विश्वास के प्रतिष्ठित स्तंभ के साथ ऐसी आत्मा-पोषक बातचीत में बहुत सांत्वना मिली, और वह ईश्वर का धन्यवाद करते थे कि उन्हें अपने झुंड में ऐसा व्यक्ति मिला था—जो प्रभु का ईश्वर-प्रेरित सेवक और एक सूक्ष्मदर्शी पिता था। तब से, वह अक्सर उनसे मिलने जाते थे और उनके साथ आध्यात्मिक बातचीत में संलग्न होते थे।

इस प्रकार संत थियोडोर ने बुद्धिमानी से मसीह के झुंड की देखभाल की, और बढ़ चुकी विधर्मियों को खत्म करने का प्रयास किया। हालाँकि, विधर्मी क्रोध से भर गए और उन्होंने पवित्र चरवाहे के खिलाफ खुले तौर पर साजिशें रचनी शुरू कर दीं। उन्होंने एक पूरी सशस्त्र भीड़ के साथ, सेवा के दौरान चर्च पर धावा बोलने, चरवाहे को मारने और झुंड को तितर-बितर करने का संकल्प लिया; लेकिन वे सफल नहीं हुए, और धर्मग्रंथ के वचन उन पर पूरे हुए: *'उन्होंने योजनाएँ बनाईं, लेकिन उन्हें पूरा नहीं कर सके'* (भजन संहिता 20:12)। जब भी वे चर्च के पास आते, तो ईश्वर की शक्ति उन्हें प्रवेश करने से रोक देती: कभी-कभी उनके हाथ सुन्न हो जाते, और कभी-कभी चर्च से अचानक निकलकर उनकी ओर आती एक आग की लपट उन्हें पीछे धकेल देती। काफी समय तक वे यह सोचकर असमंजस में रहे कि क्या करें, लेकिन फिर उन्होंने अलग तरीके से काम करने का फैसला किया। उन्होंने उस क्षेत्र के शासकों को परमेश्वर की कलीसिया और संत के विरुद्ध भड़काया, अगारीय लोगों (एदेसा सारसेन के शासन में थी) ने उन्हें भव्य उपहार दिए; और, उनकी

अनुमति और सहायता से, उन्होंने चर्च से कई संपत्तियाँ, गाँव, खेत, बगीचे और अन्य सभी चीजें जब्त कर लीं, जिनसे बिशप का परिवार और बाकी पुरोहित अपनी आजीविका कमाते थे। उन्होंने, और विशेष रूप से अमीर मनीकियों ने, अन्य ऑर्थोडॉक्स ईसाइयों के खिलाफ भी कई अन्याय और हिंसा के कृत्य किए।

संत थियोडोर को बेबीलोन जाकर आद्रामेलेक के उत्तराधिकारी, मावियस नामक सारासेन राजा से चर्च पर हो रहे अन्याय की शिकायत करने और इन अन्यायों को समाप्त करने के साथ-साथ पूरे मामले की निष्पक्ष जांच का अनुरोध करने के लिए मजबूर होना पड़ा। सबसे पहले, संत थियोडोर परम पूजनीय स्तंभवासी से सलाह लेने गए। स्तंभवासी ने उनके इरादे को मंजूरी दे दी और उनके साथ होने वाली हर घटना की भविष्यवाणी की। उन्होंने कहा कि संत अपने द्वारा निर्धारित कार्य को सफलतापूर्वक पूरा करेंगे और न केवल चर्च की सभी ज़रूरतें पूरी होंगी, बल्कि वे स्वयं राजा को भी ईसाई धर्म में धर्मांतरित कर देंगे। स्तंभ पर रहने वाले संन्यासी ने उन्हें अपने भाई जॉन को खोजने की सलाह दी, जो बेबीलोन के ऊपर कहीं रेगिस्तान में मिलना था, और उन्होंने अपने भाई को एक पत्र भी लिखा। संत, स्तंभवासी से विदा लेकर, बिशप के यहाँ लौट आए; और कुछ दिनों बाद उन्होंने अपनी यात्रा की तैयारी की और, अपने झुंड और अपने लिए ईश्वर से प्रार्थना करने के बाद, अपने चुने हुए रास्ते पर चल पड़े।

बाबेल पहुँचने पर, संत थियोडोर ईसाई चर्च गए और स्थानीय मेट्रोपॉलिटन के सामने प्रस्तुत हुए, जिन्होंने संत थियोडोर का खुशी-खुशी स्वागत किया और उन्हें रहने की व्यवस्था प्रदान की। जब मेट्रोपॉलिटन ने थियोडोर से उसकी यात्रा के उद्देश्य के बारे में पूछना शुरू किया, तो थियोडोर ने उसे चर्च पर विधर्मियों द्वारा किए गए सभी हमलों, चर्च की संपत्ति की लूटपाट और ऑर्थोडॉक्स श्रद्धालुओं के दुखों के बारे में विस्तार से बताया। उस समय, मेट्रोपॉलिटन के साथ दो दरबारी थे; एक शाही लिपिकारों का प्रमुख था, और दूसरा चिकित्सकों का प्रमुख था। दोनों ही ऑर्थोडॉक्स ईसाई थे। बिशप का वृत्तांत सुनकर, वे हृदय से उनकी सहानुभूति करने लगे। तब मेट्रोपॉलिटन ने दरबारियों से एडेसा से बिशप के आगमन की सूचना ज़ार को देने के लिए कहा, लेकिन उन्होंने उत्तर दिया:

'अब समय नहीं है – ज़ार गंभीर रूप से बीमार हैं; उनकी बीमारी के कारण उनकी दृष्टि कमज़ोर हो गई है और उनकी आँखों में छाले हैं। इसके अलावा, उनका जिगर सूज गया है, जो हमारी राय में एक लाइलाज बीमारी है। हम इतने बड़े संकट के समय में उनसे किसी भी मामले पर कैसे बात कर सकते हैं?'

हालाँकि, संत थियोडोर ने उनसे कहा:

'कौन जाने, मेरे स्वामियों – शायद, मेरी विनम्रता के लिए, प्रभु उन्हें ठीक कर दें?'

उन्होंने उनसे उत्तर दिया:

'यदि आप चिकित्सा में निपुण हैं या ईश्वर से आपको चंगा करने का वरदान मिला है, तो यह आपके लिए स्वयं के पक्ष में एक अनुकूल निर्णय प्राप्त करने का बिल्कुल सही समय है।'

सुबह, मुख्य चिकित्सक, राजा को उसकी सामान्य चिकित्सा प्रदान करने के लिए उसके सामने आकर, उसे बताया कि एडेसा से आए बिशप बीमारियों को ठीक करने में बहुत सफल थे। राजा ने तुरंत उसे बुलाने का आदेश दिया, और बिशप राजा के पास गए, अपने हृदय में दाऊद का भजन गाते और प्रार्थना करते हुए: *'जो परमप्रभु की छाया में रहता है'* (भजन संहिता 90:1–16)। जैसे ही वे राजा के शयनकक्ष में प्रवेश किए, बीमार राजा ने मुश्किल से सुनाई देने वाली आवाज़ में कहा:

'बिशप! यदि आप कर सकते हैं, तो मेरी मदद करें। मैं बहुत कष्ट में हूँ और मृत्यु के बहुत करीब हूँ।'

मसीह के पवित्र व्यक्ति ने, अपने हृदय की आँखें परमेश्वर की ओर उठाकर और दृढ़ विश्वास के साथ, शीघ्र उपचारकर्ता प्रभु मसीह से सहायता के लिए पुकारते हुए, एक स्वच्छ पात्र और कुछ स्वच्छ जल लाने का आदेश दिया। अपने साथ मसीह के जीवन-दायक मकबरे की थोड़ी सी मिट्टी लेकर, उन्होंने इस मिट्टी को पानी में घोल दिया, और राजा को इसका कुछ हिस्सा पीने का आदेश दिया, जबकि बचे हुए पानी से उन्होंने राजा के सिर, ललाट, पलकों, आँखों, हृदय और कंधों पर अभिषेक किया। इसके बाद, उन्होंने निवेदन किया कि राजा को शांति से सोने दिया जाए, और वे स्वयं सराय में चले गए। बीमार राजा गहरी नींद में पड़ गया, और जब वह सो रहा था, तो उसकी सभी बीमारियाँ दूर हो गईं; और मसीह की कृपा तथा संत थियोडोर बिशप की प्रार्थनाओं के द्वारा, उसे मृत्यु के द्वार से वापस लाया गया। जागने पर, राजा पूरी तरह से स्वस्थ महसूस कर रहा था, और उसकी आँखें साफ थीं। वे इतनी तेज़ और अप्रत्याशित पूर्ण चिकित्सा से बहुत आश्चर्यचकित थे और, अपनी प्रसन्नता में, उन्होंने तुरंत आदेश दिया कि चिकित्सा की कला में निपुण इस पवित्र बिशप

को उनके पास बुलाया जाए, और उन्होंने उनकी लंबी-चौड़ी प्रशंसा की। फिर संत ने राजा को कुछ खाने के लिए कहा, और राजा ने एक पूरी तरह से स्वस्थ व्यक्ति की तरह खाया और पिया।

अगली सुबह, राजा ने अपने सभी वरिष्ठ सामंतों को बुलाया और एक ऊँचे सिंहासन पर बैठकर, सभी को स्पष्ट रूप से दिखाया कि वह ठीक हो गया था। राजा के ठीक होने पर सभी ने आनंद मनाया, और उस दिन राजा ने सभी सामंतों, शहर के गवर्नरों, सेना और सभी लोगों के लिए एक बड़ा भोज आयोजित किया। हर्षोल्लास से भरा भोज शुरू हुआ, और राजा ने पूरी सभा के सामने संत थियोडोर बिशप का सम्मान किया, उन्हें महान उपहार दिए, और उन्हें अपनी आँखों की रोशनी कहा। तीसरे दिन, राजा ने उन्हें अपनी उपस्थिति में बुलाया—और संत थियोडोर को विशेष सम्मान दिया गया—और कहा:

'हे ईश्वर के पुरुष, मेरी आँखों का प्रकाश! मुझे बताओ, तुम यहाँ किस कारण से आए हो? जो कुछ भी तुम मुझसे माँगोगे, मैं वह दूँगा।'

तब मसीह के पवित्र सेवक ने राजा को पूरी विस्तार से उन सभी अन्यायों के बारे में बताना शुरू किया जो पवित्र चर्च और ऑर्थोडॉक्स ईसाइयों के खिलाफ हो रहे थे, चर्च की संपत्ति की लूट, और हर तरह के उत्पीड़न और हमलों के बारे में। तब राजा ने आदेश दिया कि तत्काल ही सिलिसिया, सीरिया और मेसोपोटामिया के राज्यपालों को एक पत्र लिखा जाए[4990] , जिसमें उन्हें निर्देश दिया गया कि वे एडसा की चर्च को उसकी सभी संपत्तियाँ शीघ्रता से वापस करें, और ईसाइयों पर किए गए अत्याचारों के लिए दोषियों को न्याय के कटघरे में लाएं। इसके अलावा, राजा ने आदेश दिया कि विधर्मी कैथोलिक चर्च में शामिल हो जाएँ; यदि, तथापि, वे इस आदेश का पालन करने से इनकार करते हैं, तो उन्होंने आदेश दिया कि मिनीकियों की जीभ काट दी जाए, और नेस्टोरियन, सेवेरियन और यूटकियिनों को शहर से निष्कासित कर दिया जाए, जबकि उनके सभा स्थलों को नष्ट कर दिया जाए। जब यह शाही फरमान दर्ज कर लिया गया, तो राजा ने संत से कहा:

'आप, फादर, कुछ समय के लिए हमारे साथ यहीं रुकिए, और मैं अपने फरमान के साथ एक राज्यपाल भेजूंगा ताकि वह इसे अक्षरशः लागू कर सके। अपने किसी शिष्य को उनके साथ भेजिए, और किसी और बात की चिंता मत कीजिए: जैसा आप चाहेंगे, वैसा ही सब कुछ हो जाएगा!'

इस प्रकार, राजा ने एक राज्यपाल और बिशप ने तीन पुरोहित भेजे, और जल्द ही अड्डाई से खबर आई कि वहाँ सब कुछ व्यवस्थित कर दिया गया है। कई विधर्मी, राजा की धमकियों से डरकर, ऑर्थोडॉक्स चर्च में शामिल हो गए, जबकि अन्य, जो अपनी अधर्मीता पर अड़े रहे, उन्हें शारीरिक दंड दिया गया या निर्वासित कर दिया गया।

बाबेल में रहते हुए, बिशप संत थियोडोर को अक्सर एक चिकित्सक के रूप में राजा के दरबार में बुलाया जाता था, और ऐसा करते हुए उन्होंने धीरे-धीरे मसीह की शिक्षा के बीज बोए। ये बीज राजा के हृदय की उपजाऊ भूमि पर गिरे, और राजा पहले ही कुछ हद तक सच्चे ज्ञान के प्रकाश से प्रबुद्ध हो चुका था। तब संत ने राजा से थोड़े समय के लिए निर्जन स्थान में जाने की अनुमति मांगी, ताकि वह उस तपस्वी को ढूंढ सके जिसे स्तंभवासी ने उसे बताया था। जब अनुमति मिल गई, तो वह अपने दो शिष्यों के साथ निकल पड़ा और शहर से लगभग सौ स्टेडियम की यात्रा करने के बाद, ईश्वर की कृपा से, उसे रेगिस्तान में, एक अंधेरी गुफा में, जो मुश्किल से पहुँच योग्य थी, स्तंभवासी के भाई, आदरणीय जॉन, मिले। सम्माननीय स्वयं बिशप से मिलने बाहर आए और उन्होंने संत तथा उनके शिष्यों के नाम पुकारे। एक प्रार्थना करने और एक-दूसरे को अभिवादन करने के बाद, वे बैठ गए और आध्यात्मिक बातचीत में लगे। रेवरेंड जॉन अपने भाई, स्तंभवासी थियोडोसियस से बहुत मिलते-जुलते थे। उन्होंने संत से अपनी गुफा में दैवीय पूजा (Divine Liturgy) करने और उन्हें मसीह के शरीर और रक्त के परम पवित्र रहस्यों (Most Holy Mysteries) का प्रशासन करने का अनुरोध किया, और बिशप ने उनकी इच्छा पूरी की – उन्होंने पूजा की और उन्हें संप्रदायिक भोजन (Communion) दिया। पवित्र सहभाग प्राप्त करने के बाद, तपस्वी आध्यात्मिक आनंद से भर गया और उसने अपने मेहमानों को एक तपस्वी का भोजन, , परोसा, जो उन्हें असामान्य रूप से स्वादिष्ट लगा। इसे चखने के बाद, उन्होंने ईश्वर का धन्यवाद किया और अपने आध्यात्मिक संवाद को फिर से शुरू किया। बड़े भाई ने बिशप से कहा:

'फादर! वह पत्र कहाँ है जो मेरे भाई, स्टाइलाइट ने मुझे लिखा था?'

बिशप, बूढ़े की सूझबूझ से चकित होकर, उनसे पूछा:

[4990] मेसोपोटामिया – टिग्रिस और यूफ्रेटिस नदियों के बीच स्थित एक चट्टानी और रेतीला क्षेत्र, जो उत्तर में आर्मेनिया से लेकर दक्षिण में फारस की खाड़ी तक फैला हुआ है।

'आपको कसिने बताया, बाबा, कि आपके भाई का आपके लिए कोई पत्र है?'

सम्माननीय वृद्ध ने उत्तर दिया:

'जिस क्षण पत्र लिखा गया था, मुझे वह पढ़कर सुनाया गया, और तुरंत मैंने पत्र के पीछे अपने भाई को अपना उत्तर लिखा।'

बिशप ने अपने थैले से मुहरबंद पत्र निकाला और उसे तपस्वी को देने ही वाले थे, लेकिन तपस्वी ने बिशप से पत्र की मुहर खोलकर उसे पढ़ने के लिए कहा। जब बिशप ने उनकी बात मानी, तो उन्हें पत्र के पीछे की ओर निम्नलिखित शब्द मिले:

'बाबेल की गुफाओं से, संन्यासियों में सबसे छोटा जॉन, मेरे अपने भाई, सीरिया के स्टाइलाइट थियोडोसियस को, प्रभु में आनन्द की शुभकामनाएँ!' मैंने आपका पत्र ठीक उसी समय पढ़ा जब वह लिखा गया था और तुरंत ही आपको अपना उत्तर लिख दिया; क्योंकि यद्यपि हम शारीरिक रूप से बहुत दूर हैं, मेरी आत्मा निरंतर आपके साथ वास करती है, और जो कुछ ईश्वर आपको प्रकट करते हैं, वह मुझे भी ज्ञात है। पवित्र बिशप के संबंध में आपने जो कुछ भी लिखा है, वह दैवीय व्यवस्था के कार्य द्वारा घटित हो रहा है। पवित्र कलीसिया को बल मिल रहा है; विधर्मी लज्जित हो रहे हैं और भगा दिए जाएँगे; अविश्वासी राजा, अपनी शारीरिक आँखों के प्रकाश के साथ-साथ, अपनी आध्यात्मिक आँखों का प्रकाश भी प्राप्त कर रहा है। प्रभु में कुशल रहो, हे भाई, और मेरे लिए हमारे प्रभु मसीह से प्रार्थना करो, कि आने वाले जीवन में हम एक-दूसरे को देखें और अविभाज्य रूप से एक साथ रहें।

यह अद्भुत उत्तर पढ़कर चकित हो गए बिशप ने भविष्यवक्ता हबक्कूक को याद किया, जिन्हें एक स्वर्गदूत ने यहूदिया से बेबीलोन में दानियेल के पास ले जाया था और ठीक उसी घड़ी यहूदिया वापस लौटा दिया था, और उन्होंने अपने आप से कहा:

'सर्वशक्तिमान परमेश्वर, जिन्होंने प्राचीन काल में ऐसा चमत्कार किया था, वे अब भी ऐसा ही एक चमत्कार कर सकते हैं: वे अपने पवित्र लोगों में अद्भुत हैं (भजन संहिता 67:36)।'

पवित्र बिशप एक दिन और एक रात तक पूज्य तपस्वी के साथ रहे, और अगले सुबह प्रार्थना करने के बाद उन्होंने विदा ली और बेबीलोन लौटकर राजा के पास पहुँचे। राजा ने उनसे कहा:

'हे परम कृपालु पिता, मैं न तो इस जीवन में और न ही अगले जीवन में आपसे कभी अलग होना चाहता हूँ – मेरी आत्मा प्रेम के बंधन में आपसे इतनी गहराई से जुड़ गई है!'

बिशप ने उत्तर दिया:

'मैं देखता हूँ कि आपके और मेरे बीच के दरवाज़े खुले हैं। मुझे बाहर जाने की ज़रूरत नहीं है, और न ही आपको मेरे पास आने की। लेकिन जब दरवाज़े बंद हो जाएँगे, तो हम एक-दूसरे से अलग हो जाएँगे, और यह बात मेरी आत्मा को गहराई से दुखी करती है।'

तब राजा ने कहा:

'ये दरवाज़े क्या हैं, और इनके बंद होने का क्या मतलब है? मैं आपसे विनती करता हूँ, मुझे बताइए, ताकि मैं समझ सकूँ!'

तब संत ने, अपने वक्ष से पवित्र सुसमाचार निकालकर, उसे एक ऐसी भाषा में समझाया जिसे राजा समझ सके। राजा, ध्यान से सुनते हुए, अपने हृदय में भावुक हो गया और मसीह के प्रति प्रेम से भर गया।

उस समय, केवल उसके तीन सबसे वफादार सेवक, जो अरब के मूल निवासी थे, उपस्थित थे; उन्होंने भी पवित्र सुसमाचार को गहरी भावना के साथ सुना, जिसे बिशप शाम तक पढ़ते रहे। अगली सुबह, अपना काम निपटाने के बाद, राजा ने संत को एक बार फिर बुलाया, दिखावे के लिए एक चिकित्सक के रूप में उनकी सलाह लेने के लिए, लेकिन वास्तव में उनके माध्यम से अपनी आत्मा के लिए उपचार प्राप्त करने के लिए; और एक बार फिर उसने पूरे दिन ध्यान से सुसमाचार के वृत्तांतों और उद्धारकर्ता की शिक्षाओं को सुना, और बाद में, वह स्वयं और उसके तीन सेवक, मसीह में विश्वास करने लगे। संत ने उनसे पवित्र बपतिस्मा ग्रहण करने के लिए स्वयं को तैयार करने को कहा। उन्होंने उनके लिए उपवास की एक अवधि निर्धारित की और उन्हें ईश्वर से प्रार्थना करना सिखाया, तथा उनके लिए उनकी अपनी भाषा में त्रिसिगियोन, प्रभु की प्रार्थना और अन्य प्रार्थनाओं के साथ-साथ धर्म-विश्वास-सूची – 'मैं एक ईश्वर में विश्वास करता हूँ' – लिख दी। यह सब गुप्त रूप से किया गया था, ताकि सारसेन्स, जिनसे राजा डरता था, उन्हें पता न चल जाए। हर दिन बिशप राजा से एक चिकित्सक के रूप में मिलता था और अकेले में, राजा को—और बाद में उसके तीन सेवकों को—

पवत्रि वशि्वास के संस्कार सखिाता था। कुछ समय बाद, उसने गुप्त रूप से राजा और उसके तीन सेवकों का बपतस्मिा दयिा, और राजा का नाम जॉन रखा। उन्होंने राजा के शयनकक्ष में पवत्रि धर्मवधिकिा अनुष्ठान कयिा, नव-बपतस्मिति लोगों को मसीह के शरीर और रक्त के दव्यि रहस्यों का प्रशासन दयिा, और वे सभी बड़ी प्रसन्नता के साथ आनंदति हुए। पवत्रि स्वर्गदूत भी पापयिों के धर्मपरविर्तन पर प्रसन्न हुए, और भीतरी शाही कक्षों में स्वर्गदूतों की अदृश्य भागीदारी के साथ हर्ष-उल्लास छा गया।

नव-प्रबुद्ध राजा जॉन, मानव जातकि उद्धारकर्ता, यीशु मसीह के प्रतप्रिेम से, जन्हिोंने क्रूस पर दुख उठाया, प्रभु के उस सम्माननीय और जीवन-दायक क्रूस के एक टुकड़े को प्राप्त करने की बहुत इच्छा रखते थे, जसि पर हमारे प्रभु को सूली पर चढ़ाया गया था। लेकनि चूँकि उस समय क्रूस यरूशलेम में नहीं था, क्योंकि उसे यूनानी सम्राटों द्वारा कॉन्स्टेंटनिोपल ले जाया गया था[4991] , मसीह के पवत्रि सेवक, थयिोडोर को एक शाही पत्र लेकर कॉन्स्टेंटनिोपल के लिए रवाना होना पड़ा, जसिमें इस प्रकार लखिा था:

– यूनानी साम्राज्य के सर्वोच्च और धर्मपरायण शासक, राजा माइकल, और उनकी धर्मपरायण और ईश्वर-ज्ञानी माता, थयिोडोरा को: सारासेनों के राजा, जॉन, प्रभु में आनन्दति होना चाहता है! मैं सर्वपवत्रि ईश्वर का धन्यवाद करता हूँ, जन्हिोंने मुझे भ्रम से मुक्त कयिा है और मुझे पवत्रि सुसमाचार की सच्चाई और ईसाई धर्म के अनुसरण का ज्ञान प्रदान कयिा है, और मैं आपकी शाही भक्तसि प्रार्थना करता हूँ कि मुझे जीवन-दायक और सम्माननीय क्रूस के वृक्ष का एक टुकड़ा प्रदान करें, जसि पर मेरे मसीह को सूली पर चढ़ाया गया था। मैं इसे अपने संरक्षक के रूप में अपने साथ रखना चाहता हूँ।

इस पत्र और भव्य उपहारों के साथ, सारासेन राजा ने संत थयिोडोर बशिप को ग्रीक राजा के पास भेजा; और जब वह कॉन्स्टेंटनिोपल पहुँचा और राजा को पत्र और उपहार प्रस्तुत कएि, तो उसका राजा और परम पवत्रि पैट्रआर्क द्वारा सम्मानपूर्वक स्वागत कयिा गया।

उस समय ऐसा हुआ कि राजा की माँ, थयिोडोरा, अपनी आँखों की एक बीमारी से पीड़ति हो गईं, जसिमें मोतयिाबदि बनना शुरू हो गया था, जसिसे उनकी दृष्टि धुंधली हो गई थी; और इसलिए मसीह के पवत्रि बशिप ने, पवत्रि सेपल्चर की कुछ मट्टिी लेकर उसे शुद्ध जल में मलिाया, उससे उनकी आँखों पर अभषिेक कयिा और उन्हें ठीक कर दयिा। वास्तव में, उन्होंने न केवल रानी बल्कि अन्य बीमार लोगों को भी अक्सर चंगा कयिा।

ज़ार ने, अपनी ओर से, कीमती पत्थरों और मोतयिों से सुसज्जति एक छोटा सुनहरा ताबूत बनवाने का आदेश दयिा, और उसमें प्रभु के जीवन-दायक क्रूस की सम्मानति लकड़ी का एक टुकड़ा रखा। उसी समय, उन्होंने सारासेन ज़ार को नम्निलखिति लखिा:

– माइकल, हमारे ईश्वर मसीह में एक धर्मपरायण वशि्वासी, जो सभी यूनानयिों के शासक हैं, से हमारे सौम्य स्वभाव के प्रयि, सारासेंस के राजा जॉन को, प्रभु में आनन्द की कामना! हमें आपके पत्र प्राप्त हुए हैं, जो हर प्रकार की धर्मपरायणता से भरे हुए हैं, और हम बहुत प्रसन्न हुए हैं और परमेश्वर का धन्यवाद कयिा है, जसिने आपको *'अंधकार से अपनी अद्भुत रोशनी में'* (1 पतरस 2:9) नकिाला है और आपको अनंत जीवन और शाश्वत राज्य का वारसि बनने के लिए बुलाया है। देखो, तुम इश्माएल के नहीं, बल्कि अब्राहम के पुत्र बने हो; हागर के नहीं, बल्कि सारा के बच्चे बने हो[4992] । हम तुम्हारी बुद्धि की प्रशंसा करते हैं, क्योंकि तुम सच्चे राजा को जान गए हो। अत; अंत तक मसीह के वशि्वास और हमारे उद्धारकर्ता की आज्ञाओं में बने रहो। हम तुम्हारी प्रार्थना को आनन्द के साथ पूरा करते हैं। प्रभु के जीवन-दायक क्रूस का आदरणीय वृक्ष सभी दृश्य और अदृश्य शत्रुओं से आपका रक्षक हो, और आने वाले जीवन के लिए आपकी धन्य आशा हो!

जीवन-दायक क्रूस के एक टुकड़े और उद्धारकर्ता की एक प्रतमिा के साथ, इस पत्र को सारसेन राजा तक पहुँचाने के लिए संत थयिोडोर, बशिप ऑफ़ एडेसा को सौंपने, और संत को उपहार देने के बाद, यूनानी राजा ने उन्हें शांतपि से वदिा कयिा। बाबेल जाते समय, संत अपनी राजधानी एदेसा पहुँचे और अपनी आध्यात्मकि भेड़-बकरयिों को बहुत सांत्वना

[4991] सच्चा क्रूस 614 में यूनानी सम्राट फोकास के साथ युद्ध के दौरान फारस के राजा खुसरू द्वतिीय परवेज़ (जो 590 से 628 तक शासन कयिा) द्वारा यरूशलेम से ले जाया गया था। 628 में, यूनानी सम्राट हेराक्लयिस के साथ एक शांतसिंधि के समापन के बाद, कुस्रो द्वतिीय के उत्तराधकिारी सरिीसेस ने इस क्रॉस को यूनानयिों को वापस कर दयिा।

[4992] सारा अब्राहम की पत्नी थीं; हागर उनकी दासी थी। सारा से, इसहाक के माध्यम से, परमेश्वर के लोग आए, जबकि इस्माइल से इस्माइलयिों का जन्म हुआ, जन्हिें सारासेंस और हागैरयिंस के नाम से भी जाना जाता है।

दी; उन्होंने अपने हृदय के प्रयि स्तंभ-संन्यासी, परम आदरणीय थयिोडोसयिस से भी मुलाकात की। एदेसा में कुछ समय रहने के बाद, वह בר के लिए रवाना हो गए, और जहाँ भी गए, वभिन्नि प्रकार के रोगों का इलाज करते हुए गए—कभी-कभी रोगयिों पर जीवन-दायक क्रूस और प्रभु के मकबरे की मट्टिी रखकर, और कभी-कभी अपनी पवत्रि प्रार्थनाओं के द्वारा। जब वह राजा जॉन के सामने आए, तो राजा ने उन्हें अत्यधकि प्रसन्नता के साथ स्वागत कयिा, उद्धारकर्ता के क्रूस और प्रतमिा के सामने जमीन पर सरि झुकाया, उन्हें आनंद के आँसुओं से चूमा, और उन्हें अपने शयनकक्ष में रख दयिा, और इस पवत्रि अवशेष के सामने अपने हाथों से एक शाश्वत दीपक स्थापति कयिा; और उन्होंने यूनानी राजा का पत्र बड़े प्रेम से पढ़ा।

संत थयिोडोर बेबीलोन में रहे, उन्होंने कई चंगाई कीं और लोगों से भूत-प्रेत नकिाले। इस पर ईसाई अत्यधकि प्रसन्न हुए, जबकि सारासेन और यहूदी बड़ी ईर्ष्या से भर गए। उनमें से एक यहूदी था, जो यहूदी समुदाय का नेता और कानून का शक्षिक था। उसने फारसी और सारासेन कुलीनों को यह प्रस्ताव करने के लिए मनाया कि वे राजा से ईसाइयों और यहूदयिों के बीच वश्विास के मामलों पर एक सार्वजनकि बहस का आदेश देने के लिए कहें। राजा, यह जानते हुए कि मसीह के सेवक पराजति नहीं होंगे, उनके प्रस्ताव पर सहमत हो गए। बहस के लिए एक दनि नरि्धारति कयिा गया, और फारसयिों, सरासीनों, यहूदयिों और ईसा मसीह के अनुयाययिों की एक बड़ी भीड़ इकट्ठा हुई; बाद में, राजा स्वयं अपनी पूरी परषिद के साथ सभा में उपस्थति हुए। जब राजा एक ऊँचे मंच पर अपनी सीट पर बैठ गया, तो कानून का एक यहूदी शक्षिक सभी यहूदयिों के प्रतनिधि के रूप में आगे बढ़ा, जो ईसाई शक्षिकों और संतों, बेबीलोन के मेट्रोपॉलटिन और एडसा के बशिप के खलिाफ अकेले खड़ा था: वह यहूदी इतना वाक्पटु था, और अपने ज्ञान पर इतना गर्व करता था! लेकनि जब उसने धर्मग्रंथ से नहीं, बल्कि हमारे प्रभु मसीह के वरिुद्ध हर तरह की बकवास और ईश्वरनदिा गढ़नी शुरू कर दी, तो हमारे संत थयिोडोर, जो दैवीय उत्साह से भर गए थे, ने अपने हाथ से चुप्पी का संकेत करते हुए उस यहूदी से कहा:

'यदि तुमने हमें मूसा की व्यवस्था या अन्य पवत्रि भवष्यिद्वक्ताओं में से कुछ भी बताया होता, तो हम तुम्हें उत्तर देते। परन्तु चूँकि तुमने अपने वाचाल मुख को ईश्वरनन्दिा और झूठ के लिए खोल दयिा है, और पवत्रि भवष्यिद्वक्ताओं द्वारा प्रचारति बातें नहीं बोलते, बल्कि वही बोलते हो जो तुम्हारे पति, शैतान ने तुम्हें प्रेरति कयिा *है—'हे तू जो सब छल और सब दुष्टता से भरपूर है, हे शैतान के पुत्र, हे सब धार्मकिता का शत्रु'* (प्रेरतिों के काम 13:10), तो मैं तेरे सब नन्दिा करने वाले और कपटपूर्ण वचनों के वरिोध में तुझ से दाऊद का केवल एक वचन कहूँगा: *'झूठे हों वे होंठ जो धर्मी के वरिुद्ध गर्व और तरिस्कार से बुराई बोलते हैं'* (भजन संहति 30:19)।

और तुरंत ही वह वाचाल यहूदी चुप हो गया, और उसकी ईश्वर-नदिा करने वाली जीभ गूँगी हो गई, जसिसे वह कुछ भी नहीं बोल सका। तब यहूदी लज्जति हुए, जबकि ईसाई आनन्दति हुए; फारसी और सरासीन चकति रह गए, और राजा अपने हृदय में इस बात पर प्रसन्न हुआ कि ईसाइयों ने वजिय प्राप्त की थी और यीशु मसीह की शक्ति महमिामय हुई थी।

इसके बाद, राजा ने आदेश दयिा कि ईश्वर द्वारा मूक कर दिए गए यहूदी शक्षिक को बेरहमी से बैल की खाल से कोड़ा मारा जाए और फरि जेल में डाल दयिा जाए। अन्य यहूदी नेताओं को भी इसी प्रकार दंडति कयिा गया और अपमानति होकर सभा से बाहर नकिाल दयिा गया। तीन दनि बाद, जेल में बंद यहूदी, बोल न पाने के कारण, ने संत थयिोडोर बशिप को एक लखिति वनिती भेजी, जसिमें वह दया की भीख मांग रहा था और ईसाई धर्म अपनाने का वादा कर रहा था। संत ने राजा को यह सूचति कर, उस यहूदी को जेल से रहिा कर दयिा, और वह व्यक्ति, संत के पैरों पर गरिकर, बपतस्मिा के लिए अपनी वनिती का संकेत करने लगा, क्योंकि उसकी जीभ गूँगी बनी हुई थी। तब बशिप ने उस पर उद्घोषणा का संस्कार कयिा[4993]

[4993] कैटेकेससि – ईसाई धर्म की सच्चाइयों पर मौखकि शक्षिा, जो प्रारंभकि चर्च में पवत्रि बपतस्मिा का संस्कार प्राप्त करने के इच्छुक सभी लोगों को दी जाती थी। हालाँकि उन्हें पवत्रि धर्मग्रंथ और उपदेश सुनने, और यहाँ तक कि पूजा-वधिि के पहले और दूसरे भाग ('प्रोस्कोमडियिा' और 'श्रद्धेय वर्ग की पूजा-वधिि') में भाग लेने की भी अनुमति थी, कैटेकुमेन को लटिर्जी के तीसरे, सबसे महत्वपूर्ण भाग ('वश्विासयिों की लटिर्जी') की शुरुआत से ठीक पहले चर्च छोड़ना आवश्यक था, यह एक तथ्य था जसिकी घोषणा डीकन द्वारा एक उद्घोष से की जाती थी जो आज भी ऑर्थोडॉक्स चर्च में लटिर्जी के उत्सव के दौरान संरक्षति है। कैटेकुमेनेट की अवधि भन्नि-भन्नि होती थी; कई लोग अपने पूरे जीवन कैटेकुमेन ही रहते थे। जहाँ आवश्यक होता था, वहाँ कैटेकुमेनेट की अवधि को घटाकर कुछ दनिों या कुछ घंटों तक कर दयिा जाता था। – कैटेकुमेनेट की धार्मकि रस्म आज भी ऑर्थोडॉक्स चर्च में की जाती है; इसमें बपतस्मिा के उम्मीदवार पर नरि्धारति प्रार्थनाओं का पाठ करना और शैतान के वरिुद्ध एक आह्वान का उद्घोष करना शामलि है; साथ ही, बपतस्मिा का उम्मीदवार शैतान का परतित्याग करता है, स्वयं को मसीह के साथ जोड़ता है और धर्म-स्वीकृति (Creed) का पाठ करके अपने वश्विास की घोषणा करता है (शशिु बपतस्मिा के मामले में, यह काम धर्म-माता-पति द्वारा कयिा जाता है)।

और बाद में, जब उन्होंने उसे पवित्र बपतिस्मा के कुंड में ले जाकर उस पर परम पवित्र त्रिमूर्ति के नाम का आह्वान किया, उसकी जीभ तुरंत उसकी गूंगी अवस्था से मुक्त हो गई और वह ऊँचे स्वर में पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा की महिमा करने लगा, यह स्वीकार करते हुए कि यीशु मसीह वास्तव में जीवित परमेश्वर के पुत्र हैं, जिनकी भविष्यवाणी व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओं ने की थी।

इस प्रकार, यहूदी एक ईसाई बन गया, और उसने अपने पूर्व नाम के स्थान पर पवित्र बपतिस्मा में एक नया नाम—सामन—प्राप्त किया; और, उसके उदाहरण का अनुसरण करते हुए, कुछ अन्य यहूदियों ने भी पवित्र विश्वास को अपनाया और बपतिस्मा लिया। इसी प्रकार, कई फारसी और सारासेन मसीह में विश्वास करने लगे, लेकिन अपने अधिकारियों के हाथों उत्पीड़न और मृत्युदंड के डर से अपने विश्वास को गुप्त रखा।

कुछ दिनों बाद, संत थियोडोर उस तपस्वी, परम आदरणीय जॉन से मिलने के लिए रवाना हुए, और राजा को अपने इरादे के बारे में सूचित किया; राजा ने जवाब दिया कि वह भी उस ईश्वर के पुरुष को देखना और उसकी शिक्षाएँ सुनना चाहेंगे। इस पर, संत ने कहा:

'मैं तुम्हारी इच्छा की अनुमोदन करता हूँ, क्योंकि यदि तुम उन्हें देखोगे, तो तुम्हें इससे बहुत लाभ होगा। वे एक महान आत्मा वाले व्यक्ति हैं और उनमें दूरदर्शिता का वरदान है, इसलिए वे भविष्य के बारे में ऐसा बोल सकते हैं जैसे कि वह वर्तमान हो।'

इसलिए वे ऋषि के पास एक साथ जाने पर सहमत हो गए। राजा ने यह बहाना बनाया कि वह शिकार के लिए जा रहा है और कुछ दिनों के लिए रेगिस्तान में जंगली जानवरों का शिकार करना चाहता है। इस प्रकार, वह नौकरों और सैनिकों के एक दल के साथ, बिशप को अपने निजी चिकित्सक के रूप में साथ लेकर चल पड़ा।

वे पहाड़ों और सुनसान घाटियों से होकर यात्रा करते हुए बहुत सारे जंगली जानवर पकड़ लाए। जब वे उस स्थान के पास पहुँचे जहाँ तपस्वी अपनी गुफा में रहते थे, तो राजा ने अपने नौकरों को आगे भेज दिया और एक छोटे से दल के साथ पीछे रह गया। फिर, गुफा के और करीब पहुँचकर, उन्होंने इस दल को भी पीछे छोड़ दिया और आगे बढ़ गए, अपने साथ केवल तीन सबसे वफादार नौकरों को लेते हुए, जो ईसाई धर्म अपना चुके थे, जबकि संत अपने शिष्य बेसिल को साथ ले गए, जिन्होंने बाद में उनकी जीवनी लिखी। आदरणीय जॉन, अपने मन में यह पूर्वानुमान लगाते हुए कि राजा और बिशप उनकी ओर आ रहे थे, हाथों में एक मशाल और धूप का पात्र लेकर उनका स्वागत करने के लिए बाहर आए; उन्होंने उन्हें झुककर नमस्ते की और उन्हें अपनी गुफा में ले गए, जहाँ वे सभी आत्मा के लिए लाभकारी विषयों पर बातचीत करने लगे। और तपस्वी ने राजा से कहा:

'धन्य हो तुम, क्योंकि तुमने व्यर्थ और मिथ्या को त्यागकर उस सत्य से प्रेम किया है जो तुम्हें जीवन की ओर ले जाता है। धन्य हो तुम, क्योंकि तुम्हें शहादत का मुकुट पहनाया जाएगा और एक क्षणिक सांसारिक राज्य के बजाय, तुम मसीह के साथ स्वर्ग में हमेशा राज्य करोगे।' त्रिमूर्ति में एक परमेश्वर की महिमा हो, क्योंकि उन्होंने आपको वासनाओं की खाई और अपवित्रता की गहराई से बाहर निकाला है, आपके पैरों को चट्टान पर स्थापित किया है, और आपके मुख में एक नया गीत रखा है!

उसके बाद, पूजनीय वृद्ध ने आगंतुकों को रेगिस्तान में जो कुछ भी भोजन मिल सकता था, वह सब और पीने के लिए पानी दिया, और उन्होंने परमेश्वर का धन्यवाद करते हुए खाया-पिया। राजा ने कहा:

'सच कहूँ तो, मेरे राज्य के पूरे दिनों में मैंने आज जितना भोजन और पेय का आनंद लिया है, उतना पहले कभी नहीं लिया! वास्तव में, आध्यात्मिक पिता, आप ही राजा हैं, और मैं एक भिखारी और दीन-हीन हूँ!'

और वृद्ध ने कहा:

'प्रभु आपको शीघ्र ही सच्चा राज्य प्रदान करें, क्योंकि आप एक भिखारी के पास आए।'

राजा ने उस बूढ़े को बहुत सारा सोना दिया, लेकिन उसने यह कहते हुए मना कर दिया:

'मरुभूमि के वासी को सोने की कोई ज़रूरत नहीं है; इसे शहर में रहने वाले भिखारियों को दे दो, और तुम्हें स्वर्ग में सौ गुना इनाम मिलेगा!'

और राजा उस पूजनीय संन्यासी के दैवीय जीवन को देखकर चकित रह गया; और फिर, एक लंबी बातचीत के बाद, वे सभी उस संन्यासी से विदा हुए, जिन्होंने आशीर्वाद और प्रार्थनाओं के साथ उन्हें विदा किया, और वे चले गए; और, अपने नौकरों और सैनिकों से मिलकर, वे शहर लौट आए। राजा ने संत थियोडोर से कहा:

'हे परम सम्माननीय पिता, मैं आपका धन्यवाद कैसे करूँ कि आपने मुझे एक ऐसे दिव्य पुरुष को देखने का अवसर दिया, जो संसार के सभी अन्य लोगों से ऊपर है!'

इस बीच, वह सच्चा चरवाहा अपने झुंड के पास लौटने के बारे में सोच रहा था। उसे डर था कि उसके बिना, विधर्मी—वे दुष्ट भेड़िये—उसके झुंड पर हमला कर सकते हैं और उसकी आध्यात्मिक भेड़ों को नुकसान पहुँचा सकते हैं। इसलिए, उसने राजा से एडसा जाने की अनुमति देने के लिए कहना शुरू कर दिया। राजा ने आँखों में आँसू लिए हुए कहा:

'आपके जाने के बाद, पिताजी, मुझे लगता है कि मैं ज़्यादा समय नहीं जियूँगा। मैं ईश्वर की गुप्त रूप से पूजा करना या गुप्त रूप से ईसाई नाम धारण करना नहीं चाहता। तो फिर, शांति से घर जाइए, और अपने साथ प्रभु के सम्मानित और जीवन-दायक क्रूस का एक टुकड़ा ले जाइए, ताकि मेरी मृत्यु के बाद अविश्वासियों के पैरों तले वह कुचला न जाए। यदि, हालाँकि, एक साल में आपको खबर मिले कि मैं अभी भी जीवित हूँ, तो फिर से मिलने आओ और यह पवित्र अवशेष अपने साथ लाना; लेकिन यदि आप मेरी मृत्यु की खबर पाओ, तो मेरी आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना करना।

राजा ने संत थियोडोर, बिशप को, ईश्वर के चर्चों की सजावट और गरीबों तथा ज़रूरतमंदों में बांटने के लिए बहुत सारा सोना, चांदी और हर तरह की कीमती चीज़ें दीं; और, एक-दूसरे को विदा कहने के बाद, वे आँसुओं के साथ अलग हो गए। अपने प्रस्थान पर, पवित्र बिशप ने अपने एक सेवक को बेबीलोन में छोड़ दिया ताकि वह उनके जाने के बाद वहाँ क्या हो सकता है, उस पर नजर रखे; और, बेबीलोन छोड़ने के बाद, वह सुरक्षित रूप से एडसा में अपने आध्यात्मिक झुंड के पास लौट आए।

संत थियोडोर के प्रस्थान के कुछ समय बाद, धर्मपरायण राजा जॉन, जो बेबीलोन में ठहरे हुए थे, अब मसीह में अपने विश्वास और उनके प्रति अपने प्रेम को गुप्त रखना नहीं चाहते थे, बल्कि सभी के सामने कर्म में स्वयं को एक ईसाई घोषित करने का इरादा रखते थे, उन्होंने सभी राजकुमारों, गवर्नरों और शहर के मजिस्ट्रेटों को अपने पास बुलाया और उनसे कहा:

'मैं तुम्हें एक बड़ा रहस्य बताना चाहता हूँ, और कोई भी मेरे शब्दों पर संदेह न करे! ईश्वर ने मुझे यह बताया है कि मेरी मृत्यु निकट है और कुछ ही दिनों में मैं इस जीवन से चला जाऊँगा। अत; मैं तुम्हें और सभी लोगों को आज्ञा देता हूँ कि कल सुबह उस खेत में (राजा ने एक विशेष खेत की ओर इशारा किया) इकट्ठा हो जाओ। मैं तुम्हें अपनी अंतिम इच्छा और वसीयत की घोषणा करना चाहता हूँ।'

यह कहकर, उन्होंने उन्हें विदा कर दिया, और वे दुखित होकर चले गए। फिर राजा ने नगर-घोषकों को आदेश दिया कि वे पूरे शहर में जोर-जोर से घोषणा करें कि सभी लोग सुबह उस खेत में इकट्ठा हों, जबकि उन्होंने स्वयं पूरी रात प्रार्थना में बिताई। सुबह-सुबह, उन्होंने मेट्रोपॉलिटिन को बुलाया, उन्हें अपने इरादे से अवगत कराया, और उनसे भीतरी प्रार्थना कक्ष में दैवीय अनुष्ठान करने के लिए कहा। अनुष्ठान के अंत में, उन्होंने संत के हाथों से गहरी भक्ति के साथ पवित्र Communion ग्रहण किया—मसीह के शरीर और रक्त के दैवीय रहस्य—और, संत को कीमती उपहार देकर विदा किया। फिर उन्होंने अपने चमकीले शाही वस्त्र धारण किए, अपने घोड़े पर सवार हुए और एक बड़े दल के साथ निर्धारित स्थान पर चले गए, जहाँ अनगिनत लोगों की भीड़ पहले से ही जमा हो चुकी थी: फारसी, इसमाइली, यहूदी और ईसाई, और सभी सरदार और शासक। एक ऊँचा मंच तैयार किया गया था, और उस पर एक ऊँचा शाही सिंहासन रखा गया था, ताकि हर कोई राजा को देख सके। सब सोच रहे थे कि राजा ने उन्हें एक साथ क्यों बुलाया है और एक-दूसरे से पूछ रहे थे कि राजा क्या कहने वाले हैं। राजा, उस स्थान पर पहुँचकर, अपने सिंहासन पर बैठ गया और थोड़ी देर बाद, चुप्पी का संकेत देकर, सिंहासन से उठ खड़ा हुआ और ऊँचे स्वर में बोलने लगा:

'सुनो, तुम सब—फ़ारसी, अगारियन, यहूदी और सम्मानित ईसाई! मैं एक ईसाई हूँ; मेरा नाम जॉन है। मैं पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा—ईश्वरत्व के त्रैक्य yet एकल सार—में विश्वास करता हूँ, और स्वर्ग के नीचे ईसाई धर्म के सिवा कोई अन्य सच्चा धर्म नहीं है। और चूँकि मेरे प्रभु यीशु मसीह ने सुसमाचार में कहा है: *'जो कोई मनुष्यों के सामने मेरा स्वीकार करेगा, मैं भी अपने स्वर्गीय पिता के सामने उसका स्वीकार करूँगा'* (मत्ती 10:32), देखो, मैं स्वर्ग और पृथ्वी के सामने, स्वर्गदूतों और मनुष्यों के सामने उनका स्वीकार करता हूँ!

इन शब्दों के साथ, उसने अपने वक्ष से कीमती रत्नों से जड़ा एक सुनहरा क्रूस निकाला और उसे दोनों हाथों से इस तरह ऊँचा उठाया कि सभी उसे देख सकें। फिर, क्रूस का चिह्न बनाकर और पूर्व की ओर मुंह करके जमीन पर झुकने के बाद, उसने पवित्र क्रूस को चूमा और कहा:

'हे मसीह, मैं तेरे पवित्र क्रूस की आराधना करता हूँ, और तुझे अपना ईश्वर और उद्धारकर्ता मानता हूँ, और मैं तेरे, तेरे अनारंभित पिता और तेरे परम पवित्र और जीवन-दायक आत्मा के साथ, युगानुयुग स्तुति करता हूँ, आमीन!'

यह सुनकर, सभी चकित रह गए और जैसे सुन्न हो कर खड़े रह गए। फिर राजकुमारों और सेनापतियों ने, अन्य नेताओं के साथ मिलकर, क्रोध से चिल्लाया:

'हमारे धर्म के इस निंदक को मार डाला जाए!'

और वे राजा पर टूट पड़े और उसे तलवारों और भालों से छेद-छेद कर मार डाला; और उसके साथ ही तीन वफादार सेवकों को भी मार डाला जिन्होंने Christ[4994] के नाम की गवाही दी थी।

इस प्रकार, मई के तीसरे दिन, धर्मपरायण राजा जॉन और उनके तीन सेवकों ने बेबीलोन में शहीद होकर प्राण गंवाए। फिर, इस घटना के साक्षी बने सभी ईसाइयों को आगारीय लोगों के क्रोध से अत्यधिक भय सता गया; वे घटनास्थल से भागकर छिप गए, जबकि राजा का शरीर वहीं बिना दफनाए छोड़ दिया गया।

उसी रात, पवित्र शहीद बुज़ुर्गों और शासकों के सामने एक भयानक रूप में प्रकट हुए और कहा:

'जल्दी करो और मेरे शरीर को ईसाई मेट्रोपॉलिटिन को सौंप दो, ताकि वह मुझे उचित अंतिम संस्कार दे सके; यदि तुम ऐसा नहीं करोगे, तो मैं तुम सबको एक ही बार में नष्ट कर दूँगा।'

जब वे अपनी नींद से जागे, तो वे सुबह-सुबह एकत्रित हुए, उन्होंने एक-दूसरे को वह सपना सुनाया जो उन्होंने सभी ने देखा था, और वे भय से भर गए। उन्होंने तुरंत ईसाई मेट्रोपॉलिटिन को एक आदेश भेजा, जिसमें उसे राजा की लाश को ले जाकर दफ़नाने का आदेश दिया गया। मेट्रोपॉलिटिन तुरंत गए, उन्होंने पवित्र शहीद राजा जॉन की लाश और उनके तीन पवित्र सेवकों की लाशों को उठाया, और उन्हें चर्च ले आए, जहाँ उन्होंने उन्हें सम्मानपूर्वक दफ़नाया। उनकी साझा कब्र पर कई चमत्कार हुए, और हर तरह की बीमारियों से ठीक होने का वरदान न केवल ईसाइयों को बल्कि एगारियन लोगों को भी अक्सर मिला, जिसके परिणामस्वरूप वे ईसाई धर्म अपनाने की ओर झुकने लगे।

उनकी मृत्यु के बाद वाली रात, राजा संत जॉन एडसा के बिशप संत थियोडोर को सपने में दिखाई दिए। उन्होंने अत्यंत चमकदार सफेद वस्त्र पहने हुए थे, और उनके सिर पर एक अद्भुत मुकुट था, जिसकी सुंदरता का वर्णन शब्दों में नहीं किया जा सकता। उन्होंने बिशप से कहा:

'हे आदरणीय पिता, प्रभु मसीह ने मुझे महान महिमा से गौरवान्वित किया है और मुझे शहीदों की पंक्ति में शामिल कर लिया है! कल मैंने सभी के सामने उनके परम पवित्र नाम की गवाही दी, और इसके लिए मुझे फारसियों और सरासीनों ने मार डाला; लेकिन मेरी आत्मा, शरीर की कैद से निकलकर, उन आशीर्वादों को प्राप्त कर चुकी है जिनके बारे में आपने मुझसे कहा था। ईश्वर आपको मेरे उद्धार के लिए मध्यस्थ बनने का आशीर्वाद दे, और मैं हमारे सामान्य प्रभु से प्रार्थना करता हूँ कि वे आपको मुझे जल्द ही आने का आदेश दें, ताकि हम दोनों मिलकर परम पवित्र त्रिमूर्ति की कृपा से धन्य जीवन का आनंद ले सकें।"

अपनी नींद से जागने पर, संत थियोडोर बिशप, सम्माननीय थियोडोसियस द स्टाइलाइट के पास गए और उन्हें अपने द्वारा देखे गए दर्शन के बारे में बताया। स्टाइलाइट ने उनसे कहा कि यह वास्तव में एक दर्शन था; क्योंकि उन्हें भी उसी विषय के बारे में ईश्वर से एक प्रकटवाणी प्राप्त हुई थी। कुछ दिनों बाद, बेबीलोन से एक दास— —जो वहाँ छोड़ दिया गया था—आया और उसने विस्तार से बताया कि कैसे विश्वासी राजा जॉन और तीन युवकों ने मसीह के लिए कष्ट उठाए थे। और संत थियोडोर ने पूरे हृदय से आनंद मनाया, और परमेश्वर का धन्यवाद किया कि उसकी मेहनत व्यर्थ नहीं गई थी, बल्कि स्वर्ग के राज्य में ऐसा अद्भुत फल लाई थी।

इसके कुछ समय बाद, स्तंभवासी ने एक दर्शन में देखा कि उनके भाई, आदरणीय जॉन द हरमिट, प्रभु के पास चले गए थे; और फिर, एक छोटी बीमारी के बाद, स्तंभवासी स्वयं, आदरणीय थियोडोसियस, भी चल बसे। संत ने उन्हें उपवास करने वाली पवित्र स्त्रियों के मठ के भीतर, महान शहीद सेंट जॉर्ज के चर्च में दफनाया। पवित्र राजा जॉन की हत्या के तीन साल बाद, यह कष्ट-भोगी संत थियोडोर को पहले की तरह ही एक बार फिर प्रकट हुए, और कहा:

'प्रस्थान करो, प्रिय पिता, – मसीह तुम्हें बुला रहे हैं! उन्होंने कृपा की है कि हम उनके राज्य में तुम्हारे साथ वास करें और उनकी अद्भुत ज्योति में आनंदित हों।'

[4994] संत थियोडोर की मृत्यु, उनकी जीवनी में उल्लिखित अन्य संतों की तरह, 9वीं शताब्दी में हुई थी।

इस दर्शन से, संत थियोडोर ने यह निष्कर्ष निकाला कि ईश्वर के पास उनका प्रस्थान निकट आ गया था। अत; एदेसा के चर्च के मामलों के लिए आवश्यक व्यवस्था करने और अपनी आध्यात्मिक भेड़-बकरियों को अपना आशीर्वाद और शांति प्रदान करने के बाद, उन्होंने अपनी भेड़-बकरियों को छोड़ दिया और यरूशलेम चले गए। मसीह के पवित्र जीवन-दायक मकबरे को नमन करने के बाद, वे संत सावस के मठ में चले गए, जहाँ उनका संन्यासी जीवन शुरू हुआ था, और अपनी पूर्व संन्यासी कोठरी में रहने लगे। वे वहाँ तीन सप्ताह तक रहे और फिर 9 जुलाई को स्वर्गीय निवासों में प्रवेश कर गए, और अपनी पवित्र आत्मा को ईश्वर के हाथों में सौंप दिया। यरूशलेम के पैट्रिआर्क ने, बिशपों के साथ मिलकर, उसी मठ में इस ईश्वर-पुरुष के शरीर को सम्मानपूर्वक दफनाया, जिसमें उसने पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा की महिमा करते हुए इतने सारे कार्य किए थे, त्रिमूर्ति में एक ईश्वर, जिसे, हम पापियों से भी, सम्मान, महिमा, आराधना और धन्यवाद हो, अब और हमेशा और युगों-युगों तक, आमीन।

23 जुलाई

10 जुलाई (पुराना तरीका)

हमारे पूजनीय पिता गुफाओं के एंथनी की स्मृति

10 जुलाई को स्मरणोत्सव

धर्मी और पवित्र राजकुमार व्लादिमीर के दिनों में[4995] , प्रभु अपनी कलीसिया को मठाधीशों के लिए एक दीपक और मार्गदर्शक प्रदान करने के लिए प्रसन्न हुए – सदा स्मरणीय, हमारे पूजनीय और ईश्वर-वाहक पिता एंथनी।

आदरणीय एंथनी का जन्म ल्यूबेच नगर में हुआ था[4996] । बचपन से ही ईश्वर के भय से युक्त, उन्होंने मठवासी संन्यास ग्रहण करने की तीव्र इच्छा रखी। जब दयालु ईश्वर ने उनके हृदय में ग्रीस जाकर वहाँ संन्यास ग्रहण करने का संकल्प डाला, तो एंथनी ने तुरंत इसे व्यवहार में उतार दिया, प्रभु की भाँति यात्रा करते हुए, जो हमारे उद्धार के लिए भटकते और परिश्रम करते थे। कॉन्स्टेंटिनोपल[4997] पहुँचने के बाद, पूज्य एंथनी वहाँ से अथोस के पवित्र पर्वत[4998] के लिए प्रस्थान कर गए; जैसे ही उन्होंने वहाँ के मठों का दौरा किया, वे वहाँ के पवित्र पिताओं के जीवन से चकित रह गए , जो देह में होते हुए भी मानव स्वभाव से ऊपर उठे और अदेह स्वर्गदूतों के चमत्कारों की नकल करते थे। और मसीह के प्रति प्रेम एंथनी के हृदय में पहले से कहीं अधिक प्रबल हो उठा। इन पवित्र पिताओं के जीवन का अनुकरण करने की इच्छा से, वह माउंट अथोस के एक मठ में गया और मठाध्यक्ष से मठवासी वस्त्र का दिव्य स्वरूप प्रदान करने का आग्रह किया। मठाध्यक्ष ने परम आदरणीय संत के भविष्य के तपस्वी जीवन को पूर्वानुमानित करते हुए, उनके अनुरोध

[4995] बेशक, संत व्लादिमीर, प्रेरितों के समकक्ष, रूस के प्रबोधक और बपतिस्मा देने वाले; उन्होंने 978 से 1015 तक शासन किया। उनका पर्व दिवस 15 जुलाई है।

[4996] चेर्निगोव क्षेत्र में स्थित ल्यूबेच, प्राचीन रूस के प्रागैतिहासिक शहरों में से एक है, जो वरांगियनों के आगमन से भी पहले अस्तित्व में था। ओलेग के अधीन, यह उन प्रमुख शहरों में से एक था जहाँ उनके 'महान राजकुमार' रहते थे; बाद में, ल्यूबेच ने अपनी महत्वपूर्ण राजनीतिक महत्ता खो दी। इतिहास में, ल्यूबेच 1) 1016 में यारोस्लाव और स्वेतोपोलक के बीच हुई लड़ाई और 2) 1097 में उनके बीच 'शांति स्थापित करने' के लिए आयोजित राजकुमारों की महान सभा के लिए जाना जाता है। वर्तमान में, ल्यूबेच चेर्निगोव गवर्नरेट में, डेन्येपर नदी के मॉस्को या बाएं किनारे पर स्थित एक प्रांतीय शहर या बस्ती है, जो कीव से 120 वर्स्ट की दूरी पर है।

[4997] कॉन्स्टेंटिनोपल।

[4998] माउंट अथोस (अथोस), जिसे ग्रीक में एजियन ओरोस - पवित्र पर्वत - के नाम से जाना जाता है, एक संकीर्ण, पहाड़ी प्रायद्वीप है जो द्वीपसमूह (एजियन सागर) में निकला हुआ है, और यह ग्रीक पूर्व के लिए मठवासी जीवन के केंद्र के रूप में प्रसिद्ध है। प्राचीन काल में यहाँ मठवाद का उदय हुआ, हालांकि यह सीरिया और फिलिस्तीन की तुलना में कुछ बाद हुआ। रूसी चर्च के लिए, रस में ईसाई धर्म की लगभग शुरुआत से लेकर 17वीं सदी तक, अथोस का बहुत महत्व था: यहीं पर रूसी मठवाद के पिता, सेंट एंथनी ने अपने संन्यास का संकल्प लिया था; यहीं, महान मठों के पुस्तकालयों में, अथोस की यात्रा करने वाले हमारे संतों ने उस समय की सबसे व्यापक धार्मिक शिक्षा प्राप्त की (उदाहरण के लिए, सोरा के संत नील, †1508)। यहाँ विशेष अनुवादक और प्रतिलिपि बनाने वाले थे जो रूढ़िवादी रस को भक्ति-प्रधान ग्रंथों के हस्तलिखित अनुवाद उपलब्ध कराते थे। – ऑर्थोडॉक्स पूर्व के सबसे पूजनीय पवित्र स्थलों में से एक के रूप में, माउंट अथोस पर हर साल रूस, बाल्कन प्रायद्वीप और तुर्की के एशियाई क्षेत्रों से हजारों पुरुष तीर्थयात्रियों द्वारा यात्रा की जाती है (महिलाओं को मठ में प्रवेश की मनाही है)।

को अस्वीकार नहीं कयिा और उन्होंने उनका मुंडन कयिा[4999] , तथा उन्हें पूर्ण मठवाद के सद्धिांतों में शक्षिति कयिा। नव-शरिच्छेदति भक्षिु ने सदाचार के मार्ग पर परश्रिम करते हुए हर बात में ईश्वर को प्रसन्न कयिा; लेकनि आदरणीय एंथनी वशिेष रूप से वनिम्रता और आज्ञाकारति में उत्कृष्ट थे, इसलएि जब सभी ने उनके जीवन को देखा तो वे प्रसन्न हुए। आदरणीय एंथनी पवत्रि पर्वत पर, अपने शरिच्छेदन के स्थान पर, काफी समय तक रहे, और उन्होंने कई लोगों के लएि मोक्ष के मार्गदर्शक के रूप में सेवा की तथा स्वयं पूर्णता की महान अवस्थाएँ प्राप्त कीं, जब महाधर्माध्यक्ष को ईश्वर से प्रेरणा मलिी कि वे आदरणीय एंथनी को रूसी भूमि पर वापस भेजें। उन्हें अपने पास बुलाकर, महाधर्माध्यक्ष ने कहा:

'एंथनी! रस की भूमि पर वापस जाओ—वहाँ रहने वाले, तुम्हारे द्वारा, समृद्धि प्राप्त करें और ईसाई धर्म में दृढ़ हों; पवत्रि पर्वत का आशीर्वाद तुम पर बना रहे!'

इस आशीर्वाद को मानो स्वयं ईश्वर के मुख से नकिला हुआ मानकर, पूज्य एंथनी रस की भूमि के लएि नकिल पड़े। कीव शहर[5000] पहुँचने पर, उन्होंने इस बात पर वचिार कयिा कि वे कहाँ बस सकते हैं, और उन मठों का दौरा करना शुरू कर दयिा जो रूसी के बपतस्मिा के लएि मेट्रोपॉलटिन माइकल के साथ आए ग्रीक संतों द्वारा स्थापति कएि जा रहे थे; हालाँकि, ये मठ पूर्ण सामुदायकि जीवन के नयिमों और वधिानों का पालन नहीं करते थे। ईश्वर की व्यवस्था से, कोई भी मठ आदरणीय एंथनी को नविास के लएि पसंद नहीं आया। इसलएि, वह कीव के आसपास के इलाकों - जंगलों और पहाड़ों - में भटकने लगा और इस प्रकार बेरेस्तोवो तक भी पहुँच गया। वहाँ एक गुफा पाकर, जसिे पहले वरांगयिनों[5001] ने खोदा था, पूजनीय एंथनी ने प्रार्थना करने के बाद, उसमें बस गए और महान तपस्या का जीवन व्यतीत कयिा।

धर्मपरायण राजकुमार व्लादमिीर के नधिन के बाद, अधर्मी और शापति स्व्यातोपोलक[5002] ने सत्ता पर कब्ज़ा कर लयिा, जो कीव में राजसी सहिासन पर आसीन हुआ। अपने भाइयों को पृथ्वी के चेहरे से मटिा देने की इच्छा रखते हुए[5003] , उसने बोरसि और ग्लेब की हत्या कर दी, जो इस प्रकार शहीद हो गए[5004] । इतना रक्तपात देखकर, परम पूज्य एंथनी एक बार फरि पवत्रि पहाड़ पर चले गए।

लेकनि फरि धर्मनष्ठि राजकुमार यारोस्लाव ने स्वयितोपोलक को हराकर कीव का सहिासन संभाला[5005] । यारोस्लाव को बेरेस्तोवो[5006] पसंद था, जहाँ पवत्रि प्रेरतिों को समर्पति एक चर्च था; वहाँ हलिारयिन नामक एक पादरी थे, जो एक धर्मनष्ठि व्यक्ति, एक महान उपवासी और पवत्रि शास्त्रों में पारंगत थे। (कई साल बाद, यारोस्लाव, जो धर्मगुरुओं से घरि रहना पसंद करते थे[5007]), ईश्वर की इच्छा से और अपने द्वारा इकट्ठा कएि गए बशिपों की सहमति से, हलिारयिन को मेट्रोपॉलटिन चुना, और उन्हें कीव में सेंट सोफयिा चर्च में इस पद पर अभषिक्ति कयिा गया[5008] ।)

[4999] 'एंथनी' नाम शायद इस इच्छा को व्यक्त करने के लएि चुना गया था कि एंथनी रूस के लएि वही हों जो पूर्वी संन्यासवाद के पति, महान एंथनी, मस्रि के लएि थे। पूजनीय एंथनी का सांसारकि नाम अज्ञात है। हालाँकि, एक परंपरा बची हुई है—हालांकि यह पूरी तरह से वश्विसनीय नहीं है—जसिके अनुसार आदरणीय एंथनी का सांसारकि नाम एंटपिस था।

[5000] संत एंथनी कीव में बस गए और अपने पैतृक स्थल ल्यूबेच वापस नहीं गए, शायद इसलएि क्योंकि कीव में—जो 'ईसाई धर्म में सबसे आगे और पहले से ही संतों का घर' था—उन्हें तपस्वी जीवन में प्रतद्विंद्वी मलिने की अधकि संभावना थी।

[5001] यह कल्पना की जा सकती है कि ग्रैंड प्रसिेस ने अपने गाँव बेरेस्तोवो में वरांगयिनों की एक टुकड़ी रखी थी; यही वरांगयिन थे जन्होंने अपने युद्ध के माल को एक सुरक्षति स्थान के रूप में वहाँ रखने के लएि गुफाएँ खोदी थीं।

[5002] सेंट व्लादमिीर का तीसरा पुत्र।

[5003] ववरिणकार दुष्ट राजकुमार के मुँह से नम्निलखिति शब्द कहलवाता है: 'मैं अपने सभी भाइयों को मार डालूँगा, और रूस में सारी शक्ति अकेले अपने हाथ में ले लूँगा'।

[5004] पवत्रि शहीद राजकुमारों की स्मृति रूढ़विादी रूसी चर्च द्वारा दो अवसरों पर मनाई जाती है: 2 मई और 24 जुलाई।

[5005] 1019 से महा राजकुमार।

[5006] यह नरि्धारति करना मुश्कलि है कि कीव के वर्तमान पेचेरस्की जलि में बेरेस्तोवो गाँव वास्तव में कहाँ स्थति था; यह माना जा सकता है कि यह पेचेरस्की मठ के पश्चमि में कम से कम एक वर्स्ट दूर स्थति था।

[5007] क्रॉनकिल के अनुसार, यारोस्लाव चर्च के वधिानों के शौकीन थे, उन्हें पुरोहतिों और वशिेष रूप से भक्षिुओं से प्रेम था। वह दनि-रात कतिाबें पढ़ते थे; उन्होंने कई लेखकों को इकट्ठा कयिा जो मौजूदा स्लावोनकि अनुवादों की नकल करते थे, और ऐसे अनुवादकों को भी पाया जन्होंने कतिाबों का ग्रीक से स्लावोनकि में अनुवाद कयिा। यारोस्लाव की धार्मकि और शैक्षकि गतविधियिों के बारे में, इतहिासकार टप्पिणी करता है: 'जसि प्रकार एक व्यक्ति भूमि जोतता है और दूसरा बीज बोता है, उसी प्रकार इस व्यक्ति (यारोस्लाव) ने भी कयिा: क्योंकि उनके पति वोलोदमिीर ने बपतस्मिा के माध्यम से उनके हृदयों को खोला और कोमल कयिा, जबकि उन्होंने स्वयं वश्विासयिों के हृदयों में धर्मग्रंथों के वचनों को बोया।'

[5008] 1051 में, मेट्रोपॉलटिन हलिारयिन की एक ही रचना बची है, जो शब्द के पूर्ण और सच्चे अर्थ में, वाक्पटुता का एक शानदार नमूना है। इस रचना का शीर्षक नम्निलखिति है: 'मूसा द्वारा दएि गए वधिान पर, और यीशु मसीह में जो अनुग्रह और सत्य था, और कैसे वधिान समाप्त हो गया

प्रेस्बटिर हलिारयिन कभी-कभी बेरेस्तोवो से नकिलकर डेन्यूपर नदी के पास एक प्राचीन जंगल से ढकी पहाड़ी पर चले जाते थे, जहाँ अब मठ की दूर की गुफाएँ, या थयिोडोसयिस की गुफाएँ, स्थति हैं; इस पहाड़ी पर, हलिारयिन ने दो साज़ेन गहरी एक गुफा खुद खोदी, जहाँ वह गुप्त रूप से ईश्वर से प्रार्थना करता था, भजन गाता और प्रणाम करता था।

इस बीच, परम पूज्य एंथनी पवत्रि पर्वत पर, उस मठ में थे जहाँ उन्होंने अपनी प्रतज्ञिाएँ ली थीं, और एक बार फरि मठाधीश को ईश्वर से एक प्रकटवाणी प्राप्त हुई:

प्रभु ने कहा, 'एंथनी को रूस की भूमपिर वापस भेजो, क्योंकमिुझे वहाँ उसकी आवश्यकता है।'

मठाधीश ने आदरणीय पतिा को बुलाया और उन्हें प्रकट कयिा:

'एंथनी! ईश्वर की इच्छा से, एक बार फरि रूस की भूमपिर जाओ, और पवत्रि पर्वत का आशीर्वाद तुम पर बना रहे!'

उसी समय, मठाधीश ने पूजनीय पतिा को भवष्यिवाणी की कि रूस की भूमि में वह कई भक्षिुओं के आध्यात्मकि पतिा बनेंगे; एंथनी को आशीर्वाद देने के बाद, मठाधीश ने उन्हें वदिा करते हुए ये अंतमि शब्द कहे:

'शांतसि जाओ!'

इस आशीर्वाद के साथ, पूजनीय एंथनी कीव लौट आए। उस पहाड़ी पर चढ़कर जहाँ हलिारयिन ने पहले उल्लेख की गई छोटी गुफा खोदी थी, पूजनीय एंथनी को यह स्थान बहुत भाया। ईश्वर से आँसुओं के साथ प्रार्थना करने के बाद, उन्होंने कहा:

'हे प्रभु! पवत्रि माउंट अथोस का आशीर्वाद और मेरे पतिा, जन्हिोंने मेरा मुंडन कयिा था, की प्रार्थनाएँ इस स्थान पर बनी रहें; हे ईश्वर, यहाँ मेरा नविास स्थापति करो!'

इसके बाद, उन्होंने उस गुफा को अपना नविास स्थान चुन लयिा। और पूज्यनीय पतिाजी यहाँ नरिंतर प्रार्थना में जीवन व्यतीत करते थे, सूखी रोटी खाते और थोड़ी मात्रा में पानी से अपनी प्यास बुझाते थे, और वह भी केवल हर दूसरे दनि, या कभी-कभी हर दो दनि में एक बार; और कभी-कभी तो वे पूरे सप्ताह कुछ भी नहीं खाते थे, दनि-रात प्रार्थनापूर्ण जागरण में बतिाते और अपने हाथों से लगन से एक बड़ी गुफा खोदते थे।

[5009]जब संतों को उस गुफा में रहने की खबर मलिी, तो मसीह के कुछ भक्त वहाँ उनके पास आए, जो उनके शारीरकि जीवन के लिए आवश्यक चीजें लाए और उनका आशीर्वाद लेना चाहते थे; कुछ ऐसे आगंतुक भी थे जन्हिोंने संतों के साथ रहने की इच्छा व्यक्त की; उनमें से एक धन्य नकिॉन थे।

ठीक इसी समय था जब पवत्रि थयिोडोरयिस, जो उस समय बीस वर्ष के युवक थे, के साथ पवत्रि नकिोन[5010] पवत्रि एंथनी के पास आए: पवत्रि एंथनी ने पवत्रि नकिोन – जो एक पुरोहति और एक अनुभवी भक्षिु थे – को थयिोडोरयिस का मुंडन करने का नर्दिेश दयिा।

कई वर्षों बाद, जब धर्मपरायण राजकुमार यारोस्लाव[5011] का नधिन हो गया, तो सत्ता उनके सबसे बड़े पुत्र इज्यास्लाव के पास चली गई, जन्हिोंने कीव में राजसी सहिासन पर आसीन हुए[5012] । इस समय तक, गुफाओं के आदरणीय एंथनी अपनी अनेक सद्गुणों वाली जीवन शैली के लिए पहले ही पूरे रूसी प्रदेशों में प्रसद्धि हो चुके थे, ठीक वैसे ही जैसे प्राचीन काल में एंथनी महान मस्रि में प्रसद्धि हुए थे। आदरणीय एंथनी के तपस्वी जीवन के बारे में जानकर, मसीह-प्रेमी राजकुमार इज्यास्लाव अपने अनुयायियों के साथ प्रार्थना और आशीर्वाद के लिए उनके पास आए; और सभी द्वारा पूजे जाने वाले आदरणीय एंथनी की कीर्त और भी बढ़ गई। और जो मसीह से प्रेम करते थे, वे मुंडन की इच्छा से उनके पास आने लगे: उन्होंने उन्हें स्वीकार कयिा और उनका मुंडन कयिा।

है, जबकि अनुग्रह और सत्य ने सारी पृथ्वी को भर दयिा है, और वश्विास सभी राष्ट्रों में, यहाँ तक कि हमारी अपनी रूसी भाषा में भी फैल गया है, और हमारे खान व्लादमिीर की प्रशंसा में, जनिके द्वारा हमें बपतस्मिा दयिा गया था, और हमारी सारी भूमि की ओर से परमेश्वर से एक प्रार्थना'.

[5009] वह सेंट एंथनी के पास पहले से ही एक पादरी के रूप में आए और उन लोगों का मुंडन कयिा जो संत के साथ गुफा में रहकर उनके साथ जीना चाहते थे। बाद में, धन्य नकिोन गुफा मठ के मठाधीश बने, जो सेंट थयिोडोरयिस के बाद दूसरे थे।

[5010] लगभग 1055–1056।

[5011] 1054 में

[5012] 1054 से 1068 तक महा राजकुमार।

आदरणीय एंथनी के पास आए इन धर्मनिष्ठ ईसाइयों में, सबसे पहले, धन्य बार्लाम थे, जो कुलीन कीव बोयार जॉन के पुत्र थे[5013] , और फिर एफ्रेम, एक राजसी ख़सरा[5014] । उनकी व्यक्त इच्छा के अनुसार, पूज्य एंथनी ने धन्य निकोन को उन दोनों का मुंडन करने का निर्देश दिया, जिससे पूज्य पिता और उनके भाइयों को बहुत परेशानी हुई। न केवल क्रोधित बोयार जॉन, जो नौकरों की एक भीड़ के साथ गुफा में आया था, ने हमारे पूजनीय पिता एंथनी के ईश्वर-चुने हुए झुंड को तितर-बितर कर दिया, बल्कि उसने अपने पुत्र , धन्य बरलाम को, गुफाओं से बाहर खींच निकाला और उसकी मठ की पोशाकों को शानदार बोयार के परिधानों से बदलकर, जबरदस्ती उसे अपने घर वापस ले गया; लेकिन ग्रैंड प्रिंस इज़ियास्लाव स्वयं, बोयार के बेटे और उसके प्रिय ख़ास नौकर के सिर मुंडवाने की बात जानकर, परम पूजनीय एंथनी द्वारा मसीह के नाम पर इकट्ठी हुई समुदाय से भी बहुत क्रोधित हुए; उन्होंने धन्य निकोन की गिरफ्तारी का आदेश दिया, जिन्होंने संन्यासियों का सिर मुंडवाया था, और इस बात के लिए उनके प्रति विशेष शत्रुता रखी; उसने निकॉन को वरालाम और एफ्रेम को एक बार फिर से शांति से रहने के लिए मनाने का आदेश दिया, और उसे उसके गुरु एंथनी और गुफा में मौजूद सभी लोगों के साथ कैद की धमकी दी; जहाँ तक गुफा की बात है, राजकुमार ने उसे खोदने का इरादा किया था।

'अंधकार के राजकुमार' की चालाकियों से भड़का राजकुमार का क्रोध इतना प्रचंड था कि उसने पूज्य एंथनी और शेष भाइयों को गुफा छोड़कर किसी अन्य भूमि पर जाने के लिए मजबूर कर दिया। लेकिन यह जानकर राजकुमारी ने प्रिंस से विनती की कि वह अपने क्रोध में ईश्वर के सेवकों को अपने राज्य से न निकाले, कहीं ऐसा न हो कि वह उसी ईश्वरीय क्रोध का शिकार हो जाए जो भिक्षुओं के निर्वासन के बाद उसके स्वदेश—ल्यख्स की भूमि—पर पड़ा था। (राजकुमारी, जो पोलैंड के राजा बोलेस्लाव द ब्रेव की बेटी थी, पोलिश मूल की थी; उसने राजकुमार को अपने पिता के जीवन की निम्नलिखित घटना याद दिलाई: वेनेरेबल मूसे द हंगेरियन के मुंडन के बाद, बोलेस्लाव ने संतों को पोलैंड से निकाल दिया था; प्रभु राजा के कार्यों से क्रोधित हो गए: बाद वाला (राजा) अचानक मर गया, और इसके बाद हुई गृहयुद्ध में कई बिशप और बोयार मारे गए)। बेमन से राजकुमारी की विनतियों को मानते हुए, राजकुमार को अंततः होश आया और उसने ईश्वर का भय मानना शुरू कर दिया: उसने वृद्ध को एक संदेश भेजा कि वे उस स्थान पर लौट आएं जिसे उन्होंने छोड़ दिया था; आदरणीय एंथनी को तीन दिनों की खोज के बाद ही पाया जा सका, और उन्होंने उनसे लौटने की विनती की।

इस प्रकार हमारे पूजनीय पिता एंथनी एक बार फिर अपनी गुफा में लौट आए। उन्होंने निरंतर ईश्वर से प्रार्थना की—कि प्रिंस उन्हें शत्रु, जो सद्भाव का घृणक है, द्वारा दी गई पीड़ाओं को धैर्यपूर्वक सहने की शक्ति प्रदान करें—और यह कि वह उन लोगों की आत्माओं को, जो उनका स्वीकार करते हैं, जानवरों के हवाले न करें, और अपने दीनों को सदा के लिए न भूलें[5015] । प्रभु ने पूजनीय की प्रार्थना सुनी: न केवल बिखरी हुई भेड़ें शांतिपूर्वक अपने चरवाहे के पास लौट आईं, बल्कि कई अन्य लोग भी उसकी गुफा में उसके पास आए, और उनसे विनती करने लगे कि वे उन्हें विनाश की ओर ले जाने वाले मार्ग के अंधकार से बचाएं – और उन्हें मोक्ष के मार्ग की रोशनी की ओर मोड़ें। आदरणीय एंथनी ने सभी का प्रेमपूर्वक स्वागत किया: उन्हें मसीह का अनुसरण करने के तरीके के बारे में निर्देश देने के बाद, उन्होंने धन्य निकोन को उन लोगों का मुंडन करने का निर्देश दिया जो ऐसा करना चाहते थे। और बारह पुरुषों का एक समुदाय आदरणीय के चारों ओर इकट्ठा हो गया; उनके संयुक्त प्रयासों से, एक बड़ी गुफा खोदी गई, और उसमें एक चर्च और कोठरियाँ स्थापित की गईं, जो आज भी मौजूद हैं।

एक दिन, पूज्य एंथनी ने अपने मार्गदर्शन में एकत्रित भ्राताओं से कहा:

'भगवान ने आपको एक साथ लाया है, भाइयों, और मैंने आपको पवित्र पर्वत के आशीर्वाद से मुंडन किया है, जिससे स्वयं मुझे इसके मठाधीश ने मुंडन किया था; सर्वप्रथम ईश्वर का आशीर्वाद और परम पवित्र ईश्वर माता का आशीर्वाद आप पर हो, साथ ही पवित्र पर्वत का आशीर्वाद भी।'

तब पूज्य पिता ने भ्राताओं से कहा:

उन्होंने कहा, 'तुम अपने दम पर रहो, मैं तुम्हारे लिए एक मठाधीश नियुक्त करूँगा; जहाँ तक मेरी बात है, मैं अकेले रहना चाहता हूँ, जैसा कि मैं पिछले वर्षों से करता आया हूँ।'

[5013] गुफाओं के मठ के बाद के पहले मठाध्यक्ष।

[5014] ब्रह्मचारी भिक्षु एफ्रेम, ग्रैंड प्रिंस इज़ियास्लाव के मुख्य प्रबंधक थे; उन्होंने बाद में केव्स मठ को छोड़कर कॉन्स्टेंटिनोपल का रुख किया, जहाँ वे एक मठ में रहे, और वहीं से उन्हें पेरियास्लाव के धर्माध्यक्ष पद पर पदोन्नत किया गया। उनकी मृत्यु कब हुई यह ज्ञात नहीं है; वृत्तों में उनका अंतिम उल्लेख 1091 का है। एक बिशप के रूप में, एफ्रेम अपने चर्च-निर्माण के प्रयासों के लिए प्रसिद्ध हुए।

[5015] तुलना करें भजन संहिता 73:19 से।

और उन्होंने धन्य वरलाम को उनका मठाधीश नियुक्त कयिा। जहाँ तक उनकी बात है, कलह और अफवाह से बचना चाहते हुए, उन्होंने पहले तो इसी गुफा में एक कोठरी में खुद को अलग-थलग कर लयिा, और फरि एक दूसरी पहाड़ी पर चले गए, जहाँ उन्होंने एक नई गुफा खोदनी शुरू की, जो आज के ग्रेट केव मठ ([5016]) के नीचे स्थति है।

धन्य मठाध्यक्ष वरलाम और भ्राताओं ने, आदरणीय एंथनी का आशीर्वाद प्राप्त करने के बाद, अपनी पूर्व गुफा में ही रहना जारी रखा। हालाँकि, जब भ्राताओं की संख्या इतनी बढ़ गई कि सामूहकि प्रार्थना के दौरान गुफा में सभी के लिए जगह नहीं रह गई, तो उन्होंने गुफा के बाहर एक छोटा चैपल बनाने का नश्चिय कयिा। मठाधीश और भ्राताओं ने पूज्य एंथनी के पास उनकी नई गुफा में जाकर उनसे कहा:

'पतिाजी! भाइयों की संख्या बढ़ रही है, और हम सभी अब सामूहकि प्रार्थना के दौरान गुफा के अंदर नहीं समा सकते: प्रभु और परमेश्वर की परम पवत्रि माता की आज्ञा से, और आपकी पवत्रि प्रार्थनाओं के द्वारा भी, कृपया अपना आशीर्वाद दें ताकि हम गुफा के बाहर एक छोटा सा चर्च बना सकें।'

आदरणीय संत ने अपनी सहमति दे दी। वे, उनके सामने जमीन पर सरि झुकाकर, वदिा हुए और गुफा के ऊपर एक छोटी सी चर्च का नरि्माण शुरू कयिा, जो परमेश्वर की परम पवत्रि माता के स्वर्गारोहण को समर्पति थी।

गुफा के ऊपर छोटी चर्च के पूरा होने के बाद, राजकुमार इज्यास्लाव—जनिका बपतस्मिा का ईसाई नाम डेमेट्रयिस था—ने उस संत के सम्मान में एक पत्थर की चर्च बनवाई, जनिका ईसाई नाम उनके नाम पर था, यानी महान शहीद डेमेट्रयिस के सम्मान में; और उन्होंने चर्च के बगल में एक मठ की स्थापना की। राजकुमार इज्यास्लाव ने धन्य वरलाम—जो गुफा में रहने वाले समुदाय के मठाधीश थे—को इस मठ का मठाधीश नियुक्त कयिा: वह उनकी संपत्ति का उपयोग करने की उम्मीद कर रहे थे, और वे अपने मठ को गुफा मठ से अधकि प्रतष्ठिति बनाना चाहते थे। फरि भी, यद्यपि राजाओं और बोयारों (अमीरों) की संपत्ति से कई मठों की स्थापना हुई है, वे संतों की प्रार्थनाओं, आँसुओं, उपवास और जागरणों से स्थापति मठों की बराबरी नहीं कर सकते। इसी प्रकार, पूजनीय एंथनी के पास सोना नहीं था, लेकनि अपने आँसुओं से उन्होंने एक ऐसा मठ बनाया जो कसिी अन्य की बराबरी नहीं कर सकता। हालाँकि, धन्य बार्लाम को संत डेमेट्रयिस महान शहीद के मठ में उस समय लयिा गया था जब गुफा मठ की स्थापना अभी-अभी हो रही थी। मठाध्यक्ष के प्रस्थान के बाद और एक आम परषिद के बाद, गुफा में रहने वाले भाइयों ने पूजनीय एंथनी के पास जाने का संकल्प लयिा।

'पतिाजी,' भक्षिुओं ने उनसे कहा, 'हमारे लिए एक मठाध्यक्ष नियुक्त कीजिए।'

"आप कसिे चाहते हैं?" पूज्य ने पूछा।

'जसिकी परमेश्वर, परमेश्वर की अति पवत्रि माता, और आप, सम्माननीय पतिाजी, इच्छा करें,' आए हुए लोगों ने उत्तर दयिा।

"आप में से वही व्यक्ति बने," पूज्य एंथनी ने नरि्णय लयिा, "जो आज्ञाकारति, नम्रता और वनिम्रता से वशिष्टि हो, आपका मठाधीश[5017] ।"

तब भाइयों ने परमपावन एंथनी से वनिती की कि वे परमपावन थयिोडोसयिस को मठाध्यक्ष पद के लिए आशीर्वाद दें, क्योंकि वह उनके समान वचिारधारा का और सभी अच्छे कार्यों में नपिुण था; और परमपावन एंथनी ने उन्हें मठाध्यक्ष पद के लिए आशीर्वाद दयिा। बारह पुरुषों की पूरी समुदाय ने आदरणीय एंथनी के सामने प्रणाम कयिा, इस बात की प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कि उन्हें ऐसा मार्गदर्शक मलिा था।

मठाध्यक्ष बनने के बाद, परम पूज्य थयिोडोसयिस ने दोगुनी लगन से मठ की देखभाल करना शुरू कर दयिा, और इन कर्तव्यों को महान भक्ति और अश्रुपूर्ण प्रार्थनाओं के साथ जोड़ा; उनके वरष्ठि, हमारे परम पूज्य पति एंथनी, जो एकांत में रहते थे, की प्रार्थनाएँ और आशीर्वाद उनके लिए बहुत सहायक थे। और प्रभु ने भक्षिुओं की संख्या बढ़ाना

[5016] संत एंथनी की दूसरी गुफा में आज की 'नज़दीकी' गुफाएँ, या एंथनी की गुफाएँ शामलि हैं। जसि पहाड़ी पर यह गुफा स्थति है, वह पहली गुफा की पहाड़ी से एक गहरी खाई द्वारा अलग है; वर्तमान में, उपरोक्त खाई पर फैली एक गैलरी के माध्यम से, नज़दीकी गुफाओं से दूर की गुफाओं तक की दूरी 91 सैज़ेनज़ है। संत एंथोनी कुछ शष्यिों के साथ दूसरी गुफा में चले गए, जो कठोर तपस्या में संलग्न होना चाहते थे, और बाद में उन्होंने उन लोगों को भी स्वीकार कयिा जो उनके साथ तपस्या करना चाहते थे।

[5017] इतहिासकार के सटीक शब्द थोड़ा अलग अर्थ व्यक्त करते हैं: जब भाइयों ने सेंट एंथोनी से एक मठाधीश नियुक्त करने के लिए कहा, तो उन्होंने नम्निलखिति उत्तर दयिा, जो सीधे तौर पर आदरणीय थयिोडोसयिस की ओर इशारा कर रहा था: 'आप में से थयिोडोसयिस से बड़ा कौन है—जो आज्ञाकारी, वनिम्र और नम्र है? वही आपका मठाधीश बने।'

शुरू कर दिया, ताकि जल्द ही, आदरणीय थियोडोसियस के मार्गदर्शन में, सौ पुरुष हो गए। आदरणीय थियोडोसियस ने, भ्रातृत्व में इतनी वृद्धि देखकर, उनसे परामर्श करने के बाद, एक मठ स्थापित करने का संकल्प लिया। और एक बार फिर वे सभी आदरणीय एंथनी के पास गए और उनसे कहा:

'पिताजी! भाइयों की संख्या लगातार बढ़ती जा रही है – हम एक मठ स्थापित करना चाहते हैं।'

आदरणीय एंथनी अत्यंत प्रसन्न हुए।

उन्होंने कहा, 'ईश्वर की स्तुति हो, सभी चीजों के लिए! परमेश्वर की अति पवित्र माता और पवित्र पर्वत के संतों की प्रार्थनाएं आपके साथ हों और आपकी सहायता करें।'

तब उन्होंने भाइयों में से एक को राजकुमार इज्यास्लाव को यह बताने के लिए भेजा:

'हे मसीह-प्रेमी राजकुमार! ईश्वर भाइयों की संख्या बढ़ा रहे हैं, लेकिन जिस स्थान पर हम बसे हैं वह बहुत तंग है: हम आपसे प्रार्थना करते हैं – कृपया हमें गुफा के ऊपर का पहाड़ दे दें।'

यह सुनकर राजकुमार इज्यास्लाव बहुत प्रसन्न हुआ; उसने भिक्षुओं को गुफा के ऊपर का पहाड़ सौंपने के लिए अपना बोयार (boyar) भेजा। पूजनीय थियोडोसियस और भाइयों ने वहाँ एक बड़े '[5018] ' लकड़ी के चर्च की नींव रखी और, इसके निर्माण को पूरा करने के बाद, इसे आइकन (icons) से सजाया; उन्होंने कोठरियाँ भी बनाईं, मठ को स्तंभों से घेर लिया, और गुफा से वहाँ आ गए। उस समय से, यह मठ, जिसकी उत्पत्ति पवित्र पहाड़ के आशीर्वाद से हुई थी, पेचेरस्की मठ के नाम से जाना जाने लगा, क्योंकि सिंन्यासी पहले एक गुफा में रहते थे[5019] ।

[5020]इसके बाद, पूज्य एबॉट थियोडोसियस ने भी अपने मठ को एक आध्यात्मिक घेरे के साथ स्थापित करने का संकल्प लिया, यानी, मठ के भीतर रहने वाले भिक्षुओं के जीवन को नियंत्रित करने वाला एक नियम: उन्होंने इस उद्देश्य के लिए उपयुक्त एक मठवासी नियम की तलाश शुरू कर दी। और इस मामले में, उन्हें हमारे पूजनीय पिता एंथनी की प्रार्थनाओं और आशीर्वाद से सहायता मिली: यह ठीक उनके आशीर्वाद और प्रार्थनाओं के कारण ही था कि प्रभु ने ऐसा प्रबंध किया कि, उसी समय, स्टुडियोन मठ का माइकल नामक एक सम्माननीय भिक्षु, जो मेट्रोपॉलिटन जॉर्ज के साथ ग्रीस से आया था, मौजूद था। उसके पास स्टुडियन मठ का नियम था[5021] । इन नियमों की प्रतिलिपि तैयार करने के बाद – स्वाभाविक रूप से ग्रीक से अनुवाद में – आदरणीय थियोडोसियस ने, इन्हें अपने मठ में लागू करने का संकल्प लेकर, संपूर्ण 'चर्च व्यवस्था' स्थापित की – जैसे कि धार्मिक गायन और पाठ कैसे करें, और उनके बाद प्रणाम कैसे करें; चर्च में कैसे खड़ा रहें और भोजन में समय कैसे बिताएं; भोजन में क्या खाएं और किन विशेष दिनों में क्या खाएं। अन्य सभी मठों ने कीव गुफा मठ से स्टुडाइट नियम को अपनाया; इसके कारण, कीव गुफा मठ सभी अन्य रूसी मठों पर प्रधानता और सम्मान का स्थान रखता है।

आदरणीय थियोडोसियस के मठाध्यक्षत्व के दौरान, जिन्होंने नए नियम के माध्यम से और हमारे आदरणीय पिता एंथनी की प्रार्थनाओं और आशीर्वाद की मदद से, कीव गुफाओं के मठ के जीवन को सद्गुण के मार्ग पर निर्देशित किया, हमारे आदरणीय पिता नेस्टर—जो आदरणीय थियोडोसियस और अन्य लोगों के जीवन के लेखक थे—सत्रह वर्षीय युवक के रूप में मठ में आए: आदरणीय थियोडोसियस, जो उनके पास आने वाले सभी का प्रेम से स्वागत करते थे, ने भी आदरणीय

[5018] यह पिछले चर्च से बड़ा था; हालाँकि, वास्तव में यह बहुत बड़े आकार का नहीं था।

[5019] इतिहासकार के अनुसार, मठ सेंट थियोडोसियस द्वारा नहीं, बल्कि उनके मठाध्यक्ष के पूर्ववर्ती, बार्लाम द्वारा बनाया गया था। चाहे जो भी हो, यह कहा जा सकता है कि मठ 1062 से पहले ही बना था। सेंट थियोडोसियस की गुफा के ऊपर मठ के बनने के ग्यारह या बारह साल बाद, उन्होंने पहले मठ के दूसरी ओर खाई के पार, सेंट एंथनी की दूसरी गुफा के पास, एक नई जगह पर एक नए, बहुत बड़े मठ का निर्माण शुरू किया। 1073 में, संत थियोडोसियस नए मठ के पूरा होने तक जीवित नहीं रहे – यह उनके उत्तराधिकारी मठाध्यक्षों: स्टीफन, निकॉन और जॉन द्वारा पूरा किया गया था। पेचेर्सक मठ आज भी इस दूसरे स्थल पर बना हुआ है, और यही कारण है कि संत एंथनी की गुफाएँ (दूसरा समूह) मठ के पास स्थित हैं। भाइयों को नए मठ में स्थानांतरित करने के बाद पुराने, या जर्जर, मठ को ध्वस्त नहीं किया गया था: जिस गुफा पर यह बना था, उसे भाइयों के लिए एक दफन कक्ष में बदल दिया गया था; ब्रदरहुड के कई सदस्य दफ़न के लिए पुराने मठ में ही रहे, जिनमें एक पुरोहित और एक डिकिन भी शामिल थे, जो मठ की चर्च में 'मरणासन्न भाइयों के लिए' दैनिक स्मारक पूजा का आयोजन करते थे।

[5020] वर्षांक 1072–1073 के अंतर्गत वृत्तांत में इसका उल्लेख है।

[5021] यह नियम सख्त रूप से सामुदायिक है, जो एक भिक्षु को अपना कुछ भी रखने की अनुमति नहीं देता, यहाँ तक कि एक सुई भी नहीं। सेंट नेस्टर, सेंट थियोडोसियस के जीवन में, एक अन्य स्रोत की ओर इशारा करते हैं जिससे बाद वाले ने स्टुडाइट नियम प्राप्त किया था: वे लिखते हैं, 'थियोडोसियस ने भाइयों में से एक को कांस्टेंटिनोपल में ख़ास आदमी एफ्रेम (ऊपर, टिप्पणी 21 देखें) के पास भेजा, ताकि वह स्टुडाइट मठ (जो कांस्टेंटिनोपल में स्थित था) के पूरे नियम की प्रतिलिपि बिनाकर उन्हें भेज दे; और उसने तुरंत हमारे पवित्र पिता की आज्ञा का पालन किया और, संपूर्ण मठवासी नियम लिखकर, उसे हमारे धन्य पिता थियोडोसियस को भेज दिया।

एंथनी की सलाह और आशीर्वाद से उन्हें सहर्ष स्वीकार कर लिया। मठ को विशेष रूप से 'केव्स मठ' क्यों कहा जाता था, यह पता लगाने के लिए, नेस्टर ने विश्वासियों के निर्माण के लिए, अपने वृत्तांत में मठ के संस्थापक, आदरणीय एंथनी के कारनामों का संक्षेप में वर्णन किया[5022] ।

लेकिन आइए हम चमत्कारों के बारे में कुछ कहें—हालांकि सभी के बारे में नहीं—और संत एंथनी के सम्मानजनक निधन के बारे में भी; मैंने यह जानकारी धन्य बिशप साइमन और गुफाओं के एक भिक्षु पॉलीकार्प से प्राप्त की है, जो उनके निकट थे[5023] , जबकि फिलिहाल पुरोहित पिता द्वारा सहन किए गए वास्तविक कारनामों और कष्टों के बारे में इतिहासकार के विवरणों को अलग रख रहे हैं।

हमारे पूजनीय पिता एंथनी, एक अन्य गुफा में निवृत्त होकर, अपने चुने हुए झुंड की वृद्धि और सुव्यवस्था को देखकर, ईश्वर का धन्यवाद करने लगे, जबकि स्वयं गुणों में दिन-प्रतिदिन प्रगत होते गए। इसके लिए, प्रभु ने उनकी महिमा की – आदरणीय एंथनी का नाम विभिन्न चमत्कारों और, विशेष रूप से, उपचार और भविष्यवाणी के वरदान के माध्यम से पूरे रूसी देश में प्रकाशित हो गया।

आदरणीय एंथनी ने चमत्कारी उपचारों का वरदान इस प्रकार प्रकट किया। स्वयं वरिष्ठ ने बीमारों की सेवा की और अपनी प्रार्थना के द्वारा उन्हें ठीक किया; लेकिन, अपनी प्रार्थना से हुए इन उपचारों को विनम्रता से छिपाते हुए, वे अपने आशीर्वाद के साथ, बीमारों को कुछ हरी सब्जियाँ देते थे जो वे स्वयं उपचार के रूप में खाते थे; और बीमार, उसे चखते ही, चाहे वे किसी भी बीमारी से पीड़ित हों, स्वस्थ हो जाते थे। बाद में, धन्य अगपटिस ने पूजनीय एंथनी के पदचिन्हों पर चलकर, उसी तरह बीमारियों को ठीक किया[5024] ।

जहाँ तक संत एंथनी की दूरदर्शिता की बात है, अन्य उदाहरणों के साथ-साथ निम्नलिखित वृत्तांत इसकी गवाही देता है।

यारोस्लाव के वंश के तीन राजकुमार – कीव के राजकुमार इज्यास्लाव; चेर्निगोव के स्वयातोस्लाव; और पेरियास्लाव के वसेवोल्द – जब पोलोव्त्सियों के खिलाफ युद्ध के लिए रवाना हो रहे थे[5025] , तो वे आशीर्वाद लेने के लिए परम पूज्य एंथनी के पास आए। उन्होंने, उन पर आने वाले ईश्वर के प्रकोप को पूर्व में ही देख लिया था, उनसे कहा:

'तुम्हारे पापों के कारण, तुम बर्बर लोगों से पराजित हो जाओगे और भाग खड़े होओगे; तुम्हारे कई योद्धा नदी में डूब जाएँगे, अन्य कैद कर लिए जाएँगे, और बाकी तलवार के घाट उतार दिए जाएँगे।'

यह अल्ता नदी की लड़ाई[5026] के बाद हुआ, जब राजकुमार, किसी तरह अपनी जान बचाकर, भाग गए: इज्यास्लाव और व्लादिमीर कीव की ओर, जबकि स्वियातोस्लाव चेर्निगोव की ओर; इस बीच पोलोव्त्सी रूसी भूमि के दक्षिण-पूर्वी छोरों में बिखर गए, और उसके निवासियों को कैद करके उनका कत्लेआम किया।

राजकुमारों को इस भविष्यवाणी के साथ-साथ, आदरणीय एंथनी ने वरांगियन राजकुमार अफ्रीकन के पुत्र शिमोन से भी भविष्यवाणी की कि शिमोन, ईश्वर की कृपा से, न केवल उपर्युक्त युद्ध में पहले से ही लाशों से घिरे होने पर भी मृत्यु से बच जाएगा, बल्कि, कई वर्षों बाद, वह पेचेरस्क के पत्थर के चर्च में सबसे पहले दफन होगा, जिसके बारे में

[5022] हाल के विद्वानों के शोध से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि 'अर्ली क्रॉनिकल' के लेखक परम आदरणीय नेस्टर नहीं थे, बल्कि कीव केव्स मठ के कोई अन्य भिक्षु, संभवतः सिल्वेस्टर थे, जो बाद में कीव में सेंट माइकल मठ के मठाधीश बने।

[5023] साइमन पेचेर्स्क मठ में एक नवसिखिया था; वहाँ से उन्हें ग्रैंड प्रिंस वसेवोल्द यूरीविच द्वारा व्लादिमीर में स्थापित नैटिविटी मठ के मठाधीश के रूप में नियुक्त किया गया; बाद में साइमन को व्लादिमीर के धर्मप्रांत का पहला बिशप नियुक्त किया गया, जिसे 1214 में रोस्तोव के धर्मप्रांत से अलग किया गया था। साइमन का 1226 में बारह वर्षों के शासन के बाद निधन हो गया। पॉलिकार्प, जो कीव केव्स मठ का एक भिक्षु भी था, को दो बार मठाध्यक्ष नियुक्त किया गया और दो बार उस पद से कीव केव्स मठ में लौट आया; बाद में, वह कीव केव्स मठ का मठाध्यक्ष बन गया। (इस महीने की 24 तारीख को उसकी जीवनी देखें)। व्लादिमीर के बिशप साइमन द्वारा पॉलीकार्प को लिखे एक पत्र से, और बाद वाले के केव्स के आर्चिमांड्राइट अकिंडिन को लिखे पत्र से, जिनकी सामग्री में केव्स के चमत्कार करने वालों और इसकी महान चर्च के निर्माण के दौरान मठ के भीतर हुए चमत्कारों के बारे में विवरणों की एक शृंखला शामिल है, प्रसिद्ध केव्स पैट्रिकॉन संकलित किया गया था। (एक 'पेटेरिकॉन', या 'पितृजी की पुस्तक', यानी पितृजी द्वारा या पितृजी के बारे में एक पुस्तक)।

[5024] धन्य अगापटिस, 'अनपेक्षित चिकित्सक', जिनकी मृत्यु 1095 में हुई, का पर्व दिवस 1 जून को मनाया जाता है।

[5025] पोलोव्त्सी या कुमान एक तुर्की खानाबदोश जनजाति थी जो 10वीं-13वीं शताब्दी में दक्षिणी रूस में रहती थी और वहां से रूसी भूमि के सीमावर्ती शहरों और बस्तियों पर छापेमारी करती थी।

[5026] यह लड़ाई 1066 में अल्ता नदी पर हुई थी; अल्ता ट्रुबेज़ की एक सहायक नदी है, जो कीव के नीचे बाएँ, या मॉस्को, तट पर डेन्यपर में मिलती है।

रेवरेंड फादर ने यह भी भविष्यवाणी की थी कि इसका निर्माण चमत्कारिक तरीके से होगा। शमिोन ने स्वयं, युद्ध से लौटने पर, रेवरेंड फादर एंथनी को यह बताया:

उन्होंने बताया, 'मैं मारे गए लोगों के बीच घायल पड़ा था, और देखो, किसी दिव्य शक्ति ने मुझे उनके बीच से उठा लिया और मेरे घाव भर दिए; मैंने अपने सभी प्रियजनों और योद्धाओं को भी सुरक्षित पाया।' 'जहाँ तक उस चर्च के दर्शन की बात है जो बनाया जाना था, जो मेरा अंतिम विश्राम स्थल होगा, मैंने उसे हवा में दो बार देखा: एक बार अल्ता नदी के पास, जब मैं मारे गए लोगों के बीच था, और दूसरी बार पहले समुद्र में, जब मैं अपने चाचा याकुन, जिन्होंने मुझे वरांगियन रियासत से निर्वासित कर दिया था, से भागकर प्रिंसि यारोस्लाव के पास रूसी भूमि में जा रहा था।'

तब शमिोन ने अपने शब्दों को, जो ईश्वर की कृपा के बारे में थे और जो आदरणीय एंथनी द्वारा भविष्यवाणी की गई चर्च की स्थापना के संबंध में उन्हें प्रकट हुए थे, क्रम में सिद्ध किया। शमिोन ने उन्हें एक कमरबंद और एक सुनहरा मुकुट देते हुए कहा:

'मैंने ये आइकन—मसीहा यीशु के सूली पर चढ़ाए जाने का चित्र—से तब लिए थे, जब मैं अपनी मातृभूमि छोड़ रहा था। 'आपने भविष्यवाणी की थी कि मुझे यहाँ दफनाया जाएगा; और मैंने ईश्वर की यह आज्ञा सुनी कि इस कमरबंद का उपयोग उस चर्च की नींव को मापने के लिए किया जाए जहाँ मुझे दफनाया जाना है, जिसकी आकृति मुझे हवा में दिखाई गई थी; और ताज, ईश्वर की उसी आज्ञा से, वेदी के ऊपर लगाया जाना है।'

इस प्रकार यह पूरी तरह से स्पष्ट हो गया कि आदरणीय एंथनी की भविष्यवाणी पूरी तरह से ईश्वर की इच्छा के अनुसार थी; इसकी पुष्टि बाद में स्वयं घटित घटनाओं से हुई: अभी-अभी वर्णित घटनाओं के कई वर्षों बाद, साइमन पहली बार उस गुफा में दिव्य रूप से निर्मित पत्थर के चर्च में दफनाए गए।

अब, एक बार फिर इतिहासकार की ओर लौटते हुए, आइए हम पूजनीय एंथनी द्वारा सहन की गई अगली बड़ी कष्ट-परीक्षा के बारे में बात करें। अंधकार का राजकुमार – शैतान, जो पुण्य कर्मों के प्रकाश को सहन नहीं कर सकता – ने एक बार फिर, राजकुमार इज्यास्लाव के माध्यम से, राजधानी कीव को उसके महान दीपक, हमारे पूजनीय पिता एंथनी से वंचित करने का प्रयास किया, जो अपनी चमत्कारों और गुणों के द्वारा, एक छिपे हुए प्रकाश की तरह, अंधेरी गुफा में चमक रहे थे।

उपरोक्त युद्ध में पोलोव्त्सीयों की जीत के बाद—जैसा कि आदरणीय एंथनी ने भविष्यवाणी की थी—कीव के लोगों ने राजकुमार इज्यास्लाव पर रूस की भूमि में बिखर गए दुश्मनों के खिलाफ एक बार फिर उनका नेतृत्व करने के लिए दबाव डाला। राजकुमार ने ऐसा करने से इनकार कर दिया।[5027] में एक विद्रोह छिड़ गया, जिसके दौरान पोलोत्स्क के राजकुमार व्सेस्लाव, जिन्हें कीव में[5028] में बंदी बनाया गया था, जेल से मुक्त कर दिए गए। विद्रोही लोगों ने व्सेस्लाव को कीव का राजकुमार घोषित कर दिया, और इज्यास्लाव को पोलैंड भागने के लिए मजबूर होना पड़ा। सात महीने बाद, वह वहाँ से बोलेस्लाव द ब्रेव के साथ कीव लौट आया। वसेस्लाव, जो वास्तव में एक सेना के साथ उनका सामना करने भी गया था, बाद में गुप्त रूप से पोलोत्स्क भाग गया। तब इज्यास्लाव कीव में प्रवेश किया[5029] । शैतान के उकसावे पर, उसने आदरणीय एंथनी के प्रति क्रोध रखना शुरू कर दिया, जिसके बारे में किसी ने उसके सामने बदनामी की थी - यह दावा करते हुए कि एंथनी व्सेस्लाव का पक्ष लेता था, उसे सलाह देता था, और कीव में हुए सभी उथल-पुथल[5030] का मुख्य उकसाने वाला भी वही था । हालाँकि, उस समय आदरणीय एंथनी एक गुफा में बीमार तपस्वी इसाक की सेवा कर रहे थे, जिसे शैतान ने यीशु मसीह के रूप में प्रकट होकर धोखा दिया था, और राक्षसों के साथ नृत्य में खींचने के बाद उसे मुश्किल से जीवित छोड़ दिया था[5031] । आदरणीय एंथनी की यह सेवा धोखेबाज़ को विशेष रूप से नापसंद थी, जिसे डर था कि इसाक जल्द ही शैतानी प्रलोभन से आत्मा और शरीर दोनों से ठीक हो जाएगा। इसलिए, शैतान ने राजकुमार इज्यास्लाव में क्रोध भड़काने के लिए अपनी पूरी ताकत लगा दी, ताकि वह आदरणीय एंथनी को कीव की सीमाओं से बाहर निकाल सके। और कुछ समय के लिए, वह इसमें सफल रहा। चेर्निगोव के राजकुमार स्वयितोस्लाव ने, यह जानकर कि उनका भाई इज्यास्लाव परम

[5027] 1068 में

[5028] 1067 से

[5029] 1069 के मई की शुरुआत में

[5030] क्रॉस की कसम तोड़ने के बाद वसेस्लाव को बंदी बना लिया गया था। शायद संत एंथनी ने इस बात के लिए इज्यास्लाव को खुले तौर पर फटकारा, और बाद वाले ने इन फटकारों को कीववासियों के असंतोष का कारण समझा होगा।

[5031] संत इसाक का पर्व: 14 फरवरी

पूज्य एंथनी से बहुत क्रोधित था, रात में संत को बुलवाया और गुप्त रूप से[5032] , उन्हें चेर्नगिोव ले गया। आदरणीय एंथनी को बोल्डनि पहाड़ों में चेरनहिीव के पास एक जगह पसंद आ गई: वहाँ उन्होंने खुद के लिए एक गुफा खोदी और उसमें रहने लगे; बाद में, इस स्थल पर एक मठ की स्थापना की गई[5033] । जल्द ही, राजकुमार इज्यास्लाव, मामले की पूरी और निष्पक्ष जांच करने के बाद, संत की बेगुनाही से आश्वस्त हो गए और प्रलोभक की साजशिों को पहचान लयिा। घटी घटना पर पछताते हुए, उसने चेर्नगिोव क्षेत्र में स्थति परम आदरणीय एंथनी को संदेश भेजा, जसिमें उनसे वनिती की गई कि वे एक बार फरि कीव क्षेत्र में अपने ईश्वर-चुने हुए झुंड के पास लौट आएं। आदरणीय एंथनी, जो एक नम्र और वनिम्र तपस्वी थे, ने इन वनितयिों को स्वीकार कर लयिा: वे गुफाओं के मठ समुदाय में लौट आए, जो एक चरवाहे के बनिा भेड़ों की तरह भ्रम और उपेक्षा में पड़ा था। ईश्वर की यह इच्छा नहीं थी कि हमारे पूज्य पति एंथनी, जो रूसी भूमि का दीप्तमिान सूर्य और ऐसा दीपक थे, एक पुण्यमय साधु जीवन की नींव कसिी अन्य शहर में रखें, सविाय ईश्वर-रक्षति राजधानी कीव के: लेकनि जैसे धर्मनष्ठि राजकुमार व्लादमिीर के माध्यम से रूसी भूमि पर ऑर्थोडॉक्स धर्म का प्रकाश फैला था, वैसे ही प्रभु ने परम तपस्वी जीवन के प्रकाश को पूजनीय एंथनी के माध्यम से प्रकट करने की कृपा की।

और ऐसी कष्टों के बाद, हमारे पूजनीय पति एंथनी ने हम्मित नहीं हारी, बल्कि, नरिंतर बढ़ती गई तपस्या की सीढ़ियाँ चढ़ते हुए, गुफा में तब तक परश्रिम करते रहे जब तक उन्होंने शैतान की शक्ति पर पूर्ण वजिय प्राप्त नहीं कर ली, जो उनके सामने कमजोर थी। सुसमाचार के अनुसार, उन्होंने प्रार्थना और उपवास[5034] के माध्यम से, साथ ही भक्ति के अन्य श्रम: जागना, प्रार्थना में खड़े रहना, और वनिती में घुटने टेकने के अनगनित कार्यों के माध्यम से धोखेबाजों की प्रजाति को भगा दयिा। और अपनी मृत्यु तक उन्होंने अपनी अंधेरी गुफा कभी नहीं छोड़ी, भले ही वहाँ उनका जीवन इस युग के अंधकार के अधपतियिों के खलिाफ एक अनवरत संघर्ष था।

गुफा में एक बार फरि से बस जाने के बाद, पूजनीय एंथनी ने चमत्कार करने का वरदान फरि से प्रदर्शति करना शुरू कर दयिा, और वह भी पहले से कहीं अधकि हद तक। उन्होंने पत्थर की गुफा चर्च की देखभाल बड़ी लगन से करनी शुरू कर दी; उन्होंने स्वयं इसकी रचना की भवष्यिवाणी की थी, और इस कार्य के लिए उन्हें साइमन से ईश्वर की कृपा की पुष्टि भी मलिी थी। आदरणीय एंथनी ने आदरणीय एबॉट थयिोडोसयिस से परामर्श कयिा, और साथ ही सर्वोच्च वास्तुकार[5035] से वनिम्रतापूर्वक प्रार्थना की, कि वे स्वयं इसे अपने सबसे पवत्रि हाथों से आशीर्वाद दें और अपनी सबसे पवत्रि माता के लिए एक घर बनाने में सहायता करें, ईश्वर की माता, क्योंकि, जैसा कि आदरणीय ने दाऊद के शब्दों में कहा: *'यदि यिहोवा भवन न बनाए, तो जो उसको बनाते हैं, वे व्यर्थ परश्रिम करते हैं'* (भजन संहति 126:1)। जब पूजनीय एंथनी ऐसी प्रार्थना में लगे हुए थे, तो एक अद्भुत चमत्कार हुआ: कीव गुफाओं के मठ को छोड़े बनिा, ठीक वैसे ही जैसे कभी-महान चमत्कार करने वाले मयरा के संत नकिोलस ने कयिा था, वे, अपने समान वचिारधारा वाले मत्रि, पूजनीय थयिोडोसयिस के साथ, कांस्टेंटनिोपल में स्वर्ग की रानी, परमेश्वर की अति पवत्रि माता के सामने प्रकट हुए; उसने पूजनीय थयिोडोसयिस के साथ मलिकर स्वर्ण प्राप्त कयिा और उसे मुख्य राजमस्त्रियिों को दे दयिा ताकि वे स्वर्ग की रानी की आज्ञा से रस की भूमि में गुफाओं के चर्च का नरि्माण करने जाएँ।

पत्थर के कारीगर ग्रीस से आए और इस चमत्कार की घोषणा की। हमारे पूजनीय पति एंथनी ने अन्य अद्भुत चमत्कार भी कयि, जैसे कि प्राचीन भवष्यिवक्ताओं गदिोन और एलयिा से जुड़े चमत्कार।

जब राजमस्त्रियिों ने परम पवत्रि माता परमेश्वर की आज्ञा से चर्च का नरि्माण करने के लिए उस स्थान के बारे में आदरणीय एंथनी से पूछना शुरू कयिा, तो आदरणीय पति ने तीन दनिों तक प्रार्थना की कि प्रभु, जो व्यक्तियिों में त्रमिूर्ति हैं, स्वयं स्वर्ग से एक संकेत द्वारा एक ऐसा स्थान इंगति करें जो स्वर्ग की रानी का नविास स्थान बनने के योग्य हो। जब वे ऐसा स्थान चुनने के लिए इकट्ठा हुए, तो राजकुमार स्वयितोस्लाव, ईश्वर से प्रेरति होकर, आए और उन्होंने गुफा के सटे चर्च के लिए अपना एक खेत दान कर दयिा। लेकनि इतना ही नहीं था। महमिा के राजा स्वयं, प्रभु यीशु मसीह, प्रथम रात्रि को जब वे उपरोक्त प्रार्थना में लगे हुए थे, तो आदरणीय एंथनी के समक्ष प्रकट हुए।

[5032] इज्यास्लाव से सेंट एंथनी का ठकिाना छपिाने के लिए, जो संभवतःउनके प्रत्यर्पण की मांग कर सकता था।

[5033] बोल्डनि पहाड़ों पर स्थति डॉर्मशिन मठ, या बोल्डनि मठ, जसिे अब येलेट्स के डॉर्मशिन मठ के नाम से जाना जाता है। वंशावलीकार इस मठ के संस्थापक के रूप में सेंट एंथनी का स्पष्ट रूप से नाम नहीं देता है, और यह मानना उचति है कि इसे संत के शष्यिों ने उनकी गुफा के पास बनाया था।

[5034] मार्क 9:29।

[5035] अर्थात्, रचनाकार ईश्वर को।

प्रभु ने कहा, 'एंथनी! तू मेरी दृष्टि में अनुग्रह प्राप्त कर चुका है।'

यह सुनकर, पूजनीय एंथनी ने प्रभु से प्रार्थना की कि उस रात पूरी भूमि पर ओस हो, लेकिन चर्च के लिए निर्धारित स्थान पर जमीन सूखी रहे; अगली रात, उन्होंने प्रभु से सूखी जमीन के लिए प्रार्थना की, लेकिन church[5036] के लिए उन्होंने जो स्थान चुना था, उस पर ओस गिरने के लिए। तीसरे दिन, रेवरेंड फादर ने निर्धारित स्थल का आशीर्वाद दिया और उसे उद्धारकर्ता की प्रतिमा से ली गई और साइमन से प्राप्त सोने की पट्टी से मापने का आदेश दिया – लंबाई में तीस और चौड़ाई में बीस पट्टियाँ, जैसा कि साइमन को स्वर्ग से आदेश दिया गया था। तब पूजनीय एंथनी ने अपनी प्रार्थना के द्वारा आग उतारी[5037] , जिसने उस स्थान की झाड़ियों को नष्ट कर दिया, जो एक खाई से घिरा होने के बाद अब पूरी तरह से तैयार था; यहीं पर चमत्कारिक गुफा चर्च का निर्माण किया गया, जो इसके बारे में विवरण के शब्दों में 'स्वर्ग के समान' था[5038] ।

इस प्रकार हमारे पूजनीय पिता एंथनी ने, ऐसे महान चमत्कारों के द्वारा, अपने मठ के चर्च के लिए स्थल तैयार किया और इसके निर्माण की शुरुआत को आशीर्वाद दिया। इसके बाद, उन्होंने स्वर्गीय निवासों में, हाथों से न बने, शाश्वत चर्च के लिए अपना प्रस्थान करने की तैयारी की; इस चर्च के बारे में, पवित्र प्रेरित योहन प्रकाशन की पुस्तक में लिखते हैं: *'किन्तु मैंने उसमें कोई मन्दिर नहीं देखा'*[5039] , 'क्योंकि सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर ही उसका मन्दिर है' (प्रकाशितवाक्य 21:10, 22)। इसी प्रकार स्वर्ग की रानी ने भी ब्लाचेर्ना में अपने प्रकट होने के दौरान भविष्यवाणी की[5040] , और चर्च के निर्माताओं को यह प्रकट किया:

'यह एंथनी केवल आपके कार्य में आपका आशीर्वाद करेगा, क्योंकि वह स्वयं शाश्वत विश्राम में जा रहा है; थियोडोसियस दूसरी गर्मियों में उसका अनुसरण करेगा'[5041] ।

लेकिन सम्मानजनक मृत्यु के लिए आदरणीय एंथनी को किस तैयारी की आवश्यकता थी, वह जो एक गुफा में सदाचारी जीवन जीते हुए, प्रेरित के साथ कह सकते थे: 'मैं हर दिन मरता हूँ' (1 कुरिन्थियों 15:31)? वह जिन्होंने अपने दिनों में व्यर्थ में भविष्यवक्ता के वचनों को अपने ऊपर लागू नहीं किया: 'मैं तेरी आज्ञाओं का पालन करने में शीघ्र करता हूँ और विलम्ब नहीं करता' (भजन संहिता 118:50)? आदरणीय एंथनी अपने हृदय में (शाश्वत जीवन में प्रवेश करने के लिए) तैयार थे और वे अपने बारे में नहीं, बल्कि अपने ईश्वर-चुने हुए झुंड के लिए चिंतित थे, कि कहीं वे उन्हें भ्रम में न छोड़ दें। इस प्रकार आदरणीय पिता में प्रेरित के वचन पूरे हुए: 'मैं दोनों में फँसा हूँ: *मैं मसीह के पास जाने और उसके साथ रहने की लालसा करता हूँ, जो* (प्रेरित के लिए स्वयं) *कहीं बेहतर है; फिर भी देह में रहना तुम लोगों के लिए अधिक आवश्यक है*' (फिलि. 1:23–24)।

तब यह देखकर कि उनके प्रस्थान और शरीर त्यागने का समय आ गया है, पूजनीय एंथनी ने अपने बच्चों को इस वादे से सांत्वना दी कि, अपने प्रस्थान के बाद भी, वह उस पवित्र स्थान को नहीं छोड़ेंगे जहाँ उन्होंने परिश्रम किया था, बल्कि मठ की देखभाल करते हुए, हमेशा उसकी यात्रा करेंगे और उसकी देखभाल करेंगे, वहाँ रहने वालों और विश्वास के साथ आने वालों दोनों की मदद करेंगे। लेकिन सभी सांसारिक विरासतों से बढ़कर, विशेष महत्व का है, पूज्य एंथनी का अपने परिश्रम के स्थान के संबंध में यह अनुग्रहकारी वादा: उन्होंने अपने प्रार्थनाओं के द्वारा मध्यस्थता करने का वादा किया ताकि, जैसे वे स्वयं पश्चाताप और क्षमा के विश्वास के साथ इस जीवन से विदा लेंगे, वैसे ही वहाँ मौजूद और उनसे प्रेम करने वालों को भी वही अनुग्रह प्राप्त हो—कि वे भी पश्चाताप में मरें और क्षमा प्राप्त करें।

दूसरी गुफा में जाने के बाद, आदरणीय एंथनी वहाँ 14–16 वर्षों तक रहे; यहीं उन्होंने अपना सांसारिक जीवन समाप्त किया, और 10 जुलाई के 10वें दिन, संसार की सृष्टि के 6581वें वर्ष, मसीह के जन्म के 1073वें वर्ष, और अपनी आयु के नब्बेवें वर्ष में, स्वियातोस्लाव यारोस्लाविच[5042] के शासनकाल में तथा यूनानी सम्राट रोमानोस डायोजोनेस[5043] के

[5036] संत एंथनी की यह प्रार्थना इस्राएली न्यायाधीश गिदोन (न्यायियों 6:36–40) की प्रार्थना के समान थी।

[5037] जैसे पवित्र भविष्यवक्ता एलिया ने एक बार किया था (1 राजा 18:36–39)।

[5038] यह वृत्तांत 14वें के अंतर्गत मेनायोन-चेतिया में शामिल है

[5039] अर्थात् पवित्र यरूशलेम, वह महान नगर जो स्वर्ग से उतर आया (प्रकाशितवाक्य 21:10)।

[5040] ब्लाचेर्ना कॉन्स्टेंटिनोपल का एक जिला है।

[5041] ईश्वर की माता के इस प्रकट होने के बारे में अधिक जानकारी के लिए, गुफाओं के चर्च की स्थापना के वृत्तांत में प्रविष्टि 14 देखें।

[5042] 1073 से 1075 तक कीव का राजकुमार।

[5043] यह अधिक संभावित है कि यह उनके उत्तराधिकारी, माइकल सप्तम डुकास के शासनकाल के दौरान हुआ, जिन्होंने 1074 से 1078 तक शासन किया।

दनिों में अनंत में प्रवेश कयिा। तब पूज्य संस्थापक की पवत्रि अवशेषों को उसी गुफा में वरिाम दयिा गया जहाँ उन्होंने अपना देह त्यागा था, अर्थात् महान मठ के नीचे की गुफा में। लेकनि जैसे आदरणीय पतिा स्वयं, अपने जीवनकाल में, लोगों की दृष्टि से दूर हो गए थे, और एकांत में गुप्त रूप से ईश्वर से प्रार्थना करते थे, वैसे ही उन्होंने अपनी अवशेषों के लिए भी उसी कृपा की याचना की – कि वे लोगों की दृष्टि से छपिे रहें: हमारे रूसी वधिि-प्रवर्तक के लिए इस इस्राएली के समान ही भाग्य का भागी होना उचति था। इस्राएलयिों ने मूसा के चेहरे को नहीं देख सका क्योंकि जब से उसने उन्हें सनिाई पर्वत से व्यवस्था दी थी, तब से उसके भीतर से एक महान तेज नकिलता था[5044] ; इसी प्रकार, वे हमारे पूजनीय पतिा एंथनी को भी नहीं देख सके, जो अथोस पर्वत से रूसी भूमि में व्यवस्था लाने के बाद, अपने अच्छे कर्मों के प्रकाश में एक गुफा में रहते थे। इस्राएल के वधिि-दाता मूसा का शरीर दृष्टि से ओझल हो गया था[5045] , और रूस के वधिि-दाता, आदरणीय एंथनी का शरीर, जसिे ईश्वर—जो अपने संतों में अद्भुत हैं—अभी भी चमत्कारकि रूप से हमें देखने से रोकते हैं: कई लोगों ने, जन्हिोंने उस स्थल की खुदाई करने का साहस कयिा जहाँ संत एंथनी के पवत्रि अवशेष रखे गए हैं, उन्हें आग की लपटों द्वारा दंडति कयिा गया: वे अपनी इस दुस्साहस पर पश्चाताप करने तक जलने की तीव्र पीड़ा से पीड़ति हुए। फरि भी, यद्यपि परम पूज्य एंथनी के अवशेष हमारी दृष्टि से छपिे हुए हैं, वे हमेशा हमारे साथ और उन सभी के नकिट हैं जो इस परमेश्वर के सेवक को भक्तपिूर्वक पुकारते हैं: वे बनिा रुके चमत्कार करते हैं, और उन सभी की मदद करते हैं जो वशि्वास के साथ परम पूज्य की पवत्रि कब्र पर आते हैं।

एक उदास कब्र की अँधेरी में चमकने वाले प्रकाश की तरह, वे लोगों से राक्षसों के अंधकार को वशिेष शक्ति के साथ दूर करते हैं; यह अंधकार इस प्रकाश को घेरे नहीं सकता, बल्कि आमतौर पर इसकी करिणों के सामने गायब हो जाता है। हमारे पूजनीय पतिा एंथनी के अवशेष हमें उन वभिन्नि बीमारयिों से भी मुक्ति दलिाते हैं जो न केवल शरीर बल्कि आत्मा पर भी आक्रमण करती हैं। संत जॉन दीर्घ-सहष्णिु ने इसे पूरी तरह से समझा: अशुद्ध जुनूनों से तीन साल के संघर्ष के बाद, जसिने कामुक वासना को भड़काकर उसे बहुत कष्ट पहुँचाया, वह आदरणीय एंथनी की कब्र पर आए और वहाँ दनि-रात प्रार्थना में लगे रहे। और फरि उन्होंने आदरणीय संत की यह आवाज़ सुनी जो उनसे कह रही थी:

'जॉन! जॉन! तुम्हें इस गुफा में खुद को बंद कर लेना चाहिए ताकि, ईश्वर की मदद से, एकांत और मौन द्वारा वजियी होकर, यह लड़ाई समाप्त हो जाए।'

जॉन ने ठीक वैसा ही कयिा। और ईश्वर की कृपा से, हमारे पूजनीय पतिा एंथनी की प्रार्थनाओं के द्वारा, वह बच गया: यद्यपि अशुद्ध शारीरकि वासनाएँ, अशुद्ध आत्माओं के साथ, लगभग तीस वर्षों से उसके वरिुद्ध युद्ध कर रही थीं, वे, जैसा कि हम उनके जीवन से देखते हैं, उस पर हावी नहीं हो सकीं[5046] ।

सम्माननीय एंथनी ने, जैसा कि उन्होंने वादा कयिा था, अपने पवत्रि स्थान को भी नहीं छोड़ा। उनके नधिन के बाद भी उसकी देखभाल करते हुए—ठीक वैसे ही जैसे उन्होंने अपने जीवनकाल में कयिा था—वे कांस्टेंटनिोपल में आदरणीय थयिोडोसयिस के साथ प्रकट हुए और वहाँ उन्होंने ग्रीक प्रतमिा-चत्रिकारों के साथ व्यवस्था की कि वे पेचेर्स्क चर्च के लिए पूजनीय प्रतमिाएँ बनाएं; ऐसा करते हुए, उन्होंने उन्हें एक बड़ी मात्रा में सोना सौंपा, ठीक वैसे ही जैसे उन्होंने पहले चर्च के नरि्माणकर्ताओं को, उसी आदरणीय थयिोडोसयिस के साथ, सौंपा था। आदरणीय एंथनी ने प्रतमिा-चत्रिकारों को कीव, पेचेरस्क मठ में, धन्य नकिोन के पास भेजा, जो उस समय मठाध्यक्ष थे; यह पेचेरस्क चर्च की सजावट के संबंध में परंपरा में वर्णति है[5047] ।

हमारे पूजनीय पतिा एंथनी ने, अपनी वदिाई के समय दए गए अपने कृपापूर्ण वचन के प्रति सच्चे रहे, कि वे उन लोगों की सहायता करेंगे जो उनसे प्रेम करते थे, ताकि वे अपने जीवन का अंत, जो उनके पवत्रि स्थान पर व्यतीत हुआ था, पश्चाताप में करें और प्रभु से दया प्राप्त करें। उनका यह वादा गुफाओं के एक भकि्षु, धन्य एरास्मस के जीवन में ही चमत्कारकि रूप से पूरा हुआ। गुफाओं के चर्च[5048] की सजावट पर खर्च कए गए सोने के व्यर्थ होने पर शोक करते हुए, वह एक गंभीर बीमारी में पड़ गया; सात दनिों तक वह बेहोश पड़ा रहा और ऐसा प्रतीत हुआ कि वह अपने अंत के करीब

[5044] नरि्ग. 34:29–35

[5045] Deut. 34:6.

[5046] चर्च द्वारा उनका पर्व 18 जुलाई को मनाया जाता है

[5047] मेनाऑन-चेती में 14वें के अंतर्गत इस ववरिण को देखें

[5048] धन्य एरास्मस का मानना था कि इस सोने को गरीबों में बाँटना बेहतर होता। ऐसे संदेहों से पीड़ति होकर, वह नरिाशा में डूब गया और एक बेपरवाह जीवन जीने लगा; इसी तरह जीते हुए एक गंभीर लाइलाज बीमारी ने उसे घेर लयिा।

था, फरि भी वह मर नहीं सका; क्योंकि प्रभु नहीं चाहते थे कि वह पश्चाताप के बिना उस पवित्र स्थान पर मरे। और इस प्रकार, आठवें दिन, पूजनीय एंथनी, पूजनीय थियोडोसियस के साथ, धन्य एरास्मस के सामने प्रकट हुए, और कहा:

'हमने तुम्हारे लिए परमेश्वर से प्रार्थना की है, और उन्होंने तुम्हें पश्चाताप के लिए समय दे दिया है।'

एरास्मस तुरंत ठीक हो गए, अपने पापों से तौबा की, और ईश्वर से क्षमा प्राप्त कर, तीसरे दिन परलोक सिधार गए। उनकी जीवनी में वर्णित है कि उन्हें संतों में गिने जाने के योग्य समझा गया[5049] ।

आइए हम मानव जाति के सर्व-प्रदानी प्रेमी की महिमा करें, जिन्होंने हमें इतने महान चमत्कार-कर्ता, हमारे रूसी देश में मठवाद के पूर्वज, आदरणीय एंथनी का वरदान दिया। किसी भी मनुष्य के लिए उनके सभी कार्यों का वर्णन करना असंभव है, विशेषकर उनके निधन से पहले किए गए कार्यों का, क्योंकि उन्होंने अपना जीवन गुमनामी में, गुफा के एकांत की शांति में बिताया; यह केवल हृदयों के जानने वाले स्वयं को ही ज्ञात है, जो अज्ञात और गुप्त को जानता है; उसी की जीभ लेखक की कलम की नली है (भजन संहिता 44:2), उसी ने स्वयं हमारे पूजनीय पिता एंथनी के जीवन का पूरा विवरण अनंत जीवन की पुस्तकों में अंकित किया है। जहाँ तक हमारी बात है, हमने कई युद्धों के दौरान खोई हुई पुस्तकों में से कुछ ही पाई हैं – केवल कुछ ही जानकारी इकट्ठी की है – इसलिए हमें इस चमत्कार करने वाले पूर्वज से ईमानदारी से प्रार्थना करनी चाहिए, कि हम भी, उनके निश्चित वादे के सहभागी बनकर, उनकी मध्यस्थता से, अपने जीवन का अंत पश्चाताप और ईश्वर की दया में करने के योग्य माने जाएँ, – ताकि हम भी परम पूज्य एंथनी के नाम के साथ, बच्चों और उनके पिता के नाम की भाँति, हमारे उद्धार के सर्वोच्च शासक, प्रभु यीशु मसीह की मानवता के प्रति कृपा और प्रेम के द्वारा, जीवन की शाश्वत पुस्तक में अपने नाम लिखे हुए पा सकें, जिनके लिए, उनके शाश्वत पिता और एकसार आत्मा के साथ, सम्मान हो, महिमा, स्तुति और राज्य, अब और सदा और युगानुयुग। आमीन।

ट्रोपारियन, स्वर 4:

दुनिया के कोलाहल से दूर होकर, और सुसमाचार के अनुसार दुनिया का त्याग कर, आप मसीह के अनुयायी बने; और स्वर्गदूतों के समान जीवन जीकर, आप पवित्र माउंट अथोस के शांत आश्रय तक पहुँचे: वहाँ से, संतों के आशीर्वाद से, आप कीव के पर्वत पर आए और वहाँ परिश्रमी जीवन जीकर आपने अपने देश को प्रकाशित किया; और अनेक संन्यासियों को स्वर्गीय राज्य का मार्ग दिखाकर, आपने उन्हें मसीह के पास लाया; हे पूज्य एंथनी, उनसे प्रार्थना करें कि वे हमारी आत्माओं को बचाएँ।

कॉन्टाकियन, स्वर 8:

हे पूजनीय, आपने अपना हृदय ईश्वर पर स्थिर किया, जिन्हें आप अपनी जवानी से ही सर्वोपरि प्रेम करते थे, और आपने पूरे हृदय से उनका अनुसरण किया: इस संसार की क्षणिक चीजों को शून्य मानकर, आपने पृथ्वी में एक गुफा खोदी, और उसमें आपने अदृश्य शत्रु की युक्तियों के विरुद्ध वीरता से संघर्ष किया, पृथ्वी के छोर तक तेजस्वी सूर्य की भाँति प्रकाशमान हुए। बड़े आनन्द के साथ, आप स्वर्गीय महलों में प्रवेश कर गए, और अब, स्वर्गदूतों के साथ सर्वोच्च सिंहासन के समक्ष खड़े होकर, हम पर कृपा दृष्टि रखें जो आपकी स्मृति का सम्मान करते हैं, ताकि हम आपसे पुकार सकें: हर्षित हो, एंथनी, हमारे पिता।

पवित्र शहीद अपोलोनियस का कष्टकथा

10 जुलाई को स्मरणोत्सव

[5049] धन्य एरास्मस का स्मरणोत्सव 24 फरवरी को मनाया जाता है।

मसीह के पवत्रि शहीद, अपोलोनयिस, लडियिा[5050] में स्थति सार्डसि शहर[5051] के मूल नविासी थे। एक बार, जब वे इकोनयिम शहर[5052] की यात्रा कर रहे थे, तो उन्हें पकड़ लयिा गया और उस शहर के राज्यपाल, पेरेनयिस के सामने लाया गया। अपने पूछताछ के दौरान, उन्होंने खुद को एक ईसाई घोषति कयिा, और राज्यपाल ने उन्हें सम्राट के नाम की शपथ लेने के लिए मजबूर करना शुरू कर दयिा। इस पर, संत अपोलोनयिस ने उत्तर दयिा:

'कसिी नश्वर सम्राट के नाम की शपथ नहीं लेनी चाहिए, बल्कि केवल सभी चीजों के सृष्टकिर्ता और नरि्माता के नाम की शपथ लेनी चाहिए।'

संत के शब्दों से लज्जति होकर, पेरेनयिस क्रोध से आग-बबूला हो गया और उसे एक पेड़ से बांधने का आदेश दयिा, जसिके बाद उसे लंबे समय तक यातनाएं दी गईं; इस बीच, वशि्वासयिों के लिए प्रार्थना और सभी लोगों के उद्धार की वनिती करते हुए, उन्होंने अपनी आत्मा को ईश्वर के हाथों में सौंप दयिा[5053] ।

पवत्रि शहीदों वयिानोर और सलिुआन का दुख।

10 जुलाई को स्मरण कयिा जाता है

पवत्रि शहीद वयिानोर पसिीडयिा के क्षेत्र के मूल नविासी थे[5054] । मसीह में अपने वशि्वास की घोषणा करने के लिए, उसे इसौरयिा शहर के राज्यपाल सेवेरयिन[5055] के आदेश पर गरिफ्तार कयिा गया, जसिने उसे मसीह का त्याग करने के लिए मजबूर करने की कोशशि की; लेकनि वह इस मांग के आगे नहीं झुका, और इसके लिए उसे पहले चाकू से बेरहमी से गोदा गया, फरि फांसी दी गई, और बाद में लाल-गरम लोहे के हथौड़ों से घसिा और जलाया गया, फरि उसके दाँत तोड़ दिए गए, और यह सब कुछ करने के बाद, उसके कान काट दिए गए। एक सलिुआन नामक व्यक्ति इन यातनाओं के दौरान मौजूद था और, पवत्रि शहीद का धैर्य देखकर, वह मसीह में वशि्वास करने लगा, जसिके लिए उसकी जीभ तुरंत काट दी गई, और फरि उसका सरि कलम कर दयिा गया। जहाँ तक संत वयिानोर का सवाल है, उन्होंने उसके एड़ियों में छेद कयिा, उसकी दाहनिी आँख नकिाल दी, उसके सरि की खाल उधेड़ दी और अंत में उसका सरि कलम कर दयिा। पवत्रि शहीदों वयिानोर और सलिुआन एक साथ मारे गए और उन्होंने अपनी आत्माएँ ईश्वर के हाथों में सौंप दीं[5056] ।

आर्मेनयिा के नकिोपोलसि में पीड़ति पैंतालीस पवत्रि शहीदों का दुख।

10 जुलाई को स्मरणोत्सव

नष्ठिाहीन राजा लसिनियिस[5057] , जन्हिें कॉन्स्टेंटाइन महान ने नयिुक्त कयिा था और जो पूर्वी प्रांतों पर शासन करते थे, ने अपने पूरे राज्य में एक आदेश जारी कयिा कि मूर्तयिों की पूजा करने से इनकार करने वाले ईसाइयों को वभिन्नि प्रकार की यातनाएँ दी जाएँ और उन्हें मृत्युदंड दयिा जाए, तथा उनकी संपत्ति शहरों के पुनर्नरि्माण के लिए जब्त कर

[5050] एशयिा माइनर में एक रोमन प्रांत लडियिा, ईजयिन सागर के तट पर स्थति था और इसकी सीमा पूर्व में फ्राइजयिा, उत्तर में मसियिा और दक्षणि में कैरयिा से मलिती थी।

[5051] सार्डसि शहर लडियिा में हर्मोस नदी के बाएं कनिारे पर स्थति था। इसका उल्लेख प्रकाशतिवाक्य की पुस्तक में एशयिा माइनर के उन सात शहरों में से एक के रूप में कयिा गया है, जनिके लिए संत जॉन द थयिोलॉजस्टि, एफसिुस में रहते हुए, वशिेष रूप से चतिति थे।

[5052] एशयिा माइनर में लकिोनयिा के रोमन प्रांत में इकोनयिम शहर स्थति था।

[5053] म्यूलर के अनुसार, माना जाता है कि पवत्रि शहीद अपोलोनयिस की मृत्यु सम्राट वैलेरयिन के शासनकाल के दौरान हुई थी, जन्हिोंने 253 से 259 तक रोमन साम्राज्य पर शासन कयिा।

[5054] पसिीडयिा का रोमन प्रांत एशयिा माइनर के दक्षणिी भाग में स्थति था और इसकी सीमा उत्तर में फ्रीजयिा, पूर्व में लकिोनयिा, दक्षणि में पम्फलियिा और लसियिा, और पश्चमि में कैरयिा से मलिती थी। यह इस तथ्य के लिए जाना जाता है कि संत पौलुस प्रेरति ने अपनी पहली धर्मप्रचार यात्रा के दौरान वहां उपदेश दयिा और इसके कुछ शहरों में एशयिा माइनर में पहले ईसाई चर्चों की स्थापना की।

[5055] इसौरयिा शहर एशयिा माइनर में, लाइकोनयिा के रोमन प्रांत में, पसिीडयिा के साथ अपनी सीमा के पास, कैलकिाडना नदी के उद्गम स्थल पर स्थति था।

[5056] ऐसा माना जाता है (म्यूलर और उनकी उत्कृष्टता सेरजयिस द्वारा) कि पवत्रि शहीदों वयिनोर और सलिुआन की मृत्यु चौथी शताब्दी की शुरुआत में, डायोक्लेटयिन के अधीन ईसाइयों पर हुए उत्पीड़न के दौरान हुई।

[5057] सम्राट लकिनियिस ने 307 से 324 तक रोमन साम्राज्य के पूर्वी भाग पर शासन कयिा।

ली जाए। जब यह आदेश आर्मेनिया में निकोपोलिस पहुँचा, तो मूर्तिपूजकों ने ईसाइयों के लिए यातना के उपकरण और कष्ट के विभिन्न साधन तैयार करना शुरू कर दिया, और कई विश्वासियों को पकड़कर उन्हें यातना देने के लिए ले जाने लगे; तब मसीह के चालीस से अधिक सेवक इकट्ठा हुए और दुष्टों द्वारा पकड़े जाने की प्रतीक्षा किए बिना, स्वेच्छा से अदालत के सामने उपस्थिति होकर मसीह के नाम की गवाही देने और यातना सहने का संकल्प लिया। उनमें प्रमुख थे लियोन्टियस, मॉरसियस, डैनियल, एंथनी और अलेक्जेंडर—जो अपनी वंशावली और शिक्षा के लिए प्रसिद्ध थे, और अपने सदाचारी जीवन के लिए विशिष्ट थे; वे सभी एक साथ आर्मेनियाई प्रांत के राज्यपाल के पास गए और घोषणा की कि वे ईसाई हैं। राज्यपाल इतने सारे लोगों के सर्वसम्मत समझौते और उस साहस से चकित था, जिसके साथ वे अपनी इच्छा से अपने यातना स्थल पर गए, और उनसे पूछा:

'तुम कहाँ से हो? और तुम्हें किसने सिखाया कि हमारे देवताओं की पूजा न करो?'

संत अलेक्जेंडर ने उत्तर दिया:

'हम स्थानीय हैं; हम में से कुछ शहर से हैं, कुछ गाँवों से। यह भूमि हमारी मातृभूमि है, और हमारे पिता स्वर्ग में मसीह हैं; उन्होंने हमें झूठे देवताओं की पूजा न करने की शिक्षा दी—जो बहरे और अंधे हैं, मनुष्यों के हाथों की रचना हैं।'
राज्यपाल ने कहा:

'और तुम्हारा मसीह कहाँ है? क्या उसे सूली पर नहीं चढ़ाया गया और मार डाला गया?'

संत लियोन्टियस ने उत्तर दिया:

'क्या तुम जानते हो कि मसीह मरा? तो यह भी जान लो कि वह मरे हुओं में से जी उठा और स्वर्ग में आरोहण कर गया; वह अपनी इच्छा से हमारे लिए मरा, परन्तु परमेश्वर के पुत्र के रूप में फिर जी उठा।'

गवर्नर ने कहा:

'क्या मसीह अब जीवित हैं?'

लियोन्टियस ने उत्तर दिया:

'हेगेमोन! तुम्हारे देवता मृत्यु के बाद जीवित नहीं रहते, परन्तु हमारा प्रभु सदा के लिए जीवित है, यद्यपि वह हमारे उद्धार के लिए कुछ समय के लिए मरा; अपनी मृत्यु से उसने हमें अनंत मृत्यु से बचाया, हमें जीवन दिया, और हमें उसकी खातिर मरना सिखाया, ताकि हम उसके साथ सदा के लिए जी सकें।'

और हेगेमोन ने अपने देवताओं की प्रशंसा करना शुरू कर दिया: ज्यूस, अपोलो, एAsclepius[5058] और अन्य। इस पर, लियोन्टियस ने कहा:

'क्या ज्यूस एक महान देवता है?'

'वह स्वर्गों पर शासन करता है,' राज्यपाल ने उत्तर दिया, 'वह सभी देवताओं का पिता है।'

लियोन्टियस ने आपत्ति जताई:

'एक देवता के लिए धर्मी, पवित्र और पापरहित होना ही उचित है; तुम अपने देवता ज्यूस के बारे में क्या कहते हो?'

'मैं उसे धर्मी, पवित्र और पापहीन कहता हूँ,' हेगेमोन ने कहा।

इस पर संत लियोन्टियस ने कहा:

'ज्यूस धर्मी है – फिर भी क्या उसने अपने ही पिता, क्रोनस को सिंहासन से नहीं उतारा? वह पवित्र और निर्दोष है – फिर क्या यह वही नहीं था जिसने अपनी ही बहन, हेरा को अपनी पत्नी बनाया और कई अन्य लोगों की पत्नियों का अपमान किया? उसने न केवल महिलाओं बल्कि पुरुषों का भी संहार किया, और सबसे घृणित अपराध किए[5059] । तो फिर, ऐसा पापी कैसे एक देवता हो सकता है? यदि आपका देवता एक पापी है, तो उसे सुधारने के लिए एक और देवता—जो निर्दोष हो—की आवश्यकता है।

हेगेमोन लाइसियस क्रोध से आग-बबूला हो गया और गुस्से में बोला:

[5058] एस्कलेपियस – उपचार के देवता।

[5059] यह ध्यान देने योग्य है कि प्राचीन यूनानियों ने अपने देवताओं को न केवल सकारात्मक बल्कि नकारात्मक गुण भी दिए। प्राचीन यूनानी पौराणिक कथाओं में कई देवताओं को विभिन्न प्रकार के अपराधों, विशेषकर नैतिकता के विरुद्ध अपराधों की प्रवृत्ति वाला बताया गया है। यही वह बात है जो संत लियोन्टियस के मन में है जब वह हेगेमोन के साथ तर्क कर रहे होते हैं।

'तुम्हें हमारे देवताओं के बारे में नरि्णय करने का अधकिार कसिने दयिा, हे दुष्ट मनुष्य! वे मेरे देवता हैं; मैं तुम पर कोई दया नहीं दखिाऊँगा, बल्कि तुम सबको नरि्दयता से नष्ट कर दूँगा!'

संत लयिोन्टयिस ने कहा:

'हेगेमोन, यदि आप सत्य सुनकर क्रोधति न हों; क्या लोगों को दूसरे की पत्नी लेने, अपनी ही बहन से ववािह करने, कसिी का अन्याय करने या उसे मारने से रोकने के लिए कानून नहीं दिए गए हैं? और यदि कोई भी कसिी भी तरह से कानूनों के वपिरीत कार्य करने की हम्मिति करता है, तो उसे अपराधी कहा जाता है और वह मुकदमे और मृत्युदंड के अधीन होता है। लेकनि तुम्हारे देवता मनुष्य हैं, और हर तरह की बुराई और अत्याचार से भरे हैं: वे व्यभचिारी, परस्त्रीगामी, हत्यारे थे, और, कानून तोड़ने वालों के रूप में, वे कसि भयानक न्याय और कतिनी बार मृत्युदंड के अधीन हुए! इसलिए, तुम्हारे अधर्मी देवताओं को मानवीय कानूनों के अधीन होना चाहिए और उन लोगों का अनुकरण करना चाहिए जो कानूनों का सख्ती से पालन करते हैं; और तुम्हें स्वयं अपने देवताओं के न्यायाधीश बनना चाहिए, देवता और जल्लाद दोनों की भूमकिा नभिाते हुए, जब तक कि तुम उन्हें सुधार न लो।

इगेमोन ने कहा:

'हे पागल! क्या तुम्हारा ईश्वर एक खलनायक की तरह सूली पर नहीं चढ़ाया गया था? और हमारे कसि देवता को सूली पर चढ़ाया गया था?'

संत लयिोन्टयिस ने उत्तर दयिा:

'मसीह हमारे ईश्वर ने हमारे लिए सूली पर चढ़ाई गई, और हम उसकी सूली पर गर्व करते हैं; लेकनि तुम्हारे देवता कांपते हैं, हमारे सूली पर चढ़ाए गए ईश्वर से डरते हैं, और सूली की शक्ति से बहुत दूर भागते हैं। हमारे ईश्वर ने अपनी ही इच्छा से सूली पर दुख उठाया, जबकि तुम्हारे देवता अनचि्छा से एक कड़वी मृत्यु द्वारा नष्ट हो गए। हमारे ईश्वर मानव जाति के उद्धारकर्ता हैं, जबकि आपके देवता मानवता के वनिाशकारी हैं। हमारे ईश्वर सत्य हैं, जबकि आपके देवता झूठे हैं; वे देवता तो दूर की बात, बल्कि राक्षस और वनिाशकारी धोखेबाज हैं; वे स्वयं नष्ट हो गए हैं और जो उनकी पूजा करते हैं, उन्हें शाश्वत वनिाश की ओर ले जाते हैं।

संत लयिोन्टयिस के इन शब्दों से क्रोधति होकर, राज्यपाल ने आदेश दयिा कि मसीह के सभी स्वीकारकर्ताओं के मुँह पर पत्थर मारे जाएँ।

उसने कहा, 'उन्हें उन होठों पर मारा जाए जनिसे हमारे देवताओं के वरिुद्ध अपमानजनक बातें कही जाती हैं।'

संतों को मारा गया, फरि भी उन्होंने कहा:

'हे शैतान के सेवक, ईश्वर तुझे मार डाले! तूने सत्य सुना है और फरि भी अन्यायपूर्ण नरि्णय लेता है; हे दुष्ट मनुष्य, तू अपने होश में नहीं है!'

तब यातना देने वाले ने आदेश दयिा कि उन्हें सभी को लोहे की जंजीरों में बाँधकर कालकोठरी में फेंक दयिा जाए। कालकोठरी में, संत लोग एक महल में होने की तरह प्रसन्न थे, वे परमेश्वर, अपने उद्धारकर्ता की स्तुति कर रहे थे, और दाऊद के भजन गा रहे थे: उनमें से कुछ बचपन से ही धर्मग्रंथों में पारंगत थे। और संत लयिोन्टयिस ने इन शब्दों के साथ सभी को प्रोत्साहति कयिा:

'सम्माननीय भाइयो और मसीह के सेवको! आओ, हम यह सब धैर्य से सहें! तुम पवत्रि शास्त्र से जानते हो कि धर्मी अय्यूब ने कतिना कुछ सहा, और हमारे प्रभु का दुख कैसा था, और उनके अन्य पवत्रि सेवकों ( ) ने कैसे अपने अंत को प्राप्त कयिा। यूहन्ना बपतस्मिा देने वाले का सरि कलम कर दयिा गया था, स्तेफन को पत्थर मारकर मार डाला गया था, पतरस को उल्टा सूली पर चढ़ाया गया था, थॉमस को भाले से भेद दयिा गया था, और अन्य लोग अपने प्रभु के लिए वभिन्नि प्रकार की शहीद मृत्युओं द्वारा मारे गए। हेड्रयिन[5060] , डेसयिस, के शासनकाल के दौरान कतिने संतों ने कष्ट सहे, मैक्समियिन और अन्य पूर्व अधर्मी सम्राट—केवल पुरुष ही नहीं, बल्कि महलिाएँ भी, जैसे, उदाहरण के लिए, हम संत थेकला, यूफेमयिा, कैपटिोलनिा, जुलटि्टा और अन्य पवत्रि शहीदों के बारे में सुनते हैं, जनिके नाम स्वर्ग में जीवन की पुस्तकों में दर्ज हैं; उन्होंने कतिनी वीरता से संघर्ष कयिा और शैतान पर वजिय प्राप्त की! और यदि महलिाएँ इतनी

[5060] जनि सम्राटों का वह उल्लेख करता है, उन्होंने इस प्रकार शासन कयिा: हैड्रयिन ने 117 से 138 तक, डेसयिस ने 249 से 251 तक, और मैक्समियिन (गेलेरयिस) ने 305 से 311 तक। ये सभी सम्राट ईसाई धर्म के अत्यंत क्रूर उत्पीड़क थे। उनके अलावा, नम्निलखिति ने भी ईसाई धर्म के वशिष रूप से क्रूर उत्पीड़न के माध्यम से इतहिास में अपने नाम को कलंकति कयिा: नीरो (54–68), ट्राजन (98–117) और डायोक्लेटयिन (284–305)।

बहादुर थीं, तो हम पुरुषों को और भी अधिक मजबूत और अडिग होना चाहिए, और हमारे प्रभु परमेश्वर मसीह के लिए अपनी आत्मा का बलिदान करना चाहिए, जिन्होंने हमारे लिए क्रूस पर अपनी आत्मा का बलिदान दिया।

इन शब्दों के साथ, लियोन्टियस ने पवित्र भाइयों को प्रोत्साहित किया, और सभी मसीह के लिए हर तरह की यातना सहने के लिए तैयार और इच्छुक थे। गर्मी बहुत तीव्र थी, और संतों को भयंकर प्यास सता रही थी; व्लासियाना नाम की एक कुलीन और धार्मिक महिला उनके कालकोठरी में उनसे मिलने आई, पास के एक झरने से बिना किसी रोक-टोक के ठंडा पानी लाई, और उन्हें पिलाया।

संतों ने आने वाली रात प्रार्थना और भजन-पाठ में बिताई; राज्यपाल लिसियस ने भी उस रात नहीं सोया: वह इस बात पर विचार कर रहा था कि जेल में बंद मसीह के सेवकों पर क्या यातनाएँ दी जाएँ। सुबह के समय वह सो गया, और एक राक्षस उसे सपने में दिखाई दिया और कहा:

'स्थिर रहो, लाइसियस; मैं देवता एस्क्लेपियस हूँ। उन ईसाइयों को निर्दयता से यातना दो जो हम पर अपमानजनक बातें करते हैं; उन्होंने कालकोठरी में हमारे बारे में बहुत बकवास बोली है; उन्हें हर तरह की यातना से तुरंत नष्ट कर दो।'

हेगेमोन जाग उठा; जैसे ही दिन चढ़ा, उसने मुकदमा शुरू किया और बंधे हुए संतों को अपने सामने बिठाकर उनसे कहा:

'देवताओं की पूजा करो, और तुम सम्राटों और हम सब के मित्र बन जाओगे; तुम में से प्रत्येक को दो सौ सोने के सिक्के, सुंदर नए कपड़े और कमरबंद दिए जाएँगे; तुम्हारे पास जवान लड़के लाए जाएँगे; हम बलिदान चढ़ाएंगे, भोज करेंगे और साथ में उत्सव मनाएंगे; लेकिन अगर तुम मेरी आज्ञा नहीं मानोगे, तो तुम्हें क्रूरता से यातना दी जाएगी।' मैं तुमसे विनती करता हूँ, इस सुखद जीवन से स्वयं को वंचित मत करो; अपनी पत्नियों, बच्चों और मित्रों से अलग मत होओ; हमारे कम से कम एक देवता को बलिदान अर्पित करो।

संतों ने, मानो, एक ही स्वर में उत्तर दिया:

'धिक्कार है तुझ पर, हे यातना देने वाले, और तेरे देवताओं पर भी; हम अशुद्ध राक्षसों को बलिदान नहीं चढ़ाएंगे; हमें न तेरे सोने की, न तेरे कपड़ों की, न तेरे भोज की, और न तेरी दोस्ती की ज़रूरत है; मसीह हमारे पिता और हमारे सबसे प्रिय मित्र हैं, और उनके लिए हम कुछ भी सहने और मरने को तैयार हैं।'

तब यातना देने वाले ने आज्ञा दी कि उन्हें नग्न अवस्था में लटका दिया जाए और उनके शरीर को लोहे के हुकों से खुरच दिया जाए; और लंबे समय तक, दोपहर तक, पवित्र शहीदों को खुरचा जाता रहा, जब तक कि सूरज कड़कने नहीं लगा और राज्यपाल इस तमाशे को छोड़कर घर वापस नहीं चला गया; हालाँकि, हड्डियों तक खुरच दिए गए संतों को यातना देने वाले की आज्ञा पर एक बार फिर से कालकोठरी में कैद कर दिया गया। उपरोक्त धर्मनिष्ठ महिला, व्लासियाना, फिर से उनसे मिलने आईं और खिड़की के माध्यम से उन्हें पीने के लिए पानी दिया, क्योंकि वे अपने घावों और गर्मी से थक चुके थे; और संत तरोताजा हो गए, इस महिला को आशीर्वाद दिया, उनके और उनके बच्चों के लिए प्रार्थना की, और ईश्वर का धन्यवाद किया कि उन्हें उनके लिए पीड़ित होने के योग्य समझा गया था।

जब संत जेल में थे, तो संत लियोन्टियस ने देखा कि कुछ भाई अपने घावों से बहुत पीड़ित थे, और वह उनके लिए बहुत चिंतित थे, कि कहीं वे अपनी अत्यधिक थकान के कारण विश्वास से भटक न जाएँ; इसलिए, उन्होंने ईश्वर से प्रार्थना की कि वे उनके शहीद होने का अंत शीघ्र करें।

शहर में हेरोद नाम का एक प्रमुख नागरिक था, जो एक मूर्तिपूजक था और एक सलाहकार के रूप में राज्यपाल की कृपा पर था; और इस नागरिक का फिलिप नाम का एक सचिव था, जिसे संत लियोन्टियस उसके अच्छे चरित्र के लिए बहुत मान-सम्मान देते थे। संत ने उसे बुलवाया, और जब वह कालकोठरी की खिड़की के पास आया, तो संत ने उससे कहा:

'भाई फिलिप, अपने स्वामी हेरोद से कहो कि यदि वह किसी काम से राज्यपाल के पास जाए, तो वह हमें याद करे और उन्हें कल हमें मृत्युदंड देने की सलाह दे।'

फिलिप गया और यह बात हेरोद को बताई। उसी समय, हेरोद को रात के खाने के लिए राज्यपाल के यहाँ बुलाया गया; वह तुरंत नहीं गया, और राज्यपाल उसका इंतज़ार करता रहा। उन्होंने उसे फिर से बुलाया, लेकिन वह देर से आया, यह कहते हुए:

'मैं खा नहीं सकता; मैंने दंडित पुरुषों को कोड़े खाते देखा, मैंने बहुत सारा खून बहते देखा, और मुझे चक्कर आ रहा है; मेरा पेट किसी भी भोजन को सहन नहीं कर सकता; मुझे मतली हो रही है।'

इगेमोन ने पूछा:

'तुम मुझे उनके साथ क्या करने की सलाह देते हो?'

हेरोद ने उत्तर दिया:

'उन्हें कल मरने दो। आखिरकार, वे अपराधी हैं जिन्होंने राजा की आज्ञा की अवहेलना की है और मृत्यु के पात्र हैं, तो उन्हें तुरंत क्यों नहीं मार डाला जाए?'

यह सुनकर, राज्यपाल ने उन्हें अगले दिन मृत्युदंड देने का पक्का वादा किया। तुरंत, फिलिप तहखाने में दौड़ा और संत लियोन्टियस को वह सब बताया जो उसने सुना था। सभी भाइयों को यह बात पता चली और वे इस बात पर प्रसन्न हुए कि वे अगले दिन मसीह के लिए मरेंगे; उन्होंने फिलिप को उसके प्रयासों के लिए धन्यवाद दिया और मृत्यु के लिए स्वयं को तैयार करते हुए प्रार्थना करना शुरू कर दिया। अपनी प्रार्थना में उन्होंने कहा:

'हे प्रभु, हमारे पूर्वजों के परमेश्वर, हम में अपने पवित्र नाम का महिमामंडन कर; एक पश्चात्तापी हृदय और एक नम्र आत्मा के साथ हम तुझ से प्रार्थना करते हैं; हमें स्वीकार करें, क्योंकि हम स्वयं को आपके लिए एक जीवित बलिदान के रूप में अर्पित करते हैं, जैसे भेड़ों और मेमनों की होमबलि, और जैसे मोटे किए गए मेमनों की भीड़; इस प्रकार हमारी बलि अब आपके सामने ठहरे, और यह आपको प्रिय लगे: जो आप में आशा रखते हैं, उन्हें कभी लज्जा नहीं होती! हे प्रभु, आप जानते हैं कि हमने आपसे प्रेम किया है और आपके लिए अपना जीवन दे दिया है। तो फिर हम सभी को बल दें, ताकि हम में से कोई भी इस समूह से पीछे न रह जाए, कहीं हमारा शत्रु हम पर हँसे या हम पर प्रसन्न न हो।

इस प्रकार संतों ने प्रार्थना की और एक-दूसरे को प्रोत्साहित किया; आधी रात को उन्होंने अपनी ही दफ़न के लिए महान भजन गाया, अर्थात्: 'धन्य हैं निर्दोष,' आदि (भजन संहिता 118)। जब भजन समाप्त हो गया, तो प्रभु का स्वर्गदूत आया, ने कैदखाने को प्रकाश से भर दिया, और उनसे कहा:

'हे मसीह के सेवको, आनन्द मनाओ; तुम्हारा अन्त निकट है; तुम्हारे नाम स्वर्ग में लिखे हैं; धीरज धरो, क्योंकि परमेश्वर तुम्हारे संग है।'

ये शब्द कहकर, स्वर्गदूत चला गया। उन्होंने, झुककर, ईश्वर का धन्यवाद किया। उसी क्षण, दो जेलर, मेनियस और वरिलिड, जो मिस्र मूल के थे, जाग रहे थे; उन्होंने उस प्रकाश को देखा जो कोठरी में चमक रहा था और स्वर्गदूत की आवाज़ सुनी, लेकिन उन्होंने स्वयं स्वर्गदूत को नहीं देखा। और मेनियस ने वरिलिड से कहा:

'भाई, क्या तुम देखते हो कि ये किसके सिपाही हैं? मैं शुरू से ही मसीहियों के प्रति सहानुभूति रखता हूँ: वे अन्याय के मार्ग पर नहीं चलते, बल्कि धार्मिकता के मार्ग पर चलते हैं, और वे अपने परमेश्वर में विश्वास रखते हैं; दिन-रात वे किसी का अनाचार नहीं करते, वे दूसरे की संपत्ति पर लालच नहीं करते, बल्कि अपनी संपत्ति भी दे देते हैं; वे सभी से प्रेम करते हैं और सभी के साथ भलाई करते हैं; यह तो आप खुद जानते हैं; लेकिन मिस्र के रेगिस्तान में भटकने वालों के जीवन के बारे में क्या ख्याल है? क्या यह अजीब और अद्भुत नहीं है? वे चमत्कार करते हैं। मैं उनके जेल में जाकर उनसे मुझे भी अपने साथ ले चलने के लिए कहने का सोच रहा हूँ; और आप, भाई, आप क्या सोचते हैं?

वरीलाद ने उत्तर दिया:

'ठीक वैसे ही जैसे आप करते हैं। क्योंकि हमें भी, यद्यपि हम अयोग्य हैं, उस प्रकाश की एक झलक मिली है जिससे ईश्वर ने उन्हें प्रकाशित किया है—जिसके लिए वे आनंदपूर्वक मरते हैं। यदि कोई राज्यपाल को ज्यूस, या अपोलो, या एस्कलेपियस, या अन्य किसी देवता के लिए मरने के लिए मजबूर करे, तो क्या वह मरना चाहेगा? कदापि नहीं: जीवन उसके लिए अनमोल है। लेकिन वे स्वयं को नहीं बचाते; वे अपने ईश्वर के लिए निडर होकर मृत्यु को प्राप्त करते हैं और उन्हें उस ईश्वर द्वारा ऐसी महिमा प्रदान की जाती है जो देवताओं ने अपने किसी भी भक्त पर कभी नहीं दी है। तो हम इन धर्मी पुरुषों और सच्चे ईश्वर की ओर क्यों न मुड़ें?

इस प्रकार एक-दूसरे से सलाह-मशविरा करने के बाद, दोनों पहरेदारों ने कालकोठरी में प्रवेश किया और संतों के सामने साष्टांग प्रणाम करके कहा:

'हे हमारे स्वामियो, मसीह के सेवको, सच्चे परमेश्वर, हमें अपने बीच में स्वीकार करो: हम भी प्रभु यीशु मसीह में विश्वास करते हैं, जिन्होंने तुमसे प्रेम किया, और हम तुमसे प्रार्थना करते हैं कि तुम उसी से प्रार्थना करो कि वह हमें भी तुम्हारे समान भाग्य प्रदान करे।'

संतों ने उनके ईश्वर की ओर मुड़ने पर प्रसन्नता व्यक्त की और उनका स्वागत करते हुए कहा:

'तुम हमारे भाई हो, क्योंकि हमारे प्रभु ने तुम्हें उनके परम पवित्र नाम की गवाही देने के लिए बुलाया है और तुम्हें भी हम जैसे ही पुरस्कार देंगे, जैसे उन्होंने उन लोगों को दिया जो ग्यारहवें घंटे में उनकी दाख की बारी में आए थे[5061] ।'

अगली सुबह, राज्यपाल लिसियस अपने सैनिकों के साथ शहर से बाहर उस स्थान पर गया जहाँ उसने पवित्र शहीदों को मृत्युदंड देने का इरादा किया था, जो लाइकोस नामक नदी से बहुत दूर नहीं था। वहाँ उसने एक मुकदमा चलाया और पवित्र शहीदों को लाकर उसके सामने पेश करने का आदेश दिया। जब उसने देखा कि दो जेलर पवित्र बंदियों के साथ मिल गए हैं, तो उसने अपने मुख्य सलाहकार एपियनस से कहा:

'तो ये पागल भी मरना चाहते हैं! क्या जीवन मृत्यु से बेहतर नहीं है?'

इस पर एपियन ने उत्तर दिया:

'आदेश दो कि उन्हें सबसे क्रूर यातनाएँ दी जाएँ।'

'नहीं,' राज्यपाल ने आपत्ति जताई, 'वे यातनाओं से डरकर देवताओं की ओर लौट आएँगे, और जीवित रहेंगे; लेकिन मैं उनकी जान बख्शना नहीं चाहता; उन्हें मरने दो। मैं उन सभी को मौत की सज़ा दूँगा।'

और जब पवित्र शहीदों को उनके सामने निर्णय के लिए लाया गया, तो उन्होंने उनके विश्वास के बारे में कोई सवाल नहीं किया और न ही किसी यातना का आदेश दिया, बल्कि तुरंत उन्हें मौत की सजा सुना दी और निम्नलिखित निर्णय लिखा:

'ईसाई धर्म के इन पैंतालीस लोगों पर, जिन्हें मेरे सामने न्याय के लिए लाया गया है, जिन्होंने राजा की आज्ञा की अवज्ञा की है और अपने पूर्वजों के देवताओं का अपमान किया है, मैं hereby उनके अपराधों के अनुरूप दंड लगाता हूँ: सबसे पहले, उनके हाथ और पैर कुल्हाड़ी से काट दिए जाएँ; फिर उन्हें आग में जलाने के लिए फेंक दिया जाए; और जलने के बाद बची हुई हड्डियों को नदी में फेंक दिया जाए।'

तुरंत, नौकरों ने शहीदों को ज़मीन पर पटक दिया और उनके हाथ-पैर काटना शुरू कर दिया। सूरज कड़कती धूप बरसा रहा था, और पवित्र शहीदों को प्यास सता रही थी—कुछ को अपने घावों के दर्द के कारण, तो कुछ को झुलसाती गर्मी के कारण; कुछ इन यातनाओं में मर गए, कुछ मुश्किल से सांस ले रहे थे, जबकि अन्य ने धैर्य के साथ इसे सहन किया। उनमें से एक, जिसका नाम इयानीकिति था, ने अपनी कटी हुई बाहों और पैरों को देखकर मुस्कुरा कर कहा:

'देखो, फसल का दराँता ने मेरे अंगों को, ठीक मक्के की भुट्टियों की तरह, कैसे काट डाला है!'

और संत सिसीनस, जो अपने ही खून में पड़े थे, पास की एक चट्टान से सहारे लेकर, मुड़े और इस प्रकार ईश्वर से प्रार्थना की:

'हे प्रभु, सभी भलाई का दाता, जिसने एक बार जंगल में चट्टान से पानी निकाला और इस्राएल की प्यास बुझाई (निर्गमन 17:1–7), अब इस चट्टान को खोल, पानी को बहने दे, और मुझे पीने के लिए थोड़ा सा दे: तू हमारी प्यास देखता है, जिससे हम मर रहे हैं।'

उनकी प्रार्थना पर, चट्टान अचानक खिसक गई, फट गई, और ताज़े पानी का एक झरना फूट पड़ा। संत सिसीनस ने वह पानी पिया और प्रभु का धन्यवाद करते हुए कहा:

'मैं तेरी महिमा करता हूँ, हे मेरे परमेश्वर, क्योंकि तूने मेरी प्यास बुझाई है, जैसे कोई माँ अपने बच्चे को दूध पिलाती है; मैं तेरी स्तुति करता हूँ, हे मेरे राजा, क्योंकि तूने अपने सेवक, मुझ पर तिरिस्कार नहीं किया!' किन्तु मैं आपसे विनती करता हूँ, मेरे प्रिय भाइयों, आपके सेवकों को भी तिरिस्कार न करें; उन्हें ताज़गी दें क्योंकि वे प्यास से व्याकुल हैं, उन पर अपनी कृपा का ओस अदृश्य रूप से बरसाकर, और हम सभी को यह दृढ़ता प्रदान करें कि हम आपकी आशा में एक साथ इस जीवन से विदा हो सकें; और जहाँ तक इस झरने का प्रश्न है, जिसे आपने अपनी शक्ति से पुनर्स्थापित किया है, जिसके माध्यम से आपने एक बार फिर प्राचीन चमत्कार को प्रकट किया है, इसे दुनिया के अंत तक बहने का आदेश दें, और हे मसीह, इस जल को अपनी महिमा के लिए, और आपके पिता तथा पवित्र आत्मा की महिमा के लिए, हम पैंतालीस शहीदों, आपके सेवकों की स्मृति में, जो आपके लिए पीड़ित हुए, चंगा करने वाली अनुग्रह और शक्ति प्रदान करें।

उस क्षण, नौकरों ने तैयार की गई विशाल चिता में आग लगा दी और शहीदों के शरीरों को उठाकर आग में फेंकने लगे; कुछ संत अभी भी जीवित थे, जबकि अन्य पहले ही मर चुके थे; और मृतकों को जीवितों के साथ आग के हवाले कर

[5061] अंगूरों के बगान में मजदूरों की दृष्टान्त-कथा देखें (मत्ती 20:1–16)।

दयिा गया। जब वे शहीदों को आग में फेंक रहे थे, तो नौकरों ने उनकी गनिती की और एक के गायब होने का पता चला; वे हैरान हो गए और खोज करने लगे। और संत ससिीनस, उस चट्टान के पास लेटे हुए जहाँ से पानी बह रहा था, ने पुकारा:

'मैं यहाँ हूँ! मुझे पकड़ो, मुझे आग में ले जाओ!'

उन्होंने उसे पकड़ लयिा और आग में डाल दयिा। पवत्रि शहीदों के जल जाने पर आग बुझ गई, और नौकरों ने राख में बचे शहीदों के हड्डयिों को ढूँढना शुरू कर दयिा; जतिनी भी उन्हें मलिीं, उन्होंने उन्हें फटे-पुराने कपड़ों में इकट्ठा कयिा, उन्हें ले जाकर लकिोस नदी में बहा दयिा[5062] । नदी ने संतों की हड्डयिों को एक कीमती खजाने के रूप में ग्रहण कयिा और उन्हें कनिारे के पास एक उथले स्थान पर संरक्षति रखा, और अपनी धाराओं से उन्हें एक साथ इकट्ठा कर लयिा। बाद में धर्मनष्ठि लोग उन्हें खोजने आए और उन्हें बनिा कसिी कठनिाई के पा गए; उन्होंने उन सभी को, एक-एक करके, इकट्ठा कयिा और उन्हें सम्मान की जगह पर तब तक रखा जब तक कदिुष्ट सम्राट लकिनियिस, जो सम्राट कॉन्स्टेंटनि के सह-शासक थे और साम्राज्य के पूर्वी हस्सि पर शासन करते थे, का नाश नहीं हो गया, और कॉन्स्टेंटनि अकेले राज करने लगे। जब संपूर्ण वश्वि में मसीह की कलीसयिा को स्वतंत्रता प्रदान की गई, तब इन पवत्रि शहीदों की हड्डयिाँ सभी को दखिाई गईं, और उनके सम्मान में एक गरिजाघर बनाया गया। उनके पवत्रि अवशेषों से, तथा उस झरने से भी चंगाई का कार्य हुआ, जसिे संत ससिीनस ने अपनी प्रार्थना के द्वारा प्रवाहति कयिा था। पैंतालीस पवत्रि शहीदों ने 10 जुलाई को, आर्मेनयिाई नकिोपोलसि में, लासयिास की गवर्नरी के अधीन, शहादत प्राप्त की, जब कलिसिनियिस पूर्व पर शासन कर रहा था; परन्तु हम पर हमारे प्रभु यीशु मसीह का राज्य है, जन्हिें पति और पवत्रि आत्मा के साथ, महमि और सम्मान प्राप्त है, अब और युगानुयुग, आमीन।

कॉन्टाकयिन, स्वर 8:

हे शहीदों, मसीह के लए, आपने अनेक यातनाएँ सहन कीं; आपने बहुदेववाद की सारी मूर्तपिूजा को उखाड़ फेंका, और आपने मसीह की शक्तसि हर प्रकार के अधर्म को नष्ट कर दयिा; आप हमें सभी को वश्वािसपूर्वक यह सखिाते हैं कहिम खुलकर पुकारें: अल्लeluia।

हमारे प्रभु यीशु मसीह के पवत्रि वस्त्र को फारस से मास्को के शाही नगर में स्थानांतरति करने का वृत्तांत

10 जुलाई को स्मरण कयिा जाता है

धर्मनष्ठि ज़ार और महा राजकुमार, सम्पूर्ण रूस के नरिंकुश शासक, मखिाइल फेदोरोवचि[5063] के शासनकाल में, और परमपावन फलिारेट[5064] के पैट्रआर्कट के दौरान, जो ज़ार के शरीर और आत्मा दोनों में पति थे, फ़ारस पर शाह अब्बास[5065] का शासन था। पवत्रि ज़ार मखिाइल के प्रतपि्रेम और सद्भावना को बढ़ावा देते हुए, अब्बास ने अक्सर उपहार लेकर राजदूत भेजे[5066] ; इसी प्रकार, रूसी ज़ार ने भी उपहार लेकर राजदूत भेजे। संसार की सृष्टि के 7133वें वर्ष (जो मसीह के जन्म से 1625वें वर्ष के अनुरूप है), मार्च के महीने में, शाह का एक प्रतष्ठिति दूत, जसिका नाम उरुसम्बेक था, धर्मपरायण ज़ार माइकल से मलिने के लए मास्को आया; इस दूत को उपर्युक्त शाह अब्बास द्वारा भेजा गया था। उरूसम्बेक अपने साथ धर्मनरिपेक्ष ज़ार मखिाइल के लए एक पत्र और कई कीमती उपहार लाए। इसके अलावा, वह

[5062] पवत्रि शहीदों का नधिन लगभग 319 ईस्वी में हुआ।

[5063] Mikhail फेदोरोवचि ने 1613 से 1645 तक शासन कयिा।

[5064] उन्होंने 1619 से 1633 तक पैट्रआर्क के रूप में कार्य कयिा।

[5065] शाह अब्बास प्रथम, जन्हिें महान के नाम से जाना जाता है, ने 1586 से 1628 तक फारस पर शासन कयिा। अब्बास प्रथम फारस के सबसे उल्लेखनीय शासकों में से एक थे। उन्होंने कई सुधार कए जनिसे देश को लाभ हुआ, सैन्य का पुनर्गठन कयिा, सड़कों और पुलों का नर्मिाण कयिा, शहरों के पुनर्नर्मिाण और सौंदर्यीकरण की देखरेख की, और भारत तथा यूरोप के साथ व्यापार को पुनर्जीवति करने का प्रयास कयिा। उन्होंने ईसाइयों के साथ दयालुता से व्यवहार कयिा।

[5066] शाह अब्बास ने व्यावसायकि और राजनीतकि उद्देश्यों के लए मखिाइल फेदोरोवचि के साथ मैत्रीपूर्ण संबंध बनाए रखे। उन्होंने अक्सर अन्य यूरोपीय देशों: फ्रांस, इंग्लैंड, स्पेन और नीदरलैंड को भी राजदूत भेजे।

परम पावन पैट्रआिर्क फलिारेट के लिए एक पत्र और एक कीमती उपहार भी लाए, जो था: हमारे प्रभु यीशु मसीह का चोगा, जसिे कीमती पत्थरों से सुसज्जति एक सुनहरी संदूक में रखा गया था। इस संदेश में, फ़ारसी बादशाह ने घोषणा की कि मसीह की पोशाक इबेरयिा की भूमि[5067] के वजियी अभयिान के दौरान मेट्रोपॉलटिन की संधि-कोठरी में मलिी थी, जहाँ इसे एक क्रॉस के भीतर सील कयिा गया था; इस पोशाक को लेकर, बादशाह ने इसे मास्को के सर्वधर्मगुरु को उपहार के रूप में भेजा। उसी पत्र में, फ़ारसी शाह ने प्रभु परमेश्वर और हमारे उद्धारकर्ता यीशु मसीह के महान नाम की इन शब्दों में महमिा की:

– जो कोई भी उसे (प्रभु यीशु मसीह) परमेश्वर के रूप में सम्मान नहीं देता, उसे बनिा कसिी दया के आग में जला दयिा जाए; और जो ऐसा धर्मनदिा करने वाले के लिए आग जलाता है, वह हर सम्मान का पात्र हो और महमिामय हो।

परम पावन पैट्रआिर्क फलिारेट ने इस महान उपहार को, जो सभी सांसारकि, यहाँ तक कि सबसे कीमती उपहारों से भी अधकि कीमती था, खुशी-खुशी स्वीकार कयिा; इसके बाद, पैट्रआिर्क फलिारेट ने उस समय मास्को में मौजूद अनुभवी ग्रीक बुज़ुर्गों को अपने समक्ष बुलाया; इनमें से कुछ बुज़ुर्ग यरूशलेम से मास्को आए थे, अन्य ग्रीक भूमि से; उनमें, अन्य लोगों के अलावा, नेक्टारयिोस थे, जो बाद में वोल्गोडा और ग्रेट परम के आर्चबशिप बने, साथ ही इओनकियिोस भी थे, जो कुछ ही समय पहले यरूशलेम के पैट्रआिर्क, परम पावन थयिोफेन्स के साथ मास्को आए थे। परम पावन पैट्रआिर्क फलिारेट ने इन ग्रीक बुज़ुर्गों से पूछा कि क्या वे प्रभु के वस्त्र के बारे में कुछ जानते हैं और ग्रीक भूमि में इसके बारे में क्या कहा जाता है। प्रत्येक बुज़ुर्ग ने प्रभु के वस्त्र के बारे में जो कुछ भी वह जानता था, उसे बताया। अन्य बातों के अलावा, आर्चबशिप नेक्टारयिोस ने कहा:

'जब मैं कॉन्स्टेंटनिोपल के परमपावन पैट्रआिर्क का आर्चडीकन था, तो मुझे कुछ धार्मकि मामलों के कारण उनकी ओर से इबेरयिा की भूमि पर भेजा गया था। मैं यहाँ 'इलेटा' नामक एक चर्च में था; वहाँ, पहले स्तंभ के पास दाहनिी ओर के कोर गलयिारे में, मैंने कई जलती हुई मोमबत्तयिाँ देखीं। मैंने वहाँ मौजूद पुरोहतिों से पूछा:

'यह क्या है?'

उन्होंने उत्तर दयिा कि मसीह का चोगा वहीं रखा था; उन्होंने कहा कि यह उनके देश के एक सैनकि द्वारा लाया गया था जो प्रभु के सूली पर चढ़ाए जाने के समय यरूशलेम में था; उन्होंने यह भी बताया कि मसीह के इस चोगे से कई चमत्कार हुए थे।

अन्य यूनानयिों ने परमपावन पैट्रआिर्क को बताया कि हर जगह – फलिस्तीन और यूनानी भूमि दोनों में – श्रद्धालु सर्वसम्मति से पुष्टि करते हैं कि प्रभु का चोगा आइबेरयिा में है; इस सैनकि को लॉटरी द्वारा प्रभु की पोशाक मलिी थी[5068] , जसिके बाद उसने इसे अपनी मातृभूमि—आइबेरयिा—ले जाया और वहाँ अपनी बहन को एक कीमती उपहार के रूप में भेंट कयिा, जो उस समय एक युवती थी; बाद में, इस सैनकि ने सभी को बताया कि यरूशलेम में प्रभु यीशु मसीह के संबंध में क्या हुआ था। योद्धा की बात सुनकर, उस युवती ने प्रभु की वस्त्र को संजोना शुरू कर दयिा और उसे श्रद्धापूर्वक रखा। कुछ ही समय बाद, उसका नधिन हो गया। मरते समय, उसने वसीयत की कि उसके शरीर को, प्रथागत अंतमि संस्कार के कपड़ों के बजाय, प्रभु की वस्त्र में दफनाया जाए। और ऐसा ही कयिा गया। कुछ समय बाद, उस युवती की कब्र के ऊपर एक बड़ा और बहुत सुंदर पेड़ उग आया। महान कॉन्स्टेंटनि, ग्रीक-रोमन सम्राट[5069] के शासनकाल के दौरान (जब इबेरयिा पवत्रि बपतस्मिा से प्रबुद्ध हुई थी), इस वृक्ष से एक सुगंधति और उपचारात्मक मूरा (myrrh) बहने लगी; कसिी भी बीमारी या व्याधि से पीड़ति सभी लोगों पर इस मूरा का लेप कयिा जाता था और वे ठीक हो जाते थे। इबेरयिा के ऑर्थोडॉक्स राजाओं ने, ऐसे शानदार चमत्कारों को देखते हुए, उस पेड़ के ऊपर एक सुंदर चर्च बनवाया और इसकी देखरेख के लिए एक बशिप नयिुक्त कयिा। कई वर्षों बाद, जब ईश्वर की अनुमति से, फारसियिों ने पहली बार

[5067] इबेरयिा आधुनकि जॉर्जयिा है। इसे 1613 में शाह अब्बास ने (पूरे रूप से नहीं, बल्कि अधकिांशत:) जीत लयिा था। प्रारंभकि चौथी शताब्दी में संत नीना, जो प्रेरतिों के समकक्ष थीं, के उपदेश द्वारा जॉर्जयिा में पहली बार ईसाई धर्म का प्रसार हुआ। (उनका पर्व दविस 14 जनवरी (323–340) है। उन्होंने इबेरयिा की राजधानी मत्स्खेता में एक आर्चबशिपरी की स्थापना की, जो शुरू में एंटओिक के पैट्रआिर्क के अधीन थी और बाद में कॉन्स्टेंटनिोपल के पैट्रआिर्क के अधीन हो गई। एंटीओक के पैट्रआिर्क पीटर (493–495) के अधीन, इबेरयिा के चर्च को ऑटोसेफली (स्वायत्तता) प्रदान करने का एक परषिद नर्णिय लयिा गया। 1783 में, जब जॉर्जयिाई राजा हेराक्लयिस ने स्वयं पर रूस के सर्वोच्च अधकिार को स्वीकार कर लयिा, तो उनकी महारानी ने इबेरयिा के प्रमुखों को उदारतापूर्वक पवत्रि सनिड के सदस्यों की उपाधि प्रदान की, और 1811 में जॉर्जयिाई चर्च के प्रशासन के लिए जॉर्जयिाई एक्ज़ार्केट की स्थापना की गई।

[5068] यूहन्ना 19:23-24

[5069] ने 306 से 337 तक रोमन साम्राज्य पर शासन कयिा।

इबेरिया पर विजय प्राप्त की, तो उन्होंने उस चर्च को बर्बाद कर दिया, जिसके बगल में मुर्र बहने वाला पेड़ खड़ा था। बाद में, इबेरिया फारसी शासन से मुक्त हो गई; हालाँकि, वह पेड़ अब वहाँ नहीं था, और उस स्थान से चमत्कारी मूरा अब नहीं बहती थी; केवल एक स्तंभ ही उस जगह को चिह्नित करता था। जहाँ तक प्रभु के चोगे की बात है, सभी ने सर्वसम्मति से पुष्टि की कि वह इबेरिया में था; कई लोगों का मानना था कि ईश्वर की व्यवस्था से, फारसी कैद के दौरान, विश्वासियों ने इसे उस कब्र से ले लिया था ताकि इसे अपवित्र होने से बचाया जा सके; यह बाद में मेट्रोपॉलिटन चर्च में कैसे पहुंचा, इसका कोई रिकॉर्ड नहीं बचा है।

परम पावन पैट्रिआर्क फिलारेट ने प्रभु के वस्त्र के संबंध में सभी रिपोर्टें सुनीं; फिर उन्होंने परम पूजनीय रूसी बिशपों से परामर्श किया (उस समय पवित्र लेंट का मौसम था): उनकी सलाह पर, एक कठोर उपवास और प्रार्थना की घोषणा की गई। तब, क्रूस की वंदना के रविवार को सर्व-रात्रि जागरण मनाने के बाद, परम पावन पैट्रिआर्क ने आदेश दिया कि हमारे उद्धारकर्ता और ईश्वर मसीह के वस्त्र को रोगियों पर रखा जाए, ठीक उसी तरह जैसे प्राचीन काल में धर्मपरायण रानी हेलेना ने क्रूस की प्रामाणिकता को सभी को विश्वास दिलाने के लिए उसे एक मृतक पर रखा था[5070] . और जैसे तब मसीह के क्रूस को उस शक्ति से पहचाना गया थी जिसके द्वारा मृतक को जीवित किया गया था, वैसे ही अब, उसी प्रकार, सभी प्रभु के वस्त्र की प्रामाणिकता से आश्वस्त हुए; क्योंकि जिसि किसी भी रोगी पर इसे रखा गया, उसे चंगाई और शीघ्र स्वास्थ्य लाभ मिला।

और धर्मपरायण राजा और परम पवित्र पैट्रिआर्क ऐसे आशीर्वाद से परम आनंदित हुए; उन्होंने तब आदेश दिया कि परमेश्वर की परम पवित्र माता के सुप्त होने के महान कैथेड्रल चर्च में, पश्चिमी ओर, दाहिने कोने में, एक सम्मानजनक स्थान, विशेष रूप से सुसज्जित, तैयार किया जाए, जहाँ मसीह की जीवन-दायक कफन की प्रतिमा रखी जानी थी। यहीं पर प्रभु का सम्मानित वस्त्र रखा गया था। यह वस्त्र आज भी दिखाई देता है और सभी द्वारा श्रद्धापूर्वक सम्मानित किया जाता है; आज भी, यह उन सभी बीमारों को चंगा करता है जो श्रद्धा के साथ इसके पास आते हैं[5071] ।

प्रभु की पवित्र चोगा की स्थापना के उत्सव की स्थापना 10 जुलाई को की गई थी[5072] , हमारे ईश्वर मसीह की महिमा के लिए, जो पिता और पवित्र आत्मा के साथ युगानुयुग महिमामय हैं। आमीन।

[5070] अधिक जानकारी के लिए, प्रविष्टि 14 देखें

[5071] आज, प्रभु के चोगे के दो टुकड़े सेंट पीटर्सबर्ग में रखे गए हैं: एक कोर्ट कैथेड्रल में, और दूसरा पीटर और पॉल कैथेड्रल में।

[5072] प्रभु के पवित्र वस्त्र का स्थानांतरण मार्च में, महा-उपवास के दौरान हुआ; लेकिन उपवास के मौसम के कारण, प्रभु के पवित्र वस्त्र के स्थानांतरण का उत्सव 10 जुलाई को स्थानांतरित कर दिया गया; यह दिन ज़ार मिखाइल फेदोरोविच के भव्य राज्याभिषेक की पूर्व संध्या थी। प्रभु की चोगा की अवतरण महोत्सव की प्रार्थना सभा क्रुतित्सा के मेट्रोपॉलिटन, साइप्रियन द्वारा रचित थी। इस सेवा में, विश्वासियों से उद्धारकर्ता की दिव्य और चंगा करने वाली पोशाक की पूजा करने का आह्वान करते हुए, चर्च यह घोषणा करती है कि यह पोशाक एक 'कथिन' है, जो अपनी चंगा करने की शक्ति और इस कारण से भी कीमती है क्योंकि इसने ईश्वर-मानव के पवित्र और जीवन-दायक शरीर को पहनाया था। इस वस्त्र को धारण कर, 'ईश्वर, जो स्वभाव से पूर्ण हैं, एक पूर्ण मनुष्य के रूप में प्रकट हुए: ईश्वर-मनुष्य की प्रतिमा की पुष्टि करते हुए, उन्होंने हमें अपनी दिव्य देह को एक वस्त्र, एक दीवार और एक आवरण के रूप में प्रदान किया है। आपकी दिव्य वस्त्र के प्रति हमारे निकट आने से, आपने हमें पवित्र किया है'। प्रभु की पोशाक के पर्व के दिन, पुरोहित इसे श्रद्धांजलि के लिए, क्रूस की भाँति, अपने सिर पर चर्च के केंद्र में ले जाता था। अत; चर्च के भजनों में हम यह प्रार्थना सुनते हैं: 'हे परम कृपालु, हम तेरे सम्माननीय क्रूस और तेरी पवित्र पोशाक की पूजा करते हैं, और उन्हें प्रेम से चूमते हैं'। इस पर्व की स्थापना की घोषणा शाही और पैट्रिआर्कल फरमानों द्वारा की गई थी। यह ट्वेर के आर्चबिशप द्वारा काल्याज़िन के मठाधीश, यूथमियिस को भेजे गए एक फरमान से स्पष्ट है। आर्चबिशप लिखते हैं, 'वर्तमान वर्ष 1626 में, 24 जनवरी को, हमें सर्व रूस के महा राजकुमार, सम्राट मिखाइल फेदोरोविच की ओर से, और हमारे महान शासक और पिता, सर्व मास्को और रूस के हमारे परम पवित्र पैट्रिआर्क फिलारेट निकितिच की ओर से पत्र प्राप्त हुए।' वे कहते हैं: पिछले वर्ष 1625 में, 11 मार्च को, शासक अब्बास शाह की ओर से कज़ील-बाश से ज़ार मिखाइल फेडोरोविच और उनकी पवित्रता पैट्रिआर्क फिलारेत निकितिच के दरबार में एक दूत पहुँचा, एक जॉर्जियाई, जिसका नाम उरुसांबेक था, ने ज़ार और परम पावन पैट्रिआर्क को प्रणाम करने के बाद, परम पावन को कीमती पत्थरों से जड़ा एक सुनहरा रिलिक्वरी (पवित्र अवशेष-पात्र) भेंट किया, जिसमें यीशु मसीह की चोगा या चिटोन था। उसी दिन, अपने ही प्रांगण में, महाधिराज और हमारे पिता, परम पावन पैट्रिआर्क फिलारेट ने अपने साथी पुरोहितों—साइप्रियन, सारस्क और पोडोंस्क के मेट्रोपॉलिटन; नेक्टारियोस, ग्रीस के आर्चबिशप; आर्चिमांड्राइट्स, के साथ, मठाधीशों, महापुजारियों और संपूर्ण पवित्र धर्मसभा – ने उस संदूक का परीक्षण किया और उसमें एक लिनिन का चोगा देखा, जो बुना हुआ, लालिमा लिए हुए रंग का और अत्यंत प्राचीन था। 18 मार्च को, परम पावन पैट्रिआर्क फिलारेट ने अपने पुत्र, ज़ार और ग्रैंड ड्यूक मिखाइल फेडोरोविच से कहा कि 'मसीह की सराचट्सा' के नाम से जाना जाने वाला पवित्र अवशेष, गैर-ऑर्थोडॉक्स ज़ार अब्बास शाह द्वारा भेजा गया था, और इसे वास्तविक सबूतों के बिना स्वीकार नहीं किया जा सकता: अविश्वासियों के वचन को बिना सत्यापन के गवाही के रूप में स्वीकार नहीं किया जाना चाहिए। इसलिए, 26 मार्च को आयोजित एक परिषद में, जिसमें पैट्रिआर्क, आर्चबिशप, आर्चिमैंड्राइट्स, मठों के मठाधीश और बुजुर्ग शामिल थे, सात दिनों के उपवास और प्रार्थना की अवधि का आदेश दिया गया, जबकि अन्य

ट्रोपारयिन, स्वर 4:

आज हम, वशि्वासयिों, अपने उद्धारकर्ता और ईश्वर के दवि्य और जीवन-दायक वस्त्र की ओर शीघ्रता से बढ़ते हैं, जन्हिोंने इस देह को धारण करने और क्रूस पर अपना पवत्रि रक्त बहाने की कृपा की, और इस प्रकार हमें शत्रु के कार्यों से मुक्ति दलिाई। इसलए, धन्यवाद देते हुए, हम उनसे पुकारते हैं: हमारे ऑर्थोडॉक्स सम्राट, नकिोलस अलेक्जेंड्रोवचि, और पवत्रि धर्मगुरुओं, और नगर, और सभी लोगों को बचाओ; उन्हें अपनी पवत्रि वस्त्र से सुरक्षति रखो, और हे मानवजाति के प्रेमी, हमारी आत्माओं को बचाओ।

कॉन्टाकयिन, स्वर 4:

हे प्रभु, अक्षयत्व का वस्त्र और समस्त मानवजाति के उद्धार का स्रोत, आपने अपना दवि्य खजाना, पवत्रि चोगा प्रदान कयिा, जसिसे आपने अपनी देहधारण के जीवन-दायक और पवत्रि तन को वस्त्र पहनाने की कृपा की: इसे आनंद से ग्रहण करते हुए, हम इसे हर्ष के साथ मनाते हैं; और भय तथा प्रेम के साथ, हम भलाइयों के दाता को गाते हुए, हे मसीह, हम आपसे प्रार्थना करते हैं: अपनी महान दया से हमारे वशि्वासयोग्य सम्राट नकिोलस अलेक्जेंड्रोवचि, पवत्रि धर्मगुरुओं, और सभी लोगों को शांति में संरक्षति करें।

24 जुलाई

11 जुलाई (पुराने कैलेंडर के अनुसार)

सर्व-स्तुत्य, महान शहीद संत यूफेमयिा के चमत्कार का स्मरणोत्सव

11 जुलाई को स्मरणोत्सव

[5073]पवत्रि महा-शहीद यूफेमयिा का जन्म, पालन-पोषण और खाल्सीडॉन में शहादत से मुकुट-धारण हुआ, एक शहर जो बथिनियिा में काला सागर पर स्थति है, कॉन्स्टेंटनिोपल के सामने, थ्रेसयिन बोस्फोरस जलडमरूमध्य के दूसरी ओर है जो उन्हें अलग करता है: उन्होंने 16 सतिंबर को, डायोक्लेटयिन के शासनकाल में शहादत प्राप्त की, यह वही तारीख है जसि पर उनका पर्व मनाया जाता है। हालाँकि, आज हम उस चमत्कार को याद करते हैं जो काल्सेडन में आयोजति पवत्रि पतिाओं के चौथे सार्वभौमकि परषिद के दौरान उनकी पूजनीय अवशेषों के माध्यम से हुआ था, और जसिके द्वारा धर्मपरायण वशि्वास की कबुली को प्रकट और पुष्ट की गई थी; इस चमत्कार ने पवत्रि पतिाओं के लए वधिर्मयिों के साथ संचार में प्रवेश न करने का एक संकेत भी दयिा, और यह इस प्रकार हुआ।

[5074][5075]अलेक्जेंड्रयिा के पैट्रआर्क डयिोस्कोरस और कॉन्स्टेंटनिोपल के आर्चमैंड्राइट यूटकिीस ने, जब कि ऑर्थोडॉक्स सम्राट थयिोडोसयिस जीवति थे, हमारे प्रभु यीशु मसीह के वरिुद्ध एक अपमानजनक वधिर्म फैलाया, जसिमें

चर्चों के पुरोहतिों को लटिर्जी मनाने और यह प्रार्थना करने का नर्दिेश दयिा गया कि प्रभु ईश्वर उस पवत्रि अवशेष के बारे में अपनी इच्छा प्रकट करें। प्रभु परमेश्वर और हमारे उद्धारकर्ता यीशु मसीह की कृपा, मानवता के प्रति प्रेम, और अगणनीय दया से, सप्ताह के अंत तक प्रभु के वस्त्र के द्वारा कई चंगे हो चुके थे; और एक वसि्तृत रकिॉर्ड हमें ट्वेर में भेजा गया है, जसि पर महान शासक और मॉस्को तथा सम्पूर्ण रूस के परम पावन पैट्रआर्क, फलिारेट नकितिचि की मुहर लगी है, जसिमें यह ठीक-ठीक बताया गया है कि किसिका, कसि दनि, और कसि बीमारी से ठीक हुआ। इसलए, आप, मठाधीश, ह्यरोमोंक और भाइयों के साथ, कैथेड्रल चर्च में एकत्रति हों और वहाँ के मुख्य डकिन को आज्ञा दें कि वह हमारे इस पत्र को सब लोगों के सुनने के लए ऊँचे स्वर में पढ़े; और इसे पढ़े जाने के बाद, घंटयिों की घंटी बजाकर प्रभु से प्रार्थना करें।'

[5073] उन्होंने 284 से 305 तक रोमन साम्राज्य के पूर्वी हस्सि पर शासन कयिा।

[5074] थेओडोसयिस द्वतिीय ने 408 से 450 तक शासन कयिा।

[5075] यह मोनोफज़िटि या यूटकियिन वधिर्म को संदर्भति करता है, जसिने यीशु मसीह के व्यक्तित्व में दैवीय और मानवीय स्वभावों के बीच नेस्टोरयिन भेद के वपिरीत यह सखिाया कि यीशु मसीह में मानवीय स्वभाव दैवीय स्वभाव में पूरी तरह से समा गया था और इसलए, यीशु मसीह के

उन्होंने उनकी दो प्रकृतियों—दैवीय और मानवीय—को एक ही प्रकृति में मिला दिया; उन्होंने अपनी विधर्म से कई पुरोहितों और सामान्य लोगों को गुमराह किया, कई प्रतिष्ठित दरबारीयों को अपनी विधर्म की ओर भटकाया, और उनके पर्याप्त समर्थन का व्यापक रूप से उपयोग किया।

जब एफ़िसुस की स्थानीय परिषद[5076] (तीसरे सार्वभौमिक परिषद[5077] के कुछ वर्षों बाद उसी स्थान पर आयोजित) बुलाई गई—या, बल्कि, उस डाकुओं के गिरोह में जहाँ पवित्र फ्लावियन, कॉन्स्टेंटिनोपल के पैट्रिआर्क[5078] , जो धर्म के एक दृढ़ समर्थक थे, को डियोस्कोरस और यूटिकिस के अनुयायियों द्वारा हत्या कर दी गई थी— – जिस बिंदु पर वह विधर्म और भी अधिक गहरा हो गया और उसे धर्मपरायणता के रूप में स्वीकार किया जाने लगा, जबकि सच्चे ऑर्थोडॉक्स धर्म को किसी प्रकार की अंधविश्वास के रूप में खारिज कर दिया गया। इस विधर्म को जड़ से उखाड़ने और ऑर्थोडॉक्स धर्म की पुष्टि करने के लिए पवित्र पिताओं की चौथी सार्वभौमिक परिषद का आह्वान करना आवश्यक हो गया।

उस समय धर्मपरायण राजा थियोडोसियस इस जीवन से प्रभु के पास चले गए, और उनके बाद सदाचारी और ईश्वर-भयभीत मार्सियन[5079] संत पल्केरिया के साथ सिंहासन पर आसीन हुए। ये धर्मनिष्ठा और पवित्रता के रक्षक, यह देखकर कि विधर्म चर्च को परेशान कर रहे थे और उसमें कैसी कलह व्याप्त थी, उन्होंने संसार भर के पवित्र पिताओं को महिमामय कालसेडोन नगर में एकत्र होने का आदेश दिया, ताकि वे वहाँ विश्वास के मामलों की परीक्षा और चर्चा कर सकें।

[5080]छह सौ तीस पवित्र धर्मगुरु कोंस्टेंटिनोपल में एकत्रित हुए, जिनमें कॉन्स्टेंटिनोपल के पैट्रिआर्क परम पावन अनातोलियस, परम पावन जुवेनाल, और रोम के पोप परम पावन लियो के दूत शामिल थे; साथ ही, अलेक्ज़ेंड्रिया के पैट्रिआर्क डियोस्कोरस और अंटाकिया के मैक्सिमस के नेतृत्व में विधर्मी भी उपस्थित थे—जिनके लिए डियोस्कोरस ने पदच्युत डोमनस के स्थान पर पैट्रिआर्केट सुनिश्चित किया था—उनके साथ अन्य बिशप जो उनसे सहमत थे, और यूटिकीस अपने समान विचारधारा वाले अनुयायियों के साथ मौजूद थे, ताकि विधर्मियों की एक बड़ी भीड़ इकट्ठा हो गई थी; पवित्र पिताओं के साथ, वे बोस्फोरस के पास शहर के बाहरी इलाके में स्थित, महा शहीद संत यूफेमिया के चर्च में एक परिषद के लिए एकत्रित हुए। यह काल्सेडॉन के मेट्रोपोलिस का कैथेड्रल चर्च था, एक बहुत ही विशाल इमारत जिसमें बहुत बड़ी संख्या में लोग समा सकते थे; इसके भीतर इस महान शहीद की अवशेषें रखी थीं, जिनसे अद्भुत और शानदार चमत्कार होते थे; आइए हम उनमें से कुछ का ही उल्लेख करें। उनके पर्व के दिन, ठीक उसी दिन जब उन्होंने मसीह के लिए यातनाएँ झेलीं, उनके पूजनीय अवशेषों से हर साल खून बहता था, मानो वह अभी-अभी उनके घावों से ही बहा हो; इसे इस प्रकार एकत्र किया जाता था। ताबूत संगमरमर का एक बड़ा ताबूत था, जो संगमरमर की एक स्लैब से ढका हुआ था, और उसके अंदर संत के अवशेषों वाली एक लकड़ी की अवशेष-पेटिका रखी होती थी; इस संगमरमर के ताबूत में, बाईं ओर, एक छोटा सा छेद था जिससे एक हाथ गुजर सकता था; यह सुरक्षित रूप से बंद रहता था लेकिन उचित समय पर खोला जाता था; इसके माध्यम से, पूरी रात की प्रार्थना सभा के अंत में और दिव्य धर्मविधि से पहले, बिशप स्वयं एक लंबे लोहे के हैंडल से जुड़े स्पंज का उपयोग करके उस रक्त को खींचते थे; वह उस छिद्र में एक सूखा स्पंज डालता, जब वह खून से सन जाता तो उसे निकालकर, स्पंज से खून निचोड़कर एक विशेष रूप से तैयार किए गए पात्र में भर लेता था । यह देखकर, लोग परमेश्वर और उनके पवित्र शहीद की बहुत महिमा करते थे, और आशीर्वाद तथा अपनी बीमारियों के इलाज के लिए उस खून से स्वयं पर अभिषेक करते थे। यह रक्त अत्यधिक सुगंधित था, मानो इसे कीमती मुर्र (एक प्रकार की सुगंधित द्रव्य) के साथ मिलाया गया हो, फिर भी पृथ्वी पर कोई भी मुर्र इसकी बराबरी नहीं कर सकता था: यह रक्त सभी सुगंधों से अतुलनीय रूप से श्रेष्ठ था और सभी प्रकार के रोगों को ठीक करता था। और ऐसा केवल उनके पर्व के वार्षिक उत्सव

व्यक्तित्व में केवल एक ही स्वभाव - दैवीय - को पहचाना जाना चाहिए। इस विधर्म की निंदा चौथे सार्वभौमिक परिषद में की गई थी, जैसा कि बाद में वृत्तांत में उल्लेख किया गया है।

[5076] 449 में,

[5077] तीसरा सार्वभौमिक परिषद, जो 431 में एफ़िसुस में आयोजित की गई थी, का आयोजन सम्राट थियोडोसियस द्वितीय ने कॉन्स्टेंटिनोपल के पैट्रिआर्क नेस्टोरियस की झूठी शिक्षाओं के जवाब में किया था, जिन्होंने यह सिखाया था कि परमेश्वर के वचन का अवतार केवल मसीह मनुष्य में उनका वास था, और एक ही व्यक्ति में दिव्यता और मानवता का मिलन नहीं था।

[5078] फ्लैवियन (I) ने 447 से 449 तक पैट्रिआर्क के रूप में कार्य किया। उन्हें एक संत के रूप में पुण्य घोषित किया गया। – उनका पर्व दिवस 18 फरवरी है।

[5079] सम्राट मार्सियन ने 450 से 457 तक पूर्व पर शासन किया।

[5080] 451 में – यह चौथा सार्वभौमिक परिषद था।

के दौरान ही नहीं हुआ जब पवत्रि महा-शहीद ने अपने पवत्रि अवशेषों से ऐसे मुर्रा-सुगंधति और चंगा करने वाले रक्त का स्राव कयि, बल्कि कभी-कभी अन्य समयों पर भी हुआ, वशिेष रूप से यदि उस चर्च का बशिप अपने पुण्य जीवन के द्वारा परमेश्वर को प्रसन्न करता था। कई बार संत साक्षात भी प्रकट होती थीं; वे अक्सर उन लोगों को दखिाई देती थीं जो उन पर श्रद्धापूर्वक प्रार्थना करते थे, या जो बीमार पड़े होते थे, या जो उनके मकबरे पर बने चर्च में आते थे, या जो वभिन्नि परेशानयिों में उनकी मदद मांगते थे। और लोग चारों ओर से, हर शहर से, और वशिेष रूप से पास के शहर कॉन्स्टेंटनिोपल से, बड़ी आस्था के साथ काल्सेडोन में उनकी पूजा करने के लिए उमड़ पड़े। वहीं, शाही फरमान द्वारा, पवत्रि पतिाओं का सार्वभौमकि परषिद बुलाया जाना था।

उस परषिद में ऑर्थोडॉक्स और वधिर्मीयों के बीच कई चर्चाएँ, बहसें और असहमति थी, क्योंकि वधिर्मी कसिी भी तरह से ऑर्थोडॉक्स सद्धिांत से सहमत होने से इनकार कर रहे थे। फरि परम पावन अनातोलीयस ने, अन्य पवत्रि पतिाओं से परामर्श करने के बाद, वधिर्मीयों से कहा:

'अपना धर्म-वशि्वास का बयाना एक पट पर लखिो; हम भी अपना लखिेंगे, और दोनों पटों को सील करने के बाद, उन्हें पवत्रि महा-शहीद यूफेमयिा की पवत्रि अवशेषों वाली ताबूत में रख दयिा जाएगा; आइए हम सब मलिकर उपवास करें और ईश्वर से प्रार्थना करें, कि उनके इस प्रयि सेवक के माध्यम से वह हमें प्रकट करें कि कौन सा बयाना सही है।'

परम पावन अनातोलीयस के इन शब्दों के बाद, सभी ने उनके परामर्श को स्वीकार कर लयिा, और दो पट्टयिाँ लखिी गईं: एक ऑर्थोडॉक्सों द्वारा और एक वधिर्मयिों द्वारा; उन्होंने उन्हें अपनी-अपनी मुहरों से सील कर दयिा, संत की कफ़नबंद को खोला, दोनों पट्टयिों को उनकी छाती पर रखा, कफ़नबंद को फरि से बंद कयिा, शाही मुहर लगाई, एक पहरा तैनात कयिा, और तीन दनिों तक उपवास और प्रार्थना की। चौथे दनि, राजा और पूरी परषिद पूजनीय संत की कफ़न तक आए; और जब उन्होंने शाही मुहर हटाई और कफ़न खोला, तो उन्होंने देखा कि पवत्रि महान शहीद अपने दाहनि हाथ में ऑर्थोडॉक्स वशि्वासयिों का सुन्नतपत्र पकड़े हुए थीं, जबकि वधिर्मीयों का सुन्नतपत्र उनके पैरों के पास पड़ा था। सबसे आश्चर्यजनक बात यह थी कि, जैसे वह जीवति हो, उसने अपना हाथ बढ़ाकर राजा और धर्मगुरु को सच्चे वशि्वास-पात्रता वाले ग्रंथ को सौंप दयिा। तब सभी शब्दों से परे प्रसन्न हुए, ईश्वर की स्तुति की, पवत्रि महान शहीद को स्तुति और कृतज्ञता के भजन गाए, और उनकी चमत्कारी अवशेषों को गहरी भक्ति के साथ सम्मानति कयिा। और तुरंत ही उन्होंने पवत्रि महान शहीद द्वारा दव्यि रूप से पुष्टि कए गए और चमत्कारकि रूप से प्रकट कए गए ऑर्थोडॉक्स धर्म की घोषणा की, जबकि वधिर्मी अंधवशि्वास की नदिा की गई। ऐसे चमत्कार को देखने के बाद कई वधिर्मी ऑर्थोडॉक्स धर्म में परविर्तति हो गए, जबकि जो अडगि रहे उन्हें पदच्युत करके नर्विासति कर दयिा गया। उस समय से, प्रतमिाकारों ने परषिद के दौरान हुए इस गौरवशाली चमत्कार की एक अवस्मिरणीय स्मृति के रूप में, पवत्रि महा-शहीद यूफेमयिा को प्रतमिाओं पर अपने दाहनि हाथ में एक पट्टी (स्क्रॉल) पकड़े हुए चत्रिति करना शुरू कर दयिा। तब और उसके बाद भी, पवत्रि शहीद ने चमत्कार करना और अपने पवत्रि अवशेषों से मूर्रा की सुगंधति रक्तस्राव करना कभी बंद नहीं कयिा।

कई साल बीत गए; सहिासन पर एक धर्मपरायण सम्राट, मॉरसि[5081] , ने आसीनता प्राप्त की, लेकनि, अपने अवशि्वास के कारण, उन्होंने संत के चमत्कारों पर संदेह करने की हम्मित की और उनके पवत्रि अवशेषों से नकिलने वाले रक्त को असली मानने के बजाय एक जालसाजी मानने लगे। मामले की जांच करने और सच्चाई का पता लगाने की इच्छा से, उन्होंने इस प्रकार कार्य कयिा। पवत्रि महान शहीद की वार्षकि स्मृति-सभा से बहुत पहले, उसने ताबूत और उसमें मौजूद छेद को अपनी शाही मुहर से सील कर दयिा। जब उनकी पर्व का दनि नज़दीक आया, तो वह स्वयं कॉन्स्टेंटनिोपल से काल्सेडॉन गया और मुहर हटाकर छेद खोल दयिा; तुरंत ही एक अद्भुत सुगंध फैल गई और पूरी चर्च में भर गई; रक्त—या, बल्कि, रक्त जैसा कोई पदार्थ—संत की पवत्रि अवशेषों से सामान्य से अधकि प्रचुर मात्रा में बहा; कसिी भी अन्य वर्ष में इतना रक्त नहीं बहा था, जतिना इस वर्ष बहा, जसिसे राजा का अवशि्वास लज्जति हो गया और ईश्वर की शक्ति में दृढ़ वशि्वास स्थापति हो गया, जसिके द्वारा सभी अलौककि कार्य संपन्न हो सकते हैं। प्रभु, जन्हिोंने प्राचीन काल में शमिशोन के लिए एक जानवर की हड्डी—एक गधे की जबड़े की हड्डी—से पानी का एक सोता नकिालने में सक्षम थे[5082] (न्यायायिों 15:18-19), तो क्या वे तब अपने प्रयि सेवक के अक्षय अवशेषों से रक्त और मूर्रा

[5081] सम्राट मॉरसि ने 582 से 602 तक पूर्व पर शासन कयिा।

[5082] शमिशोन – एक इस्राएली न्यायकर्ता, जसिे ईश्वर ने असाधारण शक्ति प्रदान की थी और जसिने फलस्तीयों के वरिुद्ध ईश्वर के उपकरण के रूप में कार्य कयिा। उसके जीवन और कार्यों का ववरिण न्यायायिों 13:16 में दयिा गया है।

नहीं बहा सकते थे? तब राजा, अपने अपराध का एहसास करके, पश्चाताप कर गया और उस समय से संत में दृढ़ वश्विास रखने लगा।

बाद में, हेराक्लियस[5083] के शासनकाल में, ईश्वर की अनुमतसि, फारसियों ने बथिनिया के क्षेत्र और काल्सेडोन के आसपास के इलाकों पर आक्रमण कयिा, ताकपिूरे उपनगर को बर्बर रीतकि अनुसार उजाड़ दयिा गया। शत्रु पवत्रि महान शहीद के चर्च में भी घुस गए और जो कुछ भी मलिा, सब कुछ उठा ले गए; वे संत की कफ़नबंद को खोलना चाहते थे, लेकनि कसिी भी तरह से ऐसा नहीं कर सके, और उन्होंने चाहे जतिनी भी कोशशि की, उन्हें कुछ भी हासलि नहीं हुआ: न केवल ऊपरी संगमरमर की स्लेट अचल बनी रही, बल्कवि कफ़नबंद में एक छोटा सा छेद भी नहीं कर सके। तब फारसयिों ने बहुत सारी लकड़ी और झाड़-झंखाड़ लाए, उसे ताबूत के चारों ओर ढेर लगा दयिा, उस पर ज्वलनशील सामग्री का एक पूरा पहाड़ जमा कर दयिा, और इस उम्मीद में आग लगा दी कतिीव्र गर्मी से संगमरमर फट जाएगा। हालाँकि, इस तरह भी वे कुछ हासलि नहीं कर सके। उस पर ढेर की गई हर चीज़ राख हो गई, जबकसिंत का ताबूत पूरी तरह से सुरक्षति रहा। ईश्वर ने अपने प्रयि को ऐसी अद्भुत शक्तसि नवाज़ा था! फ़ारसयिों के चले जाने के बाद, सम्राट ने पवत्रि महा-शहीद यूफेमयिा की अवशेषों के संबंध में पैट्रआर्क से परामर्श कयिा, और उन्होंने काल्सेडोन पर दूसरे बर्बर आक्रमण के डर से, उन्हें काल्सेडोन से कॉन्स्टेंटनिोपल ले जाने का नर्णिय लयिा। कॉन्स्टेंटनिोपल में, हप्पिोड्रोम के पास[5084] , संत के सम्मान में एक चर्च का नर्मिाण कयिा गया, जो कालसीडोन के चर्च के समान था—वशिाल और सुंदर—और पवत्रि अवशेषों को, पत्थर के ताबूत के साथ, बड़ी सम्मान के साथ वहाँ स्थानांतरति कर दयिा गया; कालसीडोन के मेट्रोपॉलटिन को उन पर अध्यक्षता करने के लएि नयिुक्त कयिा गया, ताकअिवशेषों को और अधकि सम्मान मलि सके। उस ताबूत को दव्यि वेदी के स्थान पर पवत्रि स्थल में रखा गया, और उस पर नर्मिल बलि चढ़ाई गई; इसके भीतर महान शहीद के पूजनीय अवशेष रखे गए थे; उनसे, ठीक काल्सेडोन की तरह, कॉन्स्टेंटनिोपल में चमत्कार हुए, और रक्त—जो मूर्रा की सुगंध से सुगंधति और उपचारात्मक था—सामान्य समयों पर बहा।

कई साल बीत गए, कई राजा आए और गए, और पवत्रि पतिाओं की सार्वभौमकि परषिदों—पाँचवीं और छठी[5085] —का आयोजन हुआ; इनके बहुत समय बाद, एक ऐसा व्यक्तसि हिासन पर चढ़ा जो नाम और चरत्रि दोनों ही रूप में एक जानवर था: राजा लयिो द इसाउरयिन[5086] । वह पहला व्यक्तथि जसिने प्रतमिा-वरिोधी वधिर्म के साथ परमेश्वर की कलीसयिा को परेशान करना शुरू कयिा, पवत्रि प्रतमिाओं को मूर्तयिाँ कहकर और अपने समान वचिारधारा वाले अनुयाययिों के साथ इस प्रकार तर्क कयिा:

'ये वे हैं जनिके वषिय में भवषि्यवक्ता कहते हैं: *"उनके मुँह हैं, पर वे बोलते नहीं; उनकी आँखें हैं, पर वे देखते नहीं; उनके कान हैं, पर वे सुनते नहीं"* (भजन संहति 113:13–14)।'

उनका वरिोध परम पावन पैट्रआर्क जर्मन[5087] ने कयिा; ज़ार ने अपमानपूर्वक उन्हें सहिासन से हटा दयिा और उनकी जगह एक वधिर्मी, अपने समान वचिारधारा वाले सहयोगी को स्थापति कर दयिा; इसी प्रकार, उन्होंने अपनी वधिर्म का वरिोध करने वाले अन्य ऑर्थोडॉक्स बशिपों को भी अपमानपूर्वक नर्वासति कर दयिा। उसने अपनी बेबाक जीभ से न केवल पवत्रि प्रतमिाओं का बल्कसिंतों की अवशेषों का भी अपमान कयिा, जैसे कोई कुत्ता, और उन्हें हर संभव तरीके से अपमानति कयिा। पवत्रि महा-शहीद यूफेमयिा के पूजनीय अवशेषों द्वारा कएि गए चमत्कारों को देखकर और सुनकर, वह ईर्ष्या से अपने मन में पीड़ति हुआ, लेकनि लोकप्रयि वद्रिोह और बगावत के डर से उन पर कुछ भी बुरा करने की हम्मित नहीं की। उसने एक बहुत ही चालाकी भरी योजना बनाई। एक रात, वह अपने समान वचिारधारा वाले अनुयाययिों के साथ गुप्त रूप से संत यूफेमयिा के चर्च में गया और उसकी कफ़नबंद تابوت को खोल दयिा, जसिे फारसी नहीं खोल पाए थे: मसीह ईश्वर ने वश्विासघाती ईसाइयों के हाथों को अपनी दुल्हन के पवत्रि अवशेषों को छूने दयिा, जन्हिें उसने अवश्विासी

[5083] हेराक्लयिस ने 610 से 641 तक शासन कयिा।

[5084] हप्पिोड्रोम घुड़दौड़ के लएि एक स्थल था।

[5085] पाँचवाँ सार्वभौमकि परषिद 553 में कॉन्स्टेंटनिोपल में हुआ था और इसे सम्राट जस्टनियिन प्रथम (527–565) द्वारा तीन बशिपों की धर्मपरायणता के प्रश्न को हल करने के लएि बुलाया गया था: मोप्सुएस्टयिा के थयिोडोर, साइरस के थयिोडोरेट और एडसा के इवास, जन्हिोंने अपने लेखों में नेस्टोरयिन वचिार व्यक्त कएि थे। – छठी सार्वभौमकि परषिद 680 में कॉन्स्टेंटनिोपल में सम्राट कॉन्स्टेंटनि चौथे पोगोनाटस (668–685) के शासनकाल के दौरान हुई; इसका प्राथमकि कार्य मोनोथेलटिकि वधिर्म की नंदिा और नन्दिा करना था, जो मसीह में केवल एक (दव्यि) इच्छा को मान्यता देता था।

[5086] लयिो तृतीय इसाउरयिन ने 716 से 741 तक शासन कयिा।

[5087] जर्मनस ने 715 से 730 तक पैट्रआर्क के रूप में कार्य कयिा।

मूर्तपिूजकों से अछूत रखा था। पारसयिों ने अज्ञानता में पाप कयिा, जबकि ईसाइयों ने यह अत्याचार जानबूझकर कयिा, उन्हें अच्छी तरह पता था कि वे क्या कर रहे हैं; ईश्वर ने उन्हें, उनकी और भी बड़ी नदिा के लिए, संत का अपमान करने की अनुमति दी। दुष्ट राजा ने ताबूत खोलकर, उसमें से लकड़ी के संदूक के साथ संत यूफेमयिा के चमत्कारी और अक्षय अवशेष नकिाल लिए, और उनकी जगह कुछ सड़ी हुई, बदबूदार हड्डयिाँ रख दीं, जिन्हें उसने इस उद्देश्य के लिए जानबूझकर तैयार कयिा था, और, एक बार फरि से उसे एक तख्ते से ढककर, वह चला गया, उन पवित्र अवशेषों को चुराकर और उन्हें शाही महल के एक कमरे में रख दयिा। हालाँकि, उसकी बहनें और बेटयिाँ गुप्त रूप से पवित्र अवशेषों के पास आतीं, धूप जलातीं, मोमबत्तयिाँ जलातीं, उनका सम्मान करतीं और प्रेम से उनकी पूजा करतीं। लेकनि जल्द ही दुष्ट राजा को इस बात की जानकारी हो गई और उसने तुरंत अवशेषों वाली संदूकची को लेकर रात के समय उसे समुद्र में फेंक दयिा। अगले सुबह, अवशि्वासयिों की भीड़ इकट्ठा करके, उसने वशि्वासयिों के सामने हँसना शुरू कर दयिा, और पवित्र महान शहीद के अवशेषों का मज़ाक उड़ाते हुए उनकी नदिा करने लगा:

'चलो, मूर्खों, उस धोखे को देखो जसिसे तुम बहकाए जा रहे हो, जो इन पवित्र अवशेषों को अक्षय और चमत्कारी कहता है; ताबूत खोलो और देखो कि क्या यह सच है।'

और तुरंत उसने अपने दरबारयिों को, लोगों के साथ, ताबूत खोलने के लिए भेजा। वे गए, उसे खोला, और उसमें सड़ी-गली, बदबूदार हड्डयिों के सवि कुछ नहीं देखा। तब वधिर्मीयों ने वशि्वासयिों का मज़ाक उड़ाना और उनका उपहास करना शुरू कर दयिा, उन्हें सड़ी हुई हड्डयिों की पूजा करने वाले कहने लगे; लेकनि वशि्वासी इस अप्रत्याशति घटनाक्रम से स्तब्ध, हैरान, लज्जति और पश्चाताप से भर गए। तब कई लोगों ने यह सोचना शुरू कर दयिा कि संत के सभी चमत्कार एक धोखा थे; उन्होंने उन सड़ी हुई हड्डयिों पर थूका, उन्हें बाहर फेंक दयिा, और उस संगमरमर के ताबूत को भी चर्च से बाहर घसीट लयिा, जसिसे ईश्वर का घर वनिाश की घृणा में बदल गया; उसका बड़े पैमाने पर अपमान कयिा गया, और वह चर्च कसिी खाली अस्तबल, या मवेशयिों के बाड़े, या उससे भी बदतर हो गया, क्योंकि यह हर तरह की गंदगी और अशुद्धता का स्थान बन गया। तब, चर्च के अंदर, लोहारों ने अपनी भट्टयिाँ लगा लीं और वहीं अपना काम करने लगे; और जहाँ कभी दव्यि भजनों की ध्वनि सुनाई देती थी, वहाँ हथौड़ों की चोटों की आवाज़ गूँजने लगी, साथ ही अभद्र भाषा की अश्लील आवाज़ें और लोगों की अव्यवस्थति बकवास भी सुनाई देने लगी। ये कारीगर अपनी पत्नयिों और बच्चों के साथ उस खाली चर्च में रहते थे, और पवित्र वेदी में, जैसे कि वह कोई एकांत स्थान हो, उन्होंने अपने लिए एक शौचालय बना लयिा; और लंबे समय तक ईश्वर ने मनुष्यों के ऐसे कर्मों, अपने पवित्र स्थल के ऐसे अपमान को सहन कयिा, जब तक कि उसने दुष्टों को बुराई से नष्ट नहीं कर दयिा, ऑर्थोडॉक्सी (सही आस्था) को फरि से स्थापति नहीं कर दयिा, और अपने स्थान को शुद्ध और पवित्र करके उसे एक बार फरि अपनी महमिा का नविास स्थान नहीं बना दयिा।

जब सर्व-स्तुत्य शहीद की पवित्र अवशेषों को समुद्र की गहराइयों में फेंका गया, तब ईश्वर की कृपा से सोफयिा नामक बंदरगाह से एक जहाज चल रहा था; उस जहाज पर दो जहाज मालकि, भाई सेर्गीयस और सेर्गोन सवार थे। जब उन्होंने अपनी नाव के पास लहरों द्वारा बहती एक ताबूत देखी, तो उन्होंने उसे पानी से नकिालकर नाव पर रख लयिा, यह सोचकर कि उसमें कोई सांसारकि खजाना है; और पाल फहराकर वे आगे बढ़ चले। जब वे अवदोवा नामक बंदरगाह पर पहुँचे, तो उन्होंने ताबूत खोला और उसमें अक्षय अवशेष देखे; उनसे एक अद्भुत सुगंध नकिल रही थी, और वे इस आध्यात्मकि खजाने पर प्रसन्न हुए, वशिेष रूप से जब, एक दर्शन में, उन्होंने उन अवशेषों की पवित्रता को पहचाना; अर्थात्, उसी रात उन्होंने एक दर्शन में, अवशेषों के ऊपर, महान महमिा, जलते दीपक और मोमबत्तयिाँ, और तेजस्वी पुरुषों को गाते और ईश्वर की स्तुति करते हुए देखा। यह दर्शन प्राप्त करने के बाद, उन्होंने ईश्वर से प्रार्थना करना शुरू कर दयिा कि वह उन्हें बताए कि ये अवशेष कसि संत के हैं; वे आगे बढ़े और लम्निॉस नामक एक द्वीप पर पहुँचे। इस द्वीप पर भी, पवित्र शहीद ग्लसिेरयिा के चमत्कारी और मस्रि-प्रवाहक अवशेष पड़े थे; इस द्वीप के पास रात बतिाते समय, उन्होंने एक दर्शन में पवित्र शहीद ग्लसिेरयिा को अपनी नाव की ओर आते हुए देखा, और एक सुंदर कन्या को उससे मलिने के लिए नाव से उतरते हुए देखा; दोनों ने स्नेहपूर्वक एक-दूसरे को गले लगा लयिा। और जहाज से उतरकर आई कन्या ने उस कन्या से कहा जो आई थी:

'हे मसीह की शहीद, सर्व-स्तुत्य यूफेमयिा, नमस्ते!'

जसि पर उसने उत्तर दयिा:

'जय हो, मसीह की शहीद, धन्य ग्लसिेरयिा!'

और, एक-दूसरे को प्रणाम करने के बाद, वे अलग हो गए: संत ग्लसिरिया अपने आवास में चली गईं, जबकि संत यूफेमिया जहाज पर लौट आईं। दोनों भाइयों को एक ही दृष्टि प्राप्त हुई; यह जानकर कि ये कनिके अवशेष थे, वे अत्यंत प्रसन्न हुए, और उन्होंने परम भक्ति से पवित्र महा-शहीद यूफेमिया के सामने प्रणाम किया, अवशेष-पात्र को गले लगाकर और चूमकर, आनंद के आँसू बहाए। वे इस अनमोल खजाने को अपने देश वापस ले जाना चाहते थे, लेकिन यह बात न तो ईश्वर को और न ही उनके पवित्र सेवक को भायी। नाविकों ने पाल फैलाए और अपनी दिशा में चल पड़े; जब वे उस द्वीप से काफी दूर थे, तो अचानक एक तूफान आ गया, जिसके साथ प्रचंड लहरें थीं, और जहाज लहरों द्वारा उसी द्वीप पर वापस ले जाया गया। एक बार फिर, जैसे ही समुद्र शांत हुआ, नाविकों ने पाल भर दिया, लेकिन फिर से, ईश्वर की आज्ञा से, अचानक लहरें उठ आईं और जहाज को वापस द्वीप पर ले गईं। और यह दो बार, न ही तीन बार, बल्कि कई बार हुआ; और जहाज पर सवार सभी लोग बहुत हैरान थे।

रात हो गई, और मसीह का एक शहीद उन्हें दिखाई दिया और कहा:

'तुम मुझे इधर-उधर क्यों ले जाने की कोशिश कर रहे हो? मैं इस जगह को नहीं छोड़ूँगी; मैं वहाँ नहीं जाना चाहती जहाँ तुम मुझे ले जाना चाहते हो।'

और उसने आगे कहा:

'क्या मेरे लिए चल्सेडॉन से बाइजेंटाइयम (कॉन्स्टेंटिनोपल) तक ले जाया जाना, समुद्र में फेंका जाना, और यहाँ लाया जाना पर्याप्त नहीं था? आप मुझे दूर-दराज के देशों में भी क्यों ले जाना चाहते हैं? यह आपकी शक्ति से परे है; अब और परेशान न करें, बल्कि इस द्वीप पर मेरे लिए एक छोटा सा घर बनाओ, और मैं यहीं विश्राम करूँगी।'

इन शब्दों के साथ, वह अदृश्य हो गईं। धर्मात्मा भाइयों सेरजियस और सेरगोन ने तुरंत और खुशी-खुशी संत की आज्ञा का पालन किया; वे बंदरगाह पर रुके, जहाज से उतरकर किनारे पर आ गए, और उस द्वीप के बिशप को सर्व-प्रशंसित यूफेमिया की अवशेषों और उनकी आज्ञा के बारे में सूचित करने चले गए। इस पर बिशप प्रसन्न हुए, लेकिन उन्होंने उन्हें पवित्र अवशेषों को गुप्त रखने का आदेश दिया, क्योंकि उस द्वीप पर भी दुष्ट राजा द्वारा पवित्र प्रतिमाओं और संतों के पूजनीय अवशेषों को बाहर फेंकने और जलाने का एक भयानक आदेश जारी किया गया था। इस दुष्ट फरमान के परिणामस्वरूप, पवित्र शहीद ग्लसिरिया के मूर्रा-प्रवाह करने वाले अवशेष छिपा दिए गए। बाद में, एक उपयुक्त स्थान खोजने पर, बिशप ने सेरजियस और सेरगॉन को समुद्र तट से बहुत दूर नहीं, मसीह की शहीद यूफेमिया को समर्पित एक छोटी सी चर्च बनाने का आशीर्वाद दिया। शीघ्र ही निर्माण कार्य पूरा हो गया; बिशप आए, उन्होंने चर्च को पवित्र किया और पवित्र अवशेषों को पवित्र वेदी में, जमीन में गहराई तक दफना दिया, ताकि मूर्तिभंजकों को वे मिल न सकें। यह सब होने के बाद, दोनों भाइयों ने पवित्र शहीद से निम्नलिखित व्रत लेने का संकल्प लिया:

उन्होंने कहा, 'हे सर्व-स्तुत्य पवित्र महान शहीद यूफेमिया, हम आपका त्याग नहीं करेंगे, और न ही हम आपके पवित्र अवशेषों से मुंह मोड़ेंगे, बल्कि यहाँ हम अपने जीवन के अंत तक आपकी सेवा करेंगे।'

यह वादा करने के बाद, उन्होंने जहाज पर लाई गई सारी संपत्ति बेच दी, संसार को त्याग दिया, और उस चर्च के पास उपवास और प्रार्थना में रहने लगे; और जल्द ही, ईश्वर को प्रसन्न करके, वे अत्यंत प्रशंसनीय पवित्र शहीद यूफेमिया की मध्यस्थता से अमर जीवन में प्रवेश कर गए, जिनकी उन्होंने उत्साह के साथ सेवा की थी। अपनी मृत्यु से पहले, उन्होंने पवित्र शहीद की कब्र पर एक पत्थर की स्लैब रखी, ताकि इस सबसे कीमती खजाने को रखने वाली जगह कभी भुला दी न जाए, और उस स्लैब पर उन्होंने निम्नलिखित अंकित किया:

– हम, सेरजियस और सेरगॉन, जन्म से भाई, जब हेलेस्पोंट (कॉन्स्टेंटिनोपल की समुद्र) पार कर रहे थे, तो हमने समुद्र से मसीह की सबसे प्रशंसनीय पवित्र शहीद, यूफेमिया के पूजनीय अवशेष निकाले, जिन्हें लहरों ने बहाया था, और, उनकी आज्ञा पर, उन्हें यहाँ स्थापित किया।

बाद में, उस द्वीप के बिशप ने एक सुंदर चर्च बनवाया और संत यूफेमिया के अवशेषों को उसमें स्थानांतरित करना चाहा; जब वह भाइयों द्वारा बनाई गई उस छोटी सी चर्च में पहुँचा, तो उसने पूरी रात जागरण किया। वह झपकी ले गया, और संत उसे दिखाई दीं, और कहा:

'आदरणीय पिता, आपने जो योजना बनाई है, उसे अंजाम न दें! मैं इस मामले में आपकी नहीं सुनूँगी, बल्कि मेरी बहन, पवित्र शहीद ग्लसिरिया के पास जाएँ, उनसे प्रार्थना करें, और मैं मध्यस्थता करूँगी; और वह स्वयं को आपके चर्च में स्थानांतरित होने देगी, जबकि आपको मुझे इस स्थान पर विश्राम करने देना होगा, जब तक कि मैं अपने स्थान पर वापस न आ जाऊँ।'

बशिप भयभीत होकर जाग उठा और उसने अपनी योजना को अंजाम देने की हम्मित नहीं की। जहाँ तक पवत्रि शहीद ग्लसिरिया का सवाल है, जनिके अवशेष कसिी अन्य स्थान पर रखे गए थे, उन्होंने वहाँ प्रार्थना करने के बाद उन्हें अपने चर्च में स्थानांतरति कर दयिा और एक छपिे हुए कक्ष में रख दयिा। इस प्रकार संतों के अवशेषों को उन दुष्ट मूर्तभिंजकों से सुरक्षति रखा गया, जो उनके वरिोधी थे। यद्यपि उन्हें छपिाकर रखा गया था, फरि भी श्रद्धालु वहाँ इकट्ठा होते और सम्मान के साथ उनके पर्व मनाते थे, क्योंकि इन महलिाओं, जो ईश्वर की संत थीं, के माध्यम से हर प्रकार के रोगों से उपचार मलिता था।

एक दनि, पवत्रि महान शहीद यूफेमयिा के पर्व के दनि, जब उनके चर्च में पर्व मनाया जा रहा था, एक सैन्य कमांडर—जो मूर्तभिंजनवाद की वधिर्म का समर्थक और उत्साही पैरोकार था—संयोग से अपने सैनकिों को ले जाने वाले जहाजों में उस द्वीप के पास से गुजर रहा था; उसे आधकिारकि काम से भेजा गया था। घाट पर पहुँचकर, वह कनिारे पर उतर आया और घाट के पास स्थति चर्च के पास लोगों की एक बड़ी भीड़ देखी। कारण पूछताछ कर जब उसे पता चला कि लोग पवत्रि शहीद यूफेमयिा की अवशेषों के सम्मान में उत्सव मना रहे थे, जन्हिें वहीं दफनाया गया था, तो वह दुष्ट व्यक्ति क्रोध से आग-बबूला हो गया और अपने सैनकिों के साथ उस चर्च की ओर बढ़ गया, और यह पुकारते हुए भीड़ को ततिर-बतिर कर दयिा:

'क्या राजा ऐसी चीज़ों की अनुमति देते हैं? हे मूर्तपिूजकों, मृत हड्डयिों के सेवकों!'

ऑर्थोडॉक्स ईसाइयों पर इस तरह के अपमान उछालते हुए, उस शापति व्यक्ति ने उस चर्च को लगभग उसकी नींव तक नष्ट कर दयिा; हालाँकि, पवत्रि अवशेष मलबे के नीचे सुरक्षति रहे। और वह जगह लंबे समय तक सुनसान पड़ी रही।

दुष्ट राजा लयिो द इसाउरयिन की मृत्यु पर, उसका पुत्र कॉनस्टेंटनि, जसिे कोप्रोन्यमस[5088] के नाम से जाना जाता था, सहिासन पर बैठा—जो अपने दुष्ट पति से भी अधकि दुष्ट था। उसने न केवल प्रतमिाओं की पूजा को अस्वीकार कर दयिा, बल्कि उसने गुप्त रूप से स्वयं मसीह ईश्वर को भी अस्वीकार कर दयिा; और, वह कतिना दुष्ट था, उसने अपनी घृणति जीभ से परम पवत्रि कुँवारी ईश्वर माता की भी नदिा की, और ईश्वर के पवत्रि संतों का अपमान कयिा। जवानी से ही वह हर बुराई और दुष्टता के जीवन का आदी था; उसने जादू-टोना और तंत्र-मंत्र सीखा और नर्दियता से मानव रक्त बहाया। वह क्रूरता में अपने पति से भी आगे था, उसने कई नर्दिोष और धार्मकि लोगों को मार डाला, और संतों को पूरी तरह से कॉन्स्टेंटनिोपल से नर्वािसति कर दयिा। वह लोगों के पापों की सजा के रूप में, ईश्वर की अनुमति से लंबे समय तक राज कयिा, और अनगनित बुराइयाँ करने के बाद, एक दुखद मृत्यु प्राप्त हुई; उसने अपना राज्य अपने बेटे लयिो को सौंपा, जो एक मूर्तभिंजक भी था, लेकनि उसने अपने पति और दादा जैसी क्रूरता नहीं दखिाई। लयिो की मृत्यु के बाद, उनके पुत्र कॉन्स्टेंटनि ने अपनी माँ आइरीन के साथ सहिासन संभाला[5089] – जसिका अर्थ (ग्रीक से) 'शांति' है – और उन्होंने वास्तव में मसीह के चर्च में शांति लाई। जबकि उसका बेटा अभी भी एक बच्चा था, उसने अकेले ही ग्रीक साम्राज्य पर शासन कयिा, और ईश्वर को प्रसन्न करने वाले तरीके से अच्छा शासन कयिा; उसने प्रतमिा-वरिोधी सम्राटों द्वारा भ्रष्ट और बर्बाद कएि गए सभी को ठीक कयिा और सम्माननीय प्रतमिाओं की पूजा करने के लएि नर्वािसति कएि गए पवत्रि पतिाओं को बहाल कयिा। वास्तव में, वह धर्मपरायण और ईश्वर-प्रेमी थीं; उन्होंने सातवीं सार्वभौमकि परषिद[5090] का आयोजन कयिा, जसिकी अध्यक्षता कांस्टेंटनिोपल के पैट्रआर्क, परम पावन तारासयिस[5091] ने की; इस प्रकार, पवत्रि चर्चों का वैभव—प्रतमिाएँ—पुनर्स्थापति हुआ, और पवत्रि संतों द्वारा प्रतमिा-भंजक वधिर्म की नदिा की गई। तभी धर्मपरायण महारानी आइरीन ने कॉन्स्टेंटनिोपल में हप्पिोड्रोम के पास स्थति पवत्रि महान शहीद यूफेमयिा के चर्च को—जसिका ऊपर उल्लेख कयिा गया था और जसिे लयिो द इसाउरयिन ने तबाह कर दयिा था—पुनर्स्थापति कयिा; उसने चर्च को गंदगी से साफ करने और जो कुछ भी नष्ट हो गया था, उसे मरम्मत करने का आदेश दयिा; उसने इसे शानदार प्रतमिाओं से हर तरह से सजाया, और इसे पवत्रि वस्त्रों और कीमती बर्तन प्रदान कएि; चर्च का अभषिेक कयिा गया, और वहाँ फरि से, पहले की तरह, दैवीय सेवाएँ आयोजति होने लगीं, और काल्सेडॉन के मेट्रोपॉलटिन ने फरि से वहाँ नवािस करना शुरू कर दयिा। मसीह-प्रेमी रानी आइरीन ने सर्व-स्तुत्य शहीद यूफेमयिा के अवशेषों का पता लगाने के

[5088] कॉन्स्टेंटनि पंचम कोप्रोन्यमस ने 714 से 775 तक शासन कयिा।

[5089] कॉन्स्टेंटनि VI (पोर्फ्योजेनटिस) ने 780 से 797 तक और आइरीन ने 797 से 802 तक शासन कयिा।

[5090] 787 में

[5091] तारास ने 784 से 806 तक पैट्रआर्क के रूप में कार्य कयिा।

लिए गंभीर प्रयास किया। जब से लियो द इसाउरियन ने पवित्र अवशेषों को चुराकर समुद्र में फेंका था, तब से राजा के इस गुप्त दुष्कर्म की अफवाहें ऑर्थोडॉक्स लोगों के बीच फैल गई थीं, और कहा जाता था कि पवित्र अवशेष कहीं मिल गए थे और उन्हें विश्वासियों द्वारा सुरक्षित रखा जा रहा था; महारानी ने यह पता लगाने का प्रयास किया कि वे कहाँ थे। लेकिन प्रभु, जो अपने भय रखने वालों की इच्छाओं को पूरा करते हैं, ने पवित्र शहीद की अवशेषों के ठिकाने के बारे में रानी को निम्नलिखित तरीके से बताया। लिम्नॉस द्वीप पर, जहाँ कहा जाता था कि अवशेष गुप्त रूप से रखे गए थे, अनास्तासियस नाम का एक प्रमुख व्यक्ति रहता था, जो 'komit[5092] ' का पद संभालता था; उसे उसी स्थान का उत्तराधिकार मिला था जिस पर उपरोक्त दो भाइयों, सेरजियस और सेरगॉन ने, पवित्र महा शहीद यूफेमिया के सम्मान में एक चर्च बनाया था और उनके पवित्र अवशेषों को जमीन में छिपा दिया था, तथा कब्र पर एक शिलालेख वाली पत्थर की स्लैब रखी थी। इस अनास्तासियस, कोमिति, ने जब देखा कि उसकी भूमि पर सर्व-स्तुत्य शहीद का चर्च पूरी तरह से खंडहर हो गया था, तो उसने उसे उसकी मूल नींव पर फिर से बनाया और उसे उपयुक्त भव्यता से सजाया। बाद में, ईर्ष्यालु लोगों की अन्यायपूर्ण बदनामी के कारण वह दुर्भाग्य का शिकार हुआ, और उसे अन्यायपूर्वक उसके पद से हटा दिया गया। फिर वह अपने नाम से झूठे आरोपों को हटाने और अपना पद वापस पाने के लिए कॉन्स्टेंटिनोपल के लिए रवाना हुआ। वहाँ सम्राज्ञी के पास एक मध्यस्थ और पैरोकार की तलाश करते समय, किसी ने उसे बताया कि काल्सेडॉन के मेट्रोपॉलिटन उसकी मदद कर सकते हैं, क्योंकि उसे, किसी और से ज्यादा, अन्याय के खिलाफ़ खड़े होने का अधिकार था। अनास्तासियस मेट्रोपॉलिटन को खोजने के लिए निकल पड़ा और उसे महल में पाया; अपने पैरों पर गिरकर, उसने अपनी मुलाकात का उद्देश्य समझाया और मेट्रोपॉलिटन से उसकी मदद करने और उसकी ओर से मध्यस्थता करने का अनुरोध किया। हालाँकि, मेट्रोपॉलिटन ने यह कहते हुए मना कर दिया:

'मैं ऐसा नहीं कर सकता; यह मामला मेरी शक्ति से परे है।'

यह कहकर, मेट्रोपॉलिटन महल से अपने घर चले गए, जबकि अनास्तासियस उनके पीछे बिशप के आवास तक गए; चर्च का ताला खुला देख, वे प्रार्थना करने के लिए अंदर चले गए। एक लंबी प्रार्थना के बाद, जिसके दौरान वह घुटने टेककर प्रार्थना कर रहा था, वह कहीं बैठ गया: उस समय चर्च में कोई सेवा नहीं हो रही थी। चर्च के एक नौकर, जो उस सप्ताह ड्यूटी पर था, उसके पास आया और पूछा कि वह कौन है और कहाँ से आया है। अनास्तासियस ने उसे अपने बारे में सब कुछ बताया और अपना दुख उसे बयां किया, और फिर चर्च के नौकर से पूछा:

'यह चर्च किस संत को समर्पित है?'

उस व्यक्ति ने उत्तर दिया:

'यह चर्च महान शहीद, सर्व-स्तुत्य संत यूफेमिया को समर्पित है।'

जैसे ही अनास्तासियस ने यह सुना, उसने तुरंत अपने हाथ अपनी छाती पर रख लिए और प्रेम से कहा:

'हे मेरी संत यूफेमिया!'

"तुम उसे अपना क्यों कहते हो?" सेक्सटन ने पूछा।

अनास्तासियस ने उत्तर दिया:

'उसकी पवित्र अवशेष मेरे चर्च में, मेरे घर में रखी गई हैं; इसलिए मैं उसे अपना कहने की हिम्मत करता हूँ।'

पुरोहित ने कहा:

'यह कैसे हो सकता है? क्या तुम सच कह रहे हो? देखो, झूठ मत बोलना, वरना तुम्हारे लिए बुरा होगा; क्योंकि रानी सेंट यूफेमिया के पवित्र अवशेषों को खोजने के लिए बहुत कोशिश कर रही है और उसने मेट्रोपॉलिटन को ईश्वर से प्रार्थना करने का आदेश दिया है कि वह प्रकट करे कि उनके शहीद के पवित्र अवशेष कहाँ हैं।'

अनास्तासियस ने कहा:

'मुझ पर विश्वास करो, ईमानदार आदमी, मेरे पास सर्व-स्तुत्य यूफेमिया के अवशेष हैं, जो काल्सेडॉन में थे।'

यह सुनकर, चर्च के सेवक ने उससे एक पल के लिए वहीं रुकने को कहा, जबकि वह स्वयं, अत्यंत प्रसन्न होकर, यह खबर महानगरपति, आदरणीय एंड्रयू को देने के लिए दौड़ पड़ा। मेट्रोपॉलिटन अत्यंत प्रसन्न हुए और तुरंत अनास्तासियस को अपने पास बुलाकर संत की अवशेषों के बारे में उससे पूछताछ की; उसने सब कुछ विस्तार से बताया,

---

[5092] 'कोमाइट्स' शब्द मूल रूप से किसी प्रांत के सर्वोच्च अधिकारी के परिचारकों के लिए प्रयुक्त होता था, और बाद में सम्राटों के परिचारकों के लिए, जो उनकी सबसे निकटस्थ संगति बनाते थे। कांस्टेंटिन महान (306–337) के समय से, यह पद सभी दरबारी और राज्य के अधिकारियों के लिए पदवी बन गया, भले ही वे शाही अनुचर मंडल से न हों।

जैसा कि उस द्वीप के निवासियों द्वारा सर्व-प्रशंसित यूफेमिया के पवित्र अवशेषों के बारे में बताया जाता है, और कैसे उन दो भाइयों द्वारा, जिन्होंने इन अवशेषों को समुद्र से निकाला था, एक पत्थर की स्लैब पर यह अंकित किया गया था। आदरणीय मेट्रोपॉलिटन तुरंत ही परम पावन पैट्रिआर्क तारासियस के पास गए और उन्हें यह बात बताई; और वे पवित्र पैट्रिआर्क, मेट्रोपॉलिटन के साथ, अनास्तासियस को अपने साथ लेकर ज़ार और उनकी माँ के पास गए, और उन्हें मसीह के शहीद की पवित्र अवशेषों के बारे में बताया। सभी ने आनंद मनाया और ईश्वर का धन्यवाद किया, जबकि अनास्तासियस को उदारतापूर्वक पुरस्कृत किया गया और उसे उसके पूर्व पद पर बहाल कर दिया गया। तुरंत एक माल से लदा जहाज तैयार किया गया, और उसमें प्रसिद्ध पुरोहितों और शाही दरबार के सदस्यों के साथ-साथ काउंट अनास्तासियस को एक प्रतिनिधिमंडल के रूप में लेमनोस द्वीप के लिए भेज दिया गया, ताकि वहां से संत की अवशेषों को कॉन्स्टेंटिनोपल लाया जा सके; एक सुरक्षित यात्रा के बाद, वे उस द्वीप पर पहुंचे। जब स्थानीय निवासियों को पता चला कि कॉन्स्टेंटिनोपल के लोग आ गए हैं और वे सर्व-प्रशंसित यूफेमिया के अवशेष लेना चाहते हैं, तो एक बड़ी और अत्यधिक शत्रुतापूर्ण भीड़ इकट्ठा हो गई: उन्होंने शाही दूतों का विरोध करने और उन्हें उस अनमोल आध्यात्मिक खजाने को अपने द्वीप से ले जाने से रोकने की कोशिश की, और उन्होंने काउंट अनास्तासियस पर सबसे क्रूरता से हमला किया, उसे गद्दार कहकर पुकारा। और लोगों के बीच पहले ही एक गुस्सा फूट चुका था, इसलिए लेम्नोस के बिशप उन्हें मुश्किल से ही शांत कर सके, यह कहते हुए:

'लोगों, इस मामले में ईश्वर की इच्छा का विरोध न करें, और राजा के क्रोध को न भड़काएँ: *"राजा का क्रोध सिंह की गर्जना के समान है"* (नीतिवचन 19:12)।'

जब लोगों की सरगोशियाँ थम गईं, तो संत की कफ़न खोली गई और मसीह की वधू के पवित्र अवशेषों को, एक सुंदर फूल की तरह, जमीन से निकाला गया, और हवा सुगंध से भर गई; और जब भजन गाए जा रहे थे, मोमबत्तियों और धूपदानों के साथ इन अवशेषों को जहाज तक ले जाया गया। हालाँकि, लोगों ने उन्हें आँसुओं के साथ विदा किया, वे इस बात पर रो रहे थे कि वे इतने कीमती खजाने से वंचित हो रहे थे, और वे समुद्र तट पर खड़े रहे, जब तक कि वह नौका उनकी नज़रों से ओझल नहीं हो गई, तब तक वे उसे अपनी आँखों से देखते रहे। जब जहाज कॉन्स्टेंटिनोपल पहुँचा, तो पूरा शहर, राजा और उसकी माँ, और परम पवित्र पैट्रिआर्क के साथ बाहर निकला, मसीह के शहीद के सम्मानित अवशेषों का स्वागत करने, और उन्हें आनंद और उत्सव के साथ प्राप्त करने के लिए; उन्होंने उन्हें सम्मानपूर्वक उस चर्च तक ले गए जहाँ से उन्हें एक बार संप्रदायिकों द्वारा गुप्त रूप से चुरा लिया गया था, और उन्हें ठीक उसी स्थान पर और ठीक उसी पत्थर के ताबूत में रख दिया जहाँ वे पहले रखे गए थे।

इस प्रकार पवित्र महा-शहीद यूफेमिया, सर्व-स्तुत्य, एक बार फिर कोंस्टेंटिनोपल में अपने सम्मानित स्थान पर लौट आईं, और उनके चमत्कारों के लिए परमेश्वर की महिमा हुई, जो अपने संतों में महिमामय हैं, जिन्हें हमसे अब और हमेशा-हमेशा के लिए सम्मान और महिमा प्राप्त होती है। आमीन।

ट्रोपारियन, स्वर 4:

अपनी वधू-वर, मसीह से प्रेम करके, अपना दीपक प्रज्वलित करके, और सद्गुणों से प्रकाशमान होकर, सर्व-स्तुत्य यूफेमिया, तुम उनके साथ विवाह-भवन में चढ़ीं, और उनसे पीड़ा का मुकुट प्राप्त किया। परन्तु हमें क्लेशों से बचाओ, हम जो विश्वास के साथ तुम्हारी स्मृति का सम्मान करते हैं।

कॉन्टाकियन, स्वर 6:

आपने अपने वधू-वर मसीह के लिए उत्साह के साथ दुख और विश्वास के कार्य किए; परन्तु अब भी, परमेश्वर की माता से प्रार्थना करें कि विधिर्मियों और शत्रुओं का अस्थिरिपन ऑर्थोडॉक्स राजाओं के पावों तले कुचल दिया जाए, वह जो छह सौ तीस ईश्वर-वाहक पितरों की परंपरा को प्राप्त करके और संरक्षित करके, सर्व-स्तुत्य हैं।

धन्य राजकुमारी ओल्गा का नधिन, जनिका बपतस्मिा का नाम हेलेना था

11 जुलाई को स्मरणोत्सव

रूसी भूमपिर छाई मूर्तपिूजा की अंधकारमय रात्रकि अंत में, धन्य ओल्गा मसीह में पवत्रि वश्विास के उज्ज्वल दनि – 'धर्म के सूर्य' – के आगमन से पहले भोर की करिण की तरह प्रकट हुईं।

धन्य ओल्गा एक प्रसद्धि वंश से थीं: वह गोस्टोमस्लि की परपोती थीं, जो एक गौरवशाली व्यक्तथि जन्हिोंने वेलकिी नोवगोरोड पर शासन कयिा, जब तक कउिनकी ही सलाह पर, रूरकि और उनके भाइयों को वरांगयिनों द्वारा रूसी पर शासन करने के लिए बुलाया नहीं गया[5093] । ओल्गा का पैतृक प्रदेश पूरा व्यबुट्स्काया था, जो अब पस्कॉव शहर के पास स्थति है, जो उस समय अस्तत्वि में नहीं था[5094] । धन्य ओल्गा के माता-पति अपनी बेटी में एक ईमानदार और समझदार जीवन के सद्धिांतों को स्थापति करने में सफल रहे, जनिका पालन वे स्वयं भी अपनी मूर्तपिूजा के बावजूद करते थे। ओल्गा अपनी पवत्रिता और तेज बुद्धकि लिए वख्यिात थीं, जैसा कजिल्द ही स्पष्ट हो जाएगा।

अपने मृत्युशय्या पर[5095] , रूरकि ने अपने पीछे अपने बेटे इगोर को छोड़ दयिा, जो उस समय एक छोटा लड़का था; इसलिए, रूरकि ने अपने बेटे के वयस्क होने तक इगोर और स्वयं रयिासत, दोनों को अपने रश्तिेदार ओलेग की देखभाल में सौंप दयिा। ओलेग ने एक बड़ी सेना इकट्ठी की और रयिासत के युवा उत्तराधकिारी, इगोर को अपने साथ लेकर कीव के लिए रवाना हो गया। वहाँ अस्कॉल्ड और डरि को मारने के बाद, ओलेग ने कीव को अपने अधीन कर लयिा और वरांगयिन-रस क्षेत्रों का एकमात्र शासक बन गया, साथ ही अपने भतीजे इगोर के लिए रयिासत को बनाए रखा; शासन के प्रयोजनों के लिए, ओलेग को कीव और वेलीकी नोवगोरोड के बीच यात्रा करनी पड़ती थी। युवा होने पर राजकुमार इगोर ने शकिार को अपना जीवन बना लयिा। ऐसा हुआ कि नोवगोरोड के आसपास शकिार करते समय, वह प्सकोव के क्षेत्र में भटक गया; उपर्युक्त व्यबुट्स्काया बस्ती के पास शकिार का पीछा करते हुए, उसने नदी के दूसरी तरफ एक ऐसी जगह देखी जो शकिार के लिए आदर्श थी, लेकनि नाव न होने के कारण वह वहाँ नहीं पहुँच सका। कुछ ही देर बाद, इगोर ने एक नौजवान को नाव चलाते हुए देखा; उसने उसे कनिारे पर बुलाया और उसे नदी के उस पार ले जाने का आदेश दयिा। जब वे नाव चला रहे थे, इगोर ने नाव चलाने वाले के चेहरे को करीब से देखा और पाया कि वह कोई युवक नहीं बल्कि एक युवती थी; वह कोई और नहीं बल्कि धन्य ओल्गा थी, जो अपनी सुंदरता के लिए प्रसद्धि थी। ओल्गा की सुंदरता ने इगोर के दलि को भेद दयिा; उसके भीतर वासना जाग उठी; और उसने अपनी बातों से उसे बहकाना शुरू कर दयिा, उसे एक अनैतकि शारीरकि संबंध के लिए लुभाने लगा। लेकनि धन्य ओल्गा ने, वासना में डूबे इगोर के वचिारों को भांपते हुए, उसकी बातचीत को बीच में ही काट दयिा, और एक बुद्धमिान बुज़ुर्ग की तरह उससे इस तरह कहा:

'राजकुमार, एक असंभव कार्य की साजशि रचकर आप क्यों परेशान हैं? आपके शब्द मेरे साथ दुर्व्यवहार करने की आपकी नर्लिज्ज इच्छा को प्रकट करते हैं, जो कभी नहीं होनी चाहिए! – मैं इसके बारे में सुनना भी नहीं चाहती। मैं आपसे वनिती करती हूँ - मेरी बात मानिए और अपने भीतर इन हास्यास्पद और शर्मनाक वचिारों को दबा दीजिए, जनि पर आपको शर्म आनी चाहिए: याद रखिए और वचिार कीजिए कि आप एक राजकुमार हैं, और एक राजकुमार को लोगों के लिए, एक शासक और न्यायाधीश के रूप में, अच्छे कार्यों का एक चमकता हुआ उदाहरण होना चाहिए; फरि भी अब आप कसि तरह की अराजकता के कगार पर हैं?! यदि आप स्वयं, अशुद्ध वासना के वश में होकर, दुष्ट कर्म करते हैं, तो आप दूसरों को ऐसा करने से कैसे रोकेंगे और अपने प्रजा का न्यायसंगत न्याय कैसे करेंगे? ऐसी नर्लिज्ज इच्छा को त्याग दें, जसिसे ईमानदार लोग घृणा करते हैं; और भले ही आप एक राजकुमार हैं, सबसे नीच व्यक्तभिी इस कारण आपसे नफरत कर सकता है और आपको शर्मनाक उपहास का पात्र बना सकता है। और यह जान लो: भले ही मैं यहाँ अकेली हूँ और

[5093] आधारति: 1) धन्य ओल्गा का नाम, जो 'ओलेग' के पुल्लगि रूप से व्युत्पन्न एक वरांगयिन नाम है, 2) कुछ संतों की जीवनयिों से प्राप्त प्रत्यक्ष साक्ष्य, और 3) यह तथ्य कि ओल्गा राजकुमार इगोर की पत्नी थीं, जनिके लिए, एक वरांगयिन के रूप में, अपनी ही जाति से पत्नी लेना पूरी तरह से स्वाभावकि होता; इसलिए यह अधकि वश्विसनीय माना जाना चाहिए कि धन्य ओल्गा एक वरांगयिन महलिा थीं। – वरांगयिन, या नॉर्मन, स्कैंडनिेवयिाई प्रायद्वीप में रहते थे, और नोवगोरोड स्लाव से केवल फन्सि द्वारा अलग कए गए थे। वृत्तांत वरांगयिनों को बुलाने की तारीख 862 देता है, लेकनि इसे 852 का बताना अधकि सटीक है।

[5094] एक बाद की परंपरा ऐसा कहती है। व्यबुत्स्काया का पूरा क्षेत्र - जसिे अब व्यबुतनिो या लाबुतनिो के नाम से जाना जाता है - प्सकोव से बारह वर्स्ट ऊपर, वेलीकाया नदी के कनिारे स्थति है। प्राथमकि वृत्तांत (वर्ष 903 के अंतर्गत) से यह स्पष्ट है कि धन्य ओल्गा का मूल स्थान प्सकोव था, जहाँ से ओलेग उसे इगोर के पास ले आया और जहाँ वह, पूरी संभावना है, कसिी गवर्नर या बोयार की बेटी थी।

[5095] उनकी मृत्यु 879 में हुई।

तुम्हारे सामने शक्तिहीन हूँ, फिर भी तुम मुझ पर विजय नहीं पा सकोगे। लेकिन अगर तुम मुझ पर विजय पा भी लो, तो इस नदी की गहराई तुरंत मेरी रक्षा करेगी: मेरे लिए इन पानी में खुद को डुबोकर पवित्रता में मरना बेहतर है, बजाय इसके कि मेरी कुँवारी अवस्था कलंकित हो।

धन्य ओल्गा द्वारा इगोर को दिए गए शुद्धता के ऐसे उपदेशों ने उसे होश में ला दिया, और उसमें लज्जा की भावना जगा दी। वह चुप हो गया, उसे जवाब देने के लिए शब्द नहीं मिल रहे थे; इसलिए वे नदी पार कर गए, और फिर अपने-अपने रास्ते चले गए। और राजकुमार उस युवती की असाधारण बुद्धिमत्ता और पवित्रता से चकित रह गया। वास्तव में, धन्य ओल्गा का यह कार्य वास्तव में उल्लेखनीय है: यद्यपि वह सच्चे ईश्वर या उसकी आज्ञाओं को नहीं जानती थी, उसने पवित्रता की रक्षा में ऐसी वीरता दिखाई; अपनी कुँवारी पवित्रता की शुद्धता की सावधानीपूर्वक रक्षा करके, उसने युवा राजकुमार को होश में ला दिया, और पुरुष के मन के योग्य बुद्धिमानी के शब्दों से उसकी कामुकता को वश में कर लिया।

उपरोक्त घटनाओं के तुरंत बाद, राजकुमार इगोर अपने संबंधी ओलेग के साथ कीव के लिए रवाना हुए, वहाँ राजसी सिंहासन स्थापित करने के इरादे से, जिसमें वे सफल रहे: उन्होंने कीव में शासन संभाला, और वेलिकी नोवगोरोद तथा रूस की अन्य भूमि के उन शहरों में, जिन्होंने उनके सामने आत्मसमर्पण किया था, अपने-अपने गवर्नर नियुक्त किए। जब राजकुमार इगोर की शादी का समय आया, तो राजसी दरबार के योग्य एक कन्या खोजने की आशा में कई सुंदर कन्याओं को चुना गया; लेकिन उनमें से कोई भी राजकुमार को भा नहीं पाई। पवित्र और सुंदर ओल्गा को याद करते हुए, इगोर ने तुरंत अपने रिश्तेदार ओलेग को उन्हें लाने के लिए भेजा। ओलेग ओल्गा को बड़े सम्मान के साथ कीव लाया[5096] , और इगोर ने उनसे विवाह कर लिया। फिर ओलेग[5097] , इगोर का रिश्तेदार और संरक्षक, की मृत्यु भी हो गई, और इगोर ने बिना किसी चुनौती के शासन करना शुरू कर दिया। अपने स्वतंत्र शासन की शुरुआत में, इगोर ने पड़ोसी लोगों के खिलाफ लगातार युद्ध किए। वह कॉन्स्टेंटिनोपल पर भी चढ़ाई कर गया: ग्रीक भूमि के कई क्षेत्रों को जीतने के बाद, वह इस अभियान से लूट और महिमा के साथ लौटा[5098] । उसने अपने जीवन के शेष वर्ष शांति से बिताए, सीमावर्ती क्षेत्रों के साथ शांति बिनाए रखी। इस दौरान, इगोर और धन्य ओल्गा के यहाँ एक पुत्र हुआ, स्वियातोस्लाव, जो बाद में संत व्लादिमीर, प्रिंस एक्वल-टू-द-अपोस्टल्स के पिता बने। और इगोर ने कीव के ग्रैंड प्रिंसिपिल्टी के सिंहासन पर समृद्धि के साथ शासन किया: कई जगहों से उसके पास प्रचुर मात्रा में धन आता था, क्योंकि दूर-दराज के देशों ने भी उसे कई उपहार और श्रद्धांजलि भेजी।

इगोर की मृत्यु इस प्रकार हुई। कई युद्धों के बाद आई शांति का लाभ उठाते हुए, इगोर ने पारंपरिक श्रद्धांजलि एकत्र करने के लिए शहरों और क्षेत्रों का दौरा करना शुरू कर दिया। द्रव्लियिन लोगों के बीच पहुँचने पर[5099] , उसे याद आया कि उसके शासन के आरंभ में उन्होंने उसके खिलाफ विद्रोह कर दिया था, और युद्ध के बाद ही वे फिर से उसके अधीन हुए थे: इसके लिए इगोर ने द्रव्लियिन लोगों पर लगाया गया कर दोगुना कर दिया, जिससे उन पर एक भारी बोझ पड़ गया। वे, बदले में, दुखी हुए और अपने राजकुमार, माल से परामर्श करना शुरू कर दिया:

'जब एक भेड़िया भेड़ों पर हमला करने की आदत डाल लेता है, तो वह पूरे झुंड को एक-एक करके खत्म कर सकता है जब तक कि उसे मार न दिया जाए; हमारे साथ भी यही हाल है – अगर हम इगोर को नहीं मारेंगे, तो वह हम सबको नष्ट कर देगा।'

इस परामर्श के बाद, वे एक अनुकूल अवसर की तलाश करने लगे। और इसलिए, जब इगोर ने ड्रेव्लियिनों से प्राप्त कर क्यिव भेज दिया, जबकि वह स्वयं अपने कुछ अनुचरों के साथ उनके पास ही रुका रहा, तो ड्रेव्लियिनों ने इसे एक उपयुक्त क्षण समझा: उन्होंने कोरोस्टेन शहर के पास इगोर पर एक आश्चर्यजनक हमला किया; राजकुमार के अनुचर

[5096] टिप्पणी 2 देखें। ओलेग द्वारा ओल्गा को प्सकोव से इगोर के पास लाने की बात उसकी सुंदरता और महान बुद्धिमत्ता की कथा से पुष्ट होती है: ओलेग को कीव के बोयारों की बेटियों में कोई ऐसी नहीं मिली जो इन गुणों में ओल्गा का मुकाबला कर सके।

[5097] 912 में

[5098] इगोर के 941 और 944 में ग्रीकों के खिलाफ दो अभियानों का नेतृत्व करने के लिए जाना जाता है; इनमें से पहला असफल रहा। यह अंश, बेशक, दूसरे अभियान का उल्लेख करता है, जब ग्रीक सम्राट ने इगोर को एक बड़ा कर भेजने के बाद, उससे ग्रीस के खिलाफ युद्ध न करने की विनती की; यह बड़ा कर प्राप्त करने के बाद, इगोर डैन्यूब के तटों से कीव लौट आया।

[5099] पूर्वी स्लावों के बसावट के दौरान, ड्रेव्लियिन लोगों ने डेन्यूपर नदी के मध्य भाग के किनारे के जंगली क्षेत्र पर कब्ज़ा कर लिया और इसकी सहायक नदी, प्रिप्याट पर बस्तियाँ बसाईं; इसी से उनका नाम 'ड्रेव्लियिन' पड़ा।

और स्वयं राजकुमार की हत्या कर दी, और उन्हें वहीं दफ़ना दिया। – यही था राजकुमार इगोर का अंत – रूस की भूमि का एक अच्छा शासक, जिसने पड़ोसी जनजातियों में भय पैदा किया था। अपने संरक्षक ओलेग की मृत्यु के बाद, इगोर बत्तीस साल तक जीवित रहा[5100] ।

जब इगोर की हत्या की खबर कीव पहुँची, तो ओल्गा की आँखों में आँसू आ गए; उसने अपने बेटे स्वियातोस्लाव के साथ मिलकर अपने पति का शोक मनाया, और कीव के सभी निवासी भी रो पड़े। इगोर की हत्या के बाद, ड्रेव्लियनों ने एक दुस्साहसी योजना बनाई: वे ओल्गा को अपने राजकुमार माल की पत्नी बनाना चाहते थे और इगोर के उत्तराधिकारी, युवा स्वियातोस्लाव, की गुप्त रूप से हत्या करना चाहते थे। इस तरह, द्रेव्लियन अपने राजकुमार की शक्ति बिढ़ाने की उम्मीद कर रहे थे। उन्होंने तुरंत नाव से बीस चुने हुए लोगों को ओल्गा के पास भेजा, ताकि उससे अपने राजकुमार की पत्नी बनने के लिए कहा जा सके; और उसके मना करने की स्थिति में, उन्हें धमकियों से उसे मजबूर करने का आदेश दिया गया था - ताकि, यदि आवश्यक हो तो बलपूर्वक भी, वह उनके स्वामी की पत्नी बन जाए। दूत नाव से कीव पहुँचे और किनारे पर उतरे। दूतों के आगमन की खबर मिलते ही, राजकुमारी ओल्गा ने ड्रेव्लियनों को अपने पास बुलाया और उनसे पूछा:

'क्या आप सद्भावना से आए हैं, माननीय मेहमानों?'

'नेक इरादों से,' उन्होंने उत्तर दिया।

'तो मुझे बताओ,' ओल्गा ने सुझाव दिया, 'तुम हमसे ठीक-ठीक क्यों आए हो?'

पुरुषों ने उत्तर दिया:

'ड्रेव्लियन लोगों ने हमें आपके पास इन शब्दों के साथ भेजा है: "इस बात पर क्रोधित न हों कि हमने आपके पति को मार डाला, क्योंकि वह, एक भेड़िये की तरह, लूट-पाट करता था और डकैती करता था। और हमारे राजकुमार अच्छे शासक हैं जिन्होंने ड्रेव्लियन भूमि का विस्तार किया है। हालाँकि, हमारे वर्तमान राजकुमार इगोर से कहीं बेहतर हैं: वे युवा और सुंदर होने के साथ-साथ सभी के प्रति कोमल, स्नेही और दयालु भी हैं। तो चलिए, हमारे राजकुमार से विवाह कर लीजिए - आप हमारी रानी और ड्रेव्लियन भूमि की शासक बनेंगी।'

राजकुमारी ओल्गा ने अपने पति के प्रति अपने दुख और हृदय के शोक को छिपाते हुए, राजदूतों से दिखावे की खुशी के साथ कहा:

'आपके शब्द मुझे भाए,' क्योंकि मैं अपने पति को पुनर्जीवित नहीं कर सकती, और विधवा बने रहना मेरे लिए कोई आसान बात नहीं है: एक महिला के रूप में, मैं ऐसी रियासत पर ठीक से शासन करने की स्थिति में नहीं हूँ; और मेरा बेटा अभी भी केवल एक छोटा लड़का है। 'इसलिए, मैं खुशी-खुशी आपके युवा राजकुमार से विवाह करूँगी; इसके अलावा, मैं स्वयं भी अभी बूढ़ी नहीं हुई हूँ। अब जाओ और अपनी नावों में आराम करो; सुबह मैं तुम्हें एक सम्मान समारोह के भोज के लिए बुलाऊँगी, जिसका मैं तुम्हारे लिए आयोजन करूँगी, ताकि तुम्हारे आगमन का कारण और तुम्हारे प्रस्ताव के लिए मेरी सहमति सभी को पता चल जाए; और फिर मैं तुम्हारे राजकुमार के पास जाऊँगी। जहाँ तक आपकी बात है, जब सुबह दूत आपको दावत के लिए बुलाने आएँ, तो इस बात का ध्यान रखना कि ऐसा करते हुए, आपको न केवल भेजने वाले राजकुमार के सम्मान को, बल्कि अपने स्वयं के सम्मान को भी बनाए रखना है: तुम दावत में उसी तरह पहुँचोगे जैसे तुम कीव में पहुँचे थे, यानी, उन नावों में जो कीव के लोग अपने सिर पर उठाकर लाएँगे – ताकि हर कोई तुम्हारी कुलीनता और तुम्हारे राजकुमार के प्रति मेरे प्रेम को देखे, जिसके कारण मैं तुम्हें अपने लोगों के सामने इतनी बड़ी सम्मान की दावत दे रहा हूँ।

ड्रेव्लियन खुशी-खुशी अपनी नावों में चले गए। हालाँकि, राजकुमारी ओल्गा, अपने पति की हत्या का बदला लेने के लिए, इस बात पर विचार कर रही थी कि वह उन पर किस प्रकार की मृत्यु ला सकती है। उसी रात उसने राजकुमार के देहाती महल के आंगन में एक गहरी खाई खोदने का आदेश दिया, जहाँ दावत के लिए एक शानदार हॉल भी तैयार किया जा रहा था। अगले सुबह, राजकुमारी ने सम्मानित पुरुषों को दामादों को दावत पर आमंत्रित करने के लिए भेजा; वे, हालांकि, अपनी नावों में पागलों की तरह बैठे हुए, बोले:

'हम पैदल नहीं जाएँगे, न ही घोड़ों पर सवार होंगे, न रथों में यात्रा करेंगे; बल्कि जैसे हमें हमारे राजकुमार ने नावों में भेजा है, वैसे ही हमें अपने सिर पर उठाकर अपनी राजकुमारी के पास ले जाओ।'

हालाँकि, कीव के लोगों ने उनकी मूर्खता पर हँसते हुए उत्तर दिया:

[5100] उनकी हत्या 945 में कर दी गई थी।

'हमारे राजकुमार को मार दिया गया है, और हमारी राजकुमारी आपके राजकुमार से विवाह करने वाली है; और अब हम, गुलामों की तरह, वही कर रहे हैं जैसा हमें आदेश दिया गया है।'

और उन्हें एक-एक करके छोटी नावों में बिठाकर, कीव के लोगों ने उन्हें झूठे घमंड से फूले-फूले ले गए। जब द्रेव्लियनों को उपर्युक्त राजसी प्रांगण में लाया गया, तो ओल्गा ने अपने कक्ष से देखते हुए उन्हें उस उद्देश्य के लिए तैयार की गई एक गहरी खाई में फेंकने का आदेश दिया। फिर, स्वयं खाई के पास जाकर और उस पर झुककर, उन्होंने पूछा:

'क्या तुम्हें यह सम्मान पसंद है?'

लेकिन वे चिल्ला उठे:

'हाय हमारा विनाश! हमने इगोर को मार डाला, और इससे हमें न तो कोई भला मिला, बल्कि हमें तो उससे भी भयानक मौत मिली है।'

और ओल्गा ने आदेश दिया कि उन्हें उसी गड्ढे में ज़िंदा दफ़ना दिया जाए।

यह करने के बाद, राजकुमारी ओल्गा ने तुरंत अपने संदेशवाहक को द्रेव्लियनों के पास निम्नलिखित शब्दों के साथ भेजा:

– 'यदि तुम सचमुच चाहते हो कि मैं तुम्हारे राजकुमार से विवाह करूँ, तो मुझे लेने के लिए एक राजदूत मंडल भेजो, जो पहले वाले से अधिक संख्या में और उच्च पद का हो; वह मुझे सम्मानपूर्वक तुम्हारे राजकुमार के पास ले जाए; अपने लोगों – राजदूतों – को जल्द से जल्द भेजो, इससे पहले कि कीव के लोग मुझे रोक लें।'

द्रेव्लियनों ने बड़ी खुशी और जल्दबाजी में ओल्गा के पास अपने पचास सबसे प्रतिष्ठित पुरुषों को भेजा—जो राजकुमार के बाद द्रेव्लियन भूमि के सबसे प्रमुख बुजुर्ग थे। जब वे कीव पहुँचे, तो ओल्गा ने उनके लिए एक स्नानागार तैयार करने का आदेश दिया और उन्हें एक अनुरोध के साथ संदेश भेजा: राजदूतों को, अपनी कठिन यात्रा के बाद, स्नानागार में स्नान करने, आराम करने, और केवल उसके बाद ही उसके पास आने दें; वे खुशी-खुशी स्नानागार में चले गए। जैसे ही द्रेव्लियन स्नान करने लगे, वहाँ जानबूझकर तैनात किए गए नौकरों ने बाहर से दरवाज़े मजबूती से बंद कर दिए, स्नानागार के चारों ओर पुआल और लकड़ी का ढेर लगाकर उसमें आग लगा दी; इस प्रकार द्रेव्लियन के बुजुर्ग, नौकरों के साथ, आग में जलकर मर गए। एक बार फिर, ओल्गा ने द्रेव्लियनों के पास एक संदेशवाहक भेजा, जो उनके राजकुमार से विवाह करने के लिए अपने निकट आगमन की घोषणा कर रहा था और उन्हें उसी स्थान पर मीड और हर तरह के पेय और भोजन तैयार करने का आदेश दे रहा था जहाँ उनके पति, की हत्या की गई थी, ताकि पहुँचने पर, वह अपने दूसरे विवाह में प्रवेश करने से पहले अपने पहले पति की याद में एक त्रिज़ना (शोक-भोज) कर सकें, अर्थात्, विधिर्मी रीति-रिवाज के अनुसार एक स्मृति-भोज; और केवल तभी विवाह होना चाहिए। अत्यंत प्रसन्न होकर, द्रेव्लियनों ने सब कुछ प्रचुर मात्रा में तैयार कर लिया। हालाँकि, राजकुमारी ओल्गा, अपने वचन के प्रति सच्ची रहीं, और एक बड़ी सेना के साथ द्रेव्लियनों के लिए रवाना हुईं, मानो वह शादी के बजाय युद्ध की तैयारी कर रही हों। जब ओल्गा द्रेव्लियनों की राजधानी कोरोस्टेन पहुँची, तो वे लोग उत्सवी वस्त्र पहनकर उससे मिलने बाहर आए – कुछ पैदल, कुछ घोड़ों पर सवार – और उन्होंने बड़े उत्साह और खुशी के साथ उसका स्वागत किया। हालाँकि, ओल्गा पहले अपने पति की कब्र पर गईं, जहाँ उन्होंने उनके लिए जोर-जोर से विलाप किया; फिर विधिर्मी रीति-रिवाज के अनुसार स्मृति-समारोह संपन्न करने के बाद, उन्होंने कब्र के ऊपर एक बड़ा समाधि-टीला बनाने का आदेश दिया। और द्रेव्लियों ने उनसे कहा:

'राजकुमारी! हमने आपके पति को इसलिए मारा क्योंकि वे एक दरिंदे भेड़िये की तरह हमारे प्रति निर्दयी थे। लेकिन आप दयालु हैं, ठीक हमारे राजकुमार की तरह - अब हम शांति से रहेंगे!'

ओल्गा ने उत्तर दिया:

'मैं अब अपने पहले पति के लिए शोक नहीं मनाती, क्योंकि मैंने उनकी कब्र पर वह सब कर लिया है जो आवश्यक था; अब समय आ गया है कि मैं आपके राजकुमार के साथ अपनी दूसरी शादी की तैयारी खुशी-खुशी करूँ।'

द्रेव्लियनों ने, अपनी ओर से, ओल्गा से अपने पहले और दूसरे दूतों के बारे में पूछा।

'वे हमारे पीछे एक अलग मार्ग से आ रहे हैं, और अपने साथ मेरा सारा धन ला रहे हैं,' राजकुमारी ने उत्तर दिया।

इसके बाद, ओल्गा ने अपना शोक-वस्त्र उतारकर राजकुमारी के योग्य चमकीले विवाह के वस्त्र धारण कर लिए, और साथ ही अपने चेहरे पर प्रसन्नता का भाव ला लिया। उन्होंने द्रेव्लियनों को खाने, पीने और आनंदित होने का आदेश दिया, और अपने लोगों को द्रेव्लियनों की सेवा करने तथा उनके साथ खाने, लेकिन नशे में न होने का आदेश दिया। जब

द्रेव्लयिानों ने मन भर पी ली, तो राजकुमारी ने अपने लोगों को पहले से तैयार कए गए हथयिारों—तलवारों, छुरयिों और भालों—से उन पर हमला करने का आदेश दयिा, जसिमें पाँच हज़ार या उससे अधकि लोग मारे गए। इस प्रकार, द्रेव्लयिानों के उत्सव में खून मलिाकर और इस तरह अपने पतकिी हत्या का बदला लेकर, ओल्गा कीव लौट आई।

अगले वर्ष, ओल्गा ने एक सेना इकट्ठी की और अपने बेटे स्वयितोस्लाव इगोरवचि के साथ ड्रेव्लयिनों के खलिाफ चली, उसे अपने पतिा की मौत का बदला लेने के लिए इस अभयिान में शामलि कयिा। ड्रेव्लयिन काफी बड़ी सैन्य ताकत के साथ उनका सामना करने बाहर आए; टकराव के बाद[5101] , दोनों पक्षों ने तब तक भयंकर लड़ाई लड़ी जब तक ककिीववासी ड्रेव्लयिनों पर हावी नहीं हो गए; और कीववासयिों ने ड्रेव्लयिनों का पीछा करते हुए राजधानी कोरोस्टेन तक पहुँचकर उन्हें तलवार के घाट उतार दयिा। ड्रेव्लयिानों ने खुद को शहर के अंदर ही घेर लयिा, और ओल्गा ने पूरे एक साल तक उस पर लगातार घेराबंदी की। हालाँकि, यह देखकर कशिहर पर धावा बोलकर कब्जा करना मुश्कलि होगा, बुद्धमिान राजकुमारी ने नम्निलखिति चाल चली। उसने शहर के अंदर घरि ड्रेव्लयिानों को संदेश भेजा:

'तुम मूर्ख, मेरे सामने आत्मसमर्पण करने के बजाय खुद को भूख से क्यों मारना चाहते हो? आखरिकार, तुम्हारे बाकी सभी शहर तो पहले ही मुझे वफादारी की कसम दे चुके हैं; उनके नविासी कर देते हैं और अपने खेत जोतकर अपने शहरों और गांवों में शांतसिे रहते हैं।'

जवाब में, जन्होंने खुद को शहर में घेर रखा था, उन्होंने कहा, 'हम भी आपके सामने आत्मसमर्पण करना चाहेंगे, लेकनि हमें डर है कआिप एक बार फरि अपने राजकुमार का बदला लेना चाहेंगे।'

तब ओल्गा ने उनके पास नम्निलखिति शब्दों के साथ एक दूसरा दूत भेजा:

'मैंने पहले ही आपके बुज़ुर्गों और अन्य लोगों से एक से अधकि बार बदला ले लयिा है; और अब मैं प्रतशिोध नहीं, बल्कआिपसे कर और समर्पण की मांग करती हूँ।'

ड्रेव्लयिानों ने उसे वह सब कुछ देने के लिए सहमतदि दी जो वह चाहती थी। ओल्गा ने उनसे प्रस्ताव रखा:

'मैं जानती हूँ कआिप अब युद्ध से गरीब हो गए हैं और मुझे शहद, मोम, चमड़े या व्यापार के लिए उपयुक्त अन्य सामानों में कर नहीं दे सकते; और न ही मैं स्वयं आप पर भारी कर का बोझ डालना चाहती हूँ; 'मुझे अपने समर्पण के प्रतीक के रूप में कुछ छोटा-सा कर दो—भले ही वह हर घर से सर्फि तीन कबूतर और तीन गौरैया ही क्यों न हों। यह मेरे लिए तुम्हारे समर्पण से आश्वस्त होने के लिए काफी होगा।'

ड्रेव्लयिनों को यह कर इतना तुच्छ लगा कउिन्होंने ओल्गा के स्त्री-सुलभ नर्णिय का मज़ाक उड़ाया; उन्होंने तुरंत हर घर से तीन कबूतर और तीन गौरैया इकट्ठा कीं और उन्हें एक धनुष के साथ उसके पास भेज दयिा। ओल्गा ने शहर से आए आदमयिों से कहा:

'लो, अब तुमने मुझे और मेरे बेटे को कर अदा कर दयिा है – शांतसिे रहो; कल मैं तुम्हारे नगर से वापस चली जाऊँगी और घर के लिए रवाना होऊँगी।'

[5102]यह कहकर, उन्होंने उन लोगों को जाने का इशारा कयिा; राजकुमारी की बातें सुनकर सभी नगरवासी बहुत प्रसन्न हुए। ओल्गा ने, अपनी ओर से, पक्षयिों को अपने योद्धाओं में बाँट दयिा, और आदेश दयिा कशिाम को देर से, हर कबूतर और हर गौरैया को गंधक में भगिोए हुए कपड़े का एक टुकड़ा बांधा जाए, जसिे फरि आग लगा दी जानी थी ताकसिभी पक्षी एक साथ हवा में उड़ सकें। योद्धाओं ने इस आदेश का पालन कयिा: पक्षी उस शहर में वापस उड़ गए जहाँ से उन्हें ले जाया गया था; हर कबूतर अपने घोंसले में और हर गौरैया अपनी जगह पर उड़ गई, और तुरंत ही शहर में कई जगह आग लग गई, जबकओिल्गा ने उसी क्षण अपनी सेना को शहर को चारों ओर से घेरने और हमला शुरू करने का आदेश दयिा। शहर के नविासी, आग से बचने के लिए, दीवारों के पीछे से बाहर भागे और दुश्मन के हाथों में पड़ गए; इस प्रकार कोरोस्टेन पर कब्जा हो गया। कई ड्रेव्लयिन तलवार के घाट उतारे गए, अन्य, अपनी पत्नयिों और बच्चों के साथ, आग में जलकर मर गए, जबककिुछ और शहर के नीचे बहने वाली नदी में डूब गए; उसी समय, ड्रेव्लयिनों का राजकुमार भी मारा गया। जो लोग बच गए, उनमें से कई को बंदी बना लयिा गया, जबकअिन्य को राजकुमारी ने उनके घरों में छोड़ दयिा, हालांकि

[5101] जब दोनों सेनाओं का आमना-सामना हुआ, तो युवा स्वयितोस्लाव ने ड्रेव्लयिनों की ओर एक भाला फेंका; एक बच्चे के हाथ से फेंका गया वह भाला घोड़े के कानों के बीच से उड़कर उसकी टांगों में जा लगा; जसि पर कीव की ड्रुज़नि के सरदारों ने कहा: 'राजकुमार ने तो आरंभ कर दयिा है – अब ड्रुज़नि राजकुमार का अनुसरण करे,' और युद्ध भड़क उठा।

[5102] इस श्रद्धांजलकिा दो-तहिाई हस्सिा कीव को जाता था, और एक-तहिाई हस्सिा ओल्गा के स्वामत्वि वाले वस्होरोद को।

उसने ड्रेव्लयिन पर एक भारी कर लगा दयिा। इस प्रकार राजकुमारी ओल्गा ने ड्रेव्लयिनों पर अपने पतकिी हत्या का बदला लयिा, ड्रेव्लयिनों की पूरी भूमकिो अपने अधीन कर लयिा, और महमिा और वजिय के साथ कीव लौट आई।

और राजकुमारी ओल्गा ने रूसी भूमकि के क्षेत्रों पर अपने अधकिार के तहत शासन एक महलि के रूप में नहीं, बल्कएिक शक्तशिाली और बुद्धमिान पुरुष की तरह कयिा, सत्ता को दृढ़ता से अपने हाथों में रखते हुए और अपने दुश्मनों के खलिाफ बहादुरी से अपनी रक्षा करते हुए। दुश्मनों को उससे डर लगता था, फरि भी अपने लोगों द्वारा एक दयालु और धार्मकि शासक, एक ऐसे न्यायप्रयि न्यायाधीश के रूप में प्रयि थी जसिने कसिी पर अत्याचार नहीं कयिा, दया के साथ दंड दयिा – और अच्छे लोगों को पुरस्कृत कयिा; उसने दुष्टों में भय पैदा कयिा, प्रत्येक को उनके कर्मों के अनुसार पुरस्कृत कयिा; शासन के सभी मामलों में उन्होंने दूरदर्शति और बुद्धमिानी का प्रदर्शन कयिा। इसके अलावा, हृदय से दयालु ओल्गा, बेसहारा, गरीब और ज़रूरतमंदों के प्रतउिदार थीं; न्यायसंगत अनुरोधों को उन्होंने तुरंत स्वीकार कर लयिा, और वह तुरंत उन्हें पूरा करती थीं। एक वधिर्मी होते हुए भी, उसके सभी कार्य ईश्वर को प्रसन्न करते थे, मानो वे ईसाई अनुग्रह के योग्य हों। इन सब के साथ-साथ, ओल्गा ने संयम और पवत्रिता का जीवन जयिा: वह दोबारा शादी नहीं करना चाहती थी, बल्कशिुद्ध वधिवा बनी रही, और अपने बेटे के वयस्क होने तक उसके राजसी अधकिारों की रक्षा करती रही। जब वह वयस्क हो गया, तो उसने शासन के सभी मामले उसे सौंप दिए, जबकविह स्वयं, सार्वजनकि जांच और पद की जम्मिेदारयिों से अलग होकर, शासन की चतिाओं से मुक्त होकर चैरटिी के कार्यों में स्वयं को समर्पति कर दी।

एक अनुकूल समय आया जब प्रभु ने स्लाव लोगों को, जो अवश्विास से अंधा हो गए थे, पवत्रि वश्विास के प्रकाश से प्रबुद्ध करने, उन्हें सत्य के ज्ञान की ओर ले जाने, और उन्हें मोक्ष के मार्ग पर मार्गदर्शन करने की इच्छा की। प्रभु ने कठोर-हृदय पुरुषों की लज्जा के लिए, इस प्रबोधन की शुरुआत एक नाजुक महलि, अर्थात् धन्य ओल्गा के माध्यम से प्रकट करने की कृपा की। क्योंकजिैसे उन्होंने पहले ही मरि्रा उठाने वाली महलिाओं को अपने पुनरुत्थान की सूचक बना दयिा था (मत्ती 28:9-10), और रानी हेलेना के माध्यम से पृथ्वी की गहराइयों से उस गौरवशाली क्रूस को प्रकट कयिा, जसि पर उन्हें सूली पर चढ़ाया गया था, उसी प्रकार बाद में, रस की भूमि में, उन्होंने एक अद्भुत महलि, एक नई हेलेना - राजकुमारी ओल्गा के माध्यम से पवत्रि वश्विास को स्थापति करने की कृपा की। प्रभु ने उन्हें अपने परम पवत्रि नाम के लिए एक योग्य पात्र के रूप में चुना - ताकविह इसे रूस की भूमि में हर जगह ले जा सकें। उन्होंने उनके हृदय में अपनी अदृश्य कृपा का प्रभात जगाया, और उनकी सूक्ष्मदर्शी आँखें उस सच्चे ईश्वर के ज्ञान के लिए खोल दीं, जसिे वह अभी तक नहीं जानती थीं। वह पहले ही मूर्तपिूजक दुष्टता की धोखाधड़ी और भ्रम को पहचान चुकी थी, और इस बात पर एक स्वयंसद्धि सत्य की तरह आश्वस्त हो चुकी थी कमिूर्ख लोगों द्वारा पूजी जाने वाली मूर्तयिाँ देवता नहीं, बल्कमिानव हाथों की नरि्जीव रचनाएँ थीं; इसलिए, उसने न केवल उनका सम्मान नहीं कयिा, बल्कउिनसे घृणा भी की। जैसे एक व्यापारी कीमती मोती खोजता है, वैसे ही ओल्गा ने भी पूरे मन से परमेश्वर की सच्ची उपासना की खोज की, और उसे नम्निलखिति तरीके से पाया। परमेश्वर की व्यवस्था से, उसने कुछ लोगों से सुना कविकेवल एक ही सच्चा परमेश्वर है, जो स्वर्ग, पृथ्वी और सभी सृष्टकिा सृष्टकिर्ता है, जसि पर यूनानी भी वश्विास करते हैं; और यह कउिसके अलावा कोई अन्य परमेश्वर नहीं है[5103] । ईश्वर के सच्चे ज्ञान को प्राप्त करने के लिए उत्सुक और स्वभाव से सुस्त न होने के कारण, ओल्गा स्वयं ग्रीकों के पास जाना चाहती थी, ताकविह अपनी आँखों से ईसाई पूजा देख सके और सच्चे ईश्वर के बारे में उनकी शकि्षा से पूरी तरह से आश्वस्त हो सके। उच्च पदस्थ पुरुषों के साथ, वह एक बड़े दल के साथ समुद्र मार्ग से कॉन्स्टेंटनिोपल के लिए रवाना हुई; वहाँ सम्राट और पादरी द्वारा उसका बड़े सम्मान से स्वागत कयिा गया, जन्हिें ओल्गा ने ऐसे गणमान्य व्यक्तयिों के लिए उपयुक्त कई उपहार भेंट कएि। कॉन्स्टेंटनिोपल में, ओल्गा ने ईसाई धर्म का अध्ययन कयिा, हर दनि ईश्वर के वचन को ध्यान से सुना और धार्मकि अनुष्ठानों की भव्यता तथा ईसाई जीवन

[5103] वैरांगयिन ऐसे थे - ईसाई, जनिकी संख्या राजकुमार इगोर के अनुचर दल में बहुत थी। प्रसद्धि इतहिासकार ई.ई. गोलुबनिस्की कहते हैं, 'एक महान बुद्धमिान महलि के रूप में,' ओल्गा ने नश्चिति रूप से इस नए धर्म के इन वैरांगयिनों पर ध्यान दयिा होगा; अपनी ओर से, वरांगयिों ने भी, ओल्गा की बुद्धमित्ता पर भरोसा करते हुए, स्वाभावकि रूप से उसे धर्मांतरति करने की उम्मीद की होगी। अंततःईसाई वरांगयिों के उपदेश ने ही ओल्गा को ईसाई बनने का नरि्णय लेने के लिए प्रेरति कयिा। हम जानते हैं कविह केवल महान बुद्धकिी ही नहीं, बल्कएिक राजनेता जैसा मन वाली महलि थीं। इस परस्थितिि ने उन लोगों के लिए, जन्होंने ईसाई धर्म की सच्चाई के बारे में उन्हें मनाने का काम अपने ऊपर ले लयिा था, यह काम आधा कठनि कर दयिा होगा। यह तथ्य कईसाई धर्म यूरोप के लगभग सभी लोगों का धर्म बन गया था, और कसिी भी स्थतिि में उनमें से सबसे उत्कृष्ट लोगों का धर्म था, – यह तथ्य कउिसके अपने ही संबंधयिों (वारांगयिनों) के बीच भी, अन्य लोगों के उदाहरण का अनुसरण करते हुए, इसकी ओर एक मजबूत आंदोलन शुरू हो गया था – ओल्गा के मन को प्रभावति कएि बनिा नहीं रह सका, जसिसे वह इस अपरहिार्य नष्किर्ष पर पहुँची कश्रेष्ठ लोगों का धर्म भी श्रेष्ठ ही होना चाहिए (History of the Russian Church, vol. 1, 1st half, दूसरा संस्करण, पृ. 75)।

के अन्य पहलुओं को देखा। उसका हृदय ईश्वर के प्रति प्रेम से प्रज्वलित हो उठा, जिन पर वह बिना किसी संदेह के विश्वास करती थी; और इस प्रकार ओल्गा ने पवित्र बपतिस्मा ग्रहण करने की अपनी इच्छा व्यक्त की। ग्रीक सम्राट, जो उस समय विधुर थे, ओल्गा को अपनी पत्नी बनाना चाहते थे: वे उसकी सुंदरता, उसकी समझदारी, उसके साहस, उसकी प्रसिद्धि और साथ ही रूसी भूमि की विशालता से आकर्षित थे। सम्राट ने ओल्गा से कहा:

'हे राजकुमारी ओल्गा! आप एक ईसाई रानी बनने और हमारे राज्य की इस राजधानी में हमारे साथ रहने के योग्य हैं।'

और सम्राट ने ओल्गा से अपने साथ विवाह करने के लिए बात करनी शुरू कर दी। हालाँकि, उसने यह संकेत दिया कि विवाह ज़ार के प्रस्ताव को अस्वीकार नहीं कर रही है, बल्कि पहले बपतिस्मा लेने का अनुरोध किया, यह कहते हुए:

'मैं यहाँ पवित्र बपतिस्मा के लिए आई हूँ, विवाह के लिए नहीं; एक बार मेरा बपतिस्मा हो जाने के बाद, तब हम विवाह की बात कर सकते हैं, क्योंकि एक अधर्मी और बिना बपतिस्मा वाली पत्नी का एक ईसाई पति के साथ मिलना अनुमत नहीं है।' ज़ार ने उनके बपतिस्मा के लिए दबाव डालना शुरू कर दिया: पैट्रिआर्क ने, पवित्र विश्वास के सत्यों में ओल्गा को पर्याप्त रूप से शिक्षित करके, इस प्रकार उन्हें बपतिस्मा के लिए तैयार किया। और जब बपतिस्मा का कुंड पहले से ही तैयार हो चुका था, तो ओल्गा ने यह अनुरोध करना शुरू कर दिया कि ज़ार स्वयं उसके धर्मपिता बनें: 'मैं,' उसने कहा, 'तब तक बपतिस्मा नहीं लूंगी जब तक ज़ार स्वयं मेरे धर्मपिता न बनें: मैं इस जगह बिना बपतिस्मा के चली जाऊँगी - और आप मेरी आत्मा के लिए ईश्वर के समक्ष जवाबदेह होंगे।' ज़ार ने उसकी मांग मान ली, और पैट्रिआर्क ने ओल्गा को बपतिस्मा दिया, जबकि ज़ार उसके गॉडफादर बने, और उन्होंने उसे पवित्र बपतिस्मा के कुंड से ग्रहण किया। ओल्गा का नाम हेलेना रखा गया, ठीक उसी तरह जैसे पहले ईसाई रानी, महान कॉन्स्टेंटिन की माँ का नाम हेलेना रखा गया था। उनके बपतिस्मा के बाद, लिटिर्जी के दौरान, पैट्रिआर्क ने ओल्गा को मसीह के परम शुद्ध शरीर और रक्त के दैवी रहस्य प्रदान किए और उन्हें इन शब्दों के साथ आशीर्वाद दिया:

'रूस की स्त्रियों में धन्य हैं आप, क्योंकि आपने अंधकार को त्यागकर सच्ची रोशनी की खोज की है; मूर्तिपूजक बहुदेववाद से घृणा करके, आपने एक सच्चे ईश्वर से प्रेम किया है; आपने अमर जीवन से सगाई करके अनंत मृत्यु से मुक्ति पाई है। अब से, रूस की भूमि के पुत्र आपका सम्मान करेंगे!'

इस प्रकार पैट्रिआर्क ने उन्हें आशीर्वाद दिया। ओल्गा के साथ आए कई पुरुष और महिलाएँ भी बपतिस्मा ग्रहण कर चुके थे, और राजकुमारी ओल्गा के बपतिस्मा के अवसर पर कॉन्स्टेंटिनोपल में बहुत खुशी थी: ज़ार ने, अपनी ओर से, उस दिन एक बड़ा भोज आयोजित किया, और सभी ने हमारे ईश्वर मसीह की महिमा करते हुए आनंद मनाया। तब ज़ार ने फिर से ओल्गा से विवाह का विषय छेड़ा, जिन्हें उनके पवित्र बपतिस्मा में हेलेना नाम दिया गया था। लेकिन धन्य हेलेना ने उनसे उत्तर दिया:

'तुम, मेरी धर्मपुत्री, मुझे अपनी पत्नी कैसे बना सकती हो? क्योंकि यह न केवल ईसाई कानून के अनुसार बल्कि मूर्तिपूजक रीति-रिवाज के अनुसार भी घृणित और अस्वीकार्य माना जाता है, कि एक पिता अपनी बेटी को अपनी पत्नी बनाए।'

'तुमने मुझे चकमा दे दिया, ओल्गा!' ज़ार ने कहा।

'मैंने तुम्हें पहले ही बताया था,' धन्य ओल्गा ने उत्तर दिया, 'कि मैं यहाँ आपके साथ शासन करने के इरादे से नहीं आई हूँ—क्योंकि रूस की भूमि में मेरे और मेरे पुत्र के पास पर्याप्त अधिकार है—बल्कि अमर राजा, ईश्वर मसीह की दुल्हन बनने के लिए आई हूँ, जिन्हें मैं अपनी पूरी आत्मा से प्रेम करती हूँ, और उनके शाश्वत राज्य के योग्य बनने की इच्छा रखती हूँ।'

तब ज़ार ने, अपनी अवास्तविक मंशा और कामुक प्रेम को त्यागकर, धन्य ओल्गा से अपनी बेटी के रूप में आध्यात्मिक प्रेम करने लगा, उस पर उदार उपहारों की वर्षा की, और उसे शांतिपूर्वक विदा कर दिया। जब वह ज़ारग्राद से रवाना हुईं, तो धन्य ओल्गा पैट्रिआर्क के पास गईं और प्रस्थान करते समय आशीर्वाद मांगते हुए उनसे कहा:

'हे पवित्र पिता, मेरे लिए ईश्वर से प्रार्थना कीजिए, क्योंकि मैं अपने देश लौट रही हूँ, जहाँ मेरा पुत्र मूर्तिपूजक भ्रम में है और सभी लोग अपनी प्राचीन दुष्टता में पत्थर की तरह कठोर हैं—प्रभु आपकी पवित्र प्रार्थनाओं के द्वारा मुझे वहाँ सभी बुराइयों से बचाएँ।'

पैट्रिआर्क ने उनसे उत्तर दिया:

'हे पवत्रि आत्मा में मेरी वशि्वासयोग्य और धन्य बेटी। मसीह, जनिमें तुम पवत्रि बपतस्मिा के द्वारा परधिानति हुईं, स्वयं तुम्हें हर बुराई से बचाएँ, जैसे उन्होंने नोआ को जलप्रलय से बचाया था, सदोम से लूत, फरिौन से मूसा और इस्राएल, शाऊल से दाऊद, सहिों के मुँह से दानयिेल, और भट्टी से तीन जवानों को बचाया। इसी प्रकार प्रभु, , आपको वपित्तसि बचाए; आप अपने लोगों में धन्य हैं, और आपके पोते-पोतयिाँ और परपोते-परपोतयिाँ आपके अंतमि दनिों तक आपका सम्मान करेंगे।

धन्य ओल्गा ने यह आशीर्वाद पैट्रआिर्क से सबसे कीमती उपहारों से भी अधकि कीमती खजाने के रूप में प्राप्त कयिा; इसके साथ ही, उन्हें पवत्रिता और प्रार्थना, उपवास और संयम, और ईश्वर-प्रसन्न करने वाले ईसाई जीवन की सभी अच्छी कृत्यों के बारे में शकि्षा भी मलिी। इसके बाद, धन्य ओल्गा ने पैट्रआिर्क से पवत्रि क्रॉस, पवत्रि प्रतमिाएँ, पुस्तकें और दैवीय पूजा के लिए आवश्यक अन्य वस्तुएँ प्राप्त कीं; उन्हें पैट्रआिर्क से पुरोहति और धर्मकर्मी भी मलि। और धन्य ओल्गा बड़ी खुशी के साथ कॉन्स्टेंटनिोपल से अपने देश के लिए रवाना हुईं[5104] ।

कहा जाता है कि पवत्रि क्रॉस, जो उन्होंने पैट्रआिर्क के हाथ से प्राप्त कयिा था, पर नम्निलखिति शलिालेख अंकति था: 'धन्य ओल्गा द्वारा प्राप्त पवत्रि बपतस्मिा के माध्यम से रूसी भूमकिो ईश्वर में जीवन के लिए नवीनीकृत कयिा गया है।' धन्य ओल्गा की मृत्यु के बाद, वशि्वासयिों ने इस क्रॉस को महा राजकुमार यारोस्लाव व्लादमिीरोवचि के दनिों तक रखा; उन्होंने कीव में संत सोफयिा का भव्य और सुंदर चर्च बनवाया, और उपर्युक्त क्रॉस को इसके वेदी में दाईं ओर स्थापति कयिा। आज यह क्रॉस मौजूद नहीं है: क्योंकि कीव पर बार-बार हुए आक्रमणों के दौरान, इसके पवत्रि चर्चों को तबाह कर दयिा गया। लेकनि आइए हम धन्य ओल्गा के वृत्तांत पर वापस लौटें।

कीव लौटने पर, नई हेलेना - राजकुमारी ओल्गा - ने सूर्य की तरह मूर्तपिूजा की दुष्टता के अंधकार को दूर करना शुरू कर दयिा, और उन लोगों के हृदयों को प्रकाशति कयिा जो संदेह में डूबे थे। उन्होंने अस्कॉल्ड की कब्र पर संत नकिोलस को समर्पति पहला चर्च स्थापति कयिा, और कीव के कई लोगों को उद्धारकर्ता मसीह में परविर्तति कयिा। लेकनि वह कसिी भी तरह से अपने बेटे स्वयितोस्लाव को सच्ची समझ - ईश्वर के ज्ञान - तक नहीं ला सकी: सैन्य अभयिानों में पूरी तरह से समर्पति, उसने अपनी माँ की बातों पर कोई ध्यान नहीं दयिा। वह एक बहादुर व्यक्ति था जसिे युद्ध से प्यार था, इतना कि उसने अपना अधकिांश जीवन घर पर रहने के बजाय रेजमिेंटों और सेनाओं के बीच बतिाया। उसकी माँ, जन्हिोंने उसे मनाने की कोशशि की, से स्वेतोस्लाव ने कहा:

'यदि मैं ईसाई धर्म स्वीकार कर लेता हूँ और बपतस्मिा ले लेता हूँ, तो बोयार, वोइवोड और मेरा पूरा अनुचर वर्ग मुझसे मुँह मोड़ लेंगे, और मेरे पास हमारे दुश्मनों से लड़ने और हमारी मातृभूमकिी रक्षा करने के लिए कोई नहीं रहेगा।'

[5104] आम तौर पर यह माना जाता है कि धन्य ओल्गा का बपतस्मिा 957 में सम्राट कॉन्स्टेंटनि पोर्फरिोजेनटिस के शासनकाल के दौरान कॉन्स्टेंटनिोपल में हुआ था। हालाँकि, इस धारणा को स्वीकार करना मुश्कलि है। तथ्य यह है कि सम्राट कॉन्स्टेंटनि पोर्फरिोजेनटिस ने 'बाइज़ेंटाइन दरबार की रस्मों या समारोहों पर' शीर्षक से एक ग्रंथ छोड़ा था। इस कृति में, वह वस्तिार से वर्णन करता है कि 957 में कॉन्स्टेंटनिोपल की अपनी यात्रा के दौरान धन्य ओल्गा का दरबार में कैसे स्वागत कयिा गया था; फरि भी सम्राट इस बात का कोई संकेत भी नहीं देता कि ओल्गा बपतस्मिा के लिए कॉन्स्टेंटनिोपल आई थीं या कि उनका वास्तव में बपतस्मिा हुआ था। इसके वपिरीत, वह यह स्पष्ट करता है कि ओल्गा पहले से ही बपतस्मिा ले चुकी थी: महल में उसके पहले स्वागत के समय उसका पुरोहति पहले से ही मौजूद था। तो फरि उसका बपतस्मिा कब हुआ? 'ऐसा प्रतीत होता है कि इगोर की मृत्यु के बाद, जब तक ओल्गा ने नाबालगि स्वयितोस्लाव के लिए रीजेंट (अभभिावक) के रूप में सेवा की और राज्य के भीतर एक आधकिारकि पद पर बनी रहीं, तब तक वह बपतस्मिा नहीं लेती रहीं, और उन्हें बपतस्मिा तब दयिा गया जब उन्होंने अपनी आधकिारकि रीजेंसी छोड़ने का अवसर पाया और कम से कम औपचारकि रूप से, नजिी जीवन में चली गईं, जसिके बाद लोगों का उन पर उनके कार्यों के लिए जवाब तलब करने का अधकिार नहीं रहा' (ई.ई. गोलुबस्कि। हस्ट्री ऑफ द रशयिन चर्च, खंड 1, पहली छमाही, 20वां संस्करण, पृ. 78)। यह केवल तब हो सकता था जब स्वेतोस्लाव वयस्कता की आयु तक पहुँच गया हो, जो उस समय, कसिी भी स्थति में, 10 वर्ष की आयु से पहले शुरू नहीं होती थी। स्वेतोस्लाव का जन्म 942 में हुआ था, और 957 तक ओल्गा का पहले ही बपतस्मिा हो चुका था। यह मानते हुए कि स्वयितोस्लाव की नागरकि वयस्कता 10 वर्ष की आयु में हुई थी, हम यह नष्किर्ष नकिाल सकते हैं कि धन्य ओल्गा का बपतस्मिा 952 (जब स्वयितोस्लाव दस वर्ष के हुए) और 957 के बीच कभी हुआ था। और धन्य ओल्गा के बपतस्मिा को इस नरि्दष्टि अवधि के भीतर कसिी एक वर्ष में रखने का नश्चिति प्रमाण है। हमारे राष्ट्रीय इतहिास-लेखन के संस्थापक और अग्रदूत, भकि्षु जैकब, जन्हिोंने यारोस्लाव के शासन के अंत और इज़्यास्लाव के शासनकाल की शुरुआत में लखिा था - एक वशि्वसनीय लेखक - ओल्गा और व्लादमिीर के बपतस्मिा के अपने वृत्तांत में बताते हैं कि ओल्गा अपने बपतस्मिा के बाद 15 साल तक जीवति रहीं। नतीजतन, याकोब के अनुसार, जो वंशवृत्तकार की तरह ओल्गा की मृत्यु 969 में मानते हैं, ओल्गा का बपतस्मिा 954 (969–15954) में हुआ था, जब कॉन्स्टेंटनि पोर्फजिनेटिस (912–957) ग्रीस का सम्राट था और थयिोफलिैक्ट (933–956) पैट्रआिर्क था। – 957 में सेंट ओल्गा की कॉन्स्टेंटनिोपल यात्रा के समय, सेंट पॉलीएक्टस पहले से ही पैट्रआिर्क थे।

प्रसि स्वयितोस्लाव ने इस प्रकार उत्तर दयिा; फरि भी, उन्होंने उन लोगों को बपतस्मिा लेने से नहीं रोका जो ऐसा करना चाहते थे; लेकनि बहुत से कुलीन वर्ग के लोग नहीं थे जनि्होंने पवत्रि बपतस्मिा ग्रहण कयिा; इसके वपिरीत, कुलीनों ने ऐसे लोगों का अपमान कयिा, क्योंकि अवशि्वासयिों के लिए, ईसाई धर्म मूर्खता है (तुलना करें 1 कुरनि्थियिों 1:18); जबकि आम लोगों में से कई पवत्रि चर्च की ओर आकर्षति हुए। संत ओल्गा ने वेलकिी नोवगोरोड और अन्य शहरों का दौरा कयिा, और जहाँ भी संभव हुआ, लोगों को मसीह के धर्म की ओर ले गईं; ऐसा करते हुए, उन्होंने मूर्तयिों को तोड़ दयिा, और उनकी जगह पवत्रि क्रॉस स्थापति कएि, जनिसे मूर्तपिूजकों को मनाने के लिए कई चमत्कार और अद्भुत कार्य हुए। अपने स्वदेश, पूरे व्यबुट्स्क लौटने पर, धन्य ओल्गा ने वहाँ भी अपने नकिटस्थ लोगों तक ईसाई संदेश का प्रसार कयिा। इस क्षेत्र में अपने प्रवास के दौरान, वह महान नदी के तट पर पहुँची, जो दक्षणि से उत्तर की ओर बहती है, और उस स्थान के सामने रुकी जहाँ से पूर्व की ओर बहने वाली प्सकोव नदी महान नदी में मलिती है (वर्णति समय में, इन क्षेत्रों में एक वशिाल, घना जंगल था, जैसा कि में दर्ज है); और वहाँ, नदी के उस कनिारे से, संत ओल्गा ने स्वर्ग से तीन अत्यंत तेज करिणों को ठीक ऊपर बताए गए स्थानों की ओर उतरते और उन्हें प्रकाशति करते हुए देखा: न केवल संत ओल्गा ने स्वयं, बल्कि उनके साथयिों ने भी इन करिणों से नकिलने वाली अद्भुत रोशनी को देखा; और धन्य ओल्गा ने बहुत प्रसन्नता व्यक्त की और इस दर्शन के लिए ईश्वर का धन्यवाद कयिा, जसिने ईश्वर की कृपा से उस भूमि के ज्ञानोदय का पूर्वाभास दयिा था। अपने साथयिों की ओर मुड़कर, धन्य ओल्गा ने भवषि्यवाणी करते हुए कहा:

'यह जान लो: ईश्वर की इच्छा से, इस स्थान पर, तीन-करिणों वाली करिणों से प्रकाशति, परम पवत्रि और जीवन-दायक त्रमिूर्ति के नाम पर एक चर्च का नरि्माण होगा, और एक महान और गौरवशाली शहर, जो सभी चीजों से परपिूर्ण होगा, की स्थापना होगी।'

इन शब्दों और एक काफी लंबी प्रार्थना के बाद, धन्य ओल्गा ने एक क्रॉस स्थापति कयिा: और आज भी वह चर्च उसी स्थान पर खड़ा है जहाँ धन्य ओल्गा ने इसे स्थापति कयिा था। रूसी भूमि के कई शहरों की यात्रा करने के बाद, मसीह की यह प्रचारक कीव लौट आईं और वहाँ परमेश्वर के लिए अच्छे कार्य कएि: यदि मूर्तपिूजा के दनिों में उसने अच्छे कर्म कएि थे, तो अब पवत्रि वशि्वास से प्रबुद्ध होकर, धन्य ओल्गा ने हर तरह के सद्गुणों से स्वयं को सजाया, और उस ईश्वर को प्रसन्न करने का प्रयास कयिा जसिे वह अभी-अभी जान पाई थी, जो उसका सृष्टकिर्ता और प्रकाशक था। नदी प्सकोव पर अपने दर्शन को याद करते हुए, उन्होंने पवत्रि त्रमिूर्ति को समर्पति एक चर्च के नरि्माण के लिए बहुत सारा सोना और चाँदी भेजा; साथ ही, उन्होंने आदेश दयिा कि उस स्थान पर लोग बसे: और थोड़े ही समय में प्सकोव शहर, जसिका नाम नदी प्सकोव के नाम पर रखा गया था, एक महान शहर में वकिसति हो गया, और वहाँ परम पवत्रि त्रमिूर्ति का नाम महमिामय हुआ।

उस समय, राजकुमार स्वयितोस्लाव, अपनी माँ और अपने बेटों यारोपोलक, ओलेग और व्लादमिीर को कीव में छोड़कर, बुल्गारयिाई लोगों के खलिाफ चल पड़े[5105] : उनके साथ युद्ध के दौरान, उन्होंने अस्सी तक शहरों पर कब्जा कयिा, और वह उनकी राजधानी, पेरयिास्लावेट्स[5106] से वशिेष रूप से प्रभावति हुए, जहाँ उन्होंने नविास कयिा। इस बीच, धन्य ओल्गा, कीव में रहते हुए, अपने पोते—स्वयितोस्लाव के बच्चों—को ईसाई धर्म की शकि्षा देती रहीं, जतिना उनकी बाल-बुद्धि में समा सकता था; लेकनि उन्होंने अपने बेटे से कसिी परेशानी के डर से उन्हें बपतस्मिा देने की हमि्मत नहीं की, और स्वयं को प्रभु की इच्छा के हवाले कर दयिा। जब स्वयितोस्लाव बुल्गारयिा के देश में रुके हुए थे, तब पेचेनेगों ने[5107] अप्रत्याशति रूप से कीव क्षेत्र पर आक्रमण कयिा, कीव को घेर लयिा और उस पर घेराबंदी कर दी; संत ओल्गा, अपने पोतों के साथ, शहर में बंद हो गईं, जसिे पेचेनेग नहीं ले सके। प्रभु, जनि्होंने अपनी वशि्वासी सेवकिा की रक्षा की, ने उनकी प्रार्थनाओं के द्वारा शहर की भी रक्षा की। कीव पर पेचेनेगों के आक्रमण की खबर स्वआितोस्लाव तक

[5105] 967 में

[5106] डैन्यूब पर।

[5107] पेचेनेग तुर्की मूल के लोग थे। वे कभी मध्य एशयिा के मैदानों में घूमते थे, और यह ठीक से नहीं पता है कि वे वहां से यूरोप कब प्रवासति हुए। 9वीं सदी तक, वे पहले से ही वोल्गा और याइक (उराल) के बीच बसे हुए थे; 10वीं सदी के 60 के दशक तक, पेचेनेगों ने रूस को परेशान नहीं कयिा। हागयिोग्राफी में उल्लेखति कीव पर पेचेनेग का हमला, क्रॉनकिल में पेचेनेग के हमलों का पहला संदर्भ है (वर्ष 968 के अंतर्गत)। उस समय से, आधी सदी से अधकि समय तक, रुस ने पेचेनेगों के खलिाफ एक अनवरत संघर्ष कयिा। रुस ने खुद को उनसे बचाने के लिए कलिेबंदी और शहरों का सहारा लयिा; यही वर्तमान कीव गवर्नरेट में ज़्मयिेव वाल की उत्पत्ति है। सेंट व्लादमिीर ने स्टुग्ना नदी के कनिारे कलिेबंदी की, जबकि यारोस्लाव द वाइज़ ने (और भी दक्षणि में) रोस नदी के कनिारे ऐसा ही कयिा। रूस पर अंतमि पेचेनेग हमला (कीव की घेराबंदी) 1034 में हुआ, जब उन्हें पूरी तरह से हरा दयिा गया था।

पहुँची; वह अपनी सेना के साथ बुल्गारियाई भूमि से जल्दी से निकलकर आया, पेचेनेगों पर एक आश्चर्यजनक हमला किया और उन्हें भागने पर मजबूर कर दिया; कीव में प्रवेश करने पर, उसने अपनी माँ का अभिवादन किया, जो पहले से ही बीमार थीं, और एक बार फिर उन्हें बुल्गारियाई भूमि की ओर बढ़ने के लिए पीछे छोड़कर जाना चाहा। लेकिन धन्य ओल्गा ने आँसुओं के साथ उससे कहा:

'तुम मुझे क्यों छोड़ रहे हो, मेरे बेटे, और तुम कहाँ जा रहे हो? किसी अजनबी की तलाश में, तुम अपनी ही लोगों को किसके हवाले कर रहे हो? क्योंकि तुम्हारे बच्चे अभी छोटे हैं, और मैं पहले से ही बूढ़ी और बीमार हूँ – मैं अपने निकट मृत्यु की प्रतीक्षा कर रही हूँ – अपने प्रिय मसीह के पास मेरे प्रस्थान की, जिस पर मैं विश्वास करती हूँ; अब मैं किसी और बात की नहीं, केवल आपकी चिंता करती हूँ: मुझे खेद है कि, यद्यपि मैंने आपको बहुत कुछ सिखाया और मूर्तिपूजक दुष्टता को त्यागने तथा उस सच्चे ईश्वर पर विश्वास करने के लिए कहा, जिसे मैं जान चुकी हूँ, आपने इस बात को अनसुना कर दिया; और मैं जानता हूँ कि मुझसे तुम्हारी अवज्ञा के कारण, पृथ्वी पर तुम्हारा एक दुखद अंत इंतजार कर रहा है, और मृत्यु के बाद – मूर्तिपूजकों के लिए आरक्षित अनंत यातना। इसलिए अब, कम से कम मेरी यह एक विनती मान लो: जब तक मैं मरकर दफन न हो जाऊँ, तब तक कहीं मत जाना; फिर जहाँ चाहो वहाँ चले जाना। मेरी मृत्यु के बाद, ऐसे मामलों में प्रचलित किसी भी विधिर्मी अनुष्ठान का पालन मत करना; बल्कि मेरे पादरी और पुरोहितों को मेरे पापी शरीर को ईसाई रीति-रिवाज के अनुसार दफनाने दो; मेरे ऊपर कब्र का टीला बनाने या अंतिम संस्कार का भोज करने का साहस मत करना; बल्कि कॉन्स्टेंटिनोपल में परम पवित्र पैट्रिआर्क को सोना भेजो, ताकि वह मेरी आत्मा के लिए ईश्वर से प्रार्थना और बलिदान कर सकें और गरीबों में दान बाँट सकें।

यह सुनकर, स्वियातोस्लाव जोर-जोर से रोया और उसकी सभी अंतिम इच्छाओं को पूरा करने का वादा किया, केवल पवित्र विश्वास को स्वीकार करने से इनकार कर दिया। तीन दिन बीत जाने के बाद, धन्य ओल्गा अत्यधिक थकान की अवस्था में पहुँच गईं; उन्होंने हमारे उद्धारकर्ता मसीह के परम पवित्र शरीर और जीवन-दायक रक्त का पवित्र भोज ग्रहण किया; इस पूरे समय वह ईश्वर और ईश्वर की परम पवित्र माता से भक्तिपूर्वक प्रार्थना करती रहीं, जिन्हें वह हमेशा ईश्वर के बाद अपनी सहायक मानती थीं; उन्होंने सभी संतों का भी आह्वान किया; विशेष उत्साह के साथ, धन्य ओल्गा ने अपनी मृत्यु के बाद रूसी भूमि के प्रबोधन के लिए प्रार्थना की; भविष्य की भविष्यवाणी करते हुए, उन्होंने अपने जीवनकाल में कई बार भविष्यवाणी की थी कि ईश्वर रूसी भूमि के लोगों को प्रबुद्ध करेंगे और उनमें से कई महान संत बनेंगे; और जैसे ही उन्होंने अपना अंतिम सांस लिया, धन्य ओल्गा ने इस भविष्यवाणी के शीघ्र पूर्ति के लिए प्रार्थना की। और एक प्रार्थना अभी भी उनके होंठों पर थी जब उनकी सम्मानित आत्मा उनके शरीर से मुक्त हो गई और, एक धर्मी महिला के रूप में, उन्हें ईश्वर के हाथों में स्वीकार कर लिया गया। इस प्रकार वह सांसारिक से स्वर्गीय राज्य में चली गईं और उन्हें अमर राजा - मसीह ईश्वर - के महल में प्रवेश करने के योग्य समझा गया और, रूस की भूमि की पहली संत के रूप में, उन्हें संतों में शामिल किया गया। धन्य ओल्गा, जिनका बपतिस्मा का नाम हेलेना था, का निधन वर्ष[5108] के जुलाई महीने के 11वें दिन हुआ। उन्होंने बयालीस वर्षों तक विवाह जीवन व्यतीत किया था, और अपने विवाह के समय वे पूर्ण आयु और ऊर्जा से भरपूर एक कुंवारी थीं - वे लगभग बीस वर्ष की थीं। अपने पति की मृत्यु के दस साल बाद, उन्हें पवित्र बपतिस्मा दिया गया, और बपतिस्मा के बाद उन्होंने पंद्रह वर्षों तक एक ईश्वरीय जीवन जिया। इस प्रकार, उन्होंने कुल मिलाकर लगभग नब्बे साल तक जीवन जिया। धन्य ओल्गा का शोक उनके पुत्र, राजकुमार स्वियातोस्लाव, बोयारों, गणमान्य व्यक्तियों और सभी लोगों ने मनाया; धन्य ओल्गा को ईसाई रीति-रिवाज के अनुसार सम्मान के साथ दफनाया गया।

संत ओल्गा के निधन के बाद, उनके पुत्र की दुखद मृत्यु और रूस के क्षेत्रों के उज्ज्वल भविष्य के बारे में उनकी भविष्यवाणी सच हुई। उनके पुत्र स्व्यातोस्लाव (जैसा कि इतिहासकार बताता है) को कुछ वर्षों बाद पेचेनेग राजकुमार Kury[5109] द्वारा युद्ध में मार दिया गया था। क्यूरी ने स्व्यातोस्लाव का सिर काट दिया और उसकी खोपड़ी से एक प्याला बनाया, जिसे सोने से मढ़ा और इस पर निम्नलिखित लिख दिया:

'जो दूसरे की चीज़ की चाह करता है, वह अपना ही नाश करता है।' अपने कुलीनों के साथ एक भोज के दौरान, पेचेनेग राजकुमार ने इसी प्याले से पीना। इस प्रकार, महा राजकुमार स्वियातोस्लाव इगोरविच, जो युद्ध में बहादुर और अब तक

[5108] 969 में

[5109] 972 में

अजेय थे, अपनी माँ द्वारा बताई गई भविष्यवाणी के अनुसार एक दुखद अंत को प्राप्त हुए, क्योंकि उन्होंने उनकी बात नहीं मानी थी। धन्य ओल्गा की भविष्यवाणी रूस की भूमि के संबंध में भी पूरी हुई। उनकी मृत्यु के बीस साल बाद, उनके पोते व्लादिमीर ने पवित्र बपतिस्मा ग्रहण किया और रूस की भूमि को पवित्र विश्वास से प्रकाशित किया[5110] । सबसे पवित्र परमेश्वर की माता को समर्पित एक पत्थर का चर्च (जिसे 'दशमांश चर्च' के नाम से जाना जाता है, क्योंकि व्लादिमीर ने इसके रखरखाव के लिए अपनी संपत्तियों का दसवां हिस्सा दिया था) बनाने और कीव के मेट्रोपॉलिटिन लियोन्टियस से परामर्श करने के बाद, संत व्लादिमीर ने अपनी दादी के पवित्र अवशेषों को जमीन से निकाला—जो अखंड, अपरिवर्ति और सुगंधित थे; उन्होंने उन्हें बड़े सम्मान के साथ उपरोक्त सर्वपवित्र परमेश्वर की माता के चर्च में स्थानांतरित किया और उन्हें गुप्त रूप से नहीं बल्कि खुलेआम रखा, उन लोगों के लिए जो आस्था से वहाँ उमड़ते थे और अपनी प्रार्थनाओं की पूर्ति प्राप्त करते थे: पवित्र अवशेषों के माध्यम से विभिन्न बीमारियों से कई चंगाइयाँ प्रदान की गईं[5111] ।

निम्नलिखित बात को भी अनदेखा नहीं किया जाना चाहिए: धन्य ओल्गा की कब्र के ऊपर चर्च की दीवार में एक छोटी सी खिड़की थी; और यदि कोई दृढ़ विश्वास के साथ पवित्र अवशेषों के पास आता था, तो छोटी खिड़की अपने आप खुल जाती थी, और बाहर खड़े लोग इसके भीतर रखे पवित्र, चमत्कारी अवशेषों को स्पष्ट रूप से देख सकते थे; इसके अलावा, जिन्हें विशेष रूप से योग्य माना जाता था, वे उनसे निकलती एक अद्भुत किरण भी देख सकते थे; और श्रद्धालुओं में से जो कोई भी किसी बीमारी से पीड़ित होता था, वह तुरंत ठीक हो जाता था। जहाँ तक कम आस्था के साथ आने वालों की बात है, छोटी खिड़की नहीं खुलती थी, और वे पवित्र अवशेषों को नहीं देख पाते थे, भले ही वे स्वयं चर्च में प्रवेश कर लें: वे केवल कब्र ही देख पाते थे और ठीक नहीं हो पाते थे। हालाँकि, विश्वासियों को संत ओल्गा की प्रार्थनाओं के द्वारा, जिन्हें उनके पवित्र बपतिस्मा में हेलेना नाम दिया गया था, और हमारे प्रभु यीशु मसीह की कृपा से, शरीर और आत्मा के लिए हर लाभ प्राप्त हुआ, जिनके लिए, पिता और पवित्र आत्मा के साथ, अब और हमेशा और युगों-युगों तक महिमा हो। आमीन।

ट्रोपारियन, स्वर 1:

दिव्य ज्ञान के पंखों से अपने मन को प्रज्वलित कर, तुम सभी दृश्यमान सृष्टि से ऊपर उठ गईं: ईश्वर और सभी चीजों के स्रष्टा को खोजकर, और उन्हें पाकर, तुमने बपतिस्मा के माध्यम से पुनर्जन्म प्राप्त किया। जीवन के वृक्ष में आनंदित, तुम सदैव अक्षुण्ण, सदा-महिमामयी ओल्गा, वास करती हो।

कॉन्टाकियन, स्वर 4:

आओ आज हम सभी के कल्याणकर्ता ईश्वर का गीत गाएँ, जिन्होंने रूस में ईश्वर-ज्ञानी ओल्गा को महिमामय किया: हे प्रभु, उनकी प्रार्थनाओं के द्वारा, हमारे पापों की क्षमा हमारे आत्माओं को प्रदान करें।

पवित्र शहीद कन्दिद की स्मृति

11 जुलाई को स्मरणोत्सव

संत कन्डिडेई पम्फिलिया के सिडा गाँव के एक पुरोहित थे। डायोक्लेटियन के शासनकाल में, उन्हें राज्यपाल स्ट्रैटनिकस के आदेश पर गिरफ्तार किया गया और खंभे पर जलाने की सजा दी गई। उन्हें कीलों से जड़े हुए लोहे के जूते पहनाकर शहादत के स्थान पर ले जाया गया। उसे ले जा रहे सैनिकों का रास्ते में एक लकड़हारे से सामना हुआ और उन्होंने जबरदस्ती उससे लकड़ी छीन ली, लेकिन संत कन्दिद ने लकड़हारे को उसका हक़ चुकाया, लकड़ी खुद उठाई और उसे

[5110] उनका पर्व दिवस 15 जुलाई है।

[5111] मंगोल आक्रमण के दौरान, उनके अवशेषों को चर्च में छिपा दिया गया था; 17वीं सदी तक, उन्हें फिर से एक अज्ञात स्थान पर छिपा दिया गया था, जिसके कारण पूरी तरह से स्पष्ट नहीं हैं।

अपने शहादत के स्थान तक ले गए। आग की लपटों के बीच रखे जाने पर, शहीद को कोई नुकसान नहीं हुआ और उन्होंने लोगों से मसीह की शक्ति को पहचानने का आह्वान किया। अचानक एक आंधी-तूफान आ गया, और भारी बारिश ने चिता को भीग दिया। जब तूफान थम गया, तो संत ने प्रभु से प्रार्थना की और अपनी अंतिम सांस ली।

25 जुलाई

12 जुलाई (पुराने कैलेंडर के अनुसार)

इसी दिन, पूजनीय: नोवगोरोड के आर्सेनियस (1570 में) और वोल्होंम के साइमन (1641 में) का निधन हुआ।

इस दिन हम पवित्र शहीदों थियोडोर द वरांगियन और उनके पुत्र जॉन का भी स्मरण करते हैं, जिन्हें 983 में कीव में मार डाला गया था।

पवित्र शहीदों प्रोकलस और हिलारियन की शहादत।

12 जुलाई को स्मरणोत्सव

पवित्र शहीद, प्रोकलस और हिलारियन, एन्कियारा के पास[5112] केलपिटा शहर के मूल निवासी थे[5113] ; उन्होंने ट्राजन के शासनकाल के दौरान राज्यपाल मैक्सिमिस के हाथों यातनाएं झेलीं[5114] । संत प्रोकलस को सबसे पहले गिरफ्तार किया गया और सम्राट के सामने पेश किया गया, जो उस समय उस क्षेत्र में थे; फिर उन्हें बेड़ियों में जकड़कर जेल में डाल दिया गया। सम्राट ने प्रोकलस के मामले की जांच की और पाया कि वह अधर्मी आज्ञाओं का पालन नहीं करेगा[5115] , इसलिए उसे यातना देने के लिए हेगेमोन मैक्सिमिस के हवाले कर दिया। मैक्सिमिस ने न्यायपीठ पर बैठकर मसीह के बंदी से उत्तर मांगा – उसने उससे पूछा:

'तुम्हारा वंश क्या है?'

'मेरी वंशावली मसीह की है,' संत प्रोकलस ने उत्तर दिया, 'और मेरी आशा मेरे ईश्वर में है।'

'देवताओं की कसम, मैं तुम्हें कोई दया नहीं दिखाऊँगा!'

गवर्नर ने कहा, और फिर पूछा:

'क्या तुम्हें उन शाही फरमानों का पता है, जो दूर-दूर तक घोषित किए गए हैं, कि सभी ईसाइयों को देवताओं को बलिदान चढ़ाना चाहिए?'

– मैंने इन कानूनविहीन लोगों के इन फरमानों के बारे में सुना है, – संत ने उत्तर दिया, – उन्होंने यह आज्ञाएँ कई लोगों को भटकाने और अपनी ही बर्बादी के लिए जारी की हैं।

'तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई,' राज्यपाल ने क्रोधित और हैरान होकर कहा, 'राजा की निंदा करने और उसके कानूनों का अपमान करने की?! क्या तुम नहीं देख सकते कि इसके लिए तुम्हारा क्या अत्याचार इंतज़ार कर रहा है, हे नीच?'

'तुम जो चाहो करो,' शहीद ने पलटकर जवाब दिया, 'मैं तुम्हारे देवताओं को बलिदान नहीं चढ़ाऊँगा, और मैं उन यातनाओं से नहीं डरता जो शरीर को मारती हैं पर आत्मा को नहीं; मनुष्यों से डरने की बजाय ईश्वर से डरना बेहतर है।'

'खुद चुनो,' राज्यपाल ने सुझाव दिया, 'या तो जीवन या मृत्यु: देखो, तुम्हारे लिए यातनाओं का वृक्ष तैयार है, और यातना के उपकरण भी – हम तुम्हारे जवाब का इंतज़ार कर रहे हैं: तुम क्या चुनते हो?'

संत प्रोकॉल्स ने उत्तर दिया:

'यदि आप राजा की आज्ञा की अवज्ञा करने से डरते हैं, कि कहीं आपको क्षणिक यातना न सहनी पड़े, तो हम ईसाई और भी अधिक ईश्वर की आज्ञा की अवज्ञा करने से डरें, कहीं हम उन लोगों के लिए ईश्वर द्वारा तैयार की गई

[5112] या, और अधिक सटीक रूप से कहें तो, गाँव।

[5113] एन्सीरा नामक दो नगर थे: एक गलातिया में, दूसरा फ्रीजिया में। यह ठीक से ज्ञात नहीं है कि कैलपिटा नामक गाँव इनमें से किसके पास स्थित था।

[5114] ट्राजन – 98 से 117 तक का रोमन सम्राट।

[5115] मूर्तियों की पूजा के संबंध में।

अनंत यातनाओं में न पड़ जाएँ जो उससे मुँह मोड़ लेते हैं और आपके झूठे देवताओं को प्रणाम करते हैं, जो स्वयं, आने वाले न्याय के दिन, उनके प्रति बलिदान चढ़ाने वालों के साथ अनंत विनाश में भेज दिए जाएँगे।

'निश्चय ही,' राज्यपाल ने आश्चर्य से कहा, 'तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई हमारे देवताओं पर भी दोष मढ़ने की? मैं तुम्हें बताता हूँ कि, तुम्हारी इच्छा के विरुद्ध, मैं तुम्हें हमारे देवताओं की शक्ति को स्वीकार करने के लिए मजबूर करूँगा।'

'लेकिन मैं अपनी आशा,' शहीद ने उत्तर दिया, 'अपने ईश्वर में रखता हूँ, कि इससे पहले कि आप मुझे आपके देवताओं की स्वीकारोक्ति करने के लिए मना लें, मैं यह सुनिश्चित करूँगा कि, सभी सैनिकों और सेवकों के सामने, आपकी इच्छा के विरुद्ध, आप मेरे प्रभु को स्वीकार करें और अपने ही हाथ से लिखें: "पापी प्रोकलस का ईश्वर सत्य है, और उससे अन्य कोई नहीं है।"'

क्रोधित होकर, राज्यपाल ने शहीद को एक पेड़ से नग्न लटकाने, उसके पैरों में एक भारी पत्थर बांधने और उसके शरीर को लोहे के हुकों से खुरचने का आदेश दिया। और लंबे समय तक संत प्रोकलस को इस तरह यातना दी गई; फिर भी उन्होंने सब कुछ साहसपूर्वक सहन किया, कुछ भी नहीं कहा, बल्कि बस आकाश को घूरते रहे; फिर उन्हें उतारकर बेड़ियों में जकड़ दिया गया।

इसके बाद, राज्यपाल कैलपिट शहर के लिए रवाना हुआ और शहीद को अपने पीछे-पीछे चलने का आदेश दिया; शहीद को तेज घोड़ों के साथ पैदल चलने के लिए मजबूर किया गया। जब वे लगभग आधा रास्ता तय कर चुके थे, तो शहीद ने प्रार्थना करना शुरू कर दिया, और ईश्वर से जोर-जोर से पुकार कर कहा:

'हे मेरे ईश्वर, हे यीशु मसीह, जिनके लिए मैं कष्ट सह रहा हूँ, सैनिकों द्वारा अपमानित होकर ले जाया जा रहा हूँ! आज अपने दास की सुन, ताकि तेरा नाम युगों-युगों तक महिमामय हो: अपना सर्वशक्तिमान हाथ बढ़ा, इस अधर्मी राज्यपाल को रोक दे, और उसे तब तक अपनी यात्रा जारी रखने न दे जब तक कि वह सभी लोगों के सामने यह स्वीकार न कर ले कि तेरे सिवा कोई और ईश्वर नहीं है!

जब संत ने इस प्रकार प्रार्थना की, तो अचानक राज्यपाल अपनी यात्रा पर अप्रत्याशित रूप से रुक गया, मानो बंधा हुआ हो: न तो घोड़े और न ही वह स्वयं हिल सके, उन्हें ईश्वर की अदृश्य शक्ति ने रोक रखा था। सभी सैनिक भी एक अद्भुत दृश्य देखकर चकित होकर रुक गए। उन्होंने बहुत देर तक रथ को हिलाने की कोशिश की, घोड़ों को उकसाया, मदद के लिए दूसरों को जोता, खुद उसे चलाने की कोशिश की, फिर भी वे कुछ नहीं कर सके; वे राज्यपाल को खुद रथ से उठा भी नहीं सके: रथ एक पहाड़ की तरह अडिग खड़ा था, और उस पर राज्यपाल - जैसे कि वहीं ठोक दिया गया हो। तब राज्यपाल ने अपने साथियों से कहा:

'क्या तुम इस चालाक ईसाई की आश्चर्यजनक जादुई शक्ति को देखते हो—उसने हमारे साथ क्या किया है? हम इस जगह से हिल नहीं पा रहे हैं, और हम तो पीछे की ओर जा रहे हैं?!'

तब राज्यपाल ने अपने एक दास, जिसका नाम यिर्मयाह था, को उस शहीद से कहने के लिए भेजा, जो बहुत पीछे था:

'तुमने यह क्या किया है, अपनी जादू-टोने से हमें वहीं रोक दिया? स्पष्ट है, शहर में तुम्हारे इंतज़ार कर रहे कष्टों से डरकर, तुमने ऐसा छल किया है, सिर्फ इसलिए ताकि तुम्हें वहाँ न ले जाया जाए।'

लेकिन संत प्रोक्लस ने राज्यपाल के सेवक से कहा:

'मैं प्रभु परमेश्वर की कसम खाता हूँ कि तुम इस जगह से तब तक नहीं हिलोगे जब तक कि राज्यपाल मेरे प्रभु यीशु मसीह के नाम का स्वीकार नहीं कर लेता, ठीक वैसे ही जैसे मैंने पहले उसे बताया था।'

हर्मियास ने पूछा, 'यदि राज्यपाल सड़क के किनारे खड़े होकर आपके ईश्वर का नाम स्वीकार कर ले, तो आप उससे इतनी दूर होते हुए भी उसे कैसे सुनेंगे या जानेंगे?'

शहीद ने कहा:

'वह इस स्वीकारोक्ति को एक लट्ठी पर लिखकर मुझे भेजे, और तुम तुरंत कैलपिट शहर के लिए रवाना हो जाओगे।'

वापस आकर, हरमियास ने शहीद के शब्द राज्यपाल को बताए, जो हालांकि अनिच्छुक था, लेकिन उस पर आई विपत्ति के कारण उसे पार्चमेंट लेना पड़ा और लिखना पड़ा:

'केवल एक ही सच्चा ईश्वर है – वह जिसे प्रोकुल्स पूजता है – और उसके सिवा कोई अन्य ईश्वर नहीं है।'

यह लिखने के बाद, उसने दस्तावेज़ शहीद के पास भेज दिया, और तुरंत ही घोड़े और सैनिक अपनी यात्रा पर निकल पड़े।

कालपि्टा शहर पहुँचने पर, राज्यपाल न्यायपीठ पर वरिाजमान हुआ और संत प्रोकलस को बुलाकर उससे कहा:

'तुमने रास्ते में हमें अपनी जादू-टोने की पूरी ताकत दखिाई; यहाँ, मैं तुम्हें अपने अधकिार की ताकत दखिाऊँगा। जैसे तुमने मुझे अपने ईश्वर को स्वीकार करने के लिए मजबूर कयिा, वैसे ही मैं तुम्हें हमारे देवताओं को स्वीकार करने और उन्हें बलदिान चढ़ाने के लिए मजबूर करूँगा।'

यह कहकर, उसने जलती हुई मोमबत्तयिाँ लाने का आदेश दयिा और उन्हें संत प्रोक्लस के पेट और पसलयिों को झुलसाने के लिए इस्तेमाल कयिा: उन्होंने शहीद को इतनी बुरी तरह जलाया कि उसका पूरा शरीर झुलस गया, फरि भी वह, बनिा कोई अधीरता दखिाए, चुप रहा, मानो वह अपना शरीर नहीं बल्कि किसी और का शरीर वहन कर रहा हो। और राज्यपाल ने उससे कहा:

'क्या तुम इन यातनाओं की परवाह नहीं करते?'

संत ने उत्तर दयिा:

'मैं इनसे बेपरवाह हूँ, परन्तु मैं शाश्वत (दंड) से डरता हूँ।'

हेगेमोन ने फरि कहा:

'क्या तुम हमारे देवताओं के आगे समर्पण करोगे?'

'मैं समर्पति हूँ,' उसने उत्तर सुना, 'मसीह को, जो सदा जीवति रहता है: वही मेरी आशा है!'

गवर्नर ने पूछा:

'क्या तुम यातनाओं में मरना चाहते हो?'

'भले ही मैं मर जाऊँ,' संत प्रोक्लस ने उत्तर दयिा, 'मैं फरि से जीवति हो जाऊँगा!'

तब राज्यपाल ने सैनकिों को आदेश दयिा कि वे संत प्रोक्लस को शहर से बाहर ले जाएँ, उसे एक पेड़ पर सूली पर चढ़ा दें, और उसे तीरों से भेद दें। सैनकिों ने शहीद को पकड़ लयिा और उससे कहा:

'हमारी बात सुनो और देवताओं को बलदिान चढ़ाओ; कुशल चकित्सिक तुरंत तुम्हारे घावों को भर देंगे, और तुम्हें एक उच्च पद से सम्मानति कयिा जाएगा।'

'मैं,' उस कष्ट-सहने वाले ने उत्तर दयिा, 'स्वर्ग में एक पद रखता हूँ, जसिसे मेरा ईश्वर मसीह मुझे सम्मानति करेंगे; इसलिए मुझे लुभाना बंद करो और जैसा तुम्हें आदेश दयिा गया है, वैसा ही करो।'

जैसे ही वे इस बारे में बात करते हुए चल रहे थे, उन्हें रास्ते में हलिारयिन नाम का एक युवक मलिा, जो अभी-अभी जवानी में कदम रखा था, और वह संत प्रोकलस का भतीजा तथा उनके अपने भाई का पुत्र था। वह पास आया, अपने चाचा को प्रणाम कयिा और उन्हें चूमते हुए बोला:

'मैं भी एक ईसाई हूँ!'

सैनकिों ने हलिारयिन को पकड़ लयिा और उसे जेल में डाल दयिा, जबकि संत प्रोकलस को फांसी के स्थान पर ले जाया गया, एक पेड़ पर सूली पर चढ़ाया गया, और अपना धनुष तानकर उन्होंने उस पर तीर चलाना शुरू कर दयिा। तीरों से पूरे शरीर में भेदे गए शहीद ने ईश्वर से प्रार्थना करते हुए कहा:

'हे प्रभु, मैं अपनी आत्मा तेरे हाथों में सौंपता हूँ; हे सच्चे परमेश्वर, मुझे बचा!'

और ये शब्द कहकर, सरि झुकाकर, उन्होंने अपनी अंतमि सांस ली। पवत्रि शहीद प्रोकलुस का नधिन जुलाई के 12वें दनि हुआ। वशि्वासयिों ने चुपके से उनके अवशेष ले गए और उन्हें दफना दयिा।

इस बीच, हलिारयिन अपनी कोठरी में बैठकर गा रहे थे:

– *'हे प्रभु, मैं तुझ से प्रेम करूँगा, हे मेरे बल! प्रभु मेरी चट्टान और मेरा शरणस्थान है*', और भजन संहति 17 की अन्य आयतें।

जब वह सो गए, तो प्रभु का स्वर्गदूत एक दर्शन में उनके पास आया और कहा:

'साहस रखो और मज़बूत बनो; मैं तुम्हारे साथ हूँ – मैं तुम्हें मज़बूत करने के लिए परमेश्वर द्वारा भेजा गया हूँ।'

प्रोक्लस की मृत्यु के तीसरे दनि, संत हलिारी को यातना देने के लिए लाया गया। और राज्यपाल ने उनसे पूछा:

'क्या तुम ईसाई हो?'

शहीद ने उत्तर दयिा:

'हाँ, मैं एक ईसाई हूँ; मेरा पूरा परविार ईसाई था, और वे सभी मसीह की महमिा करते हुए मरे।'

तब, क्रोधति होकर, राज्यपाल ने शहीद को लंबी और बुरी तरह पीटने का आदेश दयिा, उसे एक पेड़ से नग्न लटका दयिा गया। फरि उसने उसे मौत की सजा सुनाई, और आदेश दयिा कि उसे शहर से तीन स्टेडयिम बाहर ले जाया जाए और वहाँ उसका सरि कलम कर दयिा जाए। सैनकिों ने शहीद के हाथ बाँध दए, उसे ज़मीन पर फेंक दयिा और उसके पैरों से पकड़कर घसीटना शुरू कर दयिा, इस बीच शहीद ने इस बार , गाया: *'उसकी नींव पवत्रि पर्वतों पर है। यहोवा याकूब के सब घरों से ज़यिोन के फाटकों से अधकि प्रेम करता है'* (भजन संहति 86:2)

शहीद के शरीर को ज़मीन पर घसीटकर चीर-फाड़ दयिा गया, और धरती खून से लथपथ हो गई; जब वे शहर से तीन स्टेडयिम दूर गए, तो जल्लाद ने अपनी तलवार खींची, जबकि संत ने ईश्वर से प्रार्थना की:

'हे प्रभु यीशु मसीह, मेरी आत्मा ग्रहण कर!'

और शहीद का सरि कलम कर दयिा गया। संत हलिारयिन का नधिन 15 जुलाई को, संत प्रोकलस की मृत्यु के तीन दनि बाद हुआ। संत हलिारयिन का शरीर वहीं छोड़ दयिा गया था जहाँ उनका सरि कलम कयिा गया था। वशि्वासयिों ने रात में आकर उसे उठाया, और संत प्रोक्लस के अवशेषों के साथ, उसे सुला दयिा, मसीह परमेश्वर की महमिा करते हुए, जो हमेशा के लिए पति और पवत्रि आत्मा के साथ महमिा प्राप्त करते हैं। आमीन।

कॉन्टाकयिन, स्वर 4:

जैसे भोर का तारा चमकता है, वैसे ही शहीदों प्रोकलस और हलिारयिन के सम्माननीय कष्ट चमकते हैं, जो हमें अपने चमत्कारों की करिणों से पूर्व-प्रकाशति करते हैं: इसलिए हम आपकी स्मृति मनाते हैं; मसीह हमारे परमेश्वर से प्रार्थना करें कि वह हमारी आत्माओं को बचाए।

हमारे पूजनीय पति माइकल मालेन की स्मृति

12 जुलाई को स्मरणोत्सव

आदरणीय माइकल का जन्म कैपैडोसयिा के हार्सयिा क्षेत्र में एक कुलीन परविार में हुआ था; सांसारकि जीवन में उन्हें मैनुएल कहा जाता था। उनके एक रश्तिेदार, सम्राट लयिो द वाइज़ (मृत्यु 912), ने उन्हें कैंडडिेट की पदवी प्रदान की, और उन्होंने कॉन्स्टेंटनिोपल में सेवा की; सम्राट की मृत्यु के बाद, मैनुएल बथिनियिा के क्षेत्र में चले गए[5116] ; 18 वर्ष की आयु में, उन्होंने खुद को माउंट कमिनि पर एल्डर जॉन द इलाडाइट के मार्गदर्शन में रखा, जहाँ उन्हें माइकल नाम से संन्यास ग्रहण कराया गया। मठ जीवन के महान कार्यों के बाद, माइकल ने दक्षणि-पश्चमिी बथिनियिा में गल्ला नदी के पास माउंट कमिनि पर एक मठ की स्थापना की। लगभग 953 ईस्वी में, अब्राहम—जन्हिोंने मठवासी नाम अथानासयिस अपनाया था—उनके मार्गदर्शन में आए; उन्होंने बाद में माउंट अथोस पर प्रसद्धि मठ की स्थापना की[5117] । उन्होंने वहाँ लगभग छह साल बतिाए। पवत्रि माइकल का 962 में, पचास वर्षों की मठवासी भक्ति के बाद, अपने मठ में नधिन हो गया। अपने जीवनकाल में ही, प्रभु ने उन्हें कई चह्निों और चमत्कारों से गौरवान्वति कयिा। उन्हें उनके पारविारकि नाम के बाद मेलनि के नाम से जाना जाता है। उनकी बहन दो प्रसद्धि जनरलों, नकिफिोरोस और लयिो की माँ थीं। नकिफिोरोस फोकास, परम पूजनीय की मृत्यु के तुरंत बाद (963 में) सम्राट बने। इस ज़ार द्वारा प्रदान कए गए धन

[5116] बथिनियिा – एशयिा माइनर का एक उत्तर-पश्चमिी क्षेत्र, जो ब्लैक सी, बोस्फोरस और कॉन्स्टेंटनिोपल जलडमरूमध्य के तटों पर स्थति था। यह देश प्राचीन काल से जाना जाता है और इसका नाम थ्रेस से यहां आए बथिनियिा लोगों के नाम पर पड़ा। बथिनियिा सुरम्य, उपजाऊ और पशुधन से समृद्ध था। 546 ईसा पूर्व में, बथिनियिा फारसी शासन के अधीन आ गया, लेकनि 327 ईसा पूर्व से बथिनियिा एक बार फरि एक स्वतंत्र राज्य बन गया; 75 ईसा पूर्व में, राजा नकिोमेड्स III की इच्छा के अनुसार, बथिनियिा एक वशिेष प्रोकोन्सल द्वारा शासति एक स्वतंत्र प्रांत के रूप में रोमनों के पास चला गया। प्रेरतिों के समय में बथिुनयिा में ईसाई धर्म का आगमन हुआ (1 पतरस 1:1)। बथिुनयिा पर शासन करने वाले प्लनिी द यंगर के शासनकाल में, और सम्राट ट्राजन (98–117) के अधीन, यहाँ न केवल शहरों में बल्कि गाँवों और बस्तयिों में भी बहुत सारे ईसाई थे। डायोक्लेटयिन (284–305) के शासन के दौरान, बथिनियिा में ईसाइयों का भयंकर उत्पीड़न हुआ। चौथी और पांचवीं शताब्दी में, बथिनियिा धार्मकि मामलों में वशिेष रूप से उल्लेखनीय था: वभिन्नि वधिर्मों से नपिटने के लिए वहां कई चर्च परषिदें आयोजति की गईं।

[5117] इस महीने की 5 तारीख के अंतर्गत उनकी जीवनी देखें।

से, पूजनीय अथेनासयिस ने माउंट अथोस पर प्रसद्धि लावरा की स्थापना की। पहले ज़ार, जो रूस के शाही वंश के पूर्वज थे, माइकल फेडोरोवचि[5118] का नाम पूजनीय माइकल (मेलनि) के नाम पर रखा गया था।

कॉन्टाकयिन, स्वर 2:

हे माइकल, तुमने अपने कर्मों द्वारा देह के भार को शुद्ध कयिा है, और प्रबोधन द्वारा आत्मा की शीघ्रता को दृढ़ कयिा है, और त्रमिूर्त कि लएि एक नविास स्थान बन गए हो: क्योंकि यह स्पष्ट रूप से देखा जाता है कि तुम धन्य हो; हम सभी के लएि अनवरत प्रार्थना करो।

पवत्रि शहीद गोलंदिुखा का कष्टकथा।

12 जुलाई को स्मरणोत्सव

फ़ारस की भूमि में[5119] , बड़े कुसरो के शासनकाल[5120] के दौरान, एक युवती और सुंदर महलिा रहती थी, जसिे फ़ारसी नाम गोलंदिुखी से जाना जाता था; वह महान महाजन की एक कुलीन वंशज थी, और उसका ववािह मगों के एक प्रसद्धि प्रमुख से हुआ था[5121] । तीन वर्ष के ववािह के बाद, उसे दव्यि प्रकटकिरण द्वारा ज्ञान प्राप्त हुआ और, फारसी अधर्म की भूल को समझना आरंभ करते हुए, उसने यह पता लगाने का प्रयास कयिा कि कौन सा धर्म सत्य है। ईसाई धर्म के बारे में सुनकर, जो शुद्ध और नर्मिल है, उसने मन ही मन सोचा: क्या यही सच्चा धर्म है, या इसके अलावा कोई और धर्म भी है? और गोलंदिुखा इस धर्म में शक्षिति होना और सत्य के ज्ञान को प्राप्त करना चाहती थी। वह कुछ समय तक इसी चंतिन की अवस्था में रहीं, और फरि एक रात, सोते समय, उन्हें एक दर्शन हुआ: उन्होंने परमेश्वर के एक तेजस्वी स्वर्गदूत को देखा जसिने उनका हाथ पकड़कर उन्हें एक अंधेरी और आग से भरी जगह पर ले गया, जो बड़े भय और आतंक से भरी थी, जहाँ बहुत से लोग यातना झेल रहे थे। गोलंदिुखा ने उन्हें ले जा रहे स्वर्गदूत से पूछा:

'यह भयानक स्थान क्या है, और यहाँ पीड़ति ये लोग कौन हैं?'

देवदूत ने उत्तर दयिा:

'यह पापयिों और अवश्विासयिों के लएि दंड का स्थान है; तुम्हारे पूर्वज, जो मूर्तयिों और झूठे फारसी देवताओं की पूजा करते थे, वे भी यहाँ पीड़ति हैं।'

गोलंदिुखा अपने पूर्वजों के वनिाश पर दुखी हुई और गहरी आह भरने लगी। फरि देवदूत उसे एक अन्य स्थान पर ले गया, जहाँ ईश्वर का स्वर्ग और धर्मी लोगों का नविास था, और उसने एक छोटे से द्वार से उसे वह महान प्रकाश दखिाया जो वहाँ चमक रहा था, और उसके भीतर, कई पुरुष और महलिाएँ अवर्णनीय आनंद में आनंदति हो रहे थे; यह

[5118] कोस्त्रोमा में इपतीयेव मठ के ट्रनिटिी कैथेड्रल में, संत माइकल मेलेन को समर्पति एक पार्श्व चैपल है, जो ज़ार माइकल फेडोरोवचि के सम्मान में है, जन्हिें (1613 में) सहिासन पर चढ़ने के लएि इपतीयेव मठ से लाया गया था। सेंट माइकल की प्रतमिा, जो उनके नाम से समर्पति पार्श्व चैपल में रखी गई है, 19वीं सदी की शुरुआत में अपने चमत्कारों के लएि प्रसद्धि हो गई।

[5119] पर्सयिा ईरानी पठार के पश्चमिी भाग में स्थति है। इसकी आधुनकि सीमाएँ पश्चमि में तुर्की, पूर्व में अफगानस्तिान और बलूचस्तिान, दक्षणि में हदिं महासागर और उत्तर में ट्रांसकस्पीयन क्षेत्र हैं। फारसी राजशाही के संस्थापक साइरस थे, जन्हिोंने 558 से 529 ईसा पूर्व तक शासन कयिा और अपनी वजियों के लएि प्रसद्धि थे (उन्होंने पश्चमिी एशयिा के लगभग पूरे भाग को अपने अधीन कर लयिा था)।

[5120] फ़ारसी में 'खोसरू' (या, अधकि सटीक रूप से, 'खोसरव') का अर्थ 'राजा' है। यह उपाधि आमतौर पर कसिी वशिेष राजा के दएि गए नाम के साथ जोड़ी जाती थी। इस मामले में, यह स्वाभावकि रूप से ख़ोसरू प्रथम अनूशरिवान को संदर्भति करता है, जनिका शासन 531 से 579 तक रहा।

[5121] प्राचीन काल में, 'मागी' शब्द उन बुद्धमिान पुरुषों के लएि प्रयुक्त होता था, जन्हिें प्रकृति की छपिी हुई शक्तयिों और खगोलीय पडिों का व्यापक ज्ञान था। वे प्राकृतकि घटनाओं का अवलोकन करते थे, सपनों की व्याख्या करते थे और भवष्यि की भवष्यिवाणी करते थे; अधकिांशत; वे पुरोहति भी होते थे और शाही दरबारों तथा आम लोगों दोनों के बीच उन्हें बहुत सम्मान प्राप्त था। असीरयिो-बابلयिों ने पारसयिों को 'मागी' से परचिति कराया; पारसयिों के बीच, उन्हें शुरू में देशी पुरोहतिों से कड़ी प्रतरिोध का सामना करना पड़ा। लेकनि बाद में, पारसयिों के बीच मागीवाद ने जड़ें जमा लीं, और यह स्थानीय पुरोहति वर्ग के साथ मलि गया; यहाँ तक कि 'मैगस' या 'मैगस' शब्द का अर्थ ही पारसयिों के बीच 'पुरोहति' या 'पुरोहति वर्ग' हो गया। ईरान के प्राचीन नविासयिों के धर्म के संस्थापक ज़ोरोस्टर को कई प्राचीन स्रोतों में मागी या बुद्धमिान पुरुषों की श्रेणी के नेता और सुधारक के रूप में चत्रिति कयिा गया है।

दखिाने के बाद, स्वर्गदूत उन दरवाज़ों से अंदर गया; वह भी स्वर्गदूत का अनुसरण करना चाहती थी, लेकनि उसने उसे अंदर नहीं आने दयिा, और कहा:

'तुम तब तक यहाँ प्रवेश नहीं कर सकती जब तक कि तुम ईसाई नहीं बन जाती: कोई भी जो मसीह का पवत्रि बपतस्मिा नहीं ले चुका है, वह यहाँ प्रवेश नहीं कर सकता।'

तुरंत, गोलदिुखा डरकर जागी, उसने जो देखा था उस पर आश्चर्य करते हुए, और अपने पति की फ़ारसी अधर्मीता और जादू-टोने से क्रोधति होकर, वह एक ईसाई बनने के लिए बहुत तरसने लगी। इस वचिार में मग्न कि वह पवत्रि बपतस्मिा कैसे प्राप्त कर सकती है, उसने इसके लिए सच्चे ईसाई परमेश्वर से आँसुओं के साथ प्रार्थना करना शुरू कर दयिा, और जल्द ही उसे वही मलिा जसिकी उसने माँग की थी; प्रभु के स्वर्गदूत द्वारा नरि्देशति और मार्गदर्शन प्राप्त कर, वह चुपके से घर से नकिल गई और एक ऐसे पुरोहति के पास गई जो एक गुप्त स्थान पर था; इस प्रकार गोलदिुखा को अमूर्त स्वर्गदूत द्वारा देहधारी स्वर्गदूत के पास ले जाया गया, जन्हिोंने उन्हें वश्विास में शक्षिति कयिा और बपतस्मिा दयिा; उनके बपतस्मिा पर उन्हें मरयिम नाम दयिा गया।

बपतस्मिा के बाद, वह घर लौट आई, लेकनि अब उसने प्राकृतकि वैवाहकि बंधन का पालन नहीं कयिा, क्योंकि वह अपने अधर्मी पति से अपवत्रि नहीं होना चाहती थी, क्योंकि उसकी सगाई मसीह से हो चुकी थी; जसि आध्यात्मकि पतिा ने उसका बपतस्मिा दयिा था, उनकी सलाह पर, गोलदिुखा ने उपवास और प्रार्थना में खुद को समर्पति कर दयिा, और पूरी-पूरी रातें इसी अभ्यास में बतिाईं; वह अपने दनि मौन में बतिाती थी, अवश्विासयिों से बातचीत करने से इनकार करती थी, और अपने पति को उसे छूने भी नहीं देती थी। उसका पति उसके इस अप्रत्याशति परविर्तन और असामान्य व्यवहार से चकति था; वह इस बात से हैरान था कि उस पर क्या चढ़ गया है और वह उसके लिए चंतिति था। लेकनि वह वशिेष रूप से इस बात पर शोक मनाता था कि उसकी पत्नी से शारीरकि अंतरंगता खो गई थी, क्योंकि उसे उसके साथ रहने की बलि्कुल भी इच्छा नहीं थी; और लंबे समय तक उसने उसके संकल्प को तोड़ने की कोशशि की, कभी कोमलता और वनितयिों से, तो कभी हसिा और पटिाई से, लेकनि वह अपना उद्देश्य पूरा नहीं कर सका, क्योंकि मसीह की वधू परमेश्वर की अदृश्य शक्ति से मजबूत थी, और उसका पति उस पर वजिय प्राप्त करने में असमर्थ था। जब उसे आखरिकार पता चला कि उसकी पत्नी ईसाई बन गई है, तो पति उसके लिए इस तरह रोया मानो वह खो गई हो, और आँसुओं के साथ उसने हर तरह से उससे वनिती की कि वह मसीह का त्याग कर दे और पहले की तरह वैवाहकि संबंध में उसके साथ रहे; लेकनि वह उसे हलिा नहीं सका, क्योंकि वह मसीह के प्रति अपने वश्विास और प्रेम में एक अटूट स्तंभ की तरह दृढ़ खड़ी रही। उसने तो उस पर अपनी जादू-टोना भी आजमाया, मदद के लिए राक्षसों की शक्ति को पुकारा, लेकनि वह भी पूरी तरह असफल रहा, क्योंकि राक्षस भी उसके पास से दूर ही रहने की हम्मित नहीं कर सके, यह देखकर कि वह मसीह की कृपा से प्रकाशमान थी। तब वह राजा खुसरो के पास गया और बड़ी नराशिा के साथ उसे बताया कि उसकी पत्नी ईसाई बन गई थी और उससे ववािह-बंधन में बने रहने से घृणा करती थी। राजा ने उसे मनाने के लिए अपने एक दरबारी को भेजा, लेकनि वह कुलीन व्यक्ति भी खाली हाथ लौट आया। और ऐसा एक बार नहीं, बल्कि कई बार हुआ: राजा ने पहले प्रतषि्ठति पुरुषों को, फरि स्नेह और चापलूसी के साथ कुलीन महलिाओं को उसके पास भेजा, ताकि वह अपने पूर्व धर्म में लौट आए और अपने पति के साथ अपना वैवाहकि संबंध फरि से शुरू कर दे, लेकनि उनके सभी प्रयास व्यर्थ गए। एक बार राजा ने गोलन्धिुखा को संदेश भेजा कि यदि वह ईसाई धर्म त्यागकर पारसी धर्म में लौट आए, तो वह उसे अपनी पत्नी बना लेगा और वह रानी बन जाएगी; लेकनि संत ने उनके पास आए लोगों से कहा:

'मैं तुमसे एक बात पूछूँगी; मुझे बताओ: मान लो कि राजा मुझे अपनी पत्नी बना ले; लेकनि क्या वह नहीं मरेगा – क्या वह हमेशा जीवति रहेगा? अगर वह अमर है, तो मैं उसकी आज्ञा मानूँगी।'

'कसिी मनुष्य का अमर होना असंभव है,' आए हुए लोगों ने उत्तर दयिा: 'राजा एक मनुष्य है और नस्सिंदेह मर जाएगा।'

तब संत ने कहा:

'मैं एक नश्वर और क्षणकि राजा के साथ एकीकृत नहीं होना चाहती, क्योंकि मैं अमर राजा, जो हमेशा जीवति रहते हैं, मेरे ईश्वर मसीह के साथ एकीकृत हूँ, जसिके लिए मैं पीड़ा सहने और मरने दोनों के लिए तैयार हूँ।'

दूतों ने, लौटने पर, उसकी बातें राजा तक पहुँचाईं; वह आग-बबूला हो गया, और उसने उसे सरि से पाँव तक लोहे की बेड़यिों में जकड़कर एक कालकोठरी में डाल देने का आदेश दयिा, ताकि उसे सभी भूल जाएँ जैसे वह मर ही चुकी हो। और वह शहीद 18 वर्षों तक कालकोठरी में रही। इस बीच, फारस का राजा खुसरू मर गया; उसके बाद उसका बेटा ओर्मस्दिास

राजा बना, जबकि यूनान में शासकों में बदलाव हुआ: जस्टिन द यंगर[5122] , टिबेरियस II[5123] , और उनके बाद सेंट मॉरिस[5124] । उस समय, यूनानियों का एक राजदूत फारस आया, जिसका नाम अरिस्टोबुलस था, जो एक ईमानदार, ईश्वर-प्रेमी और ईश्वर-भयभीत व्यक्ति था; यह सुनकर कि मिरियम – गोलदिखा – को कैद किया गया था, वह उन्हें देखना और उनका आशीर्वाद प्राप्त करना चाहता था। उसने विशेष रूप से फारस के राजा से अड्डे तक निर्बाध पहुँच की अनुमति माँगी; अनुमति मिलने पर, वह संत के पास गया, मसीह के लिए उन्हें बाँधने वाली बेड़ियों को चूमा, और यहाँ तक कि आशीर्वाद के रूप में उनके एक छोटे से टुकड़े को अपने लिए भी ले लिया। फ़ारस में रहते हुए, यह व्यक्ति अक्सर संत से मिलने आता था और उसे दाऊद के भजन सिखाता था, ताकि मिसीह की वधू, अपने कारागार में मानो किसी महल में बैठी हो, उन्हें गाए और ईश्वर की स्तुति करे।

अरिस्टोबुलस के जाने के बाद, ओर्मिस्दास ने सेंट गोलदिखा को उनके अनुरोध पर यातना देने के लिए मगियों के हवाले कर दिया; वे हर दिन उसे उसके कालकोठरी से बाहर ले जाते, उस पर कई घाव करते और निर्दयता से यातना देते, फिर भी सुबह वे उसे अछूता और अच्छे स्वास्थ्य में पाते थे। एक अवसर पर, उसके घावों से उसके स्तन पूरी तरह से अलग हो गए, क्योंकि उसे उसके पेट और छाती दोनों पर बुरी तरह पीटा गया था; फिर भी जब सुबह उसे फिर से यातना देने के लिए बाहर लाया गया, तो उसके स्तन और उसका पूरा शरीर अछूता पाया गया; यह देखकर, फारसी चकित हो गए और उन्होंने मसीह की शक्ति की महिमा की, और उनमें से कई ने तो ईसाई धर्म भी अपना लिया। तथापि, मगों ने मसीह के मेमने के विरुद्ध जानवरों की तरह उग्रता दिखाई और नए-नए यातनाएँ रचीं: उन्होंने उसके सिर को आग से झुलसाया; फिर उन्होंने गोलदिखा को एक मदिरा-मशक में डालकर उसे बाँध दिया और सील कर दिया, और उसे एक गहरे गड्ढे में फेंक दिया ताकि वह वहीं मर जाए। लेकिन सर्वशक्तिमान परमेश्वर के हाथ द्वारा, जिसने उसके जीवन को संरक्षित रखा, वह जीवित रही, भले ही उसने कई दिनों तक बिना भोजन या पानी के बिताया; या शायद उसे अदृश्य भोजन और पानी से जीवित रखा गया था। ईश्वर जहाँ चाहें, वहाँ प्राकृतिक नियमों को पार कर देते हैं। जब, एक अलौकिक शक्ति के कार्य से, शहीद कई दिनों तक जीवित रहीं, तो निर्लज्ज पुरुषों को उसे अपवित्र करने का आदेश दिया गया। इस उद्देश्य के लिए, उसे एक विशेष कमरे में ले जाया गया; लेकिन जब वे उसे देखने के लिए अंदर गए, तो वे उसे ढूंढ नहीं सके, क्योंकि ईश्वर ने उसे अदृश्य बना दिया था: उनकी दुष्ट आँखें मसीह की पवित्र वधू को देख नहीं सकती थीं; और जब वे चले गए, तो वह फिर से अदृश्य हो गई और यातना देने वालों के सेवकों को दिखाई नहीं दी, और वे उसे विभिन्न यातनाएँ सहने के लिए वापस ले गए। तब उसे एक विशाल और भयानक सर्प को खिलाने के लिए फेंक दिया गया, जिसे एक गहरी खाई में रखा और खिलाया जाता था। लेकिन जिसने एक बार सिंहों के मुँह बंद कर दिए थे ताकि वे दानियेल को न खा सकें, जिसे सिंह के गड्ढे में फेंका गया था[5125] , उसने अपना स्वर्गदूत भेजा, और उसने साँप का मुँह बंद कर दिया ताकि वह पवित्र शहीद के धैर्यवान शरीर को नुकसान न पहुँचाए या छू न सके; साँप की क्रूरता शांत हो गई, और वह उसके सामने एक मेमने की तरह शांत हो गया; वह उसके पैरों पर लेटकर विश्राम करने लगा, और संत चार महीने तक साँप के साथ गड्ढे में रहीं: हर दिन साँप को भोजन फेंका जाता था, जबकि शहीद, बिना भोजन या पानी के, पहले की तरह ही जीवित रहीं, ईश्वर की शक्ति की बदौलत, जिसने चमत्कारिक रूप से उनका जीवन बचाया। तब, कई दिन बीत जाने के बाद, उन्हें खाने की इच्छा हुई, और परमेश्वर का एक स्वर्गदूत उनके सामने प्रकट हुआ; उसने क्रॉस का चिह्न बनाते हुए, उनके होठों को छुआ और कहा:

'अब से, तुम्हें न तो भूख लगेगी और न ही प्यास; और यदि, देह में रहते हुए, तुम कुछ चखना चाहो, तो तुम्हारी इच्छा के अनुसार होगा।'

यह कहकर, वह उसे उस गुफा से बाहर ले गया। जब दुष्ट लोगों ने उसे देखा, तो उन्होंने उसे फिर से पकड़ लिया, और इस बात पर बहुत आश्चर्य किया कि उसे साँप ने नहीं खाया था और वह गुफा से बाहर निकल आई थी; और उन्होंने कहा कि उसने ईसाई जादू-टोने से साँप को मंत्रमुग्ध कर दिया था ताकि वह उसे न खाए, और उसी जादू-टोने से वह गड्ढे से बच निकली थी। और उन्होंने फिर से घोषणा की:

'ईसाई जादू कितनी शक्तिशाली है—यह तो फ़ारसी जादू से भी बढ़कर है!'

[5122] जस्टिन द्वितीय – सम्राट 565–578।

[5123] 578 से 582 तक सम्राट।

[5124] सम्राट 582–602.

[5125] दानियेल 2:1–49।

हालाँकि, जब राजा को यह पता चला कि वह अभी भी जीवित है, तो उसने तलवार से उसका सिर कलम करने का आदेश दिया; लेकिन जब उसे फाँसी के लिए ले जाया जा रहा था, तो प्रभु का एक स्वर्गदूत उसे साथ ले जा रहे सैनिकों के हाथों से छीनकर उसे जीवित रखे हुए था। शहीद महिला, अपने अत्याचारियों की जानकारी में आए बिना, ईसाइयों के बीच रहती रही, जिनकी उस समय फारस में संख्या बहुत कम थी: वे गुमनाम स्थानों पर रहते थे, जैसे कि छिपकर, हालांकि काफिरों को उनके बारे में पता था। देवदूत के आदेश पर, संन्यासी को न तो भूख लगती थी और न ही प्यास, सिवाय शायद कुछ दुर्लभ अवसरों के जब, यह दिखाने की इच्छा से कि वह कोई भूत नहीं बल्कि एक देहधारी थी, वह रोटी का एक छोटा सा टुकड़ा लेती, उसे पानी में डुबोती और खा लेती; वह ऐसा अक्सर नहीं करती थी, बल्कि बहुत कम करती थी - कभी-कभी हर दस दिनों में एक बार, या उससे भी कम। शहीद को मौत से बचाए जाने के कुछ ही समय बाद, दुष्ट फ़ारसी राजा ओरमिस्दास का अपने ही दरबारियों द्वारा हत्या किए जाने से दुखद अंत हुआ; उसका बेटा ख़ोसरू ई[5126] , जो बड़े ख़ोसरू का पोता था, राजा बना, लेकिन कुलीनों ने उससे भी विद्रोह कर दिया, और वह फ़ारस से भाग गया। वह सोच रहा था कि उसे कहाँ जाना चाहिए: अरब, जहाँ सारसेन पहले से ही मौजूद थे, या ईसाइयों के बीच ग्रीक भूमि पर; किस ओर जाना है यह तय न कर पाकर, उसने अंततः अपने घोड़े की लगाम छोड़ देने और उसी दिशा में चलने का फैसला किया जिसे घोड़ा चुने। जब वह उस जगह पहुँचा जहाँ एक सड़क अरब की ओर जाती थी और दूसरी ग्रीक भूमि की ओर, तो घोड़ा ग्रीस की सड़क पर चल पड़ा, और ख़ोसरू अपने पूरे दल-बल के साथ ग्रीक साम्राज्य की ओर चल पड़ा, जहाँ ग्रीक राजा मॉरिस ने उसका सम्मान और दयालुता से स्वागत किया। मौरिसियस ने अपनी सेना का एक बड़ा दल खसरू के उपयोग के लिए उपलब्ध कराया; इस सेना के साथ, खसरू फारस में प्रवेश किया, अपने दुश्मनों को हराया और अपना सिंहासन वापस हासिल किया। फारस में रहने वाले ईसाइयों के लिए आनंद और स्वतंत्रता का युग शुरू हुआ, क्योंकि खिसरू मौरिसियस को अपना पिता मानता था और इसलिए, बाद वाले की मृत्यु तक, उसने ईसाइयों को कोई नुकसान नहीं पहुँचाया। मेलिटियन के बिशप, सेंट डोमेटियन, मॉरिस द्वारा भेजे गए, खुसरव के साथ फारस आए। उन्होंने, उनसे पहले के अरिस्टोबुलस की तरह, अपनी आँखों से पवित्र शहीद मरियम को देखा, जिन्हें फारसी में गोलदिखा के नाम से जाना जाता था, जो अब बेड़ियों में नहीं थीं, बल्कि स्वतंत्र होकर, फारसियों को मसीह का उपदेश दे रही थीं; उसने उससे बात की, और उसके कष्टों के बारे में या तो सीधे उसके अपने मुँह से या दूसरों से सुना, और ग्रीस लौटने पर, उसने कई लोगों को उसके बारे में बताया। ईरान में मरियम के उपदेश के माध्यम से, उनके रिश्तेदारों, अन्य प्रतिष्ठित लोगों और बहुत से आम लोगों ने पवित्र धर्म को अपना लिया, क्योंकि कई लोगों ने उनके द्वारा किए गए चमत्कारों को देखा, जिसमें भविष्य के बारे में कई भविष्यवाणियाँ और उनका पूरा होना शामिल था, क्योंकि उनमें दूरदर्शिता का वरदान था, जिससे वे छिपी और गुप्त बातों को जान सकती थीं; इन सबके कारण, उन देशों में मसीह की महिमा बढ़ गई। इसके बाद, संत यूनानी साम्राज्य के क्षेत्रों, किर्किसिया और दारिया के लिए रवाना हुईं; उन्होंने यरूशलेम का दौरा किया और वहाँ पवित्र क्रूस के जीवन-दायक वृक्ष, प्रभु के मकबरे और अन्य पवित्र अवशेषों की पूजा की। अन्य स्थानों के अलावा, वह एक मठ में आई जहाँ दुष्ट सेवरस का संप्रदाय प्रचलित था; वह यह दावा करता था कि दिव्यता ने पीड़ा सहन की थी और इसलिए उसने त्रिसिगियोन में निम्नलिखित शब्द जोड़े: 'हमारे लिए क्रूस पर चढ़ाया गया, हम पर दया करो, हे पिता और पवित्र आत्मा, जो पुत्र के साथ क्रूस पर पर पीड़ित हुए।' संत ने ईश्वर से प्रार्थना की कि वे उन्हें इन सेवेरियनों के बारे में प्रकट करें कि क्या उन्हें उनका संप्रदाय स्वीकार करना चाहिए या नहीं, और उन्होंने एक देवदूत को दो प्याले पकड़े हुए देखा[5127] , – एक अंधकार से भरा, दूसरा प्रकाश से भरा – और उसे यह प्रकट करते हुए कि अंधकार वाला प्याला विधर्मी संप्रदाय का प्रतिनिधित्व करता था, जबकि प्रकाश से भरा प्याला पवित्र, कैथोलिक और प्रेरित[5128] चर्च के संप्रदाय का प्रतिनिधित्व करता था। इसलिए, संत ने विधर्मियों के साथ संप्रदाय ग्रहण करने से इनकार कर दिया और उस स्थान को छोड़ने के लिए जल्दी की। ईश्वर के स्वर्गदूत के मार्गदर्शन में, वह अन्य देशों और शहरों में घूमीं, सीरिया में हिएरापोलिस गईं और वहाँ बिशप स्टीफन से मिलीं, जिन्होंने बाद में उनकी जीवनी लिखी। जैसे-जैसे उनके परमधाम जाने का समय निकट आया, वे पवित्र शहीद सेरजियस के चर्च में थोड़ी बीमार पड़ गईं, जो निज़ीविया और दारा नामक नगर के बीच स्थित था; उन्होंने संपूर्ण जगत के

[5126] खुसरव II परवेज़ ने 590 से 628 तक शासन किया; उन्होंने 614 में, यूनानी सम्राट फोकास के साथ युद्ध के दौरान, यरूशलेम में प्रभु के क्रूस के जीवन-दायक वृक्ष पर कब्ज़ा कर लिया था। सच्चा क्रूस 628 में ख़सरो द्वितीय के उत्तराधिकारी सिरिसेस द्वारा, यूनानी सम्राट हेराक्लियस के साथ शांति समझौते के बाद वापस कर दिया गया था।

[5127] कलश – एक प्याला।

[5128] अर्थात्, सार्वभौमिक चर्च।

उद्धार के लिए प्रार्थना की, और ईश्वर की महान दया के लिए धन्यवाद दिया, उसे प्राप्त हुई, और उसने प्रसन्नतापूर्वक अपनी पवित्र आत्मा को प्रभु के हाथों में सौंप दिया, जिन्हें वह बहुत प्रेम करती थी और जिनके लिए उसने बहुत कष्ट उठाए थे; उसे स्वर्ग के राज्य में पवित्र शहीदों में गिना गया। इस प्रकार संत मरियम शहीद, जिन्हें गोलदिखा के नाम से भी जाना जाता है, ने हमारे प्रभु मसीह यीशु में अपना सांसारिक जीवन समाप्त किया, जिनका महिमा युगानुयुग होती रहे, आमीन[5129] ।

26 जुलाई

13 जुलाई (पुराने कैलेंडर के अनुसार)

संत गब्रियिल महादूत का पर्व

13 जुलाई को स्मरणोत्सव

हम अपने उद्धार के सूचक, ईश्वर के महान सेवक और परम पवित्र कुँवारी मरियम (लूका 1:26) के आनंददायक दूत, महादूत गब्रियिल की स्तुति अपने भजनों में करते हैं, जब हम उनका पर्व दिवस दूसरी बार मनाते हैं। उनका पहला पर्व परम पवित्र थिओटोकोस की घोषणा के अगले दिन, 26 मार्च को मनाया जाता है; अब, एक बार फिर, यह पर्व पवित्र चर्च में मनाया जाता है, और एक बार फिर ईश्वर की आज्ञा से प्रकट हुई उनकी अद्भुत रूप-प्रकटियों का स्मरण और महिमा की जाती है। उन्होंने मूसा को, जो फिरौन के हाथ से बच निकले थे, निर्जन स्थान में शास्त्र सिखाए; उन्होंने उन्हें संसार की शुरुआत, पहले मनुष्य आदम की सृष्टि, उसके जीवन और उसके बाद आए कुलपतियों के जीवन, और उसके बाद के समयों—प्रलय और भाषाओं के भ्रम—के बारे में बताया; उन्होंने उन्हें स्वर्गीय ग्रहों और तत्वों की व्यवस्था समझाई, और उन्हें अंकगणित, ज्यामिति और हर तरह की बुद्धि सिखाई। उन्होंने भविष्य के आने वाले राजाओं और राज्यों के बारे में नबी दानियेल को अद्भुत दर्शन समझाए, जिन्हें विभिन्न जानवरों के रूप में उनके सामने दर्शाया गया था; उन्होंने उन्हें बेबीलोन की कैद से परमेश्वर के लोगों की मुक्ति के समय के साथ-साथ परम पवित्र कुँवारी से अवतार लेकर मसीह के संसार में पहली बार आगमन के समय के बारे में भी सूचित किया (दानिय़ेल 8:1–27, 9:1–27)। वह पवित्र और धर्मी अन्ना के सामने प्रकट हुए, जो अपने बगीचे में अपनी बाँझपन पर शोक मना रही थीं और आँसुओं के साथ ईश्वर से प्रार्थना कर रही थीं, और उनसे कहा:

'अन्ना, अन्ना! तुम्हारी प्रार्थना सुनी गई है; तुम्हारी आहें बादलों को पार कर गई हैं, और तुम्हारे आँसू परमेश्वर तक पहुँच गए हैं: तुम एक धन्य पुत्री को गर्भ धारण करोगी और जन्म दोगी, जिसके द्वारा पृथ्वी के सभी कुल धन्य होंगे, जिसके द्वारा संसार को उद्धार प्रदान किया जाएगा, और जिसका नाम मरियम रखा जाएगा।'

इसी प्रकार, पवित्र महादूत गब्रियिल धर्मी योआकिम के पास प्रकट हुए, जो रेगिस्तान में उपवास कर रहे थे, और उन्होंने उन्हें वही संदेश सुनाया जो संत अन्ना को सुनाया गया था: कि उनकी एक बेटी होगी, जिसे मानव जाति के उद्धार के लिए आने वाले मसीहा की माता बनने के लिए प्राचीन काल से चुना गया था। इस महान महादूत को ईश्वर द्वारा बांझ माता-पिता से जन्मी कुँवारी मरियम का संरक्षक नियुक्त किया गया था, और जब उन्हें मंदिर में लाया गया, तो उन्होंने उनकी देखभाल की, और प्रतिदिन उनके लिए भोजन लाए। वह पवित्र याजक जकरियाह के पास भी प्रकट हुए, जो धूप के वेदी के दाहिनी ओर खड़े थे, और उन्होंने उन्हें यह घोषणा की कि उनकी वृद्ध पत्नी एलिजाबेथ की बाँझपन दूर हो जाएगा और प्रभु के अग्रदूत सेंट जॉन का जन्म होगा; और जब जकरियाह ने उन पर विश्वास नहीं किया, तो उन्होंने उनकी जीभ को तब तक मूकता में बाँध दिया जब तक कि उनके वचन पूरे नहीं हो गए (लूका 1:25)। ईश्वर के इसी मध्यस्थ ने, ईश्वर द्वारा नासरत भेजे जाने पर, परम पवित्र कुँवारी मरियम के समक्ष प्रकट हुए, जो धर्मी यूसुफ के लिए मंगनी में बँधी थीं, और उन्हें उनके भीतर पवित्र आत्मा के कार्य और छाया द्वारा ईश्वर के पुत्र की गर्भधारण की घोषणा की।

[5129] शहीद सेंट गोलनिखा की मृत्यु 591 में हुई। 9वीं-10वीं शताब्दी के कॉन्स्टेंटिनोपोलिटन टाइपिकॉन के अनुसार, उनकी जीवनी यूस्ट्रैटियस द्वारा लिखी गई थी, जो कॉन्स्टेंटिनोपल के ग्रेट चर्च के एक पादरी और सेंट पैट्रिआर्क यूटिकियस के समकालीन थे।

वह यूसुफ़ को भी स्वप्न में प्रकट हुआ, और उसे समझाया कि वह कुँवारी पवित्र बनी रही, क्योंकि जो उसमें गर्भ में आया वह पवित्र आत्मा से था (मत्ती 1:18–21)। और जब हमारे प्रभु बेतलहम में जन्मे, तो प्रभु का यह स्वर्गदूत, गब्रियल, रात में अपनी भेड़ों की रखवाली कर रहे चरवाहों के पास प्रकट हुआ, और कहा:

'मैं तुम्हें बड़े आनन्द का शुभ समाचार देता हूँ, जो सब लोगों के लिए होगा; क्योंकि आज दाऊद के नगर में तुम्हारे लिए एक उद्धारकर्ता जन्म लिया है, जो मसीह प्रभु है।'

और तुरन्त स्वर्गियों की बड़ी सेना उनका साथ गाने लगी: *'परम-महान में परमेश्वर का महिमा हो, और पृथ्वी पर शांति और मनुष्यों में प्रीति हो'* (लूका 2:10-14)।

ऐसा माना जाता है कि यह स्वर्गदूत, मसीहा यीशु के उनके दुख-क्लेश से पहले, तब प्रकट हुआ जब वे बगीचे में प्रार्थना कर रहे थे, क्योंकि गिब्रियल नाम का अर्थ है 'ईश्वर की शक्ति'। गैब्रियल के प्रकट होने पर उन्होंने उन्हें बल दिया, क्योंकि उनके अन्य कार्यों में यह भी था—वीरता के कार्यों में बल देना—और हमारे प्रभु उस समय प्रार्थना में गहन रूप से लगे हुए थे (लूका 22:43; इब्रानियों 5:7)। यही स्वर्गदूत मूर के ले जाने वालों के पास भी प्रकट हुआ, जो कब्र के पास एक पत्थर पर बैठे थे, और उन्हें प्रभु के पुनरुत्थान की घोषणा की (मत्ती 28:1–20; मरकुस 16:1–20; लूका 24:1–53; यूहन्ना 20:1–31): इस प्रकार, प्रभु के गर्भाधान और जन्म के सूचक होने के बाद, वह उनके पुनरुत्थान के सूचक के रूप में भी प्रकट हुए। वह पवित्र कन्या मरियम के पास भी प्रकट हुए, जो जैतून के पहाड़ पर प्रार्थना कर रही थीं, और उन्होंने उन्हें उनके गौरवपूर्ण स्वर्गारोहण और पृथ्वी से स्वर्ग में जाने के निकट आने की सूचना दी, और उन्हें स्वर्ग के बगीचे से एक तेजस्वी टहनी दी। पवित्र कलीसिया, पुराने और नए नियम में उनके कई प्रकट होने को याद करते हुए और मसीही जाति के लिए परमेश्वर के सामने उनकी निरंतर मध्यस्थता को जानते हुए, अब उनकी परिषद-उत्सव मनाती है, ताकि परमेश्वर की प्रजा हमेशा और उत्साहपूर्वक मानव जाति के इस मध्यस्थ और कल्याणकर्ता की मध्यस्थता और सहायता की खोज कर सके, और उनकी प्रार्थनाओं के द्वारा हमारे प्रभु और उद्धारकर्ता मसीह[5130] से पापों की क्षमा प्राप्त कर सकें।

ट्रोपारियन, स्वर 4:

स्वर्गीय सेनाओं के सेनापति, हम अयोग्य जन सदा तुझसे विनती करते हैं: अपनी प्रार्थनाओं द्वारा, हमें अपनी निराकार महिमा के आवरण से ढाँप, हमें संरक्षित कर, जैसे हम नम्रतापूर्वक साष्टांग प्रणाम करते और पुकारते हैं: हमें क्लेशों से उबार, हे स्वर्गीय सेनाओं के सेनापति।

कॉन्टाकियन, स्वर 2:

स्वर्ग में परमेश्वर की महिमा को निहारते हुए, और ऊँचे से पृथ्वी पर अनुग्रह प्रदान करते हुए, हे बुद्धिमान गब्रियल, स्वर्गदूतों के प्रमुख, परमेश्वर की महिमा के सेवक, और शांति के दिव्य योद्धा, जो तेरी ओर पुकारते हैं, उन्हें बचा और उनकी रक्षा कर: तू हमारा सहायक बन, और कोई भी हमारे विरुद्ध न हो।

एक और कोंटाकियन, स्वर 2:

हे परमेश्वर के महादूत, दिव्य महिमा के सेवक, स्वर्गदूतों के राजकुमार और मानव जाति के मार्गदर्शक, अमरत्व की सेनाओं के नेता के रूप में, हमारे लिए मध्यस्थता करें और महान दया प्राप्त करें।

[5130] यह पर्व दिवस पहली बार 9वीं शताब्दी तक में प्रकट हुआ; इसके स्थापना का अवसर संभवतः कॉन्स्टेंटिनोपल में महादूत गब्रियल को समर्पित एक चर्च का अभिषेक था।

आदरणीय स्टीफन द सवेट की स्मृति

13 जुलाई को स्मरणोत्सव

हमारे पूजनीय पिता स्टीफन का जन्म वर्ष 725 में हुआ था। दस वर्ष की आयु में, उन्होंने संत सावा के लावरा में प्रवेश किया, और वर्ष 794 में अपनी मृत्यु तक, संत स्टीफन ने अपना जीवन या तो इसी मठ में या पास के रेगिस्तान में बिताया, और इसी कारण उन्हें सावाइट कहा जाता है। संत स्टीफन ने कई चमत्कार और अद्भुत कार्य किए, और उन्होंने अन्य बातों के अलावा, अपनी मृत्यु का पूर्वानुमान भी लगाया था। उन्हें 28 अक्टूबर को स्मरण किए जाने वाले सवितिाई स्टीफन (Stephen the Savvite) के साथ भ्रमित नहीं किया जाना चाहिए।

संत सेरापयिन का पर्व

13 जुलाई को स्मरण किया जाता है

संत सेरापयिन राजा सेवरस के शासनकाल में[5131] में रहते थे और एक धार्मिक और सदाचारी व्यक्ति थे। जब उन्हें राजकुमार अक्विला द्वारा बंदी बना लिया गया और उनके विश्वास के बारे में पूछा गया, तो सेरापयिन ने खुद को एक ईसाई बताया और निडर होकर सच्चे ईश्वर की महिमा की; इस कारण से, उन्हें विभिन्न प्रकार की यातनाएँ दी गईं और फिर आग में फेंक दिया गया, इस प्रकार उनका जीवन समाप्त हो गया[5132] ।

हमारे पवित्र पिता जूलियन का जीवन

13 जुलाई को स्मरण किया जाता है

संत जूलियन (जिन्हें कुछ लोग सुसमाचार (मत्ती 26:6) में उल्लेखित कोढ़ी साइमन मानते हैं, जिन्होंने अपने बपतिस्मा पर अपना नाम साइमन से जूलियन में बदल लिया था) को प्रमुख प्रेरित पतरस द्वारा बिशप नियुक्त किया गया और उन्हें परमेश्वर का वचन प्रचार करने के लिए गॉल भेजा गया। कीओमनिया शहर में पहुँचने पर[5133] , वह इसके पहले प्रेरित बने, ठीक उसी तरह जैसे संत डायोनिसियस द एरोपागिट पेरिसिवासियों के लिए थे[5134] ; क्योंकि उसी वर्ष, दोनों ने उन भूमिओं में पवित्र विश्वास की नींव रखी और मसीह की कलीसिया की स्थापना की, तथा प्रचार करने और मानव आत्माओं के उद्धार की देखभाल करने में प्रेरितीय परिश्रम किया। शुरुआत में, अविश्वासी केनोमनीवासियों के लिए, संत जूलियन द्वारा प्रचारित नया उपदेश कुछ लोगों के लिए प्रलोभन का स्रोत और दूसरों के लिए उपहास और तिरिस्कार का कारण बना; लेकिन जब केनोमनीवासियों ने मसीह के सर्वशक्तिमान नाम पर किए गए चमत्कारों को देखा, तो वे धीरे-धीरे इस उपदेश पर विश्वास करने लगे। क्योंकि सच्चे ईश्वर के प्रचारक के हाथों से कई चमत्कार हुए: दैत्यों को भगाया गया, कोढ़ियों को शुद्ध किया गया, अंधों की आँखें खोल दी गईं, और हर तरह की बीमारियाँ ठीक हो गईं – संत जूलियन ने मसीह के नाम का उच्चारण करके और उन पर क्रॉस का चिन्ह बनाकर, बीमारों पर चमत्कारी कार्यों के माध्यम से ईश्वर के बारे में अपनी शिक्षा की पुष्टि की। इस प्रकार उनके शरीर को चंगा करते हुए, उन्होंने उनकी आत्मा को भी चंगा किया, मसीह यीशु के बारे में उपदेश देकर और उन्हें पवित्र बपतिस्मा के माध्यम से ज्ञान प्रदान किया। शुरुआत में, संत शहर के बाहरी इलाके में एक छोटे से घर में रहते थे, और वहाँ कई लोग उनके पास आने लगे: नए धर्मांतरित शिक्षा

[5131] 193 से 211 तक सम्राट।

[5132] बेसलि के मेनोलॉजियन में कहा गया है कि संत सेरापयिन ने मसीह के नाम की घोषणा करने के बाद, उन्हें बुरी तरह कोड़ों से पीटा गया, पूरे शरीर पर कोड़ों के घाव लगे और फिर जेल में भूखा रखा गया; जेल में रहते हुए मसीह द्वारा चंगा किए जाने और बाद में पूरी तरह स्वस्थ होकर जेल से बाहर निकलने पर, उन्होंने सभी को चकित कर दिया। उनकी मृत्यु का वर्ष 205 माना जाता है, हालांकि स्थान अज्ञात है।

[5133] केनोमनिया – अब फ्रांस में ले मैन।

[5134] एथेन्स में एरियोपागस के सदस्य, संत डायोनिसियस द एरियोपागिट, प्रेरित की उपदेश द्वारा मसीह के धर्म में परिवर्तित हुए पौलुस, जिनके द्वारा उन्हें एथेन्स का बिशप नियुक्त किया गया था; बाद में उन्हें वर्ष 90 में पुरोहित रस्टिकस और डिकिन एलेउथेरीउस के साथ प्रचार करने के लिए गॉल भेजा गया, और उन्होंने सम्राट डोमिशियन के शासनकाल में वर्ष 96 में उनके साथ शहादत प्राप्त की। सेंट डायोनिसियस द एरोपागिट का पर्व दिवस 3 अक्टूबर है।

की तलाश में, और अवशि्वासी बीमारी से उपचार की तलाश में; और यहाँ बाद वालों को दोहरा उपचार मलिा, और वे वशि्वासी बन गए। जहाँ संत रहते थे, वहाँ पानी नहीं था, इसलिए जो लोग उनके पास आते और उनके साथ ठहरते थे, उन्हें पानी की बहुत कमी होती थी, जसिे दूर से लाना पड़ता था; इसलिए, ईश्वर के पुरुष, अपने साथयिों के साथ, एक दनि पास के एक वृक्ष समूह में गए, वहाँ अपनी लाठी जमीन में ठोक दी, और सभी के सुनने के लिए ऊँचे स्वर में ईश्वर से प्रार्थना की:

'हे हमारे प्रभु परमेश्वर, जन्हिोंने एक बार जंगल में अपने प्यासे लोगों के लिए कठोर चट्टान से पानी नकिाला था (गनिती 20:1–29), हम पर, अपने सेवकों पर, दृष्टि डालिए, अपनी भलाई का भंडार हमारे लिए खोल दीजिए, और इस सूखी भूमि से जीवति (झरना) जल का स्रोत प्रवाहति कराइए, ताकि यहाँ उपस्थति सभी लोग जान जाएँ कि आप ही सच्चे परमेश्वर हैं, जो युगों के अंत में, उन लोगों को जो आप में वशि्वास करते हैं, सच्चे प्रतज्ञि ात देश में ले जाने के लिए, अपने पुत्र को संसार में भेजेंगे।

जब संत ने अपनी प्रार्थना समाप्त कर ली और वशि्वासयिों ने 'आमीन' कहा, तो तुरंत उस जगह से जहाँ लाठी घुसाई गई थी, पानी का एक झरना फूट पड़ा, जसिसे लोगों को परमेश्वर की सर्वशक्तमिान शक्ति और पवत्रि पुरुष के परमेश्वर के प्रति महान वशि्वास और साहस का पता चला। तब वशि्वासयिों का वशि्वास दृढ़ हुआ, जबकि अवशि्वासयिों ने परमेश्वर के उस पुरुष के चरणों में गरिकर बपतस्मिा देने का अनुरोध कयिा। परमेश्वर के पवत्रि पुरुष ने उन्हें इसी झरने के पानी से बपतस्मिा दयिा; इस प्रकार, दनि-प्रतदिनि मसीह की कलीसयिा बढ़ती और फलती-फूलती गई। जब संत जूलयिन बशिप अपने चमत्कारों के लिए प्रसद्धि हो गए, तो उस शहर के राजकुमार, जसिका नाम डफिेंडर था, ने उन्हें देखना चाहा और सम्मानपूर्वक उनके पास आने के लिए संदेश भेजा। संत राजकुमार के नविास के लिए रवाना हुए; जैसे ही वे द्वार के पास पहुँचे, उन्होंने एक अंधे आदमी को भीख मांगते हुए देखा; उस पर दया करके, उन्होंने यीशु मसीह का नाम लयिा और उस व्यक्ति की आँखों पर क्रूस का चन्हि बनाकर उसकी दृष्टि वापस कर दी। दृष्टि वापस पाने वाले व्यक्ति की खुशी बहुत बड़ी थी, और वहाँ मौजूद लोगों को चमत्कार देखकर बहुत आश्चर्य हुआ, जसिकी सूचना तुरंत राजकुमार को दे दी गई। राजकुमार संत से मलिने के लिए दौड़ता हुआ बाहर आया, वह उस व्यक्ति को देखना चाहता था जसिने अपनी दृष्टि वापस पा ली थी; अंधे व्यक्ति और संत दोनों को देखकर, वह ईश्वर के प्रचारक के सामने झुक गया, उन्हें अपने घर में ले गया और उनके पैरों पर गरिकर वनिम्रतापूर्वक उनसे अनंत जीवन प्राप्त करने का तरीका सखिाने के लिए कहा। ईश्वर के पवत्रि पुरुष ने अपने प्रेरतिकि उपदेश के माध्यम से राजकुमार और उसके परविार को पवत्रि वशि्वास—अर्थात् सच्चे ईश्वर के ज्ञान—में पर्याप्त रूप से शक्षिति कयिा, और उपवास की एक अवधि नरि्धारति करके उन्हें बपतस्मिा के लिए तैयार कयिा; और कुछ ही दनिों बाद राजकुमार ने अपने पूरे परविार के साथ बपतस्मिा ग्रहण कयिा और संत को शहर के केंद्र में अपना घर चर्च में बदलने के लिए दे दयिा, साथ ही चर्च को आवश्यक धनराशि का दान भी दयिा। राजकुमार के उदाहरण का अनुसरण करते हुए, कई प्रमुख नागरकिों ने पवत्रि धर्म को अपनाया और बपतस्मिा ग्रहण कयिा, और उन्होंने भी परमेश्वर के संत को पर्याप्त दान दयिा। उन्होंने स्वयं एक भव्य चर्च का नरि्माण कयिा, उसे भव्यता से सजाया, और लोग उनके द्वारा वशि्वास की शक्षिा पाकर, पवत्रि बपतस्मिा से प्रबुद्ध होकर और चमत्कारों से दृढ़ होकर वहाँ इकट्ठा होने लगे; क्योंकि संत जूलयिन के पास ईश्वर से ऐसी चमत्कारी शक्ति थी कि वे मृतकों को भी जीवति कर देते थे।

शहर में अनास्तासयिस नाम का एक कुलीन व्यक्ति था, जसिने अभी तक पवत्रि धर्म को नहीं अपनाया था और मूर्तपिूजा से चपिका हुआ था: उसका एक प्रयि पुत्र था जो गंभीर रूप से बीमार पड़ गया और उसकी मृत्यु हो गई। अपने पुत्र की मृत्यु के शोक और दुख से भरकर, पति संत के पास आया और रोते हुए, उनसे पुकार कर कहा:

'हे परमेश्वर के सेवक जूलयिन, जो मसीह को सच्चा ईश्वर बताते हैं, मैं आपसे उसी मसीह ईश्वर के नाम पर वनिती करता हूँ, जसिे आप प्रचार करते हैं: मेरे पुत्र को मुझे वापस कर दें!'

संत ने कहा:

'अनास्तासयिस, यदि तुम उस एक में वशि्वास करते हो जसिकी मैं उपदेश देता हूँ, तो तुम एक जीवति पुत्र प्राप्त करोगे, और स्वयं अनंत जीवन के वारसि बनोगे।'

अनास्तासयिस ने गंभीरता से प्रतज्ञि ा की, कहते हुए:

– 'यदि मुझे एक जीवति पुत्र मलिा, तो मैं मसीह, सच्चे ईश्वर, में वशि्वास करूँगा और मूर्तयिों का पूरी तरह से त्याग कर दूँगा।'

इसके बाद, संत अपने पुरोहतिों के साथ अनास्तासयिस के घर गए, जहाँ उस युवक का मृत शरीर पड़ा था; और, कई लोगों को रोते और वलिाप करते हुए देखकर, उन्होंने उन्हें चुप रहने का आदेश दयिा; हर कोई उसे देख रहा था, और अपने मन में सोच रहा था कि वह मृत शरीर के साथ क्या करने का इरादा रखता है। तथापि, चमत्कार करने वाले संत ने शव-पेटकिा के पास जाकर मृत लड़के का हाथ पकड़ा, और स्वर्ग की ओर अपनी दृष्टि उठाकर, आँसुओं के साथ प्रार्थना की, और कहा:

'हे प्रभु यीशु मसीह, जिन्होंने नाइन नगर से दफनाने के लिए ले जाए जा रहे वधिवा के पुत्र (लूका 7:11–16), और चार दनि के उस लड़के, जो पहले ही सड़ चुका था, को जलिाया, लazarus, जो चार दनि से मृत था और पहले ही सड़ने लगा था, तेरे सामर्थ्य के वचन से (यूहन्ना 11:43-44), आज्ञा दे कि यह युवक भी मरे हुओं में से जी उठे; क्योंकि जब वह देह में जी उठेगा, तो बहुत से लोग आत्मा में जी उठेंगे, जिन्होंने तुझ पर वशि्वास कयिा है। जो लोग यहाँ उपस्थति हैं, वे जान जाएँ कि आप मसीह हैं, जीवते परमेश्वर के पुत्र हैं, जिन्होंने पिता की आज्ञा से संसार का उद्धार पूरा कयिा, जिनके द्वारा हम आपके माध्यम से योग्य रूप से युगानुयुग धन्यवाद करते हैं!

पुरोहतिों ने कहा, 'आमीन', और तुरंत वह लड़का, जैसे नींद से जाग उठा हो, जीवति और कुशल होकर उठ खड़ा हुआ। यह देखकर सभी लोग अत्यंत भय और आश्चर्य से भर गए; अनास्तासयिस के घर में अकथनीय आनंद छा गया, और एकमात्र सच्चे परमेश्वर, यीशु मसीह, की सभी ने महमिा की। और अनास्तासयिस, उस पर वशि्वास करके, अपने पूरे घर-परविार सहति बपतस्मिा ले लयिा, और उन सभी ने भी ऐसा ही कयिा जिन्होंने यह देखा और सुना था: कुछ समय बाद, प्रभु मसीह ने अपने सेवक जूलयिन के द्वारा एक और ऐसा चमत्कार कयिा, अपने परम पवत्रि नाम की महमिा के लिए: एक दनि, कैनोमनयिा के क्षेत्र में यात्रा करने और मरणासन्न मानव आत्माओं को मोक्ष की ओर ले जाने के लिए पुरोहतिों के साथ शहर से बाहर जाते हुए, उन्होंने एक मृत युवक को एक मूर्तपिूजक कब्रस्तिान में दफनाने के लिए ले जाते देखा; वह इओवनियिनस नामक एक कुलीन व्यक्ति का एकमात्र पुत्र था, और एक बड़ी भीड़ मृतक के पीछे चल रही थी। उनके पास जाकर, पवत्रि बशिप ने शव को ले जाने वालों को रुकने का आदेश दयिा और भीड़ को इशारे से चुप रहने का संकेत देते हुए, मृतक के पिता से ऊँचे स्वर में कहा:

'योवनियिन, मसीह, जनिका मैं प्रचार करता हूँ—जो मानव जाति के लिए मनुष्य बने—उन्होंने मृतकों को जीवति कयिा, एक शब्द से दुष्टात्माओं को भगाया, और लोगों के बीच रहते हुए अपनी दव्यिता की शक्ति को प्रदर्शति करने के लिए, जो कुछ भी चाहा, कयिा। यदि तुम अपने देवताओं को त्यागकर, पूरे हृदय से इस ईश्वर में वशि्वास करते हो, और पवत्रि बपतस्मिा द्वारा शुद्ध होने का वचन देते हो, तो तुम अपनी मुक्ति और अपने पुत्र के पुनरुत्थान, दोनों पर आनन्दति होओगे!

तब योवनियिन और सभी लोग, संत के पैरों पर गरि पड़े और मृतक को जीवति करने के लिए दया की भीख मांगने लगे। आँखों में आँसू लिए, योवनियिन ने संत से कहा:

'हे ईश्वर के महान सेवक, जूलयिन, यदि आप मेरे एकमात्र पुत्र—जो मेरे जीवन का सुख और आनंद था—को जीवति कर दें, तो न केवल मैं मसीह, सच्चे ईश्वर में वशि्वास करूँगा, बल्कि यह सारा जनसमूह, अपने देवताओं को त्यागकर, उत्सुकता से उस वशि्वास को अपना लेगा जसिका आप प्रचार करते हैं!'

चमत्कारकि अनुग्रह से परपिूर्ण, ईश्वर के पवत्रि पुरुष ने घुटने टेके, अपनी दृष्टि स्वर्ग की ओर उठाई, अपने हाथ उठाए, और एक ऐसी प्रार्थना में ईश्वर से नविेदन कयिा जसिे सभी सुन सकें:

– सर्वशक्तमिान प्रभु, जिन्होंने हमारे उद्धार के लिए मनुष्य बनने की कृपा की, जो मनुष्यों के बीच रहे और, अपने क्रूस के चहि्न के द्वारा, मानव जाति से मृत्यु को दूर कयिा, आज्ञा दें कि यह युवक फरि से उठ जाए, ताकि आपकी महान शक्ति के प्रकट होने से, आप में वशि्वास करने वालों के वशि्वास को बल मलि, और अवशि्वासयिों के हृदय आपके अधीन हो जाएँ, जीवति परमेश्वर के एकमात्र पुत्र, जनिके बारे में हम पिता और पवत्रि आत्मा के साथ, युगानुयुग राज्य करने का वशि्वास रखते हैं!

उपस्थति लोगों ने 'आमीन' कहा, और तुरंत वह मृतक उस तख्ते से उठ खड़ा हुआ जसि पर उसे ले जाया गया था, और सभी इस नए चमत्कार को देखकर चकति और वस्मिति हो गए। मृतकों में से जी उठे उस युवक ने ज़ोर से चल्लिाना शुरू कर दयिा:

'सत्य में महान है ईसाई ईश्वर, जसिकी घोषणा उसका सेवक जूलयिन करता है!'

और उसने अपने पिता से कहा:

'वास्तव में, हम अब तक सच्चे ईश्वर को न जानकर भ्रम में थे, क्योंकि जिन देवताओं की हमने पूजा की है वे राक्षस हैं: मैंने उन्हें नरक में देखा और देखा कि उन्हें कोई विश्राम नहीं मिलता था और वे लगातार भयानक यातनाओं से पीड़ित थे।'

तब, एक स्वर में, वे सभी सच्चे परमेश्वर, मसीह की महिमा करने लगे; उन्होंने उस पर विश्वास किया और पवित्र बिशप के निर्देशन में, जोविनीयन और उसके पुत्र के साथ बपतिस्मा लिया। इस प्रकार उस नेक चरवाहे ने खोई हुई भेड़ को पा लिया और अपने नियत मार्ग पर चल पड़ा, उसके साथ लोगों की एक बड़ी भीड़ थी जो उसके ईश्वर-प्रेरित वचनों का आनंद लेना और उसके चमत्कारों को देखना चाहती थी।

जब संत जूलियन प्रॉइलाइक नामक एक गाँव के पास पहुँचे, तो दिन ढलने को था, और वे देर शाम वहाँ आराम करने की इच्छा से गाँव में प्रवेश किए। उसी घड़ी, गाँव के मुखिया का छोटा बेटा मर गया था; उस घर में रोना सुनकर संत उस घर में प्रवेश किए, और उपदेशक के वचनों को याद किया: *'महोत्सव के घर से शोक के घर जाना उत्तम है* (उपदेशक 7:2)। उसे सोने के लिए एक अलग कमरा दिया गया, लेकिन उसने आज्ञा दी कि मृतक लड़के को उसके पास लाया जाए और उसके साथ कमरे में बंद होकर, वह सूर्योदय तक प्रार्थना में लगा रहा। उनकी प्रार्थना से, लड़का मृतकों में से जी उठा, जीवित और कुशल होकर अपने माता-पिता के पास लौट आया, और उनका शोक आनंद में बदल गया। जब दिन चढ़ा, तो इस चमत्कार की खबर पूरे गाँव में फैल गई, और सभी लोग चमत्कार करने वाले और जिसे मृतकों में से जी उठाया गया था, उसे देखने के लिए वहाँ इकट्ठा हो गए। चमत्कार करने वाले को देखकर, कई लोग अपने बीमारों को उसके पास ले आए, और उसने उन सभी के लिए प्रार्थना करके और उन सभी को आशीर्वाद देकर, उन्हें ठीक कर दिया। पूरे गाँव ने, अपने स्वामी के साथ, मसीह में पवित्र विश्वास को अपना लिया और बपतिस्मा के माध्यम से प्रबुद्ध हुए। अपने हिस्से की बात करें तो, माता-पिता ने ईश्वर से व्रत लिया कि वे पुनर्जीवित लड़के को और उस पूरे गाँव को, जिसका वह वारिस था, चर्च को दान कर देंगे, ताकि जब लड़का वयस्क हो जाए, तो वह एक पुरोहित बन सके, और गाँव को चर्च की संपत्ति में शामिल किया जा सके। जैसे ही संत वहाँ से चल रहे थे और लिडा नदी के किनारे बसे रूइल्याक नामक एक अन्य बस्ती के पास पहुँचे, उसे उस गाँव के स्वामी द्वारा भेजे गए दूतों ने रोक लिया, जिन्होंने उससे विनती की कि वह तुरंत उनके पास आएँ, क्योंकि स्वामी की एकमात्र बेटी, एक राक्षस के वश में होकर, अशुद्ध आत्मा के हाथों बहुत कष्ट झेल रही थी, जिससे उसके माता-पिता और रिश्तेदारों दोनों को बहुत दुख हो रहा था। मसीह के पवित्र पुरुष वहाँ तेज़ी से गए और कन्या से दानव को भगाकर, उसके माता-पिता को ईसाई धर्म में लाए; उन्होंने वहाँ मिली मूर्तियों को नष्ट कर दिया और एक चर्च का निर्माण किया, और तब तक वहाँ रहे जब तक कि पूरे गाँव और उसके आसपास के लोगों को पवित्र बपतिस्मा के माध्यम से ईश्वर के पास नहीं लाया गया। फिर वह वहाँ से आर्टिन नामक एक गाँव में गए, जहाँ एक बड़ा मूर्तिपूजक मंदिर था जिसमें ज्यूपिटर के नाम से प्रसिद्ध दुष्ट मूर्तिपूजक देवता की मूर्ति थी: एक राक्षस उस मूर्ति के भीतर रहता था और भ्रामित लोगों को विभिन्न भ्रमों से बहकाता था। इस गाँव और उसके आसपास के निवासी, जो राक्षसों के उत्साही सेवक थे, जब उन्होंने सुना कि एक ईसाई बिशप उनकी ओर आ रहा है, तो वे बड़ी संख्या में इकट्ठा हो गए और उसे अंदर आने से इनकार कर दिया, क्योंकि उन्हें डर था कि वह उनकी मूर्ति के साथ भी वैसा ही करेगा जैसा उसने दूसरे गाँवों में किया था, और उसे धूल में मिला देगा। जब परमेश्वर के पवित्र पुरुष उनके पास आए, तो वे क्रोध से चिल्लाने लगे: कुछ ने कहा कि उसे प्राचीन पारंपरिक रीति-रिवाजों को नष्ट करने वाले के रूप में मार दिया जाना चाहिए, जबकि अन्य चिल्ला रहे थे कि उसे एक जादूगर, धोखेबाज़ और उनके देवताओं के शत्रु के रूप में जला दिया जाना चाहिए; हालाँकि वे उसके प्रति बहुत द्वेष से भरे हुए थे, पर वे उसका कुछ भी बिगाड़ नहीं सके, क्योंकि सर्वोच्च का दयालु हाथ उसकी रक्षा कर रहा था।

अदृश्य दिव्य शक्ति के कवच और हथियारों से लैस, वह एक पराक्रमी योद्धा की तरह, साहसपूर्वक उथल-पुथल भरी भीड़ के बीच से अपना रास्ता बनाता हुआ, मूर्तिपूजक मंदिर में प्रवेश किया और मसीह के सर्वशक्तिमान नाम का आह्वान करते हुए, मूर्ति को गिरने और राक्षस को उससे बाहर निकलने की आज्ञा दी; और तुरंत मूर्ति, जमीन पर गिरकर, धूल में टूट गई, और राक्षस स्पष्ट रूप से उससे एक विशाल और भयानक सर्प के रूप में निकला, जो अपने मुंह से आग उगल रहा था, और वह अपने पूजकों पर टूट पड़ा, क्योंकि कई अविश्वासी मंदिर में प्रवेश कर गए थे; सर्प ने क्रूरता से लोगों को निगलना और नष्ट करना शुरू कर दिया। लोग, साँप के क्रोध और विष से भागने में असमर्थ, मदद के लिए संत जूलियन से पुकारने लगे, उनसे ऐसी विपत्ति से उबारने की विनती करने लगे। ईश्वर के सेवक ने साँप की ओर अपना हाथ बढ़ाया और लोहे की लाठी से जैसे क्रॉस का चिह्न बनाते हुए, उस पर वार करके उसे भगाना शुरू कर दिया; उन्होंने उस दृश्यमान राक्षस को लोगों को नुकसान पहुँचाना बंद करने और विनाश की खाई में चले जाने का आदेश दिया;

मंदरि से भाग जाने के बाद, वह साँप अदृश्य हो गया। इसके बाद, लोगों ने अपनी गलती का एहसास करते हुए, संत से पुकार लगाई:

'हे सच्चे ईश्वर के सेवक, हम खोए हुए लोगों को बचाओ!'

संत ने उन्हें पर्याप्त रूप से उपदेश देकर सभी को मसीह के प्रति आकर्षित कर लिया, क्योंकि उन लोगों ने उत्सुकता से धर्म को अपनाया, बपतिस्मा लिया, मंदरि को ध्वस्त कर दिया और संत के आदेश पर, उसकी जगह पर मसीह ईश्वर की महिमा के लिए एक चर्च का निर्माण किया; और अन्य स्थानों पर जहाँ मूर्तियाँ खड़ी थीं, उन्होंने उन्हें नष्ट कर दिया, और मूर्तिपूजा के भ्रम से मुक्ति के कारण उस भूमि पर महान आनंद छा गया। इस प्रकार, उत्साही चरवाहे ने अपनी भेड़ों के झुंड की सीमाओं को पार किया और अपनी आध्यात्मिक भेड़ों को आध्यात्मिक चरागाह में ले गया, उन्हें भेड़िये के जबड़ों से छीनकर; सिवाय इसके कि यहाँ-वहाँ कुछ खोई हुई भेड़ें रह गईं, जिन्होंने अपने पूर्व भ्रम को नहीं त्यागा था। उपरोक्त राजकुमार डिफिन्डोर ने जब सुना कि परमेश्वर के पवित्र पुरुष ने मसीह की कृपा से कई चमत्कार करके केनोमनिया देश को कैसे ज्ञान का प्रकाश दिया, तो वह बहुत प्रसन्न हुआ और परमेश्वर की महिमा की। फिर वह स्वयं पवित्र पुरुष के पास गया और हार्दिक अभिवादन के बाद, उन्हें अपने नगर में आने के लिए कहने लगा; राजकुमार के पास एक शानदार घर और एक बड़ी जागीर थी; वह चाहता था कि संत वहाँ उन्मूलित मूर्तिपूजा पर विजय का प्रतीक एक आध्यात्मिक भोज आयोजित करें, और उत्सव के भोजन में शामिल हों – ताकि सभी प्रभु की दयालु कृपा के लिए धन्यवाद देते हुए, ईश्वर की महिमा में आनंदित हों। संत, जो हमेशा मानव आत्माओं की मुक्ति के लिए प्रयासरत रहते थे, ने राजकुमार के अनुरोध को अस्वीकार नहीं किया और उसके गाँव चले गए। रास्ते में, उन्हें एक छोटा लड़का जमीन पर पड़ा हुआ मिला; एक विशाल साँप उसके चारों ओर लिपट गया था, उसकी टाँगों को रस्सी की तरह बाँध दिया था और उसके पूरे शरीर को घेर लिया था; यह देखकर सभी भयभीत हो गए। लेकिन जूलियन, ईश्वर के पुरुष, पास आकर, ईश्वर से प्रार्थना करने लगा, कहता हुआ:

'हे प्रभु यीशु मसीह, आपने अपने क्रूस के द्वारा मानव जाति को—जिसे साँप के छल से स्वर्ग से वंचित कर दिया गया था—मुक्ति दी, इसी प्रकार अपने इस प्राणी को भी उस राक्षस से मुक्त करें जिसने उसे बाँध रखा है, ताकि यहाँ उपस्थित लोग यह जान सकें कि आप उन सभी के उद्धारकर्ता हैं जो आप में आशा रखते हैं!' और तुरंत वह दो टुकड़े होकर मर गया, और लड़का उससे बिना किसी चोट के आजाद हो गया, और सभी ने परमेश्वर की महिमा की। जब वे उस गाँव के पास पहुँचे जहाँ वे जा रहे थे, तो एक बड़ी भीड़ उनका स्वागत करने के लिए बाहर आई; उनका स्वागत करने वालों में दो पिशाचग्रस्त व्यक्ति थे, जिन्होंने संत से मदद के लिए पुकारा; मसीह के नाम का आह्वान करते हुए, संत ने तुरंत उस अशुद्ध आत्मा को बाहर निकाल दिया। जो लोग चंगे हुए थे, और वहाँ मौजूद सभी लोगों ने मसीह पर विश्वास किया, जबकि ईश्वर के संत का उस गाँव में, राजकुमार के घर में, बड़े सम्मान और प्रेम से स्वागत किया गया, और न केवल शरीर के लिए बल्कि आत्मा के लिए भी एक बड़ा उत्सव मनाया गया: क्योंकि उपस्थित लोगों की सारी बातें मसीह की महिमा और शक्ति तथा राक्षसों की पराजय पर केंद्रित थीं, जिन्हें मूर्तियों के सामने हराया गया और लज्जित किया गया था। ईश्वर की महिमा के लिए आयोजित इस भोज के अंत में, राजकुमार ने बिशप को अपने सभी खजाने दिखाए और उनसे कहा कि वे जो चाहें ले लें; लेकिन संत कुछ भी लेना नहीं चाहते थे, क्योंकि उनके लिए सोना या चांदी नहीं, बल्कि मानव आत्माओं का उद्धार ही सबसे कीमती खजाना था। राजकुमार, उसके पूरे परिवार और पूरे गाँव को अपने ईश्वर-प्रेरित शब्दों से उपदेश देने, बपतिस्मा न लेने वालों को बपतिस्मा देने और उन्हें विश्वास में मजबूत करने के बाद, उस संत ने अपने शहर की ओर प्रस्थान किया। जैसे ही वह शहर में प्रवेश कर रहे थे, शहर के द्वार के पास एक कालकोठरी में बंद कैदियों ने एक छोटी सी खिड़की से संत को देखकर ऊँचे स्वर में पुकारा और उनसे अपनी बेड़ियों से मुक्त करने की विनती की। एक दयालु और करुणामय पिता होने के नाते, उन पर तरस आया और घर जाने से पहले, वे शहर के प्रशासन के प्रभारी मजिस्ट्रेटों के पास गए और उनसे अपने आगमन के सम्मान में कैदियों को रिहा करने की विनती करने लगे; लेकिन, कठोर हृदय होने के कारण, उन्होंने बिशप की विनती को अनसुना कर दिया, और वे दुख के साथ उनसे चले गए। सबसे पहले, संत चर्च गए और उस ईश्वर को धन्यवाद की प्रार्थना अर्पित की, जिन्होंने उन्हें इतनी आत्माओं को मोक्ष तक पहुँचाने में मदद की थी; फिर वे उस घर में गए जहाँ उनके लिए भोजन तैयार किया गया था, लेकिन वे कुछ भी खाने के इच्छुक नहीं थे, क्योंकि वे कैदियों की दुर्दशा से दुखी थे। लेकिन प्रभु, जो उनसे डरने वालों की इच्छा पूरी करते हैं, ने अपना स्वर्गदूत भेजा, जिसने जेल के दरवाजे खोल दिए, सभी बेड़ियाँ तोड़ दीं और कैदियों को आज़ाद कर दिया। कारागार से बाहर निकलने के बाद, वे पूरे शहर से होते हुए बिशप के घर पहुँचे, और किसी ने उन्हें न रोका और न ही उनसे एक शब्द कहा, क्योंकि सभी देख सकते थे कि

उन्हें उनकी बेड़ियों से मुक्त करके कारागार से रिहा करने का काम मानव हाथों से नहीं, बल्कि ईश्वर की शक्ति से हुआ था। पवित्र बिशप, उन्हें अपनी ओर आते देख आनंदित हो गए; उन्होंने उन्हें अपने भोजन में आमंत्रित किया और शारीरिक तथा आध्यात्मिक पोषण से उन्हें पर्याप्त रूप से तरोताज़ा कर, उनमें से प्रत्येक को उनके-उनके घर भेज दिया।

संत जूलियन, बिशप, जब नव-प्रबुद्ध चर्च की अध्यक्षता कर रहे थे और ईश्वर के वचन से आध्यात्मिक भेड़ों के नव-एकत्रित झुंड का पोषण कर रहे थे, वे काफी समय तक अपने पद पर रहे और, मसीह के सुसमाचार के प्रचार में प्रेरितों की भाँति परिश्रम करते हुए, एक सम्मानित वृद्ध बन चुके थे, तथा केनोमनिया की भूमि से मूर्तिपूजा और दानवी पूजा को पूरी तरह से समाप्त कर देने के बाद, वे अपने सम्मानजनक निधन के समीप पहुँच गए। अपनी मृत्यु से कुछ दिन पहले, संत शहर छोड़कर चर्च के एक गाँव में चले गए, और वहाँ उन्हें बीमारी हो गई। उनकी बीमारी की खबर शहर में पहुँची, और पुरोहित, धर्मपरायण नागरिक और जो भी उन्हें बहुत प्यार करते थे, वे सभी संत के पास इकट्ठा हो गए; संत ने उन्हें कुछ समय तक उपदेश देने के बाद आज्ञा दी कि उनकी मृत्यु के बाद, पुरोहित टुरीवी—जिन्होंने मानव आत्माओं के उद्धार के लिए उनके साथ मिलकर काम किया था—को उनका उत्तराधिकारी चुना जाए; इसके बाद, अंतिम चुंबन का आदान-प्रदान करने और शांति का आशीर्वाद देने के बाद, उन्होंने अपनी पवित्र आत्मा को ईश्वर के हाथों में सौंप दिया। राजकुमार संत के निधन के समय उपस्थित नहीं थे - उस समय वह शहर में नहीं थे, बल्कि अपने दूरस्थ गाँव में रुके हुए थे; हालाँकि, उन्हें इस बात की जानकारी इस प्रकार मिली: जिस दिन संत का निधन हुआ, उसी दिन राजकुमार अपने मित्रों के साथ अपने घर में भोजन कर रहा था, जब अचानक उसकी आध्यात्मिक आँखें खुल गईं और उसने देखा कि संत जूलियन, अपने धार्मिक वस्त्रों में सुसज्जित, तीन दीपक उठाए हुए डिकनों के साथ, उसकी उपस्थिति में आए और आशीर्वाद प्रदान किया, और दीकनों ने मेज़ पर दीपक रख दिए, जिसके बाद वे सब एक ही क्षण में गायब हो गए। यह देखकर, राजकुमार अपने साथ बैठे लोगों की ओर मुड़ा:

'क्या तुम वह महिमा देखते हो जो मैं देख रहा हूँ?'

लेकिन उन्होंने कहा कि वे कुछ भी नहीं देख सके; जिस पर राजकुमार ने समझाया:

'क्या तुमने हमारे पिता जूलियन को नहीं देखा, जिन्होंने हम पर इतना उपकार किया और इतने चमत्कार किए? अभी-अभी वह तीन डिकन और तीन दीयों के साथ यहाँ आए; एक तेजस्वी और प्रसन्न मुख के साथ उन्होंने हमें आशीर्वाद दिया, दीये हमारे पास छोड़ गए, और प्रस्थान कर गए; मुझे लगता है कि वह पहले ही स्वर्ग सिधार चुके हैं, क्योंकि मैंने सुना है कि वह बीमार पड़ गए थे।'

यह कहकर, राजकुमार तुरंत उठकर शहर और उस गाँव की ओर दौड़ पड़ा जहाँ संत का निधन हो गया था; प्रभु में मृत पाए जाने पर, वह जोर-जोर से रोया, और सभी लोगों ने भी अपने पिता और चरवाहे के लिए आँसू बहाए; उनके पवित्र अवशेषों को एक रथ पर रखकर, वे उन्हें शहर ले गए। जब वे सार्ता नामक नदी पर पहुँचे, जो नगर के पास बहती थी और बहुत गहरी थी, और जिसे नाव से पार करना पड़ता था, तो घोड़े संत के शरीर वाले रथ को लेकर, नाव पर चढ़ने के बजाय, सीधे नदी में कूद पड़े और एक अदृश्य हाथ के मार्गदर्शन से, घोड़ों के घुटनों तक भी पानी में भीगे बिना, एक पुल की तरह गहरी नदी को पार कर गए। इस प्रकार वे दूसरी किनारे पार कर गए, और हर कोई उस शानदार चमत्कार को देखकर चकित और विस्मित रह गया: अद्भुत चमत्कारी संत जूलियन ने न केवल अपने जीवनकाल में, बल्कि अपनी मृत्यु के बाद भी चमत्कार किए। जैसे ही उनके शरीर को शहर में भव्य जुलूस में ले जाया जा रहा था और हर कोई उसे देखने के लिए दौड़ रहा था, एक महिला अपने बच्चे को तांबे के एक पात्र में नहला रही थी, जिसके नीचे उसने पानी गर्म करने के लिए आग रखी थी; संत के शरीर और मोमबत्तियों तथा धूपदानों वाली विशाल भीड़ को देखकर, और भजनों को सुनकर, वह अपने शिशु को भूल गई और उसे वहीं छोड़कर, ईश्वर के संत के पवित्र शरीर के भव्य जुलूस को देखने के लिए बाहर चली गई; वह तब तक खड़ी होकर देखती रही जब तक जुलूस उसके घर से गुजर नहीं गया। तब, अपने बच्चे को याद करके, वह दौड़ती हुई वापस आई और देखा कि आग भड़क उठी थी, और तांबे के पात्र में पानी उबलता पानी बन गया था; वह भय से चीख पड़ी, जल्दी से पात्र को आग से हटाया और गर्म पानी को फेंक दिया, लेकिन उसने बच्चे को जीवित, स्वस्थ और उबलते पानी से बिल्कुल भी घायल नहीं पाया। मौजूद कई लोगों ने इस चमत्कार को देखा और यह महसूस किया कि शिशु को उस पवित्र पुरुष की प्रार्थनाओं के कारण बचाया गया था। संत जूलियन ऑफ़ क्राइस्ट को उसी स्थान पर बने चर्च में दफनाया गया था जहाँ कभी राजकुमार का घर था—जो संत को उपहार में मिला था—और उनकी कब्र पर कई चमत्कार हुए: हमारे प्रभु यीशु मसीह की कृपा से, इस संत की प्रार्थनाओं द्वारा हर प्रकार की बीमारियों से चंगाई मिली, जिनके साथ पिता और पवित्र आत्मा को भी युगों-युगों तक सम्मान और महिमा हो, आमीन।

संत मार्शयिन का शहीदत्व

13 जुलाई को स्मरण कयिा जाता है

पवत्रि शहीद मार्शयिन को, जब वह अभी एक युवक था, इकोनयिम शहर में पकड़ लयिा गया और यातनाएँ दी गईं, और फरि (कैपाडोसयिा में) राज्यपाल पेरेंनयिस के सामने लाया गया। उसने साहसपूर्वक बाद वाले की मूर्तपिूजक अधार्मकिता के लिए नदिा की, और मसीह को परमेश्वर और प्रभु के रूप में स्वीकार कयिा। इसके लिए, उसकी हड्डयिों और गालों पर कोड़े मारे गए; फरि यातना देने वाला, शहीद के फटकार के शब्दों से क्रोधति होकर, इन यातनाओं से संतुष्ट नहीं हुआ, बल्कि आदेश दयिा कि उसे लाल-गरम सलाख पर बठिाया जाए, और बाद में उसकी जीभ काट दी जाए। जब यह सब कर दयिा गया, और पवत्रि शहीद अपने वश्विास में दृढ़ रहे और मसीह की गवाही देते रहे, तो राज्यपाल ने उन्हें तलवार से सरि कलम करने की सज़ा सुनाई। तत्पश्चात सैनकिों ने संत मार्शयिन को लयिा और, जब वे प्रार्थना कर रहे थे और परमेश्वर का धन्यवाद दे रहे थे, तब उन्होंने उनका सरि काट दयिा[5135] ।

27 जुलाई

14 जुलाई (पुराने कैलेंडर के अनुसार)

इसी दनि, पवत्रि शहीद चमत्कारकि ओनेसमिस की स्मृति, जन्हिोंने डयिोक्लेशयिन के अधीन पीड़ा सहन की और एशयिा माइनर के मैग्नेशयिा में मृत्यु को प्राप्त हुए।

इसी दनि, आदरणीय स्टीफन ऑफ मख्रश्चि (1406) का नधिन हुआ, जन्हिोंने व्लादमिीर प्रांत के अलेक्जेंड्रोव शहर से 12 वर्स्ट दूर मख्रश्चि में एक मठ की स्थापना की थी।

प्रेरति अक्विला की स्मृति

14 जुलाई को स्मरण कयिा जाता है

संत अक्विला प्रेरति, सत्तर में से एक, संत पौलुस प्रेरति के शष्यि थे और उन्हें उनके द्वारा बशिप नयिुक्त कयिा गया था। वह मूल रूप से पोंटस क्षेत्र का एक यहूदी था[5136] ; ईसाई धर्म में परविर्तति होने से पहले, वह अपनी पत्नी प्रस्किल्लिा के साथ इटली में रहता था; लेकनि जब सम्राट क्लॉडयिस[5137] ने यहूदयिों को रोम छोड़ने का आदेश दयिा[5138] , तो अक्विला और उसकी पत्नी कोरंथि चले गए[5139] । रोम से यहूदयिों के नष्किासन का कारण इस प्रकार था: जब रोम में मसीह का प्रचार शुरू हुआ और पवत्रि प्रमुख प्रेरति पतरस वहाँ पहुँचे, तो रोम में रहने वाले कई यहूदयिों ने मसीह में पवत्रि वश्विास स्वीकार कर लयिा, लेकनि कई अवश्विास में बने रहे; इसलिए यहूदयिों में एक बड़ा ववािद खड़ा हो गया: कुछ ने मसीह को सच्चे मसीहा के रूप में स्वीकार कयिा, जबकि अन्य ने उन्हें अस्वीकार कर दयिा और उनकी नदिा की। यरूशलेम और अन्य देशों के साथ-साथ रोम में भी अवश्विासी यहूदयिों ने वश्विासयिों के वरिुद्ध द्वेष से उठ खड़े हुए: वे तो यीशु मसीह का नाम भी सहन नहीं कर सके, उन्होंने उन हेलेनस्टिों को, जो मसीह में वश्विास करते थे, वश्विासयिों के वरिुद्ध भड़काया और हर जगह उनके वरिुद्ध उत्पीड़न को बढ़ावा दयिा। जो यूनानी मसीह की ओर मुड़ गए थे, उन्होंने अवश्विासयिों के वरिुद्ध यहूदी वश्विासयिों का बचाव कयिा, और उनके बीच बड़े ववािद और शत्रुता उत्पन्न हुई, यह मामला सम्राट क्लॉडयिस के ध्यान में लाया गया। चूंकि वश्विासयिों ने प्रभु मसीह को परमेश्वर का पुत्र और इस्राएल

[5135] पवत्रि शहीद मार्शयिन की मृत्यु लगभग 258 ईस्वी में कैपैडोसयिा में हुई।

[5136] पोंटस का क्षेत्र – काला सागर के कनिारे एशयिा माइनर का उत्तर-पूर्वी क्षेत्र।

[5137] ईस्वी 41 से 54 तक सम्राट।

[5138] इटली की राजधानी, टबिर नदी के दोनों कनिारों पर स्थति, जहाँ यह समुद्र में मलिती है।

[5139] ग्रीस के एक क्षेत्र अकेया का सबसे पुराना, सबसे प्रसद्धि और वाणज्यकि शहर; वहाँ ईसाई धर्म की नींव प्रेरति सेंट पॉल ने अपनी दूसरी प्रेरतिकि यात्रा के दौरान रखी थी (प्रेरतिों के काम 18:1–28)। प्रेरति सेंट पॉल द्वारा कोरंथियिों को लखिी गई दो पत्रकिाएँ हैं।

का राजा कहा, इसलिए सीज़र को डर था कि लोगों में कुछ अशांति उत्पन्न हो सकती है और कोई नया राजा प्रकट हो सकता है जो उससे सत्ता छीनना चाहता हो। इसलिए, रोम और पूरे इटली से सभी यहूदियों को—चाहे वे मसीह में विश्वास करने वाले हों या अविश्वासी—निष्कासित करने का आदेश जारी किया गया। इस निष्कासन का एक और कारण यह भी था कि अविश्वासी यहूदियों ने क्लॉडियस की पत्नी, रानी एग्रिप्पिना को यहूदी धर्म की ओर भटका दिया था। जिन यहूदियों को निर्वासित किया जा रहा था, उनके साथ अक्विला को भी एक यहूदी के रूप में निर्वासित किया गया; वह कोरिंथ में बस गया और तंबू बनाने में निपुण होने के कारण, अपने हाथों के काम से अपनी आजीविका कमाता था। उस समय, पवित्र प्रेरित पौलुस, अन्यजातियों के बीच मसीह का प्रचार करते हुए, एथेन्स से Achaia की राजधानी कोरिन्थुस आए, और वहाँ अक्विला और प्रिस्किल्ला को पाकर उनके साथ ठहरे; चूँकि उनका धंधा एक ही था, वे साथ में काम करते थे; अक्विला और प्रिस्किल्ला को मसीह में विश्वास सिखाने के बाद, पौलुस ने उनका बपतिस्मा दिया (प्रेरितों के काम 18:1–3)। कोरिंथ में एक साल और छह महीने तक ठहरने, परमेश्वर का वचन सिखाने और मसीह की मदद से यहूदियों और अन्यजातियों दोनों को मनाने के बाद, पौलुस सीरिया के लिए रवाना हो गए; अक्विला और प्रिस्किल्ला उनके पीछे-पीछे चल दिए, जो उन्हें अपना शिक्षक और अपनी मुक्ति का स्रोत मानते थे, क्योंकि वे आध्यात्मिक प्रेम के द्वारा उनसे गहराई से जुड़ गए थे। उनके और अपने अन्य अनुयायियों के साथ, पौलुस एफेसुस में बस गया[5140] ; फिर, पास के पासका पर्व के लिए यरूशलेम में होना चाहकर, उसने अक्विला और प्रिस्किल्ला को एफेसुस में छोड़ दिया ताकि वे एफेसुसियों को मसीह के पवित्र विश्वास में शिक्षा दें, जबकि वह स्वयं यरूशलेम के लिए निकल पड़ा[5141] , यह वादा करते हुए कि वह एफेसुस लौटेगा। पौलुस के प्रस्थान के बाद, अलेक्जेंड्रिया का रहने वाला अपोलोस नाम का एक यहूदी एफिसुस आया; वह एक वाक्पटु व्यक्ति था और धर्मग्रंथों में पारंगत था। उसे प्रभु के मार्ग की शिक्षा दी गई थी और उसने प्रभु के विषय में उत्साहपूर्वक प्रचार और शिक्षा दी थी, लेकिन उसे अभी तक पवित्र त्रिमूर्ति में बपतिस्मा नहीं मिला था, वह केवल यूहन्ना के बपतिस्मा को जानता था। अक्विला और प्रिस्किल्ला, सभा में अपोलो का साहसी उपदेश सुनकर, उसे अपने घर ले गए और उसे प्रभु के मार्ग के बारे में और भी स्पष्ट रूप से समझाया (प्रेरितों के काम 18:24–28)। इसके बाद, संत पौलुस यरूशलेम से एफ़िसुस लौटे और वहाँ से उन्होंने मसीह में विश्वास करने वाले कोरिन्थियों को अपना पहला पत्र लिखा, जिसका समापन उन्होंने इन शब्दों से किया:

'अक्विला और प्रिस्किlla, अपने घर की कलीसिया सहित, तुम्हें हार्दिक नमस्कार भेजते हैं' (1 कुरिन्थियों 16:19) – अर्थात्, अपने सेवकों सहित।

इसके बाद, सम्राट क्लॉडियस की मृत्यु हो गई, और यहूदियों को एक बार फिर रोम में रहने की स्वतंत्रता प्रदान की गई; उनमें से प्रत्येक अपने पूर्व घरों और संपत्तियों पर लौट आया, और तभी अक्विला और प्रिस्किल्ला भी रोम लौट आए। जब संत पौलुस फिर से कोरिंथ आए और वहाँ से रोमियों को पत्र लिखा, तो उन्होंने उसमें अपने प्रिय शिष्यों को नमस्कार भेजना नहीं भूले, और अंतिम अध्याय में कहा:

'प्रिस्किлла और अक्विला को नमस्कार कहना, जो मसीह यीशु में मेरे सहकर्मी हैं, जिन्होंने मेरे लिए अपनी जान जोखिम में डाल दी; जिनके लिए न केवल मैं, बल्कि सभी अन्यजाति मंडलियाँ भी धन्यवाद करती हैं' (रोमियों 16:3–4)।

संत अक्विला रोम में अधिक समय तक नहीं रहे और अपनी पत्नी के साथ एशिया लौट आए[5142] , जहाँ उन्हें उनके गुरु, प्रेरित पौलुस द्वारा बिशप नियुक्त किया गया था और उन्हें वहाँ परमेश्वर का वचन प्रचार करने के लिए भेजा गया था। एफ़िसुस पहुँचने पर, उन्होंने प्रेरित पौलुस के शिष्य संत तीमुथियुस[5143] के कार्यों में सहायता की; तीमुथियुस ने उन्हें

[5140] एक तटीय व्यापारिक केंद्र और एशिया माइनर प्रांत आयोनिया की राजधानी। एफिसुस बाद में संत जॉन द थियोलोजियन की सेवा का केंद्र बन गया; 431 में यहाँ तीसरी सार्वभौमिक परिषद आयोजित की गई थी; आज, एफिसुस तुर्की का एक गरीब गाँव आयसुल्लुक है। (प्रेरितों के काम 18:18-21)।

[5141] फिलिस्तीन की राजधानी, जो यहूदा की पहाड़ियों की तीन उप-श्रेणियों—अक्रा, सियोन और मोरियाह—की ढलानों पर किद्रोन घाटी के किनारे स्थित है। यरूशलेम पुराने और नए नियम के इतिहास की महान घटनाओं के केंद्र के रूप में हर ईसाई के लिए प्रिय है – ईसाई चर्चों की जननी के रूप में, जहाँ से सुसमाचार का वचन पूरे ब्रह्मांड में फैला।

[5142] अर्थात् एशिया माइनर का पश्चिमी भाग।

[5143] संत तीमुथियुस एक यहूदी महिला (जो ईसाई धर्म में परिवर्तित हो गई थी) और एक गैर-यहूदी के पुत्र थे, और स्वयं एक सच्चे ईसाई थे, जिन्हें भाइयों ने स्वीकार किया था; उनकी सहमति से, प्रेरित संत पौलुस पौलुस ने उसे 'यहूदियों के लिए' खतना कराया, क्योंकि वे एक अख़तिया न किए हुए व्यक्ति से परमेश्वर का वचन सुनने के लिए कभी सहमत नहीं होते, जिसका पिता, इसके अलावा, एक मूर्तिपूजक था (प्रेरितों के काम 16:1–2)।

एफ़सियों के लिए बिशप नियुक्त किया था और उन्हें वहीं छोड़ दिया था, जैसा कि उन्होंने लाओदिकिया से लिखे अपने पहले पत्र में उल्लेख किया है:

'जब मैं मकदोनिया को जाता था, तब मैंने तुझ से कहा था कि एफेसुस में ठहरा रह' (1 तीमु. 1:3)।

बाद में, जब पवित्र प्रेरित पौलुस को यरूशलेम के यहूदियों द्वारा सताए जाने के कारण, बेड़ियों में जकड़कर रोम ले जाया गया और वहाँ से एफ़सिस में तिमोथी को अपना दूसरा पत्र लिखा, तो उन्होंने फिर से अपने इन प्रिय शिष्यों को याद करते हुए कहा:

'प्रिस्किल्ला और अक्विला को मेरा प्रणाम कहना' (2 तीमु. 4:19)।

संत अक्विला ने एशिया, अकेया और हेराक्लिया में मसीह का उपदेश देते हुए, आत्माओं की एक बड़ी भीड़ को मोक्ष की ओर ले गए, मूर्तिपूजकों को मूर्तियों की पूजा से दूर किया और उन्हें बपतिस्मा दिया। उन्होंने अन्य देशों में भी यात्रा की, सर्वत्र परमेश्वर के राज्य का प्रचार किया, लोगों को पवित्र विश्वास से प्रकाशित किया, मूर्तियों को तोड़ा, चर्चों का निर्माण किया और पुरोहितों की नियुक्ति की। कई कष्ट सहने के बाद, उन्हें अविश्वासियों ने मार डाला[5144] और हमारे प्रभु यीशु मसीह की कृपा से, अन्य पवित्र प्रेरितों के साथ स्वर्ग में विश्राम मिला, जिनका महिमा युगानुयुग होती रहे। आमीन।

कॉन्टाकियन, स्वर 4:

हे महिमामय अक्विला, महान सूर्य के समान, कलीसिया को प्राप्त करके, आप अपने उपदेशों के प्रकाश से उन लोगों को प्रबुद्ध करते हैं जो भक्तिपूर्वक आपका सम्मान करते हैं, हे प्रभु के प्रेरित।

परम पूजनीय एलियास की स्मृति

14 जुलाई को स्मरणोत्सव

आदरणीय एलियास मिस्र के रेगिस्तानों में अपने तपस्वी कारनामों के लिए संतों के बीच प्रसिद्ध हुए और अपने सदाचारी जीवन से परमेश्वर को प्रसन्न किया। बचपन से ही उन्हें प्रभु की सेवा के लिए एक मठ में सौंप दिया गया था; उनका पालन-पोषण संयम और पवित्रता में हुआ, उन्हें नम्रता और विनम्रता सिखाई गई, और वे ईश्वर की कृपा से सम्मानित थे, क्योंकि उन्हें अपनी युवावस्था से ही चमत्कार करने का वरदान प्राप्त था। इस प्रकार, जब उन्हें एक युवक के रूप में ही आग लाने के लिए भेजा जाता, तो वे अपने वस्त्र में एक जलता हुआ कोयला लेकर आते और कपड़े को जलाए बिना उसे बड़े संन्यासी के पास ले आते। यह देखकर भाइयों ने इस चमत्कार पर आश्चर्य किया और उस युवक के अद्भुत जीवन का अनुकरण करना चाहा, जो पवित्रता में अपने बड़ों से भी आगे था। एक बार, जब धन्य हेलीउस मरुभूमि में अकेले चल रहे थे, तो उन्हें कुछ शहद खाने की लालसा हुई और उन्होंने एक चट्टान पर शहद से भरा एक छत्ता देखा; यह समझते हुए कि यह शैतान की चाल थी, उन्होंने खुद को कोसना शुरू कर दिया, कहते हुए:

'मेरे पास से दूर हो जा, हे प्रलोभनकारी इच्छा, क्योंकि लिखा है: *"आत्मा के अनुसार चलो, और तुम शरीर की इच्छाओं को पूरा नहीं करोगे"* (गलातियों 5:16)।'

तुरन्त वह उस स्थान से चल दिया और एक दूरस्थ रेगिस्तान में जाकर, उसने स्वयं को उपवास में लगा दिया, अपने शरीर को थका दिया और, मानो, भोजन से वंचित करके अपनी अनियंत्रित प्रवृत्ति के लिए उसे दंडित किया। अपने उपवास के तीसरे सप्ताह में, उसने रेगिस्तान में जमीन पर सुंदर सेब और अन्य बगीचे के फल देखे और, एक बार फिर यह समझते हुए कि यह शत्रु का प्रलोभन था, उसने कहा:

[5144] परंपरा के अनुसार, अपनी पत्नी के साथ, जिसने परमेश्वर के वचन का प्रचार करने में प्रेरितिक मंत्रालय के श्रम में उनके साथ भाग लिया। संतों अक्विला और प्रिस्किल्ला के अवशेषों का अधिकांश भाग रोम में संत प्रिस्का द शहीद के चर्च में रखा गया है। संत प्रिस्किल्ला का पर्व दिवस 13 फरवरी है।

'मैं इसमें से कुछ का स्वाद भी नहीं चखूँगा, न ही इसे छूऊँगा, कहीं ऐसा न हो कि मैं अपने भाई—अर्थात् अपनी ही आत्मा—को प्रलोभित करूँ, क्योंकि लिखा है: *"मनुष्य केवल रोटी से जीवित नहीं रहता, परन्तु परमेश्वर के मुख से निकलने वाले प्रत्येक वचन से जीवित रहता है"* (व्यवस्थाविवरण 8:3; मत्ती 4:4)।'

चौथे सप्ताह तक उपवास करने के बाद, वह थोड़ी देर के लिए झपकी ले गया और उसने एक दर्शन में परमेश्वर के स्वर्गदूत को अपने सामने प्रकट होते देखा, जिसने कहा:

'उठो, और जो कुछ भी तुम्हारे सामने रखा जाए, उसे बिना हिचकिचाहट के चखो और हियाव बढ़ाओ!'

जब वह जागा, तो उसने ताज़े पानी का एक सोता देखा और चारों ओर कुछ हरियाली थी जिसकी महक सुहावनी थी और खाने में बहुत स्वादिष्ट थी; उसने उस हरियाली को खाया, सोते से पिया, और अपने शरीर को तरोताज़ा किया। बाद में, उसने भाइयों से कहा कि उसने अपने पूरे जीवन में कभी भी इतना मीठा भोजन नहीं चखा था। उस स्थान से थोड़ी ही दूरी पर चलने पर, उसे एक गुफा मिली और वह वहाँ बस गया, कुछ समय तक वहीं रहा। जब भी उसकी शारीरिक प्रकृति को भोजन की आवश्यकता होती, वह चट्टानों पर ईश्वर से प्रार्थना करता, और तुरंत, एक अदृश्य हाथ द्वारा, उसके पास शुद्ध ताज़ा रोटी, जैतून के फल और विभिन्न प्रकार की सब्जियाँ लाई जातीं।

एक अवसर पर, पूजनीय व्यक्ति जीवन की आवश्यकताओं की ज़रूरत में पड़े रेगिस्तान में अपने भाइयों से मिलने के लिए निकले, और उन्होंने उनके लिए ईश्वर द्वारा भेजा गया भोजन साथ ले लिया। रास्ते में, अपने बोझ के भार से थके हुए, उन्होंने रेगिस्तान में गधों को चलते और चरते हुए देखा, और उनसे संबोधित होकर कहा:

'हमारे प्रभु यीशु मसीह के नाम पर, कोई यहाँ आए और मेरा बोझ उठा ले!'

तुरंत, झुंड का सबसे मजबूत एक गधा विनम्रता से उसके पास आया; संत ने अपना बोझ उस पर लाद दिया, खुद उस पर सवार हो गए, और जल्द ही रेगिस्तान में भाइयों के निवास स्थान पर पहुँच गए, उन्होंने अपने लाए हुए भोजन से उन्हें प्रसन्न किया, और फिर गधे को रेगिस्तान में आज़ाद कर दिया। एक अन्य अवसर पर, वह भी रविवार को सुबह-सुबह एक मरुस्थलीय मठ में पहुँचे और जब उन्हें पता चला कि वहाँ चर्च में कोई प्रार्थना सभा नहीं हो रही है, तो उन्होंने पूछा कि प्रभु का दिन आराधना के बिना क्यों बीत रहा है। भाइयों ने उत्तर दिया कि पुजारी, जो नदी के दूसरी किनारे रहता था, इसलिए नहीं आया था क्योंकि नदी में एक मगरमच्छ दिखाई दिया था और उसने पहले ही कई लोगों को खा लिया था। संत ने उनसे कहा:

'यदि आप चाहें, तो मैं जाकर पुरोहित को ले आता हूँ।'

लेकिन भाइयों ने उत्तर दिया:

'नहीं! और तुम्हें दूसरी तरफ कौन ले जाएगा? हर कोई मगरमच्छ से डरता है और नाके के पास जाने की हिम्मत नहीं करता!'

लेकिन संत एलियास, ईश्वर पर भरोसा करके, चल पड़े और जब वे नदी के किनारे पहुँचे, तो उन्होंने प्रभु का नाम लिया, और तुरंत मगरमच्छ प्रकट हो गया। वह प्राणी, जो लोगों को निगलने का आदी था, ईश्वर की आज्ञा से उस धर्मी पुरुष के लिए एक नावकि बन गया : विनम्रता और भय के साथ, उसने संत को अपनी पीठ पर उठाया, उन्हें नदी के उस पार ले गया और दूसरी तरफ के किनारे पर उतार दिया। रेवरेंड, पुजारी के आवास पर पहुँचकर, उनसे भाइयों के पास आने के लिए कहने लगे, लेकिन प्रेस्बटिर, उन्हें पहचान नहीं पाकर, पूछा:

'तुम कौन हो, और कहाँ से आए हो?'

उसने उत्तर दिया कि वह अभी हाल ही में मठ में आया है। यद्यपि पुरोहित ने धन्यजन के फटे-पुराने और पैबंद लगे वस्त्र देखे, परन्तु उसने उसकी बातों और आचरण से उसे ईश्वर का पुरुष पहचान लिया, और कहा:

'भाई, तुम्हारे बाहरी वस्त्र भले ही फटे-पुराने हों, पर तुम्हारे अंतर्मन के वस्त्र उत्तम हैं!'

तब वह उठकर मठ की ओर चल पड़ा। जब वे नदी पर पहुँचे और उसे पार करने का कोई साधन नहीं मिला, तो आदरणीय व्यक्ति ने पुरोहित से कहा:

'चिंता मत कीजिए, पिताजी! ईश्वर हमारे लिए नाव का प्रबंध कर देगा!'

और उसने ऊँचे स्वर में एक मगरमच्छ को अपने पास बुलाया; मगरमच्छ, संत की आवाज़ सुनकर, तुरंत उनके पास आया और विनम्रता से अपनी पीठ पेश कर दी ताकि वे उस पर चढ़ सकें। पहले पूजनीय पिता मगरमच्छ की पीठ पर चढ़े, फिर उन्होंने पुरोहित को आमंत्रित करते हुए कहा:

'नाव पर चढ़िए, पिताजी, डरो मत!'

लेकिन पादरी, मगरमच्छ को देखकर, भयभीत हो गया और वापस भाग गया। इस बीच, भाई लोग दूसरी किनारे पर खड़े रहे और ईश्वर के उस पुरुष को मगरमच्छ की पीठ पर चढ़कर नदी पार करते हुए देखकर विस्मय से चकित हो उठे। नदी पार करने के बाद, रेवरेंड फादर किनारे पर आए और मगरमच्छ को अपने पीछे से खींचते हुए, उससे कहा:

'लोगों को नष्ट करने और उन्हें निगलने की बजाय तुम्हारा खुद मरना बेहतर है!'

और उसी क्षण मगरमच्छ गिर पड़ा और मर गया।

पवित्र ग्रीक तीन दिन तक मठ में रहे, ईश्वर से प्रेरित शब्दों से भाइयों को उपदेश देते रहे; स्वयं दूरदर्शी होने के कारण, वह प्रत्येक भाई के विचारों और अंतरात्मा को जानते थे, और उन्होंने प्रत्येक से व्यक्तिगत रूप से बात की कि उन्हें किस चीज़ ने लुभाया था। एक से उसने कहा कि वह एक अशुद्ध आत्मा से ग्रस्त था; दूसरे से, कि वह क्रोध से ग्रस्त था; एक और से, कि वह लालच में फँसा हुआ था; और एक अन्य से, कि वह किसी अन्य जुनून से ग्रस्त था। उन्होंने सभी के लाभ के लिए अन्य भिक्षुओं के गुणों का भी वर्णन किया, एक को विनम्र, दूसरे को धर्मी, तीसरे को धैर्यवान, चौथे को आज्ञाकारी, और किसी अन्य में कोई न कोई गुण बताया; सभी के जीवन और उनके सभी गुप्त कर्म, चाहे वे अच्छे हों या बुरे, ईश्वर द्वारा उन्हें प्रकट कर दिए गए थे। जुनून में डूबे प्रत्येक व्यक्ति ने स्वीकार किया कि हेलीउस ने जो कहा था वह सत्य था, और सभी करुणा से प्रेरित होकर अपना जीवन सुधारने लगे। एक बार, एक आध्यात्मिक बातचीत के दौरान, पूजनीय पिता ने कहा:

'भोजन तैयार करो, क्योंकि यात्रा कर रहे भाई जल्द ही यहाँ आ रहे हैं!'

और वास्तव में, जब भोजन तैयार हो गया, ठीक वैसे ही जैसे संत ने कहा था, दूर-दराज से भटकते भाई मठ में आ गए; उन्हें सम्मान के साथ स्वागत करने के बाद, संत हेलियस रेगिस्तान के लिए रवाना हो गए। छोटे भाइयों में से एक ने उनसे रेगिस्तान में उनके साथ जाने की भीख माँगी, और संत ने उससे कहा:

'यह एक कठिन कार्य है, भाई, और इसके लिए बहुत प्रयास की आवश्यकता है, क्योंकि मनुष्य को शैतान के प्रलोभनों के खिलाफ दृढ़ खड़ा होना चाहिए और बहुत कुछ सहना चाहिए।'

लेकिन उस भाई ने सब कुछ सहने का वादा किया, और संत ने, उसे स्वीकार करते हुए, उसे एक दूसरी गुफा में रहने का निर्देश दिया। उसी रात, राक्षसों ने उस पर हमला किया—पहले अदृश्य रूप में, उसके मन को दुष्ट विचारों से भरकर, और फिर दृश्य रूप में, जब भयानक दृश्य उस पर टूट पड़े और उसे मारने की कोशिश में उस पर हावी हो गए। वह गुफा से बाहर भागा, संत के पास दौड़ा और उन्हें अपनी बदकिस्मती के बारे में बताया। बड़े भाई ने अपने भाई को कुछ शब्दों में सांत्वना देकर और धैर्य तथा विश्वास में उसे मजबूत करके, उसे उसी गुफा में वापस ले गए, अपनी उंगली से वह जगह चिन्हित की जहाँ उसे बसना था, और उसे क्रूस के चिन्ह से चिन्हित करने के बाद, प्रभु के नाम से हथियारबंद होने और न डरने की आज्ञा दी। और वह भाई उस रेगिस्तान में रहने लगा, अब उसे शैतानी हमलों से कोई परेशानी नहीं होती थी, और उसे एक अदृश्य हाथ द्वारा लाया गया भोजन प्राप्त हुआ, ठीक वैसे ही जैसे उसके पूजनीय गुरु को मिला था, जिन्हें स्वयं ईश्वर ने पोषित किया था। संत एलियास ने दीर्घायु प्राप्त की, कई चमत्कार किए, और उस परमेश्वर के पास चले गए, जिन्हें उन्होंने प्रसन्न किया था, और उन्हें स्वर्ग में पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के सिंहासन के सामने खड़े सम्मानित लोगों की पंक्ति में गिन लिया गया, जो त्रिमूर्ति में एक परमेश्वर हैं, जिन्हें महिमा हो अब और हमेशा और युगों-युगों तक। आमीन[5145] .

शहीद संत जस्टस का स्मरणोत्सव

14 जुलाई को स्मरणोत्सव

संत जस्टस, जन्म से एक रोमन, एक सैनिक थे। उन्हें एक चमत्कारी दर्शन हुआ: हवा में एक क्रिस्टल जैसा क्रॉस प्रकट हुआ। जस्टस मसीह में विश्वास करने लगे और अपना सारा धन गरीबों में बाँट दिया। गवर्नर मैग्नेन्टियस के आदेश पर, उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया, उन्होंने कई यातनाएँ सहन कीं, जिसके बाद उन्हें आग में फेंक दिया गया और उनके सिर का एक भी बाल झुलसे बिना ही उनकी मृत्यु हो गई।

[5145] संत हेलीउस की मृत्यु चौथी शताब्दी में हुई।

28 जुलाई

15 जुलाई (पुराने कैलेंडर के अनुसार)

इसी दनि, कीव के महा राजकुमार, प्रेरतिों के समकक्ष संत व्लादमिीर (1015) का नधिन हुआ, जन्हिें बेसलि के रूप में बपतस्मिा दयिा गया था।

उसी दनि, संत अवुदमि शहीद की स्मृत, जन्होंने डयिोक्लेशयिन के अधीन यातनाएँ सहन कीं।

संत सरियिकस और जुलट्टिा की शहादत

15 जुलाई को स्मरणोत्सव

लकिोनयिा के प्रदेश में इकोनयिम नगर में कुलीन वंश की एक युवती रहती थी, जो पूर्व रोमन सम्राटों की वंशज थी, जसिका नाम जुलट्टिा था, और वह वश्वास से ईसाई थी; वधिवित ववािह में थोड़े समय तक रहने के बाद[5146] , एक पुत्र को जन्म देने के बाद वह वधिवा हो गई। उसने शशिु का बपतस्मिा कराया और उसका नाम सरियिाकस रखा। उस समय, अधर्मी डायोक्लेटयिन[5147] , जो रोमन साम्राज्य का राजदंड धारण कएि हुए था, ने अपने शासन के सभी क्षेत्रों में ईसाइयों पर एक भयंकर उत्पीड़न शुरू कर दयिा; काउंट डोमेशयिन को डायोक्लेटयिन द्वारा लकिोनयिा प्रांत का राज्यपाल नयिुक्त कयिा गया था; वह एक कठोर और अमानवीय व्यक्त था, स्वभाव से पशुवत्, जसिे ईसाई रक्त का प्रवाह देखकर आनंद आता था। इकोनयिम पहुँचने पर, डोमेशयिन ने क्रोध के साथ मसीह में वश्वास करने वालों को यातनाएँ देना शुरू कर दयिा और गुप्त रूप से ईसाई धर्म का पालन करने वालों की लगन से तलाश करने लगा। ईस की एक वश्वासी दासी, यह देखकर और यह जानते हुए कि उसकी धार्मकिता को देखते हुए, उसके लएि अपने उत्पीड़क से भागना असंभव था, भाग जाने का नश्चय कयिा, क्योंकि उसे डर था कि वह क्रूर यातनाओं को सहन नहीं कर पाएगी और मसीह का त्याग कर देगी। इसलएि, मसीह के प्रेम के लएि, उसने अपनी सारी संपत्त—जो बहुत थी—अपना घर, अपने रश्तेदार, अपनी दासयिाँ, और इस संसार का हर आनंद, इसकी महमिा और सुख, सब कुछ पीछे छोड़ दयिा; और, अपने तीन वर्षीय पुत्र सरियिकस और दो वफादार दासयिों को साथ लेकर, वह रात में इकोनयिम नगर से नकिल गई और अपनी यात्रा पर चल पड़ी, इस बात का ध्यान रखते हुए कि धर्मग्रंथ में लखिा है: *'क्योंकि हमारा यहां कोई स्थायी नगर नहीं है, परन्तु हम उस नगर की खोज में हैं जो आने वाला है'* (इब्रानयिों 13:14)।

[5146] इकोनयिम एशयिा माइनर के केंद्र में, माउंट टॉरस के तल पर, एक ऊँचे, उपजाऊ मैदान पर स्थति एक शहर है, जो लस्ट्रि और डर्बे से बहुत दूर नहीं है; पुराने समय में, इकोनयिम लाइकोनयिन क्षेत्र का प्रमुख शहर था। ईसाई चर्च के इतहिास में, इकोनयिम संत पौलुस प्रेरति द्वारा अपनी धर्मप्रचार यात्राओं के दौरान वहां कएि गए दौरों के लएि उल्लेखनीय है (प्रेरतिों के काम 13:51, 14:1–3; 2 तीमुथयिुस 3:11)। बाद में, यहाँ एक बशिप की स्थापना की गई, और 451 से आगे से इकोनयिम के बशिपों को लाइकोनयिा प्रांत के मेट्रोपॉलटिन के रूप में जाना जाने लगा।

[5147] डायोक्लेटयिन (284–305) के शासनकाल के दौरान, ईसाइयों के खलिाफ चार फरमान जारी कएि गए थे। पहला फरमान फरवरी 303 में जारी कयिा गया था। इस फरमान में चर्चों को नष्ट करने और पवत्रि पुस्तकों को जलाने का आदेश दयिा गया था; साथ ही, ईसाइयों से उनके नागरकि अधकिार, कानून का संरक्षण और उनके पद छीन लएि गए; ईसाई दासों ने अपनी स्वतंत्रता का अधकिार खो दयिा यदि कसिी भी तरह से स्वतंत्रता प्राप्त करने के बाद भी, वे ईसाई बने रहे। इसके तुरंत बाद, एक दूसरा फरमान जारी कयिा गया, जसिमें सभी चर्च नेताओं और अन्य पुरोहतिों को कैद करने का आदेश दयिा गया; इस प्रकार, यह फरमान केवल पुरोहतिों पर ही लागू हुआ; उन पर सम्राट के सामने सीरयिा और आर्मेनयिा में दंगों को भड़काने का आरोप लगाया गया, जो ईसाइयों की दुर्भाग्यवश, पहले फरमान के प्रकाशन के बाद शुरू हो गए थे। उसी वर्ष, 303 में, एक तीसरा फरमान जारी कयिा गया: नए फरमान के तहत कैद कएि गए सभी लोगों को प्रतरिोध करने पर यातना की धमकी देकर बलदिान करने के लएि मजबूर कयिा जाना था। अंत में, 304 में, अंतमि, चौथा फरमान जारी कयिा गया, जसिमें ईसाइयों के बड़े पैमाने पर उत्पीड़न की घोषणा की गई। इसी आदेश के परणिामस्वरूप ईसाइयों के जीवन का सबसे बड़ा नुकसान हुआ: यह पूरे आठ साल, 311 तक लागू रहा, जब सम्राट गैलेरयिस ने एक वशिेष आदेश जारी कयिा जसिमें ईसाई धर्म को एक अनुमत धर्म घोषति कयिा गया। डायोक्लेटयिन का उत्पीड़न आखरिी था; इसमें, लगभग तीन सदयिों तक चले संघर्ष के बाद, ईसाई धर्म मूर्तपिूजा पर वजियी हुआ।

वह सेल्यूकिया[5148] में एक भटकती और भिखारी के रूप में पहुँची, अपनी कुलीन पदवी को छिपाते हुए; लेकिन वहाँ भी उसे ईसाइयों के प्रति वही उत्पीड़न झेलना पड़ा, क्योंकि राजा द्वारा नियुक्त एक अलेक्ज़ेंडर नामक व्यक्ति सेल्यूकिया आया और जिसने भी यीशु मसीह के नाम का अंगीकार किया, उसे निर्दयता से मार डाला। धन्य जुलिटा ने यह भी ध्यान में रखते हुए कि 'क्रोध से बचो' (यानी क्रोध से भागो)[5149] , और *'जब वे तुम्हें एक नगर में सताएँ, तो दूसरे नगर को भाग जाओ'* (मत्ती 10:23) वचन बोले, सेलेउकिया छोड़ दिया और किलिकिया के एक शहर, तारस के लिए निकल पड़ीं, जहाँ उन्होंने गरीबों के बीच जीवन यापन किया। कुछ समय बाद, वही राज्यपाल, अलेक्ज़ेंडर, ईसाइयों को सताने के लिए तारस आया[5150] ; संत जुलिट्टा को कुछ लोगों ने पहचान लिया और राज्यपाल को सूचित कर दिया। उसने तुरंत उसे अपने सामने पेश करने का आदेश दिया, जबकि वह स्वयं जनता के लिए खुले न्यायपीठ पर बैठ गया। जब सैनिक उसे उसके बेटे के साथ ले गए, तो उसकी दो दासियाँ भाग गईं; वे उसकी पीड़ा और मृत्यु को देखने के लिए दूर से उसे देखने लगे। और शहीद को कमांडर के सामने लाया गया, जो अपनी बाहों में तीन वर्षीय लड़के संत स्यरियाकस को लिए हुए थी। जब कमांडर ने उससे उसका नाम, वंश और मूल देश के बारे में पूछा, तो उसने निडर होकर हमारे प्रभु यीशु मसीह का नाम स्वीकार किया और खुद को एक ईसाई घोषित किया:

उसने कहा, 'मेरा नाम, मेरी वंशावली और मेरा देश मेरे मसीह का स्वर्गीय राज्य है!'

कमांडर, क्रोधित होकर, ने आदेश दिया कि बच्चे को उससे छीन लिया जाए, नग्न कर दिया जाए और कठोर रस्सियों से बेरहमी से पीटा जाए। जब शहीद को पीटा जा रहा था, तो बच्चा, यह देखकर, रोया और उसे पकड़े हुए हाथों से छूटने के लिए संघर्ष करने लगा, ताकि वह अपनी माँ के पास जा सके। कमांडर ने बच्चे की सुंदरता देखकर उसे अपने पास लाने का आदेश दिया; फिर, उसे गोद में बिठाकर, उसे यह दिलासा देने लगा कि वह रोए नहीं, उसके सिर पर हाथ फेरते, उसे चूमते और उससे तरह-तरह के लाड़-प्यार भरे शब्द कहते रहे; लेकिन बच्चे ने विरोध किया, उसकी पकड़ से छूट गया, कमांडर से अपना सिर फेर लिया, और उन घृणित होठों से सिर पर हाथ फेरने या चूमने नहीं दिया; बच्चा अपनी माँ को देखता रहा, जिसे पीटा जा रहा था, वह रो रहा था और पुकार रहा था:

'मैं एक ईसाई हूँ! मुझे अपनी माँ के पास जाने दो!'

उसने अपने हाथ कमांडर से छुड़ाते हुए अपनी उंगलियों के नाखूनों से उसका चेहरा खुरच दिया। तब कमांडर क्रोध से आग-बबूला हो गया, उसने बच्चे को फर्श पर फेंका और उसकी पसली में लात मारी, जिससे वह ऊँचे सिंहासन से लुढ़क गया; जैसे ही बच्चा पत्थर की सीढ़ियों से लुढ़कता हुआ नीचे गिरा, उसका सिर तेज कोनों से टकराया, उसने उस पूरे स्थान को अपने रक्त से लाल कर दिया और अपनी पवित्र और निर्मल आत्मा को ईश्वर के हाथों में सौंप दिया। इस प्रकार पवित्र युवक सिरिल की शहादत को मुकुट मिला।

जहाँ तक उसकी धन्य माँ, जुलिटा का सवाल है, जिसे क्रूरतापूर्वक और बेरहमी से यातना दी गई, जो एक अजनबी शरीर में होने की तरह पीड़ा सह रही थी और एक निर्जीव स्तंभ की तरह कुछ भी महसूस नहीं कर रही थी, उसने इन शब्दों के अलावा कुछ नहीं कहा:

'मैं एक ईसाई हूँ और राक्षसों को बलिदान नहीं चढ़ाऊँगी!'

जब उन्होंने उसे पीटना बंद किया और उसे ज़मीन से उठाया, तो उसने अपने प्रिय बच्चे को न्यायाधिकरण के सामने खून से लथपथ और मृत देखा; आनंद से भरकर, जुलिट्टा ने कहा:

'मैं आपकी धन्यवाद करती हूँ, हे प्रभु, कि आपने मेरे पुत्र को ऐसी कृपा दी कि वह आपके पवित्र नाम के लिए मुझसे पहले शहीद हुआ और आपके महिमा में अक्षय मुकुट प्राप्त किया।'

[5148] सेलेउकिया – सीरिया में भूमध्य सागर के तट पर एक शहर; इसकी स्थापना सबसे अधिक संभावना सीरियाई राजा सेल्यूकस निकिटर ने लगभग 300 ईसा पूर्व में की थी; यहीं पर प्रेरित पौलुस अपनी पहली यात्रा के दौरान उपदेश देने के लिए रुके थे, और यहीं से उन्होंने साइप्रस के लिए समुद्री यात्रा आरंभ की (प्रेरितों के काम 13:4); ईस्वी 6वीं शताब्दी में, यह शहर नष्ट हो गया था।

[5149] वास्तव में, रोमियों के नाम पत्र (रोमियों 12:19) के इस अंश का एक अलग अर्थ है: 'प्यारों, स्वयं बदला न लो,' प्रेरित कहते हैं, 'बल्कि परमेश्वर के क्रोध के लिए स्थान छोड़ दो'।

[5150] टारसस, एशिया माइनर के सिलिसिया क्षेत्र का एक शहर, संत पौलुस प्रेरित का जन्मस्थान होने के लिए उल्लेखनीय है (प्रेरितों के काम 22:3); यहीं उन्होंने मसीह के सुसमाचार का प्रचार करने की तैयारी की, और यहीं से प्रेरित बरनबास ने उन्हें सुसमाचार का प्रचार करने के लिए बुलाया (प्रेरितों के काम 9:11, 30, 11:25)। परिणामस्वरूप, तारस में ईसाई धर्म जल्दी ही जड़ें जमाने लगा (प्रेरितों के काम 15:23, 41)।

इसके बाद, कमांडर ने उसे फाँसी देने और उसके शरीर को लोहे के दाँतों से खुरचने का आदेश दिया; फिर, एक कड़ाही में उबलता हुआ तारकोल लेकर, उसने उसे उसके घावों पर डालने का आदेश दिया। जब संत जुलिटा को इस तरह यातना दी जा रही थी, तो उद्घोषक ने पुकारा:

'जुलिटा, अपनी जान बचाओ, अपनी जवानी की रक्षा करो और देवताओं की पूजा करो, ताकि तुम अपने कष्टों से मुक्त हो जाओ और अपने बेटे की तरह क्रूर मृत्यु से न मरो।'

शहीद ने उत्तर दिया:

मैं राक्षसों या उनकी बहरी और गूंगी मूर्तियों की पूजा नहीं करूँगी – मैं अपने प्रभु यीशु मसीह की पूजा करती हूँ, ईश्वर के एकमात्र पुत्र, जिनके द्वारा स्वर्गीय पिता ने सभी चीजों की रचना की (कुलुस्सियों 1:12–16), और मैं अपने पुत्र के साथ जुड़ने का प्रयास करती हूँ, ताकि हम दोनों को स्वर्ग के राज्य का योग्य समझा जाए।" शहीद के अडिग धैर्य और महान साहस को देखकर, न्यायाधीश ने उसे तलवार से सिर कलम करने की सजा सुनाई। उसके सेवकों ने उसे ले जाकर शहर के बाहर उस फाँसी के मैदान तक ले गए जहाँ मृत्युदंड प्राप्त लोगों को मार डाला जाता था। संत उस ओर चलीं मानो जैसे अपने विवाह के मुकुट की ओर जा रही हों; उस स्थान पर पहुँचकर, उन्होंने प्रार्थना करने के लिए थोड़ा समय माँगा, और फिर, घुटने टेककर, उन्होंने प्रार्थना की:

'मैं तुझे धन्यवाद देती हूँ, हे प्रभु मेरे परमेश्वर, यीशु मसीह, कि तूने मेरे पुत्र को मुझसे पहले बुलाया, उसे अपने पवित्र नाम के लिए दुख सहने के योग्य समझा, और उसे, जिसने संतों के साथ रहने के लिए इस व्यर्थ जीवन को त्याग दिया; मुझे भी स्वीकार करें, अपनी अयोग्य दासी को, और मुझे अपने सामने उस अनुग्रह का दान दें कि मैं बुद्धिमान कुँवारियों में गिनी जाऊँ (देखें मत्ती 25:1–13), आपके अविनाशी महल में प्रवेश करके, ताकि मेरी आत्मा आपको धन्य कह सके, मेरे सृष्टा, आपके अनंत पिता और उसी सार के आत्मा, युगानुयुग, आमीन।

संत जुलिट्टा द्वारा यह प्रार्थना करने के बाद, जल्लाद ने अपनी तलवार तेज करके, उसकी गर्दन पर वार किया और उसका उत्तम सिर काट दिया, और उसका शरीर कुत्तों और जंगली जानवरों द्वारा खाए जाने के लिए वहीं बिना दफनाए छोड़ दिया; इसी प्रकार, उसने संत सिरिकस के शरीर को शहर से बाहर घसीट कर निकाला, उसे उसकी माँ के शरीर के पास फेंक दिया, और चला गया। जब रात हुई, तो उपरोक्त दो दासियाँ इस स्थान पर आईं, उन्होंने अपनी स्वामिनी और उसके पुत्र के शवों को उठाया, उन्हें दूर ले गईं, और उन्हें जमीन में दफना दिया। इनमें से एक दासी ने पहले ईसाई सम्राट, महान कॉन्स्टेंटिन[5151] के समय तक जीवित रहकर देखा, जिनके शासनकाल में सत्य का प्रकाश हुआ और मसीह की कृपा से ईश्वर की कलीसिया प्रमुख धर्म बन गई; तब उस दासी ने विश्वासयोग्य ईसाइयों को वह स्थान दिखाया जहाँ पवित्र शहीदों सिरिकस और जुलिटा के सम्मानित अवशेष दफनाए गए थे और उनके कष्टों का वर्णन किया। उनके पवित्र अवशेष पृथ्वी की गहराइयों से निकाले गए, अक्षुण्ण, एक मीठी सुगंध बिखेरते हुए और बीमारों को चंगा करते हुए। उनके कष्टों को पवित्र शहीदों की स्मृति और सम्मान में, विश्वासियों के लाभ के लिए और हमारे ईश्वर मसीह की महिमा के लिए दर्ज किया गया, जो पिता और पवित्र आत्मा के साथ हमेशा के लिए महिमामय हैं[5152] । आमीन।

कॉन्टाकियन, स्वर 4:

करिंका को अपनी बाहों में थामे, मसीही-शहीद जुलिट्टा, अपने संघर्ष में वीरतापूर्वक आनंदित होकर, पुकार उठीं: 'मसीह शहीदों की स्तुति हैं।'

[5151] 324 से 337 तक सम्राट

[5152] संत सिरियाकस और जुलिटा की शहादत लगभग 305 ईस्वी के आसपास की है – कॉन्स्टेंटिनोपल में सिरियाकस को समर्पित एक मठ था और जूडिया में जेरिको के पास एक चर्च था, जैसा कि जॉन मॉसस ने प्रमाणित किया है। 12वीं से 15वीं शताब्दी के रूसी तीर्थयात्रियों के विवरणों के अनुसार, सिरिअकस के अवशेष कॉन्स्टेंटिनोपल में हागिया सोफिया में रखे गए थे। ऑक्सेरे के बिशप (388–418) अमाटोर ने, उनमें से एक हिस्सा, एंटिओक के पास ऑक्सेरे में लाया।

29 जुलाई

16 जुलाई (पुराना कैलेंडर)

संत एथेनोएज ह्येरोमार्टायर और उनके दस शष्यिों का कष्टकथा

16 जुलाई को स्मरणोत्सव

नष्ठिाहीन रोमन सम्राट डायोक्लेटयिन[5153] के शासनकाल के दौरान, ईसाइयों पर एक भयंकर उत्पीड़न हुआ; जो भी परमेश्वर की इच्छानुसार जीवन यापन करते थे, वे संकट में थे; हर जगह अशांति थी; कई लोगों ने सम्राट के डर से एक-दूसरे को मौत के घाट उतारने के लिए धोखा दिया—पिता ने बेटे के खिलाफ, भाई ने भाई के खिलाफ, रिश्तेदार ने रिश्तेदार के खिलाफ। फिलोमार्क नामक एक गवर्नर अर्मेनिया के सेबास्टे शहर में आया; उसने बहुत सारे मूर्तिपूजक पुरोहितों को इकट्ठा किया, और उनके सिर पर फूलमालाएँ पहनाकर, उन्हें आज्ञा दी कि वे तुरही और झाँझों की धुन पर, लीर और बांसुरी की संगत के साथ, आनंद और उत्सव के साथ अपने दुष्ट देवताओं को बलिदान चढ़ाएँ। उसने स्वयं जनता के सामने दरबार में अपनी सीट पर बैठकर उपदेशक को निम्नलिखित बातें ज़ोर से चिल्लाने का आदेश दिया:

'सुनो, नागरिकों और सभी सम्मानित पुरुषों, राजा की आज्ञा सुनो: जाओ और देवताओं को बलिदान चढ़ाओ!'

और भीड़ चाहे कितनी भी बड़ी क्यों न हो, वे सभी चिल्ला उठे:

'हम ईसाई हैं और मूर्तियों की पूजा नहीं करेंगे!'

तब यातना देने वाले ने सैनिकों को लोगों को पीटने का आदेश दिया, और कई मसीह के लिए मर गए और उन्हें स्वर्गीय मुकुट प्राप्त हुए। इसके बाद, सैनिकों के दस्ते के कमांडर, निकोलस, यातना देने वाले के पास आए और कहा:

'हे हेगेमोन महोदय! यहाँ एथेनोजेन्स नाम का एक व्यक्ति है, जो एक ईसाई बिशप है, जो सभी को अपने धर्म से भटका रहा है; वह पडिाचफोन गाँव में रहता है।'

गवर्नर ने तुरंत उसे गिरफ्तार करने के लिए सैनिक भेजे। उस गाँव के पास, एक सुनसान जगह पर, संत अथिनाजेनेस का एक छोटा सा मठ था जहाँ वह अपने दस शष्यिों के साथ रहता था, और उपवास तथा प्रार्थना में लगा रहता था। सैनिक उसके मठ पर आए लेकिन उन्हें स्वयं पवित्र बिशप नहीं मिला: वह कहीं और चले गए थे; इसलिए उन्होंने उनके शष्यिों को बाँध दिया और उन्हें सेबास्टे ले गए। राज्यपाल ने उन्हें देखा और उन्हें जेल में डालने, बेड़ियाँ पहनाने और कड़ी निगिरानी में रखने का आदेश दिया; और उसने सैनिकों से कहा:

'मुझे उनका शिक्षक ला दो।'

सैनिक अथिनीजेनेस की खोज में हर जगह गए। अथिनीजेनेस, ईश्वर के पुरुष, मठ में आए और अपने भाइयों को न पाकर, चैपल में प्रवेश किया और वहाँ खड़े पवित्र क्रूस को आँसुओं से निहारते हुए कहा:

'मेरे वे भाई कहाँ हैं, जिन्हें मैंने आपको सौंपा था? ईश्वर से हमारी प्रथागत प्रार्थनाओं में मेरा साथ कौन देगा? सुंदर जैतून की शाखाएँ कहाँ हैं? उनका क्या हुआ? मुझे नहीं पता!'

और संत बहुत दुखी हुए। मठ छोड़कर, वे यह सोचते और हैरान होते हुए उसके चारों ओर घूमने लगे कि उनके भाई कहाँ गए होंगे; और देखो, एक हिरण का बच्चा दौड़ता हुआ उनके पास आया—जिसे उन्होंने हाल ही में अपने हाथों से पाला था—और उनसे लिपटने और उनके हाथ चाटने लगा। फिर उनकी मुलाकात एक परिचित से हुई, जिसने उनसे पूछा:

'हे पवित्र प्रभु, जब आपके शष्यिों को पकड़ा गया था, तब आप कहाँ थे? क्योंकि राज्यपाल ने उनके पीछे सैनिक भेजे, उन्हें बाँधने और यातना देने के लिए शहर ले जाने का आदेश दिया।'

यह सुनकर संत प्रसन्न हुए और स्वर्ग की ओर देखकर बोले:

'मैं आपको धन्यवाद देता हूँ, हे प्रभु यीशु मसीह, कि आपने अपने योग्य सेवकों को स्वर्ग के राज्य में बुलाया है!'

हिरण को रेगिस्तान में भेजने के बाद, वह स्वयं अपने शष्यिों से मिलने के लिए सेबास्टे शहर की ओर दौड़े। शहर के मजिस्ट्रेट के कार्यालय में पहुँचने पर, उन्होंने ज़ोर से चिल्लाना शुरू कर दिया:

[5153] उन्होंने 284 से 305 तक रोमन साम्राज्य के पूर्वी हिस्से पर शासन किया।

'हे यातना देने वाले, तूने मेरे चर्च को लूटकर मुझसे क्या छीन लिया है? ईश्वर उस दुष्ट कर्म को देखे जो तूने किया है, और वह अपना प्रकोप तुझ पर उतार दे!'

तुरन्त सैनिकों ने संत को पकड़ लिया और उसे राज्यपाल के सामने लाकर कहा:

'यहाँ अथनिोजेनेस है, वह आदमी जिसे हमें खोजने का आदेश दिया गया था; वह आपके मान-सम्मान का गहरा अपमान कर रहा है!'

राज्यपाल ने तुरंत उसे उस कालकोठरी में फेंकने का आदेश दिया जहाँ उसके भाई मसीह के लिए कैद थे। अपने भाइयों को देखकर, संत बहुत प्रसन्न हुए और उनसे कहा:

'तुम्हें शान्ति मिले! मसीह का अनुग्रह तुम पर हो, मेरे बच्चों: तुमने स्वयं को परमेश्वर को प्रसन्न करने वाला सिद्ध किया है, और इसीलिए उन्होंने तुम्हें स्वर्गीय भोज के लिए बुलाया है! स्थिर रहो; यातना देने वाले के प्रलोभनों से मत डरो; ईश्वर कल तुम्हें अपना पराक्रम पूरा करने में मदद करेंगे, और स्वर्गदूतों तथा संतों के समूह के साथ तुम स्वर्ग की खुशियों में प्रवेश करोगे और आनंदपूर्वक, शाश्वत रूप से स्वर्गीय प्रभु की महिमा करोगे!

अगले दिन, यातना देने वाले ने अदालत में अपनी सीट ली और एथेनोजेनेस और उसके दस शिष्यों को अपने सामने लाने का आदेश दिया। उसने उनसे कहा:

देवताओं को राजा की आज्ञा से बलिदान चढ़ाओ; परन्तु यदि तुम अवज्ञा करोगे, तो मैं तुम्हें भयंकर यातनाएँ दूँगा और तुम्हारी जान ले लूँगा, जैसे मैंने तुम्हारे पहले के दृढ़ रहने वालों को नष्ट कर दिया था: दुष्ट अपने ही दुष्टता से नाश हो गए।

लेकिन संत एथेनोजेनेस ने उससे उत्तर दिया:

'जिन लोगों को तुम, हे यातनाकर्ता, नष्ट कहता हो, वे नष्ट नहीं हुए हैं, बल्कि स्वर्ग में स्वर्गदूतों के साथ आनंदित हो रहे हैं।'

इगेमोन ने कहा:

'अथनिागोनस, मुझे विलंब मत कराओ, बल्कि तुरंत मेरी आज्ञा मानो और अपने साथियों के साथ मिलकर देवताओं को बलिदान चढ़ाओ, नहीं तो तुम्हें एक भयानक मृत्यु का सामना करना पड़ेगा।'

इस पर संत ने राज्यपाल से कहा:

'अधर्मी यातनाकर्ता, नीच और निर्लज्ज कुत्ते! तुम अपनी धमकियों से हमें डरा नहीं सकते; जो मन में आए सो करो: हम अपने ईश्वर के लिए कुछ भी सहने को तैयार हैं।'

तब यातना देने वाला क्रोधित हो गया और उसने आदेश दिया कि अथनिाजेनेस के दस शिष्यों को नग्न कर दिया जाए, एक ओक के पेड़ से लटका दिया जाए, निर्दयता से पीटा जाए, और उनके शरीर को लोहे की कंघियों से खुरच दिया जाए। जब वे पीड़ा सह रहे थे, तो वे चिल्लाए:

'हम अनश्वर मसीह के लिए इन घावों को सहने को तैयार हैं; हम तुझे, हमारे प्रभु परमेश्वर को, नहीं त्यागेंगे!'

यातना देने वाले ने, उनके साहस और धैर्य को देखकर, जिसे कोई यातना भी हरा नहीं सकी, उन्हें तलवार से सिर कलम करने का आदेश दिया। और संत एक गौरवपूर्ण विश्वास की घोषणा करते हुए परलोक सिधार गए और महिमा में स्वर्गीय निवासों में प्रवेश कर गए। दस पवित्र शहीदों के वध के बाद, राज्यपाल ने संत एथेनोजेनेस, बिशप, की ओर मुड़कर कहा:

'तो फिर तुम्हारा मसीह कहाँ है, जिसे तुम ईश्वर कहते हो? वह यहाँ क्यों नहीं आया और तुम्हारे शिष्यों को मेरे हाथों से क्यों नहीं छुड़ाया?'

यह कहकर, राज्यपाल ने आदेश दिया कि उसे भी नग्न करके एक पेड़ पर लटका दिया जाए और कोड़े मारे जाएँ। जब उसे कोड़े मारे जा रहे थे, तो संत ने कहा:

'महिमा तेरी हो, हे ईश्वर, क्योंकि तूने मुझे अपने नाम के लिए दुख सहने योग्य समझा!'

राज्यपाल ने उससे कहा:

'तो फिर, तुम्हारा ईश्वर तुम्हें मेरी पकड़ से क्यों नहीं छुड़ाता?'

शहीद ने उत्तर दिया:

'उसने मुझे बचाया है और इस अधर्मी, तुम्हारी दुष्ट चालाकी से बचाएगा!'

तब राज्यपाल ने आज्ञा दी कि उसे पेड़ से उतारकर एक बार फिर उसके पसलियों पर क्रूरता से पीटा जाए, जबकि संत ईश्वर की ओर मुड़कर पुकार रहे थे:

'हे प्रभु, मैंने आप पर अपना भरोसा किया है; अपनी दया से मुझे बचा लीजिए!'

और स्वर्ग से एक दैवीय स्वर उसके पास आया:

'हौसला रखो, हे मेरे चुने हुए! मैं तेरे संग हूँ—तेरा परमेश्वर, जो तुझे बचाता है!'

यह आवाज़ न केवल संत ने सुनी, बल्कि उन सेवकों ने भी सुनी जो उन्हें यातना दे रहे थे; वे भय से ग्रस्त हो गए और अब और उस परमेश्वर के पुरुष को सता नहीं सके, क्योंकि उनके हाथ सुन्न हो गए थे। राज्यपाल के एक मित्र, जिसका नाम फिलिप था, जो उसके साथ बैठा था, उससे कहा:

'क्या मैंने तुम्हें पहले नहीं बताया था कि ईसाई जादूगर होते हैं? इसको जल्दी से खत्म करो, कहीं ऐसा न हो कि जो इसे देखें वे भटक जाएँ।'

अधिकारियों ने तुरंत शहीद को तलवार से मार डालने का आदेश दे दिया, लेकिन संत ने अपने यातनाकर्ता से कहा:

'हे हेगेमोन, मैं आपसे विनती करता हूँ, आदेश दें कि मुझे मेरे मठ ले जाया जाए और वहाँ मुझे मृत्युदंड दिया जाए।'

और राज्यपाल ने उसकी प्रार्थना मान ली।

जैसे ही संत को उनके मठ ले जाया जा रहा था, उन्होंने दाऊद की भजन-पुस्तक से कुछ छंद गाए और इस बात पर प्रसन्न हुए कि वे जल्द ही अपने शरीर से अलग होकर प्रभु के पास जाएँगे। जब वे मठ के पास पहुँचे, तो उपर्युक्त हिरण रेगिस्तान से संत से मिलने के लिए बाहर आया और उनके पैरों पर झुक गया। और संत ने उससे कहा:

'तुम अपनी झुंड खो चुके हो; अब तुम उसे भी खो रहे हो जिसने तुम्हारा पालन-पोषण किया! काश शाश्वत ईश्वर तुम्हें या तुम्हारी संतान को शिकारियों के हाथों न सौंपे, बल्कि काश तुम्हारी संतान हमारी स्मृति में यहाँ आए, ताकि हमारे स्मरणोत्सव मनाने आए लोग उन्हें ईश्वर की महिमा के लिए बलिदान कर खा सकें।'

हिरण ने आँसू बहाते हुए स्वयं को संत के चरणों में झोंक दिया, और संत ने उस पर क्रॉस का चिह्न बनाते हुए कहा:

'शांति से मरुस्थल में जाओ!'

अपने मठ में प्रवेश करते समय, संत एथिनोजेनेस ने ईश्वर से इस प्रकार प्रार्थना की:

'हे मेरे प्रभु परमेश्वर! मेरी आत्मा को शांति से ग्रहण कर और यह अनुग्रह कर कि मैं अपने भाइयों के साथ रहूँ, ताकि हम मिलकर सदा के लिए तेरे परम पवित्र नाम का महिमामंडन कर सकें! हे प्रभु, उन सभी को अपनी अनंत आशीर्वाद प्रदान करें जो प्रेम से मेरी स्मृति का सम्मान करते हैं, जो मेरे नाम की याद में आपसे प्रार्थना करते हैं; उन्हें अपनी कृपा दिखाएँ और उनकी सभी आवश्यकताओं में शीघ्र सहायता प्रदान करें।

जब वे प्रार्थना कर रहे थे, तो स्वर्ग से एक आवाज़ सुनाई दी:

'आज तुम मेरे और मेरे चेलों के साथ स्वर्ग में होओगे, और तुम्हारी सब इच्छाएँ पूरी होंगी!'

शहीद ने यह आवाज़ सुनकर बहुत प्रसन्नता व्यक्त की और खुशी-खुशी अपनी गर्दन तलवार के हवाले कर दी; उसका सिर काट दिया गया; इस प्रकार वह प्रभु के पास चला गया। उसके पवित्र शरीर को विश्वासियों ने उसी स्थान पर दफनाया, और वे हर साल उसकी मृत्यु के दिन उसकी स्मृति को भक्तिपूर्वक मनाने के लिए इकट्ठा होते थे[5154]। और एक अद्भुत चमत्कार हुआ: वह हिरण जिसे संत ने पाला था और, उनके आशीर्वाद से, रेगिस्तान में भेज दिया था, जैसा कि उन्होंने आज्ञा दी थी, त्योहार के दिन आता था और अपने शावकों को अपने साथ लाता था। उन्हें वहीं छोड़कर, वह रेगिस्तान में लौट जाता था, और कोई भी उसे रोक नहीं पाता था। हिरण हर साल ऐसा करता था: वह पर्व के दिन आता और अपने शावक को लाता, जिसे पवित्र शहीद बिशप एथेनोजेन्स और उनके दस शिष्यों की स्मृति और सम्मान में, हमारे ईश्वर मसीह की महिमा के लिए काटा और खाया जाता था, जो परमपिता और पवित्र आत्मा के साथ महिमामय हैं, अब और अनंतकाल तक। आमीन।

[5154] शहीद एथेनोजेन्स की मृत्यु लगभग 311 में हुई।

कॉन्टाकयिन, स्वर 4:

हे पवत्रि शहीद अथेनोजेनेस, प्रभु की आज्ञा का पालन करते हुए, एक वफादार चरवाहे की तरह आपने मसीह के भेड़ों के लिए अपनी आत्मा का बलदिान दयिा: इसके लिए हम आपकी स्तुति करते हैं, और आपके साथ आपके उन दस शष्यिों की भी, जन्हिोंने ईश्वर के भय और आपके उपदेश से प्रेरति होकर कष्ट सहे। प्रभु ने अपने जीवन-दायक दक्षणि हस्त से उन लोगों को मुकुट पहनाया है जन्हिोंने उन्हें प्रसन्न कयिा; हम सभी के लिए उनसे प्रार्थना करें।

पवत्रि शहीद जूलयिा का कष्टकथा

16 जुलाई को स्मरण कयिा जाता है

जब फ़ारसियिों ने पूरे अफ्रीका में प्रसद्धि कार्थेज शहर[5155] पर कब्ज़ा कर लयिा और उसके कई नविासयिों को बंदी बना लयिा, उस समय, उस शहर के अन्य बंदयिों के बीच, उस छोटी लड़की को भी बंदी बना लयिा गया, जसिके बारे में हम बात करेंगे, धन्य जूलयिा, जो अनलसन नामक एक प्रतष्ठिति व्यक्ति की बेटी थी; उसे सीरयिाई फलिस्तीन ले जाया गया और एक व्यापारी, एक अधर्मी मूर्तपिूजक, को दासत्व में बेच दयिा गया। यद्यपि वह लड़की एक अवश्विासी स्वामी की देखभाल में थी, फरि भी उसने मसीह में पवत्रि वश्विास को दृढ़ता से थामे रखा, जसिमें वह जन्मी थी, और उन अच्छे ईसाई रीति-रिवाजों को जो उसने बचपन से सीखे थे – वह अक्सर प्रार्थना करती और उपवास करती थी। जब वह युवती बनी, तो उसने अपनी पवत्रिता बनाए रखने का बहुत ध्यान रखा, कठोर आत्म-संयम से युक्त एक पवत्रि जीवन जयिा, और प्रेरति के वचनों के अनुसार अपने स्वामी की नष्ठिापूर्वक सेवा की: *'पूरी नष्ठिा से, न कि केवल मनुष्यों को प्रसन्न करने के लिए* (इफसियिों 6:5-6), बल्कि ऐसा मानकर जैसे कि परमेश्वर के सामने हो, उसने अपनी समझ से उन सभी कामों को पूरा कयिा जो उसे सौंपे गए थे और जो परमेश्वर या उसके पवत्रि जीवन के वरिुद्ध नहीं थे; और जहाँ तक उन कामों की बात है जो इसके वपिरीत थे, कोई भी उसे ऐसा करने के लिए मजबूर नहीं कर सकता था। उसके स्वामी ने उसे मसीह का त्याग करने के लिए मजबूर करने की बहुत कोशशि की और उसे अपने मूर्तपिूजक रीति-रिवाजों के अनुसार दुष्टता से जीने के लिए प्रेरति कयिा; लेकनि कोई भी धमकी उसे ऐसा करने के लिए मना नहीं सकती थी, क्योंकि वह मसीह से भटकने या अपनी पवत्रिता खोने के बजाय मरने के लिए तैयार थी। उसका मालकि पहले ही उसे मौत की सज़ा देने ही वाला था, लेकनि यह देखकर कि वह वफादारी से सेवा करती थी और लगन से काम करती थी, उसने उसे माफ कर दयिा और उसके अच्छे चरत्रि, नम्रता, वनिम्रता और उपवास के सख्त पालन से चकति हो गया; उसने देखा कि वह शनविार और रवविार को छोड़कर हर दनि उपवास करती थी, और काम से मलिने वाले अपने खाली समय को आलस्य और आराम में नहीं, बल्कि या तो ईश्वर से भक्तपिूर्वक प्रार्थना करने में या कतिाबें पढ़ने में बतिाती थी, यह एक आदत थी जो उसने बचपन में सीखी थी; वह रात में शायद ही कभी सोने जाती थी। दखिावट में, वह अपने परश्रिम और संयम के कारण हमेशा पीली, पतली और दुबली-पतली रहती थी। इस पर उसके स्वामी को बहुत आश्चर्य हुआ और, यह देखकर कि वह उसी तरह जारी रही, उसे दया, प्रेम और सम्मान की भावना होने लगी: यह ईश्वर थे, जो अपनी वफादार सेवकिा, संत जूलयिा की पतृिसुलभ रक्षा कर रहे थे, जन्हिोंने एक अवश्विासी के कठोर हृदय को उसके प्रति दयालु बना दयिा। जब उसके मालकि – एक व्यापारी – ने बड़ी मात्रा में माल के साथ गॉल की समुद्री यात्रा करने का फैसला कयिा, तब वह पहले ही बीस वर्ष की आयु से अधकि की थी। वह अपनी वफादार दासी, जूलयिा को, अपने साथ ले गया, क्योंकि उसने देखा कि उसकी संपत्ति उसकी देखरेख में बढ़ रही थी: ईश्वर ने उसके माध्यम से व्यापारी के घर को आशीर्वाद दयिा था (जैसे, बहुत समय पहले मस्रि में, पोटफिर के घर को यूसुफ के माध्यम से आशीर्वाद मलिा था (उत्पत्ति 39:5))। इसीलिए, अपने कीमती माल के साथ, वह अपनी दासी—या यूँ कहें कि मसीह की दासी—को, जो कसिी भी माल से अधकि कीमती थी, साथ लेकर चल पड़ा। वह कोर्सकिा द्वीप[5156] पर उतरा, जसिके पास से वह नाव से गुज़र रहा था। यद्यपि इस द्वीप पर ईसाई शहर थे, लेकनि वहाँ कई मूर्तपिूजक भी थे, और जब यह व्यापारी द्वीप पर उतरा, तो उसने बंदरगाह के पास अपने साथी मूर्तपिूजकों की एक भीड़ देखी जो एक त्योहार मना रहे थे और राक्षसों को बलदिान दे रहे थे। वह अपने सभी सेवकों के साथ उनके पास गया, एक मोटा सांड खरीदा, और मूर्तपिूजकों के साथ मलिकर एक घृणति बलदिान चढ़ाया; और वे सभी खाने, पीने और आनंद

[5155] लगभग 625

[5156] कोर्सकिा द्वीप भूमध्य सागर में स्थति था।

करने लगे। हालाँकि, संत जूलिया जहाज पर ही रहीं, अपने हृदय में गहरी आहें भरते और रोते हुए, इन लोगों की भूल और विनाश पर शोक मना रही थीं।

उस सभा के एक सदस्य ने जहाज़ पर आकर, जूलिया को रोती और आहें भरती हुई देखीं, यह जानकर कि वह एक ईसाई थी, जाकर उस सभा के नेता से, जो बलिदानों का प्रभारी था, गुप्त रूप से कहा:

'घाट पर लगी जहाज़ पर एक युवती है जो हमारे देवताओं का अपमान करती है और हमें उनके लिए बलिदान चढ़ाने के लिए दोषी ठहराती है।'

तुरंत, उस अधर्मी सभा के नेता ने फिलिस्तीनी व्यापारी से पूछा:

'तुम्हारे सभी आदमी हमारे उत्सव और बलिदान के लिए जहाज से किनारे क्यों नहीं उतरे हैं?'

जब व्यापारी ने उत्तर दिया कि वे सभी आ गए थे, तो नेता ने आपत्ति जताई:

'मैंने सुना है कि तुम्हारे जहाज पर एक लड़की है जो हमारे देवताओं का अपमान और निंदा कर रही है।'

व्यापारी ने उत्तर दिया:

'क्या आप मेरी दासी की बात कर रहे हैं? मैं उसे उसके ईसाई भ्रम से किसी भी तरह से नहीं हटा सका और न ही उसे हमारे धर्म में परिवर्तित कर सका, न तो दया से और न ही धमकियों से; और अगर वह मुझ पर वफादार और अपने काम में इतनी मेहनती न होती, तो मैं उसे बहुत पहले ही विभिन्न यातनाओं से मार डालता।'

अधिकारी ने उससे कहा:

'अब उसे हमारे साथ देवताओं की पूजा करने और बलिदान में भाग लेने के लिए मजबूर करो; या मैं तुम्हें उसकी जगह अपनी चार दासियाँ दूँगा, या उसकी कीमत के बराबर पैसे ले लो—बस उसे मुझे सौंप दो, और मैं उसे हमारे देवताओं की पूजा करने के लिए मजबूर करूँगा।'

व्यापारी ने उत्तर दिया:

'मैं तुम्हें पहले ही बता चुका हूँ कि उसे यह करने के लिए मजबूर करना असंभव है, क्योंकि वह अपने धर्म को त्यागने के बजाय मरना पसंद करेगी। और मैं उसे तुम्हें बेच भी नहीं सकता: भले ही तुम उसके बदले में अपनी सारी संपत्ति मुझे दे दो, वह उसकी सेवा के बराबर नहीं हो सकती; वास्तव में, वह बहुत वफादार है, और उसकी देखरेख में मेरी संपत्ति बढ़ रही है; इसीलिए मैंने सब कुछ उसी के हवाले कर रखा है।'

गुंडों के सरगना ने अपने आदमियों से गुप्त रूप से सलाह-मशविरा करने के बाद, मेहमानों के लिए और भी भव्य दावत का आयोजन किया और व्यापारी, जो जूलिया का मालिक था, को खूब शराब पिलाई। भरपूर शराब पी लेने के बाद, वह गहरी नींद में सो गया; उसके साथ जो भी थे, वे भी शराब के नशे में सो गए। फिर उस द्वीप के दुष्ट मूर्तिपूजकों ने जहाज की ओर दौड़ लगाई, संत जूलिया को किनारे पर ले आए, और उसे अपने नेता के पास ले गए। और नेता ने उससे कहा:

'युवती, देवताओं को बलिदान चढ़ाओ; मैं तुम्हारे स्वामी को तुम्हारे लिए जो भी फिरौती माँगेगा, वह दे दूँगा, और तुम्हें आज़ाद कर दूँगा।'

संत ने उत्तर दिया:

'मेरी स्वतंत्रता मसीह की सेवा करने में है, जिनकी मैं हर दिन एक निर्मल अंतरात्मा के साथ सेवा करती हूँ; परन्तु मैं तुम्हारी झूठ-भरी रीति से घृणा करती हूँ!'

तब सेनापति ने आज्ञा दी कि उसे गालों पर मारा जाए। और शहीद ने कहा:

'यदि मेरे प्रभु यीशु मसीह ने मेरे लिए गाल पर प्रहार और चेहरे पर थूक सहन किया, तो क्या मैं उनके लिए ऐसा नहीं सहन करूँगी! वे उनके लिए मेरे गालों पर प्रहार करें; और थूक के बदले, मेरे चेहरे पर आँसू बहने दें!'

यातना देने वाले ने आदेश दिया कि उसके बालों से खींचकर उसे नग्न कर दिया जाए और उसके पूरे शरीर पर बेरहमी से पिटाई की जाए। और जब उसकी पिटाई हो रही थी, तो शहीद ज़ोर से चिल्लाई:

'मैं उस प्रभु की गवाही देती हूँ जिसे मेरे लिए पीटा गया! मेरे प्रभु ने काँटों का मुकुट पहना और क्रूस पर चढ़ाए जाने का दुख सहा। मुझे भी, उनकी दासी को, उनके दुखों में सहभागी होने और उनका अनुकरण करने दो, ताकि मैं भी उनके राज्य में उनके साथ महिमामय हो सकूँ!'

तब यातना देने वाले ने आदेश दिया कि उसकी कुँवारी छाती काट दी जाए; फिर भी उसने मसीह के प्रति अपने प्रेम के लिए इन सभी भयानक यातनाओं को साहस के साथ सहन किया। उसके स्वामी के जागने से पहले, उसे जल्द से जल्द मार डालने की इच्छा से, यातना देने वाले ने एक क्रूस को जल्दबाजी में बनाने और शहीद को उस पर सूली पर चढ़ाने का

आदेश दिया, ठीक वैसे ही जैसे यहूदियों ने एक बार मसीह को सूली पर चढ़ाया था। और मसीह के लिए अपने दुख-कष्ट में, संत जूलिया की तुलना स्वयं मसीह, सूली पर चढ़ाए गए प्रभु से की गई, और उन्हें उनके लिए क्रूस पर चढ़ाए जाने के योग्य माना गया।

जब वह क्रूस पर लटकी हुई थी और मृत्यु के बहुत करीब थी, उसका स्वामी जाग गया; और जैसे ही उसने उसे सूली पर चढ़ा हुआ देखा, उसके हृदय में कितनी बड़ी दया भर आई! लेकिन वह मदद करने के लिए कुछ भी नहीं कर सकता था: मसीह की वधू पहले ही अपनी अंतिम सांस ले रही थी। जब उसकी पवित्र आत्मा शरीर के बंधनों से मुक्त हुई, तो सभी ने बर्फ से भी सफेद एक कबूतर को उसके मुंह से निकलकर स्वर्ग की ओर उड़ते हुए देखा; इसके अलावा, जिन्होंने उसे यातना दी थी, उन्होंने स्वर्गदूतों को देखा; और उन सभी पर एक महान भय छा गया; वे सभी वहां से भाग गए, और केवल संत का निर्जीव शरीर ही क्रूस पर लटका रह गया[5157] । लेकिन प्रभु मसीह ने उसे नहीं छोड़ा: उन्होंने अपने स्वर्गदूतों को आदेश दिया कि वे उसकी रक्षा करें जब तक कि उन्होंने उसके लिए एक सम्मानजनक दफन की व्यवस्था नहीं कर दी, इस प्रकार।

कोर्सीका द्वीप से बहुत दूर नहीं एक छोटा सा द्वीप है, जिसे पहले मार्गरीटा कहा जाता था, लेकिन अब गोरगोना कहा जाता है; उस पर पुरुषों के लिए एक मठ था; वहाँ प्रभु का स्वर्गदूत भिक्षुओं के सामने प्रकट हुआ, उसने उन्हें संत शहीद जूलिया के साथ जो कुछ भी हुआ था, सब कुछ बताया, और उन्हें आज्ञा दी कि वे तुरंत जहाज से उस द्वीप की ओर प्रस्थान करें, संत शहीद के अत्यधिक पीड़ित शरीर को क्रूस से उतारें, और उसे दफनाने के लिए अपने मठ में ले आएं। भिक्षुओं ने जहाज़ पर चढ़कर पालें फहराए और प्रस्थान किया; घाट पर पहुँचने पर, उन्होंने सब कुछ ठीक वैसा ही पाया जैसा प्रभु के स्वर्गदूत ने उन्हें बताया था। पवित्र देह को क्रूस से उतारने के बाद, उन्होंने उसे एक साफ कफ़न में लपेटा। उन्हें उसके काटे हुए स्तन भी मिले, जिन्हें पास ही एक चट्टान के पास फेंक दिया गया था; उन्होंने उन्हें उठाया और उन्हें उनके सही स्थान पर देह से जोड़ दिया; फिर उन्होंने देह को जहाज पर रखा और सुरक्षित रूप से अपने मठ लौट आए; वहाँ उन्होंने शरीर को सम्मानपूर्वक चर्च में दफनाया, और मसीह परमेश्वर की महिमा की, जिन्होंने अपने सेवक को ऐसी शहीद की वीरता के लिए बल दिया था। उनके मकबरे पर चमत्कार होने लगे, और हर तरह की बीमारियों से चंगाई होने लगी; उसी स्थान पर भी चमत्कार हुए जहाँ उन्होंने यातनाएँ झेली थीं। ईसाइयों—उस द्वीप के निवासियों—ने भी संत के कष्टों के बारे में सुना और ठीक उसी स्थान पर उनके सम्मान में एक छोटा सा चर्च बनाया जहाँ उन्हें सूली पर चढ़ाया गया था, क्योंकि वहाँ जगह सीमित थी: वह स्थान एक खड़ी चट्टान थी। और उस स्थान पर जहाँ उनके कटे हुए स्तनों को फेंका गया था, एक चट्टान के नीचे से चंगा करने वाले पानी का एक झरना फूट पड़ा: सभी बीमार जो उस पानी को पीते या उससे स्नान करते थे, वे स्वस्थ हो गए। एक और चमत्कार भी हुआ: वह पत्थर जिसे संत के स्तनों ने छुआ था (और जिसके नीचे से झरना निकला था), हर साल उनकी स्मृति के दिन, मानो पसीना बहाता था, वे बूँदें दूधिया और खून-सी लाल थीं, जो संत जूलिया की कुँवारीपन और शहादत का प्रतीक थीं, जो दूध की तरह अपनी कुँवारी पवित्रता से श्वेत और मसीह के लिए बहाए गए रक्त से लाल रंगी हुई थीं। और ऐसे ही बूँदें पूरे दिन, सुबह से शाम तक टपकती रहीं; लोगों ने उनसे स्वयं पर अभिषेक किया और वे चंगे हो गए।

हालाँकि, कई वर्षों बाद, पवित्र शहीद को समर्पित चर्च, जो उनके कष्टों के स्थल पर बना था, जर्जर हो गया था और आंशिक रूप से खंडहर में बदल गया था। तब उन्होंने उनके सम्मान में एक नए, बड़े चर्च का निर्माण किसी दूसरे स्थान पर करने की इच्छा व्यक्त की—एक ऐसा स्थान जो अधिक विशाल हो, क्योंकि पुराना बहुत तंग था—लेकिन बहुत दूर नहीं। जब उन्होंने निर्माण के लिए पत्थर, ईंटें, चूना और अन्य सभी आवश्यक सामग्री तैयार कर ली थी, और अगले ही दिन नींव रखने वाले थे, तो उन्हें अगली सुबह पता चला कि यह सारी सामग्री—पत्थर, ईंटें और बाकी सब कुछ—अपने मूल स्थान पर वापस आ गई थी, जहाँ पुरानी चर्च खड़ी थी; निर्माणकर्ता हैरान रह गए। हालाँकि, कुछ ही समय बाद, उन्होंने सब कुछ नई जगह पर वापस ले गए, इस इरादे से कि वहाँ नया चर्च बनाएँ; लेकिन रात के दौरान, सब कुछ एक बार फिर से अपनी मूल जगह पर वापस आ गया। उस रात, पहरेदारों ने एक तेजस्वी कन्या को सभी निर्माण सामग्री एक जोड़ी सफेद बैलों द्वारा खींचे जा रहे ठेले पर लादते और उन्हें मूल स्थान पर वापस ले जाते देखा; उन्हें एहसास हुआ कि संत चाहती थीं कि चर्च को उसके मूल स्थान पर ही फिर से बनाया जाए, और उन्होंने उनकी इच्छा के अनुसार किया। कोर्सिका और गोरगोना दोनों द्वीपों पर और भी कई चमत्कार हुए, जब तक कि संत की पवित्र अवशेषों को वहां से निकालकर

[5157] पवित्र शहीद जूलिया की मृत्यु लगभग 640 में हुई।

ब्रेसयिा नहीं ले जाया गया[5158] । और जब से अवशेषों का स्थानांतरण हुआ है, कोर्सीका के नविासी श्रद्धापूर्वक संत के चर्च में आ रहे हैं; वे उनकी सहायता प्राप्त करते रहते हैं और उनके दुश्मनों के हमलों से उनकी पवत्रि और अडगि प्रार्थनाओं और हमारे प्रभु यीशु मसीह की दया द्वारा संरक्षति हैं, जन्हिें, पता और पवत्रि आत्मा के साथ, सम्मान और महमिा अर्पति की जाती है, अब और अनंतकाल तक। आमेन।

शहीद संत एंटओिकस का कष्टकथा

16 जुलाई को स्मरण कयिा जाता है

संत एंटओिकस, मसीह के एक शहीद, सेबास्टे नगर के मूल नविासी थे[5159] । पेशे से चकित्सिक, उन्होंने अपने देश के वभिन्नि नगरों में यात्रा की और अपनी कुशलता से वभिन्नि रोगों से पीड़ति लोगों का उपचार कयिा। प्रांतीय राज्यपाल हैड्रयिन के आदेश पर उन्हें गरिफ्तार कयिा गया और वभिन्नि प्रकार की यातनाएँ सहने के बाद अंततःएक कड़ाही में फेंक दयिा गया, लेकनि वे बनिा कसिी चोट के सुरक्षति बाहर नकिले। तब उसे जंगली जानवरों से लड़ने की सज़ा दी गई, लेकनि जंगली जानवरों ने उसे देखते ही , वे खुशी से भर गए, उसके पैरों तले लेट गए और उन्हें चाटने लगे, जबकि एक जानवर ने मानव आवाज़ में बोलकर अपने यातनाकर्ता की नंदिा की। इसके बाद, पवत्रि शहीद ने ईश्वर से प्रार्थना की, और उनकी प्रार्थना से सभी मूर्तयिाँ रेत की तरह बखिर गईं। फरि उनका सरि कलम कर दयिा गया, और घाव से दूध के साथ मलिा हुआ खून बहा। संत एंटओिकस का सरि काटने वाले सैनकि, जसिका नाम सरियिाकस था, ने संत की फांसी के तुरंत बाद साहसपूर्वक खुद को एक ईसाई घोषति कर दयिा और मूर्तयिों पर शाप उगल दयिा। इसके लए, हैड्रयिन के आदेश पर, उसका सरि काट दयिा गया, और उसे पवत्रि शहीद एंटओिकस के बगल में दफनाया गया[5160] ।

संत पॉल शहीद की शहादत और उनके साथ पवत्रि शहीदों एलेवतीना और चयिोनयिा की शहादत

16 जुलाई को स्मरण कयिा जाता है

ये पवत्रि शहीद मस्रि के मूल नविासी थे। पकड़े जाने के बाद, उन्हें केसरयिा शहर लाया गया और जब पूछताछ के लए राज्यपाल के सामने पेश कयिा गया, तो उन्होंने मसीह को सच्चे ईश्वर के रूप में स्वीकार कयिा। इसके लए, पहले उनके बाएँ पैरों को जलाया गया, फरि चाकुओं से उनकी दाईं आँखें नकिाल दी गईं, और अंत में, अन्य पुरुषों और महलिाओं के साथ जो मसीह में वश्विास करते थे, उन्हें आग के हवाले कर दयिा गया, जहाँ उनकी मृत्यु हो गई। इससे पहले, संत खयिोनयिा को एक पेड़ से लटकाया गया था और उसके शरीर की खाल उधेड़ दी गई थी; उनकी बहन एलेवतीना ने न्यायाधीश को धमकाकर वेदी को लात मार दी, जसिके लए उसे नर्दियी यातनाएँ दी गईं; जबकि पवत्रि शहीद पॉल प्रार्थना में खड़े थे और उन्होंने पहले ईसाइयों के लए, और बाद में सभी मूर्तपिूजकों के लए प्रार्थना की, कि वे सच्चे ईश्वर के ज्ञान को प्राप्त करें और मसीह में वश्विास करने वालों को सताना बंद कर दें। इस प्रार्थना से उपस्थति लोग आँसू बहाने लगे, जसिके बाद उसका सरि कलम कर दयिा गया।

[5158] लगभग 763

[5159] सेबास्टे शहर, जो अब सविस है, एशयिा माइनर में रोमन प्रांत पोंटस में, एंटी-टॉरस पर्वत श्रृंखला की पश्चमिी उप-श्रृंखलाओं में से एक के पैर में, गेलसि नदी के दाहनि कनिारे पर, जो अब कज़िलि इरमाक है, इसके स्रोत के पास स्थति था।

[5160] पवत्रि शहीद एंटओिकस का नधिन डायोक्लेटयिन के शासनकाल के दौरान हुआ। उनके नधिन का वर्ष अज्ञात है। उनका पर्व दनि 6वीं शताब्दी से ही 16 जुलाई को मनाया जाता था, जैसा कि साइकेओस के पूजनीय थयिोडोर के जीवन से स्पष्ट होता है, जनिका चर्च 22 अप्रैल को स्मरण करता है – उनका जीवन भी इसी तारीख के अंतर्गत शामलि है।

30 जुलाई

17 जुलाई (पुराने कैलेंडर के अनुसार)

उसी दिन, पूजनीय लाजरस के पवित्र अवशेषों का स्थानांतरण, जिन्होंने गलीसिया पर्वत पर उपवास किया था (उनका पर्व दिवस 7 नवंबर को मनाया जाता है

उसी दिन, सोलोवेत्स्की के मठाधीश, परमपूज्य इरिनार्ख का निधन।

पवित्र महा-शहीद मरीना की शहादत

17 जुलाई को स्मरण किया जाता है

संत मरीना का जन्म पिसीडियन एंटिओक[5161] में कुलीन माता-पिता के यहाँ हुआ था, हालांकि वे धर्म के अनुयायी नहीं थे, बल्कि मूर्तिपूजक अधर्म से कलंकित थे। उनके पिता, एडेशियस, एक मूर्तिपूजक पुरोहित थे; उन्होंने अपनी बेटी मरीना, जिसने अभी-अभी जन्म लेने पर ही अपनी माँ को खो दिया था, को शहर से पंद्रह वर्स्ट दूर एक गाँव में रहने वाली एक दुध माँ के पास भेज दिया। जब वह लड़की, जिसे इस दुधमाँ ने पाला था, वयस्क हुई, तो यह स्पष्ट हो गया कि वह शरीर से सुंदर और आत्मा से और भी अधिक सुंदर थी: वह अपनी विवेकशीलता और अच्छे चरित्र दोनों के लिए विशिष्ट थी। चूंकि उन दिनों ईसाइयों पर अत्याचार तेज हो गया था, पुरोहित और पादरी, ईश्वर के वचन के शिक्षक, अपने उत्पीड़कों से डरकर, कुछ तो रेगिस्तानों और पहाड़ी गुफाओं में, और अन्य गाँवों में आम लोगों के बीच भेष बदलकर छिपे हुए थे; फिर भी, जहाँ भी उन्हें मौका मिला, उन्होंने गुप्त रूप से पवित्र विश्वास का उपदेश दिया और कई लोगों को मूर्तिपूजक भ्रांतियों से हटाकर मसीह की ओर लाया।

ऐसा हुआ कि बारह साल की एक लड़की, मरीना ने, एक व्यक्ति से परमेश्वर का वचन सुना, जो सच्चे परमेश्वर, मसीह यीशु के बारे में था, कि कैसे पवित्र आत्मा द्वारा परम पवित्र कुँवारी के गर्भ में उनका अवतार हुआ और वे उनसे जन्म लिए, उनकी कुँवारीपन को अक्षुण्ण रखते हुए, कैसे उन्होंने कई चमत्कार किए, कैसे उन्होंने मानव जाति के उद्धार के लिए स्वेच्छा से कष्ट सहे , मृत्यु को प्राप्त हुए, पुनर्जीवित हुए, स्वर्ग में आरोहण किया, और उन लोगों के लिए अनंत जीवन, महिमा और अनंत राज्य तैयार किया जो उन पर विश्वास करते हैं और उनसे प्रेम करते हैं। यह सुनकर, बुद्धिमान युवती मरीना मसीह पर विश्वास करने लगी, और उसका हृदय दिव्य प्रेम से प्रज्वलित हो गया, ताकि वह मसीह यीशु के सिवा कुछ न बोले और न सोचे; या जब भी वह सच्चे परमेश्वर के बारे में शब्द सुनती, तो उसका सारा ध्यान वहीं केंद्रित हो जाता था। और चूँकि वह हृदय से उस पर विश्वास कर चुकी थी, इसलिए वह अपने होठों से उसकी गवाही देने में लज्जित नहीं हुई, भले ही उसे बपतिस्मा देने वाला कोई ईसाई पुरोहित न मिलने के कारण अभी तक बपतिस्मा नहीं मिला था। और मरीना मसीह के लिए अपना रक्त बहाने और उससे ही बपतिस्मा लेने के लिए तरसती थी, मानो वह बपतिस्मा का कुंड हो, क्योंकि उसने दोनों लिंगों के कई पवित्र शहीदों के बारे में सुना था जिन्हें अपने ही रक्त से बपतिस्मा दिया गया था—वे जिन्होंने प्रभु के लिए अपनी जान दे दी थी: वह उनके उदाहरण का अनुसरण करना चाहती थी।

जब एडेशियस को पता चला कि उसकी बेटी मरीना ने मसीह में विश्वास कर लिया है, तो वह उससे नफरत करने लगा और उसे अपनी बेटी मानना छोड़कर एक अजनबी की तरह व्यवहार करने लगा; लेकिन उस कन्या ने अपनी सारी आशा अपने स्वर्गीय पिता में रख दी। जब वह पंद्रह वर्ष की आयु में वयस्क हो गई, तो एक दिन वह अपने पिता के भेड़ों की देखभाल के लिए खेतों में गई, जो वहाँ चर रही थीं। उसी क्षण, उसकी मुलाकात ईसाइयों के एक उत्पीड़क से हुई, जो पिसीडियन एंटिओक की यात्रा कर रहा था; उस सुंदर कन्या को देखकर, राज्यपाल उसकी असाधारण सुंदरता से चकित हो गया, तुरंत ही मोहित हो गया, और उसे अपनी पत्नी बनाने का निश्चय कर लिया। वह रुका और उस कन्या से पूछताछ करने लगा:

'युवती, तुम्हारा वंश क्या है? तुम किसकी बेटी हो, और तुम्हारा नाम क्या है? मुझे अपने बारे में सच बताओ। मैं देख सकता हूँ कि तुम बहुत सुंदर हो: अगर तुम्हारे माता-पिता स्वतंत्र हैं, तो मैं तुमसे वैध विवाह करूँगा; लेकिन अगर तुम किसी की दासी हो, तो मैं तुम्हें मुक्त करा लूँगा और अपनी पत्नी बना लूँगा।'

[5161] पिसीडिया एशिया माइनर का एक क्षेत्र है।

हालाँकि वह युवती अपनी सुंदरता से अधिक अपनी पवित्रता के लिए प्रसिद्ध थी, उसने नम्रता से जवाब दिया, और उसे बताया कि वह किसकी बेटी थी और उसका नाम क्या था; न ही उसने यह छिपाया कि वह मसीह की दासी थी, कि वह एक ईश्वर में विश्वास करती थी जिसने स्वर्ग और पृथ्वी की रचना की, कि वह हृदय से प्रेम में उसके साथ एक थी, और कि वह किसी अन्य वर की इच्छा नहीं रखती थी। यह सुनकर कि वह एक ईसाई थी, राज्यपाल—जिसे ईसाइयों पर अत्याचार करने की अनुमति मिली हुई थी—ने अपने सैनिकों को आदेश दिया कि वे उसे अपने साथ शहर ले जाएँ, लेकिन सम्मानपूर्वक: एक कन्या के रूप में उसके समझदार शब्दों ने उसे उससे और भी अधिक प्रेम करने पर मजबूर कर दिया था, और उसे उम्मीद थी कि यातना की धमकियाँ जल्द ही उसे मसीह से विमुख कर देंगी और उसे उससे शादी करने के लिए मना लेंगी। जब उसे सैनिकों द्वारा ले जाया जा रहा था, तो उस कन्या ने ईश्वर से प्रार्थना करते हुए कहा:

'हे प्रभु यीशु मसीह, मेरे परमेश्वर! मुझे न छोड़िए, और मेरी आत्मा को विनाश में न डालिए! मेरे शत्रु मुझ पर न हावी हों; मेरे कान उनके कपटपूर्ण वचनों से अशुद्ध न हों; मेरा मन उनके घृणित प्रलोभनों के आगे न झुके; मेरा हृदय उनके भयानक धमकियों से न भयभीत हो! मेरे विश्वास को कीचड़ और कीचड़ में न फेंकने दें, कहीं ऐसा न हो कि बुराई का घृणित देवता, जो भलाई से घृणा करता है, मुझ पर प्रसन्न हो जाए; परन्तु मुझे अपने सिंहासन की ऊँचाइयों से सहायता भेजें, मुझे बुद्धि दें, और मेरे होठ खोलें, ताकि आपकी शक्ति से दृढ़ और आपकी कृपा से प्रकाशित होकर, मैं यातना देने वाले के प्रश्नों का उत्तर बिना भय के दे सकूँ! हे मेरे प्रभु, इस घड़ी मुझ पर दया दृष्टि डाल; मैं तो यहाँ भेड़ियों के बीच एक भेड़, शिकारियों के बीच एक पक्षी, और जाल में एक मछली के समान हूँ; आओ, और मुझे शत्रु की युक्तियों से छुड़ाओ!

इस प्रकार संत ने यात्रा करते हुए प्रार्थना की, जब तक कि वे पिसीडियन एंटिओक शहर नहीं पहुँच गए।

शहर में पहुँचने पर, राज्यपाल ने अपनी अधर्मी प्रथा के अनुसार, पहले अपने घृणित देवताओं को बलिदान चढ़ाया, अपने राजाओं को भव्य श्रद्धांजलि अर्पित की, जितने भी ईसाई मिले उन्हें पकड़कर यातनाओं तक के लिए जेल में डाल दिया; और उसने कन्या मरीना को कुछ कुलीन महिलाओं की देखभाल में सौंप दिया। अगले दिन, एक गंभीर अदालत बुलाई, उसने संत मरीना को पहले पूछताछ के लिए लाने का आदेश दिया: उसके विचार पूरी तरह से उस पर ही थे। कन्या को उसके सामने लाया गया, और उसने उसकी असाधारण सुंदरता को वासना से देखा, उसकी कामुक इच्छा लगातार बढ़ती जा रही थी। फिर, चालाकी से, उसने उससे बात करना शुरू किया:

'हे सुन्दरी कन्या, सभी देवता जानते हैं कि मुझे तुम्हारी जवानी पर कितनी दया आती है और तुम्हारे इस युवा शरीर के प्रति, जो सुंदरता से खिल रहा है, कितनी सहानुभूति है। 'इसलिए, मैं तुमसे विनती करता हूँ, मेरी बात मानो: देवताओं को बलिदान चढ़ाओ, और सब कुछ तुम्हारे लिए ठीक हो जाएगा। तुम्हें तुरंत बहुत धन मिलेगा, तुम अमीर बन जाओगी, तुम अपनी सभी सहेलियों से अधिक खुश होगी, और इस शहर की किसी भी अन्य महिला से अधिक सम्मानित होगी।'

संत मरीना ने उत्तर दिया:

मैंने स्वर्गीय पिता और उनके एकमात्र पुत्र और पवित्र आत्मा, त्रिमूर्ति में एक सच्चे और जीवित ईश्वर में विश्वास करना सीखा है, और मैं उनकी उपासना करने और हमेशा उनकी स्तुति का बलिदान चढ़ाने की आदी हूँ; और मैं उन देवताओं की पूजा नहीं करूँगी जिन्हें मैं नहीं जानती, न ही मैं उन्हें बलिदान चढ़ाऊँगी: वे आत्मा-विहीन, असंवेदनशील हैं और स्वयं को नहीं जानते: वे नहीं जानते कि उनका सम्मान किया जाता है या अपमान। मैं उन्हें वह सम्मान नहीं दूँगी जो मेरे स्रष्टा का है!

एपार्क ने कहा:

'मैं तुमसे एक बार फिर विनती करता हूँ, मरीना, कि मेरी बात मानो, लगभग अजेय देवताओं; वे अच्छी तरह जानते हैं कि यदि तुम मेरी सलाह मानोगी, तो तुम्हें तुरंत सभी नागरिकों की आँखों के सामने महान सम्मान प्राप्त होगा: मैं तुम्हें अपनी पत्नी बना लूँगा; हर कोई तुम्हें मेरी प्रिय पत्नी के रूप में सम्मान देगा; और मैं तुम्हें सम्मान और महिमा प्रदान करूँगा, जबकि तुम मुझे खुशी दोगी और मेरे जीवन को मीठा करोगी! लेकिन अगर तुम मेरी बात नहीं मानोगी और मेरे प्रति अपने प्रेम को ठुकरा दोगी, तो यह जान लो: तुम बहुत दुख सहोगी; तुम मुझे, यद्यपि मैं ऐसा नहीं चाहता, तुम्हें यातना देने और तुम्हारी सुंदरता, तुम्हारे स्वास्थ्य और तुम्हारे मधुर जीवन को नष्ट करने के लिए मजबूर करोगी; तुम क्रूर, असहनीय यातनाओं की शिकार होगी और आग और लोहे से मरोगी!

संत ने उत्तर दिया:

'बशिप, यह आशा मत करो कि तुम मेरी मसीह में आस्था को अपने अवशि्वास में बदल दोगे – न तो चापलूसी से और न ही धमकयिों से: मैं अपने प्रभु का एक वफादार सेवक हूँ, जनि्होंने मेरे लिए स्वेच्छा से दुख उठाया। यदि उन्होंने मेरे लिए सूली पर चढ़ने और मृत्यु को सहा, और परम पवत्रि कुँवारी मरयिम से प्राप्त अपने परम पवत्रि शरीर की भी परवाह नहीं की, तो मुझे भी हर तरह से उनके लिए दुख सहना चाहिए और मरना चाहिए, और अपने पापी शरीर या अपनी सेहत की भी जरा सी परवाह नहीं करनी चाहिए। अपनी धमकयिों से मुझे डराने की सोच भी मत करो: मैं किसी भी यातना और मृत्यु के लिए तैयार हूँ। जिस पर मैं अपनी आशा रखती हूँ, वह मुझे बल देगा! जहाँ तक तुम मेरे ववािह, सम्मान, महमिा और धन-संपत्ति के बारे में मुझसे कहते हो, यह सब मेरे लिए घृणति और घनिौना है। क्या मैं सचमुच अपने अमर वर, स्वर्ग के राजा मसीह को त्याग दूँ, और एक बदबूदार कुत्ते से, जो आत्मा में मृत है, ववािह कर लूँ? कभी नहीं!

संत मरीना से ऐसे साहसकि शब्द सुनकर, एपार्क क्रोधति हो गया, उसे अपमानति महसूस हुआ, और वह अत्यधकि क्रोधति हो उठा; तुरंत ही, उसका प्रेम शत्रुता और घृणा में बदल गया, और उसने आदेश दयिा कि मसीह की वधू के कपड़े उतार दिए जाएँ, आज्ञा दी कि उसे जमीन पर लटिा दयिा जाए, और उसे बेरहमी से लाठी से पीटा जाए। उन्होंने संत को लंबे समय तक नरि्दयता से पीटा; उसके कुंवारी शरीर पर घावों की बौछार हो गई, और उनसे खून की धाराएं बहने लगीं, जो जमीन को लाल कर रही थीं। यह देखकर, लोग उसकी दयालुता से भर गए, इतनी सुंदर कुंवारी को इतनी क्रूरता से यातनाएं देते देख कई लोग रो पड़े। इस बीच, उद्घोषक चलि्लाया:

'मरनिा, देवताओं को बलदिान चढ़ाओ; अपनी सुंदरता को व्यर्थ में बर्बाद मत करो, और इस मीठे जीवन से समय से पहले खुद को वंचति मत करो!'

लेकनि शहीद ने, ईश्वर की ओर अपनी आध्यात्मकि दृष्टि उठाकर, स्वर्ग से सहायता और अपने शहादत के कार्य में शक्ति के लिए प्रार्थना की; मसीह की कृपा से समर्थति, उसे अपने यातना में कोई दर्द महसूस नहीं हुआ: ऐसा लगा मानो घाव उस पर नहीं, बल्कि किसी और के शरीर पर लग रहे हों। कुछ लोगों ने उससे कहा:

'युवती, तुम अपनी सुंदरता क्यों बर्बाद कर रही हो? तुम समर्पण क्यों नहीं करतीं? देखो यह न्यायाधीश कतिना क्रूर है; वह तुम्हें नष्ट कर देगा, और तुम्हारी याद इस धरती से मटि जाएगी; हम तुम्हारी दया करते हैं!'

और संत ने उन्हें डाँटते हुए ऊँचे स्वर में उत्तर दयिा:

'हे कपटी परामर्शदाताओं, हे दुष्ट सहायकों, तुम मुझे लुभाने की कोशशि कर रहे हो! जैसे प्राचीन सर्प ने स्वर्ग में ईव को कपटी सलाह दी थी, वैसे ही अब तुम मुझे अपने ईश्वर से मुंह मोड़ने की सलाह दे रहे हो; मुझसे दूर हो जाओ, हे अधर्मी लोग: तुम मुझे लुभा नहीं सकते, क्योंकि मैं अपनी पूरी आत्मा से मसीह के प्रति समर्पति हूँ!'

तब, जब जल्लादों ने उसे पीटना बंद कर दयिा, तो यातना देने वाले ने पीड़ति से कहा:

'मरनिा, यह तो तुम्हारी यातनाओं की केवल शुरुआत है, और यदि तुम अपनी अवज्ञा पर अड़ी रहीं, तो तुम्हें और भी बड़ी यातनाएँ सहनी पड़ेंगी।'

संत ने उत्तर दयिा:

'तुम और तुम्हारे पति, शैतान, जो चाहो करो; मैं इन यातनाओं की परवाह नहीं करती, क्योंकि मसीह मेरी मदद करते हैं, और वह जल्द ही तुम्हारी सभी चालाकयिों को शर्मदिा कर देंगे।'

एपार्क और भी अधकि क्रोधति हो गया और उसने आदेश दयिा कि उसे एक तख्ते पर कीलों से ठोंक दयिा जाए और उसके शरीर को लोहे के त्रशिूलों से खुरोचा जाए। उसने, हालांकि, स्वर्ग की ओर अपनी आँखें उठाकर कहा:

'मेरे शत्रु मुझे घेरे हुए हैं, वे मेरे वरिुद्ध बुराई की साजशि रच रहे हैं, परन्तु हे मेरे प्रभु, मेरी ओर देखो और मुझ पर दया करो; मुझे अपने जीवन-दायक आत्मा की सहायता भेज दो। वह मुझे अपनी अंतमि साँस तक आपके परम पवत्रि नाम का अंगीकार करने की बुद्धि दे; वह मुझे शैतान और उसके सेवकों के वरिुद्ध दृढ़ता से खड़े होने की शक्ति दे, ताकि मैं उन पर वजिय प्राप्त करूँ और उन्हें लज्जति करूँ; यह अनुग्रह करें कि मैं उन लोगों के लिए एक उदाहरण बनूँ जो आपसे प्रेम करते हैं और आपके लिए अपनी कुँवारी अवस्था बनाए रखते हैं, ताकि मैं आपके धर्मी न्याय के समय उनके साथ आपके दाहनिे हाथ पर खड़ी हो सकूँ!

इस प्रकार संत ने प्रार्थना की, जबकि क्रूर यातना देने वाले के क्रूर सेवकों ने, नरभक्षयिों की तरह, अपने त्रशिूलों से उसके शरीर को और भी बेरहमी से नोचना शुरू कर दयिा, और उसका मांस खून से लथपथ टुकड़ों में जमीन पर गरिने लगा, जिससे उसके नंगे हड्डीयाँ दखिाई देने लगीं। एपार्क इस तरह की यातना को सहन नहीं कर सका; उसने अपना

चेहरा ढक लिया और मुँह फेर लिया, जबकि वहाँ मौजूद सभी लोग संत की सहनशक्ति को देखकर चकित रह गए। फिर यातना देने वाले ने उससे फिर कहा:

'तुम कितनी देर तक अड़ी रहोगी, मरीना? तुम्हारे शरीर के टुकड़े तो पहले ही हो चुके हैं; कम से कम अब देवताओं को बलिदान चढ़ाने के लिए मान जाओ, ताकि तुम पूरी तरह से नष्ट न हो जाओ।'

शहीद ने उत्तर दिया:

'अरे घिनौने कुत्ते! अरे सूअर! तुम मानव मांस खाते हो, फिर भी दयालु होने का दिखावा करते हो, मानो तुम्हें मुझ पर तरस आ रहा हो!' मसीह की खातिर मुझे अपने लिए कोई दया नहीं है, जिन्होंने खुद को नहीं बख्शा, बल्कि मेरे लिए बड़े कष्टों में खुद को सौंप दिया। अगर मैं तुम्हारी पागल सलाह मानूँ और अपने शरीर को बचाऊँ, तो फिर मेरी आत्मा स्वर्ग के राज्य में मुकुट कैसे पाएगी?

इसके बाद, राज्यपाल ने शहीद को कीलों से उतारने और एक विशेष कालकोठरी में बंद करने का आदेश दिया—जो गहरी, अंधेरी और हर तरह की दानवी भयावहता से भरी थी—जहाँ आमतौर पर मृत्युदंड प्राप्त लोगों को कैद किया जाता था।

इस कालकोठरी में अकेली बैठी (उस समय वहाँ कोई अन्य कैदी नहीं था), पवित्र शहीद ने अपने पूरे हृदय से ईश्वर से प्रार्थना की, और अपनी आत्मा की गहराई से पुकार लगाई:

'हे सर्वोच्च ईश्वर, सभी स्वर्गीय सेनाएँ विस्मय में आपके सामने खड़ी हैं, और सभी प्रधानताएँ और शक्तियाँ आपके मुख के सामने काँपती हैं, और प्रत्येक प्राणी आपकी सर्वशक्तिमान शक्ति द्वारा पोषित, रूपांतरित और नवीनीकृत होता है! हे प्रभु, स्वर्ग की ऊँचाइयों से, अपनी महिमा के सिंहासन से, मुझ पर, अपनी दीन, अयोग्य और अनुपयुक्त दासी पर दृष्टि डालें: मैं अपनी आशा आप में रखती हूँ, मैंने आप में शरण ली है, और मैं आपके नाम के लिए कष्ट सह रही हूँ। हे दयालु प्रभु, मेरी ओर देखें, और मेरे शरीर को चंगा करें, जो एक फाटे हुए वस्त्र की तरह घायल है; मेरी आत्मा को नया करें और उसे अपने राज्य के लिए सुरक्षित रखें। कृपा करें कि मैं अपने शत्रु पर विजय प्राप्त करूँ और उसे इस प्रकार रौंदूँ जैसे रेत पैरों तले रौंदी जाती है, ताकि मैं आपकी अजेय सहायता से उसकी शक्ति को मिटा दूँ, और आपका परम पवित्र नाम मुझ में सदा के लिए महिमामय हो।

रात हो गई, फिर भी संत ने ईश्वर से प्रार्थना करना बंद नहीं किया; तब शैतान ने शहीद को एक भयानक दृश्य दिखाकर डराने की हिम्मत की; इस प्रकार ईश्वर ने अपने प्रिय सेवक की अधिक महिमा के लिए इसकी अनुमति दी। अचानक कालकोठरी हिल गई, और एक मद्धिम रोशनी दिखाई दी, मानो धुएँ में किसी आग से निकलती हुई; तब शैतान एक बहुरंगी, विशाल, भयानक साँप के रूप में प्रकट हुआ, और जहाँ तक देखा जा सकता था, उसका शरीर छोटे-छोटे साँपों और विषैले सर्पों की भीड़ से घिरा हुआ था। साँप भयानकभाव फुफकार रहा था और अपने विशाल, लालची जबड़े को खोलकर एक असहनीय बदबू फैला रहा था; यह शहीद के चारों ओर चक्कर लगाने लगा, जिससे उसमें भय और आतंक भर गया; फिर उसने अपना घिनौना जबड़ा खोला, संत पर झपट पड़ा और उसका सिर पकड़ लिया, उसे पूरा निगलने की कोशिश करने लगा। ऐसा प्रतीत हुआ मानो शहीद को सांप ने निगल लिया हो, ठीक वैसे ही जैसे एक बार पैगंबर योनह को व्हेल ने निगल लिया था (योनह 2:1)। हालाँकि, वह न तो निराश हुई और न ही डगमगाई, बल्कि, अपना पूरा मन ईश्वर में लगाकर, उसने क्रॉस का चिह्न बनाया और तुरंत देखा कि साँप का पेट फट गया था, और वह स्वयं इससे मुक्त हो गई थी और सुरक्षित थी; और उसी क्षण, वह भयानक दैवीय आकृति नष्ट हो गई: पृथ्वी फट गई, उस सांप और उसके साथ सभी सांपों को निगल गई, और उन्हें नरक में फेंक दिया; जबकि पवित्र शहीद स्वर्गीय प्रकाश से नहा गई। ऊपर देखकर, उसने देखा कि कालकोठरी की छत खुल गई थी और मानो सूर्य की किरणें ऊपर से उस पर बरस रही थीं; उसने एक बड़ा सा क्रॉस भी देखा, जो अकथनीय प्रकाश से दमक रहा था, और क्रॉस के ऊपर बर्फ की तरह सफेद एक कबूतर था, जिसने उससे मानव की आवाज़ में कहा:

'हे मरीना, मसीह की बुद्धिमान कबूतर, जो दुष्ट शत्रु पर विजयी हुई है, आनन्दित हो! हे स्वर्गीय सियोन की बेटी, आनन्दित और हर्षित हो, क्योंकि तेरे आनन्द का दिन आ गया है, जब तू बुद्धिमान कुँवारियों के साथ, स्वर्ग के राजा, अमर वधू-वर के अविनाशी महल में प्रवेश करेगी!'

कबूतर के इन शब्दों पर, मरीना अकथनीय आनंद और मिठास से भर गई; उसका फटा हुआ शरीर ठीक होने लगा, और उसने खुद महसूस किया कि उसके घाव बंद हो रहे हैं, उसके छाले त्वचा से ढक जा रहे हैं, दर्द और कमजोरी गायब

हो रही है, और वह पहले की तरह, अपने पूरे शरीर से स्वस्थ और सुंदर हो गई। उसने खुशी से परमेश्वर का धन्यवाद किया:

'मैं तुझे धन्य कहती हूँ, हे प्रभु, और मैं तुझ महिमा करती हूँ, हे प्रभु मेरे परमेश्वर; मैं आपके नाम की स्तुति करती हूँ, क्योंकि आपने मुझ पर दया की है, मुझ पर कृपा की है, मेरे शरीर को चंगा किया है, मेरी आत्मा को बल दिया है, और मुझे मेरे शत्रुओं के हाथ में नहीं सौंपा है, बल्कि, मुझे उनका भयानक रूप दिखाकर, उन्हें सबसे गहरे गर्त में डाल दिया है और उनका आतंक मुझसे दूर कर दिया है; अब, हे मेरे उद्धारकर्ता परमेश्वर, आप में आनंदित और हर्षित होकर, मैं आपसे विनती करती हूँ, हे मानवता के शुभ प्रेमी, कि मुझे पवित्र बपतिस्मा का स्नान प्रदान करें, ताकि, रक्त और जल से स्नान करके, मैं पवित्र कुँवारियों, आपकी वधूओं के साथ आपके स्वर्गीय महल में प्रवेश करने के योग्य बन सकूँ, क्योंकि आप सदा के लिए धन्य हैं!

इस प्रकार के दर्शनों और प्रकाशनों में, और इस प्रकार के उत्सव और आनंद में, संत मरीना ने पूरी रात बिताई, जब तक कि दिन नहीं चढ़ आया और उनके अंतिम वीरता के कार्य का समय नहीं आ गया।

जैसे ही भोर हुआ, ओलंप्रियस का एपार्क एक बार फिर अपने अन्यायपूर्ण और अधर्मी न्यायाधिकरण में अपनी सीट पर बैठ गया; पूरा जनसमूह इस तमाशे को देखने के लिए इकट्ठा हुआ। शहीद को पूछताछ के लिए कालकोठरी से लाने का आदेश दिया गया। उसे एक दमकते हुए चेहरे के साथ, पूरी तरह से स्वस्थ और अक्षुण्ण, कल के घावों का एक निशान भी नहीं, देखकर राज्यपाल बहुत आश्चर्यचकित हुआ और हैरानी में चुप रह गया, यह सोचते हुए कि कल घायल हुई यह शहीद, एक ही रात में पूरी तरह से कैसे ठीक हो गई। लोग भी इस चमत्कारी उपचार से चकित थे: कुछ ने मसीह की शक्ति की स्तुति की, जबकि अन्य इसे जादू-टोने का परिणाम मान रहे थे। फिर राज्यपाल, अपनी आवाज़ खोजते हुए, संत से बात करने लगा:

'देखो, मरीना, हमारे देवता तुम्हारी कितनी परवाह करते हैं! उन्होंने तुम्हारी जवानी और सुंदरता पर दया की और तुम्हारे घावों को भर दिया। तुम्हें भी उन आशीर्वादों के लिए कृतज्ञता स्वरूप उन्हें बलिदान चढ़ाना चाहिए जो तुम्हें उनसे प्राप्त हुए हैं; और, इसके अलावा, तुम्हें अपने पिता के पदचिह्नों पर चलना चाहिए और उनकी विरासत को आगे बढ़ाना चाहिए: वह एक पुरोहित के रूप में देवताओं की सेवा करते हैं, और तुम्हें एक पुजारीनी बनकर अपने जीवन के बाकी दिनों तक उनकी सेवा करनी चाहिए।"

संत ने उत्तर दिया:

'मेरे लिए अपने सच्चे और जीवित ईश्वर को त्यागना और आपके झूठे और मृत देवताओं की सेवा करना उचित नहीं है; इसके विपरीत, आपको एकमात्र स्वर्गीय ईश्वर को जानना चाहिए और उन पर विश्वास करना चाहिए, मुझमें उनकी ऐसी शक्ति देखकर: कल आपने मुझे टुकड़े-टुकड़े कर दिया था, फिर भी उन्होंने मुझे अब तुरंत ठीक और सुरक्षित कर दिया है! वह मानव आत्माओं और शरीरों का सर्वशक्तिमान चिकित्सक है!

क्रोधित राज्यपाल ने संत को एक बार फिर यातना देने का आदेश दिया। एक बार फिर उन्होंने उसे एक पेड़ से लटका दिया, जलती हुई मोमबत्तियाँ लाईं और उसकी छाती और बगलें झुलसाने लगे; लेकिन उसने, अपने अंतर्मन में प्रार्थना करते हुए, अपने हृदय की गहराई से ईश्वर से प्रार्थना की और मौन रूप से इसे सहन किया; वह कोयले की तरह झुलस गई और इस तरह चीर-फाड़ की गई मानो वह खाने के लिए मांस हो। और जब उन्होंने उसे मुश्किल से जीवित पेड़ से उतारा, तो वह चिल्लाई:

'हे प्रभु! आपने मुझे अपने नाम के लिए आग से गुज़रने के योग्य समझा है; मुझे पवित्र बपतिस्मा के जल से भी गुज़रने का पात्र समझें, और मेरे पापों से शुद्ध होकर, मुझे अपनी विश्राम-स्थली में प्रवेश कराएँ।'

लेकिन यातना देने वाले ने, यह सुनकर कि शहीद ने पानी का उल्लेख किया था, कहा:

'यह बदकिस्मत एक घूंट पानी चाहती है; हमें इसे कुछ पानी देना ही चाहिए!'

और उसने एक विशाल पानी का बैरल लाने और बँधी हुई शहीद को उसमें फेंकने का आदेश दिया, ताकि वह डूब जाए। जब नौकरों ने उसे पानी में फेंकने के लिए पकड़ा, तो वह चिल्लाई:

हे प्रभु यीशु मसीह, जो बंधनों से छुड़ाता है, जो मृत्यु और नरक की जंजीरों को ढीली करता है, और जो अपनी दिव्य सामर्थ्य की शक्ति से कब्र से जिला उठाता है! अपनी दासी पर दृष्टि डालो और मेरे बंधन तोड़ दो! और यह पानी मेरे लिए अनंत जीवन के लिए प्रत्याशित पवित्र बपतिस्मा हो, ताकि पुराने स्वभाव को त्यागकर, मैं नए वस्त्र धारण करूँ और तेरे महल में विवाह के वस्त्रों में तेरे सामने प्रकट होऊँ!

जब शहीद इस प्रकार प्रार्थना कर रही थी, तो नौकरों ने उसे पानी के एक बैरल में फेंक दिया और उसे डुबोकर मारने लगे। लेकिन अचानक धरती हिल उठी, और जिन रस्सियों से शहीद को बाँधा गया था, वे ढीली पड़ गईं; नौकर, आतंकित होकर, बैरल से भाग गए; शहीद के सिर के ऊपर से अकथनीय प्रकाश की किरणें चमकने लगीं, और एक बार फिर वह सफेद कबूतर जो उसने पहले देखा था, ऊपर से उतरकर, चोंच में सुनहरी मुकुट के साथ सूर्य की तरह प्रकट हुआ; वह शहीद के सिर के ऊपर मंडराया, उसके पैरों को छुआ, और फिर से ऊँचाई में उड़ गया। यह दृश्य न केवल संत ने देखा, बल्कि वहाँ मौजूद कुछ अन्य लोगों ने भी देखा, जिन्हें ऐसी दृष्टि के योग्य माना गया था: लोगों में से कई गुप्त ईसाई थे और उन्हें इसका साक्षी बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। इस बीच, संत पानी में बिना डूबे खड़ी रहीं, और परम पवित्र त्रिमूर्ति, यानी पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के महान नाम का गायन, स्तुति और आशीर्वाद कर रही थीं। तब संत के ऊपर स्वर्ग तक पहुँचता हुआ आग का एक स्तंभ प्रकट हुआ, और उस स्तंभ पर प्रकाश की किरणें बिखेरता हुआ, जैसे कांच का बना हो, एक क्रॉस था; एक कबूतर उड़कर क्रॉस के शीर्ष पर आकर बैठ गया। और ऊँचे से एक आवाज़ सुनाई दी, और सभी ने उसे सुना:

'मसीह की वधू, मरीना, तुझ पर शांति बनी रहे! अब तू प्रभु के हाथ से सदाबहार सद्गुण का मुकुट प्राप्त करेगी और संतों के साथ स्वर्ग के राज्य में विश्राम करेगी।'

यह आवाज़ सुनकर और यह देखकर कि शहीद जल से बिना किसी चोट के, जलने का एक भी निशान बिना, उसके शरीर के बिना किसी क्षति के और दमकते हुए निकल आया था, पुरुषों और महिलाओं की एक बड़ी भीड़ तुरंत मसीह में विश्वास करने लगी, खुले तौर पर खुद को मसीही घोषित कर दिया, और मसीह के लिए मरने को तैयार दिखाई दी। गवर्नर यह देखकर भयभीत हो गया कि इतनी बड़ी संख्या में लोग मसीह की ओर मुड़ रहे हैं, और वह यह समझ नहीं पा रहा था कि क्या करे; फिर, क्रोधित होकर, उसने अपनी आज्ञाधीन तलवारबंद सेना को लोगों पर चढ़ा दिया, और आदेश दिया कि जो कोई भी मसीह के नाम की प्रशंसा भी करे, उसे मार डाला जाए। यह देखकर लोगों में से सभी अविश्वासी और कायर भाग गए, जबकि जो सच्चे दिल से विश्वास रखते थे, वे स्वेच्छा से तलवार का सामना करने चले गए। और मारे गए लोगों की संख्या, पुरुष और महिलाएं मिलाकर, पंद्रह हज़ार तक पहुँच गई, जो अपने ही खून से बपतिस्मा लेकर और सभी पापों से शुद्ध होकर, शहीद के मुकुट से विभूषित होकर अपने प्रभु के आनंद में प्रवेश कर गए। तब राज्यपाल ने आदेश दिया कि शहीद का भी सिर तलवार से काट दिया जाए। जब संत को फांसी के स्थान पर ले जाया गया, तो उन्होंने उन्हें ले जा रहे लोगों से थोड़ी देर रुकने के लिए कहा; और, अपने पीछे आ रहे लोगों की ओर मुड़कर, उन्होंने सभ को एकमात्र सच्चे ईश्वर, सभी चीजों के सृष्टिकर्ता को जानने, और शैतान की धोखाधड़ी और मूर्तिपूजा के विनाश से दूर होने के लिए प्रोत्साहित किया। तब उसने प्रार्थना करना शुरू किया, और सभी के लिए लंबी प्रार्थना की; अचानक पृथ्वी कांप उठी, सभी पर भय छा गया, और कई लोग आतंकित होकर जमीन पर गिर पड़े; जल्लाद भी गिर पड़ा। यह हमारे प्रभु यीशु मसीह थे जो स्वर्ग से अपने पवित्र स्वर्गदूतों के साथ अपनी दुल्हन के पास प्रकट हुए, उसे अपनी विश्राम-स्थली में बुलाते हुए और उसकी आत्मा को ग्रहण करने के लिए अपने हाथ फैलाए। हालाँकि, वह शब्दों से परे आनंदित थी, और जल्लाद को बिना देरी के अपना आदेश पूरा करने के लिए प्रेरित किया। उसने अपना कुलीन सिर तलवार के हवाले कर दिया और उसका सिर कलम कर दिया गया[5162] ; और उसकी आत्मा प्रभु के हाथों में उठा ली गई और स्वर्गीय निवासों में ले जाई गई। इस प्रकार पवित्र महा-शहीद मरीना ने 17 जुलाई को अपना शहादत पूरा किया। उसके कष्टों का वर्णन एक प्रत्यक्षदर्शी, परमेश्वर के सेवक थियोटिमस ने किया था, जिसने पूरे कष्टों को देखा और उसे संत को प्रकट किए गए दर्शनों को देखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ; उन्होंने यह विश्वासियों के निर्माण के लिए, मसीह की प्रिय वधू, मरीना के सम्मान और स्मृति में, और मानवता के प्रेमी, हमारे उद्धारकर्ता मसीह की महिमा के लिए दर्ज किया, जिन्हें पिता और पवित्र आत्मा के साथ, और हमसे, सम्मान और महिमा प्राप्त हो, अब और हमेशा के लिए। आमीन।

[5162] संत मरीना शहीद की मृत्यु तीसरी शताब्दी के अंत या चौथी शताब्दी की शुरुआत में हुई। उनके पवित्र अवशेष 1204 में क्रूसेडरों द्वारा कॉन्स्टेंटिनोपल पर कब्जा करने तक कॉन्स्टेंटिनोपल में पैंटेपोंटास (सर्व-दृष्टा मसीह) के मठ में रखे गए थे। अन्य विवरणों के अनुसार, 908 में उनके अवशेषों को एंटिओक से पश्चिम में स्थानांतरित किया गया और टस्कनी के मोंटे फियास्कोन में रख दिया गया; वर्तमान में, उनके अवशेषों का एक हिस्सा (उनका हाथ) माउंट अथोस पर वाटोपेडी मठ में रखा है।

ट्रोपारयिन, स्वर 3:

हे कुंवारी, कुँवारीपन के सद्गुणों से सुसज्जति, तुम्हें अक्षय मुकुटों से वभिूषति कयिा गया, हे मरैना: शहादत के रक्त से रँगी हुई, और चंगाई के चमत्कारों से प्रकाशमान हुई, तुमने, हे धर्मनष्ठि शहीद, अपने कष्टों के लिए वजिय का सम्मान प्राप्त कयिा।

31 जुलाई

18 जुलाई (पुराना कैलेंडर)

शहीद संत एमलियन का कष्टकथा

18 जुलाई को स्मरणोत्सव

धर्मद्रोही जूलयिन के अधर्मी शासनकाल में[5163] , ईसाइयों के खलिाफ एक भयंकर उत्पीड़न शुरू कयिा गया, जसिने एक आंधी या तूफान की तरह पूरी दुनयिा को अराजकता में डाल दयिा। रोमन साम्राज्य भर में, सभी प्रांतों और शहरों में, एक आदेश जारी कयिा गया कि ईसाइयों को, चाहे वे कसिी भी जाति या राष्ट्र के हों, दोनों लिंगों के और हर उम्र के, बनिा कसिी दया के वभिन्नि यातनाओं और क्रूर मृत्यु के अधीन कयिा जाए। इस अन्यायपूर्ण फरमान द्वारा, इस ईश्वर-द्वेषी सम्राट ने धर्मनष्ठि कानूनों का उल्लंघन कयिा और मसीह तथा उनके सेवकों के प्रति क्रोध और शत्रुता से जलते हुए, पूरे पूर्व और पश्चमि को मसीहयिों के नर्दियी रक्तपात से कलंकति कर दयिा। क्रशि्चयिन यातना देने के लिए उसे वभिन्नि प्रांतों और शहरों में भेजे गए अन्य क्रूर राज्यपालों में, उसने मसियिा प्रांत के डोरोस्टोल शहर में कैपटिोलनिस नामक एक नर्दियी यातनाकर्ता, जो मनुष्यों का वनिाशक और मूर्तयिों का सेवक था, को नयिुक्त कयिा; उक्त नगर में पहुँचने पर, वह सबसे पहले मूर्तपिूजक मंदरि गया, राक्षसों को बलदिान चढ़ाया और नर्जिीव मूर्तयिों की पूजा की। फरि, अगले दनि, वह चौक में न्यायाधकिरण में गया, एक ऊँचे सहिासन पर बैठ गया, जो ईसाइयों में भय पैदा करने के लिए गर्व और धमकी भरा दखि रहा था, और, राजा के फरमान की घोषणा करने के बाद, उसने उनसे लगन से पूछना शुरू कयिा कि क्या शहर में देवताओं के कोई शत्रु थे, या क्या वहाँ कोई खुद को ईसाई कहता था। नागरकिों ने शपथ ली कि उनके शहर में ऐसा कोई व्यक्ति नहीं है, बल्कि सभी देवताओं की पूजा करते हैं और उन्हें प्रतदिनि बलदिान देते हैं। यह सुनकर, कैपटिोलनि का हेगेमोन बहुत प्रसन्न हुआ और सभी प्रतष्ठिति नागरकिों को अपने साथ भोजन करने के लिए आमंत्रति कयिा, यह कहते हुए:

'चूँकि मैं देखता हूँ कि आप अपने पूर्वजों के देवताओं की इतनी लगन से पूजा करते हैं, इसलिए आज हमें एक साथ खाना, पीना और आनंद मनाना चाहिए।'

उस शहर में एमलियिन नाम का एक गुप्त ईसाई था, जो एक सम्मानति मूर्तपिूजक अधकिारी का दास था। अधकिारयिों के साथ हेगेमोन के भोज के दौरान, एक अनुकूल क्षण का लाभ उठाते हुए, वह अकेले मूर्तपिूजक मंदरि में घुस गया (कसिी ने उसे नहीं देखा), अपने साथ एक लोहे का हथौड़ा ले गया, और मूर्तयिों पर वार करना शुरू कर दयिा; उसने उन्हें टुकड़े-टुकड़े कर दयिा, उनके वेदयिों को उलट दयिा, बलदिान की भेंटों को बखिेर दयिा, मूर्तयिों के सामने रखे वशिाल दीयों को तोड़-फोड़ कर चकनाचूर कर दयिा, और सब कुछ तबाह करने के बाद, एक बहादुर योद्धा की तरह, वह हर्षति और हृदय में वजियी होकर चला गया। उसके बाद, एक मूर्तपिूजक मंदरि में प्रवेश कयिा; सब कुछ तबाह हुआ देखकर वह भयभीत हो गया और इस बात की सूचना हेगेमोन और उसके साथ भोजन कर रहे नागरकिों को देने के लिए दौड़ा। तुरंत ही सभी घबरा गए; हेगेमोन क्रोध से आग-बबूला हो गया और यह पता लगाने के लिए जांच का आदेश दयिा कि यह कसिने कयिा है; भेजे गए लोग दौड़ पड़े और जल्द ही उन्हें खेतों से मंदरि के पास से गुजरता हुआ एक गाँववाला दखिाई दयिा; उन्होंने उसे पकड़ लयिा और उसे हेगेमोन के सामने घसीट लाए, और उसे एक खलनायक की तरह पीटने लगे; और पुरोहतिों

[5163] जूलयिन द एपोकेटेट 361 से 363 तक राज करता था।

सहति एक बड़ी भीड़ उनका पीछा करती चली आई, वे सभी अपने देवताओं की अपवत्रिता की बात कर रहे थे और क्रोध से आग-बबूला थे। लेकनि धन्य एमलियिन, यह देखकर, मन ही मन सोचने लगे:

'अगर मैं अपने कएि को छपिाऊँ, तो उसका मुझे क्या फायदा होगा? मैं तो बस अपनी अंतरात्मा पर और भारी बोझ बनूँगा, या मेरी वजह से एक नरि्दोष आदमी मारा जाएगा, और मैं परमेश्वर के सामने एक हत्यारा बन जाऊँगा।'

ऐसा सोचकर, वह उन लोगों की ओर मुड़ा जो उस ग्रामीण को ले जा रहे थे और उसे पीट रहे थे, और उन्हें रोकने के लएि ज़ोर से चलि्लाया:

'इस नरि्दोष आदमी को जाने दो; इसके बदले मुझे ले लो: यह मैं ही था जसिने तुम्हारे नरि्जीव देवताओं को तोड़ा और रौंदा!'

उन्होंने उस गाँव वाले को अकेला छोड़ दयिा, क्रोध से संत एमलियिन को पकड़ लयिा, और उन्हें मारपीट और अपमान के बीच हेगेमोन के पास ले गए। हेगेमोन, सभी लोगों के सामने अदालत में अपनी सामान्य सीट पर बैठकर और एमलियिन को अपने सामने लाया हुआ देखकर, ने नागरकिों से पूछा:

'यह कौन है?'

नागरकिों ने उत्तर दयिा:

'यह वही खलनायक है जसिने देवताओं को चकनाचूर कर दयिा और बलदिानों पर पाँव रख दयिा है।'

हेगेमोन, क्रोध से भरकर, नागरकिों को फटकारा:

'फरि भी तुमने पहले दावा कयिा था कि तुम्हारे शहर में देवताओं का एक भी दुश्मन नहीं है; अब, तुम्हारी लापरवाही के कारण, ऐसा व्यक्ति मलि गया है; इस अपराध के लएि, तुम शाही खजाने में एक लीटर सोना जमा करोगे[5164] ।'

नागरकिों से यह कहने के बाद, वह एमलियिन की ओर मुड़ा और गुस्से में उससे पूछने लगा:

'बताओ, हे दुष्ट पुरुष, तुम्हारा नाम क्या है!'

मसीह के पराक्रमी योद्धा ने उत्तर दयिा:

'मैं एक ईसाई हूँ।'

राज्यपाल, और भी अधकि क्रोधति होकर, बोला:

'हमें अपना नाम बता, हे नीच मनुष्य!'

शहीद ने उत्तर दयिा:

'मेरे माता-पति ने मेरा नाम एमलियिन रखा था, लेकनि मसीह, सच्चे ईश्वर ने मुझे ईसाई होने और ईसाई कहलाने का योग्य समझा है।'

हेगेमोन ने पूछा:

'बताओ, हे नास्तकि, कसिने तुम्हें अमर देवताओं के वरिुद्ध ऐसा अपमान करने की शक्षिा दी?'

लेकनि मसीह के सेवक ने उत्तर दयिा:

'ईश्वर और मेरी आत्मा ने मुझे उन नरि्जीव मूर्तयिों को तोड़ने का आदेश दयिा जन्हिें आप देवता कहते हैं, ताकि सभी देख सकें कि वे नरि्जीव, बहरे और गूंगे हैं, कि उनमें कोई बुद्धि नहीं है, बल्कि वे केवल पत्थर और लकड़ी हैं जो कुछ भी महसूस नहीं करते; तो जान लो, कि मैंने सच्चे परमेश्वर का अपमान नहीं कयिा है, जसिने सभी चीजों को बनाया है, बल्कि तुम्हारे झूठे देवताओं का अपमान कयिा है, जन्हिोंने कुछ भी नहीं बनाया है, बल्कि उन्हें तुमने ही बनाया है, और मैंने उन्हें जमीन पर फेंक दयिा है ताकि वे हमेशा के लएि नष्ट हो जाएँ!

इस पर हेगेमोन ने उत्तर दयिा:

'क्या तुमने देवताओं को अकेले ही तोड़ा, या कोई और तुम्हारे साथ था?'

संत ने उत्तर दयिा:

'मैंने अकेले ही, अपने मसीह की मदद से, तुम्हारी मूर्तयिों को धूल में मलि दयिा और उनकी भेंटों और दीयों को पैरों तले कुचल दयिा; और इस अपमान का बदला मुझसे एक भी नहीं ले सका, न ही वे मेरे हाथों से बच सके, क्योंकि वे शक्तहिीन और नरि्जीव हैं। तो ऐसा ही हो तुम पर जो उन्हें बनाते हो, और उन सभी पर जो उन पर अपनी आशा रखते हैं।'

[5164] लत्रिा वजन की एक इकाई है जो 72 ज़ोलोटनकि के बराबर होती है; चांदी में इसका मूल्य लगभग 40 रूबल और सोने में 500 रूबल तक होता था।

क्रोध में, राज्यपाल ने आदेश दिया कि मसीह के सेवक के कपड़े उतार दिए जाएँ ताकि उसे पीटा जा सके। जब शहीद के कपड़े उतार दिए गए, तो राज्यपाल ने उससे कहा:

'बताओ, दुर्भाग्यशाली, किसने तुम्हें देवताओं को नष्ट करना सिखाया?'

संत ने उत्तर दिया:

'मैं तुम्हें पहले ही बता चुका हूँ, और मैं फिर से कहूँगा: यह कोई और नहीं बल्कि ईश्वर और मेरी अपनी आत्मा ही थी जिन्होंने मुझे ऐसा करने की आज्ञा दी।'

तब राज्यपाल ने अपने सेवकों को आज्ञा दी:

'उसे नंगा करो और और ज़ोर से पीटो, ताकि उसे पता चल जाए कि उसकी बदतमीज़ी उसका कोई काम नहीं आएगी, और कोई भी उसे मेरे हाथों से नहीं बचा पाएगा!'

और उन्होंने उस पर निर्दयता से प्रहार करना शुरू कर दिया।

जब उन्होंने शहीद को इतनी बुरी तरह पीटा कि जमीन उसके खून से लथपथ हो गई, तो राज्यपाल ने संत से पूछा:

'मुझसे बता, दुर्भाग्यशाली, इस दुष्ट कर्म को करने की शिक्षा तुझे किसने दी?'

लेकिन शहीद ने, पिटाई के बीच, उत्तर दिया:

'मैंने तुम्हें बताया है कि ईश्वर और मेरी आत्मा ने मुझे यह करने का आदेश दिया है, फिर भी तुम मेरा विश्वास नहीं करते; वास्तव में, मैंने बुराई नहीं बल्कि भलाई की है, क्योंकि मैंने शैतान को शर्मिंदा किया है और ईश्वर की महिमा की है।'

इगेमोन ने अपने सेवकों से कहा:

उसे पलट दो और उसके पेट और छाती पर प्रहार करो: वह घमंडी है, राजा के कानूनों का यह अवज्ञाकारी!

और उन्होंने शहीद को बहुत देर तक निर्दयता से पीटा; फिर राज्यपाल ने उन्हें संत को पीटना बंद करने का आदेश दिया और उससे पूछा:

– क्या तुम दास हो या स्वतंत्र आदमी?

– मैं नगरपालिका का दास हूँ, – संत ने उत्तर दिया।

तब राज्यपाल, शहर के मजिस्ट्रेट और एमिलियन के मालिक, पर इस तरह के दास को रखने के लिए क्रोधित हो गया—जो देवताओं का शत्रु और राजा की आज्ञा का अवज्ञाकारी था—और उसने उस पर शाही कोष में एक लिट्रा चांदी का जुर्माना लगाया, जबकि शहीद को खंभे पर जलाने की सजा सुनाई। तुरंत, नौकरों और एक बड़ी भीड़ ने संत को पकड़ लिया और उसे शहर से बाहर ले गए; फिर, डैन्यूब नदी के किनारे, एक विशाल चिता बनाकर, उन्होंने शहीद को उसमें डाल दिया। भयंकर लपटों ने संत को घेर लिया, लेकिन वे उन्हें छू नहीं सकीं; फिर वे दूर-दूर तक फैल गईं, और अपनी पहुँच में आने वाले सभी अविश्वासियों को जला दिया, कुछ को बुरी तरह झुलसा दिया, जबकि अन्य किसी तरह बच निकले। जहाँ तक भीड़ में मौजूद गुप्त ईसाइयों की बात है, उन्हें आग से कोई नुकसान नहीं हुआ, भले ही लपटें उन तक पहुँच गईं। संत आग में पूर्व की ओर मुख करके खड़े रहे, उन्होंने क्रॉस का चिह्न बनाया और ईश्वर का आशीर्वाद लिया। जब तक उन्होंने चाहा प्रार्थना करने के बाद, उन्होंने कहा:

[5165]'हे प्रभु यीशु मसीह, मेरी गवाही ग्रहण कीजिए!'

ये शब्द कहते ही, वह लेट गया और प्रभु में सो गया, ठीक उसी समय जब आग बुझ रही थी। आग से उसके शरीर को बिल्कुल भी नुकसान नहीं हुआ; एक भी बाल तक नहीं झुलसा। और नागरिकों में से जो गुप्त ईसाई थे, वे राज्यपाल की पत्नी के पास गए, जो स्वयं भी गुप्त रूप से ईसाई धर्म का पालन करती थी, उन्होंने संत के बारे में सब कुछ बताया, और उसे शहीद के शरीर को दफनाने की अनुमति मांगने के लिए मना लिया, जो चमत्कारिक रूप से आग से अप्रभावित रहा था। उसने अपने पति से विनती की, और उसने संत के शरीर को बिना किसी बाधा के ले जाने की अनुमति दे दी; और विश्वासियों ने इसे ले लिया, इसे सुगंधित तेलों से लिपटे हुए एक कफ़न में लपेटा, और शहर से तीन स्टेडियम दूर स्थित गिज़ीडिनि नामक स्थान पर सम्मान के साथ दफनाया[5166] । पवित्र शहीद एमिलियन ने 18 जुलाई को मसीह के लिए यातनाएँ सहन कीं, एक

[5165] पवित्र शहीद एमिलियन का 363 में निधन हो गया।

[5166] बाद में, पवित्र शहीद एमिलियन के सम्मान में कॉन्स्टेंटिनोपल में एक चर्च बनाया गया, जिसमें शहीद के पवित्र अवशेष स्थानांतरित कर दिए गए। कॉन्स्टेंटिनोपल में जिस क्षेत्र में यह चर्च बनाया गया था, उसे रौद्वा कहा जाता था (ग्रीक शब्द 'डंडा' से - यानी मूसा का डंडा, जिसे सम्राट

शुक्रवार को, कैपटिोलनि हलि के राज्यपाल के हाथों, रोमनों और यूनानयिों पर जूलयिन द एपोस्टेट और हम पर हमारे प्रभु यीशु मसीह के शासनकाल के दौरान; उन्हें, पतिा और पवत्रि आत्मा के साथ, सम्मान और महमिा हो, अब और हमेशा के लएि। आमीन।

कॉन्टाकयिन, स्वर 3:

दव्यि उत्साह से प्रज्वलति, आप उस अग्नि से नहीं डरे जसिसे आप सेवा करते थे; अपनी इच्छा से नडिर होकर ऊपर चढ़े, आप प्रज्वलति अग्नि में भस्म हो गए, और स्वयं को प्रभु के लएि बलदिान कर दयिा, हे शहीद, महमिामय एमलियिन। मसीह हमारे ईश्वर से प्रार्थना करें कि वह हम पर अपनी महान दया प्रदान करें।

हमारे पूजनीय पतिा पाम्वा का जीवन

१८ जुलाई को स्मरण कयिा जाता है

आदरणीय पाम्वा मस्रि के माउंट नट्रियिा के पास रेगस्तिान में वृद्धावस्था तक उपवास करने वाले तपस्वी के रूप में रहे[5167] । कई महान पतिाओं ने उनके सदाचारी, ईश्वर-प्रसन्न और पवत्रि जीवन के बारे में बताया है, जैसा कि विभिन्नि स्रोतों से संकलति नम्निलखिति ववरिण से पता चलेगा। सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण, आदरणीय एंथनी द ग्रेट[5168] ने उनके बारे में कहा कि ईश्वर के भय (जसिसे पाम्वा भरे हुए थे) के माध्यम से उन्होंने अपने भीतर ईश्वर की आत्मा को स्थापति कयिा। आदरणीय पमिन ने कहा:

'हमने पतिा पाम्वा में तीन आचरण देखे: हर दनि उपवास, मौन और शारीरकि श्रम।'

आदरणीय थयिोडोर द स्टुडाइट[5169] ने उसी धन्य पतिा के बारे में नम्निलखिति गवाही दी है: 'पाम्वा को कर्म और वचन दोनों में, एक उच्च पद वाले व्यक्ति के रूप में, उचति रूप से महमिामंडति कयिा जाए'[5170] । इस बीच, सोक्रेटसि द स्कॉलारस्टकि[5171] लखिते हैं कि अपने मठवासी जीवन की शुरुआत में, नरिक्षर होने के कारण, वह दाऊद के भजन सीखने के लएि भाइयों में से एक के पास गया। ठीक शुरुआत में ही, अड़तीसवीं भजन का पहला पद सुनते ही, अर्थात्: *'मैं अपने मार्गों का ध्यान रखूँगा, कहीं मैं अपनी जीभ से पाप न करूँ*, उसने अन्य पद सुनना नहीं चाहा, बल्कि यह कहते हुए चला गया:

'यदि मैं इसे व्यवहार में लाना सीख लूँ, तो यह एक छंद मेरे लएि काफी है।'
और उसके बाद, वह अपने गुरु के पास कभी वापस नहीं आया।
छह महीने बाद, शक्षिक ने उसे कहीं देखा और उससे पूछा:
'तुम अब तक मुझसे मलिने क्यों नहीं आए?'
पाम्वा ने उत्तर दयिा:
'मैंने अभी तक उस श्लोक को व्यवहार में लाना नहीं सीखा है।'
फरि, कई साल बाद, एक पादरी, जसिे वह जानता था, ने उससे पूछा:
'क्या तुमने वह श्लोक अभी तक सीख लयिा है, भाई?'

कॉन्स्टेंटनि द ग्रेट के शासनकाल के दौरान कॉन्स्टेंटनिोपल लाया गया था और 'चर्च ऑफ द मदर ऑफ गॉड' में रखा गया था, जसिके पास एमलीयन का चर्च स्थति था)।

[5167] मस्रि कई तपस्वयिों का एक सामान्य नविास स्थान था। मध्यम और नचिले मस्रि दोनों में मठवासी बस्तयिाँ पाई गईं। नचिले मस्रि में स्थति और नील नदी के पार देश के अंदर गहराई में स्थति, नाइट्रयिन मरुभूमि मस्रि में वशिेष रूप से प्रसद्धि थी।

[5168] उनका पर्व दविस पवत्रि चर्च द्वारा 17 जनवरी को मनाया जाता है।

[5169] उनका स्मरणोत्सव 11 नवंबर और 26 जनवरी को मनाया जाता है।

[5170] चीज़ शनविार के लएि कैनन, ओड 5 (यह कैनन स्टूडयिो के संत थयिोडोरेट द्वारा रचति था)।

[5171] सुकरात स्कॉलास्टकिस – एक यूनानी धार्मकि इतहिासकार जो 5वीं शताब्दी में रहते थे। उन्होंने 'चर्च का इतहिास' लखिा, जो सम्राट थयिोडोसयिस द्वतिीय के शासनकाल तक की अवधि को कवर करता है। – सोक्रेटसि स्कॉलैस्टकिस का नीचे उद्धृत अंश उनके *चर्च हस्टि्री* (अध्याय 18) की पुस्तक 4 में पाया जाता है।

पम्वा ने उत्तर दिया:

'मैंने उन्नीस साल तक बिना रुके अध्ययन किया है, और अब जाकर ही मैं जो कुछ यह सिखाता है, उसे व्यवहार में लाने का आदी हुआ हूँ।'

यद्यपि संत पाम्वा शुरू में निरक्षर थे, परन्तु बाद में उन्हें ईश्वर द्वारा ज्ञान प्राप्त हुआ और वे पवित्र शास्त्रों को अच्छी तरह जानते थे; वास्तव में, वे दूसरों के लिए भी एक कुशल शिक्षक थे (जैसा कि पैल्लैडियस उनके बारे में लिखते हैं[5172] ; निम्नलिखित चार भाई, जो मिस्र में प्रसिद्ध थे, उनके शिष्य थे: डियोस्कोरस, अम्मोनियस, यूसेबियस और यूथमियस, जिन्हें 'महान' कहा जाता है और जिनका उल्लेख सेंट जॉन क्रिसोस्टोम के जीवन में मिलता है[5173] । इनमें से पहले, डियोस्कोरस, बाद में हर्मोपोलिस के बिशप बने; यह वही डियोस्कोरस नहीं है जिसे एक विधर्मी माना गया था और जिसे पवित्र पिताओं के चौथे सार्वभौमिक परिषद में निंदा किया गया था[5174] , बल्कि एक ही नाम का कोई और था जो पहले रहता था। इसके अलावा, सम्माननीय ड्रेकोन्टियस , जिनका उल्लेख पूजनीय हिलारियन महान के जीवन में मिलता है—जो मसीह के एक बिशप और कन्फेशनर थे जिन्हें एरियनों के हाथों निर्वासन का सामना करना पड़ा—वे भी अपने युवा दिनों में धन्य पाम्वा के शिष्य थे। पाम्वा ही इन शिष्यों के गुरु थे।

उनके कई अन्य महान गुणों के बीच, यह सम्मानित व्यक्ति सोने और चांदी के प्रति अपनी पूर्ण तिरस्कार के लिए विशिष्ट थे। जब संत मेलानिया रोमन, मसीह के लिए अपनी सारी विशाल संपत्ति ज़रूरतमंदों में बाँटने के बाद, अलेक्जेंड्रिया पहुँचीं, और संत पाम्वा के बारे में सुना, तो वह अलेक्जेंड्रिया के पुरोहित इसिडोर के साथ उनके पास आईं, जो यात्रियों के मेज़बान थे; वह अपने साथ तीन सौ लीटर चाँदी लाई और पाम्वस से कहा कि वह लाई गई चाँदी में से जितनी चाँदी चाहे ले लें। लेकिन उन्होंने उस पर एक नज़र तक नहीं डाली और अपने काम – वह एक चटाई बुन रहे थे – को नहीं रोका, बल्कि केवल उनसे कहा:

'प्रभु तुम्हें उस भक्ति का फल दें जो तुम उन्हें दिखाती हो।'

जब उसने उसे कम से कम थोड़ा सा लेने के लिए आग्रह करना जारी रखा, तो पूज्य ने उसकी सेवा कर रहे भाई से कहा:

'जो दिया गया है उसे सावधानी से लो, और इसे लीबिया[5175] और द्वीपों में भाइयों में बाँटने के लिए ले जाओ: उन्हें बहुत ज़रूरत है, क्योंकि उनकी भूमि बंजर है; लेकिन मिस्र के मठों के भाइयों को कुछ भी नहीं देना, क्योंकि उनकी भूमि उपजाऊ है, और वे अपनी मेहनत से भरपूर जीवन यापन कर सकते हैं।'

तब धन्य मेलानिया ने उस भाई को लाया गया सारा चाँदी गरीबों में बाँटने के लिए दे दिया, और पूजनीय पाम्वे से कहा:

'पिताजी, ध्यान दीजिए कि मैं कितना चाँदी दे रही हूँ: तीन सौ लिट्रा।'

उसने उससे उत्तर दिया:

'हे बेटी, जिसे ईश्वर के पास तुम यह चाँदी लाई हो, वह तुमसे यह नहीं पूछता कि तुमने कितनी लाई है: निश्चय ही *"उसने अपने हाथ की हथेली में जल को नापा, और आकाश को एक स्पैन से मापा, और पृथ्वी की धूल को एक माप में इकट्ठा किया, और पहाड़ों को तराजू में तोला"* (यशायाह 40:12) क्या वह तुम्हारे चाँदी की मात्रा नहीं जानता? अगर आप मुझे चाँदी दे रही होतीं, तो आप बेशक मुझे बतातीं कि आप कितनी दे रही हैं; लेकिन आप इसे ईश्वर को दे रही हैं, जिन्होंने विधवा के दो पैसे को भी तुच्छ नहीं समझा, बल्कि उन्हें बहुत सारी दौलत से भी अधिक प्रसन्नता से स्वीकार किया (मरकुस 12:42); इसलिए चुप रहें; दूसरों के सामने इसका दिखावा न करें! (मत्ती 6:2)

फादर पियोर एक बार पूजनीय पाम्वा के पास आए, अपने साथ बासी रोटी का एक छोटा सा टुकड़ा लाए। जब पाम्वा ने पूछा:

[5172] उनकी स्मृति पवित्र चर्च द्वारा चीज़ शनिवार को मनाई जाती है।

[5173] उनका पर्व दिवस 13 नवंबर है।

[5174] चौथा सार्वभौमिक धर्मसभा 451 में काल्सेडन में हुआ था और इसे सम्राट थियोडोसियस द्वितीय ने यूटिकियन विधर्म की निंदा करने के लिए बुलाया था। इस विधर्म के संस्थापक कॉन्स्टेंटिनोपल के एक आर्चिमांड्राइट यूटिकीस थे, जिन्होंने यह दावा किया कि यीशु मसीह में, हाइपोस्टैटिक संघ में, मानवीय स्वभाव पूरी तरह से दैवीय स्वभाव में समाहित हो गया था। परिषद ने उस झूठे शिक्षक को निंदा किया। उसी परिषद में, अलेक्जेंड्रिया के पैट्रिआर्क डियोस्कोरस, जो यूटिकस की झूठी शिक्षाओं को मानते थे, को भी निंदित किया गया था।

[5175] लीबिया उत्तरी अफ्रीका में स्थित था।

'पतिाजी, आपने अपने साथ रोटी क्यों लाई है?'

पयिोर ने उत्तर दयिा:

'ताकि आपको असहज स्थतिि में न रखना पड़े।' (यानी, आपको रोटी देकर आपको बुरा न लगे, बल्कि मैं अपनी खा लूँ।)

कुछ दनिों बाद, पूजनीय पाम्वा, फादर पयिोर के पास गए, अपने साथ पानी में डुबोया हुआ अपना एक सूखा रोटी का टुकड़ा लेकर। यह देखकर, पयिोर ने पूछा:

– पादरयिों, आपने गीली रोटी क्यों लाई?

उन्होंने उत्तर दयिा:

– ताकि आपको मुश्कलि स्थतिि में न रखना पड़े, न केवल रोटी के मामले में, बल्कि पानी के मामले में भी।

एक अवसर पर, अलेक्जेंड्रयिा के संत अथेनासयिस ने फादर पाम्वा को अलेक्जेंड्रयिा में अपने पास आने के लिए कहा। रास्ते में, बड़े भाई, कई भाइयों के साथ, कुछ गृहस्थों को बैठे हुए देखा जो गुज़रते हुए भक्षिुओं पर ध्यान नहीं दे रहे थे; पाम्वा ने इन गृहस्थों से कहा:

– उठो और भक्षिुओं का सम्मानपूर्वक अभवािदन करो, ताकि तुम उनका आशीर्वाद प्राप्त कर सको: वे अक्सर ईश्वर से संवाद करते हैं, और उनके होंठ पवत्रि हैं।

फरि, नगर में पहुँचने पर, उसने एक कुख्यात महलिा को देखा, जो लोगों को लुभाने के लिए सजी हुई थी; और वृद्ध रो पड़ा। फरि भाइयों ने उससे पूछा:

– आप क्यों रो रहे हैं, पतिाजी?

उसने उत्तर दयिा:

'मैं दो कारणों से रोता हूँ: इस महलिा की आत्मा के वनिाश के लिए, और इसलिए कि मुझमें अपनी आत्मा के लिए वैसी लगन नहीं है जैसी उसमें अपने शरीर के लिए है। उसने लोगों को खुश करने के लिए खुद को सजाया है, जबकि मैं अपनी आत्मा को सजाने की परवाह नहीं करता कि वह ईश्वर को प्रसन्न कर सके।'

हमेशा कोमलता से भरे रहने वाले, पूजनीय पाम्वा कभी हँसे नहीं; उनके चेहरे पर एक मुस्कान भी कभी नहीं आई। एक बार, राक्षसों ने उन्हें हँसाने की कोशशि की; उन्होंने एक पंख से रस्सी बाँधी और उसे उनके सामने एक भारी बोझ की तरह खींचते हुए एक-दूसरे से कहते और चल्लिाते हुए कहा:

'बचाओ! बचाओ!'

यह देखकर, फादर पाम्वा हँस पड़े। तब राक्षस, अतिप्रसन्न होकर, चल्लिा उठे:

'आखरिकार, पाम्वा हँस ही दयिा!'

लेकनि उन्होंने पलटकर जवाब दयिा:

'मैं हँस नहीं रहा था; मैं तुम्हारी कमज़ोरी का मज़ाक उड़ा रहा था: तुम एक पंख भी नहीं उठा सकते!'

दानव शर्मदिा होकर भाग गए।

उनके शष्यि यह भी बताते हैं कि वह बातचीत में बहुत सतर्क और अपने उत्तरों में वविेकी थे। जब उनसे पवत्रि शास्त्रों या कसिी भी वषिय के बारे में कुछ पूछा जाता, तो वह तुरंत उत्तर नहीं देते थे, बल्कि पहले लंबे समय तक मौन रहकर अपने मन में वचिार करते थे, और फरि अक्सर कहते थे:

'मैं इस प्रश्न का उत्तर नहीं जानता।'

और केवल तीन दनि या तीन सप्ताह, और कभी-कभी तो तीन महीने बाद ही, वह प्रश्न का उत्तर देते थे। उनके उत्तर हमेशा न्यायसंगत और अत्यंत लाभकारी होते थे, क्योंकि वे ईश्वर की कृपा से प्रेरति होते थे। इसलिए, हर कोई उनके मुख से नकिले शब्दों को श्रद्धापूर्वक ग्रहण करता था, मानो वे स्वयं ईश्वर के मुख से नकिले हों: ईश्वर उनके मुख से बोलते थे।

इन पूजनीय पति के दनिों में, मस्रि के ही क्षेत्रों में, पैसयिस और यशायाह नामक दो भाई थे, जो धनी माता-पति के पुत्र थे; उनके पति एक प्रसद्धि व्यापारी थे जो अपने कीमती सामान के साथ स्पेन तक की यात्रा करते थे। अपने माता-पति की मृत्यु के बाद उन्हें मलिी महान संपत्ति को आपस में बाँटने के बाद, उन्होंने एक-दूसरे से कहा:

'हम अपने लिए कसि प्रकार का जीवन चुनें? यदि हम व्यापार करें, जैसा कि हमारे पति करते थे, तो कौन जाने कि हमारे चले जाने के बाद हमारे श्रम का फल कसिके हाथ लगेगा? इसके अलावा, हमें कसिी वपित्ति में पड़ने के नरिंतर भय

में जीना होगा: डकैती, जहाज-दुर्घटनाएँ।' आओ हम इसके बजाय संन्यासी जीवन चुनें और अपने पिता की संपत्ति को स्वर्गीय खजाने में निवेश करें; ऐसा करके हम अपनी आत्माओं को भी बचा लेंगे।"

इस प्रकार एक-दूसरे से सलाह-मशविरा करने के बाद, दोनों ने संसार त्याग दिया। एक ने तुरंत अपनी विरासत का हिस्सा गरीबों, चर्चों और मठों में बाँट दिया, अपने लिए कुछ भी नहीं रखा; वह रेगिस्तान में चला गया और वहाँ एक साधारण शिल्प सीखा, जिससे वह अपने हाथों की मेहनत से अपना जीवन यापन करता था; और वह ईश्वर को प्रसन्न करने वाले तरीके से अकेला रहता था, कठोर उपवास करता और कड़ी मेहनत करता था। दूसरे ने, हालांकि, सामान्य लोगों के घरों से बहुत दूर नहीं, अपने लिए एक छोटा सा मठ बनाया और कुछ भाइयों को अपने पास रखकर, राहगीरों को आश्रय दिया और गरीबों को खिलाया। एक अतिथि गृह और एक अस्पताल बनाकर, उन्होंने आने वाले सभी को आश्रय दिया और बीमारों की बड़ी लगन से सेवा की; और शनिवार और रविवार को उन्होंने गरीबों के लिए दो, तीन या चार बार भोजन का आयोजन किया। इस प्रकार कई वर्षों तक जीवन व्यतीत करने के बाद, दोनों भाई प्रभु में निवृत्त हो गए। उनकी मृत्यु के बाद, कई भाइयों ने उन दोनों के बारे में चर्चा करना शुरू कर दिया: कुछ ने उस भाई की अधिक प्रशंसा की जिसने तुरंत अपनी संपत्ति दान कर दी थी और मरुभूमि में मौन जीवन में चला गया था, जबकि अन्य दूसरे भाई का पक्ष ले रहे थे, जिसने अपनी संपत्ति का उपयोग लंबे समय तक यात्रियों, गरीबों और बीमारों की सेवा के लिए किया था। इस विवाद में लंबे समय तक असमंजस में रहने के बाद, भाइयों ने इस बारे में परम पूज्य पिता पाम्वा से पूछने के लिए गए, यह जानने की इच्छा से कि किसि भाई का जीवन ईश्वर को अधिक प्रिय था और उनमें से किसे बड़ा पुरस्कार मिलेगा। परम पूज्य पाम्वा ने उनके प्रश्न का उत्तर इस प्रकार दिया:

'दोनों ईश्वर के समक्ष सिद्ध हैं; मेज़बान धर्मी अब्राहम के समान है, और तपस्वी पवित्र नबी एलिया के समान है, और दोनों ने समान रूप से ईश्वर को प्रसन्न किया है।'

हालाँकि, भाई सहमत नहीं हो सके और आपस में बहस करने लगे; कुछ ने तपस्वी की अधिक प्रशंसा करते हुए कहा:

'उसने सुसमाचार की आज्ञा का पालन किया: "अपना सामान बेचकर गरीबों को दे दो"; और, अपना क्रूस उठाकर, वह मसीह का अनुसरण करता रहा, हर दिन प्यास और भूख सहते हुए; जबकि मेज़बान, यद्यपि उसने गरीबों की सेवा की, फिर भी अपने सामान का आनंद लेता रहा; वह यात्रियों के साथ खाता-पीता था और बीमारों के साथ भोजन करता था।'

हालाँकि, उसके विरोधियों ने आपत्ति जताई, यह कहते हुए कि मेहमाननवाज़ आदमी ने सुसमाचार में कहे गए मसीह के वचनों को भी पूरा किया था: *'वह दूसरों की सेवा करने आया, न कि अपनी सेवा करवाने'* (मत्ती 20:28)। क्योंकि वह हर दिन व्यस्त सड़क पर जाकर, यात्रियों, भिखारियों, बीमारों और गरीबों को खोजकर, उन्हें अपने घर लाता था, जहाँ वह उन सभी को विश्राम देता था; और यदि प्यासे को एक प्याला ठंडा पानी देने के लिए ईश्वर से पुरस्कार का वादा किया गया है, तो उस भाई को क्या पुरस्कार मिलेगा जिसने यात्रियों का स्वागत किया, अनगिनत प्यासे और भूखे लोगों को तृप्त किया, और हर बीमार व्यक्ति की सेवा इस तरह की जैसे वे स्वयं मसीह हों?

भाइयों के बीच ऐसा मतभेद देखकर, पूजनीय पाम्वा ने उनसे कहा:

'भाइयों, थोड़ी देर प्रतीक्षा करो, जब तक मुझे ईश्वर से मार्गदर्शन न मिल जाए; तब मैं तुम्हें बताऊँगा।'

कुछ दिनों बाद, भाई अपने प्रश्न का उत्तर जानने के लिए फिर से उनके पास आए; तब बड़े भाई ने उनसे कहा:

'मैं ईश्वर के सामने तुमसे कहता हूँ कि मैंने उन दोनों भाइयों (पैसियस और एलियाह) को स्वर्ग में एक साथ खड़े देखा था।'

यह सुनकर सभी भाइयों को आश्वासन मिला और उन्होंने परमेश्वर की महिमा की।

दो भाइयों के बारे में आदरणीय संत को प्राप्त इस प्रकटवाणी के बाद, सभी के लिए यह स्पष्ट हो गया कि वह परमेश्वर के सामने कितनी महान कृपा का धनी था, क्योंकि उसे अपनी मृत्यु से पहले ही स्वर्ग के आनंद को देखने के लिए योग्य माना गया था; और वह स्वयं स्वर्ग के निवासियों के समान था, क्योंकि उसने उन्हें देखा था और उससे भी अधिक, क्योंकि परमेश्वर की प्रचुर कृपा उसमें वास करती थी। अपने नश्वर शरीर में लोगों के बीच रहते हुए भी, उनके चेहरे पर तो स्वर्गीय अक्षयत्व की मुहर पहले ही अंकित थी; वे न केवल आत्मा से बल्कि शरीर से भी तेजस्वी थे, और उनका चेहरा महिमा से दमकता था, ठीक वैसे ही जैसे कभी पवित्र भविष्यवक्ता मूसा का चेहरा दमकता था। पवित्र संतों के जीवनचरित में यह इस प्रकार वर्णित है। तीन वर्षों तक उस आदरणीय संत ने ईश्वर से प्रार्थना की:

'हे प्रभु, मैं आपसे विनती करता हूँ, मुझे पृथ्वी पर महिमामय न करें!'

लेकनि परमेश्वर, जो अपने संतों को महमिामय बनाता है, ने उसे इतनी अधकि महमिा दी कि उसके पास मौजूद महमिा के कारण भाइयों ने उसके चेहरे को देखने की हम्मित नहीं की: इस प्रकार संत को स्वर्ग में महमिामय होने से पहले पृथ्वी पर उनके शरीर में महमिामय कयिा गया। जब उनके परमधाम गमन का समय आया, तो सत्तर वर्षों के जीवन के बाद, उन्होंने अपने पास खड़े भाइयों से कहा:

जब से मैं इस रेगस्तिान में बसा हूँ, अपना कोठरी बनाया है और इसमें रह रहा हूँ, एक भी दनि ऐसा नहीं बीता जब मैंने अपने हाथों से थकने तक काम न कयिा हो; न ही मुझे याद है कि मैंने कभी कसिी द्वारा दी गई रोटी खाई हो, बल्कि हमेशा वही खाया है जो मैंने अपनी मेहनत से कमाया है; और मेरे मुँह से कभी कोई ऐसा शब्द नहीं नकिला है, जसिके लिए मुझे अब शर्मदिगी के साथ पछताना पड़े; फरि भी मैं प्रभु के पास ऐसे जा रहा हूँ मानो मैंने ईश्वर को भाता हुआ जीवन और संन्यासी जीवन जीना शुरू ही न कयिा हो।

इन शब्दों के साथ, उन्होंने बनिा कसिी शारीरकि बीमारी को झेले, अपना ईमानदार और पवत्रि आत्मा ईश्वर के हाथों में सौंप दयिा[5176] । ईश्वर के इस सेवक का जीवन और नधिन ऐसा था; उनकी पवत्रि प्रार्थनाएँ हमें भी ईश्वर को प्रयि लगने वाला जीवन जीना सीखने और हमारे प्रभु यीशु मसीह की दया से एक शुभ नधिन प्राप्त करने में मदद करें, जन्हिें पता और पवत्रि आत्मा के साथ, अब और हमेशा और युगों-युगों तक सम्मान और महमिा दी जाती है, आमीन।

हमारे पूजनीय पता जॉन दीर्घ-सहष्णिु का जीवन

१८ जुलाई को स्मरण कयिा जाता है

'हमें परमेश्वर के राज्य में कई क्लेशों के द्वारा प्रवेश करना चाहिए' (प्रेरतिों के काम 14:22), प्रेरति पौलुस ने कहा।

उनके साथ सहमत होकर, यीशु के प्रयि शष्यि, कन्या योहन ने कहा:

'मैं, यूहन्ना, तुम्हारा भाई और सह-दुखति' (प्रकाशतिवाक्य 1:9)।

कएिव केव्स मठ के, परमेश्वर की अतपिवत्रि माता के प्रयि शष्यि, हमारे रूसी कुंवारे जॉन, जन्हिें दीर्घ-पीड़ति कहा जाता है, इस बात से सहमत हैं; वास्तव में, उन्होंने अपने स्वर्गीय वधू-वर के प्रतकिी गई कुंवारी रहने की कसम के लिए बहुत दुख सहन कएि। इस प्रकार उन्होंने स्वयं अपने जीवन का वर्णन, अपने नधिन से कुछ समय पहले, नम्निलखिति अवसर पर कयिा। इस पूजनीय संत, जो एक संकरे स्थान—परमपूजनीय एंथनी की गुफा—में स्वयं को अलग-थलग कर के अपना पूरा जीवन वहीं व्यतीत कर रहे थे, से अक्सर एक भाई मलिा करता था, जो दैवीय कामवासना से पीड़ति था; उसने संत से प्रभु से प्रार्थना करने को कहा कि उसकी कामवासना कम हो जाए। लेकनि परमपूजनीय जॉन ने उससे कहा:

'भाई, हम्मित रखो; अपने हृदय को दृढ़ करो; प्रभु के नाम पर धैर्य धारण करो और उसकी आज्ञा का पालन करो, और वह तुम्हें हमारे शत्रुओं के हाथ में नहीं छोड़ेंगे, न ही उन्हें तुम्हें फँसाने देंगे।'

भाई, अपने जुनून के वश में होकर, ने उत्तर दयिा:

'मुझ पर वश्विास कीजए, पताजी, यदि आप मुझे राहत नहीं देते हैं, तो मुझे कोई शांति नहीं मलिेगी, बल्कि मैं एक जगह से दूसरी जगह भटकता रहूँगा।'

लेकनि पूजनीय जॉन ने उससे कहा:

'तुम दुश्मन के हवाले होकर टुकड़े-टुकड़े क्यों होना चाहते हो? तुम एक ऐसे आदमी की तरह होगे जो खाई के कनिारे खड़ा हो; शत्रु उसके पास आएगा और अचानक उसे नीचे धकेल देगा, और ऐसी गरिावट इतनी भयानक होगी कि उसके बाद वह फरि कभी उठ नहीं पाएगा; लेकनि अगर आप यहाँ, इस पवत्रि मठ में रहते हैं, तो आप उस व्यक्तकिी तरह होंगे जो खाई से दूर खड़ा है, जसिे शत्रु, चाहे वह उसे नीचे खींचने के लिए कतिनी भी कोशशि कर ले, नीचे नहीं गरिा सकता; इसलिए प्रभु, आपके धैर्य के कारण, आपको वासनाओं की खाई से और क्षणकि अशुद्धसि बचा लेंगे; सुनो, भाई, मैं तुम्हें बताऊँगा कि मेरे युवावस्था में मेरे साथ क्या हुआ था।

और उसने अपना पूरा जीवन वस्तिार से बताना शुरू कर दयिा।

[5176] आदरणीय पाम्वा का 4वीं शताब्दी के अंत में नधिन हो गया।

"जब मैं," उसने कहा, "इन गुफाओं के पवत्रि मठ में आया और पवत्रि दैवीय मठवासी आदेश के नयिम के अनुसार श्रम करने लगा—मैं, वासना से अत्यधकि ग्रस्त—अपने मोक्ष के लए बहुत कुछ सहन कयिा!" दो, कभी-कभी तीन दनि तक मैंने कुछ भी नहीं खाया; अक्सर मैं पूरे एक सप्ताह बनिा कुछ खाए ही रह जाता था, प्यास से स्वयं को कष्ट देते हुए; मैं पूरी रात जागता रहता था; मैंने लगभग तीन वर्ष ऐसे ही कष्ट में बतिाए, फरि भी इस तरह मुझे कोई शांत नहीं मलिी। फरि मैं उस गुफा में गया जहाँ हमारे पूजनीय पति एंथनी को दफनाया गया था और उनकी कब्र के पास एक दनि और एक रात प्रार्थना में बतिाई; और वहाँ मैंने पूजनीय की आवाज़ को मुझसे बात करते हुए सुना:

'जॉन, जॉन, तुम्हें इस गुफा में खुद को बंद कर लेना चाहए, ताक कुछ भी न देखकर और मौन में रहकर, तुम अपने जुनून पर काबू पा सको। प्रभु अपने संतों की प्रार्थनाओं के द्वारा तुम्हारी मदद करेंगे।'

इसलए (उन्होंने कहा), तब से मैं इस तंग और सुनसान जगह पर खुद को बंद कर लयिा है, जहाँ मैं अब तेरह साल से रह रहा हूँ; और मुझे शांत प्राप्त करने में देर लगी। कई वर्षों तक मैं अपने जुनून और सांसारकि वचिारों के खलिाफ संघर्ष करता रहा, एक कठोर जीवन जीता रहा; कई वर्षों तक मैंने अपने शरीर को कष्ट दयिा, पहले केवल उपवास और जागरण के माध्यम से; फरि, यह न जानते हुए क कि्या करना है और अपने सांसारकि जुनून पर काबू न पा सका, मैंने नग्न रहने का संकल्प लयिा; मैंने अपने शरीर पर भारी बेड़यिाँ लटका लीं, और तब से लेकर आज तक, मैं ठंड और लोहे के बोझ से खुद को थकाता रहा हूँ। हालाँक, जब यह सब भी अपर्याप्त साबति हुआ, तो मैंने एक और तरीका नकिाला: मैंने अपने कंधों तक एक गहरी खाई खोदी। जब पवत्रि लेंट के दनि आए, तो मैं गड्ढे में उतर गया और खुद को पूरी तरह से मट्टिी से ढक लयिा, ताक केवल मेरे हाथ और सरि ही मुक्त रहें, और इस प्रकार मैं पूरे लेंट के दौरान मट्टिी के भार के नीचे रहा, एक भी जोड़ हलिा नहीं सकता था; फरि भी इससे भी मेरे जलते हुए कामुक जुनून को शांत नहीं कयिा। इसके अलावा, शत्रु, शैतान, मुझे डराने की कोशशि कर रहा था, और चाहता था क मैं वहाँ से नकिल जाऊँ, और मैंने उसकी धूर्तता को महसूस कयिा: गड्ढे के तल में मेरे पैरों में आग लग गई, उनमें टेंडन सख्त हो गए, मेरी हड्डयिाँ काँपने लगीं, लपटें पहले ही मेरे पेट तक पहुँच चुकी थीं, और मेरे अंग जलने लगे। फरि भी मैंने उस असह्य पीड़ा पर कोई ध्यान नहीं दयिा, बल्क अपनी आत्मा में आनंदति हुआ, इस बात का हर्ष मनाते हुए क मेरी आत्मा अशुद्धि से पवत्रि बनी रही: मैंने प्रभु के लए उस आग में जलना पसंद कयिा, बजाय इसके क मैं शैतान द्वारा अपवत्रि होकर कुंड से बाहर नकिलूँ; और उसी क्षण मैंने एक भयानक और क्रूर साँप देखा, जो आग उगल रहा था, चगिारयिों से मुझे झुलसा रहा था और मुझे नगिलने की कोशशि कर रहा था। इस प्रकार यह कई दनिों तक चलता रहा, और मुझे भगाने की कोशशि करता रहा। जब मसीह के पुनरुत्थान की उज्ज्वल रात्रि का प्रभात हुआ, तो उस भयंकर साँप ने अचानक मुझ पर आक्रमण कयिा, और अपने जबड़ों में मेरे सरि और हाथों को जकड़ लयिा; मेरे सरि और दाढ़ी के बाल झुलसकर झड़ गए, जैसा क आप अब देख सकते हैं, और मैं, जो पहले से ही साँप के जबड़ों में था, अपने हृदय की गहराई से चल्लिाया:

'हे प्रभु परमेश्वर, मेरे उद्धारकर्ता, तूने मुझे क्यों छोड़ दयिा है? हे प्रभु, मुझ पर अनुग्रह कर, क्योंक केवल तू ही मनुष्यों का प्रेमी है! मुझे, एक पापी को, बचा, क्योंक केवल तू ही नर्दिोष है! मुझे मेरी घृणति दुष्टता से बचा लो, कहीं मैं दुष्टों के जाल में हमेशा के लए न फँस जाऊँ; मुझे इस शत्रु से बचा लो: देखो, वह एक सहि की तरह गरज रहा है, मुझे नगिल जाना चाहता है। अपनी शक्त दिखिाओ और मुझे बचाने आओ! अपनी बजिली चमकाओ और उसे भगा दो, ताक वह तेरे सामने से गायब हो जाए!

जब मैंने अपनी प्रार्थना समाप्त की, तो तुरंत दव्यि प्रकाश बजिली की तरह चमका, और वह क्रूर साँप गायब हो गया; और परमेश्वर की कृपा से, मैंने तब से उसे नहीं देखा है। फरि मैंने प्रभु की यह आवाज़ सुनी जो मुझसे कह रही थी:

'योहन, योहन! तेरी सहायता यहाँ थी; अब तू स्वयं ध्यान रखना क आने वाले युग में तू और कष्ट न भोगे।'

मैंने (उसने कहा), झुककर उत्तर दयिा:

'प्रभु, आपने मुझे इतनी क्रूर यातना में क्यों छोड़ दयिा?'

उस आवाज़ ने मुझसे कहा:

'यह तुम्हारी सहनशक्त के अनुसार तुम्हें भेजा गया था, ताक आग में परखे जाने पर तुम सोने के समान शुद्ध हो जाओ; परमेश्वर कसिी व्यक्त को उसकी शक्त से अधकि परीक्षा में नहीं डालेंगे, कहीं ऐसा न हो क वह असफल हो जाए और चालाक साँप द्वारा कलंकति हो जाए।' परन्तु जैसे एक बुद्धमिान स्वामी बड़े और भारी काम को बलवान और पुष्ट सेवकों को सौंपता है, और छोटे तथा हल्के काम को दुर्बल और कमजोरों को, वैसे ही तुम्हें भी देह की वासना के वरिुद्ध संघर्ष को समझना चाहए, जसिके लए तुम अपने लए प्रार्थना करते हो। परन्तु उस मृत पुरुष से प्रार्थना करो

जो तुम्हारे समीप पड़ा है, कि वह तुम्हें तुम्हारे कामुक जुनून से चंगा करे: उसने जोसेफ[5177] से भी अधिक किया है और इस जुनून से पीड़ित लोगों की मदद कर सकता है।

और मैं (उसने जारी रखा), इस दिवंगत आत्मा का नाम न जानते हुए, चिल्लाने लगा:

'हे प्रभु, इस पूजनीय की प्रार्थनाओं के द्वारा मुझ पर दया करें!'

बाद में मुझे पता चला कि वह हंगरी का मूल निवासी मूसा था। तब मैं एक अकथनीय प्रकाश से प्रकाशित हो गया, जिसमें मैं आज भी स्वयं को पाता हूँ, और मुझे दिन हो या रात, किसी प्रकाश की आवश्यकता नहीं पड़ती; और जो भी योग्य आत्माएँ मेरे पास आती हैं, वे इसी प्रकाश से संतुष्ट रहती हैं और अपनी आँखों से उस सांत्वना को देखती हैं जिसने मुझे पुनरुत्थान की उस रात प्रकाशित किया था, और आने वाले प्रकाश की आशा दी थी।

अपने दीर्घकालीन कष्टों भरे जीवन का यह वृत्तांत समाप्त करके, हमारे पूजनीय पिता जॉन ने कामवासना से ग्रस्त व्यक्ति की ओर मुड़कर कहा:

'भैया, हम स्वयं भी अपने मन में सांसारिक बातों में रहते हैं; इसी कारण परमेश्वर अपने धर्मी न्याय द्वारा हमें दुख सहने देता है, क्योंकि हम पश्चाताप के योग्य फल नहीं खाते। लेकिन, भैया, मैं तुझसे यह कहूँगा: चल, हम इस पूजनीय मूसा से प्रार्थना करें, और वह तुझसे मदद करेगा।'

इसके बाद, उन्होंने वासना से ग्रस्त व्यक्ति के साथ मिलकर प्रार्थना की; फिर उन्होंने परम पूज्य मूसा के अवशेषों में से एक हड्डी निकाली और उसे देते हुए कहा:

'इसे अपने शरीर पर रखो।'

ऐसा करने पर, भाई ने तुरंत अपने शरीर में गर्मी कम होती महसूस की; कामुक वासना ने उसे परेशान करना बंद कर दिया और उसके भीतर समाप्त हो गई; उस समय से, उसे इससे कोई और पीड़ा नहीं हुई। तब संत और वासना से ग्रस्त भाई ने मिलकर परमेश्वर की स्तुति की कि वह उन लोगों को महिमामय बनाता है जिन्होंने अपने जीवन में पवित्रता के द्वारा उसकी महिमा की है, मृत्यु के बाद भी, उन चमत्कारों के माध्यम से जो लोगों को पाप से शुद्ध करते हैं।

अपनी महान पीड़ाओं का वर्णन करने के तुरंत बाद, 18 जुलाई को, दीर्घकालीन कष्ट सहने वाले तपस्वी, हमारे पूजनीय पिता जॉन ने अपना प्राण प्रभु के हाथों में सौंप दिया[5178] , ताकि वह उसी के साथ राज्य कर सकें जिनके साथ उन्होंने पीड़ा सहन की थी। उनके पवित्र अवशेष, जो अक्षय चंगाई प्रदान करते हैं और शत्रु के विरुद्ध रक्षा का एक स्तंभ हैं, आज भी उसी स्थान पर अडिग बने हुए हैं जहाँ उन्होंने पहली बार तपस्या करते हुए खुद को कंधों तक دفن किया था, और बाद में, जब उन्हें अपने निधन का समय ज्ञात हुआ। इस दीर्घकालीन तपस्वी, हमारे पूजनीय पिता जॉन की प्रार्थनाओं के द्वारा (जिनका सम्माननीय शरीर, बहुत कष्टों के माध्यम से कामुक वासना पर विजय प्राप्त करके, परमेश्वर के घर में एक स्तंभ बन गया है), हम भी उस प्रकाश के स्तंभ की तरह मार्गदर्शन पाएं जो मूसा के सामने प्रकट हुआ था, – उस प्रतिज्ञात स्वर्गीय भूमि की ओर, जो दूध और शहद से परिपूर्ण है, जो स्तनपान करने वाले शिशुओं को, और मसीह के प्रिय यूहन्ना के समान, इस कुंवारी यूहन्ना को भी त्रिमूर्ति परमेश्वर की कृपा और महिमा से प्रदान की जाती है, जिसकी महिमा अब और अनंतकाल तक होती रहे। आमेन।

शहीद संत हायसिथि का कष्टकथा

18 जुलाई को स्मरण किया जाता है

यह पवित्र शहीद धर्मपरायण माता-पिता थियोक्लिटिस और थियोफाइला के पुत्र थे। उनका जन्म उस समय हुआ था जब बिशप हेराक्लियस अमास्त्रिस शहर की कलीसिया के प्रभारी थे[5179] , और उन्हें एक स्वर्गदूत ने उनका नाम

[5177] योसेफ कुलपिता याकूब के बारह बेटों में से एक थे। वे अपनी निर्दोषता और हृदय की सरलता के लिए प्रसिद्ध थे। अपने भाइयों द्वारा मिस्र में बेचे जाने के बाद, वे पुतीफार की पत्नी के प्रलोभनों के आगे नहीं झुके, जिसके घर में वे रह रहे थे (उत्पत्ति 39:1-23)। – इसीलिए दीर्घ-सहनशील यूहन्ना के जीवन के वृत्तांत में उन लोगों के लिए जोशुआ की विशेष मध्यस्थता का भी उल्लेख है, जो कामुक वासनाओं से अभिभूत होकर मदद के लिए उसकी ओर मुड़े।

[5178] संत जॉन की मृत्यु 12वीं शताब्दी के मध्य में हुई।

[5179] अमास्त्रिस का शहर, जो अब अमात्रा है, एशिया माइनर में पफ्लागोनिया के रोमन प्रांत के उत्तरी भाग में, यूक्सिन सागर के ठीक किनारे पर स्थित था, जिसे अब ब्लैक सी के नाम से जाना जाता है।

दयिा जो उनके सामने प्रकट हुआ था। जब वह तीन साल का था, तो उसने मसीह का नाम लयिा और एक मृत लड़के को जीवति कर दयिा; वह लड़का बाद में उसके साथ तपस्या का जीवन जीया और सद्गुणों में वृद्धि हुई। वृद्धावस्था प्राप्त करने और कई चमत्कार करने के बाद, एक बार उसने मूर्ख मूर्तपिूजकों को एक खोखले एल्म के पेड़ को नमन करते देखा। वह गया और उस पेड़ को काट दयिा। इसके लिए, उसे पकड़कर क्षेत्र के राज्यपाल, कावस्त्रसियिस के पास अमास्त्रसि शहर में ले जाया गया, जसिने आदेश दयिा कि पहले उसे बुरी तरह पीटा जाए—उसके दांत तोड़ दिए गए—फरि, रस्सयिों से बांधकर, जमीन पर घसीटा जाए और, अंत में, कैद कर दयिा जाए, जहाँ उसने अपनी आत्मा ईश्वर को सौंप दी[5180] ।

अगस्त

1 अगस्त

19 जुलाई (पुराने कैलेंडर के अनुसार)

इसी दनि, रयिाज़ान के राजकुमार संत रोमन ओलेगोवचि का नधिन हुआ, जो 1270 में होर्डे में शहीद हुए थे।

हमारी पूजनीय माता मक्रनिा का जीवन

19 जुलाई को स्मरण कयिा जाता है

संत मक्रनिा का जन्म कॉन्स्टेंटनि द ग्रेट[5181] के शासनकाल के दौरान कैपैडोसयिा में हुआ था। उनके माता-पति बेसलि और एमलियिा थे; वह उनके पहले बच्चे और बेसलि द ग्रेट, ग्रेगरी ऑफ़ नस्सिा और अन्य भाइयों और बहनों की बड़ी बहन थीं। इन सदाचारी माता-पति के कुल दस संतान थे: चार बेटे और छह बेटयिाँ। इस पहली बेटी का नाम जन्म से पहले ही उसकी माँ को एक सपने में दव्यि प्रकटवाक्य द्वारा दयिा गया था: अर्थात्, उसके जन्म के ठीक समय से ठीक पहले, उसकी माँ को नींद आ गई और उन्होंने सपने में देखा कि वह अपने अजन्मे बच्चे को अपनी बाहों में पकड़े हुए है। और एक दव्यि तेजस्वी और सम्माननीय पुरुष प्रकट हुआ, उसने बच्चे को स्नेह से देखा और तीन बार उसे 'थेक्ला' पुकारा, जसिसे यह संकेत मलिा कि यह बच्ची पवत्रि प्रथम शहीद थेक्ला के पवत्रि जीवन का अनुसरण करेगी और बनिा रक्त बहाए एक स्वैच्छकि शहीद बनेगी।

[5182]इस दृष्टि से जागने पर, एमलियिा ने इस बच्चे को जन्म दयिा और उसका नाम थेकला रखा; लेकनि उसके घर वाले और रश्तिेदार उसे उसकी दादी, संत मैक्रनिा के नाम पर मैक्रनिा कहना पसंद करते थे, जन्होंने मैक्समियिन गैलेरयिस के शासनकाल में मसीह के लिए अपने पति के साथ उत्पीड़न झेला और उत्पीड़न समाप्त होने तक सात वर्षों तक रेगस्तिान में भटकते हुए अत्यधकि कठनिाइयों को सहन कयिा। इस प्रकार, नवजात शशिु का दोहरा नाम था: दैवीय प्रकटीकरण से थेकला, और सामान्य प्रचलन से मैक्रनिा; और यह व्यर्थ नहीं था: उसे उन दोनों संतों से एक ईश्वरीय जीवन वरिासत में मलिा, और उसके हृदय में भी परमेश्वर के प्रति उतनी ही प्रबल प्रेम की आग जलती थी, जतिनी उनमें जलती थी। लोगों में उसे मक्रनिा कहने की प्रथा इतनी दृढ़ता से स्थापति हो गई कि कुछ लोग तो उसका पहला नाम भी नहीं जानते थे, और हर कोई उसे दूसरे नाम से ही बुलाता था: हमें वश्विास है कि उन दोनों नामों से इस मसीह की वधू का नाम स्वर्ग में, जीवन की पुस्तक में अंकति है।

[5180] पवत्रि शहीद हायसथि की मृत्यु की तथि अज्ञात है।

[5181] उन्होंने 306 से 337 तक शासन कयिा।

[5182] मैक्समिस गैलेरयिस ने 305 से 311 तक रोमन साम्राज्य के पूर्वी हस्सि पर शासन कयिा।

लड़की का पालन-पोषण कयिा गया, और जब वह उचति आयु तक पहुँच गई, तो उसकी माँ ने उसे शकि्षति करना शुरू कयिा और उसे पढ़ना-लखिना सखिाया, न तो अन्य माताओं की तरह मूर्तपूिजक कथाओं से शुरू कयिा, और न ही कवयिों की रचनाओं से, जनिमें बहुत कुछ ऐसा होता है जो एक छोटी लड़की के सुनने के लिए अनुचति है; उसने सुलैमान की बुद्धि की पुस्तक ([5183]) से, दाऊद की भजन-पुस्तक से या पवत्रि शास्त्र की अन्य पुस्तकों से उपयुक्त छंदों का चयन कयिा, वशिेष रूप से उनमें से जो ईश्वर की प्रार्थना और स्तुतयिा सद्गुणों की नैतकि शकि्षाएँ देती थीं। लड़की ने अच्छी तरह सीखा; वह प्रतभिाशाली थी; और दनि के हर समय उसके होठों पर धर्मग्रंथ के शब्द और भक्तपिूर्ण गायन रहता था: चाहे वह बस्तिर से उठे, कोई काम शुरू करे, खाने के लिए बैठे या मेज से उठे; वह दोपहर या शाम को बनिा गाए कभी नहीं जाने देती थी, भजन गाती थी, और, सोने जाते समय, वह नर्धिारति प्रार्थना करती थी। उसकी माँ ने उसे एक युवती के लिए उपयुक्त सलिाई-कढ़ाई सखिाई थी, और उसे अपना समय आलस्य या बचकाने खेलों में बतिाने की अनुमतनिहीं थी, बल्कि वह लगातार या तो कतिाबें पढ़ने या सलिाई-कढ़ाई में व्यस्त रहती थी।

जब वह युवती बारह वर्ष की हुई, तो वह इतनी सुंदर साबति हुई कि पूरे देश में उसकी जैसी कोई दूसरी लड़की नहीं थी; यहाँ तक कि चत्रिकार भी उसके चेहरे की सुंदरता को चत्रिति नहीं कर सके; इसलिए, कई अमीर और कुलीन पुरुषों ने उसके पति को अनुरोधों से परेशान कर रखा था, प्रत्येक अपनी संतान का वविाह उससे कराना चाहता था।

हालाँकि, मैक्रनिा के पति, जो एक समझदार व्यक्ति थे, ने उन सभी में से एक ऐसे युवक को चुना जो न केवल अपने कुलीन जन्म के लिए बल्कि अपनी बुद्धमित्ता और अच्छे चरत्रि के लिए भी प्रसद्धि था, और अपनी सुंदर बेटी मैक्रनिा का सगाई का रश्तिा उससे कर दयिा; लेकनि उन्होंने शादी तब तक के लिए टाल दी जब तक कि वह लड़की बड़ी होकर शादी के योग्य आयु में नहीं पहुँच गई। वह युवक धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा करता रहा और सफलतापूर्वक अपनी पढ़ाई में लग गया; लेकनि ईश्वर, जो असीम बुद्धमित्ता से सभी चीजों का प्रबंध करते हैं, ने अपने समय पर उसके सांसारकि जीवन को समाप्त कर दयिा और उसे शाश्वत जीवन में पहुंचा दयिा। तब उस धन्य कन्या ने, जो अपनी युवावस्था में भी एक वृद्ध महलिा की बुद्धि रखती थी, दृढ़ संकल्प कयिा कि वह कसिी से वविाह नहीं करेगी, बल्कि अपने शेष जीवन के लिए अपनी कुँवारी अवस्था को पवत्रिता में बनाए रखेगी। कई युवकों ने मैक्रनिा से वविाह करने का आग्रह कयिा, और यहाँ तक कि उसके अपने माता-पति और रश्तिेदारों ने भी उससे वविाह करने के लिए कहा; लेकनि उसने, जो अपनी उम्र से परे बुद्धमिानी रखती थी—जैसे कि वह कोई युवती न होकर एक वृद्ध महलिा हो—वविेक और समझदारी से उत्तर दयिा:

'एक युवती के लिए, जो एक वर के साथ सगाईशुदा हो, दूसरे से वविाह करना उचति नहीं है, इस प्रकार पहले की गई सगाई को अवैध रूप से तोड़ना; क्योंकि, प्राकृतकि कानून के अनुसार, वविाह एक ही संघ होना चाहिए, जैसे कि एक ही जन्म और एक ही मृत्यु होती है; और वह पुरुष जसिसे मेरी सगाई हुई है, और जसिे वे मृतक कहते हैं, वह मृत नहीं है—मैं पुनरुत्थान की आशा में वश्विास करती हूँ—बल्कि वह जीवति है और केवल सामान्य पुनरुत्थान के समय तक कसिी अन्य देश में दूर चला गया है; यह कसिी पत्नी के लिए कोई छोटा पाप और अपमान नहीं है कि जब उसका पति कहीं दूर हो, तो वह उसके प्रति वफादार न रहे, बल्कि कसिी और के साथ मलि जाए।

इस प्रकार वविेकी कन्या मैक्रनिा ने उन सभी को उत्तर दयिा जो उससे वविाह के बारे में बात करते थे और उसे शादी करने की सलाह देते थे, और उसने स्वयं को नष्किलंक कुँवारी अवस्था में सुरक्षति रखा; वह लगातार अपनी माँ के साथ रहती थी, मानो वह उनके जीवन की एक चौकस संरक्षक हो, और उसने उनकी सेवा लगन और वनिम्रता से की, नौकरानयिों द्वारा कए जाने वाले कामों से भी पीछे नहीं हटी, बल्कि उनके साथ मलिकर काम करती थी, मानो वह उनमें से ही एक हो। वशिेष रूप से जब उनके पति प्रभु में नधिन हो गए, तो वह अपनी वधिवा माँ के लिए उनके सभी दुखों और शोक में एक सदा मौजूद सेवकिा और सांत्वना देने वाली बन गईं; वह पूरे घर का परश्रिम से ध्यान रखती थी, जबकि अपने अन्य सभी भाइयों और बहनों के लिए, सबसे बड़ी होने के नाते, वह एक शकि्षकिा और मार्गदर्शक, एक दूसरी माँ की तरह थी, वशिेष रूप से अपने सबसे छोटे भाई पीटर के लिए, जो उनके पति की मृत्यु के समय पैदा हुआ था: जब वह अपनी माँ के गर्भ से इस दुनयिा में आया, तब तक उनके पति का नधिन हो चुका था; यह स्वयं संत मक्रनिा ही थीं जन्होंने इस सबसे छोटे भाई को पढ़ना और लखिना सखिाया, उसे समझदार और अच्छे चरत्रि का बनाया, और उसे एक पवत्रि जीवन जीने की शकि्षा दी; और वह बाद में एक संत बने, जो ईश्वर के संतों में सबसे कम नहीं थे।

[5183] सोलोमन की बुद्धि की पुस्तक पुराने नयिम की एक बाइबलि की पुस्तक है; इसे गैर-प्रामाणकि के रूप में वर्गीकृत कयिा गया है। इसकी सामग्री में ईश्वर की बुद्धि की स्तुति शामलि है।

जब उनके बाद जन्मे भाई बेसलि, वभिन्नि देशों में कई वर्षों का अध्ययन करने के बाद घर लौटे और अपनी युवावस्था में अपनी वद्यिा पर गर्व करने लगे, तो संत मक्रनिा ने अपने कोमल और दैवीय प्रेरति शब्दों के माध्यम से उन्हें जल्द ही ऐसी वनिम्रता की ओर ले लयिा कि उन्होंने सभी सांसारकि चीजों को त्याग दयिा और अपने लिए संन्यासी जीवन चुना। मसीह की इस सच्ची दासी ने अपने दूसरे भाई, नेवक्रैटयिस, को भी, जब वह अभी युवा था, अपनी शक्तिशाप्रद बातचीतों के माध्यम से ईश्वर के प्रति प्रेम और एक पवत्रि जीवन की ओर मोड़ दयिा: सब कुछ त्यागकर, नेवक्रैटयिस रेगस्तिान में चला गया, जहाँ, वृद्ध तपस्वयिों की सेवा करते हुए, उसने अपनी युवावस्था में ही अपना जीवन समाप्त कर लयिा।

इस समझदार कन्या के आग्रह पर, उसकी माँ, धन्य एमलिीया, अपनी शेष बेटयिों की शादी करने और अपने पुरुष तथा महलिा दासों को आजाद करने के बाद, उन्होंने इस व्यर्थ संसार की चतिाओं को त्याग दयिा और एक मठ में प्रवेश कर लयिा, ताकि दोनों—माँ और बेटी—भक्तिषु जीवन के संकल्प लेकर मसीह की वधू बनीं। कुछ दासयिों ने भी उनके साथ संसार त्यागकर मठ में प्रवेश करने की इच्छा व्यक्त की, और उन्होंने सब कुछ साझा कयिा: एक कोठरी, एक मेज़, एक वस्त्र; जीवन के लिए आवश्यक सब कुछ उनके बीच समान रूप से साझा कयिा जाता था; उन्होंने एक ही हृदय से, नम्रता, वनिम्रता और प्रेम में प्रभु की सेवा की, और उनके बीच कोई क्रोध, कोई ईर्ष्या, कोई घृणा, कोई तरिस्कार नहीं था—कुछ भी ऐसा नहीं जो ईश्वर को अप्रसन्न कर दे: वे व्यर्थ की इच्छाओं और अहंकार से पूरी तरह मुक्त थे। उनका गौरव इस बात में था कि कोई उन्हें नहीं जानता था; उनकी संपत्ति गरीबी में, उनका पोषण संयम में था; उन्होंने अपने शरीर से सभी सांसारकि चीजों को इस तरह झटक दयिा जैसे कि वे धूल हों, और वे दनि-रात भजन गातीं और धर्मग्रंथ पढ़तीं। उनका काम और श्रम से वश्रिाम एक ही था—ईश्वर का चतिन और प्रार्थना—जबकि वे शरीर की आवश्यकताओं की देखभाल और परश्रिम को सच्चे कार्य के बजाय तुच्छ कार्य मानते थे।

कौन सी भाषा उनके ईश्वर-प्रसन्न जीवन का वर्णन कर सकती है, जो उन्होंने तपस्या के महान कार्यों में बतिाया, जसिके द्वारा वे स्वर्गदूतों के समान हो गए? वे, मानो, स्वर्गदूतों और मानवता के बीच एक सेतु थे, जो सांसारकि मनुष्यों से श्रेष्ठ और पवत्रिता तथा संयम में स्वर्गदूतों के समकक्ष थे; वे स्वर्गदूतों से केवल इस बात में भन्नि थे कि स्वर्गदूत अदेह थे, जबकि उनके पास शरीर था। यदि कोई उन्हें स्वर्गदूतों से तुलना करे तो वह गलत नहीं होगा; वास्तव में, देहधारी होते हुए भी, उन्होंने अदेह प्राणयिों का अनुकरण कयिा, और ईश्वर-प्रेमी हृदय के साथ स्वर्ग में ईश्वर के समक्ष उनके साथ खड़े रहे। उन्होंने यह जीवन थोड़े समय के लिए नहीं, बल्कि वृद्धावस्था और मृत्यु तक जयिा।

जब आदरणीय एमलिीया, जो अब अपने जीवन के अंतमि पड़ाव में थीं, अपने परमधाम जाने के करीब पहुँच रही थीं और उनका शरीर कमजोर पड़ गया था, तो उनका सबसे छोटा बेटा पीटर, जो ईश्वर को प्रयि लगने वाला जीवन जीता था, उनके पास आया और संत मक्रनिा के साथ मलिकर अपनी माँ की बीमारी के दौरान उनकी देखभाल करने लगा। उनके नधिन के क्षण में, उनके बच्चे, मक्रनिा और पीटर, उनके शय्या के दोनों ओर बैठे और उनके अन्य भाइयों और बहनों के नाम पुकारे, जबकि उन्होंने उन सभी पर अपनी मातृ-स्नेहपूर्ण आशीर्वाद की वर्षा की, मानो वह कोई अनमोल खजाना हो। फरि, एक हाथ मक्रनिा पर और दूसरा पीटर पर रखकर, उन्होंने प्रभु की ओर मुड़कर कहा:

'हे प्रभु, मैं अपनी कोख के फलों का प्रथम फल और दशांश तुझको अर्पण करती हूँ: प्रथम फल—यह पहली संतान बेटी—और दशांश—यह सबसे छोटा पुत्र! पुराने नयिम में तूने आज्ञा दी थी कि प्रथम फल[5184] और फलों का दशांश[5185] तुझको लाया जाए: यह तुझको एक मनोहर बलदिान बने, और तेरी पवत्रिता उन पर उतरे!'

इन शब्दों के साथ, उसने अपनी पवत्रि आत्मा को ईश्वर के हाथों में सौंप दयिा। और उसके बच्चों ने अपनी माँ को सम्मान के साथ दफनाया, और उनके शरीर को उनके पति की ताबूत में, उनके पति की अवशेषों के बगल में रख दयिा: यह वही व्यवस्था थी जो उन्होंने अपनी मृत्यु से पहले की थी। इसके कुछ समय बाद, संत बेसलि द ग्रेट को कैपडोसयिा

[5184] 'प्रथम फल' से तात्पर्य फसल के पहले उपज से, नई गेहूँ से बनी पहली रोटी, पहले भेड़ के ऊन से, आदि से है; पुराने नयिम में, ये सभी इसके सेवकों – याजकों और लेवयिों – की देखभाल के लिए तम्बू में लाए जाते थे (नरि्ग. 23:19; Num. 15:19–21). मूसा की व्यवस्था में प्रथम फलों की मात्रा नरि्दष्टि नहीं है, लेकनि ऐसा माना जाता है कि यह कम से कम भूमि की सभी उपज का सोलहवां हस्सिा था।

[5185] एक दसवाँ अंश, अर्थात् दसवाँ हस्सिा। पुराने नयिम में (उत्पत्ति 14:20), इस शब्द का अर्थ भूमि, झुंड आदि की उपज का दसवाँ हस्सिा ईश्वर को अर्पति करना था। यह दसवाँ अंश लेवयिों के लिए था, जनिहें कोई भूमि आवंटति नहीं की गई थी और इसलिए उन्हें जीवकिोपार्जन के साधन की आवश्यकता थी। इसके बदले में, लेवयिों ने अपने दसवें हस्सिे का एक-दसवें भाग महापुजारी के भरण-पोषण के लिए दयिा (गनिती 18:21–32)।

के सेसरिया का आर्चबिशप नियुक्त किया गया और उन्होंने अपने भाई ग्रेगरी (जिन्हें निस्सा के नाम से जाना जाता है) को एक प्रेस्बिटर के रूप में नियुक्त किया; उन्होंने अपने दूसरे भाई, पीटर को भी अपने साथ शामिल होने के लिए आमंत्रित किया और उसे पुरोहित वर्ग में शामिल कर लिया; यह जानकर, संत मक्रिना अपने हृदय में प्रसन्न हुईं। नौ साल बाद, उन्होंने फिर से संत बेसिल के बारे में सुना कि वे प्रभु के पास चले गए थे, और वे बहुत दुखी हुईं, वे अपने भाई की मृत्यु पर नहीं बल्कि इस बात पर अधिक शोक मना रही थीं कि चर्च का एक ऐसा महान दीपक बुझ गया था और भक्ति का एक ऐसा स्तंभ गिर गया था। तब स्वयं संत मक्रिना के परमेश्वर के पास जाने का समय आ गया; उनके भाई, निस्सा के बिशप संत ग्रेगरी, उनके सम्मानजनक निधन के बारे में निम्नलिखित लिखते हैं।

[5186]बेसिल की मृत्यु के नौ महीने बाद, एंटिओक में बिशपों की एक परिषद बुलाई गई, जिसमें मैं भी उपस्थित था (ग्रेगरी कहते हैं); परिषद के बाद, मैं अपनी बहन मैक्रिना से मिलने और देखने के लिए निकल पड़ा; हम एक-दूसरे को बहुत लंबे समय से नहीं देखे थे – मुझे एरियनों द्वारा हर जगह सताए जाने के कारण झेली गई कई परेशानियों और कठिनाइयों के कारण हम नहीं मिल पाए थे। इसलिए, मैं उन्हें देखने के लिए निकल पड़ी: जब मैं बहुत दूर तक यात्रा कर चुकी थी और अपनी बहन के यहाँ पहुँचने ही वाली थी, तो मेरे आगमन से एक रात पहले, मुझे एक सपने में निम्नलिखित दर्शन हुआ। मुझे ऐसा लगा कि मैं अपनी बाहों में एक शहीद के अवशेष उठाए हुए था, जिससे तेज किरणें निकल रही थीं, जैसे सूरज की ओर उठाए गए एक चमकदार दर्पण से निकलती हों, इसलिए मेरी आँखें इस चकाचौंध भरे वैभव को देख नहीं पा रही थीं। यह दृश्य एक ही रात में तीन बार दोहराया, और मैं इसका कोई अर्थ नहीं समझ सका; और मुझे अपने दिल में एक अजीब सी उदासी महसूस हुई, इसलिए मैं अपनी यात्रा पर निकल पड़ा, यह सोचते हुए कि यह सपना कैसे पूरा होगा। जब मैं उस जगह के पास पहुँचा जहाँ धन्य मक्रिना ने एक दैवीय और स्वर्गीय जीवन जिया था, और जब कई लोग सड़क पर मुझे मिलने के लिए बाहर आए और सम्मानपूर्वक मेरा अभिवादन किया, तो मैंने अपने एक परिचित से अपनी बहन मक्रिना के बारे में पूछा: मुझे बताया गया कि वह गंभीर रूप से बीमार थी। मैं दुःख से भारी मन लेकर आगे बढ़ा; मठ पहुँचने पर, मैं पहले चर्च गया, जहाँ सभी नन हमारी प्रतीक्षा कर रही थीं। प्रार्थना और आशीर्वाद के बाद, मैंने देखा कि उनकी प्रमुख, मेरी बहन मक्रिना, ननों के बीच नहीं थीं, और मेरा दिल भारी हो गया। मैं उसकी कोठरी में गई और उसे बहुत बीमार पाया, वह बिस्तर पर नहीं बल्कि फर्श पर, एक कपड़े से ढकी लकड़ी की तख्ती पर लेटी थी; लकड़ी का सिरहाना भी एक कपड़े से ढका हुआ था। मुझे दरवाज़े में आते देख, वह झुकी और मेरी बाहों में गिर पड़ी: वह खड़ी नहीं हो सकती थी, लेकिन जहाँ तक वह अपन , बिस्तर से झुक सकती थी, उसने मुझसे झुककर प्रणाम किया; मैंने भी, बदले में, उसे जल्दी से उठाया, उसे उसी जगह वापस लिटा दिया, और आँसुओं से उसका चुंबन लिया। और उसने ईश्वर की ओर अपने हाथ फैलाए और कहा:

'हे प्रभु मेरे परमेश्वर, मैं तुझे धन्यवाद देती हूँ कि तूने मुझ पर यह अनुग्रह किया, मेरी इच्छा पूरी की, और अपनी दासी से मिलने के लिए अपनी दासी को भेजा।'

तब उसने अपनी बीमारी छिपाते हुए मुझसे बात करना शुरू किया: वह मेरी आत्मा को दुखी नहीं करना चाहती थी, इसलिए वह कभी-कभी एक हल्की कराह निकालती, अपनी बार-बार आने वाली आहों को रोकने की पूरी कोशिश करती, और शांत भाव से हम सबको देखती। जैसे ही वह गंभीरता से बोलने लगी, उसने बेसिल द ग्रेट का स्मरण किया; इससे मेरा हृदय भारी हो गया, और मैं अपने आँसू रोक नहीं सका। मेरे कड़वे आँसू देखकर, वह तुरंत बेसिल के बारे में बोलना बंद कर देती है और दूसरे विषय पर आ जाती है; उसने ईश्वर की अद्भुत व्यवस्था और उनकी देखभाल, आने वाले युग, मनुष्य को क्यों बनाया गया और वह कैसे नश्वर हुआ, कैसे अस्थायी मृत्यु के माध्यम से वह शाश्वत जीवन में प्रवेश करता है – इसके बारे में बोलना शुरू किया, और अन्य दैवीय रूप से प्रेरित प्रवचन दिए, जिससे हमें और उनकी अपनी आत्मा को महान लाभ और आनंद मिला: वह पवित्र आत्मा से परिपूर्ण थी: मानो अनुग्रह उसके होठों से ऐसे बह रहा हो जैसे किसी झरने से पानी, और उसका पूरा मन स्वर्गीय बातों में लगा हुआ था। अपना प्रवचन समाप्त करके, उसने मुझसे कहा:

'पिताजी, अब आपके लिए अपनी लंबी यात्रा से थोड़ा विश्राम करने और भोजन से अपने शरीर को बलवान करने का समय है।'

हालाँकि मैं उसे छोड़ना या हमारी सुखद बातचीत को समाप्त करना नहीं चाहती थी, जिसमें मुझे वास्तव में अपनी आत्मा के लिए शांति मिली थी, फिर भी मैंने उसकी अवज्ञा करने की हिम्मत नहीं की, क्योंकि यही उसकी इच्छा थी; और

[5186] यह परिषद 341 में हुई थी और इसका आयोजन चर्च के अभिषेक के अवसर पर किया गया था, जिसकी नींव सम्राट कॉन्स्टेंटाइन (306–337) द्वारा रखी गई थी, लेकिन जिसे उनके पुत्र, कॉन्स्टेंटियस के शासनकाल के दौरान पूरा किया गया था। परिषद में, चर्च के शासन के मामलों के संबंध में 25 नियम बनाए गए थे।

इस प्रकार मैं उससे वदिा हो गई। हमारे लिए पास के एक बहुत ही सुंदर बगीचे में, पेड़ों की छाया में आराम करने के लिए एक जगह तैयार की गई थी; लेकनि मुझे कसिी चीज़ से खुशी नहीं मलिी; मेरा दलि दर्द कर रहा था; मैं देख सकता था कि मेरी बहन मौत के करीब थी, और मैं अपने सपने के सच होने का इंतज़ार कर रहा था—एक सपना जो, जैसा कि मैंने पहले ही महसूस कर लयिा था, पूरा होना शुरू हो गया था, और जसिकी मैंने अपने लिए इस प्रकार व्याख्या की: शहीद की अवशेष बहन मैक्रनिा थीं, जन्हिोंने वास्तव में ईश्वर के प्रति प्रेम से प्रेरति होकर कई वर्षों तक तपस्या के कार्यों में स्वयं को थका दयिा था, अपने शरीर को एक शहीद की तरह दंडति कयिा था और पाप से पूरी तरह मुक्त हो गई थीं; अवशेषों से नकिलने वाली तेज करिणें उनके भीतर नविास करने वाले पवत्रि आत्मा की कृपा का प्रतीक थीं।

मेरे दुख भरे वचिारों के बीच, उस धन्य ने, आत्मा द्वारा यह जानकर, मुझे संदेश भेजा कि उसकी बीमारी कम हो रही है और वह बेहतर महसूस कर रही है। उसने ऐसा इसलिए कयिा ताकि मैं न तो शोक करूँ और न ही उसके ठीक होने की आशा खो दूँ; फरि भी, ऐसा करते हुए, उसने मुझे सांत्वना दी, और अपने शारीरकि स्वास्थ्य के बारे में नहीं बल्कि अपनी आध्यात्मकि भलाई के बारे में रूपक रूप में बात की: फरि, इस अच्छी खबर से प्रसन्न होकर, मैंने कुछ भोजन लयिा और थोड़ी देर सोया। बाद में, मैं उसे फरि देखने गया, और उसने एक बार फरि अपनी और हमारे पूरे परविार पर हुई सभी दयालुताओं को याद करते हुए एक भावुक बातचीत शुरू कर दी; और इसके लिए उसने ईश्वर का गहरा धन्यवाद कयिा। जहाँ तक मेरी बात है, मैं उसके शब्दों को सुनता रहा और उनमें खोया रहा, मन ही मन सोचते हुए: काश यह दनि और भी वास्तवकि होता, ताकि मैं उसके शब्दों का और भी अधकि आनंद ले पाता! दनि तो पहले ही समाप्ति की ओर बढ़ रहा था, और हमारे लिए चर्च में शाम की प्रार्थना सभा में जाने का समय हो गया था। रोगी ने हमसे वदिा ली और ईश्वर से भक्तपिूर्वक प्रार्थना करने लगी।

अगले दनि, जब मैं उसे देखने गया (कहते हैं संत ग्रेगरी), तो मैं पहले से ही देख सकता था कि वह मरणासन्न थी: मैंने देखा कि उसकी सारी शारीरकि शक्ति उससे चली गई थी, और मैं बहुत दुखी हुआ। उसने मेरी उदासी को भाँप लयिा और वभिन्नि दैवीय प्रेरति शब्दों तथा शकि्षाप्रद कथाओं से मुझे सांत्वना देने लगी, जबकि वह स्वयं आध्यात्मकि आनंद से परपिूर्ण थी: उसे न तो मृत्यु का भय था और न ही थोड़ी सी भी बेचैनी, बल्कि केवल ईश्वर में आशा थी। दोपहर तक वह और भी कमजोर हो गई थी; उसने हमसे बात करना बंद कर दयिा और प्रार्थना में अपने हाथ उठाकर ईश्वर से संवाद करने लगी। उसने इतनी धीमी आवाज़ में प्रार्थना की कि हम मुश्कलि से ही उसे सुन पा रहे थे। उसकी प्रार्थना में नम्निलखिति शब्द शामलि थे:

'हे प्रभु, आपने हमसे मृत्यु का भय दूर कर दयिा है; आपने ऐसा प्रबंध कयिा है कि इस क्षणकि जीवन का अंत हमारे लिए एक शाश्वत और बेहतर जीवन की शुरुआत होगा। आप थोड़ी देर के लिए मृत्यु की नींद से हमारे शरीरों को शांत करते हैं और अंतमि तुरही की ध्वनि पर उन्हें फरि से जगाएंगे। आप हमारे नश्वर शरीरों को, जो आपके हाथों द्वारा बनाए गए हैं, पृथ्वी को एक खजाने के रूप में सौंपते हैं; और जो कुछ आप इसे देते हैं, उसे आप उससे वापस ले लेंगे, और जो नश्वर और अनाकर्षक है, उसे अमर और महमिामय में बदल देंगे। आपने हमें शाप और पाप से मुक्त कयिा है; आपने साँप के सरि को कुचल दयिा है[5187] और उसके जबड़ों से नगिलए गए मनुष्य को छीन लयिा है। आपने नरक के द्वार तोड़ डाले हैं और मृत्यु पर राज करने वाले की शक्ति को वश में कर, हमारे लिए पुनरुत्थान का मार्ग खोल दयिा है; आपने अपने भयभीतों को एक चह्नि, अपना पवत्रि क्रूस, हमारे जीवन को मजबूत करने और संरक्षति रखने के लिए दयिा है। हे अनंत ईश्वर, जनिके प्रति मैंने अपनी माँ के गर्भ से ही स्वयं को सौंप दयिा है, जन्हिें मैंने अपनी आत्मा की सारी शक्ति से प्रेम कयिा है, और जन्हिें मैंने अपने यौवन से अपनी आत्मा और शरीर अर्पति कयिा है! मेरी ओर एक तेजस्वी स्वर्गदूत भेजो, जो म मुझे प्रकाश और शीतलता के स्थान पर ले जाए, जहाँ वशि्राम का जल[5188] और पवत्रि पतिरों की गोद[5189] है! हे प्रभु, जसिने उस चोर के लिए स्वर्ग के द्वार पर अड़चन बनी आग की तलवार को हटा दयिा था, जो आपके साथ सूली पर चढ़ाया गया था और जसिने स्वयं को आपकी दया पर सौंप दयिा था, मुझे भी, अपने सेवक को, अपने राज्य में याद कीजिए: क्योंकि मैं भी आपके साथ स्वयं को सूली पर चढ़ा चुका हूँ, आपके भय से अपने शरीर को दण्डति करते हुए और हमेशा आपके आज्ञाओं का पालन करते हुए। वह भयानक खाई मुझे आपके चुने हुओं से अलग न करे, और ईर्ष्यालु मेरे मार्ग में बाधा

[5187] अर्थात्, शैतान (देखें उत्पत्ति 3:15)।

[5188] एक रूपक अभव्यिक्ति। जैसे पानी एक कीमती पेय है जो एक जलते हुए, रेतीले रेगस्तिान से गुजरने वाले यात्री की ताकत को बहाल करता है, वैसे ही स्वर्ग के राज्य के मार्ग पर चलने वाले यात्री के लिए स्वर्गीय नविासों में अकथनीय आशीर्वाद तैयार कए गए हैं।

[5189] 'गर्भ' – छाती। एक रूपक अभव्यिक्ति (देखें लूका 16:23)।

न डालें; मेरे पाप—जो मैंने अपनी स्वाभाविक कमजोरी के कारण आपके सामने वचन, कर्म या विचार में किए हैं—आपकी दृष्टि में न आएँ! मुझे क्षमा करें, क्योंकि आपके पास पापों को क्षमा करने की शक्ति है! ऐसा प्रबंध करें कि मेरी आत्मा, शरीर से मुक्त होकर, आपके सामने निर्दोष, पापरहित और अशुद्धिरहित प्रकट हो; यह आपके सामने एक धूपदान के समान हो।

इन शब्दों के साथ, उस धन्य महिला ने अपनी आँखों, अपने मुँह और अपने हृदय पर क्रॉस का चिह्न बनाया, और प्रार्थना के साथ अपनी आत्मा को ईश्वर के hands[5190] में सौंप दिया। ऐसा प्रतीत हुआ मानो वह सामान्य नींद में सो गई हो: उसकी आँखें बंद थीं, उसका मुँह बंद था, उसके हाथ उसकी छाती पर ठीक से रखे हुए थे, और उसका पूरा शरीर इतना अच्छी तरह से ढका हुआ था कि उसे मानव हाथों से किसी आवरण की आवश्यकता नहीं थी। जहाँ तक मेरी बात है, मैंने उन्हें देखा और जोर-जोर से रोया; उसी प्रकार ननियों ने भी, जिन्होंने तब तक अपनी आध्यात्मिक माता को रोने से परेशान करने के डर से अपने आँसू रोके हुए थे और अपने भीतर का दुख छिपाए रखा था, जब उन्होंने देखा कि वह पहले ही साँसें लेनी बंद कर चुकी थीं, तो तुरंत जोर से रोने लगीं और जोर-जोर से सिसकने लगीं। बड़ी कठिनाई से उन्हें रोने से रोककर अपने सामान्य गायन और प्रार्थना को फिर से शुरू करने के लिए मनाया जा सका।

उसके बाद, मैंने उन्हें थोड़ी देर के लिए कमरे से बाहर जाने के लिए कहा और मृतक के साथ रह गया, साथ ही कुछ लोग जो उनके जीवनकाल में उनके सबसे करीबी थे और उनकी सेवा कर चुके थे; उनमें वेस्टियाना नाम की एक महिला भी थी। वह एक सेनेटोरियल परिवार से थी; उसकी शादी हो गई थी, लेकिन वह अपने पति के साथ ज़्यादा समय तक नहीं रह सकी, क्योंकि वह जल्द ही गुजर गया, और विधवा होने के बाद, उसने पुनर्विवाह नहीं करना चाहा; लेकिन, इस संसार के वैभव, धन-संपत्ति, सुंदरता और सुखों को त्यागकर, वह धन्य मक्रिना के पास गई, उन्हें अपनी विधवा-जीवन की कोमल संरक्षक के रूप में पाया, और कई वर्षों तक उनके साथ रही, और सफलतापूर्वक स्वयं को मठवासी जीवन के लिए समर्पित कर दिया। मैंने इस वेस्टियाना से कहा:

'अब हमें इस मृत कन्या के शरीर को स्वच्छ वस्त्रों से ढकना चाहिए।'

हालाँकि, वेस्टियाना ने एक अन्य नन, लैम्पैडियो की ओर मुड़कर पूछा:

'हमारी आध्यात्मिक माता ने उनके अंतिम संस्कार के संबंध में क्या निर्देश दिए थे?'

लम्पाडियो ने आँखों में आँसू लिए मुझसे कहा:

'हमारी इस पूजनीय माता का निधन एक पवित्र जीवन से सुशोभित था; और जैसे उन्होंने अपने सांसारिक जीवन के दौरान कभी सांसारिक आभूषणों की चाह नहीं की, वैसे ही उन्होंने अपनी अंत्येष्टि के लिए भी कोई तैयारी नहीं की। यहाँ एक मोटे बालों वाला चोगा है, यहाँ एक साधारण चोगा है, यहाँ एक घिसा हुआ लबादा और सिर ढकने का आवरण है, यहाँ कुछ जर्जर चप्पलें हैं – यही उसकी सारी संपत्ति है, और कुछ भी कहीं छिपा नहीं है, न किसी संदूक में न ही किसी गर्भगृह में: उसकी एक ही गर्भगृह और एक ही खजाना था – दिव्य निवास; वहाँ उसने अपना सब कुछ रख दिया, और पृथ्वी पर कुछ भी पीछे नहीं छोड़ा।

तब मैंने (संत ग्रेगरी कहते हैं) उन ननियों से कहा:

'मेरे पास मेरी नई चादर है, जिसे मैंने अपनी ही कब्र के लिए तैयार किया है; क्या वह प्रसन्न होंगी यदि हम उन्हें मेरी इस चादर से ढक दें?'

ननियों ने मुझसे उत्तर दिया:

'भले ही वह जीवित होतीं, तो भी वह आपका उपहार अस्वीकार नहीं करतीं, क्योंकि वह आपको सम्मान और प्रेम करती थीं: उन्होंने आपको एक संत के रूप में सम्मानित किया, एक रिश्तेदार के रूप में प्रेम किया, और वास्तव में, एक भाई बहन के लिए अजनबी नहीं होता।'

तब मैंने दफ़न के लिए लपेटने वाला वस्त्र मंगवाया और वेस्टियाना तथा लैम्पाडियो को मृतक को उसमें लपेटने का निर्देश दिया।

जब वेस्टियाना संत मक्रिना के सम्मानित शरीर को कपड़े पहना रही थी, तो उसने उनकी गर्दन से एक लोहे का क्रॉस और लोहे की ही एक अंगूठी उतारी, जिस पर एक क्रॉस उकेरा हुआ था, और मुझसे कहा:

'देखो, मसीह की वधू ने गर्दन के चारों ओर यह आभूषण पहना हुआ है!'

[5190] संत मक्रिना की मृत्यु लगभग 380 ईस्वी में हुई।

तब मैंने वह अंगूठी अपने लिए ले ली और क्रॉस वेस्टयिाना को दे दयिा। जब उसने ऐसा कयिा, तो उसने मुझसे कहा:

'पतिाजी, आपने अपने लिए बेहतर हस्सिा चुना है; इस अंगूठी में प्रभु के पवत्रि क्रूस की जीवन-दायक लकड़ी का एक टुकड़ा है।'

फरि उसने मुझसे फरि कहा:

'पतिाजी, इस अद्भुत चीज़ को देखिए!'

और, दविंगत की छाती को थोड़ा सा खोलकर, उसने मुझे उसके शरीर पर एक घाव का नशिान दखिाया जो कभी लगा था और मुझे वह बताया जो उसने स्वयं उससे व्यक्तगित रूप से सुना था:

– जब वह धन्य महलिा अपनी माँ के साथ रह रही थी, तब ठीक इसी जगह पर उसे एक दर्दनाक और لاعلاج फोड़ा हो गया था; उसे चीरकर पकाना पड़ा, जसिके लिए कुशल चकित्सिकों की मदद लेनी आवश्यक थी: अन्यथा यह उसके पूरे शरीर में फैल जाता, उसके हृदय को प्रभावति करता और उसकी मृत्यु का कारण बनता। उसकी माँ ने उस पर ज़ोर दयिा कि वह वह फोड़ा डॉक्टरों को दखिाए और उनका इलाज कराए, यह कहते हुए कि चकित्सिा की कला लोगों के ठीक होने के लिए ईश्वर द्वारा दी गई है। लेकनि उसे कसिी पुरुष को अपना नग्न स्तन दखिाना और उसे छूने देना बहुत मुश्कलि लगा, और उसने फैसला कयिा कि डॉक्टरों को दखिाने से बेहतर है कि वह असहनीय दर्द सहन करे और मर भी जाए।

एक शाम, हमेशा की तरह अपनी माँ की ज़रूरतों को अपने हाथों से पूरा करने के बाद, वह प्रार्थना कक्ष में चली गई और खुद को बंद करके, पूरी रात प्रार्थना में वहीं रही, ज़मीन पर सरि झुकाकर और अपने आँसुओं से धरती को भीगते हुए, आत्मा और शरीर के सच्चे चकित्सिक, स्वयं ईश्वर से ही, ठीक होने की प्रार्थना करती रही। फरि, अपने आँसुओं से भीगी हुई मट्टिी का एक मुट्ठी भरकर, उसने उसे उस घाव पर लगा दयिा। अगले दनि, उसकी माँ, उसके लिए दुखी होकर, फरि से उससे वनिती करने लगी कि वह डॉक्टरों को अपना घाव दखिा दे। लेकनि उसने जवाब दयिा:

'माँ, मेरे लिए इतना ही काफी होगा, अगर आप अपना हाथ मेरे घाव पर रखकर उस पर क्रॉस का चह्नि बना दें।'

और जब उसकी माँ ने अपनी पोशाट के नीचे हाथ डालकर और क्रूस का चह्नि बनाकर, उस घाव वाले स्थान को छुआ, तो उन्होंने कोई घाव नहीं पाया: ईश्वर की शक्ति से वह ठीक हो गई थी, और घाव और दर्द गायब हो गए थे; जहाँ घाव था वहाँ केवल एक छोटा सा नशिान बचा था, जो ईश्वर के चमत्कार की याद दलिाता था।

वेस्टयिाना ने इसका वर्णन इस प्रकार कयिा, और संत ग्रेगरी ने इसे दर्ज कयिा। उन्होंने उनके अंतमि संस्कार का भी वस्तिार से वर्णन कयिा; हालाँकि, संक्षेप के लिए, हम केवल नम्निलखिति कहेंगे। मृत्यु में संत मैक्रनिा का चेहरा इतना सुंदर था कि वह कसिी अद्भुत तेज से चमक रहा था। लोगों की एक बड़ी भीड़ उसके अंतमि संस्कार के लिए उमड़ पड़ी, जो कसिी ने आमंत्रति नहीं की थी, बल्कि ईश्वर ने इकट्ठा की थी। उपस्थति सभी लोग जोर-जोर से रोने लगे; भीड़ ने संत की अवशेषों को धारण कए हुए ताबूत को छूने के लिए एक-दूसरे को धक्का देना शुरू कर दयिा, और भीड़ के भारी दबाव के कारण, वे उन्हें कब्र तक बड़ी मुश्कलि से ले जा सके। उन्हें उनके माता-पतिा के ताबूत में, उनकी माँ के अवशेषों के बगल में, सुलाया गया: क्योंकि उन्होंने यह नयिम बनाया था कि जनि लोगों ने अपना जीवन एक साथ बतिाया हो, उनके शरीर एक साथ ही वश्राम करें। उनके चमत्कारों में से, उनके भाई और जीवनीकार संत ग्रेगरी केवल एक का उल्लेख करते हैं: कि कैसे, अपने जीवनकाल में, उस पूजनीय महलिा ने एक ऐसी युवती को चंगा कयिा जो एक आँख से अंधी थी (उसे मोतयिाबंदि था), उस युवती की प्रभावति आँख पर चूमकर; उनके पवत्रि होठों के चुंबनों से, मोतयिाबंदि गायब हो गया, और आँख की रोशनी वापस आ गई। उनके अन्य चमत्कारों के संबंध में, स्वयं संत ग्रेगरी नम्निलखिति कहते हैं:

'ऐसी और भी कई बातें हैं जो मैंने उनके साथ रहने वाली और उनके कर्मों को अच्छी तरह जानने वाली ननों से सुनी हैं, जन्हिें मैंने इस वृत्तांत में दर्ज नहीं कयिा है, क्योंकि जब लोगों को ऐसी बातें बताई जाती हैं, तो वे केवल उन्हीं कर्मों पर वश्वास करते हैं जन्हिें वे स्वयं करने में सक्षम हैं, जबकि वे अपनी शक्तयिों से परे वाली बातों पर वश्वास नहीं करते और उन्हें झूठ मानते हैं। इसलिए, मैं यह नहीं बताऊँगा कि कैसे, अकाल के दौरान, जो गेहूँ वह अपने हाथों से ज़रूरतमंदों को बाँटती थी, वह कभी खत्म नहीं हुआ, न ही जो रोटी वह भूखे लोगों को देती थी – न ही उसके अन्य उल्लेखनीय चमत्कार: बीमारयिों का शीघ्र उपचार, दुष्ट आत्माओं का नष्किासन, भवष्यिद्रष्टि और भवष्यि के पूर्वानुमान। यद्यपि यह सब वास्तव में हुआ, और यह सब सत्य है, फरि भी मैं इसे चुपचाप छोड़ दूँगा, कहीं ऐसा न हो कि मैं कमजोर लोगों के अवश्वास के पाप का दोषी पाया जाऊँ, जो अपने शरीर के दास होकर यह नहीं जानते कि परमेश्वर अपनी देनयिों को वश्वास के अनुसार कैसे बाँटता है: जो लोग थोड़े वश्वास वाले होते हैं, उन्हें वह कम देनयिाँ देता है, और जो अधकि वश्वास वाले होते हैं, उन्हें वह अधकि देता है।

हम, तथापि, परमेश्वर की सर्वशक्तिमान शक्ति में विश्वास करते हुए, पिता और पुत्र और पवित्र आत्मा की महिमा करते हैं, अब और सदा और युगानुयुग, आमीन।

कॉन्टाकियन, स्वर 4:

हे पूजनीय मक्रिना, तुमने पूरे हृदय से सदाचारी ईश्वर से प्रेम किया; और इस सम्मानित क्रूस को अपने कंधों पर उठाकर, तुमने उत्साहपूर्वक उनका अनुसरण किया: इसीलिए तुम्हें अपने पापों की क्षमा प्राप्त हुई।

हमारे पूजनीय पिता डिया का जीवन

19 जुलाई को स्मरण किया जाता है

रेवरेंड दिया का जन्म सीरिया के एंटिओक में हुआ था; वे ईसाई माता-पिता के घर जन्मे, भक्ति में पाले गए, और अपनी युवावस्था से ही तपस्या का अभ्यास करने लगे; ईश्वर-प्रेरित पुरुषों द्वारा पुण्यपूर्ण संन्यासी जीवन में शिक्षित होकर, उन्होंने अदृश्य शत्रु – शैतान – और निकटतम शत्रु, अपने ही शरीर के विरुद्ध महान संघर्ष किया, जिसने उनकी आत्मा को प्रलोभन में डाला। उन्होंने निरंतर प्रार्थना के द्वारा शैतान पर विजय प्राप्त की, और उपवास तथा जागरण के द्वारा अपने शरीर को वश में किया; अन्य कई कठोर तपस्याओं द्वारा उन्होंने अपने सांसारिक शरीर को हर तरह से वश में किया, और शरीर को आत्मा के अधीन किया। वे बहुत कम खाते थे, और हर दिन नहीं, बल्कि एक दिन छोड़कर या दो दिन में एक बार ही खाते थे; वास्तव में, वे अक्सर पूरे सप्ताह बिना भोजन या नींद के बिता देते थे। ऐसी आत्म-संयम के द्वारा स्वयं पर विजय प्राप्त करके और आध्यात्मिक शत्रु को परास्त करके, उन्होंने निर्लिप्त जीवन की उच्चतम अवस्था प्राप्त की और पवित्र आत्मा का एक शुद्ध वासस्थान बन गए: ईश्वर की कृपा उनमें निवास करती थी, और वे कर्म और वचन दोनों में एक शक्तिशाली व्यक्ति बन गए – उन्होंने चमत्कार किए, कई लोगों को मोक्ष का मार्ग दिखाया, और उनके द्वारा स्वर्गीय पिता की महिमा हुई। वह काफी समय तक अंतीयक में रहे; फिर परमेश्वर ने उन्हें एक दर्शन में कोंस्टेंटिनोपल जाने की आज्ञा दी, ताकि वे लोगों की और भी अधिक सेवा कर सकें। पहले तो उन्होंने इस दर्शन पर विश्वास नहीं किया और उन्हें डर था कि यह शैतान की कोई चाल हो सकती है, क्योंकि वे जानते थे कि शैतान भी स्वयं को *'ज्योति के स्वर्गदूत'* के रूप में प्रकट कर सकता है (2 कुरिन्थियों 11:14)। लेकिन जब उन्हें दूसरी बार वही दिव्य प्रकटवाणी और आज्ञा मिली, और इसके अलावा उस शहर को भी दिखाया गया जहाँ वे कभी नहीं गए थे—अर्थात्, एक दर्शन में उन्होंने पूरे कॉन्स्टेंटिनोपल को ठीक वैसा ही देखा जैसा वह है—तब उन्होंने परमेश्वर की इच्छा का पालन किया, जो सभी चीजों को भलाई के लिए करता है, और, अंतीयक छोड़कर, कॉन्स्टेंटिनोपल पहुँचे। शहर में प्रवेश करने और परमेश्वर की पवित्र कलीसियाओं, महलों और भव्य नागरिक भवनों को देखने पर, वह चकित रह गया: उसने यह सब परमेश्वर द्वारा उसे दिखाए गए प्रकटवचन में देखा था, और वहाँ उसे यकीन हो गया कि अंतीयक में रहते हुए जो दर्शन उसे हुआ था, वह सत्य था। न केवल शहर में बल्कि आसपास के ग्रामीण इलाकों में भी घूमते हुए, उन्हें शहर के बाहर एक सुनसान जगह मिली जहाँ प्राचीन मूर्तिपूजक कब्रें थीं और कई राक्षस निवास करते थे; गुजरने वाले लोग राक्षसों के भूत-प्रेत और भयावह दृश्यों के कारण इस जगह से बहुत डरते थे; लेकिन उसे यह जगह पसंद आ गई, और, खुद को क्रूस और प्रार्थना की शक्ति से लैस करके, मानो वे राक्षसों के खिलाफ हथियार हों, वह वहीं बस गया, और अपने लिए एक छोटी सी झोपड़ी बना ली। राक्षसों ने दिन-रात उसे जो-जो तकलीफें दीं, उन सबको गिनाना असंभव है। वे विभिन्न अजीब साक्षात रूपों में उस पर लगातार हमला करते रहे, उसे डराने और उस जगह से भगाने की कोशिश में; लेकिन उसने, स्वर्ग के राजा के एक बहादुर योद्धा की तरह, मसीह के नाम का आह्वान किया—जो दुष्टात्माओं के लिए भयानक है—और निडर होकर उनका साहसपूर्वक विरोध किया और उन पर विजय प्राप्त की। यह जानने की इच्छा से कि क्या प्रभु ने उन्हें उस स्थान पर रहने का आशीर्वाद दिया था, उन्होंने त्रिमूर्ति में एक ईश्वर से इसके लिए तीन बार प्रार्थना की और, अपनी सूखी लाठी लेकर, उसे जमीन में ठोक दिया, यह कहते हुए:

'पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम पर! यदि यह लाठी यहाँ उगकर जड़ पकड़ लेगी, तो मैं भी यहीं रहूँगा।'

लेकिन परमेश्वर, जो अपने भय रखने वालों की इच्छाओं को पूरा करते हैं और उनकी प्रार्थनाओं को स्वीकार करते हैं, ने अपने संत की प्रार्थना सुनी और उसकी विनती को मंजूरी दे दी: उन्होंने सूखी लाठी को नमी से जीवित कर

दयिा; और उस डंडे ने जड़ पकड़ ली, उसमें टहनयिाँ नकिलीं, और वह धीरे-धीरे बढ़ने लगा, यहाँ तक कि कई वर्षों के अंत में वह एक वशिाल ओक का पेड़ बन गया, जो बाद में, उस पूजनीय की मृत्यु के बाद, सौ नहीं बल्कि कई सौ वर्षों तक खड़ा रहा, जब तक कि ईसाई धर्म में ऑर्थोडॉक्सवाद फलता-फूलता रहा। रेवरेंड डीई ने, यह देखकर कि सूखी लाठी में जड़ें जम गई थीं, यह समझ लयिा कि यह प्रभु की इच्छा थी कि वह उस स्थान पर रहें। उन्होंने राक्षसों के वरिुद्ध और भी दृढ़ता से खुद को सशस्त्र कयिा, और उस स्थान को उनके दुष्ट भूत-प्रेतों और भयावहता से शुद्ध कयिा। दैत्यों ने लंबे समय तक उससे लड़ाई की, लेकनि वे न तो उस पर काबू पा सके और न ही उसे उस जगह से भगा सके; इसके बजाय, वे खुद ही हारे हुए और भागकर वहां से चले गए। इस प्रकार अपनी प्रार्थनाओं के द्वारा उस जगह को दैत्यों से शुद्ध करने के बाद, संत वहां स्वर्गदूतों की तरह रहे, दनि-रात ईश्वर की महमिा करते हुए, और ईश्वर की कृपा से अपना जीवन-यापन करते हुए। तब लोगों को उनके बारे में पता चलने लगा। स्थानीय नविासयिों ने, यह देखकर कि साधु इतने भयानक स्थान पर बस गए थे—जहाँ से गुजरना भी खतरनाक था—पहले तो हैरान रह गए, लेकनि फरि उनके पास आने लगे। जब उन्होंने देखा कि उसके सेल में कुछ भी नहीं है, तो वे उसके लिए जीवन की आवश्यक वस्तुएँ लाने लगे; और उसने जो भी उसके पास आते थे, उन्हें मोक्ष का मार्ग दखिाया और ईश्वर-प्रेरति शब्दों से उनका उत्थान कयिा; और जो कुछ भी उसके पास लाया जाता था, उससे वह अपने आगंतुकों का सत्कार करता था, साथ ही गरीबों और रास्ते से गुजरने वाले यात्रयिों को भी खलिाता था। उसकी ख्याति दूर-दूर तक फैल गई, वशिेष रूप से जब, उसके भीतर नविास करने वाले परमेश्वर की कृपा से, उसने लोगों के रोगों को ठीक करना शुरू कर दयिा; रोगयिों की भीड़ उसके पास आने लगी, और उसने जल्द ही उन्हें न केवल शारीरकि बल्कि आध्यात्मकि स्वास्थ्य भी प्रदान कयिा: शारीरकि रोगों पर उन्होंने प्रार्थना को उपचार के रूप में लगाया, जबकि उन्होंने आध्यात्मकि घावों पर सद् उपदेशों से पट्टी बाँधी, लोगों को करुणा के लिए प्रेरति कयिा और उन्हें पश्चाताप करने के लिए मनाया।

उस समय, धर्मपरायण और मसीह-प्रेमी ज़ार थयिोडोसयिस द यंगर[5191] , जो थयिोडोसयिस द ग्रेट के पोते थे, का शासन था। सम्माननीय दीई के बारे में सुनकर, वे स्वयं उनसे मलिने आए; वे उनके जीवन के तरीके और सांसारकि वस्तुओं से उनकी नर्लिप्तिता को देखकर चकति हुए, और उनके होठों से नकिली आत्मा-रक्षक शकि्षाओं की कृपा से वे भावुक हो गए। वे उस सूखी लाठी से भी चकति थे जसिमें जड़ें जम गई थीं और जसिसे एक पेड़ उग आया था: उन्होंने अपने शाही खर्च पर आदेश दयिा कि वहाँ एक चर्च और एक मठ बनाया जाए, ताकि पूजनीय पति वहाँ कई लोगों का मार्गदर्शन कर सकें और उन्हें मोक्ष के मार्ग पर ले जा सकें, जबकि परम पावन पैट्रआर्क एटकिस ने पूजनीय पति को पुरोहति पद की दीक्षा स्वीकार करने के लिए मना लयिा। इस प्रकार, ईश्वर-प्रसन्न डीआई अपने चारों ओर इकट्ठा हुई भ्रातृत्व के मठाधीश बने, उनके पास आने वाले सभी लोगों के लिए एक गौरवशाली शकि्षक, आत्मा और शरीरों के एक चमत्कारी उपचारक, और वे पूरे राजधानी के लिए एक आशीर्वाद थे। और उनका मठ उन लोगों के लिए एक शांतपिूर्ण आश्रय बन गया जनिके पास अपना सरि रखने के लिए और कोई जगह नहीं थी। मठ में पानी की कमी थी, क्योंकि वह क्षेत्र शुष्क था, और पानी को दूर से लाना पड़ता था। इसलिए, भाइयों ने माननीय पति से मठ के भीतर एक कुआँ खोदने की अनुमति देने के लिए कहा, न केवल मठ की अपनी जरूरतों के लिए, बल्कि वहाँ आने वालों के लाभ के लिए भी। संत ने उनकी वनिती मान ली; उन्होंने बहुत समय तक कुआँ खोदा और काफी गहरा कर लयिा था, लेकनि फरि भी पानी नहीं मलिा: ज़मीन पहाड़ी और पथरीली थी। भकि्षु नराश हो गए थे, और मजदूर काम बंद करना चाहते थे, क्योंकि उन्होंने पानी मलिने की उम्मीद छोड़ दी थी; तब रेवरेंड साइट पर आए और एक फावड़ा लेकर आदेश दयिा कि उन्हें कुएँ में उतारा जाए; जब उन्हें आधा नीचे उतार दयिा गया, तो उन्होंने जसि टोकरी में उन्हें उतारा जा रहा था, उसे रोकने का आदेश दयिा, और सर्वपवत्रि त्रमिूर्ति का नाम लेते हुए अपनी फावड़ी से मट्टिी की दीवार पर तीन बार वार कयिा; और तुरंत ही वहाँ से पानी का एक प्रचुर झरना फूट पड़ा; वे मुश्कलि से कुएँ के तल पर काम कर रहे मजदूरों को बाहर नकिाल पाए थे, तभी पानी इतनी तेजी से बहने लगा कि उसने कुआँ भर दयिा; इस चमत्कार को देखकर सभी चकति रह गए और उन्होंने ईश्वर की स्तुति की। मज़दूरों में से एक, जो ऊपर खड़ा था और मट्टिी की दीवार से पानी नकिलता देख रहा था, ने वश्विास करने से इनकार कर दयिा और दूसरे से फुसफुसा कर कहा कि एल्डर ने पानी बहाने के लिए कसिी तरह का जादू कयिा है: क्योंकि उसने अपने मन में सोचा, 'यह कैसे संभव है कि सबसे नीचे पानी नहीं था, फरि भी अचानक ऊपर की दीवारों से इतना प्रचुर मात्रा में बहने लगा?' ये शब्द सुनते ही उस पर ईश्वर का न्याय अचानक टूट पड़ा: वह फसिल गया, पानी में गरि पड़ा और डूब गया। यह सुनकर,

[5191] थयिोडोसयिस द्वतिीय (युवा) ने 408 से 450 तक रोमन साम्राज्य के पूर्वी भाग पर शासन कयिा।

उसकी पत्नी जोर-जोर से रोते हुए दौड़ी आई, और पादरी पर चल्लिाने लगी तथा उसे नम्निलखिति अपमानजनक शब्दों से डाँटने लगी:

'तुम्हें यहाँ आना नहीं चाहिए था, तुम बूढ़े, तुम जादूगर, तुम बहकाने वाले, तुम वनिाशक! तुमने मेरे पति को बर्बाद कर दिया है; अब मैं खुद जान दे दूँगी, ताकि हम दोनों के पाप तुम्हारी आत्मा पर आ जाएँ!'

वह अपने वलिाप और चीखों के बीच और भी कई अपशब्द बोली। हालाँकि, पादरी ने एक कोमल स्वर में उसे सांत्वना देना शुरू किया, और कहा:

'थोड़ी देर रुको, औरत; आशा रखो, और तुम अपने पति को यहाँ से ले जाओगी!'

वह औरत और भी ज़्यादा गुस्से में आ गई और चल्लिाई:

'तुम झूठे संन्यासी! तुम मेरे पति को कहाँ से लाओगे? क्या तुम मृतकों को जीवति करोगे?'

और, पादरी पर झपटते हुए, उसने उनके वस्त्र पकड़ लिए, उन्हें फाड़ने के इरादे से। तब भाइयों ने हस्तक्षेप किया, उसे पकड़ लिया और मठ के द्वारों के बाहर नकिाल दिया। और संत ने भाइयों से कहा:

'इसे जाने दो; हमें अपमानति करने वाली वह नहीं है, बल्कि वह राक्षस है जो इसे उकसा रहा है, और जिसे जल्द ही ईश्वर की कृपा से लज्जति किया जाएगा, जो हमारी मदद कर रही है।'

यह कहकर, उन्होंने उन्हें डूबे हुए आदमी को पानी में खोजने का आदेश दिया; उन्होंने उसे ढूंढ नकिाला और बाहर नकिाला। वह मृत पड़ा था; चमत्कार करने वाले, ईश्वर के पुरुष, दिये, उसके पास गए, ईश्वर से वनिम्रतापूर्वक प्रार्थना की, मृतक का हाथ पकड़ा और उसे जीवति कर जमीन से उठाया; अपनी पत्नी को बुलाकर, उन्होंने उसका पति उसे लौटा दिया। अपना पति जीवति देखकर पत्नी भयभीत हो गई, और इस चमत्कार को देखकर सभी लोग भय से ग्रस्त हो गए। फिर पत्नी अपने पति के साथ घर चली गई। रास्ते में, घर पहुँचने से पहले, उसका पति—जिसे अभी-अभी मृतकों में से जलिाया गया था—अचानक घुटनों के बल झुक गया, जमीन पर गिर पड़ा और फिर से मर गया। यह देखकर, पत्नी भय से कांप उठी: उसे डर था कि ईश्वर अपने क्रोध से उसे भी दंडति कर सकते हैं, कि वह भी गिरकर मर सकती है। वह रोते-बिलखते मठ में लौट आई, रेवरेंड फादर के पैरों पर गिर पड़ी और क्षमा याचना करने लगी:

'रेवरेंड फादर! मेरे पति,' उसने कहा, 'जिन्हें ईश्वर ने आपकी प्रार्थनाओं से मृतकों में से जीवति कर दिया था, उन्हें मेरे पापों के कारण एक बार फिर मृत्यु हो गई है!'

और सभी ईश्वर के अद्भुत और अगम्य मार्गों के और भी बड़े भय से ग्रस्त हो गए। रेवरेंड फादर ने उस महिला को अपना शेष जीवन पश्चाताप में, अपने पापों का शोक मनाते हुए बिताने के लिए मनाया, और भाइयों को यह निर्देश देकर भेजा कि वे उसके पति को प्रथागत तरीके से दफना दें।

आदरणीय पिता ने सर्वशक्तिमान परमेश्वर की शक्ति और सहायता से कई अन्य चमत्कार भी किए (लेकिन ये हमारे लिए अज्ञात रहे हैं, क्योंकि समय के बीतने और चर्च के विभिन्न और बार-बार उत्पीड़न तथा कॉन्स्टेंटिनोपल के विनाश के परिणामस्वरूप, कई पुस्तकें नष्ट हो गई हैं, और आदरणीय पिता डीई के बारे में जो थोड़ी सी बातें हम यहाँ सुना रहे हैं, केवल वही हमें प्राप्त हुई हैं)। चमत्कार करने वाले ने लंबा जीवन जिया; अपनी वृद्धावस्था में ही वे बीमार पड़ गए और मृत्यु के कगार पर थे; उन्होंने भाइयों को बुलाया, उन्हें निर्देश दिए और पवित्र Communion प्राप्त करने के बाद, वे मृतक की तरह हो गए, अचल और साँसहीन। सभी ने यह सोचकर कि उनकी मृत्यु हो गई है, उनके लिए शोक करना और उनके अंतिम संस्कार की तैयारी करना शुरू कर दिया। उनके परम पावन अटकिस, कॉन्स्टेंटिनोपल के पैट्रिआर्क, और अलेक्जेंडर, एंटिओक के पैट्रिआर्क, जो उस समय शहर में ही थे, पहुँचे; कई अन्य प्रतिष्ठित धार्मिक और धर्मनिरपेक्ष व्यक्ति, संत को सम्मान के साथ दफनाने की इच्छा से, इकट्ठा हुए। लेकिन वह, जैसे कि जागकर अपने बिस्तर से उठ रहे हों, बोले:

'ईश्वर ने मुझे जीवन के और पंद्रह वर्ष दिए हैं।'

और वह अच्छे स्वास्थ्य के साथ उठ खड़े हुए, और मृत्यु के द्वार से उनकी वापसी पर सभी ने आनंद मनाया, क्योंकि वह सभी के लिए एक आशीर्वाद थे: उन्होंने पवित्र संतों के साथ आध्यात्मिक और ईश्वर-सम्बंधी संवाद किया; वे राजाओं के लिए परमेश्वर के समक्ष एक मध्यस्थ और वकील थे; वे मोक्ष की तलाश करने वालों के लिए सदाचारी जीवन का एक आदर्श थे; उन्होंने पापियों को पश्चाताप की ओर ले जाया; उन्होंने बीमारों को ठीक किया; उन्होंने यात्रियों को आश्रय दिया; उन्होंने गरीबों को भोजन कराया; और उन्होंने हर ज़रूरत में सभी की मदद की; आदरणीय पिता सभी के लिए सब कुछ थे, वे प्रत्येक व्यक्ति की वाणी और कर्म से सहायता करते थे; वे सभी के लिए, मानो, एक पिता थे।

ईश्वर द्वारा प्रदान कि गए पंद्रह वर्षों को अपने सामान्य तपस्वी कार्यों में बिताते हुए, अनेक आत्माओं को लाभ पहुँचाते हुए और संसार के लि प्रकाश बनते हुए, वह अपने सांसारकि जीवन के अंत के करीब पहुँच गया। एक दनि, वह पवत्रि वेदी पर प्रार्थना करने के लि चर्च में गया और उसने अपने सामने एक तेजस्वी पुरुष को प्रकट होते देखा, जो पुरोहति के वस्त्रों में लपिटा हुआ था, जसिने उससे कहा:

'तुम्हारा जीवनकाल पूरा हो गया है, और तुम्हारे लि शाश्वत जीवन में प्रवेश करने का समय आ गया है; अपने शरीर से अलग होने और प्रभु के पास जाने के लि तैयार हो जाओ।'

रेवरेंड ने उनके सामने प्रकट हुए व्यक्ति को प्रणाम कि या और अपने मृत्यु के समय की इस घोषणा के लि परमेश्वर का हार्दकि धन्यवाद कि या; फरि उन्होंने भाइयों को बुलाया, उन्हें अंतमि उपदेश का एक शब्द कहा, और अपनी दफन के संबंध में यह वसीयत की कि, यदि कोई ऐसा करना चाहे, तो वे उनके शरीर को शहर में न ले जाएँ, बल्कि उन्हें उनके अपने मठ में ही दफनाया जाए। तब, अपने शांतपिूर्ण ईसाई नधिन के लि सभी आवश्यक तैयारयिाँ करने, सभी के और अपने लि दीर्घकाल तक प्रार्थना करने, और सभी से अंतमि बार वदिा लेने के बाद, उन्होंने अपने सामने परमेश्वर के स्वर्गदूत को देखा और आनंदपूर्वक अपनी धर्मी आत्मा को उनके हवाले कर दि या[5192] । इस प्रकार हमारे पूजनीय पति डयि प्रभु के पास चले गए। ज़ार और पैट्रआिर्क उसकी पवत्रि देह को शहर की सुरक्षा के लि शहर में ले जाना चाहते थे, लेकनि भक्षिुओं ने उनकी अंतमि इच्छा बताई: कि उनकी देह को मठ की कब्रगाह के अलावा कहीं और नहीं रखा जाना चाहि। वरषि्ठ की प्रतज्ञिा को तोड़ने का साहस न करते हुए, उन्होंने उनकी इच्छा का पालन कि या और उन्हें उनके मठ में सम्मानपूर्वक दफनाया, और परमेश्वर की महमिा की, जो संतों में अद्भुत है, त्रमिूर्ति में एक, पति, पुत्र और पवत्रि आत्मा; उन्हें भी, हमसे सम्मान और महमिा हो, अब और हमेशा, और युगों-युगों तक। आमीन।

ट्रोपारयिन, स्वर 1:

हे मरुभूमवािसी, देहधारी देवदूत और चमत्कारकर्ता, आप प्रकट हुए हैं, हमारे ईश्वर-वाहक पति डाइ; उपवास, जागरण और प्रार्थना के द्वारा, आप दविय उपहार प्राप्त करते हैं, वशि्वास के साथ आपके पास आने वालों के रोगों और आत्माओं का उपचार करते हैं। महमिा उसको हो जसिने आपको शक्ति दी, महमिा उसको हो जसिने आपको मुकुट पहनाया, महमिा उसको हो जो आपके माध्यम से सभी चंगाइयाँ करता है।

कॉन्टाकयिन, स्वर 2:

हे दविजन, अपनी आत्मा की पवत्रिता से सुसज्जति होकर, और अनवरत प्रार्थना को एक शक्तशिाली भाले के रूप में धारण कर, आपने राक्षसों के दलों को ततिर-बतिर कर दि या है, हे हमारे पति और चमत्कार करने वाले, हे ईश्वर। हम सभी के लि अनवरत प्रार्थना करें।

2 अगस्त

20 जुलाई (पुराना संस्करण)

इस दनि, ब्रेस्ट के पवत्रि शहीद अथानासयिस के पूजनीय अवशेषों की खोज हुई।

पवत्रि नबी एलयिाह का जीवन और चमत्कार

20 जुलाई को स्मरणोत्सव

[5192] आदरणीय दि या लगभग 430 में नधिन हो गए।

जब हम परमेश्वर-दर्शक और परमेश्वर के गौरवशाली उत्साही रक्षक, अधर्मी राजाओं के निंदक, परमेश्वर से मुंह मोड़ने वालों के दंडदाता, झूठे नबियों के संहारक, अद्भुत चमत्कार-कर्ता, जिनके प्रति प्रकृति के तत्त्व आज्ञाकारी थे और जिन्हें स्वर्ग ने सुना, परमेश्वर के महान पुरुष, सन्त एलियाह के जीवन का वर्णन शुरू करते हैं, जो आज भी देह में जीवित हैं और मसीह के दूसरे आगमन से पहले पृथ्वी पर आने वाले हैं – प्रभु परमेश्वर के प्रति उनकी जोश के, जिसके लिए वे उत्साही थे, स्पष्ट और मजबूत प्रमाण प्रदान करने के लिए, हम संक्षेप में उनके सामने हुई घटनाओं को प्रस्तुत करेंगे।

अनादि काल से, परमेश्वर के चुने हुए लोग, जो इस्राएल के बारह बेटों से बढ़कर बारह कुल बन गए थे, जिन्हें 'घुटने' के नाम से जाना जाता था, उन्होंने एक ही राज्य बनाया, जिस पर मूसा और यहोशू और इस्राएल के अन्य न्यायियों से लेकर राजा दाऊद और सुलैमान तक एक ही नेता द्वारा अविभाज्य और निरंकुश रूप से शासन किया गया[5193] । हालाँकि, जब सुलैमान की मृत्यु के बाद, उसका पुत्र रेहबोआम सिंहासन पर बैठा, और राज्य पर शासन करते समय—अपनी जवानी में अनुभवी बुजुर्गों की सलाह को न मानकर, लेकिन इसके बजाय अपनी ही उम्र के युवकों की बात सुनी, वह अपने प्रजाजनों पर एक भारी बोझ साबित हुआ, क्योंकि उसने उन पर अत्यधिक कर और श्रम थोपा, उन्हें क्रूरता से दंडित किया, और यहां तक कि उन्हें अक्सर निर्वासन में भी भेज दिया; जिसके परिणामस्वरूप दस जनजातियों ने उससे अलग हो गए और अपने राजा के रूप में यरोबोआम नामक एक अन्य व्यक्ति को चुन लिया। यरोबोआम पहले सुलैमान का नौकर था। एक अवसर पर, सुलैमान उसे किसी अपराध के लिए मृत्युदंड देना चाहते थे, लेकिन येरोबोआम मिस्र भाग गया, जहाँ वह सुलैमान की मृत्यु तक रहा[5194] । सुलैमान की मृत्यु के बाद, वह इस्राएल की भूमि में लौट आया और उसे इस्राएल के उन जनजातियों ने राजा चुना जो रहोबोआम से अलग हो गए थे। सोलोमन के पुत्र रेहोबोअम ने यरूशलेम में केवल दो कुल - यहूदा और बेंजामिन - पर शासन किया; सोलोमन के सेवक यरोबाम ने इस्राएल के दस गोत्रों पर शासन किया, जो शेकेम शहर में रहता था[5195] , जिसे उनके लिए बहाल और पुनर्निर्मित किया गया था, क्योंकि यह पहले खंडहर में पड़ा था। जो दो कुलों ने सुलैमान के पुत्र के प्रति विफादारी बनाए रखी, उन्हें यहूदा का राज्य कहा जाता था; जबकि सुलैमान के सेवक के पक्ष में चले गए दस कुलों ने इस्राएल का राज्य बनाया।

लेकिन यद्यपि इस्राएल के गोत्र दो राज्यों में विभाजित थे, वे सभी मिलकर उसी एक ईश्वर की पूजा करते थे जिसने स्वर्ग और पृथ्वी की रचना की थी, क्योंकि सोलोमन द्वारा यरूशलेम में निर्मित मंदिर के अलावा उनका कोई अन्य मंदिर नहीं था, और न ही परमेश्वर द्वारा नियुक्त पुरोहितों के अलावा कोई अन्य पुरोहित थे; इसलिए, हर समय, इस्राएल के राज्य से बहुत से लोग प्रभु अपने परमेश्वर की उपासना करने और बलिदान चढ़ाने के लिए यरूशलेम जाते थे। यह देखकर, इस्राएल के राजा येरोबोआम ने चिंता करना शुरू कर दिया, और कहा:

'यदि ये लोग इस प्रकार परमेश्वर की उपासना करने के लिए यरूशलेम जाते रहे, तो वे अपने पहले राजा, सोलोमन के पुत्र, के पास लौटना चाहेंगे, और वे मुझे मार डालेंगे।'

इस पर विचार करते हुए, उसने इस्राएलियों को यरूशलेम से दूर रखने के तरीके खोजने शुरू कर दिए, ताकि वे वहाँ न जाएँ। और उसने सबसे पहले, उन्हें परमेश्वर से दूर करने का निश्चय किया।

उसने कहा, 'यह असंभव है कि यरूशलेम उन्हें दे दिया जाए जब तक कि वे पहले परमेश्वर को न छोड़ दें।'

[5193] प्रभु ने मानवजाति में ईश्वर में सच्चे विश्वास को संरक्षित करने और फैलाने के उद्देश्य से अब्राहम और उसकी संतानों को अन्य राष्ट्रों से चुनकर अलग किया। पैलेस्टाइन, जिसे परमेश्वर ने अब्राहम और उसकी संतान को दिया था, परमेश्वर के लोगों के उद्देश्य के लिए आदर्श रूप से उपयुक्त था। यह उत्तर में लेबनान पर्वत, पूर्व में सीरियाई-अरब रेगिस्तान, दक्षिण में चट्टानी अरब रेगिस्तान, और पश्चिम में भूमध्य सागर से घिरा हुआ है। इस प्रकार की मजबूत बाधा द्वारा, ईश्वर के लोग अन्यजातियों के प्रभाव से अलग और सुरक्षित रहे और बिना किसी बाधा के और स्वतंत्र रूप से अपनी पुकार को पूरा करते हुए ईश्वर की सेवा करने में सक्षम रहे। एशिया, अफ्रीका और यूरोप के चौराहे पर, प्राचीन राष्ट्रों के बीच अपनी स्थिति के कारण, फिलिस्तीन ईश्वर के लोगों के उद्देश्य के लिए कम उपयुक्त नहीं था (यहेजकेल 5:5)। परमेश्वर के लोग प्राचीन काल के सभी शक्तिशाली, सभ्य राष्ट्रों के साथ बातचीत करने और उन्हें परमेश्वर के प्रकाशनों की जानकारी देने में सक्षम थे। जब राष्ट्रों को दिव्य शिक्षा के प्रकाश से प्रबुद्ध करने का समय आया, तो फिलिस्तीन से इसके प्रचारकों के लिए दुनिया के सभी लोगों तक पहुँचने के मार्ग खुले और निकट थे।

[5194] येरोबोआम एप्रैम का कुल का था; वह यरूशलेम में मन्दिर के निर्माण के दौरान मजदूरों के पर्यवेक्षकों में से एक था और सुलैमान उसे बहुत पसंद करता था। जब इस्राएल के देश में कई असंतुष्ट लोग उठ खड़े हुए और कर बढ़ाने के कारण सुलैमान के विरुद्ध विद्रोह कर दिया, तो यरोबाम उनका नेता बन गया। यह जानकर, सुलैमान ने यरोबाम को मार डालने का आदेश दिया, लेकिन वह मिस्र भाग गया।

[5195] शेकेम फिलिस्तीन के पश्चिमी भाग के केंद्र में स्थित था, जो बाद में सामरिया बना।

हालाँकि, यह जानते हुए कि इस्राएली मूर्तिपूजा और हर तरह के अशुद्ध दुराचार की ओर आसानी से झुकने वाले लोग थे, येरोबाम ने उन्हें परमेश्वर से दूर ले जाने के लिए एक चालाकी भरी योजना बनाई। उसने सोने के दो बछड़े बनवाए, ठीक वैसे ही जैसे प्राचीन इस्राएलियों ने मिस्र से निकलने के बाद जंगल में अपने लिए एक सोने का बछड़ा बनाया था, जिसकी उन्होंने सच्चे परमेश्वर के स्थान पर पूजा की थी (निर्गमन, अध्याय 32)। इस्राएल के सभी लोगों को अपने पास बुलाकर और सभा के सामने उन दो बछड़ों की ओर इशारा करते हुए, यरोबाम ने कहा:

'इज़राइल! ये तुम्हारे देवता हैं, जिन्होंने तुम्हें मिस्र की भूमि से बाहर निकाला। अब यरूशलेम मत जाओ, बल्कि इन देवताओं की उपासना करो।'

और उसने उन बछड़ों को विभिन्न स्थानों पर स्थापित किया: एक बेतेल में और दूसरा दान में[5196] , उनके लिए भव्य मंदिर बनवाए, उनके सम्मान में त्योहार और अनेक बलिदान स्थापित किए, और उनके लिए पुरोहित नियुक्त किए; और वह स्वयं भी पुरोहित का कार्य करता था। पापी लोगों को और अधिक लुभाने के लिए, येरोबाम ने आज्ञा दी कि उनके त्योहारों के लिए निर्धारित दिनों पर उन सुनहरे बछड़े के आकार की मूर्तियों के सामने हर प्रकार का अधर्म किया जाए।

इस प्रकार, वह दुष्ट राजा, एक अस्थायी शासन के लिए, स्वयं परमेश्वर से भटक गया, और इस्राएल के सभी दस गोत्रों को उससे दूर ले गया। इस राजा के बाद, इस्राएल के अन्य राजा, अपने सभी प्रजातियों के साथ, उसी दुष्ट मूर्तिपूजा में लगे रहे, जैसा कि उन्होंने येरोबोअम के अधीन सीखा और आदत डाल ली थी।

लेकिन परम दयालु प्रभु, जो उन लोगों को भी नहीं छोड़ते जिन्होंने उन्हें छोड़ दिया है, बल्कि अपनी कृपा में उनका धर्म-परिवर्तन चाहते हैं, ने इस्राएलियों के पास अपने पवित्र नबियों को भेजा, ताकि वे उनकी गलतियों पर फटकार लगाएँ और उन्हें शैतान के जालों से खुद को मुक्त करने और सच्चे परमेश्वर की धर्मपरायण उपासना पर एक बार फिर लौटने के लिए प्रोत्साहित करें। विभिन्न समयों पर इस्राएल को परमेश्वर द्वारा भेजे गए नबियों में महान नबी, संत एलियाह भी थे, जिनके जीवन पर हम चर्चा करने जा रहे हैं।

विश्वसनीय विवरणों के अनुसार, परमेश्वर के पवित्र नबी, एलियाह का मूल स्थान गिलाद की भूमि थी, जो जॉर्डन के दूसरी ओर[5197] , अरबिया से सटी हुई थी; जिस नगर में उनका जन्म हुआ था, उसे तिश्बे कहा जाता था, इसीलिए एलियाह को तिश्बी भी कहा जाता था[5198] । एलियाह अपने पिता, जिनका नाम ज़ाबाद था, के माध्यम से हारून के घराने से थे। एलियाह के जन्म के समय उनके पिता ने एक दृष्टि देखी थी। ठीक उसी क्षण जब एलियाह की माता उन्हें जन्म दे रही थीं, सावा ने सफेद वेशभूषा वाले पुरुषों को देखा जो शिशु से बात कर रहे थे, उसे आग में लपेट रहे थे और उसके मुँह में एक ज्वलंत ज्वाला रखकर उसे खिला रहे थे। इस दृष्टि से भयभीत होकर, सवाह यरूशलेम गया और उसने याजकों को इसके बारे में बताया। तब उनमें से एक, जो गहरी अंतर्दृष्टि वाला व्यक्ति था, ने सवाह से कहा:

'अपने पुत्र के विषय में इस दर्शन से मत डरना, परन्तु यह जान लो कि यह शिशु परमेश्वर की कृपा का पात्र होगा: उसका वचन आग के समान होगा, शक्तिशाली और प्रभावशाली; प्रभु के प्रति उसका उत्साह महान होगा; उसका जीवन परमेश्वर को भाएगा; और वह तलवार और आग से इस्राएल का न्याय करेगा।'

इल्याह के जन्म के समय यह संकेत और भविष्यवाणी थी, जो यह बताती थी कि जब वह वयस्क होगा तो वह कैसा होगा।

एलीजा, जो पुरोहित वंश का था, ने अपना पालन-पोषण और शिक्षा पुरोहितों के बीच प्राप्त की; अपने शुरुआती वर्षों से ही स्वयं को ईश्वर को समर्पित कर, उसने कुँवारी पवित्रता को अपनाया, जिसमें वह ईश्वर के एक स्वर्गदूत की तरह, ईश्वर के सामने निर्दोष, आत्मा और शरीर से शुद्ध, निवास करता था। ईश्वर पर ध्यान लगाना पसंद करने वाले, वह अक्सर शांति की तलाश में सुनसान स्थानों पर चले जाते थे, जहाँ वह उत्कट प्रार्थना में ईश्वर के साथ निजी तौर पर लंबी बातचीत करते थे, और उनके प्रति अग्निमय प्रेम से जलते थे, जैसे कि सेराफिम[5199] । और स्वयं एलियाह को

[5196] बेथेल नगर सामरिया के दक्षिणी भाग में, यरूशलेम के उत्तर में स्थित था, जबकि दान नगर गलील के उत्तर में स्थित था।

[5197] यॉर्डन के पूर्व में, फिलिस्तीन के पूर्वी हिस्से में।

[5198] तेस्वि या तेस्वा नगर गिलिआद के देश के पूर्वी भाग में स्थित था, जो हर्मोन पर्वत से अरनोन नदी तक फैला हुआ था – यह जॉर्डन के पूर्व में, गिलिआद के पहाड़ों के पास था।

[5199] सराफ़ी (हिब्रू से: 'जलते हुए, अग्निमय प्राणी') – ईश्वर के सबसे निकट के प्राणी, सर्वोच्च आध्यात्मिक प्राणी, जो महिमा के प्रभु के सिंहासन को घेरे रहते हैं, और अनवरत पुकारते हैं: 'पवित्र, पवित्र, पवित्र है सेनाओं का यहोवा (अर्थात् सेनाओं का प्रभु); सारी पृथ्वी उसकी महिमा से परिपूर्ण है' (यशायाह 6:1–13)।

ईश्वर का प्रेम प्राप्त था, क्योंकि ईश्वर उनसे प्रेम करते हैं जो उनसे प्रेम करते हैं। एलियाह को ईश्वर के साथ अनुग्रहपूर्ण संगति प्राप्त हुई और, अपने दैवीय जीवन के परिणामस्वरूप, उन्होंने ईश्वर के समक्ष महान साहस प्राप्त किया: जो कुछ भी एलियाह ने ईश्वर से माँगा, वह उन्हें मिला, क्योंकि उन्होंने उनकी दृष्टि में अनुग्रह प्राप्त किया था। फिर भी, एक ओर, पति इस्राएल में की जा रही अधर्म को सुनते और देखते हुए: ईश्वरहीन दुष्टता में डूबे राजा, न्यायसंगत व्यवहार न करने वाले न्यायाधीश और बुजुर्ग, और एक ऐसा लोग जो मूर्तिपूजक घृणित कृत्यों की सेवा करता था और ईश्वर के भय या श्रद्धा के बिना हर तरह के आध्यात्मिक और शारीरिक दुराचार में लिप्त था, यहाँ तक कि अपने बेटों और बेटियों को राक्षसों की बलि चढ़ाता था; और दूसरी ओर, सच्चे परमेश्वर के उत्साही उपासक, जो हर प्रकार के अत्याचार और उत्पीड़न को, यहाँ तक कि मृत्यु तक भी सह रहे थे—परमेश्वर का यह भविष्यवक्ता इन सब से अपने हृदय में गहराई से दुखी था: कभी-कभी वह इतने अनगिनत मानव आत्माओं के विनाश पर शोक मनाता था, तो कभी-कभी वह धर्मी लोगों के क्रूर उत्पीड़न पर शोक मनाता था; लेकिन सबसे बढ़कर, वह दुष्ट लोगों द्वारा सच्चे परमेश्वर पर डाले गए अपमान के कारण अपने आत्मा में दुखी और पीड़ित था, और परमेश्वर की महिमा के लिए उसके भीतर उत्साह और भी बढ़ता गया। सबसे बढ़कर, एलिया ने परमेश्वर से प्रार्थना की कि वह पापियों को पश्चाताप की ओर मोड़े। लेकिन चूँकि परमेश्वर पापी लोगों से पाप से स्वेच्छा से मुँह मोड़ने की अपेक्षा करते हैं, और कठोर-हृदय इस्राएलियों ने भलाई की ओर कोई ऐसी प्रवृत्ति नहीं दिखाई, इसलिए परमेश्वर के महिमा और मानव जाति के उद्धार के लिए उत्साह से जलते हुए, भविष्यवक्ता एलियाह ने परमेश्वर से इस्राएलियों को अस्थायी रूप से दंडित करने के लिए कहा, ताकि, केवल इसी साधन से, वे अपनी दुष्टता से दूर हो जाएँ। फिर भी, यह जानते हुए कि प्रभु, मानवजाति के प्रति अपने प्रेम और दीर्घ सहनशीलता में, दंड देने में जल्दबाज़ नहीं हैं, एलियाह ने उनके प्रति अपने महान उत्साह के कारण, यह साहस किया कि वह उनसे प्रार्थना करे कि वे एलियाह को अपराधियों को दंड देने का आदेश दें, इस आशा में कि यदि उन्हें एक मनुष्य द्वारा दंडित किया जाए तो वे पश्चाताप की ओर मुड़ सकते हैं। और एलियाह ने इस बात के लिए परमेश्वर से लगातार विनती की, जब तक कि उसे वह नहीं मिला जिसकी उसने सर्व-उदार प्रभु से मांग की थी: परम दयालु प्रभु, एक प्रेम करने वाले पिता की तरह, अपने प्रिय सेवक को दुखी नहीं करना चाहते थे, जिसने एक पुत्र के रूप में उनकी सेवा की थी और उनके किसी भी छोटे से आज्ञा का भी कभी उल्लंघन नहीं किया था; लेकिन चूँकि इलियाह हर बात में उनका आज्ञाकारी था और उसने कभी भी किसी भी तरह से उनका क्रोध नहीं भड़काया था, इसलिए उन्होंने अपने वफादार सेवक की विनतियों और प्रार्थनाओं पर ध्यान दिया, और उन्हें पूरा न करके उसे दुखी नहीं किया।

उस समय, अधर्मी राजा आहाब इस्राएल पर शासन कर रहा था, जिसकी राजधानी सामरिया थी (यह शहर पहले से ही इज़राइल के साम्राज्य की तीसरी राजधानी था: पहली राजधानी एप्रैम के कुल में शेकेम थी; दूसरी मनश्शे के कुल में पर्स थी; तीसरी फिर से एप्रैम के कुल में सामरिया थी)। अहब ने सिदोन के राजा एतबाल की बेटी यजेबेल से विवाह किया। जेज़बेल, एक मूर्तिपूजक होने के कारण, अपने साथ अपने नए देश में सिदोन के देवता बाअल की मूर्ति[5200] ले आई। अहाब ने, अपनी ओर से, सामरिया में उसके लिए एक मंदिर बनवाया और वहाँ एक वेदी स्थापित की; उसने स्वयं बाअल की पूजा एक देवता के रूप में की और सभी इस्राएलियों को इस मूर्ति के सामने झुकने के लिए मजबूर किया। इसके माध्यम से, उसने जल्द ही अपने राज्य में मूर्तिपूजा को चरम स्तर तक पहुँचा दिया, और इस प्रकार परमप्रभु सर्वोच्च परमेश्वर को, उनसे पहले इज़राइल पर शासन करने वाले किसी भी राजा से अधिक, क्रोधित किया। और इसी राजा के पास परमेश्वर के भविष्यवक्ता एलिया आए, जो परमेश्वर के प्रति उत्साह से भरपूर थे, और उन्होंने उसकी इस गलती के लिए निंदा की—कि इस्राएल के परमेश्वर को त्यागकर, वह स्वयं राक्षसों के सामने झुक रहा था और अपने पूरे लोगों के साथ उन्हें विनाश की ओर ले जा रहा था। हालाँकि, जब उन्होंने देखा कि राजा उनकी नसीहतों पर ध्यान नहीं देगा, तो पवित्र नबी ने अपने शब्दों को कर्म से सिद्ध किया, और राजा—जो परमेश्वर का शत्रु था—और उसके प्रजा पर दंड लाया। उन्होंने कहा:

[5201]'जिस यहोवा सर्वशक्तिमान परमेश्वर, इस्राएल के परमेश्वर, जिसके सामने मैं खड़ा हूँ, उसकी कसम—इन वर्षों में पृथ्वी पर कोई ओस या वर्षा होगी, तो वह केवल मेरे वचन पर होगी।'

[5200] कनानी लोगों द्वारा बाअल को प्रमुख देवता माना जाता था। बाअल के नाम पर, उन्होंने प्रकृति में फलदायी शक्ति के स्रोत के रूप में सूर्य को देवता का दर्जा दिया।

[5201] वचन: 'जिस प्रकार यहोवा तुम्हारा परमेश्वर जीवित है, उसी प्रकार तुम्हारी आत्मा भी जीवित है' – हमारे शपथ 'मैं ईश्वर की कसम खाता हूँ' के समान है। प्राचीन यहूदी, अपने शब्दों की सच्चाई के प्रति दूसरों को आश्वस्त करने के लिए, आमतौर पर शपथ के रूप में विशेष रूप से इन्हीं शब्दों का उपयोग करते थे।

यह कहकर एलियाह अहब से चल दिया, और जैसा कि नबी ने कहा था, आकाश बंद हो गए और सूखा पड़ गया: धरती पर एक भी बूँद वर्षा या ओस नहीं गिरी। सूखे के परिणामस्वरूप अनाज की फसल पूरी तरह विफल हो गई और अकाल पड़ गया। क्योंकि जब एक राजा पाप करता है, तो परमेश्वर का क्रोध उसके सभी प्रजा पर पड़ता है। (जैसे कि पहले, केवल दाऊद के पाप के कारण पूरे राज्य को पीड़ा झेलनी पड़ी थी[5202])। परमेश्वर के भविष्यवक्ता, एलिया, को उम्मीद थी कि दंडित होने के बाद, इस्राएल का राजा अहब अपनी गलती को महसूस करेगा, पश्चाताप में परमेश्वर की ओर मुड़ेगा, और अपने साथ-साथ उन लोगों को भी—जिन्हें उसने भटकाया था—वापस सच्चे मार्ग पर ले आएगा। लेकिन जब संत एलियाह ने देखा कि अहब, फिरौन की तरह, कठोर बना रहा, न केवल अपनी दुष्टता को छोड़ने का कोई इरादा नहीं दिखा रहा था, बल्कि इसके विपरीत, बुराई के गर्त में और गहरा डूब रहा था, और उन लोगों को सता रहा था और यहाँ तक कि मार भी रहा था जो अपने जीवन शैली से परमेश्वर को प्रसन्न करते थे, तो उन्होंने दूसरी और तीसरी पीढ़ी तक दंड जारी रखा। उस समय, इस्राएल से कहे गए, प्रथम परमेश्वर-दर्शक, पवित्र नबी मूसा का वचन पूरा हुआ:

'तुम्हारे ऊपर का आकाश पीतल का-सा और तुम्हारे नीचे की भूमि लोहे की-सी हो जाएगी' (व्यवस्थाविवरण 28:23); क्योंकि आकाश बंद हो जाने से, भूमि में नमी नहीं बची[5203] और उसमें बिलकुल भी फल नहीं हुआ।

चूंकि हवा हमेशा झुलसाने वाली थी, और हर दिन तपती धूप से तीव्र गर्मी होती थी, सभी पेड़, फूल और घास मुरझा गए – फल नष्ट हो गए, और बगीचे, खेत और मैदान पूरी तरह से सुनसान हो गए, जहाँ न कोई हल चलाने वाला मिला और न ही कोई बोने वाला। झरनों का पानी सूख गया, छोटी नदियाँ और नालियाँ पूरी तरह सूख गईं, और बड़ी नदियों का जल स्तर गिर गया; सारी भूमि सूखकर काँटा हो गई, और लोग, पशु और पक्षी भूख से मर रहे थे। यह दंड न केवल इस्राएल के राज्य पर, बल्कि पड़ोसी देशों पर भी आया। क्योंकि जब किसी नगर में एक ही घर में आग लग जाती है, तो आग आसपास के घरों तक फैल जाती है। संसार भर में भी ऐसा ही हुआ: इज़राइल राष्ट्र ने स्वयं पर परमेश्वर का क्रोध लाया, फिर भी सारा संसार पीड़ित हुआ। लेकिन यह सब परमेश्वर के क्रोध के कारण नहीं, बल्कि भविष्यवक्ता एलिया के परमेश्वर की महिमा के प्रति उत्साह के कारण हुआ। क्योंकि परम दयालु और कृपालु प्रभु, अपनी असीम दया में, मानवता की पीड़ा और सभी प्राणियों के नाश को देखकर, पहले से ही पृथ्वी पर वर्षा भेजने के लिए तैयार थे; फिर भी उन्होंने ऐसा करने से परहेज किया, ताकि एलियाह की आज्ञा पूरी हो सके और ताकि भविष्यवक्ता के वचन झूठे न सिद्ध हों:

'जिस प्रभु के जीवन की शपथ है, मेरे वचन के बिना अब से न तो पृथ्वी पर वर्षा होगी और न ओस पड़ेगी।'

जो ये वचन बोल रहा था, वह ईश्वर के प्रति उत्साह से इतना ओत-प्रोत था कि उसने स्वयं को भी नहीं बख्शा, क्योंकि वह जानता था कि जब पृथ्वी का भोजन समाप्त हो जाएगा, तो उसे भी, सभी लोगों की तरह, भूख सहनी पड़ेगी। लेकिन उसने इस बात की परवाह नहीं की, क्योंकि वह ईश्वर से शत्रुता रखने वाले अनाड़ी पापियों पर दया दिखाने के बजाय भूख से मरना पसंद करता था।

तब सर्वशक्तिमान ईश्वर क्या करते हैं? वह नबी एलियाह को मानव बस्तियों से दूर, एक एकांत स्थान पर भेजते हैं, यह कहते हुए:

[5204]'पूर्व की ओर जाओ और यॉर्डन के सामने, करीथ नाले के पास छिप जाओ। तू इसी नाले का पानी पिएगा, और मैंने काबों को आज्ञा दी है कि वे तुझे वहाँ खाना खिलाएँगे' (1 राजा 17:3–4)।

प्रभु ने यह एलीजा को यजेबेल द्वारा मारे जाने से बचाने के लिए, उसे भूख से मरने से रोकने के लिए, और कौवों तथा करिथ नाले के द्वारा, एलीजा में उन लोगों के लिए करुणा जगाने के लिए किया जो भूख और प्यास से पीड़ित और मर रहे थे। अन्य पक्षियों की तुलना में, कागों में एक विशिष्ट विशेषता होती है (भजन संहिता 146:9): वे अत्यधिक लालची होते हैं और उनमें दया की कोई भावना नहीं होती, यहाँ तक कि अपने ही बच्चों के लिए भी; क्योंकि जैसे ही एक काग अपने बच्चों को पाल लेता है, वह उन्हें घोंसले में छोड़ देता है, दूसरी जगह उड़ जाता है और बच्चों को भूख से मरने के लिए छोड़ देता है। केवल ईश्वर की व्यवस्था ही है, जो प्रत्येक प्राणी की परवाह करती है, जो उन्हें मृत्यु से बचाती है: मक्खियाँ अपनी मर्जी से उनके मुँह में उड़ जाती हैं, और चूजे उन्हें निगल लेते हैं। और हर बार जब कावे, ईश्वर की आज्ञा से, हर

[5202] अहंकार के वश में होकर, दाऊद अपने लोगों की जनगणना करना चाहता था। इस पाप के लिए, प्रभु ने उसके राज्य में एक महामारी भेजी, जिसमें तीन दिनों के भीतर 70,000 लोग मर गए।

[5203] फिलिस्तीन में, अन्य गर्म देशों की तरह, बारिश केवल पतझड़ और वसंत में होती है; हालाँकि, ओस ज़मीन को बहुत प्रचुर मात्रा में नम कर देती है। यह इतनी भारी होती है, विशेष रूप से गर्मियों में, कि ज़मीन इससे इस तरह गीली हो जाती है जैसे कि भारी बारिश के बाद।

[5204] सीरिया में, दमिश्क के पास।

दनि पैगंबर के पास भोजन लाने के लिए उड़ते थे—सुबह रोटी और शाम को मांस—तो एलियाह का अंतरात्मा—एक व्यक्ति के भीतर ईश्वर की वह आंतरिक आवाज़—उसके हृदय में पुकार उठा:

'देखो, कौवे, भले ही स्वभाव से जंगली, लालची, भूखे और अपने ही बच्चों के प्रति निर्दयी हों, वे तुम्हारे भोजन की कितनी परवाह करते हैं: भले ही वे खुद भूखे हों, वे तुम्हारे लिए भोजन लाते हैं। फिर भी तुम, जो खुद एक इंसान हो, लोगों के लिए कोई दया नहीं दिखाते, और सिर्फ लोगों के लिए ही नहीं, बल्कि तुम पशुओं और पक्षियों को भी भूख से मार डालना चाहते हो।'

इसी तरह, कुछ समय बाद जब नबी ने देखा कि नाला सूख गया है, तो परमेश्वर ने उनसे कहा:

'अब इस पीड़ित प्राणी पर दया करने और उस पर बारिश भेजने का समय आ गया है, नहीं तो तुम स्वयं प्यास से मर जाओगे।'

लेकिन परमेश्वर का वह उत्साही सेवक दृढ़ रहा – इसके विपरीत, उसने परमेश्वर से प्रार्थना की कि जब तक उन लोगों को दंड नहीं मिल जाता जिन्हें अभी तक दंड नहीं मिला था, और जब तक पृथ्वी पर परमेश्वर के सभी शत्रु नष्ट नहीं हो जाते, तब तक वर्षा न हो। तब फिर से प्रभु ने, अपने सेवक को बुद्धिमानी से दया की ओर झुकाते हुए, उसे सिदोन के ज़रेफ़ाथ[5205] भेजा, जो इस्राएल के राजा के शासन में नहीं था, एक गरीब विधवा के पास, ताकि वह अपने भीतर चिंतन कर सके उसने न केवल अमीरों और विवाहित जीवन जीने वालों पर, बल्कि गरीब विधवाओं पर भी क्या विपत्ति ला दी थी, जिन्हें अक्सर न केवल अकाल के समय, बल्कि भरपूर फसल और हर तरह की सांसारिक समृद्धि के वर्षों में भी अपनी रोजी-रोटी की कमी का सामना करना पड़ता है। जब नबी उस नगर के फाटकों पर पहुँचे, तो उन्होंने एक विधवा को लकड़ी ढोते देखा—दो लट्ठों से अधिक नहीं; क्योंकि उसके घड़े में केवल एक मुट्ठी आटा और एक छोटी सी तेल की कुप्पी ही बची थी। चूंकि एलिया भूख से त्रस्त थे, उन्होंने विधवा से एक टुकड़ा रोटी माँगा। हालाँकि विधवा ने हाल के समय में अपनी अत्यंत गरीबी बताई, फिर भी उसने कहा कि वह बचे हुए आटे से अपने और अपने बेटे के लिए अंतिम भोजन बनाना चाहती है, जिसके बाद वे भूख से मर जाएँगे। ईश्वर के पुरुष को भूख से पीड़ित सभी गरीब विधवाओं के प्रति दया और करुणा हो सकती थी; लेकिन ईश्वर के प्रति उनका महान उत्साह बाकी सब पर हावी हो गया, और उन्होंने उस नष्ट हो रहे प्राणी पर कोई दया नहीं दिखाई, क्योंकि वे सृष्टिकर्ता की महिमा करना चाहते थे और पूरे ब्रह्मांड को उसकी सर्वशक्तिमान शक्ति का प्रदर्शन करना चाहते थे। अपने विश्वास के द्वारा ईश्वर से चमत्कार करने का वरदान प्राप्त करने के बाद, एलिया ने यह सुनिश्चित किया कि विधवा के घर में आटा और तेल कभी खत्म न हों; और उसे विधवा ने तब तक खाना खिलाया जब तक कि अकाल समाप्त नहीं हो गया। नबी ने प्रार्थना के साथ-साथ मृतक पर तीन बार फूँक मारकर विधवा के मृत पुत्र को भी जीवित कर दिया, जैसा कि परमेश्वर के वचन में लिखा है। विधवा के इस पुनर्जीवित पुत्र के बारे में एक परंपरा है कि उसका नाम योना था, और वही था जिसे वयस्क होने और भविष्यवाणी का वरदान मिलने के बाद, तौबा का उपदेश देने के लिए निनिवेह भेजा गया था; और, एक व्हेल द्वारा निगल लिए जाने और तीन दिन बाद बाहर उगल दिए जाने के बाद, उसने मसीह के तीन दिन बाद पुनरुत्थान का पूर्वसंकेत दिया, जैसा कि भविष्यसूचक पुस्तक और उनकी जीवन कहानी[5206] में विस्तार से वर्णित है।

तीन साल के सूखे और अकाल के बाद, सर्व-दयालु ईश्वर ने, पृथ्वी पर अपनी सृष्टि को अकाल से पूरी तरह नष्ट होते हुए देखकर, दया की और अपने सेवक एलिया से कहा:

'जाओ, अहब के पास जाओ; मैं अपनी सृष्टि पर दया करना चाहता हूँ और तुम्हारे वचन पर, सूखी भूमि पर वर्षा भेजना चाहता हूँ, ताकि उसे पानी मिलकर वह उपजाऊ हो जाए। अहब पहले से ही पश्चाताप की ओर झुका हुआ है; वह तुम्हें ढूँढ़ रहा है और तुम जो कुछ भी उससे कहोगे, वह उसे करने को तैयार है।'

नबी तुरंत सिदोन के ज़रेफ़ाथ से इज़राइल के राज्य की राजधानी सामरीया के लिए रवाना हो गए। उस समय, राजा अहब का ओबद्याह नाम का एक व्यवस्थापक था, जो उसका एक वफादार सेवक और ईश्वर-भयभीत व्यक्ति था। उसने प्रभु के एक सौ भविष्यवक्ताओं को यजेबेल के हत्यारे हाथ से छिपाया था, उन्हें दो गुफाओं में रखा था, प्रत्येक में पचास, और उन्हें रोटी और पानी से खिलाया था। इस व्यवस्थापक को अपने पास बुलाकर, राजा अहब ने (इल्यास के आने से पहले ही) उसे सूख चुकी नदियों के किनारे घास खोजने के लिए भेज दिया, ताकि जो कुछ घोड़े और अन्य पालतू जानवर जीवित

[5205] सारेप्ता नगर पश्चिमी फिनिसिया में, भूमध्य सागर के तट पर, सिदोन के पास स्थित था।

[5206] २२ सितंबर

बचे थे, उन्हें खलिाने के लिए कुछ मलि सके। ओबद्याह के शहर से नकिलते ही उसकी मुलाकात पवत्रि नबी एलयिाह से हो गई; उसने उनके सामने ज़मीन पर सरि झुकाया और उन्हें बताया कि अहब अपने पूरे राज्य में उनकी तलाश कर रहा था। पवत्रि नबी एलयिाह ने ओबद्याह से कहा:

'जाकर अपने स्वामी से कहो: "मैं यहाँ हूँ, एलयिाह; मैं उसकी ओर जा रहा हूँ।"'

ओबद्याह ने मना कर दयिा और कहा:

'मुझे डर है कि, एक बार जब मैं तुम्हें छोड़ दूँगा, तो प्रभु की आत्मा तुम्हें कसिी और देश में ले जाएगी, और तब मैं अपने स्वामी के सामने झूठा पाया जाऊँगा, और वह, अपने क्रोध में, मुझे मार डालेगा।' एलयिाह ने उत्तर दयिा:

'जसि सेनाओं के यहोवा के जीते रहने की मैं शपथ खाता हूँ, जसिके साम्हने मैं खड़ा हूँ! मैं आज अहब के सामने प्रकट होऊँगा!'

ओबद्याह लौटकर राजा से कहने गया। अहब परमेश्वर के मनुष्य से मलिने के लिए जल्दी से बाहर नकिला। परन्तु जब उसने एलयिाह को देखा, तो भवष्यिवक्ता के प्रति अपने मन में छपिाए हुए द्वेष के कारण उसने कठोरता से कहा, और एलयिाह से कहा:

'क्या तुम ही इस्राएल को भटका रहे हो?'

लेकनि परमेश्वर के पुरुष ने नडिर होकर अहब से उत्तर दयिा:

'इज़राइल को भटकाने वाला मैं नहीं हूँ, बल्कि तुम और तुम्हारे पति का घर है, जन्होंने यहोवा अपने परमेश्वर को छोड़ दयिा है और घृणति बाल की उपासना करते हो।'

इसके बाद, ईश्वर के नबी ने दैवीय सहायता से समर्थति होकर, अधकिारपूर्वक राजा को आज्ञा देना शुरू कयिा, कहते हुए:

'तुरंत जाओ और इस्राएल के दसों गोत्रों को मेरे पास करमेल पर्वत[5207] पर इकट्ठा करो; ऊँचे पहाड़ों और बागों में अन्य मूर्तयिों की सेवा करने वाले चार सौ पचास दुष्ट भवष्यिवक्ताओं को लाओ[5208] , , जो यजेबेल की मेज़ से खाते हैं; वे ईश्वर के वषिय में मुझसे वाद-ववािद करें, और हम देखेंगे कि कौन सा ईश्वर सच्चा है।

तुरन्त राजा ने इस्राएल के देश में दूत भेज दिए, एक वशिाल जनसमूह इकट्ठा कयिा, और सभी दुष्ट भवष्यिद्वक्ताओं और याजकों को करमेल पर्वत पर बुलाया, और वह स्वयं भी वहाँ गया।

तब परमेश्वर के उत्साही सेवक एलयिाह, सभा के सामने खड़े होकर, राजा और इस्राएल के सभी लोगों से इन शब्दों में बोले:

'तुम कतिनी देर तक दो राय में डगमगाओगे? यदि यहोवा परमेश्वर, जसिने तुम्हें मस्रि से शक्तशिाली हाथ से नकिाला, परमेश्वर है, तो उसी का अनुसरण करो। परन्तु यदि बaal तुम्हारा देवता है, तो उसी का अनुसरण करो।'

लोग चुप रहे, उत्तर देने में असमर्थ, क्योंकि हर इस्राएली को अपने अंतर्मन में अपनी गलती का एहसास हो गया था। तब एलयिाह ने कहना जारी रखा:

– यह करो: ताकि तुम अब सच्चे परमेश्वर को जान सको, जैसा मैं तुम्हें आज्ञा देता हूँ, वैसा ही करो। तुम देख सकते हो कि मैं पूरे इस्राएल में प्रभु का एकमात्र जीवति भवष्यिवक्ता हूँ; तुमने अन्य सभी भवष्यिवक्ताओं को मार डाला है; तुम यह भी देख सकते हो कि यहाँ बाल के कतिने भवष्यिवक्ता हैं। अब हमें बलदिान के लिए दो जवान सांड दो,

---

[5207] कर्मेल पर्वत सामरयिा के उत्तर-पश्चमि में, भूमध्य सागर के पास स्थति है। एलयिाह ने अपनी सभा के लिए इस पर्वत को इसलिए चुना क्योंकि यह इज़राइल के राज्य में बाअल पूजा का प्रमुख केंद्र था।

[5208] बaal के साथ-साथ अस्तारोथ या अशेरह की भी पूजा की जाती थी। वह आकाश (यर. 7:18), चंद्रमा की देवी और खुशी, प्रेम, प्रजनन क्षमता, युद्ध और शकिार की देवी थीं। उनका चत्रिण एक महलिा के सरि के साथ कयिा जाता था, जसि अर्धचंद्र या दो सींगों से सजाया जाता था। बaal की उपासना ऊँची जगहों पर होती थी, जबकि अस्तारते की उपासना घाटयिों में, हरे ओक के जंगलों (वन क्षेत्रों) में की जाती थी। पहाड़यिों और पहारों पर बने बaal के पूजा स्थल हमेशा अस्तारते को समर्पति ओक के जंगलों से घरि रहते थे, और उनके भीतर, पहाड़यिों के तल पर, अस्तारते के लिए वेदयिाँ स्थापति की जाती थीं। अस्टार्टे के पुरोहतिों को 'ग्रोव पुरोहति' के नाम से जाना जाता था। सूर्य देवता की भूमकिा के अलावा, बाअल को बाअल-जेबूब, मक्खयिों के देवता के रूप में भी जाना जाता था, क्योंकि फिलिस्तीनयिों, जो नचिले तट पर रहते थे और मक्खयिों और अन्य कीड़ों के झुंड से पीड़ति थे, मक्खयिों से मुक्ति के लिए उसकी प्रार्थना करते थे। उन्हें बीमारयिों का उपचार करने वाला और भवष्यि बताने वाला भी माना जाता था। बाअल-वेरफि शपथ, संधयिों और गठबंधनों के देवता थे। बाअल-पेओर युद्ध के देवता थे। इस्राएलयिों को मूर्ति पूजा में आसानी से खींच लयिा जाता था, क्योंकि सच्चे ईश्वर की उपासना के लिए सदाचार, प्रार्थना, पापों से पश्चाताप और उपवास की आवश्यकता होती है, जबकि मूर्ति पूजा के साथ नृत्य, भोज, मद्यपान और अन्य इंद्रयि सुख जुड़े होते थे।

एक मेरे लिए और दूसरा बाअल के याजकों के लिए; पर आग की हमें आवश्यकता नहीं है। जिस देवता की बलि पर स्वर्ग से आग गिरकर उसे भस्म कर देगी, वही सच्चा ईश्वर है, और सभी को उसकी आराधना करनी होगी; पर जो उसकी आराधना नहीं करेंगे, उन्हें मृत्युदंड दिया जाएगा।

ये वचन सुनकर, सब लोग परमेश्वर के मनुष्य के निर्णय से सहमत हो गए और कहने लगे:

'ऐसा ही हो; तुम्हारा वचन अच्छा है।'

जब बछड़े सभा के बीच में लाए गए, तो पवित्र एलियाह ने बाल के दुष्ट भविष्यद्वक्ताओं से कहा:

'इन बछड़ों में से एक को अपने लिए चुन लो, और बलिदान तैयार करने में पहले शुरू करो, क्योंकि तुम बहुत हो, जबकि मैं अकेला हूँ; और मैं अपना बाद में तैयार करूँगा। बछड़े को लकड़ी पर रख दो, पर आग मत जलाना; इसके बजाय अपने देवता बाल से प्रार्थना करो कि वह स्वर्ग से आग भेजकर तुम्हारा बलिदान भस्म कर दे।'

उन निर्लज्ज नबियों ने ठीक वैसा ही किया। पासा फेंकने के बाद, उन्होंने बछड़े को ले लिया, उसे टुकड़ों में काट दिया, उन्हें वेदी पर लकड़ी के ऊपर रख दिया, और अपने बaal से प्रार्थना करने लगे कि वह उनकी भेंट पर आग भेजे। वे सुबह से दोपहर तक उसके नाम का आह्वान करते रहे, चिल्लाते हुए:

'हमारी सुन, बाअल, हमारी सुन!'

पर न तो कोई शब्द हुआ और न ही कोई उत्तर मिला। वे वेदी के चारों ओर कूदने लगे, परन्तु सब व्यर्थ था। दोपहर को, परमेश्वर के पुरुष ने उनका मज़ाक उड़ाया:

उसने कहा, 'और ज़ोर से चिल्लाओ, ताकि तुम्हारा देवता तुम्हें सुन सके; वह इस समय व्यस्त होगा: या तो किसी काम में, या किसी से बात करने में, या भोज कर रहा होगा, या सो रहा होगा[5209] ; उसे जगाने के लिए जितनी ज़ोर से हो सके चिल्लाओ।'

झूठे नबियों ने ऊँचे स्वर में बाल से पुकारा और, जैसा कि उनका रिवाज था, चाकुओं से अपना शरीर चीर लिया, जबकि अन्य लोग तब तक खुद को कोड़े मारते रहे जब तक कि खून न बह गया। शाम होने से पहले, तिशबी के संत एलियाह ने उनसे कहा:

'चुप हो जाओ और रुक जाओ; अब मेरी बलि का समय है।'

बैल के पूजक रुक गए। फिर एलियाह ने लोगों की ओर मुड़कर कहा:

'मेरे पास आओ!'

वे सभी उसके पास आ गए। नबी ने बारह पत्थर लिए, जो इस्राएल के बारह कुल के बराबर थे, और उनसे प्रभु के लिए एक वेदी बनाई; फिर, वेदी पर लकड़ी रखकर, उन्होंने सांड को टुकड़ों में काटा, उन्हें लकड़ी पर रखा, वेदी के चारों ओर एक खाई खोदी, और लोगों को चार बाल्टियाँ पानी लेने और बलिदान तथा लकड़ी पर पानी डालने का आदेश दिया; और उन्होंने वैसा ही किया। एलियाह ने उन्हें फिर से ऐसा करने का आदेश दिया; और उन्होंने वैसा ही किया। उन्होंने तीसरी बार भी वही करने का आदेश दिया , और उन्होंने वैसा ही किया। वेदी के चारों ओर पानी बहने लगा, और खंदक पानी से भर गया। तब एलियाह ने स्वर्ग की ओर अपनी आँखें उठाकर परमेश्वर को पुकारा, और कहा:

'हे प्रभु, इब्राहीम, इसहाक और याकूब के परमेश्वर! अब मेरी सुन, हे प्रभु, अपने दास की, और स्वर्ग से अग्नि भेजकर इस बलिदान पर आग लगा दे, ताकि ये सब लोग आज जान लें कि केवल तू ही इस्राएल का परमेश्वर है, और मैं तेरा दास हूँ, और मैंने यह बलिदान तुझ ही को चढ़ाया है! हे प्रभु, मेरी सुन, और आग से उत्तर दे, ताकि इन लोगों के हृदय तेरी ओर फिरें।

और यहोवा की ओर से आकाश से आग उतरी[5210] और उसने सब कुछ भस्म कर दिया जो जलाया जाना था—लकड़ी, पत्थर, राख, और यहाँ तक कि खंदक में रखा पानी भी—आग ने सब कुछ नष्ट कर दिया। यह देखकर, सभी लोग मुँह के बल जमीन पर गिर पड़े[5211] , और चिल्ला उठे:

'सचमुच, प्रभु ही एकमात्र परमेश्वर हैं; उनके सिवा कोई और परमेश्वर नहीं है!'

इल्यास ने लोगों से कहा:

[5209] यहूदियों में दिन के सबसे गर्म हिस्से में, सुबह 10 या 11 बजे से दोपहर 3 बजे तक सोने की प्रथा थी।

[5210] स्वर्ग से आग का अवतरण इस बात का संकेत था कि ईश्वर ने उनकी ओर अर्पित बलिदान को कृपापूर्वक स्वीकार कर लिया था।

[5211] प्रार्थना के दौरान, यहूदी अपने मुँह के बल जमीन पर सिर झुकाकर प्रणाम करते थे। इसके द्वारा वे परमेश्वर के सामने अपनी पतित अवस्था और उसकी महिमा के सामने अपनी तुच्छता के प्रति अपनी जागरूकता, साथ ही अपने पापों के लिए अपनी पश्चाताप की भावना व्यक्त करते थे।

'baal के नबियों को पकड़ लो, ताकि उनमें से एक भी न बच जाए।'

लोगों ने उसकी आज्ञा का पालन किया, और एलियाह उन्हें किशोन नाले तक ले गए, जो महासागर में बहता है[5212] । वहाँ उन्होंने उन्हें अपने हाथों से मार डाला[5213] और उनके दुष्ट शवों को पानी में फेंक दिया, ताकि पृथ्वी उनसे अपवित्र न हो और हवा उनकी बदबू से दूषित न हो। इसके बाद, संत एलियाह ने राजा अहब से कहा कि वह जल्दी से खा-पी ले और अपने रथ के घोड़ों को जोत ले ताकि वह अपनी यात्रा पर निकल सके, क्योंकि जिल्द ही एक भारी वर्षा होगी जो सब कुछ भीग देगी। जब अहब खाने और पीने के लिए बैठ गया, एलियाह कार्मेल पर्वत पर चढ़ गया। उन्होंने जमीन पर झुककर अपने घुटनों के बीच अपना चेहरा रख लिया और ईश्वर से पृथ्वी पर वर्षा भेजने की प्रार्थना की। उनकी प्रार्थना के तुरंत बाद, जैसे किसी चाबी से ताला खुल गया हो, आकाश खुल गया और एक बड़ी वर्षा हुई, जिसने सभी को भीग दिया और सूखी धरती को भरपूर पानी से सिक्त कर दिया। तब आहाब, अपनी भूल का एहसास करते हुए, सामरिया के रास्ते में अपने पापों पर रोया। जहाँ तक पवित्र एलिया का सवाल है, कमर कसकर, वह उसके आगे पैदल चला, अपने प्रभु परमेश्वर की महिमा में आनंदित हो रहा था।

दुष्ट रानी, आहाब की पत्नी यजेबेल, को जब यह सब हुआ जानकर, अपने निर्लज्ज भविष्यवक्ताओं के विनाश के लिए एलियाह पर भयंकर क्रोध आया; और, अपने देवताओं की शपथ लेकर, उसने उसे संदेश भेजा कि ठीक अगले दिन, उसी घड़ी जब एलियाह ने बाल के भविष्यवक्ताओं को मार डाला था, वह उसे मार डालेगी। संत एलिया को मृत्यु का भय था, क्योंकि वह मानव जाति की सभी सामान्य कमजोरियों वाले एक मनुष्य थे, जैसा कि उनके बारे में कहा गया है: 'एलिजा हमारे ही समान एक मनुष्य था' (याकूब 5:17)। यजेबेल की धमकियों के कारण, वह यहूदा के राज्य में बेर्शेबा[5214] भाग गए, और अकेले निर्जन स्थान में चले गए। एक दिन तक रेगिस्तान में यात्रा करने के बाद, वह विश्राम करने के लिए एक जुनिपर की झाड़ी के नीचे बैठ गया। दुख से पीड़ित, उसने परमेश्वर से मृत्यु की याचना करना शुरू कर दिया, यह कहते हुए:

'हे यहोवा! अब मेरे लिए पर्याप्त है कि मैं अब तक पृथ्वी पर जीवित रहा हूँ; अब मेरी आत्मा ले लो; क्या मैं अपने पूर्वजों से बेहतर हूँ?!'

नबी ने ऐसा इसलिए नहीं कहा कि उन्हें अपने साथ हुए अत्याचार के दुख में यह बात कही हो, बल्कि ईश्वर के एक उत्साही सेवक के रूप में कहा, जो मानव द्वेष, ईश्वर का अपमान और प्रभु के परम पवित्र नाम की निंदा सहन नहीं कर सकता था: उसके लिए यह सुनना और देखना आसान था कि अधर्मी अपने ईश्वर का तिरस्कार और अस्वीकृति कर रहे हैं, बजाय इसके कि वह स्वयं मर जाए। अपने होठों पर यह प्रार्थना लिए हुए, एलिया एक पेड़ के नीचे लेट गए और सो गए। और देखो, यहोवा के दूत ने उन्हें छुआ और कहा:

'उठ, खा और पी।'

जब एलिया उठे, तो उन्होंने अपने सिर के पास कुछ गर्म बिना खमीर की रोटी और एक घड़ा पानी देखा; उन्होंने उठकर खाया, पानी पिया और फिर सो गए। प्रभु के स्वर्गदूत ने दूसरी बार उन्हें छुआ और कहा:

'उठो, खाओ और पियो, क्योंकि तुम्हारे सामने लंबा सफर है।'

एलिय्याह उठकर और कुछ खाया, कुछ पानी पिया, और इस भोजन से बल पाकर, चालीस दिन और चालीस रातें चलकर परमेश्वर के पर्वत होरेब[5215] पर पहुँचा, जहाँ वह एक गुफा में रहने लगा। यहाँ उसका साथी स्वयं प्रभु परमेश्वर थे, जो उसे एक कोमल हवा में प्रकट हुए, जो स्वच्छ हवा में धीरे-धीरे बह रही थी। जब यहोवा उसके समीप आए, तो उनके आगमन से पहले भयानक चिन्ह हुए: पहले एक प्रबल आँधी आई, जिसने पहाड़ों को तोड़ दिया और चट्टानों को चूर-चूर कर दिया; फिर आग आई, परन्तु यहोवा आग में नहीं थे; आग के बाद एक कोमल हवा चली; और वहाँ यहोवा थे[5216] । जब

[5212] किशोन नदी कारमेल पर्वत के उत्तर में बहती थी; यह भूमध्य सागर में मिलती थी, जिसे 'महान' सागर कहा जाता था।

[5213] मूसा की व्यवस्था के अनुसार, खुले तौर पर मूर्तिपूजकों को मृत्युदंड दिया जाना था, विशेष रूप से उन लोगों को जो दूसरों को मूर्तिपूजा में ले जाते थे (व्यवस्थाविवरण 13:1–18)।

[5214] बेर्शेबा नगर यहूदा के दक्षिण में स्थित था।

[5215] होर पर्वत अरब प्रायद्वीप के दक्षिण-पश्चिमी भाग में, लाल सागर के उत्तर में, सिनाई पर्वत के पास, उससे थोड़ा उत्तर-पश्चिम में स्थित है।

[5216] एलिय्याह यह आवश्यक मानते थे कि सभी दुष्ट लोग नष्ट हो जाएँ। हालाँकि, प्रभु एलिय्याह को आँधी में, न भूकंप में, न आग में प्रकट हुए, बल्कि एक कोमल हवा में प्रकट हुए, यह दिखाने के लिए कि, यद्यपि वह दुष्टों को भयानक प्राकृतिक घटनाओं के माध्यम से नष्ट कर सकते थे, वह लोगों को नम्रता और धीरज से शासन करना बेहतर मानते हैं।

एलियाह ने प्रभु को पास से गुजरते हुए सुना, तो उसने अपने चोगे से अपना चेहरा ढँक लिया और गुफा से निकलकर द्वार पर खड़ा हो गया। उसने प्रभु को उससे बात करते हुए सुना:

'हे इलियाह, तुम यहाँ क्या कर रहे हो?'

इल्याह ने उत्तर दिया:

'हे सर्वशक्तिमान प्रभु, मैं तेरे लिए उत्साही रहा हूँ, क्योंकि इस्राएल के लोगों ने तेरी वाचा को त्याग दिया है, तेरे वेदियों को ढाँ दिया है और तेरे भविष्यद्वक्ताओं को तलवार से मार डाला है; मैं ही अकेला बच गया हूँ, और वे मेरी जान लेने की ताक में हैं।'

तथापि, प्रभु ने एलियाह को उसके दुख में सांत्वना दी और उसे यह प्रकट किया कि इस्राएल के सभी लोग उनसे विमुख नहीं हुए थे, बल्कि उनके पास सात हजार ऐसे छिपे हुए दास थे जिन्होंने बाल के सामने अपने घुटने नहीं टेके थे। उसी समय, प्रभु ने एलियाह को अहब और यजेबेल और उनके पूरे घराने के निकटवर्ती विनाश की घोषणा की, और एलियाह को आज्ञा दी कि वह इस्राएल के राज्य पर शासन करने के लिए येहू नामक एक योग्य पुरुष को नियुक्त करे, जिसे अहब के पूरे घराने का संहार करना था, और एलिशा को एक भविष्यवक्ता के रूप में अभिषेक करे[5217] । इस प्रकार, अपने सेवक को सांत्वना देने के बाद, प्रभु उससे चले गए। परमेश्वर के पुरुष ने प्रभु की आज्ञा पर होरेब से प्रस्थान किया; रास्ते में वह शापhat के पुत्र एलीशा से मिला, जो बारह जोड़ी बैलों से हल जोत रहा था; अपना अंगोछा उस पर डालकर, पवित्र एलियाह ने उसे प्रभु की इच्छा बताई, उसे एक भविष्यवक्ता नियुक्त किया, और उसे अपने पीछे चलने की आज्ञा दी। तब एलीशा ने एलियाह से कहा:

'मैं आपसे विनती करता हूँ, मुझे थोड़ी देर के लिए जाने दें ताकि मैं अपने पिता और माता को विदा कह सकूँ, और फिर मैं आपके पीछे आ जाऊँगा।'

संत एलिया ने उसका रास्ता नहीं रोका। एलिशा, घर लौटकर, उन दो बैलों को काट डाला जिनसे वह स्वयं जोता करता था, अपने पड़ोसियों और रिश्तेदारों के लिए दावत तैयार की, और फिर, अपने माता-पिता को विदा कहकर, एलिया के पास गया और उनका शिष्य बनकर उनका हर जगह अनुसरण करने लगा।

उस समय, राजा अहब ने अपनी दुष्ट पत्नी यिज़ेबेल के प्रभाव में, अपने पिछले अपराधों में निम्नलिखित नया अपराध जोड़ दिया।

समरिया में राजा आहाब के महल के पास नाबोथ नामक एक इस्राएली की एक दाख की बारी थी। आहाब ने नाबोथ से प्रस्ताव रखा:

'मुझे अपनी दाख की बारी बेच दो, ताकि वह मेरे लिए एक बगीचा बन जाए, क्योंकि यह मेरे महल के पास है। मैं तुम्हें इससे कहीं बेहतर दूसरी दाख की बारी दूँगा; और अगर वह तुम्हें पसंद न आए, तो मैं तुम्हें तुम्हारी दाख की बारी का दाम पैसे में दे दूँगा।'

नबोत्थ ने उत्तर दिया:

'प्रभु मुझे अपनी forefathers[5218] की विरासत तुम्हें देने से बचाए।'

आहाब नाबथ के उत्तर से खिन्न और अपमानित होकर अपने घर लौट आया, और खीझ के मारे अपना भोजन भी नहीं कर सका। परन्तु यजेबेल ने जब उसके दुख का कारण जान लिया, तो उस पर हँसकर कहा:

'क्या वाकई यही तुम्हारी शक्ति की सीमा है, हे इस्राएल के राजा, कि तुम एक भी व्यक्ति पर अपनी इच्छा नहीं थोप सकते? परन्तु अपना दुख त्यागो, कुछ रोटी खाओ और थोड़ी देर प्रतीक्षा करो: मैं स्वयं नाबोथ की दाख की बारी तुम्हारे हाथों में दे दूँगा।'

यह कहकर उसने राजा के नाम पर इज़राइल के बुजुर्गों के लिए एक फरमान लिखा और उस पर शाही मुहर लगा दी। लिखा गया था कि वे नबूत पर एक झूठा आरोप लगाएँ— —जैसे कि उसने ईश्वर और राजा का अपमान किया हो, और, झूठे गवाह पेश करके, उसे शहर के बाहर पत्थर मारकर हत्या कर दें। और वह अन्यायपूर्ण हत्या अवैध आदेश द्वारा की गई थी। पूरी तरह से निर्दोष नबूत की फाँसी के बाद, जेजेबेल ने अहब से कहा:

'अब उस दाख की बारी पर कब्ज़ा कर लो, क्योंकि नाबोत् अब जीवित नहीं है।'

[5217] इससे यह स्पष्ट है कि, राजाओं और भविष्यवक्ताओं पर अभिषेक के माध्यम से, पवित्र आत्मा उन्हें प्रदान किया जाता है, जो उन्हें अन्य लोगों से अतुलनीय रूप से श्रेष्ठ बनाता है और उन्हें मानवता पर ईश्वर के अधिकार के प्रतिनिधि और साधन बनाता है।

[5218] मूसा की व्यवस्था ने आनुवंशिक संपत्तियों की बिक्री पर रोक लगाई थी (गिनती 36:7)।

नाबोथ की हत्या की खबर सुनकर अहब थोड़ी देर के लिए दुखी हो गया, और फिर वह दाख की बारी पर कब्ज़ा करने चला गया[5219] । रास्ते में, ईश्वर की आज्ञा से, पवित्र नबी एलिय उससे मिले और उससे कहा:

'चूँकि तुमने निर्दोष नाबथ को अन्यायपूर्वक मार डाला है और उसके दाख की बारी पर अवैध रूप से कब्जा कर लिया है, इसलिये यहोवा का वचन है: उसी जगह जहाँ कुत्तों ने नाबथ के लहू को चाटा था, वहाँ कुत्ते तेरा लहू भी चाटेंगे; इसी प्रकार तेरी पत्नी यजेबेल को भी कुत्ते नोच-नोच कर खा जाएँगे, और तेरा सारा कुल नष्ट हो जाएगा।'

अहाब, ये वचन सुनकर, रोया; उसने अपने राजसी वस्त्र उतार दिए, बोरी का वस्त्र पहन लिया, और उपवास किया[5220] । और प्रभु के सामने अहाब का यह क्षीण पश्चाताप इतना प्रभावशाली था कि उसके पूरे घराने पर निर्धारित दंड का क्रियान्वयन अहाब की मृत्यु के बाद तक के लिए स्थगित कर दिया गया। क्योंकि यहोवा ने अपने भविष्यवक्ता एलिय से कहा:

'चूंकि आहाब ने स्वयं को नम्र किया है, मैं उसके जीवनकाल में उसके घर पर विपत्ति नहीं लाऊँगा, बल्कि उसके पुत्र के दिनों में लाऊँगा।'

इसके बाद, अहब तीन वर्ष और जीवित रहा और युद्ध में मारा गया[5221] । उसे युद्ध के मैदान से रथ में सवार कर सामरिया ले जाया गया, और जैसे परमेश्वर के भविष्यवक्ता ने भविष्यवाणी की थी, रथ से बहते हुए उसका लहू कुत्तों ने चाट लिया। इसी प्रकार, जेजेबल और आहाब के पूरे घर के विषय में जो कुछ भी भविष्यवाणी की गई थी, वह सब परमेश्वर के पवित्र एलिय के स्वर्ग में उठाए जाने के बाद, उचित समय पर क्रमशः पूरा हुआ (2 राजा 9:1–37)।

अहाब की मृत्यु के बाद, उसका पुत्र यहोआहाज़ियाह राजा बना; वह न केवल सिंहासन का वारिस था, बल्कि अपने पिता के दुष्ट स्वभाव का भी, क्योंकि उसने अपनी दुष्ट माता यिज़ेबेल की बात मानकर बाल की पूजा की और उसे बलिदान चढ़ाया, जिससे इस्राएल के परमेश्वर को बहुत क्रोध आया। एक दिन, लापरवाही के कारण, अहज़ियाह अपने घर की एक खिड़की से गिर गया और बहुत बीमार हो गया। उसने झूठे देवता बाल के पास दूत भेजे—वास्तव में, उस दानव के पास जो बाल की मूर्ति में वास करता था और जो उससे प्रश्न पूछने वालों को झूठे उत्तर देता था। उसी दानव के पास उसने अपनी सेहत के बारे में पूछने के लिए भेजा था, यह जानने के लिए कि क्या वह अपनी बीमारी से ठीक होगा। जब अहज्याह के दूत बालगढ़ जा रहे थे, तो परमेश्वर की आज्ञा से भविष्यवक्ता एलिय उनके सामने प्रकट हुए और कहा:

'क्या इस्राएल में कोई परमेश्वर नहीं है कि तुम बाळ से पूछने जा रहे हो? लौट जाओ और उस राजा से कह दो जिसने तुम्हें भेजा है: "यहोवा इस प्रकार कहता है: जिस बिस्तर पर तू पड़ा है, उस पर से तू उठकर नहीं उठेगा, परन्तु उसी पर मर जाएगा।"'

वापस लौटने पर, दूतों ने ये बातें बीमार राजा को सुनाईं। राजा ने उनसे पूछा:

'जिसने तुमसे ये बातें कहीं, वह आदमी कैसा था?'

उन्होंने उत्तर दिया:

'वह आदमी बाल-झाड़ से ढका हुआ है और उसकी कमर पर चमड़े का एक पट्टा बँधा हुआ है।'

राजा ने कहा:

'वह तिशबी एलियाह है।'

और उसने पचास के सेनापतियों में से सबसे बड़े को पचास आदमियों के साथ भेजा, ताकि वह एलियाह को ले आए और उसे उसके पास ले आए। वे गए और उन्होंने एलियाह को करमेल पर्वत पर देखा, क्योंकि वह मुख्य रूप से उसी पर्वत पर रहने का आदी था। जब पचास के सेनापति ने एलियाह को पर्वत की चोटी पर बैठे देखा, तो उसने उससे कहा:

'हे परमेश्वर के मनुष्य! नीचे आओ; राजा तुम्हें बुलाता है।'

[5219] राजा के विरुद्ध अपराधों के लिए फांसी दिए गए लोगों की संपत्ति राजा के पास चली जाती थी।

[5220] प्राचीन काल में, शोक व्यक्त करने के लिए, लोग अपने वस्त्र फाड़ देते थे—अर्थात्, छाती के सामने से उन्हें चीर देते थे—अपने सिर पर राख या मिट्टी डाल लेते थे, बोरा पहन लेते थे—अर्थात्, फेल्ट से बना एक सख्त, संकरा, बिना आस्तीन का वस्त्र, जो बोरे जैसा दिखता था—उपवास करते थे, और अपने शरीर को धोने से बचते थे। वे अपने कपड़े नहीं धोते या बदलते थे, सारा आभूषण उतार देते थे, यहाँ तक कि अपने जूते और चप्पलें (पट्टी से बँधे छोटे लकड़ी के तख्ते) भी उतार देते थे, और नंगे पैर चलते थे; वे अपने बाल और दाढ़ी काट लेते थे। गहरे दुख में, वे धूल और राख में जमीन पर बैठ या लेट जाते थे; वे अपनी ठुड्डी—अर्थात् नाक के नीचे चेहरे का हिस्सा—को इस बात के संकेत के रूप में ढक लेते थे कि वे बोलना नहीं चाहते, और वे अपने पूरे चेहरे और सिर को भी ढक लेते थे।

[5221] सीरियाई राजा बेन-हदद के साथ युद्ध के दौरान।

संत एलियाि ने पचास के कप्तान से उत्तर दयिा:

'यदि मैं परमेश्वर का पुरुष हूँ, तो स्वर्ग से आग गरिकर तुम्हें और तुम्हारे पचास आदमयिों को भस्म कर दे।'

और तुरंत स्वर्ग से आग गरि पड़ी और उन्हें भस्म कर दयिा। राजा ने पचास के एक और सेनापति को पचास लोगों के साथ भेजा, लेकनि उनके साथ भी वही हुआ: स्वर्ग से गरिी आग ने उन्हें भी भस्म कर दयिा। राजा ने तीसरे , पचास आदमयिों के साथ एक और कप्तान भेजा। इस पचास के कप्तान ने, यह जानकर कि उसके पहले भेजे गए लोगों के साथ क्या हुआ था, भय और नम्रता से संत एलयिाह के पास आया और उनके सामने घुटने टेककर वनिती करने लगा, और कहा:

'हे परमेश्वर के मनुष्य! मैं यहाँ हूँ, और मेरे साथ आए ये आपके दास, आपके सामने खड़े हैं; हम पर दया करें: हम अपनी मर्जी से नहीं आए, बल्कि हमें आपके पास भेजा गया है; हमें आग से नष्ट न करें, जैसे आपने हमारे पहले भेजों को नष्ट कयिा।'

और भवष्यिवक्ता ने उन लोगों को क्षमा कर दयिा जो नम्रता से आए थे; परन्तु उसने पहले आए लोगों को नहीं बख्शा, क्योंकि वे घमंड और अधकिार के साथ आए थे, उसे बंदी बनाकर अपमानपूर्वक ले जाने की इच्छा से। प्रभु ने संत एलयिाह को आज्ञा दी कि वे बनिा भय के इस तीसरे समूह के साथ जाएँ और राजा से वही बात कहें जो उन्होंने पहले कही थी। इसलिए, परमेश्वर के पुरुष, पहाड़ से उतरकर, पचास के सेनापति और उसके लोगों के साथ गए। जब वे राजा के पास पहुँचे, तो एलयिाह ने उससे कहा:

'परमेश्वर की यह वाणी है: क्योंकि तूने अपने प्राणों के वषिय में बaal से पूछने के लिए भेजा, मानो इस्राएल में कोई परमेश्वर न हो जसिसे तू पूछ सके, इस कारण तू उस बछिौने से उठकर नहीं उठेगा जसि पर तू पड़ा है, परन्तु तू मर जाएगा।'

और अहज्याह की मृत्यु उस भवष्यिवक्ता के द्वारा कहे गए परमेश्वर के वचन के अनुसार हुई। अहज्याह के बाद, उनके भाई यहोराम राजा बने, क्योंकि अहज्याह के कोई पुत्र नहीं थे। यहोराम के साथ, आहाब के घराने की वंशावली समाप्त हो गई, जो पवत्रि नबी एलशिा के दनिों में परमेश्वर के क्रोध से समाप्त हो गई थी, जैसा कि उनकी जीवनी में दर्ज है।

जब प्रभु के लिए एलयिाह को देह में जीवति स्वर्ग में उठाने का समय नकिट आ गया, तब एलयिाह और एलशिा गलिगाल नगर से बेतेल नगर की ओर यात्रा कर रहे थे। ईश्वर से प्राप्त एक प्रकाशन द्वारा यह जानकर कि स्वर्ग में उनका आरोहण नकिट था, एलयिा एलीशा को गलिगाल में ही छोड़ जाना चाहते थे, और उन्होंने नम्रतापूर्वक उससे उस महमिा को छपिाया जो ईश्वर की ओर से उनकी प्रतीक्षा कर रही थी। उसने एलशिा से कहा, 'यहाँ ठहर, क्योंकि यहोवा ने मुझे बेतेल भेजा है।' पर पवत्रि एलशिा, जो दव्यि प्रकटवाक्य से जानता था कि क्या होने वाला है, ने उत्तर दयिा:

'जसि प्रकार यहोवा जीवति है, और जैसे तेरी आत्मा जीवति है, मैं तुझे न छोड़ूंगा,' और दोनों बेतेल को गए। बेतेल में रहने वाले भवष्यिद्वक्ताओं के पुत्र[5222] , नजिी तौर पर एलशिा के पास आए और उससे कहा:

'क्या तुम्हें पता है कि प्रभु तुम्हारे स्वामी को तुमसे छीनने वाले हैं?'

एलशिा ने उत्तर दयिा:

'मैं भी जानता हूँ, परन्तु इसे अपने तक ही रखो।'

इसके बाद, एलयि्याह ने एलशिाय से कहा:

'यहीं ठहर; यहोवा ने मुझे यरीहो को भेजा है।'

एलशिा ने उनसे उत्तर दयिा:

'जसि परमेश्वर के जीवति रहने की शपथ है, और आपकी आत्मा के जीवति रहने की शपथ है, मैं आपको नहीं छोड़ूंगा,' और वे दोनों यरीहो गए। यरीहो में रहने वाले भवष्यिद्वक्ताओं के पुत्रों ने एलीशा के पास आकर उससे कहा:

'क्या तुम जानते हो कि आज प्रभु तुम्हारे स्वामी को तुमसे छीन लेगा?'

[5222] इस्राएलयिों में, 'नबयिों के पुत्र' नबयिों के शष्यि थे। उन्होंने स्कूल या समुदाय बनाए, जनि्हें नबयिों के प्रत्यक्ष प्रभाव में पाला जाता था। भवष्यिद्रष्टा शष्यि प्रार्थना, शक्षिाप्रद वार्तालाप, भक्तपिूर्ण भजन और संगीत में संलग्न रहते थे, और कभी-कभी दव्यि प्रेरणा से ऊँचा उठाए जाते थे। पवत्रि धर्मग्रंथ के अनुसार, 'भवष्यिवाणी करना' का हमेशा दव्यि प्रकटीकरण द्वारा 'भवष्यि की भवष्यिवाणी करना' का अर्थ नहीं होता; लेकनि यह शब्द कभी-कभी 'परमेश्वर की आत्मा के प्रभाव में प्रेरति भाषण देना, उत्साहवर्धक, अभषिक्ति उपदेश देना, परमेश्वर के वचन की व्याख्या करना (1 कुरन्थियिों 14:3–6), परमेश्वर के लिए प्रार्थनाएँ और भजन रचना करना, और संगीत की संगत के साथ उनका पाठ करना और उन्हें गाना' का अर्थ भी देता है। यह सब भवष्यिवाणी करने वाले वदि्यालयों का उद्देश्य और लक्ष्य था। ऐसे वदि्यालय रामाह, बेतेल, यरीहो, गलिगाल और अन्य स्थानों में मौजूद थे।

एलशिा ने उत्तर दयिा:
'मुझे पहले से ही पता है; चुप रहो।'
पवत्रि एलयिा ने एक बार फरि एलीशा से कहा:
'यहीं ठहर, क्योंकि यहोवा ने मुझे यरदन भेजा है।'
लेकनि एलीशा ने कहा:
'जसि परमेश्वर के जीवति रहने की कसम, और जसि प्राण की कसम तुमने खाई है, मैं तुम्हें नहीं छोड़ूँगा,' और वे दोनों साथ-साथ चल पड़े। उनके पीछे, कुछ दूरी पर, भवष्यिवक्ताओं के पुत्रों में से पचास पुरुष थे; जब दोनों पवत्रि भवष्यिवक्ता यॉर्डन पहुँचे, तो एलयिा ने अपना ओढ़ना लयिा, उसे लपेटा और उससे पानी पर प्रहार कयिा; पानी दोनों ओर हट गया, और वे दोनों सूखी भूमि पर यॉर्डन पार कर गए। यॉर्डन पार करने के बाद, एलयिा ने एलशिा से कहा:
'मुझसे माँगो कि मैं तुम्हारे लिए क्या कर सकता हूँ, इससे पहले कि मुझे तुमसे उठा लयिा जाए।'
एलशिा ने उत्तर दयिा:
'मैं नविेदन करता हूँ कि जो आत्मा आप में है, वह मुझ में आप में से दोगुनी हो जाए[5223] ।'
एलयि्याह ने कहा:
'तुमने एक कठनि बात माँगी है; परन्तु यदि तुम मुझे अपने से उठाए जाते देखोगे, तो तुम्हारी वनिती मान ली जाएगी; नहीं तो तुम्हें यह नहीं मलिेगा।'
जैसे ही वे इस तरह चलते और बातें कर रहे थे, अचानक आग का एक रथ और आग के घोड़े प्रकट हुए[5224] और उन्होंने उन्हें एक-दूसरे से अलग कर दयिा, और एलयिा एक बवंडर में स्वर्ग में उठा लिए गए। लेकनि एलशिा ने देखा और पुकारा:
– पति, पति! इज़राइल के रथ और उसके घुड़सवार! (इन शब्दों से ऐसा प्रतीत हुआ मानो वह कह रहे हों: 'आप, पति, स्वयं इज़राइल की शक्ति थे: आपकी प्रार्थना और उत्साह के माध्यम से आपने इज़राइल के राज्य की सहायता युद्ध रथों और सशस्त्र घुड़सवारों की वशिाल संख्या से कहीं अधकि की।') एलशिा अब एलयिाह को और नहीं देख सकता था[5225] । तब उसने अपने वस्त्र पकड़े और शोक में उन्हें फा दयिा। इसके तुरंत बाद, एलयिा का ओढ़ना, जो ऊपर से गरि आया था, उसके पैरों तले आ गरि। उसे उठाकर, एलीशा यरदन के कनिारे खड़ा हो गया और जैसे एलयिा ने कयिा था, वैसे ही दोनों ओर पानी को चीरकर, सूखी भूमि पर से पार हो गया और उस अनुग्रह का वारसि बन गया जो उसके शकि्षक के माध्यम से कार्य कर रहा था। जहाँ तक परमेश्वर के पवत्रि नबी, एलयिाह का प्रश्न है, जन्हिें उनके शरीर सहति आग की रथ में स्वर्ग में उठा लयिा गया था, वे आज भी देह में जीवति हैं, जन्हिें परमेश्वर ने स्वर्ग के आवासों में संरक्षति रखा है। उन्हें माउंट टाबोर पर प्रभु के रूपांतरण के समय तीन पवत्रि प्रेरतिों द्वारा देखा गया था (लूका 9:30), और साधारण नश्वर मनुष्य उन्हें पृथ्वी पर प्रभु के दूसरे आगमन से पहले फरि से देखेंगे। जेजेबेल की तलवार से मृत्यु से बचने के बाद, वह फरि दानव-मसीह की तलवार से पीड़ति होगा (प्रकाशतिवाक्य 11:3-12), और न केवल एक नबी के रूप में बल्कि एक शहीद के रूप में भी, उसे संतों की पंक्तयिों में, एक के तीन रूपों वाले ईश्वर, धर्मी प्रतफिलदाता से, जो सम्मान और महमिा अब उसे प्राप्त है, उससे भी अधकि सम्मान और महमिा प्रदान की जाएगी, पति, पुत्र और पवत्रि आत्मा, जनिका महमिा और स्तुति हो, अब और सदा, और युगानुयुग। आमीन[5226] ।

[5223] नबी एलीशा ने देखा कि नबी एलयिाह, जनिमें एक महान नैतकि आत्मा और भवष्यिवाणी का वरदान था, भी इस्राएलयिों में से कठोर दुष्टों को सच्चे परमेश्वर की ओर नहीं मोड़ सके; इसलिए, परमेश्वर की महमिा के लिए उत्सुक और अपनी कमजोरी से अवगत, उसने एलयिा के पास जो भवष्यिद्वाणी और चमत्कारी आत्मा थी, उसका दोगुना हस्सिा माँगा।

[5224] ईश्वर की वह शक्ति, जिसने एलयिाह को स्वर्ग तक उठाया था, आग के रथ और आग के घोड़ों के रूप में प्रकट हुई, ताकि एलयिाह की ज्वलंत आत्मा और वचन की गवाही दी जा सके, उसे ईश्वर की महमिा के एक वजियी उत्साही रक्षक और इस्राएलयिों के रक्षक के रूप में महमिामय बनाया जा सके, और यह दखिाया जा सके कि उसे उस स्थान पर ले जाया गया था जहाँ आत्माएँ वास करती हैं, जो एक ज्वलंत ज्वाला की तरह ईश्वर के प्रति प्रेम से जलती हैं।

[5225] 2 इतहिास के अध्याय 21 में, राजा योराम के वषिय में, जसिने सेंट एलयिाह के स्वर्गारोहण के बाद यहूदा पर शासन कयिा, यह बताया गया है कि 'उसे भवष्यिवक्ता एलयिाह का एक पत्र मलिा', जसिमें भवष्यिवक्ता ने उसकी अधर्मों की नदिा की और उसकी हसिक मृत्यु की भवष्यिवाणी की।

[5226] पवत्रि भवष्यिवक्ता एलयिाह के जीवन का वृत्तांत 3 राजा 17:1–24, 18:1–46, 19:1–21, 21:1–29 और 4 राजा 1:1–18, 2:1–25, 3:1–27 में दयिा गया है।

ट्रोपारयिन, स्वर 4:

देहधारी एक स्वर्गदूत, भविष्यद्वक्ताओं की नींव, मसीह के आगमन का दूसरा अग्रदूत, महिमामय एलियाह, जो ऊपर से एलीशा के पास भेजा गया था ताकि वह दुर्बलताओं को दूर करे और कुष्ठरोगियों को शुद्ध करे। अत; वह उन पर चंगाई प्रदान करता है जो उसका सम्मान करते हैं।

कॉन्टाकयिन, स्वर 2:

हमारे परमेश्वर के महान कार्यों के भविष्यवक्ता और द्रष्टा, महाप्रसिद्ध इलियाह, जिन्होंने अपने वचन से वर्षा लाने वाले बादलों को आज्ञा दी, मानवजाति से प्रेम करने वाले के पास हमारे लिए प्रार्थना करें।

हमारे पूजनीय पिता चुख्लोम के अब्राहम, गालीच के चमत्कार करने वाले की स्मृति

20 जुलाई को स्मरणोत्सव

हमारे ये पूजनीय पिता, जो अपने युवा काल से ही ईश्वर के प्रति प्रेम से प्रेरित थे, महान चमत्कार करने वाले सर्जियस के पास आए और उनसे ही भिक्षु दीक्षा ग्रहण की। अपने पुण्य जीवन के कारण, उन्हें पुरोहित पद से सम्मानित किया गया, जिसके बाद उन्होंने और भी अधिक उत्साह के साथ भिक्षु तपस्या में स्वयं को समर्पित कर दिया। अत्यधिक विनम्रता से विशिष्ट, उन्होंने आदरणीय सर्गियस के मठ को छोड़ दिया और गालीच क्षेत्र के सुनसान इलाकों में[5227] , वहाँ कई मठों की स्थापना की[5228] । वह एक पहाड़ के पास एक स्थान पर आए और, भरपूर आँसू बहाते हुए, प्रार्थना में लीन हो गए। उसी क्षण, उन्होंने पहाड़ से एक आवाज सुनी जो उनसे कह रही थी:

'अब्राहम! पहाड़ पर चढ़ो। यहाँ मेरी माता का एक आइकन खड़ा है।'

रेवरेंड फादर पहाड़ पर चढ़े और उन्होंने वहाँ उगे एक पेड़ पर सबसे पवित्र परमेश्वर की माता की एक प्रतिमा को खड़ा देखा, जिसमें वे शाश्वत शिशु के साथ थीं। घुटनों के बल गिरकर, उन्होंने आँसुओं के साथ प्रार्थना करना शुरू कर दिया, और एक बार फिर उन्होंने एक आवाज सुनी जो उनसे कह रही थी:

'उठो, अव्राम!'

वह उठा, और वह प्रतिमा स्वयं, बिना किसी सहारे के, उसकी बाहों में उतर आई। इस स्थान पर उसने पहले अपने लिए एक कोठरी बनाई और लंबे समय तक वहाँ एकांत में रहा; कई वर्षों बाद, उसने इस सुनसान जगह पर एक मठ की स्थापना की, कई शिष्यों को इकट्ठा किया, और अटूट उत्साह के साथ उपवास और संयम में स्वयं को समर्पित कर दिया। ईश्वर के पास अपने प्रस्थान के समय का पूर्वज्ञान प्राप्त कर, आदरणीय ने अपने मठ के भाइयों को बुलाया, उन्हें उनके आध्यात्मिक लाभ के लिए निर्देश दिए, मसीह के शरीर और रक्त को ग्रहण किया, और वर्ष 1375 के जुलाई के 20वें दिन, वे शाश्वत निवासों के लिए प्रस्थान कर गए[5229] । हमारे ईश्वर की महिमा हो, अब और हमेशा और युगों-युगों तक।

[5227] यह, बेशक, गालिच और चुखलोमा नगरों के आसपास के क्षेत्र को संदर्भित करता है, जो चुद जनजातियों द्वारा आबाद था, और जो अब कोस्त्रोमा गवर्नरेट में स्थित है। इन्हीं जनजातियों से सम्माननीय अब्राहम ने 'चुखलोमा का' नाम लिया।

[5228] परम पूज्य अब्राहम ने निम्नलिखित मठों की स्थापना की: गालिच के पास चुखलोमा झील (या चुद झील) के तट पर अवस्थित डॉर्मशिन मठ, डॉर्मशिन मठ से 30 वर्स्ट दूर एक छोटी झील के तट पर अब्राहम का महान मरुभूमि, वोच नदी के तट पर वोच मठ, और बाद वाले से 13 वर्स्ट दूर मध्यस्थता मठ। इन मठों का स्थानीय निवासियों पर अत्यंत लाभकारी प्रभाव पड़ा, जो यद्यपि बपतिस्मा द्वारा ईसाई थे, लेकिन ईसाई धर्म के मूल सिद्धांतों से बहुत कम परिचित थे और अत्यंत असभ्य व्यवहार और रीति-रिवाजों के कारण, कई प्राचीन चुद अंधविश्वासों से चिपके हुए थे।

[5229] परम पूजनीय अब्राहम का निधन पोक्रोव्स्की मठ में हुआ, जिसकी स्थापना उन्होंने की थी। उनके अवशेष उनके नाम से समर्पित चर्च के एक पार्श्व चैपल में फर्श के नीचे विराजमान हैं।

3 अगस्त

21 जुलाई (पुराने कैलेंडर के अनुसार)

इसी दिन, हम गुफाओं के पूजनीय मौनव्रती ओनूप्रियस का स्मरण करते हैं, जो 12वीं शताब्दी में रहते थे।

पवित्र भविष्यवक्ता यहेजकेल का जीवन

21 जुलाई को स्मरण किया जाता है

[5230][5231]पवित्र भविष्यवक्ता एज़ेकिएल सरीरा नामक एक यहूदी नगर से थे। वे लेवी वंश के बुज़ियाह के पुत्र और सर्वोच्च ईश्वर के पुरोहित थे। यरूशलेम की दूसरी बंधकता के दौरान, उन्हें यहूदियों के राजा यहोयाकीम (जिन्हें पवित्र शास्त्रों में एल्याकीम भी कहा जाता है (2 राजा 24:1)) के साथ बेबीलोन ले जाया गया था। यरूशलेम को बेबीलोन के राजा नबूकदनेसर ने तीन बार जीता था: पहली बार यहूदा के राजा यहोयाकीम (जिन्हें धर्मग्रंथ में एल्याकीम (2 राजा 23:34) के नाम से भी जाना जाता है), जो योषियाह के पुत्र, यहोआहाज और सिदकीय्याह के भाई, और दूसरे यहोयाकीन के पिता थे, के शासनकाल के दौरान; उन्हें नबूकदनेस्सर द्वारा बेबीलोन ले जाया जाने वाले पहले व्यक्ति थे; उसी समय, पवित्र भविष्यवक्ता दानियेल को तीन युवकों, अननीयाह, अजारीयाह और मिशाएल के साथ बंदी बना लिया गया था। लेकिन कुछ ही समय बाद, नबूकदनेस्सर ने यहोयाकीम को यरूशलेम में फिर से शासन करने के लिए रहा कर दिया, और उसे अपना अधीनस्थ बना लिया। नेबुचadnezzar के शासन के अधीन यरूशलेम में तीन वर्ष तक राज्य करने के बाद, यिर्मयाह ने उन तीन वर्षों के अंत में, उस पर कर देने से इनकार करते हुए, उसका विरोध किया। इसलिए, बेबीलोन की सेना एक बार फिर यरूशलेम पर चढ़ाई कर गई; पवित्र शहर पर कब्जा कर लिया गया, राजा यहोयाकीम को मार डाला गया और कुत्तों द्वारा खाए जाने के लिए शहर के बाहर फेंक दिया गया, जबकि नबूकदनेसर की आज्ञा से, उसके पुत्र—जिसका नाम भी यहोयाकीम था—को उसकी जगह राजा बना दिया गया; उसे उसके पिता का दूसरा नाम, यहोयाकीन दिया गया, और उसे दूसरा यहोयाकीन बनाया गया, जो अपने पिता की तरह ही बेबीलोन के राजा का एक सामंत था। लेकिन चूँकि यह दूसरे यहोयाकीन ने भी यहोवा परमेश्वर की दृष्टि में बुराई की, इसलिए, परमेश्वर की अनुमति से, थोड़े ही समय में नबूकदनेसर फिर से यरूशलेम पर आ पहुँचा और यहोयाकीन को उसके पूरे घराने सहित बंदी बना ले गया; वह बहुत से कुलीनों, पराक्रमी लोगों, और हथियार उठाने में सक्षम सभी को साथ ले गया, विभिन्न कारीगर, और उसने स्वर्ण के पवित्र पात्र भी जब्त कर लिए: यह यरूशलेम का दूसरा बंधुत्व था। बंधुत्व में लिए गए लोगों में शामिल थे: पवित्र भविष्यवक्ता यहेजकेल, मर्दकै, और यीशु के पिता योसेदेक, जिन्होंने बाद में, जरूब्बाबेल के साथ मिलकर, यरूशलेम में नष्ट किए गए मंदिर का पुनर्निर्माण किया। नबूकदनेस्सर द्वारा यरूशलेम का तीसरा और अंतिम विनाश और उजाड़ना राजा सिदकियाह के दिनों में हुआ[5232], जिसे नबूकदनेस्सर ने यहोयाकीन के स्थान पर राजा नियुक्त किया था, और उस पर कर लगाया था। लेकिन जब यहोयाकीन के बाद सिंहासन पर बैठे ज़दिकियाह ने भी नबूकदनेज़र का जुआ उतार फेंका, तो नबूकदनेज़र स्वयं पूरी कलदी सेना के साथ आकर यरूशलेम को पूरी तरह से तबाह कर दिया, उसे आग और तलवार से नष्ट कर दिया, और बचे हुए लोगों को बंदी

[5230] नबूकदनेस्सर कई बेबीलोनियन राजाओं का नाम है। इस मामले में, बेशक, यह नबूपोलसर के पुत्र नबुचद्नेज़र द्वितीय को संदर्भित करता है - वह महान पूर्वी विजेता जिसने सीरिया, फारस और मिस्र को वश में किया और यहूदियों को बंदी बना लिया; उसने 605 से 562 ईसा पूर्व तक शासन किया।

[5231] बाबेल – काल्दीया की राजधानी – दुनिया के सबसे पुराने और सबसे अमीर शहरों में से एक था; इसका निर्माण हम् के वंशज, हुश या कुश के पुत्र नमिरॉड ने किया था। फरात नदी के दोनों किनारों पर स्थित, बाबेल एक विशाल मैदान पर बने एक चतुर्भुज जैसा दिखता था। शहर की परिधि 400 वर्स्ट थी; दीवारें 30 अर्शिन मोटी थीं, ताकि उनकी सतह पर छह रथ एक साथ चल सकें। दीवारों पर 250 मीनारें थीं, जिनमें सौ कांस्य के बने द्वार थे। शहर के केंद्र में, नदी पर एक विशाल पुल था, जिसके पूर्वी किनारे पर शाही महल और बेल का मूर्तिपूजक मंदिर स्थित था। बाद में, बेबीलोन पर फारसी सम्राटों साइरस, दारियस, ज़र्क्सिस और सिकंदर महान ने विजय प्राप्त की, और इसे पूरी तरह से उजाड़ दिया गया।

[5232] जेदकिया ने 599 से 588 ईसा पूर्व तक शासन किया।

बनाकर ले गया। उस समय से, यहूदा का राज्य और पूरे इस्राएल का राज्य दोनों का अस्तित्व समाप्त हो गया। नबूकदनेसर द्वारा यरूशलेम की इस तीसरी विनाश का वर्णन पवित्र भविष्यवक्ता यर्मियाह के जीवन में विस्तार से किया गया है।

[5233]बाबेल की कैद में रहते हुए, परमेश्वर के याजक एज़ेकिएल होवार नामक एक नदी के पास रहते थे; और अपने जीवन के तीसरे वर्ष में, यहोयाकीन के बंदी होने के पाँचवें वर्ष में, चौथे महीने की पाँचवीं तारीख को, उन्हें एक अद्भुत दर्शन हुआ: उन्होंने स्वर्ग को खुला हुआ देखा; उत्तर से एक प्रबल हवा चली, और उसमें से एक बड़ा और तेजस्वी बादल आया; उसके बीच में एक ज्वाला थी, और उसके चारों ओर एक तेज प्रकाश था; इस बादल से चार जीवित प्राणियों का साकार रूप प्रकट हुआ, जो आग में परिष्कृत शुद्ध तांबे के समान थे। प्रत्येक प्राणी के चार मुख थे: एक मनुष्य का मुख, एक सिंह का मुख, एक बैल का मुख और एक गरुड़ का मुख। इसके अलावा, उन सभी के चार-चार पंख थे, और उनके पंखों के नीचे मानव के हाथ थे; दो पंख उड़ान के लिए फैले हुए थे, जबकि दूसरे दो से वे अपने शरीर को ढाँकते थे; उन प्राणियों के बीच आग का भँवर था, और आग से बिजली चमक रही थी। चार बड़े पहिये भी दिखाई दे रहे थे, प्रत्येक जीव के बगल में एक; ये पहिये समुद्र के समान नीले फ़ारसी पत्थर के प्रतीत हो रहे थे, जिनमें सूर्य की किरणों से उत्पन्न सुनहरी चमक थी। इन पहियों के भीतर, मानो, अन्य पहिये दिखाई दे रहे थे; ये सभी पहिये, जैसे जीवंत हों, जीवन शक्ति से युक्त थे और हर ओर आँखों से भरे थे, जबकि चार जीवित प्राणी इन पहियों से, जैसे एक रथ से, जुड़े हुए प्रतीत हो रहे थे; और जब जीवित प्राणी चलते, तो पहिये उनके साथ चलते; जब जीवित प्राणी रुकते, तो पहिये भी रुक जाते। जब वे चलते थे, तो उनके पंखों से एक ध्वनि और गड़गड़ाहट निकलती थी, जैसे अनेक जल की गर्जना, जैसे किसी महान भीड़ का कोलाहल। परन्तु जब वे स्थिर खड़े रहते थे, तो उनके पंख चुप रहते थे। इस प्रकार वे खड़े रहे और चुप रहे, जब परमेश्वर की वाणी ऊपर से आई। क्योंकि इन चार जीवों और पहियों के ऊपर स्वर्ग का एक गुंबद दिखाई दिया, जो स्फटिक जैसा था, और उस गुंबद पर एक सिंहासन, मानो नीलम का; और उस सिंहासन पर एक मनुष्य के समान अत्यंत तेजस्वी आकृति, और उसके चारों ओर एक प्रकाशमान वृत्त, जो वर्षा के दिन बादलों में दिखाई देने वाली इंद्रधनुषी किरण की तरह चमकता था।

पवित्र भविष्यवक्ता यहेजकेल द्वारा देखी गई प्रभु की महिमा का दर्शन ऐसा था। ईश्वर-ज्ञानी और दैवीय रूप से प्रेरित पुरुषों की व्याख्या के अनुसार, नीलमणि जैसे सिंहासन पर स्थित वह तेजस्वी मानवीय आकृति परम पवित्र कुँवारी के गर्भ में परमेश्वर के पुत्र के अवतार का पूर्वाभास देती थी, जो परमेश्वर के लिए जीवित सिंहासन थे, जिन्होंने उनके माध्यम से मानव रूप धारण किया, और जिनका पूर्वाभास इस नीलमणि जैसे सिंहासन द्वारा दिया गया था; क्योंकि कीमती नीलम रत्न, जो अपने चमकीले रंग में आकाश के समान है और जिसमें आकाश की तरह तारे और सुनहरे कण हैं, परम पवित्र कुँवारी मरियम का प्रतीक है, जिनमें, स्वर्गीय स्वभाव की तरह, एक भी दोष नहीं है; जिसका गर्भ अकल्पनीय को समाहित कर स्वर्ग से भी विशाल सिद्ध हुआ, और जो, तारों की तरह, ईश्वर की कृपा के अनेक उपहारों से सुशोभित है; चार चेहरों वाले चार जीव चार पवित्र सुसमाचार लेखकों का पूर्वाभास देते हैं, जिनमें से प्रत्येक ने पृथ्वी पर लोगों के बीच मसीह के जीवन का वर्णन करते हुए, उनकी मानवता को चित्रित किया, जिसे इन जीवों में एक मानव चेहरे द्वारा प्रतीकित किया गया है; सिंह के मुख से मसीह का ईश्वरत्व प्रकट हुआ; बछड़े के मुख से मसीह का दुख सूचित हुआ; मसीह का पुनरुत्थान और स्वर्गारोहण, गरुड़ के मुख से चित्रित किया गया[5234] । कई आँखों वाले चार पहिये, जिनके भीतर अन्य पहिये दिखाई देते थे, ब्रह्मांड के चार भागों का प्रतीक थे, जिसमें विभिन्न राष्ट्र शामिल थे; वहाँ प्रवेश करने के बाद, प्रेरितों के उपदेश ने कई लोगों की आध्यात्मिक आँखें परमेश्वर के ज्ञान और चिंतन के लिए खोल दीं; जबकि दृश्य प्रकटीकरण के बीच चलती आग, और उसके चारों ओर की महान किरणें, परमेश्वर की अथाह महिमा की भव्यता को प्रकट करती थीं। इसी प्रकार, उस अद्भुत और भयानक दर्शन में अन्य आध्यात्मिक रहस्यों की भी पूर्व-छाया दिखाई गई थी; उसे देखकर, पवित्र यहेजकेल भय से भूमि पर मुँह के बल गिर पड़े और उन्हें ऊपर से, मानव रूप में सिंहासन पर विराजमान से, एक आवाज़ सुनाई दी, जो उनसे कह रही थी:

'हे मनुष्य के पुत्र, अपने पाँवों पर खड़ा हो जा, और मैं तुझ से बात करूँगा।'

और एक अदृश्य शक्ति उसमें प्रवेश कर गई, जिसने उसे जमीन से उठाकर खड़ा कर दिया।

[5233] अर्थात्, मार्च से गिनती करके, जून में।

[5234] तदनुसार, कला में, पवित्र सुसमाचार लेखकों को प्रतीकात्मक रूप से दर्शाया गया है: मत्ती को एक आदमी के रूप में, मरकुस को एक शेर के रूप में, लूका को एक सांड के रूप में, और यूहन्ना को एक गरुड़ के रूप में।

जब भविष्यवक्ता उस प्रभु की महिमा के सामने, जो उसे प्रकट हुआ था, काँपता हुआ खड़ा रहा, तो प्रभु ने उससे कहा:

– हे मनुष्य के पुत्र! मैं तुझे इस्राएल के घराने के पास भेजता हूँ, ऐसे लोगों के पास जो मुझ पर विलाप करते हैं और मुझ से विद्रोह करते हैं; वे और उनके पूर्वज आज तक मुझ पर से मुँह मोड़े हुए हैं; वे कठोर हृदय और कठोर मन वाले लोग हैं: मैं तुझे उन्हीं के पास भेजता हूँ, और तू उन्हें मेरी बातें सुनाना; चाहे वे तुझ पर क्रोध करें और बिच्छुओं की नाईं तुझे घेरा करें, फिर भी उनसे डरना नहीं (यहे. 2:3–4)।

जब यहोवा ने ये वचन कहे, तब एज़ेकिएल ने एक हाथ को अपनी ओर बढ़ा हुआ देखा, जो एक लपेटे को थामे हुए था; उस हाथ ने उसके सामने वह लपेटा खोला, और उस पर दोनों ओर लिखा था: 'शोक, विलाप और हाय'।

और प्रभु ने उससे कहा:

'हे मनुष्य के पुत्र! इस लपेटे को खा, और जाकर इस्राएल के लोगों से वही कह जो मैं तुझे आज्ञा दूँ' (यहे. 3:1)।

यहेजकेल ने अपना मुँह खोला और वह स्वल्पपत्र खा गया, और वह उसके मुँह में मधु की तरह मीठा था। उस समय से यहेजकेल भविष्यद्वाणी की आत्मा और अनुग्रह से भर गया, और जो कुछ परमेश्वर ने बाद में उससे कहा, वह उसे हृदय में बसा लेता था। और जैसे ही यह अद्भुत दर्शन उसकी दृष्टि से ओझल होने लगा, उसने एक आवाज़ सुनी, मानो किसी बड़े जनसमूह की आवाज़, जो कह रही थी:

'अपने स्थान से यहोवा की महिमा धन्य हो!'

उसी समय, उड़ने वाले प्राणियों के पंखों की सरसराहट और घूमते पहियों की आवाज़ एक बड़े भूकंप की आवाज़ जैसी थी। इस प्रकार परमेश्वर की महिमा का यह भव्य रथ उसकी दृष्टि से ओझल हो गया, और यह दर्शन समाप्त हो गया। इस दर्शन के बाद, भविष्यवक्ता ने जो कुछ उसने देखा और सुना था, उस पर मनन करते हुए सात दिन मौन में बिताए। और फिर यहोवा का वचन उस पर आया, यह कहता हुआ:

हे मनुष्य के पुत्र! मैं तुझे इस्राएल के घराने का पहरुआ ठहराता हूँ; जो वचन तू मुझसे सुनै, वह तू जाकर उन्हें सुनाना और मेरी ओर से चेतावनी देना। जब मैं दुष्ट से कहूँ, 'तू निश्चय ही मर जाएगा!' और यदि तू उसे चेतावनी नहीं देता और दुष्ट को उसके दुष्ट मार्गों से हटाने के लिए बोलता नहीं है, ताकि वह जीवित रहे, तो वह दुष्ट अपनी दुष्टता में मर जाएगा, और मैं तेरे प्राणों का हिसाब उससे लूंगा। पर यदि तू दुष्ट मनुष्य को उसकी दुष्टता और उसके बुरे मार्गों से फटकारता भी है, और वह अपनी दुष्टता से या अपने बुरे मार्गों से न लौटे, तो वह अपनी दुष्टता में मर जाएगा, और तू अपनी प्राण की रक्षा करेगा।

इसके बाद, आत्मा द्वारा बाहर खुले मैदान में ले जाए जाने पर, यहेज़केल ने फिर से, पहले की तरह, यहोवा की महिमा देखी, और उसे आज्ञा दी गई कि वह अपने घर में चुपचाप रहे और तब तक मौन रहे जब तक यहोवा उसे अपना मुँह खोलकर परमेश्वर के वचन बोलने और प्रचार करने की आज्ञा न दे। इस मौन के समय के दौरान, कुछ वर्षों में होने वाली खलदीयियों द्वारा यरूशलेम की अंतिम घेराबंदी और विनाश, और लोगों का नाश उसे प्रकट किया गया, ताकि वह न केवल इसे लोगों को वचन में प्रचार कर सके, बल्कि क्रिम में भी प्रदर्शित कर सके: प्रभु ने उसे आज्ञा दी कि वह अपना सिर और दाढ़ी मुंडवाए और अपने बालों को तीन भागों में बाँटे; एक भाग को उसकी कैद में साथ रहे लोगों की आँखों के सामने आग में जलाया जाना था; दूसरे भाग को तलवार से काटा जाना था; और तीसरे को हवा में बिखेर दिया जाना था, जो इस बात का संकेत करता था (जिससे यह प्रकट हो कि) परमेश्वर का क्रोध, जो यरूशलेम और पूरे फिलिस्तीन में रहने वाले इस्राएल के लोगों को दंडित करना चाहता था—जो सच्चे पश्चाताप की ओर मुड़ने के लिए अनिच्छुक थे और मूर्तिपूजा की घृणित कृत्यों को नहीं छोड़ रहे थे—ने उन्हें अपने धर्मी न्याय से तीन भागों में विभाजित कर दिया था, ताकि प्रत्येक भाग अपनी-अपनी सज़ा भुगत सके: इस प्रकार, कुछ यरूशलेम की घेराबंदी के दौरान अकाल और महामारियों से मरेंगे, अन्य खलदीयियों की तलवार से गिरेंगे, और तीसरे संसार भर में बिखर जाएंगे। यह सब बाद में घटित हुआ, क्योंकि यहूदी लोगों ने परमेश्वर के क्रोध को बहुत भड़काया था – क्योंकि, यद्यपि उन दिनों यहूदी वास्तव में स्वर्ग के परमेश्वर की उपासना करते थे, जिसने उनके पूर्वजों को मिस्र से एक मज़बूत हाथ और एक फैली हुई भुजा से बाहर निकाला था, वे, सुलैमान के समय से, मूर्तियों को प्रणाम करने के आदी हो गए थे, वे उन्हें नहीं छोड़ पाए, क्योंकि वे उनके अधर्मी त्योहारों के प्रलोभन में पड़ गए थे, जिनके दौरान किसी ने भी उन्हें घृणित भोज करने और शर्मनाक तथा गैरकानूनी कृत्य करने से नहीं रोका, क्योंकि स्वयं राजा, राजकुमार, न्यायाधीश और बुजुर्ग ही इस दुष्टता के उकसाने वाले थे। इसलिए, यहूदियों ने स्वर्ग के परमेश्वर की उपासना की और साथ ही मूर्तिपूजक दुष्टता से भी चिपके रहे; उन्होंने परमेश्वर के मंदिर में मूर्तियाँ स्थापित कीं,

और ठीक उसी स्थान पर जहाँ पहले एकमात्र सर्वोच्च परमेश्वर को बलिदान चढ़ाए जाते थे, वहाँ, बाद में, राक्षसों को एक साथ घृणित बलिदान चढ़ाए गए, जो प्रभु को अत्यंत अप्रिय था, क्योंकि इसने इस लोगों की तुलना एक व्यभिचारिणी से की जो अपने सच्चे पति के प्रति विफादार नहीं रहती, बल्कि दूसरों के साथ भी व्यभिचार करती है। इसीलिए, सुसमाचार में, प्रभु ने बाद में इस लोगों के बारे में *'एक दुष्ट और व्यभिचारी पीढ़ी'* (मत्ती 12:39) के रूप में कहा; और इससे पहले, यिर्मयाह की भविष्यिवाणी में (यिर्म. 3:1), परमेश्वर ने इस पीढ़ी की तुलना एक व्यभिचारिणी पत्नी से की और, लंबे समय तक, पवित्र भविष्यिवक्ताओं के माध्यम से, उन्हें पश्चाताप करने के लिए प्रोत्साहित किया। लेकिन जब उन्होंने पश्चाताप नहीं किया, तो प्रभु ने उन्हें पूर्ण विनाश के लिए कलदीयों के हवाले कर दिया और उनकी भूमि को सत्तर वर्षों के लिए सुनसान छोड़ दिया। हालाँकि, सत्तर वर्ष पूरे होने के बाद जेरूब्बाबेल द्वारा यरूशलेम और मंदिर का पुनर्निर्माण किया गया, लेकिन वे अब अपनी पूर्व सुंदरता, धन-संपत्ति और महिमा को नहीं रख पाए; और यद्यपि यहूदी, बेबीलोन की बंधुआई से छुड़ाए जाने के बाद, अपनी भूमि पर लौट आए, फिर भी उनका शासन अब उनके अपने राजाओं के हाथ में नहीं था, बल्कि वे खुद को एक विदेशी और भारी जूए के नीचे पाया, विदेशी राजाओं—पहले बेबीलोनियों, फिर मिस्रवासियों, और बाद में रोमनों—की सेवा करते हुए, जिनके हाथों से वे अंततः नष्ट हो गए। प्रभु स्वयं ने यरूशलेम के इस अंतिम विनाश की भविष्यिवाणी करते हुए कहा: *'एक पत्थर पर दूसरा पत्थर न छोड़ा जाएगा; सब कुछ उजाड़ दिया जाएगा'* (मत्ती 24:2)। और पवित्र भविष्यिवक्ता यहेज़केल (अन्य पवित्र भविष्यिवक्ताओं के साथ) ने खलदीयियों द्वारा किए गए पहले विनाश की भविष्यिवाणी की थी।

पवित्र भविष्यिवक्ता यहेज़केल के समय, जो काल्दीयों की भूमि, बेबीलोन में बंदी थे, पवित्र यिर्मयाह यरूशलेम में रहते थे। यद्यपि ये दोनों भविष्यिवक्ता बहुत दूर थे, फिर भी उन्होंने सर्वसम्मति से यरूशलेम के उजाड़ हो जाने और अपनी पुस्तकों में प्रकट हुई बहुत सी अन्य बातों की भविष्यिवाणी की: क्योंकि परमेश्वर का आत्मा दोनों भविष्यिवक्ताओं में कार्य कर रहा था; और यरूशलेम के कुछ लोगों ने यिर्मयाह के भविष्यिद्वाणी के वचन बन्धुआवास में अपने भाइयों के पास भेजे, जबकि एज़ेकिएल के वचन बबेल से यरूशलेम को भेजे गए; और यिर्मयाह ने यरूशलेम में यहेजकेल की भविष्यिवाणी की सच्चाई की गवाही दी, जबकि यहेजकेल ने बेबलिोन में अपने लोगों के सामने यिर्मयाह की भविष्यिवाणी की सच्चाई की गवाही दी, फिर भी, दुष्ट, अविश्वासी यहूदियों ने उनमें से किसी पर भी भरोसा नहीं किया, जो मूर्तिपूजा से भटक गए थे, उन्होंने झूठे नबियों में अपना पूरा भरोसा रखा, जबकि परमेश्वर की आत्मा से सचमुच भविष्यिवाणी करने वाले उन पवित्र नबियों को झूठा समझा। इसलिए, यरूशलेम के लोगों ने यिर्मयाह को सताया, जबकि बेबीलोन की कैद में रहने वालों ने एज़ेकिएल को दर्दनाक बेड़ियों में जकड़ रखा था, ठीक वैसे ही जैसे प्रभु ने उनसे पूर्व में कहा था: *'देख, वे तुझ पर बेड़ियाँ डालेंगे और तुझे उनसे बाँध देंगे'* (यहे. 3:25)। संत यहेजकेल इतने दूरदर्शी थे कि वे अपने से बहुत दूर घटित होने वाली घटनाओं को भी ठीक वैसे ही देखते थे जैसे वे उनके सामने घटित हो रही हों: बेबलिोन में रहते हुए, उन्होंने देखा कि यरूशलेम में क्या हो रहा था (यहे. 8:11, 16), और इस बारे में अपने साथ कैद में रहे लोगों से बात की। एक अवसर पर, एक स्वर्गदूत द्वारा उन्हें बेबीलोन से यरूशलेम ले जाया गया और सुलैमान के मंदिर में रखा गया; वहाँ उन्होंने मूर्तियों को बाहर और अंदर दोनों जगह खड़ा देखा, जो पवित्र स्थान में विरानता की घृणा के रूप में थीं, और उनके सम्मान में की जा रही पूजा के घृणित कार्यों को देखा: उसने इज़राइल के बुज़ुर्गों को मूर्तियों के सामने धूप जलाते, याजकों को परमेश्वर के सिंहासन से अपना मुँह फेरकर सूर्य की पूजा करते देखा, जबकि महिलाएँ फसह के लिए रोती हुई बैठी थीं, जो यूनानियों द्वारा रचा गया एडोनिस था[5235] , जिसने घृणित वीनस के साथ व्यभिचार किया था[5236] , एक जंगली सूअर द्वारा मारा गया था, उसे विधर्मी लोगों द्वारा देवताओं में गिना जाता था, और भ्रष्ट यहूदियों द्वारा एक देवता के रूप में स्वीकार किया गया था। उसने परमेश्वर की महिमा भी देखी, वैसी ही जैसी उसने पहले होवारे नदी पर देखी थी: वह, अपने क्रोध में, मंदिर को छोड़कर खाली करने ही वाली थी। और उसने प्रभु को यह कहते हुए सुना:

'हे मनुष्य के पुत्र! क्या यह दुष्टता, जो ये लोग कर रहे हैं, जैसा कि तुम देखते हो, पहले से ही महान नहीं है? उन्होंने देश को दुष्टता से भर दिया है और मुझे अत्यंत भड़काया है (जैसे कि उन्होंने मुझे भड़काने और चिढ़ाने की साजिश रची हो); इसलिये मैं अपने क्रोध में उनसे प्रतिशोध लूंगा; मेरी आँख उन्हें न तो बख्शेगी और न ही मैं उन पर दया करूँगा; और भले ही वे मेरी सुनने में ऊँचे स्वर में पुकारें, मैं उन्हें नहीं सुनूँगा।

[5235] एडोनिस को प्राचीन यूनानियों द्वारा फसलों और सामान्य रूप से प्रकृति के देवता के रूप में माना जाता था।

[5236] वीनस प्रेम और सुंदरता की देवी हैं।

तब परमेश्वर का एक और भी ऊँचा स्वर सुना गया, जो धमकी भरे और भयानक ढंग से पुकार रहा था, और भविष्यवक्ता से इस प्रकार कह रहा था:

'शहर पर प्रतिशोध और विनाश है; हर आदमी अपने विनाश के हथियार हाथ में ले ले।'

जब प्रभु ने ये वचन कह लिए, तो छह भयानक हथियारबंद पुरुष खींची हुई तलवारों के साथ आगे आए; उनके बीच एक आदमी था जो सफेद याजकीय वस्त्र पहने हुए था, जिसके पास एक स्याहीदान और एक लिपिक का दंड था, और प्रभु ने उससे कहा:

'यरूशलेम नगर में जाकर मेरे उन सेवकों के माथों पर निशान लगाओ जो इस नगर में की गई अधर्म के कारण अपने मन में शोक करते और कराहते हैं: मैं अपने इन चुने हुओं को दण्ड से बचा लूँगा।'

और यह प्रतिष्ठित व्यक्ति, जो पुरोहित के वस्त्रों में लिपटा हुआ था, आगे बढ़ा और उन लोगों के माथे पर एक निशान लगाया जो सच्चे परमेश्वर की निष्ठापूर्वक सेवा करते थे। यह निशान एक यूनानी अक्षर था जिसे 'ताउ' कहा जाता है, जो एक खड़े हुए क्रॉस जैसा दिखता था, ठीक वैसे ही जैसे हमारी वर्णमाला में बड़ा अक्षर 'टी' होता है। जब यह व्यक्ति, शानदार पुरोहित के वस्त्रों में लिपटा हुआ, नगर में घूम रहा था और परमेश्वर के सेवकों पर चिह्न लगा रहा था, तब उसके पीछे-पीछे उन छह भयानक पुरुषों को भेजा गया, जो नेबुचद्नेज़र के साथ यरूशलेम को उजाड़ने के लिए आने वाले कलदी सेनाओं के छह सेनापतियों का प्रतिनिधित्व करते थे; इन छह पुरुषों से क्रोधित प्रभु ने कहा:

'जाओ, प्रहार करो; किसी को न बख्शो, बूढ़े या जवान, स्त्रियों या कन्याओं, या शिशुओं पर कोई दया न दिखाओ, बल्कि उन्हें सभी को मार डालो, पवित्र पुरोहितों और बुज़ुर्गों से शुरू करो; परन्तु उन पर हाथ न उठाना जिन पर मेरा चिह्न लगा है।'

और पवित्र भविष्यवक्ता ने इस दर्शन में देखा कि यरूशलेम के लोगों का हर वर्ग और हर आयु वर्ग, पुरुष और महिलाएँ दोनों, वध किए जा रहे थे, ठीक वैसे ही जैसे बाद में होने वाला था। और भविष्यवक्ता प्रभु के सामने साष्टांग दण्डवत हो गया, पुकार कर कहने लगा:

'हाय, हाय! यह मेरे लिए कितना दुखद है, अदोनाई, हे प्रभु, क्योंकि आप इस्राएल के अवशेष को नष्ट कर रहे हैं, यरूशलेम पर अपना क्रोध उंडेल रहे हैं!'

इसके बाद, उन्होंने एक बार फिर उस पुरोहित के वस्त्रों में सजे सुंदर पुरुष को देखा, जो प्रभु की ओर मुड़कर बोला:

'हे प्रभु, मैंने वैसा ही किया है जैसा आपने मुझे आज्ञा दी थी।'

और एक बार फिर प्रभु ने उसे आज्ञा दी कि वह करूबों के पहियों के बीच से जलते हुए कोयले के मुट्ठी भर उठाकर पूरे यरूशलेम पर बिखेर दे, यह संकेत देने के लिए कि वह खलदीयियों द्वारा न केवल तलवार से बल्कि आग से भी नष्ट किया जाएगा। इस समाप्ति और दर्शन के बाद, भविष्यवक्ता ने खुद को काल्दीया में अपनी जगह पर वापस पाया, और जो उसने देखा था वह जल्द ही घटित हो गया।

पवित्र यहेज़केल ने उन पड़ोसी मूर्तिपूजकों के विषय में भी भविष्यवाणी की जिन्होंने यरूशलेम का उपहास उड़ाया था जब परमेश्वर द्वारा उसे दंडित किया जा रहा था—अम्मोनी, मोआबी, एदोमी, फिलिस्तीनियों, एदोम, टायर और मिस्र के लिए भी भविष्यवाणी की, कि उन पर वही दैवीय दंड आएगा जो उन्हें खलदानीयों के द्वारा भुगतना था, क्योंकि वे यरूशलेम के विनाश और उजाड़ पर प्रसन्न हुए थे। इन सब के घटित होने के बाद, उन्होंने यहूदियों के विरुद्ध परमेश्वर के क्रोध के समाप्त होने, बेबीलोन से अपने देश में उनकी वापसी, और नगर तथा मन्दिर के पुनर्स्थापन और नवीनीकरण के विषय में भविष्यवाणी की; क्योंकि यरूशलेम के पहले ही उजाड़ और सुनसान हो जाने के बाद, उसे प्रभु के हाथ से दूसरी बार यहूदा के देश में उठा लिया गया (यहे. 40:5), और वहाँ प्राप्त प्रकाशन के दौरान, उसने देखा कि जिस स्थान पर यरूशलेम स्थित था, उसे परमेश्वर की आज्ञा से मापा जा रहा था, प्रभु का नगर और मंदिर बनाए जा रहे थे, और परमेश्वर की महिमा ने अपने मंदिर को भर दिया, जैसा कि उनकी भविष्यद्वाणी की पुस्तक में विस्तार से वर्णन किया गया है।

यह संपूर्ण दर्शन शत्रु के कार्य से हमारी मुक्ति और मसीह की कलीसिया की स्थापना की एक रहस्यमयी पूर्वसूचना थी: यह परमेश्वर के अवतार, जो परम पवित्र कुंवारी से जन्मे, के माध्यम से पूरा होना था, जिन्हें इस भविष्यवक्ता ने 'बंद द्वार' कहा था और जो स्वयं परमेश्वर के सिवा किसी के लिए भी पार न हो सकने वाले थे (यहेजकेल 44:2)। उसे मृतकों के पुनरुत्थान के विषय में भी परमेश्वर से एक दर्शन प्राप्त हुआ (यहेज़केल 37:1)। उसने देखा मानो परमेश्वर के हाथ से उसे उठाकर एक ऐसे मैदान के बीच में रख दिया गया था जो पूरी तरह से सूखी मानव हड्डियों की एक

बड़ी भीड़ से भरा था; और परमेश्वर के वचन पर वे मांस से ढक दिए गए, और जब आत्मा उनमें प्रवेश कर गया, तो वे जीवित हो उठे और अपने पैरों पर खड़े हो गए, और वे बहुत बड़ी संख्या में थे। और प्रभु ने कहा:

'मैं तुम्हारी कब्रें खोलूँगा और तुम्हें तुम्हारी कब्रों से निकालूँगा।'

इसके अलावा, परमेश्वर के कई अन्य रहस्यों के विषय में, जो अंतिम दिनों में पूरी स्पष्टता के साथ पूरे होने थे, परमेश्वर के भविष्यवक्ता को प्रकाशन दिए गए; उन्होंने उन सभी की भविष्यवाणी की और उन्हें अपनी पुस्तक में दर्ज किया: जो कोई इच्छा रखता है, वह उन्हें वहाँ पढ़ ले। जहाँ तक हमारी बात है, हम अपने वृत्तांत को संक्षिप्त करते हुए, केवल यह उल्लेख करेंगे—उसके बारे में विश्वसनीय कथकों की गवाही के आधार पर—कि वह भी एक महान चमत्कार करने वाले थे; मूसा की तरह, उन्होंने भी पानी को चीर दिया। अर्थात्, एक अवसर पर, जब यहूदियों की एक बड़ी भीड़ होवारे नदी के किनारे उन पर इकट्ठी हुई थी, तो काल्दीयों ने डाकुओं की तरह उन पर हमला किया; लेकिन उनकी प्रार्थना से नदी का पानी अलग हो गया, और पीछा किए जा रहे लोगों के लिए एक सूखा रास्ता खुल गया, ताकि वे दूसरी तरफ़ पार कर सकें। और यहूदी लोग सूखी ज़मीन पर पार हो गए, जबकि काल्दीय लोग, जिन्होंने उसी रास्ते पर उनका पीछा करने की हिम्मत की, पानी में डूबकर मर गए। जब वे बेबीलोन में दान और गाद के गोत्रों के न्यायाधीश के रूप में सेवा कर रहे थे, और उन्होंने देखा कि वे प्रभु का सम्मान नहीं करते थे और प्रभु के नियम का पालन करने वालों को सता रहे थे, तो उन्होंने उनके बस्तियों पर साँप और अन्य रेंगने वाले जीव भेज दिए, जिन्होंने उनके शिशुओं और पशुओं को खा लिया। फिर, उन पर दया करके, उन्होंने प्रार्थना के द्वारा इन साँपों और रेंगने वाले जीवों को उनसे दूर कर दिया। एक अकाल के दौरान, ईश्वर से अपनी प्रार्थनाओं के द्वारा, उन्होंने लोगों के लिए भोजन को प्रचुर मात्रा में बढ़ा दिया और उन लोगों को पुनर्जीवित किया जो भूख से मरणासन्न और मृत्यु के कगार पर थे; बाद में उन्होंने स्वयं शहीद होकर मृत्यु प्राप्त की[5237]। जब उन्होंने देखा कि उनके यहूदी लोग, जो उनके साथ कैद में थे, काल्दीयों के साथ मूर्तिपूजा में लिप्त हो रहे थे और उनके सभी दुष्ट कर्मों के आदी हो रहे थे, तो उन्होंने उन्हें फटकारा, उन्हें इन पापों को छोड़ने के लिए प्रोत्साहित किया, और उन्हें परमेश्वर के क्रोध के बारे में चेतावनी दी। परिणामस्वरूप, एक यहूदी बुज़ुर्ग, जो खलदीयियों की दुष्टता के आगे झुक गया था, ने क्रोध के एक दौरे में उसे घोड़ों से टुकड़े-टुकड़े करवाकर मार डाला। लोगों ने उसके चीरे-फाड़े शरीर को इकट्ठा किया और उसे मौर के खेत में, अब्राहम के पूर्वजों, शेम और अर्फाक्सद की कब्र में दफनाया। और यहूदियों की एक बड़ी भीड़ उसकी कब्र पर इकट्ठी हुई, और वहाँ उन्होंने सेनाओं के परमेश्वर से अपनी प्रार्थनाएँ कीं, जिसकी महिमा युगानुयुग होती रहे। आमीन।

कॉन्टाकियन, स्वर 4:

हे अद्भुत यहेज़केल, तू परमेश्वर का भविष्यवक्ता बनकर प्रकट हुआ; तूने सभी को प्रभु के अवतार की घोषणा की, इस मेम्ने और सृष्टिकर्ता, परमेश्वर के पुत्र को, युगानुयुग प्रकट किया।

हमारे पूजनीय पितरों समिओन, मसीह के लिए पवित्र मूर्ख, और जॉन, उनके शहादत में साथी की जीवन गाथा

21 जुलाई को स्मरण किया जाता है

[5237] जहाँ तक भविष्यवक्ता यहेजकेल के जीवन के अन्य विवरणों का प्रश्न है, यह ज्ञात है कि वह तेल-अबीब में अपने ही घर में रहता था (यहे. 3:24, 8:1), कि वह विवाहित था और अपनी पत्नी से बहुत प्यार करता था, और कि उसकी पत्नी की अचानक मृत्यु हो गई (यहे. 24:16–18); उनकी भविष्यवाणी की सेवकाई 22 साल तक चली। प्राचीन बेबीलोन के पास स्थित उनकी कब्र आज भी तीर्थयात्रियों को आकर्षित करती है। कब्र का निर्माण राजा यहोयाकीन के द्वारा माना जाता है। – यहेजकेल की भविष्यवाणी की पुस्तक 48 अध्यायों से मिलकर बनी है; इसकी सामग्री विभिन्न प्रकार की सामग्री के मामले में बहुत समृद्ध है: इसमें दर्शन, दृष्टान्त, रूपक, भविष्यवाणियाँ और प्रतीकात्मक कृत्य शामिल हैं। यहेजकेल की पुस्तक के कुछ अंशों की प्रतीकात्मक और रहस्यमय प्रकृति के कारण, यहूदियों ने इसे एक गुप्त ग्रंथ माना और 30 वर्ष से कम आयु के किसी को भी इसे पढ़ने की अनुमति नहीं दी।

धर्मनरिपेक्ष सम्राट जस्टनियिन[5238] के दनिों में, जब मसीह-प्रेमी लोग प्रभु के बहुमूल्य और जीवन-दायक क्रूस के उत्थान के पर्व[5239] के लिए पवत्रि नगर यरूशलेम[5240] में उमड़ रहे थे, तो ईश्वर की व्यवस्था से सीरयिा[5241] से दो युवक क्रूस की बहुमूल्य लकड़ी की पूजा करने के लिए यरूशलेम आए। एक का नाम यूहन्ना था, और दूसरे का नाम समिोन; दोनों कुलीन वंशज और धनी थे।

उस समय जॉन की उम्र लगभग 24 वर्ष थी; उसकी एक युवा पत्नी थी और वह अपने वृद्ध पतिा के साथ रहता था, जबकि उसकी माँ का पहले ही नधिन हो चुका था; समिीओन, हालांकि, अभी भी अवविाहति था[5242] और उसकी केवल 80 वर्षीय वृद्ध वधिवा माँ थी। ये दोनों युवक, जो एक ही देश से थे और मसीह के प्रति अपने प्रेम के कारण घनष्ठि मत्रि बन गए थे, यरूशलेम में काफी समय एक साथ बतिाते थे, पवत्रि स्थलों का भ्रमण करते और पूजा करते थे। – जब वे अपनी वापसी यात्रा पर जेरकिो की घाटी में उतरकर पहाड़ की तलहटी से होते हुए शहर से गुज़रे, तब उन्होंने पवत्रि नदी जॉर्डन के कनिारों पर मठ देखे[5243] । फरि यूहन्ना ने समिीओन की ओर मुड़कर पूछा:

'क्या तुम जानते हो कि उन मठों में कौन रहता है?'

'और उनमें कौन रहता है?' समिीओन ने पूछा।

'वहाँ परमेश्वर के स्वर्गदूत नविास करते हैं,' जॉन ने उत्तर दयिा।

समिीओन, आश्चर्यचकति और आह भरते हुए, ने पूछा:

'क्या हम उन्हें देख सकते हैं?'

'यदि हम उनके समान जीवन जीना चाहते हैं,' जॉन ने उत्तर दयिा, 'तो नस्सिंदेह हमें उन्हें देखकर और उनसे बात करके आनंद होगा।'

वे दोनों सवारी कर रहे थे; अब वे घोड़ों से उतर गए, अपने घोड़े नौकरों को सौंप दिए, और उन्हें नर्दिेश दयिा:

'तुम हमारी गति से आगे चलो।'

तो नौकर घोड़ों को आगे ले गए, जबकि वे, थोड़ी दूरी पर चलते हुए, इस बात पर चर्चा कर रहे थे कि वे अपनी आत्माओं को कैसे बचा सकते हैं। धीरे-धीरे आगे बढ़ते हुए, वे एक चौराहे पर पहुँचे: एक सड़क, यात्रयिों से भरी, सीरयिा की ओर जाती थी, जहाँ उन्हें जाना था, जबकि दूसरी सड़क यॉर्डन की ओर जाती थी, जहाँ मठ दखिाई दे रहे थे। यॉर्डन की ओर जाने वाली सड़क की ओर अपनी उंगली से इशारा करते हुए, जॉन ने समिीओन से कहा:

'यहाँ वह मार्ग है जो जीवन की ओर ले जाता है।'

फरि, सीरयिा की ओर जाने वाली सड़क की ओर इशारा करते हुए, उन्होंने कहा:

'यह मार्ग, हालांकि, वनिाश की ओर ले जाता है। तो, भाई, आइए हम यहाँ चौराहे पर खड़े हों और ईश्वर से प्रार्थना करें कि वह हमें दखिाए कि हमें किस मार्ग पर जाना है।'

और, घुटने टेककर, उन्होंने भक्तपिूर्वक प्रार्थना करना शुरू कर दयिा:

'हे ईश्वर! हे ईश्वर! हे ईश्वर! हे सर्वलोकों के उद्धार के इच्छुक! अपने सेवकों को अपनी इच्छा प्रकट करो और हमें वह मार्ग दखिाओ जिस पर हमें चलना चाहिए!'

पर्याप्त समय तक प्रार्थना करने के बाद, यूहन्ना और समिीओन ने पासा फेंका, और पासा यॉर्डन की ओर जाने वाले मार्ग पर पड़ा। तब वे महान आध्यात्मकि आनंद से भर गए और, नम्रता से, परमेश्वर का धन्यवाद कयिा। और तुरंत ही वे अपने परविारों को भूल गए—एक ने अपने पतिा और पत्नी को, दूसरे ने अपनी माँ को—उन्होंने अपनी संपत्ति को ठुकरा दयिा और इस दुनयिा की सभी आकर्षक और सुखद चीजों को एक सपने की तरह माना। और एक-दूसरे को गले लगाकर, उन्होंने एक पवत्रि चुंबन कयिा, और जॉर्डन के मार्ग पर चल पड़े, जिससे वे वास्तव में अनंत जीवन प्राप्त कर

[5238] संत जस्टनियिन प्रथम – 527 से 565 तक सम्राट।

[5239] 14 सतिंबर।

[5240] यरूशलेम – प्रतिज्ञात भूमि का सबसे पुराना और सबसे प्रसद्धि शहर – लगभग इस भूमि के केंद्र में, यॉर्डन नदी के पश्चमिी तट पर, भूमध्य सागर से 12 घंटे और यॉर्डन से 8 घंटे की यात्रा पर, तीन यहूदी पहाड़ों: अक्रा, सयिोन और मोरयिाह की तलहटी में स्थति है।

[5241] उपरी सीरयिा, जिसे हिब्रू ग्रंथ में 'आरत' कहा गया है – एक ऐसा शब्द जिसमें सीरयिा और मेसोपोटामयिा दोनों शामलि हैं – यूफ्रेटसि नदी से भूमध्य सागर तक और टॉरस पर्वत से अरब तक पूरे क्षेत्र को कवर करता है।

[5242] समिोन और जॉन की पवत्रि स्थानों की इस यात्रा के दौरान, समिोन 31 वर्ष का था।

[5243] यॉर्डन फलिस्तिीन की एकमात्र नदी है जिसमें पूरा बहाव रहता है और जो कभी सूखती नहीं है।

गए। और वे आनंद से शीघ्रता से चले, ठीक वैसे ही जैसे पतरस और यूहन्ना मसीह के जीवन-दायक कब्र की ओर शीघ्रता से गए थे (यूहन्ना 20:1–10), एक-दूसरे को प्रोत्साहित और मजबूत करते हुए: यूहन्ना को डर था कि उसकी वृद्ध माँ के लिए कोई पछतावा शमिोन को उसके अच्छे इरादों से भटका सकता है, जबकि शमिोन को भी यूहन्ना के लिए डर था, कि कहीं उसकी जवान पत्नी के लिए प्रेम, जैसे एक चुंबक लोहे को खींचता है, उसे उस रास्ते से भटका न दे जिस पर वह चल पड़ा था। – इसलिए, उन्होंने एक-दूसरे को आध्यात्मिक मार्गदर्शन और सांत्वना के शब्दों में संबोधित किया। यूहन्ना ने सिमीओन से कहा:

'प्रिय भ्राता, हतोत्साहित न हो और न कमज़ोर पड़ो! क्योंकि मैं प्रभु में अपनी आशा रखता हूँ, जिसने हमें इसी दिन पुनर्जीवित किया है। और सांसारिक व्यर्थता में हमारे लिए क्या लाभ है? या न्याय के दिन धन-संपत्ति में हमें क्या सहायता मिलेगी? क्या वे हमें नुकसान नहीं पहुँचाएँगे? इसी तरह, हमारी जवानी और शारीरिक सुंदरता - क्या वे हमेशा हमारे साथ रहेंगी? क्या वे बुढ़ापे के साथ नहीं बदल जाएँगी और मृत्यु से नष्ट नहीं हो जाएँगी? वास्तव में, हम स्वयं यह नहीं जानते कि हम बुढ़ापे को देखने के लिए जीवित रहेंगे या नहीं, क्योंकि जिवान पुरुष भी, जो मृत्यु की उम्मीद नहीं करते, मर जाते हैं।

अपनी ओर से, सिमीओन ने यूहन्ना को मनाने की कोशिश की:

'भाई, न तो मेरा कोई पिता है, न कोई भाई और न कोई बहन; मेरे पास केवल मेरी माँ है, जो अब बहुत बूढ़ी हो गई हैं, और मुझे उनके लिए उतनी चिंता नहीं है जितना कि मैं अपने दिल में आपके लिए डरता हूँ, कि कहीं आपकी सुंदर और प्यारी पत्नी का विचार, जिससे आपकी अभी हाल ही में शादी हुई है, आपको इस धन्य मार्ग से भटका न दे।'

इस प्रकार, एक-दूसरे से बातें करते हुए वे आगे बढ़ते रहे। और उन्होंने ईश्वर से प्रार्थना की कि वह उन्हें यह इच्छा प्रकट करे कि उन्हें किस मठ में अपना संकल्प ग्रहण करना चाहिए। और उन्होंने अपने लिए यह संकेत चुना: जिस मठ के द्वार वे खोलकर पाएँगे, वही वह होगा जिसमें ईश्वर ने उन्हें प्रवेश करने का आदेश दिया था। संयोग से वे आदरणीय गेरासिमिस के मठ में पहुँचे, जहाँ मठाध्यक्ष निकॉन नामक एक ईश्वर-प्रेरित व्यक्ति थे; उन्हें ईश्वर द्वारा इन दो युवकों के आगमन के बारे में सूचित किया गया था, जिनके हृदय दैवी प्रेम से जल रहे थे। क्योंकि उस दिन निकॉन ने स्वप्न में प्रभु को उनसे बात करते हुए देखा था:

'उठो, घेरे के द्वार खोल दो, ताकि मेरी भेड़ें यहाँ प्रवेश कर सकें।'

मठाध्यक्ष उठे, गए और मठ के द्वार खोल दिए, और मसीह के भेड़ों के आगमन की प्रतीक्षा में उनके पास ही बैठ गए। जहाँ तक यूहन्ना और शमिोन की बात है, जब वे मठ के पास पहुँचे, और उन्होंने खुले द्वार और उनके पास बैठे वृद्ध को देखा, तो वे परम आनंद से भर गए। और यूहन्ना ने शमिोन की ओर मुड़कर कहा:

'यह एक शुभ संकेत है, भाई – मठ खुला है और द्वारपाल वहाँ बैठा है, मानो जानबूझकर, हमारे आगमन की प्रतीक्षा में।'

जब वे द्वार के पास पहुँचे, तो मठाध्यक्ष उठे और कहा:

'तुम लोग आकर अच्छा किया, हे मसीह के मेमनों।'

और, उन्हें गर्मजोशी से स्वागत करते हुए, उन्हें मठ के अंदर ले गए और उन्हें शारीरिक तथा आध्यात्मिक पोषण दोनों प्रदान किया; उस रात, उन्होंने सिमियोन और जॉन को ऐसे सांत्वना दी जैसे वे मुसाफिर हों। अगले सुबह, मठाध्यक्ष ने इन शब्दों के साथ उनसे संबोधित किया:

– हे बच्चों! परमेश्वर के प्रति तुम सबका एक हृदय से साझा किया गया प्रेम सुंदर और परमेश्वर को प्रसन्न करने वाला है। लेकिन तुम्हें बहुत सावधान रहना चाहिए कि हमारे उद्धार का शत्रु इसे तुममें बुझा न दे। तुम्हारा मार्ग अच्छा है, परन्तु जब तक तुम्हें मुकुट नहीं पहनाया जाता, तब तक उस पर सुस्त न हो जाओ। तुम्हारा इरादा प्रशंसनीय है, परन्तु लापरवाह न हो जाओ, कहीं ऐसा न हो कि तुम्हारे हृदयों में आध्यात्मिक गर्माहट ठंडी पड़ जाए। यह अच्छा है कि तुमने अस्थायी से ऊपर शाश्वत को रखा है। निश्चय ही, अपने सांसारिक माता-पिता की सेवा करना एक अच्छा कर्म है, परन्तु स्वर्गीय पिता की सेवा करना अतुलनीय रूप से बेहतर है। शारीरिक भाई प्रिय हैं, लेकिन आध्यात्मिक भाई कहीं अधिक उद्धारक हैं। संसार में आपके मित्र उपयोगी हैं, लेकिन ईश्वर के पवित्र संतों में से मित्र बनाना कहीं बेहतर है। राजकुमारों के समक्ष आपके मध्यस्थ और वकील शक्तिशाली हैं, लेकिन वे फिर भी उन स्वर्गदूतों जैसे नहीं हैं जो ईश्वर के समक्ष हमारे लिए मध्यस्थता करते हैं। ईश्वर के लिए गरीबों को दान देना अच्छा और दयालुता का काम है; लेकिन कोई भी भेंट उस भेंट से अधिक प्रिय नहीं है जिसमें कोई अपनी आत्मा और इच्छा को पूरी तरह से उसके हवाले कर दे। इस जीवन के सुख आनंददायक हैं, लेकिन वे स्वर्ग के आनंद की तुलना में तुच्छ हैं। धन अद्भुत है और सभी को प्रिय है,

लेकिन इसकी तुलना उन खजानों से नहीं की जा सकती *'जिन्हें न तो किसी आँख ने देखा है, न किसी कान ने सुना है, और न ही मनुष्य के हृदय में प्रवेश किया है'* (1 कुरिन्थियों 2:9)।

युवावस्था की सुंदरता आनंददायक है, फिर भी यह मनुष्यों के सभी पुत्रों में सबसे सुंदर के गुणों की तुलना में कुछ भी नहीं है[5244]। सांसारिक राजा का योद्धा बनना अद्भुत है, फिर भी यह सेवा क्षणिक और खतरनाक है। लेकिन स्वर्गीय राजा का योद्धा होना शत्रु की सभी शक्तियों पर विजय प्राप्त करना है।

इन और इसी प्रकार की प्रेरणाओं के साथ, पूजनीय मठाधीश ने उनसे कहा; और, उनकी आँखों से बहते हुए घोर आँसू देखकर, उन्होंने सिमीओन से कहा:

'शोक मत करो, अपनी माँ के सफेद बालों के लिए मत रोओ, क्योंकि तुम उसके साथ रहते हुए भी उसे तुम्हारी मेहनत के लिए उतना सांत्वना नहीं दे सकते थे, जितनी उसे ईश्वर देंगे। अगर तुम उसके पास हमेशा रहते भी, तो भी तुम्हें यह पक्का पता नहीं होता कि पहले तुम उसे दफनाओगे या वह तुम्हें। और तुम ईश्वर को प्रसन्न किए बिना ही मर जाते, तुम्हारे पास मृत्यु के बाद आने वाली बुराइयों से बचाने वाली कोई चीज़ नहीं होती: क्योंकि न तो माँ के आँसू, न पिता का प्यार, न धन-संपत्ति और महिमा, न विवाह के बंधन, न ही अपने बच्चों के प्रति प्रेम भयानक न्यायाधीश को शांत कर सकते हैं, बल्कि केवल एक पुण्य जीवन, ईश्वर के लिए किए गए कर्म और परिश्रम ही उसे प्रसन्न कर सकते हैं!

तब, यूहन्ना की ओर मुड़कर, उसने कहा:

'और तुमसे, हे मेरे बच्चे! शत्रु तुम्हारे मन में ऐसे विचार न डाले कि तुम मन में यह तर्क करने लगो: "मेरे बिना, मेरा वृद्ध पिता मेरा सहारा और भरण-पोषण कौन करेगा?" मेरी रोती हुई पत्नी को कौन सांत्वना देगा? वास्तव में, यदि आप उन्हें केवल ईश्वर के भरोसे छोड़ देते, जबकि आप स्वयं किसी और के लिए काम करने चले जाते, तो आप उनके लिए सही मायने में शोक करते। लेकिन चूँकि एक ही ईश्वर है, जिन्हें आपने अपने माता-पिता को सौंपा है, और जिनके प्रेम के कारण आपने उन्हें छोड़ा है, आपको यह जानना चाहिए कि वही स्वयं उनकी व्यवस्था करेंगे। यह भी विचार करो कि जब तुम संसार में थे और एक क्षणिक जीवन के लिए परिश्रम कर रहे थे, तो प्रभु की भलाई ने तुम्हारा पालन-पोषण किया और उदारतापूर्वक तुम्हारे घर को भर दिया; अब जब तुम पूरे हृदय से उनकी सेवा करने और उन्हें अधिक पूर्ण रूप से प्रसन्न करने की इच्छा से उनके लिए परिश्रम करने आए हो, तो प्रभु तुम्हारे घरों की और भी अधिक देखभाल करेंगे। हे बच्चों, याद रखो! प्रभु का उत्तर उस मनुष्य को जो उनका अनुसरण करना चाहता था और उसने कहा: *'प्रभु! पहले मुझे जाकर अपने पिता को दफ़ना करने दो'* प्रभु ने कहा: *'मेरे पीछे आओ, और मरे हुओं को अपने मरे हुओं को □□ ना करने दो'* (मत्ती 8:21–22)। इस प्रकार तुम भी, दृढ़ संकल्प और अटूट इच्छा के साथ, मसीह के पदचिन्हों पर चलो। क्योंकि यदि कोई सांसारिक और नश्वर राजा आपको अपने दरबार में बुलाए, और चापलूसी या सलाहकार बनाने की इच्छा रखे, तो क्या आप अपने घर-बार की परवाह नहीं करेंगे और महिमा और सम्मान में उसकी सेवा करने, और उसे तथा उसकी कृपा को देखकर आनंदित होने के लिए राजा के पास नहीं दौड़ेंगे? और आप यह थोड़े समय के लिए ही करते, जब तक वह अपने कुलीनों के सामने आपको सम्मानित करना चाहता।

लेकिन यूहन्ना और सिमीओन ने उत्तर दिया:

'वास्तव में ऐसा ही है, पिताजी!'

और मठाधीश ने जारी रखा:

'मेरे बच्चों, और भी अधिक! हमें उत्साह के साथ स्वर्गीय राजा के आह्वान का उत्तर देने के लिए शीघ्रता करनी चाहिए, जो हमें एक ऐसी महिमा के लिए बुलाता है जिसकी तुलना या समतुल्य कोई भी सांसारिक सम्मान, चाहे वह कितना भी ऊँचा क्यों न हो, नहीं कर सकता। हमें परमेश्वर की आज्ञा माननी चाहिए, जो हमें अपनी ओर बुलाते हैं, उनके हमारे प्रति प्रेम को याद करते हुए, जिसके लिए उन्होंने अपने एकलौते पुत्र को भी नहीं बख्शा, बल्कि हमें एक खूनी मृत्यु के हवाले कर दिया, ताकि हम उनके पुत्र बन सकें; और भले ही हम इसके लिए अपना सारा रक्त बहा दें, तब भी हम उनके प्रतिदान में उस भलाई और प्रेम के बराबर का एक अंश भी नहीं चुका पाएंगे जो उन्होंने हम पर दिखाया है: क्योंकि एक राजा के रक्त की तुलना दासों के रक्त से नहीं की जा सकती।

उन्हें यह सब कहने के बाद, और यह महसूस करते हुए कि सिमीओन और यूहन्ना, जो शानदार कपड़े पहने हुए थे, अभाव को जाने बिना ही बड़े हुए थे, दिव्य प्रेरित मठाधीश ने—हालाँकि उन्होंने परमेश्वर के प्रति उनके उत्कट उत्साह

[5244] अर्थात्, परमेश्वर का मसीही पुत्र, उद्धारकर्ता मसीह। तुलना करें भजन संहिता 44:1–18।

को देखा था—फिर भी उन्हें तुरंत संन्यास की शपथ न लेने, बल्कि कुछ समय प्रतीक्षा करने की सलाह दी: वे स्वयं को परखें – यह देखने के लिए कि क्या वे तपस्वी जीवन की कठिनाइयों को सहन कर सकते हैं। लेकिन वे, उसके पैरों पर गिर पड़े, और आँसुओं के साथ उससे विनती करने लगे कि वह बिना किसी देरी के उनका मुंडन करे और उन्हें पवित्र वस्त्र पहनाए।

उसके बाद, बड़े भिक्षु ने उन्हें परखने की इच्छा से, जॉन को एक तरफ ले जाकर उससे कहा:

'मैंने तुम्हारे मित्र को पहले ही एक और साल संसार में रहने के लिए मना लिया है।'

'अगर उसे ठीक लगे,' जॉन ने जवाब दिया, 'तो वह रुके; लेकिन मैं अपने मुंडन के लिए इतनी लंबी प्रतीक्षा नहीं कर सकता। मैं आपसे विनती करता हूँ, पिताजी, कि जो मेरे प्राणों की लालसा है, उसे तुरंत मेरे ऊपर पूरा करें।'

सिमोन, उन्हें निजी तौर पर बात करते हुए देखकर, ने वृद्ध से कहा:

'पिताजी, जॉन की विनती सुनने में देरी न करें; मेरा दिल उसके लिए काँप रहा है, कहीं वह अपनी पत्नी के लिए शोक न करे, जिससे उसकी इस साल शादी हुई है—एक धनी और सुंदर महिला—और कहीं उसके लिए, वह ईश्वर के प्रेम से दूर न हो जाए।'

यूहन्ना भी आँसुओं से भरा हुआ वृद्ध की ओर मुड़ा (क्योंकि वह बहुत रोने वाला था):

'पिताजी, मैं आपसे विनती करता हूँ कि हमें तुरंत मुंडन कर दें, कहीं मैं अपने प्रिय भाई को बर्बाद न कर दूँ।' उसकी एक माँ है जो उससे इतना गहरा प्रेम करती है कि वह उसे देखे बिना रह ही नहीं सकती, और मुझे उसके लिए डर है, कि कहीं वह अपनी माँ के प्रेम को याद करके ईश्वर के प्रेम से विमुख न हो जाए; अत; मैं तब तक दुखी रहूँगा जब तक मैं उसे मुंडित न देख लूँ।"

विष्ठ ने, एक-दूसरे के लिए उनकी परस्पर चिंता को देखकर, और अनुभव से यह जानते हुए कि ईश्वर उन लोगों को लज्जित नहीं करते या अस्वीकार नहीं करते जो पूरे दिल और दृढ़ विश्वास के साथ उनकी ओर मुड़ते हैं, बिना किसी और देरी के उन्हें चर्च के अंदर ले गए और उन्हें प्रारंभिक मठवासी क्रम में मुंडन कर दिया। जब उनका मुंडन हो रहा था, तो यूहन्ना जोर-जोर से रो रहा था, जबकि सिमोन ने उसे चुप रहने का इशारा करते हुए गुप्त रूप से धक्का दिया - उसे लगा कि यूहन्ना अपने पिता और पत्नी के लिए रो रहा है। लेकिन यूहन्ना परमेश्वर के प्रति अपने गहरे, सच्चे प्रेम के कारण आँसू बहा रहा था।

केश छँटाई और दैवीय धर्मविधि के अनुष्ठान के बाद, मठाधीश ने एक बार फिर से उन्हें एक लंबी और शिक्षाप्रद प्रवचन के साथ संबोधित किया, क्योंकि वह अपने सूक्ष्मदर्शी मन से जानते थे कि वे उनके मठ में अधिक समय तक नहीं रहेंगे, क्योंकि ईश्वर उन्हें जीवन के एक और भी अधिक परिपूर्ण मार्ग के लिए बुलाएगा।

उस दिन शनिवार था, और मठाधीश चाहते थे कि वे उन्हें अगली सुबह, रविवार को, एंजेलिक ऑर्डर की पूरी रस्म दें।

और कुछ भाइयों ने यूहन्ना और सिमीओन से कहना शुरू किया:

'धन्य हो तुम, क्योंकि कल तुम पुनर्जन्म लोगे और इतने शुद्ध हो जाओगे मानो अभी-अभी जन्म लिए हो; तुम अपने पापों से इस प्रकार पवित्र हो जाओगे, मानो आज ही तुम्हारा बपतिस्मा हुआ हो।'

लेकिन वे, यह न समझते हुए कि उनसे क्या कहा जा रहा था, चकित और भयभीत हो गए; और, शनिवार की शाम को पवित्र मठाधीश के पास आकर, उन्होंने उनसे इन शब्दों में विनती की:

'हमें बपतिस्मा न दें, पिताजी, क्योंकि हम ईसाई हैं और ईसाई माता-पिता की संतान हैं, जो पवित्र बपतिस्मा के जल से पुनर्जीवित हुए हैं।'

लेकिन मठाधीश, उनके शब्दों को न समझकर, ने पूछा:

'तुम्हें बपतिस्मा कौन देना चाहता है, हे बच्चों?'

उन्होंने उत्तर दिया:

'हमने भाइयों से सुना है कि हमें कल सुबह बपतिस्मा दिया जाना है।'

तब मठाधीश ने, यह समझते हुए कि भाइयों ने उनसे पवित्र दैवीय प्रतिमा के बारे में कहा था, कहा:

'पिताजी ने आपको यह अच्छी तरह समझा दिया है: क्योंकि कल हम आपको दैवीय आदेश के पूर्ण पद में परिधानित करना चाहते हैं, जो आपको दुनिया में किए गए सभी पापों से मुक्त कर देगा, ठीक एक दूसरे बपतिस्मा की तरह।'

हालाँकि, जॉन और सीमोन को यह नहीं पता था कि दैवीय आदेश के पूरण पद में क्या-क्या शामिल था। इसलिए मठाधीश ने आदेश दिया कि एक ऐसे भाई को बुलाया जाए जिसे उसने पिछले सप्ताह ही उस पूरण पद पर नियुक्त किया था; चूँकि अभी सात दिन भी नहीं हुए थे, इसलिए मठ के नियम के अनुसार, वह भाई हर समय उस पवित्र पद के सभी वस्त्र पहने रहता था। जब यह भाई आया, तो जॉन और सिमियिन, उसे देखकर, मठाध्यक्ष के पैरों पर गिर पड़े और उनसे विनती करने लगे कि वे उन्हें उसी शाम को तुरंत इस पद से सम्मानित कर दें।

उन्होंने कहा, 'हम तो बस नश्वर प्राणी हैं, और नहीं जानते कि हम इस रात जीवित रहेंगे या सुबह देख पाएँगे; और क्या होगा यदि हम इस भाई में जैसा हम यह मुकुट, आनंद और महिमा देखते हैं, वैसा प्राप्त किए बिना ही इस जीवन से अचानक चले जाएँ?'

मठाधीश को एहसास हुआ कि वे किसी प्रकार का दर्शन देख रहे थे, और उन्होंने उस बुलाए गए भाई को उसकी कोठरी में वापस भेज दिया। जब वह चला गया, तो जॉन और सिमियिन ने एक बार फिर मठाधीश से विनम्रतापूर्वक निवेदन करना शुरू कर दिया:

'पिताजी, भगवान के लिए, हमें तुरंत वे वस्त्र पहना दीजिए जो हमने उस भाई पर देखे: सचमुच, आपके मठ में हमने कभी भी किसी को उस भाई जैसी महिमा में नहीं देखा है।'

'मेरे बच्चों, तुमने उस भाई में क्या देखा?' मठाधीश ने पूछा।

उन्होंने उत्तर दिया:

'हमने उसके सिर पर एक अत्यंत तेजस्वी मुकुट देखा और उसके चारों ओर एक प्रकाश, और कुछ प्रकाशमान आकृतियाँ, जो अपने हाथों में मोमबत्तियाँ लिए हुए थीं, अद्भुत गायन के साथ उसे घेरे हुए थीं।'

और मठाधीश उनके हृदयों की पवित्रता देखकर चकित रह गए और उनसे कहा:

'कल, पवित्र आत्मा की कृपा से, तुम भी पवित्र दैवीय सेना के साथ उसी मुकुट और महिमा को प्राप्त करोगे।'

जब रविवार की सुबह हुई, तो मठाधीश ने उन पर वह पवित्र अनुष्ठान संपन्न किया, और दोनों ने एक-दूसरे के सिर पर चमकते हुए मुकुट देखे; और रात में उन्होंने एक-दूसरे के चेहरे दिन की तरह ही स्पष्ट देखे: और ऐसी खुशी से उनकी आत्मा भर गई कि उन्हें न खाने की न पीने की इच्छा हुई।

उच्चतम आदेश ग्रहण करने के दो दिन बाद, वे संयोगवश उस भाई से मिले, जिसे उन्होंने पहले महिमा में देखा था, जो अब बोरा पहने और अपने मठवासी कर्तव्यों का पालन कर रहा था – उन्होंने उसकी पूर्व महिमा या उसके सिर पर मुकुट नहीं देखा, और वे चकित रह गए। तब सिमोन ने जॉन से कहा:

'भाई, मुझ पर विश्वास करो कि सात दिनों में हम भी अब एक-दूसरे को चमकते मुकुट पहने और तेजस्वी होते हुए नहीं देखेंगे, जैसा कि हम अभी देख रहे हैं।'

योहन ने पूछा:

'तो, हे भाई, आप अपने लिए और क्या चाहते हैं?'

'मेरी बात सुनो,' सीमोन ने उत्तर दिया, 'मैं चाहता हूँ कि, जैसे हमने संसार से त्याग किया है, वैसे ही हम यहाँ से भी एक और भी अधिक शांत और एकांत जीवन के लिए निर्जन स्थान में चले जाएँ; क्योंकि जब से आदरणीय मठाधीश ने हमें इस पवित्र प्रतिमा में वस्त्र पहनाए हैं, मेरा हृदय एक अद्भुत लालसा से प्रज्वलित हो गया है, और मेरी आत्मा किसी को देखना, न बोलना, न किसी की आवाज़ सुनना चाहती है, बल्कि सभी से परम एकांत में और गहरी मौन में रहना चाहती है।

'मरुभूमि में रहते हुए हम क्या खाएंगे?' जॉन ने आपत्ति जताई।

सिमोन ने उत्तर दिया:

'दूसरे मरुस्थलवासी क्या खाते हैं, जिनके बारे में हमने हमें सिखाने वाले मठाधीश के मुख से सुना है? जो उन्हें पालता है, वह हमें भी पालएगा, और मुझे लगता है कि मठाधीश ने हमें मरुस्थलवासियों के बारे में इतना इसलिए बताया ताकि हम भी मरुस्थल का जीवन चुन लें।'

जॉन ने फिर आपत्ति जताई:

'लेकिन क्या हमने मठ के नियम के अनुसार भजन गाना अभी तक नहीं सीखा है?'

'जिसने दाऊद को बचाया, जो उसे प्रसन्न करता था,' सिमोन ने उसे आश्वासन दिया, 'वह हमें भी बचाएगा; और जैसे उसने दाऊद को, जो रेगिस्तान में भेड़ें चराता था, भजन रचने सिखाए, वैसे ही वह हमें भी सिखाएगा। मेरे विरुद्ध मत

करो, भाई, पर जैसे हमने एक साथ स्वयं को परमेश्वर को अर्पित किया है, वैसे ही हमें एक साथ उसके लिए परिश्रम करना चाहिए।'

यूहन्ना ने कहा,

'हम तुम्हारी इच्छा के अनुसार करेंगे; परन्तु हम मठ कैसे छोड़ेंगे, जिसके द्वार रात को बंद हो जाते हैं?'

योहन ने उत्तर दिया:

'जो हमें दिन में खोलता है, वह रात में भी खोलेगा।'

जब वे इस प्रकार सहमत हो गए और अपना निर्णय ले लिया, और जब रात हो गई, तो मठाध्यक्ष ने एक सपने में एक सम्मानित व्यक्ति को देखा, जो एक संत जैसा दिखता था, जो मठ के द्वार खोल रहा था और कह रहा था:

'हे मसीह के भेड़ों, अपने चरागाह की ओर बढ़ो।'

तुरंत उठकर, वह द्वारों की ओर दौड़ा और उन्हें खुला हुआ पाया; और, यह सोचकर कि जॉन और सिमियन पहले ही बाहर जा चुके थे, वह उदास होकर बैठ गया, आह भरकर, सोचने लगा:

'मैं अपने पूर्वजों की प्रार्थनाओं को स्वीकार करने के योग्य नहीं था, क्योंकि यह मैं नहीं, बल्कि वे थे जो पूर्वज और शिक्षक थे। ओह, कितने कीमती पत्थर (जैसा कि धर्मग्रंथ में कहा गया है) पृथ्वी पर अनजाने पड़े हैं, जिन्हें कई लोग देखते हैं लेकिन कुछ ही लोग महत्व देते हैं!'

जब मठाध्यक्ष अपने मन में इस प्रकार चिंतन और शोक कर रहे थे, तभी देखो, मसीह के सेवक अपनी कोठरी से मठ छोड़ने के लिए द्वार की ओर निकले। और मठाध्यक्ष ने देखा कि उनके आगे कुछ सुंदर युवक चमकती हुई जलती मोमबत्तियाँ लेकर चल रहे थे। हालाँकि, यूहन्ना और शिमोन ने इन युवकों को नहीं देखा; परन्तु, खुले द्वारों को देखकर, वे बहुत प्रसन्न हुए कि उनकी आशा व्यर्थ नहीं गई थी। जब उन्होंने द्वार पर वृद्ध को देखा, तो वे डर गए और पीछे मुड़ना चाहते थे, यह न जानते हुए कि वह मठाध्यक्ष थे। परन्तु मठाध्यक्ष ने उन्हें पुकारकर कहा:

'डरो मत, मेरे बच्चों; प्रभु के नाम में जाओ!'

जब उन्हें एहसास हुआ कि यह मठाधीश ही हैं, तो वे और भी अधिक प्रसन्न हुए और समझ गए कि ईश्वर ने, पहले ही उनके आगमन का मठाधीश को संकेत दे दिया था, उनके प्रस्थान का भी संकेत दे दिया था; और वे बुजुर्ग के सामने झुक गए, और कहा:

'हम आपको धन्यवाद देते हैं, पिताजी, लेकिन हम नहीं जानते कि ईश्वर और आपके सम्मानित प्रमुख को योग्य धन्यवाद कैसे दें। और हम में से कौन ऐसी उपहारों के योग्य माना जाने की आशा कर सकता था? किस राजा ने हमें ऐसा पद देकर सम्मानित किया होगा? किन खजानों ने हमें इतनी तेजी से समृद्ध किया होगा? किस स्नान के जल ने हमारी आत्मा को इतनी पूरी तरह से शुद्ध किया होगा? सम्माननीय पिता, कौन से माता-पिता हमें वैसा प्रेम और उद्धार दे सकते थे, जैसा आपने दिया है?! मसीह में, आप हमारे लिए पिता और माता, प्रभु, चरवाहा, शिक्षक और मार्गदर्शक हैं! आपके द्वारा हमें एक अक्षय खजाना प्राप्त हुआ है और हमने उद्धार के अनमोल मोती को पाया है; हमें वास्तव में दूसरे बपतिस्मा की शक्ति का ज्ञान हुआ है, जैसा कि धर्मपिताओं ने हमें बताया है। इसलिए हम आपसे विनती करते हैं, हे पिता, कि आप हमारे लिए प्रार्थना करें और हमें, आपके सेवकों को, वहाँ जाने की अनुमति दें जहाँ ईश्वर हमें ले जाएँ: क्योंकि हमने पूरे हृदय से उनकी सेवा करने की इच्छा की है; और हे पिता, अपनी भेड़ों को याद रखें, जिन्हें आपने ईश्वर को बलिदान के रूप में अर्पित किया है।

उन्होंने यह सब बड़े आँसुओं के साथ कहा। मठाधीश भी, उनके हृदय में परमेश्वर की सेवा करने की महान इच्छा देखकर, हर्ष के मारे रो पड़े। अंत में, सिमीओन को अपनी दाहिनी ओर और यूहन्ना को अपनी बाईं ओर बिठाकर, और अपने हाथ स्वर्ग की ओर उठाकर, उन्होंने एक प्रार्थना कही:

– हे धर्मी और महिमामय ईश्वर! हे महान और शक्तिशाली ईश्वर! हे शाश्वत और अनंत ईश्वर! इस घड़ी मुझ पापी की ओर अपना कान लगाओ! हे प्रभु, मुझे सुनो, जिन्होंने यह वादा किया है कि आप उन सभी को सुनेंगे जो सच्चे मन से आपकी सेवा करते हैं! अपने इन सेवकों के कदमों का मार्गदर्शन करो और उनके पैरों को शांति के मार्ग पर स्थापित करो। इन निर्दोष युवकों के सहायक बनो और उन्हें कबूतरों के समान सुरक्षित रखो; सभी अशुद्ध आत्माओं को आज्ञा दो कि वे उनके पास न आएं, बल्कि उनकी उपस्थिति से दूर भागें। ढाल और कवच धारण करो और उनकी सहायता के लिए उठो; अपनी तलवार खींचो और उनका पीछा करने वालों का रास्ता रोक दो; उनकी आत्माओं से कहो: 'मैं ही तुम्हारा उद्धार हूँ!' (देखो भजन संहिता 34:3)। यह अनुग्रह करो कि सारी कायरता और भय उनके विचारों से दूर हो जाएँ, और सारा

घमंड, दंभ और द्वेष नष्ट हो जाएँ; प्रकृति या दैवीय प्रलोभन से उत्पन्न शरीर की हर उत्तेजना शांत हो जाए; उनका शरीर और आत्मा पवित्र हो जाएँ, और उनकी आत्मा को आपकी कृपा के प्रकाश से प्रबुद्ध किया जाए, ताकि आध्यात्मिक रूप से बढ़ते हुए, वे पूर्ण परिपक्वता की अवस्था प्राप्त करें और आपके संतों की संगति में शामिल होने के योग्य माने जाएँ, पवित्र स्वर्गदूतों के साथ आपकी स्तुति करते हुए और हमेशा आपकी—पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा, त्रिमूर्ति में एक परमेश्वर, युगों-युगों तक, आमीन!

तब, मसीह के सेवकों की ओर मुड़कर, उन्होंने आँसुओं के साथ कहा:

'हे अच्छे बच्चों, उस परमेश्वर ने तुम्हें चुना है, जिसने तुमको चुना है!' और जिनके पास आप शरण आए हैं, ईश्वर करें कि वह आपके सामने एक स्वर्गदूत भेजे, जो आपके लिए एक सुरक्षित मार्ग तैयार करे और आपके सामने-सामने चलकर आपको शत्रु की शक्तियों से बचाए, जैसे उसने याकूब को लाबान और इसहाक से बचाया था (उत्पत्ति 31:1–55, 32:1–32, 33:1–20), और – दानियेल को सिंह के बिल से! (दानियेल 6:1–28)

और, उन दोनों को गले लगाकर, वह प्रार्थना में एक बार फिर परमेश्वर की ओर मुड़ा:

'हे परमेश्वर, हे प्रभु, उन लोगों को बचा, जिन्होंने पूरे हृदय से तुझ से प्रेम किया है: क्योंकि हे प्रभु, तू धर्मी है। उन लोगों को न छोड़ जो तेरे निमित्त सब व्यर्थ की वस्तुओं को छोड़ गए हैं!'

तब वह फिर से उनकी ओर मुड़ा:

– सावधान रहो, मेरे बच्चों! क्योंकि तुम एक भयानक युद्ध में प्रवेश करने वाले हो, परन्तु डरना मत! परमेश्वर सर्वशक्तिमान है और तुम्हारी शक्ति से बढ़कर परीक्षाएँ नहीं भेजेगा। प्रयत्न करो, मेरे बच्चों, और शत्रु तुम पर विजय न पाए; दृढ़ खड़े रहो, स्वर्गदूतों के स्वरूप में मठवासी संप्रदाय के पवित्र कवच से सुसज्जित होकर। परन्तु उस एक को याद करो जिसने कहा: *'जो कोई हल पर हाथ रखकर पीछे मुड़ता है, वह परमेश्वर के राज्य के योग्य नहीं* (लूका 9:62)। जब आप प्रभु के इस मार्ग पर निकलें तो सुस्त या निराश न हों, कहीं ऐसा न हो कि आपके विषय में उस मनुष्य का दृष्टांत पूरा हो जाए जिसने एक मीनार बनाना शुरू किया था: *'इस मनुष्य ने बनाना तो शुरू किया, पर पूरा न कर सका'* (लूका 14:30)। हौसला रखो, मेरे बच्चों, यह जानते हुए कि यह संघर्ष कितना तुच्छ है और मुकुट कितना महान है, परिश्रम कितना क्षणिक है और विश्राम कितना शाश्वत है।

जब वे इस तरह की बातचीत में लगे हुए थे, तब मैटिन्स की घंटी बजने का समय आ गया, और उन्हें मठ के द्वार से निकलना पड़ा; सिमीओन ने मठाधीश को एक तरफ ले जाकर उससे कहा:

'मैं आपसे विनती करता हूँ, पिताजी, प्रभु के लिए, मेरे भाई जॉन के लिए मन लगाकर प्रार्थना करें, कि उसकी पत्नी की स्मृति उसके मन से मिट जाए, कहीं ऐसा न हो कि शत्रु के प्रलोभन से वह मुझे छोड़ दे, और मैं हमारे बिछुड़ने के दुख से दुबला-पतला हो जाऊँ; उसके पिता के लिए भी प्रार्थना करें, ताकि प्रभु उन्हें सांत्वना दें, और वे उस पुत्र के जाने पर शोक न करें जिसने उन्हें छोड़ दिया है।

जॉन ने भी बड़े भाई को एक ओर ले जाकर उनसे विनती की:

'भगवान के लिए, पिताजी, अपनी पवित्र प्रार्थनाओं में मेरे भाई सिमीओन को न भूलें, कहीं वह अपनी माँ के प्रति प्रेम के वश में होकर मुझसे दूर न चला जाए; अन्यथा, यही बंदरगाह हमारा डूबने का स्थान बन जाएगा।'

वरिष्ठ भिक्षु उनके बीच ऐसे प्रेम को देखकर चकित रह गए और उनके लिए प्रार्थना करने का वचन देकर, उन्हें क्रूस के चिह्न से आशीर्वाद देकर शांति से विदा कर दिया।

सम्माननीय मठाधीश से विदा लेकर, मसीह के सेवक, सिकंदर और जॉन ने प्रार्थना की:

'हे ईश्वर! अपने सेवक, हमारे पिता निकोन की प्रार्थनाओं के द्वारा, हमें स्वयं वहीं ले चलो जहाँ तुम चाहो; क्योंकि हम यात्री हैं और न तो कोई स्थान जानते हैं और न ही कोई देश जहाँ हम मुड़ सकें, परन्तु हम तुम्हारी लालसा करते हैं, भले ही शायद मरुस्थल की गहराइयों में हमारी मृत्यु प्रतीक्षा कर रही हो।'

तब यूहन्ना ने सिमोन की ओर मुड़कर कहा:

'अब हम क्या करें, भाई? हमें कहाँ जाना चाहिए?'

सिमोन ने उत्तर दिया:

'हम दाईं ओर चलते हैं, क्योंकि दाईं ओर जो कुछ भी है वह अच्छा होता है।'

और वे दाईं ओर चल पड़े; और यह ईश्वर की व्यवस्था से था: प्रभु अपने सेवकों को नहीं छोड़ते। काफी दूरी तय करने के बाद, वे मृत सागर[5245] तक पहुँचे और समुद्र तथा यॉर्डन नदी, जो उस समुद्र में मलिती है, के पास एक उपयुक्त स्थान और एक कुटिया पाई जहाँ एक तपस्वी रहता था, जो कुछ दिन पहले प्रभु के पास चला गया था; वहाँ छोटी नावें भी थीं, और एक सब्जी का बगीचा था जिसमें सब्जियाँ लगी हुई थीं, जिस पर वह दिवंगत वरिष्ठ जीवित रहता था। यह देखकर मसीह के सेवकों ने उतना ही आनंद मनाया जितना कोई महान खजाना पाने वाला मनाता है, और उन्होंने परमेश्वर का धन्यवाद किया; और वहाँ बस जाने के बाद, वे रहने लगे। थोड़ी ही देर बाद, हमारे प्राणों का शत्रु, शैतान, मसीह के सेवकों के ईश्वरीय जीवन को सहन न कर सका, और उसने उन पर युद्ध छेड़ा, यूहन्ना में उसकी पत्नी और पिता की स्मृतियाँ और शमिोन में उसकी माता के प्रति प्रेम भर दिया। जब भी वे एक-दूसरे को उदास देखते, तो वे तुरंत एक-दूसरे से कहते:

'आओ, भाई, हम अपने प्रभु यीशु मसीह से मिलकर प्रार्थना करें, कि वे हमारे पवित्र वृद्ध निकोन की प्रार्थनाओं के द्वारा हमें शत्रु की युक्तियों से बचाएँ।'

और जब भी वे प्रार्थना करते, तो ईश्वर की सहायता शीघ्र ही उन्हें मिलती, जो शत्रु की बदनामी को दूर कर देती। कभी-कभी प्रलोभी उनमें मांस खाने और शराब पीने की इच्छा जगा देता; कभी-कभी वह उन्हें स्वप्न में उनके माता-पिता और रिश्तेदार दिखाता: या तो वे उनके लिए शोक मना रहे होते, या भोज कर रहे होते; कभी-कभी उन्हें निराशा और आलस्य में डुबो देता, तो कभी-कभी, प्रेतों से डराकर, वह एक बार फिर उनके मन में मठ में लौटने का विचार भर देता, मानो एक तपस्वी का जीवन उनके लिए असहनीय रूप से कठोर हो। और विभिन्न तरीकों से, उस चालाक साँप ने उन प्रशंसनीय तपस्वियों के धार्मिक जीवन को बाधित करने का प्रयास किया। वे, हालाँकि, अपने संकल्पों और उन तेजस्वी मुकुटों को याद करते हुए, जो उन्होंने पहली बार एक-दूसरे के ऊपर देखे थे, और साथ ही अपने वरिष्ठ की चेतावनियों और आँसुओं को याद करते हुए, प्रभु की सेवा में लगे रहे और उन्हें सांत्वना मिली, और अक्सर अपने हृदय में एक प्रकार की आध्यात्मिक मिठास का अनुभव करते थे। शत्रु के प्रलोभनों का साहसपूर्वक विरोध करने के बाद, पूज्यनीय निकोन उन्हें एक सपने में प्रकट हुए, कभी उन्हें फटकारते हुए, कभी उनकी ओर से ईश्वर से प्रार्थना करते हुए, और कभी उन्हें भजन और प्रार्थनाएँ सिखाते हुए। और जागने पर, उन्होंने वास्तविकता में वही याद किया जो उन्होंने सपने में उनसे सीखा था और इससे उन्हें बहुत आनंद हुआ। ठीक उसी तरह, प्रभु ने दो साल बाद ऐसे ही प्रकाशनों के माध्यम से उनके परिवार की याद में होने वाले दुख को कम कर दिया। सिमिओन को एक रात्रिकालीन दर्शन में ऐसा प्रतीत हुआ कि वह अपनी माँ से उनके घर पर मिल रहे थे और उनसे सीरियाई बोली में बात कर रहे थे:

'लादोख्रेलीहेम'—अर्थात्, 'चिंता मत करो, माँ'; क्योंकि हम कुशल हैं: मैं और स्वामी जॉन दोनों ही अच्छे स्वास्थ्य में हैं और शाही कक्ष में निवास कर रहे हैं, और यहाँ हम वे ताज पहनते हैं जिनसे राजा ने हमें विभूषित किया है, हमें उज्ज्वल वस्त्रों से सजाकर; जॉन के पिता से भी कहो कि वे अपने बेटे के लिए शोक न करें, और, सामान्य रूप से, हमारी चिंता न करें।

यह दर्शन सिमिओन को कई बार हुआ, और इससे वह समझ गया कि उसकी माँ अब उसके लिए दुखी नहीं थीं, क्योंकि उन्हें ईश्वर ने सांत्वना दी थी। इसी तरह, एक अत्यंत तेजस्वी आकृति जॉन को एक सपने में दिखाई दी, और उसने ये शब्द कहे:

'देखो, मैंने तुम्हारे पिता के मन को शांत कर दिया है, उनमें शांति और आनंद भर दिया है, और इन दिनों मैं तुम्हारी पत्नी को अपने राज्य में ले जाऊँगा।'

जब वे एक-दूसरे को ये दर्शन सुना रहे थे, तो यूहन्ना और सिमिओन अपने-अपने दिल में आनंदित हुए और अपने उद्धारकर्ता परमेश्वर में प्रसन्न हुए। और उस समय से, यूहन्ना को अपने पिता और पत्नी के लिए कोई शोक नहीं हुआ, और न ही सिमिओन को अपनी माता के लिए; परन्तु उनकी एक ही चिंता थी—दिन-रात परमेश्वर की महिमा करना। उनके लिए, यह एक ऐसा श्रम था जो थकाऊ नहीं था और एक ऐसा कार्य था जिसमें दुख नहीं था—अखंड प्रार्थना करना; और थोड़े ही समय में वे पवित्र आत्मा के योग्य पात्र बन गए और उन्हें दिव्य प्रकटियों का दर्शन प्राप्त हुआ। कभी-कभी वे एक-दूसरे से अलग रहते थे, लेकिन बहुत दूर नहीं—एक पत्थर फेंकने की दूरी से अधिक नहीं। और यदि उनमें से किसी

[5245] मृत सागर फ़िलिस्तीन के दक्षिण-पूर्वी भाग में एक अंतर्देशीय खारे पानी की झील है; यह उत्तर से दक्षिण तक 76 किमी लंबी और लगभग 3.5–16 किमी चौड़ी है; लिसान प्रायद्वीप इसे दो बेसिनों में विभाजित करता है; उत्तरी बेसिन दक्षिणी बेसिन से गहरा है। मृत सागर का पानी खनिजों से इतना संतृप्त (लगभग 25 प्रतिशत) है कि इसमें मछलियाँ जीवित नहीं रह सकतीं। पानी का विशिष्ट गुरुत्व इतना अधिक है कि इसमें गिरने वाला कार्बनिक पदार्थ डूबता नहीं है। समुद्र के आसपास के एक बड़े क्षेत्र में, भूमि निमक से ढकी हुई है। मृत सागर का स्थल कभी सिद्दीम की उपजाऊ घाटी था, जो सदोम और गमोरा शहरों का घर थी।

एक के मन में कोई बुरा विचार आता, तो वह तुरंत, कष्ट में, दूसरे के पास दौड़ जाता; क्योंकि वे अपने विचार एक-दूसरे के साथ साझा करते थे और एक साथ प्रार्थना करके, शत्रु की निंदा को दूर भगा देते थे।

कुछ समय बीत जाने के बाद, धन्य सिमीओन, एक एकांत स्थान पर बैठे हुए, आनंद-विभोर हो गए और उन्होंने खुद को अपने देश, एडसा शहर[5246] में अपनी बीमार माँ से मिलने के लिए जाते हुए देखा, और कहा:

'माँ, आप कैसी हैं?'

और उसने उत्तर दिया:

'मैं ठीक हूँ, मेरे बेटे!'

तब उसने उससे फिर कहा:

'निडर होकर राजा के पास जाओ, क्योंकि मैंने तुम्हारे लिए उनसे विनती की है और तुम्हारे लिए एक अच्छी जगह तैयार की है, और जब वह चाहेंगे, तो मैं भी तुम्हारे पास आऊँगा।'

इस दर्शन के बाद होश में आते ही, सिमीओन को एहसास हुआ कि उसकी माँ उसी क्षण निधन कर चुकी थीं, और वह जॉन के पास दौड़ा, और उससे अपनी माँ की आत्मा के लिए प्रार्थना करने के लिए कहा, जबकि वह स्वयं, घुटने टेककर, आँसुओं के साथ प्रार्थना करने लगा:

'हे ईश्वर, जिसने कृपापूर्वक अब्राहम की बलि स्वीकार की (उत्पत्ति 22:1–24) और यिप्ताह की बलिदान को अस्वीकार नहीं किया (न्यायियों 11:1–40) न ही हाबेल की भेंटों का तिरस्कार किया (उत्पत्ति 4:1–26), और जिन्होंने, अपने सेवक शमूएल के लिए, उसकी माँ हन्नाह को एक भविष्यवक्ता बनाया (1 शमूएल 1:1–28, 2:1–36)—हे मेरे प्रभु, मेरे परमेश्वर! अपने दास, मेरे लिए, अपनी प्यारी माँ की आत्मा ग्रहण करें; उसकी बीमारियों और मेरे लिए झेली गई कठिनाइयों को याद करें; उसके दुख और उन आँसुओं को याद करें जो उसने तब बहाए जब मैं उससे भागकर आप तक आया। उसकी गोद को याद करो, जिसमें उसने मुझे पाल-पोष कर बड़ा किया, इस आशा में कि उसे मुझसे सहारा और सांत्वना मिलेगी, परन्तु उसे वह नहीं मिला जिसकी उसने आशा की थी। हे प्रभु, उस हृदय से निकले विलाप को मत भूलना जो मैंने उसे तब कराया जब मैं तुम्हारे लिए उसे छोड़कर गया। याद करो कि कितनी रातें उसकी आँखों से नींद कोसों दूर रही, क्योंकि वह अपनी अकेलीपन और मेरी जवानी के बारे में लगातार सोचती रहती थी। हे प्रभु, जब वह मेरे वस्त्रों को निहारती थी, जो अब उसकी अनमोल धरोहर को नहीं सजाते थे, तो उसका हृदय कितना टूट गया था! याद करो कि मैंने उससे विदा लेकर उसे कितनी खुशियों और आनंद से वंचित कर दिया, ताकि मैं आपके, मेरे और उसके प्रभु और ईश्वर की सेवा कर सकूँ! उसे अपने एक शक्तिशाली संरक्षक देवदूत की कृपा प्रदान करें, जो उसकी आत्मा को आकाश के कपटी और निर्दयी आत्माओं से बचाएगा, जो सभी को नष्ट करना चाहते हैं[5247] । हे मेरे ईश्वर, आज्ञा दें कि उसकी आत्मा उसके

[5246] एडेसा – अब उरफा – उत्तरी मेसोपोटामिया में यूफ्रेटिस नदी पर एक शहर है; 137 ईसा पूर्व से, यह ओज्रोएन या एडेसा की नवगठित राज्य की राजधानी थी; 217 ईस्वी में, रोमनों ने एडेसा को एक पूर्वी कॉलोनी में बदल दिया; एडेसा में ईसाई धर्म जल्दी ही प्रकट हो गया; चौथी शताब्दी में, सेंट एफ्रेम द सीरियन ने वहाँ एक धर्मशास्त्र विद्यालय की स्थापना की, जो पाँचवीं शताब्दी में नेस्टोरियनवाद की ओर झुक गया, जिसके लिए एडेसा के स्कूल के शिक्षक, प्रेसीबिटिर इवा ने सक्रिय रूप से काम किया। 641 में, अरब खलीफ़ों ने एडेसा पर विजय प्राप्त की; 1098 में, इसे काउंट बाल्डविन ने जीत लिया, जिसने इसे एडसा के प्रिंसिपिल्टी की राजधानी बना दिया; 1144 में, एडसा पर तुर्कों ने विजय प्राप्त की और उस समय से यह हाथों-हाथ बदलती रही, जब तक कि 1637 में यह अंततः तुर्की के शासन में नहीं आ गई।

[5247] अर्थात्, वह अपनी माँ की आत्मा को परीक्षणों से सुरक्षित होकर पार कराएगा। ये परीक्षण कुछ ऐसे हैं जैसे जांच चौकियाँ या सीमा शुल्क चौकियाँ, जिनका सामना मृतकों की आत्माएँ स्वर्गीय न्यायाधीश के सिंहासन की ओर बढ़ते समय करती हैं। वहाँ दुष्ट आत्माएँ खड़ी रहती हैं जो किसी विशेष पाप की दोषी हर आत्मा से एक तरह का कर या फिरौती वसूलती हैं, जिसमें उस पाप के विपरीत एक पुण्य कार्य प्रस्तुत करना शामिल है। 'टोल-हाउस' और 'टोल-कलेक्टर' शब्द यहूदी इतिहास से लिए गए हैं। यहूदियों में, 'माइटैर्स' (mytairs) उन व्यक्तियों को दिया गया नाम था जिन्हें रोमनों द्वारा कर एकत्र करने के लिए नियुक्त किया जाता था। वे आमतौर पर इन शुल्कों को एकत्र करने के लिए पट्टा लेते थे और अपने लिए अधिकतम लाभ निकालने के लिए हर संभव साधन अपनाते थे, यहाँ तक कि यातना देने से भी नहीं हिचकिचाते थे। कर वसूलने वाले विशेष सीमा शुल्क चौकियों या जांच चौकियों पर खड़े रहते थे, और परिवहन किए जा रहे माल पर शुल्क लगाते थे। इन जांच चौकियों को 'कस्टम हाउस' या 'कर स्टेशन' कहा जाता था। ईसाई लेखकों ने इस नाम का विस्तार आध्यात्मिक यातना के स्थानों तक किया, जहाँ स्वर्गीय न्यायाधीश के सिंहासन पर आरोहण कर रही आत्माओं को दुष्ट आत्माओं द्वारा रोका जाता था, जो उन्हें हर तरह के पापों का दोषी ठहराने और इस प्रकार उन्हें नरक में धकेलने की कोशिश करती थीं। 'मिटिरस्ट्वा' के सिद्धांत का सार, आत्मा के प्रस्थान पर अलेक्जेंड्रिया के संत सिरिल (मृत्यु 444) के शब्दों में निहित है, जिन्हें आमतौर पर चर्च के भजन-संग्रह में शामिल किया जाता है। – यहाँ कहा गया है, 'जब आत्मा शरीर से अलग हो जाती है, तो हम एक ओर स्वर्गीय सेनाओं और शक्तियों को, और दूसरी ओर, अंधकार की शक्तियों, वायुमंडलीय कर वसूलने वालों, हमारे कर्मों के अभियोजकों को देखेंगे। उन्हें देखकर आत्मा काँप उठेगी और थर्राएगी, और भ्रम और आतंक में परमेश्वर के स्वर्गदूतों से सुरक्षा की तलाश

शरीर से बिना किसी बीमारी या भय के अलग हो जाए, और एक दयालु के रूप में, इस जीवन में किए गए उसके सभी पापों को क्षमा करें। हे धर्मी ईश्वर! उसे दुख से दुख तक, विपत्ति से विपत्ति तक, और शोक से शोक तक न ले जाओ; परन्तु उस दुख के बदले जिसमें उसने मेरे, अपने एकलौते पुत्र के लिए शोक किया, उसे आनन्द प्रदान करो, और शोक के बदले, वह हर्ष जो हे मेरे परमेश्वर, आपने अपने संतों के लिए तैयार किया है।

योहन ने भी दिवंगत आत्मा के लिए उनके साथ प्रार्थना की। और, प्रार्थना से उठकर, योहन ने शिमोन को सांत्वना दी:

'देखो, भाई, ईश्वर ने तुम्हारी प्रार्थनाएँ सुनी हैं और तुम्हारी माता को अपने पास ले गए हैं; इसलिए थोड़ी देर और मेरे साथ रुको, और हम दोनों प्रभु से प्रार्थना करें कि वह मेरी पूर्व पत्नी पर भी अपनी दया दिखाएँ, और या तो उसे मठ-जीवन की ओर ले जाएँ या उसे इस संसार से अपने पास ले जाएँ।'

और उन दोनों ने इसके लिए प्रार्थना की।

कुछ ही समय बाद, आनंद से भरकर, जॉन ने अपनी पत्नी को उसके घर में बैठी देखा: सिमीओन की माँ उसके पास आईं, उसका हाथ पकड़कर कहा:

'उठो, हे मेरी बहन, और मेरे साथ चलो, क्योंकि राजा ने मुझे एक शानदार घर दिया है; जिसने मेरे पुत्र और तुम्हारे पति को अपने योद्धा बनाया; अपने कपड़े बदलकर साफ कपड़े पहन लो।'

और वह तुरंत उठी, अपने कपड़े बदले और उसका अनुसरण किया। इस दर्शन से, यूहन्ना ने समझ लिया कि उसकी पत्नी की मृत्यु हो गई थी और, शिमोन की माँ के साथ, उसने धर्मी लोगों के स्थान पर निवास कर लिया था, और वह बहुत प्रसन्न हुआ। उस समय से, दोनों ने बेफ़िक्र जीवन जिया और रेगिस्तान में रहे, 29 वर्षों तक एक साथ रहकर हर तरह की मुसीबतों को सहते हुए, अदृश्य दुश्मनों से बहादुरी से लड़ते हुए और ईश्वर की कृपा से उन्हें हराकर भगाते रहे। विशेष रूप से सिमीओन ने इतनी महान वैराग्य की प्राप्ति की कि उसका शरीर, मानो, एक असंवेदनशील वृक्ष बन गया था, जिसमें कोई प्रबल इच्छा नहीं होती थी, क्योंकि उसके सभी अंगों को मृत्यु दे दी गई थी।

एक बार, सिमीओन ने यूहन्ना से कहा:

'भाई, अब हमें रेगिस्तान में रहने की आवश्यकता नहीं है; परन्तु मेरी सुनो: चलो हम दूसरों के उद्धार के लिए काम करें। यहाँ हम केवल अपनी ही मदद कर रहे हैं, जबकि दूसरों की मदद करने पर हमें कोई इनाम नहीं मिलता। क्या प्रेरित यह नहीं कहते: *"कोई भी अपना भला न चाहे, बल्कि दूसरों का भला चाहे"*, और फिर: *'मैं सबकी प्रसन्नता के लिए सब कुछ करता हूँ न कि अपना लाभ खोजता हूँ, बल्कि बहुतों का, ताकि वे बच जाएँ* (1 कुरिन्थियों 10:24, 33)। और फिर: *'मैं सब के लिए सब कुछ बन गया हूँ, ताकि मैं हर संभव उपाय से कुछ लोगों को बचा सकूँ* (1 कुरिन्थियों 9:22)।

इस पर, जॉन ने उससे कहा:

'भाई, मुझे लगता है कि शैतान, जो हमारे एकांत से घृणा करता है, ने तुम्हारे मन में ऐसा विचार डाला है, परन्तु उसका विरोध करो और यहीं ठहरे रहो, ताकि हम इस जंगल में उस काम को पूरा कर सकें जिसे हमने यहाँ शुरू किया है और जिसके लिए परमेश्वर ने हमें बुलाया है।'

शिमोन ने उससे उत्तर दिया:

करेगी; लेकिन स्वर्गदूतों द्वारा स्वीकार किए जाने और ऊँचाइयों पर चढ़ते समय उनकी सुरक्षा में वायुमंडल से होकर गुजरने के बाद भी, यह विभिन्न परीक्षणों का सामना करेगी जो स्वर्ग के राज्य की ओर इसके मार्ग को अवरुद्ध कर देंगे, और स्वर्ग की ओर इसके प्रयास को रोकेंगे और बाधित करेंगे। इन प्रत्येक परीक्षणों में, विशिष्ट पापों का हिसाब माँगा जाएगा... प्रत्येक वासना, प्रत्येक पाप के अपने-अपने कर वसूलने वाले और यातना देने वाले होंगे। इसके अलावा, दिव्य शक्तियाँ और अशुद्ध आत्माओं का एक समूह दोनों उपस्थित रहेंगे; और जैसे पहले वाले आत्मा के सद्गुणों की ओर इशारा करेंगे, वैसे ही बाद वाले उसके पापों की निंदा करेंगे... और यदि, अपने धार्मिक और ईश्वर-प्रसन्न जीवन के लिए, वह (एक पुरस्कार की) योग्य साबित होती है, तो देवदूत उसका स्वागत करेंगे, और फिर वह निडर होकर राज्य की ओर प्रवाहित होगी। दूसरी ओर, यदि यह पता चलता है कि उसने लापरवाही और असंयम का जीवन जिया है, तो वह उस भयानक आवाज़ को सुनेगी: 'दुष्ट को हटा दिया जाए, ताकि वे प्रभु की महिमा न देखें' (यशायाह 26:10); तब परमेश्वर के स्वर्गदूत उसे छोड़ देंगे और भयानक राक्षस उसे ले लेंगे, और आत्मा, अटूट जंजीरों से बँधी, नरक के कालकोठरियों में फेंक दी जाएगी'। इस प्रकार, टोल-हाउस कुछ और नहीं बल्कि एक निजी न्याय है जिसे प्रभु स्वयं स्वर्गदूतों के माध्यम से मानव आत्माओं पर करते हैं, इस प्रक्रिया में *'जो हमारे भाइयों की निंदा करते हैं'* दोनों को शामिल किया जाता है (प्रकाशितवाक्य 12:10), दुष्ट आत्माएँ – एक ऐसा न्याय जिसमें आत्मा के कर्मों को याद किया जाता है और निष्पक्ष रूप से आंका जाता है, और जिसके बाद उसकी नियति निर्धारित की जाती है। इस न्याय को 'विशिष्ट' न्याय कहा जाता है, जो 'सामान्य' न्याय के विपरीत है, जो दुनिया के अंत में सभी लोगों पर किया जाएगा, जब परमेश्वर का पुत्र पृथ्वी पर लौटेगा, लेकिन इस बार अपनी महिमा में।

'भाई, मेरी बात मानो, मैं अब और यहाँ नहीं ठहरूँगा, बल्कि मसीह की शक्ति से मैं निकल जाऊँगा और संसार का उपहास करूँगा।'

तब यूहन्ना ने उससे कहा:

'मैंने अभी तक उस पूर्णता को प्राप्त नहीं किया है कि मैं संसार का मज़ाक उड़ा सकूँ; मुझे डर है कि वह किसी तरह मुझे लज्जित कर देगा और मुझे ईश्वर की कृपा से वंचित कर देगा। मैं तुझसे विनती करता हूँ, मेरे अच्छे भाई, उस प्रभु के वास्ते जिसने हमें एक किया है, मुझे, एक दीन मनुष्य को, न छोड़; अपने भाई से मुख न मोड़; तू जानता है कि ईश्वर के सिवाय मेरा और कोई नहीं है, सिवाय तेरे, मेरे भाई; मैंने सभी को त्याग दिया है और केवल तुझसे ही चिपका हूँ। और अब तू मुझे इस मरुभूमि में अकेला छोड़कर जाना चाहता है, जैसे मैं समुद्र में हूँ। उस दिन को याद करो जब हमने लॉटरी निकाली थी और प्रभु की सेवा करने के लिए एक साथ निकल पड़े थे, यह संकल्प लेते हुए कि हम कभी एक-दूसरे से अलग नहीं होंगे। उस घड़ी को याद करो जब हमारे पूजनीय पिता निकोन ने हमें पवित्र और महिमामय स्वर्गदूतों के वस्त्र पहनाए थे, और हम दोनों एक ही आत्मा की तरह थे, जबकि सभी हमारे प्रेम को देखकर चकित थे। महान वरिष्ठ के शब्दों को मत भूलो, जिसे उन्होंने उस रात जब हमने मठ छोड़ा था, हमें सांत्वना दी और प्रोत्साहित किया; मुझे मत छोड़ो, भाई, मैं तुझसे विनती करता हूँ, कहीं मैं तेरे बिना अकेले ही नष्ट न हो जाऊँ, और ईश्वर तुम्हें मेरी आत्मा के लिए उत्तरदायी ठहराए।

सिमोन ने उसे समझाया:

'मुझे ऐसे समझो मानो मैं मर गया हूँ; सचमुच, अगर मैं मर जाऊँ, तो क्या तुम अकेले नहीं रह जाओगे? मेरा विश्वास करो, अगर तुम मेरे साथ चलोगे, तो अच्छा होगा; अगर तुम नहीं चलोगे, तो यह तुम्हारी मर्जी है; लेकिन मैं तो वैसे भी यहाँ नहीं रुकूँगा, क्योंकि मैं वहाँ जा रहा हूँ जहाँ परमेश्वर मुझे भेजता है।'

यूहन्ना को एहसास हुआ कि यह उसके भाई के लिए ईश्वर की ओर से एक प्रेरणा थी, जो उसे दुनिया के लिए मरुभूमि छोड़ने के लिए प्रेरित कर रही थी, और उसने उससे बहस करना बंद कर दिया। अपने भाई से बिछड़ने के दुख में, उसने उससे कहा:

'सावधान रहो, मेरे प्रिय शिमोन, कि जो कुछ तुमने रेगिस्तान में इकट्ठा किया है, वह संसार द्वारा बिखेर न दिया जाए, और जो कुछ तुमने मौन के द्वारा प्राप्त किया है, वह सांसारिक गपशप से कलंकित न हो; काश कि नींद तुम्हारी सारी रात की जागृति को नष्ट न करे, और काश कि सांसारिक सुख तुम्हारा संन्यासी ध्यान भंग न करें।' सावधान रहो कि स्त्रियों का दर्शन, जिसे ईश्वर ने तुम्हें आज तक सुरक्षित रखा है, तुम्हारी पवित्रता को नष्ट न कर दे, और धन संचय का जुनून तुम्हें सांसारिक संपत्ति से तुम्हारी संन्यासी वैराग्य से वंचित न कर दे—ताकि विभिन्न प्रकार के भोजन का स्वाद चखने से तुम्हारे उपवास भंग न हों, और हँसी तुम्हारे रोने को नष्ट न कर दे, और न ही आपकी प्रार्थना आलस्य से। भले ही, हे प्रिय, आपको ईश्वर से ऐसी शक्ति प्राप्त हो कि आप अपनी मुक्ति को बिना नुकसान पहुँचाए संसार में, लोगों के बीच रह सकें, फिर भी अपने हृदय को उस चीज़ से सावधानीपूर्वक बचाएँ जो आप अपने शरीर से दूसरों के सामने करते हैं; तुम्हारी इच्छा इसमें भागीदार न बने; तुम्हारा प्राण उस चीज़ को न छुए जिसे तुम्हारा हाथ छूता है; तुम्हारा हृदय उस बात में आनंद न ले जिसे तुम्हारे होंठ चखते हैं; और तुम्हारे चलने-फिरने से तुम्हारा अंतर्मन विक्षुब्ध न हो; जो कुछ भी बाहर घटित हो, उसे भीतर महसूस न होने दो; और तुम्हारा मन अविचलित रहे। मैं तुम्हारे उद्धार में आनन्दित हूँ; केवल मेरे लिए ईश्वर से प्रार्थना करना, कि वह हमें आने वाले युग में एक-दूसरे से अलग न करे।

'डरो मत, मेरे प्यारे भाई योहन,' सिमीओन ने उससे कहा, 'क्योंकि जो मैं करने का इरादा रखता हूँ वह मेरी अपनी इच्छा से नहीं, बल्कि परमेश्वर की इच्छा के अनुसार है; और तुम यह जान जाओगे कि मेरा काम परमेश्वर को भाता है, इस बात से कि मैं अपनी मृत्यु से पहले तुम्हारे पास आऊँगा, तुम्हें प्रणाम करूँगा, और तुम्हें मेरे साथ चलने के लिए बुलाऊँगा, और कुछ ही दिनों में तुम मेरे पीछे आओगे।'

ऐसा कहकर, वे दोनों प्रार्थना के लिए घुटनों के बल बैठ गए और बहुत देर तक प्रार्थना की, और उन्होंने बहुत आँसू बहाए। फिर, एक-दूसरे को कई बार गले लगाने और होठों तथा छाती पर चूमने के बाद, जॉन ने सीमयिन को विदाई दी, और उसे काफी दूर तक साथ ले गया: वह उससे अलग नहीं होना चाहता था। और हर बार सीमयिन उससे कहता था:

'अब लौट आओ, भाई जॉन,' ये शब्द उसके लिए एक तीखी तलवार की तरह थे जो आत्मा को शरीर से अलग कर रही हो। अंत में, एक-दूसरे को चूमने के बाद, वे अलग हो गए: सिमीओन संसार में चला गया, जबकि जॉन आँखों में आँसू लिए रेगिस्तान लौट आया।

मरुभूमि को छोड़कर, धन्य सिमीओन पवित्र नगर यरूशलेम के लिए रवाना हुए: क्योंकि वह उन पवित्र स्थानों को देखने के लिए बहुत तरस रहे थे जिन्हें उन्होंने इतने वर्षों से नहीं देखा था; और, पवित्र गोलगोथा[5248] पहुँचने के बाद, वह वहाँ तीन दिनों तक रहे, आदरणीय और जीवन-दायक क्रूस और प्रभु के पवित्र सेपुलकर की पूजा करने आए। उन्होंने ईश्वर से विनम्रतापूर्वक प्रार्थना की कि प्रभु उनके कार्यों को लोगों से तब तक छिपाए रखें जब तक कि वे इस संसार से न चल दें, ताकि वे व्यर्थ की महिमा और घमंड से बच सकें, जिसने स्वर्गदूतों को भी स्वर्ग से नष्ट कर गिरा दिया था; परन्तु सभी उन्हें एक पागल और मूर्ख समझें, और जो उन्होंने माँगा है, उसे उन्हें प्राप्त हो। प्रभु अपने सच्चे सेवकों की प्रार्थनाएँ सुनते हैं और उनकी विनतियों पर ध्यान देते हैं।

और इसके बाद इस ईश्वर के मनुष्य ने कितने ही चमत्कार किए: उसने दुष्टात्माओं को भगाया, भविष्य की भविष्यवाणी की, हर तरह की बीमारियों को ठीक किया, लोगों को अचानक मृत्यु से बचाया, अविश्वासियों को विश्वास की ओर लाया, और पापियों को पश्चाताप के लिए मनाया; फिर भी, लोग उनकी पवित्रता की पूरी सीमा को पहचान नहीं सके, क्योंकि ईश्वर ने इसे उनसे छिपा रखा था; वास्तव में, उनकी मृत्यु तक भी, वे उन्हें एक पवित्र मूर्ख और एक भूतहा व्यक्ति ही मानते थे। वह स्वयं जानते थे कि ईश्वर की कृपा से किए गए अपने चमत्कारिक कार्यों को मूर्खता के बाहरी दिखावे के पीछे कैसे छिपाना है, जैसा कि निम्नलिखित वृत्तांत से पता चलेगा। किसी को भी संत सिमोन द्वारा मूर्खता का दिखावा करते हुए, और इस व्यर्थ तथा घमंडी संसार का मज़ाक उड़ाते हुए किए गए कुछ अजीब और हँसने योग्य कार्यों को पढ़कर भ्रमित न होना चाहिए, बल्कि सभी को प्रेरितों के इन शब्दों पर मनन करना चाहिए: *'यदि तुम में से कोई इस युग में बुद्धिमान समझता है, तो उसे मूर्ख बन जाना चाहिए'* (1 कुरिन्थियों 3:18–19)। और फिर: *'हम मसीह के लिए मूर्ख हैं, क्योंकि परमेश्वर की मूर्खता मनुष्यों से अधिक बुद्धिमानी है'* (1 कुरिन्थियों 4:10, 1:25)। यरूशलेम से, पूजनीय सिमोन एमेसा शहर के लिए रवाना हुए और वहाँ उन्होंने मसीह के लिए अपनी पवित्र मूर्खता शुरू की: जब वे शहर के पास पहुँचे, तो उन्होंने कूड़े के ढेर पर एक मरा हुआ कुत्ता देखा; अपनी कमरबंद उतारकर, उन्होंने कुत्ते को उसके पैर से बाँधा और उसे खींचकर शहर में ले आए, और तेजी से दरवाजों से होकर गुज़रते हुए उसे गलियों से खींचते चले गए। बच्चों की एक भीड़ इकट्ठा हो गई और उसके पीछे-पीछे दौड़ने लगी, चिल्लाते हुए:

'पागल संन्यासी, पागल संन्यासी!'

और उन्होंने उस पर पत्थर फेंके और उसे लाठियों से पीटा। और रविवार की सुबह, वह लितिर्जी (प्रार्थना सभा) की शुरुआत में चर्च में प्रवेश किया, अपने वक्ष में मेवे छिपाए हुए। सबसे पहले, सिमोन ने मोमबत्तियाँ बुझाना शुरू कर दिया, और जब उन्होंने उसे बाहर निकालने की कोशिश की, तो वह उपदेश-मंच पर कूद गया और महिलाओं पर मेवे फेंकने लगा; बड़ी मुश्किल से वे उसे चर्च से बाहर निकाल पाए। भागते समय, उसने बिक्री के लिए रखी रोटी की रोटियों को गिरा दिया और बेकर्स ने उसे इतनी बुरी तरह पीटा कि वह मुश्किल से बच पाया। उसके बाद, एक सरायकी़—जो भोजन सामग्री और सोची (एक प्रकार का पेय) का विक्रेता था, एक अधर्मी व्यक्ति जो सेवरस की विधर्मिता का अनुयायी था[5249] —ने धन्य वृद्ध को देखा और, उनकी पवित्र मूर्खता से अनजान, उनसे इस प्रकार संबोधित किया:

'बूढ़े, तुम इधर-उधर क्यों भटक रहे हो? मेरे पास आओ और मुझे सोचविो, दालें, दलिया और अन्य राशन बेच दो।'

[5248] गोलगोथा – खोपड़ी का स्थान या वह पहाड़ी जिस पर प्रभु यीशु मसीह को सूली पर चढ़ाया गया था। हिब्रू क्रिया 'लेट' – जिससे हमारा 'गोलगोथा' शब्द लिया गया है – का अर्थ 'माथा' या 'खोपड़ी' है; इस पहाड़ी को शायद इसके खोपड़ी जैसे आकार के कारण यह नाम दिया गया था; एक प्राचीन, अत्यंत महत्वपूर्ण परंपरा इस नाम की व्याख्या इस प्रकार करती है कि आदम को वहीं दफनाया गया था, इसलिए मसीह का क्रूस मानव जाति के विश्रामरत पूर्वज के सिर के ऊपर स्थापित किया गया था। प्रभु यीशु की मृत्यु के समय, यह पहाड़ी अभी भी यरूशलेम के बाहर थी (मत्ती 27:33, 28:11; इब्रानियों 13 और बाद के)। इसके विनाश और बाद में पुनर्निर्माण के बाद, यरूशलेम मुख्य रूप से उत्तर और उत्तर-पश्चिम की ओर फैला, ताकि गोलगोथा नए यरूशलेम के पश्चिमी भाग के लगभग केंद्र में आ गया। और आज भी, तथाकथित गोलगोथा पहाड़ की चट्टान में एक दरार दिखाई जाती है, जो उद्धारकर्ता मसीह की मृत्यु के क्षण में भूकंप के कारण हुई थी (मत्ती 27:51)। यरूशलेम के संत किरिल ने (लगभग 350) कहा: 'यह पवित्र गोलगोथा, जो स्पष्ट रूप से आज भी खड़ी है, इस बात की गवाही देती है कि जिस क्षण प्रभु की मृत्यु हुई, चट्टान फट गई।'

[5249] सेवरस – एंटिओक के पैट्रिआर्क (512–518), मोनोफिसाइट विधर्म के एक प्रमुख और उत्साही अनुयायी, जो यह मानता है कि प्रभु यीशु मसीह, यद्यपि दो स्वभावों से जन्मे हैं, दो में नहीं बसते, क्योंकि परमेश्वर के पुत्र के अवतार में, मानवीय स्वभाव, ईश्वर के वचन द्वारा धारण किए जाने पर, यह केवल उनके दिव्य स्वरूप का एक गुण बन गया, अपनी स्वतंत्र अस्तित्व खो बैठा और केवल विचार में ही इससे अलग किया जा सकता है।

वह तुरंत मान गया और उस आदमी के छोटे से कमरे में बैठकर आने वाले भखिारयिों को मुफ्त में राशन बांटने लगा, और खुद भी कुछ खा लयिा, क्योंकि उसने पूरे एक हफ्ते से कुछ नहीं खाया था। और जब उसने सब कुछ दे दयिा और कोई पैसा नहीं जुटाया, तो उस आदमी ने उसे बुरी तरह पीटना शुरू कर दयिा, उसकी दाढ़ी नोच डाली और उन्हें अपने घर से बाहर नकिाल दयिा; लेकनि वह बूढ़ा आदमी, जाने से इनकार करते हुए, दरवाज़े के पास बैठ गया। एक घंटे बाद, यह सुनकर कि सरायकनि की पत्नी ने धूप जलाने के लिए गर्म कोयले मांगे हैं, वह चूल्हे की ओर भागा और फावड़ा न पाकर, मुट्ठी भर-भरकर गर्म कोयले उठाकर उस महलिा के पास ले गया ताकि वह उन्हें जलाने के लिए रख सके। यह देखकर, वह दंग रह गई और उस पर चलि्लाते हुए बोली:

'तुम क्या कर रहे हो? अपने हाथ क्यों जला रहे हो?'

लेकनि उसने अंगारे अपने कपड़ों पर डाल लिए और कहा:

'यदि आप नहीं चाहतीं कि मैं अपने हाथों से धूप जलाऊँ, तो मैं अपने कपड़ों से जलाऊँगा।'

और, धूप रखकर, वह उसे तब तक जलाता रहा जब तक कि अंगारे बुझ नहीं गए। यह देखकर कि उसके हाथ और कपड़े आग से सुरक्षति थे, पति और पत्नी बहुत हैरान हुए और बाद में उन्होंने कैथोलकि चर्च में प्रवेश कर लयिा, जबकि उस वृद्ध को एक संत के रूप में पूजति कयिा जाने लगा; लेकनि वह उस घर से भाग गया और तब तक वापस नहीं आया जब तक कि वह चमत्कार भूल नहीं गया।

जब वह शहर में एक पवत्रि मूर्ख के रूप में रह रहा था, तो एक सरायकी ने उसे आश्रय दयिा और दास बना लयिा। वह एक क्रूर और नर्दियी आदमी था और बूढ़े को शायद ही कभी खाना देता था, भले ही वह उसके कारण बहुत मुनाफ़ा कमाता था, क्योंकि शहर के लोग उपहास उड़ाते हुए कहते थे:

'चलो उस शराबखाने में चलते हैं जहाँ वह पवत्रि मूर्ख रहता है।'

बर्जुग अपनी पवत्रि मूर्खता से पीने वालों का मनोरंजन करते थे। एक दनि, एक साँप रेंगता हुआ अंदर आया, उसने एक पात्र से शराब पी, और उसमें अपना जहर छोड़कर रेंगता हुआ चला गया। उस समय कमरे में कोई नहीं था, और पागल संत घर के बाहर भीड़ के बीच उछल-कूद रहा था और तबोरा की थाप पर नाच रहा था। कुछ समय बाद, वह घर में आया और उसने उस पात्र के ऊपर एक ऐसा शब्द देखा जो कसिी और को दखिाई नहीं दे रहा था: 'मौत'।

यह समझते हुए कि क्या हुआ था, बुजुर्ग ने एक लाठी उठाई और शराब से भरे बर्तन को तोड़ दयिा, और शराब बाहर गरि गई। ठीक उसी क्षण, सरायकयिा आ गया और, यह देखकर कि बुजुर्ग ने बर्तन तोड़ दयिा है, उसने वही लाठी छीन ली और उसे तब तक बेरहमी से पीटा जब तक कि वह खुद थक नहीं गया, और उसे घर से बाहर नकिाल दयिा। अगली सुबह, बूढ़ा आदमी सराय में वापस आया और अपने मालकि से छपिता हुआ प्रतीत हो रहा था। एक बार फरि, साँप रेंगकर आया और दूसरे पात्र से शराब पीने लगा; यह देखकर, सरायकुल ने एक लाठी पकड़ी और साँप को मारने के इरादे से पात्र पर वार कयिा; साँप सरक कर भाग गया, और पात्र चकनाचूर हो गया, जसिसे शराब बखिर गई; केवल वही पात्र ही नहीं, बल्कि पास में रखे गलिास भी टूट गए। उसके पीछे खड़ा बूढ़ा चलि्लाया:

'देखो, बर्तन तोड़ने वाला मैं अकेला पागल नहीं हूँ, बल्कि तुम भी वही कर रहे हो।'

तब सरायकुल के मालकि को, यह समझ आ गया कि शमिोन ने कल शराब का घड़ा क्यों तोड़ा था, और उसे शमिोन को बनिा कसिी कारण के इतनी बुरी तरह पीटने पर पछतावा हुआ, और उसने शमिोन का एक संत की तरह सम्मान करना शुरू कर दयिा। हालाँकि, उस वृद्ध ने, जो अपने लिए कोई सम्मान नहीं बल्कि अपमान और तरिस्कार चाहता था, और बुद्धमिानी से अपनी दव्यि आत्मा को देह में मूर्खता के भेष में छपिाए हुए था, नम्निलखिति कयिा: एक दनि, जब सरायकी की पत्नी अपने कमरे में अकेली आराम कर रही थी और उसका पति शराब बेच रहा था, तो वह बूढ़ा उसके पास आया और यह दखिावा करते हुए कि वह उसके साथ लेटना चाहता है, कपड़े उतारने लगा। यह देखकर, वह चलि्लाई, और सरायकी दौड़ता हुआ आया; उससे उसकी पत्नी ने कहा:

'इस शापति पवत्रि मूर्ख को बाहर नकिालो, क्योंकि वह मेरा बलात्कार करना चाहता है।'

उसके पति ने उस बूढ़े आदमी को एक थप्पड़ मारा और उसे ठंड में बाहर नकिाल दयिा: बहुत कड़ाके की ठंड थी और बारशि हो रही थी, और वह बूढ़ा आदमी घर के बाहर एक मात्र एक फटे-पुराने और जर्जर कपड़े में ठंड सहते हुए बैठ गया। उस समय से, न केवल सरायक खुद उसे संत नहीं मानता था, बल्कि जब भी कोई और यह सुझाव देता कि सिमिीओन मसीह के लिए पागलपन का नाटक कर रहा था, तो वह कसम खाकर जोर देकर कहता:

'सचमुच, वह पिशाचग्रस्त और विक्षिप्त है, और इसके अलावा एक व्यभिचारी भी: उसने मेरी पत्नी के साथ बलात्कार करने की कोशिश की, और वह मांस खाता है और अन्य अश्लील कृत्य करता है, जैसे कोई ईश्वर को न जानने वाला।'

क्योंकि वह पूजनीय पिता, कई मौकों पर, सात दिनों के उपवास के बाद, सभी के सामने जानबूझकर मांस खाते थे, ताकि सभी उन्हें न केवल एक पवित्र मूर्ख बल्कि एक पापी भी समझें। अपनी नकली पागलपन को और दिखाने के लिए, मानव लज्जा को त्यागकर, वे अक्सर बाजार में नग्न घूमते थे, मानो वे अदेह हों, अदेह प्राणियों के एक सच्चे अनुकरणकर्ता। उस नगर के चर्च में सेवा करने वाला जॉन नामक एक डिकन, एक पुण्यशील और ईश्वर-भयभीत व्यक्ति, जो मसीह के लिए सीमोन की दिखावटी मूर्खता से अच्छी तरह वाकिफ था, ने एक बार उस वरिष्ठ को—चाहे उपवास से या अपनी दिखावट से जुड़ी कठिनाइयों के कारण—शरीर से बहुत कमजोर देखा; और, उसे नहलाने की इच्छा से, मानो मज़ाक में, पूछा:

'क्या हम स्नानागार में नहाने चलें, हे पवित्र मूर्ख?'

और वृद्ध हँसते हुए उत्तर दिया:

'मैं जाऊँगा, मैं जाऊँगा।'

और तुरंत उसने अपने फटे-पुराने कपड़े उतार लिए, उन्हें लपेटा और अपने सिर पर रख लिया। और डीकन ने उससे कहा:

'कपड़े पहन लो, भाई, क्योंकि अगर तुम नग्न जाओगे, तो मैं तुम्हारे साथ नहीं जाऊँगा।'

वरिष्ठ ने उत्तर दिया:

'मैंने काम से पहले ही काम कर दिया है, और अगर तुम मेरे साथ नहीं आना चाहते, तो मैं तुम्हें चेतावनी देता हूँ।'

यह कहकर वह आगे दौड़ पड़ा। वहाँ दो स्नानागार थे: एक पुरुषों के लिए और दूसरा महिलाओं के लिए; पुरुषों के स्नानागार को एक तरफ छोड़कर, वह महिलाओं के स्नानागार में चला गया। डीकन, उसके पास पहुँचकर, चिल्लाया:

'रुको, हे पवित्र मूर्ख, वहाँ मत जाओ; क्योंकि वह स्त्रियों का स्नानागार है।'

उसकी ओर मुड़कर, सिमिओन ने कहा:

'वहाँ भी यहीं की तरह गर्म और ठंडा पानी है; दोनों जगहों में और कुछ भी खास नहीं है।'

यह कहकर, वह आगे बढ़ा और नग्न होकर स्नानागार में घुस गया और महिलाओं के बीच बैठ गया। वे सभी तुरंत उस पर टूट पड़ीं, उसे पीटा और भगा दिया। बाद में, डीकन ने निजी तौर पर संत से पूछा:

'फादर, जब आप नग्न होकर नग्न महिलाओं के बीच गए, तो आपका शरीर कैसा महसूस कर रहा था?'

वरिष्ठ ने उत्तर दिया:

'भाई, मेरा विश्वास करो, मैं पेड़ों के बीच एक पेड़ की तरह था; मैं उनके बीच था, मुझे शरीर होने का कोई एहसास नहीं हो रहा था, यह सोच भी नहीं रहा था कि मैं देहधारी प्राणियों के बीच हूँ, बल्कि मेरा पूरा मन ईश्वर के कार्य पर केंद्रित था।'

उस धन्य व्यक्ति ने अपने तपस्वी शरीर की इस निर्लिप्तता को उस डिकन के सामने प्रकट किया, जिससे उन्होंने अपने पूरे जीवन की कोई भी बात नहीं छिपाई, क्योंकि उन्होंने उसमें ईश्वर का एक सच्चा सेवक देखा। और उन दोनों के बीच मसीह के प्रति एक भाई जैसा प्रेम पनपा, और वे एक-दूसरे के ईश्वरीय कार्यों से अवगत थे।

एक पवित्र मूर्ख की तरह जीते हुए, पूजनीय सिमोन ने न केवल अपनी बल्कि दूसरों की भी रक्षा की: उन्होंने कई पापियों को पश्चाताप की ओर ले जाया, उन्हें वचन और कर्म से शिक्षा देते हुए। एक युवक व्यभिचार के पाप में पड़ गया और तुरंत, ईश्वर की सजा के द्वारा, उसे शरीर के विनाश के लिए शैतान के हवाले कर दिया गया (1 कुरिन्थियों 5:5) और एक अशुद्ध आत्मा द्वारा उसे पीड़ा दी गई। यह देखकर, वृद्ध ने उसके गाल पर थप्पड़ मारा और उसके कान में फुसफुसाया:

'व्यभिचार मत करो।'

और तुरंत ही दुष्टात्मा उससे निकल गया, और वह युवक स्वस्थ हो गया। जिन्होंने पूछा कि वह कैसे चंगा हुआ, उन्हें उसने बताया:

– मैंने एक बूढ़े आदमी को देखा, जिसके हाथ में लकड़ी का एक क्रूस था, जिसने क्रूस से एक भयानक काले कुत्ते को मुझसे भगा दिया, और मैं ठीक हो गया।

वह यह नहीं बता सकता था कि उसे सिमिओन मसीह-के-लिए-मूर्ख ने ही चंगा किया था, क्योंकि ईश्वर ने उसकी जीभ को तब तक बँधा रखा जब तक कि सिमिओन की मृत्यु नहीं हो गई। सफिास नाम का एक हास्य कलाकार था जो नगर चौकों में हास्य-नाटकिाएँ प्रस्तुत करता था। जब वह भीड़ के सामने अपनी सामान्य प्रस्तुति दे रहा था, तब सिमिओन वहाँ आया और हास्य कलाकार को देखकर उसके जीवन में कुछ सद्गुण पहचाना, और, उसे उस स्पष्ट रूप से अस्वास्थ्यकर कृत्य से रोकना चाहकर, उसने एक बहुत छोटा सा पत्थर उठाया और, क्रॉस का चिह्न बनाकर, उस पर फेंका; वह उसके दाहिने हाथ पर लगा, और तुरंत ही वह हाथ सूख गया – और कोई भी यह नहीं बता सका कि पत्थर किसने फेंका था। और वह हास्य कलाकार बीमार और निराश होकर चला गया। एक सपने में, आदरणीय व्यक्ति उसे दिखाई दिए और उन्होंने कहा:

'यह मैं ही था जिसने तुम पर पत्थर फेंका था, और जब तक तुम पश्चाताप नहीं करते और मुझसे यह कसम नहीं खाते कि तुम अब उस हास्यास्पद कला का अभ्यास नहीं करोगे, तब तक तुम ठीक नहीं होओगे।'

उसने परम पवित्र कुँवारी मरियम की कसम खाकर उससे कहा कि वह अब वे नाटक नहीं करेगा, और उठते ही वह फिर से स्वस्थ हो गया और उसका हाथ ठीक हो गया; फिर भी वह अपने उपचारक का नाम नहीं बता सका, बल्कि केवल इस बात पर अड़ा रहा कि एक ऐसे भिक्षु ने उसे ठीक किया था जिसके सिर पर खजूर की टहनियों का हार था। उस पूजनीय ने भविष्य का भी पूर्वानुमान लगाया और उसे गुप्त रूप से दूसरों को बताया। मौरिसियस के शासनकाल में महान भूकंप[5250] से कुछ दिन पहले — जिसने अंटाकिया[5251] को ध्वस्त कर दिया और एमेसा में कई पत्थर की इमारतों को नष्ट कर दिया — उस वृद्ध ने, पागलपन का नाटक करते हुए, स्कूल से चमड़े की बुनी हुई एक कोड़ा छीन लिया और, शहर में दौड़ते हुए, पत्थर के खंभों पर वार किया; जो इमारतों को सहारा देते थे, और कुछ स्तंभों के सामने वह कहता था:

'प्रभु तुम्हें आज्ञा देते हैं कि दृढ़ खड़े रहो।'

और एक के सामने:

'ना खड़े रहो, ना गिरो।' और जब भूकंप आया, तो वे सभी स्तंभ जो संत ने उन्हें मारते समय खड़े रहने का आदेश दिया था, पूरे और सुरक्षित रहे; बाकी के स्तंभ, उन घरों के साथ जिनका वे सहारा थे, गिर गए और धूल में मिल गए। लेकिन वह स्तंभ जिसके बारे में संत ने कहा था, 'ना खड़ा रहो और ना गिरो,' ऊपर से नीचे तक दो भागों में टूट गया, और वहाँ थोड़ा सा झुककर खड़ा रहा, । जब संत ने स्तंभों को ठोककर उन्हें खड़े रहने का आदेश दिया, तो कई लोगों ने सोचा कि वह पागलपन के दौरे में ऐसा कर रहे थे; लेकिन जब उन्होंने देखा कि भूकंप के बाद भी वे सुरक्षित और सही-सलामत खड़े रहे, तो कई लोगों को तब एहसास हुआ कि यह पवित्र मूर्ख की ओर से भूकंप के बारे में एक भविष्यसूचक संकेत था। इसी तरह, जब कोई महामारी आने वाली होती, तो संत स्कूलों में आते, बच्चों को चूमते, मानो हँस रहे हों, और प्रत्येक से कहते:

'जाओ, हे मेरे अच्छे! जाओ, हे मेरे सुंदर!'

उसने सभी बच्चों को नहीं चूमा, बल्कि केवल उन्हीं को चूमा जिन पर ईश्वर की कृपा हुई थी। और शिक्षक से उसने कहा:

'अब भाई, भगवान के लिए, उन बच्चों को मत पीटना जिन्हें मैं चूमता हूँ, क्योंकि उन्हें एक लंबी यात्रा पर निकलना है।'

हालांकि, शिक्षक उसका मज़ाक उड़ाता था; कभी-कभी वह खुद उसे पीटता था, तो कभी बच्चों को उसे पीटने का आदेश देता था, और वे उस संत को एक खंभे से बांधकर पीट देते थे। और जब, ईश्वर की अनुमति से, शहर में एक महामारी आई, तो उन बच्चों में से एक भी जीवित नहीं बचा जिन्हें संत ने चूमा था; वे सभी मर गए, और तभी उन्हें उसकी भविष्यवाणी का अर्थ समझ आया।

[5250] संत मॉरिसियस – 582 से 602 तक सम्राट।

[5251] एंटीओक शहर ईसाई चर्च के लिए विशेष महत्व रखता है क्योंकि यह यरूशलेम के बाद ईसाई धर्म का दूसरा महान केंद्र है और यह गैर-यहूदियों के बीच स्थापित पहला ईसाई चर्च है। अंतियोक की स्थापना मसीह के जन्म से 300 वर्ष पूर्व सीरियाई राजा सेल्यूकस निकिटर द्वारा की गई थी, जिन्होंने अपने पिता एंटिओकस के नाम को अमर बनाना चाहा, इसलिए उन्होंने दस से अधिक अन्य शहरों की भी स्थापना की, जिनका नाम अंतियोक था। अन्य शहरों से अलग करने के लिए, इस राजधानी का नाम एंटिओक एपिडाफ्ने रखा गया, जिसका अर्थ है 'डाफ्ने के मंदिर और वन के पास'; इसे ओरोंटेस पर स्थित एंटिओक के नाम से भी जाना जाता था, जिसका नाम उस नदी के नाम पर रखा गया था जिसके किनारे यह स्थित था, नदी के मुहाने से लगभग 10 वर्स्ट दूर जहाँ यह भूमध्य सागर में मिलती है।

वह संत अमीरों के घरों में जाने और एक पवित्र मूर्ख की तरह व्यवहार करने की आदत रखते थे, और कई मौकों पर उन्होंने सभी के सामने उनकी नौकरानियों को चूमा। ऐसा हुआ कि एक प्रमुख नागरिक की दासी ने एक युवक के साथ व्यभिचार किया और उससे गर्भवती हो गई; जब यह पता चला कि वह गर्भवती है, और उसकी मालकिन ने उससे पूछा कि उसने किसके साथ व्यभिचार किया है, तो दासी ने अपने बहकाने वाले का नाम बताने से इनकार कर दिया, लेकिन कहा कि एक पवित्र मूर्ख ने उसके साथ बलात्कार किया था। जब बुजुर्ग अपने रिवाज़ के अनुसार उस घर आए, तो मालकिन ने उनसे कहा:

'सिमीओन, क्या तुमने अच्छा किया, मेरी दासी के साथ बलात्कार करके, जो तुमसे ही गर्भवती है?'

हालाँकि, बूढ़े ने उस पर हँसकर कहा:

'अब चिंता मत करो, चिंता मत करो, जब तक वह बच्चे को जन्म नहीं दे देती, और तुम्हारा एक छोटा सा सिमीओन होगा।'

उस दिन से, बुजुर्ग उस दासी को अपनी पत्नी कहने लगा और लगातार उससे मिलने आता रहा, उसके लिए ताज़ा रोटी, मांस और मछली लाता रहा, कहते हुए:

'खाओ, मेरी पत्नी, खाओ।'

जब उसके बच्चे को जन्म देने का समय आया, तो महिला को प्रसव पीड़ा शुरू हो गई लेकिन तीन दिनों तक वह बच्चे को जन्म नहीं दे सकी और मौत के कगार पर थी। उसकी मालकिन संत के पास गई और उनसे पूछा:

'हे बूढ़े, ईश्वर से प्रार्थना करो, क्योंकि तुम्हारी पत्नी बच्चे को जन्म नहीं दे सकती।'

लेकिन उसने, तालियाँ बजाते और गाते हुए, जोड़ा:

'मैं यीशु की कसम खाता हूँ, मैं यीशु की कसम खाता हूँ, वह तब तक बच्चे को जन्म नहीं देगी जब तक वह यह कबूल नहीं कर लेती कि पिता कौन है।'

यह सुनकर, प्रसव पीड़ा से पीड़ित महिला ने सच बताया: कि उसने एक निर्दोष भिक्षु पर झूठा आरोप लगाया था और अपने प्रलोभक का नाम बताया, जिसके साथ उसने पाप किया था। फिर उसने बच्चे को जन्म दिया, और लोग उस बुजुर्ग को एक संत मानने लगे; जबकि अन्य का दावा था कि वह शैतान के कामों के माध्यम से जादू-टोना करता था, क्योंकि वह एक पवित्र मूर्ख था और एक राक्षस द्वारा ग्रस्त था।

संत मानव हृदयों के गुप्त विचारों को भी जान सकते थे, जैसा कि निम्नलिखित से स्पष्ट है: शहर के पास एक मठ था जहाँ दो पादरी ओरिजिन पर चर्चा कर रहे थे, यह सोचकर हैरान थे कि इतने बुद्धिमान व्यक्ति विधर्म में क्यों भटक गए थे[5252] । एक का तर्क था कि ओरिजिन की बुद्धिमत्ता ईश्वर से नहीं, बल्कि अध्ययन और कई पुस्तकों के पठन से

[5252] ओरिजिन – अलेक्जेंड्रियाई चर्च के प्रसिद्ध शिक्षक, बुद्धि और अपने विद्वता की गहराई के मामले में अपने युग के एक अद्भुत व्यक्ति। चर्च के कई सबसे प्रतिष्ठित धर्मपिताओं ने ओरिजिन के धर्मशास्त्रीय कार्यों और उपलब्धियों को सर्वोच्च सम्मान दिया; फिर भी बाद में, उनके जीवित रहते हुए, उन्हें अलेक्जेंड्रिया की दो स्थानीय परिषदों में एक विधर्मी घोषित कर दिया गया और, उनकी मृत्यु के बाद, 543 में कॉन्स्टेंटिनोपल की परिषद में भी। हालांकि उन्होंने अपने गैर-पारंपरिक विचारों को अपरिवर्तनीय सत्य के रूप में प्रस्तुत नहीं किया, फिर भी ओरिजिन ने ईसाई चर्च के सिद्धांत के कई सत्यों पर गलत विचार रखे, यही कारण है कि कुछ लोगों ने सबसे बुनियादी ईसाई धर्मसिद्धांतों के संबंध में उनकी दृढ़ता को संदिग्ध माना। आत्माओं के पूर्व-अस्तित्व के गैर-पारंपरिक सिद्धांत को विकसित करते हुए, उन्होंने मसीह की समझ में गलती की, यह मानते हुए कि ईश्वर ने समान गरिमा वाले एक निश्चित संख्या में आध्यात्मिक प्राणियों को बनाया था, जो दिव्यता को समझने और उसकी तरह बनने में सक्षम थे; इन सृजित आत्माओं में से एक ने, इतनी तीव्र प्रेम भावना के साथ, दिव्यता की ओर मुड़कर इतना प्रबल प्रेम किया कि वह दिव्य वचन के साथ अविभाज्य रूप से एक हो गई या उसकी सृजित पात्र बन गई; ओरिजिन के दृष्टिकोण में, यह मानव आत्मा है जिसके माध्यम से परमेश्वर वचन पृथ्वी पर अवतार ले सके, क्योंकि परमेश्वर वचन का प्रत्यक्ष अवतार और संसार तथा मनुष्य की सृष्टि, ओरिजिन ने मसीह की मृत्यु को भी एक गैर-पारंपरिक अर्थ में समझा, इसे आध्यात्मिक जगत में आध्यात्मिक रूप से दोहराई जाने वाली एक ऐसी घटना माना जिससे स्वर्गदूतों की मुक्ति पर प्रभाव पड़ता है, और उद्धार के कार्य का बहुत अधिक श्रेय उन सामान्य शक्तियों को दिया जिनसे हमारी प्रकृति संपन्न है। पुनरुत्थान और आने वाले जीवन पर अपने शिक्षण के कुछ पहलुओं में भी ओरिजिन से गलती हुई थी: उदाहरण के लिए, इस दृष्टिकोण में कि शैतान भी बच सकता है, और पवित्र धर्मग्रंथ की अपनी व्याख्या में, जहाँ उन्होंने धर्मग्रंथ के ऐतिहासिक अर्थ की कीमत पर रहस्यमय अर्थ को बहुत अधिक महत्व दिया। हालाँकि, किसी भी स्थिति में, चर्च के प्रति ओरिजिन की सेवाएँ अधिक महत्वपूर्ण हैं और उनकी त्रुटियों से कहीं अधिक हैं। अपने स्कूलों में, उन्होंने चर्च के कई उल्लेखनीय फादरों और शिक्षकों को शिक्षित किया, जिनमें से कुछ का मूर्तिपूजक धर्म से ईसाई धर्म में परिवर्तन उनके कारण ही हुआ; यह एक ऐसा विश्वास था जिसके साथ उन्होंने ज्ञान और दर्शन को सामंजस्य स्थापित करने का प्रयास किया। विशेष रूप से पवित्र धर्मग्रंथ के अध्ययन पर उनके कार्य उल्लेखनीय हैं – इसकी व्याख्या और, सबसे बढ़कर, प्रामाणिक पाठ की बहाली और शुद्धिकरण; इसी तरह ईसाई धर्म का अपने शत्रुओं और विधर्मियों के खिलाफ बचाव करने के उद्देश्य से

आई थी, जबकि दूसरे ने तर्क दिया कि ईश्वर की कृपा के बिना किसी व्यक्ति के लिए इस तरह से बोलना और लिखना असंभव है कि उसकी शिक्षाओं को आज भी ऑर्थोडॉक्स द्वारा स्वीकार किया जाता हो। इस प्रकार, लंबी बहसों और असहमतियों के बाद, वे आपस में सहमत हुए:

कहा जाता है कि जॉर्डन का रेगिस्तान ईश्वर द्वारा प्रबुद्ध महान पवित्र पिताओं का घर है; अतःआइए हम वहाँ चलें, यह देखने के लिए कि क्या हमें वहाँ कोई ऐसा मिल जाए जो हमारे संदेह को दूर कर सके।

इस प्रकार निर्णय लेने के बाद, वे पहले पवित्र नगर यरूशलेम गए और पवित्र स्थानों को श्रद्धांजलि अर्पित करने के बाद, मृत सागर के रेगिस्तान के लिए रवाना हो गए; और ईश्वर की दिव्य व्यवस्था से, जिसने उनके प्रयासों को व्यर्थ नहीं जाने दिया, उन्हें आदरणीय जॉन मिले, जो सिमोन के मित्र और साथी भिक्षु थे।

उस समय तक, जॉन पहले ही पवित्रता की उच्चतम डिग्री प्राप्त कर चुके थे और उनके पास दूरदर्शिता का वरदान था। जैसे ही उन्होंने संतों को अपनी ओर आते देखा, उन्होंने उनसे कहा:

'तुमने समुद्र को छोड़कर सूखी झील से पानी निकालने के लिए अच्छा काम किया है।'

उनके बीच एक लंबी आध्यात्मिक बातचीत के बाद, जिसमें ओरिजिन के संबंध में विवाद का भी उल्लेख हुआ, परम पूज्य जॉन ने आए हुए लोगों से कहा:

'पितागण, मुझे ईश्वर से अपनी समझ से परे के मामलों पर चर्चा करने का वरदान नहीं मिला है; इसके बजाय अपने नगर में पवित्र मूर्ख सिमीओन के पास जाओ; आप जो कुछ भी पूछेंगे, वह उसका उत्तर देगा।'

वे, अपने-अपने प्रदेशों में लौटकर, एमेसा नगर आए और पूछा:

'पवित्र मूर्ख सिमोन कहाँ है?'

कुछ लोगों ने हँसते हुए उनसे कहा:

'तुम एक ऐसे पागल से क्या सुनना चाहते हो जो सभी को गुमराह करता है, हर चीज़ का मज़ाक उड़ाता है, और सबसे बढ़कर, संन्यासियों को सताता है?'

लेकिन उन्होंने ऐसी बातों पर ध्यान नहीं दिया और उस बूढ़े आदमी को खोजा; और एक सब्जी उगाने वाले के घर में उन्हें वह बीन्स के बीच पड़ा हुआ और उन्हें भालू की तरह खाता हुआ मिला। और तुरंत ही उनमें से एक, उस दृश्य से मोहित होकर, हँसकर मन ही मन सोचने लगा:

'सचमुच, हम एक महान ऋषि से मिलने आए हैं! हम उनसे बहुत कुछ सीख सकते हैं!'

उसके पास पहुँचकर उन्होंने कहा:

'हम पर आशीर्वाद डालिए, पिताजी!'

लेकिन उन्होंने, उन पर एक नज़र डालते हुए, गुस्से से कहा:

'तुम व्यर्थ आए हो, और जिसने तुम्हें मेरे पास भेजा है, वह एक मूर्ख है।'

फिर, अपने पैरों पर खड़े होकर, उन्होंने उस धोखेबाज़ आदमी के गाल पर ज़ोर से थप्पड़ मारा, और चिल्लाए:

'तुम इस सेम को डाँट क्यों रहे हो? इसे चालीस दिन से भिगोया गया है; ओरिजिन ऐसा कुछ नहीं खाता था; लेकिन वह समुद्र में चला गया, उससे बाहर नहीं निकल सका, और गहराई में डूब गया। यहाँ से चले जाओ, चले जाओ, नहीं तो तुम्हें पीटा जाएगा!'

वे चले गए, उस वृद्ध की सूझबूझ पर हैरान होकर, क्योंकि उनसे पूछे बिना, उसने उन्हें ओरिजिन के बारे में बता दिया था और उन्हें भेजने वाले का स्मरण दिलाया था, और उनके हृदय के विचार को उजागर कर दिया था; फिर भी वे उसके बारे में किसी को कुछ भी नहीं बता सकते थे। चालीस दिन तक भिगोए हुए सेम के बारे में उन्होंने जो कहा, उसका मतलब यह था कि वह उतने दिन बिना भोजन के रहे थे, जैसा कि उन्होंने बाद में अपने दोस्त, डिकिन जॉन को बताया।

एक अवसर पर, सब्जी की दुकान से एक बांसुरी लेकर, वह सड़क पर पास की एक ऐसी जगह पर गया जहाँ एक खाली घर में एक अशुद्ध आत्मा ने डेरा डाल रखा था, जो रात में देर से गुजरने वालों को डराती थी और यहाँ तक कि दूसरों को नुकसान भी पहुँचाती थी। वहाँ बैठकर, संत ने अपनी बांसुरी पर अपने पूजनीय पिता निकोन की प्रार्थना बजाई, जो उन्होंने उनसे सीखी थी, और इस प्रकार उस स्थान से दानव को भगा दिया। हालाँकि, राक्षस एक छोटे, भयानक

ओरिजिन की रचनाएँ भी उल्लेखनीय हैं। डेसियस के अधीन उत्पीड़न के दौरान, ओरिजिन ने मसीह के एक साहसी स्वीकारकर्ता के रूप में ख्याति अर्जित की; वह वर्ष 254 में टायर में सत्तर वर्ष की आयु में निधन कर गए।

इथियोपियाई का रूप धारण कर, सब्जी वाले की दुकान में घुस गया, वहाँ के सभी लोगों को डरा दिया और सारे बर्तन तोड़ दिए। जब समियिन लौटा, तो उसने सब्जी वाले की पत्नी को डरी हुई और निराश देखा; उसने उससे कहा:

'एक छोटा कद का, डरावना और गुस्सैल काला आदमी घुस आया और हम सबको डरा दिया, और सारा बर्तन-भाँडा तोड़ दिया।'

और संत ने उससे कहा:

'उसे मैंने ही तुम पर भेजा है, क्योंकि तुम पवित्र चर्च के नहीं हो' (क्योंकि वे सेवेरस के विधर्म का पालन करते थे)।

वह महिला पवित्र मूर्ख को पकड़कर मारने ही वाली थी, लेकिन वह झुक गया, एक मुट्ठी मिट्टी उठाई, उसे उसके चेहरे पर फेंका और उसकी आँखों पर मल दिया, और उस पर चिल्लाया:

'सचमुच, जब तक तुम मेरी चर्च में शामिल नहीं हो जाओगी, तब तक तुम मुझे नहीं पकड़ पाओगी; और अगर तुम शामिल होने से इनकार करोगी, तो मूर फिर से तुम्हारे पास आएगा।'

इन शब्दों के साथ, वह उस घर से भाग गया। अगले दिन, उसी घड़ी, वह दानव—ठीक पिछले दिन की तरह, एक इथियोपियाई के भेष में—उसी सब्जी के गोदाम में प्रवेश किया और बिल्कुल वैसा ही किया जैसा उसने पहली बार किया था। फिर उस घर में रहने वाले सभी लोग बिना किसी देरी के ऑर्थोडॉक्स चर्च में शामिल हो गए। इसी प्रकार, एक यहूदी, जो यीशु मसीह के नाम का अपमान करने वाला था, को पूजनीय सिमीओन ने मसीह में परिवर्तित किया। उस यहूदी ने (चूँकि ईश्वर उसे मोक्ष का मार्ग दिखा रहे थे) एक बार वृद्ध को स्नान करते हुए देखा, जब दो स्वर्गदूत उनसे बात कर रहे थे; और यह महसूस करते हुए कि वह ईश्वर को प्रिय व्यक्ति थे, वह जो उसने देखा था उसे लोगों को बताना चाहता था। लेकिन संत, एक सपने में उसके सामने प्रकट होकर, उसे जो कुछ भी उसने देखा था वह किसी को भी बताने से मना कर दिया। हालाँकि, अगले ही दिन सुबह जब यहूदी चौक में गया, तो वह रहस्य नहीं रख सका; लेकिन जैसे ही वह सिमीओन की कहानी लोगों को सुनाने ही वाला था, संत तुरंत उसके सामने प्रकट हुए, उन्होंने उसके होठों को छुआ, उन पर क्रॉस का चिह्न बनाया, और उसे गूंगा कर दिया, जबकि वह स्वयं लोगों के बीच कूदते-खेलते हुए उससे भाग गए, और यहूदी गूंगा रह गया। तब वह संत के पास गया, और बपतिस्मा लेने का संकेत करते हुए झुका और अपना सिर हिलाया। बाद में, एक सपने में, बुजुर्ग उसके सामने प्रकट हुए और कहा:

'या तो बपतिस्मा लो, या गूंगा ही रहो।'

तो यहूदी का बपतिस्मा हुआ, और जैसे ही वह पवित्र जल के कुंड से बाहर निकला, उसे तुरंत बोलने की शक्ति वापस मिल गई और उसने परमेश्वर की स्तुति करना शुरू कर दिया। फिर वह अपने पूरे परिवार को बपतिस्मा के लिए संत के पास ले आया।

संत ने इतनी पवित्रता और वैराग्य प्राप्त कर लिया था कि, महिलाओं के बीच खेलते समय भी, वह आग के बीच शुद्ध सोने की तरह रहते थे; और कई बार, निर्लज्ज महिलाएं उन्हें अश्लीलता से गुदगुदी करती थीं, अपने हाथ उनकी कमर में डालकर, फिर भी वह मृतक की तरह, एक निर्जीव वृक्ष की भाँति रहे, जो ईश्वर की कृपा से सभी स्वाभाविक इच्छाओं से मुक्त था। उन्होंने यह सब उपरोक्त डिकिन जॉन को सुनाया:

'जब मैं रेगिस्तान में था और शुरू में कामुक वासनाओं से बहुत कष्ट झेल रहा था, और इस संघर्ष से राहत के लिए ईश्वर से प्रार्थना कर रहा था, तो संत निकॉन मुझे प्रकट हुए और पूछा:

'कैसे हो, भाई?'

और मैंने उत्तर दिया:

'पिताजी, मैं बहुत कष्ट में हूँ, और यदि आप मेरी मदद नहीं करते हैं, तो मुझे नहीं पता कि क्या करूँ, क्योंकि मेरा शरीर मुझ पर भयंकर रूप से विद्रोह कर रहा है।'

वरिष्ठ हँसते हुए, पवित्र जॉर्डन नदी का कुछ पानी उठाया और, क्रॉस का चिह्न बनाते हुए, उसे मेरे पेट पर डालते हुए कहा:

'लो, तुम फिर से ठीक हो गए।'

और उस क्षण से, मैंने अपने सपनों में और वास्तविकता में, दोनों में ही शारीरिक इच्छा महसूस करना बंद कर दिया।

इस प्रकार उस धन्य व्यक्ति ने उस डकिन से अपने बारे में कहा। नस्विाभावकि होने के कारण, वह नडिर होकर महलिाओं के पास जाता था, और जैसे प्राचीन काल में सनिाई पर्वत पर झाड़ी आग के बीच जलकर नष्ट नहीं हुई थी (नर्गिमन, अध्याय 3), वैसे ही वह कसिी महलिा के स्पर्श से अप्रभावति रहता था; संत समियिन उनके बीच जाते थे, और उनकी मुक्ति की कामना करते थे। कभी-कभी वह एक वेश्या से कहते थे:

'यदि तुम चाहो, तो मैं तुम्हें अपनी साथी बना लूँगा: मैं तुम्हें 100 सोने के सकि्के दूँगा, बशर्ते कि तुम कसिी के साथ पाप न करो।'

इन शब्दों के साथ, वह वेश्या को वह सोना दखिाता था जो ईश्वर ने उसे अदृश्य रूप से दयिा होता था, जतिना भी वह चाहता। हालाँकि, वेश्याएँ उसका मज़ाक उड़ाते हुए, कसिी और के साथ पाप न करने का वादा करतीं। लेकनि वह उनसे एक शपथ की माँग करता। और अगर उनमें से कोई अपने शेष जीवन तक शुद्ध रहने की कसम खाती, तो वह उसे सोना देता; लेकनि अगर, अपनी कसम तोड़कर, वह पाप करती, तो संत को तुरंत पता चल जाता, वह उसे बेनकाब कर देता, और उस पर या तो एक भयानक बीमारी या एक राक्षस भेज देता जो तब तक उसे सताता जब तक कि वह सच्चा प्रमाण न दे दे कि उसने वास्तव में पश्चाताप कर लयिा है। लेकनि जैसे ही लोग उसे एक संत मानने लगते, वह तुरंत कुछ ऐसा करता जो पवत्रिता का नहीं बल्कि पागलपन का स्पष्ट प्रमाण होता; कभी-कभी वह लंगड़ाते हुए चलता, और कभी-कभी कूदता हुआ; कभी-कभी वह जमीन पर रेंगता, राहगीरों के पैरों से टकराता; और कभी-कभी वह जमीन पर लेट जाता, और अपने पैरों को इधर-उधर मारता। अमावस्या को, वह भूत-प्रेत सवार होने का नाटक करता और जैसे कोई दानव उसे पकड़ ले गया हो, वैसे जमीन पर गरि पड़ता। और वह कई अन्य काम भी करता था, जो देखने में अप्रयि और हास्यास्पद थे, वह खुद को सभी के सामने पागल साबति करता था, ताकि कोई भी उसे संत न माने। एक बार, पवत्रि लेंट के दौरान, वह भूखा रहा, लेकनि मौंडी गुरुवार की सुबह-सुबह, बाजार चौक में बैठे-बैठे, उसने खाना खा लयिा; यह देखकर, राहगीरों ने कहा:

'उस पागल को देखो; वह तो पवत्रि गुरुवार का भी सम्मान नहीं करता, बल्कि सुबह-सुबह ही खा लेता है।'

उसे देखकर, डीकन जॉन ने पूछा:

'तुम जो खा रहे हो, उसके लिए तुमने कतिने पैसे दिए?'

उसने उत्तर दयिा:

'चालीस तांबे के सकि्कों के लिए।'

यह नहिति रूप से संकेत देता है कि उसने 40 दनिों से कुछ नहीं खाया था। समिीओन के जीवन-यापन के तरीके के बारे में सुनकर, एमेसा के पास रहने वाले एक कुलीन व्यक्ति ने मन ही मन सोचा:

'मैं जाकर उस पर एक नज़र डालूँगा, यह देखने के लिए कि क्या वह मसीह के लिए पागल होने का नाटक कर रहा है, या वह सचमुच पागल है।'

जब वह शहर में पहुँचा और वेश्यालय के पास आया, तो उसने देखा कि एक वेश्या उस बूढ़े आदमी को अपने कंधों पर उठाए हुए थी, जबकि दूसरी उसे बेल्ट से पीट रही थी, और उसके मन में यह वचिार आया:

'कौन वश्विास करेगा कि यह कपटी भक्षिु इन अशुद्ध स्त्रयिों के साथ व्यभचिार नहीं कर रहा है?'

जैसे ही वह मन ही मन यह सोच रहा था, वह पवत्रि मूर्ख से अभी भी एक पत्थर की दूरी पर था; वृद्ध ने उन महलिाओं को पीछे छोड़ दयिा, कुलीन व्यक्ति की ओर दौड़ा और, उसके चेहरे पर थप्पड़ मारते हुए, उसकी चादरें खोल दीं और, बनिा कसिी शर्म के, अपने दंडति शरीर को प्रकट कयिा; उसके सामने कूदते हुए, उसने पूछा:

'क्या तुम्हें लगता है, हे नीच, कि यहाँ वासना जाग सकती है?'

उस कुलीन व्यक्ति को आश्चर्य हुआ कि वृद्ध ने दूर से ही उसके वचिारों को पहचान लयिा था और वह इस बात से आश्वस्त था कि वह ईश्वर का सेवक था, जो मसीह के लिए स्वेच्छा से पागलपन का नाटक कर रहा था; फरि भी वह इस बारे में कसिी को कुछ नहीं बता सकता था, भले ही वह चाहता था: क्योंकि किसी शक्ति के कारण (जैसा कि दूसरों के साथ होता था) उसकी जीभ संत के चले जाने तक बंधी रही।

दैत्य ने नगर की उसी गली में, एक दूसरे खाली घर में, फरि से डेरा डाल लयिा; जब वह उस घर के पास पहुँचा, तो पूजनीय समिोन ने दैत्य को एक राहगीर पर वार करने के लिए तैयार, उसका इंतजार करते हुए देखा; तो वृद्ध ने अपनी छाती में कुछ छोटे-छोटे पत्थर इकट्ठा कए, दूसरी तरफ खड़े हो गए, और उस रास्ते से गुजरने की चाह रखने वाले हर कसिी पर पत्थर फेंके, जसिसे कोई भी आगे नहीं बढ़ सका: केवल एक कुत्ता ही वहां से नकिल पाया और, राक्षस द्वारा तुरंत प्रहार कए जाने पर, उसके मुंह से झाग नकिलने लगा।

तब संत ने लोगों से कहा:

'अब अपने रास्ते जाओ: क्योंकि एक आदमी के बजाय एक कुत्ते को मारा गया है।'

उसके बाद, उस बूढ़े को एक ऐसी जगह से गुजरना पड़ा जहाँ युवतियों की एक भीड़ मस्ती कर रही थी। उसे देखते ही, युवतियों ने उस पर ताने कसने शुरू कर दिए, चिल्लाते हुए:

'भिक्षु! भिक्षु!'

और उन्होंने उसे अपनी भीड़ में बुलाया। लेकिन वह, उनके उद्दंड व्यवहार को दंडित करने और उन्हें अधिक पवित्र बनाने की इच्छा से, मन ही मन चुपके से ईश्वर से प्रार्थना की और उन सभी की आँखें टेढ़ी कर दीं, ताकि हर एक काना हो गया, और वह बूढ़ा अपने रास्ते चल पड़ा। जब युवतियों को यह एहसास हुआ कि उनकी आँखें टेढ़ी हो गई हैं, तो उन्हें समझ आ गया कि यह काम उस पवित्र मूर्ख ने किया है और वे उसके पीछे दौड़ पड़ीं, चिल्लाते हुए:

'इन्हें ठीक करो, हे पवित्र मूर्ख, हमारी आँखें ठीक करो!'

उन्हें लगा कि उसने यह जादू-टोने से किया है। बूढ़े के पास पहुँचकर, उन्होंने उसे पकड़ लिया और जबरदस्ती कहा:

उन्होंने कहा, 'जो तुमने बाँधा है, उसे खोलो।'

लेकिन उन्होंने मज़ाक में जवाब दिया:

'अगर तुम में से कोई ठीक होना चाहता है, तो उसे मुझे अपनी टेढ़ी आँखों पर चूमने दे, और वह ठीक हो जाएगी।'

उनमें से कुछ, जिन्हें ईश्वर ठीक करना चाहता था, ने साधु को अपनी आँखों पर चूमने देने के लिए सहमति दे दी, और उस चुंबन से वे तुरंत ठीक हो गए – उनकी आँखें वैसी ही हो गईं जैसी पहले थीं। लेकिन जिन लोगों ने बुजुर्ग को ठुकरा दिया और उन्हें चूमने नहीं दिया, वे बिना ठीक हुए रह गए और रोने लगे। जब बुजुर्ग उनसे बहुत दूर नहीं गए थे, तो वे उनके पीछे दौड़े, चिल्लाते हुए:

'रुको, हे पवित्र मूर्ख, रुको, भगवान के लिए, रुको! हमें चूमो!'

लेकिन साधु ने उनकी ओर ध्यान नहीं दिया। तो साधु आगे दौड़ता गया, और कन्याएँ उसका पीछा करने लगीं। इस घटना के कुछ गवाहों ने कहा:

'ये युवतियाँ उस पर कोई चाल चल रही हैं।'

हालाँकि, दूसरों ने सोचा कि वे पागल हो गई थीं; संत ने कुछ दर्शकों से कहा:

'अगर ईश्वर ने उनकी आँखें अंधी न कर दी होतीं, तो वे व्यभिचार में सीरिया की सभी महिलाओं से आगे निकल जातीं; लेकिन अब वे वैसी नहीं रहेंगी।'

एक बार, एमेसा के कई नगरवासी ईस्टर के पर्व के लिए यरूशलेम गए। जब पर्व समाप्त होने के बाद वे घर लौट रहे थे, तो उनमें से एक अलग हो गया और पवित्र पिताओं, से मिलने के लिए रेगिस्तान की ओर चल पड़ा, ताकि वह उनकी प्रार्थनाओं और आशीर्वादों का पात्र समझा जाए। वह उपहार लेकर पिताओं की एक कोठरी से दूसरी कोठरी में जाता रहा, और अपनी संपत्ति से दान देता रहा। ईश्वर की कृपा से, उनकी मुलाकात आदरणीय जॉन से हुई, जो मृत सागर और यॉर्डन के पास रहते थे और संत सिमोन के साथी तपस्वी थे; वह नगरवासी उनके सामने झुक गया, और उनसे आशीर्वाद और प्रार्थना की भीख माँगी। और आदरणीय जॉन ने उससे कहा:

'चूँकि तुम्हारे नगर में ईश्वर का सेवक, सिमीओन, जो पवित्र मूर्ख के नाम से जाना जाता है, मौजूद है, तो तुम एक गरीब आदमी से प्रार्थना के लिए क्यों आते हो? केवल मुझे ही नहीं, बल्कि पूरी दुनिया को उसकी प्रार्थनाओं की आवश्यकता है।'

और, उस आदमी का हाथ पकड़कर, वे उसे अपनी कोठरी में ले गए - और वहाँ, उनकी कोठरी में, एक भोजन था, जो एक अदृश्य हाथ द्वारा रखा गया और ईश्वर द्वारा भेजा गया था, जो रेगिस्तान के लिए असामान्य था: वहाँ ताज़ा, गर्म रोटी, अच्छी मछली, शराब और एक प्याला था। और, बैठकर, उन्होंने खाया; और जब उन्होंने तृप्त होकर खा लिया, तो उन्होंने ईश्वर का धन्यवाद किया। भोजन के बाद, पूजनीय जॉन ने, परमेश्वर द्वारा भेजे गए प्रॉस्फोरा के तीन रोटियाँ भी उस आदमी को देते हुए कहा:

'इसे मेरे भाई, मसीह के लिए मूर्ख सिमोन के पास ले जाओ, और उससे कहना: "अपने भाई जॉन के लिए प्रार्थना करना।"'

जब वह लौटकर आया, तो उस आदमी ने एमेस में प्रवेश किया, और पूजनीय सिमोन ने उसे द्वार पर मिलकर कहा:

'क्या मेरा भाई जॉन कुशल है? क्या तुमने वे तीन प्रॉस्फोरा की रोटियाँ नहीं खाईं जो उसने मुझे आशीर्वाद स्वरूप भेजी थीं?'

और जो मनुष्य लौटा था, वह ऐसी सूझबूझ देखकर चकति रह गया। वृद्ध ने उसे अपने साधारण आवास में बसाया और वही ईश्वर-प्रेषति भोजन परोसा जो आदरणीय जॉन ने उसे मरुभूमि में दयिा था; वहीं समियिोन ने उसे वह सब कुछ बताया जो उन्होंने उस मरुभूमि में जॉन के साथ चर्चा की थी, और जो उन्होंने खाया-पयिा था। वरष्ठि को छोड़कर, वह व्यक्ति, वरष्ठि की सूझबूझ से अत्यधकि चकति और वस्मिति होकर, कसिी को भी इसके बारे में बताने की हम्मित नहीं कर सका—आंशकि रूप से इसलिए क्योंकि ईश्वर ने इसकी मनाही की थी, और आंशकि रूप से लोगों के सामने शर्म के कारण, क्योंकि वह जानता था कि वे उस पर वशि्वास नहीं करेंगे: क्योंकि सभी लोग समिीओन को पागल समझते थे—वह जो सभी मनुष्यों से अधकि बुद्धमिान था।

एक बार, ईश्वर की अनुमति से, उपरोक्त डकिन जॉन के साथ एक दुर्भाग्यपूर्ण घटना घटी: कुछ दुष्टों ने रात के समय शहर में एक हत्या की और पीड़ति का शव उठाकर डकिन के आँगन में फेंक दयिा। जब दनि चढ़ा और मृतक को डीकन के घर में पाया गया, तो बहुत चर्चा मच गई: न्यायाधीश ने डीकन को गरिफ्तार कर हत्यारे के रूप में मुकदमा चलाया, और उसकी बेगुनाही के लिए कोई गवाह नहीं था, इसलिए वह अपना नाम साफ़ नहीं कर सका। उस नर्दिोष डकिन को मौत की सज़ा सुनाई गई – एक पेड़ से फांसी देने की। जब उसे फांसी के स्थान पर ले जाया जा रहा था, तो उसने कुछ भी नहीं कहा, सवािय इसके:

'हे पवत्रि मूर्ख के ईश्वर, मेरी मदद करो! हे समिीओन के ईश्वर, इस घड़ी मेरा साथ दो!'

इस बीच, समिीओन अपनी पवत्रि मूर्खता का अभ्यास कहीं और कर रहे थे। प्रभु ने उस नर्दिोष डकिन को ऐसी बेतुकी और शर्मनाक मृत्यु से बचाना चाहा – और इसलिए एक आदमी वृद्ध के पास आया और कहा:

'हे पवत्रि मूर्ख! तुम्हारे मत्रि और उपकारक, डकिन जॉन को मृत्युदंड सुनाया गया है, और अगर वह मर गया, तो तुम भूख से मर जाओगे: क्योंकि अब तुम्हारी परवाह करने वाला कोई और नहीं है।'

और इन शब्दों के साथ, उन्होंने समझाया कि डकिन को मृत्युदंड क्यों दयिा गया था। संत तुरंत एक गुप्त स्थान पर चले गए जहाँ वे अकेले में प्रार्थना करने के आदी थे, एक ऐसा स्थान जो इस डकिन के अलावा कसिी और को पता नहीं था; वहाँ, घुटनों के बल गरिकर, उन्होंने डकिन को मृत्यु से बचाने के लिए ईश्वर से वनिती करना शुरू कर दयिा। तुरंत, हत्यारों का पता लगा लयिा गया, और न्यायाधीश द्वारा घोड़सवारों को उस व्यक्ति को छुड़ाने के लिए भेजा गया जो उस दीकन को मौत के घाट उतारने ले जा रहा था, ताकि नर्दिोष व्यक्ति को मुक्त कयिा जा सके। और वे उन्हें ठीक उसी जगह पर पाए जहाँ दीकन को फांसी दी जानी थी। मुक्त हुए डीकन घर नहीं गए, बल्कि सीधे उस स्थान पर चले गए जहाँ संत समियिन प्रार्थना कर रहे थे और उन्होंने उन्हें अभी भी अपनी प्रार्थना समाप्त नहीं करते हुए, अपने हाथ ऊपर उठाए हुए खड़े पाया; डीकन भय से संत समियिन के कुछ दूरी पीछे रुक गए: क्योंकि उसने (जैसा कि उसने बाद में शपथ के तहत पुष्टि की) संत के मुंह से तलवारों जैसी एक ज्वाला और उसके चारों ओर एक अग्नमिय प्रकाश देखा; और डीकन तब तक उसके पास आने की हम्मित नहीं कर सका जब तक उसने अपनी प्रार्थना समाप्त नहीं कर ली और वह अग्नमिय प्रकाश स्वर्ग में नहीं चढ़ गया। मुड़कर, संत ने डीकन से कहा:

'यह क्या है, भाई जॉन? क्या तुम मृत्यु के प्याले से लगभग नहीं पी गए? जाओ, प्रार्थना करो, और उद्धारकर्ता परमेश्वर का धन्यवाद करो: यह परीक्षा तुम पर इसलिए आई क्योंकि दो भखिारी तुम्हारे पास आए, और यद्यपि तुम्हारे पास देने के लिए कुछ था, तुमने उन्हें नहीं दयिा, बल्कि उनसे मुँह मोड़ लयिा और उन्हें खाली हाथ भेज दयिा। क्या जो तुम देते हो वह तुम्हारा अपना है? या क्या तुम उस एक पर वशि्वास नहीं करते, जसिने कहा है कि जो कोई परमेश्वर के लिए कसिी भखिारी को देता है, उसे इस जीवन में सौ गुना मलिेगा, और आने वाले जीवन में अनंत जीवन प्राप्त होगा? यदि तुम वशि्वास करते हो, तो दो; यदि तुम नहीं देते हो, तो यह स्पष्ट है कि तुम प्रभु पर वशि्वास नहीं करते।

ऐसे थे पवत्रि मूर्ख के वचन—या यूँ कहें, पवत्रि और सम्माननीय पुरुष के: क्योंकि जब वह उस डकिन के साथ अकेले थे, तो उन्होंने कोई मूर्खतापूर्ण काम नहीं कयिा, बल्कि लाभ के मामलों के बारे में नम्रता और हार्दकि पश्चाताप के साथ बात की; और कई बार, संत के आत्मा-रक्षक शब्दों को सुनते हुए, डकिन को उनके होठों से एक महान सुगंध नकिलती हुई महसूस हुई।

एक रवविार की सुबह, सात दनिों के उपवास के बाद, संत समियिन, पवत्रि मूर्ख का भान् मारे हुए, उसने अपने दाहनिे हाथ में कुछ सूखा मांस लयिा, जसिे ग्रीक में 'एल्लाडा' और लैटनि में 'लुकेनकिा' कहते हैं—अर्थात् सॉसेज—और

उसे एक डकिन के दंड की तरह अपने कंधे पर रख लयिा, जबकि अपने बाएं हाथ में सरसों पकड़े हुए था; एल्लाडा को सरसों में डुबोकर, वह उसे खा गया; जो लोग मनोरंजन के लिए उनके पास आते थे, वे उनके होठों पर सरसों मल देते थे। और एक खुरदरा कसिान उनके पास आया, जसिकी आँखें दर्द से लाल थीं और उनमें से एक में मोतयिाबदि था। संत समियिन ने अचानक उसकी आँखों पर सरसों मल दी। तेज सरसों के कारण उसकी आँखों में तीव्र दर्द हुआ और वह चल्लिा उठा। और पवत्रि मूर्ख ने उससे कहा:

'जाओ, ए मूर्ख, सरिके और लहसुन से अपनी आँखें धो, और तुम तुरंत ठीक हो जाओगे।'

लेकनि उस आदमी ने संत की अवज्ञा करके डॉक्टरों के पास गया, और वह और भी ज्यादा अंधा हो गया और उसकी बीमारी और भी गंभीर हो गई। बाद में, पश्चाताप करने के बाद, उसने खुद से संकल्प लयिा: भले ही उसकी आँखें बाहर नकिल जाएँ, वह बूढ़े की आज्ञा का पालन करेगा। और जब उसने अपनी आँखों को सरिके और लहसुन से धोया, तो उसी क्षण उसकी आँखें पूरी तरह से ठीक हो गईं। बाद में, संत उसे रास्ते में कहीं मलि और कहा:

'अब जब तुम ठीक हो गए हो, तो अपने पड़ोसी की बकरयिाँ मत चुराना।'

इस प्रकार संत ने मनुष्यों के गुप्त कर्मों को जानते हुए चोर को दंड दयिा। एक नगरवासी से पाँच सौ सोने के सक्किे चोरी हो गए थे, और वह आदमी अपने खोए हुए सोने के लिए दुखी था और उसे लगन से खोजता था; वह अपने नौकरों पर क्रूर था और उन्हें बेरहमी से पीटता था। एक दनि, एक पवत्रि मूर्ख उसे सड़क पर मलिा और कहा:

'क्या तुम चाहते हो कि तुम्हारे सोने के सक्किे मलि जाएँ?'

'ओह, हाँ! मैं चाहता हूँ,' उस आदमी ने जवाब दयिा।

'और अगर तुम्हें सोना तुरंत मलि गया तो मुझे क्या दोगे?' पवत्रि मूर्ख ने पूछा।

उस आदमी ने दस सोने के सक्किों का वादा कयिा।

'मुझे सोने की नहीं, बल्कि यह कसम चाहिए कि तुम चोर को नहीं मारोगे,' संत ने कहा, 'और इस मामले में कसिी और को भी नहीं।'

और नगरवासी ने उससे कसम खाई। फरि संत ने उसे बताया:

'तुम्हारे बेकर ने सोने के सक्किे चुराए हैं, लेकनि सावधान रहना, उसे या कसिी और को मत पीटना।'

और वह आदमी अपने घर लौट आया, उसे सब कुछ ठीक वैसा ही मलिा जैसा संत ने उसे बताया था, और उसने अपने बेकर के नौकर को मारे बनिा पूरा सोना वापस ले लयिा। बाद में, जब वह कसिी गलती के लिए अपने नौकरों में से एक को मारना चाहता था, तो उसका हाथ दर्दनाक रूप से सुन्न हो गया और वह उसे मार नहीं सका। अपनी कसम को याद करते हुए, वह पवत्रि मूर्ख के पास गया और पूछा:

'मुझे मेरे वचन से मुक्त कर दो, हे पवत्रि मूर्ख; मेरा हाथ स्वतंत्र रूप से काम करे।'

लेकनि वह संत, मानो उन्हें समझ ही नहीं आया हो, ने पागलपन का नाटक कयिा। और वह आदमी कई बार उनके पास आया, उनसे शपथ से मुक्त करने के लिए जदि करता रहा। तब संत उन्हें सपने में दखिाई दिए, और कहा:

'मैं तुम्हें तुम्हारे व्रत से मुक्त कर दूँगा, पर मैं तुम्हारा सोना भी छीन लूँगा और तुम्हारी सारी संपत्ति नष्ट कर दूँगा। तुम अपने सेवकों को क्यों मारना चाहते हो, जो आने वाले युग में तुम्हारे आगे-आगे चलेंगे?'

उस दर्शन के बाद, वह व्यक्ति ईश्वर से भयभीत हो गया और सभी के प्रति दयालु हो गया।

इसलिए कि लोग संत द्वारा कए गए ऐसे चमत्कारों के बारे में न जान जाएँ, वह भूत-प्रेत बाधति होने का नाटक करने लगा और, मानो राक्षसों के काम से, यह जानने लगा कि लोगों के दलिों में गुप्त रूप से क्या चल रहा है; इस उद्देश्य के लिए, वह भूत-प्रेत बाधति लोगों के बीच से एक की तरह घूमता और, उनके प्रति सहानुभूति रखते हुए, अपनी प्रार्थनाओं के माध्यम से कई लोगों से राक्षसों को भगा देता था; जबकि अन्य पशिाचग्रस्त—या, अधकि संभावना है, उनके भीतर रहने वाले पशिाच—उसके वरिुद्ध बड़बड़ाते थे:

'हे पवत्रि मूर्ख! हे संसार को तरिस्कार करने वाले, तू हमें सताना क्यों आया है? यहाँ से चला जा; तू हम में से नहीं है; तू हमें सारी रात क्यों सताता रहता है?'

हालाँकि, संत ने पागलपन का नाटक कयिा (क्योंकि वह पवत्रि आत्मा के द्वारा सब कुछ जानते थे), और उन्होंने बहुत से लोगों के गुप्त पापों का पर्दाफाश कयिा: कुछ को अशुद्धता के लिए, दूसरों को चोरी के लिए, और कुछ और को शपथ तोड़ने के लिए—प्रत्येक को उनके द्वारा कए गए हर पाप के लिए। उन्होंने कुछ लोगों का पर्दाफाश नजिी तौर पर कयिा, दूसरों का दूसरों के सामने; कुछ लोगों को उन्होंने दृष्टांतों के माध्यम से उनके बुरे कर्मों के बारे में बताया, ताकि वे

अपने अंतरात्मा की जांच कर सकें, जबकि उन्होंने दूसरों को उनके द्वारा किए जा रहे अन्याय के लिए खुले तौर पर फटकारा। और इस प्रकार उन्होंने पूरे शहर को घातक पापों से बचाया, लोगों को आत्म-जागरूकता और पश्चाताप की ओर ले गए। हालाँकि, कई लोग सोचते थे कि वह उनके रहस्य परमेश्वर के माध्यम से नहीं, बल्कि एक राक्षस के माध्यम से जानता था, यहाँ तक कि वे उसे भूतग्रस्त मानने लगे। इस वजह से, कुछ अवनीत पापी उससे मिलने या उसके पास आने से डरते थे, बल्कि बेनकाब होने से बचने के लिए उससे भाग जाते थे।

उस समय, शहर में एक जादूगरनी रहती थी, जो लोगों के बीच कई दुर्भाग्यों का कारण थी। उसकी जादूगरी को नष्ट करने की इच्छा से, रेवरेंड ने अक्सर उससे मिलने जाना शुरू कर दिया, जैसे कि वह उसकी दोस्ती कर रहा हो, और उसे वह भोजन लाकर देता था जो उसे दिया गया था, साथ ही तांबे के सिक्के और कपड़े भी। एक बार उन्होंने उससे कहा:

'क्या तुम चाहती हो कि मैं तुम्हारे लिए कुछ ऐसा बना दूँ कि अगर तुम उसे पहनोगी तो कोई भी तुम्हें दोष नहीं दे पाएगा और कोई बुराई तुम्हारे पास नहीं आएगी?'

वह यह मानकर कि उस पवित्र मूर्ख को शैतान के प्रभाव से ऐसी चीज़ के बारे में पता था,

उसने कहा, 'हाँ, करो।'

उसने एक छोटा सा लकड़ी का पटरा लिया और उस पर सीरियक भाषा में निम्नलिखित लिखा:

– ईश्वर न करे कि तुम अब किसी को भी उससे दूर करो।

यह लिखने के बाद, उसने वह पट्टी उस महिला को उसके गले में पहनने के लिए दे दी; और जैसे ही उसने ऐसा किया, उसके भीतर मौजूद जादुई शक्ति तुरंत नष्ट हो गई, और वह जादूगरनी किसी को नुकसान पहुँचाने या मदद करने से रुक गई।

बड़ा भाई, अपने गरीब भाइयों के साथ चलता हुआ, उस भट्टी के पास पहुँचा जहाँ काँच बनाया जा रहा था। वहाँ एक यहूदी काम कर रहा था। भट्टी के पास बैठकर, संत ने खुद को गर्म किया जबकि यहूदी काँच की बोतलें बना रहा था। संत ने अपने भिखारी दोस्तों से कहा:

'क्या तुम चाहते हो कि मैं तुम्हें हँसाऊँ?'

वे यह देखने के लिए उत्सुक होकर उसकी ओर देखने लगे कि वह क्या करेगा। और जब यहूदी ने एक और शीशा बनाया, तो संत ने दूर से ही अपने दाहिने हाथ से उस पर क्रॉस का चिह्न बनाया, और वह शीशा तुरंत ही टूट गया। जब यहूदी ने एक और शीशा बनाया, तो वह भी संत सिमियन के क्रॉस के चिह्न से टूट गया; और इसी तरह तीसरा, चौथा और सातवें तक टूटते गए - और भिखारी हँस पड़े और उन्होंने यहूदी को बताया कि क्या हो रहा है। हालाँकि यहूदी क्रोधित हो गया, उसने एक जलती हुई अंगीठी उठाई और उस पवित्र मूर्ख को भगा दिया, उसे मारते हुए और झुलसाते हुए। जब वह पवित्र मूर्ख पीछे हट गया, तो वह उस पर चिल्लाया:

'अरे अशुद्ध! जब तक तुम अपने माथे पर क्रॉस का चिह्न नहीं बना लेते, तब तक तुम्हारी सारी काँच की बोतलें टूटती रहेंगी।'

जब यहूदी ने फिर से बोतलें बनाना शुरू किया, तो तेरह और बोतलें एक के बाद एक टूट गईं। यह देखकर कि उसके प्रयास व्यर्थ हो रहे थे, हालांकि वह ऐसा नहीं करना चाहता था, उसने अपने माथे पर क्रॉस का चिह्न बनाया, और बोतलें टूटना बंद हो गईं। पवित्र क्रूस की शक्ति को जानने के बाद, यहूदी फिर पवित्र चर्च गया और पवित्र बपतिस्मा ग्रहण करके ईसाई बन गया।

उस समय, प्रमुख नागरिकों में से एक बीमार पड़ गया; वह पवित्र मूर्ख उसके घर खेल खेलने के लिए जाने का आदी था। जब उस नागरिक की बीमारी बहुत गंभीर हो गई, तो उसे एक दर्शन हुआ: ऐसा लगा जैसे वह किसी भयानक राक्षस के साथ पासा फेंक रहा हो, और उन्होंने एक शर्त लगाई थी: यदि बीमार व्यक्ति लगातार तीन बार छह का पासा नहीं फेंकता, तो जीत राक्षस की होगी। और बीमार व्यक्ति संदेह और भय से भर गया। तब पवित्र मूर्ख सिमोन बीमार व्यक्ति के पास प्रकट हुए और कहा:

'सचमुच, इस बार वह काला (शैतान) तुम पर हावी हो जाएगा, लेकिन मुझे अपना वचन दो कि अब से तुम व्यभिचार करके अपनी पत्नी के बिस्तर को अपवित्र नहीं करोगे, और मैं तुम्हारे लिए पासा फेंकूंगा, और वह तुम पर हावी नहीं हो पाएगा।'

और एक दर्शन में, उस बीमार ने संत से कसम खाई कि वह व्यभिचार नहीं करेगा। संत ने पासा उठाया, उसे फेंका, और तीन बार छह की संख्या आई, और मूर उस बीमार से पीछे हट गया: वह, जागने पर, अपनी बीमारी से राहत महसूस करने लगा। पवित्र मूर्ख, अपनी आदत के अनुसार, उसके घर आए और उसे चेतावनी दी:

'तुम भाग्यशाली रहे हो कि तुम्हें तीन बार पासा फेंकने का मौका मिला, लेकिन मेरा विश्वास करो, अगर तुम अपनी कसम तोड़ोगे तो वह काले रंग का आदमी तुम्हें घोंट देगा।' ये शब्द कहकर, और पागल की तरह उन सभी को डांटने के बाद, वह तुरंत वहाँ से चला गया।

उस पादरी के पास शांति और एकांत के लिए, और विशेषकर अपनी रात की प्रार्थनाओं के लिए, अपना एक छोटा सा कमरा था, और उसमें एक बाँह भर झाड़ियों की लकड़ियाँ ही थीं। वहाँ, हर रात, वह मैटिन्स तक प्रार्थना में डूबे रहते, अपने आँसुओं से जमीन को भीगते हुए; और जब दिन निकलता, तो वे जैतून की टहनियों या जड़ी-बूटियों का एक हार बुनते, उसे अपने सिर पर रख लेते, और हाथ में एक टहनी पकड़े, शहर में घूमते हुए पुकारते हुए:

'विजयी राजा और उसके नगर की महिमा!'

'शहर' से संत का तात्पर्य आत्मा था, और 'राजा' से तात्पर्य उन भावनाओं पर शासन करने वाले मन से था, जैसा कि उन्होंने अपने मित्र, डिकिन जॉन को समझाया, जिनसे वे अक्सर गुप्त रूप से मिलते थे, और उन्हें अपने शब्दों और कार्यों के बारे में विस्तार से बताते थे तथा गंभीरता से यह मांग करते थे कि वह अपनी मृत्यु के दिन तक किसी को कुछ भी न बताए। अपने निधन से दो दिन पहले, वह निम्नलिखित शब्दों के साथ इसी जॉन के पास गए:

'आज मैं अपने प्रिय भाई जॉन तपस्वी के पास गया, जिनके साथ मैंने शुरू से ही संसार का त्याग किया था और मठवासी संस्कार ग्रहण किए थे, और मैंने पाया कि उन्होंने सद्गुणों में बहुत प्रगति की है और परमेश्वर को पूर्ण रूप से प्रसन्न किया है, और मैं उनके लिए प्रसन्न हुआ: क्योंकि मैंने उनके सिर पर एक मुकुट पहने देखा जिस पर इन शब्दों की अंकित था: 'एक तपस्वी की सहनशीलता का मुकुट'।

इसके बाद, पूजनीय सिमोन ने कहा:

'मैंने एक गौरवशाली आकृति देखी जिसने मुझसे कहा: "जाओ, हे पवित्र मूर्ख, मेरे पास आओ, और तुम एक नहीं, बल्कि कई मुकुट प्राप्त करोगे, कई मानव आत्माओं के उद्धार के लिए।"'

यह कहकर, संत ने एक आह भरी और फिर बोले:

'मुझमें ऐसा कुछ भी नहीं जानता जो स्वर्गीय पुरस्कार का योग्य हो; क्योंकि एक पवित्र मूर्ख और विवेकहीन के रूप में, मैं क्या पुरस्कार प्राप्त कर सकता हूँ, सिवाय इसके कि मेरे प्रभु अपनी कृपा से, मुझे एक उपहार के रूप में दया करें?' लेकिन मैं आपसे विनती करता हूँ, भाई, किसी भी गरीब, विशेषकर संतों का तिरिस्कार या निंदा न करें; आपका प्रेम यह पहचाने कि उनमें से कई कष्टों से शुद्ध हो चुके हैं और सूर्य की तरह ईश्वर के सामने चमकते हैं। इसी प्रकार, गाँवों में रहने वाले और खेती करने वाले साधारण लोगों में भी, जो सद्भावना और हृदय की सीधेपन का जीवन जीते हैं—जो किसी की निंदा नहीं करते, किसी का अहित नहीं करते, बल्कि अपने हाथों की मेहनत से, अपने माथे के पसीने से अपनी रोटी कमाते हैं—उनमें भी कई महान संत हैं: क्योंकि मैंने उन्हें शहर में आते और मसीह के शरीर और रक्त का सेवन करते देखा है, जो शुद्ध सोने की तरह चमकते हैं। यह न सोचिए, मेरे स्वामी, कि मैं यह सब किसी अहंकार के वश में आकर कह रहा हूँ, बल्कि आपके प्रेम ने मुझे अपनी दयनीय जीवन की निष्क्रियता को आपसे छिपाने न देने के लिए विवश किया है। तब जान लो, कि प्रभु तुम्हें भी यहाँ से शीघ्र ही ले जाएँगे: अतः अपनी आत्मा का यथाशक्ति ध्यान रखना, ताकि तुम वायुमण्डल की आत्माओं के राज्य से बिना किसी विलम्ब के पार हो सको और अंधकार के राजकुमार के क्रूर हाथ से बच सको। मेरे प्रभु परमेश्वर जानते हैं कि मैं भी गहराई से शोक मनाता हूँ और महान भय से भर गया हूँ, जब तक कि मैं इन भयानक स्थानों से न गुज़र जाऊँ, जहाँ सभी मानवीय कर्मों और वचनों की बारीकी से जाँच की जाती है। इसीलिए मैं तुझसे विनती करता हूँ, मेरे बच्चे और भाई योहन, कि हर तरह से दयालु होने का प्रयास कर: क्योंकि उस भयानक घड़ी में, दया हमें किसी भी अन्य सद्गुण से अधिक मदद कर सकती है, जैसा कि लिखा है: *'धन्य है वह जो दरिद्रों का ध्यान रखता है! संकट के दिन प्रभु उसे बचाएगा'* (भजन संहिता 40:2)। इस पर भी ध्यान दो: किसी के प्रति क्रोध रखते हुए दिव्य लिटर्जी के पास न जाओ, कहीं तुम्हारे पाप पवित्र आत्मा के आगमन को ठेस न पहुँचाएँ।

सम्माननीय डीकन से इस और कई अन्य बातों पर बात करने के बाद, पूजनीय सिमोन ने उनसे दो दिनों में अपने एकांतवास पर आने का अनुरोध किया। और, उनसे विदा लेकर, वे फिर कभी शहर में नहीं देखे गए, बल्कि अपने निधन के अंतिम क्षण तक एकांत में रहे। यह कोई नहीं जानता कि उनकी मृत्यु कैसे हुई, सिवाय ईश्वर और उसके स्वर्गदूतों के:

क्योंकि वे आमतौर पर गरीबों की मृत्यु के समय उपस्थिति रहते हैं, जिन्हें मनुष्यों द्वारा पूरी तरह से त्याग दिया गया हो, ठीक वैसे ही जैसे वे लज़ारुस की मृत्यु के समय कूड़े के ढेर पर उपस्थिति थे, जैसा कि सुसमाचार में लिखा है: *'वह गरीब मर गया और स्वर्गदूतों द्वारा उसे इब्राहीम की गोद में ले जाया गया'* (लूका 16:22)इस प्रकार, इसमें कोई संदेह नहीं है कि वही पवित्र स्वर्गदूत उनके धन्य निधन के समय इस आत्मा-से-गरीब और सच्चे आदरणीय सिमीओन के पास प्रकट हुए, और, उनके धर्मी आत्मा को उनके शुद्ध शरीर से कोमलता से मुक्त कर, उसे आनंद के गीतों के साथ स्वर्गीय निवासों में ले गए।

दो दिन बाद, संत सिमोन के कुछ भिखारी मित्र, जो उस दौरान उन्हें नहीं देख पाए थे, सोचने लगे: 'क्या यह पवित्र मूर्ख बीमार है?' वे उनके आश्रय पर आए और उन्हें झाड़ियों के नीचे मृत पड़ा हुआ पाया, और कहा:

'देखो, उसने जीवन में पागलपन का नाटक किया था, और मृत्यु में भी वही रहा: क्योंकि वह झाड़ियों के ढेर पर नहीं पड़ा था, बल्कि उसके नीचे से गुज़र गया।'

और दो लोगों ने उसके शव को बिना धोए, बिना पारंपरिक गायन के, बिना मोमबत्तियों या धूप के ले लिया, और उसे उस जगह दफनाने ले गए जहाँ अजनबियों को दफनाया जाता है। जब संत को दफ़नाने के लिए ले जाया जा रहा था, तो जुलूस उस नव-बपतिस्मा प्राप्त ईसाई के घर के पास से गुज़रा—जो पहले काँच की बोतलें बनाने वाला एक यहूदी था—और उसने, जब सबसे मनोहर आवाज़ों में अनकही गीत गाते हुए भीड़ को गाते सुना, तो वह छोटी सी खिड़की से सट गया और उसे सिवाय उन दो आदमियों के और कोई नज़र नहीं आया जो उस पवित्र मूर्ख के शव को दफ़नाने के लिए ले जा रहे थे, फिर भी, आवाज़ें अनदेखी होकर गाती रहीं। वे ईश्वर के स्वर्गदूत थे जो गा रहे थे, और उस ईसाई ने हवा में एक असाधारण सुगंध भरते हुए महसूस की:

'धन्य हो, हे पवित्र मूर्ख,' उसने कहा, 'क्योंकि भले ही तुम्हारे अंतिम संस्कार का शोक-गीत गाने के लिए कोई नहीं है, परन्तु स्वर्ग के दूत तुम्हें अपने गीतों से सम्मानित कर रहे हैं और स्वर्ग की सुगंध से तुम्हें महका रहे हैं।' और तुरंत वह उन दो लोगों के साथ गया और उस पूजनीय देह को उठाकर यात्रियों और भिखारियों की कब्रों के बीच अपने हाथों से दफना दिया, और सभी को बताया कि कैसे उसने मृतक के ऊपर स्वर्गदूतों को गाते हुए और एक अकथनीय सुगंध सुनी थी। हालाँकि, डिकिन जॉन, उस कमरे में आकर जब संत को नहीं पाया, तो उसने हर जगह उनकी खोज की और जब उसे पता चला कि संत सिमियिन की मृत्यु हो गई है और उन्हें दफना दिया गया है, तो वह जोर-जोर से रोया। वह उनके ताबूत के पास गया, यह इच्छा लेकर कि उनके शरीर को वहाँ से निकालकर सम्मानपूर्वक किसी सम्मानित स्थान पर दफनाए; लेकिन जब उन्होंने ताबूत खोला, तो उन्हें संत के शरीर का कोई निशान नहीं मिला: क्योंकि प्रभु ने, अपने पवित्र स्वर्गदूतों के साथ, उसे मनुष्यों के लिए अज्ञात स्थान पर स्थानांतरित कर दिया था। तब एमेसिया नगर के सभी निवासी, जैसे किसी सपने से जाग उठे हों, परमेश्वर के सेवक के चमत्कारिक कार्यों, उसकी भविष्यवाणियों और उसके महान कष्टों भरे जीवन को एक-दूसरे को याद करने और सुनाने लगे। तब उन्हें एहसास हुआ कि वह पवित्र मूर्ख पागल नहीं, बल्कि हमारे समय के सभी संतों से अधिक बुद्धिमान था; और यद्यपि उसे एक पापी माना जाता था, वह धर्मी और सम्माननीय था, जो अपने दिखाए गए पागलपन और स्पष्ट पापों का उपयोग लोगों से अपने ईश्वर-ज्ञानी और ईश्वर-प्रसन्न जीवन को छिपाने के लिए कर रहा था। ऐसा था इस अद्भुत सिमीओन का जीवन और ऐसे थे उसके कर्म, जिसने मसीह के लिए पागलपन का नाटक किया; जो, प्राचीन काल के लूत की तरह, सदोम के लोगों के बीच रहते हुए भी उनके पापों से कलंकित नहीं हुआ (उत्पत्ति 19:1–38); उसी प्रकार यह नया लूत, संसार के बीच रहते हुए भी, सांसारिक वासनाओं से प्रभावित नहीं हुआ। आदरणीय सिमोन का निधन 21 जुलाई को हुआ, और उनके बाद, जॉर्डन के रेगिस्तान में उनके साथी, आदरणीय जॉन का भी धन्य निवास में निधन हो गया[5253] । और जैसे उन्होंने एक साथ प्रभु की सेवा करना शुरू किया था, वैसे ही वे स्वर्ग में परमेश्वर के सिंहासन के सामने भी एक साथ प्रकट हुए। दोनों का जीवन-चरित सिमोन के धर्मात्मा होठों से एमेसा के चर्च के डिकिन, जॉन को सुनाया गया था; और इस डिकिन द्वारा इसे निष्ठापूर्वक और सत्यनिष्ठा से साइप्रस में नेपोलिस के बिशप, पितृसभों में महान संत लियोन्टियस तक पहुँचाया गया; और उन्होंने यह पत्र इसे पढ़ने और सुनने वालों के लाभ के लिए, हमारे परमेश्वर मसीह की महिमा के लिए रचा, जो पिता और पवित्र आत्मा के साथ महिमामय है, अब और हमेशा और युगानुयुग। आमीन।

[5253] इन पवित्र पुरुषों की मृत्यु का समय लगभग वर्ष 590 माना जाता है।

4 अगस्त

22 जुलाई (पुराना संस्करण)

संत मरयिम मग्दलनी, मरि्रा-वाहक, प्रेरतिों के समकक्ष का जीवन

22 जुलाई को स्मरणोत्सव

महान प्रेरतिों के तुल्य[5254] संत[5255] मरि्रा-वाहक[5256] मरयिम मग्दलीना[5257] , जो ईसाई चर्च में प्रभु यीशु मसीह के प्रति अपने उत्साही, अटूट और आत्म-बलदिानी प्रेम के लिए वशिेष रूप से प्रसदि्ध थीं, तत्कालीन समृद्ध शहर

[5254] ऑर्थोडॉक्स ईसाई चर्च में, 'चेलों के बराबर' शब्द का प्रयोग मसीह के चेलों के पुरुष और महलिा सहकर्मयिों पर, साथ ही उन धर्मी ईसाइयों पर भी कयिा जाता है, जनि्होंने चेलों की तरह, वशिेष उत्साह के साथ ईसाई धर्म का प्रचार कयिा और उसे बनाए रखा। इन्हीं वशिेष गुणों के कारण उन्हें चेलों के बराबर सम्मानति कयिा जाता है। 'अपोस्टल' शब्द का अर्थ 'दूत' है, यानी वह व्यक्ति जिसे एक वशिषि्ट मशिन सौंपा गया हो। अपने शषि्यों में से बारह को चुनने के बाद, यीशु मसीह ने उन्हें प्रचार करने (मरकुस 3:14) और हर प्रकार की बीमारी तथा हर प्रकार की दुर्बलता को चंगा करने (मत्ती 10:1–42) के लिए भेजने के उद्देश्य से 'प्रेरति' कहा।

[5255] प्रारंभकि ईसाई चर्च में, 'संत' शब्द मूल रूप से सभी ईसाइयों, यानी मसीह में वशि्वास करने वाले सभी लोगों के लिए प्रयुक्त होता था, जैसा कि उदाहरण के लिए, प्रेरति पौलुस के पत्रों में मलिता है। हालाँकि, जब कसिी धर्मी व्यक्ति का नाम लेकर संबोधति कयिा जाता था, तो प्रारंभकि ईसाई 'संत' उपाधि का उपयोग करने से बचते थे, क्योंकि यह शब्द अक्सर मूर्तपिूजक शलिालेखों में इस्तेमाल कयिा जाता था, एक ऐसी प्रथा जसिका ईसाई अनुकरण नहीं करना चाहते थे। केवल तीसरी शताब्दी से ही चर्च द्वारा पूजति एक धर्मी व्यक्ति के नाम के साथ प्राचीन कैलेंडरों में 'संत' शब्द का उपयोग कयिा जाने लगा। सुसमाचारों में, पवत्रिता को एक ईसाई की वशिेषता के रूप में उसकी सभी अभवि्यक्तयिों में प्रस्तुत कयिा गया है: 'तेरा नाम पवत्रि माना जाए…', 'हे पवत्रि पति…', 'उन्हें अपनी सच्चाई से पवत्रि कर…'

[5256] मरयिम मग्दलीनी को मरि्रा-वाहक कहा जाता है क्योंकि सुसमाचार लेखक उसे उन भक्तमिय महलिाओं में से पहली के रूप में नामति करते हैं जो उस समय के यहूदयिों की धार्मकि प्रथा के अनुसार, सुगंधति इत्रों से मसीह के शरीर पर अभषिेक करने के लिए उनकी कब्र पर आई थीं। ये अंजन (मैल) गोंद वाले पदार्थों जैसे नard, या स्पकिनार्ड, लोहबान, एलो और अन्य सुगंधति पौधों से बने होते थे, जनि्हें शुद्ध जैतून के तेल में मलिाया जाता था। मृतक के शरीर पर ऐसे सुगंधति अंजन लगाकर या छड़िककर, लोग मृतक के प्रति अपना प्रेम और सम्मान व्यक्त करते थे।

[5257] मरयिम नाम, जो हब्रि्रू शब्द 'मरयिम' से आया है, का अर्थ है: 'उच्च, उत्कृष्ट, दृढ़, उत्तम, वशिषि्ट'; और इस मरयिम को मग्दलीनी कहा जाता है क्योंकि वह मग्दला नगर से आई थी, ठीक उसी तरह जैसे सनेहद्रनि के धार्मकि सदस्य, यूसुफ को, अरमिाथेय कहा जाता है, क्योंकि वह फलिसि्तीनी नगर अरमिाथेय से था। मरयिम के नाम के साथ 'मग्दलीनी' उपनाम इसलिए जोड़ा गया है ताकि उसे उन अन्य धर्मनषि्ठ महलिाओं से अलग कयिा जा सके, जनि्होंने उसकी तरह यीशु मसीह की सेवा की (लूका 8:3) और जनिका नाम भी मरयिम था, जैसे कि लाजरुस की बहन मरयिम, और क्लोपास की पत्नी मरयिम।

मग्दला[5258] की मूल नविासी थीं, जो फलिस्तीन के क्षेत्र में गलील[5259] में स्थति था, जेनेसारत झील, या गलील की झील[5260] के तट पर, कैपरनयिम[5261] और तबिरियास[5262] शहरों के बीच। चूँकि वह मूल रूप से मगदला शहर की रहने वाली थीं, संत

[5258] मगदला, जो हब्रिू शब्द 'मगदला' से आया है, जसिका अर्थ 'मीनार' है, गेनेसरेथ झील के पश्चमिी तट पर एक शहर था, जो कैफेर्नुम और तबिरियास शहरों से बहुत दूर नहीं था। मगदला अपने रंगाई उद्योग और उत्तम ऊनी कपड़ों के लिए प्रसद्धि था; इसके अलावा, शुद्धकिरण बलदिानों के लिए गौरैया और कबूतरों का एक फलता-फूलता व्यापार था; परंपरा के अनुसार मगदला में तीन सौ कबूतरों की दुकानें और, पास में, एक पूरी 'कबूतरों की घाटी' थी। उस समय मगदला की संपत्ति इतनी अधकि थी कि कहा जाता है कि शहर द्वारा चुकाया गया कर इतना बड़ा था कि उसे एक पूरी गाड़ी में भरकर यरूशलेम भेजा जाता था। इसके नविासयिों का नैतकि पतन भी उतना ही बड़ा था। जेनेसरत की झील के तट पर कभी बसे कई शहरों और गांवों में से, केवल मगदला को छोड़कर सभी गायब हो गए हैं, जसिे अब मेदजेल कहा जाता है और यह तट पर पाए गए पत्थरों से बनी गंदी झोपड़यिों के एक समूह से बना है, जबकि घरों की सपाट छतों पर reed और झाड़यिों की लकड़ी से बनी झोपड़यिों के रूप में ऊपरी मंजलिें बनी हैं। फरि भी प्राचीन प्रहरी मीनार के अवशेष आज भी खड़े हैं, और यह स्थान पहले की तरह ही शानदार बना हुआ है: प्राकृतकि सुंदरता भी उतनी ही भव्य है और यह जेनेसारत की अद्भुत झील, या गलीलयिाई झील पर मसीह के चमत्कारों और शकि्षाओं के प्रति एक पवत्रि आश्चर्य की भावना जगाती है।

[5259] फलिस्तीन के उत्तर में गलील का क्षेत्र, या गलील (हब्रिू शब्द 'गललिी' से, जसिका अर्थ है 'क्षेत्र', 'जलिा') मरयिम मग्दलीनी के जीवनकाल के दौरान फलिस्तीन का तीसरा क्षेत्र था, और गलील स्वयं उत्तरी, ऊपरी, 'पगान' भाग, और दक्षणिी, नचिले भाग में वभिाजति था। गलील ने वशि्व इतहिास में उद्धारकर्ता मसीह के जन्मस्थान और उपदेश देने के स्थान के रूप में एक प्रमुख स्थान प्राप्त कयिा है। गलील पूर्व से पश्चमि तक लगभग 120 वर्स्ट और उत्तर से दक्षणि तक 40 वर्स्ट तक फैला हुआ था। उत्तर में इसकी सीमा सीरयिा और लेबनान पर्वत से; पश्चमि में फनिसियिा से; दक्षणि में सामरयिा से; और पूर्व में जॉर्डन नदी से मलिती थी। गलील में 200 से अधकि शहर और बड़े बस्तयिाँ थीं, जसिकी आबादी चार मलियिन तक थी, जसिमें न केवल यहूदी बल्कि सीरयिाई, फनिशियिाई, अरब और अन्य वदिेशयिों के साथ इस्राएलयिों का मश्रिण था, जनिमें से कई ने यहूदी धर्म अपना लयिा था। अपने अद्भुत जलवायु, उपजाऊपन और धन के कारण, गलीलयिा फलिस्तीन का सबसे उत्तम क्षेत्र था। एक सौम्य, स्फूर्तदिायक जलवायु, सबसे ववििधि और अद्भुत प्राकृतकि सुंदरता, और उपजाऊ मट्टिी की अटूट प्रचुरता – गलीलयिा में यह सब कुछ था। इसकी भौगोलकि स्थति और परविहन मार्गों की बहुतायत ने भी गलील को लाभ पहुँचाया: कई रोमन व्यापार मार्ग पूर्व से पश्चमि तक इससे होकर गुजरते थे, जो दमश्कि, फनिशियिाई तट, भूमध्य सागर, मस्रि और अस्सरियिा तक जाते थे; अन्य मार्ग दक्षणि से उत्तर तक इससे होकर गुजरते थे। गलील में उद्योग और जीवन पूरी तरह से फल-फूल रहे थे… सुसमाचार के कई पृष्ठ गलील की प्रकृति और जीवन को दर्शाते हैं। मसीहा का जन्मभूमि होने के नाते—नाज़रेथ का नगर, उनका बचपन, युवावस्था और मुख्य रूप से, वहाँ का उनका उपदेश—गलील ईसाई धर्म का पालना था। और यीशु मसीह के दैनकि सांसारकि जीवन की दृष्टांत कथाएँ, चमत्कार और घटनाएँ—ये सभी ऐसी छवयिाँ हैं जो गलील में प्रकृति की समृद्धि और जीवन शैली को दर्शाती हैं। आकाश, पृथ्वी, समुद्र, गेहूँ के खेत, बगीचे, फूल, दाख की बारी, घास के मैदानों की घास, मछलयिाँ और पक्षी – सभी ने उद्धारकर्ता की दव्यि उपदेश में उनकी अद्भुत शकि्षाओं के लिए आधार और रूपक का काम कयिा… फरि भी हमारे समय में, गलीलयिा में बस शहरों और गाँवों के खंडहर और पूर्ण सुनसानपन ही है…

[5260] गलीलयिा की झील, गेनेसरेत की झील और टबिेरियास की झील, ये सभी फलिस्तीनी गलीलयिा में स्थति एक ही वशिाल झील के नाम हैं। गनिती की पुस्तक (गनिती 34:11) और यहोशू की पुस्तक (यहोशू 12:3) में, इसके अंडाकार आकार के कारण इसे कन्निरेत कहा गया है। इसके तट पर स्थति टबिेरियास नगर के नाम पर इसे टबिेरियास की समुद्र कहा जाता है; और आसपास के ग्रामीण इलाकों की सुंदरता के नाम पर रखा गया तटीय नगर जेनेसारेथ, या जेनेसारेत के नाम पर इसे जेनेसारेत की समुद्र कहा जाता है। यह झील 30 वर्स्ट लंबी और 8 वर्स्ट चौड़ी तक फैली हुई थी। यॉर्डन नदी इसका उत्तरी सरि पर आकर मलिती है और दक्षणिी सरि से नकिलती है। फ़लिस्तीन का समृद्ध औद्योगकि केंद्र इस झील के आसपास केंद्रति था; इसके तटों पर लगभग अखंड रेखा में बहुत बड़ी आबादी वाले शहर और गाँव फैले हुए थे। झील का पानी साफ़, स्वाद में सुखद और ठंडा है; इसमें वभिन्नि प्रकार के चार हजार तक जहाज चलते थे: रोमन युद्धपोत, बेथसैदा के मछली पकड़ने वालों की खुरदरी नावें, और हेरोद के सोने-जड़ति बार्ज। आमतौर पर शांत और शांतपिूर्ण, गेननेसर की झील कभी-कभी पहाड़ों से आने वाली हवाओं के कारण तूफानी और खतरनाक हो जाती थी। यह सभी प्रकार की मछलयिों की असाधारण प्रचुरता के लिए प्रसद्धि था, इतना कि हर कसिी को उन्हें पकड़ने की अनुमति थी, और मछली वहाँ इतनी पसंदीदा डशि थी कि एक महान रब्बी के भोज में, तीन सौ वभिन्नि प्रकार की मछलयिाँ परोसी गई थीं। मछली को ताज़ा, नमकीन या सुखाया हुआ खाया जाता था; इससे स्वादषि्ट व्यंजन बनाए जाते थे; यहाँ तक कि रब्बी भी, जो सलाह देते थे कि मछली को बीयर या वाइन से धोना चाहिए, इस पर मार्गदर्शन देते थे कि इसे कैसे तैयार कयिा जाए और इसे कब खाया जाए। बहुत से लोग मछली पकड़ने और बेचने के काम में लगे हुए थे; यरूशलेम के एक द्वार को 'मछली द्वार' कहा जाता था क्योंकि गलील से वहाँ बड़ी मात्रा में मछलयिाँ पहुँचाई जाती थीं, और यहाँ तक कि सनेड्रनि के सदस्य भी मछली के व्यापार में शामलि थे, जो पूरे जहाजों को मछली से भर देते थे। मछली पकड़ना न केवल एक बहुत ही लाभदायक व्यवसाय था, बल्कि एक सम्मानजनक व्यवसाय भी था… झील के पश्चमिी कनिारे पर 'जेनेसरत का देश' (मत्ती 14:34; मरकुस 6:53) स्थति था, जो वह पहला और मुख्य स्थान था जहाँ उद्धारकर्ता मसीह ने उपदेश दयिा था। 'गेनेसरेथ' शब्द का ही अर्थ 'समृद्धि के बगीचे' है, और 'गेनेसरेथ की भूमि' जैसी प्राकृतकि सुंदरता और वभिन्नि प्रकार की जलवायु वाले सभी प्रकार के पौधों और फलों की प्रचुरता कहीं और नहीं थी। पेड़ लगातार दस महीने तक फल देते थे। उस समय के यहूदी इतहिासकार जोसेफस, गेननेसर झील की सुंदरता, इसके अद्भुत मौसम, खजूर के पेड़ों, अंगूर के बागों, अंजीर, संतरे, बादाम के पेड़ों और अनारों का वर्णन करते हुए कहते हैं कि वहाँ के मौसम इस स्वर्ग समान क्षेत्र पर शासन करने के सम्मान के लिए प्रतस्पिर्धा करते प्रतीत होते हैं… और यहूदी तालमूड सखिाता है कि लंबे समय से प्रतीक्षति मसीहा एक दनि इसी टबिेरियास झील, या जेनेसरत झील से प्रकट होंगे…

मरयिम, प्रेरतिों के समान, को मग्दलीनी भी कहा जाता है, ताकि उन्हें सुसमाचार में मरयिम नाम से उल्लेखति अन्य धर्मपरायण महलिाओं से अलग पहचाना जा सके।

संत मरयिम मग्दलनिी, प्रेरतिों के समकक्ष, एक सच्ची गलीलई थीं। और यह तथ्य कि कोई गलीलई है—चाहे पुरुष हो या महलिा—ईसाई धर्म के प्रचार और स्थापना में बहुत महत्व रखता है। स्वयं उद्धारकर्ता मसीह को भी एक गलीली कहा गया था (मत्ती 26:69), क्योंकि वे शशिु अवस्था से ही गलील में पले-बढ़े और वहाँ रहे तथा बाद में वहाँ व्यापक रूप से उपदेश दयिा; और यहाँ तक कि चौथी शताब्दी में भी, ग्रीक-रोमन सम्राट जूलयिन द एपोस्टेट (363 में) मसीह को संबोधति शब्दों के साथ मरा:

'तुमने मुझे जीत लयिा, गलीलयिाई!'

मसीह के पहले बुलाए गए प्रेरति, जो हमेशा के लिए उद्धारकर्ता के सबसे करीब रहे, सभी गलीलयिाई थे, केवल यहूदा इस्करयिोत—वशि्वासघाती—को छोड़कर, जो गलीलयिाई नहीं था। पुनरुत्थान के बाद, प्रकट होने पर, मसीहा उद्धारकर्ता गलील में एक पहाड़ पर वशि्वासयिों की एक बड़ी सभा (500 से अधकि) के सामने प्रकट हुए, जनिमें से अधकिांश गलील के वे लोग थे जनि्होंने गलील में प्रभु की सेवकाई के दौरान उनका अनुसरण कयिा था, उनकी शकि्षाओं को सुना था, उनके चमत्कारों के साक्षी बने थे और दयालु उपचारकर्ता, यीशु की भलाई का स्वयं अनुभव कयिा था[5263] । और चूँकि गलीलयिों ने आम तौर पर फलिस्तीन के अन्य क्षेत्रों के यहूदयिों की तुलना में अधकि उत्साह के साथ मसीह की शकि्षाओं को अपनाया और फैलाया, इसलिए मसीह उद्धारकर्ता के सभी अनुयाययिों को शुरू में 'गलीलयिाई' कहा जाता था (प्रेरतिों के काम 1:11)। इसके अलावा, गलील के लोग फ़लिस्तीन के अन्य क्षेत्रों के यहूदयिों से बहुत और तीव्रता से भन्नि थे, ठीक उसी तरह जैसे गलील की प्रकृति दक्षणिी फ़लिस्तीन की प्रकृति से पूरी तरह भन्नि थी। गलील में प्रकृति जीवन से भरपूर थी और लोग जीवंत और सरल थे; दक्षणिी फ़लिस्तीन में एक बंजर रेगस्तिान था और ऐसे लोग थे जो नयिमों के अक्षर और रूप के अलावा कसिी और चीज़ को स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं थे। गलील के लोगों ने कानून की भावना को सहजता से अपना लयिा; हालाँकि, यरूशलेम के यहूदयिों में केवल एक रूटीन पालन प्रचलति था। गलील ईसाई धर्म का जन्मस्थान और पालना बन गई; यहूदयिा संकीर्ण-दृष्टि वाले फरीसीवाद और दूरदर्शिता रहति सद्यूसीवाद से सूख गई थी। गलील के लोग उत्साही, संवेदनशील, आवेगपूर्ण, कृतज्ञ, ईमानदार और बहादुर थे; वे परम धार्मकि थे और आस्था तथा ईश्वर के बारे में उपदेश सुनना पसंद करते थे; वे स्पष्टवादी, मेहनती, काव्यात्मक थे और

[5261] हब्रिू भाषा में कैफ़र्नम का अर्थ है 'नाम का गाँव' - यह गन्नेसरेत झील के पश्चमिी तट पर स्थति एक शहर था। इसका उल्लेख पुराने नयिम में नहीं है क्योंकि इसकी उत्पत्ति अपेक्षाकृत हाल की है और यह वाणज्यिकि और औद्योगकि गतविधियिों के वकिास के कारण एक मछली पकड़ने वाले गाँव से एक शहर में बदल गया। यह एक बहुत ही खूबसूरत स्थान पर स्थति था। वहाँ हेरोदों का एक महल था; रोमनों के पास एक सैन्य छावनी और एक सीमा शुल्क चौकी थी। सुसमाचारों में नासरत छोड़ने के बाद मसीह उद्धारकर्ता के मुख्य नविास स्थान के रूप में कफरनौम का उल्लेख है, इसलिए कफरनौम 'उनका नगर' (मत्ती 9:7) के रूप में जाना जाने लगा। कफ़र्नम और उसके आसपास, मसीह ने कई चमत्कार कए और कई दृष्टान्त और शकि्षाएँ दीं; फरि भी, उनकी सभी अनुनय-वनितयिों के बावजूद, नविासी नई सुसमाचार के प्रति बधिरि बने रहे, जो उनकी वाणज्यिकि और औद्योगकि हलचल के अनुकूल नहीं थी; उन्होंने वशि्वास नहीं कयिा, और मसीह ने कफ़र्नम पर एक भयानक न्याय की घोषणा की: 'और तुम, कफ़र्नम, जो स्वर्ग तक ऊँचा उठाया गया है, तुझे अधोलोक तक नीचे गरिा दयिा जाएगा' (मत्ती 11:23)। और अब कफ़र्नम का कोई नशिान भी नहीं बचा है…

[5262] तबिेरयिादा गलील सागर के पश्चमिी तट पर, कैपरनम से थोड़ा दक्षणि में स्थति एक शहर है; इसे गलील के शासक हेरोद अंटपास ने 17 ईस्वी में बनवाया था और तत्कालीन रोमन सम्राट टबिेरयिस के नाम पर इसका नाम रखा गया था। हेरोद ने टबिेरयिास को अपनी राजधानी बनाया, एक भव्य महल, एक मंदरि, एक सनिेगॉग और एक रंगमंच का नरि्माण कयिा, और शहर को एक दीवार से घेर लयिा। शहर के पास एक उपचारात्मक, गर्म पहाड़ी धारा थी। चूँकि टबिेरयिास के नरि्माण के दौरान प्राचीन कब्रों को नष्ट कर दयिा गया था, इसलिए यहूदयिों ने इस शहर को अशुद्ध माना और वहाँ बसाने से डरते थे; परणिामस्वरूप, शुरू में इसका एक वशिष्टि मूर्तपिूजक चरति्र था। टबिेरयिास के आसपास, उद्धारकर्ता मसीह ने उपदेश दयिा और पाँच रोटयिों से पाँच हज़ार लोगों को भोजन कराया (यूहन्ना 6:1–71). वर्ष 70 में रोमनों द्वारा यरूशलेम के वनिाश के बाद, यहूदयिों ने तबिेरयिास में 13 सनिागॉग और एक उच्च वद्यिालय स्थापति कयिा, और तबिेरयिास का सनेद्रीन सर्वोच्च धार्मकि प्राधकिरण बन गया। ग्रीक महारानी हेलेना ने तबिेरयिास में बारह वेदयिों वाला एक चर्च बनवाया; और 5वीं शताब्दी के मध्य से 6वीं शताब्दी के मध्य तक, यहाँ एक बशिप की सीट थी, जसि बाद में प्रथम धर्मयुद्ध के दौरान बहाल कयिा गया। तबारीये शहर टबिेरयिास के खंडहरों पर बनाया गया था, लेकनि 1837 में यह एक भूकंप से नष्ट हो गया, और अब केवल साधारण झोपड़यिाँ ही बची हैं; फरि भी यहूदी इस स्थान को उतनी ही गहरी श्रद्धा से मानते हैं जतिनी वे यरूशलेम को मानते हैं।

[5263] प्रभु यीशु मसीह का उनके पुनरुत्थान के बाद प्रकट होना। संतों के जीवन, पुस्तक आठ (अप्रैल), पृ. 514.

उन्हें बुद्धमिान यूनानी शिक्षा पसंद थी[5264] : और मरियम मग्दलीनी, जिन्हें उद्धारकर्ता मसीह ने चंगा किया था, ने अपने जीवन में अपने साथी गलीलियों, जो पहले और सबसे उत्साही ईसाई थे, के कई अद्भुत विशिष्ट गुणों का प्रदर्शन किया।

प्रेरितों के बराबर संत मरियम मग्दलिनी के प्रारंभिक जीवन के संबंध में, इतना ही ज्ञात है कि वह एक गंभीर, लाइलाज पीड़ा से पीड़ित थीं; सुसमाचार के अनुसार, वह *'सात दुष्टात्माओं*[5265] (लूका 8:2) से ग्रस्त थीं। इस दुर्भाग्य का कारण और परिस्थितियाँ अज्ञात हैं। लेकिन पवित्र सुसमाचार और मसीह की कलीसिया के धर्मपिता यह सिखाते हैं कि ईश्वर की पूर्वदृष्टि ऐसी असाधारण और दुखद पीड़ाओं की अनुमति देती है ताकि 'ईश्वर के कार्य प्रकट हों', अर्थात्, ताकि मानवता के प्रति ईश्वर के विशेष कार्य प्रकट हों, और मसीहा मसीह के माध्यम से ईश्वर द्वारा किए गए विशेष कार्य—जैसे, इस मामले में, दुष्टात्माओं से मुक्ति—ईश्वर और मसीह की महिमा के लिए, और मरियम मग्दलीना की आध्यात्मिक प्रबोधन और उद्धार के लिए। इस प्रकार की परिस्थितियों के संबंध में उद्धारकर्ता मसीह की शिक्षा के अनुसार, यह समझना चाहिए कि मरियम मग्दलीनी पर राक्षसों का अधिकार न तो उसके अपने पापों के कारण था, और न ही उसके माता-पिता के पापों के कारण था, बल्कि यह कि दैवीय व्यवस्था ने इसे इस प्रकार होने दिया कि प्रभु यीशु मसीह

[5264] यहाँ तक कि यरूशलेम तालमूड भी गवाही देता है कि गलीलियाई सम्मान को लेकर अधिक चिंतित थे, जबकि यहूदिया के निवासी धन को लेकर चिंतित थे। गलीलियाइयों में, एक विधवा अपने विवंगत पति के घर में ही रहती थी, जबकि यहूदियाइयों में, वारिस उसे वहाँ से हटा देते थे। दूसरों की जरूरतों के प्रति गलीलियों की सहानुभूति इतनी अधिक थी कि, उदाहरण के लिए, कोई साथी गाँववासी एक गरीब बूढ़े आदमी को विचारपूर्वक प्रतिदिन वह भोजन प्रदान करता था जो वह अपने समृद्ध दिनों में खाने का आदी था। हालाँकि, गलीलियों ने शिक्षा के केंद्र नहीं स्थापित किए, और इसी कारण यहूदियों के घमंडी धर्मशास्त्रियों और फरीसियों ने गलीलियों को अज्ञानी और मूर्ख कहा; गलीलियों के कुछ यहूदी कंठ्य वर्णों के अस्पष्ट और अनिश्चित उच्चारण के कारण, यहूदी रब्बी उन्हें मंडली की ओर से प्रार्थनाएँ ज़ोर से पढ़ने की अनुमति नहीं देते थे और उनका मज़ाक उड़ाते थे...

[5265] शब्द 'दैत्य' ग्रीक शब्द 'दाइमोन' का अनुवाद है, जिसका अर्थ 'शैतान' है। नए नियम में, 'दैत्य' आमतौर पर एक दुष्ट आत्मा या शैतान को संदर्भित करता है। यद्यपि दैत्य विश्वास करते हैं और कांपते हैं, और यीशु मसीह को परमेश्वर का पुत्र स्वीकार करते हैं, वे शैतान के सेवक हैं। मसीहा यीशु के चमत्कारों में, दुष्टात्माओं से ग्रस्त लोगों का चंगा होना विशेष रूप से प्रभावशाली था। जो लोग दुष्टात्माओं की शक्ति के अधीन हो गए हैं, उन्हें दुष्टात्मा-ग्रस्त कहा जाता है, जो अशुद्ध आत्माओं से पीड़ित हैं (मत्ती 4:24; लूका 6:18)। भूत-प्रेत ग्रस्त लोगों का चंगा होना, भूत-प्रेतों के संबंध में, 'भूत-प्रेत निकालना' (मत्ती 8:16) कहा जाता है, जबकि स्वयं पीड़ितों के संबंध में इसे 'चंगा करना' कहा जाता है। जिन लोगों पर भूत-प्रेत अपना प्रभाव डालते हैं, उन पर उनका प्रभाव हमेशा शरीर पर पड़ने वाले असर के माध्यम से प्रकट होता है; इस प्रक्रिया में, मानव आत्मा शरीर पर अपना नियंत्रण खो देती है, और कोई बाहरी शक्ति शरीर और आत्मा के बीच हस्तक्षेप करती है, जिसका आत्मा के शारीरिक अंगों पर हानिकारक प्रभाव पड़ता है। राक्षस पहले शरीर की तंत्रिका तंत्र को प्रभावित करता है और उसके माध्यम से कार्य करता है, जिससे वे ही लक्षण उत्पन्न होते हैं जो शरीर के उचित कार्य में बाधा डालने वाले अन्य प्रभावों के कारण होते हैं। दैवीय शक्ति आध्यात्मिक और नैतिक स्वभाव के माध्यम से नहीं, बल्कि शारीरिक और मानसिक स्वभाव के माध्यम से कार्य करती है। शैतान ने विश्वासघाती यहूदा इस्करियोती में प्रवेश किया, अर्थात् उसने उसे विश्वासघात के लिए उकसाया, लेकिन यहूदा पर कोई दानव सवार नहीं था। भूत-प्रेत का कब्ज़ा स्पष्टदृष्टि में प्रकट होता है, जब भूत-प्रेत से ग्रस्त लोगों ने मसीह को परमेश्वर के पुत्र के रूप में पहचाना (लूका 4:34), साथ ही यह पागलपन, मिर्गी, गूंगेपन, विकृति और अंधापन में भी प्रकट होता है (मरकुस 5:3; लूका 8:27; मत्ती 9, आदि)। इसने तर्कवादियों को यह दावा करने का आधार दिया है कि दैवीय आत्मा का प्रवेश केवल एक शारीरिक बीमारी है। फिर भी, यह तथ्य कि दैवीय आत्मा के प्रवेश के साथ शारीरिक बीमारियाँ भी होती हैं, इस स्थिति की भयावह, अस्वाभाविक और गैर-भौतिक विशेषताओं को समझाने में कुछ भी मदद नहीं करता है, जिसमें कोई शारीरिक रूप से कमजोर व्यक्ति, उदाहरण के लिए, लोहे की ज़ंजीरों को तोड़ देता है या भविष्यवाणी करता है (मरकुस 5:4)। भूत-प्रेत सवार होने के कुछ लक्षणों का प्राकृतिक शारीरिक बीमारियों से मिलना केवल सतही है, जो केवल जीवन के सामान्य नियमों द्वारा निर्धारित होता है, जिनके विकृषेप के समान लक्षण हमेशा उसी तरह प्रकट हो सकते हैं, भले ही कारण कितने भी अलग क्यों न हों। और भूत-प्रेत के बारे में सुसमाचार की यह शिक्षा शारीरिक रचना और मनोविज्ञान के निष्कर्षों का किसी भी तरह से खंडन नहीं करती है। चूँकि मानव आत्मा शरीर के माध्यम से भौतिक शक्तियों के प्रभाव के अधीन भी हो सकती है, इसलिए जब आत्मा ऐसे प्रभावों का विरोध करने में असमर्थ होती है तो उसका आध्यात्मिक शक्तियों के प्रभाव में आना और भी अधिक संभावित है; इसे सम्मोहन से संबंधित कई तथ्यों द्वारा स्पष्ट रूप से पुष्टि की जाती है। और ठीक उसी तरह जैसे सम्मोहन में एक व्यक्ति, जिसकी इच्छाशक्ति मजबूत हो, सुझाव के माध्यम से दूसरे व्यक्ति को इस हद तक प्रभावित कर सकता है कि वह उसका पूरी तरह से नियंत्रण कर ले और उसे आत्म-निर्णय की क्षमता से वंचित कर दे, इसलिए, उसी मनोवैज्ञानिक नियम के अनुसार, एक दुष्ट आत्मा, एक राक्षस, एक कमजोर व्यक्ति की आत्मा पर पूरा कब्ज़ा कर सकता है, जो अपनी ही पापी प्रकृति या किसी अन्य कारण से, एक भयानक दैवीय प्रभाव का शिकार हो जाता है। और यह उल्लेखनीय है कि उद्धारकर्ता मसीह के आगमन से ठीक पहले, इस तरह के ग्रसित लोगों की संख्या विशेष रूप से अधिक थी। यह उस युग की एक विशिष्ट विशेषता थी, और इसका आंशिक रूप से स्पष्टीकरण इस तथ्य से मिलता है कि, उस समय तक, मानसिक बेचैनी और कमजोरी—जो आध्यात्मिक असंतोष और इस असहनीय दुखद स्थिति से बदलाव की एक अधीर, चिंतित प्रत्याशा का परिणाम थीं—अपनी चरम सीमा पर पहुँच चुकी थीं। उस समय यह मानसिक स्थिति पूर्व की यहूदी और मूर्तिपूजक दोनों आबादियों पर हावी थी। और दुष्ट आत्माओं की अंधकारमय शक्तियों ने, मसीहा मसीह के हाथों अपनी निकटवर्ती हार की पूर्व दृष्टि और अनुभूति करते हुए, अपने दुर्भावनापूर्ण और विनाशकारी प्रभुत्व के जाल बिछाने में जल्दबाजी की।

परमेश्वर की महिमा का कार्य प्रकट कर सकें, मरियम मग्दलीनी के चंगा होने का महान चमत्कार कर सकें, उसके मन को प्रबुद्ध कर सकें, और उसे उद्धारकर्ता मसीह में विश्वास की ओर तथा अनंत मोक्ष की ओर आकर्षित कर सकें। भूतों के वश में होने के कारण, और लोगों के प्रति ईश्वर की अन्य क्रियाओं और अनुमतियों के कारणों की तरह, जो मनुष्य के लिए अज्ञात और अकल्पनीय हैं, मरियम मग्दलीना की इस गंभीर पीड़ा का कारण ईश्वर की बुद्धि के ब्रह्मांडीय रहस्यों में निहित है, जिन्हें मनुष्य समझ नहीं सकता। यदि वह इतनी गंभीर और अचिकित्सीय पीड़ा से नहीं गुज़री होती, तो मरियम मग्दलीना या तो उद्धारकर्ता मसीह के कार्य से पूरी तरह से अलग ही रहती, या फिर मसीह परमेश्वर-मानव के चमत्कारों को जिज्ञासा और आश्चर्य की दृष्टि से देखती, लेकिन एक जीवित और उद्धार करने वाले विश्वास के बिना, और वह प्रभु के प्रति उस परम, अटूट प्रेम तक नहीं पहुँचती, जिसके लिए उसे सभी निकटतम प्रेरितों से भी पहले (मरकुस 16:9; यूहन्ना 20:16) जी उठे मसीहा-उद्धारकर्ता के दर्शन से सांत्वना मिली। फिर भी, अपने दुख में असहाय, गलील की मरियम मग्दलीनी चमत्कार करने वाले की खबर से उदासीन नहीं रह सकी, 'जो लोगों में हर प्रकार की बीमारी और हर प्रकार की दुर्बलता को चंगा करते थे' (मत्ती 9:35)। और इसलिए वह इस चमत्कार करने वाले को खोजने के लिए जल्दी करती है, और स्वयं इस बात की गवाह बनती है कि कैसे 'उसने उनके कई रोगों और दुर्बलताओं, और दुष्ट आत्माओं को चंगा किया था, और बधिरों, अंधों, लंगड़ों, कोढ़ियों और मरे हुओं को जिलाया था' (लूका 7:21-22; मत्ती 11 आदि) – और मरियम उत्कटता से उनके सर्वशक्तिमान होने में विश्वास करती है, उनकी दिव्य शक्ति की ओर मुड़ती है, अपने स्वयं के उपचार के लिए प्रार्थना करती है और, विश्वास द्वारा, वह प्राप्त करती है जो उसने माँगा था: दुष्टात्माओं की यातनाकारी शक्ति उसे छोड़ देती है; वह दुष्टात्माओं के बंधन से मुक्त हो जाती है[5266] और उसका जीवन उसके उपचारकर्ता के दैवीय तेज से पवित्र हो जाता है, जिनके प्रति मरियम मग्दलीना एक उत्साही और कृतज्ञ गलीली महिला के रूप में स्वयं को पूरी तरह से समर्पित कर देती है।

उस समय से, मरियम मग्दलीनी की आत्मा अपने उद्धारकर्ता, मसीह के लिए अत्यंत कृतज्ञ और समर्पित प्रेम से भर गई, और वह अपने मुक्तिदाता के साथ हमेशा के लिए जुड़ गई, उनकी उद्धारकारी शिक्षाओं को प्राप्त करने और अपने दैवीय चिकित्सक की सेवा करने के हर अवसर का अधिकतम लाभ उठाने के लिए हर जगह उनका अनुसरण करती रही। और उस समय की सांसारिक परिस्थितियों को देखते हुए, जिसमें मसीह ने स्वयं को मनुष्य के पुत्र के रूप में स्थापित किया था, उन्हें स्वयं के लिए और अपने कार्य के लिए समर्थन की आवश्यकता थी। क्योंकि मसीह का जन्म बेतलहम में एक गुफा में गरीबी में हुआ था, जहाँ पशुओं को रखा जाता था, और वहाँ उनका पालना एक साधारण तख्ता था (लूका 2:7, 12, 16)। उनकी माँ, परिवार की गरीबी के कारण, परमेश्वर के मन्दिर में एक नवजात शिशु के लिए आवश्यक बलिदान के रूप में केवल दो छोटी कबूतरियाँ ही चढ़ा सकीं (लूका 2:24)। गलील के छोटे से शहर नासरत में[5267] , मसीह 29

[5266] पवित्र शास्त्र के कुछ व्याख्याकार, संतों के जीवनचरित के लेखक, और यहां तक कि पश्चिमी चर्च के धर्मपिता भी, जो मरियम मग्दलिनी की पहचान उस प्रसिद्ध पापी महिला से करते हैं जिसने शिमोन फरीसी के घर में पश्चाताप किया और अपने पापों की क्षमा प्राप्त की, – का मानना है कि सुसमाचार लेखकों लूका और मरकुस ने मरियम मग्दलिनी की स्थिति का सटीक वर्णन नहीं किया जब उन्होंने कहा कि मसीह ने मरियम मग्दलिनी से दुष्टात्माओं को निकाला; ऐसे लेखक मानते हैं कि मरियम मग्दलीनी पर राक्षसों का अधिकार नहीं था, बल्कि वह केवल एक पापी थीं, और सुसमाचार लेखकों के शब्द 'सात राक्षस' कई पापों और दुर्गुणों को दर्शाते हैं (यह दृष्टिकोण, उदाहरण के लिए, धन्य जेरोम, ऑगस्टीन, ग्रेगरी महान और अन्य लोगों द्वारा अपनाया गया है)। लेकिन दो सुसमाचार लेखकों के स्पष्ट शब्दों की ऐसी पुनर्व्याख्या केवल यहूदी राक्षस-विद्या पर ही आधारित हो सकती है, जिसके अनुसार रब्बी सभी सबसे सामान्य मानवीय जुनूनों और सभी बीमारियों को दुष्ट आत्माओं का श्रेय देते हैं। और यहूदी तालमूड उसे कई निरिलज्ज दुराचारों का दोषी ठहराता है, जिसमें मरियम मग्दलिनी की असाधारण सुंदरता और उसके बालों की चोटी, साथ ही उसकी संपत्ति का भी उल्लेख है... लेकिन ऑर्थोडॉक्स पूर्वी चर्च, सिमोन फरीसी के घर में क्षमा की गई अज्ञात नाम की पापी को मरियम मग्दलीनी के साथ भ्रमित नहीं करती है, और न ही यह दो सुसमाचार लेखकों के उन स्पष्ट शब्दों की पुनर्व्याख्या करती है जो विशेष रूप से मरियम मग्दलीनी से राक्षसों को भगाने के बारे में हैं। और रोस्तोव के मेट्रोपॉलिटन, सेंट डेमेट्रियस, विश्वासपूर्वक लिखते हैं: 'यदि मिग्दलीन वही वेश्या होती, तो वह लंबे समय तक एक स्पष्ट पापी के रूप में मसीह और उनके शिष्यों का अनुसरण करती, ताकि यहूदी, जो मसीह से नफरत करते थे, उन्हें दोष दे सकें, उनकी बदनामी कर सकें और उनकी निंदा कर सकें। यदि मसीह के चेलों ने, प्रभु को सामरी स्त्री से बात करते हुए एक बार देखकर ही यह आश्चर्य माना कि वह एक स्त्री से बात कर रहे थे, तो उनके शत्रु कितनी अधिक बातें करते यदि उन्होंने किसी स्पष्ट पापी को दिन-प्रतिदिन उनका अनुसरण करते और उनकी सेवा करते देखा होता..."

[5267] नज़रेथ (इस शब्द का अर्थ है 'वंशज'; दूसरों के अनुसार, 'रक्षक' या 'संरक्षक') गलील में एक छोटा सा शहर था, जो कफ़रनम और tabor पर्वत के दक्षिण-पश्चिम में स्थित था। यह समुद्र तल से 600 फीट ऊपर उठे एक पहाड़ पर स्थित था। पहाड़ी की चोटी से दिखने वाला दृश्य, अपनी सुंदरता और विविधता के साथ, भव्य था, जिसमें घाटियाँ, पहाड़ और भूमध्य सागर शामिल थे। उसकी आबादी गरीब थी, संख्या में कम थी, और यहूदियों द्वारा तुच्छ समझी जाती थी (यूहन्ना 1:46)। नासरत को दुनिया भर में उस स्थान के रूप में प्रसिद्धि मिली जहाँ धन्य कुँवारी मरियम

वर्ष की आयु तक एक विनम्र बढ़ई के परिवार के एक दत्तक सदस्य के रूप में गरीबी में रहे। और परमेश्वर के राज्य का सुसमाचार प्रचार करते हुए, ताकि परमेश्वर-मनुष्य के महान मिशन की पूर्ति में यथासंभव कम से कम बाधाएँ आएं, मसीह ने अपने दत्तक पिता यूसुफ के परिवार के साथ किसी भी संबंध को पूरी तरह से त्याग दिया (मत्ती 12:46–50; मरकुस 3:31–35; लूका 8:19–21), जिनकी देखभाल में उनका पालन-पोषण हुआ था, और उन्होंने अपनी भौतिक भलाई और व्यक्तिगत संपत्ति की सभी चिंताओं को त्याग दिया। इसलिए, मसीह के पास विश्वास के एक गलीलियाई शिक्षक के यात्रा के कपड़ों के अलावा कोई भी संपत्ति नहीं थी; ताकि, अपनी सार्वजनिक सेवकाई के तीन वर्षों के बाद, मसीह का मूल्य केवल चाँदी के तीस सिक्कों—अर्थात् लगभग 30 रूबल—के बराबर आँका गया, जो उस समय फिलिस्तीन में सबसे गरीब, सबसे दरिद्र दासों की कीमत थी (मत्ती 26:15)। जिस धरती को बचाने के लिए वह आए थे, उस पर मसीह का न तो एक भी जमीन का टुकड़ा था और न ही एक भी घर।

'लोमड़ियों के बिल और आकाश के पक्षियों के घोंसले हैं, पर मनुष्य के पुत्र के पास अपना सिर रखने के लिए कोई जगह नहीं है' (मत्ती 8:20), यह स्वयं मसीह ने कहा।

घर या संपत्ति के बिना, उद्धारकर्ता का साधारण भोजन, सबसे गरीब गलीलियाई की तरह, जौ की रोटी[5268] और गलीलियाई सागर में पकड़ी गई मछली से बना था, जिसे तट पर ही गर्म पानी में उबाला जाता था, और कभी-कभी जंगली शहद का एक टुकड़ा भी मिलता था, जिसे स्थानीय लोग मुफ्त में इकट्ठा करते थे। चतुर फरीसियों द्वारा यह आरोप लगाया गया कि मनुष्य का पुत्र 'खाना-पीना और शराब पीना पसंद करता है' (मत्ती 11:19), इस तथ्य का संदर्भ देता है कि मसीह ने उन लोगों के साथ भोजन करने से इनकार नहीं किया जिन्होंने उन्हें एक सार्वजनिक शिक्षक के रूप में आमंत्रित किया था, क्योंकि वहाँ शिक्षक आतिथ्य प्राप्त करने के आदी थे (लूका 5:1–39, 7:1–50, 10:1–42)। और यद्यपि प्रेरितों और मसीह के कुछ अनुयायियों के पास मामूली संपत्ति थी—प्रेरित पतरस के पास कैपरनियम में एक घर था, यूहन्ना के पास यरूशलेम में एक था, और मसीह के अन्य अनुयायी विभिन्न व्यवसायों में लगे हुए थे और उनके पास एक सामान्य कोष था (यूहन्ना 12:6, 13:29) दैनिक आवश्यकताओं की लागत को पूरा करने, अन्य गरीब लोगों की सहायता करने और बेसहारा लोगों को दान देने के लिए, यहां तक कि अत्यंत आवश्यकताओं के लिए भी छोटी-छोटी रकमें भी उनके पास नकद में हमेशा उपलब्ध नहीं होती थीं। इसलिए जब नाममात्र के मंदिर कर के यहूदी संग्रहकर्ता प्रेरित पतरस के पास आए और कहा:

'क्या आपके गुरु दो ड्रैक्मा (केवल लगभग 40 कोपेक) नहीं देंगे?' – न तो गुरु मसीह के पास और न ही उनके शिष्यों के पास इतनी तुच्छ राशि थी!… (मत्ती 17:24–27)

इस बीच, मसीह और उनके चमत्कारों की अफवाहें पूरे सीरिया में फैल रही थीं[5269] ; और वे उनके पास सभी दुर्बल लोगों को, विभिन्न प्रकार की बीमारियों और दौरे के शिकार लोगों को, दुष्टात्मा-ग्रस्त लोगों को, पागल लोगों को, लकवाग्रस्त लोगों को, और लाए। उन्होंने उन्हें चंगा किया। और गलील, दक्कपोलिस, यरूशलेम, यहूदिया और यॉर्डन के पार से बड़ी भीड़ उसके पीछे हो ली' (मत्ती 4:25; लूका 6:17; मरकुस 3:7–8)। और इन सभी प्रकार के दूर-दराज के क्षेत्रों से आए लोगों की भीड़ में कई गरीब लोग थे, जिन्हें न केवल भोजन बल्कि वस्त्रों की भी आवश्यकता थी…

इन सभी कारणों से कई धर्मनिष्ठ महिलाएँ, जिन्हें मसीह ने गंभीर बीमारियों से चंगा किया था और जो अपनी संपत्ति से सुसज्जित थीं, अपने कल्याणकर्ता के साथ उनकी यात्राओं पर चलीं, जब वह सुसमाचार का प्रचार कर रहे थे, और 'अपनी संपत्ति से उनकी सेवा' करती रहीं। (लूका 8:3), अर्थात्, ज़रूरत के समय में, अपने उद्धारकर्ता के साथ चलने वाले गरीबों की बुनियादी ज़रूरतों की लागत उठाकर और, उनकी आज्ञा पर, भौतिक सहायता की ज़रूरत वालों को आवश्यक सहायता प्रदान करके। इन कृतज्ञ स्त्रियों में, सुसमाचार लेखक लूका सबसे पहले मरियम मग्दलीना का नाम लेते हैं (लूका 8:2), क्योंकि वह ईश्वर-मानव के कार्य के प्रति ऐसी कृतज्ञ सेवा का उदाहरण दूसरों के लिए रखने वाली

को दुनिया के उद्धारकर्ता, परमेश्वर के पुत्र के जन्म के बारे में बताया गया था। यीशु मसीह ने अपना बचपन, यौवन और जीवन नासरत में तब तक बिताया जब तक कि उन्होंने मानव जाति को बचाने के लिए अपनी सार्वजनिक सेवकाई शुरू नहीं की (लूका 2:39-51)। इसी कारण से, उन्हें नासरी कहा गया (यूहन्ना 19:19), और लंबे समय तक पूर्व के मसीहियों को भी नासरी कहा जाता था।

[5268] जौ की रोटी गरीबों की रोटी थी, और इसे रोमन सैनिकों को केवल दंड के रूप में दिया जाता था, उदाहरण के लिए, झंडे खोने पर। यहूदियों ने जौ को घोड़ों और गधों के भोजन के रूप में माना।

[5269] 'सीरिया' शब्द (उच्च) का हिब्रू पाठ में 'आरम' के रूप में अनुवाद किया गया है, यह एक शब्द है जो सीरिया और मेसोपोटामिया दोनों को एक साथ संदर्भित करता है। यूफ्रेटिस नदी से भूमध्य सागर तक और टॉरस पर्वत से अरब तक फैला संपूर्ण क्षेत्र सीरिया बनाता था। सीरिया की घाटियाँ बहुत उपजाऊ हैं, जिनमें गेहूँ, अंगूर, तंबाकू, जैतून, संतरे, खजूर आदि की भरमार है। जलवायु बहुत स्वास्थ्यप्रद और सुखद है। प्राचीन काल में अपनी सभ्यता के लिए भी सीरिया जितना प्रसिद्ध कोई देश नहीं था।

पहली थीं, या क्योंकि वह इस पवित्र कार्य के प्रति अपने उत्साह में सभी से आगे थीं। और उद्धारकर्ता मसीह की प्रति उनकी निस्वार्थ, उत्साही सेवा, उस समय जब 'उनके पास अपना सिर रखने के लिए कोई जगह नहीं थी', और जब उन्हें अधिकांश लोगों से ठंडक, आश्चर्य या शत्रुता का सामना करना पड़ा, यह प्रभु यीशु के लिए आनंद का स्रोत थी और उनके निरंतर परिश्रम और बार-बार होने वाले अपमानों के बीच उन्हें महान सांत्वना प्रदान करती थी।

इस संबंध में विशेष रूप से उल्लेखनीय थी वह असाधारण दृढ़ता और असाधारण साहस, जिसके साथ संत मरियम मग्दलिनी ने अपने उद्धारकर्ता का व्यवहार किया। और, हर तरह की बाधाओं और भयानक खतरों के बावजूद, मसीह के क्रूर कष्टों के दुखद दिनों और घंटों के दौरान भी, मरियम मग्दलीना ने खुद को प्रेरितों से अधिक साहसी और समर्पित साबित किया, इस हद तक कि जब उनमें से लगभग सभी—प्रेरितों सहित, प्रभु के साथ मरने के अपने वादों के बावजूद—प्रभु के शत्रुओं के भय से ग्रस्त हो गए और 'भाग गए' (मत्ती 26:56) और छिप गए – मरियम मग्दलीनी ने प्रेम के द्वारा भय पर विजय प्राप्त की और, पीड़ित प्रभु के प्रति अपनी अटूट भक्ति के द्वारा, उस काँटों भरे मार्ग को आसान बनाने का प्रयास किया जिस पर वे संसार के उद्धार के लिए चले। क्रूस पर चढ़ाए गए उद्धारकर्ता की क्रूर पीड़ा[5270] यहूदी महापुजारियों के उत्तेजक और निर्लज्ज उपहास से और भी बढ़ गई, लिखारियों और बड़ों ने, जो अपनी नीच प्रतिशोध को पूरा करने से संतुष्ट नहीं थे, क्रूस पर चढ़ाए गए मसीह के क्रूस के पास खड़े हो गए और उपहास करते हुए निर्दयी और अभद्र ताने उस निर्दोष पीड़ित पर उछालते हुए कहा:

'उसने दूसरों को (मृत्यु से) बचाया, परन्तु वह स्वयं को नहीं बचा सकता। यदि वह मसीह, इस्राएल का राजा है, तो वह स्वयं को बचाए; अब वह क्रूस से उतर आए, ताकि हम उसे देखकर विश्वास कर सकें' (मत्ती 27:41–43; मरकुस 15:31–32; लूका 23:35)…

इसी प्रकार, रोमी सैनिकों ने उसका उपहास किया और उसके पास आकर कहा:

'यदि तू यहूदियों का राजा है, तो स्वयं को बचा' (लूका 23:36–37)…

और जो अपराधी उसके साथ सूली पर चढ़ाए गए थे, वे भी उसकी निंदा कर रहे थे; वे अपशब्द कहकर कहने लगे, एक ने कहा:

'यदि तू मसीह है, तो अपना और हमारा उद्धार कर' (मत्ती 27:44; लूका 23:39)…

और भीड़ में से गुज़रने वाले लोग सिर हिलाकर उसका उपहास करते हुए कहने लगे:

'हे मन्दिर को नष्ट करनेवाले और तीन दिन में उसे फिर बनानेवाले, यदि तू परमेश्वर का पुत्र है, तो क्रूस से उतर आ' (मत्ती 27:39–40; मरकुस 15:29–30)…

और इस प्रकार, जब भीड़ की मूर्खता और क्रूरता, यहूदी अगुवों की नीच दुष्टता के साथ मिलकर, सूली पर चढ़ाए गए मसीह को घेरे हुए थी, तब उनकी शहीद की दृष्टि, जो सांत्वना से भरी थी, भक्तिमय स्त्रियों के आँसुओं पर पड़ी, जिनमें मरियम मग्दलीनी 'पहली लोगों में से एक' थीं (मत्ती 27:55–56; मरकुस 15:40; लूका 23:27)। इन करुणामय आँसुओं में, पाप के उदास क्षेत्र के बीच मनुष्य के पुत्र के लिए प्रकाश की एक किरण चमकती हुई प्रतीत हुई, और कृतज्ञ

[5270] सलीब पर चढ़ाना, यानी सलीब पर चढ़ाकर मृत्युदंड देना, प्राचीन काल से और रोमनों के बीच, मृत्युदंड के एक दासी-सुलभ, सबसे शर्मनाक और सबसे क्रूर रूप के रूप में माना जाता था, जिस पर केवल देशद्रोहियों, हत्यारों और सबसे बड़े दुष्टों को ही मृत्युदंड दिया जाता था। यहूदियों में, इस प्रकार की फांसी को 'शापित' माना जाता था (व्यवस्थाविवरण 21:22-23; 1 कुरिन्थियों 1:23)। रोमन रीति के अनुसार, सूली पर चढ़ाए गए व्यक्ति के अपराध को संक्षेप में क्रूस के शीर्ष पर लगी एक छोटी पट्टी पर अंकित किया जाता था। सलीब पर मृत्यु में यातना और बेहोशी या संवेदना खोए बिना होने वाली मृत्यु की वह सब कुछ समाहित था जो सबसे भयानक और सबसे पीड़ादायक होता है: कीलों पर लटके शरीर की अस्वाभाविक स्थिति से सबसे मामूली हरकत भी अत्यंत पीड़ादायक हो जाती थी; कीलों के पास के सूजे हुए और लगातार बिगड़ते घाव गैंग्रीन से बर्बाद हो जाते थे; धमनियाँ, विशेष रूप से सिर और पेट में, सूजकर खून से भर जाती थीं, जिससे भयंकर बुखार और असहनीय प्यास होती थी। सूली पर चढ़ाए गए लोगों का दुख इतना महान और इतना भयानक था—कभी-कभी कई दिनों तक चलने वाला—कि रोमनों ने आमतौर पर उन्हें मारने या भाले से भेदकर मृत्यु को जल्द समाप्त कर दिया। हालाँकि, यहूदियों के लिए, मूसा की व्यवस्था (Deut. के अनुसार, 21:1–23), उन्हें सूर्यास्त से पहले सूली पर चढ़ाए गए लोगों के दुखों को समाप्त करने की अनुमति थी, और यह प्रथा थी कि सूली पर चढ़ाए गए व्यक्ति को मूर्रा (मार्क 15:23; या पित्त (मत्ती 27:34)) के साथ मिला हुआ शराब दिया जाता था, जो दुख को कुछ हद तक कम करने के लिए मन को धुंधला कर देती थी; लेकिन यीशु मसीह ने पीड़ा को कम करने के लिए बनाई गई ऐसी पेय को स्वीकार नहीं किया और न ही पिया। यरूशलेम की धनी स्त्रियाँ अपनी जेब से ऐसे नशीले पेय उपलब्ध कराती थीं, और उन्हें इस बात की कोई परवाह नहीं होती थी कि जिन्हें सूली पर चढ़ाया जा रहा है, वे कौन हैं। केवल सम्राट कॉन्स्टेंटाइन महान ने ही रोमन साम्राज्य में सूली पर चढ़ाने की इस भयानक सज़ा को समाप्त किया, जबकि रोमन गणराज्य में तो बच्चों को भी सूली पर चढ़ाया जाता था…

स्त्रियों की यह करिण नरि्दोष पीड़ति को इस गवाही के साथ सांत्वना देती थी कि मानव स्वभाव अभी पूरी तरह से भ्रष्ट नहीं हुआ था।

जसि दनि ईश्वर-मानव ने पतति मानवता की महान मुक्ति की, वह दनि एक स्पष्ट दनि था। यह पहले ही दोपहर के आसपास था, और यहूदी दनि वभिाजन के अनुसार, यह छठा घंटा था (लूका 23:44; मत्ती 27:45; मरकुस 15:43)। फरि भी इस स्पष्ट दोपहर में, 'सूरज अँधेरा हो गया, और पूरे देश पर अँधेरा छा गया[5271] ' नौवें घंटे तक, अर्थात् दनि के घंटों के आधुनकि वभिाजन के अनुसार, दोपहर के तीसरे घंटे तक (मत्ती 27:45; मरकुस 15:33; लूका 23:44)। एक भयानक, राजसी, भव्य दव्यि संकेत—सूर्य का मुरझा जाना, उस उज्ज्वल मध्याह्न के प्रकाश के बीच संपूर्ण पृथ्वी को घेर लेने वाली अंधकार—ने नरि्दोष मसीह के नदिकों पर भारी बोझ डाला, उन्हें आतंकति कर मौन कर दयिा। क्रूस पर चढ़ाए गए के परचिति भक्त, जो पहले दूर खड़े होकर देख रहे थे (लूका 23:49; मत्ती 27:55; मरकुस 15:40), पीड़ति के पास आए, और उसके क्रूस के चारों ओर इकट्ठा हो गए, और उनमें सुसमाचार-लेखक फरि से मरयिम मग्दलीनी का नाम सबसे पहले लेता है (मत्ती 27:56; मरकुस 15:40)। इस प्रकार, मरयिम मग्दलीनी उद्धारकर्ता मसीह के चरणों में खड़ी रहीं—न केवल चमत्कार करने वाले, जनि्हें शशिुओं ने महमिामंडति और प्रशंसति कयिा, बल्कि नासरी यीशु के चरणों में भी, जनि्हें अपमानति, अनादरति, लज्जास्पद रूप से सूली पर चढ़ाया गया, और उनके अपने ही प्रेरतिों द्वारा भी परत्यिक्त कर दयिा गया!..

और अपने उपचारकर्ता की मृत्यु के बाद भी, मरयिम मग्दलीना ने उनका साथ नहीं छोड़ा: वह अरीमाथयिा के योसेफ[5272] और नकोदेमस[5273] के साथ गईं जब वे उनके शरीर को सूली से कब्र तक ले जा रहे थे[5274] ; वह उनके दफ़न के समय मौजूद थीं, यह देख रही थीं कि मसीह को कहाँ रखा गया (मत्ती 27:61; मरकुस 15:47) और जब परमेश्वर की व्यवस्था के अनुसार आने वाले महान पर्व पासका के सम्मान में, उसने उसके दफनाए गए शरीर को छोड़ दयिा, तो मरयिम मग्दलीनी का उत्कट और कृतज्ञ प्रेम, अपनी गहरी पीड़ा के बीच, उसे सांत्वना का एक स्रोत प्रकट कर गया। इस प्रेम ने उनमें यह इच्छा जगाई कि वह भी अपने हसि्से का अंतमि सम्मान अपने उद्धारकर्ता को अर्पति करें, जनि्हें यहूदयिों द्वारा अपमानति कयिा गया था। उन्होंने मूर्रा और अन्य सुगंधति द्रव्य खरीदे (लूका 23:56) ताकि दफ़नाए गए मसीह के शरीर पर अभषिेक करके, वह यहूदी रीति-रिवाज के अनुसार उन्हें सर्वोच्च सम्मान दे सकें।

[5271] यह अंधकार कोई साधारण सूर्यग्रहण नहीं था, जो सूर्य और चंद्रमा की गति के ज्ञात प्राकृतकि नयिमों द्वारा शासति होता है। यह एक अलौककि घटना थी, जसिने प्रकृति में बाद में हुई असाधारण घटनाओं के साथ मलिकर, प्रायश्चति की घटना के असाधारण और सर्वोच्च महत्व की गवाही दी। इस अंधकार की असाधारण प्रकृति और प्रामाणकिता की गवाही उस समय के तीन गैर-ईसाई लेखकों ने दी: रोमन इतहिासकार और खगोलशास्त्री फ्लेगॉन, जूलयिस अफ्रीकनस, इतहिासकार फालस, और एक चौथे गैर-ईसाई इतहिासकार, जसिका नाम इतहिासकार यूसेबयिस ने नहीं बताया। उनके ववरिणों में, इस अंधकार का समय पूरी तरह से प्रेरतिों के ववरिणों से मेल खाता है, जनिमें कहा गया है कि आकाश में तारे दखिाई दे रहे थे। सेंट जॉन क्रसिस्टम, थयिोफाइलेक्ट और यूथमियिस का मानना है कि यह अंधकार पृथ्वी और सूर्य के बीच बादलों के एक वशिाल जमाव के कारण हुआ था, जो मानव जाति की दुष्टता के प्रति ईश्वर के क्रोध के संकेत के रूप में एक अलौककि शक्ति द्वारा उत्पन्न कयिा गया था। दनि की गनिती शाम छह बजे से लेकर अगले दनि शाम छह बजे तक की जाती थी। दनि के घंटों की गनिती सुबह छह बजे से की जाती थी। सुबह 6 बजे से 9 बजे तक दनि का पहला भाग होता था, जसिे दनि का तीसरा घंटा कहा जाता था; सुबह 9 बजे से दोपहर 12 बजे तक दनि का दूसरा भाग होता था, जसिे छठा घंटा कहा जाता था; दोपहर 12 बजे से शाम 3 बजे तक दनि का तीसरा भाग होता था, जसिे नौवां घंटा कहा जाता था; दोपहर 3 बजे से शाम 6 बजे तक चौथा भाग था, जसिे दनि का बारहवां घंटा कहा जाता था। रात को भी चार पहरों में वभिाजति कयिा गया था, प्रत्येक तीन घंटे का होता था।

[5272] अरमिाथेआ का यूसुफ, या रामाफैम, जो दृढ़ चरति्र और नष्पिाप आचरण वाला एक धनी व्यक्ति था, यरूशलेम के महासभा का एक सम्मानति सदस्य था; स्वभाव से डरपोक होने पर भी, उसने पहले मसीह का अनुयायी होने की घोषणा करने की हमि्मत नहीं की थी, फरि भी उसने यीशु के खलिाफ फैसले में भाग नहीं लयिा था। उनके सूली पर चढ़ाए जाने से उत्पन्न क्रोध के कारण, वह मसीह के प्रति अपनी भक्ति—एक शहीद और दुर्भावना के शकिार के रूप में—उन्हें एक सम्मानजनक दफन देकर व्यक्त करना चाहता था।

[5273] नकिोदेमस एक प्रसद्धि फरीसी और महासभा का सदस्य था। वह यीशु मसीह के बारे में उनकी शकि्षाओं को अधकि वसि्तार से और अधकि स्वतंत्रता के साथ जानने के उद्देश्य से रात में यरूशलेम में उद्धारकर्ता मसीह के पास गया, और प्रभु ने उसे सुसमाचार के मुख्य सद्धिांतों का प्रकाशन कयिा (यूहन्ना 3:1–36)। वह बहुत अमीर आदमी था और उसने मसीह के शव को सुगंधति करने के लिए 100 पाउंड मूर्रा और अलोज़ का मश्रिण लाकर उनके अंतमि संस्कार की व्यवस्था करके उनका सम्मान कयिा। बाद में उसे प्रेरतिों द्वारा बपतस्मिा दयिा गया।

[5274] उस समय, 'कफ़न' शब्द का अर्थ यहूदी कब्रें, या चट्टानी पहाड़यिों से तराशी गई गुफाएं था, जनिके अंदर मृतक के लिए एक बस्तिर तैयार कयिा जाता था। उस कब्र के पास जो उसने अपने लिए तैयार की थी। यहूदी अपनी कब्रों का सम्मान करते थे, लेकनि जोसेफ ने बनिा कसिी हचिकचिाहट के उसे नरि्दोष पीड़ति को दे दयिा, और दफ़नाने की प्रक्रयिा को पूरा करने में जल्दबाजी की, क्योंकि पास के सब्त का दनि नज़दीक आ रहा था।

यह कार्य, जिससे मरियम मग्दलीनी को 'मश्रि ण लाने वाली स्त्री' की उपाधि भी मिली, केवल उनका था, क्योंकि दो सुसमाचार लेखक फिर से कई अन्य महिलाओं में उनकी ही अगुवाई का उल्लेख करते हैं जो इस कार्य में उनके पीछे-पीछे चलीं, जबकि तीसरे ने केवल उनका ही उल्लेख किया है (मत्ती 28:1; मरकुस 16:1; यूहन्ना 20:1) और इस उत्तम कार्य में उसका नाम लेते हैं।

और इस प्रकार, सप्ताह के पहले दिन, उस दुखद सब्बाथ के बाद, जब अभी भी अँधेरा था (यूहन्ना 20:1), क्रोधित यहूदियों द्वारा उत्पन्न खतरे के बीच, जिन्होंने पहले ही मसीह के चेलों पर हाथ उठाने का प्रयास किया था, और उस समय जब सूली पर चढ़ाए गए के प्रेरित, अपने टूटे हुए मनोबल के साथ, अपने निवास में खुद को बंद करके बैठ गए थे, – मरियम मग्दलीनी, कुछ धर्मनिष्ठ स्त्रियों के साथ, मंडराते खतरे की परवाह किए बिना, निडर होकर मसीहा के कब्रिस्तान की ओर बढ़ीं, उन्होंने मसाले और इत्र[5275] (लूका 23:56; मरकुस 16:1) साथ लाए थे, जो मसीह के शरीर पर अभिषेक करने के लिए लाए गए थे, ताकि पुनरुत्थित मसीह को प्रेम और श्रद्धा की अंतिम श्रद्धांजलि अर्पित की जा सके। मरियम मग्दलीनी को यह पता नहीं था कि यहूदियों ने मसीह की कब्र की गुफा पर पहरा लगाया था, और न ही उन्होंने इसके प्रवेश द्वार को महापुजारियों द्वारा सील किए जाने के बारे में सुना था, क्योंकि यह सब कुछ अरिमाथेआ के यूसुफ द्वारा बगीचे से यीशु के सभी अनुयायियों को हटाए जाने के बाद हुआ था (मत्ती 27:62-66)। लेकिन अब, यरूशलेम से मसीह की कब्र की गुफा के रास्ते में, मरियम मग्दलीनी को याद आया कि उस गुफा के मुँह पर यूसुफ और निकोदेमस ने एक इतने बड़े, भारी पत्थर से मुहर लगा दी थी कि न तो वह और न ही उसके साथी उसे मुँह से हटा सके। और इसलिए, इस बाधा से परेशान होकर, मुर्रा-वाहक एक-दूसरे से कहने लगे:

'हमारे लिए कब्र के द्वार से पत्थर कौन हटाएगा?..' (मरकुस 16:3)

इस पर विचार करते हुए, मरियम मग्दलीनी, अन्य मुर्रा-वाहकों से आगे बढ़कर कब्र के पास आई, और ऊपर देखकर अचानक देखा कि जिस पत्थर ने उसे परेशान किया था, वह कब्र के मुँह से पहले ही हटा दिया गया था… (यूहन्ना 20:1; मरकुस 16:4)।

उस समय के यहूदियों के बीच, मृतक की कब्र के प्रवेश द्वार को सील करने वाले पत्थर को अटूट माना जाता था, मानो वह पवित्र हो। और इस तथ्य से कि मसीह की कब्र के प्रवेश द्वार से पत्थर हटा दिया गया था, यह संकेत मिलता था कि वहाँ दफन व्यक्ति के शरीर के साथ कुछ असाधारण हुआ था। क्या? – सबसे सरल और सबसे पहला विचार यह था कि यीशु के शरीर को किसी ने अरीमाथिया के योसेफ की इस गुफा से उठा लिया था और शायद कहीं और दफना दिया था। और यह विचार—कि उसे उन्हें अंतिम श्रद्धांजलि अर्पित करने का अवसर से वंचित किया जाएगा—मरियम मग्दलीनी को इतना गहरा लगा कि, गुफा में प्रवेश किए बिना ही, वह तुरंत वापस यरूशलेम भाग गई ताकि प्रेरितों पतरस और यूहन्ना को मसीह की कब्र पर जो हुआ था, उसके बारे में सूचित कर सके। उसे यकीन था कि, एक बार जब वह उन्हें सूचित कर देगी, तो प्रेरित यीशु के शरीर की खोज में सक्रिय रूप से भाग लेंगे:

उसने प्रेरितों से कहा, 'उन्होंने प्रभु को कब्र से निकाल लिया है, और हमें नहीं पता कि उन्होंने उसे कहाँ रखा है' (यूहन्ना 20:2)।

[5275] मश्रि अरब, मिस्र और अबिसिनिया में उगने वाले मश्रि के पेड़ से निकलने वाला एक सुगंधित रेज़िन है। यह रेज़िन आंशिक रूप से पेड़ से स्वाभाविक रूप से निकलता था और आंशिक रूप से छाल को काटने से निकाला जाता था। यह तैलीय होता है; जैसे ही यह गाढ़ा होता है, इसका रंग सफेद-पीला हो जाता है; एक बार कठोर हो जाने पर यह लालिमा लिए हुए हो जाता है; इस रेज़िन का स्वाद तीव्र कड़वा होता है, और इसकी सुगंध इतनी विशेष रूप से सुगंधित होती है कि यह चक्कर और बेहोशी का कारण बनती है। मश्रि, या इस रेज़िन का, सड़न के सभी रूपों का विरोध करने की क्षमता के कारण, यहूदियों और मिस्रवासियों द्वारा मृतकों के शवों को अभिषेक करने और ममी बनाने के लिए उपयोग किया जाता था (यूहन्ना 19:39)। पुराने नियम में, पवित्र अभिषेक के लिए अभिषेक तेल मश्रि और जैतून के तेल से बना होता था (निर्गमन 30:23-25)।ईश्वर की आज्ञा से, इस मूर्र का उपयोग वाचा के तम्बू को अभिषेक करने के लिए, फिर हारून और उनके पुत्रों को ईश्वर की पवित्र सेवा के लिए, और बाद में राजाओं और भविष्यद्वक्ताओं को भी अभिषेक करने के लिए किया गया। मूर्र से अभिषेक किसी वस्तु के पवित्र होने और अभिषेक किए जा रहे व्यक्ति पर पवित्र आत्मा के वरदानों और शक्तियों के प्रदान किए जाने का एक बाहरी, दृश्यमान संकेत है। और ऑर्थोडॉक्स ईसाई चर्च में, प्रेरितों के समय से ही, क्रिस्माशन का संस्कार विद्यमान है, जिसके द्वारा विश्वासी, पवित्र आत्मा के नाम पर अपने सिर, ललाट, आँखों, कानों, होठों, हाथों और पैरों पर पवित्र क्रिस्म से अभिषेक किए जाने पर, पवित्र आत्मा की वरदानियाँ प्राप्त करता है, जो उसे आध्यात्मिक जीवन में नया करती हैं और उसे बल प्रदान करती हैं। ईसाई चर्चों और राजाओं को उनके राज्याभिषेक के समय उनकी महान शाही सेवा के लिए पवित्र क्रिस्म से अभिषेक किया जाता है… – मूर के अतिरिक्त, यहूदी मृतकों के अंतिम संस्कार में सुगंधित पाउडर का भी उपयोग करते थे, जिसे वे कफ़न और उस शव-वाहक पर छिड़कते थे जिस पर शव को रखा जाता था। मूर के अलावा, इस प्रकार के सुगंधित पाउडर मूर-वाहकों द्वारा मसीह की कब्र के लिए तैयार किए गए थे।

और वास्तव में, प्रेरितों में सबसे उत्साही, पतरस और यूहन्ना, तुरंत कब्र की ओर चल पड़े[5276] । वे दोनों एक साथ दौड़े; लेकिन यूहन्ना पतरस से तेज़ दौड़े और पहले कब्र पर पहुँचे; झुककर उन्होंने देखा कि वहाँ लिनेन के कपड़े पड़े थे, लेकिन वे कब्र में नहीं गए। शमोन पतरस उसके पीछे-पीछे गए, कब्र में दाखिल हुए और पड़े हुए सूती कपड़े तथा यीशु के सिर पर का कपड़ा देखा, जो सूती कपड़ों के साथ नहीं पड़ा था, बल्कि अलग ही एक जगह पर लपेटा हुआ था – और सब कुछ सुव्यवस्थित था। तब यूहन्ना भी भीतर आए, यह देखकर विश्वास कर गए कि मसीह मरे हुओं में से जी उठे हैं; क्योंकि अगर किसी ने यीशु के शरीर को किसी दूसरी जगह रखा होता, तो वह उसे बिना ढके नहीं रखता; इसी तरह, अगर किसी ने उसे चुराया होता, तो वह सिर पर का कपड़ा उतारने, उसे लपेटने और कहीं और रखने की जहमत नहीं उठाता, बल्कि शरीर को जैसे का तैसा ही ले जाता; और वास्तव में, मसीह के अंतिम संस्कार में निकोदेमस द्वारा उपयोग की गई मूर्रा और अलोज़ (एक प्रकार की सुगंधित लकड़ी) कफ़न को शरीर से बहुत मजबूती से बाँध देती हैं, – संत जॉन क्राइसोस्टोम (योहन 20:3-9) बताते हैं: – लेकिन सभी प्रेरित अपने गुरु के खाली कब्र से एक ही भावना के साथ नहीं गए: पतरस, विश्वास के बजाय, केवल 'आश्चर्यचकित होकर, जो हुआ था उस पर हैरान होते हुए वापस मुड़ गया' (लूका 24:12)…

जबकि प्रेरित मसीह की खाली कब्र से निकलते समय अभी भी इस भ्रमित और संदेहपूर्ण मानसिक स्थिति में थे, मरियम मग्दलीना एक बार फिर वहीं लौट आईं। कब्र की गुफा तक पहुँचकर, वह रोने लगी और अत्यंत दुखी होकर, झुक गई (यूहन्ना 20:11) और गुफा के नीचले प्रवेश द्वार में घुसकर एक बार फिर उस स्थान को देखने लगी जहाँ उसके उद्धारकर्ता को आराम के लिए रखा गया था। और वहाँ उसने दो स्वर्गदूतों को[5277] देखा, जो सफेद वस्त्र पहने हुए थे, एक सिरहाने और दूसरा पैरों की ओर, जहाँ यीशु का शरीर पड़ा था। और उन्होंने उससे कहा:

[5276] उस समय के रोमन सम्राट टाइटस फ्लावियस वेस्पेशियनस द्वारा वर्ष 70 में यरूशलेम की घेराबंदी के वृत्तांत में, अरिमाथिआ के यूसुफ की कब्र का उल्लेख मिलता है, जिसे साधारण एक-कक्षीय यहूदी गुफा कब्रों की शैली में बनाया गया था। यह इस बात की और पुष्टि करता है कि जिस कब्र में मसीह को दफनाया गया था, वह एक छोटी पहाड़ी के अंदर, दो कक्षों या खंडों के रूप में प्राकृतिक चट्टान से तराशी गई थी: एक प्रवेश कक्ष और वास्तविक दफन कक्ष। गुफा का प्रवेश द्वार, प्रथा के अनुसार, पूर्व की ओर था, और इसे एक बड़े पत्थर से सील कर दिया गया था। गुफा के दूसरे भाग में दफन स्थल, प्रवेश द्वार के दाईं ओर, दीवार के सहारे एक बिस्तर, बेंच या एक उभरे हुए मंच के रूप में तराशा गया था। कब्र की ऊंचाई एक मनुष्य की ऊंचाई से थोड़ी अधिक थी, जबकि प्रवेश द्वार की ऊंचाई एक मनुष्य की ऊंचाई का लगभग एक-तिहाई थी। यूसुफ की कब्र से गोलगोथा तक की दूरी लगभग 17 फाथम (या 120 फीट) थी… दूसरी शताब्दी के मध्य में, रोमन सम्राट हैड्रियन ने यहूदियों का हेलेनीकरण करने का संकल्प लेकर, यरूशलेम की सभी ऊबड़-खाबड़ ज़मीन और पहाड़ियों को समतल करने का आदेश दिया; बाद में, ईसाई पवित्र स्थानों की जगह पर जुपिटर और वीनस को समर्पित मूर्तिपूजक मंदिर बनाए गए। लेकिन वर्ष 333 में, सम्राट कॉन्स्टेंटाइन द ग्रेट के आदेश से, इन मंदिरों को ध्वस्त कर दिया गया, बांध हटा दिए गए, और पवित्र सेपल्चर वाली गुफा प्रकट हुई, जिसे बिना छेड़े हुए छोड़ दिया गया। इस ईसाई तीर्थस्थल के चारों ओर एक भव्य और शानदार चर्च बनाया गया, लेकिन पवित्र सेपल्चर की गुफा का स्वरूप बदल दिया गया: इसे चर्च में अधिक आसानी से समाहित करने के लिए, कब्र को प्रवेश द्वार (वेस्टिब्यूल) वाले हिस्से द्वारा चट्टान से अलग कर दिया गया, ताकि गुफा का केवल दफन कक्ष ही संरक्षित रह सके… फिर, सातवीं शताब्दी से, फारसियों, यहूदियों, अरबों और तुर्कों ने, ग्रीकों को हराने के बाद, ईश्वर-मानव के दफन स्थल को पृथ्वी के चेहरे से मिटाने के लिए हर संभव साधन का उपयोग किया; और यद्यपि गुफा की अधिकांश दीवारें और ऊपरी हिस्सा नष्ट हो गए थे, खुद बिस्तर और गुफा की दीवारों का निचला हिस्सा आज तक दृढ़ता से खड़ा है, प्रामाणिक और निर्विवाद स्मारकों के रूप में, जो मसीह उद्धारकर्ता की उपस्थिति से पवित्र हुए हैं। और इस पापी पृथ्वी के अंत तक, यह पवित्र पत्थर का पलंग विश्वासियों को अपनी ओर आकर्षित करेगा, उन्हें सांत्वना और सुकून देगा, और जो इसके सामने साष्टांग दंडवत करते हैं, उन्हें एक सुलह किए हुए आत्मा के साथ विदा करेगा…

[5277] 'देवदूत' शब्द का अर्थ 'संदेशवाहक' या 'दूत' है और इसका उपयोग पवित्र धर्मग्रंथों में कई तरह के अर्थों में किया गया है। लेकिन अपने सबसे सख्त अर्थ में, बाइबिल में 'देवदूत' शब्द व्यक्तिगत, आध्यात्मिक प्राणियों को संदर्भित करता है, जो मनुष्य से अधिक पूर्ण और ईश्वर द्वारा बनाए गए हैं, जो लोगों को ईश्वर की इच्छा की घोषणा करते हैं और पृथ्वी पर उसकी आज्ञाओं को पूरा करते हैं। दूतों को दृश्यमान दुनिया की रचना से पहले ईश्वर द्वारा बनाया गया था; वे आध्यात्मिक हैं और, यद्यपि वे अदेह नहीं हैं, उनका शरीर विशेष रूप से हल्का और सूक्ष्म है। मनुष्यों की स्थानिक सीमाएँ दूतों पर लागू नहीं होती हैं, फिर भी वे सर्वव्यापी नहीं हैं। उनकी पूर्णता सीमित है और, उनकी समझ की गति और गहराई के बावजूद, वे सर्वज्ञ नहीं हैं; अपनी पवित्रता और शुद्धता के बावजूद, स्वर्गदूत प्रलोभन के अधीन हो सकते हैं, क्योंकि उन्हें स्वतंत्र बनाया गया था; इसलिए वे स्वतंत्र रूप से अच्छाई पर दृढ़ रहने, जैसे कि अच्छे स्वर्गदूत, या गिरने, जैसे कि वे स्वर्गदूत जो दुष्ट आत्मा बन गए, का चुनाव कर सकते थे। स्वर्गदूत परमेश्वर के साक्षात सामने खड़े रहते हैं, निरंतर उनकी महिमा करते हैं, उनकी इच्छा को पूरा करते हैं और आनंद का अनुभव करते हैं। देवदूतों की एक अनगिनत भीड़ है, और उनमें पूर्णता के विभिन्न पद और दर्जे हैं… मानवता और ईश्वर की प्रजा का संपूर्ण इतिहास देवदूतों की सेवा के माध्यम से प्रकट होता है, और वे पुराने और नए नियम के इतिहास के महत्वपूर्ण क्षणों में प्रकट होते हैं, यीशु मसीह और उनकी कलीसिया की सेवा करते हैं; इस उद्देश्य के लिए, देवदूत एक दृश्यमान रूप धारण करते हैं जो मनुष्यों के लिए सुलभ होता है। इसलिए, सुसमाचार लेखक मरकुस और लूका, जब मुर्रा-वाहियों को स्वर्गदूतों के प्रकट होने का वृत्तांत सुनाते हैं, तो वे उनके प्रकट होने के रूप और ढंग के अनुसार, जैसा कि मुर्रा-वाहियों ने देखा, उन्हें 'पुरुष' (लूका 24:4) और 'एक जवान' (मरकुस 16:5) कहकर संबोधित करते हैं। ऑर्थोडॉक्स चर्च में, स्वर्गदूतों को ईश्वर के निकट सेवकों और उनकी इच्छा के निष्पादकों के रूप में पूजित किया जाता है।

'हे स्त्री, तू क्यों रोती है?'

मरियम ने उनसे उत्तर दिया:

'उन्होंने मेरे प्रभु को उठा लिया है, और मुझे नहीं पता कि उन्होंने उसे कहाँ रखा है!'

मरियम का दुख इतना गहरा था कि उसे यह एहसास नहीं हुआ कि उससे बात करने वाले मनुष्य नहीं, बल्कि वे स्वर्गदूत थे जिन्होंने मसीह के दुखद दफन के स्थल पर अपनी तेजस्वी, गंभीर और उत्सवपूर्ण उपस्थिति से उसके दुख को कम करने के लिए मानवीय रूप धारण किया था; और उसने उन्हें वही शब्द कहकर जवाब दिया जो उसने कब्र से मसीह के शरीर के गायब होने के बारे में प्रेरितों से कहा था। और स्वर्गदूत, अपनी गंभीर और तेजस्वी उपस्थिति के माध्यम से, मरियम मग्दलीनी को मसीह के अद्भुत पुनरुत्थान के उद्घोष के लिए तैयार कर रहे थे; हालाँकि, उन्होंने उसे यह नहीं बताया—जैसा कि उन्होंने अन्य मुर्रा-वाहकों को बताया था—कि वह जिसे वह इतनी लगन से ढूँढ़ रही थी, महिमा में जी उठा था, क्योंकि प्रभु को यह उचित लगा कि मरियम मग्दलीनी स्वयं मसीह के पुनरुत्थान की प्रत्यक्ष घोषणा करने वालों में गिने जाएँ।

और इस प्रकार, जैसे ही मरियम मग्दलीनी स्वर्गदूतों को अपने रोने का कारण बता रही थी, उद्धारकर्ता मसीह अचानक उसके पीछे प्रकट हुए, जिस पर स्वर्गदूतों ने उनके प्रति विशेष श्रद्धा की मुद्रा अपना ली; मरियम मग्दलीनी, उनके हाव-भाव में आए बदलाव को देखकर, मुड़ी और उसने 'यीशु को वहाँ खड़ा हुआ देखा, परन्तु उसे यह पता नहीं चला कि यह यीशु ही था' (यूहन्ना 20:14)। – उसके दुख भरे विचारों का बोझ और उसके बहते आँसू उसे अपने पीछे खड़े व्यक्ति को स्पष्ट रूप से देखने से रोक रहे थे; वास्तव में, यह स्पष्ट रूप से उद्धारकर्ता मसीह की अपनी इच्छा नहीं थी कि वह उन्हें तुरंत पहचान ले, ठीक वैसे ही जैसे उन्होंने एम्माउस के रास्ते पर यात्रियों के सामने अचानक अपना परिचय नहीं दिया था (लूका 24:13-32), और इस प्रकार मरियम मग्दलीनी ने उन्हें अरिमाथेआ के यूसुफ के बगीचे के माली (यूहन्ना 20:15) समझ लिया, जिसमें पवित्र सेपल्चर की गुफा स्थित थी।

मरियम मग्दलीनी द्वारा अभी तक पहचाने न जाने पर, मसीह ने उससे कहा:

'स्त्रियो, तुम क्यों रोती हो? तुम किसको ढूंढ़ती हो?'

इन शब्दों में अपने दुख के प्रति एक दयालु प्रतिक्रिया सुनकर, मरियम एक भरोसेमंद विनिती के साथ उत्तर देती है:

'प्रभु, यदि आपने उसे कहीं और रख दिया है, तो मुझे बताइए कि आपने उसे कहाँ रखा है, और मैं उसे ले लूँगी' (यूहन्ना 20:15)।

मरियम मग्दलीनी ने इन संक्षिप्त और सरल शब्दों में कितना निस्वार्थ प्रेम और गहरी भक्ति व्यक्त की! वह यीशु मसीह के कथित माली को उनके नाम से संबोधित नहीं करती, बल्कि बस 'उन्हें' कहती है… वह स्वयं अपने शिक्षक को इतना मान देती थी कि उसने मान लिया कि दूसरों को भी उनका पता होगा और वे उनमें रुचि लेंगे। वह कथित माली से विनिती करती है कि वह उसे बताए कि यीशु का शरीर कहाँ ले जाया गया है, क्योंकि इस बगीचे के माली को जोसेफ की कब्र से शरीर के गायब होने का रहस्य जरूर पता होगा। उसकी जानकारी के बिना यह अपहरण नहीं हो सकता था, क्योंकि इस बगीचे की देखभाल उसे सौंपी गई थी। और अगर बगीचे के मालिक जोसेफ ने ही शव को किसी दूसरी जगह रख दिया हो, तो वह भी माली की जानकारी के बिना नहीं हो सकता था। और मरियम मग्दलीना इस माली से पूछती है कि मसीह का शव कहाँ है, ताकि वह उसे ले जा सके:

'मैं उसे ले जाऊँगी,' वह कहती है।

प्रभु के प्रति अपने असीम प्रेम में, मरियम अपनी कमज़ोरी को पूरी तरह से भूल जाती हैं और स्वयं अपने उद्धारकर्ता के शरीर को उठाकर ले जाने की आशा करती हैं। उनका उत्साह और प्रेम इतना महान और प्रबल है कि वह खुद को अत्यंत शक्तिशाली समझती हैं। और अपने तात्कालिक प्रश्न का कोई तत्काल उत्तर न मिलने पर, मरियम मग्दलीनी, जैसा कि किसी गहरे परेशान व्यक्ति के लिए स्वाभाविक है, एक बार फिर स्वर्गदूतों की ओर मुड़ी, शायद इस उम्मीद में कि उन्हें यीशु के बारे में कुछ सुनने को मिलेगा, या उस कारण का पता चलेगा जिसने उन्हें इतना श्रद्धापूर्वक व्यवहार करने के लिए प्रेरित किया था। परन्तु प्रभु, उसकी प्रेम की गहराई और शक्ति से प्रेरित होकर, उसे उसी अनुग्रहपूर्ण स्वर में नाम से पुकारा जो मरियम के लिए पहले से ही परिचित था:

– मरियम! (यूहन्ना 20:16)

अब मरियम मग्दलीनी ने अपने उद्धारकर्ता की वह आवाज़ सुनी, जिसे वह अपने जीवन भर याद रखेगी—वह आवाज़ जिसकी शक्ति से उन्होंने उससे अनेक दुष्टात्माओं को निकाल दिया था—वह स्वर्गीय आवाज़ जो हर आत्मा में प्रवेश कर उसे जीवंत कर देती थी—वह अद्भुत आवाज़ जिसने अपने श्रोताओं की आत्माओं को स्वर्गीय आनंद से आनंदित किया। और मरियम ने अब दिव्य शिक्षक की निकट उपस्थिति को महसूस किया, जिनमें उसकी सभी आशीर्वादें, उसका सारा सुख निहित था, और एक अकथनीय आनंद ने मरियम की पूरी आत्मा को भर दिया। खुशी से अभिभूत होकर, वह बोल नहीं सकी; और, एक बार फिर प्रभु की ओर मुड़कर, उसने उन्हें एक प्रबुद्ध दृष्टि से पहचाना और, आनंद से भरकर केवल एक शब्द कहा: 'गुरुजी!' (यूहन्ना 20:16) - और वह उद्धारकर्ता मसीह के पैरों पर लोट पड़ी…

अपने आनंदित उल्लास में, मरियम मग्दलीना अभी तक जी उठे मसीह की पूर्ण महत्ता की कल्पना या पूरी तरह से समझ नहीं पा रही थीं। और इसलिए प्रभु ने, उनके विचारों को प्रबुद्ध करने और पुनरुत्थान द्वारा—उनके शरीर के—हुई परिवर्तन के बारे में सिखाने के लिए, उनसे कोमलता से कहा:

– 'मुझसे चिपकी मत रहो' ([5278]) (यूहन्ना 20:17), क्योंकि मैं अभी अपने पिता के पास नहीं चढ़ा हूँ।

मरियम मग्दलीनी ने उत्साहपूर्वक मानवता के प्रति, अपने उद्धारकर्ता और शिक्षक के प्रति, अपनी भक्ति व्यक्त की, जबकि मसीह, उसे स्वयं को छूने से रोककर, उसके विचारों को ऊँचा उठाते और पवित्र करते हैं, उसे व्यवहार का एक अधिक श्रद्धेय तरीका सिखाते हैं, और मरियम मग्दलीना को यह समझाते हैं कि उनके साथ सबसे करीबी आध्यात्मिक मिलन का समय तब आएगा जब वे अपने शिष्यों की भौतिक आँखों से पूरी तरह से छिप जाएँगे और स्वर्ग में परमपिता परमेश्वर के पास आरोहण कर जाएँगे। और चूँकि मसीह के अन्य शिष्यों ने, उनके पुनरुत्थान की खबर सुनकर, यह सोच लिया होगा कि वह अब हमेशा के लिए पृथ्वी पर उनके साथ हैं और शायद लोगों के एक महान यहूदी सांसारिक राज्य के सपनों को पूरा करेंगे, मसीह उद्धारकर्ता मरियम मग्दलीनी को ऐसे विचारों और ऐसे सपनों के खिलाफ चेतावनी देने के लिए भेजते हैं। अब, जी उठे हुए मसीह के अपने स्पष्ट दर्शन और उनके वचनों के द्वारा प्रेरितों को मसीह के पुनरुत्थान की पुष्टि करने के बाद, उन्हें प्रभु द्वारा यह घोषणा करने के लिए भेजा जाता है कि मसीह पृथ्वी पर अधिक समय तक नहीं रहेंगे, और वह, अपने सबसे महिमामय शरीर में, जल्द ही परमेश्वर पिता के पास स्वर्ग में आरोहण करेंगे। लेकिन, कहीं इस प्रस्थान की खबर से उन्हें भ्रम और दुख न हो, इसलिये प्रभु मरियम मग्दलीनी को आज्ञा देते हैं कि वह अपने शिष्यों से कहे कि उनके पिता, जिनके पास वह आरोहण कर रहे हैं, उनके भी पिता हैं, और इस प्रक्रिया में उन्हें कृपापूर्वक अपना भाई कहकर संबोधित करें:

'मेरे भाइयों के पास जा और उनसे कह: मैं अपने पिता और तुम्हारे पिता के पास, और अपने परमेश्वर और तुम्हारे परमेश्वर के पास जाता हूँ…[5279] ' (यूहन्ना 20:17)

यह कहने के बाद, मसीह अदृश्य हो गए। और मरियम मग्दलीनी, अत्यंत हर्षित और आनंदित होकर, गई और मसीह के प्रेरितों को वह सब कुछ बताया (यूहन्ना 20:18) जो उसके साथ हुआ था, और बड़े आनन्द से अद्भुत शब्दों के साथ उनके दुख में उन्हें सांत्वना दी:

– मसीह जी उठे हैं!

[5278] उसी दिन, मरियम मग्दलीनी को पहली बार प्रकट होने के तुरंत बाद, उद्धारकर्ता मसीह ने उसे, मरियम मग्दलीनी को, अन्य मुर्राधारियों के साथ, अपने पैरों, उद्धारकर्ता मसीह के पैरों से लिपटने से नहीं रोका (मत्ती 28:9; लूका 24:10); इसी प्रकार, उसी दिन की संध्या में, मसीह ने अपने शिष्यों को उसे छूने के लिए आमंत्रित किया और उन्हें अपने हाथों और पैरों में घाव दिखाए (लूका 24:39)। इन परिस्थितियों से यह निष्कर्ष निकाला जाना चाहिए – जैसा कि चिर्च फादर्स और व्याख्याकार मानते हैं – कि मरियम के सामने पहली बार प्रकट होने के समय उसे उसे छूने से रोकने का कारण केवल उस समय उसके विचारों की सादगी थी, जिसके साथ वह प्रभु की ओर दौड़ी थी। अन्य शिष्यों की तरह, उसने भी उद्धारकर्ता मसीह के पुनरुत्थान की न तो उम्मीद की थी और न ही उसे समझा था, और अचानक वह उसे अपने सामने, जीवित खड़ा हुआ देखती है। एक मृतक के जीवित होने का यह दृश्य देखकर उसके मन में विचारों और भावनाओं का कितना तूफ़ान उठा होगा – और वह यह पुष्टि करने के लिए कि जो उसकी आँखों के सामने था वह वास्तव में वही था, उसे छूने के लिए मसीह की ओर दौड़ी, उसको थामने के लिए, जिसकी वह इतनी बेसब्री से तलाश कर रही थी… हालाँकि, मसीह, यह जानते हुए कि उस समय मरियम मग्दलीनी के विचारों और आत्मा में क्या हो रहा था, कोमलता से उसके सबसे सच्चे लेकिन भ्रामक विचारों को दूर करते हैं, और साथ ही उसकी इस जायज़ इच्छा को पूरा करते हैं कि वह निश्चित हो जाए कि क्या वही उसके सामने खड़ा है – अपने वचन से इसकी पुष्टि करके और उसे प्रेरितों को उसके पुनरुत्थान की घोषणा करने का कार्य सौंपकर…

[5279] पुनरुत्थित प्रभु के इन वचनों से, शिष्यों को यह समझना था कि यीशु मसीह का राज्य इस संसार का नहीं है, कि इसे सांसारिक राज्यों से अलग किया जाना चाहिए, और यह कि उन्हें पुनरुत्थित मसीह में एक सांसारिक राजा नहीं, बल्कि एक स्वर्गीय राजा देखना चाहिए; फिर भी इस स्पष्टीकरण और प्रभु की चेतावनी के बाद भी, प्रेरितों ने अपनी लोकप्रिय, अव्यवहारिक आशाओं को नहीं छोड़ा और उन्होंने उनके स्वर्गारोहण से पहले ही उनसे पूछा: 'प्रभु, क्या आप इस समय इस्राएल के लिए राज्य पुनर्स्थापित करेंगे?' (प्रेरितों के काम 1:6)।

यही कारण है कि स्वयं प्रभु द्वारा भेजी गई मसीह के पुनरुत्थान की पहली घोषणाकर्ता के रूप में, मरियम मग्दलीनी को ईसाई चर्च द्वारा 'अपोस्तलों के बराबर' के रूप में मान्यता प्राप्त है।

यहीं पर मरिया मग्दलीना की मसीह की कलीसिया के प्रति संपूर्ण अद्भुत सेवा का सबसे प्रकाशमान पहलू निहित है। मसीह के पुनरुत्थान की सुबह, उन्हें उनके सभी शिष्यों—पुरुष और महिला दोनों—में से सबसे पहले उठे हुए प्रभु[5280] को देखने का सम्मान मिला, और प्रभु की सीधी आज्ञा से, वह सबसे पहली थीं जिन्हें उनके लिए उनके पुनरुत्थान की सूचक और प्रचारक बनाया गया। प्रेरितों ने संपूर्ण विश्व में मसीह के पुनरुत्थान का प्रचार किया: मरियम मग्दलीना ने स्वयं प्रेरितों को मसीह के पुनरुत्थान का प्रचार किया – वह प्रेरितों की प्रेरित थीं!... कलीसिया के पवित्र पिताओं ने इस परिस्थिति में एक विशेष रहस्य और ईश्वर की व्यवस्था की बुद्धिमत्ता को देखा है।

संत ग्रेगरी द थियोलोजियन सिखाते हैं, 'हे नारी, एक नारी ही थी जिसने साँप के मुँह से पहला झूठ सुना, और एक नारी ही थी जिसने स्वयं जी उठे प्रभु के मुँह से पहला आनंददायक सत्य सुना; क्योंकि वही हाथ जिसने घातक विष को घोल दिया था, वही था जिसने जीवन का प्याला पेश किया...'

[5281]मृत्यु पर विजय प्राप्त, विजयी मसीह के चित्र से पवित्र हुई, उत्साही मरियम मग्दलीनी, बिना शब्दों के भी, मसीह के पुनरुत्थान की एक पूर्ण और दृढ़ गवाह थीं। लेकिन प्रेरितों और जोन द थियोलोजियन के घर में उनके साथ जो लोग थे, उन्होंने शिक्षक यीशु के पुनरुत्थान की उनकी धन्य समाचार पर विश्वास नहीं किया। वे 'दुखी हुईं और रोईं; और जब उन्होंने सुना कि मिसीह जीवित हैं और उन्होंने उसे देखा है, तो उन्होंने विश्वास नहीं किया' (मरकुस 16:10–11; यूहन्ना 20:18)। – ऐसा क्यों था?..

मरियम मग्दलीनी को प्रेरितों का पूर्ण और अटूट विश्वास प्राप्त था। इसके अलावा, अन्य महिलाओं में जो मसाले लाई थीं—जिन्होंने प्रभु के मकबरे पर स्वर्गदूतों द्वारा घोषित (लूका 24:9–11, 4–8; मत्ती 28:5–7; मरकुस 16:1–20), थे प्रेरित यूहन्ना द थियोलोजियन की माता, प्रेरित याकूब की माता, और लाजरुस की बहनें मार्था और मरियम, साथ ही अन्य धर्मनिष्ठ महिलाएं, जिन सभी पर प्रेरितों का भी पूरा भरोसा था; फिर भी उन्होंने 'उन पर विश्वास नहीं किया, बल्कि सोचा कि उनकी बातें एक कल्पना हैं' (लूका 24:9–11; मरकुस 16:11; मत्ती 28:17)। मसीह के शिष्यों के उस छोटे समुदाय द्वारा तब निराशा की जो गहराई महसूस की गई थी, वह ऐसी थी: यहूदी महापुजारियों द्वारा उनके गुरु यीशु को पकड़कर सूली पर चढ़ाने, और प्रेरितों के बिखिरकर छिप जाने के बाद, वे अचानक ही सब कुछ से वंचित हो गए—उनकी सभी व्यक्तिगत और राष्ट्रीय आशाएँ; मसीहा यीशु में, उनकी शक्ति और महिमा में उनका विश्वास मुरझा गया था; विश्वास खोने के साथ ही, उनकी आत्मिक हिम्मत भी खत्म हो गई थी; वे इस एहसास से भी दबे हुए थे कि वे शिक्षक मसीह के प्रति अपने कर्तव्य में विफल रहे थे, जिन्हें उन्होंने कायरतापूर्वक अपने दुश्मनों के हाथों में अकेला छोड़ दिया था और भाग गए थे (मत्ती 28:56; मरकुस 14:50), और, न तो अपने भीतर और न ही बाहर से कोई सहारा होने के कारण, वे अब सबसे बढ़कर 'यहूदियों के डर से' (यूहन्ना 20:19) अपनी ही सुरक्षा की रक्षा करने के लिए चिंतित थे। मसीह की मृत्यु तक, उन सभी ने 'आशा की थी कि वह—उनका शिक्षक—मसीहा था जो इस्राएल को मुक्ति देगा' (लूका 24:21) और इस्राएल के गौरवशाली सांसारिक राज्य की स्थापना करेगा; लेकिन क्रूस पर उनकी लज्जास्पद मृत्यु ने उनकी इन आशाओं और सपनों को पूरी तरह से चकनाचूर कर दिया। उस समय के सभी लोगों की नज़र में, सूली पर चढ़ाया जाना मृत्यु का सबसे भयानक और शर्मनाक रूप था; यह मूसा की व्यवस्था के अनुसार एक भयानक 'शाप' का संकेत था (व्यवस्थाविवरण 21:23; 1 कुरिन्थियों 1:23), और यीशु के शिष्यों के हृदय में, उनके क्रूस पर चढ़ाए जाने के बाद, उन पर विश्वास केवल एक नबी के रूप में ही रह गया, 'जो परमेश्वर और सब लोगों के सामने काम और वचन में सामर्थी थे...' (लूका 24:19) – मसीह के शिष्यों के अत्यंत व्यथित मन में, यह विचार कि सच्चा मसीहा, मसीह, परमेश्वर का पुत्र, एक मनुष्य के रूप में मर सकता है—और जिस तरह से यीशु वास्तव में क्रूस पर मरे—यह अकल्पनीय था। और यद्यपि उन्होंने यीशु द्वारा यायरस की बेटी (मरकुस 5:41), नैन की विधवा के पुत्र (लूका 5:11-17) और लाजरुस (यूहन्ना 11:44) को

[5280] पवित्र सुसमाचार लेखकों ने ईश्वर की माता के समक्ष पुनरुत्थित प्रभु के प्रकट होने का कोई उल्लेख नहीं किया है, लेकिन कलीसिया अपनी परंपरा में यह विश्वास रखती है कि मूर्ख-वाहक स्तरियों से पहले ही ईश्वर की माता को एक स्वर्गदूत द्वारा मसीह के पुनरुत्थान की सूचना दी गई थी, और मसीह, कब्र से उठने के बाद, अन्य सभी लोगों से पहले उनके सामने प्रकट हुए। चर्च का यह विश्वास पास्का के पूजा-संबंधी भजनों में व्यक्त किया गया है।

[5281] यरूशलेम में, धर्मदूत योहन द थियोलोजियन का सिओन पर्वत पर अपना घर था। अन्य सभी प्रेरित भी वहाँ थे। और उद्धारकर्ता के स्वर्गारोहण के बाद, वह स्थान नए ईसाई जीवन का केंद्र बन गया। सभी ईसाई अपने प्रश्नों के उत्तर के लिए इस नए सिओन की ओर मुड़े...

चमत्कारकि रूप से जीवति करने का साक्षात्कार कयिा था, – फरि भी चूंकि यीशु स्वयं मर गए, अन्य भवषि्यवक्ताओं की तरह, उन्हें भी अंतमि दनि सभी मनुष्यों के साथ मृतकों में से जी उठाया जाएगा; और चमत्कार करने वाले भवषि्यवक्ताओं का उस समय से पहले स्वयं को मृतकों में से जी उठाने का कोई उदाहरण नहीं रहा है… – जहाँ तक पतरस और यूहन्ना का सवाल है, जनि्होंने मसीह की कब्र देखी थी, वे इस बात के अलावा कुछ भी नहीं बता सकते थे कि वह खाली थी। केवल स्त्रयिों ने ही स्वर्गदूतों और जी उठे मसीह को देखने की बात कही… एक दुखद, अत्यंत दुखद स्थति… और इसलिए अधकि उत्साही प्रेरति पतरस एक बार फरि पवत्रि सेपल्चर गए, यह जाने बनिा कि क्यों, यह न जानते हुए कि वह क्यों गए थे, क्योंकि उन्होंने स्वयं वह खाली जगह देख ली थी जहाँ मसीह को दफनाया गया था। लेकनि अब वह जल्द ही लौट आए और चेलों को बड़ी खुशी के साथ यह घोषणा की:

'सचमुच, मसीह जी उठे हैं!... मैंने उन्हें स्वयं देखा है: वे मुझ पर रास्ते में प्रकट हुए' (लूका 24:33–34; 1 कुरनि्थयिों 15:5)।

अब, ऐसा लगा कि मसीह के पुनरुत्थान की सच्चाई की पुष्टि करने के लिए पुनरुत्थति मसीह के पर्याप्त प्रत्यक्षदर्शी थे, और कई शषि्यों ने आनंदपूर्वक वशि्वास कयिा, फरि भी सभी ने नहीं कयिा[5282] । लेकनि मरयिम मग्दलीनी और अन्य स्त्रयिाँ जो कब्र पर अभषिेक करने आई थीं, जो आनंद से दीप्तमिान थीं और यीशु मसीह के उन्मत्त शत्रुओं से कसिी भी खतरे की परवाह नहीं करती थीं, वे एक जगह शांत नहीं रह सकीं; वे घर-घर, मसीह के एक शषि्य से दूसरे शषि्य के पास, पवत्रिता, सरलता के साथ गईं, अपने उपचारक और शक्षिक के प्रति अपने प्रेम की गहराई और मजबूती के साथ, उन्होंने उत्साहपूर्वक यह आनंददायक शुभ समाचार अनगनित बार दोहराया:

– मसीह जी उठे हैं! वे सचमुच जी उठे हैं!..

और, ईश्वर की कृपा से, मसीह की कलीसयिा का सबसे महान वृक्ष[5283] , सभी बीजों में सबसे छोटे से तेजी से बढ़ने लगा। चेलों का एक छोटा सा समूह, पुरुष और महलिाएं दोनों, उद्धारकर्ता मसीह के प्रति सच्चे मन से समर्पति—जनिमें सबसे उत्साही पवत्रि मरयिम मग्दलीनी, मूर्रा-वाहक और प्रेरतिों के समान थीं— ने मूर्तपिूजकता की अहंकारी मूर्खता पर वजिय प्राप्त की, अपने राजाओं सहति पूरे राज्यों पर शासन कयिा, और पृथ्वी के एक छोर से दूसरे छोर तक – संपूर्ण वशि्व में (प्रेरतिों के काम 1:8) – मसीह की दविय शक्षिा को पहुँचाया, संत मरयिम मग्दलीना की पहली घोषणा के गंभीर शब्दों को दोहराते हुए:

'मसीह जी उठे हैं! वे सचमुच जी उठे हैं!'...

[5282] एम्माउस में जी उठे मसीह के प्रकट होने के बाद भी, जसिे दो और चेलों ने देखा था, कई लोगों ने 'वशि्वास नहीं कयिा' यहाँ तक कि उन पर भी, उस ही शाम को, प्रेरति यूहन्ना के उसी घर में जहाँ शषि्य इकट्ठा हुए थे, और दरवाजे बंद होने के बावजूद, मसीह प्रकट हुए और उन्होंने उनके अवशि्वास और हठी होने के कारण उन्हें डांटा, क्योंकि उन्होंने उन लोगों पर वशि्वास नहीं कयिा था जनि्होंने उन्हें जी उठे हुए देखा था (मरकुस 16:13-14)। प्रभु के पुनरुत्थान के वृत्तांतों में यह परस्थिति अत्यंत महत्वपूर्ण है, वशिेष रूप से उनके पुनरुत्थान की सच्चाई के अकाट्य प्रमाण के रूप में। यह स्पष्ट है कि प्रेरति इस सत्य में भ्रमति नहीं थे, वे धोखा नहीं खा सकते थे, और यह उनका कोई सपना नहीं था, न ही यह उत्साह या परेशान कल्पना का उत्पाद था। प्रेरतिों ने वशि्वास नहीं कयिा था, और इस अवशि्वास को दूर करने के लिए स्वयं जी उठा मसीह की फटकार और उन्हें उसे छूने तथा उसके साथ भोजन करने की अनुमति की आवश्यकता पड़ी; और यदि प्रेरतिों ने बाद में अपने शक्षिक और प्रभु के सच्चे पुनरुत्थान पर वशि्वास कयिा और उसका प्रचार कयिा, तो यह पुनरुत्थान एक नरि्वविाद सत्य है, और अब कोई भी शषि्यों पर अतशिय वशि्वास का आरोप नहीं लगा सकता…

[5283] मसीह उद्धारकर्ता ने कहा: 'स्वर्ग का राज्य (परमेश्वर का) सरसों के दाने के समान है, जसिे बोया जाता है; यद्यपि यह सभी बीजों में सबसे छोटा है, फरि भी जब यह बढ़ता है, तो यह एक पेड़ बन जाता है, कि पक्षी आकर इसकी डालयिों की छाया में शरण लेते हैं…' (मत्ती 13:31-32; मरकुस 4:31; लूका 13:19)। यहाँ, मसीह सामान्य सरसों के बीज, न तो जड़ी-बूटी वाले प्रकार, और न ही हमारे वार्षकि सरसों (Sinapis) के बारे में बात कर रहे थे, बल्कि एक वशिेष पूर्वी बारहमासी कस्मि के बारे में बात कर रहे थे, जो फलिस्तीन में प्रचुर मात्रा में उगती है और जसिे वनस्पति वज्ञिान में 'फाइटोलाका डोडेकेंड्रा' (Phytolacca dodecandra) के नाम से जाना जाता है, जसिका बीज सबसे छोटा होता है, फरि भी इसके रासायनकि संघटक वार्षकि सरसों के समान ही होते हैं और इसका उपयोग सामान्य जड़ी-बूटी वाली सरसों के समान ही उद्देश्यों के लिए कयिा जाता है; उत्तरी अमेरकिा में, लकड़ीदार बारहमासी सरसों फाइटोलैका को 'जंगल की सरसों' कहा जाता है… जब यहूदी कसिी बहुत छोटी चीज़ का वर्णन करना चाहते थे, तो वे कहते थे कि वह सरसों के दाने के आकार की है। उपरोक्त संक्षपि्त दृष्टांत के माध्यम से, प्रभु ने सुसमाचार के संदेश के प्रसार को दर्शाया। यद्यपि उनके शषि्य सभी से कमजोर और सबसे नम्र थे, परन्तु उनमें छपिी हुई शक्ति इतनी महान थी कि उनका संदेश पूरे ब्रह्मांड में फैल गया। और मसीह की कलीसयिा, जो शुरू में छोटी और संसार की नज़रों से ओझल थी, पृथ्वी पर इतनी फैल गई है कि कई राष्ट्र, सरसों के पेड़ की टहनयिों पर बैठे पक्षयिों की तरह, उसकी छत्रछाया में शरण लेते हैं। मानव आत्मा के भीतर परमेश्वर के राज्य के लिए भी यही सच है: परमेश्वर की कृपा की श्वास, जो शुरू में मुश्कलि से ही महसूस होती है, एक व्यक्ति की लगन के माध्यम से, उनकी आत्मा को धीरे-धीरे घेर लेती है, जो तब परमेश्वर का मंदरि बन जाती है, अनेक गुणों का भंडार…

हे ईसाइयों, देखो, संत मरियम मग्दलीनी, मरि्रा-वाहकि और प्रेरतिों के समान की जीवन की सबसे महत्वपूर्ण वशिेषताएँ, जो कसिी भी संदेह से परे हैं, क्योंकि वे पवत्रि सुसमाचार में स्वयं परमेश्वर के वचन द्वारा प्रमाणति हैं। – तो फरि, चर्च द्वारा उन्हें संरक्षति और प्रस्तुत क्यों कयिा जाता है, और उन्हें क्यों पढ़ा जाता है? – क्या यह संत मरियम मग्दलीनी की महमिा के लिए नहीं है? – ओह नहीं! संतों को, जो स्वर्गीय महमिा में, परमेश्वर की उत्कृष्ट और शाश्वत महमिा में नविास करते हैं, सांसारकि महमिा, मनुष्यों द्वारा प्रदान की गई तुच्छ महमिा की कोई आवश्यकता नहीं है। लेकनि उनके सांसारकि जीवन, उनके कर्मों और गुणों की इस स्मृति के माध्यम से, हमें स्वयं परमेश्वर को प्रसन्न करने वाला जीवन जीने और आत्मा को बचाने वाले कर्म करने के लिए शकि्षा और प्रोत्साहन मलिता है। मसीह के प्रेरति, संत पौलुस के माध्यम से, प्रभु हमें आज्ञा देते हैं:

'अपने अगुवों को याद करो, जनि्होंने तुमको परमेश्वर का वचन सुनाया; और उनके जीवन के परणिाम पर ध्यान देकर, उनके वशि्वास का अनुकरण करो' (इब्रानयिों 13:7)।

और इस प्रकार मसीह की पवत्रि कलीसयिा हमारे लिए पवत्रि लोगों के जीवन के वृत्तांतों को संरक्षति रखती है और हमारे ध्यान में लाती है, ताकि हम आत्म-परीक्षण, आत्म-सुधार और इन परमेश्वर के संतों के वशि्वास और आत्मा का अनुकरण करके मोक्ष प्राप्त कर सकें, ताकि हम सुस्त न हो जाएँ, बल्कि उन लोगों का अनुकरण करें जो वशि्वास और धीरज के द्वारा, परमेश्वर के वचनों के वारसि होते हैं... (इब्रानयिों 6:12) – संत मरियम मग्दलीनी, मरि्रा-वाहक और प्रेरतिों के समान, ने उद्धारकर्ता मसीह की पहली और सबसे महत्वपूर्ण आज्ञा का नश्वि ार्थ रूप से पालन कयिा: 'प्रभु से अपने पूरे हृदय, अपनी पूरी आत्मा, अपने पूरे मन और अपनी सारी शक्ति से प्रेम करना' (मरकुस 12:30-31; मत्ती 22:37–40)। हर परस्थितिि में प्रभु के प्रति ऐसे सच्चे और सर्व-समावेशी प्रेम का संत मरियम मग्दलनिी का प्रदर्शन, हमारे उद्धारकर्ता ईश्वर के प्रति हर ईसाई के प्रेम के लिए एक जीवंत उदाहरण है। और संत मरियम मग्दलीना के उदाहरण का अनुसरण करते हुए, हम सभी ईसाइयों में ईश्वर के प्रति आत्म-बलदिानी प्रेम होना चाहिए और उसका प्रदर्शन करना चाहिए; अपने पूरे हृदय, अपनी सभी इच्छाओं, आकांक्षाओं और अपनी आत्मा की शक्ति के साथ, और अपने पूरे मन और अपनी सभी बौद्धकि शक्तियों के साथ, हमें अपने उद्धारकर्ता प्रभु से पूर्ण रूप से चपिके रहना चाहिए। ईश्वर के प्रति हमारे प्रेम की शक्ति ऐसी होनी चाहिए कि कोई भी और कुछ भी हमें इस प्रेम से अलग न कर सके: *'न जीवन, न मृत्यु, न ऊँचाई, न गहराई, न कोई प्राणी, न स्वर्गदूत, न अधकिार, न शक्तियाँ, न वर्तमान, न भवषि्य'* (रोमयिों 8:38-39)।

पवत्रि सुसमाचारों द्वारा वर्णति जी उठे मसीहा उद्धारकर्ता के दर्शनों, और इन दर्शनों से प्रेरति संत मरियम मग्दलनिा की पुनरुत्थान पर उत्साही उपदेशों के बाद, नए नयिम की बची हुई पुस्तकें संत मरियम मग्दलनिा, जो प्रेरतिों के समान हैं, की गतविधियिों के बारे में कोई और ववरिण प्रदान नहीं करतीं; उनके बाद के जीवन के बारे में जानकारी अब परंपरा का वषिय है[5284] . उनके बाद के जीवन से संबंधति परंपराएँ, जैसा कि कई स्थानीय ईसाई चर्चों द्वारा वर्णति हैं, उस क्षेत्र के आधार पर बहुत भनि्न होती हैं जहाँ से वे उत्पन्न होती हैं; हालाँकि, सार में, ये परंपराएँ हर जगह संत मरियम मग्दलीना की उत्साही, 'प्रेरतिों के समान' सेवा का प्रमाण देती हैं। और इन परंपराओं के बीच का अंतर इस बात पर नरि्भर करता है कि ये चर्च सुसमाचारों की पवत्रि महलिाओं में से कसिे संत मरियम मग्दलनिी, प्रेरतिों के समान, के नाम से संदर्भति करते हैं? पश्चमि के कुछ ईसाई चर्च, साथ ही चर्च फादर्स और वद्विान धर्मशास्त्री, सुसमाचारों की इन तीन महलिाओं को एक या दो अलग-अलग व्यक्तियिों के रूप में पहचानते हैं: वह पापी जो शमिोन फरीसी के घर में पश्चाताप करती थी, ने मसीहा यीशु के पैरों को अपने आँसुओं से धोया, उन्हें अपने बालों से पोंछा, और उन्हें कीमती इत्र से अभषिेक

[5284] 'परंपरा' शब्द का अर्थ है एक कहानी, एक वृत्तांत, या कसिी घटना की स्मृति जो पूर्वजों से वंशजों तक मौखकि रूप से चली आई हो; यह एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को दए गए सद्धिांतों, नरि्देशों और जीवन जीने के नयिमों को भी संदर्भति करता है - प्राचीनता की आवाज़, पुरानी परंपराएँ। - लपियिों और फरीसयिों ने यीशु से कहा: *'तेरे चेले बड़ों की रीति क्यों तोड़ते हैं?'* (मत्ती 15:2)। – *'इसलयि हे भातयिो, दृढ़ हो जाओ और उन परम्पराओं को दृढ़ता से थामे रहो, जो तुम्हें मुंह से या हमारे पत्र से सखिाई गई हैं,'* – प्रेरति पौलुस आज्ञा देते हैं (2 थस्सि. 2:15)। और परंपरा, जैसा कि मॉस्को के संत फलिारेट सखिाते हैं, पवत्रि धर्मग्रंथ के समकक्ष केवल तभी उपयोग की जा सकती है, जब प्रेरतिों के तत्काल शष्यिों की तरह, हमारे सामने प्रत्यक्ष, सच्ची प्रेरति परंपरा हो... लेकनि ईसाई परंपराएं पहले ही कई देशों, लोगों, भाषाओं और कई शताब्दयिों से गुजर चुकी हैं। मूल प्रेरति परंपराओं में वभिनि्न प्राचीनता की स्तरों वाली पतिृसत्तात्मक परंपराएँ जुड़ गईं, जसिके परणिामस्वरूप एक ऐसी ववधिता उत्पन्न हुई जो वरिोधाभास के कगार पर थी। इसलिए, परंपरा को एक स्रोत के रूप में उपयोग करने के लिए, इन परंपराओं की प्रामाणकिता और योग्यता की जाँच करना आवश्यक है, ताकि उनसे त्रुटपिूर्ण परविर्तनों और वदिेशी मश्रिणों को हटाया जा सके... और ऑर्थोडॉक्स चर्च परंपरा को एक स्वतंत्र स्रोत के रूप में नहीं, बल्कि ईसाई सद्धिांत के एक पूरक स्रोत के रूप में मानती है।

कयिा (लूका 7:37–38; मरकुस 14:1–72; मत्ती 26:1–75), – और बेथनी की मरयिम, लाजरुस की बहन (लूका 10:39; यूहन्ना 11:28), – और मरयिम मग्दलीनी, जसि उद्धारकर्ता मसीह ने सात दुष्टात्माओं से मुक्ति दिलाई थी[5285] (यूहन्ना 11:1–57, 12:1–50, 19:1–42, 20:1–31; मरकुस 16:3; मत्ती 27:7)। हालांकि, पूर्वी यूनानी-रूसी ऑर्थोडॉक्स चर्च अब, अतीत की तरह ही, इन तीनों व्यक्तियों को—जिन्हें सुसमाचारों में विभिन्न विशिष्ट विशेषताओं के साथ उल्लेख कयिा गया है—अलग और पृथक व्यक्तियों के रूप में पहचानती है, और मनमाने, केवल संभावित व्याख्याओं पर ऐतिहासिक विवरणों को आधारित करने से इनकार करती है। परिणामस्वरूप, पूर्वी यूनानी-रूसी ऑर्थोडॉक्स चर्च की परंपरा बताती है कि, पुनरुत्थित मसीह के प्रकट होने के सुसमाचार के वृत्तांतों के अनुसार, उनके स्वर्गारोहण से पहले और बाद में, संत मरयिम मग्दलिनी, जो प्रेरितों के समान हैं, परम पवित्र थिओटोकोस और प्रेरितों के साथ रहीं और उन्होंने प्रारंभ में यरूशलेम में ईसाई धर्म को फैलाने की शुरुआती सफलताओं में एक सक्रिय सहकर्मी के रूप में काम कयिा। हालाँकि, परमेश्वर के सुसमाचार के प्रति उत्साह, दृढ़ विश्वास और गहरे प्रेम से परिपूर्ण होकर, उन्होंने बाद में अन्य देशों में भी उपदेश दिया, और हर जगह उन सभी के लिए स्वर्गीय अनुग्रह, आनंद और मोक्ष की घोषणा की जो संसार के जी उठे उद्धारकर्ता मसीह में विश्वास करते थे।

इटली[5286] सहित अन्य स्थानों की यात्रा करने के बाद, प्रेरितों के समान संत मरयिम मग्दलीना ने तत्कालीन शासक सम्राट टबिरियस प्रथम[5287] के समक्ष उपस्थिति होने का अवसर तलाशा और, पूर्वी परंपरा के अनुसार, उन्हें एक लाल रंग का अंडा भेंट कयिा, यह कहते हुए:

'मसीह जी उठे हैं!'

सम्राट संत मरयिम मग्दलीन की विनिम्र भेंट से आश्चर्यचकित नहीं हुए, क्योंकि वह पहली बार उनके सामने प्रकट हुई थीं, क्योंकि वह इस प्राचीन रीति-रिवाज़ से अवगत थे, कि पूर्व में आम तौर पर, और यहूदियों के बीच भी, जब पहली बार वरिष्ठों के सामने, या किसी औपचारिक अवसर पर परिचितों या संरक्षकों के सामने उपस्थिति होते थे, तो

[5285] कुछ चर्च फादर्स और विद्वान मानते और सिखाते हैं कि, ऊपर उल्लेखित तीन महिलाओं के अपने सभी विवरणों में, पवित्र सुसमाचार लेखक एक ही व्यक्ति का उल्लेख करते हैं, जो अपनी जवानी में शायद व्यभिचार में लिप्त थी और, अपनी अनैतिक जीवन शैली के कारण, सात दुष्टात्माओं द्वारा ग्रस्त हो गई थी। मसीह के चमत्कारों के बारे में सुनकर, वह सिमोन फरीसी के घर उनके पास गई: अपने पापों के लिए उसके पश्चाताप की ईमानदारी के कारण, वह उद्धारकर्ता से क्षमा पाने की पात्र बनी और उसे क्षमा प्राप्त हुई, और परिणामस्वरूप उसे उन सात दुष्ट आत्माओं से मुक्ति मिली जो उसे पीड़ित कर रही थीं; तब वह अपने रिश्तेदारों, लाजर और मार्था के साथ गलील छोड़कर बेथनी को अपना घर बनाने में सक्षम हुई, जहाँ यीशु अक्सर अपने दौरे से उनके घर को सम्मानित करते थे। उदाहरण के लिए, यह दृष्टिकोण अलेक्ज़ेंड्रिया के क्लेमेंट, संत ऑगस्टीन, संत ग्रेगरी द ग्रेट और अन्य लोगों का था। वर्तमान दिन तक पश्चिमी रोमन कैथोलिक चर्च का यही दृष्टिकोण रहा है। हालाँकि, अब अधिकांश आधुनिक पश्चिमी विद्वान मरयिम मग्दलिनी को लाजरुस की बहन मरयिम से अलग मानते हैं। वे कहते हैं कि मरयिम मग्दलीना ने उद्धारकर्ता को उनके जीवन के अंतिम वर्षों के दौरान कभी नहीं छोड़ा और जब वह अंतिम यहूदी पासओवर के लिए यरूशलेम गए तो वह गलील से यरूशलेम तक उनका अनुसरण करती रहीं, जबकि लाजरुस की बहन, मरयिम, उस समय अपने भाई और मार्था के साथ बेथनी में रहीं, क्योंकि उस समय यीशु का अनुसरण करने वाली और यरूशलेम में उनके साथ पहुँचने वाली महिलाओं की सूची बनाते समय सुसमाचार लेखकों में से कोई भी उनका नाम नहीं लेता है। वास्तव में, इन दो धर्मनिष्ठ महिलाओं को पवित्र धर्मग्रंथ में पूरी तरह से अलग-अलग विशेषताओं वाली के रूप में प्रस्तुत कयिा गया है: एक को हमेशा मरयिम मग्दलिनी के रूप में संदर्भित कयिा जाता है और उसे उन महिलाओं में गिना जाता है जो गलील से मसीह का अनुसरण करती थीं; दूसरी, इसके विपरीत, बेथनी के लाजरूस की बहन के रूप में जानी जाती है। उनके संबंधित उपाधियों में इस तरह का सुसंगत अंतर पवित्र सुसमाचार लेखकों के लिए महत्वहीन नहीं हो सकता था और यह अनिवार्य रूप से इस निष्कर्ष पर ले जाता है कि उन्हें भ्रमित नहीं कयिा जाना चाहिए। संत आइरेनियस, प्रसिद्ध ओरिजन, संत जॉन क्रिसोस्टोम और कई अन्य चर्च फादर्स और विद्वान संत मरयिम मग्दलिनी को लाजरस की बहन संत मरयिम से अलग मानते हैं, लेकिन वे संत लूकस द्वारा सातवें अध्याय के अंत में उल्लेखित पश्चातापी पापिन को संत मग्दलिनी के रूप में एक ही व्यक्ति के रूप में पहचानते हैं। फिर भी, यह दृष्टिकोण भी किसी सकारात्मक सबूत से प्रमाणित नहीं है... संत ग्रेगरी द ग्रेट और पवित्र धर्मग्रंथ के कुछ अन्य व्याख्याकार, जो संत मरयिम मग्दलीना की पहचान सिमोन फरीसी (नाइन में) के घर में पश्चाताप करने वाली पापी के रूप में करते हैं, मसीह द्वारा मरयिम मग्दलिनी से निकाले गए 'सात दुष्टात्माओं' की व्याख्या विभिन्न पापों के रूप में करते हैं, जो उसने अपने दुष्ट जीवन के माध्यम से संचित किए थे और जिन्हें उद्धारकर्ता के सामने पश्चाताप करने के बाद कथित तौर पर उससे निकाल दिया गया था। लेकिन पवित्र सुसमाचार के शब्दों की ऐसी व्याख्या पूरी तरह से मनमाना है और उस सामान्य अर्थ का खंडन करती है जिसमें इन अभिव्यक्तियों का सुसमाचार में उपयोग कयिा जाता है, जहाँ इन्हें हमेशा सीधे और स्पष्ट रूप से किसी व्यक्ति पर अशुद्ध आत्माओं के अधिकार के संदर्भ में समझा जाता है, जो ईश्वर की अनुमति से, दुर्भाग्यशाली लोगों के शरीरों पर आक्रमण करती थीं—केवल एक ही नहीं, बल्कि एक पूरी सेना भी। पवित्र शास्त्र के कई बाद के पश्चिमी व्याख्याकार, पूर्वी ऑर्थोडॉक्स चर्च के साथ सहमति में, सुसमाचार लेखकों लूका और मरकुस के शब्दों को सात दुष्टात्माओं को निकालने के संबंध में शाब्दिक रूप से लेते हैं।

[5286] इटली (प्रेरितों के काम 18:1–28, 27:28; इब्रानियों 13:1–25) – रोम की राजधानी वाला एक प्रसिद्ध यूरोपीय देश।

[5287] टबिरियस सीज़र – ईस्वी 14 से 37 तक का रोमन सम्राट।

सम्मान के प्रतीक के रूप में एक उपहार देना प्रथा थी, जो किसी प्रसिद्ध या विशेष, प्रतीकात्मक महत्व को दर्शाता हो। इसके उदाहरण यहूदी पुराने नियम के इतिहास में मिलते हैं[5288] (उत्पत्ति 43:11; 1 राजा 10:2), और साथ ही धनी मगों[5289] द्वारा यहूदिया के बेथलहम में नवजात यीशु मसीह को दिए गए उपहारों में भी[5290] । जहाँ तक गरीबों का सवाल है, वे ऐसी परिस्थितियों में उपहार के रूप में विभिन्न स्थानीय फल या पक्षियों के अंडे देते थे। इस प्रकार, आंशिक रूप से इस प्राचीन रीति का पालन करते हुए और प्रस्तुत अंडे के लाल रंग तथा पहले कभी न सुने गए शब्दों 'मसीह जी उठे हैं!' के माध्यम से संदेहवादी सम्राट टिबेरियस की जिज्ञासा जगाने के उद्देश्य से, — संदेहवादी सम्राट टिबेरियस की जिज्ञासा जगाने के लिए, संत मरियम मग्दलीना, जो प्रेरितों के समान हैं, ने अपनी भेंट के महत्व को समझाते हुए पुनरुत्थान और उद्धारकर्ता मसीह की शिक्षाओं पर अपना उत्कट उपदेश शुरू किया। उन्होंने बड़े उत्साह और दृढ़ विश्वास के साथ सम्राट को यीशु मसीह के जीवन, चमत्कारों, सूली पर चढ़ाए जाने और पुनरुत्थान के बारे में बताया, और एक सीधे-सादे तरीके से, यरूशलेम के संहिद्रिन के कटु सदस्यों द्वारा यीशु मसीह के अत्यंत अन्यायपूर्ण और पक्षपातपूर्ण मुकदमे[5291] और यहूदिया के कायर रोमन गवर्नर, पोंटियस पिलातस की मिलीभगत[5292] के बारे में एक सीधे, टिबेरियस ने उन्हें मुकदमे में पेश किया, जिसके परिणामस्वरूप पिलातुस को उसके अधिकार से वंचित कर दिया गया और गॉल के वियेन शहर में निर्वासित कर दिया गया[5293] , जहाँ, एक वृत्तांत के अनुसार, पश्चाताप और निराशा से अभिभूत होकर, उसने अपनी जान ले ली। एक अन्य परंपरा के अनुसार, अदालत द्वारा मृत्युदंड की सजा पाए जाने के बाद, पिलातुस ने पश्चाताप किया, प्रार्थना में मसीह की ओर मुड़ा, और उद्धारकर्ता द्वारा क्षमा कर दिया गया; इसके संकेत के रूप में, उसका सिर कट जाने के बाद, उसे एक देवदूत द्वारा प्राप्त किया गया था[5294] ।

परंपरा के अनुसार, लाजरस की बहनें, मार्था और मैरी, संत मैरी मैग्डलीन, जो प्रेरितों के बराबर मानी जाती हैं, के साथ इटली के लिए रवाना हुईं[5295] ; और पिलातुस ने जब यह जाना और इस बात से डर गया कि ईसाई उसके अवैध कार्यों

[5288] प्राचीन और आधुनिक पूर्व में भी, किसी शासक के अधीनस्थों—या, अधिक सामान्य रूप से, निम्न पद वालों का उच्च पद वालों के पास उपहार दिए बिना जाना असभ्य और अपमानजनक भी माना जाता है। इस प्रकार, उदाहरण के लिए, कहा जाता है कि जब शाऊल को चुना गया, तो केवल 'निष्फल लोगों ने उसकी निंदा की और उसके पास उपहार नहीं लाए…' (1 शमूएल 10:27)।

[5289] 'मगी' फ़ारसी मूल का एक शब्द है, और मगि बुद्धिमान पुरुष थे जिनके पास गहरा, व्यापक और यहां तक कि गुप्त ज्ञान था, विशेष रूप से खगोल विज्ञान और चिकित्सा के क्षेत्रों में। उन्हें बहुत सम्मान दिया जाता था और वे, ज़्यादातर, धार्मिक मंत्री या पुरोहित थे।

[5290] यहूदिया का बेतलेहेम यरूशलेम से लगभग 10 वर्स्ट (लगभग 10 किलोमीटर) दक्षिण में स्थित एक छोटा सा शहर था। बेतलेहेम शब्द का अर्थ 'रोटी का घर' है, यह नाम इस स्थान को आसपास की मिट्टी की असाधारण उपजाऊता के कारण दिया गया था। प्राचीन काल में इसे बेथलहम एप्रथ कहा जाता था, और गलील के बेथलहम से अलग करने के लिए, इसे 'यहूदी' कहा जाता था; इसके अलावा, चूँकि यह नबी राजा दाऊद का जन्मस्थान था, इसे 'दाऊद का नगर' भी कहा जाता था (लूका 2:4)।

[5291] यरूशलेम का महासभा यहूदियों की सर्वोच्च न्यायालय थी; यह 72 सदस्यों से मिलकर बनी थी, जिनमें मुख्य रूप से फरीसी और सदूकी थे, जिन्हें हाथ उठाकर और आंशिक रूप से लॉटरी द्वारा चुना जाता था। सन्हेड्रिन यरूशलेम के मंदिर में मिलता था, लेकिन विशेष अवसरों पर इसके अध्यक्ष, महापुजारी के घर में भी मिलता था (मत्ती 26:3; यूहन्ना 18:24)। हर कोई सन्हेड्रिन के फैसलों का बिना शर्त पालन करने के लिए बाध्य था। यहूदिया पर रोमन विजय के बाद, सनेद्रीन का अधिकार कम कर दिया गया, और इसके द्वारा सुनाए गए मृत्युदंडों के निष्पादन के लिए रोमन गवर्नर की सहमति आवश्यक हो गई। यरूशलेम के विनाश के बाद, सनेद्रीन एक न्यायालय होना बंद हो गया और केवल यहूदी कानून का एक स्कूल बन गया।

[5292] पिलातुस को इटली के दलदली प्रांत पोंटस के नाम पर पोंटियस कहा जाता है, जहाँ वह पहले राज्यपाल रह चुके थे। ईस्वी सन् 27 से, पिलातुस यहूदिया का राज्यपाल था, लेकिन वह यहूदियों की स्वतंत्रता, रीति-रिवाजों और धर्म से घृणा करता था; वह न्याय को विकृत करने में संकोच नहीं करता था और उसने निर्दोष लोगों को बिना मुकदमे के यातना और मृत्यु के अधीन किया, यही कारण है कि उसका दस साल का शासन यहूदियों के बीच अत्यधिक अलोकप्रिय था और इसने लोकप्रिय विद्रोह को भड़काया; एक अवसर पर उसने यरूशलेम के मंदिर में ही, जब बलिदान चढ़ाए जा रहे थे, तो गैलीलियों की एक पूरी भीड़ को मार डालने में संकोच नहीं किया, ताकि उनका खून उनके बलिदानों के साथ मिल गया (लूका 13:1)।

[5293] गाल, गाल्स या फ्रैंक्स की भूमि थी, जिसे रोमनों ने जीता था; यह आधुनिक फ्रांस है। रोन नदी पर स्थित वियेन शहर, मार्सेई शहर के रास्ते में, आज के फ्रांस में इसेरे विभाग का प्रान्तीय शहर है। परंपरा के अनुसार, लाजरस और उसकी बहनों मार्था और मरियम को यहूदियों ने एक नाव में बिठाकर लहरों और हवा की दया पर समुद्र में छोड़ दिया। यह नाव दक्षिणी गॉल के तट पर आ लगी, और उस पर आए लोगों ने मार्सेई, एक्स और अन्य शहरों के निवासियों को ईसाई धर्म में परिवर्तित कर दिया।

[5294] यह 'पिलात की टिबेरियस सीज़र को पत्र' के एक संस्करण में दर्ज है, जो अपोक्रीफल, तथाकथित का हिस्सा है सुसमाचार निकोदेमस का हिस्सा है, जिसमें यह अतिरिक्त जानकारी दी गई है कि, यीशु मसीह को दोषी ठहराने के लिए पिलातुस का सिर कलम कर दिए जाने के बाद, महायाजक अन्नास को एक बैल की खाल में सिलकर लटका दिया गया, जबकि कैफाफ को दिल में तीर मारकर हत्या कर दी गई…

[5295] मार्था और मरियम दो बहनें थीं जो अपने अविवाहित भाई लाजरस के साथ बेथनी में जैतून के पहाड़ की तलहटी में रहती थीं। यह एक धार्मिक परिवार था जिसके साथ उद्धारकर्ता मसीह के मैत्रीपूर्ण संबंध थे, और वे यरूशलेम की यात्रा के दौरान अक्सर उनके घर विश्राम करने के लिए

का खुलासा कर सकते हैं, तो उसने स्वयं यीशु मसीह के बारे में सम्राट टबिेरियस को एक रपिोर्ट भेजी[5296] , जसिमें उसने मसीह के सदाचारी जीवन, सभी प्रकार की बीमारियों और कमजोरियों को ठीक करने, यहाँ तक कि मृतकों को जीवति करने, और उनके अन्य महान चमत्कारों की गवाही दी। पलितुस ने कहा कि यहूदयिों के आरोपों की जाँच करने पर, उसे यीशु मसीह में कोई दोष नहीं मलिा; उसने वद्रिोही यहूदयिों के हाथों से उनकी रक्षा के लिए हर संभव प्रयास कयिा, लेकनि वह उनकी रहिाई सुनश्चिति नहीं कर सका और लोगों के शोर-शराबे और यहूदयिों के इस आरोप के कारण कि पलितुस स्वयं एक वद्रिोही था, यीशु को उनकी इच्छा पर छोड़ दयिा... और यहूदयिों द्वारा यीशु को सूली पर चढ़ाने के बाद, प्रकृति में भयानक संकेत हुए, और जब यीशु तीसरे दनि जी उठे, तो बहुत से मरे हुए जीवति हो उठे; और पलितुस, एक महान भय से ग्रस्त गवाह के रूप में, ने सर्वशक्तमिान सीज़र को वह सब कुछ बताया जो यीशु मसीह के साथ कयिा गया था, जो परमेश्वर के रूप में वश्विास का वषिय बन गए[5297] :

यहूदयिा के रोमन राज्यपाल और उद्धारकर्ता मसीह के अनुयाययिों से इस तरह की गवाहयिों के बाद, परंपरा के अनुसार, सम्राट टबिेरियस, स्वयं उद्धारकर्ता मसीह में वश्विास करने लगे, और उन्होंने प्रस्ताव रखा कि यीशु मसीह को रोमन देवताओं में गनिा जाए; और यहाँ तक कि जब रोमन सीनेट[5298] ने उनके प्रस्ताव को खारजि कर दयिा, तब भी, टबिेरियस ने शाही फरमान द्वारा, यीशु मसीह में वश्विास करने वालों का अपमान करने की हम्मित करने वाले कसिी भी व्यक्ति को दंडति करने की धमकी दी।

इस प्रकार, मसीहा के उद्धारकर्ता की अपनी उत्साही और नडिर उपदेश के माध्यम से, संत मरयिम मग्दलीना, जो प्रेरतिों के समान हैं, ने अन्य धर्मनष्ठि ईसाइयों के साथ मलिकर यहूदयिा के मूर्तपिूजक शासक को भी तब के सार्वभौमकि मूर्तपिूजक जगत और स्वयं मूर्तपिूजक सम्राट के समक्ष मसीहा के पुनरुत्थान की सार्वभौमकि घटना की लखिति गवाही देने के लिए प्रेरति कयिा, जो उस समय सार्वभौमकि रोमन साम्राज्य को उद्धारकर्ता मसीह की महानता और दैवीय शक्ति को स्वीकार करने के लिए प्रेरति कयिा, जसिसे इस प्रकार ईसाई धर्म के प्रसार को सुगम बनाया गया।

उस समय के ईसाइयों ने, सम्राट टबिेरियस को 'मसीह जी उठे हैं!' शब्दों के साथ एक लाल अंडा भेंट करने के सेंट मेरी मैग्डलीन के प्रभाव के महत्व और शक्ति को समझते हुए, इस बात की नकल करना शुरू कर दयिा और मसीह के पुनरुत्थान की याद में, लाल अंडे देने और कहने लगे:

– मसीह जी उठे हैं! ... वे सचमुच जी उठे हैं! ...

इस प्रकार, धीरे-धीरे यह प्रथा दूर-दूर तक फैल गई, और यह दुनयिा भर के ईसाइयों के बीच सार्वभौमकि हो गई[5299] । और अंडा मसीह के पुनरुत्थान, मृतकों के पुनरुत्थान, और आने वाले जीवन में हमारे पुनर्जन्म का प्रतीक, या

रुकते थे (लूका 10:1–42; यूहन्ना 11:1–57, 12:1–50; मत्ती 26:1–75; मरकुस 14:1–72)। जब लाजरुस की मृत्यु हो गई, तो उद्धारकर्ता मसीह ने चौथे दनि उन्हें मृतकों में से जलिाया, जसिसे मृत्यु पर उनकी पूर्ण शक्ति का प्रदर्शन हुआ, जसिके बाद सनाहेड्रनि के सदस्यों ने लाजरुस को भी मारने का संकल्प लयिा। लेकनि परंपरा के अनुसार, वह और 30 साल जीवति रहे और साइप्रस द्वीप पर एक बशिप के रूप में सेवा की, जहाँ उनका नधिन भी हुआ। चर्च द्वारा 17 अक्टूबर को उनकी स्मृति मनाई जाती है।

[5296] 'द एसेन्शन, या टबिेरियस सीज़र को पलितुस का पत्र' शीर्षक के तहत, यह वृत्तांत तथाकथति 'गॉस्पेल ऑफ नकिोडेमस' के स्लावोनकि संस्करणों में इस सुसमाचार के पहले भाग के ठीक बाद आता है और इसका समापन करता है; लेकनि, इसके अलावा, यह पांडुलपियिों में नकिोदेमस के सुसमाचार से भी अधकि बार एक अलग और अधकि वस्तिृत ग्रंथ के रूप में मलिता है; यह ववरिण 'द पैशन ऑफ़ क्राइस्ट' या 'द पैशन ऑफ़ द लॉर्ड' के रूप में जानी जाने वाली पुस्तक में भी पूरी तरह से शामलि है, जो कई प्रतयिों में व्यापक रूप से प्रचलति है और इसमें चत्रिति छवयिां हैं...

[5297] मसीहा उद्धारकर्ता के चमत्कारों, मृत्यु और पुनरुत्थान के संबंध में पलितुस का सम्राट टबिेरियस को लखिा पत्र नर्विवाद है और इसकी पुष्टि सबसे प्राचीन लेखकों, जैसे कि जस्टनि द फलिॉसफर, जो प्रारंभकि दूसरी शताब्दी के एक लंबे समय तक मूर्तपिूजक रहे; टर्टुलयिन, जो दूसरी शताब्दी के एक रोमन कानूनी सलाहकार थे; और पम्फलियिा के इतहिासकार यूसेबयिस ने की है; जन्हिें राजकीय मामलों के अभलिेखागार तक पहुंच थी।

[5298] रोमन सीनेट को रोमulus, जो रोमन राज्य के संस्थापक थे, द्वारा स्थापति माना जाता था। सीनेट को लोगों की बुद्धमित्ता का मूर्त रूप और राज्य की परंपराओं का संरक्षक माना जाता था; यह राजा पर नर्भिर थी, क्योंकि सेनेटर्स राजा द्वारा नयिुक्त कए जाते थे। रोमन इतहिास के गणराज्य और राजशाही काल के दौरान लोगों के हर फैसले के लिए सीनेट द्वारा आधकिारकि पुष्टि की आवश्यकता होती थी, जो उस नर्णिय के राज्य के मौलकि धार्मकि और राजनीतकि सद्धिांतों के अनुरूप होने की पुष्टि करती थी।

[5299] कि यह रविाज़ संत मेरी मैग्डलीन, जो प्रेरतिों के समान थीं, द्वारा टबिेरियस को दी गई भेंट से अपनाया गया था, इसकी पुष्टि न केवल सभी ईसाई चर्चों में इस परंपरा की एकरूपता से होती है, बल्कि इस तथ्य से भी होती है उदाहरण के लिए, थ्रेसैलॉनीकी के पास सेंट अनास्तासयिा मठ की पुस्तकालय में संरक्षति, पार्चमेंट पर लखिे एक प्राचीन हस्तलखिति ग्रीक नयिम में, ईस्टर रवविार की प्रार्थनाओं के बाद यह लखिा है:

एक दृश्यमान संकेत के रूप में कार्य करता है, जिसका हमें मसीह के पुनरुत्थान में वादा मिला है। जिस प्रकार एक चूजा अंडे से निकलकर अपने खोल से मुक्त होकर एक पूर्ण जीवन जीना शुरू करता है, और उसके सामने जीवन का विशालतम चक्र खुल जाता है, – उसी प्रकार, मसीह के पृथ्वी पर दूसरी बार आने पर, पृथ्वी पर अपनी सांसारिक देह के साथ सभी नश्वर चीजों को त्यागकर, हम मसीह के पुनरुत्थान की शक्ति से फिर से उठेंगे और एक अन्य, उच्च, शाश्वत और अमर जीवन में पुनर्जीवित होंगे। ईस्टर अंडे का लाल रंग हमें याद दिलाता है कि मानवता की मुक्ति और हमारे भविष्य के नए जीवन को उद्धारकर्ता मसीह के क्रूस पर बहाए गए सबसे शुद्ध रक्त द्वारा सुनिश्चित किया गया था। इस प्रकार, लाल अंडा हमारे दैवीय विश्वास के सबसे महत्वपूर्ण सिद्धांतों में से एक की याद दिलाता है।

प्रेरितों के बराबर संत मरियम मग्दलीना ने इटली और रोम शहर में[5300] , प्रेरित पौलुस की रोम की पहली यात्रा के दौरान और बाद में , दो साल बाद वहां से उनके प्रस्थान के बाद भी, जी उठे मसीह के सुसमाचार का प्रचार करना जारी रखा। परंपरा के अलावा, इसका प्रमाण प्रेरित पौलुस द्वारा रोम में निवास करने वाले मसीहियों को ग्रीक व्यापारिक शहर कोरिंथ से लिखे गए पत्र (रोमियों 16:6) में संत मरियम को दिए गए विशिष्ट अभिवादन में देखा जा सकता है। संत जॉन क्राइसोस्टोम इस विषय पर सिखाते हैं कि, प्रत्येक विश्वासी को उनकी योग्य प्रशंसा देते हुए, प्रेरित पौलुस संत मरियम, प्रेरितों के बराबर वाली, का अभिवादन करते हैं, क्योंकि उन्होंने पहले ही बहुत परिश्रम किया था और स्वयं को प्रेरितों के कार्यों के लिए समर्पित कर दिया था। प्रेरित द्वारा यहाँ उल्लेख किए गए उनके श्रम, प्रेरितों और सुसमाचार प्रचारकों के कर्म थे - और इसलिए प्रेरितों के बराबर थे; उन्होंने, सेंट क्रिसोस्टोम आगे कहते हैं, अपनी संपत्ति से भी सेवा की और निडर होकर खतरों का सामना किया तथा कठिन यात्राएँ कीं, और प्रचार में सभी प्रकार की कठिनाइयों को प्रेरितों के साथ साझा किया।

चर्च की परंपरा के अनुसार, प्रेरितों के बराबर संत मरियम मग्दलीना, रोम से एफ़िसुस शहर[5301] की यात्रा की, जो उस समय एशिया माइनर में विशेष रूप से प्रसिद्ध था। परंपरा और कई पवित्र पिताओं तथा चर्च लेखकों की गवाही के अनुसार, एफ़िसुस में, संत मरियम मग्दलिनी, जो प्रेरितों के समान थीं, ने धर्मशास्त्री, संत योहन प्रेरित और सुसमाचार लेखक, के सुसमाचार प्रचार के कार्यों में सहायता की, और अपनी शांतिपूर्ण निधन तक वहाँ रहीं, और एफ़िसुस में ही उन्हें दफ़नाया गया था।

संत मरियम मग्दलीना, जो प्रेरितों के समान हैं, की अक्षुण्ण और पूजनीय अवशेषों को नौवीं शताब्दी में सम्राट लियो VI द फिलॉसफर[5302] के शासनकाल के दौरान एफ़िसुस से कॉन्स्टेंटिनोपल में भव्यता से स्थानांतरित किया गया था, और उन्हें संत लाजरस के मठ[5303] के चर्च में रखा गया था। ऑर्थोडॉक्स पूर्वी ईसाई चर्च की यही परंपरा है।

हालाँकि, यह निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता कि संत मेरी मैग्डलीन, जो प्रेरितों के समकक्ष हैं, की अवशेषें हमेशा के लिए पूरी तरह से कॉन्स्टेंटिनोपल में ही रहीं। मुसलमानों के विजयी हमलों के डर से श्रद्धालुओं ने स्वयं उन्हें किसी अन्य स्थान पर स्थानांतरित कर दिया होगा; वे आसानी से कॉन्स्टेंटिनोपल से पश्चिम की ओर रोम ले जाए जा सकते

'अंडों और पनीर के आशीर्वाद के लिए एक प्रार्थना भी पढ़ी जाती है, और मठाधीश, भाइयों को चूमते हुए, उन्हें अंडे बांटता है और कहता है: 'मसीह जी उठे हैं'... इस प्रकार हमें यह पवित्र पिताओं से प्राप्त हुआ है, जिन्होंने प्रेरितों के समय से ही इस रीति को संरक्षित रखा, क्योंकि पवित्र मरियम मग्दलीनी, जो प्रेरितों के समान थीं, ने ही विश्वासियों के लिए इस आनंदमय भेंट का पहला उदाहरण प्रस्तुत किया..."

[5300] रोम – उस समय की महान रोमन साम्राज्य की राजधानी; टायबर नदी के तट पर स्थित एक शहर। परंपरा के अनुसार, इसकी स्थापना 750 ईसा पूर्व में रोम्युलस ने की थी। शुरुआत में यह केवल एक पहाड़ी पर बसा था, फिर सात, और बाद में पंद्रह पहाड़ियों पर फैल गया। इसकी आबादी डेढ़ मिलियन तक थी, जिनमें से आधे दास थे। यहाँ 420 मूर्तिपूजक मंदिर थे; इसके निवासी अत्यंत अंधविश्वासी और सबसे कट्टर मूर्तिपूजक थे, जबकि किला और युद्ध में वे पूरी दुनिया पर हावी थे। रोमन साम्राज्य की आबादी एक सौ मिलियन तक थी।

[5301] एफ़िसुस एशिया माइनर का सबसे प्रसिद्ध शहर था, जो कैनस्ट्रा नदी (अब कुचुक मेंडेरेस) पर स्थित था; यह व्यापार का केंद्र था और विशेष रूप से प्रसिद्ध देवी आर्टेमिस-डायना के मंदिर के लिए प्रसिद्ध था, जिसकी पूजा ख़ास तौर पर शानदार और भव्यता के साथ ख़ुसरो द्वारा की जाती थी।

[5302] लियो छठे – एक ग्रीक सम्राट (886 से 912 तक), जो विज्ञान के प्रति अपने प्रेम और ज्योतिष के ज्ञान के लिए 'द फिलॉसफर' या 'द वाइज़' के नाम से जाने जाते थे; वह पैट्रिआर्क फोटियस के शिष्य थे।

[5303] कॉन्स्टेंटिनोपल, प्राचीन बाइज़ेन्टियम—जिसे रूसी और स्लाविक भाषाओं में तारग्राद के नाम से जाना जाता है—की स्थापना 658 ईसा पूर्व में मध्य ग्रीस के व्यापारिक शहर मेगारा के ग्रीकों द्वारा जलडमरूमध्य के यूरोपीय तट पर बाइज़ेन्टियम के नाम से की गई थी। 330 ईस्वी में, कॉन्स्टेंटाइन महान ने अपनी राजधानी, साथ ही उसके चर्चों, महलों और कलाकृतियों को लेकर बिज़ान्टियम में स्थानांतरित कर दिया; उन्होंने नई राजधानी में बड़ी आबादी को आकर्षित किया और, सामान्य रूप से, इसे ग्रीको-रोमन दुनिया में नागरिक और धार्मिक जीवन का एक शक्तिशाली केंद्र बना दिया।

थे, जब इटालियनों ने चौथी धर्मयुद्ध के धर्मयोद्धाओं के साथ मलिकर 13वीं शताब्दी की शुरुआत में शहर पर नयिंत्रण कर लयिा था[5304] , क्योंकि उस समय कई दक्षणि-पूर्वी क्षेत्रों के संतों के अवशेष पश्चमिी यूरोप के वभिन्नि शहरों में ले जाए जा रहे थे और वतिरति कयि जा रहे थे।

[5305]रोमन कैथोलकि चर्च का मानना है कि संत मरयिम मैग्डलीन, जो प्रेरतिों के बराबर हैं, के अवशेष, उनके सरि को छोड़कर[5306] , रोम में, रोमन पोन्तफि्स के लैटरन महल के पास, सेंट जॉन लैटरन के मुख्य चर्च में[5307] , उस वेदी के नीचे स्थति हैं जसिे पोप[5308] होनोरयिस III[5309] ने, जन्हिोंने स्वयं वहाँ उनके अवशेषों को दफनाया था, जो संत मरयिम मैग्डलीन, प्रेरतिों के समकक्ष, के सम्मान में समर्पति थे। इसके अलावा, 1280 से, रोमन कैथोलकि चर्च ने फ्रांस के प्रोवेंस में, मार्सेई शहर के पास , में इस संत की प्रदर्शति अवशेषों—जन्हिें हस्सिों में बांटा गया था—की पूजा की है, जहाँ, ऊँची चट्टानों वाले पहाड़ों की तलहटी में एक सुनसान घाटी में, संत मरयिम मग्दलीना को समर्पति एक भव्य चर्च[5310] उन अवशेषों के ऊपर बनाया गया है।

ऑर्थोडॉक्स ग्रीक-रूसी पूर्वी ईसाई चर्च और पश्चमिी रोमन कैथोलकि चर्च, साथ ही एंग्लकिन चर्च, संत मरयिम मग्दलनिा, प्रेरतिों के समान, का पर्व 22 जुलाई को मनाते हैं; कुछ स्थानीय चर्चों में, यह सबसे पवत्रि पर्व दविस है।

संत मेरी मैग्डलीन, प्रेरतिों के बराबर मर्रिा-वाहक के बारे में अब तक यह सब कुछ ज्ञात है: वह जो नस्सिंदेह सत्य है, जैसा कि हमें पवत्रि सुसमाचारों द्वारा सौंपा गया है, और वह जो स्थानीय ईसाई चर्चों की परंपराओं के अनुसार संभावति है, जनिके लयि—वास्तव में सभी के लयि—प्रेरतिों के बराबर संत मेरी मैग्डलीन, मसीहा यीशु की सीधी आज्ञा से, मनुष्यों में पहली जन्हिोंने मसीह के उद्धारक पुनरुत्थान की घोषणा की।

[5311]चर्च की महान संत, ईज़ेकेल, सखिाती हैं, 'मसीह का पुनरुत्थान हम सभी के लयि है, चतिन, मनन, आश्चर्य, आनंद, कृतज्ञता और आशा का स्रोत, जो हमेशा पूर्ण, हमेशा नया है, चाहे हम इससे कतिनी भी पुरानी या कतिनी भी बार प्रेरणा लें; यह एक शाश्वत समाचार है!..' और क्या यह आवश्यक नहीं है कि विश्विास स्थापति कयि जाए, आशा को जगाया जाए, प्रेम को प्रज्वलति कयि जाए, बुद्धि को प्रबुद्ध कयि जाए, प्रार्थना को पंख दयि जाएँ, अनुग्रह को उतारा जाए, वपित्ति, मृत्यु और बुराई को नष्ट कयि जाए, जीवन को जीवंतता दी जाए, यह सुनश्चिति कयि जाए कि परमानंद कोई सपना नहीं बल्कि एक वास्तवकिता है, और महमिा कोई भ्रम नहीं, बल्कि शाश्वत प्रकाश की शाश्वत चमक है,

---

[5304] क्रूसेड पश्चमिी यूरोप के ईसाई लोगों द्वारा 11वीं शताब्दी के अंत से 13वीं शताब्दी के अंत तक मुसलमानों से पवत्रि सेपल्चर और फलिस्तिीन को फरि से हासलि करने के लयि कयि गए सैन्य अभयिान थे।

[5305] मार्सेई दक्षणि-पश्चमिी फ्रांस के प्राचीन, वशिाल प्रांत प्रोवेंस में एक तटीय शहर है। यह ल्योन की खाड़ी की पूर्वी खाड़ी पर स्थति है। प्राचीन काल में, मार्सेई को मैसलिीया कहा जाता था और यह एक ग्रीक गणराज्य कॉलोनी थी जसिे रोमनों ने जीत लयि था। यहाँ से, ईसाई धर्म पूरे दक्षणिी गॉल, जो अब फ्रांस है, में फैल गया।

[5306] पवत्रि चर्च में, 'अवशेष' शब्द को व्यापक अर्थ में प्रत्येक दविंगत ईसाई के शरीर के रूप में समझा जाता है। इस प्रकार, दविंगत की अंत्येष्टि की रस्म में कहा गया है: 'दविंगत के अवशेष लेकर, (उन्हें लेकर) चर्च की ओर प्रस्थान कयि जाता है'। लेकनि सख्त रूप से कहें तो, 'पवत्रि अवशेष' शब्द का अर्थ 'ईश्वर के पवत्रि संतों के पूजनीय अवशेष' से है। हालाँकि, यहाँ भी 'अवशेष' शब्द के वभिन्नि अर्थ हैं। सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण, 'अवशेष' शब्द का अर्थ पवत्रि संतों की 'हड्डयिों' से है।

[5307] रोम में लैटरन के पोप महल के पास स्थति सेंट जॉन लैटरन ('सान जयिोवानी इन लैटरानी') का प्राचीन चर्च, सम्राट कॉन्स्टेंटाइन द ग्रेट के समय से मौजूद है और इसे 'सभी चर्चों की माता और प्रमुख' कहा जाता है—बेशक, यह रोमन चर्चों के लयि है।

[5308] पोप (ग्रीक शब्द 'पिता' से) – एक उपाधि जो पाँचवीं शताब्दी के अंत तक बशिपों के लयि मानद उपाधि के रूप में प्रयुक्त होती थी, और उसके बाद मुख्यतः रोम के आर्चबशिप के लयि लागू की गई।

[5309] 13वीं सदी में पोप होनोरयिस तृतीय।

[5310] पश्चमिी ईसाइयों का यह भी मानना था कि मरयिम मग्दलनिी के पवत्रि अवशेष बर्गंडी में, वेज़ले के मठ में रखे थे, और उन्होंने उनकी वहां पूजा की जब तक कि उन्होंने अपना दृष्टकिोण दक्षणिी फ्रांस में खोजे गए अवशेषों पर नहीं बदल लयि, प्रोवेंस में, एक नश्चिति संत के अवशेष—जन्हिें प्रोवेंस की परंपरा और कुछ चर्च लेखकों द्वारा प्रस्तुत कयि गया, जन्हिोंने बेथनी की मरयिम, लाजर की बहन, और फरीसी के घर में नैन की पापी को सेंट मेरी मैग्डलीन के साथ मलिा दयि—को सेंट मेरी मैग्डलीन के पवत्रि अवशेष के रूप में माना जाता है। हालांकि, पश्चमिी रोमन कैथोलकि चर्च के ये और इसी तरह के ववरिण, जो संत मरयिम मैग्डलीन के अवशेषों के जीवन और वश्रिाम के बारे में हैं, और पश्चमिी चर्चों की इन परंपराओं में जो कुछ भी सत्य और प्रामाणकि है, वह वास्तव में सबसे अधकि संभावना है कि पवत्रि सुसमाचार में उल्लेखति मरयिम नामक अन्य संतों में से एक से संबंधति है, जनिकी गतविधियिों के बारे में मसीह के स्वर्गारोहण के बाद पूर्वी चर्च के पास कोई नश्चिति जानकारी नहीं है।

[5311] फलिारेत, मॉस्को के मेट्रोपॉलटिन के शब्द और भाषण, 1848, भाग 1, पृ. 35, 36 और 44।

जो सभी को प्रकाशित करती है और किसी को चकाचौंध नहीं करती?.. – इन सब के लिए, एक ही चमत्कारी शब्द में पर्याप्त शक्ति है: 'मसीह जी उठे हैं!'

आइए हम भी, ईसाइयों के रूप में, हमारे उद्धारकर्ता स्वयं, संत मरियम मग्दलीना, जो प्रेरितों के समान हैं, के इस महान दूत से आए इस चमत्कारी उद्घोष के प्रति उत्साह के साथ प्रतिक्रिया दें: सचमुच, सचमुच, मसीह जी उठे हैं!

ट्रोपारियन, स्वर 1:

हे सम्माननीय मरियम मग्दलीनी, आप हमारे लिए कुँवारी से जन्मे मसीह का अनुसरण करती रहीं, उनके आज्ञाओं और धार्मिकता के नियमों का पालन करते हुए: अत; आज जब हम आपकी सर्व-पवित्र स्मृति का उत्सव मनाते हैं, हम आपकी प्रार्थनाओं के द्वारा पापों की क्षमा प्राप्त करते हैं।

कॉन्टाकियन, स्वर 3:

मसीहा के महिमामय क्रूस के सामने अन्य कई लोगों के साथ खड़ी होकर, परमेश्वर की माता के प्रति सहानुभूति व्यक्त करते हुए और आँसू बहाते हुए, उसने यह स्तुति की, और कहा: 'यह एक अद्भुत चमत्कार है; आपकी इच्छा थी कि सारी सृष्टि कष्ट भोगे: महिमा हो आपकी शक्ति को।'

- उसी दिन, वर्ष 404 में, पवित्र शहीद फोकास के अवशेषों को पोंटस से कॉन्स्टेंटिनोपल में स्थानांतरित किया गया था। (उनका पर्व 22 सितंबर को मनाया जाता है

5 अगस्त

23 जुलाई (पुराना तरीका)

पुरोहित-शहीद संत अपोलिनारिस की शहादत।

23 जुलाई को स्मरण किया जाता है

सम्राट क्लॉडियस के शासनकाल में[5312] , यीशु मसीह के प्रेरित संत पतरस[5313] , अपने साथ आए कई ईसाइयों के साथ, अंतीयक से रोम आए[5314] ; यहाँ, पहले, यहूदी सिनागॉग में प्रवेश करने पर, उन्होंने खुद को एक यहूदी बताया। और उन्होंने यीशु मसीह की शिक्षा का प्रचार करना शुरू कर दिया, और भविष्यद्वाणी की पुस्तकों की गवाही से यह साबित किया कि मसीह वास्तव में परमेश्वर का पुत्र है, जो मानव जाति के उद्धार के लिए आए थे; उन्होंने प्रभु यीशु के उन सभी चमत्कारों का भी वर्णन किया जो उन्होंने इस्राएल के लोगों के बीच किए थे। जब पवित्र प्रेरित पतरस यहूदी सभा-गृह में प्रतिदिन इस प्रकार उपदेश देते थे, तो बहुत से यहूदी मसीह पर विश्वास करने लगे; और न केवल यहूदी, बल्कि बहुत से रोमी भी, प्रेरित का उपदेश सुनकर, आनन्दपूर्वक उनका वचन ग्रहण करते हुए कहते थे:

'ईश्वर ने संसार को नया करने के लिए अपने पुत्र को भेजकर मानव जाति पर दया दिखाई है।'

और, मसीह में विश्वास करने के बाद, उन्हें बपतिस्मा दिया गया। कुछ समय बाद, प्रेरित संत पतरस ने अपने शिष्य अपोलिनारिस से, जो उनके साथ अंतीयक से आए थे, इन शब्दों में कहा:

[5312] क्लाउडियस – 41 से 54 ईस्वी तक सम्राट।

[5313] संत पतरस प्रेरित का पर्व, 29 जून

[5314] रोमन साम्राज्य की राजधानी, जो मध्य इटली में टिबर नदी के मुहाने पर, इसके दोनों किनारों पर स्थित थी।

'तुम्हें परमेश्वर के पुत्र, मसीह के ज्ञान में अच्छी शिक्षा दी गई है, और तुमने उनके सभी दिव्य कार्यों को पूरी तरह से समझ लिया है। इसलिए, पवित्र आत्मा का पवित्रिकरण ग्रहण करो और रैना के घनी आबादी वाले शहर में जाओ[5315] और, कुछ भी न डरते हुए, वहाँ यीशु मसीह का नाम प्रचार करो!'

यह कहने के बाद, प्रेरित पतरस ने एक प्रार्थना की और अपोलिनारिस के सिर पर अपने हाथ रखकर, उसे रावेना शहर का बिशप नियुक्त किया।

'हमारे प्रभु यीशु मसीह तुम्हारी यात्रा में तुम्हारी रक्षा के लिए अपना स्वर्गदूत भेजें और जो कुछ भी तुम माँगो, वह तुम्हें दें।'

इन विदाई शब्दों के साथ, प्रेरित ने अपोलिनारिस को गाल पर चूमकर विदाई दी। जब वह उपर्युक्त शहर के पास पहुँचा, तो अपोलिनारिस एक सैनिक, जिसका नाम आइरेनियस था, के घर में गया, क्योंकि एक यात्री के रूप में वह विश्राम करना चाहता था। उनकी बातचीत के दौरान, पवित्र बिशप ने इस इरेनियस को अपनी पहचान बताई: कि वह कौन था, कहाँ से आया था, और वह उनके शहर में क्यों यात्रा कर रहा था; और उसने मसीह यीशु और उनकी दिव्य शक्ति के बारे में बताया। इरेनियस ने उससे कहा:

'हे पिता – अजनबी! मेरा एक अंधा पुत्र है, और यदि आपके उपदेश में शक्ति है, तो उसे चंगा कीजिए ताकि वह देख सके; तब, आपके ईश्वर में विश्वास करके, मैं उनका अनुयायी बन जाऊँगा।'

और संत ने आज्ञा दी कि अंधे आदमी को उनके पास लाया जाए; और जब उसे लाया गया, तो सारा घर इकट्ठा हो गया, यह देखने की इच्छा से कि वह अजनबी अंधे आदमी के लिए क्या करेगा। और उन्होंने अंधे आदमी की आँखों पर क्रूस का चिह्न बनाते हुए कहा:

'हे सर्वव्यापी ईश्वर! कृपा करें कि आपके पुत्र का ज्ञान इस नगर में आए, ताकि इन लोगों की न केवल शारीरिक बल्कि आध्यात्मिक आँखें भी खुल जाएँ, कि वे आपको, एकमात्र सच्चे ईश्वर को, और हमारे प्रभु यीशु मसीह को जान जाएँ, जिन्हें आपने संसार के उद्धार के लिए भेजा है (देखें यूहन्ना 17:3)।'

संत के ये शब्द कहते ही अंधे आदमी की आँखें तुरंत खुल गईं; उसने अपनी दृष्टि वापस पा ली और अपने माता-पिता के साथ, परमेश्वर के उस पुरुष के पैरों पर गिर पड़ा। इस प्रकार, पूरा परिवार मसीह में विश्वास करने लगा और रावेना से बहुत दूर नहीं बहने वाली नदी में बपतिस्मा लिया, और संत आइरेनियस के उस घर में रहने लगे।

अब नगर में एक बीमार महिला थी, जो[5316] के ट्रिब्यून की पत्नी थी, जिसका नाम थेक्ला था, जो कई वर्षों से बिस्तर पर पड़ी थी; और यद्यपि उसका विभिन्न कुशल चिकित्सकों द्वारा इलाज किया गया था, वह ठीक नहीं हो सकी। ऐसा हुआ कि नव-बपतिस्मा प्राप्त सैनिक आइरेनियस ट्रिब्यून के पास गया और, यह देखकर कि वह अपनी पत्नी की असाध्य बीमारी से बहुत परेशान था, उसने उससे इन शब्दों में कहा:

वक्ता ने पूछा: 'मेरे यहाँ एक अजनबी ठहरा हुआ है जिसने बिना किसी दवा के मेरे अंधे बेटे को ठीक कर दिया; यदि आप उसे अपने पास बुलाने का आदेश देंगे, तो वह तुरंत आपकी पत्नी को भी ठीक कर देगा।'

ट्रिब्यून ने पूछा:

'यह आदमी कहाँ से आया है?'

'रोम से,' आइरेनियस ने उत्तर दिया।

[5315] रावेना – इटली के उसी नाम के प्रांत में एक शहर। रावेना की स्थापना थेस्साली लोगों ने की थी; इसके घर खंभों पर बने थे, और नहरें आंशिक रूप से सड़कों का काम करती थीं। 254 ईसा पूर्व में, यह रोमनों के अधीन नहीं था; बाद वालों ने रावेना को स्वशासन और विभिन्न विशेषाधिकार और रियायतें प्रदान कीं। रोमन साम्राज्य के दौरान, रावेना रोमन बेड़े के प्रमुख ठिकानों में से एक था: यहाँ अगस्टस द्वारा एक बंदरगाह बनाया गया था। ईस्वी 44 से, रावेना एक बिशप का केंद्र बन गया, और ईस्वी 432 से, एक आर्चबिशप का; सम्राट होनोरियस, अलारिक से भागते हुए, ने ईस्वी 402 में रावेना को अपनी राजधानी चुना। पश्चिमी रोमन साम्राज्य के पतन के बाद, रावेना को रेगुली के राजा ओडोएसर ने जीत लिया; 493 में, एक लंबे घेराबंदी के बाद, थियोडोरिक महान ने रावेना पर नियंत्रण कर लिया। 555 से, रावेना में बाइज़ेंटाइन शासन शुरू हुआ, जो वहां लगभग दो शताब्दियों तक रहा। 752 में, यह लोम्बार्ड्स के नियंत्रण में आ गया; 754 में, पेपिन द शॉर्ट ने इसे पोप को उपहार के रूप में प्रस्तुत किया। 1275 से, रावेना कुलीन पोलेंटा परिवार की संपत्ति बन गई, जो पहले पोप के अधीनस्थ थे। 1441 में, वेनिसवासियों ने रावेना पर नियंत्रण कर लिया; 1509 में, यह उनके हाथों से निकलकर फिर से पोप के नियंत्रण में आ गया। 1860 में, रावेना को इटली के साम्राज्य में शामिल कर लिया गया। – रोम, कॉन्स्टेंटिनोपल और थेस्सालोनिकी के साथ-साथ, रावेना अपने संक्रमण काल के दौरान बाइज़ेंटाइन कला में परिवर्तित होने की अवधि की प्रारंभिक ईसाई कला के स्मारकों के लिए प्रसिद्ध है।

[5316] सैन्य कमांडर।

"तो क्या वह रोमन है?" ट्रबि्यून ने पूछा।

'मुझे नहीं पता; हालाँकि, मुझे लगता है कि वह रोमन मूल का नहीं, बल्कि यूनानी है।'

'उसे चुपके से मेरे घर ले आओ!' ट्रबि्यून ने बातचीत समाप्त करते हुए कहा।

जब संत अपोलनिारसि, आइरेनयिस के साथ रावेना शहर में प्रवेश कएि, तो उन्होंने क्रॉस का चहि्न बनाया और प्रार्थना की:

'हे ईश्वर, जनि्होंने मेरे गुरु पतरस की सहायता की, मेरी भी सहायता करो, ताकि इस नगर में आपका पवत्रि नाम महमिामय हो और आपकी इच्छा यहाँ पूरी हो!'

जब संत ट्रबि्यून के घर में प्रवेश कएि, तो ट्रबि्यून ने उनका अभविादन कयिा:

'आपके आने से अच्छा कुछ नहीं हो सकता, हे चकित्सिक! सचमुच, प्यासे के लएि ठंडे पानी से अधकि तरोताज़ा करने वाला और क्या हो सकता है?'

'उन्हें शांति मिले,' संत अपोलनिारसि ने कहा, 'और हमारे प्रभु यीशु मसीह का आशीर्वाद आप पर हो।'

'जसिका आपने नाम लयिा है, वह कौन है?' ट्रबि्यून ने पूछा।

'वह जीवति परमेश्वर का पुत्र है (देखें यूहन्ना 6:69), जसिने सारी नष्ट होने वाली दुनयिा को नया कयिा है,' अपोलनिारसि ने उत्तर दयिा।

[5317]"मुझे दखि रहा है कि आप एक ईसाई हैं," ट्रबि्यून ने कहा।

'सचमुच, ऐसा ही है,' संत ने पुष्टि की।

'क्या तुम चंगा कर सकते हो?' त्रबि्यून ने पूछा।

'नहीं,' संत ने उत्तर दयिा, 'मैं यीशु के नाम के सवि और कुछ नहीं जानता।'

'और यीशु के नाम में क्या शक्ति है?' त्रबि्यून ने कहा।

'तो फरि,' संत ने उत्तर दयिा, 'अपने अधीन सैनकिों को यहाँ बुलाओ, और सभी की आँखों के सामने तुम मेरे प्रभु यीशु मसीह की शक्ति को देखोगे!'

ट्रबि्यून ने तुरंत अपने सभी सैनकिों को बुलाने के लएि एक दूत भेजा और फरि संत की ओर मुड़कर कहा:

'मेरी पत्नी कई वर्षों से बस्तिर पर पड़ी है, और न केवल दवा उससे ठीक नहीं हो पाती, बल्कि उससे उसे और भी नुकसान पहुँचता है। तो, अगर तुममें कोई चंगा करने की शक्ति है, तो उसे उस बीमार स्त्री पर प्रकट करो!'

'हे प्रभु,' संत ने प्रार्थना की, 'तुम्हारे हृदयों की आँखें खोल दे, ताकि उसकी चमत्कारों को देखकर तुम सब उस पर वश्विास करो!'

और, बस्तिर के पास जाकर, उन्होंने उस बीमार स्त्री का हाथ पकड़ा और कहा:

'हमारे प्रभु यीशु मसीह के नाम पर, उठो और उस पर वश्विास करो, और यह मत सोचो कि कोई भी उसकी तरह है।'

और तुरंत उस महलिा ने स्वयं को स्वस्थ महसूस कयिा; वह अपने बस्तिर से उठ खड़ी हुई और जोर से घोषणा करने लगी:

'यीशु मसीह के सवि कोई और ईश्वर नहीं है, जसिकी आप प्रचार करते हैं।'

यह देखकर, ट्राइब्यून और उसके सभी सैनकि, आश्चर्य से भरकर, चल्लिा उठे:

'सचमुच, केवल यही ईश्वर ऐसे कार्य करता है! यदि हम उससे प्रेम करें, तो वह हमें युद्ध में भी मदद कर सकता है!'

और ट्रबि्यून, अपनी पत्नी, अपने बच्चों और अपने पूरे परविार के साथ, मसीह में वश्विास करने लगा; और वहाँ मौजूद कई अन्यजातयिों ने भी वश्विास कयिा और बपतस्मिा लयिा। उस समय से, संत अपोलनिारसि ने शहर में, ट्रबि्यून के घर में नविास करना शुरू कर दयिा, और हर दनि बहुत से लोग उसके पास आते थे; वह उन्हें गुप्त रूप से मसीह में वश्विास करना सखिाता और उनका बपतस्मिा कराता था; जबकि जो लोग धर्म में आ गए थे, उन्होंने अपनी शक्षिा के लएि अपने

[5317] गलील – फलिस्तिीन के उत्तर में एक क्षेत्र; यहीं प्रभु यीशु मसीह ने अपना बचपन और यौवन बतिाया; गलील ही वह स्थान था जहाँ उन्होंने अधकिांशतः उपदेश दयिा; इसीलएि प्रभु यीशु को गलीलयिाई कहा जाता था (मत्ती 26:69)। चौथी शताब्दी में, ग्रीक-रोमन सम्राट जूलयिन द एपोस्टेट की मृत्यु (363 में) मसीह को संबोधति इन शब्दों के साथ हुई: 'तुमने मुझ पर वजिय प्राप्त की, गलीलयिाई!' – इस प्रकार प्रभु यीशु के अनुयायियों को गलीलयिाई के रूप में जाना जाता था।

बच्चों को संत के हवाले कर दिया। और ईश्वर के उस पवित्र पुरुष ने ट्रबिय्यून के घर के एक कमरे को चर्च में बदल दिया, जहाँ वे धर्मविधि का अनुष्ठान करते थे और विश्वासियों को मसीह के शरीर और रक्त के दैवी रहस्यों का प्रशासना देते थे। वहाँ अपने बारह वर्षों के दौरान, उन्होंने दो पुरोहितों, एडेरेट और कैलोकर को नियुक्त किया, जबकि सबसे कुलीन वंश के मार्शियन और दार्शनिक ल्यूकेडियस को डिकन, और छह पुरुषों को क्लर्क के रूप में नियुक्त किया; और उन्होंने उनके साथ दिन-रात प्रार्थनाएँ कीं, और ईश्वर की महिमा की। हालाँकि, जब ईसाइयों की संख्या बढ़ गई, और लोगों में यीशु मसीह के नाम और शक्ति तथा उनके प्रचारक की ख्याति फैल गई, तो ईश्वर का यह पुरुष अब अज्ञात नहीं रह सकता था, और उसकी सूचना शहर के राज्यपाल, सैटरनिनस को दे दी गई।

जब उसके लिए संदेशवाहक भेजे गए और उसे राज्यपाल के सामने लाया गया, तो राज्यपाल ने उसे रावेना में कैपिटोलिन हिल के मुख्य पुरोहितों के सामने पेश किया और उनकी उपस्थिति में उससे प्रश्न किया:

'तुम कौन हो?'

'मैं एक ईसाई हूँ,' संत ने ऊँचे स्वर में स्वीकारोक्ति की।

'और मसीह कौन हैं?' राजकुमार ने पूछा।

'मसीह जीवते परमेश्वर का पुत्र है, जिसके द्वारा स्वर्ग, पृथ्वी और समुद्र में सभी चीजें संचालित होती हैं,' संत ने उत्तर दिया।

न्यायाधीश ने ज़ोर देकर पूछा, 'क्या वही आपको हमारे देवताओं की पूजा को उखाड़ फेंकने के लिए भेजकर लाया है? क्या आप महान देव ज़ीउस को नहीं जानते, जो शहर के कैपिटल में रहते हैं, जिनकी आपको भी पूजा करनी चाहिए?'

'मैं नहीं जानता कि वह कौन है, और न ही मैं उसके मंदिर से परिचित हूँ,' संत ने उत्तर दिया।

तब मूर्तिकारों ने संत से कहा:

'तो जाओ और उसके भव्य, अद्भुत ढंग से सुसज्जित मंदिर को देखो; वहाँ तुम अजेय ज्यूस की प्रतिमा देखोगे और उसकी पूजा करोगे।'

और वे संत अपोलिनारिस को उस मंदिर में ले गए; जब वह उसमें प्रवेश किया और भव्य सजावट देखी, तो वह हँस पड़ा और पुरोहितों से ये शब्द कहने लगा:

'देखो, यहाँ व्यर्थ में इकट्ठा किया गया यह सारा सोना और चाँदी: क्या इसे राक्षसों के सामने व्यर्थ लटकाने के बजाय गरीबों में बाँटना बेहतर नहीं होता?'

तब दुष्ट लोग क्रोध और रोष से भर गए; उन्होंने संत को बुरी तरह पीटा, और फिर, उसके पैरों में रस्सी बाँधकर, उसे शहर से बाहर खींचकर समुद्र तट पर फेंक दिया मानो वह मृत हो; संत अपोलिनारिस, मुश्किल से जीवित, को उनके शिष्यों ने उठाया और एक मसीही विधवा के घर में छिपा दिया, जहाँ उन्होंने उनकी देखभाल की।

छह महीने बाद, बोनफिस नामक कुलीन वंश का एक व्यक्ति अचानक गूंगा हो गया; कई डॉक्टरों को उसके पास बुलाया गया, लेकिन वे उसकी कोई मदद नहीं कर सके। उस समय, उसके घर वालों तक यह खबर पहुँची कि ईश्वर के सेवक, अपोलिनारिस, जीवित थे और एक विधवा के यहाँ आश्रय ले रहे थे। मूके आदमी की पत्नी ईश्वर के उस पुरुष के पास दौड़ी और उसके पैरों पर गिरकर उससे विनती करने लगी कि वह उसके घर आए और उसके पति को चंगा करें। मसीह के संत उठे और वहाँ गए; और जैसे ही वे बोनफिस के घर में दाखिल हुए, नौकरानियों में से एक, एक युवा लड़की जो एक अशुद्ध आत्मा से ग्रस्त थी, उस आत्मा के वश में होकर चिल्लाई:

'यहाँ से निकल जा, जीवते परमेश्वर के सेवक! यदि तू नहीं गया, तो मैं तुझे फिर से शहर से बाहर खींचवा दूँगा, और तेरे पैरों में बेड़ी डलवा दूँगा!'

संत ने अशुद्ध आत्मा को डांटा और उसे दासी-कन्या से बाहर निकाल दिया; जिस कमरे में बोनफिस बीमार और मूक होकर लेटा था, उसमें प्रवेश कर, उन्होंने उसके लिए ईश्वर से इस प्रकार प्रार्थना की:

'हे प्रभु यीशु मसीह, जिन्होंने इस मनुष्य के होठों पर मुहर लगा दी है ताकि वह मदद के लिए दुष्टात्माओं को न पुकारे, अब उसके होठ खोल दो, ताकि वह तेरे परम धन्य नाम का आह्वान कर सके और विश्वास कर सके कि तू वह परमेश्वर है जो युगानुयुग जीवता है।'

जब संत ने इस प्रकार प्रार्थना की, और उपस्थित ईसाइयों ने 'आमीन' कहा, उसी क्षण मूक व्यक्ति की जीभ खुल गई और उसके होंठ एकमात्र ईश्वर की महिमा करने के लिए खुल गए, और वह ऊँचे स्वर में चिल्लाया:

'अपोलीनारिस द्वारा प्रचारित एकमात्र ईश्वर के सिवा कोई अन्य ईश्वर नहीं है!'

उस दिन, 500 से अधिक पुरुष मसीह में विश्वास करने लगे और उन्होंने पवित्र बपतिस्मा ग्रहण किया। कुछ दिनों बाद, दुष्टों ने, राक्षसों द्वारा उकसाए जाकर, संत अपोलिनारिस को फिर से पकड़ लिया और उसे लाठियों से बुरी तरह पीटा, और उसे यीशु के बारे में उपदेश देने या यहाँ तक कि उनका नाम लेने की हिम्मत न करने की मनाही की। हालाँकि, संत, जमीन पर लेटे हुए, चिल्लाए:

'सत्य में, ईश्वर यीशु मसीह हैं, जिन्होंने अपनी इच्छा से मानव जाति के लिए दुख उठाया।'

मूर्तिपूजक, मसीह के बारे में उनकी गवाही सहन न कर सके, उन्होंने उनके नंगे पैरों को गर्म कोयलों पर रख दिया और उन्हें यातना देते हुए आग पर जलाया। फिर भी उन्होंने और भी अधिक उत्साह के साथ ऊँचे स्वर में मसीह की घोषणा करना जारी रखा। फिर, संत अपोलिनारिस के पैरों में बाँधकर, उनके यातना देने वालों ने उन्हें शहर से बाहर घसीटते हुए चिल्लाया:

'भले ही तुम चमत्कार करते हो, अगर तुम जीवित रहना चाहते हो, तो शहर में प्रवेश करने की हिम्मत मत करना।'

और संत शहर के पास लेटे रहे, और यीशु मसीह के नाम के विषय में अथक रूप से उपदेश देते रहे। कई ईश्वर-भयभीत लोग उनके पास आए और उनकी सेवा की। विश्वासियों ने, जिनकी संख्या संत के उपदेशों से बढ़ रही थी, शहर से कुछ दूर समुद्र तट पर एक छोटा सा चर्च स्थापित किया, और वहाँ ईश्वर के बिशप ने पवित्र लिटिर्जी का अनुष्ठान किया और जो लोग ईश्वर मसीह की ओर मुड़े थे, उन्हें समुद्र में बपतिस्मा दिया।

कुछ वर्षों बाद, संतों को अविश्वासियों द्वारा भगा दिया गया और वे इतालवी प्रांत एमिलिया के लिए रवाना हो गए, जहाँ उन्होंने अपने उपदेश के माध्यम से यथासंभव अधिक से अधिक लोगों को पवित्र धर्म की ओर ले आए। उस समय, उनके आदेश पर, पुरोहित कलोकिरि चर्च का संचालन करते थे; उन्होंने भी यीशु मसीह के नाम की शक्ति से महान चमत्कार किए। एमिलिया में पर्याप्त समय बिताने और कई लोगों को ईसाई धर्म में परिवर्तित करने के बाद, संत अपोलिनारिस एक बार फिर रावेना लौटे, जहाँ विश्वासियों ने उन्हें खुशी से स्वागत किया। उस समय, रावेना का शासक पहले ही बदल चुका था, जिसका नाम रुफिनस था, जिसकी केवल एक बेटी थी; वह इतनी गंभीर रूप से बीमार थी कि उसकी मृत्यु की पहले ही उम्मीद की जा रही थी। संत अपोलिनारिस के बारे में सुनकर, शासक ने आदेश दिया कि उन्हें सम्मान के साथ उनके घर लाया जाए ताकि वे उसकी बेटी की मदद कर सकें। जैसे ही पवित्र बिशप और उनके पुरोहित राजकुमार के घर में प्रवेश कर रहे थे, बीमार लड़की की मृत्यु हो गई। और उसके माता-पिता और पूरे घर वालों ने जोर-जोर से रोना और विलाप करना शुरू कर दिया। संत को देखकर, रुफिनस ने उनसे कहा:

'तुम्हारे लिए मेरे घर पर न आना ही बेहतर था, क्योंकि तुम्हारी वजह से महान देवताओं ने मुझ पर अपना क्रोध उतारा है और उन्होंने मेरी बेटी को मृत्यु से बचाने से इनकार कर दिया है।'

'मेरे सीज़र की सेहत की कसम खाओ,' संत ने उत्तर दिया, 'कि आप अपनी बेटी को अपने उद्धारकर्ता का अनुसरण करने से नहीं रोकेंगे, और आप हमारे प्रभु यीशु मसीह की शक्ति देखेंगे, जिनका मैं प्रचार करता हूँ।'

रूफिनस ने उत्तर दिया, 'मैं जानता हूँ कि मेरी बेटी मर गई है, लेकिन अगर मैंने उसे जी उठे और बोलते हुए देखा, तो मैं आपके ईश्वर की शक्ति की प्रशंसा करूँगा, और मैं उसे अपने उद्धारकर्ता का अनुसरण करने से नहीं रोकूँगा।'

तब संत, मृतक के पास जाकर, प्रार्थना करने लगे:

'हे प्रभु यीशु मसीह, मेरे परमेश्वर, जो अपने प्रेरित पतरस, मेरे गुरु, की सभी प्रार्थनाओं को स्वीकार करते हैं, मेरी भी प्रार्थना स्वीकार करें – इस युवती को मृतकों में से जिला दें, क्योंकि वह आपकी रचना है। और यहाँ उपस्थित लोग आपकी शक्ति को देखें और यह जान लें कि आप के सिवा कोई और परमेश्वर नहीं है!'

तब, मृत लड़की को छूते हुए, उन्होंने पुकारा:

'उठो और अपने सृष्टिकर्ता की गवाही दो!'

और तुरंत वह कन्या जीवित हो उठी, अपने पैरों पर खड़ी हो गई और, जोर से चिल्लाकर, बोली:

'महान है वह ईश्वर जिसकी अपोलिनारिस घोषणा करता है, और उसके सिवा कोई दूसरा ईश्वर नहीं है!'

कन्या के माता-पिता आनन्दित हुए, और सभी ईसाइयों ने भी आनन्द मनाया, कि प्रभु यीशु के नाम का इतना महिमामण्डन हुआ। कन्या का बपतिस्मा उसकी माता और उसके घर के सभी सदस्यों के साथ हुआ; और दोनों लिंगों के बपतिस्मा पाए हुए आत्माओं की कुल संख्या तीन सौ चौबीस थी, जबकि अन्य कई मूर्तिपूजकों ने मसीह में विश्वास किया और बपतिस्मा लिया। जहाँ तक राज्यपाल रुफिनस का सवाल है, यद्यपि वह मसीह पर विश्वास करने लगा था, फिर भी सीज़र के डर से उसने बपतिस्मा नहीं लिया; फिर भी, गुप्त रूप से वह परमेश्वर के पवित्र जन से प्रेम करता था और

उसकी सेवा करता था। उसकी बेटी ने, तथापि, स्वयं को यीशु मसीह को समर्पित कर दिया, स्वयं को उसकी दुल्हन के रूप में सँवार लिया, और अपने पूरे जीवन में कुँवारी रही।

पगनों ने सम्राट को यह सूचना दी कि एक व्यक्ति, जो अंतीयक से आया था, ने अपनी जादू-टोने और तंत्र-मंत्र के द्वारा यहूदी यीशु के नाम को रावेना शहर में प्रवेश कराया था, और बहुत से लोग उसकी बात सुन रहे थे; वास्तव में, उसने रूफिनस के परिवार और घर वालों को भी अपने धर्म में भटका दिया था। इसलिए, सीज़र ने तुरंत अपने राज्यपाल, मेसैलिनस को, रावेना भेजकर रूफिनस को उसके अधिकार से हटा दिया, और आदेश दिया कि अपोलिनारिस को या तो मूर्तिपूजक देवताओं की पूजा करने के लिए मजबूर किया जाए या सबसे दूरस्थ भूमि में निर्वासित कर दिया जाए। मेसालिना ने सीज़र की आज्ञा का पालन करते हुए, अपोलिनारिस को प्रेटोरीयम में बुलाया और कैपिटोलिन पुजारियों की उपस्थिति में उससे पूछा कि वह कौन है, कहाँ से आया है, और क्या करता है। हालांकि, संत ने घोषणा की कि वह एक ईसाई, अंफ़ियालोपोलिस का मूल निवासी और प्रेरितों का शिष्य था; उसने कहा कि उसका एकमात्र कार्य जीवित परमेश्वर के पुत्र, यीशु मसीह का प्रचार करना था, जिसने स्वर्ग और पृथ्वी, समुद्र और उनमें और उन पर जो कुछ भी है, उसे बनाया।

मेसालिनिस ने पूछा, 'क्या तुम उसी मसीह का प्रचार नहीं कर रहे हो, जिसने कुछ साल पहले खुद को परमेश्वर का पुत्र कहा था और जिसे यहूदियों ने मार डाला था?' 'अगर वह ईश्वर होता, तो न मरता और न ही अपमान सहता; लेकिन चूँकि वह घमंडी था, उसे यातना देने और मृत्युदंड से मार डालने के लिए सौंप दिया गया—मुझे नहीं पता कि आप उसे देवताओं में क्यों गिनते हैं।'

'यह यीशु मसीह,' संत अपोलिनारिस ने उससे कहा, 'जिसके बारे में तुम बात कर रहे हो, सदा-सदा के लिए परमेश्वर था, है और रहेगा। मानव जाति को शत्रु की दासता से मुक्त करने की इच्छा से, उन्होंने स्वयं को नम्र किया और पवित्र आत्मा द्वारा कुँवारी के गर्भ में अवतार लिया, जिसने किसी पुरुष को नहीं जाना था, और उससे शब्दों से परे तरीके से जन्म लिया।

'हमने यह सब सुना है,' मेसैलिनिस ने आपत्ति जिताई, 'लेकिन यह विश्वास करना मुश्किल है।'

'हे न्यायाधीश, मेरी बात सुनो! और ध्यान दो,' संत ने पुकारा। 'ईश्वर ने पवित्र देह में वास किया और अद्भुत चमत्कार और संकेत किए; और जब उन्हें यहूदियों ने पकड़कर सूली पर चढ़ाया, तो उनका देह—जो उन्होंने सर्वपवित्र कुँवारी से लिया था—पीड़ित हुआ, जबकि उनकी दिव्यता पीड़ा से अछूती और अमर रही; इसी दिव्यता से मांस तीसवें दिन मृतकों में से जी उठा, और वह, कई लोगों को प्रकट होने के बाद, स्वर्ग में आरोहण कर गया, जहाँ से वह आया था। उन्होंने उन पर विश्वास करने वालों को इतनी बड़ी शक्ति और अधिकार दिया है कि वे, उनके नाम पर, दुष्टात्माओं को निकाल सकते हैं, हर तरह की असाध्य बीमारियों को ठीक कर सकते हैं और मृतकों को जीवित कर सकते हैं (मरकुस 16:17-18)।

मेसलिनि ने आपत्ति जिताते हुए कहा, 'तुम मुझे एक अज्ञात ईश्वर का अनुयायी बनने के लिए मना नहीं सकते, जिसे न तो सीज़र और न ही सेनेटर्स पहचानते हैं; बल्कि शहर के कैपिटल में जाओ और अपने हाथों से महान और गर्जनशील देवता ज़ीउस को धूप चढ़ाओ; यदि तुम ऐसा करने से इनकार करोगे, तो मैं तुम्हें विभिन्न यातनाओं से प्रताड़ित करूँगा और तुम्हें निर्वासन भेज दूँगा।

'भले ही मैं कैपिटल में प्रवेश करूँ, मैं फिर भी दुष्टात्माओं को धूप नहीं चढ़ाऊँगा, बल्कि अपने प्रभु यीशु मसीह को स्तुति का बलिदान चढ़ाऊँगा,' संत ने उत्तर दिया।

मूर्तिपूजक पुरोहितों ने पुकारा:

'अपोलिनारिस को यातनाएँ दो!'

और मेसैलिनिस ने शहीद के कपड़े उतारने और उसे डंडों से निर्दयता से पीटने का आदेश दिया, यह कहते हुए:

'देवताओं को बलिदान चढ़ाओ!'

और संत ने, इस यातना के दौरान, पुकारा:

'मैं एक ईसाई हूँ!'

'उसे यातनाओं की जगह पर फैला दो,' एक पुजारी गुस्से से चिल्लाया, 'और उसे और भी क्रूरता से पीड़ित करो जब तक कि वह अमर देवताओं की स्तुति न करे।'

लेकिन इन और भी क्रूर यातनाओं के बीच भी, संत अपोलिनारिस ने पुकारा:

'मैं प्रभु यीशु मसीह को जीवित परमेश्वर के रूप में स्वीकार करता हूँ, और कोई और नहीं!'

एक घंटे बाद, मेसैलिनिस ने यातनाएँ कम करने का आदेश देकर, शहीद से कहा:

'मुझसे कहो, नीच, इन यातनाओं के लिए तुम क्या इनाम चाहते हो?'

'हमारी पुस्तकों में,' शहीद ने उत्तर दिया, 'लिखा है: "जो अंत तक धीरज धरेगा, वह उद्धार पाएगा" (मत्ती 24:13), और जो मसीह के लिए मरता है, वह जीवित रहेगा: एक ईसाई के लिए यही पुरस्कार है।'

विश्वासियों और अविश्वासियों, दोनों की एक बड़ी भीड़ संत के कष्टों को देख रही थी, और विश्वासियों ने, उनका साहस और धैर्य देखकर, स्वर्ग के परमेश्वर की महिमा की। तब मेसैलिनिस ने अपने सेवकों को एक बार फिर से मसीह के सेवक को यातना देने और उसके घावों पर उबलता पानी डालने का आदेश दिया। इस बीच, उसने एक जहाज तैयार करने का आदेश दिया, ताकि वह शहीद को लोहे की बेड़ियों में जकड़कर इल्यरिकिम[5318] में निर्वासित भेज सके। संत को यातनाएँ देने वाले सेवकों में से एक—जो शहीद के प्रति सबसे क्रूर था—अचानक एक दुष्ट दानव के कब्ज़े में आ गया; वह ज़मीन पर गिर पड़ा और मर गया, क्योंकि दानव ने उसकी शापित आत्मा को उसके शरीर से फाड़ दिया। और संत अपोलिनारिस, जिन्हें यातना के स्थान से नीचे उतार लिया गया था, मेसैलिनिस की ओर मुड़े:

'हे दुष्ट मनुष्य, तू परमेश्वर के पुत्र पर विश्वास क्यों नहीं करता? तब तू गेहेना की अनंत यातना से बच जाता[5319]?'

यातना देने वाला क्रोध से आग-बबूला हो गया और उसने आदेश दिया कि संत के मुँह पर पत्थर मारा जाए। ईसाइयों ने यातना देने वाले की ऐसी क्रूरता देखकर अब और सहन नहीं किया (वे बहुत संख्या में थे); लेकिन, क्रोध के वश में होकर, उन्होंने एक जन-आंदोलन भड़काया; वे मूर्तिपूजकों पर टूट पड़े और कई लोगों को मार डाला; उन्होंने मेसालिना को भी मारने की कोशिश की, लेकिन जब उसने शुरू हुई भगदड़ और लोकप्रिय विद्रोह को देखा, तो वह डर गया और, खड़ा होकर, भाग गया और किसी किलेबंदी इमारत में कहीं छिप गया। उसने सैनिकों को आदेश दिया कि वे अपोलिनारिस को पकड़ लें, उसे एक कालकोठरी में बंद कर दें, उसके पैरों में बेड़ी डाल दें, और उसे न तो भोजन दें और न ही पानी, ताकि वह भूख और प्यास से थक कर मर जाए। लेकिन परमेश्वर, जो सभी का पालन-पोषण करता है, ने अपने सेवक को नहीं छोड़ा, बल्कि जब संत को भूख लगी तो उसे मजबूत करने के लिए एक स्वर्गदूत भेजा; और परमेश्वर का स्वर्गदूत जेलखाने में स्पष्ट रूप से प्रकट हुआ, ताकि जेलर उसे देख सकें, और उसने मसीह के बंदी के लिए भोजन और पानी लाया, जिसे उसने लेकर चखने के बाद बल प्राप्त किया और परमेश्वर का धन्यवाद किया। चार दिन बाद, यह सुनकर कि ईसाई शिक्षक अपोलिनारिस जेल में अभी भी जीवित हैं, मेसैलिनिस ने उन्हें भारी लोहे की बेड़ियों में जकड़ने, गुप्त रूप से एक जहाज पर चढ़ाने और निर्वासन में भेजने का आदेश दिया। तीन पुरोहित अपने पिता और शिक्षक से अलग होने के इच्छुक नहीं थे, इसलिए वे उनके साथ चले गए और समुद्र यात्रा पर निकल पड़े।

कुछ दिनों बाद, अचानक एक भयंकर तूफान आ गया, और समुद्र जोरदार उफान मारने लगा; जहाज लहरों की ताकत से चकनाचूर हो गया और सभी डूब गए; केवल संत अपोलिनारिस, तीन पुरोहित और उनके साथ यात्रा कर रहे दो सैनिक ही बच पाए; ईश्वर की सुरक्षा में, वे बिना किसी चोट के तट पर पहुँच गए; वे लोहे की बेड़ियाँ जिनमें संत को बाँधा गया था, उनसे गिर गई थीं, एक अदृश्य हाथ द्वारा टूट गई थीं, ठीक उसी समय जब जहाज डूबने लगा था। विनाश से बचे लोग तट पर उतर आए। और उल्लेखित दो सैनिकों ने संत से पूछा:

'स्वामी! पिताजी! हम कहाँ जाएँ? हम क्या करें?'

'विश्वास करो,' संत ने उत्तर दिया, 'हमारे प्रभु यीशु मसीह में; पवित्र बपतिस्मा ग्रहण करो और तुम जीवित रहोगे।'

उन्होंने तुरंत मूर्तियों को शाप दिया और उन्हें पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम पर बपतिस्मा दिया गया। और संत तीन पुरोहितों और दो नव-प्रबुद्ध योद्धाओं के साथ एक स्थान से दूसरे स्थान तक यात्रा करते रहे; वे यहाँ तक

[5318] इल्यरिकिम या इल्यरिया एक रोमन प्रांत था जिसका उल्लेख संत पौलुस प्रेरित ने अपनी रोमवासियों के नाम पत्र में अपनी प्रेरितिक गतिविधि की सीमा के रूप में किया है (15:19)। यूनानियों ने 'इल्यरिया' शब्द का उपयोग मेसडोनिया के पश्चिम में, डैन्यूब और एड्रियाटिक सागर के बीच स्थित पूरे क्षेत्र को संदर्भित करने के लिए किया। रोमनों ने 'इलिरिया बारबरा' - उत्तरी पहाड़ी क्षेत्र - और 'इलिरिया ग्रीका' - ग्रीक उपनिवेशवादियों द्वारा बसाया गया तटीय क्षेत्र - के बीच अंतर किया। सत्तर प्रेरितों में से कुछ ने इलिरिया में उपदेश दिया।

[5319] गेहन्ना – अनंतकालिक यातना का स्थान (मत्ती 10:28)। यह नाम हिब्रू शब्दों से लिया गया है जो यरूशलेम के पास हिन्नोम की घाटी को संदर्भित करते हैं, जहाँ मोलक के सम्मान में बच्चों को जलाया जाता था (3 राजा 11:7; 4 राजा 16:3-4)। राजा योशियाह ने ऐसे बलिदान की भयानक और धर्मद्रोही प्रथा को समाप्त कर दिया; इसके बाद, फांसी दिए गए दुष्टों के शव, सड़ी-गली लाशें और हर तरह की गंदगी हिन्नोम की घाटी में फेंक दी जाने लगी; बदबू और संक्रामण को खत्म करने के लिए, इस सब पर आग लगा दी जाती थी। इसीलिए 'आग की गेहन्ना' (मत्ती 5:22, 29, 10:28, 23:33; मरकुस 9:47) और 'अनबुझने वाली आग की गेहन्ना' (मरकुस 9:43, 45) जैसे वाक्यांश प्रचलित हुए।

कि मिसिया[5320] भी आए, जहाँ कोई उन्हें आश्रय नहीं देता था। तथापि संत ने, एक कुलीन कुल के व्यक्ति को देखकर जिसके माथे पर कोढ़ था, पूछा:

'क्या तुम चंगा होना चाहते हो?'

'मैं करता हूँ,' उसने उत्तर दिया।

'हमारे प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास करो,' संत ने कहा।

बीमार आदमी ने उत्तर दिया, 'जो भी मुझे ठीक करेगा, वही मेरा ईश्वर होगा।'

संत अपोलिनारिस ने प्रभु यीशु के नाम का स्मरण करते हुए उस व्यक्ति के कुष्ठ रोग को छुआ, और वह तुरंत चंगा हो गया; उसने मूर्तियों का त्याग कर दिया, मसीह में विश्वास किया, और बपतिस्मा ग्रहण किया। संत कई दिनों तक उनके साथ रहे, अविश्वासियों को सच्चे ईश्वर के बारे में सिखाते हुए और उन्हें पवित्र बपतिस्मा के माध्यम से ज्ञान प्रदान करते हुए। इसी तरह, जब वे वहाँ से नदी डैन्यूब के किनारे-किनारे चले, तो उन्होंने वचन के प्रचार के माध्यम से कई अविश्वासियों को मसीह के पास लाया। इसके बाद, वह थ्रेस आया और वहाँ एक मूर्तिपूजक मंदिर के पास रुका, जहाँ अशुद्ध मूर्तिपूजक देवता सेरापिस की एक मूर्ति खड़ी थी, जो अपने पूजकों से बात करती थी: क्योंकि मूर्ति के भीतर रहने वाला दानव बलिदान चढ़ाने वालों और हर तरह के मामलों के बारे में पूछने वालों को जवाब देता था। जब संत वहाँ पहुँचे, तो मूर्ति चुप हो गई। और उस देश के दुष्ट पुरोहित और सभी मूर्तिपूजक इस बात से बहुत दुखी हुए कि उनके देवता को चुप करा दिया गया था। जब उन्होंने लंबे समय तक बलिदानों से उसे प्रसन्न करने की कोशिश की ताकि वह उनसे फिर से बात करे, तो वह बड़ी मुश्किल से बोल पाया:

'क्या तुम नहीं जानते कि प्रेरित पतरस का एक चेला रोम से यहाँ आया है और उसने मुझे उस यीशु के नाम से बाँध दिया है, जिसकी वह प्रचार करता है? जब तक उसे यहाँ से भगा नहीं दिया जाता, मैं तुम्हारे प्रश्नों का उत्तर नहीं दे सकता!'

तुरन्त ही मूर्तिपूजकों ने बड़े उत्साह से मसीह के प्रचारक की खोज शुरू कर दी; और जब वे उसे ढूंढ पाए, तो उन्होंने उसे बेरहमी से पीटा। फिर, उसे समुद्र तक ले जाकर, उन्हें वहाँ इटली जाने वाली एक नाव मिली; और, अपने देश के शासक—जो उस नाव को भेज रहा था—से विनती करने के बाद, उन्होंने परमेश्वर के पवित्र जन को उस पर चढ़ा दिया, यह कहते हुए:

'जहाँ से आए हो, वहीं लौट जाओ!'

और अनुकूल हवा के साथ, वे इटली पहुँचे। अपने शिष्यों के साथ किनारे पर उतरकर, ईश्वर के पुरुष अपने झुंड के पास रावेना शहर गए और तीन साल के निर्वासन के बाद रावेना में प्रकट होने पर, उन्हें विश्वासियों ने बड़ी खुशी से स्वीकार किया। हालाँकि, जब मूर्तिपूजकों को यह पता चला कि ईसाई बिशप निर्वासन से लौट आए हैं, तो वे बहुत क्रोधित हो गए और उन्होंने अपनी योजना को अंजाम देने के लिए एक अनुकूल क्षण की तलाश में बुराई की साजिश रची।

कुछ समय बाद, जब पवित्र बिशप सिरिन नामक एक प्रमुख व्यक्ति के गाँव में स्थित एक चर्च में दैवीय अनुष्ठान कर रहे थे, तो बड़ी संख्या में मूर्तिपूजकों ने चर्च पर हमला कर दिया; मसीह के झुंड को भगा देने के बाद, उन्होंने स्वयं चरवाहे, संत अपोलिनारिस को पकड़ लिया, और उन्हें पीटने के बाद, उन्हें बँधी हुई अवस्था में शहर में ले गए और ज़ीउस के मंदिर के मुख्य कैपिटोलिनि पुजारियों के हवाले कर दिया। उन्हें देखकर, वे क्रोध में चिल्ला उठे:

'वह महान देवता ज्यूस के सामने खड़े होने के अयोग्य है, जिसका उसने कई बार मज़ाक उड़ाया है; उसे अपोलो के पास ले जाओ!'

जब संत को अपोलो के मंदिर में लाया गया, उन्होंने अपने प्रभु से प्रार्थना की, और मूर्ति तुरंत जमीन पर गिरकर धूल में टूट गई; कुछ ही समय बाद, वह अधर्मी मंदिर नष्ट हो गया। यह देखकर ईसाइयों ने अपने सर्वशक्तिमान ईश्वर की स्तुति की, जबकि मूर्तिपूजकों ने संत अपोलिनारिस को पकड़ लिया, उसे टॉरस नामक राजकुमार के समक्ष लाया, और शहीद को मृत्युदंड के लिए उसके हवाले कर दिया। शासक ने अपने सभी नागरिक सलाहकारों को प्रेटोरीयम में बुलाकर, उनके सामने मसीह के बंदी से पूछा, 'वह बीमारों को चंगा करते हुए ऐसे चमत्कार किसकी शक्ति से करता है?'

संत ने उत्तर दिया कि वह सब कुछ मसीह की शक्ति से करते थे, क्योंकि केवल मसीह ही सच्चे और सर्वशक्तिमान ईश्वर हैं।

[5320] मोएसिया – मैसेडोनिया के उत्तर में स्थित एक देश, जो थ्रेस से सटा हुआ था।

न्यायाधीश ने कहा, 'मेरा एक बेटा है जो जन्म से अंधा है; यदि तुम अपने मसीह की शक्ति से उसे दृष्टि दे सकते हो, तो हम भी विश्वास कर लेंगे कि मसीह ही सच्चे ईश्वर हैं; लेकिन यदि तुम ऐसा नहीं कर सकते, तो हम तुम्हें आग में डाल देंगे, ताकि तुम अपनी नियति के अनुसार नष्ट हो जाओ।'

मसीह के संत ने जन्म से अंधे व्यक्ति को आगे लाने का आदेश दिया, और जब उसे उनके सामने लाया गया, तो ईश्वर के पुरुष ने उसकी अंधी आँखों पर क्रॉस का चिन्ह बनाया और कहा:

'क्रूस पर चढ़ाए गए यीशु मसीह के नाम पर, अपनी आँखें खोल और देख।'

और तुरंत जन्म से अंधा वह मनुष्य अपनी आँखें खोलकर देखने लगा। और सब चकित हो उठे, और यह कहने लगे:

'सचमुच, जो ऐसे चमत्कार करता है, वही सच्चा ईश्वर है।'

और कई लोग मसीह में विश्वास करने लगे। राज्यपाल ने संत को अविश्वासियों के हाथों से मुक्त करके, रात के समय उसे अपनी संपत्ति पर भेज दिया, जो शहर से छह मिलियारी[5321] दूर थी, इस बहाने कि वह उसे वहाँ बेड़ियों में बंद रखेगा। लेकिन संत उन चारों वर्षों तक उस गाँव में रहे, बेड़ियों में नहीं बल्कि स्वतंत्र रूप से, और सभी विश्वासी उनके चारों ओर इकट्ठा हो गए, और कई विधर्मी भी उनके पास आए; उन्होंने सुसमाचार के प्रचार के माध्यम से उन्हें भी पवित्र विश्वास में परिवर्तित किया और उनका बपतिस्मा दिया; उन्होंने उन सभी बीमारों को चंगा किया जिन्हें उनके पास लाया गया था।

उन दिनों, रोम में वेस्पासियन[5322] को सीज़र चुना गया था, और रावेना में मुख्य पुरोहितों ने सीज़र को निम्नलिखित शब्दों में एक पत्र लिखा:

'यदि आप जादूगर अपोलिनारिस को नष्ट नहीं करते, जो आपके राज्य के लिए हानिकारक है, तो देवताओं की पूजा समाप्त हो जाएगी और रोम की महिमा कम हो जाएगी; क्योंकि वह अपनी जादू-टोने से प्रतिदिन जनसमूह को बहकाता है, वह अमर देवताओं का अपमान करता है और उनके मंदिरों को नष्ट कर देता है; लेकिन यदि सभी जीवित मनुष्यों में से केवल वही नष्ट हो जाए, तो रोम की महिमा हमेशा के लिए सुरक्षित रहेगी।

इस पर विचार करने के बाद, सीज़र वेस्पासियन ने रावेना को निम्नलिखित लिखा:

'यदि कोई देवताओं का अपमान करता है, तो उसे उपहार चढ़ाकर प्रायश्चित करना चाहिए, अन्यथा उसे शहर से निर्वासित कर दिया जाना चाहिए; क्योंकि देवताओं की ओर से किसी पर प्रतिशोध लेना अनुचित है, क्योंकि यदि वे क्रोधित हों तो वे स्वयं अपने दुश्मनों से प्रतिशोध ले सकते हैं।'

जब सीज़र का जवाब रावेना पहुँचा, तो पैट्रिशियन डेमोस्थनीज़ ([5323]), जो तब तक शहर का गवर्नर बन चुका था, ने ईश्वर के पवित्र पुरुष, अपोलिनारिस को, जो पहले से ही वृद्ध थे और अपनी कई तकलीफों से शारीरिक रूप से थके हुए थे, पकड़ लिया। मूर्तिपूजकों की भीड़ ने डेमोस्थनीज़ से मांग की कि वह या तो अपोलिनारिस को यातनाएं दे या उसे स्वास्थ्य के लिए हानिकारक दूर-दराज के स्थानों पर भेज दे, जहाँ वह बिना किसी सुराग के मर जाए। हालाँकि, डेमोस्थनीज़ ने संत को एक शताब्दीपति के हवाले सेफ्टी के लिए कर दिया, जब तक कि वह यह तय न कर ले कि उस पर क्या यातनाएं दी जाएं और उसे किन शर्तुतापूर्ण स्थानों पर निर्वासित किया जाए। हालाँकि, वह शताब्दी, जो एक गुप्त ईसाई था, परमेश्वर के उस पुरुष को अपने घर ले गया और उसे किसी कालकोठरी में नहीं बल्कि अपने ही घर में रखा, जहाँ उसने उसे आराम दिया। कुछ दिनों बाद, उसने संत अपोलिनारिस से ये शब्द कहे:

'हे प्रभु और पिता, मरने की इतनी जल्दी मत करो, क्योंकि हमारे अपने भले के लिए आपके जीवन की हमें बहुत आवश्यकता है; परन्तु रात को उस बस्ती में जाओ जहाँ बीमार हैं और तब तक वहीं रहो जब तक सार्वजनिक अशांति शांत नहीं हो जाती।'

इन शब्दों के साथ, शताध्यक्ष ने गुप्त रूप से संत को आधी रात को शहर से निकलने दिया। जब संत बाहर गए, तो कुछ मूर्तिपूजकों को यह पता चल गया, और वे उनके पीछे दौड़े। रास्ते में उन्हें रोककर उन्होंने उन्हें पीटा और अपनी तलवारों से तब तक वार किया जब तक उन्हें नहीं लगा कि वह मर गए हैं; फिर, उन्हें वहीं छोड़कर वे चले गए।

जब दिन हुआ, तो उसके शिष्य आए और उन्होंने संत को मुश्किल से सांस लेते हुए पाया; उन्होंने उसे उठाया और उस बस्ती में ले गए जहाँ बीमार थे, और वह वहाँ सात दिनों तक रहा। अपनी मृत्यु से पहले, उनका पूरा झुंड उनके चारों ओर

[5321] एक मिलियारियम, या (रोमन) मील, आठ स्टेडियम के बराबर था; एक स्टेडियम, बदले में, हमारे लगभग 88 फathom के बराबर है।

[5322] वेस्पासियन – 70 से 79 ईस्वी तक का सम्राट।

[5323] अपनी वंशावली के कारण कुलीन जन्म का व्यक्ति।

इकट्ठा हो गया, और उन्होंने लंबे समय तक उन्हें मसीह के पवित्र धर्म से भटकने न जाने, मूर्तिपूजक दुराचार से घृणा करने की शिक्षा दी, और भविष्यवाणी करते हुए मसीह की कलीसिया के खिलाफ होने वाले अनगिनत उत्पीड़नों की भविष्यवाणी की; उन्होंने यह भी भविष्यवाणी की कि, इन सभी भयानक विपत्तियों के बाद, मूर्तियों का सार्वभौमिक विनाश होगा और भक्ति का प्रकाश पूरे ब्रह्मांड में चमकेगा; ईसाई राजा प्रकट होंगे, और ईसाई बिना किसी बाधा के जीवित परमेश्वर को बलिदान चढ़ाएंगे। उन्होंने जो कहा था, उसमें निम्नलिखित जोड़ा:

'जो कोई हमारे प्रभु यीशु मसीह के विश्वास में दृढ़ रहता है, वह न मरेगा, बल्कि अनंतकाल तक जीवित रहेगा।'

ये और भी कई वचन कहने के बाद, मसीह के पवित्र शहीद प्रभु में सुलाए गए। सभी विश्वासियों ने उनके लिए शोक मनाया, और उन्होंने उनके सम्मानित शरीर को एक पत्थर के ताबूत में रखा और उन्हें अधर्मी लोगों के डर से बहुत गहराई में دفنا दिया, कहीं वे उनके शरीर को जमीन से खोदकर अपवित्र न कर दें। ईश्वर के पवित्र पुरुष, अपोलिनारिस ने अठ्ठाईस वर्ष, एक महीना और चार दिन तक मसीह की कलीसिया की सेवा की। पवित्र शहीदों ट्रॉफिमिस और थियोफिलस की स्मृति। संत ने रोमनों के शासनकाल में वेस्पेसियन के समय, और हमारे प्रभु यीशु मसीह के शासनकाल में (जो पिता और पवित्र आत्मा के साथ युगानुयुग हैं) अगस्त की कैलेंड्स से दस दिन पहले (अर्थात् 23 जुलाई) को कष्ट सहे। आमीन[5324] ।

पवित्र शहीदों ट्रॉफिमिस और थियोफिलस का स्मरणोत्सव

23 जुलाई को स्मरण किया जाता है

पवित्र शहीदों ट्रॉफिमिस और थियोफिलस ने डायोक्लेटियन के शासनकाल में कष्ट सहे[5325] । उनके साथ अन्य विश्वासयोग्य सेवकों और मसीह के सच्चे दासों ने भी कष्ट सहे – कुल तेरह लोगों ने। जब उन्होंने दुष्ट यातनाकर्ता की आज्ञा का पालन करने से इनकार कर दिया – उन्होंने निर्जीव मूर्तियों को घृणित बलिदान नहीं चढ़ाया – और मसीह का त्याग करने से मना कर दिया, तो उन्हें यातना वृक्ष पर लटका दिया गया; फिर मूर्तिपूजकों ने तेज लोहे के औजारों से उनके शरीर को नोचना शुरू कर दिया और उन यातना-भोगियों पर पत्थर भी बरसाए; अंत में, उनकी पिंडलियाँ तोड़कर उन्हें चिता पर फेंक दिया गया। लेकिन ईश्वर की सर्वशक्तिमान शक्ति से, संत आग की लपटों के बीच सुरक्षित और अक्षुण्ण रहे और बिना किसी चोट के आग से बाहर निकले। फिर यातना देने वाले ने, गेहेना की आग की तरह प्रचंड क्रोध से भरकर, आदेश दिया कि उन्हें सभी को तलवार से मार डाला जाए। और संतों के सम्माननीय सिर को संपूर्ण चर्च के प्रमुख – हमारे प्रभु यीशु मसीह[5326] – के सम्मान और महिमा में काट दिया गया।

6 अगस्त

24 जुलाई (पुराना संस्करण)

पवित्र शहीद क्रिस्टीना का कष्टकथा।

24 जुलाई को स्मरणोत्सव

[5324] संत अपोलिनारिस का लगभग 75 ईस्वी में निधन हो गया; उनका शरीर रावेना में, उनके नाम पर बने चर्च में विश्राम करता है, जबकि उनका पूजनीय हाथ रोम में, उनके नाम समर्पित चर्च में है।

[5325] 284 से 305 तक शासन किया।

[5326] पवित्र शहीदों ट्रॉफिमिस और थियोफिलस, और उनके साथ रहे अन्य तेरह शहीदों के पराक्रम और कष्टों का सटीक स्थान अज्ञात है। कुछ लोग इसे एशिया माइनर के लिसिया प्रांत में मानते हैं; लेकिन यह अधिक संभावित है कि पवित्र शहीदों का मूल क्रीट द्वीप था, इस आधार पर कि उनके सम्मान में कैनन सेंट एंड्रयू ऑफ क्रीट द्वारा रचित किया गया था (4 जुलाई को स्मरण किया जाता है; उस तारीख के अंतर्गत उनका जीवन भी देखें)। – संतों के शहादत का समय डियोक्लेशियन (चौथी शताब्दी की शुरुआत) के अधीन उत्पीड़न की अवधि के अंतर्गत आता है।

टायर नगर[5327] में, उरवान नामक कुलीन वंश का एक पुरुष था, जो हेगेमोन (प्रमुख) के पद पर था, उसकी एक पुत्री थी, एक युवा कन्या, जिसने अपनी युवावस्था के शुरुआती वर्षों से ही अपने स्रष्टा, ईश्वर को जान लिया था; कई भयंकर यातनाओं को बहादुरी से सहते हुए, उसने उनके लिए अपनी आत्मा अर्पित कर दी।

जब वह पैदा हुई, तो उसके पिता और माता ने उसका नाम क्रिस्टीना रखा, न कि अपनी मूर्तिपूजक बुद्धि के अनुसार, बल्कि ईश्वर की पूर्वज्ञान से: यह नाम ही, मानो एक भविष्यवाणी हो, इस बात का संकेत दे रहा था कि वह युवती, परिपक्वता तक पहुँचने पर, एक ईसाई, मसीह की सेविका और वधू, और एक शहीद बनेगी। जब वह ग्यारह वर्ष की हुई, तो उसकी असाधारण सुंदरता प्रकट हो गई, और कोई भी अन्य कन्या सुंदरता में उसकी बराबरी नहीं कर सकती थी। उसके पिता, उसे दूसरों की निगाहों से बचाना चाहते हुए, ने उसके लिए एक असाधारण ऊँचे कक्ष में रहने की व्यवस्था की, उसकी देखभाल के लिए श्रेष्ठ दासियों को नियुक्त किया, और वहाँ सोने और चांदी से बने अपने देवताओं की मूर्तियाँ रखकर, उसे उन पर प्रतिदिन धूप जलाने और उनकी पूजा करने का आदेश दिया। कई कुलीन और अमीर पुरुषों ने उस युवती की सुंदरता के बारे में सुनकर, प्रत्येक ने उसे अपने बेटे की दुल्हन बनाने की इच्छा व्यक्त की। जब उन्होंने इसके लिए क्रिस्टीना के पिता से विनती की, तो उर्वान ने उत्तर दिया:

'मैं अपनी बेटी किसी को नहीं दूँगा, बल्कि मैं उसे अपने देवताओं को समर्पित करता हूँ: दयालु देवताओं ने उससे अत्यधिक प्रेम किया है, और उसे उनके लिए कुँवारी रहने दो, हमेशा उनकी सेवा करते हुए!'

जैसे-जैसे कन्या क्रिस्टीना की आयु और समझ बढ़ी—क्योंकि ईश्वर ने अपनी कृपा से उसे ज्ञान प्रदान किया और मार्गदर्शन किया—वह सत्य के ज्ञान को प्राप्त करने लगी। इस प्रकार, एक छोटी सी खिड़की से आकाश और दिव्य पिंडों को निहारते हुए, उसने अपनी रचना के माध्यम से सृष्टिकिर्ता को पहचाना; और, निर्जी आइकनों की असंवेदनशीलता और शून्यता से आश्वस्त होकर, उसने उन्हें धूप चढ़ाने या उनकी पूजा करने से इनकार कर दिया। इसके बजाय, पूर्व की ओर, आकाश और ऊँचाइयों की ओर देखते हुए, वह आह भरती और रोती हुई अपने आप से कहती थी:

'लोगों के दिल कब तक अँधेरे में रहेंगे? उनके अज्ञानी मन कब तक बादलों में लिपटे रहेंगे, जो प्रभु परमेश्वर से मुँह मोड़े रहेंगे, जिसने स्वर्ग और पृथ्वी को बनाया और उन्हें इतनी सुंदरता से सजाया, जो आँखों के सामने इतनी स्पष्ट है?'

अपने मन में इस प्रकार तर्क करते हुए, उसने स्वर्ग में रहने वाले, सच्चे ईश्वर की आराधना करना शुरू कर दिया, और उनसे आँसुओं के साथ प्रार्थना की, कि वे स्वयं को उसके सामने प्रकट करें, ताकि वह उस एक को निश्चित रूप से जान सके जिसके लिए उसका हृदय प्रेम से जल उठा था। जब उसने प्रार्थना और उपवास में पर्याप्त दिन बिता लिए, तो उसे ईश्वर की कृपा से दर्शन का सौभाग्य प्राप्त हुआ: क्योंकि प्रभु का स्वर्गदूत उसके पास प्रकट हुआ, उसने उस पर क्रूस का चिन्ह बनाया, उसे मसीह की वधू कहा, उसे परमेश्वर के ज्ञान में पूरी तरह से शिक्षित किया, और उसे दुख-क्लेश के परीक्षणों के बारे में बताया—अर्थात्, त्रिमूर्ति में एक परमेश्वर के लिए उसे तीन यातना देने वालों द्वारा यातना दी जाएगी; उसने उसे इस परीक्षा के लिए मजबूत किया, और चूंकि वह उपवास से भूखी थी, उसे खाने के लिए शुद्ध रोटी का एक टुकड़ा दिया। इस दैवीय दर्शन के बाद, वह कन्या आत्मा में सांत्वना पाकर अपने उद्धारकर्ता परमेश्वर में आनंदित हुई, और उसने धन्यवाद दिया कि उसने पवित्र स्वर्गदूत के संदेश के माध्यम से अपनी दासी से दर्शन किया; उस समय से, उसने प्रभु से और भी अधिक उत्साह के साथ प्रार्थना करना शुरू कर दिया और उसी के प्रति अपने प्रेम में सांत्वना पाने लगी। ईश्वर के प्रति उत्साह से भरकर, उसने एक-एक करके सोने और चांदी की मूर्तियों को उठाकर तोड़ना शुरू कर दिया; उन्हें टुकड़ों में तोड़ने के बाद, देर शाम उसने उन्हें खिड़की से बाहर सड़क पर फेंक दिया; सुबह, राहगीरों ने बिखरे हुए सोने और चांदी को इकट्ठा कर लिया।

एक दिन, राज्यपाल उर्वान, अपनी बेटी से मिलने और अपने देवताओं की पूजा करने की इच्छा से, उस ऊँचे कक्ष में प्रवेश किया और मूर्तियाँ न देखकर क्रिस्टीना से पूछा:

'देवता कहाँ हैं?'

[5327] वोल्सेनी द्वीप पर टायर (वर्तमान टस्कनी डची में), जिसे परंपरा के अनुसार बाद में पानी में डुबा दिया गया था; अन्य लोग इसे पूर्व के प्रसिद्ध शहर टायर के साथ पहचानते हैं, और यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि सेंट क्रिस्टीना की स्मृति का पूर्व में प्राचीन काल से विशेष रूप से सम्मान किया जाता रहा है।

वह चुप रही। तब उसने अपनी दासियों को बुलाया और उनसे भी देवताओं के बारे में पूछा, और उन्होंने उसे बताया कि उसकी बेटी ने मूर्तियों के साथ क्या किया था। क्रोधित होकर, वह अपनी बेटी के गालों पर थप्पड़ मारने लगा, और कहा:

'देवता कहाँ चले गए?'

लेकिन उसने जवाब देने से इनकार कर दिया। फिर, कुछ हिचकिचाहट के बाद, उसने स्वर्ग में रहने वाले एकमात्र सच्चे ईश्वर, सभी चीजों के स्रष्टा, की गवाही दी। उसने सोने और चांदी से बने तथाकथित देवताओं को राक्षस - मूर्तियाँ - कहा, और बताया कि कैसे उसने उन्हें अपने हाथों से तोड़-फोड़ दिया था। तब, अत्यधिक क्रोध से भरकर, उर्वन ने अपनी तलवार से सभी दासियों के टुकड़े-टुकड़े कर दिए, जबकि अपनी बेटी को विभिन्न यातनाएँ दीं: पहले उसे डंडों और कोड़ों से निर्दयतापूर्वक पीटा गया, और फिर, बाँधकर, उसे एक कालकोठरी में फेंक दिया गया। यह जानने पर, उसकी माँ, रोते-बिलखते हुए, उसके पास दौड़ी और उसे मसीह से मुंह मोड़कर अपने पिता के देवताओं के पास लौटने के लिए कहा। लेकिन मसीह की शहीद ने न केवल अपनी माँ की बात मानने से इनकार कर दिया, बल्कि इन्हीं शब्दों में उसने अपनी माँ का भी त्याग कर दिया:

'मुझे अपनी बेटी मत कहो। क्या तुम्हें नहीं पता कि मैं मसीह का नाम धारण करती हूँ, एक ऐसा नाम जिसे हमारे परिवार में किसी को भी धारण करने के योग्य नहीं समझा गया? नाम और कर्म में, मैं अब तुम्हारे परिवार की नहीं, बल्कि मसीह की हूँ; मैं स्वर्ग के राजा मसीह की सहधर्मिणी बन गई हूँ; मैं उसकी दासी और बेटी हूँ; वह मेरा पिता, मेरी माता और मेरा प्रभु है!'

बहुत समय तक उसकी माँ इस तरह रोती रही और कुछ हासिल न कर पाने पर, दुखित होकर चली गई। जब रात बीत गई और दिन चढ़ आया, तो उर्वन, जो द्वेष के दानव से उकसाया गया था, अपनी बेटी के प्रति स्वाभाविक स्नेह को भूलकर, अदालत में बैठ गया, और उसने संतों क्रिस्टीना को अपनी खून-पसीने की बेटी के रूप में नहीं, बल्कि एक अजनबी और एक बड़ी खलनायिका के रूप में यातना देने का मन बना लिया। जब संत को कालकोठरी से न्याय के स्थान पर ले जाया जा रहा था, तो कई महिलाओं ने उन्हें देखकर कहा:

'हे मेरे सेवक क्रिस्टीना के ईश्वर! उसकी सहायता करो, क्योंकि उसने आपमें शरण ली है!'

मसीह का मेमना उर्वन के सामने खड़ी थी, एक पिता के सामने नहीं, बल्कि एक यातना देने वाले और एक मांसाहारी जानवर के सामने, और उसके पिता ने चालाकी से उसे लुभाना शुरू कर दिया:

'मेरी संतान, मुझे तेरी दया आती है, और मैं तुझसे विनती करता हूँ कि हमारे महान देवताओं के पास आओ और मेरे साथ मिलकर उनके लिए बलिदान चढ़ाओ, ताकि वे तुझ पर दया करें और तुझे उस पाप से क्षमा कर दें जिसके लिए तू उनके सामने दोषी है। लेकिन अगर तू ऐसा नहीं करेगी, तो तू मेरी बेटी नहीं है, और मैं तुझ पर कोई दया नहीं दिखाऊँगा।'

'तुम मुझे बहुत प्रसन्न करोगी,' संत ने उत्तर दिया, 'यदि तुम मुझे अपनी बेटी न कहो: क्योंकि तुम शैतान की दासी हो, जबकि मैं मसीह की दासी हूँ और निश्चित रूप से तुम्हारी बेटी नहीं, क्योंकि मेरे पिता मेरे स्रष्टा हैं।'

बड़े क्रोध से जलते हुए, उर्वन ने उस कन्या को यातना-पाट पर नग्न लटकाने का आदेश दिया, और उसके पवित्र कन्या-शरीर को तेज लोहे से खुरचने और चीरने का आदेश दिया। और उसके शरीर को इतनी बुरी तरह खुरचा गया कि उसकी हड्डियाँ तक नंगी हो गईं। जब उसे फांसी के फंदे से खोला गया और उसने अपने शरीर के वे अंग देखे जो यातना के दौरान गिर गए थे, तो उसने उन्हें इकट्ठा किया और अपने पिता के मुँह पर फेंकते हुए कहा:

'अपनी बेटी का मांस खाओ।'

और भी क्रोधित होकर, उसने संत क्रिस्टीना को यातना कक्ष के लोहे के पहिये पर फैला दिया, उसके नीचे आग जलाने का आदेश दिया, और हुक्म दिया कि उसके शरीर पर गर्म तेल डाल दिया जाए। आग के ऊपर पहिये से घूमते हुए संत क्रिस्टीना का शरीर, भोजन के लिए मछली या मांस की तरह भुना गया। एक इंसान के लिए, खासकर एक महिला के लिए, ऐसी यातना से बच निकलना असंभव था, लेकिन ईश्वर ने अपनी सेविका के जीवन की रक्षा की और अपने पवित्र नाम के महिमामंडन तथा मूर्तिपूजकों की अपमान के लिए उसे शक्ति प्रदान की। इस प्रकार यातनाएँ सहने वाली संत क्रिस्टीना ने ईश्वर की स्तुति की और उनसे प्रार्थना की। इस बीच, पवित्र स्वर्गदूत अदृश्य रूप से उसके पास खड़े थे, उसके दुख को कम कर रहे थे। उसी समय, ईश्वर की आज्ञा से, आग से अचानक एक विशाल ज्वाला निकलकर आसपास खड़े दुष्ट लोगों की ओर बढ़ी, और उनमें से लगभग एक हजार को जला दिया। उर्वान, यह न जानकर कि शहीद के साथ और क्या किया जाए, ने उसे एक कालकोठरी में फेंकने का आदेश दिया; वहाँ प्रार्थना करते समय प्रभु का स्वर्गदूत

उसके पास प्रकट हुआ और उसने उसके घावों को चंगा कर उसे पूर्ण स्वास्थ्य प्रदान किया; उसने उसे लाया हुआ भोजन भी दिया; शहीद ने अपनी शक्ति पुनःप्राप्त की और ईश्वर की स्तुति की। इसके बाद, उसके पिता ने उसे समुद्र में फेंकने का आदेश दिया; दासों ने मसीह की दासी को पकड़कर, उसे एक नाव में बिठाया, उसे किनारे से दूर ले गए और उसके गले में एक बड़ा पत्थर बाँधकर उसे गहराई में फेंक दिया। परमेश्वर के स्वर्गदूत ने उसका स्वागत किया और उसके गले से पत्थर खोल दिया; पत्थर डूब गया, जबकि संत, असीम प्राणी के हाथों के सहारे, पानी पर सूखी भूमि की तरह चली; और इस प्रकार समुद्र उसके लिए पवित्र बपतिस्मा का स्रोत बन गया, जिसके लिए वह इतनी लालसा रखती थी। एक प्रकाशमान बादल ने उस पर छाया की, और स्वर्ग से एक आवाज ने पवित्र बपतिस्मा की रस्म के अनुसार उस पर पवित्र त्रिमूर्ति के नाम की घोषणा की; और संत क्रिस्टीना ने प्रभु को देखा, जो उनके सामने प्रकट हुए और उनसे ऐसे शब्द कहे जिन्होंने उन्हें आनंद से भर दिया । किनारे पर आने के बाद, वह अपने पिता के सामने प्रकट हुई और उसे भय से भर दिया। वास्तव में, वह दुष्ट व्यक्ति पवित्र कन्या को समुद्र से जीवित निकलते देख हैरान और स्तब्ध दोनों था। फिर भी, इतने बड़े चमत्कार के बाद भी वह ईश्वर की शक्ति को पहचान नहीं सका, बल्कि इसे जादू-टोने का काम समझा। उसने शहीद को वापस जेल में डालने का आदेश दिया, और अगले सुबह तलवार से उसका सिर कलम करने का इरादा किया। लेकिन उसी रात, मृत्यु की दरांती से अप्रत्याशित रूप से मारा जाकर, वह हमेशा के लिए नष्ट हो गया, जबकि संत जीवित रहीं, ईश्वर की महिमा करती हुईं और उसकी स्तुति करती हुईं।

उर्वन की अप्रत्याशित मृत्यु के बाद, राजा ने उनकी जगह लेने के लिए डायोन नामक एक और राज्यपाल (इगेमन) भेजा, और उसे क्रिस्टीना की कैद के बारे में सूचित किया गया। उसने उसे कालकोठरी से बाहर निकाला और अपने दरबार में पेश किया; पहले उसने चापलूसी से शहीद को धर्मत्याग के लिए लुभाने की कोशिश की; लेकिन जब वह उसे उसकी पवित्र आस्था में अडिग पाया, तो उसने अंततः उसे यातनाएं दीं, कोड़े मारे, लोहे की पंजाओं से खुरचवाया और आग से जलाया। उसने एक लोहे की कड़ाही को बहुत अधिक तापमान पर गर्म करने का आदेश दिया, नग्न संत को उस पर लिटाकर घुमाया गया, जबकि उसके ऊपर उबलता हुआ तेल और गोंद डाला गया, और उसे पास में खड़ी अपोलो की मूर्ति की पूजा करने के लिए मजबूर किया गया। लेकिन शहीद, एक हीरे की तरह[5328] , यीशु मसीह के परम पवित्र नाम की अपनी गवाही में अडिग रही। उसने अपनी प्रार्थना के द्वारा अपोलो की मूर्ति को नष्ट कर दिया, और जब मूर्ति गिरिकर धूल में मिल गई, तो राज्यपाल डायोन भी जमीन पर गिर पड़ा और मर गया। मूर्ति के भीतर रहने वाले राक्षस ने, जब उसका निवास नष्ट हो गया, तो अपने उत्साही सेवक की आत्मा को उठा ले गया और उसे अपने साथ नरक में ले गया, जबकि पवित्र शहीद को एक बार फिर से बेड़ियों में जकड़कर जेल में डाल दिया गया। और मसीह की इस कन्या का दुख व्यर्थ नहीं गया, क्योंकि बहुत से लोगों ने ऐसे चमत्कार देखकर एकमात्र ईश्वर, यीशु मसीह की महिमा की, और लगभग तीन हज़ार आत्माएँ उन पर विश्वास करने लगीं; और जो संन्यासिनी की ओर मुड़ रहे थे, जिसे काफी समय से जेल में रखा गया था, और उसने उन्हें तब तक सिखाया जब तक कि जूलियन नामक एक अन्य राज्यपाल टायर नगर में नहीं आ गया।

उसने संत को मुकदमे के लिए तलब किया और उन्हें विभिन्न यातनाएँ दीं: पहले उन्होंने एक विशाल भट्टी प्रज्वलित की और उसे तीन दिनों तक भड़काया; फिर उन्होंने शहीद को उसमें डाल दिया और उसे सील कर दिया, और पाँच दिनों तक पवित्र कन्या क्रिस्टीना वहाँ भट्टी में आग से अप्रभावित रही, ठीक वैसे ही जैसे पुराने समय के बेबीलोन के युवक (दानियेल 3:1–100); जैसे किसी महल में बैठी हो, उसने ईश्वर की महिमा करते हुए गीत गाया। क्योंकि प्रभु के स्वर्गदूत उसके साथ थे, जो पानी छिड़ककर भट्टी को ठंडा कर रहे थे, और गीत में उसकी आवाज़ में अपनी आवाज़ मिला रहे थे, ताकि भट्टी की रखवाली कर रहे सैनिकों ने गाने वालों की आवाज़ें सुनीं। जब पाँच दिन बाद भट्टी खोली गई, तो संत पूरी तरह से सुरक्षित और अछूती पाई गईं, आग ने उन्हें तनिक भी नहीं छुआ था, और ईसाई ईश्वर की महिमा हुई, जबकि मूर्तिपूजक दुष्टता को शर्मिंदगी उठानी पड़ी। हालाँकि, राज्यपाल, शैतानी द्वेष से अंधा होकर, इसमें ईश्वर की शक्ति को पहचानने में असफल रहा, और उसने ऐसे आश्चर्यजनक चमत्कार को जादू-टोना कहा। असंभव को हर कीमत पर पार करने के दृढ़ संकल्प के साथ, उसने सभी प्रकार के सरीसृपों को मंत्रमुग्ध करने में निपुण जादूगरों और जादूबाजों को बुलाया, और उन्हें आदेश दिया कि वे अपने जादू का उपयोग करके साँपों, विषैले सर्पों और बिच्छुओं की एक बड़ी संख्या को इकट्ठा करें, और उन सभी को शहीद पर छोड़ दें ताकि वे अपने जहरीले डंक से उसकी मृत्यु को सुनिश्चित कर सकें। लेकिन जब सरपों को संत पर छोड़ा गया, तो उनमें से एक ने भी उसे नुकसान नहीं पहुँचाया, भले ही वे उसके चारों ओर रेंगते

[5328] अर्थात् एक हीरा।

रहे और यहाँ तक कि उसके शरीर के चारों ओर लिपट गए। पास में मुख्य जादूगर खड़ा था, जो अपनी फुसफुसाहटों और चालों से उन जीवों को उस युवती को अपने डँक से मारने के लिए उकसा रहा था। लेकिन ईश्वर की आज्ञा से, वे बड़ी ताकत से अपने जादूगर पर टूट पड़े और उसे तुरंत अपने डँक से मार डाला। और संत ने उन जीवों से कहा:

'यीशु मसीह के नाम पर, मैं तुम रेंगने वाले साँपों, विषैले सर्पों और बिच्छुओं को आज्ञा देता हूँ: जाओ, हर कोई अपने-अपने स्थान पर चला जाए, और किसी को नुकसान न पहुँचाए!'

और साँप तुरंत हर दिशा में बिखर गए। कुछ समय बाद, साँपों के डँसने से मरे हुए आदमी पर दया करके, उन्होंने प्रभु से प्रार्थना करने के बाद उसे मृतकों में से जीवित कर दिया, और वह एक ईसाई बन गया। और केवल वही नहीं, बल्कि कई अन्य लोग भी, इतने अद्भुत चमत्कार देखकर, प्रभु पर विश्वास करने लगे। हालाँकि, राजकुमार ने क्रोध में आकर आदेश दिया कि उसकी कुँवारी छातियों को काट दिया जाए, और घावों से खून के बजाय दूध बहने लगा। फिर उन्होंने उसकी जीभ काट दी, जिसने मसीह परमेश्वर की महिमा की थी। अपनी जीभ कटवाने के बाद भी, शहीद स्पष्ट रूप से बोलती रही; उसने अपनी कटी हुई जीभ को पकड़कर राजकुमार के चेहरे पर फेंका, जो उसकी आँख में जा लगी:

उसने कहा, 'खाओ, हे दुष्ट, मेरे अंग!'

और राजकुमार उसकी जीभ के स्पर्श से अंधा हो गया, जबकि संत ने और भी अधिक उत्साह के साथ ईश्वर की स्तुति की और मूर्तियों तथा उनके पूजकों का तिरस्कार किया। हालाँकि, राज्यपाल, संत क्रिस्टीना के अपमानजनक शब्दों को और सहन न कर सका और अपनी अंधापन से क्रोधित होकर, उसे मौत की सज़ा देने का आदेश दे दिया। फिर सैनिकों ने संत को लोहे के भाले से भेद दिया, और मसीह की निष्कलंक कन्या और महान शहीद, संत क्रिस्टीना ने अपनी सम्मानित और पवित्र आत्मा अपने प्रभु के हाथों में सौंप दी। प्रभु ने उनके माध्यम से इतनी महान शक्ति प्रकट की कि तीन ' ' क्रूर यातना देने वाले एक भी कुंवारी पर काबू नहीं पा सके। संत क्रिस्टीना के एक रिश्तेदार, जो मसीह में विश्वास करता था, ने उनके अत्यधिक पीड़ित शरीर को उठाया और उसे सम्मान के साथ दफना दिया। यह सब रोमनों और ग्रीकों पर अधर्मी सेवरस के शासनकाल के दौरान, और ईसाइयों के बीच प्रभु यीशु मसीह के महान शासनकाल के दौरान हुआ, जिनके लिए पिता और पवित्र आत्मा के साथ महिमा और सम्मान हो, अब और हमेशा और युगानुयुग, आमीन[5329] ।

कॉन्टाकियन, स्वर 4:

हे सम्माननीय क्रिस्टीना, तुम को सुनहरे पंखों वाली एक तेजस्वी कबूतर के रूप में पहचाना गया है, और तुम स्वर्ग की ऊँचाइयों तक उड़ान भर गई हो: इसलिए हम तुम्हारा महिमामय पर्व मनाते हैं, और विश्वास के साथ तुम्हारी पवित्र अवशेष-पेटी की पूजा करते हैं, जिससे सभी को, आत्मा और शरीर दोनों में, दिव्य उपचार प्रचुर मात्रा में प्राप्त होता है।

हमारे पूजनीय पिता पॉलीकार्प, गुफाओं के आर्चमिंड्राइट का जीवन

24 जुलाई को स्मरणोत्सव

धन्य और प्रशंसनीय पॉलीकार्प – जिनका नाम '[5330] ' का अर्थ 'फलदायी' है – वास्तव में अपने पुण्य कार्यों में फलदायी थे; उन्होंने उस प्रचुर फल को दिया जिसकी बात स्वर्गीय सृष्टिकर्ता ने की थी: *'यदि गेहूँ का एक दाना पृथ्वी में गिरकर नाश न हो, तो वह अकेला ही रहता है; परन्तु यदि वह नाश हो जाए, तो बहुत फल उपजाता है'* (यूहन्ना 12:24), और फिर: *'जो मुझ में बना रहता है, और मैं उसमें, वह बहुत फल उपजाता है'* (यूहन्ना 15:5)। इस धन्य ने इस संसार की क्षणभंगुर महिमा और प्रतिमा को धूल में मिला दिया और, गुफाओं के लिए प्रसिद्ध मठ में पवित्र दैवीय संन्यासी जीवन ग्रहण कर, जोती हुई भूमि में गेहूँ के दाने के समान, तपस्या के श्रम द्वारा हर तरह से अपने शरीर को वश में किया, जबकि उसकी आत्मा सदा ईश्वर में निवास करती रही। इस प्रकार उन्होंने पश्चाताप के योग्य बहुत फल दिए और अपने भीतर

[5329] अन्य, अधिक विश्वसनीय विवरणों के अनुसार, सेंट क्रिस्टीना ने डायोक्लेटियन के शासनकाल के दौरान लगभग 300 ईस्वी में शहादत प्राप्त की।

[5330] पॉलिकार्प, ग्रीक से अनुवादित, का अर्थ है 'फलदायी'।

आत्मा के सभी फलों को प्रकट कयिा: ईश्वर और अपने भाइयों के प्रतसिच्चा *प्रेम*, एक नरि्मल अंतरात्मा का *आनंद*, सभी भावों पर वजिय से मलिने वाली *शांति*, वपित्तयिों और दुख्खों में *धीरज*, सभी के प्रतआिज्ञाकारतिा में *दयालुता*, गरीबों के प्रतअिपनी हार्दकि चतिा में दया, आज्ञाओं के पालन में अटूट *वशि्वास*, अपने व्रतों का पालन करने में नषि्ठा, क्रोध न जानने में *नम्रता*, भोजन और पेय—दोनों प्रचुर और स्वादषि्ट—और वास्तव में सभी शारीरकि वासनाओं से *संयम* (देखें गलातयिों 5:22-23)। ईश्वर ने इन सभी फलों को धन्य पोलीकार्प में परपिक्व कयिा, जबकि व्लादमिीर और सुज़दल के बशिप संत साइमन ने उन्हें रोपा[5331] । बाद वाले (पोलीकार्प) उसके रक्त संबंधी थे और वे यह भी नहीं चाहते थे कि पोलीकार्प आत्मा में उनसे अलग हो जाएँ; बल्कि, एक अच्छी जड़ की तरह, उन्होंने एक अच्छी टहनी को भी पोषति करने का प्रयास कयिा। इसलिए, जब साइमन स्वयं को गुफाओं के पवत्रि मठ से व्लादमिीर और सुज़डल के धर्मप्रांत के पद पर नयिुक्त कयिा गया, तो वह धन्य पॉलीकार्प को अपने साथ ले गए; वहाँ उन्होंने पॉलीकार्प को एक सदाचारी जीवन जीने के लिए प्रोत्साहति कयिा और, इस उद्देश्य के लिए, उनसे उन बातों पर शकि्षाप्रद वार्तालाप कयिा जो उन्होंने स्वयं गुफाओं के पूर्व पवत्रि संतों के बारे में प्रत्यक्षदर्शयिों के वृत्तांतों में पढ़ी या सुनी थीं, उनके द्वारा सहन की गई कठनि परशि्रमों के बारे में, और कैसे उन्होंने परमेश्वर को इतना प्रसन्न कयिा कि यहाँ भी वे अपने अवशेषों की चमत्कारी अक्षयता के माध्यम से चमकते थे, यह इस बात का संकेत था कि उन्होंने स्वर्ग में अक्षय मुकुट प्राप्त कयिा था। और धन्य पॉलकिार्प ने, आज्ञाकारतिा द्वारा अपने हृदय की भूमि जोतकर और वहाँ अपने पतिा की शकि्षा के बीज बोकर, सौगुणा फल प्राप्त कयिा। वह स्वयं केवल सद्गुणों में ही फलदायी नहीं थे, बल्कि उन्होंने सभी ऑर्थोडॉक्स वशि्वासयिों में भी उसी प्रकार की फलदायीता को स्थापति करने का प्रयास कयिा। इसलिए, जब उन्होंने गुफाओं के पूजनीय पतिाओं के दैवीय कर्मों के बारे में धन्य बशिप साइमन से सुना, तो उन्होंने मोक्ष की खोज में लगे अन्य लोगों के लाभ के लिए यह सब लखिने की जहमत उठाई ; इस प्रकार, उस धन्य बशिप के अधीन रहते हुए, उन्होंने धन्य अकदिनि, जो गुफाओं के आर्चमिंड्राइट थे, को लखि अपने पत्र में कई संतों के अद्भुत जीवन को दर्ज कयिा; ये जीवन कीव-गुफाओं के पैट्रआिर्कॉन के दूसरे भाग में संकलति हैं। बाद में, यद्यपि धन्य पॉलकिार्प अपने पतिा और गुरु साइमन से शारीरकि रूप से अलग हो गए थे—क्योंकि वे अपने बशिप के पद से लौटकर गुफाओं के मठ में आ गए थे—फरि भी उन्होंने सद्गुणों के मामले में उस पवत्रि व्यक्तसिे खुद को दूर नहीं कयिा: उन्होंने अपनी पूर्व शकि्षाओं को अपने हृदय में दृढ़ता से स्थापति कर लयिा था और उन्हें संरक्षति करने तथा उनका पालन करने का प्रयास कयिा। अपनी ओर से, संत साइमन ने अपनी लखिति पत्रकिा के माध्यम से दूर से भी उन्हें सखिाना बंद नहीं कयिा, जो दैवीय प्रेरति उपदेशों और गुफाओं के संतों के सदाचारी जीवन के वर्णनों से भरी थी। इस पत्रकिा को हमेशा अपनी आँखों के सामने रखते हुए, धन्य पॉलीकार्प ने अपने पतिा के सभी शब्दों को अपने हृदय की पटल पर अंकति कयिा, उन पर अपने मन में ध्यान लगाया और उन्हें व्यवहार में लाया। इस प्रकार के कठोर तपस्या के माध्यम से, उन्होंने सद्गुण की उच्चतम श्रेणी प्राप्त की।

जब गुफ़ाओं के आर्चमिांड्राइट, धन्य अकनिदि, जनि्होंने मसीह के झुंड का परमेश्वर को भाता हुआ और सावधानी से पालन-पोषण कयिा था, परपिक्व वृद्धावस्था में पहुँचे और लंबे समय की सेवा के बाद, शाश्वत वशि्राम के लिए प्रभु के पास चले गए, तो पवत्रि भाइयों के ईश्वर-चुने हुए समूह में पॉलकिार्प से बड़ा या मठवासी तपस्या में अधकि अनुभवी कोई नहीं था। इसलिए, मसीह के सभी अच्छे योद्धाओं ने सर्वसम्मतसिे और एकमत होकर इस धन्य व्यक्तको अपना नेता और मार्गदर्शक चुना, जो परमेश्वर की अतपिवत्रि माता और गुफाओं के हमारे पूजनीय पतिा एंथोनी और थयिोडोरस की पवत्रि और महान लव्रा की बागडोर संभालने के योग्य और सक्षम थे; यह कीव के ग्रैंड प्रसि रोस्टस्लिाव म्स्टस्लिावचि के शासनकाल के दौरान हुआ[5332] , मेट्रोपॉलटिन जॉन के अधीन, जो उस नाम वाले चौथे मेट्रोपॉलटिन थे[5333] और

[5331] साइमन कीव के गुफाओं के मठ के एक भकि्षु थे; वहाँ से उन्हें ग्रैंड प्रसि वेस्वेलोड यूरीवचि द्वारा नेटीवटिी मठ के मठाधीश के रूप में नयिुक्त कयिा गया था, जसिे राजकुमार ने व्लादमिीर में स्थापति कयिा था; बाद में, साइमन को व्लादमिीर के धर्मप्रांत का पहला बशिप नयिुक्त कयिा गया, जसिे 1214 में रोस्तोव के धर्मप्रांत से अलग कयिा गया था। साइमन का 1226 में बारह साल के शासन के बाद नधिन हो गया। पॉलीकार्प, जो कीव केव्स मठ के एक भकि्षु भी थे, को दो बार मठाध्यक्ष नयिुक्त कयिा गया और वे दो बार उस पद से कीव केव्स मठ लौट आए; बाद में, वे कीव केव्स मठ के मठाध्यक्ष बने। व्लादमिीर के बशिप साइमन द्वारा पॉलीकार्प को लखि एक पत्र और बाद वाले के कीव गुफाओं के आर्चमैंड्राइट अकडिनि को लखि पत्र से, जनिकी सामग्री में गुफाओं के चमत्कार करने वालों और इसकी महान चर्च के नरि्माण के दौरान मठ के भीतर हुए चमत्कारों के बारे में ववरिणों की एक श्रृंखला शामलि है, प्रसदि्ध 'केव्स पैट्रआिर्कॉन' संकलति कयिा गया था। (पतिामहों की एक पुस्तक, यानी पतिामहों द्वारा या पतिामहों के बारे में एक पुस्तक)।

[5332] रॉस्टस्लिाव म्स्तस्लिावचि – 1154 में महाप्रमुख (एक सप्ताह के लिए); दूसरी बार 1158 से 1167 तक महाप्रमुख।

[5333] जॉन चौथे, कीव के मेट्रोपॉलटिन, 1164–1166।

मेट्रोपॉलटिन क्लीमेंट के बाद तीसरे थे, जिन्हें संत क्लेमेंट द्वारा अभिषिक्त किया गया था[5334] । गुफाओं की पवित्र महान लावरा[5335] का नेतृत्व संभालने के बाद, धन्य पॉलीकार्प ने परम पूज्य थियोडोरस[5336] द्वारा स्थापित सभी मठवासी विधानों को संरक्षित करने के लिए लगन से प्रयास किया, और उनमें कुछ भी अनावश्यक नहीं जोड़ा। वह मोक्ष के कार्य में एक कुशल नेता साबित हुए; वास्तव में यही उस चमत्कारी लावरा को चाहिए था, और इसी के लिए वह प्रसिद्ध थे। धन्य पॉलीकार्प के नेतृत्व में इसकी धार्मिकता की ख्याति दूर-दूर तक फैल गई। कई कुलीन और शक्तिशाली राजकुमारों ने उनके मार्गदर्शन से लाभ उठाया और एक सदाचारी जीवन के लिए प्रयास किया, यहाँ तक कि उन्होंने उनके साथ रहने की इच्छा से अपने गौरवशाली सिंहासन भी त्याग दिए; इसका एक चमकता हुआ उदाहरण कीव के सदा-स्मरणीय राजकुमार रोस्टिस्लाव म्स्टिस्लावविच हैं। मसीह के इस प्रेमी ने, जो हमेशा धन्य पॉलीकार्प के जीवन के मार्ग को अपना आदर्श मानते थे, एक अत्यंत प्रशंसनीय प्रथा स्थापित की: महान लेंट के दौरान, हर शनिवार और हर रविवार, वह गुफाओं के बारह भिक्षुओं को और तेरहवें के रूप में, धन्य आर्किमैंड्राइट पॉलीकार्प को अपने साथ भोजन के लिए आमंत्रित करते थे; और, उन्हें भोजन कराने के बाद, वह उन्हें खाली हाथ नहीं जाने देते थे। जहाँ तक उनकी बात है, वे हर रविवार को दिव्य रहस्यों में भाग लेते थे, आँसुओं, हार्दिक आहों और कराहों के साथ प्रार्थना करते थे, ताकि उन्हें इतनी गहरी भक्ति में देखकर कोई भी अपने आँसू न रोक सके। जब पवित्र महा-उपवास समाप्त हो जाता था, तो लाजर Saturday पर मसीह-प्रेमी राजकुमार गुफाओं के सभी धन्य वृद्धों को, जो अपने तपस्वी प्रयासों से दमक उठे थे, बुलाता था, उन सभी का गर्मजोशी से सत्कार करता था, उन्हें दान देता था, और सम्मान के साथ विदा करता था। इसी तरह, वह अन्य मठों के मठीय समुदाय को, लेकिन विशेष रूप से गुफाओं के मठीय समुदाय को आमंत्रित करता और उनकी मेजबानी करता था, क्योंकि वह उन सभी के सदाचारी जीवन और, सबसे बढ़कर, उनके धन्य गुरु, पॉलीकार्प के जीवन की बहुत प्रशंसा करता था, जिन्होंने हर तरह से गुफाओं के मूल गुरुओं, एंथनी और थियोडोरस का अनुकरण किया था। इसलिए राजकुमार अक्सर धन्य व्यक्ति से गुहार लगाता था कि वह उसे गुफाओं के मठ के भिक्षुओं की पंक्ति में शामिल कर लें। लेकिन धन्य पॉलीकार्प ने उससे उत्तर दिया:

'धर्मपरायण राजकुमार! ईश्वर ने तुम्हें एक अलग जीवन जीने की आज्ञा दी है – शासन करने, धर्मपरायण न्याय करने, और क्रूस के चिह्न का कड़ाई से पालन करने की।'

और राजकुमार रोस्टिस्लाव ने उनसे आपत्ति जताई:

'हे पवित्र पिता! इस संसार का शासन पाप रहित नहीं हो सकता, और मैं इससे थक गया हूँ; इसके दैनिक चिंताओं ने मुझे थका दिया है। अत; मैं चाहता हूँ कि कम से कम अपने वृद्धावस्था में, थोड़ा सा ईश्वर की सेवा करूँ और उन राजकुमारों और राजाओं के उदाहरण का अनुसरण करूँ जिन्होंने संकीर्ण और कठिन मार्ग पर चलकर स्वर्ग के राज्य को प्राप्त किया।'

इन शब्दों पर, धन्य पॉलीकार्प ने उत्तर दिया:

'हे मसीह-प्रेमी राजकुमार! यदि आप यह पूरे हृदय से चाहते हैं, तो ईश्वर की इच्छा पूरी हो।'

हालाँकि राजकुमार इस इरादे को पूरा नहीं कर सका, फिर भी आगे से यह स्पष्ट है कि यह वास्तव में उसके हृदय की एक गहरी इच्छा थी, जो संत पॉलीकार्प के अच्छे उदाहरण से उत्पन्न हुई थी।

जब राजकुमार स्मोलेंस्क में गंभीर रूप से बीमार पड़ गया और उसे कीव ले जाने का आदेश दिया, तो उसकी बहन रोगनेदा, यह देखकर कि उसका भाई कितना कमजोर था, उससे विनती करने लगी:

'यहीं स्मोलेंस्क में रुको, और हम तुम्हें यहीं अपनी चर्च में सुला देंगे।'

उसने उससे उत्तर दिया:

[5334] आमतौर पर, मंगोल-पूर्व काल में, कीव के मेट्रोपॉलटिन का चुनाव और अभिषेक कॉन्स्टेंटिनोपल में होता था, और केवल दो ज्ञात उदाहरण हैं जब मेट्रोपॉलटिन ग्रीक नहीं बल्कि स्वदेशी रूसी थे, जिन्हें स्वयं रस में चुना और अभिषेक किया गया था। 1051 में, मेट्रोपॉलटिन हिलारियन को इसी प्रकार नियुक्त किया गया था; और 1147 में, मेट्रोपॉलटिन क्लिमेंट। मेट्रोपॉलटिन के चुनाव और अभिषेक के लिए बुलाई गई बिशपों की परिषद (1147) में—जिसमें, अन्य लोगों के अलावा, चेर्निगोव के बिशप भी शामिल थे—बाद वाले ने, कॉन्स्टेंटिनोपल के पैट्रिआर्क की भागीदारी के बिना एक रूसी मेट्रोपॉलटिन की नियुक्ति को सही ठहराते हुए, कहा: 'मैं जानता हूँ कि बिशपों को, जब वे एक परिषद के रूप में इकट्ठा होते हैं, तो एक मेट्रोपॉलटिन नियुक्त करने का अधिकार है – इसके अलावा, हमारे पास संत क्लेमेंट का सिरि (अवशेष) है; जैसे ग्रीक संत जॉन के हाथ से (अपने पैट्रिआर्क) नियुक्त करते हैं, (वैसे ही हम एक मेट्रोपॉलटिन नियुक्त करेंगे)।'

[5335] धन्य पॉलिकार्प को 1164 में कीव-पेचेर्स्क मठ के आर्चिमैंड्राइट के रूप में चुना और अभिषिक्त किया गया था।

[5336] देखें गुफाओं के एंथनी का जीवन

'कृपया ऐसा न करें; भले ही मैं बहुत कमजोर हूँ, फिर भी मुझे कीव ले जाने दें; यदि ईश्वर मुझे इस यात्रा पर ले जाए, तो मेरा शरीर मेरे पिता द्वारा निर्मित संत थियोडोर के मठ में ही विश्राम पाए; लेकिन यदि ईश्वर मुझे इस बीमारी से बचा ले, तो मैं धन्य पॉलीकार्प के मार्गदर्शन में पवित्र गुफाओं के मठ में संन्यास की शपथ लेने का वचन देता हूँ।

बाद में, जब उनकी बीमारी बढ़ गई और वे मरणासन्न हो गए, तो उन्होंने अपने आध्यात्मिक पिता, पुरोहित सिमियिन से कहा:

'केव्स मठ में उस पवित्र व्यक्ति द्वारा मेरा मुंडन न होने देने के लिए आपको ईश्वर के समक्ष उत्तर देना होगा: मैंने इसकी तीव्र इच्छा की थी, और प्रभु मेरे व्रत को पूरा न कर पाने के पाप को क्षमा करें!'

इस प्रकार उन्होंने धन्य विश्राम में देह त्यागा। सदा-स्मरणीय राजकुमार द्वारा जीए गए ऐसे पुण्य जीवन की शुरुआत और कारण कोई और नहीं बल्कि हमारे पूजनीय पिता पॉलीकार्प के तपस्वी जीवन का उदाहरण और ईश्वर-प्रेरित परामर्श थे, जिन्होंने अपने शासनकाल के दौरान पवित्र और चमत्कारी गुफाओं के मठ के एक योग्य मठाधीश के रूप में कार्य किया; अपने पुण्य उदाहरण से न केवल संन्यासी समुदाय बल्कि भक्तिपूर्ण गृहस्थों को भी प्रेरित करते हुए, उन्होंने उन्हें पश्चाताप और मोक्ष के मार्ग पर स्थापित किया। इस प्रकार उन्होंने ईश्वर द्वारा उन्हें सौंपी गई भेड़ों की झुंड का बहुत सावधानी से पालन-पोषण किया। उन्होंने लंबा जीवन जिया और अपनी वृद्धावस्था में, संसार की सृष्टि के 6690वें वर्ष में, और मसीह के जन्म के 1182वें वर्ष में, 24 जुलाई को, पवित्र कष्ट-सहिष्णु, रूसी राजकुमारों बोरिस और ग्लेब के पर्व के दिन, प्रभु के पास प्रस्थान किया। उनके शरीर को पवित्र संतों के बगल में सम्मानपूर्वक वस्त्र पहनाकर दफनाया गया।

उनके निधन के बाद, मठ में एक बड़ी दुविधा उत्पन्न हुई: भाई-बंधु एक नए मठाधीश का चुनाव नहीं कर सके। यद्यपि कई धन्य वृद्धजन ऐसे पद के योग्य थे, लेकिन विनम्रता और मौन के अपने व्रत के कारण, एक भी इसे स्वीकार करने के इच्छुक नहीं था: वे इसे आज्ञाकारिता और एकांत में रहने के लिए बेहतर मानते थे, ताकि उनकी परिश्रम से अर्जित सद्गुणों का खजाना उन चिंताओं और दुखों में बर्बाद न हो जाए जो आमतौर पर नेतृत्व से अविभाज्य होते हैं। भाइयों ने शोक मनाया और कड़वी विलाप की: इतनी बड़ी भेड़ एक घंटे के लिए भी बिना चरवाहे के नहीं रह सकती थी। मंगलवार को घंटी बजाई गई; पूरा समुदाय चर्च में इकट्ठा हुआ और परमेश्वर की परम पवित्र माता और पूजनीय पिता एंथनी और थियोडोसियस से अपनी आवश्यकता के लिए प्रार्थना करना शुरू कर दिया, सहायता के लिए तपस्वी – नव-निधन हुए धन्य पॉलीकार्प – को पुकारा और उनसे प्रार्थना की कि वह परमेश्वर से उनके स्थान पर एक मठाधीश नियुक्त करने के लिए विनती करें, और इस प्रकार यह प्रकट हो कि उसने प्रभु को प्रसन्न किया था या नहीं। एक चमत्कार हुआ: मानो एक ही स्वर में, कई लोगों ने एक साथ कहा:

'आओ हम श्चेकोवट्सा के धार्मिक पुरोहित बेसलि के पास चलें[5337] ; वही हमारे मठाधीश हों और गुफा मठ के भिक्षुओं का शासन करें।'

वे सभी झुककर फादर बेसलि के पास आए और कहा:

'हम, गुफा मठ के भाई, सभी आपके सामने नमन करते हैं और आपको अपना पिता तथा मठाधीश बनाना चाहते हैं!'

फादर बेसलि अत्यंत आश्चर्यचकित हुए; उन्होंने एक-एक करके गहरी नम्रता से उन्हें प्रणाम किया और कहा:

'हे पवित्र पिताओं! मैंने तो केवल संन्यासी जीवन के बारे में ही सोचा था; मैं, जो इतना अयोग्य हूँ, मठाध्यक्ष कैसे बन सकता हूँ?'

और उन्होंने लंबे समय तक इनकार किया, जब तक कि अंततः वे उनकी ज़िद भरी विनतियों के आगे झुक नहीं गए। फिर भाइयों ने उन्हें अपने साथ मठ ले गए।

शुक्रवार को, इस ईश्वर-चुने बेसलि के मुंडन के लिए, कीव के महाधर्माध्यक्ष परम पावन निकिफोर[5338] और ईश्वर-प्रेमी बिशप—टुरोव के लॉरेंटी और पोलोत्स्क के निकोले—सभी सबसे सम्मानित मठाध्यक्षों के साथ आए; परम पावन निकिफोर ने स्वयं अपने हाथों से उनका मुंडन किया। इस प्रकार वह पवित्र गुफाओं के मठ के भिक्षुओं का मठाधीश और एक अच्छा चरवाहा बना; अपनी प्रार्थनाओं के द्वारा, वह सभी के लिए सदाचार का एक आदर्श था, स्वर्गीय मार्गदर्शक और चरवाहों के प्रधान, प्रभु परमेश्वर और हमारे उद्धारकर्ता यीशु मसीह की महिमा और सम्मान के

[5337] कीव में एक स्थल।

[5338] निकिफोरस द्वितीय, 1182 से 1197 तक के क्रॉनिकल में उल्लेखित।

लिए, उन्हें, अनंतकालकि पिता और परम पवित्र, शुभ और जीवन-प्रदायक आत्मा के साथ, सारी सृष्टकि ओर से अखंड स्तुतऔिर आराधना मलि, अब और हमेशा, और युगों-युगों तक। आमीन।

- इस दनि हम पवित्र शहीदों, रूसी राजकुमार बोरसि (रोमन) और ग्लेब (डेवडि) का स्मरण करते हैं। (देखें 2 मई

7 अगस्त

25 जुलाई (पुराना कैलेंडर)

आज के दनि, 1444 में ज़ेल्टोवोडस्क के पूजनीय मकरयिस का नधिन।

सम्माननीय कुंवारी यूप्रैक्सिया का जीवन

25 जुलाई को स्मरण कयिा जाता है

धर्मपरायण सम्राट थयिोडोसयिस महान के दनिों में[5339] , कॉन्स्टेंटनिोपल में[5340] एक प्रतष्ठिति व्यक्तरिहते थे, जनिका नाम एंटगिोनस था, जो सम्राट के रश्तिेदार थे, शब्द और कर्म दोनों में ववेिकी, और अपने परामर्श में बुद्धमिान थे; वह हमेशा राजकीय मामलों में उचति और सहायक मार्गदर्शन देता था; इसके अलावा, वह लोगों के प्रतदियालु, करुणामय, गरीबों पर दया करने वाला और उससे मदद मांगने वाले कसिी भी व्यक्तकिी सहायता करने के लिए तैयार रहता था। सम्राट उसे न केवल एक रश्तिेदार के रूप में, बल्कमिसीह के एक भक्तपिूर्ण प्रेमी और एक अच्छे सलाहकार के रूप में भी प्यार करते थे। एंटीगोनस बहुत अमीर भी थे, इतने अमीर कराजा को छोड़कर उनसे अधकि धनी कोई नहीं था। उन्होंने अपनी पत्नी के रूप में यूप्रैक्सिया नाम की एक सुंदर युवती को चुना, जो शाही वंश की भी थी; वह धार्मकि और ईश्वर-भयभीत थी, पवित्र चर्चों में जाने से प्यार करती थी, आँसुओं के साथ ईश्वर से प्रार्थना करती थी, और प्रभु के पवित्र स्थानों की सजावट के लिए ईश्वर के चर्चों को उदारतापूर्वक दान देती थी। एंटगिोनस और यूप्रैक्सिया, यह कुलीन, ईश्वर-भयभीत जोड़ा, जो शरीर और आत्मा से एक थे और राजा-रानी के प्रयि थे, की एक बेटी हुई, जसिका उन्होंने अपनी माँ के नाम पर यूप्रैक्सिया रखा। एक दनि, उसके जन्म के बाद, एंटगिोनस ने अपनी पत्नी यूप्रैक्सिया से कहा:

'तुम जानती हो, मेरी पत्नी, कयिह जीवन क्षणकि है और इस व्यर्थ संसार की संपत्तकिुछ भी नहीं है: मानव जीवन मुश्कलि से अस्सी वर्ष की आयु तक रहता है, जबकजिो संपत्तपिरमेश्वर से डरने वालों के लिए स्वर्ग में तैयार की गई है, वह अनंत युगों तक बनी रहती है। और हम, सांसारकि चतिाओं में बँधे और क्षणकि धन-संपत्तके मोह में फँसे, अपने दनि व्यर्थ में बतिाते हैं, जसिसे हमारी आत्मा को कोई लाभ नहीं होता।

यह सुनकर, यूप्रैक्सिया ने एंटगिोनस से पूछा:

'तो फरि हमें क्या करना चाहिए, मेरे स्वामी?'

एंटीगोनस ने उत्तर दयिा:

'ईश्वर की कृपा से हमें एक बेटी हुई है, और हमारे लिए एक ही काफी है; आइए हम अपने कामुक वैवाहकि संबंध को समाप्त कर दें – आइए हम इसके बनिा ही जीवन यापन करें।'

तब यूप्रैक्सिया ने अपने हाथ ऊपर उठाए, अपनी आँखें आकाश की ओर उठाईं और एक आह भरकर अपने पतसिे कहा:

'धन्य है प्रभु ईश्वर, जनिहोंने आपको उनका भय दखिाया और आपको सच्चे ज्ञान की ओर मार्गदर्शन कयिा। मैं यह बात नहीं छपिाऊँगी, मेरे स्वामी, कमैंने कई बार ईश्वर से प्रार्थना की है कविह आपके हृदय को प्रकाशति करें

[5339] थेओडोसयिस महान – 379 से 395 तक सम्राट।

[5340] बाइज़ेन्टयिम – बोस्फोरस के यूरोपीय कनिारे पर 658 ईसा पूर्व में स्थापति एक मेगारीय उपनविेश; गोल्डन हॉर्न, जो अपनी प्राकृतकि वशिषताओं और ब्लैक सी को मार्मारा सागर से जोड़ने वाली संकरी जलडमरूमध्य पर अपनी प्रभुत्वशाली स्थतिकि लिए उल्लेखनीय एक खाड़ी है, ने एक व्यापार और उद्योग केंद्र के रूप में इसकी महत्वता सुनश्चति की। सम्राट कॉन्स्टेंटनि द ग्रेट ने बज़िान्टयिम के स्थान के लाभों को पहचानते हुए, रोमन साम्राज्य की राजधानी को वहाँ (330 में) स्थानांतरति कर दयिा, जसिसे बज़िान्टयिम को वशि्व इतहिास में एक स्थान प्राप्त हुआ; इसने अतीत के साथ अपने संबंध तोड़ लिए और इसे कॉन्स्टेंटनिोपल, यानी नया रोम के नाम से जाना जाने लगा।

और आपके मन में ऐसा शुभ वचिार डालें, लेकनि मैं कभी आपसे अपनी इच्छा व्यक्त करने की हम्मित नहीं कर सकी; अब जब आपने स्वयं इस बारे में बात की है, तो कृपया मुझे कुछ शब्द कहने की अनुमतदिें।

'बोलएि, मेरी मालकनि, जो कुछ भी आप चाहती हैं,' एंटगिोनस ने सहमतजिताई।

'आप जानते हैं, मेरे स्वामी,' यूप्रैक्सयिा ने जारी रखा, 'प्रेरति क्या कहते हैं: *"समय कम है; इसलएि जनिकी पत्नयिाँ हैं वे ऐसे रहें जैसे कि उनकी कोई पत्नी न हो; और जो रोते हैं वे ऐसे रहें जैसे कि वे रोए ही नहीं; और जो आनंद मनाते हैं वे ऐसे रहें जैसे कि वे आनंद मनाए ही नहीं; और जो कुछ खरीदते हैं वे ऐसे रहें जैसे कि उन्होंने कुछ प्राप्त ही नहीं कयिा; और जो संसार का उपयोग करते हैं वे ऐसे रहें जैसे कि वे इसका उपयोग ही नहीं कर रहे; क्योंकि इस संसार का वर्तमान स्वरूप बीत रहा है"* (1 कुरन्थियिों 7:29–31)। अतः आइए, हम इस क्षणकि जीवन को आपकी इच्छानुसार, सांसारकि संबंधों के बनिा जएिँ, ताकि हम सब मलिकर शाश्वत, अमर जीवन प्राप्त कर सकें। और यह सारी संपत्ति जो हमारे पास अब है, और ये सारी संपत्तयिाँ—इनका हमारे लएि क्या उपयोग है? क्या हम इनमें से कुछ भी अपने साथ कब्र में ले जा सकते हैं? इसलएि, अपने शुभ इरादों के साथ, इन चीज़ों को गरीबों को दे दो, ताकि हमारा यह नर्णिय व्यर्थ न जाए।

अपनी पत्नी से ये वचन सुनकर, एंटगिोनस ने परमेश्वर की स्तुति की और अपने धन को उदारतापूर्वक गरीबों में बाँटना शुरू कर दयिा; अपनी पत्नी के साथ, वह एक भाई की तरह बहन के साथ रहता था, बनिा शारीरकि संबंध के, परस्पर आध्यात्मकि प्रेम में, एक ही हृदय और एक ही मन से परमेश्वर को प्रसन्न करते हुए। अपने जीवन के लएि ऐसे सदाचारी नयिम नर्धिारति करने के बाद, एंटगिोनस केवल एक वर्ष तक अपनी पत्नी के साथ वैवाहकि संबंधों के बनिा जीने के बाद प्रभु के पास चले गए; और राजा और रानी ने एक रश्तिेदार और एक धर्मी और धर्मपरायण व्यक्ति के रूप में उनके लएि शोक मनाया। उन्होंने वधिवा यूप्रैक्सयिा के प्रति भी अपनी संवेदना व्यक्त की, जो अभी बहुत छोटी थी: वह अपने पति के साथ केवल दो साल तीन महीने ही वैवाहकि जीवन में रही थी, और एक साल बनिा वैवाहकि संबंधों के रही थी। एंटीगोनस के दफ़न के बाद, राजा और रानी ने यूप्रैक्सयिा को सांत्वना देने का पूरा ध्यान रखा। उसने, बदले में, अपनी बेटी को लयिा, उसे अपनी बाहों में बठिाया, और उनके पैरों पर गरिते हुए, रोते और ससिकते हुए कहा:

'मैं इस अनाथ को ईश्वर और आपके हवाले करती हूँ; अपने संबंधी एंटगिोनस की याद में इसे अपना लें और इसके लएि माता-पति जैसा स्नेह दखिाएँ।'

उपस्थति कई लोगों की आँखों में आँसू आ गए, और राजा-रानी स्वयं रो पड़े। चार साल बाद, जब यूप्रैक्सयिा की बेटी पाँच साल की हो गई, तो राजा ने उसकी माँ से सलाह-मशवरि करके उस बच्ची का रश्तिा एक सेनेटर के बेटे से कर दयिा, जो एक कुलीन युवक था और उसने वादा कयिा कि वह लड़की के वयस्क होने तक प्रतीक्षा करेगा; इस बात की पुष्टि करने के बाद, राजा ने यूप्रैक्सयिा को उससे एक प्रतज्ञि और एक लखिति वचन लेने का आदेश दयिा। कुछ समय बाद, एक सेनेटर ने यूप्रैक्सयिा, जो एंटगिोनस की वधिवा थी, से ववािह करने की इच्छा व्यक्त की, और उसने रानी से, कुछ कुलीन महलिाओं के माध्यम से और राजा से गुप्त रूप से, यूप्रैक्सयिा को उससे ववािह करने के लएि राजी करने को कहा। रानी ने अपनी ओर से वधिवा यूप्रैक्सयिा के पास दासी भेजीं, और उसे उपर्युक्त सेनेटर से ववािह करने की सलाह दी। यह सुनकर, यूप्रैक्सयिा रो पड़ीं और उनके पास आई महलिाओं से कहा:

'ऐसी सलाह देने के लएि तुम्हारा अगले जन्म में वनिाश हो, जबकि मैंने ईश्वर से वधिवा जीवन की पवत्रिता में रहने का व्रत लयिा है; मुझसे दूर हो जाओ: तुम्हारी सलाह मेरी इच्छा के वरिुद्ध है!'

ऐसी फटकार सुनकर, वे शर्मदिा होकर चली गईं और इस बात की सूचना रानी को दी। जब राजा को यह पता चला, तो वह रानी पर बहुत क्रोधति हुआ और उसे फटकारा:

उसने कहा, 'तुमने एक ऐसा काम कयिा है जो तुम पर बलि्कुल भी शोभा नहीं देता! क्या यह एक ईसाई रानी के लएि उपयुक्त है? क्या इसी तरह तुमने ईश्वर से धर्मपरायणता से शासन करने का वादा कयिा था? क्या इसी तरह तुम हमारे करीबी रश्तिेदार और वश्विसनीय सलाहकार एंटगिोनस को याद करती हो?' उसकी पत्नी, जो उसके साथ थोड़े ही समय तक रही और उसके जीवति रहते हुए, उसकी इच्छानुसार, ईश्वर के लएि पवत्रि जीवन का चयन कयिा—तुम उसे एक बार फरि सांसारकि जीवन में लौटने के लएि मना रही हो! तुम्हें ईश्वर का कोई भय नहीं है! हर कोई तुम पर हँसेगा, तुम मूर्ख महलिा!"

ये शब्द सुनकर रानी को इतनी शर्म आई कि वह दो घंटे तक पत्थर की तरह चुप रही। और यूप्रैक्सयिा को लेकर राजा और रानी के बीच काफी झगड़ा हुआ। यह सुनकर यूप्रैक्सयिा बहुत दुखी और परेशान हो गई; उसका चेहरा सूख गया।

उसने कॉन्स्टेंटनिोपल से चुपके से नकिल जाने का नश्चिय कयिा और अपने बेटी यूप्रैक्सयिा से कड़वाहट भरे आँसुओं के साथ कहा:

'मेरी बेटी, मस्रि में हमारी एक बड़ी जागीर है; चलो वहाँ चलते हैं, और तुम अपने और मेरे पतिा की संपत्तदिेखोगी: क्योंकविह सब तुम्हारी ही है।'

अपनी बेटी और कुछ पुरुष तथा महलिा नौकरों के साथ, वह राजा को बनिा बताए गुप्त रूप से शहर से नकिल गई, और मस्रि पहुँचकर अपनी जमीनों की देखरेख करने लगी। वह कभी-कभी अपने नौकरों और प्रबंधकों के साथ थेबाइड के अंदरूनी हस्सिों में यात्रा करती थी और, पुरुषों और महलिाओं दोनों के लएि चर्चों और मठों का दौरा करते हुए, उसने सोने और चांदी का उदारतापूर्वक वतिरण करते हुए कई दान दएि।

शहर के पास तावेना का एक मठ था, जसिमें एक सौ तीस नन थीं, जनिके धार्मकि कार्यों की लोगों में बहुत चर्चा होती थी: उनमें से कोई भी शराब नहीं पीती थी, न ही वे तेल, अंगूर या कोई भी फल खाती थीं। उनमें से कुछ, जो बचपन में ही कन्वेंट में आ गई थीं, उन्होंने तो फल देखा भी नहीं था। उनका भोजन रोटी और पानी, अंगूर का रस और हरी सब्जयिाँ होता था, और वह भी बनिा तेल के। वे दनि में एक बार, शाम को भोजन करती थीं; कुछ दूसरे दनि भोजन करती थीं, जबकि कुछ तो हर दो दनि में ही थोड़ा-सा भोजन लेती थीं। वे कभी आराम नहीं करती थीं और न ही स्नान करती थीं। स्नान की तो कोई बात ही नहीं थी: वे शरीर खोलने की बात सुनना भी बर्दाश्त नहीं कर सकती थीं, और 'स्नान' शब्द का इस्तेमाल उनके बीच एक अपमान, शर्म और उपहास के रूप में कयिा जाता था। उनके पास बछिावन के लएि केवल जमीन पर बछिाया जाने वाला एक रेशा-कपड़ा था, जो तीन कोहनी लंबा और एक कोहनी चौड़ा था: वे इसी पर सोती थीं, और वह भी बहुत कम। उनके कपड़ों में बाल वाली कमीजें होती थीं, जो ज़मीन तक लंबी और उनके पैरों को ढकने वाली होती थीं। और उनमें से प्रत्येक अपने बस की पूरी मेहनत करती थी। जब उनमें से कोई बीमार पड़ जाती, तो वह कोई दवा नहीं लेती थी, बल्कि अपनी बीमारी को कृतज्ञता से सहन करती थी, मानो ईश्वर की ओर से कोई बड़ा आशीर्वाद मलिा हो, और मदद के लएि केवल उसी की ओर देखती थी। उनमें से कोई भी कभी मठ की दीवारों से बाहर नहीं नकिली या आगंतुकों से बात नहीं की; सभी संपर्क एक ही द्वारपाल के माध्यम से होते थे: उनका सारा उत्साह प्रार्थना में ईश्वर से संवाद करने और उन्हें प्रसन्न करने की ओर नर्दिेशति था। इसी कारण, ईश्वर ने उनकी प्रार्थनाओं को स्वीकार कयिा और उनके लएि कई चमत्कार कएि, वहाँ आने वाले सभी बीमारों को स्वास्थ्य प्रदान कयिा। धन्य वधिवा यूप्रैक्सयिा इस मठ और इन ननों के जीवन के प्रशंसनीय तरीके से बहुत प्रभावति हुई; वह अक्सर अपनी बेटी के साथ इसकी यात्रा करती थीं और चर्च में मोमबत्तयिाँ और धूप लाती थीं। एक दनि उसने एबेस और अन्य वरषि्ठ बहनों से कहा:

'मैं आपके मठ को सोने के बीस या तीस लीटर[5341] की एक छोटी सी भेंट देना चाहती हूँ, ताकि आप मेरे, मेरी बेटी और उसके दविंगत पतिा, एंटगिोनस के लएि ईश्वर से प्रार्थना करें।'

एब्बेस—जो एक डीकोनेस ([5342]) थीं और जन्हिें थयिोडुला कहा जाता था—ने उन्हें इस प्रकार उत्तर दयिा:

'मेरी स्वामनिी, आपकी ये दासयिाँ सोने या संपत्तकिी कसिी भी प्रकार की आवश्यकता नहीं रखतीं: उन्होंने शाश्वत आशीर्वादों की पात्रता प्राप्त करने के लएि इस संसार की सभी वस्तुओं का त्याग कर दयिा है; अतःहम पृथ्वी पर कुछ भी धारण नहीं करना चाहतीं, कहीं ऐसा न हो कि हम स्वर्ग की संपदा से वंचति रह जाएँ। हालाँकि, आपको दुखी न

[5341] एक लीटर वजन की एक इकाई है जो लगभग एक पाउंड के बराबर होती है।

[5342] दीकोनीस (Deaconesses) प्रेरतिों के समय से ही मौजूद थीं। प्रेरति पौलुस ने अपनी रोमयिों के नाम पत्र (रोमयिों 16:1) में फोबे का उल्लेख कयिा है, जो 'केनख्रेया में कलीसयिा की सेवकिा' थीं; प्रेरतिों के पश्चात के काल में, सार्वभौमकि परषिदों (प्रथम सार्वभौमकि परषिद, कैनन 19; चतुर्थ सार्वभौमकि परषिद, कैनन 15; षष्ठ सार्वभौमकि परषिद, कैनन 14) द्वारा, साथ ही चर्च के पतिरों और शकि्षकों, और सम्राटों द्वारा अपने कानूनों में (जस्टनियिन, नोवेल्स 3, 6 और 123) डकिोनसिों का अक्सर उल्लेख मलिता है। प्रारंभ में, डीकोनेस का चयन मुख्य रूप से कुंवारी महलिाओं में से कयिा जाता था, और वधिवाओं में से केवल उन वधिवाओं को चुना जाता था जो 'वफादार और धर्मपरायण, जनिका ववािह केवल एक बार हुआ हो' (एपोस्टोलकि कॉन्स्टट्यिूशंस, पुस्तक VI, 18); लेकनि सम्राट जस्टनियिन के अधीन दोनों समूहों से चयन करने की अनुमतदिी गई, और वास्तव में 40 वर्ष की आयु से पहले भी, हालांकि वास्तवकि मंत्रालय उन्हें उस आयु तक पहुँचने पर ही सौंपा जाता था। (चौथा सार्वभौमकि परषिद, कैनन 15; जस्टनियिन के नोवेल्स 123); केवल धर्मपरायण जीवन से वशिषि्ट महलिाएं ही बनिा कसिी परीक्षा अवधकि तुरंत ही डीकोनेस के रूप में नयिुक्त की जाती थीं। डीकोनेस के कर्तव्य इस प्रकार थे: 1) वे महलिाओं को बपतस्मिा के लएि तैयार करती थीं; 2) वे महलिाओं के वास्तवकि बपतस्मिा के दौरान चर्च के मंत्रयिों की सहायता करती थीं; 3) वे बशिप द्वारा महलिाओं के संबंध में सौंके गए वभिन्नि कार्यों को करती थीं - जैसे बीमारों और संकट में पड़े लोगों से मलिना; 4) वे चर्च में महलिाओं और बच्चों के बीच व्यवस्था और शषि्टाचार सुनश्चिति करती थीं।

करने के लिए, चर्च के दीयों के लिए थोड़ा तेल, कुछ मोमबत्तियाँ और धूप लाओ, और इसके लिए तुम्हें प्रभु से पुरस्कार मिलेगा।"

यूप्रैक्सिया ने वैसा ही किया, और उसने मठ की अधिष्ठात्री और सभी बहनों से अपने पति एंटिगोनस और अपनी बेटी के लिए प्रार्थना करने को कहा।

एक दिन, जब यूप्रैक्सिया हमेशा की तरह इस मठ में आईं, तो मठाधिपति, मानो ईश्वर की आत्मा से प्रेरित होकर, ने यूप्रैक्सिया की छोटी बेटी से कहा:

'मेरी लेडी यूप्रैक्सिया, क्या आप इस मठ और इन बहनों से प्रेम करती हैं?'

'हाँ, मैडम,' उसने उत्तर दिया, 'मैं आप सभी से प्यार करती हूँ।'

'अगर तुम हमसे प्यार करती हो,' मदर सुपीरियर ने कहना जारी रखा, 'तो एक नन के रूप में हमारे साथ रहो।'

लड़की ने उत्तर दिया:

'बिल्कुल, बशर्ते मेरी माँ दुखी न हों, मैं यहाँ से नहीं जाऊँगी।'

तब मदर सुपीरियर ने उससे पूछा:

'मुझसे सच कहो: तुम किसे ज़्यादा प्यार करती हो – हमसे या अपने मंगेतर से?'

लड़की ने जवाब दिया, "मैं उसे नहीं जानती, लेकिन मैं आपको जानती और प्यार करती हूँ। तो मुझे बताइए, आप किससे ज़्यादा प्यार करती हैं: मुझसे या उस व्यक्ति से जिसे आप वर कहते हैं?"

मदर सुपीरियर ने उत्तर दिया:

'हम तुमसे और हमारे मसीह से प्रेम करते हैं।'

इस पर, लड़की ने स्वीकार किया:

'और मैं तुमसे और तुम्हारे मसीह से प्यार करती हूँ।'

और उसकी माँ, यूप्रैक्सिया, अपनी बेटी की बुद्धिमानी भरी बातें सुनती रहीं, और उनकी आँखों से भरपूर आँसू बहने लगे। मठाधिपति ने भी उस छोटी सी लड़की की बातों को स्नेहपूर्वक सुना और आश्चर्यचकित हुईं कि वह, जो अभी भी एक बच्ची थी – उसकी उम्र अभी सात वर्ष भी नहीं हुई थी – इतनी बुद्धिमानी से उत्तर दे सकी। अंत में, उसकी माँ ने अपनी बेटी पर दया करके उससे कहा:

'चलो, मेरी बच्ची, हम घर चलते हैं; शाम हो चुकी है।'

लेकिन लड़की ने उत्तर दिया:

'मैं यहाँ मदर सुपीरियर के साथ रहूँगी।'

इस पर मदर सुपीरियर ने उससे कहा:

'अपनी माँ के साथ घर जाओ; तुम्हें यहाँ नहीं रहना चाहिए: केवल एक युवती जो स्वयं को मसीह को समर्पित कर चुकी हो, यहीं रह सकती है।'

– 'लेकिन मसीह कहाँ हैं?' लड़की ने पूछा। मदर सुपीरियर बहुत प्रसन्न हुईं और उन्होंने मसीह की प्रतिमा की ओर इशारा किया। लड़की दौड़ी, उद्धारकर्ता की प्रतिमा को चूमने लगी और मदर सुपीरियर की ओर मुड़कर बोली:

'सचमुच, मैं भी स्वयं को मसीह को समर्पित करती हूँ और अपनी माँ के साथ यहाँ से नहीं जाऊँगी, बल्कि आपके साथ रहूँगी।'

'मेरी बच्ची,' मदर सुपीरियर ने आपत्ति जताई, 'तुम्हारे पास सोने के लिए कुछ भी नहीं है; तुम यहाँ नहीं रह सकती।'

लड़की ने जवाब दिया, 'आप जिस पर भी सोती हैं, मैं भी उसी पर सोऊँगी।'

शाम का अँधेरा गहरा रहा था, और उसकी माँ और मठाधीश हर तरह से उस लड़की को मठ छोड़कर घर जाने के लिए मनाने की कोशिश करती रहीं, लेकिन वे कुछ नहीं कर सकीं, क्योंकि उसका जाने का कोई इरादा नहीं था। अंत में, मठाधीश ने उससे कहा:

'मेरी बच्ची, अगर तुम यहाँ रहना चाहती हो, तो तुम्हें पढ़ना-लिखना सीखना होगा, भजन-पुस्तक का अध्ययन करना होगा, और दूसरी बहनों की तरह शाम तक उपवास रखना होगा।'

लड़की ने सहमति जताई, 'मैं उपवास रखूँगी, और मैं सब कुछ सीख लूँगी, बस मुझे यहीं रहने दो।'

तब मदर सुपीरियर ने उसकी माँ से कहा:

'मेरी माता जी, उसे यहीं रहने दें: मैं देख सकती हूँ कि ईश्वर की कृपा उस पर चमक रही है; कि उसके पिता के धार्मिक कर्म और आपका पवित्र जीवन, आप दोनों के माता-पिता के रूप में प्रार्थनाओं और आशीर्वादों के साथ, उसे अनंत जीवन की ओर ले जा रहे हैं।'

तब कुलीन यूप्रैक्सिया अपनी बेटी को उद्धारकर्ता की प्रतिमा के पास ले गई, उसने अपने हाथ ऊपर उठाए और आँसुओं के साथ कहा:

'हे प्रभु यीशु मसीह, इस बच्ची का ध्यान रखना: उसने आपको चाहा, उसने स्वयं को आपको समर्पित कर दिया है!'

फिर वह लड़की की ओर मुड़ी:

'यूफ्रैक्सिया, मेरी बेटी! जिसने पहाड़ों को दृढ़ता से स्थापित किया है, वही ईश्वर तुम्हें अपने भय में स्थापित करे।'

इन शब्दों के साथ, उन्होंने लड़की को मदर सुपीरियर के हवाले कर दिया, जबकि वे खुद रो रही थीं और अपना सीना पीट रही थीं, और सभी नन उनके साथ रो रही थीं। और इस प्रकार उन्होंने अपनी बेटी को ईश्वर के हवाले कर, मठ छोड़ दिया।

अगले दिन सुबह-सुबह, वह मठ में लौट आई। अधिष्ठात्री ने यूप्रैक्सिया नामक लड़की को चर्च में ले जाकर, एक प्रार्थना करने के बाद, उसकी माँ के सामने उसे स्वर्गदूतों जैसा संन्यासी वस्त्र पहनाया। अपनी बेटी को स्वर्गदूतों जैसा वस्त्र पहने देखकर माँ ने अपने हाथ स्वर्ग की ओर उठाए और उसके लिए ईश्वर से इस प्रकार प्रार्थना करने लगी:

'हे शाश्वत राजा, आपने जो यह शुभ कार्य उनमें आरंभ किया है, उसे पूर्ण कीजिए—यह अनुग्रह कीजिए कि वह आपकी पवित्र इच्छा को पूरा कर सके; हे सृष्टिकर्ता, यह अनाथ, जिसने बचपन से ही स्वयं को आपके प्रति समर्पित कर दिया है, आपके पास दया पाए।'

फिर उसने अपनी बेटी से पूछा:

'मेरी बेटी, क्या तुम्हें यह साधु-संन्यास की पोशाक पसंद है?'

लड़की ने जवाब दिया, 'हाँ, मुझे ये पसंद हैं,' 'क्योंकि मैंने मदर सुपीरियर और अन्य ननों से सुना है कि मसीह इन वस्त्रों को उन लोगों को सगाई की निशानी के रूप में देते हैं जो उनसे प्रेम करते हैं।'

उसकी माँ ने उत्तर दिया:

'हे मेरी बेटी, जिसे मसीह से तेरी सगाई हुई है, वह तुझे अपने स्वर्गीय महल में स्थान दे।'

यह कहकर, उसने अपनी बेटी को चूमा; फिर, एबेस और सभी बहनों से विदा लेकर, वह मठ से चली गई। अपनी आदत के अनुसार, वह मिस्र में अन्य मठों—मरुभूमि और शहरों दोनों में—के साथ-साथ गरीबों के घरों का दौरा करने लगी, और अपने धन का उपयोग सभी गरीबों और जरूरतमंदों की मदद करने के लिए करने लगी। धन्य विधवा यूप्रैक्सिया, उनके पुण्य कार्यों और परोपकार के अनगिनत कार्यों की खबर दूर-दूर तक फैल गई; इसकी चर्चा स्वयं सम्राट थियोडोसियस महान और उनके कुलीनों तक भी पहुँची; सभी उनके जीवन-यापन के तरीके पर चकित हुए और उस ईश्वर की स्तुति की, जिसने उन्हें बल दिया। उनके बारे में कहा जाता था कि वह न तो मछली खाती थीं, न ही शराब पीती थीं, हर दिन शाम तक उपवास रखती थीं, और देर शाम को केवल बहुत ही कम उपवास का भोजन, जैसे कि कुट्या या सब्जियां, लेती थीं; उनकी अपार संपत्ति को देखते हुए, हर कोई उनके इस तरह के आत्म-संयम से चकित था। कुछ वर्षों बाद, उपर्युक्त मठ की अधिष्ठात्री ने सदाचारी विधवा यूप्रैक्सिया को अपने कक्ष में आमंत्रित किया और उससे गुप्त रूप से कहा:

'मेरी महारानी, मैं आपको कुछ महत्वपूर्ण बताना चाहती हूँ, लेकिन घबराइए मत।'

'बोलिए, मेरी मालकिन, जो कुछ भी आप चाहती हैं,' उसने उत्तर दिया। मठाधीश ने निम्नलिखित कहा:

'यदि आप अपनी बेटी के संबंध में कोई व्यवस्था करना चाहती हैं, तो बिना देरी के करें। मैंने आपके पति एंटिगोनस को एक सपने में हमारे प्रभु मसीह के सामने महान महिमा में खड़े देखा और उनसे विनती करते देखा कि वे आपको अपना शरीर छोड़ने और उनके साथ रहने का आदेश दें, उसी महिमा का आनंद लेते हुए जिसके वह अपने सदाचारी जीवन के माध्यम से पात्र बने थे।'

यह सुनकर वह धर्मनिष्ठ महिला न केवल अविचलित रही, बल्कि वास्तव में परमानंदित हो गई: वह अपना शरीर त्यागकर मसीह के पास जाने के लिए लालायित थी। उसने तुरंत अपनी बेटी को बुलाया, जो लगभग बारह वर्ष की थी, और उससे कहा:

'मेरी बेटी, यूप्रैक्सिया! मसीह मुझे पहले ही बुला रहे हैं, जैसा कि मदर सुपीरियर ने मुझे बताया है, और मेरे निधन का दिन नज़दीक है; इसलिए, मैं तुम्हारे पिता और अपनी सारी संपत्ति तुम्हारे हाथों में सौंप रही हूँ; उन्हें ईमानदारी से संभालो, ताकि तुम स्वर्ग के राज्य की वारिस बन सको।'

कन्या यूप्रैक्सिया रोई और बोली:

'हाय! मैं अकेली, एक अनाथ रह गई हूँ!'

'मेरी बेटी,' उसकी माँ ने उससे कहा, 'मसीह तुम्हारे पिता हैं, जिनसे तुम्हारा सगाई का रिश्ता हुआ है; तुम अकेली अनाथ नहीं रहोगी: अपनी माँ के स्थान पर, तुम्हारे पास मदर सुपीरियर होंगी; बस मसीह से किए गए अपने वादे को पूरा करने का प्रयास करना। ईश्वर का भय मानो, अपनी बहनों का आदर करो, और नम्रता से उनकी आज्ञा मानो; कभी अपने मन में यह न सोचो कि तुम राजसी वंश की हो, और यह न कहो: 'उन्हें मेरे लिए काम करना चाहिए, न कि मुझे उनके लिए,' बल्कि निम्र बनो, और प्रभु तुमसे प्रेम करेंगे; पृथ्वी पर गरीब बनो, और तुम स्वर्ग में धनी होगे। देखो, सब कुछ तुम्हारे हाथ में है: अगर कन्वेंट को पैसों की ज़रूरत हो, तो जितनी ज़रूरत हो उतनी दे देना, और मेरे और अपने पिता के लिए प्रार्थना करना, ताकि हमें ईश्वर की दया प्राप्त हो और हम अनंत यातना से मुक्त हो जाएँ।

धन्य यूप्रैक्सिया ने अपनी बेटी को यही वसीयत दी; तीन दिन बाद वह प्रभु के पास चली गईं और उसी कन्वेंट में दफनाई गईं।

जब राजा को पता चला कि एंटिगोनस की पत्नी यूप्रैक्सिया की मृत्यु हो गई है, तो उसने उस सेनेटर को बुलाया जिसके बेटे की सगाई यूप्रैक्सिया नामक लड़की से हुई थी, और उसे बताया कि उसने संसार का त्याग कर दिया है और एक मठ में प्रवेश कर लिया है। उस सेनेटर ने, बदले में, राजा से विनम्रतापूर्वक आग्रह किया कि वह उसे तुरंत बुला भेजे, ताकि वह तुरंत कॉन्स्टेंटिनोपल में अपने मंगेतर के पास आ सके और उनकी शादी हो सके। राजा ने तुरंत ऐसा करने की जल्दी दिखाई। लेकिन मसीह की दुल्हन, यूप्रैक्सिया ने, राजा का पत्र प्राप्त करके और पढ़कर, हँस पड़ी, बैठ गई और व्यक्तिगत रूप से उसे निम्नलिखित लिखा:

हे राजा! क्या आप सचमुच मुझे, अपनी दासी को, आज्ञा देंगे कि मैं मसीह को त्याग दूँ और स्वयं को एक नश्वर और क्षणभंगुर मनुष्य से जोड़ लूँ, जो आज जीवित है पर कल कीड़े उसे खा जाएँगे? मुझे ऐसा करने के लिए मजबूर न करें। और उस मनुष्य को मेरी वजह से आपकी महिमा को परेशान न करने दें: क्योंकि मैं पहले से ही मसीह की वधू हूँ, और मुझे उन्हें धोखा नहीं देना चाहिए। लेकिन मैं आपकी महामहिम से विनती करती हूँ, मेरे माता-पिता की स्मृति में, कि आप उनकी सारी संपत्ति लेकर उसे पवित्र चर्चों और मठों, गरीबों, विधवाओं और अनाथों में बाँट दें; तब, दास-दासियों को मुक्त कर दें और मेरे माता-पिता की संपत्ति के प्रबंधकों को आज्ञा दें कि वे उन पर बकाया सभी ऋणों को माफ कर दें: हे स्वामी, यह सब उचित रीति से करें, ताकि मैं अपने मसीह की सेवा कर सकूँ, जिनके प्रति मैंने अपनी पूरी आत्मा के साथ स्वयं को सौंप दिया है, बिना किसी चिंता या बाधा के। हे राजा और रानी, मेरे, आपके सेवक, लिए भी प्रभु से प्रार्थना करें, कि वह मुझे अपनी सेवा करने के योग्य समझे।

अपना यह उत्तर अपने हाथ से लिखने के बाद, यूप्रैक्सिया ने उस पर मुहर लगाई और उसे दूत को दे दिया; वह कॉन्स्टेंटिनोपल लौट गया। यूप्रैक्सिया का पत्र प्राप्त करने पर, राजा ने रानी के साथ अकेले में इसे पढ़ा, और उन्होंने भावनाओं से भरकर बहुत आँसू बहाए और यूप्रैक्सिया के लिए ईश्वर से प्रार्थना की। अगले दिन, सम्राट ने सभी कुलीनों को, जिसमें उस युवक का पिता भी शामिल था जिसके साथ यूप्रैक्सिया की सगाई हुई थी, बुलाया और उनके सामने उसका पत्र पढ़ने का आदेश दिया; इसे सुनने वाले सभी लोग आँसुओं के बीच बोले:

'हे राजा, सचमुच यह कन्या आपकी वंशज है, सुन्दर माता-पिता एंटिगोनस और यूप्रैक्सिया की एक सुन्दर संतान, एक पवित्र कुल की पवित्र संतान!'

और सभी ने एक स्वर में, उसके लिए ईश्वर की स्तुति की। मंगेतर के पिता ने भी यूप्रैक्सिया के बारे में राजा से कुछ कहने की हिम्मत नहीं की। राजा ने, अपनी ओर से, उसकी सारी संपत्ति—जो उसके माता-पिता ने उसे दी थी—को उचित ढंग से चर्चों और गरीबों में बाँट दिया, और इस प्रकार उसकी इच्छा पूरी की; इसके कुछ समय बाद, राजा प्रभु के पास चले गए। जहाँ तक यूप्रैक्सिया की बात है, उसने ईश्वर को प्रसन्न करने के लिए और भी अधिक गंभीरता से खुद को समर्पित कर दिया, अपनी शक्ति से परे उपवास किया; जब उसने अपने लिए सबसे कठोर जीवन शैली चुनी, तब उसकी उम्र बारह वर्ष थी। शुरुआत में वह दिन में केवल एक बार, शाम को भोजन करती थी, लेकिन फिर उसने अगले दिन तक, और अंत में तीसरे दिन तक उपवास करना शुरू कर दिया। वह अत्यंत उत्साह के साथ बहनों की सेवा करते हुए और सबसे

गंदे कामों को नम्रतापूर्वक करते हुए कड़ी मेहनत करती थी: वह भोजन कक्ष और अन्य कोठरियों की सफाई करती थी, बहनों के बिस्तर लगाती थी, रसोई में पानी और लकड़ी ले जाती थी, भोजन बनाती थी, बर्तन धोती थी, और सभी मठ के कर्तव्यों में वह सबसे अधिक उत्साही थी। उस मठ में एक रिवाज था: यदि कोई बहन नींद में शैतान के प्रलोभन का शिकार होती, तो उसे तुरंत इसकी सूचना अधिष्ठात्री को देनी होती; जो फिर आँसुओं से ईश्वर से प्रार्थना करतीं कि वह उस बहन को शैतान से दूर कर दें, और उसे पत्थर इकट्ठा करने, उन्हें उसके बालों के गद्दे के नीचे बिछाने और उस पर सोने, तथा गद्दे पर राख छिड़कने और इस तरह दस दिनों तक सोने का निर्देश देतीं। एक दिन, यूप्रैक्सिया भी सोते समय प्रलोभक के कुछ प्रलोभनों का शिकार हुई; तो उसने अपने बालों के गद्दे के नीचे पत्थर इकट्ठा किए और उस पर राख छिड़क दी। यह देखकर, मठाधीम ने मुस्कुरा कर एक वरिष्ठ बहन से कहा:

'देखो, यह लड़की भी शैतान के हाथों पीड़ित होने लगी है!'

और उसने उसके लिए प्रार्थना करना शुरू कर दिया:

उसने कहा, 'हे ईश्वर, जिसने उसे अपनी छवि में बनाया है, और उसे यह मठवासी जीवन चुनने की आज्ञा दी है, उसे अपने भय में दृढ़ बनाओ और उसे शैतान के प्रलोभनों से बचाओ!'

फिर उसने यूप्रैक्सिया को बुलाया और पूछा:

'तुमने मुझे यह क्यों नहीं बताया कि तुम्हें शैतान द्वारा परीक्षा में डाला जा रहा था, बल्कि इसे मुझसे छिपाए रखा?'

और वह अबायस के चरणों में गिर पड़ी, यह कहते हुए:

'मुझसे क्षमा करें, मेरी माता, क्योंकि मैं आपको बताने में बहुत शर्मिंदा थी।'

'मेरी बेटी,' मठाधीश ने उसे प्रोत्साहित किया, 'यह दुश्मन के खिलाफ तुम्हारी लड़ाई की शुरुआत है; हिम्मत रखो, ताकि तुम उस पर काबू पा सको और अपना मुकुट प्राप्त कर सको!'

कुछ समय बाद, यूप्रैक्सिया को फिर से शैतान ने प्रलोभित किया और उसने जूलिया नाम की एक बहन को अपना मन खोलकर बताया, जो उससे बहुत प्यार करती थी और उसके आध्यात्मिक प्रयासों में उसका मार्गदर्शन करती थी। और जूलिया ने उससे कहा:

'मेरी स्वामिनी यूप्रैक्सिया, इसे मदर सुपीरियर से मत छिपाइए, बल्कि जैसा आपको करना चाहिए, वैसा ही उन्हें बताइए, ताकि वह आपके लिए प्रार्थना कर सकें; कहते हैं कि अपनी जवानी में उन्होंने स्वयं भी शैतान से कई प्रलोभनों का सामना किया था।' कहा जाता है कि एक रात, एक कठिन प्रलोभन के बाद, वह अपनी कोठरी से निकल आई, खुली हवा में खड़ी हो गई, उसने अपने हाथ स्वर्ग की ओर उठाए, और चालीस दिन और चालीस रातों तक बिना भोजन, बिना पानी, बिना नींद के, खड़ी होकर ईश्वर से प्रार्थना करती रही, जब तक कि उसने शैतान पर विजय प्राप्त नहीं कर ली। हम सभी को शत्रु द्वारा परीक्षा में डाला जाता है, लेकिन हमें आशा है कि मसीह की सहायता से हम अपने परीक्षक पर विजय प्राप्त करेंगे। इसलिए, बहन, इससे आश्चर्यचकित न हों, विचलित न हों, बल्कि जितनी जल्दी हो सके आपसे जो हुआ है वह सब कुछ प्रमुख बहन को बता दें; शर्म न करें!

यह सुनकर, यूप्रैक्सिया ने जूलिया को धन्यवाद दिया:

'भगवान तुम्हारी मदद करें, बहन, मुझे समझाने और मेरी आत्मा को मजबूत करने के लिए: मैं जाकर पूजनीय माता को बताऊँगी कि मेरे साथ क्या हुआ है।'

'और सिर्फ उसे यह मत बताना,' जूलिया ने कहा, 'बल्कि उससे अपने लिए प्रार्थना करने और अपने संकल्प को मजबूत करने के लिए भी कहो।'

युप्राक्सिया गई और उसने मठाधीश को शैतान के प्रलोभन के बारे में बताया। मठाधीश ने उससे कहा:

'मेरी बेटी, इस पर आश्चर्य न करो; शैतान हम पर हर हथियार से हमला करता है, लेकिन डरो मत; दृढ़ और अडिग रहो, कहीं वह तुम पर हावी न हो जाए। तुम्हें अभी भी उससे कई प्रलोभनों का सामना करना है; लेकिन उस पर विजय पाने का प्रयास करो और अपने वधूवर मसीह से विजय के मुकुट प्राप्त करो। जहाँ तक हो सके, अपने उपवास को और कठोर करो: ऐसे श्रमों के लिए सम्मान दिया जाता है। मुझे बताओ, मेरी बेटी, तुम कैसे उपवास करती हो?

'मैं हर दो दिन में एक बार खाती हूँ,' यूप्रैक्सिया ने उत्तर दिया।

'अपने उपवास में एक और दिन जोड़ो,' मठाधीश ने कहा, 'और सूर्यास्त के बाद चौथे दिन भोजन करो।'

यूफ्रेक्सिया ने इस आज्ञा को खुशी से स्वीकार कर लिया

यूफ्रैक्सिया बीस वर्ष की आयु में पहुँच चुकी थी; वह वयस्क हो चुकी थी और सुंदर थी, – जो उसकी वंशावली की कुलीनता को दर्शाता था। एक बार फिर प्रलोभित होने पर, उसने इसकी सूचना मठाधीश को दी, और मठाधीश ने उससे कहा:

'जाओ, मेरी बच्ची, और इन पत्थरों को यहाँ लाकर चूल्हे के पास ढेर लगा दो।'

यूफ्रैक्सिया ने तुरंत ही इन पत्थरों को उठाना शुरू कर दिया। उनमें से कुछ इतने बड़े थे कि दो ताकतवर बहनें भी उन्हें उठाने में संघर्ष करतीं। फिर भी उसने उन्हें अकेले ही उठाया, अपने कंधे पर लादा और ले गई: वह देह से तो मज़बूत थी, पर आज्ञाकारिता में उससे भी अधिक मज़बूत थी, और उसने किसी से मदद नहीं माँगी—न इसलिए कि पत्थर भारी थे, न इसलिए कि वह भूखी या थकी हुई थी—बल्कि आज्ञा को उत्साह के साथ पूरा किया। जब उसने सभी पत्थर उठा लिए, तो कुछ दिनों बाद एब्बेस ने उससे फिर कहा:

'नहीं, ये पत्थर चूल्हे के पास नहीं रहने चाहिए; इन्हें उनके मूल स्थान पर वापस ले जाओ।'

उसने ज़रा भी अवज्ञा नहीं की, बल्कि एक बार फिर से काम में जुट गई और जो आदेश उसे दिया गया था, उसे सावधानी से पूरा किया। बहनें उसकी आज्ञाकारिता, धैर्य और लगन को देखकर चकित रह गईं; कुछ छोटी बहनें हँस पड़ीं, जबकि अन्य ने कहा:

– 'हौसला रखो, बहन यूप्रैक्सिया, दृढ़ रहो!'

फिर भी वह खुशमिजाज रहती थी और काम करते समय गाती थी। उसकी यह मेहनत तीस दिन तक चलती रही, जब मठाधीश ने उसे वह काम छोड़ने का आदेश दिया और बेकरी में सेवा करने के लिए भेज दिया। वह हर आज्ञा का पालन बड़ी खुशी से करती थी; कभी वह बेकरी में आटा छानती, आटा गूंथती और रोटी सेंकती; कभी वह रसोई में खाना बनाती और लकड़ियाँ काटती; कभी वह भोजनशाला में बहनों की सेवा करती: और किसी भी काम में वह कभी आलसी नहीं हुई, अवज्ञा नहीं की, लापरवाही से काम नहीं किया या शिकायत नहीं की, लेकिन हर सेवा में वह दयालु, आज्ञाकारी, पूरी लगन से काम करने वाली और धैर्यवान थी। इन सब के बावजूद, वह अपनी आधी रात की प्रार्थना, सुबह की स्तुति, और पहले, तीसरे, छठे और नौवें घंटे की प्रार्थना कभी नहीं छोड़ती थी; और शाम की स्तुति के बाद, वह उपवास कर रही ननियों को भोजन परोसती थी।

शैतान ने एक बार फिर रात के प्रलोभन से उसे परेशान करने की कोशिश की। एक रात वह उसके सपने में उस युवक के रूप में प्रकट हुआ जिसके साथ उसकी कभी सगाई हुई थी: मानो योद्धाओं के एक दल के साथ, वह उसे अगवा करने आया था और जबरदस्ती उसे कॉन्वेंट से खींच रहा था। वह अपने बिस्तर पर लेटी थी और, नींद में, चिल्लाने लगी और अपनी बहनों को चिल्लाकर अगवा करने वाले की पकड़ से बचने में मदद करने के लिए कहने लगी। उसकी चीखों से बहनें जाग गईं; वे उसके पास दौड़ीं, उसे होश में लाईं, और पूछने लगीं कि वह क्यों चिल्ला रही थी। उसने उन्हें अपने सपने में देखी शैतान की प्रलोभन के बारे में बताया, और वे सभी उसके लिए प्रार्थना करने लगीं। जैसे ही प्रलोभक उसे फिर से परेशान कर रहा था, मठाधीश ने उससे कहा:

'सावधान रहो, मेरी बेटी यूप्रैक्सिया, कहीं शैतान तुम्हारे मन पर हावी न हो जाए, कहीं तुम्हारी मेहनत व्यर्थ न चली जाए; थोड़ा और धैर्य रखो, उससे बहादुरी से लड़ो, और वह तुमसे भाग जाएगा।'

और जूलिया ने भी यूप्रैक्सिया से कहा:

'बहिन, यदि हम अब, जब हम जवान और मजबूत हैं, अपने शत्रु से नहीं लड़ते और उसे पराजित नहीं करते, तो हम अपनी वृद्धावस्था में उसे कैसे पराजित करेंगे?'

यूप्रेक्सिया ने उससे उत्तर दिया:

'जिस प्रभु के जीवित हैं, मेरी बहन जूलिया, यदि अधिष्ठात्री मुझे आज्ञा दें, तो मैं पूरे एक सप्ताह तक कुछ नहीं खाऊँगी, जब तक कि प्रभु की सहायता से मैं उस शत्रु पर विजय प्राप्त न कर लूँ जो मुझे परीक्षा में डालता है।'

जूलिया ने उत्तर दिया, "सचमुच, मेरी बहन, मैं इतने लंबे समय तक उपवास नहीं कर सकती, लेकिन अगर तुम कर सकती हो, तो यह बहुत अच्छा होगा; पूरे मठ में हमारी माता अधिष्ठात्री के अलावा कोई भी पूरे सप्ताह बिना भोजन के नहीं रह सकता।"

तो यूप्रैक्सिया मदर सुपीरियर के पास गई और उनसे एक ऐसा उपवास करने की अनुमति मांगी कि वह पूरे एक सप्ताह तक बिना भोजन के रह सके। मदर सुपीरियर ने उत्तर दिया:

'जतिना कर सकती हो, मेरी बच्ची; तुम्हारा स्रष्टा, ईश्वर, तुम्हें शक्ति दे और तुम्हें शैतान पर वजिय पाने की ताकत दे!'

और यूफ्रेक्सिया ने पूरे सप्ताह का उपवास शुरू कर दिया, वह केवल रविवार को ही भोजन करती थी, और साथ ही उसने न तो अपने मठ के कर्तव्यों की अनदेखी की और न ही बहनों की सेवा की, जिससे हर कोई उसके महान कार्यों को देखकर चकित रह गया। कुछ बहनों ने कहा, 'हम एक साल से यूफ्रेक्सिया पर नज़र रख रहे हैं, क्या हमने उसे कभी बैठते देखा है, यहाँ तक कि खाने के समय भी? नहीं, हमने उसे ऐसा करते हुए कभी नहीं देखा है - सिवाय शायद रात में बिस्तर पर आराम करने के लिए लेटने के समय के - और तब भी वह खड़े होकर ही खाती है।

और सभी बहनें उससे इसलिए प्यार करती थीं क्योंकि वह बहुत मेहनत करती थी और बहुत विनम्र थी, भले ही वह राजसी वंश की थी, और वे उसके लिए ईश्वर से प्रार्थना करती थीं, कि वह उसे शक्ति और मोक्ष प्रदान करें।

बहनों में हर्नाना नाम की एक बहन थी, जिसके बारे में कहा जाता था कि वह एक साधारण और गरीब दासी की संतान थी; वह अकेली ही सर्वप्रिय यूप्रैक्सिया से प्यार नहीं करती थी: शैतान ने उसके भीतर ईर्ष्या जगाई। एक दिन, हर्नाना ने यूप्रैक्सिया को रसोई में अकेले, कड़ी मेहनत करते हुए पाया, और झगड़ा शुरू कर दिया:

'यूप्रैक्सिया पूरे सप्ताह उपवास करती है, लेकिन हम नहीं कर सकतीं; अगर अबेस हमें भी ऐसे उपवास करने का आदेश दे तो हम क्या करेंगी?'

यूप्रैक्सिया ने उत्तर दिया:

'माफ़ करना, बहन, लेकिन हमारी महान महिला ने हम में से प्रत्येक को अपनी क्षमतानुसार काम करने का आदेश दिया है, और उन्होंने यह काम मुझ पर जबरदस्ती नहीं थोपा है।'

हर्मना, गुस्से में आकर, बोली:

'हे धोखेबाज़, तू हर तरह की चालाकी से भरी है! कौन नहीं जानता कि तू यह जानबूझकर व्यर्थ की शोहरत की चाह में कर रही है, ताकि हर कोई तुझे देखे और तेरी प्रशंसा करे: तू चाहती है कि अबेस की मृत्यु के बाद उसका पद तुझे मिल जाए; लेकिन मैं ईश्वर की कसम खाकर कहती हूँ कि तू हम पर कभी शासन नहीं करेगी!'

यूफ्रैक्सिया नम्रतापूर्वक उसके पैरों में गिर पड़ी।

'मुझे क्षमा करें, मेरी माता,' उसने कहा, 'मैंने ईश्वर और आपके सामने पाप किया है!'

जब एबिस को इस बात का पता चला, तो उन्होंने हर्मना को बुलाया और सभी बहनों के सामने उसे डाँटना शुरू कर दिया:

'हे दुष्ट और अधर्मी सेवक! यूप्रैक्सिया ने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है जो तुम उसके ईश्वरीय कार्य में बाधा डाल रहे हो? तुम्हें एक अयोग्य व्यक्ति के रूप में, बहनों के साथ चर्च की सेवाओं और भोजन से वंचित कर दिया जाएगा!'

यूप्रैक्सिया ने बहुत समय तक मदर सुपीरियर से गेरमाना को माफ करने की विनती की, लेकिन वह तीस दिनों तक उन्हें मना नहीं सकी; तीसरे दिन, यूप्रैक्सिया जूलिया को अपने साथ ले गईं और वरिष्ठ बहनों से गेरमाना की क्षमा के लिए मदर सुपीरियर से मध्यस्थता करने का अनुरोध किया। मदर सुपीरियर ने गेरमाना को बुलाया और उससे कहा:

'क्या तुम्हें एहसास नहीं हुआ, हे दुर्भाग्यपूर्ण महिला, कि किसी को भी कोई पुण्य कार्य करने से रोकना कितना बड़ा पाप है? क्या तुम्हें यह भी ध्यान नहीं आया कि वह एक सेनेटर की बेटी है, शाही वंश की है, और फिर भी इतनी विनम्र, ईश्वर के प्रति इतनी समर्पित, और तुम्हारी सेवा करने के लिए अयोग्य है?'

तब सभी बहनों ने जर्मेना की ओर से अधिष्ठात्री से विनती करनी शुरू कर दी; उन्होंने अंततः उसे मना लिया, और जर्मेना को क्षमा कर दिया गया। इस प्रकार, दृश्यमान शत्रु ने अस्थायी रूप से अपनी द्वेषिता को एक ओर रख दिया, जबकि अदृश्य शत्रु, शैतान, यूप्रैक्सिया के विरुद्ध लड़ना बंद नहीं हुआ, और वह इस बात से नाराज़ था कि वह उसकी विनम्रता से पराजित हो रहा था। इस प्रकार, एक रात उसने उसके मन को दुष्ट सांसारिक सपनों से भर दिया, जिससे वह गहराई से परेशान हो गई। अपने खिलाफ़ खड़े दुश्मन के प्रबल हमले को भांपते हुए, वह अपने बिस्तर से कूदी, उसने क्रॉस का चिह्न बनाया, और अपनी कोठरी से बाहर निकल आई; आँगन में, वह एक विशेष स्थान पर खड़ी हुई, उसने स्वर्ग की ओर अपनी बाहें फैला दीं, अपनी आँखें और मन स्वर्ग पर टिका दिए, और चालीस दिनों तक उसी स्थान से एक इंच भी हिले-डुले के बिना, दिन-रात प्रार्थना करती रही, मानो जमीन में जड़ें जमा ली हों; इस दौरान उसने न तो कुछ पिया और न ही कुछ खाया, किसी से बात नहीं की, न सोई, और न ही अपनी बाहें नीचे कीं। उसकी प्रार्थना-अवधि की शुरुआत में, यह जानकर मठाधीश उसके पास आईं और कहा:

'भगवान तुम्हें शक्ति दें, मेरी बच्ची, और तुम्हें धैर्य प्रदान करें!'

उस समय यूप्रैक्सिया पच्चीस साल की थी। जब वह दो सप्ताह तक खड़ी रही, तो मठाधीश और बहनें उसकी सहनशक्ति को देखकर मुस्कुराईं और उसके लिए प्रसन्न हुईं। तीस दिन बीत गए, और बहनें चकित होने लगीं और मठाधीश से कहा:

'माँ, ऐसा लगता है कि यूप्रैक्सिया आपकी चालीस-दिनों की उपवास पूरी करना चाहती है, ठीक वैसे ही जैसे आपने स्वयं एक बार किया था।'

'भगवान उसे शक्ति दें,' मदर सुपीरियर ने उत्तर दिया, 'आओ हम सभी उसके लिए प्रार्थना करें!'

चालीस दिन बीत जाने के बाद, वह और पाँच दिन तक खड़ी रही, और फिर, थकान से हारकर, वह ज़मीन पर गिर पड़ी और जैसे मृतप्राय लेट गई। बहनें इकट्ठा हो गईं, उसे एक कमरे में ले गईं और उसकी बाहें नहीं मोड़ सकीं: वह एक लकड़ी की तरह अकड़ी हुई थी और एक भी शब्द नहीं बोल सकी। मदर सुपीरियर उसके लिए कुछ खाना लाईं, उसे उसके होठों तक ले जाकर कहा:

'मेरी बच्ची, यूप्रैक्सिया! हमारे प्रभु यीशु मसीह के नाम पर, खा!'

और तुरंत उसने भोजन लिया, उसे खाया और बोलना शुरू कर दिया; उसने कुछ शक्ति वापस पा ली और खड़ी हो गई; वे उसे चर्च ले गए, और मसीह ईश्वर का धन्यवाद करने लगे, जिन्होंने अपनी दासी को इतने बड़े काम के लिए शक्ति प्रदान की थी। इसके बाद, यूप्रैक्सिया ने धीरे-धीरे खाना और ठीक होना शुरू कर दिया।

उस समय से, शैतान अब यूप्रैक्सिया को दुष्ट विचारों या शारीरिक वासनाओं को भड़काकर परेशान नहीं कर सका: मसीह की वधू ने उसकी प्रलोभनों पर एक निर्णायक विजय प्राप्त कर ली थी; जिस पर उसने उसके खिलाफ अन्य योजनाएँ बनाना शुरू कर दिया, जैसा कि आरंभ से ही हत्यारा (यूहन्ना 8:44): उसने निम्नलिखित तरीके से उसका जीवन पूरी तरह से लेने की कोशिश की। एक दिन, धन्य यूफ्रेक्सिया एक पानी उठाने वाले के साथ पानी भरने के लिए कुएँ पर गईं; और शैतान ने, ईश्वर की अनुमति से, उन पर काबू पाकर उन्हें कुएँ में फेंक दिया; वह, जैसा कि उसने बाद में स्वयं बताया, सिर के बल कुएँ के तले तक पहुँच गई, लेकिन, पानी की सतह पर आने के बाद, उसने कुएँ में डले बाल्टी से लटकती रस्सी को पकड़ लिया और चिल्लाई:

'हे प्रभु यीशु मसीह, मेरी मदद करो!'

चीखें गूँज उठीं कि यूप्रैक्सिया कुएँ में गिर गई है; बहनें प्रमुख बहन के साथ इकट्ठा हुईं और उसे बाहर निकाला। फिर उसने खुद को क्रॉस का चिह्न बनाया और मुस्कुराते हुए कहा:

'मेरा मसीह जीवित है! शैतान, तुम मुझे हरा नहीं सकते; मैं तुम्हारे आगे नहीं झुकूँगी: आज तक मैं एक ही पात्र में पानी लाती थी; अब से मैं दो में लाऊँगी।'

और उसने ऐसा ही करना शुरू कर दिया। इसके बाद, उसे रसोई के लिए लकड़ी काटने पड़ी; जब उसने एक लट्ठे पर वार करने के लिए कुल्हाड़ी घुमाई, तो शैतान ने उसके हाथ फिसला दिए; कुल्हाड़ी से उसने अपने ही पैर पर वार कर लिया और अपनी पिंडली फाड़ ली; घाव बहुत गहरा था, और बहुत सारा खून बह रहा था। थककर, वह जमीन पर गिर पड़ी और जैसे मृत पड़े रहने लगी। जूलिया ने यह देखा; वह बहुत डरी हुई थी, चिल्लाई, और अपनी बहनों के पास दौड़ते हुए उन्हें बताया कि यूप्रैक्सिया ने कुल्हाड़ी से अपने पैर में चोट लगा ली है और उसकी मृत्यु हो गई है। बहनें इकट्ठा हो गईं और उसे घेरकर रोने लगीं: अबेस आईं, उन्होंने उसके चेहरे पर ठंडा पानी छिड़का और उस पर क्रॉस का चिह्न बनाते हुए कहा:

'मेरी बच्ची, यूप्रैक्सिया! तुम बेसुध क्यों हो गई हो? हमसे देखो और अपनी बहनों से कुछ कहो: वे तुम्हारे लिए शोक मना रही हैं।'

उसने अपनी आँखें खोलीं और एबेस से कहा:

'रोओ मत, मेरी प्रिय माता; मेरी आत्मा अभी भी मुझमें है।'

तब मदर सुपीरियर ने प्रभु की ओर प्रार्थना में मुड़कर कहा:

'हे प्रभु यीशु मसीह! अपनी दासी को चंगा कर; तेरे ही खातिर वह इतनी पीड़ा सह रही है।'

फिर, उसके पैर को एक बालों के स्कार्फ से बांधकर, मदर सुपीरियर यूफ्रेक्सिया को उठाया और उसे उसकी कोठरी में ले जाने लगीं। लेकिन उसने, चारों ओर देखकर और वहाँ रखी लकड़ी को देखकर, कहा:

'मेरे प्रभु की कसम! मैं यहाँ से तब तक नहीं जाऊँगी जब तक मैं लकड़ियाँ इकट्ठी करके रसोई तक नहीं ले जाऊँगी।'

जूलिया ने कहा, 'मैं इकट्ठा कर लूंगी, और तुम जाकर लेट जाओ।'

लेकिन यूप्रैक्सिया ने जूलिया को लकड़ियाँ इकट्ठा करने नहीं दीं; उसने खुद एक बाँह भर लकड़ियाँ उठाईं और उन्हें ले गई। रसोई तक जाने के लिए एक सीढ़ी चढ़नी पड़ती थी; जब यूप्रैक्सिया अंतिम सीढ़ी पर पहुँची, तो शैतान ने उसे ठोकर मार दी और उसे रोक दिया: उसका पैर अपने ही वस्त्र के किनारे में अटक गया और वह मुँह के बल उन लकड़ियों पर गिर पड़ी जो वह उठाए हुए थी; उसकी आँख के पास एक लकड़ी का टुकड़ा उसके चेहरे में घुस गया; जूलिया चीख पड़ी, उसकी ओर दौड़ी और कहा:

'क्या मैंने तुम्हें नहीं कहा था कि तुम लकड़ी नहीं उठा सकतीं? मैंने कहा था कि तुम लेट जाओ, लेकिन तुमने मेरी बात नहीं सुनी।'

'दुखी मत हो, बहन,' यूप्रैक्सिया ने जवाब दिया, 'मेरे चेहरे से काँटा सावधानी से निकालो; ईश्वर की कृपा से मेरी आँख को कोई चोट नहीं लगी है।'

काँटा निकाल दिया गया; घाव से बहुत खून बह रहा था; मठ की प्रमुख ने कुछ तेल और नमक लिया और प्रार्थना करने के बाद, घाव पर लेप लगाया, जबकि जूलिया यूप्रैक्सिया से कहने लगी:

'जाओ, मेरी मालकिन, अपने बिस्तर पर लेट जाओ और आराम करो, जब तक मैं दूसरी बहनों की देखभाल करती हूँ।'

लेकिन यूप्रैक्सिया ने उत्तर दिया:

'जब तक मैं अपनी बहनों के प्रति अपना कर्तव्य पूरा नहीं कर लेती, तब तक मैं आराम नहीं करूँगी।'

सभी बहनें बार-बार उससे आराम करने की विनती करती रहीं, क्योंकि उसका घाव दर्दनाक था, लेकिन उसने आराम करने से इनकार कर दिया; वह खड़ी रही और खाना पकाया, जबकि उसके दोनों घावों से खून बह रहा था; जब तक उसने बहनों की सेवा करना और भोजन करना समाप्त नहीं कर लिया, तब तक वह नहीं लेटी; केवल जब उसने अपने सभी कर्तव्य पूरे कर लिए, तब वह देर शाम को अपने बिस्तर पर गई। ईश्वर ने, उसका धैर्य देखकर, जल्द ही उसके घावों को भर दिया, और वह ठीक हो गई। लेकिन शैतान ईर्ष्या से भर गया और उसे नष्ट करने का एक और प्रयास किया। एक दिन, किसी कारण से, वह बहनों के साथ एक ऊंची इमारत पर चढ़ी; शैतान ने उसे ऊपर से नीचे फेंक दिया। उसके साथ वाली बहनें सीढ़ियों से नीचे भागीं: वे सोच रही थीं कि इतनी ऊँचाई से गिरने के कारण यूफ्रेक्सिया कुचलकर मर गई होगी। लेकिन वह जमीन से बिना किसी चोट के उठ खड़ी हुई और उनकी ओर चली गई; जब उन्होंने उससे पूछा कि क्या वह कुचल गई थी, तो उसने जवाब दिया:

'मुझे नहीं पता कि मैं कैसे गिरी या कैसे उठ खड़ी हुई।'

और सभी ने उस ईश्वर की स्तुति की, जिन्होंने अपनी दासी को मृत्यु से बचाया था।

एक अन्य अवसर पर, जब वह बहनों के लिए एक बड़े बर्तन में हरी सब्जियाँ उबाल रही थी और उबलते बर्तन को आग से हटाने ही वाली थी, तो शैतान ने उसे ठोकर मार दी; वह पीछे की ओर गिर पड़ी, और उबलते भोजन से भरा बर्तन उसके चेहरे पर उलट गया। उसकी सहायिका, जूलिया, चिल्लाई कि यूफ्रेक्सिया को जलने से चोट लग गई है, और पास में मौजूद सभी बहनें दौड़कर आईं; लेकिन यूफ्रेक्सिया जल्दी से जमीन से उठ गई और मुस्कुराते हुए जूलिया से कहा:

'बहन, तुमने यह क्या किया? तुमने बिना वजह बहनों और अधिष्ठात्री को डरा दिया!'

और हर कोई देख सकता था कि उसका चेहरा सुरक्षित था, उस पर जलने का एक भी निशान नहीं था। मदर सुपीरियर ने कड़ाही में झाँका और देखा कि नीचे बचा हुआ उबलता पानी अभी भी उबल रहा था; फिर उन्होंने यूप्रैक्सिया से पूछा:

'क्या तुम्हारे ऊपर कोई उबलता पानी नहीं छींका?'

'प्रभु की कसम,' उसने जवाब दिया, 'ऐसा लगा जैसे मेरे चेहरे पर उबलता पानी नहीं, बल्कि ठंडा पानी छिटका हो।'

मदर सुपीरियर चकित रह गईं और कहा:

'भगवान तुम्हें अंत तक सुरक्षित रखें, मेरी बच्ची!'

फिर, वरिष्ठ बहनों से निजी तौर पर बात करते हुए, उन्होंने कहा:

– देखो, यूप्रैक्सिया पर ईश्वर की कृपा है: वह छत से गिर गई और उसे चोट नहीं लगी; उसने अपने चेहरे पर उबलता पानी डाल लिया और उसे कोई हानि नहीं हुई।

बहनों ने उत्तर दिया, 'हम देख सकते हैं कि यूप्रैक्सिया ईश्वर की सच्ची सेवक है और प्रभु उसकी रक्षा करते हैं: उन्होंने उसे इतनी सारी परीक्षाओं से बचाया है।'

महिलाएँ—साधारण महिलाएँ—नज़दीकी कस्बे और आसपास के गाँवों से इस मठ में आती थीं, अपने बीमार बच्चों के साथ-साथ उन बच्चों को भी लाती थीं जिन्हें राक्षसों ने वशीभूत कर रखा था: प्रभु, जैसा कि ऊपर उल्लेख किया गया है, पवित्र मठाधीश और ईश्वर की इच्छा के अनुसार जीवन यापन करने वाली बहनों की प्रार्थनाओं के माध्यम से बीमारों को चंगा करते थे और राक्षसों को भगा देते थे। वे चर्च में इकट्ठा होतीं और विभिन्न बीमार लोगों के लिए सामूहिक प्रार्थना करतीं, और वे लोग चंगे होकर अच्छे स्वास्थ्य के साथ घर लौट जाते। उस मठ में एक महिला थी जो एक दुष्ट दानव के वश में थी, जो बचपन से ही उसके भीतर वास करता था—अन्य अशुद्ध आत्माओं का राजकुमार। इस महिला के हाथों और पैरों में जंजीरों से बंधा रहता था; वह दांत पीसती, सीटी बजाती, मुंह से झाग उगलती और ज़ोर से चिल्लाती थी, जिससे उसकी चीखों से हर कोई दहशत में आ जाता था। कई बार मठ की प्रमुख और वरिष्ठ भिक्षुणियों ने चर्च में ईश्वर से प्रार्थना की कि वह इस पीड़ित महिला से राक्षस को भगा दें, लेकिन उनकी प्रार्थनाओं पर कोई ध्यान नहीं दिया गया: ईश्वर की इच्छा से, यह एक महान चमत्कार और मसीह की वधू, यूप्रैक्सिया की पवित्रता के प्रमाण के रूप में काम करना था, जैसा कि नीचे वर्णित किया जाएगा। इस महिला के भीतर एक ऐसा प्रचंड राक्षस था कि कोई भी उसके पास नहीं आ सकता था; उसे तहखाने के एक कमरे में एक स्तंभ से जंजीरों में बांधकर रखा गया था, और उसका खाना-पीना दूर से ही लाया जाता था: वे एक लंबी लकड़ी से एक कटोरा बांधते, उसमें रोटी, दाल और कुछ हरी सब्जियां रखते, और उसे उसकी ओर बढ़ाते; लेकिन वह अक्सर लकड़ी से कटोरा छीन लेती और उसे लाने वालों के चेहरे पर फेंक देती। कॉन्वेंट में उसे लंबे समय तक इसी तरह रखा गया था। एक दिन, द्वारपाल अबायस के पास यह बताने आया कि एक महिला रोते हुए कॉन्वेंट आई है, जिसके साथ एक आठ वर्षीय बच्चा था जो लकवाग्रस्त और बहरा-मूंगा था, और वह अपने बच्चे के ठीक होने के लिए प्रार्थना करने के लिए कह रही थी। मठ की अधिष्ठात्री को ईश्वर से प्राप्त एक प्रकटोक्ति द्वारा यह ज्ञात हुआ कि यूप्रैक्सिया को पहले ही चंगा करने की कृपा और अशुद्ध आत्माओं पर अधिकार दे दिया गया था, इसलिए उन्होंने उसे बुलाया और कहा:

'जाओ, द्वार पर खड़ी माँ से बच्चे को ले आओ, और उसे यहाँ ले आओ।'

वह गई और, बच्चे को पूरी तरह से लकवाग्रस्त, बहरा और गूंगा देखकर, उस पर तरस खा गई, एक आह भरी, और उस पर धर्मचिह्न बनाकर कहा:

'हे बालक, जिस ईश्वर ने तुम्हें बनाया है, वही तुम्हें चंगा भी करे!'

यह कहकर, उसने उसे अपनी बाहों में उठा लिया और उसके साथ एबेस के पास चली गई। जब वह उसे उठाए हुए थी, तो बच्चा तुरंत ठीक हो गया, बोलने लगा और अपनी माँ को पुकारने लगा। यूप्रैक्सिया ने जब सुना कि बच्चा बोलने लगा है, तो वह भयभीत हो गई और उसे जमीन पर उतार दिया; लेकिन बच्चा खड़ा हो गया और अपनी माँ को पुकारते हुए द्वार की ओर दौड़ पड़ा। दरबान ने जाकर महाधर्माध्यक्षी को वह सब बताया जो हुआ था। तब महाधर्माध्यक्षी ने बच्चे की माँ को बुलाया और उससे कहा:

'यह क्या है, बहन? क्या तुम एक स्वस्थ बच्चे से हमें लुभाने आई हो?'

माँ ने जवाब दिया, 'हे मेरी मालकिन, मसीह हमारे प्रभु मेरे गवाह हैं कि इस क्षण तक मेरा बच्चा न तो बोल पाया था, न कुछ सुन पाया था, अपने हाथ-पैर हिला नहीं सकता था, और न ही एक कदम चल सकता था; लेकिन जब इस सदाचारी कन्या ने उसे अपनी बाहों में लिया, तो वह तुरंत बोलने लगा, चंगा हो गया, और चलने लगा।'

तब मठाधीश ने उस स्त्री से कहा:

'मसीह की कृपा से, तुम्हारा बच्चा चंगा हो गया है; शांति से जाओ और ईश्वर का धन्यवाद करो।'

जब वह महिला अपने ठीक हुए बच्चे के साथ चली गई, तो एब्बेस ने यूप्रैक्सिया से कहा:

'बेटी, मेरी इच्छा है कि तुम हमारे मठ की उस बहन को, जो पिशाच-ग्रस्त है, अपने हाथों से खाना खिलाओ, अगर तुम उससे नहीं डरती हो।'

'मैं नहीं डरती, मेरी माता,' यूप्रैक्सिया ने उत्तर दिया, 'और यदि आप आज्ञा दें, तो मैं ऐसा ही करूँगी।'

उसके बाद, यूप्रैक्सिया ने एक बर्तन में कुछ रोटी और पका हुआ भोजन लिया और उसे भूतग्रस्त महिला के पास ले आई; वह महिला तुरंत ही अपने दाँत पीसने लगी, उस पर झपट पड़ी और बर्तन को पकड़कर उसे तोड़ने की कोशिश करने लगी। लेकिन यूप्रैक्सिया ने उसका हाथ पकड़ते हुए उससे कहा:

'जसि प्रभु की कसम, मैं तुम्हें ज़मीन पर पटक दूँगी, हमारी प्रमुख माता का दंड उठा लूँगी, और तुम्हें बुरी तरह पटिूँगी, ताकि तुम फरि कभी उत्पात न मचा सको!'

भूतग्रस्त महलि ने देखा कि यूफ्रेक्सिया उससे कहीं अधकि शक्तशिाली थी – क्योंकि प्रभु ने अपनी सेवकि को शक्ति दी थी – और डरकर चुप हो गई। और संत ने उसे धीरे से समझाना शुरू कयि:

'बैठ जाओ, मेरी बहन,' उसने कहा, 'खाओ, पयिो और शर्मदिा मत हो।'

तो वह बैठ गई, खाई-पएि और सो गई। उस समय से, उन्होंने उसे डंडे से दूर से खाना देना बंद कर दयि; वह उसे यूप्रैक्सिया के हाथों से लेती थी, और सभी बहनें चकति हो गईं। जब भी वह पस्सिा हुई महलि बेचैन होने, इधर-उधर उछलने और चलि्लाने लगती, तो बहनें उससे कहतीं:

'चुप हो जाओ! यूप्रैक्सिया अपनी छड़ी लेकर आ रही है, और वह तुम्हें पीटेगी!'

और तुरंत ही वह पस्सिी हुई महलि शांत हो जाती और चुप हो जाती। उपरोक्त हर्नाना को फरि से ईर्ष्या ने चटखा लगा दयि; उसने अन्य बहनों से कहा:

'क्या बहनों में यूप्रैक्सिया के अलावा और कोई नहीं है जो इस भूतग्रस्त महलि को खाना लाती है? मुझे कुछ रोटी दो, और मैं भी इस भूतग्रस्त महलि की सेवा ठीक वैसे ही करूंगी जैसे यूप्रैक्सिया करती है।'

उसने रोटी और कुट्या ले ली, भूतग्रस्त महलि के पास गई और कहा:

'ले लो यह, बहन, और खा लो!'

लेकनि उस पशिाचग्रस्त महलि ने उसे कसकर पकड़ लयि, उसके कपड़े फाड़कर उसे नग्न कर दयि, उसके प्रति दाँत पीसे, उसे ज़मीन पर फेंक दयि, उसके ऊपर बैठ गई और उस पर भारी पड़कर, उसके कंधों और गर्दन पर उसका मांस नोचना और चबाना शुरू कर दयि। एक भयानक चीख गूँजी, लेकनि कोई भी उसके पास आने की हम्मित नहीं कर सका; फरि जूलयि दौड़कर रसोई में गई और यूप्रैक्सिया से कहा:

'हर्मना को वह पशिाचग्रस्त महलि पूरी तरह से नोच-खा रही है!'

यूप्रेक्सिया दौड़ी, भूतग्रस्त महलि को बाजुओं और गर्दन से पकड़कर जर्मना को बचा लयि, जो पूरी तरह से घायल और खून से लथपथ थी।

यूफ्रैक्सिया ने भूतग्रस्त महलि से पूछा, 'क्या यह सही था? अपनी बहन को इस तरह घायल करना?'

लेकनि वह वहाँ खड़ी रही, दाँत पीसते हुए और उसके मुँह से झाग नकिल रहा था।

यूफ्रेक्सिया ने आगे कहा, 'ईश्वर की कसम, अब से अगर तुम कसिी बहन को नुकसान पहुँचाओगी, तो मैं तुम्हें बलि्कुल भी दया नहीं दखिाऊँगी; मैं अबाइस का डंडा लेकर तुम्हें बेरहमी से मारूँगी।'

फरि वह महलि लेट गई और चुप हो गई।

अगली सुबह जल्दी, यूप्रैक्सिया उस बीमार महलि से मलिने आई। पता चला कि उसने अपने सारे कपड़े फाड़ डाले थे और नग्न होकर जमीन पर बैठकर, अपने ही मवाद को इकट्ठा करके खा रही थी। धन्य यूफ्रेक्सिया को उस पर दया आ गई और वह रो पड़ी; फरि उसने उसे दूसरे कपड़े पहनाए, उसके लिए रोटी और पानी लाई, और उसे खाना-पीना दयि। अपने सेल में लौटकर, वह दनि भर बहनों से छपिकर रोती रहीं और प्रार्थना करती रहीं कि प्रभु उस पीड़ति महलि को ठीक कर दें; और इस प्रकार वह पूरी रात प्रार्थना में रहीं, जबकि ईश्वर ने उनकी प्रार्थना का खुलासा अबाइस से कर दयि; अगली सुबह, अबाइस ने उन्हें बुलाया और पूछा:

'मेरी बेटी यूप्रैक्सिया, तुमने उस पीड़ति महलि के लिए अपनी प्रार्थना मुझसे क्यों छपिाई? अगर तुमने मुझे बताया होता, तो मैं भी तुम्हारे साथ मलिकर प्रयास करती।'

'मुझे क्षमा करें, मेरी माता,' यूप्रैक्सिया ने उत्तर दयि, 'मैंने उन्हें इतनी दयनीय अवस्था में देखा और उन पर तरस आ गया।'

'मेरी बेटी,' मठाधष्ठिा ने कहा, 'मुझे तुम्हें कुछ बताना है; लेकनि ध्यान रखना कि अहंकारी न बन जाना। देखो, मसीह ने तुम्हें उस राक्षस को भगाने की शक्ति दी है, और तुम्हें सभी अन्य राक्षसों पर अधकिार दयि गया है।'

यह सुनकर यूप्रैक्सिया ज़मीन पर गरि पड़ी, अपने सरि पर मट्टिी डाल ली, और चलि्लाकर बोली:

'मैं, जो इतनी नीच और तुच्छ हूँ, एक राक्षस को कैसे भगा सकती हूँ, जबकि आप इतने वर्षों से प्रार्थना कर रही हैं और अब तक ऐसा नहीं कर सकीं?'

अब्बेस ने कहा:

'मेरी बच्ची, यह कार्य तुम्हारा ही इंतज़ार कर रहा था, ताकि तुम जान सको कि स्वर्ग में तुम्हारे लिए कितना बड़ा इनाम तैयार है; अवज्ञा मत करो, बल्कि जैसा तुम्हें आज्ञा दी गई है, वैसा ही करो।'

यूफ्रेक्सिया पहले चर्च गई, हमारे प्रभु यीशु मसीह की प्रतिमा के सामने ज़मीन पर लोट गई, और स्वर्ग से मदद माँगते हुए अपने आँसुओं से ज़मीन को भीग दिया। फिर, मदर सुपीरियर की आज्ञा को याद करते हुए, वह पिशाचग्रस्त महिला के पास चल दी; सभी बहनें यह देखने के लिए उसके पीछे-पीछे चलीं कि क्या होगा। बीमार महिला के पास पहुँचकर, यूफ्रेक्सिया ने कहा:

'हमारे प्रभु यीशु मसीह, जिन्होंने तुम्हें बनाया है, तुम्हें चंगा करें।'

और उसने उस पर क्रॉस का चिह्न बनाया। दानव ने एक भयानक आवाज़ में चिल्लाकर कहा: 'कितनी धूर्त और दुष्ट नन है! मैं इस महिला में कितने सालों से रहा हूँ, और किसी ने मुझे बाहर नहीं निकाला, फिर भी यह अशुद्ध महिला मुझे बाहर निकालना चाहती है!'

यूफ्रेक्सिया ने कहा, 'तुम्हें बाहर निकालने वाला मैं नहीं हूँ, बल्कि मसीह, मेरे ईश्वर, मेरे वरा है!'

और दानव चिल्लाया:

'मैं नहीं जाऊँगा, हे अशुद्ध! तुझमें मुझे निकालने की कोई शक्ति नहीं है!'

'मैं अशुद्ध हूँ,' संत ने उत्तर दिया, 'मेरे भीतर बहुत गंदगी है, जैसा तुम कहते हो, लेकिन उससे बाहर आओ—मेरे प्रभु मसीह तुम्हें आज्ञा देते हैं! और अगर तुम बाहर आने से इनकार करते हो, तो मैं हमारी अधीक्षिका की लाठी ले लूँगी और तुम्हें उससे मारूँगी।'

दैत्य ने लंबी-चौड़ी दलीलें दीं और फिर भी जाने से इनकार कर दिया। तब यूप्रैक्सिया ने महाधर्माध्यक्ष से लाठी ले ली और उसे धमकाते हुए कहा:

'निकल जा, नहीं तो मैं तुझे पीटूँगा।'

'मैं उसे कैसे छोड़ सकता हूँ,' दानव ने विरोध किया, 'जब मैंने उसके साथ एक संधि की है और मैं इसे तोड़ नहीं सकता?'

संत ने उसे लाठी से तीन बार मारा, और कहा:

'ईश्वर की सृष्टि से निकल आओ, अशुद्ध आत्मा – प्रभु मसीह तुम्हें आज्ञा देते हैं।'

दैत्य फूट-फूट कर रो पड़ा:

उसने कहा, 'मैं कहाँ जाऊँ?'

'पूर्ण अंधकार में जाओ,' संत ने उत्तर दिया, 'और शाश्वत अग्नि में, उस अनंत यातना में जो तुम्हारे और तुम्हारे पिता शैतान के लिए, और उन सभी के लिए तैयार की गई है जो तुम्हारी इच्छा का पालन करते हैं।'

सभी बहनें दूर से ही देखती रहीं, पास आने की हिम्मत नहीं कर सकीं। चूंकि दानव जाने से इनकार कर रहा था और बहस करता रहा, संत यूप्रैक्सिया ने अपनी आँखें आकाश की ओर उठाईं और पुकार कर कहा:

'हे प्रभु यीशु मसीह! मुझे इस घड़ी लज्जित न करना, कहीं ऐसा न हो कि वह अशुद्ध दानव मेरी वजह से आनंद मनाए!'

और तुरंत उस दानव ने ऊँचे स्वर में पुकारा और चला गया, और उसी क्षण से वह स्त्री पूरी तरह से स्वस्थ हो गई। यूप्रैक्सिया उसे अपने साथ ले गई, उसे धोया, साफ कपड़े पहनाए और उसे चर्च ले गई; वहाँ, उन्होंने सभी ने मिलकर हमारे ईश्वर मसीह की महिमा की और धन्यवाद अर्पित किया। उस दिन से, यूप्रैक्सिया और भी अधिक विनम्रता से विशिष्ट हुईं और सभी बहनों की नौकरानी के रूप में सेवा की। जब माताएँ बीमार बच्चों को मठ में लाती थीं, तो अधिष्ठात्री उन्हें संत यूप्रैक्सिया के पास भेजती थीं, और वह, यद्यपि वह ऐसा नहीं करना चाहती थीं, फिर भी अपनी अधिष्ठात्री की आज्ञा का पालन करती थीं और मसीह की कृपा से उन्हें चंगा कर देती थीं।

जैसे-जैसे संत यूप्रैक्सिया के परमधाम गमन का समय निकट आता गया, अधिष्ठात्री को एक सपने में ईश्वर से यह दिव्य-दर्शन हुआ कि मसीह की वधू को पहले ही स्वर्गीय महल में बुलाया जा रहा था; इस दर्शन से अधिष्ठात्री बहुत दुखी हुईं – वह अपनी प्रिय यूप्रैक्सिया से बिछड़ने के लिए उदास थीं; वह रोने लगीं और अपने इस दर्शन के बारे में किसी से बात नहीं करना चाहती थीं। वरिष्ठ भिक्षुणियों ने, यह देखकर कि वह हर दिन शोक मना रही थी और रो रही थी, पहले तो उससे यह पूछने की हिम्मत नहीं की कि वह इतनी दुखी क्यों थी; लेकिन फिर वे स्वयं उसके दुख से इतने दुखी हो गए कि उन्होंने उससे यह प्रश्न किया:

'हमसे कहिए, हमारी मालकिन, हमारी माँ, आप इतनी उदास क्यों हैं? आपका दुख और आँसू देखकर हमारा दिल टूट रहा है।'

'कल तक मुझे यह बताने के लिए मजबूर न करें,' मदर सुपीरियर ने उत्तर दिया।

'ईश्वर की कसम,' बूढ़ी ननों ने कहा, 'अगर आप हमें नहीं बताएँगी, माँ, तो आप हमें बहुत दुखी कर देंगी।'

तब मदर सुपीरियर ने कहा:

'मैं सुबह तक आप लोगों को यह नहीं बताना चाहती थी, लेकिन चूँकि आप लोग मुझसे इतनी विनती कर रही हैं, तो सुनिए: यूप्रैक्सिया हमें छोड़कर जा रही है – कल वह इस जीवन से चली जाएगी। लेकिन आप में से कोई भी आज इस बारे में उससे बात न करे, कहीं वह दुखी न हो जाए – जब तक उसका समय नहीं आ जाता, तब तक उसे यह राज न पता चले।'

मदर सुपीरियर की बात सुनकर बहनें जोर-जोर से रोने लगीं: वे सभी यूप्रैक्सिया से बहुत प्यार करती थीं और उसका बहुत सम्मान करती थीं, क्योंकि वे जानती थीं कि वह ईश्वर की एक महान संत और मसीह की एक सच्ची सेविका और दुल्हन थीं; उसे खोना उनके लिए एक बहुत बड़ा नुकसान था। बहनों में से एक ने बड़ी ननों को रोते हुए सुना, कारण पूछा, और सीधे बेकरी की ओर दौड़ी, जहाँ उसे यूप्रैक्सिया और जूलिया रोटी सेंकते हुए मिलीं।

उसने कहा, 'आप जानती हैं, माता सुपीरियर और वृद्ध नन आपके लिए रो रही हैं।'

यूफ्रैक्सिया और जूलिया इन शब्दों से स्तब्ध रह गईं और चुपचाप खड़ी रहीं। फिर जूलिया ने यूफ्रैक्सिया से कहा:

'निश्चित रूप से आपके पूर्व मंगेतर ने ज़ार को आपको जबरदस्ती मठ से ले जाने के लिए मनाया नहीं होगा—क्या मदर सुपीरियर और वृद्ध नन इसी बात पर शोक मना रही हैं?'

'मेरे प्रभु यीशु मसीह की कसम,' संत ने उत्तर दिया, 'अगर पृथ्वी के सभी राज्य भी एक साथ हो जाएँ, तो भी वे मुझे मेरे मसीह को त्यागने के लिए मजबूर नहीं कर सकते; फिर भी, मेरी मालकिन जूलिया, जाओ और यह पक्की तरह पता लगाओ कि वे क्यों रो रही हैं; मेरा दिल बहुत बेचैन है।'

जूलिया जाकर दरवाज़े के पास खड़ी हो गई और यह सुनने लगी कि क्या कहा जा रहा है, जबकि उसी समय मठाधीश अपनी दृष्टि का वर्णन वृद्ध ननों को सुना रही थीं।

उसने कहा, "मैंने दो सम्मानित पुरुषों को चमकीले वस्त्रों में देखा; वे कन्वेंट में आए और मुझसे कहा: "यूफ्रेक्सिया को रिहा करो; राजा उसे मांगते हैं।" फिर दो और आए, जो उनसे भी अधिक चमकीले थे, और कहा: "यूफ्रेक्सिया को ले जाओ और उसे राजा के पास ले जाओ।" मैं उसे तुरंत ले चली; जब हम कुछ अद्भुत द्वारों पर पहुँचे – मैं उनकी सुंदरता का वर्णन भी नहीं कर सकती – वे अपने आप खुल गए, और हम अंदर गए; वहाँ हमने एक ऐसा कक्ष देखा जो मानव हाथों से नहीं बना था, अकथनीय वैभव से परिपूर्ण, और एक ऊँचा सिंहासन; उस पर दैदीप्यमान राजा विराजमान थे। मैं प्रवेश नहीं कर सका, लेकिन यूप्रैक्सिया को ले जाया गया और राजा के सामने पेश किया गया; उसने उनके चरणों में सिर झुकाया और उनके अति पवित्र चरणों को चूमा। वहाँ मैंने स्वर्गदूतों और संतों की अनगिनत भीड़ देखी, और वे सभी खड़े होकर यूप्रैक्सिया को देख रहे थे। फिर मैंने परमेश्वर की माता, सर्व-पवित्र कुँवारी मरियम, हमारी माता को देखा; उन्होंने यूप्रैक्सिया को उठाया और उसे वह सुंदर महल और वह ताज दिखाया जो महिमा और सम्मान से दमक रहा था, जो उसके लिए तैयार किया गया था। और मैंने एक आवाज़ सुनी जो उससे कह रही थी:

'यूफ्रेक्सिया! यहाँ तुम्हारा पुरस्कार और तुम्हारा विश्राम है; परन्तु अब जाओ, और दस दिन में लौट आओ, और तुम इन सबका आनंद सर्वदा के लिए उठाओगी।'

इस प्रकार महाधर्मप्राचारिणी ने अपनी दृष्टि का वर्णन वृद्ध भिक्षुणियों को सुनाया, और बोलते-बोलते रो पड़ीं, और अंत में कहा:

'आज उस दृष्टि को देखे हुए दसवां दिन है, और कल यूप्रैक्सिया का निधन हो जाएगा।'

यह सुनकर जूलिया ने अपना सीना पीटना शुरू कर दिया और रोती-बिलखती बेकरी की ओर चली गई। यूप्रैक्सिया ने उसे रोते हुए देखा और कहा:

'मैं ईश्वर के पुत्र की शपथ देती हूँ, मुझे बताओ तुमने क्या सुना है जो तुम्हें इतना रुला रहा है?'

उसने जवाब दिया, 'मैं इसलिए रो रही हूँ, क्योंकि आज हम अलग हो रहे हैं: मैंने हमारी महान महिला से सुना है कि आप कल चल देंगी।'

जैसे ही यूप्रैक्सिया ने यह सुना, उसकी सारी शक्ति तुरंत ही छूट गई और वह मृतप्राय होकर जमीन पर गिर पड़ी। जूलिया उसके पास बैठ गई और रोने लगी।

तब यूप्रैक्सिया ने जूलिया से कहा:

'बहन, अपना हाथ दो, मुझे उठाओ और मुझे खलिहान तक ले चलो; मुझे वहीं लिटा दो।'

जूलिया ने वैसा ही किया। यूप्रैक्सिया जमीन पर लेटी, रोते हुए प्रभु से कह रही थी:

'हे प्रभु, आपने एक अजनबी और अनाथ, मुझसे अपना मुख क्यों मोड़ लिया है? आप मुझे क्यों तुच्छ समझते हैं? अब तो शैतान से लड़ने और संघर्ष करने का समय है, और फिर भी आप मेरी आत्मा मुझसे छीन रहे हैं!' हे प्रभु, अपनी दासी पर दया करें, और मुझे कम से कम इस एक वर्ष के लिए छोड़ दें, ताकि मैं अपने पापों से पश्चाताप कर सकूँ, क्योंकि मैंने पश्चाताप नहीं किया है; मेरे पास कोई अच्छे कर्म नहीं हैं और न ही उद्धार की कोई आशा है। मरे हुओं को न पश्चाताप है, न आँसू; हे प्रभु, मरे हुए तेरी स्तुति नहीं करते, न वे जो नरक में नहीं उतरते, परन्तु जीवित तेरे पवित्र नाम का धन्यवाद करते हैं; मुझे एक बाँझ अंजीर के पेड़ की तरह एक वर्ष की अवधि दे दे।

जब वह इस प्रकार रो रही थी, तो बहनों में से एक ने उसे सुना, जाकर मठाधीश और वरिष्ठ ननों को बताया:

'उसे किसने बताया,' मठाधीश ने पूछा, 'हमारी बातचीत के बारे में और उसकी आत्मा को बेचैन किया? क्या मैंने तुम्हें यह रहस्य उसके समय आने तक उससे बताने से मना नहीं किया था? तुमने क्या किया! तुमने समय से पहले ही उसे बेचैन कर दिया! जाओ, उसे यहाँ ले आओ!'

जब संत को अंदर लाया गया, तो वह अबायस के पैरों पर गिर पड़ी, और कहने लगी:

'माँ, आपने मुझे यह क्यों नहीं बताया कि मेरी मृत्यु निकट है? मैं अपने पापों पर रोती! और अब मैं मोक्ष की आशा के बिना जा रही हूँ: मेरे नाम पर कोई पुण्य कर्म नहीं है।' मेरी दया करो, मेरी माता; मेरे लिए ईश्वर से प्रार्थना करो, कि वह मुझे जीवन का एक और वर्ष दे, ताकि मैं अपने पापों का प्रायश्चित कर सकूँ। मैं प्रायश्चित के बिना जा रही हूँ, और मुझे नहीं पता कि कौन सी अंधकारमयता मुझे घेर लेगी या मेरा क्या कष्ट इंतज़ार कर रहा है।

अब्बेस ने उससे उत्तर दिया:

'जिस प्रकार प्रभु जीवित हैं, मेरी बेटी यूप्रैक्सिया, तुम्हारे अमर वरा, मसीह ने तुम्हें स्वर्ग के राज्य के योग्य समझा है और तुम्हारे लिए एक शानदार महल और अनंत महिमा का मुकुट तैयार किया है।'

और अधिष्ठात्री ने उसे उसके बारे में अपनी पूरी दृष्टि सुनाना शुरू किया, इस प्रकार उसे सांत्वना देते हुए और उसकी आत्मा में आशा जगाते हुए; इसके अलावा, उन्होंने यूप्रैक्सिया से उनके लिए ईश्वर से प्रार्थना करने को कहा, कि वह उन्हें भी वही भाग्य प्रदान करें। अधिष्ठात्री के चरणों में लेटी यूप्रैक्सिया बीमार पड़ गई: पहले उसे ठंड लग गई, और फिर उसे बुखार हो गया।

तब महाधर्मप्राचारिका ने बहनों से कहा, 'इसे ले जाओ और प्रार्थनालय में ले चलो; इसका समय आ गया है।'

वे उसे ले गए, चैपल में लिटा दिया, और शाम तक उसके पास बैठे रहे, शोक मनाते और रोते रहे; शाम को, एबेस ने बहनों को अपना रात्रिभोज करने का आदेश दिया, जबकि जूलिया को यूप्रैक्सिया के साथ अकेले ही रहना था, क्योंकि वह कभी भी उसकी बगल नहीं छोड़ी थी। जूलिया उसके साथ ही कमरे में बंद हो गई और मैटिन्स तक वहीं रही। उसने यूप्रैक्सिया से विनती की:

'बहिन, प्रभु के समक्ष मुझे भूलना मत! याद रखना कि मैं कभी तुम्हारे साथ से नहीं हटी; याद रखना कि मैंने तुम्हें पढ़ना-लिखना सिखाया; याद रखना कि मैंने तुम्हें तपस्या करने के लिए प्रोत्साहित किया; मसीह से विनती करना कि वह मुझे भी अपने साथ ले जाएँ!'

जैसे ही सुबह हुई, मठाधिष्ठा ने देखा कि यूप्रैक्सिया अपनी अंतिम साँसें ले रही थी, और उन्होंने जूलिया को बहनों के पास यह कहने के लिए भेजा:

'जाओ और यूप्रैक्सिया से अपनी अंतिम विदाई लो: वह मर रही है।'

बहनें इकट्ठा हुईं और उसे विदा कहते हुए रोने लगीं और कहने लगीं:

'भगवान के राज्य में हम बहनों को याद रखना!'

लेकिन वह बोल नहीं सकी और चुप रही। जब बाकी सब चले गए, तो वह महिला आई जिसे यूप्रैक्सिया ने उस दानव से मुक्त कराया था जो उसे सताता था; उसने आँसुओं से उसके हाथों को चूमा और कहा:

'इन पवित्र हाथों ने मेरे लिए, जो कि अयोग्य हूँ, बहुत कुछ किया है; इन्हीं से वह शैतान जो मुझे सताता था, मुझसे दूर भगा दिया गया था।'

लेकिन यूफ्रेक्सिया ने उत्तर में कुछ नहीं कहा, और मठाधीश ने कहा:

'यूफ्रैक्सिया, क्या तुम्हें इस बहन पर तरस नहीं आता? वह इतनी रो रही है, और फिर भी तुम उससे कुछ नहीं कहतीं?'

यूफ्रेक्सिया ने इस बहन की ओर देखा और कहा:

'बहन, तुम मुझे क्यों सता रही हो? मुझे चैन से मरने दो; मैं तो वैसे भी मौत के कगार पर हूँ; पर परमेश्वर का भय मानो, और वह तुम्हें बचाएगा!'

फिर, मदर सुपीरियर को देखते हुए, उसने कहा:

– मेरी प्रार्थना करो, माता, क्योंकि मेरी आत्मा इस समय बहुत कष्ट में है।

और सभी बहनें, मठाधीश के साथ, उसके लिए प्रार्थना करने लगीं; और जब उन्होंने अपनी प्रार्थना समाप्त करके 'आमीन' कहा, तो मसीह की पवित्र और सम्मानित वधू, यूप्रैक्सिया ने अपना धर्मी और पवित्र आत्मा ईश्वर के हाथों में सौंप दिया। वह तीस वर्ष तक जीवित रहीं[5343] . बहनें उनके लिए जोर-जोर से रोईं; उन्होंने उन्हें उनकी माँ के बगल में दफनाया और ईश्वर की स्तुति की कि उन्होंने उन्हें अपने बीच में इतनी ईश्वर-प्रसन्न बहन दी और उन्हें ईश्वर तक साथ ले जाने की अनुमति दी। जहाँ तक जूलिया की बात है, वह तीन दिनों तक अपनी कफन से नहीं हटी, रोती और विलाप करती रही; लेकिन चौथे दिन वह मठ की अधिष्ठात्री के पास आई, प्रसन्न और आनंदित, और कहा:

'मेरे लिए प्रार्थना करें, माता; मसीह मुझे पहले ही बुला रहे हैं, और लेडी यूप्रैक्सिया ने मेरी ओर से उनसे मेरी सिफारिश की है ताकि मैं उनके साथ रह सकूँ।'

यह कहकर, उन्होंने सभी बहनों को विदाई दी और पाँचवें दिन देहांत हो गया। उन्हें संत यूप्रैक्सिया की कफ़न के बगल में दफ़नाया गया। तीस दिन बाद, पूजनीय एब्बेस, डिकिनेस थियोडुला ने बहनों को बुलाया और उनसे कहा:

– अपने लिए एक माता चुनों जो मेरी जगह ले सके, जो आपका मार्गदर्शन कर सके: प्रभु मुझे बुला रहे हैं; लेडी यूफ्रेक्सिया ने मेरी ओर से उनसे विनती की है कि वे मुझे यूफ्रेक्सिया और जूलिया के साथ एक स्थान प्रदान करें: जूलिया को भी यूफ्रेक्सिया के साथ स्वर्गीय महल में एक स्थान प्रदान किया गया है; मैं भी अब उनके पास जा रहा हूँ।

सभी बहनें यूप्रैक्सिया और जूलिया के लिए प्रसन्न हुईं कि वे अपने प्रभु के आनंद में प्रवेश कर गई थीं, और उन्होंने प्रार्थना की कि वह उन्हें भी वही भाग्य प्रदान करें। जहाँ तक उनकी माता का सवाल है, जो उन्हें छोड़कर जा रही थीं, वे रोईं और बहनों में से एक, जिसका नाम थियोग्निया था, को अपनी अधिष्ठात्री के रूप में चुना। महाधर्मपिता ने अपनी मृत्यु से पहले उसे अपने पास बुलाया और उससे कहा:

'तुम मठ के पूरे अनुशासन और नियम को अच्छी तरह जानती हो; मैं आपसे परम पवित्र एकसार त्रिमूर्ति के नाम पर विनती करती हूँ: मठ के लिए कोई संपत्ति या धन-संपदा न जुटाएँ, कहीं ऐसा न हो कि बहनों के मन सांसारिक चिंताओं में उलझ जाएँ, कहीं ऐसा न हो कि वे सांसारिक चीजों के कारण स्वर्गीय आशीर्वादों से वंचित हो जाएँ; बल्कि उन्हें, सभी क्षणभंगुर चीजों को नज़रअंदाज़ करते हुए, शाश्वत प्राप्त हो।

और बहनों से उसने कहा:

'तुम संत यूप्रैक्सिया के जीवन को जानती हो। उनके उदाहरण का अनुसरण करो, ताकि उनके साथ तुम भी स्वर्गीय महल की योग्य समझी जाओ।'

तब, सभी को अंतिम बार विदा कहने के बाद, उन्होंने आदेश दिया कि उन्हें प्रार्थना कक्ष में ले जाया जाए, दरवाज़े बंद कर दिए जाएँ, और अगले दिन तक कोई भी अंदर न आए। अगले दिन सुबह-सुबह, बहनें अंदर आईं और उन्हें प्रभु में निद्रित पाया; वे रोते हुए उन्हें संत यूप्रैक्सिया के बगल में दफना दिया। उस समय से, उस स्थान पर किसी और को दफनाया नहीं गया; और ईश्वर की इन सेविकाओं के पवित्र अवशेषों से कई चमत्कार हुए: हर तरह की बीमारियाँ ठीक हुईं, और दुष्टात्माएँ बाहर निकलीं, जो ज़ोर से चिल्लाती थीं:

'हे यूप्रैक्सिया! मृत्यु में भी तुम हमें पराजित कर भगा देती हो!'

ऐसा था पूजनीय यूप्रैक्सिया का जीवन और कार्य, जिन्हें स्वर्गीय महिमा के योग्य माना गया। आइए, हम भी उनका अनुकरण करने का प्रयास करें: आइए हम विनम्रता, आज्ञाकारिता, नम्रता, परिश्रम, धैर्य, पवित्रता और ब्रह्मचर्य का पालन करें, ताकि उसकी प्रार्थनाओं के द्वारा हम भी शाश्वत आशीर्वादों, आनंद और स्वर्गदूतों के

[5343] संत यूप्रैक्सिया की मृत्यु लगभग 413 में हुई: जब यूप्रैक्सिया ने अपने विवाह का त्याग करते हुए राजा को एक पत्र लिखा और पहले से भी अधिक कठोर तपस्या का जीवन चुना, तब उसकी उम्र 12 साल थी; राजा की मृत्यु लगभग उसी समय, 395 में हुई थी; हालांकि, यूप्रैक्सिया 30 वर्ष की आयु में, अगले 18 वर्षों तक तपस्या करने के बाद निधन कर गईं; इसलिए, 18 में से 395 घटाने पर वर्ष 413 आता है।

समुदाय के साथ सहभागिता के योग्य सिद्ध हों – ताकि हमें हमारे प्रभु यीशु मसीह की महिमा का आनंद, सभी संतों के साथ स्वर्गीय राज्य में, युगानुयुग प्राप्त हो, आमीन।

दीकोनिस संत ओलंपियास का जीवन।

25 जुलाई को स्मरणोत्सव

संत ओलंपियास, जिनका नाम उनकी माँ के नाम पर रखा गया था, का जन्म कॉन्स्टेंटिनोपल में हुआ था, जहाँ उनके विशिष्ट और कुलीन माता-पिता रहते थे। उनके पिता, एनीशियस सेकंडस, सबसे सम्मानित सेनटर्स में से एक थे, जबकि उनकी माँ प्रसिद्ध एपार्क यूलावीयस की बेटी थीं, जिनका उल्लेख संत निकोलस चमत्कारकर्ता के चमत्कारों के वृत्तांत में मिलता है और जो, कॉन्स्टेंटाइन महान के शासनकाल के दौरान, सम्राट के बाद दूसरे नंबर पर थे। यूलावीयस की बेटी ओलंपिया की सगाई शुरू में कॉन्स्टेंटाइन के सबसे छोटे बेटे कॉन्स्टस से हुई थी, जो अपने पिता के बाद प्राचीन रोम पर शासन करता था; लेकिन शादी होने से पहले ही उसकी मृत्यु हो गई, और फिर उसकी शादी अर्मेनिया के राजा आर्सेस से हुई, जिनके साथ वह विधवा होने से पहले केवल थोड़े समय के लिए ही रही। जिसके बाद ओलंपियास ने उपर्युक्त सेनेटर एनीशियस सेकंडस से विवाह कर लिया और संत ओलंपियास को जन्म दिया; अपनी उम्र पूरी करने से पहले ही, उनके माता-पिता ने उन्हें एपार्क नेव्रडियस के पुत्र, एक कुलीन युवक के साथ सगाई कर दी थी; हालाँकि, विवाह स्थगित कर दिया गया था। लेकिन बीस महीने बीत गए, मंगेतर की मृत्यु हो गई, और ओलंपिया कुंवारी और विधवा दोनों ही रहीं; यद्यपि वह वयस्क हो चुकी थीं, वह अब किसी और से शादी नहीं करना चाहती थीं, बल्कि उन्होंने कुंवारी रहने और अपने शेष जीवन को ब्रह्मचर्य में जीने का विकल्प चुना।

अपने माता-पिता की मृत्यु के बाद, ओलंपियास को बड़ी संपत्ति और अनगिनत संपत्तियाँ विरासत में मिलीं; उसने यह सब कुछ ईश्वर को समर्पित कर दिया और इसे उदारतापूर्वक जरूरतमंदों में बाँटना शुरू कर दिया: चर्चों, मठों, संन्यासियों, अस्पतालों, गरीबों और यात्रियों के आश्रयों, अनाथों और विधवाओं, और जो गरीबी में गिर गए थे, उन्हें; उसने कैदियों और निर्वासन किए गए लोगों को भी उदार दान भेजा; इस प्रकार उसकी उदारता दूर-दूर तक फैल गई। जहाँ तक उसकी अपनी बात है, वह लगातार प्रार्थना करती और उपवास करती थी, हर तरह से अपने शरीर को कष्ट देती और उसे आत्मा के अधीन रखती थी।

उस समय, थियोडोसियस महान[5344] , आर्कैडियस और होनोरियस के पिता, का शासन था; उनके एक रिश्तेदार एल्पडियस थे, जिनसे वे धन्य ओलंपियास की शादी करना चाहते थे, जो जवान और सुंदर थीं, लेकिन उन्होंने मना कर दिया। राजा ने उनसे विनती की, हर तरह से उन्हें अपने रिश्तेदार एल्पडियस से शादी करने के लिए मनाने की कोशिश की, लेकिन धमकी दिए जाने के बावजूद वह किसी भी हालत में मानने को तैयार नहीं हुईं, और वह जानती थीं कि राजा नाराज़ थे। उन्होंने राजा को यह जवाब भेजा:

'महामहिम! यदि ईश्वर चाहते कि मेरी शादी हो, तो वे मेरे पहले पति को मुझसे न लेते; लेकिन, चूँकि वह जानता था कि इस जीवन में मेरा विवाह करना मेरे भले के लिए नहीं होगा, उसने मेरे पति को मुझसे अलग कर दिया, और मुझे पति के अधिकार के भारी जुए से मुक्त कर दिया, और मेरे विचारों पर अपना कोमल जुआ (तुलना करें मत्ती 11:30) रख दिया।

राजा आग-बबूला हो गया और उसने शहर के राज्यपाल को आदेश दिया कि वह उसकी सारी संपत्ति जब्त कर ले और ओलंपियास के तीस वर्ष की आयु तक पहुँचने तक उसे सुरक्षित रखे। राज्यपाल ने, राजा के आदेश से कम और एल्पडियास के उकसावे पर अधिक, उस पर इतना अत्याचार किया और उसे इतना सीमित कर दिया कि न केवल उसकी संपत्ति पर बल्कि स्वयं उस पर भी उसका कोई नियंत्रण नहीं रहा : वह न तो उसे धर्मपरायण संतों से बात करने देता था और न ही चर्च जाने देता था, ताकि वह निराशा में विवाह के लिए राज़ी हो जाए; फिर भी ओलंपियास प्रसन्न हुई और ईश्वर का धन्यवाद किया। कुछ समय बाद, उसने राजा को निम्नलिखित लिखा:

[5344] सम्राट 379–395।

'आपने, महामहमि, मुझ पर राजसी दया दखिाई है और एक बशिप के सच्चे रूप में कार्य कयिा है[5345] , जब आपने कसिी और को मेरे बोझ की देखभाल और सुरक्षा का आदेश दयिा, जसिकी देखभाल मैं स्वयं कर रही थी; आप मुझ पर और भी बड़ा उपकार करेंगे यदि आप अपने अधकिारी को आदेश दें कि वह मेरी सारी संपत्ति चर्चों, गरीबों और ज़रूरतमंदों में बाँट दें, ताकि मैं स्वयं बाँटकर व्यर्थ की कीर्ति से बच सकूँ; और फरि मैं अपनी सच्ची संपत्ति[5346] की उपेक्षा नहीं करूँगी, क्योंकि मैं सांसारकि और नश्वर धन की चंता से मुक्त हो जाऊँगी।

ज़ार ने उनका पत्र पढ़ा और इस मामले पर वचिार करने के बाद, उन्हें अपनी संपत्ति पर अधकिार बनाए रखने की अनुमति दे दी: उन्होंने उनके सदाचारी और ईश्वर-भक्त जीवन, उनके महान आत्म-संयम और शरीर की कठोर तपस्या के बारे में बहुत कुछ सुना था। वास्तव में, वह बलि्कुल भी मांस नहीं खाती थी, और न ही वह स्नानघर जाती थी; हालाँकि, यदि खराब स्वास्थ्य के कारण उसे स्नान करने के लिए मजबूर होना पड़ता था, तो वह केवल एक ट्यूनकि पहनकर गर्म पानी के स्नान में बैठ जाती थी और बनिा कपड़े उतारे ही स्नान करती थी, क्योंकि वह न केवल अपनी दासीयों से बल्कि स्वयं से भी शर्मदिा थी, और वह अपना नग्न शरीर देखना नहीं चाहती थी।

इस प्रकार के पवत्रि और सदाचारी जीवन के कारण—जसिके गुणों पर स्वयं पवत्रि संत भी चकति थे—संत ओलंपयिास को चर्च की सेवा के लिए बुलाया गया; उन्हें परम पावन पैट्रआर्क नेक्टारयिोस द्वारा एक डीकोनेस नयिुक्त कयिा गया था[5347] [5348] . और उन्होंने अन्य डकिॉनेस (दीकनी) के साथ, सुसमाचार की वधिवा संत ऐनी की तरह, *जो 'मंदरि नहीं छोड़ती थीं, बल्कि उपवास और प्रार्थना के साथ दनि-रात परमेश्वर की सेवा करती थीं* (लूका 2:37), ईमानदारी और धार्मकिता से प्रभु की सेवा की। धन्य ओलंपयिास का जीवन इतना नर्दिोष था कि उनके शत्रु भी उनमें नंदिा के योग्य कुछ भी नहीं पा सके। जो लोग संत जॉन क्राइसोस्टोम से, जो नेक्टारीयस के बाद पैट्रआर्क बने, असहमत थे, वे मसीह की इस नर्दिोष दासी के प्रति भी शत्रुतापूर्ण थे, और उनमें सबसे प्रमुख थे अलेक्जेंड्रयिा के पैट्रआर्क थयिोफलिस: वह उससे इसलिए नाराज़ था क्योंकि जब वे कॉन्स्टेंटनिोपल पहुँचे, तो उसने उन धर्मी संतों को आश्रय दयिा था जन्हिें उसने मस्रि के रेगस्तिान से नकिाल दयिा था (जैसा कि क्रिसोस्टोम के जीवन में वस्तिार से वर्णति है), और मसीह के लिए उनका भरण-पोषण कयिा था। वह आम तौर पर शहर में आने वाले यात्रयिों, संतों और बशिपों का बहुत गर्मजोशी से स्वागत करती थीं और उन्हें वश्रिाम के लिए जगह देती थीं, तथा अपने साधनों से उनकी देखभाल करती थीं; और स्वयं थयिोफलिस ने भी पहले अक्सर उनकी आतथि्य और उदारता का लाभ उठाया था। बाद में, हालाँकि, वह उसके प्रति शत्रुतापूर्ण हो गया—उपरोक्त संतों और संत जॉन क्रसिोस्टोम दोनों के कारण—और उसने उस पर अनुचति आरोप लगाकर उसे बदनाम करने की कोशशि की; फरि भी, कसिी ने भी उसकी दुर्भावनापूर्ण झूठ और बदनामी पर वश्विास नहीं कयिा, क्योंकि हर कोई उसके शुद्ध और पवत्रि जीवन को जानता था। मसीह की इस सच्ची सेवकिा की कीर्ति सभी चर्चों में फैल गई; उसने ठीक वैसे ही काम कयिा जैसे सुसमाचार में वर्णति दयालु सामरी ने कयिा था, जसिने एक आदमी को—जो लुटेरों द्वारा घायल कयिा गया था और पास से गुजरने वालों में से कसिी ने भी उसकी परवाह नहीं की थी—अपनी खच्चर पर बठिाया, उसे एक सराय में ले गया, और उसके ठीक होने तक उसकी देखभाल की (लूका 10:30-37); वास्तव में, उसने उन सभी को आश्रय

[5345] वैसे, बीजान्टनि सम्राट को 'चर्च के बाह्य मामलों के बशिप' की उपाधि प्राप्त थी; ग्रीक से अनुवादति 'बशिप' शब्द का अर्थ पर्यवेक्षक, नरीक्षक या पर्यवेक्षणकर्ता होता है।

[5346] अर्थात्, आत्मा के मोक्ष से संबंधति।

[5347] कॉन्स्टेंटनिोपल के पैट्रआर्क 381–397।

[5348] दीकोनीस (Deaconesses) प्रेरतिों के समय से ही मौजूद थीं। प्रेरति पौलुस, रोमयिों के नाम अपनी पत्री (रोमयिों 16:1) में, फोबे का उल्लेख करते हैं, जो 'केनख्रेआ में कलीसयिा की सेवकिा' थीं; प्रेरतिोत्तर काल में, डकिनेस का उल्लेख अक्सर सार्वभौमकि परषिदों (प्रथम सार्वभौमकि परषिद, कैनन 19; चतुर्थ सार्वभौमकि परषिद, कैनन 15; षष्ठ सार्वभौमकि परषिद, कैनन 14) द्वारा, साथ ही चर्च के पतिाओं और शक्षिकों, और सम्राटों द्वारा अपने कानूनों में (जस्टनियिन, नोवेल्स 3, 6 और 123) कयिा गया है। प्रारंभ में, डीकोनेस का चयन मुख्य रूप से कुंवारी महलिाओं में से कयिा जाता था, और वधिवाओं में से केवल उन वधिवाओं का कयिा जाता था जो 'वफादार और धर्मपरायण, और जनिका ववािह केवल एक बार हुआ हो' (एपोस्टोलकि कॉन्स्टट्यिूशंस, बुक VI, 18); लेकनि सम्राट जस्टनियिन के अधीन दोनों समूहों से चयन करने की अनुमति दी गई, और वास्तव में 40 वर्ष की आयु से पहले भी, यद्यपि वास्तवकि मंत्रालय उन्हें उस आयु तक पहुँचने पर ही सौंपा जाता था। (चौथा सार्वभौमकि परषिद, कैनन 15; जस्टनियिन के नोवेल्स 123); केवल धर्मपरायण जीवन से वशिष्टि महलिाएं ही बनिा कसिी परीक्षा अवधि के तुरंत ही डीकोनेस के रूप में नयिुक्त की जाती थीं। डीकोनेस (स्त्रैण उपयाजक) के कर्तव्य इस प्रकार थे: 1) वे महलिाओं को बपतस्मिा के लिए तैयार करती थीं; 2) वे चर्च के मंत्रयिों की महलिाओं के वास्तवकि बपतस्मिा के दौरान सहायता करती थीं; 3) वे बशिप द्वारा महलिाओं के संबंध में सौंके गए वभिन्नि कार्यों को करती थीं – जैसे बीमारों और संकट में पड़े लोगों से मलिना; 4) वे चर्च में महलिाओं और बच्चों के बीच व्यवस्था और शष्टिाचार सुनश्चिति करती थीं।

दयिा जनिके पास सरि रखने के लिए कोई जगह नहीं थी; उसने गरीबों और बीमारों, फोड़ों से पीड़ति लोगों, सड़कों पर छोड़ दिए गए और सभी द्वारा त्याग दिए गए लोगों की लगन से देखभाल की, और हर तरह से, पूरे दलि और ईमानदारी से परोपकार के कार्यों के लिए समर्पति थी। उसने पुण्य कार्यों पर कतिना खर्च कयि—सोने और चांदी, कपड़ों में, और गरीबों तथा अपने काम से कॉन्स्टेंटनिोपल आने वालों को प्रतदिनि भोजन के वतिरण में—और कैसे उसने हर तरह से उनकी ज़रूरतों को पूरा कयि। इस प्रकार, वह अपनी संपत्तकि साथ अपने लोगों की सहायता के लिए आगे आई, बहुत सारा सोना दान करते हुए, चांदी और चर्च के आभूषण सेंट एम्फलिोचयिस, इकोनयिम के बशिप, और पोंटस के ओनेसमिस (और पहले नेक्टारयिस से पहले कॉन्स्टेंटनिोपल में पुरोहति के रूप में सेवा करने वाले ग्रेगरी द थयिोलोजयिन) को, और बेसलि द ग्रेट के भाई पीटर ऑफ सेबास्टे, और साइप्रस के एपफिानयिस को दान कए। उसने ऑप्टमिस की - जो कॉन्स्टेंटनिोपल में मर गया था - आँखें अपने हाथों से बंद कीं। उसने न केवल संतों और सदाचारी लोगों के साथ, बल्कविद्रिोहयिों और दुश्मनों के साथ भी भलाई की, जैसे कटिोलेमाइस के बशिप एंटओिकस; वेरयिा के अकाकयिस; गावल के सेवेरयिन; और उनके जैसे अन्य लोग। वह द्वेष से मुक्त थीं और उन्होंने स्वयं को पूरी तरह से ईश्वर को समर्पति कर दयिा था; इस कारण से, वह अपनी संपत्तकिो अपना नहीं, बल्कईश्वर का मानती थीं। संत जॉन क्राइसोस्टोम उन्हें ईश्वर की एक महान दासी के रूप में बहुत सम्मान देते थे और उनसे आध्यात्मकि प्रेम करते थे, ठीक वैसे ही जैसे संत प्रेरति पौलुस ने एक बार पर्ससि से कयि था, जसिके बारे में वे लखिते हैं: *'मेरी प्रयि पर्ससि को नमस्कार कहना, जसिने प्रभु के लिए बहुत परशि्रम कयि है'* (रोमयिों 16:12)। और संत ओलंपयिास ने पर्ससि से कम कुछ नहीं कयि, उन्होंने प्रभु के लिए बहुत परशि्रम कयि और संतों की बड़ी और गर्मजोशी से प्रेमपूर्ण सेवा की।

जब संत जॉन क्रसिोस्टोम को, हर तरह से नरि्दोष होने के बावजूद, अन्यायपूर्ण ढंग से उनके पद से हटा दयिा गया, तो धन्य ओलंपयिास ने अन्य डकिनेस के साथ इस पर बहुत रोया। जब वह अंतमि बार चर्च से वदिा ले रहे थे, तो जॉन क्रसिोस्टोम बपतस्मिा गृह में गए, उन्होंने धन्य ओलंपयिास को पेंटाडयिा, प्रोक्लयिा और साल्वनिा नामक डकिोनसिों के साथ बुलाया, जो एक सदाचारी वधिवा थीं, और उनसे कहा:

'मेरे बच्चों, यहाँ आओ और मेरी बात सुनो। मैं देख सकता हूँ कमिेरे वरिुद्ध उत्पीड़न समाप्त होने को है। मैंने अपना कर्तव्य नभिाया है, और मुझे नहीं लगता कआिप मुझे फरि से देख पाएँगी। इसलिए, मैं आपसे वनिती करता हूँ, मेरे स्थान पर नयिुक्त कए जाने वाले बशिप के कारण चर्च को न छोड़ें, चाहे वह जबरदस्ती से हो या आम सहमतसि, बल्कउिसकी आज्ञा का पालन करें जैसे आप जॉन की आज्ञा का पालन करते थे: चर्च एक बशिप के बनिा नहीं रह सकती। ईश्वर की कृपा आप पर बनी रहे; अपनी प्रार्थनाओं में मेरा स्मरण करना!

हालाँकि, वे बहुत रोते हुए उनके सामने साष्टांग दंडवत हो गए; और संत अपनी कैद की जगह के लिए यात्रा पर नकिल पड़े।

उनके नरि्वासन के बाद, कैथेड्रल में आग लग गई; और शहर का एक बड़ा हसि्सा जलकर राख हो गया; परणिामस्वरूप, सेंट जॉन के सभी समर्थकों से, भले ही वे नरि्दोष थे, शहर के राज्यपाल ने इस आग के बारे में पूछताछ की: यह माना गया कउिन्होंने चर्च में आग लगाई थी; सेंट ओलंपयिास को भी इसका परणिाम भुगतना पड़ा, मानो वह भी आगजनी की दोषी हो; उसे अदालत में लाया गया और उससे कठोर पूछताछ की गई (मजस्ट्रिेट क्रूर और नरि्दयी था)। हालाँकिउिसमें कोई दोष नहीं पाया गया, फरि भी उसने अन्यायपूर्वक ओलंपयिास को उस आगजनी के लिए, जसिका दोष उस पर नहीं था, एक बड़ी रकम का भुगतान करने की सज़ा सुनाई।

इसके बाद, संत ने कॉन्स्टेंटनिोपल छोड़ दयिा और साइज़किस[5349] के लिए रवाना हुईं; हालाँकि, उनके दुश्मनों ने वहाँ भी उन्हें चैन से नहीं रहने दयिा; उन्हें नरि्वासन की सज़ा सुनाई गई और नकिोमेडयिा[5350] में कैद कर दयिा गया; यह जानकर, संत जॉन क्राइसोस्टोम ने अपनी ही कैद से उन्हें एक पत्र लखिा, जसिमें उन्होंने उनके दुःख में सांत्वना दी[5351] । दीर्घकाल तक कैद में रहने और बहुत कष्ट सहने के बाद, धन्य ने प्रभु की ओर प्रस्थान कयि[5352] । उनकी मृत्यु के

[5349] क्यज़किोस, आर्क्टोनसि्सोस की प्रोपोंटसि (मार्मारा सागर) प्रायद्वीप पर स्थति था।

[5350] नकिोमेडयिा एशयिा माइनर के उत्तर-पश्चमिी भाग में, मार्मारा सागर के तट पर बथिनियिा प्रांत का एक शहर था। सेंट ओलंपयिास को 405 में नकिोमेडयिा में कैद कयि गया था।

[5351] संत जॉन क्रसिोस्टोम के ओलंपयिास को लखिे सत्रह पत्र संरक्षति हैं।

[5352] लगभग 409, 25 जुलाई।

बाद, जब उनका पवत्रि शरीर अभी तक दफनाया नहीं गया था, संत नकिोमेडयिा के बशिप को स्वप्न में प्रकट हुईं और कहा:

'मेरे शरीर को एक लकड़ी के ताबूत में रखो और उसे समुद्र में फेंक दो; जहाँ भी लहरें उसे कनिारे पर लाकर रख दें, वहीं उसे दफना देना।'

बशिप ने ठीक वैसा ही कयिा। लहरों ने ताबूत को कॉन्स्टेंटनिोपल के पास व्रोहती नामक स्थान पर कनिारे पर लाकर रख दयिा, जहाँ संत थॉमस द अपोस्टल को समर्पति एक चर्च था। स्थानीय लोगों को संत ओलंपयिास के शरीर के बारे में ईश्वर से एक दव्यि-दर्शन प्राप्त हुआ; वे तट पर गए, ताबूत को ढूंढा और उसे प्रेरति के चर्च में रख दयिा। और हर तरह की बीमारयिों से लोग ठीक होने लगे। कई वर्षों बाद, बर्बर लोगों ने इस स्थान पर हमला कयिा, चर्च को जला दयिा, और पवत्रि अवशेषों को—जो आग से अछूते रहे, भले ही ताबूत जल गया था—समुद्र में फेंक दयिा; और जसि स्थान पर अवशेष फेंके गए थे, वहाँ पानी खून में बदल गया: इस प्रकार ईश्वर ने अपनी दासी के दुख को प्रकट कयिा। लेकनि चमत्कारी अवशेषों को फरि से वशि्वासयिों द्वारा समुद्र से नकिाल लयिा गया। यह जानकर, कॉन्स्टेंटनिोपल के पैट्रआर्क सेरजयिस[5353] ने पुरोहति जॉन को भेजा, और उन्हें सम्मान के साथ कॉन्स्टेंटनिोपल लाने का नर्दिेश दयिा। जब पादरी उस स्थान पर पहुँचे और पवत्रि अवशेषों को उठाया, तो उनसे बहुत सारा खून बहने लगा: और हर कोई इस बात पर बहुत चकति हुआ कि दो सौ साल बाद भी, सूखी हड्डयिों से खून इस तरह बह रहा था जैसे कसिी जीवति शरीर से। इस प्रकार इन पवत्रि और चमत्कारी अवशेषों को शाही शहर में ले जाया गया और सेंट ओलंपयिास द्वारा स्थापति मठ में रख दयिा गया; और , उनके पवत्रि अवशेषों के माध्यम से कई चमत्कार हुए: हर तरह की बीमारयिाँ ठीक हुईं, और संत ओलंपयिास की प्रार्थनाओं और हमारे प्रभु यीशु मसीह की कृपा से दुष्टात्माएँ नकिल गईं, जनिके लिए, पति और पवत्रि आत्मा के साथ, अब और हमेशा और युगों-युगों तक सम्मान और महमिा हो। आमीन।

- आज के दनि, परम पवत्रि थओिटोकोस की माता, धर्मी अन्ना का नधिन दविस है। (उनके जीवन के लिए, धर्मी योआकमि के साथ, 9 सतिंबर देखें

8 अगस्त

26 जुलाई (पुराने कैलेंडर के अनुसार)

हमारे पूजनीय पति मूसा हंगरी के जीवन

26 जुलाई को स्मरणोत्सव

दुष्ट शत्रु लोगों के वरिुद्ध अशुद्ध, कामुक वासनाओं के माध्यम से युद्ध करने का सबसे अधकि आदी है; क्योंकि इस अशुद्ध कलंक से धुंधला हुआ व्यक्ति, अपने सभी कर्मों में ईश्वर की ओर देखना बंद कर देता है, क्योंकि केवल *'शुद्ध हृदय वाले परमेश्वर को देखेंगे'* (मत्ती 5:8)। हमारे धन्य पति मूसा ने, इस लड़ाई में दूसरों की तुलना में महान पराक्रम दखिाते हुए, मसीह के एक सच्चे योद्धा की तरह बहुत कष्ट सहे, जब तक कि उन्होंने अंततः अशुद्ध शत्रु की शक्ति को परास्त नहीं कर दयिा और हमारे अनुसरण के लिए एक उदाहरण नहीं छोड़ दयिा। उनके बारे में नम्निलखिति बताया जाता है।

धन्य मूसा के बारे में यह ज्ञात है कि वह उग्रनि का मूल नविासी था[5354] , जो धार्मकि, पवत्रि राजकुमार और रूसी कष्ट-सहने वाले बोरसि का प्रयि था। उन्होंने अपने भाई जॉर्ज के साथ मलिकर राजकुमार की सेवा की, जो अपने स्वामी की अपने शरीर से ढाल बनकर रक्षा करते हुए और उन पर झपटते हुए, अल्ता नदी के कनिारे[5355] दुष्ट स्वयातोपोलक के

[5353] सर्गीयस – कॉन्स्टेंटनिोपल में उस नाम के पहले पैट्रआर्क, जनिहोंने 610 से 638 तक सेवा की।

[5354] अर्थात्, हंगरी से। 'उग्रयिन-हंगेरयिन' नाम रूसी भाषा में लगभग 9वीं शताब्दी की शुरुआत में प्रकट हुआ होगा, जब रूसी स्लावों का मैग्यारों से पहली बार सामना हुआ था; स्पष्ट रूप से, उस समय रूसी भाषा में नाक की ध्वनि अभी भी मौजूद थी और इस शब्द का उच्चारण 'ngr' था; यह आज के 'हंगेरयिन' शब्द की व्याख्या भी करता है।

[5355] अल्टा, ट्रुबेज्ह की एक सहायक नदी है, जो कीव के नीचे की ओर बाएं कनिारे से, मास्को की ओर, डेन्यूपर में मलिती है।

सैनकिों द्वारा संत बोरसि[5356] के साथ मारे गए; उन्होंने सोने के ह्रविनयि[5357] के कारण उनका सरि भी काट दयि था, जो संत बोरसि ने उन पर रखा था।

केवल धन्य मूसा ही मौत से बच नकिले और कीव में यारोस्लाव की बहन प्रेदस्लिावा के पास चले गए, जहाँ वे स्वयातोपोलक से छपिकर रहे और तब तक ईश्वर से भक्तपिूर्वक प्रार्थना करते रहे जब तक कि धर्मपरायण राजकुमार यारोस्लाव अपने मारे गए भाइयों के प्रतकिरुणा से प्रेरति होकर नहीं आए और उन्होंने अधर्मी स्वयातोपोलक को पराजति नहीं कर दयि[5358] । जब स्वयितोपोलक, पोलशि लोगों के पास भाग जाने के बाद[5359] , बोलेस्लाव के साथ लौटा और यारोस्लाव को बाहर नकिाल दयि, और स्वयं कीव पर शासन करने लगा[5360] , तब बोलेस्लाव, अपनी रयिाया में लौटकर, यारोस्लाव की दो बहनों और उसके कई बोयारों को बंदी बना ले गया, जसिमें धन्य मूसा भी शामलि था, जसिे भारी लोहे की बेड़यिों में जकड़कर कड़ी नगिरानी में रखा गया था, क्योंकि वह अपनी मजबूत काया और सुंदर चेहरे के लिए प्रसद्धि था।

लयिाश की भूमि में, उसे एक महलिा ने देखा—जो कुलीन, सुंदर और युवा थी—और जसिके पास अपार धन-संपत्ति और शक्ति थी; उसका पति, बोलेस्लाव के साथ गए होने के कारण, वापस नहीं आया, क्योंकि वह युद्ध में मारा गया था। इस महलिा ने, भक्षिु की सुंदरता को देखकर, उसके प्रति कामुक इच्छा से ग्रस्त हो गई और उसे बहकाने लगी, इन शब्दों से मनाते हुए:

'हे मनुष्य! जब एक रास्ता है जसिसे तुम अपनी बेड़यिों और पीड़ा से मुक्त हो सकते हो, तो तुम ऐसी यातना क्यों सहते हो?!'

'ईश्वर की इच्छा है,' मूसा ने उत्तर दयि।

'यदि तुम मेरे अधीन हो जाओ,' उस महलिा ने कहना जारी रखा, 'तो मैं तुम्हें आज़ाद कर दूँगी और तुम्हें पूरे पोलैंड में प्रसद्धि कर दूँगी, और तुम मुझे और मेरी सारी संपत्ति पर अधकिार करोगे।'

लेकनि उस धन्य पुरुष ने, उसकी अशुद्ध इच्छा को भांपते हुए, उससे उत्तर दयि:

'कौन सा पुरुष है जसिने अपनी पत्नी की बात मानकर कभी अपनी स्थति सुधारी हो? पहले आदम ने अपनी पत्नी की बात मानकर स्वर्ग से नकिाल दयि गया। शमिशोन, जो शक्ति में सभी से श्रेष्ठ था और एक पूरी सेना को हरा चुका था, उसे एक महलिा ने वदिेशयिों के हाथों धोखा दयि। सुलैमान, जसिने ज्ञान की गहराइयों को प्राप्त कयि था, एक महलिा की आज्ञा मानते हुए मूर्तयिों के सामने झुक गया। हेरोद, जसिने कई जीतें हासलि की थीं, अपनी पत्नी को खुश करने की कोशशि करते हुए यूहन्ना बपतस्मिा देने वाले का सरि कलम कर दयि। तो मैं उस महलिा की दासी बनकर कैसे मुक्त हो सकता हूँ जसिे मैं जन्म के दनि से कभी नहीं जानता?[5361]

उसने कहा, 'मैं तुम्हें छुड़ा लूंगी, मैं तुम्हें प्रसद्धि कर दूंगी, मैं तुम्हें अपने पूरे घर का स्वामी बना दूंगी, और मैं तुम्हें अपना पति बनाना चाहती हूँ—बशर्ते तुम मेरी आज्ञा का पालन करो; क्योंकि मैं तुम्हारी सुंदरता को व्यर्थ में नष्ट होते हुए नहीं देख सकती।'

धन्य मूसा ने उससे कहा, 'नश्चिति रहो, कि मैं तुम्हारी आज्ञा का पालन नहीं करूँगा, और न ही मैं तुम पर प्रभुत्व या धन-संपत्ति चाहता हूँ; इन सब बातों से ऊपर, मेरे लिए आत्मा और शरीर की पवत्रिता है।' कहीं मैं पाँच साल की इस कठनि परीक्षा को व्यर्थ न गँवा दूँ—अर्थात् वे पीड़ादायक बंधन जन्हिें प्रभु ने मेरे लिए अन्यायपूर्वक सहने का वधिान कयि है—जसिके बदले मुझे शाश्वत यातना से मुक्ति की आशा है।

तब उस स्त्री ने, यह देखकर कि वह ऐसी सुंदरता खो सकती है, एक और शैतानी योजना बनाई, यह तर्क देते हुए कि यदि वह उसे छुड़ा लेती, तो वह हर तरह से उसके अधीन हो जाता, यहाँ तक कि ज़रूरत पड़ने पर जबरदस्ती भी। इसलिए उसने उस मालकि को संदेश भेजा जसिने संत को बंदी बना रखा था, और उससे कहा कि वह उससे जतिनी रकम चाहे ले ले,

---

[5356] 1015 में।

[5357] ग्रविनयि (संस्कृत शब्द 'ग्रवि' - गर्दन से) मूल रूप से एक हार या माला थी, जो आमतौर पर सोने की बनी होती थी और आभूषण के रूप में गर्दन में पहनी जाती थी। बाद में, 'ग्रविनयि' नाम का प्रयोग एक वशिष्टि वजन (72 से 96 ज़ोलोटनकि तक) के सोने के एक छल्ले के लिए होने लगा, जो सक्के के रूप में चलन में था।

[5358] 1017 में।

[5359] अर्थात् पोलैंड को।

[5360] 1018 से।

[5361] अर्थात्, जन्मदनि से ही उसने अपनी कुँवारी अवस्था अक्षुण्ण रखी।

बशर्ते कि वह मूसा को उसे बेच दे। और उसने, धन प्राप्त करने का एक अनुकूल अवसर देखकर, उससे लगभग 1,000 सोने के सिक्के ले लिए और मूसा को उसे सौंप दिया। उस महिला ने, उस पर अपना दबदबा बना लेने के बाद, निर्लज्जतापूर्वक उसे अश्लील व्यवहार में खींच लिया। उसे उसकी बेड़ियों से मुक्त करने के बाद, उसने उसे महँगे वस्त्र पहनाए, उसे स्वादिष्ट व्यंजन खिलाए, और कामुकता से उसे गले लगाकर, उससे यौन संबंध बनाने के लिए मजबूर किया। लेकिन धन्य मूसा, उस स्त्री के उन्मत्त व्यवहार को देखकर, प्रार्थना और उपवास में और भी अधिक लग गए, और परमेश्वर को प्रसन्न करने के लिए उन्होंने भव्य दावतों और शराब के बजाय शुद्धता के साथ सूखी रोटी और पानी को प्राथमिकता दी। और तुरंत ही, अपने भव्य वस्त्र उतारकर, वह, यूसुफ की तरह, पाप से बचा (उत्पत्ति 39:1–23), और इस संसार के सुखों को कुछ भी नहीं समझा। अपमानित महिला को इतना क्रोध आया कि उसने उस धन्य पुरुष को कालकोठरी में डालकर भूख से मार डालने का निश्चय किया। लेकिन परमेश्वर, जो हर प्राणी को भोजन प्रदान करते हैं, जिन्होंने एक बार जंगल में एलियाह को सहारा दिया था (2 शमूएल 17:1-29), साथ ही थियोबेस के पौलुस और उनके कई अन्य सेवकों ने, जिन्होंने उन पर भरोसा किया था, इस धन्य पुरुष को भी नहीं छोड़ा: वास्तव में, उस स्त्री के ही एक सेवक ने, दया दिखाने के लिए परमेश्वर द्वारा प्रेरित होकर, गुप्त रूप से मूसा के लिए भोजन लाया। और अन्य लोगों ने उसे मनाने की कोशिश की:

'भाई मूसा, तुम्हें शादी करने से क्या रोक रहा है? तुम अभी जवान हो, और यह विधवा केवल एक साल विवाहित रही है; वह अन्य महिलाओं से अधिक सुंदर है, और उसकी संपत्ति अथाह है।' इस पोलिश भूमि में उसकी प्रतिष्ठा बहुत महान है, इसलिए कि यदि वह चाहती, तो राजकुमार भी उससे विवाह करने में संकोच न करता; और फिर भी तुम, एक बंदी और दास, उसके स्वामी बनना नहीं चाहते?! यदि तुम कहते हो कि तुम मसीह की आज्ञा तोड़ना नहीं चाहते, तो क्या मसीह सुसमाचार में नहीं कहते: *'इसीलिए पुरुष अपने पिता और माता को छोड़कर अपनी पत्नी से जुड़ जाएगा, और दोनों एक शरीर बन जाएंगे'* (मत्ती 19:5)। इसी प्रकार, प्रेरित कहते हैं: *'उत्तेजना से जलने की अपेक्षा विवाह करना उत्तम है'* (1 कुरिन्थियों 7:9)। वे विधवाओं के बारे में भी कहते हैं: *'मैं चाहूँगा कि जवान विधवाएँ विवाह कर लें'* (1 तीमु. 5:14)। आपने, हालाँकि, संन्यास का व्रत नहीं लिया है, बल्कि इससे आप स्वतंत्र हैं। तो फिर, आप स्वयं को ऐसी क्रूर और दुखद यातनाओं के अधीन क्यों करते हैं और इस प्रकार क्यों कष्ट उठाते हैं? यदि ऐसी दयनीय अवस्था में आपकी मृत्यु हो जाए, तो आपको क्या प्रशंसा मिलेगी? वास्तव में, प्रारंभिक धर्मी पुरुषों में से किसने—जैसे कि अब्राहम, इसहाक और याकूब ने—पत्नियों को तुच्छ समझा? किसी ने नहीं, सिवाय आज के भिक्षुओं के। दास यूसुफ अपनी पत्नी से भाग गया था, फिर भी बाद में उसने भी अपने लिए एक पत्नी ली (उत्पत्ति 41:45)। और तुम भी, यदि इस पत्नी से जीवित बच गए, तो (जैसा कि हम मानते हैं) समय आने पर अपने लिए भी एक पत्नी ढूंढ लोगे। और तुम्हारी मूर्खता पर कौन हँसेगा? तुम्हारे लिए इस पत्नी के अधीन हो जाना बेहतर होगा, ताकि तुम मुक्त हो जाओ और उसके पूरे घर के स्वामी बन जाओ।

परन्तु धन्य मूसा ने उन्हें उत्तर दिया:

– सचमुच, मेरे भाइयो और प्रिय मित्रो, आप मुझे अच्छी सलाह दे रहे हैं। मैं समझता हूँ कि आप मुझे वही शब्द दे रहे हैं जो साँप ने स्वर्ग में ईव को फुसफुसाए थे: तुम मुझे इस पत्नी के आगे झुकने के लिए मजबूर कर रहे हो, लेकिन किसी भी हालत में मैं तुम्हारी सलाह नहीं मानूँगा; भले ही मैं इन बेड़ियों और भयानक यातनाओं में मर जाऊँ, मैं इसके लिए परमेश्वर से अनेक दया की आशा करता हूँ, और जबकि कई धर्मी पुरुष अपनी पत्नियों के साथ बचाए गए थे, मैं अकेला, एक पापी, पत्नी के साथ नहीं बच सकता। वास्तव में, यदि यूसुफ ने शुरू में ही पेंटेफ्री की पत्नी की आज्ञा मानी होती, तो बाद में जब उसने अपने लिए एक पत्नी ली, तब वह मिस्र पर राज्य नहीं करता। परन्तु उसके पूर्व धैर्य को देखकर, परमेश्वर ने उसे मिस्र का राज्य प्रदान किया; इस प्रकार वह पीढ़ी-दर-पीढ़ी पवित्र के रूप में महिमामय हुआ, यद्यपि उसके संतान भी हुए। जहाँ तक मेरी बात है, मैं मिस्र का राज्य नहीं चाहता, न ही मैं पोलैंड की भूमि पर शासन करना या कोई उच्च पद धारण करना चाहता हूँ, और न ही पूरी रूसी भूमि में सम्मान का आनंद लेना चाहता हूँ; बल्कि मैंने स्वर्ग के राज्य के लिए इन सबको ठुकरा दिया है। इसलिए, यदि मैं इस महिला के हाथों से जीवित बच गया, तो मैं कोई दूसरी पत्नी नहीं चाहूँगा, बल्कि (यदि ईश्वर को प्रसन्न हो) मैं एक भिक्षु बन जाऊँगा। जैसा कि मसीह ने सुसमाचार में कहा है: *'जो कोई मेरे निमित्त घर, भाइयों, बहनों, पिता, माता, पत्नी, बच्चों या खेतों को छोड़ देगा, वह सौ गुणा पाएगा और अनंत जीवन का वारिस होगा'* (मत्ती 19:29)। क्या मुझे मसीह की अधिक सुननी चाहिए या आपकी? प्रेरित यह भी कहते हैं: *'अविवाहित मनुष्य प्रभु के कामों में लगा रहता है—कि वह प्रभु को कैसे प्रसन्न करे; परन्तु विवाहित मनुष्य सांसारिक कामों में लगा रहता है—कि वह अपनी पत्नी को कैसे प्रसन्न करे'* (1 कुरिन्थियों 7:32–33)। तो मैं आपसे पूछता हूँ: किसी को किसके लिए अधिक काम

करना चाहिए—प्रभु के लिए या अपनी पत्नी के लिए? मैं यह भी जानता हूँ कि प्रेरित निम्नलिखित लिखते हैं: *'दासों, अपने स्वामियों की आज्ञा मानो'* (इफिसियों 6:5), परन्तु भलाई के लिए, बुराई के लिए नहीं। इसलिए, आप लोगों को जो मुझे पकड़े हुए हैं, यह जान लेना चाहिए कि मैं कभी भी किसी स्त्री की सुंदरता से मोहित नहीं होऊँगा, और न ही यह मुझे मसीह के प्रति अपने प्रेम से भटकाएगा।

यह सुनकर, उस स्त्री ने मन में एक और चालाकी भरी योजना सोची। उसने आदेश दिया कि उस धन्य पुरुष को कई सेवकों के साथ एक घोड़े पर बिठाया जाए, और उसे उसके नगरों और गांवों से होकर ले जाया जाए, और कहा:

'यह सब तुम्हारा है, अगर तुम्हें पसंद हो; इसके साथ अपनी इच्छा से जो चाहो करो।'

उसने स्वयं लोगों से भी कहा:

'यह तुम्हारे स्वामी और मेरे पति हैं; जो कोई भी उनसे मिले, उन्हें प्रणाम करे।'

उसने उस स्त्री की मूर्खता पर हँसकर उससे कहा:

'तुम व्यर्थ ही परिश्रम कर रही हो! क्योंकि तुम न तो मुझे इस संसार की नाशवान चीजों से लुभा सकती हो, और न ही मुझे मेरे अक्षय धन से वंचित कर सकती हो; इसे समझो और व्यर्थ परिश्रम मत करो।'

तब उस स्त्री ने क्रोध में आकर उससे उत्तर दिया:

'क्या तुम नहीं जानती कि तुम्हें मुझ पर बेचा गया है, और कोई भी तुम्हें मेरी पकड़ से आजाद नहीं कर सकता? मैं तुम्हें कभी जीवित नहीं जाने दूँगा, बल्कि बहुत यातना देने के बाद मैं तुम्हें मार डालूँगा।'

परन्तु धन्य ने उससे निडर होकर कहा:

'मैं किसी भी यातना से नहीं डरूँगा, क्योंकि प्रभु मेरे साथ हैं; इस क्षण से (उनकी इच्छा से) मैं भिक्षु जीवन में उनकी सेवा करना चाहता हूँ।'

और उसी समय, ईश्वर के मार्गदर्शन से, पवित्र पर्वत का एक भिक्षु—जो दीक्षा प्राप्त पुरोहित था—धन्य मूसा के पास आया और उसे पवित्र दैवीय भिक्षु संप्रदाय में दीक्षा देकर उसके सिर के बाल मुंडवा दिए। उसने (मूसा) को आध्यात्मिक पवित्रता के बारे में बहुत कुछ सिखाया, ताकि वह शत्रु के सामने आत्मसमर्पण न करे और न ही उस अशुद्ध स्त्री से भय खाए, और इतना कहकर वह चला गया। उन्होंने इस भिक्षु को हर जगह खोजा लेकिन उसे नहीं ढूंढ सके। फिर उस महिला ने, अपनी आशाओं से निराश होकर, पूजनीय भिक्षु मूसा को बुरी तरह पीटा: उसने आदेश दिया कि उसे लिटा दिया जाए और लाठियों से पीटा जाए, ताकि जमीन खून से लथपथ हो गई। जो लोग मूसा को पीट रहे थे, उन्होंने उसे उकसाया:

'अपनी स्वामिनी की आज्ञा मानो; उसकी आज्ञा का पालन करो; यदि तुम अवज्ञा करोगे, तो हम तुम्हारे शरीर के टुकड़े-टुकड़े कर देंगे; यह मत सोचो कि तुम इन यातनाओं से बच जाओगे, बल्कि, बहुत यातनाओं के बाद, तुम और भी अधिक पीड़ा में अपनी अंतिम साँस लोगे; अपनी पर दया करो; इन संन्यासी के फटे-पुराने कपड़ों को त्याग दो और महंगे बोयार के परिधान पहन लो, और तुम्हें उन यातनाओं से बचा लिया जाएगा जो तुम्हारे सिर पर मंडरा रही हैं।

बहादुर मूसा ने उत्तर दिया:

'भाइयो! जैसा आपसे कहा गया है, वैसा बिना किसी देरी के करो: क्योंकि मैं किसी भी परिस्थिति में संन्यास और ईश्वर के प्रति अपने प्रेम को नहीं त्याग सकता, और कोई भी यातना—चाहे आग से हो, तलवार से हो, या घाव पहुँचाने से—मुझे ईश्वर और महान दैवीय प्रतिमा से मुँह मोड़ने के लिए मजबूर नहीं कर सकती। जहाँ तक इस महिला का सवाल है, जिसने शर्म की सारी हदें लांघ दी हैं और जिसका दिमाग़ धुंधला गया है—जिन्होंने न केवल ईश्वर के भय बल्कि मनुष्यों के सामने शर्म की भी पूरी तरह से अवहेलना की है, और जो निर्लज्जतापूर्वक मुझे अपना शरीर अपवित्र करने और व्यभिचार करने के लिए मजबूर कर रही हैं—मैं कभी भी उनके आगे नहीं झुकूँगा और न ही उनकी शापित आज्ञा का पालन करूँगा।

यह महिला अपनी अपमान का बदला कैसे ले, इस बात को लेकर बहुत बेचैन थी; आखिरकार, उसने बोलेस्लाव को निम्नलिखित संदेश लिखा:

'तुम अच्छी तरह जानते हो कि तुम्हारे द्वारा लड़ी गई युद्ध में मेरे पति मारे गए थे, और तुमने मुझे अपना पति चुनने की आज़ादी दी थी, जिसे मैं चाहूँ। मैं तुम्हारे एक बंदी, एक सुंदर जवान आदमी, से प्यार करने लगी, और उसे छुड़ाने के बाद— —मैं उसे अपने घर ले आई, जिसके लिए मैंने बहुत सारा सोना चुकाया था, और मैंने उसे अपने घर का सारा सोना-चांदी और अपना सारा अधिकार दे दिया, बस वह मेरा पति बनने के लिए राज़ी हो जाए। लेकिन उसने यह सब कुछ बेकार

समझा। कई बार मैंने उसे भूख और पिटाई से यातना दी, लेकिन मुझे कुछ भी हासिल नहीं हुआ। जैसे कि यह पर्याप्त नहीं था कि उसने अपने पूर्व स्वामी के अधीन पाँच साल बेड़ियों में बिताए थे, वह अब छठे वर्ष तक मेरे साथ रहा है और मैंने उसकी अवज्ञा के लिए उसे बुरी तरह सताया है: उसने यह सब अपने ही कठोर दिल के कारण खुद पर लाया है; और अब तो एक किसी संन्यासी ने उसका मुंडन भी कर दिया है: तो, आप मुझे उसके साथ क्या करने का आदेश देते हैं?

बोलेस्लाव ने उस महिला को अपने पास आने और मूसा को लाने का आदेश दिया। उसकी आज्ञा के अनुसार ऐसा किया गया। पादरी को देखकर, उसने उन्हें उसकी पत्नी बनाने के लिए बहुत देर तक मनाया, लेकिन उन्हें मनाने में असफल रहा। अंत में, उसने उनसे कहा:

'क्या तुम्हारे जैसा निर्दयी कोई और आदमी है? तुम स्वयं को कई आशीर्वादों और सम्मानों से वंचित कर रहे हो, और स्वयं को भयंकर यातनाओं में डालोगे!' आज से, यह जान लो कि तुम्हारा जीवन और मृत्यु तुम्हारे अपने हाथों में हैं: या तो, अपनी स्वामिनी की इच्छा पूरी करके, तुम हमारे द्वारा सम्मानित होओगे और महान शक्ति धारण करोगे; या, यदि तुम अवज्ञा करोगे, तो बहुत यातनाओं के बाद एक क्रूर मृत्यु से मिलोगे।

राजकुमार ने अपनी पत्नी से भी ये शब्द कहे:

'तुमने जिसे बंदी बनाकर खरीदा है, उसे किसी भी परिस्थिति में मुक्त न होने देना, बल्कि स्वामिनी के रूप में अपने दास के साथ जैसा उचित समझो वैसा व्यवहार करना; ताकि दूसरे अपने मालिकों की अवज्ञा करने की हिम्मत न करें।'

हमारे पूजनीय पिता मूसा ने उनसे उत्तर दिया:

– '"*एक मनुष्य को क्या लाभ,*" प्रभु कहते हैं, "*यदि वह सारी दुनिया तो पा ले पर अपनी आत्मा खो दे? या एक मनुष्य अपनी आत्मा को छुड़ाने के लिए क्या मूल्य दे सकता है?*"' (मत्ती 16:26) और तुम—मुझे ऐसा सम्मान और महिमा देने का वादा कैसे कर सकते हो जिसे तुम स्वयं जल्द ही खो दोगे, और कब्र तुम्हें कुछ भी बचे बिना स्वीकार कर लेगी? इसी तरह, इस अशुद्ध स्त्री को भी क्रूरतापूर्वक मार डाला जाएगा।

यह सब ठीक वैसे ही हुआ जैसा कि रेवरेंड ने भविष्यवाणी की थी। लेकिन उससे पहले, उस स्त्री ने उस पर पूरा अधिकार पाकर, उसे और भी निर्लज्जता से पाप करने के लिए उकसाया: इस प्रकार, उसने मूसा को जबरदस्ती अपने बिस्तर पर लिटाने का आदेश दिया, जहाँ उसने उसे चूमा और गले लगाया; फिर भी यह भी उसे उसकी इच्छा पूरी करने के लिए मना नहीं सका। क्योंकि आदरणीय ने उससे कहा:

'तू व्यर्थ ही यत्न करती है, हे स्त्री: यह मत समझ कि मैं यह पाप इसलिए नहीं करता कि मैं कोई पागल हूँ, या इसलिए कि मैं असमर्थ हूँ; मैं तो तुझसे, हे अशुद्ध, केवल ईश्वर के भय से घृणा करता हूँ।'

यह सुनकर, उस स्त्री ने आदेश दिया कि उसे हर दिन सौ कोड़े मारे जाएँ; अंत में, उसने आदेश दिया कि उसका ख़सरा कर दिया जाए। पूजनीय मूसा मृतक की तरह पड़े थे, रक्तस्राव के कारण जीवन के केवल क्षीण संकेत दे रहे थे। बोलेस्लाव ने इसे रोकने का कोई प्रयास नहीं किया, बल्कि संतों पर भी एक बड़ा उत्पीड़न शुरू कर दिया और उन्हें अपने राज्य से निर्वासित कर दिया, ताकि वह मोशे की प्रेमिका को खुश कर सके, जिसे वह एक कुलीन महिला के रूप में प्यार करता था। लेकिन ईश्वर ने जल्द ही अपने सेवकों पर प्रतिशोध भेजा। एक रात बोलेस्लाव की अचानक मृत्यु हो गई[5362] और लियेश की भूमि में एक बड़ा विद्रोह भड़क उठा। क्योंकि, उठ खड़े होकर, लोगों ने अपने बिशपों और बोयारों को पीटा, जिनमें वह महिला भी मारी गई थी जिसने अपना सम्मान खो दिया था।

कई साल बाद, कीव के ग्रैंड प्रिंसेस इज़ियास्लाव को उनकी राजकुमारी, जो पोलिश वंश की महिला और बोलेस्लाव की बेटी थी, द्वारा ईश्वर के इस क्रोध की याद दिलाई गई—जो आदरणीय मोसेस के मुंडन के लिए संन्यासियों को निष्कासित करने के बाद उन पर पड़ा था— जिन्होंने धन्य बार्लाम और ख़ासगर एफ्रेम के सिर मुंडवाने के कारण आदरणीय एंथनी और उनके भाइयों को अपने राज्य से निष्कासित न करने के लिए आग्रह किया था[5363] । लेकिन अब हम वर्तमान पर लौटते हैं। हमारे पूजनीय पिता मूसा, कुछ राहत पाकर, मसीह के एक पराक्रमी योद्धा की तरह शहादत के निशान लिए हुए, पूजनीय एंथनी की गुफा में आए: और उन्होंने ईश्वर को प्रसन्न करने वाला जीवन जिया, उन्होंने स्वयं को प्रार्थना, उपवास, जागरण और सभी मठवासी सद्गुणों को समर्पित कर दिया, जिनके द्वारा उन्होंने अंत तक अशुद्ध शत्रु की सभी चालाकियों पर विजय प्राप्त की।

[5362] 3 अप्रैल 1025।

[5363] 10 जुलाई के अंतर्गत गुफाओं के संत एंथनी का जीवन देखें

इस आदरणीय संत के वरिुद्ध उठने वाले अशुद्ध, कामुक भावों पर उनकी अनेक वजियों के कारण, प्रभु ने उन्हें उन्हीं भावों पर काबू पाने की शक्ति प्रदान की जो दूसरों में भी उत्पन्न होते हैं। इस प्रकार, भाइयों में से एक, कामुक भावों के वश में होकर, आया और इस आदरणीय संत से अपनी मदद करने की वनिती करने लगा:

'और मैं,' उन्होंने कहा, 'जो कुछ भी आप मुझे आज्ञा देंगे, मैं उसे अपनी मृत्यु तक नभिाने का वादा करता हूँ।'

सम्माननीय ने उसे आज्ञा दी:

'अपने पूरे जीवन में कभी भी कसिी महलिा से एक भी शब्द न बोलना।'

उस व्यक्ति ने पूरे दलि से अपना वादा कयिा। फरि संत ने, पहले मूसा की नकल करते हुए, जन्हिोंने अपनी लाठी से चमत्कार कएि थे, उस भाई के कमर को अपनी लाठी से छुआ, क्योंकि उसके बनिा, अपने पछिले घावों के दर्द के कारण, वह बनिा सहारे नहीं चल सकता था; और तुरंत ही उस भाई की सभी अशुद्ध वासनाएँ समाप्त हो गईं (अपनी शक्ति खो बैठीं), और उस समय से उसे फरि कोई प्रलोभन नहीं हुआ।

इस प्रकार मसीह के इस पराक्रमी योद्धा ने सोलह वर्ष कष्ट और ईश्वरीय प्रयास से परपिूर्ण जीवन व्यतीत कयिा: पाँच वर्षों तक उसे उसके अपहरणकर्ता ने बेरहमी से बेड़ियों में जकड़कर यातना दी, और उसने, यॉब की तरह, ईश्वर के प्रति कृतज्ञता से परपिूर्ण धैर्य का प्रदर्शन कयिा; छठे वर्ष में उसने पवत्रिता के लएि जोसेफ से भी अधकि वीरतापूर्वक पीड़ा सहन की; फरि, पवत्रि माउंट अथोस से प्राप्त दैवीय आदेश के अनुसार, एक गुफा में दस वर्षों तक दैवीय मौन के माध्यम से, वह दूसरों के सामने चमक उठा, ठीक वैसे ही जैसे पहले मूसा ने पवत्रि माउंट सनिाई से प्राप्त 'दस आज्ञाओं' के साथ कयिा था। तब हमारे आदरणीय मूसा को वास्तव में ईश्वर को देखने के योग्य माना गया: उन्होंने हृदय की पवत्रिता के आनंद के लएि स्वयं को योग्य साबति कयिा, और ईश्वर को साक्षात देखने के लएि, वे[5364] को जुलाई के छब्बीसवें दनि, परम पूज्य एंथनी के जीवति रहते हुए, परलोक सधिार गए, जनिकी गुफा में इस पवत्रि पुरुष के अक्षय और चमत्कारी अवशेष, जन्हिोंने कभी अपनी पवत्रिता से समझौता नहीं कयिा, आज भी वरिाजमान हैं।

अपने अवशेषों के माध्यम से, संत मूसा मृत्यु के बाद भी अशुद्ध वासनाओं पर वजिय प्राप्त करते हैं, जैसा कि दीर्घ-सहष्णिु संत जॉन ने पाया। क्योंकि, एक गुफा में शरण लेकर और संत मूसा के अवशेषों के सहारे कंधों तक खुद को धकेलकर, उन्होंने लंबे समय तक कष्ट सहे, अपनी शारीरकि वासनाओं पर वजिय प्राप्त की, और अंत में प्रभु की वाणी सुनी:

'उग्रनि के इस आदरणीय मूसा से, जो उसके सामने पड़ा हुआ मृतक है, प्रार्थना करे!'

जब उस दीर्घ-सहष्णिु संत ने ऐसा कयिा, तो वह तुरंत अशुद्ध आत्मा से मुक्त हो गया। इसी प्रकार, उसी दीर्घ-सहष्णिु संत जॉन ने एक अन्य भाई को भी उसी घृणति पाप से पीड़ति होने पर मुक्ति दलिाई, जब उन्होंने उस व्यक्ति को, जो इस वासना से ग्रस्त था, पूज्य मोसेस की अवशेषों में से एक हड्डी दी, ताकि वह उसे अपने शरीर पर लगा सके, जैसा कि पूज्य दीर्घ-सहष्णिु जॉन के जीवन-चरति में वर्णति है। और आदरणीय मूसा हमारे मार्गदर्शक हों, जो हमें सभी अशुद्धयिों से मुक्त कर चुके हैं, और अपनी प्रार्थनाओं के द्वारा हमें मोक्ष के मार्ग पर नर्दिेशति करें; आइए हम उनके साथ त्रमिूर्ति में पूजे जाने वाले परमेश्वर की आराधना करें, जसिकी महमिा अब और हमेशा और युगों-युगों तक हो। आमीन।

पवत्रि शहीद हर्मोलाउस की स्मृति

26 जुलाई को स्मरण कयिा जाता है

सम्माननीय पुरोहति हर्मोलाउस और उनके साथी कष्ट-सहष्णिु – पवत्रि शहीद हर्मप्पिस और हर्मोक्रेट्स – नकिोमेडयिा की पवत्रि कलीसयिा के पुरोहति थे; वे उन 20,000 शहीदों के अवशेषों में से थे जन्हिें मैक्समियिन ने कलीसयिा में जला दयिा था, जनिकी स्मृति 28 दसिंबर को मनाई जाती है। प्रभु के ये तीनों सेवक मूर्तपिूजकों के भय से वभिन्नि स्थानों पर छपि गए; फरि भी, जब भी कोई उपयुक्त अवसर मलिता, वे मूर्तपिूजकों को पवत्रि वश्विास में शक्षिति करते और उन्हें मसीह के धर्म में परविर्तति करते। इस प्रकार, संत हर्मोलाउस ने चकित्सिक पैंटेलमिोन को देखकर, एक दैवीय प्रेरति वार्तालाप के बाद उन्हें ईसाई धर्म में परविर्तति कर दयिा। जब पंतेलमिोन को दुष्ट राजा मैक्समियिन द्वारा यातना देने के लएि ले जाया गया और उससे पूछा गया कि उसने ईसाई धर्म कसिसे सीखा है, तो संत, झूठ नहीं बोल पाने के

[5364] 1043 में।

कारण, उन्होंने उन्हें पवित्र ईसाई पुरोहित हर्मोलाउस का नाम बता दिया। तत्काल, संत हर्मोलाउस और उनके सहकर्मियों, हर्मिप्पुस और हर्मोक्रेट्स को गिरफ्तार कर दुष्ट न्यायाधिकरण के समक्ष लाया गया। उनकी पूछताछ के दौरान, उन्होंने साहसपूर्वक मसीह को सच्चे ईश्वर के रूप में स्वीकार किया और घृणित मूर्तियों तथा उनके पूजकों का तिरस्कार किया; इसके लिए, अपने यातनादाताओं द्वारा मृत्युदंड की सजा सुनाए जाने पर, उन्होंने तलवार से अपना अंत किया। उनके दुःखों का और अधिक विवरण पवित्र महान शहीद पैंटेलिमोन के जीवन में 27वें दिन के अंतर्गत वर्णित है।

कॉन्टाकियन, स्वर 4:

क्योंकि हे पवित्र एक, आपने ईश्वर-भययुक्त जीवन जिया और शहादत का मुकुट प्राप्त किया: मूर्तिपूजक बलिदानों को समाप्त कर, हे अति बुद्धिमान, आप मसीह के झुंड के एक अच्छे चरवाहे और पंतेलिमोन के एक सच्चे शिक्षक थे। इसी कारण हम आपको सम्मान देते हैं, गीत में पुकारते हुए: हमें अपनी सदा-मौजूद प्रार्थनाओं के द्वारा हमारे कष्टों से बचाइए, हमारे पिता हर्मोलाओस।

पवित्र शहीद परस्केवा का कष्टकथा

26 जुलाई को स्मरणोत्सव

पवित्र पूजनीय शहीद पारास्केवा, सम्राट एंटोनिनिस[5365] के शासनकाल में प्राचीन रोम नगर के आसपास रहती थीं। वह अपने माता-पिता की एकमात्र बेटी थीं और उन्होंने स्वयं को पवित्र धर्मग्रंथों के अध्ययन के लिए समर्पित कर दिया। जब उनके माता-पिता का निधन हो गया, तो उन्होंने अपनी संपत्ति गरीबों में बाँट दी, संन्यास की शपथ ली और, पवित्र प्रेरितों के उदाहरण का अनुसरण करते हुए, मसीह के बारे में प्रचार करने के लिए निकल पड़ीं, और कई मूर्तिपूजकों को सच्चे धर्म में परिवर्तित किया। इसी कारण से, यहूदियों ने सम्राट के सामने उसकी बदनामी की, जिसने उसे अपने सामने पेश करने का आदेश दिया; और जब उसने, मनाने और धमकियों दोनों के बावजूद, मसीह का त्याग करने से इनकार कर दिया, तो उसने आदेश दिया कि उसके सिर पर एक लाल-गरम हेलमेट रखा जाए और उसे उबलते तेल और गोंद से भरे एक तांबे के बड़े बर्तन में फेंक दिया जाए; लेकिन संत चमत्कारिक रूप से इन सब से बिना किसी चोट के बच निकलीं और, एक चमत्कार क[5366] करने के बाद, सम्राट एंटोनिनिस और उनके सामने मौजूद लोगों को मसीह के धर्म में परिवर्तित कर दिया। इसके बाद रोम से रिहा होने पर, संत परास्केवा अन्य शहरों के लिए निकल पड़ीं और जहाँ भी गईं, वहाँ मसीह के बारे में प्रचार किया। एक निश्चित शहर में पहुँचने पर, जहाँ एस्क्लेपियस नामक एक व्यक्ति शासन करता था, उसे उसके सामने लाया गया। यह मानकर कि वह अपना मन नहीं बदलेगी, राजा ने उसे शहर के बाहर एक गुफा में रहने वाले एक साँप के पास ले जाने का आदेश दिया जो सभी में आतंक फैलाता था, ताकि वह उसे टुकड़े-टुकड़े कर दे; लेकिन उसने साँप पर क्रॉस का चिह्न बनाया, और वह दो भागों में बंट गया। इसके बाद, एस्क्लेपियस और उसके साथियों ने मसीह में विश्वास करना शुरू कर दिया। एक बार फिर मुक्त होकर, संत ने सभी शहरों और क्षेत्रों में मसीह के धर्म का प्रचार करते हुए यात्रा करना शुरू कर दिया। टारासियस नामक दूसरे राजा के शासन वाले एक शहर में पहुँचने पर, उसे मुकदमे के लिए उसके सामने लाया गया और उसने मसीह के बारे में उपदेश देना शुरू कर दिया। तब उसने उसे अनेक और क्रूर यातनाएँ दीं; लेकिन चूँकि वह इससे उसे मसीह का त्याग करने के लिए मजबूर नहीं कर सका, उसने आदेश दिया कि उसकी कुलीन गर्दन तलवार से काट दी जाए[5367] ।

[5365] रोमन सम्राट एंटोनिनिस पियस ने 138 से 161 तक शासन किया।

[5366] निकोडेमस के सिनाक्ज़ेरियन में, जहाँ पवित्र शहीद परास्केवा का वृत्तांत विस्तार से दिया गया है, इस चमत्कार का वर्णन इस प्रकार है। उबलते तेल और पिच के कड़ाही में फेंके जाने के बाद भी सुरक्षित रहने पर, संत ने उस उबलते तरल को जिज्ञासु सम्राट एंटोनिनिस की आँखों में डाल दिया, जिससे वह अंधा हो गया; और फिर, उसकी प्रार्थना पर, उसने उसकी खोई हुई दृष्टि वापस कर दी।

[5367] पवित्र शहीद परास्केवा की मृत्यु का वर्ष अज्ञात है। 1200 में, तीर्थयात्री एंथनी ने कॉन्स्टेंटिनोपल में उनके अवशेष देखे, और उनकी चर्च आज भी वहाँ स्थित है। यह गोल्डन हॉर्न के बाएं किनारे पर हास-कोय जिले में स्थित है।

9 अगस्त

27 जुलाई (पुराने तरीके से)

उसी दिन, 1392 में वेलिकी नोवगोरोद के कोचानोवो में मसीह के लिए पवित्र मूर्ख, धन्य निकोलस का निधन।

पवित्र महान शहीद पैंटेलिमोन का कष्टकथा।

27 जुलाई को स्मरणोत्सव

[5368][5369]दुष्ट मैक्सिमियन[5370] के शासनकाल में, जो ईसाइयों का एक क्रूर उत्पीड़क था, और जब लगभग पूरी दुनिया मूर्तिपूजक दुष्टता के अंधकार में डूबी हुई थी, मसीह में विश्वास करने वालों के विरुद्ध सर्वत्र एक बड़ा उत्पीड़न शुरू हो गया, और यीशु मसीह के परम पवित्र नाम के कई स्वीकारकर्ताओं ने शहीद की मृत्यु पाई; तब ही पवित्र महा-शहीद पंतेलिमोन ने बिथुनिया की भूमि में, निकोमेडिया शहर में मसीह के लिए यातनाएँ सहन कीं।

मसीह के इस गौरवशाली शहीद, जो शहीदों में प्रसिद्ध थे, का जन्म निकोमेडिया के उसी नगर में एक कुलीन और धनी पिता यूस्टोरजियस और माता यूबुला के घर हुआ था। उनके पिता, अपने विश्वास के अनुसार, मूर्तिपूजा के प्रति गहराई से समर्पित एक मूर्तिपूजक थे; उनकी माता एक ईसाई थीं, जिन्हें उनके पूर्वजों ने पवित्र विश्वास सिखाया था और जो उत्साह के साथ मसीह की सेवा करती थीं। इस प्रकार, यद्यपि शरीर से एक थे, परन्तु आत्मा से वे अलग थे: वह झूठे देवताओं को बलिदान चढ़ाता था, जबकि वह सच्चे परमेश्वर को 'स्तुति का बलिदान' अर्पित करती थी। उनसे पैदा हुए लड़के, जिसके बारे में हम बात कर रहे हैं, का नाम पंतोलेऑन रखा गया, जिसका अर्थ है 'हर चीज़ में एक शेर', क्योंकि यह माना जाता था कि उसका साहस एक शेर जैसा होगा। बाद में, हालांकि, लड़के का नाम बदलकर पैंटेलिमोन रखा गया, जिसका अर्थ है 'सर्व-दयालु', क्योंकि वह सभी पर दया करता था, बीमारों का बिना शुल्क के इलाज करता या गरीबों को दान देता था, और ज़रूरतमंदों में अपने पिता की संपत्ति उदारतापूर्वक बांटता था।

बचपन से ही, उसकी माँ ने उसे ईसाई भक्ति में पाला, उसे स्वर्ग में रहने वाले एक सच्चे ईश्वर, हमारे प्रभु यीशु मसीह के बारे में सिखाया, ताकि वह उन पर विश्वास करे और अच्छे कर्मों के द्वारा उन्हें प्रसन्न करे, तथा मूर्तिपूजक बहुदेववाद से दूर रहे। लड़के ने अपनी माँ की बात मानी और अपने नाजुक बचपन को देखते हुए उन्हें यथासंभव आत्मसात किया। लेकिन क्या बड़ा नुकसान और शोक था! उनकी दयालु माँ और प्रारंभिक वर्षों की मार्गदर्शक प्रभु के पास चली गईं, और उस लड़के को पूर्ण विवेक और परिपक्वता प्राप्त करने से पहले ही छोड़ गईं। उनकी मृत्यु के बाद, लड़के ने सहज ही अपने पिता की गलती के पदचिन्हों पर चलना शुरू कर दिया; उसका पिता अक्सर उसे मूर्तियों की पूजा के लिए ले जाता था, जिससे वह विधर्मी अधर्म में दृढ़ हो गया।

तब लड़के को व्याकरण स्कूल में भेजा गया, और जब उसने सांसारिक मूर्तिपूजक शिक्षा का पूरा पाठ्यक्रम सफलतापूर्वक पूरा कर लिया, तो उसके पिता ने उसे चिकित्सा विद्यालय में एक प्रसिद्ध चिकित्सक, यूफ्रोसिनिस के हवाले कर दिया, ताकि वह चिकित्सा की कला में प्रवीणता प्राप्त कर सके। वह लड़का, चतुर होने के कारण, जो कुछ भी सिखाया जाता था, उसे आसानी से आत्मसात कर लेता था और जल्द ही अपने साथियों से आगे निकलकर, लगभग अपने शिक्षक के बराबर हो गया था; इसके अलावा, उसने अपने आचरण, वाक्पटुता और सुंदरता से खुद को विशिष्ट बनाया,

---

[5368] बिथिनिया - एशिया माइनर का एक उत्तर-पश्चिमी क्षेत्र, जो ब्लैक सी, बोस्फोरस और कॉन्स्टेंटिनोपल जलडमरूमध्य के तटों पर स्थित था। यह क्षेत्र प्राचीन काल से जाना जाता है और इसका नाम बिथिनियाई लोगों के नाम पर पड़ा, जो थ्रेस से यहाँ आए थे। बिथिनिया मनोरम, उपजाऊ और पशुधन से समृद्ध था। 546 ईसा पूर्व में, बिथिनिया फारसी शासन के अधीन आ गया, लेकिन 327 ईसा पूर्व से बिथिनिया एक बार फिर एक स्वतंत्र राज्य बन गया; 75 ईसा पूर्व में, राजा निकोमेड्स तृतीय की इच्छा के अनुसार, बिथिनिया एक विशेष प्रोकोन्सल द्वारा शासित एक स्वतंत्र प्रांत के रूप में रोमनों के अधीन आ गया। प्रेरितों के समय में बिथुनिया में ईसाई धर्म का आगमन हुआ (1 पतरस 1:1)। बिथुनिया के शासक प्लिनी द यंगर और सम्राट ट्राजन (98–117) के शासनकाल के दौरान, यहाँ न केवल शहरों में बल्कि गाँवों और बस्तियों में भी बहुत सारे ईसाई थे। डायोक्लेटियन (284–305) के शासन के दौरान, बिथिनिया में ईसाइयों का भयंकर उत्पीड़न हुआ। चौथी और पांचवीं शताब्दी में, बिथिनिया धार्मिक मामलों में विशेष रूप से उल्लेखनीय था: विभिन्न विधर्मों से निपटने के लिए वहां कई चर्च परिषदें आयोजित की गईं।

[5369] निकोमेडिया – प्राचीन काल में प्रोपोंटिस या मार्मारा सागर के तट पर स्थित एक भव्य शहर।

[5370] 305–311

और सभी पर एक अनुकूल प्रभाव डाला; वह तो सम्राट मैक्समियिन को भी ज्ञात था। क्योंकि उस समय मैक्समियिन निकोमेडिया में रह रहा था; वह ईसाइयों को यातनाएँ दे रहा था, उसने उनमें से 20,000 को एक चर्च में जला दिया, क्रिसमस के दिन बिशप एम्फिमिस को मौत की सज़ा दी, और विभिन्न यातनाओं के बाद, कई लोगों को अलग-अलग प्रकार की फांसी दी। चिकित्सक यूफ्रोसिनिस अक्सर दवाओं के साथ उत्पीड़क के शाही कक्षों में आता था—या तो स्वयं सम्राट के पास या उसके दरबारियों के पास—क्योंकि यह चिकित्सक पूरे शाही दरबार के रोगों का इलाज करता था। जब भी यूफ्रोसिनिस राजा के महल में आता था, तो उसके साथ युवा पैंटोलेऑन भी होता था, जो अपने शिक्षक के पदचिन्हों पर चलता था, और हर कोई उस लड़के की सुंदरता और सुदृढ़ विवेक से चकित होता था। और राजा, उसे देखकर, पूछता था:

'वह कहाँ से आता है, और किसका बेटा है?'

उत्तर मिलने पर, राजा ने शिक्षक को उस लड़के को चिकित्सा की पूरी कला में यथाशीघ्र और यथासंभव पूरी तरह से प्रशिक्षित करने का आदेश दिया, और यह इच्छा व्यक्त की कि वह हर समय उसके साथ रहे, क्योंकि वह राजा के सामने खड़े होने और उसकी सेवा करने के योग्य था। तब तक वह युवक पहले ही परिपक्वता की आयु में पहुँच चुका था।

उन दिनों निकोमेडिया में हरमोलाउस नामक एक वृद्ध पादरी थे, जो अधर्मी लोगों के भय से कुछ ईसाइयों के साथ एक छोटे और साधारण से घर में छिपे हुए थे। पैंटेलिमोन का रास्ता, जब वह अपने घर से अपने गुरु के यहाँ और वापस आता था, उस आवास के पास से होकर जाता था जहाँ हरमोलाउस छिपे हुए थे। एक छोटी सी खिड़की से उस युवक को बार-बार गुजरते हुए देखकर, हर्मोलाउस ने उसके चेहरे और दृष्टि से ही उसके अच्छे चरित्र को पहचान लिया; अपनी आत्मा में यह महसूस करते हुए कि वह युवक ईश्वर का एक चुना हुआ पात्र बनेगा, हर्मोलाउस एक बार उससे मिलने के लिए बाहर आए और उससे विनती की कि वह थोड़ी देर के लिए उनके घर में आ जाए। वह विनम्र और आज्ञाकारी युवक वृद्ध के घर में प्रवेश कर गया। उसे अपने बगल में बिठाकर, वृद्ध ने उससे उसकी उत्पत्ति और माता-पिता, उसके विश्वास और उसके जीवन के पूरे मार्ग के बारे में पूछा। उस युवक ने सब कुछ विस्तार से बताया और समझाया कि उसकी माँ ईसाई थीं और उनका निधन हो चुका था, जबकि उसके पिता जीवित थे और, मूर्तिपूजक कानूनों के अनुसार, कई राक्षसों की पूजा करते थे। और संत हर्मोलाउस ने उससे इस प्रकार पूछा:

'तो फिर, मेरे अच्छे बच्चे! तुम किस पक्ष और किस धर्म से जुड़ना चाहोगे—अपने पिता के या अपनी माता के?'

युवक ने उत्तर दिया:

जब वह अभी जीवित थीं, मेरी माँ ने मुझे अपना विश्वास सिखाया, और मैं उससे प्रेम करने लगा। लेकिन मेरे पिता, जो दोनों में अधिक शक्तिशाली थे, मुझे मूर्तिपूजक कानूनों का पालन करने के लिए बाध्य करते हैं; वे मुझे शाही दरबार में स्थापित करना चाहते हैं, राजा के सबसे निकट और प्रतिष्ठित योद्धाओं और सेवकों में मेरा स्थान बनाना चाहते हैं।

संत हर्मोलाउस ने फिर पूछा:

'और आपका शिक्षक आपको क्या शिक्षा देता है?'

युवक ने उत्तर दिया:

'अस्कलेपिआडेस, हिप्पोक्रेट्स और गैलेन की शिक्षाएँ[5371] ; वास्तव में, यह ठीक वही था जो मेरे पिता चाहते थे, और मेरे शिक्षक कहते हैं कि यदि मैं इन शिक्षाओं में पारंगत हो गया, तो मैं लोगों की हर तरह की बीमारियों को आसानी से ठीक कर सकूँगा।'

इन अंतिम शब्दों में, संत हर्मोलाउस को एक सार्थक बातचीत का अवसर मिला और उन्होंने उस युवक के हृदय में, जैसे उपजाऊ भूमि में, ईश्वर के वचन के शुभ बीज बोने शुरू कर दिए:

'मुझ पर विश्वास करो,' उन्होंने कहा, 'हे अच्छे युवक! मैं तुम्हें एक सत्य बताता हूँ: एस्कलेपिआडेस, हिप्पोक्रेट्स और गैलेन की शिक्षाएँ और कला तुच्छ हैं और जो लोग इनकी शरण में आते हैं, उन्हें ये बहुत कम मदद करती हैं। और देवता जिनकी सम्राट मैक्समियिन, आपके पिता और अन्य मूर्तिपूजक पूजा करते हैं, वे व्यर्थ हैं और दुर्बल मन वालों के लिए केवल कविदंतियाँ और धोखा हैं। लेकिन सच्चा और सर्वशक्तिमान ईश्वर एक है—यीशु मसीह—और यदि आप उस पर विश्वास करते हैं, तो केवल उसके परम पवित्र नाम का स्मरण करने से ही आप हर प्रकार की बीमारियों से चंगा हो जाएँगे। क्योंकि उसने अंधों को दृष्टि दी, कोढ़ियों को शुद्ध किया, और मृतकों को जिलाया; उन्होंने एक ही शब्द से मूर्तिपूजकों द्वारा पूजे जाने वाले राक्षसों को लोगों से भगा दिया; न केवल उन्होंने स्वयं ऐसा किया, बल्कि उनके वस्त्रों

[5371] प्राचीन काल के प्रसिद्ध चिकित्सक।

ने भी चंगाई का वरदान दिया: क्योंकि बारह वर्षों से रक्तस्राव से पीड़ित महिला को उनके वस्त्र के किनारे को छूते ही तुरंत चंगा कर दिया गया। लेकिन उनके सभी अद्भुत कार्यों का विस्तार से वर्णन कौन कर सकता है? जैसे समुद्र में रेत के दाने, आकाश में तारे, या पानी की बूँदों को गिनना असंभव है, वैसे ही उनके चमत्कारों को गिनना या ईश्वर की महानता को मापना असंभव है। और अब वह अपने सेवकों के लिए एक शक्तिशाली सहायक हैं, जो दुखी लोगों को सांत्वना देते हैं, बीमारों को चंगा करते हैं, विपत्तियों से बचाते हैं और शत्रु के सभी बुराइयों से मुक्ति दिलाते हैं, किसी के विनती करने का इंतजार नहीं करते, बल्कि उनकी प्रार्थनाओं और यहाँ तक कि उनके हृदय की हलचल का पूर्वानुमान लगाते हैं। वह यह सब करने की शक्ति उन लोगों को देता है जो उससे प्रेम करते हैं और उन पर और भी बड़े चमत्कारों का वरदान प्रदान करता है; अंत में, वह स्वर्ग के राज्य की अनंत महिमा में उन्हें अनंत जीवन प्रदान करता है।

पैंटालियन ने संत हर्मोलाउस की इन शिक्षाओं को सत्य माना और उन्हें अपने हृदय में बसा लिया; उन्होंने उन्हें आनंदपूर्वक आत्मसात किया और पवित्र वृद्ध से कहा:

'मैंने यह अपनी माँ से कई बार सुना है और उन्हें अक्सर प्रार्थना करते और उस ईश्वर का आह्वान करते देखा है, जिसके बारे में आप मुझसे बात करते हैं।'

उस दिन से, पंतोलेऑन हर दिन उस संत से मिलने जाता और उनके ईश्वर-प्रेरित संवादों में आनंदित होता, जिससे वह सच्चे ईश्वर के ज्ञान में और अधिक दृढ़ होता गया। और जब वह अपने गुरु यूफ्रोसिनिस के घर से लौटता, तो संत से मिलकर और उनकी आत्मा-पोषक शिक्षाएँ प्राप्त किए बिना वह घर नहीं जाता था।

एक अवसर पर, अपने शिक्षक के घर से लौटते समय, वह थोड़ा भटक गया और उसे एक मृत बच्चा मिला जिसे एक विशाल एकडिना ने काट लिया था, और वही एकडिना स्वयं, पीड़ित के ठीक बगल में पड़ा था। यह देखकर, पंतोलेऑन पहले तो डर गया और कुछ कदम पीछे हट गया, लेकिन फिर उसने अपने आप से कहा:

'अब समय आ गया है कि मैं इसे आज़माऊँ और खुद देखूँ कि बूढ़े हरमोलाउस ने जो कुछ भी कहा है, वह सच है या नहीं।'

आकाश की ओर देखते हुए, उसने कहा:

'हे प्रभु यीशु मसीह, यद्यपि मैं आपको पुकारने के योग्य नहीं हूँ, फिर भी यदि आप चाहें कि मैं आपका सेवक बनूँ, तो अपनी शक्ति दिखाएँ और यह अनुग्रह करें कि, आपके नाम पर, यह लड़का जीवित हो उठे और साँप नष्ट हो जाए।'

और तुरंत वह लड़का, जैसे नींद से जाग उठा हो, जीवित हो उठा, जबकि साँप दो टुकड़ों में बँट गया। तब पंतोलेऑन, मसीह में पूर्ण विश्वास प्राप्त करके, अपनी शारीरिक और आध्यात्मिक दृष्टि स्वर्ग की ओर मोड़ ली और परमेश्वर को आनंद और आँसुओं के साथ धन्यवाद दिया कि उन्होंने उसे अंधकार से निकालकर अपने ज्ञान के प्रकाश में ला दिया। वह जल्दी से संत हर्मोलाउस पादरी के पास गया, उनके पवित्र चरणों में गिर पड़ा, और बपतिस्मा की याचना की। उसने उन्हें वह सब बताया जो हुआ था— —कि कैसे मृत लड़का यीशु मसीह के नाम की शक्ति से जीवित हो उठा था, और कैसे वह साँप जो उसकी मृत्यु का कारण बना था, नष्ट हो गया था। संत हर्मोलाउस, अपना घर छोड़कर, उसके साथ मृत विषैले सांप को देखने गए और उसे देखकर, उस चमत्कार के लिए परमेश्वर का धन्यवाद किया जो उन्होंने किया था, जिसके द्वारा उन्होंने पंतोलेऑन को अपने ज्ञान की ओर ले आए थे। घर लौटकर, उन्होंने उस युवक का पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम पर बपतिस्मा दिया, और अपने भीतर के कक्ष में लिटिर्जी का अनुष्ठान करने के बाद, उसे मसीह के शरीर और रक्त के दिव्य रहस्य प्रदान किए।

उनके बपतिस्मा के बाद, पंतोलेऑन सात दिनों तक वृद्ध हर्मोलाउस के साथ रहे, और उन्होंने वृद्ध के होठों से और मसीह की कृपा से प्रदत्त दैवीय वचनों से सीखा: एक जीवित जल के झरने की तरह, उन्होंने अपनी आत्मा को आध्यात्मिक फलों की प्रचुरता से पोषित किया। आठवें दिन, वे घर चले गए, और उनके पिता ने उनसे पूछा:

'बेटा, तुम इन दिनों कहाँ रहे? मैं तुम्हारी चिंता कर रहा था।'

संत ने उत्तर दिया:

'मैं अपने गुरु के साथ राजा के महल में था – हम एक बीमार व्यक्ति का इलाज कर रहे थे जिसे राजा बहुत प्यार करते हैं, और जब तक हमने उसे स्वस्थ नहीं कर दिया, तब तक हम सात दिनों तक उसके पास से नहीं हटे।'

संत ने ऐसा कहा, और उन्होंने कोई झूठ नहीं बोला, बल्कि एक दृष्टांत के बहाने रहस्यमयी और रूपक ढंग से सत्य को संप्रेषित किया: अपने मन में, उसने संत हर्मोलाउस द प्रेस्बटिर को अपना गुरु बताया; 'राजा के कक्ष' से उसका तात्पर्य उस आंतरिक शांति से था जिसमें दैवी रहस्य का उत्सव मनाया जा रहा था; और 'बीमार व्यक्ति' से उसका तात्पर्य

अपनी ही आत्मा से था, जिसे स्वर्गीय राजा ने प्रेम किया था और जिसे आध्यात्मिक औषधि द्वारा सात दिनों तक चंगा किया गया था।

जब वह अगले दिन सुबह अपने गुरु यूफ्रोसिनिस के पास आया, तो उन्होंने उससे पूछा:

'तुम इन दिनों कहाँ थे?'

'मेरे पिता ने एक संपत्ति खरीदकर मुझे उसका कब्ज़ा लेने के लिए भेजा था, और मैं वहाँ सब कुछ ध्यान से जाँचते हुए ठहर गया, क्योंकि उसे ऊँचे दाम पर खरीदा गया था।'

और उसने यह पवित्र बपतिस्मा के रूपक अर्थ में कहा था, जो उसे मिला था, और ईसाई धर्म के अन्य संस्कारों के बारे में, जिन्हें वह जान चुका था और जो सभी अतुलनीय मूल्य के हैं, सभी धन-संपत्ति से परे हैं, क्योंकि उन्हें मसीह के लहू से प्राप्त किया गया था। यह सुनकर, यूफ्रोसिनिस ने अपना प्रश्न करना बंद कर दिया। जहाँ तक धन्य पंतोलेऑन का प्रश्न है, वह ईश्वर की कृपा से परिपूर्ण था, और अपने भीतर पवित्र विश्वास का खजाना संजोए हुए था। वह अपने पिता के लिए गहराई से चिंतित था, और उसे मूर्तिपूजा के अंधकार से निकालकर मसीह के ज्ञान के प्रकाश में लाना चाहता था; और हर दिन, दृष्टान्तों और प्रश्नों के माध्यम से बुद्धिमानी से उससे बात करते हुए, वह उससे कहता था:

'पिताजी! ऐसा क्यों है कि खड़े रहने के लिए बनाए गए देवता आज तक ठीक वैसे ही खड़े रहते हैं जैसे उन्हें पहली बार स्थापित किया गया था, और वे कभी नहीं बैठते; जबकि बैठने के लिए बनाए गए देवता आज तक बैठे रहते हैं और कभी खड़े नहीं होते?'

'तुम्हारा सवाल मुझे पूरी तरह से समझ नहीं आया,' उसके पिता ने जवाब दिया, 'और मुझे खुद नहीं पता कि इसका जवाब कैसे दूँ।'

हालांकि, संत ने अपने पिता से इस तरह के लगातार प्रश्न पूछकर उन्हें अपने देवताओं पर संदेह करने और धीरे-धीरे मूर्तिपूजा की मिथ्या और भ्रम को समझने पर मजबूर कर दिया; उसके पिता अब पहले की तरह मूर्तियों का सम्मान नहीं करते थे, उन्हें अनेक बलिदान चढ़ाना और प्रतिदिन उनकी पूजा करना बंद कर दिया था, और उन्होंने उन पर तिरस्कार करना और उनकी पूजा करने से इनकार करना शुरू कर दिया था। यह देखकर, पंतोलेऑन प्रसन्न हुआ कि, यद्यपि उसने अपने पिता के मन में मूर्तियों के बारे में संदेह जगा दिया था, फिर भी वह उन्हें पूरी तरह से उनसे दूर करने में सफल नहीं हुआ था। एक से अधिक बार पंतोलेओन अपने पिता की मूर्तियों को तोड़ना चाहता था, जो उसके घर में बहुत सारी थीं, लेकिन उसने खुद को रोका, आंशिक रूप से इसलिए कि वह अपने पिता को नाराज़ न कर दे—जिन्हें ईश्वर की आज्ञाओं के अनुसार सम्मानित करना चाहिए—और आंशिक रूप से इसलिए कि उसे उम्मीद थी कि एक बार जब उसके पिता स्वयं सच्चे ईश्वर को जान लेंगे, तो वे उन्हें अपने ही हाथों से तोड़ना चाहेंगे।

उस समय, एक अंधा आदमी पंतोलेओन के पास लाया गया, जो इस प्रकार चंगा होने की भीख माँग रहा था:

'मैं आपसे विनती करता हूँ, मुझ पर दया करें, जो अंधा हो गया हूँ और उस अनमोल प्रकाश से वंचित हो गया हूँ; इस शहर के सभी डॉक्टरों ने मेरा इलाज किया है, फिर भी मुझे उनसे कोई लाभ नहीं हुआ; वास्तव में, मैं अपनी सारी संपत्ति के साथ-साथ देखने की अपनी आखिरी किरणें भी खो चुका हूँ; क्योंकि मैंने उन्हें भुगतान करने में बहुत कुछ खर्च कर दिया है, और इलाज के बजाय, मुझे उनसे केवल नुकसान और समय की बर्बादी ही मिली है।"

संत ने उससे उत्तर दिया:

'अगर तुमने उन डॉक्टरों को अपना सारा धन दे दिया है, जिनसे तुम्हें कोई लाभ नहीं मिला, तो अगर तुम ठीक हो जाओ और अपनी दृष्टि वापस पा लो, तो मुझे इनाम कैसे दोगे?'

अंधे ने कहा, 'मैं खुशी-खुशी जो कुछ थोड़ा-बहुत मेरे पास बचा है, वह आपको दे दूँगा।'

संत ने कहा:

'दृष्टि का वरदान, जो आपके लिए प्रकाश खोलता है, आपको प्रकाश के पिता, सच्चे ईश्वर द्वारा, मेरे, उनके अयोग्य सेवक के माध्यम से दिया जाएगा; और जो आपने मुझे देने का वादा किया है, वह न दें, बल्कि उसे गरीबों में बाँट दें।'

यह सुनकर, पंतोलेओन के पिता यूस्टोर्जियस ने उससे कहा:

'मेरे बेटे! ऐसी चीज़ का प्रयास करने का दुस्साहस मत करना जो तुम कर ही नहीं सकते, कहीं तुम पर हँसा न जाए: क्योंकि, वास्तव में, तुम उन श्रेष्ठतम चिकित्सकों से ज़्यादा क्या कर सकते हो, जिन्होंने उसका इलाज किया और उसे ठीक नहीं कर सके?'

संत ने उत्तर दिया, 'उनमें से कोई भी नहीं, उन डॉक्टरों को मेरे जैसा पता है कि इस मामले में कौन सा इलाज करना है, क्योंकि उन और मेरे गुरु, जिन्होंने मुझे यह इलाज बताया, के बीच बहुत बड़ा अंतर है।'

उसके पिता ने, यह सोचकर कि वह यूफ्रोसीन के शिक्षक की बात कर रहा है, टिप्पणी की:

'मैंने सुना है कि आपके गुरु ने भी इस अंधे आदमी का इलाज किया था और उसके लिए कुछ नहीं कर सके।'

'एक क्षण रुकिए, पिताजी!' पंतोलेऑन ने उत्तर दिया, 'और आप मेरी उपचार शक्ति की शक्ति देखेंगे।'

इन शब्दों के साथ, उसने अपनी उंगलियों से अंधे आदमी की आँखों को छूते हुए कहा:

'मेरे प्रभु यीशु मसीह के नाम पर, जो अंधों को दृष्टि देते हैं, अपनी दृष्टि ग्रहण करो।'

तुरन्त ही अंधे आदमी की आँखें खुल गईं – और वह देखने लगा। और उसी क्षण, पंतोलेऑन के पिता यूस्टोर्जियस, उस आदमी के साथ जिसने अपनी दृष्टि वापस पाई थी, मसीह पर विश्वास कर बैठे और उन्हें पवित्र पुरोहित हर्मोलाउस ने बपतिस्मा दिया, और वे मसीह की कृपा और शक्ति से महान आध्यात्मिक आनंद से भर गए।

तब यूस्टोर्जियस ने अपने घर में सभी मूर्तियों को तोड़ना शुरू कर दिया, जिसमें उनके पुत्र, संत पंतोलेऑन ने उनकी सहायता की; मूर्तियों को टुकड़ों में तोड़ने के बाद, उन्होंने उन टुकड़ों को एक गहरे गड्ढे में फेंक दिया और उन्हें मिट्टी से ढक दिया। उसके बाद थोड़ी ही देर तक जीवित रहने के बाद, यूस्टोरजियस प्रभु के पास चले गए। पंतोलेऑन, अपने पिता की बहुत संपन्न संपत्ति के उत्तराधिकारी बनकर, तुरंत ही पुरुष और महिला दासों को आजादी दे दी और उन्हें उदारतापूर्वक पुरस्कृत किया; फिर उन्होंने अपनी संपत्ति को ज़रूरतमंदों में बाँटना शुरू कर दिया: गरीब, बेसहारा, विधवाएँ और अनाथ। वह जेलों में जाता था और बेड़ियों में जकड़े सभी पीड़ितों की देखभाल करता था, उनके घावों पर मरहम-पट्टी करके और उनकी हर ज़रूरत पूरी करके उन्हें सांत्वना देता था; इस प्रकार, वह न केवल घावों का बल्कि मानवीय गरीबी का भी उपचार करने वाला था; क्योंकि सभी को उससे दान का एक अक्षय भंडार प्राप्त होता था; बेसहारा लोग उनकी उदारता से समृद्ध हो गए; और उनके उपचार कार्य में, उन्हें ईश्वर की कृपा से सहायता मिली। क्योंकि उन्हें स्वर्ग से उपचार का वरदान प्राप्त था, और उन्होंने हर तरह की बीमारियों का इलाज बिना किसी शुल्क के किया, औषधीय उपचारों के माध्यम से नहीं बल्कि यीशु मसीह के नाम का आह्वान करके। तब पंतोलेऑन ने वास्तव में अपने आप को पंतेलिमोन, अर्थात् नाम और कर्म दोनों में सर्व-दयालु साबित किया, सभी पर दया दिखाते हुए और कभी भी किसी को दान या सांत्वना के बिना वापस नहीं भेजा; क्योंकि वह ज़रूरतमंदों की सहायता करता था और बीमारों का मुफ्त में इलाज करता था। पूरा शहर अपने बीमारों को लेकर उसी के पास जाने लगा, और सभी अन्य चिकित्सकों को छोड़ दिया, क्योंकि पैंटेलिमोन के अलावा कोई और इतनी तीव्र और पूर्ण चिकित्सा नहीं कर सकता था, जो उनके इलाज को सफलतापूर्वक करता था और किसी से भी भुगतान स्वीकार नहीं करता था। और उस सर्व-दयालु और निशुल्क चिकित्सक का नाम पूरे देश में प्रसिद्ध हो गया, जबकि अन्य डॉक्टरों की निंदा और उपहास किया गया। परिणामस्वरूप, डॉक्टरों ने संत के प्रति काफी ईर्ष्या और शत्रुता पाल ली; यह उस समय से ही शुरू हो गया था जब उपर्युक्त अंधे व्यक्ति को अपनी दृष्टि वापस मिली थी। यह मामला इस प्रकार हुआ।

एक दिन, जब यह अंधा आदमी, जिसे संत पैंटेलिमोन की कृपा से अपनी दृष्टि वापस मिली थी, शहर में घूम रहा था, तो डॉक्टरों ने उसे देखा और एक-दूसरे से कहा:

'क्या यह वही आदमी नहीं है जो अंधा था और जिसने हमसे इलाज करवाया था, लेकिन हम उसे ठीक नहीं कर सके? अब वह कैसे देख पा रहा है? उसे किसने ठीक किया, और किस तरीके से, और उसकी आँखें खोल दीं?'

और उन्होंने उससे सीधे पूछा कि उसने अपनी दृष्टि कैसे वापस पाई। और उस व्यक्ति ने यह बात नहीं छिपाई कि उसका उपचार करने वाले पंतेलिमोन थे। वहाँ मौजूद लोगों ने, यह जानते हुए कि वह यूफ्रोसिनिस का शिष्य था, कहा:

'एक महान शिक्षक का एक महान शिष्य।'

उन्हें यह एहसास नहीं था कि पंतेलिमोन के माध्यम से मसीह की शक्ति कार्य कर रही थी, और बिना सोचे-समझे, उन्होंने यह सत्य स्वीकार कर लिया कि पंतेलिमोन महान शिक्षक - यीशु मसीह के एक महान शिष्य थे। फिर भी, यद्यपि वे पाखंडपूर्वक अपने होठों से संत की प्रशंसा करते थे, अपने दिलों में, ईर्ष्या से, उन्होंने बुराई की साजिश रची और उस पर नज़र रखी, उसे नष्ट करने के लिए उसके खिलाफ कोई आरोप खोज रहे थे। और यह देखते हुए कि वह कालकोठरियों में जाता था और वहाँ मसीह के लिए पीड़ित शिष्यों के घावों को ठीक करता था, उन्होंने यातनाकर्ता मैक्सिमिनिस को घोषित किया:

'हे राजा! वह युवक जिसे आपने चिकित्सा की कला में प्रशिक्षित करने का आदेश दिया था, और जिसे आप अपने कक्ष में अपने पास रखना चाहते थे, उसने आपके प्रति आपके इस स्पष्ट अनुग्रह को ठुकरा दिया है और वह कालकोठरियों में जा रहा है, हमारे देवताओं की निंदा करने वाले कैदियों को चंगा कर रहा है, हमारे देवताओं के बारे में उनके साथ उसी तरह तर्क कर रहा है और दूसरों को भी उसी दुष्ट तर्क के लिए मना रहा है। यदि आपने जल्द ही उसे समाप्त नहीं किया, तो आप अपने लिए बहुत सी परेशानी खड़ी कर लेंगे, क्योंकि आप देखेंगे कि कितने लोग, उसकी मोहक शिक्षाओं के कारण, देवताओं से मुंह मोड़ लेंगे। वास्तव में, चिकित्सा की कला , जिससे पैंटोलियन उपचार करता है, वह उसे एस्कुलेपियस[5372] या अन्य किसी देवता को नहीं बल्कि एक निश्चित मसीह को श्रेय देता है, और जिन्हें वह ठीक करता है वे सभी उसी में विश्वास करते हैं।

तो बदनाम करने वालों ने कहा, राजा से विनती करते हुए कि पंतोलेओन द्वारा चंगा किए गए अंधे आदमी को उनके शब्दों की सच्चाई के प्रमाण और स्पष्ट गवाही के रूप में बुलाया जाए। और राजा ने तुरंत आदेश दिया कि जिसे अंधे ने अपनी दृष्टि वापस पा ली थी, उसे ढूंढा जाए, और जब उसे उसके सामने लाया गया, तो उसने उससे पूछा:

'मुझे बताओ, हे मनुष्य, पंतोलेओन ने तुम्हारी आँखों का इलाज कैसे किया?'

उसने उत्तर दिया:

'उसने मसीह का नाम लिया, मेरी आँखों को छुआ, और मुझे तुरंत दृष्टि वापस मिल गई।'

'और तुम्हारा क्या विचार है,' राजा ने उससे पूछा, 'तुम्हें मसीह ने चंगा किया, या देवताओं ने?'

'हे राजा!' उसने उत्तर दिया, 'ये डॉक्टर जिन्हें आप अपने चारों ओर देख रहे हैं, उन्होंने मुझे ठीक करने के लिए बहुत प्रयास किए और लंबा समय लगाया; उन्होंने मेरी सारी संपत्ति छीन ली और न केवल मुझे कोई लाभ नहीं पहुँचाया, बल्कि उन्होंने मेरी थोड़ी-बहुत बची हुई दृष्टि भी छीन ली और मुझे पूरी तरह से अंधा कर दिया। लेकिन पंतेलिओन ने मसीह के नाम का केवल एक बार स्मरण करके मेरी दृष्टि वापस कर दी। अब आप स्वयं निर्णय करें, हे राजा, और तय करें कि बेहतर और सच्चा चिकित्सक कौन है: एस्कुलेपियस और अन्य देवता, जिनका लंबे समय तक आह्वान किया गया और जिन्होंने कोई मदद नहीं की, या मसीह, जिनका पंतेलिओन ने केवल एक बार आह्वान किया और जिन्होंने तुरंत मुझे चंगा कर दिया।

जवाब कैसे देना है यह न जानते हुए, राजा ने, जैसा कि सभी यातना देने वालों का रिवाज है, उसे अधर्मी बनने के लिए मजबूर करना शुरू कर दिया:

'मूर्ख मत बनो, आदमी, और मसीह के बारे में बात मत करो, क्योंकि यह स्पष्ट है कि देवताओं ने तुम्हें प्रकाश देखने की क्षमता प्रदान की है।'

हालाँकि, ठीक हो चुका आदमी, राजा के अधिकार की परवाह किए बिना और यातना देने वाले की धमकियों से न डरते हुए, ने मक्सिमियन को सुसमाचार के अंधे आदमी (यूहन्ना 9:27) से भी अधिक साहसपूर्वक उत्तर दिया, जिसे एक बार फरीसियों के सामने पूछताछ के लिए लाया गया था:

'हे राजा, आप स्वयं पागल हैं! आप अपने अंधे देवताओं को दृष्टि देने वाले कहते हैं, और आप स्वयं भी उनके जैसे हैं, सत्य को देखने के इच्छुक नहीं।'

क्रोध से भरकर, राजा ने आदेश दिया कि तलवार से तुरंत उसकी जान ले ली जाए, और यीशु मसीह के नाम के उस भले ही स्वीकारकर्ता का सिर काट दिया गया; और वह देहगत दृष्टि प्राप्त कर, उस अक्षय स्वर्गीय प्रकाश में आमने-सामने उसे देखने के लिए प्रस्थान कर गया, जिसे उसने पृथ्वी पर स्वीकार किया था। संत पैंटेलिमोन ने हत्यारों से उसका शरीर खरीद लिया और उसे अपने पिता के शरीर के पास दफना दिया।

उसके बाद, राजा ने पंतेलिमिओन को अपने सामने लाने का आदेश दिया। जब सैनिक संत को राजा के पास ले जा रहे थे, तो उन्होंने दाऊद की भजन संहिता के शब्द गाए: *'हे मेरे स्तुति के परमेश्वर! चुप न रह, क्योंकि दुष्टों के होंठ और कपटियों के होंठ मेरे विरुद्ध खुल गए हैं'* (भजन संहिता 108:1–2) और उसी भजन से आगे गाया। इस प्रकार वह देह से सांसारिक राजा के सामने, और आत्मा से स्वर्गीय राजा के सामने खड़ा था।

राजा मैक्सिमियन, बिना किसी क्रोध के, उसे देखकर, सौम्य भाव से उसे इस प्रकार मनाने लगे:

[5372] चिकित्सा के देवता।

'मैंने तुम्हारे बारे में कुछ अप्रयि बातें सुनी हैं, पंतोलेऑन; मुझे बताया गया है कि तुम एस्कुलेपयिस और अन्य देवताओं की हर तरह से नदिा और अवमानना करते हो, जबकि तुम मसीह की महमिा करते हो, जन्हिोंने एक क्रूर मृत्यु भोगी, और अपनी आशा उसी में रखते हो, और केवल उसी को परमेश्वर कहते हो। मेरा ख्याल है, यह आपके लिए कोई रहस्य नहीं है कि मैंने आप पर कितना ध्यान दयिा है और आपके प्रति कितनी दया दखिाई है, इस बात से कि आपको मेरे महल में स्वागत कयिा गया, और मैंने आपके शक्षिक, यूफ्रोसनिस को बनिा कसिी देरी के आपको चकित्सिा की कला सखिाने का आदेश दयिा है, ताकि आप हमेशा मेरी बगल में रह सकें; फरि भी तुमने, यह सब तुच्छ समझकर, मेरे शत्रुओं की ओर मुंह कर लयिा है। हालाँकि, मैं तुम्हारे बारे में कही जाने वाली बातों पर वश्विास नहीं करना चाहता; क्योंकि लोग बहुत से झूठ बोलने के आदी होते हैं। इसीलिए मैंने तुम्हें बुलाया है, ताकि तुम स्वयं अपने बारे में सच्चाई बताओ और अपने ईर्ष्यालु वरिोधयिों द्वारा तुम पर लगाए गए झूठे आरोपों का, सभी के सामने खंडन करो, पहले महान देवताओं को यथोचति बलदिान अर्पति करने के बाद।

संत ने उत्तर दयिा:

'हे राजा, कर्मों पर शब्दों की तुलना में अधकि वश्विास कयिा जाता है! क्योंकि सत्य शब्दों की तुलना में कर्मों के माध्यम से कहीं बेहतर जाना जाता है। अत; मेरे बारे में कही गई बातों पर वश्विास करें: कि मैं एस्कुलेपयिस और आपके अन्य देवताओं का त्याग करता हूँ, और मसीह की महमिा करता हूँ, क्योंकि उनके कर्मों के माध्यम से मैं जान गया हूँ कि वही एकमात्र सच्चे ईश्वर हैं।' अब मसीह के कार्यों को थोड़े में सुनो: उन्होंने स्वर्गों को बनाया, पृथ्वी को स्थापति कयिा, मृतकों को जलिाया, अंधों को दृष्टि दी, कोढ़ियों को शुद्ध कयिा; संक्षेप में, उन्होंने लकवाग्रस्तों को उनके बस्तिरों से उठाया। मुझे नहीं पता कि जिन देवताओं की आप पूजा करते हैं— —उन्होंने ऐसा कुछ कयिा है, न ही यह कि वे ऐसा करने में सक्षम हैं। यदि, तथापि, आप अब मसीह की सर्वशक्तमिान शक्ति को जानना चाहते हैं, तो आप इसे तुरंत और वास्तवकिता में कार्य करते हुए देखेंगे। आदेश दो कि यहाँ एक ऐसा व्यक्ति लाया जाए जो मृत्युशय्या पर पड़ा हो, जसिे डॉक्टरों ने मृतप्राय घोषति कर दयिा हो; तुम्हारे पुरोहति आएं और अपने देवताओं को पुकारें, और मैं अपने ईश्वर को पुकारूंगा – और जसि देवता के द्वारा वह बीमार व्यक्ति चंगा हो जाए, उसे एकमात्र सच्चा ईश्वर माना जाए, जबकि बाकी को अस्वीकार कर दयिा जाएगा।

राजा संत की सलाह से प्रसन्न हुआ, और उसने तुरंत ऐसा मरीज ढूंढने का आदेश दयिा।

और इस प्रकार एक आदमी को पलंग पर लाया गया, जो कई वर्षों से लकवाग्रस्त था, जो एक भी अंग नहीं हलिा सकता था और ऐसा था मानो वह कोई नर्जिीव पेड़ हो। पुजारी भी आए—जो मूर्तयिों की पूजा करते थे और चकित्सिा की कला में नपिुण थे—और उन्होंने संत से सुझाव दयिा कि उन्हें पहले अपने मसीह को पुकारना चाहिए।

संत ने उनसे उत्तर दयिा:

'यदि मैं अपने ईश्वर को पुकारूँ और मेरा ईश्वर इस लकवाग्रस्त व्यक्ति को चंगा कर दे, तो आपके देवता कसिे चंगा करेंगे? लेकनि पहले आप अपने देवताओं को पुकारें; और यदि वे बीमार व्यक्ति को चंगा कर दें, तो मेरे ईश्वर को पुकारने की कोई आवश्यकता नहीं होगी।'

तब पुजारयिों ने अपने देवताओं को पुकारना शुरू कयिा: एक ने एस्कुलेपयिस को, दूसरे ने ज़ीउस को, एक और ने डायना को, और अन्य ने वभिन्नि राक्षसों को पुकारा; परन्तु न तो कोई आवाज़ सुनाई दी और न ही कोई उत्तर मलिा। और वे बहुत समय तक बनिा कसिी सफलता के अपनी अधर्मी प्रार्थनाओं में लगे रहे। संत ने उनके व्यर्थ प्रयासों को देखकर हँस दयिा। उसे हँसता हुआ देखकर राजा पंतोलेऑन की ओर मुड़ा:

'तुम, पैंटोलेऑन, अगर तुम कर सकते हो, तो अपने ईश्वर को पुकारकर इस आदमी को ठीक कर दो।'

संत ने कहा, 'पुजारी लोग हट जाएँ,' और वे हट गए।

तब संत, बस्तिर के पास आकर, अपनी आँखें आकाश की ओर उठाकर नम्निलखिति प्रार्थना बोले:

'*हे प्रभु! मेरी प्रार्थना सुन, और मेरी पुकार तेरे सामने आवे। अपने मुख को मुझ से छपिा न रख; क्लेश के दनि अपना कान मेरी ओर लगा; जसि दनि [मैं तुझ से पुकारूँ, मुझे शीघ्र सुन* (भजन संहति 101:2-3); और जो तुझे नहीं जानते, उनके सामने अपनी सर्वशक्तमिान शक्ति का प्रकट कर, क्योंकि हे सर्वशक्तमिानों के राजा! तेरे लिए सब कुछ संभव है।

यह प्रार्थना कहने के बाद, संत ने लकवाग्रस्त व्यक्ति का हाथ पकड़कर कहा:

'प्रभु यीशु मसीह के नाम पर, उठ और चंगा हो जा!'

और उसी घड़ी लकवाग्रस्त आदमी उठ खड़ा हुआ, उसे अपने पूरे शरीर में ताकत महसूस हुई, और वह चलते हुए आनंदित हुआ; और अपना बिस्तर उठाकर वह अपने घर ले गया।

ऐसा चमत्कार देखकर, उपस्थित लोगों में से कई मसीह पर विश्वास करने लगे; लेकिन मूर्तियों की सेवा करने वाले पुरोहितों ने मसीह के सेवक पर दाँत पीसे और राजा से ये शब्द कहते हुए मुड़े:

'यदि वह जीवित रहा, तो देवताओं की बलि निष्ट हो जाएगी, और ईसाई हम पर हँसेंगे; हे राजा! उसे यथाशीघ्र नष्ट कर दो।'

तब राजा ने पंतोलेओन से कहा:

'पैंटोलेऑन, देवताओं को बलिदान अर्पित करो, अन्यथा तुम व्यर्थ में नष्ट हो जाओगे; तुम जानते ही हो कि कितने लोग हमारे देवताओं का त्याग करने और हमारे आदेशों की अवज्ञा करने के कारण नष्ट हो गए। क्या तुम नहीं जानते कि वृद्ध अम्फिमिस को कितनी क्रूरता से यातनाएँ दी गई थीं?'

– मसीह के लिए जो भी मरे हैं,' संत ने उत्तर दिया, 'वे नष्ट नहीं हुए, बल्कि उन्होंने अनंत जीवन पाया है। और यदि अम्फिमिस, वृद्ध और दुर्बल शरीर होते हुए भी, हमारे प्रभु के लिए क्रूर यातनाओं को सहन कर सके, तो मुझे, जो जवान और मजबूत शरीर का हूँ, उन सभी यातनाओं को बिना डरे सहना और भी अधिक उचित है, जिन्हें तुम मुझे देंगे; क्योंकि यदि मैं मसीह के लिए नहीं मरता तो मैं जीवन को व्यर्थ समझूँगा, और यदि मैं मर भी जाता हूँ, तो मैं इसे लाभ मानूँगा।

राजा ने नग्न शहीद को यातना वृक्ष पर लटकाने और उसके शरीर को लोहे की पंजों से खुरचने का आदेश दिया, जबकि उसकी पसलियों को जलती हुई मोमबत्तियों से झुलसाया गया। जब वह इन यातनाओं को सहन कर रहा था, तो उसने स्वर्ग की ओर देखा और कहा:

'हे प्रभु यीशु मसीह! इस घड़ी में मेरा साथ रहो; मुझे धीरज दो, ताकि मैं इन यातनाओं को अंत तक सह सकूँ।'

और प्रभु पुरोहित हर्मोलाउस के रूप में उसके सामने प्रकट हुए, और कहा:

'डरो मत; मैं तुम्हारे साथ हूँ।'

और तुरंत यातना देने वालों के हाथ कमज़ोर पड़ गए और सुन्न हो गए, जिससे यातना के उपकरण उनके हाथों से गिर गए और मोमबत्तियाँ बुझ गईं। यह देखकर, राजा ने शहीद को यातना के स्थान से हटाने का आदेश दिया और उससे कहा:

'तुम्हारे जादू-टोने की शक्ति किसमें है, कि नौकर भी थक गए हैं और मोमबत्तियाँ भी बुझ गई हैं?'

शहीद ने इस प्रकार उत्तर दिया:

'मेरा जादू मसीह है, जिनकी सर्वशक्तिमान शक्ति सभी चीजों को पूरा करती है।'

राजा ने प्रत्युत्तर दिया:

'और अगर मैं तुम्हें इससे भी अधिक यातनाएँ दूँ तो तुम क्या करोगे?!'

– 'महान यातनाओं में,' शहीद ने उत्तर दिया, 'मेरा मसीह और भी अधिक शक्ति का प्रदर्शन करेगा, और मुझे अधिक धैर्य प्रदान करेगा ताकि मैं तुम्हें लज्जित कर सकूँ। और मैं, उनके लिए और भी कठोर यातनाएँ सहकर, उनसे और भी बड़े पुरस्कार प्राप्त करूँगा।'

तब यातना देने वाले ने आज्ञा दी कि एक बड़े पात्र में टिन पिघलाया जाए और शहीद को उसमें फेंक दिया जाए। जब टिन उबल रहा था, तो शहीद को पात्र के पास ले जाया गया; उसने अपनी आँखें आकाश की ओर उठाईं और इस प्रकार प्रार्थना की:

'हे परमेश्वर, मेरी प्रार्थना का स्वर सुन; शत्रु के भय से मेरे प्राण की रक्षा कर; विश्वासघाती की युक्तियों से, दुष्टों के विद्रोह से मेरी रक्षा कर' (भजन संहिता 63:2-3)।

जब वह इस प्रकार प्रार्थना कर रहा था, तो प्रभु फिर से हर्मोलाउस के रूप में उसके पास प्रकट हुए; उन्होंने उसका हाथ पकड़कर उसके साथ कड़ाही में प्रवेश किया, और तुरंत आग बुझ गई और पिघला हुआ सीसा ठंडा हो गया, जबकि शहीद भजन के वचन गा रहा था: *'परन्तु मैं परमेश्वर को पुकारूँगा, और यहोवा मुझे बचाएगा। शाम को, सुबह को, और दोपहर को मैं याचना करूँगा और पुकारूँगा, और वह मेरी आवाज़ सुनेगा'* (भजन संहिता 54:17–18)। वहाँ उपस्थित लोग इस चमत्कार को देखकर चकित रह गए, और राजा ने उद्घोष किया:

'तो अब क्या किया जाए—जब आग बुझ गई है और पिघला हुआ सीसा ठंडा हो गया है? मैं इस जादूगर को किस यातना में डालूँ?'

उपस्थति लोगों ने सलाह दी:

'इसे समुद्र की गहराइयों में फेंक दो, क्योंकि निश्चय ही वह पूरे समुद्र पर जादू नहीं कर सकता – और वह तुरंत ही मर जाएगा।'

यातना देने वाले ने ऐसा करने का आदेश दिया।

नौकरों ने शहीद को पकड़ लिया, उसे समुद्र तक ले गए, उसे एक नाव में बठिाया, और उसके गले में एक बड़ा पत्थर बाँध दिया; तट से काफी दूर नौकायन करने के बाद, उन्होंने उसे समुद्र में फेंक दिया, जबकि वे स्वयं तट पर लौट आए। जब संत को समुद्र में फेंका गया, तो मसीह पहली बार की तरह ही, हरमोलाउस के रूप में, एक बार फिर उसके सामने प्रकट हुए, और शहीद की गर्दन में बँधा पत्थर एक पत्तियों जितिना हल्का हो गया, जिससे पंतेलमिोन समुद्र की सतह पर बिना डूबे तैरता रहा, लेकिन, जैसे कि वह सूखी ज़मीन पर हो, वह पानी पर चला, ठीक वैसे ही जैसे कभी प्रेरित पतरस को मसीह के दाहिने हाथ ने मार्गदर्शन किया था; वह गाते और परमेश्वर की महिमा करते हुए किनारे पर आया, और राजा के सामने उपस्थति हुआ। राजा इस चमत्कार को देखकर इतना चकति रह गया कि उसके पास शब्द नहीं थे, और वह चिल्ला उठा:

'तो फिर, पंतोलेऑन, तुम्हारे जादू की शक्ति क्या है, कि तुमने तो समुद्र को भी उसके अधीन कर लिया है?'

'यहाँ तक कि समुद्र भी,' संत ने समझाया, 'अपने प्रभु की आज्ञा मानता है और उनकी इच्छा को पूरा करता है।'

'तो क्या आप समुद्र पर भी शासन करते हैं?' राजा ने पूछा।

'मैं नहीं,' शहीद ने उत्तर दिया, 'बल्कि मेरा मसीह, जो सभी दृश्य और अदृश्य प्राणियों का सृष्टिकर्ता और प्रभु है। वह स्वर्ग और पृथ्वी पर, और इसी प्रकार समुद्र पर भी शासन करता है: *"तुम्हारा मार्ग समुद्र में है, और तुम्हारा पथ महान जल में है"* (भजन संहिता 76:20)।

इसके बाद, यातना देने वाले ने शहर के बाहर एक जानवरों से लड़ने का अखाड़ा तैयार करने का आदेश दिया, ताकि शहीद को जानवरों के खाने के लिए फेंका जा सके। यह तमाशा देखने के लिए पूरा शहर इकट्ठा हुआ था, यह देखने के लिए उत्सुक था कि कैसे वह सुंदर और निर्दोष रूप से पीड़ित युवक जानवरों द्वारा फाड़ दिया जाएगा। राजा भी वहाँ आया; शहीद को अपने सामने लाकर, उसने जानवरों की ओर इशारा किया और कहा:

'वे तुम्हारे लिए तैयार हैं; इसलिए मेरी बात सुनो, अपनी जवानी की रक्षा करो, अपने शरीर की सुंदरता की रक्षा करो, देवताओं को बलदिान चढ़ाओ, नहीं तो तुम जानवरों के दाँतों से चीर-फाड़ कर एक क्रूर मृत्यु मरोगे।'

लेकिन संत ने घोषणा की कि वह ऐसे कपटी सलाह और आदेश का पालन करने के बजाय जानवरों द्वारा चीर-फाड़ किए जाने को ترجيح देंगे। और इस प्रकार उन्हें जानवरों के सामने फेंक दिया गया। लेकिन प्रभु, संत के सामने हर्मोलाउस नामक पुरोहित के रूप में प्रकट हुए, उन्होंने जानवरों के मुँह बंद कर दिए और उन्हें भेड़ों की तरह शांत बना दिया, ताकि वे संत के पास रेंगकर आए और उनके पैरों को चाटने लगे। संत ने उन्हें अपने हाथ से सहलाया, और प्रत्येक जानवर संत का हाथ छूने के लिए एक-दूसरे को धकेलते हुए आगे बढ़ने लगा। यह देखकर लोग चकित रह गए और ऊँचे स्वर से चिल्ला उठे:

'महान है ईसाई ईश्वर! यह निर्दोष और धर्मी युवक मुक्त हो जाए!'

तब राजा क्रोध से भरकर, प्रभु मसीह की महिमा करने वालों पर खींची हुई तलवारों के साथ सैनिक भेज दिया, और मसीह में विश्वास करने आए हुए बहुत से लोग मारे गए; राजा ने यह भी आज्ञा दी कि सभी जानवरों को मार डाला जाए। यह देखकर, शहीद ने इस प्रकार पुकारा:

– महिमा तेरी हो, हे मसीह परमेश्वर, कि न केवल मनुष्य बल्कि पशु भी तेरे लिए मरते हैं!

और राजा इस तमाशे के दृश्य से दुखी और क्रोधित होकर पीछे हट गया, और शहीद को जेल में डाल दिया। मारे गए लोगों को उनके अपने लोगों द्वारा ले जाया गया और उन्हें उचित तरीके से दफनाया गया, जबकि जानवरों को कुत्तों और मांसाहारी पक्षियों द्वारा खाए जाने के लिए छोड़ दिया गया। लेकिन तब भी एक बड़ा चमत्कार हुआ: ये जानवर कई दिनों तक बिना छुए पड़े रहे, न तो कुत्तों ने और न ही पक्षियों ने उन्हें छुआ; और इतना ही नहीं, बल्कि उनके शवों से कोई दुर्गंध नहीं आ रही थी। यह जानकर, राजा ने आदेश दिया कि उन्हें एक गहरे गड्ढे में फेंक दिया जाए और मिट्टी से ढक दिया जाए। जहाँ तक शहीद का सवाल है, उन्होंने एक भयानक पहिया तैयार करने का आदेश दिया, जिस पर नुकीले काँटे लगे हुए थे। जब संत को उससे बाँधा गया और उन्होंने पहिये को घुमाना शुरू किया, तो वह तुरंत एक अदृश्य शक्ति के प्रभाव से टुकड़े-टुकड़े हो गया, जिससे पास खड़े कई लोग घातक रूप से घायल हो गए, जबकि शहीद पहिये से सुरक्षित

और सही-सलामत उतर आए। और ऐसे चमत्कारों को देखकर सभी पर भय छा गया, जिनके द्वारा अपने संत के रूप में ईश्वर की महिमा हुई। राजा बहुत आश्चर्यचकित हुआ और शहीद से पूछा:

'आपको जादू-टोने के इतने बड़े करतब सिखाया किसने?'

'मुझे जादू-टोना नहीं, बल्कि सच्ची ईसाई भक्ति सिखाई गई है,' शहीद ने कहा, 'पवित्र पुरोहित हर्मोलाउस द्वारा।'

राजा ने पूछा, 'और यह आपका शिक्षक, हर्मोलाउस, कहाँ है? हम उसे देखना चाहते हैं।'

हालाँकि शहीद ने अपने आत्मा में यह महसूस किया कि हर्मोलाउस के शहीद का ताज प्राप्त करने का समय निकट आ रहा था, उसने राजा को उत्तर दिया:

'यदि आप आज्ञा दें, तो मैं उसे आपके पास बुला लूँगा।'

और संत को, उनकी सुरक्षा कर रहे तीन सैनिकों के साथ, पुरोहित हर्मोलाउस को बुलाने के लिए भेज दिया गया।

जब शहीद उस घर में पहुँचे जहाँ पुरोहित रहते थे, तो बूढ़े ने उन्हें देखकर पूछा:

'तुम क्यों आए हो, मेरे पुत्र?'

'मेरे स्वामी और पिता, राजा आपको बुला रहे हैं।'

'तुम मुझे बुलाने के लिए बिल्कुल सही समय पर आए हो,' बुजुर्ग ने कहा, 'क्योंकि मेरे कष्ट और मृत्यु का समय आ गया है; क्योंकि आज ही रात प्रभु मुझे प्रकट हुए और घोषणा की: "हर्मोलाउस! तुम्हें मेरी खातिर बहुत कष्ट सहना होगा, ठीक वैसे ही जैसे मेरे सेवक पैंटेलिमोन ने किया था।"'

ये शब्द कहकर, संत आनंदपूर्वक शहीद के साथ गए और राजा के सामने उपस्थित हुए। राजा ने संत को देखकर उनका नाम पूछा। हालाँकि, संत ने अपना नाम बताते समय अपने विश्वास को नहीं छिपाया, और ऊँचे स्वर में स्वयं को एक ईसाई घोषित किया। राजा ने उनसे फिर पूछा:

'क्या तुम्हारे साथ कोई और है जो इसी आस्था को मानता है?'

वरिष्ठ ने उत्तर दिया:

– मेरे दो साथी सेवक हैं, मसीह के सच्चे सेवक, हर्मिप्पस और हर्मोक्रैट्स।

तब राजा ने उन्हें अपने सामने लाने का आदेश दिया और मसीह के उन तीन सेवकों से कहा:

'क्या तुमने ही पैंटोलेऑन को हमारे देवताओं से दूर किया है?'

– स्वयं मसीह, – उन्होंने उत्तर दिया, – हमारे परमेश्वर उन लोगों को अपनी ओर बुलाते हैं जिन्हें वे योग्य समझते हैं, उन्हें मूर्तिपूजा के अंधकार से निकालकर अपने ज्ञान के प्रकाश में लाते हैं।

राजा ने सुझाव दिया, 'अब अपने कपटपूर्ण शब्द बंद करो और पंतोलेऑन को देवताओं के पास वापस लाओ; तब तुम्हारा पहला अपराध क्षमा कर दिया जाएगा, और तुम मेरे यहाँ से इतने सम्मान पाओगे कि तुम मेरे महल में मेरे सबसे करीबी दोस्त बन जाओगे।'

पवित्र लोगों ने दृढ़ता से पूछा, 'हम ऐसा कैसे कर सकते हैं, जब हम स्वयं हमारे ईश्वर मसीह के लिए उनके साथ मरने की तैयारी कर रहे हैं?! न तो हम और न ही वह मसीह का परित्याग करेंगे, और न ही हम बहरी और निर्जी मूर्तियों को बलिदान चढ़ाएंगे।'

यह कहकर उन्होंने अपना सम्पूर्ण ध्यान ईश्वर की ओर केंद्रित किया और स्वर्ग की ओर अपनी दृष्टि उठाकर प्रार्थना करने लगे। और ऊपर से उद्धारकर्ता उन्हें दिखाई दिए, और तुरंत ही एक भूकंप आ गया, और धरती हिलने लगी।

'देखो, देवता तुमसे कितने क्रोधित हैं,' राजा ने घोषणा की, 'वे पृथ्वी को हिला रहे हैं!'

'आप सच कह रहे हैं,' संतों ने सहमति जताई, 'क्योंकि तुम्हारे देवताओं के कारण ही पृथ्वी हिल गई है, क्योंकि वे अपनी जगहों से गिरकर जमीन पर बिखर गए हैं और हमारे परमेश्वर की शक्ति से चूर-चूर हो गए हैं, जो तुमसे क्रोधित हैं!'

वे यह बात कह ही रहे थे कि मंदिर से एक दूत दौड़ता हुआ राजा के पास यह खबर लेकर आया कि उनकी सभी मूर्तियाँ ज़मीन पर गिरकर चूर-चूर होकर धूल में मिल गई थीं। लेकिन उस पागल शासक ने, इस सब में ईश्वर की शक्ति को नहीं बल्कि ईसाइयों की जादू-टोना समझकर, चिल्लाया:

'सचमुच, अगर हमने इन जादूगरों को तुरंत नष्ट नहीं किया, तो पूरा शहर इनके कारण बर्बाद हो जाएगा।'

उसने पंतेलिमिओन को जेल भेजने का आदेश दिया, जबकि वृद्ध हर्मोलाउस और उनके दो साथियों को, कई यातनाएँ दिए जाने के बाद, तलवार से सिर कलम करने की सज़ा दी गई। और इस प्रकार तीनों पवित्र शहीदों—पुजारी हर्मोलाउस

और उनके साथी सेवकों, हर्मप्पिुस और हर्मोक्रेट्स—ने अपनी शहादत पूरी करके, स्वर्गीय महमिा में पवत्रि त्रमिूर्ति के समक्ष एक साथ प्रकट हुए।

तीन पवत्रि शहीदों की हत्या के बाद, राजा ने संत पंतेलमिोन को अपने सामने लाने का आदेश दयिा, और उनसे ये शब्द कहे:

'मैंने मसीह से बहुतों को हमारे देवताओं की ओर मोड़ा है, फरि भी तुम अकेले मेरी बात नहीं मान रहे हो। यहाँ तक कि तुम्हारे गुरु, हर्मोलाउस ने भी, अपने दो दोस्तों के साथ मलिकर देवताओं की पूजा की है और उनके लिए बलदिान चढ़ाया है, और मैंने उन्हें अपने महल में सम्मान की पदवी से सम्मानति कयिा है। तुम भी ऐसा ही करो, ताकि तुम भी उन्हें मलिने वाला सम्मान प्राप्त कर सको।'

हालाँकि शहीद ने अपने आत्मा में यह जानकर कि संत स्वर्ग सधिार चुके थे, राजा से पूछा:

'उन्हें यहाँ आने का आदेश दो, ताकि मैं तुम्हारे सामने उन्हें देख सकूँ।'

राजा ने झूठ बोला, 'वे अभी यहाँ नहीं हैं, क्योंकि मैंने उन्हें एक दूसरे शहर में भेज दयिा है, जहाँ उन्हें बहुत धन-संपत्ति मिलिगी।'

संत ने उसे समझाया, 'देखो—तुम्हारी मर्जी के खलिाफ, तुमने सच बोल दयिा, तुमने उन्हें यहाँ से भगा दयिा, उन्हें मौत की सज़ा दी, और वे वास्तव में उन धन-संपत्तयिों को प्राप्त करने के लिए मसीह के स्वर्गीय नगर में चले गए हैं जन्हिें आँख नहीं देख सकती।'

जब राजा ने देखा कि शहीद को कसिी भी तरह से बुराई की ओर झुकाया नहीं जा सकता, तो उसने उसे बुरी तरह कोड़े मारने का आदेश दयिा और उस पर क्रूर घाव पहुँचाने के बाद, उसे मौत की सज़ा सुनाई: कि उसकी तलवार से गर्दन काट दी जाए, और उसके शरीर को आग के हवाले कर दयिा जाए। और सैनकिों ने, उसे पकड़कर, शहर के बाहर सरि कलम करने के लिए ले गए।

जब संत अपने मृत्युदंड की ओर बढ़ रहे थे, तो उन्होंने दाऊद का एक भजन गाया: *'जवानी से ही कई लोगों ने मुझ पर चढ़ाई की है, पर वे मुझ पर हावी नहीं हुए। हलवालों ने मेरी पीठ पर हल जोता है'* (भजन संहति 128:2-3)। और वे उस भजन के अंत तक यही गाते रहे।

जब सैनकि शहीद को शहर से एक स्टेडयिम से अधकि दूरी पर ले गए, तो वे उस स्थान पर पहुँचे जहाँ प्रभु को यह उचति लगा कि उनका सेवक मर जाए; उन्होंने पंतेलमिैन को एक जैतून के पेड़ से बाँध दयिा, और जल्लाद पास आकर संत की गर्दन पर अपनी तलवार से वार कयिा, लेकनि तलवार मोम की तरह मुड़ गई, और संत के शरीर पर वार का कोई असर नहीं हुआ; क्योंकि उन्होंने अभी अपनी प्रार्थना पूरी नहीं की थी।

सैनकि भय से चल्लिा उठे:

'महान है ईसाई ईश्वर!'

और, संत के पैरों पर गरिकर, उन्होंने वनिती की:

'हे परमेश्वर के सेवक, हम आपसे वनिती करते हैं! हमारे लिए प्रार्थना करें, ताकि हमारे पापों को क्षमा कयिा जाए, जो हमने राजा की आज्ञा पर आपके साथ कयिा है।'

जब संत प्रार्थना कर रहे थे, तो स्वर्ग से एक आवाज़ सुनाई दी, जो उन्हीं को संबोधति कर रही थी और उनके नाम परविर्तन की पुष्टि कर रही थी; क्योंकि प्रभु ने पंतोलेऑन के बजाय, उन्हें पंतेलमिोन कहा, स्पष्ट रूप से उन पर यह अनुग्रह प्रदान करते हुए कि वे हर तरह की परेशानी और दुख में उनकी ओर मुड़ने वाले सभी पर दया करें – और प्रभु ने उन्हें स्वर्ग में बुला लयिा। संत, आनंद से भरकर, ने सैनकिों को आज्ञा दी कि वे उसे अपनी तलवारों से मार गरिाएँ; परन्तु उन्होंने मना कर दयिा, क्योंकि वे डर गए और काँप उठे। – तब संत ने उनसे ये वचन कहे:

'यदि तुम अपने सौंपे गए कार्य को पूरा नहीं करते, तो मेरे मसीह से तुम्हें दया नहीं मलिेगी।'

सैनकि आगे बढ़े और पहले उन्होंने उसके पूरे शरीर को चूमा; फरि उन्होंने उनमें से एक को नयिुक्त कयिा – और उसने शहीद का सरि काट दयिा, और खून के बजाय दूध बहने लगा। उसी क्षण से, जैतून का पेड़ जड़ से लेकर चोटी तक फलों से भर गया। यह देखकर, सरि कलम कएि जाने के समय उपस्थति कई लोग मसीह में वश्विास करने लगे।

राजा को वहाँ हुई चमत्कारों की सूचना मलिी, और उसने आदेश दयिा कि जैतून के पेड़ को तुरंत टुकड़ों में काटकर शहीद के शरीर के साथ जला दयिा जाए।

जब आग बुझ गई, तो वशि्वासयिों ने संत के शरीर को राख से नकिाला—जो आग से पूरी तरह से अछूता था—और उसे वदि्वान एडामेंटयिास की नकिटवर्ती भूमपिर सम्मान के साथ दफनाया।

लॉरेंटीयस, वासोई और प्रोवयिन, जो शहीद के घर में सेवा करते थे, जो दूर से उनका अनुसरण कर रहे थे, जनि्होंने उनके सभी कष्टों को देखा और स्वर्ग से आई उस आवाज़ को सुना जसिने उनसे बात की, ने उनके जीवन और कष्टों का एक वृत्तांत लखिा और शहीद की स्मृतमिें, इसे पढ़ने और सुनने वालों के लाभ के लएि, हमारे ईश्वर मसीह की महमिा के लएि, जो परमपतिा और पवत्रि आत्मा के साथ महमिामय हैं, अब और हमेशा और युगों-युगों तक, पवत्रि चर्चों को सौंप दयिा। आमीन[5373] .

ट्रोपारयिन, स्वर 3:

हे पवत्रि शहीद और चंगा करने वाले पंतेलमिैन, दयालु परमेश्वर से प्रार्थना करो कि वह हमारे आत्माओं को पापों की क्षमा प्रदान करें।

कॉन्टाकयिन, स्वर 5:

हे दयालु के अनुयायी और हमारे परमेश्वर मसीह के रोग-नाशक तथा शहीद, आपने उनसे चंगाई का अनुग्रह प्राप्त कयिा है, अपनी प्रार्थनाओं से हमारी आत्माओं की दुर्बलताओं को चंगा करें, और वशि्वास के साथ पुकारने वालों से सदा-संघर्षशील वरिोधी के प्रलोभनों को दूर भगाएँ: हे प्रभु, हमारा उद्धार करें।

आदरणीय मठाधीश अंफसिा की स्मृति

27 जुलाई को स्मरणोत्सव

संत अंफसिा (या यूँ कहें कि अंफुसा) 8वीं शताब्दी में एशयिा के मैनटनियिन क्षेत्र में रहती थीं। अपने माता-पतिा का घर छोड़कर, वह पहले गुफाओं में एकांत में रहने लगीं। वृद्ध ससिीनयिा से मलिने के बाद, उन्होंने उनकी आज्ञाओं के अनुसार अपना तपस्वी जीवन जारी रखा और अपनी आध्यात्मकि जीवन में इतनी प्रगतकिी कि 90 युवतयिों ने स्वयं को उनके मार्गदर्शन के लएि सौंप दयिा। परम पूज्य अंफसिा को पवत्रि प्रतमिाओं की पूजा के लएि कष्ट सहने पड़े। उन्होंने उत्पीड़क कॉन्स्टेंटाइन कॉप्रोनमिस की पत्नी को एक लड़के और एक लड़की के जन्म की भवष्यिवाणी की। बाद वाली, जनि्हें अंफुसा के नाम से जाना जाता है, वे भी अपनी पवत्रिता के लएि प्रसद्धि हुईं और चर्च द्वारा 12 अप्रैल को उनकी स्मृतमिनाई जाती है।

10 अगस्त

28 जुलाई (पुराने कैलेंडर के अनुसार)

[5373] संत पैंटेलमिोन का 27 जुलाई 305 को सरि कलम कर दयिा गया था। बेसलि के मेनोलॉजयिन में कहा गया है कि संत के सरि कलम कएि जाने के समय बहने वाला रक्त और दूध 10वीं शताब्दी तक संरक्षति थे और उन्होंने श्रद्धालुओं को आरोग्य प्रदान कयिा; इसका उल्लेख 12वीं शताब्दी के एक ग्रीक छंद प्रस्तावना में भी मलिता है। प्राचीन काल से ही पूर्व में सेंट पैंटेलमिोन की स्मृतकिा वशिेष रूप से सम्मान कयिा जाता रहा है; आर्मेनयिाई सेबास्टे और कॉन्स्टेंटनिोपल में उनके नाम पर बनी चर्चें चौथी शताब्दी की हैं। उनके अवशेष तसरग्राद ले जाए गए थे; वहाँ से, इसका बड़ा हस्सिा पेरसि के सेंट-डेनसि में स्थानांतरति कर दयिा गया, जबकि कथति तौर पर उनका सरि 802 में ल्योन ले जाया गया था; हालाँकि, रूसी तीर्थयात्री एंथनी ने 1200 में कॉन्स्टेंटनिोपल के हागयिा सोफयिा में उनका सरि देखा था, और नोवगोरोड के स्टीफन की गवाही के अनुसार (1350), 14वीं शताब्दी में संत पैंटेलमिोन के अवशेष कॉन्स्टेंटनिोपल में ब्लाचेर्ने के चर्च में रखे गए थे। अवशेषों का एक हस्सिा अब माउंट अथोस पर स्थति संत पैंटेलमिोन के मठ में रखा गया है।

पवत्रि प्रेरति (सत्तर में से) प्रोकोरस, नकिानोर, टमिोन और पार्मेन

28 जुलाई को स्मरण कयिा जाता है

प्रभु के स्वर्गारोहण और प्रेरतिों पर पवत्रि आत्मा के अवतरण के बाद, यरूशलेम में वशि्वासयिों की संख्या में काफी वृद्धि हुई; इसलिए, उस समय यरूशलेम में मौजूद प्रेरतिों की सलाह पर, पवत्रि आत्मा और बुद्धि से परपिूर्ण सात पुरुषों (प्रेरतिों के काम 6:5) को डकिन के मंत्रालय के लिए चुना गया। इन पुरुषों के नाम इस प्रकार थे: स्तेफन, फलिपि, प्रोकोरस, नकिानोर, तमिोना, पार्मेनास और अंताकयिा का नकिोलस। प्रेरतिों के काम की पुस्तक उनके चुनाव का वर्णन इस प्रकार करती है:

'उन दनिों में, जब शष्यिों की संख्या बढ़ गई, तो हेलेनस्टिों की यहूदयिों के वरि्द्ध यह शकिायत हुई, कि उनकी वधिवाओं को भोजन के दैनकि वतिरण में अनदेखा कयिा जा रहा था। तब बारहों [प्रेरतिों] ने, शष्यिों की सारी मंडली को इकट्ठा करके कहा: "मेजों पर सेवा करने के लिए परमेश्वर के वचन की उपेक्षा करना हमारे लिए उचति नहीं है। इसलिए, भाइयो, अपने बीच से सात प्रतष्ठिति पुरुषों को चुन लो, जो पवत्रि आत्मा और बुद्धि से परपिूर्ण हों; हम यह काम उन पर सौंप देंगे, और अपना समय प्रार्थना और वचन की सेवा के लिए देंगे।' यह प्रस्ताव सारी मंडली को भाया; और उन्होंने स्तेफन, जो वशि्वास और पवत्रि आत्मा से परपिूर्ण मनुष्य था, और फलिपि, and प्रोखोरुस, और नकिानोर, और तमिोन, और पार्मेनास, और अंताकयिा का नकिोलस, जो अन्यजातयिों में से धर्म बदलकर आया था, को चुना; उन्हें प्रेरतिों के पास लाया गया, और [प्रेरतिों ने] प्रार्थना करके उन पर हाथ रखा। और परमेश्वर का वचन फैलता गया, और यरूशलेम में शष्यिों की संख्या बहुत बढ़ गई' (प्रेरतिों के काम 6:1–7)।

इन सभी चुने हुए लोगों में से, प्रथम शहीद संत स्टीफन की स्मृति दिसंबर के सत्ताइसवें दनि मनाई जाती है; संत फलिपि की स्मृति अक्टूबर के ग्यारहवें दनि मनाई जाती है; जबकि अन्य डकिन्स की स्मृति, नकिोलस को छोड़कर—जन्हिें संतों में नहीं गनिा गया है[5374] —को पवत्रि चर्च द्वारा इसी दनि सम्मानति कयिा जाता है, भले ही वे अलग-अलग समयों और स्थानों पर मसीह के नाम का प्रचार करते हुए और शहीद की मृत्यु से अपने प्रचार को सील करते हुए परलोक सधिार गए।

संत प्रोकोरस ने अन्य शष्यिों के साथ (ईश्वर की माता के स्वर्गारोहण से भी पहले) स्वयं पवत्रि प्रमुख प्रेरति पतरस के साथ यात्रा की; इसी प्रेरति पतरस द्वारा ही संत प्रोकोरस को बथिुनयिा के नकिोमेडयिा का बशिप नयिुक्त कयिा गया था, जैसा कि धन्य समियिन मेटाफ्रastes[5375] ने पवत्रि प्रेरति पतरस के जीवन और कार्यों के अपने वृत्तांत (29 जून के अंतर्गत) में वर्णन कयिा है। ईश्वर की माता के स्वर्गारोहण के बाद, प्रोकोरस पवत्रि प्रेरति जॉन द थयिोलोजयिन के साथी और सहकर्मी बन गए; उनके साथ, प्रोकोरस ने कई देशों की यात्रा की, और मसीह के नाम का प्रचार करने के लिए हर जगह मूर्तपिूजकों से उत्पीड़न सहन कयिा; जॉन द थयिोलोजयिन के साथ, प्रोकोरस को पतमोस द्वीप पर नर्विासति कर दयिा गया था; वहाँ उन्होंने संत जॉन द थयिोलोजयिन से जो कुछ भी दव्यि प्रकाशन द्वारा कहा गया था,

---

[5374] कुछ चर्च लेखक (लायन के संत आइरेनयिस, साइप्रस के एपफिानयिस, धन्य जेरोम, और अन्य) डीकन नकिोलस को नकिोलाइट्स का संस्थापक और नेता मानते हैं, जनिकी संत जॉन द एपोस्टल और इवैंजलस्टि, द थयिोलॉजस्टि, ने प्रकाशतिवाक्य की पुस्तक (2:6, 15) में नदिा की है. ऐसा कहा जाता है कि डीकन नकिोलस ने प्रेम और ईसाई स्वतंत्रता पर मसीह की शकि्षा को गलत समझ लयिा था और वह अनयिंत्रति कामुक प्रेम का प्रचारक था। हालाँकि, अलेक्जेंड्रयिा के क्लेमेंट गवाही देते हैं कि डीकन नकिोलस ने एक कठोर और धार्मकि जीवन जयिा, उनकी पत्नी और बच्चे थे, और उनकी बेटयिाँ कुँवारीपन में बूढ़ी हो गईं। उनके शब्द: 'मांस का उपयोग बुराई के लिए कयिा जाना चाहिए', यानी मांस की उपेक्षा करना, उसकी रक्षा नहीं करना – उसे नयिंत्रति करना – को संप्रदायवादयिों ने गलत समझ लयिा; नकिोलस स्वयं, एक कठोर तपस्वी के रूप में, ऐसे भ्रमों से बहुत दूर थे'।

[5375] समिोन मेटाफ्रastes – 10वीं सदी के सबसे प्रसद्धि चर्च संबंधी लेखक; कॉन्स्टेंटनिोपल में जन्मे; सम्राट लयिो द फलिॉसफर और कॉन्स्टेंटनि VII के सचवि के रूप में कार्य कयिा; महत्वपूर्ण राजनयकि मशिन पूरे कएि; उन्होंने अरबों के नेता को शहर को बख्शने के बदले में धनराशि के भुगतान के लिए मनाकर थ्रेसैलॉनीकी शहर को वनिाश से बचाया था, जसिकी धमकी अरबों ने 904 में दी थी; अपने जीवन के अंत में, उन्होंने पैट्रसियिन और मैजस्टिर के पदवी धारण कीं। अपने धार्मकि जीवन के लिए, उन्हें पवत्रि चर्च द्वारा संत घोषति कयिा गया (उनका पर्व दविस 27 नवंबर को पवत्रि चर्च द्वारा मनाया जाता है)। समियिन मेटाफ्रैस्टेस चर्च के इतहिास पर अपने कार्यों के लिए अत्यधकि प्रसद्धि हुए; उन्होंने *संतों के जीवन* (Lives of the Saints) का संकलन (या, अधकि सटीक रूप से, संग्रह) कयिा; फरि भी, संत समियिन ने खुद को केवल संतों के जीवन, कार्यों और कष्टों के प्राचीन ववरिणों को इकट्ठा करने तक ही सीमति नहीं रखा, बल्कि उन्हें फरि से सुनाया या अनुकूलति भी कयिा; इसीलिए उनका उपनाम 'मेटाफ्रास्टेस' (Metaphrastes) पड़ा, जो ग्रीक भाषा में 'फरि से बताने' या 'अनुकूलति करने' के लिए प्रयुक्त होता है।

उसे सब दर्ज कयि[5376] ; इसके बाद, संत प्रोकोरस ने नकिोमेडयि में एक बार फरि सेवा की, जहाँ वे पहले बशिप थे; वहाँ उन्होंने मूर्तपिूजकों को ईसा मसीह के धर्म में परविर्तति कयि, जसिसे नव-स्थापति चर्च का वकिास हुआ। संत प्रोखोरस की मृत्यु शहीद के रूप में हुई, उन्हें अंटीओक शहर में मसीह के नाम का प्रचार करने के लिए मूर्तपिूजकों द्वारा मार डाला गया था[5377] ।

संत नकिानोर ने उसी दनि यातनाएँ सहन कीं जसि दनि पहले शहीद संत स्तेफानुस को पत्थर मारकर मार डाला गया था; उस समय, यरूशलेम की कलीसयि के वरिुद्ध एक भीषण उत्पीड़न शुरू हो गया था; संत नकिानोर को भी, पहले शहीद स्तेफानुस की तरह, मसीह में वशि्वास करने आए दो हज़ार लोगों के साथ मार डाला गया। कैनन में उनके शहीद होने के तरीके का उल्लेख है, जसिमें उन्हें ईश्वर को बलदिान के रूप में अर्पति एक मेमने के रूप में वर्णति कयि गया है[5378] ।

पवत्रि प्रेरतिों द्वारा संत टमिोन को अरब में स्थति बोस्ट्रा शहर का बशिप नयिुक्त कयि गया था; मसीह के नाम का प्रचार करने के लिए, उन्हें यहूदयिों और मूर्तपिूजकों दोनों के हाथों बहुत कष्ट सहना पड़ा; अंत में, उन्हें एक भयंकर जलती हुई भट्टी में फेंक दयि गया, लेकनि आग से उन्हें बल्कुि भी चोट नहीं लगी और वे भट्टी से सुरक्षति बाहर नकिल आए। रोमन चर्च की परंपरा यह भी बताती है कि संत टमिोन, भट्टी से बनिा कसिी चोट के नकिलने के बाद, को सूली पर चढ़ाकर मौत की सज़ा दी गई[5379] ।

संत पर्मेन ने पवत्रि प्रेरतिों द्वारा सौंपी गई सेवा को उत्साह के साथ नभिाया; वे उनकी उपस्थतिि में ही मर गए और उन्हें उनके ही हाथों दफनाया गया और उन्होंने शोक मनाया। हालाँकि, कुछ का मानना है कि उन्होंने अपनी मृत्यु से पहले यातनाएं झेलीं और उन्हें शहीद का मुकुट पहनाया गया[5380] ।

कॉन्टाकयिन, स्वर 1:

सम्माननीय डकिन और वचन के प्रत्यक्षदर्शी, और वशि्वास के चुने हुए पात्र, नकिानोर, प्रोकोरस, पार्मेन और टमिोन, हे महमिामय: इसलिए आज हम आपकी पवत्रि स्मृति मनाते हैं, हृदय में आनंद के साथ आपको महमिामय करते हुए।

शहीद संत यूस्टाथयिस की स्मृति

28 जुलाई को स्मरणोत्सव

मसीह के पवत्रि शहीद, यूस्टैथयिस, सेना में सेवा करते थे। चूँकि वह एक ईसाई था, उसे गरिफ्तार कर एन्क्रा शहर के राज्यपाल कोर्नेलयिस के सामने लाया गया[5381] । उसकी पूछताछ के दौरान, उसने नडिरता से मसीह की गवाही दी, और इसके लिए उसे पहले नर्दियता से पीटा गया, फरि उसके एड़यिों में ड्रलि से छेद कयि गया; बाद में, उसे एक रस्सी

[5376] परंपरा के अनुसार, संत प्रोकोरस ने संत यूहन्ना द थयिोलोजयिन द्वारा बताई गई सुसमाचार को लखिा।

[5377] कुछ वद्विानों के अनुसार, प्रोकोरस नामक दो व्यक्तयिों के बीच अंतर करना चाहिए: 1) प्रोकोरस, डकिन – संत पेत्रुस प्रेरति का साथी और बाद में नकिोमेडयि के बशिप। यही प्रोकोरस था जसिने 9 अगस्त को अंतीयक में मसीह के नाम की घोषणा करने के लिए यातनाएँ झेलीं। 2) प्रोकोरस, जो बाद में रहे, संत जॉन द थयिोलोजयिन, प्रेरति और सुसमाचार प्रचारक के एक शष्यि और साथी थे। इस प्रोकोरस को ईश्वर की माता के नद्रिोपवेश से लेकर उनकी अपनी मृत्यु तक, संत जॉन द थयिोलोजयिन, प्रेरति और सुसमाचार प्रचारक के जीवन और चमत्कारों के वृत्तांत के लेखक माना जाता है। माना जाता है कि यही प्रोकोरस है जसिे प्राचीन आइकन (चत्रिों) में एक लपिकि (सुसमाचार की प्रतलिपिि बनाने वाला) के रूप में दर्शाया गया है। हालाँकि, हम नश्चिति रूप से यह नहीं कह सकते कि प्रोखोर नामक दो व्यक्तयिों के बीच अंतर कयि जाना चाहिए; हो सकता है कि डीकन प्रोखोर और संत यूहन्ना प्रेरति और सुसमाचारकार, द थयिोलोजयिन के साथी प्रोखोर, एक ही व्यक्ति हों, जैसा कि रोस्तोव के संत डेमेट्रयिस का मानना है।

[5378] ओड्स 4, 6 और 7।

[5379] पवत्रि चर्च 30 दसिंबर और 4 जनवरी को संत तमिोन प्रेरति की स्मृति भी मनाता है।

[5380] कुछ वद्विानों के अनुसार, प्रेरति सेंट पर्मेन ने मैसेडोनयि में सुसमाचार का प्रचार कयि। प्रेरति सेंट पर्मेन की शहादत सम्राट ट्राजन (98–117 ईस्वी) के शासनकाल में, वशिेष रूप से उनके शासन के अंतमि वर्षों में हुई थी।

[5381] एन्सीरा शहर एशयि माइनर में रोमन प्रांत गलाटयि में स्थति है।

से बांधकर, वे उसे अंकारा शहर से सागकी नदी तक घसीटते ले गए[5382] , जबकि राज्यपाल उसके पीछे-पीछे देखते हुए चल रहा था; और अंत में, उन्होंने उसे एक संदूक में डालकर नदी में फेंक दिया। लेकिन उसी क्षण, ईश्वर की इच्छा से, प्रभु का एक स्वर्गदूत प्रकट हुआ और उसने उस संदूक को नदी से निकालकर सूखी भूमि पर रख दिया। संत जीवित पाए गए और, डिब्बे में ही रहते हुए, उन्होंने गाया: *'जो परम ध्रुव की छाया में बसता है'* (भजन संहिता 90:1) आदि। यह देखकर, राज्यपाल को शर्म आई और, अपनी तलवार खींचकर, उसने आत्महत्या कर ली। इस बीच, पवित्र शहीद ने ईश्वर से प्रार्थना की, प्रकट हुए स्वर्गदूत के हाथों से पवित्र सहभाग प्राप्त किया—क्योंकि दिव्य रहस्य एक कबूतर द्वारा स्वर्ग से लाए गए थे—और इसके बाद उन्होंने अपना प्राण प्रभु के हाथों में सौंप दिया[5383] । उनके पूजनीय अवशेष एन्सीरा शहर में दफनाए गए थे।

पवित्र शहीद अकाकियोस की स्मृति

28 जुलाई को स्मरण किया जाता है

मसीह के एक शहीद, संत अकाकियोस ने, लिसिनियस के शासनकाल में[5384] , जिसके हवाले उन्हें मुकदमे के लिए किया गया था, कष्ट सहे। मसीह की घोषणा करने के लिए, लिसिनियस ने उन्हें फाँसी देने और उनके शरीर को कोड़ों से पीटने का आदेश दिया, और फिर उन्हें राज्यपाल[5385] टेरेन्टियस के पास भेज दिया। बाद वाले ने उसे पिघले हुए राल और चर्बी से भरे एक बड़े बर्तन में फेंकने का आदेश दिया, लेकिन वह पूरी तरह से सुरक्षित बाहर निकल आया। जब एपार्क को अपामिया और अपोलोनिया[5386] के लिए रवाना होना पड़ा, तो उसने संत अकाकियस को अपने साथ चलने का आदेश दिया। इन शहरों में से एक में, उसे एक मूर्तिपूजक मंदिर में ले जाया गया, और प्रार्थना की शक्ति से उसने उसमें रखी सभी मूर्तियों को गिरा दिया। इसके बाद, राज्यपाल ने उसे मुकदमे के लिए ट्रिब्यून के हवाले कर दिया[5387] , जिसके आदेश पर पहले तो उसे बुरी तरह पीटा गया, फिर जंगली जानवरों से लड़ने के लिए मजबूर किया गया, और अंत में एक भट्टी में फेंक दिया गया, फिर भी वह सुरक्षित रहा। ट्रिब्यून ने सोचा कि भट्टी ठंडी हो गई है, इसलिए उसने यह जांचने के लिए पास जाकर खुद को उसमें जला लिया और उसकी लाश राख में बदल गई। ट्रिब्यून की मृत्यु के बाद, संत को निर्णय के लिए पोसडिोनियस के हवाले कर दिया गया, जिसने आदेश दिया कि उस पर भारी बेड़ियाँ डाल दी जाएँ और उसे मलिटेस ले जाया जाए[5388] , जहाँ उसने एक बार फिर मूर्तियों को तोड़ दिया। इसके लिए, उसका सिर काट दिया गया[5389] , और घाव से खून और दूध बहने लगा। लियोन्टियस नामक एक पादरी ने उसके शरीर को सिन्नाडा शहर में दफनाया[5390] ।

[5382] यहाँ 'साक्गी' नाम, बेशक, सांगारियस नदी को संदर्भित करता है। यह फ्राइजिया प्रांत में उत्पन्न होती है, जो गैलाटिया से सटा हुआ है, गैलाटिया और बिथिनिया से होकर बहती है, और यूक्सिन सागर में मिल जाती है, जिसे अब काला सागर के नाम से जाना जाता है।

[5383] पवित्र शहीद यूस्टेथियस की मृत्यु लगभग 316 ईस्वी में हुई।

[5384] 311 से रोमन साम्राज्य के पूर्वी भाग पर शासन करने वाले लिसिनियस, मसीहियों के एक निर्दयी उत्पीड़क मैक्सिमियिन गैलेरियस के उत्तराधिकारी थे। 311 में, उन्होंने और कॉन्स्टेंटिन द ग्रेट ने मिलकर ईसाइयों के पक्ष में एक कानून जारी किया; हालाँकि, बाद में, जब उनके और कॉन्स्टेंटिन के बीच तनाव उत्पन्न हुआ—इस सवाल को लेकर कि साम्राज्य पर दो शासकों का या एक शासक का शासन होना चाहिए—तो उन्होंने ईसाइयों पर कॉन्स्टेंटिन के प्रति सहानुभूति रखने का संदेह किया और पहले उन्हें उत्पीड़ित करना और फिर सताना शुरू कर दिया। यह 323 तक जारी रहा; लिसिनियस को कॉन्स्टेंटाइन के खिलाफ युद्ध में मार दिया गया था।

[5385] ग्रीक-रोमन दुनिया में, 'एपार्क्स' शब्द का अर्थ प्रांतीय गवर्नरों से था।

[5386] एशिया माइनर में फ्रीजिया के रोमन प्रांत में, पिसीडिया के साथ इसके दक्षिण-पूर्वी सीमा के पास अपमेआ और अपोलोनिया के शहर स्थित थे।

[5387] रोमन साम्राज्य में, 'ट्रिब्यून' शब्द का उपयोग विभिन्न अधिकारियों, और विशेष रूप से एक हजार सैनिकों के प्रभारी सैन्य कमांडरों के लिए किया जाता था।

[5388] मलिटिस एशिया माइनर में रोमन प्रांत कैरिया का एक तटीय शहर था।

[5389] पवित्र शहीद अकाकियोस की मृत्यु लगभग 321 ईस्वी में हुई।

[5390] सिन्नादा शहर एशिया माइनर में, रोमन प्रांत फ्रीजिया में स्थित था।

संत जूलयिन की शहादत

28 जुलाई को स्मरण कयि जाता है

सम्राट एंटोननिस के शासनकाल में[5391] , मूर्तपिूजकों ने ईसाइयों को देवताओं को बलदिान चढ़ाने के लिए मजबूर कयि; यदि वे मना कर देते, तो मूर्तपिूजक ईसाइयों को भयानक यातनाओं और स्वयं मृत्यु की धमकी देते थे। कैंपैनयि प्रांत में[5392] , उस समय का गवर्नर एक फ्लैवयिन नामक व्यक्ति था, जो अत्यंत क्रूर था; यह गवर्नर मसीह के नाम से घृणा करता था।

हेगेमोन फ्लेवयिन ने अपने दुष्ट सेवकों को कैंपैनयि प्रांत में भेज दयि, और उन्हें आदेश दयि कि वे जतिने भी ईसाइयों से उनकी मुलाकात हो, उन्हें पकड़कर एथेंस शहर ले आएं, जहाँ वह स्वयं उस समय ठहरे हुए थे।

उस समय, डाल्मेशयि से एक व्यक्ति कैम्पेनयि में आया था[5393] : आयु में युवा, परन्तु आचरण और ईसाई ज्ञान में परपिक्व; रूप में सुंदर, परन्तु अनुग्रह और पवत्रिता में और भी अधकि सुंदर; कुलीन वंश का, परन्तु वशि्वास में और भी अधकि कुलीन। उस व्यक्ति का नाम जूलयिन था। जब जूलयिन अनाग्नी नगर के पास से गुजर रहा था, तो उसकी मुलाकात राज्यपाल के सैनकिों से हो गई। जूलयिन ने उन्हें एक ईसाई अभविादन के साथ नमस्कार कयि, और कहा:

'भाइयों, तुम्हें शांति मिले!'

सैनकिों ने इन शब्दों और संत के सौम्य व्यवहार से यह समझते हुए कि वह एक ईसाई था, उससे पूछना शुरू कयि कि वह कौन था और कहाँ से आया था; उसका नाम क्या था और वह कसि आस्था का अनुयायी था।

लेकनि जूलयिन, जो परमेश्वर का सेवक था, मसीह के नाम के लिए दुख सहने और मरने की इच्छा रखता था, ने नडिर होकर उत्तर दयि:

मैं एक ईसाई हूँ; मेरा नाम जूलयिन है; मैं डल्माटयि से आया हूँ; और मैं इन क्षेत्रों में यात्रा कर रहा हूँ, हर जगह लोगों को मूर्तयिों की पूजा को अस्वीकार करने और एक सच्चे ईश्वर और उनके पुत्र, प्रभु यीशु मसीह में वशि्वास करने के लिए प्रोत्साहति कर रहा हूँ; मैं लोगों को उसी का सम्मान करने के लिए प्रेरति करता हूँ, जसिके बारे में मैं प्रचार करता हूँ और जसिके लिए मैं अपना जीवन बलदिान करने को तैयार हूँ।

सैनकि संत के साहसी उत्तर से बहुत चकति हुए; फरि भी, उन्होंने उसे पकड़ लयि, कसकर बाँध दयि और उसे ले चले, डंडों और हथयिारों से मारते हुए और कहते हुए:

'हम देखेंगे कि तुम्हारे शब्द कतिने सच हैं जब तुम कहते हो कि तुम सूली पर चढ़ाए गए के लिए मरना चाहते हो!'

मारे जाने के दौरान, संत ने ईश्वर से प्रार्थना की, उनसे अपने पवत्रि नाम के लिए अपने दुखों को अंत तक सहने की शक्ति प्रदान करने के लिए कहा। और संत जूलयिन की प्रार्थना ईश्वर ने सुनी, क्योंकि एक आवाज आई, जसिने संत को बल दयि और कहा:

– 'डरो मत, जूलयिन! मैं तुम्हारे साथ रहूँगा और तुम्हें शक्ति और साहस दूँगा।'

तब उस पवत्रि युवक ने दयालु ईश्वर का धन्यवाद कयि, जसिके बाद उसे राज्यपाल के सामने लाया गया और उसके आदेश पर 'कोल्ड डचि' नामक एक भयानक कालकोठरी में कैद कर दयि गया। इस कालकोठरी में, संत को भूख और प्यास से नष्ट करने की आशा में सात दनिों तक बनि भोजन या पानी के रखा गया।

लेकनि ईश्वर ने अपने सेवक को नहीं छोड़ा, क्योंकि उन्होंने उसके पास एक पवत्रि देवदूत भेजा। मसीह के इस बंदी ने इस देवदूत को देखकर और उससे बात करके आनंदति महसूस कयि, और उसके हाथों से स्वर्गीय भोजन ग्रहण कयि।

[5391] एंटोननिस पयिस ने 138 से 161 तक रोमन साम्राज्य पर शासन कयि।

[5392] कैम्पेनयि प्राचीन इटली का एक प्रांत था, जसिकी सीमा पश्चमि में लैटयिम, उत्तर में सैम्नयिम, पूर्व में लुकेनयि, और दक्षणि तथा दक्षणि-पश्चमि में टायर्रेनीयन सागर से लगी हुई थी। प्राचीन लेखकों ने इसके अनुकूल जलवायु और इसकी मटि्टी की उर्वरता, दोनों की प्रशंसा की, जसिसे साल में तीन बार फसलें बोई और काटी जा सकती थीं। यहाँ अंगूर के कई बाग, जैतून के बगीचे और लकड़ी के जंगल थे। कैंपेनयि के नविासी (पगान) अपनी नपुंसकता और वलिासति के प्रेम के लिए जाने जाते थे।

[5393] डल्माटयि – प्राचीन काल में एक रोमन प्रांत। डल्माटयि भूमध्य सागर के तट पर एक संकीर्ण पट्टी के रूप में स्थति है; यह उत्तर में क्रोएशयि, पूर्व में बोस्नयि और हर्जेगोवनि, और दक्षणि में मोंटेनेग्रो से सटा है। दलमाटयि ईस्वी संवत्सर 6 में रोमन शासन के अधीन आ गया; उस समय से, यह इल्यरकिम के साथ मलिकर एक साम्राज्यकि प्रांत बन गया। दलमाटयि के नविासी इल्यूरयिन जनजाति से थे और वे शकिार, कृषि और पशुपालन में लगे हुए थे।

सात दनिों के बाद, राज्यपाल सार्वजनकि अदालत में गया (जहाँ बाद में परम पवत्रि ईश्वर की माता को समर्पति एक चर्च बनाया गया) और इकट्ठी हुई भीड़ के सामने न्यायाधीश की कुर्सी पर बैठ गया; फरि उसने शहीद को पूछताछ के लिए अपने सामने लाने का आदेश दयिा। जब संत को राज्यपाल के सामने लाया गया, तो राज्यपाल ने उनसे पूछा:

'क्या तुम्हें शर्म नहीं आती, तुम जो इतने सुंदर और सम्माननीय युवक हो, एक अल्पज्ञात नासरी की पूजा करने में जसिे क्रूस पर चढ़ाया गया था? क्या यह बेहतर नहीं होगा कि तुम इस दुष्ट धर्म को त्याग दो? हमारे देवताओं की पूजा करो, और फरि राजा तुम्हें दया दखिाएगा।'

शहीद ने उत्तर दयिा:

'मेरी महमिा और प्रशंसा क्रूस पर चढ़ाए गए मसीह, मेरे परमेश्वर में है; और मैं स्वयं अपने प्रभु के क्रूस के अलावा कसिी और बात पर घमंड नहीं करना चाहता; और पवत्रि वशि्वास के लिए, जसिे आप दुष्ट कहते हैं, मैं मरने को तैयार हूँ। लेकनि आपके देवता सचमुच घृणति हैं; क्योंकि वे दानव हैं; जो कोई भी उनकी पूजा करता है वह लज्जति हो।'

संत के इन शब्दों के बाद, राज्यपाल क्रोध से आग-बबूला हो गया और उसने आदेश दयिा कि संत के मुँह पर वार कयिा जाए और उसे यातना वृक्ष पर लटकाकर भी यातना दी जाए।

हालाँकि संत ने प्रहार सहते हुए, ईश्वर से इस प्रकार प्रार्थना की:

'हे प्रभु, मैं तुझी पर भरोसा करता हूँ; अपनी शक्ति से मेरी रक्षा कर। तू मेरा परमेश्वर, मेरा सहायक, मेरा शरणस्थान और मेरा उद्धारकर्ता है; जो मूर्तयिों की पूजा करते हैं और मुझे नुकसान पहुँचाने की साजशि रचते हैं, वे सब लज्जति हों। हे प्रभु, मैं तुझी को पुकारता हूँ; मुझे अपने शत्रुओं के हाथ में न सौंप।'

और एक बार फरि स्वर्ग से संत के पास एक आवाज़ आई, जसिने उन्हें मजबूत कयिा और कहा:

'डरो मत! साहस रखो!'

तब मसीह के शहीद ने लोगों की ओर मुड़कर कहा:

'सुनो, हे दुष्टो! उन देवताओं पर अपना भरोसा मत करो जन्हिें तुमने अपने हाथों से बनाया है; उस एक परमेश्वर को जानो जसिने शून्य से स्वर्ग और पृथ्वी की रचना की।'

इन शब्दों से लोगों को प्रोत्साहति करते हुए, संत जूलयिन ने तीस से अधकि पुरुषों को मसीह के धर्म में परविर्तति कयिा; फरि उन्हें वापस जेल ले जाया गया।

अगली सुबह, संत को फरि से अदालत के सामने लाया गया। राज्यपाल ने उनसे इन शब्दों में कहा:

'मैं तुम्हें क्षमा करना चाहूँगा, क्योंकि तुम स्वयं को भी नहीं बख्शते और अजेय देवताओं की पूजा करने से इनकार करते हो।'

इन शब्दों पर पवत्रि शहीद ने उत्तर दयिा:

'तुम व्यर्थ में मुझसे बात कर रहे हो; तुम मेरा मन नहीं बदल सकते। मैं उस एक ईश्वर की पूजा करता हूँ जसिकी सभी को पूजा करनी चाहए। इसी ईश्वर ने स्वर्ग और पृथ्वी की रचना की।'

हेगेमोन फ्लेवयिन संत के शब्दों से क्रोधति हो गया और जूलयिन को यातना वृक्ष पर लटकाने और पटिाई तथा लोहे से रगड़कर यातना देने का आदेश दयिा। लेकनि ईश्वर की शक्ति से, जो अपने संतों में अद्भुत है, यातना देने वालों के हाथ कमजोर पड़ गए और उनमें दर्द होने लगा, इसलिए वे न केवल संत को छू नहीं सके, बल्कि वे अपने हाथों में यातना के उपकरण भी नहीं पकड़ सके, और वे कुछ भी करने में पूरी तरह से असमर्थ हो गए।

जब राज्यपाल इस पर बहुत हैरान था, तभी एक दूत आया, जसिने यह घोषणा की कि उनके देवता सेरापसि के मंदरि[5394] का ढाँचा ढह गया था और उस देवता की मूर्ति, अन्य मूर्तयिों के साथ, धूल में मलि गई थी।

यह समाचार सुनकर राज्यपाल और उसके शैतानी सेवक बहुत हैरान और लज्जति हो गए; लेकनि मसीही, जो लोगों के बीच छपि हुए पवत्रि वशि्वास का पालन करते थे, अपने हृदय में आनंदति हुए और मसीह परमेश्वर की महमिा करने लगे।

तब उस स्थान के पास खड़े मूर्तपिूजक सबके सुनने के लिए चल्लिा उठे:

[5394] सरापसि वास्तव में एक मस्रि का देवता था। मस्रि के लोग सरापसि को अपना सर्वोच्च देवता मानते थे, ठीक उसी तरह जैसे ज्यूस को यूनानयिों और रोमनों द्वारा प्रमुख देवता माना जाता था। सरापसि की पूजा केवल मस्रि तक ही सीमति नहीं थी; ईसा पूर्व दूसरी शताब्दी में, सरापसि का पंथ ग्रीस और रोम तक फैल गया। सेरापसि की पूजा को सम्राट नीरो और एंटोननिस पयिस का वशिेष संरक्षण प्राप्त था, जनिका उल्लेख संत-चरत्रि में मलिता है। रोम में सेरापसि को समर्पति कई मंदरि थे, और इस देवता के नाम वाले कई शलिालेख और स्मारक भी थे।

'इस जादूगर को जल्द से जल्द मौत की सज़ा दी जाए!'

राज्यपाल, क्रोध और द्वेष से भरकर, तुरंत लोगों की मांग मान गया और शहीद को मृत्युदंड की सजा सुनाई, और अपना निर्णय इन शब्दों में व्यक्त किया:

'हम आदेश देते हैं कि जूलियन, जिसे ईसाइयों ने जादू-टोना सिखाया है, जो देवताओं का अपमान करने वाला और राजा के आदेश का अवज्ञाकारी है, उसका सिर तलवार से कलम कर दिया जाए; और हम आदेश देते हैं कि उसका सिर उसी स्थान पर कलम किया जाए जहाँ मंदिर नष्ट किया गया था, ताकि हमारे देवताओं पर हुए अपमान का बदला लिया जा सके।'

और संत को उस स्थान पर ले जाया गया।

वहाँ पहुँचने पर, संत घुटने के बल झुक गए और ईश्वर से इन शब्दों में प्रार्थना की:

'हे ईश्वर की अनंत दया! मैं तुझे धन्यवाद देता हूँ, हे प्रभु, कि तूने मुझे, जो कि अयोग्य हूँ, अपने पवित्र नाम के लिए सहने वाली ऐसी सम्मानजनक मृत्यु का योग्य समझा। इसलिए मैं आपसे विनती करता हूँ, कि आप मेरे इस रक्त-स्राव से मुझे शुद्ध करें, मुझे मेरे पापों से मुक्त करें, और मुझे अपने धन्य राज्य में प्रवेश कराएँ। मेरी आत्मा को शांतिपूर्वक स्वीकार करें। अपनी दया में, उन सभी को न भूलें जो आपके परम पवित्र नाम की महिमा के लिए मेरे दुःख की स्मृति का सम्मान करना चाहते हैं।

संत के इन शब्दों में प्रार्थना करने के बाद, स्वर्ग से एक आवाज सुनाई दी, जिसने इस बात की पुष्टि की कि उनकी प्रार्थना सुनी गई थी और संत को स्वर्गीय लोकों में बुलाया। और पवित्र शहीद जूलियन[5395] का सिर कलम कर दिया गया। उनका पवित्र आत्मा, देह से मुक्त होकर, स्वर्ग में हमारे परमेश्वर मसीह के पास चढ़ गया, जो पिता और पवित्र आत्मा के साथ राज्य करते हैं, जिनका महिमा अब और हमेशा और युगों-युगों तक हो। आमीन।

11 अगस्त

29 जुलाई (पुराना संस्करण)

पवित्र शहीद, कुंवारी सेराफिमा का कष्टकथा

29 जुलाई को स्मरणोत्सव

निष्ठाहीन रोमन सम्राटों द्वारा भड़काए गए भयानक उत्पीड़नों के दिनों में, कई विश्वासियों ने विभिन्न यातनाओं के माध्यम से मसीह के लिए पीड़ा सहन की। उस समय, विडिन गाँव में, एक कुलीन परिवार से आने वाली सावनि नामक महिला के घर में, अंफ़ियोकी की नागरिक, कन्या सेराफ़िमा रहती थीं। अपनी शिक्षाओं के माध्यम से, उन्होंने सावनि को भी ईसाई धर्म की ओर ले आईं।

गवर्नर बेरिलिस ने अपने सेवकों को सावनिा के घर भेजा, और उन्हें आदेश दिया कि वे पवित्र कन्या सेराफिमा को ले जाकर उसके सामने न्याय के लिए पेश करें। धन्य सावनिा ने इसका विरोध किया और उसने अपने बस में सब कुछ किया ताकि संदेशवाहक उस कन्या को ले जाने से रोक सकें। लेकिन संत सेराफिमा ने उससे कहा:

'मेरी स्वामिनी और माँ! मुझे उनके साथ जाने दो। आपको बस मेरे लिए ईश्वर से मन लगाकर प्रार्थना करनी है। मैं अपने प्रभु यीशु मसीह में अपना विश्वास रखती हूँ और मानती हूँ कि वह मेरे पास आएँगे और मुझे उनकी निष्ठापूर्वक सेवा करने की शक्ति देंगे, भले ही मैं अपने पापों के कारण इसके लायक नहीं हूँ।'

तथापि, धन्य सविनिा अपने आपको उस पवित्र कन्या को इगेमोन के दुष्ट सेवकों के साथ जाने देने के लिए तैयार नहीं कर सकीं, और इसलिए वह स्वयं उसके साथ इगेमोन से मिलने चली गईं। चूँकि वह कुलीन जन्म की थी, एक प्रसिद्ध सेनेटोरियल परिवार से संबंध रखती थी, राज्यपाल, उसे अपने सामने देखकर हैरान रह गया और उसने सेंट सेराफिमा के साथ उसे घर भेजने की जल्दी की।

[5395] जूलियन की मृत्यु का सटीक वर्ष अज्ञात है। संत की मृत्यु दूसरी शताब्दी के मध्य में हुई मानी जाती है।

तीन दनि बीत गए। राज्यपाल ने मुकदमा आयोजति करने का आदेश दयिा और शहर के मजस्टि्रेटों को सेराफमिा को उसके सामने लाने का हुक्म दयिा। धर्मद्रोही शासकों ने पवत्रि कन्या को पकड़ लयिा और उसे मुकदमे के लिए ले गए। धन्य सवनिा एक बार फरि उसके पीछे चली गईं। जब उन्होंने देखा कि सेराफमिा को उसके दुश्मनों के हाथों से छुड़ाने का कोई रास्ता नहीं है, तो उन्होंने हेगेमोन से पुकारा:

'हे जंगली एशयिाई कुत्ते! इस पवत्रि कन्या को नुकसान पहुँचाने की हम्मित मत करना। तू स्वयं वनिष्ट हो जाएगा, क्योंकि मसीह हमारा परमेश्वर हमारे साथ है, और वह तुझे और तेरे दुष्ट राजाओं को जीवति परमेश्वर के सेवकों पर थोपे गए अनगनित दुखों के लिए अनंत यातनाओं से दंडति करेगा।'

यह कहकर, सवनिा रोते हुए अपने घर लौट आई।

तब राज्यपाल ने सेराफमिा की ओर मुड़कर ये शब्द कहे:

'अमर देवताओं को बलदिान अर्पति करो, जनिकी पूजा हमारे राजा भी करते हैं।'

सराफमिा ने उत्तर दयिा:

'मैं सर्वशक्तमिान ईश्वर की आराधना और सेवा करती हूँ, जसिने स्वर्ग और पृथ्वी और उनमें जो कुछ भी है, उसे बनाया है। जन्हिें आप मुझे पूजने का आदेश देते हैं, वे देवता नहीं, बल्कि राक्षस हैं; मेरे लिए उन्हें सम्मान देना उचति नहीं है, क्योंकि मैं एक ईसाई हूँ।'

गवर्नर ने उससे कहा:

'तो आगे आओ और अपने मसीह को वही बलदिान अर्पति करो जो हमारे देवताओं के लिए तैयार कयिा गया है।'

सराफ़मिा ने उत्तर दयिा:

'मैं हर दनि उसको बलदिान चढ़ाती हूँ; मैं उसकी पूजा करती हूँ और दनि-रात उससे प्रार्थना करती हूँ।'

तब राज्यपाल ने पूछा:

'आपके मसीह का मंदरि कहाँ है? आप उन्हें कौन सा बलदिान चढ़ाती हैं?'

सेराफमिा ने उत्तर दयिा:

'मसीह को प्रसन्न करने वाला बलदिान मेरी कुँवारीपन को पवत्रिता में बनाए रखने में, और उनकी सर्वशक्तमिान सहायता से, दूसरों को भी इस कृत्य की ओर ले जाने में नहिति है।'

गवर्नर ने कहा:

'क्या यही तुम्हारा चर्च और तुम्हारा बलदिान है?'

सेराफमिा ने उत्तर दयिा:

'सच्चे ईश्वर को जानने और एक धार्मकि जीवन के माध्यम से केवल उसी की सेवा करने से बड़ा कुछ भी नहीं है।'

गवर्नर ने कहा:

'क्या तुम स्वयं, जैसा तुम कहती हो, अपने ईश्वर के लिए चर्च हो?'

सेराफमिा ने उत्तर दयिा:

– चूंकि मैं अपने परमेश्वर की सर्वशक्तमिान सहायता से स्वयं को शुद्ध रखता हूँ, मैं वास्तव में उनकी कलीसयिा हूँ। हमारे पवत्रि धर्मग्रंथों में लखिा है: *'तुम जीवति परमेश्वर का मंदरि हो'* (2 कुरन्थियिों 6:16)।

गवर्नर ने पूछा:

– लेकनि अगर तुम्हारे साथ बलात्कार कयिा जाए और तुम्हारी कुँवारी अवस्था कलंकति हो जाए, तो क्या तुम फरि भी अपने ईश्वर के लिए एक चर्च बनी रहोगी?

सराफमिा ने पवत्रि शास्त्र के शब्दों में उत्तर दयिा:

'यदि कोई परमेश्वर के मन्दरि को नाश करता है, तो परमेश्वर उसे नाश करेगा' (1 कुरन्थियिों 3:16–17)।

लेकनि इगमेन को इन शब्दों की समझ नहीं आई और उसने आदेश दयिा कि सेराफमिा को मस्रि के दो नर्लिज्ज युवकों के हवाले कर दयिा जाए, ताकि वे उसके साथ पूरी रात बति सकें। इन दुष्ट युवकों ने उसे पकड़ लयिा और एक अंधेरी कोठरी में ले गए। पवत्रि कुंवारी ने गहरी भक्ति के साथ प्रभु से प्रार्थना की:

'हे प्रभु यीशु मसीह, मेरे कुँवारपन के सच्चे रक्षक और संरक्षक, मैं आपकी सहायता के लिए पुकारती हूँ! हे प्रकाश और अनंत आनंद, मैं आपको पुकारती हूँ! हे प्रभु, जसिने अपने प्रेरति पौलुस को जेल में मलिने और बल देने के लिए दर्शन दयिा था, मेरी ओर भी देखिए और अपनी दीन दासी पर दया कीजिए। मुझे इन युवकों की दुष्ट कामनाओं से

बचाओ। मैं आपसे वनिती करती हूँ, उनकी आँखें अँधी कर दो, और उन्हें अपनी दासी पर हाथ न उठाने दो, जो आप पर भरोसा करती है! उन्हें मेरे शरीर को अपवत्रि न करने दो, जो आपकी पवत्रिता से मुहरबंद है। उनकी नरि्लज्जता को लज्जति कर दो और मेरे भ्रष्टाचार को अनुमतनि दें; आज्ञा दें कि मुझे शीघ्र ही आप तक ले जाया जाए। हे दयालु यीशु, अपनी दासी सवनिा पर भी दृष्टि डालें, और उसे अपनी शक्ति से मजबूत करें, ताकि क्रूर शत्रु, शैतान, वजियी न हो सके; क्योंकि उसने भी मेरे कारण बहुत कष्ट उठाया है। हे प्रभु यीशु मसीह, धन्य और महमिामय, और पति तथा पवत्रि आत्मा के साथ सदा और सदा के लिए महमिामंडति, मेरी सुनो। आमीन।

और देखो, रात के पहले पहर में, जब दुष्ट युवक अपना शर्मनाक काम करने ही वाले थे, अचानक एक बड़ी हलचल मच गई और एक भयंकर भूकंप शुरू हो गया, जसिकी गूँज आस-पास के सभी नविासयिों तक पहुँची। वे युवक नरि्जीव की तरह जमीन पर गरि पड़े, और उनके सभी अंग सुन्न पड़ गए। ईश्वर से ऐसी शीघ्र सहायता पाकर, उस नरि्दोष कन्या ने स्वर्ग की ओर अपने हाथ उठाकर, आँसुओं से प्रभु का धन्यवाद कयिा और पूरी रात प्रार्थना में बतिाई। सुबह-सुबह, राज्यपाल द्वारा भेजे गए दूत यह पूछने आए कि क्या युवकों ने अपना इरादा पूरा कयिा था। चैपल में प्रवेश करने पर, उन्होंने देखा कि पवत्रि कन्या प्रार्थना कर रही थी, जबकि युवक मृतकों की तरह पड़े थे, उनमें न तो उठने की और न ही बोलने की ताकत थी; और केवल उनकी खुली आँखें ही इस बात की गवाही दे रही थीं कि वे अभी भी जीवति थे। इस चमत्कार को देखने के लिए एक बड़ी भीड़ इकट्ठा हो गई। यह सुनकर कि क्या हुआ था, राज्यपाल ने फरि से ईश्वर की सेविका, सेराफमिा को न्याय के लिए अपने सामने लाने का आदेश दयिा और उससे कहा:

'क्या तुम्हारी कामुक इच्छा शांत हो गई है, सेराफमिा, या क्या तुम अभी भी वासना में डूबी हुई हो?'

संत सेराफमिा ने उत्तर दयिा:

'मैं देखता हूँ कि तुम्हारा हृदय भ्रष्ट है, और शैतान तुम्हारे भीतर वास करता है; इसीलिए तुम इस तरह ईश्वर की नदिा करती हो। लेकनि मैं उन युवकों को नहीं जानता जनिके बारे में तुम बात कर रही हो, और न ही मैंने यह महसूस कयिा कि वे मेरे साथ थे।'

गवर्नर ने कहा:

'तो क्या तुम यह दावा करती हो कि उन्होंने पूरी रात तुम्हारे साथ नहीं बतिाई?'

सराफमिा ने उत्तर दयिा:

'मेरे साथ वह था जसिकी मैं दासी हूँ और जसिने मुझे अपने लहू से मुक्ति दिलिाई।'

इगेमोन ने पूछा:

'तो वह कौन है?'

सेराफमिा ने उत्तर दयिा:

'मेरे रक्षक और संरक्षक, प्रभु यीशु मसीह।'

गवर्नर ने कहा:

'तुम इतनी बकवास क्यों कर रहे हो? मुझे यह बताओ, कसि जादू-टोने से तुमने उन युवकों को लकवाग्रस्त कर दयिा?'

संत सेराफमिा ने उत्तर दयिा:

'हम ईसाइयों के लिए जादू-टोना करना उचति नहीं है; लेकनि जन्हिें तुम अपनी दुष्ट जादू-टोने से मार डालते हो, उन्हें हमारे प्रभु और स्वामी यीशु मसीह द्वारा तब जीवति कर दयिा जाता है जब उनकी सहायता मांगी जाती है।'

राज्यपाल ने कहा:

'अगर तुम्हारा मसीह सभी जादुई चालाकयिों पर काबू पा सकता है, तो उसे इन युवकों को उनकी पूर्व शारीरकि शक्ति वापस करने के लिए पुकारो। तब हम खुद उनसे जान सकते हैं कि वे सारी रात तुम्हारे साथ क्या कर रहे थे।' मैं स्वयं लगभग नश्चिति हूँ कि आपने उन्हें कसिी दुष्ट जादू-टोने से होश खोने पर मजबूर कर दयिा है, ताकि वे आपकी अशुद्धता का खुलासा न कर सकें।

सेराफमिा ने उत्तर दयिा:

'जसि ईश्वर की मैं सेवा करती हूँ, वह सर्वशक्तमिान है, और उसके लिए कुछ भी असंभव नहीं है।'

राज्यपाल ने कहा:

'तो उन युवकों को होश में लाओ, ताकि उनका स्वास्थ्य ठीक हो जाए और वे बोल सकें।'

सेराफमिा ने उत्तर दयिा:

'तुम अभी भी सोचते हो कि मैं एक जादूगरनी हूँ। लेकनि मुझे जादू-टोने के बारे में कुछ भी नहीं पता। मैं अपने ईश्वर से प्रार्थना करती हूँ, और उनके माध्यम से वह जो माँगा जाता है, न केवल मुझे, बल्कि हर उस व्यक्ति को भी प्रदान करते हैं जो पूरे दलि से उनकी पुकार लगाता है।'

गवर्नर ने कहा:

'तुम अपनी मर्जी करो, लेकनि उन युवकों को बोलने की शक्ति वापस मलि जानी चाहए, और फरि हम देखेंगे कि तुमने अपनी कुँवारी अवस्था बरकरार रखी है या नहीं।'

सेराफमिा ने उत्तर दयिा:

'मैं तुम्हें पहले ही बता चुकी हूँ कि मैं कोई जादू-टोना नहीं जानती: मैं केवल ईश्वर से प्रार्थना कर सकती हूँ कि वह अपनी दया दखिाएँ।'

गवर्नर ने कहा:

'तो जाओ उस जगह जहाँ जवान पुरुष हैं, और उनके लए अपने ईश्वर से प्रार्थना करो।'

सेराफमिा ने उत्तर दयिा:

'मेरे लए वहाँ जाना उचति नहीं है; क्योंकि तब दूसरों को इस चमत्कार को देखने का अवसर नहीं मलिेगा, और, अपने अवश्विास में, वे भी मेरे बारे में वैसा ही सोचेंगे जैसा आप सोचते हैं—कि मैं एक जादूगरनी हूँ। यह बेहतर होगा कि नर्जिीव युवकों को यहाँ लाने का आदेश दयिा जाए।'

इगेमोन ने युवकों को न्यायस्थल पर लाने का आदेश दयिा। जब उन्हें लाया गया, तो उन्हें देखकर सभी चकति रह गए। वे इतनी बुरी तरह से लकवाग्रस्त थे कि ऐसा लग रहा था कि न तो उनकी जीभ थी, न हाथ और न ही पैर।

हेगेमोन ने कहा:

'सराफमिा! अब अपने ईश्वर से प्रार्थना करो कि ये युवक फरि से स्वस्थ हो जाएँ।'

तब संत सेराफमिा ने स्वर्ग की ओर अपने हाथ उठाकर गहरी भक्ति के साथ प्रार्थना करना शुरू कयिा:

हे सर्वशक्तमिान प्रभु ईश्वर! आपने स्वर्ग, पृथ्वी और समुद्र, और उन पर जो कुछ भी है, उसे बनाया है। अपने शष्यिों और प्रेरतिों के द्वारा, आपने मृतकों को जीवति कयिा, कोढ़यिों को चंगा कयिा, और मूक को बोलने तथा बधरि को सुनने की शक्ति प्रदान की। अब मेरी, अपनी दासी, जो आप में अपनी आशा रखती है, की प्रार्थना सुनें। मेरी प्रार्थना को तुच्छ न समझइि, और इस दुष्ट शासक के अवश्विास के कारण मुझसे मुंह न मोड़इि, बल्कि उन सभी के सामने, जो इस चमत्कार की प्रतीक्षा कर रहे हैं, इन युवकों को स्वास्थ्य प्रदान कीजइि। वह पागल लज्जति हो जाए, जसिने उन्मत्त होकर, उन पर अत्याचार कयिा है जो आप पर वश्विास करते हैं। हे प्रभु, शीघ्रता करें, अपनी शक्ति का प्रकट करें, ताकि वे जान जाएँ कि केवल आप ही चमत्कार करने वाले ईश्वर हैं, और आप के सवािय कोई और नहीं है।

इस प्रकार प्रार्थना करने के बाद, संत सेराफमिा जवानों के पास गईं और उन्हें छूते हुए, पुकार कर कहा:

'हमारे प्रभु यीशु मसीह के नाम पर, मैं तुम्हें आज्ञा देती हूँ: उठ खड़े हो जाओ!'

वे युवक तुरंत खड़े हो गए और बोलने लगे। यह देखकर, सभी भय और आश्चर्य से भर गए।

लेकनि हेगेमोन ने कहा:

'क्या तुमने यह ध्यान नहीं दयिा कि जब तक उसने अपने हाथों से युवकों को नहीं छुआ, तब तक वह अपना जादू नहीं कर सकती थी?'

फरि वह जवानों की ओर मुड़ा और पूछा:

'यह औरत तुम्हारी समझदारी और शारीरकि ताकत कैसे छीन सकती थी?'

युवकों ने उत्तर दयिा:

'हे हेगेमोन! जब हम आपकी आज्ञा पर उसकी उपस्थति में पहुँचे, तो अचानक एक युवक प्रकट हुआ, जो सूर्य की तरह सुंदर और तेजस्वी था। वह हमारे और उस युवती के बीच खड़ा हो गया। उसकी असाधारण करिणों ने हमें भय, कांपना, अंधकार और पूर्ण पक्षाघात से भर दयिा। उस पल से अब तक, हम इसी हालत में रहे हैं। अब आप खुद ही फैसला करें: क्या वह एक जादूगरनी है, या उसका ईश्वर सचमुच महान है?

हेगेमोन ने सेराफमिा की ओर मुड़कर कहा:

'मुझे समझाओ, सेराफमिा, तुमने यह कसि चाल से कयिा है, और मैं तुम्हें तुरंत रहिा कर दूँगा।'

सेराफमिा ने उत्तर दयिा:

'मुझे अब बुरी शक्षिाओं से घृणा हो गई है; वास्तव में, सभी ईसाई सभी जादू-टोने और तंत्र-मंत्र को दूर कर सकते हैं और उनसे कोई हानि नहीं उठा सकते, बशर्ते वे अपने प्रभु का नाम लें।'

गवर्नर ने उससे कहा:

– मैं देख सकता हूँ कि तुम अपनी जादू-टोने से कतिनी क्षमता रखती हो; हालाँकि, मैं तुम्हें यह बता दूँ: अगर तुम मेरे देवताओं को बलदिान नहीं चढ़ाओगी, तो मैं तुम्हारा सरि कलम करवा दूँगा।

सेराफमिा ने उत्तर दयिा:

'तुम जो चाहो करो, पर मैं तुम्हारे राक्षसों को बलदिान नहीं चढ़ाऊँगी, और न ही मैं तुम्हारे पति शैतान की इच्छा पूरी करूँगी, क्योंकि मैं एक ईसाई हूँ।'

तब राज्यपाल ने आदेश दयिा कि उसके शरीर को दो मोमबत्तयिों से जलाया जाए। लेकनि मोमबत्तयिाँ अचानक बुझ गईं, और जो लोग उसे जला रहे थे वे जमीन पर गरि पड़े। संत सेराफमिा ने स्वर्ग की ओर अपनी आँखें उठाकर कहा:

'हे प्रभु यीशु मसीह, मेरे सभी शत्रु लज्जति और अपमानति हों।'

राज्यपाल ने उससे कहा:

'देवताओं को बलदिान चढ़ाओ, ताकि तुम यातनाओं में न मरो।'

सराफमिा ने उत्तर दयिा:

'मैं ठीक इसी लिए तुम्हारे राक्षसों को बलदिान देने से इनकार करती हूँ, ताकि मैं शाश्वत मृत्यु न भोगूँ।'

गवर्नर ने उससे कहा:

'हे पागल और उन्मत्त महलिा! राजा की आज्ञाओं का पालन करो, अमर देवताओं की पूजा करो, और तुम खुद को यातना और वनिाश से मुक्त कर लोगी।'

सेराफमिा ने उत्तर दयिा:

'तुम स्वयं राक्षसों के वश में और पागल हो, क्योंकि तुम जीवति और सच्चे परमेश्वर का परत्यिाग करते हो और राक्षसों की पूजा करते हो, जनिके साथ तुम नाश हो जाओगे। जहाँ तक मेरी बात है, मैं स्वयं को अमर परमेश्वर के लिए एक बलदिान के रूप में अर्पति करती हूँ, काश कि वह मुझे स्वीकार कर लें, यद्यपि मैं एक पापी हूँ, फरि भी एक सच्ची ईसाई हूँ।'

तब राज्यपाल ने उसे डंडों से पीटने का आदेश दयिा। जब ऐसा कयिा गया, तो अचानक एक बड़ा भूकंप आ गया। जसि डंडे से संत को पीटा जा रहा था, उसमें से एक टुकड़ा उड़कर राज्यपाल की दाहनिी आँख में जा लगा, और तीन दनि बाद वह अंधा हो गया।

तब राज्यपाल क्रोध से आग-बबूला हो गया और नम्निलखिति आदेश जारी कयिा:

'हम आदेश देते हैं कि सेराफमिा, जो न केवल शाही फरमानों का तरिस्कार करती है, बल्कि गंभीर अपराधों की भी दोषी है, को तलवार से मौत की सज़ा दी जाए।'

और पवत्रि कुंवारी सेराफमिा का सरि कलम कर दयिा गया।

उदार सावनिा ने, अपने पवत्रि शरीर को बड़ी श्रद्धा से लेकर, उसे मसीह की एक ऐसी कन्या और शहीद के अनुरूप सम्मान के साथ दफनाया, और, एक महान खजाने और सबसे कीमती मोती के रूप में, उसे उसकी नई ताबूत में रख दयिा, मसीह की स्तुति करते हुए, सच्चे परमेश्वर, जो पति और पवत्रि आत्मा के साथ सदा के लिए महमिामय हैं। आमीन।

शहीद संत कैलनिकिस का कष्टकथा

29 जुलाई को स्मरणोत्सव

पवत्रि शहीद कैलनिकिस का जन्म सलिसिया में हुआ था और वह ईसाई भक्ति में पले-बढ़े। वयस्क होने पर, कैलनिकिस ने देखा कि कैसे बहुत से लोग मूर्तपिूजक दुष्टता से चपिके हुए थे; दैवीय भ्रम से अंधा होकर, वे प्रभु मसीह से दूर थे, नर्जिीव पत्थरों में वश्विास करते थे और मूर्तयिों को बलदिान देते थे। कैलनिकिस इन लोगों के वनिाश पर बहुत रोए और उन्होंने खुलकर उन्हें सत्य का ज्ञान सखिाने का संकल्प लयिा, ताकि वे अपनी भूल से मुड़कर मसीह परमेश्वर पर वश्विास करें। प्रेरतिों की तरह, परमेश्वर का वचन प्रचार करते हुए, कैलनिकिस कई कस्बों और गांवों में घूमे, और

अंततः गलातिया के शहर एंकेरा पहुँचे। वे इस शहर में काफी समय तक रहे। मानव आत्माओं के उद्धार के लिए चतिति और मसीह के सुसमाचार के प्रचार में परिश्रम करते हुए, उन्होंने कई लोगों को मसीह के पास लाया। इसीलिए, उसे अविश्वासियों ने पकड़ लिया और मुकदमे के लिए राजकुमार सैकेरडॉन के सामने पेश किया। सैकेरडॉन मूर्तियों का एक उत्साही पूजक, मसीह का शत्रु और मसीहियों का एक क्रूर उत्पीड़क था। दुष्टों ने कैलनिकिस को उसके सामने लाकर पुकारा:

'यह है विदेशी कैलनिकिस, जो लोगों को देवताओं को बलिदान न चढ़ाने और उनकी पूजा न करने की शिक्षा देता है, और उसने पहले ही कई लोगों को गुमराह कर दिया है।'

संत को गुस्से से घूरते हुए, राजकुमार ने धमकाते हुए उससे पूछताछ करना शुरू कर दिया:

'तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई, हे पागल, यहाँ एक अजनबी होकर, लोगों को उन देवताओं को त्यागने की शिक्षा देकर भ्रष्ट करने की, जिन्होंने इस संसार की रचना की है और जिन्हें राजा, सभी अधिकारी और संपूर्ण ब्रह्मांड पूजते हैं? क्या तुम उनकी शक्ति को नहीं जानते?'

संत ने नम्रता से उत्तर दिया:

'मैं मसीह का सेवक हूँ। लोगों को विनाश की ओर जाते देख मेरा हृदय उनके लिए व्यथित होता है, और मैं जहाँ तक हो सके, उन्हें अच्छी शिक्षा के द्वारा अँधेरे से प्रकाश में और विनाश से उद्धार की ओर मोड़ने का प्रयास करता हूँ। क्योंकि हमारी पुस्तकों में लिखा है: *"जो कोई एक पापी को उसके भटकने के मार्ग से फेर देता है, वह उसकी आत्मा को मृत्यु से बचाएगा और बहुत से पापों को ढाँकेगा"* (याकूब 5:20)। मैं भी आपको प्रकाश की ओर ले जाना चाहता हूँ, उस दैवीय अंधकार से दूर जो आपको कैद किए हुए है, और आपको सच्चे मार्ग पर स्थापित करना चाहता हूँ।

क्रोध से भरा राजकुमार बोला:

'क्या तुम्हें सच में लगता है कि मैं देवताओं को त्याग दूँगा और तुम्हारी पागल बातों पर ध्यान देकर, एक धन्य जीवन के बजाय एक कड़वी मृत्यु का चुनाव करूँगा? नहीं, कभी नहीं! इसके विपरीत, मैं तुम्हें, तुम्हारी इच्छा के विरुद्ध भी, हमारे देवताओं की पूजा करने के लिए मजबूर करूँगा। क्योंकि मैं तुम्हें भयंकर यातनाओं में डालूँगा, और फिर मैं देखूँगा कि क्या तुम्हारा ईश्वर तुम्हें मेरी शक्ति से छुड़ाने आएगा। मैं तुम्हारे शरीर पर तब तक कोई दया नहीं दिखाऊँगा जब तक तुम देवताओं की शक्ति और अधिकार को नहीं मान लेते और उन्हें बलिदान नहीं चढ़ाते।"

संत ने साहसपूर्वक सेकरडोन को उत्तर दिया:

'मेरे प्रभु के लिए सहे गए किसी भी कष्ट को मैं वैसे ही स्वीकार करता हूँ जैसे भूखे को भोजन। इसलिए, विलंब मत करो, और धमकियों पर समय बर्बाद मत करो, बल्कि तुरंत अपना यातना-कर्म शुरू करो। यह मेरा शरीर है—यह यातना के लिए तैयार है। लेकिन मेरी आत्मा में स्वयं परमेश्वर हैं, जो मेरे लिए मोक्ष और तुम्हारे लिए विनाश तैयार करेंगे।'

और भी क्रोधित होकर, राजकुमार ने कहा:

'दुर्भाग्यशाली मनुष्य! तुझे ऐसी बातें कहने की हिम्मत कैसे हुई? मैं देवताओं की शपथ लेता हूँ कि मैं तुझ पर कोई दया नहीं दिखाऊँगा, बल्कि तेरे हड्डियों से मांस नोच लूँगा और तेरे लिए हर तरह की यातनाएँ रचूँगा, जब तक कि तू एक भयानक मृत्यु को प्राप्त नहीं हो जाता।'

संत ने उत्तर दिया:

'तुम सभी अधर्मी लोगों में सबसे नीच हो! तुम अपने क्रोध में समय बर्बाद करते रहोगे, बजाय इसके कि काम पर लगो? मुझे यातना दो, और मसीह के एक अनुयायी के साहस और उदारता को देखो, जो अपने उद्धारकर्ता से विजय की माला की प्रतीक्षा कर रहा है।'

तब यातनाकर्ता ने शहीद के कपड़े उतारकर उसे बैल की खाल की रस्सियों से निर्दयतापूर्वक पीटने का आदेश दिया। उन्होंने संत को बहुत देर तक पीटा, जबकि उद्घोषक चिल्ला रहा था:

'कैलनिकिस, देवताओं को मान, और उनकी प्रार्थना कर, और वे तुम्हें तुम्हारे कष्टों से मुक्ति देंगे!'

लेकिन पवित्र शहीद यातना देने वाले और उसकी यातनाओं पर हँस पड़ा, और ऊँचे स्वर में बोला:

'तुमने मुझे बड़े कष्टों की धमकी दी, फिर भी तुम केवल सबसे हल्की सजा दे रहे हो। मुझे गंभीर घाव दो; मुझे सबसे क्रूर यातना दो: क्योंकि मैं न आग से डरता हूँ और न ही तलवार से भयभीत हूँ; मैं मृत्यु का मज़ाक उड़ाता हूँ, क्योंकि मैं अपने ईश्वर से अनंत जीवन की प्रतीक्षा कर रहा हूँ।'

तब राजकुमार ने शहीद को एक पेड़ से लटकाने और उसके शरीर में लोहे की कीलें ठोकने का आदेश दिया। इस प्रकार उसकी हड्डी तक मांस छेद दिया गया।

लेकिन संत इस यातना पर हँसते रहे, जैसे यह उनका अपना शरीर नहीं बल्कि किसी और का शरीर था जिसे यातना दी जा रही थी, और उन्होंने राजकुमार से कहा:

'आदेश दो कि मेरी खाल और भी बुरी तरह उधेड़ी जाए, क्योंकि जितना अधिक तुम मेरे शरीर की खाल उधेड़ते हो, उतना ही अधिक तुम मेरी आत्मा को पोषित करते हो: मसीह मेरी मदद करते हैं; उनकी कृपा से मजबूत होकर, मुझे इन यातनाओं से कोई दर्द महसूस नहीं होता है।'

इसके बाद, यातनाकर्ता ने आदेश दिया कि मसीह के शहीद को पेड़ से उतार लिया जाए, तेज कीलों वाले लोहे के जूते पहनाए जाएं, एन्सीरा से अस्सी स्टेडियम दूर गंग्रा शहर ले जाया जाए और वहाँ जला दिया जाए। उसने ऐसा इसलिए करने का फैसला किया क्योंकि उस शहर में कैलनिकिस ने बहुत से लोगों को मसीह के धर्म में परिवर्तित कर दिया था। उसे लगा कि कैलनिकिस की शहादत का दृश्य देखकर, ईसाई बने ये नए लोग भयभीत हो जाएँगे और अपने पुराने धर्म पर लौट आएँगे। इस प्रकार, उस क्रूर राजकुमार ने मसीह के योद्धा को अपने क्रूर सैनिकों के हवाले कर दिया और उन्हें आदेश दिया कि वे स्वयं अपने तेज घोड़ों पर सवार हों, और शहीद को अपने आगे धकेलते हुए, उसे प्रहारों से तेजी से चलने के लिए मजबूर करें। कीलों से जड़े लोहे के जूतों में, शहीद ऐसे चल रहा था मानो कीलों का कोई दर्द महसूस नहीं कर रहा हो, और उसने दाऊद का एक भजन गाया: *'मैंने यहोवा पर अपना भरोसा रखा है, और वह मेरी ओर झुका है और मेरी पुकार सुनी है; उसने मुझे विनाश की खाई से, कीचड़ भरी दलदल से निकाला, और मेरे पैरों को चट्टान पर स्थिर किया और मेरे कदमों को दृढ़ किया'* (भजन संहिता 39:2-3)।

तो वह अपने निर्धारित यात्रा पर निकल पड़ा और घोड़सवारों से आगे, अपनी इच्छा से, तेजी से चल पड़ा।

जब वे साठ स्टेडियम का सफर तय करके मातृका नामक स्थान पर पहुँचे, तो सैनिक सूर्य की तीव्र गर्मी के कारण प्यास से त्रस्त होने लगे—क्योंकि यह जुलाई का महीना था। रास्ते में पानी नहीं मिल रहा था, और सैनिक खुद थक चुके थे, जबकि उनके घोड़े मुश्किल से सांस ले पा रहे थे। तब उन्होंने आँसुओं के साथ संत से पुकारा:

'हे सच्चे ईश्वर के सेवक, हम पर दया करो, जो अपनी ही जान से निराश हो रहे हैं। अपने ईश्वर से प्रार्थना करो कि वह हमें पानी दे, कहीं हम मर न जाएँ। हमने सुना है कि आपका ईश्वर सर्वशक्तिमान है। तो फिर, उस पीड़ा को भूल जाओ जो हमने तुम्हें दी है: हमने तुम्हें अपनी इच्छा से नहीं सताया, बल्कि राजकुमार की आज्ञा से सताया है।'

जब संत कैलनिकिस ने देखा कि वे प्यास से मर रहे थे, तो उन्होंने उन पर दया की और अपने दुश्मनों को भलाई करना चाहकर, उस सड़क पर एक चट्टान के पास खड़े हो गए जहाँ यह घटना हुई थी; उन्होंने अपनी आँखें आकाश की ओर उठाईं और प्रार्थना करने लगे:

हे स्वर्ग और पृथ्वी, समुद्र और सारी सृष्टि के प्रभु! प्राचीन काल में, आपने मरुभूमि में यात्रा करते समय मूसा और उनके साथ के लोगों को चट्टान से पानी दिया था। अपने चमत्कार एक बार फिर दिखाइए: अपनी आज्ञा से इस चट्टान से पानी बहा दीजिए, और इन लोगों की प्यास बुझा दीजिए, ताकि जो लोग आपको नहीं जानते, वे भी आपके महिमामय कार्यों को देखें और आपका पवित्र नाम महिमामय हो।

उसने अपनी प्रार्थना समाप्त करते ही चट्टान से जीवन-दायक जल का एक सोता फूट पड़ा। सभी ने पिया, अपनी प्यास बुझाई, और ऊँचे स्वर में पुकार उठे:

'महान है ईसाई परमेश्वर, और सबसे गौरवशाली!'

उस घड़ी से, यह झरना पानी देना कभी बंद नहीं हुआ, जो शहीद की प्रार्थनाओं के माध्यम से हुए ईश्वर के चमत्कार की एक अविस्मरणीय यादगार है।

पर्याप्त रूप से ठंडा होने के बाद, योद्धाओं और उनके घोड़ों ने बिना किसी कठिनाई के अपनी बाकी यात्रा पूरी की और गंग्रा पहुँचे। वे अपने उपकारी, कैलनिकिस—जिन्होंने उनकी यात्रा ( ) में निश्चित मृत्यु से बचाया था—को मृत्युदंड देने के लिए अनिच्छुक थे। लेकिन, इस डर से कि राजकुमार अपने गुस्से में उन्हें खुद ही मौत की सजा दे देगा, उन्होंने राजकुमार का आदेश पूरा किया। भट्टी प्रज्वलित करने के बाद, उन्होंने शहीद को सीधे आग के पास रख दिया। लेकिन वह, आनंदित और गौरवान्वित होकर, उसने क्रॉस का चिह्न बनाया और प्रार्थना करना शुरू कर दिया:

'हे स्वर्गीय पिता! मैं आपको धन्यवाद देता हूँ कि आपने मुझे अपने पवित्र नाम के लिए मरने के योग्य समझा। मेरी आत्मा को शांतिपूर्वक ग्रहण करें और सर्वशक्तिमान परमेश्वर, अपने शत्रुओं को लज्जित करें!'

ये शब्द कहकर, वह आग से धधकती भट्टी के बलिकुल बीच में चला गया, और लेटकर उसने अपनी पवत्रि आत्मा को ईश्वर के हाथों में सौंप दयिा। जब भट्टी ठंडी हो गई, तो उसका सम्माननीय शरीर बनिा कसिी चोट के पाया गया। वशि्वासयिों ने उसे उठाया और उचति सम्मान के साथ दफनाया, और त्रमिूर्त मिें एक परमेश्वर, पति, पुत्र और पवत्रि आत्मा की महमिा की। हमसे भी उसकी महमिा और सम्मान हो, अब और हमेशा, और युगों-युगों तक। आमीन।

कॉन्टाकयिन, स्वर 2:

अब तुमने योग्य रूप से स्वर्गीय राज्य का उत्तराधकिार प्राप्त कयिा है: क्योंकि, मसीह के महान प्रेम से प्रज्वलति होकर, तुमने बहादुरी से कैलनिकिस की आग का सामना कयिा। अब भी उनके सामने खड़े होकर, हम सभी के लिए प्रार्थना करना न छोड़ना।

12 अगस्त

30 जुलाई (पुराना संस्करण)

पवत्रि प्रेरति सलिास, सलिवान, क्रसि्पस और उनके साथ अन्य

30 जुलाई को स्मरणोत्सव

प्रेरति सेंट साइलस, जनि्हें वरषि्ठ प्रेरतिों ने परमेश्वर के वचन का प्रचार करने के कार्य के लिए चुना था, ने मसीह की शकि्षाओं को प्रचारति करने में बहुत परशि्रम कयिा, पहले पवत्रि प्रधान प्रेरति पौलुस के साथ, और बाद में उनके बनिा, अकेले। जब यरूशलेम की परषिद ने एंटओिक की कलीसयिा के लिए एक पत्र तैयार कयिा जसिमें यह नरि्देश दयिा गया था कि जो अन्यजाति मिसीह के पवत्रि वशि्वास को ग्रहण करते हैं, उनका खतना नहीं कयिा जाना चाहिए, तो संत सलिास को अन्य वशिषि्ट पुरुषों के साथ वहाँ भेजा गया, जैसा कि संत लूका प्रेरतिों के काम में लखिते हैं:

– *'तब प्रेरतिों और बुज़ुर्गों ने, सारी कलीसयिा के साथ मलिकर, यह नरि्णय लयिा कि वे अपने बीच से कुछ लोगों को चुनें और उन्हें पौलुस और बर्नबास के साथ अंतीयकयिा को भेजें, अर्थात् यहूदा, जसिे बरसबस उपनाम मलिा था, और सलिास, जो भाइयों में प्रतषि्ठति पुरुष थे*' (प्रेरतिों के काम 15:22)।

अंत्योखयिा पहुँचने पर, उन्होंने लोगों को इकट्ठा कयिा और पत्र पढ़कर सुनाया। उसे पढ़ने के बाद, जो आज्ञा उन्हें मलिी थी, उसे लेकर सभी बहुत प्रसन्न हुए। यहूदा और सलिास, जनिके पास भवषि्यवाणी का वरदान था, ने वशि्वासयिों को लगन से समझाया, उन्हें सांत्वना दी और वशि्वास में दृढ़ कयिा। सलिास अंतीयकयिा में ही ठहर गए, जबकि यहूदा यरूशलेम लौट गए। इसके बाद, प्रेरति पौलुस ने अन्य देशों में प्रचार करने का नशि्चय कयिा, और संत सलिास को अपना साथी चुना। भाइयों द्वारा परमेश्वर की कृपा सौंपे जाने पर, वे चल पड़े और सीरयिा और कि्सि्रयिा से होकर गए, और वहाँ के मंडलीयों को मज़बूत कयिा। देर्बे और लूस्त्र से होकर जाते हुए, वे वहाँ तमिोथी से मलिे और उसके साथ मैसेडोनयिा गए। जब वे फलिपिी में थे, तो उन्होंने एक दासी से भवषि्य बताने की आत्मा को नकिाल दयिा, जो अपनी भवषि्यवाणयिों से अपने मालकिों के लिए बहुत लाभ कमाती थी। जब मालकिों को एहसास हुआ कि उनका लाभ कमाने की आशा खत्म हो गई है, तो उन्होंने पौलुस और सलिास को पकड़ लयिा और उन्हें नगर अधकिारयिों के सामने बाजार में घसीट लाए, और उन पर नगर की शांति भंग करने का आरोप लगाया। एक बड़ी भीड़ इकट्ठा हो गई, और न्यायाधीशों ने पौलुस और सलिास के कपड़े उतारकर उन्हें कोड़े मारने का आदेश दयिा। कई प्रहारों के बाद, उन्होंने पवत्रि प्रेरतिों को एक अँधेरी कोठरी में बंद कर दयिा, और उनके पैरों में बेड़यिाँ डाल दीं। आधी रात को, जब पौलुस और सलिास परमेश्वर के भजन गा रहे थे और प्रार्थना कर रहे थे, तो अचानक ऐसा भीषण भूकंप आया कि कोठरी हलि गई, दरवाज़े अपने आप खुल गए, और सबके हाथों की बेड़यिाँ ढीली हो गईं। कारागारपाल जागा और जब उसने देखा कि जेल के द्वार खुले हुए हैं, तो उसने अपनी खंजर खींच ली और यह सोचकर कि कैदी भाग गए हैं, आत्महत्या करने ही वाला था; पर प्रेरति पौलुस ने उसे पुकारकर आत्महत्या करने से रोक दयिा। भय से काँपते हुए, जेलर ने पॉल और सलिास के सामने आत्मसमर्पण कर दयिा; फरि वह उन्हें जेल से बाहर

ले गया और अपने घर ले गया, जहाँ उसने उनके घाव धोए, और वह स्वयं और उसके पूरे घर ने बपतस्मिा लयिा। वहाँ से, पवत्रि प्रेरति पॉल और सलिास अम्फपिोलसि, अपोलोनयिा और थस्सिलुनीके गए। कई यूनानी और काफी संख्या में कुलीन महलिाएँ उनके साथ शामलि हो गईं। हालाँकि, यहूदयिों ने ईर्ष्या और अवज्ञा के कारण, कुछ बेईमान लोगों की मदद लेकर, लोगों को प्रेरतिों के वरिुद्ध भड़काया और उन्हें नष्ट करने का प्रयास कयिा। रात में, भाइयों ने पौलुस और सलिास को बेरयिा भेज दयिा, लेकनि वहाँ भी थस्सिलुनीके से आए यहूदयिों ने परमेश्वर के वचन के प्रचारकों के वरिुद्ध लोगों को भड़काया। इसलएि, पौलुस तटीय क्षेत्रों में चले गए, जबकि सलिास और तीमुथयिुस वहीं रहे। कुछ दनिों बाद जब वे चले गए, तो उन्होंने कोरन्थि में संत पौलुस को पाया (प्रेरतिों के काम 16:1–40, 17:1–34, 18:1–28)। यहाँ, संत सलिास बशिप बने। परमेश्वर के वचन का प्रचार करते हुए काफी समय तक परश्रिम करने और अपने जीवनकाल में कुछ चह्निों और चमत्कारों को करने के बाद, वे प्रभु के पास चले गए।

प्रेरति सलिास ने प्रमुख प्रेरतिों पतरस और पौलुस के साथ मलिकर परमेश्वर का वचन प्रचार करने में परश्रिम कयिा; दोनों ने अपने लेखों में उनका उल्लेख कयिा है। प्रेरति पतरस अपनी पहली पत्री में नम्निलखिति लखिते हैं:

'मैंने यह संक्षप्ति पत्र तुम्हें सलिवान के द्वारा लखिा है, जसिे मैं तुम्हारा वश्विासयोग्य भाई मानता हूँ' (1 पतरस 5:12)।

पवत्रि प्रेरति पौलुस भी कुरन्थियिों को अपनी दूसरी पत्री में कहते हैं:

– *'यीशु मसीह, परमेश्वर का पुत्र, जसिे हम ने तुम्हारे बीच प्रचार कयिा—मैं ने और सलिास ने'* (2 कुरन्थियिों 1:19)।

इससे यह स्पष्ट है कि संत सलिवान ने मसीह की शक्षिा का प्रचार करने में प्रत्येक प्रमुख प्रेरति के साथ मलिकर परश्रिम कयिा, और उनके कार्यों तथा कष्टों में भागीदार बने। थस्सिलुनीके में, वह एक बशिप थे और, वश्विास के लएि कई कष्ट सहने के बाद, वे मसीह के पास चले गए, जो सभी कर्मों को मुकुट प्रदान करते हैं।

प्रेरति सेंट पॉल अपनी तीमुथयिुस को दूसरी पत्री में प्रेरति क्रस्सिपास का उल्लेख करते हुए कहते हैं: *'क्रस्सिपास गलातयिा में है'* (2 तीमु. 4:10), अर्थात्, उन्हें उपदेश देने के लएि वहाँ भेजा गया था। गलातयिा में उन्होंने एक बशिप के रूप में सेवा की; फरि उन्होंने गॉल में मसीह के बारे में प्रचार कयिा और वयिना शहर में, अपने शष्यि ज़कारयिास को बशिप नयिुक्त कयिा, एक बार फरि गलातयिा लौट आए, और वहाँ ट्राजन के शासनकाल में शहादत प्राप्त की[5396] ।

प्रेरति पौलुस रोमयिों के नाम अपनी पत्री में पवत्रि प्रेरति एपनेतुस का भी उल्लेख करते हैं: *'मेरे प्रयि एपनेतुस को नमस्कार करना, जो अहाया में मसीह के लएि पहला परविर्तति हुआ है'* (रोमयिों 16:5)। एपनेतुस कार्थेज में एक बशिप था।

रोमयिों को लखिे उसी पत्र में, प्रेरति पौलुस प्रेरति अन्द्रोनकिुस का भी उल्लेख करते हैं: *'अन्द्रोनकिुस और जूनयिा को नमस्कार करना, जो मेरे कुलजने और सह कैदी हैं, जो प्रेरतिों में वशिष्टि हैं और जो मुझसे पहलि मसीह में हुए'* (रोमयिों 16:7)[5397] ।

कॉन्टाकयिन, स्वर 4:

आप मसीह की बेल की डालों के रूप में प्रकट हुए हैं, जो सद्गुणों में ज्ञान की गुच्छाएँ धारण करती हैं, और हमारे लएि उद्धार की मदरि बहाती हैं: जब हम इसका सेवन करते हैं, तो हम आनंद से भर जाते हैं, आपकी अतसिम्मानति स्मृति का उत्सव मनाते हुए; इसमें, हे प्रभु के प्रेरतिों, हमारे पापों की क्षमा के लएि प्रार्थना करें।

[5396] सम्राट 98–117 ईस्वी।

[5397] धन्य थयिोडोरेट, संत पॉल प्रेरति के पत्रों (2 कुरन्थियिों 1:19; 2 थस्सिलुनीकयिों 1:1) पर अपनी व्याख्या में, यह मानते हैं कि यहाँ उल्लेखति प्रेरति सलिुआन और प्रेरति सलिास एक ही व्यक्ति हैं। इस बात से समर्थन मलिता है कि पत्रों में सलिास का उल्लेख बलि्कुल भी नहीं है, भले ही वह पवत्रि प्रेरतिों के सबसे उत्साही सहकर्मयिों में से एक थे, जबकि सलिावानुस का उल्लेख प्रेरतिों द्वारा उन संदर्भों में कयिा गया है जो सलिास के अनुकूल हैं। पश्चमिी टीकाकार (वीज़ेलर, मेयर और अन्य) सलिवान को, जनिका उल्लेख प्रेरति पतरस अपनी पहली पत्री (1 पतरस 5:12) में करते हैं, साइलस ही मानते हैं। क्रसिैन्ट, जो ग्रीक मेनोलॉजयिन में कैनन की छठी ओड के अनुसार गॉल में उपदेश देते थे और कार्चडिॉन के आर्चपास्टर थे, ग्रीक मेनोलॉजीज में एक टप्पिणी के अनुसार, गॉल के पड़ोसी स्पेन में न्यू कार्चडिॉन के बशिप थे। स्लावोनकि मेनोलॉजयिन में, 'कार्थेज' की जगह 'खल्केडोन' है, और 'गॉल में' शब्दों की जगह 'आनंद के अभषिेक द्वारा' है।

पवत्रि शहीद संत वैलेंटाइन का कष्टकथा।

30 जुलाई को स्मरणोत्सव

[5398][5399]इटली के एक क्षेत्र ओम्ब्रिया में, इंटराम्ना नामक एक शहर में, संत वैलेंटाइन नामक एक बशिप थे, जन्हिें ईश्वर से चंगा करने का वरदान प्राप्त था। उन्होंने प्रार्थना और सर्वपवत्रि यीशु मसीह के नाम के उच्चारण द्वारा लोगों में हर तरह की बीमारियों और कमजोरियों को ठीक किया, और अविश्वासियों को मूर्तियों की पूजा से हटाकर ईश्वर की पूजा की ओर मोड़ा (उस समय, दुनिया में पगन बहुदेववाद अभी भी प्रचलति था, और पश्चमि तथा पूर्व पर शासन करने वाले अधर्मी राजा, , ईसाइयों का उत्पीड़न करते थे)। उन दनिों, एथेन्स के मूल के तीन वद्विान, जो मूर्तपिूजक धर्म के अनुयायी थे, प्रोकुलस, एफवि और अपोलोनियस नामक[5400] , रोम में अध्ययन करने आए, ताकि वे भाषा और रोमन वद्विता से बेहतर परचिति हो सकें। उन्हें लैटनि और ग्रीक दोनों में पारंगत क्रेटन नामक एक वद्विान शक्षिक मलिा; वे उसके शष्यि बन गए और उसके घर में रहने लगे। ऐसा हुआ कि क्रेटोना के बेटों में से एक, जसिका नाम हेरमिाँ था, गंभीर रूप से बीमार पड़ गया; उसकी हालत ऐसी थी कि उसकी रीढ़ की हड्डी मुड़ गई थी, उसका सरि उसके घुटनों के बीच आ गया था, और वह बलिकुल भी सीधा नहीं हो सकता था। कई डॉक्टरों को बुलाया गया, लेकनि वे मरीज को कोई राहत नहीं दे सके। वह लगभग तीन साल तक इस तरह पीड़ति रहा और इलाज की हर उम्मीद खो चुका था। एक दनि, फ्रोंटन नाम का एक ईसाई शक्षिक क्रेटन के घर आया; मरीज को देखकर उसने कहा:

'मेरे अपने भाई को भी इसी बीमारी से पीड़ा थी, और उसे इंटरम्ना शहर में रहने वाले वैलेंटाइन नामक एक ईसाई बशिप ने ठीक कर दिया था।'

यह सुनकर, ट्रबि्यून ने क्रैटन को अपने बीमार बेटे को इस बशिप के पास भेजने की सलाह दी; उन्होंने यह भी बताया कि उनके भाई, ठीक हो जाने के बाद, बशिप के पास से जाना नहीं चाहते थे और बशिप की दया से आकर्षति होकर, उनसे गहराई से जुड़ गए थे। यह सब सुनकर, क्रैटन ने कुछ सम्मानति, वफादार और समर्पति लोगों को बशिप के पास यह अनुरोध लेकर भेजा कि वे उनके पास आएं, क्योंकि ऐसे सफ़र पर बीमार लड़के को भेजना असंभव था। प्रभु की महमिा के लिए, ईश्वर के पुरुष ने उसे आमंत्रति करने वाले व्यक्ति से मलिने के लिए अपने नगर से रोम की यात्रा करने में संकोच नहीं किया, और उसे बड़े सम्मान से प्राप्त किया गया। बीमार हेरमिाँ को संत को दखिाने के बाद, क्रैटन ने उनसे अपने पुत्र को ठीक करने का आग्रह करना शुरू कर दिया, ठीक वैसे ही जैसे उन्होंने ट्राइब्यून के भाई को ठीक किया था। संत वैलेंटाइन ने कहा:

'यदि आप चाहें, तो आपका पुत्र ठीक हो जाएगा।'

"अगर तुम मेरे बेटे को ठीक कर सकते, तो मैं अपनी संपत्ति का आधा हसि्सा देने में संकोच नहीं करूँगा," क्रेटन ने उत्तर दिया।

'मुझे आश्चर्य है,' संत ने आपत्ति जताई, 'कि आप, एक बुद्धमिान शक्षिक होते हुए भी, मेरे कहे शब्दों को नहीं समझते। मैं आपसे फरि कहता हूँ, यदि आप चाहें तो वह बीमार व्यक्ति ठीक हो जाएगा; क्योंकि यदि आप मेरे मसीह में वश्विास करते हैं, तो वश्विासी के लिए सब कुछ संभव है।' एक वश्विासी, एक अवश्विासी से ईश्वर को अपार रूप से अधकि प्रयि होता है, जो सांसारकि और नरिर्थक चीज़ों में अपनी आशा रखता है और लकड़ी, पत्थर या कसिी अन्य पदार्थ से बनी, कभी जीवति रहे दुष्ट पुरुषों की मूर्तियों की पूजा देवताओं के रूप में करता है। कोई भी व्यक्ति उन लोगों को देवता कैसे मान सकता है, जो दुष्ट कर्मों में डूबे हुए हैं और क्रूर यातनाएँ देते हैं, और जनिका एक घंटा भी घृणति अत्याचार से मुक्त नहीं होता? यदि आप उस वश्विास को स्वीकार करते हैं जो मैं आपको देता हूँ, और मूर्तपिूजक दुष्टता का त्याग करते हैं, और अपनी आशा एकमात्र, अदृश्य और सर्वशक्तमिान ईश्वर में रखते हैं, तो आपके पुत्र को स्वास्थ्य प्राप्त होगा, जैसा आप चाहते हैं। और जहाँ तक आपके धन का आधा हसि्सा है जो आप मुझे देते हैं, उसे गरीबों में बाँट दें, ताकि वे आपके और आपके पुत्र के लिए ईश्वर से प्रार्थना करें। जहाँ तक मेरी बात है, आप मेरे बेटे के ठीक होने के बदले में मुझसे कुछ भी स्वीकार करने के लिए मुझे कसिी भी तरह से राज़ी नहीं कर सकते; मैं केवल आस्था माँगता हूँ। इसलिए, ईश्वर के

[5398] ग्रीस में।

[5399] सैन्य पद।

[5400] शष्यि।

पुत्र यीशु मसीह पर वशि्वास करो, कि वह सच्चे ईश्वर हैं, अपनी सभी मूर्तियों का त्याग करो, और तुम अपने बेटे को स्वस्थ होते हुए देखोगे।

क्रैटन ने उत्तर दिया:

'हालाँकि मैं नहीं जानता कि आपका वशि्वास वास्तव में किसमें है, मैंने सुना है कि हर कोई अपने ही वशि्वास से बचता है; एक व्यक्ति का वशि्वास दूसरे की मदद नहीं कर सकता, और इसके विपरीत, एक व्यक्ति का अवशि्वास दूसरे को नुकसान नहीं पहुँचा सकता।'

पवित्र बशिप ने उत्तर दिया:

'मानव जीवन में कुछ ऐसी चीजें हैं जो दूसरों की न तो मदद कर सकती हैं और न ही नुकसान पहुँचा सकती हैं; और एक पिता का अवशि्वास उसके बेटे के वशि्वास को नुकसान नहीं पहुँचा सकता, लेकिन ज़रूरत के समय और बीमारों के चंगा होने में, एक व्यक्ति का वशि्वास दूसरे की सहायता कर सकता है; उदाहरण के लिए, वशि्वास के द्वारा एक पिता अपने बेटे की, एक बहन अपने भाई की, और एक मालकि अपने नौकर की मदद कर पाता है। पवित्र शास्त्र में हम पढ़ते हैं कि शतपति ने अपने वशि्वास के द्वारा अपने मरणासन्न दास को स्वस्थ होते देखा (मत्ती 8:5-13); सभा के अधिकारी ने अपनी मरणासन्न बेटी को जीवित होते देखा (मत्ती 9:23–25), और बहनों ने, अपने मृत और दफनाए गए भाई लाजरुस के लिए रोते हुए, उसे चौथे दिन प्रभु के वचन से मृतकों में से जी उठते देखा, और वे आनन्दित हुईं (यूहन्ना 11:1–44)। पुराने और नए नियम में भी कई अन्य उदाहरण हैं जो स्पष्ट रूप से दिखाते हैं कि एक व्यक्ति का वशि्वास दूसरे की मदद कर सकता है। यह भी होता है कि एक व्यक्ति के अवशि्वास से दूसरों को हानि पहुँचती है; उदाहरण के लिए, एक व्यक्ति, फिरौन, के अवशि्वास ने पूरे मिस्र पर विभिन्न महामारियाँ ला दीं और यहाँ तक कि उसे और उसकी पूरी सेना को नष्ट कर दिया।

बशिप से ये और इसी प्रकार के शब्द सुनकर, शिक्षक क्रैटन उनके पैरों पर गिर पड़े और कहा:

'मैं उसी में वशि्वास करता हूँ जिसका आप उपदेश देते हैं, कि वह सच्चा परमेश्वर है और उसके सिवा कोई और नहीं है जो बीमारी और मृत्यु को जाने की आज्ञा देता है, और वे चली जाती हैं; जो जीवन की आज्ञा देता है – और वह लौट आता है।'

इस पर, बशिप संत वैलेंट ने उत्तर दिया:

'ईसाई वशि्वास का प्रमाण न केवल शब्दों से, बल्कि कर्मों से भी दिया जाना चाहिए।'

शिक्षक ने पूछा, 'तो फिर, वे कौन से कर्म हैं जिनसे वशि्वास का प्रदर्शन हो सकता है?'

'त्याग दो,' बशिप ने उपदेश दिया, 'मानव हाथों से बनी मूर्तियों को, और पवित्र बपतिस्मा ग्रहण करो, ताकि तुम्हारा नाम परमेश्वर के पुत्रों में लिखा जाए।'

क्रैटन ने पूछा, 'तो फिर, पानी, जो केवल शारीरिक अशुद्धि को धोता है, किसी को पापों से कैसे शुद्ध कर सकता है?'

'पवित्र जल,' संत ने उनकी उलझन सुलझाई, 'जब उस पर परम पवित्र त्रिमूर्ति का नाम लिया जाता है, तो वह रहस्यमय रूप से पवित्र आत्मा को ग्रहण करता है, जो इस जल में बपतिस्मा लेने वाले व्यक्ति के सभी पापों को शुद्ध कर देता है।'

'हमारी बातचीत लंबी खिच रही है,' क्रेटन ने कहा, 'और मेरे बेटे चेरीमोन का जीवन समाप्त होने को है।'

संत वैलेंटाइन ने उत्तर दिया:

'जब तक तुम उस पर वशि्वास नहीं करोगे जिसे तुमने कभी सुना या देखा नहीं है, तुम्हारे बेटे का इलाज नहीं हो सकता।'

'तो वह क्या है,' क्रेटन ने सोचा, 'जिसे मैं न तो देख सकता था और न ही सुन सकता था?'

'क्या आपने कभी सुना है,' संत ने समझाया, 'किसी कुंवारी के बारे में जिसने पापरहित तरीके से गर्भधारण किया और बच्चे को जन्म दिया, और बच्चे को जन्म देने के बाद भी कुंवारी बनी रही? क्या आपने कभी किसी को समुद्र पर इस तरह चलते देखा है जैसे वह सूखी जमीन पर हो?' क्या आपने किसी के बारे में सुना है, जिसने एक ही शब्द से समुद्र का तूफ़ान शांत कर दिया, जिसे अंततः सूली पर चढ़ाया गया, जो मर गया, जिसे दफ़नाया गया, जो तीसरे दिन मरे हुओं में से जी उठा, जो कई लोगों की आँखों के सामने स्वर्ग में आरोहण कर गया, जबकि स्वर्गदूत, जो लोगों को स्पष्ट रूप से दिखाई दिए, इस बात की गवाही देते हैं कि वह जीवितों और मरे हुओं का न्याय करने के लिए स्वर्ग से फिर आएगा? यदि आप

वशि्वास करते हैं कि यह सब घटति हो गया है, तो आगे आओ और बपतसि्मा लो, ताकि तुम्हारा पुत्र चंगा हो जाए और तुम्हें स्वयं भी अनंत जीवन प्राप्त हो।

'मैं आप जो कहेंगे, सब करूँगा,' शकि्षक ने सहमति जताई, 'बशर्ते मेरा बेटा ठीक हो जाए।'

इस पर पवत्रि बशिप ने उत्तर दयिा:

'चूँकि सारी सांसारकि बुद्धि, जसिे आप सखिाते हैं, परमेश्वर के सामने कुछ भी नहीं है, और आप उतनी पूरी तरह से वशि्वास नहीं कर सकते जतिनी आस्था की माँग करती है, तो मुझे अपना वचन दीजए कि आप और आपका सारा घर मेरे वशि्वास के द्वारा आपके पुत्र के चंगे हो जाने पर मसीह की ओर मुड़ेंगे और बपतसि्मा लेंगे!'

तब शकि्षक क्रैटन ने अपनी पत्नी और अपने पूरे परविार को बुलाकर संत के पैरों पर गरि पड़े, और उन्होंने सभी ने यह वादा कयिा कि यदि चेरीमोन ठीक हो गया तो वे सभी ईसाई बन जाएँगे। उपर्युक्त युवक—प्रोकुलस, एफवि और अपोलोनयिस—भी मौजूद थे; वे भी, अपने शकि्षक के बेटे के ठीक होने की कामना करते हुए, ईसाई बनने का वादा कयिा। इसके बाद, पवत्रि बशिप ने एक अलग कमरा तैयार करने का आदेश दयिा और कहा कि वे उस दनि और अगली रात चुप रहें; जहाँ तक उनकी बात है, उन्होंने उस बीमार व्यक्ति को इस कमरे में ले जाकर, केवल उसके साथ ही उसमें बंद हो गए। बीमार लड़के का शरीर इस तरह सकिुड़ गया था जैसे कि एक कसकर गेंद में: उसका सरि उसके घुटनों के बीच था, उसके पैर उसके कंधों और पीठ पर टकि हुए थे। उसके शरीर का एक भी अंग मुक्त नहीं था; वह बोल भी नहीं सकता था, और केवल कराह सकता था; कोई भी चकित्सिक इस बीमारी को न तो समझ सकता था और न ही उसका इलाज कर सकता था। संत बशिप वैलेंट ने, वह खुरदरी चोगा लेकर जसि पर वह आमतौर पर प्रार्थना करते थे, उसे जमीन पर बछिाया और उस अर्ध-मृत युवक को उस पर लटिा दयिा, जबकि वे स्वयं पूरी रात प्रार्थना करते रहे और ईश्वर की स्तुति करते रहे। आधी रात को, उस कमरे में एक दव्यि प्रकाश चमका, जसिसे बाहर वालों को ऐसा लगा मानो अंदर आग लग गई हो; और आधी रात के बाद, वह लड़का स्वस्थ होकर उठ खड़ा हुआ, और ऊँचे स्वर में ईश्वर की स्तुति करने लगा। चेरमिोन की आवाज़ और उसके कहे शब्दों को सुनकर उसके माता-पति और घर में मौजूद सभी लोग अत्यंत प्रसन्न हुए, क्योंकि तीन साल से उन्होंने उसकी कराहों के सवि कुछ नहीं सुना था। वे दरवाज़ों के पास गए, और उन्हें खटखटाते हुए संत से वनिती करने लगे कि वे उन्हें खोल दें ताकि वे हेरमिाँ को देख सकें। लेकनि संत ने उत्तर दयिा कि वे अपनी रोज़ की प्रार्थनाएँ कए बनि दरवाज़ा नहीं खोलेंगे; और वे सुबह तक इंतज़ार करते रहे, जो हुआ था उस पर आनंदति होते हुए। जब दनि हुआ, तो पवत्रि बशिप ने दरवाज़ा खोला और लड़के को पूरी तरह से स्वस्थ बाहर लाए, मानो वह कभी बीमार ही न हुआ हो, और उसे उसके माता-पति के हवाले कर दयिा। फरि शकि्षक क्रेटन, अपने पूरे घर-परविार के साथ, मसीह में वशि्वास करने लगे और बपतसि्मा लयिा; सभी अपने हृदय में परमेश्वर, अपने उद्धारकर्ता, में आनंदति हुए।

ठीक हो चुका लड़का, हेरमिाँ, बपतसि्मा ग्रहण करने के बाद, अपने चकित्सिक, संत वैलेंटाइन को छोड़ना नहीं चाहता था; ठीक वैसे ही जैसे उपरोक्त तीन युवकों ने अपने बपतसि्मा के बाद सांसारकि ज्ञान को त्यागकर, आध्यात्मकि शकि्षक, ईश्वर के बशिप, को पूरे हृदय से समर्पति कर दयिा और उनके शष्यि बन गए, उनके पवत्रि जीवन का अनुकरण करते हुए और अपनी मुक्ति की खोज करते हुए। अन्य वद्विान—उनकी ही उम्र के युवक—उनके उपदेशों और उनके ईमानदार तथा पवत्रि जीवन के उदाहरण से प्रेरति होकर, ईसाई धर्म और पवत्रि बपतसि्मा की ओर मुड़ गए, इस प्रकार वद्विानों की भीड़ उन पर उमड़ पड़ी; उन्होंने उनकी ईश्वर-प्रेरति शकि्षा पर ध्यान दयिा, उन्हें दव्यि ज्ञान की शकि्षा दी गई और उन्होंने सच्चे मार्ग पर चलना आरंभ कयिा। जब, हालाँकि, शहर के राज्यपाल का पुत्र, जसिका नाम अवुंडयिस था, मसीह में वशि्वास करने और बपतसि्मा लेने के बाद, दव्यि उत्साह से भर गया और सबके सामने खुले तौर पर स्वयं को मसीह का सेवक घोषति कर दयिा, तो उसका पति और अन्य राज्यपाल बहुत क्रोधति हो गए; उन्होंने ईसाई धर्म के प्रमुख शकि्षक, संत वैलेंटाइनस को पकड़ लयिा, और उसे बेरहमी से पीटा; उन्होंने उसे मूर्तयिों की पूजा करने के लए मनाने की कोशशि की, लेकनि उसने उनकी बात मानने से इनकार कर दयिा; इसलए, उन्होंने उसे और भी क्रूरता से यातना दी और फरि उसे जेल की बेड़यिों में जकड़ दयिा। हालाँकि, संत इस बात से प्रसन्न हुए कि उन्हें अपने प्रभु मसीह के लए पीड़ा सहने योग्य समझा गया था, और, प्राप्त घावों को कीमती आभूषणों की तरह पहनकर, उन्होंने उन पर गर्व कयिा और कहा:

'मैं अपने शरीर पर हमारे प्रभु यीशु के नशिान उठाए फरिता हूँ' (गलातयिों 6:17) और 'मैं मसीह की पीड़ाओं में जो कमी रह गई है, उसे अपने शरीर में पूरी कर रहा हूँ' (कुलुस्सयिों 1:24)।

साथ ही, उन्होंने जेल में अपने पास आए शिष्यों को पवित्र विश्वास में दृढ़ किया। यह जानकर, राज्यपाल बहुत क्रोधित हो गया और रात में उसे बुलवाकर जेल से बाहर निकलवाकर उसका सिर कलम करवा दिया। इस प्रकार, बिशप संत वैलेंटाइन ने अपना शहीदी जीवन समाप्त किया। संत प्रोकुलस, एफवि और अपोलोनियस के शिष्यों ने उनके पवित्र शरीर को उठाया और उसे इंटरम्ना शहर ले गए; वहाँ उन्होंने शहर के बाहरी इलाके में एक छोटी सी जमीन खरीदी और उन्हें सम्मान के साथ दफनाया, और कई दिनों और रातों तक उपवास, प्रार्थना और प्रभु की महिमा करते हुए कब्र के पास रहे। शहर में रहने वाले विश्वासियों के साथ-साथ बहुत से अविश्वासियों ने भी उनके चारों ओर इकट्ठा हो गए; बाद वालों ने, उनके आत्मा-रक्षक वचनों और मसीह के उपदेश को सुनकर, विश्वास से प्रकाशित हो गए। कुछ समय बाद, यह बात शहर के गवर्नर, लियोन्टियस के ध्यान में आई, और उसने इन तीनों युवकों को पकड़कर जेल में डाल दिया। जब उसने देखा कि लोग हंगामा कर रहे हैं और उन्हें दया आई—क्योंकि हर कोई उनसे प्यार करता था—तो उसने उन्हें रात में मार डालने का आदेश दिया: उसे डर था कि, अगर वह उन्हें दिन-दहाड़े मौत की सजा देगा, तो गुस्साई भीड़ उन्हें बचा सकती है। इस प्रकार, उस रात पवित्र शहीदों का सिर तलवार से कलम कर दिया गया और वे स्वर्ग के राज्य की अक्षय ज्योति में प्रवेश कर गए। उपर्युक्त संत अवुंडयिस, जो एक रोमन अधिकारी का पुत्र था, जब अपने प्रिय मित्रों के पास आया और उन्हें मार डाले जाने के बारे में जानकर, वह बहुत दुखी हुआ; उनके सम्मानित शरीरों को लेकर, उसने उन्हें अपने गुरु, संत वैलेंटाइन की कब्र के पास सम्मानपूर्वक दफनाया, और प्रभु यीशु मसीह की महिमा की, जो पिता और पवित्र आत्मा के साथ युगानुयुग जीवते और राज्य करते हैं। आमीन।

शहीद संत पोलख्रिोनीयस का कष्टकथा

30 जुलाई को स्मरणोत्सव

धर्मनिरपेक्ष रोमन सम्राट डेसियस[5401] ने कई ईसाइयों को यातनाएँ देने के बाद, अपनी पूरी सेना के साथ फारस के लिए प्रस्थान किया; फारसी सेनाओं को हराने और देश पर कब्जा करने के बाद, उसने बेबीलोनिया, बैक्ट्रिया, इरकनिया और असीरिया के क्षेत्रों पर नियंत्रण हासिल कर लिया; इन प्रदेशों में कई ईसाइयों को पाकर, सम्राट ने उन्हें हर संभव तरीके से सताना और यातना देना शुरू कर दिया। उस समय बेबीलोन में पॉलीक्रोनीउस नामक एक बिशप थे, जिनके साथ तीन प्रेस्बिटिर: पार्मेनियस, एलमि और क्रिसोथेलस, और दो डीकन: ल्यूक और मुको थे; उन्हें गिरफ्तार कर, डिसियिस ने आदेश दिया कि उन्हें तुरंत मूर्तियों को बलिदान चढ़ाने के लिए ले जाया जाए। लेकिन संत पॉलीक्रोनीउस ने साहसपूर्वक घोषणा की:

'हम स्वयं को अपने प्रभु यीशु मसीह के लिए बलिदान के रूप में अर्पित करते हैं; लेकिन हम कभी भी राक्षसों या मानव हाथों से बनी व्यर्थ मूर्तियों की पूजा नहीं करेंगे।'

डेसियस ने बिशप को, प्रेस्बिटिरों और डिकिन्स के साथ, कैद करने का आदेश दिया, जबकि उसने स्वयं बेबीलोन शहर में अपने घृणित देवता सैटर्न के लिए एक मंदिर का निर्माण शुरू कर दिया, जिसके लिए उसने एक सुनहरी मूर्ति भी बनाई। उसने रोम में अपने वरिष्ठ, वैलेरियन को लिखा, जिसमें उसने फारसियों पर अपनी शानदार जीत का वर्णन किया—जो, उसकी दृष्टि में, देवताओं द्वारा उसे प्रदान की गई थी—और देवताओं के सम्मान में रोम में एक बड़ा उत्सव आयोजित करने का आदेश दिया, जबकि ईसाइयों को यातना देकर मृत्युदंड दिया जाना था।

वैलेरियन ने रोम में सम्राट के इस आदेश के अनुसार कार्य किया। जब बेबीलोन में सैटर्न का घृणित मंदिर पूरा हुआ, तो अधर्मी डेसियस ने बिशप पोलख्रिोनीयस को वरिष्ठ पुरोहितों और डिकनों के साथ अपने दरबार में बुलाया और कहा:

'क्या तुम वही नंदिक हो जो न तो देवताओं का सम्मान करते हो और न ही राजा की आज्ञाओं का पालन करते हो?'

पवित्र बिशप मौन खड़े रहे, एक भी शब्द नहीं बोले। फिर राजा ने पुरोहितों और डिकिन्स की ओर मुड़कर कहा:

'तुम्हारे नेता की आवाज़ चली गई है!'

लेकिन पुरोहित पार्मेनियस ने कहा:

[5401] डेसियस – 249 से 251 तक सम्राट।

'हमारे पिताजी की आवाज़ नहीं गई है, परन्तु वे हमारे प्रभु यीशु मसीह की आज्ञा का पालन करते हुए, अपने शुद्ध और पवित्र होठों को अशुद्ध नहीं करना चाहते, जिन्होंने कहा: *"पवित्र वस्तु कुत्तों को न डालो, और अपने मोती सूअरों के आगे न फेंको, कहीं वे उन्हें अपने पैरों तले कुचल न दें और मुड़कर तुम्हें टुकड़े-टुकड़े न कर दें"* (मत्ती 7:6)। क्या यह उचित है कि शुद्ध ओठों को गंदगी से अपवित्र किया जाए?

एक क्रोधित डेसियस ने कहा:

'तो क्या हम मवाद हैं?'

और तुरंत उसने पुरोहित की जीभ काट देने का आदेश दिया। जब संत पर्मेनियस की जीभ काट दी गई, तब भी वह स्पष्ट रूप से बोलते रहे, संत पोलिख्रोनीयस को संबोधित करते हुए:

'हे पवित्र पिता, मेरे लिए प्रार्थना करें, क्योंकि मैं आप पर राजा – पवित्र आत्मा को देखता हूँ, जो आपके होठों पर मुहर लगाता है, जबकि मेरे होठों में एक शहद का छत्ता रखता है।'

इस प्रकार परमेश्वर अपने संतों में अद्भुत हैं: वे जिनके पास जीभ है, उन्हें चुप रहने का आदेश देते हैं, जबकि जिनकी जीभ काट दी गई है, उन्हें अपनी सर्वशक्तिमान शक्ति का प्रदर्शन करने के लिए वाक्-शक्ति का वरदान देते हैं। और डेशियस ने बिशप से कहा:

'पोलिख्रोनीयस, देवताओं को बलिदान चढ़ाओ और तुम मेरे मित्र बन जाओगे, और मैं सैटर्न का नया मंदिर तुम्हें सौंप दूँगा।'

बिशप ने उन्हें कोई उत्तर नहीं दिया। डेसियस क्रोध से आग-बबूला हो गया और उसने आदेश दिया कि संत के होठों पर पत्थर से मारा जाए; लेकिन संत ने, प्रहार झेलते हुए, अपने हाथ स्वर्ग की ओर उठाए और अपनी आँखें उठाकर अपनी अंतिम साँस ली। डेसियस ने शहीद के शरीर को सैटर्न के मंदिर के सामने छोड़ दिया। उसी रात, अवडोन और सेनिस नामक दो कुलीन फारसी राजकुमार, जो गुप्त ईसाई थे, ने गुप्त रूप से पवित्र बिशप पोलिख्रोनीउस के शरीर को उठाया और शहर की दीवार के पास दफना दिया। इस बीच, डेसियस फारस की भूमि में स्थित कॉर्डोबा शहर के लिए रवाना हो गया, और कैदियों—प्रेस्बिटर्स और डीकन—को हथकड़ी में उसके सामने लाए जाने का आदेश दिया।

जैसे ही संतों को ले जाया जा रहा था, उनके गले और हाथों से लोहे की बेड़ियाँ गिर पड़ीं। कॉर्डोबा शहर पहुँचने पर, डेकियस ने कैदियों को अदालत के सामने लाने का आदेश दिया और उनसे कहा:

'हे मूर्खों, क्या तुम नष्ट होना चाहते हो? यहाँ, मैं तुम्हें अमर देवताओं को बलिदान करने का अवसर देता हूँ!'

लेकिन वरिष्ठ पर्मिनियस, जिसकी जीभ काट दी गई थी, ने ज़ोर से उत्तर दिया:

'हे नीच मनुष्य, जो हमें मानव हाथों से बनी मूर्तियों की पूजा करने के लिए उकसाता है! तुम्हारे लिए यह बेहतर होगा कि तुम हमारे प्रभु यीशु मसीह की पूजा करो: यदि तुम उनकी पूजा नहीं करते हो, तो तुम अपने देवताओं के साथ नष्ट हो जाओगे।'

डेसियस ने उन्हें यातना के रूप में सभी को फांसी देने का आदेश दिया। लेकिन ऐसी स्थिति में भी, संतों ने परमेश्वर का धन्यवाद किया, और प्रेस्बिटर पार्मेनियस से कहा:

– हमारे लिए प्रार्थना करें, पिताजी!

उसने उत्तर दिया:

'ईश्वर, हमारे प्रभु यीशु मसीह के पिता, हमें पवित्र आत्मा का सांत्वना प्रदान करें, जो युगानुयुग राज्य करते हैं।'

और वे सभी उत्तर देने लगे:

'आमेन!'

लेकिन डेसियस, क्रोध में, चिल्लाया:

'यह जादू-टोना है! एक बिना जीभ वाला आदमी बोल रहा है: क्या यह जादू-टोने का स्पष्ट प्रमाण नहीं है?'

इस पर, पुरोहित पार्मेनियस ने उत्तर दिया:

'हमारे प्रभु यीशु मसीह, जिन्होंने एक बार बहरे को जीभ दी, और मुझ पापी को, जिसकी जीभ काट दी गई थी, बोलने की क्षमता दी; फिर भी तुम, जबकि तुम्हारे पास जीभ है और तुम बोल सकते हो, मूक हो, क्योंकि तुम सच्चे परमेश्वर की महिमा नहीं करते!'

डेसियिस ने आदेश दयिा कि उन्हें आग में जलाया जाए, उनके बगल में लाल-गरम लोहे की पट्टयिाँ दबाई जाएँ, और लोहे के हुकों से उनके शरीर को नोचा जाए। जब संतों को इस प्रकार यातना दी जा रही थी, तो स्वर्ग से एक आवाज सुनाई दी, जसिमें कहा गया:

'मेरे पास आओ, हे तुम सब जो हृदय से दीन हो!'

यह आवाज सुनकर, डसियिस ने इसे जादू-टोने का परणिाम माना, और शहीदों को नीचे उतारने, उनके सरि कलम करने, उनके शरीरों को शहर से बाहर सड़क पर फेंकने और पहरेदार तैनात करने का आदेश दयिा ताकि कोई उन्हें उठाकर उचति अंतमि संस्कार न कर सके। इस प्रकार तीनों वरष्ठि पादरयिों, पवत्रि कष्ट-भोगयिों ने मसीह के लिए अपने कष्टों का अंत कयिा: पार्मेनयिस, एलमि और क्रसिोथेलस, और दो डकिन: ल्यूक और मुको। उनके शरीर, जन्हिें एक तरफ फेंक दयिा गया था, रात में उपरोक्त दो राजकुमारों—जो राजा के साथ यहाँ आए थे—द्वारा चुरा लिए गए और कॉर्डोबा के पास उनके गाँव में दफना दयिा गया। उसी समय, राजा डेसियिस ने ईसाइयों को खोजने और उन्हें यातना देने के लिए पूरे फारस में तलाशी अभयिान भेजा; उसके कुछ सेवकों ने उससे कहा:

'हे राजा, वे बंदी जन्हिें आपने क्षमा कयिा और जन्हिें आपने जीवन और स्वतंत्रता प्रदान की, वे ईसाई हैं; वे ईसाइयों के शवों को इकट्ठा करते हैं, उन्हें अपने गाँव में दफनाते हैं, और देवताओं की पूजा नहीं करते; वे आपकी आज्ञाओं का भी पालन नहीं करते।'

'ये दुष्ट पुरुष कौन हैं?' राजा ने गुस्से में पूछा। नौकरों ने अवडोन और सेनसि के नाम बताए। राजा ने तुरंत उन्हें अपने सामने लाने का आदेश दयिा, और जब वे उपस्थति हुए, तो उन्होंने कहा:

'क्या तुम इतने मूर्ख हो कि तुम्हें यह एहसास नहीं है कि तुम्हारी पराजय और रोमन शासन के अधीन होने का कोई और कारण नहीं था, सवािय देवताओं के प्रति तुम्हारी अवमानना के?'

इस पर उन्होंने उत्तर दयिा:

'हम आपके देवताओं से घृणा करते हैं, और यही कारण है कि मसीह ने हमें शैतान पर वजिेता बनाया है।'

डेसियिस ने उनसे गुस्से में कहा:

'क्या तुम्हें नहीं पता कि तुम्हारी जान मेरे हाथ में है?'

'हमारे प्राण,' संतों ने उत्तर दयिा, 'हमारे परमेश्वर के हाथ में हैं, और हम उसी की उपासना करते हैं जो हमारे उद्धार के लिए स्वर्ग से पृथ्वी पर उतरा।'

डेसियिस ने उन्हें लोहे की जंजीरों में बाँधकर एक तंग कालकोठरी में बंद करने का आदेश दयिा। जब उन्हें जंजीरों में बाँधा गया, तो संतों ने कहा:

'यह हमारा गौरव है, जसिकी हमें हमेशा अपने प्रभु से प्राप्त होने की आशा थी!'

उसी दनि, दो अन्य कुलीन व्यक्तयिों, ओलम्पयिस और मैक्समिस पर राजा के सामने ईसाई होने का आरोप लगाया गया, और राजा ने उन्हें तुरंत पकड़कर बनिा मुकदमे के लाठयिों से पटिवाया, यह कहते हुए:

'वे अपने शब्दों को सुने जाने के योग्य नहीं हैं, क्योंकि वे देवताओं का सम्मान नहीं करते, और वे मृत्यु के पात्र हैं, क्योंकि वे एक मृत मनुष्य को अपना ईश्वर मानते हैं।'

संत मैक्समिस ने उत्तर दयिा:

'तुमने "मरने वाले" के बारे में तो अच्छी तरह कहा, परन्तु "जी उठने वाले" के बारे में क्यों नहीं कहा?'

डेसियिस ने कहा, 'हमें अपने खजाने के बारे में बताओ।'

संत ओलंपयिस ने उत्तर दयिा:

– हमारा खजाना, हमारा सोना, हमारा चाँदी और हमारी सारी संपत्ति हमारे प्रभु यीशु मसीह हैं, जनिके लिए हम अपनी सेहत की भी परवाह नहीं करते और सभी सांसारकि धन-संपत्ति को तुच्छ समझते हैं!

और जब संतों को क्रूरता से पीटा जा रहा था, तो उन्होंने पुकारा:

– महमिा तेरी हो, हे प्रभु यीशु मसीह, कि आपने हमें अपने सेवकों में गनिने की कृपा की!

डेसियिस और भी अधकि क्रोधति हो गया और शहीदों को सीसे की छड़ों से पीटने का आदेश दयिा; फरि उसने उन्हें अपने राज्यपाल, कसिी अनसियिस नामक व्यक्ति के हवाले कर दयिा, जसिने उन्हें यातनाएं देना जारी रखा और अंत में, कुल्हाड़ी से उनके सरि काट दिए, और उनके शरीरों को कुत्तों को खाने के लिए फेंक दयिा। पाँच दनिों तक शव बनिा

दफ़नाए पड़े रहे, और कसिी ने उन्हें छुआ भी नहीं; छठे दनि, ईसाइयों ने रात में पवत्रि अवशेषों को लेकर उन्हें सम्मान के साथ दफ़ना दयिा।

इसके बाद, अधर्मी डेसयिस रोम गया, और उसके साथ फारस के पवत्रि शहीदों, अवदोन और सेनसि को बेड़ियों में जकड़कर ले जाया गया, जन्हिें डेसयिस ने रोमनों के लएि एक तमाशा दखिाने हेतु अपनी महमिा के लएि अपने साथ ले गया था। उस समय, रोम में राज्यपाल वैलेरयिन ने पवत्रि पोप सक्सिस, उनके पुरोहतिों और कई ईसाइयों को गरिफ्तार कर उन्हें कैद कर दयिा। पोप कई दनिों तक जेल में रहे; गुप्त ईसाई उनके पास अपने बच्चों के साथ-साथ उन रश्तिेदारों और परचितिों को भी लाए जो मूर्तपिूजक दुष्टता से मुँह मोड़कर मसीह की ओर लौट रहे थे; जेल में ही पोप ने उनका बपतस्मिा कराया। उन दनिों, डेसयिस ने दो फारसी राजकुमारों, अवदोन और सेनसि को बंदी बनाकर, बड़े सम्मान और धूमधाम के साथ रोम में प्रवेश कयिा। इसके बाद, डेसयिस ने कमांडर वैलेरयिन के साथ पूरी रोमन सीनेट को बुलाया, और उन्हें ईरान से लाए गए राजकुमार, जो जंजीरों में बंधे लेकनि राजसी वस्त्रों में सजे हुए थे, पेश कएि; हालाँकि वे यात्रा के दौरान वभिन्नि यातनाओं से थके हुए थे, फरि भी डेशयिस की महमिा के लएि उन्हें सोने, चांदी और कीमती रत्नों से जड़े महँगे वस्त्रों से सजाया गया था। उनकी ओर इशारा करते हुए, डेशयिस ने कहा:

'देखो, ये वे शत्रु हैं जन्हिें देवताओं और देवयिों ने हमारे हाथों में सौंपा है। ये रोमन साम्राज्य के शत्रु हैं!'

उन्हें देखकर, पूरी रोमन सीनेट उनके कुलीन रूप से चकति हो गई और उन पर दया आने से करुणा से भर गई। प्रभु ने अपने सेवकों पर इतनी कृपा दखिाई कि जो भी उन्हें देखते थे, वे क्रोध के बजाय करुणा से भर उठते थे। डेसयिस ने कैपटिल के मुख्य पुरोहति, जसिका नाम क्लॉडयिस था, को बुलाने का आदेश दयिा; वह एक मूर्ति और एक त्रपिाद के साथ उपस्थति हुआ, और डेसयिस ने संतों से कहा:

'देवताओं को बलदिान चढ़ाओ, और तुम स्वतंत्र रोमन कुलीनों बन जाओगे; तुम अपनी सारी संपत्तयिाँ बनाए रखोगे, और भी अधकि धनी बनोगे, और हमसे महान सम्मान प्राप्त करोगे!'

लेकनि संतों ने उत्तर दयिा:

'हम केवल स्वयं को अपने प्रभु यीशु मसीह को बलदिान के रूप में अर्पति करते हैं; आप स्वयं अपने देवताओं को बलदिान अर्पति करें!'

इसके बाद, राजा ने सुबह तक एक तमाशा तैयार करने का आदेश दयिा, जसिमें फारसी राजकुमार अवदोन और सेनसि को जानवरों के सामने फेंका जाना था। जब सुबह हुई और तमाशे के लएि सब कुछ तैयार था, राजा डेसयिस नहीं आए, बल्कि उन्होंने अपनी जगह अपने सेनापति वैलेरयिन को भेजा। वैलेरयिन के आने पर, उसने शहीदों को बाहर नकिाला और सबसे पहले उन्हें मूर्तयिों की पूजा करने के लएि प्रेरति करना शुरू कयिा, कहते हुए:

'अपने कुलीन स्वभाव को बचाओ और देवताओं की वेदी पर धूप जलाओ; यदि तुम ऐसा नहीं करोगे, तो तुम जानवरों के दाँतों से मर जाओगे।'

'हम पहले ही कह चुके हैं,' संतों ने उत्तर दयिा, 'कि हम केवल अपने प्रभु यीशु मसीह को स्तुति का बलदिान और प्रार्थना का धूपदान अर्पति करते हैं, और हम केवल उन्हीं के सामने सरि झुकाते हैं; हम कभी भी मनुष्य द्वारा नर्मिति मूर्तयिों की पूजा नहीं करेंगे।'

वहाँ सूर्य की एक मूर्ति खड़ी थी, और वैलेरयिन ने सैनकिों को आदेश दयिा कि वे शहीदों को इस मूर्ति के पास ले जाएँ और उन्हें इसकी पूजा करने के लएि मजबूर करें; लेकनि संत, मूर्ति के पास पहुँचकर, उस पर थूक दएि। तब वेलेरयिन क्रोध से आग-बबूला हो गया और उसने पवत्रि शहीदों को टनि की छड़ों से पीटने का आदेश दयिा, और फरि उन्हें नग्न करके एक वशिेष रूप से तैयार की गई जगह पर ले जाया गया, जहाँ ऊँचे मंचों से देखने वाले लोगों की आँखों के सामने उन्हें जंगली जानवरों द्वारा नोचा जाना था। और संत वहाँ खड़े रहे, शरीर से नग्न लेकनि मसीह की आत्मा के वस्त्र पहने हुए, और उन्होंने क्रॉस का चह्नि बनाया। पहले दो शेर उन पर छोड़े गए, और फरि चार भालू, लेकनि जानवरों ने उन्हें कोई नुकसान नहीं पहुँचाया और उनके पैरों तले लेट गए जैसे उनकी रक्षा कर रहे हों। तब वैलेरयिन ने कहा:

'यह स्पष्ट रूप से ईसाई जादू-टोना है!'

और उसने जानवरों को ले जाने का आदेश दयिा, और अपने हथयिार-वाहकों को अंदर जाकर शहीदों को मार डालने का। संतों को तलवारों से मार डाला गया; उनके शरीरों को पैरों से हुक लगाकर बाहर घसीटा गया और सूर्य की मूर्ति के सामने फेंक दयिा गया ताकि ईसाइयों में डर पैदा हो सके, जैसा कि यातना देने वाले ने आदेश दयिा था; वहाँ वे तीन दनिों तक पड़े रहे। उस स्थान के पास रहने वाले, क्यरेन नामक एक गुप्त ईसाई, जो एक उप-डीकन था, ने रात के समय शहीदों के

शव चुरा लिए और उन्हें अपने ही घर में एक टिन के ताबूत में दफना दिया। इस प्रकार फारस के राजकुमार, पवित्र शहीदों अवदोन और सेनिस का जीवन समाप्त हुआ। संत पोप सिक्सटस, पुरोहित वर्ग के साथ, उनके बाद शहीद हुए; उनकी पीड़ा, आर्चडीकन लॉरेंस के साथ, अगस्त के दसवें दिन को याद किया जाता है। दो पवित्र शहीदों अवदोन और सेनिस के पवित्र अवशेष कॉन्स्टेंटिन महान के सिंहासनारोहण तक दबे रहे; लेकिन उनके शासनकाल के दौरान, दैवीय प्रकटीकरण द्वारा, उन्हें विश्वासियों द्वारा खोजा गया और हमारे ईश्वर मसीह के सम्मान और महिमा के लिए, जो पिता और पवित्र आत्मा के साथ सदा-सर्वदा महिमामय हैं, पोंटियन कब्र में स्थानांतरित कर दिया गया। आमीन[5402] .

संत योद्धा जॉन की स्मृति

30 जुलाई को स्मरण किया जाता है

[5403]इन संत जॉन ने सम्राट जूलियन द एपोस्टेट[5404] के शासनकाल के दौरान सेना में सेवा की और, अन्य सैनिकों के साथ, ईसाइयों को मारने के लिए भेजे गए थे। जो लोग उन्हें यह कार्य करते हुए देखते थे, उन्हें वह ईसाइयों का उत्पीड़क लगता था, लेकिन गुप्त रूप से उन्होंने उन्हें काफी सहायता प्रदान की। इस प्रकार, वह कुछ लोगों को पकड़े जाने से पहले चेतावनी दे देता था ताकि वे भाग सकें, जबकि दूसरों को वह पकड़े जाने के बाद मुक्त कर देता था। उसने न केवल उत्पीड़ित ईसाइयों पर, बल्कि अपनी मदद मांगने वालों पर भी दया दिखाई, और उन्हें उनकी ज़रूरत की हर चीज़ प्रदान की। प्रार्थना और उपवास के माध्यम से, संत जॉन ने बीमारों से मिलने और पीड़ितों को सांत्वना देकर अपने जीवन को समृद्ध किया, और इस प्रकार सद्गुणों में स्वयं को परिपूर्ण किया। इस तरह ईश्वर भक्ति से जीवन जीने के बाद, वह प्रभु के पास चले गए और उन्हें उस स्थान पर दफनाया गया जहाँ यात्रियों को आराम दिया जाता था[5405] । कुछ समय बाद, एक प्रकटिकरण में, उन्होंने एक महिला को अपने जीवनकाल में किए गए सभी कार्यों के बारे में बताया, और उसे वह नाम भी बताया जिससे वह जाने जाते थे। कहा जाता है कि इसके अलावा, संत जॉन ने अन्य चमत्कार भी किए। वह विशेष रूप से दासों को भागने से रोकने, चोरी का भंडाफोड़ करने और चोरी की गई वस्तुओं को बरामद करने के लिए प्रसिद्ध हैं। ईश्वर ने संत जॉन को उनके सदाचारी जीवन के पुरस्कार के रूप में ऐसी चमत्कारिक शक्तियों से نواز।

13 अगस्त

31 जुलाई (पुराना तरीका)

अगस्त

संत यूडोकिमस धर्मनिष्ठ

31 जुलाई को स्मरणोत्सव

[5402] रोमन शहीद-सूची में, पवित्र शहीदों के स्मरणोत्सव विभिन्न दिनों पर सूचीबद्ध हैं; रोस्तोव के संत डेमेट्रियस ने उन्हें एक ही समूह में एकजुट किया, उन सभी को एक ही डेसियस के हाथों पीड़ित और एक ही क्षेत्रों से आने वाले के रूप में। अवदोन और सेनिस के अवशेष 9वीं शताब्दी से रोम के सेंट मार्क चर्च में रखे गए हैं; वे (रोम में) संतों की मृत्यु के क्षण से ही वहां रखे हुए हैं।

[5403] एम्ब्रोसियन लाइब्रेरी का प्रस्तावना और निकोदेमस का कार्य बताते हैं कि संत जॉन तैफलों की स्कैथियन जनजाति के सैनिकों से बनी एक रेजिमेंट में एक सैनिक थे। उनकी उत्कृष्टता सेर्गीयस, *कम्प्लीट मंथली कैलेंडर ऑफ द ईस्ट* (खंड II, पृ. 220) में, यह सुझाव देते हैं कि वह स्लाव मूल के थे।

[5404] जूलियन, जो सम्राट का अपना भतीजा था, ने 361 से 363 तक शासन किया। उन्हें एक धर्मत्यागी कहा जाता है क्योंकि, यद्यपि वे बचपन से ईसाई थे, सिंहासन पर बैठने के बाद उन्होंने ईसाई धर्म का त्याग कर दिया और एक कट्टर मूर्तिपूजक बन गए। ईसाई धर्म को कमजोर करने और रोमन साम्राज्य में पतनशील मूर्तिपूजा को बहाल करने की इच्छा से, उसने शुरू में ईसाइयों के खिलाफ चालाक उपाय अपनाए, लेकिन बाद में हिंसा का सहारा लिया; हालाँकि, उसने ईसाइयों के व्यापक उत्पीड़न को भड़काया नहीं - उनके उत्पीड़न की केवल आइसोलेटेड घटनाएँ ही हुईं।

[5405] संत जॉन की मृत्यु का वर्ष अज्ञात है। यह केवल इतना ज्ञात है कि उनकी मृत्यु हो गई और उन्हें कॉन्स्टेंटिनोपल में दफनाया गया था।

संत यूडोकमिस धर्मात्मा कापडोसिया[5406] के मूल निवासी थे, और वे धर्मपरायण माता-पिता बेसिल और यूडोक्सिया के पुत्र थे। थियोफिलस[5407] के शासनकाल के दौरान, उन्होंने सेना में सेवा की और अपने सदाचारी जीवन के लिए विशिष्ट थे, उन्होंने ईश्वर की सभी आज्ञाओं का सावधानीपूर्वक पालन किया और उपवास तथा संयम का अभ्यास किया, साथ ही अपने पापों के लिए प्रार्थना और पश्चाताप किया। पवित्र शास्त्रों के अध्ययन और पाठ में स्वयं को पूरी लगन से समर्पित करते हुए, उन्होंने गरीबों, बेसहारा लोगों, अनाथों और विधवाओं को उदार दान दिया; उन्होंने चर्चों और मठों का समर्थन किया; और सभी के प्रति प्रचुर दया दिखाते हुए, उन्होंने अपनी कुँवारी पवित्रता को निर्दोष बनाए रखा। वह इतने पवित्र थे कि उन्होंने कभी भी महिलाओं से बात करने या उन्हें देखने की अनुमति स्वयं को नहीं दी; उन्होंने अपनी माँ को छोड़कर किसी महिला को अपने पास आने की भी अनुमति नहीं दी, जिनका उन्होंने एक बेटे की तरह सम्मान किया और जिनसे उन्होंने बातचीत की। अपनी सभी बातचीतों में, वह व्यर्थ की बातों और बकवास से बचते थे, और बकबक की बजाय मौन को प्राथमिकता देते थे; वह उन लोगों से दूरी बनाए रखते थे जो व्यर्थ और मूर्खतापूर्ण बातें करना पसंद करते थे; जहाँ तक झूठ, बदनामी और सभी प्रकार की निंदा की बात है, वह न केवल उन्हें बोलने से बचते थे, बल्कि उन्हें सुनना भी पसंद नहीं करते थे, और इस प्रकार उन्होंने अपने आत्मा को हर तरह के सद्गुणों से सजाया। दुनिया के कोलाहल, उथल-पुथल और व्यर्थता के बीच, कोई भी उन्हें काँटों में खिलती कमल या आग में खरे सोने के समान मान सकता था, जो सांसारिक प्रलोभनों और कामनाओं से पूरी तरह अछूते थे। उनके गुणों के कारण, सभी उनसे प्रेम करते थे और उनका सम्मान करते थे, और वे राजा को भी ज्ञात थे, जिसने उन्हें कैपाडोकिया रेजिमेंट का कमांडर नियुक्त किया और लोगों पर शासन करने के लिए उन्हें चार्सिया की भूमि[5408] पर भेजा। अपने अधिकार का प्रयोग करते हुए, उन्होंने दया और पूर्ण न्याय के साथ शासन किया, ताकि वे अपने जीवन में परमेश्वर और मनुष्यों दोनों के सामने धर्मी रहे। जहाँ तक उनके गुप्त पुण्य कार्यों का प्रश्न है, उन्हें सर्वज्ञ ईश्वर के सिवा कोई नहीं जान सकता या उनके बारे में नहीं बोल सकता, जो हमारे हृदयों और मन की खोज करते हैं, जिनकी सेवा इस धन्य और धर्मी व्यक्ति ने अपने पूरे हृदय और आत्मा से की और, उन्हें पूरी तरह से प्रसन्न करके, कम उम्र में ही शांति से परलोक सिधार गए: वह केवल 33 वर्ष के थे। उसमें यह पवित्र शास्त्र पूरा हुआ: *'जो थोड़े ही समय में परिपूर्ण हो गया, वह दीर्घायु को प्राप्त हुआ; क्योंकि उसकी आत्मा प्रभु को प्रिय थी'* (ज्ञान 4:13–14)। यद्यपि वह वृद्धावस्था के सफेद बाल देखने के लिए जीवित नहीं रहा, फिर भी वह अपने सदाचारी जीवन की पूर्णता में कई वृद्धों से श्रेष्ठ था; क्योंकि ईश्वर-भयभीत वृद्धावस्था की माप वर्षों की संख्या से नहीं होती है: ज्ञान ही धर्मपरायणता के सफेद बालों का काम करता है, और एक सदाचारी पुरुष का पवित्र जीवन ही वृद्धावस्था का काम करता है; यदि कोई ऐसी आयु तक पहुँचता है, तो उन्हें इस व्यर्थ और निरर्थक दुनिया में कई वर्षों तक रहने की आवश्यकता नहीं है, और वे *'क्रूस के साथ होने' के लिए* लालायित रहते हैं (फिलि. 1:23)। ऐसी आयु तक पहुँचने के बाद, संत यूडोकमिस का निधन हो गया, भले ही वे आयु में जवान थे। उन्होंने परमेश्वर को प्रसन्न किया, और परमेश्वर ने उनसे प्रेम किया; इसलिये, उन्हें पापियों के बीच से उठा लिया गया, ताकि द्वेष उनके मन को भ्रष्ट न कर दे और चापलूसी उनकी आत्मा को बहका न दे (देखें बुद्धिमान 4:1–20)। उनके निधन के समय उपस्थित लोगों ने बताया कि यह कैसे हुआ। जब वे अपनी मृत्युशय्या पर लेटे हुए अपने अंतिम क्षण के करीब पहुँचे, तो उन्होंने अपने घर वालों को बुलाया और उनसे शपथ ली कि उनकी आत्मा के निकल जाने के बाद, वे न तो उनके शरीर की जाँच करें और न ही उसे धोएँ, बल्कि उन्हें उसी कपड़े और जूते में दफनाएँ जो उन्होंने पहने हुए थे, और इस प्रकार उन्हें ताबूत में रख दें। फिर, सभी को जाने और दरवाज़े बंद करने का आदेश देकर, उन्होंने एक प्रार्थना की, जिसे कुछ लोग दरवाज़े के माध्यम से सुन सकते थे। अपनी प्रार्थना में, उन्होंने प्रार्थना की कि उनके निधन का कोई गवाह न बने, ठीक वैसे ही जैसे उनका जीवन—जो गुप्त भक्ति के कार्यों से चिह्नित था—सभी के लिए अज्ञात रहा था। सभी चीजों के लिए ईश्वर का धन्यवाद करने के बाद, उन्होंने अंत में कहा: *'हे प्रभु, मैं अपनी आत्मा तेरे हाथों में सौंपता हूँ'*, और प्रभु के साथ रहने के लिए अपने शरीर से अलग हो गए। उनके परिवार ने उन्हें ठीक वैसे ही दफनाया जैसा उन्होंने उन्हें निर्देश दिया था।

प्रभु, अपने सेवक को महिमामय बनाना और उनके देहांत के बाद उनके जीवन की पवित्रता को प्रकट करना चाहते हुए, उनके महिमामय अवशेषों पर एक चमत्कारी अनुग्रह प्रदान किया, जिसके द्वारा हर प्रकार की बीमारियों से चंगाई प्रदान की गई। सबसे पहले, एलियाह नाम का एक व्यक्ति, जो एक अशुद्ध आत्मा से ग्रस्त था और जिसके कारण

[5406] कैपाडोसिया एशिया माइनर का एक क्षेत्र है।

[5407] थेओफिलस – 829 से 842 तक का बाइज़ेंटाइन सम्राट।

[5408] एशिया माइनर में, कापडोसिया के पश्चिमी भाग में चार्सियन का क्षेत्र।

वह बहुत कष्ट सह रहा था, संत यूडोकमिस के निधन और दफन के तुरंत बाद, उस दानव द्वारा प्रेरित और पीड़ित होकर, धर्मी व्यक्ति की कफ़न के पास आया। जैसे ही उसके पैर ताबूत को छूए, अशुद्ध आत्मा, मानो आग से झुलस गई हो, जोर से चिल्लाई और, उस आदमी को ताबूत पर फेंककर, उस संत की प्रार्थनाओं से भगा दी गई और भाग गई। जब लोगों ने यह देखा, तो वे अपने बीमारों को लाने लगे और उन्हें उस ताबूत पर लिटाने लगे; और सभी को शीघ्र स्वास्थ्य लाभ मिला; इसके लिए, संत यूडोकमिस को ताबूत के ऊपर एक छतरी बनाकर और एक दीपक जलाकर सम्मानित किया गया। उनके चमत्कारों की ख्याति दूर-दूर तक फैल गई, और कई लोग उनके पास आने लगे; विभिन्न बीमारियों से पीड़ित लोग या तो दीपक के तेल से अभिषेक करके या ताबूत से ली गई मिट्टी को प्रभावित क्षेत्रों पर लगाकर ठीक हो गए। एक महिला अपना बच्चा लेकर आई, जिसके हाथ लकवाग्रस्त थे, और मृतक की तरह निष्क्रिय थे; जैसे ही उसने अपने बच्चे के हाथों पर संत के दीपक का तेल लगाया, बच्चा तुरंत ठीक हो गया और उसने अपने हाथों का सही ढंग से उपयोग करना शुरू कर दिया। इसी तरह, एक और लड़के को लाया गया जिसके पैर लकवाग्रस्त थे, जिससे वह न तो चल सकता था और न ही खड़ा हो सकता था; जब उसके लकवाग्रस्त पैरों पर उसी दीपक के तेल से अभिषेक किया गया, तो लड़का तुरंत ठीक हो गया और ईश्वर की स्तुति करते हुए चलने और कूदने लगा। एक महिला जिसके शरीर पर एक दर्दनाक फोड़ा था, आई और संत की कब्र से कुछ मिट्टी लेकर उसे पानी—या यूँ कहें कि अपने आँसुओं—में मिलाकर फोड़े पर एक मरहम के रूप में लगा दिया; उसी दिन वह पूरी तरह से ठीक हो गई। संत यूडोकमिस के चमत्कारों की खबर कॉन्स्टेंटिनोपल पहुँची, जहाँ उनके माता-पिता, जो कैपैडोसिया से वहाँ आ गए थे, अभी भी रह रहे थे। उसकी माँ बिज़ान्टियम से चार्सियन की भूमि पर आईं और अपने बेटे की ताबूत तथा उसके चारों ओर इकट्ठी भीड़—जो लोग उपचार की तलाश में उमड़ रहे थे—को देखकर, वह ताबूत के सामने साष्टांग दंडवत हो गईं और उसे सीने से लगाकर, अपने आँसुओं के बीच कहा:

'हे मेरे प्रियतम बच्चे! मेरी आँखों की रोशनी! यह महान चमत्कारी शक्ति कहाँ से आई है? ऐसा आरोग्यदायक अनुग्रह कहाँ से आया है? सचमुच, यह तुम्हें ईश्वर ने तुम्हारे गुप्त पुण्य कार्यों के लिए प्रदान किया है, जिनसे तुमने अपने प्रभु को प्रसन्न किया है!' मैं माताओं में धन्य हूँ, क्योंकि मुझे ऐसे पुत्र की माँ बनने का योग्य समझा गया; और मैं अब तुम्हारे लिए एक मृत पुत्र की तरह नहीं रोती, बल्कि ईश्वर के एक मित्र के रूप में, जो ईश्वर के साथ जीवित है, तुम्हें आध्यात्मिक भजन अर्पित करती हूँ।"

खुशी के आँसुओं के साथ ये और अन्य शब्द कहने के बाद, माँ ने आदेश दिया कि पित्थर हटाया जाए, मिट्टी खोदी जाए और ताबूत खोला जाए; जब ऐसा किया गया, तो उन्होंने संत का शरीर देखा, जो बिल्कुल भी सड़ नहीं रहा था, उसका चेहरा जीवित जैसा दमक रहा था, और उसके होंठ अपनी प्राकृतिक सुंदरता बनाए हुए थे; हालाँकि संत 18 महीनों से जमीन में थे, पर वे जरा भी नहीं बदले थे; वे जैसे जीवित हों, बस सो रहे हों; उनसे एक अद्भुत सुगंध निकल रही थी, और उनकी अवशेष-पेटिका ( ) को जमीन से ऊपर लाया गया। जब माता अपने पुत्र को नए वस्त्र पहनाना चाहती थीं, तो संयोग से जोसेफ नामक एक आगंतुक भिक्षु उपस्थित थे—जो एक पुजारी के पद पर आसीन एक सदाचारी व्यक्ति थे; उन्होंने संत के शरीर को अवशेष-पात्र से ऐसे उठाया मानो वह जीवित हो—उसकी बाहें और पैर स्वतंत्र रूप से मुड़ रहे थे; भिक्षु ने संत के पुराने वस्त्र और उनके पैरों से जूते बिना किसी कठिनाई के उतार लिए, क्योंकि उनके हाथ वस्त्र उतारने और उनके पैर जूते उतारने के लिए मानो तैयार थे; शरीर को नए वस्त्र पहनाने के बाद, उन्होंने उन्हें फिर से श्रद्धापूर्वक अवशेष-पात्र में रख दिया।

माँ अपने प्रिय पुत्र का चमत्कारी शरीर अपने साथ बाइज़ेन्टियम ले जाना चाहती थी।

'यह चमकता हुआ तारा,' उसने कहा, 'मेरी कोख से निकला था; तो इसे मुझे, मेरे घर लौटने दो!'

लेकिन उस देश के लोग इकट्ठा हो गए और उन्होंने उसे शरीर देने से इनकार कर दिया, यह कहते हुए:

'यद्यपि यह तारा आपकी कोख से उदय हुआ, परन्तु यह हमारे बीच अस्त हुआ है, और यहाँ अपने चमत्कारों के द्वारा और भी अधिक चमका है। यद्यपि यह अच्छी बेल आपसे उगी, परन्तु इसने हमारे बीच चंगाई की अनुग्रह के मीठे फल दिए हैं। अगर ईश्वर ने संत की चमत्कारी अवशेषों को कहीं और रखना चाहा होता, तो क्या वह उस जगह से जीवित वापस नहीं आ सकता था जहाँ से वह हम तक आया था?! ओ दयालु माँ! ईश्वर की इच्छा का विरोध न करें, और हमारे इस उपहार से ईर्ष्या न करें; आपके लिए इतना ही काफी है कि आपने ऐसे संत को जन्म दिया है!

ये शब्द सुनकर माँ चुप हो गईं और अपने बेटे की कफ़न के पास कई दिन बिताने के बाद, उन्होंने सभी से विदा ली और घर लौट आईं। उपरोक्त हयेरोमोंक जोसेफ संत की पवित्र अवशेषों के संरक्षक बन गए और कुछ समय तक उनके साथ रहे, लेकिन फिर, एक अनुकूल क्षण का लाभ उठाते हुए, उन्होंने रात के समय उस धर्मात्मा के अवशेषों को चुपके

से ले लिया और उन अवशेषों के साथ कॉन्स्टेंटिनोपल के लिए प्रस्थान कर गए। और रास्ते में चमत्कार हुए: जैसे चोरी की गई मूर्रा, भले ही छिपाई जाए, अपनी तेज सुगंध के कारण छिप नहीं सकती, वैसे ही संत यूडोकिमस के अवशेष, भले ही चोरी से लिए गए थे, उनसे निकलने वाले चंगाई के अनुग्रह के कारण छिपाए नहीं जा सकते थे: यात्रा के दौरान जहाँ भी कोई बीमार व्यक्ति मिला, वह ठीक हो गया। एक दैत्य-ग्रस्त महिला पूजनीय अवशेष-पात्र के पास आई, और उसके भीतर का दैत्य चिल्लाया, वह उस धर्मात्मा की निंदा कर रहा था जिसे ले जाया जा रहा था और उसके खिलाफ अपमानजनक शब्द कह रहा था; लेकिन, तुरंत एक अदृश्य शक्ति से प्रहारित होकर, वह महिला को एक तरफ फेंक दिया और उससे भाग गया। मांटेनिया मठ की मठाधीश एक बीमारी और अपने शरीर के एक निजी अंग में एक गंभीर अल्सर से पीड़ित थीं; किसी भी तरह से उनका इलाज नहीं हो पा रहा था और वे बहुत दुखी थीं। संत की अवशेषों से मिलने पर, उन्होंने पूजनीय अवशेष-पात्र को छुआ, संत के शरीर से स्वयं को सटा लिया और जैसे कि वह जीवित हों, अपनी बीमारी के बारे में उनसे फुसफुसाया, और तुरंत ही ठीक हो गईं। जोसेफ संत यूडोकिमस के पवित्र अवशेषों को बिज़ान्टियम ले आए और उन्हें अपने माता-पिता को भेंट किया; वे शब्दों से परे आनंदित हुए, और न केवल वे, बल्कि पूरा शहर भी इन चमत्कारी अवशेषों के आगमन पर अत्यधिक प्रसन्न हुआ[5409] । उनके माता-पिता ने जल्द ही अपने संत पुत्र के पवित्र अवशेष-पात्र को चाँदी में मढ़वाया और उसे परमेश्वर की परम पवित्र माता के चर्च में स्थापित किया, जिसे उन्होंने स्वयं बनवाया था, और परमपिता, पुत्र और पवित्र आत्मा, जो त्रिमूर्ति में महिमामय हैं, की महिमा की और धन्यवाद दिया; उन्हें हमसे अब और हमेशा और युगों-युगों तक महिमा मिले। आमीन।

ट्रोपारियन, स्वर 4:

हे पवित्र यूडोकिमोस, पृथ्वी से स्वर्गीय निवासों में बुलाए जाने के बाद भी आपका शरीर मृत्यु के पश्चात् अक्षुण्ण बना हुआ है; क्योंकि आपने शरीर को कलंकित किए बिना, पवित्रता और शुद्ध जीवन द्वारा आनंद में निवास किया। अतः हमारे ईश्वर मसीह से हमारी मुक्ति के लिए निश्शंकोच प्रार्थना करें।

कॉन्टाकियन, स्वर 2:

स्वर्गीय वस्तुओं की कामना करते हुए और स्वर्गवासियों के साथ एक होकर, हे अति धन्य यूडोकिमस, आपने सद्गुणों की दिव्य आरोहण द्वारा अपनी आत्मा को एक अग्निमय रथ के समान परिपूर्ण किया है; पृथ्वी पर अदेहवत् जीवन यापन करके, आपने सर्वसृष्टिकर्ता को प्रसन्न किया है।

पवित्र शहीद जुलिटा की स्मृति

31 जुलाई को स्मरणोत्सव

संत जुलिटा को जब जबरदस्ती उसकी संपत्ति से वंचित कर दिया गया, तो उसने न्यायाधीश से न्याय की मांग की और उसे बताया गया कि वह मसीह का त्याग करके ही अपनी संपत्ति वापस पा सकती है; तब मसीह के नाम की निडर स्वीकारकर्ता ने धर्मत्याग के बजाय मृत्यु को चुना; अपनी संपत्ति और अपना जीवन त्यागकर, संत जुलिटा ने निडरता से शहादत का पराक्रम किया; उनका कष्ट सहना 304 या 305 ईस्वी में सम्राट डायोक्लेटियन के शासनकाल में हुआ।

[5409] ग्रीक प्रोलॉग्स में दिए गए विवरणों के आधार पर, यह माना जाता है कि परम पूजनीय यूडोकिमस की मृत्यु 31 जुलाई को हुई थी, और उनके अवशेषों का स्थानांतरण 6 जुलाई को हुआ था। हमारे रूसी तीर्थयात्री एंथनी, जो 1200 में कॉन्स्टेंटिनोपल में थे, कहते हैं: 'ईश्वर की माता के मठ के बगल वाले स्तंभ के पास, चांदी के ताबूत में नया यूडोकिमस पड़ा है, मानो जीवित हो।' सेंट यूडोकिमस की जीवन-कथा, ग्रीक मूल से, लोपारेव द्वारा 1893 में प्रकाशित की गई थी।

14 अगस्त

1 अगस्त (पुराना तरीका)

प्रभु के बहुमूल्य और जीवन-दायक क्रूस का मलिना

1 अगस्त को स्मरणोत्सव

पवत्रि क्रूस के उत्थान का पर्व ग्रीस में कॉन्स्टेंटनिोपल के पैट्रआिर्क ल्यूक[5410] के द्वारा सम्राट मैनुअल[5411] के शासनकाल में, और रूस में कीव के मेट्रोपॉलटिन कॉन्स्टेंटनि[5412] और रोस्तोव के बशिप नेस्टर[5413] के द्वारा ग्रैंड प्रसि एंड्रे यूरीवचि[5414] के शासनकाल में 1 अगस्त को स्थापति कयिा गया था। इसके स्थापना का कारण इस प्रकार था। ज़ार मैनुएल और राजकुमार आंद्रे, जो एक-दूसरे के साथ शांतमिें थे और भाईचारे के प्रेम से बंधे थे, संयोग से एक ही दनि युद्ध पर नकिल पड़े: पहले कॉन्स्टेंटनिोपल से सारासेनों के खलिाफ[5415] , और दूसरे रोस्तोव से बुल्गारों के खलिाफ। (उस समय महाप्रभु रोस्तोव में रहते थे; बुल्गारयिाई वोल्गा के नचिले इलाकों में रहने वाले मूर्तपिूजकों को दयिा गया नाम था, जसिसे उनका नाम पड़ा)। प्रभु परमेश्वर ने उन्हें उनके दुश्मनों पर पूर्ण वजिय प्रदान की: ग्रीक ज़ार ने सारासेनों को हराया[5416] , जबकि राजकुमार एंड्रे बोगोल्यूबस्की ने बुल्गारयिाई लोगों को हराया और उन्हें अपने अधीन कर लयिा, उन्हें अपना जागीरदार बना लयिा। – जब भी आंद्रेई युद्ध में जाता था, वह अपने साथ परम पवत्रि ईश्वर की माता की एक प्रतमिा ले जाने का आदी था, जसिकी बाहों में शाश्वत शशिु, हमारे प्रभु यीशु मसीह थे, और मसीह के पवत्रि क्रूस की एक छवि, जसिे दो पुरोहतिों द्वारा सैनकिों के बीच ले जाया जाता था। नकिलने से ठीक पहले, वह मसीह और परमेश्वर की माता को भक्तपिूर्ण, अश्रुपूर्ण प्रार्थनाएँ अर्पति करते और मसीह के दैवी रहस्यों में भाग लेते थे। वह तलवारों और भालों से अधकि इस अजेय हथयिार से लैस रहता था, और अपनी सेना की बहादुरी और संख्या पर भरोसा करने के बजाय सर्वशक्तमिान की मदद पर भरोसा करता था, क्योंकि वह दाऊद के इन शब्दों को अच्छी तरह जानता था: *'वह घोड़े की ताकत पर नहीं देखता, और न ही वह मनुष्य के पैरों की दौड़ में आनंद लेता है'* (भजन संहति 146:10–11)। राजकुमार ने अपने सैनकिों को प्रार्थना करने के लिए, अपनी स्वयं की भक्तपिूर्ण प्रार्थनाओं के उदाहरण और सीधी आज्ञा दोनों

[5410] ल्यूक क्रसिोवर्गोस – कॉन्स्टेंटनिोपल के पैट्रआिर्क 1156–1169।

[5411] मैनुअल कोमननिोस – 1143 से 1180 तक ग्रीक सम्राट।

[5412] कॉन्स्टेंटनि द्वतिीय, कीव के मेट्रोपॉलटिन, 1167 में ग्रीस से कीव आए थे; उनका उल्लेख फरि से 1169 के वर्ष के अंतर्गत वृत्तांत में मलिता है।

[5413] नेस्टर – रोस्तोव के धर्मप्रांत के छठे बशिप – का उल्लेख क्रॉनकिल में वर्ष 1149 के अंतर्गत मलिता है; 1156 में, नेस्टर, जनि पर उनके ही घर वालों द्वारा मेट्रोपॉलटिन के समक्ष बदनामी की गई थी, को चर्च से बहष्किृत कर दयिा गया; 1157 में, उन्होंने मेट्रोपॉलटिन के समक्ष अपना नाम साफ कयिा, लेकनि उसी वर्ष, बुधवार और शुक्रवार को उपवास को लेकर ववािद के कारण, उन्हें आंद्रेई बोगोлюбскी द्वारा उनके पद से हटा दयिा गया।

[5414] संत एंड्रयू बोगोल्यूबस्की, धर्मनष्ठि – महा राजकुमार यूरी व्लादमिीरोवचि के पुत्र और प्रसद्धि व्लादमिीर मोनोमाख के पोते – का जन्म संभवतः1111 में हुआ था। उनकी हत्या 30 जून 1175 को कर दी गई थी।

[5415] सारासेन मुसलमान थे।

[5416] ना तो ग्रीक ऐतहिासकि वृत्तांतों में और ना ही ग्रीक पूजा-संबंधी ग्रंथों में सर्वदयालु उद्धारकर्ता और परमेश्वर की अतपिवत्रि माता के सम्मान में कसिी पर्व दविस का कोई स्पष्ट उल्लेख मलिता है, जो सम्राट मैनुएल की सरासनिों पर वजिय का प्रतीक हो। हालाँकि, सम्राट मैनुएल के इतहिास में, जनिहोंने वभिन्नि लोगों के खलिाफ कई युद्ध लड़े, ऐसे उदाहरण हैं जनिहोंने नसि्संदेह सम्राट को युद्ध के सफल समापन और खतरे से मुक्ति के लिए ईश्वर को वशिष धन्यवाद देने के लिए प्रेरति कयिा होगा। यहाँ वशिष रूप से सम्राट मैनुअल के तुर्की सुल्तान या सरासेनों के खलिाफ भयंकर युद्ध पर ध्यान आकर्षति कयिा गया है। सम्राट स्वयं सेना का नेतृत्व कर रहे थे, और उन्होंने बार-बार खुद को अत्यधकि खतरे में डाला। यह सच है कि वजिय शत्रु को मलिी, लेकनि राजा का स्वयं जीवति रहना वास्तव में ईश्वर की दया का एक चमत्कार था। यह सतिंबर में हुआ, जबकि अभयिान, बेशक, अगस्त में ही शुरू हो गया था। इस युद्ध के बाद, ग्रीकों ने सरासेंस के खलिाफ दो सफल लड़ाइयाँ लड़ीं, जनिमें से एक का नेतृत्व स्वयं राजा ने कयिा था। ये घटनाएँ, बुल्गारयिाई लोगों के खलिाफ युद्ध में ईश्वर की मदद की रूस से मलिी खबरों के साथ मलिकर, राजा मैनुएल को उद्धारकर्ता का पर्व एक सामान्य ईसाई त्योहार के रूप में स्थापति करने के लिए प्रेरति कर सकती हैं, जसिकी नींव 1 अगस्त को पानी पर आशीर्वाद के साथ पहले ही कॉन्स्टेंटनिोपल में रख दी गई थी। हालाँकि, ग्रीक संतों के जीवन पर आधारति स्रोतों में अभी तक उद्धारकर्ता को समर्पति कोई सेवाएँ नहीं मलिी हैं।

से प्रेरित किया; और सभी, घुटनों के बल गिरकर, परम पवित्र ईश्वर की माता की प्रतिमा और मसीह के पवित्र क्रूस के सामने आँसुओं के साथ प्रार्थना करने लगे। महा राजकुमार ने प्रतिमा को निहारते हुए, अपनी प्रार्थना में इस प्रकार कहा:

'हे सर्वशक्तिमान देवी, जिन्होंने हमारे ईश्वर मसीह को जन्म दिया! जो कोई भी आप में अपनी आशा रखता है, वह नष्ट नहीं होगा, और मैं, आपका सेवक, ईश्वर की कृपा से, आप में एक दीवार और एक ढाल पाता हूँ, और—आपके पुत्र के क्रूस को—हमारे शत्रुओं के विरुद्ध एक द्विधारी तलवार के रूप में पाता हूँ। जगत के उद्धारकर्ता, जिन्हें आप अपनी बाहों में धारण करती हैं, उनके समक्ष हमारी वकालत करें, कि क्रूस की शक्ति हमारे साथ युद्ध करने वाले शत्रुओं को भस्म करने वाली अग्नि के समान हो, और आपकी सर्वशक्तिमान मध्यस्थता हमें उन पर विजय प्राप्त करने में मदद करे।

उत्कट प्रार्थना के बाद, सभी ने पवित्र प्रतिमा और कीमती क्रूस को चूमा और निडर होकर दुश्मनों के खिलाफ बढ़ गए: प्रभु ने क्रूस की शक्ति से उनकी सहायता की, और परमेश्वर की अति पवित्र माता उनकी सहायता के लिए आईं, और परमेश्वर के सामने उनके लिए मध्यस्थता करने लगीं। हर लड़ाई से पहले इस रिवाज़ का लगातार पालन करने के बाद, ग्रैंड प्रिंस ने बुल्गारियाई लोगों के खिलाफ़ लड़ाई से पहले भी इससे विचलित नहीं हुए: वह अपने सेना के सिर पर प्रभु का क्रूस लेकर चल पड़े, ठीक वैसे ही जैसे प्राचीन काल में सम्राट कॉन्स्टेंटिन ने किया था। बुल्गारों के साथ युद्ध के बाद, मैदान में उतरकर रूसी सेना ने उन्हें भागने पर मजबूर कर दिया और उनका पीछा करते हुए पाँच शहरों पर कब्ज़ा कर लिया; उनमें नदी कामा पर स्थित ब्रायाखिमोव शहर भी शामिल था। जब वे अविश्वासियों के साथ युद्ध के बाद अपने शिविर में लौटे, तो उन्होंने देखा कि शिशु मसीह के साथ ईश्वर की माता की प्रतिमा से ज्वालाओं जैसी तेज किरणें निकल रही थीं, जो पूरे सैन्य दल को प्रकाशित कर रही थीं; यह अगस्त का पहला दिन था। इस अद्भुत दृश्य ने महाप्रिंस के साहस और आशा की भावना को और बढ़ा दिया, और उन्होंने एक बार फिर अपनी रेजिमेंटों को बुल्गारों का पीछा करने के लिए मोड़ दिया; उन्होंने उनके अधिकांश शहरों को जला दिया, बचे हुए शहरों पर कर लगा दिया, और पूरी भूमि को उजाड़ दिया; इस जीत के बाद, महाप्रिंस विजय प्राप्त कर घर लौट आए। – यूनानी राजा मैनुएल, जो अपनी सेना के साथ सारासेनों के खिलाफ निकला था, ने उसी दिन एक समान चमत्कार देखा – उद्धारकर्ता के साथ परम पवित्र परमेश्वर की माता की प्रतिमा से निकलने वाली किरणें, जिसे पवित्र क्रूस के साथ सैनिकों के बीच रखा गया था, पूरी रेजिमेंट पर बरस रही थीं; और उस दिन उसने सारासेनों को हरा दिया।

राजा और राजकुमार ने ईश्वर की महिमा करते हुए, ईश्वर की मदद से मिली विजयों और उद्धारकर्ता की प्रतिमा से निकलने वाली चमत्कारी किरणों के बारे में एक-दूसरे के साथ विशेष संदेशों का आदान-प्रदान किया। वरिष्ठ बिशपों से परामर्श करने के बाद, मसीहा उद्धारकर्ता और उनकी परम पवित्र माता के प्रति कृतज्ञता के संकेत के रूप में, उन्होंने अगस्त के पहले दिन एक पर्व दिवस स्थापित किया। क्रूस की उस शक्ति की स्मृति में, जिससे उन्होंने अपने शत्रुओं को पराजित किया था, उन्होंने आदेश दिया कि पुरोहित पवित्र क्रूस को पवित्रस्थान से बाहर ले आए और उसे गिरिजाघर के केंद्र में रख दे ताकि ईसाई उसकी पूजा कर सकें और उसे चूम सकें, और प्रभु यीशु मसीह की महिमा कर सकें, जिन्हें क्रूस पर चढ़ाया गया था। इसके अलावा, बिशपों ने आदेश दिया कि इस दिन जल का अभिषेक किया जाए, और इसी कारण इस पर्व को 'पवित्र क्रूस का उत्थान' नाम मिला, क्योंकि पवित्र क्रूस को अन्य पवित्र प्रतिमाओं के साथ नदी, कुएँ और झरनों तक भव्यता से ले जाया जाता है। – हे भाइयो, आइए उत्सव मनाएँ, सर्वशक्तिमान परमेश्वर और हमारे उद्धारकर्ता यीशु मसीह और उनकी परम पवित्र माता, परम पवित्र थियोटोकोस की स्तुति और धन्यवाद करते हुए, और साथ ही मसीह के पवित्र क्रूस का श्रद्धापूर्वक सम्मान करते हुए; परन्तु आदरपूर्वक उत्सव मनाएँ, परमेश्वर को प्रसन्न करें, आपस में शान्ति और प्रेम से जिएँ, दान-पुण्य के कार्य करें, और, परमेश्वर के भय को स्मरण रखकर, पाप से दूर रहें: ताकि, अपने सृष्टिकर्ता और प्रभु को प्रसन्न करके, हम उन सभी संतों के साथ अनन्त उत्सव के योग्य ठहरें, उस दिन के बाद जब मनुष्य के पुत्र का चिह्न स्वर्ग में दिखाई देगा (मत्ती 24:30)—मसीह का सम्माननीय क्रूस, जो जीवितों और मरे हुओं के न्यायी के आने से पहले है, जो बड़ी शक्ति और महिमा के साथ आने वाले हैं, और सभी धर्मी लोगों को तेजस्वी और आनंदमय किरणों से प्रकाशित करेंगे। और जब न्याय पूरा हो जाएगा, तो वह सभी संतों के सामने स्वर्ग के राज्य में उनका नेतृत्व करने के लिए जाएँगे, और सभी संत धन्य होंगे, और सदैव के लिए आनंदित रहेंगे; हे सर्व-दयालु

उद्धारकर्ता मसीह, हमारी अति पवित्र प्रभु-माता, परमेश्वर की माता की प्रार्थनाओं के द्वारा, हमें पापियों को भी उनके बीच के रूप में गनिें, जइसwell[5417] । आमीन।

ट्रोपारयिन, स्वर 1:

हे प्रभु, अपने लोगों को बचा, और अपनी वरिासत को आशीर्वाद दे, हमारे वशि्वासयोग्य सम्राट नकिोलस अलेक्जेंड्रोवचि को उनके शत्रुओं पर वजिय प्रदान कर, और अपने क्रूस द्वारा अपने नविास स्थान की रक्षा कर।

कॉन्टाकयिन, स्वर 4:

अपनी स्वैच्छकि इच्छा से क्रूस पर उठाए जाने के बाद, हे मसीह ईश्वर, अपने नाम वाले अपने नए नविास को अपनी कृपा प्रदान करें; हमारे वशि्वासयोग्य सम्राट नकिोलस अलेक्जेंड्रोवचि को अपनी शक्ति से प्रसन्न करें, उन्हें उनके वरिोधयिों पर वजिय प्रदान करें, और अपनी शांति के हथयिार को उनके सहायक के रूप में रखकर, उन्हें अजेय वजिय प्रदान करें।

ट्रोपारयिन, स्वर 8:

ऊँचे से हम पर दृष्टि डालकर, दीनों को स्वीकार करते हुए, हे सर्व-दयालु प्रभु, हमारे पास आओ जो पाप से पीड़ति हैं। ईश्वर की माता की प्रार्थनाओं के द्वारा, हमारी आत्माओं को महान दया प्रदान करें।

कॉन्टाकयिन, स्वर 4:

हे सर्व-दयालु उद्धारकर्ता, मैं हर प्रकार की अशुद्धता का कर्ता रहा हूँ, और नराशिा की खाई में गरि गया हूँ; फरि भी मैं अपने हृदय की गहराई से कराहता हूँ और हे वचन, आपसे पुकारता हूँ: हे उदार, शीघ्रता करें, और हमारी सहायता के लिए फुर्ती करें, क्योंकि आप दयालु हैं।

[5417] एक सख्त परभिाषति ऐतहिासकि आधार पर खड़े होकर, यह ध्यान दयिा जाना चाहिए कि 1 अगस्त को ऑर्थोडॉक्स चर्च दो त्योहार मनाता है, जो अपनी उत्पत्ति में भन्नि हैं: 1) प्रभु के सम्माननीय और जीवन-दायक क्रूस का मलिना, और 2) सर्व-दयालु उद्धारकर्ता और परमेश्वर की परम पवत्रि माता का पर्व। 1897 में प्रकाशति ग्रीक 'बुक ऑफ आवर्स' में, पहले पर्व की उत्पत्ति इस प्रकार समझाई गई है: 'अगस्त में बहुत आम बीमारयिों के कारण, कॉन्स्टेंटनिोपल में प्राचीन काल से एक रवािज स्थापति हो गया था कि सम्मानति क्रूस की लकड़ी को स्थानों को पवत्रि करने और बीमारयिों से बचाने के लिए सड़कों और गलयिों में ले जाया जाता था। उत्सव की पूर्व संध्या (31 जुलाई) को, इसे शाही कोषागार से बाहर लाया जाता था और महान चर्च (यानी हागयिा सोफयिा) की पवत्रि मेज़ पर रखा जाता था। उस दनि से लेकर, परमेश्वर की माता के नद्रिोपवेश तक, पूरे शहर में जुलूस नकिाले जाते थे, जसिके बाद इसे लोगों के श्रद्धांजलि के लिए प्रस्तुत कयिा जाता था। यही इसका आरंभ है (*प्रोडोस*) पवत्रि क्रूस का'। 14 अगस्त को, क्रूस को शाही कक्षों में वापस कर दयिा गया। 'यह रवािज, कॉन्स्टेंटनिोपल के एक अन्य रवािज—हर महीने के पहले दनि (जनवरी को छोड़कर, जब यह 6 तारीख को होता है, और सतिंबर, जब यह 14 तारीख को होता था)—ने 1 अगस्त को होने वाले पवत्रि और जीवन-दायक क्रूस के सम्मान में उत्सव और झरनों पर जल का गंभीर आशीर्वाद, जो इसी दनि होता है, के लिए आधार का काम कयिा।' 9वीं शताब्दी की शुरुआत में ही, 1 अगस्त से पहले शाही महलों से सेंट सोफयिा चर्च तक पवत्रि क्रूस ले जाने की यह प्रथा मौजूद थी; जबकि 31 जुलाई को क्रूस के पर्व की पूर्व संध्या के लिए कैनन, जो वशिेष रूप से इस अवसर के लिए रचा गया था (कैनन इन शब्दों से शुरू होता है: 'दव्यि क्रूस आ रहा है'), आठवीं शताब्दी में रहते थे और दो बार कॉन्स्टेंटनिोपल आए थे, अमास्ट्रसि के बशिप जॉर्ज को श्रेय दयिा जाता है। सम्राट कॉन्स्टेंटनि पोर्फरियिोजेनटिस (912–959) की संस्कार संबंधी पुस्तक में महल से बाहर क्रूस को ले जाने के समय के बारे में वस्तिृत नयिम शामलि हैं; 1 अगस्त से पहले, क्रूस को समर्पति कोई सेवा नहीं थी, जो यरूशलेम वधिान के परचिय के साथ 14वीं-15वीं शताब्दी में सामने आई। सर्व-दयालु उद्धारकर्ता और परमेश्वर की अति पवत्रि माता का पर्व लगभग 1168 में ग्रीस और रूस में, ग्रीक सम्राट मैनुअल के युद्धों के दौरान उद्धारकर्ता और परमेश्वर की माता की पूजनीय प्रतमिाओं द्वारा कए गए चमत्कारों की स्मृति में स्थापति कयिा गया था। (1143–1180) सरासेंस के खलिाफ और 1164 में रूसी राजकुमार एंड्रे बोगोल्यूब्स्की द्वारा बुल्गारयिाई लोगों के खलिाफ।

पुरानी वाचा के शहीदों का कष्ट: याजक एलेआज़र, सात मक्काबीय भाइयों, उनकी माता सोलोमोनयिा, और उनके साथ अन्य लोग

1 अगस्त को स्मरण कयिा जाता है

पवत्रि शहीदों के दुखों का वृत्तांत शुरू करने से पहले, जनिके नाम पृथ्वी पर 'मक्काबीस की पुस्तकों' में दर्ज हैं, और स्वर्ग में – जीवन की शाश्वत पुस्तकों में – यह उचति है कि एक संक्षप्ति प्रस्तावना के रूप में, पहले उन उथल-पुथल का वर्णन कयिा जाए जो उन वर्षों में यरूशलेम में हुईं[5418] और परमेश्वर के वचन का पालन करने वाले धर्मनष्ठि यहूदयिों पर हुए अत्याचारों का; इन दोनों को शुरू में कानून के कपटी शक्षिकों और यरूशलेम के सत्ता-लोलुप महापुजारयिों ने भड़काया था; लेकनि जब, क्रोधति प्रभु की अनुमतसि, यहूदी मूर्तपिूजक राष्ट्रों के शासन में आ गए, तो ये अशांतऔि उत्पीड़न इतनी हद तक बढ़ गए कि पवत्रि शहर खून से भर गया और परमेश्वर का पवत्रि स्थान घृणति कृत्यों से भर गया।

बाबेल के राजा नबूकदनेस्सर द्वारा की गई यरूशलेम की पहली महान और भयानक वनिाश, यहूदा के राजा सदिकयि्याह के दनिों में हुई, जैसा कि पवत्रि भवष्यिवक्ता यरि्मयाह के जीवन और पवत्रि भवष्यिवक्ता यहेजकेल के जीवन में वर्णति है। इस तबाही के सत्तर साल बाद, यहूदयिों को ईश्वर की कृपा से बंदी-अवस्था से मुक्तमिलिी और वे यरूशलेम लौट आए; पवत्रि नगर में एक बार फरि भव्य इमारतें खड़ी हुईं, और ईश्वर का नव-नरि्मति मंदरि, पहले वाले की तरह, भव्यता से सुसज्जति था; बंधन से वापसी और यरूशलेम तथा मंदरि के पुनर्स्थापन के इस इतहिास को एज्रा और नेहेमायाह की पुस्तकों में वस्तिार से वर्णति कयिा गया है। ईश्वर के लोगों की संख्या तेजी से बढ़ी: वे जल्द ही पूरे फलिस्तिीन में पहले की तरह ही क्रम और लगभग उसी संख्या में बस गए; ईश्वर के वधिान के प्रतविफादार पवत्रि नगर, अपने महापुजारी राजकुमारों के शासन में शांतकिा आनंद लेते हुए, लंबे समय तक भक्तमिें फलता-फूलता रहा। यह सभी से, यहां तक कि मूर्तपिूजक राजाओं के शासन के दौरान भी, प्रसदि्धऔि सम्मान का आनंद लेता था। कई मूर्तपिूजक राजा और राजकुमार, यद्यपि मूर्तपिूजक थे, फरि भी उन्होंने इस्राएल के परमेश्वर का सम्मान कयिा और यरूशलेम में प्रभु के मंदरि में उपहार भेजे (2 मक्काबी 3:2); वे महापुजारयिों के साथ भी वशिेष सम्मान से पेश आते थे; उदाहरण के लिए, मकदूनयिा के राजा अलेक्जेंडर ने, जब महापुजारी अद्दा को अपनी ओर आते देखा, तो उनके सामने जमीन पर सरि झुकाया; और यरूशलेम तथा परमेश्वर के मन्दरि में प्रवेश करने पर, उसने सर्वशक्तमिान प्रभु को भेंट और बलदिान अर्पति की। अन्य मूर्तपिूजक राजा भी इसी प्रकार का व्यवहार करते थे। मस्रि के राजा पतोलमी फलिाडेल्फस ने यरूशलेम में प्रभु के मन्दरि में अनेक उपहार भेजे और महापुजारी एलेआज़र को पत्र लखिकर उनसे पवत्रि धर्मग्रंथों की पुस्तकें और ऐसे वद्विान भेजने का अनुरोध कयिा जो उन्हें हब्रिू से यूनानी में अनुवाद कर सकें; टॉलेमी फलिोपटर, जो टॉलेमी फलिाडेल्फस का उत्तराधकिारी था, ने सीरयिाई राजा एंटओिकस महान को हराने के बाद यहूदयिा आकर, यरूशलेम में, प्रभु के मंदरि में, एकमात्र सच्चे परमेश्वर को धन्यवाद का बलदिान अर्पति कयिा। इसी प्रकार, अंटयिोकस महान, जनि्होंने बारी अपनी ओर से मस्रियिों को हराया था, सच्चे ईश्वर की पूजा करने के लिए यरूशलेम आए; पवत्रि मंदरि में उन्होंने धन्यवाद की प्रार्थनाओं के साथ अनेक बलदिान चढ़ाए और महापुजारी तथा अन्य यहूदी नेताओं पर उदारतापूर्वक उपहार प्रदान कए। पगनों द्वारा यरूशलेम और परमेश्वर के मंदीर को जसि सम्मान की दृष्टसि देखा जाता था, वह इस प्रकार था; पवत्रि शास्त्र भी इसका उल्लेख करता है जब यह कहता है कि राजाओं ने स्वयं इस स्थान का सम्मान कयिा और महान भेंटों से मंदीर की महमिा की (देखें 2 मक्काबी 3:2)। यरूशलेम के प्रतअिन्यजातयिों का यह रवैया तब तक जारी रहा जब तक उसके नेता, परमेश्वर के भय में जीते हुए, प्रभु की व्यवस्था का पालन करते रहे और एक धार्मकि जीवन व्यतीत करते रहे; लेकनि जब उन्होंने परमेश्वर की व्यवस्था को भूल दयिा, तो पहले की तरह ही उन पर अनेक वपित्तयिाँ आईं। नम्निलखिति परस्थितिनि ने इन वपित्तयिों की शुरुआत को चह्निति कयिा।

धर्मी महापुजारी शमिोन के दनिों में, जनिकी सरिाख के पुत्र यीशु की पुस्तक (सरिाख 50:1) में प्रशंसा की गई है, जब महान अंटयिोकस का पुत्र सेल्यूकस एशयिा और सीरयिा पर शासन करता था, तब यरूशलेम में शमिोन नाम का एक व्यक्तथिा, जो बन्यिामीन के कुल का वंशज था; उसे मंदरि के कोष का प्रबंधन, मंदरि के सेवकों का प्रशासन और मंदरि रक्षक के रूप में तैनात सैनकिों की कमान सौंपी गई थी। घमंड और द्वेष के कारण, वह लगातार महापुजारी का वरिोध

[5418] यरूशलेम – प्राचीन फलिस्तिीन की राजधानी।

करता था और लोगों के बीच अशांति भड़काता था; उच्च पुरोहित को अक्सर उसके विरुद्ध करनी पड़ने वाली धमकियों और चेतावनियों को सहन न कर पाकर, शिमोन ने न केवल उच्च पुरोहित को बल्कि पूरी कलीसिया को भी नुकसान पहुँचाने का निश्चय किया। इस उद्देश्य के लिए, वह सीरिया और फिनिसिया के सेनापति अपोलोनियस के पास गया, और उसे कलीसिया के खजानों के बारे में बताया: शिमोन ने कहा कि मंदिर से जुड़े खजानों में अनगिनत धन था, जहाँ चर्च के खजानों के साथ-साथ पूरे लोगों का अपार धन रखा जाता था; उसने यह भी जोड़ा कि यह सारा धन राजा के हाथ लग सकता है (2 मक्काबी 3:5–6)। अपोल्लोनियस ने सिमोन का संदेश राजा तक पहुँचाया, जो अपनी लालच के लिए कुख्यात था। राजा ने तुरंत ही राजकीय कोषाध्यक्ष हेलिओडोरस को एक सेना के साथ यरूशलेम भेजा ताकि उपर्युक्त खजाने को राजकीय कोष में ले जाया जा सके। जब हेलिओडोरस यरूशलेम पहुँचा, तो उसने चर्च की संपत्ति पर कब्ज़ा करना और गरीबों, यात्रियों, विधवाओं और अनाथों के लिए रखे गए एकत्रित धन को लूटना शुरू कर दिया, तो उसे, जैसा कि मिक्काबीस की दूसरी पुस्तक के अध्याय 3 में विस्तार से वर्णित है, ईश्वर की सजा मिली: देवदूतों द्वारा उसे इतनी बुरी तरह कोड़ा मारा गया कि वह लगभग मर ही गया, और इसलिए वह राजा के आदेशों को पूरा किए बिना ही वापस लौटने पर मजबूर हो गया। कुछ ही समय बाद, राजा सेल्यूकस की हत्या उनके ही दरबारियों ने कर दी; उनके बाद उनके भाई एंटिओकस, जिन्हें एपिफिनिस, यानी 'प्रकाशमान' के नाम से जाना जाता था, सिंहासन पर बैठे, वह अपने पूर्ववर्ती से भी अधिक भ्रष्ट था। कुछ लोग अक्सर अंटिओकस को 'एपिमिन', यानी 'पागल' कहते थे: वह सच्चे ईश्वर और उनके मंदिर के खिलाफ पागलपन से भड़क उठा, और खुद को भविष्य के मसीह-विरोधी की एक आकृति के रूप में प्रस्तुत किया[5419] । यरूशलेम में बड़ा उथल-पुथल मच गया। , जो महापुजारी ओनियस का भाई जेसन था, महापुजारी का पद प्राप्त करने की इच्छा से राजा के पास गया और उससे बड़ी रकम देकर महापुजारी का पद खरीद लिया। राजा को खुश करने की इच्छा से, इस अयोग्य सत्ता-लोलुप व्यक्ति ने उसके सामने हेलेनिस्टिक[5420] नागरिक कानूनों, नैतिकता और रीति-रिवाजों के प्रति अपना प्रेम व्यक्त किया, और यहूदियों के बीच उन्हें लागू करने का वादा किया: अपने धन और वादों के बदले में महापुजारी का पद प्राप्त

[5419] अंतियोकस चतुर्थ एपिफिनिस, जो 176 से 164 ईसा पूर्व तक सीरिया का राजा था, जिसने अपने भाई की मृत्यु के बाद सिंहासन पर कब्जा कर लिया था, असीम अहंकार से परिपूर्ण था (2 मक्काबी 5:21, 9:8); उसने खुद को एक देवता कहा और ओलंपियन ज़्यूस की उपाधि अपनाई; उसने आदेश दिया कि उसके सभी प्रजा केवल एक ही देवता - ओलंपियन ज़्यूस की पूजा करें, जिसके साथ उसने खुद की पहचान की; यानी, एंटिओकस ने वास्तव में उन्हें एक देवता के रूप में उसकी पूजा करने का आदेश दिया (2 मक्काबीस 6:7)। यहूदियों में कुछ लोग थे जो यूनानी रूप में मूर्तिपूजा की ओर झुकाव रखते थे; उन्होंने यरूशलेम में एक अलग गुट बनाया जिसे अंतियोकस का समर्थन मिला (1 मक्काबी 1:11–15)। ईसा पूर्व 175 में, धर्मनिष्ठ महापुजारी ओनियस को उनके भाई येशु ने पदच्युत कर दिया, जिन्होंने अपना नाम बदलकर ग्रीक नाम जेसन रख लिया था, एंटीओकस से महापुजारी का पद खरीदा था, और ग्रीक खेलों को शुरू करने की अनुमति प्राप्त की थी, जिससे सच्चे धर्म से मुंह मोड़ने वालों की संख्या और भी बढ़ गई। तीन साल बाद, मेनेलाउस ने जेसन को पदच्युत कर दिया, जिसने महापुजारी के पद के लिए एक बड़ी रकम की पेशकश की थी, और उसने सबसे नीचले तरीकों से इसे बनाए रखा: इस प्रकार मेनेलाउस ने ओनियस को मार डाला (2 मक्काबी 4:23-50)। – एंटिओकस ने मिस्र के खिलाफ एक अभियान शुरू किया और पहले ही इसे पूरी तरह से जीतने की उम्मीद कर रहा था, लेकिन (168 ईसा पूर्व) में एक रोमन हमले की अफवाहों के कारण उसे रोक दिया गया। मिस्र के खिलाफ अपनी पहली और दूसरी मुहिम के बीच, अंटिओकस ने यरूशलेम के मंदिर को लूटा (1 मक्काबी 1:21), और मिस्र से अपनी अंतिम वापसी पर, उसने यहोवा की उपासना, खतना, सब्बाथ का पालन, और शुद्ध तथा अशुद्ध के बीच के अंतर को समाप्त करने का आदेश दिया; उसने पवित्र पुस्तकों को जलाने का आदेश दिया; उसने वेदियाँ बनाने का आदेश दिया, जिन पर मृत्युदंड की सजा के तहत, सभी को ओलंपियन ज़्यूस को बलिदान करने के लिए मजबूर किया गया (1 मक्काबीस 1:41; 2 मक्काबीस 5:24); वर्ष 168 में किस्लेव की 15 तारीख को, मंदिर में ओलंपियन ज़्यूस का एक वेदी स्थापित किया गया (2 मक्काबीज़ 6:2; 1 मक्काबीज़ 1:54), और किस्लेव की 25 तारीख को पहली बलि चढ़ाई गई; माउंट गेरीज़िम पर, ज़्यूस ज़ेनियस की पूजा स्थापित की गई (2 मक्काबीज़ 6:2)। फिर भी, भयानक यातनाओं के बावजूद कई लोग अपने धर्म के प्रति वफादार रहे (1 मक्काबी 52:64; 2 मक्काबी 6:7)। याजक मत्तथियास वफादार लोगों का नेता बन गया। जोप्पा के पास मोदिन में, उसने एक मूर्तिपूजक वेदी के सामने एक सीरियाई कमांडर को मार डाला, और यहूदियों द्वारा एक सशस्त्र विद्रोह शुरू हो गया। अंतियोकस ने इसे सैन्य बल से दबाने का निश्चय किया; धन की आवश्यकता ने उसे अपनी सेना को दो भागों में विभाजित करने के लिए मजबूर किया; आधे के साथ वह स्वयं कर वसूलने के लिए पूर्वी प्रांतों की ओर रवाना हो गया (2 मक्काबीस 8:10; 1 मक्काबीय 3:34), जबकि उन्होंने दूसरी आधी सेना का नेतृत्व लिसियास को सौंप दिया, जिसे यहूदा मक्कबाउस ने बुरी तरह हराया था, और यहूदियों ने मंदिर पर नियंत्रण कर लिया। वर्ष 165 में किस्लेव के 25वें दिन, पहली मूर्तिपूजक बलि चढ़ाए जाने के तीन साल बाद, मंदिर को बड़ी गंभीरता से शुद्ध और पवित्र किया गया; यह आदेश दिया गया कि उस गौरवशाली दिन की स्मृति में वार्षिक रूप से एक उत्सव मनाया जाए (1 मक्काबी 4:59), जिसे 'समर्पण का पर्व' के नाम से जाना जाने लगा (यूहन्ना 10:22)। इस बीच, पूर्व में अंटिओकस को बहुत कम सफलता मिली; उसने एलिमाइडा में नानेया के समृद्ध मंदिर को लूटने का प्रयास किया, लेकिन स्थानीय निवासियों द्वारा उसे भगा दिया गया और यहूदिया से बुरी खबर मिलने के बाद 164 ईसा पूर्व में ताबा में उसकी मृत्यु हो गई (1 मक्काबीस 6:4)। पुराने नियम में, अंटिओकस को प्रभु, उसकी प्रजा और वाचा के विरोधी के रूप में चित्रित किया गया है (1 मक्काबीस 1:10); नए नियम में, उसे मसीहा-विरोधी की पूर्वसूचक के रूप में दर्शाया गया है (प्रकाशितवाक्य 13:5)।

[5420] हेलेनिस्टिक – ग्रीक।

करने के बाद, जेसन ने अपने भाई, संत ओनियस, से यह पद छीन लिया और यहूदियों के बीच मौजूद अच्छे नागरिक कानूनों को पैगन (पराये) कानूनहीनता से बदलना शुरू कर दिया। सियोन पर्वत के तल पर, उन्होंने सार्वजनिक मनोरंजन के लिए स्थल और स्कूल स्थापित किए जहाँ यूनानी दार्शनिक शिक्षाएँ दी जाती थीं; उन्होंने युवकों के खेलों के लिए व्यायामशालाएँ भी स्थापित कीं; जेसन ने कानून की स्पष्ट मनाही का उल्लंघन करते हुए पवित्र शहर में वेश्यालय भी स्थापित किए, जहाँ बेखौफ व्यभिचार होता था; इन भ्रष्ट प्रतिष्ठानों में मुख्य रूप से हेलेनिक कलाओं का अध्ययन करने वाले युवा पुरुष आते थे। जेरूसलम में यूनानी अधर्मीता को लाकर, जेसन ने बहुतों को परमेश्वर की सच्ची उपासना से हटा दिया, यहाँ तक कि पुरोहितों ने भी परमेश्वर के मंदिर को मनोरंजन, दौड़, कुश्ती और अन्य मूर्तिपूजक खेलों और व्यभिचार के लिए छोड़ दिया; युवा और जो लोग धर्मशास्त्र में अस्थिर थे, वे उनसे और भी अधिक मोहित हो गए: उन्होंने हेलेनिक कानूनों और रीति-रिवाजों की प्रशंसा की और, परमेश्वर के कानून को भूलकर, आसानी से दुष्टता की ओर ले जाए गए। जहाँ तक कानून में दृढ़ और सच्चे धर्मपरायण लोगों का सवाल है, यरूशलेम में हो रहे इस अन्याय को देखकर, वे प्रभु की वाचा के उजाड़ हो जाने और पवित्र नगर के अपवित्र हो जाने पर शोक मनाए बिना नहीं रह सके; वे अपने देशवासियों के लिए शोक मनाते थे, जो अपने अंधे नेता—जेसन—के पदचिह्नों पर चल रहे थे, जिसने अपनी मनमानी से ईश्वर और उसके विधान को त्याग दिया था, अपने पूर्वजों के विश्वास के साथ विश्वासघात किया था, और ईश्वर के लोगों के बीच प्रलोभन और पतन के कई कारण लाए थे।

जेसन ने अपनी अवैध रूप से प्राप्त शक्ति का तीन वर्षों तक प्रयोग किया, जिसके बाद उसे अपने ही जैसे एक और सत्ता-लोलुप व्यक्ति और हेलेनिक अधर्मी का भक्त—मेनेलाउस—द्वारा बाहर निकाल दिया गया; इस प्रकार, जेसन को वही भुगतना पड़ा जो उसने पहले अपने धर्मी भाई ओनियस पर थोपा था। मेनेलॉस ने राजा को बड़ी रकम दी और बदले में महापुजारी का पद प्राप्त किया; जेसन को भगाने के बाद, उसने राजा से पूर्व महापुजारी, धर्मी ओनियस की एक दुष्ट कुलीन व्यक्ति के हाथों हिंसक मृत्यु सुनिश्चित करवाई। हालाँकि, मेनेलाउस लंबे समय तक महापुजारी नहीं रहा: उसके भाई लिसिमाकस, जिसने राजा को उससे भी अधिक धन दिया था, ने उसे महापुजारी के पद से हटा दिया; मेनेलाउस को भी जेसन की तरह निर्वासन का सामना करना पड़ा। लिसिमाकस को मंदिर से पवित्र बर्तन और धन चोरी करने के लिए लोगों ने मार डाला। मेनेलॉस, अपने भाई की मृत्यु का बदला लेना चाहकर, राजा से यरूशलेम के लोगों को मार डालने का अधिकार खरीद लिया और उनमें से कई की, जो पूरी तरह से निर्दोष थे, जान ले ली; उसी समय, उसने एक बार फिर से राजा से महापुजारी का पद प्राप्त किया (2 मक्काबी 4:23–50)। यरूशलेम में इस तरह का अव्यवस्था और उथल-पुथल, मूर्तिपूजकों की दुष्टता में दैनिक वृद्धि और अधर्म के खुले कामों ने प्रभु को क्रोधित कर दिया, और उनका धार्मिक न्याय, जो मनुष्य के कर्मों के अनुसार पुरस्कार देता है, निकट आ गया। एक अद्भुत संकेत दिखाई दिया, जो उस परमेश्वर के क्रोध का पूर्वाभास दे रहा था जो नगर पर आने वाला था: हवा में, सैनिकों की कतारें दिखाई दीं; सुनहरे कवच और सिर पर हेलमेट पहने, घोड़ों पर सवार सैनिक, अपने हाथों में नंगी तलवारें और भाले पकड़े, एक-दूसरे के साथ युद्ध में लगे हुए थे; उनमें से कुछ ने एक-दूसरे पर अपनी तलवारें चलाईं, कुछ ने अपने भाले और ढाल ऊँचे उठा लिए, जबकि अन्य ने एक-दूसरे पर तीर चलाए – संक्षेप में, उन्होंने वह सब कुछ किया जो आमतौर पर युद्ध में किया जाता है; सैनिकों के कवच और हथियारों से एक अग्निमय प्रकाश निकल रहा था (2 मक्काबीज़ 5:2–3)। यह भयानक, डरावना दृश्य चालीस दिनों तक चला। यरूशलेम के निवासी बड़े भय और हैरानी में पड़ गए; उनमें से प्रत्येक अपने आप से पूछे बिना नहीं रह सका: आखिर इसका क्या मतलब हो सकता है? उस समय, यरूशलेम में यह झूठी खबर पहुँची कि राजा कथित तौर पर मिस्रियों के खिलाफ लड़ाई में मारा गया था: वह वास्तव में, उस समय मिस्र में युद्ध करने गया था। यरूशलेम के सबसे धर्मनिष्ठ लोगों ने यह मानकर आनंद मनाया, उत्सव किया और अत्यंत हर्षित हुए कि दुष्ट और अधर्मी राजा वास्तव में नष्ट हो गया था। लेकिन जब यह पता चला कि राजा मरा नहीं है, बल्कि जीवित है और मिस्र से सीरिया लौट रहा है, तो उन्होंने अब उसकी आज्ञा मानने या कर देने का संकल्प त्याग दिया; इसलिए, उन्होंने उससे लड़ने की तैयारी की। यह जानकर, राजा क्रोध से आग-बबूला हो गया और अपनी सेना के साथ यरूशलेम की ओर बढ़ गया; यरूशलेम के लोगों ने उसके खिलाफ दरवाजे बंद कर दिए, लेकिन वे उसका पर्याप्त विरोध करने में असमर्थ थे, क्योंकि घेराबंदी में फंसे लोगों के बीच ही असहमति उत्पन्न हो गई थी: जो लोग हेलेनिस्टिक अधर्मीता की ओर मुड़ गए थे—विशेष रूप से झूठे महापुजारी मेनेलाउस—वे राजा के प्रति पक्षपात रखते थे। अपनी सेना की मदद से शहर पर कब्जा करने के बाद, राजा ने आदेश दिया कि न केवल सड़कों पर मिले हर व्यक्ति को निर्दयता से पीटा जाए, बल्कि उसके सैनिकों को घरों में घुसकर पति, पत्नियों, बुजुर्गों, युवकों और शिशुओं को भी मार डालना चाहिए; तीन दिनों के भीतर, मारे गए लोगों की संख्या अस्सी हजार तक पहुँच गई; चालीस हजार

को बाँधकर कालकोठरियों में डाल दिया गया; लगभग उतने ही लोगों को बंदियों के रूप में सैनिकों में बाँट दिया गया। अपने घमंड में, राजा, जिसका नेतृत्व मेनेलॉस—जो अपने देश और कानून का गद्दार था—ने किया था, ने ईश्वर के मंदिर में प्रवेश करने की हिम्मत की; वहाँ उसने सोने का वेदी, सोने का दीव, सोने के धूपदान और मंदिर को सजाने के लिए राजाओं द्वारा दान किए गए सभी कीमती बर्तन जब्त कर लिए; उसने पर्दा, मुकुट और अन्य सोने के आभूषण, साथ ही वहाँ छिपा हुआ पाया गया सोना और चाँदी भी जब्त कर ली। ईश्वर के मंदिर को लूटने और अपवित्र करने, नगर को तबाह करने तथा उसे रक्त और विलाप से भरने के बाद, राजा अंताखिया लौट गया; जबकि यरूशलेम और पूरे यहूदिया में, अंताखुस ने इस्राएलियों को यातना देने के लिए अपने से भी अधिक क्रूर यातना देने वालों को छोड़ दिया। (2 मक्काबीस 5:5–22)।

कुछ समय बीत जाने के बाद, एंटिओकस ने पूरे राज्य में एक फरमान जारी किया कि उसके सभी प्रजाजन, चाहे वे किसी भी जनजाति के हों, उसी ग्रीक देवताओं की पूजा करें और उन्हीं ग्रीक कानूनों का पालन करें। न केवल सभी मूर्तिपूजकों ने इस आदेश का पालन किया, बल्कि कई यहूदियों ने भी इसका पालन किया: उन्होंने मूर्तियों को बलिदान चढ़ाया और सब्बाथ का अपमान किया। यह आदेश जारी होने के कुछ दिनों बाद, राजा ने अपने एक सलाहकार—एथेंस के एक वृद्ध व्यक्ति—को अंताकिया से यरूशलेम भेजा, इस निर्देश के साथ कि वह सभी यहूदियों को उनके पूर्वजों के कानूनों को त्यागने, मूर्तियों की पूजा करने और मूर्तियों को बलिदान किए गए मांस को खाने के लिए मजबूर करे; उसने यहूदियों को सूअर का मांस खिलाने के लिए एक विशेष आदेश जारी किया, जो कानून द्वारा निषिद्ध था। इसी समय, अंटिओकस ने प्रभु के मंदिर को एक मूर्तिपूजक पूजा स्थल में बदलने का आदेश दिया: उसमें जुपिटर की एक मूर्ति स्थापित करने और इसे ओलंपियन जुपिटर का मंदिर नाम देने का आदेश दिया। राजा द्वारा भेजा गया एक वृद्ध व्यक्ति, एक सैन्य दल के साथ, यरूशलेम पहुँचा और राजा की आज्ञा का पालन करने लगा: उसने प्रभु के मंदिर को अपवित्र किया, उसमें मूर्तियाँ स्थापित कीं, जिनके लिए उसने घृणित बलिदान चढ़ाए, और परमेश्वर के लोगों को भी ऐसा ही करने के लिए मजबूर किया। कई यहूदियों ने, जिनका हृदय अडिग नहीं था, मूर्तियों को बलिदान चढ़ाने में शीघ्रता की; लेकिन उनमें से जो अपने विश्वास में दृढ़ता के लिए प्रसिद्ध थे, वे पहाड़ों और रेगिस्तानों में भाग गए, जहाँ वे यातना से शरण पाने और मूर्तिपूजा की अशुद्धता से खुद को बचाने के लिए, गुफाओं और घाटियों में छिप गए। जो शहर में रह गए थे, उन्हें पकड़ लिया गया और, हृदय में दुख के साथ, उन्हें जबरदस्ती राजा के जन्मदिन समारोहों और अन्य मूर्तिपूजक त्योहारों में भाग लेने और मूर्तियों को बलिदान चढ़ाने के लिए मजबूर किया गया; जिन्होंने ऐसा करने से इनकार कर दिया, उन्हें यातनाएँ दी गईं (2 मक्काबीस 6:1–9)। यरूशलेम के सभी निवासी बहुत भय से ग्रस्त हो गए, इसलिए कोई भी खुले तौर पर यहूदी कहने, सब्बत का पालन करने, अपने बच्चों का खतना कराने, या सामान्य रूप से मूसा की व्यवस्था के विधानों को पूरा करने की हिम्मत नहीं करता था: भविष्य में होने वाले यातना और मृत्यु का भय सभी की आँखों के सामने मंडरा रहा था। उस समय, राजा द्वारा भेजे गए यातनाकर्ता को यह सूचना दी गई कि दो यहूदी महिलाओं ने अपने कानून के अनुसार अपने नवजात शिशुओं का खतना कराया था। तब यातनाकर्ता ने आदेश दिया कि इन महिलाओं को पकड़कर सार्वजनिक अपमान के लिए शहर में घुमाया जाए, और शिशुओं को उनकी गर्दन से पकड़कर उनकी माताओं की छाती से लटका दिया जाए; फिर उन्हें शहर की दीवार से सिर के बल नीचे फेंक दिया गया; इस प्रकार माताओं और उनके शिशुओं ने शहीद की मृत्यु प्राप्त की। यह भी जानने पर कि कुछ यहूदी सब्बाथ मनाने के लिए शहर के सबसे करीबी गुफाओं में इकट्ठा हो रहे थे, यातना देने वाले ने उन्हें सभी को जिंदा जलाने का आदेश दिया (2 मक्काबीस 6:10-11)।

इसके बाद, प्रमुख लेखकों में से एक, एलेज़र नामक एक पुरोहित को पकड़ लिया गया; वह एक वृद्ध व्यक्ति था, जो बुढ़ापे से सफेद पड़ गया था, जिसके वक्षस्थल पर बाल थे, और जो अत्यंत गरिमामय रूप वाला था, अपनी बुद्धि और धार्मिकता के लिए प्रसिद्ध था; वे यरूशलेम में व्यवस्था के प्रमुख शिक्षकों में से एक के रूप में सभी के बीच जाने जाते थे: वे उन बहत्तर व्याख्याकारों में से एक थे जिन्होंने मिस्र के राजा पतोलमी फिलाडेल्फस के लिए पवित्र शास्त्रों का हिब्रू से ग्रीक में अनुवाद किया था। पवित्र शास्त्र इस सम्मानित पिता के दुखों का निम्नलिखित वृत्तांत देते हैं। जब एलेज़र को यातना देने वाले के सामने लाया गया और खाने के लिए मजबूर किया जा रहा था, तो वे उसके मुँह में सूअर का मांस ठूँसने लगे, तब उसने संकल्प लिया कि ईश्वर के विधान के लिए एक गौरवपूर्ण शहीद की मृत्यु पाना बेहतर है, बजाय इसके कि उसके उल्लंघन करके एक अपमानजनक और ईश्वर को अप्रिय जीवन जिया जाए। इस प्रकार एलेज़र ने स्वेच्छा से अपनी यातनाओं को सहन किया; रास्ते में उसने उसे थूक दिया, क्योंकि उसे अशुद्ध मांस को छूने के लिए मजबूर किया गया था; उसने अन्य ईश्वर-भयभीत यहूदियों के लिए एक उदाहरण स्थापित किया, जिन्हें ईश्वर के कानून का पालन करने के लिए मृत्यु की धमकी भी दी गई थी, और उन्हें अपने कार्यों से ही यह सिखाया कि किसी को भी सांसारिक

जीवन को बचाने के लिए पाप नहीं करना चाहिए, और न ही उसे उससे लगाव के कारण कानून तोड़कर ईश्वर के क्रोध को भड़काना चाहिए। कुछ विधर्मी, जो एलेज़र को लंबे समय से जानते थे, उन पर तरस खा गए और गुप्त रूप से सूअर के मांस के बजाय, कानून द्वारा निषिद्ध नहीं किया गया अन्य मांस लाए, और उसके कान में फुसफुसाया:

'इसे लो और सूअर के मांस के बजाय सबके सामने खाओ; जब सब लोग तुम्हें मांस खाते देखेंगे, तो वे मान लेंगे कि यह वही सूअर का मांस है जिसे राजा ने तुम्हें खाने का आदेश दिया है, और इस तरह तुम यातना और मृत्यु से बच जाओगे।'

लेकिन उस समझदार और धर्मनिष्ठ बूढ़े ने बिना किसी हिचकिचाहट के उन्हें उत्तर दिया:

'मैं अपने प्रभु के पवित्र विधान को तोड़कर उन्हें क्रोधित करने के बजाय नरक में जाने के लिए सहमत हो जाऊँगा, और यह मेरे लिए उचित नहीं है कि मैं इतनी वृद्धावस्था में पाखंड करूँ और कई युवाओं को भटका दूँ; जब वे देखेंगे कि मैं वही कर रहा हूँ जो आप मुझे करने की सलाह दे रहे हैं, तो वे कहेंगे: 'देखो, एलेज़र, जो अब अपनी गहरी वृद्धावस्था में है, ने हमारे पूर्वजों के प्राचीन विधान को छोड़कर विधर्मी लोगों के विधान को अपना लिया है' – और मेरे कपटपूर्ण कर्म के कारण, वे सच्चे ईश्वर से मुँह मोड़कर मेरे अनुकरण में नाश हो जाएँगे; इस क्षणिक जीवन के प्रति प्रेम के कारण, वे ईश्वर के विधान का तिरस्कार करने और हेलेनिक अधर्म की ओर मुड़ने लगेंगे, जबकि मैं इतने सारे आत्माओं के विनाश का कारण बनकर अपने वृद्ध जीवन पर कलंक लगाऊँगा। यदि मैं मनुष्यों द्वारा दिए गए कष्टों से बच भी जाऊँ, तो भी मैं परमेश्वर के दंड देने वाले दहिने हाथ से न तो पृथ्वी पर अपने जीवन में और न ही कब्र के पार मृत्यु के बाद बच सकूँगा; मेरे लिए तो यही बेहतर है कि मैं अब मर जाऊँ, और पवित्र विधान के लिए सहे गए कष्टों के बीच हतोत्साहित हुए बिना, दृढ़ता से मरकर, मैं अपने सफेद बालों को धैर्य से सजाऊँगा और युवाओं के लिए अनुकरण करने हेतु एक अच्छा उदाहरण छोड़ जाऊँगा।

संत एलेज़र के ये वचन सुनकर, उसे यातनाएँ देने के लिए ले जाया गया; और वे लोग जो पहले उसके प्रति सहानुभूति व्यक्त कर रहे थे, अब उसकी बात सुनकर उसके प्रति क्रोध और रोष से भर गए। अपनी भयानक यातनाओं के दौरान, जब परमेश्वर का याजक अपने गंभीर घावों से मृत्यु के करीब था, तो वह अपने कराहों के बीच प्रभु की ओर मुड़ा:

'हे सर्वज्ञ और सर्व-दयालु प्रभु, आप जानते हैं कि, यद्यपि मैं मृत्यु से बच सकता था, फिर भी मैं खुशी-खुशी और प्रेमपूर्वक इन क्रूर घावों को स्वीकार करता हूँ, अपने शरीर को कठोर यातनाओं के अधीन करता हूँ; क्योंकि मैं आपके पवित्र नाम की महिमा के लिए पीड़ा सह रहा हूँ।'

यह कहकर वह मर गया, और उसने अपनी मृत्यु में न केवल युवकों के लिए बल्कि सभी यहूदियों के लिए साहस का एक उदाहरण छोड़ा (2 मक्काबीस 6:18–31)। संत एलेज़र के दुखों के बारे में पवित्र पुस्तकों में दिए गए विवरण को निम्नलिखित परंपरा द्वारा और पूरक किया गया है: एक क्रूर पिटाई के बाद, उन्होंने उसके नाक में तेज बदबू वाला सिरका डाला, और फिर उसे आग में फेंक दिया; लेकिन उसने ईश्वर से प्रार्थना की कि प्रभु उसकी पीड़ा और मृत्यु को पूरे यहूदी लोगों के लिए एक बलिदान के रूप में स्वीकार करें, और अपनी आत्मा को त्याग दिया।

संत एलेज़र की शहादत के बाद, उनके सात भाइयों को उनकी माँ के साथ गिरफ्तार कर लिया गया; चूँकि वे एक कुलीन परिवार से थे, उन्हें परीक्षा के लिए सीधे अंफ़ियाकी में राजा के पास भेज दिया गया। वहाँ, कानून की स्पष्ट मनाही का उल्लंघन करते हुए, राजा ने उन्हें सूअर का मांस खाने के लिए मजबूर किया, जिसे यहूदियों के प्रभु से धर्मत्याग का एक स्पष्ट संकेत माना जाता था, जिन पर यहूदी विश्वास करते थे, और इसे मूर्तिपूजा को अपनाने के रूप में देखा जाता था, जिसकी ओर वे यहूदी मुड़ रहे थे जो यातनाओं से डरते थे। उक्त सात भाइयों ने, जो यरूशलेम के शहीद पुरोहित और शिक्षक एलेआज़र के शिष्य थे, उसकी शिक्षाओं को अच्छी तरह याद रखा और अपनी धार्मिक निष्ठा में अडिग रहे: उन्होंने राजा की आज्ञा नहीं मानी और किसी भी परिस्थिति में कानून को तोड़ने से इनकार कर दिया। इसके लिए, उन्हें लंबे समय तक यातनाएँ दी गईं, चाबुक और बैल की खाल के फट्टों से पीटा गया। पवित्र शास्त्र, मक्काबीस की दूसरी पुस्तक में, उनके दुखों और उनके यातना देने वाले के सामने उनके निडर विरोध का वर्णन इस प्रकार करता है। भाइयों में से एक, जो सबसे बड़ा था, ने स्वयं बोलने का दायित्व लेते हुए, राजा से कहा:

'तुम हमसे क्या पूछना चाहते हो, या हमसे क्या जानना चाहते हो? हम अपने पूर्वजों के नियमों का उल्लंघन करने के बजाय मरने को तैयार हैं।'

तब राजा ने क्रोधित होकर आज्ञा दी कि कड़ाहियों और बड़े बर्तन को गर्म किया जाए। जब ऐसा किया गया, तो राजा ने तुरंत आज्ञा दी कि उत्तर देने वाले युवक की जीभ काट दी जाए, उसकी खाल उधेड़ दी जाए, और उसके अंग-प्रत्यंग काट दिए जाएँ, यह सब उसके अन्य भाइयों और उसकी माँ के सामने किया जाए। राजा ने शहीद—जिसके सभी

अंग काट दिए गए थे लेकिन वह अभी भी सांस ले रहा था—को चिता पर ले जाकर कड़ाही में भुना जाने का आदेश दिया; और जब कड़ाही से एक तीव्र भाप उठी, तो भाइयों ने अपनी माँ के साथ मिलकर एक-दूसरे को साहसपूर्वक मृत्यु को सहन करने के लिए प्रोत्साहित किया, यह कहते हुए:

'प्रभु परमेश्वर हमें देख रहे हैं और निश्चय ही हम पर दया करेंगे, जैसा कि मूसा ने लोगों के सामने अपने गीत में घोषणा की थी: "और वह अपने सेवकों पर दया करेगा।"'

जब पहला मर गया, तो वे दूसरे को उपहास करने के लिए बाहर ले आए; और उसके सिर से बाल सहित त्वचा उधेड़ने के बाद, उन्होंने उससे पूछा कि क्या वह (सूअर का मांस) खाएगा, इससे पहले कि वे उसके शरीर को टुकड़ों में काटकर उसे यातना देना शुरू करते। उसने, हालांकि, अपनी मातृभाषा में जवाब देते हुए कहा: 'नहीं।' इसलिए, उसने भी पहले की ही तरह यातनाएँ सहन कीं, और अपनी अंतिम साँस लेते हुए कहा:

'तुम, हमारे यातना देने वाले, हमसे यह जीवन छीन रहे हो, लेकिन संसार के राजा हमें, जो उनके नियमों के लिए मरे हैं, अनंत जीवन में पुनर्जीवित करेंगे।'

इसके बाद, तीसरे भाई को यातनाएँ दी गईं, और जब उससे अपनी जीभ निकालने के लिए कहा गया, तो उसने तुरंत उसे बाहर निकाल दिया, निडर होकर अपने हाथ भी फैला दिए, और साहसपूर्वक कहा:

'मैंने उन्हें स्वर्ग से प्राप्त किया है, और उसके नियमों की खातिर मैं उन्हें नहीं छोड़ता; और मुझे उम्मीद है कि मैं उन्हें फिर से उसी से प्राप्त करूँगा।'

राजा स्वयं और उसके साथी उस युवक के साहस से चकित थे, क्योंकि वह अपनी पीड़ा को कुछ भी नहीं समझता था। जब वह भी मर गया, तो उन्होंने चौथे को भी उसी प्रकार यातनाएँ दीं और प्रताड़ित किया। जब वह मृत्यु के करीब पहुँचा, तो उसने इस प्रकार कहा:

'मनुष्यों के हाथों मरते हुए किसी की यही इच्छा होती है कि वह अपनी आशा परमेश्वर में रखे, ताकि वह उसे पुनर्जीवित कर दे; परन्तु तुम्हारे लिए जीवन का पुनरुत्थान नहीं होगा।'

तब उन्होंने पाँचवें को लाया और उसे यातना देना शुरू कर दिया। राजा की ओर देखते हुए, उसने कहा:

'मनुष्यों पर अधिकार होने के कारण, तुम जो स्वयं क्षय के अधीन हो, जो चाहो करो; लेकिन यह मत सोचो कि हमारे लोगों को ईश्वर ने त्याग दिया है। प्रतीक्षा करो, और तुम उसकी महान शक्ति को देखोगे, जब वह तुम्हें और तुम्हारी संतान को दंड देगा।'

इसके बाद उन्होंने छठे को लाया, जो मृत्यु के लिए तैयार होते हुए, बोला:

'व्यर्थ में खुद को धोखा न दो, क्योंकि हम यह अपने परमेश्वर के विरुद्ध अपने पापों के कारण सह रहे हैं; इसीलिए यह आश्चर्यजनक घटना घटी है[5421] । लेकिन यह मत सोचो कि तुम बिना सज़ा के बच जाओगे, तुमने जो परमेश्वर का विरोध करने की हिम्मत की है।'

तथापि, आश्चर्य और गौरवपूर्ण स्मरण के लिए सबसे योग्य वह माता है, जिसने अपने सात पुत्रों को एक ही दिन में मृत्युदंड भोगते हुए देखा, और प्रभु में अपनी आशा रखकर इस सब को धैर्यपूर्वक सहन किया। उत्तम भावनाओं से परिपूर्ण और अपने स्त्री-सुलभ विवेक को पुरुषोचित साहस से दृढ़ करते हुए, उसने अपने प्रत्येक पुत्र को उनकी मातृभाषा में प्रोत्साहित किया और उनसे कहा:

'मुझे नहीं पता कि तुम मेरी कोख में कैसे आए: यह मैं नहीं था जिसने तुम्हें प्राण और जीवन दिया; और न ही यह मैं था जिसने तुममें से प्रत्येक का रूप रचा। और संसार का स्रष्टा, जिसने मानव स्वभाव को रचा और सभी की उत्पत्ति को निर्धारित किया, वह अपनी दया में एक बार फिर तुम्हें प्राण और जीवन प्रदान करेगा, क्योंकि तुम उसके नियमों के लिए अपना जीवन भी बलिदान करने से पीछे नहीं हट रहे हो।'

हालाँकि, अंटिओकस ने यह सोचकर कि उसका अपमान किया जा रहा है और इन शब्दों को अपने लिए एक अपमान मानकर, सबसे छोटे बेटे—जो अभी भी वहीं था—को न केवल शब्दों से बल्कि गंभीर शपथों के साथ भी आग्रह किया कि यदि वह अपने पिता के कानूनों का त्याग कर दे तो वह उसे अमीर और खुशहाल बना देगा, उसे अपना दोस्त मानेगा और उसे सम्मान के पदों पर नियुक्त करेगा। लेकिन जब उस युवक ने उसकी कोई भी बात नहीं सुनी, तो राजा ने अपनी माँ को बुलाया और उससे अपने बेटे को अपनी जान बचाने की सलाह देने का आग्रह किया। उसकी बहुत मनाने पर, वह अपने बेटे

[5421] अर्थात् यहूदियों का उत्पीड़न और यातना।

को समझाने की कोशशि करने के लिए तैयार हो गई। उसके पास झुकते हुए और उस क्रूर यातनाकर्ता का मज़ाक उड़ाते हुए, उसने अपनी मातृभाषा में इस प्रकार कहा:

'मेरे बेटे! मुझ पर दया कर, जसिने तुझे नौ महीने अपनी कोख में रखा, तीन साल तक तेरा दूध पलिाया, तुझे पाला-पोसा और पढ़ाया-लखिाया। मैं तुझसे वनिती करती हूँ, मेरे बच्चे, आकाश और पृथ्वी को देख और उन पर जो कुछ भी है, उसे देखकर यह समझ कि ईश्वर ने सब कुछ शून्य से बनाया है, और मानव जाति भी इसी तरह अस्तित्व में आई। इस हत्यारे से मत डर, बल्कि अपने भाइयों के योग्य बन और मृत्यु को स्वीकार कर, ताकि मैं, ईश्वर की कृपा से, फरि से तुझसे और तेरे भाइयों से मलि सकूँ।

वह अभी बोल ही रही थी कि उिस युवक ने कहा:

– तुम क्या उम्मीद करते हो? मैं राजा की आज्ञा नहीं मानता, बल्कि मूसा के द्वारा हमारे पूर्वजों को दिए गए कानून का पालन करता हूँ। और तू, यहूदियों के वरिुद्ध सब बुराइयों का उत्तेजक, परमेश्वर के हाथ से न बच पाएगा: हम अपने ही पापों के लिए दुख उठा रहे हैं। यदि, हमारी शिक्षा और दंड के लिए, जीवते प्रभु हम पर थोड़े समय के लिए क्रुद्ध हुए हैं, तो वे एक बार फरि अपनी दासों पर दया दखिाएंगे; परन्तु तुम, जो सब मनुष्यों में सबसे दुष्ट और अपराधी हो, व्यर्थ में घमण्ड मत करो, और यह झूठी आशा मत रखो कि तुम उसके दासों पर हाथ उठाओगे; क्योंकि तुम अब तक सर्वशक्तमिान और सर्वदर्शी परमेश्वर के न्याय से नहीं बचे हो। हमारे भाइयों ने, अब थोड़ी सी पीड़ा सहकर, अनन्त जीवन प्राप्त कर लिया है, जबकि तुम, परमेश्वर के न्याय द्वारा, अपनी घमंड के लिए उचति दंड भुगतोगे। जहाँ तक मेरी बात है, मैं भी अपने भाइयों की तरह, हमारे पूर्वजों की व्यवस्थाओं के लिए अपनी आत्मा और शरीर दोनों को सौंपता हूँ, और परमेश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि वह शीघ्र ही लोगों पर दया करें, और यह कि यातनाओं और दण्डों के द्वारा तुम यह स्वीकार करो कि वही एकमात्र परमेश्वर है, और यह कि सर्वशक्तमिान का क्रोध—जो हमारे पूरे वंश पर न्यायपूर्वक आया है—मेरे और मेरे भाइयों पर समाप्त हो जाए।

तब क्रोधति राजा ने उपहास से आहत होकर, उसे दूसरों से भी अधकि क्रूरता से प्रताड़ति कयिा। और इस प्रकार उसने भी प्रभु में अपना पूरा भरोसा रखकर अपना जीवन पवत्रिता में समाप्त कयिा (2 मक्काबी 7:2–40)। यह देखकर, धन्य माता—जसिका नाम सोलोमोनयिा था—अनकही आनंद से भर गईं कि उिसने अपने बच्चों को पवत्रिता में प्रभु के पास भेजा था; उनके शरीरों के ऊपर खड़ी होकर, उसने अपने हाथ ऊपर उठाए और, गर्म, आनंदति आँसुओं के साथ प्रार्थना करके, अपनी आत्मा परमेश्वर के हाथों में सौंप दी। इस प्रकार वह माता अपने बच्चों के साथ परमेश्वर सर्वशक्तमिान के वधिान के लिए अपनी आत्मा अर्पण करके चल बसी[5422] ।

अपने सेवकों के रक्तपात को देखकर, प्रभु ने यहूदी लोगों पर दया की: उन्होंने उनके बीच यहूदा को उठाया, जो पुरोहति वंश का था और मैकाबी के नाम से जाना जाता था। अपनी सैन्य शक्ति से, यहूदा ने दुष्ट अंटओिकस के खलिाफ बहादुरी से प्रतरिोध कयिा और अपनी वजिय के बाद, उसने अपने कमांडरों को पीछे हटने पर मजबूर कर दयिा। फरि उसने उन सभी को मार डाला जो हेलेनस्टिकि मूर्तपिूजा की ओर मुड़ गए थे और मंदरि को मूर्तयिों से शुद्ध कयिा, जैसा कि मैकाबीज़ की पुस्तकों में वस्तिार से वर्णति है।

जहाँ तक राजा अंटओिकस का सवाल है, ईश्वर का धर्मी न्याय उसे उसके जीवति रहते ही मलि गया। वह एक भयानक बीमारी से पीड़ति हो गया: उसके आँत सड़ने लगे और उनमें कीड़े पड़ गए, और उससे एक असहनीय बदबू नकिलने लगी। तब, शहीदों में सबसे छोटे की भवष्यिवाणी के अनुसार (2 मक्काबी 7:34-35), दुष्ट अंटओिकस को उस सच्चे परमेश्वर की सर्वशक्तमिानता को स्वीकार करने के लिए मजबूर होना पड़ा, जसिकी उसने पहले नदिा की थी, और अपने उत्पीड़न के बाद वह प्रार्थना में उसी की ओर मुड़ा। लेकनि प्रभु ने उस पर दया नहीं की जसिने दूसरों पर कोई दया नहीं दखिाई थी: अन्तयिोकस, जो सच्चा पश्चाताप नहीं कर पाया, का एक दुखद अंत हुआ, जसिने सभी को परमेश्वर के न्याय पर वचिार करने के लिए प्रेरति कयिा। सभी ने सर्वशक्तमिान परमेश्वर की महमिा की, जैसे कि अब सभी पीढ़ियाँ उसकी महमिा करती हैं और हमेशा के लिए उसकी महमिा करती रहेंगी। आमीन।

[5422] पवत्रि शहीदों की मृत्यु का समय 166 ईसा पूर्व का माना जाता है।

ट्रोपारयिन, स्वर 1:

हे प्रभु, तेरे लिए दुख सहने वाले संतों के दुखों के द्वारा, दयालु हो, और हे मानव-प्रेमी, हम प्रार्थना करते हैं कि तू हमारी सभी दुर्बलताओं को चंगा कर।

कॉन्टाकयिन, स्वर 2:

हे परमेश्वर की बुद्धि के सात स्तंभों, और दिव्य प्रकाश के सात-शाखीय दीपों, हे सर्व-ज्ञानी मक्काबीयों, हे शहीदों में महान शहीद, उनके साथ मिलकर उन लोगों के उद्धार के लिए परमेश्वर से प्रार्थना करो जो आपको सम्मानित करते हैं।

पवित्र शहीदों लियोन्टिनस, अट्टस, अलेक्जेंडर, कैडियस, मिनिसफिस, सिरियिकस, मिनियस (मिनीऑन), कैटुनस और यूक्लियस के कष्ट कथा

1 अगस्त को स्मरण किया जाता है

ये पवित्र शहीद सम्राट डायोक्लेटियन के शासनकाल में पम्फिलियाई शहर पेरगा में रहते थे, उस समय जब पम्फिलिया पर हेगेमोन फ्लेवियन का शासन था, और सभी ईसाई पूर्वजों की संतान थे। माइनियन पेशे से एक बढ़ई था, जबकि अन्य किसान थे। एक ही संकल्प साझा करते हुए, वे सभी एक ही महान निर्णय पर पहुँचे और उन्होंने स्वयं को शहीद होने के कार्य के लिए समर्पित कर दिया। इसलिए, अपने दैनिक कार्यों को त्यागकर, वे रात के समय आर्थमिसि के मंदिर[5423] गए और उसमें मौजूद सभी पूजा की वस्तुओं को नष्ट कर दिया। इसीलिए उन्हें गिरफ्तार कर पूछताछ की गई, जिसके बाद उन्हें बेरहमी से पीटा गया और उनके घावों को आग से दागा गया; फिर, लोहे की पंजाओं से उनका मांस लगभग हड्डी तक नोच लिया गया, उनके कंधों को जलती मोमबत्तियों से झुलसाया गया, और कीलों से उनकी आँखें निकाल दी गईं। इस सारी यातना के बाद, उन्हें एक कालकोठरी में डाल दिया गया जहाँ, यातना देने वाले के आदेश पर, उन्हें न तो भोजन दिया गया और न ही पानी। फिर उन्हें चीर-फाड़ के लिए जानवरों के सामने फेंक दिया गया, लेकिन पवित्र शहीदों ने जानवरों को वश में कर लिया, जिससे वहाँ मौजूद सभी लोग भय से भर गए और जोर से चिल्ला उठे:

'महान है ईसाई ईश्वर!'

तत्काल गरज और बिजली के साथ एक तूफान आ गया, और आग और ओलों के साथ मिलकर बारिश धरती पर गिरी। उसी समय, संतों को पुकारती हुई एक आवाज़ सुनाई दी, और इस मधुर आवाज़ को सुनकर वे परम आनंद से भर गए। फिर, राज्यपाल के आदेश पर, तलवार से उनके सिर काट दिए गए[5424] । इस प्रकार उनका बलिदान समाप्त हुआ।

15 अगस्त

2 अगस्त (पुराने कैलेंडर के अनुसार)

उसी दिन, पवित्र हयेरोमार्टायर और रोम के पोप, संत स्टीफन की स्मृति दिवस है, जिनका वेलेरियन के शासनकाल में वर्ष 257 के 2 अगस्त को शहादत हुई थी।

इसी दिन, धन्य बेसिल की स्मृति मनाई जाती है, जो वोल्गोडा जिले के कुबेन्स्की द्वीप पर स्पासोकाम्योये मठ में एक भिक्षु के रूप में रहते थे।

[5423] आर्टमिसि या डायना, ज्यूस और लेटो की बेटी, की यूनानियों द्वारा एक कुंवारी देवी, कन्याओं और महिलाओं की संरक्षक, और साथ ही चंद्रमा की देवी के रूप में पूजा की जाती थी। इस देवी की विशेष रूप से एफ़िसुस शहर में पूजा की जाती थी, जहाँ उनके सम्मान में एक भव्य मंदिर बनाया गया था और रोमन साम्राज्य के सभी हिस्सों से बड़ी संख्या में लोग उनकी पूजा करने के लिए वहाँ आते थे। देवी की इस पूजा का केंद्र विभिन्न मूर्तिपूजक अंधविश्वास थे, और उनके सम्मान में कई अनैतिक समारोह और अनुष्ठान किए जाते थे।

[5424] इन पवित्र शहीदों की मृत्यु का वर्ष अज्ञात है।

पहले शहीद और महाडीकन संत स्टीफन के अवशेषों का स्थानांतरण

2 अगस्त को स्मरण कयिा जाता है

संत स्टीफन महादीकन को यहूदयिों द्वारा पत्थर मारकर हत्या कएि जाने के बाद (प्रेरतिों के काम 7:55–60), उनका पवत्रि शरीर एक दनि और एक रात तक बनिा दफनाए पड़ा रहा: इसे कुत्तों, जंगली जानवरों और पक्षयिों द्वारा नोच खाए जाने के लएि खुला छोड़ दयिा गया था; लेकनि शरीर को कुछ भी नहीं हुआ, क्योंकि प्रभु उसकी रक्षा कर रहे थे। दूसरी रात, यरूशलेम में धर्म-शक्षिा का प्रसद्धि शक्षिक, गमलीएल[5425] , जो प्रेरतिों के काम की पुस्तक में उल्लेखति है (प्रेरतिों के काम 5:34, 22:3), जो मसीह के वशि्वास की ओर आकर्षति होने लगे थे और पवत्रि प्रेरतिों के एक गुप्त मत्रि बन गए थे, ने कुछ धर्मपरायण पुरुषों को पहले शहीद का शरीर चुपके से ले जाने के लएि भेजा; उन्होंने इसे अपनी संपत्ति पर ले गए, जसिका नाम मालकि के नाम पर कफ़र गमाला था, अर्थात् गमलीएल की संपत्ति; यह यरूशलेम से बीस स्टेडयिम[5426] दूर स्थति थी। वहाँ, गमलीएल ने संत स्तेफन के शरीर को सम्मानपूर्वक दफनाया, और उसे अपनी नई कब्र में एक गुफा में रख दयिा। तब नकिोदेमस, 'यहूदयिों का हाकमि', जो रात को यीशु मसीह के पास आया था (यूहन्ना 3:1-2), संत स्तेफन की कब्र पर रोते हुए चल बसा; और उसे उसी गमलीएल ने पहले शहीद की कब्र के पास ही दफनाया। इसके बाद, गमलीएल, , अपने पुत्र आववि के साथ पवत्रि बपतस्मिा ग्रहण करने और कुछ समय के लएि ईसाई भक्ति में एक ईश्वर-भयभीत जीवन जीने के बाद, का नधिन हो गया; दोनों को स्तेफानुस और नकिोदेमुस की कब्रों के बगल में, एक ही गुफा में दफनाया गया।

कई वर्षों बाद, जब उत्पीड़क—जो लंबे समय से परमेश्वर की कलीसयिा का उत्पीड़न कर रहे थे—नष्ट हो गए, और महान कॉन्स्टेंटनि के धर्मांतरण के बाद ईसाई राजाओं का युग आ गया—एक ऐसा युग जब चर्च में सर्वत्र शांति और भक्ति का प्रकाश फैल रहा था— – तब, दैवीय प्रकटोक्ति द्वारा, पवत्रि प्रथम शहीद स्तेफन और उनके साथ दफनाए गए धर्मपरायण पुरुषों—नकिोदेमस, गमलीएल और अववि—की पूजनीय अवशेषों की खोज हुई।

उन्हें उपरोक्त नगर के पुरोहति लूसयिन ने एक दर्शन के बाद खोज नकिाला। गुरुवार और शुक्रवार की मध्यरात्रि के तीसरे पहर में, लूसयिन को एक स्वप्न-दर्शन में एक पवत्रि-दृश्य वृद्ध व्यक्ति दखिाई दयिा: कद में लंबा, उम्र के कारण सफेद-धारी, लंबी दाढ़ी वाला, और सुनहरे क्रॉस की छवयिों से सुशोभति सफेद वस्त्र पहने हुए; उसके हाथ में एक सुनहरा दंड था। उससे पुरोहति के बगल में ठेलते हुए, उसने उसे तीन बार नाम से पुकारा:

'लुसयिन! लुसयिन, लुसयिन!'

तब वह बोलने लगा:

'यरूशलेम जाओ और पवत्रि आर्चबशिप जॉन से कहो: "हम कब तक बंद रहेंगे? तुम हमें क्यों नहीं खोलते? क्योंकि आपके पवत्रि मंत्रालय के दनिों में यह उचति है कि हम प्रकट हों; बनिा देरी के हमारी कब्र खोलो, जहाँ हमारे अवशेष उपेक्षति पड़े हैं, जो अब बारशि से भीग रहे हैं, और अब अवशि्वासयिों के पैरों तले कुचले जा रहे हैं। मैं अपनी चति कम करता हूँ और उन संतों की अधकि, जो मेरे साथ पड़े हैं और जो महान सम्मान के योग्य हैं; तुम्हें जो अवशेष बताए गए हैं, उन्हें खोलो—ताकि ईश्वर अपनी दया के द्वार उस संसार के लएि खोलें जो अनेक वपित्तयिों से घरि हुआ है।

पुजारी लूसयिन, भय से भरकर, उस व्यक्ति से पूछा जो उसे दखिाई दयिा था:

'आप कौन हैं, महोदय? और "आपके साथ वाले" से आपका क्या अभप्रिाय है?'

'मैं,' उस प्रकट हुए व्यक्ति ने उत्तर दयिा, 'गमालएिल हूँ, प्रेरति पौलुस का शक्षिक और गुरु; और मेरे साथ अर्चडीकन स्तेफन हैं, जन्हिें यहूदयिों और यरूशलेम के महापुरोहतिों ने मसीह में उनके वशि्वास के कारण पत्थर मार कर मार डाला था: उसका शरीर, जसिे कुत्तों, जंगली जानवरों और पक्षयिों द्वारा खाए जाने के लएि फेंक दयिा गया था, मैंने रात में उठाया, उसे पूरा-पूरा इस स्थान पर लाया और उसे अपनी गुफा में एक कब्र में रख दयिा जो मैंने अपने लएि तैयार की थी, यह इच्छा रखते हुए कि पुनरुत्थान में और प्रभु की कृपा में उसी के साथ मेरी भी वही नयिति हो। एक ही गुफा में,

---

[5425] गामलीएल – कानून के एक प्रसद्धि यहूदी शक्षिक, जो यरूशलेम के महासभा में एक उच्च पद पर थे और पूरे राष्ट्र द्वारा सम्मानति थे, इतने सम्मानति कि उन्हें 'कानून का गौरव' कहा जाता था। परंपरा बताती है कि उन्हें, उनके पुत्र आववि के साथ, प्रेरति पतरस और प्रेरति यूहन्ना द्वारा बपतस्मिा दयिा गया था।

[5426] दूरी की एक इकाई जो हमारे लगभग 690 फाथम के बराबर है।

एक अन्य मकबरे में, प्रभु निकोदेमस लेटे हैं, जिन्हें स्वयं प्रभु मसीह ने पवित्र विश्वास सिखाया था और (प्रभु के स्वर्गारोहण के बाद) उन्होंने प्रेरितों से पवित्र बपतिस्मा ग्रहण किया था; जब यहूदियों को मसीह में उसकी आस्था और उसके बपतिस्मा के बारे में पता चला, तो वे क्रोध से भर गए और उसे मार डालना चाहा, ठीक वैसे ही जैसे उन्होंने स्तेफन के साथ किया था; हालाँकि, उन्होंने मेरे सम्मान के कारण ऐसा करने से परहेज़ किया, क्योंकि निकोदेमस मेरे रिश्तेदार थे; यहूदियों ने उसे उसके पद से हटा दिया और उसकी संपत्ति को चर्च की संपत्ति में मिला लिया; फिर, उसे शाप देकर, उन्होंने उसे अपमान और बहुत सी निंदा के बीच शहर से बाहर निकाल दिया: तब मैंने उसे अपनी देखभाल में ले लिया और उसकी मृत्यु तक उसका भरण-पोषण किया; और जब उसकी मृत्यु हुई, तो मैंने उसे पहले शहीद, स्तेफन की अवशेषों के पास दफनाया। वहाँ, गुफा की दीवार में बनाई गई एक तीसरी कब्र में, मैंने अपने प्रिय पुत्र आबिद को दफनाया, जो बीस वर्ष की आयु में मर गया था, जिसने मसीह के प्रेरितों से मेरे साथ पवित्र बपतिस्मा प्राप्त किया था; मैंने यह वसीयत की कि मेरी मृत्यु के बाद मेरा शरीर भी उनके साथ ही दफनाया जाए।

'तो फिर हम आपको कहाँ खोजें?' पुजारी ने पूछा।

'हमें खोजो,' गमलीएल ने उत्तर दिया, 'पूरी सभा के सामने दक्षिण की ओर मुख किए हुए, डेलागाव्री के खेत में (अर्थात् परमेश्वर के लोगों के खेत में)।'

नींद से चौंककर जागते ही, उस वृद्ध ने ईश्वर का धन्यवाद किया और इस प्रकार प्रार्थना की:

'हे प्रभु यीशु मसीह! यदि यह दर्शन आप से है और कोई भ्रम नहीं है, तो आज्ञा करें कि यह तीन बार दोहराया जाए।'

और लूसियन ने अगले शुक्रवार तक केवल सूखी रोटी खाकर उपवास करना शुरू कर दिया, और अपना समय प्रार्थना में बिताया तथा यह दर्शन किसी को नहीं बताया।

अगले शुक्रवार की रात के तीसरे पहर में, गमलीएल फिर से पादरी लूसियन के पास प्रकट हुए, ठीक वैसे ही जैसे उन्होंने पहली बार किया था।

'आपने,' उन्होंने पूछा, 'मेरी आज्ञा की अवहेलना क्यों की कि आप जाकर आर्चबिशप जॉन को वह सब कुछ बता दें जो आपको बताया गया था?'

'मेरे प्रभु, मुझे क्षमा करें,' पुरोहित ने उत्तर दिया, 'मैं पहली दृष्टि के बाद तुरंत जाकर यह घोषणा करने से डर रहा था, मुझे डर था कि मुझे झूठा समझा जाएगा; इसलिए मैंने प्रभु से प्रार्थना की कि वे मुझे दूसरी और तीसरी बार भेजें, ताकि मैं सत्य के प्रति आश्वस्त हो सकूँ।'

गamaliel ने अपना हाथ बढ़ाते हुए कहा:

'शांति तुम्हारे साथ हो, पुरोहित; शांति से विश्राम करो!'

और ऐसा प्रतीत हुआ मानो वह पुरोहित की दृष्टि से ओझल हो रहा हो।

फिर, एक बार फिर उसकी ओर मुड़कर, उसने कहा:

'लुसियन! तुम इस बारे में सोच रहे हो कि हिम में से प्रत्येक के अवशेष कैसे प्राप्त और पहचाने जाएँ; तो देखो और समझो कि तुम्हें क्या दिखाया जा रहा है।'

यह कहकर, उसने पादरी के पास चार टोकरियाँ लाईं; उनमें से तीन सोने की और चौथी चांदी की प्रतीत हो रही थीं। सोने की एक टोकरी लाल फूलों से भरी थी, दूसरी सुगंधित केसर से। गamaliel ने पहले सुनहरे टोकरे को, जिसमें लाल फूल थे, पुरोहित के दाईं ओर, पूर्व की ओर मुख करके रखा; दूसरे सुनहरे टोकरे को, जिसमें सफेद फूल थे, उसने उत्तरी ओर रखा; और तीसरे और चौथे टोकरे को उसने एक साथ पश्चिमी ओर, पूर्वी ओर स्थित पहले टोकरे के सामने रखा।

'इसका क्या मतलब है, महोदय?' पुजारी ने गामालिएल से पूछा, जो उसे टोकरी दिखा रहा था।

उसने उत्तर दिया:

'ये हमारे मकबरे हैं, जिनमें हम विश्राम करते हैं: इस प्रकार, पूर्व की ओर रखा गया लाल फूलों वाला पहला सुनहरा टोकरा, संत स्टीफन का मकबरा है, जो मसीह के लिए शहादत के रक्त से रंगा गया था; उत्तर की ओर खड़ा सफेद फूलों वाला दूसरा सुनहरा टोकरा, निकोडेमस का मकबरा है; तीसरी, जिसमें सफेद फूल भी थे, पश्चिम की ओर मुँह किए हुए एक सुनहरी टोकरी – वह मेरी कब्र है; जबकि चौथी टोकरी, जो चांदी की बनी और सुगंधित केसर से भरी है, जो मेरी बगल में खड़ी है, वह मेरे बेटे अबिद की कब्र है, जो अपनी माँ के गर्भ से ही शरीर और आत्मा से पाप से रहित था और निर्मल कुँवारी अवस्था में मर गया।

इन शब्दों के बाद, गमलीएल गायब हो गया, और टोकरी भी गायब हो गईं।

इस दर्शन के बाद, उस वृद्ध पादरी ने ईश्वर का धन्यवाद कयिा और तीसरे शुक्रवार तक अपने उपवास और प्रार्थना को और भी कठोर कर दयिा, इस आशा में कि उसे तीसरी बार दर्शन प्राप्त होंगे। और फरि से, तीसरे शुक्रवार की रात को, वही सम्माननीय और पवत्रि गमलीएल उस वृद्ध पादरी के सामने प्रकट हुए और धमकी देते हुए कहा:

'तुमने अभी तक यह ज़िम्मेदारी क्यों नहीं ली कि महाधर्माध्यक्ष के पास जाओ और उन्हें वह सब बताओ जो तुम्हें दखिाया और कहा गया है? क्या तुम वह सूखा और दुख नहीं देख सकते जो स्वर्ग के अधीन छाया हुआ है? तुम बुद्धमिानी से काम नहीं कर रहे हो। क्या रेगस्तिानों में ऐसे पवत्रि पुरुष नहीं हैं, जो अपने जीवन-यापन के तरीके में तुमसे श्रेष्ठ हैं, और इस प्रकटवाणी के योग्य हैं? लेकनि हम, उन्हें दरकनिार करते हुए, तुम्हारे द्वारा प्रकट होना चाहते हैं। इसलए, उठो, जाओ और आर्चबशिप से कहो कि वह उस स्थान को उजागर करे जहाँ हम वश्रिाम करते हैं और यहाँ एक चर्च बनावे, ताकि हमारी प्रार्थनाओं के द्वारा प्रभु अपने लोगों पर दया करें।"

पुजारी उठकर ईश्वर का धन्यवाद करने लगा और जल्दी से यरूशलेम के लिए रवाना हो गया, जहाँ उसने आर्चबशिप जॉन को उस दर्शन के बारे में बताया जो उसे तीन बार दखिाई दयिा था और उस आज्ञा के बारे में भी जो उसे मली थी। आर्चबशिप खुशी से रो पड़े और कहा:

'मनुष्य का प्रेमी, प्रभु परमेश्वर धन्य हो, जो अपने संतों के प्रकाशन के माध्यम से हम पर अपनी दया प्रकट करना चाहता है: और जब हमें उनके अवशेष खोजने के लिए योग्य ठहराया जाएगा, तो मुझे पहले शहीद स्तेफन के अवशेष उस नगर से यहाँ लाने होंगे जहाँ उन्होंने यहूदयिों से संघर्ष कयिा था, जहाँ उन्होंने स्वर्ग को खुला हुआ और मसीह परमेश्वर को अपनी महमिा में खड़ा हुआ देखा था (प्रेरतिों के काम 7:1–60)। उन्होंने पुरोहति से कहा, 'तुम उस खेत में जाओ और उस स्थान को ढूंढो जहाँ संतों की कब्र है; जब तुम उनकी कब्र तक खोद लो, तो मुझे बता देना।'

पुरोहति, शहर से अपने घर लौटकर, कुछ धर्मनष्ठि लोगों को बुलाया और उनके साथ डेलागाव्री के खेत में गया। उस खेत के बीच में एक पहाड़ी थी; यह सोचकर कि संतों के अवशेष वहीं रखे हैं, उसने खोदने का इरादा कयिा, लेकनि पहले उसने उस पहाड़ी पर पूरी रात प्रार्थना में बतिाई। उसी रात, संत गमलीएल उन हस्सिों के पास रहने वाले नुगेटयिस नामक एक भक्षिु के सपने में प्रकट हुए और कहा:

'जाकर पादरी लूसयिन से कहो कि वह उस टीले को खोदने की जहमत न उठाए, क्योंकि हम वहाँ नहीं हैं; बल्कि वह हमें झाड़ी के पास, दक्षणि की ओर मुख करके खोजे, क्योंकि हम वहीं दफन हैं; जहाँ तक उस पहाड़ी का सवाल है, हमें दफ़नाने के लिए ले जाते समय वहाँ रखा गया था, और यहाँ, प्राचीन रीति-रिवाज के अनुसार, उन्होंने हम पर वलिाप कयिा; वह टीला उस वलिाप की गवाही के रूप में बनाया गया था जो हम पर हुआ था।"

[5427]उठकर, भक्षिु नर्दिेशानुसार चल पड़ा और उसे उपरोक्त टीले पर कई लोगों के साथ पादरी लूसयिन मलि; उन्होंने पहले ही खुदाई शुरू कर दी थी; तब भक्षिु ने लूसयिन को वह सब बताया जो उसने देखा और सुना था। पादरी ने उस परमेश्वर की महमिा की, जसिने प्रकाशन के लिए एक और गवाह प्रकट कयिा था। और वे नर्जिन स्थान की ओर चल पड़े, where , उन्हें एक पत्थर मलि जसि पर हब्रिू में 'हेललि' अंकति था, जसिका अर्थ है 'ईश्वर के सेवक'; पत्थर के चारों ओर खोदकर और उसे एक तरफ हटाने पर, उन्हें एक गुफा का संकरा प्रवेशद्वार मलि। मोमबत्ती लेकर गुफा में प्रवेश करने पर, उन्होंने दीवारों में तराशे गए ताबूत देखे, जनिमें संतों के अवशेष रखे थे। गुफा का प्रवेश द्वार दक्षणि की ओर था; इस प्रकार, पूर्व की ओर दाईं ओर संत स्टीफन की कब्र थी, प्रवेश द्वार के वपिरीत उत्तर की ओर संत नकिोडेमस की कब्र थी; जबकि पश्चमिी ओर, संत स्टीफन के वपिरीत, संत गमलीएल अपने बेटे के साथ वश्रिाम कर रहे थे, ठीक वैसे ही जैसे पहले प्रेस्बटिर को टोकरी के दर्शन में प्रकट कयिा गया था। प्रेज़बटिर ने तुरंत पवत्रि अवशेषों की खोज की सूचना यरूशलेम के आर्चबशिप जॉन को दी।

आर्चबशिप, साथ में मौजूद दो बशिपों—सेबास्टे के एलेउथेरीयस और यरीहो के एलेउथेरीयस—को लेकर, उस स्थान पर तुरंत पहुँचे जहाँ अवशेष मलि थे; उन्होंने गुफा के प्रवेश द्वार को चौड़ा कयिा और अंदर चले गए। जब उन्होंने पवत्रि प्रथम शहीद की कफ़नबंद تابوت खोली, तो पृथ्वी तुरंत काँप उठी, और जनि्होंने पुण्य जीवन जयिा था, उन्होंने स्वर्ग से देवदूतों की गायन की आवाज़ें सुनीं: 'परमपद में परमेश्वर की महमिा, और पृथ्वी पर शान्त!' जहाँ तक संत की अवशेषों से नकिलने वाली सुगंध की बात है, वह ऐसी थी जैसी कसिी भी मनुष्य ने पहले कभी अनुभव नहीं की थी; यह

[5427] इन अवशेषों की खोज वर्ष 415 में हुई।

अकथनीय सुगंध हवा में दस स्टेडियम तक फैली, और उपस्थित सभी लोगों ने ऐसा महसूस किया मानो वे स्वर्ग में हों। आर्चबिशप के साथ यरूशलेम और आसपास के गांवों से एक बड़ी भीड़ आई; जो लोग आए थे, उनमें विभिन्न बीमारियों से पीड़ित कई रोगी थे - अंधे, लंगड़े, आंतरिक रोगों और दुष्टात्माओं से पीड़ित, और फोड़ों व घावों से ढके हुए; उन सभी को चंगा कर दिया गया। ठीक होने वालों की संख्या तेरह सौ सत्ताइस थी। इस प्रकार, ईश्वर के चार संतों के अवशेष लेकर, वे भजन और अन्य पवित्र भजन गाते हुए उन्हें पहाड़ी पर ले गए; इस बीच लोगों ने उन्हें छुआ और श्रद्धापूर्वक चूमा। इसके तुरंत बाद, आर्चबिशप ने उस पहाड़ी पर नव-खोजे गए संतों के सम्मान में एक चर्च की स्थापना की और उसमें निकोडेमस, गमलीएल और आविव के अवशेष रख दिए; जहाँ तक सेंट स्टीफन द आर्चडीकन के अवशेषों का सवाल है, उन्होंने उन्हें भक्तिपूर्वक यरूशलेम ले जाकर पवित्र माउंट सियोन पर स्थित एक चर्च में रख दिया।

लगभग उसी समय, एक कुलीन व्यक्ति, सेनेटर अलेक्जेंडर, अपनी पत्नी जूलियानिया के साथ, पवित्र स्थलों पर पूजा करने के लिए कॉन्स्टेंटिनोपल से यरूशलेम पहुँचे: पवित्र प्रथम शहीद स्तेफन की कब्र पर हो रहे चमत्कारों को देखने के बाद, अलेक्जेंडर ने शहर में अपने सम्मान में एक पत्थर का चर्च बनवाया और बिशप से विनम्रतापूर्वक सेंट स्टीफन के अवशेषों को उसमें स्थानांतरित करने का आग्रह किया; बिशप, उनकी उत्कट विनती से प्रभावित होकर, उनकी प्रार्थना स्वीकार कर ली। कुछ समय बाद, अलेक्जेंडर यरूशलेम में घातक रूप से बीमार पड़ गए और उन्होंने अपनी पत्नी को एक शपतबद्ध वसीयत दी: कि वह प्रथम शहीद के समान एक अवशेष-पात्र बनवाए और उसे संत स्टीफन के अवशेषों के बगल में रखे। यह वसीयत करने के बाद, उनकी मृत्यु हो गई। उसकी पत्नी ने अपने पति की अंतिम इच्छा पूरी की: उसने संत स्टीफन के समान एक अवशेष-पेटिका बनवाई, और अपने पति को पहले शहीद की अवशेष-पेटिका के बगल में एक भव्य अंतिम संस्कार के साथ दफनाया। और वह अपने दिवंगत पति से अलग होने के इच्छुक नहीं थी, इसलिए वह यरूशलेम में उपर्युक्त चर्च के पास रहती थी; उसका मानना था कि वह ईश्वर के लिए जिया था।

चूंकि अलेक्जेंडर की पत्नी अभी भी जवान, सुंदर और, इसके अलावा, अमीर थी, इसलिए कई कुलीनों ने उसे दोबारा शादी करने के लिए मनाने की कोशिश की। लेकिन एक पवित्र स्त्री होने के नाते, उसमें पुनर्विवाह की कोई इच्छा नहीं थी: वह अपने पहले पति के प्रति विफादार रहने के लिए दृढ़ संकल्पित थी, इस आशा में कि वह पुनरुत्थान के दिन धर्मी लोगों के लिए तैयार की गई वही नियति उसके साथ साझा करेगी (मत्ती 25:34)। जब एक कुलीन अधिकारी ने उससे विवाह करने की इच्छा से उसे लगातार परेशान करना शुरू कर दिया, तो जुलियाना, उससे छुटकारा पाने के लिए, निम्नलिखित योजना बनाई: अपने पति का शरीर लेकर कॉन्स्टेंटिनोपल में अपने देश लौट जाना, भले ही उसके पति की मृत्यु को आठ साल बीत चुके थे। उसने आर्चबिशप से अपने पति का शरीर ले जाने से मना न करने को कहा; आर्चबिशप ने मना कर दिया; जिस पर जुलियाना ने तुरंत अपने पिता को लिखा, जो कॉन्स्टेंटिनोपल में रहते थे, और उनसे सम्राट के पास मध्यस्थता करने का अनुरोध किया ताकि वह बिना किसी बाधा के अपने पति का शरीर ले आ सके और कॉन्स्टेंटिनोपल आ सके। कुछ ही समय में, राजा से वांछित अनुमति मिल गई, जिसे उन्होंने आर्चबिशप के सामने प्रस्तुत किया। राजा का पत्र देखकर, आर्चबिशप अब कोई आपत्ति नहीं कर सके और उन्होंने जुलियाना के अनुरोध को अपनी सहमति दे दी। अपनी ओर से, जब उसने उस स्थान पर आशीर्वाद के साथ खुदाई शुरू की जहाँ दो अवशेष-पात्र रखे थे—एक पवित्र प्रथम शहीद स्टीफन का और दूसरा उसके पति अलेक्जेंडर का—तो उसने अपने पति के अवशेष-पात्र के बजाय संत के अवशेषों वाला अवशेष-पात्र ले लिया; इस प्रकार जुलियाना ने गलती से ऐसा किया, जबकि वास्तव में यह ईश्वर की इच्छा से और प्रथम शहीद के अनुरोध पर हुआ था। जब जुलियाना ने संतों के अवशेषों वाली कलश को खच्चरों द्वारा खींची जाने वाली गाड़ी पर रख दिया, तो वह अपनी यात्रा पर निकल पड़ी। जब वह यरूशलेम से रवाना हुई तो शाम हो चुकी थी; और उसी रात, जब अवशेष ले जा रहे थे, हवा में स्वर्गदूतों की एक आवाज़ सुनाई दी जो परमेश्वर की स्तुति कर रहे थे, जबकि अवशेष-पात्र से एक अद्भुत सुगंध निकल रही थी, मानो उसमें डाली गई बहुत सारी लोहबान की हो। राक्षसों की चीखें भी सुनी जा सकती थीं, क्योंकि वे दूर से चिल्ला रहे थे:

'हाय हमारा विनाश! क्योंकि स्तेफन हमें मार डालने आ रहा है।'

यह सब सुनकर जूलियाना के नौकर भयभीत हो गए और अपनी मालकिन से कहने लगे:

'मालकिन, इसका क्या मतलब है कि हम स्टीफ़न के नाम की पुकार करते हुए विभिन्न आवाज़ें सुन रहे हैं? क्या हम अपने स्वामी अलेक्जेंडर के संदूक के बजाय प्रथम शहीद स्टीफ़न का संदूक नहीं ले जा रहे हैं?'

उसने आनंद के आँसुओं के साथ उत्तर दिया:

'शांत हो जाओ, मेरे बच्चों; सब कुछ वैसा ही हो रहा है जैसा ईश्वर और उनके पवित्र सेवक को प्रसन्न है।'

जब वे तटीय शहर अस्कलॉन पहुँचे, तो उन्हें कॉन्स्टेंटिनोपल जाने वाली एक नाव मिली; नाविक को आवश्यक किराया चुकाने के बाद, वे संत की अवशेषों के साथ नाव पर चढ़ गए और रवाना हो गए। जब जहाज़ समुद्र में था, तो एक भयंकर तूफ़ान आ गया, जिससे जहाज़ एक तरफ़ झुकने लगा; विशाल लहरों को देखकर सभी भयभीत हो गए; लेकिन फिर पवित्र प्रथम शहीद स्टीफ़न नाविकों के सामने प्रकट हुए और कहा:

'मैं तुम्हारे साथ हूँ – डरो मत!'

यह कहकर, वह अदृश्य हो गए, और तुरंत ही समुद्र शांत हो गया, और बाकी की यात्रा सुरक्षित रूप से आगे बढ़ी; जबकि रात में संत की अवशेषों के ऊपर एक प्रकाश चमक रहा था, अवशेष-पात्र से एक सुगंध निकल रही थी, और हवा में स्वर्गदूतों का गायन सुना जा सकता था। जब वे काल्सेडोन पहुँचे, तो उन्होंने वहाँ पाँच दिनों तक रहने का फैसला किया। शहरवासियों को संत स्टीफन के अवशेषों के बारे में पता चला; वे मरीजों को साथ लेकर जहाज पर दौड़े; और पहले शहीद के आगमन की बदौलत शहर के सभी मरीज़ ठीक हो गए, लोगों से राक्षसों को भी भगा दिया गया, और जैसे ही उन्हें भगाया गया, वे चिल्लाए:

'यहूदियों द्वारा पत्थर मारकर हत्या किए गए स्तेफन आ गए हैं और क्रूरता से हमें सता रहे हैं तथा हमें हर जगह—ज़मीन पर और समुद्र में—भगा रहे हैं।'

चाल्सीडोन से प्रस्थान करने के बाद, जहाज सुरक्षित रूप से कॉन्स्टेंटिनोपल पहुँचा। धर्मपरायण जुलियाना अपने पिता के पास गईं और उन्हें आर्चडीकन सेंट स्टीफन के अवशेषों के बारे में विस्तार से बताया। फिर, अपने पिता के साथ, वे सम्राट और पैट्रिआर्क के पास गए और उन्हें भी इसकी सूचना दी; और सभी बहुत प्रसन्न हुए। पैट्रिआर्क, पुरोहितों और सभी लोगों के साथ, प्रथम शहीद की अवशेषों का स्वागत करने के लिए घाट पर गए। जहाज से अवशेष-पात्र निकालकर उन्होंने उसे शाही रथ पर रखा और भजन-गायन के साथ उसे राजा के महल में ले गए; ऐसा ही राजा का आदेश था। यह कहना असंभव है कि उस समय पवित्र अवशेषों की उपस्थिति में कितने चमत्कार हुए; संक्षेप में, हर कोई, चाहे वह किसी भी बीमारी या रोग से पीड़ित रहा हो, ठीक हो गया। जब यह भव्य जुलूस 'कांस्टेंटिन के स्नानागार'[5428] पर पहुँचा, तो अवशेषों वाले शाही रथ को ले जा रही खच्चरें रुक गईं; और चाहे नौकरों ने उन्हें आगे बढ़ने के लिए कितना भी मारा-पीटा, वे उस जगह से हिल नहीं सकीं। तब खच्चरों में से एक को, ईश्वर की आज्ञा से वाणी का वरदान प्राप्त हुआ, और उसने कहा:

'तुम हमें बेवजह क्यों पीट रहे हो? यही वह स्थान है जहाँ प्रथम शहीद संत स्टीफन को दफनाया जाना है।'

यह सुनकर वहाँ उपस्थित सभी लोग अत्यंत आश्चर्य और भय से भर गए, और उन्होंने परमेश्वर की स्तुति की। राजा ने तुरंत उस स्थान पर एक पत्थर का चर्च बनाने का आदेश दिया; और कुछ ही समय में संत स्टीफन प्रथम शहीद और महादीकन के नाम पर एक सुंदर चर्च का निर्माण किया गया; और उनके पवित्र अवशेषों को वहाँ स्थापित किया गया, हमारे प्रभु और उद्धारकर्ता यीशु मसीह की महिमा और स्तुति के लिए, जो परमपिता और पवित्र आत्मा के साथ महिमामय हैं[5429] ; हम पापियों द्वारा उन्हें अब और हमेशा और युगों-युगों तक सम्मान और महिमा, आराधना और धन्यवाद अर्पित किया जाए। आमीन।

ट्रोपारियन, स्वर 4:

हे स्तेफन, शहीदों में प्रथम, हमारे ईश्वर मसीह में सहन किए गए कष्टों के लिए तुम्हें राजसी मुकुट से विभूषित किया गया: क्योंकि तुमने यहूदियों के पागलपन की निंदा की, और पिता के दाहिने हाथ पर अपने उद्धारकर्ता को देखा। अतः हमारे प्राणों के लिए उनसे प्रार्थना करो।

[5428] इन स्नानागारों की स्थापना कॉन्स्टेंटिन द ग्रेट ने की थी, उनके पुत्र कॉन्स्टैंटियस ने इसे जारी रखा, और थियोडोसियस द यंगर ने 427 में इसे पूरा किया। अब इन्हें टेउकर-हम्माम कहा जाता है और यह चौथे टीले पर स्थित हैं।

[5429] वर्ष 1200 में, हमारे रूसी तीर्थयात्री एंथनी ने इस चर्च का दौरा किया; वहाँ उन्होंने पहले शहीद का माथा देखा, जिसे पत्थर मारा गया था और सिल दिया गया था।

कॉन्टाकयिन, स्वर 6:

हे सर्व-स्तुत्य स्तेफन, तुम स्वर्गीय शिल्पी द्वारा पृथ्वी पर बोए जाने वाले प्रथम थे। हे धन्य, तुम पृथ्वी पर मसीह के लिए अपना रक्त बहाने वाले प्रथम थे; तुम स्वर्ग में विजय के मुकुट से, शहीदों के अग्रदूत, शहीदों के प्रथम-पीड़ित मुकुट-धारक, उसी द्वारा मुकुटित होने वाले प्रथम थे।

मॉस्को के धन्य, धर्मी और चमत्कार करने वाले संत बेसिल का निधनोत्सव

2 अगस्त को स्मरण किया जाता है

ये धन्य बेसिल धर्मनिष्ठ ज़ार और ग्रैंड प्रिंस जॉन वासिलीविच[5430] के शासनकाल में और परम पावन मकारियस, मॉस्को और सर्व रूस के मेट्रोपॉलिटन के नेतृत्व में रहे। उनके पिता का नाम याकूब और उनकी माता का नाम अन्ना था। उनकी प्रार्थनाओं से उन्हें ईश्वर की ओर से यह वरदान मिला, और उनके विश्वास के कारण उन्हें यह वरदान प्राप्त हुआ। बचपन से ही, वह ईश्वर के प्रति प्रेम से परिपूर्ण थे और उन्होंने उनके आज्ञाओं के अनुसार जीना शुरू कर दिया। अपने पिता का घर और अपने रिश्तेदारों को पीछे छोड़ते हुए, धन्य बेसिल ने भविष्य के आशीर्वादों की आशा में अपनी सांसारिक संपत्ति को आध्यात्मिक संपत्ति के लिए बदल दिया; क्योंकि पिता के स्थान पर उन्हें पापों के बोझ से मुक्ति मिली, माता के स्थान पर – पवित्रता, भाइयों के स्थान पर – स्वर्गीय यरूशलेम के लिए प्रयास करने की इच्छा, और बच्चों के स्थान पर – हार्दिक आहें। और यह सब प्राप्त करने के लिए, उन्होंने विभिन्न प्रकार के कठोर तपस्या के कार्यों से स्वयं को थका दिया। धन्य व्यक्ति इतने गरीब थे कि उनके पास अपने लिए एक छोटी सी गुफा भी नहीं थी, और न ही उन्होंने अपने शरीर पर कोई कपड़े पहने; वह लगातार बेघर रहे और गर्मियों और सर्दियों दोनों में नग्न चलते थे, सर्दियों की ठंड में कांपते और गर्मियों में गर्मी से पीड़ित होते थे। हालांकि वह लगातार शोर-शराबे से घिरे रहते थे, फिर भी उन्होंने अपनी आत्मा को वासनाओं से मुक्त रखा और हमेशा मसीह के लिए एक पवित्र मूर्ख का जीवन जिया। उन्होंने एक भी शब्द नहीं बोला और ऐसा प्रतीत होता था कि उन्हें वाक्-शक्ति का वरदान ही नहीं मिला था, इस प्रकार वे लोगों से अपने गुणों को छिपाना चाहते थे और केवल परमेश्वर द्वारा जाने जाना चाहते थे। लेकिन *'पहाड़ पर स्थित नगर छिप नहीं सकता'* (मत्ती 5:14)। उस धन्य व्यक्ति के पवित्र जीवन और अटूट धैर्य के कारण, उनकी खबर धर्मपरायण ज़ार और सर्व रूस के निरंकुश शासक, ग्रैंड प्रिंस जॉन वासिलीविच के कानों तक पहुँची, जिन्हें महाधर्माध्यक्ष मकारियस ने अपने जीवन के बारे में बताया। वे दोनों उसके धैर्य को देखकर अत्यंत चकित हुए और अपने समय में ऐसे पवित्र पुरुष को प्रदान करने के लिए परमेश्वर की स्तुति की।

इस प्रकार, निरंतर परिश्रम और सहनशीलता में अपना जीवन जीते हुए, भूख और प्यास सहते हुए और प्रतिदिन जानलेवा खतरे का सामना करते हुए, धन्य बेसिल ने अपना जीवन यापन किया। अंततः बीमार पड़ने के बाद वह बिस्तर पर लेट गए। सभी रूस के धर्मपरायण ज़ार और ग्रैंड प्रिंस जॉन वासिलीविच, संत के ईश्वर के पास शीघ्र प्रस्थान की खबर सुनकर, अपनी धर्मपरायण ज़ारिना और ग्रैंड प्रिंसेस अनास्तासिया और अपने कुलीन राजकुमारों के साथ उनके पास आए, जॉन और थियोडोर, उनसे मिलने और उनका आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए आए। परम पुण्यशील व्यक्ति, मृत्यु के समीप और मृत्युशय्या पर लेटे हुए, ने राजकुमार थियोडोर से भविष्यवाणी करते हुए कहा:

'जो कुछ भी तुम्हारे पूर्वजों का है, वह तुम्हारा होगा, और तुम उनके उत्तराधिकारी होगे।'

इन शब्दों के बाद, परम पुण्य आत्मा ने अपना प्राण ईश्वर के हाथों में सौंप दिया। उनके शरीर से पूरे शहर में एक सुगंधित खुशबू फैल गई, और शहर के बहुत से निवासी उनके अंतिम संस्कार के लिए उमड़ पड़े। एक मार्मिक दृश्य सामने आया। ज़ार और राजकुमारों ने स्वयं धन्य व्यक्ति के शरीर को अपने कंधों पर उठाकर पवित्र चर्च तक ले गए; बिशपों और पुरोहितों ने, पूरे पुरोहित वर्ग के साथ, उनके सम्मान में भजन और चर्च के गीत गाए, जबकि लोग आँसुओं के साथ चिल्ला रहे थे, कह रहे थे:

[5430] धन्य बेसिल का जन्म मॉस्को के ग्रैंड प्रिंस जॉन III (1462–1505) के शासन के शुरुआती वर्षों में एलाखोवो गाँव में हुआ था, जो तब मॉस्को के पास स्थित था, जहाँ अब एलाखोव्स्काया और बासमन्नाया सड़कें स्थित हैं। 16 वर्ष की आयु में, उन्होंने स्वयं पर पवित्र मूर्खता का तपस्यात्मक अभ्यास लिया और इसे 72 वर्षों तक समर्पित किया। उन्हें इवान चतुर्थ वासिलीविच द टेरिबल के शासनकाल के दौरान प्रसिद्धि मिली, जिनके पास उनका परिचय मेट्रोपॉलिटन मकारी (1543–1564) ने कराया था, जो परम पुण्य आत्मा का बहुत सम्मान करते थे।

'हे परम धन्य बेसलि! हमारे मॉस्को नगर और सभी रूसी नगरों तथा गांवों के लिए, हमारे मसीह-प्रेमी ज़ार, उनकी धर्मपरायण ज़ारिना और उनके कुलीन बच्चों के लिए हमारे प्रभु मसीह से विनम्रतापूर्वक प्रार्थना करें, और उनकी सेना को विजय में तथा शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने में सहायक बनें।'

धन्य एक के अंतिम संस्कार में भाग लेते समय, ज़ार और ज़ारिना की आँखों से आनंद और दुख दोनों के आँसू बह निकले—आनंद के आँसू क्योंकि उन्होंने संत के निधन में उनके पूर्णत्व और संतों में उनकी पंक्तिबद्धता का प्रमाण देखा, और दुख के आँसू क्योंकि उन्होंने एक ऐसे पराक्रमी तपस्वी को खो दिया था। तब भी, धन्य व्यक्ति की पवित्र अवशेषों को छूने से कई लोग चंगे हो गए। महामहिम मेट्रोपॉलिटिन मकारी ने, पवित्र सिनिड के साथ, संत के शरीर पर भजन और अंतिम संस्कार के भजन गाने के बाद, उन्हें 2 अगस्त 1552 को सम्मान के साथ दफनाया[5431] । उनका संपूर्ण जीवन 88 वर्षों का था, जिनमें से 72 वर्ष उन्होंने एक पवित्र मूर्ख के रूप में बिताए। प्रभु ने 1588 में, उनकी मृत्यु के बाद भी, धन्य व्यक्ति को चमत्कारों से गौरवान्वित किया। हमारे परमेश्वर की महिमा हो, अब और हमेशा और युगों-युगों तक।

ट्रोपारियन, स्वर 8:

बेसलि, आपका जीवन निर्दोष था, और आपकी पवित्रता अछूती थी; मसीह के लिए आपने उपवास और जागरण, पाले और सूर्य की गर्मी, वर्षा और वर्षा-भरे बादलों से अपने शरीर को थाम रखा, और आपका मुख सूर्य के समान दमक उठा: और अब रूस के लोग, राजा और राजकुमार, और सभी लोग, आपके पवित्र निधन की महिमा करते हुए आपके पास आते हैं। हमारे प्रभु ईश्वर से प्रार्थना करें, कि वे हमें बर्बर कैद और गृहयुद्ध से छुड़ाएँ, और संसार को शांति तथा हमारी आत्माओं को महान दया प्रदान करें।

कॉन्टाकियन, स्वर 4:

हे परम धन्य बेसलि, परमेश्वर की आत्मा द्वारा निर्देशित होकर, आपने सांसारिक कलह को त्याग दिया और इस जीवन की परेशानियों से घृणा की; और आपने नश्वरता के वस्त्र त्याग दिए, और स्वयं को निर्लिप्तता के वस्त्र से परिधानित किया; आप इस संसार के छलने वाले शासक के जालों से भागे, और अपनी ही भूमि में परदेशी रहे; और सांसारिक धन-संपत्ति के ऊपर स्वर्गीय धन-संपत्ति को चुनकर, आपको धैर्य के मुकुटों से विभूषित किया गया। और अब, अति धन्य बेसलि, हमारे प्रभु मसीह से उन लोगों के लिए प्रार्थना करें जो आपकी पवित्र स्मृति का सम्मान करते हैं, कि हम आपसे पुकार सकें: आनंदित हो, अति धन्य बेसलि।

16 अगस्त

3 अगस्त (पुराने कैलेंडर के अनुसार)

इसी दिन, सन् 1147 में नोवगोरोड में परम पूजनीय एंथनी द रोमन का निधन हुआ।

हमारे पूजनीय पिता इज़ाक, दल्मत और फावस्टस

3 अगस्त को स्मरण किया जाता है

[5431] धन्य बेसलि के शरीर को खाई पर स्थित पवित्र त्रिमूर्ति चर्च के पास दफनाया गया था, जहाँ 1554 में इवान द टेरिबल ने कज़ान के विजयी अभियान की स्मृति में इंटरसेशन कैथेड्रल का निर्माण करने का आदेश दिया, जिसे सेंट बेसलि द ब्लेस्ड के चर्च के नाम से बेहतर जाना जाता है। 1586 में, धन्य बेसलि के अवशेषों ने कई चमत्कार करना शुरू कर दिया, और उसी वर्ष, ज़ार थियोडोर इओआनोविच के आदेश पर, उनके दफन स्थल पर एक चर्च का निर्माण किया गया (जो आज इंटरसेशन कैथेड्रल का सेंट बेसलि का पार्श्व-गृह है), चांदी से बना, सोने का पानी चढ़ा और मोतियों व कीमती पत्थरों से सजा एक अवशेष-पात्र तैयार किया गया, और यह आदेश दिया गया कि उनकी स्मृति 2 अगस्त को मनाई जाए। धन्य व्यक्ति के अवशेष आज भी इस चैपल में वेदी के नीचे विराजमान हैं।

आदरणीय डल्मेट थेओडोसियिस महान के शासनकाल में रहते थे[5432] , सेना में सेवा की[5433] और सम्राट द्वारा उन्हें उच्च सम्मान प्राप्त था। इसके बाद, ईश्वर की खातरि सभी सांसारकि चीज़ों का त्याग कर, उन्होंने अपनी पत्नी और बच्चों को छोड़ दयिा[5434] ; केवल अपने पुत्र फाउस्टस को साथ लेकर, वे सम्माननीय इसाक के पास गए, जनिके पास कॉन्स्टेंटनिोपल के पास एक मठ था; वहाँ सम्माननीय इसाक ने उन्हें मठवासी संप्रदाय में दीक्षा दी और दोनों ने ईश्वर को प्रसन्न करने वाला जीवन जयिा , लगातार कठोर उपवास का पालन करते हुए। जब परम पूज्य इसाक[5435] , बहुत वृद्धावस्था में पहुँचकर, ने महसूस कयिा कि मृत्यु नकिट आ रही है, तो उन्होंने मठवासी समुदाय को बुलाया; उन्हें अपनी अंतमि आज्ञाएँ देने के बाद, उन्होंने परम पूज्य दल्मत को अपने स्थान पर मठाध्यक्ष नयिुक्त कयिा, और उन्हीं के नाम पर बाद में इस मठ को दल्मत मठ[5436] के नाम से जाना जाने लगा। आदरणीय डाल्मैट का अभषिेक कॉन्स्टेंटनिोपल के पैट्रआिर्क एटकिस[5437] द्वारा एक पुरोहति के रूप में कयिा गया था। उन्होंने पूर्ण संयम का जीवन जयिा और एक बार, महा लेंट के दौरान, चालीस दनिों तक बनिा भोजन के रहे[5438] ; उपवास और प्रार्थना के माध्यम से, आदरणीय डाल्मैट ने शैतान की शक्ति पर वजिय प्राप्त की। उन्होंने शैतान के दृश्य सेवकों - नेस्टोरयिन वधिर्मी, जनि्होंने परमेश्वर की परम पवत्रि माता की नंदिा की[5439] : आदरणीय डाल्मेट तीसरे सार्वभौमकि परषिद के पवत्रि पतिाओं के एक सक्रयि सहायक थे, जो एफसिुस में सम्राट थयिोडोसियिस द यंगर के अधीन आयोजति हुई थी[5440] ; इसके माध्यम से, आदरणीय डाल्मेट ने सम्राट और पवत्रि पतिाओं का प्रेम अर्जति कयिा, जनि्होंने उन्हें डाल्मेट मठ का आर्चमिैंड्राइट नयिुक्त कयिा। इस प्रकार ईश्वर की सेवा में अपना लगभग पूरा जीवन समर्पति करने के बाद, परम पूज्य डलमत का बहुत वृद्धावस्था में देहांत हुआ[5441] । – आदरणीय फावस्टस, अपने पति की तरह, एक महान तपस्वी थे; उन्होंने मठवासी नयिमों, वशिेष रूप से उपवास का, कड़ाई से पालन कयिा[5442] । अपना सांसारकि जीवन पूरा करने के बाद, वे शाश्वत नविासों में चले गए और अमर जीवन में, आदरणीय पतिाओं की पंक्तयिों में गनि गए।

[5432] थेओडोसियिस महान – 379 से 395 तक सम्राट।

[5433] दूसरी गार्ड रेजमिेंट में, जनि्हें तब स्कॉलारी के नाम से जाना जाता था।

[5434] कन्याएँ।

[5435] संत इसाक के धर्मपरायण जीवन और वशि्वास के प्रतमिहान उत्साह, जसिने उन्हें अधर्मी राजा वैलेंस की नडिर होकर नंदिा करने के लिए प्रेरति कयिा—जसिके पतन की उन्होंने भवषि्यवाणी की थी—और उनके धन्य नधिन के बारे में, पर्याप्त ववरिण 30 मई के अंतर्गत दयिा गया है; जो चाहें वे इसके बारे में वहां पढ़ सकते हैं।

[5436] संत इसाक की मृत्यु 383 में हुई।

[5437] अन्य, अधकि वशि्वसनीय स्रोतों के अनुसार, उन्हें मठ का मठाधीश पैट्रआिर्क नेक्टैरयिस (381–397) द्वारा नयिुक्त कयिा गया था, न कि एटकिस (408–425) द्वारा।

[5438] और फरि, भोजन करने के बाद, मसीह के स्वर्गारोहण के पर्व से 43 दनि पहले, वे समाधि में रहे और इस समय के दौरान उन्हें दवि्य दर्शन प्राप्त हुए; उन्होंने उन स्थानों का सटीक वर्णन कयिा जहाँ उनके मठ के तीन भाई, जो मक्काबीस के चर्च में पर्व में शामलि हो रहे थे, खड़े थे, और इस प्रकार उन्होंने सार्वभौमकि प्रसदि्धि प्राप्त की। – संत प्रोक्लस, पैट्रआिर्क (434–446), जब संत डाल्मेटस जीवति थे, ने एंटओिक के जॉन को लखिे एक पत्र में उनकी बहुत प्रशंसा की।

[5439] नेस्टोरयिन वधिर्मीयों ने दावा कयिा कि परम पवत्रि कुँवारी मरयिम को परमेश्वर की माता नहीं कहा जाना चाहए, क्योंकि उन्होंने परमेश्वर को नहीं, बल्कि केवल एक मनुष्य को जन्म दयिा, जसिके साथ—उनसे अलग—परमपति से शाश्वत रूप से उत्पन्न परमेश्वर का वचन एक हुआ था; मरयिम से जन्मा यीशु, मनुष्य मात्र, दवि्यता का वासस्थान और हमारे उद्धार का साधन था; यह मनुष्य, पवत्रि आत्मा की प्रेरणा से, मसीह, अर्थात् अभषिक्ति, बन गया, और परमेश्वर का वचन उसके साथ एक वशिेष नैतकि या सापेक्षकि मलिन में वास करता था। नेस्टोरयिन वधिर्म की नंदिा तीसरे सार्वभौमकि धर्मसभा में की गई थी।

[5440] जब उन्हें पता चला कि एफ़सिुस की परषिद में ऑर्थोडॉक्सी (सही आस्था) हसिा के खतरे में थी, तो संत डाल्मेट ने ऑर्थोडॉक्सी के प्रति वफादार मठाधीशों, भक्षिुओं और ईसाइयों का नेतृत्व संभाला, राजा के महल गए और सत्य की रक्षा के लिए सम्राट के सामने बहादुरी से बोले; फरि भी, उस समय तक वह 48 वर्षों से मठ नहीं छोड़े थे, भले ही सम्राट ने उनसे ऐसा करने के लिए कहा था, यह चाहकर कि यह महान तपस्वी भूकंप से मुक्ति के लिए सामूहकि प्रार्थनाओं में भाग लें।

[5441] उनकी मृत्यु की सटीक तारीख अज्ञात है; केवल इतना कहा जा सकता है कि वे कॉन्स्टेंटनिोपल के पैट्रआिर्क, सेंट प्रोकॉक्स के समय में भी जीवति थे। रोस्तोव के संत डेमेट्रयिस का कहना है कि, इसाक, डलमेटस और फाउसटस के अप्रकाशति जीवन-चरतिों के अनुसार, संत डलमेटस की मृत्यु 2 अगस्त को कम से कम 90 वर्ष की आयु में हुई, और 434 के बाद और संभवतः440 के आसपास, प्रोक्लस के पैट्रआिर्केट के दौरान 3 अगस्त को उनका दफन कयिा गया था।

[5442] उनके जीवन का कोई ववरिण उपलब्ध नहीं है।

कॉन्टाकयिन, स्वर 2:

अपने तप से तारों की तरह चमकते हुए, और वशि्वास द्वारा वधिर्म को दूर करते हुए, आइए हम उन्हें इसहाक के भजनों से स्तुति करें, और दल्माटस और फावस्टस के साथ, मसीह के सेवकों के रूप में, हम सभी की ओर से उनसे वनिती करें।

आदरणीय कोस्मास, ख़ास पुरुष तपस्वी का जीवन

3 अगस्त को स्मरणोत्सव

पुस्तक *लमिोनार*[5443] में वकिानयिन मठ के एक पुरोहति, बाबा बेसलि द्वारा, परम पूज्य कोस्मास का नम्निलखिति वृत्तांत सुनाया गया है।

'मेरे अंतीयक में रहने के दौरान,' पुरोहति ने कहा, 'अब्बा कोस्मास, जो फारना में स्थति[5444] की लावरा के एक नपुंसक थे, पवत्रि पैट्रआर्क ग्रेगरी के पास यरूशलेम से आए थे; वे एक कठोर तपस्वी, आस्था के एक उत्साही रक्षक, चर्च के सद्धिांतों के एक दृढ़ संरक्षक, और पवत्रि धर्मग्रंथों में पूरी तरह से पारंगत थे। एंटीओक में उनके आगमन के कुछ ही दनिों बाद, उस वरषि्ठ का नधिन हो गया; पैट्रआर्क ने आदेश दयिा कि उनके पवत्रि शरीर को उनके अपने मठ में ही सुलाया जाए, जहाँ एक बशिप को दफनाया गया था। एक बार मैं उस पवत्रि साधु की कब्र पर उनकी अवशेषों को श्रद्धांजलि देने गया, और वहाँ मैंने एक भखिारी को चर्च में प्रवेश करने वालों से भीख माँगते देखा। मुझे देखकर, उसने कब्र के सामने तीन बार सरि झुकाया और, दविंगत की आत्मा की शांति के लिए पुरोहति की प्रार्थना का पाठ करने के बाद, मुझसे कहा:

'बहुत महान हैं, फादर अबा[5445] , वे वृद्ध जन्हिें आपने दो महीने पहले यहाँ दफनाया था।'

मैंने पूछा, 'आपको कैसे पता?'

उसने उत्तर दयिा:

मैं बारह साल से लकवाग्रस्त था - मैं सच कहता हूँ, मैं झूठ नहीं बोलता - और इस बूढ़े के माध्यम से प्रभु ने मुझे चंगा कर दयिा। जब मैं दुखी होता हूँ, तो वह आता है और मुझे सांत्वना देता है, मुझे राहत पहुँचाता है। मैं आपसे उनके बारे में एक और चमत्कार नहीं छपिाऊँगा: जब से आपने उन्हें दफनाया है, मैंने उन्हें हर रात बशिप से कहते सुना है: 'मुझे छूना मत, और मेरे पास मत आना, हे वधिर्मी; तुम पवत्रि कैथोलकि चर्च के शत्रु हो।'

यह सुनकर, मैं पैट्रआर्क के पास गया और भखिारी के साथ हुई अपनी बातचीत बताई; साथ ही, मैंने पैट्रआर्क से अनुरोध कयिा कि वे उस वृद्ध के शरीर को उठाकर कहीं और दफना दें। लेकनि उनकी पवत्रिता पैट्रआर्क ने उत्तर दयिा:

'मेरे बेटे, मेरा वशि्वास करो, कि वह वधिर्मी संत कोस्मास को कोई नुकसान नहीं पहुँचा सकता: जो कुछ भी तुमने सुना है, वह सब इसलिए हुआ ताकि संत के धर्म के प्रति उत्साह और उनके सद्गुण हमसे छपि न रहें – और ताकि बशिप की दुष्टता का खुलासा हो सके, और उसे एक ऑर्थोडॉक्स ईसाई के रूप में सम्मानति न कयिा जाए।'

[5443] *लमिोनार* (ग्रीक शब्द **लमिन** - घास का मैदान, चरागाह से) जॉन मॉस्कस, एक ग्रीक भकि्षु (मृत्यु 622) द्वारा रचति एक बहुत ही व्यापक संतों के जीवन पर आधारति ग्रंथ है। पैलेस्टाइन, सीरयिा, मस्रि, साइप्रस, कॉन्स्टेंटनिोपल और रोम के मठों की यात्रा के दौरान, मोस्कस ने ईसाई तपस्वयिों के जीवन के बारे में बड़ी मात्रा में ववरिण, साथ ही उनके कई कथन और नैतकि शकि्षाएं एकत्र कीं; उन्होंने यह सारी जानकारी अपने *लमिोणार* में प्रस्तुत की। – *लमिोनार* के नम्निलखिति रूसी अनुवाद ज्ञात हैं: 1) चेर्निगोव के आर्चबशिप फलिारेट द्वारा *द स्परिचिुअल मेडो* (मास्को, 1848, 1850 और 1853 में प्रकाशति) और 2) एक अज्ञात प्रकाशक द्वारा: *द मेडो, ऑर फ्लावर गार्डन* (मास्को, 1859)।

[5444] 'लावरा' – ग्रीक शब्द से, जसिका अर्थ है कसिी शहर का एक हस्सिा; 'गली' – वशिेष रूप से, सेलों की एक पंक्ति जो मठाधीश के आवास के चारों ओर गलयिों के रूप में व्यवस्थति होती है और बाड़ या दीवार से घरिी होती है। लवरा में भकि्षु तपस्वी जीवन जीते थे और अपने-अपने कोठरी में तपस्या में लगे रहते थे, सप्ताह के पहले और आखरिी दनिों में दैवीय सेवाओं के लिए इकट्ठा होते थे, जबकि बाकी दनिों में सख्त मौन का पालन करते थे; लव्रा में जीवन अन्य मठों की तुलना में कहीं अधकि कठनि था। प्राचीन काल से, 'लव्रा' शब्द का प्रयोग बड़े और महत्वपूर्ण मठों के लिए कयिा जाता रहा है। यह सबसे पहले मस्रि में और बाद में फलिस्तीन में प्रकट हुआ। वर्तमान में, हमारे देश में 'लव्रा' नाम का उपयोग वशिेष रूप से एक सम्मान के रूप में कयिा जाता है।

[5445] अर्थात् 'पति'।

इसी прecбटिर बेसलि ने आदरणीय कोस्मास के बारे में एक और कहानी भी सुनाई है:

'मैं मठ में उनसे मलिने गया, और बड़े भाई ने मुझे अपने बारे में बताया, कि एक बार उनके मन में यह वचिार आया था—कि प्रभु के अपने शष्यिों से कहे शब्दों का क्या अर्थ था: *"परन्तु अब, जसिके पास थैला है, वह उसे उठा ले, और इसी प्रकार बटुआ; और जसिके पास नहीं है, वह अपना ओढ़ना बेचकर तलवार खरीद ले"* (लूका 22:36), और उनका उत्तर: *'इतना ही काफी है'*, जब उन्होंने कहा, *'यहाँ दो तलवारें हैं'* (लूका 22:38)। वृद्ध ने प्रभु के इन वचनों पर देर तक मनन कयिा और कोई नष्किर्ष न पाकर, दोपहर को परिगा लाव्रा के लिए अबा थयिोफलिस से मलिने और उनसे स्पष्टीकरण पूछने नकिल पड़े। मरुभूमि से होकर जाते हुए रास्ते में, जब वह कलामोन के पास पहुँचा, तो उसने माउंट कलामोन से एक वशिाल साँप को फसिलते हुए नीचे आते देखा; वह साँप इतना बड़ा था कि उसके वजन से जमीन पर एक गहरी लकीर पड़ गई, और उसके शरीर के घुमाव बड़े-बड़े चाप बना रहे थे; वह ठीक वृद्ध के रास्ते को पार कर रहा था। यह समझते हुए कि यह शैतान की एक चाल थी, जो पूजनीय पिता को उनका इरादा छोड़ने के लिए मजबूर करना चाहता था, बुजुर्ग ने प्रार्थना से खुद को लैस कयिा और नडिर होकर अपनी राह जारी रखी: ईश्वर की शक्ति से संरक्षति, वह सांप के शरीर के कुंडलों से बनिा कसिी नुकसान के गुजर गया, जैसे कसिी द्वार से गुजर रहा हो। अब्बा थयिोडोर के पास पहुँचने पर, उन्होंने अपना प्रश्न उनसे पूछा और यह उत्तर मलिा:

'दो छुरी दो प्रकार के ईश्वरीय जीवन का प्रतीक हैं: कर्म या श्रम, और चतिन या मन का प्रार्थना और ईश्वर के चतिन में डूबना; जो इन दो गुणों का स्वामी है, वह एक पूर्ण मानव है।'

प्रतष्ठिति कोस्मस के बारे में उनके ववरिणों में, प्रेस्बटिर बेसलि ने नम्निलखिति जोड़ा:

'मेरे दस वर्षों के प्रवास के दौरान फारान मठ में, जहाँ मैं अपने संन्यासी जीवन की शुरुआत में ही आदरणीय कोस्मास के पास आया था, उन्होंने मुझे अपने दैवीय प्रेरति प्रवचनों ( ) से लगातार उपदेश दयिा; एक बार, जब वे मेरे साथ आत्मा के उद्धार पर चर्चा कर रहे थे, तो उन्होंने संत अथेनासयिस महान के शब्दों से एक अंश उद्धृत कयिा और टप्पिणी की:

'जब भी आप संत अथेनासयिस का कोई कथन सुनें या कसिी कतिाब में पाएं, यदि आपके पास कागज न हो, तो उसे अपने कपड़े पर लखि लें।'

चर्च के महान पिता और शक्षिकों के प्रति परमपूज्य कोस्मास का ऐसा सम्मान था: पृथ्वी पर अपने दैवी जीवन के समापन पर, उन्होंने हमारे प्रभु यीशु मसीह की कृपा से अनंत जीवन में भाग प्राप्त कयिा, जनिके लिए, पिता और पवत्रि आत्मा के साथ, अब और हमेशा महमिा हो।

17 अगस्त

4 अगस्त (पुराने कैलेंडर के अनुसार)

उसी दनि, पवत्रि शहीद यूडोक्सयिा की स्मृति, जन्हिोंने लगभग 362–364 में फारस में शपुर के अधीन यातनाएँ सहन कीं।

उसी दनि, पवत्रि शहीद एलेउथेरीउस की स्मृति, जन्हिोंने मैक्समियिन के दरबार में चेंबरलेन (कुवकिुलारसि) के रूप में सेवा की और उनके आदेश पर मसीह के लिए सरि कलम कर दयिा गया।

एफ़सिस के सात पवत्रि युवक

4 अगस्त को स्मरण कयिा जाता है

नष्ठिाहीन रोमन सम्राट डेसयिस[5446] के शासनकाल में मसीह की कलीसयिा पर अत्याचार कयिा गया, और मसीह के कई सेवक—पुरोहति, कलीसयिा के मंत्री और अन्य वश्विासी—नर्दियी उत्पीड़क से भयभीत होकर जहाँ-जहाँ संभव

[5446] डेसयिस – 249 से 251 तक का सम्राट।

था, छपिने के लिए विवश हो गए। जब ईसाइयों के प्रति घृणा से जलता हुआ डेसियस कार्थेज[5447] से एफ़िसुस[5448] आया, तो उसने सबसे पहले आसपास के निवासियों को मूर्तियों को बलिदान चढ़ाने के लिए इकट्ठा होने का आदेश दिया। अपने अहंकार से अंधा होकर, राजा ने शहर के केंद्र में मूर्तियाँ स्थापित कीं और उनके सामने वेदियाँ लगाईं; उसके आदेश पर, शहर के अधिकारियों को स्वयं राजा के साथ उन पर सबसे पहले बलिदान करना था। इस सार्वजनिक उत्सव बलिदान के दौरान, जमीन खून से लथपथ हो गई और हवा बदबू और धुएँ से भर गई: इतने सारे जानवरों का वध किया गया और उन्हें जलाया गया। दो दिन बाद, राजा ने सभी ईसाइयों को पकड़ने और उन्हें मूर्तियों को बलिदान चढ़ाने के लिए मजबूर करने का आदेश दिया। वे हर जगह ईसाइयों की तलाश करने लगे: उन्हें उनके घरों और गुफाओं से घसीटकर निकाला गया, एक ही भीड़ में इकट्ठा किया गया, और अपमानपूर्वक उस चौक तक ले जाया गया जहाँ बलिदान चढ़ाने वाले लोग जमा हुए थे। मसीह के कुछ अनुयायी, जिनमें आध्यात्मिक धैर्य की कमी थी और जो आने वाले यातनाओं से डरते थे, वे आस्था से भटक गए और सभी के सामने मूर्तियों की पूजा करने लगे। अन्य ईसाइयों ने, जिन्होंने या तो अपने साथियों द्वारा ऐसे कृत्यों को देखा था या उनके बारे में सुना था, अपने हृदय में शोक मनाया, मसीह से उनके धर्मत्याग और मूर्तिपूजा में उनके पतन पर विलाप किया; जबकि जो विश्वास में दृढ़ और आत्मा में मजबूत थे, उन्होंने निडर होकर अपने यातनाओं का सामना किया और विभिन्न प्रकार की यातनाओं में मरते हुए, बहादुरी से अपने प्रभु के लिए अपना जीवन न्योछावर कर दिया। इतने सारे शहीद हुए कि उनके घावों से बहता हुआ उनका खून और उनकी हड्डियों का चूर-चूर होना पानी की तरह जमीन पर बह गया; शहीदों के शवों को या तो सड़क के किनारे कूड़े की तरह फेंक दिया गया या शहर की दीवारों के चारों ओर लटका दिया गया, जबकि उनके सिर शहर के दरवाजों के सामने विशेष खंभों पर रख दिए गए; काग, बाज़ और अन्य मांसाहारी पक्षी दीवारों पर इकट्ठा हो गए और अपने विश्वास के लिए मरने वालों के शवों को नोच-नोच कर खा गए। छिपे हुए और भगोड़े ईसाइयों के लिए, यह बहुत दुख का कारण था कि वे अपने भाइयों के शवों को, जिन्हें पक्षी नोच रहे थे, इकट्ठा करके दफनाने में असमर्थ थे; उन्होंने स्वर्ग की ओर हाथ उठाकर, सिसकियों के साथ प्रभु से प्रार्थना की, कि वह अपनी कलीसिया को ऐसी यातना से बचाए।

उस समय एफ़िसुस में सात युवक थे; वे सम्मानित शहर के अधिकारियों के पुत्र थे और सेना में सेवा करते थे। उनके नाम इस प्रकार थे: मैक्सिमिलियन, याम्ब्लिचस, मार्टिनियन, जॉन, एDionysius, , एक्साकस्टोडियन और एंटोनिनस। हालांकि वे रक्त के बंधन से बंधे नहीं थे, वे आध्यात्मिक भाईचारे से एकजुट थे—विश्वास और मसीह के प्रेम के माध्यम से; वे एक साथ प्रार्थना करते और उपवास करते थे, शरीर को कष्ट देकर और कठोरता से पवित्रता का पालन करके मसीह के क्रूस पर चढ़ाए जाने में सहभागी होते थे। ईसाइयों पर हो रहे निरंतर अत्याचारों और क्रूर हत्याओं को देखकर, वे अपने हृदय में गहराई से दुखी हुए और अपने आँसू और आहें रोक नहीं सके। – जब मूर्तिपूजक, राजा के साथ, बलिदान चढ़ाने के लिए निकले, तो पवित्र युवक उनसे मुँह मोड़ गए; ईसाई चर्च में प्रवेश करने पर, वे प्रभु के सामने जमीन पर सिर झुकाकर प्रणाम करने लगे और अपने सिर पर धूल छिड़ककर, उनसे आँसुओं भरी प्रार्थनाएँ करने लगे। उनका यह व्यवहार कुछ लोगों की नज़रों से नहीं बच सका (उस समय, हर कोई यह देखने के लिए अपने पड़ोसी पर नज़र रखता था कि वह किस देवता से प्रार्थना करता है, और भाई ने भाई को, पिता ने अपने बेटे को, और बेटे ने अपने पिता को धोखा दिया; अगर किसी ने उन्हें मसीह से प्रार्थना करते देखा तो कोई भी अपने पड़ोसी को नहीं छिपाता था)। वे सीधे राजा के पास गए और कहा:

'हे राजा, आपकी आयु लंबी हो! आप दूर-दूर से ईसाइयों को बुलाते हैं, उन्हें बलिदान चढ़ाने के लिए कहते हैं, फिर भी आपके अपने ही लोग आपके शाही अधिकार को अनदेखा कर रहे हैं और आपकी आज्ञाओं की अवज्ञा करते हुए ईसाई धर्म अपनाकर उनका उल्लंघन कर रहे हैं।'

क्रोधित राजा ने पूछा कि वास्तव में उसकी आज्ञाओं की अवहेलना कौन कर रहा है। मुखबिरों ने उत्तर दिया:

'नगरपाल के पुत्र मैक्सिमिलियन, और एफ़िसुस के कुलीन नागरिकों के छह अन्य युवक; उन सभी को पहले से ही उच्च सैन्य पद प्राप्त हैं।'

[5447] कार्थेज – अफ्रीका के उत्तरी तट पर एक शहर, जिसने अपनी स्थापना की महान पश्चिमी फिनिशियन राज्य को अपना नाम दिया, जो 146 ईसा पूर्व में एक रोमन प्रांत बनने तक रोम का एक लंबे समय से प्रतिद्वंद्वी था।

[5448] एफ़िसुस – एशिया माइनर में इकोनिया का प्रमुख शहर, कैस्ट्रस नदी के मुहाने के पास – प्राचीन काल में निकट पूर्व में सभी व्यापार का केंद्र। यह आर्टेमिस – डायना के मंदिर के लिए प्रसिद्ध था।

राजा ने तुरंत उन्हें पकड़ने, हथकड़ी डालने और अपने सामने लाने का आदेश दिया। कुछ ही देर में उन पवित्र युवकों को राजा के सामने लाया गया, उनकी आँखें अभी भी आँसुओं से गीली थीं और उनके सिर धूल से लथपथ थे। उन पर नज़र डालते ही, उत्पीड़क ने कहा:

'आप उस उत्सव में हमारे साथ क्यों नहीं शामिल हुए, जो उन देवताओं के सम्मान में मनाया जाता है जिन्हें सारा ब्रह्मांड पूजता है? अब जाओ और अन्य लोगों की तरह, देवताओं को वह बलिदान अर्पित करो जो उनका अधिकार है।'

संत मैक्सिमिलियन ने उत्तर दिया:

'हम स्वर्ग के एक ईश्वर और राजा की आराधना करते हैं, जिन्होंने स्वर्ग और पृथ्वी को अपनी महिमा से भर दिया है, और हम हर घड़ी उन्हें विश्वास और प्रार्थना का आध्यात्मिक बलिदान अर्पित करते हैं; लेकिन आपकी मूर्तियों को, अपनी आत्मा को कलंकित करने से बचने के लिए, हम जानवरों को जलाकर, बदबू और धुएँ से युक्त बलिदान नहीं चढ़ाएंगे।'

इस उत्तर के बाद, राजा ने आदेश दिया कि युवकों की सैन्य पट्टियाँ—जो उनके उच्च पद का प्रतीक थीं—उनसे छीन ली जाएँ:

उसने कहा, 'तुम राजा की सेना में सेवा करने के अयोग्य हो, क्योंकि तुम न तो उसकी और न ही देवताओं की आज्ञा मानते हो।'

हालाँकि, उनकी सुंदरता और जवानी को देखकर, राजा को उन पर तरस आ गया और कहा:

'इतने युवा पुरुषों को इस क्षण यातना देना निर्दयता होगी; अत; हे सुंदर युवक, मैं तुम्हें विचार करने के लिए समय देता हूँ, ताकि होश में आकर, तुम देवताओं को बलिदान चढ़ा सको और इस प्रकार अपनी जान बचा सको।'

तब उसने आज्ञा दी कि उनकी बेड़ियाँ खोल दी जाएँ और उन्हें नियत समय तक के लिए आज़ाद कर दिया जाए, जबकि वह स्वयं एफ़िसुस लौटने के इरादे से दूसरे नगर में चला गया।

हालाँकि, पवित्र युवकों ने मसीह की शिक्षाओं का पालन करते हुए, राजा द्वारा दिए गए समय का उपयोग अच्छे कर्मों के लिए किया: उन्होंने अपने माता-पिता के घर से सोना और चाँदी लेकर, उसे गुप्त रूप से और खुलेआम गरीबों में बाँट दिया। इसी बीच, उन्होंने आपस में सलाह-मशविरा किया, और कहा:

'जब तक राजा लौटकर नहीं आता, तब तक हम कुछ समय के लिए शहर छोड़ दें; हम शहर के पूर्व में पहाड़ पर स्थित उस बड़ी गुफा में चलें, और वहाँ, मौन रहते हुए, हम प्रभु से विनम्रतापूर्वक प्रार्थना करेंगे कि वे हमें उनके पवित्र नाम की आगामी स्वीकारोक्ति के लिए शक्ति प्रदान करें, ताकि हम, यातना देने वाले के सामने निडर होकर उपस्थित होकर, अपने दुश्मनों को साहसपूर्वक सह सकें और हमारे प्रभु मसीह से अपने वफादार सेवकों के लिए तैयार की गई महिमा का अक्षय मुकुट प्राप्त कर सकें।

आपस में इस पर सहमत होकर, वे ओखलोन नामक पूर्वी पहाड़ की ओर चल पड़े, और अपने साथ कई दिनों के भोजन के लिए पर्याप्त चांदी ले गए। पहाड़ में एक गुफा में पहुँचने पर, वे वहाँ काफी समय तक रहे, निरंतर ईश्वर की स्तुति करते और अपनी आत्माओं के उद्धार के लिए प्रार्थना करते रहे। उनकी ज़रूरत की चीज़ें खरीदने के लिए शहर जाने का काम संत इम्ब्लिकस को सौंपा गया, क्योंकि वह सबसे छोटा था। संत इम्ब्लिकस, जो एक बहुत ही समझदार लड़का था, शहर जाने से पहले ही फटे-पुराने कपड़े पहन लिए ताकि उसे कोई पहचान न सके; अपने साथ लाए गए पैसों में से, उसने गरीबों को देने के लिए एक हिस्सा अलग रख दिया, और बाकी पैसों से खाना खरीदा। शहर की ऐसी ही एक यात्रा पर, संत इम्ब्लिकस, ने अपना नाम छिपाते हुए यह पूछा कि राजा ठीक-ठीक कब लौटेगा और यह कितनी जल्दी हो सकता है। पर्याप्त समय बीत जाने के बाद, संत इम्ब्लिकस, एक भिखारी का भेष धारण करके, शहर में लौटे और अपने यात्रा से लौटे राजा के आगमन को स्वयं देखा; उन्होंने पूरे शहर में राजा के उस फरमान को भी सुना, जिसमें सभी शहर के गवर्नरों और सैन्य कमांडरों को अगले सुबह देवताओं को बलिदान चढ़ाने के लिए तैयार रहने का आदेश दिया गया था - राजा इतना धर्मपरायण मूर्तिपूजक था। इसके अलावा, इम्ब्लिकस ने सुना कि राजा ने आदेश दिया था कि जिन्हें अस्थायी रूप से रिहा किया गया था, उन्हें ढूंढा जाए ताकि वे अन्य नागरिकों के साथ मिलकर उसकी उपस्थिति में मूर्तियों को बलिदान चढ़ा सकें। भयभीत होकर, इम्ब्लिकस ने थोड़ी सी रोटी उठाई और गुफा में अपने भाइयों के पास दौड़ गया; वहाँ उसने उन्हें वह सब कुछ बताया जो उसने देखा और सुना था, और यह भी सूचित किया कि उन्हें बलिदान चढ़ाने के लिए पहले से ही ढूंढा जा रहा था। इस खबर से वे भयभीत हो गए: वे रोते-बिलखते हुए जमीन पर गिर पड़े, और उन्होंने ईश्वर से प्रार्थना की, खुद को उनकी सुरक्षा और दया के हवाले कर दिया। प्रार्थना से उठकर, संत याम्ब्लिखस ने उनके द्वारा लाई गई रोटी की

थोड़ी मात्रा से एक भोजन तैयार किया; शाम हो चुकी थी, और सूरज डूब रहा था; बैठकर, पवित्र युवकों ने भोजन से अपना बल बढ़ाया, आगे आने वाले यातनाओं की प्रतीक्षा करते हुए। अपना मामूली भोजन समाप्त करने के बाद, उन्होंने एक-दूसरे से बातचीत की, और मसीह के लिए अपने दुखों को साहस के साथ सहने के लिए एक-दूसरे को प्रोत्साहित और मजबूत किया। इस आत्मा-रक्षक बातचीत के दौरान, उन्हें नींद आने लगी: उनके दिलों में दुख के कारण उनकी आँखें भारी हो गईं। लेकिन दयालु और प्रेममय प्रभु, जो हमेशा अपनी कलीसिया और अपने वफादार सेवकों की परवाह करते हैं, ने उन सात पवित्र जवानों को एक अद्भुत और असाधारण निद्रा में डालने का आज्ञा दिया, ताकि भविष्य में एक अद्भुत चमत्कार प्रकट किया जा सके और मृतकों के पुनरुत्थान पर संदेह करने वालों को विश्वास दिलाया जा सके। संतों को एक गहरी निद्रा आ गई, जबकि उनकी आत्माएँ परमेश्वर के हाथ में सुरक्षित रहीं, और उनके शरीर अपरिवर्तित और अक्षुण्ण पड़े रहे, मानो वे केवल सो रहे हों।

सुबह, राजा ने आदेश दिया कि सात कुलीन युवकों को ढूंढा जाए, और एक निष्फल खोज के बाद, उसने अपने कुलीनों से कहा:

'मुझे इन युवकों पर तरस आता है, क्योंकि वे कुलीन कुल के थे और अपनी सुंदरता के लिए प्रसिद्ध थे; मुझे लगता है कि, हमारे क्रोध से डरकर, वे कहीं भाग गए हैं और छिप गए हैं, हालाँकि, हमारी दया में, हम उन लोगों को क्षमा करने के लिए तैयार हैं जो, पश्चाताप करके, एक बार फिर देवताओं की ओर लौटते हैं।'

मंत्रियों ने उत्तर दिया:

'हे राजा, उन युवकों के लिए शोक मत करो जिन्होंने आपका और देवताओं का विरोध किया है: हमने सुना है कि उन्होंने न केवल पश्चाताप नहीं किया है, बल्कि वे देवताओं के और भी अधिक दुष्ट निन्दक बन गए हैं; उन्होंने शहर के भिखारियों में सोने और चांदी की बड़ी मात्रा बाँटकर, बिना कोई सुराग छोड़े गायब हो गए हैं।' यदि आप अनुमति दें, तो हम उनके माता-पिता को बुलाकर यातना देकर उनसे अपने बेटों का ठिकाना बताने के लिए मजबूर कर सकते हैं।

बिना किसी देरी के, राजा ने पवित्र युवकों के माता-पिता को बुलाने का आदेश दिया और उनसे कहा:

'मुझे बताओ, बिना कुछ छिपाए, तुम्हारे बेटे कहाँ हैं, जिन्होंने मेरे राज्य को कलंकित किया है? उनकी जगह, मैं तुम्हें मृत्युदंड का आदेश दूँगा: क्योंकि तुमने उन्हें सोना और चाँदी दी और उन्हें कहीं भेज दिया ताकि वे हमारे सामने न आएं।'

माता-पिता ने उत्तर दिया:

'हे राजा, हम आपकी दया की याचना करते हैं! बिना क्रोध के हमारी बात सुनें: हम आपके राज्य के विरुद्ध कोई विश्वासघात नहीं करते, हम कभी आपके आदेशों की अवज्ञा नहीं करते, और हम निरंतर देवताओं को बलिदान चढ़ाते हैं – तो फिर आप हमें मृत्यु की धमकी क्यों दे रहे हैं? यदि हमारे पुत्र भटक गए हैं, तो यह हमने उन्हें नहीं सिखाया; हमने उन्हें सोना या चाँदी नहीं दी; उन्होंने स्वयं इसे गुप्त रूप से लिया और गरीबों में बाँटकर भाग गए और, हमें मिली अफवाहों के अनुसार, ओख्लोन पर्वत पर एक बड़ी गुफा में छिपे हुए हैं। अब कई दिन बीत चुके हैं, फिर भी वे अभी तक वापस नहीं आए हैं: हमें नहीं पता कि वे वहाँ जीवित हैं या नहीं।

यह सुनकर राजा ने माता-पिता को विदा किया, और फिर गुफा के मुँह को पत्थरों से बंद करने का आदेश दिया, यह कहते हुए:

'चूँकि उन्होंने पश्चाताप नहीं किया है, देवताओं की ओर नहीं मुड़े हैं, और मेरे सामने नहीं आए हैं, तो अब से उन्हें कभी भी किसी मनुष्य का चेहरा न देखने को मिले, और वे पत्थरों से बंद गुफा में भूख और प्यास से मर जाएँ।'

एफ़िसुस के राजा और लोगों को यह नहीं पता था कि वे पहले ही प्रभु के पास चले गए थे, और वे सोचते रहे कि वे अभी भी जीवित हैं। ठीक उसी क्षण जब गुफा के प्रवेश द्वार को बंद किया जा रहा था, राजा के दो कोषाध्यक्ष, थियोडोर और रूफिनस—जो गुप्त ईसाई थे—ने दो टिन की पट्टिकाओं पर सात पवित्र युवकों के दुःखों को दर्ज किया, साथ ही उनके नाम भी लिखे; फिर उन्होंने इन पट्टिकाओं को एक छोटे तांबे के डिब्बे में रखा और उसे गुफा के मार्ग में बिछाए गए पत्थरों के बीच रख दिया: क्योंकि, वे सोचते थे, कि यदि प्रभु अपने महिमामय आगमन से पहले अपने सेवकों से मिलने आएँ, और गुफा कभी खोली जाए, और संतों के शरीर मिलें, तो, हमारी इस कथा से, वे उनके नाम और कर्मों के बारे में जानेंगे और यह महसूस करेंगे कि ये शरीर उन शहीदों के हैं जो मसीह की गवाही देने के लिए सीलबंद गुफा में मारे गए थे। इस प्रकार गुफा के प्रवेश मार्ग को बंद कर दिया गया, और उस पर एक मुहर लगा दी गई।

थोड़ी ही देर बाद दुष्ट डेसियिस की मृत्यु हो गई। उसके बाद कई अन्य दुष्ट राजा आए जिन्होंने ईश्वर की कलीसिया का उत्पीड़न किया, जब तक कि महान कॉन्स्टेंटाइन के साथ ईसाई राजाओं का युग आरंभ नहीं हुआ। धर्मपरायण सम्राट थियोडोसियिस द्वितीय[5449] के दिनों में, जब कॉन्स्टेंटाइन महान की मृत्यु को काफी समय बीत चुका था, ऐसे विधर्मी प्रकट हुए जिन्होंने मृतकों के पुनरुत्थान से इनकार किया, यद्यपि प्रभु यीशु मसीह ने अपनी कलीसिया को इस विषय पर एक स्पष्ट शिक्षा दी थी, जिसने सभी संदेहों को दूर कर दिया था। और फिर भी कई लोगों ने संदेह करना शुरू कर दिया; न केवल आम लोग, बल्कि कुछ बिशप भी इस विधर्म के अनुयायी बन गए। विधर्म में भटक चुके कुलीनों और बिशपों से - जिनमें से बाद वालों में, ईगिनि के बिशप थियोडोर विशेष रूप से प्रमुख थे - ऑर्थोडॉक्स के खिलाफ एक भयंकर उत्पीड़न शुरू हो गया। कुछ विधर्मी दावा करते थे कि लोग मृत्यु के बाद किसी भी पुरस्कार की उम्मीद नहीं कर सकते, क्योंकि मृत्यु पर न केवल शरीर बल्कि आत्मा भी नष्ट हो जाती है; हालांकि, अन्य का तर्क था कि आत्माओं को अपना पुरस्कार मिलेगा, जबकि शरीर सड़कर नष्ट हो जाएंगे।

उन्होंने पूछा, 'ये शरीर पूरे सहस्राब्दियों के बाद फिर से कैसे उठ सकते हैं, जब इनकी राख भी शेष नहीं रहती?'

इस प्रकार विधर्मियों ने तर्क दिया, और अपनी अधार्मिकता में सुसमाचार में मसीह के वचन को भूल गए: *'मरे हुओं को परमेश्वर के पुत्र का शब्द सुनेंगे, और सुनते ही जीवित होंगे'* (यूहन्ना 5:25); वे यह भी भूल गए कि भविष्यवक्ता दानिय्येल ने क्या लिखा है: *'पृथ्वी की धूल में जो सोए हैं, उनमें से बहुत उठेंगे, कुछ अनन्त जीवन के लिए, और कुछ अनन्त लज्जा और तिरस्कार के लिए'* (दानिय्येल 12:2), – और परमेश्वर की ओर से बोलते हुए भविष्यवक्ता यहेजकेल के वचन: *'देखो, मैं तुम्हारी कब्रें खोलूँगा और तुम्हें, हे मेरी प्रजा, तुम्हारी कब्रों से बाहर निकालूँगा'* (यहे. 37:12)। पवित्र शास्त्र की इस शिक्षा को भूलकर, विधर्मीयों ने परमेश्वर की कलीसिया में बड़ा कलह मचाया। उन्होंने राजा थियोडोसियिस को बहुत दुख पहुँचाया: उन्होंने उपवास और आँसुओं के साथ परमेश्वर से विनती की, कि वे, जो सभी वस्तुओं के सृष्टिकर्ता हैं, अपनी कलीसिया को इस विनाशकारी विधर्म से बचाएँ। दयालु प्रभु, जो नहीं चाहते कि कोई भी विश्वास की सच्चाइयों से भटककर नाश हो जाए, ने राजा की प्रार्थना और कई विश्वासियों के अश्रुपूरित विलाप को सुना, और मृतकों के अपेक्षित पुनरुत्थान और शाश्वत जीवन के रहस्य को स्पष्ट रूप से प्रकट किया। दिव्य प्रबंध के कार्य से, निम्नलिखित घटित हुआ। माउंट ओक्लोन के स्वामी, अडोलीउस नामक एक व्यक्ति—जहाँ सोए हुए युवक एक सीलबंद गुफा में रहते थे—के पास पहाड़ पर कुछ खाली जगह थी, और वह वहाँ एक भेड़शाला बनाना चाहता था। इसे बनाते समय, मजदूरों ने गुफा के प्रवेश द्वार पर ढेर किए गए पत्थरों को ले लिया; उन्हें इस बात का बिल्कुल भी अंदाजा नहीं था कि पहाड़ के अंदर एक गुफा थी, वे सोचते थे कि ये पत्थर पहाड़ का एक प्राकृतिक हिस्सा हैं। जब वे पत्थरों को तोड़कर कार्यस्थल पर ले जा रहे थे, तो उन्होंने गुफा के मुंह पर एक ऐसा रास्ता बना दिया जिससे कोई आदमी आसानी से गुजर सकता था। उसी समय, हमारे प्रभु यीशु मसीह, जो जीवन और मृत्यु के स्वामी हैं, जिन्होंने एक बार चार दिन बाद लाजरुस को जिलाया था (यूहन्ना 11:39, 43–44), कई वर्षों (लगभग दो सौ) से सो रहे लोगों और सात पवित्र युवकों को जगाया: उनके दैवीय आज्ञा से, पवित्र शहीदों को पुनर्जीवित किया गया, जैसे वे नींद से जाग रहे हों। उठने पर, उन्होंने सबसे पहले प्रभु की भोर की स्तुति की, जिसके बाद, अपनी प्रथा के अनुसार, उन्होंने एक-दूसरे को नमस्कार किया। उन्हें ऐसा लगा कि वे एक सामान्य रात की नींद से जाग गए हैं, क्योंकि ऐसा कुछ भी नहीं था जो यह इंगित करता हो कि उन्हें मृतकों में से जिलाया गया था: उनके कपड़े पूरी तरह से क्षतिग्रस्त नहीं थे, उनका रूप-रंग बिल्कुल भी नहीं बदला था - वे अभी भी स्वास्थ्य और सुंदरता से परिपूर्ण थे; सब कुछ अनजाने में पवित्र युवकों को यह विश्वास दिला रहा था कि वे बस कल सो गए थे और अब सुबह जाग गए हैं। जब वे आपस में बात कर रहे थे, तो उन्हें ईसाइयों पर हो रहे अत्याचार और इस तथ्य को दुख के साथ याद आया कि उन्हें राजा के आदेश पर शहर जाना था, जिसने उन्हें मूर्तियों को बलिदान चढ़ाने का आदेश दिया था; वे निश्चित थे कि डेसियिस उन्हें यातना देने के लिए ढूंढ रहा था। संत अम्ब्लचिस की ओर मुड़कर, उन्होंने उनसे एक बार फिर वह सुनाने के लिए कहा जो उन्होंने शहर में सुना था। संत अम्ब्लचिस ने उत्तर दिया:

'जो मैंने कल तुमसे कहा था, वही आज कहूँगा: राजा ने आज सभी नागरिकों को बलिदान के लिए तैयार रहने का आदेश दिया है; उसने यह भी आदेश दिया है कि हमें ढूंढा जाए, ताकि हम उसकी उपस्थिति में सभी के साथ मूर्तियों की पूजा कर सकें; और यदि हम ऐसा नहीं करते हैं, तो वह हमें यातना देगा।'

तब संत मैक्सिमिलियिन ने सभी को संबोधित करते हुए कहा:

[5449] थेओडोसियिस द्वितीय – 408 से 450 तक सम्राट।

'भाइयो, चलो हम आगे बढ़ें और बिना डरे डकियिस के सामने उपस्थित हों: हम डरपोकों की तरह यहाँ और कितनी देर तक बैठेंगे? आओ हम आगे बढ़ें और बिना भय के, सांसारिक राजा के सामने स्वर्ग के राजा, सच्चे परमेश्वर, हमारे प्रभु यीशु मसीह की गवाही दें; और उनके पवित्र नाम की महिमा के लिए, अपना रक्त बहाएँ और अपनी आत्माएँ अर्पित करें; हमें यातना देने वाले या नश्वर यातनाओं से न डरें: वे हमें उस अनंत जीवन से वंचित नहीं कर सकते, जिसका हम मसीह यीशु में अपने विश्वास के द्वारा इंतजार कर रहे हैं। जहाँ तक तुम्हारा सवाल है, भाई इम्ब्लिकस, देखना कि हमारे लिए भोजन समय पर तैयार हो; चाँदी का सिक्का लेकर शहर जाओ; वहाँ कल से ज़्यादा रोटी खरीदना—कल तुमने बहुत कम लाई थी , और अब हम भूखे हैं; पता लगाओ कि डिसियिस ने हमारे बारे में क्या आदेश दिया है और जल्द से जल्द वापस आओ, ताकि भोजन से तरोताज़ा होकर हम अपनी मर्ज़ी से इस जगह को छोड़ सकें और खुद को यातनाओं के हवाले कर सकें।

संत इम्ब्लिकस ने चाँदी का सिक्का लिया और शहर की ओर चल पड़े; यह बहुत सुबह का समय था, और भोर अभी-अभी हो रही थी।

जब वह गुफा से बाहर निकला, तो संत इम्ब्लिकस पत्थर देखकर चकित रह गया; यह क्या मतलब है, उसने सोचा, इन्हें यहाँ क्यों रखा गया है? ये कल यहाँ नहीं थे। पहाड़ से उतरकर, वह शहर में प्रवेश करने से डरते हुए, भयभीत होकर चला, जहाँ उसे पहचान लिया जाता और राजा के सामने पेश कर दिया जाता। जैसे ही वह शहर के दरवाजों के पास पहुँचा, संत इम्ब्लिकस ने बड़ी हैरानी से देखा कि उन पर एक उत्कृष्ट कलाकृति के रूप में पवित्र क्रॉस अंकित था। और जहाँ भी उसने अपनी नज़र घुमाई, उसने उसी हैरानी के साथ अन्य इमारतों, आवासों और दीवारों को देखा। संत इम्ब्लिकस शहर के एक अन्य द्वार पर गए और वहाँ, उन्हें यह देखकर हैरानी हुई कि दीवार पर पवित्र क्रूस की एक छवि बनी हुई थी; वे शहर के सभी द्वारों के चारों ओर घूमे और हर जगह पवित्र क्रूस देखे। हैरानी के मारे, संत इम्ब्लिकस लगभग पागलपन के कगार पर पहुँच गए थे। पहले द्वार पर एक बार फिर लौटकर, वह सोचने लगा: आखिर इसका क्या मतलब है? कल कहीं भी पवित्र क्रूस की कोई छवि नहीं थी, सिवाय उन छवियों के जो विश्वासियों द्वारा गुप्त रूप से रखी जाती थीं, और अब वे खुले तौर पर शहर के द्वारों और दीवारों पर प्रदर्शित हैं; क्या मैं वास्तव में उन्हें देख रहा हूँ, या यह केवल मेरी कल्पना है? क्या मैं सपना देख रहा हूँ? खुद को संभालते हुए, वह शहर में प्रवेश कर गया। थोड़ी दूर चलने पर, संत याम्ब्लिचिस ने कई लोगों को मसीह के नाम की कसम खाते हुए सुना। वह यह सोचकर भयभीत हो गया: 'कल, किसी में खुलेआम मसीह के नाम का उच्चारण करने की हिम्मत नहीं थी, फिर भी अब मैं इसे कई लोगों के मुँह से सुन रहा हूँ; जाहिर है, यह एफ़िसुस नहीं, बल्कि कोई और शहर है, क्योंकि इमारतें अलग हैं और लोग बिल्कुल अलग तरह के कपड़े पहने हुए हैं।' अपने रास्ते पर आगे बढ़ते हुए, उसने एक आदमी से पूछा:

'इस शहर का नाम क्या है?'

'एफ़िसुस,' उस आदमी ने जवाब दिया।

संत इम्ब्लिकस को उस पर विश्वास नहीं हुआ और वह फिर भी सोच रहा था: 'निस्संदेह मैं किसी दूसरे शहर में आ गया हूँ; मुझे तुरंत कुछ रोटी खरीदनी चाहिए और शहर से बाहर निकलना चाहिए, कहीं मैं पूरी तरह से खो न जाऊँ।' रोटी बेचने वाले के पास पहुँचकर, उसने एक चाँदी का सिक्का निकाला और उसे रोटी का भुगतान करने के लिए दे दिया, फिर अपनी खरीदारी और बकशे के लिए रुक गया। चाँदी का सिक्का बहुत बड़ा था और उस पर सबसे प्राचीन राजाओं का एक शिलालेख और एक छवि अंकित थी। बिक्रेता ने चाँदी का सिक्का लिया और उसे एक दूसरे आदमी को दिखाया, जिसने उसे तीसरे को दे दिया, और उस आदमी ने चौथे को; वहाँ मौजूद दूसरे लोग भी आगे आए; चाँदी के सिक्के को निहारते हुए, वे सभी उसकी प्राचीनता से चकित हो गए और, सेंट इम्ब्लिकस को देखते हुए, एक-दूसरे से फुसफुसाए:

'निस्संदेह इस लड़के को प्राचीन काल में छिपा हुआ कोई खजाना मिल गया है।'

संत याम्ब्लिखस ने उनकी फुसफुसाहट को देख लिया और डर गया, यह सोचकर कि उन्होंने उसे पहचान लिया है और उसे पकड़कर राजा डिसियिस के सामने ले जाने की साजिश रच रहे हैं।

उसने कहा, 'कृपया, यह चाँदी का सिक्का ले लो: मुझे कोई छुट्टा नहीं चाहिए।'

लेकिन उसके आसपास के लोगों ने सेंट इम्ब्लिकस को पकड़ लिया और उसे कसकर पकड़े हुए कहा:

'हमें बताओ कि तुम कहाँ से हो और तुम्हें प्राचीन राजाओं का खजाना कैसे मिला; हमें उसमें से हिस्सा दो, और हम तुम्हारा राज़ नहीं खोलेंगे; लेकिन अगर तुम हमें हिस्सा देने से इनकार करोगे, तो हम तुम्हें न्यायाधीश के हवाले कर देंगे।'

यह सुनकर संत इम्ब्लिकस चकित हो गए और असमंजस में चुप रहे। वे आगे बोले:

'अब तुम इस खजाने को छपिा नहीं सकते—हमें बताओ यह कहाँ है, अपनी मर्ज़ी से बता दो, इससे पहले कि यातनाएँ तुम्हें ऐसा करने पर मजबूर कर दें।'

संत इम्ब्लकिस को समझ नहीं आया कि वे उनसे क्या कहें और वे मूक की तरह चुप रहे। फरि उन लोगों ने उनकी कमरबंद उतार ली, उसे उनके गले में डाल दयिा, और उन्हें बाजार के चौराहे के बीच में खड़ा कर दयिा; लोगों में यह अफवाह फैल गई कि खिजाना मलिने वाले एक लड़के को पकड़ लयिा गया है। संत इम्ब्लकिस के चारों ओर एक बड़ी भीड़ इकट्ठी हो गई; हर कोई उसके चेहरे को घूरते हुए कह रहा था: 'वह यहीं का नहीं है; हमने उसे पहले कभी नहीं देखा है।' संत इम्ब्लकिस, हालांकि वह यह कहना चाहता था कि उसे कोई खजाना नहीं मलिा है, अपने बड़े आश्चर्य के कारण एक भी शब्द नहीं बोल सका; उसने भीड़ में अपने कसिी जानने वाले या अपने घर के कसिी सदस्य – अपने पति, माता या कसिी नौकर – को खोजने की कोशशि की। कसिी को न पाकर और न पहचानकर, वह और भी अधकि हैरान हो गया: कल तक हर कोई उसे एक कुलीन व्यक्ति का बेटा जानता था, फरि आज न केवल कोई उसे पहचान नहीं पा रहा था, बल्कि वह खुद भी अपने कसिी जानने वाले को नहीं ढूंढ पा रहा था। संत इम्ब्लकिस की गरिफ्तारी के बारे में शहर भर में फैली अफवाह शहर के गवर्नर और बशिप स्टीफन[5450] तक पहुँची: ईश्वर की कृपा से, उस समय दोनों एक साथ थे और बातचीत कर रहे थे; दोनों ने आदेश दयिा कि उस युवक को, जसिे चांदीकार के साथ पकड़ा गया था, उनके सामने लाया जाए।

रास्ते में, संत इम्ब्लकिस को लगा कि उन्हें राजा डेसयिस के पास ले जाया जा रहा है, और उन्होंने भीड़ को और भी ध्यान से देखा, यह उम्मीद करते हुए कि उन्हें कोई परचिति दखिाई दे, लेकनि उनकी सारी उम्मीदें व्यर्थ गईं। जब उसे नगरपालक और बशिप के सामने लाया गया, तो उन्होंने चाँदी का सक्का लेकर उसकी जाँच की और उसे देखकर चकति रह गए, क्योंकि वह बहुत प्राचीन राजाओं के समय का था। फरि नगरपालक ने संत इम्ब्लकिस से पूछा:

'तुम्हें जो खजाना मलिा है, वह कहाँ है? नस्सिंदेह तुमने यह चाँदी का सक्का वहीं से लयिा होगा।'

'मुझे कसिी खजाने के बारे में नहीं पता,' संत इम्ब्लकिस ने जवाब दयिा, 'मुझे बस इतना पता है कि यह मुझे मेरे माता-पति से मलिा है और यह इस शहर में प्रचलति सामान्य चांदी के सक्कों से अलग नहीं है। मैं हैरान और परेशान हूँ कि मेरे साथ क्या हो रहा है।'

'तुम कहाँ से हो?' गवर्नर ने पूछा।

संत ने उत्तर दयिा:

'मुझे लगता है कि मैं इसी शहर का हूँ।'

राज्यपाल ने जवाब में कहा:

'तुम कसिके बेटे हो? क्या यहाँ कोई है जो तुम्हें जानता हो? अगर हाँ, तो उन्हें आने दो और तुम्हारी बात की सच्चाई की गवाही देने दो, और हम तुम्हें रहिा कर देंगे।'

संत इम्ब्लकिस ने अपने पति, माता, दादा, भाइयों और अन्य रश्तिेदारों के नाम बताए; कोई भी उन्हें नहीं जानता था।

'तुम झूठ बोल रहे हो,' राज्यपाल ने आपत्ति जताई, 'तुम कुछ अजीब और अनसुने नाम ले रहे हो, जनिके बारे में हमने कभी सुना भी नहीं।'

पवत्रि युवक हैरानी में चुप रहा, उसका सरि झुका हुआ था, जबकि उपस्थति लोगों में से कुछ ने कहा:

'वह एक पवत्रि मूर्ख है।'

– 'नहीं, वह बस मुसीबत से बचने के लिए ऐसा दखिावा कर रहा है,' दूसरों ने जवाब दयिा।

राज्यपाल ने गुस्से में संत याम्ब्लखिस को धमकाना शुरू कर दयिा:

– हम तुम्हारी बात कैसे मानें कि तुमने यह चाँदी का सक्का अपने माता-पति द्वारा इस्तेमाल कए गए सक्कों में से ही लयिा है? आखरिकार, इस पर प्राचीन राजा डसियिस की छवि और शलिालेख है, जनिकी कई साल पहले मृत्यु हो गई थी, और यह सक्का आज चलन में मौजूद सक्कों से बलि्कुल भी मेल नहीं खाता। क्या सच में आपके माता-पति इतने बूढ़े हैं कि वे राजा डसियिस को याद रखते हैं और उनके चांदी के सक्के उनके पास हैं? आप अभी भी जवान हैं, आपकी उम्र अभी तीस साल भी नहीं हुई है, और फरि भी आप अपनी चालाकी से एफेसस के बुजुर्गों और बुद्धमिानों को धोखा देने

[5450] अन्य, अधकि वश्विसनीय ववरिणों के अनुसार, वर्णति घटना स्टीफन के पूर्ववर्ती, सेंट मेमनन के शासनकाल के दौरान हुई थी, जनिका पर्व दविस 16 दसिंबर है।

की कोशशि कर रहे हैं। मैं तुम्हें जेल में डाल दूँगा, तुम्हें दंड दूँगा, और जब तक तुम सच नहीं बता देते और यह नहीं बता देते कि तुम्हें जो खजाना मलिा है वह कहाँ छपिा है, तब तक तुम्हें रहिा नहीं करूँगा।

जब राज्यपाल बोल रहा था, तो संत इम्ब्लकिस एक ओर तो उसकी धमकयिों से डर गया था, और दूसरी ओर इस बात से चकति था कि डेसयिस प्राचीन काल में रहता था; घुटनों के बल गरिते हुए, उसने कहा:

'मैं आपसे वनिती करता हूँ, मेरे प्रभुओं, मैं जो प्रश्न पूछने वाला हूँ उसका उत्तर दें, और मैं स्वयं अपनी इच्छा से आपको सब कुछ बता दूँगा: क्या राजा डसियिस शहर में हैं, और क्या वह जीवति हैं या नहीं?'

बशिप ने उत्तर दयिा:

'वर्तमान में, मेरे पुत्र, इस भूमि पर डेसयिस नाम का कोई राजा नहीं है; बीते वर्षों में, प्राचीन काल में, वास्तव में ऐसा एक राजा था; अब धर्मपरायण थयिोडोसयिस का राज है।'

तब संत याम्ब्लचिस ने कहा:

'मैं आपसे वनिती करता हूँ, मेरे साथ चलए और मैं आपको माउंट ओक्लोन की गुफा में अपने मत्रि दखिाऊँगा, और आप स्वयं देखेंगे कि जो मैंने कहा है वह सच है।' हम वास्तव में कुछ दनि पहले डेसयिस से भागकर इस जगह को छोड़कर उस गुफा में शरण ले आए थे; मैंने कल डेसयिस को एफ़सिुस में प्रवेश करते देखा था, लेकनि अब मुझे नहीं पता कि यह एफ़सिुस है या कोई और शहर।

धर्मप्राचार्य, वचिारों में डूबे हुए, ने अपने आप से कहा:

'ईश्वर इस युवक के माध्यम से कोई रहस्य प्रकट करना चाहता है।'

'हम उसके साथ चलते हैं,' उसने राज्यपाल से कहा, 'और देखते हैं: कुछ अद्भुत होने वाला है।'

अपने पैरों पर खड़े होकर, बशिप और शहर के गवर्नर उस युवक के साथ चल पड़े, और उनके पीछे शहर के सभी अधकिारी और लोगों की एक बड़ी भीड़ चल दी। जब जुलूस पहाड़ पर पहुँचा, तो संत याम्ब्लचिस सबसे पहले गुफा में दाखलि हुए, जबकि बशिप, बाकी लोगों के साथ उनका अनुसरण करते हुए, को गुफा के प्रवेश द्वार पर, दो पत्थरों के बीच, दो चांदी की मुहरों वाला एक छोटा तांबे का डब्बिा मलिा; सभी के सामने तांबे का बक्सा खोलने पर, बशिप और शहर के राज्यपाल को उसमें दो टनि की पट्टयिाँ मलिीं, जनि पर लखिा था कि सात पवत्रि युवक – शहर के राज्यपाल के पुत्र मैक्समिलियिन, इम्ब्लकिस, मार्टनियिनस, जॉन, डायोनसियिस, एक्साकस्टोडयिन और एंटोननिस – राजा डेसयिस से भागकर इस गुफा में शरण ले चुके थे; डेसयिस के आदेश पर, गुफा के प्रवेश द्वार को पत्थरों से बंद कर दयिा गया था, और पवत्रि युवकों ने इसके भीतर मसीह के लिए शहीद होकर प्राण त्याग दिए थे। इस पाठ के बाद, सभी आश्चर्य से भर गए और जोर-जोर से परमेश्वर की महमिा करने लगे।

गुफा में प्रवेश करने पर, उन्होंने पवत्रि युवकों को सुंदरता से दमकते हुए पाया; उनके चेहरों पर आनंद झलक रहा था और वे ईश्वर की कृपा के प्रकाश से चमक रहे थे; बशिप, राज्यपाल और लोग पवत्रि युवकों के पैरों पर गरि पड़े, और उन्होंने उस ईश्वर की स्तुति की, जसिने उन्हें ऐसा शानदार चमत्कार देखने का सौभाग्य प्रदान कयिा था। पवत्रि युवकों ने उन्हें अपने बारे में और डसियिस के बारे में सब कुछ बताया - कि उसके शासन के दौरान ईसाइयों पर कैसा अत्याचार हुआ था। तुरंत, बशिप और राज्यपाल ने धर्मपरायण राजा थयिोडोसयिस को एक पत्र भेजा, जसिमें उनसे अपने शासनकाल के दौरान प्रभु द्वारा प्रकट कए गए चमत्कार को देखने के लिए सम्मानति पुरुषों को भेजने का अनुरोध कयिा:

उन्होंने लखिा, 'क्योंकि, हमारे दनिों में प्रभु ने पवत्रि युवकों के शरीरों के पुनरुत्थान के माध्यम से, न केवल आत्मा बल्कि शरीर के भी भवष्यि के सामान्य पुनरुत्थान की एक पूर्वछाया दखिाई है।'

यह समाचार पाकर, सम्राट थयिोडोसयिस बहुत प्रसन्न हुए और कुलीनों तथा लोगों की एक बड़ी भीड़ के साथ, कॉन्स्टेंटनिोपल से एफ़सिुस की ओर रवाना हुए, जहाँ उनका उच्च पद के अनुरूप भव्य समारोह के साथ स्वागत कयिा गया। बशिप, राज्यपाल और अन्य शहर के अधकिारयिों ने सम्राट को गुफा तक ले गए। जब थयिोडोसयिस गुफा में प्रवेश कयिा और स्वर्गदूतों जैसे दखिने वाले पवत्रि युवकों को देखा, तो वह उनके पैरों पर गरि पड़े; उन्होंने, बदले में, अपने हाथ बढ़ाकर उन्हें जमीन से उठा लयिा। उठकर, राजा ने प्रेम से पवत्रि युवकों को गले लगाया और उन्हें चूमते हुए अपने आँसू नहीं रोक सका; फरि, उनके सामने जमीन पर बैठकर, वह गहरी भावना से उन्हें नहिारने लगा और ईश्वर की स्तुति करने लगा:

उसने कहा, 'हे स्वामनिो, मैं आपके चेहरों में स्वयं राजा और मेरे प्रभु मसीह को देखता हूँ, जन्हिोंने एक बार लाजरुस को कब्र से जलिा उठाया था: अब उन्होंने अपने सर्वशक्तमिान वचन से आपको उठा दयिा है, ताकि मृतकों के पुनरुत्थान

की आने वाली घटना को हम पर स्पष्ट रूप से प्रकट कर सकें, जब कब्रों में लेटे हुए, परमेश्वर के पुत्र की आवाज़ सुनकर, जीवति हो उठेंगे और उनमें से अक्षुण्ण होकर नकिलेंगे।

संत मैक्सिमिलियिन ने राजा से कहा:

'अब से, आपके वशि्वास की दृढ़ता के कारण, आपका राज्य अटूट रहेगा, और जीवते परमेश्वर के पुत्र यीशु मसीह (देखें मत्ती 16:16), इसे अपने पवत्रि नाम में हर बुराई से बचाएंगे; वशि्वास करो कि तुम्हारे लिए, प्रभु ने हमें सामान्य पुनरुत्थान के दनि से पहले उठा दयिा है।'

एक काफी लंबी बातचीत के दौरान, पवत्रि युवकों ने राजा से आत्मा के उद्धार के संबंध में कई अन्य सच्चाइयों के बारे में बात की, जबकि राजा, बशिप, कुलीनों और लोगों के साथ, उन्हें आध्यात्मकि आनंद के साथ सुन रहे थे (चर्च संबंधी घटनाओं के ग्रीक वंशावलीकार, नकिफिोरस कैलस्टिोस, यह जोड़ते हैं कि पूरे एक सप्ताह तक राजा ने हर दनि उनके साथ भोजन कयिा और उनकी सेवा की)। इन वार्तालापों के बाद, पवत्रि युवकों ने, उन सभी के सामने जो उन्हें देखकर आनंदति हो रहे थे, एक बार फरि अपना सरि ज़मीन पर झुकाया और, ईश्वर की आज्ञा से, एक घोर नदि्रा में लीन हो गए। राजा उन पर जोर-जोर से रोया, और उपस्थति सभी लोग अपने आँसू नहीं रोक सके।

राजा ने पवत्रि युवकों के शरीरों को रखने के लिए चाँदी और सोने के सात कब्रस्तिान बनाने का आदेश दयिा। उसी रात वे राजा को सपने में दखिाई दिए, और उन्होंने उसे आदेश दयिा कि वह उन्हें परेशान न करे, बल्कि उन्हें पृथ्वी में उसी प्रकार आराम करने दे, जैसे वे पहले आराम कर चुके थे। पवत्रि युवकों के वशि्राम स्थल पर, संतों का एक समूह इकट्ठा हुआ; उन्होंने एक शानदार भोज मनाया और पवत्रि शहीदों को उचति श्रद्धांजलि दी। राजा ने, अपनी ओर से, उस देश के गरीबों और ज़रूरतमंदों को उदार दान दयिा, कैदयिों को रहिा कर दयिा, और फरि आनंदपूर्वक कन्स्टेंटनिोपल लौट आए, हमारे ईश्वर मसीह की महमिा करते हुए; उसी को, हम पापयिों की ओर से, पति और पवत्रि आत्मा के साथ, अब और हमेशा और युगों-युगों तक सम्मान और महमिा मलि। आमीन[5451] .

ट्रोपारयिन, स्वर 4:

हे वशि्वास के महान चमत्कार, एक गुफा में मानो राजसी महल में, सात पवत्रि युवक रहे, और बनिा क्षय के मर गए; और कई वर्षों के बाद वे सभी मानव जाति के पुनरुत्थान की पुष्टि के रूप में, नींद से उठे। उनकी प्रार्थनाओं के द्वारा, हे मसीह हमारे परमेश्वर, हम पर दया करें।

कॉन्टाकयिन, स्वर 4:

इस संसार की क्षणभंगुर चीज़ों को तुच्छ समझकर और अक्षय वर प्राप्त करके, वे मर गए, फरि भी क्षय से मुक्त रहे; इसलिए, कई वर्षों के बाद, वे उठ खड़े हुए, और उन्होंने हर प्रकार के उग्र अवशि्वास को शांत कर दयिा: और जैसे हम आज उनकी स्तुति करते हैं, आइए मसीह की स्तुति करें।

18 अगस्त

5 अगस्त (पुराने कैलेंडर के अनुसार)

[5451] इस चमत्कारकि कहानी को इसकी प्रामाणकिता के बहुत मजबूत, अवविादति साक्ष्यों का समर्थन प्राप्त है: इस घटना के एक समकालीन साक्षी, सेंट जॉन कोलोव (5वीं शताब्दी), ने इसे पैसयिस द ग्रेट के जीवन में उल्लेख कयिा है; सीरयिाई लेखक और सरूग (मेसोपोटामयिा में) के ऑर्थोडॉक्स बशिप, जेम्स ने इस घटना का एक वृत्तांत छोड़ा है; यह अनुवाद के माध्यम से टूर्स के ग्रेगरी (मृत्यु 594) तक जानी जाती थी। सीरयिाक मारोनाइट्स, जो 7वीं शताब्दी में ऑर्थोडॉक्स चर्च से अलग हो गए थे, अपने धर्म-वधिि में पवत्रि युवकों का सम्मान करते हैं; उन्हें इथयिोपयिाई कैलेंडर और प्राचीन रोमन शहीद-सूचयिों में शामलि कयिा गया है; उनकी कहानी मुहम्मद और कई अरब लेखकों को ज्ञात थी। युवकों की गुफा आज भी एफ़सिस के पास, माउंट प्रायोन की ढलानों पर दखिाई जाती है। उनके अवशेषों का अंतमि रकिॉर्ड 12वीं शताब्दी का है, जब उन्हें पवत्रि स्थानों की तीर्थयात्रा करने वाले हमारे हेग्यूमेन डैनयिल ने देखा था। इन पूजनीय अवशेषों का बाद का भाग्य अज्ञात है।

इस दिन हम पवित्र शहीदों का स्मरण करते हैं: कांटडियिस और कांटडियिना, जिन्हें मिस्र में पत्थर मारकर मृत्युदंड दिया गया, और सिवेल, जिन्हें मिस्र में तीरों से मार डाला गया।

उसी दिन, पवित्र और धर्मी नॉन्ना, संत की माता की स्मृति

ग्रेगरी द थियोलोजियन।

संत पोंटियिस का जीवन और शहादत

5 अगस्त को स्मरण किया जाता है

प्रभु उन्हें अपनी ओर न खींचें, तो कौन विश्वास कर सकता है? प्रभु उनकी सहायता न करें, तो कौन वीरता के कार्य कर सकता है? मसीह इसे न दें, तो कौन शहीद के मुकुट का योग्य समझा जा सकता है? 'और मैं, यद्यपि अयोग्य हूँ,' इस जीवनचरित्र के लेखक वैलेरियिस कहते हैं, जो पवित्र शहीद पोंटियिस के साथ पले-बढ़े और शिक्षित हुए थे, 'मुझे उनके साथ मसीह के लिए मरने की ऐसी कृपा नहीं मिली, परन्तु उनके कर्मों और शहादत के कारण मैं प्रभु से दया की आशा करता हूँ। मैं उसके बारे में जो कुछ भी कहता हूँ – मैं मसीह और उनके स्वर्गदूतों को गवाह के रूप में बुलाता हूँ – मैंने वह सब अपनी आँखों से देखा है, अपने कानों से सुना है, और यहाँ तक कि उसमें उसका एक अंश साझा भी किया है। इसी कारण, आपको भी इस सच्चे और विश्वासयोग्य वृत्तांत पर विश्वास करना चाहिए, और अपने विश्वास के लिए आप पवित्र शहीद के साथ, मृतकों के पुनरुत्थान के दिन प्रभु से एक पुरस्कार प्राप्त करेंगे।

रोम में[5452] में सम्माननीय सेनेटर मार्कस रहते थे; वह निश्चिंतान थे, जिससे उन्हें और उनकी पत्नी जूलिया दोनों को बहुत दुख था। उनके विवाह के इक्कीसवे वर्ष में, उनकी बड़ी प्रसन्नता के लिए, जूलिया को पता चला कि वह गर्भवती है; अपनी गर्भावस्था के पांचवें महीने में, अपने पति के साथ मूर्तिपूजक मंदिरों में जाते समय - क्योंकि वे दोनों मूर्तिपूजक थे - वह डिया के मंदिर में आई, जिसे 'महान' कहा जाता था। वहाँ, जूलिया ने पुजारी को देखा, जिसने अपने सिर पर एक माला पहन रखी थी और मूर्ति के सामने बलिदान कर रहा था; अचानक पुजारी अत्यधिक उतावल में आ गया और अपने सिर से माला उतारकर उसे टुकड़े-टुकड़े करने लगा, और अपने आँसुओं के बीच चिल्लाया:

'यह महिला अपने गर्भ में उस व्यक्ति को धारण किए हुए है जो इस महान मंदिर को धूल-चटा कर देगा और इसके देवताओं को नष्ट कर देगा!'

घबराए हुए पुजारी ने ये शब्द कई बार ऊँचे स्वर में दोहराए, जिससे वहाँ मौजूद सभी लोगों में, और खासकर मार्क और जूलिया में, दहशत फैल गई; काँपते हुए, वे मंदिर से भागकर अपने घर पहुँचे, जो मंदिर के पास ही स्थित था। एक पत्थर उठाकर, जूलिया ने अपने गर्भ और पसलियों पर वार किया और चिल्लाई:

'ओह, काश मैंने उस बच्चे को गर्भ में न धारण किया होता जो मंदिर को तबाह करेगा और देवताओं को कुचल देगा; उसे जन्म देने से तो मेरे लिए उसके साथ मर जाना बेहतर है!'

जब समय आया, तो उसने एक बिल्कुल स्वस्थ बच्चे को जन्म दिया, हालांकि हर किसी को उसकी माँ द्वारा खुद पर पत्थर से मारे गए ज़बरदस्त वारों को याद करते हुए, यह उम्मीद थी कि वह मृत पैदा होगा। जूलिया नवजात शिशु को मारना चाहती थी, लेकिन उसके पिता ने विरोध करते हुए कहा:

'अगर डीयस चाहेगा, तो वह अपने दुश्मन से खुद बदला लेगा; हम, अपनी ओर से, अपने ही बच्चे के कातिल नहीं बनेंगे।'

इसलिए लड़के को जीने दिया गया और उसका नाम पोंटियिस रखा गया। जब उनका बेटा बड़ा हो गया, तो उसके माता-पिता ने उसे स्कूल भेजा और कभी भी अपने साथ मंदिर नहीं ले गए। हालाँकि, वह लड़का न केवल उम्र में बल्कि ज्ञान में भी बढ़ रहा था: अपनी कम उम्र में ही उसे सही मायने में एक दार्शनिक कहा जा सकता था; साथ ही, वह अन्य विज्ञानों में भी बहुत जानकार था, क्योंकि उसकी याददाश्त बहुत तेज थी और उसने खूब पढ़ा था; सच्चे ज्ञान की अपनी खोज में, पोंटियिस अपने सभी समकालीनों से आगे निकल गया।

[5452] नीचे संत फाविस का जीवन देखें

एक सुबह, जब वह अपने शिक्षक के पास जा रहा था, तो वह एक ईसाई घर के पास से गुज़रा, जहाँ पोप पोंटियन ([5453]) के साथ इकट्ठा हुए विश्वासी सुबह के भजन गा रहे थे। गाने को ध्यान से सुनते हुए, पोंटियन ने शब्द सुने: *'हमारा ईश्वर स्वर्ग में है; वह जो चाहे करता है। पर उनकी मूर्तियाँ चाँदी और सोने की हैं, मनुष्यों के हाथों की बनाई हुई। उनके मुँह हैं, पर वे बोलती नहीं; उनकी आँखें हैं, पर वे देखती नहीं; उनके कान हैं, पर वे सुनती नहीं; उनकी नाक है, पर वे सूंघ नहीं सकते; उनके हाथ हैं, पर वे महसूस नहीं कर सकते; उनके पैर हैं, पर वे नहीं चल सकते; और उनके गले से कोई आवाज नहीं निकलती। जो उन्हें बनाते हैं वे उनके जैसे हों, और जो उन पर भरोसा करते हैं वे भी'* (भजन संहिता 113:11–16)।

वह ठहर गया, उसने आह भरी और इन शब्दों के अर्थ पर विचार करने लगा; फिर, पवित्र आत्मा की कृपा से प्रेरित होकर, पोंटियस रो पड़ा और अपने हाथ ऊपर उठाकर पुकार उठा:

'हे परमेश्वर, जिसकी स्तुति मैं अब सुन रहा हूँ, यह अनुग्रह मुझे दे कि मैं तुझे जानूँ!'

तब वह घर के दरवाजों के पास गया और उन्हें जोर-जोर से खटखटाने लगा। ऊपर खिड़की से झाँकने वालों ने पुरोहित से कहा:

'कोई जवान लड़का दरवाज़ा खटखटा रहा है।'

पिता, जो पवित्र आत्मा के प्रकाशन से पहले ही सब कुछ जान चुके थे, ने कहा:

'जाकर उसके लिए दरवाज़ा खोल दो, ताकि वह हमारे पास आ सके, *"क्योंकि परमेश्वर का राज्य ऐसे ही लोगों का है"* (लूका 18:16)।'

वह ईमानदार लड़का केवल अपने हमउम्र और सहपाठी वैलेरियस के साथ घर में दाखिल हुआ, जिसने बाद में संत पोंटियस का जीवन लिखा; उसने अपने नौकरों को सड़क पर ही छोड़ दिया। कमरे में प्रवेश करने और यह देखकर कि एक दैवीय सेवा चल रही थी, वह लड़का एक कोने में चला गया, जहाँ वह सेवा के अंत तक रहा, ध्यानपूर्वक सुनता रहा और उसका हृदय भावनाओं से भर गया। फिर वह पवित्र पोप के पास गया और, आँसुओं के साथ उनके पैरों पर गिर पड़ा, और कहा:

'मैं आपसे विनती करता हूँ, मेरे पिता, मुझे उन शब्दों का अर्थ समझाइए जो आपने अभी-अभी गाए हैं – मूर्तिपूजकों की मूर्तियाँ अंधी और बहरी हैं; उनमें सूंघने की शक्ति नहीं है और वे अपने हाथों से महसूस नहीं कर सकतीं; मैं विशेष रूप से इस कथन से प्रभावित हुआ: *"जो उन्हें बनाते हैं और जो कोई भी उन पर अपनी आशा रखता है, वे भी उनके जैसे हों।"*'

पोप ने स्नेहपूर्वक पोंटियस को अपने पास खींच लिया और कहा:

'मैं देखता हूँ, मेरे पुत्र, कि ईश्वर ने तुम्हारे हृदय को प्रकाशित किया है, जिससे वह उनकी लालसा करने लगा है। इसके बारे में सोचो और विचार करो: क्या सभी मूर्तियाँ सोने, चाँदी, तांबे या वास्तव में किसी अन्य पदार्थ से बनी नहीं होती हैं? कौन नहीं जानता कि पत्थर की मूर्तियों को पहाड़ों से काटकर, खंभों पर चढ़ाकर, बाज़ार में बेचने के लिए वहाँ से लाया जाता है? क्या ये मूर्तियाँ, जो मिट्टी से बनी हैं, और जिनका भाग्य भविष्य में नष्ट होकर फिर से मिट्टी में मिल जाना है, देवता हो सकती हैं? लेकिन हमारा ईश्वर, जिस पर हम विश्वास करते हैं, स्वर्ग में है, और उसे केवल हृदय की आँखों से देखा जा सकता है, न कि देह की आँखों से, और उसे केवल विश्वास के द्वारा जाना जा सकता है।

इस पर, धन्य पोंटियस ने उत्तर दिया:

'मेरे पिता और स्वामी, आप बिल्कुल सही कहते हैं: आखिर कौन नहीं देखता कि मूर्तियाँ निर्जीव और गतिहीन होती हैं, और वे न केवल बाज़ार, कैपिटल और मंदिरों में, बल्कि सभी सड़कों पर भी भरी पड़ी हैं: उनकी संख्या इतनी अधिक है कि उनकी गिनती नहीं की जा सकती; वे सबसे विविध रूपों में आते हैं और इंसानी दिमाग द्वारा संभव की जा सकने वाली उच्चतम कलात्मकता से तैयार किए गए हैं। और कौन यह नहीं देखता कि उन्हें लोहे या टिन से उनके स्थान पर जकड़ा जाता है, ताकि हवा उन्हें उड़ाकर न ले जाए, और फिर भी वे टूटे नहीं हैं? यह भी सर्ववदिति है कि चोर और लुटेरे अक्सर सोने और चांदी की मूर्तियों को चुराते हैं; और वे लोगों को बुराई से कैसे बचा सकते हैं, जबकि उन्हें स्वयं कुछ लोगों से सुरक्षा की आवश्यकता होती है ताकि दूसरे उन्हें चुराने से रोक सकें?

संत पोंटियन उस लड़के की बुद्धिमत्ता से चकित हो गए और, उसका हाथ पकड़कर, उसे अपने बगल में बिठाना चाहा, लेकिन धन्य पोंटियस ने कहा:

[5453] संत पोंटियन – रोम के पोप, 230–235

'यदि हम अपने शिक्षकों के साथ बैठने की हिम्मत नहीं करते, जो हमें तुच्छ बातों में सिखाते हैं, तो मैं ऐसे पिता के साथ कैसे बैठ सकता हूँ जो मुझे भ्रम के मार्ग के बजाय सत्य का मार्ग, और अंधकार के बजाय प्रकाश दिखाता है?'

पोप ने उत्तर दिया:

'हमारे प्रभु और शिक्षक, यीशु मसीह ने हमें यह आज्ञा दी है, कि सब उसमें एक हों (देखें यूहन्ना 15:4–5) और एक दूसरे को उस बात में शिक्षा दें जो भली है।'

तब मेरे पिता ने धन्य युवक से पूछा:

'क्या तुम्हारे माता-पिता हैं?'

'अब एक और साल हो गया है,' पोंटियस ने जवाब दिया, 'जब से मेरी माँ का निधन हुआ; केवल मेरे पिता जीवित हैं, जो अब बहुत बूढ़े हो गए हैं, और जिनके लिए मैं ही एकमात्र सहारा हूँ।'

'क्या वह ईसाई है या मूर्तिपूजक?' पोप ने पूछा।

'मेरे पिता, अधिकांश लोगों की तरह, एक उत्साही मूर्तिपूजक हैं,' पोंटियस ने उत्तर दिया।

पोप ने कहा, 'ईश्वर, जिन्होंने आपको मनुष्यों की किसी भी शिक्षा के बिना ज्ञान दिया है, वे आपके पिता को भी ज्ञान दें, ताकि जिसने आपको इस नश्वर जीवन में लाया है, वह आपके माध्यम से अमर जीवन को जान सके। और तुम, मेरे पुत्र, मेरी बात मानो: मसीह में विश्वास करो और पवित्र बपतिस्मा ग्रहण करो, जो मनुष्य को अनंत यातना से मुक्त करता है।'

इस प्रकार पोप ने लगभग तीन घंटे तक पोंटियस को उपदेश दिया, और उसे परमेश्वर के राज्य के सिद्धांत को समझाया; उसे और उसके साथ आए युवक वैलेरियस को बपतिस्मा देने के बाद, और इस प्रकार उन्हें पवित्र बपतिस्मा ग्रहण करने के लिए तैयार करने के बाद, उन्होंने उन दोनों को शांति से विदा कर दिया। वे चले गए और, एक हरे-भरे चरागाह से निकलते मेमनों की तरह, इस बात पर आनंदित हुए कि उन्होंने अपनी आत्माओं के लिए उद्धार पा लिया था। उस समय से, वे हर दिन उस ईश्वर के पवित्र पुरुष के पास शिक्षा ग्रहण करने आते थे।

एक दिन, सेनेटर मार्कस ने पोंटियस से पूछा:

'तुम्हारे शिक्षकों से इन पिछले दिनों में तुमने क्या नई बातें सीखी हैं, मेरे बेटे?'

पोंटियस ने उत्तर दिया, 'जब से मैं पढ़ रहा हूँ, मैंने उनसे अब जो सीखा है, उससे बेहतर कुछ भी नहीं सुना है।'

उसके पिता को यह सोचकर प्रसन्नता हुई कि लड़के ने मूर्तिपूजक स्कूलों में पढ़ाए जाने वाले विषयों से नई जानकारी प्राप्त की है। लेकिन धन्य पोंटियस, अपने पिता को भी अपने साथ मसीह में विश्वास की ओर ले जाने के लिए एक उपयुक्त अवसर की तलाश में, एक दिन कहने लगा:

'मैंने कई लोगों से सुना है, पिताजी, कि जिन देवताओं की हम पूजा करते हैं वे व्यर्थ हैं और उनमें कुछ भी दिव्य नहीं है, यह एक ऐसा दृष्टिकोण है जिसके प्रति मैं स्वयं आंशिक रूप से झुका हुआ हूँ: उनमें केवल मानव अंगों जैसी आकृति है और वे पूरी तरह से निष्क्रिय हैं; जो कोई भी अपने घर में देवताओं को रखना चाहता है, वह एक कारीगर को काम पर रखता है और उसके माध्यम से, अपनी सामर्थ्य के अनुसार किसी भी सामग्री से देवताओं को बनवाता है: सोना, चांदी या कुछ और। मैं आपसे विनती करता हूँ, मेरे पिता, मुझे बताइए: क्या आपने कभी हमारे घर में रखे देवताओं को पूरे समय यहाँ रहने के दौरान किसी भी कार्य में कोई शक्ति प्रदर्शित करते हुए देखा या सुना है?

मार्कस ने उत्तर दिया, 'ऐसा कुछ भी कभी नहीं हुआ।'

पॉन्टियस ने पूछा, 'तो फिर उनका सम्मान क्यों करें—क्यों बलिदान दें, धूप जलाएं और उनके सामने झुकें?'

ये शब्द सुनते ही मार्कस क्रोध से आग-बबूला हो गया और अपनी तलवार से अपने बेटे पर वार करने ही वाला था, यह कहते हुए:

'तुम मेरे देवताओं का अपमान कर रहे हो!'

फिर, शांत होकर, उसने कहा:

'क्या वाकई, मेरे बेटे, क्या हम ही इकलौते हैं जो देवताओं को नहीं मानेंगे और उन्हें बलिदान नहीं चढ़ाएंगे?'

धन्य पोंटियस ने उत्तर दिया:

'यहीं शहर में बहुत से लोग हैं जो सच्चे ईश्वर को सच्ची बलिदान अर्पित करते हैं।'

मार्कस ने पूछा, "मैं उन्हें कहाँ ढूंढ सकता हूँ?"

'अगर आप चाहें, तो मैं जाकर आपको एक ऐसा आदमी ला दूँगा जो आपको सब कुछ स्पष्ट रूप से समझा देगा,' पोंटियस ने प्रस्ताव रखा।

उसके पिता सहमत हो गए। पोंटियस ने वैलेरियस की ओर मुड़कर कहा:

'देखो, सर्वोच्च के दाहिने हाथ से यह परिवर्तन हुआ है,' और तुरंत पवित्र पोप पोंटियन के पास गए और उन्हें अपने पिता के पास ले आए।

पोप ने मार्क से लंबी बात की, उन्हें सच्चे ईश्वर के ज्ञान का उपदेश दिया और पवित्र विश्वास के रहस्यों का खुलासा किया। मार्क ने पूरे दिल से हमारे प्रभु यीशु मसीह में विश्वास किया और पोप तथा उनके पुत्र के साथ मिलकर घर में खड़ी मूर्तियों को तोड़ना शुरू कर दिया; इसके बाद, उन्होंने अपने पुत्र और पूरे परिवार के साथ पवित्र बपतिस्मा ग्रहण किया। अपने बपतिस्मा के बाद, मार्क अधिक समय तक जीवित नहीं रहे और प्रभु के पास चले गए, वे पहले ही एक अति सम्मानित एल्डर बन चुके थे। उस समय, धन्य पोंटियस बीस वर्ष के थे। अपने पिता की मृत्यु के छह महीने बाद, उन्हें राजा अलेक्जेंडर के दरबार में ले जाया गया और उनके पिता की जगह एक सेनेटर नियुक्त किया गया। यह ईश्वर की पूर्व-नियोजित व्यवस्था के कारण हुआ, ताकि बाद में, नियत समय पर, न केवल लोग बल्कि राजा भी पोंटियस के माध्यम से मसीह को जान सकें। सच्ची भक्ति से परिपूर्ण, संत पोंटियस सभी दरबारी लोगों के स्वाभाविक प्रेम और सम्मान के पात्र थे। उस समय, पोप संत पोंटियन ने एक वीरतापूर्ण मृत्यु प्राप्त की, जिन्हें अलेक्जेंडर के उत्तराधिकारी मैक्सिमियिन के आदेश पर मसीह की स्वीकारोक्ति के लिए मार डाला गया था; उनकी जगह संत अंफरि ने ले ली, लेकिन उन्होंने भी रोम के पैट्रिआर्क के सिंहासन पर मुश्किल से एक महीना बिताने के बाद, उसी मैक्सिमियिन के हाथों मसीह के लिए शहीद की मृत्यु प्राप्त की। संत अम्फरि के बाद, संत फाबियस को पोप चुना गया; वह संत पोंटियस से वैसे ही प्रेम करता था जैसे एक पिता अपने पुत्र से करता है। संत पोंटियस ने अपनी सारी संपत्ति गरीबों, विशेषकर अपने साथी विश्वासियों में बांटने के लिए उन्हें दे दी। लेकिन अब समय आ गया है कि हम उस वृत्तांत की ओर मुड़ें कि कैसे मसीह के एक सच्चे सेवक, संत पोंटियस ने राजाओं को मसीह के प्रति परिवर्तित किया और कैसे, शैतान के खिलाफ अपने संघर्ष में, वह विजयी हुए और शहीद का मुकुट प्राप्त किया।

उत्पीड़क मैक्सिमियिन की मृत्यु के बाद, गॉर्डियन राजा बना, जिसके बाद फिलिप सत्ता में आया, जिसने अपने बेटे—जिसका नाम भी फिलिप था—को अपना सह-शासक बनाया; वे दोनों संत पोंटियस को एक बुद्धिमान, धार्मिक व्यक्ति के रूप में बहुत सम्मान देते थे, जिनकी सलाह शासन के मामलों में बहुत फायदेमंद थी। उनके शासन के तीसरे वर्ष में, जो रोम की स्थापना की सहस्राब्दी भी थी, वे देवताओं को कृतज्ञता की बलि चढ़ाने के लिए मंदिर की ओर रवाना हुए, और अपने प्रिय सेनेटर पोंटियस को अपने साथ चलने के लिए आमंत्रित किया:

'आओ हम महान देवताओं का धन्यवाद करें कि उन्होंने हमें स्वयं शहर के भीतर रोम के सहस्राब्दी का जश्न मनाने का अवसर प्रदान किया।'

संत पोंटियस ने उनके निमंत्रण को अस्वीकार करने की पूरी कोशिश की, ताकि वह किसी मूर्तिपूजक मंदिर में प्रवेश न करें, लेकिन राजाओं ने एक मित्र के रूप में लगातार उनसे साथ चलने का आग्रह किया। तब संत पोंटियस ने, यह महसूस करते हुए कि राजाओं को एकमात्र सच्चे ईश्वर, हमारे प्रभु यीशु मसीह, का प्रकट करने का यह सही समय है, कहा:

'हे परमेश्वर द्वारा मानवजाति पर नियुक्त उत्तम राजाओं, आप उस की उपासना क्यों नहीं करते जिसने आपको राजसी सम्मान और अधिकार प्रदान किया है? आप केवल उसी की स्तुति-बलिदान क्यों नहीं करते?'

राजा फिलिप प्रथम ने उत्तर दिया:

'मैं वास्तव में महान ज्यूस को बलिदान चढ़ाना चाहता हूँ, ठीक इसलिए क्योंकि उसने मुझे राजसी शक्ति प्रदान की है।'

संत पोंटियस मुस्कुराते हुए बोले:

'हे राजा, डियोस की पूजा करके धोखा न खाओ: स्वर्ग में केवल एक ही ईश्वर है, जिसने अपने एकमात्र वचन से सभी चीजों की रचना की और पवित्र आत्मा की कृपा से सभी चीजों को जीवन दिया।'

'हम नहीं जानते कि आप यह सब क्यों कह रहे हैं,' दोनों राजाओं ने उत्तर दिया।

'क्या दिया का अस्तित्व सनातन काल से है?' संत पोंटियस ने पूछा।

राजाओं ने कहा, "नहीं, दयि से पहले, उसके पिता क्रोनस थे; उसने इटली पर शासन किया, और उसके शासन के तहत इटली के लोगों ने समृद्धि का आनंद लिया।"

'और जिस समय क्रोनस ने क्रीट में शासन किया, और इससे पहले कि उसे उसके पुत्र ज़ियस द्वारा निकाल दिया गया और वह इटली आया, क्या इटली में अपने लोग और शासक नहीं थे?' संत पोंटियस ने फिर से पूछा।

'नहीं,' उन्होंने कहना जारी रखा, 'अपने कवियों की झूठी कथाओं से धोखा न खाओ। स्वर्ग में सभी से ऊपर एक ही ईश्वर है – ईश्वर पिता, जो अपने पुत्र और पवित्र आत्मा के साथ मिलकर, अपनी सृष्टि पर शासन करते हैं और अपनी शक्ति से जो कुछ भी अस्तित्व में है, उसे बनाए रखते हैं; उसने स्वर्ग, पृथ्वी और समुद्र की रचना की, और उन सब चीज़ों की जो उनमें हैं; और अंत में, उसने अमर मनुष्य को अपनी ही प्रतिमा और समानता में बनाया, और पृथ्वी, समुद्र और हवा में जो कुछ भी है, उसे उसके अधिकार के अधीन कर दिया। जब शैतान ने देखा कि ईश्वर ने मनुष्य को जो महान सम्मान दिया है, तो वह स्वर्ग से निष्कासित होकर ईर्ष्या से भर गया और मनुष्य के मन में ईश्वर की आज्ञा का उल्लंघन करने का एक लुभावन विचार डाला, ताकि इस प्रकार वह अपने सृष्टिकर्ता और कल्याणकर्ता के प्रति कृतघ्न और अवज्ञाकारी साबित हो। मनुष्य ने धोखेबाज़ की विश्वासघाती सलाह मानी और इस प्रकार उसने स्वयं को अमरत्व से वंचित कर लिया, उसकी अवज्ञा ने न केवल उस पर बल्कि पूरे मानव जाति पर मृत्यु ला दी। लेकिन शैतान मानव की इस धोखाधड़ी से संतुष्ट नहीं था और उसने मूर्तियाँ बनाईं, जिन्हें आप देवता कहते हैं, ताकि मानव जाति को सृष्टिकर्ता से और भी दूर कर सके। हालाँकि, दयालु प्रभु, जो अपनी छवि में बनाए गए मनुष्य के अंतिम विनाश को नहीं चाहते थे, ने स्वर्गीय सिंहासन से पृथ्वी पर अपने एकमात्र पुत्र वचन[5454] को भेजने की कृपा की: पवित्र आत्मा की शक्ति से, वचन परम पवित्र कुँवारी के गर्भ में निवास किया, अकल्पनीय रूप से उसने उससे देह धारण किया और एक अनुपम तरीके से उससे जन्म लिया, और वचन मनुष्य बन गया, ताकि वह पतित मानवता को नवीनीकृत कर सके और शैतान की शक्ति को नष्ट कर सके। ईश्वर-मनुष्य ने मनुष्यों के बीच कई चमत्कार किए: उन्होंने एक ही वचन से जन्म से अंधे, लकवाग्रस्त और कई वर्षों से बिस्तर पर पड़े रोगियों को चंगा किया; उन्होंने कोढ़ियों को शुद्ध किया; उन्होंने मृतकों को जीवित किया – चार दिन से कब्र में पड़े लाजरुस को कब्र से बाहर बुलाकर उसे जीवन प्रदान किया; सर्वशक्तिमान परमेश्वर के रूप में, उन्होंने अनगिनत अन्य चमत्कार किए। लेकिन यहूदियों ने, उस पर विश्वास न करके और उससे ईर्ष्या करके, उसे राज्यपाल पोंतियस पिलातुस के हवाले कर दिया, और उसे, जो उन्हें बचाने आया था, सूली पर चढ़ा दिया। हालाँकि, वह परमेश्वर के रूप में, तीसरे दिन मरे हुओं में से जी उठे और, अपने पुनरुत्थान के बाद, कई दिनों तक अपने शिष्यों के सामने प्रकट हुए; उसने शैतान द्वारा मानवजाति पर थोपी गई मृत्यु को नष्ट कर दिया; अपनी मृत्यु और पुनरुत्थान के माध्यम से उसने हमें अनंत जीवन प्रदान किया; और जैसे वह, मृतकों में से जी उठने के बाद, फिर कभी नहीं मरता, वैसे ही हम भी, इस क्षणभंगुर yet दुखों से भरे जीवन के अंत में, अपनी कब्रों से उठकर, उसके साथ अनंतकाल तक जीवित रहेंगे। मोक्ष का मार्ग दिखाने के बाद, वे स्वर्ग में आरोहण कर गए; और जो कोई भी इस मोक्ष को अनदेखा करता है, वह शैतान के साथ अनंतकाल के लिए दंडित होगा; लेकिन जो विश्वासी मोक्ष के मार्ग पर चलता है, वह स्वर्ग के राज्य में हमेशा के लिए मसीह के साथ रहेगा।

संत पोंटियस ने राजाओं को लंबे समय तक उपदेश दिया: उन्होंने उन्हें मसीह के बारे में, विश्वास के रहस्यों के बारे में और आने वाले जीवन के बारे में सब कुछ विस्तार से बताया, और उनका भाषण, जो पवित्र आत्मा की कृपा से परिपूर्ण था, ने राजाओं के मन खोल दिए: उनके शब्दों की पूर्ण सच्चाई को समझने के बाद, उनके हृदय द्रवित हो गए और वे हमारे प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास करने लगे। राजाओं ने संत पोंटियस से विनती की कि वे अगले दिन उन्हें उद्धार के रहस्य को और भी विस्तार से समझाएँ, ताकि वे न बुझने वाली आग से बच सकें और, आने वाले अमर जीवन में, संतों के

[5454] यह परम पवित्र त्रिमूर्ति के दूसरे व्यक्ति, ईश्वर के पुत्र, उद्धारकर्ता मसीह को दिया गया नाम है। यह उपाधि यूहन्ना के सुसमाचार (1:1–14) से ली गई है। – तो फिर, ईश्वर के पुत्र को वचन क्यों कहा जाता है? क) उनके जन्म की तुलना हमारे मानव शब्द की उत्पत्ति से करना: जैसे हमारा शब्द हमारे मन या विचार से भावहीन, अदृश्य और आध्यात्मिक रूप से जन्म लेता है, वैसे ही परमेश्वर का पुत्र भी पिता से भावहीन और आध्यात्मिक रूप से जन्म लेता है। ख) जिस प्रकार हमारे विचार हमारे शब्दों के माध्यम से प्रकट या व्यक्त होते हैं, उसी प्रकार परमेश्वर का पुत्र, अपने सार और पूर्णता में, परमपिता परमेश्वर का सबसे सटीक प्रतिबिंब है और इसलिए उसे 'उसकी महिमा का तेज' और उसकी 'स्वभाव (प्रतिमा) का सटीक प्रतिनिधित्व' कहा जाता है (इब्रानियों 1:3)। c) जिस प्रकार हम वाणी के द्वारा अपने विचारों को दूसरों तक पहुँचाते हैं, उसी प्रकार परमेश्वर ने भी, भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा लोगों से कई बार बात करने के बाद, अंततः पुत्र के द्वारा बात की (इब्रानियों 1:2), जो इस उद्देश्य के लिए देहधारी हुए और अपने पिता की इच्छा को इतनी पूरी तरह से प्रकट किया कि जिसने पुत्र को देखा, उसने पिता को देखा (यूहन्ना 14:9)।

भाग में सहभागी हो सकें। उस दिन, और बाद के दिनों में भी, राजा मूर्तियों को बलिदान चढ़ाने के लिए कैपिटल नहीं गए; उन्होंने केवल इतना आदेश दिया कि रोम के सहस्राब्दी दिवस को सार्वजनिक तमाशों के साथ मनाया जाए। संत पोंटियस ने, अपनी ओर से, परम पावन पोप फाबियस के पास जाने में कोई समय बर्बाद नहीं किया, जिन्हें उन्होंने सब कुछ सुनाया; पोप, परम आनंद से भरकर, घुटनों के बल गिर पड़े, यह कहते हुए:

'हे प्रभु यीशु मसीह, मैं तुझे धन्यवाद देता हूँ कि तूने अपने सेवक पोंटियस के द्वारा रोम के सम्राटों को अपने परम पवित्र नाम के ज्ञान की ओर ले जाने की कृपा की!'

अगले दिन, पोप और पोंटियस एक साथ सम्राटों के पास गए और उन्होंने उनके साथ एक सच्चे ईश्वर और मोक्ष के संपूर्ण मार्ग के बारे में विस्तार से बात की; राजाओं के विश्वास को देखकर, पोप ने उन्हें पवित्र बपतिस्मा के लिए तैयार घोषित किया, और फिर, कुछ ही समय बाद, उन्हें बपतिस्मा दिया; उनके साथ अन्य लोगों को भी बपतिस्मा दिया गया, क्योंकि राजाओं के उदाहरण का अनुसरण करते हुए, बहुत से लोग मसीह में विश्वास करने लगे। और उस समय ईसाइयों की खुशी का वर्णन कौन कर सकता है? तभी संत पोंटियस के विषय में वह भविष्यवाणी पूरी हुई—जो शैतान ने, ईश्वर की आज्ञा से, एक पिस्सा हुआ पुजारी के माध्यम से तब की थी जब वह अपनी माँ के गर्भ में था: राजाओं की अनुमति मिलने पर, संत पोंटियस, संत पोप फाबियस के साथ, डिया के मंदिर में गए, जहाँ उपरोक्त भविष्यवाणी की गई थी; वहाँ उन्होंने पहले मूर्तियों को तोड़ा, और फिर मंदिर को ही जमीन-दोस्त कर दिया; कई अन्य मूर्तिपूजक मंदिर भी नष्ट कर दिए गए, और उनकी जगह पर ईश्वर के पवित्र चर्चों का निर्माण किया गया; उन दिनों, बहुत से लोग ईसा की ओर मुड़े और बपतिस्मा ग्रहण किया। फिर भी वे रोम की पूरी आबादी नहीं थे: यह केवल उसका एक हिस्सा था, और मसीह की कलीसिया के लिए अनुकूल बताए गए उन कुछ वर्षों के दौरान मूर्तियों से भरे सभी तीर्थस्थल नष्ट नहीं हुए, बल्कि ईश्वर की इच्छा से केवल कुछ ही नष्ट हुए। उसे केवल चार वर्षों तक ही ऐसी स्वतंत्रता मिली: प्रभु यीशु मसीह, अपनी कलीसिया को वैसे ही परखना चाहते थे जैसे सोने को भट्टी में परखा जाता है, उन्होंने एक नए उत्पीड़न को शुरू होने दिया – दुष्ट डेसियस[5455] , ने मूर्तिपूजकों के मुखिया के रूप में, विद्रोह कर दिया और मसीह में अपने विश्वास के कारण धर्मनिष्ठ राजाओं को मार डाला। और नए बपतिस्मा पाए हुए कई लोग, जिनमें आत्मिक दृढ़ता की कमी थी, उत्पीड़न के डर से एक बार फिर मूर्तिपूजा में लौट गए; अन्य भाग गए, जहाँ भी उन्हें जगह मिली वहाँ छिप गए, जबकि साहसी लोगों ने बहादुरी से अपने यातनाओं का सामना किया, और मसीह के लिए अपना जीवन दे दिया। इस भयंकर उत्पीड़न के दौरान, जो एक तूफान की तरह अचानक आया था, संत पोंटियस ने स्वयं रोम में एक निश्चित स्थान पर शरण ली, लेकिन मूर्तिपूजक पुरोहितों ने विशेष उत्साह के साथ उनकी तलाश की; उनकी मूर्तियों और मंदिरों को नष्ट करके, उन्होंने उनमें अपने प्रति अत्यधिक घृणा जगा दी थी - वे उन्हें यातना देने के लिए उत्सुक थे। इस परिस्थिति के कारण संत पोंटियस ने एक रात रोम से भागने का निर्णय लिया, और सुसमाचार में प्रभु के स्वयं कहे शब्दों का पालन किया: *'जब वे तुम्हें एक नगर में सताएँ तो दूसरे नगर में भाग जाओ'* (मत्ती 10:23); वह आल्प्स के पास, गॉल की सीमा पर स्थित Cime[5456] नगर में पहुँचे; यहाँ उन्होंने एक भटकते यात्री और अजनबी के रूप में जीवन व्यतीत किया। राजा डेसियस का शीघ्र ही निधन हो गया, और गैलस और वोलुसियनस के संक्षिप्त शासन के बाद, Valerian[5457] अपने पुत्र गैलिनस के साथ रोमन साम्राज्य के सिंहासन पर आसीन हुए। इन सम्राटों ने न केवल रोम में बल्कि उसकी सभी प्रांतों में ईसाइयों के नाम को ही मिटा देने का प्रयास किया; इस उद्देश्य के लिए, उन्होंने हर जगह ईसाइयों पर अत्याचार करने के लिए विशेष अधिकारी भेजे; ऐसे ही दो अत्याचारियों, क्लॉडियस और अनावियस को, अन्य लोगों के साथ, गॉल प्रांत में भेजा गया था। वे सबसे पहले सिमे शहर में पहुँचे; देवताओं को बलिदान चढ़ाने और नगर के केंद्र में एक न्यायालय स्थापित करने के बाद, उन्होंने आदेश जारी किए कि ईसाइयों को पकड़कर यातना के लिए उनके सामने पेश किया जाए। संत पोंटियस को, एक प्रसिद्ध और प्रतिष्ठित व्यक्ति होने के नाते, सभी से पहले अवैध न्यायालय के सामने पकड़कर लाया गया। उन्हें देखकर, राज्यपाल क्लॉडियस ने गुस्से में कहा:

'क्या तुम वही पोंटियस हो, जिसने किसी अज्ञात जादू-टोने से रोम में उथल-पुथल मचाई और राजाओं को देवताओं से दूर कर दिया?'

[5455] 240 से 251 तक सम्राट।

[5456] वर्तमान नाइस के पास।

[5457] वैलेरियन – सम्राट 252–259।

'मैंने किसी को भी भटकाया नहीं है और न ही कोई अशांति फैलाई है,' संत पोंटियस ने उत्तर दिया, 'बल्कि मैंने जितनों को हो सका, उन्हें मूर्तिपूजा से हटाकर सच्चे ईश्वर की ओर मोड़ा है।'

गवर्नर ने कहा:

'हमारे राजाओं ने, यह जानते हुए कि आप कुलीन कुल के हैं, आपको देवताओं को बलिदान चढ़ाने का आदेश दिया है: अन्यथा, आपको नीच और दरिद्र लोगों के साथ विभिन्न यातनाओं को भुगतना पड़ेगा।'

संत पोंटियस ने उत्तर दिया:

'मेरा राजा और सांत्वनादाता मसीह हैं, और यदि उनके लिए मुझे अपनी सांसारिक मातृभूमि से वंचित कर दिया जाता है, तो मैं शाश्वत मातृभूमि का वारिस बनूँगा; और यदि मुझे क्षणिक आशीर्वादों से वंचित किया जाता है, तो मैं पवित्र स्वर्गदूतों के साथ स्वर्गीय महिमा में सहभागी बनूँगा।'

क्लाउडियस ने पूछा, 'तुम ऐसे बिल्कुल अविश्वसनीय शब्दों का उच्चारण करके मुक्ति क्यों चाहते हो?' 'तुम्हारे लिए केवल एक ही काम है: देवताओं को बलिदान चढ़ाओ। यदि तुम ऐसा नहीं करते हो, तो तुम्हारे शरीर को यातनाओं में टुकड़े-टुकड़े कर दिया जाएगा।'

संत पोंटियस ने उत्तर दिया, 'लेकिन मैंने तुम्हें बताया है कि मैं एक ईसाई हूँ और कभी भी देवताओं को बलिदान नहीं चढ़ाऊँगा।'

गवर्नर ने सेंट पोंटियस को, पहले उस पर बेड़ियाँ डालकर, जेल में डालने का आदेश दिया और साथ ही सम्राटों को उसकी रिपोर्ट भेजी; फिर क्लॉडियस ने उन्हें निम्नलिखित पत्र भेजा:

ब्रह्मांड के शासकों, महान विजेताओं, रोमन सम्राटों वैलेरियन और गैलिनस, आपके सेवकों क्लॉडियस और अनाविअस को: गॉल की सीमाओं में प्रवेश करने पर, हमें पोंटियस मिला, जिसने एक बार रोम में उथल-पुथल मचा दी थी, देवताओं को कुचल दिया था और उनके मंदिरों को तबाह कर दिया था, और जो अब आपके अधिकार से छिप रहा है और आपके आदेशों की अवज्ञा कर रहा है; और चूँकि वह सबसे प्रतिष्ठित सेनेटर्स में से एक है, हम उसे यातना देने की हिम्मत नहीं कर सके, बल्कि केवल, उसे हथकड़ी में बाँधकर, उसे जेल में डाल दिया है जब तक कि आप इस मामले की जाँच न कर लें और आदेश न दें कि हमें उसके साथ कैसा व्यवहार करना है।

राजाओं ने निम्नलिखित उत्तर भेजा:

'हमारा प्रभुत्व आपको निम्नलिखित आज्ञा देता है: यदि पोंटियस देवताओं को बलिदान देने से इनकार करता है, तो उस पर आपका पूरा अधिकार होगा और आप उसे उस तरीके से मृत्युदंड दे सकते हैं जो आपको उचित लगे।'

राजाओं का आदेश प्राप्त करने के बाद, राज्यपाल क्लॉडियस और अनाविअस अदालत गए और मसीह के कैदी को उनके सामने लाने का आदेश दिया। क्लॉडियस ने संत पोंटियस से कहा:

'अपने शासकों के न्यायसंगत आदेश का पालन करो, जिसके द्वारा वे तुम्हें देवताओं को बलिदान चढ़ाने का आदेश देते हैं; यदि तुम ऐसा नहीं करते हो, तो तुम्हें दंडितों के साथ यातनाएँ दी जाएँगी।'

संत पोंटियस ने उत्तर दिया:

'मेरा कोई अन्य स्वामी नहीं है, सिवाय मेरे एकमात्र स्वामी, यीशु मसीह के, जो मुझे उन यातनाओं से हमेशा बचा सकते हैं जिनकी आप मुझे धमकी दे रहे हैं।'

क्लॉडियस ने कहा, "मैं हैरान हूँ कि तुम, जो अपनी मर्जी से कुलीन जन्म के व्यक्ति हो, इतनी गरीबी और अपमान में कैसे पहुँच गए—तुम एक ऐसे प्रभु की सेवा करते हो, जिसके बारे में तुम स्वयं कहते हो कि वह एक गरीब और नम्र व्यक्ति था, और जिसे, मुझे नहीं पता किस अपराध के लिए, पिलातुस ने, जो हम जैसे एक राज्यपाल था, मृत्युदंड दिया।" क्या आपके लिए यह बेहतर नहीं होगा कि आप उन स्वामियों की आज्ञा मान लें जो पूरे रोमन साम्राज्य पर कोमलता से शासन करते हैं?

'मैं भी हैरान हूँ,' संत पोंटियस ने उत्तर दिया, 'कि आप, एक विवेकशील व्यक्ति होकर, इतने पागलपन में डूब गए हैं कि आप स्वर्ग और पृथ्वी के सृष्टिकर्ता को पहचानने से इनकार करते हैं, जो आपके उद्धार के लिए निर्धन हो गए, और—आपमें इतनी हिम्मत है कि आप उन्हें अपमानजनक कहते हैं, जिनका स्वर्ग में स्वर्गदूत सम्मान करते हैं और जिन्होंने, न तो जबरदस्ती से बल्कि अपनी ही इच्छा से, हमारे उद्धार के लिए यहूदियों और पिलातुस के हाथों सूली पर चढ़ने की कृपा की। हे, काश तुम उस ईश्वर के सामने सिर झुकाते, जो अपनी विनम्रता में इतना महान है: तुरंत ही तुम्हारा मन प्रबुद्ध हो जाएगा, और तुम यह महसूस करोगे कि अपने भ्रम में तुम अपने देवताओं—या यूँ कहो, राक्षसों—के साथ

एक अंधेरी खाई में पड़े हो; जहाँ तक आपके स्वामियों का सवाल है, जिन्हें आप रोमन शासक कहते हैं, वे लकड़ी और पत्थर की पूजा करके न केवल स्वयं विनाश की ओर बढ़ रहे हैं, बल्कि अपने शासन के लोगों को भी अपने साथ खींच रहे हैं; यह जान लो: यदि तुम अपने अविश्वास में बने रहे, तो तुम एक भयानक मृत्यु से मरोगे और, न्याय के दिन, अपने देवताओं के साथ अनंतकालिक यातनाओं के लिए दंडित किए जाओगे।

ये शब्द राज्यपाल को क्रोधित कर गए; अपने क्रोध में उन्होंने अपने सेवकों से चिल्लाकर कहा:

'काँटेदार फावड़े, लोहे की सलाखें, आग और यातना के लिए आवश्यक सब कुछ तैयार करो; उसकी पागलपन को सबके सामने उजागर होने दो!'

'सब कुछ पहले से ही तैयार है,' नौकरों ने उत्तर दिया।

'उसे चक्की पर खींच दो,' राज्यपाल ने आदेश दिया, 'ताकि वह अपने पूरे शरीर से यातना महसूस करे, और देखते हैं कि क्या ईश्वर उसे हमारी पकड़ से छुड़ा पाएगा।'

संत पोंटियस, जब उन्हें खींचा जा रहा था, तो उन्होंने राज्यपाल से कहा:

'यद्यपि तुम अपने अविश्वास में मेरे ईश्वर को शक्तिहीन कहते हो, मैं दृढ़ता से विश्वास करता हूँ कि मेरे प्रभु यीशु मसीह की शक्ति से, जो यातनाएँ तुम मुझे देना चाहते हो, वे मेरे शरीर को नहीं छूएँगी, और वह कष्ट से बच जाएगा।'

तुरंत, यातना का उपकरण ज़ोरदार आवाज़ के साथ गिरकर धूल में बदल गया; डर के मारे कांपते सेवक भी मृतक की भाँति ज़मीन पर गिर पड़े, जबकि संत पोंटियस, आनंद से भरकर, राज्यपाल से कहने लगे:

'अब यकीन कर, हे अल्पविश्वासी, कि मेरे प्रभु के पास यह सामर्थ्य है कि वह *"भक्तिमानों को परीक्षा से बचा ले और अधर्मी को न्याय के दिन तक दण्ड में रखे"* (2 पतरस 2:9)।

गवर्नर क्लॉडियस इतना क्रोधित हो गया कि वह समझ नहीं पाया कि क्या करे; उसके साथी अनावियस ने उससे कहा:

'हे बुद्धिमान, जब हम यहाँ पहुँचे, तो दो विशाल भालू, जिन्हें डाल्मेशियन पहाड़ों से पकड़ा गया था, हमें यहाँ लाए जाने के समय ही लाए गए थे; एक तमाशा आयोजित करने का आदेश दो और पोंटियस को इन जानवरों द्वारा खाए जाने के लिए सौंप दो।'

तुरंत, राज्यपाल के आदेश पर, एक तमाशा आयोजित किया गया, और पवित्र शहीद को केंद्र में खड़ा किया गया; दो पहरेदारों ने भालुओं को बाहर निकाला ताकि वे संत को टुकड़े-टुकड़े कर दें। लेकिन भालुओं ने अचानक पहरेदारों पर झपटकर उन्हें खा लिया, जबकि वे संत पोंटियस के पास आने से भी डर रहे थे। उपस्थित भीड़ ने एक अनैच्छिक चीख निकाली:

'केवल एक ही ईश्वर है – ईसाई ईश्वर, जिस पर पोंटियस का विश्वास है!'

अपने अहंकार पर चोट लगने और और भी अधिक क्रोधित होकर, राज्यपाल ने अपने नौकरों को यथाशीघ्र लकड़ी और झाड़-झंखाड़ लाने के लिए चिल्लाया: वह पवित्र शहीद को जलाना चाहता था। संत पोंटियस ने उससे कहा:

'तुम मेरे खिलाफ क्या आरोप लगा रहे हो कि तुम मुझे आग के हवाले करना संभव समझते हो? तुम स्वयं अविनाशी अग्नि में नष्ट हो जाओगे; जहाँ तक मेरी बात है, मेरे प्रभु हमेशा, यदि उनकी इच्छा हो, तो मुझे आग के बीच सुरक्षित रखेंगे, ठीक वैसे ही जैसे उन्होंने पुराने दिनों में बेबीलोन की भट्टी में तीन युवकों को सुरक्षित रखा था (दानियेल 3)।'

जब लकड़ी और अन्य अत्यधिक ज्वलनशील सामग्री इकट्ठी कर ली गई, तो संत पोंटियस को, बाँधकर, उस अखाड़े के केंद्र में रखा गया जहाँ यह तमाशा आयोजित किया गया था; फिर उन्होंने उसके चारों ओर लकड़ी और झाड़ियों का ढेर लगाकर उसमें आग लगा दी; सभी ने सोचा कि शहीद की केवल राख ही बचेगी। लेकिन जब सब कुछ जलकर राख हो गया, तो उन्होंने देखा कि संत पोंटियस जीवित और पूरी तरह से सुरक्षित थे: आग ने उनके कपड़ों को भी नहीं छुआ था। और एक बार फिर लोगों ने पुकारा:

'महान है ईसाई ईश्वर!'

अपनी हार देखकर, राज्यपाल को गहरा शर्मिंदगी महसूस हुई और उसने पवित्र शहीद से कहा:

'तुम ऐसे घमंड क्यों करते हो मानो तुमने सभी यातनाओं पर पहले ही विजय प्राप्त कर ली हो? क्या तुम्हें नहीं लगता कि तुम्हें इससे भी बड़ी यातनाओं का सामना करना पड़ सकता है? लेकिन वहाँ, पास में ही, अपोलो का पवित्र मंदिर है: जाओ और वहाँ बलिदान चढ़ाओ।'

संत पोंटियस ने उत्तर दिया:

'मैं अपना शरीर अपने प्रभु यीशु मसीह को बलदिान के रूप में अर्पति करता हूँ, जसिे मैंने अब तक मूर्तपिूजक घृणास्पद कृत्यों से पवत्रि रखा है; परन्तु तुम और तुम्हारे राजा शीघ्र ही मसीह के नर्दिोष सेवकों पर अन्याय से अत्याचार करने के लएि परमेश्वर के धर्मी न्याय का सामना करोगे।'

हालाँकि, राज्यपाल ने पाखंडपूर्वक उसे मनाना शुरू कर दयिा:

'सत्य तो यह है कि हमें तुम्हें आँकना चाहएि, न कि तुम्हें हमें: क्योंकि तुम प्रमुख सेनेटर्स में से एक हो, और हम यह समझ नहीं पा रहे कि कौन सी व्यर्थ आशाएँ तुम्हें सम्मान और धन से वंचति करने पर प्रेरति कर रही हैं।'

'इस संसार का सम्मान और इसकी दौलत,' संत पोंटयिस ने उत्तर दयिा, 'प्रातःकी ओस के समान हैं, जो मानव की आँखों से पृथ्वी, पहाड़ों और समुद्र को छपिा देती है; परन्तु जब हवा चलती है, तो वह शीघ्र ही गायब हो जाती है, मानो वह कभी थी ही नहीं; फरि भी वह सम्मान, धन और महमिा जसिकी मैं आकांक्षा करता हूँ, सदा के लएि बनी रहती है।'

जब संत बोल ही रहे थे, भीड़ में बड़ी संख्या में मौजूद यहूदयिों ने राज्यपाल को संबोधति करते हुए चल्लिाना शुरू कर दयिा:

'मार दो, इस जादूगर को अभी मार दो!'

और संत पोंटयिस ने स्वर्ग की ओर अपने हाथ उठाकर कहा:

'मैं तेरा धन्यवाद करता हूँ, हे मेरे ईश्वर, कि यहूदी भी मेरे वरिुद्ध चल्लिा रहे हैं, अपने पूर्वजों के पदचन्हिों पर चलते हुए जन्हिोंने मसीह के वषिय में पलिातुस से कहा था: "इसे सूली पर चढ़ा दो, इसे सूली पर चढ़ा दो!" (देखें यूहन्ना 19:6, 15)।'

इसके बाद, राज्यपाल ने संत पोंटयिस को मृत्युदंड सुनाया:

'उसे शहर के बाहर ले जाओ और दलदल में फेंक दो।'

सब कुछ यातना देने वाले के आदेशानुसार कयिा गया। और शहीद संत पोंटयिस ने, अपना सरि कटवाकर, इस अंतमि यातना के साथ मसीह के लएि अपने दुःखों को समाप्त कयिा। जहाँ तक संत के सम्मानति शरीर का सवाल है, उनके दुःखों के वृत्तांतकार और उनके समकालीन वैलेरयिस ने, उसे ठीक उसी जगह पर दफनाया जहाँ सरि कटने के बाद वह गरिा था[5458]।

संत पोंटयिस की मृत्यु के तुरंत बाद, उनकी भवष्यिवाणयिाँ सच हुईं। धर्महीन रोमन सम्राट वैलेरयिन, फारस के राजा शपूर के साथ युद्ध के दौरान, बंदी बना लयिा गया था, जहाँ उसे लगातार हर तरह के अपमान का सामना करना पड़ा: जब भी शपूर अपने घोड़े पर चढ़ता, तो वह वैलेरयिन की गर्दन पर इस तरह पैर रखता जैसे वह एक पायदान हो; जबकि एक अन्य रोमन सम्राट गैलयिनिस को मेडओिलानम जाने वाले रास्ते पर अपने ही सैनकिों ने मार डाला। जहाँ तक राज्यपाल क्लॉडयिस और उनके मत्रि अनावयिस का सवाल है, पवत्रि शहीद का सरि काटे जाने के ठीक उसी क्षण उन्हें राक्षसों ने पकड़ लयिा: क्लॉडयिस ने अपने दाँतों से अपनी जीभ को चबाकर बाहर थूक दयिा, जबकि अनावयिस की आँखें अपनी जगह से बाहर नकिलकर उसके गालों पर लटक गईं; और राक्षसों के हाथों थोड़ी लेकनि भयंकर यातना के बाद, दोनों का अंत हो गया। पगानों और यहूदयिों ने, संत पोंटयिस के शब्दों की पूर्ति को देखकर, भयभीत हो गए, और कई लोगों ने पवत्रि शहीद के मकबरे की पूजा करना शुरू कर दयिा। वैलेरयिस ने संत के जीवन और कष्टों को दर्ज करने के बाद, और यह देखकर कि उत्पीड़न रुकने का कोई संकेत नहीं दखिा रहा था, एक जहाज पर सवार हो गया और अपने उत्पीड़क से डरकर लीबयिा की ओर चल पड़ा। और पवत्रि शहीद पोंटयिस की धर्मी आत्मा अपने प्रभु और हमारे स्वामी यीशु मसीह के आनन्द में प्रवेश कर गई; उसी को, पति और पवत्रि आत्मा के साथ, महमिा और सम्मान मलि, अब और सदा के लएि और युगों-युगों तक। आमीन।

[5458] पाँचवीं शताब्दी में, कमिला के बशिप वैलेरयिन (लगभग 460), ने अपने उपदेशों में अपने श्रोताओं को शहीद पोंटयिस का अनुकरण करने के लएि प्रोत्साहति कयिा और उनके अवशेषों के बारे में बात की, जन्हिें ईसाइयों की भक्ति द्वारा सम्मानति कयिा गया था। बाद में, नस्सिंदेह लोम्बार्ड्स द्वारा कमिला के लूट लएि जाने और उसके नवािसयिों के नाइस चले जाने के बाद, पवत्रि शहीद पोंटयिस के अवशेष वहाँ स्थानांतरति कर दएि गए।

पवित्र शहीद यूसग्निियस का स्मरणोत्सव

5 अगस्त को स्मरण कयिा जाता है

संत यूसग्निियस अंकोई के मूल नविासी थे; डायोक्लेटियिन, मैक्समियिन, कॉन्स्टेंटियस क्लोरोस, कॉन्स्टेंटाइन महान और उनके बेटों के शासनकाल के दौरान उन्होंने सेना में सेवा की; वे अन्य बातों के अलावा, पवित्र शहीद बेसलिस्किस के साथी और मैक्समियिन के अधीन उन्होंने जो कष्ट सहे, उनके वृत्तांतकार के रूप में जाने जाते हैं। संत बेसलिस्कि का सरि कलम कएि जाने के बाद, संत यूसग्निियस ने उनके साथ मलिकर स्वर्ग में तारों से बने क्रूस को देखा, और क्रूस की शक्ति से लैस होकर, उन्होंने बहादुरी से अपने दुश्मनों से लड़ाई की। सेना में साठ साल तक सेवा करने के बाद, उन्होंने इसे कॉन्स्टेनटाइन महान के बेटे, कॉन्स्टेंटियस के अधीन छोड़ दयिा, क्योंकि वे पहले से ही बहुत बूढ़े थे। अंतयिोकयिा में अपने स्वदेश लौटने पर, उन्होंने अपना जीवन ईश्वर को समर्पति कर दयिा, अपना सारा समय प्रार्थना और उपवास में बतिाया, और लगातार ईश्वर के चर्चों में जाते रहे; इस प्रकार वे ईसाइयों के उत्पीड़क जूलयिन द एपोस्टेट के समय तक जीवति रहे[5459] । जब यह दुष्ट सम्राट अंतयिोकयिा पहुँचा, तो संत यूसग्निियस को नम्निलखिति परस्थिति के कारण यातनाएँ दी गईं। एक दनि, चर्च जाते समय, उनकी मुलाकात दो मूर्तपिूजकों से हुई जो एक ववािद में उलझे हुए थे जो झगड़े का रूप ले चुका था। जब संत यूसग्निियस उनके पास पहुँचे, तो उन्होंने उन्हें रोककर कहा:

'हम जानते हैं, हे वीर पुरुष, कि आप लंबे समय तक सैनकि रहे हैं और इसलएि कानूनों को जानते हैं – हम आपसे वनिती करते हैं कि आप हमारे ववािद को सुलझाएं और अपना न्यायपूर्ण नर्णिय सुनाएं।'

संत यूसग्निियस ने उनकी प्रार्थना मान ली और न्याय की मांग के अनुसार उनका मामला नपिटाया; एक को सही पाया गया, और दूसरे को नहीं। बाद वाले को बुरा लगा, वह राजा के पास गया और उसे सूचति कयिा कि यूसग्निियस एक ईसाई था। राजा ने आदेश दयिा कि संत को गरिफ्तार कर मुकदमे के लएि उसके सामने पेश कयिा जाए। जब यातनाकर्ता के सामने लाया गया, तो संत यूसग्निियस ने नडिर होकर उसे कंसटेंटाइन महान के उदाहरण का पालन न करने, बल्कि मसीह का त्याग कर और मूर्तपिूजा की ओर मुड़कर सच्चे ईश्वर की उपासना को मूर्तयिों की पूजा से बदल देने के लएि फटकारा। संत यूसग्निियस ने महान कॉन्स्टेंटनि के वश्विास और धार्मकिता की प्रशंसा की, वस्तिार से बताते हुए कि कैसे उन्होंने स्वर्ग में क्रूस देखा था और उसकी शक्ति से अपने शत्रुओं को पराजति कयिा था, और कैसे, मूर्तपिूजा का त्याग करने के बाद, वह पूरे हृदय से प्रभु यीशु मसीह से चपिके रहे, और वश्विास तथा पवित्र बपतस्मिा के द्वारा न केवल स्वयं को बल्कि संपूर्ण वश्वि को भी प्रकाशति कयिा। कन्स्टेन्टाइन महान की इस प्रकार प्रशंसा करते हुए, संत यूसग्निियस ने उसी समय धर्मत्यागी की नदिा की और उसकी अधार्मकिता के लएि उसे फटकारा। इन नदिाओं को सुनने के इच्छुक न होते हुए, जूलयिन ने मसीह के सैनकि का सरि कलम करने का आदेश दयिा। इस प्रकार, संत यूसग्निियस ने अपने जीवन के 110वें वर्ष में मसीह के लएि शहीद की मृत्यु पाई और अनंत जीवन में प्रवेश कयिा, जहाँ समय नहीं है।

पवित्र शहीद फाबयिस, रोम के पोप की स्मृति

5 अगस्त को स्मरण कयिा जाता है

[5460]संत फाबयिस रोम के मूल नविासी थे[5461] और उन्होंने दुष्ट रोमन सम्राटों के शासनकाल में एक पुरोहति के रूप में सेवा की, जो वशिष रूप से मूर्तपिूजा के प्रति समर्पति थे और परणिामस्वरूप, उन्होंने परमेश्वर की कलीसयिा का उत्पीड़न कयिा। शुरुआत में, संत फाबयिस रोम के पास एक गाँव में रहते थे, लेकनि बाद में वे स्वयं शहर में चले गए, जहाँ उन्होंने शहीदों के शवों को दफनाने के लएि खुद को समर्पति कर दयिा: उस समय, कई ईसाइयों को उनके वश्विास के लएि यातना दी जा रही थी और मारा जा रहा था, और उनके शवों को कुत्तों, जंगली जानवरों और पक्षयिों द्वारा खाए जाने के लएि शहर के द्वारों के बाहर फेंक दयिा जाता था; संत फाबयिस रात के समय गुप्त रूप से शहीदों के शवों को नकिालते और उन्हें सम्मानपूर्वक दफनाते थे। मसीह की स्वीकारोक्ति के लएि सबसे पवित्र पोप अम्फरिो को मक्समियिन[5462]

[5459] संत यूसग्निियस का 362 में तलवार से सरि कलम कर दयिा गया था।

[5460] 236 में

[5461] रोम – रोमन साम्राज्य की राजधानी।

[5462] मैक्समियिन प्रथम, 235 से 238 तक सम्राट।

के शासनकाल में हत्या कए जाने के बाद, वश्वासयों—जो उत्पीड़न से बचने के लए छपे रहे थे और अपने वश्वास को गुप्त रख रहे थे—उत्पीड़क ों को बताए बना, बशपों और पुरोहतों के साथ एक ही चर्च में एकत्रत हुए, ताक एक नए पोप का चुनाव कर सकें: ईसाइयों के लए इस कठन समय के दौरान एक साधारण घर ही उनका चर्च था। संत फावयस भी इस सभा में उपस्थत थे। जब इस पर वचार-वमर्श शुरू हुआ क रोम के बशप जैसे उच्च पद के लए कौन योग्य होगा, तो कई लोगों ने सम्मानत और प्रतष्ठत पुरुषों को याद कया जो मसीह के कानून के अनुसार उनकी भेड़-बकरयों की रखवाली कर सकते थे; लेकन कसी ने संत फावयस पर तो ध्यान भी नहीं दया: वह, हाल ही में ग्रामीण इलाकों से आए थे, और नम्न पद के पुरोहतों में से एक थे। चयन के दौरान असहमत उत्पन्न हुई, और अचानक बर्फ की तरह सफेद एक कबूतर उनके सरों के ऊपर बहुत ऊँचाई पर दखाई दया; वह उतरकर पुरोहत फावयस के सर पर आ बैठा, फर से ऊपर उठा और नज़रों से ओझल हो गया। तब सभी को एहसास हुआ क प्रभु ने स्वयं, अपने पवत्र आत्मा के माध्यम से, फावयस को अपनी कलीसया का प्रमुख और चरवाहा चुना था, और उन्होंने बड़ी खुशी के साथ उन्हें पैट्रआर्कल सहासन पर स्थापत कया। इस प्रकार संत फावयस रोम के पोप बने; और मसीह की कलीसया में शांत लौट आई। उत्पीड़क मैक्समिनिस को उसके ही सैनकों ने मार डाला; सहासन पर गॉर्डयिन[5463] ने उसका स्थान ग्रहण कया, जनके शासन में उत्पीड़न समाप्त हो गया: यद्यप यह सम्राट एक मूर्तपूजक था, वह सौम्य और दयालु स्वभाव का था, और उसने ईसाइयों पर उत्पीड़न नषेध कर दया। अपने शासनकाल में शांत का आनंद लेते हुए, ईसाइयों ने सर्वत्र चर्चों की स्थापना की। संत फावयस ने दफन गुफाओं में शहीदों की कब्रों के ऊपर कई वशाल चर्च बनाए, जहाँ वश्वासयों ने प्रार्थना करने के लए इकट्ठा होना शुरू कर दया; और उन गुफाओं के ऊपर, जो उत्पीड़न के दौरान आश्रय के रूप में काम करती थीं, उन्होंने छोटे चैपल बनाए। मूर्तपूजा से ईसाई धर्म में रोजाना होने वाले लोगों के धर्मांतरण के कारण चर्च का वकास हुआ; गॉर्डयिन की मृत्यु के बाद यह समृद्ध की एक वशेष ऊँचाई पर पहुँच गया, जब फलिप[5464] उसका उत्तराधकारी बना, जसिने अपने बेटे, जसिका नाम भी फलिप था, के साथ शासन साझा कया; उन दोनों ने पोंटयिस नामक एक धार्मक और प्रतष्ठत व्यक्त से शक्षा प्राप्त करने के बाद ईसाई धर्म को अपना लया; संत पोप फावयस ने उन्हें बपतस्मा दया। उस समय, वश्वासयों की संख्या में काफी वृद्ध हुई: राजा और उसके बेटे के उदाहरण का पालन करते हुए, कई लोगों का बपतस्मा हुआ, और मसीह में वश्वास स्वतंत्र रूप से और बना कसी डर के व्यक्त कया जा सकता था। संत पोप फावयस ने, मसीह के एक सच्चे सेवक, सीनेटर पोंटयिस की सहायता से, चर्चों का नर्माण कया और साथ ही साथ मूर्तपूजकों के मंदरों और उनकी मूर्तयों को ध्वस्त कया। लेकन चर्च को ऐसी शांत और स्वतंत्रता लंबे समय तक नहीं मली - केवल लगभग चार साल: उसके प्रमुख, मसीह, यह इच्छा रखते हुए क उनकी दुल्हन, जसिके लए उन्होंने अपना लहू बहाया था, पृथ्वी पर भट्टी में परखे गए सोने की तरह और कांटों के बीच एक फूल की तरह हो, एक बार फर उसे कष्टों और पीड़ाओं के अधीन होने दया, और उत्पीड़न शुरू हो गया, जसिकी शुरुआत उस नरक के अजगर ने की, जसिने, जैसा क प्रभु ने जॉन द थयोलोजयिन को एक दर्शन में प्रकट कया, स्वर्गीय वैभव से सुशोभत स्त्री का पीछा कया, और उसे डुबाने के लए अपने मुँह से पानी की एक पूरी नदी उगल दी[5465] । भलाई के इस प्राचीन शत्रु ने, मसीह की बढ़ती महमा को सहन न कर पाकर, उन धर्मनष्ठ राजाओं के वरुद्ध उठ खड़ा हुआ जन्होंने ईसाई धर्म को अपनाया था। मूर्तपूजकों, जो मसीह और ईसाइयों से घृणा करते थे, ने दुष्ट डेसयिस[5466] के नेतृत्व में इकट्ठा होकर राजा फलिप और उसके पुत्र को इसलए मार डाला क्योंक उन्होंने मसीह में वश्वास कया था और ईसाई धर्म के स्वतंत्र अभ्यास की अनुमत दी थी। राजाओं की हत्या के बाद, उन्होंने ईसाइयों पर हमला कया; उस समय, ईसाइयों का खून नदी की तरह बहने लगा। संत पोप फावयस को सबसे पहले पकड़ा गया: ईसाइयों के प्रतनधि और शक्षक के रूप में, उसे मूर्तपूजकों द्वारा वशेष रूप से घृणा की जाती थी। उन्होंने धर्मनष्ठ सेनेटर पोंटयिस को भी ढूंढा, लेकन वह उन्हें नहीं मला: वह, कई वश्वासयों की तरह, छपे गया और फर रोम से भाग गया। जहाँ तक संत पोप फैबयिस का सवाल है, उनका सर कलम कर दया गया[5467] और, अपनी भेड़ों के झुंड के कई लोगों के साथ, जो उसी समय मारे गए थे, उन्होंने संघर्षरत कलीसया

[5463] गॉर्डयिन – 238 से सम्राट।
[5464] फलिप अरब – 244 से 249 तक सम्राट।
[5465] प्रकाशतवाक्य 12:15–16
[5466] डेसयिस – सम्राट 249–251
[5467] 250 ईस्वी में

से वजियी कलीसयिा में प्रवेश कयिा। और संत पोंटयिस को बाद में पकड़ लयिा गया और उन्होंने भी हमारे प्रभु यीशु मसीह के लिए शहीद की मृत्यु भोगी, जनिका, पिता और पवत्रि आत्मा के साथ, युगानुयुग महमिा हो। आमीन।

19 अगस्त

6 अगस्त (पुराने कैलेंडर के अनुसार)

इसी दनि, पूजनीय जॉब ऑफ उश्चेली की स्मृति, जन्होंने अर्कांगेल्स्क गवर्नोरेट के उश्चेली गाँव में एक मठ की स्थापना की और 5 अगस्त 1628 को डकैतों द्वारा मारे गए और 6 तारीख को दफनाए गए।

स्नाक्सारयिन[5468] प्रभु के रूपांतरण पर

6 अगस्त को स्मरणोत्सव

जैसे ही वह हमारे उद्धार के लिए स्वेच्छा से सहन करने वाले दुखों के नकिट पहुँचे, हमारे प्रभु यीशु मसीह ने अपने शष्यिों से कहना शुरू कयिा कि *'उन्हें यरूशलेम जाकर बुज़ुर्गों, मुख्य याजकों और शक्षिकों से बहुत कुछ सहना होगा, और मार डाला जाएगा'* (मत्ती 16:21); उन्होंने यह बात केसरयिा फलिपिी में कही[5469] , जब प्रेरति पतरस ने उनकी पहचान मसीह, जीवते परमेश्वर के पुत्र के रूप में की थी – *'तू मसीह है, जीवते परमेश्वर का पुत्र'* (मत्ती 16:16)। यह यीशु मसीह की तीन-वर्षीय सेवकाई का अंतमि वर्ष और पवत्रितम कुँवारी से उनके जन्म का तेतीसवाँ वर्ष था। मसीह के वचनों ने शष्यिों को, और वशिष रूप से प्रेरति पतरस को, गहराई से दुखी कर दयिा, जन्होंने प्रभु को डाँटना शुरू कर दयिा, यह कहते हुए: *'प्रभु, अपने ऊपर दया करें! यह कभी न हो कि तुझ पर ऐसा पड़े!'* (मत्ती 16:22)। शष्यिों के दुख को देखकर और उसे कम करने की इच्छा से, यीशु मसीह ने उनमें से कुछ को उस महमिा को प्रकट करने का वादा कयिा, जसिमें वह अपने स्वर्गारोहण के बाद सुसज्जति होंगे: *'यहाँ कुछ लोग खड़े हैं,'* उन्होंने कहा, *'जो मनुष्य के पुत्र को अपने राज्य में आते हुए देखने से पहले मृत्यु का स्वाद नहीं चखेंगे'* (मत्ती 16:28)। इन घटनाओं के छह दनि बाद, प्रभु अपने शष्यिों और एक बड़ी भीड़ के साथ, सीज़रयिा फलिपिी के क्षेत्र से गलील की ओर रवाना हुए[5470] ; दनि ढलने को था जब वे गलील में माउंट टाबर पहुँचे[5471] । जैसा कि उनकी आदत थी, यीशु मसीह रात में अपने शष्यिों से अलग होकर परमेश्वर पति से एकांत में प्रार्थना करने के लिए चले जाते थे; इस अवसर पर भी, पहाड़ की तलहटी में भीड़ को छोड़कर और अपने साथ केवल

[5468] सनिाक्ज़ारयिन, एक ग्रीक शब्द, synaxis – एक सभा (चर्च में उत्सव के लिए वशि्वासयिों की) – से व्युत्पन्न है और इसका अर्थ है: उत्सवों की एक पुस्तक; बाद में, कसिी उत्सव या संत के बारे में ऐतहिासकि जानकारी का एक संग्रह।

[5469] उत्तरी फलिस्तिीन में एक शहर, जो हर्मोन पर्वत की तलहटी में स्थति है। इसकी स्थापना हेरोद महान के पुत्र और टेट्रार्क फलिपि ने की थी; उन्होंने शहर को सुशोभति कयिा और इसका नाम रोमन सम्राट टबिेरयिस के सम्मान में केसरयिा रखा; पलेस्टाइन में केसरयिा या स्ट्रैटो की केसरयिा से अलग करने के लिए, इस शहर को केसरयिा फलिपिी के नाम से जाना जाता है।

[5470] उत्तरी फ़लिस्तिीन में गलील का क्षेत्र, या गलील (हब्रिू शब्द 'गललिी' - क्षेत्र, जलिा से), उद्धारकर्ता मसीह के दनिों में फ़लिस्तिीन का तीसरा क्षेत्र था, और यह उत्तरी, ऊपरी क्षेत्र - जो मूर्तपिूजक था - और दक्षणिी, नचिले क्षेत्र में वभिाजति था। गलील ने प्रभु यीशु के जन्मस्थान और उनकी सेवा के स्थान के रूप में वशि्व इतहिास में एक प्रमुख स्थान प्राप्त कयिा है। गलील पूर्व से पश्चमि तक लगभग 120 वर्स्ट और उत्तर से दक्षणि तक 40 वर्स्ट तक फैला हुआ था। उत्तर में इसकी सीमा सीरयिा और लेबनान पर्वत से; पश्चमि में फनिसियिा से; दक्षणि में सामरयिा से; और पूर्व में, इसकी सीमा जॉर्डन नदी थी... मसीहा के जन्मभूमि के रूप में—नाज़रेथ का नगर, जहाँ उन्होंने अपना बचपन और यौवन बतिाया और जहाँ उन्होंने अधकिांश भाग में उपदेश दयिा—गलील ईसाई धर्म का पालना था। और यीशु मसीह की दृष्टान्त कथाएँ सभी ऐसी छवयिाँ हैं जो गलील की प्रकृति की समृद्धि और सुंदरता तथा जीवन के तरीके को दर्शाती हैं। आकाश, पृथ्वी, समुद्र, गेहूँ के खेत, बगीचे, फूल, अंगूर के बगान, घास के मैदान, मछलयिाँ और पक्षी – सभी ने उद्धारकर्ता की दव्यि उपदेश में उनकी अद्भुत शक्षिाओं के लिए आधार और रूपक का काम कयिा।

[5471] माउंट टाबर नासरत से सात वर्स्ट दूर एक एकांत पहाड़ है, जसिकी ऊँचाई लगभग 500 सैज़ेन है। यहीं पर बराक ने सीसरा के वरिुद्ध अपनी सेना इकट्ठी की (न्याययिों 4:6) और पहाड़ की तलहटी में अपने शत्रुओं को पराजति कयिा (न्याययिों 6:33)। यहीं पर हमारे प्रभु यीशु मसीह का रूपांतरण हुआ (मत्ती 17:1; मरकुस 9:2; लूका 9:28)। दाऊद ने टाबर पर्वत के इस गौरवशाली भाग्य की पूर्वदृष्टि की थी (भजन संहति 88:13): 'टाबर और हर्मोन तेरे नाम में आनन्द करेंगे।' इससे भजनकार ने वादा कए गए पूरे देश का उल्लेख कयिा, क्योंकि ये प्रतज्ञिात भूमि के पर्वत हैं।

पतरस को लेकर, याकूब और यूहन्ना उनके साथ प्रार्थना करने के लिए पहाड़ पर चढ़े; और वहाँ, उनसे थोड़ी दूरी पर एक ऊँचे टीले पर जाकर, उन्होंने प्रार्थना में स्वयं को समर्पित कर दिया। हालाँकि, तीनों प्रेरित, आंशिक रूप से पहाड़ पर चढ़ने से और आंशिक रूप से अपनी लंबी प्रार्थना से थके हुए, सो गए, जैसा कि पवित्र सुसमाचार लेखक लूका वर्णन करते हैं: *'परन्तु पतरस और उसके साथी नींद के भार से दबे थे'* (लूका 9:32)। जब वे सो रहे थे, और भोर हो रहा था, तब प्रभु यीशु मसीह का स्वरूप बदल गया, और वे अपनी दिव्यता की महिमा से चमकने लगे; उनके आज्ञा देने पर, दो भविष्यवक्ता उनके सामने प्रकट हुए – मृतकों में से मूसा और स्वर्ग से एलियाह; उन्होंने यरूशलेम में उनके सामने आने वाले दुख और मृत्यु के बारे में बात की। यह बातचीत और दिव्य शक्ति का असाधारण प्रकटीकरण प्रेरितों को जगा गया; प्रभु यीशु की अनुपम महिमा को देखकर—उनका चेहरा सूर्य के समान चमकता हुआ, उनके वस्त्र बर्फ की तरह श्वेत चमकते हुए, और वे दो पुरुष उस महिमा में खड़े होकर उनसे बात कर रहे थे—प्रेरितों में भय-मिश्रित आदर भर गया। पवित्र आत्मा के प्रकट होने से, उन्होंने तुरंत उन पुरुषों में मूसा और एलियाह को पहचान लिया और समझ गए कि यह बातचीत मसीह के स्वैच्छिक दुखों के बारे में थी; इसे सुनकर, प्रेरित विस्मित रह गए, और साथ ही दिव्य महिमा के दर्शन का आनंद ले रहे थे, जितना उनकी शारीरिक आँखें उसे देख सकती थीं। और प्रभु ने स्वयं उन्हें अपनी महिमा उस सीमा तक प्रकट की, जितना एक सांसारिक मनुष्य अपनी दृष्टि खोए बिना देख सकता है; क्योंकि एक नश्वर मनुष्य के लिए अदृश्य, अमर दिव्यता को आमने-सामने देखना असंभव है। मूसा ने एक बार प्रभु से प्रार्थना की थी कि वह उसे अपनी दिव्य महिमा आमने-सामने प्रकट करें; जिस पर प्रभु ने उत्तर दिया: *'कोई भी मुझे देखकर जीवित नहीं रह सकता'* (निर्गमन 33:20)। जब मूसा और एलिय के साथ मसीह की बातचीत समाप्त होने को थी और प्रेरितों ने, पवित्र आत्मा द्वारा प्रेरित होकर, यह महसूस किया कि उनका प्रस्थान निकट था, प्रेरित पतरस इस बात से दुखी था कि भविष्यद्वक्ताओं ने अपनी दृष्टि से दूर होने की इच्छा व्यक्त की थी: वह मसीह की महिमा और धर्मी भविष्यद्वक्ताओं की महिमा के अद्भुत दृश्य का अनंतकाल तक आनंद लेना चाहता था; साहस करके, उसने कहा: *'हे गुरु, हम यहाँ रहना अच्छा है; आओ हम तीन झोपड़ियाँ बनाएँ: एक तेरे लिए, एक मूसा के लिए और एक एलियाह के लिए'* (लूका 9:33)। जब प्रेरित पतरस ये बातें कह ही रहा था, कि एक तेज बादल—जिसने दोनों भविष्यद्वक्ताओं को मसीह के सामने प्रस्तुत किया था—प्रेरितों पर छा गया, और पहाड़ की चोटी को घेरा लिया, ताकि एक बार फिर दैवीय आज्ञा से, वह भविष्यद्वक्ताओं को उठाकर हर एक को उसके स्थान पर वापस ले जाए; प्रेरित और भी अधिक भयभीत हो गए जब वे मसीह के पास आए और उसी बादल में प्रवेश किया और भीतर से एक आवाज सुनी: *'यह मेरा प्रिय पुत्र है; इसकी सुनो'* (लूका 9:35)। स्वर्ग से इन शब्दों के सुनते ही, शिष्यों ने बड़े भय से काँपकर अपना आप खो दिया और गहरे भय में जमीन पर लोट गए। जैसे ही वे घुटने टेककर गिर पड़े, प्रभु की महिमा और उसके साथ भविष्यवक्ता उनकी दृष्टि से ओझल हो गए। प्रभु अपने शिष्यों के पास आए, जो जमीन पर पड़े थे, और कहा, 'उठो; डरो मत!' जब उन्होंने अपनी आँखें उठाईं, तो शिष्यों ने प्रभु यीशु के सिवा और किसी को नहीं देखा। भोर हो रहा था, और वे पहाड़ से उतरने लगे; रास्ते में, प्रभु ने उन्हें आज्ञा दी कि वे इस दर्शन के बारे में किसी को कुछ न बताएं, जब तक कि वह अपने कष्ट और मृत्यु के बाद तीसरे दिन कब्र से नहीं उठ गए, और उन्होंने चुपचाप उस समय उस सब के बारे में किसी से कुछ नहीं कहा जो उन्हें देखने का सौभाग्य मिला था।

प्रभु के रूपांतरण के पर्व के लिए एक उपदेश

6 अगस्त को मनाया जाता है

प्रभु के रूपांतरण का वृत्तांत केवल सुसमाचारों में ही नहीं मिलता: कलीसिया के शिक्षकों ने भी इस पर्व को समर्पित अनेक प्रवचनों में इसे हमें प्रदान किया है; यहाँ वे इसके महत्व को स्पष्ट करते हैं, इस प्रकार भक्तिपूर्ण चिंतन में रमने वाले ईसाइयों के लिए एक समृद्ध आध्यात्मिक भोज प्रस्तुत करते हैं। और हमारे लिए, इन शिक्षाओं और कलीसिया के धर्मपिता के वचनों को अपने पास पाते हुए, जिन्होंने मसीह के रूपांतरण के अर्थ को पूरी तरह से स्पष्ट किया है, हमारे पास इस तैयार-बनाई गई शिक्षा पर ध्यान देने, और उच्च विचारों के पूर्ण आध्यात्मिक भोज का आनंद लेने के अलावा कोई विकल्प नहीं है; और यह व्यर्थ नहीं होगा यदि हम चर्च फादर्स के शब्दों का सहारा लेकर, उनमें पाई जाने वाली व्याख्याओं को एक साथ लाएँ—उन्हें एक भोज के टुकड़ों की तरह इकट्ठा करते हुए—और जो इच्छुक हैं उनके लिए इसी पर्व की व्याख्या में उनका उपयोग करें।

'छः दिन बाद, यीशु ने पतरस, याकूब और उसके भाई यूहन्ना को अलग ले जाकर एक ऊँचे पहाड़ पर चढ़ाया, और उनके सामने रूपांतरित हो गया' (मत्ती 17:1–2)।

मसीह उद्धारकर्ता ने, अपनी स्वेच्छा से सहे गए दुख और मृत्यु से पहले, अपने शिष्यों को अपनी महिमा—जितना वे समझ सकते थे—प्रकट करने की इच्छा रखते हुए, सभी शिष्यों को तabor पर्वत पर क्यों नहीं चढ़ाया? क्योंकि उनके बीच यहूदा था, जो इस दिव्य दर्शन का अयोग्य था। बुल्गारिया के आर्चबिशप, संत थियोफिलिक्ट, इस पर इस प्रकार विचार करते हैं: 'हमारे प्रभु मसीह ने बारहों शिष्यों को पहाड़ पर नहीं लिया, क्योंकि यहूदा अपनी विश्वासघाती आँखों के साथ, मसीह के रूपांतरण की महिमा को देखने के लिए अयोग्य था'। संत दमास्कस ने भी इस पर खूबसूरती से कहा है: 'हे मसीह परमेश्वर, दुष्ट तेरा तेज नहीं देखेंगे।'

लेकिन क्या यहूदा को अयोग्य समझकर अकेले पहाड़ की तलहटी पर नहीं छोड़ा जा सकता था, जबकि अन्य प्रेरितों को पहाड़ पर ले जाया गया? बेशक, यह प्रभु के लिए पूरी तरह से संभव था; लेकिन हमारे दीर्घ-सहिष्णु प्रभु, जो सभी लोगों के पापों को ढकते हैं, यहूदा की अयोग्यता को उजागर नहीं करना चाहते थे, न ही उसे और बड़े पतन का कारण देना चाहते थे, जैसा कि धर्मग्रंथ कहता है: *'एक निन्दक को फटकार न लगाओ, कहीं ऐसा न हो कि वह तुझ से बैर करने लगे'* (नीतिवचन 9:8)। क्योंकि यदि प्रभु, सभी प्रेरितों को साथ ले जाकर, केवल यहूदा को पीछे छोड़ देते, तो वह न केवल यीशु मसीह के प्रति, बल्कि सभी प्रेरितों के प्रति भी क्रोध और घृणा से भर जाता; उसके पास मसीह के प्रति अपनी विश्वासघाती द्वेष के लिए एक तरह का बहाना होता, और वह कह सकता था: 'मैंने यीशु को इस लिए धोखा दिया क्योंकि उन्होंने मुझसे तिरिस्कार किया।' यह धन्य थियोफिलिक्ट का दृष्टिकोण है: 'यदि मसीह अन्य लोगों को अपने साथ ले जाते समय यीशु को पहाड़ की तलहटी पर अकेला छोड़ देते, तो कुछ लोग कह सकते थे कि यह विशेष परिस्थिति ही थी जिसने यीशु के हृदय को आहत किया और उसे अपने प्रभु को धोखा देने का विचार करने के लिए प्रेरित किया।'

लेकिन क्या यहूदा उन तीन प्रेरितों से ईर्ष्यालु नहीं था जिन्हें पहाड़ पर ले जाया गया था? वह ईर्ष्यालु नहीं था: वह जानता था कि वे प्रार्थना करने जा रहे थे, एक प्रार्थना जो पूरी रात तक चलने वाली थी, जैसा कि पवित्र सुसमाचार लेखक लूका लिखते हैं: *'पतरस, यूहन्ना और याकूब को अपने साथ लेकर, वह प्रार्थना करने के लिए पहाड़ पर चढ़ गए'* (लूका 9:28); यहूदा, हालांकि, आलसी था और पहाड़ की तलहटी में पूरी रात सोना चाहता था; आलसी और सुस्त लोग धार्मिक कार्यों की परवाह नहीं करते।

तो फिर, प्रभु पहाड़ पर तीन से अधिक प्रेरितों को क्यों नहीं ले गए? उन्होंने ऐसा व्यवस्थाविवरण में कही गई उस पवित्रशास्त्र की पूर्ति के लिए किया, जिसमें लिखा है: *'कोई बात दो गवाहों या तीन गवाहों के बयान से स्थापित होगी'* (व्यवस्थाविवरण 19:15)। अपने साथ तीन प्रेरितों को ले जाने के बाद, प्रभु यीशु मसीह दो नबियों को भी ले जाना चाहते थे, ताकि जीवितों और मृतकों दोनों के लिए गवाह हों कि वह परमेश्वर का पुत्र है, जिसे संसार के उद्धार के लिए परमपिता परमेश्वर ने भेजा है और जिसकी गवाही स्वर्गीय स्वर ने दी है। लेकिन फिर , यदि गवाही के लिए दो लोग पर्याप्त हैं, तो तीन प्रेरित क्यों मौजूद हैं? मूसा को मृतकों में से बुलाया गया था ताकि वह हादेस में बंद मृतकों के पास मसीह के संसार में आगमन की गवाही दे सकें; एलिया को—स्वर्ग में हनोक से बात करने के लिए; जबकि तीन प्रेरितों को इसलिए बुलाया गया था ताकि वे बाद में रूपांतरण में देखी गई मसीह की महिमा का प्रचार कर सकें, यह कहते हुए: *'और हमारे बीच वास किया, अनुग्रह और सत्य से परिपूर्ण; और हमने उसकी महिमा देखी, जो पिता की एकलौती संतान की महिमा के समान थी'* (यूहन्ना 1:14)। और फिर: *'चालाकी से रची गई कविदंतियों का अनुसरण न करते हुए, बल्कि उसकी महिमा के साक्षी बनकर।' क्योंकि उसे परमेश्वर पिता से महिमा और तेज प्राप्त हुआ, जब महिमामय तेज से एक स्वर उसके पास आया, जो कहता है: 'यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिसमें मैं प्रसन्न हूँ।' और यह स्वर हम स्वयं स्वर्ग से आते हुए सुन चुके थे, जब हम उसके साथ पवित्र पर्वत पर थे'* (2 पतरस 1:16-18)।

क्योंकि प्रभु, जो अपने रूपांतरण में स्वर्गदूतों और मनुष्यों दोनों के लिए श्रद्धापूर्वक आश्चर्य का विषय बनकर प्रकट हुए, उनके लिए इतना ही पर्याप्त था कि पृथ्वी पर रहने वालों में से केवल तीन ही उनकी महिमा को देखें और उसकी गवाही दें: उनकी दृष्टि में, तीनों प्रेरित सभी राष्ट्रों और कुलों से अधिक योग्य थे। कि एक धर्मी व्यक्ति का परमेश्वर के सामने पापियों की भीड़ की तुलना में अतुलनीय रूप से अधिक मूल्य है – यह प्रभु ने स्वयं पुराने नियम में स्पष्ट रूप से प्रदर्शित किया: मिस्र के फिरौन के मन में अपनी सामर्थ्य की शक्ति से भय पैदा करने की इच्छा से, उसने मूसा को आज्ञा दी कि वह उसके सामने प्रकट हो और यह घोषित करे कि जिसे परमेश्वर ने उसे भेजा था, वह तीन मनुष्यों का परमेश्वर था: अब्राहम का परमेश्वर, इसहाक का परमेश्वर और याकूब का परमेश्वर। लेकिन क्या फ़िरौन, जो इतने

सारे शहरों और मस्रियों जतिने महान लोगों का राजा था, ऐसे परमेश्वर से डर सकता था जो स्वयं को केवल तीन लोगों का प्रभु कहता था? क्या इतनी बड़ी भूमकि राजा के सामने यह घोषणा करना शर्मनाक नहीं था कजिसिने मूसा को भेजा था वह केवल तीन लोगों पर शासन करता था? क्या फरिौन के कठोर हृदय को नरम करने के लिए यह अधकि उपयुक्त नहीं होता कमिूसा यह कहता कजिसिने उसे भेजा था वह वह ईश्वर था जो स्वर्ग के नीचे की सभी भूमओिं पर, और ब्रह्मांड के सभी राज्यों पर शासन करता था? तथापि, प्रभु ने ऐसा करना उचति नहीं समझा, बल्कि उन्होंने फरिौन के सामने केवल अपने तीन सेवकों के प्रभु के रूप में महमिा प्राप्त करना चुना। क्यों? नस्संदेह इसलिए क्योंकि ये तीनों, परमेश्वर को प्रसन्न करके और केवल स्वर्गीय आशीषों की परवाह करके, परमेश्वर की दृष्टि में सभी राज्यों और जनसमूहों से अधकि योग्य थे। प्रेरति कहते हैं, '*इसलिये परमेश्वर को उनका परमेश्वर कहलाने में लज्जा नहीं आती*' (इब्रानयिों 11:16), मानो यह कहने के लिए: हे फरिौन, तुम अपने राज्य की महानता और अपने अधीन नगरों और लोगों की भीड़ पर क्यों गर्व करते हो? मेरे पास ऐसे तीन सेवक हैं, जनिका तुम्हारा राज्य कोई मुकाबला नहीं कर सकता – मैं अब्राहम, इसहाक और याकूब का परमेश्वर हूँ, और मुझे इस बात पर कोई शर्म नहीं है। संत क्रसिोस्टोम भी यही कहते हैं, तर्क देते हुए: 'ब्रह्मांड का ईश्वर तीन (पुरुषों) का ईश्वर कहलाने में लज्जति नहीं है, और यह सही भी है: क्योंकि संत अपने मूल्य में सभी से श्रेष्ठ हैं – जो ईश्वर की इच्छा करता है वह दसयिों हज़ार अधर्मी लोगों से बेहतर है।' तीनों प्रेरतिों को परमेश्वर की महमिा देखने के लिए तabor पर्वत पर ले जाया गया था, और अन्य कसिी की आवश्यकता नहीं थी: क्योंकि संसार उनके योग्य नहीं था (देखें इब्रानयिों 11:38)।

प्रभु ने अपने साथ सर्फ़ कोई और प्रेरति ही क्यों नहीं, बल्कि विशिष रूप से पतरस, याकूब और यूहन्ना को ही क्यों लयिा? संत क्रसिोस्टोम और अन्य चर्च फादर्स इस प्रश्न का एक पर्याप्त उत्तर देते हैं। हमारी ओर से, मोक्ष के लिए आवश्यक तीन सद्गुणों को याद करते हुए, जन्हिें पवत्रि शास्त्र में वशिेष स्पष्टता के साथ रेखांकति कयिा गया है—वश्विास, आशा और प्रेम—हम कह सकते हैं: प्रभु इन तीन प्रेरतिों को अपने साथ ले गए क्योंकि ये तीनों सद्गुण शुरू से ही उनमें स्पष्ट थे, और बाद में वशिेष स्पष्टता के साथ प्रकट हुए। पतरस में – वश्विास: वह पहला था जसिने मसीह को जीवते परमेश्वर का पुत्र स्वीकार कयिा (मत्ती 16:16), और बाद में प्रभु स्वयं उससे कहने लगे: *'मैंने तेरे वश्विास के लिए प्रार्थना की है, कि तेरा वश्विास कमज़ोर न हो जाए*' (लूका 22:32); याकूब में – आशा: वह बारह प्रेरतिों में से पहला था जसिने इस्राएल की आशा के लिए तलवार के नीचे अपनी जान दी; यूहन्ना में – प्रेम: वह प्रभु का सबसे प्रयि शष्यि था, जसिे परम पवत्रि कुँवारी मरयिम का पुत्र कहा गया (यूहन्ना 19:26–27)। इसी कारण से, पवत्रि प्रेरति पतरस, याकूब और यूहन्ना को बाद में प्रेरति पौलुस ने 'स्तंभ' कहा (गलातयिों 2:9)। संत क्रसिोस्टोम प्रेरतिों की प्रशंसा में इस उपाधि की व्याख्या इस प्रकार करते हैं: 'महान और अद्भुत (स्तंभ), जनिका सभी महमिामंडन करते हैं: वे वश्विास, आशा और प्रेम के द्वारा, स्तंभों के रूप में, आरंभकि कलीसयिा को स्थापति करने वाले पहले थे।'

इन तीन प्रेरतिों में, इसके अलावा, हमें ईश्वर के चुने हुए संतों के तीन वर्गों की एक पूर्व-छाया मलिती है, जो सभी में सबसे योग्य हैं कि वे मसीह को उनकी स्वर्गीय महमिा में देखें: ईश्वर-प्रेमयिों का वर्ग, शहीदों का वर्ग, और कुंवारी कन्याओं का वर्ग। पवत्रि प्रेरति पतरस में हम उन लोगों की प्रतमिा देखते हैं जो ईश्वर से प्रेम करते हैं: उन्होंने, संत क्रसिोस्टोम की गवाही के अनुसार, प्रभु यीशु मसीह से वशिेष उत्साह के साथ प्रेम कयिा; और यहाँ, इस क्षणकि जीवन में, मसीह के प्रति प्रेम की दृढ़ता के अनुसार, प्रत्येक व्यक्ति से वहाँ, अनंत जीवन में, प्रेम कयिा जाएगा और वह उन्हें नहिारकर आनंदति होगा, जैसा कि उन्होंने स्वयं कहा: *'जो मुझ से प्रेम करते हैं, मैं भी उनसे प्रेम करता हूँ*' (नीतविचन 8:17)। और फरि: *'जो मुझ से प्रेम करेगा, उस से पति भी प्रेम करेगा, और मैं भी उस से प्रेम करूँगा, और अपने आप को उस पर प्रगट करूँगा*' (यूहन्ना 14:21)। पवत्रि प्रेरति याकूब में हमें शहीदों की छवि दखिाई देती है—केवल उन लोगों की नहीं जन्होंने मसीह के लिए अपना रक्त बहाया, बल्कि उनके भी जो, अपना रक्त बहाए बनिा, मसीह के लिए प्रतदिनि पाप के प्रति मरते हैं, और अपने जुनून और इच्छाओं के साथ देह को सूली पर चढ़ाते हैं (गलातयिों 5:24)। याकूब का अर्थ है 'जो वजिय प्राप्त करता है', 'योद्धा', 'वजिेता': ये गुण दुख-संताप के बनिा प्राप्त नहीं कए जा सकते। जो कोई भी अदृश्य शत्रु से उत्पन्न होने वाले प्रलोभनों के वरिुद्ध संघर्ष करता है, जो दैनकि आत्म-संयम के द्वारा अपनी कामनाओं पर वजिय प्राप्त करता है, वह याकूब की तरह एक शहीद और एक शक्तशिाली योद्धा है, भले ही वह अपना रक्त न बहाए; संघर्ष के दौरान सहन कए गए दुख की मात्रा और उन प्रयासों के अनुसार जनिसे प्रलोभनों को खारजि कयिा जाता है और उन पर वजिय प्राप्त की जाती है, उसे वजिेता मसीह के साथ महमिामंडति कयिा जाएगा। संत योहन द वर्जनि में, शरीर और आत्मा की पवत्रिता को बनाए रखने वालों के क्रम की एक पूर्व-छाया दी गई है; उनके लिए महमिा में परमेश्वर

को देखने का एक विशेष वादा दिया गया है: *'धन्य,'* प्रभु ने कहा, *'हैं हृदय से शुद्ध, क्योंकि वे परमेश्वर को देखेंगे'* (मत्ती 5:8)। प्रभु, पतरस, याकूब और यूहन्ना को अपने साथ तabor पर्वत पर ले जाकर रूपांतरण की महिमा का दर्शन कराते हैं, और इस प्रकार यह सिखाते हैं कि जो कोई स्वर्ग के राज्य में उनके साथ रहना चाहता है और उनके मुख के दर्शन का आनंद लेना चाहता है, उसे प्रेम में पतरस, शहादत में याकूब, और पवित्रता में यूहन्ना का अनुकरण करना चाहिए; सामान्य रूप से, अपनी पूरी क्षमता से, ऐसे ईसाई को परमेश्वर के संतों का अनुकरण करना चाहिए, जो परमेश्वर के प्रति उत्कट प्रेम से जलते थे, जिन्होंने अपने रक्त का बहाव किए बिना—अपने शरीर की अनवरत मृत्यु-चिंतन के द्वारा—स्वयं को प्रतिदिन के शहीद के रूप में समर्पित किया, और उन्हें शरीर और आत्मा की हर अशुद्धि से अपना रक्षण करना चाहिए, और सच्ची पश्चाताप के द्वारा स्वयं को शुद्ध करना चाहिए।

प्रभु अपने शिष्यों को प्रार्थना करने के लिए किसी समतल स्थान पर ले जाने के बजाय एक ऊँचे पर्वत पर क्यों ले जाते हैं? यह इसलिए है कि उन्हें पृथ्वी की नीची गहराइयों से स्वर्गीय ऊँचाइयों तक उठाकर, वह उन्हें एक रहस्यमयी तरीके से यह पाठ सिखा सके कि जो कोई भी ईश्वर से प्रकटियों के योग्य माना जाना चाहता है और उसकी महिमा को देखना चाहता है, उसे सांसारिक, नीच भावनाओं को त्याग देना चाहिए, और स्वर्गीय, दिव्य आशीर्वादों की इच्छा करनी चाहिए और उन्हें प्राप्त करने का प्रयास करना चाहिए। धन्य थियोफिलिक्ट कहते हैं, 'वह उन्हें एक ऊँचे पहाड़ पर ले जाते हैं, यह दिखाते हुए कि जब तक कोई सांसारिक वासनाओं से ऊपर नहीं उठता, वह ऐसे प्रकटनों को देखने के योग्य नहीं है।' पवित्र प्रेरित पौलुस हमें खूबसूरती से सिखाते हैं जब वे कहते हैं: *'ऊँची चीज़ों की खोज करो, जहाँ मसीह परमेश्वर के दाहिने विराजे हैं; अपना मन ऊँची चीज़ों पर लगाओ, न कि सांसारिक चीज़ों पर। क्योंकि तुम मर गए हो, और तुम्हारा जीवन मसीह के साथ परमेश्वर में छिपा हुआ है'* (कुलुस्सियों 3:1-3)। जो नीची जगहों पर चलता है वह दूर तक नहीं देख सकता, लेकिन जो एक ऊँचे पहाड़ पर चढ़ गया है वह आसानी से दूर तक फैले क्षेत्र को देख सकता है; और जो केवल इस वर्तमान जीवन से संबंधित है, वह भविष्य के स्वर्गीय आशीर्वादों की मिठास को कैसे समझ सकता है? लेकिन धार्मिक चिंतन के पर्वत पर चढ़ने पर, वह अपने मन से, अपनी आँखों की तरह, यहाँ तक कि स्वर्गों के ऊपर की भी वस्तुओं को जानने और देखने लगता है। जैसे पृथ्वी पर रेंगने वाले सरपट जीव और उस पर रहने वाले जानवर सूर्य की किरण को नहीं देख सकते, वैसे ही सांसारिक व्यर्थता में डूबे व्यक्ति का मन किसी भी तरह से मसीह की महिमा को नहीं देख सकता या उसकी कृपा के प्रकाश से प्रबुद्ध नहीं हो सकता। इसलिए, हे ईसाई, अपना मन पृथ्वी से स्वर्ग की ओर, वर्तमान से भविष्य की ओर, सांसारिक वस्तुओं के लगाव से स्वर्गीय की लालसा की ओर उठाओ; तब तुम जानोगे कि इस्राएल का परमेश्वर कितना भला है, सबसे मधुर यीशु कितने मधुर हैं, उनका प्रेम कितना आनंददायक है, और तुम उनके दिव्य प्रकाशनों में आनंदित होओगे।

प्रभु अपने शिष्यों को किसी नीची पहाड़ी पर नहीं, बल्कि एक ऊँची पहाड़ी पर ले जाते हैं। क्यों? ताकि उन्हें ईश्वर पर मनन करना और, साथ ही, परिश्रम करना सिखा सकें: परिश्रम के बिना, ऊँचाइयों पर चढ़ना असंभव है। पहाड़ की ऊँचाई ईश्वर पर मनन का प्रतीक है; पहाड़ पर चढ़ना परिश्रम की ओर संकेत करता है। ईश्वर की ओर अपना मन उठाना अच्छा है, लेकिन परिश्रम की भी उपेक्षा नहीं करनी चाहिए: अच्छे कर्म परिश्रम के द्वारा ही प्राप्त होते हैं। मन ईश्वर को निहारता है, जबकि परिश्रम उसकी दृष्टि की ओर ले जाता है; मन उनके आज्ञाओं का पालन करके मसीह के अधीन होता है, जबकि परिश्रम उनके पदचिन्हों पर चलकर मसीह का जुआ उठाता है। चिंतन मसीह के आंतरिक दर्शन में आनंदित होता है, जबकि परिश्रम उनका ध्यान अपनी ओर आकर्षित करता है: भजन रचयिता ने कहा, *'मेरी कष्ट और मेरी थकान पर देखो'* (भजन संहिता 24:18)। मसीह द्वारा देखा जाना उन्हें देखने से कम आशीर्वाद नहीं है। ये दोनों गुण—ध्यान और परिश्रम—उस व्यक्ति के लिए उतने ही आवश्यक हैं जो दिव्य आशीर्वाद और आनंद प्राप्त करना चाहता है, जितने कि पंख एक पक्षी के लिए होते हैं: एक पंख वाले पक्षी से हवा में नहीं उड़ा जा सकता, और केवल इनमें से एक गुण वाला व्यक्ति पूर्ण मोक्ष की ऊँचाइयों तक नहीं पहुँच सकता; विचार-विमर्श परिश्रम के जीवन के बिना सच्चा नहीं है, और विचार-विमर्श के बिना परिश्रम का कोई लाभ नहीं है। दो पंखों से, हर पक्षी स्वतंत्र रूप से उड़ता है; दो सद्गुणों—ईश्वर का चिंतन और परिश्रम—से, हर कोई आध्यात्मिक माउंट टाबर पर चढ़ता है ताकि वह हमेशा के लिए ईश्वर की महिमा का दर्शन कर सके—पहले परिश्रम के माध्यम से चढ़ता है, क्योंकि यह ईश्वर के चिंतन और ईश्वर के ज्ञान का अग्रदूत है। पवित्र प्रेरितों ने प्रभु के रूपांतरण की महिमा को देखने के लिए ऊँचे पर्वत पर चढ़ने का श्रम किया; और फिर, कौन बिना श्रम के ईश्वर को देखने का आनंद प्राप्त करने की आशा कर सकता है?

प्रभु केवल पतरस, याकूब और यूहन्ना को ही पहाड़ पर क्यों ले गए, और उनके पीछे-पीछे चल रही भीड़ तथा अन्य प्रेरितों को पीछे क्यों छोड़ दिया? ताकि इस माध्यम से, उन लोगों को सिखाया जा सके जो ध्यान का अभ्यास करना चाहते हैं और आध्यात्मिक दर्शन का आनंद लेना चाहते हैं, कि उन्हें एकांत और मौन की तलाश करनी चाहिए।

केवल इन तीन प्रेरितों को ही एकान्त स्थान पर ले जाया गया – पहाड़ की ऊँचाइयाँ एक रेगिस्तान की तरह थीं, जहाँ लोग नहीं रहते थे – ताकि एकान्त और मौन में, प्रभु की महिमा उन्हें और भी स्पष्ट रूप से प्रकट हो सके। जीवन के व्यस्तता और भटकाव के बीच, प्रभु स्वयं को उसी तरह प्रकट नहीं करते जैसे वे एकांत और मौन में करते हैं: भविष्यवक्ता एलियाह अपने मन से परमेश्वर को देखते हैं जब वे इस्राएल के राजा अहब के सामने खड़े होकर उनसे तर्क करते हुए कहते हैं: *'इस्राएल के परमेश्वर यहोवा के जीते जी, जिसके सामने मैं खड़ा हूँ'* (3 राजा 17:1), अर्थात्, 'मैं देह में तेरे सामने खड़ा हूँ, पर अपने मन में अपने परमेश्वर के सामने; मैं तुझे अपनी शारीरिक आँखों से देखता हूँ, पर परमेश्वर को अपने मन से।' फिर भी, भविष्यवक्ता एलियाह अपने प्रभु को कार्मेल के मरुभूमि पर्वत पर एकांत और मौन में अतुलनीय रूप से अधिक स्पष्टता के साथ देखते हैं (3 राजा 19): यहाँ उन्हें परमेश्वर के साथ एक मधुर संवाद और उनके प्रकाशन प्राप्त होते हैं, न केवल आंतरिक रूप से बल्कि दृश्य रूपों में भी। यह सच है कि कोई व्यक्ति कभी-कभी दैनिक जीवन के कोलाहल के बीच भी अपना मन परमेश्वर की ओर लगा सकता है; फिर भी, शांत एकांत में जितनी आसानी से नहीं: वहाँ कई बाधाएँ हैं, जबकि यहाँ मौन और शांति है! क्या प्रभु स्वयं व्यर्थ में नहीं कहते: *'शांत हो जाओ* (अर्थात् स्वयं को दैनिक जीवन के कोलाहल से मुक्त करो) *और जानो कि मैं परमेश्वर हूँ'* (भजन संहिता 45:11); मुझें जानो, वह कहते हैं, धर्मपरायण चिंतन में स्वयं को समर्पित करके, कि मैं कितना अनुग्रहकारी और दयालु हूँ, मैं उनसे कैसे प्रेम करता हूँ जो मुझसे प्रेम करते हैं और उन सभी के करीब हूँ जो मुझे खोजते हैं; मुझें जानो और तुम जल्द ही मुझे पाओगे, बशर्ते तुम व्यर्थता को त्याग दो और अत्यधिक सांसारिक चिंताओं से पीछे हट जाओ। यह महसूस करने के बाद, कई लोग इस उथल-पुथल भरी दुनिया से भागकर शांत रेगिस्तानों में चले गए, और पहाड़ों तथा धरती की घाटियों में भटकते रहे (इब्रानियों 11:38), ताकि वे एकांत में, स्वयं को पूरी तरह से ईश्वर को समर्पित कर सकें, और उनके साथ संबंध की आशीषों का आनंद ले सकें: संत दमास्कस गाते हैं, 'मरुभूमि में, संसार की व्यर्थता से परे, एक अनवरत दिव्य लालसा है।'

आइए हम यहाँ भी इस रहस्य को खोजें – प्रभु ने प्रेरितों को दिन में नहीं, बल्कि रात होने पर पहाड़ पर क्यों ले गए? क्योंकि दिन की तुलना में रात एकाग्र प्रार्थना के लिए अधिक अनुकूल होती है: रात में पूरा ब्रह्मांड शांत होता है और तारों से सुसज्जित आकाश के अलावा कुछ भी दिखाई नहीं देता, जिसकी शोभा अनैच्छिक रूप से आँखों और मन को अपनी ओर आकर्षित करती है। प्रभु अपने शिष्यों को माउंट टाबोर पर रात में इसीलिए ले जाते हैं ताकि वे हमें भी सिखा सकें कि प्रार्थना करते समय किसी भी सांसारिक चीज़ के बारे में न सोचें, बल्कि अपने हृदय को स्वर्ग की ओर मोड़ें। एक बार, राजा दाऊद ने भविष्यसूचक रूप में गाया था, यह बताते हुए कि दिव्य रहस्यों की समझ मनुष्य को कैसे प्रकट होती है। आइए इस शिक्षक को खोजते हुए उनकी बात पर ध्यान दें: *'रात,'* वे कहते हैं, *'रात ज्ञान प्रकट करती है'* (भजन संहिता 18:3); रात वास्तव में एक ऐसा शिक्षक है, जो उन लोगों को परमेश्वर के मन की शिक्षा देती है, जो इस क्षणभंगुर जीवन में रात के अंधकार और मृत्यु की छाया में बैठे हैं: संत सिरिल कहते हैं, 'यदि आप (रात में) आकाश की ओर देखें, जो अनगिनत सितारों से मोमबत्तियों की तरह चमकता है, और इस पर विचार करें कि जो लोग दिन भर भाग-दौड़ करते रहे हैं, वे अब रात में (जब वे नींद में डूब जाते हैं), मृतकों से कोई अलग नहीं हैं, तो आप मानव पापों से घृणा करेंगे।' इस प्रकार, रात द्वारा सिखाया गया पाठ यह है: यह हमें सांसारिक चिंताओं और उन कर्मों की व्यर्थता को पहचानना सिखाती है जो ईश्वर के क्रोध को भड़काते हैं, और हमें दोनों से बचने के लिए प्रेरित करती है। पृथ्वी पर रहने वाले सभी लोग रात में मृतकों के समान हैं; दिन में जो कुछ भी दिखाई देता है, वह रात में अंधकार में लिपट जाता है, मानो उसमें दफ़न हो गया हो। अद्भुत महल और भव्य इमारतें ताबूतों जैसी लगने लगती हैं; अद्भुत पेड़, बगीचे और जंगल खूंखार पुतलों जैसे दिखते हैं; सोना, चांदी और कीमती पत्थर रात के अंधेरे में तांबे, लोहे और साधारण पत्थरों से अलग नहीं दिखते; उनकी सुंदरता और मूल्य अप्रतिम हैं; रात में पृथ्वी पर कोई भी वस्तु अपनी सुंदरता से किसी व्यक्ति को प्रसन्न नहीं कर सकती; सब कुछ अंधकार में लिपटा होता है, और केवल आकाश ही दिखाई देता है, जो मोतियों जैसे तारों से सुसज्जित होता है और उसे देखने वालों को आनंद देता है। यहाँ हम दिव्य उद्देश्य देखते हैं: रात रहस्यमय तरीके से हमें ईश्वर की उपासना का निर्देश देती है। यदि आप प्रार्थना के लिए मौन में, परिश्रम के साथ, पीछे हट गए हैं, और अपने मन से ईश्वर के चिंतन के पर्वत पर चढ़ना शुरू करते हैं, तो सभी सांसारिक वस्तुएँ आपकी आँखों को वैसी ही दिखाई दें जैसी वे रात में उन्हें दिखाई देती हैं; सभी सांसारिक वस्तुओं को, जो केवल क्षणिक सुख देती हैं, तुच्छ समझो; उनसे एक ईसाई के अयोग्य के रूप में मुंह मोड़ो, क्योंकि उनमें

कुछ भी सच्चा नहीं है और वे मृत्यु की छाया में लिपटी हुई हैं। आपका मन केवल स्वर्गीय आशीर्वादों पर ही मनन करे; तब आपको परमेश्वर की कृपा का प्रकाश प्रकट होगा, और आप परमेश्वर के प्रकाशनों पर मनन करने की मिठास से आध्यात्मिक आनंद से भर जाएँगे।

प्रभु प्रेरितों को अपनी रूपांतरण की महिमा दिखाने के लिए, किसी अन्य पहाड़ पर नहीं, बल्कि माउंट टाबर पर ही क्यों ले जाते हैं? हिब्रू भाषा से अनुवादित टाबर का अर्थ है 'शुद्धता और प्रकाश का महल'; यही कारण है कि प्रभु उन्हें किसी अन्य स्थान पर नहीं बल्कि माउंट टैबर पर ले गए, ताकि प्रेरितों को पहाड़ के नाम से ही यह सीख मिल सके कि जो कोई भी दिव्य महिमा के प्रकट होने का साक्षी बनना चाहता है, उसे सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण रूप से एक ऐसे विवेक का स्वामी होना चाहिए जो शुद्धता के महल के समान हो, जो स्वयं में परमेश्वर की कृपा के प्रकाश को ग्रहण करने के योग्य हो। आइए यहाँ माउंट टैबर पर हुई एक प्राचीन घटना को भी याद करें। जब कनानी सेनाओं का सेनापति सिसरा इस्राएलियों को नष्ट करने आया, तो उनके नेता बराक ने तabor पर्वत पर चढ़ाई की और वहाँ इस्राएली सेना को इकट्ठा किया ; वहाँ से वह शत्रुओं पर टूट पड़ा और पूरी कनानी सेना को पूरी तरह परास्त कर दिया, जिससे सिसरा स्वयं मारा गया (न्यायियों, अध्याय 4)। प्रभु ने अपनी रूपांतरण घटना में इस प्राचीन घटना को रहस्यमय रूप से दोहराया: नरकीय सिसेरा पर अंतिम विजय सुनिश्चित करने के इरादे से, वह पहले माउंट टाबर पर चढ़े ताकि वहां दिव्य शक्ति के प्रकट होने से खुद को एक ढाल के रूप में सशस्त्र करके, वह शैतान पर झपट सकें और उसे हरा सकें; माउंट टाबर पर हुई बातचीत का विषय ठीक यही था: *'वे उसकी विदाई के विषय में बात कर रहे थे'* (लूका 9:31)। इसमें उस मसीही के लिए एक सबक है जो अदृश्य शत्रु और उसके द्वारा स्थापित पाप की शक्ति पर विजय प्राप्त करना चाहता है: – उसे सबसे पहले हृदय की पवित्रता के तabor पर्वत पर चढ़ना चाहिए; उसे सच्ची पश्चाताप के द्वारा अपने विवेक को शुद्ध करना चाहिए और दुष्टता के जीवन से सद्गुण के जीवन में परिवर्तित होना चाहिए; उसे धार्मिकता के कवच से स्वयं को आच्छादित करना चाहिए और *'परमेश्वर का पूरा कवच'* (इफिसियों 6:13) धारण करना चाहिए; तब, बिना किसी बड़ी कठिनाई के, वह शत्रु की शक्ति पर विजय प्राप्त कर लेगा।

प्रभु, अपने शिष्यों के साथ पहाड़ पर चढ़ने के बाद, *'उनके सामने रूपांतरित हो गए'* (मत्ती 17:1–2)। *'उनके सामने'* यह वाक्यांश सुसमाचार लेखकों ने एक विशिष्ट उद्देश्य से दर्ज किया था: यह स्पष्ट करने के लिए कि मसीह अपनी ही खातिर रूपांतरित नहीं हुए, जिससे उनका चेहरा सूर्य की तरह चमके; *क्योंकि वह* प्रकाश, *'उनकी महिमा का प्रतिबिंब'* (इब्रानियों 1:3), जिसमें स्वयं में कोई अंधकार नहीं है, उसे प्रकाश की कोई आवश्यकता नहीं। वह हमारे लिए रूपांतरित हुए, ताकि हमारे अंधकार को दूर करें और हमें पाप के दासों से उनके सच्चे सेवकों में, और क्रोध के पुत्रों से परमेश्वर के प्रिय पुत्रों में बदल दें; मसीह के आने का वही उद्देश्य, जिसे उन्होंने पूरा किया, हमें परमेश्वर की संतान बनाना था। इसीलिए वह पवित्रतम कुँवारी और पवित्र आत्मा से अवतार धारण हुए; इसीलिए वह *'मानव रूप में पाए गए'* (फिलि. 2:7); इसीलिए उन्होंने एक सेवक का रूप लिया, और उन्होंने कितनी परिश्रम सहन नहीं की, ताकि हमारे भीतर, पुत्रों के रूप में, पिता की खोई हुई प्रतिमा को फिर से स्थापित कर सकें! मूसा ने एक बार प्रभु से कहा: *'पवित्र स्थान, जिसे आपके हाथों ने बनाया है, हे प्रभु'* (देखें निर्गमन 15:17)। आइए हम इस पर ध्यान दें - 'आपके हाथों ने बनाया है': वह यह नहीं कहते कि 'मानव हाथों ने इसे आपकी आज्ञा पर बनाया', बल्कि कहते हैं 'आपने स्वयं अपने हाथों से परिश्रम किया'। मोशे ने यह कहते हुए मानवजाति के प्रति प्रभु की असीम देखभाल की ओर इशारा किया: क्या ऐसा कुछ है जो प्रभु ने मनुष्य के लिए नहीं किया या नहीं करते हैं? उसके लिए ही उन्होंने स्वर्ग और पृथ्वी, समुद्र, नदियाँ—उनमें और उन पर सब कुछ बनाया; उसके लिए ही वे दिन-रात स्वर्गीय पिंडों से आकाश को प्रकाशित करते हैं; उसके लिए ही वे वर्षा, ओस और बर्फ भेजते हैं; उनके लिए वह, एक किसान और माली की तरह, बोता और काटता है, ताकि मनुष्य को किसी चीज़ की कमी न हो। इस पर चिंतन करते हुए, यरूशलेम के संत सिरिल कहते हैं: 'प्रत्येक व्यक्ति को, हमारा उद्धारकर्ता उसकी आत्मा की प्रवृत्ति के अनुसार दिखाई देता है: जो लोग (ईश्वर को) अपनी प्रार्थनाएँ अर्पित करने की आवश्यकता में हैं, उनके लिए वह एक मध्यस्थ और महायाजक है। या: 'पापियों के लिए, वह हमारे लिए वध किए जाने वाले मेमने का रूप धारण करते हैं, और वह अपनी स्वभाव की सार में अपरिवर्तित रहते हुए, सभी के लिए सब कुछ बन जाते हैं।' इस प्रकार, सबसे विविध तरीकों से, हमारे प्रभु हमारी सेवा करते हैं, यह कहते हुए: *'मनुष्य का पुत्र सेवा करवाने नहीं, बल्कि सेवा करने आया है'* (मत्ती 20:28)। और वह सब कुछ करता है, अपने हित की नहीं बल्कि हमारे हित की खोज करते हुए, ताकि हम, उसकी अविरल परोपकारिता को जानकर, कृतज्ञता से भर जाएँ और पापियों से धर्मी, और संसार के प्रेमियों से ईश्वर के प्रेमियों में बदल जाएँ। और तabor पर्वत पर हमारे लिए उनका रूपांतरण हुआ, ताकि हम हमारे लिए तैयार की गई स्वर्गीय महिमा

को जान सकें; वह *'हमारे नीच शरीर को रूपांतरित कर देगा'* (फलि. 3:21), ताकि सामान्य पुनरुत्थान में वह उनके शाश्वत राज्य में उनके महिमामय शरीर के अनुरूप हो सके, जो *'संसार की नींव के समय से'* तैयार किया गया है (मत्ती 25:34) जो उससे प्रेम करते हैं उनके लिए। हमारे ईश्वर और प्रभु, मानवता के प्रेमी मसीह, अपनी दया से, हमें भी उनके साथ, अपने मुख को देखने का अनुग्रह प्रदान करें; उसी को, पिता और पवित्र आत्मा के साथ, अब और हमेशा और युगानुयुग सम्मान और महिमा मिले। आमीन।

ट्रोपारियन, स्वर 7:

हे मसीह हमारे परमेश्वर, तू पहाड़ पर रूपांतरित हुआ, और अपने शिष्यों को अपनी महिमा दिखाई, जितना वे सहन कर सकते थे: हे प्रकाश के दाता, परमेश्वर की माता की प्रार्थनाओं द्वारा, तेरी सर्वदा-उपस्थिति ज्योति हम पापियों पर भी चमके; तुझे महिमा हो।

कॉन्टाकियन, स्वर 7:

हे मसीह परमेश्वर, पर्वत पर तेरा रूपांतरण हुआ, और तेरे शिष्यों ने तेरी महिमा को, जितना वे सहन कर सकते थे, देखा: हे प्रकाश के दाता, जब वे तेरा क्रूस पर चढ़ाया जाना देखें, तो वे यह समझें कि तेरा दुख भोगना तेरी स्वैच्छिक इच्छा से था, और वे संसार में यह प्रचार करें कि तू सचमुच परमपिता की किरण है।

20 अगस्त

7 अगस्त (पुराना कैलेंडर)

हमारे पूजनीय पिता पिमिन बहु-पीड़ित का जीवन

7 अगस्त को स्मरणोत्सव

[5472]जैसे ही हम धन्य पिमिन का वृत्तांत शुरू करते हैं, आइए हम उनके दुख सहने के महान धैर्य पर अपना ध्यान केंद्रित करें और इससे यह सीखें कि बीमारी को धैर्य से सहना चाहिए और ईश्वर की शक्ति दुर्बलता में सिद्ध होती है। – धन्य पिमिन बीमार पैदा हुए थे; जीवन भर उनकी बीमारी कभी नहीं छूटी, फिर भी इस शारीरिक बीमारी ने एक आध्यात्मिक बीमारी को उनके भीतर जड़ जमाने नहीं दी: वे दुराचार से मुक्त थे और अपनी माँ के गर्भ से ही अपनी कुँवारीपन की रक्षा की। कई मौकों पर उन्होंने अपने माता-पिता से एक मठ में जाकर भिक्षु बनने की अनुमति देने के लिए कहा, लेकिन अपने प्रति उनके गहरे प्रेम के कारण उन्होंने इन अनुरोधों को अस्वीकार कर दिया, क्योंकि वे अपनी मृत्यु के बाद उन्हें अपना उत्तराधिकारी बनाना चाहते थे। एक दिन, ईश्वर की उस दिव्य व्यवस्था से, जो सभी चीजों को सर्वोत्तम रूप से व्यवस्थित करती है, धन्य पिमिन गंभीर रूप से बीमार पड़ गए, इतनी हद तक कि उन्हें ठीक होने की कोई उम्मीद भी नहीं थी; आवश्यकता के वश में होकर, उनके माता-पिता उन्हें पेचेर्स्क मठ ([5473]) ले गए और वहाँ रहने वाले पूजनीय संतों से अपने पुत्र को उसकी बीमारी से मुक्ति दिलाने के लिए प्रार्थना करने का अनुरोध किया। लेकिन संतों की प्रार्थनाओं से उस बीमार लड़के को स्वास्थ्य लाभ नहीं मिला; धन्य पिमिन की प्रार्थना उन सभी की संयुक्त प्रार्थनाओं से कहीं अधिक

[5472] प्राचीन काल से, पवित्र ऑर्थोडॉक्स चर्च ने उन लोगों के लिए एक विशेष आदेश के अनुसार मठवासी मुंडन की रस्म का पालन किया है जो तपस्या के मार्ग और प्रार्थना तथा पश्चाताप में स्वयं को ईश्वर को पूर्ण रूप से समर्पित करने का चयन करते हैं। जो लोग इस मार्ग पर चलने का संकल्प लेते हैं, उनसे पूछा जाता है कि क्या वे इसे अपनी स्वेच्छा से चुन रहे हैं; फिर उनसे तीन व्रत लेने को कहा जाता है: कुँवारीपन, ब्रह्मचर्य और दरिद्रता के, जिसके बाद, पवित्र त्रिमूर्ति के नाम पर, उनके बाल क्रूस के आकार में काटे जाते हैं और उन पर मठवासी वस्त्र पहनाए जाते हैं। नव-केशच्छेदन किए गए भिक्षु को एक क्रूस और एक जलती हुई मोमबत्ती पकड़ने के लिए दी जाती है।

[5473] कीव-पेचेरस्क लावरा की स्थापना आदरणीय एंथनी (1054–1068) द्वारा की गई थी।

शक्तिशाली थी - उन्होंने प्रभु से एक और भी बड़ी बीमारी माँगी, क्योंकि उन्हें डर था कि ठीक होने पर उनके माता-पिता उन्हें फिर से मठ से ले जाएँगे और इस प्रकार उन्हें संन्यास ग्रहण करने का अवसर से वंचित कर देंगे। इसलिए, जब उसके पिता और माता उसके बगल में बैठे थे, और उसके मुंडन को रोक रहे थे, तब धन्य पेमेन ने गहराई से शोक मनाया और ईश्वर से प्रार्थना की कि वह उनकी इच्छा को, जैसा भी उचित समझे, पूरा करें। और इस प्रकार, एक रात, जब उसके माता-पिता और नौकर गहरी नींद में थे, तो दमकते हुए स्वर्गदूत उसके कमरे में आए; कुछ सुंदर युवकों के रूप में, अन्य मठाधीश और मठीय समुदाय के रूप में; उनके हाथों में पवित्र सुसमाचार, मोमबत्तियाँ, एक बाल-कमीज़, एक चोगा, एक मुखावरण और मुंडन के लिए आवश्यक अन्य सभी चीजें थीं:

उन्होंने पूजनीय पिता से पूछा, 'क्या आप चाहेंगे कि हम आपका मुंडन करें?'

उन्होंने प्रसन्नतापूर्वक उत्तर दिया:

'हाँ, मैं चाहता हूँ; प्रभु ने आपको भेजा है, हे स्वामिनि; मेरे हृदय की इच्छा पूरी कीजिए।'

वे तुरंत प्रश्न पूछने लगे, और संन्यास नियम में शिरोच्छेदन के लिए जो कुछ भी निर्धारित है, उसे पूरा किया; इस प्रकार उन्होंने उसे महान दैवीय रीति से शिरोच्छेदन किया, उसे एक चोगा और एक मुखावरण पहनाया, और उसका नाम पेमेन रखा। रीति के अनुसार उसे एक जलती हुई मोमबत्ती देकर, उन्होंने कहा:

'चालीस दिन और चालीस रात तक यह मोमबत्ती नहीं बुझेगी।'

साथ ही, उन्होंने भविष्यवाणी की कि वह एक पुरानी बीमारी से पीड़ित होगा, और उससे उसके ठीक होने पर यह उसके लिए एक संकेत होगा कि मृत्यु निकट आ रही है। धन्य पेमेन को चूमने के बाद, वे चर्च में चले गए, जहाँ उन्होंने उसके बाल, एक कपड़े में लपेटकर, पूजनीय थियोडोरस की ताबूत पर रख दिए।

पड़ोसी कोठरियों के संन्यासियों ने गायन की आवाज़ सुनकर, यह सोचकर कि या तो मठाधीश और कुछ भाई उस बीमार संन्यासी का मुंडन कर रहे हैं, या उसकी मृत्यु हो गई है, अन्य लोगों को जगाया; वे सभी एक साथ उस कोठरी में गए जहाँ आदरणीय व्यक्ति लेटे थे। वहाँ उन्होंने सभी को सोते हुए पाया – उसके पिता, उसकी माता और नौकरों को; भिक्षुओं ने उन्हें जगाया और देखा कि कोठरी एक मधुर सुगंध से भर गई थी, जबकि बीमार व्यक्ति आनंद और प्रसन्नता से भरपूर था और संन्यासी वस्त्र पहने हुए था।

'तुम्हारा मुंडन किसने किया, और वह कौन-सा गायन था जो हमने यहाँ सुना, जिसे तुम्हारे माता-पिता ने नहीं सुना?' उन्होंने पूज्य पिताजी से पूछा।

'मुझे लगा,' उसने जवाब दिया, 'कि मुझे भाइयों के साथ आए मठाधीश ने मुंडन करके पेमिन नाम दिया है; गाने की ध्वनि उन्हीं की थी, जैसा आपने सुना; उन्होंने मुझे यह मोमबत्ती भी दी है जो आप देख रहे हैं, यह कहते हुए कि यह चालीस दिन और रात लगातार जलती रहेगी; तब, मेरे बाल एक कपड़े में रखकर, वे उसे लेकर चर्च में चले गए। यह सुनकर, भिक्षु तुरंत चर्च की ओर भागे, लेकिन उसे बंद पाया; सेवकों को जगाकर, उन्होंने उनसे पूछा कि क्या संध्या की प्रार्थना के बाद कोई चर्च में प्रवेश किया था। उन्होंने जवाब दिया कि कोई अंदर नहीं आया था, क्योंकि चाबियाँ खुद एक्लेसियार्क[5474] के पास थीं। एक्लेसियार्क को जगाया गया (उसने न तो किसी को चाबियाँ दी थीं, और न ही वह खुद किसी के साथ चर्च में गया था); चाबियाँ लेकर, भिक्षुओं ने चर्च में प्रवेश किया और वहाँ, पूजनीय थियोडोसियस की ताबूत पर, उन्हें वास्तव में कपड़े में रखा हुआ बाल मिला। इसके बाद, उन्होंने मठाधीश को सब कुछ सूचित किया। मठाधीश अत्यंत आश्चर्यचकित हुए और उन्होंने बड़ी लगन से यह पता लगाने की कोशिश की कि आदरणीय पेमेन का सिर किसने मुंडवाया होगा, लेकिन उनकी सभी पूछताछ व्यर्थ साबित हुई। तब सभी को यह स्पष्ट हो गया कि यह मुंडन ईश्वर की आज्ञा से, पवित्र स्वर्गदूतों द्वारा किया गया था। मठाधीश और भाइयों ने इस बात पर लंबी चर्चा की कि क्या इस चमत्कारी मुंडन को नियम के अनुसार किया गया एक साधारण मुंडन माना जाए, और वे इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि धन्य पेमेन पर मुंडन को दोहराया न जाए, क्योंकि उन पर किए गए इस अनुष्ठान की प्रामाणिकता का स्पष्ट प्रमाण था: भिक्षुओं को वास्तव में, ठीक वैसे ही जैसे धन्य पेमेन ने कहा था, उनकी कब्र पर पूजनीय थियोडोसियस की ताबूत पर उनके बाल मिले थे, और वह

[5474] चर्च का कोषाध्यक्ष, जिसे चर्च की संपत्ति की सुरक्षा का जिम्मा सौंपा गया है और जो धार्मिक अनुष्ठानों के पालन की देखरेख के लिए जिम्मेदार है।

मोमबत्ती, जिसे सामान्यतःबुझने में एक दिन लगता, वह चालीस दिन और चालीस रात बिना बुझे जलती रही[5475] , एक तथ्य जिसकी ओर पूजनीय व्यक्ति ने भी उनके मुंडन के तुरंत बाद इशारा किया था। इसे देखते हुए, उन्होंने केवल इतना कहा:

'तुम्हारे लिए, भाई पिमेन, ईश्वर द्वारा प्रदान किया गया स्वरूप और नाम ही पर्याप्त हैं।'

'लेकिन फिर भी, हमें बताइए,' संन्यास-संस्कार की पुस्तक लेकर आते हुए मठाधीश ने कहा, 'आपका संस्कार ठीक-ठीक किसने किया था, और क्या उन्होंने इस पुस्तक में लिखा कुछ भी छोड़ा था?'

धन्य पिमेन ने मठाधीश से कहा:

'पिताजी, आप मुझे क्यों परख रहे हैं?' आप स्वयं, पूरे समुदाय के साथ यहाँ आकर, इस पुस्तक में निर्धारित सभी अनुष्ठान मुझ पर किए; इसके अलावा, आपने कहा कि मुझे जीवन भर बीमारी से पीड़ित होना होगा और केवल मेरी मृत्यु के समय ही मैं इससे मुक्त होऊँगा, ताकि मैं अपने अंतिम संस्कार का प्रबंध स्वयं कर सकूँ; मेरे लिए प्रार्थना करें, हे पवित्र पिता, कि प्रभु मुझे धैर्य प्रदान करें।"

यह सुनकर, वे सभी उसे छोड़कर चले गए।

जैसा कि उन लोगों ने भविष्यवाणी की थी जिन्होंने उनका मुंडन किया था, धन्य पिमेन कई वर्षों तक एक गंभीर और घृणित बीमारी से पीड़ित रहे: जो भी उनकी देखभाल करने आते थे, वे इससे घृणा करते थे और अक्सर तीन दिन तक उन्हें खाने-पीने के लिए कुछ भी नहीं देते थे, लेकिन उन्होंने यह सब खुशी से सहन किया, और ईश्वर का धन्यवाद किया।

ऐसा हुआ कि एक मरीज, जो आदरणीय पिमेन की ही तरह की बीमारी से पीड़ित था, उसे कीव गुफाओं के मठ में लाया गया और उसका मुंडन किया गया। संन्यासी, जो बीमारों की देखभाल के लिए जिम्मेदार थे, उसे धन्य पिमेन के पास ले आए ताकि वे दोनों की समान और निरंतर देखभाल कर सकें; लेकिन अपने कर्तव्यों में लापरवाह होने के कारण वे अक्सर उन्हें भूल जाते थे, जिससे बीमार पुरुष कभी-कभी प्यास से व्याकुल हो उठते थे। तब धन्य पिमेन ने अपने बगल में लेटे हुए बीमार पुरुष से कहा:

'चूँकि जो लोग हमारी देखभाल करते हैं, वे हमसे निकलने वाली बदबू के कारण हमसे दूर भागते हैं, तो क्या तुम, मेरे भाई, उनके कर्तव्य निभाने के लिए तैयार हो, यदि प्रभु तुम्हें ठीक कर दें?'

बीमार व्यक्ति ने पूजनीय पिता से वादा किया कि वह अपनी मृत्यु तक उत्साहपूर्वक उनकी सेवा करेगा। धन्य पिमेन ने उत्तर दिया:

'देखो, प्रभु तुम्हारी बीमारी दूर कर रहे हैं, और जब तुम स्वस्थ हो जाओ, तो अपना वचन पूरा करना – मेरी और मुझ जैसे लोगों की सेवा करना; परन्तु जो अपने कर्तव्यों में लापरवाह रहे हैं, उन पर प्रभु एक गंभीर बीमारी लाएंगे, ताकि दंड भोगकर वे मोक्ष प्राप्त कर सकें।'

वह बीमार आदमी तुरंत उठ खड़ा हुआ और पूजनीय फादर की सेवा करने लगा; जबकि लापरवाह सेवक, ठीक वैसे ही जैसे उन्होंने कहा था, बीमारी से ग्रस्त हो गए।

अपनी बीमारी से ठीक हो जाने के बाद, उस भाई ने लंबे समय तक पूजनीय पिमेन की सेवा नहीं की: बदबू सहन न कर पाने के कारण, वह विदा लेकर चला गया और उन्हें भूख और प्यास में तड़पने के लिए छोड़ गया; जाने के बाद, वह एक दूसरे सेल में बस गया। और अचानक उसे आग की तरह एक भयंकर बुखार चढ़ गया; उठ न पाने के कारण, वह तीन दिन तक प्यास से तड़पता रहा और, अंत में, चिल्लाने लगा:

'भगवान के लिए, मुझ पर दया करो, क्योंकि मैं प्यास से मर रहा हूँ!'

उसे सुनकर, पास की कोठरी के भिक्षु उसके पास आए; उसकी बीमारी देखकर, उन्होंने इस बात की सूचना पूजनीय पिमेन को दी:

'वह भाई जिसने आपकी सेवा की, वह मर रहा है।'

[5475] चालीस संख्या का महत्वपूर्ण प्रतीकात्मक अर्थ है। यह एक अवस्था से दूसरी अवस्था में संक्रमण, नवीनीकरण और परिवर्तन का प्रतीक है। जन्म के चालीस दिन बाद, शिशु को चर्च में ईश्वर को समर्पित करने के लिए लाया जाता है। पवित्र ऑर्थोडॉक्स चर्च के विश्वास के अनुसार, मृत्यु के चालीसवें दिन, दिवंगत ईसाई की आत्मा ईश्वर की उपासना करने के लिए स्वर्ग में आरोहण करती है। इसी तरह, संन्यास की शपथ लेने पर, नव-मुंडित भिक्षु को विशेष रूप से चालीस दिनों तक प्रार्थना के अभ्यास में खुद को समर्पित करना चाहिए, क्योंकि वह, एक तरह से, एक नए जीवन में पैदा हुआ है, जबकि, एक तरह से, सांसारिक और क्षणिक जीवन के लिए मर गया है। यह सम्माननीय पिमेन को स्वर्गदूतों द्वारा दी गई जली हुई मोमबत्ती का भी महत्व था, जो चालीस दिन और रात तक जलती रही।

'जैसा बोएगा, वैसा ही काटेगा,' पूजनीय पिता ने उत्तर दिया (देखें गलातियों 6:7): उसने मुझे भूखा और प्यासा छोड़ दिया था, और अब उसे स्वयं वही भुगतना पड़ रहा है, क्योंकि उसने ईश्वर से झूठ बोला और मेरी अयोग्यता का तिरस्कार किया। लेकिन हमें बुराई का बदला बुराई से चुकाने की शिक्षा नहीं दी गई है; अत; जाओ और उससे कहो: 'फिलेन तुम्हें बुला रहे हैं – उठो और उनके पास जाओ।'

जब यह बात बीमार व्यक्ति तक पहुँची, तो वह तुरंत स्वस्थ हो गया और उठकर बिना किसी सहायता के परम पावन पिता के पास आ गया। धन्य फिलेन ने उसे विस्तार से समझाते हुए कहा:

'हे अल्पविश्वासी, देखो, तुम फिर से स्वस्थ हो गए हो; ध्यान रखना कि फिर से पाप न करना!' क्या तुम नहीं जानते कि बीमार व्यक्ति और उसकी सेवा करने वाले दोनों को एक ही पुरस्कार मिलेगा? विनम्रों का धैर्य व्यर्थ नहीं जाएगा: जो यहाँ थोड़े समय के दुख और कठिनाइयों को सहते हैं, वे वहाँ आनंद और प्रसन्नता का अनुभव करेंगे, जहाँ न तो बीमारी है, न दुख, न ही आह, बल्कि अनंत जीवन है। इसी कारण से मैं सब कुछ सहन करता हूँ; परमेश्वर, जिसने मुझसे होकर तुम्हें तुम्हारी दुर्बलता से बचाया है, वह मुझे इस बिस्तर से उठा भी सकता है और मेरी दुर्बलता को चंगा भी कर सकता है, पर मैं ऐसा नहीं चाहता: प्रभु ने कहा, *'जो अंत तक सहन करेगा, वह उद्धार पाएगा'* (मत्ती 10:22)। मेरे लिए इस जीवन में एक लाश बन जाना बेहतर है, ताकि अगले जीवन में मेरा शरीर अक्षय हो सके; यहाँ बदबू सहना बेहतर है, ताकि वहाँ मैं एक अकथनीय सुगंध का आनंद ले सकूँ। मेरे भाइयो, एक उज्ज्वल, शुद्ध और पवित्र स्थान में कलीसिया की सेवा कितनी राजसी है, जहाँ यह परमेश्वर को प्रसन्न करती है और अदृश्य स्वर्गदूतों के साथ मिलकर उसकी आराधना करना एक आनंद है; इसीलिए कलीसिया को 'पृथ्वी पर स्वर्ग' कहा जाता है, और जो इसके भीतर खड़े हैं उन्हें स्वर्ग में खड़ा हुआ माना जाता है। क्या यह अंधेरी और बदबूदार कोठरी अंतिम न्याय का पूर्वाभास नहीं है? क्या यह अनंत यातना का पूर्वाभास नहीं है? परन्तु जो इन सब को धन्यवाद के साथ सहन करता है, *वह यथार्थ* रूप से कह सकता है: *'मैंने प्रभु पर भरोसा किया, और वह मेरी ओर झुका और मेरी पुकार सुनी'* (भजन संहिता 39:2); ऐसे दुखियों को सांत्वना देते हुए, प्रेरित कहते हैं: *'यदि तुम अनुशासन सहते हो, तो परमेश्वर तुम्हारे साथ पुत्रों की तरह व्यवहार कर रहे हैं... लेकिन यदि तुम अनुशासन के बिना छोड़े गए हो—जो सभी के लिए सामान्य है—तो तुम अवैध संतान हो, पुत्र नहीं'* (इब्रानियों 12:7–8), और प्रभु स्वयं हमें, मेरे भाई, प्रोत्साहित करते हुए कहते हैं: *'अपने धीरज से अपनी आत्माओं को बचाओ'* (लूका 21:19)।

आदरणीय पिता के इस निर्देश से प्रेरित होकर, भाई ने उनकी सेवा करते हुए उनका साथ कभी नहीं छोड़ा; जबकि धैर्यवान पीड़ित और धर्मी अय्यूब के सच्चे अनुयायी, संत फिलेन, बीस वर्षों तक अपनी शय्या पर पड़े रहे, और निरंतर ईश्वर का धन्यवाद करते रहे। जब उनके इस संसार से प्रस्थान का समय आया, तो कीव गुफाओं के मठ में एक संकेत दिखाई दिया: रात में भोजनशाला के ऊपर आग के तीन स्तंभ दिखाई दिए, जो फिर चर्च के ऊपरी भाग में चले गए। केवल प्रभु ही इस संकेत का सच्चा अर्थ जानते थे, लेकिन यह मानना अनुचित नहीं होगा कि इसका तात्पर्य यह था कि पवित्र त्रिमूर्ति, जो *'आत्माओं को अपने दूत बनाती है, और अपने सेवकों को जलती हुई आग'* (भजन संहिता 103:4), ने पहले ही अत्यधिक पीड़ित फिलेन की आत्मा को लेने के लिए अपने स्वर्गदूत भेज दिए थे, ठीक वैसे ही जैसे उन्होंने लाजरस की आत्मा को लिया था: उस दिन वह अचानक ठीक हो गया और उसे एहसास हुआ कि उसकी मृत्यु निकट है, और उसने उन लोगों की भविष्यवाणी को याद किया जिन्होंने उसका मुंडन किया था। उठकर, वह सभी कोठरियों में घूमा, सभी को प्रणाम किया और क्षमा मांगी। बीमार भिक्षुओं से उसने कहा:

'मेरे भाइयो और मित्रो, उठो और मुझे विदा करो!'

उनके एक शब्द पर, उनकी बीमारी तुरंत ही छूट गई, और स्वस्थ हो जाने पर, वे उनके पीछे हो लिए। चर्च में प्रवेश करते ही, परम पूज्य फिलेन ने पवित्र रहस्य ग्रहण किए; जिसके बाद, अपने अंतिम संस्कार के बिस्तर को उठाकर, वे बिना किसी मार्गदर्शन के एक ऐसी गुफा में चले गए जहाँ वे कभी नहीं गए थे और जिसे उन्होंने अपने जन्म के दिन के बाद कभी नहीं देखा था। गुफा में प्रवेश करते ही, उन्होंने परमपूज्य एंथनी[5476] की कब्र के सामने नमन किया और उस स्थान को इंगित किया जहाँ वे दफनाए जाना चाहते थे। अपनी मृत्यु से पहले, उन्होंने एक अद्भुत रहस्य प्रकट किया, पास में पड़े कुछ भाइयों की कब्रों की ओर इशारा करते हुए:

[5476] आदरणीय एंथनी (मृत्यु 1073) के अवशेष उस गुफा में दफ़न हैं जहाँ वे एक भिक्षु के रूप में रहते थे (तथाकथित नियर केव्स में)।

'यहाँ,' उन्होंने कहा, 'आपने इस वर्ष दो भाइयों को सुलाया है, एक बिना स्कीमा के और दूसरा स्कीमा में[5477] ; पहला, जिसे बिना स्कीमा के सुलाया गया था, आपको स्कीमा में मिलेगा; वह बार-बार इसे प्राप्त करना चाहता था लेकिन टालता रहा; फिर भी, चूँकि उसने इस पद के योग्य कर्म दिखाए थे, प्रभु ने उसे मृत्यु के बाद स्कीमा प्रदान की। जहाँ तक दूसरे भाई का सवाल है, जो स्कीमा पहनकर सोया, उसे आप स्कीमा के बिना पाएँगे: उसने जीवित रहते हुए स्कीमा पहनने की इच्छा नहीं की, न ही उसने इसके योग्य कर्म दिखाए; बल्कि, उसने कहा, 'जब तुम देखो कि मैं इस दुनिया को छोड़ रहा हूँ, तो मुझे स्कीमा के लिए मुंडन कर देना'; उसने उन शब्दों को याद नहीं रखा जिन्होंने कहा था: *'न तो मृतक और न ही जो कब्र में उतर गए हैं, वे प्रभु की स्तुति करेंगे; परन्तु हम प्रभु का धन्यवाद करेंगे'* (भजन संहिता 113:25-26)। इसलिए, स्कीमा का सम्मान उससे ले लिया गया और उसे दिया गया जिसने इसके योग्य कर्म दिखाए थे: *'क्योंकि जिसके पास है, उसे और दिया जाएगा, और उसके पास बहुत होगा; पर जिस के पास नहीं है* (अच्छे कर्म) *उससे जो कुछ भी है, वह भी छीन लिया जाएगा'* (मत्ती 25:29)। 'तीसरा भाई,' उन्होंने जारी रखा, 'कई साल पहले यहाँ सुलाया गया था और पूरी तरह से सड़ गया है, लेकिन उसका मठवासी वस्त्र अपरिवर्तित रहा है: यह उसकी निंदा और बेनकाब करने के लिए संरक्षित है, क्योंकि उसने इस आदेश के अनयोग्य कर्म किए – उसने अपना पूरा जीवन आलस्य और पाप में बिताया, प्रभु के वचन को भूल गया: *"जिसके पास बहुत कुछ है, उससे बहुत कुछ माँगा जाएगा"* (लूका 12:48); जो लोग ऐसे अच्छे कर्म नहीं करते जो उन्हें शाश्वत यातना से मुक्ति दिलाएं, उन्हें स्कीमा धारण करने से कोई लाभ नहीं होता।

रहस्य प्रकट करने के बाद, पूजनीय पिमेन ने भाइयों से कहा:

'देखो, जिन्होंने मेरा मुंडन किया है, वे मेरी आत्मा को लेने आए हैं।'

इन शब्दों के तुरंत बाद, वे लेट गए और प्रभु में निद्रित हो गए[5478] । भिक्षुओं ने उन्हें उसी स्थान पर, जिसे उन्होंने इंगित किया था, बड़े सम्मान के साथ सुला दिया। – जब उन्होंने उन कब्रों को खोदा जिनके बारे में आदरणीय पिता ने बताया था, तो उन्होंने ठीक वैसा ही पाया जैसा उन्होंने कहा था: तीन भिक्षु। हाल ही में मृत दो में से, एक, जिसे उसके स्कीमा (monastic robe) में दफनाया गया था, उससे वह उतार लिया गया था – और उसे दूसरे पर रख दिया गया था, जिसने स्कीमा नहीं पहना था; जहाँ तक तीसरे भाई का सवाल है, जो बहुत समय पहले मर चुका था, उन्होंने उसे पूरी तरह से सड़ चुका पाया; केवल उसका स्कीमा ही अक्षुण्ण बचा था। और लंबे समय तक हर कोई ईश्वर के अकथनीय न्याय पर चकित हुआ, जो प्रत्येक व्यक्ति को उनके कर्मों के अनुसार पुरस्कृत करता है। ईश्वर को महिमा, सम्मान और शक्ति मिले, अब और हमेशा और युगों-युगों तक। आमीन।

आदरणीय भिक्षु ओरा का निधनोत्सव

7 अगस्त को स्मरण किया जाता है

मिस्र के थेबाइड[5479] , जो इथियोपिया[5480] की सीमा से लगा हुआ एक क्षेत्र है, में संन्यासियों के बीच ओर नाम का एक अद्भुत व्यक्ति रहता था, जिसने कई मठों की स्थापना की, जिनके भिक्षु—जिनकी संख्या एक हजार तक थी—उसके अधिकार में थे; वह नब्बे वर्ष के, चांदी जैसे सफेद बालों वाले एक वरिष्ठ और स्किमिनिक (संन्यासी) थे, जिनका रूप अत्यंत राजसी था: उनके चेहरे पर इतनी आध्यात्मिक गहराई झलकती थी कि वे एक देहहीन प्राणी प्रतीत होते थे। आदरणीय ओर ने अपना तपस्वी जीवन एक दूरस्थ रेगिस्तान में शुरू किया, जहाँ उन्होंने कई वर्षों तक पूर्ण एकांत में,

---

[5477] स्कीमा मठवासी परिधानों का सर्वोच्च पद है, जिसे 'महान दैवीय आदेश' (Great Angelic Order) के नाम से जाना जाता है। स्कीमा ग्रहण करने पर, भिक्षु को कुछ विशेष परिधान भी प्रदान किए जाते हैं, अर्थात्: कुकोल और अनालाव। कुकोल एक वस्त्र है जो सिर और कंधों को चारों ओर से ढकता है: इसका ऊपरी सिरा थोड़ा नुकीला होता है और यह लाल डोरी से कढ़े गए पाँच क्रॉस से सजा होता है; ये क्रॉस माथे पर, छाती पर, दोनों कंधों पर और पीठ पर स्थित होते हैं। अनालाव कपड़े का एक चौकोर टुकड़ा है जिसके कोनों पर डोरी सिलाई होती है। यह रस्सियों से गर्दन पर लटकता है और किनारों से खुलता है, यह बगल के नीचे की मांसपेशियों के चारों ओर लपेटा जाता है और छाती व कंधों को पार करते हुए, उसी कपड़े को लपेटने और कसने के लिए उन्हीं रस्सियों का उपयोग करता है। कुकोल और अनालाव दोनों का आध्यात्मिक महत्व है।

[5478] 11 फरवरी 1110।

[5479] थेबाइड प्राचीन काल में प्रसिद्ध थेब्स शहर का क्षेत्र था; इसी नाम का उपयोग इसके प्रमुख शहर के नाम पर पूरे ऊपरी (दक्षिणी) मिस्र के लिए भी किया जाता था। यह क्षेत्र मठवासी रेगिस्तानों से भरपूर था।

[5480] इथियोपिया – मिस्र के दक्षिण में स्थित देश – जिसमें नूबिया और अबिसिनिया शामिल थे।

सबसे कठोर उपवास का पालन करते हुए जीवन व्यतीत कयिा। फरि, ईश्वर की आज्ञा से, वे वहाँ से चले गए और एक शहर के पास एक मठ स्थापति कयिा; ताकि भाइयों को लकड़ी लाने के लिए दूर न जाना पड़े, उन्होंने उसके चारों ओर अपने हाथों से एक बगीचा लगाया; उनके आने से पहले, वहाँ एक भी पेड़ नहीं था। इस प्रकार, आदरणीय ओर ने न केवल भाइयों की आध्यात्मकि मुक्ति की, बल्कि उनकी शारीरकि जरूरतों का भी ध्यान रखा, यह सुनश्चिति करते हुए कि संतों को कसिी चीज़ की कमी न हो। जब वह स्वयं दूरस्थ रेगस्तिान में रहते थे, तो वह केवल पत्तयिों और जड़ों पर ही जीवति रहते थे, जन्हिें वह बहुत स्वादष्टि भोजन मानते थे; वे केवल तभी पानी पीते थे जब उन्हें मलिता था; दनि-रात के अधकिांश समय, आदरणीय ऑर ने उत्कट प्रार्थना में स्वयं को समर्पति कयिा। उन्होंने बहुत अधकि उम्र तक इस जीवन शैली को अपनाया, और एक दनि प्रभु का स्वर्गदूत उन्हें एक सपने में प्रकट हुआ, और कहा:

'तुम बहुतों के पति बनोगे, क्योंकि बहुत से लोग तुम्हारे हवाले कए जाएँगे, और तुम हजारों को मोक्ष के मार्ग पर ले जाओगे; आगामी जीवन में, तुम्हें उद्धार के लिए जीती गई आत्माओं की संख्या के अनुरूप पुरस्कार मलिेगा; इतने बड़े जनसमूह की भौतकि आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए कतिनी आवश्यकता होगी, इस वचिार से परेशान न हो: तुम्हें कसिी चीज़ की कमी नहीं होगी – जो कुछ भी तुम ईश्वर से माँगोगे, वह सब तुम्हें मलिेगा।"

इस दृष्टि के बाद, वृद्ध साधु गाँवों की ओर चल दिए; पहले, उन्होंने अपने लिए एक छोटा सा कोठरीनुमा आवास बनाया और कुछ सब्जयिाँ उगाईं; और यहाँ, ठीक वैसे ही जैसे उन्होंने पहले दूरस्थ रेगस्तिान में कयिा था, आदरणीय ओर केवल सब्जयिों पर ही जीवन यापन करते थे, और तब भी वे उन्हें केवल थोड़ी मात्रा में ही खाते थे: अक्सर, वे सप्ताह में केवल एक बार ही खाते थे। पहले वह पढ़ नहीं पाता था, लेकनि दूरस्थ रेगस्तिान से आने के बाद, प्रभु ने उसे शास्त्रों को समझने का वरदान दयिा: जब एक भाई ने उसे एक कतिाब दी, तो उसने उसे खोला और ऐसा पढ़ना शुरू कयिा मानो वह बहुत पहले से ही पढ़ने की कला जानता हो। इसी समय, आदरणीय ओर को ईश्वर से राक्षसों पर अधकिार प्राप्त हुआ: जनि पर भूत-प्रेत सवार होते थे, उन्हें जबरदस्ती उनके पास लाया जाता था, और वे खुले तौर पर उन पुण्य कार्यों के बारे में बताते थे जो वे गुप्त रूप से करते थे; आदरणीय व्यक्ति ने स्वर्ग से प्राप्त मसीह की कृपा से कई अन्य उपचार भी कए। बहुत से लोग पूजनीय ओर के पास आने लगे, जो उनकी मार्गदर्शन में तपस्या करना चाहते थे, और जल्द ही संन्यासयिों का एक बड़ा समुदाय बन गया, जसिके वे पूजनीय मार्गदर्शक और नेता थे। वह पहले आध्यात्मकि भोजन ग्रहण करने और फरि शारीरकि भोजन करने का आदी था: दव्यि रहस्यों को प्राप्त करने के बाद ही वह भोजन के लिए जाता था, भाइयों को दव्यि प्रेरति शकि्षाओं से उपदेश देता या आत्मा के लिए लाभकारी कहानयिाँ सुनाता। एक बार, भाइयों के उत्थान के लिए, उन्होंने नम्निलखिति सुनाया:

'मैंने रेगस्तिान में एक ऐसे व्यक्ति को देखा जसिने तीन साल तक सांसारकि भोजन नहीं खाया था: हर दो दनिों में, प्रभु का एक स्वर्गदूत उसके लिए स्वर्गीय भोजन लाता था, जो उसके पानी का काम भी करता था।'

'मैं जानता हूँ,' परम पूज्य ओर ने एक अन्य अवसर पर कहा, 'एक ऐसे भकि्षु के बारे में जसिे राक्षस स्वर्ग के दूतों और देवदूतों के रूप में प्रकट हुए; उन्होंने उसे एक अग्नमिय रथ दखिाया, जसिमें, मानो, एक राजा महमिा से घरिा हुआ बैठा था। इस राजा ने भकि्षु से कहा:

'तुममें सभी गुण मौजूद हैं; अब बस इतना ही बाकी है कि तुम मेरे सामने झुक जाओ, और मैं तुम्हें, एलयिाह (2 राजा 2:1–25) की तरह, उस अग्नमिय रथ पर ले जाऊँगा और यहाँ से ले जाऊँगा।'

ये शब्द सुनते ही भकि्षु गहरी सोच में पड़ गया:

उसने मन में सोचा, 'इसका क्या मतलब है?' 'मैं नरिंतर अपने उद्धारकर्ता की पूजा करता हूँ, जो मेरे राजा हैं, और अगर यह आकृति जिसे मैं देख रहा हूँ वही वह होते, तो वे मेरी पूजा की मांग नहीं करते, यह जानते हुए कि मैं हमेशा उनकी ही पूजा करता हूँ।'

इस पर मनन करने के बाद, भकि्षु ने कहा:

'मेरा अपना राजा है, जसिकी मैं नरिंतर उपासना करता हूँ; तुम, हालाँकि, मेरे राजा नहीं हो।'

तुरंत ही राक्षस, अपने राजा और अपने रथ के साथ, गायब हो गए।

आदरणीय ओर ने यह सब अपने भाइयों को ऐसे सुनाया मानो यह कसिी और के साथ हुआ हो, लेकनि उनमें से कई यह अच्छी तरह जानते थे कि उन्होंने जो कुछ भी बताया था, वह उनके साथ ही हुआ था। आदरणीय ओर सभी के प्रति बहुत स्वागतशील और दयालु थे: जब भी कोई भाई उनके पास आता और उनके साथ रहने की इच्छा व्यक्त करता, तो वे एक ही दनि में उसके लिए एक कोठरी बना देते; काम पर लगकर, आदरणीय ओर पूरे समुदाय को बुलाते, और हर कोई

उत्साह से उनकी मदद करता: कुछ लोग पत्थर लाते, कुछ रेत, कुछ पानी और कुछ लकड़ी, और शाम तक कुटिया तैयार हो जाती थी; आए हुए भाई को इसे सौंपते हुए, पूज्य ऑर उसे जीवन के लिए आवश्यक सभी चीजों से भरपूर प्रदान करते थे। ईश्वर ने अपने सेवक को उसकी हर मांग के अनुसार भरपूर प्रदान किया। रेवरेंड फादर के बारे में एक और वृत्तांत भी है, जो उनके जीवन के उस दौर से संबंधित है जब उनके केवल एक शिष्य था: एक बार, जब मसीह के पुनरुत्थान का भव्य पर्व निकट आ रहा था, तो इस शिष्य ने अपने गुरु से कहा:

'क्या आप जानते हैं, फादर, कि अब ईस्टर है, और हमें भी इसका उत्सव मनाना चाहिए, जैसे बाकी सभी मनाते हैं?'

'ओह, मेरे पुत्र,' वृद्ध ने उत्तर दिया, 'मैं भूल गया था कि अब ईस्टर है।'

और, अपनी कोठरी से बाहर निकलकर, पूजनीय ओर खुले आसमान के नीचे खड़े हो गए, अपनी बाहें ऊपर की ओर फैलाकर: उसी मुद्रा में, वे तीन दिनों तक खड़े रहे, ईश्वर के ध्यान में मग्न। तीन दिनों के बाद, वे अपनी कोठरी में लौट आए, यह कहते हुए:

'बस, यही है, मेरे बच्चे; मैंने अपनी पूरी क्षमता से ईस्टर मनाया है।'

शिष्य ने पूछा, 'आप क्या कर रहे थे, फादर?'

'एक भिक्षु के लिए,' बुजुर्ग ने उत्तर दिया, 'त्योहार और ईस्टर इस बात में है कि उसका मन संसारिक जीवन के कोलाहल से परे चला जाए, जैसे इज़राइल सूखे पैरों से समुद्र से होकर गुज़रा था (निर्गमन, अध्याय 14), और ईश्वर के और करीब आए।' उन्होंने अपनी बात जारी रखते हुए कहा, 'एक भिक्षु, दृश्यमान दुनिया से अलग होकर, अदृश्य ईश्वर के करीब आता है; लेकिन सांसारिक चीजों से जुड़कर, वह स्वयं को अदेह ईश्वर से दूर कर लेता है।'

कई भाइयों के पिता होने के नाते, रेवरेंड फादर प्रत्येक भाई के जीवन और कर्मों को जानते थे, यहाँ तक कि वे भी जो गुप्त रूप से किए गए थे।

इस प्रकार, एक अवसर पर, एक विशेष घुमक्कड़ संन्यासी, जो झूठ बोलने का आदी था, ने रेवरेंड फादर से मिलने जाते समय अपने कपड़े छिपा दिए। आधे नग्न होकर उनके सामने उपस्थित होकर, उसने उनसे कपड़े मांगे: रेवरेंड फादर ने तुरंत छिपाए हुए कपड़े निकालकर सभी के सामने उसे झूठा साबित कर दिया। पूरा समुदाय यह देखकर विस्मित हो गया कि वह सूक्ष्मदर्शी पिता दूसरों से छिपी हुई बातें और रहस्य जानता था, और कोई भी उससे कुछ छिपाने या उसकी दृष्टि से दूर कहीं कोई अवैध कार्य करने की हिम्मत नहीं करता था, क्योंकि परमेश्वर ने उसे सब कुछ प्रकट कर दिया था। कई लोगों को मोक्ष के मार्ग पर ले जाने के बाद, न केवल भिक्षुओं के बीच बल्कि सामान्य लोगों के बीच भी, परम पूज्य ओर प्रभु के पास चले गए[5481] और स्वर्गीय निवासों में प्रवेश कर गए और वे उन महान परम पूज्य पिताओं में गिने गए जो पिता और पुत्र और पवित्र आत्मा, त्रिमूर्ति में एक ईश्वर, के सिंहासन के सामने खड़े हैं, जिनका महिमा युगानुयुग हो। आमीन।

पवित्र पूजनीय शहीद डोमेटीयस की स्मृति

7 अगस्त को स्मरण किया जाता है

[5482]संत डोमेतियस का जीवन महान कॉन्स्टेंटाइन के शासनकाल में बीता। उनका जन्म फारस में हुआ था, जहाँ उन्हें वार नामक एक व्यक्ति ने मूर्तिपूजा से ईसाई धर्म में परिवर्तित किया था। अपने रिश्तेदारों और अपने देश को पीछे छोड़कर, जो मूर्तिपूजक दुष्टता में डूबा हुआ था, संत डोमेटियस यूनानी साम्राज्य की सीमाओं पर, निसिबिसि शहर[5483] में चले गए। वहाँ एक मठ में प्रवेश करने पर, उन्होंने पवित्र बपतिस्मा ग्रहण किया और फिर मठवासी संकल्प लिए, और तपस्या का एक निष्कलंक जीवन जिया। हालाँकि, एक ईर्ष्यालु और चालाक राक्षस की बदनामी के कारण, उस मठ में रहने वाले संतों ने उनसे घृणा करने लगे, इसलिए संत डोमेटीयस को वहाँ से भागकर थियोडोसियोपोलिस शहर में स्थित पवित्र शहीदों सेरजियस और बक्कस के मठ में शरण लेनी पड़ी[5484] । वहाँ उन्होंने आर्चिमैंड्राइट नुरवेल के जीवन का

[5481] उनके जन्म के 90 साल बाद, लगभग 390 ईस्वी के आसपास।

[5482] 23 मार्च 363 को।

[5483] मेसोपोटामिया में।

[5484] यूफ्रेट्स नदी के पूर्वी तट पर।

अनुकरण कयिा, जनिके बारे में कहा जाता है कि उन्होंने साठ वर्षों तक कुछ भी पकाया हुआ नहीं खाया, बहुत कम सोए, और वह भी लेटकर या बैठकर नहीं, बल्कि अपने दंड पर झुककर खड़े होकर सोए। आर्कमिंड्राइट नुरवेल ने परमपूज्य डोमेटीयस को डीकन के रूप में अभषिक्ति कयिा, लेकनि जब संत को पता चला कि आर्कमिंड्राइट उन्हें पादरी बनने के लिए मजबूर करना चाहते थे, तो वे भी वहाँ से चले गए[5485] । एक एकांत पहाड़ पर पीछे हटकर[5486] , संत डोमेटीयस ने वहाँ ईश्वर-भरा जीवन जयिा, और उन्होंने गर्मी, ठंड और मौसम के सभी बदलावों को सहन कयिा। बाद में, एक गुफा में नविास कर, उन्होंने वहाँ मसीह के नाम पर कई चमत्कार कए: उन्होंने अपने पास आने वाले कई लोगों को उनकी बीमारयिों से ठीक कयिा, उन्हें मूर्तपिूजा से मसीह के वश्विास की ओर ले गए। जब जूलयिन अपोस्टेट[5487] उस क्षेत्र में पहुँचे, और संत डोमेतयिस के बारे में सब कुछ जानने पर, उन्होंने उन्हें पत्थर मारकर हत्या करने का आदेश दयिा। इस दुष्ट कार्य को करने के लिए भेजे गए लोग रवाना हुए और दनि के तीसरे घंटे में, उन्होंने पवत्रि पति को उनके दो शष्यिों के साथ 'महा-मृत्यु-वजिय' ( ) की उपयुक्त स्तुति का पाठ करते हुए पाया। उन पर टूट पड़कर, उन्होंने उन पर पत्थर बरसाकर उनकी हत्या कर दी, और इस प्रकार पूजनीय डोमेटीयस ने अपने दो शष्यिों के साथ मलिकर अपना ईश्वरीय जीवन समाप्त कर लयिा।

ट्रोपारयिन, स्वर 4:

हे सर्व-धन्य, पर्वत पर तपस्या में स्वयं को समर्पति करके, आपने क्रूस के पूर्ण कवच से शत्रु की सेनाओं का नाश कयिा। एक बार फरि आपने साहसपूर्वक दुख के जुए को उठाया: और दोनों के लिए, हे पूजनीय शहीद डोमेटयिस, सदा-स्मरणीय, आपको ईश्वर द्वारा मुकुट प्रदान कयिा गया।

कॉन्टाकयिन, स्वर 6:

हे पूज्य शहीद डोमेटीयस, आपने उस व्यर्थ और सांसारकि ज्ञान को अस्वीकार कर दयिा जो मनुष्य को नीचे खींचता है, और आप भक्षिुओं के लिए एक महान शक्षिक साबति हुए, आप राजा के क्रोध से नहीं डरे, जसिने सच्चे ईश्वर, मसीह का सम्मान करने से इनकार कर दयिा था। इसी कारण से आप इस जीवन से वदिा हो गए, यह भजन गाते हुए: 'ईश्वर मेरे साथ है, और कोई भी हमारे वरिुद्ध नहीं है।'

पवत्रि शहीदों मरीना और एस्टेरयिस का कष्टकथा

7 अगस्त को स्मरणोत्सव

पैगन सम्राटों वैलेरयिन और उनके पुत्र गैलनिस के दनिों में[5488] , रोम में एस्टरयिस नाम का एक सम्मानति और सदाचारी कुलीन व्यक्ति रहता था, जो मसीह के धर्म का प्रचारक था; वह उच्च पद और महान धन-संपत्ति वाला व्यक्ति

[5485] दो शष्यिों के साथ।

[5486] सीरयिा के सरिस क्षेत्र में।

[5487] जूलयिन द एपोस्टेट, कॉन्स्टेंटाइन द ग्रेट के भतीजे और उनके भाई जूलयिस कॉन्स्टेंटयिस के पुत्र, का जन्म 331 में हुआ था। 345 में, अपने भाई गैलस के साथ, उन्हें कॉन्स्टेंटयिस द्वारा कैपाडोसयिा में नर्विासति कर दयिा गया था, जहाँ उन्होंने कड़ी नगिरानी में छह साल बतिाए। 351 में, उन्होंने अपने नर्विासन का स्थान छोड़ दयिा और नकिोमेडयिा में कई साल बतिाए, जहाँ उन्होंने खुद को दर्शनशास्त्र के अध्ययन के लिए समर्पति कर दयिा; 355 में, उन्हें कॉन्स्टैंटयिस द्वारा गॉल में सैनकिों का कमांडर नयिुक्त कयिा गया, जहाँ उन्होंने सेना का स्नेह जीतने में कामयाबी हासलि की, जसिने 361 में उन्हें सम्राट घोषति कर दयिा। एक मूर्तपिूजक शक्षिक के अधीन दर्शनशास्त्र का अध्ययन, एरयिन ववािदों से उत्पन्न ईसाइयों के बीच संघर्ष, और कॉन्स्टैंटयिस के प्रति उसकी घृणा ने जूलयिन के मन में अपने उत्पीड़क के धर्म - ईसाई धर्म - के प्रति घृणा भर दी। उसने मूर्तपिूजा को बहाल करने और ईसाई धर्म को नष्ट करने का लक्ष्य नर्धिारति कयिा। लेकनि उसके सभी प्रयास पूरी तरह से वफिल रहे। जूलयिन की मृत्यु 363 में फारसयिों के खलिाफ अभयिान के दौरान हुई; उनके अंतमि शब्द मसीह को संबोधति थे: 'तुमने मुझे हरा दयिा, गलीलयिाई!'

[5488] वैलेरयिन – 253 से 259 तक सम्राट; गैलनिस – 260 से 268 तक।

था, जो सम्राटों की कृपा में था। उस समय मसीह की कलीसिया पर हुए उत्पीड़नों के दौरान, अस्टेरियस ने परहेज़गारी का कड़ाई से पालन किया, और प्रभु यीशु में अपने विश्वास को किसी भी तरह से छिपाया नहीं।

एक अवसर पर, जब संत अस्तेरियस फिलिस्तीन में थे, तो वे केसरिया फिलिप्पी ([5489]) शहर आए, जिसे फ़िनिशियिन पानेआडा के नाम से जानते थे; इस शहर में, जहाँ मूर्तिपूजकों की भीड़ रहती थी, माउंट पानेअस से निकलने वाले एक झरने के पास एक मूर्तिपूजक त्योहार मनाने की प्रथा थी; माना जाता है कि यॉर्डन नदी का स्रोत यहीं है। इस त्योहार के दौरान, राक्षस को चढ़ाया गया बलिदान अदृश्य कर दिया जाता था: वहाँ रहने वाला राक्षस बलिदान को झपटकर छीन लेता और उसे नज़रों से ओझल कर देता, और मूर्तिपूजक, भ्रम से अंधा होकर, इस राक्षसी धोखे को एक महान चमत्कार के रूप में महिमामंडित करते थे। अस्टरियस, जो मसीह के एक सेवक थे, इस शैतान के त्योहार में उपस्थित होते हुए, धोखा खाए हुए लोगों के भ्रम और आध्यात्मिक अंधापन पर अपने हृदय में शोक करने से खुद को रोक नहीं सके; उन्होंने स्वर्ग की ओर अपनी आँखें उठाईं और अपने हाथ उठाकर, मसीह परमेश्वर से विश्वास के साथ प्रार्थना की कि वह उस शैतान को भगा दें जो लोगों को धोखा दे रहा था। और तुरंत ही शैतान परमेश्वर की शक्ति से भगा दिया गया, और शैतानी चमत्कार समाप्त हो गया – सभी ने बलिदान को अपनी आँखों से देखा; वह पहले की तरह छिपा नहीं रहा, न ही अदृश्य हुआ। जब चमत्कार समाप्त हुआ, तो उत्सव भी समाप्त हो गए, क्योंकि मूर्तिपूजक झरने पर इकट्ठा होना बंद कर दिए। इस प्रकार, संत एस्टरियस की प्रार्थना, जो विश्वास के साथ संयुक्त थी, ने उस स्थान को शैतान के अपवित्रता से शुद्ध कर दिया।

ईसा मसीह के लिए उसकी पीड़ा ईश्वर की व्यवस्था से निम्नलिखित प्रकार से हुई। फिलिस्तीन के केसरिया में[5490] , एक कुलीन और धनी सैनिक मारिनि नामक रहता था, लेकिन वह ईसा मसीह में अपने विश्वास में और भी अधिक ईमानदार था और पुण्य कर्मों में प्रचुर था। उसकी रेजिमेंट के साथियों ने उस पर जोर दिया कि वह सेंचुरियन का पद ग्रहण करे, जो पहले इस पद पर रहे सैनिक की मृत्यु के बाद खाली हो गया था। जब मारिनि उक्त पद ग्रहण करने की तैयारी कर रहा था, तो एक अन्य सैनिक, ईर्ष्या से प्रेरित होकर और स्वयं सेंचुरियन बनने की इच्छा से, न्यायाधीश अचेओस के पास गया: उसने उसे बताया कि मारिनि, एक ईसाई होने के नाते, देवताओं और राजाओं की मूर्तियों को बलिदान चढ़ाने से इनकार कर देता था; और इसलिए, मुखबिर ने आगे कहा, रोमन कानून के ' ' के तहत, ऐसे व्यक्ति को सेंचुरियन नहीं बनाया जा सकता था। न्यायाधीश ने तुरंत मारिनि को तलब किया और उसके विश्वास के बारे में उससे पूछताछ की; जब न्यायाधीश ने मारिनि से स्वयं यह सुना कि वह एक ईसाई है, तो न्यायाधीश ने उसे विचार करने के लिए तीन घंटे का समय दिया - जीवन और मृत्यु के बीच चयन करने के लिए। संत मारिनि के सामने केवल दो परिणाम थे: या तो एक मूर्तिपूजक बलिदान चढ़ाकर जीवित रहना, या मसीह के विश्वास की घोषणा करने के लिए मरना।

उस क्षण, फिलिस्तीन के केसरिया के बिशप, फेतेइक, मसीह के इस स्वीकारकर्ता के पास आए, उन्होंने उसका हाथ पकड़ा और उसे चर्च में ले गए, तथा उसे उत्साहवर्धक उपदेश दिया। तब, उसके साथ पवित्र उपasanालय में प्रवेश करने के बाद, बिशप ने अपने हाथ से पवित्र सुसमाचार और उस योद्धा की तलवार की ओर इशारा करते हुए, जिससे मारिनिस ने कमर कस रखी थी, कहा:

'इन दोनों में से, हे पुण्यशील पुरुष, एक चुनो: या तो यह तलवार धारण करो, कुछ समय के लिए सांसारिक राजा की सेवा करो, और मृत्यु पर अनंत विनाश का सामना करो; या स्वर्गीय राजा का योद्धा बनो, इस पुस्तक में लिखित उनके परम पवित्र नाम के लिए अपनी आत्मा अर्पण करो, और अनंत युगों तक उनके साथ राज्य करो।'

संत मारिनि ने पवित्र सुसमाचार की ओर अपना दाहिना हाथ बढ़ाया, उसे भक्तिपूर्वक चूमा, जिससे यह दिखा कि वह मसीह के लिए मृत्यु का सामना करने को तैयार था। फिर बिशप ने उससे कहा:

[5489] इस शहर की स्थापना हेरोद के पुत्र फिलिप ने की थी, जिन्होंने इसे सम्राट टिबेरियस के सम्मान में सीज़रिया नाम दिया। यह जॉर्डन नदी के स्रोत पर स्थित था।

[5490] फ़िलिस्तीन में केसरिया – प्राचीन काल में इसे स्ट्रैटन का शहर या मीनार के नाम से जाना जाता था। इस शहर का पुनर्निर्माण हेरोद महान द्वारा किया गया था, जिन्होंने सम्राट ऑगस्टस के सम्मान में इसका नाम केसरिया रखा। यह भूमध्य सागर के तट पर स्थित था। प्रेरित संत पौलुस ने अपनी धर्मप्रचार यात्राओं के दौरान कई अवसरों पर इसका दौरा किया (प्रेरितों के काम 9:29–30, 18:28, 21:8) और वहाँ एक कैदी के रूप में दो साल बिताए (प्रेरितों के काम 23:23, 24:27, 25:4–6)। शतानी कोर्नेलियुस इसी शहर में रहता था; संत पतरस ने उसे मसीह के धर्म में परिवर्तित किया और उसका बपतिस्मा दिया (प्रेरितों के काम 10:1–48); संत फिलिप भी यहाँ रहते थे (प्रेरितों के काम 21:8); यहीं पर अग्रीपा की मृत्यु भी हुई, जो एक स्वर्गदूत द्वारा मारा गया और कीड़ों ने उसे खा लिया (प्रेरितों के काम 12:20–23)। फिलिस्तीन में केसरिया का उल्लेख सुसमाचार में नहीं मिलता।

'अपनी पूरी आत्मा से ईश्वर से चपिके रहो और, उनकी शक्ति से दृढ़ होकर, वही स्वीकार करो जसिे तुमने स्वयं चुना है।'

इसके बाद, बशिप ने संत मारनि को इन शब्दों के साथ वदिा कयिा:

'शांति से जाओ।'

जैसे ही संत मारनि चर्च से बाहर जा रहे थे, उद्घोषक पहले से ही अदालत के दरवाजों पर खड़ा था, जो ज़ोर से मारनि का नाम पुकार रहा था, क्योंकि तीन घंटे पहले ही बीत चुके थे। अदालत में प्रवेश करने पर, संत मारनि ने पहले से भी अधकि नडिरता के साथ खुद को एक ईसाई स्वीकार कयिा, सभी के सामने मसीह के नाम की महमिा की और मूर्तपिूजक दुष्टता की नदिा की। न्यायाधीश ने उस पर मृत्युदंड की घोषणा की, और पवत्रि शहीद मारनि को शहर से बाहर ले जाया गया और वहाँ सरि से अलग कर दयिा गया। संत एस्टरयिस उनकी शहादत के समय उपस्थति थे, जो उस समय ईश्वर की व्यवस्था से शहर आए थे। संत मारनि की शहादत के बाद, उन्होंने अपना कीमती बाहरी वस्त्र उतारा, उसे जमीन पर बछिाया, फरि शहीद के पवत्रि शरीर को, उनके सरि के साथ, उसमें लपेटा; उसे अपने कंधों पर उठाकर कब्र तक ले गए, और उसे सम्मानपूर्वक दफनाया। इसके लिए, उन्हें स्वयं शहीद का मुकुट प्रदान कयिा गया: अधर्मी वधिर्मीयों ने उन्हें पकड़ लयिा और उनका सरि कलम कर दयिा[5491] , और इस प्रकार संत एस्टरयिस, संत मारनिस के साथ, पवत्रि शहीदों की संगति में स्वर्गीय राजा—मसीह—के समक्ष उपस्थति हुए।

यह घटना गैलनिस के शासनकाल में हुई, जो अपने पति, वैलेरयिन की मृत्यु के बाद सहिासन पर बैठे थे। अनगनित ईसाइयों के रक्तपात के लिए, उन्हें ईश्वर के क्रोध से दंडति कयिा गया: एक युद्ध के दौरान, फारसियिों ने रोमनों को हरा दयिा, और वैलेरयिन को फारसी राजा सापोइर द्वारा जीवति कैदी के रूप में पकड़ लयिा गया; उसे फारस ले जाया गया, जहाँ जब सपोर् अपने घोड़े पर चढ़ता था तो वह उसके लिए पायदान का काम करता था। इसके अलावा, वैलेरयिन को इस शर्मनाक कैद से छुड़ाया नहीं जा सका: सपोर् ने उसके बदले में कसिी भी खजाने को स्वीकार करने से इनकार कर दयिा, क्योंकि वह रोमन सम्राट को रौंदने की महमिा को संजोए हुए था। वैलेरयिन को दीर्घकाल तक यातना देने के बाद, फारसी राजा ने अंततः आदेश दयिा कि उसकी खाल सबके सामने उधेड़ दी जाए और उस पर नमक छड़िक दयिा जाए; इस प्रकार उस दुष्ट व्यक्ति का अंत हुआ, जसिकी शाश्वत यातनाएँ इस जीवन में ही शुरू हो चुकी थीं। अपने पति की नयिति से गैलनिस भयभीत हो गया: उसने इसमें ईसाइयों के नर्दियी रक्तपात के लिए ईश्वर की सजा को पहचाना; इसलिए, गैलनिस ने रोमन साम्राज्य के सभी प्रांतों में एक फरमान जारी कयिा, जसिमें ईसाइयों पर अत्याचार समाप्त करने और बशिपों को अपनी चर्चों का स्वतंत्र रूप से शासन करने की अनुमति देने का आदेश दयिा गया। लेकनि इससे पहले कि यह आदेश फलिस्तिीन के केसरयिा तक पहुँचता, संत मारनिस और अस्टेरयिस ने मसीह के लिए शहीद होकर अपने प्रभु और हमारे स्वामी यीशु मसीह की आनंद में प्रवेश कयिा, जो पति और पवत्रि आत्मा के साथ राज्य करते हैं।

21 अगस्त

8 अगस्त (पुराने कैलेंडर के अनुसार)

उसी दनि, 12वीं शताब्दी के गुफाओं के एक प्रतमिाकार, परम पूजनीय ग्रेगरी की स्मृति मनाई जाती है, जो सेंट एंथनी की गुफा में वशि्राम करते हैं।

इसी दनि, पवत्रि शहीदों एलेउथेरीयस और लयिोनदिास की स्मृति दविस है, जन्हिें यीशु मसीह की गवाही देने के लिए आग में फेंक दयिा गया था।

उसी दनि, पूजनीय ग्रेगरी द सनिाइट की स्मृति मनाई जाती है, जो यूनान के राजा माइकल IX पैलेओलोगस और एंड्रोनकिस के शासनकाल में रहते थे, जन्होंने कई धर्मोपदेशात्मक पुस्तकें लखिीं और 14वीं शताब्दी के पहले भाग में नधिन कर गए।

[5491] वर्ष 250 में

टॉल्गस्काया के नाम से प्रसद्धि, उनकी अतसिम्मानति और चमत्कारकि प्रतमिा के प्रकट होने के सम्मान में परमेश्वर की अतपिवत्रि माता का पर्व।

8 अगस्त को स्मरणोत्सव

दुनयिा की सृष्टकि े 6822वें वर्ष में[5492] , कीव और सर्व रूस के मेट्रोपॉलटिन पीटर के समय में, यारोस्लाव के धर्मनष्ठि राजकुमार डेवडि फेडोरोवचि के अधीन, रोस्तोव और यारोस्लाव के बशिप प्रोकहोर - अन्य ववरिणों के अनुसार, त्रफिोन - अपने धर्मप्रांत का दौरा करते हुए, करिलिो-बेलोज़ेर्स्की मठ में पहुँचे; वहाँ से उन्होंने नाव द्वारा अपनी यात्रा जारी रखी – पहले वोल्गा की सहायक नदी शेक्स्ना के कनिारे, और फरि स्वयं वोल्गा के कनिारे यारोस्लावल तक। जब यात्री यारोस्लावल से छह पोप्रीश्ची[5493] दूर थे, तो दनि ढलने लगा; तब उन्होंने शहर के सामने वोल्गा के कनिारे एक पहाड़ी के पास रात के लिए नावें रोकीं; पहाड़ी पर चढ़कर, उन्होंने अपना तंबू लगाया। उनका शविरि ठीक उस स्थान के सामने स्थति था जहाँ टोलगा, वोल्गा की एक सहायक नदी, नदी में मलिती है; उस पूरे कनिारे पर घना जंगल था। रात में, बशिप आधी रात को जागे और उन्होंने एक रोशनी देखी; जल्दी से उठकर और टेंट से बाहर झाँककर, उन्होंने पाया कि उनके सभी साथी - पुरोहति, धर्मकर्मी, नौकर और यहाँ तक कि पहरेदार भी - सो रहे थे; इस बीच, एक बड़ी रोशनी ने पूरे इलाके को रोशन कर रखा था। नदी की ओर मुड़कर, बशिप ने दूसरी तरफ के कनिारे पर एक असाधारण रूप से उज्ज्वल, असामान्य रूप से दमकता हुआ स्तंभ देखा; उसी समय, उन्होंने वोलगा के पार एक पुल देखा जो उस ओर जाता था; इस रहस्यमय घटना ने बशिप में आश्चर्य और भय का मश्रिति भाव जगा दयिा। हालाँकि, ईश्वर से प्रार्थना करने के बाद, उन्होंने अपना धर्माध्यक्षीय दंड पकड़ा, तंबू छोड़ दयिा और, कसिी को जगाए बनिा, नदी की ओर बढ़े और उस पुल पर कदम रखा जो उन्हें दखिाई दे रहा था: वास्तव में, धर्माध्यक्ष पानी पर इस तरह चल रहे थे जैसे कि वह लकड़ी हो – उस जगह पर कभी कोई पुल नहीं था, लेकनि, ईश्वर की आज्ञा से, पानी जम गया था, और उसके पैरों के नीचे एक तरह का पुल बन गया था। दूसरी कनिारे पहुँचने पर, बशिप ने परम पवत्रि ईश्वर की माता की एक प्रतमिा देखी, जसिमें उन्होंने हमारे प्रभु यीशु मसीह, जो शशिु थे, को अपनी बाहों में पकड़ा हुआ था; यह प्रतमिा कसिी पेड़ पर नहीं टकिी थी, बल्कि चमत्कारकि रूप से पाँच कोहनी की ऊँचाई पर हवा में लटकी हुई थी, ताकि जमीन से हाथ से उसे छुआ न जा सके। बशिप ने ईश्वर की माता की प्रतमिा के सामने सरि झुकाया और वशि्व की रानी से आँसुओं से सनी प्रार्थनाएँ कीं; एक काफी लंबी प्रार्थना के बाद, वे उस स्थान पर अपना दंड छोड़कर लौट आए। उसी पुल से नदी पार करके, बशिप अपने तंबू में लौट आए, और चूँकि सभी सो रहे थे, इसलिए कसिी को भी उनकी यात्रा के बारे में पता नहीं चल सका; बशिप सुबह तक शांतिसे सोए। जब भोर हुई, तो सभी उठे, और हमेशा की तरह मैटन्सि (प्रभात प्रार्थना) का आयोजन कयिा गया। अब नावों पर जाने का समय था, और नौकरों ने संत की लाठी की तलाश शुरू कर दी, लेकनि उनकी सारी कोशशिें व्यर्थ गईं। फरि उन्होंने बशिप को बताया कि लाठी बनिा कसिी नशिान के गायब हो गई थी, जबकि इसे पछिली शाम ही तंबू में रखा गया था। बशिप को याद आया कि उन्होंने अपनी लाठी नदी के उस पार छोड़ दी थी, और उन्होंने महसूस कयिा कि प्रभु इस चमत्कारकि घटना को सबको बताना चाहते थे; आँसुओं से एक शब्द भी न बोल पाने की स्थतिि में, उन्होंने वोल्गा नदी के उस पार की ओर इशारा करना शुरू कर दयिा; फरि, अपनी बेचैनी के कारण मुश्कलि से बोलते हुए, संत ने वसि्तार से बताया कि वह वोल्गा के दूसरी कनिारे कैसे पहुँचे और वहाँ उन्होंने क्या देखा; इसके बाद उन्होंने उन्हें वोल्गा के उस पार उस दशिा में सवारी करने और वहाँ से लाठी लाने का आदेश दयिा। सेवक चल पड़े और, डंडा ढूंढते हुए, उन्हें जंगल में सर्वपवत्रि परमेश्वर की माता की एक प्रतमिा मलिी, जो अब हवा में लटकी नहीं थी, बल्कि पेड़ों के बीच जमीन पर खड़ी थी; डंडा पास में पड़ा था। पवत्रि प्रतमिा के सामने नमन करने और डंडा उठाने के बाद, वे संत के पास लौट आए और उन्हें बताया कि उन्होंने सर्वपवत्रि परमेश्वर की माता की प्रतमिा देखी है। तब बशिप ने, फलिहाल यारोस्लाव के लिए अपनी यात्रा स्थगति करते हुए, अपने सभी लोगों के साथ वोल्गा पार कयिा; सर्वपवत्रि मसीह की माता की प्रतमिा को देखते ही, उन्होंने तुरंत इसे वही प्रतमिा पहचान लयिा जो उस रात एक स्तंभ के रूप में तेजस्वी प्रकाश से घरिी हुई हवा में तैर रही थी। खुशी और आध्यात्मकि आनंद से भरकर, संत घुटनों के बल गरि पड़े, उन्होंने परम पवत्रि माता परमेश्वर को भक्तपिूर्वक

[5492] मसीह के जन्म के 1314 वर्ष बाद

[5493] लगभग छह वर्स्ट की दूरी पर।

प्रार्थनाएँ अर्पति कीं और उनकी पवत्रि प्रतमिा को श्रद्धापूर्वक चूमा। वहाँ मौजूद सभी लोग भी अपनी प्रसन्नता के आँसू नहीं रोक सके और पूजनीय प्रतमिा के सामने झुककर, परमेश्वर की माता से भक्तपिूर्वक प्रार्थना करने लगे।

परम पवत्रि माता ईश्वर की इस चमत्कारी प्रतमिा का दर्शन 8 अगस्त को, कज़िचि के बशिप, संत एमलियिन के पर्व के दनि हुआ था।

संत प्रोखोरस ने बनिा कसिी देरी के, तुरंत ही अपने हाथों से उस जगह की सफाई करने का काम शुरू कर दयिा जहाँ पवत्रि प्रतमिा प्रकट हुई थी, पेड़ काटकर चर्च के नर्मिाण के लिए लकड़ी तैयार की; उनके साथ मौजूद लोगों ने भी उत्साहपूर्वक उनका अनुकरण कयिा; उसी दनि उन्होंने एक छोटे से चर्च की नींव रखी और दोपहर तक उसका नर्मिाण पूरा कर लयिा। चमत्कारी प्रकट होने और उससे जुड़ी घटनाओं की खबर यारोस्लावल तक पहुँच गई, और एक बड़ी भीड़ उस स्थान पर पहुँच गई जहाँ बशिप ठहरे हुए थे; आने वालों में पुरोहति और आम लोग, बूढ़े और जवान, अमीर और गरीब, स्वस्थ और बीमार शामलि थे। परमेश्वर की अतपिवत्रि माता की प्रतमिा को देखकर, वे अनुत्तरनीय आनंद से भर गए और भक्तपिूर्वक प्रार्थना करने लगे; हर कसिी ने चर्च बनाने वालों की मदद करने का प्रयास कयिा – कुछ ने पेड़ काटे, जबकि अन्य ने उन लोगों के साथ मलिकर काम कयिा जन्होंने चर्च का नर्मिाण शुरू कयिा था। जब इसका नर्मिाण पूरा हो गया, तो बशिप ने उसी शाम इसे पवत्रि कयिा और चमत्कारी प्रतमिा को लाया; फरि, नवनर्मिति चर्च में दैवीय लटिर्जी का अनुष्ठान करने के बाद, संत ने इसे परम पवत्रि माता के सम्मानति प्रस्तुतीकरण को समर्पति कयिा और अगस्त के आठवें दनि उनकी प्रतमिा के प्रकट होने का पर्व स्थापति कयिा। भगवान की परम पवत्रि माता की कृपा से, उपस्थति सभी अस्वस्थ लोग चंगे हो गए। उसी क्षण, बशिप ने चर्च के बगल में एक मठ स्थापति करने का आदेश दयिा और उसी दनि, इसके लिए एक मठाधीश नयिुक्त कयिा। तब से, चमत्कारी प्रतमिा के प्रकट होने के स्थान पर एक मठ स्थापति कयिा गया; शुरुआत में यह काफी साधारण था, लेकनि बाद में, जैसे-जैसे इसकी प्रसद्धि बढ़ी, यह आकार में बड़ा होता गया। ईश्वर द्वारा संरक्षति यह मठ आज भी मौजूद है और इसे टोल्ग्स्काया मठ के नाम से जाना जाता है, जसिका नाम टोल्ग्हा नदी पर पड़ा है, जो वोल्गा की एक सहायक नदी है और इसी स्थान पर इस नदी में मलिती है।

परमेश्वर की अतपिवत्रि माता की चमत्कारी प्रतमिा के प्रकट होने के दनि से, अनेक चमत्कार होने लगे; इनमें से, हम यहाँ केवल कुछ सबसे उल्लेखनीय चमत्कारों का उल्लेख करेंगे। वर्ष 6900[5494] के 16 सतिंबर को, हेग्यूमेन जर्मनस के मठाध्यक्ष रहते हुए, जब पुरोहति ने नवमी ओड के बाद मातनि्स में घोषणा की: 'आओ हम स्तोत्रों के साथ ईश्वर की माता और प्रकाश की माता की स्तुति करें!' अचानक परम पवत्रि ईश्वर की माता के दाहनि हाथ से मर्रिा बहने लगा, और चर्च एक अद्भुत सुगंध से भर गया; चर्च में उपस्थति सभी लोग, इस चमत्कार को देखकर, आश्चर्य और भय से भर गए, और साथ ही ईश्वर और उनकी परम पवत्रि माता की महमिा करने लगे। मैटनि्स के बाद, परमेश्वर की अतपिवत्रि माता के लिए एक प्रार्थना सभा आयोजति की गई, और इसके समापन पर, जब 'हे सर्वोच्च देवी, अपने सेवकों की प्रार्थनाओं को स्वीकार करो' भजन गाया जा रहा था, तब परमेश्वर की माता की बाईं बांह में बैठे परम पवत्रि शशिु के बाएं पैर से मूर्रा बहने लगी; इस प्रकार, उस समय चर्च में उपस्थति वशि्वासयिों ने एक ही प्रतमिा से दो स्रोतों – परमेश्वर की अतपिवत्रि माता के दाहनि हाथ और मसीह के बाएं पैर से – चमत्कारकि रूप से मुर्रा बहते हुए देखा। यह अद्भुत चमत्कार मठाधीश और भाइयों में आध्यात्मकि आनंद जगाए बनिा नहीं रह सका: आँसुओं से भरी आँखों के साथ, वे परम पवत्रि ईश्वर की माता के सामने घुटनों के बल झुक गए और उस मूर्रा से अपने माथे पर लेप लगाया, जसिमें महान उपचारात्मक शक्ति थी: जसि भी रोगी—चाहे वह कसिी भी बीमारी से पीड़ति हो—पर उस चमत्कारी मुर्र से अभषिेक कयिा जाता, वह तुरंत स्वस्थ हो जाता था। इस चमत्कारकि घटना के कुछ समय बाद, मस्कोवी के महान राजकुमार द्वारा नकिति नामक एक बोयार को बेलोजेर्स्क क्षेत्र में भेजा गया: जब वह अपनी पत्नी और नौकरों के साथ यारोस्लावल पहुँचा, तो वह नदी के ऊपरी प्रवाह में यात्रा जारी रखने के लिए नावों पर चढ़ गया। उस बोयार का एकमात्र पुत्र था, जो अभी भी एक छोटा लड़का था – चार साल से अधकि का नहीं – और यात्रा के दौरान वह बीमार पड़ गया और उसकी मृत्यु हो गई; उसके शरीर को तब दफनाने के लिए परम पवत्रि ईश्वर की माता के टोलगा मठ ले जाया गया। लड़के के माता-पति परम पवत्रि माता ईश्वर की प्रतमिा के सामने जोर-जोर से रोने लगे, क्योंकि उनके और कोई संतान नहीं थी। शव को तैयार करने के बाद, उन्होंने ताबूत बनाने और दफ़नाने के लिए आवश्यक अन्य चीज़ों की व्यवस्था करने लगे; इन दुखद तैयारयिों के बीच, दोपहर के एक बजे से शाम के दस बजे तक समय बीत गया। और इस प्रकार, जब पारंपरकि प्रार्थना

[5494] 1392 ईस्वी

सेवा के बाद, अंतमि संस्कार का भजन शुरू हुआ, तो लड़का अचानक जीवति हो उठा और चलि्लाया; सभी भयभीत और साथ ही अत्यंत प्रसन्न हो गए; वशिेष रूप से उसके माता-पति बहुत प्रसन्न हुए। अपने बेटे को एक बार फरि जीवति और स्वस्थ देखकर, वे यह नहीं जानते थे कि प्रभु और उनकी परम पवत्रि माता का धन्यवाद कैसे करें। एक बार, ईश्वर की इच्छा से, मठ में एक बड़ी आग लग गई; चर्च में आग इतनी तेजी से लगी कि भाइयों के पास चर्च के दरवाज़े खोलने या पवत्रि स्थल से कुछ भी बाहर नकिालने का समय नहीं था; पूरा चर्च, उसमें मौजूद सब कुछ के साथ, राख हो गया। सबने दुख के साथ यह मान लयिा कि चमत्कारी प्रतमिा का भी वही हश्र हो गया है। लेकनि आग के बाद, पवत्रि प्रतमिा अप्रत्याशति रूप से मठ के पास एक बगीचे में पूरी तरह से सुरक्षति और एक दव्यि प्रकाश से घरिी हुई मलिी: नस्सिंदेह, यह केवल स्वर्गदूतों के हाथ ही हो सकते थे, न कि मानव हाथ, जन्हिोंने पवत्रि प्रतमिा को भयानक लपटों से बचाया था। संन्यासी समुदाय ने पवत्रि प्रतमिा को खुशी-खुशी स्वीकार कयिा और बनिा कसिी देरी के एक नय , जो आकार में अधकि वशिाल और अपनी सजावट में भव्य था, का नरि्माण शुरू कर दयिा। आज भी, चर्च की खूबसूरत इमारतें और मठ की संरचनाएं देखी जा सकती हैं। परमेश्वर की अतपिवत्रि माता और सदा कुंवारी मरयिम की कृपा आज भी चमत्कार करती रहती है, जैसे कि एक झरने से, उनकी पवत्रि प्रतमिा से, बीमारों को स्वास्थ्य प्रदान करते हुए और लोगों से दुष्ट आत्माओं को भगाते हुए।

इन चमत्कारों का वर्णन स्वयं मठ के भीतर वस्तिार से कयिा गया है; हम, केवल संक्षेप में ही सही – क्योंकि एक वस्तिृत ववरिण के लिए पर्याप्त समय नहीं होगा – ईश्वर और उनकी परम पवत्रि माता, कुँवारी मरयिम की महमिा करेंगे; हम उनकी सम्मानति प्रतमिा को उचति श्रद्धांजलि अर्पति करेंगे, जसिे सभी ईसाई पीढ़ियों को हमेशा, अब और सदा के लिए और युगों-युगों तक पूजना चाहिए। आमीन।

हमारे पवत्रि पति, चमत्कार करने वाले मीरॉन, क्रीट के बशिप की स्मृति।

८ अगस्त को स्मरण कयिा जाता है

संत मरिॉन का जन्म क्रीट के द्वीप पर हुआ था[5495] , जहाँ उनका पालन-पोषण भी हुआ; उन्होंने काफी कम उम्र में शादी कर ली; उनका मुख्य व्यवसाय खेती था, और 'अपने माथे के पसीने से' संत मरिॉन ने न केवल अपनी रोटी कमाई, बल्कि दूसरों को भी खलिाया, और अपनी फसल से गरीबों को दयिा। प्रभु ने संत मरिॉन के श्रम को इसके लिए आशीर्वाद दयिा: उनकी फसल का आकार उनकी दानशीलता की सीमा के अनुरूप था। संत मरिॉन उस भूमि में रहने वाले कसिी भी अन्य व्यक्ति से अधकि दयालु थे: एक अवसर पर, उन्होंने अपने खलिहान में चोरों को पकड़ लयिा जब उन्होंने अपनी बोरी जौ से इतनी भर ली थी कि वे उन्हें उठा नहीं सकते थे; उन्हें शारीरकि या कसिी अन्य दंड देने के बजाय, संत मरिॉन उनके पास गए और, अपने हाथों से, उन्हें बोरी अपने कंधों पर उठाने में मदद की; साथ ही, उन्होंने चोरों को यह सख्त मनाही की कि वे कसिी को भी उनके इस काम के बारे में न बताएं। अपने पुण्य जीवन के लिए, संत मरिॉन को एक प्रेस्बटिर (पादरी) के रूप में नयिुक्त कयिा गया; इस पद पर रहते हुए, उन्होंने अपने अनुयायियों को पवत्रि ईसाई जीवन के बारे में लगन से सखिाया, और दुष्ट राजा डेसयिस[5496] के उत्पीड़न के दौरान, उन्होंने उन्हें दृढ़ता से अपने दुखों को सहने के लिए प्रोत्साहति कयिा। जब दुष्ट राजा डसियिस[5497] की मृत्यु के साथ उत्पीड़न समाप्त हो गया, तो संत मरिॉन को बशिप का पद प्रदान कयिा गया: बशिप के रूप में, उन्होंने उन पवत्रि शहीदों की स्मृति स्थापति की जन्हिोंने मसीह के लिए उत्पीड़न में पीड़ा सहन की थी, और ईश्वर की शक्ति से कई चमत्कार और अन्य अद्भुत कार्य कए। उदाहरण के लिए, संत मरिॉन ने एक बार एक नदी के प्रवाह को रोका: बाढ़ के दौरान, ट्रटिन नामक एक कुलीन व्यक्ति को[5498] नदी पार करनी थी; पवत्रि बशिप ने उसके प्रवाह को तब तक रोक दयिा जब तक कि वह व्यक्ति नदी पार करके वापस नहीं आ गया; फरि संत मरिॉन ने अपना क्रॉज़यिर (छड़ी) इस आज्ञा के साथ भेजा कि नदी अपने सामान्य मार्ग पर वापस आ जाए। जब संत

[5495] क्रीट – भूमध्य सागर के पूर्वी भाग में स्थति यूनानी द्वीपों में सबसे बड़ा।

[5496] डेसयिस – 249 से 251 ईस्वी तक सम्राट।

[5497] वर्ष 251 में

[5498] नकिोडेमस के हागीओग्राफी और सनिैक्सारयिन में एक अलग वृत्तांत दयिा गया है: वहाँ बताया गया है कि सेंट मरिॉन ने बाढ़ के दौरान ट्रटिन नामक एक नदी को रोका था, और उसे सूखी जमीन पर पार करने के बाद, उन्होंने बाद में एक लाठी भेजकर आदेश दयिा कि वह फरि से बहे। क्रीट में ससिीली के डायोडोरस को ट्रटिन नदी पहले से ही ज्ञात थी।

मायरन के दूत नदी तक पहुँचे और संत की छड़ी से पानी को हलिाकर, उनके आदेश को दोहराया, तो नदी अपने तल में असाधारण गति और बल के साथ अपनी पूर्व दशिा में बहने लगी। ईश्वर के उस पवत्रि पुरुष ने कई चमत्कार कएि, जो अपने भव्यता में अभी वर्णति चमत्कार के समान थे। संत मरिॉन एक शताब्दी आयु में प्रभु के पास चले गए, उन्होंने अपने पूरे जीवन को ईश्वर के पवत्रि आज्ञाओं का पालन करके ईश्वर को समर्पति कयिा था[5499] ।

हमारे पवत्रि पतिा एमलियिन द कन्फेशर, कज़िचि के बशिप की स्मृति

8 अगस्त को स्मरण कयिा जाता है

साइज़किस के बशिप एमलियिन[5500] ने, प्रतमिा-भंजक, आर्मेनयिाई लयिो के शासनकाल के दौरान[5501] , मसीह की अपनी स्वीकारोक्ति के लिए कष्ट सहन कएि। संत एमलियिन को बार-बार सम्माननीय और पवत्रि प्रतमिाओं की पूजा का परत्यिाग करने के लिए मजबूर कयिा गया, लेकनि, पवत्रि पतिाओं की शकि्षाओं का दृढ़ता से पालन करते हुए, उन्होंने ऐसा करने से इनकार कर दयिा। ऑर्थोडॉक्स धर्म के प्रति इस नष्ठिा के लिए, उन्हें वधिर्मयिों के हाथों बहुत सी कठनिाइयों का सामना करना पड़ा, जसिमें कारावास भी शामलि था[5502] , लेकनि संत एमलियिन ने अपनी अस्थायी पीड़ाओं के बदले में शाश्वत आनंद प्राप्त करने की आशा में, यह सब खुशी से सहन कयिा। इस प्रकार की शुद्ध ईसाई भावना के साथ, दुख और कष्टों के बीच अपने जीवन के मार्ग पर चलते हुए, संत एमलियिन ने प्रभु में वश्विास बनाए रखते हुए बंदी अवस्था में मृत्यु पाई और एक कन्फेशर के मुकुट से वभिूषति हुए।

कॉन्टाकयिन, स्वर 3:

पवत्रि त्रमिूर्ति के एक पराक्रमी योद्धा के रूप में प्रकट हुए, कलीसयिा आपको महमिामय करती है, हे एमलियिन, जनिके लिए आपने दुख उठाया: इसी कारण हम आपकी स्मृति का सम्मान करते हैं; अपने सेवकों को मूर्तपिूजक आक्रमण से बचाएँ।

22 अगस्त

9 अगस्त (पुराने कैलेंडर के अनुसार)

इसी दनि, महान पाचोमयिस के शष्यि, आदरणीय प्सोस की स्मृति, जन्हिोंने चौथी शताब्दी में मस्रि में सेवा की।

पवत्रि प्रेरति मत्तीयास की शहादत

9 अगस्त को स्मरण कयिा जाता है

पवत्रि प्रेरति मत्ती, यहूदा के कुल के वंशज, बेथलहम में जन्मे थे; बचपन से ही उन्होंने पवत्रि धर्मग्रंथों और ईश्वर के वधिान का अध्ययन यरूशलेम में पवत्रि समिीओन ईश्वर-स्वीकारकर्ता के मार्गदर्शन में शुरू कर दयिा था।

[5499] संत मरिॉन की मृत्यु लगभग 350 ईस्वी में हुई।

[5500] क्यज़किोस प्रोपोंटसि (मार्मारा सागर) की आर्कटोनस्सिॉस प्रायद्वीप पर स्थति है; इस शहर की स्थापना मसियिाई लोगों ने ईसा मसीह से पाँच शताब्दयिाँ पहले की थी।

[5501] लयिो पंचम अर्मेनयिाई – 813 से 820 तक सम्राट।

[5502] इस प्रकार, 815 में, उन्हें अन्य बशिपों के साथ कैद कर दयिा गया। प्रतमिा-भंजक सम्राट की उपस्थति में पैट्रआर्क की अध्यक्षता में बशिपों की एक बैठक में, सेंट एमलियिन बशिपों में से पहले व्यक्ति थे जन्हिोंने लयिो द आर्मनियिन से साहसपूर्वक बात की और चर्च के अधकिारों का दृढ़ता से बचाव कयिा। सम्राट द्वारा उन्हें प्रतमिा-भंजन अपनाने के लिए मनाने के प्रयासों के जवाब में, उन्होंने कहा: 'यदि यह मामला, हे सम्राट, चर्च का मामला है, जैसा कि आपने स्वयं कहा है, तो इसे रीति के अनुसार चर्च के भीतर ही परखा जाए। प्राचीन काल से, आरंभ से ही, चर्च के मामलों की जांच चर्चों में की जाती रही है, न कि शाही महल में।' 3 अप्रैल के अंतर्गत सेंट नकिति का जीवन देखें।

उनसे, संत मत्ती को सदाचारी जीवन का उपदेश मिला: उन्होंने ईश्वर की आज्ञाओं में निर्धारित मार्ग का कड़ाई से पालन करते हुए ईश्वर को प्रसन्न करने वाला जीवन जिया। समय आया जब प्रभु, परम पवित्र कुँवारी मरियम से अपने जन्म के तीस वर्ष बाद और यूहन्ना से बपतिस्मा प्राप्त करने के पश्चात्, ने स्वयं को संसार के सामने प्रकट किया; अपने शिष्यों को इकट्ठा करके, उन्होंने परमेश्वर के राज्य के आगमन का उपदेश दिया, और साथ ही अनगिनत चमत्कार और चिह्न भी किए। मसीह की शिक्षा सुनकर और उनके चमत्कारों को देखकर, संत मत्ती उन पर प्रेम से भर गए: उन्होंने सांसारिक चिंताओं को त्याग दिया, और अन्य शिष्यों तथा लोगों के साथ मिलकर प्रभु का अनुसरण किया, मसीह के रूप में देहधारी ईश्वर के दर्शन और उनकी शिक्षा की अनुपम आनंद में आनंदित हुए। प्रभु, जिनके सामने मानव हृदय की गहरी भावनाएँ प्रकट होती हैं, ने संत मत्ती के उत्साह और हृदय की पवित्रता को देखकर, उन्हें न केवल अपने शिष्यों में से एक के रूप में चुना, बल्कि प्रेरितिक सेवा के लिए भी चुना। शुरुआत में, संत मत्ती को सत्तर छोटे प्रेरितों में गिना गया, जिनके बारे में सुसमाचार कहता है: *'प्रभु ने सत्तर अन्य (शिष्यों) को भी नियुक्त किया और उन्हें अपने से पहले दो-दो करके भेज दिया'* (लूका 10:1); लेकिन हमारे प्रभु यीशु मसीह के स्वैच्छिक दुःख-क्लेश, पुनरुत्थान और स्वर्ग में आरोहण के बाद, संत मत्ती को बारह प्रेरितों में शामिल किया गया। जुडास के बारह प्रेरितों की संख्या से चले जाने के बाद, चूंकि जुडास की जगह किसी को नहीं चुना गया था, इसलिए यह संख्या अपनी पूर्णता खो बैठी, और साथ ही बारह कहलाने का अधिकार भी खो गया; इसलिए, प्रेरितों के मुखिया, पहले ईसाइयों की सभा के बीच खड़े संत पतरस ने विश्वासियों को संबोधित करते हुए कहा कि गिर जाने और नष्ट हो जाने वाले यहूदा की जगह लेने के लिए , उन्हें उन लोगों में से किसी एक को चुनना चाहिए जो प्रभु यीशु के साथ रहने के पूरे समय में प्रेरितों के साथ थे, ताकि उनके द्वारा चुने गए बारह सबसे करीबी प्रेरितों का समूह पूरा और अपरिवर्तित बना रहे। *'तब उन्होंने दो मनुष्यों को प्रस्तुत किया: बरसब्स कहलाने वाले यूसुफ... और मत्तियास; और उन्होंने प्रार्थना करके कहा: "हे प्रभु, तू जो सब के हृदयों को जानता है, इन दोनों में से जिसको तू ने यहूदा के चले जाने के बाद इस सेवा और प्रेरितित्व का भाग लेने के लिए चुना है, वह हमें दिखा दे..." और उन्होंने उनके लिए पासा फेंका, और पासा मत्तियास पर पड़ा, और वह ग्यारह प्रेरितों में,* बारहवें के रूप में, *गिन लिया गया'* (प्रेरितों के काम 1:23-26)। इस चुनाव की पुष्टि जल्द ही प्रभु द्वारा आग की जीभों के रूप में पवित्र आत्मा के अवतरण से हुई: क्योंकि पवित्र आत्मा अन्य पवित्र प्रेरितों और संत मत्तीयास, दोनों पर अवतरित हुआ, और उसे वही अनुग्रह प्रदान किया जो प्रभु के शिष्यों को मिला था। पवित्र आत्मा के अवतरण के बाद, प्रेरितों ने यह निर्धारित करने के लिए पासा डाला कि उनमें से किसे सुसमाचार का प्रचार करने के लिए किस देश में जाना चाहिए; पंजी द्वारा, संत मत्ती को यहूदिया में भेजा गया, जहाँ उन्होंने नगर-नगर और गाँव-गाँव घूमकर मसीह यीशु के द्वारा संसार के उद्धार की शुभ-सूचना का प्रचार किया; वास्तव में, उन्होंने न केवल यहूदियों के बीच बल्कि अन्यजातियों के बीच भी मसीह के नाम का प्रचार किया। परंपरा यह मानती है कि संत मत्ती ने इथियोपिया के लोगों तक भी मसीह का सुसमाचार पहुँचाया[5503] और वहाँ उन्होंने कई तरह की यातनाएँ सहन कीं: उन्हें ज़मीन पर घसीटा गया, पीटा गया, एक खंभे से बाँधा गया, उनके पार्श्व लोहे से खुरचे गए और आग लगा दी गई; लेकिन, मसीह द्वारा बल पाए हुए, संत मत्ती ने इन यातनाओं को साहस और आनंद के साथ सहन किया। कुछ विवरणों के अनुसार, संत मत्ती ने मैसेडोनिया[5504] में भी सुसमाचार का प्रचार किया, जहाँ धर्महीन यूनानियों ने, पवित्र प्रेरित द्वारा प्रचारित शिक्षा की शक्ति का परीक्षण करने की इच्छा से, उन्हें पकड़ लिया और उन्हें एक ऐसा जहर पिलाने पर मजबूर किया जो व्यक्ति की दृष्टि छीन लेता था: जो कोई भी इसे पीता था, वह अंधा हो जाता था। लेकिन संत मत्ती ने मसीह के नाम पर जहर पीने के बाद भी उससे कोई हानि नहीं हुई; वास्तव में, उन्होंने उन लोगों को भी चंगा किया जो इससे अंधे हो गए थे—संख्या में दो सौ पचास से अधिक लोग—उन पर अपने हाथ रखकर और मसीह के नाम का आह्वान करके। शैतान, ऐसी अपमान सहन न कर सका, एक युवक के रूप में विधर्मी लोगों के सामने प्रकट हुआ और उन्हें मत्ती को मार डालने का आदेश दिया, क्योंकि वह राक्षसों की पूजा को नष्ट कर रहा था; लेकिन जब उन्होंने पवित्र प्रेरित को पकड़ने की कोशिश की, तो उन्हें तीन दिनों तक उसे खोजने के लिए मजबूर होना पड़ा: संत मत्ती, भले ही वे उनके बीच चल रहे थे, उनके लिए अदृश्य थे। तब पवित्र प्रेरित उन विधर्मी लोगों के सामने प्रकट हुए जो उन्हें ढूंढ रहे थे और स्वेच्छा से अपने आप को उनके हाथों में सौंप दिया; उन्होंने उन्हें बांधा और कैद कर दिया, जहाँ राक्षस क्रोध से अपने दाँत पीसते हुए उनके सामने प्रकट हुए, लेकिन अगली रात प्रभु एक महान प्रकाश में उनके

[5503] 'इथियोपिया' से तात्पर्य पोंटिक इथियोपिया या कोल्चिस, वर्तमान मिंग्रेलिया और इमेरेटी से है।

[5504] मैसिडोनिया बाल्कन प्रायद्वीप पर एक देश है, जो एजियन सागर के उत्तर-पश्चिमी कोने (थेस्सालोनिकी की खाड़ी) से सटा हुआ है।

सामने प्रकट हुए; उन्होंने संत मत्ती को प्रोत्साहित किया और उन्हें उनकी बेड़ियों से मुक्त कर दिया, जेल के दरवाजे खोल दिए और उन्हें आज़ाद कर दिया। जब दिन हुआ, तो प्रेरित फिर से लोगों के बीच खड़े हुए और पहले से भी अधिक धैर्य के साथ मसीह के नाम का प्रचार करने लगे; लेकिन जब कुछ लोग, जिनके हृदय कठोर हो गए थे, उनके उपदेश पर विश्वास करने से इनकार कर दिया और, अपने क्रोध में, उन्हें अपने हाथों से मारने की कोशिश करने लगे, तो अचानक पृथ्वी फट पड़ी और उन्हें निगल गई; जबकि बाकी लोग भयभीत हो गए, मसीह की ओर मुड़ गए और बपतिस्मा लिया।

इसके बाद, मसीह के प्रेरित अपने नियुक्त क्षेत्र—यहूदिया—में एक बार फिर लौट आए और उन्होंने इस्राएल के कई पुत्रों को प्रभु यीशु मसीह के प्रति परिवर्तित किया, उन्हें परमेश्वर का वचन प्रचार करते हुए और चिह्नों और अद्भुत कार्यों से इसकी पुष्टि करते हुए: मसीह के नाम पर, संत मत्ती ने अंधों को दृष्टि, बधिरों को सुनने की शक्ति और मरणासन्न लोगों को जीवन प्रदान किया; उन्होंने लंगड़ों को चंगा किया, कोढ़ियों को शुद्ध किया और दुष्टात्माओं को भगाया। मूसा को एक संत कहकर और लोगों से व्यवस्था का पालन करने का आग्रह करते हुए, जो उसे परमेश्वर द्वारा पट्टियों पर दिया गया था, संत मत्ती ने उसी समय लोगों को मसीह में विश्वास करना सिखाया, जो स्वयं मूसा द्वारा बताई गई निशानी और प्रतीकों में, भविष्यवक्ताओं द्वारा भविष्यवाणी किए गए, संसार के उद्धार के लिए परमपिता परमेश्वर द्वारा भेजे गए, और परम शुद्ध और निर्दोष कुँवारी से अवतार लिए हुए थे। ऐसा करते हुए, संत मत्ती ने मसीह के बारे में सभी भविष्यवाणियों की व्याख्या इस रूप में की कि वे आ चुके मसीहा में पहले ही पूरी हो चुकी थीं।

उस समय, यहूदी महापुजारी अनान था, जो मसीह से घृणा करता था और उनके नाम का अपमान करता था – वह मसीहियों का एक उत्पीड़क था जिसने आदेश दिया कि संत जेम्स, प्रेरित और परमेश्वर के भाई को एक चर्च की छत से फेंक दिया जाए, जिससे उसकी मृत्यु हो गई। और इस प्रकार, जब संत मत्ती गलील में यात्रा करते हुए स्थानीय यहूदी प्रार्थनालयों में परमेश्वर के पुत्र, मसीह का उपदेश दे रहे थे, तो यहूदियों ने—अविश्वास और दुर्भावना से अंधे और उग्र क्रोध से भरे हुए—पवित्र प्रेरित को पकड़ लिया और उसे उपरोक्त महापुजारी अनन्स के समक्ष यरूशलेम ले आए। मुख्य याजक ने सनेद्रिन को इकट्ठा करके और पवित्र प्रेरित को मुकदमे के लिए तलब करने के बाद, उस विवेकहीन भीड़ से ये शब्द कहे:

'सारी दुनिया और यह सभा भी जानती है कि हमारे लोगों ने अपने ऊपर क्या कलंक लगाया है; और यह हमारी अपनी गलती से नहीं, बल्कि हम में से कुछ व्यक्तियों के भ्रष्टाचार के कारण, और रोमन शासकों की अतृप्त लालच—या यूँ कहें कि अत्याचार—के कारण हुआ है; इन नए विधर्म के उकसाने वालों का उल्लेख भी नहीं करना चाहिए, जिन्होंने हमारे इतने हजारों लोगों को गुमराह किया है: आप स्वयं जानते हैं कि उनमें से कितने रोमन सैनिकों द्वारा मारे गए हैं; इस प्रकार धोखेबाज और धोखा खाए हुए दोनों ही नष्ट हो गए, और उन्होंने हमारे लोगों पर कलंक लगाया; ऐसे ही विधर्म के जनक थे: गलीलियाई यहूदा और जादूगर थूदास; उनके पतन के साथ, उनकी स्मृति तिक मिट गई। लेकिन ऐसे सभी विधर्मियों के बीच नासरत का विधर्म-प्रवर्तक यीशु उभरकर आया: उसने स्वयं को परमेश्वर का पुत्र और परमेश्वर कहा, और अपने जादुई चिह्नों और चमत्कारों से कई लोगों को चकित किया, हृदयों को अपनी ओर आकर्षित किया और व्यवस्था के उन्मूलन का प्रचार किया; जिसके लिए उसे उसी व्यवस्था के तहत मुकदमे का सामना करना पड़ा, जिसकी उसने निंदा की थी। और क्या कहा जा सकता है? क्या हम यह नहीं जानते कि व्यवस्था स्वयं परमेश्वर द्वारा मूसा को दी गई थी, कि यह कुलपतियों और भविष्यद्वक्ताओं द्वारा पालन की गई थी, जिन्हें परमेश्वर ने ऐसे चमत्कार करने की शक्ति दी थी जो यीशु नहीं कर सके: मूसा के बारे में कौन नहीं जानता, जिसने परमेश्वर से एक मनुष्य की तरह संवाद किया था? एलिय्याह के बारे में कौन नहीं जानता, जिसे आग की रथ में स्वर्ग में उठा लिया गया था? किसने यह नहीं सुना कि एलिशा की हड्डियों पर गिरा हुआ एक मृतक जीवित हो उठा था? और परमेश्वर के अन्य संतों ने कितने चमत्कार किए; फिर भी उनमें से किसी ने भी वह करने का साहस नहीं किया जो यीशु ने किया – परमेश्वर को मिलने वाला सम्मान अपने लिए लेना और एक नया विधान स्थापित करना; पवित्र आत्मा से प्रेरित भविष्यवक्ताओं ने नम्रता से बात की, जबकि उन्होंने घमंड से अपनी ही रची बातें कहीं और यहाँ तक कि मुख्य याजकों और राजकुमारों को तीखी फटकार सुनाई, और शास्त्रियों और फरीसियों को पाखंडी कहा; क्या किसी भविष्यवक्ता ने ऐसा कुछ किया? और अपने घमंड के कारण, उन्हें एक उपयुक्त अंत मिला, और उन्होंने अपने कर्मों का उचित दंड भुगता। काश कि उनकी स्मृति भी उनके साथ ही नष्ट हो जाती, और जो मर गया उसकी शिक्षाओं को किसी ने पुनर्जीवित न किया होता! यह विशेष रूप से दुखद है कि परमेश्वर का मंदिर, पवित्र शहर और हमारे पूर्वजों के कानून रोमनों द्वारा दासता में रखे गए हैं, और कोई भी दया दिखाने, सहानुभूति व्यक्त करने, या हमें मुक्त करने वाला नहीं है; हमें हमारी किसी गलती के बिना ही अदालतों में घसीटा जाता है, फिर भी हम इसे सहन करते हैं;

हमें धोखा दिया जाता है, फिर भी हम मौन सहमति दे देते हैं; हमसे लूटपाट की जाती है, फिर भी हम एक आवाज़ तक नहीं निकालते; और – सबसे दुखद बात यह है – गलील के लोग हमें रोमनों के हाथों में धोखा दे रहे हैं, निर्लज्जतापूर्वक हमें और हमारे लोगों पर यीशु की हत्या का आरोप लगा रहे हैं, मानो वह निर्दोष था। इन कुछ गलीलियों के मर जाने दो, बजाय इसके कि यह पवित्र स्थान और हमारा पूरा लोगों रोमनों द्वारा विनाश के अधीन हो जाए; दो बुराइयों में से – यदि दोनों से बचना असंभव है – एक को चुनना होगा, वह भी छोटी और अधिक सहनीय बुराई। और यीशु का यह चेला, जो अब हमारे सामने खड़ा है, मृत्यु का पात्र है; लेकिन पहले वह अपने मन में विचार करे – हम उसे विचार करने का समय नहीं छीन रहे, क्योंकि हम उसकी विनाश नहीं बल्कि सुधार की कामना करते हैं – और उसे दोनों में से एक चुनना चाहिए: या तो मूसा के द्वारा परमेश्वर से दिए गए कानून का पालन करे, और इस प्रकार अपना जीवन बचाए, या खुद को ईसाई कहे और मर जाए।

इसके उत्तर में, संत मत्ती ने अपने हाथ उठाकर कहा:

'हे पुरुषों और भाइयो! मैं उन आरोपों के बारे में लंबी बात नहीं करना चाहता जो आप मुझ पर लगाते हैं – मेरे लिए, "ईसाई" नाम कोई अपराध नहीं, बल्कि एक सम्मान है। क्योंकि प्रभु स्वयं भविष्यवक्ता के माध्यम से कहते हैं कि अंतिम दिनों में *वे "अपने सेवकों को एक नए नाम से पुकारेंगे"* (यशायाह 65:15)।

मुख्य याजक अनन ने आपत्ति जिताई:

'क्या यह अपराध नहीं है कि पवित्र व्यवस्था को तुच्छ समझा जाए, ईश्वर का सम्मान न किया जाए, और जादू-टोने की व्यर्थ कहानियाँ सुनी जाएँ?'

'यदि आप मेरी बात सुनें,' संत मत्ती ने उत्तर दिया, 'तो मैं आपको समझाऊंगा कि जिस शिक्षा का हम प्रचार करते हैं, वह किंवदंतियाँ या जादू-टोना नहीं, बल्कि स्वयं सत्य है, जिसकी विधि ने बहुत पहले से गवाही दी है।'

जब महापुजारी ने अपनी सहमति दे दी, तो संत मत्ती ने अपना मुख खोला और यीशु मसीह के बारे में पुराने नियम के प्रकारों और भविष्यवाणियों पर व्याख्या करना शुरू किया, कि कैसे परमेश्वर ने पुरखों अब्राहम से वादा किया था, इस्हाक और याकूब, कि उनके वंश से वह ऐसा मनुष्य उत्पन्न करेगा जिसके द्वारा पृथ्वी के सभी कुल आशीष पाएंगे—जैसा कि दाऊद भी भजन के वचनों में कहते हैं: *'उसमें [कुलों में] आशीष पाएंगे; सभी जातियां उसे धन्य कहेंगी'* (भजन संहिता 71:17) – जैसे जलते हुए झाड़ ने परम पवित्र कुँवारी से मसीह के अवतार का पूर्वाभास दिया था (निर्गमन 3:2), जिनके बारे में यशायाह ने भविष्यवाणी की थी: *'देखो, एक कुँवारी गर्भधारण करेगी और एक पुत्र को जन्म देगी, और वे उसका नाम इम्मानुएल रखेंगे'* (यशायाह 7:14), अर्थात्, 'ईश्वर हमारे साथ'। मूसा ने भी इसी प्रकार मसीह के विषय में स्पष्ट रूप से यह भविष्यवाणी की, कहते हुए: *'प्रभु तुम्हारा परमेश्वर तुम्हारे लिए, तुम्हारे भाइयों में से, मुझ-सा एक नबी उत्पन्न करेगा—तुम उसकी सुनना'* (व्यवस्थाविवरण 18:15)। उन्होंने एक डंडे पर साँप को उठाकर उद्धारकर्ता के स्वैच्छिक दुखों का भी पूर्वाभास दिया, जैसा कि यशायाह ने भी कहा: *'वधशाला को ले जाई जाने वाली भेड़ के मेमने के समान'* (यशायाह 53:7) और: *'उसे अपराधियों में गिना गया'* (यशायाह 53:12); भविष्यवक्ता योना, जो व्हेल की पेट से बिना चोट के निकले, तीसरे दिन प्रभु के पुनरुत्थान का पूर्वाभास थे।

यीशु मसीह के बारे में बात करने वाली पुराने नियम की पुस्तकों की इन लंबी व्याख्याओं ने अनन के क्रोध को भड़काया, इसलिए वह खुद को संभाल न सका और उसने संत मत्ती से कहा:

'क्या तुम इस तरह से व्यवस्था पर हमला करने की हिम्मत करते हो? क्या तुम धर्मग्रंथ के वचनों से परिचित नहीं हो: 'यदि तुम्हारे बीच कोई भविष्यवक्ता या स्वप्नद्रष्टा उठे और वह तुम्हें कोई चिह्न या आश्चर्य दिखाए, और वह चिह्न या आश्चर्य जो उसने तुम्हें बताया था, पूरा हो जाए, और वह कहे, *"आओ, हम अन्य देवताओं के पीछे चलें, जिन्हें तुम नहीं जानते, और उनकी सेवा करें"... 'क्या उस भविष्यवक्ता या उस स्वप्नद्रष्टा को मार डाला जाना चाहिए?'* (व्यवस्थाविवरण 13:1, 2, 5)।

संत मत्ती ने उत्तर दिया:

'जिसके बारे में मैं बात कर रहा हूँ, वह केवल एक पैगंबर नहीं, बल्कि पैगंबरों के प्रभु हैं; वह ईश्वर हैं, ईश्वर के पुत्र हैं, जैसा कि उनके सच्चे चमत्कार गवाही देते हैं; इसीलिए मैं उन पर विश्वास करता हूँ और उनके पवित्रतम नाम का प्रचार करते हुए दृढ़ रहने की आशा रखता हूँ।'

'अगर तुम्हें सोचने के लिए समय दिया जाए, तो क्या तुम पश्चाताप करोगे?' महायाजक ने पूछा।

पवत्रि प्रेरति ने उत्तर दयिा, 'जसि सत्य को मैं पहले ही पा चुका हूँ, उससे मुँह मोड़ना मुझसे दूर रहे। मैं पूरे हृदय से वशि्वास करता हूँ और खुले तौर पर स्वीकार करता हूँ कि नासरी यीशु, जसिे तुमने अस्वीकार कयिा और मृत्युदंड दयिा है, परमपति के समान स्वभाव का और सह-शाश्वत पुत्र है, और मैं उसका सेवक हूँ।'

तब महायाजक ने अपने कानों पर हाथ रखकर और दाँत पीसते हुए पुकारा:

'ईश्वर-नदिा! ईश्वर-नदिा! उसे कानून के सामने लाया जाए!'

तुरन्त व्यवस्था की पुस्तक खोली गई, और वह अंश पढ़ा गया जहाँ लखिा है: 'जो कोई अपने परमेश्वर की नन्दिा करता है, वह अपना पाप वहन करेगा, और जो यहोवा के नाम की नन्दिा करता है, उसे मरना ही चाहए; सारी मंडली उसे पत्थर से मार डाले; तुम्हारी आँख उस पर दया न करे, और इस प्रकार तुम इस्राएल के लोगों के बीच से बुराई को दूर करोगे' (देखें लेवी 24:15-16)।

यह अंश पढ़ने के बाद, महायाजक ने मसीह के प्रेरति से कहा:

'तुम्हारे ही शब्द तुम्हारे वरिुद्ध गवाही देते हैं; तुम्हारा लहू तुम्हारे ही सरि पर होगा।'

इसके बाद, महायाजक ने संत मत्तीयास को पत्थर मारने की सज़ा सुनाई; और प्रेरति को उनके नष्पिादन के लए ि ले जाया गया। जब वे बेथलास्कीला नामक स्थान पर पहुँचे, यानी पत्थर मारकर हत्या कए ि गए लोगों का घर, तो संत मत्तीयास ने उन्हें ले जा रहे यहूदयिों से कहा:

'कपटी लोगो, भवष्यिवक्ता दाऊद ने तुम जैसे लोगों के वषिय में ठीक कहा था: "वे *धर्मी की आत्मा पर भीड़ के रूप में टूट पड़ते हैं और नर्दिोष रक्त का दोषी ठहराते हैं*" (भजन संहति 93:21); भवष्यिवक्ता यहेजकेल भी ऐसे लोगों के बारे में कहते हैं, कि वे उन प्राणों को मार डालते हैं जन्हिें मरना नहीं चाहए ि (यहेजकेल 13:19)।

मसीह के प्रेरति के इन वचनों के बाद, दो गवाहों ने – जैसा कि कानून में लखिा है – उसके सरि पर हाथ रखकर गवाही दी कि उसने परमेश्वर, कानून और मूसा का अपमान कयिा है; वे ही पहले थे जन्हिोंने संत मत्तीयास पर पत्थर फेंके, जबकि उन्होंने नविेदन कयिा कि ये पहले दो पत्थर मसीह के लए ि उनके दुखों के गवाह के रूप में उनके साथ दफनाए जाएँ। तब बाकी लोग पत्थर चलाने लगे, उन्होंने पवत्रि प्रेरति पर पत्थर बरसाए, और उन्होंने अपने हाथ उठाकर प्रभु में अपना प्राण दे दयिा। हालाँकि, अधर्मी यहूदयिों ने यातना में उपहास भी जोड़ दयिा: शहीद की मृत्यु के बाद, रोमनों को खुश करने के लए, ि उन्होंने रोमन रीति के अनुसार तलवार से उसका सरि काट दयिा – मानो मसीह का प्रेरति सीज़र का दुश्मन हो। इस प्रकार, एक महान कार्य करके, पवत्रि प्रेरति मत्ती ने अपना जीवन-मार्ग पूरा कयिा। वशि्वासयिों ने प्रेरति के शरीर को लेकर, उसे सम्मान के साथ दफनाया, और हमारे प्रभु यीशु मसीह की स्तुति की; उसी को, पति और पवत्रि आत्मा के साथ, महमिा और सम्मान मलि, अब और हमेशा और युगानुयुग। आमीन[5505] .

कॉन्टाकयिन, स्वर 4:

हे चमत्कार-करने वाले प्रेरति मत्ती, सूर्य के समान तेजस्वी, जो संपूर्ण संसार में प्रकाशति होता है, आपका उपदेश अनुग्रह से मूर्तपिूजक चर्च को प्रबुद्ध करता है।

शहीद संत एंथनी का कष्टकथा

9 अगस्त को स्मरण कयिा जाता है

संत एंथनी शहीद अलेक्जेंड्रयिा शहर के नविासी थे[5506] ; उन्होंने मसीह में वशि्वास कयिा और ईश्वर-भयभीत जीवन जयिा। उन्हें पकड़ लयिा गया और शहर के राज्यपाल के सामने पेश कयिा गया। अपनी पूछताछ के दौरान, उन्होंने खुद को एक ईसाई घोषति कयिा और साहसपूर्वक मसीह को सच्चे ईश्वर के रूप में प्रचार करना शुरू कर दयिा। इसके

[5505] ग्रीक मेनोलॉजी के अनुसार, कहा जाता है कि सेंट मैथ्यू की मृत्यु क्रूस पर हुई थी। सेंट मैथ्यू का सरि 1200 में कॉन्स्टेंटनिोपल में होली अपोस्टल्स चर्च में था, जैसा कि हमारे रूसी तीर्थयात्री एंथनी ने प्रमाणति कयिा है। अब सरि और अवशेषों का एक हस्सिा रोम में प्रदर्शति है, जबकि एक अन्य हस्सिा ट्रायर और पावयिा में है।

[5506] अलेक्जेंड्रयिा शहर मस्रि में भूमध्य सागर के तट पर स्थति था।

लिए, उसे एक पेड़ से लटका दिया गया, और उसके शरीर की खाल लोहे के औजारों से उधेड़ दी गई; फिर भी उसने मसीह का त्याग नहीं किया और अपने यातना देने वालों का विरोध किया, धैर्यपूर्वक अपनी पीड़ा सहते हुए, जिसके बाद उसे खंभे पर जलाने की सजा सुनाई गई। चिता पर खड़े होकर, उन्होंने इकट्ठे लोगों से इस प्रकार कहा:

'मेरे प्रिय भाइयो! शरीर की इतनी सेवा न करो, बल्कि आत्मा की करो। याद रखो कि यह तुम्हें परमेश्वर द्वारा दी गई है और यह तर्कशील दैवीय शक्तियों के समान है[5507] , और इसका ध्यान रखो कि इसे प्रभु के सामने शुद्ध अवस्था में प्रस्तुत करो।'

पवित्र शहीद की मृत्यु के बाद[5508] , उनका शरीर पूरी तरह से अक्षुण्ण पाया गया।

पवित्र शहीदों जूलियन, मार्शियन और अन्य लोगों की स्मृति, जिन्होंने आइकनों के लिए उनके साथ कष्ट सहे।

9 अगस्त को स्मरणोत्सव

जब लियो द इसौरियन[5509] , जिनका उपनाम कोनोन था, जो उस दानव के समान नाम वाले थे, ग्रीक साम्राज्य के सिंहासन पर बैठे, तो उन्होंने परमेश्वर की कलीसिया के विरुद्ध एक उत्पीड़न शुरू किया, और उसमें एक नया प्रतिमा-विरोधी विधर्म भड़काया, जिसके अनुसार पवित्र प्रतिमाओं को मूर्तियाँ माना जाता था, और जो लोग भक्तिपूर्वक उनकी आराधना करते थे, उन्हें मूर्ति-पूजक कहा जाता था। लियो इसुरियन ने आदेश दिया कि पवित्र प्रतिमाओं को चर्चों, घरों और आवासों से बाहर फेंक दिया जाए, और उन्हें आग या पानी में फेंककर नष्ट कर दिया जाए; जो लोग उनके विधर्मी भ्रम में विश्वास नहीं करते थे, उन्हें या तो राज्य की सबसे दूर की जगहों पर निर्वासित कर दिया गया या उन्हें विभिन्न यातनाओं से पीड़ा दी गई और यहां तक कि उन्हें मौत के घाट भी उतार दिया गया। अपने उत्पीड़न की शुरुआत में, उसने कॉन्स्टेंटिनोपल के परम पवित्र पैट्रिआर्क, जर्मनस[5510] को अपमानित करके और पीट-पीटकर पदच्युत कर दिया, क्योंकि उन्होंने उसके फरमानों का विरोध किया था; पदच्युत पैट्रिआर्क की जगह, संप्रदायिक अनास्तासियस[5511] को स्थापित किया गया, जो राजा की विचारधारा से सहमत था। उस समय, कई धर्मनिष्ठ ईसाई इस विधर्म के खिलाफ उठ खड़े हुए, जिसके लिए उन्हें शहीद का ताज मिला, ठीक वैसे ही जैसे उन लोगों को मिला जिनके बारे में हम अब बात करने जा रहे हैं। उनका दुःख इस कारण से शुरू हुआ। कॉन्स्टेंटिनोपल में, कॉन्स्टेंटिन महान के समय से, एक द्वार था जिसे 'तांबे का द्वार' के नाम से जाना जाता था; और लंबे समय तक इन द्वारों के ऊपर उद्धारकर्ता की एक मूर्ति, जो कांस्य की बनी थी, खड़ी रही। अधर्मी सम्राट और पादरी ने इस मूर्ति को हटाने का आदेश दिया; एक सीढ़ी लगाई गई, और सैनिकों में से एक, एक स्पैथारियोस, उस पर चढ़ने लगा; इससे द्वारों पर इकट्ठी हुई विशाल भीड़ में धर्मपरायण आक्रोश उत्पन्न हो गया; उनमें से कुछ ने सीढ़ी पकड़ ली और उस पर खड़े सैनिक सहित उसे ज़मीन पर फेंक दिया, जिससे उस सैनिक की मृत्यु हो गई। लोगों द्वारा इस कृत्य के बारे में जानने पर, राजा ने ऑर्थोडॉक्स के खिलाफ खींची हुई तलवारों के साथ सैनिक भेजे, जिन्होंने पुरुषों और महिलाओं, बूढ़ों और जवानों की एक बड़ी संख्या को मार डाला; उनकी संख्या केवल प्रभु ही जानते हैं। भीड़ में सबसे प्रतिष्ठित, प्रतिमाओं के पूजक, जीवित पकड़े गए; उनके नाम इस प्रकार थे: जूलियन, मार्शियन, जॉन, जेम्स, एलेक्सियस, डेमेट्रियस, फोकास, पीटर और लियोन्टियस। एक क्रूर कोड़े मारने के बाद, उन्हें एक कालकोठरी में डाल दिया गया, जहाँ वे अस्सी दिनों तक बेड़ियों में जकड़े रहे, और निर्दयी पिटाई सहते रहे: उनमें से प्रत्येक को प्रतिदिन पाँच सौ प्रहार किए जाते थे। लेकिन मसीह की शक्ति से मजबूत होकर, पवित्र शहीदों ने यह सब बहादुरी से सहन किया, अपनी शारीरिक शक्ति खोए बिना; यह देखकर, यातना देने वाले ने आदेश दिया कि पहले उनके चेहरों को लाल-गरम लोहे से झुलसा दिया जाए, और फिर उन्हें चौक में ले जाकर तलवार से मौत की सज़ा दी जाए। इस प्रकार संतों ने अपने दुखों को समाप्त किया। उनके साथ, मारिया नाम की एक कुलीन महिला , पेट्रिसिया को प्रतिमाओं

[5507] यहाँ 'दिव्य शक्तियों' से हमारा तात्पर्य स्वर्गदूतों से है।

[5508] पवित्र शहीद एंथनी की मृत्यु की तारीख अज्ञात है।

[5509] लियो तृतीय इसाउरियन – सम्राट 716–741।

[5510] संत हरमन – 715 से 730 तक कॉन्स्टेंटिनोपल के पैट्रिआर्क।

[5511] 730 से 754 तक पैट्रिआर्क।

के प्रति उनकी भक्तिपूर्ण श्रद्धा के लिए सिर कलम कर दिया गया। पवित्र शहीदों के शरीरों को समुद्र की गहराई में फेंक दिया गया। जब पवित्र शहीदों को गिरफ्तार किया गया, तो एक नन, पूजनीय थियोडोसिया को भी उनके साथ ले जाया गया, उस पर भी उसी अपराध का आरोप लगाया गया था – उसने दूसरों के साथ मिलकर सीढ़ी को पलटने में भाग लिया था। पूजनीय थियोडोसिया ने उपर्युक्त संतों से पहले शहीद का मुकुट प्राप्त किया; उनकी स्मृति मई के उन्नीसवें दिन मनाई जाती है; उनका जीवन भी इसी तिथि के अंतर्गत दर्ज है।

उद्धारकर्ता की सम्मानित प्रतिमा के लिए पीड़ा सहने वाले सभी पवित्र शहीद एक साथ हमारे प्रभु, हमारे परमेश्वर, मसीह के सामने उपस्थित हुए हैं; उसकी महिमा युगानुयुग होती रहे। आमीन[5512] .

23 अगस्त

10 अगस्त (पुराना कैलेंडर)

उसी दिन, 1515 में, ख्रीस्त के लिए पवित्र मूर्ख, कलूगा के धन्य लॉरेंस का निधन हुआ।

पवित्र शहीदों आर्चडीकन लॉरेंस, पोप सिक्सटस और उनके साथियों का कष्टकथा

10 अगस्त को स्मरणोत्सव

रोम के पोप संत सिक्सटस[5513] को उनके पुरोहितों के साथ गिरफ्तार कर रोमन गवर्नर वैलेरियन ने सार्वजनिक जेल में बंद कर दिया था, यह उस समय की बात है जब सम्राट डेसियस[5514] फारसियों पर अपनी विजय के बाद विजयी होकर रोम लौट रहे थे[5515] । संत सिक्सटस का जन्म ग्रीक शहर एथेंस में हुआ था; वह पहले एक दार्शनिक थे और फिर मसीह के शिष्य बने। जब वह रोम आए, तो एक बुद्धिमान और धार्मिक व्यक्ति के रूप में, उन्होंने मसीह के चर्च के एक अत्यंत उपयोगी सदस्य के रूप में खुद को साबित किया; यहाँ, अधिक या कम समय की अवधि में, वह पदानुक्रम के विभिन्न पदों पर पदोन्नत हुए। मसीह की स्वीकारोक्ति के लिए पोप सेंट स्टीफन की हत्या के बाद, पोप[5516] , सेंट सिक्सटस को उनके पद पर पदोन्नत किया गया, मानो निश्चित मृत्यु की ओर: उस समय, कोई भी पोप ऐसा नहीं था जो पीड़ा के प्याले से बच निकला हो। जब संत पोप सिक्सटस पुरोहितों और अन्य ईसाइयों के साथ जेल में थे, तब दो फारसी राजकुमार, अवदोन और सेनिस, को रोम में मसीह के लिए यातना दी जा रही थी: डेसियस उन्हें कैदियों के रूप में हथकड़ी में बांधकर अपने साथ लाया था। उनकी शहादत के बाद[5517] , राजा डेसियस और वैलेरियन ने आदेश दिया कि संत पोप सिक्सटस को रात में टेलुडा नामक मंदिर में उनके पास लाया जाए। जब संदेशवाहक पोप को उनके कालकोठरी से लेने आए, तो उन्होंने उन ईसाइयों से कहा जो उनकी बेड़ियों में बँधे हुए थे:

[5512] संतों के कृत्यों (Acts of the Saints) में शामिल इन शहीदों के विवरणों से यह स्पष्ट है: 1) कि कुलीन कुल की मारिया पैट्रिसिया ने उस सैनिक की हत्या में मुख्य भूमिका निभाई, जिसने राजा के आदेश पर कांस्य द्वार से उद्धारकर्ता की प्रतिमा को गिराने का प्रयास किया था; 2) कि सैनिक को उखाड़ फेंकने में मारिया की मुख्य सहायक प्रोटोस्पैथारियोस सेंट ग्रेगरी थे, जिन्होंने अपने इस कार्य के लिए शहादत प्राप्त की; 3) कि यह घटना 19 जनवरी को हुई थी; 4) कि शहीद फोकास को अधिकांश स्रोतों में फोटियस के रूप में संदर्भित किया गया है। – 9 अगस्त 730 को उनकी मृत्यु के बाद, शहीदों को कॉन्स्टेंटिनोपल के 'पेलाजियन्स' जिले में, सेंट थियोडोरस द मार्टायर के चर्च के पास दफनाया गया। उनके पवित्र अवशेष 139 वर्षों तक जमीन में पड़े रहने के बाद भी अपरिवर्तित पाए गए। उनकी अवशेषों की खोज इग्नेशियस के पैट्रिआर्केट के दौरान हुई, जब उन्हें सोते समय तीन बार एक प्रकटवाणी हुई।

[5513] नाम सिक्सटस, या कुछ के अनुसार ज़िस्टस, **xystos** – 'समतल', 'चमकाया हुआ' – या **xyston** – 'भाला' से लिया गया है; अन्य लोग इसे लैटिन *sisto* – 'मजबूती से खड़ा होना', 'मजबूती से स्थापित' से व्युत्पन्न करते हैं।

[5514] डेसियस – 249 से 251 तक सम्राट।

[5515] रोम – रोमन साम्राज्य की राजधानी, जो मध्य इटली में स्थित है।

[5516] उनका पर्व दिवस 2 अगस्त है।

[5517] उनका पर्व दिवस 30 जुलाई है।

– हे मेरे भाइयो और बहनो, क्षणकि कष्ट से न डरो, यह याद करते हुए कि हमारे से पहले के संतों ने अनंत जीवन का मुकुट प्राप्त करने के लिए कितनी बड़ी विपत्तियाँ सहन कीं; मसीह स्वयं हमारे उद्धार के लिए कष्ट सहन कर गए, और हमारे अनुसरण के लिए एक उदाहरण छोड़ गए (देखें 1 पतरस 2:21) – मसीह के लिए कष्ट सहन करने से न डरें, ताकि आप उनके साथ राज्य कर सकें। पोप के साथ दो डिकन, फेलिसिसिमिस और अगापिटस, को भी ले जाया गया; उन्हें डेसियस और वेलेरियन के सामने पेश किया गया।

'क्या आप जानते हैं,' डेसियस ने पोप से पूछा, 'आपको हमारे सामने क्यों लाया गया है?'

'मैं इस बात से अच्छी तरह वाकिफ हूँ,' पोप ने उत्तर दिया।

सम्राट ने कहा, 'अगर आप जानते हैं, तो फिर दूसरों की तरह करें जो आपके पद पर हैं: इस तरह आप अपनी जान बचा लेंगे और अपने पुरोहितों की संख्या बढ़ा लेंगे।'

'निस्संदेह,' पोप ने पुष्टि की, 'मैं लगातार पुरोहितों की संख्या बढ़ाने के लिए चिंतित रहता हूँ।'

'तो देवताओं को बलिदान चढ़ाओ, और तुम्हें सभी पुरोहितों पर अधिकार दे दिया जाएगा,' राजा ने सुझाव दिया।

संत सिक्सटस ने इसका विरोध किया:

'मैं हमेशा सर्वशक्तिमान परमपिता परमेश्वर, उनके पुत्र, हमारे प्रभु यीशु मसीह, और पवित्र आत्मा को एक शुद्ध और निर्दोष बलिदान अर्पित करता हूँ।'

'हम तुम्हारी वृद्धावस्था के कारण तुम्हें क्षमा कर रहे हैं,' राजा ने पोप से कहना जारी रखा, 'इसलिए अपनी और अपने पुरोहितों की दया करो, और उन्हें मृत्यु से बचाओ।'

'अब तक,' संत सिक्सटस ने उत्तर दिया, 'मैंने अपनी और अपने पुरोहितों दोनों का ध्यान रखा है, और रखना जारी रखता हूँ, ताकि मैं उन्हें स्वयं के साथ बचा सकूँ और उन्हें अनंत मृत्यु से मुक्त कर सकूँ।'

'इसे ले जाओ,' डेसियस ने सैनिकों को आदेश दिया, 'मार्स के मंदिर में, और वहाँ एक बलिदान चढ़वाओ; यदि वह ऐसा नहीं करता है, तो उसे एक विशेष काल-कोठरी, मामेर्टिन में बंद कर दो।'

पवित्र पोप को, डिकनों के साथ, मार्स के मंदिर ले जाया गया, जहाँ उन्होंने उन्हें बलिदान चढ़ाने के लिए आग्रह करना शुरू कर दिया; लेकिन उन्होंने सैनिकों से कहा:

'हे लोगों, जो शैतान द्वारा अंधा कर दिए गए हो और दया के पात्र हो: आप मूक और बधिर मूर्तियों की पूजा क्यों करते हैं, जो न तो स्वयं की और न ही दूसरों की कोई मदद कर सकती हैं? मेरी बात सुनो, मेरे बच्चों, पश्चाताप करो, और इस प्रकार अपनी आत्माओं को शाश्वत यातना से मुक्त करो।'

लेकिन उन्होंने, राजा की आज्ञा का पालन करते हुए, पोप और डिकनों को मामर्टिनिस के कालकोठरी में ले गए।

पवित्र महादीकन[5518] लॉरेंस, यह देखकर कि पोप को जेल ले जाया जा रहा था, उन्होंने उन्हें संबोधित करते हुए पुकारा:

'हे मेरे पिता, आप अपने पुत्र के बिना कहाँ जा रहे हैं? हे पवित्र बिशप, आप अपने आर्चडीकन के बिना कहाँ जल्दी में हैं? आपने कभी भी मेरी सहायता के बिना रक्तहीन बलिदान नहीं किया है: तो फिर, मैंने अब आपकी दया को कैसे ठेस पहुँचाई है? क्या मैं अब आपके साथ रहने के योग्य नहीं रहा? क्या आप मुझे उस सेवक के रूप में नहीं पहचानते जो हमेशा आपके प्रति आज्ञाकारी रहा है? और यदि मैंने दिव्य रहस्यों के उत्सव में आपके साथ भाग लिया है, तो मैं मसीह के लिए अपना रक्त बहाने में आपके साथ क्यों न भाग लूँ? तब ले चलो, हे पिता, अपने पुत्र को अपने साथ; न छोड़ो, हे गुरु, अपने शिष्य को; मुझे ईश्वर को बलिदान के रूप में अर्पित करो, जैसे अब्राहम ने अपने पुत्र इसहाक को अर्पित किया था (उत्पत्ति, अध्याय 22) और जैसा कि प्रमुख प्रेरित पतरस ने पहले आर्चडीकन स्तेफन के साथ किया था (प्रेरितों के काम, अध्याय 6-7); और फिर, जब आप मुझे शहीद का मुकुट प्राप्त करते देखें, तो आप स्वयं भी ऐसा ही करें।

संत सिक्सटस ने उनसे उत्तर दिया:

मैं तुम्हें नहीं छोड़ रहा, मेरे पुत्र, बल्कि तुम्हें और भी बड़े कष्टों के लिए सुरक्षित रख रहा हूँ: मसीह में विश्वास के महान कार्य तुम्हारा इंतज़ार कर रहे हैं। मैं पहले से ही बूढ़ा हूँ और इसलिए एक हल्के संघर्ष के लिए जा रहा हूँ; लेकिन तुम्हें एक अधिक गौरवशाली विजय प्राप्त करनी है और अपने यातनाकर्ता पर विजय प्राप्त करनी है। रोओ मत: जान

[5518] उस समय, एक आर्चडीकन के कर्तव्यों में न केवल चर्च की सेवा, बल्कि चर्च की संपत्ति का प्रबंधन, गरीबों को सहायता प्रदान करना और बेघरों की देखभाल करना भी शामिल था।

लो कि मेरी मृत्यु के तीन दिन बाद, तुम, एक लेवी, अपने पुरोहित का अनुसरण करोगे; तुम्हें अपना सहारा बनाए रखने के लिए मेरी उपस्थिति की आवश्यकता नहीं है। एलिया ने एलीशा को छोड़ दिया, लेकिन उसे उसकी चमत्कारी शक्ति से वंचित नहीं किया (2 राजा 2)। जाओ, इस समय का भरपूर उपयोग करो: चर्च के खजाने को गरीबों और ज़रूरतमंदों में अपनी समझ से बाँट दो। संत लॉरेंस ने आज्ञा मानी: चर्च के सभी खजाने, पवित्र पात्रों सहित, लेकर वह शहर में घूमने लगा, छिपे रहे पुरोहितों और बेसहारा ईसाइयों को ढूँढ़कर उनकी ज़रूरतों के अनुसार उनकी मदद करने लगा। इस प्रकार वह माउंट हेलेन पर पहुँचा, जहाँ उसे एक विधवा का घर मिला, जिसके पति की मृत्यु बत्तीस साल पहले हो गई थी; यह विधवा, जिसका नाम क्रिस्टियाकिया था, कई ईसाइयों को उनके पुरोहितों और पादरियों के साथ आश्रय दे रही थी। संत लॉरेंस रात के समय वहाँ चाँदी, कपड़े और अन्य आवश्यक वस्तुएँ लाए और पुरोहितों तथा अन्य ईसाइयों दोनों के पैर धोने लगे। विधवा क्यरियाकिया, उनके पैरों पर झुककर, बोली:

'मैं आपसे विनती करती हूँ, हे मसीह के सेवक, अपने हाथ मेरे सिर पर रखिए, क्योंकि यह बहुत ज़ोर से दर्द कर रहा है।'

संत लॉरेंस ने उन्हें वह तौलिया दे दिया जिससे वे अपने पैर पोंछ रहे थे, क्रॉस का चिह्न बनाते हुए उन्होंने उनके सिर पर हाथ रखा और कहा:

'हमारे प्रभु यीशु मसीह के नाम पर, भली हो जाओ!'

और तुरंत ही विधवा अपनी बीमारी से ठीक हो गई। उसी रात, संत लॉरेंस शहर के कैनरी नामक जिले में गए, और वहाँ, नार्कसिस नामक एक ईसाई के घर में, वे कई ईसाइयों से मिले; उन्होंने उनके पैर भी धोए, और उनकी ज़रूरतों को पूरा करने के लिए चर्च के कुछ खजाने बाँटे। वहाँ एक अंधा ईसाई था: वह रोते हुए संत की ओर मुड़ा और कहा:

'मेरी आँखों पर अपना हाथ रखो, ताकि मैं तुम्हारा चेहरा देख सकूँ।'

संत लॉरेंस ने कहा:

'हमारे प्रभु यीशु मसीह, जिन्होंने अंधों की आँखें खोल दीं, आपको ज्ञान प्रदान करें!'

इन शब्दों के साथ, उन्होंने अंधे आदमी की आँखों पर क्रॉस का चिह्न बनाया; उस आदमी ने तुरंत अपनी दृष्टि वापस पा ली और संत लॉरेंस का चेहरा देखकर प्रसन्न हुआ। इस स्थान को छोड़ते समय, संत को पता चला कि कई ईसाई नेपोशियन गुफाओं में छिपे हुए थे; वह उनकी जरूरतों के लिए कुछ चाँदी अपने साथ लेकर उनके पास गए। वहाँ उन्हें तेरह (73) ईसाई मिले, जिनमें पुरुष और महिलाएँ दोनों शामिल थे; संत जस्टिन द प्रेस्बिटिर भी मौजूद थे; ईसाइयों के पैर धोने और अपना आखिरी पैसा बाँटने के बाद, संत लॉरेंस ने विदाई ली। यह सुनकर कि पोप सिक्सस को दो डिकन के साथ टेल्लुडा के मंदिर में मुकदमे के लिए ले जाया गया था, संत लॉरेंस यह देखने की इच्छा से वहाँ जल्दी पहुँचे कि क्या होगा।

जब पोप डेसियस और वैलेरियन के सामने न्यायालय में उपस्थित हुए, तो सम्राट ने उनसे कहा:

'तुम्हारी वृद्धावस्था पर तरस खाकर, हम तुम्हारे भले की कामना करते हैं – हमारी बात मानो और देवताओं को बलिदान चढ़ाओ।'

'इसके बजाय खुद पर दया करो,' संत सिक्सटस ने उत्तर दिया, 'और स्वर्गीय ईश्वर का अपमान मत करो; संतों के रक्तपात पर पश्चाताप करो, कहीं तुम सर्वनाश न हो जाओ।'

ये शब्द सुनते ही डेसियस क्रोध से आग-बबूला हो गया और उसने वैलेरियन से कहा:

'यदि उसे मौत की सज़ा नहीं दी गई, तो कोई भी अधिकारियों की आज्ञा नहीं मानेगा और न ही उनके आदेशों पर ध्यान देगा।'

'उसे मौत की सज़ा दो!' वैलेरियन ने उत्तर दिया।

तब डिकन्स ने यातना देने वालों को संबोधित करते हुए पुकारा:

'ओह, काश तुम, अयोग्यों, हमारे पिता की उपदेशों पर ध्यान देते; ऐसा करने से, तुम उन शाश्वत यातनाओं से बच जाते जो तुम्हारा इंतज़ार कर रही हैं!'

वेलेरियन ने कहा, 'और कितनी देर तक वे जीवित रहकर हमें यातनाओं की धमकी देते रहेंगे?! उन्हें मार्स के मंदिर ले जाओ – उन्हें बलिदान चढ़ाने दो; और अगर वे ऐसा करने से इनकार करें, तो उनके सिर काट दो।'

मार्स का मंदिर शहर की दीवारों के बाहर, एपियन गेट के सामने स्थित था। जब संतों को वहाँ लाया गया, तो संत सिक्सटस ने मंदिर को निहारते हुए घोषणा की:

'जीवित ईश्वर के पुत्र मसीह तुम्हें कुचल डालें!'

मौजूद ईसाइयों ने 'आमीन!' कहा ही था कि एक भूकंप आ गया; मंदिर का एक हिस्सा ढह गया और उसमें रखी मूर्तियाँ चकनाचूर हो गईं। तब संत लॉरेंस ने पवित्र पिता से पुकारा:

'मुझे अकेला न छोड़िए, मेरे पिता; मैंने वह खज़ाना जो आपने मुझे सौंपा था, पहले ही बाँट दिया है!'

खजाने के बारे में सुनकर, सैनिकों ने संत लॉरेंस को पकड़ लिया और उसे जाने नहीं दिया, जबकि पवित्र पोप और डिकन्स को मंदिर के सामने टीले पर मार डाला गया, और उनके शवों को बिना दफनाए छोड़ दिया गया। जब रात हुई, तो पुरोहितगण, डिकन और अन्य ईसाइयों के साथ आए और उन पवित्र देहों को ले गए: पोप को कैलिक्सटस की क्रिप्ट के भीतर एक मकबरे में सुलाया गया, और डिकनों को प्रेटेक्स्टाटस की क्रिप्ट में। पोप संत सिक्स्टस और उनके डिकन, फेलिसिसिमिस और अगापिटस ने[5519] के अगस्त महीने के छठे दिन मसीह के लिए शहीद होकर अपनी जान दे दी। संत सिक्स्टस की हत्या के बाद, सैनिकों ने संत लॉरेंस को सम्राट के सामने पेश किया और उससे कहा:

'हमने आर्चडीकन सिक्स्टस को पकड़ लिया है: उसने बिशप से एक खजाना प्राप्त किया था और उसे कहीं छिपा दिया था।'

खज़ाने के बारे में सुनकर राजा अत्यंत प्रसन्न हुआ और उसने सेंट लॉरेंस को अपने पास बुलाकर कहा:

'वे चर्च के खजाने कहाँ हैं जिन्हें तुमने छिपाया है?'

संत लॉरेंस ने कोई उत्तर नहीं दिया।

तब डिसियस ने उसे एपार्क वैलेरियन के हवाले कर दिया, यह कहते हुए:

'उससे चर्च के खजाने के बारे में पता लगाओ और उसे देवताओं की पूजा करने के लिए मजबूर करो: लेकिन अगर वह खजाने का खुलासा नहीं करता है या देवताओं की पूजा नहीं करता है, तो उसे यातनाओं में मरने दो!'

वेलेरियन, संत लॉरेंस को लेकर, उन्हें सैन्य कमांडर हिप्पोलीटस—जो उस समय जेलर भी थे—के हवाले जेल में बंद करने के लिए कर दिया। हिप्पोलीटस ने संत लॉरेंस को एक कालकोठरी में बंद कर दिया जहाँ पहले से ही अन्य कैदी बंद थे; उनमें लूसिलियस नाम का एक ग्रीक था: वह बहुत लंबे समय से कैद में था और लगातार रोने से अंधा हो गया था।

संत लॉरेंस ने उससे कहा, 'ईश्वर के पुत्र, हमारे प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास करो और बपतिस्मा लो: वह तुम्हारी दृष्टि वापस कर देगा।'

अंधे ने उत्तर दिया, 'मैं बहुत समय से मसीह के नाम पर बपतिस्मा लेने की इच्छा रखता हूँ।'

"क्या तुम पूरे दिल से विश्वास करते हो?" संत लॉरेंस ने पूछा।

अंधा आदमी रोते हुए बोला:

'मैं प्रभु यीशु मसीह में विश्वास करता हूँ; मैं व्यर्थ मूर्तियों का त्याग करता हूँ और उनसे घृणा करता हूँ।'

हिप्पोलीटस ने धैर्यपूर्वक संत लॉरेंस और अंधे आदमी के बीच की बातचीत सुनी, यह देखने की इच्छा रखते हुए कि क्या वास्तव में अंधे आदमी की आँखें खुलेंगी और यह चमत्कारिक घटना कैसे घटित होगी। संत लॉरेंस ने लुसिलियस को उपदेश देकर और जल को पवित्र करके, उसे बपतिस्मा दिया; और तुरंत ही अंधे आदमी की आँखें खुल गईं, और वह ऊँचे स्वर में चिल्ला उठा:

'धन्य है प्रभु यीशु मसीह, अनन्त परमेश्वर, जिन्होंने मुझे दृष्टि प्रदान की है!'

अन्य अंधे लोगों ने इस चमत्कार के बारे में सुना और वे संत लॉरेंस की जेल की कोठरी में आने लगे। और उन्होंने, क्रॉस का चिह्न बनाते हुए और मसीह के नाम का स्मरण करते हुए, उनके नेत्रों पर अपना हाथ रखकर उनकी दृष्टि लौटा दी। यह सब देखकर हिप्पोलीटस के मन में अनायास ही आश्चर्य की भावना जागृत हुई। कुछ समय बाद, उन्होंने संत से कहा:

'मुझे चर्च के खजाने दिखाइए।'

'यदि तुम विश्वास करते हो,' संत लॉरेंस ने उत्तर दिया, 'सर्वशक्तिमान ईश्वर पिता और उनके पुत्र, हमारे प्रभु यीशु मसीह में, तो खजाना तुम्हारे सामने प्रकट हो जाएगा और तुम्हें अनंत जीवन प्रदान किया जाएगा।'

[5519] वर्ष 258 में। सेंट सिक्सटस की शहादत और एक शहीद के रूप में उनकी पूजा का सबसे पहला प्रमाण सेंट साइप्रियन द्वारा सुक्सेसस को लिखे एक पत्र में मिलता है (जो 80 के दशक या 82 का है); सेंट साइप्रियन ने सिक्सटस के साढ़े पाँच सप्ताह बाद (14 सितंबर) शहादत प्राप्त की। संत सिक्स्टस रोम के बिशप केवल 11 महीने से कुछ अधिक समय तक, या एक पूरे वर्ष से भी कम समय तक रहे। पोप, संत सिक्स्टस द्वितीय के अवशेष रोम में उनके नाम पर बने चर्च में रखे गए हैं; शहीदों फेलिसिसिमिस और अगापिटस के अवशेष भी रोम में, 'चर्च ऑफ अवर लेडी ऑफ मर्सी' में हैं।

हप्पिोलीटस ने कहा, "यदि जो आप कह रहे हैं वह सच हो गया, तो मैं आपकी हर आज्ञा का पालन करूँगा।"

संत लॉरेंस ने कहना जारी रखा, "मेरी बात सुनो, और मेरी सलाह पर बिना देरी किए अमल करो: बधिरि और मूक मूर्तियों का त्याग करो और बपतिस्मा ग्रहण करो।"

हप्पिोलीटस मान गया और सेंट लॉरेंस को जेल से अपने घर ले गया। हप्पिोलीटस को पवित्र विश्वास में शिक्षित करने और उसकी धर्मशिक्षा करने के बाद, सेंट लॉरेंस ने उस पर बपतिस्मा का संस्कार किया।

बपतिस्मा के बाद हप्पिोलीटस ने कहा, 'मैंने पाप रहित आत्माओं को महान आनंद में देखा है।' (ये ठीक वही खजाने थे जिनके बारे में संत लॉरेंस ने भविष्यवाणी की थी कि वे उसे प्रकट होंगे: बपतिस्मा के दौरान, प्रभु ने उसे एक अद्भुत दर्शन में स्वर्गीय आशीर्वाद दिखाई।)

तब हप्पिोलीटस ने संत लॉरेंस से विनती की, 'प्रभु यीशु मसीह के नाम पर, मेरे पूरे परिवार का बपतिस्मा दीजिए।'

और संत लॉरेंस ने हप्पिोलीटस के घर में उन्नीस लोगों, पुरुषों और महिलाओं, को बपतिस्मा दिया। उसी क्षण, हप्पिोलीटस को संत लॉरेंस को वैलेरियन के पास ले जाने का आदेश मिला। हप्पिोलीटस ने यह बात संत लॉरेंस को बताई, और उन्होंने कहा:

'चलो; शहादत का ताज तुम्हारा और मेरा इंतज़ार कर रहा है।'

जब वे दोनों वैलेरियन के सामने उपस्थित हुए, तो वैलेरियन ने संत लॉरेंस से कहा:

'अपनी हठ छोड़ो और हमें वे खजाने दिखाओ जिनके तुम मालिक हो, जैसा कि कहा जाता है।'

'मुझे दो-तीन दिन का समय दें, और मैं आपको खजाने का पता बता दूँगा,' संत लॉरेंस ने प्रस्ताव रखा।

वेलेरियन ने हप्पिोलीटस से कहा, 'मैं उसे तीन दिनों के लिए तुम्हारे हवाले करता हूँ,' और सेंट लॉरेंस को रिहा कर दिया। उन तीन दिनों के दौरान, संत लॉरेंस ने हप्पिोलीटस के घर में बहुत सारे भिखारी, विधवाएं और अनाथ, अंधे, लंगड़े और बीमार लोगों को इकट्ठा किया। जब तीन दिन बीत गए, तो वह उन्हें सभी को डेसियस और वैलेरियन के सामने ले आया, जो सालस्टियन कक्ष में थे:

संत लॉरेंस ने डिसियस और वैलेरियन से कहा, 'देखो, ये लोग जिन्हें आप अब देख रहे हैं, वे शाश्वत खजाने से भरे पात्रों के समान हैं; और जो कोई भी अपनी संपत्ति इन पात्रों में निवेश करता है, उसे स्वर्ग के राज्य में यह प्रचुर मात्रा में वापस मिलेगी।'

संत लॉरेंस के कार्यों से शर्मिंदा होकर, डेसियस और वेलरियन बहुत क्रोधित हो गए, लेकिन उन्होंने खजाने के बारे में उनसे और सवाल नहीं किया; इसके बजाय, उन्होंने उन्हें मूर्तियों की पूजा करने के लिए मजबूर करना शुरू कर दिया।

वैलेरियन ने कहा, 'तुम ये साजिशें क्यों रच रहे हो?' 'देवताओं को बलिदान चढ़ाओ और इस जादू-टोने को छोड़ दो जिस पर तुम अपनी उम्मीदें लगाए हुए हो।'

संत लॉरेंस ने पूछा, 'आप शैतान को ईसाइयों को राक्षसों की पूजा करने के लिए मजबूर करना सिखाने की अनुमति क्यों देते हैं?' 'आप स्वयं निर्णय करें कि क्या एक मनुष्य द्वारा बनाई गई मूर्ति की पूजा करना सही है, जिसमें एक राक्षस वास करता हो, जबकि स्वर्गीय ईश्वर, सभी दृश्य और अदृश्य चीजों के सृष्टा को भूल जाना।'

क्रोध से आग-बबूला होकर, राजा ने आदेश दिया कि संत को नग्न कर दिया जाए, जमीन पर लिटाया जाए और बिच्छुओं से पीटा जाए ('बिच्छू' एक यातना उपकरण था - तेज कांटों वाली एक पतली लोहे की छड़)। पवित्र शहीद को इतनी क्रूरता से पीटा गया कि उनकी खून से जमीन लाल हो गई; जबकि उसी क्षण डेशियस ने स्वयं कहा:

'देवताओं के विरुद्ध अपमानजनक शब्द न बोलो, अपमान न करो!'

संत लॉरेंस ने प्रहारों को सहते हुए उत्तर दिया:

'मैं अपने ईश्वर का धन्यवाद करता हूँ कि उन्होंने मुझे अपने सेवकों, पवित्र शहीदों द्वारा सहन किए गए दुखों में भागीदार बनने के योग्य समझा; लेकिन तुम, दुर्भाग्यपूर्ण, अपने ही पागलपन और क्रोध से अंधे हो गए हो।'

तब डेसियस ने यातनाएँ बंद करने और संत लॉरेंस को जमीन से उठाने का आदेश दिया; फिर उसने आज्ञा दी कि एक लोहे का बिस्तर, तख्ते, टिन की छड़ें और यातना के अन्य उपकरण लाए जाएँ और उसके सामने रख दिए जाएँ; इन सभी की ओर इशारा करते हुए, उसने कहा:

'यदि तुम देवताओं को बलिदान नहीं चढ़ाओगे तो यह सब तुम्हारे यातना के लिए इस्तेमाल किया जाएगा।'

संत लॉरेंस ने उत्तर दिया, 'मैं लंबे समय से ऐसे कष्टों को एक दावत के रूप में चाहता था, वे आपके लिए यातनाएँ हैं, लेकिन हमारे लिए महिमा हैं।'

'यदि ये यातनाएँ,' डेसियस ने उपहास करते हुए कहा, 'तुम्हारे लिए एक दावत और महिमा हैं, तो हमें बताओ कि तुम्हारे जैसे दूसरे ईसाई कहाँ छिपे हैं: हम उन्हें यहाँ लाएँगे—ताकि वे भी तुम्हारे साथ दावत कर सकें।'

'तुम अधर्मी लोग हो,' संत लॉरेंस ने उत्तर दिया, 'उनका दर्शन करने के अयोग्य हो, जिनके नाम स्वर्ग में लिखे हैं।'

इसके बाद, राजा ने बंधे हुए शहीद को टिबेरियस के महल में ले जाने का आदेश दिया, जहाँ वह स्वयं जा रहा था। वहाँ पहुँचने पर, वह डिया के मंदिर में अपनी सीट पर बैठ गया और सेंट लॉरेंस को अपने सामने लाने का आदेश दिया:

उसने कहा, 'हमें बताओ, दुष्ट ईसाई कहाँ छिपे हैं, ताकि हम उन्हें इस शहर से बाहर निकाल सकें; और तुम देवताओं की पूजा करो और उन खजानों में अपनी आशा मत लगाओ जिन्हें तुम छिपा रहे हो।'

'मैं तुम्हें मसीह के सेवकों का पता नहीं बताऊँगा,' संत ने उत्तर दिया, 'और न ही मैं व्यर्थ में खजाने में अपनी आशा रखता हूँ: मैं उन्हें अच्छी तरह जानता हूँ।'

'क्या तुम्हें नहीं लगता कि तुम सोने या चाँदी से अपनी यातनाओं से बच सकते हो?' राजा ने पूछा।

'मैं मसीह का सेवक हूँ,' शहीद ने उत्तर दिया, 'और मैं अपनी सारी आशा उसी में रखता हूँ; मैं उन स्वर्गीय खजानों से भी अवगत हूँ जिन्हें मसीह, मेरे ईश्वर ने, मेरे और अपने सभी सेवकों के लिए तैयार किया है।'

क्रोधित होकर, राजा ने संत को डंडों से पीटने का आदेश दिया, जबकि उनकी पसलियों को लाल-गरम लोहे की पट्टियों से झुलसाया गया; इन यातनाओं के दौरान, संत लॉरेंस ने ईश्वर से प्रार्थना की:

'हे प्रभु यीशु मसीह, परमेश्वर से परमेश्वर, मुझ पर, अपने दास पर, दया करें: उन्होंने मेरी निंदा की, पर मैंने आपको नहीं त्यागा; उन्होंने मुझसे पूछताछ की, और मैंने आपके परम पवित्र नाम का अंगीकार किया।'

तब डेसियस ने शहीद को सीसे की छड़ों से पीटने का आदेश दिया, और संत लॉरेंस ने पुकारा:

'हे प्रभु यीशु मसीह, मेरी आत्मा ग्रहण करो!'

तब स्वर्ग से एक आवाज़ उनके पास आई:

'तुझे अभी और भी बहुत कष्ट सहने हैं!'

यह आवाज़ सभी ने सुनी। हालाँकि, डेसियस क्रोध से आग-बबूला होकर, ज़ोर से चिल्लाया:

'रोम के पुरुषों और जनसमूह! आप इस जादूगर और ईश्वरनिंदक को सांत्वना देते हुए राक्षसों की आवाज़ सुन रहे हैं, जो हमारे देवताओं का सम्मान नहीं करता, राजा मुझसे नहीं सुनता, और यातनाओं से नहीं डरता!'

और फिर उसने संत लॉरेंस को फिर से आगे लाने और बिच्छुओं से एक बार फिर पीटने का आदेश दिया। लेकिन पवित्र शहीद ने अपने यातनाओं का सामना करते हुए हँसकर डेसियस को शर्मिंदा कर दिया, और प्रार्थना करते हुए कहा:

'धन्य हैं आप, हे प्रभु परमेश्वर, हमारे प्रभु यीशु मसीह के पिता! मैं आप का धन्यवाद करता हूँ कि आपने हम पर अपनी दया दिखाई, यद्यपि हम इसके अयोग्य हैं; परन्तु मुझे अपनी कृपा भी प्रदान करें, ताकि यहाँ उपस्थित और मुझे देखने वाले जान जाएँ कि आप अपने सेवकों के सांत्वनादाता हैं।'

जब वह प्रार्थना कर रहा था, यातना स्थल पर मौजूद सैनिकों में से एक, जिसका नाम रोमन था, मसीह में विश्वास करने लगा और ऊँचे स्वर में चिल्लाया:

'हे संत लॉरेंस, मैं आपके बगल में एक अत्यंत तेजस्वी युवक को खड़ा हुआ देख रहा हूँ, जो आपके घावों को पोंछ रहा है और आपके पूरे शरीर की देखभाल कर रहा है; मैं आपसे प्रभु मसीह के नाम पर विनती करता हूँ, जिन्होंने आपको अपना स्वर्गदूत भेजा है, कृपया मुझे न छोड़िए!'

डेसियस ने वैलेरियन से कहा:

'हम इस जादूगर से हार गए हैं!' और, शहीद को यातना यंत्र से खोलने का आदेश देकर, उसने उसे कैद करने के लिए हिप्पोलीटस के हवाले कर दिया। और सिपाही रोमन संत लॉरेंस के पास एक भरा हुआ पानी का घड़ा लेकर आया, उनके पैरों पर गिर पड़ा, और आँसू भरी आँखों से उनसे बपतिस्मा देने की विनती करने लगा। जब उसका बपतिस्मा हो गया, तो अन्य सिपाही अचानक आ गए, उसे पकड़ लिया और राजा के पास ले गए; लेकिन उससे पूछताछ शुरू करने से पहले ही, वह चिल्ला उठा:

'मैं एक ईसाई हूँ!'

सम्राट ने तुरंत उसका सरि कलम करने का आदेश दयिा: रोमन को तब सालारयिन गेट से शहर के बाहर ले जाया गया और उसका सरि कलम कर दयिा गया; यह घटना अगस्त के नौवें दनि हुई। उसके शरीर को उपरोक्त पादरी जस्टनि ने रात के दौरान उठाया और उसे सम्मानपूर्वक दफनाया।

उसी रात, डेसयिस और वैलेरयिन ने सैलस्टयिस के महल के पास, ओलंपकि स्नानागार में रहते हुए, संत लॉरेंस के अंतमि मुकदमे के लिए एक न्यायाधकिरण तैयार करने का आदेश दयिा; साथ ही, उन्होंने यातना के सभी उपकरण तैयार करने का भी आदेश दयिा। यह जानकर, हप्पिोलीटस रोने लगा। हालाँकि, संत लॉरेंस ने उन्हें सांत्वना देते हुए कहा:

'मेरे लिए मत रोओ; बल्कि, आनंद मनाओ, क्योंकि मैं शहादत का गौरवशाली मुकुट प्राप्त करने जा रहा हूँ।'

"मैं आपके सामने 'मैं एक ईसाई हूँ!' क्यों नहीं चल्लिा सकता, ताकि मैं आपके साथ मर सकूँ?" हप्पिोलीटस ने पूछा।

'अभी अपने इक़रार को अपने दलि में ही रखो,' संत लॉरेंस ने कहा, 'थोड़ी ही देर में मैं तुम्हें बुलाऊँगा – तुम मुझे सुनोगे और मेरे पास आओगे।'

जब सम्राट वेलेरयिन के साथ न्यायपीठ पर वरिाजमान हुआ, तो शहीद संत लॉरेंस को उसके सामने लाया गया।

'अपनी जादू-टोना छोड़ दो,' डसियिस ने उससे कहा, 'और हमें बताओ कि तुम कसि तरह के आदमी हो।'

'मैं स्पेन में पैदा हुआ था,' संत ने उत्तर दयिा, 'रोम में पला-बढ़ा, और जन्म से ही एक ईसाई; मुझे अपने शुरुआती वर्षों से ही ईश्वर के वधिान की शक्षिा दी गई थी।'

'क्या इसे,' राजा ने पूछा, 'तुम ईश्वर का वधिान कहते हो—ताकि तुम देवताओं का सम्मान न करो और कसिी यातना से न डरो?'

'जसि कानून की मुझे शक्षिा दी गई है,' संत ने उत्तर दयिा, 'उसने मुझे यह बताया है और मुझे अपने ईश्वर, प्रभु यीशु मसीह का सम्मान करने के लिए बाध्य कयिा है; उनके नाम से बल प्राप्त कर, मैं वास्तव में उन यातनाओं से नहीं डरता जनिसे आप मुझे डरा रहे हैं।'

राजा ने कहा, "देवताओं को बलदिान चढ़ाओ, और अगर तुम ऐसा नहीं करोगे, तो तुम्हें सारी रात यातनाएँ दी जाएँगी।"

संत लॉरेंस ने उत्तर दयिा:

'मेरी रात अँधेरी नहीं, बल्कि पूरी तरह से प्रकाश से भरी है।'

यातना देने वाले ने आदेश दयिा कि संत लॉरेंस के मुँह पर पत्थर मारा जाए; लेकनि पवत्रि शहीद आत्मा में और भी अधकि बलवान हो गए, उन्होंने राजा को शर्मदिा कर दयिा, और ईश्वर का धन्यवाद कयिा।

डेसयिस ने कहा, 'लोहे का बस्तिर लाओ, इस रात घमंडी लॉरेंस को उस पर लेटने दो।'

और वे एक बस्तिर ले आए, जो वास्तव में एक लोहे की जाली थी; उन्होंने उसे डेसयिस और वलेरयिन के सामने रख दयिा, और फरि नग्न पवत्रि शहीद को उस पर लटिा दयिा, बस्तिर के नीचे गर्म कोयले रख दिए थे; जबकि नौकरों ने ऊपर से लोहे की भालाओं से संत लॉरेंस को दबा रखा था, और उसे ऐसे भून रहे थे मानो वह खाने योग्य मांस हो।

सम्राट ने कहा, "देवताओं को बलदिान चढ़ाओ।"

'मैंने स्वयं को,' शहीद ने उत्तर दयिा, 'एक पश्चात्तापी आत्मा के साथ, अपने ईश्वर के लिए एक सुगंधति धूप के रूप में अर्पति कयिा है।'

उस क्षण, नौकरों ने आग में और भी अधकि ईंधन डालकर बस्तिर को और भी तीव्रता से गर्म कर दयिा।

'यह जान ले, नीच,' शहीद ने राजा से कहा, 'ये गर्म अंगारे मुझे ठंडक पहुँचाएँ, पर तुम्हें शाश्वत यातना दें: मेरे प्रभु जानते हैं कि मैंने, जनिके पवत्रि नाम की गवाही देने के लिए मेरी नंदिा की गई, उनका त्याग नहीं कयिा, बल्कि जब मुझसे पूछा गया, तो मैंने घोषणा की कि मैं एक ईसाई हूँ, और अब, आग में होते हुए, मैं उन्हें अपना धन्यवाद अर्पति करता हूँ।'

वेलेरयिन ने पूछा, 'वह आग कहाँ है जसिसे तुमने हमें डराया था?'

'हे मूर्ख और अंधा लोग!' संत ने उत्तर दयिा, 'जान लो कि ये कोयले जनि पर तुम मुझे जला रहे हो, ये मेरी आत्मा को ठंडक पहुँचा रहे हैं, जबकि तुम्हारी आत्माओं के लिए ये एक न बुझने वाली आग तैयार कर रहे हैं।'

वहाँ उपस्थति सभी लोग राजा की क्रूरता पर चकति थे, जसिने एक जीवति व्यक्ति को भूनने का आदेश दयिा था। हालाँकि, संत लॉरेंस ने एक तेजस्वी मुख के साथ कहा:

'मैं तुझसे धन्यवाद करता हूँ, हे प्रभु यीशु मसीह, कि तूने मुझे बल दयिा!' और, डसियिस और वैलेरयिन की ओर अपनी आँखें उठाकर, उन्होंने कहा:

'देखो, हे नीचों, तुमने मेरे शरीर का एक हिस्सा पहले ही भुन लिया है; इसे दूसरी तरफ पलट दो और जो भुना हुआ है उसे खा लो।'

तब, ईश्वर की महिमा करते हुए, उन्होंने कहा:

'मैं आपको धन्यवाद देता हूँ, हे प्रभु यीशु मसीह, कि आपने मुझे अपने द्वारों में प्रवेश करने की कृपा दी!'

इतना कहकर उन्होंने प्राण त्याग दिए। डिसियिस और वैलेरियिन, यह देखकर कि शहीद की मृत्यु हो गई है, शर्मिंदा होकर चले गए और शव को बिस्तर पर ही छोड़ दिया। हालाँकि, हिप्पोलीटस ने सूर्योदय से पहले पवित्र शहीद के सम्मानित और कष्ट-सहिष्णु शरीर को उठा लिया; उसे सुगंधित तेलों से महकाए हुए कफ़न में लपेटकर, उसने पवित्र पुरोहित जस्टिन को संदेश भेजा। बाद वाले तुरंत ही हिप्पोलीटस के पास आए, और वे दोनों मिलकर शरीर को सिरीकियिस की उपर्युक्त विधवा के पास ले गए; जहाँ यह शाम तक रहा, और उस पूरे दिन उन्होंने रोते हुए उपवास किया। देर शाम, ईसाइयों की एक बड़ी सभा के बीच, उन्होंने शव को रोते हुए विधवा की जमीन पर स्थित एक गुफा में ले गए; वहाँ रात भर जागरण करने के बाद, उन्होंने शहीद को सम्मान के साथ दफनाया। पवित्र पुरोहित जस्टिन ने दैवीय लिटिर्जी का अनुष्ठान किया, और सभी ने मसीह के शरीर और रक्त के परम पवित्र रहस्यों में भाग लिया। पवित्र शहीद लॉरेंस ने अगस्त के दसवें दिन अपने कष्टों भरे जीवन का अंत किया। संत हिप्पोलीटस ने भी, संत लॉरेंस के तीसरे दिन बाद, अन्य लोगों के साथ पीड़ा सहन की, इस विषय पर उचित समय पर और विस्तार से चर्चा की जाएगी। इन सबके लिए महिमा हमारे परमेश्वर को हो, जो पवित्र त्रिमूर्ति में महिमामय है, अब और हमेशा और युगों-युगों तक। आमीन[5520] .

कॉन्टाकियन, स्वर 2:

हे पीड़ितों के सहारे, ईश्वर-वाहक शहीद लॉरेंस, आपने अपने हृदय में दिव्य अग्नि प्रज्वलित कर, वासनाओं की अग्नि को पूर्णतः भस्म कर दिया, और अपने कष्टों में आपने विश्वासपूर्वक पुकारा: 'कुछ भी मुझे मसीह के प्रेम से पृथक नहीं कर सकता।'

24 अगस्त

11 अगस्त (पुराना कैलेंडर)

हमारे पूजनीय पिताओं थियोडोर और बेसलि, कीव-पेचेरस्क लाव्रा के भिक्षुओं का जीवन।

11 अगस्त को स्मरणोत्सव

'धन का प्रेम सभी बुराइयों की जड़ है' (1 तीमुथियुस 6:10), कहते हैं पवित्र प्रेरित पौलुस। हम इस कथन की पूर्ति को आदरणीय थियोडोरेट और बेसलि के वर्तमान जीवन में देखते हैं: शैतान ने धन के प्रेम के अलावा और किसी चीज़ के द्वारा संत थियोडोर की आत्मा में पापी विचार और इरादे नहीं भड़काए; धन के इस प्रेम के माध्यम से, शैतान ने न केवल आदरणीय संत को, बल्कि उनके सलाहकार, धन्य बेसलि को भी शारीरिक पीड़ा और मृत्यु दी। इन पवित्र संतों के बारे में निम्नलिखित वर्णित है।

दुनिया में अपने जीवन के दौरान, आदरणीय थियोडोर के पास बहुत बड़ी संपत्ति थी। एक बार सुसमाचार में प्रभु के वचन सुनने के बाद – *'तुम में से कोई भी मेरे शिष्य नहीं बन सकता, जब तक कि वह अपनी सारी संपत्ति का त्याग न*

[5520] संत लॉरेंस की 258 में शहादत हुई। उन्हें रोम के पूर्वी उपनगर में, शहर से एक वर्स्ट (लगभग एक मील) दूर, टिबर्टिन मार्ग पर दफनाया गया था। अनास्तासियिस द लाइब्रेरियिन के अनुसार, सम्राट कॉन्स्टेंटिन द ग्रेट ने इस स्थल पर संत के लिए एक भव्य चर्च का निर्माण कराया था। 27 सितंबर को थियोडोसियिस द यंगर के शासनकाल के दौरान, सेंट लॉरेंस के अवशेष, या यूँ कहें कि अवशेषों का एक हिस्सा, कॉन्स्टेंटिनोपल में उनके नाम से समर्पित चर्च में रखे गए थे। वर्तमान में, सेंट लॉरेंस के अवशेष रोम में, विया टिबर्टिना पर उनके नाम से समर्पित एक उपनगरीय चर्च में हैं, जबकि उनकी खोपड़ी क्विरिनिल पैलेस के सैक्रिस्टिन द्वारा उनके नाम से समर्पित एक निजी चैपल में रखी गई है।

कर दे (लूका 14:33), उन्होंने इन पर अमल कयिा: संसार को त्यागकर और अपनी संपत्ति गरीबों में बाँटकर, परम पूजनीय थयिोडोर कीव केव्स मठ में एक भक्षिु बन गए, और उन्होंने तपस्या के महान कार्यों से भरा जीवन जयिा। मठाधीश के आदेश पर, वे वरांगयिन गुफा के नाम से जानी जाने वाली एक गुफा में रहने लगे, जहाँ उन्होंने कई वर्षों तक कठोर संयम का पालन करते हुए जीवन व्यतीत कयिा। जब आदरणीय थयिोडोर इस गुफा में ठहरे हुए थे, तो शैतान ने उनमें गरीबों को दी गई संपत्ति के लिए दुख और पछतावा भर दयिा, और उन्हें उनकी बढ़ती उम्र, कमजोर स्वास्थ्य और संन्यासयिों के मामूली भोजन की याद दलिाई। धन्य थयिोडोर को यह एहसास नहीं हुआ कि ऐसे वचिार शैतानी प्रलोभन थे। प्रभु के वचन भूल गए: *'अपने प्राण के लिए न सोचो कि क्या खाओगे या क्या पयिोगे, और न अपने शरीर के लिए कि क्या पहनोगे। क्या प्राण भोजन से और शरीर वस्त्र से अधकि नहीं है? आकाश के पक्षयिों को देखो: वे न बोते हैं, न काटते हैं और न कोठारों में इकट्ठा करते हैं; फरि भी तुम्हारा स्वर्गीय पति उन्हें खलिाता है* (मत्ती 6:25-26), और अपनी गरीबी को देखकर, वह दुख से नरिाशा की ओर फसिलने लगा, और प्रत्येक बीतते दनि के साथ प्रलोभन के जाल में और भी गहराई से फँसता गया। एक दनि, उसने बनिा कुछ छपिाए अपने दुख को अपने दोस्तों के सामने बयां कयिा।

कीव गुफाओं के मठ के संतों में बेसलि नाम का एक संत था, जो अपने जीवन-यापन के तरीके में सबसे सदाचारी था। सम्माननीय थयिोडोर को नरिाशा की खाई से बाहर नकिालने और उसे सांत्वना देने की इच्छा से, उसने उससे कहा:

'मैं आपसे वनिती करता हूँ, भाई थयिोडोर, अपना इनाम न गँवाएँ; लेकनि यदि आपको वह धन पछतावा है जो आपने गरीबों को दयिा है, तो मैं उसे उसी मात्रा में आपको वापस दलिाने का प्रयास करूँगा: आपको बस प्रभु से यह प्रार्थना करनी है कि आपका दान मेरे खाते में दर्ज हो जाए, और आप तुरंत अपने दुख से मुक्त हो जाएँगे और मेरे माध्यम से अपना धन वापस पा लेंगे।' हालाँकि, देखें कि प्रभु इसे अनुमति देते हैं या नहीं: कांस्टेंटनिोपल में भी, एक व्यक्ति को गरीबों को दयिा गया अपना सोना याद आया, और उसने परमेश्वर के सामने अपना दान कसिी और के नाम कर दयिा, और उससे उतना ही पैसा ले लयिा जतिना उसने दयिा था; जब उसने कहा: 'हे प्रभु, यह दान का कार्य मैंने नहीं कयिा, बल्कि यह इस मनुष्य का कार्य है,' वह तुरंत गरिजाघर के बीच में गरि पड़ा और मर गया, इस प्रकार वह अपना सोना और अपनी जान दोनों खो बैठा।

यह सुनकर, धन्य थयिोडोर को होश आया और उसने अपनी गरिावट पर शोक करना शुरू कर दयिा, और उस भाई की प्रशंसा करने लगा जसिने उसे इतनी खतरनाक आध्यात्मकि बीमारी से ठीक कयिा था। ऐसे लोगों के बारे में प्रभु ने कहा: *'यदि तुम व्यर्थ से कीमती वस्तु को अलग करोगे, तो तुम मेरे मुख समान होओगे'* (यरि्म. 15:19)। उस समय से, थयिोडोर और बेसलि के बीच प्रेम और भी प्रगाढ़ हो गया। तब से, परम पूजनीय थयिोडोर ने ईश्वर की आज्ञाओं में अथक प्रगति की, और एक धर्मी, ईश्वर-प्रसन्न, पवत्रि और नरि्दोष जीवन के लिए आवश्यक सभी कार्य करने का प्रयास कयिा। हालाँकि, शैतान को बहुत अपमान झेलना पड़ा, क्योंकि वह धन के प्रेम से पूजनीय थयिोडोर को पूरी तरह से बहका नहीं सका। उसने एक बार फरि पूजनीय व्यक्ति पर अपनी नज़र गँठी और उसमें लालच की भावना जगाने के लिए नई योजनाएँ बनाईं। एक अवसर पर, मठाधीश ने परम पूज्य बेसलि को एक ऐसे कार्य के लिए मठ से बाहर भेजा जसिे पूरा करने में उन्हें तीन महीने लग गए: अपनी साजशिों के लिए यह समय उपयुक्त समझकर, शैतान ने बेसलि का रूप धारण कयिा और जैसे आत्मा-उद्धारक बातचीत के लिए परम पूज्य थयिोडोर की गुफा में आया।

उसने कहा, 'कैसे हो, तुम अपने पुण्य जीवन में? क्या शैतान के प्रलोभनों के खलिाफ तुम्हारा संघर्ष समाप्त हो गया है, या वह अभी भी जारी है, जो तुम्हारे द्वारा गरीबों को दिए गए धन की याद से तुम्हारे भीतर लालच जगाता है?'

आदरणीय थयिोडोर, उस दानव को पहचान नहीं पाए और यह मानकर कि वे भाई बेसलि से बात कर रहे हैं, ने उत्तर दयिा:

'आपकी प्रार्थनाओं से, पतिाजी, मैं शैतान के खलिाफ संघर्ष को सफलतापूर्वक झेल रहा हूँ और उसके द्वारा जगाए गए वचिारों पर ध्यान नहीं देता; और अब, आप जो भी आज्ञा देंगे, मैं खुशी-खुशी उसका पालन करूँगा: आपके नरि्देशों में मुझे अपनी आत्मा के लिए बहुत लाभ मलिा है।'

हालाँकि, कथति भाई, पूजनीय थयिोडोर के होठों से ईश्वर के नाम का कोई उल्लेख न सुनकर, और भी दुस्साहसी हो गया:

उसने कहा, 'मैं तुम्हें एक नई सलाह देता हूँ: यदि तुम इसका पालन करोगे, तो तुम्हें शांति मलिेगी और जल्द ही ईश्वर से तुम्हें उतनी ही संपत्ति का पुरस्कार मलिेगा जतिनी तुमने दान की है: प्रभु ईश्वर से प्रार्थना करो कि वह तुम्हें बहुत सारा सोना और चाँदी भेजे, और कसिी को भी अपनी गुफा में प्रवेश न करने दो, न ही तुम्हें स्वयं उसे छोड़नी चाहिए।'

आदरणीय थियोडोर ने यह सब करने का वादा किया। फिर शैतान, जो दुष्ट युक्तियों से भरा था, उसे छोड़ गया; उसने आदरणीय व्यक्ति के मन में खजाना प्राप्त करने का विचार धीरे से डालते हुए, उसे इसके लिए प्रार्थना करने के लिए प्रेरित किया। धन्य थियोडोर ने प्रभु से प्रार्थना की कि वह उन्हें एक खजाना भेजें, जिसे उन्होंने गरीबों को पूरी तरह से दान करने का वादा किया था। उनकी प्रार्थना के बाद, वह सो गए और एक सपने में उन्होंने एक राक्षस को देखा, जिसने एक तेजस्वी देवदूत का रूप धारण कर लिया था, और उसे एक गुफा में खजाने की ओर इशारा किया। उन्हें यह दर्शन न केवल एक बार, बल्कि कई बार हुआ। कुछ समय बाद, आदरणीय थियोडोर अपने सपने में बताई गई जगह पर गए; खुदाई शुरू करने पर, उन्हें वहाँ वास्तव में सोने, चाँदी और कीमती बर्तन से युक्त एक खजाना मिला। इसके बाद, दानव, बेसिल के भेष में, फिर से उनके पास आया और कहा:

'तुम्हें दिया गया खजाना कहाँ है? तुम्हारे सामने प्रकट हुआ स्वर्गदूत ने मुझे भी बताया है कि अपनी प्रार्थनाओं के द्वारा तुमने बहुत सारा सोना और चाँदी प्राप्त की है।'

धन्य थियोडोर ने उसे खजाना दिखाने से इनकार कर दिया। और तुरंत ही उस चालाक राक्षस ने खुले तौर पर उसे सलाह देना शुरू कर दिया, उसके मन में गुप्त विचार डालते हुए कि वह खजाना ले ले और उसे लेकर किसी दूसरे देश भाग जाए। पहले उसने उस पादरी से कहा:

'क्या मैंने तुम्हें नहीं बताया, भाई थियोडोर, कि तुमने जो धन दान किया है, उसके लिए तुम्हें शीघ्र ही परमेश्वर से पुरस्कार मिलेगा, क्योंकि उन्होंने स्वयं कहा है: *'जो कोई भी मेरे निमित्त घर, या भाइयों, या बहनों, या पिता, या माता, या पत्नी, या बच्चों, या खेत-खलिहान छोड़ देता है, वह सौ गुना पाएगा और अनंत जीवन का वारिस होगा'* (मत्ती 19:29), और अब यह धन-संपत्ति आपके हाथ में है; इसके साथ अपनी इच्छा के अनुसार करें!'

'इसलिए मैंने ईश्वर से इसकी याचना की है,' पादरी ने उत्तर दिया, 'ताकि जो कुछ मुझे प्रदान किया गया है, मैं उसे गरीबों में बाँट सकूँ, और मेरा मानना है कि मुझे यह इसलिए भेजा गया है।'

'यहाँ देखो, भाई थियोडोर,' दुश्मन ने आपत्ति जताई, 'क्या शैतान इस वितरण के माध्यम से तुम्हें पहले की तरह फिर से दुख नहीं पहुँचा सकता? यह खजाना तुम्हें उस चीज़ के बदले में दिया गया है जो तुमने दे दी है, और मैं तुम्हें सलाह देता हूँ: इसे लो और किसी दूसरे स्थान पर जाओ, और वहाँ अपने लिए कुछ जमीन खरीद लो; और उस स्थान पर तुम बच जाओगे और शैतान की चालाकी से बच निकलोगे। जब मृत्यु का समय आएगा, तो कोई भी तुम्हें अपनी संपत्ति उस पर बाँटने से नहीं रोकेगा जिसे तुम चाहो, और इसके कारण तुम्हारी एक कृतज्ञ स्मृति बनी रहेगी।

आदरणीय थियोडोर ने उत्तर दिया:

'मुझे शर्म आती है कि मैं सारी दुनिया और उसकी सभी सुख-सुविधाओं को छोड़कर इस गुफा में अपना जीवन समाप्त करने की कसम खाने के बाद, एक भगोड़ा और सांसारिक व्यक्ति बन जाऊँ।'

शैतान ने उसे उकसाया, 'तुम अपना खजाना यहाँ नहीं छिपा सकते: लोगों को इसके बारे में पता चल जाएगा और फिर वे इसे तुमसे छीन लेंगे। तुम्हारे लिए बेहतर है कि तुम मेरी बात सुनो और मेरी सलाह पर तुरंत अमल करो: अगर ईश्वर की इच्छा न होती कि तुम्हारे पास धन हो, तो उन्होंने तुम्हें ये खजाने न भेजे होते और न ही तुम्हारा मार्गदर्शन करने के लिए मुझे सूचित किया होता।

तब धन्य थियोडोर, शैतान को एक भाई की तरह मानते हुए, उसने गुप्त रूप से गाड़ियाँ और पात्र तैयार करना शुरू कर दिया, जिनमें वह खजाने रख सकता था, ताकि वह उन खजानों के साथ गुफा छोड़कर वहाँ जा सके जहाँ भी शैतान उसे ले जाए; क्योंकि शैतान, अपनी चालाकी से, संत को आदरणीय एंथनी और थियोडोसियस के स्थान से, परमेश्वर की अति पवित्र माता से और, सबसे बढ़कर, स्वयं परमेश्वर से दूर ले जाना चाहता था। लेकिन दयालु प्रभु, *'जो चाहता है कि सभी लोग बचें'* (1 तीमुथियुस 2:4), ने अपने संतों की प्रार्थनाओं के द्वारा अपने सेवक थियोडोर को बचाया।

उस समय, पूजनीय बेसिल अपनी यात्रा से लौटे; वे ही थे जिन्होंने पहले धन्य थियोडोर को बुरे विचारों से मुक्त कराया था। उन्हें देखने की इच्छा से, वे गुफा में उनके पास आए, यह कहते हुए:

'भैया थियोडोर, अब तुम ईश्वर के अनुसार अपना जीवन कैसे बिता रहे हो? मैंने तुम्हें बहुत समय से नहीं देखा है।'

परम पूज्य थियोडोर इस अभिवादन से चकित हो गए और कहा:

'तुम क्या कह रहे हो—कि तुमने मुझे बहुत समय से नहीं देखा? कल, परसों, और उससे पहले, तुम लगातार मेरे पास आते रहे, मुझे उपदेश देते रहे, और अब मैं यहाँ हूँ, जैसा तुमने मुझे बताया था वैसा ही कर रहा हूँ।'

इसके जवाब में, रेवरेंड बेसिल और भी अधिक हैरान रह गए:

'मुझसे बताइए,' उन्होंने पूछा, 'यह कहने का आपका क्या मतलब है कि मैं आपको लगातार—कल, परसों, और उससे पहले—सिखाने के लिए आता था? और आप कहाँ जा रहे हैं? मैं आज ही अपनी यात्रा से लौटा हूँ और मुझे इस बारे में कुछ भी नहीं पता: शायद शैतान ने आपको बहकाया है? मैं आपसे हाथ जोड़कर विनती करता हूँ, कृपया यह मुझसे न छिपाएँ।'

रेवरेंड थियोडोर ने उससे गुस्से में कहा:

– तुम मुझे क्यों लुभा रहे हो? एक क्षण में एक बात और दूसरे क्षण में दूसरी बात कहकर मेरी आत्मा को क्यों कष्ट देते हो? मैं क्या मानूँ?

इस प्रकार उससे अपनी नाराज़गी व्यक्त करने के बाद, उन्होंने उसे भेज दिया।

यह सुनकर, पूजनीय बेसिल मठ में चले गए। और शैतान फिर से पूजनीय थियोडोर के पास बेसिल के भेष में आया:

'मैं तो पागल हो गया हूँ, मैं कितना नीच इंसान हूँ,' उसने कहा, 'मैंने तुम्हें वह बात बता दी जो मुझे नहीं बतानी चाहिए थी; इसलिए मैं तुम्हारे द्वारा कही गई निंदा को याद नहीं रखता, और मैं तुम्हें एक बार फिर से कहता हूँ: आज ही रात, अपना खजाना अपने साथ लेकर तुरंत इस जगह को छोड़ दो।'

यह कहकर, वह विदा हो गया।

आदरणीय बेसिल, कुछ वरिष्ठों को अपने साथ लेकर, एक बार फिर थियोडोर के पास आए:

उसने उससे कहा, 'भगवान मेरे गवाह हैं कि मुझे आपको देखकर तीन महीने हो गए हैं: मुझे मठ के काम से भिक्षु-प्रमुख ने भेजा था; आज मेरे लौटे हुए तीसरा दिन है, और फिर भी, जैसे ही मैं आपकी उपस्थिति में आया, आपने मुझे बताया कि मेरी अनुपस्थिति के दौरान मैं लगातार आपसे मिलने आता रहा हूँ। मुझे लगता है कि एक राक्षस मेरे रूप में तुम्हारे पास आया था; अगर तुम निश्चित होना चाहते हो, तो यह करो: जो कोई भी तुम्हारे पास आए, उसे यीशु की प्रार्थना का जाप किए बिना तुमसे बात शुरू न करने दो; अगर आगंतुक मना कर दे, तो तुम जान जाओगे कि वह एक राक्षस है।

इसके बाद, पूजनीय बेसिल ने मदद के लिए संतों को पुकारते हुए, भगाने की एक प्रार्थना का पाठ किया, और थियोडोर को निर्देश देने के बाद मठ में अपनी कोठरी में लौट आए। राक्षस ने फिर कभी पूजनीय थियोडोर के सामने आने की हिम्मत नहीं की, और प्रलोभक की चाल उसके लिए स्पष्ट हो गई। उस समय से, उन्होंने यह नियम बना लिया कि उनके पास आने वाला हर कोई पहले यीशु की प्रार्थना का पाठ करे, और तभी वे उनसे बातचीत करें। इस प्रकार आदरणीय थियोडोर ने शत्रु को परास्त किया और, ईश्वर की सहायता से, शिकार की तलाश में घात लगाते हुए सिंह के मुँह से (देखें 1 पतरस 5:8) मुक्ति पाई। प्रभु ने अपने कई चुने हुओं को ऐसी मुक्ति प्रदान की है और प्रदान करते रहते हैं, जो रेगिस्तानों और घाटियों में भटक रहे हैं, और अपने कोठरी के एकांत में मौन साधे हुए हैं: उन्हें महान नैतिक शक्ति और ईश्वर की सहायता की आवश्यकता होती है, कहीं ऐसा न हो कि आत्मा-विनाशक दानव उनके संघर्ष के दौरान उन पर विजय प्राप्त कर उन्हें निगल जाए।

विनाश की खाई से छुड़ाए जाने के बाद, पूजनीय थियोडोर ने यह सुनिश्चित करने का काम शुरू किया कि मानव जाति का शत्रु स्वयं ही उस खाई में गिर जाए: सबसे पहले, उसने उस खजाने को, जो उसने पाया था और जिसने लगभग उसे ईश्वर से दूर कर ही दिया था, धरती में गहराई से गाड़ दिया; साथ ही, पूजनीय थियोडोर ने निरंतर प्रभु से प्रार्थना की कि वह उन्हें उस स्थान को भूलने का वरदान दें जहाँ खजाना दफन था और उनमें से धन के प्रेम की लालसा को दूर कर दें। प्रभु ने अपने सेवक की प्रार्थना सुनी: आदरणीय थियोडोर यह पूरी तरह से भूल गए कि उन्होंने खजाना कहाँ छिपाया था, और उन्होंने धन-संपत्ति प्राप्त करने के बारे में कभी नहीं सोचा; सोना और चांदी उनके लिए मिट्टी से अधिक कीमती नहीं रहे।

तब, आलस्य में न रहने के लिए—जो सुस्ती को जन्म देता है, और उसके साथ लापरवाही, जिसका शैतान फिर से अपनी प्रलोभनों के लिए फायदा उठा सकता है—आदरणीय थियोडोर ने एक बड़ा काम हाथ में लिया: उन्होंने अपनी गुफा में चक्की के पत्थर स्थापित किए और भाईचारे के लिए काम करना शुरू कर दिया, न केवल अनाज खुद पीसते थे बल्कि मठ से उसे लाते भी थे; वे रात लगभग बिना सोए बिताते थे, उसका अधिकांश समय प्रार्थना और हाथ से चलने वाली चक्कियों पर काम करने में लगाते थे, जबकि दिन के दौरान वे आटे को ले जाते और एक बार फिर अनाज लाते थे। अपने परिश्रम के द्वारा, पूजनीय पिताजी ने कई वर्षों तक मठ के मजदूरों पर बोझ को बहुत कम कर दिया, और वे उनकी मेहनत में शामिल होने में शर्म नहीं करते थे।

एक बार, मठ के व्यवस्थापक ने जब देखा कि आदरणीय थियोडोर ने अपने ऊपर कितना भारी और थका देने वाला काम ले लिया है, तो वह दयालु हो गया: जब मठ के गांवों से राई लाई गई, तो उसने आदरणीय थियोडोर के पास पाँच गाड़ियाँ

भेज दीं ताकि वह खुद को अतिरिक्त मेहनत से बचा सके - और उसे इसे मठ वापस नहीं ले जाना पड़े। आदरणीय थियोडोर ने अनाज खाली कर दिया और भजन जपते हुए काम में लग गए। जब वे थक गए और थोड़ी देर आराम करना चाहते थे, तो अचानक गरज की आवाज़ सी हुई, और चक्की के पाट अपने आप घूमने लगे। शैतान की चाल को भांपते हुए, आदरणीय थियोडोर उठे और लगन से प्रार्थना करने लगे, जिसके बाद उन्होंने ऊँचे स्वर में कहा:

'हे दुष्ट दैत्य, प्रभु तुम्हें मना करते हैं!'

लेकिन राक्षस चक्की के पत्थरों के साथ पीसना बंद नहीं हुआ। तब पादरी ने फिर कहा:

'पिता के नाम पर, और पुत्र के नाम पर, और पवित्र आत्मा के नाम पर, जिसने तुम्हें स्वर्ग से गिरा दिया और तुम्हें अपने संतों के वश में कर दिया, मैं, एक पापी, तुम्हें आज्ञा देता हूँ कि जब तक तुम सारा अनाज पीस न लो, तब तक अपना काम बंद न करना: तो, पवित्र भाइयों के लिए काम करो।'

यह कहकर, उन्होंने अपनी प्रार्थना जारी रखी: राक्षस अवज्ञा करने की हिम्मत नहीं कर सका और, एक ही रात में, सारा अनाज पीस गया। सुबह, पूजनीय थियोडोर ने सेलर को आटा मंगवाने का आदेश दिया। सेलर इस असाधारण घटना—कि एक ही रात में पाँच ठेले अनाज कैसे पीस लिए गए—से चकित था और स्वयं आटा लेने के लिए गुफा में गया; और वहाँ एक और चमत्कार हुआ: उसी अनाज से, आटे के पाँच और ठेले निकल आए। इस प्रकार, यहाँ पूजनीय थियोडोर के जीवन की अभी-अभी बताई गई घटना में, प्रेरितों के शब्द, जिन्होंने एक बार यीशु मसीह से कहा था: *'प्रभु, यहाँ तक कि दुष्टात्माएँ भी तेरे नाम से हमारे वश में हो जाती हैं'* (लूका 10:17), और , स्वयं परमेश्वर के वचन का वादा भी पूरा हुआ: *'देखो, मैंने तुम्हें सर्पों और बिच्छुओं पर और शत्रु की सारी शक्ति पर पैर रखने का अधिकार दिया है* (लूका 10:19)। धूर्त दानवों ने पूजनीय थियोडोर को डराने और भ्रम की उस घड़ी की तरह उन्हें अपने अधीन करने की कोशिश की; लेकिन इसके बजाय, उन्होंने खुद पर दासता की बेड़ियाँ डाल लीं, ताकि उन्हें चिल्लाने के लिए मजबूर होना पड़ा:

'हम फिर कभी यहाँ नहीं आएँगे।'

आदरणीय थियोडोर और बेसिल ने अपने बीच एक धार्मिक प्रथा स्थापित की कि वे कभी भी अपने विचारों को छिपाएंगे नहीं, बल्कि उन्हें एक साथ चर्चा करेंगे ताकि यह पता लगाया जा सके कि वे परमेश्वर को कितने प्रसन्न थे। आपसी सहमति से, बेसिल मौन में रहने के लिए एक गुफा में चले गए, जबकि पूजनीय थियोडोर, वृद्धावस्था में पहुँचने के बाद, एक प्राचीन मठ में रहने के लिए वहाँ से चले गए।

उस समय, मठ जल चुका था। चर्च और कोठरियों के लिए लकड़ी, जिसे ड्नीपर नदी में राफ्टों पर बहाकर लाया गया था, नदी के किनारे पड़ी थी, और मजदूरों को इसे पहाड़ी पर खींचने के लिए काम पर रखा गया था; लेकिन पूजनीय थियोडोर, अपनी खुद की कोठरी बनाना चाहते थे, इसलिए उन्होंने स्वयं नदी के किनारे से लकड़ी को पहाड़ी पर ले जाना शुरू कर दिया, और किसी और को यह काम करने नहीं दिया। धूर्त राक्षसों ने, श्रम करते समय दबाव में किए गए अपने वादे—कि वे कभी भी पूज्य के पास नहीं आएंगे—को भूलकर, एक बार फिर अपनी साजिशें शुरू कर दीं: जो भी लकड़ियाँ धन्य थियोडोर ने दिन में बड़ी कठिनाई से पहाड़ पर चढ़ाई थीं, राक्षस उन्हें रात में नीचे फेंक देते थे, इस उम्मीद में कि इससे वह वहां से जाने के लिए मजबूर हो जाएगा। दानवों की चालों को भांपते हुए, रेवरेंड ने उनसे कहा:

'हमारे प्रभु यीशु मसीह के नाम पर, जिन्होंने तुम्हें सूअरों में प्रवेश करने की आज्ञा दी थी (मत्ती 8:32), मैं, उसका पापी सेवक, तुम्हें आज्ञा देता हूँ कि नदी के किनारे से सभी लकड़ियाँ पहाड़ पर ले जाओ, ताकि परमेश्वर के लिए परिश्रम करने वाले भाइयों का ध्यान उनके काम से न भटके और वे तुम्हारी योजनाओं से मुक्त होकर परमेश्वर की परम पवित्र माता के लिए एक चर्च और अपने लिए कोठरियाँ बना सकें; तब तुम जान जाओगे कि प्रभु इस स्थान पर उपस्थित हैं।

उसी रात, दुष्टात्माओं ने मठ के निर्माण के लिए नदी के किनारे से पहाड़ तक सभी लकड़ियाँ ले जाईं। जब सुबह परिवहन के लिए काम पर रखे गए मजदूर तट पर पहुँचे, तो उन्हें एक भी लकड़ी का तख्ता नहीं मिला; चारों ओर देखने पर, उन्होंने देखा कि लिकड़ी के तख्ते पहले से ही पहाड़ पर थे और एक ढेर में नहीं रखे गए थे, बल्कि व्यवस्थित रूप से रखे गए थे: कुछ छत के लिए अलग रखे गए थे, कुछ फर्श के लिए, और कुछ लंबे, अत्यंत भारी बीम थे। यह सब, जो मानवीय शक्ति से परे एक करतब था, ने बड़ी आश्चर्य उत्पन्न किया। इस प्रकार प्रभु अपने संतों थियोडोर और उनके सलाहकार बेसिल के माध्यम से महिमामय हुए; उनके कर्मों के लिए, प्रभु ने यह चमत्कार किया। फिर भी, ईश्वर के ये सेवक, जो आत्मा में एक समान थे, राक्षसों को अपने अधीन होते देख गर्वित नहीं हुए, बल्कि मिसीह की आज्ञा का पालन किया: *'इस बात पर आनंद मत करो कि आत्माएँ तुम्हारे अधीन हैं, बल्कि इस पर आनंद करो कि तुम्हारे नाम स्वर्ग में लिखे हैं'* (लूका

10:20)। हालाँकि, दानव, संत थियोडोर और बेसलि द्वारा अपनी साजशिों में इतनी स्पष्ट रूप से बेनकाब होने के बाद, इस अपमान को सहन नहीं कर सके - वे जिन्होंने कभी, देवताओं की तरह, मूर्तपिूजकों की आराधना और पूजा का आनंद लयिा था, अब उन्हें ईश्वर के वफादार सेवकों के हाथों तरिस्कार, अपमान और अनादर सहना पड़ा; उन्हें उनके लिए खरीदे गए गुलामों की तरह मेहनत करनी पड़ी, कभी अनाज पीसना, तो कभी लकड़ियाँ खींचनी पड़ीं; और इसके अलावा, उन्हीं संतों के आदेश का पालन करते हुए, उन्हें लोगों से दूर रहना पड़ा। इसीलिए, लकड़ियाँ खींचते समय, वे चलि्लाए, जैसा कि कुछ लोगों ने सुना:

'हे हमारे दुष्ट और क्रूर शत्रु, थियोडोर और बेसलि! हम तुमसे लड़ना तब तक बंद नहीं करेंगे जब तक कि हम तुम्हें मौत के घाट नहीं उतार देते!'

उस समय से, चालाक राक्षसों ने – यह जाने बनिा कि वे पूजनीय संतों को और भी अधकि महमिा दलिाने में सेवा कर रहे थे – हर संभव तरीके से दुष्ट लोगों को संत थियोडोर और बेसलि के खलिाफ भड़काना शुरू कर दयिा। लकड़ियों के चमत्कारी परविहन के तुरंत बाद, इस काम के लिए काम पर रखे गए मजदूरों ने हंगामा खड़ा कर दयिा:

उन्होंने धन्य थियोडोर से कहा, 'हमें हमारा मजदूरी का भुगतान करो: हमें उन तरकीबों से कोई लेना-देना नहीं है जो तुम और बेसलि ने लकड़ी के गट्ठों को हलिाने के लिए इस्तेमाल कीं, जबकि हम उन्हें खुद ले जाने के लिए तैयार थे।'

इसके अलावा, सोने की रशि्वत लेकर उस बेईमान न्यायाधीश ने फैसला सुनाया: यह भूलकर कि प्रभु की चेतावनी है कि जो अन्याय से न्याय करता है, वह स्वयं दोषी ठहराया जाएगा, उसने परम पूजनीय थियोडोर से यह कहने में संकोच नहीं कयिा:

– 'वे राक्षस जो तुम्हें इन्हें उठाने में मदद कर चुके हैं, वे ही तुम्हें इसका भुगतान करने में मदद करें।'

शैतान के इस नए प्रलोभन ने गैर-स्वामति्व वाले थियोडोर और उनके सलाहकार वासलिी को बहुत दुख पहुँचाया। पूजनीयों की मृत्यु न करा पाने पर, शैतान ने धन्य थियोडोर पर अपनी पहली जीत को याद करते हुए, एक बार फरि एक घातक तूफान खड़ा कर दयिा। उसने उस समय वरांगयिन गुफा में मौन व्रत में रहने वाले आदरणीय बेसलि का रूप धारण कयिा, और राजकुमार के सबसे करीबी बोयारों में से एक के पास गया; यह एक क्रूर और अधर्मी व्यक्ति था जो आदरणीय बेसलि को व्यक्तगित रूप से जानता था।

प्रलोभी ने उससे कहा, 'थियोडोर, जो मुझसे पहले इस गुफा में रहता था, उसे सोने, चांदी और कीमती बर्तन से भरा एक बड़ा खजाना मलिा, और वह इसे लेकर भागने ही वाला था, लेकनि मैंने उसे रोक लयिा; अब वह एक पवत्रि मूर्ख होने का नाटक कर रहा है और राक्षसों के साथ घुलता-मलिता है, जिन्हें वह अनाज कुटाई करने या नदी के कनिारे से पहाड़ी पर लकड़ियाँ ले जाने का आदेश देता है; यह सब करते हुए, वह अपने द्वारा खोजे गए धन को सावधानी से छपिाए रखता है, ताकि जब कोई अधकि अनुकूल समय आए तो वह मेरे से चोरी-छपिे कहीं भाग जाए; ऐसी स्थति में, राजकुमार को, बेशक, कुछ भी नहीं मलिेगा।"

यह सुनकर, बोयार ने कथति वासलिी को राजकुमार म्स्तस्लिाव स्वयितोपोलकोवचि के पास ले गया। राक्षस ने उन्हें वही कहानी सुनाई, और नम्निलखिति सलाह दी:

'उसे जतिनी जल्दी हो सके, भागने से पहले पकड़ लो, और फरि तुम्हें खजाना मलि जाएगा; अगर वह स्वेच्छा से उसे देने से इनकार करता है, तो उसे पीटो; लेकनि अगर, उसके बाद भी, वह उसे सौंपने से इनकार करता है, तो उसे बेरहमी से यातना दो और मुझे बुलाओ: मैं उसे सबके सामने बेनकाब करूँगा और वह जगह भी बताऊँगा जहाँ खजाना छपिा है।'

इस प्रकार राजकुमार को धोखा देने के बाद, शैतान गायब हो गया।

अगली सुबह, राजकुमार, जैसे शकिार पर जाने या दुश्मन से लड़ने के लिए नकिल रहा हो, योद्धाओं के एक दल के साथ सवारी करके मठ पहुँचा; पूजनीय थियोडोर को साथ लेकर, वह उन्हें अपने घर ले आया और पहले तो, उन्हें प्यार से पूछताछ करने लगा:

'मुझे बताइए, पतिाजी, क्या यह सच है, जैसा मैंने सुना है, कि आपने खजाना पाया है?'

'हाँ,' पादरी ने उत्तर दयिा, 'मैंने वास्तव में इसे पाया था, और अब यह एक गुफा में छपिा हुआ है।'

'क्या आप जानते हैं,' राजकुमार ने फरि पूछा, 'कि इसे ठीक-ठीक कसिने छपिाया था, और इसमें कतिना सोना, चाँदी और बर्तन हैं?'

'हमारे पिता एंथनी के जीवित रहते हुए भी,' धन्य थियोडोर ने कहा, 'इस गुफा में एक वरांगियन द्वारा छिपाए गए खजाने की बात थी, और इसीलिए इसे अभी भी वरांगियन गुफा कहा जाता है; मैंने इसे देखा है; इसमें बहुत सारा सोना, चांदी और बर्तन हैं, जो सभी लैटिन मूल के हैं।'

'तो फिर, पिताजी, आप मुझे यह क्यों नहीं देंगे?' राजकुमार ने पूछा। 'मैं इसे आपके साथ बाँटूँगा; जितना आपको चाहिए उतना ले लीजिए, और बदले में आप मेरे और मेरे पिता दोनों के लिए मेरे पिता की जगह लेंगे' (वे उस समय तुरोव में थे)।

आदरणीय थियोडोर ने उत्तर दिया:

'मैं उससे अपने लिए कुछ भी नहीं चाहूँगा जो मेरे किसी काम का नहीं होगा; मैं यह सब तुम्हें दे दूँगा: तुम ऐसे बोझ उठाते हो जिनसे मैं पूरी तरह से मुक्त हूँ, लेकिन प्रभु ने मुझसे उस जगह की सारी याद छीन ली है जहाँ मैंने खजाना दफनाया था।'

तब राजकुमार ने क्रोध में अपने नौकरों को आदेश दिया:

'इस भिक्षु के हाथ-पैरों में बेड़ियाँ डाल दो, और तीन दिनों तक उसे रोटी-पानी भी मत दो: वह मेरी दया की कदर नहीं करता।'

जब आदरणीय थियोडोर को बाँध दिया गया, तो उससे एक बार फिर पूछा गया कि उसने खजाना कहाँ छिपाया था।

आदरणीय थियोडोर ने पहले की तरह ही उत्तर दिया:

'मैं पहले ही कह चुका हूँ कि मुझे नहीं पता कि वह कहाँ है।'

इस जवाब के बाद, राजकुमार ने उसे पीटने का आदेश दिया, ताकि महात्मा के पहने हुए रोंगटे खून से लथपथ हो गए; फिर, राजकुमार के आदेश पर, उसे घने धुएँ में लटका दिया गया और पीछे से बाँधकर उसके नीचे आग जला दी गई। कई लोग आदरणीय थियोडोर के धैर्य को देखकर चकित रह गए: वह आग के बीच ऐसे खड़े थे जैसे ओस के बीच; आग ने उनकी खुरदरी कमीज़ को छुआ तक नहीं। यह देखने वालों में से एक ने राजकुमार को बताया; राजकुमार, भय से भरकर, एक बार फिर से उस संत से विनती करने लगा:

'आप उस खजाने का खुलासा करने से इनकार करके अपना ही नाश क्यों कर रहे हैं जो हमारा होना चाहिए?'

'मैं तुम्हें सच बताता हूँ: मेरे भाई बेसिल की प्रार्थनाओं के द्वारा, जब मुझे खजाना मिला तो मैं धन के मोह से मुक्त हो गया, और अब—मैं एक बार फिर दोहराता हूँ—प्रभु ने मुझसे यह याददाश्त छीन ली है कि यह कहाँ दफन है,' पूज्य थियोडोर ने उत्तर दिया।

यह उत्तर सुनकर, राजकुमार ने तुरंत धन्य बेसिल को बुलवाया, जिन्हें जबरदस्ती लाया गया, क्योंकि उन्होंने गुफा से बाहर आने से इनकार कर दिया था।

'इस दुष्ट बूढ़े आदमी के साथ जो कुछ भी करने की आपने मुझे सलाह दी थी,' राजकुमार ने पूजनीय बेसिल से कहा, 'मैंने वह सब कर लिया है, और मुझे कुछ भी हासिल नहीं हुआ है; और मैं आपको गवाह के रूप में बुलाता हूँ, क्योंकि मैं आपको एक पिता के स्थान पर रखना चाहता हूँ।'

'तो फिर, मैंने तुम्हें क्या करने की सलाह दी थी?' पवित्र बेसिल ने उलझन में पूछा।

राजकुमार ने उत्तर दिया, 'उसकी यातनाओं के बावजूद, वह यह बताने से इनकार कर रहा है कि उसने वह खजाना कहाँ छिपाया है जो, जैसा आपने मुझे बताया था, उसे मिला था।'

'मुझे उस दुष्ट राक्षस की चालाकियाँ पहचाननी में आती हैं,' रेवरेंड बेसिल ने कहा, 'जिसने आपको बहकाया है, और मुझ पर तथा इस सम्मानित व्यक्ति पर बदनामी की है: मुझे इस गुफा को छोड़े पंद्रह साल हो गए हैं।'

'आपने हम सभी के सामने राजकुमार से बात की थी,' राक्षस और राजकुमार के बीच बातचीत के दौरान उपस्थित लोगों ने आपत्ति जताई।

'तुम सब शैतान के छल में आ गए हो,' पादरी ने उत्तर दिया, 'मैंने न तो तुम्हें देखा और न ही राजकुमार को।'

क्रोधित राजकुमार ने आदेश दिया कि उन्हें भी पूजनीय थियोडोर की तरह क्रूर यातनाएँ दी जाएँ। आरोप सहन न कर पाने और उग्र क्रोध से ग्रस्त होकर—जो शराब के नशे में और बढ़ गया और उन्माद में बदल गया—उसने एक तीर निकाला और धन्य बेसिल को घायल कर दिया। अपने शरीर से तीर निकालने के बाद, पूजनीय व्यक्ति ने उसे राजकुमार पर फेंका, और कहा:

'तुम्हें स्वयं भी जल्द ही इस तीर से घाव लगेगा' – जैसा कि संत ने भविष्यवाणी की थी, वैसा ही हुआ। इसके बाद, राजकुमार ने पादरियों को, जो पहले से ही अपने यातनाओं से मुश्किल से जीवित थे, एक अलग कालकोठरी में बंद करने का आदेश दिया, ताकि सुबह उन्हें नए, और भी क्रूर यातनाएँ दी जा सकें। उसी रात, दोनों पादरी प्रभु के पास चले गए (1098 में)। प्रभु ने उनके प्राणों को कालकोठरी से निकालकर शाश्वत प्रकाश में अपने सर्व-पवित्र नाम की महिमा की। उनकी मृत्यु की खबर मिलते ही, भाई आए और पवित्र शहीदों के शरीरों को लेकर, उन्हें वरांगियन गुफा में सम्मानपूर्वक दफनाया, जहाँ उन्होंने ईश्वरीय कर्मों से परिपूर्ण अपना जीवन व्यतीत किया था। बाद में, उन्हें पूजनीय एंथनी की गुफा में स्थानांतरित कर दिया गया, जहाँ वे आज भी अपरिवर्तित पड़े हैं, खून से सने कपड़ों और बालों वाली कमीज़ पहने हुए, जो स्वयं भी अपरिवर्तित बनी हुई हैं।

उनके परमधाम गमन के तुरंत बाद, परम पूज्य बेसिल की भविष्यवाणी सच हुई: व्लादिमीर शहर में राजकुमार डेविड इगोरेविच के साथ युद्ध के दौरान राजकुमार मस्टिस्लाव स्वियातोपोलकोविच एक तीर से घायल हो गए; उसी तीर को पहचानते हुए जिससे उन्होंने परम पूज्य बेसिल को घायल किया था, उन्होंने कहा:

'मैं यहाँ मर रहा हूँ, पूज्य थियोडोर और बेसिल के लिए दंडित।'

इस प्रकार दुष्ट हत्यारे को उसके अपराध के लिए दंडित किया गया; जबकि पूजनीय शहीदों को, धन के प्रेम से जीतने वाले शैतान पर विजेता के रूप में, नश्वर चांदी और सोने से नहीं, बल्कि शाश्वत महिमा और सम्मान से मुकुटित किया गया है: उन्होंने अपना मुकुट उस अनमोल रत्न – मसीह से प्राप्त किया, जिनका महिमा और सम्मान परमपिता परमेश्वर और पवित्र आत्मा के साथ, अब और हमेशा और युगों-युगों तक हो। आमेन।

पवित्र कन्या शहीद सुसान्ना और उनके साथ अन्य शहीदों का कष्टकथा

11 अगस्त को स्मरण किया जाता है

डायोक्लेटियन[5521] और मैक्सिमियन[5522] , जिन्हें हरक्यूलिस के नाम से जाना जाता है, के शासनकाल के दौरान रोम में गैवियस नामक एक पादरी रहते थे, जो पोप गैसियस[5523] के भाई थे; पैगन दार्शनिकों का गहरा ज्ञान रखने वाले और पवित्र शास्त्रों का गहन अध्ययन करने वाले गैवियस ने अपने भाई की सलाह और आग्रह पर पैगन त्रुटियों का खंडन करते हुए कई पुस्तकें लिखीं। दोनों व्यक्ति एक कुलीन परिवार से थे, इसलिए वे सम्राट डायोक्लेटियन के रिश्तेदार थे; हालाँकि, बाद वाले ने उनके साथ अपने रिश्ते को स्वीकार नहीं करना चाहा; वह उन्हें ईसाई धर्म अपनाने के लिए तुच्छ समझता था: डायोक्लेटियन इससे नफरत करता था और इसलिए उसने अपने ईसाई रिश्तेदारों से नाता तोड़ लिया।

प्रेस्बिटर गावियस की सुसन्ना नाम की एक बेटी थी; उन्होंने उसे एक सच्ची ईसाई भावना से पाला, उसमें कम उम्र से ही ईश्वर का भय भर दिया, और साथ ही उसे अच्छी सांसारिक शिक्षा भी दी। सुसान्ना अपनी बुद्धिमत्ता और शारीरिक सुंदरता के लिए प्रसिद्ध थी, जिसमें केवल उसकी आत्मा की सुंदरता ही उससे बढ़कर थी: वह प्रभु यीशु मसीह से अपने पूरे हृदय से प्रेम करती थी और उसकी एक वफादार, पवित्र सेविका थी। सुसान्ना की बुद्धिमत्ता और सुंदरता के बारे में सुनकर, डायोक्लेटियन उसे अपने बेटे मैक्सिमियन की पत्नी बनाना चाहता था। (अन्य लोग उसे मैक्सिमियन कहते हैं; वास्तव में, वह डियोक्लेटियन का पुत्र नहीं था, बल्कि उसे उसके निकटतम रिश्तेदारों के वंशज के रूप में गोद लिया गया था; पहले, डियोक्लेटियन ने अपनी बेटी वैलेरिया का विवाह उससे किया था; लेकिन उसकी मृत्यु के बाद, वह मैक्सिमियन का विवाह अपनी रिश्तेदार सोसाना से करना चाहता था। इस मैक्सिमियन का एक और उपनाम था, गेलेरियस, और उसे उपर्युक्त मैक्सिमियन (जो हरक्यूलिस के नाम से जाना जाता था) से अलग समझना चाहिए)। डायोक्लेटियन ने एक कुलीन दर्जे के व्यक्ति, अपने चचेरे भाई क्लॉडियस को, गावनियस के पास यह सौदा करने के लिए भेजा कि वह अपनी बेटी सुसान्ना का विवाह उसके बेटे मैक्सिमियन से कर दे। इस मिशन के साथ गावनियस के आवास पर पहुंचने पर, क्लॉडियस ने कहा:

[5521] डायोक्लेटियन – सम्राट 284–305।

[5522] मैक्सिमियन – 285 से 305 तक डायोक्लेटियन के साथ सम्राट और सह-शासक।

[5523] गाइउस 283 से 22 अप्रैल 296 तक पोप थे।

'हमारे परम प्रतापी सम्राट डायोक्लेटियिन ने मुझे आपके पास बड़ी कृपा और हर्ष के साथ भेजा है: वह आपकी पुत्री के विवाह के माध्यम से हमारे साथ आपका नाता-रिश्ता फिर से जोड़ना चाहते हैं, और शाही परिवार के साथ रक्त संबंध के माध्यम से आपके परिवार पर मिले इस नए सम्मान से बड़ा आपके लिए और क्या उपकार हो सकता है!'

गावियस ने कहा, 'हम गरीब और विनम्र हैं, और हमारी अयोग्यता को देखते हुए, हम खुद को सम्राट का संबंधी कैसे कह सकते हैं?'

क्लॉडियस ने उत्तर दिया:

'क्या तुम और तुम्हारे भाई, बिशप गियस, सेनेटर मैक्समियिन के पुत्र नहीं हो, जो हमारे चाचा, हमारे स्वामी सम्राट डायोक्लेटियिन के भाई, के संबंधी थे?'

'यह सच है,' गावियस सहमत हो गया, 'फिर भी हाल की परिस्थितियाँ हमें यह स्वीकार करने के लिए मजबूर करती हैं कि हम सम्राट के रिश्तेदार होने के पद के अयोग्य हैं।'

क्लॉडियस ने आपत्ति जताते हुए कहा, "अपना नाता न छिपाओ, क्योंकि यहाँ हमारे स्वामी और सम्राट हैं, जो आज्ञा देते हैं कि उनकी बेटी—जिसे विज्ञान में अत्यधिक बुद्धिमान बताया जाता है—की शादी तुम्हारे बेटे मैक्समियिन से कर दी जाए; और यह उचित है कि एक ही मूल से निकली शाखाएँ अलग न हों; यही हम, तुम्हारे रिश्तेदार भी, चाहते हैं; मुझे लगता है कि इससे आपको भी खुशी होगी।

गावनियिस ने कहा:

'कृपया मुझे कुछ समय दें ताकि मैं पता लगा सकूँ कि मेरी बेटी स्वयं आपके प्रस्ताव के बारे में क्या सोचती है।'

इतना कहकर वे अलग हो गए।

क्लॉडियस के जाने के बाद, गावियस ने अपने भाई के पिता, गयस, जो पास में ही रहते थे, को अपने घर आने के लिए कहा। जब गयस आए, तो गावियस ने उन्हें उस मिशन के बारे में बताया जिसके लिए क्लॉडियस राजा की ओर से उनके पास आया था। फिर उन्होंने सोसाना को बुलाया और आँसुओं भरी आँखों से उससे कहा:

'सम्राट डायोक्लेटियिन ने हमारे संबंधी क्लॉडियस को हमारे पास भेजा है, जिसके माध्यम से उन्होंने यह इच्छा व्यक्त की है कि वे आपको अपने पुत्र मैक्समियिन की पत्नी के रूप में देखना चाहते हैं।'

धन्य सुसन्ना ने अपने पिता और चाचा को इस प्रकार उत्तर दिया:

'अब तुम्हारी बुद्धि कहाँ चली गई? सचमुच, मुझे उसमें तुम्हारे भीतर कोई निशान भी नहीं दिखता; अगर मैं तुम्हारी शिक्षाओं की बदौलत ईसाई न बनी होती, तो वास्तव में मुझसे उस मामले पर बात करना संभव होता जिस पर तुम अब चर्चा कर रहे हो; तो फिर, आप अपने कानों और होठों को पापपूर्ण शब्दों को सुनकर और उन्हें मुझे दोहराकर क्यों अपवित्र कर रहे हैं, इस उद्देश्य से कि मुझे एक अधर्मी उत्पीड़क से शादी करने पर मजबूर करें? क्योंकि आपने स्वयं ही उसकी अधार्मिकता के कारण, जो आपके द्वारा स्वीकार किए गए पवित्र ईसाई धर्म के अनुकूल नहीं है, उससे सभी रिश्तेदारी का निडर होकर त्याग कर दिया है। परन्तु सर्वशक्तिमान परमेश्वर की महिमा हो, जिसने मुझे अपने संतों के समान आत्मा प्रदान की है: हमारे प्रभु यीशु मसीह में विश्वास के द्वारा, एक दुष्ट मनुष्य के साथ इस घृणित विवाह को अस्वीकार करके, मैं शहीद के मुकुट का पात्र समझा जाऊँगा!

'सुनो, मेरी बेटी,' गावनियिस ने उत्तर दिया, 'उस विश्वास में दृढ़ रहो जो अब तुममें है, ताकि तुम प्रभु के सामने अपना सम्मान बनाए रख सको, और हम तुम्हारे विश्वास के फल को प्रभु मसीह को अर्पित होते देख कर आनंदित होंगे।'

'मेरे स्वामियो,' सुसन्ना ने अपने पिता और चाचा से उत्तर दिया, 'आपने मुझे अक्सर प्रभु यीशु मसीह के लिए अपनी कुँवारी अवस्था बनाए रखने के लिए प्रोत्साहित किया है, और अब, उनके प्रति अपने प्रेम और उनके भय में, मैं इतनी दृढ़ता से स्थापित हूँ कि मैं देहगत विवाह की कल्पना भी नहीं कर सकती; मेरे पिता, मैं केवल उसी से प्रेम करूँगी, उसी के लिए जियूँगी, और उसी में अपनी आशा रखूँगी, जिसने मुझे स्वयं हमेशा के लिए सौंपा है; प्रभु, वह मेरे हृदय की सच्चाई को जानते हैं!

'चूंकि तुम्हें मसीह परमेश्वर, तुम्हारे स्वर्गीय वर को सौंप दिया गया है, हमेशा उनके प्रेम में रहो, उनके आज्ञाओं का पालन करो,' संत पोप गैसियस ने कहा।

इस प्रकार प्रभु के दोनों पवित्र सेवकों ने सुसन्ना के शुद्ध इरादे के बारे में जानकर, उसकी धार्मिक इच्छा में उसे लंबे समय से प्रोत्साहित किया, और साथ ही वे इतनी बड़ी प्रसन्नता से भर गए कि उनकी आँखों से भावनाओं से भरे आँसू अनायास बह निकले।

तीन दिन बाद, क्लॉडियस, नौकरों के एक समूह के साथ, एक बार फिर गाविनियस के पास आया; नौकरों को घर के बाहर छोड़कर, वह स्वयं अंदर गया, जहाँ उसे पोप गाइअस मिले। पारंपरिक अभिवादन के बाद, क्लॉडियस ने कहा:

'माननीय पादरियों, आप निस्संदेह उस आनंदमय अवसर से अवगत हैं जिसने मुझे यहाँ लाया है।'

'यहाँ तक कि,' बिशप गयिस ने उत्तर दिया, 'यदि ऐसा कोई कारण न भी होता, तो भी हम आपको देखकर प्रसन्न होते, क्योंकि हम एक-दूसरे के संबंधी हैं; हम इस पारिवारिक मिलन और एक-दूसरे से बातचीत में सांत्वना पाकर प्रसन्न हैं।'

क्लॉडियस ने कहना जारी रखा, 'आप जानते हैं, अति कृपालु भाइयों, कि हमारे स्वामी, सम्राट डायोक्लेटियन, आपसे और भी घनिष्ठ संबंध बनाने की तीव्र इच्छा व्यक्त करते हैं, और मैं आपको सलाह देता हूँ और विनती करता हूँ: विश्व के शासक की इच्छा को पूरा करें और इस प्रकार उन्हें सांत्वना दें।'

गावियस ने उत्तर दिया, "इस सम्राट की इच्छा को मेरे स्वामी और भाई, बिशप गयिस तक पहुँचाइए।"

क्लॉडियस ने गयिस से कहा, 'हमारे दयालु सम्राट, आपकी बेटी—और मेरी पोती—का विवाह अपने पुत्र के साथ करना चाहते हैं; वह उसकी सुंदरता, बुद्धि और प्रतिभा से अवगत हैं; हम, रिश्तेदारों के रूप में, मानते हैं कि हमारे परिवार के लिए न केवल शाही वंश से जुड़े रहना, बल्कि उससे और भी घनिष्ठ रूप से एकजुट होना, इससे अधिक सम्मानजनक कुछ भी नहीं हो सकता: इसके माध्यम से, यह और भी गौरवान्विति और महिमामंडित होगा।

जैसे ही बिशप चुप रहे, गावियस ने क्लॉडियस के भाषण का उत्तर दिया:

'आओ हम उस युवती को बुलाएँ और उससे स्वयं पूछें।'

तब संत सुज़ाना को उनके पास बुलाया गया। कमरे में कोई बाहरी व्यक्ति नहीं था; केवल वे तीनों ही मौजूद थे। सुज़ाना को देखकर, क्लॉडियस प्रेम और आनंद से आँसू बहाने लगा और, उसे गले लगाते हुए, उसे चूमकर अभिवादन करना चाहा। हालाँकि, उसने इसका विरोध किया और उससे मुंह फेरते हुए कहा:

'मेरे प्रभु यीशु मसीह जानते हैं कि उनकी दासी के होंठों को किसी पुरुष के होंठों ने कभी नहीं छुआ है: उन्हें अपवित्र न करें।'

क्लॉडियस ने उत्तर दिया, 'मैंने तुम्हें एक रिश्तेदार के रूप में चूमना चाहा: क्योंकि तुम मेरी पोती हो।'

संत सुसन्ना ने उत्तर दिया:

'मैं तुम्हारे चुंबन से इसलिए घृणा नहीं कर रही हूँ कि कोई और कारण हो, बल्कि इसलिए कि तुम्हारे होंठ मूर्तिपूजक बलिदानों से अपवित्र हैं।'

संत सुसन्ना के ये शब्द सुनते ही क्लॉडियस, ऐसा अनुभव करते हुए मानो ईश्वर की उंगली ने उसके हृदय को छू लिया हो, करुणा से भर उठा और बोला:

'इस अपवित्रता से अपने होंठों को शुद्ध करने के लिए मुझे क्या करना चाहिए?'

'पश्चाताप करो और पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम पर बपतिस्मा लो,' संत सुसन्ना ने उत्तर दिया।

तब क्लॉडियस ने बिशप की ओर मुड़कर कहा:

'मुझे शुद्ध करो, क्योंकि मसीह में विश्वास के द्वारा शुद्ध हुआ मनुष्य उन देवताओं की सेवा करने वाले से बेहतर है: मैंने उनके लिए कई बलिदान चढ़ाए हैं, फिर भी मुझे उनसे कुछ भी नहीं मिला, भले ही राजा उनके सामने सिर झुकाते हैं।'

निर्मल कन्या के शब्दों के माध्यम से ईश्वर की कृपा के प्रभाव से क्लॉडियस में आए चमत्कारी और अचानक परिवर्तन को देखकर, बिशप गैस ने प्रसन्नतापूर्वक कहा:

'मेरी बात सुनो, मेरे भाई! मैं तुम्हें कुछ अच्छी सलाह देना चाहता हूँ: तुम अपने स्वामी के पुत्र के लिए एक वधू खोजने हमारे पास आए हो, लेकिन ईश्वर तुम्हें खोज रहे हैं और इस कन्या की प्रार्थनाओं के द्वारा, तुम्हें बचाना चाहते हैं, ताकि हमारी अपनी वंश-परंपरा से भी कुछ लोग ईश्वर के राज्य के योग्य हो सकें। अत; ईश्वर में विश्वास करो, पवित्र शहीदों के रक्त के बहाव के लिए पश्चाताप करो, और पवित्र बपतिस्मा ग्रहण करने में विलंब मत करो।

क्लॉडियस ने पूछा, 'यदि मैं पवित्र बपतिस्मा ग्रहण करूँ, तो क्या मेरे हृदय की सारी पापपूर्ण अशुद्धियाँ दूर हो जाएँगी?'

'निस्संदेह; आपको बस पूरे दिल से विश्वास करना है,' पवित्र पिता ने उत्तर दिया।

यह सुनकर, संत सुसान्ना अपने चाचा, संत गैसियस के पैरों पर गिर पड़ीं, और कहा:

'मैं आपसे वनिती करती हूँ, मेरे प्रभु, मसीह के वास्ते, क्लॉडयिस का बपतस्मिा न टालिए; उसकी आत्मा को बचा लीजिए।'

'सबसे पहले, आइए यह सुनश्चिति करें कि क्या वह वास्तव में मसीह ईश्वर में वश्विास करता है,' पवत्रि बशिप ने कहा।

'मैं सचमुच वश्विास करता हूँ,' क्लॉडयिस ने कहा, 'काश मेरे पाप क्षमा हो जाएँ, जैसा तुम मुझसे वादा करते हो।'

'सर्वशक्तमिान प्रभु यीशु मसीह के नाम पर, तुम्हारे सभी पाप क्षमा कए गए हैं,' गाइउस ने उत्तर दयिा।

क्लॉडयिस संत के पैरों तले ज़मीन पर गरि पड़ा और अपने सरि पर धूल उड़ाते हुए चल्लिाया:

'हे प्रभु परमेश्वर, अनंत प्रकाश, मेरी अज्ञानता और अवश्विास में की गई पापों को क्षमा करें; मुझे अपनी कृपा से भर दें, ताकि मेरी पत्नी और बच्चे जान सकें कि आप ही उन लोगों को बचाते हैं जो आप में अपनी आशा रखते हैं!'

तब संत गैसयिस ने क्लॉडयिस को उपदेश और समझा-बुझाकर घर भेज दयिा। उसी रात बाद में, क्लॉडयिस अपनी पत्नी और दो बेटों के साथ संत गैसयिस के पास पवत्रि बपतस्मिा के लिए आया। बनिा कसिी देरी के बशिप ने उनका बपतस्मिा दयिा; पुरोहति गावयिस उनके गॉडफादर थे। जब क्लॉडयिस पवत्रि बपतस्मिा के कुंड से बाहर नकिला, तो उसने कहा:

'मैंने सूर्य से भी अधकि तेज प्रकाश देखा, जो मेरे बपतस्मिा के दौरान मुझ पर चमका।'

पवत्रि बपतस्मिा और क्रस्मिाशन के बाद, बशिप ने पवत्रि लटिर्जी का अनुष्ठान कयिा और नव-बपतस्मिति लोगों को मसीह के शरीर और रक्त के दैवीय रहस्य प्रदान कए, और सभी अपने उद्धारकर्ता ईश्वर में आनंदति हुए। क्लॉडयिस की पत्नी का नाम प्रेपेडग्निा था, और उसके बेटों का नाम अलेक्जेंडर और कुफयिस था। बपतस्मिा के बाद, क्लॉडयिस ने अपनी संपत्ति बेचना और उससे प्राप्त धन को गरीबों में बाँटना शुरू कर दयिा; इस उद्देश्य के लिए, उसने वभिन्नि गुप्त स्थानों पर छपि हुए ईसाइयों को खोजा और रात में गुप्त रूप से कालकोठरयिों में भी गया; क्लॉडयिस जनि लोगों को भी पाता, उनके पैर धोता, उन्हें चूमता और उदार उपहारों से उनकी ज़रूरतों को पूरा करता, उन्हें रोज़ाना कपड़े और भोजन प्रदान करता; साथ ही, वह अपने पछिले जीवन में कए गए पापों के लिए लगातार पश्चाताप करता था।

कुछ समय बाद, डायोक्लेटयिन ने क्लॉडयिस के बारे में पूछताछ करनी शुरू कर दी, यह सोचकर कि उसने कोई खबर क्यों नहीं लाई, जबकि उसे वशिष रूप से गावनियिस के पास यह पता लगाने के लिए भेजा गया था कि क्या सुसान्ना उसके बेटे से शादी के लिए सहमत है; सम्राट को बताया गया कि क्लॉडयिस बीमार था। तब उसने अपने छोटे भाई मैक्समिस को, जो दरबार में एक सम्मानति पद पर था, उस बीमार व्यक्ति से मलिने और सुसानना के बारे में पूछताछ करने के लिए भेजा। मैक्समिस ने अपने भाई को रोंगटे खड़े कर देने वाले कपड़े पहने और ईश्वर से प्रार्थना करते हुए पाया। वह भयभीत हो गया और कहा:

'मेरे प्रयि भाई, जसिने मुझे बचपन से पाला है, तुम्हें इतना बदलने का क्या कारण है – तुम इतने पीले और दुबले-पतले हो गए हो?!'

क्लॉडयिस ने उत्तर दयिा, 'यदि आप मेरी बात सुनने को तैयार हैं, तो मैं आपको अपने परविर्तन का कारण बताऊँगा।'

मैक्समि ने कहा, "मुझे अपनी बीमारी के बारे में बताइए, मेरे स्वामी!"

क्लॉडयिस ने कहना शुरू कयिा, 'मैं स्वीकार करता हूँ कि सम्राटों की आज्ञा मानते हुए और उनके आदेशों को पूरा करते हुए, मैंने ईसाइयों को मारा, और इस प्रकार नर्दिोषों का रक्त बहाया; यद्यपि मैंने यह अज्ञानतावश, सम्राट की आज्ञा का पालन करते हुए कयिा, पर अब मैं इसके लिए गहराई से शोक मनाता हूँ और पश्चाताप करता हूँ।'

'तुम क्या कह रहे हो, मेरे भाई?' मैक्समि ने आपत्ति जताई। 'हमारे स्वामी, सम्राट डायोक्लेटयिन ने तुम्हें हमारे भाई गैवयिस के पास उनकी बेटी और उनके बेटे के बीच ववािह का प्रबंध करने के लिए भेजा था; मुझे इस बारे में पता लगाने के लिए तुम्हारे पास भेजा गया है, फरि भी तुम कुछ और ही बात कर रहे हो।'

क्लॉडयिस ने कहा, 'मैं ठीक इसी लिए गया था, अपनी प्रयि पोती के पास, और मैंने उसे देखा: वह शरीर और आत्मा दोनों से सुंदर है; वह पवत्रि और बुद्धमिान है, और वह पहले से ही स्वर्ग के राजा, मसीह की दुल्हन है; उसकी बदौलत, मुझे भी मेरे पापों से मुक्ति मिलि गई है। लेकनि ताकि तुम भी परमेश्वर की दया को जान सको, जो सभी को बचाना चाहता है, हम आज रात अपने भाई, पुरोहति गावयिस के पास जाएँगे, और तुम अनंत प्रकाश को देखोगे।

'मैं वही करूँगा जो आप आज्ञा देंगे,' मैक्समिस ने उत्तर दयिा।

उसी रात वे सालस्टस के महलों के पास स्थित, सालारियन गेट्स के नाम से जाने जाने वाले शहर के द्वारों पर गए। जब गावनियिस को बताया गया कि उसके भाई, क्लॉडियस और मैक्समिस, घर के पास खड़े थे और अंदर आना चाहते थे, तो वह तुरंत उनसे मलिने के लिए बाहर भागा और उन्हें खुशी-खुशी अंदर ले आया। उनके साथ बातचीत शुरू करने से पहले, गावनियिस प्रार्थना करने के लिए उठे: वे घुटनों के बल बैठ गए और अपना सिर झुका लिया; क्लॉडियस और मैक्समि ने भी उनका अनुसरण किया।

प्रार्थना करते हुए गावनियिस ने कहा, 'हे प्रभु परमेश्वर, आप जो बिखिरे हुए को इकट्ठा करते हैं और इकट्ठा हुए पर दृष्टि रिखते हैं, अपनी हाथों के काम पर दृष्टि रिखें, उन सभी को प्रकाशित करें जो आप में विश्वास रखते हैं: आप सदा-सदा के लिए सच्चा प्रकाश हैं।'

सभी ने उत्तर दिया:

'आमेन!'

उठकर, उन्होंने एक-दूसरे को गले लगाया और चूमा, जबकि क्लॉडियस पादरी के पैरों पर गिर पड़ा, उन्हें चूमने लगा। यह देखकर, मैक्समिस चकित हो गया और सुसानना से बात करने की अनुमति मांगी। गावियस ने उसे बुलाने का आदेश दिया। अंदर आते ही, उसने पहले ईश्वर के सामने सिर झुकाया, और फिर, अपने पिता के पास आकर कहा:

'मुझे आशीर्वाद दीजिए, पिताजी।'

तब पुरोहित ने सुसन्ना के आगमन के लिए एक बार फिर प्रार्थना की:

उन्होंने कहा, 'हमारे प्रभु यीशु मसीह, जो सर्वशक्तिमान परमेश्वर पिता के साथ सदा-सदा जीवते और राज्य करते हैं, हम पर शांति प्रदान करें।'

'आमेन!' सभी ने कहा।

नम्रता और पवित्रता से परिपूर्ण संत सुसन्ना को देखकर, मैक्समिस ने उनका हाथ चूमना चाहा; लेकिन उन्होंने ऐसा करने की अनुमति नहीं दी। और जब वे सभी भाईचारे के प्रेम से प्रेरित होकर अपने आँसू रोक नहीं पा रहे थे, तो संत गैसियस, जो उनके द्वारा बनाए गए चर्च के पास ही रहते थे, को बताया गया कि उनके भाई इकट्ठा हो गए हैं। उन्होंने सोचा कि उन्हें शहादत का दर्द झेलने के लिए ले जाया जा रहा है और, उनमें से पहले शहीद होने का अनुभव करने की इच्छा से, वे गैवनियिस के घर की ओर दौड़ पड़े। जब उन्होंने उसे देखा, तो वे इस आश्चर्य से डर गए और उसके सामने जमीन पर सिर झुका लिया।

संत गैसियस ने उनसे कहा, 'तुम्हें शांति मिले!' 'प्रभु के नाम में हिम्मत रखो; आइए हम प्रार्थना करें!'

और उन्होंने प्रार्थना करना शुरू किया, यह कहते हुए:

'हे प्रभु परमेश्वर, हमारे प्रभु यीशु मसीह के पिता, जिन्होंने उन्हें सब के उद्धार के लिए भेजा, और जो हमें इस संसार के अंधकार से छुड़ाकर अनंत जीवन में ले जाना चाहते हैं, हमें, अपने सेवकों को, अपने विश्वास में दृढ़ कीजिए, क्योंकि आप युगानुयुग राज्य करते हैं।'

'आमेन,' उपस्थित लोगों ने कहा।

अपनी सीट पर बैठकर, बिशप ने एक दैवीय प्रेरित प्रवचन देना शुरू किया; सभी ने उनके द्वारा बोले गए ईश्वर के वचनों को ध्यान से सुना; संत सुसान्ना ने, हालांकि, उनके बीच बैठना नहीं चाहती थी, इसलिए खड़े होकर सुना; उसी समय, उसने मन ही मन प्रार्थना की। प्रवचन के अंत में, बिशप ने मैक्समिस से कहा:

'भैया, हमारे यहाँ आने के लिए हम आपको धन्यवाद देते हैं।'

मैक्समिस ने उत्तर दिया, "मैं, यद्यपि अयोग्य हूँ, आपके पवित्र चरणों को छूने आया हूँ, और आप स्वयं अच्छी तरह जानते हैं कि मूल रूप से मुझे आपके पास आने के लिए क्या प्रेरित किया।"

'तुम ही कह दो,' संत गैसियस ने सुझाव दिया।

मैक्समि ने कहा, "सम्राट डायोक्लेटियिन सुसान्ना का विवाह अपने पुत्र मैक्समियिन से कराने का अनुरोध कर रहे हैं।"

'कन्या के पास पहले से ही मसीह, उसके स्वर्गीय वरा, हैं, जो उसे परमपिता परमेश्वर द्वारा दिए गए हैं, और यह अच्छी तरह जान लो कि वह अब और विवाह नहीं कर सकती,' बिशप ने इस प्रस्ताव के जवाब में कहा।

'जो कुछ भी ईश्वर देते हैं वह शाश्वत होता है,' मैक्समिस ने कहा।

'खुद शाश्वत जीवन प्राप्त करो,' पोप ने उन्हें सुझाव दिया।

उसने पूछा, "शाश्वत जीवन क्या है?"

क्लॉडियस ने बीच में कहा, 'वह शाश्वत जीवन है जिसे मैं जान चुका हूँ।'

मैक्सिमस ने उससे कहा, 'जिससे तुम परिचित हुए हो, मैं भी उसे जानना चाहता हूँ, लेकिन फिर भी, हमें राजा के साथ अपने संबंध तोड़ने नहीं चाहिए।'

'हम आपसे आग्रह करते हैं,' संत गैसियस ने विरोध करते हुए कहा, 'कि आप हमारे प्रभु यीशु मसीह, परमेश्वर के शाश्वत पुत्र पर विश्वास करें; क्योंकि पृथ्वी के राजा की दृश्य महिमा और सम्मान अस्थायी हैं, और उससे संबंध रखने से कोई लाभ नहीं होता; यह सब, हमारे क्षणिक जीवन के साथ, बीत जाएगा और नष्ट हो जाएगा। लेकिन जो कुछ स्वर्गीय राजा, हमारे ईश्वर मसीह, हमसे वादा करते हैं, वह शाश्वत और आवश्यक है, और हमारे प्रयास के योग्य है।

यह सुनकर मैक्सिमिस भावुक हो गया और खुशी-खुशी पवित्र विश्वास को अपनाने के लिए सहमत हो गया।

'भाई, तुम जानते हो,' बिशप ने कहा, 'कि हमने अपनी सारी संपत्ति त्याग दी है और अब हम अपने प्रभु यीशु मसीह के सिवा कुछ नहीं चाहते, जिनमें हम जीते हैं और जिनमें हम गर्व करते हैं।'

मैक्सिमस ने कहा, 'मेरे स्वामिनो, विलंब न करें, बल्कि मेरे उद्धार के लिए जो भी आप आवश्यक समझें, उसे करने में शीघ्रता करें।'

उसके लिए उपवास का आदेश देकर, बिशप ने उसे घर भेज दिया। उसके जाने के बाद, मैक्सिमिस ने पहले तो मसीह में अपने विश्वास को छिपाया, हालांकि वह गाविस, गैसियस और सबसे बढ़कर स्वयं प्रभु यीशु के प्रति प्रेम से जल रहा था; फिर, जैसे-जैसे ईश्वर के प्रति उसका प्रेम गहरा होता गया, उसने मृत्यु की परवाह न करते हुए, खुले तौर पर मसीह के नाम का प्रचार करना शुरू कर दिया। लेकिन बिशप और पुरोहित ने उन्हें सलाह दी कि वे अपने धर्म को और पाँच दिनों तक छिपाए रखें, जब तक कि वे अपनी संपत्ति बेचकर उसकी आय गरीबों में बाँट न दें। मैक्सिमिस ने उनकी आज्ञा मानी। पाँच दिन बाद, वे संत गियस के पास गए और उनके पैरों पर गिरकर बोले:

'हे मेरे प्रभु, मैं आपको मसीह के नाम पर विनती करता हूँ, कि आप मुझे पवित्र बपतिस्मा के द्वारा ज्ञान प्रदान करें, जैसे आपने मेरे भाई क्लॉडियस को ज्ञान प्रदान किया था; जब से आपने मुझे हमारे प्रभु यीशु मसीह की शिक्षाओं में शिक्षित किया है, मेरा हृदय इतना प्रभावित हुआ है कि जब तक मैं पवित्र बपतिस्मा नहीं प्राप्त कर लेता, मुझे शांति नहीं मिल सकती।'

बिशप ने उनका बपतिस्मा दिया और पवित्र धर्मविधि संपन्न करने के बाद, उन्हें दैवीय रहस्य प्रदान किया। मैक्सिमिस अपने ईसाई रिश्तेदारों के साथ रहे, उनके साथ ईश्वर के लिए भजन गाते और उनकी महिमा करते रहे; इस दौरान उन्होंने अंततः उस संपत्ति को बेच दिया—जिसे वे पाँच दिनों के भीतर बेचकर बाँट नहीं पाए थे—और अपनी वफादार मित्र फार्सन के माध्यम से इसका पैसा गरीबों में बाँट दिया, जो एक गुप्त ईसाई था और बाद में इन पवित्र शहीदों के दुखों का वर्णन किया, क्योंकि यह सब कुछ उसकी आँखों के सामने हुआ था।

क्लोडियस से मैक्सिमिस की मुलाकात के पंद्रह दिन बाद, डायोक्लेटियन को पता चला कि वे दोनों—और बाद वाला, अपने पूरे परिवार के साथ—ईसाई बन गए थे: इससे उसे बहुत दुख हुआ। हालाँकि, उसने अपना दुख छिपाया और अपनी पत्नी, रानी आइरीन से केवल यह कहा कि उसने गाविस को बुलाया है, ताकि अपने बेटे मैक्सिमियिन और गाविस की बेटी सुसानना की शादी का इंतजाम कर सके। यह सुनकर, आइरीन ने ईश्वर की स्तुति की: वह एक गुप्त ईसाई थी, और उसने सम्राट से कहा:

– जैसा ईश्वर आपको प्रेरित करे, वैसा ही करें।

रानी को अपना दुख बताए बिना, डियोक्लेटियन ने अपने सैन्य कमांडर जूलियस को, जो एक मूर्तिपूजक और क्रूर व्यक्ति था, बुलाया और दुख के साथ बताया कि उसके प्रिय रिश्तेदार, जिन्हें उसके पुत्र मैक्सिमियिन के लिए एक दुल्हन की सगाई का प्रबंध करने के लिए भेजा गया था, उसके निषेध के बावजूद ईसाई धर्म में परिवर्तित हो गए थे।

जूलियस ने कहा, 'जो कोई भी राजा की आज्ञाओं की अवहेलना करता है, भले ही सबसे हालिया आज्ञाएं अन्यायपूर्ण हों, उसे मृत्युदंड दिया जाना चाहिए; लेकिन आपकी आज्ञा न्यायपूर्ण थी, और यदि उन्होंने इसका उल्लंघन किया है, तो वे और भी अधिक मृत्युदंड के पात्र हैं।'

राजा ने तुरंत जूलियस को आदेश दिया कि बिशप गियस को छोड़कर सभी को गिरफ्तार करने के लिए सैनिक भेजे जाएँ, और ऐसा ही किया गया। उन्होंने पादरी गैवियस और उसकी बेटी को हिरासत में रखने का आदेश दिया; जबकि मैक्सिमिस और क्लॉडियस को उनकी पत्नियों और बच्चों के साथ निर्वासित कर दिया। बाद में, उन्होंने उन्हें ओस्टिया

शहर में जलाने का आदेश दिया[5524] , और उनकी राख को समुद्र में फेंक दिया गया; इस प्रकार संतों ने शहादत का गौरवशाली मुकुट प्राप्त कर अपना अंत किया।

पचास-पाँच दिन बाद, डायोक्लेटियन ने अपनी पत्नी को आदेश दिया कि वह सुसन्ना को अपनी देखभाल में रखे, ताकि उसे उसके बेटे से शादी करने के लिए मना सके। जब संत सुसन्ना, जो पहरे में थी, ने उन्हें अपनी ओर आते देखा, तो उसने दिल से एक गहरी आह भरकर और आँसुओं के साथ, ईश्वर से प्रार्थना करते हुए कहा:

'हे प्रभु, अपनी दासी को न छोड़िए!'

जब सुसन्ना को रानी के सामने लाया गया, तो रानी ने उससे पहले ही झुककर नम्रता दिखाई: रानी ने उसमें मसीह की कृपा और उसकी पवित्रता का सम्मान किया। संत सुसन्ना रानी के सामने जमीन पर गिर पड़ीं, लेकिन रानी ने उन्हें प्यार से उठाया और कहा:

'हमारे उद्धारकर्ता मसीह तुममें आनन्दित होते हैं।'

रानी के मुख से मसीह का नाम सुनकर, संत सुसन्ना प्रसन्न हुईं और कहा:

'मैं अपने ईश्वर मसीह का धन्यवाद करती हूँ, जो सर्वत्र राज्य करते हैं!'

और वे दोनों, रानी आइरीन और संत सोसाना, प्रभु परमेश्वर में आनंदित हुईं, और प्रेमपूर्वक उनके बारे में बातें करती रहीं। उन्होंने प्रभु से भक्तिपूर्वक प्रार्थनाएँ कीं, विशेष रूप से संत सोसाना ने: अपने पिता के निर्देशानुसार, उन्होंने दिन-रात, बिना रुके परमेश्वर की स्तुति करते हुए भजन गाए। इस बीच, डियोक्लेशियन इंतजार कर रहा था, इस उम्मीद में कि सुसन्ना शादी के लिए राज़ी हो जाएगी। लंबे इंतजार के बाद, उसने रानी को बुलवा भेजा और उससे पूछा:

'क्या उसने सुसन्ना को उसके बेटे से शादी करने के लिए मना लिया है? क्या वह मैक्सिमियिन के प्रेम की ओर झुकाव रखती है?'

रानी ने उत्तर दिया, 'एक असंभव लक्ष्य का पीछा करना व्यर्थ का प्रयास है, और जहाँ सहमति न हो वहाँ आशा नहीं रखनी चाहिए: मुझे सुज़ाना में ऐसे किसी भी विचार या इरादे का सबसे छोटा सा भी निशान नहीं दिखता जो यह विश्वास दिला सके कि कोई भी उसे किसी भी तरह से इसके लिए मजबूर कर सकता है।'

यह सुनकर, डायोक्लेटियन को भयंकर क्रोध आ गया और उसने अपने बेटे मैक्सिमियिन को सुसन्ना के साथ एक घिनौना हिंसक कृत्य करके उसका अपमान करने की अनुमति दे दी, लेकिन महल में नहीं – उसे उसे उसके पिता के घर ले जाकर अपनी शर्मनाक वासना को पूरा करते हुए वहाँ अपवित्र करने का आदेश दिया। संत सुसन्ना को महल छोड़ने और अपने घर लौटने के लिए मजबूर किया गया। जब रानी ने संत सुसन्ना को विदाई दी, तो उन्होंने रोते हुए उससे कहा:

'जिसने प्राचीन काल में अपनी दासी सुसन्ना (दानियेल 13) को बचाया, वही तुम्हें भी बचाएगा, तुम्हारी सहायता करेगा, और तुम्हें एक गौरवपूर्ण विश्राम प्रदान करेगा।'

विदा लेकर, वे रोते हुए अलग हो गए। जब संत सुसन्ना को दो महिलाओं द्वारा उनके घर ले जाया गया, तो वह अपने कक्ष में जमीन पर गिर पड़ीं और वहाँ, रोते और विलाप करते हुए, अपने उद्धारकर्ता, मसीह से प्रार्थना की कि वह उनकी सहायता के लिए शीघ्रता करें। उसी रात, राजा मैक्सिमियिन का पुत्र, घृणित कामुकता से ग्रस्त होकर, आया; जिस कमरे में संत सुसन्ना प्रार्थना कर रही थीं, उसमें चुपके से प्रवेश करते हुए, उसने उनके ऊपर परमेश्वर के स्वर्गदूत को देखा, जिससे एक महान तेज निकल रहा था। मैक्सिमियिन को बहुत डर सता गया: संत सुसन्ना के पास जाने की हिम्मत न करते हुए, वह यथाशीघ्र महल में अपने घर वापस भाग गया, जहाँ उसने अपने पिता को सब कुछ बता दिया।

डायोक्लेटियन ने कहा, 'यह ईसाई जादू-टोने के सिवा और कुछ नहीं है।'

और उसने अपने एक दरबारी, कर्टियस को यह पता लगाने के लिए भेजा कि सुसन्ना के घर में क्या हो रहा था। लेकिन कर्टियस भी, जैसे ही वह घर में घुसा, तुरंत एक बड़े भय से ग्रस्त हो गया और, आतंकित होकर, दौड़ता हुआ सम्राट के पास वापस चला गया। उस समय, डायोक्लेटियन मसीह के आगमन और देवताओं की पूजा को लेकर रानी से बहस कर रहा था। रानी से पराजित होने पर, उसे सुसान्ना याद आई और उसने कहा:

'उसकी सुंदरता और बुद्धिमत्ता को देखकर तुम उसे मेरे बेटे से शादी करने के लिए मना क्यों नहीं पाए?'

रानी ने उत्तर दिया, 'उसने अपने लिए बेहतर मार्ग चुना है, क्योंकि आपके बेटे ने स्वयं कहा था कि उसने उसके ऊपर एक अगम्य प्रकाश देखा था।'

[5524] यह रोम के पास एक लैंडिंग स्टेज का नाम था।

राजा अत्यधिक क्रोधित हो गया और उसने क्रूरता के लिए कुख्यात एक उत्साही मूर्तिपूजक, मैसेडोनियस नामक व्यक्ति को आदेश दिया कि वह सुसन्ना के पास जाए और उसे न केवल धमकियों बल्कि यातनाओं के माध्यम से भी मूर्तियों की पूजा करने के लिए मजबूर करे; साथ ही, डायोक्लेटियन ने यह गुप्त रूप से करने का आदेश दिया, ताकि राजा को उसकी क्रूरता के लिए दोषी न ठहराया जाए, और लोग यह न कहें कि वह अपने ही रिश्तेदारों को भी नहीं बख्शता। मैकेडोनियस सेंट सुसान्ना के पास आया, और अपने साथ देवता डिया का प्रतिनिधित्व करने वाली एक छोटी सुनहरी मूर्ति लाया; संत को यह दिखाते हुए, उसने उसे इसकी पूजा करने का आदेश दिया। संत सोसाना ने मूर्ति पर फूँक मारी और कहा:

'हे मेरे प्रभु, मसीह यीशु, मेरी आँखें इस शैतान के औजार को न देखें।'

और तुरंत वह मूर्ति, जो मेसेडोनियस के हाथों में थी, अदृश्य हो गई, मानो किसी ने उसे छीन लिया हो। मेसेडोनियस हैरान रह गया और उसने सोचा कि सेंट सोसाना ने ही किसी तरह मूर्ति चुराकर छिपा दी होगी:

'मैं देखता हूँ,' उसने कहा, 'कि तुम सोने से प्यार करती हो, क्योंकि तुमने मेरे हाथों से मूर्ति चुरा ली है, और मैं तुम्हारी प्रशंसा किए बिना नहीं रह सकता: मुझे लगता है कि अगर तुम इससे प्यार नहीं करतीं तो तुम मूर्ति नहीं लेतीं।'

'मेरे प्रभु ईश्वर ने,' संत सोसन्ना ने उत्तर दिया, 'अपने स्वर्गदूत को भेजा, जिसने मूर्ति को घर से बाहर फेंककर मेरी दृष्टि से दूर कर दिया।'

जैसे ही उसने ये शब्द कहे, उसका नौकर मैसेडोनियस अंदर आया, और उसने बताया कि मूर्ति घर से बाहर सड़क पर फेंक दी गई है। क्रोध के आवेश में आकर, मैसेडोनियस ने अपने ही हाथों से संत सुसन्ना के कपड़े फाड़ दिए और उसे बेरहमी से लाठी से पीटने लगा। हालांकि, संत सुसन्ना ने उसी क्षण पुकारा:

'महिमा तेरी हो, हे प्रभु!'

'देवताओं को बलिदान चढ़ाओ,' मैसिडोनियस ने कहा।

'मैं अपने प्रभु को अपना बलिदान अर्पित करती हूँ,' संत ने उत्तर दिया।

मेसेडोनियस ने राजा को बताया कि सुसन्ना अपने विश्वास में दृढ़ और अटल रही और उसने मूर्ति को अपवित्र कर दिया था। राजा ने आदेश दिया कि उसे वहीं, उसी घर में, तलवार से मार डाला जाए। और मसीह की वधू की प्रमुख, पवित्र शहीद सुसन्ना का सिर काट दिया गया; और वह आनंद और उल्लास के साथ, अपने स्वर्गीय वधू-वर के तेजस्वी महल के लिए प्रस्थान कर गई। संत सोसन्ना की हत्या के बारे में जानने पर, रानी ने रात के समय उस पवित्र शहीद के पूजनीय शरीर को उठाया और अपनी ही ओढ़नी से, जो जमीन पर बहा हुआ था, उसका खून इकट्ठा किया: सुगंधित तेलों से अभिषिक्त एक कपड़े में लपेटकर, रानी ने उसके शरीर को संत अलेक्ज़ेंडर की कब्र में रख दिया, जहाँ कई शहीदों को दफनाया गया था, और अपने सिर के आवरण पर एकत्रित उसके रक्त को एक चाँदी के अवशेष-पात्र में रख दिया, जिसे उन्होंने अपने कक्ष में छिपा दिया, जहाँ वह आमतौर पर दिन-रात गुप्त रूप से प्रार्थना करती थीं। जहाँ पवित्र शहीद सुसानना का रक्त बहाया गया था, उस स्थल को पोप सेंट गैसियस ने एक चर्च के रूप में पवित्र किया और वहाँ दैवीय अनुष्ठान का आयोजन किया[5525] । – कुछ ही समय बाद, पवित्र पुरोहित गैवियस ने भी शहादत प्राप्त की, और उनके बाद सेंट गैसियस ने भी शहीद होकर अपना प्राण त्याग दिया; वे सभी, शहीदों के रूप में, परमेश्वर के सिंहासन के सामने उपस्थित हुए, और त्रिमूर्ति में एक परमेश्वर, पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा की महिमा करने लगे। उसी को हमसे भी सम्मान और महिमा मिले, अब और हमेशा, और युगों-युगों तक[5526] । आमीन।

शहीद, डिकिन संत यूप्ला की स्मृति

11 अगस्त को स्मरण किया जाता है

डायोक्लेटियन और मैक्सिमियन के शासनकाल में, ईसाइयों का उत्पीड़न पूरे संसार में फैल गया। उस समय, उपर्युक्त अधर्मी सम्राटों ने पेंटागुरस नामक एक राजकुमार को — जो अपनी क्रूरता के लिए जाना जाता था — सिसिली भेजा कि वह ईसाइयों को खोजकर उन्हें यातना दे। कैटानिया शहर में पहुँचने पर, यातना देने वाले ने शहर के मजिस्ट्रेट,

---

[5525] पोप सेरजियस की जीवनी में सुसन्ना के स्वयं के घर में स्थित एक चर्च का उल्लेख है, जो वर्ष 682 में मौजूद था।

[5526] सुसानना के साथ स्मरण किए गए पवित्र शहीदों की मृत्यु 295–296 में हुई। शहीद सुसानना की अवशेष, उनके पिता गावियस की अवशेषों के साथ, रोम में उनके नाम पर स्थित चर्च में हैं; पोप गाइअस की अवशेष भी रोम में, उनके नाम पर स्थित चर्च में हैं।

कैल्वसियिानुस को आदेश दयिा कि वह सभी लोगों को — न केवल शहर में रहने वालों को बल्कि आसपास के क्षेत्रों में रहने वालों को भी — चौक में इकट्ठा करे। अकलीज़ चौक में इस तमाशे के लिए एक जगह तैयार की गई थी, और तुरही तथा तबले की थाप पर दोनों लिंगों और सभी उम्र के लोगों की एक बड़ी भीड़ इकट्ठा हो गई। राजकुमार पेंटागुर कैल्वसियिानस के साथ वहाँ पहुँचा; भीड़ को देखकर, उसने उससे पूछा:

'क्या सभी श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं और पूजा करते हैं, और हमारे देवताओं को बलदिान चढ़ाते हैं?'

कैल्वसियिन ने उत्तर दयिा:

'वास्तव में, हे प्रतापी राजकुमार, ये सभी जिन्हें आप देखते हैं, वे बड़े देवताओं की भक्ति में उत्साहपूर्वक लगे हुए हैं, और अनेक बलदिान देते हैं; उनमें एक भी अधर्मी व्यक्ति नहीं है।'

इस उत्तर से पेंटागुर बहुत प्रसन्न हुआ, और उसने लोगों और शहर के मजिस्ट्रेट दोनों को अपनी स्वीकृति व्यक्त की; फिर, राजा के फरमान की घोषणा करने के बाद, उसने सभी की उपस्थिति में कैल्वसियिन को यह अधिकार दयिा कि यदि कोई खुद को ईसाई कहने वाला पाया जाता है, तो वह उसे यातना दे सकता है और मृत्युदंड दे सकता है। इसके बाद, पेंटागुरस अन्य शहरों में चला गया; हालाँकि, कैल्वसियिन ने प्रेटोरयिन नौकरों को बुलाया और उन्हें शहर और उसके आसपास अच्छी तरह से खोज करने का आदेश दयिा कि क्या कोई, गुप्त रूप से भी, ईसाई धर्म का अनुयायी है – ऐसे व्यक्ति को उन्हें यातना देने के लिए ले आना था। तब नौकरों में से एक आगे आया और कहा:

'इस शहर में यूफ़लस नाम का एक व्यक्ति है: वह अपने साथ एक किताब रखता है और घर-घर तथा गलियों में जाकर लोगों को सिखाता है, और ईसाई ईश्वर को महान कहता है।'

(संत यूफेलस एक डिकिन थे और अपने साथ सुसमाचार रखते थे: वे लोगों को मसीह के चमत्कारों के बारे में पढ़कर सुनाते थे, और उन्हें उद्धारकर्ता में विश्वास करना सिखाते थे)।

यह सुनकर, काल्वशियिन ने तुरंत उसे गरिफ्तार करके बेड़ियों में जकड़कर अपने सामने लाने का आदेश दयिा। सैनिक निकल पड़े और पूरे शहर में संत यूफ़लस की तलाश करने लगे; आखिरकार, उन्हें वह एक झोपड़ी में मिले, जहाँ वह पवित्र सुसमाचार पढ़ रहे थे और सुनने वालों को उपदेश दे रहे थे; सैनिकों ने उसे पकड़ लिया, उसके हाथ पीठ पीछे बाँध दिए और परीक्षण के लिए शहर के राज्यपाल के सामने ले गए, साथ ही पवित्र सुसमाचार भी जब्त कर लिया। संत यूफुलस को देखकर, कैल्वसियिन ने कहा:

'क्या तुम देवताओं के प्रति अपमानजनक बातें करने वाले और राजा के आदेशों का उल्लंघन करने वाले हो?'

संत यूफुलस ने उत्तर दयिा:

'तुम्हारे देवता कौन हैं जिन्हें मैं सम्मान दूँ?'

'हमारे देवता जुपटिर, एस्क्लेपयिस और डायना हैं,' काल्वशियिन ने कहा।

संत ने पलटकर उत्तर दयिा, "तुम अंधे हो, जो उस एक सच्चे ईश्वर को नहीं जानते, जिसने स्वर्ग और पृथ्वी की रचना की, जिसने मनुष्य को मिट्टी से बनाया, और जिसने हम ईसाइयों को अमरत्व के अमूल्य और सबसे तेजस्वी वस्त्र से आच्छादित किया है, जो पवित्र बपतिस्मा है।"

'तुम इतनी अहंकार से बात कर रहे हो क्योंकि तुमने अभी तक इन यातनाओं को नहीं सहा है,' काल्वशियिन ने कहा।

संत यूफ़लस ने उत्तर दयिा, 'मेरे लिए ये यातनाएँ एक तेजस्वी मुकुट हैं, लेकिन आपके लिए ये अंधकार और विनाश हैं।'

तब काल्वशियिन, अत्यधिक क्रोधित होकर, सेंट यूफुलस को फांसी देने और लोहे की कंघियों से कोड़े मारने का आदेश दयिा। इन यातनाओं के दौरान, सेंट यूफुलस ने अपनी आँखें स्वर्ग की ओर उठाईं और प्रार्थना करते हुए कहा:

'हे प्रभु यीशु मसीह, मुझे उस अमरत्व से परिधानित कर—जिससे अब मेरा शरीर एक वस्त्र की भाँति उतारा जा रहा है—आगामी जीवन में; इस घड़ी मुझे शक्ति प्रदान कर, ताकि ये यातनाएँ मुझ पर हावी न हो जाएँ।' और स्वर्ग से एक आवाज आई:

'हौसला रखो और मज़बूत बनो, यूफ़लस! तुम्हारे लिए सच्चे वस्त्र पहले से ही तैयार कर दिए गए हैं।'

उन्होंने पवित्र शहीद को लंबे समय तक कोड़े मारे, जबकि कैल्वसियिन ने उससे कहा:

'क्या तुम अपनी भूल से मुँह नहीं मोड़ोगे? देवताओं के मंदिर में क्यों नहीं जाते और उन्हें बलदिान क्यों नहीं चढ़ाते, ताकि तुम उनसे अपने पापों की क्षमा, राजाओं से सम्मान और धन-संपत्ति, और हमसे दोस्ती का प्रस्ताव प्राप्त कर सको? वास्तव में, इसके द्वारा तुम बहुत सोना और चाँदी प्राप्त करोगे।'

'हे शैतान के सेवक और साथी, विनाश के पुत्र!' संत यूफ्लस ने उत्तर दिया, 'क्या तुम्हें नहीं पता कि परमेश्वर के भयानक न्याय के दिन तुम उन सभी के लिए कितनी कठोर सजा भुगतोगे, जिन्हें तुम अभी सोने और चांदी से मूर्तिपूजा में फंसा रहे हो?'

और भी अधिक क्रोधित होकर, यातना देने वाले ने आदेश दिया कि संत को लोहे के हथौड़ों से जबड़ों पर मारा जाए और उसकी जांघों और पिंडलियों को कुचल दिया जाए। इन पिटाइयों के दौरान, संत यूफुलस ने यातना देने वाले को फटकारते हुए कहा:

'हे दुष्टता से अंधा हो गए पागल! तुम मुझे ये यातनाएँ क्यों दे रहे हो, जिन्हें मैं अपने ईश्वर की शक्ति से मकड़ी के जाले से अधिक कुछ नहीं समझता? अगर तुम कर सकते हो, तो और भी भयानक यातनाएँ सोचो; मेरे लिए तो ये सब एक खेल मात्र हैं।'

इसके बाद, कैल्विसियिन ने सेंट यूफ्लस को खोलने और उसकी गर्दन में सुसमाचार लटकाने का आदेश दिया, और उसे कालकोठरी में ले जाने का आदेश दिया; साथ ही, उसने यह भी आज्ञा दी कि जेल के दरवाज़े बहुत सावधानी से बंद किए जाएँ और उसकी मुहर से सील किए जाएँ, और एक पहरा लगाया जाए ताकि कोई भी सेंट यूफ्लस के पास न आ सके और उसे रोटी और पानी न ला सके: कैल्विशियिन चाहता था कि वह प्यास और भूख से तड़पते हुए मर जाए। संत यूफुलस सात दिन और सात रातें कालकोठरी में रहे और उन्हें तीव्र प्यास लगी; तब उन्होंने प्रभु से प्रार्थना की:

'हे प्रभु यीशु मसीह, हमारे सच्चे परमेश्वर, जो सभी जीवित प्राणियों को आहार प्रदान करते हैं, आपने प्राचीन काल में मूसा के नेतृत्व में मरुभूमि में अपने लोगों की प्यास बुझाई, चट्टान से जीवित जल निकालकर (निर्गमन 17:6), आपने जो संदूक के सूखे जबड़े से शिमिशोन के लिए पानी निकाला (न्यायियों 15:19) और हमें पवित्र बपतिस्मा के जल से धोया है, मुझे भी, मैं विनती करता हूँ, ताजगी प्रदान करें, क्योंकि मैं प्यास से कमज़ोर हो गया हूँ: आज्ञा दें कि इस कालकोठरी में पानी का एक झरना फूट निकले और मेरी प्यास बुझा दे, ताकि सभी जान जाएँ कि केवल आप ही ईश्वर हैं और आपके समान कोई और नहीं है।

जब संत यूफ्लस ने यह प्रार्थना समाप्त की, तो कुएँ में अचानक पानी का एक सोता प्रकट हुआ; उन्होंने इस पानी को पिया और इसने न केवल उनकी प्यास बल्कि उनकी भूख को भी शांत कर दिया, मानो यह भोजन हो; संत यूफ्लस ने परमेश्वर की महिमा करते हुए और धन्यवाद देते हुए गीत गाया। सात दिन बीत जाने के बाद, कैल्विसियिन ने शहीद को कोठरी से बाहर लाने का आदेश दिया, यद्यपि वह अभी भी जीवित था: उसने यह मान लिया था कि संत यूफुलस पहले ही आंशिक रूप से अपने घावों और आंशिक रूप से भूख और प्यास से मर चुका था। जब सैनिक आए और उन्होंने कोठरी के दरवाज़े खोले, तो वे यह देखकर दंग रह गए कि पूरी कोठरी पानी से भर गई थी। लेकिन संत यूफ्लस ने पानी पर अपने हाथ फैला दिए, मानो उसे आज्ञा दे रहे हों, और पानी तुरंत ही गायब हो गया। सैनिकों ने एक-दूसरे से कहा:

'वास्तव में महान है वह ईश्वर जिसकी यह व्यक्ति सेवा करता है!'

और, पवित्र शहीद को लेकर, वे उसे नगरपाल के घर ले गए। नगरपाल ने देखा कि संत यूफुलस की आकृति में जरा भी परिवर्तन नहीं आया था और वह इतनी प्रसन्नता से भरा था, मानो अभी-अभी किसी भोज से लौटा हो, तो वह बहुत आश्चर्यचकित हुआ और कहा:

'अब, कम से कम, देवताओं को प्रणाम कर दो, इससे पहले कि तुम्हारा सिर काट दिया जाए।'

संत यूफ्लस ने उत्तर दिया:

'हे शैतान के विश्वासघाती और भ्रामक मित्र! कौन प्रकाश को त्यागकर अंधकार में चलना चुनेगा?'

क्रोधित राज्यपाल ने आदेश दिया कि उसके कान लोहे के हुकों से नोचे जाएँ और उसे बँधी हुई अवस्था में मुकदमे के लिए प्रेटोरियम ले जाया जाए; यातना देने वाला स्वयं यहाँ आया और, अपनी सीट पर बैठकर, लंबे समय तक संत को अधर्मी बलिदान चढ़ाने के लिए मजबूर करता रहा; लेकिन, यह देखकर कि संत यूफुलस अडिग रहे, कैल्विसियिन ने उन्हें तलवार से सिर कलम करने की सज़ा सुना दी। अपनी मृत्युदंड की सजा सुनने के बाद, संत यूफ्लस ने राज्यपाल से सिर कलम किए जाने से पहले प्रार्थना के लिए समय देने का अनुरोध किया; कैल्विसियिन ने उनके अनुरोध को स्वीकार कर लिया। जब सैनिक पवित्र शहीद को मृत्युदंड के स्थान पर ले गए, तो उनके साथ लोगों की एक बड़ी भीड़ थी, जिसमें कई ऐसे ईसाई भी थे जो गुप्त रूप से अपने धर्म पर अडिग थे। फांसी के स्थान पर पहुँचने पर, संत यूफुलुस रुक गए; फिर, लोगों की ओर मुड़कर, उन्होंने सुसमाचार लिया, जिसे वे हमेशा अपने साथ रखते थे, और, उसे खोलकर, मसीह के चमत्कारों के

बारे में पढ़ना शुरू कयिा, उन्हें सच्चे ईश्वर के बारे में सखिाया, और कई वधिर्मी मसीह की सच्चाई के प्रकाश से प्रबुद्ध हुए। तब संत यूफ्रुलुस ने ईश्वर से प्रार्थना करना शुरू कयिा, और स्वर्ग से एक आवाज़ उन्हें सुनाई दी:

'धन्य है तू, यूफ्लस, मेरे अच्छे और वश्विासयोग्य सेवक; आ और अपने प्रभु के आनंद में प्रवेश कर, उन सब के साथ वश्राम का आनंद ले जो प्राचीन काल से मुझे प्रसन्न करते आए हैं!'

यह आवाज़ गूँजने के बाद, संत यूफ्रुलस ने अपना सरि झुकाया और, उसे कटवाकर, अपने प्रभु के पास चले गए: उनके कष्ट August[5527] के ग्यारहवें दनि समाप्त हुए। ईसाइयों में से धर्मनष्ठि पुरुषों ने उनके सम्मानति शरीर और सरि को उठाया और उन्हें एक वशिष रूप से तैयार की गई जगह पर दफना दयिा; और पवत्रि शहीद की प्रार्थनाओं के द्वारा, उनके मकबरे पर कई चमत्कार हुए, जसिमें हमारे प्रभु यीशु मसीह की कृपा कार्यरत थी; उन्हें, पता और पवत्रि आत्मा के साथ, युगानुयुग सम्मान और महमिा मलि। आमीन।

कॉन्टाकयिन, स्वर 1:

मसीह के नयिमों को दृढ़ता से थामे हुए, आप युद्ध में शत्रु के वरिुद्ध अडगि खड़े रहे, यह घोषणा करते हुए: 'मैंने सबसे दृढ़ता से पीड़ा सहने का चुनाव कयिा है।' इसलिए, प्रसन्नतापूर्वक अपनी गर्दन झुकाकर, आपने तलवार का वार सहन कयिा, और इस प्रकार अपने जीवन का अंत कयिा।

25 अगस्त

12 अगस्त (पुराने कैलेंडर के अनुसार)

इसी दनि, पवत्रि शहीदों पम्फलिस और कैपटिोन का स्मरणोत्सव।

पवत्रि शहीद फोटयिस और एनीसेटस

12 अगस्त को स्मरण कयिा जाता है

बत्थिनियिा प्रांत के एक शहर नकिोमेडयिा[5528] में, अधर्मी सम्राट डायोक्लेटयिन (284–305) ने ईसाइयों पर खुले तौर पर अत्याचार शुरू कयिा; उसके आदेश पर, पूरे शहर में यातना के उपकरण प्रदर्शति कए गए: तलवारें, दराँतयिाँ, सीखें, लोहे के कील, कड़ाही, पहयि, कड़ाहें और इस प्रकार के अन्य अमानवीय उपकरण; जंगली जानवर भी तैयार कए गए; इन सबके माध्यम से, डायोक्लेटयिन उन लोगों को आतंकति करना चाहता था जो मसीह का नाम लेते थे। उसने रोमन साम्राज्य के हर कोने में भयानक फरमान भेजे, जसिमें आदेश दयिा गया था कि ईसाइयों को हर जगह सताया जाए - उन्हें यातना दी जाए और मौत के घाट उतार दयिा जाए, जबकि परमेश्वर के एकलौते पुत्र के खलिाफ कई अपमानजनक शब्द कहे गए।

उस समय, नकिोमेडयिा में अनकिति नाम का एक कुलीन और प्रतष्ठिति काउंट रहता था। ईश्वर के प्रति उत्साह से भरकर, वह सम्राट के सामने उपस्थति हुआ और नडिर होकर प्रभु यीशु मसीह, परमेश्वर के सच्चे पुत्र, की गवाही दी – संत अनकिति ने सम्राट को परमेश्वर के पुत्र के शाश्वत जन्म और हमारे उद्धार के लए, समय पूरा होने पर, उनके अवतार के बारे में प्रभावपूर्ण ढंग से बताया; साथ ही, उन्होंने मूर्तपिूजकों के भ्रम की नदिा की, और मूर्तपिूजक देवताओं को बहरा और असंवेदनशील कहा; और, अंत में, उन्होंने राजा से इन शब्दों में कहा:

'हे राजा, तुमने ईसाइयों के लए जो यातनाएँ तैयार की हैं और जो घोषणा की है, वे हमें बलि्कुल भी डरा नहीं सकतीं: हमारे लए यातनाएँ कुछ भी नहीं हैं, और हम कभी भी नरि्जीव मूर्तयिों की पूजा नहीं करेंगे।'

[5527] अन्य, अधकि वश्विसनीय ववरिणों के अनुसार, संत यूपुलस का 304 ईस्वी में 12 अगस्त को सरि कलम कर दयिा गया था। उनके अवशेष नेपल्स की सीमाओं के भीतर त्रविकिो (अब वकिो डेला बरोनयिा) में स्थति हैं; यह ज्ञात नहीं है कि उन्हें कैटानयिा से यहाँ कब स्थानांतरति कयिा गया था; 1656 में, अवशेषों का एक हस्सिा वहाँ से वापस कैटानयिा ले जाया गया था।

[5528] एशयिा माइनर में।

राजा, क्रोध और गुस्से से भरकर, संत एनीसेटस का दैवीय प्रेरित उपदेश सुनना बर्दाश्त नहीं कर सका और आदेश दिया कि उसकी जीभ तुरंत काट दी जाए; फिर भी बाद में भी वह स्पष्ट रूप से बोला, ईश्वर मसीह की महिमा करते हुए; फिर उसे बैल की खाल से इतनी क्रूरता और इतनी देर तक कोड़ा मारा गया कि उसकी हड्डियाँ तक नंगी हो गईं। फिर भी संत अनीकीता ने—जैसे कि यातनाएं किसी और को दी जा रही हों, न कि उन्हें—बहादुरी से अपने कष्टों को सहन किया और उन्हें देख रहे लोगों से जोर से घोषणा की कि मसीह एकमात्र सच्चे ईश्वर हैं। इसके बाद, राजा ने आदेश दिया कि संत अनिकिता को जानवरों के सामने फेंक दिया जाए: एक विशाल सिंह को छोड़ा गया, जो दहाड़ता हुआ शहीद के पास आया और अचानक एक मेमने की तरह शांत हो गया: उसने संत को सूंघा और अपनी पंजे से, जैसे होंठों से हो, उनके कष्टों से उनके माथे और गालों पर छीनी पसीना पोंछ दिया। और संत एनीसेटस ने जोर से पुकारा:

'मैं तुझे धन्यवाद देता हूँ, हे प्रभु यीशु मसीह, कि तूने मुझे इस जानवर के दाँतों से बचा लिया है! हे प्रभु, मैं तुझसे विनती करता हूँ, कि जो परीक्षा मेरे सामने है, उसमें अपने दास की सहायता के लिए अपना दहिना हाथ बढ़ा, ताकि मैं अपने यातनाकर्ता के क्रोध पर विजय प्राप्त कर सकूँ और तेरे द्वारा शहीद के मुकुट का योग्य समझा जाऊँ।'

संत की प्रार्थना के बाद, एक भूकंप शुरू हो गया, जिससे हर्क्यूलिस का मंदिर, उसकी मूर्ति और शहर की दीवार का एक हिस्सा ढह गया, और कई विधर्मी मलबे के नीचे दबकर मर गए। तब डायोक्लेटियन ने पवित्र शहीद का सिर तलवार से कलम करने का आदेश दिया, लेकिन जब सैनिक ने सम्राट के आदेश को पूरा करने के लिए अपनी तलवार उठाई, तो उसके हाथ तुरंत सुन्न हो गए, और वह स्वयं जमीन पर गिर पड़ा और अचेत की तरह निष्प्रभ पड़ा रहा। यह देखकर, डायोक्लेटियन ने सेंट एनीसेटस को तेज लोहे के कांटों से बने एक पहिये से बांधने, उसके नीचे आग जलाने और पहिये को घुमाने का आदेश दिया: वह चाहता था कि पवित्र शहीद लोहे से टुकड़े-टुकड़े होकर और आग से जलकर मर जाए। लेकिन पहिये से बंधे सेंट एनीसेटस ने इस प्रकार प्रार्थना की:

'हे प्रभु यीशु मसीह, उन लोगों के निमित्त जो आपके सामने खड़े हैं, मुझे इन यातनाओं से बचा लीजिए, ताकि जो मुझ पर दृष्टि डालें, आपकी शीघ्र सहायता देखकर, यातना देने वाले के विरुद्ध धैर्यपूर्वक खड़े हो सकें और आप से शहीद का मुकुट प्राप्त कर सकें।'

और तुरंत ही संत एनीसेटस के बंधन ढीले हो गए; पहिया रुक गया, और आग बुझ गई। तब यातना देने वाले ने आदेश दिया कि एक कड़ाही टिन से भर दी जाए, उसे पिघलाया जाए, और पवित्र शहीद को उसमें फेंक दिया जाए। सभी ने प्रभु के स्वर्गदूत को संत एनीसेटस के साथ कड़ाही में प्रवेश करते देखा, और जैसे ही शहीद ने कड़ाही को छुआ, तो टिन ठंडा हो गया और बर्फ की तरह कठोर हो गया।

संत एनीसेटस के एक रिश्तेदार, फोटियस नामक, ने उनके कारनामे और मसीह की शक्ति को अपने सेवक की रक्षा करते हुए देखकर, सभी भय को त्याग दिया; भीड़ के बीच से निकलकर सीधे फांसी के स्थान पर आकर, वह पवित्र शहीद के पास गया और स्नेहपूर्वक उन्हें गले लगाकर चूमा, उन्हें अपना पिता और अपनी मुक्ति के लिए मध्यस्थ कहकर संबोधित किया; इस कृत्य से, फोतियस ने स्पष्ट रूप से दिखा दिया कि वह मसीह के लिए किसी भी यातना को सहने के लिए तैयार था; फिर, राजा की ओर मुड़कर, फोतियस ने कहा:

'लाज है तुम पर, मूर्तिपूजक! तुम्हारे देवता कुछ भी नहीं हैं।'

तब डियोक्लेटियन ने क्रोधित होकर सैनिकों से पुकारा:

'उसे तलवार से मार डालो!'

लेकिन जब एक सैनिक ने शहीद को मारने के लिए अपनी म्यान से बाहर की तलवार उठाई, तो ईश्वर की शक्ति से उसका हाथ खुद उसके खिलाफ हो गया, और अपने ही घुटनों पर वार करते हुए, वह जमीन पर गिरकर मर गया। इसके बाद, संत एनीसेटस और फोटियस को लोहे की जंजीरों में बांध दिया गया, और दोनों को एक साथ जेल में डाल दिया गया। तीन दिन बाद, डायोक्लेटियन ने उन्हें अपनी उपस्थिति में बुलाया और कहा:

'यदि तुम मेरी आज्ञा मानो और देवताओं को बलिदान चढ़ाओ, तो मैं तुम्हारा सम्मान करूँगा और तुम्हें धनी बना दूँगा।'

'आपका सम्मान और आपकी संपत्ति,' संतों ने उत्तर दिया, 'वे आपके विनाश तक आपके साथ रहें।'

क्रोध में आकर, यातना देने वाले ने आदेश दिया कि पहले उन्हें रैक पर लटकाया जाए और उनके शरीर को लोहे की पंजों से खुरचा जाए, उनके घावों को आग से जलाया जाए, और फिर उन पर पत्थर फेंके जाएँ। लेकिन संतों ने इन सभी यातनाओं को खुशी से सहन किया और ईश्वर का धन्यवाद किया, क्योंकि उन्हें कोई दर्द महसूस नहीं हुआ: प्रभु ने अपने

पवत्रि नाम की महमिा के लिए, उन्हें बनिा कसिी चोट के रखा। तब उन्हें उनके पैरों से जंगली घोड़ों से बाँध दयिा गया, जो उन्हें घसीटते हुए ले गए। लेकनि इस यातना के बावजूद, डायोक्लेटयिन को कुछ भी हासलि नहीं हुआ: प्रभु ने एक बार फरि उन्हें सुरक्षति रखा - पवत्रि शहीदों ने, जैसे रथ में घसीटे जा रहे हों, प्रभु की अजेय शक्ति की महमिा की और एक-दूसरे को मजबूत कयिा; तब जंगली घोड़े अचानक रुक गए; संतों के पैर बंधनों से मुक्त हो गए, और वे पूरी तरह से सुरक्षति खड़े हो गए। यातना देने वाले ने फरि से आदेश दयिा कि उन्हें बेरहमी से पीटा जाए, उनके घावों पर नमक मलिाकर सरिका डाला जाए; इसके बाद, उन्हें एक बार फरि जेल में डाल दयिा गया, जहाँ उन्होंने तीन साल बतिाए। तब संतों को और यातनाएँ देने के लिए बाहर ले जाया गया। डयिोक्लेशयिन के आदेश पर, एक सार्वजनकि पत्थर के स्नानागार को तीन दनिों तक गर्म कयिा गया, जसिमें बाद में पवत्रि शहीदों को बंद कर दयिा गया। लेकनि संत एनीसेटस और फोतयिस ने ईश्वर से प्रार्थना की, और स्नानागार ढह गया; वह झरना जो उन्हें ठंडा पानी प्रदान कर रहा था, सूख गया। जब तीसरे दनि रक्षकों ने स्नानागार खोला, तो उन्होंने देखा कि संत बनिा कसिी चोट के अंदर इधर-उधर घूम रहे थे, और ईश्वर की स्तुति कर रहे थे; इसकी सूचना सम्राट को दी गई। बाद वाला, जैसे कि खबर पर वशि्वास नहीं कर रहा हो, स्वयं इसकी सच्चाई की जांच करने गया। संत, सम्राट को देखकर, उससे कहने लगे:

'हम यहाँ हैं, हे हमारे यातनाकर्ता; हम अपनी सभी यातनाओं से वजियी होकर नकिले हैं, जबकि तुम पराजति और लज्जति हुए हो।'

राजा शर्मदिा होकर घर लौट गया; उसने शहीदों को ले जाकर तब तक जंजीरों में बाँधने का आदेश दयिा जब तक कि वह उन्हें नष्ट करने का कोई तरीका न सोच ले। उसके आदेश पर, चार लोहे के स्तंभों से समर्थति एक वशिाल भट्टी बनाई गई; यह इतनी बड़ी थी कि इसमें बहुत से लोग समा सकें। ठीक वैसे ही जैसे नबूकदनेसर ने अतीत में कयिा था (दानयिेल 3), उसने भट्टी को लाल-गरम तापमान तक गर्म करने का आदेश दयिा, इस इरादे से कि उसमें न केवल दो पवत्रि शहीदों को, बल्कि हर ईसाई को जला दयिा जाए जसिे वह ढूंढ सके। हालाँकि, ईसाइयों ने, वधिर्मयिों द्वारा उन्हें भट्टी में डालने की प्रतीक्षा कएि बनिा, अपनी पत्नयिों और बच्चों के साथ, स्वयं भट्टी की ओर बढ़ गए, यह कहते हुए:

'हम ईसाई हैं और हम एक सच्चे परमेश्वर की उपासना करते हैं!'

सबसे पहले, पवत्रि शहीदों एनीसेटस और फोतउिस भट्टी में प्रवेश कयिा, और उनके पीछे, प्रार्थना करते हुए और हाथ स्वर्ग की ओर उठाए हुए, इकट्ठा हुए ईसाइयों की पूरी भीड़ आग में चली गई। लपटों के भीतर से, ईसाइयों ने पुकारा:

'हम तुझे धन्यवाद देते हैं, हे पति और सर्वशक्तमिान परमेश्वर, कि अपने एकलौते पुत्र और हमारे प्रभु यीशु मसीह में वशि्वास के द्वारा, तूने हमें शहीद के मुकुट के लिए एकत्र कयिा है; हम तुझसे प्रार्थना करते हैं, हे दयालु, अपनी भुजाएँ ऊपर से फैला और हमारी आत्माओं को उस अनंत वशि्राम में ग्रहण कर जो तूने अपने स्वीकार करने वालों के लिए तैयार कयिा है।'

इस प्रार्थना के दौरान, वे प्रभु में सो गए। हालाँकि, संत एनीसेटस और फोटयिस उस भट्टी में तीन घंटे तक जीवति रहे, और फरि, प्रार्थना करने के बाद, उन्होंने अपनी आत्माएँ ईश्वर के हाथों में सौंप दीं। जब क्लेमेंट के सेवकों ने सेंट्स एनीसेटस और फोटयिस के शरीरों को लोहे के औजारों से बाहर नकिाला, तो उन्होंने देखा कि आग से उन्हें कोई भी नुकसान नहीं हुआ था; यहाँ तक कि उनके बाल भी सुरक्षति थे। और बहुत से वधिर्मी हमारे ईश्वर मसीह में वशि्वास करने लगे, जनिका महमिा पति और पवत्रि आत्मा के साथ युगानुयुग हो। आमीन[5529] ।

कॉमाना के पवत्रि शहीद और बशिप संत अलेक्जेंडर का स्मरणोत्सव

12 अगस्त को स्मरण कयिा जाता है

नयिोकेसरयिा के पास कोमाना शहर में[5530] , जहाँ उस समय संत ग्रेगरी द वंडरवर्कर बशिप थे, अलेक्जेंडर नाम का एक व्यक्ति रहता था जसिने स्वेच्छा से गरीबी में जीवन जीना चुना; उसका ईश्वरीय जीवन मानव की आँखों से छपिा हुआ था और केवल ईश्वर को ही ज्ञात था। संत अलेक्जेंडर, जो उत्कृष्ट शक्षिा प्राप्त व्यक्ति थे, काफी संपत्ति

[5529] यहाँ स्मरण कएि गए शहीदों ने 305 या 306 में कष्ट सहे।

[5530] पोलोमोनीयाकम् में, पोंटस में, आइरसि नदी के कनिारे।

अर्जति कर सकते थे और सार्वभौमकि सम्मान प्राप्त कर सकते थे, लेकनि उन्होंने ईश्वर के लिए स्वेच्छा से गरीबी का जीवन चुना। संसार को तुच्छ समझते हुए, उन्होंने अपने ज्ञान को कोई महत्व नहीं दयिा और स्वयं को एक अनपढ़, अज्ञानी व्यक्तकि रूप में प्रस्तुत कयिा, जसिसे प्रेरति के वचन पूरे हुए: *'यदि तुम में कोई इस युग में बुद्धमिान समझता है, तो मूर्ख हो जाओ, ताकि तुम बुद्धमिान बन जाओ'* (1 कुरन्थियिों 3:18)। अपने हाथों की मेहनत से अपनी रोजी-रोटी कमाने की इच्छा से, धन्य अलेक्जेंडर ने अत्यंत वनिम्रता के साथ, इस उद्देश्य के लिए शायद सबसे वनिम्र व्यवसाय चुना: उन्होंने कोयला बनाना और बेचना शुरू कर दयिा, जसिसे वे अपनी रोजी-रोटी कमाते थे। इसी कारण से, संत अलेक्जेंडर बच्चों के लिए मज़ाक और मनोरंजन का वषिय बन गए: उनके चेहरे और कपड़े उनके काम की कोयले की धूल से ढके रहते थे, और जब वे ऐसे ही बाजार में आते थे, तो वे एक इथयिोपयिाई जैसे दखिते थे; पूरे शहर में, संत अलेक्जेंडर को 'कोयलेवाला' के नाम से जाना जाता था। लेकनि प्रभु, जो ऊँचे पर वास करते हैं, जो दीन लोगों को देखते हैं और उन्हें ऊँचा उठाते हैं, वे यहाँ अपने पृथ्वी पर के जीवन के दौरान ही अपने दीन सेवक अलेक्जेंडर को महमिामय करना और अपनी कलीसयिा को उनमें एक स्तंभ और शोभा प्रदान करना पसंद करते थे; इस उद्देश्य के लिए, उन्होंने उन्हें बशिप के पद से सम्मानति कयिा। जब कोमाना के बशिप की मृत्यु हो गई, तो नगरवासयिों ने नेओकैसरेआ में संत ग्रेगरी चमत्कारकर्ता के पास एक दूत भेजकर उनसे आकर एक बशिप नयिुक्त करने का अनुरोध कयिा। संत ग्रेगरी कुछ ही समय बाद पहुँचे। जब परषिद ने बशिप के पद को संभालने के लिए एक योग्य व्यक्तकि चुनने का काम शुरू कयिा, तो असहमतउित्पन्न हुई: कुछ लोग कुलीन जन्म वालों के पक्ष में थे, कुछ अमीरों के, एक तीसरा समूह वाक्पटु लोगों का, और चौथा उन लोगों का जो अपने रूप और उम्र के कारण वशिषि्ट थे; और इन सभी उम्मीदवारों को संत ग्रेगरी महान के पास प्रशंसा और बशिप पद के योग्य पुरुषों के रूप में प्रस्तुत कयिा गया। हालाँकि, संत ग्रेगरी चमत्कारकर्ता एक बशिप को चुनने और अभषिेक करने की कोई जल्दबाज़ी में नहीं थे, और वे प्रभु स्वयं द्वारा एक योग्य उम्मीदवार को प्रकट करने का इंतज़ार कर रहे थे। उन्होंने परषिद को संबोधति कयिा और उन्हें याद दलिाया कि कैसे परमेश्वर ने इस्राएल पर शासन करने के लिए दाऊद को चुना था: जब यशिै अपने सबसे बड़े बेटे, एलयिाब, को संत शमूएल के पास लाया, तो भवषि्यवक्ता ने प्रभु से पूछा कि क्या यह व्यक्तउिनका अभषिक्ति व्यक्तबिनने के लिए नयित नहीं था? परन्तु यहोवा ने शमूएल से कहा: 'उसके रूप-रंग या उसके कद की ऊँचाई पर दृष्टनि रख' (1 शमूएल 16:6–7)।

'और हमें,' संत ग्रेगरी ने कहा, 'इस शहर के लिए एक चरवाहा चुनना चाहिए, बाहरी दखिावट से नहीं, बल्कईिश्वर द्वारा चुने गए व्यक्तको ढूंढना चाहिए: क्योंकमिनुष्य चेहरे को देखता है, लेकनि ईश्वर हृदय को देखते हैं, और योग्यता का मापदंड बाहरी दखिावट नहीं बल्कहृिदय की आंतरकि प्रवृत्तहै—जो केवल प्रभु को ही ज्ञात है।'

संत ग्रेगरी के ये शब्द कुछ लोगों को नागवार लगे, और वे उपहासपूर्वक आपस में बड़बड़ाए: 'अगर हम बाहरी दखिावट और कुलीन जन्म को नहीं देखेंगे, तो कोयला बेचने वाला अलेक्जेंडर भी चुना जा सकता है और बशिप नयिुक्त कयिा जा सकता है।' कोयला व्यापारी का उल्लेख परषिद में उपस्थति अन्य लोगों के बीच हँसी का कारण बना; लेकनि संत ग्रेगरी ने, कुछ वचिार करने के बाद, कहा:

'ईश्वर की दव्यि योजना के कार्य के बनिा इस व्यक्तका उल्लेख नहीं हुआ है, जो अब उपहास का पात्र बन गया है।'

और उन्होंने पूछना शुरू कयिा:

'यह अलेक्जेंडर कौन है जसिके बारे में आप बात कर रहे हैं? मैं उसे देखना चाहता हूँ।'

उसी क्षण, संत अलेक्जेंडर परषिद आयोजति होने वाली इमारत के पास खड़े थे, चुनाव के लिए आए लोगों के गधों की देखभाल कर रहे थे; कुछ लोग बाहर गए और संत अलेक्जेंडर को परषिद में ले आए। जब वह सभा के बीच में खड़े हुए , तो सभी लोग उन्हें घूरने और हँसने लगे, क्योंकि वह स्वयं और उनके फटे-पुराने कपड़े दोनों कोयले से काले हो गए थे। सामान्य हँसी-ठठिोली के बीच, वह संत के सामने सम्मानपूर्वक खड़ा रहा, वचिारों में खोया हुआ और हँसने वालों पर कोई ध्यान नहीं दे रहा था। संत ग्रेगरी चमत्कारकर्ता, जनिके पास ववेिक का वरदान था, ने धन्य अलेक्जेंडर के भीतर नवािस कर रहे ईश्वर की कृपा को पहचाना, जसिने उन्हें बशिप के पद के लिए चुने जाने के योग्य बनाया। अपनी सीट से उठकर, वे संत अलेक्जेंडर के साथ अलग हो गए और उनसे सवाल करना शुरू कर दयिा, ईश्वर के नाम पर उनसे सत्य बोलने का आग्रह करते हुए: वे कौन थे? हालाँकि संत अलेक्जेंडर अपनी पहचान छपिाना चाहते थे, लेकनि वे इतने सम्मानति संत की उपस्थतिि में झूठ नहीं बोल सके और, इसके अलावा, शपथ का डर उन्हें सता रहा था, इसलिए उन्होंने अपने जीवन के बारे में सब कुछ बता दयिा: कि कैसे उन्होंने, जो एक महान वद्विान थे, ईश्वर के लिए स्वयं को इतना नम्र कयिा और स्वेच्छा

से गरीबी का वेश धारण कयिा। उनकी बातचीत से, संत ग्रेगरी को वशि्वास हो गया कि वह न केवल वज्ञिान में बल्कि पवत्रि धर्मग्रंथों में भी पूरी तरह से पारंगत थे। इसके बाद, संत ने अपने सहायकों को आदेश दयिा कि वे संत अलेक्जेंडर को उनके पास ले जाएँ, वहाँ उन्हें धोएँ, ठीक से कपड़े पहनाएँ, और उन्हें परषिद में वापस लाएँ। इस बीच, अपनी सीट पर वापस आकर, उन्होंने दव्यि प्रेरणा से युक्त एक प्रवचन देना जारी रखा। कुछ ही समय बाद, संत अलेक्जेंडर को परषिद में लाया गया, जसिे धोकर, हल्के रंग के वस्त्र पहनाए गए थे और जो अत्यंत गरमिामय दखि रहे थे; जन्हिोंने पहले इस पवत्रि व्यक्ति को देखा था, वे उन्हें पहचानकर चकति हुए बनिा नहीं रह सके। और संत ग्रेगरी ने उनसे धर्मग्रंथ से प्रश्न पूछकर संवाद करना शुरू कयिा। संत अलेक्जेंडर ने इतनी बुद्धमिानी से उत्तर दयिा कि उपस्थति लोग उन्हें एक वद्विान और बुद्धमिान व्यक्ति के रूप में पहचानने से खुद को रोक नहीं सके; वास्तव में, वे और भी अधकि चकति हुए: इतनी वद्विता वाले व्यक्ति ने अपनी बुद्धमित्ता को क्यों छपिाया, और उनके बीच सबसे अज्ञानी व्यक्ति की तरह क्यों रहा? साथ ही, उन्होंने एक ऐसे बुद्धमिान व्यक्ति का मज़ाक उड़ाने के लिए खुद को कोसा, जसिने ईश्वर के लिए स्वयं को नम्र कयिा था, और उसे एक पागल समझा था। फरि परषिद में उपस्थति सभी लोगों ने, धर्मग्रंथ में कहे गए प्रभु के वचनों की पूर्ति के लिए, संत अलेक्जेंडर को खुशी-खुशी और सर्वसम्मति से बशिप चुना: 'मनुष्य बाहरी दखिावट पर ध्यान देता है, परन्तु यहोवा हृदय पर' (1 शमूएल 16:7)। संत ग्रेगरी ने, संत अलेक्जेंडर को पदानुक्रमकि रैंक के माध्यम से पदोन्नत करते हुए, पहले उन्हें पुरोहति और फरि बशिप नयिुक्त कयिा। बशिप के रूप में उनकी नयिुक्ति के बाद, उन्होंने संत अलेक्जेंडर को लोगों को एक शकि्षाप्रद उपदेश देने का नर्दिेश दयिा। जैसे ही संत ने अपना उपदेश दयिा, पवत्रि आत्मा का अनुग्रह उनके होठों से नदी की तरह बहा, जसिने श्रोताओं के हृदयों को स्पर्श कयिा; और पूरे शहर ने इतने बुद्धमिान चरवाहे को पाकर आनंद मनाया और परमेश्वर की महमिा की। संत ग्रेगरी नेओकेसरेया चले गए, जबकि संत अलेक्जेंडर कोमाना में मसीह के झुंड की देखभाल करते थे, और वचन और कर्म दोनों से वशि्वासयिों के लिए एक उदाहरण स्थापति करते थे। उस समय, एटकिा का एक युवा दार्शनकि कोमाना में आया हुआ था; जब वह इस संत को लोगों को उपदेश देते सुन रहा था, तो उसने उनकी वाक्पटुता की अलंकारकिता से रहति सादगी का मज़ाक उड़ाया; लेकनि संत अलेक्जेंडर अपने उपदेशों में शब्दों की सुंदरता की नहीं, बल्कि उनके शकि्षाप्रद स्वरूप की परवाह करते थे, और अपने श्रोताओं की सादगी के लिए, उनके शब्द सादगी से परपिूर्ण होते हुए भी आत्मा के लिए अत्यंत लाभकारी थे। लेकनि एक दनि उपर्युक्त एटकि दार्शनकि को एक दर्शन हुआ: बहुत सुंदर सफेद कबूतरों का एक झुंड उसके सामने प्रकट हुआ, जो एक शानदार चमक बखिेर रहे थे, जैसा कि भजनकार कहता है: 'उनके पंख चांदी से ढके हैं, और उनके पंख शुद्ध सोने से' (भजन संहति 67:14), और इसके साथ एक आवाज आई:

'ये बशिप अलेक्जेंडर के शब्द हैं, जनि पर तुम हँसे थे।'

दृष्टि से जागने पर, दार्शनकि को अपने व्यवहार पर शर्म आई और बशिप के पास जाकर क्षमा मांगी।

[5531]इसके तुरंत बाद, डायोक्लेटयिन के शासनकाल में ईसाइयों के खलिाफ उत्पीड़न शुरू हो गया, और कोमाना के बशिप, संत अलेक्जेंडर को अधर्मी मूर्तपिूजकों ने पकड़ लयिा; मूर्तयिों की पूजा करने के लिए मजबूर कए जाने पर भी, उन्होंने मसीह का त्याग नहीं कयिा, जसिके लिए उन्हें यातना देने के बाद आग में डाल दयिा गया, जहाँ हमारे ईश्वर मसीह के लिए पवत्रि बशिप ने अपनी अंतमि साँस ली।

26 अगस्त

13 अगस्त (पुराना कैलेंडर)

उसी दनि, हमारे पूजनीय पति मैक्समिस द कन्फेशर के पवत्रि अवशेषों का स्थानांतरण, जनिकी स्मृति 21 जनवरी को मनाई जाती है।

उसी दनि, मसीह के लिए एक पवत्रि मूर्ख, मास्को के धन्य मैक्समिस के अवशेषों की खोज।

उसी दनि, हमारे पवत्रि पति वोरोनेज़ और ज़ाडोन्स्क के बशिप, चमत्कार करने वाले तकिोन का नधिन (1783 में) और अवशेषों की खोज (1861 में)।

[5531] सम्राट 284–305।

शहीद संत हिप्पोलीटस

13 अगस्त को स्मरणोत्सव

महान-डीकन संत लॉरेंस की शहादत के बाद, एक सैन्य कमांडर और जेलर धन्य हिप्पोलीटस ने उस शहीद के अत्यधिक कष्ट झेल चुके अवशेषों को सम्मानपूर्वक दफनाया, जो पहले उनके कैदी थे और फिर उनके शिक्षक बने; धन्य हिप्पोलीटस दफन के तीसरे दिन तक घर नहीं लौटे। उनके घर के सभी सदस्य – कुल मिलाकर उन्नीस लोग, पुरुष और महिलाएं दोनों – ईसाई थे; उन्हें ईसाई धर्म की सच्चाइयों में शिक्षित किया गया था और बाद में संत लॉरेंस द्वारा बपतिस्मा दिया गया था। अपने पूरे परिवार के साथ, घर पर एक सामूहिक प्रार्थना के बाद, धन्य हिप्पोलीटस ने मसीह के शरीर और रक्त के दिव्य रहस्यों में भाग लिया; और फिर, इस आध्यात्मिक पोषण को प्राप्त करने के बाद, शरीर को मजबूत करने के लिए भोजन परोसा गया; लेकिन इससे पहले कि वे शुरू कर पाते, सैनिक आ गए, उन्होंने धन्य हिप्पोलीटस को पकड़ लिया, और उसे राजा डेसियस के सामने ले गए[5532] । उसे देखकर राजा हँसा और बोला:

'क्या तुम भी एक मगस बन गए हो, क्योंकि तुमने लॉरेंस का शरीर चुराया था?'

'मैं कोई जादूगर नहीं, बल्कि एक ईसाई हूँ,' धन्य हिप्पोलीटस ने उत्तर दिया।

तब क्रोधित राजा ने आदेश दिया कि उसके मुँह पर पत्थर मारे जाएँ, और फिर उसके कपड़े—जो ईसाइयों का प्रचलित परिधान था—उतार दिए जाएँ।

'तुमने मुझे नग्न नहीं किया है, बल्कि मुझे और भी कीमती वस्त्र पहनाए हैं,' धन्य हिप्पोलीटस ने उत्तर दिया।

'क्या अब तुम देवताओं का सम्मान नहीं करते, क्योंकि तुम इतना पागलपन कर रहे हो और अपनी नग्नता पर शर्म नहीं करते?' राजा ने पूछा।

'मैं बुद्धिमान हूँ, नग्न नहीं,' धन्य हिप्पोलीटस ने उत्तर दिया, 'क्योंकि मैं मसीह के वस्त्र पहने हुए हूँ; मैं तब पागल था जब मैं, तुम्हारे जैसे, दानवों की सेवा करता था, और मैं तब नग्न था जब मुझमें मसीह की कृपा नहीं थी, लेकिन अब मैं एक मसीही हूँ।'

राजा ने सुझाव दिया, 'देवताओं को बलिदान चढ़ाओ, ताकि तुम भी लॉरेंस की तरह यातनाओं से नष्ट न हो जाओ।'

धन्य हिप्पोलीटस ने पुकार लगाई, 'हे प्रभु, काश मुझे संत लॉरेंस के समान भाग्य के योग्य माना जाए, जिसका नाम तुम, नीच प्राणी, अपने घृणित होठों से उच्चारण भी नहीं कर सकते!'

राजा ने आदेश दिया कि उसे ज़मीन पर लिटा दिया जाए और डंडों से बेरहमी से पीटा जाए; जबकि पवित्र शहीद ज़ोर से चिल्लाया:

'मैं एक ईसाई हूँ!'

तब यातना देने वाले ने पिटाई बंद करने का आदेश दिया, ताकि धन्य हिप्पोलीटस को जमीन से उठाकर उसकी सामान्य सैन्य वर्दी पहनाई जाए; उसी समय, उसने पवित्र शहीद को संबोधित करते हुए कहा:

'अपने सैन्य पद का ध्यान रखो और पहले की तरह हमारे मित्र बने रहो, हमारे साथ बलिदान चढ़ाना जारी रखो।'

'मैं मसीह, मेरे उद्धारकर्ता का सिपाही हूँ, और मैं उनके लिए मरना चाहता हूँ,' धन्य व्यक्ति ने उत्तर दिया।

तब डेसियस ने एपार्क वेलेरियन से कहा:

'उसकी सारी संपत्ति जब्त कर लो, और उसे यातना देकर मार डालो।'

उसी दिन, वैलेरियन के आदमियों ने धन्य हिप्पोलीटस की संपत्ति लूट ली; जब वैलेरियन को यह पता चला कि हिप्पोलीटस के घर में मसीह में विश्वास करने वाले मिले हैं, तो उसने उन्हें अपने सामने लाने का आदेश दिया। उनके सामने लाए गए लोगों में हिप्पोलीटस की दूध-माँ, जिसका नाम कॉनकॉर्डिया था, भी शामिल थी। उन पर एक नज़र डालते ही, वैलेरियन ने कहा:

'अपनी जान बचाओ, कहीं तुम अपने स्वामी हिप्पोलीटस के साथ नष्ट न हो जाओ।'

'हम कुछ बेहतर चाहते हैं,' कॉनकॉर्डिया ने उत्तर दिया, 'अपने स्वामी के साथ मसीह के विश्वास के लिए सम्मानपूर्वक मरना, बजाय इसके कि उसे खोकर, हम आपके जैसे अधर्मी लोगों के बीच जीवित रहें।'

[5532] सम्राट 249 से 251 तक।

वेलेरियन ने कहा, 'दासों की एक जाति का सुधार केवल घावों से ही हो सकता है,' और उसने आदेश दिया कि कॉनकॉर्डिया को टिन की छड़ों से पीटा जाए; जब उसे कोड़े मारे जा रहे थे, तो पवित्र शहीद ने अपनी आत्मा प्रभु को सौंप दी। यहाँ भी, धन्य हिप्पोलीटस को सैनिकों द्वारा पहरे में रखा गया था: जब उसने अपनी दुधमाँ की शहीद मृत्यु देखी, तो उसने प्रसन्नता से उद्घोष किया:

'हे प्रभु, मैं आपको धन्यवाद देता हूँ कि आपने मुझे पोषित करने वाली को पहले अपने राज्य में, अपने संतों के पास भेज दिया!'

राज्यपाल ने कहा:

'क्या तुम अभी भी जादू-टोने में अपनी आशा रखते हो – क्या तुम देवताओं का सम्मान नहीं करते और राजा की आज्ञा का पालन नहीं करते?'

और, अपने क्रोध में, वैलेरियन ने आदेश दिया कि उन सभी को, हिप्पोलीटस के साथ, टिवुर्तिन गेट से शहर के बाहर ले जाया जाए और वहाँ मार डाला जाए। संत हिप्पोलीटस ने रास्ते में उनका उत्साह बढ़ाया:

'डरो मत – हम दोनों का एक ही प्रभु हमसे ऊपर है।'

जब वे फाँसी के स्थान पर पहुँचे, तो धन्य हिप्पोलीटस की उपस्थिति में सैनिकों ने सभी के सिर काट दिए। कुल अठारह लोग—दोनों लिंगों और सभी आयु वर्गों के—ने इस शहीद की मृत्यु भोगी, शहर में मारी गई संत कोंकॉर्डिया को छोड़कर। स्वयं संत हिप्पोलीटस को एपार्क के आदेश पर जंगली घोड़ों से बाँधकर पथरीली जमीन पर घसीटा गया, जब तक कि वह प्रभु के पास नहीं चले गए। पवित्र शहीद हिप्पोलीटस ने अपने परिवार के साथ मिलकर, संत लॉरेंस की शहादत के तीन दिन बाद, अगस्त की तेरह तारीख को मसीह के लिए यातनाएँ भोगीं।

जैसे ही रात हुई, संत जस्टिन द प्रेस्बिटिर विश्वासियों के साथ फांसी के स्थान पर आए और पवित्र शहीदों के शवों को इकट्ठा करके उन्हें वहीं दफना दिया। हालाँकि, पूरे शहर में सबसे गहन तलाशी के बावजूद, संत कॉनकॉर्डिया का शरीर नहीं मिल सका; इस बात से संत जस्टिन को इतना दुख हुआ कि वे रो पड़े। हालाँकि, संत कोंकॉर्डिया का पवित्र शरीर यातना देने वाले के आदेश पर एक गंदे स्थान पर फेंक दिया गया था। धन्य हिप्पोलीटस की मृत्यु के तीन सप्ताह बाद, इरेनियस नामक एक ईसाई को एक सैनिक से इस बात की जानकारी मिली; वह अपने साथ एक अन्य ईसाई, अवुंडियस को लेकर, रात के समय पवित्र शहीद का शरीर वापस ले आया—जो कीचड़ से पूरी तरह से अछूता रहा—और उसे पादरी जस्टिन के पास ले गया। प्रेस्बिटिर अत्यंत प्रसन्न हुआ और पूजनीय अवशेषों को संत हिप्पोलीटस और अन्य शहीदों के शरीर के बगल में दफना दिया। अगले ही दिन सुबह, वैलेरियन को इस बात की जानकारी मिली; उसने इरेनायस और अवुंडियस को पकड़ने का आदेश दिया और उन्हें उसी जगह फेंककर कीचड़ में जिंदा डुबो देने का आदेश दिया, जहाँ से उन्होंने संत कॉनकॉर्डिया का शरीर निकाला था। और दोनों संत वहाँ अगस्त के छब्बीस तारीख को मर गए। संत जूलियन ने रात में उनके शवों को निकालकर संत लॉरेंस की अवशेषों के पास दफनाया, और मसीह परमेश्वर की महिमा की, जो पिता और पवित्र आत्मा के साथ युगानुयुग महिमामय हैं[5533] । आमीन।

27 अगस्त

14 अगस्त (पुराना संस्करण)

उसी दिन, नोवोटॉर्ज्स्क के एफ्रेम के शिष्य, पूजनीय आर्काडियस की स्मृति।

इसी दिन, पवित्र शहीद मार्सेलस, अपामिया के बिशप की स्मृति मनाई जाती है, जिन्हें एक मूर्तिपूजक मंदिर को नष्ट करने के लिए लगभग 389 ईस्वी में मूर्तिपूजकों द्वारा खंभे पर जला दिया गया था।

[5533] संत ह्युपोलिटिस शहीद और संत कॉन्कोर्डिया शहीद ने 13 अगस्त 258 को यातनाएँ भोगीं।

कीव-पेचेरस्क लाव्रा में परमेश्वर की अतिपवित्र माता के सम्मानित नद्रिारोहण के गरिजाघर की स्थापना पर

14 अगस्त को स्मरण किया जाता है

[5534]किसी को इस बात पर संदेह नहीं करना चाहिए कि रूस में महान और प्रथम लावरा, गुफाओं के पूजनीय एंटोनी और थियोडोसियस की[5535] में, परम पवित्र ईश्वर की माता का सुंदर पत्थर का चर्च, जिसकी शोभा स्वर्ग के समान है, प्रभु की इच्छा और व्यवस्था द्वारा और उनकी परम पवित्र माता की प्रार्थनापूर्ण मध्यस्थता के माध्यम से बनाया, सुसज्जित और समर्पित किया गया था। धन्य बिशप साइमन के साथ मिलकर, आइए हम सबसे पहले इसके निर्माण की शुरुआत के बारे में बात करें, जो चमत्कारों से युक्त थी।

वरांगियनों की भूमि में अफ्रीकन नाम का एक राजकुमार था, जो अंधे याकुन का भाई था – वही जिसने अपने भयंकर भाई म्स्तिस्लाव के खिलाफ यारोस्लाव के लिए अपनी रेजिमेंट के साथ लड़ते हुए, सोने से बुने हुए वस्त्र पहनने से इनकार कर दिया था। अफ्रीकन के दो बेटे थे, फ्रायंड और शिमोन; अफ्रीकन की मृत्यु के बाद, याकुन ने अपने दोनों बेटों को उनके क्षेत्रों से निर्वासित कर दिया। शिमोन धर्मपरायण राजकुमार यारोस्लाव के पास रूस आया, जिन्होंने उसका स्वागत किया और उसका सम्मान किया; उन्होंने उसे अपने बेटे वसेवोल्द का मुख्य बोयार बना दिया, और वास्तव में शिमोन को वसेवोल्द के अधीन बहुत बड़ा अधिकार प्राप्त था।

[5536]निम्नलिखित परिस्थितियों के कारण, शिमोन को गुफाओं के पवित्र मठ के प्रति बहुत गहरी भक्ति थी। कीव में इज्यास्लाव यारोस्लाविच के शासनकाल के दौरान, खानाबदोश पोलोव्त्सियों ने रूसी भूमि पर आक्रमण किए। तीन राजकुमार—यारोस्लाव के पुत्र: इज्यास्लाव, स्वियातोस्लाव और वसेवोल्द—उनके खिलाफ़ marched निकले, और शिमोन वसेवोल्द के दल में था। वे सभी आदरणीय एंथनी के पास गए, और युद्ध के लिए उनकी प्रार्थना और आशीर्वाद मांगा। एल्डर ने सत्य बोलते हुए, स्पष्ट रूप से उनकी विनाश की भविष्यवाणी की। शिमोन एल्डर के पैरों में गिर पड़ा और विनती की कि प्रभु उसे ऐसी विपत्ति से बचा लें। आदरणीय ने उससे उत्तर दिया:

[5537]'मेरे पुत्र, तुम में से कई तलवार से मारे जाएँगे; अन्य, दुश्मन से भागते हुए, पैरों तले कुचले जाएँगे, घायल होंगे और पानी में डूब जाएँगे; लेकिन तुम, बचकर, यहाँ, बनने वाली चर्च में दफनाए जाओगे।' जब दोनों पक्षों की सेनाएँ आल्टे नदी पर आमने-सामने हुईं, तो ईसाइयों की, ईश्वर की सहायता से वंचित, पराजय हुई – राजकुमार भाग गए, जबकि कई कमांडर और उनके सैनिक मारे गए; उनमें घायल शिमोन भी पड़ा था। आकाश की ओर देखते हुए, उसने एक बड़ी चर्च देखी, ठीक वैसी ही जैसी उसने पहले समुद्र में देखी थी, और उद्धारकर्ता के वे शब्द याद आए, जो उनसे बहुत समय पहले कहे गए थे[5538] ; तब शिमोन ने पुकारा:

'हे प्रभु, अपनी परम पवित्र माता और पूजनीय एंथनी और थियोडोसियस की प्रार्थनाओं के द्वारा, मुझे इस कड़वी मृत्यु से बचा।'

[5534] साइमन पेचेरस्क मठ के एक भिक्षु थे। वहाँ से, उन्हें ग्रैंड प्रिंस वेस्वेलोड यूरीविच द्वारा नेटीवटी मठ के मठाध्यक्ष के रूप में नियुक्त किया गया, जिसकी स्थापना उस राजकुमार ने व्लादिमीर में की थी; बाद में, साइमन को व्लादिमीर के डायोसीस का पहला बिशप नियुक्त किया गया, जिसे 1214 में रोस्तोव के डायोसीस से अलग किया गया था। बारह वर्षों के शासन के बाद 1226 में साइमन की मृत्यु हो गई। व्लादिमीर के बिशप साइमन के पॉलीकार्प—जो स्वयं एक भिक्षु थे और बाद में कीव केव्स मठ के मठाधीश बने—को लिखे पत्रों से, और पॉलीकार्प के अकोलिन को लिखे पत्र से, केव्स के आर्चिमांड्राइट—जिसकी सामग्री में केव्स के चमत्कारी संतों और उनके महान चर्च के निर्माण के दौरान मठ के भीतर घटित चमत्कारों के वृत्तांतों की एक शृंखला शामिल है—से प्रसिद्ध 'केव्स का पैट्रिकोन' संकलित किया गया।

[5535] लावरा – ग्रीक शब्द से, जिसका अर्थ है 'शहर का एक हिस्सा' या 'गली' – विशेष रूप से मठ के मुखिया (अबॉट) के आवास के चारों ओर शहर की गलियों की तरह व्यवस्थित कोशों (सेलों) की एक पंक्ति को संदर्भित करता है, जो एक बाड़ या दीवार से घिरी होती है। लवरा में भिक्षु तपस्वी जीवन जीते थे और अपने-अपने कोठरी में तपस्या में लगे रहते थे, सप्ताह के पहले और आखिरी दिनों में दैवीय सेवाओं के लिए एकत्रित होते थे, जबकि शेष दिनों में मौन का पालन करते थे; लवरा में जीवन अन्य मठवासी समुदायों की तुलना में बहुत कठिन था। प्राचीन काल से, 'लावरा' नाम बड़े और महत्वपूर्ण मठों के लिए प्रयुक्त होता आया है। यह सबसे पहले मिस्र में और बाद में फिलिस्तीन में प्रकट हुआ। वर्तमान में, हमारे देश में 'लावरा' नाम का उपयोग विशेष रूप से एक सम्मान के रूप में किया जाता है।

[5536] पोलोव्त्सी या कुमान एक तुर्की खानाबदोश जनजाति थी जो 10वीं से 13वीं शताब्दी में दक्षिणी रूस में रहती थी और वहां से रूसी भूमि के सीमावर्ती शहरों और गांवों पर छापेमारी करती थी।

[5537] यह 1066 का समय था। अल्ता, ट्रुबेज़्ह नदी की एक सहायक नदी है, जो कीव से नीचे की ओर बाएँ, या मास्को, तट पर डेन्यपर में मिलती है।

[5538] इन शब्दों की व्याख्या के लिए नीचे देखें।

और अचानक किसी शक्ति ने उसे मृतकों के बीच से खींच लिया, और वह तुरंत अपने घावों से ठीक हो गया, और एक बार फिर पूरी तरह से स्वस्थ हो गया। इसके बाद पवित्र एंथनी के पास लौटकर, साइमन ने उन्हें सब कुछ बताया, और यह भी जोड़ा:

'मेरे पिता, अफ्रीकनस ने, लगभग दस कोहनी लंबा एक बड़ा क्रॉस बनाया, जिस पर मसीह की एक प्रतिमा लगी हुई थी; प्रभु की प्रतिमा का सम्मान करते हुए, उसने उसकी कमर के चारों ओर लगभग 50 हृव्निया की कीमत का एक सुनहरा पट्टा[5539] बांधा, और उसके सिर पर एक मुकुट रखा; लेकिन जब मेरे चाचा याकुन ने मुझे मेरे क्षेत्र से बाहर निकाल दिया, तो मैंने वह पट्टा और मुकुट ले लिया और उद्धारकर्ता की प्रतिमा से, जो मेरी ओर मुड़ गई थी, एक आवाज सुनी:

'हे मनुष्य, इस मुकुट को कभी अपने सिर पर मत रखना, बल्कि इसे उस स्थान पर ले जाओ जो इसके लिए तैयार किया गया है, जहाँ आदरणीय मेरे लिए मेरी माता का एक चर्च बनाएँगे; और इसे उन्हें सौंप देना, ताकि वे इसे मेरे वेदी के ऊपर लटका सकें।'

'मैं,' शिमोन ने कहा, 'डर के मारे गिर पड़ा और वहाँ मृतक की तरह सुन्न पड़ा रहा; फिर मैं उठा और जहाज़ पर चढ़ गया। यात्रा के दौरान, एक भयंकर तूफ़ान आ गया – इतना ज़ोरदार कि हम जीने की उम्मीद ही छोड़ चुके थे। तब मुझे वह कमरबंद याद आया, जिसे मैं पूरी तरह से भूल गया था, और मैं ज़ोर से प्रार्थना करने लगा:

'प्रभु, मुझे क्षमा करें, क्योंकि मैं अब इस कमरबंद के कारण मर रहा हूँ, जिसे मैंने आपके पवित्र प्रतिमा से लिया था,' – और अचानक मैंने ऊपर एक चर्च देखा और सोचा: यह कौन सी चर्च है? और ऊपर से एक आवाज़ आई:

– (यह वही चर्च है) जिसे रेवरेंड ईश्वर की माता के नाम पर बनाएंगे; यह उतना ही भव्य और ऊँचा होगा जितना आप इसे अब देख रहे हैं; रेवरेंड इसके आयाम उस सुनहरे बेल्ट से निर्धारित करेंगे – चौड़ाई में बीस बेल्ट, लंबाई में तीस और ऊँचाई में पचास; आपको इसी चर्च में सुलाया जाएगा।

इसके बाद, समुद्र शांत हो गया। हम सभी ने ईश्वर का धन्यवाद किया और बहुत प्रसन्न हुए, यह महसूस करते हुए कि हमें एक कड़वी मृत्यु से बचा लिया गया था।

यह सब बताने के बाद, साइमन ने रेवरेंड एंथनी की ओर मुड़कर कहा:

'पिताजी, मुझे यह नहीं पता था कि मुझे दिखाया गया चर्च कहाँ बनाया जाएगा, जब तक कि मैंने आपसे यह नहीं सुना कि मुझे उसी चर्च में आराम दिया जाएगा जो बनाया जाना है।'

और, सुनहरी कमरबंद लेकर, उन्होंने उसे पूजनीय एंथनी को देते हुए कहा:

'यहाँ उस चर्च की नींव का माप है,' और, मुकुट सौंपते हुए, उन्होंने कहा:

'यह मुकुट पवित्र वेदी के ऊपर लटकाया जाना है।'

वरिष्ठ ने ईश्वर का धन्यवाद करते हुए उत्तर दिया:

'मेरे पुत्र, अब से तुम्हारा नाम शिमोन नहीं, बल्कि साइमन होगा।'

संत एंथनी ने धन्य थियोडोसियस को बुलाकर कहा:

'यही है, साइमन, जो चर्च का निर्माण करेगा।'

और उसके बाद, उन्होंने पूजनीय को एक कमरबंद और एक मुकुट भेंट किया। उस समय से, साइमन पवित्र निर्माता थियोडोसियस के लिए गहरे प्रेम से भर गया: उसने ईश्वर द्वारा प्रकट की गई चर्च के निर्माण के लिए अपनी संपत्ति में से बहुत कुछ उसे दिया, और अक्सर उससे मिलने आता था। एक बार, जब साइमन धन्य थियोडोसियस के पास आया, तो अपनी सामान्य बातचीत के बाद उसने उससे कहा:

'पिताजी, मैं आपसे केवल एक ही बात मांगता हूँ।'

'जो कुछ भी आप चाहें,' पूजनीय थियोडोसियस ने उत्तर दिया, 'हमारी विनम्रता से माँगो, मेरे पुत्र, एक कुलीन वंश के पुरुष?'

'मैं आपसे एक ऐसा उपहार मांगता हूं जो बहुत बड़ा है और मेरी क्षमता से परे है,' साइमन ने उत्तर दिया।

'तुम जानते हो, मेरे बेटे,' पूजनीय थियोडोसियस ने एक बार फिर उत्तर दिया, 'हमारी गरीबी—अक्सर हमारे पास अपने दैनिक भरण-पोषण के लिए पर्याप्त रोटी भी नहीं होती; मेरे पास ऐसी कोई चीज़ हो सकती है, यह मुझे नहीं पता।'

साइमन ने कहा:

[5539] हृव्निया एक विशिष्ट वजन (72–96 ज़ोलोटनिक) का प्राचीन सिक्का है, जो अक्सर सोने या चांदी के बिलेट के रूप में होता है।

'यदि आप चाहें, तो प्रभु द्वारा आपको दिए गए अनुग्रह से मुझे यह प्रदान कर सकते हैं, जिन्होंने आपको "आदरणीय" कहा है: क्योंकि जब मैंने मसीह के सिर से मुकुट हटाया, तो प्रभु ने मुझसे कहा:

'मुकुट को उसके लिए तैयार की गई जगह पर ले जाओ, और उसे उस आदरणीय के हाथों में रख दो जो मेरी माता के लिए एक चर्च का निर्माण करेगा।'

'तो मैं आपसे यही निवेदन करता हूँ: मुझे अपना वचन दीजिए कि आप मुझे जीवन में और मेरी मृत्यु के बाद तथा अपनी मृत्यु के बाद भी आशीर्वाद देंगे।'

संत थियोडोसियस ने उत्तर दिया:

'हे साइमन, तुम्हारी याचना मेरी शक्ति से परे है! परन्तु यदि तुम मेरे प्रस्थान के साक्षी बनोगे और मेरे देहांत के बाद, यहाँ बनी हुई कलीसिया को देखोगे, जिसमें सौंपे हुए नियम अटूट रूप से पालन किए जाएँ, तो जान लेना कि मुझे परमेश्वर के सामने साहस है; परन्तु अभी मुझे नहीं पता कि मेरी प्रार्थना स्वीकार्य है या नहीं।'

'तुम्हारी धार्मिकता,' साइमन ने उत्तर दिया, 'प्रभु स्वयं ने प्रमाणित की है: मैंने तुम्हारे बारे में उनकी पवित्र प्रतिमा के सबसे शुद्ध ओठों से सुना है; इसलिए मैं तुमसे निवेदन करता हूँ: जैसे तुम अपने भिक्षुओं के लिए प्रार्थना करते हो, वैसे ही मेरे लिए, एक पापी के लिए, मेरे पुत्र जॉर्ज के लिए, और मेरे सभी रिश्तेदारों के लिए प्रार्थना करो।'

संत थियोडोसियस ने, जैसे कोई वादा करते हुए, कहा:

'मैं न केवल उनके लिए, बल्कि इस पवित्र स्थान से प्रेम करने वाले सभी लोगों के लिए भी प्रार्थना करता हूँ।'

तब साइमन, जमीन पर गिरकर, विनती करने लगा:

'पिताजी, जब तक आप अपने शब्दों की लिखित में पुष्टि नहीं कर देते, तब तक मैं इस स्थान को नहीं छोड़ूँगा।'

साइमन के प्रेम से प्रेरित होकर, पूज्य थियोडोसियस ने निम्नलिखित लिखा:

'पिता के नाम पर, और पुत्र के नाम पर, और पवित्र आत्मा के नाम पर, हमारी परम पवित्र माता, ईश्वर की माता और सदा कुंवारी मरियम, और पवित्र अदेह शक्तियों की प्रार्थनाओं के द्वारा…' – और पापमुक्ति की प्रार्थना के अन्य शब्द, जिसका समापन इस प्रकार हुआ:

– इस जीवन में और आने वाले जीवन में आपको क्षमा मिले, जब धर्मी न्यायाधीश जीवितों और मृतकों का न्याय करने आएँगे।

उस समय से, इस प्रार्थना को मृतक के हाथों में रखना शुरू कर दिया गया, जैसा कि पहले साइमन ने अपने लिए वसीयत में लिखा था। इस प्रार्थना के साथ, परमपूज्य थियोडोसियस ने साइमन को निम्नलिखित भी लिखा:

– हे प्रभु, मुझे याद रखना, जब आप अपना राज्य स्थापित करने आएँगे और प्रत्येक को उसके कर्मों के अनुसार प्रतिफल देंगे; तब, हे प्रभु, यह अनुग्रह करें कि आपके सेवक, साइमन और जॉर्ज, आपकी महिमा में आपके दाहिने हाथ पर खड़े हों और आपका आनंददायक स्वर सुनें: *'आओ, हे मेरे पिता के धन्य जन; संसार की उत्पत्ति से तुम्हारे लिए तैयार की हुई अपना उत्तराधिकार ग्रहण करो'* (मत्ती 25:34)।

तब साइमन ने फिर पूछा:

'प्रार्थना करें, पिता, कि मेरे माता-पिता और रिश्तेदारों के पाप क्षमा हो जाएँ।'

आदरणीय थियोडोसियस ने अपने हाथ उठाकर कहा:

'प्रभु तुम्हें सियोन से आशीष दें, और तुम्हें जीवन भर यरूशलेम की भलाई देखने दें, जब तक कि तुम्हारा जीवन समाप्त न हो जाए' (देखें भजन संहिता 127:6)।

सिमोन ने संत की प्रार्थना और आशीर्वाद को एक अत्यंत कीमती मोती के रूप में स्वीकार किया, जिससे वह अपनी मृत्यु तक भी अलग नहीं होना चाहता था, जैसा कि वास्तव में बाद में हुआ भी। उस समय तक, वह एक वरांगियन—एक लैटिन ईसाई था; लेकिन तब से, परम पूजनीय थियोडोसियस द्वारा निर्देशित होकर, उसने ईश्वर की कृपा से, लैटिन चर्च की त्रुटियों को त्याग दिया और पूरे मन से ऑर्थोडॉक्स धर्म अपना लिया; उसके पूरे परिवार ने, जिसमें तीन हजार तक लोग थे—जिनमें पादरी भी शामिल थे—उसके साथ धर्म परिवर्तन किया। यह सब गुफ़ाओं के आदरणीय एंथनी और थियोडोसियस के चमत्कारों के कारण हुआ। – काफी समय बीत जाने के बाद, जब गुफ़ाओं में चर्च पहले ही बन चुका था, साइमन को दिव्य प्रकटवाणी और आदरणीय एंथनी की भविष्यवाणी के अनुसार, वहाँ पहली बार दफ़नाया गया।

प्रशंसनीय साइमन और उसे प्राप्त हुए दैवीय प्रकाशनों का वृत्तांत स्पष्ट रूप से दर्शाता है कि पृथ्वी पर इसके निर्माण से पहले, पवित्र गुफा चर्च की प्रतिमा स्वर्ग में पूर्व-चित्रित की गई थी, ताकि भजनकार के वचन यहाँ पूरे हो

सकें: 'महानतम ने स्वयं इसकी स्थापना की है' (देखें भजन संहिता 86:5)। बाद में, स्वर्ग की रानी की मध्यस्थता से, यह और भी स्पष्ट हो गया, जैसा कि आगे से देखा जा सकता है।

साइमन द्वारा आदरणीय एंथनी को एक पट्टा और एक मुकुट भेंट किए हुए कई साल बीत चुके थे, और एक दिन कॉन्स्टेंटिनोपल के चार चर्च निर्माता – पत्थर के चर्चों के निर्माता और बहुत बड़े धनी लोग – आदरणीय एंथनी और थियोडोसियस के पास आए:

'आप चर्च का निर्माण कहाँ शुरू करना चाहेंगे?' उन्होंने उनसे पूछा।

'जहाँ प्रभु निर्देश दें,' संतों ने उत्तर दिया।

'कितना अद्भुत है,' निर्माणकारों ने कहा, 'आप अपनी मृत्यु का समय जानते हैं, फिर भी आप चर्च के लिए कोई स्थान नहीं बता सकते, जबकि आपने हमें काम पर रखते समय इतनी बड़ी रकम सोने की दी थी।'

पूरे समुदाय को बुलाने के बाद, पूजनीय पादरियों ने यूनानियों से पूछना शुरू किया:

'जो कुछ भी आप चर्चा कर रहे थे, वह सब कुछ बिना कुछ छिपाए हमें बताइए।'

निर्माताओं ने कहा:

'एक दिन, जब हम सुबह-सुबह अपने घरों में सो रहे थे – ठीक सूर्योदय के समय – सुंदर जवान पुरुष हम में से प्रत्येक के पास आए और कहा:

'[5540] की रानी आपको व्लाचेर्ना बुला रही हैं।'

हम अपने दोस्तों और रिश्तेदारों को साथ लेकर एक ही समय पर व्लाचेर्ना पहुँचे; एक-दूसरे से बात करने पर हमें एहसास हुआ कि हम सभी को उन्हीं दूतों द्वारा और उन्हीं शब्दों में रानी के पास बुलाया गया था। वहाँ हमने रानी को देखा, जो योद्धाओं की भीड़ से घिरी हुई थीं; हम उनके सामने झुक गए, और उन्होंने हमसे कहा:

'मैं रूस में, कीव में, अपने लिए एक चर्च बनवाना चाहती हूँ; अतः मैं तुम्हें आज्ञा देती हूँ: तीन वर्ष के लिए सोना लो और चर्च का निर्माण आरंभ करो।'

नमन करके, हमने उत्तर दिया:

'हे सर्वोच्च रानी, आप हमें एक परदेस में भेज रही हैं – वहाँ हम किसके पास जाएँगे?'

उसने कहा, 'जो यहाँ हमारे सामने खड़े हैं—मैं एंटनी और थियोडोरस को भी भेज रही हूँ।'

'तब फिर, हे स्वामिनी,' हमने पूछा, 'आप हमें तीन साल के लिए सोना क्यों दे रही हैं? बस उन्हें कह दीजिए कि हमें भोजन और आवश्यक सभी चीजें मिल सकें; जहाँ तक हमें पुरस्कृत करने की बात है, आप स्वयं सबसे अच्छी जानती हैं।'

रानी ने उत्तर दिया, '[5541] शाश्वत विश्राम के लिए प्रस्थान कर रहे हैं; थियोडोसियस दूसरी गर्मियों में उनके पीछे आएँगे; इसलिए जितना सोना ले जा सकते हो, ले जाओ, और जाओ; और कोई भी तुम्हें उतना इनाम नहीं दे सकता जितना मैं दे सकती हूँ: मैं तुम्हें वह दूँगी जो *"न किसी ने देखा है... न किसी ने सुना है, और न ही यह मानव हृदय में प्रवेश किया है"* (1 कुरिन्थियों 2:9)। और मैं स्वयं उस चर्च को देखने आऊँगी जिसमें मैं निवास करना चाहती हूँ; इसके बाद, उन्होंने हमें पवित्र शहीदों के अवशेष दिए: आर्टेमियस, पॉलिएक्टस, लियोन्टियस, अक्काकियोस, एरेफस, जेम्स और थियोडोरस, यह कहते हुए: 'इन्हें चर्च की नींव में रख दो।' हमने पवित्र अवशेष और आवश्यक से अधिक सोना लिया, और रानी से चर्च के आयामों के बारे में पूछा:

'इसे मापने के लिए,' उन्होंने उत्तर दिया, 'मैंने मेरे पुत्र की आज्ञा से उसकी कमरबंद भेजी है; फिर भी, बाहर जाओ और इसके आयाम स्वयं देखो।'

हम बाहर गए और खुले में चर्च को देखा। लौटकर, हम फिर से रानी के सामने झुके और पूछा: 'हे सर्वोच्च महारानी, चर्च का नाम क्या होगा?'

'मैं इसे अपना नाम देना चाहती हूँ,' उन्होंने उत्तर दिया।

हमने उनके नाम के बारे में पूछने की हिम्मत नहीं की, लेकिन रानी ने स्वयं कहा:

'यह चर्च ईश्वर की माता को समर्पित होगा,' और उन्होंने हमें यह पवित्र प्रतिमा अपने हाथों से दी।

[5540] व्लाचेर्ना – कॉन्स्टेंटिनोपल का एक जिला।

[5541] सेंट एंथनी

यह सुनकर, सभी ने ईश्वर और उनकी अतिपवित्र माता की महिमा की; और संत एंथनी ने निर्माणकर्ताओं से कहा:

'मेरे बच्चों, हम इस स्थान को छोड़कर कभी तुम्हारे पास नहीं आए।'

लेकिन यूनानियों ने शपथ लेकर पुष्टि की:

'कई गवाहों की मौजूदगी में, हमने रानी का सोना सीधे आपके हाथों से लिया; हम आपको जहाज तक छोड़ने गए, और आपके प्रस्थान के एक महीने बाद, हम अपनी यात्रा पर निकले; अब हमें कॉन्स्टेंटिनोपल छोड़े दस दिन हो गए हैं।'

संत एंथनी ने उनसे उत्तर दिया:

'मसीह ने तुम पर महान अनुग्रह किया है, क्योंकि तुम उनकी इच्छा के कार्यपालक हो; वे सुन्दर मुख वाले युवक जिन्होंने तुम्हें बुलाया है, वे सबसे तेजस्वी स्वर्गदूत हैं, और ब्लाचेर्ना की रानी कोई और नहीं बल्कि हमारी परम पवित्र माता, ईश्वर की माता और सदा कुंवारी मरियम हैं; और उनके चारों ओर खड़े योद्धा अदेह दैवीय सेनाएँ थीं; और हमारे हाथों से आपका स्वर्ण प्राप्त करना ईश्वर का एक चमत्कार है, जिसे प्रभु ने अपनी इच्छा से अपने सेवकों पर, केवल उन्हीं के ज्ञात तरीकों से, प्रकट किया। तुम्हारी पैरिश धन्य है, और तुम्हारे पास एक अच्छी साथी है – ईश्वर की माता की यह पवित्र प्रतिमा, जो तुम्हें, जैसा कि उसने वादा किया है, 'वह *सब कुछ* प्रदान कर सकती है *जो किसी आँख ने नहीं देखा, किसी कान ने नहीं सुना, और किसी मानव हृदय ने कल्पना नहीं की है*'; जो वरदान केवल ईश्वर की माता और उनके पुत्र, प्रभु परमेश्वर और हमारे उद्धारकर्ता यीशु मसीह ही दे सकते हैं। उनकी कमरबंद और मुकुट वरांगियनों की भूमि से यहाँ लाए गए थे; उस अति सम्मानित चर्च की चौड़ाई, लंबाई और ऊँचाई स्वर्ग से अवतरित एक भव्य महिमापूर्ण स्वर द्वारा बताई गई थी, जो साइमन द वरांगियन को संबोधित था, जिसने हमें कमरबंद और मुकुट लाकर दिए थे।

ग्रीक भक्तिपूर्वक संतों के सामने झुके, और पहले की तरह पूछा:

'चर्च बनाने के लिए स्थान कहाँ है? हमें दिखाओ।'

आदरणीय एंथनी ने उत्तर दिया:

'आओ हम तीन दिन तक प्रार्थना करें, और प्रभु हमें वह स्थान दिखा देंगे।'

और इस प्रकार, ईश्वर की प्रेरणा से, चर्च बनाने के लिए एक स्थान खोजने हेतु एक बड़ी भीड़ इकट्ठा हो गई, हालांकि किसी ने उन्हें बुलाया नहीं था; कुछ ने एक जगह की ओर इशारा किया, दूसरों ने दूसरी जगह की ओर, लेकिन उन्हें कोई उपयुक्त स्थान नहीं मिल सका। पास में ही राजकुमार का खेत था, और ईश्वर की व्यवस्था से, ऐसा हुआ कि उसी क्षण राजकुमार स्व्यातोस्लाव स्वयं वहाँ से गुजर रहे थे; भीड़ को देखकर, उन्होंने पूछा कि क्या हो रहा है। और जब उन्हें पता चला, तो उन्होंने अपना घोड़ा घुमाया और भीड़ के पास आए; और जैसे ईश्वर से प्रेरित होकर, राजकुमार ने अपने खेत में एक जगह की ओर इशारा किया जहाँ उन्होंने चर्च बनाने का आदेश दिया।

पवित्र पुरुषों ने तीन दिन तक प्रार्थना की। और प्रार्थना की पहली रात को, प्रभु आदरणीय एंथनी को प्रकट हुए, और कहा:

'एंथनी! तुमने मेरी दृष्टि में अनुग्रह प्राप्त किया है।'

रेवरेंड एंथनी ने उत्तर दिया:

'हे प्रभु, यदि मैंने आपकी दृष्टि में अनुग्रह पाया है, तो सारी पृथ्वी पर ओस हो, परन्तु उस स्थान पर जहाँ आप पवित्र करना प्रसन्न करते हैं, वहाँ सूखी भूमि हो।'

और सुबह, जब सारी पृथ्वी पर ओस पड़ी हुई थी, तब उस स्थान पर जहाँ अब चर्च खड़ा है, सूखी भूमि मिली। अगले दिन रात को फिर प्रार्थना करने के बाद, पूज्य एंथनी ने कहा:

– 'हे प्रभु, सारी पृथ्वी पर सूखी भूमि हो, परन्तु पवित्र स्थान पर ओस हो।'

और सुबह, पवित्र स्थान पर ओस देखी गई, जबकि सारी धरती सूखी थी (देखें न्यायियों 6:37-40)। तीसरे दिन, उन्होंने उस स्थान पर प्रार्थना की; पूजनीय एंथनी ने इसे आशीर्वाद दिया; उस स्थल की चौड़ाई और लंबाई का माप मसीह की स्वर्ण पट्टिका से लिया गया, जिसे साइमन वरांगियनों की भूमि से लाया था, और उन्हें उस माप द्वारा मार्गदर्शन मिला जो समुद्र में रहते समय स्वर्ग से आई एक आवाज़ द्वारा साइमन को बताई गई थी। फिर संत एंथनी ने, अपने हाथ ऊपर उठाकर, प्राचीन नबी एलिया की तरह ऊँचे स्वर में प्रार्थना की:

'हे प्रभु, मुझे सुन, मुझे (आज) आग द्वारा सुन, और इन सभी लोगों को यह जानने दे कि यह तू ही है जिसने यह चाहा है' (तुलना करें 3 राजा 18:37)।

और तुरंत स्वर्ग से आग गिरि पड़ी: उसने झाड़ियों और कांटों को भस्म कर दिया, ओस को सुखा दिया, और निर्धारित स्थान पर एक खाई की तरह एक खोखला गड्ढा बना दिया। उस समय आदरणीय संत के चारों ओर खड़े लोग डर के मारे मृतक की तरह गिरि पड़े। – इस प्रकार, परमेश्वर की कृपा और पूजनीय एंथनी के नेतृत्व में विश्वासियों की उत्कट प्रार्थनाओं से, परमेश्वर द्वारा चुना गया स्थान प्रकट हुआ: और उससे भी पहले, परमेश्वर की कृपा, आदरणीय थियोडोसियस की प्रार्थनाओं के माध्यम से—जैसा कि उनकी जीवनी में वर्णित है—ने इस स्थान का पूर्वाभास दिया था: कभी-कभी पूर्व चर्च से उसकी ओर एक लौ के झुकने के दर्शन के माध्यम से, और कभी-कभी एक पवित्र प्रतिमा ले जाने वाले स्वर्गदूतों के दर्शन के माध्यम से।

स्थल के इस चमत्कारी संकेत के बाद, पूजनीय एंथनी और थियोडोसियस ने परमेश्वर की परम पवित्र माता को समर्पित एक पत्थर के चर्च की नींव रखी; यह दुनिया की सृष्टि के 6581वें वर्ष और ईस्वी 1073 के वर्ष में था, ईश्वर-प्रेमी बिशप माइकल के अधीन था – उस समय मेट्रोपॉलिटन जॉर्ज ग्रीस में थे – धर्मपरायण राजकुमार स्वियातोस्लाव यारोस्लाविच के शासनकाल के दौरान[5542] । उन्होंने स्वयं अपने हाथों से चर्च की नींव के लिए खाई खोदना शुरू किया और निर्माण को और अधिक सफलतापूर्वक आगे बढ़ाने के लिए परम पूजनीय थियोडोरस को 100 हृव्निया सोना दिया।

दीवारों की नींव में पवित्र शहीदों के अवशेष रखे गए, जो ब्लाचेर्ना में परमेश्वर की अति पवित्र माता ने निर्माताओं को दिए थे। जैसा कि उन्होंने पूर्वानुमान लगाया था, चर्च की नींव रखे जाने के बाद परम पूज्य एंथनी अधिक समय तक जीवित नहीं रहे - वे उसी वर्ष निधन हो गए। आदरणीय थियोडोसियस ने चर्च के निर्माण पर बहुत ध्यान दिया, लेकिन वे भी जल्द ही, आदरणीय एंथनी की मृत्यु के दूसरे वर्ष में, जब नींव का काम पहले ही पूरा हो चुका था, अपने शाश्वत निवास के लिए प्रस्थान कर गए। आदरणीय थियोडोसियस के उत्तराधिकारी, धन्य स्टीफन के अधीन, तीसरे वर्ष में चर्च का निर्माण पूरा हुआ। धन्य स्टीफन ने अभी वर्णित गौरवशाली चमत्कारों को देखा: उन्होंने कलाकारों को माँ-भगवती की प्रतिमा के साथ कॉन्स्टेंटिनोपल से आते देखा, और उनका वह वृत्तांत सुना कि कैसे उन्हें ब्लाचेर्ना में सम्राज्ञी द्वारा भेजा गया था। इन चमत्कारों की स्मृति में, कीव-पेचेरस्क लावरा छोड़ने के बाद, उन्होंने Klov[5543] पर ब्लाचेर्ना की परमेश्वर की माता को समर्पित एक चर्च की स्थापना की। और धर्मनिष्ठ राजकुमार व्लादिमीर वसेवोदोविच मोनोमाख – जो उस समय एक छोटे लड़के थे – ने देखा कि आकाश से आग गिरिकर एक गड्ढा जला दिया, जहाँ चर्च की नींव के लिए सोने की कमरबंद से निशान लगाया गया था।

इन अद्भुत चमत्कारों की खबर पूरे रूस के देश में फैल गई। इसने राजकुमार वसेवोल्द और उनके पुत्र व्लादिमीर को पेरियास्लाव से कीव की यात्रा करने के लिए प्रेरित किया। उस समय व्लादिमीर बीमार थे; उन्हें उपरोक्त सुनहरी कमरबंद से कसा गया, और हमारे पवित्र पिता एंथनी और थियोडोसियस की प्रार्थनाओं के माध्यम से, वह तुरंत स्वस्थ हो गए। इसलिए, ईश्वर-प्रेमी राजकुमार व्लादिमीर ने स्वयं ईश्वर द्वारा प्रकट किए गए पेचेरस्क चर्च के आयामों को अपनाया और, अपनी रियासत में रोस्तोव शहर में, ऊंचाई, लंबाई और चौड़ाई में बिल्कुल वैसा ही एक चर्च बनवाया; साथ ही, उन्होंने एक विशेष चार्टर में पेचेरस्क चर्च में स्थापित सभी पर्व-दिवसों को सूचीबद्ध किया, ताकि वे अपने स्वयं के चर्च के लिए मार्गदर्शक के रूप में काम करें। व्लादिमीर के पुत्र, राजकुमार जॉर्ज ने, अपने पिता से गुफाओं के चर्च के निर्माण के आसपास के चमत्कारिक घटनाओं के बारे में सुनकर, अपनी रियासत में, सुज़दाल शहर में, समान आयामों का एक चर्च भी बनाया। लेकिन अब समय आ गया है कि हम पवित्र प्रतिमाओं से गुफाओं के चर्च की सजावट की कहानी की ओर मुड़ें।

कॉन्स्टेंटिनोपल से मुख्य निर्माण कलाकारों के आगमन के दस साल बाद, मुख्य प्रतिमा-चित्रकार भी वहाँ से गुफाओं के उस समय के मठाधीश, धन्य निकॉन के पास आए:

उन्होंने उनसे कहा, 'हमें वे लोग दिखाओ जिन्होंने हमें आइकन बनाने के लिए काम पर रखा था; हम उनसे बात करना चाहते हैं: कई गवाहों की मौजूदगी में, हमने उनके साथ एक छोटी सी चर्च को आइकन से सजाने के लिए सहमति व्यक्त की थी; यह चर्च, हालांकि, बहुत बड़ी है; अन्यथा, अपना सोना वापस ले लो, और हम कॉन्स्टेंटिनोपल लौट जाएंगे।'

इन शब्दों से मठाधीश चकित हो गए, और उन्होंने प्रतिमा-चित्रकारों से कहा:

'वे लोग कैसे थे जिन्होंने आपसे यह समझौता किया था?'

[5542] स्वियातोस्लाव यारोस्लाविच – 1073 से 1075 तक कीव के महाप्रसि।

[5543] क्लोव – कीव के पास एक भूखंड।

आइकन-चित्रिकारों ने उसे उनका हुलिया बताया और उनके नाम बताए - एक का नाम एंथनी और दूसरे का थियोडोसियस था। फिर मठाधीश ने कहा:

'हे मेरे बच्चों! हम उन्हें तुम्हारे पास नहीं ला सकते; उन्हें प्रभु के पास गए दस साल हो गए हैं, जहाँ वे हमारे लिए अथक प्रार्थना करते हैं, इस चर्च की रक्षा करते हैं और अपने मठ तथा वहाँ रहने वालों का ध्यान रखते हैं।'

यह उत्तर सुनकर प्रतिमा-चित्रिकार भयभीत हो गए। उन्होंने कई व्यापारियों को, जो कॉन्स्टेंटिनोपल से भी आए थे, मठाधीश के पास लाया था, यह कहते हुए:

'यहाँ, उनकी ही उपस्थिति में, हमने उनके साथ सौदा किया और उनके हाथों से सोना लिया; फिर भी आप हमें उन्हें दिखाने से इनकार कर रहे हैं। यदि वे चल बसे हैं, तो हमें उनकी प्रतिमा दिखाएँ, ताकि ये लोग खुद देख सकें कि क्या यह वास्तव में वे ही हैं।'

तब मठाधीश ने सभी के सामने पूज्य एंथनी और थियोडोसियस की प्रतिमा निकाली। प्रतिमा को देखकर यूनानियों ने प्रणाम किया, और कहा:

'सचमुच, ये वही हैं, और हमारा विश्वास है कि ये मृत्यु के बाद भी जीवित हैं और उन पर दया कर सकते हैं तथा उनका उद्धार कर सकते हैं जो उनकी शरण में आते हैं।'

और व्यापारियों ने वह मोज़ेक प्रस्तुत किया जिसे वे, यों कहें, बिक्री के लिए लाए थे: बाद में इसका उपयोग पवित्र वेदी को सजाने के लिए किया गया। फिर प्रतिमा-चित्रिकारों ने अपने पाप से पश्चाताप करना शुरू किया और निम्नलिखित बातें बताईं:

'जब हम नाव से कीव पहुँचे, तो हमने पहाड़ी पर यह महान चर्च देखा और पूछा: "यह कौन सी चर्च है?" उन्होंने जवाब दिया, "पेचेर्सक लाव्रा, जिसे आपको सजाना है।"

चर्च की विशालता देखकर, हम क्रोधित हो गए और वापस नौका से लौटना चाहते थे। लेकिन रात में एक भयंकर तूफान आ गया, और जब हम सुबह उठे, तो हमने देखा कि हम त्रिपोली के पास थे, और नाव अपने आप धारा के विपरीत चल रही थी – मानो किसी शक्ति द्वारा खींची जा रही हो। हमने पूरी ताकत से उसे रोका और पूरे दिन वहीं खड़े रहे, यह सोचते रहे कि अब आगे क्या होगा। हमने एक ही रात में, और चप्पू की मदद के बिना, वह दूरी कैसे तय कर ली जिसे तय करने में दूसरों को तीन दिन लग जाते हैं? अगली रात हमें एक दर्शन हुआ: हमने यह चर्च और वहाँ स्थापित ईश्वर की माता की चमत्कारी प्रतिमा देखी, जिन्होंने हमसे कहा:

'तुम व्यर्थ में क्यों संघर्ष करते हो, मेरे और मेरे पुत्र की इच्छा के आगे समर्पण करने से इनकार करते हो? यदि तुम मेरी आज्ञा नहीं मानते और वापस भाग जाते हो, तो मैं तुम सबको और तुम्हारी नाव को अपनी चर्च के पास रख दूँगी: और जान लो कि तुम उस जगह से नहीं जाओगे, बल्कि, मेरी मठ में मठवासी व्रत लेने के बाद, तुम अपना जीवन वहीं समाप्त करोगे।' मैं, तथापि, आने वाले युग में संस्थापकों – एंथनी और थियोडोरस – की प्रार्थनाओं के लिए, आपके लिए मध्यस्थता करूँगी।

जब हम सुबह उठे, तो हम फिर से भागना चाहते थे; लेकिन भले ही हमने पूरी ताकत से धारा के खिलाफ नौका चलाई, फिर भी नाव धारा के साथ ही आगे बढ़ रही थी; इसलिए, हमने ईश्वर की इच्छा के आगे समर्पण करते हुए अपनी योजना छोड़ दी, और नाव जल्द ही अपने आप मठ के पास आकर रुक गई।

इस वृत्तांत के बाद, सभी ने—भिक्षुओं और यूनानियों, निर्माणकर्ताओं और प्रतिमा-चित्रिकारों ने—ईश्वर, उनकी परम पवित्र माता, उनकी चमत्कारी प्रतिमा, और पूजनीय एंथनी और थियोडोसियस की स्तुति की।

तब प्रतिमा-चित्रिकारों ने चर्च को सजाना शुरू किया, जिसमें प्रभु ने अपने चिह्नों से उनकी सहायता की। जब प्रतिमा-चित्रिकार मोज़ेक से वेदी को सजा रहे थे, तो सर्वपवित्र परमेश्वर की माता की एक प्रतिमा अपने आप वेदी के भीतर प्रकट हुई; उस क्षण, सभी प्रतिमा-चित्रिकार उपस्थित थे, उनमें आदरणीय एलियस भी थे, जो उनसे सीख रहे थे और उनकी सहायता कर रहे थे; ईश्वर को यह उचित लगा कि वे उन्हें इतने अद्भुत और विस्मयकारी चमत्कार के साक्षी बनाएँ। जैसे ही उन्होंने उस प्रतिमा को निहारा, वह अचानक सूर्य से भी अधिक तेज चमकने लगी, जिससे प्रतिमा-चित्रिकार उसे देख न सके और भयभीत होकर साष्टांग दण्डवत हो गए। वे थोड़ा उठे, वे एक बार फिर चमत्कारी प्रतिमा को देखना चाहते थे: और अचानक ईश्वर की माता के मुख से एक सफेद कबूतर उड़ निकला। चर्च में मौजूद लोग यह देखने के लिए देखते रहे कि क्या वह चर्च से बाहर उड़ गया है। और वहाँ, सभी की आँखों के सामने, कबूतर उद्धारकर्ता के मुख से एक बार फिर उड़ निकला और पूरी कलीसिया में मंडराने लगा: वह संतों की प्रतिमाओं तक उड़ गया, एक के

हाथों पर और दूसरे के सरि पर उतर गया; फरि, नीचे उड़कर, वह परम पवत्रि परमेश्वर की माता की स्थानीय चमत्कारी प्रतमिा के पीछे जा बैठा; चर्च में मौजूद लोग कबूतर को पकड़ना चाहते थे: उन्होंने एक सीढ़ी लगाई, लेकनि उन्हें कबूतर का कोई सुराग न तो प्रतमिा के पीछे मलिा और न ही पर्दे के पीछे; उन्होंने हर जगह खोज की लेकनि यह नहीं देख सके कि कबूतर कहाँ छपि गया था। और वे सभी वेदी में प्रकट हुई प्रतमिा को नहिारते रहे: और देखो, एक बार फरि, उनकी आँखों के सामने, मसीह की माता के मुख से एक कबूतर उड़ नकिला और उद्धारकर्ता की प्रतमिा की ओर ऊँचा उड़ गया। नीचे खड़े लोगों ने ऊपर काम कर रहे लोगों से पुकारा:

'इसे पकड़ो!'

उन्होंने उसके पीछे हाथ फैलाए, लेकनि कबूतर वापस उड़कर उद्धारकर्ता के मुँह में चला गया। एक बार फरि, सूर्य से भी अधकि तेज प्रकाश उन सभी पर चमका, जसिसे उन्हें अपनी आँखें बंद करनी पड़ीं; और वे, साष्टांग दण्डवत होकर, प्रभु की आराधना करने लगे, और गुफा चर्च में नविास करने वाले परम पवत्रि आत्मा के कार्यों को देखने की कृपा प्रदान करने के लिए उनका धन्यवाद करने लगे। चमत्कारों से बल प्राप्त करके, प्रतमिा-चत्रिकारों ने गुफा चर्च—जो स्वर्ग के समान थी—को सजाते हुए स्वयं को भी वभिन्नि सद्गुणों से सुसज्जति कयिा। ईश्वर-प्रसन्न साधु जीवन जीने के बाद, उन्होंने अपना जीवन उसी गुफा मठ में समाप्त कयिा; यही बात मुख्य नरि्माण-शलि्पयिों के बारे में भी सच थी; वे सभी पूज्य एंथनी की गुफा चर्च के प्रवेश-मण्डप में वशि्राम कर रहे हैं, जहाँ उनके अक्षत शरीर आज भी पड़े हैं। इस प्रकार वह भवषि्यवाणी पूरी हुई जो धन्य प्रतमिा-चत्रिकारों ने परमेश्वर की माता की सबसे सम्मानति प्रतमिा से सुनी थी, जब पेचेरस्क चर्च उन्हें तब दखिाई दी जब वे कॉन्स्टेंटनिोपल लौटने का प्रयास कर रहे थे; उन्होंने उनसे कहा: 'तुम उस स्थान को नहीं छोड़ोगे, बल्कि, मठवासी व्रत लेने के बाद, तुम वहीं मरोगे।'

यहाँ एक और अद्भुत चमत्कार को याद करना उचति है, जो उसी समय परमेश्वर द्वारा माँ-ईश्वर की सबसे सम्मानति और चमत्कारी प्रतमिा के माध्यम से प्रकट कयिा गया था, जो गुफाओं में माँ-ईश्वर के सोमोपम की पत्थर की चर्च में स्थति है।

कीव में दो कुलीन व्यक्ति रहते थे—जो एक-दूसरे के मत्रि थे—जॉन और सर्गयिस: एक दनि, पेचेरस्क चर्च में आकर, उन्होंने देखा कि ईश्वर की माता की चमत्कारी प्रतमिा से सूर्य से भी अधकि तेज प्रकाश नकिल रहा था, और इसके सामने उन्होंने शपथ लेकर अपनी आध्यात्मकि भाईचारे की पुष्टि की। कई वर्षों बाद, जॉन घातक रूप से बीमार पड़ गया, और पीछे अपने पाँच वर्षीय पुत्र ज़कारयिास को छोड़ गया: उसने केव्स के मठाधीश, धन्य नकिोन को बुलाया, और उनकी उपस्थति में, अपनी संपत्ति गरीबों में बाँट दी, और अपने बेटे का हस्सिा—एक हज़ार रजत हृव्नयिा और सौ स्वर्ण हृव्नयिा—सर्गेई को सौंप दयिा; उसने अपने बेटे को भी उसके हवाले कर दयिा, जैसे कि अपने दोस्त और वफादार भाई को, और यह वसीयत की कि जब उसका बेटा वयस्क हो जाए तो सर्गयिस उसे चाँदी और सोना दे दे। यह व्यवस्था करने के बाद, वह जल्द ही चल बसा।

जब ज़कारयिास पंद्रह साल का हो गया, तो वह सर्गयिस से अपना चाँदी और सोना वापस लेना चाहता था; लेकनि सर्गयिस, शैतान के प्रलोभन में आकर, धन प्राप्त करने के लिए अपना ही जीवन बर्बाद करने की कोशशि करने लगा। उसने उस युवक से कहा:

'तुम्हारे पति ने अपनी सारी संपत्ति ईश्वर को दे दी है – सोना और चाँदी उनसे माँगो; वे तुम्हारे लेनदार हैं, और शायद वे तुम पर दया करें; जहाँ तक मेरी बात है, मैं न तो तुम्हारे पति का और न ही तुम्हारा कुछ भी देनदार हूँ; तुम्हारे पति ने अपनी मूर्खता में अपनी सारी संपत्ति गरीबों को दे दी और तुम्हें बनिा कसिी साधन के छोड़ दयिा।'

यह सुनकर, उस युवक ने अपनी गरीबी पर वलिाप करना शुरू कर दयिा। फरि उसने सेर्गीयस को एक नविेदन भेजा, कहकर:

'मुझे मेरी वरिासत का कम से कम आधा हस्सिा दे दो, और बाकी आधा, जो उसके बराबर है, अपने पास रख लो।'

लेकनि सर्जयिस ने कठोर शब्दों में उसके पति जकारयिास और स्वयं उस युवक दोनों की नदिा की। जकारयिास ने तब एक तहिाई, या यहाँ तक कि एक दसवाँ हस्सिा माँगा; लेकनि जब उसे लगा कि वह कुछ भी नहीं पा सकता, तो उसने सर्जयिस से कहा:

'अगर तुमने कुछ नहीं लयिा है, तो आओ और गुफाओं के चर्च में परमेश्वर की परम पवत्रि माता की चमत्कारी प्रतमिा के सामने, जसिके सामने तुमने मेरे पति के साथ एक भाईचारे की संधि की थी, मेरे सामने शपथ लो।'

सर्गेयस ने बिना किसी हिचकिचाहट के चर्च में प्रवेश किया और परम पवित्र ईश्वर माता की प्रतिमा के सामने खड़े होकर शपथ खाई कि उसने न तो चाँदी के एक हजार ह्रिव्निया और न ही सोने के सौ ह्रिव्निया लिए थे। लेकिन जब उसने प्रतिमा को चूमने की कोशिश की, तो वह उसके पास नहीं जा सका। और इस प्रकार, जब वह चर्च से बाहर जा रहा था, तो वह चिल्लाने लगा:

'आदरणीय पादरियों, एंथनी और थियोडोरियस, मुझे इस निर्दयी देवदूत से सुरक्षा प्रदान करें जो मेरा विनाश करना चाहता है; परमेश्वर की परम पवित्र माता से प्रार्थना करें कि वह मुझ पर हावी कई राक्षसों को दूर भगा दें - उन्हें चाँदी और सोना लेने दो, जो मेरे कोठरी में सील करके छिपाया गया है।'

उन सभी पर एक बड़ा भय छा गया, और उस समय से आगे किसी को भी ईश्वर की माता की पवित्र प्रतिमा के सामने शपथ लेने की अनुमति नहीं दी गई। उन्होंने खोज करने के लिए लोगों को भेजा और वास्तव में एक सीलबंद पात्र मिला, जिसमें दो हजार ह्रिव्निया चांदी और दो सौ ह्रिव्निया सोना था। इस प्रकार प्रभु—कृपा के दाता—ने विरासत को बढ़ा दिया। ज़कारियास ने सारा पैसा मठाधीश जॉन को दे दिया, ताकि वह इसका उपयोग अपनी इच्छानुसार कर सकें; अपनी ओर से, उन्होंने पेचेर्स्क मठ में मठीय संन्यास की शपथ ली और वहीं अपना बाकी जीवन बिताया। इस चांदी और सोने से, बोयार जॉन और उनके बेटे जकारियास, जिनके ये चांदी और सोने थे, की स्मृति में पेचेर्सक चर्च के ऊपर संत जॉन द फॉररनर को समर्पित एक चर्च का निर्माण किया गया।

पेकर्सक चर्च को आइकनोग्राफी से सजाने के साथ हुए चमत्कारों के बारे में कहने के बाद, आइए अब हम यह बताएं कि सिर्वोच्च ने अपनी माता की बस्ती को कैसे पवित्र किया।

धन्य जॉन, जो चर्च के नाम के समान थे, के महाधर्माध्यक्ष के अधीन, उनके अभ्यक्षत्व के पहले वर्ष में, चमत्कारिक रूप से निर्मित और सुसज्जित पेचेर्सक चर्च का अभिषेक किया गया; इसके अभिषेक के अवसर पर, ईश्वर की कृपा से, ऐसे चमत्कार हुए। – जब चर्च के अभिषेक की तैयारी चल रही थी, तो यह पता चला कि पवित्र वेदी के लिए कोई पत्थर की पट्टी नहीं थी; सभी प्रयासों के बावजूद, कोई ऐसा कारीगर नहीं मिला जो उसे बना सके; इसलिए उन्हें पत्थर की पट्टी के बजाय लकड़ी की पट्टी का उपयोग करने के लिए मजबूर होना पड़ा। लेकिन मेट्रोपॉलिटिन जॉन नहीं चाहते थे कि इतनी बड़ी चर्च के पवित्र वेदी पर पत्थर की स्लैब के बजाय लकड़ी की स्लैब रखी जाए; इससे मठाधीश और भाइयों को बहुत दुख हुआ, क्योंकि चर्च का अभिषेक कुछ समय के लिए स्थगित करना पड़ा। 13 अगस्त को, भिक्षु, अपनी प्रथा के अनुसार, संध्या की प्रार्थना करने के लिए चर्च गए और अचानक ए ह कि वेदी की पर्दादारी पर पवित्र वेदी के निर्माण के लिए एक पत्थर की स्लैब और स्तंभ थे; उन्होंने तुरंत मेट्रोपॉलिटिन को इसकी सूचना दी; उन्होंने ईश्वर का धन्यवाद किया और अभिषेक के लिए संध्या की प्रार्थना करने का आदेश दिया। उन्होंने यह पता लगाने के लिए बहुत खोजबीन की कि वह पत्थर की स्लैब कहाँ से आई थी और उसे किसने लाया था—चाहे पानी के रास्ते या ज़मीन के रास्ते—और उसे चर्च में कैसे लाया गया था, जिसकी चाबी किसी के पास नहीं थी; लेकिन उनकी सारी कोशिशें व्यर्थ गईं। फिर उन्होंने उस स्थान पर तीन रिव्निया चाँदी भेजी जहाँ ऐसी वस्तुएँ बनाई जाती हैं, ताकि उस कारीगर को पत्थर की स्लैब के लिए भुगतान किया जा सके जिसे उसने बनाया था; लेकिन ऐसा कोई कारीगर नहीं मिल सका, भले ही उन्होंने हर जगह खोज की; क्योंकि उसकी माँ के घर की मेज़ के लिए पत्थर की स्लैब स्वयं सभी अच्छी चीजों के स्रष्टा और प्रदाता द्वारा प्रदान की गई थी; और इसी शिला पर ही वह सभी दिनों में संपूर्ण विश्व के लिए बलिदान होना चाहते थे। लेकिन चमत्कारों का सिलसिला यहीं खत्म नहीं हुआ। अगले ही सुबह, उपर्युक्त पत्थर की पट्टिका के चमत्कारिक रूप से मिलने के बाद, मेट्रोपॉलिटिन जॉन इस बात से बहुत दुखी हुए कि पेचेर्स्क चर्च के अभिषेक का समय आ गया था, और फिर भी एक भी बिशप उनके साथ मौजूद नहीं था, क्योंकि उनके धर्मप्रांत कीव से बहुत दूर थे; लेकिन अचानक, बिल्कुल अप्रत्याशित रूप से, ईश्वर-प्रेमी बिशप प्रकट हुए: चेरनिगोव के जॉन, रोस्तोव के इसाइयाह, युर्येव के एंथनी, और बेलगोरोद के ल्यूक, भले ही किसी ने उन्हें बुलाया नहीं था; इस प्रकार, मेट्रोपॉलिटिन की बिशपों के साथ मिलकर चर्च का अभिषेक करने की इच्छा पूरी हुई। मेट्रोपॉलिटिन अत्यंत आश्चर्यचकित थे, क्योंकि उन्होंने बिशपों को बुलाने के लिए किसी को नहीं भेजा था, और उन्होंने उनसे पूछा:

'जबकि आपको बुलाया नहीं गया था, आप यहाँ क्यों आए हैं?'

बिशपों ने उत्तर दिया:

'आपकी कृपा से, हमारे पास युवक भेजे गए थे, जिन्होंने हमें बताया कि पेचेरस्क चर्च का अभिषेक 14 अगस्त को होगा और हमें आपके साथ मिलकर लिटिर्जी मनाने के लिए तैयार रहना चाहिए; और इसलिए, आपके वचन पर, हम यहाँ हैं।' यूरीएव के एंथनी ने जोड़ा:

'मैं बीमार था, और उस रात काले चोगा पहने एक भिक्षु मेरे पास आया, और कहा: "कल गुफाओं में चर्च का अभिषेक होगा – तुम्हें वहाँ होना चाहिए।" यह सुनते ही मैं स्वस्थ हो गया, और आज्ञा के पालन हेतु मैं यहाँ उपस्थित हूँ।'

मेट्रोपॉलिटिन उनका बुलावा भेजने वालों को खोजने का इरादा रख रहे थे, लेकिन अचानक एक आवाज़ गूँजी:

– *'जो मुझे आजमाते हैं वे लुप्त हो गए हैं'* (भजन संहिता 63:7)।

तब उसने स्वर्ग की ओर अपने हाथ फैलाकर कहा

– हे परमेश्वर की परम पवित्र माता! जैसे आपके स्वर्गवास के समय आपने अपने संस्कार की अधिक महिमा के लिए संसार के छोर-छोर से प्रेरितों को इकट्ठा किया था, वैसे ही अब, अपने चर्च के अभिषेक के लिए, आपने हमारे सह-सेवकों और उप-पादरियों को इकट्ठा किया है; इस कार्य में हमें आशीर्वाद दें और अपने पुत्र तथा अपनी महिमा के लिए, हमारी सहायता करें।

सभी लोग ऐसे चमत्कारों से स्तब्ध थे, जो हालांकि अभी खत्म नहीं हुए थे।

जब अभिषेक के दौरान, चर्च के तीन चक्कर लगाकर, वे इसके दरवाजों के पास पहुँचे और गाने लगे, 'हे द्वारों, अपने सिर उठाओ, और हे प्राचीन द्वारों, ऊपर उठ जाओ, कि महिमा का राजा प्रवेश कर सके', तो चर्च के अंदर किसी ने भी जवाब में यह नहीं गाया, 'यह महिमा का राजा कौन है?' – क्योंकि चर्च के अंदर कोई बचा नहीं था। लेकिन लंबे समय की खामोशी के बाद, अचानक गिरिजाघर के भीतर से स्वर्गदूतों जैसे एक गीत की ध्वनि गूँजी: 'यह महिमा का राजा कौन है?' उन्होंने यह पता लगाने के लिए खोजबीन शुरू कर दी कि ये गायक कौन थे, वे कहाँ से आए थे, और जब गिरिजाघर के दरवाज़े बंद थे तो वे अंदर कैसे आ गए; लेकिन उन्हें गिरिजाघर के अंदर एक भी व्यक्ति नहीं मिला। और यह सभी के लिए स्पष्ट हो गया कि यह सब ईश्वर की दिव्य व्यवस्था का कार्य था; और सभी ने पेचेर्स्क चर्च की स्थापना के समय हुए चमत्कारों को याद करते हुए, प्रेरित के साथ उद्घोष किया:

– *'हे परमेश्वर की धन-संपत्ति और बुद्धि और ज्ञान की गहराई! उसके निर्णय कितने अथाह हैं, और उसके मार्ग कितने अचिन्त्य हैं! क्योंकि प्रभु का मन किसने जाना है? या उसका कोई परामर्शदाता कौन रहा है?'* (रोमियों 11:33-34)। – इस प्रकार गुफा चर्च का अभिषेक संसार की सृष्टि के 6597वें वर्ष, ईस्वी 1089 में, कीव के धर्मनिष्ठ राजकुमार वसेवोлод यारोस्लाविच के शासनकाल में, स्वयं प्रभु के चमत्कारी हस्तक्षेप द्वारा, उनकी परम पवित्र माता और हमारे पूजनीय पिताओं, एंथनी और थियोडोरस की प्रार्थनाओं के उत्तर में पूरा हुआ।

सत्य कहने पर, भाइयों, पेचेर्सक चर्च का वृत्तांत चमत्कारों से भरा है: प्रभु ने इसके निर्माण से पहले एक दर्शन में इसे प्रकट किया और वरांगियनों की भूमि से एक मुकुट और एक पट्टा भेजा जिस पर उनकी सम्मानित छवि अंकित थी; जबकि ग्रीस की भूमि में, स्वयं परमेश्वर की अति पवित्र माता ने अपनी प्रतिमा और पवित्र शहीदों के अवशेष भेजकर चर्च की एक प्रतिमा प्रकट की। इसके निर्माण के इतिहास में, जो तीन भागों में विभाजित है—चर्च भवन के निर्माण का इतिहास, इसकी सजावट और इसका अभिषेक—पवित्र त्रिमूर्ति का कार्य प्रकट हुआ। स्वयं परमपिता, आदिकाल के प्राचीन, ने उस स्थान को सूखी भूमि से चिह्नित किया, जो पुरातनता या वृद्धावस्था का प्रतीक है; पुत्र, *'जो ऊन पर ओस की तरह उतरा'*, ने ओस भेजी; और पवित्र आत्मा, आग की जीभों में उतरकर, स्वर्ग से आग भेजी। इसी तरह, चर्च की सजावट के दौरान, पिता, जिन्होंने मनुष्य को अपनी ही छवि में बनाया, ने—बिना किसी मानवीय प्रतिमाकार के हाथ के—वेदी में एक मोज़ेक के माध्यम से परमेश्वर की परम पवित्र माता की छवि को दर्शाया: ' ' पुत्र—धर्म का सूर्य—फिर चर्च को तेज से भर दिया, जबकि पवित्र आत्मा, कबूतर के रूप में प्रकट होकर, प्रतिमा के मुंह से बाहर उड़ते हुए एक कबूतर का दर्शन प्रकट किया। अंत में, अभिषेक के दौरान, पिता, जिन्होंने एक बार पत्थर की पट्टियों पर व्यवस्था दी थी, उन्होंने पवित्र वेदी के लिए एक पत्थर प्रदान किया; पुत्र, जो स्वर्गों के ऊपर विराजमान महापुजारी हैं, ने चमत्कारिक रूप से महापुजारियों को एकत्रित किया; पवित्र आत्मा—वह आवाज जिसने सारी पृथ्वी से बात की—ने चर्च के भीतर से उत्तर दिया, जबकि वहाँ कोई नहीं था। यदि, तब, त्रिमूर्ति में पूजे जाने वाले ईश्वर, ऐसे अद्भुत संकेतों के माध्यम से, अपनी प्रिय स्वर्गीय रानी के नाम पर अपने लिए गुफाओं की सबसे सम्मानित चर्च का निर्माण करने के लिए प्रसन्न हुए, तो, निश्चित रूप से, वह प्रेम के साथ यहाँ वास करते हैं; और उनके साथ उनकी दाहिनी ओर खड़ी रानी निवास

करती हैं, जो सभी ईसाइयों की मध्यस्थ और शरण हैं, परमेश्वर की परम पवित्र माता, ठीक वैसे ही जैसे उन्होंने स्वयं ब्लाचर्ना में वादा किया था, और निर्माण करने वालों से कहा:

'मैं स्वयं चर्च को देखने आऊँगी और इसमें निवास करना चाहूँगी।'

इसी प्रकार, परमेश्वर के संत, जिनकी अवशेष चर्च की दीवारों के भीतर एक अटूट नींव के रूप में पड़े हैं, पेचेर्सक चर्च में अनवरत निवास करते हैं। इसके बारे में हम क्या कहें? वास्तव में, यह पवित्र और अद्भुत है, और स्वयं स्वर्ग के समान है। इसलिए, हमें दिवंगत विश्वासयोग्य राजकुमारों, मसीह-प्रेमी बोयारों, सम्माननीय भिक्षुओं, और सभी ऑर्थोडॉक्स लोगों का धन्यवाद और प्रशंसा करनी चाहिए, जिन्होंने पवित्र गुफा चर्च के लिए उत्साह दिखाया। हमारे पूजनीय पिताओं, एंथनी और थियोडोसियस की प्रार्थनाओं के द्वारा, ईश्वर करे कि मसीह, जो कलीसिया के प्रमुख हैं, अपनी कृपा और दया उन पर और हम पर, जो ऑर्थोडॉक्स कलीसिया के बच्चे हैं, दोनों पर प्रदान करें; मसीह परमेश्वर का सम्मान और महिमा हो, उनके पिता जो आदि-विहीन हैं और परम पवित्र, शुभ और जीवन-प्रदायक आत्मा के साथ, अब और हमेशा और युगानुयुग। आमीन।

हमारे पूजनीय पिता थेओडोरस, गुफाओं के मठाधीश, के अवशेषों का स्थानांतरण

14 अगस्त को स्मरण किया जाता है

हमारे पूजनीय पिता थियोडोरस को पृथ्वी से स्वर्ग में आत्मा सहित ले जाए जाने के अठारहवें वर्ष में[5544] , प्रभु को यह उचित लगा कि उनके शरीर को भी गुफा से गुफाओं के पवित्र और स्वर्ग-सदृश चर्च में स्थानांतरित किया जाए। यह इस प्रकार पूरा किया गया।

पवित्र, महान और चमत्कारी गुफाओं के मठ के संपूर्ण समुदाय ने, अपने मठाध्यक्ष, हेग्यूमेन जॉन के साथ एकत्र होकर, विचार-विमर्श के बाद सर्वसम्मति से यह निर्णय लिया कि धन्य और ईश्वर-वाहक थियोडोरस के पवित्र अवशेषों को गुफा से महान पत्थर के चर्च में स्थानांतरित किया जाए, एक धर्मपरायण और कुलीन जीवन वाले, अपने गुणों में अद्भुत और अपने चमत्कारों के लिए प्रसिद्ध व्यक्ति। भाइयों ने एक-दूसरे से कहा:

'क्या हम अकारण ही अपने पिता और गुरु को खुद से वंचित कर रहे हैं? हमारे लिए अपने चरवाहे से वंचित होना उचित नहीं है, और न ही चरवाहे के लिए ईश्वर द्वारा सौंपी गई झुंड को छोड़ना उचित है, कहीं कोई जंगली जानवर मसीह की झुंड को नष्ट न कर दे।' हम भाइयों को, हमेशा अपने पिता की पवित्र अवशेषों को अपनी आँखों के सामने रखना चाहिए, और हर समय उन्हें योग्य श्रद्धांजलि अर्पित करनी चाहिए। उनके लिए मठ और अपनी चर्च के बाहर रहना अनुचित है, क्योंकि उन्होंने इसकी नींव रखी और संन्यासियों को एकजुट किया।

तब, एक स्वर में, उन्होंने सभी ने कहा:

'आओ हम अपने प्रिय पिता की पवित्र अवशेषों को गुफा से इस स्थान पर लाएँ: प्रभु कहते हैं, "*जब तुम दीपक जलाते हो, तो उसे माप के पात्र के नीचे नहीं, बल्कि दीवट पर रखते हो, और वह घर में सबको प्रकाश देता है*" (मत्ती 5:15)।'

इस निर्णय के बाद, भाइयों ने तुरंत पूजनीय अवशेषों के लिए एक स्थान तैयार किया और एक पत्थर का अवशेष-कोष स्थापित किया। परमेश्वर की अति पवित्र माता के निद्रारोहण का पर्व निकट आ रहा था। उत्सव से तीन दिन पहले, मठाधीश ने उन्हें गुफा में जाने और उस स्थान की खुदाई करने का आदेश दिया जहाँ हमारे पूज्य पिता थियोडोसियस की पवित्र अवशेषों को विराम दिया गया था। इस कार्य को करने वाले और पवित्र अवशेषों को अपनी आँखों से देखने वाले पहले व्यक्ति धन्य नेस्टर थे, जिन्होंने यह वृत्तांत लिखा। वे स्वयं इस प्रकार गवाही देते हैं:

'मैं आपको सत्य ही बताऊँगा और केवल सत्य,' क्योंकि मैंने यह दूसरों से नहीं सुना[5545] , बल्कि स्वयं इसमें भाग लेने वाला पहला व्यक्ति था। मठाधीश मेरे पास आकर बोले: 'चलो, मेरे पुत्र, हम अपने पूजनीय पिता थियोडोरस के पास चलते हैं।' और हम बिना किसी के ध्यान दिए गुफा में चले गए। चारों ओर देखने के बाद, हमने उस स्थान को चिह्नित किया

[5544] गुफाओं के संत थियोडोसियस का 1074 में निधन हो गया।

[5545] संत थियोडोसियस की अवशेषों की खोज पर।

जसिे खोदने की आवश्यकता थी और पीछे हट गए। फरि मठाधीश ने मुझसे कहा: 'भाइयों में से अपनी मदद के लिए जसिे चाहो उसे ले लो, और इन चुने हुए लोगों के अलावा कसिी को मत बताना – भाइयों में से कसिी को तब तक पता न चले जब तक हम पवत्रि अवशेषों को गुफा के सामने वाले स्थान पर नहीं ले आते।'

उसी दनि मैंने खुदाई के औज़ार तैयार कए। यह मंगलवार का दनि था; देर शाम मैं अपने साथ दो भाइयों को ले गया, जो एक अद्भुत जीवन जीने वाले पुरुष थे – और यह बात कसिी और को पता नहीं थी। जब हम गुफा पर पहुँचे, तो श्रद्धापूर्वक प्रार्थना करने के बाद, हमने बनिा कसिी देरी के भजन गाते हुए काम शुरू कर दयिा। मैंने खोदना शुरू कयिा; लंबे समय तक परश्रिम करने के बाद, मैंने फावड़ा दूसरे भाई को दे दयिा। हम आधी रात तक इसी तरह खोदते रहे और हमें संत के अवशेष नहीं मलि। तब हम दुखी होने और रोने लगे: पहले तो हमने सोचा कि संत ने हमें अपना दर्शन करने की कृपा नहीं की; इस वचिार की जगह एक और वचिार आया - क्या हम शायद गलत जगह पर खोद रहे थे? और इस प्रकार, एक बार फरि फावड़ा उठाकर, मैंने और भी लगन से खोदना शुरू कर दयिा। मेरे साथ रहे भाइयों में से एक, जो गुफा के बाहर खड़ा था, उसने चर्च की घंटी की आवाज़ सुनी[5546] जो भक्तों को मैटन्सि के लिए बुला रही थी, और उसने मुझे बताया कि चर्च की घंटी तो पहले ही बज चुकी थी। लेकनि तब तक, मैं पवत्रि अवशेषों के ऊपर की मट्टिी खोद चुका था और अपने भाई को जवाब दयिा: 'भाई, मैंने तो मट्टिी खोद ली है।' जब मैंने ऐसा कयिा, तो मुझ पर एक बड़ा भय छा गया और मैं चल्लिाने लगा:

'आदरणीय थयिोडोसयिस के वास्ते, हे प्रभु, मुझ पर दया करो!'

तब मैंने मठाधीश को संदेश भेजा:

'आइए, पतिाजी, हम रेवरेंड की पवत्रि अवशेषों को बाहर नकिालें।'

मठाधीश दो भ्राताओं के साथ आए; मैंने अपनी ओर से और भी खोदा। और झुककर, हमने अवशेषों को पवत्रि ढंग से पड़ा हुआ देखा: सभी अंग अक्षुण्ण थे, और क्षय ने उन्हें छुआ भी नहीं था; चेहरा दीप्तमिान था, आँखें बंद थीं, होंठ एक-दूसरे से चपिके हुए थे, और बाल सूखकर सरि पर चपिके हुए थे। पवत्रि अवशेषों को एक पालकी पर रखकर, हम उन्हें गुफा के बाहर ले आए।

इस प्रकार संत नेस्टर पवत्रि अवशेषों की खोज में अपनी भूमकिा के बारे में बताते हैं; वह उस अवसर पर हुए ईश्वर के अद्भुत कार्यों की भी गवाही देते हैं।

उस रात, दो भाई, जो पहरेदार थे, गुफा मठ में पहरा दे रहे थे, जबकि मठाधीश, अपने लिए अज्ञात एक भाई के साथ, गुप्त रूप से पूज्यनीय की पवत्रि अवशेष ले गए; और वे गुफा की दशिा पर पैनी नज़र रखे हुए थे; जब मैटन्सि के लिए चर्च की घंटी बजी, तो उन्होंने देखा कि तीन स्तंभ, जो प्रकाशमान चापों जैसे थे, जो पूज्य थयिोडोसयिस की गुफा के ऊपर खड़े थे, वे बड़े चर्च की चोटी पर चले गए थे, जहाँ पूज्यनीय को स्थानांतरति कयिा जाना था। यह चर्च में प्रातःप्रार्थना के लिए जाते हुए अन्य भक्षिुओं द्वारा भी देखा गया; और स्वयं शहर के कई धर्मनष्ठि नागरकिों ने भी इसे देखा।

आदरणीय स्टीफन, जो गुफाओं के मठाधीश के रूप में आदरणीय थयिोडोसयिस के उत्तराधकिारी थे, और जन्हिोंने बाद में क्लोव पर एक मठ की स्थापना की और ईश्वर की इच्छा से, बाद में व्लादमिीर के बशिप बने, उस समय क्लोव पर अपने मठ में थे; और उस रात उन्होंने, खेत के पार, गुफा के ऊपर एक बड़ी ध्रुवीय ज्योति देखी। यह सोचकर कि परम पूज्य थयिोडोसयिस की पवत्रि अवशेषों को स्थानांतरति कयिा जा रहा है (उन्हें इस घटना की जानकारी एक दनि पहले ही मलि गई थी), उन्हें इस बात का गहरा खेद हुआ कि यह स्थानांतरण उनके बनिा हो रहा था। वह तुरंत अपने घोड़े पर सवार हो गए और क्लेमेंट के साथ, जन्हिें उन्होंने अपनी जगह क्लोव का मठाधीश नयिुक्त कयिा था, गुफा की ओर तेज़ी से बढ़े। रास्ते में, उन्होंने दूर से एक बड़ी दव्यि करिण देखी, और जैसे-जैसे वे करीब पहुँचे, उन्होंने गुफा के ऊपर कई मोमबत्तयिाँ देखीं। लेकनि जब वे गुफा तक पहुँचे, तो उन्हें कुछ भी नहीं दखिा। तब उन्हें एहसास हुआ कि जो दैवीय प्रकाश उन्होंने देखा था, वह परम पूज्य थयिोडोसयिस के पवत्रि अवशेषों से नकिल रहा था। गुफा के प्रवेश द्वार के पास पहुँचने पर, स्टीफन और क्लेमेंट ने संत नेस्टर को भाइयों के साथ पवत्रि अवशेषों के चारों ओर खड़े देखा।

अगले ही दनि, ईश्वर की कृपा से पूज्यनीय की पवत्रि अवशेषों की खोज के बाद, ईश्वर-प्रेमी बशिपों का एक जमावड़ा हुआ: पेरयिास्लाव के एफ्रेम, व्लादमिीर के स्टीफन, चेर्नहिवि के जॉन, युरएिव के मारनि, पोरोज़्स्क के एंथनी

[5546] एक लकड़ी या धातु का तख्ता जसिे घंटयिों के आगमन से पहले चर्च सेवाओं के लिए श्रद्धालुओं को बुलाने हेतु डंडे या हथौड़े से बजाया जाता था।

– और (कीव के) सभी मठों के मठाधीश बड़ी संख्या में भिक्षुओं के साथ; शहर से भी बहुत सारे भक्तपूर्ण लोग मोमबत्तियाँ और धूप लेकर उमड़ पड़े। और संत थियोडोसियस की पवित्र अवशेषों को लेकर, वे उन्हें ईश्वर-निर्मित, अति सम्मानित चर्च में ले गए। और सबसे सम्मानित चर्च ने अपना दीपक प्राप्त करके आनंद मनाया, इतना कि दिन का प्रकाश मोमबत्तियों की रोशनी से फीका पड़ गया। फिर पवित्र बिशपों ने अवशेषों को छुआ, पुरोहितों ने प्रणाम किया, और भिक्षु तथा लोग प्रेम से आगे बढ़े, संत के अवशेषों को चूमते हुए, ईश्वर को आध्यात्मिक भजन अर्पित करते हुए और सम्माननीय संत की प्रशंसा और स्तुति करते हुए। इस प्रकार, पूजनीय अवशेषों को परम पवित्र ईश्वर माता के निद्रारोहण के चर्च में, जो पूजनीय थियोडोसियस द्वारा स्थापित था, दाईं ओर विराजित किया गया – उन्हें अगस्त की चौदह तारीख को, गुरुवार के दिन, दिन के पहले घंटे में विराजित किया गया; और इस दिन को बड़ी धूमधाम से मनाया गया। हमें इस तथ्य को चुपचाप नहीं गुज़ारना चाहिए कि, को, हमारे पूजनीय पिता थियोडोसियस के अवशेषों के स्थानांतरण के तीसरे दिन, उनकी यह भविष्यवाणी पूरी हुई।

अपनी मठाध्यक्ष के कार्यकाल के दौरान, परम पूज्य थियोडोसियस की एकमात्र चिंता यह थी कि उन पर सौंपी गई भेड़ों के झुंड का सर्वोत्तम तरीके से पालन-पोषण कैसे किया जाए; ऐसा करते हुए, उन्होंने न केवल संन्यासियों का, बल्कि सामान्य लोगों, विशेष रूप से अपने आध्यात्मिक बच्चों, की मुक्ति का भी ध्यान रखा; उन्होंने उनके पास आने वालों को सांत्वना दी और उन्हें उपदेश दिया; और कभी-कभी अपने आशीर्वाद देने के लिए उनके घरों पर भी जाते थे। कुलीनों में संत थियोडोरस का जॉन नामक एक आध्यात्मिक पुत्र था; वह और उसकी पत्नी, मैरी, दोनों धर्मपरायण लोग थे जो एक पवित्र जीवन जीते थे। धन्य पिता, एक बार उनके घर आकर (वे उनसे प्रेम करते थे, क्योंकि वे प्रभु की आज्ञाओं के अनुसार और एक-दूसरे के प्रति प्रेम में रहते थे), ने उस दम्पती को गरीबों को दान देने, धर्मी लोगों के लिए तैयार स्वर्ग के राज्य, और पापियों की प्रतीक्षा कर रहे यातनाओं के बारे में उपदेश देना शुरू किया, और उन्होंने पवित्र धर्मग्रंथों से उन्हें विस्तार से समझाया, जब तक कि बातचीत शरीर के दफ़न के विषय पर नहीं आ गई। आदरणीय पादरी के शब्दों से संकेत पाकर, जॉन की धर्मपरायण पत्नी ने उससे कहा:

'माननीय पिताजी! कौन जाने कि मेरा शरीर कहाँ विश्राम करेगा?'

ईश्वर-प्रेरित थियोडोसियस, जो भविष्यवाणी के वरदान से परिपूर्ण थे, ने उन्हें उत्तर दिया:

'मैं तुमसे सच कहता हूँ: जहाँ मेरा शरीर विश्राम करेगा, वहाँ तुम भी, कुछ वर्षों के बाद, विश्राम करोगी।'

और ऐसा ही हुआ कि संत के निधन के अठारहवें वर्ष में, जब उनके पवित्र अवशेष स्थानांतरित किए गए; उसी समय, जॉन की पत्नी मारिया का भी निधन हो गया। आदरणीय थियोडोसियस के अवशेष 14 अगस्त को स्थानांतरित किए गए थे, और उन्हें उसी महीने और वर्ष की 16 तारीख को उसी गुफा चर्च में, आदरणीय थियोडोसियस के ताबूत के सामने, बाईं ओर सुलाया गया। फिर, पूज्य थियोडोसियस की अवशेषों के स्थानांतरण के पंद्रहवें वर्ष में, मरियम के पति, महान बोयार जॉन का भी निधन हो गया; वह पहले से ही नब्बे वर्ष के एक पूज्य वृद्ध थे, बहादुर वोयवोड विशाटा के पुत्र, वोयवोड ओस्त्रोमीर के पोते, और स्वयं काफी लंबे समय तक एक वोयवोड रहे; जॉन एक धर्मी व्यक्ति थे, अपने पूर्वजों से कम नहीं, एक अच्छे, सौम्य और विनम्र व्यक्ति जो बुराई से दूर रहते थे। उन्हें उनकी पत्नी के सिर के पास, उसी पूजनीय थियोडोसियस की कफ़न के सामने, दफनाया गया, ताकि उनके विश्राम स्थल के बारे में धन्य पिता की भविष्यवाणी—ठीक उसी स्थान पर जहाँ उनका अपना शरीर पड़ा है—उनके मामले में भी पूरी हो गई।

यहाँ यह भी याद करना उचित है। प्रभु, जो उनका महिमामंडन करते हैं जो उनका महिमामंडन करते हैं और जो अपने निधन के अठारहवें वर्ष में परम पूज्य थियोडोरस के अवशेषों को अँधेरी गुफा से पवित्र गुफा चर्च में स्थानांतरित करने से प्रसन्न हुए थे, अपने सेवक का और भी अधिक महिमामंडन करने की इच्छा रखते हुए, उनके नाम और पूजन को गुमनामी से निकालकर सभी ऑर्थोडॉक्स चर्चों में स्थानांतरित करने के लिए प्रसन्न हुए, यह भी गुफा से स्थानांतरण के अठारहवें वर्ष में—ताकि यह दीपक संपूर्ण विश्व पर प्रकाशित हो सके।

हृदयों के जानने वाले ने गुफाओं के मठाधीश धन्य थियोक्टीस्ट को प्रेरित किया कि वे यह सुनिश्चित करें कि आदरणीय थियोडोरस का नाम सिनोडिकॉन या चर्च रजिस्टर में दर्ज किया जाए, और उन्हें प्राचीन आदरणीय पिताओं और सभी संतों की पंक्ति में शामिल किया जाए, जिनके पर्व पूरे ऑर्थोडॉक्स चर्च में मनाए जाते हैं। धन्य थियोक्टिस्ट ने धर्मपरायण महा राजकुमार माइकल-स्वियातोपोलक इज़्यास्लाविच[5547] को इस बात की याद दिलाना शुरू किया: उन्होंने

[5547] कीव के महाप्रसि, 1093–1114.

उनसे आग्रह कयिा कि वे उनकी उत्कृष्टता मेट्रोपॉलटिन नकिफिोर[5548] को बशिपों, मठाधीशों और संपूर्ण धार्मकि पुरोहति वर्ग का एक पवत्रि सनिड बुलाने का आदेश दें, और उन्हें सभा के कारण से अवगत कराएं, और फरि सब कुछ उसी प्रकार कयिा जाए जैसा ईश्वर को प्रसन्न हो। मेट्रोपॉलटिन ने प्रसन्नतापूर्वक राजकुमार की बात मानी, बशिपों, मठाधीशों और संपूर्ण धार्मकि पुरोहति वर्ग को इकट्ठा कयिा, और उन्हें परम पूज्य थयिोडोसयिस की प्रस्तावति पूजा के बारे में सूचति कयिा। महान राजकुमार ने, अपनी ओर से, परषिद के सभी पतृिगणों को पूज्यनीय की जीवन गाथा सुनाई। तत्पश्चात, उन्होंने सभी ने सर्वसम्मतसि और एक स्वर में एक फरमान जारी करने का संकल्प लयिा कि पूज्यनीय थयिोडोरस को ऑर्थोडॉक्स (रूसी) चर्च में पहले से ही हर जगह पूजे जाने वाले सभी संतों के समकक्ष के रूप में पूजति कयिा जाना चाहए। उनकी उत्कृष्टता मेट्रोपॉलटिन ने बशिपों को नर्दिेश दयिा कि उनमें से प्रत्येक अपने-अपने धर्मप्रांत के सभी चर्चों में संतों की सूची में पूज्य थयिोडोसयिस का नाम दर्ज कराए। बशिपों ने खुशी-खुशी आज्ञा का पालन कयिा: उन्होंने परम पूज्य थयिोडोरस का नाम दर्ज कयिा और सभी चर्चों में उनकी स्मृतमिनाना शुरू कर दयिा, उनसे प्रार्थना करते हुए और सभी चीजों के दाता, ईश्वर, और उनके सेवक, परम पूज्य थयिोडोरस की महमिा के लए, वार्षकि रूप से उनके पर्व का उत्सव मनाते हुए।

जहाँ तक धन्य थयिोक्टसि्ट का प्रश्न है, जन्हिोंने अपने पतिा, परमपूज्य थयिोडोसयिस के नाम को संतों की सूची में दर्ज करवाकर उनकी सेवा करने के लए उत्साहपूर्वक प्रयास कयिा था, प्रभु ने उनके श्रम का फल दयिा: थोड़ी ही देर बाद, उन्हें परमेश्वर-रक्षति चेर्नगिोव शहर का बशिप चुना गया और उसी परम पूजनीय मेट्रोपॉलटिन नकिफिोर द्वारा अभषिक्ति कयिा गया। जब वह सहिासन पर आरूढ़ हुआ, तो मसीह-प्रेमी राजकुमार डेवडि, राजकुमारी, बोयार और सभी लोगों ने उसका अकथनीय आनंद के साथ स्वागत कयिा, क्योंकि उसने गरिजाघर के रजस्टिर में आदरणीय थयिोडोसयिस का नाम अंकति करके चर्च में अकथनीय आनंद लाया था। उनकी प्रार्थनाओं के द्वारा, हम भी धन्य थयिोक्टीस्ट के साथ, इस आनंदमय आह्वान को सुनने की प्रतीक्षा कर रहे हैं: *'आनंद मनाओ कि तुम्हारे नाम स्वर्ग में लखि हैं'* (लूका 10:20)।

आइए हम यहाँ हमारे पूजनीय पतिा थयिोडोसयिस के पवत्रि अवशेष-पात्र के सोने और चांदी से चमत्कारकि रूप से सुसज्जति होने के संबंध में धन्य बशिप साइमन[5549] के वृत्तांत को भी दर्ज करें, जन्हिोंने अपने स्थानांतरति कएि गए पवत्रि अवशेषों के माध्यम से, मानो, पवत्रि पेचेर्सक चर्च को अक्षय सोने और चांदी से सुशोभति कयिा। जबकि उन्होंने अपने सम्मानति नाम की पूजा के माध्यम से अन्य ऑर्थोडॉक्स चर्चों को भी सुशोभति कयिा। यह इस प्रकार हुआ। वरंगयिन राजकुमार, समिोन के पुत्र और अफ्रकिानस के पोते, आदरणीय थयिोडोसयिस की अवशेषों के स्थानांतरण के कुछ समय बाद, सुज़दाल के एक प्रांत के शासक, हजार-सैनकि कमांडर जॉर्ज, ने उनके प्रतअिपने महान प्रेम के प्रतीक के रूप में आदरणीय थयिोडोसयिस के पवत्रि अवशेष-पात्र को सजाना चाहा। उन्होंने अपने एक बोयार, जसिका नाम वासलिी था, को सुज़दाल से कीव के पेचेरस्क मठ में भेजा, और उसे चाँदी की पाँच सौ ह्रव्निय[5550] और सोने की पचास ह्रव्निय सौंपकर संत की अवशेष-पेटकि पर सोने का पानी चढ़वाने का काम सौंपा। चाँदी और सोना लेकर, वासलिी अनचि्छा से चल पड़ा, और अपने जीवन तथा अपने जन्म के दनि को कोसने लगा:

"यह क्या है," उसने कहा, "कि हमारे स्वामी ने इतनी संपत्तनिष्ट करने का नश्चिय कयिा है? और मृत व्यक्ति की ताबूत पर कर लगाने से उसे क्या इनाम मलिेगा? ऐसा लगता है कि उसने इसे बनिा कसिी प्रयास के—व्यर्थ में—इकठ्ठा कयिा और अब इसे बर्बाद कर रहा है।" लेकनि मेरी दुर्दशा होगी, मैंने अपने स्वामी की अवज्ञा करने की हम्मित नहीं की – मैंने अपना घर क्यों छोड़ा, और कसिके लए मैं इस कड़वे रास्ते पर यात्रा कर रहा हूँ? क्या मुझे कसिी से कोई सम्मान मलिेगा? – क्योंकि मुझे न तो कसिी राजकुमार के पास भेजा गया है और न ही कसिी कुलीन व्यक्ति के पास। मैं उन

[5548] नकिफिोर – इस नाम वाले पहले मेट्रोपॉलटिन, 1103–1121।

[5549] साइमन – कीव गुफाओं के मठ का एक भकि्षु। वहाँ से, उन्हें ग्रैंड प्रसि वसेवोल्द यूरीवचि द्वारा नेटीवटिी मठ के मठाध्यक्ष के रूप में नयिुक्त कयिा गया, जसिे राजकुमार ने व्लादमिीर में स्थापति कयिा था; बाद में, साइमन को व्लादमिीर के धर्मप्रांत का पहला बशिप नयिुक्त कयिा गया, जसिे 1214 में रोस्तोव के धर्मप्रांत से अलग कयिा गया था। साइमन का 1226 में बारह साल के शासन के बाद नधिन हो गया। व्लादमिीर के बशिप साइमन के पॉलीकार्प—जो खुद एक भकि्षु थे और बाद में कीव केव्स मठ के मठाधीश बने—को लखि पत्रों से, और पॉलीकार्प के अकडिनि को लखि पत्र से, एक गुफाओं के आर्चमिांड्राइट, जसिकी सामग्री में गुफाओं के चमत्कार-कर्ता और उनके महान चर्च के नर्मिाण के दौरान मठ के भीतर हुए चमत्कारों के ववरिणों की एक श्रृंखला शामलि है, से प्रसद्धि 'पैटेरकिॉन ऑफ द केव्स' संकलति कयिा गया था।

[5550] ह्रव्निय एक वशिष्टि वजन (72–96 ज़ोलोटनकि) का प्राचीन सक्किा है, जो अक्सर सोने या चांदी के बस्किटि के रूप में होता है।

मुट्ठी भर पत्थरों से क्या कहूँगा? और मुझे कौन जवाब देगा? मेरी इस मूर्खतापूर्ण उपस्थिति पर कौन हँसेगा? और इस प्रकार वासिली ने अपने साथ चल रहे लोगों से ऐसे ही कई शब्द कहे। लेकिन संत थियोडोसियस एक सपने में उसके सामने प्रकट हुए, और कोमल स्वर में बोले:

'हे मेरे बच्चे! मैं तुम्हारी मेहनत का इनाम देना चाहता था; लेकिन अगर तुम पश्चाताप नहीं करते, तो तुम बहुत सी विपत्तियों को झेलोगे।'

हालाँकि, बेसिली ने अपनी बड़बड़ाहट बंद नहीं की, और प्रभु ने उसके पापों के लिए उस पर बड़ी विपत्ति लाई: उसके सभी घोड़े मर गए, और भेजे गए खजाने के अलावा उसकी संपत्ति चोरों द्वारा चुरा ली गई। तब वासिली ने सोने-चांदी के रूप में उस खजाने का पाँचवाँ हिस्सा ले लिया, जिसे संत की पवित्र अवशेषों को रखने के लिए भेजा गया था; उसने उसे अपने और अपने घोड़ों के लिए भोजन-पानी पर खर्च कर दिया, और उसे इस बात का अंदाज़ा भी नहीं था कि उसकी ईश्वर-निंदा के लिए उसे क्या सज़ा मिली थी। जब वह चेर्निगोव में था, तो वह अपने घोड़े से गिर पड़ा और इतना बुरी तरह घायल हो गया कि वह अपना हाथ भी नहीं हिला सकता था। बेसिली के साथ आए लोग उसे एक रथ पर बिठाकर उसी शाम कीव के उपनगर में ले आए। और उसी रात, संत थियोडोसियस बेसिली के सपने में प्रकट हुए और कहा:

'वासिली! क्या तुमने प्रभु के वचन नहीं सुने: *"अपने लिए अधर्मी धन के द्वारा मित्र बनाओ, ताकि जब वह समाप्त हो जाए, तो वे तुम्हें अनंत निवासों में ग्रहण करें"* (लूका 16:9); और: *"जो कोई धर्मी के नाम पर एक धर्मी को ग्रहण करता है, वह धर्मी का प्रतिफल पाएगा"* (मत्ती 10:41)। मेरे पुत्र जॉर्ज ने एक पुण्य कार्य का संकल्प लिया था; तुम्हें भी अपने परिश्रम के लिए उसके साथ ही मुकुट पहनाया जाना था, और हर कोई उस महिमा को प्राप्त नहीं करेगा जो जॉर्ज के साथी के रूप में तुम्हें मिलने वाली थी। अब, हालाँकि, तुमने सब कुछ खो दिया है; फिर भी अपने जीवन के बारे में निराश न हो, भले ही तुम अपने पापों से पश्चाताप करने के अलावा किसी अन्य तरीके से चंगा नहीं हो सकते। आदेश दो कि तुम्हें पेचेर्सक मठ, परमेश्वर की परम पवित्र माता के चर्च में ले जाया जाए, और उन्हें तुम्हें मेरे अवशेष-पात्र पर लिटा देना है, और तुम चंगा हो जाओगे; जहाँ तक उस सोने और चाँदी का सवाल है जिसे तुमने बर्बाद किया है, तुम उन्हें अछूता पाएगा।

यह वही है जो आदरणीय थियोडोसियस ने बेसिली से कहा, जो उन्हें सपने में नहीं, बल्कि स्वयं प्रकट होकर सुना। ठीक उसी अगली सुबह, राजकुमार जॉर्ज व्लादिमीरोविच सभी बोयारों के साथ बेसिली के पास आए; उसे गंभीर रूप से बीमार देखकर, वे दुख के साथ वापस चले गए। हालाँकि, बेसिली, संत के दर्शन पर विश्वास करने लगे, और उन्होंने आदेश दिया कि उन्हें पेचेर्सक मठ ले जाया जाए। जब वे तट पर पहुँचे, तो एक अजनबी गुफाओं के मठाधीश की कोठरी में गया और कहा:

'जल्दी से नदी के किनारे जाओ, वासिली को लाओ और उसे पूजनीय थियोडोसियस की ताबूत पर लिटा दो; जब वह तुम्हें खजाना दे, तो सभी के सामने उस पर इसका पाँचवाँ हिस्सा लेने का आरोप लगाओ; और अगर वह पश्चाताप करे, तो उसे माफ कर देना।' ये शब्द कहकर वह बोलने वाला गायब हो गया। मठाधीश टिमोथी ने उनके पास आए उस आदमी के बारे में पूछताछ करनी शुरू कर दी; लेकिन उसे अंदर आते या बाहर जाते हुए किसी ने नहीं देखा था। मठाधीश डिनीपर नदी पर गए, बासिली को लाए और उसे संत थियोडोसियस की ताबूत पर लिटा दिया; और बासिली पूरी तरह से ठीक होकर उठ खड़ा हुआ। उसने मठाधीश को सौंपे गए खजाने को देते हुए कहना शुरू किया:

'यहाँ, आपको चाँदी के चार सौ ह्रिव्निया और सोने के चालीस ह्रिव्निया मिलेंगे।'

तब मठाधीश ने उससे कहा:

'मेरे बेटे! तो फिर बाकी के सौ चांदी के ह्रिव्निया और दस सोने के सिक्के कहाँ हैं?'

वासिली ने पश्चाताप करना शुरू कर दिया और उसने स्वीकार किया:

'मैंने इसे ले लिया और खर्च कर दिया; पिताजी, मुझसे सहन करें, और मैं आपको सब कुछ वापस कर दूँगा; मैंने सोचा था कि मैं यह सर्व-द्रष्टा ईश्वर से छिपा सकता हूँ।'

तब उन्होंने उस पात्र से सोना और चाँदी निकाली, जहाँ उन्हें मुहरबंद करके रखा गया था; उन्होंने सबके सामने उनकी गिनती की और पाया कि वह पूरी तरह से सुरक्षित थी - पाँच सौ चाँदी के ह्रिव्निया और पचास सोने के; और सभी ने परमेश्वर और संत थियोडोरस की स्तुति की। फिर बेसिली ने संत के अपने पास आने की घटनाओं और संत द्वारा उसकी ओर से किए गए कार्यों को क्रम से बताना शुरू किया। सुबह, राजकुमार डॉक्टरों को साथ लेकर उस जगह आया जहाँ उसने बीमार बेसिली को देखा था, उसका इलाज करने की इच्छा से, लेकिन वह वहाँ नहीं मिला। यह जानकर कि बेसिली को पेचेर्स्क मठ ले जाया गया था और यह सोचकर कि उसकी मृत्यु हो चुकी है, राजकुमार मठ की ओर तेज़ी से बढ़ा और वहाँ

बेसलि को पाया - मानो वह कभी बीमार ही न हुआ हो। उससे अद्भुत चमत्कारों के बारे में सुनकर, राजकुमार वस्मिति भी हुआ और आध्यात्मकि आनंद से भी भर गया; वह हमारे पूजनीय पतिा थयिोडोसयिस के चमत्कारी ताबूत का आदर करने गया और फरि वदिा हो गया। यह सुनकर, एक हज़ार सैनकिों के कमांडर जॉर्ज साइमोनोवचि, परमेश्वर की परम पवत्रि माता और संत थयिोडोसयिस के प्रतपि्रेम से और भी अधकि भर गए; उन्होंने अपनी महान भेंट में एक और हरव्निया[5551] जोड़ा, जसिे वह स्वयं पहनते थे और जसिमें सोने के सौ हरव्निया थे; साथ ही, उन्होंने नम्निलखिति लखिा:

'मैं, जॉर्ज, साइमन का पुत्र, परम पवत्रि मसीह की माता और संत थयिोडोसयिस का सेवक, जन्हिें उनके पवत्रि हाथ से आशीर्वाद मलिा है, एक बार तीन साल तक आँखों की बीमारी से पीड़ति था और सूर्य की करिणों को नहीं देख सकता था, लेकनि आदरणीय पतिा के वचन से चंगा हो गया – क्योंकमैंने उनके मुख से सुना: "अपनी आँखें खोलो!" और मैंने अपनी दृष्टवािपस पा ली। इसी कारण से मैं यह पत्र अपने लोगों को लखि रहा हूँ, ताकिकोई भी स्वयं को परमेश्वर की परम पवत्रि माता और गुफाओं के सम्माननीय पतिा, एंथनी और थयिोडोरस के मठ से अलग न कर ले; उनकी प्रार्थनाएँ मठ के आसपास के गाँवों तक भी मध्यस्थता लाती हैं: जब हम, पोलोव्त्सयिानों के साथ[5552] , इज्यास्लाव म्स्तस्लावचि पर पहुँचे, तो हमने दूर से एक ऊँचा शहर देखा, और तुरंत उससे मुँह मोड़ लयिा। लेकनि कसिी को नहीं पता था कविह कसि तरह का शहर था; और उसके पास मौजूद पोलोव्त्सयिानों में से कई घायल हो गए, और हम उस शहर से भाग गए। बाद में, हालाँकि, हमें पता चला कयिह पेचेरस्क मठ का एक गाँव था; वहाँ कभी कोई शहर नहीं था; वास्तव में, उस गाँव में रहने वाले लोग भी इस बात से अनजान थे कि क्या हुआ था; जब वे सुबह बाहर नकिले, तो उन्होंने देखा कखिून-खराबा हुआ था और वे बहुत हैरान रह गए। इसीलिए मैं आपको यह बताने के लिए लखि रहा हूँ कआप सभी संत थयिोडोसयिस की प्रार्थना में शामलि हैं: उन्होंने मेरे पतिा साइमन से हमारे लिए प्रार्थना करने का वादा कयिा, ठीक वैसे ही जैसे वह अपने स्वयं के भक्षिुओं के लिए प्रार्थना करते हैं; और उन्होंने एक प्रार्थना लखिी जसिे मेरे पतिा ने आज्ञा दी कजिब उन्हें ताबूत में रखा जाए तो उसे उनके हाथ में रख दयिा जाए, उस वादे के पूरा होने की आशा में, जसिके बारे में, एक धर्मपरायण पतिा को प्रकट होकर, उन्होंने इस प्रकार कहा:

'मेरे पुत्र जॉर्ज से कहो कमुझे संत की प्रार्थनाओं से आशीर्वाद प्राप्त हुआ है – और तुम, मेरे पुत्र, अच्छे कर्मों से मेरे पदचन्हिों पर चलो।'

'जो कोई संत थयिोडोसयिस का आशीर्वाद और प्रार्थनाएँ नहीं चाहता और उससे मुँह मोड़ता है, वह शाप से प्रेम करने लगेगा – और वह उसी पर पड़ जाए।'

यहाँ समाप्त होता है उपर्युक्त मसीह-प्रेमी जॉर्ज का पत्र; और हम, जो इस वृत्तांत को समाप्त कर रहे हैं, को उनसे यह सीखना चाहिए—कहिम अपने पूजनीय पतिा थयिोडोसयिस के आशीर्वाद और अत्यंत प्रभावशाली प्रार्थनाओं से वमिुख न हों, बल्कहिम अच्छे कर्मों द्वारा उनके समीप आएँ, और वह हमारे समीप आएँगे। और इस प्रकार, शपथ से न डरते हुए, हम हमारे प्रभु यीशु मसीह द्वारा संसार की नींव से तैयार कए गए राज्य के वारसिों के रूप में आशीष प्राप्त करेंगे, जनिके द्वारा और जनिके साथ, पवत्रि आत्मा के साथ, पतिा को महमिा, सामर्थ्य, सम्मान और आराधना मलि, अब और हमेशा और युगानुयुग। आमीन।

पवत्रि भवष्यिवक्ता मीका की स्मृत।

14 अगस्त को स्मरण कयिा जाता है

संत मीका, उस नाम के पहले नबी, एप्रैम के कुल के और इम्ब्लाई के पुत्र थे। वे पवत्रि नबी एलयिाह के दनिों में रहते थे, जब समरयिा में इस्राएलयिों पर अहब और यजेबेल और यरूशलेम में यहूदयिों पर यहोशापात का राज्य था। उस समय, याकूब के बारह बेटों के वंशज दो राज्यों में वभिाजति थे: एक को यहूदा का राज्य कहा जाता था – जसिमें यहूदा और बन्यिामीन के कुल शामलि थे, और यरूशलेम इसकी राजधानी थी; दूसरे को इस्राएल का राज्य कहा जाता था और इसमें यहूदी लोगों के शेष दस कुल शामलि थे; जसिकी राजधानी सामरयिा थी। इस्राएल के राज्य में एप्रैम का कुल भी शामलि

[5551] अर्थात्, गले में आभूषण के रूप में पहनी जाने वाली एक जंजीर।

[5552] पोलेत्सयिाई या कुमान एक तुर्की खानाबदोश जनजाति थी जो 10वीं-13वीं शताब्दी में दक्षणिी रूस में रहती थी और वहां से रूसी भूमि के सीमावर्ती शहरों और गांवों पर हमला करती थी।

था, जिससे पवित्र भविष्यवक्ता मीका जन्म से संबंधित थे। उन्होंने इस्राएल के राजा आहाब की निंदा अक्सर उसी पापों के लिए की जो पवित्र भविष्यवक्ता एलियाह ने की थी, अर्थात् या तो ईश्वर से मूर्तिपूजा में धर्मत्याग करने के लिए, या उसके द्वारा किए गए अन्याय के लिए। राजा उससे घृणा करता था जो उसकी निंदा करता था, लेकिन उसे मारने की हिम्मत नहीं हुई: राजा ईश्वर की सजा के डर, एक धर्मी व्यक्ति की निर्दोषता के सामने लज्जा, और इस डर से रोक लिया गया था कि उसकी भविष्यवाणियाँ सच हो सकती हैं। हालाँकि, नबी, राजा के अन्यायपूर्ण क्रोध के आगे झुककर, राजधानी से चले गए और अक्सर पहाड़ों में रहते थे: उन्हें, मानो, यह डर था कि बार-बार राजा के सामने जाकर उसे फटकारने से, वह राजा में ऐसा क्रोध भड़का सकते हैं जो किसी भी हद तक जा सकता है।

उन दिनों में, इस्राएल के राजा आहाब के घराने और यहूदा के राजा यहोशापात के घराने के बीच एक पारिवारिक गठबंधन बना: यहोशापात ने आहाब की बेटी अतल्याह को अपने सबसे बड़े बेटे यहोराम के लिए पत्नी के रूप में ले लिया। पारिवारिक स्नेह से प्रेरित होकर, यहोशापात आहाब से मिलने के लिए यरूशलेम से सामरीया गया। अपने अतिथि के सम्मान में उत्सव के दौरान, आहाब ने यहोशापात से अस्सूर के राजा के खिलाफ युद्ध में उसकी मदद करने के लिए कहा, ताकि वह उससे रामोथ-गिलाद को फिर से जीत सके; यह शहर लंबे समय से इस्राएली था, लेकिन अस्सूर के राजा ने इसे जबरदस्ती ले लिया था। यहोशापात ने, आहाब के साथ स्वयं युद्ध में जाने का वादा करते हुए, कहा:

'जैसा आप हैं, वैसा ही मैं हूँ; जैसा आपका लोक है, वैसा ही मेरा लोक है: मैं आपके साथ युद्ध में जाऊँगा। परन्तु पहिले हम प्रभु परमेश्वर से पूछ लें: क्या यह युद्ध हमारे लिये सफल होगा?'

और तुरंत अहब ने अपने 400 दुष्ट और झूठे नबियों को इकट्ठा किया; इन झूठे नबियों का नेता कनान का पुत्र जिदकियाह था। उन्होंने सभी ने अहब को सफलता की आशा देकर हौसला बढ़ाया, यह कहते हुए:

उन्होंने कहा, 'जाओ, परमेश्वर न केवल रामत के नगर को, बल्कि अश्शूर के राजा को भी तुम्हारे हाथ में दे देगा।'

लेकिन यहूदा के राजा यहोशापात, जो एक ईश्वर-भक्त और विश्वासयोग्य व्यक्ति थे, ने यह महसूस किया कि इन भविष्यद्वक्ताओं में से एक भी सच्चा नहीं था, बल्कि वे सभी चापलूस और चाटुकार थे; इसलिए यहोशापात ने अहब से कहा:

'क्या यहाँ प्रभु का एक भी सच्चा भविष्यवक्ता नहीं है जिससे हम परामर्श कर सकें, और जो हमें सच बता सके?'

अहब ने उत्तर दिया:

'एक आदमी है जो यहोवा से परामर्श कर सकता है और हमें सत्य बता सकता है—इम्ला का पुत्र मिकायाह; परन्तु मैं उससे घृणा करता हूँ, क्योंकि वह हमेशा मेरे विरुद्ध बुराई की ही भविष्यवाणी करता है।'

'ऐसा मत बोलो,' यहोशापात ने अहब से आपत्ति जताई, 'बल्कि उसे बुलाओ, उसकी बात सुनो, और उसकी फटकार से क्रोधित न होओ।'

और तुरंत अहाब ने भविष्यवक्ता मिकायाह को बुलवा भेजा, जो उस समय जंगल के पहाड़ों से इज़राइल आया था। दोनों राजा सामरिया के फाटक पर अपने सिंहासन पर अपनी पूरी शान-शौकत में बैठे थे, जबकि झूठे भविष्यवक्ता उनके सामने भविष्यवाणी कर रहे थे। इसके अलावा, उनके नेता ज़ेदेकियाह ने लोहे के सींग बनाए थे और उन्हें बजाते हुए अहाब से कहा:

'यहोवा का वचन है: इन सींगों से तू अरामीया को कुचलकर नष्ट कर देगा।'

इसी प्रकार, अन्य झूठे नबियों ने कहा:

'रामोथ-गिलाद पर चढ़ जा, और तू अश्शूर के राजा को परास्त कर देगा; प्रभु उसे तेरे हाथ में देगा।'

इस बीच, भविष्यवक्ता मिकायाह के पास भेजे गए दूत ने उससे कहा:

'सभी नबी राजा के लिए शुभ भविष्यवाणी कर रहे हैं; मैं आपसे विनती करता हूँ, आप भी वही कहें, ताकि आपके शब्द उनके शब्दों का खंडन न करें।'

'जिस प्रभु जीवित है,' नबी मिकायाह ने उत्तर दिया, 'जो कुछ भी प्रभु मेरा ईश्वर मुझसे कहेगा, वही मैं राजा से कहूँगा।'

और इस प्रकार, जब वह आया, तो पवित्र मीका इस्राएल के राजा अहब के सामने खड़ा हुआ, जिसने उससे पूछा:

उसने कहा, "मिकायाह, सुन, क्या मैं रमथ-गिलाद जाकर लड़ूँ, या रुकूँ?"

नबी ने राजा के प्रश्न का सीधा उत्तर न देते हुए और उसे अधिक गंभीर पूछताछ में लाने की इच्छा से कहा:

उसने कहा, 'जाओ, तुम सफल होओगे, और वे तुम्हारे हाथ लग जाएँगे।'

यह देखकर कि नबी नडिर होकर नहीं बोल रहे थे, अहब ने उनकी ओर मुड़कर कहा:

'मैं तुझ पर ईश्वर की कसम देता हूँ: मुझे वह सत्य बता जो प्रभु के सामने है।'

तब पवित्र मिकायाह ने नडिर होकर कहा:

'मैंने इस्राएल के सभी पुत्रों को पहाड़ों पर बिना चरवाहे के भेड़ों की तरह बिखिरा हुआ देखा है।'

इन शब्दों के साथ, नबी ने भविष्यवाणी की कि इस्राएली सेना युद्ध में अपना चरवाहा—अर्थात् अपना राजा—खो देगी: वह मारा जाएगा, और सभी लोग, भेड़ियों के सामने भेड़ों की तरह, अस्सिरियाई सेनाओं द्वारा पहाड़ों और रेगिस्तानों में बिखिर जाएंगे। और अहब ने राजा यहोशापात से कहा:

'क्या मैंने तुम्हें नहीं बताया कि वह मेरे बारे में कभी कोई अच्छा भविष्यवाणी नहीं करता, बल्कि केवल बुरा ही करता है?'

पवित्र मीका ने जारी रखा:

'तब यहोवा का वचन सुनो: मैंने यहोवा को उसके सिंहासन पर विराजमान देखा, और स्वर्ग की सारी सेना उसकी दहिनी और बाईं ओर खड़ी थी। और यहोवा ने कहा, 'इज़राइल का राजा आहाब को किस प्रकार बहकाया जाए कि वह जाकर रामोथ-गिलाद में लड़ाई में मारा जाए?' और वहाँ खड़े एक ने एक बात कही, और दूसरे ने दूसरी। तब एक आत्मा आगे आया और यहोवा के सामने खड़ा होकर बोला, 'मैं उसे बहकाऊँगा।' और यहोवा ने उससे कहा, 'कैसे?' उसने उत्तर दिया, 'मैं निकिल जाऊँगा और उसके सब भविष्यद्वक्ताओं के मुंह में एक झूठ का आत्मा बन जाऊँगा।' और उसने (यहोवा ने) कहा, 'तू उसे बहकाएगा और सफल हो जाएगा; जा और ऐसा ही कर।' भविष्यद्वक्ता ने कहा, 'हे राजा, जान रख, कि तेरे भविष्यद्वक्ताओं के मुंह में एक झूठ का आत्मा है, और यहोवा ने तेरे विरुद्ध बुराई की बात कही है।'

जब नबी ये बातें कह ही रहा था, तब झूठे नबी सद्दायक ने आकर पवित्र मीकाह के गाल पर थप्पड़ मारा और कहा:

'प्रभु की किस आत्मा से तुमने यह सब कहा है?'

संत मीका ने उत्तर दिया, 'तुम स्वयं देखोगे, उस दिन जब अश्शूरियों के डर से तुम एक कमरे से दूसरे कमरे तक भागोगे, यहाँ तक कि अपने ही घर के भीतर छिपने की कोशिश करोगे।'

क्रोध से उन्मत्त, आहाब ने आज्ञा दी कि भविष्यवक्ता मिकायाह को ले जाकर जेल में डाल दिया जाए, और वहाँ उसे 'दुख का रोटी' खिलाई जाए और 'दुख का पानी' पिलाया जाए—अर्थात्, उसे रोटी और पानी इतनी कम मात्रा में दिया जाए कि भविष्यवक्ता भूख और प्यास से न मरे, बल्कि तब तक जीवित रहे जब तक राजा लौट न आए, जो उसे यातना देना चाहता था। राजा ने इस प्रकार कहा:

'जब तक मैं शांति से वापस नहीं आ जाता, तब तक उसे वहीं रखो।'

संत माइकल ने राजा को उत्तर दिया:

'यदि आप शांति से लौटते हैं, तो यह प्रभु नहीं थे जिन्होंने मुझसे बात की।'

तब संत माइकल ने लोगों की ओर मुड़कर ज़ोर से कहा:

'हे सभी लोगों, यह सुनो!'

पवित्र नबी को इस्राएल के राज्य की राजधानी सामरिया के एक कालकोठरी में कैद कर दिया गया था। हालाँकि राजा आहाब युद्ध में गया, जहाँ उसे सन्त मिकायाह की भविष्यवाणी के अनुसार मार दिया गया; इसका वर्णन तीसरी राजाओं की पुस्तक के अध्याय 22 और दूसरी इतिहास की पुस्तक के अध्याय 18 में विस्तार से किया गया है। आहाब की मृत्यु के बाद, उसका पुत्र अहज्याह सिंहासन पर बैठा।

पवित्र धर्मग्रंथों में पवित्र भविष्यवक्ता मीका की मृत्यु के बारे में कुछ नहीं कहा गया है; केवल प्रस्तावना में ही यह कहा गया है कि उन्हें कथित तौर पर आहाब के पुत्र यहोराम द्वारा मार दिया गया था; लेकिन यह पहले ही उल्लेख किया जा चुका है कि यहोराम आहाब का दामाद था, उसका बेटा नहीं। हालाँकि, यह अत्यधिक संभावित है कि पवित्र भविष्यवक्ता मीका अपने उत्पीड़क में से किसी एक के हाथों शहीद हो गए: क्योंकि अहब की पत्नी यिज़ेबेल, जो अपने पति की मृत्यु के बाद विधवा हो गई थी, और उसका पुत्र अहज्याह, जो अपने पिता के बाद सिंहासन पर बैठा, और उसका दामाद, यरूशलेम का राजा योराम - उनमें से कोई भी उस व्यक्ति के प्रति कोई सद्भावना नहीं रख सकता था जिसने अहब के पतन की भविष्यवाणी की थी। महान मेनायोन और कीव के मासिक कैलेंडर में पैगंबर मिकाह की स्मृति जिनवरी के पांचवें दिन पड़ती है। और ग्रेट मेनायोन में कहा गया है कि, अधर्म की निंदा करने के लिए, उन्हें मार डाला गया और एक खाई में

फेंक दिया गया: संत मीका के साथियों ने वहां से उनके सम्मानित शरीर को निकाला और उसे अपनी भूमि में, एक निश्चित घुमक्कड़ नबी की कब्र के पास दफनाया। पहले नबी मीका के लगभग 150 वर्ष, या शायद उससे भी अधिक समय बाद, एक ही नाम का एक और पवित्र नबी (ईसा पूर्व 8वीं शताब्दी में) प्रकट हुआ, जिसकी स्मृति का अब पालन किया जाता है।

वे यहूदा के कुल से थे; उनका जन्मस्थान एलेउथेरोपोलिस शहर के पास मोरास्पमि गाँव था; इसी स्थान से पवित्र नबी को 'मोरास्पफ़ाईट' की उपाधि मिली। उन्होंने यहूदी राजाओं योथाम, आहाज़ और हिज़किय्याह के शासनकाल के दौरान यरूशलेम में भविष्यवाणी की; पवित्र नबी यशायाह भी इस समय जीवित थे। संत मीका ने अपने देशवासियों को मूर्तिपूजा में पड़ने, सच्चे ईश्वर को भूल जाने, और अविश्वासियों की दुष्ट प्रथाओं को अपनाने के लिए फटकारा। टूटे हुए दिल से, नबी ने ईश्वर की ओर से उनसे कहा:

'मेरे लोगों, मैंने तुम्हारे साथ क्या किया है? मैंने तुम्हारा अहित कैसे किया है? मैंने तुम्हें दुख कैसे पहुँचाया है? मुझे उत्तर दो। क्या इसलिए कि मैंने तुम्हें मिस्र देश से निकाला और दासत्व से मुक्त किया, कि तुमने मुझे त्याग दिया और मूर्तिपूजक देवताओं को अपना देवता बना लिया?'

गरीबों और ज़रूरतमंदों पर राजकुमारों, न्यायाधीशों और बुज़ुर्गों द्वारा किए गए अत्याचार, अन्याय, लूटपाट और जुल्म की निंदा करते हुए, पवित्र मीका ने कहा:

'हे याकूब के घराने के हाकिमों, सुनो, जो भलाई से घृणा करते हो और बुराई को खोजते हो: क्या तुम्हें धर्म का न्याय करने के लिए अपनी पूरी कोशिश नहीं करनी चाहिए?' फिर भी तुम बिलकुल निर्दोष गरीबों और बेसहारों पर इतनी अन्यायपूर्ण ढंग से अत्याचार करते हो कि तुमने उनकी खाल उधेड़ दी है, उनकी हड्डियाँ कुचल दी हैं और उनके शरीरों को चूर-चूर कर दिया है – मानो तुम उन्हें भोजन पकाने के लिए किसी कड़ाही में फेंकना चाहते हो। तो सुनो, हे याकूब के घराने के हाकिमों, जो न्याय को तुच्छ समझते हो और जो सब कुछ सीधा-सही को टेढ़ा कर देते हो, जो सियोन का निर्माण रक्त से और यरूशलेम का अधर्म से करते हो!

इस प्रकार भविष्यवक्ता ने पापियों की निंदा की और, उनकी पश्चातापहीनता को देखकर, उनके विनाश पर विलाप किया, कराहते हुए पुकार उठा:

हाय मुझ पर! क्योंकि मेरी दशा अब ग्रीष्मकालीन कटनी जैसी, अंगूर इकट्ठा करने के समय जैसी है: खाने के लिए एक भी अंगूर नहीं है (इसलिए कोई भी परमेश्वर को प्रसन्न नहीं करता!)। हाय, मेरी आत्मा! पृथ्वी पर कोई भी दयालु मनुष्य नहीं बचा, मनुष्यों में कोई भी धर्मी नहीं; सब खून बहाने की साजिश रचते हैं; हर कोई अपने भाई के लिए फंदा लगाता है। उनके हाथ बुराई करने पर लगे हैं; शासक घूस की मांग करता है, और न्यायाधीश घूस लेकर फैसला सुनाता है।

दुष्टों के पश्चातापहीन हृदयों पर शोक व्यक्त करते हुए और उनकी निंदा करते हुए, नबी ने उन पर आने वाले ईश्वर के क्रोध की भविष्यवाणी की: यह सबसे पहले सामरिया, अर्थात् इज़राइल के राज्य की राजधानी पर पड़ेगा, क्योंकि वहीं मूर्तिपूजा, ईश्वर के कानून का उल्लंघन, और विधर्मी दुष्टता शुरू हुई थी; फिर यरूशलेम को भी वही दंड भुगतना पड़ेगा – ईश्वर के न्याय का निर्णय था कि सामरिया को अश्शूरियों द्वारा और यरूशलेम को खलदीनियों द्वारा उजाड़ दिया जाएगा। और एक बार फिर से भविष्यवक्ता ने विलाप करते हुए कहा:

'हाय, हाय मेरे लिए! यहोवा का दिन समीप आ पहुँचा है!'

लेकिन ऐसी दुखद भविष्यवाणियों के बीच, परमेश्वर के भविष्यवक्ता ने यह भी शुभ समाचार घोषित किया कि हमारे आत्माओं के चरवाहे और उद्धारकर्ता, प्रभु यीशु मसीह, बेतलहम में पैदा होंगे: 'और हे बेतलहम एप्रत्थाह, क्या तू यहूदा के कुल-कुलों में सबसे छोटा है? तुम्हारे ही यहाँ से मेरा वह निकलने वाला है जो इस्राएल में शासक होगा।' (अध्याय 5, श्लोक 2)।

ईश्वर के इस पवित्र नबी की शेष भविष्यवाणियाँ उनके नाम से विख्यात भविष्यवाणी की पुस्तक में दी गई हैं।

हमें इस बारे में कोई निश्चित जानकारी नहीं है कि संत मीका ने अपनी भविष्यवाणी की सेवकाई पूरी करने के बाद अपना जीवन कैसे समाप्त किया, लेकिन यह संभावना नहीं है कि उनकी मृत्यु शहीद के रूप में हुई। पवित्र भविष्यवक्ता यिर्मयाह की पुस्तक में यह लिखा है कि जब पुरोहितों ने, झूठे भविष्यवक्ताओं और लोगों की एक बड़ी भीड़ के साथ मिलकर, पवित्र यिर्मयाह को मार डालने का प्रयास किया, तो कुछ बुज़ुर्गों ने उनकी रक्षा की और सभा से कहा:

मोराशेथ का मिकायाह यहूदा के राजा हिजकिय्याह के दिनों में भविष्यद्वाणी करता था, और यहूदा के सब लोगों से कहता था: "सेनाओं का यहोवा इस प्रकार कहता है: सिय्योन खेत की नाईं जोता जाएगा, और यरूशलेम खंडहरों का ढेर हो

जाएगा, और इस भवन का पहाड़ जंगल से ढका हुआ टीला बन जाएगा।" क्या यहूदा के राजा हिज़कियाह और पूरे यहूदा ने उसे इस बात के लिए मार डाला? क्या वह यहोवा से नहीं डरता था और यहोवा से विनती नहीं करता था? और यहोवा ने वह विपत्ति टाल दी जो उसने उन पर घोषित की थी, फिर भी हम अपनी आत्मा पर बड़ी बुराई लाने वाले हैं।

इन शब्दों से हम देख सकते हैं कि पवित्र भविष्यवक्ता मीका को मार नहीं डाला गया था, बल्कि, अपना ईश्वरीय जीवन पूरा करने के बाद, वे शांतिपूर्वक देहांत को प्राप्त हुए। वे मर गए और उन्हें उनके स्वदेश, मोराशत में दफनाया गया। कई, कई वर्षों बाद, उनके पवित्र अवशेष, भविष्यवक्ता हबक्कूक के अवशेषों के साथ, थियोडोसियस महान के शासनकाल में, एलेउथेरोपोलिस के बिशप ज़ेबिनस को ईश्वर से प्राप्त एक प्रकटोक्ति के बाद खोजे गए। इन सब के लिए, महिमा हमारे ईश्वर को सदा हो, अब और हमेशा, और युगों-युगों तक। आमीन।

28 अगस्त

15 अगस्त (पुराने कैलेंडर के अनुसार)

हमारी परम पवित्र माता, ईश्वर की माता और सदा कुंवारी मरियम का निद्रोपवेश

15 अगस्त को स्मरणोत्सव

प्रभु द्वारा मानव जाति के उद्धार को पूरा करने और स्वर्ग में आरोहण करने के बाद, परमेश्वर की माता और हमारे उद्धार की मध्यस्थ, अति पवित्र और अति धन्य कुँवारी मरियम, प्रारंभिक ईसाइयों के बीच काफी लंबे समय तक रहीं; जब उन्होंने संपूर्ण ब्रह्मांड में मसीह की कलीसिया के विस्तार और अपने पुत्र और अपने ईश्वर की महिमा को पृथ्वी के छोर तक फैलते हुए देखा, तो वह महान आध्यात्मिक आनंद से भर गईं; ईसाई चर्च के उन शुरुआती दिनों में, परमेश्वर की अति पवित्र माता ने अपनी आँखों से अपने शब्दों की पूर्ति देखी कि 'सभी पीढ़ियाँ मुझे धन्य कहेंगी' (लूका 1:48) – क्योंकि ईसाई, जो हर जगह मसीह परमेश्वर की महिमा करते थे, उन्होंने उनकी अति पवित्र माता की भी महिमा की, जो उस समय भी पृथ्वी पर जीवित थीं।

ईश्वर की परम पवित्र माता, अपना जीवन पूर्ण कर चुकी थीं[5553] ; वे स्वयं अपने शरीर से विदा होकर ईश्वर की उपस्थिति में प्रवेश करने के लिए लालायित थीं। उनकी आत्मा सदैव एक ही, अटूट इच्छा से परिपूर्ण रहती थी: स्वर्ग में पिता के दहिने बैठने वाले अपने पुत्र के मधुर मुखमंडल को निहारने की (इब्रानियों 1:3); सराफिम के प्रेम से भी कहीं अधिक अतुलनीय प्रेम के साथ उनकी लालसा करती थीं[5554] । ईश्वर की माता, अपनी पवित्र आँखों से आँसुओं की धाराएँ

[5553] दूसरी शताब्दी के धर्मरक्षक मेलटिन, सार्डिस के बिशप, परम पवित्र ईश्वर की माता के निधन का वर्ष उनके जीवन का 69वां वर्ष, मसीह के जन्म के 55वें वर्ष और प्रभु के स्वर्गारोहण के 22वें वर्ष के रूप में बताते हैं; रोम के बिशप हिप्पोलीटस (3वीं शताब्दी), परमेश्वर की माता के निधन का वर्ष मसीह के जन्म के 43वें वर्ष और उनकी अपनी जन्मतिथि के 57वें वर्ष के रूप में देते हैं; पैलेस्टाइन के सेज़रिया के बिशप यूसेबियस पैम्फिलिस (मृत्यु 340), जिन्हें 'चर्च इतिहास के पिता' के रूप में जाना जाता है, लिखते हैं कि सर्वदा कुंवारी के निद्रोपवेश का वर्ष उनके जीवन का 63वां वर्ष था, जो मसीह के जन्म के 48वें वर्ष और उद्धारकर्ता के स्वर्गारोहण के 15वें वर्ष में था; साइप्रस के एपिफानियस (मृत्यु 403) ने परमपवित्र माता के जीवन के कुल वर्षों की संख्या 72 बताई है, और उनके अनुसार, यह वर्ष मसीह के जन्म के 57वें वर्ष था। इसी बात का उल्लेख जॉर्ज केड्रिन, जो 11वीं शताब्दी के अंत या 12वीं शताब्दी की शुरुआत के एक बीजान्टिन लेखक थे, ने भी किया है। चर्च के इतिहासकार (14वीं शताब्दी) निकिफोरस कैलिस्टोस, सत्तर प्रेरितों में से एक, संत इवोड के शब्दों का हवाला देते हैं, जो परमेश्वर की माता के निद्रोपवेश के वर्ष को उनके जीवन का 59वां वर्ष और मसीह के जन्म के 44वें वर्ष के रूप में मानते हैं। क्रीट के संत एंड्रयू (मृत्यु 712) और संत सिमियन मेटाफ्रस्टेस (10वीं सदी) ईश्वर की माता के जीवन के वर्षों की सटीक संख्या निर्दिष्ट नहीं करते हैं, केवल यह बताते हैं कि उनका निधन 'वृद्धावस्था में' हुआ था।

[5554] सराफ़ीम – हिब्रू शब्द से, जिसका अर्थ है 'आग जैसी' या 'ज्वाला-सदृश' प्राणी। पैगंबर यशायाह उन्हें यशायाह 6:1–3 में वर्णित करते हैं। पैगंबर का यह दर्शन दर्शाता है कि सेराफिम परम आध्यात्मिक प्राणी हैं, जो ईश्वर के सबसे निकट हैं। सेंट डायोनिसियस द एरोपागिट की *सेलेस्टियल पदानुक्रम* में, वे दैवीय आदेशों में पहला स्थान रखते हैं।

बहाते हुए, प्रभु से आग्रहपूर्वक प्रार्थना करती थीं कि वह उन्हें इस आँसुओं की घाटी से स्वर्गीय[5555] धन्य निवासों में ले जाएँ। पर्वत सियोन पर संत जॉन द थियोलोजियन के घर में रहते हुए[5556] , वह अक्सर वहां से जैतून के पर्वत[5557] पर चली जाती थीं - जो उनके पुत्र और प्रभु के स्वर्ग आरोहण का स्थान था; यहां, एकांत में, वह उनकी ओर अपनी प्रार्थनाएं अर्पित करती थीं। और इस प्रकार, जैतून के पहाड़ पर परमेश्वर की माता की ऐसी ही एक एकांत प्रार्थना के दौरान, जिसमें उन्होंने प्रभु से अपने स्वर्गारोहण को शीघ्र करने और उन्हें स्वर्ग में अपने पास ले जाने का अनुरोध किया था, महादूत गब्रियल[5558] उनके सामने प्रकट हुए; उन्होंने परमेश्वर की अति पवित्र माता की उनके बचपन के शुरुआती दिनों से ही सेवा की थी: उन्होंने उन्हें परम पवित्र स्थान में पाला था, उन्हें उनके गर्भ से ईश्वर के पुत्र के जन्म की शुभ-सूचना दी थी (लूका 1:27–38), और पृथ्वी पर उनके जीवन भर उनकी निरंतर रक्षा की थी। एक तेजस्वी मुखमंडल के साथ, स्वर्गीय दूत ने परमेश्वर की अति पवित्र माता को प्रभु के आनंद के वचन सुनाए, कि जल्द ही – तीन दिनों के बाद – वह मसीह परमेश्वर के साथ रहने के लिए प्रस्थान करेंगी। सर्व-शुद्ध कुँवारी को उनके निधन के समय की सूचना देते हुए, महादूत ने उनसे परेशान न होने के लिए कहा , बल्कि उनके शब्दों को आनंद के साथ स्वीकार करने के लिए कहा, क्योंकि वे उन्हें महिमा के शाश्वत राजा के साथ अमर जीवन के लिए बुला रहे थे:

'तुम्हारे पुत्र और हमारे ईश्वर,' महादूत ने कहा, 'महादूतों और स्वर्गदूतों, करूबों और सेराफों, और सभी स्वर्गिक आत्माओं और धर्मी लोगों की आत्माओं के साथ, तुम्हें, उनकी माता को, स्वर्ग के राज्य में ग्रहण करेंगे, ताकि तुम उनके साथ अनंत काल तक जीवित रहो और राज्य करो।'

ईश्वर की माता की मृत्यु पर विजय का संकेत—अर्थात्, कि देहिक मृत्यु का उन पर कोई अधिकार नहीं होगा, जैसे आध्यात्मिक मृत्यु का उन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा था—और यह कि वे, एक क्षणिक निद्रा में सो जाने के समान, मृत्यु में थोड़ी देर के लिए सो गईं, और शीघ्र ही, जागने पर, पुनरुत्थित होंगी और, मृत्यु को अपने से वैसे ही दूर कर देंगी जैसे कोई अपनी आँखों से उनींदापन दूर करता है, वह प्रभु के मुख के प्रकाश में अमर महिमा और जीवन को देखेगी, जहाँ वह आनंद के जयकारों और आध्यात्मिक हर्षोल्लास के बीच प्रस्थान करेगी—इन सबका संकेत स्वरूप, महादूत ने परम पवित्र कुँवारी को स्वर्ग की एक टहनी भेंट की: यह खजूर के पेड़ की एक टहनी थी, जो स्वर्गीय अनुग्रह के प्रकाश से दमक रही थी; जिसे, जैसा कि महादूत ने कहा, परमेश्वर की माता की अत्यंत सम्मानित और सबसे पवित्र देह को दफनाने के लिए ले जाए जाने पर, उनके शव-पेटिका के आगे ले जाया जाना था। ईश्वर की परम धन्य माता अकथनीय आनंद और आध्यात्मिक उल्लास से भर गईं, क्योंकि उनके लिए अपने पुत्र और ईश्वर के साथ स्वर्ग में वास करने और उनके प्रिय मुखमंडल के दर्शन के आनंद से अधिक आनंददायक और सुखद और क्या हो सकता था? घुटनों के बल झुककर, उन्होंने अपने सृष्टिकर्ता का हार्दिक धन्यवाद करना शुरू किया:

'मैं इसके योग्य नहीं थी,' परम पवित्र ईश्वर की माता ने प्रार्थना की, 'कि हे प्रभु, आप मुझे अपनी कोख में ग्रहण करें, यदि आपने स्वयं अपनी दासी पर दया न की होती; मुझे सौंपे गए खजाने की मैंने रक्षा की है, और इसलिए हे महिमा के राजा, मुझमें यह हिम्मत है कि मैं आपसे गेहेना के राज्य से मेरी रक्षा करने के लिए प्रार्थना करूँ[5559] : यदि स्वर्ग और स्वर्गदूत भी आपके सामने कांपते हैं, तो मिट्टी से बने एक मनुष्य के बारे में तो और भी अधिक ही सोचा जा सकता है, जिसके पास आपके परम-सौजन्य द्वारा प्रदान की गई कृपा के सिवा अपनी कोई योग्यता नहीं है; हे प्रभु और परमेश्वर, जो सदा के लिए धन्य हैं।

[5555] 'गॉर्नजि' का अर्थ है 'सबसे ऊँचा', 'स्वर्गीय' (यहे. 41:7; कुल. 3:3)।

[5556] जब हिब्रू से अनुवाद किया जाता है, तो सियोन का अर्थ कुछ के अनुसार, धूप में खुला स्थान, और दूसरों के अनुसार, एक ऊँची, प्रसिद्ध जगह या किला है। सियोन यरूशलेम में दक्षिण-पश्चिमी पहाड़ है, जिस पर यरूशलेम का किला स्थित है।

[5557] जैतून का पहाड़ अपना नाम वहाँ उगने वाले जैतून के पेड़ों की बड़ी संख्या से प्राप्त करता है; यह यरूशलेम के पूर्व में स्थित है और पवित्र शास्त्र में, विशेष रूप से नए नियम में, अक्सर इसका उल्लेख मिलता है।

[5558] एक महादूत स्वर्गदूतों का प्रमुख होता है (1 थिस्स. 4:16; यहूदा 1:9)।

[5559] गेहेना हिब्रू शब्द का एक अनुवाद है जिसका अर्थ हिन्नोम की घाटी या 'हिन्नोम के पुत्र' है; यह घाटी एक गहरी, संकरी घाटी को संदर्भित करती है जहाँ यहूदियों ने एक समय में, राजाओं के शासनकाल के दौरान, मोलक को अपने बच्चों की बलि दी थी (2 राजा 23:10; यर. 7:31)। बाद के समय में, यह सभी प्रकार की गंदगी के निपटान के लिए एक स्थान बन गया, और इसे नष्ट करने के लिए वहाँ एक आग लगातार जलती रहती थी; परिणामस्वरूप, हिन्नोम की घाटी अनंत यातना के स्थान का प्रतीक बन गई। ठीक इसी अर्थ में—नरक के अर्थ में—'गेहेन्ना' शब्द का उपयोग नए नियम में किया गया है (मत्ती 5:29–30, 10:28, 18:9, 23:15; मरकुस 9:43, 45; लूका 12:5; याकूब 3:6)।

अत्यंत पवत्रि कन्या ने, जब इस जीवन से वदिा ली, तो पवत्रि प्रेरतिों को देखना चाहा, जो पहले ही सुसमाचार का प्रचार करने के लिए संसार भर में जा चुके थे; उन्होंने प्रभु से यह भी प्रार्थना की कि, अपनी मृत्यु के समय, उन्हें अंधकार का राजकुमार और उसके भयानक सेवक न दखिाई दें, बल्कि उनका अपना पुत्र और ईश्वर, अपने वादे को पूरा करते हुए, आकर उनकी आत्मा को अपने पवत्रि हाथों में ग्रहण करें। जब हमारी माता, जैतून के पहाड़ पर घुटने टेककर, अपने सृष्टकिर्ता से अपनी प्रार्थना और धन्यवाद अर्पति कर रही थीं, तो उनकी प्रार्थना के साथ एक अद्भुत दृश्य भी था: जैतून के पहाड़ पर खड़े जैतून के पेड़, मानो जीवंत हो गए हों, ईश्वर की माता के साथ झुक गए: जब ईश्वर की माता ने घुटने टेके, तो पेड़ भी झुक गए; जब वह खड़ी हुईं, तो वे फरि से सीधे हो गए; पेड़ों ने, सेवकों की तरह, ईश्वर की माता की सेवा की, उनका सम्मान करते हुए।

प्रार्थना के समापन पर, परमेश्वर की अतपिवत्रि माता घर लौट आईं, और तुरंत ही परमेश्वर की माता के चारों ओर मंडराती अदृश्य शक्ति की उपस्थतिि से और उस प्रभु की महमिा से, जसिसे वह तेजस्वी हो रही थीं, सब कुछ काँप उठा। उनका चेहरा, जो हमेशा परमेश्वर की कृपा से सनिाई पर्वत पर परमेश्वर से बात करने वाले मूसा (नरि्गमन 34:30) से भी अधकि चमकता था, एक अकथनीय महमिा से और भी अधकि प्रकाशमान हो गया। – परम धन्य महलिा ने अपने प्रस्थान की तैयारी शुरू कर दी। सबसे पहले, उन्होंने अपने प्रयि शष्यि यूहन्ना को, जसिे मसीह ने अपना लयिा था, यह बात बताई, और उसे स्वर्ग की एक तेजस्वी टहनी दखिाई, तथा उसे इसे अपने शव-शय्या के आगे ले जाने का कार्य सौंपा; फरि परम पवत्रि कुँवारी ने अपने घर के अन्य सदस्यों को, जो उनकी सेवा करते थे, यही बात बताई। फरि उन्होंने आदेश दयिा कि उनके ऊपरी कक्ष को सुगंधति धूप से भर दयिा जाए, उसमें यथासंभव अधकितम दीपक तैयार करके जला दिए जाएँ, और स्वयं कक्ष तथा उसमें रखी ताबूत दोनों को सजाया जाए – संक्षेप में, अंतमि संस्कार की सभी आवश्यक व्यवस्थाएँ की जाएँ। संत जॉन द थयिोलोजयिन ने तुरंत संदेश भेजा संत जेम्स, जो प्रभु के भाई और यरूशलेम के पहले बशिप थे, के साथ-साथ सभी रश्तिेदारों और पड़ोसयिों को, उन्हें ईश्वर की माता के नकिटवर्ती—और सटीक दनि बताकर—प्रस्थान के बारे में सूचति करते हुए। संत जेम्स ने न केवल यरूशलेम में बल्कि आसपास के कस्बों और गांवों में रहने वाले सभी ईसाइयों को सूचति करने में कोई समय बर्बाद नहीं कयिा, ताकि यरूशलेम के बशिप के साथ, उनके सभी रश्तिेदार और दोनों लगिों के वश्विासयिों की एक बड़ी भीड़ परम पवत्रि परमेश्वर की माता के सामने इकट्ठा हो सके। सर्वशुद्ध महलिा ने एकत्रति भीड़ को स्वर्गदूत द्वारा उनक , स्वर्ग आरोहण के संबंध में कहे गए शब्द सुनाए, और पुष्टि के रूप में उन्होंने वह दव्यि टहनी दखिाई जो उन्हें अपने दूत से प्राप्त हुई थी, जो सूर्य की करिण की तरह दव्यि महमिा के प्रकाश से चमक रही थी। ईश्वर की माता के स्वयं अपने मुख से उनके शीघ्र नधिन की खबर सुनकर, उनके चारों ओर खड़े वश्विासी अपने आँसू नहीं रोक सके: पूरा घर वलिाप और रोने से भर गया; सभी ने दयालु देवी से, सभी की माता के रूप में, वनिती की कि उन्हें अनाथ न छोड़ें। लेकनि परमेश्वर की माता ने उनसे वलिाप न करने, बल्कि उनके प्रस्थान पर आनंदति होने के लिए कहा, क्योंकि परमेश्वर के सहिासन के और नकिट पहुँचकर, अपने पुत्र और परमेश्वर को आमने-सामने देखकर और उनसे मुख से मुख मलिाकर वार्तालाप करके, वह मृत्यु के बाद, उनसे दया और भलाई के लिए और अधकि साहस के साथ वनिती कर सकेंगी; साथ ही, परमेश्वर की परम धन्य माता ने वचन दयिा कि वे अपने प्रस्थान के बाद न केवल उन्हें, बल्कि संपूर्ण वश्विव को अनाथ नहीं छोड़ेंगी: वे संपूर्ण वश्विव का भ्रमण करेंगी, उसकी आवश्यकताओं का ध्यान रखेंगी और संकट में पड़े लोगों की मदद करेंगी। परमेश्वर की माता के सांत्वनादायक शब्दों ने रो रहे लोगों के आँसू पोंछ दिए और उनके दुख को शांत कर दयिा। तब उस अतपिवत्रि महलिा ने अपने दो वस्त्रों के संबंध में वसीयत की कि उन्हें दो गरीब वधिवाओं को दे दयिा जाए, जन्हिोंने उनसे जीवकिोपार्जन प्राप्त करके उनकी भक्तपिूर्वक सेवा की थी। अपने परम पवत्रि शरीर के संबंध में, परमेश्वर की माता ने वसीयत की कि इसे जैतून के पहाड़ के पास, यरूशलेम से बहुत दूर नहीं, स्थति 'Gethsemane[5560] ' के बगीचे में दफनाया जाए, जहाँ उनके धर्मी माता-पतिा, योआकमि और अन्ना, और उनके मंगेतर, संत जोसेफ, की कब्रें स्थति थीं; ये कब्रें जोसाफेट घाटी से सटी हुई थीं, जो यरूशलेम और जैतून पर्वत के बीच फैली हुई थी और यरूशलेम के गरीब नविासयिों के लिए एक सामान्य कब्रस्तिान के रूप में काम करती थी।

[5560] गेथ्सेमनी, जो हब्रिू में 'जैतून का प्रेस' के लिए है – जैतून पर्वत की तलहटी में एक स्थान, जो उद्धारकर्ता के पीड़ादायक संघर्ष का स्थल होने और जहाँ उन्होंने अपना महा-याजकीय प्रार्थना अर्पति करने के लिए प्रसद्धि है (मरकुस 14:26, 32; लूका 22:39; यूहन्ना 18:1); एक परंपरा के अनुसार जो चौथी शताब्दी से चली आ रही है, गथ्समनी कद्रिोन नदी पर बने पुल के पूर्व में 50 फाथम की दूरी पर स्थति था।

जब परमेश्वर की अतिपवित्र माता ये अंतिम प्रबंध कर रही थीं, तभी गर्जना के समान एक अचानक शोर सुना गया, और संत जॉन द थियोलोजियन के घर को बादलों ने घेर लिया – क्योंकि, परमेश्वर की आज्ञा से, स्वर्गदूतों ने प्रेरितों को—जो ब्रह्मांड के छोर तक सुसमाचार का प्रचार करने गए थे—ले लिया था और उन्हें बादलों पर बिठाकर यरूशलेम ले आए, और उन्हें मसीह की माता के निवास के घर के द्वार के सामने सियोन पर्वत पर उतार दिया। पवित्र प्रेरितों ने एक-दूसरे को देखकर प्रसन्नता और आश्चर्य व्यक्त किया, और कहा:

'प्रभु ने हमें एक साथ क्यों इकट्ठा किया है?'

संत जॉन द थियोलोजियन उनके स्वागत के लिए बाहर आए और आनंद के आँसुओं के साथ, ईश्वर की परम पवित्र माता के समीपवर्ती निधन की घोषणा करते हुए, उनका अभिवादन किया। तब पवित्र प्रेरितों को एहसास हुआ कि प्रभु ने उन्हें ब्रह्मांड के दूर-दराज के कोनों से इसलिए इकट्ठा किया था ताकि वे उनकी परम पवित्र माता के धन्य निधन के समय उपस्थित हों, ताकि वे उनके परम पवित्र शरीर को सम्मानपूर्वक विश्राम दे सकें। ईश्वर की माता के निकट निधन की खबर ने पवित्र प्रेरितों के हृदयों को गहरे दुख से भर दिया। घर में प्रवेश करने पर, उन्होंने परमेश्वर की माता को आनंदित मुखमंडल के साथ अपने बिस्तर पर बैठे देखा; पवित्र प्रेरितों ने उनसे इन शब्दों के साथ अभिवादन किया:

'धन्य हो तुम प्रभु द्वारा, जिसने स्वर्ग और पृथ्वी की रचना की!'

'आप पर शांति बनी रहे, हे भाइयों, जिन्हें स्वयं प्रभु ने चुना है!' सबसे पवित्र महिला ने उत्तर दिया।

और फिर उन्होंने पूछा:

'आप यहाँ कैसे आईं?'

पवित्र प्रेरितों ने उन्हें समझाया कि उनमें से प्रत्येक को परमेश्वर की आत्मा की शक्ति द्वारा उस स्थान से उठा लिया गया था जहाँ वे उपदेश दे रहे थे और एक बादल पर सियोन लाया गया था। परमेश्वर की माता ने परमेश्वर की स्तुति की, जिन्होंने उनकी प्रार्थना सुनी थी और उनके हृदय की इच्छा को पूरा किया था - अपने निधन के समय पवित्र प्रेरितों को देखने की।

उन्होंने उनसे संबोधित होकर कहा, 'प्रभु,' 'उन्होंने तुम्हें यहाँ मेरी आत्मा को सांत्वना देने के लिए लाया है, जो, नश्वर स्वभाव की माँग के अनुसार, शरीर से अलग होने वाली है: मेरे सृष्टिकर्ता द्वारा मेरे लिए पूर्वनिर्धारित समय अब निकट आ गया है।'

जवाब में, उन्होंने दुख के साथ उससे कहा:

'हे माता, पृथ्वी पर अपने समय के दौरान, हमने स्वयं हमारे प्रभु और शिक्षक के रूप में आपको देखकर सांत्वना पाई; लेकिन अब, आपकी उपस्थिति से वंचित, हम उस गहरे दुख को कैसे सहन करेंगे जो हमारी आत्माओं पर छा गया है?' किन्तु आप मसीह ईश्वर, जिन्हें आपने जन्म दिया, की इच्छा से स्वर्गीय निवासों में जा रही हैं, और हम आपके विषय में ईश्वर के इस निर्णय पर प्रसन्न हुए बिना नहीं रह सकते, यद्यपि साथ ही हम अपनी अनाथता पर शोक भी करते हैं, क्योंकि हम अब आपको, हमारी माता और सांत्वना देने वाली, पुनः नहीं देख पाएँगे।

ये शब्द सुनकर, पवित्र प्रेरितों की आँखों में आँसू भर आए।

'रोओ मत,' परमेश्वर की अतिपवित्र माता ने उन्हें सांत्वना दी, 'और हे मसीह के मित्रों और शिष्यों, अपनी उदासी से मेरी प्रसन्नता पर छाया मत डालो; बल्कि, मेरे साथ आनन्द मनाओ, क्योंकि मैं अपने पुत्र और ईश्वर के पास जा रही हूँ। 'मेरे शरीर को, जिसे मैंने स्वयं दफ़नाने के लिए तैयार किया है, गेथ्सेमनी में भूमि को सौंप दो; और फिर तुम उन सुसमाचारों के प्रचार पर लौट जाओ जो तुम्हें सौंपे गए हैं; जहाँ तक मेरी बात है, यदि प्रभु चाहेंगे, तो तुम मुझे मेरे प्रस्थान के बाद फिर से देखोगे।'

जब परमेश्वर की माता पवित्र प्रेरितों से बात कर रही थीं, तब परमेश्वर द्वारा चुना हुआ पात्र—पवित्र प्रेरित पौलुस आ पहुँचा: वह परमेश्वर की परम पवित्र माता के चरणों में गिर पड़ा, और उसने अपना मुख खोलकर उनकी स्तुति और महिमा की:

पवित्र प्रेरित ने कहा, 'हे जीवन की माता और मेरे उपदेश की माता, आनंदित रहो; यद्यपि मैं प्रभु यीशु मसीह के स्वर्गारोहण से पहले पृथ्वी पर उन्हें देखने का आनंद नहीं ले सका, परन्तु अब, जब मैं आपको निहार रहा हूँ, तो मुझे ऐसा प्रतीत हो रहा है मानो मैं उन्हें ही देख रहा हूँ।'

प्रेरति पौलुस के साथ उनके नकिटतम शष्यि डायोनसियिस द एरोपाजयिन[5561] , हरिोथयिस[5562] और तमिोथी[5563] थे; सत्तर में से शेष प्रेरति भी उपस्थति थे – सभी को पवत्रि आत्मा द्वारा परम पवत्रि कुँवारी मरयिम का आशीर्वाद प्राप्त करने और अपनी उपस्थतिि से उनके दफन को अधकि गंभीरता प्रदान करने के लिए एकत्रति कयिा गया था। परम पवत्रि माता ने प्रत्येक पवत्रि प्रेरति को उनके नाम से बुलाया, मसीह यीशु की घोषणा करने में उनके वश्विास और कर्मों की प्रशंसा की; प्रत्येक के लिए उन्होंने अनंत आनंद की कामना की और संपूर्ण वश्विव में शांतकि लिए प्रार्थना की।

अगस्त का पंद्रहवां दनि आ गया, और वह धन्य घड़ी जसिका सभी को इंतजार था, नज़दीक आ गई – यह दनि का तीसरा घंटा था – ईश्वर की परम पवत्रि माता का नधिन। ऊपरी कक्ष में कई दीपक जलाए गए थे; पवत्रि प्रेरति परमेश्वर की स्तुतकि रहे थे; जबकि नरि्दोष कन्या एक सजे हुए पलंग पर लेटी थीं, अपने धन्य नधिन की तैयारी कर रही थीं और अपने प्रयि पुत्र और प्रभु के आगमन की प्रतीक्षा कर रही थीं। अचानक, कक्ष में दव्यि महमिा की एक अकथनीय ज्योतप्रिकट हुई, जसिने दीपों की रोशनी को फीका कर दयिा। जनि लोगों के सामने यह दृश्य प्रकट हुआ, वे वस्मिय से भर गए। उन्होंने देखा कि कक्ष की छत खुल गई थी और प्रभु की महमिा स्वर्ग से उतर रही थी, – स्वयं मसीह, महमिा के राजा, स्वर्गदूतों और महादूतों की सेना के साथ, सभी स्वर्गीय शक्तयिों के साथ, उन पवत्रि पूर्वजों और भवष्यिवक्ताओं के साथ जनि्होंने एक बार परम पवत्रि कुँवारी के आगमन की भवष्यिवाणी की थी, और सभी धर्मी आत्माओं के साथ, अपनी परम पवत्रि माता के करीब आ रहे थे। अपने पुत्र को आते देख, परमेश्वर की माता, महान आनंद से भरकर, अपने गीत के शब्द बोलीं:

– *'मेरी आत्मा प्रभु की महमिा करती है, और मेरी आत्मा मेरे उद्धारकर्ता परमेश्वर में आनंदति है, क्योंकि उसने अपनी दासी की दीनता पर दृष्टि की है'* (लूका 1:46–47)।

और अपने बछिौने से उठकर, जैसे अपने पुत्र से मलिने के लिए बाहर जाना चाहती हों, वह प्रभु के सामने झुक गईं। तब प्रभु ने, पास आकर और प्रेम से उन्हें नहिारते हुए, कहा:

'आओ, मेरे प्रयितम, आओ, मेरी कबूतरयिा, आओ, मेरे अनमोल खजाने, और अनन्त जीवन के धाम में प्रवेश करो।'

ईश्वर की माता ने झुककर उत्तर दयिा:

'धन्य हो तेरा नाम, हे महमिा के प्रभु और मेरे परमेश्वर, जसिने अपनी दासी को अपने रहस्य की सेवा के लिए चुनने की कृपा की; हे महमिा के राजा, मुझे अपने अनंत राज्य में स्मरण रखना; तू जानती है कि मैंने तुझसे अपने पूरे हृदय से प्रेम कयिा है और मुझ पर सौंपे गए खजाने की रक्षा की है; अब, शांतमिें, मेरी आत्मा को ग्रहण कर और मुझे अंधकारमय, शैतानी शक्तकिी सभी चालाकयिों से बचा।

प्रभु ने प्रेम से परपिूर्ण शब्दों से उनका सांत्वना दी, और उन्हें आश्वस्त कयिा कि वे शैतानी शक्तसि न डरें, जसिे वे पहले ही परास्त कर चुकी थीं; उन्होंने प्रेमपूर्वक उन्हें पृथ्वी से स्वर्ग तक नडिर होकर जाने के लिए बुलाया।

'*"हे परमेश्वर, मेरा हृदय तैयार है, मेरा हृदय तैयार है"* (भजन संहति 107:2),' परम पवत्रि कुँवारी ने उत्तर दयिा।

और फरि, उन्होंने एक बार कहे गए शब्दों को दोहराया – *'मुझ में तेरा वचन सत्य हो'* (लूका 1:38) – और वह फरि से अपने बस्तिर पर लेट गईं। अपने पुत्र और प्रभु के परम तेजस्वी मुख के दर्शन से अकथनीय आनंद की अनुभूतकिरते हुए, परमेश्वर की माता, जो प्रेम से आध्यात्मकि आनंद से भर गई थीं, ने अपनी परम पवत्रि आत्मा को प्रभु के हाथों में

[5561] एथेन्स में एरयिोपागस के एक सदस्य, सेंट डायोनसियिस द एरयिोपागटि, धर्म-प्रचारकों के काम (प्रेरतिों के काम 17:34) के अनुसार, प्रेरति सेंट पॉल द्वारा धर्मांतरति हुए थे। चर्च के इतहिासकार यूसेबयिस के अनुसार, वह एथेंस के पहले बशिप थे और, जैसा कि एरस्टिडीज़ की अपोलॉजी में कहा गया है, उन्होंने 96 ईस्वी में डोमशियिन के अधीन एक शहीद की मृत्यु के साथ अपनी सेवा को समाप्त कयिा।

[5562] संत हायरोथयिस भी एथेनयिन एरयिोपागस के सदस्य थे और संत पौलुस प्रेरति द्वारा इसी तरह ईसाई धर्म में परविर्तति हुए थे; उन्हें एथेन्स का बशिप बनाने वाले भी संत पौलुस ही थे; संत हायरोथयिस की मृत्यु पहली शताब्दी में हुई।

[5563] संत तीमुथयिुस, एशयिा माइनर के डेर्बे या ल्यूसट्रा के मूल नवािसी (प्रेरतिों के काम 16:1, 20:4; 2 तीमुथयिुस 3:4); उन्होंने मसीह में अपनी धर्मांतरण का श्रेय प्रेरति संत पौलुस के उपदेश को दयिा, जनि्होंने इसलिए उन्हें अपना पुत्र कहा (1 कुरन्थियिों 4:17; 1 तीमु. 1:2); वह सुसमाचार का प्रचार करने के लिए संत पौलुस प्रेरति की यात्राओं पर उनका एक स्थरि साथी था (रोमयिों 16:21; 1 कुरन्थियिों 16:10; 1 थस्सिलुनीकयिों 3:2)। बाद में, परंपरा के अनुसार स्वयं प्रेरति द्वारा, एफेस की कलीसयिा के बशिप के रूप में अभषिक्ति होकर, तमिोथी ने अपनी 15-वर्षीय बशिप की सेवा को शहीद की मृत्यु के साथ समाप्त कयिा; कुछ ववरिणों के अनुसार, यह डोमशियिन (81–96 ईस्वी) के शासनकाल के दौरान हुआ, जबकि अन्य इसे नेर्वा (96–98 ईस्वी) के शासनकाल में रखते हैं: संत तीमथयिुस को एक मूरतपिूजक त्योहार के दौरान, मूरतपिूजकों की भीड़ ने उनके नदिनीय उपदेश से क्रोधति होकर, पत्थर मार-मार कर हत्या कर दी।

सौंप दिया; ऐसा करते समय उन्हें कोई पीड़ा नहीं हुई, बल्कि ऐसा प्रतीत हुआ मानो वे एक मधुर निद्रा में सो गई हों: जिसने उसे कुँवारीपन खोए बिना गर्भ में धारण किया था और बिना पीड़ा के जन्म दिया था, उसने उसकी सबसे पवित्र देह से उसकी आत्मा को ग्रहण किया। और तुरंत ही एक अद्भुत, आनंद से भरा स्वर्गीय गायन शुरू हो गया, जिसमें परम पवित्र कुँवारी को गब्रियल की शुभकामनाओं के शब्द, जिन्हें स्वर्गदूत अक्सर दोहराते थे, सुनाई दिए:

– *'हे धन्य मरियम, अनुग्रह से परिपूर्ण! प्रभु तेरे संग है; स्त्रियों में धन्य तू है'* (लूका 1:28)।

इस प्रकार के गंभीर भजनों के साथ, स्वर्ग के दूतों ने परमेश्वर की माता की परम पवित्र आत्मा को स्वर्गीय निवासों तक प्रभु की बाहों में ले जाया। पवित्र प्रेरितों, जिन्हें यह दर्शन मिला था, ने अश्रुपूर्ण नेत्रों से ईश्वर की माता को विदा होते देखा, ठीक वैसे ही जैसे उन्होंने एक बार प्रभु को जैतून के पर्वत से स्वर्गारोहण करते देखा था (प्रेरितों के काम 1:9-12); वे वहाँ बहुत देर तक विस्मय से अभिभूत होकर और जैसे समाधि में डूबे हुए खड़े रहे। होश में आते ही, मसीह के शिष्य उस प्रभु के सामने झुक गए, जिन्होंने महिमामय रूप से अपनी माता की आत्मा को स्वर्ग में उठा लिया था, और रोते हुए, उन्होंने ईश्वर की माता की शव-पेटिका को घेर लिया। परम धन्य कुँवारी मरियम का चेहरा सूर्य की तरह चमक रहा था, और उनके परम शुद्ध शरीर से एक अद्भुत सुगंध निकल रही थी, जैसा कि इस पृथ्वी पर नहीं पाया जा सकता। सभी विश्वासियों ने, परम पवित्र देह का श्रद्धापूर्वक सम्मान करते हुए, उसे भक्तिपूर्वक चूमा; ईश्वर की माता के पवित्र अवशेषों से एक पवित्र करने वाली शक्ति उत्सर्जित हुई, जिसने उन्हें छूने वालों के हृदयों को आनंद से भर दिया। बीमार भी चंगे हो गए: अंधों को दृष्टि वापस मिली, बधिरि फिरि से सुनने लगे, लंगड़े सीधे हो गए, दुष्टात्माएँ निकल गईं – ईश्वर की माता की शवयात्रा को छूते ही हर बीमारी पूरी तरह से दूर हो गई।

ईश्वर की माता के निधन के समय घटित इन घटनाओं के बीच, उनके परम सम्मानित शरीर को दफनाने के लिए एक भव्य जुलूस शुरू हुआ: पवित्र प्रेरित पतरस ने, संत पौलुस और प्रभु के भाई संत याकूब के साथ मिलकर, नेतृत्व किया और बारहों के अन्य पवित्र प्रेरितों के साथ मिलकर परम पवित्र मसीह की माता की शवपेटिका को उठाया; जबकि संत यूहन्ना दैवज्ञ उनके आगे एक स्वर्गीय टहनी ले चले, जिससे तेजस्वी प्रकाश फैल रहा था। बाकी श्रद्धालु, मोमबत्तियाँ और धूपदान लेकर, ताबूत के चारों ओर चलते रहे। सभी ने प्रारंभिक प्रार्थनाएँ गाईं: संत पतरस प्रेरित ने शुरुआत की, और अन्य लोगों ने उनके बाद एक स्वर में दाऊद का भजन गाया: 'जब इस्राएल मिस्र से निकला' (भजन संहिता 113), हर छंद में 'अल्लेलुया' जोड़ते हुए; पवित्र आत्मा से प्रेरित होकर, उन्होंने अन्य गंभीर और कृतज्ञता भरे प्रार्थनाएँ और भजन भी गाए। परमेश्वर की माता के परम पवित्र शरीर को ले जाने वाला गंभीर जुलूस सियोन से होकर यरूशलेम से होते हुए गेतशेमनी तक गया। ताबूत और जुलूस के ऊपर, बादलों का एक घेरा दिखाई दिया, जो एक मुकुट जैसा था और असाधारण रूप से तेज प्रकाश से प्रकाशमान था। और बादलों के भीतर से, सभी को सुनाई देने वाला और हवा में गूँजता हुआ, स्वर्गदूतों का अद्भुत गायन सुनाई दिया। यह बादलों का मुकुट हवा में ईश्वर की माता की शवयात्रा के ऊपर से दफन स्थल तक तैरता रहा; इस पूरे समय, स्वर्गदूतों का गायन बंद नहीं हुआ। लेकिन यह आनंदमय जुलूस – जिसका वर्णन दुर्बल मानव भाषा पूरी तरह से नहीं कर सकती – अप्रत्याशित रूप से बाधित हो गया। कई यहूदी जो मसीह में विश्वास नहीं करते थे, असामान्य गायन सुनकर और गंभीर जुलूस देखकर, अपने घरों से निकल पड़े और उसमें शामिल हो गए: वे भी शहर से बाहर चले गए, और यीशु मसीह की माता के पवित्रतम शरीर पर प्रदान की गई महिमा और सम्मान को देखकर चकित हुए। यह जानकर, महापुजारी और धर्मशास्त्री बहुत क्रोधित हो गए और उन्होंने कई लोगों को उकसाकर नौकरों और सैनिकों को जुलूस के पास भेजकर उसमें शामिल लोगों को तितिर-बितिर करने का आदेश दिया; साथ ही, उन्होंने मसीह के शिष्यों को मार डालने और परमेश्वर की माता के शरीर को जला देने का भी आदेश दिया। लेकिन जब भड़काऊ लोगों की आज्ञा मानते हुए और युद्ध के लिए सजे-धजे, भीड़ क्रोध में परम पवित्र मसीह की माता के शरीर के साथ चल रहे लोगों के पीछे भागी और उन्हें पकड़ ही चुकी थी, तभी अचानक हवा में तैरता हुआ बादलों का एक घेरा ज़मीन पर उतर आया और एक दीवार की तरह, पवित्र प्रेरितों और बाकी ईसाइयों, दोनों को घेर लिया; पीछा करने वालों ने बादल के पीछे किसी को न देखकर केवल गायन की ध्वनि सुनी। पवित्र स्वर्गदूत, जो परमेश्वर की माता और अन्य ईसाइयों के शरीर के ऊपर अदृश्य रूप से मंडरा रहे थे, ने उन दुष्ट पीछा करने वालों को अंधा कर दिया: उनमें से कुछ ने अपने सिर शहर की दीवारों से ठोक दिए; अन्य दीवारों के सहारे टटोलते हुए चले और, यह न जानते हुए कि कहाँ जाएँ, मार्गदर्शकों की तलाश करने लगे। उस समय, अफोनियोस नामक एक यहूदी पुरोहित संयोग से सड़क पर बाहर था: पवित्र प्रेरितों को देखकर – बादल, ईश्वर की आज्ञा से, ईश्वर की माता की महान महिमा के लिए एक बार फिर से उभर आया था – और मोमबत्तियाँ लेकर

गाते हुए, सदा-कुंवारी मरयिम के शरीर को घेरे खड़े ईसाइयों की भीड़ को देखकर, अफोनयिोस ईर्ष्या से भर गया; हमारे प्रभु के प्रतिउसकी पुरानी द्वेष भावना उसके भीतर भड़क उठी, और उसने कहा:

'देखो, उस स्त्री के शरीर को कितना सम्मान प्राप्त है जिसने उस धोखेबाज़ को जन्म दिया जिसने हमारे पूर्वजों के नियम को नष्ट कर दिया!'

बड़ी ताकत का आदमी होने के कारण, वह पागलों की तरह क्रोधित होकर ईसाइयों की भीड़ को चीरता हुआ ताबूत की ओर भागा, हमारी परम पवित्र माता के शरीर को ज़मीन पर फेंकने के इरादे से: लेकिन जैसे ही पुरोहित के अभद्र हाथों ने ताबूत को छुआ, एक अदृश्य देवदूत ने उन्हें ईश्वर के प्रतिशोध की अमूर्त तलवार से दो टुकड़े कर दिया, और वे वहीं, ताबूत से चिपके हुए लटकते रहे, जबकिअथोनयिस स्वयं ज़मीन पर गिर पड़ा, और चिल्लाया:

'हाय मेरी!'

अपने पाप का एहसास करते हुए, उसने पश्चाताप करना शुरू कर दिया और पवित्र प्रेरितों से कहा:

'हे मसीह के सेवको, मुझ पर दया करो!'

पवित्र प्रेरित पतरस ने ईश्वरमाता के शरीर को ले जाने वालों को रुकने का आदेश दिया और अथोनयिस से कहा:

'यहाँ, तुम्हें वह मिल गया है जिसकी तुमने इच्छा की थी; जान लो किईश्वर, प्रतिशोध का प्रभु, ने स्वयं को प्रकट किया है (भजन संहिता 93:1), और हम तुम्हारे घावों को चंगा नहीं कर सकते; केवल हमारे प्रभु स्वयं ही ऐसा कर सकते हैं, जिनके विरुद्ध तुमने अन्याय से विद्रोह किया और उन्हें पकड़कर मृत्युदंड दिया; परन्तु वह भी तुम्हें तब तक चंगा नहीं करेंगे जब तक तुम पूरे हृदय से उन पर विश्वास नहीं करते और अपने वचनों से यह स्वीकार नहीं करते कियीशु ही सच्चे मसीहा, परमेश्वर के पुत्र हैं।

अफोनीया ने कहा:

'मैं विश्वास करता हूँ किवह भविष्यवक्ताओं द्वारा बताये गए संसार का उद्धारकर्ता - मसीह - हैं; शुरू से ही हमने देखा किवह परमेश्वर का पुत्र हैं, लेकिन, दुर्भावनापूर्ण ईर्ष्या से अंधा होकर, हम परमेश्वर की महानता को खुले तौर पर स्वीकार नहीं करना चाहते थे और हमने उन्हें अन्यायपूर्वक मृत्युदंड दिया; परन्तु अपनी दिव्यता की शक्ति से वह तीसरे दिन फिर जी उठे, और हम सभी—उनके घृणितों—को लज्जित किया: हमने रक्षकों को घूस देकर उनके पुनरुत्थान को छिपाने की कोशिश की, परन्तु हम कुछ नहीं कर सके, क्योंकिइसकी खबर दूर-दूर तक फैल चुकी थी।

जब अथोनयिस ने अपने पाप से पश्चाताप करते हुए ये शब्द कहे, तो पवित्र प्रेरितों और सभी विश्वासियों ने पश्चातापी पापी को देखकर स्वर्गदूतों के आनंद के साथ आनंद मनाया: पवित्र प्रेरित पतरस ने अथोनयिस को आज्ञा दी किवह अपनी कटी हुई हथेलियों के घावों को विश्वास के साथ क्रूस पर रखे, और परमेश्वर की अतिपवित्र माता का नाम पुकारे। अफोनीज ने वैसा ही किया जैसा उससे कहा गया था, और तुरंत ही कट चुके हाथ अपने स्थान पर जुड़ गए; वे पूरी तरह से ठीक हो गए; केवल कटने का एक निशान बचा था – कोहनी के चारों ओर एक लाल धागे की तरह। अफोनी ताबूत के सामने साष्टांग दंडवत हो गया, मसीह—ईश्वर, जो परम पवित्र माता से जन्मे थे—के आगे झुका और उनकी अतिपवित्र माता की अनेक स्तुतियों से उनकी प्रशंसा करने लगा: उसने पवित्र शास्त्रों से उनकी और मसीह की गवाही देने वाली भविष्यवाणियाँ उद्धृत कीं, और अफ़ोनयि के कटे हुए हाथों के चमत्कारी उपचार को देखकर और उससे प्रभु यीशु की महिमा करने और परमेश्वर की माता की प्रशंसा करने वाले बुद्धिमानी भरे वचन सुनकर सभी और भी अधिक चकित हुए। तब अथोनयिस पवित्र प्रेरितों में शामिल हो गया, और अन्य ईसाइयों के साथ गेथ्सेमनी में पवित्र शव-वाहक बिस्तर तक गया। इसी तरह, अंधापन से पीड़ित जो अपने पाप के प्रतिसचेत थे, वे अपने मार्गदर्शकों के साथ पश्चाताप में पवित्र शव-पालने के पास आए और उसे विश्वास के साथ छुआ, वे चंगे हो गए - उन्हें न केवल अपनी शारीरिकि आँखों बल्किअपनी आध्यात्मिकि आँखों की भी रोशनी मिली। सभी की दयालु माता, हमारी परम पवित्र माता, जिस प्रकार उन्होंने अपने जन्म से पूरे ब्रह्मांड में आनंद लाया था, उसी प्रकार अपने निद्रोपवेश में भी वे किसी को दुखी नहीं करना चाहती थीं: एक अच्छे राजा की अच्छी माता के रूप में, उन्होंने अपनी अनुग्रह-पूर्ण उपहारों से अपने पूर्व शत्रुओं को भी कृपापूर्वक सांत्वना दी।

लेकिन अब पवित्र प्रेरित, ईसाइयों की एक बड़ी भीड़ के साथ, गेथ्सेमनी के बगीचे में पहुँचे; जब उन्होंने परम सम्मानित देह को उठाने वाली पालकी को स्थापित किया, तो ईसाइयों के बीच फिर से विलाप मच गया: सभी, ऐसे खजाने से वंचित होकर, अपनी अनाथता पर रो पड़े; जब उन्होंने अंतिम चुंबन दिया, तो ईसाइयों ने स्वयं को परमेश्वर की परम पवित्र माता के शरीर पर झोंक दिया और उसे जोर-जोर से रोते हुए चूमा, इसलिए शाम तक ही वे सबसे सम्मानित शरीर को ताबूत

में रख सके; लेकिन तब भी, जब ताबूत के पास एक विशाल पत्थर पहले ही लुढ़का दिया गया था, ईसाई उससे दूर नहीं गए, क्योंकि वे परमेश्वर की माता के प्रति अपने प्रेम में बँधे हुए थे। – पवित्र प्रेरित, गेथ्सेमनी के बगीचे को छोड़े बिना, तीन दिनों तक परमेश्वर की परम पवित्र माता की कफ़न के पास रहे, दिन-रात भजन गाते रहे। और इस पूरे समय, स्वर्गवासियों से हवा में एक अद्भुत गायन सुना जा सकता था, जो परमेश्वर की स्तुति कर रहा था और उनकी परम पवित्र माता की महिमा कर रहा था।

ईश्वर की एक विशेष व्यवस्था से, प्रेरितों में से एक, संत थॉमस, परमेश्वर की परम पवित्र माता के शरीर के गौरवशाली अंतिम संस्कार में उपस्थित नहीं थे; वे तीसरे दिन तक गेथ्समनी में नहीं दिखाई दिए। प्रेरित संत थॉमस इस बात से गहराई से दुखी और हृदय से व्यथित थे कि उन्हें अन्य पवित्र प्रेरितों की तरह परमेश्वर की परम पवित्र माता को अंतिम विदाई और आशीर्वाद देने के लिए योग्य नहीं समझा गया था; वह इस बात पर भी बहुत रोया क्योंकि केवल वही दिव्य महिमा, अद्भुत रहस्य और परमेश्वर की उन कृत्यों का साक्षी नहीं बना था जो मसीह की माता के स्वर्गारोहण और उनके भव्य संस्कार के दौरान प्रकट हुई थीं। पवित्र प्रेरितों ने, उस पर दया करके, कब्र खोलने का निर्णय लिया ताकि संत थॉमस, परम धन्य ईश्वर की माता के मृत शरीर को ही सही, देख सकें, उसका सम्मान कर सकें और उसे चूम सकें, और इस प्रकार अपने दुःख से कुछ राहत और अपने शोक में सांत्वना पा सकें। लेकिन जब पवित्र प्रेरितों ने पत्थर हटाकर कब्र खोली, तो वे भय से भर गए: परमेश्वर की माता का शरीर कब्र में नहीं था - केवल दफ़नाने के वस्त्र ही बचे थे, जिनसे एक अद्भुत सुगंध निकल रही थी; पवित्र प्रेरित हैरानी से खड़े रह गए, यह सोचते हुए कि इसका क्या मतलब हो सकता है! वे कब्र में छोड़े गए दफ़न के वस्त्र को आँसुओं और श्रद्धा के साथ चूमते हुए, प्रभु से प्रार्थना करने लगे कि वे उन्हें यह प्रकट करें कि परमेश्वर की परम पवित्र माता का शरीर कहाँ गायब हो गया था। शाम तक, वे कुछ आराम करने के लिए बैठ गए। पवित्र प्रेरितों की भोजन के समय एक रीति थी: वे अपने बीच एक स्थान खाली छोड़ देते थे, और उस पर मसीह के सम्मान में रोटी का एक टुकड़ा रख देते थे – जो उनके एक अंग के रूप में होता था। भोजन के अंत में, धन्यवाद देते हुए, वे उपर्युक्त रोटी का टुकड़ा, जिसे 'प्रभु का अंश' कहा जाता था, उठाते और उसे ऊँचा कर परम पवित्र त्रिमूर्ति के महान नाम का महिमामंडन करते; फिर, 'हे प्रभु यीशु मसीह, हमारी सहायता करो!' कहने के बाद, वे इस टुकड़े को ईश्वर का आशीर्वाद मानकर खाते थे। पवित्र प्रेरितों ने यही किया, न केवल जब वे सभी एक साथ होते थे, बल्कि जब वे एक-दूसरे से अलग होते थे, तब भी। लेकिन अब, गेतशेमनी में, भोजन के दौरान, वे कुछ और न सोच रहे थे और न बोल रहे थे, सिवाय इसके कि परमेश्वर की माता का सबसे पवित्र शरीर कब्र में क्यों नहीं मिला था। और इस प्रकार, जब उन्होंने अपना भोजन समाप्त कर लिया, तो पवित्र प्रेरितों ने प्रभु के सम्मान में अलग रखे गए रोटी के टुकड़े को उठाना शुरू किया, और परम पवित्र त्रिमूर्ति की महिमा करने लगे, तभी उन्होंने अचानक स्वर्गदूतों का गायन सुना: अपनी आँखें उठाकर, उन्होंने परमेश्वर की परम पवित्र माता को हवा में खड़ी देखा, जो स्वर्गदूतों की भीड़ से घिरी हुई थीं। वह एक अकथनीय प्रकाश से दमक रही थीं और उन्होंने उनसे कहा:

'खुश हो जाओ! क्योंकि मैं हमेशा तुम्हारे साथ हूँ।'

पवित्र प्रेरित, आनंद से भरकर, अपने सामान्य 'हे प्रभु यीशु मसीह, हमारी सहायता करो' के बजाय, पुकार उठे:

'हे परमेश्वर की अति पवित्र माता, हमारी सहायता करो!'

उस समय से, उन्होंने न केवल स्वयं इस पर विश्वास किया, बल्कि पवित्र चर्च को भी यह विश्वास करना सिखाया कि परमेश्वर की अति पवित्र माता, अपने दफन के तीसरे दिन, अपने पुत्र द्वारा मृतकों में से जी उठाई गईं और शरीर तथा आत्मा सहित स्वर्ग में उठा ली गईं। कब्र पर लौटकर, पवित्र प्रेरितों ने शोकित लोगों को सांत्वना देने और ईश्वर की माता के कब्र से पुनरुत्थान के अकाट्य प्रमाण के रूप में वहाँ छोड़ी गई कफ़न उठा ली।

जीवन के निवास के लिए मृत्यु के अधीन होना उचित नहीं था, और न ही उस के लिए जो सभी प्राणियों के सृष्टिकर्ता को जन्म देती हैं, सांसारिक प्राणियों के साथ क्षय के भाग्य में भागीदार होना उचित था। विधि-प्रदाता ने स्वयं उस कानून को पूरा किया जो उन्होंने दिया था—कि बच्चों को अपने माता-पिता का सम्मान करना चाहिए: उन्होंने अपनी निष्कलंक माता का सम्मान वैसे ही किया जैसे उन्होंने स्वयं का किया—जिस प्रकार वे स्वयं तीसरे दिन महिमा में पुनर्जीवित हुए और फिर अपने परम पवित्र शरीर के साथ स्वर्ग में उठा लिए गए, उसी प्रकार उन्होंने अपनी माता को भी तीसरे दिन महिमा में पुनर्जीवित किया और उन्हें स्वर्गीय निवासों में अपने पास ले गए। संत दाऊद ने भी इसकी भविष्यवाणी की थी, उन्होंने कहा: *'हे प्रभु, उठ, अपनी विश्राम-स्थली में जा—तू और अपनी सामर्थ्य का सन्दूक'* (भजन संहिता 131:8); उनके भविष्यसूचक वचन प्रभु के पुनरुत्थान पर और उनके द्वारा उनकी माता के पुनरुत्थान पर पूरे हुए। – ईश्वर की

माता का खाली कब्र, जो उनके पुत्र की तरह चट्टान से तराशा गया था, आज तक संरक्षित है और विश्वासियों के लिए श्रद्धापूर्वक पूजनीय वस्तु है।

उनकी विशेष व्यवस्था से, प्रभु ने संत थॉमस के आगमन को परम पवित्र थिओटोकोस के निद्रारोहण के दिन तक देरी कर दी, ताकि कब्र उनके सामने प्रकट हो सके, और इस प्रकार कलीसिया को ईश्वर की माता के निद्रारोहण का आश्वासन मिल सके, ठीक वैसे ही जैसे पहले उसी प्रेरित के अविश्वास के माध्यम से मसीह के पुनरुत्थान का आश्वासन मिला था। (यूहन्ना 20:24-31)। – इस प्रकार परमेश्वर की हमारी अति पवित्र और अति धन्य माता का स्वर्गारोहण, उनके निर्दोष शरीर का दफन, उनका गौरवशाली पुनरुत्थान, और देह सहित स्वर्ग में उनके आरोहण की भव्य पुष्टि हुई।

ईश्वर के इन सभी अद्भुत चमत्कारों और रहस्यों के पूर्ण होने पर, पवित्र प्रेरित, एक बार फिर एक बादल पर सवार होकर, प्रत्येक उस भूमि पर लौट आए जहाँ से उन्हें सुसमाचार का प्रचार करने के लिए उठाया गया था।

संत अम्ब्रोज़, पृथ्वी पर हमारी माता के जीवन के बारे में बात करते हुए, परमेश्वर की परम पवित्र माता के अद्भुत आध्यात्मिक गुणों का वर्णन इस प्रकार करते हैं:

– वह न केवल देह से, बल्कि आत्मा से भी कुँवारी हैं: हृदय से विनम्र और वाणी में संयमी; उनके शब्द दैवीय ज्ञान से परिपूर्ण हैं; वह लगभग निरंतर पवित्र शास्त्र के पाठ में व्यस्त रहती हैं और अपने कार्यों में अथक हैं; संभाषण में पवित्र, लोगों से इस प्रकार बात करती हैं मानो ईश्वर के समक्ष हों; उन्होंने कभी किसी का अपमान नहीं किया, सभी के लिए भलाई की कामना करती हैं; वह किसी को भी तुच्छ नहीं समझती थीं, चाहे वह कितना भी गरीब क्यों न हो, और न ही वह किसी पर हँसती थीं, बल्कि उन्होंने जो कुछ भी देखा उसे अपने प्रेम से ढक लिया; उनके होठों से कभी भी ऐसा कोई शब्द नहीं निकला जो अनुग्रह न लाता हो; अपने सभी कार्यों में उन्होंने परम कुँवारीपन का प्रतिबिंब प्रकट किया। उनका बाहरी रूप उनके आंतरिक पूर्णता - अच्छाई और द्वेष की कमी - का प्रतिबिंब था।

संत अम्ब्रोज़ ऐसा कहते हैं। हमें एपिफानियस और निकिफ़ोरस की रचनाओं में परमेश्वर की माता की आध्यात्मिक पवित्रता और बाहरी रूप का वर्णन भी मिलता है:

– सभी परिस्थितियों में, उन्होंने एक गरिमामय आचरण और दृढ़ता बनाए रखी; उन्होंने बहुत कम बात की, केवल आवश्यक और अच्छे विषयों पर – उनके शब्द कानों को मीठे लगते थे; उन्होंने सभी के साथ उचित सम्मान से व्यवहार किया; प्रत्येक व्यक्ति के साथ उन्होंने उपयुक्त बातचीत की, बिना हँसे, बिना परेशान हुए, और निश्चित रूप से बिना गुस्सा हुए। वह मध्यम कद की थीं; उनकी रंगत गेहुँए रंग की थी; उनके बाल हल्के भूरे और कुछ सुनहरे रंग के थे; उनकी दृष्टि तीव्र और पैनी थी; उनकी आँखें जैतून के रंग की थीं; उनकी भौंहें हल्की ढलान वाली और घनी थीं; उनकी नाक मध्यम आकार की थी; उनके होंठ गुलाब के रंग के और मधुर वाणी वाले थे; उनका चेहरा पूरी तरह गोल नहीं था; उनके हाथ और उंगलियां लंबी थीं; उनमें कोई अहंकार नहीं था, बल्कि हर चीज़ में बिना किसी दिखावे के सादगी थी; वह आत्म-तुष्टि के किसी भी रूप से बहुत दूर थीं, और साथ ही उन्होंने परम विनम्रता का उदाहरण प्रस्तुत किया। उनके वस्त्र साधारण थे, बिना किसी कृत्रिम आभूषण के, जैसा कि आज तक सुरक्षित रहे उनके घूंघट से स्पष्ट है – संक्षेप में, उन पर व्याप्त दैवीय अनुग्रह उनके हर पहलू में प्रकट होता था।

इस प्रकार निकिफिोरस और एपफिेनियस, पृथ्वी पर अपने जीवन के दौरान परम पवित्र ईश्वर की माता के आध्यात्मिक और शारीरिक स्वरूप का वर्णन करते हैं।

अब, हालाँकि केवल स्वर्गीय आत्माएँ और धर्मी लोगों की आत्माएँ—जो परमेश्वर की माता के सामने खड़ी हैं और परमेश्वर तथा परम पवित्र कुँवारी दोनों को देखकर आनंदित होती हैं—ही परमेश्वर की माता के बारे में बता सकती हैं, जिन्होंने स्वर्गीय निवासों में अपनी जगह ले ली है और परमेश्वर के सिंहासन के दाहिने हाथ पर खड़ी हैं; केवल वे ही हमें उनके बारे में बता सकते हैं, जैसा कि उनकी पवित्रता की माँग है। हम, हालांकि, पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा—त्रिमूर्ति में एक ईश्वर—की महिमा करते हुए, ईश्वर के अनुसार, उनकी परम पवित्र माता की भी महिमा करते हैं, और हम उनकी आराधना भक्तिपूर्वक करते हैं, जो सभी पीढ़ियों से सदा के लिए महिमामय और धन्य हैं।

परमेश्वर की परम पवित्र माता के जीवन की विशिष्ट घटनाएँ, उनके जन्म के दिन से, उनके विशेष पर्वों पर वर्णित की जाती हैं: गर्भधारण, जन्म, मंदिर में समर्पण, घोषणा, साथ ही मसीह के जन्म और प्रभु के मंदिर में समर्पण पर। यहाँ, उनकी अमर निद्रोपम स्वर्गारोहण के वृत्तांत के बाद, उनकी जीवन-कथा को पूरा करने के लिए, हम यह बताएँगे कि मसीह के स्वर्गारोहण के बाद हमारी माता ने कहाँ और कैसे जीवन यापन किया।

पवित्र सुसमाचार लेखक लूका प्रेरितों के काम में लिखते हैं कि, प्रभु के स्वर्ग में आरोहण के बाद, उनके शिष्य जैतून के पहाड़ से यरूशलेम लौट आए; और, ऊपरी कक्ष (जहाँ मसीह का अंतिम भोज हुआ था) में प्रवेश करने के बाद, *'वे सभी कुछ स्त्रियों और यीशु की माता मरियम के साथ मिलकर लगातार प्रार्थना में लगे रहे'* (प्रेरितों के काम 1:13–14)। यीशु मसीह के स्वर्गारोहण के बाद, परमेश्वर की माता शिष्यों का एकमात्र सांत्वना, दुख में उनका आनंद, और विश्वास की एक दृढ़ शिक्षिका थीं। परमेश्वर की माता ने जो भी वचन और अद्भुत घटनाएँ अपने हृदय में संजोई थीं (लूका 2:19)— जिसकी शुरुआत गब्रियल के शुभवर्तमान से हुई, जिसमें कुँवारी के गर्भ से मसीह के गर्भधारण और जन्म की अद्भुत घोषणा थी, और जिसका समापन प्रभु के शिशु-काल और यूहन्ना द्वारा उनके बपतिस्मा तक के जीवन-काल के साथ हुआ— – यह सब उन्होंने अपने पुत्र के शिष्यों को प्रकट किया; पवित्र आत्मा से प्रचुर प्रकटवाक्यों को प्राप्त करके और स्वयं मसीह के जीवन में हुए सभी अद्भुत कार्यों की गवाह होकर, उस दिन तक जब प्रभु संसार में प्रकट हुए, परमेश्वर की माता ने उद्धारकर्ता के बपतिस्मा तक के जीवन का विस्तृत वृत्तांत देकर पवित्र प्रेरितों के विश्वास को दृढ़ किया। सभी विश्वासियों ने, उपर्युक्त ऊपरी कक्ष में रहते हुए, बिना रुके प्रार्थना की, और परमपिता से प्रभु द्वारा प्रतिज्ञा किए गए पवित्र आत्मा के वरदानों को प्राप्त करने की तैयारी की। और अवतरण के समय – प्रभु के स्वर्गारोहण के ग्यारहवें दिन, – पवित्र आत्मा आग की जीभों के रूप में प्रेरितों पर अवतरित हुआ (प्रेरितों के काम 2:1-4); पिता द्वारा भेजा गया सांत्वनादाता (यूहन्ना 14:16), सबसे पहले परम पवित्र कुँवारी पर अवतरित हुआ, जो अब तक उसका योग्य मंदिर रही थीं, जिसमें वह अनवरत रूप से निवास करता था। पवित्र आत्मा के वरदान परम धन्य कन्या पर पवित्र प्रेरितों की अपेक्षा कहीं अधिक प्रचुरता से बरसे, जैसे एक बड़ा पात्र अधिक पानी समा सकता है, और परम पवित्र कन्या, पवित्र आत्मा के वरदानों से सबसे समृद्ध पात्र, क्योंकि वह प्रेरितों, भविष्यद्वक्ताओं और सभी संतों से ऊपर उत्थित हैं, जैसा कि कलीसिया उन पर पुकारती है: 'सत्य में, हे पवित्र कुँवारी, तुम सभी से ऊपर उत्थित हो'; इसलिए उन्होंने भी पवित्र आत्मा के वरदानों को किसी और से अधिक पूर्ण रूप से प्राप्त किया।

ईश्वर की माता संत जॉन द थियोलोजियन के घर में रहती थीं, जो यरूशलेम के सबसे ऊँचे स्थान – सियोन पहाड़ी पर स्थित है: उसी क्षण से जब प्रभु ने क्रूस से अपनी माता से कहा, अपने प्रिय शिष्य की ओर इशारा करते हुए: *'हे स्त्री! देख, तेरा पुत्र'*, और शिष्य से कहा: *'देख, तेरी माता'* (यूहन्ना 19:26–27), यूहन्ना ने परम पवित्र कुँवारी को अपने घर में ले लिया और वास्तव में उनकी अपनी माता के रूप में सेवा की। – पवित्र आत्मा के अवतरण के बाद, पवित्र प्रेरित तुरंत सुसमाचार का प्रचार करने के लिए दुनिया भर में नहीं निकले, बल्कि प्रेरितों के काम से यह स्पष्ट है कि वे लंबे समय तक यरूशलेम में ही रहे। वहाँ यह वर्णित है कि, पवित्र प्रथम शहीद स्तेफन (प्रेरितों के काम 7:59-60) की हत्या के बाद, *'यरूशलेम में कलीसिया के विरुद्ध एक बड़ा सताव* शुरू हो गया*; और प्रेरितों को छोड़कर सब यहूदिया और सामरिया के विभिन्न हिस्सों में बिखर गए'* (प्रेरितों के काम 8:1); मसीह के शिष्य, परमेश्वर की शक्ति द्वारा संरक्षित, प्रभु के स्वर्गारोहण के समय से लेकर उस दिन तक जब *'राजा हेरोदेस ने कलीसिया के कुछ लोगों पर हाथ डाला कि उन्हें हानि पहुँचाए'* (प्रेरितों के काम 12:1), लगभग दस वर्षों तक यरूशलेम में रहे। यह सच है कि विर्णित अवधि के दौरान, पवित्र प्रेरित कभी-कभी अन्य देशों की यात्रा करते थे, जैसे कि पितरस और यूहन्ना एक साथ सामरिया (प्रेरितों के काम 8:14-15), या पतरस अकेले लिद्दा में, जहाँ उन्होंने आठ वर्षों से लकवाग्रस्त एनेयास को चंगा किया (प्रेरितों के काम 9:32-34), और योपा, जहाँ उन्होंने तबीथा को मृतकों में से जिलाया (प्रेरितों के काम 9:36–43), केसरिया, जहाँ उन्होंने शताब्दीकर्त्ता कोर्नेलियस को बपतिस्मा दिया (अध्याय 10), और अंतीयक, जहाँ उन्होंने अपने एपिस्कोपेट (धर्मप्रांतीय पद) का पहला केंद्र स्थापित किया; या, यूहन्ना के भाई याकूब की तरह, जो स्पेन गए, हालांकि वे बाद में यरूशलेम लौट आए। अपनी सेवकाई की शुरुआत में, पवित्र प्रेरितों ने सबसे बढ़कर इस्राएल के लोगों को उद्धार पहुँचाने का प्रयास किया, और साथ ही यरूशलेम में पहली कलीसिया की स्थापना की, जो सभी कलीसियाओं की जननी है, जैसा कि सेंट जॉन ऑफ़ डेमास्कस गाते हैं: 'हे पवित्र सियोन, गिरिजाघरों की माता, परमेश्वर का वासस्थान, आनन्दित हो: क्योंकि पापों की क्षमा तुझमें ही सबसे पहले हुई'; साथ ही, वे परमेश्वर की माता को यथासंभव बार-बार देखना और उनसे सीखना चाहते थे। पवित्र प्रेरितों ने, मानो, उन्हें मसीह की प्रतिनिधि के रूप में पूजते हुए, परमेश्वर की माता के परम सम्माननीय और गौरवशाली मुखमंडल को स्वयं मसीह के मुखमंडल के रूप में देखा; और, सदा-कन्या, जो भलाई से परिपूर्ण थीं, के वचनों को सुनकर, वे अकथनीय आध्यात्मिक आनंद से भर गए, और उनके शब्दों की मिठास से अपनी परीक्षाओं और दुर्भाग्यों की कड़वाहट को भूल गए। इसलिए, दूर-दराज के देशों से मसीह में विश्वास करने वाले कई लोग ईश्वर की माता को देखने और उनकी पवित्र बुद्धि से परिपूर्ण वाणी को सुनने के लिए यरूशलेम आए; क्योंकि मसीह और उनकी परम

पवित्र माता की ख्याति ब्रह्मांड के दूरस्थ कोनों तक फैलकर, कई लोगों को यरूशलेम में परम पवित्र कुँवारी के पास खींच लाई, जैसा कि एंटिओक के संत जॉन द थियोलोजियन को संत इग्नेशियस द गॉड-बेयरर द्वारा लिखे गए पत्र से स्पष्ट रूप से स्पष्ट है:

'यहाँ,' वह लिखता है, 'कई महिलाएँ हैं जो यीशु की माता को देखने की लालसा रखती हैं; वे लगातार आपके पास आने और उनसे मिलने का अवसर तलाशती रहती हैं, प्रभु यीशु को पालने वाली छाती से स्वयं को सटाने के लिए, और उनसे कुछ रहस्य जानने के लिए। यहाँ उन्हें परमेश्वर की माता और कुंवारी के रूप में पूजित किया जाता है, जो अनुग्रह और सद्गुणों से परिपूर्ण हैं; उनके बारे में कहा जाता है कि वह कष्टों और उत्पीड़नों में आनंदित होती हैं, गरीबी और अभाव में दुखी नहीं होतीं, और न केवल उन लोगों से बुरा नहीं मानतीं जो उनका अनादर करते हैं, बल्कि वह उन्हें भलाई भी करती हैं; आनंद के समय, वह गरीबों के प्रति विनिम्र और दयालु होती हैं, और उन्हें यथासंभव मदद करती हैं; फिर भी वह हमारे विश्वास के शत्रुओं के विरुद्ध दृढ़ खड़ी रहती हैं: वह हमारी नई भक्ति की शिक्षिका और सभी विश्वासियों के लिए हर अच्छे काम में मार्गदर्शक हैं; वह विशेष रूप से विनिम्र लोगों से प्रेम करती हैं, और स्वयं सभी के प्रति विनिम्र हैं; जिन्होंने भी उन्हें देखा है, वे उनकी प्रशंसा करते हैं। और जब यहूदी धर्मशास्त्री और फरीसी उनका मज़ाक उड़ाते हैं तो वह कितनी विनिम्र होती हैं! हमें पूर्ण विश्वास के योग्य लोगों द्वारा बताया गया है कि यीशु की माता मरियम में, उनकी पवित्रता के कारण, मानवीय स्वभाव स्वदूतिक स्वभाव के साथ एकीकृत प्रतीत होता है। यह सब हम में, जो इन बातों को सुनते हैं, एक अपार इच्छा जगाता है कि हम उस दिव्य—कह सकते हैं—अद्भुत और परम पवित्र चमत्कार को निहारें।

एक अन्य पत्र में, वही संत इग्नेशियस द गॉड-बेयरर फिर से संत जॉन द थियोलोजियन को लिखते हैं:

– यदि अवसर मिला, तो मेरा इरादा आपके पास आने का है, ताकि मैं यरूशलेम में एकत्रित विश्वासियों को, और विशेष रूप से यीशु की माता को देख सकूँ: उनके बारे में कहा जाता है कि वह सम्माननीय, कृपामयी हैं और सभी में आश्चर्य जगाती हैं, और हर कोई उन्हें देखना चाहता है; वास्तव में, कौन नहीं चाहेगा कि वह कुँवारी को देखे और उस से बात करे जिसने सच्चे ईश्वर को जन्म दिया?

संत इग्नेशियस के जॉन द थियोलोजियन को लिखे इन पत्रों से, कोई भी आसानी से उस तीव्र लालसा को समझ सकता है, जिसके साथ संतों ने परमेश्वर के जीवित तीर्थस्थल, परम पवित्र कुँवारी मरियम को निहारने का प्रयास किया, और जिन्हें उन्हें देखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ, वे स्वयं को सबसे धन्य मानते थे। सच्चे अर्थ में धन्य हैं वे नेत्र जिन्होंने उद्धारकर्ता मसीह के द्वारा उन्हें देखा, और धन्य हैं वे कान जिन्हें उनके परम सम्मानित ओठों से वे वचन सुनने का सौभाग्य मिला जो मनुष्य को आध्यात्मिक जीवन में वापस लाते हैं!

उन्हें कितनी आनंद और अनुग्रह प्राप्त हुआ!

इसी कारण से प्रभु ने अपनी अति पवित्र माता को पृथ्वी पर छोड़ा, ताकि उनकी उपस्थिति, मार्गदर्शन, शिक्षाओं और उनके पुत्र तथा ईश्वर से की गई उनकी प्रार्थनाओं के द्वारा, कलीसिया, यद्यपि संघर्ष में थी, गुणित, दृढ़ और इतनी बढ़े कि वह प्रभु के लिए अपना जीवन बलिदान करने का साहस कर सके। ईश्वर की माता ने सभी को बल दिया, सभी को पवित्र आत्मा के आनंद से सांत्वना दी, और सभी के लिए प्रार्थना की। जब पवित्र प्रेरितों को कैद किया गया, तो परमेश्वर की माता ने करुणा से भरे हृदय से उनके लिए प्रार्थना की – और प्रभु ने उनके पास एक स्वर्गदूत भेजा, जिसने रात में जेल के द्वार खोल दिए और उन्हें बाहर निकाल लिया (प्रेरितों के काम 5:18–19)। जब पवित्र प्रथम शहीद स्तेफन को मृत्युदंड के लिए ले जाया गया , तो परमेश्वर की माता दूर से उनका पीछा कर रही थीं, और जब उन्होंने किद्रोन नाले के पास, जोसाफात की घाटी में संत स्तेफन पर पत्थर चलाना शुरू किया (प्रेरितों के काम 7:57–60), वह दूर एक पहाड़ी पर यूहन्ना द थियोलोजियन के साथ खड़ी थीं, वहां से उनकी मृत्यु को निहार रही थीं और परमेश्वर से विनिम्रतापूर्वक प्रार्थना कर रही थीं कि प्रभु शहीद को बल दें और उनकी आत्मा को अपने हाथों में ग्रहण करें। जब *'साऊल कलीसिया को उजाड़ रहा था'* (प्रेरितों के काम 8:3), विश्वासीयों का उत्पीड़न कर रहा था, तब परमेश्वर की माता ने उसके लिए प्रभु से इतनी हार्दिक आँसुओं के साथ प्रार्थना की कि उसने उसे एक क्रूर भेड़िये से एक नम्र मेमने में, एक शत्रु से एक प्रेरित में, एक उत्पीड़क से ब्रह्मांड के एक शिष्य और शिक्षक में बदल दिया। और आदमि चर्च ने परम पवित्र थिओटोकोस से वे कौन से आशीर्वाद नहीं पाए, ठीक वैसे ही जैसे एक स्तनपान करने वाला बच्चा अपनी माँ से प्राप्त करता है? उन्होंने इस अक्षय स्रोत से कौन-सी कृपा नहीं प्राप्त की? उनकी देखभाल और अनुग्रहपूर्ण प्रभाव के बिना ही चर्च का पोषण और परिपक्वता नहीं हुई – इतनी हद तक मजबूत हुई कि नरक के द्वार उस पर हावी नहीं हो सकते (मत्ती 16:18); यही कारण है कि स्वयं परमेश्वर की माता, दाऊद के शब्दों में, अपने बच्चों पर प्रसन्न होने वाली

माँ की तरह प्रसन्न हुईं (भजन संहिता 112:9)। उन्होंने देखा कि कलीसिया के बच्चे लगातार बढ़ रहे थे: इस प्रकार, शुरू से ही, पवित्र प्रेरित पतरस के उपदेश द्वारा, 3,000 लोग परिवर्तित हुए (प्रेरितों के काम 2:41), फिर 5,000 (प्रेरितों के काम 4:4), और फिर और भी अधिक। पवित्र प्रेरितों ने सुसमाचार का प्रचार करके यरूशलेम लौटने पर, परमेश्वर की अति पवित्र माता को भी संपूर्ण ब्रह्मांड में मसीह की कलीसिया के प्रसार के बारे में बताया। ईसाई प्रचार की सफलता ने उन्हें आध्यात्मिक आनंद से भर दिया और उन्हें अपने पुत्र और परमेश्वर की स्तुति करने के लिए प्रेरित किया।

लेकिन फिर हेरोद के हाथों चर्च पर अत्याचार हुआ: उसने स्पेन से लौटे, यूहन्ना के भाई याकूब को तलवार से मार डाला, और फिर पतरस को गिरफ्तार कर उसे भी उसी मृत्यु पर मारने के इरादे से जेल में डाल दिया (प्रेरितों के काम 12:1–4), तब, एक स्वर्गदूत द्वारा जेल की बेड़ियों से संत पतरस की चमत्कारिक रिहाई के बाद, यह आवश्यक हो गया कि प्रेरित स्वयं यहूदियों के क्रूर उत्पीड़न से बचने के लिए यरूशलेम छोड़ दें; वे दुनिया भर में बिखर गए, यह निर्धारित करने के लिए पासा फेंक रहे थे कि उनमें से किसे किस देश में प्रचार करने के लिए भेजा जाएगा। लेकिन बिछड़ने से पहले, पवित्र प्रेरितों ने एक धर्म-सूत्र तैयार किया, ताकि वे सर्वत्र मसीह में पवित्र विश्वास का एकरूप से प्रचार और स्थापना कर सकें। प्रत्येक लॉटरी द्वारा निर्धारित स्थान पर चला गया; केवल ईश्वर का एक भाई, संत जेम्स, यरूशलेम में ही रहा, जिसे प्रभु स्वयं यरूशलेम का बिशप नियुक्त कर चुके थे। उत्पीड़न से भागते हुए, धर्मशास्त्री संत जॉन भी परमेश्वर की माता के साथ रवाना हो गए, जिनके द्वारा उन्हें पुत्र के रूप में गोद लिया गया था: उन्होंने यहूदियों का क्रोध शांत होने तक, भीषण उत्पीड़न और यातना के आगे झुकते हुए, यरूशलेम छोड़ दिया; लेकिन, व्यर्थ में समय बर्बाद न करने के लिए, ईश्वर की माता और संत यूहन्ना सुसमाचारकार एफ़िसुस गए, जहाँ दैवज्ञ को पासे द्वारा नियुक्त किया गया था। ईश्वर की परम पवित्र माता का संत जॉन के साथ एफिसुस में यह प्रवास निम्नलिखित से स्पष्ट रूप से पुष्ट होता है: तृतीय सार्वभौमिक परिषद के पितृगणों द्वारा कॉन्स्टेंटिनोपल के पुरोहितों को लिखा गया एक पत्र मौजूद है, जो नेस्टोरियस के विरुद्ध एफिसुस में आयोजित हुई थी; इस पत्र में निम्नलिखित अंश है: 'दुष्ट विधर्म के संस्थापक नेस्टोरियस, जिसे एफ़िसुस में परिषद के पवित्र पिताओं और बिशपों द्वारा (मुकदमे के लिए) बुलाया गया था—जहाँ कभी धर्मज्ञ संत जॉन और पवित्र कुँवारी, परमेश्वर की माता मरियम, निवास करती थीं—वह अपने ही दुष्ट अंतरात्मा से दोषी ठहराए जाने और स्वयं को चर्च से बहिष्कृत कर लेने के कारण, उनके सामने उपस्थित होने की हिम्मत नहीं कर सका; इसलिए, तीन बार बुलाए जाने के बाद, उसे पवित्र परिषद के धर्मी निर्णय द्वारा दोषी ठहराया गया और पुरोहित पद से हटा दिया गया।" एफ़िसुस में सुसमाचार लेखक यूहन्ना के साथ परमेश्वर की माता के प्रवास के बारे में इन शब्दों से, यह स्पष्ट है कि परम पवित्र कन्या, मसीह के प्रिय शिष्य के साथ, वास्तव में यरूशलेम छोड़कर एफ़िसुस में कुछ समय बिताईं। और परमेश्वर की माता ने केवल एफ़िसुस ही नहीं, बल्कि मसीह की शिक्षाओं के प्रकाश से प्रबुद्ध अन्य शहरों और देशों का भी भ्रमण किया: परंपरा के अनुसार, वह संत इग्नेशियस द गॉड-बेयरर के साथ अंतीयक में थीं, जिन्हें उन्होंने अपने आगमन से पहले अपनी यात्रा की सूचना भेजी थी: 'मैं तुम्हें और तुम्हारी भेड़-बकरियों को देखने के लिए यूहन्ना के साथ आऊँगी।' यह भी कहा जाता है कि सिर्वपवित्र थियोटोकोस साइप्रस द्वीप[5564] पर चार दिन बाद जी उठे लाजरस के साथ थीं, जो वहाँ बिशप के रूप में सेवा कर रहे थे, और माउंट अथोस पर भी। माउंट अथोस के एक भिक्षु स्टीफन ने इसके बारे में लिखा है।

हमारे प्रभु यीशु मसीह के स्वर्ग में आरोहण के बाद, पवित्र प्रेरित, परमेश्वर की माता के साथ, ज़ियोन पर्वत पर अविभाज्य रूप से रहे; वहाँ वे सांत्वनादाता की प्रतीक्षा कर रहे थे, जैसा कि प्रभु ने उन्हें आज्ञा दी थी, उन्हें निर्देश देते हुए कि जब तक उन्होंने प्रतिज्ञात पवित्र आत्मा को प्राप्त नहीं कर लिया, तब तक वे यरूशलेम से न निकलें (लूका 24:49)। मसीह के शिष्यों ने यह निर्धारित करने के लिए पासा फेंका कि उनमें से किसे और कौन सी विशिष्ट भूमि उन्हें परमेश्वर के सुसमाचार का प्रचार करने के लिए आवंटित की जाएगी; परमेश्वर की परम पवित्र माता ने कहा:

'और मैं भी सुसमाचार के प्रचार में भाग लेना चाहती हूँ, और मैं आप लोगों के साथ पासा फेंकना चाहती हूँ, ताकि मुझे वह भूमि प्राप्त हो जिसे परमेश्वर निर्दिष्ट करेंगे।'

ईश्वर की माता के वचनों पर, पवित्र प्रेरितों ने श्रद्धा और भय के साथ पासा फेंका, और आइवरी का देश उनका भाग बन गया[5565] । परमेश्वर की अति पवित्र माता ने अपनी पर्ची प्रसन्नता से स्वीकार की और तुरंत – पवित्र आत्मा

[5564] भूमध्य सागर के उत्तर-पूर्वी छोर पर एक द्वीप।

[5565] आधुनिक जॉर्जिया।

के आग की जीभों के रूप में अवतरति होने पर – इवेरयिा की भूमि के लिए प्रस्थान करना चाहा, लेकनि परमेश्वर के स्वर्गदूत ने उनसे कहा:

'अभी यरूशलेम न छोड़ो, बल्कि कुछ समय के लिए यहीं ठहरो; तुम्हें जो देश दयिा गया है, वह अंतमि दनिों में प्रकाशति होगा और वहाँ तुम्हारा राज्य स्थापति होगा; कुछ समय बीत जाने के बाद, तुम उस देश में सुसमाचार का प्रचार करने का कार्य आरंभ करोगी, जहाँ परमेश्वर तुम्हें भेजेंगे।'

और परमेश्वर की अति पवित्र माता यरूशलेम में काफी लंबे समय तक रहीं।

चार दनि पुराने लाजरस साइप्रस द्वीप पर रहते थे; वहाँ उन्हें पवित्र प्रेरति बरनबास द्वारा बशिप नयिुक्त कयिा गया था। वे हमारे प्रभु की परम पवित्र माता को देखने के लिए बहुत तरसते थे, जनि्हें उन्होंने लंबे समय से नहीं देखा था, लेकनि यहूदयिों के डर से यरूशलेम आने की हम्मित नहीं कर सके। यह जानकर, परमेश्वर की माता ने लाजरस को एक पत्र लखिा: जसिमें, उन्होंने उसे सांत्वना दी और उसे अपने लिए एक जहाज भेजने का नरि्देश दयिा ताकि वह साइप्रस में उससे मलि सकें; सर्वपवित्र कुँवारी ने स्वयं उसे अपने लिए यरूशलेम आने का आदेश नहीं दयिा। पत्र पढ़कर लाजरुस अत्यंत प्रसन्न हुआ, और साथ ही ईश्वर की माता की वनिम्रता पर आश्चर्यचकति भी हुआ; बनिा कसिी देरी के, उसने एक जहाज और एक उत्तर उसके लिए भेजा। परमेश्वर की अति धन्य माता, मसीह के प्रयि शष्यि यूहन्ना और अन्य लोगों के साथ, जो श्रद्धापूर्वक उनका साथ दे रहे थे, जहाज पर सवार हुईं, और वे सभी साइप्रस के लिए रवाना हो गए। लेकनि अचानक वपिरीत हवा ने जहाज को माउंट अथोस के पास एक बंदरगाह में धकेल दयिा; यह सुसमाचार प्रचार का संक्षपि्त कार्य था, जसिके बारे में देवदूत ने परमेश्वर की माता से कहा था। पूरा माउंट अथोस[5566] मूर्तयिों से भरा हुआ था: वहाँ अपोलो का एक बड़ा मंदरि और पूजा स्थल था, जहाँ भवष्यिवाणी, जादू-टोना और अन्य दैवीय अनुष्ठान कएि जाते थे। सभी वधिर्मी इस स्थान का अत्यधकि सम्मान करते थे, इसे देवताओं द्वारा चुना हुआ मानते थे; लोग पूजा करने के लिए ब्रह्मांड के सभी कोनों से यहाँ आते थे, और यहाँ उन्हें भवष्यिवक्ताओं से अपने प्रश्नों के उत्तर मलिते थे। और इसलिए, जब परमेश्वर की अति पवित्र माता को ले जाने वाला जहाज बंदरगाह में प्रवेश कयिा, तो सभी मूर्तयिों ने तुरंत पुकार लगाई:

'हे अपोलो के बहकाए हुए सभी लोगो, महान ईश्वर यीशु की माता मरयिम से मलिने के लिए पहाड़ से उतरकर क्लेमेंट के बंदरगाह पर आओ' (इस प्रकार राक्षसों ने, जो अपनी इच्छा के वरिुद्ध मूर्तयिों के भीतर फँसे हुए थे और ईश्वर की शक्ति से बाध्य थे, सत्य की घोषणा की, ठीक वैसे ही जैसे एक बार गेरासेनयिों के देश में प्रभु से पुकार करने वालों ने कयिा था: *'हे परमेश्वर के पुत्र यीशु, हमारा तुझसे क्या संबंध है? क्या तू हमें पीड़ा देने समय से पहले आ गया है?*' (मत्ती 8:29)।

यह सब सुनकर, लोग चकति हो गए और उपरोक्त बंदरगाह की ओर समुद्र तट पर दौड़ पड़े; जहाज़ और परमेश्वर की माता को देखकर, उन्होंने उनका सम्मानपूर्वक स्वागत कयिा और अपनी सभा में पूछा:

– आपने कसि प्रकार के ईश्वर को जन्म दयिा है? और उसका नाम क्या है?

ईश्वर की अति पवित्र माता ने अपने दैवीय ओठ खोलकर लोगों को मसीह यीशु के बारे में सब कुछ वस्तिार से बताया। सभी लोग ज़मीन पर गरि पड़े, उस से उत्पन्न ईश्वर की आराधना करने लगे, और जसिने उन्हें जन्म दयिा था, उसके प्रति बहुत सम्मान दखिाया; वश्विास में आने के बाद, वे बपतस्मिा ग्रहण कर लिए, क्योंकि ईश्वर की माता ने वहाँ कई चमत्कार कएि थे। बपतस्मिा के बाद, उन्होंने जहाज़ पर उनके साथ आए लोगों में से एक को नव-प्रबुद्ध लोगों का नेता और शकि्षक नयिुक्त कयिा, और आत्मा में आनंदति होकर कहा:

'यह स्थान मेरी वरिासत हो, जो मुझे मेरे पुत्र और मेरे ईश्वर ने दी है।'

इन शब्दों के बाद, परमेश्वर की अति पवित्र माता ने लोगों को एक बार फरि यह कहते हुए आशीर्वाद दयिा:

'ईश्वर की कृपा इस स्थान पर और यहाँ रहने वालों पर बनी रहे, जो वश्विास और श्रद्धा के साथ मेरे पुत्र और मेरे ईश्वर की आज्ञाओं का पालन करते हैं – उन्हें कठनि परश्रिम के बनिा जीवन के लिए आवश्यक सभी चीजें प्रचुर मात्रा में प्राप्त होंगी; उन्हें स्वर्गीय जीवन प्रदान कयिा जाएगा, और समय के अंत तक मेरे पुत्र की दया इस स्थान से दूर नहीं होगी; मैं इस स्थान की रक्षक और परमेश्वर के समक्ष इसकी प्रबल मध्यस्थ रहूँगी।

[5566] माउंट अथोस (अथोस) – एक संकीर्ण, पहाड़ी प्रायद्वीप जो द्वीपसमूह (एजयिन सागर) में बाहर की ओर नकिला हुआ है, और जसि ग्रीक पूर्व के लिए मठवासी जीवन का केंद्र माना जाता है। प्राचीन काल में यहाँ मठवासी जीवन उभरा, हालांकि यह सीरयिा और फलिस्तिीन की तुलना में कुछ बाद की बात है।

यह कहने के बाद, ईश्वर की माता ने एक बार फरि लोगों को आशीर्वाद दयिा और यूहन्ना तथा उनके साथ आए लोगों के साथ जहाज़ पर सवार होकर साइप्रस के लिए रवाना हो गईं। उन्होंने लाजरस को गहरे दुख में पाया, क्योंकि परमेश्वर की अति पवित्र माता की यात्रा बहुत लंबी रही थी, और उसे डर था कि यह देरी किसी तूफान के कारण हुई होगी: वह परमेश्वर की व्यवस्था से माउंट अथोस पर हुई घटनाओं से अनजान था। उनके आगमन से , ईश्वर की माता ने उनके दुख को आनंद में बदल दयिा; उपहार के रूप में उन्होंने उनके लिए एक ओमोफोरीयोन और एक पोर्चुई लाया था, जिसे उन्होंने स्वयं उनके लिए बनाया था; उन्होंने उन्हें यरूशलेम और माउंट अथोस में हुई सभी घटनाओं के बारे में बताया। और उन्होंने हर चीज़ के लिए ईश्वर का धन्यवाद किया। थोड़े समय के लिए साइप्रस में रहने, साइप्रोट चर्च के ईसाइयों को सांत्वना देने और उन्हें आशीर्वाद देने के बाद, परमेश्वर की माता एक जहाज पर सवार होकर यरूशलेम चली गईं। (यहाँ तक, माउंट अथोस के एक भिक्षु, स्टीफन)।

उपरोक्त देशों का भ्रमण करने के बाद, सर्वपवित्र कुँवारी मरियम ने पुनःयरूशलेम में, संत यूहन्ना सुसमाचारकार के घर में निवास ग्रहण किया; सर्वशक्तिमान ईश्वर के दैवीय हस्त ने उन्हें ईश्वर-हत्यारा यहूदी सभा की ईर्ष्यालु साज़िशों से संरक्षित रखा, जो ईश्वर के पुत्र और उन पर विश्वास करने वालों के विरुद्ध युद्ध करना कभी बंद नहीं करती थी। बेशक, कटु यहूदी यीशु की माता को नहीं बख्शते और हर संभव तरीके से उनका नाश कर देते; लेकिन ईश्वर की विशेष व्यवस्था ने जीवित ईश्वर के सन्दूक को ढाल प्रदान की, ताकि अविश्वासियों का हाथ उन पर न पड़े। एक बार, उनके पुत्र, हमारे प्रभु मसीह ने, नासरत के सभाघर में उपदेश देने के बाद, जब क्रोध से भरे यहूदियों ने उन्हें पहाड़ की चोटी पर ले जाकर वहाँ से नीचे फेंकने का प्रयास किया, वह उनके बीच से बिना किसी हानि के निकल गए: यद्यपि यहूदियों ने उन्हें देखा, वे उन पर हाथ नहीं डाल सके या उन्हें छू भी नहीं सके, क्योंकि परमेश्वर की शक्ति ने उन्हें पीछे धकेल दिया और उन्हें उसी स्थिति में रोके रखा, क्योंकि परमेश्वर के पुत्र के दुख सहने का समय अभी नहीं आया था (लूका 4:29-30); प्रभु ने अपनी परम पवित्र माता पर भी वही शक्ति प्रकट की, यहूदियों द्वारा रची गई साजिशों को विफल करते हुए और उन पर उनकी योजनाओं को नाकाम करते हुए: अक्सर यहूदियों ने परमेश्वर की माता को पकड़ने का प्रयास किया और उन्हें यातना देने के बाद, उन्हें मार डालने का प्रयास किया, लेकिन वे कुछ भी नहीं कर सके। इतनी तीव्र घृणा और शत्रुता के बीच, परम पवित्र कुँवारी यरूशलेम में भेड़ियों के बीच एक भेड़ और काँटों के बीच एक लिली की तरह रहीं, अक्सर अपने पूर्वज दाऊद के शब्दों को दोहराती रहीं, जो वास्तव में उनके लिए सच हुए: *'यहोवा मेरा प्रकाश और मेरा उद्धार है; मैं किस से डरूँगा? प्रभु मेरे जीवन का दुर्ग है: मैं किससे डरूँगा? यद्यपि दुष्ट, मेरे विरोधी और शत्रु, मेरा मांस नोच खाने को मुझ पर चढ़ा करें, तौभी वे स्वयं ठोकर खाकर गिरेंगे। यद्यपि एक सेना मेरे विरुद्ध डेरा डाले, तौभी मेरा हृदय न डरेगा; यद्यपि युद्ध मेरे विरुद्ध खड़ा हो, तौभी मैं आशा रखूँगा'* (भजन संहिता 26:1–3), क्योंकि हे मेरे पुत्र और मेरे ईश्वर, आप मेरे साथ हैं। – संत डायोनिसियस द एरोपागिट, जिन्हें एथेन्स में संत पौलुस प्रेरित ने मसीह के धर्म में परिवर्तित किया था और जिन्होंने तीन वर्षों तक वफादारी से उनका साथ दिया था, उन्होंने परमेश्वर की अति पवित्र माता का दर्शन करने और उनकी आराधना करने के लिए यात्रा की। वह परमेश्वर की माता को देखने के लिए गहराई से लालायित थे, और इसलिए, अपने धर्मांतरण के तीन साल बाद, अपने गुरु, प्रेरित संत पौलुस के आशीर्वाद से, वे यरूशलेम आए: परमेश्वर की अति पवित्र माता को देखकर, वे महान आध्यात्मिक आनंद से भर गए। संत पौलुस प्रेरित को लिखे अपने पत्र में, संत डायोनिसियस द एरोपागिट ने ईश्वर की माता के दर्शन का वर्णन इस प्रकार किया है।

'मेरे लिए, हमारी महान नेता, यह निस्संदेह था, – मैं ईश्वर के समक्ष कहता हूँ – कि सर्वोच्च ईश्वर के अलावा कुछ भी इतना दिव्य शक्ति और अद्भुत अनुग्रह से परिपूर्ण नहीं हो सकता; और फिर भी यह मानवीय मन के लिए यह समझना असंभव है कि मैंने हमारे प्रभु यीशु मसीह की पवित्रतम माता को देखा, जो मुखमंडल में अधिक सुंदर हैं और पवित्रता में सभी स्वर्गीय स्वर्गदूतों से श्रेष्ठ हैं; यह मुझे ईश्वर की कृपा और प्रेरितिक पद की गरिमा, तथा स्वयं परम अनुग्रहशील कन्या की अनुपम दया और करुणा से प्रदान किया गया था। मैं एक बार फिर ईश्वर की सर्वशक्तिमत्ता, उद्धारकर्ता की कृपा और कन्या की महान महिमा के समक्ष स्वीकार करता हूँ, उनकी माता, कि जिब मैं, यूहन्ना—जो सुसमाचार प्रचारकों और भविष्यद्वक्ताओं में प्रथम है, जो देह में रहते हुए भी स्वर्ग में सूर्य की भाँति चमकता है—के साथ, उस सुन्दर और परम पवित्र कुँवारी के समक्ष ले जाया गया, तो मैं एक महान दिव्य प्रकाश से आच्छादित हो गया जिसने मेरी आत्मा को प्रबुद्ध किया; साथ ही, मैंने इतनी अद्भुत सुगंध अनुभव की कि मेरी आत्मा और शरीर इस महिमा के प्रकट होने और शाश्वत आनंद की पूर्व-झलक को मुश्किल से सहन कर सके; मेरा हृदय और मेरी आत्मा उनकी महिमा और उनकी दिव्य कृपा से अभिभूत हो गए। मैं उस ईश्वर की गवाही देता हूँ, जो परम सम्मानित कुँवारी गर्भ में

निवास करता था, कि यदि मेरी नव-प्रबुद्ध आत्मा में आपके दैवीय उपदेश और विधान निहित न होते, तो मैं उसे सच्चे ईश्वर के रूप में पहचान लेता और केवल ईश्वर को अर्पित होने वाली पूजा से उसका सम्मान करता: मनुष्यों द्वारा प्रदान किया गया कोई भी सम्मान या महिमा, चाहे वह ईश्वर द्वारा कितनी भी प्रशंसित क्यों न हो, उस आनंद की तुलना नहीं कर सकती जिसका अनुभव मैंने, अपनी अयोग्यता के बावजूद, उस समय किया था; वह समय मेरे लिए परम आनंद का समय था। मैं अपने सर्वोच्च और परम धन्य ईश्वर, दैवी कुँवारी, प्रेरितों में महान योहन, और आप, जो चर्च की शोभा और अजेय दल के नेता हैं, का धन्यवाद करता हूँ, जिन्होंने मुझे कृपापूर्वक इतनी बड़ी कृपा प्रदान की है।

संत डायोनिसियस द एरोपागिट के इस पत्र से, हम स्पष्ट रूप से देख सकते हैं कि पृथ्वी पर अपने जीवन के दौरान हमारी परम पवित्र माता का मुख दिव्य अनुग्रह से कैसे प्रकाशित हुआ था, और जिन्होंने उन्हें देह में देखा, उनके आत्मा कैसे प्रबुद्ध हुए और उनके हृदय आध्यात्मिक आनंद से भर गए। दोनों लिंगों के नव-प्रबुद्ध लोग सभी दिशाओं से बड़ी संख्या में उनकी ओर उमड़ पड़े; एक सच्ची माँ के रूप में, उन्होंने सभी को समान रूप से स्वीकार किया , बिना किसी पक्षपात के, सभी पर अपनी कृपा की वर्षा करते हुए—बीमारों को स्वास्थ्य, कमजोरों को शक्ति, दुखी लोगों को सांत्वना, और सभी को, बिना किसी अपवाद के, विश्वास में दृढ़ता, आशा में स्थिरता और प्रेम में दिव्य आनंद प्रदान किया, साथ ही पापियों को पश्चाताप का अवसर दिया।

जबकि संत जॉन के घर में रह रही थीं, सर्वपवित्र कुँवारी अक्सर उन स्थानों पर जाती थीं जिन्हें उनके प्रिय पुत्र और ईश्वर ने अपने पैरों के पदचिन्हों और अपने रक्त के बहाव से पवित्र किया था। इस प्रकार वह बेथलहम गईं, जहाँ उन्होंने एक अनुपम तरीके से अपनी कुँवारी अवस्था को बनाए रखते हुए, मसीह ईश्वर को जन्म दिया; लेकिन ईश्वर की माता विशेष रूप से उन स्थानों पर अक्सर आती थीं जहाँ हमारे प्रभु ने अपनी इच्छा से पीड़ा सहन की। मातृ प्रेम से प्रेरित होकर उन्होंने वहाँ भरपूर आँसू बहाए, और कहा:

'यहाँ मेरे प्रिय पुत्र को कोड़ों से पीटा गया; यहाँ उन्हें काँटों का मुकुट पहनाया गया; यहाँ वे क्रूस उठाए चलें; यहाँ उन्हें सूली पर चढ़ाया गया।'

हालाँकि, कब्र पर, परमेश्वर की माता अगणित आनंद से भर गईं और आनंद के आँसुओं के साथ उच्चारण किया:

'और यहाँ उन्हें दफनाया गया था, और तीसरे दिन वे महिमा में पुनर्जीवित हुए।'

इसके अतिरिक्त, यह भी बताया जाता है कि कुछ शत्रुतापूर्ण यहूदियों ने महापुजारियों और शास्त्रियों को सूचित किया कि यीशु की माता मरियम, हर दिन गोलगोथा जाती थीं और उस कब्र पर, जहाँ उनके पुत्र यीशु को रखा गया था, घुटने टेकती थीं, रोती थीं और धूप जलाती थीं; जिस पर उन्होंने उस स्थान से किसी भी ईसाई के गुजरने को रोकने के लिए एक पहरा लगा दिया। इससे हम देखते हैं कि उस समय भी ईमानदार ईसाइयों की पवित्र स्थानों की यात्रा करने और वहाँ मसीह ईश्वर की पूजा करने की धार्मिक प्रथा शुरू हो गई थी, जिन्होंने अपनी इच्छा से हमारे लिए दुख उठाया: इस संबंध में पहला उदाहरण स्वयं परमेश्वर की माता ने दिया, जिनका अनुसरण अन्य पवित्र महिलाओं और पुरुषों ने किया। इस प्रकार, मुख्य याजकों और धर्मशास्त्रियों ने, जो द्वेष और हत्या की मंशा से भरे थे, एक पहरेदार तैनात किया, जिन्हें यह आदेश दिया गया था कि वे किसी को भी यीशु की कब्र के पास न आने दें, और उनकी माता को मार डालें। लेकिन परमेश्वर ने पहरेदारों को अंधा कर दिया, ताकि वे उनकी माता को मसीह यीशु की कब्र के पास आते हुए न देख सकें। और जब परम धन्य कुँवारी, अपनी आदत के अनुसार, कब्र पर आईं, तो पहरेदार न तो उन्हें देख सके और न ही उनके साथ वालों को। काफी समय बाद, वे कब्र से चले गए और, शपथ लेकर, मुख्य याजकों और शास्त्रियों को आश्वस्त किया कि उन्होंने यीशु की कब्र पर किसी को आते हुए नहीं देखा था। ईश्वर की परम पवित्र माता अक्सर जैतून के पहाड़ पर भी जाती थीं, जहाँ से हमारे प्रभु स्वर्ग में आरोहण हुए थे: घुटने टेककर, उन्होंने पत्थर पर पड़े मसीह के पैरों के निशानों को चूमा। ईश्वर की माता ने उस क्षण प्रचुर आँसुओं के साथ प्रार्थना की कि प्रभु उन्हें भी अपने पास ले जाएँ: निस्संदेह, उनमें, पवित्र प्रेरित पौलुस से भी कहीं अधिक, *मसीह के साथ होने की 'लौटकर जाने की इच्छा'* (फिलि. 1:23) थी, और वे अक्सर दाऊद के शब्दों को दोहराती थीं: *'मैं कब आकर परमेश्वर के सामने उपस्थित होऊँगा!' मेरे आँसू दिन-रात मेरा भोजन रहे हैं* (भजन संहिता 41:3–4), मैं अपने प्रिय पुत्र को कब देखूँगी? मैं उसके पास कब जाऊँगी? उस के पास जो परमेश्वर पिता के दाहिने हाथ पर विराजमान है? (मरकुस 16:19) मैं उसकी महिमा के सिंहासन के सामने कब खड़ी होऊँगी? मैं उसका मुख निहार-निहार कर कब तृप्त होऊँगी? हे अति मधुर पुत्र और मेरे परमेश्वर! सियोन पर दया दिखाने का समय आ गया है (देखें भजन संहिता 50:20)—मुझ पर, अपनी माता पर, दया करने का समय आ गया है, जो अब तक इस संसार की दुखपूर्ण घाटी में, आपका मुख न देखकर, शोक मनाती रही है; मेरी आत्मा को इस शरीर से, जैसे किसी जेल से, मुक्त कर दो; जैसे

हरिण जल के सोते के लिए तरसता है, वैसे ही हे परमेश्वर, मेरी आत्मा तेरे लिए तरसती है, ताकि जब तेरा महिमा मुझे प्रकट हो तो मैं आनंदित होऊँ (भजन संहिता 41:2)। अत्यंत पवित्र कुँवारी कभी-कभी जैतून के पहाड़ पर काफी समय तक रहती थीं: पहाड़ के तल पर गेथ्सेमनी का बगीचा और ज़ेबेदी की एक छोटी सी संपत्ति थी, जो संत जॉन द थियोलोजियन को विरासत में मिली थी। गेथ्सेमनी के बगीचे में, हमारे प्रभु ने अपनी स्वेच्छा से उठाई गई पीड़ा के बीच, तब तक प्रार्थना की जब तक कि वे पसीने से लथपथ नहीं हो गए, अपने घुटनों के बल झुकते और अपने स्वर्गीय पिता के सामने साष्टांग दंडवत करते रहे (मत्ती 26:36–44)। यहाँ, इसी स्थान पर, उनकी परम पवित्र माता ने भी अपनी प्रार्थनाएँ अर्पित कीं, वे भी घुटनों और मुँह के बल गिर पड़ीं और अपने आँसुओं से जमीन को भीगा दिया; यहीं पर प्रभु ने अपने स्वर्गदूत के माध्यम से उन्हें सांत्वना दी, जिसने उन्हें स्वर्ग में उनके शीघ्र आरोहण के बारे में सूचित किया। एक यूनानी इतिहासकार, जॉर्जी केद्रिन की गवाही के अनुसार, स्वर्गदूत परम पवित्र मसीह की माता को उनके निधन से पहले दो बार प्रकट हुए: पहली बार उनकी सुप्त अवस्था से पंद्रह दिन पहले, और दूसरी बार तीन दिन पहले; देवदूत से, ईश्वर की माता ने स्वर्गीय खजूर की टहनी प्राप्त की, जिसे पवित्र प्रेरित और सुसमाचार लेखक यूहन्ना द थियोलोजियन ने उनके शव-शय्या के आगे वहन किया। कुछ, जैसे कि सार्डिस के बिशप मेलिटिन, बताते हैं कि मसीह के प्रिय शिष्य ईश्वर की माता के निद्रारोहण से पहले एफ़िसुस चले गए और वहाँ से, अन्य प्रेरितों की तरह लेकिन उनसे पहले, एक बादल में उठा लिए गए और ईश्वर की माता के अंतिम संस्कार के लिए लाए गए। हालांकि, अन्य, जैसे मेटाफ्रास्टस और सोफ्रोनीयस, बिना किसी संकोच के यह दावा करते हैं कि संत योहन द थियोलोजियन ने कभी भी परमेश्वर की माता को नहीं छोड़ा, जिनके द्वारा उन्हें एक पुत्र के रूप में गोद लिया गया था, बल्कि, एक सच्चे पुत्र के रूप में, उन्होंने उनकी सेवा की, और उनके निधन तक अपने घर में आश्रय प्रदान किया। केवल कभी-कभार, बहुत कम समय के लिए, वह आसपास के क्षेत्रों में जाता था (जैसा कि हमने ऊपर प्रेरितों के काम से देखा है: इस प्रकार संत जॉन द थियोलोजियन प्रेरित पतरस के साथ सामरिया में थे), लेकिन उन्होंने यह स्वयं ईश्वर की माता की सहमति और आशीर्वाद से किया और तुरंत यरूशलेम में उनकी सेवा में लौट आए; और उनके लौटने तक, परमेश्वर के भाई संत जेम्स, जिन्होंने कभी अपना धर्मप्रांत – यरूशलेम – नहीं छोड़ा, उन्होंने परम पवित्र थिओटोकोस (ईश्वर माता) की सेवा की। भले ही कोई उन लोगों से सहमत हो जो कहते हैं कि योहन द थियोलोजियन को, अन्य पवित्र प्रेरितों की तरह, एक बादल पर स्वर्गारोहण किया गया था, यह निस्संदेह यरूशलेम के सबसे निकटवर्ती क्षेत्र से ही था।

15 अगस्त को परम पवित्र मसीह की माता के स्वर्गारोहण का भव्य उत्सव धर्मनिरपेक्ष ग्रीक सम्राट मॉरिस[5567] के शासनकाल में स्थापित किया गया था। – जैसे हम परमेश्वर की माता के पृथ्वी से स्वर्ग में सर्व-महिमामय

[5567] एक विश्वसनीय वृत्तांत है कि जुवेनल ने, परंपरा का हवाला देते हुए, सम्राट मार्सियन (450–457) के समक्ष, ईश्वर की माता के देह सहित स्वर्ग में चमत्कारिक रूप से आरोहण करने संबंधी उस समय प्रचलित कथाओं की प्रामाणिकता की पुष्टि की। उन्होंने तो ईश्वर की माता के कफ़न भी कॉन्स्टेंटिनोपल भेजे, जिन्हें सम्राज्ञी पल्केरिया ने ब्लाचर्ना में ईश्वर की माता के चर्च में रखा था, जिसे उन्होंने मार्सियन के शासनकाल की शुरुआत में बनवाया था। जुवेनल का यह वृत्तांत बेसिल के 10वीं सदी के मासिक कैलेंडर में 2 जुलाई को दर्ज है; इसके लेखक—चाहे स्वयं सम्राट हों या कॉन्स्टेंटिनोपल का कोई निवासी—निस्संदेह विश्वसनीय स्रोतों के आधार पर ब्लाचेर्नाए के चर्च में दफन वस्त्रों के बारे में जानते थे। इतिहासकार निकिफोरोस कैलिस्टोस (14वीं सदी) इस बारे में विस्तार से बात करते हैं। इससे यह स्पष्ट है कि कॉन्स्टेंटिनोपल में, मार्सियन और पुलचेरिया के शासनकाल के दौरान, ईश्वर की माता के निद्रोत्सव का पर्व मनाया जाता था, जिसका जीवंत प्रतीक उनके दफन के वस्त्र थे। छंद प्रोलॉग्स से यह स्पष्ट है कि निद्रोत्सव का पर्व ब्लाचेर्ना के चर्च में मनाया जाता था। यह कल्पना करना मुश्किल है कि कॉन्स्टेंटिनोपल में—जिसे कॉन्स्टेन्टाइन महान ने ईश्वर की माता की सुरक्षा में सौंपा था, और जहाँ न केवल एक चर्च स्वयं कॉन्स्टेन्टाइन द्वारा और तीन पुलकेरिया द्वारा उनके लिए बनाई गई थीं—वहाँ चौथी या, कम से कम, पाँचवीं शताब्दी में पवित्रतम कुँवारी के निद्रोत्सव का कोई उत्सव नहीं मनाया जाता था, जब कई संतों के पर्व मनाए जाते थे। इसलिए इतिहासकार निकिफ़ोरस की गवाही के आधार पर यह मानना अनुचित है कि डोर्मिशन का पर्व सबसे पहले सम्राट मॉरिसियस (592–602) द्वारा शुरू किया गया था। निकिफ़ोरस लिखते हैं: 'सम्राट (जस्टिनियन) ने आदेश दिया कि प्रिस्तुति पर्व को पूरे विश्व में एक पर्व के रूप में सम्मानित किया जाए; जस्टिन ने मसीह के जन्म के संबंध में भी ऐसा ही किया; और कुछ ही समय बाद, मॉरिस ने आदेश दिया कि परमेश्वर की परम पवित्र माता के निद्रोपवेश का पर्व 15 अगस्त को मनाया जाए'। निकिफ़ोरस के शब्दों का अर्थ यह समझना चाहिए कि मॉरिस ने इस पर्व को अधिक भव्य बनाया और, सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि इसके उत्सव के लिए एक विशिष्ट तिथि - 15 अगस्त - स्थापित की। उस समय तक, कुछ लोग डॉर्मिशन का उत्सव जनवरी में मनाते थे: जेरोम की प्राचीन रोमन मार्टायरोलॉजी में, ईश्वर की माता के डॉर्मिशन को 18 जनवरी के रूप में सूचीबद्ध किया गया है, जबकि 15 अगस्त को असेम्प्शन के रूप में सूचीबद्ध किया गया है। टूर्स के ग्रेगरी (मृत्यु 594) का कहना है कि फ्रांस में ईश्वर की माता के स्वर्गलोक में गौरवमय आरोहण का उत्सव ग्यारहवें महीने में, यानी जनवरी में (मार्च से गिनती करके) मनाया जाता था। कॉप्टिक और अबिसिनियाई स्रोतों में, 16 जनवरी को माँ ईश्वर की निद्रा और 16 अगस्त को स्वर्ग में उनकी आरोहण का प्रतीक माना जाता है। निद्रा का पर्व फिर पोप गेलासियस प्रथम (492-496) के सैक्रामेंटरी में मिलता है, जो सम्राट मॉरिस के शासनकाल से एक पूरी सदी पहले की बात है। यह 4वीं और 5वीं शताब्दी से पहले किसी एक रोमन

आरोहण का आनंदपूर्वक उत्सव मनाते हैं, वैसे ही हम उसको महमिा दें जो उनसे जन्मे और जन्हिोंने उन्हें महमिा के साथ स्वर्ग में ग्रहण कयिा – हमारे प्रभु ईसा मसीह को, जो पतिा और पवत्रि आत्मा के साथ सदा के लिए महमिामय हैं। आमीन।

ट्रोपारयिन, स्वर 1:

प्रसव में तूने अपनी कुँवारी अवस्था को अक्षुण्ण रखा; नद्रिोपस्थतिमिें तूने संसार को नहीं छोड़ा, हे परमेश्वर की माता: तू जीवन की माता होकर जीवन में प्रवेश कर गई, और अपनी प्रार्थनाओं द्वारा तू हमारे प्राणों को मृत्यु से बचाती है।

कॉन्टाकयिन, स्वर 2:

प्रार्थना में सदा-सतर्क ईश्वर की माता, और उनकी मध्यस्थता में हमारी अटूट आशा, कब्र या मृत्यु द्वारा बंधी नहीं रह सकीं: क्योंकि जीवन की माता जीवन की गोद में चली गईं, वह सदा-कुँवारी जनिमें जीवन-दाता वास करते थे।

29 अगस्त

16 अगस्त (पुराना संस्करण)

हमारे प्रभु यीशु मसीह की अक्षय प्रतमिा का एदेसा से कॉन्स्टेंटनिोपल स्थानांतरण

16 अगस्त को स्मरण कयिा जाता है

कैलेंडर में 16 अगस्त को दखिाई देता है, और यह ज्ञात है कि मसीह के जन्म के अपवाद के साथ, अन्य प्रमुख पर्व पूर्व से पश्चमि में आए, जैसा कि प्राचीन कैलेंडर में उनके नामों से स्पष्ट है; सोमनशिन के पर्व के संबंध में भी यही माना जाना चाहिए। पूर्व में, 7वीं शताब्दी की शुरुआत में, यरूशलेम के पैट्रआर्क मोडेस्टस (मृत्यु 634) ने इस पर्व पर एक उपदेश दयिा; उसी शताब्दी में या 8वीं शताब्दी की शुरुआत में, क्रीट के संत एंड्रयू (मृत्यु 712) ने डोर्मशिन पर तीन उपदेशों में इस दनि के भव्य उत्सव के बारे में बताया। डोर्मशिन का पर्व 715 की सबसे पुरानी बची हुई फेस्टल गॉस्पेल और 8वीं सदी तथा बाद की शताब्दयिों के सभी अन्य धर्मपरायण कैलेंडर में दर्ज है। प्रसद्धि संतो-चरत्रिाकार व्लादमिीर के बशिप सेरजयिस, ऊपर दए गए वचिारों के आधार पर तर्क देते हैं, 'नस्सिंदेह, परमेश्वर की माता के महमि्नति शरीर में स्वर्ग में आरोहण पर ईसाई वश्विास सत्य है। यदि बाढ़-पूर्व युग के हनोक और वधि-पूर्व युग के नबी एलयिा को देह सहति स्वर्ग में उठा लयिा गया था, तो क्या करूबों में सबसे सम्मानति और सेराफमिों में सबसे गौरवशाली की सबसे पवत्रि देह को वास्तव में क्षय के लिए छोड़ दयिा गया होगा? शहीदों और तपस्वयिों की सेनाएँ अपने सुगंधति अवशेषों की अक्षुण्णता से महमिामंडति होती हैं, जनिसे चंगाई की धाराएँ प्रवाहति होती हैं; उनमें से कई लोगों के शरीर, जो कभी अज्ञात थे, पृथ्वी पर काफी समय रहने के बाद, दर्शन और चमत्कारों के माध्यम से वश्विासयिों के सामने प्रकट हुए हैं; फरि क्या ईश्वर की माता का सबसे पवत्रि शरीर, यद्यपि अक्षुण्ण है, पृथ्वी पर कहीं अंधकार में छपिा हुआ है? ईसाई जगत का ऐसा कोई भी कोना नहीं है जहाँ ईश्वर माता के अवशेषों का कोई अंश न पाया जाता हो; ऐसा इसलिए है क्योंकि उनके अत्यंत पवत्रि शरीर के साथ स्वर्ग में आरोहण के वश्विास का समय बहुत प्राचीन है, जो प्रेरतिों और शहीदों के समय से चला आ रहा है। ईश्वर की माता का कमरबंद और उनके पवत्रि वस्त्र ईसाई दुनयिा द्वारा पूजा के लिए उपलब्ध हैं; श्रद्धापूर्वक संरक्षति और पृथ्वी पर टुकड़ों में वतिरति, उन्होंने चमत्कार कए हैं और करते रहते हैं। उनकी अनगनित प्रतमिाएं हर जगह इतनी सारी चंगाई और संकेत प्रदान करती हैं; फरि भी उनका पवत्रि शरीर पृथ्वी पर एक अज्ञात स्थान पर पड़ा है। नहीं, यह असंभव है! महमिामंडति शहीदों के पवत्रि अवशेष, समय के साथ, कभी-कभी—पृथ्वी पर रहने वालों के पापों के कारण—पार्थवि जगत की सामान्य नयिति के अधीन हो जाते हैं: आग, बाढ़, भूकंप के वनिाश और बर्बर लोगों द्वारा अपवत्रि कए जाने। ईश्वर की माता के परम पवत्रि शरीर के मामले में ऐसा नहीं होने दयिा गया है; इसे इस क्षणभंगुर दुनयिा के मनमानी परविर्तनों के लिए नहीं छोड़ा गया है, न ही इसे पृथ्वी में छपिाकर संतों के शरीरों के सामने नम्र कयिा गया है; बल्कि, यह स्वर्ग में इसके गौरवमय आरोहण के माध्यम से उनसे अतुलनीय रूप से अधकि उत्कृष्ट है। (द कम्प्लीट ल्यूनर कैलेंडर ऑफ द ईस्ट, खंड II। द होली ईस्ट, आर्चबशिप सेरजयिस द्वारा। व्लादमिीर, 1901। 15 अगस्त, पृष्ठ 323-326)।

[5568]जिस समय हमारे प्रभु यीशु मसीह पृथ्वी पर प्रकट हुए, जब वे मनुष्यों के बीच रहते थे और यहूदिया तथा पड़ोसी प्रदेशों के नगरों और गांवों में परमेश्वर के राज्य का प्रचार करते हुए यात्रा कर रहे थे, *"लोगों में हर प्रकार की बीमारी और हर पीड़ा को ठीक करते हुए*, यूफ्रेटिस नदी के दूसरी ओर स्थित एक सीरियाई शहर एदेसा में अब्गार नामक एक राजकुमार रहता था। वह एक असाध्य रोग—कोढ़—से पीड़ित था: उसका शरीर नीले रंग के घावों से ढका हुआ था; भीतर से उसे अपनी हड्डियों में दर्द और पूरे शरीर में कमजोरी महसूस होती थी। प्रभु यीशु मसीह और उनके द्वारा किए गए महान चमत्कारों के बारे में खबर अवगार तक पहुँची – कि कैसे, अपने वचन से, उन्होंने कोढ़, पक्षाघात और हर बीमारी को चंगा किया; और अवगार ऐसे चमत्कारों के कर्ता को अपनी आँखों से देखने के लिए बहुत लालायित था, इस आशा में कि वह स्वयं उनसे चंगाई पाएगा। हालाँकि, चूँकि राजकुमार स्वयं यहूदिया की यात्रा नहीं कर सकता था, उसने प्रभु यीशु को एक निवेदन भेजा, उनसे विनती करते हुए कि वे एदेसा में उसके पास आएं। यह सुनिश्चित न होने पर कि उसकी प्रार्थना स्वीकार की जाएगी, अबगार ने कुशल चित्रकार अनानियास को फिलिस्तीन भेजा, उसे एक प्रतिमा पर प्रभु के चेहरे को चित्रित करने का निर्देश देते हुए; राजकुमार अपनी बीमारी में कम से कम यह सांत्वना चाहता था, अर्थात् मसीह यीशु के चेहरे की छवि को देखना; जो कुछ उसने सुना था, उस पर आधारित विश्वास से प्रेरित होकर मसीह के प्रति उसका प्रेम इतना महान था। प्रभु यीशु के लिए अबगार का संदेश इस प्रकार था: 'एदेसा का राजकुमार अबगार, यरूशलेम के प्रदेशों में देह में प्रकट हुए, अच्छे उद्धारकर्ता यीशु को, आनंदित होकर।

मुझे आपके और आपके महिमामय चमत्कारों के बारे में समाचार मिला है, कि आप बिना चिकित्सकों या औषधियों की सहायता के रोगों को ठीक करते हैं—आप अंधों को दृष्टि प्रदान करते हैं, लंगड़ों को चलने की क्षमता प्रदान करते हैं, लोगों से अशुद्ध आत्माओं को निकालते हैं, वर्षों से बिस्तरों पर पड़े कुष्ठरोगियों और पक्षाघातग्रस्त लोगों को स्वच्छ करते हैं, एक शब्द से चंगा करते हैं, और मृतकों को जीवित करते हैं: आपके बारे में सुनकर, कि आप ऐसे अद्भुत चमत्कार करते हैं, मैं आपके संबंध में दो निष्कर्षों पर पहुँचा हूँ: या तो आप ईश्वर हैं, जो स्वर्ग से उतरे हैं, या आप ईश्वर के पुत्र हैं। इसीलिए मैं आपसे यह विनम्र निवेदन करता हूँ: कृपया मेरे पास आने की कृपा करें और मेरी उस असाध्य बीमारी को ठीक करें, जिससे मैं कई वर्षों से पीड़ित हूँ; मैंने यह भी सुना है कि यहूदी आपसे घृणा करते हैं और आपको हानि पहुँचाना चाहते हैं। जहाँ तक मेरी बात है, मेरा एक नगर है—यद्यपि छोटा, फिर भी सुंदर और हर अच्छी चीज़ से भरपूर; अतः मेरे पास आओ और मेरे नगर में मेरे साथ रहो, जहाँ हमें अपनी ज़रूरत की हर चीज़ मिल जाएगी।'

अबगर के इस संदेश के साथ, चित्रकार अनानियास यरूशलेम पहुँचा। उसने प्रभु यीशु को एक बड़ी भीड़ के बीच मैदान में उपदेश देते देखा, लेकिन भीड़ के घने होने के कारण वह उनके पास नहीं जा सका। भीड़ के छंटने की प्रतीक्षा करते हुए, अनानियास ज़मीन से थोड़ा ऊपर उठे हुए एक पत्थर पर चढ़ गया; जहाँ से उसने उद्धारकर्ता के मुख पर ध्यान से निहारते हुए उसे चित्रित करने का इरादा किया; फिर भी अनानिया ऐसा नहीं कर सका, क्योंकि सर्व-दृष्टा ने, जो चित्रकार के इरादे को पसंद नहीं करते थे, अपने चेहरे को दिव्य, अकल्पनीय महिमा और अनुग्रह से बदल दिया, जो मानव हाथ की पहुँच से परे था। अनानिया ने बहुत समय तक प्रयास किया, लेकिन कुछ भी हासिल नहीं कर सका। तब प्रभु ने प्रेरित थॉमस को आज्ञा दी कि वह जाकर उस मनुष्य को लाए जो एक चट्टान पर खड़ा होकर उनका चेहरा चित्रित कर रहा था। जब उसे उनके सामने लाया गया और उसने अभी बोलना शुरू भी नहीं किया था, तब प्रभु ने उसका नाम लेकर पुकारा और उसके काम की ओर इशारा करते हुए, उसे चित्रकार अनानियास कहकर संबोधित किया और उसके आने का कारण प्रकट किया, और कहा:

'एदेसा से तुम्हारे राजकुमार अवगार का पत्र, जो तुम मेरे पास लाए हो, वह कहाँ है?'

[5568] मसीह के अवगार के साथ संबंधों का पहला विवरण चर्च के इतिहासकार पम्फिलिया के यूसेबियस (मृत्यु 340) की रचना में मिलता है; उनके अपने शब्दों में, उन्होंने इस विवरण को अपनी इतिहास-पुस्तक में शामिल किया, जिसे उन्होंने न केवल परंपरा पर बल्कि एडेसा के अभिलेखागार में खोजे गए लिखित दस्तावेजों पर भी आधारित किया था। यूसेबियस के बाद चौथी शताब्दी में एफ्रेम द सीरियन, पांचवीं शताब्दी में अर्मेनियाई इतिहासकार मोसेस ऑफ खोरेन, और छठी शताब्दी में प्रोकोपियस ने इसका उल्लेख किया। पांचवीं शताब्दी के अर्मेनियाई इतिहासकार मोसेस ऑफ खोरेन उस घटना का वर्णन करते हैं जिसके माध्यम से अब्गार ने यीशु मसीह के बारे में सुना, अर्थात्: अब्गार को मसीह के बारे में अपने दूतों से पता चला, जिन्हें उसने फिनिसिया, फिलिस्तीन, सीरिया और मेसोपोटामिया पर शासन करने वाले रोमन ट्रिब्यून के पास भेजा था; अपनी वापसी यात्रा पर, दूत यरूशलेम से होकर गुज़रे और वहाँ उन्होंने उद्धारकर्ता के चमत्कार देखे। 10वीं सदी के लेखक कॉन्स्टेंटाइन पोर्फिजिनिटस (मृत्यु 959), जो 'हस्तनिर्मित नहीं की गई छवि' की उत्पत्ति का सबसे विस्तृत विवरण देते हैं, बताते हैं कि अवगार को मिस्र की यात्रा से लौटे अपने सेवक अनानियास द्वारा मसीह के बारे में सूचित किया गया था।

प्रभु की दूरदर्शिता से चकित और विस्मित होकर, अनानियास ने तुरंत राजकुमार का पत्र निकाला और काँपते हुए उसे उद्धारकर्ता के हाथों में रख दिया। पत्र पढ़ने के बाद, प्रभु ने अवगार को निम्नलिखित लिखा:

'धन्य है तू, अवगार, जिसने मुझे न देखकर भी मुझ पर विश्वास किया है; क्योंकि मेरे विषय में लिखा है कि जो मुझे देखते हैं वे विश्वास नहीं करते, परन्तु जो मुझे नहीं देखते हैं वे मुझ पर विश्वास करेंगे और अनन्त जीवन का वारिस होंगे। तुम मुझे लिखते हो कि मैं तुम्हारे पास आऊँ, परन्तु मेरे लिए यह उचित है कि मैं उस उद्देश्य को पूरा करूँ जिसके लिए मुझे भेजा गया है, और उसे पूरा करके मुझे उस पिता के पास लौटना चाहिए जिसने मुझे भेजा है। और जब मुझे उनके पास उठा लिया जाएगा, तो मैं अपने शिष्यों में से एक को तुम्हारे पास भेजूँगा, जो तुम्हें तुम्हारी बीमारी से पूरी तरह चंगा कर देगा, और तुम्हें और तुम्हारे साथ वालों को (बपतिस्मा के द्वारा) अनंत जीवन प्रदान करेगा।'

अबगार को यह संदेश लिखने के बाद, प्रभु यीशु मसीह ने इसे एक मुहर से सील कर दिया जिस पर हिब्रू लिपि में निम्नलिखित शिलालेख था: 'ईश्वर से एक दर्शन, एक दिव्य चमत्कार।' तब प्रभु ने, अबगार और कलाकार की इच्छा पूरी करते हुए, पानी मंगवाया और अपने परम पवित्र मुख को धोकर, उन्हें भेंट किए गए चार कोनों वाले कपड़े से पोंछ दिया। और, आश्चर्य की बात! साधारण पानी रंग में बदल गया, और दिव्य मुख की परम पवित्र प्रतिमा उस कपड़े पर अंकित हो गई। इस छवि को एक पत्र के साथ अनानियास को देते हुए, प्रभु ने कहा:

'इसे ले जाओ और उसे दे दो जिसने तुम्हें भेजा है।' (ये प्रभु के पृथ्वी पर उनके कष्टों[5569] से पहले के अंतिम दिन थे।

[5570]और अनानियास एडसा लौट आए और अपने राजकुमार को पत्र के साथ कपड़े पर अंकित मसीह के चेहरे की छवि—जो मानव हाथों से नहीं बनी थी—दे दी। उन्हें लेकर अबगार आनंदित हो गया और स्नेहपूर्वक चूमने लगा; मसीह की प्रतिमा के सामने झुकते ही उसे अपनी बीमारी से तुरंत राहत मिली, इतना कि उसके चेहरे पर कोढ़ का केवल एक छोटा सा हिस्सा ही रह गया, जब तक कि प्रभु द्वारा भेजा गया शिष्य उसके पास नहीं आया।

[5569] कुछ लोग अबगर से यीशु मसीह को और यीशु मसीह से अबगर को लिखे पत्रों की प्रामाणिकता पर आपत्ति जताते हैं। वे कहते हैं: 1) सुसमाचार में इस घटना का कोई उल्लेख नहीं है। लेकिन सुसमाचार में कहा गया है: *'यीशु ने अपने चेलों के सामने और भी बहुत से चिन्ह दिखाए, जो इस पुस्तक में लिखे नहीं हैं* (यूहन्ना 20:30)। सुसमाचार के अनुसार, यीशु मसीह की ख्याति सीरिया तक फैल गई थी, और वहाँ से बीमारों को उसके पास लाया जाता था (मत्ती 4:24)। 2) यूसेबियस से पहले की पहली तीन शताब्दियों के लेखक इस मामले पर चुप्पी साधे हुए हैं। लेकिन यह भी, पहले की तरह ही, एक नकारात्मक प्रमाण है। सिसेरो का ग्रंथ *डे रिपब्लिका* 1822 तक खोजा नहीं गया था; इसलिए यह आश्चर्य की बात नहीं है कि पूर्वी यूनानी लेखक—जिनमें से कई की अपनी रचनाएँ भी संरक्षित नहीं हैं—इस पत्र से अनभिज्ञ थे। हालाँकि, जॉर्ज सिनिसेलस, 215 ईस्वी के अंतर्गत, बताते हैं कि अफ्रीका के जूलियस ने एदेसा के पवित्र राजा अबगार के बारे में बात की; इसका उल्लेख खोरन के मूसा (5वीं शताब्दी, पुस्तक 2, अध्याय 9) द्वारा भी किया गया है। 3) धन्य जेरोम इस मामले पर मौन हैं। लेकिन यूसेबियस जेरोम की जगह लेते हैं। उन्होंने स्वयं इन कृत्यों को देखा और उन्हें अपनी 'चर्च इतिहास' में ग्रीक में प्रकाशित किया। 4) धन्य ऑगस्टीन का कहना है कि यीशु मसीह ने कुछ भी नहीं लिखा। वह यह बात मनिचियों के साथ एक विवाद में कहते हैं, जो कथित तौर पर मसीह द्वारा स्वयं अपने बारे में लिखी गई रचनाओं पर निर्भर थे; और सामान्य रूप से, उनका मतलब यह है कि यीशु मसीह ने अपने बारे में शिक्षाओं को लिखित रूप में नहीं दिया, न ही उनका ऐसा कोई इरादा था—और यह बात यीशु मसीह द्वारा अबगर को लिखे गए संक्षिप्त पत्र पर लागू नहीं हो सकती। यीशु मसीह ने उन फरीसियों के सामने पृथ्वी पर झुक गए जिन्होंने व्यभिचार में पकड़ी गई एक स्त्री को उनके पास लाया था। 5) यीशु मसीह के पत्र में यूहन्ना (XX, 29) का उल्लेख है। यूहन्ना को नहीं, बल्कि यशायाह की भविष्यवाणी (6:9, 50, 15:65, 2) को। 6) यूसेबियस के अनुसार, यीशु मसीह की मृत्यु का वर्ष, सेल्यूसीड युग का 340वां वर्ष, उनके जीवन का 30वां वर्ष (टिबेरियस के शासन का 15वां वर्ष) के अनुरूप है। यूसेबियस अपनी स्वयं की कालक्रम का उपयोग नहीं करते, बल्कि एडेसा की कालक्रम का उपयोग करते हैं; प्राचीन काल में, कई लोगों का मानना था कि यीशु मसीह ने अपनी सेवकाई के पहले वर्ष में, अर्थात् अपने जीवन के 30वें वर्ष में, कष्ट सहे। हालाँकि, यह सर्वविदित है कि प्राचीन पांडुलिपियों में तारीखों में त्रुटियाँ आम हैं। 7) पोप गेलासियस ने अपने फरमान द्वारा इस कृति को अपोक्रीफल (apocryphal) माना; लेकिन इसका केवल यह मतलब था कि इसे कैननिकल (canonical) लेखन में शामिल नहीं किया गया था; फिर भी, सभी अपोक्रीफल लेखन अविश्वसनीय नहीं होते हैं। – स्लावोनिक मेनोलॉजियन (Slavonic Menologion) में कहा गया है कि प्रेरित थैडियस को निनीशियन शहर, विरिति में दफनाया गया था। हिप्पोलिटस से जुड़े, या उनके नाम से लिखे गए, प्रेरितों पर लिखे गए ग्रंथ में, विरिति में शहादत को बारह प्रेरितों में से एक, थदेउस, या यहूदा (19 जून) को श्रेय दिया गया है।

[5570] कांस्टेंटिन पोर्फ्योजेनिटिस द्वारा दर्ज की गई एक परंपरा बताती है कि जब अनानियास, अपने देश लौटते हुए, हिएरापोलिस शहर पहुँचे, तो वे शहर के बाहर रुके और ताज़ी बनी ईंटों के ढेर में मसीह के चेहरे की एक छवि छिपा दी। आधी रात के आसपास, शहर के निवासियों ने उस स्थान के चारों ओर आग देखी और वहाँ छिपी हुई पवित्र वस्तु को खोज निकाला; उसी समय, यह भी पता चला कि ईंटों में से एक पर उद्धारकर्ता की छवि अंकित हो गई थी। हाइरापोलिस के निवासियों ने इस ईंट को रख लिया, जबकि अनानियास को रिहा कर दिया गया। कॉन्स्टेंटिन लिखते हैं कि उनके समय में भी यह ईंट हाइरापोलिस में संरक्षित थी।

प्रभु के स्वैच्छिक दुख, पुनरुत्थान और स्वर्ग में आरोहण के बाद, सत्तर प्रेरितों में से एक, संत थैडियस, दैवीय कृपा से एडेसा आए: मसीह में पवित्र विश्वास के बारे में अवगार को पर्याप्त रूप से शिक्षित करने के बाद, संत थदेउस ने राजकुमार को बपतिस्मा दिया; और जब अवगार पवित्र बपतिस्मा के कुंड में गया और बपतिस्मा लिया, तो कुष्ठ रोग के शेष निशान तुरंत मिट गए, और वह कुंड से पूरी तरह से स्वच्छ, शरीर और आत्मा से स्वस्थ होकर निकला। अवगार के साथ-साथ उसके पूरे परिवार और पूरे शहर का बपतिस्मा हुआ, और एडसा में हमारे प्रभु यीशु मसीह, एकमात्र सच्चे परमेश्वर, के नाम की महिमा हुई। एदेसा के द्वारों पर किसी विधर्मी देवता की एक मूर्ति खिड़ी थी, जो अनादि काल से वहाँ थी, और जिसके सामने शहर में प्रवेश करने वाला हर कोई पूजा करने के लिए बाध्य था। अवगार ने इस मूर्ति को उसकी जगह से गिरा दिया और उसे नष्ट कर दिया; फिर उसने द्वारों के ऊपर पत्थर की दीवार में एक गोलाकार गुहा बनवाई, जिसमें बारिश का पानी नहीं गिर सकता था; मानव हाथों से न बनी मसीह की छवि वाले कपड़े को सड़न-रोधी लकड़ी की एक तख्ती पर रखकर, अवगार ने उसे सोने और कीमती पत्थरों से ढका और सजाया और उसे द्वार के ऊपर दीवार में स्थापित कर दिया; इसके अलावा, उसने सोने के अक्षरों में निम्नलिखित शब्द अंकित किए:

– हे मसीह हमारे ईश्वर! जो कोई आप पर विश्वास करेगा वह लज्जित नहीं होगा।

और अवगर ने शहर में प्रवेश करने वाले और शहर से बाहर निकलने वाले सभी को मसीह की दिव्य प्रतिमा की पूजा करने का आदेश दिया; उसने एक कानून जारी किया जिसमें प्रभु की प्रतिमा को बिना चूके ऐसा सम्मान देने का आदेश दिया गया; अवगर का यह धार्मिक आदेश, जो कानून में अंकित था, कई वर्षों तक पालन किया गया: न केवल उसके जीवनकाल में, बल्कि उसके बाद एदेसा पर शासन करने वाले उसके पुत्र और उसके पोते के शासनकाल में भी। तब, एडसा के राजपद को संभालने वाले अवगर के एक परपोते के अधीन, नगर में प्राचीन मूर्तिपूजक अधर्म पुनर्जीवित हो गया: यह राजकुमार, भ्रष्ट हो जाने पर, मसीह से मुँह मोड़ बैठा और मूर्तिपूजा में लिप्त हो गया। शहर के द्वार पर उद्धारकर्ता की प्रतिमा को देखकर—जिसे अंदर आने और बाहर जाने वाले सभी लोग पूजते थे—राजकुमार, मसीह का शत्रु होने के नाते, क्रोधित हो गया; उसने दीवार से उस दैवीय प्रतिमा को गिराने और उसकी जगह एक मूर्ति रखने का प्रयास किया। प्रभु से एक विशेष प्रकटोक्ति के माध्यम से यह जानकर, एदेसा के बिशप अपने पुरोहितों के साथ रात में शहर के द्वार पर आए; सीढ़ियाँ चढ़कर, उन्होंने मसीह की पवित्र प्रतिमा के सामने जैतून के तेल से भरा एक जलता हुआ दीपक रखा; तब बिशप ने पवित्र प्रतिमा को एक मिट्टी की पट्टी से ढक दिया, उसके बाद ईंटें रखीं, और इस तरह छिपाए गए स्थान को चॉक से ढककर दीवार के बराबर कर दिया – जैसा कि उन्हें एक दैवीय प्रकटिकरण द्वारा आज्ञा दी गई थी। जब मानव हाथों से न बनी मसीह की प्रतिमा अदृश्य हो गई, तो दुष्ट राजकुमार ने अपनी योजना त्याग दी। और, बहुत समय बाद, लोगों के मन से पवित्र प्रतिमा की स्मृति मिट गई, और वह स्थान जहाँ इसे छिपाया गया था, भुला दिया गया; कई वर्षों बाद इसके चमत्कारिक प्रकट होने के दिन तक किसी को भी इसके बारे में पता नहीं था, जो इस प्रकार हुआ।

धार्मिक सम्राट जस्टिनियन के दिनों में, फारस के राजा खुसरव एक बड़ी सेना के साथ एडेसा पहुँचा, उस पर घेरा डाल दिया, और एक भयंकर तथा लंबे घेराबंदी शुरू कर दी। जब नागरिक, भ्रम और बड़े भय से थके हुए, आँसुओं के साथ ईश्वर से प्रार्थना कर रहे थे, तो एक रात एडसा के बिशप यूलावीयस को एक अत्यंत तेजस्वी दुल्हन, जो बड़ी महिमा से चमक रही थी, दिखाई दी; उसने अपनी उंगली शहर के द्वारों और दीवार में एक स्थान की ओर इशारा करते हुए कहा:

'इन द्वारों के ऊपर छिपी हुई है मसीहा उद्धारकर्ता की दिव्य, अविनाशी प्रतिमा; तुम्हारे लिए अच्छा होगा कि तुम इसे अवरोध के पीछे से बाहर निकालो।'

बिशप द्वारों पर दौड़े और दीवार में बताए गए स्थान पर चढ़कर, उन्होंने सब कुछ ठीक वैसा ही पाया जैसा उन्हें प्रकटवाणी में बताया गया था; उस घेरे की पहचान कर लेने पर, उसने उसे खोदा और तख्ती हटा दी; और उसने मसीह की सबसे शुद्ध और सबसे पवित्र प्रतिमा को पूरे और सुरक्षित पाया, और दीपक, इतने वर्षों बीत जाने के बावजूद, अभी भी जलता हुआ और तेल से भरा हुआ था; और जिस तख्ते से प्रतिमा ढकी गई थी, उसी पर मसीह के चेहरे की एक और छवि प्रकट हुई थी, जो मानव हाथों की बनी नहीं थी। बिशप ने उद्धारकर्ता की छवि वाले कपड़े को लिया और इसे नागरिकों को दिखाया; और सभी के लिए बड़ी खुशी हुई, और हर कोई प्रभु में विश्वास करके साहस से भर गया। बिशप ने प्रार्थना करते हुए , उस चित्र को शहर की दीवारों के साथ-साथ ले जाया, और शहर पर घेराबंदी कर रहे फारसी सैनिकों को उद्धारकर्ता का चेहरा दिखाया; और तुरंत ही, दैवीय शक्ति से पीछे हटकर, पूरी फारसी सेना भाग खड़ी हुई। इस प्रकार एदेसा हमारे परमेश्वर मसीह की दया और उनकी सबसे पवित्र प्रतिमा, जो मनुष्य के हाथों से नहीं बनी थी, के प्रकट होने से अपने शत्रुओं से मुक्त हुई।

फरि, कई साल बाद, जब रोमानुस पर्पल-बॉर्न—जन्हिें लकिापेनेस के नाम से भी जाना जाता है—ग्रीस में सम्राट के रूप में शासन कर रहे थे, और वे शक्ति का बंटवारा लयिो द वाइज़ के पुत्र और अपने दामाद कॉन्स्टेंटनि के साथ कर रहे थे, ईश्वर के दव्यि मुख की अमानवीय छवि वाला पवत्रि वस्त्र, जसिे सारासेनों ने कब्जा कर लयिा था, एडसा से कॉन्स्टेंटनिोपल में स्थानांतरति कर दयिा गया: उन दनिों, पूरा सीरयिा, जसिमें एडसा स्थति है, पहले से ही सारासेन के शासन में था। यह हस्तांतरण इस प्रकार हुआ: ग्रीक सम्राट रोमनस, इस अनमोल खजाने (उद्धारकर्ता की चमत्कारी छवि) को कॉन्स्टेंटनिोपल में रखना चाहते थे, इसलिए उन्होंने सारासेन अमीर को मसीह की चमत्कारी छवि सौंपने के लिए बार-बार अनुरोध भेजा। हालाँकि, जब एडेसा के ईसाइयों ने उस पर दबाव डाला, तो सरैसेन अमीर ने प्रतमिा सौंपने से इनकार कर दयिा और युद्ध छड़ि गया: राजा रोमन ने अपनी सेना एडेसा भेज दी और शहर की घेराबंदी कर दी, साथ ही आसपास के ग्रामीण इलाकों को लूट लयिा। तब एडेसा के लोगों ने युद्ध समाप्त करने के लिए ग्रीक राजा से वनिती की; राजा ने बदले में उनसे मसीह की प्रतमिा माँगी। जसि सरैसेन अमीर के अधीन एडेसा था, उसने इसे मुफ्त में सौंपने से इनकार कर दयिा; ईसाई राजा, मानव नरि्मति नहीं की गई मसीह की प्रतमिा को पाने की तीव्र इच्छा से प्रेरति होकर, ने अमीर को बारह हजार चाँदी के सक्कि दिए और दो सौ कुलीन सारासेनों को ग्रीक कैद से रहिा कयिा; इसके साथ ही उसने सोने से मुहरबंद एक शाही पत्र भी दयिा, जसिमें एडसा या उसके पड़ोसी शहरों के खलिाफ कभी भी युद्ध न करने का वादा कयिा गया था। इस प्रकार अपनी इच्छा की पूर्ति होने पर, राजा ने मानव नरि्मति नहीं, मसीह की छवि को स्वीकार कयिा, साथ ही उस पत्र को भी स्वीकार कयिा जो, जैसा कि ऊपर उल्लेख कयिा गया है, हमारे प्रभु यीशु मसीह ने एदेसा के राजकुमार अवगर को लखिा था; पवत्रि छवि को बशिपों और पादरी वर्ग के अन्य सम्मानति लोगों के हाथों कॉन्स्टेंटनिोपल ले जाया गया। रास्ते में और स्वयं कॉन्स्टेंटनिोपल में, पवत्रि प्रतमिा द्वारा कई चमत्कार कए गए: हर तरह की बीमारयिों का इलाज हुआ – अंधों को दृष्टि मलिी, बधरिों ने सुना, लंगड़ों ने चला, और दुष्ट आत्माओं को बाहर नकिाला गया। हालाँकि, एक सताए हुए व्यक्ति ने चल्लिाकर कहा:

'इसे स्वीकार करो, कॉन्स्टेंटनिोपल, अपनी महमिा और आनंद, और तुम, पोर्फ्योजेनटिस, अपने राज्य का सम्मान।'

जैसे ही उसने ऐसा पुकारा, वह व्यक्ति अपने पशिाच-ग्रस्त होने से मुक्त हो गया।

मसीह की अकृत-हस्त प्रतमिा के स्थानांतरण का उत्सव अगस्त के 16वें दनि मनाया जाता है, जब, सटीक रूप से, शाही शहर ने इसे बड़े सम्मान और भव्यता के साथ प्राप्त कयिा और इसे फ़ारोस में परमेश्वर की परम पवत्रि माता के चर्च में रख दयिा[5571] शहर की सुरक्षा के लिए और हमारे ईश्वर मसीह की महमिा के लिए, जो अब और हमेशा और युगों-युगों तक, पति और पवत्रि आत्मा के साथ महमिामय हैं। आमेन[5572] ।

ट्रोपारयिन, स्वर 2:

हे परम शुभ, हम तेरी अति पवत्रि प्रतमिा की पूजा करते हैं, हे मसीह हमारे ईश्वर, हम अपने पापों की क्षमा के लिए प्रार्थना करते हैं; क्योंकि अपनी इच्छा से तूने देह में सूली पर चढ़ने की कृपा की, ताकि तू उन लोगों को, जन्हिें तूने सृजति कयिा है, शत्रु के कार्य से मुक्त कर सके। अतः कृतज्ञतापूर्वक हम तुझसे पुकारते हैं: हे हमारे उद्धारकर्ता, तूने सभी को आनंद से भर दयिा है, जो संसार को बचाने आए।

[5571] यह चर्च सम्राट माइकल (856–867) द्वारा बनाया गया था।

[5572] कांस्टेंटनि पोर्फयिोगेनटिस 944 में एडसा से 'हस्तनरि्मति नहीं' आइकन को, अवंगर को मसीह के पत्र के साथ, कॉन्स्टेंटनिोपल में स्थानांतरति करने का वर्णन करते हैं। 'हस्तनरि्मति नहीं' आइकन 1204 तक कॉन्स्टेंटनिोपल में रखा गया था। जहाँ तक 'अनदेखी बनाई गई छवि' वाली ईंट का सवाल है, ज़ोनारास (मृत्यु 1118) के अनुसार, इसे सम्राट नकिेफ़ोरस फोकास (963–969) द्वारा 968 में स्थानांतरति कयिा गया था। ज़ोनारास इसे *'हिeron ke phion ektipora'* (पवत्रि और दव्यि छवि) के रूप में संदर्भति करते हैं। – एक वृत्तांत के अनुसार, लगभग 1362 में उद्धारकर्ता की प्रतमिा को जॉन पलाइओलोगोस ने सरैसेन आक्रमण से ग्रीक साम्राज्य को मुक्त कराने के बदले में जेनोआ के जनरल लयिोनार्डो डे मोंटाल्टो को दयिा था, और मोंटाल्टो ने इसे जेनोआ में सेंट बार्थोलोम्यू के मठ को दान कर दयिा, जहाँ यह आज भी मौजूद है। एक अन्य, अधकि वशि्वसनीय ववरिण के अनुसार, 1204 से 1261 तक कॉन्स्टेंटनिोपल में क्रूसेडर्स के शासन के दौरान, इसे वेनसि के डॉज डैंडोली ने चुरा लयिा था, लेकनि जसि जहाज पर इसे अन्य पवत्रि वस्तुओं के साथ ले जाया जा रहा था, वह प्रोपोंटसि में डूब गया।

कॉन्टाकयिन, स्वर 2:

हम उस पर चुंबन से सम्मान प्रकट करते हैं जो मानव जाति के प्रति आपके अनुपम और दैवीय स्नेह, पिता के अकथनीय वचन, और उस अलिखित परन्तु दैवीय रूप से अंकित प्रतिमा को प्रकट करता है, जो आपके सच्चे अवतार की विजय की ओर ले जाती है।

पवित्र प्रतिमाओं की श्रद्धा पर आदरणीय जॉन ऑफ़ डेमास्कस का एक अंश[5573]

16 अगस्त को स्मरण किया जाता है

चूंकि कुछ लोग हमारे उद्धारकर्ता और परमेश्वर की माता की प्रतिमा, साथ ही मसीह के अन्य पवित्र सेवकों की प्रतिमाओं (आइकन)[5574] की पूजा और सम्मान करने के लिए हमें दोष देते हैं, तो ऐसे लोगों को पता होना चाहिए कि परमेश्वर ने मूल रूप से मनुष्य को अपनी ही छवि में बनाया था। हम एक-दूसरे की उपासना (एक-दूसरे को नमस्कार) क्यों करते हैं, यदि इस लिए नहीं कि हम सभी ईश्वर की प्रतिमा में बनाए गए हैं? ईश्वर-धारी और पवित्र महान चर्च पिता, बेसिल द ग्रेट[5575] कहते हैं कि एक प्रतिमा पर दिया गया सम्मान मूल व्यक्ति पर लौटता है। तब, मूल वह है जिसे समान रूप में दर्शाया गया है और जिससे आइकन पर छवि प्राप्त होती है। और किस कारण से मूसा के लोगों ने स्वर्गीय वस्तुओं के तम्बू की पूजा की, उसके चारों ओर खड़े होकर, जबकि तम्बू स्वयं कई छवियों का समान रूप लिए हुए था? क्योंकि परमेश्वर ने मूसा से कहा: *'देख, जो नमूना तुझे पहाड़ पर दिखाया गया है, उसके अनुसार उन्हें बनाना* (निर्गमन 25:40)। इसी प्रकार, क्या वे करूब जो वेदी पर छाया करते थे, मानव हाथों का काम नहीं थे; और क्या यरूशलेम की गौरवशाली कलीसिया मानव हाथों की कला द्वारा निर्मित नहीं थी? पवित्र शास्त्र केवल मूर्तिपूजा करने वालों और राक्षसों को बलिदान चढ़ाने वालों की निंदा करता है। यूनानियों और यहूदियों दोनों ने बलिदान चढ़ाए: लेकिन यूनानियों ने राक्षसों को बलिदान चढ़ाया, जबकि यहूदियों ने उन्हें परमेश्वर को चढ़ाया। यूनानियों के बलिदान अस्वीकार किए गए और शापित थे, जबकि यहूदियों के बलिदान प्रभु को प्रसन्न करने वाले थे। देखो, नूह ने एक बलिदान अर्पित किया[5576] , और *'यहोवा ने सुगन्ध सूंघा'* (उत्पत्ति 8:21), क्योंकि यह बलिदान एक शुद्ध और परोपकारी हृदय से अर्पित किया गया था; लेकिन यूनानी मूर्तियाँ, घृणित और अधर्मी होने के कारण, निषिद्ध और शापित थीं, क्योंकि वे राक्षसों की मूर्तियाँ थीं।

इसके अलावा, कौन परमेश्वर के मुख का चित्रण कर सकता है, जो अदृश्य, असीम, अकथनीय और अतुलनीय हैं? ईश्वरत्व को उसी रूप में चित्रित करने की इच्छा रखना अधर्मी मूर्खता होगी जैसा कि वह स्वयं में है। इसी कारण से, पुराने नियम में प्रतिमाओं का उपयोग नहीं किया जाता था। लेकिन बाद में, जब दयालु ईश्वर, अपनी दया में, हमारे उद्धार की व्यवस्था करते हुए, एक सच्चे मनुष्य के रूप में प्रकट हुए—केवल एक मानवीय चेहरे की समानता में नहीं, जैसा कि वे एक बार अब्राहम और भविष्यवक्ताओं के सामने प्रकट हुए थे—बल्कि उन्होंने स्वयं को एक सच्चे मनुष्य के रूप में प्रकट किया, जो पृथ्वी पर चलता था, लोगों के बीच रहता था, चमत्कार करता था, कष्ट सहता था, को सूली पर चढ़ाया गया, दफ़नाया गया, फिर पुनरुत्थित हुआ और स्वर्ग में आरोहण किया – तो जो कुछ वास्तव में हुआ, जो कुछ लोगों ने

[5573] सेंट जॉन ऑफ डेमास्कस - एक प्रसिद्ध धर्मशास्त्री और भजनकार, सेंट सावस मठ के एक भिक्षु, और प्रतिमा-भंजकों के खिलाफ संघर्ष में ऑर्थोडॉक्सी के एक दृढ़ रक्षक, जो 8वीं शताब्दी में रहते थे। उनके अत्यधिक कलात्मक और मार्मिक भजनों के लिए, उन्हें 'स्वर्ण-स्वर' की उपाधि दी गई थी। – उनकी स्मृति पवित्र चर्च द्वारा 4 दिसंबर को मनाई जाती है।

[5574] जब संत जॉन ऑफ़ डमास्कस उन लोगों के बारे में बात करते हैं जो ईसाइयों की निंदा करते हैं, तो उनका मतलब प्रतिमा-भंजकों से है। प्रतिमा-भंजकवाद की विधिर्म 8वीं शताब्दी में उभरी; परिणामस्वरूप, संत जॉन ऑफ़ डमास्कस इसके समकालीन थे। प्रतिमा-भंजकों ने मूर्खतापूर्ण ढंग से प्रतिमाओं की पूजा को मूर्तिपूजा के साथ मिला दिया। पवित्र प्रतिमाओं की आराधना पर इस प्रवचन में, संत जॉन ऑफ डेमास्कस प्रतिमा-भंजकों के अधर्मी भ्रम की निंदा करते हैं। – निकिया (फ्राइजिया - एशिया माइनर का एक क्षेत्र) के बिशप कॉन्स्टेंटिन को प्रतिमा-भंजक विधिर्म का संस्थापक माना जाता है। प्रतिमा भंजनवाद के सबसे कट्टर समर्थक सम्राट लियो तृतीय इसाउरियन (717–741) और कॉन्स्टेंटिन पंचम कॉप्रोन्यमस (741–775) थे। इस विधिर्म की निंदा सातवें सार्वभौमिक परिषद में की गई थी, जो 787 में निकिया शहर में आयोजित की गई थी।

[5575] संत बेसिल द ग्रेट - चौथी शताब्दी के सबसे प्रसिद्ध चर्च फादर - का पवित्र चर्च 1 और 30 जनवरी को स्मरणोत्सव मनाता है।

[5576] नोआ – लामेक का पुत्र, बाढ़ से पहले का अंतिम कुलपिता। नोआ ने जलयान से बाहर निकलने पर परमेश्वर को एक बलिदान चढ़ाया (उत्पत्ति 8:15-20), जिसने मसीह के बलिदान का पूर्वाभास दिया।

देखा, लेकिन जिसे हमने, जो उस समय नहीं जिए, नहीं देखा – यह सब फिर हमारी शिक्षा और स्मरण के लिए दर्ज किया गया, ताकि, यद्यपि हमने इसे नहीं देखा, हम इसे जैसे सुन रहे हों। और, विश्वास करने पर, (शाश्वत) आनंद प्राप्त कर सकें। और चूँकि सभी को धर्मग्रंथों का ज्ञान नहीं दिया गया है, और न ही सभी को किताबें पढ़ने का वरदान मिला है, इसलिए पवित्र पिताओं ने सर्वसम्मति से सबसे तेज़ याददाश्त के लिए, महिमामय और विजयी चिह्नों के रूप में, इन सभी को आइकन (चित्रों) में चित्रित करने का निर्णय लिया। क्योंकि अक्सर, अपनी ही लापरवाही से, हम प्रभु के दुखों को भूल जाते हैं; लेकिन जब हम मसीह के सूली पर चढ़ाए जाने की छवि ( ) को देखते हैं, तो हमें तुरंत उनके उद्धारकारी दुख याद आ जाते हैं और, प्रणाम करते हुए, हम वस्तु की पूजा नहीं करते, बल्कि उसी की पूजा करते हैं जिसकी छवि हिम अपने सामने देखते हैं; क्योंकि हम उस पदार्थ की पूजा नहीं करते जिससे सुसमाचार बना है, बल्कि उसमें लिखे परमेश्वर के वचन की पूजा करते हैं; इसी तरह, हम उस पदार्थ की पूजा नहीं करते जिससे क्रूस बना है, बल्कि क्रूस पर दर्शाए गए मसीह के क्रूस पर चढ़ाए जाने की पूजा करते हैं। यदि क्रूस केवल अपनी सामग्री का प्रतीक होता, तो वह मसीह के सूली पर चढ़ाए जाने का प्रतिनिधित्व न करता, तो वह किसी अन्य वस्तु से अलग नहीं होता। यही बात परमेश्वर की अति पवित्र माता के प्रतिमा के बारे में भी कही जा सकती है, क्योंकि परमेश्वर की माता को हम जो सम्मान देते हैं, वह उसी की ओर निर्देशित होता है जो उनकी कोख से अवतारित हुए। इसी तरह, आइकन पर चित्रित ईश्वर के पवित्र तपस्वियों के वीर कर्म हमें साहस, उत्साह और उनके सद्गुणों की नकल करने तथा ईश्वर की महिमा करने के लिए प्रेरित करते हैं; और, जैसा कि हमने कहा है, आइकन पर चित्रित प्रशंसनीय तपस्वियों को हम जो सम्मान देते हैं यह प्रभु के प्रति हमारी भक्ति की गवाही है, जो हम सभी के लिए सामान्य है; इसके अलावा, वह सम्मान सच्चे मूल तक पहुँचता है।

हमने जो कहा है वह पवित्र धर्मग्रंथों में दर्ज नहीं है, ठीक उसी तरह जैसे वहाँ पूर्व की ओर झुकने, क्रूस की पूजा, और कई अन्य समान मामलों का कोई रिकॉर्ड नहीं है। हालाँकि, इतिहास में यह दर्ज है कि कैसे एदेसा के राजा अब्गार ने प्रभु की एक प्रतिमा बनाने के लिए अपने चित्रकार को भेजा, लेकिन मसीह के चेहरे से निकलने वाली अद्भुत प्रकाश के कारण चित्रकार अपना सौंपा गया काम करने में असमर्थ था। तब प्रभु ने स्वयं अपने दिव्य और जीवन-दायक चेहरे पर एक कपड़ा रखा और उस पर अपनी प्रतिमा अंकित की, जिसे उन्होंने अवगार की इच्छा पूरी करने के लिए भेजा। और यह कि पवित्र प्रेरितों ने हमें धर्मग्रंथों के अलावा बहुत कुछ सौंपा है, इसकी गवाही यहूदियों के अलावा अन्य लोगों के प्रेरित, संत पौलुस देते हैं: *'इसलिये, भाइयो, दृढ़ रहो और उन परम्पराओं को दृढ़ता से थामे रहो, जो तुम्हें मुँह-ज़बानी या हमारे पत्र द्वारा सिखाई गई हैं'* (2 थिस्स. 2:15)। और एक अन्य अंश में: *'मैं तुम्हें सराहता हूँ, भाइयो, कि तुम मेरी सारी शिक्षा को याद रखते हो और परम्पराओं को दृढ़ता से थामे हुए हो'* (1 कुरिन्थियों 11:2)।

शहीद संत डायोमेड्स की स्मृति

16 अगस्त को स्मरण किया जाता है

संत डायोमेड्स सिलिसिया के तारस शहर के मूल निवासी थे[5577] ; पेशे से वे एक चिकित्सक थे, और विश्वास से एक ईसाई थे, और उन्होंने न केवल शरीरों को बल्कि लोगों की आत्माओं को भी चंगा किया; क्योंकि उन्होंने यूनानियों को ईश्वर में विश्वास करने के लिए प्रोत्साहित किया और उन्हें शिक्षित किया, उन्हें पवित्र बपतिस्मा के लिए तैयार करते हुए।

सम्राट डायोक्लेटियन[5578] के शासनकाल में, संत डायोमेड्स तारसस से निकलकर बिथिनिया[5579] में स्थित निकिया शहर आए; और वहाँ, अपनी प्रथा के अनुसार, संत डायोमेड्स ने न केवल औषधीय उपचारों द्वारा, बल्कि मुख्य रूप से सर्वशक्तिमान और हमारे प्रभु यीशु मसीह के चंगा करने वाले नाम का आह्वान करके और पवित्र क्रॉस के चिह्न द्वारा चंगाई की; उन्होंने अपनी उपचार कला के साथ-साथ अपनी शिक्षाओं के माध्यम से कई मूर्तिपूजकों को मसीह के धर्म में परिवर्तित किया।

[5577] सिलिसिया – एशिया माइनर का एक क्षेत्र।

[5578] शासनकाल 284–305।

[5579] बिथिनिया – एशिया माइनर का एक क्षेत्र।

जब सम्राट डायोक्लेटियिन, जो उस समय पूर्वी प्रांतों में थे, को यह पता चला, तो उन्होंने संत को पकड़ने के लिए सैनिक भेजे। जब सैनिक उस स्थान पर पहुँचे, तो उन्होंने पाया कि संत डायोमेडिस पहले ही प्रभु में निधन कर चुके थे; फिर भी, उन्होंने सम्राट के पास ले जाने के लिए उनका सिर काट दिया। लेकिन जैसे ही सिर काटा गया, उन सैनिकों की दृष्टि चली गई और वे अंधे हो गए, इसलिए अन्य लोगों को उन्हें सम्राट के पास ले जाना पड़ा, जबकि वे पवित्र शहीद डायोमेड्स का कटा हुआ सिर ले जा रहे थे।

जब सम्राट ने सिर देखा, और अंधे सैनिकों को भी देखा, तो उसने उन्हें आदेश दिया कि वे तुरंत सिर को लेकर उसे वापस उस शरीर पर लगा दें जहाँ वह था; जैसे ही सैनिकों ने ऐसा किया, उनकी दृष्टि तुरंत वापस आ गई और उन्होंने हमारे प्रभु यीशु मसीह, सच्चे परमेश्वर पर विश्वास किया, जिसे युगानुयुग महिमा दी जाती है। आमीन[5580] .

उसी दिन, पूजनीय चेरीमोन की स्मृति

१६ अगस्त को स्मरणोत्सव

आदरणीय चेरमिोन का उल्लेख पैलाडियस के ग्रंथ *लवसाइक* और अल्फाबेटिकल पैटैरिकॉन में मिलता है। उनकी गुफा पानी से बारह पोप्रीश्च दूर थी; उनके निधन के बाद, वे अपने सामान्य स्थान पर बैठे हुए पाए गए, उनके हाथों में उनका काम था, क्योंकि वे काम करते हुए ही मर गए थे। इन संत चेरमिोन का उल्लेख संत थियोडोर द स्टुडाइट[5581] द्वारा लेंटन ट्रायोडियन में, चीज़ सैटरडे को मैटिन्स में कैनन में, छठी ओड में भी किया गया है[5582] ।

30 अगस्त

17 अगस्त (पुराने कैलेंडर के अनुसार)

उसी दिन, पवित्र शहीदों: पॉल और उनकी बहन जूलियाना की स्मृति मनाई जाती है; उनकी स्मृति मार्च के चौथे दिन मनाई जाती है (उनके कष्टों का वर्णन इस तिथि के अंतर्गत विस्तार से दिया गया है)।

इसी दिन, पवित्र शहीदों: फर्स, ल्यूकियस और उनके साथियों का स्मरणोत्सव मनाया जाता है, जिन्होंने बिथिनिया के सेज़रिया में सम्राट डेकियस (249–251) के अधीन यातनाएँ झेलीं; उनका स्मरणोत्सव चौदह दिसंबर को भी मनाया जाता है (उनके शहादत का वृत्तांत इस तिथि के अंतर्गत पढ़ा जा सकता है)।

संत पैट्रोक्लस की शहादत

17 अगस्त को स्मरण किया जाता है

ऑरेलियिन के शासनकाल में[5583] , गॉल के साथ-साथ अन्य क्षेत्रों में भी ईसाइयों पर एक क्रूर उत्पीड़न शुरू किया गया। उस समय, ट्राइससीन नगर में पैट्रोक्लस नामक एक सम्मानित व्यक्ति रहता था; वह नगर के बाहरी इलाके में अपने माता-पिता की मृत्यु के बाद विरासत में मिले एक घर में रहता था; वह धनी था और उसके पास बहुत सारी संपत्ति थी। यह व्यक्ति दिन-रात ईश्वर की सेवा करता था, क्योंकि वह उनके पवित्र विधान से प्रेम करता था और एक सख्त ईसाई तथा धार्मिक जीवन जीता था; शिक्षित होने के कारण, वह हमेशा उत्साह के साथ पवित्र शास्त्रों का अध्ययन करता था और हर घंटे प्रार्थना के लिए घुटने टेकता था। वह दिन में केवल एक बार, बारहवें घंटे पर भोजन करता था, और खाने से पहले प्रभु की स्तुति और प्रार्थना करता था; और वह अपनी संपत्ति को ज़रूरतमंदों, विधवाओं और अनाथों, और विशेष रूप से उन ज़रूरतमंद ईसाइयों में बाँट देता था जो पूरे दिल से प्रभु की सेवा करते थे। उनकी परोपकारिता इतनी महान थी कि

[5580] संत डायोमेड्स की मृत्यु तीसरी शताब्दी के अंत या चौथी शताब्दी की शुरुआत में हुई।

[5581] उनका पर्व दिवस 11 नवंबर है।

[5582] संत हेरमिोन का निधन चौथी शताब्दी के अंत में या पाँचवीं शताब्दी के शुरुआती वर्षों में हुआ।

[5583] सम्राट ऑरेलियिन ने 270 से 275 तक शासन किया।

गरीब उन्हें स्वर्गीय खजाने के वितरक मानते थे, क्योंकि उन्होंने अपने लिए पृथ्वी पर नहीं, बल्कि स्वर्ग में खजाने संजोए थे, और वे केवल स्वर्ग के राज्य को प्राप्त करने के बारे में सोचते हुए सभी सांसारिक सुखों से दूर रहे। यह पवित्र पुरुष, जिसने अपना जीवन ईश्वर के भय में, उपवास और प्रार्थना में और ईश्वर के प्रति भक्ति के प्रत्येक कार्य में बिताया, उसे प्रभु से राक्षसों को आज्ञा देने की शक्ति प्राप्त हुई; उसे चंगा करने की कृपा भी प्राप्त हुई, ताकि वह मसीह की शक्ति से अशुद्ध आत्माओं को भगाता और लोगों को पीड़ा देने वाली विभिन्न बीमारियों को ठीक करता। उस समय, दुष्ट राजा ऑरेलियन, जो ईसाइयों का एक क्रूर उत्पीड़क था, सेनोनस्क शहर से त्रिकासिन शहर में आया; संत पैट्रोक्लस के बारे में सुनकर, ऑरेलियन ने आदेश दिया कि उसे पकड़कर उसके सामने लाया जाए। पैट्रोक्लस को देखकर, उसने उससे कहा:

'मैंने तुम्हारी पागलपन के बारे में सुना है; तुमने एक व्यर्थ आस्था अपना ली है और उसकी पूजा करते हो जिसे मनुष्यों ने तिरस्कृत किया था।'

लेकिन संत ने इन मूर्खतापूर्ण शब्दों का कोई उत्तर नहीं दिया।

तब ऑरेलियन ने उससे पूछा:

'तुम्हारा नाम क्या है?'

संत ने उत्तर दिया:

'मेरा नाम पैट्रोक्लस है।'

ऑरेलियन ने फिर पूछा:

'तुम किस धर्म का पालन करते हो, और किस देवता की पूजा करते हो?'

संत पैट्रोक्लस ने उत्तर दिया:

'मैं जीवित और सच्चे ईश्वर की पूजा करता हूँ, जो स्वर्ग में वास करते हैं और विनम्र लोगों पर अनुग्रह की दृष्टि रखते हैं; मैं उसी ईश्वर की पूजा करता हूँ जो सभी बातों को उनके घटित होने से पहले जानता है।'

ऑरेलियन ने कहा:

'अपनी मूर्खता छोड़ो और हमारे देवताओं की पूजा करो; हम तुम्हें सम्मान और धन से पुरस्कृत करेंगे, और तुम्हारा नाम महिमामय होगा।'

संत ने उत्तर दिया:

'मैं एक सच्चे ईश्वर के सिवा किसी और ईश्वर को नहीं जानता, जिसने स्वर्ग, पृथ्वी, समुद्र और जो कुछ भी दृश्यमान और अदृश्य है, उसकी रचना की।'

ऑरेलियन ने जवाब में कहा:

'हमें साबित करो कि जो तुम कह रहे हो वह सच है।'

पैट्रोकलस ने उत्तर दिया:

'सचमुच, जो कुछ भी मैं कहता हूँ वह न्यायसंगत है; लेकिन चूँकि आप सभी झूठ में नाश हो रहे हैं, आप सत्य पर विश्वास नहीं करना चाहते, क्योंकि झूठ हमेशा सत्य से नफरत करता है।'

ऑरेलियन ने कहा:

'यदि तुम देवताओं को बलिदान नहीं चढ़ाओगे तो मैं तुम्हें आग के हवाले कर दूँगा।'

लेकिन संत ने उत्तर दिया:

'देखो, मैं स्तुति का बलिदान चढ़ाता हूँ, और मैं स्वयं को अपने ईश्वर के बलिदान के रूप में अर्पित करता हूँ, जिन्होंने अपने पवित्र नाम के लिए मुझे शहीद होने का आह्वान करने की कृपा की है।'

तब राजा ऑरेलियन क्रोध से भर गया और उसने आदेश दिया कि शहीद के पैरों में आग में तपी हुई लोहे की बेड़ियाँ डाल दी जाएँ; उसने यह भी आदेश दिया कि संत के हाथ आग में तपी हुई लोहे की जंजीरों से उसकी पीठ के पीछे बांध दिए जाएँ; फिर उसने आज्ञा दी कि संत को एक कालकोठरी में फेंक दिया जाए और तब तक वहाँ रखा जाए जब तक कि वह उसे नष्ट करने का कोई तरीका न सोच ले।

बेड़ियों में जकड़े होने के दौरान, संत ने ईश्वर से प्रार्थना करते हुए कहा:

– *'जैसा कि आपने अपने दास से कहा है, आपकी दया मेरा सांत्वना हो'* (भजन संहिता 118:76)।

और फिर:

– *'मैं तेरी दया में आनन्दति और हर्षति होऊँगा, क्योंकि तूने मेरी कष्ट-क्लेश पर दृष्टि की है'* (भजन संहिता 30:8)।

तीन दिन बाद, सम्राट ऑरेलियन ने अपने सार्वजनिक दरबार में अपनी सीट ली और शहीद को जेल से बाहर निकालकर अपने सामने न्याय के लिए पेश करने का आदेश दिया। जब संत को लाया गया, तो सम्राट ने उनसे कहा:

– 'ईश्वरनिन्दक, जा, तुरंत मृत्यु से अपना बचाव कर और देवताओं को बलिदान चढ़ा।'

शहीद ने उत्तर दिया:

'हमारे प्रभु ने अपने सेवकों की आत्मा को अनंत मृत्यु से बचाया है; जो भी उन पर भरोसा करते हैं, वह उन्हें कभी नहीं त्यागेगा; लेकिन यदि आप मेरी संपत्ति में से कुछ लेना चाहते हैं, तो मैं खुशी-खुशी आपको दे दूँगा, क्योंकि मैं देखता हूँ कि आप निर्धन हैं।'

ऑरेलियन ने उत्तर दिया:

'सम्राट, तुम मुझे भिखारी कैसे कह सकते हो, जबकि मेरे पास अनगिनत खजाने हैं?'

संत ने उत्तर दिया:

'तुम्हारे पास सांसारिक धन-संपत्ति है, जो क्षणभंगुर है; फिर भी तुम दरिद्र हो, क्योंकि तुम स्वयं पर अधिकार नहीं रखते, क्योंकि तुमने अपने हृदय में हमारे प्रभु यीशु मसीह में पवित्र विश्वास नहीं पाया है; इसलिए तुम धर्मी न्यायी—ईश्वर—द्वारा अपने पिता, शैतान के साथ यातना भोगने के लिए दण्डित किए जाओगे।'

ऑरेलियन ने कहा:

'तुम मेरे साथ क्रूरतापूर्वक अपमान कर रहे हो, और इसलिए मैं तुम्हें दया नहीं दिखा सकता।'

शहीद ने कहा:

'मेरा ईश्वर, जिसकी मैं अपनी जवानी से सेवा कर रहा हूँ, मुझ पर दयालु है। लेकिन तुम्हारा विनाश तब होगा जब तुम्हें उस स्थान पर ले जाया जाएगा जहाँ शैतान, जिसकी तुम अब सेवा करते हो, पीड़ा में रहता है; वहाँ तुम अपने लिए तैयार की गई अनंत यातनाएँ देखोगे।'

सम्राट ने उत्तर दिया:

'मुझे समझ नहीं आ रहा कि तुम क्या कह रहे हो; मुझे बस इतना ही समझ आता है कि तुम मेरी पकड़ में हो और कोई भी तुम्हें मेरे हाथों से नहीं बचा सकता।'

संत ने कहा:

'केवल मेरा शरीर ही तुम्हारी शक्ति में है; लेकिन तुम मेरी आत्मा को छू नहीं सकते, क्योंकि उस पर एकमात्र उस ईश्वर का अधिकार है जिसने उसे बनाया है, जिसने हमसे, अपनी दासों से, कहा: *'उनसे मत डरो जो शरीर को मारते हैं पर आत्मा को नहीं मार सकते; बल्कि उससे डरो जो आत्मा और शरीर दोनों को गेहेन्ना में नष्ट कर सकता है'* (मत्ती 10:28)।

सम्राट ऑरेलियन ने उत्तर दिया:

'लेकिन क्या हमारे देवता भी बिल्कुल ऐसा ही सामर्थ्य नहीं रखते? आखिरकार, वे हमारे प्रति विफादार हैं, क्योंकि वे हमेशा हमारी हर प्रार्थना का उत्तर देते हैं; और उन्हीं ने अब तक तुम्हें—उनके शत्रु और ईश्वरनिन्दक को—जीवित रहने दिया है।'

संत ने उत्तर दिया:

'तुम्हारे देवता कौन से हैं?'

ऑरेलियन ने उत्तर दिया:

'हमारे देवताओं में महान अपोलो[5584] , शक्तिशाली ज्यूस[5585] , और डायना, देवताओं की माता[5586] शामिल हैं, क्योंकि वे लोगों को बिना धोखे के भविष्य बताते हैं[5587] ।'

[5584] एपोलो को प्राचीन यूनानियों द्वारा प्रकाश के देवता के रूप में माना जाता था; उन्हें भविष्य बताने का वरदान भी प्राप्त था।

[5585] ज़ीउस – प्राचीन यूनानी धर्म का सर्वोच्च देवता, जिसे अन्य देवताओं का पूर्वज माना जाता था।

[5586] प्राचीन यूनानियों द्वारा आर्टेमिस को प्रकाश और जीवन की देवी माना जाता था; उन्हें प्रकृति के ताज़े, खिलते जीवन की दाता के रूप में भी पूजित किया जाता था।

[5587] सम्राट ऑरेलियन, एक मूर्तिपूजक के रूप में, इस बात पर दृढ़ता से विश्वास करते थे कि जिन देवताओं में उनका विश्वास था, वे भविष्य बता सकते थे; यह कोई संयोग नहीं था कि उन्होंने अपोलो का नाम लिया, जिन्हें प्राचीन यूनानियों द्वारा भविष्य के भविष्यवक्ता माना जाता था। अपोलो

पवित्र पैट्रोक्लस ने कहा:

'जहाँ तक अपोलो का सवाल है, जिसे आप देवता कहते हैं, हमने अपने पूर्वजों से सुना है कि वह थेस्साली के राजा एडमेटस का एक चरवाहा था[5588] ; जहाँ तक ज़्यूस का सवाल है, जिसकी आप देवता के रूप में पूजा करते हैं, हम जानते हैं कि वह एक नीच और दुष्ट व्यक्ति था, एक व्यभिचारी, एक परस्त्रीगामी, एक चोर और हर तरह की बुराई का बीजारोपण करने वाला था; यह ज्ञात है कि उसने मनुष्यों के बीच कलह और अराजकता फैलाई, हत्या और डकैती की, और वास्तव में एक अत्यंत शर्मनाक मृत्यु प्राप्त की, इसलिए कि पृथ्वी ने उसके शव को स्वीकार नहीं किया। जहाँ तक डायना का सवाल है, जिसे तुम अपने देवताओं की माँ कहते हो, क्या तुम्हें यह नहीं पता कि वह दोपहर की एक frenzy[5589] है? हे मनुष्यों की दयनीय मूर्खता, जो अविश्वास से अंधी हो गई है, जो व्यर्थ और शून्य की पूजा करते हैं!

राजा ने कहा:

'मेरा धैर्य बहुत बड़ा है, क्योंकि मैंने अब तक तुम्हारी धर्मनिंदा सुनी है। लेकिन अब मैं तुम्हें आखिरी बार कहता हूँ: यदि तुम अपोलो, ज़्यूस और डायना की पूजा नहीं करते और बलिदान नहीं चढ़ाते, तो मैं तुम्हें तुरंत मौत की सज़ा दे दूँगा।'

शहीद ने उत्तर दिया:

'दुष्ट यातनाकर्ता! तुम एक ऐसे चोर की तरह हो जो एक निर्दोष आदमी को मारता है, फिर भी उसके शरीर को निगल नहीं सकता। इसी तरह, यद्यपि तुम घमंड करते हो कि तुम मेरे शरीर को मार डालोगे, तुम उसे निगल नहीं पाओगे; और भले ही तुम मेरे शरीर को निगल भी लो, तुम मेरी आत्मा को चोट पहुँचाने की हिम्मत नहीं करोगे।'

संत के ये वचन कहने के बाद, ऑरेलियन बहुत क्रोधित हो गया और संत को तलवार से सिर कलम करने का आदेश दिया। साथ ही, ऑरेलियन ने अपने सैनिकों को आदेश दिया कि संत का सिर सूखी जमीन पर न काटें, बल्कि किसी दलदली जगह पर काटें, ताकि उन्हें मनुष्यों के लिए प्रथागत दफन न मिल सके, बल्कि उन्हें सरीसृप, पक्षी और जानवर खा जाएँ।

सैनिकों ने पवित्र शहीद को पकड़ लिया और उन्हें सीन नामक नदी के किनारे ले गए, उनका इरादा दलदल में, नदी के किनारे वहाँ उनकी गर्दन काटने का था। संत प्रार्थना में पुकारते हुए, आनंद के साथ अपनी मृत्यु की ओर बढ़े:

– हे प्रभु यीशु मसीह, मेरे शरीर को उस दलदली जगह पर नष्ट न होने दें, बल्कि अपने परम पवित्र नाम का महिमामंडन करें, ताकि यह आपके शत्रुओं की दृष्टि में महिमामय हो, और ताकि विधर्मी यह न कहें: 'तो उनका परमेश्वर कहाँ है?' – हे पवित्र प्रभु, मेरी प्रार्थना सुनें, जैसे आपने मूसा और हारून की प्रार्थना सुनी जब उन्होंने आपके लोगों के लिए प्रार्थना की, और, उनके लिए समुद्र को पार करके, आपने इस्राएलियों को सूखी भूमि पर ले गए (निर्गमन 14:21-32); इस प्रकार मुझे भी इस नदी को पार करके दूसरी ओर ले चलो, एक ऐसी जगह पर जो दलदली न हो, ताकि मेरा खून सूखी ज़मीन पर बहे और मेरा शरीर दलदल में नहीं, बल्कि विश्राम पाए: *'मुझे कीचड़ से निकालो, ताकि मैं डूब न जाऊँ'* (भजन संहिता 68:15): मुझे मेरे यातना देने वालों से बचाओ!

संत ने ये शब्द प्रार्थना करते ही, उन्हें वहाँ लाए सैनिकों की आँखें अँधेर हो गईं, ताकि वे (सैनिक) अब शहीद को देख न सकें।

हालाँकि संत पैट्रोक्लस नदी में घुसे और घुटनों तक पानी में चलकर पार हो गए; फिर भी वह नदी बहुत चौड़ी और गहरी थी, और ऊपर से वर्षा के पानी से उफान पर थी; फिर भी पवित्र शहीद बिना पानी के घुटनों तक पहुँचने के भी बिना ही उसमें से पार चले गए; फिर, दूसरी किनारी पर पहुँचकर, शहीद ने वहाँ स्थित पहाड़ पर चढ़ाई की और कहा:

'प्रभु अपने आदरणीय संतों की आत्माओं की रक्षा करते हैं और उन्हें पापियों के हाथों से बचाते हैं।'

जहाँ तक सैनिकों का सवाल है, जब उन्होंने उस शहीद को नहीं देखा जिसे वे ले जा रहे थे, तो वे बहुत डर और भय से भर गए, क्योंकि उन्हें डर था कि राजा सोचेगा कि उन्होंने अपनी मर्जी से उस दंडित व्यक्ति को छोड़ दिया है और उन्हें मौत की सजा दे देगा; सैनिकों ने अपने आप से कहा:

के सम्मान में प्राचीन यूनानियों द्वारा बनाए गए कई मंदिरों को भी प्रसिद्ध ओरेकल माना जाता था; सबसे प्रसिद्ध थे डेलफी का ओरेकल, यूबोइया द्वीप पर ओरोपस का ओरेकल, और अन्य; प्राचीन यूनानियों ने अपने व्यक्तिगत और सार्वजनिक जीवन, दोनों में ही सभी गंभीर और महत्वपूर्ण मामलों में ओरेकल का मार्गदर्शन माँगा: यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि जिन भविष्यवक्ताओं के पास यूनानी सलाह के लिए जाते थे, वे भविष्यवाणी नहीं कर सकते थे, क्योंकि वे हमेशा भ्रमित और अस्पष्ट उत्तर देते थे।

[5588] इस मामले में, संत पैट्रोक्लस प्राचीन यूनानी पौराणिक कथाओं की हास्यास्पद कहानियों का संदर्भ दे रहे थे।

[5589] 'दोपहर का दानव', शाब्दिक रूप से 'एक महामारी जो दोपहर में तबाही मचाती है'; शायद कोई विशेष बीमारी, जैसे कि हैजा, जो दक्षिणी सूर्य की तपती किरणों के कारण होती थी (तुलना करें भजन संहिता 90:6)।

'उस आदमी का ईश्वर कितना महान है, क्योंकि उसने हमें देखे बिना ही उसे हमारे हाथों से बचा लिया है!'

सैनिकों में से अन्य लोगों ने कहा:

'वह कोई इंसान नहीं था, बल्कि कोई आत्मा जैसी चीज़ थी, क्योंकि वह हमारी आँखों से बिना कोई निशान छोड़े ओझल हो गया।'

जब सैनिक इस बारे में एक-दूसरे से काफी देर तक बहस कर रहे थे, और राजा के पास लौटने की हिम्मत नहीं कर रहे थे, तब नाव में नदी पार कर रही एक विधर्मी महिला ने सैनिकों की बहस सुन ली और, उनकी उदासी देखकर, उनसे कहा:

'मैंने नदी के उस पार, पहाड़ पर, एक ईसाई पुरुष को देखा जिसे तुम ढूंढ रहे हो; वह प्रार्थना करते हुए अपने ईश्वर के सामने साष्टांग दंडवत पड़ा था।'

लेकिन वे, निर्दोष रक्त बहाने में जल्दबाज़ी करते हुए, तुरंत नाव से नदी पार कर गए और पहाड़ पर चढ़कर, उस संत को ठीक उसी मुद्रा में पाया जैसा उस महिला ने बताया था। फिर वरिष्ठ योद्धा ने क्रोध के साथ संत से कहा:

'सचमुच, तुम मृत्यु के पात्र हो, क्योंकि तुम हमसे भाग गए थे; लेकिन अब तुम फिर से हमारे हाथों में हो; और अब तुम हमसे नहीं बचोगे: तुम्हें मौत की सजा दी जाएगी; लेकिन अगर तुम जीना चाहते हो, तो हमारे देवताओं को बलिदान चढ़ाओ।'

संत ने उनसे उत्तर दिया:

'मैं दुष्ट राक्षसों की पूजा नहीं करूँगा; मैं केवल एक सच्चे ईश्वर की पूजा करता हूँ।'

सैनिकों ने उससे कहा:

'तुम्हारा ईश्वर किस प्रकार का है – वह जो जन्मा है या जो रचा गया है?'

संत ने कहा:

हे व्यर्थ भ्रम! हे मूर्ख अविश्वास! हे मूर्खतापूर्ण वचन! मनुष्यों में से कौन उस आरंभहीन ईश्वर के बारे में कुछ कह सकता है! उसकी उत्पत्ति का वर्णन कौन कर सकता है? उसने कहा, और सभी चीजें हो गईं; उसने आज्ञा दी, और सभी चीजें बन गईं - दृश्य और अदृश्य। उसने मानव जाति के लिए उद्धारकर्ता भेजा, अपना एकमात्र पुत्र, हमारे प्रभु यीशु मसीह, जिन्होंने हमारे लिए अपना पवित्र रक्त बहाया, ताकि वह हमें विनाश और अनंत मृत्यु से बचा सकें; परन्तु प्रभु तीसरे दिन मरे हुओं में से जी उठे, अपने शिष्यों की उपस्थिति में स्वर्ग में आरोहण किए, और जैसा कि उन्होंने वादा किया था, उन्हें पवित्र आत्मा भेजा। और हमें वैसे ही विश्वास करना चाहिए जैसे पवित्र आत्मा ने प्रेरितों के मुख से सिखाया; क्योंकि यह शिक्षा धर्मी और सच्ची है; परन्तु जो इस शिक्षा पर विश्वास नहीं करता वह अनंत जीवन नहीं देखेगा, बल्कि परमेश्वर का क्रोध उस व्यक्ति पर सदा बना रहेगा। हम ईसाई मसीह, हमारे परमेश्वर से अनंत जीवन प्राप्त करने में दृढ़ विश्वास और आशा रखते हैं; इसीलिए हम प्रेम से उनके लिए दुख सहते हैं और स्वेच्छा से मरते हैं, यह जानते हुए कि चाहे हम जिएं या मरे, हम प्रभु के हैं। फिर भी, तुम जैसे सभी जो राक्षसों की पूजा करते हैं, उन्हें राक्षसों के साथ गेहेन्ना की आग में डाल दिया जाएगा।

जब संत ये शब्द कह रहे थे, तो सैनिक क्रोध से भर गए और संत को अपने देवताओं का निंदक कहकर, उनका सिर कलम करने के लिए अपनी तलवारें खींच लीं। लेकिन शहीद ने परमेश्वर की ओर मुड़कर कहा:

'हे प्रभु, मैं अपनी आत्मा तेरे हाथों में सौंपता हूँ; क्योंकि तू जानता है कि मैं तेरे परम पवित्र नाम के लिए मर रहा हूँ।'

इसके बाद, पवित्र शहीद पैट्रोक्लस का सिर कलम किया गया[5590] ।

सैनिकों ने शहीद का सिर काटकर उसके शरीर से बहुत दूर फेंक दिया; फिर वे चले गए।

उस समय, उस स्थान के पास ही पहाड़ पर, दो वृद्ध भिखारी थे, जिन्होंने पहले संत के हाथों से दान प्राप्त किया था और ईसाई धर्म को स्वीकार किया था। उन्होंने शहीद की मृत्यु देखी और उनके अंतिम शब्द सुने। जब सैनिक चले गए, तो उन्होंने बहुत डर के साथ शहीद का शरीर और उसका सिर उठा लिया, कहीं अधर्मी उन्हें न देख लें; उन्होंने शहीद के पवित्र शरीर और सिर को शाम तक छिपा कर रखा, और फिर उस शहर के प्रोटोप्रेस्बिटर, यूसेबियस नामक व्यक्ति को, चुपके से सब कुछ बता दिया।

[5590] संत पैट्रोकलस शहीद की मृत्यु लगभग 275 ईस्वी में हुई थी।

जब रात हुई, तो प्रोटोप्रेज़बटिर डकिन लबिरियिस के साथ उस स्थान पर आए (जहाँ शहीद का शरीर छपिाया गया था); उस पवत्रि शरीर को एक साफ़ कफ़न में लपेटकर, उन्होंने उसी रात, मूरतपिूजकों के डर से, उपयुक्त भजन गाकर, चुपचाप और कुछ मोमबत्तयिों की रोशनी में उसे दफ़नाया।

पवत्रि शहीद पैट्रोकलस का नधिन रोम में ऑरेलयिन के शासनकाल के दौरान हुआ, जबकि ईसाइयों के लिए यह हमारे प्रभु यीशु मसीह के शासनकाल के दौरान था, जन्हिें पति और पवत्रि आत्मा के साथ, अब और हमेशा-हमेशा के लिए सम्मान और महमिा दी जाती है। आमीन।

गुफाओं के हमारे पूजनीय पति अलीपयिस का जीवन

17 अगस्त को स्मरण कयिा जाता है

हमारे पूजनीय पति गुफाओं के अलीपअिस ने स्वयं को संत लूकस सुसमाचारकार का अनुयायी सद्धि कयिा, क्योंकि उन्होंने प्रभु की सेवा की, जन्हिोंने हमें अपनी ही छवि और समानता में बनाया (उत्पत्ति 1:26), ठीक वैसे ही जैसे लूकस ने कयिा, अर्थात्: उन्होंने न केवल आइकन पर संतों के चेहरों को चमत्कारकि रूप से चत्रिति कयिा, बल्कि अपने स्वयं के आत्मा में उनके गुणों को भी साकार कयिा; इसके अलावा, वह एक अद्भुत चकित्सिक थे; उनका धार्मकि जीवन हमें इस प्रकार प्रस्तुत कयिा गया है:

कएिव के धर्मनष्ठि राजकुमार, वसेवोल्द यारोस्लावचि के शासनकाल में[5591] , आदरणीय नकिोन के नेतृत्व में, ईश्वर की व्यवस्था और आदरणीय पति एंथनी और थयिोडोसयिस की सलाह पर, जो अपने नधिन के दस साल बाद कॉन्स्टेंटनिोपल में चमत्कारकि रूप से प्रकट हुए थे, ग्रीक प्रतमिा-चत्रिकार पवत्रि गुफाओं के चर्च को सजाने के लिए आए, इन ही प्रतमिा-चत्रिकारों को उनके माता-पति ने धन्य अलीपयिस को चत्रिकला की कला सखिाने के लिए सौंपा था। संत अलीपयिस गुफाओं के चर्च की कथा में वर्णति उस अद्भुत चमत्कार के प्रत्यक्षदर्शी थे, अर्थात्: जब प्रतमिा-चत्रिकार अपनी चत्रिकला से वेदी को सजा रहे थे, तो उस पर स्वतःही परम पवत्रि ईश्वर माता की एक प्रतमिा प्रकट हो गई: उस क्षण, वह प्रतमिा सूर्य से भी अधकि चमक उठी; फरि परम पवत्रि ईश्वर माता के मुख से एक कबूतर उड़ा, जो (चर्च के चारों ओर) काफी देर तक उड़ने के बाद, चर्च के ऊपरी भाग में स्थति प्रतमिा पर चत्रिति उद्धारकर्ता के मुख में चला गया। – उस समय धन्य अलीपयिस शक्षिति हो रहे थे, अपने शक्षिकों की सहायता कर रहे थे; और वह, इसके अलावा, अपनी आत्मा में खूबसूरती से चत्रि बनाते थे, क्योंकि पवत्रि आत्मा की कृपा उस गुफा चर्च में वास करती थी।

जब उपर्युक्त प्रतमिा-चत्रिकारों ने अपना काम पूरा कर लयिा और पवत्रि चर्च को प्रतमिाओं से सुशोभति कर दयिा, तो आदरणीय मठाधीश नकिोन ने स्वयं अलीपयिस को स्वर्गदूतों के पवत्रि मठवासी क्रम से एक अद्भुत तरीके से सुशोभति कयिा। और संत अलीपयिस ने अपनी आत्मा में संतों के गुणों को चत्रिति करने की कला सीखनी शुरू कर दी; कला सखिाए जाने के बाद, उन्होंने (आइकन पर) उनके भौतकि स्वरूप को चत्रिति कयिा।

संत अलीपयिस अपनी कला में इतने नपिुण थे कि ईश्वर की कृपा से, उन्होंने प्रतमिा पर दृश्य चत्रिण के माध्यम से, मानो, सद्गुणों की आध्यात्मकि छवि को ही पुनर्जीवति कर दयिा; क्योंकि उन्होंने प्रतमिा-चत्रिकला की कला धन प्राप्त करने के लिए नहीं, बल्कि सद्गुण प्राप्त करने के लिए सीखी थी; वे अथक परश्रिम करते थे, मठाधीश, भाइयों और सभी जरूरतमंदों के लिए प्रतमिाएँ बनाते थे, और अपने श्रम के लिए कोई भुगतान स्वीकार नहीं करते थे।

धन्य अलीपयिस ने हर कसिी से, जो कसिी भी चर्च में जर्जर प्रतमिाएँ देखता, उसे सूचति करने के लिए कहा; तब वह बनिा कोई भुगतान मांगे, अपनी कला से उन चर्चों को सुशोभति कर देता। जब भी संत इस तरह के काम से मुक्त होते, तो वे अपने लिए प्रतमिा-चत्रिकला का अभ्यास करते और प्रतमिाएँ बनाते, जन्हिें वे उन लोगों को दे देते जनिसे उन्होंने प्रतमिाओं को सजाने के लिए आवश्यक सोना और चाँदी उधार ली होती थी। संत इस तरह से काम करते थे ताकि वे अपना समय आलस्य में न बतिाएं; वे प्राचीन पवत्रि पतिाओं के उदाहरण का पालन करते थे, जो लगातार शारीरकि श्रम में लगे रहते थे, और स्वयं सर्वोच्च प्रेरति पॉल के भी, जो अपने बारे में कहते हैं: 'इन हाथों ने मेरी और मेरे साथयिों की ज़रूरतों को पूरा कयिा है' (प्रेरतिों के काम 20:34)।

[5591] वसेवोल्द यारोस्लावचि ने पहली बार 1075 से 1076 (छह महीने) तक और दूसरी बार 1078 से 1093 तक शासन कयिा।

जब भी संत अलीपयिस अपनी कारीगरी से कोई पैसा कमाते, तो वे उसे तीन भागों में बाँट देते थे: पहला भाग प्रतमिाओं की मरम्मत पर, दूसरा गरीबों को दान में, और तीसरा मठ की जरूरतों के लिए दे देते थे। इस प्रकार संत साल दर साल ऐसा करते रहे, और दनि-रात खुद को आराम नहीं देते थे; क्योंकि रात में वे प्रार्थनापूर्ण जागरण और प्रणाम करते थे, जबकि दनि में, महान वनिम्रता, वैराग्य, पवत्रिता, धैर्य, उपवास, प्रेम और ईश्वर के चंतिन के साथ, वे अपने शल्पि कार्यों में लगे रहते थे; कसिी ने भी उन्हें कभी आलसी नहीं देखा; फरि भी, इन सब के बावजूद, वे प्रार्थना सभाओं में कभी नहीं चूकते थे, यहाँ तक कि अपने काम के लिए भी नहीं।

जब मठाध्यक्ष ने उस पूज्य व्यक्ति में इतने महान सद्गुण और प्रतमिा चत्रिकला में इतनी महारत देखी—कि वह मठवासी संघ की दैवीय छवि धारण करके, परमेश्वर के पुत्र, यीशु मसीह के अनुकरणकर्ता के रूप में स्वयं को प्रस्तुत करने के योग्य था—तो उन्होंने उसे मेल्कीजेदक की व्यवस्था के अनुसार पुरोहति पद की दीक्षा दी[5592] . तब आदरणीय पति को एक खंभे पर रखे दीपक की भाँति स्थापति कयिा गया (मत्ती 5:15), या यूँ कहें कि सम्मान के स्थान पर अनुकरण के लिए एक आदर्श के रूप में, जो मठवासी और पुरोहतिीय सद्गुणों की अतुलनीय सुंदरता से दमक रहा था; और वह कोई साधारण पवत्रि आदर्श नहीं थे, क्योंकि उन्होंने चमत्कार कएि; उनके अनेक चमत्कारों में से, हम यहाँ कुछ का स्मरण करेंगे।

कीव शहर का एक धनी नागरकि कुष्ठ रोग से पीड़ति था; उसने कई डॉक्टरों, जादूगरों और मूर्तपिूजकों से मदद मांगी, लेकनि न केवल उसे अपनी बीमारी से कोई राहत नहीं मलिी, बल्कि उसकी हालत और भी खराब हो गई। तब उस बीमार व्यक्ति के एक मत्रि ने उसे गुफा मठ जाने और पवत्रि संतों से उनकी प्रार्थनाओं के लिए नविेदन करने की सलाह दी; वह अनचि्छा से ही सही, मान गया।

जब उस बीमार व्यक्ति को पेचेर्सक मठ में लाया गया, तो मठाधीश ने आदेश दयिा कि उसे पूजनीय संत के कुएँ का पानी पलिाया जाए, और साथ ही यह भी आज्ञा दी कि उसी पानी से उसका चेहरा धोया जाए। तुरंत, उस बीमार व्यक्ति के शरीर पर—उसके अवशि्वास की सजा के रूप में—इतना मवाद नकिल आया कि हर कोई उसके शरीर से नकिलने वाली भयानक बदबू को सहन नहीं कर सका और उससे दूर भाग गया। तब, रोते और क्रोधति होकर, यह कोढ़ी अपने घर लौट आया, और उससे नकिलने वाली बदबू के कारण कई दनिों तक घर से बाहर नहीं नकिला, और अपने दोस्तों से कहा: *'उन्होंने मेरे चेहरे पर लज्जा का लेप लगा दयिा है। मैं अपने भाइयों के लिए एक अजनबी और अपनी माँ के बेटों के लिए एक परदेशी बन गया हूँ'*(भजन संहति 68:8–9), क्योंकि मैंने पूजनीय पति एंथनी और थयिोडोसयिस में वशि्वास नहीं कयिा; और मैं हर दनि अपनी मृत्यु का इंतजार करता था।

हालाँकि, होश में आने पर, इस आदमी ने अपने सभी पापों का इकरार करने का संकल्प लयिा; इसलिए, वह एक बार फरि से गुफा मठ में परम पूज्य अलीपयिस के पास गया और उनसे अपने अपराधों का इकरार कयिा। तब परम पूज्य ने उससे कहा:

'मेरी अयोग्यता में ईश्वर के सामने अपने पापों का इक़रार करने आकर तूने अच्छा कयिा, मेरे बच्चे; इस प्रकार भवष्यिवक्ता भी अपने बारे में गवाही देते हैं, प्रभु से पुकार कर *कहते हैं: "मैंने कहा, 'मैं अपने अपराधों का इक़रार प्रभु से करूँगा,' और आपने मेरे पाप का दोष दूर कर दयिा"* (भजन संहति 31:5)।

तब पूजनीय अलीपयिस ने उन्हें उद्धार के वचनों से वस्तिार से उपदेश दयिा; बाद में, प्रतमिा-चत्रिण के रंग लेकर, उन्होंने उनके चेहरे पर लेप लगाया, और सड़ रहे घावों पर मल दयिा; जसिके बाद संत अलीपयिस ने उस बीमार व्यक्ति को चर्च में ले गए, उसे पवत्रि रहस्य प्रदान कएि, और उसे उस पानी से स्नान करने का नर्दिेश दयिा जसिसे पुरोहति आमतौर पर पवत्रि रहस्य प्राप्त करने के बाद स्नान करते थे; कुछ ही समय बाद, उस बीमार व्यक्ति से सड़न भरे छाले झड़ गए और वह पहले की तरह स्वस्थ हो गया।

[5592] सेलम के राजा और सर्वोच्च ईश्वर के पुरोहति मेल्कीजेदक का उल्लेख उत्पत्ति 14:18 में मलिता है। उत्पत्ति की पुस्तक, जो मेल्कीजेदक के बारे में बताती है, न तो मेल्कीजेदक की उत्पत्ति के बारे में कुछ कहती है और न ही उसके जीवन के अंत के बारे में; इसने, अब्राहम पर उसके आशीर्वाद के साथ मलिकर, मेल्कीजेदक को, जैसा कि संत पौलुस प्रेरति (इब्रानयिों 6:20) द्वारा समझाया गया है, यीशु मसीह – शाश्वत महायाजक और राजा – की पूर्वसूचना बना दयिा। राजा और भवष्यिवक्ता दाऊद ने भी परमेश्वर के पुत्र के बारे में बोलते हुए, मेलकीजेदक के याजकत्व के प्रकारात्मक महत्व की ओर इशारा कयिा: *'तू मेलकीजेदक की व्यवस्था के अनुसार सदा के लिए याजक है'* (भजन संहति 109:4)। लेकनि मेलकीजेदक का प्रकारात्मक महत्व संत पौलुस प्रेरति द्वारा इब्रानयिों के नाम पत्र 7:1–28 में वशिेष रूप से स्पष्ट और वस्तिार से प्रकट कयिा गया है।

इस चमत्कार में, हमारे पूजनीय पिता अलीपियस ने स्वयं को हमारे प्रभु यीशु मसीह का अनुकरण करने वाला साबित किया; क्योंकि जैसे मसीह ने कोढ़ी को चंगा करते समय उसे आज्ञा दी थी कि वह याजक के पास जाकर अपनी शुद्धि के लिए दान चढ़ावे (मत्ती 8:4), वैसे ही इस पूजनीय पिता ने भी कुष्ठरोग से पीड़ित व्यक्ति को आज्ञा दी कि वह दिव्य बलिदान के दौरान उसे, एक याजक के रूप में, अपने सामने प्रस्तुत करे, और दान के रूप में वह चढ़ावे जिसके बारे में भविष्यवक्ता कहता है: *'मैं प्रभु को उसकी सभी कृपाओं के बदले में क्या दूँ? मैं उद्धार का प्याला लूँगा'* (भजन संहिता 115:3-4)। आइए यहाँ बलिदान का भी उल्लेख करें, क्योंकि इस कोढ़ी के परपोते ने, अपनी शुद्धि के लिए कृतज्ञता स्वरूप, गुफाओं के चर्च में पवित्र वेदी के ऊपर रखे ताबूत को सोने से मढ़वा दिया था।

इसके अलावा, पूजनीय अलीपिअस ने स्वयं को मसीह का अनुकरण करने वाला साबित किया, जिन्होंने जन्म से अंधे व्यक्ति को चंगा किया; क्योंकि, ठीक वैसे ही जैसे मसीह ने जन्म से अंधे व्यक्ति को चंगा करते समय, पहले उसकी आँखों पर मिट्टी का लेप लगाया, फिर उसे सिलोआम के कुंड में (जिसका अर्थ है 'भेजा गया') धोने का आदेश दिया (यूहन्ना 9:6-7), उसी प्रकार इस पूजनीय पिता ने भी किया: पहले उन्होंने कुष्ठरोगी के घावों पर प्रतिमा-चित्रण के रंगों से अभिषेक किया, फिर उसे उसी पानी से स्नान करने का आदेश दिया जिससे पुरोहित—ईश्वर के दूत—आमतौर पर स्नान करते हैं; इस प्रकार संत ने उस बीमार व्यक्ति को उसकी शारीरिक कुष्ठ रोग और उसकी आध्यात्मिक अंधापन दोनों से चंगा कर दिया, जिससे नगर से उस बीमार व्यक्ति के साथ आए सभी लोग इतनी तीव्र चिकित्सा पर अत्यंत चकित हो गए। लेकिन पूजनीय अलीपियस ने उनसे कहा:

'भाइयो! इस बात पर ध्यान दो कि किहा गया है: *"कोई भी दो स्वामियों की सेवा नहीं कर सकता"* (मत्ती 6:24); क्योंकि यह मनुष्य अपने पापों के कारण मूल रूप से एक दानव का दास था; इसलिए, जब वह परमेश्वर के पास आया, परन्तु शैतान की सलाह पर, अपनी मुक्ति से निराश हो गया और उस प्रभु पर विश्वास नहीं किया, जो अकेले ही उसे बचा सकते थे, तो उसके शरीर पर उसकी अविश्वास की सजा के रूप में कोढ़ और भी अधिक प्रबलता से छा गया; क्योंकि प्रभु ने कहा है: *'माँगो'*, और केवल 'माँगो' ही नहीं, बल्कि विश्वास के साथ, *'और तुम्हें दिया जाएगा'* (मत्ती 7:7)। परन्तु जब वह अब पश्चाताप करके दूसरी बार मेरे सामने परमेश्वर की ओर मुड़ा, *'दया से धनी परमेश्वर'* (इफिसियों 2:4) ने उसे चंगा किया।

यह सुनकर, लोग संत के सामने झुक गए और ठीक हुए व्यक्ति के साथ मिलकर परमेश्वर और परम आदरणीय पिताओं एंथनी और थियोडोसियस, तथा उनके शिष्य, हमारे परम आदरणीय पिता अलीपियस की महिमा करते हुए, अपने वापसी के सफर पर निकल पड़े; और उन्होंने इस पवित्र अलीपियुस के बारे में कहा, कि वह उनके लिए एक नए एलिशा के समान प्रकट हुए थे, क्योंकि उन्होंने उस कुष्ठरोगी को ठीक किया था, ठीक वैसे ही जैसे एलिशा ने सीरियाई नामान को कुष्ठरोग से ठीक किया था (2 राजा 5:14)।

कीव के उसी शहर का एक धार्मिक व्यक्ति भी था। उसने एक चर्च बनवाया और उसे सजाने के लिए सात बड़ी प्रतिमाएँ चाहें; इस व्यक्ति ने चाँदी, प्रतिमाओं को चित्रित करने के लिए निर्धारित पैनलों के साथ, गुफा मठ के दो भिक्षुओं को दीं जिन्हें वह जानता था, और उनसे प्रतिमाओं के चित्रण के संबंध में संत अलीपियस से परामर्श करने के लिए कहा। लेकिन भिक्षुओं ने अलीपियस से कुछ नहीं कहा; इसके बजाय, उन्होंने चाँदी अपने पास रख ली। कुछ समय बाद, उस आदमी ने भिक्षुओं को यह पूछने के लिए संदेश भेजा कि क्या उसकी आइकन चित्रित की गई थीं या नहीं। उन्होंने जवाब दिया कि अलीपियस और अधिक चाँदी की माँग कर रहे थे। फिर, एक बार फिर, उस आदमी द्वारा भेजी गई चाँदी लेकर, उन्होंने उसे अपने पास रख लिया। तब, निर्लज्जता की हद पार करते हुए, उन दो संतों ने उस आदमी को फिर से संदेश भेजा (संत की बदनामी करते हुए) कि अलीपियस उतनी ही चांदी की मांग कर रहे थे जितनी वह पहले ही प्राप्त कर चुके थे। उस ईश्वर-प्रेमी व्यक्ति ने तीसरी बार चांदी दे दी, यह कहते हुए:

'मैं उनके हाथों के काम से एक प्रार्थना और आशीर्वाद प्राप्त करना बहुत चाहता हूँ।'

हालाँकि, संत अलीपियस को इस बात की कोई खबर नहीं थी कि भिक्षु क्या कर रहे थे।

अंत में, उस व्यक्ति ने एक बार फिर यह पूछने के लिए संदेश भेजा कि क्या आइकन अभी तक चित्रित किए गए हैं। भिक्षुओं ने, यह नहीं जानते हुए कि क्या जवाब दें, कहा कि अलीपियस ने तीन मौकों पर भेजा गया सारा चाँदी ले लिया था, लेकिन आइकन चित्रित नहीं करना चाहता था।

तब वह ईश्वर-प्रेमी व्यक्ति अपने अनुचरों के साथ गुफा मठ पहुँचा, आबट निकोन के पास गया और उन्हें अलीपियस द्वारा (कथित रूप से) उस पर डाले गए दुःख का कारण बताया। आबट ने अलीपियस को बुलवाकर उससे कहा:

'भाई, तुम हमारे इस पुत्र को इतना दुख क्यों दे रहे हो, जिसने तुमसे आइकन बनाने की सच्चे मन से विनती की थी और तुम्हें उतना चाँदी दे दिया जितनी तुमने माँगी थी? फिर भी तुमने, इतनी सारी चाँदी लेकर और आइकन बनाने का वादा करके, उन्हें नहीं बनाया, जबकि अन्य अवसरों पर तुमने बिना किसी भुगतान के आइकन बनाए हैं।'

इस पर, धन्य अलीपियस ने उत्तर दिया:

– आदरणीय पिताजी! आप अच्छी तरह जानते हैं कि मैंने इस मामले में कभी आलस्य नहीं दिखाया है; लेकिन फिलहाल मुझे बिल्कुल समझ नहीं आ रहा कि आप किस बारे में बात कर रहे हैं।

तब मठाधीश ने उससे फिर कहा:

'आपने सात आइकन चित्रित करने के लिए तीन गुना कीमत ली; फिर भी आज तक आपने उन्हें चित्रित नहीं किया है।'

और तुरंत, संत को बेनकाब करने की इच्छा से, उसने आदेश दिया कि आइकन (चित्रों) को चित्रित करने के लिए निर्धारित पैनल लाए जाएँ (ये पैनल एक दिन पहले मठ की एक इमारत में खड़े हुए देखे गए थे, और उन पर कुछ भी चित्रित नहीं था): मठाधीश ने यह भी आदेश दिया कि उन भिक्षुओं को बुलाया जाए जिनके माध्यम से उस व्यक्ति ने संत को चाँदी दी थी, ताकि ये भिक्षु अलीपियस को बेनकाब कर सकें।

पैनलों को लाने के लिए भेजे गए लोगों ने पाया कि वे बहुत कुशलता से चित्रित थे और उन्हें मठाधीश के पास ले आए; यह देखकर, उपस्थित सभी लोग अत्यंत आश्चर्यचकित हो गए और भयभीत हो गए; फिर, काँपते हुए, वे जमीन पर लोट गए और उन प्रतिमाओं के सामने , जो मानव हाथों से नहीं बनी थीं, नमन करने लगे – अर्थात्, प्रभु की प्रतिमा, परमेश्वर की अति पवित्र माता की प्रतिमा, और परमेश्वर के अन्य संतों की प्रतिमाएँ।

तब वे दो भिक्षु आए जिन्होंने अलीपियस की बदनामी की थी; इस चमत्कार के बारे में कुछ भी न जानते हुए, वे संत से बहस करने लगे, कहते हुए:

'तुमने दोगुनी कीमत ली है, फिर भी तुम कोई आइकन नहीं बना रहे हो!'

ये शब्द सुनकर, वहाँ मौजूद सभी लोगों ने भिक्षुओं को आइकॉन दिखाते हुए कहा:

'ये आइकॉन, जो स्वयं ईश्वर द्वारा चित्रित हैं, अलीपियस की बेगुनाही साबित करते हैं!'

हालाँकि, भिक्षुओं ने जब ये आइकन देखे, तो वे इतने बड़े चमत्कार को देखकर भयभीत हो गए। उन पर तुरंत ही मठाधीश ने चोरी और धोखाधड़ी का आरोप लगाया, उन्हें मठ से निकाल दिया और उनकी सारी संपत्ति छीन ली।

लेकिन इन भिक्षुओं ने अपनी दुर्भावना नहीं छोड़ी: उन्होंने पूरे शहर में सम्माननीय अलीपियस के खिलाफ बदनामी फैलाना शुरू कर दिया, यह दावा करते हुए कि उन्होंने स्वयं ही वे प्रतिमाएँ बनाई थीं; उन्होंने कहा, 'हमारे अधिष्ठाता, हमारे श्रम का पुरस्कार नहीं देना चाहते थे—और हमें हमारे काम से हटाने के लिए—ने आइकन के बारे में झूठ बोला, यह दावा करते हुए कि उन्हें स्वयं ईश्वर ने चित्रित किया था, जो अलीपियस को बेदाग साबित करना चाहते थे।'

ऐसी बातें सुनकर, कई नागरिक उन प्रतिमाओं को देखने और उनकी पूजा करने के लिए नगर से मठ गए। हालाँकि, इस तथ्य के बावजूद कि कई नागरिकों ने उन भिक्षुओं पर विश्वास कर लिया था जिन्होंने आदरणीय अलीपियस पर बदनामी की थी – ईश्वर, जो अपने संतों को महिमामय बनाता है, जैसा कि वह स्वयं पवित्र सुसमाचार में कहते हैं: *'पहाड़ पर स्थित नगर छिपा नहीं सकता'* (मत्ती 5:14); और फिर: *'जब दीपक जलाया जाता है, तो उसे टोकरी के नीचे नहीं, बल्कि दीवट पर रखा जाता है, और वह घर में सभी को प्रकाश देता है'* (मत्ती 5:15)—ईश्वर ने इस धर्मात्मा के पुण्य कर्मों को नहीं छिपाया; क्योंकि संत अलीपियस के लिए प्रभु द्वारा किया गया इस चमत्कार की खबर राजकुमार व्लादिमीर मोनोमाख[5593] तक पहुँच गई; इस चमत्कार की पुष्टि इस प्रकार हुई:

ईश्वर की इच्छा से, कीव में आग लग गई, जिसने कीव के लगभग पूरे पोडिल जिले ([5594]) को जला दिया; शहर के इस हिस्से में स्थित चर्च, जिसमें उपर्युक्त आइकन रखे थे, भी जलकर राख हो गया; हालाँकि, आग के बाद, सभी सात आइकन पूरी तरह से क्षति-मुक्त पाए गए।

जब राजकुमार को इसकी सूचना मिली, तो वह स्वयं आग लगने की घटनास्थल पर गए, वहाँ हुए चमत्कार को देखने की इच्छा से। आइकनों को देखकर, जो आग से अछूते रहे, राजकुमार ने सबसे पहले यह जाना कि उन्हें ईश्वर की दिव्य

[5593] व्लादिमीर मोनोमाख ने 1114 से 1125 तक शासन किया।

[5594] शहर का एक हिस्सा।

व्यवस्था द्वारा एक ही रात में चित्रित किया गया था, जो अलपियिस पर लगाए गए अपमान को दूर करना चाहते थे। तब राजकुमार व्लादिमीर मोनोमाख ने परमेश्वर की, जो सभी चीजों के स्रष्टा हैं, भक्तिपूर्वक स्तुति की, जिन्होंने आदरणीय अलीपियिस के पुण्यों के लिए इतने बड़े चमत्कार किए थे। इसके बाद, उन प्रतिमाओं में से एक—अर्थात् परमेश्वर की अति पवित्र माता की प्रतिमा—लेकर, उन्होंने इसे रोस्तोव शहर में, वहाँ स्थित पत्थर के चर्च में भेजने का आदेश दिया, जिसे उन्होंने स्वयं बनवाया था। एक समय, रोस्तोव में यह चर्च नष्ट हो गया था; हालाँकि, प्रतिमा पूरी तरह से सुरक्षित रही। बाद में, प्रतिमा को एक लकड़ी के चर्च में रखा गया; लेकिन यह चर्च भी कुछ समय बाद आग से नष्ट हो गया; फिर भी प्रतिमा एक बार फिर सुरक्षित रही, और आग के बाद उस पर एक भी मामूली खरोंच नहीं मिली।

यह सब निस्संदेह हमारे पूजनीय पिता अलीपियिस के पुण्य जीवन की गवाही देता था, जिनके लिए वह प्रतिमा अपनी इच्छा से चित्रित की गई थी।

अब हम संत के निधन के समय घटित चमत्कार की ओर चलें, ताकि हम देख सकें कि कैसे यह व्यक्ति, एक कुशल प्रतिमा-चित्रकार, इस क्षणिक जीवन से अनंत जीवन में अद्भुत रूप से प्रवेश किया।

एक धर्मनिष्ठ व्यक्ति ने हमारे पूजनीय पिता अलीपियिस से परमेश्वर की अति पवित्र माता की एक प्रतिमा बनाने का अनुरोध किया; उसने संत से यह भी अनुरोध किया कि वे इस प्रतिमा को 'डोर्मिशन' (निद्रोपवेश) के पर्व के लिए समय पर पूरा कर दें। लेकिन कुछ ही समय बाद हमारे पूज्य पिता अलिपियिस बीमार पड़ गए और मृत्यु के समीप थे; इस बीच, प्रतिमा अभी तक नहीं बनाई गई थी; उस व्यक्ति ने इस पर गहरा दुःख व्यक्त किया और संत को बहुत चिंतित किया। लेकिन धन्य अलपियिस ने उससे कहा:

'मेरे बच्चे! मुझे परेशान मत करो, बल्कि अपना सारा दुःख प्रभु पर डाल दो, और वह अपनी इच्छा से करेंगे: प्रतिमा अपने पर्व के दिन अपनी जगह पर होगी।'

उस व्यक्ति ने संत के शब्दों पर भरोसा करके, आनंदित होकर घर चला गया।

बाद में, वह परम पवित्र ईश्वर की माता के निद्रोत्सव के पूर्व संध्या पर फिर से अलीपियिस के पास आया। यह देखकर कि प्रतिमा नहीं बनी थी, और यह भी ध्यान देते हुए कि परम पूजनीय अलीपियिस और भी अधिक बीमार पड़ गए थे, उस व्यक्ति ने धन्य संत को डाँटना शुरू कर दिया, और कहा:

'आपने मुझे अपनी गंभीर बीमारी के बारे में कुछ क्यों नहीं बताया? तब मैं यह प्रतिमा किसी दूसरे प्रतिमाकार को दे देता, जो मेरे लिए इसे चित्रित कर देता, ताकि त्योहार सम्मानजनक और भव्य हो सके; लेकिन अब आप मुझे बहुत शर्मिंदगी दे रहे हैं।'

सम्माननीय ने नम्रता से उत्तर दिया:

'हे मेरे पुत्र! क्या मैंने यह अपनी आलस्य के कारण किया है? फिर भी ईश्वर अपनी माता का एक चित्र अपने एक ही वचन से बना सकते हैं; देखो, मैं स्वयं इस संसार से जा रही हूँ, जैसा कि प्रभु ने मुझे बताया है, लेकिन मैं तुम्हें दुःख में नहीं छोड़ना चाहती।'

वह व्यक्ति गहरे दुःख के साथ चला गया। उसके जाने के तुरंत बाद, एक तेजस्वी युवक रेवरेंड अलीपियिस की कोठरी में आया और उस व्यक्ति के लिए एक प्रतिमा चित्रित करने लगा। अलीपियिस ने सोचा कि उस व्यक्ति ने उनसे नाराज़ होकर एक नया प्रतिमा-चित्रकार भेज दिया है, और शुरू में उसने उस युवक को एक इंसान समझ लिया; हालाँकि, उसके काम की गति और सुंदरता से पता चला कि वह एक देवदूत था; क्योंकि तीन घंटों के भीतर उसने एक अत्यंत सुंदर प्रतिमा चित्रित कर दी थी, कभी प्रतिमा पर सोना चढ़ाता, कभी पत्थर पर विभिन्न रंग पीसकर उनसे चित्र बनाता; फिर उसने रेवरेंड से कहा:

'फादर! शायद यहाँ अभी भी कुछ कमी है, या क्या मुझसे किसी तरह की गलती हो गई है?'

जिस पर रेवरेंड फादर ने उत्तर दिया:

'आपने सब कुछ बहुत खूबसूरती से किया है; ईश्वर स्वयं ने आपको इतनी भव्यता से प्रतिमा चित्रित करने में मदद की; यह वही थे जिन्होंने यह सब आपके माध्यम से किया।'

जब शाम हुई, तो प्रतिमा-चित्रकार, प्रतिमा के साथ, दृष्टि से ओझल हो गया।

इस बीच, प्रतिमा का मालिक दुःख के मारे सारी रात सो नहीं सका, क्योंकि वह सोच रहा था कि प्रतिमा उत्सव के लिए तैयार नहीं होगी; इसलिए, उसने खुद को ऐसी दैवी कृपा का अयोग्य समझा और खुद को एक बड़ा पापी कहा। इसी कारण, अगले दिन सुबह उठकर, वह प्रभु के सामने अपने पापों की स्वीकारोक्ति करने के लिए चर्च गया। लेकिन जैसे ही

उसने चर्च के दरवाज़े खोले, उसने अपनी जगह पर प्रतिमा को खड़ा देखा। तुरंत वह डर के मारे ज़मीन पर गिर पड़ा, यह सोचकर कि यह एक भूत है; फिर, ज़मीन से थोड़ा उठकर और प्रतिमा को ध्यान से देखने पर, उसे एहसास हुआ कि यह उसकी अपनी प्रतिमा थी। परिणामस्वरूप, वह बड़े भय और आतंक से भर गया और उसे पूजनीय अलीपियस के शब्द याद आए, जिन्होंने उससे कहा था कि प्रतिमा अपने पर्व के दिन के लिए तैयार हो जाएगी; फिर वह जाकर अपने पूरे घर वालों को जगा लाया। उसका परिवार मोमबत्तियाँ और धूपदान लेकर आनंदपूर्वक चर्च की ओर भागा; वहाँ सूर्य की तरह चमकती हुई प्रतिमा को देखकर, वे सभी जमीन पर गिर पड़े, प्रतिमा के सामने झुक गए और आनंदित हृदयों से उसे चूमा।

इसके बाद, वह धर्मनिष्ठ व्यक्ति मठाधीश के पास गया और उन्हें उस चमत्कार के बारे में बताया जो प्रतिमा के साथ हुआ था; फिर वे दोनों मिलकर आदरणीय अलीपियस के पास गए और पाया कि वे पहले ही इस संसार से प्रस्थान कर रहे थे। इसके बावजूद, मठाधीश ने उनसे पूछा:

'फादर! इस व्यक्ति के लिए यह प्रतिमा किसने और कैसे बनाई?'

अलिपियस ने उन्हें वह सब कुछ बताया जो उसने देखा था और कहा:

'उस प्रतिमा को एक देवदूत ने चित्रित किया था, और वह स्वयं यहाँ खड़ा है, मेरी आत्मा को ले जाने का इरादा रखता है।'

यह कहकर, धन्य व्यक्ति ने[5595] के अगस्त के सत्रहवें दिन अपना प्राण प्रभु के हाथों में सौंप दिया। भाइयों ने, उनके शरीर को कफ़न में लपेटकर, उन्हें चर्च ले गए; फिर, प्रथागत अंतिम संस्कार करने के बाद, उन्होंने संत के शरीर को परम पूज्य एंथनी की गुफा में सुला दिया।

इस प्रकार इस पवित्र और चमत्कारी प्रतिमा-चित्रकार ने स्वर्ग और पृथ्वी को सुशोभित किया; पृथ्वी पर देह में जीवन यापन करने के बाद, वह एक पुण्य आत्मा के साथ स्वर्ग में आरोहण किया, प्रतिमा-चित्रकारों के प्रमुख, परमेश्वर पिता की महिमा के लिए, जिन्होंने कहा: *'आओ हम मनुष्य को अपनी प्रतिमा [और] अपनी समानता में बनाएँ* (उत्पत्ति 1:26), और भी *'उसकी हाइपोस्टेसिस की प्रतिमा में'* (इब्रानियों 1:3), परमेश्वर पुत्र, जो *'मानव रूप में पाए गए'* (फिलिप्पियों 2:7); पवित्र आत्मा के साथ, जो कबूतर के रूप में (मत्ती 3:16) और आग की जीभ के रूप में (प्रेरितों के काम 2:3) स्वर्ग से अवतरित हुए। आओ हम इन सभी की स्तुति करें—परमेश्वर पिता, परमेश्वर पुत्र और परमेश्वर पवित्र आत्मा, जो एक सार में वास करते हैं—हमारे पूजनीय पिता अलीपियस के साथ, और आओ हम उन्हें युगानुयुग महिमामय करें। आमीन।

पवित्र शहीदों स्ट्रैटन, फिलिप, यूटकियन और साइप्रियन का कष्टकथा

17 अगस्त को स्मरण किया जाता है

ये पवित्र शहीद, कुलीन वंश के पुरुष होने के नाते, निकोमेडिया[5596] में घूमते थे और सार्वजनिक मनोरंजन कार्यक्रमों में भाग लेते हुए, वहाँ इकट्ठी हुई भीड़ को उपदेश देते थे, उन्हें मूर्तियों की पूजा छोड़ने और मसीह में विश्वास करने के लिए मनाते थे। एक दिन, शहर के राज्यपाल ने देखा कि अखाड़ा खाली था, और वहाँ लगभग कोई दर्शक नहीं थे, और इसका कारण जानने पर—अर्थात् यह कि पवित्र शहीदों द्वारा सिखाए जाने के कारण लोगों ने मनोरंजन के लिए इकट्ठा होना बंद कर दिया था, और इसलिए वे अपनी पारंपरिक प्रथाओं को नज़रअंदाज़ कर रहे थे और किसी तरह का नया जीवन जी रहे थे—उसने तुरंत संतों को अपने सामने लाने का आदेश दिया। जब वे नगरपालिका के समक्ष उपस्थित हुए, तो उन्होंने उससे घोषणा की कि वे मसीह में अपने विश्वास पर दृढ़ बने हुए हैं और इसे दूसरों को सिखाते हैं। फिर उन्हें अखाड़े में ले जाया गया और जंगली जानवरों के सामने फेंक दिया गया, लेकिन जानवरों ने उन्हें कोई हानि नहीं पहुँचाई।

[5595] आदरणीय अलीपियस का 1114 में निधन हो गया।

[5596] निकोमेडिया – प्राचीन रोमन साम्राज्य के पूर्वी भाग की राजधानी, सम्राट डायोक्लेटियन का सिंहासन, एशिया माइनर में बिथिनिया के रोमन प्रांत का एक प्रसिद्ध शहर, जो एशिया माइनर के उत्तर-पश्चिमी भाग में स्थित था।

इसके बाद, उन्हें कई और तरह-तरह की यातनाएँ दी गईं और अंत में आग में फेंक दिया गया। इस प्रकार, पवित्र शहीदों ने मसीह के लिए पीड़ा की दौड़[5597] पूरी की और विजयी होकर, अपने मुकुट प्राप्त किए[5598] ।

पवित्र शहीद मरिॉन की स्मृति

17 अगस्त को स्मरणोत्सव

संत मरिॉन दुष्ट राजा डेसियस[5599] के शासनकाल के दौरान अकेया[5600] में एक पुरोहित थे; उस प्रांत का राज्यपाल एंटपिेटर था। संत एक कुलीन और धनी परिवार से थे; वे बहुत ही सौम्य स्वभाव के थे; उनके हृदय में हमेशा ईश्वर और लोगों के प्रति गिहरा प्रेम था, और उन्होंने ईश्वर को प्रिय लगने वाला जीवन जिया।

एक दिन, मसीह के जन्म के पर्व पर, राज्यपाल एंटपिाटर प्रार्थना के लिए इकट्ठा हुए ईसाइयों को पकड़ने और उन्हें यातना देने के लिए एक ईसाई चर्च में घुसा; यह देखकर, संत मायरन उत्साह से भर गए और उन्होंने राज्यपाल की जोरदार निंदा की। इसके लिए, उन्हें राज्यपाल के आदेश पर गिरफ्तार कर क्रूर यातनाएँ दी गईं: उन्हें एक पेड़ से लटकाया गया और लोहे की कंघी से खुरच दिया गया; फिर उन्हें आग से झुलसाया गया; अंत में, उसे एक भयंकर आग उगलती भट्टी में फेंक दिया गया; लेकिन उसी क्षण, भट्टी से आग फूट पड़ी और पास खड़े राज्यपाल के एक सौ पचास अधर्मी सेवकों को भस्म कर दिया; हालाँकि संत मसीह की कृपा से जीवित रहे, उन्हें कोई भी हानि नहीं हुई, और भट्टी के बीच में खड़े होकर उन्होंने ईश्वर का धन्यवाद किया। उसी समय, भट्टी में पवित्र स्वर्गदूत भी दिखाई दिए, जो आग के बीच संत के चारों ओर खड़े होकर भट्टी को ठंडा कर रहे थे।

जब भट्टी बुझ गई और संत उसमें से बिना किसी चोट के बाहर निकले, तो राज्यपाल ने उन्हें मूर्तियों की पूजा करने के लिए मजबूर करना शुरू कर दिया; लेकिन जब संत ने इस दुष्ट आदेश का पालन नहीं किया, तो राज्यपाल ने आदेश दिया कि संत की खाल उसके कंधों से लेकर पैरों तक उधेड़कर पट्टियों में काट दी जाए। हालाँकि, पवित्र शहीद ने अपने ही शरीर से एक पट्टा उतारा और उसे राज्यपाल के चेहरे पर फेंक दिया; जिसके बाद एक बार फिर से उसके नंगे शरीर पर लोहे की पंजाओं से खुरचने की यातना दी गई और फिर उसे चीजों द्वारा खाए जाने के लिए जंगली जानवरों के सामने फेंक दिया गया; फिर भी उसे उनसे कोई चोट नहीं लगी।

उस समय, हेगेमोन एंटपिाटर, मसीह के उत्साही मरिॉन द्वारा पूरी तरह लज्जित होकर, क्रोध और रोष से भर गया और अपने ही हाथों अपनी जान ले ली; इस प्रकार वह दुष्ट व्यक्ति एक बड़े शोर-शराबे के साथ नष्ट हो गया, अपनी नीच आत्मा को नरक में राक्षसों के हवाले कर गया, जहाँ उसे अनंतकाल तक यातनाएँ सहनी होंगी। हालाँकि, पवित्र शहीद को साइज़िकस नगर ले जाया गया[5601] और वहाँ उनका सिर कलम कर दिया गया, उन्होंने अपनी पवित्र आत्मा को ईश्वर के हाथों में सौंप दिया[5602] । इस प्रकार, शहीद का मुकुट प्राप्त कर, वह अपने प्रभु के आनंद में प्रवेश कर गए।

कॉन्टाकियन, स्वर 4:

हे अति महिमामय, हे अति सम्माननीय मायरॉन, आपने अपनी युवावस्था से ही मसीह से प्रेम किया और उनके दैवीय आज्ञाओं का पालन किया, और पूर्ण निष्ठा के साथ उनके पास आए, और स्वर्गदूतों के साथ विनम्रता से प्रार्थना करें। उन सभी के पापों की क्षमा के लिए मध्यस्थता करें जो आपकी स्मृति का सम्मान करते हैं।

[5597] ग्रीकों के बीच, 'स्टेडियम' एक निश्चित लंबाई और चौड़ाई वाली जगह को कहा जाता था, जो बाड़ से घिरी होती थी और दौड़ के लिए इस्तेमाल होती थी। जो धावक दौड़ पूरी करके दूसरों से पहले फिनिश लाइन तक पहुँचता था, उसे विजेता घोषित किया जाता था और इनाम के रूप में उसे एक माला दी जाती थी।

[5598] इन पवित्र शहीदों की मृत्यु की तारीख अज्ञात है।

[5599] सम्राट डेसियस ने 249 से 251 तक शासन किया।

[5600] अकेया पेलोपोनेस प्रायद्वीप पर स्थित एक प्राचीन यूनानी क्षेत्र था।

[5601] साइज़िकस शहर आर्कटोनिसोस प्रायद्वीप पर स्थित था।

[5602] संत माइरॉन शहीद की मृत्यु लगभग 250 ईस्वी में हुई।

31 अगस्त

18 अगस्त (पुराने कैलेंडर के अनुसार)

इसी दनि, कॉन्स्टेंटनिोपल के पवत्रि पैट्रआिर्क, जॉन और जॉर्ज की स्मृति। जॉन ने 669 से 674 तक, और जॉर्ज ने 678 से 683 तक पैट्रआिर्क के रूप में सेवा की – दोनों सम्राट कॉन्स्टेंटनि पॉगोनैटस (668–685) के शासनकाल के दौरान।

पवत्रि पुरोहति-शहीद एमलियिन और उनके साथयिों की शहादत

18 अगस्त को स्मरण कयिा जाता है

संत एमलियिन का जन्म आर्मेनयिा के एशयिाई प्रांत में हुआ था। उनके माता-पति - ईसाई - कुलीन वंश और महान धन-संपत्ति वाले लोग थे। उन्होंने उनकी शक्षिा के लिए उन्हें एक सदाचारी व्यक्ति, हलिारयिन नामक एक मठवासी पुरोहति, के हवाले कर दयिा। धर्मग्रंथों के अध्ययन में पूरी तरह से पारंगत और परपिक्व होने के बाद, एमलियिन ने एक पवत्रि, ईश्वरीय और धार्मकि जीवन जयिा, और वह उपवास, प्रार्थना और धर्मग्रंथों के पाठ के प्रति उत्साहपूर्वक समर्पति रहा, साथ ही उसने अपनी कुंवारी पवत्रिता को नरि्दोषता में बनाए रखा। जब आर्मेनयिा में यह खबर पहुँची कि अधर्मी रोमन सम्राटों डायोक्लेटयिन और मैक्समियिन ने यूरोप में ईसाइयों पर एक क्रूर उत्पीड़न शुरू कर दयिा था, तो एमलियिन सच्चे धर्म के लिए पवत्रि उत्साह से भर गया और मसीह के प्रति प्रेम से इतना जल उठा कि वह उनके लिए मृत्यु को भी स्वीकार करने को तैयार था, उसने वहाँ के मूर्तपिूजकों को मसीह के नाम का प्रचार करने और अपने प्रभु के लिए अपना जीवन बलदिान करने हेतु उन प्रदेशों की यात्रा करने का संकल्प लयिा। एमलियिन के दो भाई थे, डायोनसियिस और हर्मपि्पस। दविय प्रेरति उपदेशों के माध्यम से, उसने उनमें भी यही संकल्प भर दयिा। और इस प्रकार, अपने माता-पति की मृत्यु के बाद, भाइयों ने आपसी सहमति से और मसीह के प्रति प्रेम के कारण, अपना घर, अपना देश, अपनी वरिासत और इस दुनयिा की सभी संपत्तियिों को छोड़ दयिा, और एशयिा से यूरोप के लिए रवाना हो गए। वे अपने साथ अपने शक्षिक, पवत्रि भक्षिु हलिारयिन को ले गए, और इटली के स्पोलीटन शहर में पहुँचे[5603] । इस शहर में, मूर्तपिूजकों के बीच, उन्होंने कई ईसाइयों को शुद्ध और धर्मी जीवन जीते हुए पाया, और उनके अनुरोध पर, उन्होंने उनके साथ नविास करना शुरू कर दयिा। धन्य एमलियिन सभी के लिए पवत्रिता का एक उदाहरण थे, क्योंकि वे दनि-रात प्रार्थना और परमेश्वर के वचन के प्रचार में लगे रहते थे।

[5604]कुछ समय बीत जाने के बाद, ट्रेबयिा नामक एक पड़ोसी शहर के बशिप का नधिन हो गया। तब उस नगर के नविासी—जो मूर्तपिूजकों के बीच रहने वाले ईसाई थे, जैसे खरपतवार के बीच गेहूँ और काँटों के बीच कमल—ने संत एमलियिन के जीवन और ज्ञान के बारे में जानकर, उन्हें अपना बशिप चुना, एक ऐसा व्यक्ति जो भले ही उम्र में युवा था, लेकनि ज्ञान और सद्गुण में बड़ों से भी आगे था। उनके अभषिेक के लिए, उन्हें रोम में परम पावन पोप मार्सेलनिस के पास भेजा गया। पोप से बशिप का अभषिेक प्राप्त करने के बाद, संत एमलियिन, अपने शक्षिक और अपने भाइयों के साथ, स्पोलीटोन से अपने धर्मप्रांत के कैथेड्रल शहर ट्रेबयिा चले गए। अपनी भेड़ों का प्रभार संभालने के बाद, उन्होंने बहादुरी से उनका शासन कयिा, मसीह की भेड़ों को कर्म और वचन दोनों से उपदेश दयिा; इसके अलावा, मसीह की कृपा से चमत्कारकि रूप से बीमारयिों को ठीक करके और मानव शरीरों तथा आत्माओं को पुनर्स्थापति करके, उन्होंने कई अवशि्वासयिों को ईसाई धर्म में परविर्तति कर दयिा।

उस समय, उन भूमि का शासक मैक्समियिन नामक एक क्रूर स्वभाव का व्यक्ति था, जसिे अधर्मी सम्राटों ने एट्रूरयिा और उम्ब्रयिा का अधकिार सौंपा था। ईसाई बशिप इमलियिन के बारे में यह सुनकर कि वह कई लोगों को मूर्तयिों

[5603] अब स्पोलेटो के नाम से जाना जाने वाला यह शहर उम्ब्रयिा में टबिर नदी की एक सहायक नदी पर स्थति है। प्राचीन काल में इस सहायक नदी को क्लटिुम्ने कहा जाता था।

[5604] ट्रेबयिा, प्राचीन काल में एक काफी महत्वपूर्ण शहर, स्पोलटिो की तरह ही, ब्रह्मांड की राजधानी, रोम को एड्रयिाटकि सागर के एक बंदरगाह से जोड़ने वाली मुख्य सड़क पर स्थति था; अब यह अस्तत्वि में नहीं है। यह उम्ब्रयिा में, स्पोलटिो से कुछ उत्तर में और उससे थोड़ी दूरी पर था।

की पूजा से हटाकर मसीह की ओर मोड़ रहे थे और मूर्तिपूजक मंदिरों को बंद कर रहे थे, मैक्सिमियिन ट्रेबियो की ओर तेज़ी से बढ़ा और ईश्वर के उस पवित्र पुरुष को पकड़कर अपने सामने न्याय के लिए लाने का आदेश दिया, और उससे कहा:

'एमिलियिन, मैं तुम्हारे बारे में यह क्या सुन रहा हूँ? तुम अपने ही विनाश को क्यों जानबूझकर आमंत्रित कर रहे हो? अगर तुम हमारे देवताओं की पूजा नहीं करोगे, तो मैं तुम्हें क्रूर यातनाओं से गुजारूँगा और तुम्हें एक भयानक मृत्यु देने का आदेश दूँगा।'

'मैं राक्षसों की पूजा नहीं करूँगा,' पवित्र बिशप ने पूर्ण दृढ़ता से उत्तर दिया, 'क्योंकि सभी विधर्मी देवता राक्षस हैं, जैसा कि पवित्र पुस्तकों में लिखा है, और जो कोई भी उनके सामने सिर झुकाता है, उसे नरक में अनंतकालिक यातनाएँ प्राप्त होंगी।'

ये शब्द सुनते ही राज्यपाल क्रोध से आग-बबूला हो गया और संत को बेरहमी से पीटने का आदेश दिया; और पिटाई के बाद, उसने अपने शब्दों से उनका मज़ाक उड़ाना शुरू कर दिया। उसने ईश्वर मसीह की निंदा की और कहा कि ईसाई ईश्वर के पास कोई शक्ति नहीं है, जबकि जिन देवताओं की वह पूजा करता था, वे सर्वशक्तिमान थे। तब पवित्र बिशप ने उससे कहा:

'अगर तुम चाहो तो इसका परीक्षण करो, और पता लगाओ कि किसकी शक्ति अधिक है—मसीह की या तुम्हारे देवताओं की? आदेश दो कि किसी लकवाग्रस्त व्यक्ति या किसी अन्य बीमारी से पीड़ित व्यक्ति को यहाँ लाया जाए, और अपने पुरोहितों को आज्ञा दो कि वे उस बीमार व्यक्ति के ठीक होने के लिए देवताओं से प्रार्थना करें; मैं भी अपने ईश्वर से प्रार्थना करूँगा, और जिस ईश्वर की शक्ति से वह बीमार व्यक्ति ठीक हो जाए, उसी ईश्वर को सभी सच्चा ईश्वर मानें और उसकी आराधना करें।"

संत एमिलियिन का यह प्रस्ताव मैक्सिमियिन को भाया, और उसने तुरंत उस बीमार व्यक्ति की तलाश भेज दी। जल्द ही एक लकवाग्रस्त व्यक्ति को लाया गया, जो बहुत लंबे समय से बिस्तर पर पड़ा था और उसके अंगों पर उसका बिल्कुल भी नियंत्रण नहीं था। यह दृश्य देखने के लिए एक बड़ी भीड़ जमा हो गई, जो होने वाले चमत्कार को देखने के लिए उत्सुक थी। और इस प्रकार, शासक के आदेश पर, पुरोहितों ने अपने देवताओं से प्रार्थना करना शुरू कर दिया, अपोलो, ज्यूस, मर्करी और उनके अन्य व्यर्थ और झूठे देवताओं का आह्वान करते हुए, कि वे लकवाग्रस्त व्यक्ति को ठीक कर दें। उन्होंने बहुत लंबे समय तक प्रार्थना की, लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ, जबकि संत, एक तरफ खड़े होकर, उन्हें और उनके देवताओं का मज़ाक उड़ाते रहे। अंत में, मैक्सिमियिन ने अपने पुरोहितों को उनकी प्रार्थना बंद करने का आदेश दिया और ईसाई बिशप, एमिलियिन की ओर मुड़कर उससे कहा:

'अब अपने ईश्वर से प्रार्थना करो, यदि तुम्हें उनसे कुछ प्राप्त करने की आशा है।'

तब बिशप प्रार्थना करने के लिए घुटने पर बैठ गए; अपने हाथ उठाकर, उन्होंने अपनी आँखें स्वर्ग की ओर उठाईं और प्रार्थना करते हुए कहा:

'हे प्रभु! मेरी प्रार्थना सुन, और मेरी पुकार तेरे समीप आवे। अपना मुख मुझ से न छिपाओ... जिस दिन मैं पुकारूँ उसी दिन शीघ्र ही मेरी सुन' (भजन संहिता 101:2–3)। हे प्रभु, यहाँ उपस्थित सभी को दिखाओ कि आप ही एकमात्र सच्चे परमेश्वर हैं, और उन लोगों को बचाओ जो आप पर विश्वास करते हैं।

इस प्रकार प्रार्थना करने के बाद, संत लकवाग्रस्त व्यक्ति के पास गए और, उसका हाथ पकड़कर, कहा:

'हमारे प्रभु यीशु मसीह के नाम पर, उठ और चंगा हो जा।'

वह लकवाग्रस्त व्यक्ति तुरंत खड़ा हो गया, उसका पूरा शरीर स्वस्थ हो गया, और सभी के देखते-देखते वह आनंदित होकर परमेश्वर की महिमा करता हुआ चलने लगा। उसने सभी को यह प्रमाण दिखाया कि वह पूरी तरह से ठीक हो गया था, और आनंदित होकर घर चला गया।

यह चमत्कार देखने वाले सभी लोग चकित रह गए, और कई लोग मसीह में विश्वास करने लगे। मैक्सिमियिन स्वयं अपने हृदय में विश्वास की ओर आकर्षित होने लगा, लेकिन दुष्ट पुरोहितों ने उसे विश्वास न करने के लिए मनाना शुरू कर दिया, यह कहते हुए कि यह चमत्कार ईश्वर की शक्ति से नहीं बल्कि एमिलियिन की जादू-टोने से हुआ था, और उन्होंने शासक से कहा:

'इस जादूगर को मार डालो, कहीं देवताओं की पूजा पूरी तरह से नष्ट न हो जाए।'

दुष्ट पुरोहतिों की बात सुनकर और ईश्वर की स्पष्ट शक्ति की अपेक्षा उनके झूठ पर अधकि वशि्वास करते हुए, मैक्समियिन ने एक बार फरि संत एमलियिन को मूर्तयिों की पूजा करने के लिए मनाने का प्रयास कयिा, यह कहते हुए:

'देवताओं को बलदिान चढ़ाओ, यह जानते हुए कि मेरे उपदेश पर ध्यान न देने वाले कई लोग अब तक भयानक यातनाओं में मर चुके हैं।'

'जो आपके दुष्ट देवताओं को बलदिान नहीं चढ़ाते थे,' संत ने उत्तर दयिा, 'बल्कि मसीह के लिए मरना चुना, वे अब उनके साथ अनंत आनंद का अनुभव करते हैं।'

मॅक्समियिन ने उत्तर दयिा, "मुझसे मसीह के नाम के बारे में और मत बोलो, लेकनि अपनी जवानी की परवाह करो, क्योंकि भयानक यातनाएँ तुम्हारा इंतज़ार कर रही हैं।"

संत एमलियिन ने उत्तर दयिा, 'मैं मसीह का सेवक हूँ, और मैं यीशु मसीह के नाम का खुले तौर पर प्रचार और महमिा करना बंद नहीं करूँगा; उनके लिए मैं हर तरह की यातना और यहाँ तक कि मृत्यु को भी सहने के लिए तैयार हूँ।'

तब मैक्समियिन ने आदेश दयिा कि संत के कपड़े उतार दिए जाएँ, उन्हें यातना स्थल पर लटका दयिा जाए, और उनके शरीर को जलती हुई मोमबत्तयिों से झुलसा दयिा जाए।

इस यातना को बनिा कसिी शकिायत के सहते हुए, पवत्रि शहीद ने प्रभु से प्रार्थना की कि वे उनके दुःखों में उन्हें बल प्रदान करें। और फरि मसीह उनके सामने प्रकट हुए और कहा:

'डरो मत, एमलियिन, मैं स्वयं तुम्हारे साथ हूँ!'

और उसी क्षण मोमबत्तयिाँ बुझ गईं और जल्लादों के हाथ लकवाग्रस्त हो गए। यह देखकर, राज्यपाल ने शहीद को यातना स्थल से उतारने का आदेश दयिा और उससे कहा:

'तुम कसि शक्ति से काम कर रहे हो, कि तुमने मोमबत्तयिाँ बुझा दीं और मेरे सेवकों के हाथों को पंगु बना दयिा? परन्तु मेरे पास तुम्हारे लिए और भी कठोर यातनाएँ हैं, जन्हिें तुम सहन नहीं कर पाओगे।'

'मेरी शक्ति,' शहीद ने उत्तर दयिा, 'मेरा मसीह है, और यदि तुम मुझे और अधकि यातनाएँ देते हो, तो वह मुझे और भी अधकि धैर्य प्रदान करेगा और अपनी शक्ति को मेरे माध्यम से और भी स्पष्ट रूप से प्रदर्शति करेगा।'

तब मैक्समियिन ने टनि का एक पात्र पघिलाने और शहीद को उसमें फेंकने का आदेश दयिा। लेकनि मसीह अपने सेवक के पास एक बार फरि प्रकट हुए और, उसका हाथ पकड़कर, उसके साथ कड़ाही में प्रवेश कर गए; तुरंत आग बुझ गई, कड़ाही चूर-चूर हो गई और टनि बाहर गरि गया, जबकि संत को कोई हानि नहीं हुई। इस चमत्कार से शासक और वहाँ मौजूद सभी लोग चकति रह गए, फरि भी उन्होंने इसमें ईश्वर की शक्ति को नहीं पहचाना।

इसके बाद, मैक्समियिन ने आदेश दयिा कि पवत्रि शहीद के गले में एक बड़ा पत्थर बाँधा जाए और उसे शहर के पास बहने वाली नदी, जसिे क्लटिुम्ना के नाम से जाना जाता है, में फेंक दयिा जाए। लेकनि यहाँ भी मसीह संत एमलियिन के सामने प्रकट हुए और, ठीक वैसे ही जैसे उन्होंने एक बार प्रेरति पतरस के साथ कयिा था, उन्होंने उनका हाथ पकड़ा और उन्हें पानी की गहराई से बाहर कनिारे पर ले आए। सैनकि संत को शासक के पास वापस ले आए और उन्होंने उससे घटति चमत्कार के बारे में बताया।

तब मैक्समियिन ने आदेश दयिा कि एमलियिन को जंगली जानवरों के सामने फेंक दयिा जाए, लेकनि जानवरों ने भी ईश्वर के संत को कसिी भी प्रकार की हानि नहीं पहुँचाई, क्योंकि प्रभु स्वयं, एक बार फरि अपने वफादार सेवक के सामने प्रकट होकर, वहाँ मौजूद थे। मसीह ने उससे कहा:

'हौसला रखो, एमलियिन, मेरे अच्छे और वफादार सेवक!'

और जानवर शांत हो गए: सहि और तेंदुआ मेमनों की तरह शांत हो गए, कुछ संत के पैरों को चाट रहे थे, तो कुछ उनके हाथों को। ऐसे चमत्कारों को देखकर, लोग चल्लिा उठे:

'महान है ईसाई ईश्वर! उनके सेवक को मुक्त कयिा जाए।'

और उसी दनि, एक हज़ार लोग मसीह में वशि्वास करने लगे। लोगों के प्रति अपने भयंकर क्रोध में, मैक्समियिन ने उनके खलिाफ सशस्त्र सैनकि भेजे और उन्हें उन लोगों को मारने का आदेश दयिा जो मसीह की महमिा करते थे। इस प्रकार, दोनों लगिों और सभी उम्र के एक हज़ार वशि्वासयिों को मृत्युदंड दयिा गया। इसके अलावा, क्रोधति शासक के आदेश से, उन जानवरों को भी मार डाला गया जन्हिोंने शहीद को कोई नुकसान नहीं पहुँचाया था। जानवरों को कटारों का शकिार होते देख, एमलियिन ने पुकार कर कहा:

'महमिा तेरी हो, हे मसीह हमारे परमेश्वर, क्योंकि न केवल लोग बल्कि पशु भी तेरे नमित्ति मर रहे हैं।'

जब उसे यह समझ नहीं आ रहा था कि संत एमलियिन को और कौन सा यातना दी जाए, तो मैक्समियिन ने उसे कैद करने का आदेश दिया। इस समय, अपने जल्लादों की सलाह पर, उसने एक विशेष यातना चक्का बनाने का आदेश दिया और उसमें कई तीखे लोहे के दांत लगवाए। लेकिन जब, उनके आदेश पर, पवित्र शहीद को कालकोठरी से बाहर लाया गया, इस पहिये से बाँधा गया और पहाड़ से नीचे लुढ़काया गया, उसी क्षण प्रभु संत के सामने प्रकट हुए, उन्होंने उसे खोल दिया और पहिये से उठा लिया, जबकि लुढ़कता हुआ पहिया पहाड़ की तलहटी में मौजूद कई विधर्मी लोगों को अपंग कर गया और मार डाला। इसके बाद, पवित्र शहीद को एक बार फिर कैद कर लिया गया। इस बीच, मैक्समियिन को जब संत एमलियिन के दो भाइयों, डायोनसियिस और हर्मिप्पस, और उनके शिक्षक हिलारियिन के बारे में पता चला, तो उसने सैनिकों को उनकी तलाश में भेज दिया, क्योंकि वे डर के मारे छिप रहे थे। जब उन्हें ढूंढकर राज्यपाल के सामने लाया गया, तो उसने उन्हें उसी कालकोठरी में बंद करने का आदेश दिया जहाँ संत एमलियिन को रखा गया था। अपने शिक्षक और अपने भाइयों को देखकर, ईश्वर के उस पवित्र पुरुष ने बहुत प्रसन्नता व्यक्त की; और वे सभी एक साथ इस बात पर प्रसन्न हुए कि उन्हें मसीह के नाम के लिए पीड़ा सहने के योग्य समझा गया था। उसी रात, धन्य हिलारियिन को ईश्वर से यह प्रकट हुआ कि वे सभी जल्द ही शहादत के मुकुट प्राप्त करेंगे। कुछ ही समय बाद, डियोनसियिस और हर्मिप्पस को, वृद्ध हिलारियिन के साथ, मुकदमे के लिए राज्यपाल के सामने लाया गया। लेकिन जब राज्यपाल ने उन्हें मूर्तियों की पूजा करने के लिए मजबूर किया और उन्हें यातना देने की धमकी देने लगा, तो प्रभु मसीह उनके विश्वास को मजबूत करने के लिए उनके सामने प्रकट हुए; उसी समय, एक भूकंप आया, और मूर्तियाँ अपने चौकड़ों से गिरकर चूर-चूर हो गईं। इसलिए, राज्यपाल के आदेश पर , संतों को बेरहमी से पीटा गया और अंत में, उनका सिर कलम कर दिया गया। इस प्रकार, उन्होंने प्रभु द्वारा उन्हें वचन दिए गए शहादत के मुकुट प्राप्त किए।

अगले दिन सुबह, मैक्समियिन ने परमेश्वर के सेवक, संत एमलियिन को अदालत में पेश करने का आदेश दिया और उससे कहा:

'तुम्हारे भाइयों और तुम्हारे शिक्षक ने मसीह का त्याग कर दिया है, और मैंने उन्हें सम्मान प्राप्त करने के लिए दूसरे शहर में भेज दिया है।'

लेकिन संत एमलियिन, जो ईश्वर से प्राप्त प्रकाशन द्वारा संतों के शहीद होने का ज्ञान रखता था, ने शासक को उत्तर दिया:

'हे यातनाकर्ता, तुम झूठ बोल रहे हो: उन्होंने मसीह का परित्याग नहीं किया है, बल्कि उनके लिए अपनी जान दे दी है। हालाँकि, तुम यह कहने में सही थे कि तुमने उन्हें दूसरे शहर भेजा है, क्योंकि उन्हें मारकर, तुमने वास्तव में उन्हें स्वर्गीय नगर में भेज दिया है ताकि वे महिमा के राजा, मसीह से सम्मान प्राप्त करें, जिसके लिए उन्होंने कष्ट उठाया।'

ये शब्द सुनते ही मैक्समियिन क्रोध से आग-बबूला हो गया और उसने संत एमलियिन को तलवार से सिर कलम करने की सज़ा सुनाई। इस सज़ा के बाद, संत को लोगों की एक बड़ी भीड़ के साथ शहर से बाहर कार्पयिानोवो नामक स्थान पर, जो एक स्टेडियम की दूरी पर था[5605] , मृत्युदंड के लिए ले जाया गया। जैसे ही वे फाँसी के स्थान की ओर जा रहे थे, शहीद ने ईश्वर की महिमा करते हुए और लोगों के लिए प्रार्थना करते हुए गीत गाया। जब जल्लाद ने अपनी तलवार से संत के गले पर वार किया, तो तलवार मोम की तरह मुड़ गई और कोई घाव नहीं हुआ। तब निष्पादन स्थल पर मौजूद सैनिक संत के पैरों में गिर पड़े, उनसे क्षमा याचना करने लगे, उन्होंने स्वीकार किया कि मसीह एकमात्र सच्चे ईश्वर हैं, और पवित्र शहीद से विनती की कि वे मसीह ईश्वर से उनके लिए प्रार्थना करें। और जब शहीद, घुटने टेककर, न केवल उनके लिए बल्कि सभी लोगों के लिए प्रार्थना करने लगे, तो उन्होंने स्वर्ग से एक आवाज सुनी जिसने उन्हें सूचित किया कि उनकी प्रार्थना स्वीकार हो गई है, और उन्हें स्वर्गीय निवासों में बुलाया। यह आवाज सुनकर, पवित्र शहीद आनंद से भर गए। वे जल्द से जल्द अपने शरीर से मुक्त होकर मसीह के साथ रहना चाहते थे; हालाँकि, वे यह प्राकृतिक मृत्यु से नहीं, बल्कि एक शहीद की मृत्यु से प्राप्त करना चाहते थे, और इसलिए उन्होंने प्रभु से प्रार्थना की कि वह उन्हें तलवार से मरने का वरदान दें। और इस प्रकार एक और जल्लाद आया और उसने उनका उत्तम सिर काट दिया। इस प्रकार, बिशप संत एमलियिन को शहीद का मुकुट पहनाया गया। उनके घाव से खून के बजाय दूध बहने लगा, और ऐसे चमत्कारों को देखकर कई विधर्मी मसीह में विश्वास करने लगे। उन्होंने शहीद के पवित्र शरीर को सुगंधित तेल से अभिषिक्त स्वच्छ कफ़न में लपेटा और वहीं पर दफना दिया।

[5605] 'पोपलशिचे' दूरी की एक इकाई है जो लगभग एक वर्स्ट (690 सैज़ेन्ज़) के बराबर है।

बाद में, जब ईसाइयों पर अत्याचार समाप्त हो गया, तो विश्वासियों ने भक्तिपूर्वक संत की अवशेषों को शहर में स्थानांतरित किया और उन्हें एक पवित्र स्थान पर रखा, और मसीह परमेश्वर की महिमा की, जिसकी महिमा हम भी करते हैं, पिता और पवित्र आत्मा के साथ, अब और हमेशा और युगों-युगों तक। आमीन।

पवित्र शहीदों फ्लोरा और लौरस का स्मरणोत्सव

१८ अगस्त को स्मरण किया जाता है

[5606]पवित्र शहीद फ्लोरस और लौरस न केवल देह से बल्कि आत्मा से भी भाई थे, क्योंकि दोनों ने पूरे हृदय से मसीह में विश्वास किया और अपने अच्छे कर्मों द्वारा उन्हें प्रसन्न किया। वे पत्थर के कारीगर थे। उनके शिक्षक धर्मनिष्ठ पुरुष प्रोकलस और मैक्समिस थे, जिनसे उन्होंने अपने व्यवसाय के साथ-साथ ईसाई धर्म के सिद्धांतों के अनुसार एक ईश्वरभक्त जीवन जीना सीखा। मसीह में उनके विश्वास के लिए, पहले उनके शिक्षकों को मृत्युदंड दिया गया; और फिर, कुछ समय बाद, अपने शिक्षकों के पदचिन्हों पर चलते हुए, उन्होंने भी शहीद का मुकुट प्राप्त किया, और इल्लिरिया के शासक लाइसियिन के हाथों एक दर्दनाक मृत्यु भोगी। उनके दुःख का कारण इस प्रकार था।

एक पड़ोसी देश के एक शासक ने इल्यूरिया के शासक से आग्रह किया कि वह उसे मूर्तिपूजक देवताओं के लिए एक भव्य पत्थर का मंदिर बनाने के लिए कुशल राजमिस्त्रियों को भेजे। चूँकि संत फ्लोरस और लौरस देश में इस शिल्प के सबसे कुशल विशेषज्ञ थे, लाइसियिन ने उन्हें उस शासक के पास भेज दिया। शासक की इच्छानुसार मंदिर का निर्माण करते समय, पवित्र भाइयों ने अपने श्रम के लिए प्राप्त मजदूरी गरीबों में बाँट दी, और साथ ही गरीबों को मसीह में पवित्र विश्वास सिखाया। वे स्वयं हमेशा उपवास, प्रार्थना और श्रम में अपना समय व्यतीत करते थे: वे रात में प्रार्थना करते थे और दिन में अपना काम करते थे; वे बहुत कम खाते थे, फिर भी भूखे और गरीबों को भरपूर भोजन कराते थे। इस तरह करके, उन्होंने न केवल जिन गरीबों की वे देखभाल करते थे, बल्कि एक मूर्तिपूजक पुरोहित और उसके बेटे को भी ईसाई धर्म में परिवर्तित कर दिया। यह इस प्रकार हुआ।

एक दिन, जब पवित्र भाई पत्थर काट रहे थे, तो पुजारी का बेटा, एक छोटा लड़का, उनके पास आया और पास में खड़ा होकर उन्हें काम करते हुए देखने लगा। अचानक, पत्थर से एक तीखा टुकड़ा उड़ा, जो लड़के की आँख में लगा और उसे निकाल दिया। दर्द से वह लड़का चिल्ला उठा; उसकी चीख सुनकर, उसका पिता, वह मूर्तिपूजक पुरोहित, दौड़ता हुआ आया। जब उसने देखा कि उसके बेटे का चेहरा खून से लथपथ है और उसकी आँख निकल गई है, तो वह दुःख में अपने कपड़े फाड़ने लगा, उसने उन पवित्र श्रमिकों को गाली देना शुरू कर दिया और उन पर मारने के लिए टूट पड़ने ही वाला था, लेकिन वहाँ मौजूद दूसरे श्रमिकों ने उसे रोक लिया। पवित्र भाइयों की निर्दोषता की पुष्टि करते हुए, उन्होंने समझाया कि उस युवक की दुर्भाग्य के लिए वही स्वयं दोषी था, क्योंकि वह पत्थर काटते समय उनसे बहुत करीब आ गया था और बिना कोई सावधानी बरते उनके काम को देख रहा था। ईश्वर के पवित्र सेवक, फ्लोरस और लॉरस, पुजारी को शांत करने का प्रयास करते हुए, उसके बेटे की आँख को जल्द ठीक करने और उसकी दृष्टि को पहले जैसी बहाल करने का वादा किया।

इसके बाद, उन्होंने उस युवक को रात के लिए अपने घर में ठहराया और उसे एक सच्चे परमेश्वर, यीशु मसीह के ज्ञान की शिक्षा देने लगे, और उससे कहा:

'यदि तुम उस ईश्वर में अपने पूरे हृदय से विश्वास करोगे, जिसके बारे में हम तुमसे बात कर रहे हैं, तो तुम्हारी आँख जल्द ही ठीक हो जाएगी।'

युवक ने उत्तर दिया, 'यदि मेरी आँख वैसी ही हो जाएगी जैसी पहले थी, तो मैं आपके ईश्वर पर विश्वास करूँगा और उनका सम्मान करूँगा। निस्संदेह, मनुष्य को उन देवताओं में अधिक विश्वास करना चाहिए जो बीमारों को ठीक करते हैं और अंधों की दृष्टि लौटाते हैं, बजाय उन देवताओं के जो न केवल बीमारों को ठीक करने में असफल रहते हैं, बल्कि स्वस्थ लोगों को भी बीमार कर देते हैं।'

तब उस युवक ने संतों को एक घटना के बारे में बताया।

[5606] इल्यूरिया – बाल्कन प्रायद्वीप के उत्तर-पश्चिमी भाग में स्थित एड्रियाटिक सागर के तट पर एक विशाल क्षेत्र। आज, प्राचीन इल्यूरिया का क्षेत्र बोस्निया और हर्जेगोविना, सर्बिया और अन्य देशों द्वारा घेर लिया गया है।

उसने कहा, 'हमारे पुरोहतिों में हर्म नाम का एक नश्चिति पुरोहति है। जब, कुछ साल पहले, वे उसे पुरोहति पद की दीक्षा देना चाहते थे, तो वे उसे ज्यूस की मूर्तकि सामने ले आए ताकि मूर्तका हाथ उसके सरि पर रखा जा सके। पुरोहतिों को नयिुक्त करते समय हम ऐसा ही अनुष्ठान करते हैं। इसमें पुरोहति चाँदी की एक चेन का उपयोग करके मूर्तकी बाँह उठाते हैं—जो उसके कंधों से जुड़ी होती है और जोड़ पर हलिती है—और फरि उसे उम्मीदवार के सरि पर नीचे लाते हैं। जब यह हाथ एर्मा के सरि पर गरिाया जा रहा था, तो उसे पकड़े हुए लोगों के हाथों से चाँदी की ज़ंजीर गलती से फसिल गई, और मूर्तका हाथ, एर्मा के चेहरे पर गरिकर, उसके नाखूनों से हड्डी तक चीर गया, इतना कि आज भी उसकी हड्डयिाँ दूर से दखिाई देती हैं। और एक भी देवता उसकी मदद के लिए नहीं आया; बल्कि, उसकी हालत दनि-ब-दनि और बगिड़ती जा रही है।

जब उस युवक ने यह घटना सुनाई, तो संत फ्लोरस और लौरस, आँसुओं से भरी आँखों के साथ, ईश्वर से प्रार्थना करने लगे कि वह उस युवक को ठीक कर दें और न केवल उसकी शारीरकि आँख को बल्कि उसकी आत्मा की आँखों को भी प्रकाशति कर दें। उत्कट प्रार्थना के बाद, उन्होंने उस युवक की पीड़ति आँख पर क्रॉस का चह्नि बनाया, और आँख तुरंत ठीक हो गई, पूरी तरह से स्वस्थ हो गई और पहले की तरह ही अच्छी तरह से देखने लगी। इस चमत्कार के परणिामस्वरूप, न केवल ठीक हुआ युवक मसीह पर वश्विास करने लगा, बल्कि उसके पति, जो एक मूर्तपिूजक पुरोहति थे, भी वश्विास करने लगे। इस पुरोहति का नाम मेमर्टनि था, और उस समय से, वह अपने बेटे के साथ, राक्षसों के सेवक से हमारे प्रभु यीशु मसीह के सेवक में बदल गया।

इसके बाद, पवत्रि श्रमकि फ्लोरस और लॉरस ने, परमेश्वर के स्वर्गदूत से अपने काम में सहायता प्राप्त करके, थोड़े ही समय में उस चर्च का नर्मिाण पूरा कर लयिा जसिे वे बना रहे थे; फरि भी उन्होंने इसे मूर्तयिों के नविास स्थान के रूप में नहीं छोड़ा, बल्कि इसे परम पवत्रि यीशु मसीह के नाम की महमिा के लिए समर्पति कर दयिा। उन्होंने चर्च के पूर्वी भाग में पवत्रि क्रूस स्थापति कयिा और लगभग तीन सौ गरीब लोगों, जो उनके वश्विास में भाइयों थे, को इकट्ठा करके, मसीह परमेश्वर की महमिा करते हुए, एक रात्रि जागरण कयिा। प्रार्थना के दौरान, स्वर्गीय महमिा का एक अकथनीय प्रकाश ऊपर से अवतरति हुआ और चर्च को एक अद्भुत तेज से भर दयिा। सारी रात की प्रार्थना सभा के अंत में, चर्च में मौजूद सभी लोग पास में खड़ी एक इमारत में गए, जहाँ नए चर्च के लिए तैयार की गई मूर्तयिाँ रखी गई थीं; और, इन मूर्तयिों के गलों में अपनी पट्टयिाँ बाँधकर, उन्होंने उन्हें जमीन पर घसीटना, पीटना और तोड़ना शुरू कर दयिा, इस प्रकार उन्हें छोटे-छोटे टुकड़ों में चूर-चूर कर दयिा।

यह सब जानकर, प्रांतीय राज्यपाल ने फ्लोरस और लॉरस और उनके साथ मौजूद सभी लोगों, जसिमें मामर्टनिस और उसका बेटा भी शामलि थे, को गरिफ्तार करने का आदेश दयिा। उसने उन सभी को, जो संतों के साथ थे, खंभे पर जकड़कर जलाने की सज़ा सुनाई, जबकि संतों को खुद, एक क्रूर पटिाई के बाद, बाँधकर इलरियिा के राज्यपाल, लाइसयिन के पास भेज दयिा गया। लसियिन ने , उनसे हर बात के बारे में पूरी तरह पूछताछ की और जब यह जानकर कि वे ईसाई थे और अपने वश्विास में अडगि रहे, तो उन्हें एक गहरे कुएँ में फेंककर ज़दिा दफ़नाने का आदेश दयिा।

कई वर्षों बाद, उनके पवत्रि और जीवन-दायक अवशेष खोजे गए और हमारे ईश्वर, मसीह की महमिा के लिए सम्मानपूर्वक कॉन्स्टेंटनिोपल ले जाया गया।

ट्रोपारयिन, स्वर 4:

आओ, यथोचति रूप से, परम धन्य और ईश्वर-ज्ञानी युगल, परम धन्य फ्लोरा और परम पूजनीय लावरा की स्तुति करें, जन्हिोंने उत्साहपूर्वक और स्पष्ट रूप से सभी को अकल्पति त्रमिूर्तका उपदेश दयिा। रक्त तक पीड़ा सहने और दीप्तमिान मुकुटों से भूषति होने के बाद, हमारे ईश्वर मसीह से प्रार्थना करें कि वे हमारी आत्माओं को बचाएँ।

कॉन्टाकयिन, स्वर 8:

भक्ति के शहीदों और मसीह के लिए ईश्वर-ज्ञानी पीड़तिों के रूप में, आज संपूर्ण वश्विव भव्यता से फ्लोरा और लावरा का सम्मान करता है: ताकि हम उनकी प्रार्थनाओं के माध्यम से अनुग्रह और दया प्राप्त कर सकें, और वपित्तयिों और आपदाओं से, तथा न्याय के दनि क्रोध और दुख से मुक्त हो सकें।

पवत्रि शहीदों हेर्मास, सेरापयिन और पोल्येनस का स्मरणोत्सव

18 अगस्त को स्मरण कयिा जाता है

पगनों ने इन पवत्रि शहीदों पर यह आरोप लगाया कि वे मूर्तयिों से मुंह मोड़कर और उनकी अवहेलना करते हुए मसीह की पूजा करते थे। परणिामस्वरूप, उन्हें गरिफ्तार कर लयिा गया और, जब रोमन governor[5607] के सामने लाया गया, तो उन्होंने मसीह में अपने वशि्वास का साहसपूर्वक इकरार कयिा। इसके लिए, उन्हें पहले एक बदबूदार कालकोठरी में बंद कर दयिा गया, और फरि उसे बाहर नकिाला गया, लेकनि उन्होंने मूर्तयिों को बलदिान चढ़ाने से इनकार कर दयिा। इसलिए, उन्हें संकीर्ण और गुज़रने लायक नहीं जगहों से घसीटा गया, और चट्टानों से टकराते हुए, उन्होंने अपने धर्मी आत्माओं को ईश्वर को सौंप दयिा, और उस स्थान पर शाश्वत आनंद प्राप्त कयिा जहाँ सभी आनंदति लोगों का नविास पाया जाता है[5608] ।

सतिंबर

1 सतिंबर

19 अगस्त (पुराने कैलेंडर के अनुसार)

सेंट एंड्रयू द स्ट्रैटलिट्स का कष्टकथा

19 अगस्त को स्मरण कयिा जाता है

अधर्मी मैक्समियिन[5609] , जो रोमन साम्राज्य के पूर्वी भाग पर शासन कर रहा था, ने ईसाइयों के खलिाफ बड़े पैमाने पर उत्पीड़न शुरू कयिा। उस समय, सीरयिा में एंटओकस नाम का एक सैन्य कमांडर था, जो क्रूर स्वभाव का और मूर्तयिों का उत्साही पूजक था, जसिने मसीह के वशि्वासयिों के खलिाफ धमकयिों और फांसी की सजा का ऐलान कयिा। सम्राट ने उसे पूरे सीरयिा का अधकिार सौंपा था और उसे ईसाइयों को यातना और मृत्युदंड देने का आदेश दयिा था; इस उद्देश्य के लिए, एक हजार के कई कमांडर, अपने अधीनस्थ रोमन सैनकिों के साथ, उसकी सेवा में रखे गए थे। अन्य कमांडरों के बीच, काँटों के बीच एक सुगंधति लली की तरह, अँटओकस के अधकिार में मसीह का एक अनुयायी था जसिका नाम एंड्रयू था, जसिने शुरू में मसीह में अपने पवत्रि वशि्वास को गुप्त रखा, लेकनि फरि, जब समय आया, तो उसे पूरी दुनयिा के सामने प्रकट कयिा, और सभी के सामने खुले तौर पर मसीह के नाम का प्रचार कयिा। हालाँकि उसका अभी तक बपतस्मिा नहीं हुआ था, फरि भी वह अपने हृदय में मसीह के प्रति दृढ़ वशि्वास और उत्कट प्रेम रखता था, वह परमेश्वर को अप्रसन्न करने वाले हर काम से दूर रहता था और परमेश्वर की इच्छा के अनुसार उत्साहपूर्वक कर्म करता था। ऐसी भक्ति के लिए, ईश्वर ने उसे युद्ध में असाधारण साहस और वीरता प्रदान की, ताकि बहादुरी और साहस के मामले में पूरे रोमन सैन्य में उसका कोई मुकाबला न कर सके। एक से अधकि मौकों पर उसने अपने दुश्मनों पर शानदार जीत हासलि की और अन्य कमांडरों की तुलना में सैनकिों के बीच अधकि महमिा और सम्मान प्राप्त कयिा।

[5607] ग्रीको-रोमन साम्राज्य में, 'एपार्क' प्रांतीय गवर्नरों को दिए गए नाम थे।

[5608] इन पवत्रि शहीदों की मृत्यु का वर्ष अज्ञात है।

[5609] यह, बेशक, डायोक्लेटयिन के सह-शासक मैक्समियिन हर्क्यूलस को नहीं, बल्कि मैक्समियिन गैलेरयिस को संदर्भति करता है, जो डायोक्लेटयिन के दामाद और रोमन साम्राज्य के पूर्वी भाग में उनके सह-शासक थे। यही वह था जसिने डायोक्लेटयिन को ईसाइयों के खलिाफ एक सामान्य फरमान जारी करने के लिए मनाया, जसिके कारण उनका बड़े पैमाने पर उत्पीड़न हुआ।

एक अवसर पर, फारसी सेना की एक बड़ी सेना ने एंटिओकस पर युद्ध की घोषणा कर सीरिया पर एक आश्चर्यजनक हमला किया। फारसी हमले की अप्रत्याशित प्रकृति के कारण, एंटिओकस बहुत चिंतित हो गया। लेकिन, एक हजार सैनिकों के वीर कमांडर एंड्रयू को याद करते हुए, उन्होंने उसे जल्दबाजी में बुलाया, उसकी जगह पर सेना की पूरी कमान सौंप दी, और उसे 'स्ट्रेटेलिइट्स'—अर्थात्, सैन्य नेताओं में वरिष्ठ कमांडर—नियुक्त करके, देश पर आक्रमण करने वाले दुश्मनों के खिलाफ सैनिकों के साथ मार्च करने और उनकी प्रगति को रोकने का आदेश दिया, और उससे कहा:

'युद्ध में आपका साहस और वीरता न केवल मुझे, बल्कि स्वयं सम्राट को भी अच्छी तरह ज्ञात है; इसीलिए मैंने आपको इतना ऊँचा पद दिया है। अत; मैं यह अप्रत्याशित युद्ध आपके हवाले करता हूँ। सेना को ले जाइए, मेरी ओर से उसका नेतृत्व कीजिए, और उस महिमा को और भी बढ़ाने का प्रयास कीजिए जो पहले से ही आपकी है।'

यह आदेश स्वीकार करने के बाद, मसीह के योद्धा संत एंड्रयू ने दुश्मनों के खिलाफ उचित वीरता के साथ मार्च करने की इच्छा व्यक्त की, अपनी व्यक्तिगत महिमा के लिए नहीं, बल्कि यीशु मसीह के नाम की महिमा के लिए; फिर भी, प्राचीन गिदोन के उदाहरण का अनुसरण करते हुए (न्यायियों 7:1), उन्होंने विशाल रोमन सेना में से लड़ाई के लिए अपने लिए केवल कुछ ही योद्धाओं को चुना, यह अच्छी तरह जानते हुए कि पवित्र राजा दाऊद के वचन हैं, कि प्रभु *'घोड़े की ताकत पर नहीं देखता, न ही वह मनुष्य के पैरों की गति में आनंद लेता है—प्रभु उनका आनंद लेता है जो उससे डरते हैं, जो उसकी दया पर भरोसा करते हैं'* (भजन संहिता 146:10-11)। संत एंड्रयू की पसंद उन लोगों पर पड़ी जिन्हें ईश्वर की कृपा ने उनके हृदय पर प्रेरणा के रहस्यमय कार्य के माध्यम से उन्हें इंगित किया था, और वह उनके साथ दुश्मनों के खिलाफ निकल पड़े। दुश्मन की विशाल सेना को देखकर, जिसने टिड्डियों की तरह सीरियाई क्षेत्र पर आक्रमण कर दिया था, संत एंड्रयू ने अपने योद्धाओं को एक बहादुरी भरे संघर्ष के लिए मजबूत करना शुरू कर दिया, ताकि अपनी कम संख्या के बावजूद, वे विशाल फारसी सेना से न डरें, और चूँकि उसके सभी योद्धा मूर्तियों की पूजा करते थे और उनमें से कोई भी अभी तक ईसाई नहीं हुआ था, उसने प्रस्ताव रखा कि वे एकमात्र सर्वशक्तिमान ईश्वर को जानें, जो युद्ध में भयानक है और उन लोगों को सर्वशक्तिमान सहायता प्रदान करता है जो उस पर विश्वास करते हैं। उसने उनसे कहा:

'मेरे भाइयो और मित्रो! अब आप स्वयं देख सकते हैं कि मूर्ति पूजा के देवता राक्षस हैं। वे स्वयं शक्तिहीन हैं, इसलिए वे किसी की मदद नहीं कर सकते; लेकिन एक सच्चा ईश्वर है, जिसकी मैं सेवा करता हूँ, जिसने स्वर्ग और पृथ्वी की रचना की। वह सर्वशक्तिमान है, और जो कोई भी उससे प्रार्थना करता है, उसे वह शीघ्र सहायता भेजता है: वह उन्हें युद्ध में शक्तिशाली बनाता है और उनके दुश्मनों को उनके सामने भागने पर मजबूर कर देता है। जैसा कि आप देख सकते हैं, दुश्मनों की अनेक टुकड़ियाँ हम पर आक्रमण कर रही हैं; अपनी संख्या के बल पर वे हमसे कहीं अधिक शक्तिशाली हैं। लेकिन यदि आप अपने व्यर्थ के देवताओं का त्याग कर दें और मेरे साथ मिलकर एक सच्चे परमेश्वर को पुकारें, तो आप तुरंत देखेंगे कि दुश्मन आपके सामने इस प्रकार गायब हो जाएँगे जैसे धुआँ या धूल गायब हो जाती है।

जब संत ने यह कहा, तो उनके साथ मौजूद सभी योद्धाओं ने उनके शब्दों पर विश्वास किया और मसीह ईश्वर से मदद की प्रार्थना करते हुए, दुश्मन पर बहादुरी से धावा बोल दिया। एक भयंकर युद्ध छिड़ गया, और संत एंड्रयू के योद्धाओं ने एक शानदार विजय प्राप्त की, क्योंकि संत के विश्वास और प्रार्थनाओं के द्वारा एक अदृश्य शक्ति ऊपर से उनकी सहायता के लिए आई, जिसने फारसी सैनिकों में आतंक फैला दिया और उन्हें अव्यवस्थित कर दिया; और वे, पीछे हटने के बाद, भाग खड़े हुए, जबकि संत एंड्रयू के नेतृत्व वाली रोमन सेना उनका पीछा करती रही और अपनी तलवारों से फारसियों के सिर काटती रही, ठीक वैसे ही जैसे कोई दरांती से अनाज की बालें काटता है। इस प्रकार, मसीह की शक्ति की मदद से, रोमनों ने फारसियों पर एक शानदार विजय प्राप्त की। जब दुश्मनों को भगा दिया गया, तो संत एंड्रयू के साथ रहे सभी सैनिकों ने, मसीह की मदद से मिली ऐसी अप्रत्याशित जीत को देखकर, उन पर विश्वास करना शुरू कर दिया; और संत एंड्रयू ने, अपनी पूरी क्षमता से, उन्हें विश्वास में मजबूत करने और मोक्ष की ओर ले जाने वाले धार्मिक मार्गों को समझाने का काम शुरू किया। युद्ध से विजयी होकर लौटते हुए, महिमा के मुकुट धारण किए संत एंड्रयू और उनके योद्धाओं ने अंकोइया शहर में प्रवेश किया।

इस बीच, कुछ ईर्ष्यालु सैन्य कमांडरों ने, जो संत एंड्रयू की वीरता और महिमा से ईर्ष्या करते थे, एंटिओकस को उनकी शिकायत की, और बताया कि स्ट्रैटेलिट्स एंड्रयू सूली पर चढ़ाए गए ईश्वर की पूजा करते थे। यह सुनकर, अंटिओकस बहुत क्रोधित हो गया और उसने कुछ वरिष्ठ सैन्य अधिकारियों को यह पता लगाने के लिए उसके पास भेजा कि उसके बारे में जो कहा जा रहा था वह सच था या नहीं। यह जानने के बाद कि यह सब वास्तव में सच था, एंटिओकस ने

एक बार फरि एंड्रयू के पास दूत भेजे, आंशकि रूप से उपदेशों और आंशकि रूप से धमकयिों के साथ, उसे ईसाइयों के प्रतिअपनी असहष्णिुता की याद दलिाते हुए; और अंत में, उसने दूतों को यह कहने का आदेश दयिा:

'तुम अच्छी तरह जानते हो कि मैंने पॉलएिक्टोस के बेटे, यूथमिीयस और उसके साथ ईसाई धर्म के कई अन्य अनुयायियों को कतिनी यातनादायक मृत्यु दी थी। मैंने उनमें से कसिी को भी नहीं बख्शा। तो फरि, तुम क्या उम्मीद करते हो और क्या आशा रखते हो, उस मनुष्य को दविय सम्मान देकर जसिे क्रूस पर चढ़ाया गया था?'

जब अंटओिकस द्वारा भेजे गए दूत इस संदेश के साथ संत के पास आए और उन्होंने ये शब्द उनके पास पहुँचाए, तो उन्होंने उत्तर दयिा:

'एंटीओकस के शब्द मुझे डराने की तुलना में अधकि प्रोत्साहति करते हैं: क्योंकियदि जनि लोगों की वह मुझे याद दलिाता है, उन्हें क्रूर यातनाएँ दी गईं, फरि भी वे उसके वजिेता बने और शहीदों के मुकुट पहनकर मसीह परमेश्वर के सामने उपस्थति हुए, तो मैं अपने प्रभु यीशु मसीह का वफादार सेवक क्यों न बनूँ, ताकि जो मेरे पहले उनके लिए पीड़ति हुए, उनके साथ मैं भी उनके राज्य में उत्तराधकिार का पात्र समझा जाऊँ?

जब दूतों ने सेंट एंड्रयू के उत्तर की सूचना एंटओिकस को दी, तो वह क्रोध से भर गया और उसने संत को बांधकर अपने सामने लाने का आदेश देकर सैनकि भेजे। न्यायाधीश की कुर्सी पर बैठकर, उसने संत एंड्रयू को आदेश दयिा कि वह उपस्थति सभी के सामने स्पष्ट रूप से घोषणा करे कि क्या वह राजा की आज्ञा का पालन करना चाहता है या अपने ईश्वर की सेवा करने का इरादा रखता है। तब संत, उस अधर्मी दरबार में, स्वर्गदूतों और मनुष्यों की उपस्थतिमिें खड़े होकर, नडिरता से ऊँचे स्वर में स्वीकारोक्तकिी कि मसीह सच्चे ईश्वर थे, और वह स्वयं उनके सेवक थे। इसके बाद, यातना देने वाले ने तुरंत एक तांबे का बस्तिर लाने और उसे आग से तपाने का आदेश दयिा, ताकि मसीह के योद्धा को उस पर जलाया जा सके। जब बस्तिर इतना तप गया कि उससे चगिारयिाँ उड़ने लगीं, तो एंटओिकस ने शहीद से कहा:

'एंड्रयू, तुमने सैन्य सेवा में बहुत परश्रिम कयिा है; अतःइतनी मेहनत के बाद, तुम्हें इस बस्तिर पर आराम करना चाहए।'

पवत्रि शहीद ने जल्लादों के उसे ले जाने का इंतज़ार कए बनिा, तुरंत अपने कपड़े उतार दए, जल्दी से पलंग पर चढ़ गया और लेटकर उस पर इस तरह फैल गया जैसे कोई नरम पलंग पर हो, और बहादुरी से अपने शरीर के जलने को सहन कयिा। शुरुआत में दर्द महसूस करते हुए, उन्होंने मसीह ईश्वर से प्रार्थना करना शुरू कर दयिा कि वह उन्हें शीघ्र सहायता भेजें; और वास्तव में, ईश्वर की आज्ञा से, आग ने तुरंत अपनी शक्तखिो दी और शहीद के शरीर को कोई नुकसान नहीं पहुँचा सकी। उसी समय, अंटओिकस ने आदेश दयिा कि एंड्रयू के सैनकिों में से कुछ अन्य पुरुषों को पकड़ लयिा जाए; और, यह आदेश देकर कि उनके हाथों को चार भागों वाले पेड़ों पर एक क्रूस के आकार में कीलों से ठोक दयिा जाए, उसने उनसे उपहास करते हुए पूछा कि क्या उन्हें यह सुखद लगता है। मसीह के लिए ऐसी पीड़ा को अपने लिए अत्यंत सुखद मानते हुए, उन्होंने कहा:

'हे, काश कि हम भी अपने प्रभु मसीह का अनुकरण करने के योग्य ठहरें, जनि्हें क्रूस पर चढ़ाया गया था!'

इसके बाद, यातना देने वाले ने संत एंड्रयू से एक बार फरि कहा और पूछा कि क्या वह जलन से पर्याप्त रूप से पीड़ति हो चुका है और क्या वह मसीह का त्याग करके देवताओं की पूजा नहीं करेगा। इस पर शहीद ने उत्तर दयिा कि वह अंत तक सहन करना चाहता है, क्योंकि अंत ही हर प्रयास को मुकम्मल करता है; क्योंकि जो अपना कार्य अच्छी तरह से शुरू करता है वही मसीह ईश्वर से अपना इनाम नहीं पाता, बल्कि जो उसे अच्छी तरह से समाप्त करता है। अत; यातना देने वाले अंटओिकस ने आदेश दयिा कि संत एंड्रयू को तांबे के बस्तिर से उतार दयिा जाए, और उनके साथयिों को खंभों से मुक्त कर जेल में डाल दयिा जाए, दखिावे के लिए ताकि उन्हें ईश्वर की ओर मुड़ने के लिए राजी होने तक वचिार करने का समय मलि सके, लेकनि असल में ताकि वह उन पर सम्राट को रपिोर्ट कर सके, क्योंकि वह सम्राट की जानकारी और सहमतकिे बनिा एंड्रयू और उसके साथयिों जैसे बहादुर और प्रतष्ठिति व्यक्तको मारने की हम्मित नहीं कर सकता था। सम्राट मैक्समियिन ने, एंटओिकस की रपिोर्ट प्राप्त कर पढ़ने के बाद, यह अनुचति समझा कि इतने प्रसदि्ध योद्धा और उसके साथ उन अन्य सैनकिों को, जनि्होंने इतनी असाधारण बहादुरी दखिाई थी, सार्वजनकि रूप से मृत्युदंड दयिा जाए: इससे सेना के भीतर अशांतऔिर वदि्रोह फैल जाता और एक नया युद्ध छड़ि सकता था। जवाब में, उन्होंने एंटओिकस को एक पत्र लखिा, जसिमें उन्होंने आदेश दयिा कि एंड्रयू और उनके साथयिों को रहिा कर दयिा जाए, उन्हें कैद और मृत्युदंड से बचाते हुए; लेकनि साथ ही उन्होंने एंटओिकस को एक गुप्त आदेश दयिा कि, एंड्रयू और उनके साथयिों को रहिा कए जाने के बाद, थोड़ी देर प्रतीक्षा करने के बाद, कुशलता से उनके खलिाफ कोई अन्य अपराध ढूंढकर उन्हें

मृत्युदंड देना चाहिए, यदि वे ईसाई बने रहने पर अड़े रहते हैं—जैसे कि यह उनके धर्म के लिए न हो—और, इसके अलावा, कि उन्हें एक-एक करके मृत्युदंड के लिए ले जाया जाए। सम्राट से ऐसा आदेश पाकर, अंटिओकस ने तुरंत संत एंड्रयू और उनके साथियों को उनकी बेड़ियों और काल-कोठरियों से मुक्त कर दिया और उन्हें आज़ाद कर दिया, साथ ही उन्हें पहले की तरह ही अपने पदों पर बने रहने का आदेश दिया।

इस बीच, मसीह के सिपाही, संत एंड्रयू ने, ईश्वर से प्राप्त एक प्रकटोक्ति के माध्यम से दुष्टों की इस विश्वासघाती साजिश के बारे में जानकर, गुप्त रूप से, एंटिओकस की जानकारी के बिना, उन सभी सैनिकों के साथ जिन्होंने मसीह में विश्वास किया था (और उनकी संख्या 2,593 थी), सिलिसिया के शहर तारस के लिए रवाना हुए[5610] ने शहर के बिशप, पीटर से पवित्र बपतिस्मा प्राप्त करने के लिए, क्योंकि न तो वह और न ही उसके किसी सैनिक का अभी तक बपतिस्मा हुआ था। कुछ समय बाद, जब अंटिओकस को संत एंड्रयू और उनके अनुयायियों के सिलिसिया क्षेत्र के लिए प्रस्थान की खबर मिली, तो वह भयानक क्रोध और रोष से भर गया; और, अपने करीबी लोगों से सलाह-मशविरा करने के बाद, उसने सिलिसिया के राज्यपाल सेल्यूकस को एक पत्र भेजा, जिसमें उसने लिखा:

'मैं जानता हूँ कि तुमने एंड्रयू के बारे में सुना है, जो साम्राज्य की सेना में एक हजार सैनिकों का सेनापति था। अब वह न केवल स्वयं पागलपन में पड़ गया है, और सम्राट के आदेशों की अवज्ञा कर रहा है, बल्कि उसने कई सैनिकों को भी उसी पागलपन में धकेल दिया है और, जैसा कि हमने सुना है, वह अपने समान विचारधारा वाले साथियों के साथ सिलिसिया के क्षेत्र में भाग गया है। इसलिए, सम्राट की आज्ञा के अनुसार, आदेश दो कि एंड्रयू और उसके साथ मौजूद सभी लोगों को पकड़ लिया जाए, बाँध दिया जाए, और हमारे पास भेज दिया जाए। यदि वे प्रतिरोध करने या भागने का प्रयास करें, तो सशस्त्र सैनिकों को आदेश दो कि उन्हें तलवार से काट डालें।

एंटीओकस से यह पत्र प्राप्त करते ही, सेल्यूकस ने तुरंत सिलिसिया के क्षेत्रों में एंड्रयू और उसके साथ मौजूद सैनिकों के बारे में पूछताछ करने के लिए दूत भेजे; और, यह जानने पर कि वह तारस में था, वह स्वयं अपनी सेना के साथ तारस के लिए रवाना हो गया। उस समय, संत एंड्रयू ने अपने आत्मा में यह पूर्वानुमान लगाते हुए कि भेड़िये पहले ही मसीह के झुंड पर घिर रहे थे, तारस के बिशप से कहा, कि उन्हें और उनके सैनिकों को बिना देरी के पवित्र बपतिस्मा दें; और बिशपों ने तुरंत ही संत एंड्रयू और उनके पूरे दल को बपतिस्मा दे दिया।

पवित्र बपतिस्मा प्राप्त करने के बाद, संत एंड्रयू और उनके साथी तारसस से टैक्सनटिी नामक स्थान के लिए चले गए, ऐसा इसलिए नहीं था कि वह मृत्यु से डरते थे—बल्कि इसके विपरीत, वह मसीह के लिए मृत्यु की बहुत इच्छा रखते थे—बल्कि अपने प्रभु की आज्ञा के पालन में, जो इन शब्दों में व्यक्त की गई थी: *'जब वे तुम्हें एक नगर में सताएँ, तो दूसरे नगर में भाग जाओ'* (मत्ती 10:23)। कुछ ही समय बाद, सेल्यूकस युद्ध के लिए सशस्त्र सैनिकों के साथ तारस पहुँचा। वहाँ एंड्रयू और उसके साथियों को न पाकर, वह घबरा गया और उसका चेहरा गुस्से से बदल गया; फिर, भयानक क्रोध से भरकर, वह मसीह के झुंड का पीछा करने निकल पड़ा। इस बीच, संत उपर्युक्त स्थान से आर्मेनिया की सीमाओं की ओर, 'एलेक्ज़ेंड्रिया ऑफ़ कैपडोकिया' (Tavros[5611]) के नाम से जाने जाने वाले पहाड़ों में निकल पड़े, जबकि सेल्यूकस हर जगह उनका पीछा करता रहा, यह प्रयास करते हुए कि वह उन तक पहुँचकर उन्हें पीट सके। इन पहाड़ों के विभिन्न हिस्सों से यात्रा करते हुए, संत एक संकरे मार्ग पर पहुँचे, जो हर तरफ से दीवारों जैसी ऊँची चट्टानों से घिरा हुआ था, और जिसमें केवल एक ही मार्ग से प्रवेश हो सकता था, जैसे किसी शहर का द्वार। यहाँ संत एंड्रयू अपने साथियों के साथ रुके और अपने हत्यारों की प्रतीक्षा करने लगे, क्योंकि ईश्वर ने ठीक इसी स्थान की भविष्यवाणी उन्हें और उनके साथियों की शहादत स्थल के रूप में की थी। फिर संत एंड्रयू ने अपने साथियों से ये शब्द कहे:

'मित्रों, भाइयों और मेरे बच्चों, *"अब अनुग्रह का समय है; अब उद्धार का दिन है"* (2 कुरिन्थियों 6:2; यशायाह 49:8); इसलिए, आइए हम परमेश्वर के प्रेम में एकजुट और दृढ़ रहें, जैसा कि हमारे प्रभु ने आज्ञा दी है, और आइए हम उन लोगों के विरुद्ध अपना हाथ न उठाएँ जो हमें सताते हैं, बल्कि उन्हें धन्यवाद की प्रार्थना में परमेश्वर की ओर उठाएँ कि उन्होंने हमें आज के दिन तक जीवित रहने में सक्षम बनाया है, जब हम उनके लिए पीड़ित हुए सभी संतों के साथ अपना उत्तराधिकार प्राप्त करेंगे। तो आइए हम भी उसी से प्रार्थना करें, जैसे पहले शहीद संत स्तेफन ने तब प्रार्थना की थी

[5610] सिलिसिया एक रोमन प्रांत था; यह एशिया माइनर प्रायद्वीप के दक्षिण-पूर्वी भाग में, भूमध्य सागर के तट पर, सीरिया के उत्तर-पूर्व में स्थित था, और पूर्व में सीरिया से इसकी सीमा लगती थी। तारसस शहर संत पॉल द अपोस्टल का जन्मस्थान था।

[5611] आज, टॉरस एक पर्वत श्रृंखला है जो स्कैंडियन प्रायद्वीप के दक्षिणी तट के साथ फैली हुई है, फिर उत्तर की ओर उठती है और पूर्व की ओर फैली हुई है। इसके पूर्वी भाग में, इसे एंटी-टॉरस कहा जाता है। प्रसिद्ध नदी टिग्रिस का स्रोत एंटी-टॉरस की हिमनदियों में है।

जब यहूदी उसे पत्थर मार रहे थे, और कहा था: *'हे प्रभु यीशु* मसीह, अपने सेवकों की आत्माओं को *ग्रहण कर* (प्रेरितों के काम 7:59), जिन्हें हम तेरे हाथों में सौंपते हैं।'

अपने साथियों से ये वचन कहने के बाद, संत एंड्रयू उनके बीच में खड़े हो गए, उन्होंने अपने हाथ उठाए, अपनी दृष्टि स्वर्ग की ओर की, और प्रार्थना करना शुरू किया, कहते हुए:

– हे प्रभु, हे प्रभु, महान और सर्वशक्तिमान! अपने पापी और अयोग्य सेवक और मेरे साथ उन सभी लोगों की प्रार्थना सुनें, जिन्होंने आप में पवित्र विश्वास को निर्दोष रूप से बनाए रखा है; हमारी आत्माओं को शांति से ग्रहण करें, उन्हें अपनी दया से ढकें, और उन्हें स्वर्ग के निवास प्रदान करें। हे प्रभु! हम उन लोगों के लिए भी आपसे प्रार्थना करते हैं जो हमारी स्मृति का सम्मान करेंगे। उनकी उन सभी प्रार्थनाओं को स्वीकार करें जो मोक्ष की ओर ले जाती हैं, और हमारी प्रार्थनाओं के माध्यम से, उनकी सभी ज़रूरतों में उनका सहायक बनें। और इस स्थान पर, जहाँ हमारे विनम्र रक्त का बहाव आपके लिए होगा, वहाँ एक ऐसा झरना हो जो चंगा करे और अशुद्ध आत्माओं को भगा दे। जो भी यहाँ आएँ, उन्हें हर विपत्ति से बचाएँ और उन्हें आत्मा और शरीर की तंदुरुस्ती प्रदान करें, ताकि इस स्थान पर आपका परम पवित्र नाम, और पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा का नाम महिमामय हो।

जब संत एंड्रयू और उनके साथी इस प्रकार ईश्वर से प्रार्थना कर रहे थे, तब सेल्यूकस अपने सैनिकों के साथ उन पर टूट पड़ा। अपनी तलवारें खींचकर और दाँत पीसते हुए, वे जानवरों की तरह मसीह के झुंड पर झपट पड़े। फिर भी मसीह के पवित्र सैनिकों ने, जो युद्ध में बहादुर और अनुभवी थे और उस संकरे स्थान में, जहाँ केवल एक ही मार्ग था, हत्यारों के हाथों से अपनी रक्षा करने में सक्षम थे, अपने प्रभु का अनुकरण किया और कोमल मेमनों की तरह, अपने हत्यारों के सामने वध के लिए आत्मसमर्पण कर दिया। घुटने टेककर, उन्होंने अपनी गर्दनें तलवारों के सामने कर दीं, और सेल्यूकस के सैनिकों ने, बिना किसी दया के उन्हें गिराते हुए, थोड़े ही समय में सभी को मार डाला। और संतों का खून पानी की तरह बह निकला, जो उस स्थान से बह रहा था, जबकि उनकी आत्माएँ विजयी होकर अपने प्रभु के आनंद में प्रवेश कर गईं।

पवित्र लोगों ने अगस्त के 19वें दिन, रविवार को दिन के दूसरे घंटे पर यातनाएं सहन कीं; और ठीक उसी स्थान पर जहाँ उनके शहीदों का रक्त बहाया गया था, शुद्ध और चंगा करने वाले पानी का एक झरना तुरंत फूट पड़ा।

संतों को पीटे जाने का दृश्य उपरोक्त बिशपों, सिलिसिया के तारस के पीटर और बेरिया शहर के नॉन ने देखा, जो ऊपर एक चट्टान पर छिपे हुए थे, क्योंकि वे अपने पुरोहितों के साथ दूर से उनका पीछा कर रहे थे, और वे उनकी मृत्यु का साक्षी बनना चाहते थे। जब पवित्र शहीदों की पिटाई के बाद सेल्यूकस अपने सैनिकों के साथ घर लौटने के लिए रवाना हुआ, तो ये बिशप अपने पुरोहितों के साथ शहीदों के शवों के पास गए और उन पर रोए; फिर, उन्हें दफनाने की तैयारी करने के बाद, उन्होंने उन्हें उसी स्थान पर सम्मान के साथ दफनाया। उन्होंने वह झरना भी देखा जो पवित्र शहीदों की प्रार्थनाओं से फूटा था; और, उसके पानी को पीकर, उन्होंने इसके चंगा करने वाले गुणों को पहचाना, क्योंकि बिशपों के साथ मौजूद पुरोहितों में से एक लंबे समय से एक अशुद्ध आत्मा से पीड़ित था, लेकिन जब उसने इस झरने का पानी पिया, तो अशुद्ध आत्मा तुरंत उससे निकल गई। संतों के दफ़नाने के बाद, बिशप पीटर तारस नहीं लौटे, क्योंकि सेल्यूकस ने उन्हें मारने के इरादे से उनकी तलाश शुरू कर दी थी; इसके बजाय, वे अपने साथ मौजूद सभी लोगों के साथ इसौरिया चले गए।

इस बीच, स्थानीय निवासियों को जब इस चंगा करने वाले झरने के बारे में पता चला, तो वे आने लगे और अपने बीमारों को लाने लगे। उन्होंने उस पानी को पिया, उससे स्नान किया, और पवित्र कष्ट-भोगी एंड्रयू और उनके साथ कष्ट सहने वाले पवित्र शहीदों की प्रार्थनाओं द्वारा, और हमारे प्रभु यीशु मसीह की कृपा से, हर प्रकार की बीमारियों से चंगा हो गए, जिनके लिए, पिता और पवित्र आत्मा के साथ, अब और हमेशा और युगों-युगों तक सम्मान और महिमा हो। आमीन।

ट्रोपारियन, स्वर 5:

पार्थिव पद की महिमा को त्यागकर और स्वर्ग के राज्य को विरासत में पाकर, आपने अपने रक्त की बूंदों से, एक अद्भुत रत्न की तरह, अपने अक्षय मुकुटों को सजाया, और आपने यातना-भोगियों की मंडली का मसीह की ओर नेतृत्व किया; स्वर्गदूतों की पंक्तियों में, आपने स्वयं को मसीह के अस्त न होने वाले सूर्य की अक्षय प्रकाश में पाया,

हे पवित्र शहीद एंड्रयू: आप और आपके साथी शहीदों से निवेदन है कि कृपया निरंतर उनके समक्ष प्रार्थना करें, कि वे हमारे आत्माओं को बचाएँ।

कॉन्टाकियन, स्वर 2:

प्रार्थना में प्रभु के समक्ष खड़े होकर, जैसे एक तारा सूर्य से पहले होता है, और राज्य के लालायित खजाने को देखकर, अकथनीय आनंद से भरकर, आप अमर राजा के लिए युगानुयुग गायन करते हैं, जिनकी देवदूत निरंतर स्तुति करते हैं, एंड्रयू द स्ट्रैटेलेट्स: उन सब के साथ हमारे लिए निरंतर प्रार्थना करें।

डॉन की ईश्वर माता के '[5612]' आइकन के सम्मान में पर्व

19 अगस्त को स्मरण किया जाता है

इस दिन, मास्को के शाही शहर के पास स्थित डॉन्स्काया नामक मठ में, उनकी पूजनीय और चमत्कारी प्रतिमा के सम्मान में सर्वशुद्ध कन्या मरियम का पर्व मनाया जाता है।

इस प्रतिमा के बारे में निम्नलिखित कहा जाता है।

जब धर्मपरायण ग्रैंड प्रिंस दिमित्री इवानोविच डोन और नेप्र्याद्वा नदियों के बीच अधर्मी तातार खान मामई से लड़ रहे थे, तो यह सबसे सम्मानित और चमत्कारी प्रतिमा रूसी सैनिकों के बीच मौजूद थी। इसे डॉन सेना द्वारा ग्रैंड प्रिंस को उनके दुश्मनों के खिलाफ सहायता के लिए एक उपहार के रूप में लाया गया था। परमेश्वर की अति पवित्र माता की प्रार्थनाओं द्वारा और चमत्कार करने वाली प्रतिमा से उत्सर्जित उनकी अनुग्रह-पूर्ण शक्ति से, तातारों को पराजित किया गया। अपनी सेना के साथ मिलकर भव्य उत्सव के साथ विजय का जश्न मनाने के बाद, महा राजकुमार अपनी राजधानी मास्को लौट आए और अपने साथ वह पूजनीय प्रतिमा लाए, जिसे डॉन के उस पार तटारों पर मिली विजय की स्मृति में 'डॉन प्रतिमा' का नाम दिया गया था।

डोन्स्काया मठ के नाम से एक मठ है, जिसका नाम परम पवित्र ईश्वर माता की डोन्स्काया प्रतिमा के नाम पर रखा गया है।

धार्मिक ज़ार और ग्रैंड प्रिंस थियोडोर इओनोविच के शासनकाल के दौरान, क्रीमियाई हॉर्ड ने मस्कोवाइट राज्य के क्षेत्रों पर अचानक छापा मारा, और tatar ख़ान मुरात गिरिय स्वयं मास्को की राजधानी तक आगे बढ़ आए। उस समय, धर्मपरायण ज़ार अपनी सेना के साथ टाटारों के खिलाफ़ मार्च करके उसी स्थान पर शिविर लगा लिया जहाँ अब मठ स्थित है। उन्होंने अपने सैन्य शिविर में परमेश्वर की परम पवित्र माता का प्रतिमाचित्र भी लाया था, जिसे डॉन से लाया गया था। परमेश्वर की परम पवित्र माता की सहायता से, उन्होंने टाटार सेनाओं पर विजय प्राप्त की और उन्हें खदेड़ दिया। जीत के लिए ईश्वर की माता को धन्यवाद देते हुए, उन्होंने उस स्थान पर एक पत्थर का चर्च बनाने और उसमें उपरोक्त प्रतिमा रखने का आदेश दिया। उस समय से, यह मठ डॉन्स्काया के नाम से जाना जाने लगा।

इस दिन, संपूर्ण पुरोहित वर्ग, पवित्र क्रॉस और आइकन लेकर, मास्को के महान कैथेड्रल से मठ में आता है और ईश्वर की माता के सम्मान में एक भव्य उत्सव मनाता है।

पवित्र शहीदों टिमोथी, अगापियस और थेक्ला का कष्टकथा

19 अगस्त को स्मरण किया जाता है

[5612] golden-ship.boom.ru पर आइकन देखें

महान शहीद थमिोथी फलिस्तिीनी शहर गाज़ा के मूल नविासी थे[5613] । चूँकि उन्होंने अपने जीवन-यापन के तरीके और वाक्पटुता के उपहार से प्रशंसा अर्जति की, इसलिए उन्हें ईसाई धर्म का शक्षिक नयिुक्त कयिा गया। उन्हें गाजा में गरिफ्तार कयिा गया और जब शहर के राज्यपाल, अर्बन, के सामने पेश कयिा गया, तो उन्होंने पूछताछ के दौरान खुद को एक ईसाई घोषति कयिा, मानव जाति के लिए मसीह के प्रेम, पृथ्वी पर उनके आगमन और उनके अवतार का उपदेश दयिा। इसके लिए, उन्हें वभिन्नि यातनाओं का सामना करना पड़ा, लेकनि वह अपने वश्विास पर अडगि रहे। बाद में उसे आग में फेंक दयिा गया, जहाँ उसकी मृत्यु हो गई। उसी समय, उसी शहर में, संत अगपयिस और थेकला को क्रूर यातनाएँ दी गईं; और चूँकि उन्होंने इसके बाद भी मसीह में अपने वश्विास को दृढ़ता से बनाए रखा, उन्हें चीर-फाड़ के लिए जानवरों के सामने फेंक दयिा गया, जसिसे उनकी मृत्यु हो गई, और उन्होंने अपने स्वर्गीय मुकुट प्राप्त कयि[5614] ।

2 सतिंबर

20 अगस्त (पुराना संस्करण)

पैगंबर सेंट सैमुअल का जीवन

20 अगस्त को स्मरणोत्सव

इज़राइल के राजाओं के शासन से पहले, जब परमेश्वर के लोग अभी भी न्यायायिों द्वारा शासति थे, एल्कना नाम का एक व्यक्ति रिहता था। वह लेवी के कुल का था और एफ्राइम के प्रदेश में, नामक एक शहर रामा (रामाह) में रहता था, जो स्पेरा नामक पहाड़ पर स्थति था। बाद में, इस शहर को अर्माफमि और अरमिाथेआ कहा जाने लगा, जहाँ से बाद में यूसुफ का जन्म हुआ, जनि्होंने हमारे प्रभु यीशु मसीह के सबसे पवत्रि शरीर को आराम दयिा। एलीनाह की दो पत्नयिाँ थीं। एक का नाम हन्नाह था, और दूसरी पेनीनाह। पेन्नाना के बच्चे थे, जबकि हन्ना बाँझ थी। हालाँकि, एल्कना हन्ना से पेन्नाना से अधकि प्रेम करता था, जसि पर पेन्नाना हन्ना से नफरत करती थी और अक्सर उसका अपमान करती थी। अपनी नफरत करने वाली से प्रताड़ति होकर, हन्ना अपनी संतानहीनता पर दुखी हुई और अपने दुख से रोई। हर साल, बड़े पर्वों पर, एल्काना अपनी दोनों पत्नयिों के साथ शीलो (जैसा कि उस पहाड़ और शहर का नाम था) जाता था ताकि बलदिान चढ़ाए और सेनाओं के प्रभु परमेश्वर से प्रार्थना करे; क्योंकि जब तक यरूशलेम में मंदरि नहीं बना था, तब तक मंदरि और परमेश्वर का संदूक वहाँ था, और इस्राएल के सभी कुल वहाँ परमेश्वर की उपासना करने आते थे। उस समय, एली नामक एक व्यक्ति इज़राइल के पुरोहति और न्यायाधीश दोनों के रूप में सेवा करता था; उसके दो पुत्र थे, होफ़नी और फनिहास।

एक दनि, एल्काना अपनी पत्नयिों के साथ शलिोह आया और परमेश्वर को बलदिान चढ़ाया। उसने बलदिान का एक हस्सिा पेनीनाह को और उसके प्रत्येक बच्चे को एक वशिष हस्सिा दयिा, लेकनि हन्नाह को केवल एक हस्सिा दयिा, क्योंकि उसके कोई संतान नहीं थी। तब पेनीनाह ने उसका उपहास करना और उसे ताना देना शुरू कर दयिा। हन्नाह पेननिाह के तानों और अपनी संतानहीनता, दोनों से बहुत दुखी थी। वह रोई, खाने से इनकार कर दयिा, और इस गहरे दुख से अभभिूत हो गई कि प्रभु ने उसकी कोख बंद कर दी थी, उसे संतान नहीं दी थी, और इस प्रकार उसे पेननिाह के तरिस्कार का नशिाना बना दयिा था, जसिसे वह कमजोर पड़ गई। तब उसके पति एलीकाम ने उससे कहा:

'हन्नाह, तुझे क्या हुआ है? तू क्यों रो रही है? तू खाने से क्यों इनकार कर रही है, और तू अपने मन को इतनी गहरी उदासी से क्यों व्यथति कर रही है? क्या मैं तुझको दस बच्चों से भी बढ़कर नहीं हूँ?'

[5613] गाज़ा भूमध्य सागर के तट पर स्थति है। प्राचीन काल में, यह पाँच सबसे प्रसद्धि फ़लिस्तिीनी शहरों में से एक था और फ़लिस्तिीन में कनानी लोगों की दक्षणिी सीमा को चहि्नति करता था। नए नयिम में, गाज़ा का उल्लेख केवल इथयिोपयिाई रानी कैंडस के धर्मांतरण के वृत्तांत में (प्रेरतिों के काम 8:26) मलिता है। चौथी शताब्दी से ही गाज़ा एक ईसाई शहर था, और सातवीं शताब्दी में इस पर मुसलमानों ने वजिय प्राप्त की।

[5614] वर्षस्कि की कैलेंडर के अनुसार, संत तमिोथी और थक्ला की मृत्यु 304 ईस्वी में गाजा शहर में हुई, जबकि संत अगपयिस की मृत्यु 306 ईस्वी में फलिस्तिीन के केसरयिा में हुई। पहले वाले को खंभे पर जला दयिा गया, संत थक्ला को जंगली जानवरों द्वारा चीर-फाड़ कर टुकड़े-टुकड़े कर दयिा गया, और संत अगपयिस को समुद्र में फेंक दयिा गया।

लेकिन हन्ना को कोई सांत्वना नहीं मिली। जब भोजन समाप्त हो गया, तो वह उठकर शीलो गई, यहोवा के मंदिर में। उस समय, याजक एली यहोवा के मंदिर के द्वार पर अपनी याजकीय सीट पर बैठे थे। मंदिर के सामने खड़ी होकर, हन्ना ने यहोवा के सामने सिर झुकाया और अपने हृदय के कष्ट के कारण रोने लगी। वह चुपचाप प्रार्थना करने लगी, कहती हुई:

'हे सेनाओं के प्रभु, अदोनाई! यदि आप अपनी दासी की दीनता पर अनुग्रह की दृष्टि डालें और मुझे याद रखकर अपनी दासी को एक पुत्र दें, तो मैं उसे आपके लिए अर्पित कर दूँगी, ताकि वह अपने जीवन के सभी दिनों तक आपकी सेवा करे। वह न तो दाखरस पिएगा और न ही कोई मदक पीने की वस्तु, और कोई ब्लेड उसके सिर को नहीं छूएगा (जैसा कि नज़ीरी लोगों की रीति है)।

जब हन्नाह प्रभु के सामने इस प्रकार प्रार्थना कर रही थी और अपनी प्रार्थना लम्बी खींच रही थी, तब याजक एली उसके होंठों को देख रहा था। चूंकि वह मन ही मन बोल रही थी और उसके होंठ हिल रहे थे पर उसकी आवाज़ सुनाई नहीं दे रही थी, एली ने सोचा कि वह नशे में है और उससे कहा:

'तुम इस नशे की हालत में यहाँ कब तक रहोगी? प्रभु की उपस्थिति से दूर जाओ और होश में आओ।'

'नहीं, महाराज,' हन्नाह ने उत्तर दिया, 'मैं नशे में नहीं हूँ, पर मैं गहरे दुःख से दबी हुई एक स्त्री हूँ। मैंने न तो शराब पी है और न ही कोई और नशीली वस्तु; मैं अपना मन प्रभु के सामने खोलकर रख रही हूँ। अपनी दासी को इस्राएल की बेटियों के लिए उपहास का विषय न बनाइए, क्योंकि मैं अपनी बड़ी उदासी और दुःख के कारण ही अब तक बोलती रही हूँ।'

तब एली ने उसकी बातों के उत्तर में उससे कहा:

'सुकून से जाओ। इस्राएल का परमेश्वर तुम्हारी हर वह प्रार्थना पूरी करे जो तुमने उनसे की है।'

हन्नाह ने कहा, 'मैं, आपकी दासी, ने आपकी दृष्टि में अनुग्रह पाया है।'

इसके बाद हन्नाह अपने पति के पास लौट आई; उसने उसके साथ खाया-पिया, और उसका चेहरा पहले की तरह उदास नहीं रहा। अगले दिन, वे सब भोर-भोर उठकर प्रभु की उपासना करके अपने घर लौट आए। और प्रभु ने हन्नाह की दीनता पर दृष्टि की, उसकी प्रार्थना सुनी और उसे बाँझपन से चंगा किया। हन्नाह के गर्भ से संतान उत्पन्न हुई, और जब समय पूरा हुआ, तो उसने एक पुत्र को जन्म दिया और उसका नाम शमूएल रखा, जिसका अर्थ है 'परमेश्वर से माँगा हुआ'।

जल्द ही त्योहार का समय आ गया, जिसमें अपने रिवाज़ के अनुसार हन्ना का पति अपने पूरे घर-बार के साथ शिलोह में प्रभु के पास जाकर बलिदान चढ़ाने, प्रार्थना करने और अपनी भूमि की उपज का दसवाँ हिस्सा चढ़ाने जाता था। हन्ना ने अपने पति से कहा:

'मैं इस बार तुम्हारे साथ शीलो नहीं जाऊँगी, बल्कि तब तक घर पर ही रहूँगी जब तक मैं बच्चे का दूध नहीं छुड़ा लेती; और जब वह दूध छुड़ा लेगा, तब मैं जाकर उसे प्रभु के सामने प्रस्तुत करूँगी और वह व्रत पूरा करूँगी जो मैंने प्रभु से किया था: कि मेरा पुत्र हमेशा के लिए उनकी सेवा में रहे।'

उसके पति ने उत्तर दिया:

'जैसा तुम्हें ठीक लगे करो, और यहोवा तुम्हारे मुँह से निकली बात को पूरा करे।' हन्ना घर में ही रही और तीन वर्ष तक यहोवा के पास शीलो नहीं गई, जब तक उसने शिशु शमूएल को दूध नहीं छुड़ा दिया, क्योंकि यहूदी माताओं में अपने शिशुओं को तीन वर्ष तक स्तनपान कराने की प्रथा थी।

जब शमिोन दूधमुँहा हो गया, तो हन्नाह उसके और अपने पति के साथ शीलो गई। वे बलिदान के लिए तीन जवान सांड, तीन माप गेहूँ का आटा और एक चमड़ा दाखमक्खी का ले गए, और बच्चे को साथ लेकर शीलो में प्रभु के भवन में प्रवेश किए। हन्नाह ने बच्चे को प्रभु के लिए एक भेंट के रूप में अर्पित किया, जैसा कि उसने वादा किया था, और उसे याजक एली के हवाले करते हुए कहा:

'मैं वही स्त्री हूँ जिसे आपने तीन साल पहले यहाँ देखा था, जो अपनी बाँझपन दूर करने के लिए प्रभु से प्रार्थना कर रही थी। प्रभु ने मेरी विनती स्वीकार की और मुझे यह पुत्र दिया, जिसे मैंने उनसे माँगा था। अब मैं उसे प्रभु को अर्पित कर रही हूँ, ताकि वह अपने जीवन के सभी दिन उनकी सेवा करे।'

इन शब्दों के साथ, हन्नाह ने अपने बच्चे को याजक के हाथों में रख दिया और प्रभु के सामने झुक गई, जबकि उसके पति एलीकाना ने बलिदान के लिए लाई हुई भेंटें अर्पित कीं (1 शमूएल 1:1–28)। फिर हन्नाह भविष्यवाणी की आत्मा से भर गई और गाकर कहने लगी:

'मेरा हृदय यहोवा में आनन्दित होता है, और मेरी शक्ति मेरे परमेश्वर में महान हुई है'—और अन्य शब्द जो अब अक्सर चर्च में गाए जाते हैं (1 शमूएल 2:1–10)।

अपना धन्यवाद का बलिदान और प्रार्थनाएँ अर्पित करने के बाद, एलीकाना और हन्ना घर लौट गए, और तीन वर्षीय लड़के शमूएल को यहोवा की सेवा में याजक एली के पास छोड़ गए, क्योंकि वे उस बच्चे को, जिसे उन्होंने एक बार परमेश्वर को सौंपा था, अब अपने घर वापस नहीं ले जाना चाहते थे। उस समय से, वह लड़का परमेश्वर के मंदिर में पला-बढ़ा, उसने पढ़ना-लिखना सीखा और एली की देखरेख में परमेश्वर के पवित्र स्थान में सेवा की। उसकी माँ, जो अक्सर परमेश्वर के लिए भेंट-चढ़ावे के साथ शीलो आती थी, अपने बेटे के लिए कपड़े लाती थी और उसे बड़ा होते देख, और याजकीय सूती वस्त्रों को पहनकर प्रभु के मंदिर में अपनी सेवा करते देख, वह उससे बहुत प्रसन्न होती थी। पुरोहित एली उससे प्रेम करता था, क्योंकि वह उसकी सेवा में उत्साह देखता था और उसमें ईश्वर-प्रदत्त प्रतिभा को पहचानता था। और एली ने शमूएल के माता-पिता को आशीर्वाद दिया और एल्काना से कहा:

'प्रभु तुम्हें मेरे द्वारा सामूएल के बदले में संतान दें, जिसे तुमने प्रभु को अर्पित किया है।'

इसके बाद, प्रभु ने एक बार फिर हन्नाह पर दया दिखाई, और वह पुत्रों और पुत्रियों को जन्म देने लगी; जबकि इस समय में शमूएल न केवल कद में बल्कि ज्ञान में भी बढ़ गया, और प्रभु तथा लोगों की कृपा प्राप्त हुई।

पुजारी एली बूढ़े थे, और उनके पुत्र होफ़नी और फिनेहास दुष्ट पुरुष थे। अधर्मी लोगों के बेटों की तरह, वे परमेश्वर को नहीं जानते थे और अपने याजकीय कर्तव्यों को पूरा नहीं करते थे। उन्होंने बलिदान लाने वालों पर अत्याचार किया, अपने लिए सबसे अच्छी हिस्सेदारी ले ली और प्रभु के मंदिर में प्रार्थना करने आई महिलाओं को अपवित्र होने दिया। वे पूरे इस्राएल के लिए प्रलोभन और ठोकर का कारण थे, क्योंकि उन्होंने और भी कई अन्याय किए। उनके पिता एली ने यह सुना, पर उन्हें मार-पीटकर या समाज से बहिष्कृत करके दंड नहीं दिया; उसने केवल शब्दों से उन्हें अपने दुष्ट कर्मों को छोड़ने के लिए मनाने की कोशिश की, पर वे उसकी नहीं सुने। और यहोवा न केवल दुष्ट बेटों पर, बल्कि उनके पिता पर भी क्रुद्ध हुआ, क्योंकि उसने उनके अपराधों के लिए उन्हें वैसे दण्ड नहीं दिया जैसा देना चाहिए था, भले ही वह स्वयं निर्दोष था। और यहोवा ने एली और उसके बेटों को, उनके पूरे घराने सहित, नष्ट करने का निश्चय किया, और पहले एक अज्ञात भविष्यवक्ता को एली के पास यह कहने के लिए भेजा:

'मैंने इस्राएल के सभी घराने में से तुम्हारे पिता के घराने को अपनी मंदिर में मेरी सेवा करने के लिए चुना था, परन्तु तुमने उस सम्मान की परवाह नहीं की जो मैंने तुम पर किया और तुमने मुझे छोड़कर अपने बेटों को तरजीह दी, क्योंकि तुमने उन्हें मेरे सामने अधर्म करने दिया। इसलिए, मैं यह सम्मान आपके घर से छीन लूंगा, क्योंकि मैं केवल उन्हीं का सम्मान करूंगा जो मेरा सम्मान करते हैं, जबकि जो मेरा अपमान करते हैं, उन्हें लज्जित किया जाएगा। देखो, वे दिन आ रहे हैं जब मैं आपके वंशजों और आपके पिता के घर के वंशजों को समाप्त कर दूंगा। और तेरे घराने पर आने वाली सज़ा के चिन्ह के तौर पर, तेरे दोनों पुत्र एक ही दिन तलवार से मरेंगे। और उनकी जगह मैं अपना एक विश्वासयोग्य याजक खड़ा करूँगा, जो मेरे मन के अनुसार सब कुछ करेगा (1 शमूएल 2:10–36)।

एलियाह को यह भविष्यवाणी उस समय मिली जब शमूएल अभी भी एक छोटा लड़का था; फिर भी इस भविष्यवाणी के बाद भी एलियाह ने अपने बेटों के व्यवहार को उचित दंड देकर नियंत्रित करने का कोई प्रयास नहीं किया, बल्कि केवल शब्दों से ही उन्हें फटकारता रहा, और उसके अवज्ञाकारी बेटों को अपने पिता का कोई भय नहीं था। और ईश्वर, दिन-प्रतिदिन अधिक क्रोधित होकर, दंड को और निकट लाया और उसे दूसरी बार सैमुएल के माध्यम से एली को इस प्रकार बताया।

जब शमूएल बारह वर्ष का था और याजक एली के अधीन प्रभु की सेवा कर रहा था, तो एक रात की बात है कि एली प्रभु के मन्दिर के बरामदे में अपनी सामान्य जगह पर विश्राम कर रहे थे, और उनकी आँखें नींद से भारी होने लगीं, जबकि शमूएल प्रभु के मन्दिर में सो रहा था, जहाँ परमेश्वर का संदूक रखा था और दीपक अभी भी जल रहा था। और प्रभु ने भीतर के पर्दे के पीछे से पुकारा, और कहा:

'शमूएल, शमूएल!'

समुएल तुरंत जागकर उत्तर दिया:

'मैं यहाँ हूँ!'

और वह एली के पास दौड़ा और कहा:

'मैं यहाँ हूँ! आपने मुझे बुलाया।'

पर एली ने कहा:

'मैंने तुम्हें नहीं बुलाया, मेरे बेटे! वापस जाओ और लेट जाओ।'

शमूएल गया और लेट गया। परन्तु यहोवा ने दूसरी बार उसे पुकारा:

'शमूएल, शमूएल!'

शमूएल उठकर एली के पास दौड़ा और दूसरी बार बोला:

'मैं यहाँ हूँ! आपने मुझे बुलाया।'

लेकिन याजक ने कहा:

'मैंने तुम्हें नहीं बुलाया, मेरे बेटे! वापस जाओ और लेट जाओ।'

सamuएल ने अभी तक प्रभु की आवाज़ को नहीं पहचाना था, क्योंकि उसे परमेश्वर से अभी तक कोई प्रकटवाणी प्राप्त नहीं हुई थी।

और प्रभु ने तीसरी बार शमूएल को पुकारा। वह जल्दी से उठा, तीसरी बार एली के पास गया और कहा:

– मैं हाज़िर हूँ! आपने मुझे बुलाया।

तब एली को समझ आया कि यहोवा लड़के को बुला रहे हैं, और उन्होंने कहा:

'लौट जा, मेरे बेटे, और लेट जा; और जब वह जो बुला रहा है तुझे फिर बुलाए, तो कहना:

'प्रभु, बोलिए, क्योंकि आपका दास सुन रहा है।'

शमूएल गया और अपनी जगह लेट गया। और यहोवा आकर वहाँ खड़ा हुआ, और पहले, दूसरे और तीसरे बार की तरह पुकारकर कहने लगा:

'शमूएल, शमूएल!'

शमूएल जाग उठा और जल्दी से उठ खड़ा हुआ, और उसने कहा:

'प्रभु, बोलिए, क्योंकि आपका दास सुन रहा है।'

प्रभु ने शमूएल से कहा:

'देख, मैं इस्राएल में एक ऐसा काम करने वाला हूँ कि जो कोई भी इसकी सुनना, उसके दोनों कान गूँज उठेंगे। उस दिन मैं एली के विरुद्ध वह सब कुछ पूरा करूँगा जो मैंने उसके घराने के विषय में कहा है। मैं उसे आरंभ करूँगा और मैं उसे समाप्त करूँगा।' मैंने उसे यह घोषित कर दिया है कि मैं इस अपराध के लिए उसके घराने को हमेशा के लिए दंडित करूँगा: हालाँकि वह जानता था कि उसके बेटों का आचरण कितना दुष्टतापूर्ण था, फिर भी उसने उन्हें रोका नहीं।

सैमुएल ने प्रभु के इन वचनों को काँपते हुए सुना, और जब प्रभु की उपस्थिति समाप्त हो गई, तो वह फिर से सो गया और सुबह तक सोता रहा। जब वह सुबह उठा, तो उसने प्रभु के मंदिर के द्वार खोल दिए, परन्तु वह अपने स्वामी, याजक एली को यह दर्शन बताने से डर रहा था। परन्तु एली ने सैमुएल को बुलाया और कहा:

'मेरे पुत्र, शमूएल! यहोवा ने तुझ से क्या कहा? मैं तुझ से विनती करता हूँ, मुझ से कुछ भी न छिपा।'

और एली ने शपथ दिलाकर उस लड़के शमूएल से मांगा कि वह परमेश्वर का एक भी वचन उससे न छिपाए। तब शमूएल ने उसे वह सब कुछ बता दिया जो उसने सुना था। याजक एली ने नम्रता से कहा:

'जैसा मेरे प्रभु को भाए, वैसा ही हो।'

लेकिन एली में अब अपने बेटों को अनुशासित करने और सुधारने की ताकत नहीं बची थी, क्योंकि वह अब बहुत बूढ़ा हो गया था, और उसके बेटों को उससे बिल्कुल भी डर नहीं था। जहाँ तक सामूएल का प्रश्न है, वह दिन-प्रतिदिन कद और आत्मा में बढ़ता गया, और परमेश्वर का अनुग्रह उस पर बढ़ता गया। यहोवा उसके साथ था, और उसने भविष्यवाणी के वचन बोले; उसकी एक भी बात जो उसने कही थी, वह झूठी नहीं निकली। और इस्राएल के सब लोगों ने यह जान लिया कि सामूएल यहोवा का भविष्यवक्ता था (1 शमूएल 3:1-21)।

कुछ समय बीत जाने के बाद, ईश्वर का दंड एली के घराने पर और उसके साथ-साथ पूरे इस्राएल के लोगों पर भी आया, क्योंकि केवल एली के पुत्रों ने ही ईश्वर को क्रोधित नहीं किया था, बल्कि इस्राएलियों ने भी किया था। हालाँकि उन सबने नहीं, पर उनमें से कई लोगों ने, मूर्तिपूजा की प्रथा अविश्वासियों से सीखकर, उसे नहीं छोड़ा; और सच्चे परमेश्वर की सेवा करते हुए भी, उन्होंने मूर्तियों को बलिदान चढ़ाया, जिससे वे अपने परमेश्वर को क्रोधित करने लगे। लेकिन दीर्घ-सहिष्णु परमेश्वर ने लोगों के पापों को तब तक सहन किया जब तक कि एलियाह के पुत्रों ने—जो इस्राएल के लोगों के याजक और शासक थे—उसे क्रोधित नहीं कर दिया। और जब उन्होंने, अपनी अधर्मीता से, परमेश्वर को

क्रोध और दण्ड के लिए उकसाया, तब धर्मी न्यायी और प्रतिफलदाता, लोगों के पापों को भी याद करते हुए, उन सभी को एक साथ दण्ड दिया, क्योंकि परमेश्वर प्रजा को उनके शासकों के साथ दण्ड देता है। और लोगों के पाप उतनी आसानी से दंड के लिए ईश्वर के क्रोध को भड़काते नहीं हैं, जितना कि उन लोगों के पाप जो उसने लोगों के नेताओं और शासकों के रूप में नियुक्त किए हैं।

फिलिष्टियों ने इस्राएलियों के विरुद्ध युद्ध किया, और इस्राएली फिलिष्टियों से पराजित हो गए; इस्राएली सेना के चार हजार पुरुष मारे गए। और इस्राएल के बुजुर्गों ने एक-दूसरे से कहा:

'आज परमेश्वर ने हमें परदेसियों के सामने क्यों पराजित किया है? आओ, हम शीलो से हमारे परमेश्वर यहोवा की संदूक लाएँ और उसे अपने डेरे में लाएँ। जब तक हम पलिश्तियों से लड़ रहे हैं, तब तक वह हमारे बीच रहे, और वह हमें हमारे शत्रुओं के हाथ से बचाए।'

यह निर्णय लेने के बाद, उन्होंने शिलोह को भेजा और वहाँ से परमेश्वर का सन्दूक लाया, जो करूबों पर विराजमान है; और परमेश्वर के सन्दूक के साथ एली के दो पुत्र, होफ्नी और फिनेहास भी थे। जब यहोवा का सन्दूक छावनी में पहुँचा, तो सारे इस्राएलियों ने इतनी ऊँची जयजयकार की कि पृथ्वी गूँज उठी। फिलिष्टियों ने यह जयकार सुना और कहा:

'यहूदियों के शिविर में इतनी ऊँची चीखों का कारण क्या है?'

और फिलिश्तियों को यह एहसास हुआ कि यहोवा का सन्दूक इज़राइल के छावनी में आ गया है। वे भयभीत हो गए और कहने लगे:

'ईश्वर हमारे विरुद्ध लड़ने के लिए उनके शिविर में आ गए हैं। हाय हम पर! हमें उनके हाथ से कौन बचाएगा? क्योंकि उन्होंने मिस्रियों को हर प्रकार की विपत्तियों से मारा था। परन्तु हे फिलिस्तीयों के लोग, हम हिम्मत करें और बहादुरी से यहूदियों से लड़ें, कहीं ऐसा न हो कि हम उनके दास बन जाएँ, जैसे वे हमारे दास रहे हैं।'

इन शब्दों से एक-दूसरे को प्रोत्साहित करते हुए, फिलिश्ती यहूदियों के खिलाफ डटे रहे। युद्ध छिड़ गया और दोनों ओर एक बड़ी लड़ाई हुई; और फिलिस्तीनियों ने यहूदियों पर विजय प्राप्त की। चूँकि परमेश्वर क्रोधित थे, वाचा का संदूक कोई सुरक्षा प्रदान नहीं कर सका; क्योंकि जहाँ कहीं परमेश्वर का दंड पड़ता है, वह स्वयं संदूक को भी नहीं बख्शता। पलिश्तियों ने इस्राएलियों पर विजय प्राप्त की, उनके तीस हजार योद्धाओं को मार गिराया, परमेश्वर के सन्दूक को पकड़ लिया, और उसके साथ रहे एली के दोनों बेटों को भी मार डाला। इस प्रकार, परमेश्वर के वचन के अनुसार, वे दोनों तलवार से मारे गए।

इस प्रकार परमेश्वर अपने प्रजा को उनके शासकों के पापों के लिए दंडित करता है और वेदी की सेवा करने वालों के दुष्ट कर्मों के कारण, अधर्मी लोगों को पवित्र वेदियों को लूटने और उसके मंदिरों को उजाड़ने की अनुमति देता है। एली के बेटों ने, जिन्होंने अपने वृद्ध पिता की जगह पूरे इस्राएल के याजक, न्यायाधीश और शासक के रूप में ली थी, मुख्य रूप से अपनी ही अवज्ञा के द्वारा परमेश्वर का क्रोध भड़काया; फिर भी, उनके कारण पूरे इस्राएल को परमेश्वर की सज़ा भुगतनी पड़ी, और यहोवा का सन्दूक परमेश्वर-विरोधियों के विदेशी हाथों में पड़ गया।

जब इस्राएल की सेना इस प्रकार पराजित हो गई, तो बिन्यामीन के कुल का एक मनुष्य, जिसका नाम यमिनी था, युद्ध के मैदान से भागकर फटे कपड़ों में और सिर पर धूल डाले शिलोह में आया, और उसने नगर में इस्राएल की सेना की पराजय की घोषणा की; और सारा नगर ऊँचे विलाप से विलाप करने लगा। उस समय एली प्रभु के मन्दिर के द्वार पर अपनी कुर्सी पर बैठा था, और उसका हृदय परमेश्वर के सन्दूक के लिए काँप रहा था। लोगों के विलाप का शब्द सुनकर, उसने अपने साथ बैठे लोगों से पूछा:

'इतनी हलचल का क्या कारण है?'

तब सेना से दौड़ता हुआ आया हुआ वह आदमी एली के पास आया और बोला:

'मैं युद्ध के मैदान से दौड़कर आया हूँ।'

एलियाह ने उससे पूछा:

'वहाँ क्या हुआ, मेरे बेटे?'

उसने उत्तर दिया, 'इज़राइलियों को फ़िलिस्तीनियों ने हरा दिया है और वे उनसे भाग गए हैं; लोगों में भारी भगदड़ मच गई है, तुम्हारे दोनों बेटों को मार डाला गया है, और परमेश्वर के सन्दूक को भी पकड़ लिया गया है।'

जब एली ने सुना कि परमेश्वर का संदूक पकड़ लिया गया है, तो वह तुरन्त अपनी कुर्सी से पीछे की ओर गिर पड़ा और उसकी गर्दन टूट गई और वह मर गया, क्योंकि वह अस्सी-आठ वर्ष का, बूढ़ा और भारी था (1 शमूएल 4:1–22)।

इस बीच, इज़राइल की सेना को हराने के बाद, फ़िलिस्तीनियों ने परमेश्वर की संदूक पर कब्ज़ा कर लिया और इस बात पर आनंदित और घमंड करते हुए कि उन्होंने इज़राइल के पवित्र स्थल को जीत लिया है, उसे अपनी राजधानी अश्क़दोध ले आए; उन्होंने इसे अपने अशुद्ध देवता डैगोन के मंदिर में ले जाकर अपनी मूर्ति के बगल में रख दिया। लेकिन जब वे अगली सुबह दागोन के मंदिर में प्रवेश किए, तो उन्होंने अपने देवता को परमेश्वर की संदूक के सामने जमीन पर मुंह के बल पड़ा पाया। उन्होंने उसे जमीन से उठाया और उसे उसकी जगह पर वापस रख दिया। लेकिन जब, अगली सुबह, वे फिर से मंदिर में दाखिल हुए, तो उन्होंने दागोन को न केवल परमेश्वर के सन्दूक के सामने पड़ा हुआ पाया, बल्कि टुकड़े-टुकड़े हो गया था: उसका सिर और दोनों पैर अलग-अलग, दहलीज पर पड़े थे, और दोनों हथेली दरवाजों के पास थीं; दागोन का केवल धड़ बचल था। ईश्वर की शक्ति, जो संदूषण के साथ थी, ने न केवल इस एक फिलिस्तीनी देवता को, बल्कि सभी फिलिस्तीनियों और उनकी भूमि को दंडित किया। सबसे छोटे से लेकर सबसे बूढ़े तक, इसने उन्हें एक अजीब बीमारी से पीड़ित कर दिया, जिससे उनके गुप्तांगों में कीड़े पड़ने वाले घाव हो गए; कई मर गए, और जो बच गए वे भयानक घावों से पीड़ित थे और असहनीय दर्द से इतनी ज़ोर से चिल्लाए कि उनकी चीखें स्वर्ग तक पहुँच गईं (1 शमूएल 5)। इसके अलावा, चूहों ने उस देश में तबाही मचा दी, जो सब कुछ चट कर गए, और चूहों की भारी संख्या के कारण देश में बदबू फैल गई। तब फिलिष्टियों को एहसास हुआ कि इस्राएल का परमेश्वर उन्हें अपना सन्दूक़ बंदी बनाने के लिए दंडित कर रहा था, और, अपनी इच्छा के विरुद्ध, उन्होंने इसे सुनहरे उपहारों के साथ इस्राएलियों को वापस भेज दिया, जैसा कि राजाओं की पहली पुस्तक में विस्तार से वर्णित है (1 शमूएल 6:1–21)। अब हम पवित्र नबी शमूएल के वृत्तांत पर वापस आते हैं।

उपरोक्त वर्णित युद्ध के अंत और इस्राएली याजक और न्यायाधीश एलियाह की मृत्यु के बाद, इस्राएलियों ने 20 वर्ष फिलिष्टियों की दासता के बोझ तले बिताए, वे अपने शत्रुओं के शासन में रहते थे और उन्हें कर देते थे। लेकिन बीस साल बाद, परमेश्वर ने अपने लोगों की पीड़ा पर दृष्टि डाली, जो फिलिस्तीनियों द्वारा उत्पीड़ित थे, और जब, उन पर दया करके, उन्होंने इस्राएल को उसके शत्रुओं की शक्ति से छुड़ाना चाहा, तो उन्होंने सबसे पहले उनके बीच में पश्चाताप का एक प्रचारक, अपने वफादार सेवक और याजक, नबी शमूएल को खड़ा किया। क्योंकि परमेश्वर तब तक अपने लोगों पर दया नहीं करेंगे जब तक वे पश्चाताप नहीं कर लेते। और पवित्र शमूएल ने इस्राएल के सभी गोत्रों में प्रचार करना शुरू किया, यह कहते हुए:

'यदि तुम पूरे मन से प्रभु की ओर लौट आओ, तो अपने बीच से परदेश के देवताओं और अशेरा के खंभों[5615] को हटा दो, और अपना मन प्रभु पर लगाओ और केवल उसी की सेवा करो, और वह तुम्हें पलिश्तियों के हाथ से छुड़ा लेगा।'

लोगों ने सामूएल की बात मानी और उस पर विश्वास किया, क्योंकि वे उसे उसके बचपन से जानते थे, और वे जानते थे कि उसके भविष्यवाणी के वचन हमेशा सच होते थे। और इस्राएल के पुत्रों ने परदेशी देवताओं, बाअल[5616] और अशेरह के खंभों को त्याग दिया, और केवल यहोवा की ही सेवा करने लगे, जबकि पवित्र शमूएल, परमेश्वर के भविष्यवक्ता और याजक के रूप में, उनके न्यायी और शासक थे। और संत शमूएल ने पूरे इस्राएल को मसफि नगर में, एक ऊँचे पहाड़ पर, अपने पास इकट्ठा होने की आज्ञा दी, ताकि वे वहाँ परमेश्वर से प्रायश्चित की राष्ट्रीय प्रार्थना करें। जब इस्राएल के लोग परमेश्वर के भविष्यवक्ता शमूएल के सामने इकट्ठा हुए, और प्रार्थना कर रहे थे, उपवास कर रहे थे और अपने पापों का इल्ज़ाम स्वीकार कर रहे थे, यह कहते हुए, 'हमने यहोवा के विरुद्ध पाप किया है', जबकि संत शमूएल, परमेश्वर के याजक के रूप में, लोगों के पापों की क्षमा के लिए परमेश्वर को बलिदान चढ़ा रहे थे, फिलिष्टियों ने जब इस्राएलियों के इकट्ठा होने की खबर सुनी और यह सोचकर कि वे उनके खिलाफ़ युद्ध करने जा रहे हैं, तो उन्होंने बड़ी संख्या में हथियारबंद होकर अचानक इस्राएलियों पर हमला कर दिया, ताकि उन्हें पूरी तरह से नष्ट कर सकें। जब इस्राएलियों ने सुना कि उनके शत्रु उन पर आक्रमण करने के इरादे से आ रहे हैं, तो वे बहुत डर गए और परमेश्वर के भविष्यवक्ता शमूएल से कहने लगे:

'हमारे लिए यहोवा हमारे परमेश्वर से पुकारना बंद न करना, कि वह हमें फिलिष्टियों के हाथ से बचाए।'

लेकिन उस पवित्र पुरुष ने उन्हें हिम्मत दी कि वे न डरें, बल्कि केवल परमेश्वर से प्रार्थना करें और उसी में अपनी आशा रखें; और उसने स्वयं, बलिदान चढ़ाते समय, उनके लिए विनम्रता से प्रार्थना की। और यहोवा ने शमूएल की प्रार्थना सुनी। उसने बलिदान चढ़ाना अभी पूरा भी नहीं किया था कि फिलिस्तीनी इस्राएलियों से लड़ने के लिए पास आ

[5615] अस्टार्टे एक देवी थीं जिन्हें फिनिशियाई और पूर्व के अन्य प्राचीन लोगों द्वारा पूजित किया जाता था। उनकी पूजा करने वालों ने उनकी सेवा के लिए मंदिर नहीं बनाए, बल्कि ओक के जंगलों या वन क्षेत्रों को अलग रखा।

[5616] सूर्य देवता बाअल का प्राचीन फ़िनिशियाई लोगों द्वारा विशेष रूप से सम्मान किया जाता था।

गए; परन्तु उस दिन यहोवा ने फिलिस्तीनियों पर जोर से गरज की और उन पर भयानक गरज और बिजली गिराई: वे भयभीत हो गए और इस्राएल के सामने गिर पड़े। तब इस्राएलियों ने मसपिा नगर से प्रस्थान किया और अपने शत्रुओं का पीछा किया; जब वे उनका पीछा कर रहे थे, तो उन्होंने उन्हें बेथ-होरोन के पास की जगह तक[5617] मार गिराया और परमेश्वर के पवित्र पुरुष, शमूएल की प्रार्थनाओं के द्वारा, और अपनी स्वयं की पश्चाताप के परिणामस्वरूप, परमेश्वर की मदद से, उन्होंने अपने शत्रुओं को पूरी तरह से पराजित कर दिया।

इस प्रकार प्रभु ने अपने लोगों के सामने फिलिश्तियों को वश में कर लिया, और सामूएल के दिनों भर उन्होंने फिर कभी इस्राएल की सीमाओं पर आक्रमण नहीं किया; इसके अलावा, उन्होंने इस्राएलियों को वे नगर लौटा दिए जो उन्होंने उनसे छीन लिए थे। और जब तक पवित्र शमूएल उनका न्यायी और शासक था, तब तक परमेश्वर के लोगों के बीच शांति थी, जिसने पूरे इस्राएल पर ईमानदारी से शासन किया। वह नगर-नगर घूमता रहा, और जो कुछ भी सुधारने की आवश्यकता थी, उसे सुधारता रहा, और निष्पक्ष रूप से न्याय करता रहा, क्योंकि उसने किसी से भी कोई उपहार स्वीकार नहीं किया, और ने किसी पक्ष के प्रति पक्षपात दिखाए बिना न्याय किया। फिर वह अरामाह (रामा) लौट आता था, क्योंकि वहीं उसका घर था; वहाँ वह लोगों का न्याय करता था और वहाँ उसने यहोवा के लिए एक वेदी बनाई (1 शमूएल 7:1–17)।

इज़राइल के न्यायाधीश के रूप में कई वर्षों तक सेवा करने के बाद, पवित्र शमूएल बूढ़ा हो गया और उसने अपने दो बेटों, योएल और अबिय्याह को अपनी जगह लोगों के न्यायाधीश नियुक्त किया। लेकिन उसके बेटों ने उसके मार्गों पर चलने से इनकार कर दिया: वे लालच की ओर मुड़ गए और न्याय के लिए उनके पास आने वालों से रिश्वत लेने लगे; उन्होंने रिश्वत की मात्रा के अनुसार न्याय किया और अन्यायपूर्ण निर्णय सुनाए। इसलिए, इस्राएल के बुजुर्ग एकत्रित हुए और संत शमूएल के पास गए, और उससे कहा:

'अब आप बूढ़े हो गए हैं, और आपके पुत्र आपके मार्ग पर नहीं चलते। इसलिए, हमारे ऊपर एक राजा नियुक्त करें, ताकि वह हमें न्याय दे और हमारा शासन करे, जैसा कि अन्य राष्ट्रों में प्रचलन है।'

समुएल को बुजुर्गों के इन शब्दों से अप्रसन्नता हुई, क्योंकि उन्होंने उससे अपने बेटों को दंडित करने या उन्हें न्यायाधीश के पद से हटाने के लिए नहीं कहा था—जो काम वह खुशी-खुशी कर देता—बल्कि उनके लिए एक राजा नियुक्त करने के लिए कहा; और लोगों ने ज़िद की, कहते हुए:

'हमें एक राजा दे जो हमारा न्याय करे।'

तब शमूएल ने प्रभु से प्रार्थना की, और प्रभु ने उससे कहा:

'इन लोगों की बात सुनो और जैसा वे चाहते हैं, वैसा ही उनके लिए करो, क्योंकि उन्होंने तुम्हें नहीं ठुकराया है, बल्कि उन्होंने मुझें ठुकराया है, ताकि मैं उनका राजा न रहूँ। परन्तु, उन्हें उस राजा के अधिकारों के बारे में बता दो जो उन पर राज्य करेगा।'

और शमूएल ने लोगों से कहा:

'हे इस्राएलियों! जान लो कि जिस राजा की तुम माँग कर रहे हो, वह तुम पर कैसे शासन करेगा। वह तुम्हारे बेटों को लेगा और उन्हें अपने सेवक बना लेगा: वह उन्हें हथियार देगा, घोड़ों पर बिठाएगा, अपने रथों के आगे दौड़ने का आदेश देगा, और उन्हें हजारों और सौ के सेनापति नियुक्त करेगा। इसके अलावा, वह उन्हें अपना दास बना लेगा: वह उन्हें अपने खेत जोतने, अपनी फसल काटने, अपनी दाख की बारी में अंगूर इकट्ठा करने और उसके सभी आवश्यक काम करने के लिए मजबूर करेगा। और वह तुम्हारी बेटियों को इत्र बनाने वाली, रसोइया और बेकर बना लेगा। वह तुम्हारे खेत, तुम्हारी दाख की बारियाँ और जैतून के बगान, और जो कुछ भी तुम्हारे पास उत्तम है, वह सब ले लेगा और अपने दासों को दे देगा; और जो फसलें, दाख की बारियाँ और खेत तुम्हारे पास बचेंगे, उन पर वह एक दसवाँ हिस्सा लगा देगा, ताकि जो कुछ तुम्हारे पास बचेगा, उसका तुम उसे दसवाँ हिस्सा दोगे। इसी तरह, वह आपसे अपने लिए आपके पुरुष और महिला दास और आपके सबसे अच्छे पशु ले लेगा, और आप उसके दास बन जाएंगे। उन दिनों आप अपने राजा के जुए के नीचे कराहेंगे, लेकिन प्रभु आपको उत्तर नहीं देंगे, क्योंकि आपने स्वयं एक राजा चुना है।

जब पवित्र शमूएल ने ये बातें कहीं, तो लोगों ने उसकी न सुनी, बल्कि उस पर चिल्लाकर कहा:

[5617] बेअर-शेबा – एक पहाड़ी की चोटी और उसी नाम का एक शहर। यह बिन्यामीन के कुल में, फिलिस्तीनियों के क्षेत्रों की उत्तर-पूर्वी सीमा के पास स्थित था।

'हम एक राजा चाहते हैं, ताकि हम अन्य सभी राष्ट्रों के समान हो सकें। हमारा राजा हमें न्याय करे और हमारे शत्रुओं से लड़ने के लिए हमारे आगे-आगे जाए।'

इसके बाद, संत शमूएल ने लोगों को तब तक घर जाने का आदेश दिया जब तक कि परमेश्वर उनके राजा के रूप में एक योग्य पुरुष को नियुक्त न कर दे (1 शमूएल 8)।

बिन्यामीन के कुल में गिबा नामक एक नगर में किश नाम का एक आदमी था। उसका एक बेटा साऊल था, जो लंबा और सुंदर था; इस्राएलियों में उससे अधिक सुडौल कोई नहीं था। किश के गधे खो गए थे, इसलिए उसने अपने बेटे साऊल को एक नौकर के साथ उन्हें खोजने के लिए भेजा। गधों की खोज करते हुए, वे सभी जगहों से हो कर गुज़रे लेकिन उन्हें कुछ नहीं मिला। और इस प्रकार वे ज़ीफ़ नामक पहाड़ पर आए, जहाँ अरमाह (रामा) नगर स्थित था, जो पवित्र शमूएल का जन्मस्थान और घर था। और साऊल ने अपने सेवक से कहा:

'चलो घर लौट चलें, मेरे पिता के पास, क्योंकि मुझे लगता है कि उन्हें गधों की तुलना में हमारी ज़्यादा चिंता है।'

परन्तु उसके दास ने उससे कहा:

'इस नगर में परमेश्वर का एक मनुष्य है, जो द्रष्टा है। वह उसके पास आने वालों को भविष्य बताता है। हम उसके पास चलें; शायद वह हमें बता देगा कि गिदहयाँ कहाँ मिलेंगी।'

इस प्रकार वे परमेश्वर के पुरुष के पास गए, और इससे पहले ही यहोवा ने संत शमूएल को साऊल के बारे में सब कुछ प्रकट कर दिया था और उसे राजा बनाने का आदेश दिया था। जब संत शमूएल ने किश के पुत्र शाऊल को देखा, तो उन्होंने उसका गर्मजोशी से स्वागत किया और उससे गधों की चिंता न करने के लिए कहा, क्योंकि वे पहले ही मिल चुके थे, और उन्होंने उसे उस दिन और रात के लिए अपने घर में आश्रय दिया। अगली सुबह, जब वह साऊल को विदा कर रहा था, तो शमूएल ने तेल की एक शीशी ली, उसके सिर पर तेल डाला, उसे चूमा और कहा:

'देख, प्रभु ने तुझे अपने लोगों का राजा बनाया है। अब तू प्रभु के लोगों पर राज्य कर और उन्हें उनके चारों ओर के शत्रुओं के हाथ से छुड़ा।'

यह अभिषिक्त साउल के भविष्य के शासन के संबंध में एक भविष्यवाणी के रूप में गुप्त रूप से किया गया था। और पवित्र शमूएल ने अभिषिक्त साउल को उसकी यात्रा पर होने वाली हर बात बताई, यह कहते हुए:

'यहाँ एक चिह्न है कि प्रभु ने तुम्हें राजा बनाने के लिए अभिषिक्त किया है। जब तुम मुझे अब छोड़ोगे, तो तुम बेन्यामीन के क्षेत्र ज़ेलूहा में राहेल की कब्र के पास दो आदमियों से मिलोगे, जो तेज़ी से चल रहे होंगे; वे तुमसे कहेंगे: 'जिन गधियों को तुम खोजने गए थे, वे मिल गई हैं, पर तुम्हारे पिता गधियों की बात भूल गए हैं और तुम्हारी चिंता में बहुत परेशान हैं।' इन दोनों आदमियों से मिलने के बाद, जब आप तabor के दबो के वृक्ष-समूह पर पहुँचेंगे, तो वहाँ आप तीन आदमियों से मिलेंगे, जो बेतेल में परमेश्वर के पास बलिदान के लिए भेंट लेकर जा रहे होंगे – एक तीन नर बकरियाँ ले जा रहा होगा, दूसरा तीन रोटियाँ ले जा रहा होगा, और तीसरा मदिरा की एक खाल ले जा रहा होगा। वे आपको नमस्कार करेंगे और आपको दो रोटियाँ देंगे। तब तुम परमेश्वर के पहाड़ पर चढ़ोगे और भविष्यद्वक्ताओं की एक मंडली से मिलोगे। यहोवा का आत्मा तुम पर आ जाएगा, और तुम उनके साथ भविष्यवाणी करोगे। जब तुम ये चिन्ह होते देखोगे, ठीक वैसे ही जैसे मैंने तुमसे कहा है, तब जान लेना कि परमेश्वर तुम्हारे साथ है।

जब शाऊल पवित्र सैमुएल से चले गए, तो जैसा भविष्यवक्ता ने उनसे कहा था, वैसा ही रास्ते में सब कुछ हुआ।

इसके बाद, पवित्र शमूएल ने सभी लोगों को मसपिा नगर में यहोवा के सामने इकट्ठा होने की आज्ञा दी; वह स्वयं वहाँ गया और इस्राएलियों से कहा:

'इस्राएल के परमेश्वर यहोवा का यह वचन है: मैंने तुम्हारे पितरों को मिस्र के देश से निकाला और फिरौन के हाथ से तथा उन सब राजाओं के हाथ से, जो तुम्हें सताते थे, तुम्हें छुड़ाया; परन्तु तुमने अब अपने परमेश्वर को, जो तुम्हें हर विपत्ति से बचाता है, त्याग दिया है और तुमने अपने ऊपर एक राजा नियुक्त करने की मांग की है। इसलिये, जैसा तुमने निवेदन किया है, वैसा ही हो।'

यह कहने के बाद, शमूएल ने इस्राएल के सभी गोत्रों को उनके कुल के अनुसार प्रभु के सामने रखा, और यह निर्धारित करने के लिए कि राजा किस गोत्र से चुना जाएगा, लॉटरी निकालना शुरू किया; लॉटरी बेंजामिन गोत्र पर पड़ी। तब उन्होंने उस कुल के प्रमुख पुरुषों के बीच फिर से पासा फेंका, और पासा किश के पुत्र शाऊल पर पड़ा। वे अपने बीच में शाऊल को खोजने लगे, पर उसे नहीं पा सके, क्योंकि उसने स्वयं को एक घर में छिपा लिया था, इस उच्च सम्मान के लिए स्वयं को अयोग्य समझकर इससे दूर रहना चाहा; परन्तु प्रभु ने उसे प्रकट कर दिया। तब लोगों में से कुछ, शमूएल

के साथ, वहाँ जाकर उसे ले आए और सभा के बीच में खड़ा कयिा। वह लोगों में से कसिी से भी लंबा था। और शमूएल ने सब लोगों से कहा:

'देखो, प्रभु ने जसिे चुना है। तुम में उसका-सा कोई नहीं है।'

सभी लोगों ने जयजयकार कयिा और पुकारा:

'राजा दीर्घायु प्राप्त करें!'

और शमूएल ने लोगों के लिए राजा के संबंध में नयिम बताए; उसने इन नयिमों को एक पुस्तक में लखिकर उन्हें प्रभु के सामने रख दयिा। हालाँकि, साऊल का राजसी अधकिार अभी पूरी तरह से स्थापति नहीं हुआ था, क्योंकि कुछ लोग असंतुष्ट और असहमत थे। शमूएल ने लोगों को वदिा कर दयिा, और सब अपने-अपने घर चले गए। साऊल भी गब्याह नगर में अपने घर चला गया, और उसके साथ वे पराक्रमी पुरुष गए जनिके हृदय को प्रभु ने साऊल की ओर झुका दयिा था, जबकि उसके वरिोधी कह रहे थे:

'क्या यह व्यक्ति सचमुच हमें हमारे शत्रुओं के हाथ से छुड़ा सकता है?'

और उन्होंने उसकी अवहेलना की और उसे कोई उपहार नहीं दयिा, पर साऊल ने उनके तरिस्कारपूर्ण शब्दों को न सुनने का नाटक कयिा (1 शमूएल 9-10)।

लगभग एक महीने बाद, अम्मोनयिों के राजा नास एक वशिाल सेना के साथ मनश्शेह के प्रदेश में जाबेश-गलिाद नामक एक नगर में आया, और उसने उसे चारों ओर से घेर लयिा। नगर के घरि हुए नविासयिों ने, नास की वशिाल सेना को देखकर, उससे कहा:

'हमारे साथ संधि करो, और हम तुम्हारी सेवा करेंगे।'

लेकनि नास ने उनसे उत्तर दयिा:

'मैं तुम्हारे साथ संधि करूँगा, परन्तु इस शर्त पर कि मैं तुम में से हर एक की दाहनिी आँख फोड़ डालूँ, और इस प्रकार पूरे इस्राएल को अपमानति करूँ।'

तब नगर के नविासयिों ने साऊल के पास दूत भेजे और उनसे मदद करने तथा उन्हें घेराबंदी से मुक्त कराने का अनुरोध कयिा। साऊल ने तुरंत इस्राएल के सभी क्षेत्रों में दूत भेजे, शीघ्रता से एक बड़ी सेना इकट्ठी की और पवत्रि नबी शमूएल को अपने साथ लेकर, अचानक नास पर चढ़ाई कर दी। अत्यंत भोर में उसने उस पर आक्रमण कयिा, उसकी सेना को ततिर-बतिर कर दयिा और उसे मार डाला। तब इस्राएलयिों ने भवष्यिवक्ता शमूएल से कहा:

'यह कसिने कहा था, "साऊल हम पर राज्य नहीं करेगा"? इन लोगों को हमें सौंप दो, और हम उन्हें मार डालेंगे।'

पर साऊल ने कहा:

'आज मेरे कारण एक भी मनुष्य न मरे, क्योंकि आज यहोवा ने इस्राएल में उद्धार कयिा है।'

और पवत्रि शमूएल ने कहा:

'आओ, हम गलिगाल जाएँ और वहाँ राज्य का नवीनीकरण करें।'

और सब लोग चले गए, और शमूएल ने गलिगाल में यहोवा के साम्हने सब लोगों के देखने सबुलून को राजा अभषिेक कयिा। और उन्होंने वहाँ यहोवा के साम्हने मेल-पसंद का बलदिान कयिा, और सबुलून और सब इस्राएली वहाँ बहुत आनन्दति हुए (1 शमूएल 11:1–15)।

उस समय, जब इस्राएली अपने नव-नयिुक्त राजा के साथ, जसिके साथ उन्होंने अम्मोनीयों पर इतनी शानदार वजिय प्राप्त की थी, आनंद मना रहे थे, तब संत शमूएल ने उनसे कहा:

'मैंने तुम्हारी कही हुई सब बातों में तुम्हारी आज्ञा मानी है, और मैंने तुम्हारे ऊपर एक राजा नयिुक्त कयिा है; और देखो, राजा मेरे जवान होने से लेकर आज तक तुम्हारे आगे-आगे चला है। अब, इसलिए, परमेश्वर और उनके अभषिक्ति, अपने राजा के सामने यह बताओ: क्या मैंने तुम में से कसिी का बैल या गधा या कुछ और भी लयिा है? क्या मैंने कसिी का अन्याय कयिा है या उसे उत्पीड़ति कयिा है, या कसिी के हाथ से घूस या कोई उपहार लयिा है? मेरे वरिुद्ध गवाही दो, और मैं तुम्हें भरपाई कर दूँगा।

लोगों ने उनसे उत्तर दयिा:

'तुमने हम पर कोई अत्याचार नहीं कयिा और न ही हमें सताया है; तुमने जबरदस्ती कुछ भी नहीं लयिा, और न ही तुमने हमसे कोई रश्वित या उपहार मांगा है।'

इसके बाद, शमूएल ने कहा:

'आज, यहोवा और उनके अभिषिक्त, तुम्हारे राजा, इस बात के गवाह हैं कि तुम्हारे पास मुझ पर शिकायत का कोई कारण नहीं है जिसके लिए तुम एक राजा की माँग कर सकते हो, क्योंकि यहोवा स्वयं तुम्हारे राजा थे और उन्होंने विभिन्न न्यायियों के द्वारा तुम पर शासन किया, और तुम्हें तुम्हारे शत्रुओं के हाथ से छुड़ाया। तब जान लो कि तुमने यहोवा के सामने एक बड़ा पाप किया है, क्योंकि तुमने एक राजा माँगा है। अब तुम एक चिह्न देखोगे (1 शमूएल 12:1–25)।

ये वचन कहने के बाद, शमूएल ने प्रभु से प्रार्थना करना आरंभ किया। यह फसल काटने का समय था, और दिन साफ़ और शुष्क था। अचानक गरज की एक ज़ोरदार आवाज़ हुई, बिजली की एक भयानक चमक हुई, बादल छा गए, और मूसलाधार बारिश होने लगी। सभी लोग प्रभु और शमूएल से बहुत डर गए, और उन्होंने भविष्यवक्ता से कहा:

'अपने प्रभु परमेश्वर से अपने सेवकों के लिए प्रार्थना करो, कि हम मर न जाएँ; क्योंकि हम देखते हैं कि हमने अपने सभी पापों के ऊपर एक और पाप जोड़ दिया है, राजा माँगकर।'

और पवित्र शमूएल ने लोगों से कहा:

'डरो नहीं; प्रभु अपने लोगों को नहीं छोड़ेंगे। अपने राजा के साथ रहो, परन्तु पूरे मन से प्रभु की सेवा करो और उनकी इच्छा पूरी करो, तुम भी और तुम्हारा राजा भी; और मैं तुम्हारे लिए प्रभु से प्रार्थना करना नहीं छोड़ूँगा; केवल उनका भय मानो और उनकी निष्ठापूर्वक सेवा करो, यह याद करते हुए कि उन्होंने तुम पर कितने आश्चर्यकर्म और आशीषें दी हैं। लेकिन यदि तुम बुराई करते हो, तो तुम अपने राजा के साथ ही नाश हो जाओगे।' लोगों से यह सब कहने के बाद, संत शमूएल ने न्यायाधीश के रूप में अपना पद त्याग दिया और स्वयं को केवल पुरोहितीय सेवा के लिए समर्पित कर दिया।

इज़राइल पर शासन करते हुए, शाऊल धीरे-धीरे भ्रष्ट हो गया, जिससे परमेश्वर का क्रोध भड़का, और उसने याजक के पद का अधिकार लेने की हिम्मत की – यहोवा के याजक, शमूएल के बिना परमेश्वर को बलिदान चढ़ाया। इसके अलावा, वह परमेश्वर की आज्ञा का अवज्ञाकारी साबित हुआ। क्योंकि उनके भविष्यवक्ता शमूएल के मुख से यहोवा ने उन्हें आज्ञा दी कि वे अमालेकियों को उनकी पुरानी दुष्टता के कारण नष्ट करने जाएँ – अर्थात्, जब इस्राएल के लोग मिस्र से प्रतिज्ञात देश तक के रेगिस्तान में यात्रा कर रहे थे, तब अमालेकियों ने उनके मार्ग में एक बड़ी बाधा डाली थी। यहोवा ने आज्ञा देते हुए कहा:

'उनमें से किसी पर भी दया न करना, बल्कि उन्हें सबको मार डालना—पुरुषों और स्त्रियों, लड़कों और शिशुओं, बैलों और भेड़ों, ऊँटों और गधों को।'

राजा शाऊल ने इस्राएलियों के बीच से एक बड़ी सेना इकट्ठी करके अमालेकियों के देश पर चढ़ाई की, उनकी सेनाओं को परास्त किया और उनके देश पर कब्ज़ा करके उनके राजा को जीवित पकड़ लिया। उसने पूरे अमालेकी लोगों—बुज़ुर्गों और जवानों, पुरुषों और महिलाओं—को तलवार से मार डाला, लेकिन उनके राजा को छोड़ दिया। इसके अलावा, उसने और उसके सैनिकों ने अमालेकियों के झुंडों में से सबसे अच्छी भेड़ें अपने लिए ले लीं, और केवल सबसे खराब और सबसे कम मूल्यवान को बख्शा। उन्होंने अमालेकियों की सारी संपत्ति में से भी सबसे अच्छी चीजें अपने लिए लूट लीं, और प्रभु की आज्ञा का पालन नहीं किया कि कुछ भी न बख्शें और अपने लिए कुछ भी न लें, बल्कि सब कुछ विनाश के लिए समर्पित कर दें।

और यहोवा का वचन भविष्यवक्ता शमूएल के पास आया:

'मुझे पछतावा है कि मैंने साऊल को राजा बनाया, क्योंकि उसने मुझसे मुँह मोड़ लिया है और मेरी आज्ञा का पालन नहीं किया है।'

और शमूएल साऊल के लिए दुखी हुआ और सारी रात यहोवा से उसके लिए विनती करता रहा। प्रातकाल जल्दी उठकर, शमूएल युद्ध से लौट रहे इस्राएलियों से मिलने गया, और गिलगाल में साऊल से मिला। जब साऊल ने पवित्र शमूएल को देखा, तो उससे कहा:

'परमेश्वर तुझे धन्य दे, क्योंकि मैंने वह सब किया है जो परमेश्वर ने मुझसे तेरे द्वारा कहलवाया था।'

पर शमूएल ने कहा:

'मेरे कानों में भेड़ों की बां-बां और गायों की म्याऊँ-म्याऊँ की यह आवाज़ क्या है?'

शाऊल ने उत्तर दिया:

'मैंने उन्हें अमालेकियों से लाया है। लोगों ने उनमें से सबसे अच्छे को बचाया और इकट्ठा किया, लेकिन सबसे बुरों को उन्होंने नष्ट कर दिया।'

और पवत्रि शमूएल ने उससे कहा:

'तू प्रभु की उस आज्ञा का पालन क्यों नहीं कयिा, जो उसने तुझसे कही थी, बल्कि लूटपाट करने और प्रभु की दृष्टि में बुराई करने के लिए क्यों दौड़ा?'

तब साऊल ने शमूएल से उत्तर दयिा:

'मैंने प्रभु की आज्ञा मानी और जैसा उसने मुझसे कहा, वैसा ही कयिा। मैंने अमालेकयिों को नष्ट कर दयिा, उनके राजा को पकड़ लयिा और उसे जीवति ले आया, जबकि लोगों ने झुंडों से लूट का माल ले लयिा – भेड़ों और मवेशयिों में से सबसे अच्छी – प्रभु परमेश्वर के लिए होमबलि और बलदिान के लिए।'

संत शमूएल ने शाऊल से उत्तर दयिा:

'क्या तुम्हारी होमबलि और बलदिान वास्तव में यहोवा को प्रसन्न करते हैं? क्या यहोवा की आज्ञा का पालन करना बेहतर नहीं होता? क्योंकि आज्ञाकारति सभी बलदिानों और नर-बकरों की चर्बी से कहीं अधकि परमेश्वर को प्रसन्न करती है। परमेश्वर की आज्ञा की अवज्ञा जादू-टोने के समान एक बड़ा पाप है, और यहोवा की आज्ञा को तोड़ना मूर्तपिूजा के समान है। और चूँकि तुमने यहोवा के वचन को तुच्छ जाना है, इसलयि यहोवा भी तुम्हें तुच्छ जानेगा, और तुम्हारा घराना अब इस्राएल पर राज्य नहीं करेगा।

शौल ने कहा:

'मैंने पाप कयिा है, क्योंकि मैंने प्रभु की आज्ञा और तुम्हारे वचनों का उल्लंघन कयिा है; परन्तु मैं लोगों से डर गया और उनकी बात मान ली। परन्तु मैं तुमसे वनिती करता हूँ, मेरे पाप को क्षमा करो और मेरे साथ बलदिानों के पास लौट आओ, ताकि मैं तुम्हारी उपस्थति में प्रभु परमेश्वर की आराधना कर सकूँ।'

परन्तु पवत्रि शमूएल मुड़कर उसे छोड़ने लगा, और शाऊल ने उसके वस्त्र का कनिारा पकड़कर उसे फा दयिा, और परमेश्वर के पुरुष को अपनी ओर खींच लयिा। तब पवत्रि व्यक्ति ने उससे कहा:

'आज यहोवा ने इस्राएल का राज्य तेरे हाथ से छीन लयिा है और तेरे पड़ोसी को दे दयिा है, जो तुझ से उत्तम है।'

शाऊल ने सामूएल से कहा:

'मैंने यहोवा के वरिुद्ध पाप कयिा है; परन्तु अब मुझे इस्राएल के बुज़ुर्गों और मेरी प्रजा के साम्हने अपमानति न कर; मेरे संग लौट आ, कि मैं तेरे परमेश्वर यहोवा की आराधना करूँ।'

शमूएल साऊल के साथ लौटा, और उन्होंने यहोवा की आराधना की। और पवत्रि पुरुष शमूएल ने कहा:

'अमालेकयिों के राजा अगग को मेरे पास ले आओ।'

अगाग काँपता हुआ उसके पास आया और बोला:

– ओह, मृत्यु कतिनी कड़वी है!

संत सैमुअल ने उससे कहा:

– जैसे तुम्हारी तलवार ने स्त्रयिों को उनके बच्चों से वंचति कयिा है, वैसे ही स्त्रयिों में तुम्हारी माता भी एक पुत्र से वंचति हो जाए।

और शमूएल ने गलिगाल में यहोवा के सामने अगग को टुकड़े-टुकड़े कर दयिा, क्रूरता से नहीं, बल्कि यहोवा की आज्ञा का पालन करने के लिए। इसके बाद, शमूएल राममाह (आर्ममे) चले गए, जबकि शाऊल गबिाह (गवि) में अपने घर चले गए। और पवत्रि शमूएल ने राजा शाऊल को उनकी मृत्यु के दनि तक फरि कभी नहीं देखा, लेकनि उन्होंने उनके पतन पर शोक मनाते हुए वलिाप कयिा (1 शमूएल 15:1–35)।

कुछ समय बाद, प्रभु ने शमूएल से कहा:

'आप साऊल के लिए कब तक शोक मनाएँगे, जसि मैंने इस्राएल पर राजा न रहने के लिए खारजि कर दयिा है? अपना सींग तेल से भरए और बेतलेहेम जाकर यशै के पास जाइए, क्योंकि उसके पुत्रों में से मैंने एक को राजा होने के योग्य पाया है।'

शमूएल ने प्रभु से उत्तर दयिा:

'मैं कैसे जाऊँ? साऊल को इसकी खबर मलि जाएगी और वह मुझे मार डालेगा।'

तब यहोवा ने कहा:

'झुंड में से एक बछड़ी ले जाओ और उसे बेतलेहेम ले जाकर कहना कि मैं यहोवा के लिए बलिदान चढ़ाने आया हूँ। और यहेशाय और उसके बेटों को बलिदान पर बुलाना। मैं तुझे बताऊँगा कि तुझे क्या करना है, और तू उसी पर मेरा अभिषेक करना, जिसको मैं तुझसे कहूँगा।'

और शमूएल ने वैसा ही किया जैसा प्रभु ने उससे कहा था, और वह बेतलेहेम गया। उसके आगमन पर, नगर के बुज़ुर्ग डर गए; वे उससे मिलने बाहर आए और कहा:

'हे द्रष्टा! क्या आपकी यह यात्रा शांतिपूर्ण है?'

शमूएल ने उत्तर दिया:

'सब कुछ शांतिपूर्ण है। मैं प्रभु को बलिदान चढ़ाने आया हूँ। उपवास और प्रार्थना द्वारा स्वयं को पवित्र करो, और मेरे पास आओ, और मैं बलिदान चढ़ाऊँगा।'

बलिदान चढ़ाने के बाद, संत शमूएल येशे के घर गए और उसे आज्ञा दी कि वह अपने बेटों को एक-एक करके उनके पास लाए। येशे ने अपने सबसे बड़े बेटे, एलिआब को, नबी के पास लाया। और नबी ने मन ही मन प्रभु से प्रार्थना करते हुए पूछा, कि क्या यही वह है जिसे उन्होंने राजा बनने के लिए चुना है। प्रभु ने शमूएल से कहा:

'उसके कद-काठी पर मत देख, क्योंकि मैंने उसे अस्वीकार कर दिया है। क्योंकि मैं बाहरी दिखावट से न्याय नहीं करता। मनुष्य बाहरी दिखावट पर देखता है, परन्तु यहोवा हृदय पर देखता है।'

तब यिशै ने अमीनदाब को बुलाया और उसे शमूएल के पास ले आया। नबी ने कहा:

'प्रभु ने इसको भी नहीं चुना है।'

तब यिशै शमाह को ले आया, और शमूएल ने कहा, 'प्रभु ने इसको भी नहीं चुना।'

इस प्रकार यिशै ने अपने सात पुत्रों को शमूएल के सामने लाया। और शमूएल ने यिशै से कहा:

'क्या ये सब तुम्हारे बेटे हैं?'

यिशै ने उत्तर दिया:

– एक और है, सबसे छोटा। वह खेत में भेड़ों की देखभाल कर रहा है।

शमूएल ने कहा:

'उसे बुलाकर यहाँ ले आओ, क्योंकि जब तक वह आ नहीं जाता, हम भोजन करने नहीं बैठेंगे।'

यिस्सै ने उसे बुलाया, और वे दाऊद को ले आए। वह सुन्दर बालवाला, सुन्दर आँखों और सुन्दर मुखवाला था। और यहोवा ने शमूएल से कहा:

'उठो और उस पर अभिषेक करो, क्योंकि यही वह है।'

तब शमूएल ने तेल की सींग उठाई और दाऊद को उसके भाइयों के बीच अभिषेक किया। और उसी दिन से यहोवा का आत्मा दाऊद पर उतरने लगा। इसके बाद शमूएल उठकर रामा में अपने घर चला गया (1 शमूएल 16:1–13)।

अपना जीवन-काल पूरा करने के बाद, अब वृद्धावस्था में, शमूएल का देहांत हो गया। और सारे इस्राएली इकट्ठे हुए और उनके लिए रोए, और उन्हें अर्माह (रामा) में उनके घर में دفनाया (1 शमूएल 25:1)।

सीराख के पुत्र यीशु, इस पवित्र नबी शमूएल की प्रशंसा करते हुए कहते हैं:

'सैमुएल, प्रभु का भविष्यवक्ता, अपने प्रभु के प्रिय, ने राज्य स्थापित किया और अपने लोगों पर राजाओं (शाऊल और दाऊद) को अभिषिक्त किया। उसने प्रभु के विधान के अनुसार लोगों का न्याय किया, और (अपनी प्रार्थनाओं के द्वारा) प्रभु ने याकूब पर अनुग्रह की दृष्टि रखी। अपने विश्वास के कारण उन्हें एक सच्चे नबी के रूप में पहचाना गया। जब उनके शत्रुओं ने उन्हें चारों ओर से घेर लिया, तो उन्होंने सर्वशक्तिमान प्रभु से पुकारा, और प्रभु ने स्वर्ग से गर्जना की; एक प्रचंड, सुने जाने योग्य गर्जना के साथ उन्होंने अपनी आवाज़ सुनाई और टायर के नेताओं तथा सभी फिलिस्तीनियों के राजकुमारों को नष्ट कर दिया। अपनी मृत्यु से पहले ही, (शमूएल) ने प्रभु और उनके अभिषिक्त के सामने गवाही दी कि उसने किसी से कुछ भी नहीं लिया था—यहाँ तक कि जूतों का एक जोड़ा भी नहीं—और कोई भी उसमें दोष नहीं लगा सकता था। उन्होंने अपनी मृत्यु के बाद भी भविष्यवाणी की और राजा (शाऊल) के पतन की भविष्यवाणी की; और अपनी भविष्यवाणी में उन्होंने पृथ्वी से अपनी आवाज़ बुलंद की, यह घोषित करते हुए कि अधर्मी लोग नष्ट हो जाएँगे (सीर. 46:16-23)।

सरिक सैम्युअल के बारे में यही कहते हैं। हम, पापी होते हुए, इस पवत्रि ईश्वर-पुरुष की प्रार्थनाओं के द्वारा पापों की क्षमा और उद्धार प्राप्त करने की आशा करते हुए, पिता और पुत्र और पवत्रि आत्मा, त्रमिूर्त में एक ईश्वर की महमिा करेंगे, अब और सदा के लिए और युगानुयुग। आमीन।

कॉन्टाकयिन, स्वर 8:

क्योंकि आप गर्भ में आने से पहले ही ईश्वर को अर्पित एक अति सम्मानित उपहार थे[5618] , और हे सर्वधन्य, आपने अपनी युवावस्था से ही एक स्वर्गदूत की भाँति उनकी सेवा की, और भवषि्य की बातें बताने के योग्य माने गए। अतः हम आपसे पुकारते हैं: हे ईश्वर के भवषि्यवक्ता और महायाजक सैमुएल, आनन्दित हो।

पवत्रि शहीद सेवरस और शताध्यक्ष मेमनोन, और उनके साथ सैंतीस शहीद।

20 अगस्त को स्मरण कयिा जाता है

उसी दनि, हम पवत्रि शहीदों का स्मरण करते हैं: थ्रेस के मूल नविासी सेवेरस, और शताध्यक्ष मेमनोन, साथ ही उन सैंतीस शहीदों का जन्हिोंने फलिपिोपोलसि में राज्यपाल एपेलयिन के हाथों मसीह के लिए पीड़ा सहन की। सेवरस को लोहे से खुरचने की यातना दी गई; फरि उसकी उंगलयिों में लाल-गरम छल्ले डाले गए; इसके बाद, उसे आग में तपा हुआ लोहे का पट्टा पहनाया गया; और अंत में, उसका सरि कलम कर दयिा गया। सेंचुरयिन मेमनोन को दो स्तंभों के बीच खींचा गया और यातना दी गई, जसिके दौरान उसके यातनाकारों ने उसके शरीर से सरि से पैर तक त्वचा की तीन पट्टयिाँ काटीं; फरि उन्होंने मेमनोन और अन्य सैंतीस शहीदों की बाहें और पैर काट दिए, एक बड़ी भट्टी में आग लगाई और मसीह के लिए इन सभी पीड़तिों को आग में फेंक दयिा। इस प्रकार पवत्रि शहीदों ने अपने कष्टों को एक end[5619] तक पहुँचाया।

3 सतिंबर

21 अगस्त (पुराने कैलेंडर के अनुसार)

इसी दनि, गुफाओं के परश्रिमी आदरणीय अव्रामयिस की स्मृति मनाई जाती है, जो लगभग 12वीं शताब्दी में सेंट एंथनी की गुफा में एक तपस्वी के रूप में रहते थे।

उसी दनि, सम्माननीय अव्रामयिस, स्मोलेंस्क के चमत्कारकर्ता (जो 13वीं शताब्दी के पहले भाग में नधिन हो गए) की स्मृति मनाई जाती है।

सत्तर प्रेरतिों में से एक, संत थदेउस का जीवन

21 अगस्त को स्मरण कयिा जाता है

प्रेरति थॉमस एदेसा नगर[5620] से आए थे; वे यहूदी वंश के थे और उन्हें पुराने नयिम के पवत्रि धर्मग्रंथों का पूर्ण ज्ञान था। संत यूहन्ना बपतस्मिादाता के दनिों में, संत थॉमस यरूशलेम आए; वहाँ उन्होंने प्रभु के अग्रदूत का उपदेश

[5618] अर्थात्, वशिष श्रद्धा के योग्य एक उपहार।

[5619] इन पवत्रि शहीदों ने 304 ईस्वी में, सम्राट डायोक्लेटयिन और मैक्समियिन के शासनकाल के दौरान, यातनाएँ सहन कीं।

[5620] एडेसा, जसिे अब उर्फ़ा के नाम से जाना जाता है, उत्तरी मेसोपोटामयिा में फरात नदी के कनिारे बसा एक शहर है; 137 ईसा पूर्व से यह नवगठति राज्य ओज्रोएन या एडेसा की राजधानी थी; 217 ईस्वी में रोमनों ने इसे एक पूर्वी कॉलोनी में बदल दयिा। – चौथी शताब्दी में, सेंट एफ्रेम द सीरयिन ने एडेसा में एक धर्मशास्त्र वद्यिालय की स्थापना की; पांचवीं शताब्दी में, यह स्कूल नेस्टोरयिनवाद की ओर झुक गया, जसिके लिए एडेसा स्कूल के शक्षिक, प्रेसीबटिर इवा, एक वशिष रूप से सक्रयि समर्थक थे। 614 में, एडेसा पर अरब खलीफ़ाओं ने वजिय प्राप्त की; 1098 में, इसे काउंट बाल्डविन ने जीत लयिा, जसिने इसे प्रसिपिैलटिी ऑफ़ एडेसा की राजधानी बना दयिा; 1144 में, इस पर तुर्कों ने वजिय प्राप्त की और उस समय से यह हाथों-हाथ बदलती रही, जब तक कि 1637 में, यह अंततःतुर्की के शासन में नहीं आ गई।

सुना और उनके स्वर्गदूत सदृश जीवन को देखा, थॉडयिस बहुत आश्चर्यचकति हुए और उन्हें यूहन्ना अग्रदूत ने बपतस्मिा दयिा। कुछ ही समय बाद, संत थॉडयिस ने हमारे प्रभु यीशु मसीह को देखा, जो मानव रूप में अवतार लेकर मनुष्यों के बीच वास कर रहे थे; उन्होंने उनके उपदेश को भी सुना और हमारे प्रभु यीशु मसीह द्वारा कएि गए अद्भुत चमत्कारों को देखा, और उनका अनुसरण कयिा। संत थैडयिस को प्रभु ने स्वीकार कयिा और सत्तर प्रेरतिों (छोटे प्रेरतिों) में गनि लयिा, जनिके बारे में सुसमाचार में कहा गया है: *'प्रभु ने सत्तर अन्य शष्यिों को भी नयिुक्त कयिा और उन्हें अपने से पहले दो-दो करके हर उस नगर और स्थान में भेज दयिा जहाँ वह स्वयं जाने वाले थे'* (लूका 10:1)।

इन सत्तर प्रेरतिों में पवत्रि प्रेरति थदेउस भी थे, जनिका हम अब स्मरण कर रहे हैं। जब प्रभु ने इन प्रेरतिों को सुसमाचार का प्रचार करने के लएि भेजा, तो प्रभु ने उनसे कहा:

'कटनी तो बहुत है, पर मजदूर कम हैं; इसलयि कटनी के प्रभु से प्रार्थना करो कि वह अपने कटनी में मजदूर भेजे। जाओ; मैं तुम्हें भेड़यि के बीच मेमनों के समान भेजता हूँ। न तो थैला, न बटुआ, न चप्पल उठाओ, और न ही रास्ते में कसिी को नमस्कार करो। तुम जसि घर में प्रवेश करो, पहले कहो, 'इस घर में शान्ति हो।' और यदि ऐसा न हो, तो वह शान्ति तुम्हारे पास लौट आए। उसी घर में ठहरो, जो कुछ उनके पास हो, वही खाओ और पीओ; क्योंकि मजदूर अपने मजदूरी का अधकिारी होता है। एक घर से दूसरे घर न फरिो। और यदि तुम कसिी नगर में आओ और वे तुम्हें ग्रहण करें, तो जो कुछ तुम्हारे सामने परोसा जाए, वही खाओ। और वहाँ के बीमारों को चंगा करो, और उनसे यही कहो, 'परमेश्वर का राज्य तुम पर नज़दीक आ गया है।' परन्तु यदि तुम कसिी नगर में प्रवेश करो और वे तुम्हें ग्रहण न करें, तो उसकी सड़कों पर जाकर कहो, 'यहाँ तक कि हमारे पैरों का धूल जो तुम्हारे नगर में चपिकी है, हम उसे झाड़ कर तुम्हारे वरिुद्ध छोड़ते हैं; तौभी यह जान लो कि परमेश्वर का राज्य तुम पर नज़दीक आ गया है...' जो तुम्हें सुनता है, वह मुझे सुनता है, और जो तुम्हें ठुकराता है, वह मुझे ठुकराता है; परन्तु जो मुझे ठुकराता है, वह उसे ठुकराता है जसिने मुझे भेजा है (लूका 10:2–16)।

सत्तर शष्यि बड़ी खुशी के साथ सुसमाचार का प्रचार करने नकिले और प्रभु का वचन प्रचारति कयिा। फरि वे प्रभु के पास लौट आए और उसे यह बताकर रपिोर्ट दी कि उनके नाम पर दुष्टात्माएँ भी उनके अधीन हो गईं।

हमारे प्रभु यीशु मसीह के स्वैच्छकि दुख-क्लेश, मृत्यु, तीन दनि के पुनरुत्थान और स्वर्ग में आरोहण के बाद, पवत्रि प्रेरतिों ने संपूर्ण ब्रह्मांड में सुसमाचार का प्रचार करने के लएि प्रस्थान कयिा; पवत्रि प्रेरति थदाएवस को प्रभु द्वारा एदेसा नगर में सुसमाचार का प्रचार करने के लएि भेजा गया था; क्योंकि हमारे प्रभु यीशु मसीह ने, अपनी स्वेच्छा से पीड़ा सहने से भी पहले, यहाँ अपने एक पवत्रि प्रेरति को भेजने का वादा कयिा था। इस नगर का शासक राजकुमार अवगार था, और प्रभु ने ठीक इसी अवगार को अपना प्रेरति भेजने का वादा कयिा था।

यह अबगार एक असाध्य रोग - कोढ़ से पीड़ति था। प्रभु यीशु मसीह द्वारा कएि गए अद्भुत चमत्कारों के बारे में सुनकर, अबगार उन्हें देखने, उनकी शक्षिा सुनने और अपनी गंभीर बीमारी से उनके सामर्थ्य द्वारा चंगा होने की बहुत इच्छा रखता था। लेकनि यह आशा करने की हम्मित न करते हुए कि प्रभु यीशु मसीह स्वयं उसके पास आएँगे, अवगिार ने प्रभु के पास एक कुशल प्रतमिाकार भेजा और उसे प्रभु के चेहरे की एक प्रतमिा बनाने का काम सौंपा। साथ ही, अवगर ने प्रभु को एक संदेश भेजा, जसिमें उसने प्रभु और उनके अद्भुत चमत्कारों के बारे में जो सुना था, उसके बारे में लखिा: कि कैसे उन्होंने कसिी भी औषधीय काढ़े या जड़ी-बूटयिों के बनिा बीमारयिों को ठीक कयिा, अंधों को दृष्टि वापस दी, लंगड़ों को चलने की क्षमता लौटाई, कुष्ठरोगयिों को ठीक कयिा, लोगों से अशुद्ध आत्माओं को नकिाला, लकवाग्रस्त लोगों को—जो लंबे समय से अपनी खाट पर पड़े थे—एक ही शब्द से ठीक कयिा, और मृतकों को जीवति कर दयिा।

अवगार ने लखिा, 'आपके बारे में यह सब सुनकर, मैं केवल दो संभावनाओं के बारे में सोच सकता हूँ: या तो आप स्वयं ईश्वर हैं, जो स्वर्ग से उतर आए हैं, या आप ईश्वर के पुत्र हैं, क्योंकि आप अत्यंत अद्भुत और शानदार चमत्कार करते हैं।' इसलिए, मैं यह वनिम्र संदेश आपको लखि रहा हूँ, कि कृपा करके मेरे पास आकर मुझे मेरी लाइलाज बीमारी से चंगा करें, जसिसे मैं कई वर्षों से पीड़ति हूँ[5621] :

हमारे प्रभु यीशु मसीह ने, राजकुमार अवगर के वश्विास और आशा को देखकर, उसे अपने परम पवत्रि चेहरे की एक प्रति भेजी, जो मानव हाथों से नहीं बनी थी, और एक संदेश भी लखिा जसिमें उन्होंने इस प्रकार कहा:

'धन्य है तू, अवगर, जसिने मुझे नहीं देखा पर मुझ पर वश्विास कयिा; क्योंकि मेरे वषिय में लखिा है कि जो मुझे देखेंगे वे वश्विास नहीं करेंगे, जबकि जो मुझे नहीं देखते वे मुझ पर वश्विास करेंगे और अनन्त जीवन का वारसि होंगे। तुमने

[5621] इस पर और ववरिण ऊपर, 16वें के अंतर्गत मलि सकते हैं

मुझे लखिा है कि मैं तुम्हारे पास आऊँ, परन्तु मेरे लिए उचति है कि मैं उस उद्देश्य को पूरा करूँ जसिके लिए मुझे भेजा गया है, और उसके पूरा होने पर मुझे भेजने वाले पति के पास लौट जाऊँ। और जब मुझे उनके पास उठा लयि जाऊँगा, तब मैं अपने शष्यिों में से एक को तुम्हारे पास भेजूँगा, जो तुम्हें तुम्हारी बीमारी से पूरी तरह चंगा कर देगा, और तुम्हें तथा तुम्हारे साथ वालों को अनन्त जीवन प्रदान करेगा।

राजकुमार अवगार, यह संदेश प्राप्त करके और हमारे प्रभु यीशु मसीह की चमत्कारी प्रतमिा को देखकर, परम आनन्दति हुआ। संदेश को प्रेम से चूमकर और मसीह की प्रतमिा के सामने सरि झुकाकर, अवगार को जल्द ही अपनी बीमारी से काफी राहत मलिी, क्योंकि उसके चेहरे पर कोढ़ का केवल एक छोटा सा नशिान ही रह गया था।

अवगार को उसकी बीमारी से पूरी तरह से ठीक करने के लिए, प्रभु ने अपने वादे के अनुसार, पवत्रि प्रेरति थदेउस को भेजा, जन्हिोंने अवगार को न केवल शरीर से बल्कि आत्मा से भी पूरी तरह से ठीक कर दयिा, जैसा कि नीचे वर्णति कयिा जाएगा।

जब पवत्रि प्रेरति थदेयूस एदेसा नगर में पहुँचे, तो उन्होंने तुरंत ही राजकुमार अवगार के सामने स्वयं को प्रकट नहीं कयिा, बल्कि पहले वे एक यहूदी के घर में गए, जसिे वे जानते थे, जसिका नाम तोबयिाह था। इस यहूदी के यहाँ ठहरते समय, संत थॉडयिस ने मसीह की शक्ति से चमत्कारकि रूप से कई और ववििधि प्रकार के उपचार कए, हाथ रखने और हमारे प्रभु यीशु मसीह के नाम का उच्चारण करके सभी प्रकार की बीमारयिों को ठीक कयिा।

संत थैडयिस की खबर जल्द ही पूरे शहर में फैल गई, और शहर के नविासी कई बीमार लोगों को पवत्रि प्रेरति के पास लाने लगे; उनकी शीघ्र स्वस्थता को देखकर, सभी बहुत आश्चर्यचकति हुए।

कुछ समय बाद, राजकुमार अवगार को खबर मलिी कि यिरूशलेम से आया एक अज्ञात व्यक्ति मसीह के नाम पर कई चमत्कार कर रहा था।

तुरंत, अवगार को मसीह का वह वादा याद आया कि वह अपने एक शष्यि को उनके पास भेजेगा और वह मन ही मन सोचने लगा कि क्या यही वह व्यक्ति हो सकता है जसिे प्रभु ने भेजने का वादा कयिा था। फरि उसने तोबयिाह को बुलाने का आदेश दयिा और उससे कहा:

'मैंने सुना है कि यिरूशलेम से एक आदमी आपके घर में ठहरा है; लोग कहते हैं कि यह आदमी यीशु मसीह के नाम पर बीमारों को चंगा करता है।'

तोबयिाह ने उत्तर दयिा:

'हाँ, वास्तव में ऐसा ही है; आप बलि्कुल सही कह रहे हैं, महोदय, कि मेरे यहाँ ठहरा हुआ व्यक्ति प्रभु यीशु मसीह के नाम पर कई चमत्कार करता है।'

तब राजकुमार ने कहा:

'उसे मेरे पास लाओ।'

तोबयिाह संत थदेउस के पास गए और उनसे कहा:

'इस नगर का राजकुमार मुझे बुलावा भेजकर आदेश दे चुका है कि मैं तुम्हें उसके पास ले आऊँ, ताकि तुम उसे उस बीमारी से ठीक कर सको जसिसे वह पीड़ति है।'

संत थदेउस ने उत्तर दयिा:

'सचमुच, मुझे उसके पास भेजा गया है।'

अगली सुबह जल्दी, वे दोनों राजकुमार के महल के लिए रवाना हुए; तब तक सभी कुलीनों और सलाहकारों पहले ही वहाँ इकट्ठा हो चुके थे।

जब प्रेरति संत थैडयिस राजकुमार के महल के द्वार में प्रवेश कए, तो राजकुमार ने उन्हें देखा और देखा कि प्रेरति का चेहरा कसिी असाधारण प्रकाश से दमक रहा था। अवगर वस्मिय से भर गया, अपनी सीट से उठा और मसीह के प्रेरति के सामने जमीन पर झुक गया।

इस बीच, वहाँ मौजूद सभी लोग राजकुमार के इस कृत्य से बहुत हैरान थे, और वे सोच रहे थे कि उसने एक साधारण व्यक्ति के सामने क्यों झुका, क्योंकि वे मसीह के प्रेरति के चेहरे से नकिल रही अद्भुत दव्यि आभा को नहीं देख पा रहे थे।

तब राजकुमार ने संत थैडयिस से पूछा:

'क्या आप प्रभु यीशु मसीह, परमेश्वर के पुत्र के शिष्य हैं, जिन्होंने मुझे मेरे रोग से पूरी तरह चंगा करने और मुझे तथा मेरे सभी प्रियजनों को अनंत जीवन प्रदान करने के लिए अपना एक शिष्य भेजने का वादा किया था?'

मसीह के प्रेरित ने उत्तर दिया:

'चूँकि आपने मेरे प्रभु यीशु मसीह में महान विश्वास दिखाया है, मुझे उनके द्वारा आपके पास भेजा गया है; और यदि आपका विश्वास और भी दृढ़ हो जाता है, तो आप अपने विश्वास के द्वारा जो कुछ भी चाहेंगे वह पूरा होगा।'

अवगार ने उत्तर दिया:

'मैंने उन पर (प्रभु यीशु पर) इतनी दृढ़ता से विश्वास किया कि मेरा इरादा एक सेना उठाकर उन यहूदियों के विरुद्ध युद्ध करने का था जिन्होंने प्रभु को सूली पर चढ़ाया था, ताकि उनकी क्रूरता और दुष्टता का बदला लिया जा सके और उन्हें हमेशा के लिए नष्ट किया जा सके; लेकिन मुझे ऐसा करने से रोम के अधिकारियों ने रोक दिया, जिनके अधीन हमारा देश है।'

संत थैडियस ने कहा:

'हमारे प्रभु और परमेश्वर, यीशु मसीह को, ईर्ष्यालु और कठोर-हृदय यहूदियों के हाथों अपनी पीड़ा के दौरान मानवीय सहायता की बिल्कुल भी आवश्यकता नहीं थी; क्योंकि यदि वे चाहते, तो वे स्वयं स्वर्गदूतों की सेनाओं को बुला सकते थे; लेकिन, पिता की इच्छा को पूरा करते हुए, हमारे प्रभु ने संसार के उद्धार के लिए पीड़ा सहन की; और अपने पिता की इच्छा को पूरा करने के बाद, वे महिमा के साथ स्वर्ग में उनके पास आरोहण हुए और उनके दाहिने हाथ पर बैठ गए; हमारे प्रभु को अपने शत्रुओं से बदला लेने के लिए किसी की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि उन पर सभी का अधिकार है; वे स्वयं एक दिन जीवितों और मृतकों का न्याय करेंगे और प्रत्येक व्यक्ति को उनके कर्मों के अनुसार पुरस्कृत करेंगे।

पवित्र प्रेरित थदेउस ने राजकुमार अबगर और उनके साथ मौजूद सभी लोगों से हमारे प्रभु यीशु मसीह के बारे में विस्तार से बात की; फिर, उन्हें प्रभु में पूर्ण विश्वास दिलाने के बाद, उन्होंने उनका बपतिस्मा दिया।

उनके बपतिस्मा के तुरंत बाद, अवगार को कोढ़ से चंगा कर दिया गया। यह ध्यान देने योग्य है कि अपनी पहली चंगाई के बाद[5622] , अवगार का चेहरा अभी भी कोढ़ से ग्रस्त था, जबकि शुरुआत में उसका पूरा शरीर इस बीमारी से ग्रस्त था। जब मसीह का पत्र (प्रेरित-पत्र) और मसीह के परम पवित्र मुख की प्रतिमा, जो मानव हाथों से नहीं बनी थी, उनके पास लाई गई, तो अवगार पहली बार ठीक हो गए – उनका शरीर कुष्ठ रोग से शुद्ध हो गया, और केवल उनके शरीर का एक छोटा सा हिस्सा, ईश्वर की व्यवस्था से, अर्थात् उनका चेहरा, प्रेरित के आगमन तक ठीक नहीं हुआ था।

साथ ही, प्रेरित के आगमन के बाद पवित्र बपतिस्मा के माध्यम से एक और चंगाई हुई—केवल शरीर की ही नहीं, बल्कि आत्मा की भी—क्योंकि राजकुमार अवगर पवित्र बपतिस्मा के कुंड से पूरी तरह से स्वस्थ होकर निकले।

और केवल राजकुमार अवगार ही नहीं थे जिन्हें प्रेरित के उपदेश के बाद बपतिस्मा दिया गया; उनके घर में रहने वाले सभी लोगों को, साथ ही उन सभी को भी बपतिस्मा दिया गया जिन्होंने प्रेरित द्वारा किए गए चमत्कारों को देखा था, और उन लोगों को भी जिन्हें प्रेरित ने उनकी बीमारियों से ठीक किया था।

इसके बाद, पवित्र प्रेरित थदेउस ने राजकुमार को सभी नगरवासियों को इकट्ठा करने का निर्देश दिया, ताकि वे भी परमेश्वर का वचन सुन सकें।

अगले दिन सुबह, सभी लोग इकट्ठा हुए। मसीह के प्रेरित ने, एक ऊँची जगह पर खड़े होकर, सभी लोगों को एक ईश्वर के बारे में उपदेश देना शुरू किया, जिसने अपनी सर्वशक्तिमान शक्ति से स्वर्ग और पृथ्वी, और सभी दृश्य और अदृश्य चीजों को बनाया; पवित्र प्रेरित थदेयस ने लोगों को यह भी बताया कि कैसे हमारे प्रभु यीशु मसीह मानव जाति के उद्धार के लिए, एक अनुपम तरीके से मानव रूप धारण करके स्वर्ग से पृथ्वी पर उतरे, कैसे उन्होंने परमेश्वर की इच्छा के अनुसार दुख सहे, फिर से जी उठे, स्वर्ग में आरोहण किया, और धर्मी लोगों के लिए स्वर्ग में एक शाश्वत पुरस्कार, तथा दुष्टों के लिए नरक में अनंत यातनाएँ तैयार कीं। पवित्र प्रेरित ने संसार के लिए ईश्वर की योजना के सभी अन्य रहस्यों के बारे में भी विस्तार से बताया।

प्रेरित के वचन सुनने वाले सभी लोगों ने उनके शब्दों में अपना विश्वास प्रकट किया, क्योंकि उन्होंने प्रेरित द्वारा किए गए चमत्कारों को देखा था: सभी ने अपने स्वामी को चंगा होते देखा, साथ ही कई अन्य लोगों को भी जिन्हें पहले विभिन्न बीमारियों से पीड़ा हुई थी; सभी ने प्रभु की महिमा करना शुरू कर दिया और प्रेरित से बपतिस्मा देने के लिए कहा।

[5622] देखें वही।

इस प्रकार एडसा का नगर हमारे प्रभु यीशु मसीह के नाम में पवित्र विश्वास और पवित्र बपतिस्मा द्वारा प्रकाशित हुआ; इसके बाद, वहाँ गिरजाघर बनना शुरू हो गए, और प्रेरितों की नियुक्ति द्वारा पुरोहित नियुक्त किए गए।

राजकुमार अबगर अपने चमत्कारी उपचार के लिए मसीह के प्रेरित का किसी तरह से धन्यवाद करना चाहते थे, इसलिए उन्होंने उन्हें बहुत सारा सोना दिया, लेकिन संत ने कुछ भी स्वीकार नहीं किया, और कहा:

'यदि हमने अपनी ही संपत्ति को त्याग दिया है, तो हम दूसरों से कुछ प्राप्त करने या हासिल करने की इच्छा कैसे कर सकते हैं?'

पवित्र प्रेरित थदेउस ने एदेसा में पवित्र विश्वास और धार्मिकता स्थापित करने तथा सर्वसाधारण के कल्याण के लिए सभी व्यवस्थाएँ करने के बाद, मिसोपोटामिया[5623] के लिए प्रस्थान किया; वहाँ उन्होंने अनेक लोगों को ज्ञान प्रदान कर उन्हें मसीह में परिवर्तित किया और चर्चों की स्थापना की; पवित्र प्रेरित ने मसीह के नाम का प्रचार करने के लिए अनेक सीरियाई नगरों में यात्रा की। फिर वे फिनिशिया के बेरूत नगर[5624] आए; वहाँ मसीह के नाम का प्रचार करने और अनेक लोगों का बपतिस्मा देने के बाद, पवित्र प्रेरित थदेयस प्रभु के साथ शांति में विश्राम कर गए[5625] ।

यह ध्यान देने योग्य है कि आज स्मरण किए जाने वाले पवित्र प्रेरित थदाएवस, बारह प्रेरितों में से एक, लेबाएवस नामक पवित्र प्रेरित यहूदा थदाएवस से एक अलग व्यक्ति हैं, जिनकी स्मृति जून के उन्नीसवें दिन मनाई जाती है (उनका जीवन-चरित्र इस तिथि के अंतर्गत भी पढ़ा जा सकता है)। प्रोलॉग में, सिनाक्सारियन के ऊपर आज की तारीख के अंतर्गत, पवित्र प्रेरित थैडोस के बारे में निम्नलिखित शिलालेख है, जिनकी स्मृति आज मनाई जाती है: 'पवित्र प्रेरित थैडोस की स्मृति, जिन्हें लेबायस के नाम से भी जाना जाता है'। हालांकि, यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि 'लीवी' उपनाम इस संत थैडियस को नहीं, बल्कि बारह प्रेरितों में से किसी अन्य को दिया जाना चाहिए, जैसा कि मत्ती के सुसमाचार (मत्ती 10:3) में उल्लेख है।

निकिता कैलिकिस्टस[5626] , एक प्राचीन यूनानी चर्च-इतिहासकार, अपनी 'इतिहास' की दूसरी पुस्तक के अध्याय 40 में इस पर अधिक विस्तार से चर्चा करते हैं। यह निकिटस कैलिकिस्टस ही हैं जो निम्नलिखित बात कहते हैं: 'संत जूड, इस्करीओत नहीं, बल्कि एक और, जो दो नामों से जाने जाते थे: थैडोयूस और लेबायस, जोसेफ के पुत्र, जेम्स के भाई, जिन्हें मंदिर की छत से फेंका गया था, ने शुरू में यहूदिया और गलील में सुसमाचार का प्रचार किया, समारिया और ईदोमिया में, साथ ही अरब के शहरों में, सीरिया और मेसोपोटामिया के प्रदेशों में; फिर वह अबगर के शहर एदेसा पहुँचा, जहाँ सत्तर प्रेरितों में से एक अन्य थदेउस ने पहले ही मसीह के नाम का प्रचार किया था, और वहाँ उसने वह सब कुछ पूरा किया जो उस थदेउस के[5627] द्वारा पूरा नहीं किया गया था।

[5623] मेसोपोटामिया – टिग्रिस और यूफ्रेटिस नदियों के बीच स्थित एक चट्टानी और रेतीला क्षेत्र जो उत्तर में आर्मेनिया से लेकर दक्षिण में फारस की खाड़ी तक फैला हुआ है।

[5624] बेरूत लेबनान की राजधानी है। प्राचीन काल में, बेरूत एक फिनिशियाई बंदरगाह था और इसे बेरटिस के नाम से जाना जाता था। मिस्र के राजा थutmose II ने इस शहर पर विजय प्राप्त की, जबकि एंटिओकस III ने इसे टॉलेमी वंश से छीन लिया। ईसा पूर्व 140 में, बेरूत को सीरियाई डायोथस ट्रायफोन ने नष्ट कर दिया था, लेकिन सम्राट अगस्टस के अधीन इसे एग्रिप्पा द्वारा पुनर्निर्मित किया गया और रोमन दिग्गजों के लिए एक कॉलोनी में बदल दिया गया। बाद के सम्राटों के अधीन, बेरूत अपने वाक्पटुता, कविता और विशेष रूप से कानून के स्कूल के लिए प्रसिद्ध था।

[5625] संत थैडियस प्रेरित की मृत्यु लगभग 44 ईस्वी में हुई। – अस्सिरिया के राजा नर्सिस द्वारा एदेसा के राजकुमार अवगर को भेजे गए एक राजदूत मिशन की एक रिपोर्ट है, जिसमें यह अनुरोध किया गया था कि यदि तो पवित्र प्रेरित थैडोस को उनके पास भेजा जाए, या उनके (नर्सिस) पास एक पत्र भेजा जाए जिसमें इस प्रेरित द्वारा किए गए चमत्कारों का वर्णन हो। नर्सिस के इस अनुरोध के जवाब में, अवगर ने उसे प्रेरित थैडोडियस के चमत्कारों के बारे में सूचित किया।

[5626] निकिफोरस कैलिस्टोस – 14वीं शताब्दी के सबसे प्रसिद्ध चर्च इतिहासकार, कॉन्स्टेंटिनोपल में हागिया सोफिया मठ के एक भिक्षु। उनकी *चर्च इतिहास* (18 पुस्तकों में) बाइजेंटाइन सम्राट फोकास (लगभग 611) की मृत्यु तक की अवधि को कवर करती है।

[5627] कहा जाता है कि पवित्र प्रेरित जूड ने फारस में भी ईसाई धर्म का प्रचार किया, और वहीं से उन्होंने चर्चों को अपना पत्र लिखा। यह पत्र लिखने का कारण यह था कि अविश्वासी लोग विश्वासियों के समुदाय में घुस आए थे; वे ईश्वर की कृपा को अन्याय का अवसर बना रहे थे और ईसाई स्वतंत्रता के बहाने, हर तरह के पापपूर्ण कार्यों में लिप्त थे। इस पत्र में आंशिक रूप से धर्मशास्त्रीय शिक्षा शामिल है: पवित्र त्रिमूर्ति के रहस्य पर, यीशु मसीह के अवतार पर, अच्छे और बुरे स्वर्गदूतों के बीच अंतर पर, और भविष्य के अंतिम न्याय पर; इसमें नैतिक शिक्षा भी शामिल है: पापी और शारीरिक अशुद्धता, ईश्वरनिंदा, अहंकार, अवज्ञा और अन्य दुर्गुणों से बचने की प्रेरणा; प्रेरित सभी को अपने कर्तव्यों और जिम्मेदारियों – विश्वास, प्रार्थना और प्रेम में – दृढ़ रहने के लिए प्रोत्साहित करते हैं, और उन लोगों के धर्म-परिवर्तन की परवाह करने तथा विधर्मियों से स्वयं को बचाने का आग्रह करते हैं।

इन दो थदार्यों के बारे में नाइसफ़ोरस कैलस्टिस यह कहते हैं: वह एक (बारह प्रेरतिों में से) को लेबयिस कहते हैं, जबकि दूसरे (जनिकी यहाँ चर्चा हो रही है), जो सत्तर प्रेरतिों में से एक थे, उन्हें वे केवल थदार्यों कहते हैं, लेबयिस नहीं।

यह भी ध्यान देने योग्य है कि कुछ सुसमाचारकारों द्वारा पवत्रि प्रेरति और सुसमाचारकार मत्ती को लेबायस कहा गया है[5628] ।

कॉन्टाकयिन, स्वर 4:

चूंकि चर्च को आप में, प्रेरति थदेउस, एक अत्यंत तेजस्वी तारा प्राप्त हुआ है, जो अपने चमत्कारों से सदैव प्रकाशति हैं: उन लोगों को बचाएं जो आपकी स्मृति का श्रद्धापूर्वक सम्मान करते हैं।

पवत्रि शहीद वासा और उनके बच्चों: थयिोगनज़ि, अगापयिास और पस्टिा की स्मृति

21 अगस्त को स्मरणोत्सव

पवत्रि शहीद वासा सम्राट मैक्समियिन के शासनकाल में[5629] एदेसा शहर[5630] में रहती थीं; उन्होंने वैलेरयिस नामक एक वधिर्मी पुरोहति से ववािह कयिा और उन्हें तीन पुत्र हुए: थयिोग्नसि, अगपयिस और पस्टिा, और उन्होंने उन्हें ईसाई भक्ति में पाला, क्योंकि वह स्वयं एक ईसाई थीं (उसे अपने माता-पति से पवत्रि ईसाई धर्म की शक्षिा मली थी)। अपने पति द्वारा बदनाम कए जाने के बाद, उसे एक मूर्तपिूजक न्यायाधीश के सामने पेश होने के लए मजबूर कयिा गया, जसिके समक्ष उसने खुद को ईसाई होने का स्वीकारोक्ति कयिा; इसी कारण से, उसे अपने बच्चों के साथ कैद कर दयिा गया। फरि संत वासा को फांसी के स्थान पर ले जाया गया; और उसकी आँखों के सामने ही उसके बेटों को वभिन्नि यातनाएँ दी गईं: पहले, थयिोग्नसि को लटकाया गया और उसका चमड़ा उधेड़ दयिा गया; फरि उसके दूसरे बेटे, अगपयिस को कोड़ों से पीटा गया; यातना देने वालों ने अगपयिस का सरि से लेकर छाती तक चमड़ा उधेड़ दयिा, लेकनि वह चुप रहा और एक भी शब्द नहीं बोला; फरि उसके तीसरे बेटे को भी वभिन्नि यातनाओं का सामना करना पड़ा। अपनी संतानों का दुख देखकर माँ ने उन्हें हम्मित दी और प्रार्थना के माध्यम से उन्हें साहसपूर्वक अपनी परीक्षा सहने के लए प्रोत्साहति कयिा। और इन तीनों युवकों ने, उन पर दी गई सभी यातनाओं को साहसपूर्वक सहने के बाद, एक साथ तलवार से सरि कलम कर दए गए।

उनकी माँ, वास्सा, ने अपने प्रयि बच्चों को मसीह के पास भेजकर आनंद मनाया; बाद में उन्हें फरि से कैद कर लयिा गया; वहाँ, उन्हें भूखा रखा गया, लेकनि उन्हें एक स्वर्गदूत से भोजन मलिा, जसिने उन्हें और भी अधकि कष्ट सहने के लए मजबूत कयिा। बाद में, यातना देने वाले के आदेश पर, उन्हें मैसडिोनयिा ले जाया गया और वहाँ एक घृणति बलदिान करने के लए मजबूर कयिा गया; हालाँकि, उन्होंने अपने यातना देने वालों की अवज्ञा की, जसिके लए उन्हें पहले पानी में, फरि आग में फेंका गया; इसके बाद, उन पर पत्थर चलाए गए, फरि भी वे अपनी सभी यातनाओं के बीच सुरक्षति रहीं। जब उसे मूर्तपिूजक मंदरि में ले जाया गया, तो उसने ज़्यूस देवता की मूर्त[5631] को पकड़ लयिा, उसे ज़मीन पर फेंक दयिा और उसे टुकड़े-टुकड़े कर दयिा। फरि संत वासा को जानवरों द्वारा खाए जाने के लए उन पर फेंक दयिा गया, लेकनि वह उनमें से सुरक्षति रहीं। इसके बाद उनके यातना देने वालों ने उन्हें तट से तीस स्टेडयिम दूर समुद्र में फेंक दयिा। और जो भी संत को दूर से देख रहे थे, उन्होंने देखा कि तीन तेजस्वी पुरुष, जो सूर्य से भी अधकि चमक रहे थे, संत को एक जहाज पर ले गए और उन्हें एक सहिासन पर बठिा दयिा। आठ दनि बाद, संत वासा हेलेस्पोंट नामक एक द्वीप पर कुछ सैनकिों के सामने प्रकट हुईं; जब फलिपि नामक मैसेडोनयिाई गवर्नर को यह पता चला, तो उसने साइज़किस (हेलेस्पोंटाइन धर्मप्रांत) के क्षेत्र के गवर्नर को पत्र लखिकर उसे शहीद को पकड़ने का आदेश दयिा; उसने संत को पकड़कर

[5628] इस पर और अधकि ववरिण संत मत्ती प्रेरति और सुसमाचारकर्ता के जीवन के वृत्तांत में, 16वें के अंतर्गत मलि सकते हैं

[5629] सम्राट मैक्समियिन ने 305 से 311 तक रोमन साम्राज्य के पूर्वी हस्सि पर शासन कयिा।

[5630] एडेसा शहर मैसेडोनयिा में स्थति था।

[5631] ज़्यूस प्राचीन यूनानी धर्म का सर्वोच्च देवता था, जसि अन्य देवताओं का पूर्वज माना जाता था।

मूर्तियों को बलिदान चढ़ाने के लिए मजबूर किया। लेकिन, जब उसने देखा कि संत अडिग रहीं, तो उसने उनके हाथ पीठ में बाँधने और उनके पूरे शरीर पर निर्दयता से प्रहार करने का आदेश दिया; अंत में, उसने उनके सम्मानित सिर को कलम करने का आदेश दिया। इस प्रकार पवित्र शहीद वासा ने अपनी पवित्र आत्मा को मसीह ईश्वर के हाथों में सौंप दिया, जिनका महिमा अब और हमेशा और युगों-युगों तक होती रहे। आमीन[5632] .

4 सितंबर

२२ अगस्त (पुराना संस्करण)

पवित्र शहीद यूलालिया का कष्टकथा।

22 अगस्त को स्मरणोत्सव

[5633]पैगन सम्राटों के शासनकाल में, जब संपूर्ण विश्व पर हेलेनिक नास्तिकता का साया था, स्पेन के बार्सिलोना नगर में ईसाई माता-पिता की पुत्री यूलालिया नाम की एक युवा कन्या रहती थी। अपने शुरुआती वर्षों से ही, वह अपने पूरे दिल से हमारे प्रभु यीशु मसीह से प्रेम करती थी; वह शहर से कुछ दूरी पर स्थित एक गाँव में अपने माता-पिता के साथ रहती थी। उसके माता-पिता उसकी कोमलता, विनम्रता और उसके वर्षों से परे बुद्धिमत्ता के लिए यूलालिया से बहुत प्यार करते थे; यूलालिया को शास्त्रीय शिक्षा दी गई थी, और उसका एक दृढ़ संकल्प था – अपने निर्दोष कुँवारीपन के साथ प्रभु की सेवा करना। संत ने अपने साथियों के साथ एक विशेष कोठरी में रहकर, दिन-रात किताबें पढ़ने और ईश्वर की स्तुति करने में स्वयं को समर्पित कर दिया।

जब यूलालिया चौदह वर्ष की हुईं, तो सम्राट डायोक्लेटियन[5634] ने ईसाइयों पर एक क्रूर उत्पीड़न शुरू किया। हेगेमोन डैसियन बार्सिलॉन शहर में पहुँचा; वहाँ उसने अपने अधर्मी देवताओं के लिए घृणित बलिदान चढ़ाए, फिर ईसाइयों को ढूंढना शुरू कर दिया ताकि उन्हें मूर्तियों को धूप जलाने के लिए मजबूर कर सके। परिणामस्वरूप, शहर में भारी हलचल मच गई, क्योंकि ईसाइयों को जबरदस्ती उनके घरों से खींच लिया गया और यातनाओं के तहत मूर्तियों की पूजा करने के लिए मजबूर किया गया; इसकी खबर जल्द ही आसपास के सभी गांवों में फैल गई।

जब कुंवारी यूलालिया ने यह सब सुना, तो वह महान आध्यात्मिक आनंद से भर गई और, एक प्रसन्न मुख के साथ, कहा:

'मैं आपको धन्यवाद देती हूँ, हे प्रभु यीशु मसीह! महिमा हो आपके परम पवित्र नाम की, क्योंकि मुझे वह मिल गया है जिसकी मैं खोज में थी। मैं आप पर विश्वास करती हूँ, हे मेरे प्रभु, कि आपकी सहायता से मेरे हृदय की इच्छा पूरी होगी।'

जब यूलालिया के माता-पिता और उसके साथ मौजूद युवतियों ने संत के ये शब्द सुने, तो वे यह नहीं समझ सके कि वह क्या कह रही थी; उन्होंने उससे पूछा कि उसकी खुशी का कारण क्या था, उसे क्या मिला था, और वह क्या चाहती थी। लेकिन उसने उन्हें कुछ नहीं बताया, और अपने इरादों को अपने दिल में ही छिपाए रखा। और सभी चकित रह गए, क्योंकि संत पवित्र विश्वास के बारे में जो कुछ भी समझती थीं, उसे छिपाने की आदत नहीं रखती थीं; बल्कि जो कुछ भी उन्होंने स्वयं पुस्तकों से समझा, उसे ईश्वर की कृपा से प्रकाशित होकर, वह सभी को उनके लाभ के लिए सुनाती थीं—इसीलिए सभी उन्हें अपनी आत्मा के समान प्रेम करते थे। हालाँकि, यूलालिया ने उस समय अपने विचार व्यक्त नहीं किए, ताकि अपने पिता और माता, जो उनसे बहुत प्यार करते थे, से अपनी योजनाओं में कोई विरोध न हो।

जब रात हुई और सभी सो रहे थे (और मुर्गी की पहली बाँग भी पहले ही सुनाई दे चुकी थी), तो वह पवित्र कन्या चुपके से अपने घर से निकल पड़ी—बिना किसी के उसके जाने का पता लगे—और अपने स्वर्गीय वर, प्रभु मसीह के प्रति

[5632] संत वासा और उनके बच्चों की शहादत चौथी शताब्दी की शुरुआत में हुई थी। कालसेडोन में, लगभग 450 ईस्वी में, शहीद संत वासा के सम्मान में एक चर्च का निर्माण किया गया था।

[5633] अब बार्सिलोना।

[5634] सम्राट डायोक्लेटियन ने 284 से 305 तक शासन किया।

प्रेम में पूरी तरह डूबी, उनके लिए अपना जीवन बलिदान करने के दृढ़ संकल्प के साथ शहर की ओर चल दी। और यह रात की यात्रा उसे डरावनी नहीं लगी, जैसा कि आमतौर पर उन सभी युवा कुंवारी लड़कियों के साथ होता है जो रात में अपने घर से बाहर निकलने से डरती हैं; ईश्वर में अपनी सारी आशा रखकर और उसके लिए मरने का दृढ़ संकल्प लेकर, संत ने रात के अंधकार पर कोई ध्यान नहीं दिया, न ही रात के भूत-प्रेतों से परेशान हुई, और न ही उन जंगली जानवरों से जो उसके रास्ते में आए; लेकिन पानी के स्रोतों के लिए तरसते हिरण की तरह, वह भी ऐसे खुरदरे रास्ते पर नंगे पैरों से तेज़ी से चली, जो इस तरह के रास्ते के आदी नहीं थे।

संत यूलालिया दोपहर तक शहर में पहुँच गईं। जब वह शहर के दरवाजों से गुज़र रही थीं, तो उन्होंने नगर-घोषकों को लोगों को फांसी के मैदान में बुलाते हुए सुना। वह फांसी के मैदान की ओर तेज़ी से चलीं, जो शहर के केंद्र में स्थित था: वहाँ संत ने गवर्नर डेशियन को उच्च न्यायाधीश की सीट पर बैठे देखा। भीड़ में बड़ी कठिनाई से संघर्ष करते हुए, संत राज्यपाल के सामने प्रकट हुईं और ऊँचे स्वर में कहा:

'हे अधर्मी न्यायाधीश, जो एक ऊँचे सिंहासन पर विराजमान है और सर्वोपरि ईश्वर से नहीं डरता। क्या इसी लिए तुम यहाँ बैठे हो—कि उन निर्दोष लोगों को नष्ट करो, जिन्हें ईश्वर ने अपनी ही छवि और समानता में बनाया है ताकि वे उसकी सेवा कर सकें? तुम उन्हें शैतान की सेवा में लगा देते हो और जो तुम्हारी आज्ञा नहीं मानते, उन्हें मृत्युदंड देते हो।'

इगेमोन, उस युवती की इतनी बड़ी निर्भीकता देखकर चकित हो गया, बोला:

'तुम कौन हो, जिसने बिना बुलाए हमारी अदालत में आने, हमारे सामने दोषारोपण करने और शाही आदेश की अवहेलना करने की हिम्मत की?'

लेकिन संत ने बड़ी निर्भीकता से उत्तर दिया:

– मैं यूलालिया हूँ, प्रभु यीशु मसीह की दासी, जो राजाओं के राजा और प्रभुओं के प्रभु हैं; उन पर भरोसा करके, मैं तुम्हारी निंदा करने के लिए अपनी इच्छा से आने में लज्जित नहीं हुई हूँ। तुम ईश्वर की अवहेलना करके इतनी मूर्खता क्यों करते हो, जिसने सभी चीज़ों को बनाया है: स्वर्ग, पृथ्वी, समुद्र, और जो कुछ भी उन पर और उनके भीतर है; तुम शैतान की पूजा क्यों करते हो, और, इसके अलावा, जो सच्चे परमेश्वर की सेवा करते हैं, उन्हें विभिन्न यातनाओं के द्वारा मूर्तियों की पूजा करने के लिए मजबूर करते हो, जो देवता नहीं बल्कि दानव हैं; उनके साथ, तुम सब जो उनकी पूजा करते हो, अनंत आग में फेंक दिए जाओगे।

राज्यपाल, क्रोध से भरकर, ने तुरंत आदेश दिया कि निर्वस्त्र कन्या की पीठ पर ओक की लाठियों से निर्दयतापूर्वक पिटाई की जाए। और जब यूलालिया की पिटाई हो रही थी, राज्यपाल ने कहा:

'अभागी कन्या! तो फिर तुम्हारा ईश्वर कहाँ है? वह तुम्हें इन प्रहारों से क्यों नहीं बचाता; और तुम इतनी पागल क्यों हो गईं कि उस मामले पर बोलने की हिम्मत कर बैठीं जो तुम्हारा विषय नहीं है? तो स्वीकार करो कि तुमने यह भोलेपन में किया, यह समझे बिना कि न्यायाधीश का अधिकार कितना महान है; तब तुम्हें क्षमा कर दिया जाएगा; क्योंकि मुझे भी तुम पर तरस आता है, इतनी कम उम्र, सुंदर और कुलीन कन्या पर इतनी क्रूर पिटाई हो रही है।

इस पर संत ने उत्तर दिया:

'मैं तुम पर हँसूँगा, क्योंकि तुम मुझे झूठ बोलने की सलाह दे रहे हो, मानो मैंने अज्ञानता में अपने ईश्वर के लिए यातनाएँ सहने की हिम्मत की हो, और मानो मैं यह न जानता होऊँ कि तुम्हारी शक्ति कितनी महान है। कौन नहीं जानता कि हर तानाशाह की शक्ति अस्थायी होती है; जैसे एक मनुष्य आज जीता है और कल मर जाता है, वैसे ही उसकी शक्ति क्षणिक होती है। लेकिन मेरे प्रभु यीशु मसीह की शक्ति अनंत है, क्योंकि वह स्वयं शाश्वत है। मैं झूठ नहीं बोलना चाहती, क्योंकि मैं अपने प्रभु से डरती हूँ, जो सभी झूठे और अधर्मी लोगों को जलाने के लिए आग की गेहेन्ना में डाल देंगे; मेरी कुँवारी जवानी और भी अधिक सुशोभित होगी और मेरी कुलीनता और भी बढ़ेगी यदि मैं अपने प्रभु के लिए दुख सहूँ। यह जान लो, यातना देने वाले: मुझे मुझ पर डाले गए कष्टों से कोई दर्द महसूस नहीं होता, मेरे प्रभु मसीह की सुरक्षा की बदौलत, जो न्याय के दिन तुम्हें तुम्हारे कर्मों के अनुसार अनंत यातनाओं में डाल देंगे।

शहीद के ये शब्द सुनकर, राज्यपाल और भी अधिक क्रोधित हो गया और आदेश दिया कि संत को एक क्रूस के आकार के यातना वृक्ष पर लटका दिया जाए और उसके शुद्ध कन्या शरीर को लोहे की कंघियों से तब तक खुरचा जाए जब तक उसकी सारी त्वचा उधड़ न जाए। उन यातनाओं के बीच, संत ने ईश्वर से पुकार लगाते हुए कहा:

'हे प्रभु यीशु मसीह! मुझ पर, अपनी इस अयोग्य दासी पर, ध्यान लगाओ और मेरे पापों को क्षमा करो! अपने पवित्र नाम की खातिर, मुझे इन यातनाओं में बल दो, ताकि शैतान और उसके सेवक लज्जित हों।'

तब राज्यपाल ने उससे कहा:

'वह कहाँ है, जिसके लिए तुम पुकार रही हो? तुम्हारे लिए बेहतर होगा कि तुम मेरी बात सुनो, हे मूर्ख और दुर्भाग्यपूर्ण कन्या, और देवताओं को बलिदान चढ़ाओ: तब तुम्हें बचा लिया जाएगा; क्योंकि तुम्हारी मृत्यु पहले ही नज़दीक आ चुकी है, और कोई भी तुम्हें बचा नहीं सकता।'

लेकिन संत यूलालिया ने उससे उत्तर दिया:

'तुम्हें कोई भलाई न मिले, हे धर्मनिंदा करने वाले, हे पवित्र आत्मा से वंचित मनुष्य, हे नीच! और मैं, और भी अधिक, अपने ईश्वर से विमुख नहीं होऊँगी, क्योंकि वह, जिसे मैं पुकारती हूँ, यहाँ है; परन्तु तुम उसे नहीं देखते, अपनी अशुद्धता के कारण, क्योंकि तुम उसे देखने के योग्य नहीं हो; वह मुझे बल देते हैं, इसलिए मैं तुम्हारे द्वारा मुझ पर डाले जाने वाले यातनाओं को कुछ भी नहीं समझती।

तब राज्यपाल ने संत को जलती हुई मोमबत्तियों से झुलसाने का आदेश दिया, और यह हुक्म दिया कि उसे तब तक जलाया जाए जब तक वह मर न जाए।

जब उन्हें जलाया जा रहा था, तो वह शहीद आनंद से भर गईं और भजन के शब्द ऊँचे स्वर में घोषित किए: *'देखो, परमेश्वर मेरा सहायक है; प्रभु मेरी आत्मा को सहारा देता है। वह मेरे शत्रुओं को उनके दुष्टता के लिए दंड देगा; उन्हें अपनी सच्चाई से नष्ट कर देगा। मैं अपना सम्पूर्ण हृदय अर्पण करूँगी; हे प्रभु, मैं तेरे नाम का गुणानुवर्णन करूँगी, क्योंकि यह उत्तम है, क्योंकि तूने मुझे मेरी सभ क्लेशों से छुड़ाया है'* (भजन संहिता 53:6–9)।

जब संत इन शब्दों की प्रार्थना कर रही थीं, तो मोमबत्तियों की लौ सेवकों की ओर मुड़ गई और उनके चेहरों को बुरी तरह झुलसा दिया, जिससे वे जमीन पर गिर पड़े। जब संत ने यह देखा, तो उन्होंने अपनी आँखें स्वर्ग की ओर उठाईं और और भी ऊँचे स्वर में पुकार लगाई:

– हे प्रभु यीशु मसीह! मेरी प्रार्थना सुनें, और मुझे अपनी दया दिखाएँ; मुझे अनंत जीवन में विश्राम के लिए अपने चुने हुओं में गिन लें: *'मुझे अपनी अनुकूलता का एक संकेत दिखाएँ, ताकि जो मुझसे द्वेष रखते हैं वे उसे देखकर लज्जित हों'* (भजन संहिता 85:17); और जो आप पर विश्वास करते हैं वे आपकी शक्ति का महिमामंडन करें।

ये शब्द प्रार्थना करने के बाद, संत ने अपना प्राण ईश्वर को सौंप दिया[5635] ; और सभी ने एक कबूतर को, जो बर्फ की तरह सफेद था, उसके मुँह से निकलकर स्वर्ग की ओर उड़ते हुए देखा; यह देखने वाले सभी लोग बहुत हैरान रह गए; जबकि ईसाइयों (जो लोगों में बहुत थे) ने इस बात पर प्रसन्नता मनाई कि उन्हें अपने ही नगर से स्वर्ग में प्रभु के सामने एक मध्यस्थ पाने के लिए योग्य समझा गया था।

जब राज्यपाल ने देखा कि शहीद पहले ही मर चुकी है, तो वह एक युवती से पराजित होने के कारण बहुत लज्जित हुआ, और न्यायाधीश की कुर्सी से क्रोधित होकर उठकर घर चला गया। राज्यपाल ने आदेश दिया कि शहीद के शरीर को उस यातना के पेड़ पर लटका रहने दिया जाए और पहरेदार तैनात कर दिए जाएं ताकि कोई भी उसके शरीर को वहां से नीचे न उतार सके; राज्यपाल ने कहा, 'उसे पेड़ पर तब तक लटका रहने दो जब तक पक्षी उसे खाकर उसकी हड्डियां बिखेर न दें।'

जब राज्यपाल चला गया, और संत का शरीर अभी भी पेड़ से लटका हुआ था, तो अचानक बादलों से बर्फ गिरने लगी और उसने पवित्र शहीद के पवित्र शरीर को एक सफेद वस्त्र की तरह ढक दिया; पहरेदार भय से ग्रस्त हो गए; उस स्थान से पीछे हटकर, वे दूर से ही घटी हुई सभी घटनाओं से भयभीत होकर देखते रहे।

इस बीच, संत के माता-पिता को सब कुछ पता चल गया: क्योंकि जब वे सुबह उठे और अपनी प्यारी बेटी को घर पर नहीं पाया, तो वे बहुत दुखी हुए और उसे हर जगह खोजने लगे। दोपहर तक उन्हें पता चल गया कि उनकी बेटी ने मसीह के नाम का प्रचार करने के लिए अपनी जान दे दी है और वह अभी भी यातना के पेड़ पर लटकी हुई है; यह सुनकर वे कड़वा रोते हुए नगर की ओर दौड़े। संत को पेड़ पर क्रूस के आकार में, बर्फ से ढकी हुई, मृत देखकर, उसके माता-पिता जोर-जोर से रो पड़े, वे शोक से भर गए, और वे कड़वे आँसू बहाने लगे; फिर भी, उसी समय वे इस बात से प्रसन्न हुए कि उनकी प्रिय पुत्री ने शहीद का मुकुट प्राप्त कर लिया था और स्वर्गीय वर के महल में प्रवेश कर गई थी। वे मसीह के शहीद के

[5635] पवित्र शहीद यूलालिया की मृत्यु लगभग 303 में हुई।

शरीर को अपने साथ घर ले जाने का इरादा रखते थे, लेकिन रक्षकों ने उन्हें इसके पास आने की अनुमति नहीं दी; दूर से संत को निहारते हुए, वे रोए, फिर भी उसी समय आत्मा में आनंदित हुए।

तीसरे दिन, कुछ धर्मनिष्ठ पुरुषों ने रात के समय पवित्र शहीद के शरीर को ले लिया (रखवालों ने इसका ध्यान नहीं दिया) और उसे सुगंधित तेलों से महकते एक शुद्ध कफ़न में लपेटा, और यह सब उसकी माता-पिता की उपस्थिति में किया, जिन्होंने अपनी प्रिय बेटी के शरीर को अपने आँसुओं से धोया। संत फेलिक्स (जिन्होंने बाद में मसीह के नाम का प्रचार करने के लिए यातनाएँ झेलीं)[5636] , मृत शहीद के चेहरे को निहारते हुए, आनंद के आँसुओं के साथ कहा:

'लेडी यूलालिया! आपको हमसे पहले शहीद का मुकुट प्राप्त करने के योग्य समझा गया है!'

जब फेलिक्स ने ये शब्द कहे, तो उस कन्या का चेहरा—जो तीन दिनों से निर्जीव पड़ा था—उसकी ओर देखकर जीवंत हो उठा; इसके बाद, वहाँ उपस्थित सभी लोग भजन के शब्द गाने लगे: *'धर्मी पुकार लगाते हैं, और प्रभु उनकी सुनता है; वह उन्हें उनकी सभी परेशानियों से छुड़ाता है'* (भजन संहिता 33:18)।

और उन्होंने पवित्र शहीद यूलालिया के शरीर को सम्मान के साथ दफनाया, और परमपिता परमेश्वर, और उनके एकमात्र पुत्र, प्रभु यीशु मसीह, और पवित्र आत्मा, त्रिमूर्ति में एक परमेश्वर की महिमा की, जिनका राज्य अनंत है और युगानुयुग तक बना रहता है। आमीन।

परमेश्वर की माता के जॉर्जियाई प्रतिमा के सम्मान में पर्व

22 अगस्त को स्मरणोत्सव

रूस के उत्तर में पाइनेगा नदी बहती है, जो ड्विना नदी में मिल जाती है; पाइनेगा के किनारों पर कई बस्तियाँ बसी हुई हैं; इस नदी के पास चेर्नाया नाम का एक बड़ा और ऊँचा पहाड़ है; यह पहाड़ महासागर (आर्कटिक महासागर) तक फैला हुआ है और इसकी लंबाई लगभग पाँच सौ पोपरीश है; पहले यह खाली और निर्जन था।

ईश्वर के एक विशेष प्रकाशन से, संसार की सृष्टि के 7111वें वर्ष (ईस्वी 1603 में) उस पहाड़ पर परम पवित्र ईश्वर की माता को समर्पित एक मठ का निर्माण किया गया; इस मठ का निर्माण उस देश के मिरॉन नामक एक पुजारी ने किया था, जो बाद में उसी मठ का मठाधीश बना।

यह ध्यान देने योग्य है कि धर्मनिरपेक्ष ज़ार और ग्रैंड प्रिंस मिखाइल फेडोरोविच[5637] के शासनकाल के दौरान, फ़ारसी शाह अब्बास[5638] ने इबेरिया[5639] को अपने शासन के अधीन कर लिया; वहाँ प्रभु परमेश्वर और हमारे उद्धारकर्ता यीशु मसीह का चमत्कारी चोगा पाकर, उन्होंने उसे ले लिया; उस समय, फ़ारसियों ने इबेरिया में कई अन्य पवित्र अवशेष और पूजनीय प्रतिमाएँ जब्त कर लीं और सब कुछ फ़ारस ले गए, श्रद्धा के लिए नहीं (क्योंकि वे मूर्तिपूजक थे), बल्कि उन्हें रूसी व्यापारियों को बेचने के लिए; क्योंकि उस समय फारस में बहुत सारे रूसी व्यापारी थे, और फारसियों को पता था कि वे पवित्र प्रतिमाओं का सम्मान और पूजा करते थे। इन व्यापारियों में रूसी शहर यारोस्लाव के एक स्टीफन नामक व्यक्ति भी था; यह स्टीफन यारोस्लाव के जॉर्ज नामक एक नागरिक की संपत्ति का प्रबंधक था। इसी स्टीफन के पास एक फारसी ने परम पवित्र मसीह की माता की एक प्रतिमा लाकर चाँदी और सोने से जड़ी हुई बेचे का प्रस्ताव रखा। उस धर्मपरायण व्यक्ति ने उस फारसी से उस पवित्र प्रतिमा को बड़ी खुशी से खरीद लिया।

ठीक उसी क्षण जब वह फारस में यह प्रतिमा खरीद रहा था, उसके स्वामी जॉर्ज, जिसका ऊपर उल्लेख किया गया है, जो यारोस्लावल शहर में रहते थे, को सोते समय एक दर्शन हुआ, जिसमें उन्होंने ये शब्द सुने:

'तुम्हारे संपत्ति का प्रबंधक, जो फारस में रहता है, ने तुम्हारे लिए कीमती मनके प्राप्त किए हैं; और जब वह उन्हें तुम्हारे पास लाए, तो उन्हें द्विना क्षेत्र में, ब्लैक माउंटेन भेजो।'

[5636] संत फेलिक्स का पर्व पवित्र चर्च द्वारा 22 अगस्त को मनाया जाता है।

[5637] Mikhail फेदोरोविच ने 1613 से 1645 तक शासन किया।

[5638] 1622 में

[5639] आधुनिक जॉर्जिया।

वास्तव में, कुछ समय बाद, उपरोक्त स्टीफन, जो जॉर्ज के संपत्ति का प्रबंधक था, फारस से आया और उसने जॉर्ज को परमेश्वर की अति पवित्र माता की पवित्र प्रतिमा दी, जिसे उसने फारस में खरीदी थी। जॉर्ज ने खुशी-खुशी इस पवित्र अवशेष को स्वीकार किया और अपने दर्शन को याद करते हुए कहा:

'यह वास्तव में वह अनमोल मोती है जिसके बारे में मुझे अपने सपने में बताया गया था।'

थोड़ी ही देर बाद, ईश्वर की आज्ञा के अनुसार, जॉर्ज ड्विना क्षेत्र के लिए रवाना हुए और उपर्युक्त चेर्नोगोर्स्क मठ[5640] पहुँचे, साथ में वह पूजनीय प्रतिमा लेकर (इस प्रतिमा को 'जॉर्जियाई' प्रतिमा कहा जाता था क्योंकि इसे इबेरिया, या जॉर्जिया की भूमि से लाया गया था)। जॉर्ज ने मठ को बहुत सारा सोना, चाँदी, चर्च के बर्तन और पूजा-संबंधी पुस्तकें भेंट कीं[5641] ।

जब ईश्वर की माता का पवित्र प्रतिमा इस मठ में लाया गया था, तब मठाध्यक्ष और भ्राता चर्च में सर्व-रात्रि जागरण मना रहे थे; उस मठ का पिटिरिम नाम का एक भिक्षु, जो कई वर्षों से अंधा और बहरा था और उस समय सेवा के समय मठ की चिकित्सालय में रह रहा था, ईश्वर से प्रार्थना करने के लिए अपनी कोठरी के सामने बरामदे में गया। जब वह प्रार्थना कर रहा था, तो अचानक उस पर एक बड़ी रोशनी चमक उठी, जिससे वह बहुत डर गया, क्योंकि उसने कई वर्षों से रोशनी नहीं देखी थी (अपनी अंधापन के कारण); पितिरिम ने इसे एक शैतानी भ्रम समझा; फिर उसने पवित्र क्रॉस का चिह्न बनाया और अपनी आँखें उस महान पहाड़ की ओर उठाईं, और उसी क्षण उसने उस पर सूर्य की किरणों जैसी एक रोशनी देखी; फिर, एक प्रार्थना करने के बाद, वह तुरंत अपनी आँखों से देखने और अपने कानों से सुनने लगा। सुबह की प्रार्थना सभा के बाद, पिटिरिम मठाधीश के पास गए और उन्होंने मठाधीश तथा अन्य भाइयों को अपनी नेत्रहीनता और बधिरता से मुक्ति के बारे में बताया; और वहाँ उपस्थित सभी लोगों ने ईश्वर की स्तुति की।

जब उस धार्मिक व्यक्ति, जॉर्ज (जो उस समय वहाँ था), ने इस अति महिमामय चमत्कार के बारे में सुना, तो उसने परमेश्वर की परम पवित्र माता के सम्मान में उस मठ में एक सुंदर चर्च बनवाया। और फिर उस पवित्र प्रतिमा के माध्यम से चमत्कारों की एक बड़ी विविधता होने लगी; कई बीमार लोग चंगे हुए; उदाहरण के लिए, परमेश्वर की अति पवित्र माता की कृपा से नियोनीला नाम की एक लकवाग्रस्त महिला चंगी हो गई; थियोडोसिया नाम की एक अन्य महिला, जो आँखों की बीमारी से पीड़ित थी, भी चंगी हो गई। ईश्वर की परम पवित्र माता ने कोड्रैटस नामक एक व्यक्ति की मदद की, जो दानवों के वश में था और जिसे उन्होंने दस सप्ताह तक रेगिस्तान में घुमाया, और इस दौरान उसने कुछ भी नहीं खाया या पिया; ईश्वर की माता, उसके सामने प्रकट होकर, उसे मजबूत किया, उसे उसके माता-पिता के घर का रास्ता दिखाया और उसे अपने मठ में चमत्कारी प्रतिमा के पास आने की आज्ञा दी, यह वादा करते हुए कि वह उसे उसकी बीमारी से पूरी तरह ठीक कर देंगी, जो उन्होंने वास्तव में उस पर किया। ईश्वर की माता के मध्यस्थता से, जॉन नामक एक मछुआरा, जो एक झील में डूब रहा था, डूबने से बच गया; इसके अलावा, ईश्वर की माता एक अन्य व्यक्ति पॉल के सामने प्रकट हुईं, जो एक तटीय क्षेत्र में रहता था और एक पूरे वर्ष से पेट की बीमारी से पीड़ित था; इस पॉल के सामने प्रकट होकर, ईश्वर की माता ने उसे पवित्र धर्मग्रंथों में शिक्षित किया और उसे उसकी बीमारी से ठीक कर दिया। इसी तरह, ईश्वर की माता ने कई अन्य लाइलाज बीमारियों और व्याधियों को भी ठीक किया, जैसे: पेट की बीमारियाँ, शरीर के ट्यूमर, और आँखों तथा दाँतों की विभिन्न बीमारियाँ; उन्होंने अशुद्ध आत्माओं से ग्रस्त लोगों को भी चंगा किया और आज भी विभिन्न बीमारियों से चंगा करके अपनी चमत्कारी शक्ति प्रकट करती हैं[5642] । और केवल वहीं नहीं, बल्कि मास्को में भी, पवित्र त्रिमूर्ति के चर्च में रखी उस पूजनीय प्रतिमा की एक प्रति के माध्यम से कई चमत्कार होते हैं।

प्रतिमा की प्रतिलिपि निम्नलिखित कारण से बनाई गई थी।

1654 में, परमेश्वर की माता की चमत्कारी जॉर्जियाई प्रतिमा को चेरनोगोर्स्क या क्रास्नोगोर्स्क मठ से मरम्मत के लिए मास्को लाया गया था और माना जाता है कि इसे निकित्नीकी में पवित्र त्रिमूर्ति के चर्च में या उस चर्च के किसी पारिशदीयन के घर में रखा गया था। उसी वर्ष महा-उपवास के पहले सप्ताह के दौरान, एक कारीगर गाव्रील

[5640] या क्रास्नोგორ्स्क।

[5641] 1629 में माँ ईश्वर की एक जॉर्जियाई प्रतिमा चेरनोगोर्स्क (या क्रास्नोगोर्स्क) मठ में लाई गई थी।

[5642] अलेक्सी मिखाइलोविच (1645–1676) के शासनकाल के दौरान, ईश्वर की माता की चमत्कारी जॉर्जियाई प्रतिमा को साइबेरिया, लेना नदी और रूस के भीतरी शहरों: उस्त्युग, वोल्गोडा, पेरियास्लाव-ज़ालेस्की और मास्को ले जाया गया था। – स्वर्ग की रानी की दया के चमत्कारिक संकेत आज भी इस जॉर्जियाई प्रतिमा के माध्यम से होते रहते हैं। उदाहरण के लिए, 17 जून 1897 को, वोल्गोडा गवर्नरेट के टोटेम्स्की जिले के शुइस्कोये गाँव के एक पादरी की पत्नी का इस प्रतिमा के सामने एक अत्यंत गंभीर और जानलेवा बीमारी से इलाज हो गया।

एवदोकमिोव, जसिके बेटे की तबीयत बहुत खराब थी, के अनुरोध पर ह्येरोमोंक मकाएरी ने इस प्रतमिा को प्रार्थना सेवा के लिए उसके घर लाया, और बीमार लड़का ठीक हो गया। चंगा होने की कृतज्ञता में, गाव्रील एवदोकमिोव ने उस चमत्कारी जॉर्जयिाई आइकन की एक प्रतबिनवाई, जसिे उन्होंने वर्वारस्की गेट्स के पास, चर्च ऑफ़ द होली ट्रनिटिी में स्थापति कयिा।

आज भी इस प्रतमिा द्वारा चमत्कार होते रहते हैं, और यह मास्को के नविासयिों के बीच गहरी भक्तपिूर्ण श्रद्धा का वषिय है[5643] ।

ये चमत्कार उन सभी पर हुए जो वशि्वास के साथ आए थे और हमारे प्रभु यीशु मसीह की महमिा के लिए हुए, जो पति और पवत्रि आत्मा के साथ, अब और हमेशा और युगों-युगों तक महमिा प्राप्त करते हैं। आमीन।

पवत्रि शहीदों: एगाथोनकिा, ज़ो[illegible]स, थयिोप्रेपयिा, अकनिडिा, सेवेरयिनस और उनके साथ अन्य लोगों का स्मरणोत्सव

22 अगस्त को स्मरणोत्सव

[5644]मसीह के शहीद, अगथोनकिा, सम्राट मैक्समियिन[5645] के शासनकाल के दौरान नकिोमेडयिा में रहते थे; उन्होंने यूनानयिों को मूर्तयिों की पूजा से दूर कयिा और उन्हें मसीह की ओर ले गए; उन्हें काउंट[5646] यूटोलमयिस द्वारा यातना देने के लिए ले जाया गया। जब यह काउंट, जो सम्राट द्वारा ईसाइयों का उत्पीड़न करने के लिए पोंटस क्षेत्र में भेजा गया था, जहाज से कार्पनि नामक स्थान पर पहुँचा, तो उसने वहाँ संत ज़ो[illegible]स को उनके शष्यिों के साथ पाया, जो मसीह में अपने वशि्वास का प्रचार कर रहे थे; काउंट यूटोलमयिस ने अपने शष्यिों को सूली पर चढ़ाकर मौत की सज़ा सुनाई, जबकि वह संत ज़ो[illegible]स को अपने साथ ले गया। नकिोमेडयिा लौटने पर, उसने प्रसिपिस नामक एक व्यक्ति को पकड़ लयिा, जसिे संत अगथोनकिस ने पवत्रि ईसाई धर्म की शकि्षा दी थी; उसे, अगथोनकिस, ज़ो[illegible]स और अन्य ईसाइयों—जनिमें थयिोप्रेपयिस, अकनिदिस और सेवेरयिन शामलि थे—के साथ बाँधकर, वह उन सभी को थ्रेस ले गया, जहाँ सम्राट स्वयं भी पहुँच चुके थे, ताकि उन्हें वहाँ यातनाएँ दी जा सकें। जब संत पोटमा नामक क्षेत्र में थे, तो काउंट ने संत ज़ो[illegible]स, थयिोप्रेपयिोस और अकनिडिोस को मृत्युदंड दे दयिा, क्योंकि वे पहले प्राप्त घावों और फोड़ों के कारण अब चल नहीं सकते थे; और काल्सेडोन के आसपास पहुँचने पर[5647] , काउंट ने संत सेवेरयिन को मृत्युदंड दे दयिा, जन्होंने साहसपूर्वक मसीह की स्वीकारोक्ति की थी; जहाँ तक अन्य शहीदों का सवाल है, सेंट अगथोन के साथ, वह उन्हें बज़िन्टयिम ले गया और वहाँ कुछ समय तक उन्हें यातनाएँ दीं; फरि वह उनके साथ स्लमि्ब्रयिा में, अम्मस नामक स्थान पर पहुँचा – क्योंकि मैक्समियिन वहाँ ठहरा हुआ था; वहाँ पवत्रि शहीद अगथोनकिस के साथ-साथ नकिोमेडयिा से लाए गए सभी ईसाइयों को अंतमि बार यातनाएँ दी गईं, जसिके बाद उन्हें मृत्युदंड सुनाकर सरि कलम कर दयिा गया, और उन्होंने हमारे ईश्वर मसीह के नाम के लिए[5648] कष्ट सहकर शहादत प्राप्त की।

[5643] इस प्रतमिा के माध्यम से प्रकट हुए चमत्कारकि संकेतों के बारे में और अधकि ववरिण उपरोक्त पुस्तक: ग्लोरी टू द मदर ऑफ गॉड (पृ. 590-591) में पाए जा सकते हैं।

[5644] नकिोमेडयिा मार्मारा सागर द्वारा नर्मति खाड़ी के उत्तर-पूर्वी कोने में एक शहर है। इसकी स्थापना 264 ईसा पूर्व में हुई थी और इसका नाम बथिनियिा के राजा नकिोमेड्स प्रथम के नाम पर रखा गया था। अब इज़मति शहर प्राचीन नकिोमेडयिा की जगह पर स्थति है।

[5645] मैक्समियिन हर्क्यूलसि, जो अगस्टस की उपाधि धारण करते थे, डायोक्लेटयिन के सह-शासक थे और उन्होंने 285 से 305 तक रोमन साम्राज्य के पश्चमिी हसि्से पर शासन कयिा।

[5646] एक 'कोमति' शाही अंगरक्षक, शाही कोष के लिए करों का संग्रहकर्ता, या एक शहर का गवर्नर था; इस संदर्भ में, 'कोमति' शब्द का अर्थ शहर के गवर्नरों से है।

[5647] काल्सेडोन, या अधकि सटीक रूप से काल्सेडोन – मूल रूप से मरमरा सागर के तट पर एक मेगारीन बस्ती थी। ईसाई सम्राटों के अधीन, काल्सेडोन बथिनियिा के एशयिा माइनर प्रांत की राजधानी थी। ईसाई चर्च के इतहिास में, काल्सेडोन चौथे सार्वभौमकि परषिद के स्थल के रूप में उल्लेखनीय है, जसिे 451 में सम्राट मार्सयिन द्वारा बुलाया गया था।

[5648] पवत्रि शहीदों का नधिन तीसरी शताब्दी के अंत या चौथी शताब्दी की शुरुआत में हुआ।

कॉन्टाकयिन, स्वर 1:

हे अगथोन, ईश्वर की बुद्धि से धन्य कीर्ति प्राप्त करके, तुम दुष्टों के विश्वास से मुड़ गए, और यातनाओं से नहीं डरे। इस प्रकार तुम उस आशीर्वाद के योग्य वारिस बने, और अपने साथ पीड़ा सहने वालों के साथ, योग्य मुकुट प्राप्त किए।

उसी दिन, पूज्य अंफुसा, पवित्र हायरोमार्टायर बिशप अथानासियस, और संत अंफुसा की दो दासियों: कैरिसीमस और नेओफायटस की स्मृति

22 अगस्त को स्मरण किया जाता है

सेल्यूकिया शहर के धनी निवासियों की बेटी, संत अंफुसा ने बपतिस्मा ग्रहण करने के बाद, 23 वर्षों तक रेगिस्तान में एक तपस्वी के रूप में जीवन व्यतीत किया। सिलिसिया में तारस के बिशप, अथेनासियस, जिन्होंने संत अंफुसा को बपतिस्मा दिया था, को ऑरेलियन (270-275) के शासनकाल के दौरान तलवार से सिर कलम कर दिया गया था; कैरिसीमस और निकोफाइटस, जिन्हें अपनी स्वामिनी के साथ बपतिस्मा दिया गया था, का भी यही हश्र हुआ। संत अंफुसा का निधन उनके शहादत के बहुत समय बाद (20 से अधिक वर्ष बाद) शांतिपूर्वक हुआ।

5 सितंबर

23 अगस्त (पुराना तरीका)

ल्योन के बिशप संत आइरेनियस की शहादत

23 अगस्त को स्मरणोत्सव

ल्यों के बिशप, संत आइरेनियस, चर्च के सबसे प्रतिष्ठित धर्मपिता और शिक्षकों में से एक हैं। उन्होंने दूसरी शताब्दी में जीवन यापन किया और परिश्रम किया, तथा अपना पूरा जीवन ग्नॉस्टिसिज़्म के खिलाफ संघर्ष को समर्पित कर दिया[5649] । दूसरी शताब्दी के ईसाई चर्च के लिए उनकी महत्ता की तुलना चौथी शताब्दी के ईसाई चर्च के लिए संत अथेनासियस द ग्रेट की महत्ता से की जा सकती है। दोनों, समान रूप से और सबसे बढ़कर, अपने जीवन और कार्यों में, अपने समय की झूठी विधर्मी शिक्षाओं के खिलाफ शुद्ध, अपरिवर्तित चर्च सिद्धांत के रक्षक थे – सेंट आइरेनियस ग्नॉस्टिसिज़्म के खिलाफ; सेंट एथानैशियस एरियनवाद के खिलाफ[5650] ।

[5649] नोस्टिसिज़्म उन कई विधर्मी झूठी शिक्षाओं के लिए एक सामान्य शब्द है जो ईसाई युग की पहली दो शताब्दियों के दौरान उभरीं। नोस्टिसिज़्म व्यापक रूप से फैला हुआ था और विभिन्न देशों में इसके कई अनुयायी थे। मिस्र, सीरो-काल्डीयन और एशिया माइनर नोस्टिसिज़्म के बीच अंतर किया जाता है। मिस्र के ग्नॉस्टिसिज़्म के प्रतिनिधियों में शामिल थे: सेरिनथस (संत जॉन द एपोस्टल और इर्वेंजलिस्ट के समकालीन), वैलेन्टिनस और बेसिलिडिस; सीरो-खल्दीय ग्नॉस्टिसिज़्म का समर्थन साइमन द मैगस और मेनेन्डर के अनुयायियों ने किया था; जबकि एशिया माइनर के gnosticism का समर्थन विधर्मी केर्डोन और मार्सियन ने किया था। gnostics ने दैवीय - आध्यात्मिक - और सांसारिक - भौतिक - क्षेत्रों के बीच एक कठोर अंतर बनाया; इसके अलावा, सभी gnostic प्रणालियों ने परम (सर्व-पूर्ण) अस्तित्व और सापेक्ष अस्तित्व (यानी दुनिया का अस्तित्व) के बीच संचार की संभावना को ही खारिज कर दिया।. दिव्य और सांसारिक, आध्यात्मिक और भौतिक के बीच इस पूर्ण विभाजन का व्यावहारिक परिणाम आत्मा और शरीर का अलगाव था। ग्नोस्टिकों ने दिव्य प्रकटीकरण से इनकार किया और ईसाई धर्म की सभी सच्चाइयों की व्याख्या केवल तर्क के प्रयासों से की।

[5650] एरियन विधर्म का संस्थापक अलेक्ज़ेंड्रिया का एक पादरी एरियस था। उसने इस बात से इनकार किया कि परमेश्वर का पुत्र परमपिता परमेश्वर के समान सार का था, यीशु मसीह को एक सृजित प्राणी माना, और इसी तरह अन्य बातें। एरियन विधर्म को पहले (325 ईस्वी) और दूसरे (381 ईस्वी) एकुमेनिकल परिषदों में, जहाँ धर्मपितागण एकत्रित हुए, विश्वास-सूत्र तैयार किया गया। 5वीं शताब्दी में, रोमन साम्राज्य में आरियनवाद के लगभग कोई अनुयायी नहीं थे, लेकिन इसे जर्मनी में गोथ, बर्गंडियन, वैंडल और लोम्बार्ड लोगों के बीच पुनर्जीवित किया गया, जहाँ यह 7वीं शताब्दी तक बना रहा।

संत आइरेनयिस एशयिा माइनर से थे; उनका जन्मस्थान स्मyrna शहर था; कम उम्र से ही, आइरेनयिस ने सभी हेलेनकि ज्ञान का गहन अध्ययन कयिा; वह ग्रीक कवति, दर्शन और अन्य हेलेनकि वज्ञिानों से अच्छी तरह वाकफि थे।

हालाँकि, संत आइरेनयिस झूठे सांसारकि ज्ञान से प्रभावति नहीं हुए। आध्यात्मकि ज्ञान – ईसाई ज्ञान – के बारे में सुनकर, इरेनयिस ने उसे पूरे दलि से अपनाने की इच्छा व्यक्त की; तब से, उन्होंने केवल इसी सच्चे, आत्मा-मोक्षकारी ज्ञान का अध्ययन करने की इच्छा व्यक्त की, जबकि सांसारकि हेलेनकि ज्ञान को नरिर्थक माना।

संत आइरेनयिस को प्रारंभ में स्मyrna के बशिप संत पॉलीकार्प द्वारा ईसाई धर्म की सच्चाइयों का नर्दिेश दयिा गया था। ये संत पॉलीकार्प संत जॉन द एपोस्टल और इवैंजलस्टि, द थयिोलॉजस्टि के शष्यि थे, और स्वयं को भी उन्होंने स्मyrna के बशिप पद के लिए अभषिक्ति कयिा था। संत पॉलकिार्प ने मसीह की कलीसयिा के लाभ के लिए बहुत परशि्रम कयिा, क्योंकि उन्होंने न केवल स्मyrna में अपने झुंड की देखभाल की, बल्कि पड़ोसी कलीसयिाओं को पत्र भी लखि। धन्य जेरोम[5651] की गवाही के अनुसार, पॉलकिार्प 'ईसाई धर्म में पूरे एशयिा के नेता' थे।

संत आइरेनयिस इस गौरवशाली पॉलीकार्प के शष्यि थे; संत पॉलीकार्प के मुख से आत्मा-रक्षक ईसाई शक्षिा को सुनने के बाद, आइरेनयिस ने इसे कसिी भी सांसारकि शक्षिा से अधकि प्रेम करने लगे; पॉलीकार्प के शष्यि बनकर, संत आइरेनयिस, मानो, स्वयं मसीह के शष्यि बन गए, क्योंकि उन्होंने ईसाई धर्म की सच्चाइयों को पूरे हृदय से आत्मसात कयिा और स्वयं को पूरी तरह से परमेश्वर की सेवा के लिए समर्पति कर दयिा। चूंकि پولیकार्प, संत जॉन द एपोस्टल और इवैंजलस्टि, द थयिोलोजयिन के शष्यि थे, उन्होंने संत आइरेनयिस को वह सब कुछ सौंप दयिा जो उन्होंने स्वयं पवत्रि प्रेरतिों से सुना था, जो मसीह के प्रत्यक्षदर्शी और सेवक थे।

इरनेयस ने यह सब स्मृति में संजो लयिा, और इसे एक तरह के पार्चमेंट की तरह अपने हृदय पर अंकति कर लयिा।

संत पोलकिार्प ने संत आइरेनयिस को एक प्रेस्बटिर (पादरी) के रूप में नयिुक्त कयिा और उन्हें वहाँ परमेश्वर का वचन प्रचार करने के लिए गॉल भेजा।

उस समय ल्यों के बशिप संत पोथनिस थे, जन्हिोंने बाद में मसीह के नाम पर शहादत देकर अपने उपदेश को मुहरबंद कयिा। गैलकि शहर ल्यों में पहुँचने पर, संत इरेनयिस ने लगन से काम शुरू कयिा और संत पोथनिस की महाधर्मपालक कर्तव्यों में सहायता की।

उस समय, ल्यों में मूर्तपिूजकों द्वारा ईसाइयों का एक भयंकर उत्पीड़न चल रहा था, और संत आइरेनयिस ने खुद को ईसाइयों का एक साहसी रक्षक और चर्च का एक दृढ़ स्तंभ साबति कयिा। वहाँ से, बशिप पोथनिस द्वारा संत आइरेनयिस को रोम भेजा गया ताकि वे स्वीकारकर्ताओं की ओर से बशिप एलेउथेरीउस को एक संदेश पहुँचा सकें[5652] ।

संत पोथनिस की शहादत के बाद रोम से लौटने पर[5653] , संत आइरेनयिस ने बशिप का पदभार संभाला।

संत आइरेनयिस ल्यों के नागरकिों के लिए उनके सबसे कठनि समय में एक अच्छे चरवाहे थे, क्योंकि उस समय मसीह की कलीसयिा कई वपित्तयिों से घरिी हुई थी: दुष्ट मूर्तपिूजकों ने मसीहयिों के खलिाफ एक भयंकर उत्पीड़न शुरू कर दयिा था, और इसके अलावा, अधर्मी वधिर्मीयों ने परमेश्वर की कलीसयिा के भीतर कलह और फूट बोना शुरू कर दयिा था।

मसीह के नाम के लिए, संत आइरेनयिस ने मूर्तपिूजकों द्वारा उन पर कए गए सभी अत्याचारों और कठनिाइयों को धैर्यपूर्वक सहन कयिा, जबकि वधिर्मयिों के खलिाफ उन्होंने अपने शब्दों और लेखों से एक भयंकर लड़ाई लड़ी। संत आइरेनयिस की पादरीय सेवा केवल ल्यों तक सीमति नहीं थी, जसिकी उन्होंने पूरी आबादी को ईसाई धर्म में परविर्तति कर दयिा था, बल्कि यह पूरे गॉल में फैली हुई थी। संत आइरेनयिस ने रोम के चर्च के साथ-साथ एशयिा माइनर के चर्चों के

[5651] धन्य जेरोम – पश्चमिी चर्च के सबसे महान शक्षिकों में से एक (330–419); स्लाव मूल के (डल्माटयिा के स्ट्रडिॉन शहर से), जेरोम ने रोम में शक्षिा प्राप्त की जो अपने समय के लिए उत्कृष्ट थी; 373 में उन्होंने पहले बपतस्मिा ग्रहण करने के बाद पूर्व की ओर प्रस्थान कयिा; अपने धार्मकि जीवन के लिए, जेरोम को एक प्रेस्बटिर नयिुक्त कयिा गया था। – धन्य जेरोम ने धर्मशास्त्रीय ज्ञान के वभिन्नि वषियों पर बहुत सारे कार्य लखि। धन्य जेरोम की कृतयिों को चार मुख्य समूहों में वभिाजति कयिा गया है: 1) व्याख्यात्मक, 2) धर्मशास्त्रीय, 3) नैतकि, और 4) ऐतहिासकि। धन्य जेरोम की सबसे महत्वपूर्ण कृति पवत्रि धर्मग्रंथों का उनका अनुवाद है, जसि वल्गेट के नाम से जाना जाता है। इसके अतरिक्ति, जेरोम की नम्निलखिति कृतयिों पर वशिेष ध्यान देने योग्य है: *क्रॉनकिल*, *लाइव्स ऑफ द फादर्स*, *ऑन इलस्ट्रेयस मेन*, *मार्टरिोलॉजी*, और अन्य। छोटे पत्रों को छोड़कर, धन्य जेरोम की कृतयिों की कुल संख्या 180 है।

[5652] इस पत्र में, संत आइरेनयिस की ईसाई धर्म के सबसे उत्साही रक्षक के रूप में प्रशंसा की गई है।

[5653] संत पोथनिस की शहादत लगभग 177 ईस्वी में हुई थी।

साथ भी सबसे सक्रिय संबंध बनाए रखे, जैसा कि रोमन पुरोहित फ्लोरिनस और ब्लास्टस को लिखी उनकी पत्रिकाओं, और ईस्टर के उत्सव पर विवादों के दौरान रोम और एशिया माइनर के बिशपों को लिखी उनकी पत्रिकाओं से भी प्रमाणित होता है, जो पोप विक्टर प्रथम के अधीन उत्पन्न हुई थी[5654] । संत आइरेनियस ने हमेशा उन लोगों के बीच सुलह कराने का प्रयास किया जो मतभेद और असहमति में थे। उदाहरण के लिए, जब उपर्युक्त पोप विक्टर प्रथम ने अपनी अविवेकी ज़िद के कारण ईस्टर की तारीख को लेकर मतभेदों के कारण पूर्वी और पश्चिमी ईसाइयों के बीच फूट डालने की धमकी दी, तो संत आइरेनियस ने अपने प्रभाव से इस फूट को रोक दिया और असहमत लोगों को सुलह कराई।

संत आइरेनियस ने अपने समय की विधर्मी झूठी शिक्षाओं का खंडन करने में भी बहुत उत्साह दिखाया। उन्होंने कई ग्रंथ लिखे जिनमें उन्होंने विधर्मियों की गलतियों की निंदा की और ईसाई धर्म की सच्चाइयों का खुलासा किया। उनकी सभी रचनाओं में, सबसे उल्लेखनीय 'एगेंस्ट हेरेसीज़' (Against Heresies) शीर्षक वाली रचना है[5655] । संत आइरेनियस ने यह रचना अपने एक मित्र के अनुरोध पर लिखना शुरू किया, जिसका उद्देश्य वैलेंटाइनियों[5656] की विधर्म को खंडित करना था, जो उस समय न केवल रोम में बल्कि गॉल में भी अपनी झूठी शिक्षाओं को बड़े पैमाने पर फैला रहे थे। बाद में, वैलेन्टिनियन संप्रदाय की मिथ्याता और प्रकृति को प्रदर्शित करने की इच्छा से—जो केवल पूर्ववर्ती संप्रदायों की गलतियों को दोहराता था—संत आइरेनियस ने उन सबसे प्राचीन संप्रदायों का वर्णन किया जो पहले उत्पन्न हुए थे और जिन्होंने ईसाई धर्म के साथ संघर्ष किया था; और सच्ची ईसाई बुद्धिमानी से, आइरेनियस ने सभी विधर्मीयों की त्रुटियों का खंडन किया और एकमात्र उद्धार करने वाले सिद्धांत - ईसाई सिद्धांत - को प्रकट किया।

जिस मुख्य आधार पर संपूर्ण ईसाई धर्मशास्त्र टिका है, 'चर्च का स्तंभ और आधार'[5657] - सेंट आइरेनियस के शब्दों में - वे प्रभु के शिष्यों और प्रत्यक्षदर्शियों द्वारा लिखी गई चार नए नियम की सुसमाचार हैं। आइरेनियस का तर्क है कि ये सुसमाचार इस प्रकार हैं: मत्ती का सुसमाचार, जो हिब्रू में लिखा गया था; प्रेरित पतरस के शिष्य मरकुस का सुसमाचार; पवित्र प्रेरित पौलुस के साथी लूका का सुसमाचार; और यूहन्ना का सुसमाचार, जो प्रभु के प्रिय शिष्य थे, और उन्होंने इसे एशिया माइनर के एफेस में रहते हुए लिखा था। इस प्रकार, कलीसिया में केवल चार ही वास्तविक प्रेरितिक सुसमाचार हैं, जो विश्वसनीय और अचूक हैं; और संत आइरेनियस का तर्क है, 'कलीसिया में जितने सुसमाचार हैं, उससे अधिक या कम सुसमाचारों का होना असंभव है'[5658] । वे आगे कहते हैं, "(संप्रदायिक) वैलेन्टिनस के अनुयायी, निडर होकर अपनी ही रचनाएँ प्रस्तुत करते हैं और घमंड करते हैं कि उनके पास वास्तव में जितनी सुसमाचार हैं, उससे अधिक सुसमाचार हैं।" वे इतने आगे बढ़ गए हैं कि उन्होंने अपने हालिया कार्य का शीर्षक 'सत्य का सुसमाचार' (The Gospel of Truth) रखा है, भले ही यह प्रेरितों के सुसमाचारों से किसी भी रूप में मेल नहीं खाता। क्योंकि यदि वे जो सुसमाचार प्रस्तुत करते हैं, वह सत्य है, फिर भी वह उन सुसमाचारों से किसी भी प्रकार से मेल नहीं खाता जो हमें प्रेरितों द्वारा सौंपे गए हैं, तो कोई भी जो चाहे, जैसा कि पवित्रशास्त्र स्वयं दिखाते हैं, यह देख सकता है कि यह प्रेरितों द्वारा सौंपा गया सत्य का सुसमाचार नहीं है[5659] । – और संत आइरेनियस निम्नलिखित तरीके से यह साबित करते हैं कि वे सुसमाचार सत्य और विश्वसनीय हैं। चार सुसमाचार होने ही चाहिए, कम से कम इसलिए क्योंकि पृथ्वी के केवल चार कोने हैं; इसके अलावा, संत आइरेनियस के तर्क के अनुसार, सुसमाचारों की संख्या चार, ईश्वर द्वारा मानवता को दिए गए चार नियमों के अनुरूप होनी चाहिए – बाढ़ से पहले आदम के अधीन दिया गया नियम, बाढ़ के बाद नूह के अधीन दिया गया नियम, मूसा के अधीन दिया गया विधान और, अंत में, चौथा और अंतिम वाचा – ईसाई वाचा, जो सभी अन्य वाचाओं को समाहित करती है[5660] । अंत में, संत आइरेनियस चार सुसमाचारों की विशिष्ट संख्या—और अधिक या कम नहीं—के सबसे महत्वपूर्ण प्रमाण को सुसमाचारों के चार प्रलयकालीन प्राणियों—केरूबीबिम के साथ उनकी समानता में देखते हैं, जिन पर 'वह वचन जो सभी चीजों को स्थापित करता है और सभी चीजों को बनाए रखता है' अनंत काल से विराजमान है[5661] । इस प्रमाण की ताकत इस

[5654] विक्टर प्रथम ने 187 से 200 तक पोप का पद संभाला।

[5655] इस कृति का सटीक शीर्षक है: 'झूठे ज्ञान का उजागरण और खंडन'। यह कृति ग्रीक में लिखी गई थी, लेकिन मूल पाठ के केवल अंश ही पूर्वी चर्च के पितृलेखों में संरक्षित हैं। यह कृति पाँच पुस्तकों में विभाजित है और सबसे उल्लेखनीय विवादात्मक ग्रंथों में गिनती जाती है।

[5656] इन विधर्मी लोगों ने अपना नाम अपने मुख्य संस्थापक, वैलेन्टिनस, के नाम पर रखा।

[5657] 'heresies के विरुद्ध', पुस्तक III, अध्याय 11।

[5658] उपरोक्त, पुस्तक III, अध्याय 11।

[5659] उपरोक्त।

[5660] उपरोक्त।

[5661] उपरोक्त।

तथ्य में निहित है कि सुसमाचारों का उद्देश्य परमेश्वर के पुत्र की चार प्रकार की या चार तरीकों की गतिविधियों की अभिव्यक्ति के रूप में काम करना है, जिनका उल्लेख प्रकाशितवाक्य की पुस्तक[5662] चार जीवित प्राणियों - केरूबीबिम - के प्रतीक के तहत करती है। प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में वर्णित पहला जीवित प्राणी एक सिंह के समान है और वचन के परमेश्वर के अनादि प्रभुत्व और राजसी अधिकार की ओर संकेत करता है; यही बात यूहन्ना का सुसमाचार व्यक्त करता है, जो पिता से पुत्र के शाश्वत और महिमामय जन्म का वर्णन करता है, परमेश्वर से परमेश्वर के रूप में: *'आरम्भ में वचन था, और वचन परमेश्वर के साथ था, और वचन परमेश्वर था। वही आरम्भ में परमेश्वर के साथ था। उसके द्वारा सब कुछ उत्पन्न हुआ, और जो कुछ उत्पन्न हुआ है, उसमें से कुछ भी उसके बिना उत्पन्न नहीं हुआ'* (यूहन्ना 1:1-2)। दूसरा जानवर एक बछड़े के समान है और हमारे प्रभु यीशु मसीह की महा-पुजारी की सेवा का प्रतीक है; संत आइरेनियस के अनुसार, लूका का सुसमाचार भी इसी सेवा की ओर इशारा करता है; यह याजक जकरयाह के परमेश्वर को बलिदान चढ़ाने के वृत्तांत से शुरू होता है; यह इस बात का संकेत देता है कि मेमना, जो सनातन काल से ही संसार के पापों के लिए वध के लिए पूर्वनिर्धारित था, मानव जाति के पापों के लिए परमेश्वर को एक बलिदान चढ़ाने के लिए संसार में आया। तीसरी दानव, जिस पर वचन विराजमान था, उसका चेहरा मनुष्य का था और यह मानव रूप और समानता में परमेश्वर के पुत्र के प्रकट होने की ओर संकेत करता था; और मत्ती का सुसमाचार भी, मुख्य रूप से यीशु मसीह की मानवता की घोषणा करता है, और उन्हें यूसुफ और मरियम के पुत्र के रूप में प्रस्तुत करता है। – अंत में, चौथा प्राणी एक ऊँची उड़ान भरने वाले गरुड़ जैसा है और कलीसिया में पवित्र आत्मा की उपस्थिति की ओर संकेत करता है, जिसे परमेश्वर पिता ने पुत्र के प्रायश्चित के गुणों के कारण भेजा है; और, संत आइरेनियस के अनुसार, पवित्र आत्मा की उपस्थिति मरकुस के सुसमाचार द्वारा भी व्यक्त की जाती है, जो एक संक्षिप्त और, यों कहें, संक्षिप्त विवरण के रूप में लिखा गया है, क्योंकि भविष्यसूचक आत्मा का स्वभाव ही ऐसा है। संत आइरेनियस निष्कर्ष निकालते हैं, 'इस प्रकार, जैसा परमेश्वर के पुत्र का कार्य है, वैसा ही जीवित प्राणियों का स्वरूप है; और जैसा जीवित प्राणियों का स्वरूप है, वैसा ही सुसमाचार का चरित्र है। पशुओं के चार रूप हैं; सुसमाचार के चार रूप हैं; और प्रभु के कार्य के चार रूप हैं'[5663] । इस प्रकार, हमारे प्रभु यीशु मसीह के कार्य या सेवकाई के चार रूपों के साथ सुसमाचारों का पूर्ण मेल, उनकी वास्तविक प्रेरितिक उत्पत्ति, उनकी सच्चाई और प्रामाणिकता का निर्विवाद प्रमाण है; सच्ची के रूप में प्रस्तुत की गई अन्य सभी सुसमाचार प्रामाणिक नहीं हैं और अविश्वसनीय हैं, क्योंकि केवल चार प्रामाणिक सुसमाचार हो सकते हैं, न अधिक और न ही कम।

संत आइरेनियस ने विशेष रूप से उन विधर्मियों की निंदा की जिन्होंने ईश्वर के सार की एकता से इनकार किया। विधर्मी मार्सियन ने ईश्वर के भीतर दो विरोधी कार्यों का गलत तरीके से दावा किया, जो दो नियमों—पुराने और नए—में व्यक्त हुए; उसने दावा किया कि दो ईश्वर हैं—एक जो दंड देता है और सजा देता है, और दूसरा जो केवल दयालु है।

इस झूठी शिक्षा का खंडन करते हुए, संत आइरेनियस ने कहा कि इस तरह की धारणा ईश्वर की अवधारणा के ही अनुकूल नहीं है। संत आइरेनियस का तर्क है कि सच्चा ईश्वर न तो केवल दंड देने वाला और प्रतिशोध लेने वाला, प्रेम और अच्छाई के बिना हो सकता है, और न ही केवल अच्छा और दयालु, न्याय और निर्णय के बिना; क्योंकि प्रेम और न्याय दोनों अनिवार्य रूप से और आवश्यक रूप से ईश्वर के हैं। संत आइरेनियस का तर्क है कि ईश्वर का एक सबसे आवश्यक गुण बुद्धिमत्ता है। यदि ईश्वर बुद्धिमान है, तो उसमें निर्धारित करने और निर्णय लेने, और परिणामस्वरूप न्याय करने की क्षमता है; और यदि वह न्याय करता है, तो वह प्रत्येक व्यक्ति को उनके कर्मों के अनुसार पुरस्कृत करता है, अर्थात्, या तो दंडित करता है या पुरस्कृत करता है[5664] ।

मार्सियन ने पुराने और नए नियम के प्रबंधों—पुराने और नए नियमों—के बीच विरोध के अपने सिद्धांत को जिस मुख्य तर्क पर आधारित किया, उनमें से एक यह था कि पुराने नियम में ईश्वर के कार्य, मानो, नए नियम में ईश्वर के कार्यों के विपरीत थे; मार्सियन ने तर्क दिया, 'पुरानी वाचा में ईश्वर, मानो, केवल न्याय और निष्पक्षता के ईश्वर के रूप में प्रकट होते हैं, जबकि नई वाचा में ईश्वर, मानो, विशेष रूप से प्रेम और भलाई के ईश्वर के रूप में प्रकट होते हैं।'

अपने लेखन में, संत आइरेनियस ने मार्सियन की इस अधर्मी भूल का खंडन किया और इस विचार को प्रतिपादित किया कि पुराना और नया नियम दोनों मिलकर एक एकल, अविभाज्य संपूर्ण बनाते हैं। संत आइरेनियस के तर्क के अनुसार,

---

[5662] प्रकाशितवाक्य 4:1–11

[5663] 'विश्वासघातों के विरुद्ध', पुस्तक III, अध्याय 11.

[5664] 'Against Heresies', पुस्तक III, अध्याय 25.

पुराने नियम में ईश्वर को केवल न्याय का और नए नियम में केवल सर्व-व्यापी प्रेम का ही मान लेना, दोनों में से किसी भी वाचा की आत्मा और अर्थ को न जानना और न समझना है। पुरानी वाचा में ईश्वर कड़ी सज़ा देते हैं, लेकिन वह नई वाचा में और भी कड़ी सज़ा देंगे—और देते भी हैं। ईसाई धर्म यहूदी धर्म से अधिक परिपूर्ण है; नई वाचा पुरानी वाचा से अधिक व्यापक और अधिक पूर्ण है; इस आधार पर, ईसाई धर्म की माँगें यहूदी धर्म की माँगों से कहीं अधिक कठोर होनी चाहिए। यहूदी धर्म में, दैवीय कानून के पालन के लिए कम साधन प्रदान किए गए थे; ईसाई धर्म में, कहीं अधिक प्रदान किए गए हैं – ईसाई धर्म में, दैवीय कानून के पालन के लिए आवश्यक अनुग्रह के सभी उपहार और शक्तियाँ प्रदान की गई हैं; परिणामस्वरूप, ईसाई धर्म में इस कानून का कोई भी उल्लंघन या उसे पूरा करने में विफलता को यहूदी धर्म की तुलना में कहीं अधिक कठोर दंड दिया जाना चाहिए। – 'नए नियम में, – जैसा कि संत आइरेनियस तर्क देते हैं – जिस हद तक ईश्वर में हमारा विश्वास बढ़ा है (यानी, अधिक व्यापक हो गया है), उसी हद तक हमारे जीवन के तरीके के संबंध में मांगें भी बढ़ी हैं – हमें न केवल बुरे कर्मों से, बल्कि बुरे विचारों से, व्यर्थ की बातों से, तुच्छ शब्दों और खाली बकवास से भी परहेज़ करने की आज्ञा दी गई है; उतने ही हद तक, जो लोग वचन पर विश्वास नहीं करते और उसकी आने वाली आराधना का तिरस्कार करते हैं, उनके लिए दंड भी बढ़ गया है'[5665] । यहूदी धर्म में, सेंट आइरेनियस के तर्क के अनुसार, ईश्वर की सज़ाएँ 'मध्यम' और, एक तरह से, अस्थायी थीं, क्योंकि यह धर्म ईसाई धर्म से अधिक पूर्ण नहीं है; जबकि ईसाई धर्म में, चूँकि यह यहूदी धर्म से उच्च और अधिक पूर्ण है, ये सज़ाएँ कहीं अधिक कठोर हैं और अब केवल अस्थायी नहीं, बल्कि शाश्वत हैं[5666] ।

इस प्रकार, पुराने और नए नियम दोनों में, ईश्वर समान रूप से स्वयं को एक ऐसे स्वरूप के रूप में प्रकट करते हैं जो दंड देने वाला और प्रेम करने वाला दोनों है; और दोनों में, वे पुरस्कृत भी करते हैं और दंडित भी करते हैं, और दया भी दिखाते हैं और दंड भी देते हैं। और यह एक ही सच्चा, सर्वशक्तिमान और सर्व-परिपूर्ण ईश्वर है।

मार्सियोन और उसके जैसे अन्य विधिर्मियों का पर्दाफाश करते हुए, संत आइरेनियस ने अपनी रचनाओं में पुराने नियम के अर्थ और महत्व को विस्तार से बताया है।

संत आइरेनियस के अनुसार, पुराने नियम में दो पहलू शामिल हैं: एक बाहरी, अनुष्ठानिक पहलू, और एक आंतरिक, नैतिक और आध्यात्मिक पहलू। कानून का बाहरी पहलू केवल सापेक्ष और अस्थायी महत्व का था: वे अनुष्ठान संबंधी निर्देश और नियम जो पुराने नियम के व्यक्ति के पूरे जीवन को घेरे हुए थे, और जो उसे दासता के जुए के अधीन रखते थे, संत आइरेनियस के दृष्टिकोण में, केवल यहूदियों के संबंध में ही एक अस्थायी और सापेक्ष महत्व रखते थे, और दिव्य व्यवस्था के हाथों में, यहूदी लोगों के नैतिक और धार्मिक पालन-पोषण के लिए केवल एक आवश्यक साधन थे; यहूदियों को दासता के बोझ तले रखना था – जैसा कि संत आइरेनियस तर्क देते हैं, 'उनके हृदयों की कठोरता और विद्रोह की प्रवृत्ति के कारण', और 'मूर्तियों की ओर लौटने और अपने लिए सोने के बछड़े बनाने की उनकी निरंतर प्रवृत्ति के कारण'[5667] । हालाँकि, नए नियम के आगमन के साथ, मूसा की व्यवस्था के अनुष्ठानिक निर्देश पूरी तरह से अनावश्यक और तुच्छ साबित हुए, क्योंकि मनुष्य अब ईश्वर के साथ एक अलग संबंध—एक घनिष्ठ, पुत्रवत संबंध—में प्रवेश कर गया था, और वह विशिष्ट, विस्तृत बाहरी निर्देशों के बिना, स्वतंत्र रूप से और स्वतःस्फूर्त रूप से ईश्वर की आज्ञाओं का पालन करने में सक्षम हो गया था। संत आइरेनियस के तर्क के अनुसार, पुराने नियम में ईश्वर के साथ मनुष्य के संबंध में दासता की भावना और नए नियम में पुत्रत्व की भावना, एक-दूसरे का बिल्कुल भी खंडन नहीं करती हैं। दासत्व की भावना से स्वतंत्रता और पुत्रत्व की भावना में संक्रमण केवल एक सख्त क्रमिकता और निरंतरता, और ईश्वर की दिव्य व्यवस्था के इतिहास तथा मानव जाति के नैतिक और धार्मिक पालन-पोषण में परम बुद्धिमत्तापूर्ण उद्देश्यपूर्णता की ओर इशारा करता है। उसी ईश्वर ने प्राचीन मानवता को एक निश्चित तरीके से शिक्षित किया, और नई मानवता को पूरी तरह से अलग तरीके से शिक्षित कर रहे हैं। – 'ईश्वर सब कुछ माप और क्रम में करते हैं,' संत आइरेनियस तर्क देते हैं, 'और उनमें कुछ भी अमापनीय नहीं है, क्योंकि उनमें कुछ भी अव्यवस्थित नहीं है'[5668] .

दिव्य वाचा के हाथों में शिक्षा के एक आवश्यक साधन के रूप में, यह अनावश्यक और अनावश्यक साबित हुआ और इसलिए इसे समाप्त कर दिया गया – फिर भी, संत आइरेनियस के तर्क के अनुसार, मूसा के कानून का बाहरी पहलू,

---

[5665] 'विश्वास-भ्रष्टताओं के विरुद्ध', पुस्तक I, अध्याय 27; तुलना करें: पुस्तक III, अध्याय 25; पुस्तक IV, अध्याय 28 और 40।

[5666] 'Against Heresies', Book IV, Chapter 28.

[5667] *heresies के विरुद्ध*, पुस्तक IV, अध्याय 14 और 15।

[5668] उपरोक्त, पुस्तक IV, अध्याय 4।

एक ही समय में, मसीहा के भविष्य के समय के बारे में एक भविष्यवाणी था, और इसकी एक पूर्व-आकृति संबंधी महत्वता थी। इस दृष्टिकोण से भी, मूसा की संस्कारकि व्यवस्था का उन्मूलन फरि से स्वाभावकि और आवश्यक है, और यह कसिी भी तरह से पुराने और नए नयिम के बीच कोई वरिोधाभास साबति नहीं करता है। लेकनि जो बात वशिेष रूप से मार्सयिन के सद्धिांत के वरिुद्ध है, वह है उद्धारकर्ता का पुराने नयिम के कानून के आंतरकि, नैतकि पहलू के प्रतरिवैया; सेंट आइरेनयिस का तर्क है कि उद्धारकर्ता ने इस पहलू को समाप्त नहीं कयिा, बल्कि केवल 'इसे पूरा कयिा और वस्तिारति कयिा'[5669] । मूसा की व्यवस्था की मुख्य नैतकि आज्ञा ईश्वर से प्रेम और अपने पड़ोसी से प्रेम थी; उद्धारकर्ता इस आज्ञा को समाप्त नहीं करते हैं, बल्कि इसके वपिरीत, इसे नए नयिम की व्यवस्था की मौलकि आज्ञा के रूप में पुष्टि और स्पष्ट करते हैं। सुसमाचार और, वास्तव में, नए नयिम की समग्र नैतकि शकि्षा पुरानी वाचा की नैतकि शकि्षा से अधकि उच्च और अधकि परपिूर्ण है – फरि भी दोनों का मौलकि आधार एक ही है; अत; दोनों नैतकि शकि्षाओं का लेखक एक ही है।

इस प्रकार, संत आइरेनयिस के तर्क के अनुसार, पुराने और नए नयिम के बीच सबसे छोटा भी कोई वरिोधाभास नहीं है, और दोनों एक ही सच्चे और सर्वोच्च ईश्वर के कार्य हैं, जन्हिोंने मानव उद्धार के कार्य को शाश्वत से बनाई गई एक बुद्धमिानी योजना के अनुसार, सख्त प्रगतऔिर अनुक्रम में व्यवस्थति कयिा है; इसलिए यह स्वतःस्पष्ट है कि पुराने नयिम की रचनाएँ, जनिमें मानव जाति के उद्धार के लिए ईश्वर की इच्छा और योजना व्यक्त की गई है, उतनी ही दैवीय रूप से प्रेरति और उद्धारकारी हैं जतिनी कि नए नयिम की रचनाएँ, जनिमें उद्धार की पूर्तऔिर उसकी प्राप्तकिो दर्शाया गया है। 'ईश्वर की वही आत्मा, – जैसा कि संत आइरेनयिस तर्क देते हैं – 'जन्हिोंने, भविष्यवक्ताओं के माध्यम से, यह पूर्वानुमान लगाया कि प्रभु का आगमन कैसा होगा, और बुजुर्गों के माध्यम से[5670] ने स्पष्ट रूप से समझाया कि भविष्यवक्ताओं द्वारा क्या कहा गया था; उन्होंने प्रेरतिों के माध्यम से यह भी प्रचार कयिा कि पुत्रों के रूप में गोद लिए जाने का समय आ गया है और स्वर्ग का राज्य नकिट है'[5671] ।

संत आइरेनयिस की शकि्षा के अनुसार, ईश्वर शब्द के व्यापक अर्थ में सभी का प्रभु है। केवल वही सभी का शासक और प्रभु है, और उससे कोई अन्य शासक या प्रभु न तो उसके बराबर है और न ही उसके समान हो सकता है, क्योंकि, जैसा कि संत आइरेनयिस तर्क देते हैं, 'जसिके ऊपर कोई और या जो अपने बराबर का हो, उसे अब न तो ईश्वर और न ही एक महान राजा कहा जा सकता है'[5672] . केवल ईश्वर ही, सभी के प्रभु के रूप में, बनिा कसिी वभिाजन के सभी पर सर्वोच्च अधकिार और शक्तरिखते हैं; जो कुछ भी अस्तत्वि में है, वह सब उनके द्वारा बनाया गया है और उनकी शक्तसिे धारण कयिा जाता है।

संप्रदायियों का खंडन करते हुए, संत आइरेनयिस ने पवत्रि ईसाई वश्विास के स्रोतों पर भी चर्चा की। संक्षेप में, उनके तर्क इस प्रकार थे।

पवत्रि शास्त्र, जसिमें पुराना और नया नयिम दोनों शामलि हैं, नस्सिंदेह दव्यि उत्पत्तकिा है, क्योंकि यह पवत्रि आत्मा की वशिेष आध्यात्मकि प्रेरणा के तहत पवत्रि पुस्तकों के लेखकों द्वारा लखिा गया था। यह पवत्रि आत्मा भविष्यवक्ताओं और प्रेरतिों दोनों के माध्यम से कार्य करता था। पवत्रि शास्त्र आस्था और धार्मकि ज्ञान का पहला और सबसे प्रमुख स्रोत है – जो सत्य, अचूक और सभी पर बाध्यकारी है। शास्त्र की एक सही और त्रुटहिीन समझ केवल पवत्रि सार्वभौमकि चर्च के मार्गदर्शन में ही संभव है, और केवल उसी में ही सत्य पाया जा सकता है। पवत्रि परंपरा की उत्पत्तभिी शास्त्र के समान ही दैवीय है, – जो इसलिए वश्विास और धार्मकि ज्ञान का एक और स्रोत है, जो पवत्रि धर्मग्रंथ के समान ही सच्चा, अचूक और सभी पर बाध्यकारी है; सार्वभौमकि कलीसयिा, अपने प्रमुखों के व्यक्तत्वि में, ही प्रामाणकि प्रेरति परंपरा की एकमात्र संरक्षक हो सकती है। – 'जो कोई भी सत्य जानना चाहता है,' संत आइरेनयिस तर्क देते हैं, 'उसे चर्च की ओर मुड़ना चाहिए, क्योंकि प्रेरतिों ने दव्यि सत्य केवल उसी को संप्रेषति कयिा, और, एक धनी व्यक्तकिी तरह अपनी खजाना-गृह में, सत्य से संबंधति सब कुछ उसी के भीतर रख दयिा। 'केवल

[5669] उपरोक्त, पुस्तक IV, अध्याय 12 और 13।

[5670] अर्थात्, सत्तर व्याख्याकार।

[5671] *heresies के वरिुद्ध*, पुस्तक III, अध्याय 21.

[5672] उपरोक्त, पुस्तक II, अध्याय 30.

चर्च ही जीवन का द्वार है'[5673] । और, विशेष रूप से, संत आइरेनियस की शिक्षा के अनुसार, केवल चर्च के विधिवत नियुक्त पादरी ही चर्च में निहित सत्य के सच्चे शिक्षक और संरक्षक हैं।

संत आइरेनियस चर्च के इस महत्व को—जो प्रामाणिक प्रेरित परंपरा का एकमात्र अचूक संरक्षक और वाहक है—इसके भीतर पवित्र आत्मा की निरंतर उपस्थिति और इसके भीतर दिव्य उपहारों और शक्तियों के निरंतर कार्य करने पर आधारित करते हैं। संत आइरेनियस की शिक्षा के अनुसार, ईश्वर का आत्मा चर्च में इसकी नींव से ही मौजूद है। वह, मानो, कलीसिया का जीवन और आत्मा है; वह इसे ठीक उसी तरह से संचालित और नियंत्रित करता है जैसे आत्मा हमारे शरीर के अंगों को संचालित और नियंत्रित करती है। ईश्वर ने कलीसिया के भीतर सभी आवश्यक सेवाएँ – प्रेरितत्व, भविष्यवाणी और शिक्षण – स्थापित की हैं, जिनके द्वारा हमारा उद्धार संभव होता है।

चर्च में पवित्र आत्मा की निरंतर और तत्काल उपस्थिति के कारण, चर्च कभी भी पाप या भूल नहीं कर सकती। इसलिए, प्रेरितों द्वारा इसे मौखिक या लिखित रूप में सौंपा गया दैवीय सत्य, हमेशा एक और वही बना रहेगा, उतना ही शुद्ध और दैवीय सत्य जितना यह प्रेरितों के समय में था - क्योंकि वही पवित्र आत्मा जिसने प्रेरितों में कार्य किया था, अब कलीसिया में उनके उत्तराधिकारियों के व्यक्तित्व में कार्य कर रहा है। संत आइरेनियस का तर्क है कि प्रेरितिक पद की उत्तराधिकार प्रणाली चर्च में हर जगह और बिना किसी रुकावट के संरक्षित है, और इसके साथ ही प्रेरितिक परंपरा भी अपने शुद्ध और अछूते रूप में संरक्षित है। – 'सामान्य रूप से,' संत आइरेनियस टिप्पणी करते हैं, 'चर्च, यद्यपि पूरी दुनिया में बिखरा हुआ है, फिर भी, उसमें ईश्वर के एक ही पवित्र आत्मा की उपस्थिति के कारण और उसमें एक ही प्रेरितीय पद की निरंतरता के कारण, हर जगह एक ही शिक्षा को संरक्षित रखता है। वह एक ही प्रकार से विश्वास करती है, मानो एक ही आत्मा और एक ही हृदय रखती हो; वह एक ही प्रकार से प्रचार करती है, सिखाती है और संप्रेषित करती है, मानो एक ही मुख रखती हो। चर्च जर्मनी, स्पेन, गॉल, पूर्व, मिस्र और लीबिया में एक ही तरीके से विश्वास करती है और एक ही परंपरा का पालन करती है। जैसे कि संपूर्ण विश्व में सूर्य एक ही है, वैसे ही सत्य का प्रचार भी संपूर्ण चर्च में सभी को एक ही तरीके से प्रकाशित और प्रबुद्ध करता है[5674] ।

इस प्रकार सभी को सिखाकर और निर्देश देकर, संत आइरेनियस ने कई लोगों को मूर्तिपूजा और विधर्मी भ्रांतियों से बचाया; उन्होंने कई ईसाइयों को मोक्ष के मार्ग पर मार्गदर्शन दिया, जबकि अन्य को शहीद होने के संघर्ष के लिए मजबूत किया। अंत में, उन्होंने स्वयं सम्राट सेवरस के शासनकाल में मसीह के नाम के लिए कष्ट सहे[5675] । सुसमाचार की उनकी स्वीकारोक्ति के लिए, संत आइरेनियस का सिर कलम कर दिया गया और इस प्रकार उन्होंने हमारे प्रभु यीशु मसीह के राज्य में शहादत का गौरवमय मुकुट प्राप्त किया[5676] ।

कॉन्स्टेंटिनोपल के पैट्रिआर्क संत कैलिनिकिस की स्मृति

23 अगस्त को स्मरण किया जाता है

संत कैलिनिकिस मूल रूप से ब्लाचेर्ना में परमेश्वर की परम पवित्र माता के चर्च के एक पुरोहित और संरक्षक थे[5677] । जब पैट्रिआर्क पॉल प्रभु के पास चले गए, तो संत कैलिनिकिस को पैट्रिआर्क के सिंहासन पर पदोन्नत किया

[5673] उपरोक्त, पुस्तक III, अध्याय 4.

[5674] उपरोक्त, पुस्तक I, अध्याय 10.

[5675] सम्राट सेवरस ने 193 से 211 तक शासन किया – पवित्र शहीद आइरेनियस की मृत्यु 202 में हुई।

[5676] *विश्वास-भ्रष्टताओं के विरुद्ध* (*झूठे ज्ञान का पर्दाफाश और खंडन*) के अतिरिक्त, संत आइरेनियस कई अन्य कृतियों के लेखक हैं, यद्यपि ये हमें केवल छोटे-छोटे अंशों में ही प्राप्त हुई हैं। इनमें शामिल हैं: 'रोम के बिशप विक्टर को पत्र' (ईस्टर के उत्सव की तारीख के बारे में), 'एकल सिद्धांत पर, या यह कि ईश्वर बुराई के रचयिता नहीं हैं', 'आठ युगों पर' (यानी युग; यह जीवन के स्रोतों के रूप में युगों के ग्नोस्टिक सिद्धांत का खंडन है)। संत आइरेनियस के नाम से जुड़ी लगभग 50 और छोटी रचनाएँ एकत्र की गई हैं, लेकिन उनकी प्रामाणिकता अभी तक स्थापित नहीं हो सकी है।

[5677] ब्लाचेर्ना कॉन्स्टेंटिनोपल का एक जिला है, जो शहर के पश्चिमी कोने में स्थित है; यह अपनी पवित्र स्थलों के लिए प्रसिद्ध था। यहीं पर hagiography में उल्लेखित चर्च स्थित था, जिसे सम्राट लियो द ग्रेट (457–474) ने परमेश्वर की परम पवित्र माता के सम्मान में बनवाया था, जिनके शासनकाल में पवित्र भूमि से लाई गई अति पवित्र कुँवारी मरियम की पवित्र पोशाक को इसी चर्च में रखा गया था; इस घटना की स्मृति को पवित्र चर्च 2 जुलाई को मनाता है (इस तारीख के अंतर्गत उक्त घटना का वृत्तांत भी पढ़ा जा सकता है)। – बाद में, यह चर्च आग से नष्ट हो गई; अब इसके केवल छोटे अवशेष ही दिखाई देते हैं।

गया। यह जस्टनियिन II[5678] के शासनकाल के दौरान हुआ - एक दुष्ट और अधर्मी राजा जसिने बहुत से (ईसाइयों) को सताया, पुरोहति वर्ग का कोई सम्मान नहीं कयिा और परमेश्वर के चर्चों का सम्मान नहीं कयिा।

यह सम्राट अपने लएि एक बड़ा और भव्य महल बना रहा था, जसिे वह अपने नाम पर रखना चाहता था। उस महल के पास परम पवत्रि माता ईश्वर की समर्पति एक चर्च थी; इस चर्च को मेट्रोपॉलटिन चर्च के नाम से जाना जाता था। चूँकि सम्राट जस्टनियिन के आदेश पर बन रहे महल की एक दीवार को उपरोक्त चर्च के पास से होकर गुजरना था, इसलएि सम्राट ने इसे ध्वस्त करने का नश्चिय कयिा, ताकि चर्च महल के नर्मिाण में बाधा न बने, खासकर क्योंकि महल के प्रवेश द्वार के सामने सीढ़यिाँ और बरामदा ठीक उसी स्थान पर बनाए जाने थे। सम्राट ने पैट्रआर्क से उक्त चर्च के ध्वंस के लएि एक आशीर्वाद प्रार्थना करने का आदेश दयिा। लेकनि पैट्रआर्क ने सम्राट का वरिोध करते हुए कहा:

'मेरे पास चर्च के वनिाश के लएि कोई प्रार्थना नहीं है; इसके वपिरीत, मेरे पास चर्च की नींव और नर्मिाण के लएि प्रार्थनाएँ हैं, क्योंकि ईश्वर ने दुनयिा को अस्तत्वि में रहने के लएि बनाया है, न कि नष्ट होने के लएि।'

तब राजा के दूतों ने पादरी पर ज़ोर डालना शुरू कर दयिा और यहाँ तक कि उन्हें सम्राट की आज्ञा का पालन करने के लएि मजबूर करने लगे। लेकनि उन्होंने, आँखों में आँसू लएि, उद्घोष कयिा:

'महमिा तेरी, हे मसीह, जो सर्वस्व सहन करता है!'

और तुरंत ही चर्च ढह गया।

थोड़ी ही देर बाद, ईश्वर के धर्मी न्याय से, राजा पर स्वयं वनिाश आ पड़ा: क्योंकि उसे अपमानपूर्वक अपने राज्य से नर्विासति कर दयिा गया, और जसि महल का उसने नर्मिाण कयिा था, वह दूसरों का नविास-स्थान बन गया। यह सब इस प्रकार घटति हुआ।

जब सम्राट को पता चला कि कॉन्स्टेंटनिोपल के नविासी उससे नाराज़ थे—क्योंकि वे उसके बार-बार अत्याचारों और उसके कानूनहीन जीवन-शैली के कारण उससे नापसंद थे—और उसने सुना कि शहर में हर कोई उसकी बुराई कर रहा था, तो वह पूरे शहर के प्रति क्रोध और रोष से भर गया; तब उसने कुलीन नागरकि ई[5679] और गवर्नर स्टीफन—जो फारसी मूल का एक क्रूर व्यक्ति था और नर्दियता से मानव रक्त बहाता था—को आदेश दयिा कि वे कसिी को भी पता न चले, चुपचाप एक सशस्त्र बल इकट्ठा करें और उसी रात सबसे कुलीन नागरकिों पर आश्चर्यजनक हमला कर उन्हें नर्दियता से मार डालें।

उस समय, पूर्व में सेवा कर चुके वोयोवोड लयिोन्टयिस, कॉन्स्टेंटनिोपल में रह रहे थे। इस वोयोवोड ने कई मौकों पर युद्ध में महान वीरता दखिाई थी और कई दुश्मन रेजमिेंटों को हराया था; फरि भी, सम्मान और प्रशंसा के बजाय, उन्हें सम्राट द्वारा तीन साल के लएि कैद कर दयिा गया था। उस समय, उन्हें अभी-अभी अपनी कैद से रहिा कयिा गया था।

सम्राट की क्रूर और अन्यायपूर्ण योजना और आदेश के बारे में जानने पर, लयिोन्टयिस ने चुपचाप अपने कुछ वफादार दोस्तों को सब कुछ बता दयिा। उन्होंने उसी तरह की जानकारी अपने अन्य दोस्तों तक पहुँचाई, और इस प्रकार देर शाम तक उनमें से काफी संख्या में लोग इकट्ठा हो गए थे। उस रात शुरू होने वाले नागरकिों के अन्यायपूर्ण कत्लेआम को रोकने के लएि, उन्होंने सभी ने हथयिार उठा लएि और शाही महल के लएि रवाना हो गए। राजा को सोया हुआ देखकर, सैनकिों ने उसे पकड़ लयिा और बाँध दयिा। तुरंत, लयिोन्टयिस ने सभी कालकोठरयिों के दरवाज़े खोल दएि, सभी कैदयिों को रहिा कर दयिा, उन्हें हथयिार दे दएि, और उन्हें पूरे शहर में भेज दयिा। वे शहर में घूमते हुए चल्लिा रहे थे:

'ईसाइयों! सेंट सोफयिा के चर्च में इकट्ठा हो जाओ, क्योंकि सम्राट जस्टनियिन पराजति और बंधति हो गए हैं।'

यह सुनकर, सभी लोग बड़ी खुशी से चर्च के लएि नकिल पड़े, यह कहते हुए:

– *'यह वह दनि है जसिे प्रभु ने बनाया है; आओ हम इसमें आनंद मनाएँ और खुश हों!'* (भजन संहति 117:24)

जब वह दनि आया, तो लयिोन्टयिस ने बंधे हुए सम्राट को उस स्थान पर ले जाया जहाँ आम तौर पर घुड़दौड़ होती थी[5680] ; वहाँ इकट्ठा हुए सभी लोगों की मौजूदगी में, उसने सम्राट की नाक काट दी और उसे कैद के लएि चेरसोनेसोस[5681]

[5678] सम्राट जस्टनियिन द्वतिीय ने 685 से 695 तक; फरि 705 से 711 तक शासन कयिा।

[5679] प्राचीन काल में, 'पैट्रशियिंस' शब्द कुलीन जन्म के लोगों को संदर्भति करता था; उन्हें आमतौर पर सबसे महत्वपूर्ण राज्य पदों का प्रभार सौंपा जाता था।

[5680] घोड़ों की दौड़।

[5681] चेर्सोनेसस या चेर्सन (पुराना रूसी: कुर्सुन) – वर्तमान क्रीमयिा प्रायद्वीप का प्राचीन नाम।

भेज दिया; उस समय से, जस्टिनियन को 'नाक-रहित'[5682] के नाम से जाना जाने लगा। कॉन्स्टेंटिनोपल के निवासियों ने तुरंत लियोन्टियस को सम्राट घोषित कर दिया; उन्हें परम पावन पैट्रिआर्क कैलिनिकिस ने राज्याभिषिक्त किया।

लियोन्टियस ने तीन वर्षों तक शासन किया; फिर उन्हें सेनापति एप्सिमर ने सिंहासन से हटा दिया, जिसे सैनिकों ने सम्राट चुना और टायबेरियस तृतीय का नाम दिया[5683] । एप्सिमर ने लियोन्टियस को पकड़कर एक डलमाटियाई मठ में निर्वासित कर दिया; एप्सिमर ने सात वर्षों तक शासन किया।

इस समय, जस्टिनियन कोर्कोनोस चेरसोनेस में बंदी से भाग निकला और पहले खज़ारों के पास, और फिर बुल्गारियाई लोगों के पास पहुँचा; बुल्गारियाई लोगों से एक बड़ी सैन्य टुकड़ी इकट्ठा करने के बाद, जस्टिनियन कॉन्स्टेंटिनोपल के लिए रवाना हुआ और गोल्डन गेट[5684] पर रुका। उसकी सेना इतनी बड़ी थी कि वह ब्लाचेर्ना तक फैली हुई थी। जस्टिनियन वहाँ तीन दिन तक रुके और उन्होंने कॉन्स्टेंटिनोपल के निवासियों से उन्हें अपना सम्राट स्वीकार करने का आग्रह किया; लेकिन कॉन्स्टेंटिनोपल के निवासियों ने ताने और अपमान के साथ जवाब दिया।

इस बीच, अप्सिमिर, जस्टिनियन के विशाल सेना के साथ आगमन से डरकर, अपोलोनिया[5685] भाग गया। तब जस्टिनियन ने महामहिम पैट्रिआर्क कैलिनिकिस और संपूर्ण सिनिक्लाइट[5686] को दूत भेजे, उनसे खुद को स्वीकार करने की विनती करते हुए और किसी को भी नुकसान न पहुँचाने का गंभीर वादा करते हुए।

विचार-विमर्श के बाद, पैट्रिआर्क और सिक्लाइट ने प्रस्ताव रखा कि जस्टिनियन प्रभु के पवित्र क्रॉस, पवित्र सुसमाचार और मसीह के शरीर और रक्त के परम पवित्र रहस्यों को चूमे, ताकि इस चुम्बन के कार्य से वह अपनी कसम की पुष्टि कर सके – अर्थात्, कि वह अपने पिछले निर्वासन के लिए किसी से भी बदला नहीं लेगा। इस प्रकार जस्टिनियन ने अपनी कसम की पुष्टि की।

तब कॉन्स्टेंटिनोपल के निवासियों ने उसके लिए शहर के द्वार खोल दिए और उसे सम्मान के साथ स्वीकार किया। हालाँकि, सम्राट, अपने सैनिकों के साथ शहर में प्रवेश करने और राज्य पर कब्ज़ा करने के बाद, तुरंत अपने वचन को तोड़ गया, उस नीच ने, और उसने सिक्लाइट के कई सदस्यों के साथ-साथ अन्य प्रतिष्ठित नागरिकों को भी मौत के घाट उतारना शुरू कर दिया। फिर उसने आदेश दिया कि लियोन्टियस, जिसने उसे निर्वासित किया था, को डल्मेशिया के मठ से लाया जाए; इसी प्रकार, उसके सैनिकों ने अपोलोनिया में एप्सिमर को पकड़ लिया और उसे उसके सामने पेश किया; उसने दोनों पुरुषों को बंधकर अपमानपूर्वक शहर में घुमाने का आदेश दिया। फिर उसने उन्हें घुड़दौड़ के अखाड़े में अपने सामने लाने का आदेश दिया; जब उन्हें लाया गया और उसके पैरों तले फेंका गया, तो उसने उनके गलों पर पैर पटक कर उनके सिरों को रौंद डाला, जबकि उसके सैनिक ज़ोर से चिल्ला रहे थे:

'*तू साँप और बेसिलिस्क पर पाँव रखेगा; तू सिंह और अजगर को रौंदेगा*' (भजन संहिता 90:13)।

उन्हें उपहास और अपमानित करने के बाद, जस्टिनियन ने उनका सिर कलम करने का आदेश दिया।

लेकिन इतना ही नहीं था: जस्टिनियन ने पूरे शहर को खून से भर दिया, यहाँ तक कि लोगों को भी नहीं बख्शा। फिर, सर्वपवित्र पैट्रिआर्क कैलिनिकिस को पकड़कर, उसने उनकी आँखें निकाल दीं, उनकी नाक और जीभ काट दी, और उन्हें रोम में निर्वासन में भेज दिया, यह आदेश देते हुए कि वहाँ उन्हें एक पत्थर की दीवार में बंद कर दिया जाए।

सम्राट की आज्ञा का पालन किया गया, और संत कैलिनिकिस को दीवार में बंद कर दिया गया। लेकिन चालीस दिनों के बाद, दीवार ढह गई, और संत कैलिनिकिस जीवित पाए गए, हालांकि वे मुश्किल से सांस ले रहे थे। चार दिन बाद, संत प्रभु के पास चले गए[5687] ।

उस समय, पवित्र प्रमुख प्रेरित पतरस और पौलुस रोम के पोप जॉन VI[5688] को एक सपने में प्रकट हुए और उन्हें आज्ञा दी कि वे संत पैट्रिआर्क कैलिनिकिस के शरीर को सम्मान के साथ उनके प्रेरितों के चर्च में दफनाएं। पोप ने पवित्र प्रेरितों की आज्ञा का पालन किया।

[5682] ग्रीक से अनुवादित, इसका अर्थ है 'काटकर नाक वाला'।

[5683] सम्राट टिबेरियस तृतीय अप्सिमिर ने 698 से 705 तक शासन किया।

[5684] कॉन्स्टेंटिनोपल में एक जिला।

[5685] कई प्राचीन यूनानी शहर अपोलोनिया नाम से जाने जाते हैं। इस मामले में, यह संभवतःइलिरिया में स्थित अपोलोनिया को संदर्भित करता है।

[5686] सिक्लाइट सबसे बुज़ुर्ग और सबसे सम्मानित नागरिकों (और उच्चतम धार्मिक प्राधिकरण के प्रतिनिधियों) से मिलकर बनी एक परिषद थी।

[5687] संत कैलिनिकिस का 705 में निधन हो गया।

[5688] जॉन छठे ने 701 से 705 तक पोप का पद संभाला।

जहाँ तक शपथ-भंग करने वाले और अत्याचारी, सम्राट जस्टनियिन कोरकोनोस का सवाल है, वह ईश्वर के न्याय से नहीं बच सका। उसके अमानवीय अत्याचार को सहन न कर पाने के कारण, नागरकिों और सैन्य कमांडरों ने उसके खलिाफ साजशि रची और, एक अनुकूल क्षण का लाभ उठाकर, उस पर हमला कयिा और उसका सरि कलम कर दयिा।

इस प्रकार उस दुष्ट व्यक्ति का क्रूर अंत हुआ; जबकि संत कैलनिकिस, जो मसीह के एक संत थे, को हमारे प्रभु यीशु मसीह के राज्य में शहीद का मुकुट प्रदान कयिा गया।

पवत्रि शहीद लूपस की स्मृति

23 अगस्त को स्मरण कयिा जाता है

पवत्रि शहीद लुपस सम्राट ऑरेलयिन[5689] के शासनकाल में रहते थे और एक मालकि के दास थे, फरि भी प्रभु मसीह में स्वतंत्र थे (देखें 1 कुरनि्थयिों 7:22), जसि पर उन्होंने अपना वशि्वास रखा था; धार्मकि उत्साह से भरकर, संत लूप ने नरि्जीव यूनानी मूर्तयिों को तोड़ डाला और अन्य मूर्तयिों को समुद्र की गहराइयों में फेंक दयिा। यह देखकर, क्रोध से भरे दुष्ट मूर्तपिूजकों ने खींची हुई तलवारों के साथ संत पर झपट पड़े, उनका सरि कलम करने का इरादा था, लेकनि वे पागल हो गए और एक-दूसरे को मारने लगे; जबकि संत, मूर्तपिूजकों के बीच अक्षुण्ण रहते हुए, वशि्वास, ज्ञान और परमेश्वर की कृपा से परपिूर्ण होकर, उन पर परमेश्वर का वचन प्रचार करते रहे। उनके सभी प्रयासों के बावजूद, दुष्ट संत को पकड़ नहीं सके, क्योंकि उन्हें मसीह की शक्ति द्वारा इसमें बाधा पहुँचाई गई, जसिने उन्हें मसीह के शहीद के पास आने भी नहीं दयिा; इसलिए, दुष्ट लोग, दूर खड़े होकर, अपने धनुष तानकर संत पर तीर चलाने लगे, लेकनि शहीद को मारने के बजाय, वे अपने ही तीरों से एक-दूसरे को घायल करने लगे; संत लुप, उन सभी के बीच एक नशिाने के रूप में खड़े थे, न केवल कसिी तीर से मारे गए, बल्कि घायल भी नहीं हुए। और चूँकि मसीह के शहीद का अभी तक बपतस्मिा नहीं हुआ था और वह पवत्रि बपतस्मिा का बहुत इच्छुक था, कहीं ऐसा न हो कि वह अपने अत्याचारयिों के हाथों एक गैर-ईसाई के रूप में मर जाए, इसलिए उसने इसके लिए प्रभु से प्रार्थना की; और तुरंत स्वर्ग से उस पर पानी बरसने लगा। इस प्रकार मसीह के पवत्रि शहीद ने सभी यूनानयिों की उपस्थति में, जो उन्हें देख रहे थे और जो कुछ हो रहा था उस पर अत्यंत आश्चर्यचकति थे, स्वर्ग से दव्यि बपतस्मिा प्राप्त कयिा।

इसके बाद, संत लुपस ने स्वयं को एक नरि्दोष मेमने की तरह दुष्टों के हाथों बलदिान होने के लिए स्वेच्छा से सौंप दयिा; और उन्होंने संत को पकड़कर राज्यपाल के सामने ले गए। राज्यपाल ने पहले मसीह के सेवक को चापलूसी से अपने प्रभु का परत्यिाग करने और मूर्तयिों की पूजा करने के लिए मनाने की कोशशि की; हालाँकि, वह संत को लुभाने में असमर्थ रहा; जसि पर राज्यपाल ने संत को डंडों से नरि्दयता से पटिवाने का आदेश दयिा; इसके बाद, राज्यपाल ने संत को अन्य यातनाएँ दीं, लेकनि चूँकि वह मसीह के अजेय सेवक पर वजिय प्राप्त नहीं कर सका, उसने उसे तलवार से सरि कलम करने की सज़ा सुना दी।

इस प्रकार, पवत्रि शहीद लुप ने तलवार के आगे अपना सरि झुकाकर, अपने प्रभु मसीह के लिए अपनी आत्मा अर्पति कर दी[5690] , और वशि्वासयिों द्वारा उचति सम्मान के साथ उनका दफन कयिा गया; और उनके ताबूत से, उनकी पवत्रि प्रार्थनाओं और हमारे प्रभु यीशु मसीह की कृपा से, सभी प्रकार के रोगों और बीमारयिों का चंगा होना शुरू हो गया।

आदरणीय यूटकियिस और फ्लोरेन्टयिस की स्मृति

23 अगस्त को स्मरणोत्सव

नर्सयिा के क्षेत्र में, पवत्रि मठवासी जीवन शैली में, दो पुरुष एक साथ रहते थे जो नरि्जन स्थान में तपस्वी का जीवन यापन करते थे; एक का नाम यूटकियिस और दूसरे का फ्लोरेंटयिस था। यूटाइकयिस, जो आध्यात्मकि उत्साह से प्रेरति था, ने न केवल अपनी मुक्ति की परवाह की बल्कि दूसरों की मुक्ति की भी, और अपनी आत्मा-रक्षक शकि्षाओं

[5689] सम्राट ऑरेलयिन ने 270 से 275 तक शासन कयिा।

[5690] शहीद संत लुपस की मृत्यु लगभग 275 में हुई।

और नर्दिेशों के माध्यम से सभी को प्रभु की ओर ले जाने के लिए हर संभव प्रयास कयिा; फ्लोरेंटयिस, हालांकि, अपनी सादगी में, केवल अपने बारे में सोचता था, और अपना पूरा जीवन प्रार्थना में बतिाता था।

इन संतों यूटकियिस और फ्लोरेन्टयिस के रहने की जगह से ज्यादा दूर नहीं एक मठ था; संयोग से उस मठ में अब्बा[5691] का नधिन हो गया था; भक्षिुओं ने इकट्ठा होकर यूटकियिस के पास गए और उनसे नविेदन करने लगे कि वे मठ के मठाध्यक्ष बनें। उनकी प्रार्थना मानते हुए, यूटकियिस उनके पास गए और मठ का नेतृत्व संभाल लयिा, जबकि अपने मत्रि फ्लोरेन्टयिस को उस तपस्थल में अकेले तपस्या करने के लिए छोड़ दयिा, ताकि वहाँ की चर्च (जो बहुत छोटी थी) खाली न रह जाए।

अकेले रहकर, फ्लोरेन्टयिस ने परमेश्वर से भक्तपिूर्वक प्रार्थना करना शुरू कर दयिा, उनसे यह नविेदन करते हुए कि वह उस एकांत स्थान में अकेले ही अपने तपस्वी जीवन का नर्बिाध रूप से पालन कर सके।

थोड़ी ही देर बाद, अपनी नयिमति प्रार्थनाएँ करने और चर्च से नकिलने के बाद, फ्लोरेन्टयिस ने चर्च के दरवाजे पर एक भालू को खड़ा देखा, जसिका सरि जमीन की ओर झुका हुआ था, और उसमें उसके पशु-स्वभाव का कोई संकेत नहीं था; इसके वपिरीत, अपनी कोमलता के कारण, यह स्पष्ट था कि उसे परमेश्वर द्वारा संत फ्लोरेन्टयिस के पास सेवा और श्रम के लिए भेजा गया था। यह समझते हुए, ईश्वर के पवत्रि सेवक, फ्लोरेंटयिस ने ईश्वर का धन्यवाद कयिा कि उन्होंने उन्हें ऐसा साथी भेजा। फ्लोरेंटयिस के सेल के पास पाँच भेड़ें थीं; यह न जानते हुए कि उनकी देखभाल और रक्षा कौन करेगा, फ्लोरेंटयिस ने भालू को आज्ञा देते हुए कहा:

'जाओ, इन भेड़ों को चरागाह में ले जाओ और उनकी देखभाल करो; और छठे घंटे के आसपास उनके साथ वापस आओ।'

और वह जानवर हमेशा ऐसा ही करता था, उस पर सौंपी गई भेड़ों की देखभाल स्वयं करता था; इस प्रकार, जो हमेशा अपने शकिार को फाड़-फाड़ कर खाने का आदी था, वह अब भूख सहते हुए और अपनी स्वाभावकि प्रवृत्ति पर काबू पाते हुए भेड़ों की रखवाली करता था।

जब परमेश्वर के पुरुष नौवें घंटे तक उपवास करना चाहते थे, तो वे भालू को नौवें घंटे तक भेड़ों के साथ लौटने का नर्दिेश देते थे; और वह जानवर ऐसा ही करता था। हालाँकि, जब उनका इरादा नौवें घंटे तक उपवास करने का नहीं होता था, बल्कि छठे घंटे पर खाने की इच्छा व्यक्त करते थे, तो भालू उसी घंटे लौट आता था; संक्षेप में, वह जानवर ईश्वर के मनुष्य की हर आज्ञा का पालन करता था और कभी चूकता नहीं था – जब उसे छठे घंटे आने की आज्ञा दी गई थी तो वह नौवें घंटे कभी नहीं आता था, और इसके वपिरीत, जब उसे नौवें घंटे आने की आज्ञा दी गई थी तो वह छठे घंटे कभी नहीं आता था। क्योंकि स्वयं परमेश्वर ने उस जानवर को ज्ञान दयिा था, जसिे उन्होंने अपने संत के अधकिार में रखा था, और उसे वृद्ध की आज्ञा समझने तथा उनकी इच्छा पूरी करने की शक्षिा दी थी।

जब उस दानव ने बहुत समय तक उस वृद्ध की सेवा की, तो उस देश में परमेश्वर के पुरुष, फ्लोरेन्टयिस, के वषिय में अफवाहें फैलने लगीं, क्योंकि हर कोई उस अद्भुत कार्य को देखकर चकति था, यह देखते हुए कि वह दानव भेड़ों की देखभाल करता था और वृद्ध की सेवा करता था।

इस बीच, प्राचीन शत्रु, शैतान ने कुछ लोगों में ईर्ष्या जगाई; क्योंकि जब शैतान धर्मात्मा लोगों को उनकी महमिा में चमकते हुए देखता है, तो वह उन पर ईर्ष्या से भ्रष्ट चरत्रि और जीवन शैली वाले लोगों पर काबू पा लेता है, और उन्हें वनिाश की ओर ले जाता है। और इस प्रकार, शैतान के उकसावे पर, चार भक्षिु—संत यूटकियिस के शष्यि—फ्लोरेन्टयिस से बहुत ईर्ष्या करने लगे, क्योंकि उनके गुरु कोई चमत्कार नहीं करते थे; जबकि, जैसा कि ईर्ष्यालुओं ने तर्क दयिा, अकेले फ्लोरेन्टयिस, जसिे उनके गुरु ने एक सुनसान कोठरी में छोड़ दयिा था, इतना प्रसद्धि हो गया था। ऐसे वचिारों को पालते हुए, वे चारों शष्यि फ्लोरेन्टयिस के पास गए और उस स्थान पर घात लगाकर बैठ गए जहाँ भालू भेड़ों को चराने के लिए बाहर ले जाता था, और उन्होंने भालू को मार डाला। चूंकि भालू उस समय तक वृद्ध के पास वापस नहीं आया था जब तक उसे लौटने के लिए कहा गया था, वृद्ध हैरान थे; शाम तक इंतजार करने के बाद, लेकनि न तो जानवर और न ही भेड़ें देखने पर, वृद्ध इस बात पर दुखी होने लगे कि भालू, जसिे वे अपनी सादगी में अपना भाई कहा करते थे, उनके पास वापस नहीं आया था।

[5691] अब्बा – मठ का प्रमुख, मठाधीश।

अगली सुबह, फ्लोरेंटाइन भालू और भेड़ों की तलाश में खेतों में निकल पड़ा; भालू को मृत पड़ा देख, बूढ़ा बहुत दुखी हुआ। घटनास्थल का ध्यान से निरीक्षण करने और यह समझ जाने के बाद कि भालू को किसने मारा है, बूढ़ा आदमी रोने लगा; हालाँकि, वह भालू की मौत के लिए उतना नहीं रोया जितना उन चार भाइयों की विनाशकारी दुर्भावना के लिए, और वह बहुत फूट-फूट कर रोया।

जब आबा यूटकियिस को फ्लोरेंटियिस के दुख और शोक का पता चला, तो उन्होंने उसे अपने पास बुलाया और उसे सांत्वना देने लगे। आबा की उपस्थिति में, ईश्वर के उस पुरुष ने अत्यंत दुखी मुखमंडल के साथ कहा:

'मैं सर्वशक्तिमान ईश्वर में अपनी आशा रखता हूँ कि जिन्होंने उस भालू को मारा, जिसने किसी को कोई हानि नहीं पहुँचाई थी, उन्हें प्रभु से इसी जीवन में, सभी के सामने, दंड मिलेगा।'

ईश्वर के उस पुरुष के ये शब्द कहते ही, वही बात घटित हुई जिसका उसने उल्लेख किया था; क्योंकि अचानक उन चारों भिक्षुओं को प्रभु ने एक भयानक कोढ़ से ग्रस्त कर दिया, जिससे उनके सभी अंग सड़ गए, और वे उस रोग से मर गए।

यह सब होने के बाद, परमेश्वर के पुरुष, फ्लोरेन्टियिस, को यह भय सताने लगा कि उसने उन भाइयों को शाप दे दिया था, और अपने जीवन के शेष दिनों तक वह उनके लिए रोना बंद नहीं किया, और स्वयं को उनका निर्दयी हत्यारा कहता रहा।

यह सब सर्वशक्तिमान ईश्वर द्वारा इसलिए किया गया था ताकि यह साधारण और सदाचारी व्यक्ति, अन्याय सहने के बाद, फिर कभी अपने होठों से किसी को शाप न दे।

इस धर्मपरायण व्यक्ति ने एक और अद्भुत कार्य किया। जब उनके बारे में खबरें दूर-दूर तक फैल गईं, तो एक डीकन उनकी प्रार्थना और आशीर्वाद पाने के लिए दूर से उनके पास आया। उनकी कोठरी के चारों ओर बहुत सारे साँप और सभी प्रकार के रेंगने वाले जीव देखकर, डीकन बहुत डर गया और चिल्लाया, कहते हुए:

'हे परमेश्वर के सेवक! मेरे लिए प्रार्थना करें!'

उस समय, हवा बहुत साफ़ और उज्ज्वल थी, क्योंकि वह सूर्य की किरणों से प्रकाशित हो रही थी। फ्लोरेंटियिस, अपनी कोठरी से बाहर निकलकर और ज़मीन पर खड़े होकर, अपनी निगाहें आकाश पर टिकाईं और अपने हाथ ऊपर उठाकर प्रार्थना करने लगे कि प्रभु उन सरीसृपों को किसी भी ऐसे साधन से भगा दें जो उन्हें स्वयं उचित लगे। और तुरंत गरज की आवाज़ हुई, बिजली की एक चमक दिखाई दी, और उस गरज ने, बिजली के साथ मिलकर, उस स्थान में रहने वाले सभी साँपों को मार गिरा दिया। यह सब देखकर, ईश्वर के पुरुष फ्लोरेंटियिस ने एक बार फिर स्वर्ग की ओर अपनी आँखें उठाईं और कहा:

'देखो, प्रभु, आपने इन साँपों को मार डाला है: परन्तु इन्हें यहाँ से कौन ले जाएगा?'

और उनके शब्दों के तुरंत बाद, उतने ही पक्षियों का एक बड़ा झुंड आ गया, जितने वध किए गए साँप थे; और प्रत्येक पक्षी एक साँप लेकर, उसे दूर ले गया और वहाँ फेंक दिया; इस प्रकार जहाँ आदरणीय निवास करते थे, वह स्थान साँपों से मुक्त हो गया।

ईश्वर के प्रति महान भक्तिभाव में अपना सम्पूर्ण जीवन व्यतीत करने के बाद, संत फ्लोरेन्टियिस ने शाश्वत जीवन में प्रवेश किया[5692] ।

इसी तरह, पूजनीय यूटकियिस ने कई वर्षों तक अपने सुपुर्द किए गए झुंड की देखभाल की; कई लोगों को स्वर्ग के राज्य के मार्ग पर मार्गदर्शन करने और कई लोगों को मोक्ष तक पहुँचाने के बाद, संत प्रभु के पास चले गए[5693] । और जो अपने जीवनकाल में चमत्कार नहीं करते थे, वे अपने निधन के बाद चमत्कारी सिद्ध हुए; क्योंकि संत की मृत्यु के बाद बचे हुए वस्त्रों के माध्यम से विभिन्न प्रकार की बीमारियों से पीड़ित रोगियों को स्वास्थ्य लाभ प्राप्त हुआ। इस प्रकार प्रभु ने अपने सेवक को महिमामय किया।

जब भी सूखा पड़ता था और भूमि सूख जाती थी, तो उस क्षेत्र के निवासी एकत्रित होते, पूजनीय यूटकियिस के वस्त्र लेते, उन्हें चर्च में लाते और प्रभु से प्रार्थना करने के बाद, उनके साथ गाँवों, खेतों और बगीचों में जुलूस निकालते; और तुरंत ही प्रभु द्वारा वर्षा भेजी जाती, जो पृथ्वी को नम और संतृप्त कर देती थी[5694] । इससे यह स्पष्ट रूप से सभी को

[5692] संत फ्लोरेन्टियिस का निधन 547 में हुआ।

[5693] संत यूटकियिस की मृत्यु लगभग 540 में हुई।

[5694] वर्णित घटना 1492 में हुई थी।

पता चल गया कि उस व्यक्ति की आध्यात्मिक सदाचार की आंतरिक शक्ति, उनके जीवनकाल में कितनी महान थी, जिसके केवल बाहरी वस्त्र को प्रभु के सामने लाने भर से प्रभु का क्रोध टल जाता था।

इस प्रकार उस समय परमेश्वर की महिमा उनके दोनों संतों द्वारा की गई थी, और अब, उनके लिए, उनकी महिमा हम, उनके सेवकों द्वारा की जाती है – और युगानुयुग होती रहेगी। आमीन।

6 सितंबर

24 अगस्त (पुराने कैलेंडर के अनुसार)

उसी दिन, कन्फेशर (स्वीकारकर्ता) सेंट जॉर्ज ऑफ़ लिम्निओटा की स्मृति, जिन्होंने प्रतिमा-भंजक सम्राट लियो III द इसाउरियन (717–741) के शासनकाल के दौरान सेवा की।

उसी दिन, वोलोग्दा के चमत्कार करने वाले कोमेल के परमपूजनीय आर्सेनियस की स्मृति, जिनका 1550 में निधन हुआ।

उसी दिन, सर्व-रूस के चमत्कार-कर्ता, मेट्रोपॉलिटन सेंट पीटर के अवशेषों का स्थानांतरण (1479 में)।

पवित्र शहीद सिरिा का कष्टकथा

24 अगस्त को स्मरण किया जाता है

फारस के राजा खुसरू प्रथम[5695] के शासनकाल में, उनके राज्य के अठ्ठाईसवें वर्ष में, पवित्र कन्या सीरा फारस में प्रकट हुईं, जैसे समुद्र में एक अत्यंत शुद्ध मोती, जो ईसाई विश्वास की सुंदरता से चमक रही थीं और मसीह के नाम के लिए अपने महान कष्टों के कार्यों के लिए प्रसिद्ध हुईं।

संत सीरा का जन्म केर्च-सेल्यूकिया नामक एक शहर में हुआ था और वह एक अधर्मी परिवार से थीं। उनके पिता मूर्तियों के पुजारी थे, एक मगस जिन्हें (पगनों द्वारा) बहुत सम्मान दिया जाता था; लंबे समय तक उन्होंने फारसी मगस और पुजारियों की सभा के न्यायाधीश और प्रमुख के रूप में कार्य किया; वह प्राचीन उच्च जादूगर ज़ोरोस्टर[5696] की शिक्षाओं में अच्छी तरह से निपुण था, जो फारस में ज्योतिष (नक्षत्रों का विज्ञान) का प्रमुख विशेषज्ञ था। इस जादूगर, पवित्र कन्या सीरा के पिता, ने ईसाइयों से गहराई से घृणा की और उसे इस बात का गहरा डर था कि उसकी बेटी ईसाई धर्म के बारे में जान सकती है और ईसाई कन्याओं से परिचित हो सकती है। क्योंकि उस समय फारस में बहुत सारे ईसाई थे (जैसा कि सामान्य रूप से एगारीयनों के शासन के तहत पूरे एशिया में थे), इस तथ्य के बावजूद कि उन्हें बुरी तरह से दबाया और सताया जाता था। इसी कारण से (सीरा को ईसाई प्रभाव से बचाने की इच्छा से), उसकी माँ की मृत्यु के बाद, उसके पिता ने उसे फारस नामक एक दूसरे शहर में भेज दिया (जहाँ जादू-टोना बहुत प्रचलित था) अपनी एक महिला रिश्तेदार के साथ रहने के लिए, जो एक जादूगरनी थी, ताकि वह मूर्तिपूजकों की अधर्मी रीति-रिवाजों में पली-बढ़ी।

जब वह युवती वयस्क होने लगी, तो उसे जादू-टोना सिखाया गया और घृणित मूर्तिपूजक पूजा में दीक्षित किया गया; अर्थात्, उस पर राक्षसों के लिए कुछ गुप्त बलिदान करने का आरोप लगाया गया, जिन्हें मूर्तिपूजक 'यासफ' कहते थे और शुद्ध भेंट मानते थे।

पवित्र कन्या सिरिा के बारे में यह सब इसलिए बताया गया है, ताकि यह ज्ञात हो सके कि वह शैतानी भ्रम और धोखे की किस अवस्था में थी, और शैतान के जालों से बचकर, वह किस घोर अंधकार से निकलकर सच्चे धर्म के ज्ञान के प्रकाश में आ गई।

[5695] फ़ारसी में 'खोसरू' (या, अधिक सटीक रूप से, 'खोसरव') का अर्थ 'राजा' होता है। यह उपाधि आमतौर पर किसी विशेष फ़ारसी राजा के दिए गए नाम के साथ जोड़ी जाती थी। वृद्ध खोसरू, यानी खोसरू प्रथम अनुशिरवान, ने 531 से 579 तक शासन किया।

[5696] ज़ोरोस्टर एक फ़ारसी ऋषि (मगस) थे; वह मसीह से 1,000 साल पहले रहते थे; उन्होंने द्वैतवाद के सिद्धांत पर आधारित एक अत्यधिक जटिल धार्मिक सिद्धांत की स्थापना की (अर्थात्, अच्छाई और बुराई के बीच दो असंगत फिर भी स्वतंत्र सिद्धांतों के रूप में एक सख्त विभाजन के सिद्धांत पर)।

जब सीरा परपिक्व हो गई और जादू-टोने की कला में पूरी तरह पारंगत हो गई – क्योंकि वह पहले से ही घृणित फारसी देवताओं की पुजारीनी के रूप में सेवा कर रही थी – तब उसके मोक्ष का मार्ग इस प्रकार प्रकट हुआ।

ईश्वर की कृपा और इच्छा से, वह कुछ गरीब ईसाई महिलाओं को जानने लगी और उनसे पहली बार प्रभु मसीह, सच्चे ईश्वर के बारे में सुना; तब उसने उनसे ईसाई धर्म, इसके सिद्धांतों और संपूर्ण ईसाई शिक्षा के साथ-साथ ईसाइयों के जीवन के बारे में भी विस्तार से पूछना शुरू कर दिया; और उसने अपने मन में जो कुछ भी उनसे सुना, उसका मूल्यांकन किया, ईसाई धर्म की तुलना फ़ारसी धर्म से की और दोनों में एक बड़ा अंतर पाया। क्योंकि उसने फारसी धर्म से संबंधित हर चीज़ को झूठा और घृणित मानना शुरू कर दिया, जबकि ईसाई धर्म से संबंधित हर चीज़ को धर्मी और पवित्र मानने लगी; जिसके परिणामस्वरूप उसने फारसी अधर्म को त्यागने और ईसाइयों में शामिल होने का दृढ़ संकल्प लिया। ईसाई धर्मपरायणता से और भी अधिक परिचित होने की इच्छा से, उसने गुप्त रूप से ईसाई चर्चों में जाना शुरू कर दिया, जहाँ वह पठन, भजन और परमेश्वर के वचन से उपदेश सुनती थी, और चर्च की सेवाओं के सुव्यवस्थित तथा भक्तिपूर्ण आचरण को ध्यान से देखती थी। धीरे-धीरे, वह ईसाई धर्म से गहराई से प्रेम करने लगी, और वह ईसाई जीवन शैली की ओर आकर्षित हुई। फिर उसने सावधानी से ईसाइयों का उनके आत्म-त्याग और देह की मृत्यु में अनुकरण करना शुरू कर दिया। उसकी आयु अठारह वर्ष की हो चुकी थी, और उसे सबसे अधिक भय था कि उसका विवाह कर दिया जाएगा और उसका मन इस जीवन की चिंताओं से बोझिल हो जाएगा। इसी कारण, वह सार्वजनिक रूप से (मूर्तिपूजकों के बीच) नहीं निकलती थी, और न ही उसने फारस की प्रतिष्ठित और अमीर युवतियों और महिलाओं के साथ मेलजोल बढ़ाया; इसके बजाय, वह उनसे दूर रहती थी, उनसे बातचीत और दोस्ती से बचती थी; लेकिन वह अक्सर ईसाई कुंवारी लड़कियों और महिलाओं से मिलने जाती थी और उनसे परम पवित्र कुंवारी से मसीह के जन्म, उनके सभी चमत्कारों, उनकी स्वेच्छा से हुई पीड़ा और मृत्यु, देह में उनके पुनरुत्थान और स्वर्ग में आरोहण, भविष्य के अंतिम न्याय, धर्मी लोगों के पुरस्कार और पापियों के कष्टों के बारे में बातचीत करती थी। वह ईसाई कुंवारी लड़कियों से जो कुछ भी सुनती थी, उस पर बिना किसी संदेह के विश्वास करती थी, और जो कुछ भी वे कहती थीं, उसे अपने हृदय पर उकेर लेती थी, जिससे उसकी आत्मा कोमल हो जाती थी और प्रभु के प्रति उसका प्रेम और भी प्रबल हो जाता था। वह अपने कमरे में अकेले रह जाती, ईसाई किताबें पढ़ती, प्रार्थना और भजन-पाठ की आदत डालती, और अपने सिर पर राख डालकर एक सच्चे ईसाई ईश्वर से प्रार्थना करती। इस प्रकार वह लंबे समय तक डटी रही, और ईसाई धर्म को गुप्त रखती रही। क्योंकि वह अपने पिता और अन्य जादूगरों से डरती थी, और इसके अलावा यह भी मानती थी कि उद्धार के लिए , गुप्त रूप से मसीह में विश्वास करना ही पर्याप्त है: उसने अभी तक प्रेरित के वचनों को नहीं समझा था: '*क्यों कि धार्मिक ठहरने के लिए मन से विश्वास किया जाता है, और मुक्ति के लिए मुँह से घोषणा की जाती है*' (रोमियों 10:10)।

काफी समय बाद, सीरा बीमार पड़ गई; हालाँकि, उसने उन अधर्मी लोगों के बीच प्रचलित रीति के अनुसार जादू-टोने से इलाज नहीं कराया, बल्कि उसने अपना हृदय प्रभु की ओर मोड़ लिया। शारीरिक रूप से पीड़ित होकर, वह एक ईसाई चर्च में गई और पादरी से विनती करने लगी कि उसे चर्च की थोड़ी सी धूल दे दें, इस आशा में कि वह इससे ठीक हो जाएगी। लेकिन पादरी ने उसे एक अविश्वासी कहकर अस्वीकार कर दिया, यह कहते हुए:

'तुम्हारा, जो अविश्वासी हो, और विश्वासियों का क्या मेल? तुम, जो मूर्ति-पूजक हो, और मसीही कलीसिया का क्या संबंध?'

वह इससे आहत नहीं हुई, क्योंकि वह अपनी अयोग्यता को अच्छी तरह जानती थी, बल्कि चुपचाप विश्वास से याजक के वस्त्र को छू लिया, ठीक वैसे ही जैसे रक्तस्राव वाली स्त्री ने एक बार मसीह के वस्त्र को छुआ था (मत्ती 9:20-22), – और वह तुरंत अपनी पीड़ा से चंगी हो गई; फिर वह अच्छे स्वास्थ्य के साथ घर लौट आई, जिससे उसकी इतनी शीघ्र स्वस्थ होने पर सभी चकित रह गए।

इसके बाद, पवित्र कन्या सीरा ने मन ही मन सोचा: यदि मसीह के सेवकों की शक्ति इतनी है, तो स्वयं मसीह कितने अधिक सर्वशक्तिमान होंगे – और उसने मसीही विश्वास को और गहराई से समझने की सच्ची इच्छा की, इस पर विचार करते हुए कि वह पवित्र बपतिस्मा के लिए कैसे योग्य ठहराई जा सकती है।

सभी भलाई से ईर्ष्या करने वाला शैतान, धन्य कन्या सीरा में पवित्र विश्वास की पहली कोंपलों को देखकर, उसे रोकने का निश्चय किया; इसलिए, वह रात में एक क्रोधित रूप में उसके सामने प्रकट हुआ और उस पर यह आरोप लगाने लगा कि उसने अपनी देशी प्रथाओं को त्यागकर, अपनी बीमारी के दौरान मदद के लिए ईसाइयों की ओर रुख किया और एक ईसाई पुरोहित के वस्त्रों को छुआ।

तथापि, धन्य कन्या ने यह समझते हुए कि यह एक दैवीय छल था, क्रूस का चिह्न बनाया, जैसा कि उसे ईसाइयों ने सिखाया था, और घुटने टेककर, दाऊद के निन्यानवेवें भजन का पाठ करने लगी: *'जो परमप्रभु की छाया में रहता है, वह सर्वशक्तिमान की छाया में निवास करेगा'* (भजन संहिता 90:1), अंत तक।

तब शैतान कुछ समय के लिए गायब हो गया, लेकिन जब उसने भजन पढ़ना समाप्त कर दिया, तो वह फिर से प्रकट हुआ और इस बार गुस्से में उस युवती से वही बात कही।

एक बार फिर, वह कन्या परमेश्वर के सामने घुटने के बल झुकी और उसी भजन को पढ़ने लगी।

एक बार फिर शैतान थोड़ी देर के लिए गायब हो गया, लेकिन फिर लौट आया और उस युवती से कहने की हिम्मत की:

'मैं वह देवता हूँ जो ऊँचे स्थान पर वास करता है, जिसकी सुरक्षा में सभी रहते हैं; और तुम,' उसने कहना जारी रखा, 'मेरी ओर मुड़ो, न कि उन ईसाइयों की ओर जो तुम्हें धोखा दे रहे हैं।'

पवित्र कन्या ने प्रार्थना में तीन बार सिर झुकाने के बाद, पूरे हृदय से मसीह ईश्वर से विनती करने लगी कि वह उसे सत्य प्रकट करें और उससे हर धोखे को दूर कर दें।

और तुरंत ही, ईश्वर की शक्ति से, प्रलोभी संत से दूर भगा दिया गया; लेकिन उनके मन में, शैतान की धोखाधड़ी के निशान के रूप में, संदेह बना रहा। यह महसूस करते हुए कि यह संदेह शैतानी भ्रम से उत्पन्न हुआ था, सीरा ने गर्मजोशी से भरे दिल के साथ ईश्वर की ओर रुख किया, आँसुओं के साथ पश्चाताप किया और अपनी कमजोरी का ईश्वर के सामने इकरार किया।

अगली रात, संत को एक सपने में ईश्वर से सांत्वना मिली, जिसने उनके शहीद होने का पूर्वाभास दिया।

उसे ऐसा प्रतीत हुआ कि वह पुरोहितों के ऊपर किसी ऊँची जगह पर खड़ी थी, और उसके हाथों में मसीह के रक्त से भरा एक पवित्र प्याला था; उसने यह प्याला लोगों को दिखाया, जबकि दो डिकिन उसके दोनों ओर खड़े होकर धूप जला रहे थे। इस दर्शन का अर्थ था कि संत को लोगों की उपस्थिति में मसीह के नाम के लिए पीड़ा का प्याला पीना था, जो इस दृश्य के साक्षी बनेंगे; जबकि वह ऊँची जगह जिस पर वह खड़ी थी, शहादत के उच्च सम्मान का प्रतीक थी, जो सभी संतों के पदों से ऊपर है; और धूप इस बात का संकेत थी कि उसका दुखद जीवन परमेश्वर को एक बलिदान और सुगंधित भेंट की तरह प्रिय था, और उस दुख के माध्यम से मसीह की संपूर्ण कलीसिया सुगंधित हो जाएगी।

उस दर्शन के बाद, संत ने ईश्वर को समर्पित एक कठोर तपस्वी जीवन जीना शुरू कर दिया। हालाँकि, जल्द ही उसके भाइयों और रिश्तेदारों को पता चल गया कि वह ईसाई धर्म के प्रति सहानुभूति रखती थी: क्योंकि उन्होंने देखा कि उसका शरीर ही बदल गया था, और संयम तथा उपवास से उसका चेहरा पीला पड़ गया था; वह लगभग किसी से बात नहीं करती थी, बल्कि अपने कमरे में अकेले रहकर मौन धारण किए रहती थी; उसने देवताओं को बलिदान देना बंद कर दिया था और मूर्तिवादियों द्वारा आमतौर पर किए जाने वाले अनुष्ठानों को त्याग दिया था। यह देखकर, वे दुखी हो गए और उन्होंने उसकी सौतेली माँ से विनती करना शुरू कर दिया कि वह उस युवती को ऐसा जीवन त्यागने और उनके पूर्वजों के देवताओं की पूजा से न मुँह मोड़ने के लिए मनाए, कहीं ऐसा न हो कि वह अपने परिवार पर कलंक लगा दे और पूरे कुल पर राजा का क्रोध ( ) आ पड़े। हालाँकि, सौतेली माँ, जिसे उस ने सिखाया था जिसने प्राचीन काल में एक साँप का रूप लेकर स्वर्ग में ईव को धोखा दिया था[5697] , एक आनंदित और प्रसन्न मुख के साथ उस धन्य कन्या के पास अकेले में गई, और उसे बताने लगी कि वह भी उसी ईसाई धर्म को मानती है, लेकिन वह इसे गुप्त रखती है और मसीह की सेवा करती है। उसकी सौतेली माँ ने उसे सलाह दी कि वह गुप्त रूप से मसीह से मुंह न मोड़े, बल्कि सभी के सामने मूर्तियों के लिए प्रथागत पुरोहितीय अनुष्ठान करे, ताकि सभी, यह देखकर कि वह देवताओं की सेवा करती है, उस पर एक ईसाई होने का संदेह करना बंद कर दें।

'ऐसा करने से,' प्रलोभी ने कहा, 'तुम न तो मसीह को नाराज़ करोगी (क्योंकि वह उन लोगों से भी प्रसन्न हैं जो गुप्त रूप से उनकी सेवा करते हैं) और न ही अपने पिता और भाइयों को क्रोधित करोगी, और तुम उन भयानक यातनाओं से बच जाओगी जो निश्चित रूप से तुम्हें तब झेलनी पड़ेंगी जब तुम मेरी सलाह पर ध्यान नहीं दोगी। सोचो कि तुम, एक युवा कन्या, जो शरीर से कमजोर हो, पिटाई, घाव, देह की यातना, खंभे पर जलाए जाने और अन्य यातनाओं को कैसे सहोगी; क्या तुम्हें डर नहीं लगता कि इस पीड़ा को सहन न कर पाकर, तुम अपनी इच्छा के विरुद्ध मसीह का त्याग कर दोगी?

[5697] अर्थात्, शैतान।

तब तुम एक घोर और अक्षम्य पाप करोगी। तुम्हारे लिए यह कहीं बेहतर है कि तुम गुप्त रूप से मसीह की सेवा करो, जबकि दिखावे के लिए यह कहो कि तुम देवताओं की सेवा कर रही हो। यह तुम्हारे विरुद्ध पाप नहीं माना जाएगा।

सौतेली माँ रोज़ाना युवती सीरा से इसी तरह की बातें कहती थी, और उसने उसका मन अपनी बातों की ओर मोड़ लिया: *'बुरे लोगों के साथ मेल मिलाप चरित्र को बिगाड़ देता है'* (1 कुरिन्थियों 15:33), जैसा कि पवित्रशास्त्र कहता है।

हालाँकि, प्रभु ने अपनी दासी को उस धोखे में किसी गहरे गर्त में डूबने नहीं दिया, बल्कि एक बार फिर से उसे नए प्रकाशनों से मज़बूत किया।

उसके बाद चार महीने बीत गए; महा-व्रत—पवित्र चालीस दिन—शुरू हुए, और पवित्र कन्या ने गुप्त रूप से उपवास और प्रार्थना में स्वयं को समर्पित करने की इच्छा की। जब संत ने उपवास करना शुरू किया, तो उसने (एक स्वप्न-जैसी दृष्टि में) अपने भाइयों को पीब और कीचड़ में डूबा हुआ देखा; उसने अपने पिता को एक गंदे बिस्तर पर लेटे हुए भी देखा; लेकिन जब उसने दूसरी ओर देखा, तो उसने एक महल और एक ऊँचा और सुंदर बिस्तर देखा, जो एक अद्भुत प्रकाश से चमक रहा था; उसने कई दमकते हुए चेहरे भी देखे जो उसे उस महल में बुला रहे थे।

उस दर्शन के बाद, वह अपनी नींद से जागी और सुबह-सुबह ईसाई चर्च के लिए निकल पड़ी; बिशप जॉन के पास आकर, उसने उन्हें अपने बारे में सब कुछ विस्तार से बताया—कि कैसे वह पुजारी के वस्त्र को छूकर अपनी बीमारी से ठीक हो गई थी, उसे प्रभु से कौन से दर्शन प्राप्त हुए थे—और बिशप से उसे पवित्र बपतिस्मा देने का अनुरोध करने लगी।

उस युवती द्वारा बताई गई सारी बातें सुनकर, बिशप उसके लिए अपने हृदय में आनंदित हुए, यह महसूस करते हुए कि उसे परमेश्वर द्वारा उद्धार के लिए बुलाया गया था। हालाँकि, उस युग के कठोर समय को ध्यान में रखते हुए, उन्होंने उसे बपतिस्मा नहीं दिया, क्योंकि वह जानते थे कि वह एक बहुत ही कुलीन परिवार से आई थी और उसका एक पिता था जिसे (पगनों द्वारा) बहुत सम्मान दिया जाता था; वह सभी मगियों द्वारा विश्वासियों के प्रति पाले गए अटूट घृणा से भी अवगत था; उसे डर था कि वह pagans को उकसा देगा, कहीं वे लड़की के बपतिस्मा से क्रोधित होकर, राजा को मसीह की कलीसिया के खिलाफ उत्पीड़न शुरू करने के लिए मना न लें, और भेड़ियों की तरह क्रूर होकर, अपने क्रोध से मसीह के आध्यात्मिक झुंड को बिखेर न दें। इसके अलावा, बिशप उस कन्या के लिए भी चिंतित थे, उन्हें डर था कि माता-पिता के क्रोध से भयभीत और यातनाओं से डरी हुई वह मसीह का त्याग कर सकती है, और इस प्रकार पवित्र बपतिस्मा की कृपा कलंकित हो सकती है। इसलिए, बिशप ने उस धन्य कन्या को सलाह दी कि वह पहले अपने पिता, अपने भाइयों, अपने रिश्तेदारों और अपने पूरे घर के सामने मसीह की गवाही दे। यदि यह साबित होता कि वह अपने पवित्र रिश्तेदारों द्वारा दी जाने वाली पीड़ा को सहन करने में सक्षम थी, तो वह मसीह के नाम की अपनी स्वीकारोक्ति में अंत तक दृढ़ रह सकती थी; और फिर उसे पवित्र बपतिस्मा के लिए योग्य माना जाता। कन्या को यह सलाह देने के बाद, बिशप ने उसे शांति से विदा कर दिया।

वह कन्या गहराई से दुखी होकर बिशप के पास से चली गई, क्योंकि उसकी इच्छा पूरी नहीं हुई थी; उसके विचारों में उथल-पुथल मची थी, क्योंकि वह प्रेम और भय के बीच फँसी हुई थी – वह मसीह के प्रति प्रेम से जल रही थी, फिर भी उसी समय उसे यातनाओं का भय था; इसलिए, वह भय के मारे चुप रही।

कुछ समय बाद, पवित्र कन्या ने सोते समय एक और दर्शन देखा; अर्थात्, उसने परमेश्वर के एक स्वर्गदूत को अपने हाथों में लोहे की छड़ी पकड़े हुए और उससे उस पर प्रहार करते हुए देखा; उसी क्षण, स्वर्गदूत ने उससे पूछा:

'तुम्हारा वादा कहाँ है? क्योंकि तुमने सच्चे परमेश्वर की निष्ठापूर्वक सेवा करने और दुष्टों के विरुद्ध उनके पवित्र नाम के लिए दृढ़ रहने का वादा किया था।'

इस नींद और दर्शन से जागने पर, वह कन्या भय से कांप उठी।

जब सुबह हुई, तो उसे सौतेली माँ ने बुलाया। सौतेली माँ ने उसे परंपरा के अनुसार देवताओं के लिए सुबह की बलि की रस्में करने का आदेश दिया। पहले से ही प्रभु मसीह के प्रति उत्साह से जलती हुई, सीरा ने सबके सामने खुले तौर पर मसीह के नाम का प्रचार करने और जादू-टोने तथा मूर्तिपूजा का त्याग करने का इरादा किया; हालाँकि, उस क्षण उसने अपनी माँ के प्रति आज्ञाकारिता का दिखावा किया और, शैतान की रीतियों के अनुसार पुरोहितीय सेवा के उपकरण लेकर, ज़रतोष्ट्र की परंपराओं के अनुरूप वेदी के पास पहुँची; लेकिन उसी क्षण वह अपने आपको एक दिव्य प्रकाश से स्नान किए हुए अनुभव करने लगी। अपने हृदय को दृढ़ करके और अपनी आत्मा से भय को दूर कर, संत ने उन यजक के उपकरणों

को सभी की आँखों के सामने तोड़ डाला, आग पर थूक दिया (जिसे फारसी एक देवी के रूप में पूजते थे), उसे बुझा दिया, वेदी को नष्ट कर दिया, और जोर से चिल्लाई:

'मैं एक ईसाई हूँ! मैं मूर्तियों की पूजा को अस्वीकार करती हूँ, मैं सभी घृणित, शैतानी जादू-टोने की निंदा करती हूँ, मैं झूठे देवताओं और अधर्मी वेदियों पर पाँव रखती हूँ; मेरा विश्वास एक सच्चे ईसाई ईश्वर में है, और मैं ईसाई चर्च जा रही हूँ।'

उसके भाइयों और सौतेली माँ ने, साथ ही घर में मौजूद हर उस व्यक्ति ने जिसने उस युवती की बातें सुनी थीं, उसे पकड़ लिया, रोक दिया और उसे एक कमरे में बंद कर दिया ताकि वह बाहर न निकल सके; फिर उन्होंने उस पर नजर रखने के लिए पहरेदार लगा दिए (उस समय उसके पिता घर पर नहीं थे)। तथापि, उस धन्य कन्या ने उनसे अपने पिता को बुलाने के लिए कहना शुरू कर दिया, ताकि वह उनके सामने मसीह के नाम का अंगीकार कर सके, भले ही इसके लिए उसे यातना के लिए उनके हवाले कर दिया जाए; क्योंकि वह अब मसीह में अपने विश्वास को छिपाना नहीं चाहती थी, बल्कि उसे सभी के सामने खुले तौर पर दिखाना चाहती थी, और किसी भी यातना से नहीं डरती थी।

इसी बीच, उसी क्षण, उसकी रिश्तेदार और परिचित उस युवती के पास आए और रोते हुए उसे इस तरह का कदम छोड़ देने के लिए मनाने लगे और कहा कि वह अपने पिता और भाइयों को दुखी न करे, अपने परिवार पर कलंक न लगावे, और जानबूझकर खुद को भयंकर यातनाओं के हवाले न करे; लेकिन संत ने इन कपटी वनिताओं को सुना भी नहीं।

जब उसके पिता आए और उन्होंने देखा कि उनकी जादुई आग, जिसे वे एक देवता मानते थे, बुझ गई थी, वेदी उलट दी गई थी, और पुरोहित की सेवा के उपकरण तोड़ दिए गए थे, और जब उसने यह भी सुना कि उसकी बेटी, सीरा, जोर-जोर से मसीह के नाम की महिमा कर रही थी, तो वह बहुत क्रोधित हो गया; उसे पकड़कर, वह अपने ही हाथों से निर्दयता से उसे पीटने लगा, और तब तक पीटता रहा जब तक कि वह खुद थक नहीं गया। तब, उसकी आँखों में आँसू लिए, वह उसे समझाने और सांत्वना देने लगा, उससे दयालुता और कोमलता से बात करने लगा; फिर भी उसे कोई सफलता नहीं मिली। यद्यपि उसके पिता ने उसे अनेक यातनाएँ दीं, उसे बेड़ियों में जकड़ा, एक अँधेरी जगह में बंद कर दिया, भूखा-प्यासा रखा, और कई बार पीटा; कभी-कभी, या तो स्वयं या अपने रिश्तेदारों के माध्यम से, वह उससे विनम्रतापूर्वक अपने पिता के देवताओं और पुरोहिती मंत्रालय की ओर लौटने का आग्रह करता था - मसीह की यह सच्ची सेविका हमारे प्रभु यीशु मसीह के परम पवित्र नाम की अपनी स्वीकारोक्ति में एक स्तंभ की तरह अडिग और अटल बनी रही।

जब उसके पिता को स्पष्ट हो गया कि उसकी ईसाई धर्म के प्रति अटूट निष्ठा पर यकीन हो गया, और यह भी कि किसी भी तरह से उस युवती को ईसाई धर्म से हटाना असंभव था, तो वह जाकर मावपिटसि को सब कुछ बता दिया; फारसियों द्वारा मावपिटसि को मगों का प्रमुख माना जाता था। मावपिटसि ने पड़ोसी शहरों के सभी पुरोहितों और मगों को इकट्ठा किया, और अपने देवता—आग—के मंदिर में उनके साथ अपनी सीट पर बैठ गया और आदेश दिया कि मसीह की कन्या को उसकी अदालत में लाया जाए। वहाँ एक बड़ी भीड़ इकट्ठा हो गई; लोगों में कई ईसाई भी थे जो सीरा नामक युवती के पराक्रम को देखने आए थे; क्योंकि हर कोई पहले से ही उसके धर्म परिवर्तन और उसके पिता द्वारा उस पर दी गई यातनाओं से अवगत था।

मावपिटसि ने उस युवती से पूछना शुरू किया कि उसने अपने पिता के देवताओं और परंपराओं को क्यों अस्वीकार कर दिया और एक अलग धर्म को क्यों अपना लिया। युवती ने इस प्रकार उत्तर दिया:

कोई भी स्वस्थ दिमाग वाला व्यक्ति मूर्ख जानवरों की नकल नहीं करेगा, जो अपने माता-पिता के पीछे-पीछे चलते हैं - पता नहीं कहाँ - बल्कि वह उस मार्ग का अनुसरण करेगा जिसे वह सर्वोत्तम समझता है; कोई भी समझदार व्यक्ति अपने पिता और पूर्वजों का अनुसरण नहीं करेगा, जो अपने भ्रम में उन्हें विनाश की ओर ले जाते हैं। इसी तरह, जब मैंने देखा कि ईसाई धर्म मेरे पिता के अधर्म से अतुलनीय रूप से बेहतर था, तो मैंने बेहतर को चुना और बुरे को अस्वीकार कर दिया।

मावपिटसि ने गुस्से में कहा:

'युवती, अगर तुम हमारी आज्ञा नहीं मानोगी तो तुम्हें कई यातनाएँ झेलनी पड़ेंगी।'

सीरा ने अपनी गर्दन पर हाथ रखकर बड़ी निर्भीकता से कहा:

'इसे काट दो; यह तुम्हारी शक्ति में है,' मैं तुम्हें एक बार के लिए कहती हूँ।

उसके बाद, मावपिटसि ने उससे कई बार पूछा, लेकिन उसने उसे कोई जवाब नहीं दिया; इसके बजाय, उसने अपने लिए दाऊद की भजन-संग्रह की आयतें पढ़ीं, जिन्हें मूर्तिपूजक समझ नहीं पा रहे थे।

अंततः मावपि्टसि ने अपने आसपास मौजूद लोगों से पूछा:

'वह क्या कह रही है?'

लेकनि कोई नहीं जानता था कि वह क्या कह रही थी। और उपस्थति लोगों में से केवल एक (एक मूर्तपिूजक) ने कहा:

'वह ईसाई प्रार्थनाएँ पढ़ रही है।'

मावपि्टसि ने तुरंत एक ईसाई बशिप को बुलाने का आदेश दयिा, ताकि यह पता लगाया जा सके कि वह कन्या ईसाई शब्द बोल रही थी या नहीं।

महाधर्माध्यक्ष जादूगरों की शक्ति से भयभीत होकर बड़े डर के साथ आए। शहीद ने उनकी ओर देखा। यह देखकर कि वह डर गया है, कन्या ने उनसे ऊँचे स्वर में कहा:

'डरो मत, पतिाजी, बल्कि धर्मग्रंथ के वचनों को याद करो: *"मैं राजाओं के सामने आपकी गवाहयिाँ दूँगा और लज्जति नहीं होऊँगा"* (भजन संहति 118:46)। और फरि: *"और उन से मत डरना जो शरीर को तो मार सकते हैं, पर आत्मा को नहीं मार सकते"* (मत्ती 10:28)।'

जब बशिप से उस युवती द्वारा कहे गए शब्दों के बारे में पूछा गया, तो उन्होंने पुष्टि की कि वे वास्तव में ईसाइयों के शब्द थे।

कुंवारी से क्रोधति होकर मावपि्टसि ने उसे होठों पर मारने का आदेश दयिा। इसके बाद, वह कभी तो उसे चापलूसी से बात करता और कभी उसे यातना देने की धमकी देता रहा, लेकनि उसे कुछ भी हासलि नहीं हुआ, और उपस्थति ईसाइयों के सामने उसे शर्मदिगी उठानी पड़ी, जो हो रही सारी घटनाओं को देख रहे थे।

तब मावपि्टसि ने आदेश दयिा कि युवती को कुछ समय के लिए उसके पति के घर पर रखा जाए, क्योंकि वह उस समय राजा के पास उसकी शकिायत नहीं करना चाहती थी, कहीं ऐसा न हो कि वह उसके कुलीन परविार का अपमान करे; साथ ही, मावपि्टसि ने युवती के पति को सलाह दी कि वह उसे धमकयिों के बजाय दयालुता से ईसाई धर्म त्यागने के लिए मनाए। और शहीद प्रसन्न होकर घर लौट आई, क्योंकि वह राजकुमार, न्यायाधीशों और सभी लोगों के सामने मसीह के नाम के लिए कष्ट सहने योग्य समझी गई थी।

जब वह कन्या अपने पति के घर में थी, तब प्रभु ने अपनी दासी को नए प्रकाशनों से सांत्वना दी और उसे बल दयिा; क्योंकि वह अक्सर स्वर्गदूतों को देखती थी जो उसे यह सखिाते थे कि अधर्मी न्यायाधीशों का उत्तर कैसे देना है। कभी-कभी मूसा, एलयिा, प्रेरति पतरस और अन्य संत उसके सामने प्रकट होते थे, जैसा कि पवित्र कन्या सरिा की शहादत के अधकि वस्तिृत वृत्तांत में वर्णति है।[5698]

इस बीच, कन्या के पति ने हर तरह से उसे मसीह से हटाने की कोशशि की, लेकनि वह उसकी दृढ़ता पर वजिय प्राप्त नहीं कर सका; और इसलिए उसने फरि से कन्या की हठधर्मी की सूचना मावपि्टसि और जादूगरों की पूरी सभा को दी।

उस समय, दार नामक एक कुलीन व्यक्ति, जो राजा की सर्वोच्च परषिद में बैठता था, उस शहर में आ पहुँचा; ये दोनों कुलीन व्यक्ति, दार और मावपि्टसि, एक साथ मौजूद थे जब उन्हें उस कन्या के पति को सुनना पड़ा, जो अपनी बेटी की शकिायत कर रहा था और ईसाइयों पर भी बदनामी कर रहा था, यह दावा करते हुए कि उन्होंने कथति तौर पर उसके खलिाफ वद्रिोह कर दयिा था और उसे पत्थर मारने की कोशशि की थी।

कुलीन दार ने कन्या के पास कई प्रतषि्ठति पुरुष भेजे, और उन्हें यह नर्दिेश दयिा कि वे संत से पूछें कि उसने जादुई ज्ञान और पुरोहतिीय सेवा को क्यों त्याग दयिा और ईसाई धर्म क्यों अपना लयिा। इसी समय, दार ने दूतों को युवती को दयालु शब्दों से मनाने और शाही उपहारों का वादा करने का आदेश दयिा; और यदि वह उनकी बात न माने, तो उन्हें युवती से कहने का नर्दिेश दयिा कि उसके लिए भयानक यातनाएँ प्रतीक्षा कर रही हैं।

जब दूत उस युवती के पास आए और उन्होंने उससे सब कुछ पूछना शुरू कयिा, उससे कोमल और दयालु शब्दों में बात की, तो युवती ने उत्तर दयिा:

'मैं स्वयं उस तक जाना चाहती थी जसिने तुम्हें भेजा है, उसे मसीह में अपने वशि्वास के बारे में बताने के लिए; लेकनि चूँकि तुम मेरे पास आए हो, तो सुनो: मैंने ईसाई धर्म को इसलिए अपनाया है क्योंकि मैं इसके सत्य और धार्मकिता को

[5698] यह अधकि वस्तिृत ववरिण आज तक संरक्षति नहीं रहा है।

समझ गई हूँ, क्योंकि यह विश्वास सभी चीजों के सृष्टिकर्ता के रूप में एक ही परमेश्वर, सर्वशक्तिमान और अमर को स्वीकार करता है; लेकिन मैं तुम्हारी जादू-टोने और मूर्ति पूजा से घृणा करने लगी हूँ, क्योंकि तुम कई देवताओं को मानते हो, फिर भी ये देवता निर्जीव और तुच्छ हैं; उसे बता दो जिसने तुम्हें भेजा है: 'अपना वादा तोड़ना मत, बल्कि जैसा तुमने वादा किया है, मुझे यातनाओं के लिए सौंप दो, क्योंकि मैं अपने ईश्वर मसीह के लिए दुख सहने और मरने को भी तैयार हूँ।'

कुंवारी की उत्तर सुनकर, कुलीन डार क्रोध से भर गया और उसने आदेश दिया कि उसे उसके पिता के घर से ले जाया जाए और कालकोठरी में लाया जाए; फिर, उसके हाथ और पैरों को लोहे की ज़ंजीरों से बांधकर, उन्होंने उसे एक तंग और अंधेरी कोठरी में बंद कर दिया और उसे न तो रोटी दी और न ही पानी।

और संत तीन दिन और तीन रात तक तहखाने में पड़ी रहीं, न तो उन भारी लोहे की ज़ंजीरों के कारण जिन्हें उन्होंने बाँध रखा था, और न ही कोठरी की तंग जगह के कारण वे हिल-डुल सकीं।

तीन दिनों के बाद, उस युवती को उसकी कैद से बाहर लाया गया। फिर विधर्मी उससे पूछने लगे कि क्या यह सज़ा उसके लिए पर्याप्त थी और क्या वह अपने पूर्वजों के देवताओं की पूजा पर लौटना चाहती थी और उनके पारंपरिक कानूनों को स्वीकार करना चाहती थी।

युवती मसीह में अपने विश्वास पर अडिग रही।

तब मूर्तिपूजकों ने एक बार फिर उसका मुकदमा चलाया और आदेश दिया कि संत को बहुत भारी लोहे की बेड़ियों से बाँधकर एक गहरे, अंधेरे, बदबूदार और घृणित गड्ढे में फेंक दिया जाए। जब वे युवती पर बेड़ियाँ चढ़ा रहे थे, तो उन्होंने कीलों से जंजीरों को कसने की कोशिश की, लेकिन कीलें उनके लिए तैयार किए गए छेदों में नहीं बैठ रही थीं; कई लोहारों को बुलाया गया, लेकिन कोई भी अपने काम में सफल नहीं हो सका। शहीद ने कीलों और ज़ंजीरों पर क्रॉस का चिह्न बनाया, और तुरंत ही कीलें अपने आप अपने सही स्थानों पर गिर गईं। हालाँकि, मसीह के दुश्मन, दुर्भावना से अंधे होकर, पवित्र क्रॉस की चमत्कारिक शक्ति को पहचानने में असफल रहे और, बिना किसी दया के, संत को बाँध दिया, उसका सिर उसके पैरों की ओर झुका दिया; फिर उन्होंने उसे गड्ढे में फेंक दिया।

प्रभु मसीह, जो उनसे प्रेम करने वालों को कभी नहीं छोड़ते, ने तुरंत उस खाई में अपनी दासी को सांत्वना भेजी; क्योंकि वहाँ वह स्वर्गीय प्रकाश से प्रकाशित हो गई, लोहे की बेड़ियाँ अपने आप ढीली हो गईं और संत से अलग हो गईं, और बदबू एक मीठी सुगंध में बदल गई; शहीद उस खाई में एक महल की तरह रहीं, परमेश्वर का आनंद मनाते और उसकी महिमा करते हुए।

इस बीच, उस नगर के ईसाइयों ने अपने बिशप के साथ गिरिजाघर में इकट्ठा होकर, शहीद सीरा के लिए आँसुओं के साथ परमेश्वर से प्रार्थना करना शुरू कर दिया, कि वह उसे बहादुरी से अपना पराक्रम पूरा करने में मदद करें।

और शहीद पंद्रह दिनों तक उसी गड्ढे में रही, ताकि भयानक बदबू और भूख के साथ-साथ उस पर डाली गई बेड़ियों के बोझ के कारण कोई यह न सोचे कि वह जीवित रह सकती है।

इस बीच, लंबे समय तक बारिश न होने के कारण सूखा पड़ गया था, और लोगों ने कहा कि यह ईश्वर का क्रोध है, जो कन्या सीरा के निर्दोष दुखों के लिए सभी को सूखे और अकाल से दंडित कर रहा है।

पंद्रह दिन बाद, दुष्ट न्यायाधीशों को पता चला कि कन्या सीरा अभी भी गड्ढे में जीवित है और उसने अपनी बेड़ियों से खुद को मुक्त कर लिया है। सभी बहुत आश्चर्यचकित हुए। संत को गड्ढे से निकालकर सार्वजनिक जेल में वापस भेज दिया गया।

शहीद को कुएँ से बाहर निकाले ही आकाश से मूसलाधार बारिश हुई, जिसने धरती को भरपूर पानी से सिक्त कर दिया; और लोगों ने कहा कि ईश्वर ने यह बारिश कुएँ से निकाली गई कन्या सीरा के लिए भेजी थी।

प्रभु ने अपनी दासी को चमत्कार करने का वरदान भी दिया, ताकि वह बीमारों को ठीक कर सके और दुष्ट आत्माओं को भगा सके; जब संत जेल में थीं, तो बहुत से लोग उनसे ठीक होने की इच्छा से उनके पास आए; और जो भी उनके वस्त्र या उनकी बेड़ियों को छूता, वह अपने रोगों से मुक्त हो जाता था; जबकि दुष्ट आत्माएँ किसी को भी उसके पास आने की अनुमति नहीं देती थीं।

कुछ समय बाद, उन पवित्र शहीदों के सम्मान में स्थापित एक पर्व का दिन आया, जिन्होंने पहले फारस में कष्ट सहे थे; यह पर्व शहर के बाहर स्थित एक चर्च में साल में केवल एक बार मनाया जाता था; शहीद उस सार्वजनिक उत्सव और पूरी रात की प्रार्थना सभा में शामिल होना चाहती थीं; क्योंकि एक ईश्वर-भयभीत ईसाई ने रक्षकों को कुछ सोना

दयिा था और व्यक्तगित रूप से शहीद के लिए ज़मानत दी थी, ताकि वे उसे जेल से रहिा कर दें, यह वादा करते हुए कि अगली सुबह उसे उसकी कोठरी में वापस कर देंगे।

संत को जेल से रहिा कर दयिा गया; ऐसा करते ही, उसने अपने कपड़े बदल लिए ताकि मूर्तपिूजक उसे पहचान न सकें; चर्च पहुँचने पर, वह प्रवेश-कक्ष के एक कोने में खड़ी हो गई और चर्च के भजन सुनने लगी।

संयोग से, उस उत्सव के आयोजन में एक राक्षस-ग्रस्त महलि भी मौजूद थी; जैसे ही वह महलि पवत्रि कन्या सीरा के पास पहुँची, उसके भीतर का राक्षस तुरंत ज़ोर से चलि्लाया, यह कहते हुए कि शहीद सीरा चर्च में आ गई हैं और वह उसे (राक्षस को) बाहर नकिाल सकती हैं। और जब वहाँ मौजूद सभी लोग पवत्रि शहीद को चर्च में खोजने लगे, तो वह तुरंत चली गईं और अपनी कोठरी में चली गईं।

दैत्य उससे इतने भयभीत थे कि वे उसके पास भी नहीं आ सके।

उसके बाद की कसिी रात, पवत्रि कन्या सीरा को फरि से जेल से जमानत पर रहिा कयिा गया, इसके लिए रक्षकों को रश्वित दी गई; फरि वह बशिप के पास गई और शहर में स्थति चर्च में उनसे पवत्रि बपतस्मिा ग्रहण कयिा।

इन सब के बाद, मावप्टिसि ने, अपने साथ मौजूद अन्य न्यायाधीशों और जादूगरों के साथ, शहीद को राजा के पास भेजने का फैसला कयिा, क्योंकि वे कसिी भी तरह से उसे ईसाई धर्म की घोषणा करने से रोक नहीं सके। जब उन्होंने कन्या को राजा के पास भेजा, तो न्यायाधीशों ने अपनी प्रथा के अनुसार शहीद के गले में एक मुहर लगा दी, ताकि कोई दूसरी महलि सरि ( ) कन्या के स्थान पर पेश न हो सके; और यह मुहर ऐसी थी कि इसे पवत्रि शहीद के गले से सरि कलम कएि बनिा कसिी भी तरह से नहीं हटाया जा सकता था।

संत को ले जाने के बाद, सैनकिों ने उसे अलीयाक नामक शहर में ले गए, क्योंकि उस समय राजा वहीं था; सैनकिों ने शहीद को शहर के राज्यपाल के हवाले कर दयिा, साथ ही एक लखिति बयान भी दयिा जसिमें उसकी दोषसद्धि, उसकी वंशावली और उसके द्वारा सहन कएि गए यातनाओं का ववरिण था।

शहर के राज्यपाल (एपार्क) ने पहले तो संत को भली-भांति समझाने की कोशशि की, फरि उसे यातनाओं की धमकी देने लगा, और उस युवती से अपने पुराने धर्म और जीवन-शैली (यानी, मूर्तपिूजक धर्म और जीवन-शैली) पर लौटने का आग्रह करने लगा; लेकनि जब उसने देखा कि वह उसकी नहीं सुन रही थी, तो उसने उसके कपड़े उतारने का आदेश दयिा, उसे कुछ फटे-पुराने कपड़े पहना दएि, और उसे यहूदयिों की हरिासत में सौंप दयिा, यह जानते हुए कि यहूदी ईसाइयों के दुश्मन थे।

यहूदयिों ने संत को लोहे की बेड़यिों में जकड़कर एक तंग कमरे में बंद कर दयिा; खाने के लिए उन्होंने उसे जौ की रोटी का एक बहुत छोटा सा टुकड़ा दयिा, ताकि वह भूख से न मर जाए; जबकि साथ ही, वे हर दनि उसे अपमानजनक शब्दों से फटकारते और मसीह का अपमान भी करते हुए कहते थे:

'तो फरि, वह कहानी जो वे तुम्हारे बारे में सुनाते हैं—कि ज़ंजीरें अपने आप ही तुम्हारी गर्दन, हाथों और पैरों से उतर जाती हैं, वह कहाँ गई? अब देखते हैं कि ये ज़ंजीरें कैसे उतरती हैं!'

एक बार, जब यहूदी संन्यासनिी का ऐसे शब्दों से मज़ाक उड़ा रहे थे, तो उसने अपनी आँखें आकाश की ओर उठाईं, आह भरकर, अपने हृदय की गहराई से प्रभु से प्रार्थना की; और तुरंत, यहूदयिों की आँखों के सामने ही, उसके गले, हाथों और पैरों से बंधन छूट गए, जसिसे यहूदी अत्यंत चकति हो गए।

संत ग्यारह दनि तक यहूदयिों के पास रहीं, जसिके बाद राज्यपाल ने फरि से उन्हें जादूगरों के मुखयिा के सामने पेश करने का आदेश दयिा, जो राजा की सेवा में था, और उसे उस युवती के बारे में सब कुछ बताया जो वह जानता था।

मंत्रयिों के मुखयिा ने, कन्या को अपने सामने लाने का आदेश देकर, उससे पूछा:

'तुमने हमारा धर्म क्यों त्यागा है? क्योंकि हमारे धर्म का राजा और राजकुमार दोनों ही सम्मान करते हैं; यह दूर-दूर तक फैला हुआ है, सभी पर शासन करता है, और इसे मानने वालों को समृद्ध बनाता है; और तुम ईसाइयों में क्यों शामलि हो गईं—वे लोग जो अपमानजनक, गरीब, और सभी द्वारा तरिस्कृत और घृणति हैं?'

युवती ने साहसपूर्वक उत्तर दयिा:

– अब कहाँ हैं तुम्हारे मृत राजाओं के ताज? राजकुमारों का वैभव कहाँ है? यह सब नष्ट हो गया है; राजा और राजकुमार, घास की तरह, थोड़े समय के लिए फलते-फूलते थे, लेकनि फरि मुरझा गए और शाश्वत मृत्यु को प्राप्त हुए, क्योंकि वे सच्चे परमेश्वर, सभी चीजों के सृष्टकिर्ता को नहीं जानते थे, न ही उन्होंने जीवन और मृत्यु के प्रभु का सम्मान कयिा, बल्कि सृष्टि की एक देवता के रूप में पूजा की, आग, पानी, सूर्य, चंद्रमा और सतिारों की पूजा की। हालाँकि, मसीही,

इस जीवन में आपके हाथों जो दुख सहते हैं, उन्हें अनंत जीवन मलिेगा; और अपनी अस्थायी अपमान के लिए, वे स्वर्गीय महमिा के वारसि होंगे।

मंत्रयिों के मुखयि ने युवती की बातों पर क्रोध से आग-बबूला हो गया; फरि उसने उससे वस्तिार से पूछना शुरू कयि कि वह पहले कहाँ थी। यह जानकर कि उसने कतिनी बड़ी यातनाएँ झेली थीं, साथ ही तहखाने में उसकी कठोर कैद के बारे में भी, और यह सुनकर कि सिंन्यासनिी यहूदयिों की कड़ी नगिरानी में थी, उसने उसे यहूदयिों के हवाले करने का आदेश दयि, और उन्हें सख्त नगिरानी रखने का हुक्म दयि ताकि कोई भी ईसाई उस युवती के पास न आ सके।

संत को अपनी हरिासत में लेने के बाद, यहूदयिों ने उस पर बेरहमी से अत्याचार करना शुरू कर दयि और तीन दनिों तक उसे वभिन्नि प्रकार की यातनाएँ दीं।

जब एक शाही अधकिारी, जसिे सभी काल-कोठरयिों और सभी कैदयिों की देखरेख का काम सौंपा गया था, ने शहीद के बारे में सुना, तो उसने उसे यहूदयिों से छीन लयि और उसे अपनी ही काल-कोठरी में रख दयि। उसने ऐसा वत्तिीय लाभ के लिए कयि, क्योंकि ईसाइयों में यह प्रथा थी कि वे सोने और चांदी से जेल के रक्षकों से तहखाने में प्रवेश करने और उन कैदयिों से मलिने का अधकिार खरीदते थे जो मसीह के नाम के लिए पीड़ति हो रहे थे।

जब शहीद जेल में थी, कुछ ईसाई, जेल में प्रवेश करने के अधकिार के लिए भुगतान करके, पवत्रि कन्या सीरा से मलिने आए। जब उन्होंने देखा कि वह लोहे की बेड़यिों में कसकर बंधी और नंगी ज़मीन पर लेटी हुई थी, तो उन्होंने उसके लिए एक बस्तिर लाया और बछिाया, ताकि उसकी महान पीड़ा को थोड़ा सा ही सही, कम कयि जा सके। लेकनि जेल के एक रक्षक ने, शहीद के पास आकर, उसे बस्तिर से नीचे फेंक दयि और उस पर डाली गई बेड़यिों के वजन के कारण उसे बहुत दर्द पहुँचाया। और तुरंत ही वे लोहे की बेड़यिाँ अपने आप ढीली हो गईं और शहीद से गरि पड़ीं, जसिसे वहाँ मौजूद सभी लोग इस घटना को देखकर बहुत चकति हो गए।

उन दनिों, राजा उस शहर से रेसांकुसाडोन नामक दूसरे शहर की यात्रा करना चाहता था; सभी फारसी कुलीनों के साथ-साथ मगयिों का प्रमुख भी उसके साथ गया। उनके पीछे पवत्रि शहीद सरिा (जो बंधे हुए थे), और साथ ही सभी अन्य कैदी भी चल रहे थे; पूरे सफर के दौरान, पवत्रि शहीद ने दाऊद के भजन गाते हुए प्रभु से प्रार्थना की। संत की सुरक्षा में तैनात सैनकिों ने बार-बार उनसे चुप रहने की मांग की; इस कारण, उन्होंने उन पर और भी भारी बेड़यिाँ डाल दीं; लेकनि उन्होंने गाना और ईश्वर की स्तुति करना बंद नहीं कयि।

जब वे कार्स नामक स्थान पर पहुँचे, तो मगयिों के प्रमुख ने, अन्य न्यायाधीशों के साथ, संत को पूछताछ के लिए सामने लाने का आदेश दयि और उससे पूछा:

'तुम्हारे पास वचिार करने के लिए पर्याप्त समय रहा है; तो हमें बताओ, तुम क्या चुनती हो: क्या तुम देवताओं की अपनी पूर्व पूजा पर लौटने और जीवति रहने के लिए सहमत हो, या तुम एक ईसाई के रूप में मरना चाहती हो?'

संत ने उत्तर दयि:

'मैं और क्या चुन सकती हूँ, सवािय उस चीज़ के जसिे मैंने एक बार और हमेशा के लिए चुन लयि है? क्योंकि मैंने कई बार कहा है कि मैं एक ईसाई हूँ, अपने प्रभु यीशु मसीह की दासी हूँ: मैं उनसे प्रेम करती हूँ, उनकी सेवा करती हूँ, और उनके लिए मैं मरना चाहती हूँ।'

मंत्रयिों के मुखयि ने कहा:

'हमें उस जादुई ज्ञान के शब्द बताओ जो तुम्हें मूल रूप से सखिाया गया था।'

तब संत ने दाऊद की भजन-पुस्तक से ईश्वर के लिए प्रार्थना के शब्द जोर से कहना शुरू कर दयि।

मंत्रयिों के मुखयि को बहुत गुस्सा आया और उसने आदेश दयि कि उसके कपड़े फाड़ दिए जाएँ और उसे पूछताछ के लिए नग्न अवस्था में उसके सामने लाया जाए; फरि उसने पूछा:

'क्या तुम्हें सच में अभी बलि्कुल भी शर्म नहीं आ रही?'

संत ने उत्तर दयि:

'मुझे क्यों शर्मदिा होना चाहिए? मैं कोई चोर नहीं हूँ, कोई वेश्या नहीं हूँ; मैंने कसिी को कोई नुकसान नहीं पहुँचाया है; भले ही तुमने मेरे बाहरी वस्त्र छीन लिए हैं, मेरे पास स्वर्ग में एक अत्यंत तेजस्वी, अक्षय, शाश्वत वस्त्र है, जसिे मेरे प्रभु ने मेरे लिए तैयार कयि है, जसिके लिए मैं अब नग्न कर दी गई हूँ।'

जैसे ही संत ये शब्द बोल रहे थे, खज़ैन देश के राजकुमार, जो जादूगर के बगल में बैठा था, ने कहा:

'वह बकवास कर रही है।'

लेकिन संत ने उत्तर दिया:

'मुझ पर नहीं, बल्कि तुम पर भूत सवार है; क्योंकि तुम दुष्टात्माओं की सेवा करते हो। यदि तुम चाहो, तो मैं तुम्हारे माथे पर क्रॉस का चिह्न बना दूँगा; तब दुष्टात्मा तुमसे दूर हो जाएगा, और तुम्हारी आत्मा की आँखें प्रबुद्ध हो जाएँगी, ताकि तुम सत्य को जान सको।'

तब वहाँ उपस्थित सभी लोग ज़ोर से चिल्ला उठे:

'वह मौत की हकदार है, क्योंकि वह हमारे देवताओं का अपमान करती है, राजा का तिरस्कार करती है और राजकुमारों से अभद्रता से बात करती है।'

तब न्यायाधीशों ने उसे मौत की सज़ा सुनाई और एक बार फिर उसके मुँह पर मुहर लगा दी, ताकि किसी चालबाजी से उसकी जगह किसी दूसरी महिला को मौत की सज़ा न मिल जाए। वे पहले से ही उस दिन ही उसे मृत्युदंड देने के लिए ले जाने का इरादा कर रहे थे। लेकिन कुछ न्यायाधीशों ने उसकी फांसी को थोड़ी देर के लिए टालने की सलाह दी, यह कहते हुए कि उसे उसी जगह पर नहीं मारा जाना चाहिए, क्योंकि वहां बहुत सारे ईसाई थे और इसलिए उसकी मौत के कारण दंगा और हंगामा हो सकता है। इसी कारण से, मसीह की शहीद की फांसी स्थगित कर दी गई, और न्यायाधीशों ने संत को मुख्य जेलर के हवाले कर दिया; शहीद को पाकर, इस जेलर ने उसे बांधने और अन्य कैदियों के साथ उसी कोठरी में बंद करने का आदेश दिया।

इसके बाद राजा वहाँ से वेफारमाइस नामक नगर के लिए रवाना हुआ, जहाँ वह कुछ समय तक ठहरा। पवित्र शहीद को भी वहाँ लाया गया और कैद कर दिया गया। कारागार में, वह पवित्र शहीद गंभीर रूप से बीमार पड़ गईं, इतनी कि वह पहले ही मृत्यु की प्रतीक्षा कर रही थीं; तब मसीह की शहीद ने आँसुओं के साथ प्रभु से प्रार्थना करना शुरू कर दिया, उनसे विनती करते हुए कि उन्हें वहाँ मरने न दें, बल्कि उन्हें शहीद का मुकुट और अपने कष्टों के बीच मृत्यु का वरदान दें। ईश्वर ने अपनी सेविका की प्रार्थना सुनी और उन्हें स्वस्थ कर दिया।

तब जेलर में से एक, जो शैतान के उकसावे पर एक कामुक पाप करने के लिए प्रेरित था, ने अपने अधिकारी से विनती की कि वह उसे बंदी (पवित्र कन्या सियारा) के साथ अश्लील अपवित्रता का कृत्य करने की अनुमति दे।

रक्षकों के प्रमुख से अनुमति मिलने पर, वह मूर्तिपूजक अशुद्ध कामुकता से जलता हुआ मसीह की दुल्हन के पास गया। लेकिन प्रभु, जो अपने सेवक की रक्षा करते हैं, ने अदृश्य रूप से रक्षक की आँखों, कानों और जीभ पर प्रहार किया, जिससे वह अंधा, बहरा और गूंगा हो गया; और, जमीन पर लोटकर, वह एक उन्मत्त चीख निकालने लगा।

रक्षक दल के कप्तान ने यह सब देखकर, भयभीत होने के बजाय, ईश्वर की शक्ति को पहचानते हुए और रक्षक की इस दुस्साहस के लिए उसे दंड देते हुए, स्वयं पवित्र कन्या के प्रति कामवासना से ग्रस्त होकर, एक अन्यायपूर्ण कृत्य करने की योजना बनाई।

संत ने उससे कहा:

'मेरी सगाई स्वर्ग के राजा से हुई है, और वह अपनी कुंवारी और दुल्हन को अपवित्र नहीं होने देंगे।'

लेकिन पहरेदार के कप्तान ने उसकी कोई परवाह नहीं की। हालाँकि, जैसे ही वह निर्लज्जतापूर्वक उस कन्या के पास जाने वाला था, परमेश्वर के एक स्वर्गदूत ने उसे मार गिराया, और वह मृतक की तरह जमीन पर गिर पड़ा। नौकर आए और उसे उठा ले गए; वह कुछ समय तक होश में नहीं आया, लेकिन परमेश्वर से ऐसी सजा मिलने के बाद भी, शैतान का यह सेवक सुधरने वाला नहीं था। क्रोध से भरकर, उसने तुरंत शहीद को नष्ट करने का निश्चय किया, क्योंकि उसे उसे किसी न किसी प्रकार की मृत्यु देने का आदेश मिला था। इस दुष्ट व्यक्ति ने संत को तलवार से मारना नहीं चाहा, बल्कि रस्सी से उसका गला घोंटने का निश्चय किया। एक लोहार को बुलाकर, उसने उसे शहीद के पैरों से लोहे की बेड़ियाँ हटाने का आदेश दिया।

लेकिन पवित्र कन्या ने रक्षकों के कप्तान से कहा:

'यहाँ लोहार की कोई ज़रूरत नहीं है।'

ये शब्द कहने के बाद, उसने स्वयं अपनी गर्दन, हाथों और पैरों से बेड़ियाँ उतार लीं। और जो भी इस घटना के साक्षी बने, वे चकित रह गए, फिर भी उन्होंने ईश्वर की शक्ति को नहीं पहचाना।

तब जेलर के कप्तान ने आज्ञा दी कि मसीह की शहीद के हाथ फिर से बाँध दिए जाएँ, ताकि वह अपने फांसी के दौरान विरोध न कर सके। लेकिन शहीद ने उससे फिर कहा:

– 'अपनी व्यर्थ की सलाह छोड़ दो, क्योंकि मैं स्वयं, अपनी इच्छा से, अपने ईश्वर के लिए मृत्यु को अपनाऊँगी, ताकि मैं एक हाथ भी न हिलाऊँ।'

तब दुष्ट लोगों ने शहीद के गले में रस्सी बाँधी और फाँसी का फंदा कसना शुरू कर दिया। जब संत पहले ही मौत के कगार पर थीं, तो उन्होंने रस्सी को थोड़ा ढीला किया और उससे कहा:

'यदि तुम ईसाई धर्म का त्याग कर दो, तो हम तुम्हारी जान बख्श देंगे।'

लेकिन शहीद ने उनसे उत्तर दिया:

'जैसा तुम्हें आदेश दिया गया है, वैसा करो।'

उन्होंने फिर से उसका गला घोंटना शुरू कर दिया, लेकिन एक बार फिर रस्सी ढीली कर दी और पूछा:

'क्या तुम मसीह का त्याग नहीं करना चाहतीं, ताकि तुम जीवित रह सको?'

लेकिन पवित्र शहीद, मसीह के लिए मरने की इच्छा रखते हुए, ने फिर से उन्हें आज्ञा दी कि वे जैसा उनसे कहा गया है वैसा ही करें। तब यातना देने वालों ने दोनों ओर से पूरी ताकत से रस्सी खींची, जब तक कि उन्होंने पवित्र शहीद की जान नहीं ले ली।

इस प्रकार पवित्र शहीद, कन्या सीरा, अपने प्रभु मसीह के लिए यातनाएँ सहते हुए[5699] , का निधन हुआ।

उसके यातना देने वालों ने उसके पवित्र शरीर को सम्मानपूर्वक दफनाने से इनकार कर दिया, बल्कि उसे कुत्तों को खाने के लिए फेंक दिया। इसलिए, उन्होंने शहीद के शरीर को कालकोठरी से निकालकर एक घर में ले गए, वहाँ बहुत सारे कुत्ते इकट्ठा किए, और, दरवाज़े बंद करके, शहीद के शरीर को कुत्तों को खाने के लिए फेंक दिया। लेकिन कुत्तों ने उसे छुआ भी नहीं, और उस रात मूर्तिपूजकों ने शहीद का शरीर घर से बाहर फेंक दिया। उस शहर के ईसाइयों ने, मसीह के शहीद की पीड़ादायक मृत्यु के बारे में जानकर, यह देखने के लिए बारीकी से निगिरानी रखी कि उसके यातना देने वाले क्या करेंगे। जब मसीह की शहीद का शरीर बाहर फेंका गया, तो मसीहियों ने उसे उठाया और सम्मान के साथ दफनाया, और परमपिता, पुत्र और पवित्र आत्मा, त्रिमूर्ति में एक परमेश्वर की महिमा की, जिन्हें हम भी यीशु मसीह के द्वारा महिमा और सम्मान अर्पित करते हैं, अब और सदा के लिए और युगों-युगों तक। आमीन।

पवित्र शहीद यूटकियिस का स्मरणोत्सव

24 अगस्त को स्मरण किया जाता है

संत यूटकियिस सेवासटोपोल शहर के मूल निवासी थे[5700] । मसीह के सुसमाचार को सुनने के बाद, उन्होंने अपने माता-पिता और दोस्तों को छोड़ दिया और प्रेरित शिष्य और प्रेरित यूहन्ना द थियोलोजियन के पास चले गए; हर जगह उनका अनुसरण करते हुए और उनके जीवन के तरीके का अनुकरण करते हुए, संत यूटकियिस ने उनसे दिव्य ज्ञान सीखा और उनसे, एक झरने की तरह, ईश्वर की कृपा प्राप्त की। प्रेरितिक उत्साह से भरकर, संत यूटकियिस ने बहादुरी से शैतानी धोखे को जड़ से उखाड़ फेंका। पवित्र प्रेरित पौलुस से मिलने पर, यूटकियिस उनके साथी बन गए और उनके साथ मिलकर सुसमाचार का प्रचार करते हुए और हर प्रकार की कठिनाइयों को साहसपूर्वक सहते हुए बहुत परिश्रम किया; इस कारण से, संत यूटकियिस को सुसमाचार प्रचारक यूहन्ना द थियोलोजियन और पवित्र प्रेरित पौलुस दोनों का शिष्य माना जाता है।

इस यूटकियिस को छोटे प्रेरितों में भी गिना जाता है और उन्हें प्रेरित कहा जाता है, हालांकि उन्हें सत्तर प्रेरितों में शामिल नहीं किया गया है; उन्हें प्रेरित की उपाधि से सम्मानित किया जाता है क्योंकि उन्होंने हमारे प्रभु यीशु मसीह के नाम का प्रचार करते हुए वरिष्ठ प्रेरितों के साथ मिलकर परिश्रम किया, और यह भी इसलिए क्योंकि उन्हें इन वरिष्ठ प्रेरितों द्वारा वचन (प्रचार) की सेवकाई और बलिदान चढ़ाने के लिए एक बिशप के रूप में नियुक्त किया गया था, और,

---

[5699] पवित्र शहीद सीरा की मृत्यु 558 में हुई। पवित्र शहीद सीरा की मृत्यु के तुरंत बाद, उनकी रिश्तेदार, संत मैरी (जो फारसी में गोलदिखा के नाम से जानी जाती थीं), ने उसी राजा, खसरव प्रथम के अधीन मसीह के नाम का प्रचार करने के लिए अपना शहीद होना शुरू किया; फिर भी उनका दुख दूसरे राजा खसरव—जो पहले वाले के पोते—यानी खसरव द्वितीय परवेज़ के अधीन जारी रहा। (590–628)। – सेंट मैरी गोलदिखा का पर्व दिवस 12 जुलाई है।

[5700] प्राचीन काल में कई शहर सेवासटोपोल (या सेबास्टे) नाम से जाने जाते थे; इस मामले में विशेष रूप से किस सेवासटोपोल का उल्लेख है, यह अज्ञात है।

अंत में, क्योंकि वह मसीह के नाम का प्रचार करते हुए न केवल अन्य प्रेरितों के साथ, बल्कि अकेले भी कई देशों में घूमा। हालाँकि, उन्होंने अकेले सुसमाचार का प्रचार नहीं किया, क्योंकि उनके साथ हमेशा परमेश्वर का एक स्वर्गदूत रहता था, जो उन्हें बल देता था और उनके साथ होने वाली सभी घटनाओं की भविष्यवाणी करता था। मसीह के इस प्रेरित ने जहाँ भी गए, धैर्यपूर्वक कैद और प्रहारों को सहन किया, और अपने प्रभु के लिए साहसपूर्वक दुख उठाया।

एक अवसर पर, जब संत यूटिकियस को कैद किया गया था और वह लंबे समय से भूखा था, तो स्वर्ग से परमेश्वर द्वारा उसे रोटी भेजी गई; यह रोटी एक अदृश्य हाथ द्वारा लाई गई थी; इस रोटी का स्वाद चखने के बाद, मसीह का प्रेरित इतना बलवान हो गया कि उसने उन सभी यातनाओं को कुछ भी नहीं समझा जिनसे वह गुज़र रहा था।

एक अन्य अवसर पर, जब उन्हें यातना वृक्ष पर नग्न लटकाया गया था और लोहे के औजारों से यातना दी जा रही थी, तो उनके शुद्ध शरीर से उनके रक्त के साथ सुगंधित मुर्रा (एक सुगंधित द्रव) बह निकली और उसने हवा को अपनी मीठी सुगंध से भर दिया।

बाद में, जब पवित्र प्रेरित को एक भड़कती हुई आग में फेंका गया, तो स्वर्ग से अचानक गरज की आवाज़ सुनाई दी, जिसके बाद बर्फ (ओलावृष्टि) के साथ भारी बारिश हुई, जिसने आग की लपटों को बुझा दिया; संत जीवित और सुरक्षित रहे और प्रभु की महिमा की।

संत को जंगली जानवरों के सामने भी फेंका गया, लेकिन वे उन्हें देखते ही भेड़ों की तरह शांत हो गए; लेकिन सबसे अद्भुत बात यह थी: उस पर छोड़े गए शेर ने मानव स्वर में बोलकर सभी को प्रभु और हमारे उद्धारकर्ता यीशु मसीह की महानता का घोषणा किया, और इस दृश्य को देखने वाले सभी लोग अत्यंत चकित और भयभीत हो गए।

लेकिन इसमें आश्चर्य की क्या बात है? वह जिसने प्राचीन काल में बिलाम की गधी का मुँह खोल दिया था (गिनती 22:28–31), ताकि वह मानव भाषा में बोल सके, क्या वह सिंह का मुँह नहीं खोल सकता था, ताकि वह मानव भाषा में बोलकर दुष्टों को उजागर कर उन्हें लज्जित कर सके और अपनी सर्वशक्तिमान शक्ति की महिमा कर सके? वही एकमात्र प्रभु थे जो यहाँ और वहाँ दोनों जगह उपस्थित थे और चमत्कार करते थे।

जहाँ तक इस बात का संबंध है कि पवित्र प्रेरित यूटिकियस का अंत कैसे हुआ, यह ज्ञात है कि उन्हें बँधी हुई अवस्था में एफ़िसुस से उनके स्वदेश सेवासपोल लाया गया था, जहाँ उनका निधन हुआ। मेनायोन में उनके लिए निर्धारित सेवा में उनके निधन के तरीके का उल्लेख है, अर्थात्: उन्हें तलवार से सिर कलम कर दिया गया था, और ईश्वर ने उनके पवित्र सिर को विजय के गौरवशाली मुकुट से विभूषित किया[5701] ।

कॉन्टाकियन, स्वर 3:

यूतखियुस, प्रेरितों के सहकर्मी और पवित्र धर्मगुरुओं की शोभा, तू शहादत द्वारा महिमामय हुआ; तू सूर्य के समान चमका, सबको प्रकाशित करते हुए, और तूने अधर्मीपन की घोर अँधेरी को दूर किया। इसी कारण हम तुझे मसीह के एक सच्चे दैवीय सेवक के रूप में सम्मानित करते हैं।

पवित्र शहीद टेटियन की स्मृति

24 अगस्त को स्मरण किया जाता है

यह पवित्र शहीद मंटिनिया का मूल निवासी था, जो क्लॉडियोपोलिस के मेट्रोपोलिस और होनोरियाडिस के डायोसीस[5702] के अंतर्गत स्थित है। मसीह में अपने विश्वास के लिए मूर्तिपूजकों द्वारा पकड़े जाने पर, उसे क्लॉडियोपोलिस शहर[5703] के राज्यपाल, अर्बन के समक्ष लाया गया, और पूछताछ के दौरान उसने खुद को एक ईसाई

[5701] पवित्र प्रेरित यूटिकियस की मृत्यु पहली शताब्दी के अंत या दूसरी शताब्दी की शुरुआत में हुई।

[5702] मांतिनिया और क्लॉडियोपोलिस एशिया माइनर में उत्तर-पश्चिमी रोमन प्रांत बिथिनिया के होनोरियाड क्षेत्र में स्थित थे। यूनानियों के बीच, प्रांतों के प्रमुख शहरों को 'मेट्रोपोलिस' कहा जाता था, जबकि प्रांतीय जिलों के शहरों को 'डायोसीस' कहा जाता था। प्रशासनिक रूप से, मंटिनियम क्लॉडियोपोलिस के हेगेमोन और होनोरियाडिस के एपार्क के अधिकार क्षेत्र में था।

[5703] क्लोदियोपोलिस शहर, जिसे पहले बिथिनिया के नाम से जाना जाता था, एशिया माइनर में बिथिनिया प्रांत में, बिलिया नदी के उद्गम के पास स्थित था।

घोषति कयि, जसिके लिए उसे कैद कर दयि गया। बाद में उसकी दूसरी बार पूछताछ की गई; और चूंकि वह मसीह में अपने वश्विास पर अडगि रहा, उसे पहले लाठयिों से पीटा गया, फरि उसके शरीर को लोहे के औजारों से खुरोचा गया, जसिके बाद उसे फरि से पीटा गया और शहर में घसीटा गया। शहर के द्वार पर पहुँचने पर, पवत्रि शहीद ने क्रूस का चह्नि बनाया, और उसी क्षण ऊपर से एक आवाज़ सुनी जो उनके लिए एक आनंदमय भवष्यि की घोषणा कर रही थी, जसिके बाद उन्होंने अपना प्राण प्रभु को सौंप दयि[5704] ।

7 सतिंबर

25 अगस्त (पुराना कैलेंडर)

संत ततिस प्रेरति

25 अगस्त को स्मरणोत्सव

पवत्रि प्रेरति टाइटस क्रीट के मूल नविासी थे और उनका जन्म ऐसे माता-पति के यहाँ हुआ था जो यद्यपि कुलीन वंशज थे (क्योंकि वे अपनी वंशावली क्रीट के राजा माइरो तक ट्रेस करते थे), परन्तु सच्चे धर्म के अनुयायी नहीं थे – वे मूर्तपिूजक दुष्टता का अभ्यास करने वाले आराधक थे। टटिस ने स्वयं भी शुरू में उसी दुष्टता की सेवा की और, अपनी युवावस्था में, हेलेनकि वज्ञिानों का अध्ययन करने में बहुत उत्साह दखिाया: उन्होंने होमर और अन्य जैसे प्राचीन दार्शनकिों और कवयिों की कृतयिों का लगन से अध्ययन कयि। इसके बावजूद, ततिस ने द्वेष से रहति और पवत्रिता से युक्त जीवन जयि; यद्यपि वह सच्चे ईश्वर को नहीं जानता था, फरि भी उसने नर्दिोषता में अपने शरीर की कुँवारी पवत्रिता को बनाए रखा, जैसा कि बाद में संत इग्नेशयिस द गॉड-बेयरर ने फलिाडेल्फयिन्स को लखि अपने पत्र में उसकी गवाही दी, जसिमें उन्होंने ततिस को एक कुंवारा कहा; उसी परमेश्वर को जसिे टाइटस वश्विास के द्वारा नहीं जानता था, उसने अपने अच्छे कर्मों के द्वारा सम्मानति कयि, और वह उसी को भाता था।

जब टाइटस बीस वर्ष का हुआ, तो उसने स्वर्ग से एक आवाज़ को अपने पास उतरते हुए सुना, जो कह रही थी:

'ततिुस! तुम्हें इस स्थान को छोड़ देना चाहिए और अपनी आत्मा को बचाना चाहिए, क्योंकि यूनानयिों की शक्षिाएँ मोक्ष की ओर नहीं ले जातीं।'

टटिस ने यह आवाज़ सुनने के बाद, दूसरी बार इसे सुनने की लालसा की; क्योंकि वह जानता था कि कभी-कभी आवाज़ें और प्रेरणाएँ मूर्तयिों से आती हैं। अब तक, टटिस मूर्तयिों में वश्विास नहीं करना चाहता था, क्योंकि वह राक्षसों की धोखाधड़ी को पहचानने लगा था (जसिका शकिार मूर्तयिों की पूजा करने वाले सभी लोग होते हैं); और वह वहाँ एक और साल तक रहा।

तब, एक स्वप्न में, उसे परमेश्वर से यहूदी धर्मग्रंथों को पढ़ने की आज्ञा मलिी; और उस स्वप्न-दृश्य के बाद, टाइटस ने यहूदी धर्मग्रंथों की खोज शुरू कर दी। पवत्रि भवष्यिवक्ता यशायाह की पुस्तक पाकर, टाइटस ने उसे खोला और अध्याय एकछत्तालशि पर आया, जो इस प्रकार शुरू होता है: *'हे द्वीपों, मेरे सामने मौन रहो, और हे राष्ट्रों, अपनी शक्ति को नया करो* (यशायाह 41:1)। इस अध्याय को पढ़ते समय, टाइटस की नज़र कुछ ऐसे शब्दों पर पड़ी, जो उसे ऐसा लगे जैसे स्वयं परमेश्वर उसके हृदय से कह रहे हों, अर्थात्: *'तुम मेरे सेवक हो; मैंने तुम्हें चुन लयि है और तुम्हें त्याग न दूँगा: न डर, क्योंकि मैं तुम्हारे संग हूँ*; धोखा न खाओ, *'क्योंकि मैं तुम्हारा परमेश्वर हूँ* (यशायाह 41:9-10)। और फरि: *'मैं यहोवा, तुम्हारा परमेश्वर हूँ: मैं तुम्हारा दाहनिा हाथ थामे हुए हूँ* (यशायाह 41:13)। अध्याय के अंत के पास, उसने मूर्तपिूजा के भ्रम के बारे में पढ़ा, अर्थात्: *'कोई नहीं था, और उनमें कोई ऐसा परामर्शदाता नहीं था जसिके पास मैं मुड़ सकूँ और जो उत्तर दे सकें। देखो, वे सब कुछ नहीं हैं, वे व्यर्थ हैं, और उनके काम कुछ नहीं हैं; उनकी मूर्तयिाँ केवल हवा और व्यर्थता हैं'* (यशायाह 41:28-29)।

[5704] चूंकि सेंट टेटयिन के उत्पीड़क प्रीफेक्ट अर्बन थे, इसलिए उनकी शहादत का समय डायोक्लेटयिन के शासनकाल, वशिेष रूप से वर्ष 305, माना जाता है। सम्राट बेसलि, अपने संतों के कैलेंडर में, उन्हें टेटयिन के रूप में संदर्भति करते हैं।

ये और भविष्यद्वाणी की पुस्तक के अन्य वचन, मानो, टाइटस के लिए एक कुंजी के रूप में काम आए, जिसने उसके मन के द्वार को एक सच्चे परमेश्वर के ज्ञान के लिए और, साथ ही, मूर्तिपूजा की धोखाधड़ी और मूर्तिपूजक धर्म की गलतियों की समझ के लिए खोल दिए; और उस समय से, टाइटस का हृदय उस परमेश्वर के लिए आग से भर गया जिसे यहूदी पूजते थे।

उस समय, क्रीट के द्वीप पर (जहाँ टाइटस रहता था), मसीह के बारे में एक अफवाह फैली - वह परमेश्वर जो देह में प्रकट हुआ था, जो यरूशलेम में लोगों के बीच रहा था और अद्भुत और अकथनीय चमत्कार किए थे; क्योंकि उसकी कीर्ति पृथ्वी के छोर तक फैल गई थी। क्रीट के एम्फिपिटस[5705] , जो टाइटस के नाना थे, ने प्रमुख पुरुषों से परामर्श करने के बाद, अपने भतीजे—इस समझदार और जिज्ञासु टाइटस—को यरूशलेम भेजा ताकि वह मसीह के वचनों को ध्यान से सुनकर समझ सके, और उनसे बातचीत कर सके; इस प्रकार, टाइटस अपने देशवासियों को उन सभी बातों की सबसे बारीकी से रिपोर्ट कर सके जो उसने स्वयं मसीह के बारे में सीखी थीं।

तितुस यरूशलेम के लिए रवाना हुआ; प्रभु मसीह को देखकर, वह उनके सामने झुक गया और प्रभु के पीछे-पीछे और उनके शिष्यों के पीछे-पीछे चलने लगा, बड़ी संख्या में प्रभु के पीछे चलने वाली भीड़ में घुल-मिल गया; इस प्रकार, तितुस ने मसीह द्वारा किए गए कई चमत्कारों को देखा, और प्रभु के उद्धारकारी दुःख को देखा, और उनके पुनरुत्थान से भी आश्वस्त हुआ। प्रभु के स्वर्गारोहण के बाद, जब पवित्र आत्मा आग की जीभों के रूप में प्रेरितों पर उतरा, और प्रेरित विभिन्न भाषाओं में बोलने लगे, तो तितुस ने प्रेरितों को क्रेती भाषा में भी बातें करते सुना, और वह बहुत चकित हुआ, जैसा कि प्रेरितों के काम की पुस्तक में लिखा है: *'वहाँ आए हुए क्रेतियों* (जिनमें तितुस भी था) *और अरबियों* ने आश्चर्य करके एक-दूसरे से कहा, *'हम उन्हें अपनी-अपनी भाषाओं में परमेश्वर के बड़े-बड़े कामों के विषय में बोलते सुनते हैं'* (प्रेरितों के काम 2:10-11)। इसके बाद, तितुस ने यह सब अपने देश क्रीट में सुनाया।

धन्य तीतुस ने प्रेरितों के कार्य में भी भाग लिया; जब अन्यजातियों (प्रेरितों 14:27) और शताध्यक्ष कोर्नेलियुस, और बाद में अन्य यूनानियों के लिए विश्वास का द्वार खोला गया, तो तितुस, जो अन्यजाति और अनच्छादित मूल का था, को पहले साउल के नाम से जाने जाते, पवित्र प्रेरित पौलुस द्वारा बपतिस्मा दिया गया। यद्यपि तितुस मसीह में विश्वास करने लगा था, फिर भी प्रेरितों ने उसे तब तक प्रारंभिक कलीसिया में स्वीकार नहीं किया जब तक कि उसका बपतिस्मा नहीं हो गया था, क्योंकि वे बिना खतना कराए लोगों को बिल्कुल भी स्वीकार नहीं करते थे; हालाँकि, तीतुस पुराने नियम के खतना के रीति-रिवाज़ को अपनाना नहीं चाहता था; फिर भी मसीह में विश्वास करने आए यहूदियों ने शुरू में यह माँग की कि सभी गैर-यहूदियों को यह रीति-रिवाज़ अपनाना चाहिए, यह कहते हुए कि खतने के बिना कोई भी उद्धार प्राप्त नहीं कर सकता, जैसा कि प्रेरितों के काम की पुस्तक में लिखा है: 'कुछ लोग यहूदिया से उतरकर भाइयों को यह सिखाने लगे, *"यदि तुम मूसा की रीति के अनुसार खतना नहीं कराओगे, तो तुम बच नहीं सकते"* (प्रेरितों के काम 15:1)। ऐसे लोगों ने पवित्र प्रधान प्रेरित पतरस के खिलाफ भी बड़बड़ाया क्योंकि उन्होंने शतनरीक्षक कोर्नेलियुस को बपतिस्मा दिया था और उनसे (प्रेरित पतरस से) विवाद में पड़ गए, यह कहते हुए कि वह अखुत्ते लोगों के घर में चले गए थे और उनके साथ भोजन किया था। किन्तु जब पवित्र प्रेरितों ने परिषद में इस मामले पर विचार किया, तो उन्होंने यह निर्णय लिया कि अन्यजातियों को खतना करवाने के लिए बाध्य न किया जाए; तभी धन्य टाइटस का बपतिस्मा हुआ, क्योंकि किसी ने उसे खतना कराने के लिए मजबूर नहीं किया, जैसा कि प्रेरित पौलुस ने गलातियों को लिखे अपने पत्र में भी उल्लेख किया है, कहते हुए: *'लेकिन उन्होंने मेरे साथ रहे टाइटस को भी खतना कराने के लिए मजबूर नहीं किया, यद्यपि वह एक यूनानी था'* (गला. 2:3)।

उनके बपतिस्मा के बाद, अन्य प्रमुख प्रेरितों द्वारा टाइटस को प्रेरितिक सेवा का कार्यभार संभालने के लिए अधिकृत किया गया और उसे सत्तर छोटे प्रेरितों में गिना गया; पौलुस प्रेरित के साथ-साथ टिटस को भी अन्यजातियों के पास परमेश्वर का वचन प्रचार करने के लिए भेजा गया था; और टिटस ने संत पौलुस का लगातार अनुसरण किया, न केवल जैसे एक शिष्य अपने गुरु का करता है, बल्कि जैसे एक पुत्र अपने प्रिय पिता का करता है। क्योंकि पौलुस उसे अपना पुत्र कहता है, जैसा कि तितुस को लिखी उसकी पत्री से देखा जा सकता है: *'मेरे सच्चे पुत्र तितुस को, जो हमारे समान विश्वास में है: अनुग्रह और दया'* (तितुस 1:4)। संत तितुस कभी-कभी प्रेरित पौलुस के साथ यात्रा करते थे, जबकि अन्य समयों में उन्हें स्वतंत्र रूप से प्रचार करने के लिए उनके द्वारा भेजा जाता था; उदाहरण के लिए, उसे पॉल द्वारा दल्मातिया भेजा गया था, जैसा कि पॉल तिमोथी को लिखी अपनी पत्री में उल्लेख करते हैं, कहते हुए: *'तितुस दल्मातिया*

[5705] अर्थात् एक शासक।

को' (2 तमिोथी 4:10), यानी, उसे दल्मातयिा के शहरों में सुसमाचार का प्रचार करने के लिए मेरे द्वारा भेजा गया था। कभी-कभी, पवत्रि प्रेरति पौलुस ततिुस को अपनी प्रेरतिकि पत्रयिों के साथ भेजते थे, जैसे, उदाहरण के लिए, कोरन्थियिों के पास, जनिसे वे कहते हैं: *'मैंने ततिुस को आग्रह कयिा और उसके साथ भाइयों में से एक को भेजा'* (2 कुर. 12:18)। वह यह भी कहते हैं: *'हमने ततिुस से आग्रह कयिा कि वह जो आरम्भ कर चुका था, उसे पूरा करे'* (2 कुरन्थियिों 8:6)। और फरि: *'परमेश्वर का धन्यवाद हो, जसिने ततिुस के हृदय में तुम्हारे लिए ऐसा उत्साह उत्पन्न कयिा है'* (2 कुरन्थियिों 8:16)। नस्संदेह, पौलुस ने मसीह में तीतुस के लिए महान आध्यात्मकि प्रेम रखा, क्योंकि वह उसे कभी अपना पुत्र और कभी अपना भाई कहता है; और जब तीतुस ने पौलुस को छोड़ने में देरी की, तो बाद वाले ने उसके लिए दुःख व्यक्त कयिा, अपने बारे में कहते हुए: *'जब मैं मसीह के सुसमाचार का प्रचार करने के लिए त्रोआस आया, यद्यपि प्रभु ने मेरे लिए द्वार बंद कर दयिा था, फरि भी मुझे मन की शांति नहीं मलिी, क्योंकि मुझे मेरा भाई तीतुस वहाँ नहीं मलिा'* (2 कुरन्थियिों 2:12-13)। और जैसे महान प्रेरति टाइटस की अनुपस्थतिि में दुखी हुए, वैसे ही उसकी उपस्थतिि से उन्हें सांत्वना मलिी, क्योंकि वे कहते हैं: *'सांत्वना देने वाला परमेश्वर ने टाइटस के आगमन से हमें सांत्वना दी'* (2 कुरन्थियिों 7:6)। और वे यह भी कहते हैं: *'हम टाइटस की प्रसन्नता से प्रसन्न हुए'* (2 कुरन्थियिों 7:13)।

मसीह के नाम की सुसमाचार लेकर कई देशों में यात्रा करते हुए, पवत्रि प्रेरति ततिुस के स्वदेश, क्रीट पहुँचे। उस समय, टटिस की बहन का पतरिस्टकिस, क्रीट में एम्फ़पिोलसि में रहता था; ईश्वर मसीह के बारे में प्रेरतिों का उपदेश सुनकर, उसने शुरू में उसका मज़ाक उड़ाया; लेकनि जब प्रेरति पौलुस द्वारा उसके मृत पुत्र को मृतकों में से जलिाया गया, तो रस्टकिस ने मसीह में वश्विास कयिा और अपने पूरे घर के साथ पवत्रि बपतस्मिा ग्रहण कयिा; उसी समय, उस द्वीप पर रहने वाले कई अन्य मूर्तपिूजकों ने भी पवत्रि वश्विास को अपनाया और बपतस्मिा लयिा। तब संत पौलुस ने धन्य ततिुस को क्रीट द्वीप और अन्य पड़ोसी द्वीपों का बशिप नयिुक्त कयिा; उन्होंने नव-प्रबुद्ध ईसाइयों को उसके हवाले कर दयिा और उसे वहीं छोड़ दयिा; जबकि वह स्वयं अन्य देशों के लिए नकिल पड़े ताकि वे मूर्तपिूजकों को मसीह के नाम का प्रचार कर सकें। नकिोपोलसि पहुँचने पर, संत पौलुस ने ततिुस को एक पत्र लखिा, जसिमें उन्होंने उन्हें मसीही समुदाय के उचति शासन के बारे में नर्देश दयिा: *'इसीलिए मैं तुम्हें क्रीट में छोड़ गया था, ताकि तुम जो कुछ करना बाकी है उसे व्यवस्थति करो और हर नगर में बुज़ुर्ग नयिुक्त करो, जैसा कि मैंने तुम्हें नर्देश दयिा था'* (तीतुस 1:5)। प्रेरति के इन शब्दों की व्याख्या करते हुए, संत क्रसिोस्टोम कहते हैं: 'ततिुस, पॉल के साथ रहने वालों में सबसे अधकि सक्षम था; क्योंकि यदि वह सक्षम नहीं होता, तो पॉल उसे पूरे द्वीप का प्रभार नहीं सौंपते, न ही उसे अधूरे काम पूरे करने का आदेश देते, और न ही उन्होंने बशिपों को उसके अधकिार में रख दयिा होता, यदि उन्होंने इस व्यक्ति (ततिुस) पर भरोसा नहीं कयिा होता।'

जब पौलुस नकिोपोलसि में रुके, तो उन्होंने फरि से ततिुस को अपने पास बुलाया, और उसे अपने पत्र में लखिा: *'जब मैं आर्तेमास या तकिीकुस को तेरे पास भेजूँ, तो हर संभव प्रयास करके नकिोपोलसि में मेरे पास आना, क्योंकि मैंने वहाँ सर्दी बतिाने का नश्चिय कयिा है'* (तीतुस 3:12)। और संत टाइटस नकिोपोलसि में उनके पास आए; उनके साथ थोड़ी देर रहने के बाद, टाइटस को फरि से उनके द्वारा क्रीट भेज दयिा गया।

इसके बाद, संत पौलुस को यरूशलेम में गरिफ्तार कयिा गया, बेड़यिों में जकड़ा गया और रोम भेज दयिा गया। टाइटस, यह सब सुनकर, अपने शक्षिक की शहादत का साक्षी बनने के लिए रोम आया। तीतुस पवत्रि प्रेरति पौलुस की मृत्यु तक रोम में रहे; प्रेरति का माननीय सरि काटे जाने के बाद (जो नेरो के आदेश पर कयिा गया था[5706]), तीतुस ने प्रेरति के माननीय शरीर को दफनाया और एक बार फरि क्रीट में अपनी मंडली के पास लौट आए; टाइटस ने क्रीट के सबसे उत्कृष्ट शहरों में से एक, गॉर्टनि में अपना बशिप का पद संभाला; उन्होंने अथक परश्रिम कयिा, ग्रीकों को उनकी भूल से हटाकर मसीह की ओर मोड़ा, उन्हें उपदेश दयिा और चमत्कारों के माध्यम से उनके वश्विास को दृढ़ कयिा।

यह ध्यान देने योग्य है कि उस द्वीप पर देवी डायना की एक मूर्ति थी, जसिे मूर्तपिूजकों द्वारा पूजति कयिा जाता था[5707] ; कई यूनानी इस मूर्ति की पूजा करने और बलदिान चढ़ाने के लिए आते थे। एक दनि, संत ततिुस उस स्थान पर आए जहाँ अधर्मी इकट्ठा थे और उन्होंने उनके बीच परमेश्वर का वचन प्रचार करना शुरू कयिा, उन्हें मूर्तपिूजा की धोखाधड़ी को पहचानकर सच्चे परमेश्वर की ओर लौटने के लिए प्रोत्साहति कयिा। लेकनि चूँकि लोगों ने उनकी बातों पर ध्यान नहीं

[5706] सम्राट नीरो ने 54 से 68 तक शासन कयिा।

[5707] प्राचीन यूनानयिों के बीच, डायना को शकिार की देवी और, अधकि सामान्य रूप से, प्रकृति की संरक्षक माना जाता था।

दयिा, संत टाइटस ने ईश्वर से प्रार्थना की, और तुरंत ही वह मूर्त गिरिकर धूल-मट्टिी में मलि गई। तब वहाँ मौजूद सभी लोग भय से भर गए, और उसी दनि पाँच सौ लोग मसीह पर वशि्वास करने लगे। इसी तरह, जब रोमन सम्राट के आदेश पर, क्रीट द्वीप पर घृणति देवता ज्यूस[5708] के सम्मान में एक बड़ा मूर्तपिूजक मंदरि बनाया जा रहा था - और इसका नरि्माण पहले ही पूरा होने वाला था - तो मसीह के प्रेरति, ततिुस, उस जगह से गुज़रते हुए, सच्चे परमेश्वर से प्रार्थना की, और अचानक वह मंदरि गरि गया और धूल-मट्टिी में मलि गया। इस चमत्कार को देखकर, कई यूनानी मसीह की ओर मुड़े और प्रभु यीशु मसीह, सच्चे परमेश्वर के नाम पर एक सुंदर चर्च का नरि्माण कयिा।

पवत्रि वशि्वास के प्रकाश से क्रीट द्वीप और आसपास की भूम कि प्रकाशति करने के बाद, प्रेरति ततिुस ने वृद्धावस्था में प्रवेश कयिा; वे चौरासी वर्ष की आयु में प्रभु के पास चले गए। उनके नधिन के समय, स्वर्गदूत उनकी आत्मा को ग्रहण करने के लएि स्वर्ग से उतरे; और उनका चेहरा सूर्य के समान चमक उठा। क्योंक जिनिका जीवन संसार के लएि एक प्रकाश था, उनके नधिन को भी हमारे प्रभु यीशु मसीह के प्रकाश की करिणों से सम्मानति कयिा गया[5709] ।

कॉन्टाकयिन, स्वर 2:

हे प्रेरति, पौलुस आपके साथी के रूप में प्रकट हुए; उनके द्वारा आपने हमें दव्यि अनुग्रह का वचन बताया, हे सदा-स्मरणीय तीतुस, रहस्य के वाहक। इसी कारण हम आपसे पुकारते हैं: हम सभी के लएि प्रार्थना करना न छोड़ें।

पवत्रि प्रेरति बार्थोलोम्यू की पूजनीय अवशेषों का स्थानांतरण

25 अगस्त को स्मरण कयिा जाता है

संत बार्थोलोम्यू प्रेरति[5710] की शहादत के बाद, जो उन्होंने अर्मेनयिाई शहर अल्बाना[5711] में दुष्टों के हाथों मसीह के लएि सहन की, वशि्वासयिों ने प्रेरति के पवत्रि शरीर को प्राप्त कयिा और उसे उसी शहर में एक टनि के अवशेष पात्र में रख दयिा; और प्रेरति की अवशेषों के माध्यम से चमत्कार होने लगे, क्योंक उनके द्वारा बीमारों को स्वास्थ्य लाभ मलिा; इस कारण, कई अवशि्वासयिों ने मसीह की ओर मुंह कयिा। हालाँक, शैतान के सेवक—दुष्ट और क्रूर पुरोहति—इन चमत्कारों के बारे में सुनने और यहाँ तक क उन्हें अपनी आँखों से देखने के बाद भी, न केवल ईश्वर की शक्त को पहचानने में असफल रहे, बल्क उनके हृदय कठोर हो गए और वे प्रेरति के पवत्रि अवशेषों से घृणा करने लगे। शत्रुता और क्रोध की पराकाष्ठा पर पहुँचकर, शैतान के इन सेवकों ने अवशेषों वाली उपर्युक्त टनि की संदूकची को समुद्र में फेंक दयिा, इस इरादे से क उसे समुद्र की गहराई में डुबो दें। इसके अलावा, इन दुष्ट लोगों ने अन्य पवत्रि शहीदों, अर्थात् पापयिन, लूसयिन, ग्रेगरी और अकाकयिोस के अवशेषों से भरे चार और अवशेष-पात्र समुद्र में फेंक दएि। लेकनि समुद्र की गहराई में डूबने के बजाय, ये अवशेष-पात्र अनमोल खजाने को अपने भीतर समेटे हुए, समुद्र की सतह पर नावों की तरह तैरने लगे। प्रेरति बार्थोलोम्यू का अवशेष-पात्र, हालांक टनि का बना था, पानी में डूबा नहीं; इसके वपिरीत, यह असाधारण रूप से हल्का साबति हुआ, जो प्रकृत के नयिमों से परे था, और यह अन्य शहीदों की कब्रों के बीच समुद्र पर इस प्रकार तैरता गया, जैसे सर्वशक्तमिान ईश्वर द्वारा संचालति कोई जहाज हो; क्योंक प्रेरति के सम्मान में, इसके दाईं ओर दो कब्रें और बाईं ओर दो कब्रें थीं।

समुद्र को चमत्कारकि रूप से पार करते हुए, उपर्युक्त अवशेष-पात्र प्रोपोंटसि में थ्रेसयिन बोस्फोरस तक पहुँचे, फरि हेलेस्पोंट से होकर गुज़रे, एजयिन और आयोनयिन सागरों को पार कयिा, और ससिलिी पहुँचे; वे सरिाक्यूज़ को अपने बाईं ओर छोड़कर पश्चमि की ओर बढ़े और लपिारी द्वीप पर पहुँचे। यहाँ प्रेरति की नाव कनिारे पर आ लगी; जबक

[5708] ग्रीकों द्वारा ज्यूस को प्रमुख देवता माना जाता था – सभी अन्य मनुष्यों और देवताओं का पूर्वज।

[5709] संत टाइटस प्रेरति की पवत्रि अवशेषों को गॉर्टनि के कैथेड्रल चर्च में स्थापति कयिा गया था। 823 में जब द्वीप पर सारासेनों ने तबाही मचाई, तो अवशेषों में केवल उनका सरि ही बचा था, और इसे वेनसि में सेंट मार्क के बेसलिकिा में ले जाया गया। हालांक, अन्य ववरिणों के अनुसार, प्रेरति का सरि स्वयं क्रीट द्वीप पर, उनके नाम से समर्पति चर्च में रखा गया है।

[5710] संत बार्थोलोम्यू प्रेरति का पर्व 11 जून को मनाया जाता है।

[5711] अब बाकू।

अन्य पवित्र शहीदों की नावें, जो प्रेरित के साथ लपिारी तक आई थीं, उन्हें वहीं छोड़कर अपनी-अपनी राह चल पड़ीं, और प्रत्येक नाव ईश्वरीय व्यवस्था द्वारा अपनी-अपनी दिशा में चली गई। पपियास का जहाज़ ससिलिी, लूसयिन का मेसनिीया, ग्रेगरी का कैलाब्रयिा, और अकाकयिोस का अस्कालस नगर तक गया; यह सब ईश्वर द्वारा लपिारी द्वीप के बशिप, अगथोन को प्रकट कयिा गया था।

यह बशिप पुरोहतिों और लोगों के साथ समुद्र तट पर आए और वहाँ प्रेरित की अवशेषों वाली नाव पाकर, अन्य लोगों के साथ आनंदति हुए और कहा:

'हे लपिारी, तुम्हारे पास ऐसा अनमोल खजाना कहाँ से आया है? सचमुच, तुम अब गौरवान्वति और महमिामय हो; आनंदति होओ और हर्षति होओ, ईश्वर के समक्ष अपने इस महान मध्यस्थ और वकील को, जो तुम पर कृपा करने आए हैं, अपने हाथों से ग्रहण करो, और उनसे पुकार कर कहो: "स्वागत है, हे प्रभु के प्रेरति!"'

सब यह देखकर चकति थे कि पवित्र प्रेरित की अवशेषों से भरा टनि का ताबूत न केवल पानी में डूबा नहीं, बल्कि नाव से भी हल्का साबति हुआ और उसने इतनी लंबी समुद्री यात्रा पूरी की, जो स्पष्ट रूप से मानवीय शक्ति से नहीं, बल्कि ईश्वर की शक्ति से नरि्देशति थी। और सभी ने ईश्वर की महानता की स्तुति की।

इसके बाद, प्रेरति की अवशेषों से युक्त पवित्र संदूक को लेकर, वे भजन गाते हुए उसे भक्तपिूर्वक चर्च में ले गए; और प्रेरति के पवित्र अवशेषों से मुर्रा बहने लगी; इस मुर्रा का उपयोग असाध्य रोगों के उपचार के लिए कयिा जाता था[5712] ।

मसीह के प्रेरति की ये पूजनीय अवशेष उस द्वीप पर लंबे समय तक रहे, यहाँ तक कि प्रतमिा-भंजक थयिोफलिस के शासनकाल तक[5713] । इस थयिोफलिस के शासनकाल में, लोगों के पापों के दंड स्वरूप ईश्वर की अनुमति से, अगारयिों ने लपिारी द्वीप पर कब्जा कर लयिा। बेनेवेंटो नगर के शासक, राजकुमार सकिार्ड, जन्हिोंने बहुत पहले से ही मसीह के प्रेरति के चमत्कारों के बारे में सुना था, संत में गहरी आस्था से भर गए; इसलिए, अमाल्फी शहर में से नावकिों को बुलाकर और उन्हें उदार इनाम देने का वादा करके, उन्होंने उन्हें जहाज द्वारा लपिारी द्वीप जाने और संत बार्थोलोम्यू प्रेरति की अवशेषों को एक कीमती खजाने के रूप में उनके पास वापस लाने के लिए मना लयिा। ये लोग समुद्र यात्रा पर नकिले, लपिारी द्वीप पहुँचे, वहाँ से उस बहु-आकांक्षति आध्यात्मकि खजाने को लयिा, और अपने लोगों के पास लौट आए। और जैसे ही प्रंसि सकिार्ड को पता चला कि संत की अवशेषें उनकी ओर आ रही हैं, वह बशिप और बहुत से लोगों के साथ जहाजों पर सवार होकर समुद्र में उनका स्वागत करने के लिए नकिल पड़े; मसीह के प्रेरति की पवित्र अवशेषों को आनंद के साथ ग्रहण कयिा गया; फरि उन्हें सम्मानपूर्वक बेनेवेंटो शहर में ले जाया गया और महान चर्च में रखा गया, और इस घटना का भव्य रूप से उत्सव मनाया गया। उस समय से, पवित्र प्रेरित संत बार्थोलोम्यू के पवित्र अवशेषों के स्थानांतरण के सम्मान में, अगस्त के पच्चीसवें दनि एक पर्व दविस स्थापति कयिा गया। इन पवित्र अवशेषों के माध्यम से, संत बार्थोलोम्यू प्रेरति की प्रार्थनाओं और हमारे प्रभु यीशु मसीह की कृपा से[5714] वभिन्नि बीमारयिों से पीड़ति लोगों पर चंगाई की गई।

कॉन्टाकयिन, स्वर 4:

हे बार्थोलोम्यू, प्रभु के प्रेरति, तू ब्रह्मांड के महान सूर्य के रूप में प्रकट हुआ है, जो शक्षिाओं और अद्भुत चमत्कारों से प्रकाशमान है, और जो तेरा सम्मान करते हैं, उनका मार्गदर्शन करता है।

एडेसा में एरयिनों के हाथों पीड़ति मसीह के पवित्र कन्फेशर्स का स्मरणोत्सव

25 अगस्त को स्मरणोत्सव

[5712] यह घटना छठी शताब्दी के अंत में हुई थी।

[5713] सम्राट थयिोफलिस ने 829 से 842 तक शासन कयिा।

[5714] संत बार्थोलोम्यू प्रेरति के पवित्र अवशेषों को लगभग 839 में लपिारी से बेनेवेंटो शहर में स्थानांतरति कर दयिा गया था।

धर्म-निरपेक्ष, मूर्तिपूजक राजाओं और अत्याचारियों द्वारा प्रेरित ईसाइयों पर कई अत्याचारों के बाद, महान सम्राट कॉन्स्टेंटिन के दिनों में मसीही चर्च को स्वतंत्रता मिली और यह शांति और सुकून में फलने-फूलने लगी; हालाँकि, शैतान के कामों के द्वारा इसके खिलाफ एक नया उत्पीड़न शुरू किया गया, हालाँकि इस बार यह मूर्तिपूजकों से नहीं, बल्कि उन अविश्वासी मसीहियों से था जो विधर्म में भटक गए थे। सम्राट कॉन्स्टेंटाइन की मृत्यु के बाद, ईश्वर-निन्दा करने वाला एरियन संप्रदाय[5715] काफी मजबूत हो गया, पहले कॉन्स्टेंटियस[5716] के शासनकाल में, जो कॉन्स्टेंटाइन का पुत्र था, और फिर वैलेंस[5717] के शासनकाल में; क्योंकि दोनों ही एरियन संप्रदाय को मानते थे और दोनों ने अपने-अपने शासनकाल में मसीह की कलीसिया पर बुरी तरह अत्याचार किया।

वैलेंस के शासनकाल में, जब रूढ़िवादी बिशपों को उनके पदों से हटा दिया गया और उनकी जगह विधर्मियों को स्थापित किया गया, तब वर्सीस एडेसा का बिशप था – रूढ़िवादी आस्था का एक व्यक्ति और एक संत, जिसमें लोगों की सभी प्रकार की बीमारियों को ठीक करने का वरदान था; इस वर्सीस ने एरियन विधर्म का कट्टरता से विरोध किया। दुष्ट सम्राट वैलेन्टिनि, इस पवित्र व्यक्ति को सहन न कर सका, उसने उसे उसके पद से हटा दिया और उसे निर्वासन में भेज दिया, शुरू में अरद द्वीप पर; लेकिन जब वैलेंट को यह पता चला कि वहाँ बहुत से लोग पवित्र बिशप वर्सिस के पास आ रहे थे और उनकी सुन्नत की शिक्षाओं को सुन रहे थे, तो उसने उन्हें वहाँ से मिस्र के एक शहर ऑक्सिरिंकोस में स्थानांतरित कर दिया। लेकिन जब संत वहाँ भी अपने चमत्कारों और शिक्षा के लिए प्रसिद्ध हो गए, तो वैलेंटाइनस ने उन्हें एक बार फिर एक और भी दूरस्थ शहर, फेनॉन में स्थानांतरित कर दिया, जो बर्बर लोगों के निवास के पास स्थित था; वहीं पर मसीह के पवित्र बिशप और कन्फेशर का धन्य निद्रा में निधन हो गया; राडे द्वीप पर उन्होंने जो बिस्तर छोड़ा था, वह बीमारों को चंगा करता था; जो कोई भी किसी भी प्रकार की बीमारी से पीड़ित था, उस बिस्तर पर लेटने पर वह स्वस्थ हो जाता था और अशुद्ध आत्माओं से मुक्त हो जाता था।

एडेसा के चर्च के इस पवित्र बिशप को पद से हटाने के बाद, उस अधर्मी राजा ने उसकी जगह एक भेड़िये को स्थापित किया—नाम और स्वभाव दोनों से; क्योंकि उस व्यर्थ बिशप का नाम लुपस था, जिसका अर्थ है 'भेड़िया'[5718] । और इस प्रकार, सच्चे चरवाहे के बजाय, एक भेड़िया, जो बिशप के पद की भेड़ की खाल में लिपटा हुआ था, मसीह के झुंड में प्रवेश कर गया।

हालाँकि, एदेसा के ऑर्थोडॉक्स लोगों ने उस झूठे चरवाहे, उस विधर्मी—विरोध की घृणा (मत्ती 24:15)—के साथ संप्रदायिक संबंध में प्रवेश करने से इनकार कर दिया, जिसने पवित्र स्थान, अर्थात् चर्च में, निवास कर लिया था; इसलिए, उस शहर के ऑर्थोडॉक्स नागरिक शहर छोड़कर खेतों में चले जाते, एक खुले स्थान पर इकट्ठा होते और वहाँ चर्च में की तरह ही ईश्वर की उपासना करते; क्योंकि ऑर्थोडॉक्सों के लिए एक भी चर्च उपलब्ध नहीं कराया गया था, बल्कि सभी चर्च उनसे बंद कर दिए गए थे, और अरियनों ने शाही फरमान के अनुसार सभी सबसे गौरवशाली चर्चों पर कब्जा कर लिया था।

ऐसा हुआ कि राजा स्वयं, एंटिओक से यात्रा करते हुए, एडेसा आया; यह जानकर कि विश्वासी (ईसाई) एरियनवाद की विधर्म से घृणा करते थे और उपर्युक्त बिशप के साथ कोई संबंध रखने से इनकार कर रहे थे, बल्कि उससे भाग रहे थे और प्रार्थना करने के लिए शहर के बाहर इकट्ठा हो रहे थे, – राजा मोडेस्टस नामक एडेसा के एपार्क पर लोगों को इस तरह का व्यवहार करने की अनुमति देने के लिए क्रोधित हो गया, और उसने एपार्क के गाल पर थप्पड़ मारा; फिर उसने उसे सशस्त्र सैनिकों को इकट्ठा करने का आदेश दिया; तब उसने एपार्क को आज्ञा दी कि वह इन सैनिकों को उस स्थान पर ले जाए जहाँ लोग प्रार्थना में एकत्रित थे, और उन्हें कोड़े मारकर, ईसाइयों को मौत के घाट उतार दे और उन्हें तितिर-बितिर कर दे।

हालाँकि एपार्क को राजा से आदेश मिला था, लेकिन निर्दोष लोगों के प्रति दया के कारण, उसने गुप्त रूप से विश्वासियों को चेतावनी दी कि वे अगले दिन शहर न छोड़ें या अपनी नियमित प्रार्थना और पूजा के लिए इकट्ठा न हों,

---

[5715] एरियन विधर्म के संस्थापक एरियस थे, जो अलेक्जेंड्रिया के एक पादरी थे। उन्होंने इस बात से इनकार किया कि परमेश्वर का पुत्र परमेश्वर पिता के समान सार का है, यीशु मसीह को एक सृजित प्राणी माना, और उनमें दिव्य गुणों – सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ, आदि – को नहीं माना। पहले (325) और दूसरे (381) सार्वभौमिक परिषदों में एरियन विधर्म की कड़ी निंदा की गई थी।

[5716] वे 337 से 361 तक शासन करते थे।

[5717] 364 से 378 तक

[5718] लैटिन: lupus – भेड़िया।

क्योंकि राजा ने अपने गुस्से में, ईसाइयों को मार डालने के लिए उनके खिलाफ सशस्त्र सैनिक भेजने का आदेश दिया था। हालाँकि, विश्वासियों ने यह सुनकर डरने के बजाय और भी अधिक उत्साह से भर गए; और, सुबह-सुबह उठकर, वे अपनी पत्नियों और बच्चों के साथ शहर से बाहर निकल गए; ईसाई मसीह के लिए वहाँ अपना बलिदान देने के इरादे से अपने सभा के सामान्य स्थान पर पहुँचे। राज्यपाल, राजा के आदेश का पालन करते हुए, अगले ही सुबह सशस्त्र सैनिकों के साथ उस स्थान के लिए रवाना हुआ, मानो युद्ध पर जा रहा हो। और जब वह शहर के दरवाजों पर पहुँचा, तो उसने एक महिला को देखा जो अपने घर का दरवाजा बंद किए बिना ही बाहर निकल आई थी, उसने जल्दबाजी में कपड़े पहने थे (और वह सँवरी हुई नहीं थी), और अपने साथ एक छोटे लड़के को लिए हुए थी; वह महिला रो रही थी और शहर से बाहर जाते हुए उसकी सैनिकों से आगे भागने की कोशिश कर रही थी। राज्यपाल ने उसे पकड़कर अपने सामने लाने का आदेश दिया। सड़क के किनारे रुककर, राज्यपाल ने उससे पूछना शुरू किया, कहते हुए:

'अभागी स्त्री! इतनी सुबह-सुबह इतनी जल्दी कहाँ भागी जा रही है, और इतनी जल्दी क्यों कर रही है?'

उस महिला ने उत्तर दिया:

'मैं उस मैदान की ओर जल्दी कर रही हूँ जहाँ ईसाई इकट्ठा हो रहे हैं।'

गवर्नर ने उत्तर दिया:

'क्या तुमने नहीं सुना कि राज्यपाल वहाँ सैनिकों के साथ जाने और वहाँ मिलने वाले सभी को मार डालने का इरादा रखता है?'

उस महिला ने उत्तर दिया:

'हाँ, मैंने इसके बारे में सुना है; इसीलिए मैं जल्दी कर रही हूँ, ताकि मैं मसीह के नाम के लिए उनके (ईसाइयों) के साथ मर सकूँ।'

गवर्नर ने फिर पूछा:

'तो फिर, तुम इस लड़के को अपने साथ क्यों लाई हो?'

उस महिला ने उत्तर दिया:

'मैं चाहती हूँ कि इस लड़के को भी मेरे साथ शहीद का मुकुट प्रदान किया जाए।'

यह सुनकर, राज्यपाल ईसाइयों के ऐसे उत्साह और अपने धर्म के लिए मरने की उनकी तत्परता देखकर चकित रह गया, और सैनिकों को पीछे हटने का आदेश दिया; फिर वह राजा के पास गया और उससे कहा:

'यदि आप मुझे मरने का आदेश देते हैं, तो मैं तैयार हूँ; लेकिन मैं आपके द्वारा दिए गए आदेश का पालन नहीं कर सकता।'

तब एपार्क ने राजा को बच्चे वाली महिला के बारे में बताया, और उस उत्साह का वर्णन किया जिसके साथ वह शहीद होने के लिए शहर से बाहर खेतों में भागी थी, जो वह अपने और अपने बच्चे दोनों के लिए चाहती थी; तब राज्यपाल ने राजा को पूरे लोगों की मृत्यु को स्वीकार करने की तत्परता के बारे में भी सूचित किया, क्योंकि सभी ईसाई, अपनी पत्नियों और बच्चों सहित, मसीह में अपने विश्वास की गवाही के लिए मरने को तैयार थे।

'और यह असंभव है,' एपार्क ने आगे कहा, 'कि एडसा के लोगों को बिशप के धर्म में लाया जाए, भले ही हर नागरिक को मौत की सज़ा दी जाए; लेकिन उससे क्या फायदा होगा? क्योंकि वे अपने साहसी और शहीद-जैसे पराक्रम के लिए सभी ईसाइयों के बीच महिमामय होंगे, जबकि हम शर्म और शाश्वत उपहास के साथ रह जाएँगे।'

यह कहने के बाद, बिशप ने राजा को लोगों को पीटने से रोक दिया: राजा ने आदेश दिया कि लोगों पर अत्याचार न किया जाए, और आज्ञा दी कि केवल उन पुरोहितों, डिकन्स और अन्य पादरियों को यातना दी जाए जो एरियन बिशप के साथ संप्रदायिक एकता करने से इनकार करते थे।

इसके बाद, एपार्क ने एडसा के सभी पादरियों को अपने पास बुलाया जो सच्चे धर्म का पालन करते थे, और उन्होंने सभी को धीरे से राजा की आज्ञा मानने और ल्यूपस नामक बिशप के साथ संप्रदायिक संबंध बनाने के लिए समझाना शुरू किया। उस समय एपार्क ने कहा:

'मूर्खता की पराकाष्ठा यह है कि आप, जो केवल कुछ ही लोग हैं, राजा की आज्ञा की अवहेलना करते हैं और उसका विरोध करते हैं, जबकि वह कई देशों पर शासन करता है।'

जब एपार्क ने कहा, तो सभी चुप रहे। फिर एपार्क ने, सबसे बड़े प्रेस्बिटर, यू□गियस, जो पहले से ही वृद्ध थे, की ओर मुड़कर उनसे पूछा:

'तुम मुझे जवाब क्यों नहीं देते?'

यू□गयिस ने उत्तर दयिा:

'मैं आपको उत्तर नहीं दे रहा हूँ क्योंकि आप सभी से एक साथ बात कर रहे हैं; इस कारण से, मैं अपने उत्तर से बाकी सभी के उत्तरों से पहले बोलना नहीं चाहता। लेकनि अगर आप मुझसे अकेले कसिी भी बात के बारे में पूछें, तो मैं आपको उत्तर दूँगा।'

एपार्क ने पूछा:

'आप राजा के साथ पवत्रि सहभाग क्यों नहीं लेते?'

लेकनि धन्य यूलोगयिस ने उस वधिर्मी के प्रश्न का उपहास करते हुए उत्तर दयिा:

'क्या राजा को शायद पादरी का पद दयिा गया है ताकि मैं उनके साथ पवत्रि भोज ग्रहण कर सकूँ?'

एपार्क, क्रोध से भरकर, पवत्रि साधु को डाँटते हुए बोला:

'हे मूर्ख! तुम राजा के धर्म से क्यों कतराते हो और उन लोगों के साथ संप्रभु भाग लेने से इनकार क्यों करते हो जो राजा के साथ संप्रभु भाग लेते हैं?'

तब उन सभी ने, पवत्रि वृद्ध यूलोगयिस के साथ, मसीह, सच्चे परमेश्वर, जो परमपति के समतत्त्व और सह-शाश्वत हैं, में अपने ऑर्थोडॉक्स (सही) वशि्वास की घोषणा की, और इस घोषणा के लिए अपना जीवन बलदिान करने की अपनी तत्परता व्यक्त की।

इसके बाद, राजा के आदेश पर, एपार्क ने पुरोहति वर्ग के अस्सी पुरुषों को पकड़कर, उन्हें बेड़यिों में जकड़ दयिा और थ्रेस में नर्विासति कर दयिा।

और जब मसीह के इन स्वीकारकर्ताओं को नर्विासन के लिए ले जाया जा रहा था, तो सभी कस्बों और गांवों से लोग उनका स्वागत करने के लिए बाहर आए, उनका सम्मान कयिा और उन्हें उनकी ज़रूरत की हर चीज़ प्रदान की। यह जानकर, वधिर्मयिों ने जल्द ही राजा को यह खबर भेजी कि अपमान के बजाय, नर्विासयिों को बहुत सम्मान दयिा जा रहा था।

तब राजा ने आदेश दयिा कि उपर्युक्त ईसाइयों को जोड़ों में बाँटकर वभिन्नि देशों में भेजा जाए: कुछ को थ्रेस, कुछ को अरब, कुछ को मस्रि और अन्य देशों में भी। धन्य एल्डर यूलोजयिस को, प्रोटोजेनेस नामक एक अन्य सम्मानति पुरोहति के साथ, थेबाइड के एंटनिोई शहर ले जाया गया, जहाँ ईसाई बहुत कम थे, जबकि मूर्तयिों की पूजा करने वाले यूनानयिों की एक अनगनित भीड़ थी। यहाँ संत काफी समय तक रहे, उन्होंने यीशु मसीह के नाम का स्मरण करके लोगों के वभिन्नि रोगों को ठीक कयिा, और कई मूर्तपिूजकों को पवत्रि बपतस्मिा देकर ईसाई धर्म में परविर्तति कयिा।

जब दुष्ट राजा वैलेंस का नाश हो गया, और धार्मकि थयिोडोसयिस ने पूर्वी साम्राज्य का राजदंड संभाला, तो एरयिन वधिर्म लज्जति होकर शांत हो गया, और मसीह की कलीसयिा को सताने वाले वधिर्मीयों की शक्ति और सामर्थ्य समाप्त हो गई; मसीह के स्वीकारकर्ता जो नर्विासन में थे (अर्थात्, उनमें से जो अभी तक प्रभु के पास नहीं गए थे, बल्कि जीवति थे) उन्हें मुक्त कर दयिा गया और प्रत्येक अपने देश लौट आया: ऑर्थोडॉक्स बशिपों ने एक बार फरि अपने पद ग्रहण कएि। तब उपर्युक्त दो पवत्रि पुरोहति, यूलोगयिस और प्रोटोजेनेस, एडसा से नर्विासन से लौटे; और ऑर्थोडॉक्स ईसाइयों ने एरयिनों से अपनी चर्चें वापस ले लीं; चूंकि संत वर्सीस पहले ही नर्विासन के दौरान प्रभु के पास जा चुके थे, इसलिए यूलोगयिस को एडसा शहर का बशिप नयिुक्त कयिा गया; जबकि प्रोटोजेनेस को मेसोपोटामयिा के शहर कैरयिा का बशिप नयिुक्त कयिा गया। ये पवत्रि पुरुष, यूलोगयिस और प्रोटोजेनेस, दोनों ने अपने नधिन के दनि तक अपने शब्दों और जीवन से मसीह की कलीसयिा को सुशोभति कयिा[5719] । हम भी, परमपति और पवत्रि आत्मा के साथ, हमारे ईश्वर और उद्धारकर्ता मसीह की महमिा करते हैं, जसिकी महमिा युगानुयुग होती रहे। आमीन।

कॉन्स्टेंटनिोपल के पैट्रआर्क, संत मीना की स्मृति

25 अगस्त को स्मरणोत्सव

[5719] मसीह के पवत्रि स्वीकारकर्त्ता, यूलोजयिस और प्रोटोजेनेस, चौथी शताब्दी के उत्तरार्ध में नधिन हो गए।

जस्टनियिन के शासनकाल में[5720] , संत मीना संत सैम्पसन के हॉस्टल में यात्रयिों के लएि एक पुरोहति और व्यवस्थापक थे। पैट्रआिर्क एम्फमिस[5721] को उनके वधिर्म सद्धिांतों के कारण उनके पद से हटा दएि जाने के बाद, संत मीना, जो ईसाई धर्म के एक पुरुष थे, जन्हिोंने पवत्रि जीवन जयिा और इसलएि उच्च पद के योग्य थे, को उस समय रोम के पोप, संत अगपटिस[5722] द्वारा पैट्रआिर्क के पद पर पदोन्नत कयिा गया।

संत मीना के पैट्रआिर्कात् के दौरान, कॉन्स्टेंटनिोपल शहर में एक चमत्कार हुआ:

एक यहूदी लड़का कुछ ईसाई बच्चों के साथ एक चर्च में प्रवेश कर गया, जब मसीह के शरीर और रक्त के परम पवत्रि रहस्य प्रदान कएि जा रहे थे; यह लड़का, अन्य बच्चों के साथ रहस्यों के पास जाकर, पवत्रि सहभागति प्राप्त कर गया। जब लड़का घर लौटा, तो उसके पति ने उससे पूछा कि वह कहाँ गया था और वह देर से क्यों आया। एक बच्चे के नाते, उसने अपने पति को पूरा सच बता दयिा – कहा कि वह एक ईसाई चर्च में गया था और उसने ईसाई संस्कार ग्रहण कयिा था। यह सुनकर, यहूदी पति बहुत गुस्से में आ गया, और बच्चे को पकड़कर, उसे कांच बनाने के लएि इस्तेमाल होने वाली एक तपती भट्टी में फेंक दयिा (क्योंकि वह एक कांच बनाने वाला था); लेकनि उसने अपनी पत्नी से कुछ नहीं कहा।

इस बीच, माँ अपने बेटे को हर जगह ढूंढ रही थी, रोते हुए और उसका नाम पुकारते हुए; अपनी खोज के तीसरे दनि, वह जलती हुई भट्टी पर पहुँची, और बच्चे ने उसकी पुकार का जवाब दयिा; फरि, बड़ी मुश्कलि से, उसने उसे बाहर नकिाला और पूछा:

'ऐसी आग में होते हुए भी तुम कैसे नहीं जले और अभी भी जीवति हो?'

तब लड़के ने उसे यह बताया:

'एक दव्यि महलिा अक्सर मेरे पास आती थीं, आग को ठंडा करती थीं और मुझे पानी देती थीं; जब मुझे भूख लगती थी तो वह मुझे खाना भी लाती थीं।'

जल्द ही इस चमत्कार की खबर पूरे शहर में फैल गई; सम्राट जस्टनियिन और पैट्रआिर्क सेंट मीना ने इसके बारे में सुना। इसके बाद, उक्त लड़के का उसकी माँ के साथ बपतस्मिा हुआ, जबकि उसका पति, जो क्रोधति हो गया था और बपतस्मिा लेने से इनकार कर दयिा था, उसे सम्राट ने बाल-हत्यारे के रूप में मुकदमे में पेश कयिा और मृत्युदंड की सजा सुनाई।

संत मीना ने सोलह वर्षों तक मसीह की कलीसयिा का मार्गदर्शन कयिा और फरि प्रभु के पास प्रस्थान कयिा[5723] ।

8 सतिंबर

26 अगस्त (पुराना संस्करण)

पवत्रि शहीदों एड्रयिन और नतालयिा का कष्टकथा

26 अगस्त को स्मरण कयिा जाता है

मसीह की कलीसयिा के महान उत्पीड़क, दुष्ट राजा मॅक्समियिन[5724] , ने सर्वत्र अनगनित ईसाइयों को सताकर मृत्युदंड देने के बाद, नकिोमेडयिा नगर[5725] में प्रवेश कयिा। पैगन मंदरि में प्रवेश करने पर, राजा ने अपने नीच देवताओं की पूजा की, जमीन पर मूर्तयिों के सामने साष्टांग प्रणाम कयिा, और शहर के सभी नविासयिों की भागीदारी से, घृणति

[5720] स्वाभावकि रूप से, सम्राट जस्टनियिन प्रथम, जन्हिोंने 527 से 565 तक शासन कयिा।

[5721] एम्फमिस प्रथम ने 535 से 536 तक शासन कयिा।

[5722] अगापटिस प्रथम ने 535 से 536 तक पोप का पद संभाला।

[5723] संत मीना ने 536 से 552 तक पैट्रआिर्क के रूप में सेवा की।

[5724] मैक्समियिन गैलेरयिस (305–311) सम्राट डायोक्लेटयिन के दामाद और बाद में उनके उत्तराधकिारी थे।

[5725] नकिोमेडयिा – रोमन साम्राज्य की पूर्वी राजधानी, एशयिा माइनर के उत्तर-पश्चमिी भाग में, बथिनियिा क्षेत्र में, मरमरा सागर के तट पर स्थति एक भव्य शहर।

बलदिान चढ़ाए। फरि उसने आदेश दयिा कि ईसाइयों को ढूंढकर यातना दी जाए। राजा ने उन लोगों को, जो ईसाइयों को आश्रय देने की कोशशि करेंगे, वशिेष रूप से कठोर दंड देने की धमकी दी। इसके वपिरीत, राजा ने उन लोगों को इनाम और सम्मान देने का वादा कयिा जो यह पता लगाने के बाद कि कोई ईसाई कहाँ छपिा है, उसकी सूचना देते, या कसिी को ढूंढकर खुद उसे अदालत के सामने लाते। परणिामस्वरूप, लोगों ने एक-दूसरे को मौत के घाट उतारने के लिए धोखा देना शुरू कर दयिा: पड़ोसी ने पड़ोसी के खलिाफ, दोस्त ने दोस्त के खलिाफ; कुछ राजा के भयानक फरमान के डर से, तो कुछ इनाम के लालच में।

कुछ अधर्मी लोगों ने अपने कमांडर को बताया कि ईसाई एक गुफा में छपिे हुए थे, जो पूरी रात वहां गा रहे थे और अपने ईश्वर से प्रार्थना कर रहे थे। तुरंत सैनकि भेजे गए; वे गुफा में घुसे और उसमें मौजूद सभी ईसाइयों को, जनिकी संख्या तेईस थी, पकड़ लयिा। उन्हें लोहे की जंजीरों में बाँधकर, उन्हें राजा के सामने पेश करने के लिए शहर भेज दयिा।

उस समय, राजा बलदिान चढ़ाने के लिए रथ से मूर्तपिूजक मंदरि जा रहा था। रास्ते में उससे मलिने पर, बँधे हुए ईसाइयों को ले जा रहे सैनकिों ने उससे पुकार कर कहा:

'हे राजा! ये वे हैं जो आपके आदेश की अवहेलना करते हैं और हमारे महान देवताओं का अपमान करते हैं।'

रथ को रोकने का आदेश देकर और कैदयिों को अपने पास बुलाकर, राजा ने उनसे पूछा कि वे कहाँ के रहने वाले हैं।

'हम इसी देश में पैदा हुए हैं, और हम वशि्वास से ईसाई हैं,' उन्होंने उत्तर दयिा।

'क्या तुमने नहीं सुना,' राजा ने अपनी बात जारी रखते हुए कहा, 'उन लोगों के लिए क्या यातनाएँ नरि्धारति हैं जो खुद को ईसाई कहते हैं?'

'हमने सुना है,' संतों ने उत्तर दयिा, 'और हमने तुम्हारी मूर्खता और स्वयं शैतान पर हँसी उड़ाई है, जो उन बेटों के माध्यम से काम करता है जो ईश्वर में वशि्वास नहीं करते, जनि पर तुम शासक हो!'

क्रोधति राजा ने कहा:

'हे नीचों! तुम मुझसे पागल कहने और मुझ पर हँसने की हम्मित कैसे करते हो? मैं महान देवताओं की कसम खाता हूँ कि मैं तुम्हारे शरीरों को सबसे भयानक यातनाओं से कुचल डालूँगा!'

उसने सैनकिों को आदेश दयिा, 'उन्हें खींचकर बेरहमी से लाठयिों से पटिवाओ, और फरि देखेंगे कि उनका ईश्वर उनकी मदद करने और उन्हें मेरे हाथों से छुड़ाने आता है या नहीं।'

और सैनकिों ने शहीदों को क्रूरता से पीटा। पीटे जाने के दौरान, उन्होंने राजा से कहा:

'हे ईश्वर के शत्रु! हम पर तीन और यातना देने वाले भेज दे; चाहे तू कतिनों को भी बुलाए और चाहे कैसी भी यातनाएं रच ले, जान ले कि इससे हमारे मुकुटों में केवल वृद्धि होगी।'

राजा चलि्लाया, 'हे मनुष्यों में सबसे नीचो!' 'मैं तुम्हारे सरि काट दूँगा, और फरि भी तुम उम्मीद करते हो कि उन पर मुकुट पहनोगे? … अपना व्यर्थ का वशि्वास त्याग दो और अपनी मूर्खता के कारण अपनी बर्बादी मत करो!'

शहीदों ने उत्तर दयिा:

'ईश्वर तुम्हें उनके अनुचति रूप से यातना देने के लिए नष्ट कर देगा, जनि्होंने कोई बुराई नहीं की है!'

तब राजा ने अपने सैनकिों को आदेश दयिा:

'उनके मुँह पर पत्थर मारो!'

सेवकों ने जल्दबाजी में पत्थर उठाकर शहीदों के मुँह पर मारना शुरू कर दयिा, लेकनि उन्होंने शहीदों की तुलना में खुद को अधकि नुकसान पहुँचाया, क्योंकि वे इतने वकि्षपि्त हो गए थे कि वे उन्हीं पत्थरों से एक-दूसरे की जबड़े कुचल रहे थे।

और संतों ने अपने अत्याचारी, मैक्समियिन से कहा:

'हे अधर्मी और ईश्वर-वरिोधी मनुष्य! तू हम पर नरि्दयता से प्रहार करता है, यद्यपि हम तेरे सामने नरि्दोष हैं; परन्तु परमेश्वर का स्वर्गदूत तुझको भी मार डालेगा और तेरे पूरे दुष्ट घराने का नाश कर देगा।' तुम्हें उन यातनाओं से तृप्ति नहीं मलिती, जनिसे तुम हमें इतने घंटों से इतनी क्रूरता से पीड़ति कर रहे हो, फरि भी तुम्हारे लिए स्वयं अतुलनीय रूप से बड़ी यातनाएँ प्रतीक्षा कर रही हैं; स्पष्ट है कि आपने इस बात पर वचिार नहीं कयिा है कि हमारे भी आपके जैसे ही शरीर हैं, बस इतना अंतर है कि आपका घृणति और अशुद्ध है, जबकि हमारे पवत्रि बपतस्मिा द्वारा शुद्ध और पवत्रि कएि गए हैं।

इन शब्दों से और भी क्रोधति होकर, यातना देने वाले मैक्समियिन ने कहा:

'मैं महान देवताओं की शपथ खाता हूँ कि मैं तुम्हारी जीभें कटवाने का आदेश दूँगा, ताकि दूसरे, तुम्हें देखकर, यह सीखें कि अपने मालकिों का वरिोध न करें!'

मसीह के शहीदों ने उत्तर दयिा:

'सुन, हे अधर्मी यातनाकर्ता! यदि तू उन दासों से घृणा करता है और उन्हें यातना देता है जो अपने सांसारकि स्वामयिों का वरिोध करते हैं, तो फरि तू हमें हमारे प्रभु परमेश्वर का वरिोध करने के लिए क्यों मजबूर करता है? या क्या तू चाहता है कि वही यातनाएँ जो तेरे लिए तैयार की गई हैं, हम पर भी आ पड़ें?'

'मुझे बताओ,' यातना देने वाले ने पूछा, 'मेरे लिए कसि प्रकार की यातनाएँ रखी गई हैं?'

'जो कुछ परमेश्वर ने शैतान और उसके स्वर्गदूतों के लिए तैयार कयिा है,' संतों ने उत्तर दयिा, 'वह उसी ने तुम्हारे लिए भी तैयार कयिा है, हे शैतान के बर्तन; अर्थात्: न बुझने वाली आग, एक कीड़ा जो कभी नहीं सोता, अनंत यातना, शाश्वत दंड, नरकीय वनिाश, घोर अंधकार, जहाँ वलिाप और दांत पीसना होगा, और कई अन्य अनगनित यातनाएँ।

'कसम से, मैं तुम्हारी जीभें काट डालूँगा!' यातना देने वाले ने कहा।

'अरे पागल!' – संतों ने उत्तर दयिा, – यदि तुम उन अंगों को काट दोगे जनिसे हम ईश्वर की महमिा करते हैं, तो हमारी आहें और भी आसानी से उन तक पहुँचेंगी और हमारे दलि और भी अधकि उत्कटता से उनकी ओर पुकारेंगे, और हमारा खून, जो तुम्हारे हाथों से बहाया गया है, प्रभु के पास एक तुरही की तरह अपनी आवाज़ उठाएगा, यह गवाही देते हुए कि हम अन्याय से पीड़ति हैं।

संतों का यह उत्तर सुनकर, दुष्ट राजा ने आदेश दयिा कि उन्हें लोहे की बेड़यिों में बाँधकर जेल में डाल दयिा जाए, और उनके नाम तथा शब्द न्यायालय के अभलिेखों में दर्ज कएि जाएँ।

जब संतों को उनके नाम दर्ज कराने के लिए अदालत में लाया गया, तो वहाँ के एक अधकिारी, एड्रयिन नामक एक कुलीन वंशज व्यक्ति, जो हेलेनकि मूर्तपिूजा[5726] का अनुयायी था, ने इन शहीदों की धैर्यपूर्ण और साहसी पीड़ा को देखकर, उनके पास आकर पूछा:

'मैं तुम्हारे उस ईश्वर की कसम खाकर तुमसे वनिती करता हूँ, जसिके लिए तुम इतना कष्ट सह रहे हो – मुझे ईमानदारी से बताओ, ऐसी यातनाओं के लिए तुम अपने ईश्वर से क्या प्रतफिल की आशा करते हो? मुझे लगता है कि तुम उससे कुछ महान और अद्भुत प्राप्त करने की आशा करते हो।'

पवत्रि शहीदों ने उनसे उत्तर दयिा:

'हम तुम्हें अपने होठों से बता नहीं सकते, और न ही तुम अपने कानों से समझ सकते हो या अपने मन से ग्रहण कर सकते हो उन आनंदों और महमिामय सम्मानों को जो हम अपने प्रभु, न्यायी प्रतफिलदाता से प्राप्त करने की आशा करते हैं।'

'और क्या तुम इस बारे में व्यवस्था, भवष्यिद्वक्ताओं और अन्य पुस्तकों से कुछ नहीं जानते?' हाड्रयिन ने पूछा।

संतों ने उत्तर दयिा, 'यहाँ तक कि स्वयं भवष्यिद्वक्ताओं ने भी अपने मन में उन अनंत आशीर्वादों को पूरी तरह से नहीं समझा, क्योंकि वे भी हम जैसे ही मनुष्य थे; यद्यपि उन्होंने अपने वश्विासयोग्य वश्विास और अच्छे कर्मों के द्वारा परमेश्वर को प्रसन्न कयिा और जो कुछ पवत्रि आत्मा ने उन्हें कहने के लिए प्रेरति कयिा, वही कहा, फरि भी उस महमिा और उन पुरस्कारों के वषिय में जन्हिें हम प्राप्त करने की आशा रखते हैं, पवत्रिशास्त्र कहता है: *'न तो कसिी ने देखा है, न कसिी ने सुना है, और न ही कसिी मानव हृदय ने इस बात की कल्पना की है कि परमेश्वर ने अपने प्रेम करने वालों के लिए क्या तैयार कयिा है'* (1 कुरन्थियिों 2:9)।

ये शब्द सुनकर, हैड्रयिन आगे बढ़ा और शहीदों के नाम दर्ज कर रहे लपिकिों से कहा:

'इन संतों के साथ मेरा नाम भी लखिो, क्योंकि मैं भी एक ईसाई हूँ और हमारे परमेश्वर मसीह के लिए इनके साथ मरूँगा!'

लपिकिार तुरंत राजा के पास गए और उसे बताया कि एड्रयिन ने स्वयं को ईसाई घोषति कर दयिा था और उनसे अपने नाम को दंडतिों की सूची में जोड़ने के लिए कह रहा था।

यह सुनकर राजा चकति और क्रोधति हो गया; उसने तुरंत एड्रयिन को बुलवाया और उससे पूछा:

'क्या तुम्हें होश खो गया है, एड्रयिन? या क्या तुम भी एक दुखद अंत चाहते हो?'

[5726] अर्थात्, ग्रीको-रोमन धर्म।

'नहीं,' उसने उत्तर दिया, 'मैंने अपना होश नहीं खोया है; बल्कि, मैं बड़ी पागलपन के बाद होश में आ गया हूँ।'

'बहस मत करो,' राजा ने कहा, 'बेहतर है कि तुम क्षमा मांगो, सबके सामने स्वीकार करो कि तुमने पाप किया है, और अपने नाम को दंडितों की सूची से काट दो।'

'आज से,' एड्रियन ने उत्तर दिया, 'मैं सच्चे ईश्वर से विनती करना शुरू करूँगा कि वह मुझे उन पापों के लिए क्षमा कर दे जो मैंने एक मूर्तिपूजक होते हुए किए थे।'

एड्रियन के शब्दों से क्रोधित होकर, राजा मैक्सिमियन ने तब उसे लोहे की जंजीरों में बाँधने और उन शहीदों के साथ कैद करने का आदेश दिया, और एक तारीख निर्धारित की जिस पर वह उन सभी को यातनाएँ देगा।

एड्रियन के एक नौकर ने जल्दी से उसके घर आकर उसकी मालकिन, एड्रियन की पत्नी नतालिया को सूचित किया कि उसके स्वामी को बेड़ियों में जकड़कर जेल भेज दिया गया है।

यह सुनकर नतालिया भय से कांप उठी; वह जोर-जोर से रोई और अपने कपड़े फाड़ते हुए नौकर से पूछा:

'मेरे पति को किस अपराध में जेल में डाला गया है?'

'यह देखकर,' नौकर ने उत्तर दिया, 'कि कैसे कुछ लोगों को एक निश्चित मसीह के नाम के लिए और ज़ार के आदेश की अवज्ञा करने, अपने धर्म को त्यागने से इनकार करने और देवताओं को बलिदान चढ़ाने से इनकार करने के लिए यातना दी गई, हमारे मालिक ने लेखकों से अपना नाम मृत्युदंड पाए वालों की सूची में जोड़ने के लिए कहा, क्योंकि वह उनके साथ मरना चाहता है।'

"और क्या तुम्हें ठीक-ठीक नहीं पता कि उन लोगों को क्यों यातनाएँ दी गईं?" नतालिया ने नौकर से फिर पूछा।

'मैं तुम्हें पहले ही बता चुका हूँ,' नौकर ने जवाब दिया, 'कि उन्हें एक ऐसे मसीह के लिए और देवताओं की पूजा करने के राजा के आदेश की अवज्ञा करने के कारण यातनाएँ दी गईं।'

तब नतालिया का हौसला बहुत बढ़ गया; वह रोना बंद कर गई, अपने फटे कपड़े उतार दिए, अपने सबसे अच्छे वस्त्र पहन लिए, और कालकोठरी की ओर चल दी।

ईश्वर-भयभीत और पवित्र माता-पिता की बेटी होने के नाते, नतालिया पहले मसीह में अपने विश्वास को किसी के सामने प्रकट करने से डरती थी, जिसे उसने गुप्त रखा था, क्योंकि उसने देखा था कि मिसीहियों को अधर्मी लोगों द्वारा किस भयंकर उत्पीड़न और यातना का सामना करना पड़ता था; लेकिन अब, यह सुनकर कि उसके पति मिसीह में विश्वास रखते थे और उन्हें यातना देने के लिए दंडित किए गए लोगों में गिनती की गई थी, उसने दृढ़ संकल्प किया कि वह खुद को एक ईसाई घोषित करेगी।

कारागार में प्रवेश करते हुए, धन्य नतालिया अपने पति के पैरों पर गिर पड़ीं और उनकी बेड़ियों को चूमते हुए कहा:

'धन्य हैं आप, मेरे स्वामी एड्रियन, क्योंकि आपने ऐसा खजाना पाया है, जो आपको अपने माता-पिता से विरासत में नहीं मिला: **इस प्रकार एक ईश्वर-भयभीत व्यक्ति धन्य होता है**।' सचमुच, मेरे स्वामी, इतनी कम उम्र में आपने अब मसीह में अपने विश्वास के माध्यम से ऐसी संपत्ति अर्जित की है, जो आप अपनी वृद्धावस्था में भी नहीं कमा पाते यदि आप हेलेनिक भ्रम में ही रहते। अब आप बिना किसी दुख के परलोक में प्रवेश करेंगे और वह खजाना पाएँगे जो महान धन इकट्ठा करने वाले और संपत्तियाँ प्राप्त करने वाले वहाँ नहीं पाएँगे। वहाँ, उनके पास कुछ भी प्राप्त करने, या उधार देने, या किसी से उधार लेने का समय नहीं रहेगा, जब कोई भी उन्हें अधोलोक में अनंत मृत्यु और गेहन्ना की यातनाओं से नहीं बचा सकता; वहाँ कोई एक-दूसरे की मदद नहीं करेगा – न पिता अपने बेटे को, न माँ अपनी बेटी को, न महान सांसारिक धन उसे इकट्ठा करने वाले को, न दास अपने मालिक को – बल्कि प्रत्येक अपनी-अपनी सज़ा उठाएगा। हे मेरे प्रभु, आपके सभी सद्गुण आपके साथ मसीह के पास जाएँगे, ताकि आप उनसे उन लोगों के लिए तैयार की गई आनंद की प्राप्ति कर सकें जो उनसे प्रेम करते हैं। अत; निडर होकर उनके पास जाएँ, और भविष्य की यातना से न डरें; क्योंकि आप पहले ही अविनाशी आग और अन्य सभी यातनाओं पर विजय प्राप्त कर चुके हैं। इसलिए मैं आपसे विनती करता हूँ, हे स्वामी, कि आप उस पुकार में दृढ़ रहें जिसके लिए आपको ईश्वर की दया से बुलाया गया है। न तो आपकी युवावस्था की सुंदरता का पछतावा, न ही अपने परिजनों, मित्रों, धन, पुरुष और महिला दासों, या किसी भी सांसारिक वस्तु के प्रति प्रेम आपको उस शुभ मार्ग से भटकाए: ये सभी चीजें बूढ़ी होकर नष्ट हो जाएँगी; परन्तु अपनी आँखों के सामने केवल उसी को रखें जो शाश्वत है, और इस संसार के नाशवान और क्षणिक आशीर्वादों पर अपनी दृष्टि न जमाएँ। अपने रिश्तेदारों और दोस्तों की चापलूसी भरी बातों से प्रभावित न हों, कहीं वे अपनी चालाक सलाह से आपको विश्वास से भटका न दें। उनकी चापलूसी से घृणा करें, उनकी सलाह को अस्वीकार करें, और उनके कपटपूर्ण शब्दों पर ध्यान न दें; केवल उन पवित्र शहीदों को

देखो जो तुम्हारे साथ हैं; उनके वचनों पर ध्यान दो और बिना किसी संकोच के उनके धैर्य का अनुकरण करो। यातना देने वाले के क्रोध या उसकी विभिन्न यातनाओं से मत डरो; यह सब जल्द ही समाप्त हो जाएगा, और स्वर्ग में मसीह से उनके सेवकों के लिए एक अनंत पुरस्कार होगा जो उनके लिए पीड़ा सहते हैं।

यह कहकर नतालिया चुप हो गई। शाम हो चुकी थी।

एड्रियन ने उससे कहा:

'अब घर जाओ, मेरी बहन, और चैन से सोओ; और जब मुझे पता चलेगा कि हमें हमारे यातना के लिए कब बाहर ले जाया जाएगा, तो मैं तुम्हें खबर भेजूँगी ताकि तुम आकर हमारी मृत्यु का साक्षी बन सको।'

एड्रियन के पैरों से उठकर, नतालिया तेईस कैदियों में से प्रत्येक के पास गई और उनके पैरों पर गिरकर, उनकी बेड़ियों को चूमते हुए कहा:

हे मसीह के सेवको! मैं आपसे विनती करती हूँ, मसीह के इस भेड़ के बच्चे को बल दीजिए; उसे अंत तक धीरज रखने की सलाह दीजिए, और उसे उस भविष्य के पुरस्कार के बारे में बताइए जो परमेश्वर मसीह को अपना रक्त अर्पित करने वाले विश्वासियों के लिए तैयार किया गया है, ठीक वैसे ही जैसे आपने स्वयं अपना रक्त अर्पित किया है, जिसके लिए आप इस कष्ट के बदले में अनंत मुक्ति प्राप्त करेंगे। उसकी आत्मा को अपनी आत्मा के साथ मिला दो, और उसके सांसारिक माता-पिता, जो अधर्मी थे, की जगह उसके पिता बनो; उसे अपने पवित्र परामर्श से मजबूत करो, ताकि वह बिना किसी संदेह के विश्वास करके अपना शहादत का कार्य पूरा कर सके।

यह कहकर, नतालिया ने एक बार फिर एड्रियन की ओर मुड़कर देखा, जो कालकोठरी की गहराइयों में था:

'सुनिए, मेरे स्वामी,' उसने कहा, 'अपनी जवानी या अपनी शारीरिक सुंदरता पर दिल न लगाइए: यह नश्वर शरीर कीड़ों का भोजन बन जाएगा। अपने धन-संपत्ति, सोने और चांदी पर मन न लगाओ, क्योंकि अंतिम न्याय के दिन ये सभी चीजें किसी काम की नहीं रहेंगी। वहाँ, कोई भी किसी उपहार से अपनी आत्मा को शाश्वत पाप से मुक्त नहीं कर सकता, क्योंकि कोई भी ऐसे उपहार स्वीकार नहीं करेगा; केवल पवित्र आत्माओं के पुण्य कर्म ही ईश्वर उपहार के स्थान पर स्वीकार करेंगे।

यह कहकर, नतालिया घर चली गई।

कुछ दिनों बाद, एड्रियन ने यह सुनकर कि राजा उसे अन्य कैदियों के साथ न्याय और यातना के लिए अदालत में लाने का इरादा रखता है, पवित्र शहीदों से निम्नलिखित अनुरोध किया:

उसने कहा, 'हे स्वामिनो!' 'आपकी कृपा से, मुझे अपने घर जाकर आपकी दासी, मेरी बहन नतालिया को बुलाना होगा, ताकि वह हमारे कष्टों की गवाह बन सके, क्योंकि मैंने उससे नियत समय पर बुलाने का वादा किया था।'

संतों ने उसे अपना आशीर्वाद दिया और उसकी ज़मानत दी; एड्रियन, जेलर को पैसे देकर, चल पड़ा।

शहर के एक व्यक्ति ने, उसे घर की ओर जाते हुए देखा और नतालिया के पास दौड़कर गया और उसे बताया कि उसके पति को उसकी बेड़ियों से मुक्त कर दिया गया है और वह घर के रास्ते पर है।

यह सुनकर, नतालिया को विश्वास नहीं हुआ और उसने कहा:

'उसे आखिर किसने आज़ाद किया होगा? यह हो ही नहीं सकता कि मेरे पति को पवित्र शहीदों से अलग कर दिया गया हो।'

जब वे बात कर ही रहे थे, एक नौकर भी आ गया और बोला:

'क्या आपको पता है, मैडम, कि हमारे स्वामी को आज़ाद कर दिया गया है और वे घर की ओर आ रहे हैं?'

यह सोचकर कि उसने मसीह का त्याग कर दिया है और इसी कारण उसे मुक्त कर दिया गया है, नतालिया अत्यंत दुख से भर गई और जोर-जोर से रोने लगी; और जब उसने खिड़की से देखा कि वह पहले ही घर के पास आ रहा है, तो उसने अपना काम फेंक दिया, जल्दी से उठी, दरवाज़े बंद कर दिए, और ज़ोर से चिल्लाई:

'मेरे पास से दूर हो जाओ, हे ईश्वर-त्यागी, हे जिसने अपने प्रभु को धोखा दिया है! मैं ईश्वर से मुंह मोड़ने वाले से बात नहीं कर सकती, और न ही मैं तुम्हारे कपटपूर्ण शब्दों को सुनूंगी। हे अधर्मी और अत्यंत दुखी मनुष्य! किसने तुम्हें ऐसा कार्य करने के लिए उकसाया जिसे तुम अंत तक पूरा नहीं कर सकते थे? तुम्हें संतों से किसने अलग किया है? तुम्हें उनके साथ मेलजोल से हटने के लिए किसने प्रलोभित किया है? किस कारण से तुम भिड़ने से पहले ही भाग गए? तुमने अभी तक दुश्मन को देखा भी नहीं है, फिर भी तुम पहले ही अपने हथियार फेंक चुके हो; तुम्हारे ऊपर अभी तक कोई तीर नहीं चलाया गया है, फिर भी तुम पहले ही घायल हो चुके हो! मैं चकित रह गई, यह सोचते हुए: क्या एक अधर्मी वंश और एक

दुष्ट नगर से कुछ भी अच्छा निकल सकता है? क्या एक यातना देने वाले के वंशज द्वारा ईश्वर को एक शुद्ध बलिदान अर्पित किया जा सकता है? क्या निर्दोषों का रक्त बहाने वालों की धूप सर्वोच्च के लिए सुगंधित होगी? और मैं, एक दीन-हीन स्त्री होकर, इस दुष्ट पुरुष से विवाह करके क्या करूँ? मुझे शहीद की पत्नी का सम्मान पाने लायक नहीं समझा गया; इसके विपरीत, मैं एक धर्मत्यागी की पत्नी बन गई हूँ; मेरी खुशी क्षणिक थी और अब वह शाश्वत कलंक में बदल गई है; कुछ समय के लिए मुझे महिलाओं में प्रशंसा मिली थी, लेकिन अब मुझे उनके सामने अनंत शर्म का सामना करना होगा!

दरवाज़े के बाहर खड़े और नतालिया की बातें सुन रहे धन्य एड्रियन ने मन ही मन प्रसन्नता की और अपने संकल्प में दृढ़ हो गए, और हमारे ईश्वर मसीह से किए गए अपने वादे को पूरा करने की और भी तीव्र इच्छा से भर गए। वे अपनी युवा पत्नी के ऐसे शब्दों पर चकित थे, जिससे उन्होंने अभी हाल ही में विवाह किया था, क्योंकि उनके विवाह के दिन से केवल तेरह महीने ही बीते थे।

अपनी पत्नी के गहरे दुख को देखकर, एड्रियन ने दरवाज़ा खटखटाते हुए उससे विनती करनी शुरू कर दी, और कहा:

'मेरे लिए दरवाज़ा खोलो, मेरी मालकिन, नतालिया! मैं अपनी पीड़ाओं से नहीं भागा हूँ, जैसा तुम सोचती हो; नहीं, मैं ऐसा कुछ कर ही नहीं सकता था। मैं तुम्हें अपने साथ ले जाने आया हूँ, जैसा मैंने वादा किया था, ताकि तुम हमारी मौत के गवाह बन सको।'

उसकी बातों पर विश्वास न करते हुए, नतालिया ने डाँटते हुए उससे कहना जारी रखा:

'एक अपराधी मुझे इसी तरह धोखा देता है, एक दूसरा यहूदा इसी तरह झूठ बोलता है! मुझसे दूर हट जाओ, नहीं तो मैं तुम्हें मार डालूँगा!...'

और उसने दरवाज़ा नहीं खोला।

एड्रियन ने विनती की, 'जल्दी से दरवाज़ा खोलो, नहीं तो मैं तुम्हें देखे बिना चला जाऊँगा, और तुम इस पर दुखी होगी, क्योंकि मुझे तुरंत वापस जाना है। पवित्र शहीदों ने मेरी गारंटी दी है, और अगर मैं नियत समय तक वापस नहीं आया, और मेरी अनुपस्थिति में मेरे वरिष्ठ मेरे बारे में पूछें, तो पवित्र शहीदों को अपने कष्टों के अलावा, मेरी खातिर और भी अधिक पीड़ा सहनी पड़ेगी; लेकिन क्या वे मेरे लिए भी इतना कष्ट सह सकते हैं, जबकि वे खुद मुश्किल से जीवित हैं?

यह सुनकर, नतालिया ने तुरंत खुशी से दरवाज़े खोल दिए, और दोनों ने एक-दूसरे को गले लगा लिया।

एड्रियन ने कहा, 'धन्य है तू, मेरी पत्नी! केवल तू ही अपने पति को बचाने के लिए ईश्वर को जानने आई है! सचमुच, तू एक ऐसी पत्नी है जो अपने पति से प्रेम करती है! इसके लिए तेरा पुरस्कार आनंद होगा, क्योंकि यद्यपि तू स्वयं कष्ट नहीं सहती, फिर भी तू अपनी करुणा के द्वारा शहीदों के दुख में सहभागी होती है।'

एड्रियन ने अपनी पत्नी का हाथ पकड़कर उसके साथ चलना शुरू कर दिया।

रास्ते में, उसने उससे पूछा:

'और हम अपनी संपत्ति का क्या करें?'

नतालिया ने उत्तर दिया:

'पृथ्वी पर संबंधी मामलों की चिंता मुझ पर छोड़ दें, मेरे स्वामी, कहीं ऐसा न हो कि यह आपके मन को भटका दे; आप केवल उस कार्य को पूरा करने पर ध्यान दें और उसी के बारे में सोचें जिसके लिए आपको बुलाया गया है। जो कुछ भी सांसारिक, क्षणिक और आत्मा के लिए हानिकारक है, उसे भूल जाओ; बल्कि अपना हृदय उन शाश्वत आशीर्वादों को देखने और प्राप्त करने पर लगाओ जो आपके और उन संतों के लिए तैयार किए गए हैं जिनके साथ आप प्रभु के मार्ग पर चलते हैं।"

जैसे ही वह तहखाने में पहुँची, ईश्वर की दासी नतालिया पवित्र शहीदों के सामने साष्टांग दंडवत हो गई और उनकी बेड़ियों को चूमते हुए देखा कि उनके घाव पहले ही सड़ने लगे थे और उनमें से कीड़े गिर रहे थे; इसके अलावा, जिन लोहे की बेड़ियों से उन्हें जकड़ा गया था, उनके बोझ तले उनके अंग टूट रहे थे। वह झुककर उनके घावों से पीप पोंछने लगी। तब उसने तुरंत अपनी दासियों को घर से अच्छी सूती चादरें और पट्टी लाने के लिए भेजा। जब यह सब लाया गया, तो नतालिया ने अपने हाथों से शहीदों के घावों पर पट्टी बाँधी और जहाँ तक हो सका, उनकी असहनीय पीड़ा को कम किया, और सात दिनों तक तहखाने में उनकी देखभाल करती रही, जब तक कि उन्हें मुकदमे का सामना करने के लिए बाहर नहीं ले जाया गया।

जब मुकदमे का दिन आया, तो राजा मैक्सिमियिन बेंच पर अपनी सीट पर बैठ गए और कैदियों को अपने सामने लाने का आदेश दिया। नौकर तुरंत जेल में जाकर उन्हें राजा का आदेश सुनाने के लिए निकल पड़े। जब उन्होंने देखा कि वे अपने गहरे घावों के कारण इतने शारीरिक रूप से थके हुए थे कि वे चल भी नहीं सकते थे, तो नौकरों ने सभी शहीदों को एक ही ज़ंजीर से बाँधकर मवेशियों के शवों की तरह घसीटते हुए ले जाया; जहाँ तक एड्रियिन का सवाल है, वे उसे बाकी लोगों के पीछे ले गए, उसके हाथ पीठ पीछे बँधे हुए थे।

जैसे ही वे दरबार के पास पहुँचे, राजा को सूचित किया गया कि कैदियों को लाया गया है।

राजा ने आदेश दिया, 'उन्हें सभी को यहाँ एक साथ लाओ, ताकि वे एक-दूसरे की यातना देख सकें; उन्हें नग्न लाओ, यातना के लिए तैयार।'

कारागार अधीक्षक ने राजा को बताया:

'हे राजा! जिन्हें पहले यातनाएँ दी गई थीं, उन्हें मुकदमे के लिए यहाँ नहीं लाया जा सकता। उन्होंने आदेश दिया कि केवल एड्रियिन को लाया जाए, क्योंकि वह अभी भी सतर्क है और अच्छे शारीरिक स्वास्थ्य में है और विभिन्न प्रकार के यातनाओं को सहन कर सकता है; हालाँकि, दूसरों के शरीर गंग्रीन से ग्रस्त हो गए हैं, उनके घावों से उनकी हड्डियाँ दिखाई दे रही हैं, और यदि उन्हें फिर से यातना दी गई, तो वे संभवतः तुरंत मर जाएँगे, क्योंकि वे उनके लिए तैयार की गई कई यातनाओं को सहन नहीं कर पाएँगे। हम नहीं चाहते कि वे थोड़े से कष्ट से ही मर जाएँ, जैसे कि वे केवल थोड़े से दोषी हों, बल्कि उन्हें ठीक होने और अपनी ताकत फिर से हासिल करने के लिए कुछ समय दिया जाए, ताकि वे फिर अपनी अवज्ञा के लिए सबसे कठोर यातनाओं को सह सकें।

तब राजा ने आज्ञा दी कि केवल एड्रियिन को अन्दर लाया जाए।

एड्रियिन को नग्न करने के बाद, नौकरों ने उसे मृत्युदंड के उपकरण सौंप दिए ताकि वह उन्हें अपने ही हाथों से उठाकर ले जा सके।

पवित्र शहीदों ने उससे कहा:

'धन्य है तू, एड्रियिन, क्योंकि तुझे अपना क्रूस उठाने और मसीह का अनुसरण करने के योग्य समझा गया! अतः सावधान रह: न डर, न पीछे हट, और अपना इनाम न खो; सावधान रह कि शैतान तेरा खज़ाना न चुरा ले; दृश्य पीड़ाओं से मत डरो, बल्कि आने वाले पुरस्कार पर दृष्टि रखो: निडर होकर आगे बढ़ो और अपने यातनाकर्ता को लज्जित करो! यह जान लो: *'क्योंकि हमारी वर्तमान कष्ट-पीड़ाएँ उस महिमा के बराबर भी नहीं हैं जो हम पर प्रकट होने वाली है'* (रोमियों 8:18), जिसे हम प्रभु की दया से प्राप्त करने की आशा करते हैं।

धन्य नतालिया ने उससे यह भी कहा:

'हे स्वामी, अपना मन केवल ईश्वर पर लगाइए, और आपका हृदय किसी भी बात से न डरे! परिश्रम थोड़ा है, परन्तु शान्ति अनन्त है; पीड़ा क्षणिक है, परन्तु शहीदी का गौरव शाश्वत है; आप थोड़ी सी बीमारी सहन करेंगे और शीघ्र ही स्वर्गदूतों के साथ आनन्दित होंगे। यदि पृथ्वी के राजा की सेवा करते समय, आप छोटे-छोटे कर इकट्ठा करने का ध्यान रखते थे, अपने स्वास्थ्य की कोई परवाह नहीं करते थे, और युद्ध में मरने के लिए तैयार रहते थे, तो क्या आपको अब और भी अधिक साहस के साथ स्वर्गीय राजा के लिए हर प्रकार की यातनाएँ सहनी और मरनी नहीं चाहिए, जिनके साथ आप स्वयं भी राज्य करेंगे!

जब एड्रियिन को अधर्मी राजा मैक्सिमियिन के सामने लाया गया, तो उसने एक नज़र उस पर डालते हुए पूछा:

'क्या तुम अभी भी अपने पागलपन की चपेट में हो और यातनाओं से अपना जीवन समाप्त करना चाहते हो?'

एड्रियिन ने उत्तर दिया, 'मैं तुम्हें पहले ही बता चुका हूँ, कि मैं पागल नहीं हुआ हूँ, बल्कि होश में आ गया हूँ और इस जीवन में मरने के लिए तैयार हूँ!'

राजा ने पूछा:

'क्या तुम बलिदान नहीं चढ़ाओगे और देवताओं की पूजा नहीं करोगे, ठीक वैसे ही जैसे मैं और मेरे साथ वाले सभी लोग उनके सामने झुकते हैं और बलिदान चढ़ाते हैं?'

'अरे मूर्ख,' एड्रियिन ने उत्तर दिया, 'चूंकि तुम स्वयं भ्रम में हो, तो दूसरों को भी उसी भ्रम में क्यों ले जा रहे हो? क्योंकि तुम न केवल अपने ऊपर विनाश ला रहे हो, बल्कि उन सभी लोगों पर भी जो तुम्हारी बात सुनते हैं, और उन्हें आत्मा रहित मूर्तियों की पूजा करने की सलाह देकर और उन्हें मजबूर करके, स्वर्ग और पृथ्वी के सच्चे सृष्टिकर्ता, परमेश्वर को त्यागने के लिए, उन्हीं विनाश में घसीट रहे हो!

'तो क्या तुम हमारे महान देवताओं को छोटा मानते हो?' राजा ने पूछा।

एड्रियिन ने उत्तर दिया, 'मैं उन्हें न तो छोटा कहता हूँ और न ही बड़ा, क्योंकि वे कुछ भी नहीं हैं।'

क्रोधित यातनाकर्ता ने तब उसे डंडों से बुरी तरह पीटने का आदेश दिया।

धन्य नतालिया ने, यह सुनकर कि उसके पति को पीटना शुरू कर दिया गया है, पवित्र शहीदों को इस बात की सूचना दी, यह कहते हुए:

'मेरे पति को कष्ट झेलने शुरू हो गए हैं!'

पवित्र संतों ने तुरंत उसके लिए ईश्वर से प्रार्थना करनी शुरू कर दी, कि वह उसे उसके यातनाओं में बल प्रदान करें।

तथापि राजा ने यातना देने वालों को चिल्लाने का आदेश दिया: 'देवताओं का अपमान मत करो!'

जब शहीद को पीटा जा रहा था, तो उसने राजा से कहा:

'यदि मुझे उन देवताओं के विरुद्ध निन्दा करने के लिए यातना दी जा रही है जो देवता नहीं हैं, तो जीवित और सच्चे परमेश्वर के विरुद्ध निन्दा करने के लिए तुम्हारे लिए क्या यातना इंतज़ार कर रही है?'

'क्या तुझे इन चापलूसों से इतनी बेधड़क बोलना सिखाया है?' राजा ने पूछा।

शहीद ने उत्तर दिया:

'तुम उन लोगों को जो हमें मोक्ष की ओर ले जाते हैं और अनंत जीवन की ओर मार्गदर्शन करते हैं, "चापलूस" क्यों कहते हो? तुम बड़े धोखेबाज हो, जो लोगों को विनाश की ओर ले जा रहे हो!'

क्रोधित होकर, मैक्सिमियिन ने चार मजबूत नौकरों को शहीद को मोटी लकड़ियों से निर्दयता से पीटने का आदेश दिया।

और जब एड्रियिन को पीटा जा रहा था, तो उन्होंने कहा:

'हे मेरे यातनाकर्ता, तुम मेरे लिए जितनी अधिक यातनाएँ रचोगे, उतने ही अधिक मुकुट तुम मेरे लिए सुनिश्चित करोगे!'

और धन्य नतालिया ने पवित्र शहीदों को वह सब कुछ बता दिया जो सम्राट ने पूछा था और एड्रियिन ने जो उत्तर दिया था।

'कम से कम अपनी जवानी की परवाह कर,' यातना देने वाले ने आग्रह करना जारी रखा, 'और देवताओं को पुकार! तुम इतनी बेवजह और अपनी मर्ज़ी से क्यों मरना चाहते हो? मेरे देवता महान हैं, और मुझे तुम पर बहुत तरस आता है, यह देखकर कि तुम कितनी बुरी तरह पीड़ित हो और तुम्हारी सुंदरता कैसे नष्ट हो रही है!'

'मैं स्वयं को बचा रही हूँ,' शहीद ने उत्तर दिया, 'ताकि मैं पूरी तरह से नष्ट न हो जाऊँ!'

तड़पाने वाले ने विनती की, 'तो देवताओं को पुकारो, वे तुम्हें क्षमा कर देंगे, और मैं तुम्हें तुम्हारे पूर्व पद पर वापस कर दूँगा। तुम्हारी तुलना उन लोगों से नहीं की जा सकती जो तुम्हारे साथ बेड़ियों में जकड़े हुए हैं, क्योंकि तुम एक कुलीन व्यक्ति हो, प्रतिष्ठित माता-पिता के पुत्र हो, और यद्यपि युवा हो, तुम महान सम्मान के योग्य हो; वे अन्य कैदी, हालांकि भिखारी, नीच वंशज और मूर्ख अज्ञानी हैं!

'मुझे पता है,' शहीद ने उत्तर दिया, 'कि तुम मेरे वंश और उत्पत्ति से वाकिफ हो; लेकिन अगर तुम उन संतों के वंश और उस समृद्ध विरासत को जानते जो उनका इंतज़ार कर रही है, तो तुम उनके पैरों पर गिरने वालों में सबसे पहले होते और उनसे अपनी प्रार्थना करने के लिए विनती करते, और अपने ही हाथों अपने निर्जीव देवताओं को नष्ट कर देते!'

और भी अधिक क्रोधित होकर, यातना देने वाले ने चार मजबूत नौकरों को शहीद के पेट पर वार करने का आदेश दिया।

और उन्होंने संत को तब तक पीटा जब तक उसका पेट फट नहीं गया और उसके आँतें बाहर निकलने लगीं। यह देखकर, यातना देने वाले ने उन्हें पीटना बंद करने का आदेश दिया।

धन्य एड्रियिन शरीर से युवा और कमजोर थे: उनकी आयु केवल अठाईस वर्ष थी।

'क्या तुम देखते नहीं,' राजा ने उससे कहा, 'मैं तुम्हारी कैसे रक्षा कर रहा हूँ! यदि तुम देवताओं को पुकारने के लिए केवल एक भी शब्द बोल दो, तो वे तुरंत तुम्हें दया दिखाएंगे; और मैं तुम्हारे घावों को भरने के लिए चिकित्सकों को बुलाऊंगा, और आज ही तुम मेरे शाही महल में होगे!'

'यदि तुम मुझे डॉक्टरों की देखभाल का वादा करते हो,' शहीद ने उत्तर दिया, 'और अपने महल में सम्मान देते हो, और कहते हो कि तुम्हारे देवता मुझ पर दया करेंगे, तो उन्हें अपने ही होठों से बताने दो कि वे मुझे क्या देना चाहते हैं; उन्हें कहने दो कि वे मुझे कौन-सी कृपा का वादा करते हैं!' और जब मैं उनके शब्द सुन लूँगा, तो मैं उनके लिए बलिदान चढ़ाऊँगा और उनकी पूजा करूँगा, ठीक वैसे ही जैसे आप चाहें!

'वे बोल नहीं सकते!' राजा ने उत्तर दिया।

'और अगर वे बोल नहीं सकते,' शहीद ने कहा, 'तो मैं इन बहरी और निर्जीव मूर्तियों की पूजा क्यों करूँ?'

क्रोध और गुस्से में, यातना देने वाले ने पवित्र शहीद को अन्य कैदियों के साथ फिर से बाँधने और कालकोठरी में बंद करने का आदेश दिया, और उनके मुकदमे की तारीख तय कर दी।

तब सैनिकों ने पवित्र शहीदों को पकड़ लिया, कुछ को घसीटते हुए ले गए, जबकि अन्य, शारीरिक पीड़ा से थके और चलने में असमर्थ, को अपनी बाहों में उठाकर ले जाया गया; और संत एड्रियन को भी ले जाकर फिर से कैद कर दिया गया।

धन्य नतालिया ने उनका उत्साह बढ़ाया और उन्हें सांत्वना दी; उन्हें गले लगाते हुए, उन्होंने कहा:

'धन्य हैं आप, मेरे प्रभु, क्योंकि आपको पवित्र शहीदों के भाग्य के योग्य समझा गया! धन्य हैं आप, मेरी आँखों की रोशनी, क्योंकि आप उसी के लिए पीड़ा सह रहे हैं जिसने आपके लिए पीड़ा सहन की! अब आप उसकी महिमा को देखने जा रहे हैं और उसमें सहभागी होंगे, क्योंकि जो कोई भी उसकी पीड़ा में सहभागी होता है, वह उसकी महिमा में भी सहभागी होगा।'

जब वे बात कर रहे थे, नतालिया ने उसका खून पोंछा और अपने शरीर पर लगा लिया।

और पवित्र शहीदों ने एड्रियन के साहसी धैर्य पर बहुत प्रसन्नता व्यक्त की; वे उसके पास आकर उसे चूमने लगे और कहने लगे, 'भाई, तुम्हें शांति मिले।'

और जो अपने घावों की गंभीरता के कारण चल नहीं सकते थे, वे फर्श पर लेटकर उसे चूमने के लिए रेंगते हुए उसकी ओर गए, और उन सभी ने उससे कहा:

'प्रिय भ्राता, प्रभु में आनन्दित हो, क्योंकि तुम्हारा नाम परमेश्वर के महिमामय सेवकों में लिखा हुआ है!'

'तो आनंद मनाओ, हे मसीह के सेवको,' एड्रियन ने उत्तर दिया, 'क्योंकि तुम्हें मेरी देखभाल के लिए मुकुट मिलेंगे! तो मेरी ओर से प्रभु से प्रार्थना करो, कि वह मुझे बल दे, जिसका शरीर बहुत कमजोर हो गया है, और यह कि जो शत्रु मुझ पर उठता है—शैतान—वह मुझे हानि पहुँचाने में असमर्थ हो!'

'ईश्वर पर अपना विश्वास रखो,' संतों ने कहा। 'शैतान तुम पर विजय नहीं पाएगा: तुमने अपनी पीड़ा से उसे दूर भगा दिया है।' पहले तो हमें आपके लिए डर था, यह सोचकर कि एक इंसान होने के नाते आप कमजोर होंगे; लेकिन अब, आपका दृढ़ धैर्य देखकर, हमें अब आप पर कोई संदेह नहीं है और हम मानते हैं कि, ईश्वर की मदद से, दुश्मन आपके साथ कुछ भी नहीं कर सकता; इसलिए, डरो मत: शैतान को जीतने वाले मसीह आपके साथ हैं!

संत नतालिया के साथ अन्य धर्मनिष्ठ महिलाएँ भी थीं जो संतों की सेवा करती थीं, उनके घावों पर उपचारात्मक मलहम लगाती और उनकी पट्टियाँ बाँधती थीं, साथ ही शहीदों को आपस में बाँट लेती थीं ताकि प्रत्येक महिला अपनी-अपनी देखभाल हर तरह से कर सके।

जब दुष्ट राजा को यह पता चला कि कई धर्मनिष्ठ महिलाएँ कैदियों के घावों पर दवा लगाकर उनकी देखभाल करने के लिए कालकोठरी में आ रही थीं, तो उसने उन्हें कैदियों के हिस्से में प्रवेश करने से रोक दिया।

जब उन्होंने देखा कि महिलाओं को शहीदों से मिलने की अनुमति नहीं दी जा रही है, तो संत नतालिया ने अपने बाल काट लिए, पुरुषों के कपड़े पहन लिए और एक पुरुष का भेष धारण कर कारागार में प्रवेश किया, जहाँ उन्होंने न केवल अपने पति, संत एड्रियन, बल्कि अन्य सभी पवित्र शहीदों की भी अकेले ही देखभाल की।

शहीदों के घावों पर पट्टी बांधने के बाद, वह एड्रियन के पैरों के पास बैठ गई और कहा:

'मैं आपसे विनती करती हूँ, मेरे स्वामी, कि आप अपने कष्टों के समय हमारे मिलन और मेरी आपके साथ मौजूदगी को याद रखें, और मेरी यह इच्छा कि आप अपना मुकुट प्राप्त करें; हमारे प्रभु यीशु मसीह से प्रार्थना करें कि वह मुझे भी अपने साथ ले जाएँ, ताकि जैसे हम इस दुख और पाप से भरे जीवन में एक साथ रहे, वैसे ही हम उस धन्य जीवन में भी अविभाज्य रहें।' मैं आपसे विनती करती हूँ, हे मेरे स्वामी, जब आप प्रभु मसीह के समक्ष खड़े हों, तो मेरी लिए पहली प्रार्थना करें; मुझे विश्वास है कि आप जो कुछ भी माँगेंगे, प्रभु आपको देगा, क्योंकि आपकी प्रार्थना उनके प्रिय है

और आपका निवेदन उन्हें भाता है। लेकिन आप इन नागरिकों की दुष्टता और राजा के अधर्मीपन को जानते हैं, और मुझे डर है कि वे मुझे किसी दूसरे आदमी, एक दुष्ट और विधर्मी व्यक्ति से शादी करने के लिए मजबूर कर सकते हैं; तब मेरा बिस्तर अपवित्र हो जाएगा और हमारा मिलन टूट जाएगा। मैं आपसे विनती करती हूँ, जैसा प्रेरित सिखाते हैं, अपनी पत्नी का सम्मान करें; मुझे मेरी पवित्रता के पुरस्कार स्वरूप, आपके साथ मरने का वरदान दें!

यह कहकर, वह उठी और एक बार फिर संतों की सेवा करने लगी, उन्हें भोजन और पेय लाने लगी, उनके घाव धोने और पट्टियाँ बाँधने लगी।

धार्मिक महिलाओं ने जब यह जाना कि नतालिया पुरुषों के वस्त्र पहनकर संतों की सेवा कर रही थी, तो उन्होंने भी उसका अनुकरण किया: उन्होंने भी अपने बाल काट लिए और पुरुषों के वस्त्र पहनकर, वे भी तहखाने में प्रवेश करती रहीं और संतों की सेवा करती रहीं।

जब दुष्ट राजा को यह पता चला कि महिलाओं ने क्या किया था, और यह भी कि कैदी अपने सड़ते हुए घावों से पूरी तरह थके हुए और मुश्किल से जीवित थे, तो उसने कालकोठरी में उनके पास एक हथौड़ा और एक लोहार की चक्की लाने का आदेश दिया, ताकि शहीदों की पिंडलियाँ और भुजाएँ तोड़ी जा सकें, यह कहते हुए:

'इन्हें पुरुषों के लिए प्रथागत हिसाब मृत्यु से न मरने दो!'

और जब यातना देने वालों और हत्यारे नौकरों ने लोहे का अँडेल और हथौड़ा कालकोठरी में लाया, तो नतालिया ने यह देखकर और उनके आने का कारण समझकर, उनसे विनती की कि वे एड्रियन से ही शुरू करें, क्योंकि उसे डर था कि उसके पति, अन्य शहीदों की भीषण यातना और मृत्यु का दृश्य देखकर, भयभीत हो सकते हैं।

यातना देने वालों ने नतालिया की बात मानी और सबसे पहले एड्रियन पर अत्याचार करना शुरू कर दिया।

और नतालिया ने अपने पति के पैरों को उठाकर उन्हें अँडवे पर रख दिया; यातनादाताओं ने हथौड़े से शहीद के पैरों पर एक ज़ोरदार वार करके उसकी पिंडलियाँ तोड़ डालीं और उसके पैरों को काट डाला।

नतालिया ने कहा, 'हे मेरे प्रभु, मसीह के सेवक, मैं आपसे विनती करती हूँ, जब तक आप जीवित हैं, अपना हाथ बढ़ाएँ ताकि वे उसे काट सकें, और तब आप उन अन्य पवित्र शहीदों के समान हो जाएँ जिन्होंने आपसे अधिक कष्ट सहे हैं!'

संत एड्रियन ने अपनी ओर हाथ बढ़ाया, और उसने उसे लेकर अँडवे पर रख दिया। यातना देने वाले ने हथौड़े से उसके हाथ पर जोर से वार कर उसे काट दिया, और तुरंत ही संत एड्रियन ने महान पीड़ा के बीच अपनी आत्मा ईश्वर के हाथों में सौंप दी।

संत एड्रियन को मृत्युदंड देने के बाद, यातना देने वाले हथौड़े और अँकुस लेकर अन्य शहीदों के पास गए, लेकिन उन्होंने स्वयं अपने पैर और हाथ अँकुस पर रख दिए और कहा:

'हे प्रभु, हमारी आत्माओं को ग्रहण करो!'

इसके बाद, अधर्मी राजा ने शहीदों के शवों को जलाने का आदेश दिया, ताकि ईसाई उन्हें न ले सकें।

राजा की आज्ञा सुनकर, धन्य नतालिया ने चुपके से अपने पति का हाथ लेकर उसे अपने साथ छिपा लिया, ताकि वह जल न जाए।

जब यातना देने वालों के नौकरों ने भट्टी प्रज्वलित कर दी और पवित्र शहीदों के शरीरों को जलाने के लिए कालकोठरी से बाहर ले जा रहे थे, तो संत नतालिया और अन्य धर्मपरायण महिलाएँ उनके पीछे चली गईं और शहीदों का खून अपने कीमती परिधानों और दुपट्टों में इकट्ठा किया; उसे अपने पास रखकर, उन्होंने अपने शरीर पर उसका अभिषेक किया। इसके अलावा, उन्होंने तो नौकरों से पैसे देकर शहीदों के खून से सने उनके वस्त्र भी खरीद लिए।

जब संतों के शवों को भट्टी में फेंका गया, तो महिलाएँ आँसू भरी आँखों से चिल्लाईं:

'हे स्वामिनी, अपनी शाश्वत विश्राम में हमें याद रखना!'

और संत नतालिया पहले ही आग में कूदने के लिए भट्टी तक दौड़ चुकी थीं, वह अपने पति के साथ मिलकर खुद को ईश्वर की बलिदान के रूप में अर्पित करना चाहती थीं, लेकिन उन्हें ऐसा करने से रोक लिया गया।

अचानक, आकाश में एक भयंकर गर्जना हुई, बिजली चमकी, और एक मूसलाधार बारिश शुरू हो गई, जिसने पूरे इलाके को बाढ़ में डुबो दिया और भट्ठी को भी बुझा दिया। डर के मारे, दुष्ट यातना देने वाले भाग गए, और उनमें से कई बिजली गिरने से रास्ते में ही मर गए।

जब यातना देने वाले के नौकर बखिर गए, तो वहाँ मौजूद वशि्वासयिों ने, संत नतालयिा और अन्य महलिाओं के साथ मलिकर, पवत्रि शहीदों के शवों को भट्टी से बाहर नकिाला, जो आग से पूरी तरह से सुरक्षति और अक्षुण्ण थे, यहाँ तक कि उनके एक भी बाल झुलसा नहीं था।

एक धर्मनष्ठि व्यक्ति, अपनी पत्नी के साथ, संत नतालयिा के चरणों में गरि पड़ा और उनसे तथा अन्य भाइयों से वनिती करने लगा, कहता हुआ:

'हम शहर के बाहरी इलाके में एक एकांत स्थान पर रहते हैं; हम अधर्मीपन से घृणा करते हैं और अब दुष्ट राजा द्वारा की जा रही क्रूर रक्तपात का साक्षी नहीं बन सकते, और इसलिए हम अब यहाँ नहीं रहना चाहते और बज़िान्टयिम जा रहे हैं। हमें पवत्रि शहीदों के शव दे दो; हम उन्हें एक जहाज पर लादकर अपने साथ यहाँ से ले जाएँगे, और उन्हें दुष्ट राजा मैक्समियिन की मृत्यु तक वहीं रखेंगे; और उसकी मृत्यु के बाद, यदि हम जीवति रहे, तो हम लौट आएँगे और संतों के शवों को वापस यहाँ लाएंगे, ताकि सभी उन्हें श्रद्धांजलि दे सकें। लेकनि अगर वे अब यहाँ रहे, तो राजा फरि से उन्हें जलाने का आदेश देगा, और आप ही वे लोग होंगे जनि्होंने उन पवत्रि देहों को धोखा दयिा, जनि्हें ईश्वर ने बारशि के द्वारा आग से बचाया था।

सभी सहमत हो गए और शहीदों के शवों को बज़िान्टयिम भेजने के लिए जहाज पर लाद दयिा; और जहाज के प्रस्थान के लिए हवा अनुकूल थी।

इस बीच, संत नतालयिा अपने घर में रहती थीं, अपने प्रयि पति, संत एड्रयिन का हाथ अपने पास रखती थीं, जसिे उन्होंने कीमती मूर्रा से अभसिकि्त कयिा था और बैंगनी रंग में लपेटकर अपने बस्तिर के सरिहाने रख दयिा था—यह एक ऐसी बात थी जो उनके घर का कोई भी व्यक्ति नहीं जानता था।

कुछ समय बाद, एक कुलीन व्यक्ति, जो एक हज़ार के कमांडर के पद पर था, ने नतालयिा से ववािह करने की इच्छा व्यक्त की, क्योंकि वह जवान, सुंदर और अमीर थी। उसने राजा से एड्रयिन की पत्नी से ववािह करने की अनुमति मांगी, और राजा ने ववािह के लिए सहमति दे दी। दूल्हे ने तुरंत नातालयिा के पास ववािह का प्रस्ताव लेकर कुलीन महलिाओं को भेजा। लेकनि नातालयिा ने उनसे कहा:

'मुझे यह सुनकर बहुत प्रसन्नता हुई कि ऐसा व्यक्ति मुझसे ववािह करना चाहता है; लेकनि मैं आपसे तीन दनि प्रतीक्षा करने का अनुरोध करती हूँ ताकि मैं स्वयं को तैयार कर सकूँ, क्योंकि मुझे बलि्कुल भी उम्मीद नहीं थी कि कोई मुझसे इतनी जल्दी ववािह करना चाहेगा।'

यह कहकर, धन्य नतालयिा ने शहीदों के शवों को ले जाई गई जगह पर भाग जाने का नशि्चय कयिा।

उनके पास भेजी गई स्त्रयिों को एक हजार के सेनापति के पास भेजकर और उन्हें आश्वस्त करके, वह स्वयं अपने शयनकक्ष में गईं, जहाँ संत एड्रयिन का हाथ रखा हुआ था, और, जमीन पर गरिकर, उन्होंने रोते हुए प्रभु से पुकारा:

'हे हमारे प्रभु परमेश्वर, हे शोकति और हृदय-वदीर्ण लोगों के परमेश्वर, मुझ पर, अपनी दासी पर, दृष्टि डालें, और अपने शहीद एड्रयिन की शय्या को अपवत्रि न होने दें। हे प्रभु, अपनी दासी के दुखों को न भूलें, जो उसने आपके पवत्रि नाम के लिए सहन कए! हे दयालु प्रभु! उनकी पडिली के टूटने और उनके हाथों के कटने को याद करो, और उन अन्य सेवकों को भी जनि्होंने आपके लिए दुख उठाया है, और उनके दुख व्यर्थ न जाएँ। उनके लिए मेरी दया करो, और मुझे आपके शत्रुओं के साथ जीने न देना। हे प्रभु, जनि्होंने उन संतों को आग से बचाया, मुझे भी इस दुष्ट मनुष्य की युक्तयिों से बचाओ!

जब वह प्रार्थना कर रही थी, तो नतालयिा, थकान और दुख से मुरझाई हुई, झपकी ले गई और हल्की नींद में सो गई; और देखो, एक सपने में पवत्रि शहीदों में से एक उसके सामने प्रकट हुआ और कहा:

तब धन्य नतालयिा ने उससे पूछा:

तब धन्य नतालयिा ने उससे पूछा:

'मुझसे कहिए, हे पवत्रि शहीद, क्या मेरा स्वामी एड्रयिन भी आपके साथ प्रभु मसीह के समक्ष प्रकट हुए हैं?'

शहीद ने उत्तर दयिा:

'वह हमसे पहले प्रभु के समक्ष प्रकट हुए हैं! लेकनि तुम्हें तुरंत एक जहाज पर चढ़कर उस स्थान के लिए रवाना होना है जहाँ हमारे शरीर पड़े हैं; वहाँ प्रभु तुम्हारे सामने प्रकट होंगे और तुम्हें हमारे पास ले आएँगे!'

जागते ही, संत नतालयिा तुरंत सब कुछ पीछे छोड़कर, केवल संत एड्रयिन का हाथ थामे, घर से बाहर नकिल गईं; समुद्र तट पर पहुँचने पर, उन्होंने एक जहाज देखा, जो मानो खास तौर पर उनका इंतजार कर रहा हो और बज़िान्टयिम के

लिए रवाना होने को तैयार हो। उस पर चढ़ते ही, उसने देखा कि उसमें दोनों लिंगों के लोग सवार थे, जो सभी दुष्ट सम्राट मैक्सिमियिन के उत्पीड़न से भागे हुए ईसाई थे, और उसने परमेश्वर की महिमा की।

हालाँकि, कमांडर को नाटालिया के प्रस्थान की खबर मिलते ही, उसने सहायता के लिए राजा से सैनिक मांगे और एक दूसरे जहाज पर सवार होकर उसका पीछा करने निकल पड़ा। जब उसका जहाज़ तट से एक हज़ार स्टेडियम दूर निकल गया, तो समुद्र में एक विपरीत हवा चली, जिसने जहाज़ को वापस तट की ओर उसी जगह पर धकेल दिया जहाँ से यह रवाना हुआ था, और उसे बहुत नुकसान पहुँचाया, जिससे जहाज़ पर सवार कई लोग डूब गए। ईसाई जहाज, जिस पर संत नतालिया सवार थीं, बिना किसी खतरे के आगे बढ़ता रहा। आधी रात को, शैतान उनके सामने प्रकट हुआ, मानो वह पूर्व से एक जहाज पर सवार होकर आ रहा हो, जिसके साथ नाविकों जैसे दिखने वाले लोग थे; शैतान ने ईसाई नाविकों से, मानो पतवार संभालने वाले की आवाज़ में, पूछा:

'तुम कहाँ से हो, और कहाँ जा रहे हो?'

उन्होंने उत्तर दिया:

'हम निकोमेडिया से हैं, बिज़ान्टियम की ओर नौकायन कर रहे हैं[5727] .'

दुश्मन ने उनसे कहा:

'तुम सही मार्ग से भटक गए हो; जहाज को बाईं ओर मोड़ो।'

ऐसा कहकर, शैतान ने उन्हें धोखा देने और डुबाने की कोशिश की। ईसाइयों ने इस धोखे भरी सलाह पर विश्वास कर लिया और यह सोचकर कि जिनसे वे मिले थे वे वास्तव में पूर्व से आ रहे थे, उन्होंने पाल और जहाज को बाईं ओर मोड़ना शुरू कर दिया; लेकिन अचानक पवित्र शहीद एड्रियिन प्रकाश से दमकते हुए उनके सामने प्रकट हुए, और ऊँचे स्वर में चिल्लाए:

'अपने चुने हुए मार्ग पर ही नौका चलाओ और दुश्मन की बातों पर ध्यान मत दो, जो निश्चित रूप से तुम्हारा विनाश रच रहा है।'

यह कहने के बाद, शहीद जल पर चलकर आगे बढ़ते हुए दिखाई दिए, जबकि शैतान अपनी नाव के साथ गायब हो गया।

धन्य नतालिया अपने पैरों पर खड़ी हो गईं, उन्होंने संत एड्रियिन को जहाज के आगे चलते हुए देखा, और उद्घोषणा की:

'वहाँ मेरे स्वामी हैं!'

और तुरंत संत अदृश्य हो गए।

एक अनुकूल हवा चलने लगी। यात्री भोर से पहले बिज़ान्टियम पहुँचे और किनारे पर लंगर डाला, जिसके पास वह चर्च था जहाँ पवित्र शहीदों के शव रखे थे, और वे खुशी से उतर गए।

पवित्र शहीदों के शरीर देखने के लिए चर्च में प्रवेश करते ही, संत नतालिया, अकथनीय आनंद के साथ, उन पर झपट पड़ी, उन्हें चूमते हुए और आनंद के आँसू बहाते हुए; संत एड्रियिन का हाथ उनके शरीर पर रखकर, वह घुटनों के बल बैठ गई और लंबे समय तक प्रार्थना करने लगी। तब, एक लंबी प्रार्थना के बाद, वह उठी और वहाँ मौजूद भाइयों और बहनों को चूमा, क्योंकि वहाँ कई विश्वासी ईसाई इकट्ठा हो गए थे; उन्होंने खुशी से उसका स्वागत किया, उसे घर के अंदर ले गए और उसे थोड़ी देर आराम करने के लिए कहा, क्योंकि वे देख सकते थे कि वह समुद्री यात्रा से पूरी तरह थक गई थी। जब वह गहरी नींद में सो गई, तो संत एड्रियिन एक सपने में उसके सामने प्रकट हुए और उससे कहा:

'यह अच्छा है कि तुम यहाँ आई हो, हे मसीह की दासी और शहीदों की पुत्री: आओ अपने विश्राम में, जो प्रभु ने तुम्हारे लिए तैयार किया है; आओ और अपना पुरस्कार प्राप्त करो!'

जागने पर, संत नतालिया ने अपने सपने के बारे में अपने साथ मौजूद ईसाइयों को बताया और उनसे अपने लिए प्रार्थना करने को कहा। इसके बाद, वह फिर से सो गईं। एक घंटे बाद, विश्वासियों उसे जगाने आए, लेकिन उन्होंने उसे पहले ही मृत पाया, क्योंकि उसकी पवित्र आत्मा प्रभु के साथ शाश्वत विश्राम में चली गई थी। इस प्रकार, पवित्र शहीदों के दुखों के तुरंत बाद, संत नतालिया ने भी अपना बलिदान पूरा किया, यद्यपि बिना रक्तपात के। उन्होंने पवित्र

[5727] बाइजेंटाइयम, जिसे बाद में प्रसिद्ध कॉन्स्टेंटिनोपल या त्सारग्राद के नाम से जाना गया, शुरू में एक छोटी मेगारी उपनिवेश थी, जिसकी स्थापना लगभग 658 ईसा पूर्व में हुई थी और इसका नाम इसके संस्थापक, बिसास के नाम पर रखा गया था, जो एशिया माइनर के ग्रीक शहर मिलिटस का मूल निवासी था, जो कभी फारसी शासन के अधीन था।

शहीदों के साथ मलिकर बहुत कष्ट सहे, जेल में उनकी सेवा की और उनके दुखों को देखा; उन्होंने पवत्रिता की खातरि अपने घर और अपने देश को भी त्याग दयि, और शहीदों में गनि जाने के बाद, हमारे उद्धारकर्ता मसीह के सामने प्रकट हुईं, जन्हिें पति और पवत्रि आत्मा के साथ, अब और हमेशा और युगों-युगों तक सम्मान और महमि दी जाती है। आमेन।

ट्रोपारयिन, स्वर 4:

हे प्रभु, तेरे शहीदों ने अपने कष्टों के द्वारा, हमारे परमेश्वर, तुझ से अक्षय मुकुट प्राप्त कए हैं: क्योंक, तेरी शक्ति को धारण करके, उन्होंने अपने यातना देने वालों को परास्त कयि और दुष्टात्माओं के दुर्बल अत्याचार को कुचल डाला; उनकी प्रार्थनाओं से, हमारी आत्माओं को बचा।

कॉन्टाकयिन, स्वर 4:

हे ईश्वर-पराज्ञ पत्नी, आपने मसीह के शहीद एड्रयिन के हृदय में दव्यि वचन का संचार कयि, और आप ने उत्सुकता से शहादत की खोज की, तथा अपने पति के साथ एक मुकुट प्राप्त कयि।

ईश्वर माता के व्लादमिीर प्रतमिा के मलिन के सम्मान में पर्व

26 अगस्त को स्मरणोत्सव

धर्मपरायण महा राजकुमार वासलिी दमित्रिीवचि[5728] के शासनकाल में, परम पवत्रि मेट्रोपॉलटिन साइप्रयिन[5729] के अधीन, अगारयिन राजा (मंगोल वजिेता) तैमूर ने रूस की भूमि पर आक्रमण कयि; यह तैमूर, एक वशिाल सेना के साथ पूर्व से मार्च करके, कई प्रदेशों को वश में कर लयि और अंततः रूसी साम्राज्य की सीमाओं के पास पहुँच गया। रयिाज़ान क्षेत्र की सीमाओं पर पहुँचने पर, तैमूर ने येलेट्स शहर पर कब्ज़ा कर लयि, येलेट्स के राजकुमार को बंदी बना लयि और कई ईसाइयों को मौत के घाट उतार दयि; क्योंकि वह ईसाइयों का घृणति और भयानक उत्पीड़क था। तमरलेन ने डींग मारी कि वह पूरी रूसी भूमि को उजाड़ देगा और ईसाई धर्म का सफाया कर देगा; इस वध्विंसक ने मास्को शहर की ओर रुख कयि, उसका इरादा उसे उजाड़ देने का था।

जब ग्रैंड प्रंसि वासलिी दमित्रिीवचि को इसकी खबर मलिी, तो उन्होंने अपने योद्धाओं को इकट्ठा कयि और कोलोम्ना शहर के लए रवाना हो गए। वहाँ से नकिलकर, वे ओका नदी के कनिारे रुके और दुश्मन के खलिाफ वहीं मोर्चा संभाल लयि; तमिूर, अपनी ओर से, पंद्रह दनिों तक एक ही जगह पर रुका रहा। जब महाप्रंसि (और सभी ईसाई योद्धाओं) को उस अधर्मी ज़ार की महान शक्ति के बारे में पता चला, जो एक वशिाल सेना के साथ रूस आया था, और उन्होंने उसके दुष्ट इरादों के बारे में भी सुना, तो उन्होंने अपने योद्धाओं के साथ स्वर्ग की ओर अपने हाथ उठाए और प्रभु और परमेश्वर की अतपिवत्रि माता से आँसुओं के साथ प्रार्थना की, उस अधर्मी अगारयिन से मुक्ति की याचना करते हुए: महाप्रंसि ने मदद के लए ईश्वर के संतों, पवत्रि धर्मगुरु पेत्रस और अलेक्सयिस, आदरणीय सर्गयिस और अन्य रूसी चमत्कार-कर्ताओं का आह्वान कयि।

साथ ही, महाप्रंसि ने अपने आध्यात्मकि पति, उनकी उत्कृष्टता मेट्रोपॉलटिन साइप्रयिन से लोगों के लए प्रार्थना के साथ उपवास की घोषणा करने का अनुरोध कयि; महाप्रंसि ने मेट्रोपॉलटिन से रूसी राजधानी की सुरक्षा के लए व्लादमिीर शहर से ईश्वर की माता की चमत्कारी प्रतमिा लाने और उसे मॉस्को लाने का भी अनुरोध कयि। संत साइप्रयिन पहले भी माँ ईश्वर की उपर्युक्त पूजनीय प्रतमिा को मास्को लाने पर वचिार कर चुके थे; और जब उन्हें राजकुमार से आज्ञा मलिी, तो उन्होंने बड़े राजकुमार के हृदय में वही वचिार रखने के लए ईश्वर का हार्दकि धन्यवाद कयि; परम पावन मेट्रोपॉलटिन ने ग्रैंड प्रंसि के साथ इस उद्देश्य की एकता को मास्को में माँ की चमत्कारी प्रतमिा लाए जाने के लए ईश्वर की कृपा और सहमति के संकेत के रूप में माना।

[5728] वासलिी (द्वतिीय) दमित्रिीवचि ने 1389 से 1425 तक शासन कयि।

[5729] साइप्रयिन ने 1380 से 1385 तक मॉस्को मेट्रोपोलसि का शासन कयि; फरि 1390 से 1406 तक।

थोड़ी ही देर बाद, मेट्रोपॉलिटन ने व्लादिमीर से ईश्वर की माता की प्रतिष्ठित प्रतिमा को वापस लाने के लिए प्रतिष्ठित पुरोहितों को भेजा; सभी पुरोहितों और लोगों की एक बड़ी भीड़ को इकट्ठा करके, परम पावन मेट्रोपॉलिटन ने दुश्मनों पर विजय के लिए एक परिषद प्रार्थना सेवा का नेतृत्व किया और सभी को उपवास करने और प्रार्थना करने का आदेश दिया; उन्होंने स्वयं चर्च नहीं छोड़ा, दिन-रात सेवाएं करते रहे और बड़े राजकुमार, उनके सैनिकों और सभी ऑर्थोडॉक्स ईसाइयों के लिए आँसुओं के साथ प्रार्थना करते रहे।

जब पवित्र प्रतिमा, व्लादिमीर शहर से लाई गई, अगस्त के पंद्रहवें दिन, परम पवित्र माता परमेश्वर के सोपान पर्व के अवसर पर, मास्को शहर के पास पहुँची, तो महामहोदय मेट्रोपॉलिटन शेष पुरोहितों और लोगों की एक बड़ी भीड़ के साथ उसका स्वागत करने के लिए बाहर गए। उस पवित्र प्रतिमा को देखकर, सभी जमीन पर गिर पड़े और उन्होंने उसकी पूजा स्वयं परम पवित्र मसीह की माता के रूप में की, जो उनके पास आई थीं, और उसे बड़ी खुशी से स्वीकार किया; इस प्रतिमा को निहारते हुए, सभी ने गहरी भावना के आँसू बहाए और मसीह की माता से अगारियों के आक्रमण से मुक्ति के लिए प्रार्थना की।

उनकी प्रार्थना व्यर्थ नहीं गई: जिस दिन परम पवित्र माता ईश्वर की पवित्र प्रतिमा मास्को लाई गई थी, उसी दिन दुष्ट अगारियन राजा तैमूर एक भयानक स्वप्न से डरकर आतंकित हो गया और अपनी पूरी सेना के साथ भाग गया, भले ही कोई उसका पीछा नहीं कर रहा था।

उसने जो दर्शन देखा वह इस प्रकार था: उसने अपने सामने एक ऊँचा पहाड़ देखा, जिसकी चोटी से पवित्र संत अपने हाथों में सुनहरे दंड लिए हुए उसकी ओर उतर रहे थे और उसे धमका रहे थे; इन पवित्र संतों के ऊपर, तैमूर ने हवा में एक असाधारण प्रकाश देखा; उसने एक रानी को भी उन संतों के बीच अकथनीय महिमा में खड़ा देखा, जो एक गाढ़े लाल रंग के चोगे में लिपटी हुई थी और सूर्य से भी अधिक तेज, बिजली जैसी किरणों से प्रकाशमान थी। इस रानी के चारों ओर हथियारबंद योद्धाओं की एक अनगिनत भीड़ थी, जो उसकी सेवा कर रहे थे और युद्ध के लिए तैयार प्रतीत हो रहे थे। रानी के हाथ आकाश की ओर फैले हुए थे - ऐसा लग रहा था कि वह प्रार्थना कर रही है। टैमरलेन को ऐसा लगा कि रानी उसे धमका रही थी, उसे रूसी भूमि की सीमाओं से पीछे हटने का आदेश दे रही थी और, मानो, अपनी सेना को उस पर टूट पड़ने का हुक्म दे रही थी।

यह भयानक दृश्य तिमूर को आतंकित कर गया; अपने बिस्तर से उठते हुए, वह डर के मारे चिल्लाया:

'हाय रे मेरी किस्मत, मैंने एक भयानक दृश्य देख लिया है!'

और वह बेचारा आदमी काँप रहा था, हिल रहा था और कराह रहा था, मानो वह उन्माद की स्थिति में हो।

कुछ समय बाद, तैमूर होश में आया, उसने अपने राजकुमारों और सैन्य कमांडरों को बुलाया, और डर से कांपते हुए उन्हें वह सब कुछ बताया जो उसने देखा था।

तैमूर की बात सुनकर और यह देखकर कि वह डर से कांप रहा था, वे भी दहशत में आ गए और हैरान होकर एक-दूसरे से पूछने लगे:

'अब क्या होगा?'

हालाँकि कुछ ने कहा:

'जिस रानी को हमने देखा है वह ईसाई ईश्वर, प्रभु यीशु मसीह की माता हैं; निस्संदेह वह ईसाइयों की रक्षा करना चाहती हैं, क्योंकि वह उनकी सहायक और मध्यस्थ हैं।'

तमरलेन ने कहा:

'यदि ईसाइयों के पास ऐसी सहायक है, तो हमने व्यर्थ ही उनके विरुद्ध हथियार उठा लिए हैं; हम व्यर्थ ही परिश्रम कर रहे हैं; क्योंकि यदि वह अपने सामने खड़े लोगों में से किसी एक को भी भेज दे, तो वह हम सभी को हरा देगी, और हमें कोई ऐसी जगह नहीं मिलेगी जहाँ हम भाग सकें।'

इस प्रकार वह दुष्ट राजा, अपनी पूरी अगारियन सेना के साथ, शर्मिंदगी में भाग गया, क्योंकि अगारियनों को ऐसा प्रतीत हुआ कि रूस की भूमि की सैनिकों की कई रेजिमेंट उनका पीछा कर रही थीं; भय और कांपते हुए, अगारियों ने एक-दूसरे को रौंद डाला, अपने हथियार फेंक दिए और अपना लूट-खसूट, साथ ही उन सभी को छोड़ दिया जिन्हें उन्होंने बंदी बनाया था।

इस प्रकार, सर्वपवित्र कुँवारी मरियम की प्रार्थनाओं के द्वारा, ऑर्थोडॉक्स ईसाइयों को उनके शत्रुओं पर बिना किसी युद्ध के विजय प्रदान की गई, और बिना रक्तपात के पराजय हुई।

तमरलेन द्वारा अगारयिों के साथ यह आक्रमण, और रूसी भूमि की सीमाओं से उसका चमत्कारकि नष्किासन, संसार की सृष्टि के 6903वें वर्ष में हुआ था[5730] ; उस समय से, मास्को के शाही शहर में, परम पवत्रि वर्जनि मैरी की प्रतमिा, जसिे व्लादमिीर प्रतमिा[5731] के नाम से जाना जाता है, के आगमन के सम्मान में एक पर्व दविस स्थापति कयिा गया, जो परमेश्वर की माता के मध्यस्थता से मलिी अगारयिनों से चमत्कारकि मुक्ति की एक अवस्मिरणीय और कृतज्ञ स्मृति के रूप में है। ईश्वर की माता को, उनके द्वारा जन्म लिए हुए मसीह ईश्वर के साथ, हमसे सदा, अब और अनंतकाल तक सम्मान, महमिा और आराधना अर्पति हो। आमीन।

ट्रोपारयिन, स्वर 4:

आज मास्को का परम गौरवशाली नगर, हे सर्वशक्तमिान देवी, आपकी चमत्कारी प्रतमिा को सूर्य के उदय के समान प्राप्त करके, उज्ज्वल रूप से दमक रहा है; हम अब उसी की ओर शीघ्रता से बढ़ते हैं और आपको प्रार्थना करते हुए, इस प्रकार पुकारते हैं: हे अद्भुत माता, परमेश्वर की माता, हमारे परमेश्वर मसीह से प्रार्थना करो, जो तुमसे देहधारी हुए, कि वे इस नगर को, और सभी ईसाई नगरों और देशों को, शत्रु की सभी युक्तयिों से सुरक्षति बचाएँ, और हमारी आत्माओं को बचाएँ, क्योंकि वे दयालु हैं।

कॉन्टाकयिन, स्वर 8:

हे आश्चर्यमयी माता, परमेश्वर की माता, एक वजियी नेता के रूप में चुने जाने और तेरी पवत्रि प्रतमिा के आगमन से बुराई से मुक्त होने के कारण, हम हर्ष के साथ तेरे आगमन का पर्व मनाते हैं, और अपनी परंपरा के अनुसार, हम तुझसे पुकारते हैं: हे अवविाहति वधू, आनन्दति हो।

9 सतिंबर

27 अगस्त (पुराने कैलेंडर के अनुसार)

उसी दनि, वेनेफालेक में परम पूजनीय सव्वा की स्मृति (परम पूजनीय सव्वा के जीवन का स्थान और काल अज्ञात हैं)।

उसी दनि, पवत्रि शहीद अंफसिा की स्मृति, जन्हिें मसीह के नाम की गवाही देने के लिए एक कुएँ में फेंक दयिा गया था (उनके कार्यों का समय और मृत्यु का स्थान अज्ञात है)।

हमारे पूजनीय पति पमिन महान का जीवन

27 अगस्त को स्मरण कयिा जाता है

[5730] 1395 ईस्वी में

[5731] वर्णति घटना के पचहत्तर साल बाद, 1480 में होर्डे खान अखमत के आक्रमण से मुक्ति के लिए कृतज्ञता स्वरूप, 23 जून को व्लादमिीर प्रतमिा के लिए एक दूसरा पर्व दविस स्थापति कयिा गया। इस चमत्कार की व्याख्या करते हुए रूसी वंशावलीकारों ने कहा, 'अपने हथयिारों से पैदा होने वाले भय की तुच्छ डींग न करें।' 'न तो हथयिार थे, न ही मानवीय बुद्धमित्ता, बल्कि स्वयं प्रभु ने ही अब रूस को बचाया है।' 1521 में, महमेट-गरि के नेतृत्व में मंगोलों ने एक बार फरि रूस पर चढ़ाई की। इस अवसर पर भी, ईश्वर की माता के मध्यस्थता से, मास्को को उसके दुश्मनों से बचाया गया। पवत्रि चर्च इस घटना का स्मरण 21 मई को करती है। 1812 में, फ्रांसीसी आक्रमण के दौरान, चमत्कारी व्लादमिीर प्रतमिा को, इवेरॉन और स्मोलेंस्क प्रतमिाओं के साथ, महाधर्माध्यक्ष अगस्टीन द्वारा 1 सतिंबर को मुरोम ले जाया गया था, और दुश्मन से मास्को की मुक्ति के बाद, 20 अक्टूबर को राजधानी में वापस लाया गया था। ईश्वर की माता का चमत्कारी व्लादमिीर आइकन अब मॉस्को कैथेड्रल ऑफ द डॉर्मशिन में रखा गया है (इस आइकन का अधकि वस्तिृत ववरिण मॉस्को सनिोडल प्रटिंगि हाउस, मॉस्को, 1907 द्वारा प्रकाशति पुस्तक *ग्लोरी टू द मदर ऑफ गॉड*, पृष्ठ 380–385 में पाया जा सकता है)।

आदरणीय पमिेन मस्रि के मूल नविासी थे[5732] ; अपने दो छोटे भाइयों के साथ, वे मस्रि के एक सामुदायकि मठ में गए; वहाँ, अपने भाइयों के साथ, उन्होंने मठवासी संन्यास की शपथ ली[5733] ।

कुछ वर्षों बाद, अपने बच्चों के प्रतिएक माँ के स्वाभावकि प्रेम से प्रेरति होकर, भाइयों की माँ उन्हें देखने की इच्छा से उनसे मलिने के लिए नकिल पड़ीं; हालाँकि, जब वह उन्हें देख नहीं सकीं, तो वह चर्च के पास खड़ी हो गईं, और प्रार्थना के लिए उनके आने का इंतजार करने लगीं। जब वे चर्च जा रहे थे, तो उनकी माँ उनके पास आईं, लेकनि वे उससे भाग गए और अपनी कोठरी में प्रवेश करके उसका दरवाज़ा बंद कर लिया; कोठरी के बाहर खड़ी होकर, वह गहरी भावना से रोते हुए अपने बेटों को पुकारने और दरवाज़ा खटखटाने लगी। लेकनि भकि्षुओं ने न केवल अपनी कोठरी का दरवाज़ा खोलने से इनकार कर दिया, बल्कि उन्होंने कोई जवाब भी नहीं दिया। इस बीच, जब वह महलिा काफी समय से कोठरी के दरवाज़े पर खड़ी होकर रो रही थी, तब अबा अनुवियस, जो सब कुछ सुन चुके थे, भकि्षुओं के पास जाने के लिए दूसरे दरवाज़े से अंदर आए और पमिेन से कहा:

'हम इस बूढ़ी औरत का क्या करें? वह इस जगह से हटे बनिा, काफी देर से बहुत रो रही है।'

तब पमिेन उठे, दरवाज़े पर गए और पूछा:

'तुम क्यों रो रही हो, बूढ़ी औरत?'

उसने उसकी आवाज़ तो सुन ली थी लेकनि उसे नहीं देख पा रही थी क्योंकि दरवाज़े बंद थे, उसने कहा:

'मैं तुम्हें देखना चाहती हूँ, मेरे बच्चों! क्या मैंने ही तुम्हें अपने स्तन का दूध नहीं पलिाया? क्या मैंने ही तुम्हारा पालन-पोषण नहीं किया? और अब मैं अपने जीवन के अंतमि पड़ाव में हूँ; अपने बच्चों की आवाज़ सुनकर भी उन्हें न देख पाने से मेरा दलि बहुत दुखता है। मैं मरने से पहले तुम लोगों को देखना चाहती हूँ, मेरे बच्चों।'

पमिेन ने कहा:

'तुम हमें कहाँ देखना चाहती हो: यहाँ, या परलोक में?'

उसने उत्तर दिया:

'क्या मैं तुम्हें वहाँ देख पाऊँगी, मेरे बच्चों, अगर मैं तुम्हें यहाँ नहीं देख पाऊँ?'

पमिेन ने उत्तर दिया:

'यदि आप धैर्यपूर्वक इसे सहन करेंगे और हमें यहाँ नहीं देखेंगे, तो हमें उम्मीद है कि, मानवता के प्रतिईश्वर के प्रेम के माध्यम से, आप नश्चिति रूप से हमें वहाँ देखेंगे।'

कही गई बातों पर वचिार करके, उसने उत्तर दिया:

'वास्तव में, मैं तुम्हें यहाँ की तुलना में वहाँ देखना ही बेहतर समझूँगी।'

तब वह बड़ी आशा और आनंद के साथ चली गई, क्योंकि वह इस वर्तमान जीवन की अपेक्षा परलोक में अपने बच्चों को अधकि स्पष्ट रूप से देखना चाहती थी।

धन्य पमिेन, जिन्होंने अपने दनि और वर्ष तपस्या के कठोर कार्यों में बिताए और निरंतर प्रार्थना में लगे रहे, साधु-संतों के गुणों में पारंगत थे और ईश्वर की सहायता से, दृढ़तापूर्वक अदृश्य शत्रु के विरुद्ध हथियार उठाया; उन्होंने अपने शरीर को वश में किया, जो आत्मा के विरुद्ध युद्ध करता था, उसे महान परश्रिमों द्वारा थका दिया—मानो वह एक कैदी हो—और उसे आत्मा की सेवा के अधीन कर दिया; इस प्रकार, वे निर्लिप्तता के शखिर पर पहुँचे और सद्गुणों में सबसे पूर्ण होने के कारण, सभी मरुभूमि के पतिाओं में सबसे गौरवशाली बन गए।

कुछ समय बाद, उस देश के शासक ने हमारे पूजनीय पतिा पमिेन को देखना चाहा और उनके पास एक संदेशवाहक भेजा, यह अनुरोध करते हुए कि वह पूजनीय व्यक्ति के पास आ सके। हालाँकि, विरष्ठि बहुत दुखी हुए, और मन ही मन इस प्रकार वचिार किया:

'यदि कुलीन लोग मुझे सम्मानति करने के लिए मेरे पास आएँगे, तो आम लोग भी मेरे पास आएँगे और मुझे परेशान करेंगे; वे मेरी मौन साधना को भंग करेंगे, और मैं विनम्रता की वह कृपा खो दूँगा, जिसे मैंने ईश्वर की मदद से, अपनी जवानी से ही बहुत परश्रिम करके अर्जति किया है; तब मैं आसानी से अहंकार में पड़ सकता हूँ।'

[5732] आदरणीय पमिेन का जन्म लगभग 340 ईस्वी में हुआ था।

[5733] पमिेन ने लगभग 355 में संन्यासी की शपथ ली।

अपने मन में इस प्रकार तर्क करने के बाद, पूजनीय पिता ने राजकुमार से मिलने से इनकार कर दिया और उसी दूत के माध्यम से उससे कहा कि वह उनके पास न आए – क्योंकि, पूजनीय पिता ने कहा, वह उससे नहीं मिलेंगे; बल्कि, वह उसे उस स्थान से भगा देंगे।

यह उत्तर सुनकर राजकुमार बहुत दुखी हुआ और कहा:

'मेरे पापों के कारण ही मुझे इस ईश्वर-पुरुष को देखने का योग्य नहीं समझा गया है।'

हालाँकि, किसी भी तरह से पवित्र साधु को देखने के लिए बहुत उत्सुक होकर, उसने निम्नलिखित चाल चली: उसने साधु की बहन के बेटे को, दिखावे के लिए किसी छोटे-मोटे अपराध के लिए, बंदी बना लिया और उसे कैद कर दिया, इस उम्मीद में कि साधु अपने भतीजे के लिए उससे मध्यस्थता करेगा; इस तरह, उसने सोचा कि वह संत से मिल सकेगा। इसलिए, राजकुमार ने अपने सेवकों से कहा:

'यदि अबा पमिन आते हैं, तो मैं उस युवक को तुरंत रिहा कर दूँगा; लेकिन यदि वे नहीं आते हैं, तो मैं अपराधी को बिना सज़ा के नहीं जाने दूँगा: क्योंकि उसका अपराध बहुत गंभीर है।'

जब उस युवक की माँ (पमिन की बहन) को यह बात पता चली, तो वह तुरंत अपने भाई से मिलने के लिए रेगिस्तान की ओर चल दी; उसकी तपस्वी कुटिया पर पहुँचने पर, उसने दरवाज़ा खटखटाना शुरू कर दिया, और आँसू भरी आँखों से उससे विनती करने लगी कि वह राजकुमार के पास जाकर अपने बेटे के लिए मध्यस्थता करे, ताकि वह रिहा हो सके।

हालाँकि, बड़े भाई ने न केवल उसका दरवाज़ा खोलने से इनकार कर दिया, बल्कि कोई जवाब भी नहीं दिया।

हालाँकि, बहन लंबे समय तक रोते हुए दरवाज़े पर खटखटाती हुई बड़े भाई से विनती करती रही; लेकिन जब उसे कोई जवाब नहीं मिला, तो उसने बड़े भाई से डाँट और गुस्से के साथ कहना शुरू कर दिया:

'तुम निर्दयी, हृदयहीन, क्रूर, अधर्मी और पशुवत् हो! क्या मेरी आँसू तुम्हें बिलकुल भी नहीं पिघलाते? आखिरकार, मेरा बेटा—मेरा एकलौता बेटा—घातक खतरे में है!'

तथापि, वृद्ध ने एक शिष्य को यह बताने के लिए भेजा:

'हट जाओ: पमिन के कोई बच्चे नहीं हैं, इसलिए उसे कोई दुख नहीं है।'

बहन लौट आई, जोर-जोर से रोते हुए, और उसने अपने भाई को फटकारा।

जब राजकुमार ने यह सब सुना, तो उसने अपने दोस्तों से कहा:

'जाकर उस साधु से कहो कि वह मेरी रिहाई के लिए एक निवेदन-पत्र लिखे, और तब मैं उसके भतीजे को जेल से आज़ाद कर दूँगा।'

और कई लोगों ने साधु को राजकुमार को पत्र लिखने की सलाह दी। साधु ने निम्नलिखित प्रकार से लिखा:

'अपने अधिकारियों को आदेश दो कि वे उस युवक के अपराध की पूरी तरह से जांच करें जिसने गलती की है; और यदि मृत्युदंड योग्य कोई बात मिले, तो उसे मरने दो, ताकि एक अस्थायी मृत्युदंड से वह शाश्वत यातना से बच सके; लेकिन यदि अपराधी मृत्युदंड का पात्र न पाया जाए, तो कानून के अनुसार दंडित करने के बाद, उसे मुक्त कर दो।'

जब राजकुमार ने वृद्ध का संदेश पढ़ा, तो वह उस व्यक्ति की बुद्धिमत्ता और सदाचार से चकित हो गया, यह महसूस करते हुए कि वह ईश्वर का सच्चा सेवक था; राजकुमार ने उस युवक को रिहा कर दिया; जबकि परम पूजनीय पमिन, व्यर्थ की कीर्ति और मानवीय सम्मान से दूर रहते हुए, लंबे समय तक विभिन्न देशों में घूमते रहे। फिर वे मिस्र के रेगिस्तान में एक बार फिर बस गए और वृद्धावस्था तक वहीं रहे, अपने तपस्वी श्रमों द्वारा ईश्वर को प्रसन्न करते हुए; और यह संत पमिन कई भिक्षुओं के लिए एक पिता थे।

अपने शिष्यों को विनम्रता की बुद्धिमत्ता सिखाते हुए—क्योंकि वे स्वयं विनम्र थे—सम्माननीय पिता ने उनके सामने एक वृद्ध (शायद स्वयं का) का किस्सा एक उदाहरण के रूप में प्रस्तुत किया, और इस प्रकार कहा:

– बहुत समय पहले की बात नहीं है, एक मिस्र का संन्यासी कॉन्स्टेंटिनोपल के पास एक सुनसान जगह पर रहता था, जहाँ उसकी एक छोटी सी कुटिया थी। संयोग से एक दिन धर्मपरायण सम्राट थियोडोसियस (युवा[5734]) उस क्षेत्र से गुजर रहे थे; वहाँ रहने वाले संन्यासी के बारे में सुनकर, सम्राट ने अपने सभी परिचारकों को पीछे छोड़ दिया और एक साधारण सैनिक का भेष धारण कर, वृद्ध की कोठरी के दरवाजे तक पहुँच गए। जब सम्राट ने दरवाज़ा खटखटाया, तो

[5734] हालांकि, कुछ लोग इसका अर्थ सम्राट थियोडोसियस महान से लगाते हैं, जिन्होंने 379 से 395 तक शासन किया।

भिक्षु ने कोठरी का दरवाज़ा खोला, लेकिन आए हुए सम्राट को पहचान नहीं पाया; बल्कि, उसने उसे एक साधारण सैनिक समझ लिया। एक प्रार्थना करने के बाद, वे दोनों बैठ गए। फिर सम्राट ने पूछा:

'मिस्र में रहने वाले पादरी कैसे हैं?'

'वे सभी हमारे उद्धार के लिए ईश्वर से प्रार्थना कर रहे हैं।'

वृद्ध की कोठरी में चारों ओर देखने पर, राजा को उसमें दीवार पर लटकी एक टोकरी के सिवा कुछ नहीं मिला, जिसमें थोड़ी सी सूखी रोटी थी; फिर उसने वृद्ध से कहा:

'फादर! मुझे थोड़ा चखने का आशीर्वाद दें।'

और तुरंत ही साधु ने एक पात्र में पानी डाला, उसमें थोड़ा नमक मिलाया और उसमें सूखी रोटी के टुकड़े डाल दिए; और वे दोनों साथ में खाने लगे; फिर साधु ने पानी का एक घड़ा लाया और राजा को पिलाया। भोजन के बाद, राजा ने साधु से पूछा:

'क्या आप जानते हैं कि मैं कौन हूँ?'

उसने उत्तर दिया:

'मैं नहीं जानता, मेरे स्वामी, लेकिन ईश्वर आपको जानते हैं।'

तब राजा ने उससे कहा:

'मैं राजा थियोडोसियस हूँ।'

और तुरंत बुढ़िया उसके सामने झुक गई।

तब राजा ने कहा:

– धन्य हो तुम, संन्यासियों, क्योंकि तुम इस व्यर्थ संसार की चिंताओं से मुक्त हो और मौन का जीवन जीते हो, केवल इस बात में लगे रहते हो कि कैसे दिव्य, शाश्वत जीवन और स्वर्ग के आशीर्वाद प्राप्त किए जाएँ। मैं तुमसे सच कहता हूँ, मैं, जो अपने राज्य में पैदा हुआ और अब राजा के रूप में राज करता हूँ, ने कभी इतनी मिठास वाली रोटी का स्वाद नहीं चखा और न ही इतना आनंदपूर्वक पानी पिया है, जितना मैंने अभी चखा और पिया है।

वरिष्ठ ने उत्तर दिया:

'ऐसा इसलिए है क्योंकि हम संन्यासी प्रार्थना और आशीर्वाद के साथ अपना भोजन ग्रहण करते हैं; इस कारण से, सबसे साधारण भोजन भी स्वादिष्ट होता है। आपके घरों में, हालांकि, भोजन बिना प्रार्थना के, बल्कि बहुत सारे झगड़ों और बेकार की बातों के बीच तैयार किया जाता है; इस कारण से, आपके भोजन को वह आशीर्वाद नहीं मिलता जो उसे मीठा बना सकता है।'

वरिष्ठ भिक्षु का हाथ चूमकर, राजा विदा हो गया और तब से उसने उस भिक्षु को सर्वोच्च सम्मान दिया।

इस बीच, वृद्ध भिक्षु, विनाशकारी आत्म-महत्त्वाकांक्षा और अहंकार से डरकर, और इस भय से कि कहीं मानवीय सम्मान के कारण वह अपनी विनम्रता का वरदान न खो दे और ईश्वर की कृपा से वंचित न हो जाए, उठकर वहाँ से भाग गया, और बाद में मिस्र लौट गया।

संत पिमेन ने अपने शिष्यों को विनम्रता सिखाने के लिए यह कथा सुनाई; इस कथा के माध्यम से, संत पिमेन ने अपने शिष्यों को व्यर्थ प्रशंसा और सम्मान से दूर रहने का उपदेश दिया, जो संतों को लाभ के बजाय हानि पहुँचाते हैं।

संत पिमेन ने अपने शिष्यों को अन्य गुणों में भी शिक्षित किया; उनके उपदेश हमेशा प्रभावी होते थे, क्योंकि वह किसी को भी मोक्ष का मार्ग सिखाने में सक्षम थे; जैसे उन्होंने अपने जीवन के माध्यम से दैवीय गुण का उदाहरण प्रस्तुत किया, वैसे ही उनके शब्द भी सभी के लिए लाभ का स्रोत थे। और केवल नवसिखिए ही नहीं, बल्कि संन्यासी जीवन के कठोर तप में लंबे समय से अनुभवी लोग भी उनके पास आते थे, और वे उनसे आत्मा के मोक्ष के लिए क्या लाभदायक है, यह पूछते थे; जो भी पूजनीय संत के पास आए, उन्हें अपनी आत्मा के निर्माण के लिए ईश्वर-प्रेरित और ईश्वर-ज्ञान से युक्त उत्तर प्राप्त हुए; इन उत्तरों को कुछ लोगों ने 'पितामहों की पुस्तकों' (Books of the Fathers) में दर्ज किया था[5735] . हम यहाँ इनमें से कुछ उत्तरों को याद करेंगे।

एक व्यक्ति ने अब्बा पिमेन से पूछा, कहकर:

'यदि मैं अपने भाइ को पाप करते देखूँ, तो क्या मैं उसका पाप छिपा दूँ?'

[5735] अर्थात्, 'ओटेक्निकी' और 'पेटेरिका'।

पमिैन ने उत्तर दयिा:

'यदि हम अपने भाइयों के पापों को छपिाएँ, तो ईश्वर भी हमारे पापों को छपिाएगा।'

एक भाई ने अब्बा पमिैन से कहा:

'पतिाजी! मैं परेशान हूँ और इस जगह को छोड़ने के बारे में सोच रहा हूँ।'

वरषि्ठ ने कहा:

'आप यहाँ से क्यों जाना चाहते हैं?'

भाई ने उत्तर दयिा:

'मैंने यहाँ रहने वाले एक भाई के बारे में बुरी बातें सुनी हैं, और मैं भटक रहा हूँ।'

वरषि्ठ ने कहा:

'तुम्हें जो सुना है वह सच नहीं है।'

भाई ने उत्तर दयिा:

'सचमुच, पतिाजी, यह सच था, क्योंकि जिसिने मुझे यह बताया वह पूरी तरह भरोसेमंद है।'

लेकनि बड़े ने कहा:

'नहीं, जसिने तुम्हें यह बताया है, उस पर भरोसा नहीं कयिा जा सकता, क्योंकि अगर वह भरोसेमंद होता, तो वह तुम्हें यह नहीं बताता। लेकनि कभी भी उस बात पर वशि्वास मत करना जो तुमसे कही जाती है जब तक कि तुमने उसे खुद न देखा हो; क्योंकि सोदोम के वलिाप को सुनकर भी परमेश्वर ने तब तक इसकी पुष्टि नहीं की जब तक कि वह स्वयं नीचे आकर अपनी आँखों से सब कुछ नहीं देख लयिा[5736] : *'और यहोवा ने कहा: "सोदोम और गमोरा के वरिुद्ध जो पुकार बड़ी है, और उनका पाप बहुत भारी है; मैं उतरकर देखूंगा कि जो पुकार मुझ तक उनके वषिय में आई है, क्या वे उसके अनुसार सर्वथा वैसे ही हैं, या नहीं; मैं जान लूंगा"* (उत्पत्ति 18:20–21)।

भाई ने उत्तर दयिा:

'और मैं, पतिाजी, अपनी आँखों से देख रहा था कि वह भाई पाप कर रहा था।'

यह सुनकर, वृद्ध ने जमीन की ओर देखा; फरि, जमीन से एक छोटी टहनी उठाकर, उन्होंने भाई से कहा:

'यह क्या है?'

भाई ने उत्तर दयिा:

'यह एक टहनी है।'

तब बड़े भाई ने इमारत की छत की ओर देखा और जसि बीम पर छत टकिी थी, उसे दखिाते हुए पूछा:

'और वह क्या है?'

भाई ने जवाब दयिा:

'यह एक लट्ठा है।'

और वृद्ध ने भाई से कहा:

'अपने हृदय में यह याद रखो कि तुम्हारे पाप इस लट्ठी के समान हैं, जबकि उस भाई का पाप जसिके बारे में तुम बात कर रहे हो, इस गाँठ के समान है; तब तुम कभी भी भ्रम या प्रलोभन में नहीं पड़ोगे।'

अब्बा ससिोएस, जो उस समय उनके साथ थे, ने संत पमिैन के ये वचन सुने; जो उन्होंने सुना था, उससे अत्यंत चकति होकर, उन्होंने संत पमिैन से कहा:

'मैं आपकी प्रशंसा कैसे करूँ, अबा पमिैन! सचमुच, आपके शब्द अनुग्रह और महमिा से भरे हैं, जैसे कोई कीमती रत्न!'

तब आबा पमिैन ने कहा:

'कहा गया है: "केवल उसी बात की गवाही दो जो तुम्हारी आँखों ने देखी है।" लेकनि मैं तुमसे कहता हूँ कि भले ही तुम अपनी आँखों से कुछ देखो, उस पर वशि्वास मत करो।'

और फरि उन्होंने नम्निलखिति घटना सुनाई।

[5736] यह एक रूपक अभवि्यक्ति है।

एक भाई शैतान द्वारा इस तरह के एक प्रकट होने से धोखा खा गया: उसने एक दूसरे भाई को एक महिला के साथ पाप करते देखा; उस भाई के विचार परेशान हो गए और वह वासना से अभिभूत हो गया। उनके पास जाकर, उसने अपने पैर से उन्हें लात मारी, यह कहते हुए:

'यह बंद करो; तुम पाप क्यों कर रहे हो?'

लेकिन बाद में पता चला कि वे लोग नहीं, बल्कि गेहूँ की बालें थीं।

इसलिए,' पिमेन ने निष्कर्ष निकाला, 'मैं तुमसे कहता हूँ: अपनी आँखों से देखी गई बात पर भी भरोसा मत करो।

अब्बा अनुविस ने संत पिमेन से कहा:

'लेकिन अगर आप किसी पापी को देखकर उसे डाँटते नहीं, तो आप परमेश्वर को क्या जवाब देंगे?'

पिमेन ने उत्तर दिया:

'मैं ईश्वर से कहूँगा: "प्रभु! आपने आज्ञा दी थी: *'पहले अपनी आँख की तख्ती निकालो, और तब तुम स्पष्ट रूप से अपने भाई की आँख की सुई निकालने में सक्षम होगे*' (मत्ती 7:5)। मैंने आपकी आज्ञा का पालन किया है।"

तब एक भाई ने अब्बा पिमेन से पूछा, कहकर:

'पिताजी! मैंने एक घोर पाप किया है। मैं तीन साल प्रायश्चित में बिताना चाहता हूँ। लेकिन क्या प्रायश्चित के लिए तीन साल पर्याप्त हैं?'

वरिष्ठ ने उत्तर दिया:

– यह बहुत ज्यादा है।

फिर मेरे भाई ने कहा:

'तो, क्या आप मुझे सिर्फ एक साल के लिए प्रायश्चित करने का आदेश दे रहे हैं?'

इस पर बड़े भाई ने उत्तर दिया:

'वह भी बहुत लंबा है।'

जब दूसरे भाइयों ने यह सुना, तो उन्होंने कहा:

'तो क्या इसका मतलब यह है कि किसी को चालीस दिनों से अधिक तपस्या नहीं करनी चाहिए?'

लेकिन बड़े भाई ने उत्तर दिया:

'यह भी बहुत लंबा है।'

और फिर उन्होंने जोड़ा:

'मेरा मानना है कि यदि कोई व्यक्ति पूरे दिल से पश्चाताप करता है और दृढ़ संकल्प करता है कि वह पाप में कभी वापस नहीं जाएगा, तो ईश्वर उससे तीन दिन के पश्चाताप को भी स्वीकार कर लेगा।'

एक अन्य भाई ने अब्बा पिमेन से पूछा, कहते हुए:

'एक व्यक्ति को कैसे जीना चाहिए?'

वरिष्ठ ने उत्तर दिया:

'दानियिल के उदाहरण से हम देखते हैं कि उस पर किसी भी बात का आरोप नहीं लगाया जा सकता था, सिवाय इसके कि उसने अपने प्रभु परमेश्वर की सेवा की।'

इन शब्दों के साथ, संत ने यह स्पष्ट कर दिया कि एक व्यक्ति को इस तरह जीना चाहिए कि उसका पूरा जीवन प्रभु परमेश्वर की सेवा के अलावा कुछ भी न हो।

एक अन्य भिक्षु ने पूछा:

– मैं शत्रु की चालाकियों से अपनी रक्षा कैसे करूँ?

पिता ने उत्तर दिया:

'जब नीचे से गर्म किया गया एक बर्तन उबल रहा होता है, तो न तो मक्खी और न ही कोई अन्य कीट उसे छू सकता है; लेकिन जब वह ठंडा हो जाता है, तो मक्खियाँ और कीड़े दोनों उस पर बैठ जाते हैं। इसी तरह, शत्रु उस भिक्षु के पास आने की हिम्मत नहीं करता जो सदाचार के अभ्यास में लगन से परिश्रम करता है, और न ही वह उसे अपनी जालों में फँसा सकता है; परन्तु शत्रु उस मनुष्य के पास आसानी से आ जाता है जो लापरवाही और आलस्य का जीवन व्यतीत करता है, और उसे अपनी इच्छानुसार पाप की ओर ले जाता है।

किसी ने बूढ़े से पूछा कि मन में आने वाले बुरे विचारों से कैसे छुटकारा पाया जाए। बूढ़े ने उत्तर दिया:

'यह स्थिति उस व्यक्ति की तरह है जिसके बाईं ओर आग और दाईं ओर पानी का एक पात्र हो; यदि वह व्यक्ति आग की लपट से जल जाता है, तो वह पात्र से पानी लेकर आग बुझा देगा।' आग उन बुरे विचारों का प्रतीक है जिन्हें हमारे उद्धार का शत्रु एक व्यक्ति के हृदय में स्थापित करता है, जैसे मंदिर में एक चिंगारी, ताकि वह व्यक्ति पापी इच्छाओं से प्रज्वलित हो जाए; पानी, हालांकि, एक व्यक्ति के ईश्वर की ओर प्रार्थनापूर्वक मुड़ने का प्रतीक है।

एक बार फिर, वृद्ध पिमेन ने अबा अमोन से हृदय से उत्पन्न होने वाले दुष्ट विचारों और व्यर्थ की इच्छाओं के बारे में पूछा। और वृद्ध ने पवित्र शास्त्र का हवाला देते हुए इस प्रकार उत्तर दिया:

'एक कुल्हाड़ी को चलाने वाले के बिना वह क्या महिमा प्राप्त कर सकती है? और एक कारीगर के बिना क्या एक आरी घमंड कर सकती है? इसलिए बुरे विचारों को अपनी सहमति नि दें, और ये सभी विचार नष्ट हो जाएँगे।'

अब्बा जोसेफ ने अब्बा पिमेन से उपवास के बारे में पूछा, कहते हुए:

'उपवास कैसे करना चाहिए?'

वरिष्ठ ने उत्तर दिया:

'मैं हर दिन थोड़ा-सा भोजन करता हूँ, अपनी भूख पूरी तरह से नहीं मिटाता।'

अब्बा जोसेफ ने पूछा:

'और जब आप जवान थे, तब क्या आप एक साथ दो दिन उपवास नहीं करते थे?'

पिमेन ने उत्तर दिया:

'सचमुच, मैंने उपवास किया, और केवल दो दिनों के लिए नहीं, बल्कि तीन, और यहाँ तक कि पूरे सप्ताह के लिए; लेकिन पवित्र पिताओं ने, दोनों तरीकों को आज़माने के बाद, पाया कि हर दिन थोड़ा-थोड़ा खाना बेहतर है; क्योंकि यही (मोक्ष का) राजसी मार्ग है, जो आसान और अधिक आरामदायक है, ताकि मन अभिमानी न हो जाए।'

महान के मठ के मठाधीश ने बाबा पिमेन से पूछा, कहते हुए:

'मैं पश्चाताप कैसे प्राप्त करूँ?'

वरिष्ठ ने उत्तर दिया:

'क्या ऐसे दिल में पश्चाताप हो सकता है जो पनीर, तेल के जार और अन्य सांसारिक चीजों के बारे में सोचता हो?'

एक अन्य ने बूढ़े से पूछा:

'क्या बेहतर है: बोलना, या चुप रहना?'

बड़े बुजुर्ग ने उत्तर दिया:

'जो ईश्वर के लिए बोलता है, वह अच्छा करता है; इसी प्रकार, जो ईश्वर के लिए चुप रहता है, वह भी अच्छा करता है।'

महात्मा ने प्रश्नों के ऐसे बुद्धिमानी भरे उत्तर दिए; इसके अलावा, 'फादर्स' में संत पिमेन के कई बुद्धिमानी भरे कथन पाए जाते हैं। उनमें से कुछ इस प्रकार हैं।

अब्बा पिमेन ने कहा:

– जब कोई व्यक्ति घर बनाने का इरादा करता है, तो वे कई सामग्रियाँ इकट्ठा करते हैं जिनसे घर बनाया जा सकता है; उसी तरह, हम भी हर सद्गुण का एक छोटा सा अंश लेकर अपने भीतर आसानी से एक आध्यात्मिक घर बना सकते हैं।

उन्होंने यह भी कहा:

'एक व्यक्ति को तीन मुख्य नियमों का पालन करना चाहिए: ईश्वर से डरना, अक्सर प्रार्थना करना, और अपने पड़ोसी के प्रति अच्छा व्यवहार करना।'

अब्बा पिमेन ने यह भी कहा:

'अलोभिता, धैर्य और विवेक - ये मठवासी जीवन की तीन नींव हैं; क्योंकि लिखा है: *"यदि इनमें ये तीन पुरुष पाए जाते - नूह, दानियेल और अय्यूब - तो वे अपनी धार्मिकता से केवल अपनी आत्माओं को ही बचाते"* (यहे. 14:14)। नोआ लालच से रहित होने का, आयोब धैर्य का, और दानियेल विवेक का आदर्श हैं; यदि ये तीनों गुण किसी भिक्षु में पाए जाएँ, तो ईश्वर, जो उसे बचाता है, उसी में वास करेगा।

वरिष्ठ ने यह भी कहा:

'यदि कोई भिक्षु दो चीजों से घृणा करने लगे, तो वह इस संसार के प्रलोभनों से मुक्त हो सकता है।'

भाई ने वृद्ध से पूछा:

'ये चीजें क्या हैं?'

इस पर वृद्ध ने उत्तर दिया:

'शारीरिक सुख और अहंकार।'

तब वृद्ध ने कहा:

'सुसमाचार में लिखा है: "जिसके पास एक कोट है, वह उसे बेचकर तलवार खरीद ले" (लूका 22:36); इसका अर्थ है: जिसके पास देह की सुख-सुविधा है, वह उसे त्यागकर संकीर्ण मार्ग अपनाते हुए कठोर जीवन जीने लगे।

फिर उन्होंने जोड़ा:

'जब दाऊद ने एक शेर या भालू से लड़ा, तो उसने उस जानवर को गले से पकड़कर मार डाला (1 शमूएल 17:34-35); उसी तरह, ईश्वर की मदद से, हम शेर—शैतान—और भालू—अपने शरीर—पर विजय प्राप्त करेंगे, यदि हम अपने गले और अपने पेट पर संयम का लगाम लगाएँ।'

विष्ठ ने यह भी कहा:

'यदि बेबीलोन के राजा के रसोइयों के मुखिया नबूज़रदान यरूशलेम नहीं आया होता, तो यहोवा का मंदिर जलकर नष्ट नहीं होता; इसी तरह, हमारे भीतर पापी इच्छा की आग नहीं भड़केगी, और न ही हमारा मन, जो शत्रु से लड़ता है, कभी पराजित होगा - बशर्ते कि हम लालच और आलस्य के आगे न झुकें।

विष्ठ ने आगे कहा:

'जैसे मधुमक्खियाँ धुएँ से भागती हैं, जिससे लोग अपने श्रम के मीठे फलों का आनंद ले सकें, वैसे ही शरीर का बाकी हिस्सा प्रभु के भय को हमारी आत्मा से भगा देता है, और वह (आत्मा) हर अच्छे काम से वंचित रह जाती है।'

फिर उन्होंने जोड़ा:

'जैसे हर राजसी घोड़सवार राजा के करीब रहता है, हमेशा उसकी रक्षा के लिए तैयार रहता है, वैसे ही हमारी आत्मा को भी व्यभिचार के राक्षस से लड़ने के लिए हमेशा तैयार रहना चाहिए।'

एक बार, बाबा पिमेन ने एक ऐसे भाई के बारे में सुना जो छह दिन तक उपवास करता था और सातवें दिन केवल थोड़ा सा भोजन करता था, फिर भी वह एक ही समय में अपने भाई से क्रोधित था। बाबा पिमेन ने उसके बारे में कहा:

'उसने छह दिन का उपवास करना तो सीख लिया है, पर एक दिन के लिए भी क्रोध पर काबू नहीं पा सका।'

एक मठ के पुरोहित ने कुछ भाइयों के बारे में सुना कि वे अक्सर शहर जाते थे, सार्वजनिक स्नानागारों में स्नान करते थे, और अपनी मुक्ति में लगनशील नहीं थे, तो वे उन पर क्रोधित हो गए; और, मठ में लौटने पर, उन्होंने उनके संन्यासी के वस्त्र छीन लिए; लेकिन बाद में उसने पश्चाताप किया, अबा पिमेन के पास गया और उन भाइयों के साथ जो कुछ भी उसने किया था, सब कुछ बता दिया। तब वृद्ध ने उससे कहा:

'क्या तुम्हारे भीतर भी पुराने मनुष्य का कुछ अंश नहीं है; या, शायद, तुम अंततः उसी से भटक गए हो[5737] ?'

विष्ठ से ये शब्द सुनकर, पुरोहित गहराई से प्रभावित हुआ; उसने उन भाइयों को बुलाया जिन्हें उसने दुखी किया था, उनसे क्षमा याचना की, और उन्हें फिर से उनकी मठ की वेशभूषा पहनाई।

एक दिन, अबा इसाक अबा पिमेन के पास आए और जब उन्होंने देखा कि वे अपने पैरों पर थोड़ा सा पानी डाल रहे थे, तो उनसे कहा:

'कुछ लोग अपने शरीर के साथ कितनी क्रूरता करते हैं!'

विष्ठ ने उत्तर दिया:

'हमें शरीर-हत्यारे बनने की शिक्षा नहीं दी गई है।'

और फिर उन्होंने कहा:

'कभी-कभी ऐसा होता है कि कोई व्यक्ति चुप दिखाई देता है; लेकिन यदि उसका हृदय दूसरों को दोषी ठहराता है, तो वह हमेशा बोलता रहता है। और ऐसे भी हैं जो सुबह से रात तक बोलते रहते हैं, फिर भी उसी समय मौन का पालन करते हैं (क्योंकि जो अपने पड़ोसी को दोषी नहीं ठहराता, वह उसी के समान है जो चुप रहता है)।'

[5737] 'पुरुष' वह व्यक्ति है जो पाप का दास है, और मोक्ष के मार्ग से अनभिज्ञ है। पवित्र प्रेरित पौलुस इस पद का प्रयोग उन लोगों के लिए करते हैं जिन्होंने अभी तक नए नियम की कृपा प्राप्त नहीं की है (देखें इफिसियों 4:22; कुलुस्सियों 3:9)।

अब्बा जोसेफ ने निम्नलिखित कहानी सुनाई:

– एक बार, जब हम बाबा पिमेन के साथ बैठे थे, तो युवा भाई अगथोन हमारे बीच था; इस अगथोन से कुछ कहना चाहकर, वृद्ध (पिमेन) ने उसे 'बाबा' कहकर संबोधित किया, कहते हुए:

'अब्बा अगथोन।'

लेकिन हमने वृद्ध से कहा:

'यह भाई अभी भी युवा है; आप उसे "अब्बा" क्यों कह रहे हैं?'

जिस पर वरिष्ठ ने उत्तर दिया:

– उसके मौन होंठ मुझे उसे 'अब्बा' कहने के लिए विवश करते हैं।

तब अबा पिमेन ने भी कहा:

'एक भाई जो अपने पड़ोसी के साथ है, उसे पत्थर की मूर्ति जैसा होना चाहिए; जब अन्याय हो तो उसे क्रोध नहीं करना चाहिए; जब प्रशंसा हो तो उसे घमंड नहीं करना चाहिए।'

उन्होंने यह भी कहा:

'बुराई को बुराई से कभी नहीं जीता जा सकता; यदि कोई आपको नुकसान पहुँचाता है, तो उन पर दया दिखाएँ; तब आपका सद्गुण उनकी दुर्भावना पर विजय प्राप्त कर लेगा।'

आदरणीय पिमेन ने इस गुण (और अन्य गुणों) को अपने उदाहरण से ही सिखाया; क्योंकि मिस्र के स्केटे से उनके आगमन से पहले, मिस्र में एक ऐसे वरिष्ठ रहते थे जिन्हें सभी सम्मान देते थे। जब बाबा पिमेन उस स्थान पर पहुँचे, तो कई लोग उस वृद्ध को छोड़कर पिमेन के पास आने लगे; इस कारण से, वह वृद्ध नए आए बाबा (पिमेन) से क्रोधित होने लगे, उनसे ईर्ष्या करने लगे और उनकी बुराई करने लगे। जब बाबा पिमेन को यह पता चला, तो वे दुखी हो गए और अपने भाइयों से कहा:

'अब हम क्या करें, क्योंकि इन लोगों ने एक ऐसे पवित्र और सदाचारी वृद्ध को छोड़कर हमारे पास आकर हमें दुख पहुँचाया है, जो किसी भी काम के नहीं हैं? हम उस महान पिता के क्रोध को कैसे शांत करें? चलो थोड़ा भोजन और थोड़ी मदिरा तैयार करें, वृद्ध के पास जाएँ और उनके साथ भोजन करें; शायद इस तरह हम उनका मन शांत कर सकें।'

थोड़ा भोजन और थोड़ी मदिरा लेकर, वे वृद्ध के कक्ष की ओर चल पड़े और दरवाज़ा खटखटाया। वृद्ध के शिष्य ने, खटखटाहट सुनकर, पूछा:

'कौन है?'

उन्होंने उत्तर दिया:

'अपने मठाधीश से कहो कि पिमेन और उसके भाई आपके मठाधीश का आशीर्वाद लेने आए हैं।'

शिष्य गया और वृद्ध को बताया। वृद्ध ने सुनकर कहा:

'जाओ और उनसे कहो: इस जगह से चले जाओ, क्योंकि मेरे पास तुम्हें देखने का समय नहीं है।'

जब शिष्य ने यह बात आने वालों से कही, तो उन्होंने उत्तर दिया:

'जब तक हमें वरिष्ठ को प्रणाम करने का सम्मान नहीं मिलता, हम इस जगह से नहीं जाएँगे।'

और वे कोठरी के द्वार पर तपती धूप में खड़े रहे।

आए हुए लोगों की विनम्रता और धैर्य देखकर, वृद्ध दयालु हो गए, उन्होंने उनके लिए दरवाज़ा खोला और उन्हें चूमकर स्वागत किया; बैठ जाने के बाद, वे सभी स्नेहपूर्वक बातचीत करने लगे और उन्होंने जो भोजन लाया था, उसे ग्रहण किया। फिर वृद्ध ने कहा:

'सचमुच, जो मैंने आपके बारे में सुना है वह न केवल सच है, बल्कि मैं आप में सौ गुना अधिक पुण्य देखता हूँ।'

उस समय से, बड़े भाई ने अब्बा पिमेन के प्रति सिद्भावना से व्यवहार करना शुरू कर दिया।

इस प्रकार आदरणीय पिमेन जानते थे कि अपने प्रति शित्रुता रखने वालों की द्वेषिता को कैसे दूर करना है, और उन्होंने दूसरों के लिए इसका एक उदाहरण प्रस्तुत किया।

आदरणीय पिमेन अपने मौन के साथ-साथ अपने शब्दों के माध्यम से भी दूसरों को ठीक करने में सक्षम थे।

एक अवसर पर, उस क्षेत्र के वरिष्ठ पादरी उस मठ में आए जहाँ आदरणीय बाबा पिमेन ठहरे हुए थे; बाबा अनुवियस, उन्हें कम से कम कुछ आतिथ्य प्रदान करने की इच्छा से, आदरणीय बाबा पिमेन के पास गए और उन्हें इस

बारे में बताया। हालाँकि, पमिन ने कोई जवाब नहीं दयिा, बल्कि लंबे समय तक चुप रहे; और बाबा अनुवयिस दुख के साथ उनके पास से चले गए।

बाद में, उसके साथ रहे भाइयों ने उससे (अब्बा पमिन) पूछा:

'आपने अबा अनुवयिस को उत्तर क्यों नहीं दयिा?'

वरष्ठि ने उनसे उत्तर दयिा:

'मेरे पास इसके लयि कोई माध्यम (अर्थात् जीभ) नहीं था; क्योंकि मैं मरा हुआ हूँ; और मरे हुए बोलते नहीं हैं; इसलयि, मुझे अपने बीच का न समझना।'

वरष्ठि ने ऐसा इसलयि कयिा ताकि नए आए भाइयों द्वारा भोजन के लयि बुलाया न जाएँ; क्योंकि उनके बारे में यह भी कहा जाता है कि, जब भाई उन्हें अपने साथ भोजन के लयि बुलाते थे, तो वे रोते हुए, जैसे अनचि्छा से, जाते थे; क्योंकि वे अपना पेट भरना नहीं चाहते थे, फरि भी वे भाइयों की अवज्ञा नहीं करना चाहते थे, कहीं ऐसा न हो कि वे उन्हें दुखी कर दें।

एक भक्षिु, आदरणीय पमिन के पुण्य जीवन के बारे में सुनकर, उनसे मलिने और उनसे सीखने के लयि दूर देश से उनके पास आया; वरष्ठि ने उस भक्षिु का सम्मानपूर्वक स्वागत कयिा; एक-दूसरे को प्रणाम करने के बाद, वे बैठ गए; भक्षिु ने बड़ों से पवत्रि शास्त्रों, शास्त्रों में वर्णति समझने में कठनि वषियों और स्वर्गीय बातों के बारे में बातचीत शुरू की। लेकनि पता पमिन ने अपना चेहरा दूसरी ओर मोड़ लयिा, मौन रहे और आगंतुक को कोई उत्तर नहीं दयिा। भक्षिु ने शास्त्रों से वस्तिार से बात की, लेकनि उसे वृद्ध से कोई उत्तर नहीं मलिा, क्योंकि वह मौन रहे; तब भक्षिु दुखति होकर कोठरी से चला गया और वृद्ध के शष्यि से कहा:

'मैंने इतनी लंबी और कठनि यात्रा व्यर्थ की है: मैं यहाँ उनके (अब्बा पमिन) खातरि आया था, लेकनि उन्होंने मुझसे एक भी शब्द नहीं कहा।'

तब, वरष्ठि के कक्ष में प्रवेश करते ही, उस शष्यि ने उनसे कहा:

'पताजी! ये सम्माननीय व्यक्ति, जो अपने देश के संतों में प्रसद्धि हैं, आपकी खातरि आए हैं: फरि आपने उनसे कुछ भी क्यों नहीं कहा?'

वरष्ठि ने उत्तर दयिा:

'वह उच्च लोकों से हैं,'—और स्वर्गीय वषियों पर बात करते हैं—'जबकि मैं नम्नि लोकों से हूँ,'—और केवल सांसारकि बातें ही कर सकता हूँ। यदि हमारे पास आए भाई आत्मा के भावों या शरीर की दुर्बलताओं के बारे में बात करते, तो मैं उनका उत्तर देता; लेकनि चूँकि वे स्वर्गीय वषियों पर बात करते हैं, मैं उनके बारे में कुछ नहीं कह सकता।

शष्यि, बूढ़े को छोड़कर, उस संन्यासी के पास गया और उससे कहा:

'जानए, पताजी, कि वृद्ध पवत्रि शास्त्रों के बारे में बात करने में संकोच करते हैं, लेकनि अगर कोई उनकी आत्मा के भावों के बारे में उनसे बात करना शुरू करे, तो वृद्ध उत्तर देते हैं।'

यह देखकर, भक्षिु वृद्ध के पास गया और उससे पूछा:

'अब्बा! मैं क्या करूँ, क्योंकि मैं अपनी वासनाओं की चपेट में हूँ?'

तब, प्रसन्न मुख से उसे देखकर, वृद्ध ने कहा:

'तुम आकर अच्छा कयिा; अब मैं अपना मुँह खोलकर उसे शुभ वचनों से भरूँगा।'

और उन्होंने उनसे उन कामनाओं पर वजिय पाने के बारे में वस्तिार से बात की जो हमारे वरिुद्ध उठती हैं। वृद्ध के ईश्वर-प्रेरति शब्दों से अत्यंत प्रसन्न होकर, भक्षिु ने ईश्वर का धन्यवाद कयिा कि उन्होंने उसे ऐसे वृद्ध को देखने और उनका प्रवचन सुनने के योग्य समझा; और वह अपने लोगों के पास लौट आया, इस बात की प्रसन्नता के साथ कि उसे अपनी आत्मा के लयि महान लाभ मलिा था।

तब एक और भक्षिु, बाबा इसाक, पता पमिन के पास आए और उन्हें मौन में बैठे हुए पाए, मानो समाधि में हों। पर्याप्त समय तक प्रतीक्षा करने के बाद, लेकनि जब उन्हें कोई संकेत नहीं मलिा कि वरष्ठि होश में आ रहे हैं, तो भक्षिु ने वरष्ठि के सामने प्रणाम कयिा, यह कहते हुए:

'मुझे बताइए, पताजी, आपका ध्यान कहाँ था?'

उस गंभीर अनुरोध से उत्तर देने के लयि ववशि होकर, उन्होंने उत्तर दयिा:

'मेरा मन वहाँ था जहाँ सर्व पवित्र कुँवारी मरियम, ईश्वर की माता, क्रूस के पास खड़ी होकर रोई; और मैं भी हमेशा ऐसे ही रोना चाहूँगा।'

पितामहों में महान, पूजनीय पमिन ऐसे थे, जिन्होंने सभी सद्गुणों में महारत हासिल कर ली थी और अपने जीवन तथा अपने शब्दों, दोनों से सभी का भला किया था; उनके मन में इतनी महान विनम्रता थी कि वे अक्सर एक आह भरकर कहते थे:

'मुझे उस स्थान में फेंका जाएगा जहाँ शैतान को फेंका जाएगा!'

तथापि, प्रभु ने अपने विनम्र सेवक को उन स्थानों पर ऊँचा उठाया है जहाँ पवित्र स्वर्गदूत निवास करते हैं, धर्मी और भक्तमिय लोगों के आवासों में; पृथ्वी पर एक दीर्घ जीवन के बाद, प्रभु ने उसे स्वर्गीय आवासों में बसा दिया है, जहाँ वर्ष कभी समाप्त नहीं होते[5738] ; वहाँ सभी संत, परमेश्वर की महिमा के सिंहासन के सामने खड़े होकर, सदा पिता, और पुत्र, और पवित्र आत्मा, त्रिमूर्ति में एक परमेश्वर की महिमा करते हैं, जिन्हें हम पापियों की ओर से भी महिमा दी जाती है, अब और सदा और युगानुयुग। आमीन।

ट्रोपारियन, स्वर 8:

अपने आँसुओं की धाराओं से आपने उजाड़ रेगिस्तान को उपजाऊ बनाया, और अपने हाँफने की गहराइयों से आपने सौ परिश्रम उत्पन्न किए; और आप चमत्कारों को प्रकाशित करते हुए संसार के लिए एक दीपक थे। पमिन, हमारे पिता, हमारे ईश्वर मसीह से प्रार्थना करें कि हमारी आत्माएँ बच सकें।

कॉन्टाकियन, स्वर 4:

हे आदरणीय पिता, आज आपके महिमामय कार्यों का पवित्र स्मरण है, जो धर्मनिष्ठों की आत्माओं को आनंदित करता है, हे ईश्वर-ज्ञानी पमिन, हमारे आदरणीय पिता।

आदरणीय शहीद कुक्शा और उपवासी पमिन की स्मृति

27 अगस्त को स्मरणोत्सव

जहाँ कर्म स्वयं स्पष्ट गवाही देते हों, वहाँ बहुत शब्दों की आवश्यकता नहीं होती, जैसा कि इन धन्य लोगों के मामले में है; क्योंकि धन्य पवित्र शहीद कुक्शा – जो पवित्र गुफाओं के मठ के संतों में से एक थे – सभी के परिचित थे, उन्होंने विधर्मी लोगों का बपतिस्मा दिया, जो पहले अविश्वास के जाल में फँसे हुए थे, और कई लोगों को आस्था का प्रकाश दिया। इन संत कुक्शा ने कई गौरवशाली चमत्कार किए: उन्होंने भूत-प्रेत भगाए, स्वर्ग से वर्षा कराई, एक झील को सूखा दिया, और कई अन्य अद्भुत चमत्कार किए। अंत में, बहुत कष्ट सहने के बाद, उन्हें उनके शिष्य के साथ अविश्वासियों द्वारा सिर कलम कर दिया गया।

इसी समय, धन्य उपवासी पमिन कीव गुफाओं के मठ में तपस्या का जीवन जी रहे थे, और ईश्वर को प्रसन्न कर रहे थे; अपने महान उपवास और परिश्रम के लिए, उन्हें ईश्वर से इतना बड़ा वरदान मिला कि वे न केवल बीमारों को ठीक करने के लिए, बल्कि दूर और अज्ञात स्थानों में होने वाली भविष्य की घटनाओं को पूर्व में देखने के लिए भी प्रसिद्ध हो गए। इन संत पमिन ने कई पीड़ितों को ठीक किया, कई बातों की भविष्यवाणी की, और अपनी मृत्यु से दो साल पहले ही प्रभु के पास अपने प्रस्थान का पूर्वानुमान लगाया था। संत पमिन ने, अपने से बहुत दूर रहे धन्य कुक्शा के सिर कटने का पूर्वानुमान लगाकर, पेचेरस्क चर्च में ज़ोर से पुकारा:

'हमारे भाई कुक्शा को आज मार डाला गया है!'

[5738] आदरणीय पमिन का 110 वर्ष की आयु में निधन हो गया। उनका निधन लगभग 450 ईस्वी के आसपास हुआ।

यह कहने के बाद, पमिन का नधिन ठीक उसी दनि हुआ जसि दनि संत कुक्शा और उनके disciple[5739] का नधिन हुआ।

इस प्रकार, इन तीनों ने मलिकर एक तहिरी आनंद प्राप्त कयिा जसि न कसिी ने देखा है, न कसिी ने सुना है, और जो मानव हृदय में प्रवेश नहीं कयिा है (तुलना करें 1 कुरन्थियिों 2:9); यह आनंद त्रमिूर्त मिें से एक, परमेश्वर द्वारा, उन सभी के लिए तैयार कयिा गया था जो उनसे प्रेम करते हैं: महमिा उसी की हो, अब और सदा और युगानुयुग। आमीन।

रोम के पोप, संत लबिेरयिस वज्ञिाता की स्मृत

27 अगस्त को स्मरणोत्सव

पोप जूलयिस[5740] के बाद संत लबिेरयिस बशिप के पद पर आसीन हुए। अपने शासन के आरंभ से ही, वे धर्मपरायणता के एक उत्साही समर्थक और अलेक्जेंड्रयिा के संत अथेनासयिस के एक दृढ़ रक्षक थे, जन्हिोंने एरयिनवादयिों के खलिाफ लड़ाई लड़ी। सम्राट कॉन्स्टैंटयिस (जो एरयिनों के पक्ष में था) धमकयिों या चापलूसी से, न तो अपने दरबारयिों के माध्यम से, और न ही व्यक्तगित रूप से, संत लबिेरयिस को संत अथेनासयिस और परणिामस्वरूप ऑर्थोडॉक्सी की नदिा करने के लिए मजबूर कर सका; ऑर्थोडॉक्सी में ऐसी दृढ़ता के लिए , लबिेरयिस को थ्रेस में बरयिा में नर्वासन में भेज दयिा गया था। लेकनि जब सम्राट कॉन्स्टैंटयिस रोम में थे[5741] , तो लोगों ने, जो अपने आर्चपास्टर का सम्मान करते थे और उनसे प्यार करते थे, सम्राट से पोप लबिेरयिस की रोम वापसी के लिए याचकिा की। हालाँकि, रोम लौटने से पहले, लबिेरयिस को सरिमयिम की तीसरी परषिद (अर्ध-एरयिन परषिद) में बुलाया गया, जहाँ उन्हें परषिद के फरमान पर हस्ताक्षर करने के लिए मजबूर कयिा गया। केवल तब, रोम लौटने की अनुमत मिलिने के बाद, लबिेरयिस दो साल के नर्वासन के बाद वहाँ लौटे[5742] । लेकनि बाद में, लबिेरयिस ने अपने कार्यों के लिए गहरा पश्चाताप व्यक्त कयिा (जो सेमी-एरयिन परषिद, सरिमयिम की तीसरी परषिद के फरमान पर उनके हस्ताक्षर में प्रकट हुआ), संत प्रेरति पतरस के उदाहरण का अनुसरण करते हुए, जन्हिोंने सच्चे पश्चाताप के माध्यम से, प्रभु से इनकार करने का प्रायश्चति कयिा था। रोम में, लबिेरयिस ने ऑर्थोडॉक्सी (सही आस्था) के लिए बहुत प्रयास कयिा और अंततःप्रभु के पास चले गए[5743] ।

हमारे पूजनीय पति ओसयिास द कन्फैसर, कॉर्डोबा के बशिप की स्मृत

27 अगस्त को स्मरणोत्सव

यह सम्मानति पुरुष, सांसारकि सुखों से अलग होकर और हर सद्गुण से स्वयं को सुसज्जति कर, कोर्डोबा शहर के बशिप के रूप में स्थापति कयिा गया[5744] । ऑर्थोडॉक्स धर्म के प्रत उत्साही, वह एरयिस की मूर्खता की नदिा करने और उसकी आत्मा-वनिाशकारी वधिर्म को नष्ट करने के लिए प्रथम सार्वभौमकि परषिद के लिए रवाना हुआ। और जब इस परषिद के लिए सभी एकत्रति हुए, तो उन्होंने अपने प्रवचनों से एरयिस और कई अन्य लोगों को कष्ट दयिा। सम्राट कॉन्स्टेंटनि[5745] द्वारा अथेनासयिस द ग्रेट[5746] के नर्वासन में भाग लेने से इनकार करने और एरयिस की झूठी शक्षिा में

[5739] संत कुक्शा शहीद और पमिन तपस्वी की मृत्यु लगभग 1113 में हुई।

[5740] जूलयिस ने 337 से 352 तक पोप का पद संभाला। लबिेरयिस 22 मई 352 को रोम के सहिासन पर आसीन हुए।

[5741] सम्राट कॉन्स्टैंटयिस ने 337 से 361 तक शासन कयिा – वह 357 में रोम में थे, जब लोगों ने उनसे लबिेरयिस को नर्वासन से वापस लाने का अनुरोध कयिा।

[5742] लबिेरयिस 358 में रोम लौटे।

[5743] संत लबिेरयिस का 366 में नधिन हो गया।

[5744] कोर्डोबा शहर, जो अब कोर्डोबा है, स्पेन के दक्षणिी भाग में बेटा नदी के दाहनि कनिारे पर स्थति था, जसि अब ग्वाडलक्वइिर कहा जाता है।

[5745] यहाँ प्रस्तावना में एक त्रुटयिा मुद्रण संबंधी गलती है। ऑर्थोडॉक्स बशिपों को उनके पदों से सम्राट कॉन्स्टेंटाइन द्वारा नहीं, बल्कि उनके बेटे, एरयिन कॉन्स्टेंटयिस द्वारा हटाया गया था।

[5746] यह, बेशक, अलेक्जेंड्रयिा के महाधर्माध्यक्ष, संत अथानासयिस द ग्रेट को संदर्भति करता है, जो आरयिन के वधिर्म के खलिाफ ईश्वर के पुत्र के बारे में ऑर्थोडॉक्स सद्धिांत के प्रसद्धि रक्षक थे। – उनका पर्व दविस 2 मई और 18 जनवरी को मनाया जाता है।

शामलि न होने के कारण ऑर्थोडॉक्स बशिपों को उनके पदों से हटा दिए जाने के बाद, उन्हें भी नर्विासन में भेज दयिा गया, जहाँ, कई कष्ट सहने के बाद, उनका नधिन हो गया[5747] ।

आदरणीय पमिैन (फलिस्तिीन के) की स्मृति

27 अगस्त को स्मरण कयिा जाता है

पवत्रि पतिाओं सोफ्रोनीयस और जॉन ने अपनी पुस्तक[5748] में इस संत पमिैन के बारे में नम्निलखिति बातें दर्ज कीं:

वे कहते हैं, 'हमारे पूजनीय पति सव्वास के मठ के मठाधीश अबा अगथोन ने हमें नम्निलखिति बात बताई:

'मैं,' बाबा अगथोनकि ने सुनाया, 'एक दनि रuvu रेगस्तिान में बाबा पमिैन से मलिने जा रहा था, जो एक गुफा में रहते थे और जड़ों पर जीवति रहते थे। उसे खोज लेने के बाद, मैंने उसे अपने वचिार बताए, और चूँकि शाम हो चुकी थी, उसने मुझे रात के लिए गुफा में अकेला छोड़ दयिा, जबकि वह स्वयं दूसरी गुफा में चला गया। वह रात बहुत ठंडी थी, और मैं ठंड से बहुत कष्ट भोग रहा था। अगले सुबह, वरष्ठि मेरे पास आए और पूछा:

'तुमने रात कैसे बतिाई, मेरे बेटे?'

अब्बा अगथॉन कहते हैं, 'मैंने उनसे उत्तर दयिा:

'मुझे क्षमा करें, पतिाजी! पूरी रात मैं ठंड से बुरी तरह कष्ट में रहा।'

फरि उन्होंने मुझसे कहा:

'मैं तुम्हें सच बता रहा हूँ, मेरे बेटे, मुझे बल्कि‍ुल भी ठंड नहीं लगी।'

– 'यह सुनकर,' अगथोनकि बताता है, 'मैं बहुत हैरान हुआ, क्योंकि वह बूढ़ा नग्न था; तब मैंने उससे पूछा, कहकर:

'मुझे अपना प्रेम दखिाइए, पतिाजी – बताइए, नग्न होने के बावजूद आपको ठंड क्यों नहीं लगी?'

और वृद्ध ने मुझसे उत्तर दयिा:

'एक सहि आया, मेरे पास लेट गया और मेरे शरीर को गर्म कर दयिा; परन्तु, यह जान ले, मेरे पुत्र, कि मैं जंगली जानवरों द्वारा खा लयिा जाऊँगा।'

तब मैंने उससे पूछा:

'कसि कारण से, पतिाजी, आप जंगली जानवरों द्वारा खाए जाएँगे?'

इस पर बूढ़े ने उत्तर दयिा:

'जब मैं अपनी मातृभूमि में दुनयिा में रहता था (वे दोनों गालातयिा के थे[5749]), तो मैं एक चरवाहा था; एक दनि, जब मैं अपनी भेड़ों की देखभाल कर रहा था, एक आदमी मेरे झुंड के पास से गुज़रा; मेरे कुत्तों ने उस पर हमला कर दयिा और उसे टुकड़े-टुकड़े कर दयिा। मैं उसे कुत्तों से बचा सकता था, लेकनि मैंने नहीं बचाया। और मुझे दव्यि प्रकटकिरण से पता चला कि मुझे भी उसी मृत्यु से मरना है – अर्थात्, मुझे जंगली जानवरों द्वारा फाड़-फाड़ कर मार दयिा जाएगा।

आदरणीय पमिैन ने यह बात अबा अगथोन को सुनाई; और वास्तव में, जैसा उन्होंने कहा था, वैसा ही हुआ; क्योंकि तीन साल बाद यह पता चला कि तपस्वी पमिैन को जंगली जानवरों ने खा लयिा था[5750] । हालाँकि, हमारे प्रभु यीशु मसीह की दया से उनकी पवत्रि आत्मा को पवत्रि पतिाओं की कतार में शामलि कर लयिा गया है, जनिकी महमिा युगानुयुग होती रहे।

[5747] 355 में, संत अथेनासयिस का बचाव करने के लिए सम्माननीय ओसयिस को सम्राट कॉन्स्टेंटयिस द्वारा सरिमयिम में नर्विासति कर दयिा गया था। धमकयिों, कारावास और हसिा के माध्यम से, उन्हें 357 में सरिमयिम की दूसरी परषिद के एरयिन धर्मवश्विास पर हस्ताक्षर करने के लिए मजबूर कयिा गया; बाद में उन्हें कोर्दोबा वापस भेज दयिा गया, जहाँ 359 में उनकी मृत्यु हो गई – या, स्टैडलर के अनुसार, 358 में – लेकनि अपनी मृत्यु से पहले उन्होंने एक बार फरि एरयिनवाद को शाप दयिा।

[5748] यह, बेशक, *लमिोनार* (या *आध्यात्मकि चरागाह*) को संदर्भति करता है, अर्थात्, संन्यासयिों के कारनामों के बारे में शक्षिाप्रद कथाओं का एक संग्रह (अध्याय 167)।

[5749] गलाटयिा – एशयिा माइनर का एक क्षेत्र।

[5750] संत पमिैन की मृत्यु छठी शताब्दी के अंत में हुई।

10 सतिंबर

28 अगस्त (पुराने कैलेंडर के अनुसार)

हमारे पूजनीय पतिा मूसे मुरनि का जीवन

28 अगस्त को स्मरण कयिा जाता है

मस्रि की भूमि में मूसा नाम का एक डाकू रहता था, जो जन्म से मुरनि था,[5751] और गंभीर मुख वाला था; मूल रूप से वह एक कुलीन स्वामी का दास था, लेकनि मूसा द्वारा कएि गए एक हत्या के कारण, उसे उस स्वामी ने नकिाल दयिा और वह डाकुओं में शामलि हो गया; और इन डाकुओं ने, यह देखकर कि वह मजबूत और दृढ़ चरत्रि का था, उसे अपना अतामान (नेता) चुन लयिा। संत मूसा का यह वृत्तांत इसलएि बताया गया है ताकि उनकी सुधार प्रक्रयिा स्पष्ट हो सके, और यह भी कि कैसे मूसा इतने दुष्ट जीवन से पश्चाताप करके ईश्वर को प्रयि लगने वाले जीवन में आ गया; क्योंकि संतों के पाप (जो अतीत में कएि गए) छपिाए नहीं जाते, ताकि ईश्वर की दया की महमिा हो सके—एक ऐसी दया जो धर्मी को अयोग्य से अलग करती है और पापयिों को धर्मी में बदल देती है।

डकैती करते समय, मूसा ने अपने साथयिों के साथ मलिकर लूटपाट और खून-खराबे की कई घटनाएँ कीं, और कई अन्य घृणति, गैर-कानूनी कृत्य और अपराध कएि; मूसा अपनी क्रूरता के लएि सभी के बीच कुख्यात हो गया, क्योंकि हर कोई उससे डरता था। उसकी डकैती के कृत्यों में से, नम्निलखिति का उल्लेख करना उचति है:

मोशे को भेड़ चराने वाले एक चरवाहे से रंजशि थी, क्योंकि इस चरवाहे ने अपने कुत्तों (जो झुंड की रखवाली करते थे) के साथ एक बार मोशे को एक दुष्ट कर्म करने से रोक दयिा था; एक बार जब मोशे ने देखा कि वह चरवाहा नील नदी के दूसरी तरफ अपनी भेड़ें चरा रहा था, तो मोशे ने उसे मारने का नश्चिय कयिा। नदी नील (बाढ़ के कारण) उफान पर थी; मूसा ने अपने कपड़े एक साथ बांधे, उन्हें अपने सरि पर कस लयिा, मुँह में तलवार दबाई, और इस महान नदी को पार करने के लएि नकिल पड़ा। उस चरवाहे ने, जब मूसा को नदी पार करते हुए दूर से देख लयिा, तो अपनी भेड़ों को छोड़कर उस जगह से भाग गया: मूसा, नदी पार करने के बाद लेकनि चरवाहे को न पाकर, चार सबसे बड़े मेमनों को काट डाला, फरि उन्हें एक रस्सी से बाँध दयिा और नाइल नदी से वापस तैरकर पार कर गया, साथ में मेमनों के खाल ( ) को ले गया; इन मेमनों की खाल उधेड़ने के बाद, मूसा ने उनका मांस खाया (जो बहुत स्वादष्टि था), और खाल बेचकर उससे मलिी रकम से शराब खरीद ली।

लंबे समय तक, मूसा ने ऐसे पापी कर्मों का जीवन जयिा; लेकनि एक दनि, संयोग से, वह होश में आ गया, क्योंकि परमेश्वर ने उस पर दया की और उसे पश्चाताप के लएि बुलाया, क्योंकि परम दयालु और परोपकारी प्रभु पापयिों का वनिाश नहीं चाहते, बल्कि उनके उद्धार के लएि उनके परविर्तति होने की प्रतीक्षा करते हैं। उस पापी का हृदय पश्चाताप से भर गया; उसने अपने दुष्कर्मों से तौबा की, डकैती और अपने साथयिों को त्याग दयिा, एक मरुस्थल के मठ में चला गया, और स्वयं को मठाधीश और भाइयों के प्रति और सबसे बढ़कर स्वयं ईश्वर के प्रति आज्ञाकारति और समर्पण में लगा दयिा; मोसेस ने दनि-रात अपने पूर्व पापों पर पश्चाताप करते हुए बहुत आँसू बहाए; उसने सौंपे गए सभी कार्यों और कर्तव्यों को बनिा आलस्य के पूरा कयिा, और एक गौरवशाली भकि्षु था।

कुछ समय बाद, मूसा एक संन्यासी की कुटयिा में चले गए; वहाँ वे अकेले रहते थे, ईश्वर पर ध्यान लगाते थे और अतीत में कएि गए अपने पापों के लएि हार्दकि पश्चाताप के माध्यम से स्वयं को शुद्ध करते थे।

जब मूसा इस पश्चाताप के जीवन को जी रहे थे, तो चार डाकू उनकी कोठरी में उन पर तब हमला कर बैठे, जब उन्हें यह एहसास नहीं हुआ कि वह मूसा ही हैं। उन्होंने, अकेले होते हुए भी, उन पर काबू पा लयिा, उन्हें बाँध दयिा, और उन्हें अपने कंधों पर फसलों के गट्ठों की तरह लादकर मठ के चर्च में ले आए, और भाइयों से कहा:

'तुम मुझे इनके साथ क्या करने की सलाह देते हो? मुझे कसिी को नुकसान नहीं पहुँचाना चाहएि, लेकनि वे मुझ पर आए, और मैंने उन्हें पकड़ लयिा।'

पतिाजी ने उसे डाकुओं को खोलकर आजाद करने का आदेश दयिा, कहते हुए:

[5751] अर्थात् इथयिोपयिाई।

'हमें कसिी को नहीं मारना चाहिए।'

डकैतों ने, यह समझते हुए कि यह उनके पूर्व नेता मूसा थे, उनके जीवन में आए इस परविर्तन को देखकर चकति हो गए और ईश्वर की स्तुति की; वे स्वयं भी करुणा से भर गए, ईश्वर का भय मानने लगे, और पश्चाताप करके प्रसद्धि भक्षिु बन गए।

और केवल ये चार ही नहीं, बल्कि अन्य लुटेरे भी, जब उन्होंने अपने नेता मूसा के बारे में सुना—कि उसने पश्चाताप किया था और एक संन्यासी बन गया था—तो उन्होंने भी डकैती और सभी पापपूर्ण कार्यों को त्याग दिया और सदाचारी भक्षिु बन गए।

इस प्रकार, मूसा पश्चाताप के कार्यों में लगे रहे। पहले तो, व्यभचिार के दानवों ने उन्हें पापपूर्ण वचिारों से घेर लिया, उनकी वासना को जगाया और उन्हें व्यभचिार के अपने पूर्व जीवन में वापस खींचने लगे, जैसा कि उन्होंने बाद में अपने भाइयों को बताते हुए कहा:

'मैंने कामुक इच्छाओं के वरिुद्ध अपने संघर्ष में इतनी बड़ी कठनिाइयों को सहा कि मैं लगभग अपना संन्यासी व्रत तोड़ ही बैठा था।'

स्केट में पादरी अबा इसडिोर के पास जाकर, उसने उन्हें कामुक वासना से होने वाले अपने कष्टों के बारे में बताया। और संत इसडिोर ने उससे कहा:

'नरिाश न हो, भाई! तुम अभी एक नवागंतुक हो (यानी, तुमने अभी-अभी अपने आध्यात्मकि संघर्ष की शुरुआत की है), और इसीलिए राक्षस इतनी क्रूरता से तुम पर हमला करते हैं, यह सोचकर कि वे तुममें तुम्हारा पुराना स्वभाव पा लेंगे; उन्हें भगाने के लिए, मैं तुम्हें सलाह देता हूँ कि तुम प्रतदिनि उपवास और संयम का पालन करो और अपना पेट पूरी तरह से न भरो। जैसे एक कुत्ता, जो कसाई द्वारा फेंकी गई हड्डयिों को चबाने का आदी हो, बाज़ार बंद होने तक वहाँ से नहीं जाता; लेकनि जब व्यापार बंद हो जाता है और कोई भी कुत्ते को खाने के लिए कुछ फेंकने के लिए नहीं रहता, तो भूख से थका हुआ, वह उस जगह से चला जाता है; उसी प्रकार व्यभचिार का दैत्य भी उस व्यक्ति के पास ठहरता है जो तृप्ति तक खाता है। लेकनि यदि आप लगातार उपवास और संयम का पालन करते हैं, अपने सांसारकि अंगों को दंडति करते हैं और आत्म-त्याग से तृप्ति के द्वार को बंद रखते हैं, तृप्ति—जो पापी इच्छाओं को जगाती है—को अपने भीतर प्रवेश करने नहीं देते, तो वह राक्षस, मानो भूख से थका हुआ, दुख के साथ आपसे दूर चला जाएगा।

ईश्वर के सेवक मूसा, अपनी कोठरी में जाकर, वहाँ अकेले रहने लगे और प्रतदिनि उपवास करते रहे, सूर्यास्त के बाद शाम को केवल बहुत थोड़ी सी रोटी खाते थे; मूसा ने शारीरकि श्रम में बहुत परश्रिम किया, वे दनि में प्रार्थना के लिए पचास बार उठते थे, और घुटने टेककर प्रार्थना करते थे।

हालाँकि मूसा ने अपने शरीर को श्रम और तपस्या से पीड़ति किया, फरि भी वह कामुक इच्छा जो उसे पाप करने के लिए प्रेरति करती थी, उसके भीतर से नहीं गई। तब वह फरि से अब्बा इसडिोर के पास गया और उनसे कहा:

'पतिाजी! मैं अपनी कोठरी में नहीं रह सकता, क्योंकि मैं कामुक वासनाओं से अभभिूत हूँ।'

धन्य इसडिोर ने उसका हाथ पकड़कर उसे अपनी कोठरी के ऊपरी हस्सि में ले जाकर उससे कहा:

'पश्चमि की ओर देखो!'

मोशे ने देखा और भयानक राक्षसों की एक भीड़ को देखा, जो इधर-उधर भाग-दौड़ कर रहे थे और युद्ध की तैयारी कर रहे थे।

तब अबा इसडिोर ने कहा:

'अब पूर्व की ओर मुड़ो और देखो।'

पूर्व की ओर देखते ही मूसा ने अनगनित पवत्रि, तेजस्वी स्वर्गदूतों की भीड़ देखी, जो युद्ध की तैयारी कर रहे थे।

और संत इसडिोर ने मूसा से कहा:

'पश्चमि में जो हैं वे ईश्वर के संतों के वरिुद्ध युद्ध कर रहे हैं, जबकि पूर्व में जो हैं उन्हें प्रभु ने धर्मनष्ठि तपस्वयिों की सहायता के लिए भेजा है। अतः जानो कि हमारे वरिुद्ध उठने वालों की तुलना में हमारी सहायता करने वालों की संख्या अधकि है।'

इस दर्शन और वृद्ध के शब्दों से बल प्राप्त करके मूसा अपनी कुटिया में लौट आए और एक बार फरि उन्होंने अपने आराधना के सामान्य कार्यों और प्रार्थना के श्रम में स्वयं को समर्पति कर दिया।

हालाँकि, इसके बाद भी, संघर्ष उससे नहीं छूटा; बल्कि, सपनों से उत्तेजित होकर, मूसा को दुश्मन के हाथों और भी अधिक कष्ट झेलने पड़े। इसलिए, उठकर वह एक अन्य पवित्र वृद्ध के पास गए, जो बहुत अनुभवी थे, और उनसे कहा:

'मैं क्या करूँ, बाबा? ये नींद में होने वाले दृश्य मेरे मन को धुंधला कर देते हैं, मेरे शरीर को उत्तेजित करते हैं, मेरी वासनाओं को बढ़ावा देते हैं और मुझे अपने पूर्व पापी जीवन की ओर लौटने के लिए उकसाते हैं, मुझे भूत-प्रेतों से भ्रमित कर देते हैं?'

बृद्ध ने उत्तर दिया:

'तुम इस घृणित पीड़ा से इसलिए पीड़ित हो क्योंकि तुम अपने मन को कामुक कल्पनाओं से नहीं बचाते। जैसा मैं तुमसे कहता हूँ, वैसा करो: स्वयं को जागने (अर्थात् पूरी रात प्रार्थना में जागते रहने) के लिए समर्पित करो, धीरे-धीरे इसकी आदत डालो, और पूरी लगन से प्रार्थना करो; तब तुम उस संघर्ष से मुक्त हो जाओगे।'

मोसेस ने अपने अनुभवी पवित्र गुरु की इस अच्छी सलाह को स्वीकार किया, अपनी कोठरी में लौट आया और पूरी रात जागने (अर्थात् पूरी रात प्रार्थनापूर्वक जागते रहने) का अभ्यास करने लगा; वह सारी रात अपनी कोठरी के बीच में खड़े रहे और प्रार्थना में घुटने नहीं टेके, कहीं वे सो न जाएँ, बल्कि सीधे खड़े रहे, अपनी आँखें खुली रखीं।

संत ने छह साल तक इस तपस्या में दृढ़ता बनाए रखी; फिर भी इस तरह भी वह उन कामुक इच्छाओं से छुटकारा नहीं पा सके जो आत्मा के विरुद्ध युद्ध करती थीं; क्योंकि ईश्वर ने ऐसा होने दिया ताकि पूजनीय पिता, कड़ाही में सोने की तरह परखे जाने के बाद, अन्य शहीदों के साथ एक महिमामय मुकुट प्राप्त कर सकें।

कुछ समय बाद, उस वीर भिक्षु ने एक नया और कठिन कार्य सोचा: वह रात में अपनी कुटिया से निकलता, रेगिस्तान के संतों की कुटियाओं का चक्कर लगाता और उन कुटियाओं में रखे बिना निगरानी के पानी के घड़ों को उठाकर पानी भर लाता, जबकि संत इस बात से अनजान रहते थे (पानी का स्रोत कुछ दूरी पर था)। कुछ संतों की कुटियाएँ पानी के स्रोत से दो 'पोपरीश्चा' ([5752]) दूर थीं, कुछ की तीन, चार या उससे भी अधिक; कुछ ऐसे भी थे जो अपनी अधिक उम्र के कारण अपने लिए पानी लाने में पूरी तरह असमर्थ थे; ऐसे लोगों के लिए, मूसा हर रात उनके पात्रों को पानी से भर देते थे। संत मूसा का यह करतब शैतान को बहुत घृणित लगता था। ईश्वर की अनुमति से, शैतान ने संत मूसा को इस प्रकार परेशान किया:

एक रात, वह धन्य मजदूर एक वृद्ध व्यक्ति के पात्र को लेकर पानी खींचने के इरादे से कुएँ के ऊपर झुका; उसी क्षण, शैतान ने एक लकड़ी के टुकड़े से उसकी पीठ पर जोर से वार किया; वह वृद्ध बेहोश हो गया और जैसे मृत पड़ा रहा।

अगली सुबह, कुछ भिक्षु पानी लेने के लिए उस कुएँ पर आए और उन्होंने मूसा को वहाँ आधा-बेहोश पड़ा हुआ देखा। भिक्षु महान तपस्वी बाबा इसिडोर के पास गए और उन्हें सारी बात बताई; वे अपने भाइयों के साथ आए, मोशेस को उठाया और उसे चर्च ले गए। और मोशेस अस्वस्थ था, जैसे लकवाग्रस्त हो गया हो, और उसने इतना कष्ट सहा कि वह मुश्किल से एक साल बाद ठीक हुआ।

तब अबा इसिडोर ने उससे कहा:

'भाई मूसा! राक्षसों के खिलाफ अपने संघर्ष को अपनी शक्ति से अधिक मत बढ़ाओ, क्योंकि साहस में भी संयम बरतना चाहिए।'

मूसा, मसीह के अजेय योद्धा, ने उत्तर दिया:

'मैं तब तक संघर्ष नहीं छोड़ूँगा जब तक मेरे सोने में वे घिनौने सपने मुझे छोड़ नहीं देते।'

तब अबा इसिडोर ने उनसे कहा:

– हमारे प्रभु यीशु मसीह के नाम पर, ये सांसारिक इच्छाएँ अब तुमसे दूर हो रही हैं; अब तुम शांति में रहोगे; अतः निश्चिंत होकर मसीह के शरीर और रक्त के दिव्य रहस्यों में भाग लो। जान लो कि देह के विरुद्ध इतनी भारी लड़ाई तुम्हें इसलिये अनुमति दी गई थी, कि कहीं तुम अपने मन में इस बात का घमंड न करने लगो कि तुमने अपने उपवासों और तपस्या के श्रम से अपनी कामनाओं पर विजय प्राप्त कर ली है, और इस प्रकार घमंडी होकर तुम नाश न हो जाओ।

ये वचन सुनकर मूसा ने दिव्य रहस्य ग्रहण किए, अपनी कुटिया में गए और अपने पूर्व कष्टों से मुक्त होकर, कठोर, उपवास और मौन जीवन जीते हुए, शांति से अपना तपस्वी जीवन जारी रखा।

[5752] 'पॉप्रश्चि' लंबाई की एक इकाई है जो लगभग दो किलोमीटर के बराबर होती है।

कुछ समय बाद, मूसा से पूछा गया कि क्या उनके वासनात्मक भाव अभी भी उन्हें परेशान करते थे। मूसा ने उत्तर दिया:

'जब से मसीह के सेवक इसिडोर ने मेरे लिए प्रार्थना की है, तब से मैं कामुक वासना से पीड़ित नहीं हुआ हूँ।'

इतनी बड़ी परीक्षाओं के बाद, धन्य मूसा ने ईश्वर की कृपा से (आंतरिक) शांति प्राप्त की और तब से उन्होंने अपना जीवन कामुक परीक्षाओं से मुक्त होकर व्यतीत किया; साथ ही, उन्हें ईश्वर से राक्षसों पर महान शक्ति प्राप्त हुई, जिसे वे उन्हें कीड़ों की तरह तुच्छ समझते थे; और वे पवित्र आत्मा की कृपा से परिपूर्ण हो गए, और तपस्वियों में प्रसिद्ध हुए।

चूंकि संत मूसा अपने सदाचारी जीवन के लिए प्रसिद्ध हो गए थे, उस देश के राजकुमार (शासक) ने उनके बारे में सुना; वह अब्बा मूसा से मिलने की इच्छा से स्केटे के लिए रवाना हो गया। वरिष्ठ को सूचना दी गई कि राजकुमार उनसे (मोसेस से) मिलने आने का इरादा रखता है; लेकिन मोसेस, अपनी कुटिया छोड़कर, दलदलों और झाड़ियों में भागने की योजना बनाने लगा; हालाँकि, राजकुमार के साथ आए सेवकों ने उससे मुलाकात की और पूछा:

'अब्बा मूसा की कुटिया कहाँ है?'

उसने उनसे कहा:

'तुम्हें उससे क्या चाहिए? वह साधु मूर्ख है, एक बड़ा झूठा है, और पापी जीवन जीता है।'

जब उन्होंने ये शब्द सुने, तो वे चकित हो गए और आगे बढ़ गए। और जब वे चर्च पहुँचे, तो राजकुमार ने पुरोहितों से कहा:

'मैंने अबा मूसा के बारे में सुना है और उनके आशीर्वाद के लिए आया हूँ; लेकिन हमारा सामना मिस्र जा रहे एक संन्यासी से हुआ, और जब हमने उससे पूछा कि अबा मूसा कहाँ रहते हैं, तो उसने मूसा की बदनामी की, उसे एक मूर्ख बूढ़ा, एक झूठा और एक पापी जीवन जीने वाला कहा।'

यह सुनकर, पुरोहित बहुत दुखी हुए और पूछा:

'यह साधु किस प्रकार का व्यक्ति था जिसने एक पवित्र पुरुष के खिलाफ ऐसी बदनामी की?'

उन्होंने उत्तर दिया:

'वह एक लंबा वृद्ध था, जिसका चेहरा गंभीर था और जो फटे-पुराने कपड़े पहने हुए था।'

पुरोहितों ने कहा:

'वास्तव में, वह अबा मूसे ही थे; लेकिन चूँकि वह न तो आपसे अपना परिचय देना चाहते थे, और न ही आपसे सम्मान स्वीकार करना चाहते थे, इसलिए उन्होंने आपके सामने अपने बारे में बुरा कहा, जैसे कि वह किसी और के बारे में बात कर रहे हों।'

महान आध्यात्मिक लाभ प्राप्त कर, राजकुमार ईश्वर की महिमा करते हुए प्रस्थान कर गया।

इस प्रकार आदरणीय मूसा ने मानवीय महिमा और सम्मान से परहेज़ किया और उनके पास आने वाले सामान्य लोगों से बातचीत से बचा, यद्यपि वे अतिथि सत्कार करने वाले थे, क्योंकि उन्होंने अपने पास आने वाले सभी भटकते भाइयों का प्रेम से स्वागत किया, जैसा कि 'फादर्स बुक' में उनके अतिथि सत्कार का वर्णन है।

एक अवसर पर, सभी मरुभूमि-निवासी संतों को स्केटे में निम्नलिखित आज्ञा दी गई:

'इस पूरे सप्ताह उपवास करो और पास्चा मनाओ।'

संयोग से, मिस्र से कुछ भटकते भाई मूसा के पास आए; बड़े भाई ने उनके लिए थोड़ा पका हुआ भोजन बनाया; लेकिन जब उनके पड़ोसियों ने धुआँ देखा, तो उन्होंने पुरोहितों से कहा:

'मोशे ने आज्ञा तोड़ दी है और अपने लिए भोजन पका रहा है।'

लेकिन पादरियों ने उत्तर दिया:

'जब वह सभा में आएगा तो हम उसे फटकारेंगे' (क्योंकि सभी मोशे के तपस्वी प्रयासों को जानते थे)।

जब सब्बाथ का दिन आया, तो मूसा सामूहिक कीर्तन के लिए गिरिजाघर आए; और उन्होंने सभी पुरोहितों की उपस्थिति में उनसे कहा:

'फादर मूसा! आपने एक मानवीय आज्ञा तोड़ी है, लेकिन आपने ईश्वर की आज्ञा का पालन किया है।'

आदरणीय आर्सेनियस के जीवन में यह भी वर्णित है:

एक भाई दूर से सम्माननीय आर्सेनियस को देखने के लिए स्केटे में आया; जब उसे आर्सेनियस के सामने लाया गया, तो भाई ने उन्हें देखा, लेकिन उसे उनके शब्द सुनने की कृपा नहीं मिली; क्योंकि वरिष्ठ (आर्सेनियस) मौन में बैठे थे, और जमीन की ओर देख रहे थे।

इसके बाद, उस भटकते हुए भिक्षु ने उस भाई से विनती करनी शुरू कर दी कि वह उसे मूसा के पास ले जाए, जो संन्यास ग्रहण करने से पहले एक डाकू था। भाई ने उसकी विनती मान ली और उसे पूज्य मूसा के पास ले गया।

जब वे मूसा के पास पहुँचे, तो उन्होंने खुशी से उनका स्वागत किया, उन्हें आराम करने और कुछ खाने के लिए आमंत्रित किया, और उन पर बहुत दया दिखाने के बाद, उन्हें विदा कर दिया।

रास्ते में, संन्यासी ने आगंतुक से कहा:

'अब तुम पिता अर्सेनियस और पिता मूसा दोनों से मिल चुके हो। तुम्हें इनमें से कौन बेहतर लगता है?'

भाई ने उत्तर दिया:

'दोनों में से बेहतर वह है जिसने हमें प्रेम से स्वागत किया।'

– एक भिक्षु, यह जानकर, ईश्वर से प्रार्थना करने लगा, यह कहते हुए:

'हे प्रभु! मुझे बताइए, उनमें से कौन अधिक परिपूर्ण है और आपकी अधिक कृपा का पात्र है: वह जो आपके लिए लोगों से दूर रहता है, या वह जो आपके लिए ही सभी का स्वागत करता है?'

उनकी प्रार्थना के उत्तर में, इस भिक्षु को निम्नलिखित दर्शन हुआ: उन्होंने एक बहुत बड़ी नदी पर दो जहाजों को चलते हुए देखा; एक जहाज में परम पूजनीय आर्सेनियस थे, और परमेश्वर की आत्मा उनके जहाज को चला रही थी, और उसे बड़ी शांति में रख रही थी; दूसरे में परम पूजनीय मूसा थे; जबकि उसकी नाव ईश्वर के स्वर्गदूतों द्वारा चलाई जा रही थी, जो मूसा के मुँह में शहद डाल रहे थे।

दीर्घकाल तक तपस्या के कठोर कार्यों में संलग्न रहने के बाद, परम आदरणीय मूसा को ईश्वर के एक विशेष प्रकाशन द्वारा पुरोहित के पद के लिए योग्य माना गया; और जब उन्हें पुरोहित के प्रथम पद पर नियुक्त किया गया, तो उन्हें एक स्टिचैरियन पहनाया गया; उस समय बिशप ने उनसे कहा:

'देखो, अब्बा मूसा अब पूरी तरह से सफेद हो गए हैं।'

हालाँकि मूसा ने बिशप से कहा:

'महाधर्माध्यक्ष महोदय! एक पुरोहित को क्या बनाता है: बाहरी चीज़ या आंतरिक चीज़?' (अर्थात्, मानो वह पूछ रहे हों: 'क्या एक व्यक्ति को पुरोहित पद के योग्य बनाने वाला बाहरी वस्त्र है, या उसके आंतरिक सद्गुण हैं?')।

बिशप, यह परखने के लिए कि क्या मूसा वास्तव में अपने आत्मा में सद्गुणों से युक्त मसीह का सेवक था, पुरोहित वर्ग से कहा:

'जब मूसा पवित्र स्थल में प्रवेश करे, तो उसे बाहर निकाल दो; फिर उसका पीछा करो और सुनो कि वह क्या कहता है।'

पुरोहितों ने ठीक वैसा ही किया: उन्होंने मूसा को पवित्र स्थल से बाहर निकाल दिया, यह कहते हुए:

'यहाँ से निकल जा, अरे काले आदमी!'

वह, तथापि, बाहर जाकर एक अलग स्थान पर खड़ा हो गया, और स्वयं को कोसने लगा, यह कहते हुए:

'कुत्ते, उन्होंने तेरे साथ अच्छा व्यवहार किया है; काले इथियोपियाई, उन्होंने तेरे साथ अच्छा व्यवहार किया है; क्योंकि तू अयोग्य है, और तुझे इस पवित्र स्थान में प्रवेश करने की हिम्मत कैसे हुई? तू कोई इंसान नहीं है: तो फिर तू लोगों और परमेश्वर के सेवकों के पास आने की हिम्मत कैसे करता है?'

संत के ये वचन सुनकर, पुरोहितों ने बिशप को इसकी सूचना दी; जिस पर बिशप ने मूसा को वापस वेदी पर बुलाने और उसे एक पादरी के रूप में नियुक्त करने का आदेश दिया। फिर उसने उससे पूछा, कहकर:

'पिताजी, जब आपको निकाल दिए जाने के बाद वापस बुलाया गया, तब आप क्या सोच रहे थे?'

मोशे ने उत्तर दिया:

'मैंने अपनी तुलना एक कुत्ते से की, जिसे भगा देने पर वह भाग जाता है, लेकिन जब बुलाया जाता है, तो वह फौरन लौट आता है।'

और बिशप ने कहा:

'सत्य में, यह व्यक्ति दैवीय अनुग्रह का पात्र है; क्योंकि ईश्वर नम्र लोगों पर अनुग्रह करते हैं।'

इस पिता पर इससे पहले भी एक समान परीक्षा आई थी, जब वह अभी एक नवसिखुआ था; क्योंकि जब सभी भाई स्केटे में इकट्ठा हुए थे, तो पिताओं ने मूसा की नम्रता की परीक्षा लेने की इच्छा की और उसे तुच्छ समझना शुरू कर दिया, यह कहते हुए:

'यह इथियोपियाई हमारे बीच क्यों चल रहा है?'

लेकिन वह, यह सुनकर, चुप रहा।

जब भाई-बंधु बिखरने वाले थे, उन्होंने उससे पूछा, कहते हुए:

'फादर मूसा! क्या आप परेशान हैं या नहीं?'

उन्होंने भजन संहिता की एक आयत से उत्तर दिया: *'मैं हिल गया हूँ और बोल नहीं सकता'* (भजन संहिता 76:5) (अर्थात्, मैं मौन में अपमान सहता हूँ)।

पादरी नियुक्त होने के बाद, पूज्य मूसा ने पचहत्तर वर्ष की आयु प्राप्त कर, अगले पंद्रह वर्षों तक अपनी तपस्या संबंधी कष्टसाध्य परिश्रम जारी रखा; अपने चारों ओर पचहत्तर शिष्यों को इकट्ठा करने के बाद, उन्होंने निम्नलिखित प्रकार से शहीद की मृत्यु पाई[5753] :

एक दिन, अपने भाइयों के बीच रहते हुए, उन्होंने कहा:

'देखो, बर्बर लोग संन्यासियों का वध करने के लिए आश्रम में आ रहे हैं; उठो और यहाँ से भाग जाओ।'

लेकिन भाइयों ने उनसे कहा:

'तो फिर, पिताजी, आप यहाँ से भाग क्यों नहीं रहे?'

लेकिन उन्होंने उनसे कहा:

'क्योंकि मैं कई वर्षों से उस समय की प्रतीक्षा कर रहा हूँ जब मेरे प्रभु यीशु मसीह का वचन मुझ में पूरा होगा, जिन्होंने कहा था: *"जो कोई तलवार उठाएगा, वह तलवार से ही नाश होगा"* (मत्ती 26:52)।'

इस पर भाइयों ने उत्तर दिया:

'हम भी नहीं भागेंगे, बल्कि आपके साथ ही मरेंगे!'

लेकिन उन्होंने उनसे उत्तर दिया:

'मुझे इसकी आवश्यकता नहीं है; प्रत्येक व्यक्ति वही करे जो वह उचित समझे।'

तब भ्राता उस स्थान से भाग गए, और केवल सात भिक्षु पूज्यनीय के साथ रह गए। कुछ समय बाद, वृद्ध ने उनसे कहा:

'बारबेरियन पहले ही पास में आ चुके हैं!'

उल्लेखित सात संतों में से एक, डरकर, अपनी कोठरी से भाग गया और एक निश्चित स्थान पर छिप गया। जंगली लोगों ने कोठरी में प्रवेश करके संत मूसा और उनके साथ रहे छह भिक्षुओं को मार डाला। जो भिक्षु मौत से बच निकला था, वह अपनी छिपने की जगह में था, तभी उसने स्वर्ग खुलते देखा और स्वर्ग से सात तेजस्वी मुकुट उतरते हुए देखे।

जब बर्बर चले गए, तो यह भिक्षु सेल में लौटा और उसने मूसा और अन्य भिक्षुओं को मृत पाया; उनके शरीर खून के एक तालाब में पड़े थे। यह देखकर, भिक्षु रोने लगा; फिर बाकी भाई आए और, रोते हुए, मारे गए भिक्षुओं को दफना दिया।

इस प्रकार हमारे पूजनीय पिता मूरेन मोसेस का जीवन समाप्त हुआ, जो एक डाकू से भिक्षु बने थे और सच्ची पश्चाताप के द्वारा ईश्वर को प्रसन्न किया था, ताकि एक शहीद के रूप में, न केवल स्वर्ग का बगीचा बल्कि स्वयं स्वर्ग भी उनके लिए खुल गया, और उन्हें महिमा का मुकुट पहनाया गया। उनकी प्रार्थनाओं के द्वारा, परोपकारी प्रभु मसीह, हमारे ईश्वर, हमें भी पश्चाताप के सच्चे मार्ग पर मार्गदर्शन करें और हमें भी स्वर्ग का राज्य प्रदान करें; उन्हें, पिता और पवित्र आत्मा के साथ, सम्मान और महिमा अर्पित की जाती है, अब और हमेशा और युगों-युगों तक। आमीन।

[5753] संत मूसे मुरिन का लगभग 400 ईस्वी में निधन हो गया।

ट्रोपारयिन, स्वर 1:

हे मरुस्थलवासी, देह में दूत, और चमत्कार-कर्ता, हमारे ईश्वर-धारी पिता मूसा, आप प्रकट हुए हैं: उपवास, जागरण और प्रार्थना के द्वारा, आपने स्वर्गीय वर प्राप्त किए, विश्वास के साथ आने वालों के रोगों और आत्माओं को चंगा करते हुए। उसकी महिमा हो जिसने आपको शक्ति दी; उसकी महिमा हो जिसने आपको मुकुट पहनाया; उसकी महिमा हो जो आपके द्वारा सभी चंगाइयाँ करता है।

कॉन्टाकयिन, स्वर 4:

मुरिनों को मारकर और दुष्टात्माओं के मुख पर थूककर, आप अपने मन में उज्ज्वल सूर्य की भाँति प्रकाशित हुए, और अपनी जीवन-ज्योति तथा अपने उपदेश से हमारी आत्माओं को शिक्षित करते हुए।

हमारे पूजनीय पिता सैवा ऑफ़ क्रपिट्स, पस्कोव के चमत्कार-कर्ता की स्मृति

28 अगस्त को स्मरणोत्सव

हमारे पूजनीय पिता सावा का जन्म, पालन-पोषण और उन्होंने विदेशी भूमि में मठवासी संन्यास की शपथ ली। यह ज्ञात नहीं है कि वह किस देश से आए थे[5754] ; यह केवल इतना ज्ञात है कि उनका जन्म रूसी भूमि में नहीं हुआ था, बल्कि एक विदेशी के रूप में, वे प्सकोव शहर में, सर्वपवित्र परमेश्वर की माता के मठ में आए थे, जिसे स्न्यातोगोर्स्क[5755] के नाम से जाना जाता है। मठाधीश द्वारा आश्रय दिए जाने पर, उन्होंने बहादुरी से मठवासी तपस्या में स्वयं को समर्पित किया और अपने सदाचारी जीवन के माध्यम से सभी की प्रशंसा और सम्मान अर्जित किया। लेकिन, मनुष्यों से कोई महिमा न चाहकर, वह टोल्वा नदी पर, महान यूफ्रोसिनिस के मठ में चला गया[5756] । पूजनीय यूफ्रोसिनिस ने उसका स्वागत किया और उसे एक मठिया सेवक के कर्तव्यों का जिम्मा सौंपा। भिक्षु सावा ने इन कर्तव्यों का पालन लगन और विनम्रता से किया। थोड़ी ही देर बाद, महान यूफ्रोसिनिस का आशीर्वाद लेकर, वह रेगिस्तान में चले गए, जो यूफ्रोसिनिस के मठ से 15 पोप्रीश्चेस दूर था, क्रपिट्स नामक एक झील के पास, और वहाँ एक पूरी तरह से सुनसान जगह पर बस गए। वहाँ रहते हुए, आदरणीय सावा ने राक्षसों से कई प्रलोभनों को सहन किया। शीघ्र ही उन्होंने अपने तपस्या स्थल पर संत जॉन द थियोलोजियन को समर्पित एक चर्च का निर्माण किया, कोठरियों का प्रबंध किया और एक मठ की स्थापना की, जिसके बाद बड़ी संख्या में भिक्षु उनके चारों ओर इकट्ठा हो गए। उनके सदाचारी जीवन की ख्याति जल्द ही दूर-दूर तक फैल गई, और प्सकोव के राजकुमार, यारोस्लाव वासिलीविच,[5757] , ने उनके बारे में सुना। राजकुमार आदरणीय सावा को अत्यधिक सम्मान देते थे। उन्होंने मठ की स्थापना के लिए पर्याप्त दान दिया, भाइयों की देखभाल के लिए भूमि[5758] और झीलें उपहार में दीं, और आदरणीय सावा का आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए स्वयं अक्सर मठ आते थे। एक अवसर पर, वह अपनी पत्नी, राजकुमारी के साथ मठ आए। आदरणीय सावा ने उनका बड़े सम्मान से स्वागत किया, लेकिन राजकुमारी को मठ में प्रवेश करने की अनुमति नहीं दी; इसके बजाय, उन्होंने उसे मठ के द्वार के बाहर आशीर्वाद दिया और वहाँ ही उसके रोग को ठीक कर दिया, क्योंकि वह बीमार थी।

[5754] वेरज़्सिकी के कैलेंडर के अनुसार, पूजनीय सावा सर्बियाई मूल के थे।

[5755] माँ ईश्वर की स्नयातोropस्क मठ प्सकोव क्षेत्र की सबसे पुरानी मठों में से एक है (पहली बार 1265 में उल्लेखित); यह प्सकोव से चार वर्स्ट की दूरी पर, वेलीकाया नदी के तट पर, स्नयातनाया गोरा नामक क्षेत्र में स्थित था।

[5756] यह पस्कोव गवर्नरेट में टोल्वा नदी पर, पस्कोव से 30 वर्स्ट दूर स्थित स्पासो-वेलिको-पुस्टिन्स्की मठ था, जिसकी स्थापना लगभग 1450 में परम पूज्य यूफ्रोसिनिस ने की थी। परम पूज्य यूफ्रोसिनिस का स्मरणोत्सव 15 मई को मनाया जाता है। उनका स्मरणोत्सव इस तिथि के अंतर्गत भी सूचीबद्ध है।

[5757] यह प्रिंस यारोस्लाव वासिलीयेविच ओबोलेन्स्की थे, जिन्होंने पस्कॉव पर शासन किया था।

[5758] 1487 में, राजकुमार यारोस्लाव वासिलीविच ने मठ को भूमि प्रदान करने के लिए एक चार्टर जारी किया और सेन्ट सावा मठ तक दलदलों और कीचड़ के ऊपर 1,400 सैज़ेन लंबा एक पुल के निर्माण का आदेश दिया। इस पुल को आज भी यारोस्लाव का पुल के नाम से जाना जाता है।

आदरणीय सावा कई वर्षों तक जीवित रहे, और 30 अगस्त 1495 को[5759] उन्होंने प्रभु के पास गमन किया। उनकी अवशेषों की खोज 1554 में इसाया के मठ में हुई, जिसे उन्होंने स्थापित किया था, जहाँ पूज्य भिक्षु का एक दिव्यदर्शन हुआ था, और आज भी वे उन लोगों को अनेक रोगमुक्ति प्रदान करते हैं जो ईश्वर की महिमा के लिए विश्वास के साथ उनके पास आते हैं, उसी मसीह ईश्वर की महिमा हो, जिसकी महिमा अब और सदा और युगों-युगों तक हो।

संत अन्ना धर्मपरायण की स्मृति

28 अगस्त को स्मरण किया जाता है

संत और धर्मी अन्ना आशेर के कुल से थीं और फानूएल की पुत्री थीं। जैसा कि उनका नाम ही इंगित करता है (हिब्रू में अन्ना का अर्थ 'कृपालु' है), वह एक सदाचारी महिला थीं। अपने धार्मिक जीवन के कारण, अन्ना को भविष्यवाणी का वरदान प्राप्त था। वृद्धावस्था तक पहुँचने पर, सुसमाचार के अनुसार, 'वह *मंदिर से नहीं जाती थीं, बल्कि दिन-रात उपवास और प्रार्थना के साथ परमेश्वर की सेवा करती थीं* (लूका 2:37)।

संत अन्ना उन धर्मनिष्ठ यहूदी महिलाओं में से थीं जो मसीहा के आगमन की उत्सुकता से प्रतीक्षा कर रही थीं; यहीं पर यूसुफ और मरियम शिशु मसीह को निर्धारित अनुष्ठान कराने के लिए लाए थे। उस समय, ईश्वर-स्वीकारकर्ता सिमिओन ने शिशु यीशु को अपनी बाहों में उठा लिया और उनके विषय में अपनी अद्भुत भविष्यवाणी इस प्रकार कही:

'अब, हे प्रभु, आप अपने दास को अपनी बात के अनुसार शान्ति में जाने दें; क्योंकि मेरी आँखों ने आपका उद्धार देख लिया है, जो आपने सब राष्ट्रों के सामने तैयार किया है, जो अन्यजातियों के लिए प्रकट होने का प्रकाश और आपके प्रजाकूल इस्राएल की महिमा है (लूका 2:29-32)।

तब सिमिओन ने प्रभु की माता की ओर मुड़कर यह भविष्यवाणी उनसे कही:

– 'देख, यह बालक इस्राएल में बहुतों के गिरने और उठाने के लिए, और एक ऐसे चिन्ह के लिए जिसे विरोध में कहा जाएगा (और एक तलवार तेरे अपने प्राण में भी भेद जाएगी), ताकि बहुतों के मन की सोच प्रगट हो जाए (लूका 2:34-35)।

इन पवित्र और गंभीर क्षणों के दौरान, पवित्र और धर्मी भविष्यवक्ता अन्ना मंदिर में थीं। उस समय उनकी आयु अस्सी-चार वर्ष की थी। इस प्रकार, अपने जीवन के संध्याकाल में, उन्हें शिशु यीशु को देखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। अब वह शांति से मर सकती थीं।

मसीह के बारे में सिमिओन की भविष्यवाणी सुनकर, उन्होंने सिमिओन के साथ मिलकर प्रभु की महिमा की और यरूशलेम में मुक्ति की प्रतीक्षा कर रहे सभी लोगों से उसकी बात की[5760] ।

11 सितंबर

29 अगस्त (पुराने कैलेंडर के अनुसार)

प्रभु के भविष्यवक्ता, अग्रदूत और बपतिस्मादाता संत योहन की शिरोच्छेदन का पर्व

29 अगस्त को स्मरणोत्सव

यह प्रभु परमेश्वर और हमारे उद्धारकर्ता यीशु मसीह के अग्रदूत, संत योहन के लिए उचित था, कि वह अपनी मृत्यु से प्रभु के जन्म और मृत्यु दोनों से पहले हो; और, जैसे पृथ्वी पर उसने प्रभु के आगमन का प्रचार किया, यह कहते हुए: *'मेरे बाद एक ऐसा आ रहा है जो मुझसे शक्तिशाली है'* (मरकुस 1:7): उसी प्रकार उन्हें अधोलोक में पवित्र पूर्वजों

[5759] यहाँ प्रोलॉग में, यह मानना चाहिए कि एक मुद्रण संबंधी त्रुटि है, क्योंकि पूजनीय सावा के सभी विवरणों में, उनके निधन की तारीख 28 अगस्त दी गई है।

[5760] संत एनी का पर्व 3 फरवरी को, संत सिमियन द गॉड-रिसीवर के पर्व के साथ मनाया जाता है।

की आत्माओं के पास प्रभु के आगमन का प्रचार करना था; क्योंकि अग्रदूत यूहन्ना को वहाँ यह घोषित करना था कि मसीहा, जिसका संसार प्रतीक्षा कर रहा था, पहले ही आ चुके थे। और जैसे हमारे प्रभु यीशु मसीह ने मानव जाति के पापों के लिए दुख उठाया, वैसे ही उनके अग्रदूत ने भी हेरोद के अधर्म के कारण एक पीड़ादायक मृत्यु भोगी। यह इस प्रकार हुआ:

हेरोद, जिसे अंटिपास के नाम से जाना जाता है, जो बड़े हेरोद का पुत्र था, जिसने बेथलहम के शिशुओं का कत्ल किया था – एक दुष्ट मूल से निकला दुष्ट अंकुर, जिसने गलील पर शासन किया – मूलतः अरब के राजा अरेतास की बेटी से विवाहित था; वह उसके साथ काफी समय तक रहा। लेकिन बाद में, अपने भाई फिलिप की पत्नी हेरोदियास की सुंदरता से मोहित होकर, वह उसके करीब आ गया, क्योंकि उसने उसकी वासना के आगे आत्मसमर्पण कर दिया; इस वेश्या के आग्रह पर, उसने अपनी पहली वैध पत्नी को घर से निकाल दिया और कानून के विपरीत अपने भाई की पत्नी से विवाह कर लिया; क्योंकि भले ही उसका भाई मर भी गया होता, तब भी वह उसकी पत्नी को नहीं ले सकता था, क्योंकि उस पत्नी से जन्मी उसके भाई की बेटी तब भी जीवित होती; हालाँकि, कानून यह निर्धारित करता था कि कोई व्यक्ति अपने मृत भाई की पत्नी (विधवा) को तभी ले सकता है जब मृत भाई अपने पीछे कोई संतान न छोड़ गया हो[5761] । विश्वसनीय रूप से यह बताया जाता है कि हेरोद ने अपने भाई फिलिप की पत्नी को तब ले लिया जब वह जीवित था; इस प्रकार उसने एक शिकारी, एक व्यभिचारी और एक अश्लीलता के आचरणकर्ता के रूप में एक बड़ा अन्याय किया।

ईश्वर के कानून के उत्साही रक्षक, मानव पापों के उद्घाटक और पश्चाताप के उपदेशक - सेंट जॉन द बैपटिस्ट ने, हेरोद द्वारा की गई ऐसी अराजकता को देखकर चुप्पी नहीं साधी, बल्कि सभी के सामने हेरोद को एक व्यभिचारी और चोर के रूप में निंदा किया जिसने अपने भाई की पत्नी को ले लिया था, और उससे कहा:

'तुम्हें अपने भाई फिलिप की पत्नी नहीं रखनी चाहिए।'

हालाँकि, हेरोद इस फटकार को सहन न कर सका, और उसने यूहन्ना को कैद करके बेड़ियाँ डालने का आदेश दिया; हेरोद की पत्नी हेरोदियास, संत पर विशेष रूप से क्रोधित थी और उसकी मृत्यु की बहुत इच्छा रखती थी, लेकिन वह उसे मार नहीं सकी, क्योंकि हेरोद स्वयं अपने कैदी को अपनी पत्नी की हत्या की मंशा से बचाता था। हेरोद यूहन्ना को एक धर्मी और पवित्र मनुष्य मानता था; पहले वह आनंदपूर्वक उसकी बातें सुनता था और उसके वचनों पर ध्यान देकर उसने बहुत भलाई की थी; इसी कारण हेरोद यूहन्ना को मारने से डरता था। हालाँकि, वह ईश्वर से ज़्यादा लोगों से डरता था, जैसा कि सुसमाचार लेखक मत्ती कहते हैं: *'वह उसे मार डालना चाहता था, पर वह लोगों से डरता था, क्योंकि वे उसे एक भविष्यवक्ता मानते थे'* (मत्ती 14:5); हेरोद को डर था कि लोग उसके खिलाफ उठ खड़े होंगे और विद्रोह भड़काएंगे; इसी कारण, वह सार्वजनिक रूप से उस भविष्यवक्ता और प्रभु के बपतिस्मा देने वाले को, जिसे सभी प्यार और सम्मान देते थे, मारने की हिम्मत नहीं कर सका, बल्कि उसे केवल जेल में सड़ने के लिए छोड़ दिया, ताकि वह अपने आरोप लगाने वाले की अथक आवाज़ को चुप करा सके।

संत यूहन्ना लंबे समय तक जेल में रहे; उनके शिष्य उनके पास इकट्ठा होते थे; यूहन्ना अक्सर उन्हें ईश्वर के विधान के अनुसार एक सदाचारी जीवन जीने की शिक्षा देते थे, और मसीहा के आगमन का प्रचार करते थे, जिसके पास उन्होंने उन्हें भेजा, जैसा कि सुसमाचार में लिखा है: *'जब यूहन्ना ने जेल में मसीह के कामों के बारे में सुना, तो उसने अपने दो चेलों को यह पूछने के लिए भेजा, "क्या तू ही वह है जो आना है, या हमें किसी और की प्रतीक्षा करनी चाहिए?"'* (मत्ती

[5761] यहूदियों में, अपने पूर्वजों से विरासत में मिली, लेविरेट विवाह की प्राचीन प्रथा, व्यवस्था की पुस्तक (Deuteronomy) में दिए गए विवरण के अनुसार, इस प्रकार थी: *'यदि भाई एक साथ रहते हैं और उनमें से एक बिना पुत्र के मर जाता है, तो मृतक की पत्नी किसी अजनबी से विवाह नहीं करेगी; इसके बजाय, उसका देवर उसके पास जाएगा और उसे अपनी पत्नी बना लेगा, और उसके साथ रहेगा, – और जो पहला पुत्र वह जन्मती है, उसका नाम उसके मृतक भाई के नाम पर रखा जाएगा, ताकि उसका नाम इस्राएल में मिट न जाए। लेकिन यदि वह अपनी भाभी को लेने के लिए अनिच्छुक है, तो उसकी भाभी द्वार पर, बुजुर्गों के पास जाएगी, और कहेगी: 'मेरा देवर इस्राएल में अपने भाई के नाम को बनाए रखने से इनकार कर रहा है; वह मुझसे विवाह करने के लिए अनिच्छुक है'; तब उसके नगर के बुजुर्ग उसे बुलाकर समझाएंगे; और यदि वह अडिग रहकर कहे, 'मैं उसे नहीं लेना चाहता', तो उसकी भाभी बुजुर्गों की उपस्थिति में उसके पास जाकर उसके पैर से एक जूता उतार देगी, और उसके मुँह पर थूककर कहेगी: 'यह उस मनुष्य के साथ किया जाता है जो अपने भाई [इज़राइल में] के लिए घर नहीं बनाता'; और इज़राइल में वे उसे इस नाम से पुकारेंगे: 'उसका घर जिसके जूते उतारे गए'* (व्यवस्थाविवरण 25:5-10)। लेविरेट विवाह की प्रथा, जो कुलपिता याकूब के समय से पहले यहूदियों में उत्पन्न हुई थी, मोआबियों में भी मौजूद थी; यह अन्य पूर्वी लोगों, जैसे कि फारिसियों और अन्य लोगों को भी ज्ञात था। इसकी उत्पत्ति को विभिन्न तरीकों से समझाया गया है; लेकिन सबसे संभावित व्याख्या यह है कि यह पूर्वी लोगों की उस तीव्र इच्छा में निहित है कि वे अपने वंश और अपने नाम को अपनी संतान के माध्यम से अमर बनाने के लिए बच्चे पैदा करें।

11:2–3)। उसने उन्हें यह पूछने के लिए इसलिए नहीं भेजा कि वह स्वयं नहीं जानता था; क्योंकि वह उस व्यक्ति को कैसे नहीं जान सकता था जिसे उसने स्वयं बपतिस्मा दिया था, जिस पर उसने स्वर्ग से पवित्र आत्मा को उतरते हुए देखा था, जिसके विषय में उसने पिता की यह गवाही सुनी थी, और जिसे अंत में उसने स्वयं यह कहते हुए इंगित किया था:

'देखो, परमेश्वर का मेम्ना!' (यूहन्ना 1:36)।

यूहन्ना ने अपने चेलों को प्रभु से पूछने के लिए भेजा ताकि उसके चेले अपनी आँखों से वे महिमामय चमत्कार देख सकें जो प्रभु कर रहे थे, और ताकि वे अंततः इस बात से आश्वस्त हो सकें कि वह (यीशु मसीह) मानव जाति को बचाने आए थे।

कुछ समय बाद वह दिन आया जिस दिन हेरोद अपना जन्मदिन मनाया करता था। गलील के सभी राजकुमारों, राज्यपालों, बुज़ुर्गों और टेट्रार्कों[5762] को इकट्ठा करने के बाद, हेरोद ने उनके लिए एक बड़ा भोज दिया (मरकुस 6:21)। इस भोज के दौरान, हेरोदियास की बेटी ने नृत्य किया, और उसका नृत्य हेरोद और उसके साथ भोजन कर रहे लोगों को बहुत भाया; अपनी क्रूर माँ के उकसावे पर, उसने हेरोद से संत यूहन्ना बपतिस्मादाता का सिर माँगा और उसे वही मिला जिसकी उसने मांग की थी, क्योंकि हेरोद ने उससे वादा किया था कि वह उसे जो कुछ भी वह मांगेगी, वह देगा, यहाँ तक कि अपना आधा राज्य भी। उस बेचारी ने न तो अपना वचन तोड़ना चाहा, और न ही वह नर्तकी की नीच माँ को दुखी करना चाहता था; लेकिन वह उस डर को भूल गया जो अब तक उसे यूहन्ना को मारने से रोक रहा था, और वह उसका पवित्र जीवन भी भूल गया; और, जैसे शराब के नशे में धुत हो, वह निर्दोष रक्त बहाने के इरादे से भर उठा। और उसी क्षण उसने एक जल्लाद को कालकोठरी में भेजा, यह आज्ञा देते हुए कि वह यूहन्ना का सिर कलम कर दे और उसका सिर एक थाल में लाए।

इस प्रकार मसीह के अग्रदूत को, हेरोद और हेरोदियास के अवैध संबंध की निंदा करने के कारण, उसी रात देर से जेल में सिर से अलग कर दिया गया; क्योंकि उस घृणित भोज को पवित्र सुसमाचार लेखक मरकुस द्वारा एक भोज कहा जाता है: *'उसने अपने कुलीनों के लिए एक भोज दिया'* (सुसमाचार लेखक कहते हैं) (मरकुस 6:21); यह भोज आधी रात से भी बहुत देर तक चलता रहा, और जब सभी शराब के नशे में पूरी तरह से चूर हो गए थे और उपर्युक्त निर्लज्ज कन्या के नृत्य से पर्याप्त समय तक मनोरंजन हो चुका था, तभी यह अन्यायपूर्ण हत्या की गई। और संत योहन का सिर दावत के बीच एक थाल पर लाया गया, जिससे अभी भी खून टपक रहा था; और (जैसा कि कुछ लोग बताते हैं) सिर को कटने के बाद भी, कटने के बाद भी, हेरोद से वही फटकार भरे शब्द बोले:

'तुम्हें अपनी भाई की पत्नी फिलिप्पी से विवाह नहीं करना चाहिए था।'

अहो, उस भोज में लेटे और खड़े सभी लोगों पर कितनी बड़ी दहशत छा गई जब उन्होंने एक मानव सिर देखा, जो एक थाली पर भोजन के रूप में परोसा गया था, जिससे खून टपक रहा था, और जो अपने होंठ हिलाकर शब्द बोल रहा था; और नर्तकी ने इस सिर को अपने साहसी हाथों से उठाया और अपनी माँ के पास ले गई। हेरोदियास ने उसे लेकर, एक सुई से उस जीभ को भेद दिया जिसने उसकी दुष्टता की निंदा की थी; पर्याप्त समय तक उसका मज़ाक उड़ाने के बाद, हेरोदियास ने यूहन्ना के सिर को उसके शरीर के साथ दफ़नाने की अनुमति देने से इनकार कर दिया, क्योंकि उसे डर था कि यदि यूहन्ना का सिर उसके शरीर से फिर से जुड़ गया तो वह फिर से जीवित हो सकता है, और तब वह फिर से उसकी और हेरोदेस की निंदा करना शुरू कर देगा। उसी रात, पवित्र अग्रदूत के शिष्यों ने उसके शरीर को कालकोठरी से निकालकर सेबास्टे में दफना दिया; जहाँ तक बपतिस्मादाता के सिर का सवाल है, हेरोदियास ने उसे अपने ही महल में, किसी अपमानजनक और गुप्त स्थान पर, जमीन में दफना दिया। जहाँ तक बपतिस्मा देने वाले का सिर वहाँ से कैसे लिया गया, इस बात का वर्णन 24 फरवरी के अंतर्गत किया गया है, जब इस सम्मानित सिर की खोज का उत्सव मनाया जाता है।

प्रभु के पवित्र और महिमामय अग्रदूत और बपतिस्मा देने वाले, यूहन्ना की शहादत के बाद, शापित हेरोदेस ने एक और अत्याचार किया, जो उससे कम दुखद नहीं था; क्योंकि उसने हमारे लिए हमारे प्रभु यीशु मसीह की स्वैच्छिक पीड़ा के दौरान उनका उपहास किया, जैसा कि पवित्र सुसमाचार लेखक लूका वर्णन करते हैं: *'हेरोद, अपने सिपाहियों सहित, उसे अपमानित करने और उसका उपहास करने के बाद, उसे एक सुंदर वस्त्र पहनाकर पिलातुस के पास वापस भेज दिया'* (लूका 23:11)।

[5762] क्षेत्रों के शासक।

हालाँकि, भविष्यवक्ताओं के इस हत्यारे और मसीह के अपमानकर्ता पर ईश्वर का प्रतिशोध देर से नहीं आया; क्योंकि, एक ओर, यूहन्ना का लहू हेरोदेस के विरुद्ध ईश्वर से पुकार रहा था, ठीक वैसे ही जैसे एक बार हबलि का लहू काइन के विरुद्ध पुकार रहा था (उत्पत्ति 4:1–16); दूसरी ओर, हेरोद के अन्य अधर्मों (विशेषकर हमारे प्रभु यीशु मसीह के विरुद्ध उसकी ईश्वरनिंदा) ने उस पर ईश्वर का धर्मी दंड ला दिया; और वास्तव में, कुछ ही समय बाद, हेरोद ने हेरोदियास और नर्तकी के साथ अपना राज्य और अपना जीवन खो दिया। क्योंकि अरब के राजा अरेफस, अपनी बेटी पर हुए अपमान और बेइज्ज़ती का बदला लेने के लिए, अपनी सेना को इकट्ठा करके हेरोद के खिलाफ़ चल पड़ा; उसी तरह, हेरोद भी अपनी सेना को इकट्ठा करके अरेफस के खिलाफ़ युद्ध करने निकल पड़ा। दोनों पक्षों की सेनाओं के बीच एक भयंकर युद्ध छिड़ गया; अरेफ की सेना ने हेरोद की सेना को हरा दिया; हेरोद को करारी हार का सामना करना पड़ा; उसके लगभग सभी सैनिक मारे गए, और वह स्वयं बड़ी मुश्किल से बच निकला। इसके बाद, रोमन सीज़र ने हेरोद से उसकी शक्ति और सारी संपत्ति छीन ली और उसे व्यभिचारिणी और उसकी बेटी के साथ निर्वासन में भेज दिया, शुरुआत में गॉल के एक शहर लायन में; फिर उसे वहां से स्पेन के एक शहर हलिर्डा में स्थानांतरित कर दिया गया, और वहीं उसने कठिनाई और दुख में अपना जीवन समाप्त किया; लेकिन अपनी मृत्यु से पहले उसने अपनी बेटी, उस नर्तकी की मृत्यु देखी, जो इस प्रकार मारी गई:

एक सर्दियों के दिन, उसे किसी ज़रूरत के लिए सिकोरिस नामक नदी पार करनी थी; जैसे ही वह चल रही थी, उसके नीचे की बर्फ़ टूट गई और वह पानी में गिर पड़ी, और गर्दन तक डूब गई। ईश्वर की न्यायपूर्ण व्यवस्था से, बर्फ़ ने उसकी गर्दन को कुचल दिया, जिससे उसका शरीर पानी में लटक गया और उसका सिर बर्फ़ के ऊपर रह गया; और जैसे वह कभी अपने पैरों पर जमीन पर नाची थी, वैसे ही अब उसके पैर जमीन तक नहीं पहुँच पा रहे थे, बल्कि वह पानी में बस असहाय हरकतें कर रही थी, मानो नाच रही हो, जबकि नदी का तेज बहाव उसे इधर-उधर उछाल रहा था; फिर भी कोई उसकी मदद के लिए नहीं आ सका; और वह बेचारी औरत उसी अवस्था में पानी में लटकी रही, जब तक कि तेज बर्फ ने उसकी गर्दन नहीं काट दी। उसका घिनौना शव, बर्फ के नीचे पानी के बहाव से बह गया और कभी नहीं मिला, जबकि उसका सिर हेरोद और हेरोदियास के पास ले जाया गया, ठीक वैसे ही जैसे कभी अग्रदूत का सिर लाया गया था, बस फर्क इतना था कि वह तलवार से नहीं बल्कि बर्फ से कटा था। इस प्रकार ईश्वर के न्याय ने उस नर्तकी को दंड दिया, जो सम्माननीय संत योहन के सिर कलम करने की दोषी थी।

इसके बाद, अधर्मी हत्यारा हेरोद और घृणित हेरोदियास 'एक बड़े कम्पन के साथ' नष्ट हो गए; क्योंकि कहा जाता है कि उन्हें पृथ्वी ने जीवित ही निगल लिया था।

जहाँ तक संत योहन का प्रश्न है, अपने जीवनकाल में और मृत्यु के बाद भी, वह प्रभु मसीह के अग्रदूत बने रहे। क्योंकि, प्रभु के नरक में अवतरण से पहले, उन्होंने नरक में उन लोगों को परमेश्वर के मसीह का सुसमाचार सुनाया जो देह में प्रकट हुए थे, और पवित्र पूर्वजों को आनंद पहुँचाया; मसीह के पुनरुत्थान के बाद, नरक के विनाश के पश्चात्, उन्हें नरक से बाहर निकाल लिया गया, और स्वर्ग के राज्य में उन्हें कई मुकुट प्रदान किए गए—एक कुंवारी के रूप में, एक तपस्वी के रूप में, पश्चाताप के शिक्षक और प्रचारक के रूप में, एक भविष्यवक्ता के रूप में, अग्रदूत और बपतिस्मा देने वाले के रूप में, और एक शहीद के रूप में। उनकी प्रार्थनाओं के द्वारा, मसीह, हमारे दयालु प्रभु और परमेश्वर, जिनके साथ पिता और पवित्र आत्मा के साथ युगानुयुग महिमा की जाती है, हमें भी सच्चे पश्चाताप के मार्ग पर चलाएँ और हमें स्वर्ग का राज्य प्रदान करें। आमीन।

ट्रोपारियन, स्वर 2:

धर्मी की स्तुति सहित स्मृति अग्रदूत, प्रभु की गवाही आप पर है, क्योंकि आपने स्वयं को सचमुच भविष्यवक्ताओं में सबसे सम्मानित साबित किया है, चूंकि आपको उस घोषित किए गए को जल में बपतिस्मा देने के लिए योग्य ठहराया गया था। इसलिए, सत्य के लिए आनन्दपूर्वक दुख सहने के बाद, आपने अधोलोक में उन लोगों को सुसमाचार का प्रचार किया, जिन्होंने देह में प्रकट होकर संसार का पाप दूर किया और हम पर महान दया दिखाई।

कॉन्टाकयिन, स्वर 5:

पूर्ववर्ती का गौरवपूर्ण सरि कलम कयिा जाना एक दविय् दर्शन था: क्योंकि इसने अधोलोक में रहने वालों के लिए उद्धारकर्ता के आगमन की घोषणा की। हेरोदयिास रोए, क्योंकि उसने एक अवैध हत्या की चाह की: क्योंकि उसने न तो परमेश्वर के वधिान से प्रेम कयिा और न ही अनंत जीवन से, बल्कि केवल एक झूठे और क्षणकि अस्तत्वि से।

प्रभु के अग्रदूत सेंट जॉन की शरिोच्छेद के दनि के लिए सेंट जॉन क्रसिोमॉम का प्रवचन[5763]।

29 अगस्त को स्मरणोत्सव

एक बार फरि हेरोदयिास उन्मत्त है; एक बार फरि वह हतबुद्धि है; एक बार फरि वह नाचती है; एक बार फरि वह कानून की अवहेलना करते हुए हेरोद से यूहन्ना बपतस्मिादाता का सरि कलम करवाने की मांग करती है। एक बार फरि यज़िेबेल[5764] नाबोथयिों के दाख के बग़ीचे[5765] पर कब्ज़ा करने की साज़शि रचती है और पवत्रि एलयिाह को पहाड़ों में भगाने की साज़शि करती है। और क्या आप सभी[5766] जन्हिोंने सुसमाचार की आवाज़ सुनी है, मेरे साथ योहन की नर्भिीकता, हेरोद की मूर्खता, और इन अधर्मी महलिाओं के पशु-सदृश उन्माद पर आश्चर्य नहीं करेंगे? क्योंकि हमने क्या सुना है? *'हेरोदेस ने यूहन्ना को बुलवाकर पकड़वाया और उसे जेल में डाल दयिा'* (मरकुस 6:17)। कसि कारण *से? 'उसकी भ्रातृवधू हेरोदयिास के* कारण'।

कौन हेरोद के उस पागलपन की पर्याप्त नदिा कर सकता है, जो महलिाओं के प्रति उसके अत्यधकि चापलूसी के कारण प्रकट हुआ? या कौन दुष्ट महलिाओं की अभूतपूर्व नर्लिज्जता का वर्णन कर सकता है? मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि स्वर्ग के नीचे कोई भी पशु है जो एक दुष्ट पत्नी के समान हो सके (मैं अब केवल दुष्ट स्त्री के बारे में ही बात कर रहा हूँ, न कि अच्छी और पवत्रि स्त्री के बारे में, क्योंकि मैं जानता हूँ कि कई स्त्रयिाँ हैं जो वनिम्र और अच्छे चरत्रि की हैं, जनिके सदाचारी जीवन का उल्लेख बाद में कयिा जाएगा, सदाचारयिों के लाभ और उदाहरण के लिए, ताकि हम उस चीज़ से प्रेम करें जो अच्छी और सम्मानजनक है)। दुनयिा में कोई भी जानवर एक दुष्ट महलिा के समान नहीं है। सरीसृपों में एक सांप से अधकि खतरनाक क्या हो सकता है? फरि भी, एक शेर या साँप में (दुष्ट) महलिा जतिना द्वेष नहीं होता, जैसा कि सबसे बुद्धमिान, सुलैमान, मेरे शब्दों की पुष्टि करते हुए कहते हैं: *'झगड़ालू और क्रोधति पत्नी के साथ रहने से तो रेगस्तिान में रहना बेहतर है'* (नीतविचन 21:19; तुलना करें सरिाख 25:18)। कोई यह न सोचे कि भवष्यिवक्ता ने ये शब्द (महलिाओं का) उपहास उड़ाने के लिए कहे थे: तथ्य स्वयं बल्कि्कुल यही बात साबति करते हैं: खाई में शेर दानाएल से लज्जति हुए; जबकि धर्मी नाबोत् को यजेबेल ने मार डाला। व्हेल ने योना को अपने पेट में सुरक्षति रखा; लेकनि दलीला ने, शमिशोन के बाल काटकर और बाँधकर, उसे परदेसयिों के हाथों में सौंप दयिा। जंगल में साँप, वषिैले साँप और अजगर यूहन्ना से डरते थे; लेकनि हेरोदयिास ने एक भोज में उसका सरि काट दयिा। गद्दिों ने पहाड़ पर एलयिाह को खलिाया;

[5763] इस प्रवचन में, संत जॉन क्राइसोस्टोम तथाकथति 'दुष्ट महलिाओं' की कड़ी नदिा करते हैं, अर्थात् उन महलिाओं की, जन्हिोंने अपने जीवन में दुष्टता और अपराध की चरम सीमा तक पहुँच लयिा है। संत जॉन क्राइसोस्टोम वशिेष रूप से उन महलिाओं के वरिुद्ध तीव्र रूप से बोलते हैं जनिकी गलती से धर्मी और धर्मनष्ठि लोगों को पीड़ा सहनी पड़ी है। हालांकि, जैसा कि जॉन क्रसिोस्टोम स्वयं (इस धर्मोपदेश में) उल्लेख करते हैं, 'दुष्ट', भ्रष्ट महलिाओं के अलावा, सदाचारी महलिाएं भी हैं; जनिकी केवल प्रशंसा की जा सकती है (जो वे धर्मोपदेश के अंत में करते हैं)। इस प्रकार, संत जॉन क्रसिोस्टोम सामान्य रूप से महलिा स्वभाव के खलिाफ नहीं बोलते हैं, बल्कि जीवन में उस स्वभाव के दुष्ट प्रकट रूपों के खलिाफ बोलते हैं।

[5764] यज़ेबेल – इज़राइल के राजा अहब की पत्नी, जो अत्यधकि दुष्टता और व्यभचिारपूर्ण जीवन के लिए जानी जाती थी। उसके प्रभाव में अंधाधुंध समर्पति होकर, अहब ने अपने सभी पूर्वजों से भी अधकि दुष्टता दखिाई और सबसे शर्मनाक मूर्तपिूजा में लप्ति हो गया। उसने सामरयिा में बाअल का एक मंदरि बनवाया, पवत्रि वन लगाए, और यजेबेल को तरि और सीदोन के देवताओं के लिए वेदयिाँ बनाने की अनुमति दी (3 राजा 16:31-33)। यजेबेल चार सौ झूठे नबयिों का भरण-पोषण करती थी, जन्हिें उसकी मेज से भोजन मलिता था (3 राजा 18:19)।

[5765] नाबोथ – यज़्रेएल का एक ईश्वर-भयभीत इस्राएली; उसने अपना दाख का बगीचा, जो राजा के आँगन से सटा हुआ था, अहब को बेचने से इनकार कर दयिा; जसिके लिए, यजेबेल के उकसावे पर, नबोत् को सार्वजनकि रूप से एक ईश्वर-नन्दिक और देशद्रोही के रूप में बदनाम कयिा गया और पत्थर मारकर मार डाला गया (अधकि जानकारी के लिए, 3 राजा 21:1-29 देखें)।

[5766] उपदेशक अपने श्रोताओं को संबोधति करते हैं (यह उपदेश मंदरि में दयिा गया था)।

लेकिन जेजेबेले ने, जब उसने बारिश लाकर उसकी एक कृपा की, तो उसे मारने की कोशिश की। यह वही है जो उसने उससे कहा:

'यदि तुम ही इलियाह हो, तो मैं जेजेबल हूँ; देवता मुझसे जो चाहें करें, और मेरी सज़ा बढ़ा दें, यदि कल इसी समय तक तुम्हारी आत्मा मार डाली न गई' (देखें 3 राजा 19:2)।

और एलियाह डर गया, और अपनी जान के डर से भागा, और जंगल में जाकर छिप गया, और चालीस दिन तक चलता रहा, और अपने लिए मृत्यु माँगने लगा, यह कहते हुए:

'हे यहोवा परमेश्वर! मुझसे इस दुख को दूर कर: मेरी आत्मा को मुझसे ले ले, क्योंकि मैं अपने पूर्वजों से बेहतर नहीं हूँ!'

हाय! नबी एलिया एक महिला से डर गए; जिन्होंने अपने भीतर अविश्वासियों पर ब्रह्मांड की वर्षा को धारण किया, जिन्होंने स्वर्ग से आग उतारी, जिन्होंने प्रार्थना के द्वारा मृतकों को जीवित किया—वे एक महिला से डर गए।

हाँ, वास्तव में, वह डर गया था। क्योंकि एक दुष्ट महिला की दुर्भावना की तुलना किसी भी दुर्भावना से नहीं की जा सकती। मेरे शब्दों की पुष्टि ज्ञान की पुस्तक से होती है, जो कहती है: *'एक साँप के सिर से अधिक विषैला कोई सिर नहीं है'* (सिर. 25:17), और एक महिला की दुर्भावना से बड़ी कोई दुर्भावना नहीं है!

हे शैतानी बुराई और सबसे तीखे हथियार!

प्राचीन काल से स्वर्ग में, शैतान ने एक स्त्री के माध्यम से आदम को घायल किया; एक स्त्री के माध्यम से, उसने सबसे नम्र पुरुष, दाऊद को, उरीया की विश्वासघाती हत्या तक ले गया; एक महिला के माध्यम से उसने सबसे बुद्धिमान सुलैमान को पाप में डाल दिया; एक महिला के माध्यम से उसने सबसे पराक्रमी शिमशोन को अंधा कर दिया; एक महिला की गलती से उसने याजक एलियाह के बेटों को मार डाला; एक महिला की गलती से उसने सबसे कुलीन यूसुफ को कालकोठरी में बेड़ियों में जकड़ दिया; एक महिला की गलती से उसने जॉन—जो संपूर्ण विश्व का दीपक था—को सिर कलम करवाने के लिए सौंप दिया।

वास्तव में, मैं पुरुषों (सामान्यतः) की बात क्यों कर रहा हूँ? एक महिला की गलती से, शैतान ने संतों को भी सदाचार से भटका दिया है; वह (शैतान) हर किसी को एक महिला के माध्यम से नष्ट करता है, हर किसी को मारता है, हर किसी को कलंकित करता है, हर किसी को अपमानित करता है; क्योंकि एक निर्लज्ज महिला किसी को नहीं बख्शती, किसी पुरोहित का सम्मान नहीं करती, एक लेवी से शर्म नहीं करती, और एक भविष्यवक्ता का कोई सम्मान नहीं करती। हे दुष्ट, सभी बुराइयों में सबसे बुरी, दुष्ट स्त्री! यदि वह गरीब है, तो वह द्वेष में अमीर हो जाती है; लेकिन यदि उसके पास चालाकी में मदद करने वाली संपत्ति है, तो यह दोगुनी विनाशकारी है। एक महिला एक अधीर जानवर है, एक ﻉﻼﺝ पीड़ा, एक अदम्य जानवर है। मैंने जंगली साँपों को, शेरों, एक-सींग वाले जानवरों और भालुओं को वश में होते देखा है; पर एक दुष्ट स्त्री, जब डाँटी जाती है, तो क्रोधित हो जाती है, और जब कोमलता से समझाई जाती है, तो अहंकारी हो जाती है। यदि उसका पति कोई पदवीधारी है, तो वह उसे दिन-रात अपनी बातों से भ्रष्ट कर देती है, उसे दुष्टता के लिए उकसाती है, ठीक वैसे ही जैसे हेरोदिया ने हेरोद को उकसाया था; लेकिन यदि उसका पति गरीब है, तो वह उसे क्रोध और झगड़े के लिए उकसाती है। यदि वह विधवा है, तो वह स्वयं सभी का अपमान करती है; क्योंकि वह प्रभु के भय से अपनी जीभ को नहीं रोकती, आने वाले न्याय पर ध्यान नहीं देती, परमेश्वर में अपना विश्वास नहीं रखती, और प्रेम के नियमों का पालन नहीं करती। एक दुष्ट स्त्री के लिए अपने पति को मार डालना कुछ भी नहीं है। क्योंकि धर्मी अय्यूब की पत्नी ने उसे परमेश्वर के विरुद्ध निन्दा करके मृत्यु को आत्मसमर्पण करने की सलाह दी, यह कहते हुए:

'प्रभु से एक बात बोल, और मर जा' (अय्यूब 2:9)।

अरे दुष्ट स्वभाव! अरे अधर्मी इरादे! जब की पत्नी ने कोई दया नहीं दिखाई जब उसने अपने पति को एक गंभीर बीमारी से पीड़ित, यंत्रणा में तड़पते देखा, जैसे कोयला चिंगारियाँ बिखेरता है—उसका पूरा शरीर घावों से ढका हुआ और कीड़ों द्वारा खाया जा रहा था; वह दया नहीं दिखा पाई, जब उसने उसे विकृत, अत्यधिक पीड़ा में और भयानक कष्ट में तड़पते हुए देखा, जो अपने दर्द से खुले मुँह से तेज़ी से साँस ले रहा था। उसका हृदय तब भी नहीं पसीजा, जब उसने उसे देखा जो कभी शाही बैंगनी वस्त्र पहनता था, अब गंदगी के बिस्तर पर पड़ा था, उसका शरीर नग्न था। उसे अपने अतीत के कोमल वैवाहिक बंधन की याद नहीं आई, और न ही उसे याद आया कि उसने अतीत में उससे कितनी महिमा और भलाई प्राप्त की थी। लेकिन वह क्या कहती है:

'प्रभु से एक शब्द बोलो, और मर जाओ।'

हे नारी की दया! हे दुखों की दवा! हे वैवाहिक प्रेम का प्रतिशोध! क्या उसने (यानी उसके पति ने) बीमारी में कभी तुमसे ऐसे शब्द कहे थे? क्या वह अपनी प्रार्थनाओं और पुण्य कर्मों से ही तुम्हें तुम्हारी बीमारियों से ठीक नहीं करता था? क्या यह अस्थायी दंड उसके लिए पर्याप्त नहीं था, कि तुम प्रभु के विरुद्ध निन्दा करके उसके अनंतकालिक कष्ट की याचना करो? या क्या तुम नहीं जानतीं कि लोगों के हर प्रकार के पाप और निन्दा क्षमा किए जाएँगे, परन्तु पवित्र आत्मा के विरुद्ध निन्दा क्षमा न तो इस युग में और न ही आने वाले युग में की जाएगी? (मत्ती 12:31)

क्या तुम उसकी चालाकी में इस (स्त्री) जैसी कोई दूसरी देखना चाहती हो? दलीला को देखो, जिसने बलशाली शमिशोन को बाँधकर परदेशियों के हवाले कर दिया (न्यायियों 16:6); उसने अपने पति को परदेशियों के हवाले कर दिया—उस पुरुष को जिसे वह प्रेम करती थी, जिसे वह लाड़-प्यार करती थी, और जिससे उसने कहा था कि वह उससे स्वयं से भी अधिक प्रेम करती है। जिससे वह कल प्यार करती थी, उसे अब वह बहकाती है; जिसे कल उसने चूमकर गर्म किया था, उसे अब, बहकाते हुए, मृत्यु के हवाले कर देती है। क्या वह सुंदर नहीं था? उससे अधिक सुंदर और कौन था, जब वह अपने सिर पर सात चोटी बाँधकर (न्यायियों 16:13-14) सातगुनी दैदीप्यमान कृपा का प्रतीक बना था? क्या वह पराक्रमी नहीं था? लेकिन उससे अधिक पराक्रमी और कौन था, जब उसने अकेले ही रास्ते में एक भयानक शेर को परास्त किया और केवल एक गधे की जबड़े की हड्डी से एक हजार परदेसियों को मार गिराया? लेकिन शायद वह सदाचारी नहीं था? नहीं, वह इतना सदाचारी था कि, एक बार जब उसे प्यास लगी, तो उसने पानी के लिए प्रार्थना की (कि ईश्वर उसे पानी भेजे), और उसके हाथों में पकड़े हुए मृत गधे की जबड़े की हड्डी से पानी फूटा, जिससे उसने अपनी प्यास बुझाई। और फिर भी इतना कुलीन, इतना वीर, इतना सदाचारी व्यक्ति अपनी ही पत्नी द्वारा एक दुश्मन की तरह बाँधा गया और अपने ही शत्रुओं के हवाले कर दिया गया। लेकिन एक महिला ऐसे शक्तिशाली व्यक्ति पर कैसे काबू पा सकती थी? पुरुषों में निहित दयालुता के कारण: क्योंकि, रात में उसकी ताकत के रहस्य से वंचित करके, उसने उसे नग्न अवस्था में एक मजबूत रस्सी से बांध दिया। इसलिए, (दिव्य) बुद्धि आपको आज्ञा देती है: *'अपने ओठों के द्वार की रक्षा करो उस से जो तेरे सीने में लेटा है'* (मीका 7:5)।

मुझे बताइए, कौन-सा जानवर अपनी ही जाति के विरुद्ध ऐसी बात की कल्पना कर सकता है? कौन-सा साँप अपनी ही जोड़ीदार को नष्ट करने का इरादा रखता है? कौन-सी सिंहनी अपने सिंह को वध के लिए सौंप देगी? आप देखते हैं कि बुद्धि की पुस्तक सही कहती है जब वह कहती है, *'साँप के सिर से अधिक विषैला कोई सिर नहीं है'* (सिर. 25:17), और एक स्त्री की द्वेषिता से बड़ी कोई द्वेषिता नहीं है!

मैं स्पष्ट रूप से कहूँगा: जो कोई दुष्ट पत्नी रखता है, वह जाने कि वह अपने ही पापों का प्रत्याहार भुगत रहा है। कहीं ऐसा न हो कि यह वचन बिना प्रमाण के रह जाए, बुद्धि की बात सुनें, जो यह घोषित करती है कि एक दुष्ट पत्नी उसके दुष्ट कर्मों के कारण एक अधर्मी पति के पास भेजी जाती है (सिर. 25:22–29)।

अब तक हमने दुष्ट स्त्री के बारे में बात की है, और यहाँ हम इस प्रवचन का समापन करेंगे। अब यहाँ उपस्थित लोगों के लिए विशेष रूप से, सदाचारी स्त्रियों के बारे में भी बात करना उचित है।

तो फिर, इन महिलाओं को अच्छा क्यों कहा जाता है? क्योंकि जब वे दूसरों द्वारा ईश्वर को प्रसन्न करने वाले सद्गुणों का अभ्यास होते देखती हैं, तो वे उन पर इस प्रकार प्रसन्न होती हैं जैसे वे उनके अपने हों, और सद्गुण के पुरस्कार के रूप में दूसरों के श्रम का श्रेय स्वयं लेती हैं।

शूनेमी स्त्री एक सदाचारी और परोपकारी महिला थी, जिसने अपने पति की अनुमति लेकर एलीशा के लिए एक निवास तैयार किया ताकि वह उसके यहाँ विश्राम कर सके (2 राजा 4:9-10; तुलना करें लूका 4:25-26); उसने उसके लिए एक बिस्तर, एक दीपक और भोजन तैयार किया; पलंग पर चादर थी, परन्तु वह एक नबी के योग्य बिस्तर से सुसज्जित था; दीपक में रोशनी थी, परन्तु उसमें जलता हुआ तेल था जो प्रकाश दे रहा था; मेज़ पर रोटी थी, परन्तु वह भोजन से भरी हुई थी।

इसी तरह, कौन उस गरीब विधवा के बारे में बुरा कहेगा जिसने नबी एलिया को आश्रय दिया था? उसके पास ज़्यादा पैसा नहीं था, लेकिन उसने अपनी सद्भावना की संपदा दिखाई। उसके पास न तो गेहूँ था, न ही मदिरा, और न ही इस संसार की कोई अन्य वस्तु; उसके पास गेहूँ बोया हुआ कोई खेत नहीं था जिससे उसे अनाज मिल सके; उसकी दाख की बेलों पर उसके लिए मीठे अंगूरों की कोई गुच्छा नहीं लगी; उसके पौधों पर उसके लिए मीरी कोई सब्ज़ी नहीं लगी। तो फिर उसने नबी को कैसे आश्रय दिया और खिलाया? हालाँकि उसके पास खेती करने के लिए एक छोटी सी ज़मीन का टुकड़ा भी नहीं था, और न ही एक कोहनी (यानी क्षेत्रफल या आयतन में) जितना बड़ा दाख का बगीचा था, वह हमेशा फसल काटने के

समय खेतों की सीमाओं के कनिारे-कनिारे चलती और, ज़मीन पर झुककर, अनाज के उन दानों को इकट्ठा करती जो दाने काटने वालों की दरांतयिों के नीचे से गरि गए थे; इस तरह वह हर साल अपने लिए आवश्यक भोजन का भंडारण करती थी। अकाल के समय एलयिा इसी वधिवा के पास आए, जब सारी भूमि वर्षा की कमी से मुरझा रही थी, जब आकाश सूखा हुआ था, हवा झुलस गई थी, और बादल छा गए थे; जब न तो अनाज था, न फूल, न कसिी पौधे की एक भी कली, और न ही नमी वाली हवा की एक झलक थी जो मकई के नए भुट्टों को पानी दे और उनकी वृद्धि को पोषति करे; जब नदयिाँ सूख गई थीं, नदयिों को पानी देने वाले झरने गर्मी में गायब हो गए थे, और समुद्र अत्यधकि खारा हो गया था, क्योंकि उसमें कोई ताज़ा पानी नहीं बह रहा था क्योंकि बारशि और धाराएँ रुक गई थीं। तब एलयिा उस गरीब वधिवा के पास आया। लेकनि आप जानते हैं कि एक वधिवा अच्छी फसल के समय भी कैसे कष्ट सहती है। फरि भी नबी ने अमीरों को, जनिके पास रोटी का भरपूर भंडार था, छोड़ दयिा, और पहाड़ से उतरकर इस वधिवा के पास गए। लेकनि एलयिा, जनि्होंने अपने वचन से स्वर्ग से आग मंगवाई थी, उन्होंने अपने लिए रोटी क्यों नहीं मंगवाई? शायद इसलिए कि वे नहीं कर सकते थे? नहीं, वे कर सकते थे, लेकनि उन्होंने ऐसा नहीं कयिा। तो फरि क्यों? ताकि विधिवा को उसकी दानशीलता के फल से वंचति न कयिा जाए, और ताकि अपने आशीर्वाद से, आटे के घड़े और तेल की थोड़ी सी आपूर्ति को बढ़ाया जा सके। क्योंकि नबी स्वयं को खलिाने के लिए नहीं, बल्कि उस गरीब महलिा को खलिाने और उसके हृदय में छपिी सद्गुण और सद्भावना को प्रकट करने के लिए आए थे। ईश्वर इसी प्रकार कार्य करते हैं: क्योंकि, यद्यपि वे संसार में अपने साथ रहे सभी सेवकों को भोजन खलिाने में सक्षम हैं, फरि भी वे दान-पुण्य की मांग करते हैं ताकि वे उनके दान के कार्यों के माध्यम से उनके हृदय की सद्भावना को प्रकट कर सकें। और जब उनके (उनके सेवकों) को खलिाने वाला कोई नहीं बचता, तो वह या तो पक्षयिों द्वारा उनका भरण-पोषण करता है, जैसा उसने पहाड़ पर एलयिाह का कयिा, या वदिेशी नबयिों द्वारा, जैसा उसने कुंड में दानयिेल का कयिा, या समुद्र के कसिी जीव द्वारा, जैसा उसने व्हेल द्वारा योना का कयिा, या वह स्वयं भोजन भेजता है, जैसा उसने नर्जिन प्रदेश में हमारे पूर्वजों का कयिा; क्योंकि जब उनके पास (अपने भरण-पोषण के लिए) लेने के लिए कुछ भी नहीं था, तो उन्होंने स्वर्ग से मन्ना भेजा और चट्टान से पानी नकिाला। लेकनि जब उसके संत दूसरे लोगों के बीच संसार में रहते हैं, तो परमेश्वर अपना दाहनिा हाथ रोक लेता है, भले ही वह उन्हें कष्ट में देखता है; वह उन्हें छोड़ देता है, ताकि वह उन लोगों को अपनी कृपा से पुरस्कृत कर सके जो उन पर दया दखिाना चाहते हैं; क्योंकि इसके द्वारा, कई लोग मोक्ष प्राप्त कर सकते हैं।

इस प्रकार एलयिा एक वधिवा के पास आया जसिके पास केवल एक मुट्ठी आटा था, जो स्वयं और उसके बच्चों के लिए एक ही भोजन के लिए भी पर्याप्त नहीं था। तो, भवष्यिवक्ता ने उससे क्या कहा?

'मुझे पात्र में थोड़ा पानी ला दो, कि मैं पी लूँ।'

जब वह पानी लेने गई, तो उसने पीछे से पुकारा:

'अपने हाथ में कुछ पका हुआ आटा भी ले आ।'

उसने उसे बताया कि उसके पास क्या नहीं था, लेकनि उसने जो कुछ उसके पास था उसे छपिाया नहीं; बल्कि, उसने घोषणा की:

'जसि प्रभु के जीवन की शपथ! क्या मेरे पास कोई रोटी छपिाई हुई है? मेरे पास बस एक मुट्ठी आटा और एक मर्तबान में थोड़ा सा तेल है।'

यह अपने आप में आश्चर्यजनक है कि इतनी कमी के बावजूद, उसने अपने पास मौजूद भोजन के छोटे से अंश को नहीं छपिाया। आज ऐसे कतिने लोग हैं, जनिके पास सोना और चांदी तो बहुत है, लेकनि जब उनके दोस्त उनसे मांगते हैं तो वे उनके साथ बांटते नहीं हैं? यहाँ तक कि जब उनसे प्यार से माँगा जाता है, तो वे कहते हैं कि उनके पास कुछ नहीं है, क्योंकि वे देना नहीं चाहते; लेकनि अगर, बहुत मन्नितों के बाद, वे कसिी को उधार देने के लिए राजी हो भी जाते हैं, तो वे उन लोगों से, जनि्हें वे पैसे देते हैं, एक ऐसा रसीद लेते हैं जो लोहे से भी मज़बूत होती है, जो गवाहों और जमानतदारों की मौजूदगी में हस्ताक्षर करके लेने वाले के हाथ को बाँध देती है। लेकनि उस वधिवा ने एक ही शब्द में एक मुट्ठी आटे से वंचति होने से इनकार नहीं कयिा।

तो फरि नबी ने उससे क्या कहा?

'जल्दी करो और कुछ बनिा खमीर की रोटी बनाओ, सबसे पहले मेरे लिए, और फरि अपने लिए और अपने बच्चों के लिए।'

यह भविष्यवाणी का वचन एक परीक्षा थी – दिल की परीक्षा, सद्भावना की परीक्षा। धन्य विधवा का हृदय, मानो, एक चमिटे में था, यह चुनने के लिए फाँसा हुआ था कि क्या चुने: अपने बच्चों के लिए प्रेम, या भविष्यवक्ता के प्रति दान? और उस विधवा ने अपने और अपने बच्चों के लिए कठिनाई सहने और भविष्यवक्ता का आतिथ्य करने को चुना, क्योंकि वह जानती थी कि *'जो कोई भविष्यवक्ता को भविष्यवक्ता के नाम पर ग्रहण करेगा, वह भविष्यवक्ता का प्रतिफल पाएगा'* (मत्ती 10:41); और जो कोई शिष्य के नाम पर एक प्याला ठंडा पानी भी देगा, वह अपना प्रतिफल खोएगा नहीं (मत्ती 10:42)।

लेकिन फिर पैगंबर ने 'जल्दी करो!' क्यों कहा? क्या वह इतना भूखा था कि उसे विधवा की विशेष लगन की आवश्यकता थी? नहीं, बिल्कुल भी नहीं; बल्कि वह इससे रहस्यमयी रूप से यह संकेत दे रहे थे कि एक अच्छा काम उत्साह और आनंद के साथ किया जाना चाहिए, न कि दुख और कष्ट के साथ: *'क्योंकि परमेश्वर प्रसन्न मन से देने वाले से प्रेम करता है'* (2 कुरिन्थियों 9:7)।

– जल्दी करो और तैयारी करो, सबसे पहले मेरे लिए, और फिर अपने और अपने बच्चों के लिए।

'जल्दी करो'—ठीक वैसे ही जैसे अब्राहम, जब स्वर्गदूत उसके पास आए, तो पशुओं के पास दौड़ा और एक बछड़े को ज़िबाह किया, ताकि वह मेमने को प्राप्त कर सके (उत्पत्ति 18:6); और जैसे सारा अखमीरी रोटी के लिए दौड़ी, ताकि वह स्वर्ग में छिपी रोटी को प्राप्त कर सके।

शीघ्रता करो और जैसा अब्राहम ने परमेश्वर के लिए अपनी बलिदानों के साथ किया, वैसा ही करो; खुद को पहले और फिर मुझे बाद में मत रखना, जैसा काइन, याजक एली के पुत्र ओफ़नी और फिनेहास ने किया, जिन्होंने परमेश्वर द्वारा लाई गई भेंटों में से पहली उपज खुद ले कर परमेश्वर का तिरस्कार किया।

विधवा ने उत्साह के साथ भविष्यवक्ता की आज्ञा का पालन किया।

नबी ने, उस रोटी को स्वीकार करते हुए—हालाँकि वह मामूली थी, फिर भी बड़ी लगन से अर्पित की गई थी—उसका स्वाद चखा और उसके घर को आशीर्वादों से भर दिया, क्योंकि उन्होंने कहा:

'मिट्टी के पात्र में आटे का मुट्ठी भर और तेल की कुप्पी में तेल तब तक नहीं खत्म होगा जब तक यहोवा पृथ्वी पर वर्षा नहीं भेजता।'

लेकिन क्यों – 'उस समय तक' (जब वर्षा भेजी जाएगी)?

यह रहस्यमय तरीके से दिखाने के लिए कि जब स्वर्ग से वर्षा की तरह नया अनुग्रह प्रकट होता है, तो पुराना विधान समाप्त हो जाता है।

और वास्तव में, जैसा कि नबी ने कहा था, वैसा ही हुआ।

क्या तुम देखती हो कि इन सदाचारी स्त्रियों ने अपनी दानशीलता का फल कैसे काटा? क्योंकि पुण्य कर्म पुण्य फल और पवित्रता की अक्षय जड़ देते हैं।

हे स्त्रियो, तुमने दुष्ट स्त्रियों के कर्मों और सज्जन स्त्रियों के सद्गुणों के विषय में सुना है; एक को प्रेम करो, परन्तु दूसरे से दूर रहो; एक की नकल करो, परन्तु दूसरे से बचो, ताकि (सज्जन स्त्रियों के) मार्ग पर चलकर तुम हमारे प्रभु मसीह यीशु के द्वारा पवित्र लोगों में गिनती पाओ, जिसके लिये युगानुयुग महिमा और सामर्थ्य हो। आमीन।

12 सितंबर

30 अगस्त (पुराने कैलेंडर के अनुसार)

इस दिन, 1652 में मास्को के पवित्र और धर्मी राजकुमार डैनियल अलेक्जेंड्रोविच के अवशेषों की खोज हुई। उनके अवशेष मास्को में दानिलोव मठ में विराजमान हैं (पवित्र और धर्मी राजकुमार डैनियल के निधन की स्मृति 4 मार्च को मनाई जाती है)।

संत अलेक्जेंडर, जॉन और पॉल, कॉन्स्टेंटिनोपल के पैट्रिआर्क

30 अगस्त को स्मरण किया जाता है

संत अलेक्जेंडर, कॉन्स्टेंटिनोपल के पहले पैट्रआर्क, परम पावन मट्रिोफैन[5767] के अधीन एक बशिप (खोरेपस्किोपस[5768]) थे; यह अलेक्जेंडर हर सद्गुण से सुशोभति थे। जब नकियिा में प्रथम सार्वभौमकि परषिद बुलाई गई, तो अलेक्जेंडर को धर्मपरायणता के एक उत्साही समर्थक के रूप में परषिद में भेजा गया, क्योंकि पैट्रआर्क मट्रिोफैन अपनी उन्नत आयु और शारीरकि बीमारयिों के कारण परषिद में उपस्थति नहीं हो सके। इस परषिद में पैट्रआर्क की जगह लेते हुए (यानी, उनके प्रतनिधिि और उप-प्रतनिधिि के रूप में कार्य करते हुए), अलेक्जेंडर ने दुष्ट एरयिस के खलिाफ उत्साहपूर्वक ऑर्थोडॉक्स धर्म की रक्षा की। जब परषिद के सत्र समाप्त हो गए थे, और अलेक्जेंडर पहले ही कॉन्स्टेंटिनोपल लौटने के रास्ते में था, तब प्रभु का स्वर्गदूत धन्य मट्रिोफान के पास प्रकट हुआ: इस स्वर्गदूत ने मट्रिोफान को सूचति कयिा कि उसकी मृत्यु नकिट है और उसे अलेक्जेंडर को अपने उत्तराधकिारी के रूप में पादरी नयिुक्त करने का आदेश दयिा। स्वर्गदूत ने मट्रिोफान से कहा:

'दस दनि बाद तुम परमेश्वर से अपना मुकुट प्राप्त करोगे; तुम्हारे बाद तुम्हारा सहकर्मी अलेक्जेंडर पैट्रआर्क का सहिासन ग्रहण करे।'

धार्मकि सम्राट कॉन्स्टेंटाइन, कई पादरयिों के साथ, परम पावन पैट्रआर्क मट्रिोफैन के पास आए, जो पहले से ही मृत्युशय्या पर थे। जब कॉन्स्टेंटाइन ने उनसे पूछा कि वह अपनी मृत्यु के बाद पैट्रआर्क के रूप में अपने उत्तराधकिारी के लिए कसिे आशीर्वाद देंगे, तो संत मट्रिोफैन ने उत्तर दयिा:

'प्रभु ने मुझे प्रकट कयिा है कि मेरे बाद सहिासन मेरे सहकर्मी मंत्री अलेक्जेंडर लेंगे, जो वास्तव में चुनाव और पवत्रि आत्मा के वरदान के योग्य हैं।'

और ऐसा ही हुआ।

उनकी परम पावनता पैट्रआर्क मTpoफान के प्रभु के पास प्रस्थान करने के बाद, अलेक्जेंडर को कॉन्स्टेंटिनोपल का पैट्रआर्क नयिुक्त कयिा गया; उन्होंने उत्साहपूर्वक मसीह के वचन के झुंड की रखवाली की[5769] , और भेड़यिों को भगा दयिा, – वधिर्मी और हेलेनकि, क्योंकि अलेक्जेंडर को न केवल एरयिनों के खलिाफ बल्कि हेलेनकि दार्शनकिों के खलिाफ भी एक बड़ा संघर्ष करना पड़ा।

इस प्रकार, एक अवसर पर, कुछ हेलेनकि दार्शनकिों ने राजा के पास आने और उस पर यह आरोप लगाने की हम्मित की कि उसने पूर्वजों के प्राचीन धर्म, साथ ही रोमन और ग्रीक कानूनों को अस्वीकार कर, एक नश्चिति नया धर्म और नए कानून अपना लिए थे, जो, जैसा कि इन दार्शनकिों ने दावा कयिा, न तो राज्य को मजबूत करने के लिए बल्कि उसके वनिाश के लिए था। दार्शनकिों ने राजा से अनुरोध कयिा कि उन्हें बशिप अलेक्जेंडर के साथ वश्विास पर बहस में प्रवेश करने की अनुमतदिें। राजा ने इस बहस के लिए अनुमतदि दी। ईश्वर के संत अलेक्जेंडर, यद्यपि उन्होंने हेलेनकि दर्शन में प्रशक्षिण नहीं लयिा था, फरि भी पवत्रि आत्मा से परपिूर्ण थे और उन्होंने बहस से इनकार नहीं कयिा।

जब दार्शनकि बड़ी संख्या में इकट्ठा हुए और उन्होंने एक ही समय पर ईसाई बशिप के साथ बहस में शामलि होने की अपनी इच्छा व्यक्त की, तो संत ने सुझाव दयिा कि वे अपने बीच से एक ही दार्शनकि चुनें, जो सबसे बुद्धमिान और सबसे वाक्पटु हो, और बहस का संचालन करने का कार्य उसे सौंप दें; इस बीच, शेष दार्शनकि बहस सुन सकते थे।

'यह असंभव है,' संत अलेक्जेंडर ने तर्क दयिा, 'कि एक व्यक्ति तुम सभी को बहस में परास्त कर दे, जो चल्लिा रहे हो और शोर मचा रहे हो।'

दार्शनकिों ने अपने बीच से एक ऐसे व्यक्ति को चुना जसिे वे सबसे बुद्धमिान मानते थे, और उसे संत के सामने प्रस्तुत कयिा, जबकि वे स्वयं ध्यानपूर्वक सुनने के लिए तैयार हो गए। बहस की शुरुआत करते हुए, परम पावन पैट्रआर्क अलेक्जेंडर ने उस दार्शनकि से कहा:

'मेरे प्रभु यीशु मसीह के नाम पर, मैं तुम्हें चुप रहने की आज्ञा देता हूँ!'

और तुरंत ही उस दार्शनकि की जीभ जकड़ गई और वह मूक हो गया, इतना कि वह एक भी शब्द नहीं बोल सका।

तब दार्शनकिों की पूरी सभा भय और लज्जा से भर गई, जसिसे उनमें से कुछ अपमानति होकर भाग गए, जबकि अन्य मसीह में वश्विास करने लगे। जहाँ तक उस दार्शनकि का सवाल है जसिे वाणी का वरदान छीन लयिा गया था, उसने इशारा कयिा कि वह अपनी गलती और ईसाई धर्म की सच्चाई, दोनों को स्वीकार करता है; फरि वह संत के पैरों पर गरि

[5767] मट्रिोफान ने 315 से 325 तक पैट्रआर्क के रूप में कार्य कयिा।

[5768] एक कोरेपस्किोपस – एक ग्रामीण बशिप – कसिी शहर के आसपास के गांवों का बशिप होता है।

[5769] अलेक्जेंडर ने 325 से 340 तक पैट्रआर्क के रूप में कार्य कयिा।

पड़ा; और तुरंत ही उसकी जीभ मूकता से मुक्त हो गई: वह उपस्थति सभी लोगों के सामने हमारे प्रभु यीशु मसीह की महमिा करने लगा, जसिके बाद उसका और उसके अन्य मत्रिों का बपतस्मिा हुआ।

इस अवसर पर, राजा और सभी वश्विासयिों ने आनंद मनाया, और सभी ने उस परमेश्वर की महमिा की, जसिने अपने सेवक पर ऐसी अद्भुत शक्त प्रदान की थी।

बाद में इस संत अलेक्जेंडर ने अपनी प्रार्थनाओं के द्वारा दुष्ट एरयिस को पराजति कयिा।

पहले सार्वभौमकि परषिद के कुछ वर्षों बाद, वधिर्मी एरयिस को कॉन्स्टेंटनिोपल बुलाया गया; वहाँ, अपनी चालाकी से, उसने धर्मपरायण राजा कॉन्स्टेंटाइन को नम्निलखिति तरीके से धोखा दयिा। कॉन्स्टेंटाइन ने उससे पूछा: 'क्या तुम उस तरह वश्विास करते हो जैसा पवत्रि पतिाओं ने नीसयिा की परषिद में आज्ञा दी थी?' हालाँकि, एरयिस ने अपनी छाती पर अपनी वधिर्मी शक्षिाओं को दर्शाने वाला एक दस्तावेज़ रखकर, अपने हाथ से अपनी छाती पर चोट मारी और कहा:

'यही मेरा वश्विास है!'

इस प्रकार, इस वधिर्मी ने नाम मात्र का समर्थन कयिा, लेकनि मन ही मन वह कह रहा था कि वह उसी बात पर वश्विास करता है जो उसने अपनी ही लखिाई से लखिी थी, और जसिे वह अपने सीने से लगाए हुए था। और उस अधर्मी ने राजा के सामने शपथ ली और कहा कि वह 'इस प्रकार वश्विास करता है'।

इस तरह की धूर्तता से अनजान, राजा ने एरयिस के शब्दों पर वश्विास कयिा और उसे परम पावन पैट्रआर्क अलेक्जेंडर के पास भेज दयिा, यह आदेश देते हुए कि वे एरयिस को एक ऑर्थोडॉक्स वश्विासी के रूप में चर्च की संप्रदायकिता में शामलि करें; एक रविवार भी नयिुक्त कयिा गया जसि पर एरयिस को वश्विासयिों के साथ पवत्रि संप्रदाय प्राप्त करने के लयि चर्च में लाया जाना था।

हालाँकि, संत अलेक्जेंडर ने एक वधिर्मी के संस्थापक होने के कारण, एरयिस को संप्रदाय में शामलि करने से इनकार कर दयिा।

इस बीच, शनविार बीत गया और रविवार की सुबह हो गई। रविवार की रात, ईश्वर के बशिप ने वेदी के सामने पवत्रि स्थल में प्रार्थना करते हुए स्वयं को प्रणाम कयिा। उन्होंने आँसुओं के साथ ईश्वर से वनिती की कि वह उनकी आत्मा को उनके शरीर से ले लें, ताकि उन्हें वह दनि न देखना पड़े जसि दनि एरयिस चर्च की संप्रभुता में भाग लेगा और पवत्रि रहस्यों को प्राप्त करेगा; या, अपने चर्च के प्रति दया दखिाते हुए, एरयिस को जीवतिों के बीच से नष्ट कर दें।

संत अलेक्जेंडर ने पूरी रात इसी प्रकार प्रार्थना की; सुबह हुई और धर्मवधि का समय नज़दीक आ गया। एरयिस बहुत गर्व के साथ शाही कक्षों से नकिलकर चर्च की ओर बढ़ा; उसके चारों ओर शाही गणमान्य व्यक्त थे जो उसकी वधिर्म से सहानुभूत रखिते थे, और कवच-वाहकों की भीड़ थी।

जब एरयिस 'कांस्टेंटाइन के बाज़ार' के नाम से जाने जाने वाले स्थान पर पहुँचा (जहाँ राजा की मूर्त वाला एक संगमरमर का स्तंभ खड़ा था), तो उसे अपने कुटलि अंतर्मन से उत्पन्न भय ने घेर लयिा; इस डर के कारण, अरयिस को शौच जाने की आवश्यकता महसूस हुई और वह कसिी एकांत स्थान की तलाश करने लगा। वहाँ से बहुत दूर नहीं एक सार्वजनकि स्थान था; वहाँ प्रवेश करते ही, अरउिस को अचानक आंतों की एक भयंकर बीमारी ने घेर लयिा, और उस दुष्ट व्यक्त की आंतें फट पड़ीं, ठीक वैसे ही जैसे यहूदा के साथ हुआ था (मत्ती 27:1), जसिसे उसकी सारी आंतें बाहर नकिल आईं।

इस प्रकार उस वधिर्मी का भयानक अंत हुआ।

पास में खड़े लोग जो एरयिस के बाहर आने का इंतजार कर रहे थे, जब उन्होंने देखा कि वह बाहर आने में देर कर रहा था, तो वे स्वयं उसके पास गए और उसे कीचड़ और खून में लथपथ मृत पाया। और तुरंत ही वधिर्मी एरयिस की भयानक और अप्रत्याशति मृत्यु की खबर पूरे शहर में फैल गई; ईश्वर-वरिोधी लज्जति हो गए, जबकि ऑर्थोडॉक्स (सही वश्विास वाले) इस बात पर अत्यधकि प्रसन्न हुए कि मसीह, सच्चे ईश्वर ने, अपने शत्रु और ईश्वर-नन्दिक से प्रतशिोध लयिा था; और सबसे बढ़कर, परम पवत्रि पैट्रआर्क अलेक्जेंडर ने मसीह ईश्वर का धन्यवाद कयिा, ईश्वर का धन्यवाद करते हुए कि उन्होंने अपनी कलीसयिा पर दया दखिाई और उसे उस क्रूर भेड़यि से बचाया।

धर्मपरायण सम्राट कॉन्स्टेंटाइन महान, एरयिस की मृत्यु की खबर सुनकर, अपने धर्मपरायण वश्विास में और अधकि दृढ़ हो गए और अपनी मृत्यु तक, उन्होंने नकियिा परषिद के सद्धिांतों की रक्षा की।

ईश्वर के महान बशिप, अलेक्जेंडर की धर्मी प्रार्थना की ईश्वर के समक्ष ऐसी शक्ति थी। एक तीखे हथियार की तरह, इसने परमेश्वर के शत्रु को मार गरिाया और ऑर्थोडॉक्स चर्च को वजिय प्रदान की; संत ग्रेगरी द थयिोलोजयिन[5770] ने बाद में कॉन्स्टेंटनिोपल के लोगों को संबोधति करते हुए इसका उल्लेख कयिा, और अलेक्जेंडर की प्रशंसा करते हुए इस प्रकार कहा:

– मैं तुमसे सच कहता हूँ: तुम गौरवशाली अलेक्जेंडर के शष्यि हो, जो पवत्रि त्रमिूर्त के उत्साही रक्षक और प्रचारक थे, जन्हिोंने वचन और कर्म दोनों से वधिर्मी भ्रांत के वरिुद्ध स्वयं को सशस्त्र कयिा। आपको उनकी वह प्रार्थना याद है, जो प्रेरतिों के समान थी, जसिसे उन्होंने वधिर्मयिों के नेता और मुखयिा को उसी स्थान पर नष्ट कर दयिा जहाँ सबसे दुष्ट जीभ का होना उचति था, ताक लिज्जा का प्रतफिल लज्जा से दयिा जाए, और ताक वधिर्म की घातक बुराई, जसिने कई आत्माओं को नष्ट कर दयिा था, उसे एक अपमानजनक मृत्यु द्वारा हमेशा के लिए उजागर कयिा जा सके, जो उसके उचति प्रतफिल के रूप में भेजी गई थी।

संत ग्रेगरी ने ये शब्द संत अलेक्जेंडर की प्रशंसा में और अधर्मी एरयिस को शर्मदिा करने के लिए कहे; इसीलिए उन्होंने एरयिस की मृत्यु का उल्लेख कयिा, जो अलेक्जेंडर की प्रार्थनाओं के द्वारा एक अपमानजनक स्थान पर हुई; क्योंक, जैसे अरअिस ने परमेश्वर के पुत्र का अपमान कयिा था, उनकी दव्यिता का अपमान करते हुए—जो परमेश्वर पति के बराबर और एकसार है—वैसे ही उसकी खुद की भी अपमानजनक मृत्यु हुई; इस प्रकार, अपमान का बदला अपमान से लयिा गया।

संत अलेक्जेंडर ने एक वृद्ध आयु तक पहुँचने तक, कई वर्षों तक मसीह की कलीसयिा का मार्गदर्शन कयिा। जब वे मरणासन्न थे, तो उनकी भेड़ों का झुंड अपने चरवाहे के बस्तिर के चारों ओर इकट्ठा हो गया और उनसे पूछा:

'पतिाजी, आप हमें, अपने बच्चों को, कसिके हवाले कर रहे हैं? आप अपनी जगह हमारे चरवाहे के रूप में कसिे नयिुक्त करेंगे; जो आपके पदचन्हिों पर चलकर, चर्च का दृढ़ता से शासन कर सके?'

अलेक्जेंडर ने दो सम्मानति पुरुषों—अर्थात् पादरी पॉल और डकिन मेसडिोनयिा—की ओर इशारा करते हुए उत्तर दयिा:

'यद आप एक ऐसे चरवाहे को चाहते हैं जो बुद्धमिान और गुणों से सुसज्जति हो, तो पॉल को चुनें; लेकनि यद आप एक ऐसे चरवाहे को चाहते हैं जो केवल दखिावटी हो, बाहरी सुंदरता से दमकता हो, तो मैसेडोनयिा को चुनें।'

यह कहने के बाद, परम पावन पैट्रआिर्क अलेक्जेंडर अपने जन्म के दनि से अस्सी वर्ष आठ महीने की आयु में प्रभु के पास चले गए। उनके बाद, यह पद सेंट पॉल ने संभाला, जो कॉन्स्टेंटनिोपल के पहले पैट्रआिर्क थे जन्हिें यह उपाध मिली name[5771] (जनिका स्मरणोत्सव 6 नवंबर को मनाया जाता है)।

कपाडोसयिा के मूल नविासी होने के कारण कपाडोसयिन के नाम से प्रसद्धि संत जॉन, वधिर्मी अनास्तासयिस[5772] के शासन के अंत के आसपास, वधिर्मी टमिोथी[5773] के बाद कॉन्स्टेंटनिोपल के पैट्रआिर्केट के सहिासन पर आसीन हुए। उन्हें उनकी इच्छा के वरिुद्ध चुना गया था (क्योंक वे यह उच्च पद स्वीकार नहीं करना चाहते थे), और उन्हें शाही प्राधकिरण की तुलना में अधकि रूढ़विादी लोगों द्वारा पैट्रआिर्क के रूप में सहिासन पर बठिाया गया था। जॉन को मृत्यु के दनि तक धर्मद्रोही सम्राट (अनास्तासयिस) से कोई राहत नहीं मलिी, क्योंक वह उससे घृणा करता था और उसका उत्पीड़न करता था; क्योंक इस सम्राट ने सेवरस, तथाकथति सीरयिा-अंतयिोकयिा के पैट्रआिर्क[5774] , की वधिर्म का बचाव कयिा था, जो कालसीडोन (चौथा सार्वभौमकि परषिद)[5775] में आयोजति पवत्रि पतिाओं की परषिद का वरिोधी था। यह वधिर्मी सेवरस, डयिोस्कोरस और यूटकिस—जन्हिें उस परषिद में बहष्कृत और शापति कयिा गया था—की शक्षिाओं का अनुसरण करते हुए, हमारे प्रभु यीशु मसीह के व्यक्तित्व में केवल एक स्वभाव को स्वीकार करता था:

[5770] संत ग्रेगरी द थयिोलोजयिन (नाज़यिान्ज़स के) ने थोड़े समय (एक साल से भी कम) के लिए कॉन्स्टेंटनिोपल के पैट्रआिर्क के रूप में कार्य कयिा; वह अपनी उत्कृष्ट रचनाओं के लिए जाने जाते हैं, जसिके लिए उन्हें 'द थयिोलोजयिन' की उपाध दी गई। उनका पर्व दविस 25 जनवरी है।

[5771] पॉल (प्रथम) ने 340 से पैट्रआिर्क के रूप में कार्य कयिा; उन्हें जल्द ही पदच्युत कर दयिा गया लेकनि 347 में उन्हें पुनर्स्थापति कयिा गया; उन्होंने 350 तक पैट्रआिर्क का पद संभाला।

[5772] सम्राट अनास्तासयिस (डकिोर्) ने 491 से 518 तक शासन कयिा।

[5773] तमिोटयिस (I) ने 511 से 518 तक पैट्रआिर्क के रूप में कार्य कयिा।

[5774] सेवरस ने 512 से 519 तक पैट्रआिर्क के रूप में कार्य कयिा।

[5775] 451 में

उन्होंने दावा कयिा कि अवतार में वचन और देह एक ही स्वभाव में वलिीन हो गए थे, और मसीह के एक ही व्यक्तित्वि में दो स्वभावों को स्वीकार नहीं कयिा, जैसा कि पवित्रि पतिाओं ने हमें वशि्वास करना सखिाया था और जैसा कि चर्च, अपनी धर्मशास्त्रीय शकि्षा में, अभी भी घोषति करती है: 'स्वभावतःईश्वर, और हमारे लएि स्वभावतःमनुष्य: दो व्यक्तयिों में वभिाजति नहीं, बल्कि बनिा मशि्रण के दो स्वभावों के रूप में मान्यता प्राप्त'[5776] । ऑर्थोडॉक्सी के उपर्युक्त sofistical वरिोधी ने गलत तरीके से दावा कयिा कि पवित्रि त्रमिूर्ति की दवि्यता ने क्रूस पर मसीह की मानवता के साथ मलिकर पीड़ा सहन की; इस कारण से, उसने त्रसिगयिोन के भजन में नम्निलखिति शब्द जोड़े: 'हमारे लएि क्रूस पर चढ़ाया गया, हम पर दया करो'।

इसी शापति उत्तर से एसेफाल्स, अर्थात् 'नर्जिीवों' का संप्रदाय उत्पन्न हुआ, जन्हिें ऐसा कहा जाता था क्योंकि वे अपने अधीन चर्चों पर ऑर्थोडॉक्स बशिपों के अधकिार को स्वीकार नहीं करते थे, ठीक वैसे ही जैसे सरि अन्य अंगों का अध्यक्ष होता है; लेकनि उनमें से प्रत्येक ने अपनी ही तर्कशक्ति के अनुसार स्वयं को एक नेता और शकि्षक माना। इस झूठी शकि्षा का बचाव करने वाले वधिर्मी बशिपों और पुरोहतिों की मृत्यु के बाद, उन वधिर्मयिों के बीच न तो बपतस्मिा और न ही दैवीय धर्मवधि को प्रचलति चर्चीय अनुष्ठान के अनुसार संपन्न कयिा जाता था; इसके बजाय, वे पहले से तैयार कएि गए और लंबे समय तक संरक्षति एक मेमने का सेवन करते थे, , वे पवित्रि पास्का के दनिों में इकट्ठा होते और मेमने को छोटे-छोटे टुकड़ों में तोड़ते थे। फरि इन में से प्रत्येक वधिर्मी ने अपनी पसंद का कोई भी वशि्वास चुन लयिा; शकि्षण का अधकिार मनमाने ढंग से ग्रहण करने के बाद, उन्होंने दूसरों को भी सखिाया, और उन्हें अपना झूठा सद्धिांत प्रचारति कयिा। परणिामस्वरूप, इन वधिर्मयिों से बहुत सी वधिर्मयिाँ उत्पन्न हुईं, जनिमें से प्रत्येक एक-दूसरे का खंडन करती थीं; यूनानी चर्च इतहिासकार नकिफिोरोस कैलस्टिोस अठारहवें पुस्तक, अध्याय पैंतालीस में इन वधिर्मयिों का उल्लेख करते हुए नम्निलखिति टपि्पणी करते हैं:

ऐसे ही वधिर्मयिों में दुष्ट राजा अनास्तासयिस भी था, जसिने ईश्वर की कलीसयिा को ऑर्थोडॉक्स बशिपों को उनके पद से हटाकर बहुत हानि पहुँचाई; इस राजा ने कॉन्स्टेंटनिोपल के पैट्रआिर्क संत जॉन को भी पदच्युत करने का प्रयास कयिा, लेकनि वधिर्मी पर ईश्वर का न्याय हुआ, और उसकी आयु मृत्यु द्वारा छीन ली गई।

यहाँ इस अधर्मी राजा की मृत्यु का उल्लेख करना उचति होगा, जो नम्निलखिति परस्थितियिों में हुई।

अपने मृत्यु से कुछ दनि पहले, इस राजा ने एक सपने में एक भयानक आकृति देखी, जो एक न्यायाधीश की तरह महमिा में एक ऊँचे सहिासन पर वरिाजमान थी, और उसके सामने बहुत से लोग खड़े थे। इस न्यायाधीश के हाथ में एक कतिाब थी; इस कतिाब को खोलकर, उसने उसमें अनास्तासयिस का नाम पाया और, इसे राजा को दखिाते हुए, कहा:

'मैं तुम्हें लंबा जीवन देना चाहता था, लेकनि तुम्हारी दुष्टता के कारण, मैं तुम्हारे जीवन से चौदह साल काट दूँगा।'

यह कहने के बाद, न्यायाधीश ने कतिाब में जो लखिा था उसे मटिा दयिा; राजा, हालांकि भय और आतंक से ग्रस्त, अपने नद्रिा से घबराहट में जाग उठा, उसने अपने सबसे करीबी सलाहकारों में से एक, जसिका नाम अमान्त था, जसिे वह हर बात में (और अपनी वधिर्मी दर्शन में भी) सहमत पाता था, को बुलाया, और उस दुखद स्वप्नदृश्य को उसे सुनाया। अमान्त ने राजा की बात सुनकर और उसके वृत्तांत से भयभीत होकर कहा:

'कल रात मुझे भी एक भयानक स्वप्न आया: मुझे ऐसा लगा कि मैं आपके शाही मुख के पास खड़ा था, जैसे कोई नौकर, लेकनि एक वशिाल सूअर आकर, मेरे बाहरी वस्त्र को पकड़कर मुझे ज़मीन पर पटक दयिा और मुझे खा गया।'

जब उन्होंने एक-दूसरे को ये भयानक सपने बताए और उनसे भयभीत हो गए, तो उन्होंने प्रोकलस नामक एक भवष्यिवक्ता को बुलाया और उसे अपने सपनों के बारे में बताया, ताकि वह उनका अर्थ बता सके। उसने उनसे कहा कि वे दोनों जल्द ही मर जाएँगे।

और वास्तव में, कुछ ही समय बाद, राजमहल पर बजिली गरिने से राजा की मृत्यु हो गई। इस प्रकार उस दुष्ट व्यक्ति का भयानक अंत हुआ।

राजा अनास्तासयिस की मृत्यु के बाद, ईश्वर-भक्त और धर्मी व्यक्ति, ईJustin[5777] को राजसी सहिासन पर चुना गया। जहाँ तक अमान्ट और अन्य दुष्ट पुरुषों का सवाल है, जन्हिोंने अनास्तासयिस के दुष्ट कार्यों में सहायता की थी

[5776] छठी सार्वभौमकि परषिद।

[5777] जस्टनि प्रथम ने 518 से 527 तक शासन कयिा।

और वशि्वासयिों पर अत्याचार कयिा था, उन्हें एक न्यायपूर्ण नरि्णय द्वारा मृत्युदंड दयिा गया। इस प्रकार, जो दृष्टि उन्हें अपनी नींद में दखिाई दी थी, वह अनास्तासयिस और अमान्ट दोनों के लएि सच हुई।

इन दुश्मनों के पतन के बाद, मसीह के चर्च में और उसके चरवाहों के बीच शांति और सुकून लौट आया। परम पावन पैट्रआिर्क जॉन, नव नरि्वाचति धर्मपरायण राजा जस्टनि और सभी ऑर्थोडॉक्स लोगों के साथ, पवत्रि चर्च की अपने उत्पीड़कوں के जुए से मुक्ति पर प्रसन्न हुए और चर्च में धन्यवाद के भजन गाए। इसके तुरंत बाद, उन्होंने (राजा और पैट्रआिर्क) नकिटतम बशिपों (संख्या में चालीस) को एक स्थानीय परषिद में बुलाया और एंटओिक के झूठे पैट्रआिर्क सेवेरस और उसके सभी समान वचिारधारा वाले अनुयायियों को चर्च से बहष्किृत कर दयिा; इसी समय, उन्होंने चल्सीडोन में आयोजति चौथे सार्वभौमकि परषिद की पुष्टि की और उसकी प्रशंसा की।

संत जॉन ने अपने जीवन का शेष समय चर्च की शांति में बतिाया, उन्हें सौंपी गई भेड़ों का उत्साहपूर्वक पालन करते हुए और ईश्वर को प्रसन्न करते हुए; तीन वर्षों तक पद धारण करने के बाद, जॉन शांतपिूर्वक प्रभु के पास चले गए[5778] ।

संत पॉल, जन्हिें अब पूजति कयिा जाता है – एक ही नाम के कॉन्स्टेंटनिोपल के चौथे पैट्रआिर्क – साइप्रस के मूल नवािसी थे; उन्होंने नकिताि[5779] , एक प्रतमिा-वरिोधी वधिर्मी[5780] , के बाद पैट्रआिर्क का पद संभाला, जो कोप्रोन्यमस के पुत्र लयिो[5781] के शासनकाल में थे। इन संत पॉल का उल्लेख संत तारासयिस[5782] की जीवनी में मलिता है।

पॉल एक सदाचारी और धर्मपरायण व्यक्ति थे, लेकनि बहुत कमजोर इच्छाशक्ति और डरपोक थे; क्योंकि पवत्रि प्रतमिाओं के लएि अधर्मी राजा के हाथों वशि्वासयिों द्वारा सहन की गई महान पीड़ाओं को देखकर, उन्होंने अपनी भक्ति छिपा ली और वधिर्मयिों के साथ मलि गए, हालांकि वह ऐसा करना नहीं चाहते थे। उस दुष्ट राजा की मृत्यु के बाद, वह पवत्रि प्रतमिाओं की पूजा की धर्मपरायण प्रथा को बहाल करना चाहता था, लेकनि ऐसा नहीं कर सका, क्योंकि उसकी सहायता करने वाला कोई नहीं था; इस बीच, पूरे शहर और आसपास के क्षेत्रों में प्रतमिा-भंजन दृढ़ता से स्थापति हो गया था। इसी कारण से, पॉल बहुत दुखी हुए; यह देखकर कि सफलता की संभावना नहीं थी, उन्होंने पैट्रआिर्क के सहिासन को छोड़ने का संकल्प लयिा, जसि पर वे चार साल से अधकि नहीं रहे थे; बीमार पड़ने के बाद, वे गुप्त रूप से पैट्रआिर्क के आवास से नकिलकर सेंट फ्लोरस के मठ चले गए, जहाँ उन्होंने पवत्रि स्कीमा ग्रहण की।

इसकी खबर जल्द ही दूर-दूर तक फैल गई, और हर कोई बहुत हैरान रह गया।

सम्राज्ञी आइरीन[5783] इस घटनाक्रम से गहराई से दुखी थीं, जब उन्हें पता चला कि पैट्रआिर्क ने कसिी को बताए बनिा ऐसा कदम उठाया था। आइरीन अपने पुत्र, ज़ार कॉन्स्टेंटनि के साथ उनके पास गईं और उनसे पूछा:

'फादर? आपने यह क्या कयिा, और आपने ऐसा क्यों कयिा?'

पॉल ने उत्तर दयिा:

'यह मेरी बीमारी और नकिट मृत्यु की संभावना थी जसिने मुझे इस पवत्रि मठवासी जीवन शैली को अपनाने के लएि प्रेरति कयिा, लेकनि सबसे बढ़कर यह धार्मकि कलह और संघर्ष था जसिने मुझे पैट्रआिर्क के सहिासन को त्यागने के लएि प्रेरति कयिा; क्योंकि चर्च प्रतमिा-वरिोधी वधिर्म से परेशान होकर पीड़ति है; मूर्तभिंजक वधिर्मयिों की लंबी और अधर्मी साजशिों के कारण, चर्च को एक गहरा घाव लगा है, और मैं, एक दीन प्राणी, पहले ही तीन बार अपने हाथ और अपनी कलम से उस वधिर्म का समर्थन कर चुका हूँ; न केवल मैं वधिर्म के जालों से बचने में असफल रहा हूँ, बल्कि मैं अपनी जीभ और अपने हाथ दोनों से उसमें उलझ गया हूँ, जसिके लएि मैं अब गहराई से शोक करता हूँ; लेकनि जो बात सबसे अधकि मेरे आत्मा को आहत करती है और बोझलि करती है, वह यह है कि मैं देखता हूँ कि आपके अधकिार के अधीन सभी देश, जबकि ऑर्थोडॉक्स धर्म-स्वीकृति को दृढ़ता से बनाए रखते हुए, ऑर्थोडॉक्स सद्धिांत में बने रहते हुए और आनंदति

[5778] जॉन ने 518 से 520 तक पैट्रआिर्क के रूप में कार्य कयिा।

[5779] नकिताि प्रथम ने 766 से 780 तक पैट्रआिर्क के रूप में कार्य कयिा।

[5780] प्रतमिा-वरिोधी वधिर्म 8वीं शताब्दी में उभरा। प्रतमिा-वरिोधयिों ने मूर्खतापूर्वक प्रतमिाओं की पूजा को मूर्तपिूजा के साथ मलिा दयिा। प्रतमिा-भंजनवाद के सबसे कट्टर समर्थक सम्राट थे: लयिो तृतीय इसाउरयिन (717–741) और कॉन्स्टेंटनि पंचम कोप्रोन्यमस (741–775)। इस वधिर्म की नदिा सातवें सार्वभौमकि धर्म-सभा में की गई, जो 787 में नकियिा शहर में आयोजति की गई थी।

[5781] लयिो चौथे (खज़ार) ने 775 से 780 तक शासन कयिा।

[5782] पवत्रि चर्च द्वारा संत तारासयिस का पर्व दविस 25 फरवरी को मनाया जाता है।

[5783] सम्राज्ञी आइरीन ने 797 से 802 तक शासन कयिा।

होते हुए, हमारी कलीसिया से परहेज़ करते हैं और हमें, मसीह के झुंड के एक हिस्से के रूप में, भटकी हुई भेड़ों की तरह अपने से दूर भगा देते हैं। इसी कारण, मैं एक विधर्मी सभा का चरवाहा नहीं बनना चाहता और पवित्र चतुष्टय (Sees[5784]) के पावन अनुशासनात्मक दंड के अधीन होने के बजाय कब्र में होना पसंद करूँगा। लेकिन चूँकि ईश्वर ने राजदंड का अधिकार आपके हाथों में सौंपा है, ताकि आप संसार भर में बिखरी हुई ईसाई मंडली की राजसी देखभाल कर सकें, अपनी माता के दुख की ओर अपना ध्यान दें, – कलीसिया – और उसे और अधिक अविश्वसनीय दुख में रहने न दें, बल्कि अपनी पूरी शक्ति से यह सुनिश्चित करें कि वह अपनी पूर्व की भव्यता पुनःप्राप्त कर ले। अपने वफादार शासन के दौरान, इस घृणित विधर्म को, जो खेत से निकले सूअर की तरह है, मसीह की दाख की बारी को तबाह और नष्ट करने न दें; कुटिलता से मसीह की दाख की बारी को कलंकित करने न दें। आपके पास एक कुशल कारीगर है जो एक ही चर्च की दैवीय चक्की पर घिसकर सच्चे विश्वास की गुच्छा को संवार सकता है। यह कारीगर ज्ञान के प्याले को भर देगा और धर्मपरायण लोगों के लिए ऑर्थोडॉक्स ज्ञान का पान तैयार करेगा।

उन्होंने उससे पूछा:

'पिताजी, आप किसके विषय में बात कर रहे हैं?'

उन्होंने उत्तर दिया:

'मैं तारासियोस[5785] की बात कर रहा हूँ, जो आपके पहले शाही सलाहकार हैं; मैं जानता हूँ कि वह चर्च के व्यवस्थापक बनने के योग्य हैं, क्योंकि वह अपनी विवेक की लाठी से विधर्मी बकवास को दूर कर सकते हैं और बुद्धिमानी से मसीह के झुंड का चरवाहा कर सकते हैं, और उसे ऑर्थोडॉक्सी (सही आस्था) के एकल अहाते के भीतर इकट्ठा कर सकते हैं।'

पैट्रिआर्क पॉल से ये वचन सुनकर, धर्मपरायण महारानी आइरीन और उनके पुत्र, सम्राट कॉन्स्टेंटिन, दुख के साथ प्रस्थान कर गए। हालाँकि, पॉल ने अपने पास बचे कुछ कुलीनों की ओर मुड़कर उनसे कहा:

'काश मैं उस समय सिंहासन पर न होता जब चर्च सार्वभौमिक धर्मसभाओं द्वारा निंदित विधर्मी लोगों के कारण उथल-पुथल में थी। जब तक कि सातवीं सार्वभौमिक धर्मसभा का आयोजन नहीं किया जाता और प्रतिमा-विरोधी विधर्म की निंदा नहीं की जाती, तब तक तुम बचोगे नहीं।'

अभिजात वर्ग ने उनसे कहा:

'तो फिर, जब आपको पैट्रिआर्क के रूप में स्थापित किया गया था, तो आपने प्रतिमा-भंजन को अपनी लिखित स्वीकृति क्यों दी?'

पॉल ने उत्तर दिया:

चूंकि मैंने उस समय उस दस्तावेज़ पर हस्ताक्षर किए थे, मैं अब उस पर पश्चाताप करता हूँ और उस समय डर के मारे चुप रहने और आपसे सच न बोलने के लिए ईश्वर की सजा से डरता हूँ। हालाँकि, अब मैं पश्चाताप करता हूँ, और मैं कहता हूँ कि यदि आप उस विधर्मी कपटपूर्ण तर्क पर अड़े रहते हैं तो आप मोक्ष की आशा नहीं कर सकते।'

इस घटना के कुछ ही दिनों बाद, पैट्रिआर्क का शांतिपूर्वक निधन हो गया[5786] । उस समय से, कॉन्स्टेंटिनोपल के नागरिकों ने स्वतंत्र रूप से और बिना किसी डर के बोलना शुरू कर दिया, और संतों की प्रतिमाओं के बारे में विधर्मियों के साथ बहस करने लगे, जिनका तब से कोई बचाव करने की हिम्मत नहीं कर पाया था जब से लियो द इसाउरियन का समय था[5787]

बोला।

अब इन तीन पवित्र पिताओं—अलेक्जेंडर, जॉन और पॉल—के बारे में यह सब जानने के बाद, आइए हम त्रिमूर्ति में एक परमेश्वर, पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा की महिमा करें। आमीन।

[5784] यह, बेशक, कॉन्स्टेंटिनोपल, रोम, एंटिओक और अलेक्जेंड्रिया के पैट्रिआर्कल सीज़ (धर्मप्रांतीय क्षेत्रों) को संदर्भित करता है।

[5785] तारास 784 से 806 तक कॉन्स्टेंटिनोपल के पैट्रिआर्क थे (पॉल चौथे के उत्तराधिकारी)।

[5786] पॉल चौथे ने 780 से 784 तक पैट्रिआर्क के रूप में कार्य किया।

[5787] लियो तृतीय (इसाउर), जिन्होंने 717 से 741 तक शासन किया, एक कट्टर मूर्तिभंजक थे।

कॉन्टाकयिन, स्वर 8:

हे महमिामय संतों, मसीह के प्रेम से प्रज्वलति होकर, और उनका जुआ तथा सम्माननीय क्रूस उठाकर, आप उनके जीवन के अनुयायी और उनकी दव्यि महमिा के सहभागी बने: ईश्वर-ज्ञानी अलेक्जेंडर, अद्भुत जॉन और महमिामय पॉल के साथ। अत; उनके सहिासन के समक्ष खड़े होकर, हमारी आत्माओं के लिए वनिम्रतापूर्वक प्रार्थना करें।

पवत्रि और धर्मी राजकुमार अलेक्जेंडर नेवस्की का जीवन[5788]

स्मरणोत्सव 30 अगस्त को

पवत्रि और धर्मी महा राजकुमार अलेक्जेंडर यारोस्लावचि का जन्म 30 मई 1219 को 'Pereslavl-[5789] ' शहर में हुआ था।

अलेक्जेंडर यारोस्लाव$_{h_2}$ के पति, महान राजकुमार यारोस्लाव वसेवोदोवचि, अपने समकालीनों के ववरिणों के अनुसार, एक सौम्य, दयालु, धार्मकि राजकुमार थे, जन्हिें सभी पसंद करते थे। धन्य अलेक्जेंडर की माता, धन्य राजकुमारी थयिोडोसयिा, अपनी भक्त और तपस्या के कारण, अपने जीवनकाल में ही अपने समकालीनों द्वारा पवत्रि राजकुमारी के रूप में सम्मानति की गई थीं[5790] । धन्य राजकुमार अलेक्जेंडर ने अपना बचपन अपने धर्मपरायण माता-पति की देखरेख में बतिाया, जो उनसे बहुत प्यार करते थे।

उस समय की प्रथा के अनुसार, उनकी शक्षिा कम उम्र में शुरू हुई; और चूंक उनके पालन-पोषण में मुख्य चति बच्चे की आत्मा में ईश्वर का भय और धार्मकिता को वकिसति करना था, इसलिए धर्मनष्ठि राजकुमार को सबसे पहले पवत्रि पुस्तकें – सुसमाचार, भजन संहति, एक पवत्रि पुस्तक जो पवत्रि रूस में प्रयि थी, जसिके बुद्धमिानी भरे शब्दों में हमारे धर्मनरिपेक्ष राजकुमारों ने अपने जीवन के सबसे कठनि क्षणों में सांत्वना तलाशी और पाई, जब प्रभु के अलावा कसिी से भी मदद या आराम की उम्मीद नहीं की जा सकती थी।

अपने आरंभकि दनिों से ही प्रभु ने धर्मनष्ठि राजकुमार अलेक्जेंडर को वश्विास और सद्गुणों से प्रकाशमान एक दीपक के रूप में गढ़ा था। धर्मनष्ठि राजकुमार के जीवन के एक प्राचीन वृत्तांतकार के अनुसार, वह कभी भी बचकाने खेलों या मनोरंजन में लप्ति नहीं हुआ। उनका प्रयि शगल पवत्रि ग्रंथों का अध्ययन था; वश्राम का उनका पसंदीदा तरीका प्रभु से भक्तपिूर्वक प्रार्थना करना था, जसिका उदाहरण वे अपनी धर्मपरायण माता के व्यक्तित्व में नरिंतर देखते थे। वे चर्च के भजन गाकर अपनी आत्मा को आनंदति करते थे, और उपवास तथा संयम के माध्यम से अपनी शारीरकि शक्त को मजबूत और वकिसति करते थे।

शैक्षणकि शक्षिा के साथ-साथ, पुराने रूसी राजकुमारों के परविार में शारीरकि प्रशक्षिण पर भी बहुत ध्यान दयिा जाता था: शक्त और चपलता का वकिास, तलवार और भाला चलाने की क्षमता, घोड़े की सवारी करना, आद, क्योंक एक राजकुमार से यह अपेक्षा की जाती थी क वह न केवल आध्यात्मकि उपलब्धयिों में बल्क युद्ध कौशल में भी नपिुण हो; उसे न केवल मसीह का योद्धा बल्क एक सांसारकि योद्धा भी होना था, जो पवत्रि चर्च की रक्षा न केवल वचन की शक्त से बल्क, जब आवश्यक हो, तलवार की शक्त से भी करने में सक्षम हो। और धर्मनष्ठि राजकुमार अलेक्जेंडर, एक अजेय योद्धा, जैसा क उनके समकालीन उन्हें कहते थे, ने राजसी परवरशि के इस पहलू में पूर्णता हासलि कर ली थी और अपने साथी योद्धाओं के लिए, न केवल एक नेता बल्क युद्ध कौशल का एक आदर्श भी थे।

युवा राजकुमारों का उनके भवष्यि के शासन के लिए प्रशक्षिण कम उम्र में ही शुरू हो जाता था। यहाँ भी, धर्मपरायण अलेक्जेंडर के पास अपने प्रसद्धि पति में एक उत्कृष्ट उदाहरण और आदर्श था—जो, अपने समकालीनों

[5788] धर्मनष्ठि राजकुमार अलेक्जेंडर यारोस्लावचि के जीवन के वृत्तांत उनके लिए समर्पति प्राचीन संतों की जीवनयिों और इतहिासों में पाए जाते हैं। प्राचीन रूस में, धर्मनरित राजकुमार की पाँच जीवनीएँ संकलति की गईं, जनिमें से पहली, एक संक्षप्ति ववरिण, अलेक्जेंडर यारोस्लावचि के एक समकालीन द्वारा लखिी गई थी, जबक अंतमि, सबसे वस्तिृत, 17वीं शताब्दी में भी रची गई थी, जो प्रारंभकि जीवनीओं पर आधारति थी, जन्होंने क्रमशःएक-दूसरे को पूरक बनाया।

[5789] आज यह व्लादमिीर गवर्नरेट में एक छोटा सा शहर है (ट्रुबेज़ नदी पर, जहाँ यह पेरयिास्लाव झील में मलिती है), लेकनि उस समय यह पेरयिास्लावल-ज़ालेस्की के अपानगेज राजतंत्र की राजधानी थी।

[5790] धार्मकि राजकुमारी थयिोडोसयिा, प्रसद्धि रूसी राजकुमार म्स्तस्लिाव म्स्तस्लिावचि द ब्रेव की पुत्री, की मृत्यु 1244 में हुई।

के अनुसार, रूसी भूमि के लिए एक शहीद थे, जिन्होंने ईश्वर द्वारा उन्हें शासन करने के लिए सौंपी गई देश के लिए अपनी जान न्योछावर कर दी थी।

लेकिन धर्मपरायण राजकुमार अलेक्जेंडर अपने पिता के घर और देखभाल में अधिक समय तक नहीं रहे; बहुत कम उम्र में ही, उन्हें जीवन में अपना रास्ता खुद चुनना पड़ा।

वेलिकी नोवगोरोड, उस समय एक समृद्ध 'स्वतंत्र' शहर था जो लगभग पूरे वर्तमान रूस के उत्तरी भाग पर नियंत्रण रखता था, अपने स्वयं के कानून और नियम बनाता था, अपने स्वयं के राजकुमारों को चुनता और पदच्युत करता था, ने धर्मपरायण राजकुमार अलेक्जेंडर के पिता यारोस्लाव को राजसी सिंहासन की पेशकश की। यारोस्लाव वसेवोल्दोविच ने इस प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया; लेकिन वह उस अधीनस्थ स्थिति को स्वीकार नहीं कर सके जिसमें नोवगोरोड के लोगों के बीच एक राजकुमार खुद को पाता था। 1228 में, नोवगोरोडवासियों की अवज्ञा से क्रोधित होकर, यारोस्लाव वसेवोदोविच अपने स्वयं के पेरियास्लावल में चले गए, और अपने दो छोटे बेटों, थियोडोर और अलेक्जेंडर को नोवगोरोड में अपने विश्वस्त बोयारों की देखरेख में छोड़ गए। 5 जून 1233 को, राजकुमारों में बड़े की मृत्यु उसकी शादी की तैयारियाँ चल रही थीं, तब अचानक हो गई, और धर्मपरायण राजकुमार अलेक्जेंडर एक ऐसे शहर में अकेला रह गया जो उसके लिए विदेशी था।

वहाँ की स्थिति आसान से कोसों दूर थी। एक ओर, नोवगोरोड के स्वतंत्रता-प्रेमी लोग नहीं चाहते थे कि युवा राजकुमार उनके नियंत्रण से बाहर जाए, वह आज्ञाकारी होकर उनकी इच्छाओं को पूरा करे, और उनकी स्वतंत्रताओं और रीति-रिवाजों का सम्मान करे। दूसरी ओर, अपनी आकांक्षाओं में दृढ़, यारोस्लाव वसेवोदोविच ने अपने बेटे से यह मांग की कि वह उसी रास्ते पर चले जिस पर वह खुद चला था, और नोवगोरोड में राजसी अधिकार को मजबूत करने का प्रयास करे, चाहे नोवगोरोडवासियों के असंतोष के उभार कितने भी हों। युवा राजकुमार से कितनी इच्छाशक्ति, विवेक और साथ ही लोगों से निपटने तथा उनके विचारों और रीति-रिवाजों के प्रति सहिष्णुता दिखाने की क्षमता की अपेक्षा की जाती थी, ताकि वह अपने पिता की योजना को अंजाम देते हुए नोवगोरोड के लोगों का विश्वास और स्नेह जीत सके, जो अपनी किसी भी स्वतंत्रता पर समझौता करने को तैयार नहीं थे। वह यहाँ, मानो दो आग के बीच फँसा हुआ, हमेशा सतर्क रहते हुए, सभी कठिनाइयों से सफलतापूर्वक निपट रहा था। उसके पिता उससे प्रसन्न थे; नोवगोरोड के लोग उससे स्नेह करने लगे, उसे 'हमारा राजकुमार' कहने लगे और इस बात पर गर्व करते थे कि अलेक्जेंडर, जिसे हर रूसी क्षेत्र अपना राजकुमार बनाना चाहता था, उन पर शासन करता था।

धार्मिक राजकुमार अलेक्जेंडर ने नोवगोरोड के लोगों का मन और दिल केवल अपनी बुद्धि और बुद्धिमानी भरे शासन से ही नहीं जीता था। वे पवित्र राजकुमार के दुर्लभ चरित्र गुणों से भी आकर्षित हुए, साथ ही उनकी आध्यात्मिक सुंदरता के साथ-साथ उनकी असाधारण शारीरिक सुंदरता से भी, जिसने पवित्र राजकुमार को देखने वाले हर व्यक्ति को प्रभावित किया। पवित्र राजकुमार अलेक्जेंडर ने अपनी उपस्थिति से जो अप्रतिरोध्य प्रभाव डाला, उसके बारे में उनका प्राचीन जीवनी-ग्रंथ में निम्नलिखित विवरण संरक्षित है।

एंड्रियाश नामक एक जर्मन शूरवीर नोवगोरोड पहुँचा। धर्मनिष्ठ राजकुमार अलेक्जेंडर की अद्भुत सुंदरता से प्रभावित होकर, अपने देश लौटने पर उन्होंने अपने देशवासियों को निम्नलिखित शब्दों में अपनी छाप बताई: 'मैं कई देशों में घूमा हूँ और कई लोगों को देखा है, लेकिन न तो राजाओं में और न ही राजकुमारों में मैंने एक भी ऐसा व्यक्ति देखा है जो राजकुमार अलेक्जेंडर की बराबरी कर सके।'

धर्मनिष्ठ राजकुमार अलेक्जेंडर के भव्य व्यक्तित्व ने रूस के भयानक विजेता - बटू पर भी यही प्रभाव डाला। जहाँ तक संत अलेक्जेंडर के समकालीन रूसी लोगों की बात है, जब उन्होंने अपने राजकुमार के रूप का वर्णन किया, तो जर्मन शूरवीर की ही तरह, उन्हें समकालीन जीवन में कोई तुलना नहीं मिल सकी। सौंदर्य के मामले में, उन्होंने धर्मनिष्ठ राजकुमार की तुलना पैट्रिआर्क जोसेफ से की, जिन्हें फिरौन ने पूरे मिस्र देश का शासक नियुक्त किया था; शक्ति के मामले में, पुराने नियम के न्यायाधीश सैंसमन से; बुद्धिमत्ता के मामले में, राजा सुलैमान से; और उनके साहस तथा सैन्य पराक्रम के लिए – प्राचीन रोमन सम्राट वेस्पेशियन[5791] से।

जब धर्मनिष्ठ राजकुमार लोगों से बात करता या अपने सैनिकों को आदेश देता, तो एक समकालीन – राजकुमार के जीवन के वृत्तांतकार – ने लिखा कि उसकी आवाज़ तुरही जैसी लगती थी।

[5791] सम्राट वेस्पासियन ने 70 से 79 तक शासन किया।

लेकिन धर्मनिरपेक्ष राजकुमार ने अपनी आध्यात्मिक सुंदरता के माध्यम से और भी अधिक ध्यान आकर्षित किया, जो उनके समकालीनों को उनकी शारीरिक सुंदरता जितनी ही असाधारण लगती थी। 'वह असीम दयालु थे,' इतिहासकार ने टिप्पणी की।

धर्मात्मा राजकुमार अलेक्जेंडर के राजसी परिवार में दया एक विशिष्ट, आनुवंशिक गुण था। उनके माता-पिता, यारोस्लाव और थियोडोसिया, इसी गुण के लिए विख्यात थे, यही गुण था जिसके द्वारा धर्मपरायण अलेक्जेंडर के चाचा, व्लादिमीर के ग्रैंड प्रिंस यूरी व्सेवोलोदोविच, ने लोगों का सार्वभौमिक स्नेह जीता; और यही गुण था जो संत अलेक्जेंडर के पूर्वज, कीव के ग्रैंड प्रिंस व्लादिमीर व्सेवोलोदोविच मोनोमाख, जो एक महान पुराने रूसी परोपकारी थे, ने विरासत में छोड़ा था, जिन्होंने अपनी उदारता और जरूरतमंद की मदद करने की तत्परता से सभी को अपनी ओर आकर्षित किया।

नोवगोरोड में हुई घटनाएँ, जिनके बीच धन्य राजकुमार अलेक्जेंडर ने अपनी युवावस्था बिताई, पवित्र राजकुमार में इस गुण के विकास के लिए विशेष रूप से अनुकूल थीं, जो उन्हें अपने पूर्वजों से विरासत में मिला था। कृषि के लिए पूरी तरह से अनुकूल नहीं होने वाली मिट्टी की स्थितियों के कारण, समृद्ध, वाणिज्यिक नोवगोरोड अक्सर फसल विनाश और अकाल से पीड़ित रहता था। ऐसे समय में, रोटी की कीमत खतरनाक रूप से बढ़ जाती थी, और गरीबों को कभी-कभी भूखमरी का खतरा होता था। नोवगोरोड में धर्मात्मा राजकुमार अलेक्जेंडर के जीवन के शुरुआती वर्षों के दौरान ऐसी ही एक विपत्ति आई।

1230 में, जल्दी हुई पाले के कारण नोवगोरोड क्षेत्र की सभी शीतकालीन फसलें नष्ट हो गईं। अनाज की कोई आपूर्ति नहीं थी, क्योंकि रूस के अन्य हिस्सों में भी फसलें बर्बाद हो गई थीं। नोवगोरोड के लोगों को अपने पश्चिमी पड़ोसियों, यानी जर्मन व्यापारियों से कुछ सीमित सहायता मिल सकी, जिनके साथ नोवगोरोड का व्यापक व्यापार होता था। लेकिन विदेशी व्यापारी जो दे सकते थे, वह बहुत कम था। रोटी की कमी के कारण, लोगों ने काई, लिंडेन और पाइन की छाल, और ओक के फल खाने शुरू कर दिए; फिर उन्होंने घोड़े का मांस, कुत्ते और बिल्लियाँ खाना शुरू कर दिया, लेकिन यह भोजन भी कम ही उपलब्ध था। भूख से मरने वाले लोगों की अनगिनत बिना दफ़नाई गई लाशें सड़कों पर बिछी थीं; उनके दफ़न की देखभाल करने वाला कोई नहीं था, क्योंकि हर कोई उसी भयानक मौत को झेलने के डर में जी रहा था। भूख लोगों के दिलों में सभी मानवीय भावनाओं को दबाती हुई लग रही थी। भाई ने भाई को, पिता ने बेटे को, और माँ ने बेटी को रोटी का एक टुकड़ा देने से इनकार कर दिया। माता-पिता ने अपने लिए वह दयनीय निवाला सुनिश्चित करने के लिए अपने बच्चों को गुलामी में बेच दिया। अंत में, भूख और निराशा से पागल होकर, उन्होंने मानव शवों को खाना शुरू कर दिया, और कुछ इस हद तक पागल हो गए कि उन्होंने जीवित लोगों पर हमला किया, उन्हें मार डाला और खा गए। सड़कें सुनसान पड़ी थीं; हर कोई पैदल या गाड़ी से घर से बाहर निकलने से डरता था। जो पकड़े गए और दोषी ठहराए गए, उन्हें कोई भी फांसी रोक नहीं सकी; भूख ने दंड और मृत्यु के भय पर विजय प्राप्त कर ली। सभी नागरिक व्यवस्थाएँ टूट गईं: लूटपाट शुरू हो गई, साथ ही रोटी का कोई साधन खोजने की आशा में घरों को जलाया जाने लगा, और भाई-भ्रातृहत्या का कत्लेआम शुरू हो गया। धार्मिक राजकुमार अलेक्जेंडर, जो उस समय लगभग एक बच्चा ही थे, ने नोवगोरोड के लोगों के साथ इन सभी भयावह परिस्थितियों को सहा, और हम केवल कल्पना ही कर सकते हैं कि उन घटनाओं ने उनके नाजुक बच्चे की आत्मा को कैसे प्रभावित किया होगा। लेकिन यह एकमात्र दुर्भाग्य नहीं था। बाद के वर्षों में, ऐसी आपदाएँ एक से अधिक बार दोहराई गईं, यद्यपि कम तीव्रता के साथ; ये भूतपूर्व पीड़ा की याद दिलाते हुए, भविष्य के लिए भी भय पैदा करती रहीं।

गरीब लोगों की ये दुर्भाग्यपूर्ण स्थितियाँ धर्मनिष्ठ राजकुमार में उनके प्रति विशेष करुणा जगा गईं। एक प्राचीन जीवनी के अनुसार, अलेक्जेंडर यारोस्लाविच ज़रूरतमंदों और बेसहारा लोगों के एक सच्चे मित्र, विधवाओं और अनाथों के एक पिता, और भिखारियों तथा गरीबों के लिए एक पालनहार थे। उद्धारकर्ता की इस आज्ञा को ध्यान में रखते हुए कि पृथ्वी पर खजाना न इकट्ठा करें, उन्होंने उदारतापूर्वक जरूरतमंदों की सहायता की, और कोई भी प्रिंस के दरबार से अपनी मांग पूरी हुए बिना कभी नहीं गया।

ईश्वर की सजा की भयानक विपत्तियों के साथ-साथ, धर्मनिष्ठ राजकुमार अलेक्जेंडर को नोवगोरोड में रहते हुए, मानव मनमानी और अन्याय से उत्पन्न कई दुर्भाग्यों को देखना पड़ा।

वह स्वतंत्र शहर, जो अपनी स्वतंत्रता को बहुत प्रिय मानता था, हमेशा सभी के प्रति समान रूप से न्यायपूर्ण और विचारशील नहीं था। लोगों की सभाओं में, जहाँ राज्य के सभी मामलों पर निर्णय लिया जाता था, अक्सर अमीरों के प्रभाव में प्रस्ताव पारित किए जाते थे; इनका लोगों की स्थिति पर गंभीर प्रभाव पड़ता था गरीबों पर और इसने स्वाभाविक रूप से उनकी ओर से आक्रोश और असंतोष को जन्म दिया। जिनके साथ अन्याय हुआ था, वे हमेशा सत्ता में बैठे लोगों से

सुरक्षा नहीं पा सकते थे, क्योंकि यह अधिकार—जो लोकप्रिय सभाओं के प्रस्तावों को लागू करता था—आमतौर पर उन्हीं अमीर व्यक्तियों का होता था। और यह असामान्य नहीं था कि असंतोष खुली बगावत में बदल जाए; लड़ने वाले गुट उन लोगों के साथ कठोरता से पेश आते थे जिन्हें वे मुख्य अपराधी मानते थे; वोलखोव पुल पर[5792] , भयानक दृश्य सामने आए: जीवित लोगों को नदी में फेंक दिया गया, और केवल नोवगोरोड के संत की आवाज़ ने, जो शत्रुता और द्वेष को क्षमा करने और लोगों से अपने भाइयों के रक्त से प्रार्थना के माध्यम से खुद को शुद्ध करने का आह्वान कर रही थी, इस भाई-भ्रांत युद्ध को रोका। ऐसे हालात में, नोवगोरोड के राजकुमार शहर को शांत करने के लिए कुछ नहीं कर सकते थे; उन्हें घटित हो रहे भयावह दृश्यों का एक निष्क्रिय दर्शक बने रहने के लिए मजबूर होना पड़ा, क्योंकि उनका हस्तक्षेप, तनाव को शांत करने के बजाय, और भी अधिक रोष को भड़का सकता था। नोवगोरोडियन विचारों के अनुसार, शहर के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप करना राजकुमार का काम नहीं था।

ऐसे अवसर भी थे जब राजकुमार स्वयं—और विशेष रूप से उनके बोयार और अनुचर—जन आक्रोश का कारण बनते थे, क्योंकि वे स्थानीय आबादी के साथ हमेशा निष्पक्ष व्यवहार नहीं करते थे। धार्मिक राजकुमार अलेक्जेंडर यह सुनिश्चित करने के लिए बहुत सावधानी बरतते थे कि उनके अधीनस्थ, लोगों के साथ अपने व्यवहार में, असंतोष या शिकायत का कोई कारण न दें। उन्होंने अपने अनुचर मंडली को यह बुद्धिमानी भरी सलाह दी कि उन्हें अपने अधिकार का प्रयोग कैसे करना चाहिए।

वे कहते थे, 'ईश्वर ने हमें ईश्वर के लोगों पर अधिकार दिया है, और ईश्वर के न्याय के भयानक दिन हमें इसका हिसाब देना होगा कि हमने उस अधिकार का प्रयोग कैसे किया।' ईश्वर के भय से घिरे रहो, और उस सर्वव्यापी हिसाब-किताब के दिन को ध्यान में रखो जब प्रत्येक को उनके कर्मों के अनुसार पुरस्कृत किया जाएगा, सभी के साथ पूरी निष्पक्षता से न्याय करो; विवादित पक्षों के प्रति पक्षपात न दिखाओ, बल्कि अमीर और गरीब दोनों पर समान रूप से ध्यान दो। दोषियों को दंड देते समय क्रूर न बनो; दंड को दया के साथ संतुलित करो। क्रोध, चिड़चिड़ाहट या ईर्ष्या के प्रभाव में कुछ भी न करें। ज़रूरतमंदों को न भूलें; सभी की मदद करें; 'बेहिचक' दान करें, ताकि आप भी ईश्वर की दया के पात्र बन सकें।

इसमें कोई संदेह नहीं है कि धर्मपरायण राजकुमार अलेक्जेंडर ने खुद को केवल ऐसी ही शिक्षाओं तक सीमित नहीं रखा; बल्कि, अपने बुद्धिमान पूर्वज, व्लादिमीर मोनोमाख की सलाह को ध्यान में रखते हुए—जिन्होंने एक राजकुमार को स्वयं ही हर बात की जांच करने और जो काम वह स्वयं कर सकता और करना चाहिए, उसे दूसरों पर न छोड़ने की सलाह दी थी—उन्होंने अपने दरबारियों के कार्यों पर कड़ी नजर रखी। और इसके कारण, राजकुमार और नोवगोरोड के लोगों के बीच शांति और सद्भाव लगभग कभी भी भंग नहीं हुआ; लोगों ने राजकुमार या उनके अनुयायियों के खिलाफ एक भी बार कोई आक्षेप नहीं लगाया। 'हमारा राजकुमार निर्दोष है' - सेंट अलेक्जेंडर के बारे में नोवगोरोड के लोगों की यही राय थी। उन्होंने यह भावना तब भी दोहराई जब दुर्भावनापूर्ण लोगों के प्रभाव में, सामान्य सामंजस्य टूटने की कगार पर था; जब राजकुमार के गुणों को भूलकर, कलह के लिए जिम्मेदार लोग ऐसी परिस्थितियों में प्रचलित शब्द कहने के लिए तैयार थे: 'आप, राजकुमार, अपने दम पर हैं, और हम अपने दम पर हैं' – अर्थात्, हमें अब आपकी आवश्यकता नहीं है; जहाँ चाहें चले जाएँ।

लेकिन धर्मपरायण राजकुमार अलेक्जेंडर को केवल नोवगोरोड में जीवन की कठोर परिस्थितियों से ही नहीं जूझना पड़ा। अपनी युवावस्था में, प्रभु ने पूरे रूस के देश पर एक महान परीक्षा भेजी। 1223 की शुरुआत में ही, रूस के दक्षिण में एक भयंकर विजेता प्रकट हुआ, जो पहले किसी के लिए भी अज्ञात था – तातार। दक्षिणी रूस के राजकुमारों को नदी काल्की के तट पर तातारों के हाथों एक भयानक हार का सामना करना पड़ा[5793] , जिसने समकालीन लोगों के अनुसार, रूस की भूमि को पूरे 200 वर्षों तक शोक में डुबो दिया। लेकिन विजेता, मानो इस जीत से संतुष्ट हो, ने अपना आक्रमण जारी नहीं रखा और कुछ समय के लिए रूस को शांति में छोड़ दिया। रूस के उत्तर-पूर्व में लोगों ने आने वाली आपदा पर उचित ध्यान नहीं दिया; उन्होंने यह नहीं सोचा था कि वह भयानक दुश्मन फिर से प्रकट हो सकता है। राजकुमारों के बीच विवाद थे, जिसने रूस को और भी कमजोर कर दिया। और इसलिए, जब काल्का नरसंहार के 14 साल बाद, तातार रूसी सीमाओं के भीतर फिर से प्रकट हुए, तो उन्हें विनाश के रास्ते में लगभग कोई प्रतिरोध नहीं मिला। तातार नेता बटू ने अपनी सेना के

[5792] नोवगोरोड वोलखोव नदी द्वारा दो भागों में विभाजित है: सोफिया जिला, जहाँ मुख्य तीर्थस्थल – कैथेड्रल ऑफ़ सेंट सोफिया, द विजडम ऑफ़ गॉड (ईश्वर की बुद्धि) – स्थित है, और टॉर्गोवाया जिला, जहाँ तथाकथित यारोस्लाव का कोर्ट स्थित था।

[5793] काल्का दक्षिणी रूस में एक नदी है जो अज़ोव सागर में मिलती है।

साथ कामा और वोल्गा नदियों को पार कर एक के बाद एक रूसी रियासतों को लूट लिया। रयाज़ान, मास्को और व्लादिमीर—जो उस समय उत्तर-पूर्वी रूस की राजधानी थी—तबाह हो गए। ग्रैंड प्रिंस यूरी व्सेवोलोदोविच ने तातारों को रोकने की कोशिश की, और उन्हें सिटी नदी पर[5794] युद्ध में लड़ा, लेकिन वह हार गए और उस दुर्भाग्यपूर्ण युद्ध में उनकी मृत्यु हो गई।

अपने रास्ते में आने वाले अन्य शहरों को लूटने के बाद, टाटार नोवगोरोड की ओर बढ़े। हालांकि, जैसा कि इन भयानक घटनाओं के एक समकालीन ने लिखा है, नोवगोरोड के संतों, राजकुमारों और पूजनीय पिताओं की प्रार्थनाओं से, प्रभु ने वेलिकी नोवगोरोड और नोवगोरोड के राजकुमार की रक्षा की: नोवगोरोड से 100 वर्स्ट से भी कम दूरी पर, टाटार दक्षिण की ओर मुड़ गए, और रूसी शहरों की जननी - राजधानी, कीव को नष्ट करने के लिए निकल पड़े।

इस आक्रमण के समय से, रूसी इतिहास में एक कठिन दौर शुरू हुआ, जिसे 'तातार का जुआ' के नाम से जाना जाता है। महा राजकुमार के सिंहासन पर धर्मपरायण राजकुमार अलेक्जेंडर के पिता, यारोस्लाव वसेवोल्दोविच ने कब्जा कर लिया। उस समय रूस की राजधानी व्लादिमीर पहुँचने पर, उन्हें वहाँ खंडहर और लाशों के अलावा कुछ भी नहीं मिला। राजकुमार ने अथक कार्य शुरू किए: शहर को शवों से मुक्त कराया गया, बिखरी हुई आबादी को वापस लाया गया और उन्हें आश्वस्त किया गया, और व्यवस्था बहाल की गई। लेकिन कोई पूर्ण शांति नहीं थी, क्योंकि कोई नहीं जानता था कि विह भयानक विजेता अगला क्या करेगा, या वह अपनी विनाशकारी छापामारी का अंत कैसे करेगा। हर जगह, लोग खान द्वारा रूस पर एक नए हमले और पिछली भयावह घटनाओं के दोहराव से डरते थे। आबादी इतनी भयभीत थी कि, एक समकालीन वृत्तांत के अनुसार, 'तातार' शब्द का मात्र उल्लेख मात्र सुनते ही, हर कोई यह जाने बिना कि वे कहाँ भाग रहे हैं, हर दिशा में भाग खड़ा हुआ।

लोगों को आश्वस्त करने और यह पता लगाने के लिए कि खान का रूस के प्रति रुख क्या होगा, यारोस्लाव वसेवोलोदोविच बटू से दया मांगने के लिए होर्डे गए। इस भयभीत करने वाले खान की कृपा प्राप्त करने के लिए इस धर्मपरायण राजकुमार को इस यात्रा के दौरान बहुत सी कठिनाइयों, दुख और अपमान को सहना और अनुभव करना पड़ा। लेकिन यारोस्लाव वसेवोलोदोविच बटू की कृपा हासिल करने में सफल रहे। एक समकालीन इतिहासकार यह भी बताता है कि रूसी राजकुमार का तातार हॉर्ड में सम्मानपूर्वक स्वागत किया गया और रूस लौटने पर, सभी रूसी राजकुमारों पर सर्वोच्च अधिकार प्रदान किया गया।

अब रूसी लोग उन भयावह स्थितियों से और भविष्य को लेकर अपनी चिंता से कुछ राहत पा सकते थे। यह सच है कि टाटारों ने रूसी लोगों से प्रति व्यक्ति भारी कर और उनकी सभी मांगों का बिना सवाल के पालन करने की मांग की, लेकिन उन्होंने उन्हें अपनी छापों से परेशान नहीं किया, उनसे दूर रहे[5795] , रूसी राज्य जीवन के क्रम को अछूता छोड़ दिया और, सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि, रूसी धर्म, जो प्राचीन रूस में नागरिक व्यवस्था की नींव और उसके भविष्य के पुनरुत्थान की गारंटी – भारी जुए से मुक्ति – था।

तातारों से दूर नोवगोरोड में रहते हुए, धर्मनिष्ठ राजकुमार अलेक्जेंडर यारोस्लाविच ने उत्तर-पूर्वी रूस में व्यवस्था बहाल करने के अपने पिता के प्रयासों में कोई सीधा हिस्सा नहीं लिया। वास्तव में, उनके पास इस पर विचार करने का समय नहीं था। ठीक उसी क्षण जब उत्तर-पूर्वी रूस पर तातारों द्वारा विनाश का खतरा मंडरा रहा था, तब उत्तर-पश्चिमी रूसी शहर - वेलिकी नोवगोरोड और प्सकोव - एक कम खतरनाक नहीं दुश्मन: स्वीडिश, जर्मन और लिथुआनियाई लोगों से खतरे में थे।

रूस पर टाटारों की भारी पराजय और ग्रैंड प्रिंस की नोवगोरोड और प्सकोव के लोगों की सहायता करने में असमर्थता का लाभ उठाते हुए, उन्होंने रूसी सीमावर्ती शहरों पर अपना आक्रमण तेज कर दिया और कम प्रयास से उन्हें अपने शासन के अधीन करने की उम्मीद की।

रूसी उत्तर-पश्चिम पर एक भयंकर खतरा मंडरा रहा था। यहाँ दांव पर न केवल राजनीतिक स्वतंत्रता खोने और रूसी भूमि से कट जाने की संभावना थी, बल्कि ऑर्थोडॉक्स धर्म को खोने का भी खतरा था। पश्चिमी शत्रु इस सदियों पुराने रूसी तीर्थस्थल पर एक निर्लज्ज हमला कर रहा था, जिसे तो मूर्तिपूजक विजेताओं ने भी अछूता छोड़ा था। लंबे

[5794] सिटी, मोलोटा नदी की एक सहायक नदी है, जो टवर और यारोस्लाव प्रांतों से होकर बहती है।

[5795] रस पर विजय प्राप्त करने के बाद, तातारों ने वोल्गा और डॉन नदियों के किनारे के मैदानों पर कब्जा कर लिया और वहाँ अपना तातार साम्राज्य स्थापित किया, जिसे 'गोल्डन हॉर्ड' के नाम से जाना जाता था। हॉर्ड की राजधानी वोल्गा के निचले हिस्से पर स्थित सराई थी।

समय से, पोप 'वभिाजनवादयिों'[5796] के खलिाफ तलवार के दम पर लड़ने की आवश्यकता पर जोर दे रहे थे, ताकि उन्हें रक्त की नदयिों के माध्यम से पोप और कैथोलकि चर्च के अधीन लाया जा सके। ऐसा प्रतीत होता है कि तातार नरसंहार ने इसके लिए एक बहुत अनुकूल अवसर प्रदान कयिा, और यह आश्चर्य की बात नहीं है कि ऑर्थोडॉक्सी के खलिाफ लड़ने का आह्वान कैथोलकि चर्च के सर्वोच्च प्रतनिधि द्वारा अधकि जोरदार तरीके से कयिा जाने लगा और उनके कुछ आध्यात्मकि बच्चों द्वारा इस पर अधकि ध्यान दयिा जाने लगा। लेकनि धर्मनष्ठि राजकुमार अलेक्जेंडर यारोस्लावचि के व्यक्तित्व में, प्रभु ने ऑर्थोडॉक्स धर्म के ऐसे शक्तशिाली, अजेय रक्षक को खड़ा कयिा कि कैथोलकि उसके खलिाफ कुछ भी नहीं कर सके।

[5797]धर्मनष्ठि राजकुमार अलेक्जेंडर ने संघर्ष की अनविार्यता का पूर्वानुमान लगाया और इसकी तैयारी की। 1239 में, उन्होंने पोलोत्स्क के राजकुमार ब्रायाचसिलाव की बेटी से ववािह कयिा, जो बाहरी रूसी राजकुमारों में से एक थे और जो नोवगोरोड की तुलना में कैथोलकिों से और भी बड़े खतरे में थे। इस प्रकार अलेक्जेंडर यारोस्लावचि ने अपने ससुर में एकेडमक्सि ( ) के रूप में एक वश्विसनीय, भले ही वशिेष रूप से शक्तशिाली न हो, सहयोगी प्राप्त कयिा। राजकुमार की शादी टोरोपेट्स में हुई, जबकि शादी के भोज टॉर्जोक और नोवगोरोड में आयोजति कएि गए थे। और जैसे ही शादी का जश्न खत्म हुआ, धर्मनष्ठि राजकुमार अलेक्जेंडर ने तुरंत एक महत्वपूर्ण कार्य शुरू कर दयिा – नोवगोरोड-पस्कोव भूमि की सीमाओं पर कलिेबंदी का नर्मिाण, जहाँ से हमलों की सबसे अधकि संभावना थी। शेलोन नदी पर कलिों की एक श्रृंखला बनाई गई। लेकनि दुश्मन ने नोवगोरोड-पस्कोव सीमाओं को मजबूत करने के इन प्रारंभकि कार्यों को पूरा होने नहीं दयिा। बटू के आक्रमण के चार साल बाद, पश्चमिी दुश्मन के साथ एक भयंकर संघर्ष शुरू हुआ, जो धर्मपरायण राजकुमार अलेक्जेंडर यारोस्लावचि के लगभग पूरे जीवनकाल तक जारी रहा। स्वीडन वालों ने सबसे पहले हमला कयिा।

उस समय, राजा एरकि स्वीडशि सहिासन पर वरिाजमान थे। राजा के सबसे करीबी रश्तिेदार – बरिगर, एक बहादुर योद्धा और सैन्य कमांडर, जसिने पहले ही आज के फनिलैंड और उससे सटे नोवगोरोड क्षेत्रों पर अपनी साहसकि छापों के माध्यम से अपना नाम बना लयिा था – को उम्मीद थी कि नश्चिंतान एरकि की मृत्यु के बाद वह स्वीडशि सहिासन पर बैठ जाएगा। वह नई वजियों के माध्यम से लोगों का स्नेह जीतने की उम्मीद कर रहा था और पोप के उकसावे पर, उसने रूसी पर युद्ध छेड़ दयिा। स्वीडशि, नॉर्वेजयिन और फनिशि लोगों से मलिकर बनी एक बड़ी सेना के साथ, और कैथोलकि बशिपों के साथ, बर्गिर 1240 में इज़ोरा नदी के मुहाने पर रूसी लोगों के लिए अप्रत्याशति रूप से प्रकट हुआ[5798] और उसने नोवगोरोड में धर्मपरायण राजकुमार अलेक्जेंडर को एक चुनौतीपूर्ण चुनौती भेजी: 'मैं पहले से ही तुम्हारी भूमि में हूँ, इसे तबाह कर रहा हूँ, और मेरा इरादा तुम्हें भी बंदी बनाने का है। अगर तुम मेरा वरिोध कर सकते हो, तो करो।' बरिगर को यकीन था कि धर्मपरायण राजकुमार अलेक्जेंडर कोई वरिोध नहीं कर पाएंगे और वह पहले से ही अपनी जीत का जश्न मना रहे थे। और वास्तव में, उनके हमले ने नोवगोरोड के लोगों को चौंका दयिा, क्योंकि वे इसे रोकने के लिए पूरी तरह से तैयार नहीं थे। जैसा कि एक समकालीन ने देखा, यह देखना दुखद था कि ग्रैंड प्रंसि यारोस्लाव अपने बेटे को खतरे की सूचना नहीं दे सके और समय पर उसकी मदद के लिए नहीं आ सके, और अलेक्जेंडर यारोस्लावचि अपने पति को खतरे के बारे में चेतावनी नहीं दे सके। नोवगोरोड की सेना को इकट्ठा नहीं कयिा गया था। अलेक्जेंडर यारोस्लावकि के पास केवल एक छोटा सा दल था, जसिे उसने जल्दबाजी में नोवगोरोड के लोगों से मजबूत कयिा। फरि भी वह दुश्मन की इस दुस्साहसी चुनौती से वचिलति नहीं हुआ। इस खतरे के खलिाफ, उसने सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण रूप से ईश्वर से सुरक्षा और सहायता मांगी। सेंट सोफयिा, दव्यि ज्ञान, के नोवगोरोड कैथेड्रल में, धर्मनष्ठि राजकुमार ने प्रभु से मदद के लिए एक भावुक, अश्रुपूर्ण प्रार्थना की, उनसे अनुरोध करते हुए कि वे उनके घमंडी शत्रु के साथ उनके ववािद का न्याय करें और अपनी वरिासत को दुष्टों के हाथों में न सौंपें।

[5796] अर्थात्, संप्रदायवादी। यह नाम लैटनिों द्वारा ऑर्थोडॉक्स को दयिा गया था क्योंकि रूसी पोप के अधकिार या रोमन चर्च द्वारा नए परचिय कराए गए धर्मसद्धिांतों को स्वीकार नहीं करते थे।

[5797] धन्य राजकुमार अलेक्जेंडर यारोस्लावचि की पत्नी, अलेक्जेंड्रा ब्रायाचसिलावोना को ईश्वर की माता की एक चमत्कारी प्रतमिा आशीर्वाद के रूप में प्राप्त हुई। यह प्रतमिा, जसिे परंपरा के अनुसार संत ल्यूक सुसमाचारकार द्वारा चत्रिति कयिा गया था, यूनानी सम्राट मैनुएल द्वारा पोलोत्स्क की धन्य राजकुमारी, आदरणीय यूफ्रोसीन को उपहार के रूप में भेजी गई थी। (जो 23 मई 1173 को नधिन हो गईं)। टोरोपेट्स में अपनी शादी की याद में, अलेक्जेंड्रा ब्रायाचसिलावोना ने यह पवत्रि अवशेष वहीं छोड़ दयिा; यह आज भी टोरोपेट्स कैथेड्रल में रखा है और इसे 'मां ऑफ गॉड की कुर्सुन प्रतमिा' के नाम से जाना जाता है। पवत्रि त्रमिूर्ति का लकड़ी का चर्च, जसिमें धन्य राजकुमार अलेक्जेंडर का राज्याभषिेक हुआ था, आज तक नहीं बचा है। अब उस स्थान पर पवत्रि त्रमिूर्ति को समर्पति एक प्राचीन पत्थर का चर्च खड़ा है।

[5798] इझोरा नेवा की एक सहायक नदी है।

धार्मिक राजकुमार अलेक्जेंडर ने प्रार्थना में पुकारा, 'हे धर्मी, महान, शाश्वत और सर्वशक्तिमान ईश्वर, आपने स्वर्ग और पृथ्वी की रचना की, राष्ट्रों के क्षेत्रों की सीमाएँ स्थापित कीं, और उन्हें दूसरों की भूमि पर अतिक्रमण किए बिना रहने की आज्ञा दी। अपने वफादारों के छोटे से झुंड को, आपने आशा दी है, ताकि वे उन लोगों से न डरें जो उन पर हमला करते हैं। हे उदार प्रभु, अब हम पर दृष्टि डालिए, और इस शत्रु के घमंडी वचनों को सुनिए, जो आपके पवित्र चर्च को नष्ट करने, ऑर्थोडॉक्स धर्म को मिटा देने, और मसीहियों का निर्दोष रक्त बहाने का घमंड करता है। उसके साथ मेरे विवाद का न्याय कीजिए। हमारी सहायता के लिए उठो और हमारी रक्षा करो, ताकि हमारे शत्रु यह कहने का साहस न करें: 'उनका ईश्वर कहाँ है?' हे प्रभु, हम आप पर ही अपना भरोसा रखते हैं, और आपको ही महिमा देते हैं, अब और सदा के लिए और युगानुयुग।

उसी उत्कट प्रार्थना के साथ, धर्मनिष्ठ राजकुमार ने फिर ईसाई जाति की मध्यस्थ, विजयी सेनापति, परमेश्वर की माता, और ऑर्थोडॉक्स धर्म के पवित्र संरक्षकों और पवित्र रूस के स्वर्गीय मध्यस्थों और प्रार्थना-कर्मियों - धर्मनिष्ठ राजकुमार व्लादिमीर, बोरिस और सम्माननीय ग्लेब - की ओर रुख किया।

अपनी प्रार्थना समाप्त करने पर, धर्मनिष्ठ राजकुमार ने नोवगोरोड के बिशप स्पिरिडॉन से आशीर्वाद प्राप्त किया, अपने अनुचरों को गरीबों को दान देने और उनकी प्रार्थनाएँ माँगने का आदेश दिया, और फिर अपने अनुचरों के पास गए, जो अपनी संख्या कम होने के कारण निराश थे, उन्हें आगे आने वाले कार्य के लिए प्रोत्साहित करने के लिए। 'ईश्वर शक्ति में नहीं, बल्कि धार्मिकता में है' – इन शब्दों के साथ धर्मी नेता ने अपने साथियों को प्रोत्साहित किया। फिर, इन कुछ बहादुर लोगों के साथ, वह दुश्मन से मिलने के लिए तेजी से निकल पड़ा; और यहीं, नेवा नदी के किनारे, उस ऐतिहासिक दिन रूसी के लिए —उसके प्रबोधक, धर्मनिष्ठ राजकुमार व्लादिमीर (15 जुलाई) की धन्य स्मृति का दिन—प्रसिद्ध युद्ध हुआ, जिसके लिए अलेक्जेंडर यारोस्लाविच ने 'ऑफ़ द नेवा' की उपाधि अर्जित की।

उनके सामने आने वाले इस महान कार्य के लिए ऑर्थोडॉक्स धर्म के रक्षकों को मजबूत करने हेतु, प्रभु ने उन्हें एक चमत्कारिक संकेत प्रदान किया।

धर्मनिष्ठ अलेक्जेंडर की सेना में इज़ोरा का एक व्यक्ति पेलगस था, जिसका बपतिस्मा फिलिप के नाम से हुआ था, जिसे अलेक्जेंडर यारोस्लाविच ने रात की पहरेदारी सौंपी, क्योंकि वह एक अनुभवी योद्धा था जो इलाके को अच्छी तरह जानता था। अपने साथी जनजातियों के बीच, जो मूर्तिपूजा में डटे हुए थे, ईसाई पेलगस अपने धार्मिक जीवन के लिए सबसे अलग थे: वह अपना समय प्रार्थना, श्रम और उपवास के कार्यों में बिताते थे; और प्रभु ने इस भक्तिपूर्ण योद्धा को निम्नलिखित चमत्कारी दर्शन से सम्मानित किया।

सूर्योदय के समय, पेलगस ने नदी की दिशा से एक नाव के आने की आवाज़ सुनी और यह सोचकर कि यह दुश्मन है, उसने अपनी चौकसी दोगुनी कर दी। नौकर ऐसे लग रहे थे मानो एक धुंध में लिपटे हों जो उनके चेहरों को छिपा रही थी। नाव में खड़े केवल दो ही शूरवीर दिखाई दे रहे थे। उनके सुंदर चेहरे और वस्त्र पेलगस को परिचित लग रहे थे; और अचानक उसने एक आवाज़ सुनी जिसने उसके संदेह की पुष्टि की, उसके सभी संदेहों को दूर कर दिया और उसकी आत्मा को आनंद से भर दिया। युवा योद्धा से बात करते हुए, वृद्ध योद्धा ने कहा: 'भाई ग्लेब, उन्हें तेजी से नौका चलाने का आदेश दो; चलो हम अपने रिश्तेदार अलेक्जेंडर यारोस्लाविच की मदद के लिए जल्दी करते हैं।' ये पूजनीय शहीद, धर्मपरायण राजकुमार बोरिस और ग्लेब थे, जिनका धर्मपरायण राजकुमार अलेक्जेंडर मदद के लिए प्रार्थना में आह्वान कर रहे थे।

पेलगस ने जो देखा था, उसे राजकुमार को बताने के लिए जल्दी से दौड़ लगाई। इस चमत्कारिक संकेत से उत्साहित होकर, अलेक्जेंडर यारोस्लाविच ने उसी दिन दुश्मन पर हमला कर दिया। स्वीडिश लोगों को इस हमले की उम्मीद नहीं थी; उन्हें यह एहसास नहीं था कि दुश्मन इतना करीब था, न ही वे उनकी संख्या या ताकत के बारे में जानते थे। सुबह से शाम तक एक भयंकर युद्ध छिड़ गया।

अपने नेता से प्रेरित होकर, वफादार राजकुमार के अनुयायियों ने अद्भुत वीरता के कार्य दिखाए, जिससे उनके दुश्मन चकित रह गए। अलेक्जेंडर यारोस्लाविच स्वयं पूरे युद्ध में अग्रिम पंक्ति में रहे; उन्होंने स्वीडिश कमांडर के चेहरे पर घाव पहुँचाया। उनके एक सैनिक ने बिरिगर का तंबू काट दिया; एक अन्य, युद्ध की गर्मी में, एक स्वीडिश जहाज पर चढ़ गया और अपनी तलवार से उन दुश्मनों पर भयानक वार करता रहा, जो आश्चर्य और भय से भ्रम में पड़ गए थे। सभी मोर्चों पर पराजित और अपने सबसे बहादुर साथियों को खोने के बाद, स्वीडिशों ने रूसी सेना पर संख्यात्मक श्रेष्ठता होने के बावजूद, न तो लड़ाई फिर से शुरू करने की हिम्मत की और न ही सुबह तक युद्धक्षेत्र पर बने रहे। युद्ध में मारे गए लोगों के शवों से दो गड्ढे भरने और मारे गए योद्धाओं में सबसे विशिष्ट लोगों को अपने जहाजों पर ले जाने के बाद, वे

उसी रात नेवा के नरि्जन कनिारों से प्रस्थान करने के लिए नकिल पड़े। रूसी हताहत नगण्य थे: केवल बीस लोग मारे गए, जनिमें उन छह योद्धाओं में से एक, रटमीर भी शामलि था, जनि्होंने युद्ध में सबसे अधकि उत्कृष्टता दखिाई थी।

लेकनि नेवा पर यह शानदार वजिय केवल ड्रुज़निा और उसके नेता की बहादुरी से नहीं मलिी थी। प्रभु, जनि्होंने युद्ध शुरू होने से पहले एक चमत्कारी दृष्टि से रूसी योद्धाओं को प्रोत्साहति कयिा था, ने युद्ध के दौरान भी अपनी सहायता भेजी। अगले दनि, युद्ध में भाग लेने वाले इज़ोरा नदी के दूसरी ओर दुश्मन के शवों की भीड़ देखकर चकति रह गए, जो लगभग पार न की जा सकने वाली जगह पर थे, जहाँ युद्ध के दौरान एक भी रूसी योद्धा साहस नहीं कर पाया था। ईश्वर के स्वर्गदूतों ने अदृश्य रूप से पवति्र धर्म के कुछ ही रक्षकों की मदद की थी, उन दुश्मनों के खलिाफ जनि्होंने उस धर्म का अपमान कयिा था।

प्रभु की चमत्कारकि सहायता और प्राप्त वजिय के लिए धन्यवाद देने के बाद, धर्मपरायण राजकुमार अलेक्जेंडर बड़ी महमिा के साथ नोवगोरोड लौट आए, जहाँ नोवगोरोड के लोगों ने उनका उत्साहपूर्वक स्वागत कयिा।

पवति्र रूस ने कभी भी पवति्र राजकुमार और उनके अनुयाययिों की इस गौरवशाली वीरता को नहीं भुलाया; इसने युद्ध में मारे गए योद्धाओं के नामों को प्रार्थनापूर्वक स्मरण कयिा और धर्मपरायण राजकुमार अलेक्जेंडर के लिए 'नेवस्की' उपाधि को हमेशा के लिए संरक्षति रखा। दुश्मनों को भी अपनी हार लंबे समय तक याद रही। लेकनि नोवगोरोड के लोगों ने, जनि्हें सबसे बढ़कर अपने राजकुमार की इस वीरता का सम्मान करना चाहए थि, जाहरि तौर पर इसे जल्द ही भूल गए। खतरा टल गया था, और कुछ ही समय में वे राजकुमार से अलग हो गए। अलेक्जेंडर यारोस्लावचि ने नोवगोरोड छोड़ दयिा और पेरयिास्लावल चले गए। जल्द ही नोवगोरोड के लोगों को अपने कृतघ्न व्यवहार पर पछताना पड़ा।

नोवगोरोड में अशांति और संत अलेक्जेंडर के शहर से प्रस्थान के बारे में सुनकर, लविोनयिाई जर्मनों ने स्थति का लाभ उठाने का फैसला कयिा और प्सकोव पर हमला कयिा[5799] । प्सकोव के सीमा कलि इज़बॉर्स्क को जीतने के बाद, जर्मनों ने प्सकोव पर चढ़ाई कर दी। पस्कोव के लोग घेराबंदी का सामना नहीं कर सके, खासकर क्योंकि उनके बीच एक गद्दार था जसिने चुपके से जर्मनों को शहर में घुसने दयिा। अब सेंट ओल्गा का पवति्र शहर जर्मनों के कब्जे में आ गया। जर्मनों ने शहर में राज्यपाल नयिुक्त कए; जर्मन शासन की स्थापना के बाद, धर्म परविर्तन की उम्मीद थी: जर्मनों ने प्सकोव में एक कैथोलकि धर्मप्रांत स्थापति करने का नरि्णय लयिा।

लेकनि खतरा केवल पस्कॉव तक ही सीमति नहीं था: जर्मन नोवगोरोड पर भी आगे बढ़ रहे थे। सर्दयिों में नोवगोरोड वोडस्काया प्ययातनि[5800] पर कब्जा करने के बाद, उन्होंने वहाँ कोपोरी का कलि बनाया, टेसोव पर कब्जा कर लयिा, और नोवगोरोड से तीस वर्स्ट की दूरी पर लूटपाट और हत्या की घटनाएँ कीं, कैदयिों को पकड़कर उन्हें लविोनयिा भेज दयिा। नोवगोरोड में हर कोई भयभीत हो गया; व्यापार ठप हो गया, और शहर ने घेराबंदी के लिए खुद को तैयार कर लयिा, लेकनि एक नेता और कमांडर की अनुपस्थति का मतलब था कि शहर की रक्षा की तैयारी बहुत खराब थी। तब नोवगोरोड के लोगों को अपने प्रसदि्ध राजकुमार की याद आई, उन्हें सेंट अलेक्जेंडर के प्रति अपने कए अपराध का पछतावा हुआ, और उन्होंने चाहे कुछ भी हो जाए, उनसे नोवगोरोड लौटने की वनिती करने का संकल्प लयिा। इस उद्देश्य के लिए, नोवगोरोड के लोगों ने व्लादमिीर में ग्रैंड प्रसि यारोस्लाव वसेवोदोवचि को एक राजदूत मशिन भेजा, जसिमें उनसे धर्मपरायण राजकुमार अलेक्जेंडर को नोवगोरोड लौटने के लिए रहिा करने का अनुरोध कयिा गया।

यरोस्लाव ने अपने बेटे आंद्रेई के साथ नोवगोरोड में एक सेना भेजी। लेकनि नोवगोरोड के लोगों को आंद्रेई नहीं, बल्कि अलेक्जेंडर की ज़रूरत थी; उन्हें एहसास हुआ कि केवल वही उन्हें उस वपित्ति से बचा सकते थे जो उन पर आई थी, और इसलिए उन्होंने आर्चबशिप के नेतृत्व में एक नया राजदूत दल तुरंत महान राजकुमार के पास भेजा, ताकि एक बार फरि से अलेक्जेंडर यरोस्लावचि को राजकुमार के रूप में बहाल करने का अनुरोध कयिा जा सके। दयालु राजकुमार ने नोवगोरोड के लोगों द्वारा उन पर कए गए अपमान को उनके खलिाफ नहीं रखा, और उस स्थान पर शीघ्रता से पहुँचे जहाँ

[5799] 12वीं सदी के उत्तरार्ध में जर्मन लोग लविोनयिा (अब बाल्टकि क्षेत्र) में आए। 1201 में, उन्होंने वहाँ रगिा शहर की स्थापना की - जो लविोनयिा की राजधानी थी - और अगले वर्ष एक वशिष धार्मकि-सैन्य (आंशकि रूप से मठवासी, आंशकि रूप से सैन्य) एक ऑर्डर की स्थापना की गई, जसिने न केवल लविोनयिा क्षेत्र को जीतने का, बल्कि स्थानीय आबादी को सैन्य बल से कैथोलकि धर्म में परविर्तति करने का भी लक्ष्य नरि्धारति कयिा। 1237 में, 'ऑर्डर ऑफ द स्वॉर्ड ब्रदर्स' का वलिय एक अन्य समान ऑर्डर - 'ट्यूटनकि ऑर्डर' - के साथ हो गया, जसिने पहले वस्तिुला नदी के नचिले हस्सिों के साथ-साथ अपना प्रभुत्व स्थापति कयिा था।

[5800] नोवगोरोड की भूमि को पाँच भागों, या 'प्यातनि' में वभिाजति कयिा गया था। वोडस्काया प्यातनि में लाडोगा झील के आसपास स्थति भूमि शामलि थी।

उनकी बहुत आवश्यकता थी। नोवगोरोड में उनके आगमन के साथ ही सब कुछ बदल गया: शहर की ओर बढ़ रहे दुश्मन के खलिाफ लड़ाई की तैयारी तेजी से और सफलतापूर्वक की गई; हर कसिी का वजिय में वशि्वास बहाल हो गया, और वे अपने नायक - राजकुमार के साथ नए कारनामों के लएि प्रेरति हुए। युद्ध की अपनी तैयारयिाँ पूरी करने के बाद, अलेक्जेंडर यारोस्लावचि नोवगोरोड और नज़िनी रेजमिेंटों के साथ प्सकोव को मुक्त करने के लएि रवाना हो गए। जर्मनों को प्सकोव से खदेड़ दयिा गया, और प्सकोव के लोगों ने अपने मुक्तदिाता का खुशी-खुशी स्वागत कयिा।

लेकनि धर्मनरिपेक्ष राजकुमार ने खुद को केवल पस्कोव से जर्मनों को बाहर नकिालने तक ही सीमति नहीं रखा। रूस के उत्तर-पश्चमि में शांतकिो सुदृढ़ करना, दुश्मन को सबक सखिाना, और उनकी ओर से आगे के हमलों की संभावना को रोकना आवश्यक था। धर्मनरिपेक्ष राजकुमार ने उनके क्षेत्रों में आक्रामक अभयिान चलाकर जर्मनों को उनके हमलों और लूटपाट के लएि दंडति करने का संकल्प लयिा।

पवत्रि त्रमिूर्तकि े चर्च में, अपने धर्मनष्ठि संबंधी, पस्कोव के राजकुमार वसेवोल्द म्स्तस्लावचि की अवशेष-पेटकिा के सामने प्रार्थना करके और पस्कोव के लोगों की प्रार्थनाओं व शुभकामनाओं के साथ, अलेक्जेंडर यारोस्लावचि अपनी रेजमिेंटों के साथ लवािोनयिा के लएि रवाना हो गए। जर्मनों ने इतनी तेज हमला की उम्मीद नहीं की थी और वे कोई भी प्रतरिोध करने में असमर्थ थे: रूसी सेनाओं ने लवािोनयिा को तबाह कर दयिा। लवािोनयिा से प्सकोव लौटने के अपने सफर में, धर्मनष्ठि राजकुमार पईपस झील के कनिारे रुके, और यहीं, 5 अप्रैल 1242 को, जर्मन शूरवीरों के साथ प्रसद्धि लड़ाई हुई, जसिे इतहिास में 'बर्फ पर लड़ाई' (Battle on the Ice) के नाम से जाना जाता है[5801] ।

शूरवीरों की वशिाल सेना वजिय को लेकर आश्वस्त थी। 'आओ हम रूसी राजकुमार अलेक्जेंडर को बंदी बना लें; स्लावों को हमारा दास बनना चाहए,' योद्धाओं ने घमंड से कहा। लेकनि, ईश्वर की मदद पर भरोसा करते हुए और जसि उद्देश्य की वह रक्षा कर रहा था उसकी पवत्रिता और धार्मकिता में वशि्वास रखते हुए, धर्मपरायण राजकुमार इन घमंडी शब्दों से वचिलति नहीं हुआ। ना ही वह शूरवीरों के साथ टकराव में शुरुआती असफलता से नराश हुआ। दुश्मन की गतविधियिों पर नजर रखने के लएि धर्मनरिपेक्ष राजकुमार द्वारा भेजी गई हल्की अग्रमि इकाइयों का सामना मुख्य जर्मन सेना से हो गया और वे पराजति हो गईं। उनमें से कुछ को बंदी बना लयिा गया, जबकि अन्य '' पर हुई हार की दुखद खबर लेकर राजकुमार के पास वापस भाग गए। इसके बाद धर्मनरिपेक्ष राजकुमार ने अपने सैनकिों को उज़्मेन नदी के पास वोरोन्या कामन क्षेत्र में पैपस झील की बर्फ पर रोक दयिा[5802] और वहाँ एक नर्णिायक युद्ध की तैयारी करने लगे।

उनकी सेना में नोवगोरोड से आए नए सैनकिों ने बढ़ोतरी की, लेकनि तब भी, शूरवीरों की सेना की तुलना में, उनकी सेना बहुत कम थी। हालाँकि, इस संख्यात्मक कमजोरी की भरपाई योद्धाओं के उत्साह और एक न्यायसंगत कारण और अपने प्रयि राजकुमार के लएि अपना जीवन बलदिान करने की उनकी नडिर तत्परता से हो गई थी। नेता को अपने योद्धाओं के लड़ाकू जोश को बढ़ाने की आवश्यकता नहीं थी; सभी आसन्न घटना के महत्व से अवगत थे और गर्वति दुश्मन के खलिाफ नस्विार्थ भाव से युद्ध में उतर गए। 'हे हमारे प्रयि और सम्मानति राजकुमार! समय आ गया है; हम सभी अपनी जान तुम्हारे लएि दे देंगे' - ऐसी प्रेरक पुकारें रूसी योद्धाओं की कतारों से गूंज उठीं।

योद्धा सबसे पहले युद्ध में उतरे। सरि से पाँव तक लोहे के कवच में लपिटे, वे अपनी संख्या के दम पर रूसी सेना को कुचलने के इरादे से उस पर टूट पड़े। लेकनि यहाँ उनका सामना इतना बहादुरी भरा प्रतरिोध हुआ कि वे हक्के-बक्के रह गए। दुश्मन के अपेक्षति भगदड़ या भागने के बजाय, उन्होंने भय से देखा कि रूसी कतारें और कस गईं, मानो एक जीवति दीवार बन गई हो। शूरवीर भ्रम में पड़ गए और रुक गए। तब धर्मपरायण राजकुमार अलेक्जेंडर ने, दुश्मन के भ्रम को भांपते हुए, अपनी रेजमिेंटों के एक हस्सि को कुशलता से उनके चारों ओर मोड़ दयिा और उस दशिा से हमला कयिा जसिकी शूरवीरों ने बलि्कुल भी उम्मीद नहीं की थी। एक भयंकर युद्ध छड़ि गया। तलवारों के ढालों और हेलमेटों से टकराने की कान-फाड़ देने वाली गूँज, टूटती हुई भालों की चटकाहट, और मारे गए तथा पानी में डूब रहे लोगों की कराहों ने कमांडरों के लएि लड़ाई का नर्दिेशन करना या अपनी सेनाओं को आदेश देना असंभव बना दयिा। कोई संगठति लड़ाई नहीं हो रही थी। अपनी हार को भांपते हुए, शूरवीरों ने उन्हें घेरने वाली रूसी रेजमिेंटों की घेराबंदी को तोड़ने और पकड़े जाने से बचने के लएि

[5801] चुडस्कोए झील प्सकोव से बहुत दूर नहीं स्थति है। इसे पेइपस के नाम से भी जाना जाता है। यह वार्म लेक के नाम से जाने जाने वाले एक जलडमरूमध्य द्वारा पस्कॉव झील से जुड़ा है। चुडस्कोए झील 90 वर्स्ट लंबी और 47 वर्स्ट चौड़ी है; पस्कॉव झील 50 वर्स्ट लंबी और 20 वर्स्ट चौड़ी है।

[5802] यह भूभाग उस मोड़ पर स्थति है जहाँ चुद्स्कोए झील प्सकोव्स्कोए झील में बदलती है। इसका नाम वहाँ मंडराने वाले कागों की भीड़ के नाम पर पड़ा।

एक हताश प्रयास में अपनी सारी ताकत जुटा ली। लेकिन यह भी असंभव साबित हुआ। झील की बर्फ खून से सनी हुई थी और कई जगहों पर, वह वजन नहीं उठा सकी, टूट गई और अपने साथ लड़ाकों और उनके हथियारों दोनों को नीचे खींच ले गई। लड़ाई शाम देर तक चलती रही। घुड़सवारों को भारी नुकसान हुआ। जो जीवित बचे थे, वे भागने की कोशिश करने लगे, लेकिन रूसी सैनिकों ने उनका पीछा किया और उन्हें मार गिराया। सात वर्स्ट तक झील लाशों से पटी पड़ी थी। कई घुड़सवारों को कैद कर लिया गया, और उससे भी अधिक मारे गए; उस मिलिशिया का लगभग कुछ भी नहीं बचा था जो हाल ही में इतनी शक्तिशाली और संख्या में अधिक थी।

विजेता, अपने कमांडर के नेतृत्व में, विजय-उत्सव मनाते हुए प्सकोव लौटे। पचास सबसे प्रतिष्ठित शूरवीर धार्मिक राजकुमार के घोड़े के बगल में सवार थे, जबकि रूसी सेना के पीछे आम कैदियों की भीड़ चल रही थी। प्सकोव के लोगों ने अपने उद्धारकर्ता का खुशी-खुशी स्वागत किया।

'प्रभु, जिन्होंने नम्र दाऊद की विदेशी लोगों को हराने में मदद की, उन्होंने हमारे धर्मपरायण राजकुमार की भी पस्कोव शहर को मूर्तिपूजकों और विदेशियों से मुक्त कराने में मदद की है' – यह आनंदित उद्घोष हर जगह गूँज उठा।

हर जगह खुशी और जश्न का माहौल था; हर किसी को एहसास हुआ कि यह जीत कितनी महत्वपूर्ण थी, और इस दूरस्थ रूसी शहर के लिए धर्मपरायण राजकुमार ने कितनी बड़ी सेवा की थी, जो कई दुश्मनों के हमलों के खिलाफ अपनी स्वतंत्रता की रक्षा करने में असमर्थ था। प्सकोव के लोगों को पवित्र राजकुमार अलेक्जेंडर यारोस्लाविच की इस वीरता को कभी नहीं भूलना चाहिए। 'हे पस्कोव के अज्ञानी लोगों! यदि तुम महान राजकुमार अलेक्जेंडर यारोस्लाविच को भूल जाओगे, या उससे, या उसके बच्चों से, या उसकी वंश-परंपरा से मुंह मोड़ लोगे, तो तुम उन यहूदियों जैसे हो जाओगे, जिन्हें प्रभु ने मिस्र की दासता से मुक्त किया था, और जो रेगिस्तान में मानना से पोषित हुए, फिर भी उन्होंने प्रभु को भुला दिया,' एक समकालीन इतिहासकार इस शानदार विजय के अपने वृत्तांत का समापन करते हुए कहते हैं। इन शब्दों के साथ, ऐसा लगता है कि वह प्सकोव के लोगों को अपने बड़े भाइयों - नोवगोरोड के लोगों - के नक्शेकदम पर चलने के खिलाफ चेतावनी दे रहे हैं, जिन्होंने नेवा पर मिली विजय को इतनी जल्दी भुला दिया और न केवल अपनी कृतघ्नता दिखाई बल्कि अपने प्रसिद्ध राजकुमार की इस महान उपलब्धि को समझने और उसकी सराहना करने में अपनी अक्षमता भी प्रकट की।

पस्कोव की मुक्ति का भक्तिपूर्वक उत्सव मनाने के बाद, धर्मनिष्ठ राजकुमार अलेक्जेंडर यारोस्लाविच अपनी रेजिमेंटों के साथ नोवगोरोड के लिए रवाना हो गए, जहाँ उनका स्वागत पस्कोव जैसे उत्साह और आनंद के साथ किया गया।

पेइपस झील पर शानदार विजय को इन दोनों दूरस्थ रूसी शहरों में लंबे समय तक याद किया जाता रहा, और यहाँ तक कि 16वीं सदी के अंत तक भी, लोग उस लड़ाई में मारे गए योद्धाओं के नामों की याद में प्रार्थना करना जारी रखे हुए थे। विजेता की ख्याति दूर-दूर तक फैल गई। वरांगियन सागर[5803] , काला सागर और कैस्पियन सागर के तटों पर, रोम में और दूरस्थ एशिया में, जैसा कि धर्मनिरपेक्ष राजकुमार के एक समकालीन जीवनीकार ने उल्लेख किया है, अलेक्जेंडर यारोस्लाविच की शानदार विजयों की कहानियाँ सुनाई जाती थीं।

जबकि रूस में इस विजय का भव्यता से उत्सव मनाया जा रहा था, वहीं लिवोनिया में शूरवीरों की सेना की पराजय की खबर तेजी से फैली और सभी के दिलों में दहशत छा गई। जर्मनों को दिन-प्रतिदिन यह उम्मीद थी कि धर्मपरायण राजकुमार अलेक्जेंडर अपनी रेजिमेंटों के साथ लिवोनिया की राजधानी - रीगा - की ओर मार्च करने में देरी नहीं करेंगे, और उन्हें रूसी राजकुमार के हमले को पीछे हटाने या अपनी नई राजधानी की रक्षा अपनी ही कोशिशों से करने की कोई उम्मीद नहीं थी। ट्यूटोनिक ऑर्डर के मास्टर (नेता) ने तत्काल डेनमार्क के राजा को एक राजदूत दल भेजा, और उससे नोवगोरोड के राजकुमार के खिलाफ मदद मांगी।

लेकिन धर्मनिरपेक्ष राजकुमार अलेक्जेंडर का विजय प्राप्त करने का कोई इरादा नहीं था। अपना गौरवशाली कार्य पूरा कर, नोवगोरोड और प्सकोव को संभावित खतरे से मुक्त कर, वह अपने पेरियास्लावल के लिए रवाना हो गए। फिर जर्मनों ने, राजकुमार के नोवगोरोड से प्रस्थान की खबर सुनकर, वहाँ अपने दूत भेजने में जल्दबाजी की और एक शांति संधि तथा कैदियों के आदान-प्रदान का अनुरोध किया। उन्होंने अपनी सभी विजयों को त्याग दिया और नोवगोरोड के लोगों को नोवगोरोड की भूमि से सटे अपने क्षेत्रों का एक हिस्सा सौंपने के लिए तैयार थे, बशर्ते कि वे नोवगोरोडवासियों

[5803] प्राचीन काल में, यह नाम बाल्टिक सागर को दिया जाता था।

को शांतिके लिए मना सकें; और शांति 'नोवगोरोड की पूर्ण शर्तों पर', यानी स्वयं नोवगोरोडवासियों द्वारा प्रस्तावित शर्तों पर संपन्न हुई।

इस प्रकार स्वीडनियों और जर्मनों के विरुद्ध संघर्ष समाप्त हुआ।

रूसी लोगों के लिए नेवस्काया और चुद्स्काया की विजयें अत्यंत महत्वपूर्ण थीं। अब विदेशी लोगों द्वारा दूरस्थ रूसी नगरों पर कब्जा करने, उन्हें अपने शासन के अधीन लाने और रूसी लोगों को पवित्र ऑर्थोडॉक्स धर्म को त्यागकर कैथोलिक धर्म अपनाने के लिए मजबूर करने का कोई भय नहीं रहा। ईश्वर स्वयं सदियों पुराने विवाद को सुलझाने वाले बने, उन्होंने हमारी मातृभूमि को लैटिनों की साज़िशों से बचाया, जर्मन प्रभुत्व के प्रसार को एक सीमा दी, और अपने वफादार सेवक, धर्मपरायण राजकुमार अलेक्जेंडर के शक्तिशाली हाथ के माध्यम से, विदेशी सीमाओं पर अतिक्रमण करने और रूसी पवित्र स्थल - अर्थोडॉक्स धर्म - पर दावा करने के खिलाफ एक सख्त चेतावनी जारी की। पवित्र रूस को इसके रक्षक, धर्मपरायण, 'अजेय' - जैसा कि उनके समकालीन उन्हें कहते थे - प्रिंस अलेक्जेंडर यारोस्लाविच द्वारा एक महान सेवा प्रदान की गई, और पवित्र रूस ने इस महान सांसारिक पराक्रम को कभी भुलाया नहीं है, और न ही कभी भूलेगा।

दो शक्तिशाली पश्चिमी दुश्मनों को हराया जा चुका था और वे अब पहले जितने खतरनाक नहीं लगते थे। लेकिन एक नया दुश्मन उभरा - हालांकि उतना खतरनाक नहीं, फिर भी और भी क्रूर - लिथुआनियाई, जिनके विनाशकारी हमलों ने नोवगोरोड और प्सकोव क्षेत्रों की दक्षिण-पश्चिमी सीमाओं को त्रस्त कर दिया।

बाल्टिक सागर के पूर्वी तट पर, विस्तुला और पश्चिमी ड्विना नदियों के मुहाने के बीच के मैदान पर, एक लिथुआनियाई जनजाति—जो उत्पत्ति और भाषा दोनों में हमसे निकट थी—कई शताब्दियों से रह रही थी। गरीब और बौद्धिक रूप से पिछड़े होने के कारण, उन्हें अपनी पहली मुठभेड़ों में ही स्लावों की श्रेष्ठता को स्वीकार करने के लिए मजबूर होना पड़ा, वे परिधीय रूसी राजकुमारों के अधीन हो गए और उन्हें कर देने लगे। उस समय, लिथुआनियाई लोग अलग-अलग जनजातियों में विभाजित थे, जो अक्सर आपस में लड़ते-झगड़ते रहते थे और जिनमें किसी भी प्रकार के राज्य संगठन या व्यवस्था का अभाव था। हालांकि, 13वीं शताब्दी की शुरुआत में, ट्यूटनिक ऑर्डर के शूरवीरों के लगातार हमलों के दबाव में, अब तक बिखरे हुए लिथुआनियाई जनजातियों ने एकजुट होना शुरू कर दिया। लिथुआनियाई लोगों के बीच युद्धप्रिय राजकुमार उभरे, जिन्होंने देश में दिन-ब-दिन अपनी शक्ति और प्रभाव बढ़ाया। शुरू में, लिथुआनियाई राजकुमारों ने अपने सामान्य दुश्मन - जर्मनों - के खिलाफ रूसी राजकुमारों के साथ गठबंधन में लड़ाई लड़ी, लेकिन बाद में उन्होंने अपने ही सहयोगियों पर भी हमला करना शुरू कर दिया। अपने मजबूत और तेज घोड़ों पर सवार होकर, छोटे-छोटे दलों में, उन्होंने रूसी सीमावर्ती जिलों पर छापेमारी की, तबाही मचाई और नरसंहार किए। नोवगोरोड और प्सकोव के बाहरी कस्बों और गांवों के निवासी अप्रत्याशित लिथुआनियाई हमलों के निरंतर भय में रहते थे; और चूंकि नोवगोरोड और प्सकोव के लोग, जो मुख्य रूप से जर्मनों और स्वीडिशों से लड़ने में व्यस्त थे, उन्होंने मुख्य रूप से एक भारी हथियारबंद सेना और बहुत कम हल्के, मोबाइल सैनिक - धनुर्धारियों - को बनाए रखा था, और इसलिए वे लिथुआनिया से सटे क्षेत्रों की रक्षा करने में असमर्थ थे। यहाँ भी, धर्मपरायण राजकुमार अलेक्जेंडर उनके रक्षक साबित हुए।

बर्फ पर लड़ाई के उस यादगार वर्ष की गर्मियों में, नोवगोरोड को लिथुआनियाई लोगों के लूटपाट वाले हमलों की खबर मिली, और ठीक उसी क्षण धर्मपरायण राजकुमार ने उनसे लड़ना शुरू कर दिया। एक ही अभियान में, वह सात दुश्मन टुकड़ियों को तितर-बितर करने में कामयाब रहे, जो विभिन्न स्थानों पर एक-दूसरे से अलग-अलग काम कर रही थीं। लिथुआनियाई टुकड़ियों के कई नेता राजकुमार की रेजिमेंटों द्वारा पराजित हुए या बंदी बना लिए गए। अब लिथुआनियाई, जैसा कि इन घटनाओं के एक प्रत्यक्षदर्शी इतिहासकार ने लिखा है, राजकुमार अलेक्जेंडर के नाम से डरने लगे, लेकिन वे अपनी लूटपाट की छापों को बंद करने के लिए तैयार नहीं थे।

1245 में, उन्होंने टॉर्जोक और बेझेत्स्क के आसपास के इलाकों में तबाही मचाई और अपनी लूट की संपत्ति और कैदियों के साथ, वे पहले ही घर लौटने की तैयारी कर रहे थे। लेकिन टोरोपेट्स की दीवारों के नीचे उन पर नोवोटॉर्ज्स्क, ट्वेर और दमित्रोव के लोगों की संयुक्त सेना ने हमला कर दिया, और खुले मैदान में हारने के बाद, वे टोरोपेट्स में शरण लेने लगे। तब, प्राचीन टोरोपेट्स—जो प्रिंस मस्तिस्लाव मस्तिस्लाविच द ब्रेव का आवंटित क्षेत्र था—की रक्षा के लिए, धर्मपरायण प्रिंस अलेक्जेंडर अपने छोटे दल और नोवगोरोड के लोगों के साथ शीघ्रता से पहुँचे। घेराबंदी के पहले ही दिन, धर्मपरायण प्रिंस की सेनाओं द्वारा टोरोपेट्स पर कब्जा कर लिया गया। लिथुआनियाई लोग शहर से भागने के

लिए दौड़ पड़े, लेकिन अलेक्जेंडर यारोस्लावविच के अनुयायियों ने उन्हें घेर लिया और उन्हें अपने हमलों की भारी कीमत चुकानी पड़ी। उनके आठ नेता युद्ध में मारे गए; जो बच गए, वे अपना लूट का माल छोड़कर भाग निकले।

लेकिन धर्मनिष्ठ राजकुमार अलेक्जेंडर ने इस जीत पर संतोष नहीं किया। अभिमानी दुश्मन को सबक सिखाने और रूसी सीमाओं को आगे के लिथुआनियाई हमलों और तबाही से बचाने के लिए, उन्होंने नोवगोरोडवासियों की एक और अभियान में साथ चलने की अनिच्छा के बावजूद, केवल अपने छोटे से दल के साथ दुश्मन का पीछा करने के लिए प्रस्थान किया। झील ज़िव्त्सा के पास, उन्होंने भगोड़ों को पकड़ लिया और उन्हें आखिरी आदमी तक खत्म कर दिया। फिर वह वटिबस्क गए, जहाँ उनके ससुर ब्रयाचिस्लाव का शासन था, और थोड़ी देर आराम करने के बाद एक बार फिर लिथुआनियाई लोगों के खिलाफ निकल पड़े, इस बार उनके ही क्षेत्र के अंदर गहराई तक; उन्होंने उस्व्यात के पास उनकी एक और मिलिशिया को बुरी तरह पराजित किया और अपने दुश्मनों के दिलों में इतना खौफ पैदा कर दिया कि वे लंबे समय तक रूसी क्षेत्रों पर हमला करने की हिम्मत नहीं कर सके।

[5804]इस प्रकार धर्मनिष्ठ राजकुमार अलेक्जेंडर यारोस्लावविच ने बहादुरी से अपने उत्तर-पश्चिमी क्षेत्र की रक्षा की। अपनी असाधारण बहादुरी और सैन्य कौशल के माध्यम से, उन्होंने प्राचीन रूस के लिए तातारों के शासन के शुरुआती वर्षों जैसे कठिन समय में भी, यह साबित कर दिया कि तातारों से पराजित एक रूसी भी अपनी स्वतंत्रता और अपने धर्म की रक्षा करने में सक्षम है। न केवल प्राचीन रूस के उत्तर-पश्चिमी क्षेत्रों का बचाव करने में, बल्कि उन्हें पूरी तरह से सुरक्षित करने में भी कामयाब रहे, और साथ ही पश्चिमी दुश्मन को यह साबित कर दिया कि तातारों से पराजित एक रूसी भी अपनी स्वतंत्रता और अपने धर्म की रक्षा करने में सक्षम था।

केवल नोवगोरोड-पस्कोव क्षेत्र में ही लोग इस धर्मनिष्ठ राजकुमार की विजयों पर प्रसन्न नहीं हुए। उस समय उनकी खबरें पूरे रूस में फैल गईं, जिसने कठिन परीक्षाओं के समय रूसी लोगों को प्रोत्साहित किया; सभी की निगाहें उस वीर राजकुमार पर टिकी थीं, जिसने एक बेहतर भविष्य की आशा जगाई। टैटरों के शासन के अधीन कराह रही उत्तर-पूर्वी रूस, नोवगोरोड से कम उत्सुक नहीं थी कि वह धर्मनिष्ठ राजकुमार अलेक्जेंडर को अपने महा-राजकुमार के सिंहासन पर देखे, और नोवगोरोड के लोगों की तुलना में उसकी उपलब्धियों की सराहना करने में बेहतर थी।

1246 की घटनाओं ने उत्तर-पश्चिमी रूस में धर्मनिष्ठ राजकुमार अलेक्जेंडर की गतिविधियों को अस्थायी रूप से समाप्त कर दिया, और उन्हें उत्तर-पूर्व वापस बुला लिया। उस वर्ष, धर्मपरायण राजकुमार अलेक्जेंडर के पिता - व्लादिमीर के महा राजकुमार यारोस्लाव वसेवोल्दोविच[5805] - की होर्डे में शहीद होकर मृत्यु हो गई। पुरानी रूसी प्रथा के अनुसार, महा राजकुमार के सिंहासन का अधिकार दिवंगत राजकुमार के भाई, स्वियातोस्लाव वसेवोल्दोविच का था। लेकिन अब सर्वोच्च अधिकार और राजसी उपाधियाँ प्रदान करने का अधिकार तातारों के पास था, और खान की स्वीकृति सुनिश्चित करने के लिए, स्वियातोस्लाव को स्वयं होर्डे की यात्रा करनी पड़ी। उसी वर्ष, स्वियातोस्लाव के भतीजे—आंद्रेई और अलेक्जेंडर यारोस्लावविच—भी खान को श्रद्धांजलि देने के लिए होर्डे के लिए रवाना हुए।

नोवगोरोड के पराक्रमी राजकुमार और उसकी प्रसिद्ध विजयों की खबरें ख़ान तक पहुँच चुकी थीं। बटू उस धर्मपरायण राजकुमार को देखना चाहता था, जिसके बारे में इतना कुछ कहा जा रहा था, और उसने तुरंत ही उसके हॉर्ड के सामने उपस्थिति होने की मांग की।

'ईश्वर ने कई लोगों को मेरे अधीन कर दिया है; निश्चित रूप से आप अकेले ही अधीन नहीं होना चाहेंगे? यदि आप अपनी भूमि को बचाना चाहते हैं, तो आकर मुझे श्रद्धांजलि दें,' बटू ने आदेश दिया कि यह बात अलेक्जेंडर यारोस्लावविच तक पहुँचा दी जाए।

उस भयानक शासक के इस आदेश की अवज्ञा करना असंभव था, और वह धर्मनिष्ठ राजकुमार लंबे सफर पर निकल पड़ा।

यह ज्ञात नहीं था कि वहाँ उसका क्या इंतज़ार कर रहा था। वहाँ उनके पिता का सम्मानपूर्वक स्वागत किया गया था, लेकिन वह सम्मानजनक स्वागत अपमान और तिरस्कार की एक पूरी श्रृंखला की कीमत पर मिला था। राजकुमारों को शुद्धिकरण की आग से गुजरने, एक झाड़ी के सामने, दिवंगत ख़ानों की परछाइयों के सामने झुकने आदि के लिए मजबूर किया गया था। सभी रूसी राजकुमार इन मांगों को मानने के लिए सहमत नहीं थे, जो एक ईसाई के लिए अपमानजनक थीं,

---

[5804] उस समय, उत्तर-पूर्वी रूसी, स्वीडिश, जर्मन और लिथुआनियाई जैसे शक्तिशाली दुश्मनों के खिलाफ अलेक्जेंडर यारोस्लावविच के संघर्ष में सहायता और समर्थन प्रदान करने में लगभग असमर्थ था।

[5805] कुछ राजकुमार के दुश्मनों ने खान के सामने यारोस्लाव वसेवोदोविच पर बदनामी फैलाई। तातारों ने उसे जहर दे दिया।

और उन्होंने अपनी अवज्ञा की कीमत अपनी जान से चुकाई। रूसी राजकुमार-शहीद मखिाइल यारोस्लावचि ऑफ चेरनगिोव का उदाहरण धर्मपरायण राजकुमार अलेक्जेंडर को नस्सिंदेह अच्छी तरह से पता था। हालांकि, उसी समय, उनके पति के उदाहरण से यह भी पता चला कि खान की सभी मांगों का पालन करने और आज्ञाकारिता करने पर भी हमेशा जान नहीं बचती। यारोस्लाव वसेवोदोवचि, जिन्हें होर्डे में अपनी पहली यात्रा पर सम्मान के साथ स्वागत किया गया था, जब वे दूसरी बार आए तो तातारों ने उन्हें जहर दे दिया। और धर्मनिष्ठ राजकुमार अलेक्जेंडर ने विधर्मी अनुष्ठानों को करने से इनकार करने का संकल्प लिया, भले ही इस इनकार की कीमत उन्हें अपनी जान चुकानी पड़े। ऑर्थोडॉक्स धर्म का एक बहादुर रक्षक, अपने युवा काल से ही प्रभु द्वारा चुनी गई भक्ति का एक पात्र—क्या वह अन्यथा कर सकता था!

पवित्र उपहार और आर्चबिशप का आशीर्वाद प्राप्त करने के बाद, वह नोवगोरोड से होर्डे के लिए रवाना हो गया।

जब धर्मनिष्ठ राजकुमार होर्ड में पहुँचे और खान के सामने पेश किए जाने से पहले, उन्हें टाटारों के बीच प्रचलित अनुष्ठान करने का आदेश दिया गया, तो उन्होंने इस आज्ञा का पालन करने से इनकार कर दिया। उन्होंने कहा, 'मैं एक ईसाई हूँ, और मेरे लिए किसी प्राणी के सामने सिर झुकाना उचित नहीं है। मैं पिता और पुत्र और पवित्र आत्मा, एक ईश्वर की उपासना करता हूँ, जो त्रिमूर्ति में महिमामय है, जिसने स्वर्ग, पृथ्वी और उनमें जो कुछ भी है, उसे बनाया है।' पवित्र राजकुमार के शांत, दृढ़ उत्तर ने खान के दरबारियों को चकित कर दिया; लेकिन वे और भी अधिक हैरान रह गए जब बटू ने, अलेक्जेंडर यारोस्लावचि द्वारा टाटार अनुष्ठान करने से इनकार करने की बात सुनकर, ऐसे मामलों में सामान्य आदेश देने के बजाय—"अवज्ञाकारी को मौत"—यह आदेश दिया कि संत पर और कोई जबरदस्ती न की जाए और उसे तुरंत उसके पास लाया जाए।

धर्मनिष्ठ राजकुमार ने खान को संबोधित करते हुए और उनके सामने झुकते हुए कहा, 'खान, मैं आपके सामने इसलिए झुकता हूँ क्योंकि ईश्वर ने आपको सिंहासन का सम्मान दिया है, लेकिन मैं केवल प्राणियों के सामने नहीं झुकूँगा। मैं एक ही ईश्वर की सेवा करता हूँ; मैं उनका सम्मान करता हूँ और उनकी पूजा करता हूँ।'

बाटू ने अलेक्जेंडर यारोस्लावचि के सुंदर, साहसी चेहरे को काफी देर तक देखा और अंत में, अपने चारों ओर खड़े दरबारियों की ओर मुड़कर कहा: 'उन्होंने मेरे सामने उसके बारे में सच कहा था: उससे बड़ा कोई राजकुमार नहीं है।' धर्मपरायण राजकुमार का खान की पत्नी द्वारा भी सम्मानपूर्वक स्वागत किया गया।

बाटू एक स्वतंत्र शासक नहीं था; उसे केवल ग्रेट खान का राज्यपाल माना जाता था, जो बैकाल झील के परे, एशियाई गोबी रेगिस्तान के पहाड़ी किनारे पर स्थित कारा-कोरम में रहता था। अपने तत्काल अधिपति - गोल्डन होर्डे के खान - को श्रद्धांजलि अर्पित करने के बाद, रूसी राजकुमारों को मंगोलों के सर्वोच्च शासक को उनकी दूरस्थ राजधानी में श्रद्धांजलि देने के लिए निकलना आवश्यक था। यह लंबा और अत्यंत कठिन सफर बटू के आदेश पर, धर्मपरायण राजकुमार अलेक्जेंडर यारोस्लावचि[5806] द्वारा भी किया जाना था।

उन्हें एशिया के शासक ने आदरपूर्वक स्वागत किया और वे कुछ समय तक मंगोल राजधानी में रहे, जहाँ उन्होंने इन रूसी शासकों के चरित्र का बारीकी से अवलोकन किया। 1250 में ही अलेक्जेंडर यारोस्लावचि और उनके भाई एंड्रे रूस लौटे। खान ने आंद्रेई को राजसी सिंहासन प्रदान किया, जबकि कीव और नोवगोरोड को अलेक्जेंडर यारोस्लावचि के पास छोड़ दिया। लेकिन कीव, जो रूसी शहरों की जननी और रूस की सबसे प्राचीन राजधानी थी, तातारों द्वारा की गई तबाही के बाद खंडहर में बदल गया था। कीव क्षेत्र की आबादी तातारों से भाग गई, कुछ दक्षिण-पश्चिम की ओर, आज के गलीसिया में, और अन्य उत्तर-पूर्व की ओर, व्लादिमीर रस में। अलेक्जेंडर यारोस्लाविच का वहाँ कोई काम नहीं था, और इसलिए, व्लादिमीर में कुछ समय बिताने के बाद, वह वेलिकी नोवगोरोड लौट आए।

[5806] इस यात्रा की कठिनाइयों का अंदाज़ा मध्य एशियाई रेगिस्तानों के आधुनिक यात्रियों के विवरणों से लगाया जा सकता है। 'वनस्पति रहित, घास के मैदानों का अंतहीन विस्तार, यात्री की आत्मा पर एक उदास, दमनकारी छाया डालता है। इन भयानक रेगिस्तानों से जानवर भाग जाते हैं। यहां तक कि छिपकलियाँ और कीड़े-मकोड़े भी शायद ही कभी दिखाई देते हैं। कभी-कभी, पैरों तले मृत घोड़ों, खच्चरों और ऊंटों की हड्डियाँ मिल जाती हैं। असहनीय गर्मी से जमीन झुलस जाती है; सूरज सुबह से शाम तक निर्दयता से तपता रहता है। हवा में एक भी झोंका नहीं चलता, जो गर्मी से एक पल की भी राहत दे। केवल कभी-कभार ही एक गर्म आंधी गुज़रती है, जिसके आगे नमक की धूल के घुमावदार स्तंभ चलते हैं। तूफान के दौरान, यह नमक की धूल यात्रियों को घेर लेती है और उनकी आँखों को अँधा कर देती है।'

नोवगोरोद के लोगों ने उनका खुशी-खुशी स्वागत कयिा; लेकनि यह खुशी जल्द ही दुख और चतिा से फीकी पड़ गई: धर्मपरायण राजकुमार, कठनि यात्रा और हॉर्ड में झेली गई यातनाओं से थका-हार कर, गंभीर रूप से बीमार पड़ गया। नोवगोरोड के लोग अपने राजकुमार की बीमारी की प्रगतकिो चतिा के साथ देख रहे थे; सुबह से रात तक, चर्च भक्त राजकुमार के ठीक होने के लएि प्रार्थना करने वाले लोगों से खचाखच भरे रहते थे। और प्रभु ने लोगों की प्रार्थनाओं को अस्वीकार नहीं कयिा: भक्त राजकुमार अपनी गंभीर बीमारी से ठीक हो गए।

अब नोवगोरोड के लोगों को शांतकिा समय मलिा। अलेक्जेंडर यारोस्लावचि की प्रसद्धि वजियों को ध्यान में रखते हुए, उनके पश्चमिी पड़ोसयिों ने अपने हमलों को दोहराने की हम्मित नहीं की, और केवल नॉर्वेजयिनों ने ही कभी-कभार नोवगोरोड की सीमाओं पर छापेमारी की। धार्मकि राजकुमार भी अपने राज्य को नॉर्वेजयिाई हमलों से सुरक्षति रखना चाहते थे; उन्होंने नॉर्वेजयिाई लोगों को नोवगोरोड के लोगों के साथ गठबंधन में लाने का प्रयास कयिा। इस उद्देश्य के लएि, नॉर्वे के राजा हॉकॉन को एक राजदूत मशिन भेजा गया, जसिे साथ ही यह प्रस्ताव देने का नर्दिेश दयिा गया कि राजा अलेक्जेंडर यारोस्लावचि के साथ एक रश्तिेदारी गठबंधन करे – अपनी बेटी क्रस्टिीना का ववािह अलेक्जेंडर के बेटे, वासलिी से करके।

प्रस्तावति ववािह नहीं हुआ, लेकनि राजदूतों के मुख्य उद्देश्य की पूर्तहिो गई: नॉर्वे के राजा ने भी बदले में नोवगोरोडवासयिों के साथ एक संधकिरने के लएि नोवगोरोड को राजदूत भेजे, और उस समय से नॉर्वे के हमले बंद हो गए। इस संधकि समापन के तुरंत बाद, अलेक्जेंडर यारोस्लावचि ने नोवगोरोड के राजसी सहिासन को स्थायी रूप से त्याग दयिा।

आंद्रेई यारोस्लावचि, जन्हिें ग्रैंड प्रसि की उपाधप्रिदान की गई थी, उनमें न तो अपने बड़े भाई की वशिेषता रही समझदारी थी और न ही राजनेता जैसी बुद्धमित्ता। उन्होंने राज्य के मामलों पर बहुत कम ध्यान दयिा, अपना अधकिांश समय वभिन्नि प्रकार के मनोरंजन में बतिाया, अपने आसपास अनुभवहीन सलाहकारों को रखा, और तातारों के साथ तालमेल बठिाने में असफल रहे। हॉर्ड ने उसे एक वद्रिोही राजकुमार माना, और बटू के उत्तराधकिारी सार्ताक ने उस रूसी राजकुमार को दंडति करने का नश्चिय कयिा। उसने नेव्र्यू की कमान में अपनी सेनाएँ उसके खलिाफ भेज दीं। जैसे ही एंड्रे यारोस्लावचि को ततारों के आने की खबर मलिी, वह व्लादमिीर से भाग गया, पहले नोवगोरोड और फरि, जब नोवगोरोड के लोगों ने उसे आश्रय देने से इनकार कर दयिा, तो वह स्वीडन चला गया[5807] । आबादी को महाप्रसि के लापरवाह कार्यों की कीमत चुकानी पड़ी। यह धर्मनरिपेक्ष प्रसि अलेक्जेंडर थे जो उसकी रक्षा के लएि आए।

अपने देश को टाटारों के वनिाश से बचाने के लएि, अलेक्जेंडर यारोस्लावचि होर्डे के लएि रवाना हुए और न केवल ख़ान के क्रोध को शांत करने में कामयाब रहे—जसिसे रूस में शुरू हुआ खून-खराबा रुका—बल्कि ख़ान से एक चार्टर भी प्राप्त कयिा जसिमें उनके महा-राजकुमार के पद की पुष्टकिी गई थी। यहीं से धर्मनरिपेक्ष राजकुमार की अपनी मातृभूमकि के प्रतआिात्म-बलदिानी सेवा शुरू हुई, क्योंकि उन्होंने ततारो के जुए के बोझ को कम करने के लएि अपनी सारी ऊर्जा समर्पति कर दी।

अलेक्जेंडर यारोस्लावचि ने बंदयिों को छुड़ाने के लएि अपने राजसी खजाने पर कोई खर्च नहीं कयिा, जन्हिें ततार बड़ी संख्या में होर्डे ले जा रहे थे। उन्होंने यह भी सुनश्चिति कयिा कि बंधन में रहे लोग अपने दुख में मुख्य सांत्वना - प्रार्थना और दैवीय सेवा - से वंचति न रहें। मेट्रोपॉलटिन सरिील के साथ मलिकर, उन्होंने खान से होर्डे की राजधानी - साराई में एक रूसी धर्मप्रांत स्थापति करने की अनुमतप्रिाप्त की।

लेकनि केवल बंदयिों को ही धर्मनरिपेक्ष राजकुमार की देखभाल की आवश्यकता नहीं थी। नेव्र्यूव के आक्रमण के बाद, उत्तर-पूर्वी रूस एक बार फरि तबाह हो गया था, और धर्मनरिपेक्ष राजकुमार अलेक्जेंडर ने तबाह हो चुके चर्चों को बहाल करने, बखिरे हुए लोगों को एकत्रति करने, और उन्हें तबाह खंडहरों के बीच बसाने में मदद करने में शीघ्रता दखिाई। एक समकालीन ने पवत्रि राजकुमार के बारे में टप्पिणी की, 'एक पति की तरह, उन्होंने अपने लोगों की देखभाल की; और इन प्रयासों के कारण, महान रयिासत में धीरे-धीरे शांतऔर व्यवस्था बहाल हो गई।' धर्मपरायण राजकुमार न केवल आबादी को आश्वस्त करना चाहते थे, बल्कि उनकी दुर्दशा को भी कम करना चाहते थे और जहाँ तक संभव हो, तातारों का जुआ हल्का करना चाहते थे।

[5807] बाद में, राजकुमार अलेक्जेंडर ने राजकुमार आंद्रेई का खान से मेल-मलिाप कराया। आंद्रेई अपने देश लौट आए और उन्हें सुज़दाल का राज्यपाल नयिुक्त कयिा गया।

रूसी शासन प्रणाली में बदलाव किए बिना, और पवित्र धर्म और धार्मिक व्यवस्था को अछूता रखते हुए, तातारों ने बदले में रूस पर एक भारी कर लगाया। उन्होंने जो कुछ भी सर्वश्रेष्ठ और सबसे मूल्यवान था, वह सब ले लिया, और अपनी मांगों में इस बात पर कोई ध्यान नहीं दिया कि उनके प्रजाजन उनसे मांगी गई राशि में कर का भुगतान करने में सक्षम थे या नहीं। तातारों ने प्रति व्यक्ति कर लगाया, अमीरों और गरीबों में कोई भेदभाव नहीं किया; उन्होंने विधवाओं को बिना किसी दया के होर्डे ले जाकर उन्हें दासता में धकेल दिया।

1257 में, रूसी लोगों से प्राप्त होने वाली आय को और अधिक सटीक रूप से निर्धारित करने के उद्देश्य से, तातारों ने सभी रूसी लोगों की जनगणना करने के लिए अपने अधिकारियों को भेजा। महाप्रमुख को यह अच्छी तरह से पता था कि यह उपाय चाहे कितना भी कठोर क्यों न हो, प्रतिरोध के माध्यम से तातारों से और भी बुरी प्रतिक्रिया को उकसाने से बचने के लिए इसका पालन करना आवश्यक था। लेकिन हर कोई इस विचार से सहमत नहीं था।

राजकुमार के आग्रह पर, व्लादिमीर-सुज़दल रस में जनगणना शांतिपूर्वक हुई, और अलेक्जेंडर ख़ान की कृपा प्राप्त करने के लिए horde की ओर रवाना हो गया, जो रूसी लोगों और उनके राजकुमार की आज्ञाकारिता से प्रसन्न था। लेकिन हॉर्ड में, वेलिकी नोवगोरोड को भी जनगणना में शामिल करने का निर्णय लिया गया था, जहाँ रूसी के गुलाम बनाने वालों के प्रति घृणा विशेष रूप से तीव्र थी। नोवगोरोड के लोगों के बीच ऐसी अशांति से अवगत होकर, महाप्रमुख भारी, परेशान मन से अपने देश लौट आए। और उनके डर सही साबित हुए।

जैसे ही जनगणना की खबर नोवगोरोड पहुँची, लोगों में बेचैनी फैल गई; उन्होंने सार्वजनिक सभाएँ करना शुरू कर दिया और संकल्प लिया कि वे खान की मांग के आगे झुकने के बजाय मरना पसंद करेंगे। नोवगोरोड के लोग जनगणना के लिए सहमत होने को भी तैयार नहीं थे क्योंकि नोवगोरोड पर तातारों ने विजय प्राप्त नहीं की थी, और कई लोगों को ऐसा लगता था कि केवल इसी कारण से तातारों को सेंट सोफिया के क्षेत्र पर अपनी मनमर्जी से शासन करने का कोई अधिकार नहीं था। 'हम सेंट सोफिया और दैवीय आवासों (पवित्र मठों) के लिए मरेंगे,' यह आवाज़ें शहर की सड़कों में गूँज रही थीं, और शहरवासी एक विद्रोह के लिए तैयारी कर रहे थे।

अलेक्ज़ेंडर यारोस्लाविच शहर पर तातारों के भयानक प्रतिशोध को रोकने के लिए नोवगोरोड की ओर भागे। उन्हें उम्मीद थी कि नोवगोरोड के लोग उनकी समझदारी भरी सलाह पर ध्यान देंगे। लेकिन राजकुमार के आगमन से पहले ही, शहर में कलह फैल गई थी: जहाँ आम लोग तातारों से लड़ना चाहते थे, वहीं अमीर लोग मांगे गए कर का भुगतान करना पसंद करते थे ताकि न तो तातारों को और न ही महा राजकुमार को भड़काया जा सके। अलेक्जेंडर यारोस्लाविच ने इसका फायदा उठाया और, अपनी दृढ़ता के दम पर, नोवगोरोड के लोगों को जनगणना के लिए राज़ी करने में कामयाब रहे। हालाँकि, टाटार अधिकारियों के आगमन और जनगणना के दौरान हुए अत्याचारों—न केवल टाटारों के हाथों बल्कि अमीर नोवगोरोडवासियों के हाथों भी—ने एक बार फिर नोवगोरोड में अशांति भड़का दी। इस बार, नोवगोरोड के राजकुमार वासिली अलेक्ज़ेंड्रोविच ने प्रदर्शनकारियों का साथ दिया, लेकिन अपने पिता से डरकर वह पस्कॉव भाग गया।

धार्मिक राजकुमार अलेक्ज़ेंडर ने अपने विद्रोही बेटे को गिरफ्तार करने का आदेश दिया और नोवगोरोड में उसकी रियासत छीनकर उसे सुज़दल रस भेज दिया। विद्रोह के सरगनाओं को कठोर दंड दिया गया; और चूँकि इन कठोर उपायों के बाद भी, नोवगोरोड के लोगों ने शांत होने और खान की माँगों को मानने से इनकार कर दिया, तो धर्मपरायण राजकुमार अलेक्ज़ेंडर, तातारों के साथ मिलकर, तुरंत नोवगोरोड से चले गए, और नोवगोरोड के लोगों को अकेले ही खान के क्रोध का सामना करने के लिए छोड़ दिया। महान राजकुमार का प्रस्थान किसी भी तरह की मनाओ से कहीं अधिक प्रभावी साबित हुआ: नोवगोरोड के लोगों ने आत्मसमर्पण कर दिया, खान के अधिकारियों को स्वीकार कर लिया, और इस प्रकार नोवगोरोड का तातारों द्वारा विनाश होने से बच गया।

लेकिन मुश्किल से दो साल ही बीते थे कि रूज़ में तातार कर वसूलियों के खिलाफ एक बार फिर अशांति फैल गई, जो खुली बगावत में बदलने और उत्तर-पूर्वी रूज़ के लगभग सभी शहरों को अपनी चपेट में लेने की धमकी दे रही थी। इस अशांति के लिए निम्नलिखित परिस्थितियाँ उत्प्रेरक बनीं।

नए ख़ान - बर्के - ने, श्रद्धांजलि वसूल करने वालों द्वारा किए गए दुरुपयोग और एकत्र की गई राशि को छिपाने को देखते हुए, श्रद्धांजलि वसूली का काम खिवा या बेसरमेन के व्यापारियों को सौंप दिया। ये व्यापारी, स्वाभाविक रूप से अपनी जेबें भरने की चाह में, खान को दिए गए पैसे से कहीं ज़्यादा वसूल कर गए और उन्होंने जनता पर पहले के tatar वसूलियों से भी ज़्यादा अत्याचार किया। लोग इस अत्याचार को सहन नहीं कर सके, और विभिन्न क्षेत्रों में विद्रोह फूट पड़े। लेकिन यह अशांति तब चरम पर पहुँच गई जब ज़ोसिमा नाम का एक भिक्षु, जो ऑर्थोडॉक्स धर्म से धर्मत्यागी था,

कर वसूलियों के बीच प्रकट हुआ; उसने न केवल अपने ही लोगों पर अत्याचार किया बल्कि निर्लिज्जतापूर्वक ऑर्थोडॉक्स धर्म का अपमान भी किया। लोग इन अपमानों को सहन नहीं कर सके, और यारोस्लावल में उन्होंने उस घृणित धर्मत्यागी को मार डाला; इसके बाद, रोस्तोव और सुज़दल प्रमुखताओं के अन्य रूसी शहरों में भी एक विद्रोह भड़क उठा; tatar कर संग्रहकर्ताओं को भगा दिया गया, और जिन्हें विशेष रूप से घृणा की जाती थी, उन्हें पीटा गया। अफवाहें फैलीं कि महा राजकुमार अलेक्ज़ेंडर ने स्वयं शहरों को पत्र भेजकर उन्हें 'तातारों को पीटने' का आदेश दिया था और वह लोकप्रिय विद्रोह का नेतृत्व करने की तैयारी कर रहे थे।

खान के कर वसूलियों के नरसंहार से टटारों द्वारा एक भयानक प्रतिशोध की प्रतिक्रिया होना निश्चित था। एक बार फिर, महान राजकुमार को रूस पर मंडरा रहे संकट को टालने के लिए हॉर्ड की ओर तेजी से बढ़ना पड़ा। धार्मिक राजकुमार के सामने एक कठिन कार्य था। लेकिन उत्तर-पूर्वी रूस में इस भयानक अशांति के समय, उत्तर-पश्चिम में, नोवगोरोड-पस्कोव क्षेत्र के भीतर भी स्थिति अस्थिर थी।

नेवा की लड़ाई और बर्फ पर लड़ाई के बाद, पश्चिमी दुश्मनों ने रूस पर हमला करने की हिम्मत नहीं की। यह महसूस करने के बाद कि नेवा के नायक को हराना असंभव था, उन्होंने उसे वश में करने के लिए एक और तरीका आजमाने का फैसला किया।

1248 में, पोप इनोसेंट चतुर्थ ने गाल्ड और जेमोंट नामक दो विद्वान कार्डिनलों के नेतृत्व में अलेक्ज़ेंडर यारोस्लाविच को एक राजदूत मिशन भेजा। जिसे पत्र को दूतों को रूसी राजकुमार को सौंपना था, उसमें पोप ने लिखा: 'हमने आपके बारे में एक अद्भुत और सम्मानित राजकुमार के रूप में सुना है, और यह कि आपकी भूमि विशाल है, और हमने अपने दो कार्डिनल आपको इसलिए भेजे हैं ताकि आप उनकी शिक्षाओं पर ध्यान दें।' यह दिखावा करते हुए कि रूसी राजकुमार का महान राज्य रोमन चर्च के अधीन नहीं था, पोप ने अलेक्ज़ेंडर यारोस्लाविच से अपने अधिकार के प्रति समर्पण करने और यह सुनिश्चित करने का आग्रह किया कि उसके लोग लैटिन धर्म में परिवर्तित हो जाएँ। यह तर्क देते हुए कि मोक्ष और सच्चा धर्म केवल लैटिन चर्च में ही मिल सकता है, पोप ने उन सांसारिक लाभों का भी उल्लेख किया जो राजकुमार को पोप के अधिकार के प्रति समर्पण करने से मिलेंगे। साथ ही, उन्होंने राजकुमार को यह आश्वासन देने की कोशिश की कि इस तरह की अधीनता किसी रूसी राजकुमार का मान किसी भी तरह से कम नहीं करेगी; वास्तव में, पोप ने आगे कहा, 'हम आपको कैथोलिक शासकों में सबसे उत्तम मानेंगे और आपकी महिमा को बढ़ाने के लिए हमेशा विशेष उत्साह के साथ प्रयास करेंगे'। अंत में, यह जानते हुए कि धर्मनिष्ठ राजकुमार के लिए अपने पिता की स्मृति कितनी प्रिय थी, पोप ने अपने पत्र में जानबूझकर झूठ कहा कि यारोस्लाव व्सेवोल्दोविच पहले ही रूसी चर्च को पोप के अधीन करने की सच्ची इच्छा व्यक्त कर चुके थे, और केवल यारोस्लाव की असामयिक मृत्यु ने ही उन्हें इस इरादे को पूरा करने से रोका था।

लेकिन पोप की ये सभी युक्तियाँ सफल नहीं हुईं। इनोसेंट के लंबे पत्र का, अलेक्ज़ेंडर यारोस्लाविच ने एक बहुत ही संक्षिप्त लेकिन शक्तिशाली रूप से प्रभावशाली उत्तर दिया: 'यह सब दुनिया की रचना से लेकर महाप्रलय तक, और महाप्रलय से लेकर भाषाओं के भ्रम और अब्राहम तक, अब्राहम से लेकर मिस्र से इस्राएलियों के प्रस्थान और लाल सागर को पार करने तक और राजा दाऊद की मृत्यु तक, सुलैमान के शासन की शुरुआत से लेकर रोमन सम्राट अगस्टस तक, जिनके शासनकाल में संसार के उद्धारकर्ता, मसीह, का जन्म हुआ, और प्रभु के कष्ट, पुनरुत्थान और स्वर्गारोहण, तथा प्रथम सार्वभौमिक परिषद और अन्य छह सार्वभौमिक परिषदों तक – यह सब हम अच्छी तरह जानते हैं, और हमें आपके उपदेश की कोई आवश्यकता नहीं है और न ही हम इसे स्वीकार करेंगे।"

पोप निष्क्रिय नहीं रहे: उन्होंने विद्रोही रूसी राजकुमार के खिलाफ स्वीडिश लोगों और शूरवीरों को एकजुट करना शुरू कर दिया; लेकिन ये नए अभियान भी असफल रहे।

[5808]1256 में, स्वीडिशों ने फिनिश तट पर कब्जा करने का एक और प्रयास किया, और डेन और ईस्टोनी लोगों के साथ गठबंधन करके नारवा नदी पर एक किला बनाना शुरू कर दिया। उस समय, नोवगोरोड के लोगों ने सहायता के लिए महा राजकुमार के पास दूत भेजे, और अपने पूरे जिले में सेना इकट्ठा करने के आदेश जारी किए; इन तैयारियों से घबराकर दुश्मन समुद्र पार भाग निकला। सर्दियों में, धर्मनिष्ठ राजकुमार नोवगोरोड पहुँचे और नोवगोरोड के लोगों तथा अपनी स्वयं की रेजिमेंटों के साथ मिलकर, फिनलैंड में एमी के खिलाफ मार्च किया ताकि फिनिश लोगों को डराया जा सके और

[5808] एमी एक फिनिश जनजाति है।

नोवगोरोड के बाहरी इलाके पर किसी भी आगे के हमले को रोका जा सके। अपरिचित इलाके से होकर यात्रा अत्यंत कठिन थी: बर्फीले तूफ़ानों के कारण, सेना दिन और रात में अंतर नहीं कर पा रही थी; फिर भी, कठिनाइयों के बावजूद, अभियान अत्यधिक सफल रहा: रूसी लोगों ने इन लोगों के देश को तबाह कर दिया, और दुश्मन ने विरोध करने का सोचने की भी हिम्मत नहीं की।

1262 में, जर्मनों के साथ शत्रुता शुरू हो गई। ग्रैंड प्रिंस जर्मनों के खिलाफ एक अभियान की तैयारी कर रहे थे, लेकिन तातारों के विद्रोह ने उन्हें होर्डे की ओर जल्दी जाने के लिए मजबूर कर दिया। रूसी सेना ने, ग्रैंड प्रिंस के भाई यारोस्लाव और उनके बेटे, प्रिंस दिमित्री अलेक्जेंड्रोविच के नेतृत्व में, एक बार फिर शानदार जीत की एक श्रृंखला हासिल की: ग्रैंड प्रिंस यारोस्लाव द वाइज़ द्वारा स्थापित एक प्राचीन रूसी शहर, युर्येव शहर पर कब्ज़ा कर लिया गया, और सेना बड़ी लूट-पाट और बड़ी संख्या में कैदियों के साथ नोवगोरोड लौट आई।

इस बीच, धर्मपरायण महा राजकुमार अलेक्जेंडर सुरक्षित रूप से होर्डे पहुँच गए, और प्रभु ने उन्हें क्रोधित खान को शांत करने में मदद की। बाद वाले ने न केवल तातार कर वसूलियों की पिटाई के लिए रूसी लोगों को माफ कर दिया, बल्कि संत राजकुमार अलेक्जेंडर के हस्तक्षेप पर, उन्हें एक और कृपा प्रदान की – उन्होंने उन्हें तातार रेजिमेंटों में सैन्य सेवा के बोझिल कर्तव्य से मुक्त कर दिया[5809] ।

धार्मिक राजकुमार प्रसन्न समाचार लेकर शीघ्रता से अपने देश लौटने के लिए प्रस्थान कर गया। लेकिन रूसी जनता राजकुमार के अपने होठों से ये प्रसन्न समाचार नहीं सुन सकी। यह धार्मिक राजकुमार का अंतिम पराक्रम था। यात्रा की कठिनाइयों और झेली गई चिंताओं से थके हुए, धर्मनिष्ठ राजकुमार अलेक्जेंडर यारोस्लाविच होर्ड से गोरोडेट्स लौटते समय गंभीर रूप से बीमार पड़ गए[5810] । जब उन्हें एहसास हुआ कि उनका पवित्र निधन निकट है, तो उन्होंने अपने साथियों को बुलाया और उन्हें अंतिम विदाई दी, जिससे आने वाले नुकसान के विचार से सभी की आँखों में कड़वे आँसू आ गए। फिर धर्मपरायण राजकुमार ने मठाध्यक्ष को अपने पास बुलाया और मठवासी संन्यास ग्रहण किया, और अपने राजकुमार नाम को बदलकर मठवासी नाम एलेक्सियस रख लिया। पवित्र रहस्यों को प्राप्त करने और अपने चारों ओर खड़े भिक्षुओं को अंतिम विदाई देने के बाद, धर्मनिष्ठ राजकुमार-भिक्षु चुपचाप अपने शाश्वत निवास के लिए प्रस्थान कर गए, और अपनी शुद्ध आत्मा को उस प्रभु के हवाले कर दिया, जिसकी उन्होंने अपने सांसारिक जीवन के दौरान इतनी लगन से सेवा की थी। यह 14 नवंबर 1263 को हुआ। वे जीवन के पचपन वर्ष भी पूरे नहीं कर पाए थे। युद्ध में अजेय, वे राजकुमार के राजसी ताज के बोझ से थक चुके थे, जो उस समय रूस के लिए एक वास्तविक काँटों का ताज था, जो निरंतर परिश्रम की मांग करता था और बदले में महाप्रमुख को कुछ भी नहीं बल्कि दुख और चिंता ही देता था।

गोरॉडेट से विशेष दूतों के आने से पहले ही, महाप्रिंस के पुण्य निधन की खबर जल्द ही व्लादिमीर तक पहुँच गई। प्रभु ने इस बात को चमत्कारिक रूप से उस समय के व्लादिमीर के संत, सर्व-रूस के मेट्रोपॉलिटन सिरिल को प्रकट किया।

जब मेट्रोपॉलिटन, पुरोहितों से घिरे हुए, पवित्र रूस और उसके महाप्रिंस के लिए भक्तिपूर्वक प्रार्थना कर रहे थे, तो उन्हें निम्नलिखित चमत्कारी दर्शन हुआ: उन्होंने परमेश्वर के स्वर्गदूतों को धर्मनिष्ठ प्रिंस अलेक्जेंडर की धन्य आत्मा को स्वर्ग तक ले जाते हुए देखा। इस दर्शन से प्रभावित होकर संत चुप रहे; फिर, वेदी पर चढ़कर, उन्होंने प्रार्थना में उपस्थित लोगों को यह दुखद समाचार सुनाया: 'भाइयों, जान लो कि रूसी भूमि का सूर्य पहले ही अस्त हो चुका है '। जब लोगों ने हैरानी से ये शब्द सुने, तो संत ने थोड़ी देर रुककर, जो कहा था उसका अर्थ समझाया: 'धर्मपरायण महाप्रिंस अलेक्जेंडर यारोस्लाविच अब नहीं रहे।' इस दुखद समाचार से हर कोई भयभीत हो गया। चर्च शोक और निराशा के चीखों से गूंज उठा; 'हम बर्बाद हो रहे हैं,' उपासकों ने एक स्वर में दोहराया। धर्मपरायण राजकुमार के निधन से उत्पन्न दुख की गहराई को पवित्र राजकुमार के एक समकालीन के शब्दों से मापा जा सकता है, जिनके साथ वह राजकुमार की मृत्यु का अपना वृत्तांत शुरू करता है।

'हाय रे तेरी दुर्भाग्य, हे दीन प्राणी! तुम अपने स्वामी के निधन का वर्णन कैसे कर सकते हो! तुम्हारी आँसुओं के साथ तुम्हारी पलकें भी कैसे नहीं गिर जातीं! तुम्हारा हृदय तीव्र शोक से कैसे नहीं फट जाता! एक आदमी अपने पिता को

[5809] उस समय, एशिया के अंदर गहरी मुहिम के लिए तैयारियाँ चल रही थीं, जिसमें खान के अधीन सभी लोगों को भाग लेना था।

[5810] वोल्गा पर स्थित गोरॉडेट्स निज़्नी नोवगोरोड गवर्नरेट का एक गाँव है।

भूल सकता है, लेकिन वह एक अच्छे स्वामी को नहीं भूल सकता; अगर ऐसा संभव होता, तो वह ताबूत में भी उनके साथ लेट जाता।'

जो भी इस दुखद घटना के साक्षी बने, उन्होंने भी ऐसा ही महसूस किया। जैसे ही व्लादिमीर को यह खबर मिली कि धर्मनिष्ठ राजकुमार का शव शहर की ओर आ रहा है, सभी लोग उसका स्वागत करने के लिए बाहर दौड़ पड़े। मेट्रोपॉलिटन सिरिल, पुरोहितों के साथ, बोगोलीुबोव में दिवंगत राजकुमार के शव से मिले। अमीर और गरीब, बड़ों और बच्चों का एक विशाल जनसमूह आसपास के क्षेत्र में भर गया। और जैसे ही ताबूत नज़रों में आया, हर कोई बेकाबू होकर आगे बढ़ा, हर कोई उस पवित्र राजकुमार के शरीर वाले अवशेष-पात्र को चूमने की कोशिश कर रहा था। लोगों के रोने की आवाज़ से सब कुछ दब गया: पुरोहितों और भजन गायकों की आवाज़ें सुनाई नहीं दे रही थीं; एक समकालीन वृत्तांत के अनुसार, ऐसा लग रहा था मानो कराहों और चीखों से धरती हिल जाए।

23 नवंबर को, सेंट व्लादिमीर के कैथेड्रल में, मेट्रोपॉलिटन और पुरोहितों ने एक विशाल भीड़ की उपस्थिति में भव्य रूप से अंतिम संस्कार सेवा का संचालन किया। प्रभु ने धर्मनिष्ठ राजकुमार के निधन पर शोक मनाने वालों को सांत्वना प्रदान की। अंतिम संस्कार सेवा के दौरान, निम्नलिखित चमत्कार हुआ।

जब मेट्रोपॉलिटन के व्यवस्थापक, करिल सेवस्तोवन, ताबूत के पास आए और मृतक के हाथों को अलग करने वाले थे ताकि मेट्रोपॉलिटन उनके हाथों में 'विदाई पत्र' (क्षमा याचना की प्रार्थना) रख सकें, तो धर्मनिष्ठ राजकुमार ने, जैसे कि जीवित हो, अपना हाथ बढ़ाया, ताना (scroll) ले लिया, और फिर एक बार फिर से अपने सीने पर क्रॉस के चिह्न में अपने हाथ जोड़ लिए। उपस्थित सभी पर श्रद्धापूर्ण विस्मय छा गया। सभी चकित हो गए और प्रभु की महिमा करने लगे, जिन्होंने ऐसा अद्भुत संकेत दिखाया था। पवित्र राजकुमार के शरीर वाली अवशेष-पेटिका को श्रद्धापूर्वक लेकर, उन्होंने उन्हें मठ के चर्च 'द नेटिविटी ऑफ द मोस्ट होली मदर ऑफ गॉड' में दफना दिया।

मेट्रोपॉलिटन सिरिल के आदेश पर, दफन के समय घटित चमत्कार की खबर सभी तक पहुँचाई गई, और इस प्रकार, पूरे धर्मनिष्ठ रूस में, जो अपने उस राजकुमार और संरक्षक के लिए शोक मना रहा था जिसने पवित्र रूस के लिए अपना जीवन बलिदान कर दिया था, उनके असामयिक निधन के दुखद समाचार के साथ यह सांत्वनादायक समाचार भी मिला कि धर्मी राजकुमार अलेक्ज़ेंडर के व्यक्तित्व में, रूस को सर्वोच्च के सिंहासन के समक्ष एक नया मध्यस्थ और वकील मिल गया था। यह समाचार रूसी लोगों की शोकाकुल आत्माओं को कितना सांत्वना देने वाला था, जो निकट भविष्य को लेकर चिंतित थे!

धर्मपरायण राजकुमार अलेक्ज़ेंडर यारोस्लाविच का संपूर्ण जीवन अपनी मातृभूमि की सेवा के लिए समर्पित था। अपनी अद्वितीय बहादुरी और सैन्य वीरता के माध्यम से, उन्होंने पश्चिमी कैथोलिक राष्ट्रों द्वारा उस पर लगाए गए निरंतर दावों से अपने उत्तर-पश्चिमी क्षेत्र को संरक्षित रखा; तलवार की ताकत और बुद्धिमानी से, उन्होंने ऑर्थोडॉक्स चर्च को लैटिनों के हमलों और रोमन पोपों की साजिशों, दोनों से सुरक्षित रखा; विवेक और बुद्धिमानी से शासन करके, उन्होंने भारी तातार जुए को हल्का किया, जिससे रूसी लोग इसे अधिक शांति से सहन कर सकें; उन्होंने रूस की शक्ति में उनके विश्वास को बनाए रखा और बेहतर समय की आशा जगाई; उन्होंने दास बनाने वालों को ही जीते हुए देश और उसके शासक के साथ सम्मानपूर्वक व्यवहार करने के लिए मजबूर कर दिया। धर्मनिष्ठ राजकुमार की इस महान सेवा का उनके समकालीन जीवनीकार ने निम्नलिखित शब्दों में सुंदर सारांश प्रस्तुत किया है: 'उन्होंने रूसी भूमि, नोवगोरोड, प्सकोव और पूरे ग्रैंड डची के लिए बहुत परिश्रम किया, अपना जीवन ही दे दिया, और ऑर्थोडॉक्स धर्म के लिए।'

लेकिन उनके निधन के बाद भी, धर्मपरायण राजकुमार अलेक्ज़ेंडर यारोस्लाविच ने रूसी भूमि के प्रति अपनी महान सेवा बंद नहीं की; वह हमारे देश के जीवन के सबसे कठिन क्षणों में हमेशा एक मध्यस्थ और एक त्वरित सहायक रहे हैं।

धर्मनिष्ठ राजकुमार की मृत्यु के बाद दो सौ वर्षों से अधिक समय तक, हमारे देश ने भारी तातार जुए को सहन किया। इसने टाटारों के हाथों कई आपदाओं और खतरों को सहा, जब तक कि धर्मपरायण राजकुमार अलेक्ज़ेंडर के वंशजों—मॉस्को के राजकुमारों[5811] —के बुद्धिमानीपूर्ण शासन के तहत, यह मजबूत नहीं हो गया, अपने उत्पीड़कों के खिलाफ संघर्ष नहीं करने लगा, और न केवल उनका जुआ उतार फेंका बल्कि एक समय के शक्तिशाली टाटार राज्यों को भी अपने अधीन कर लिया। पवित्र राजकुमार अलेक्ज़ेंडर की मृत्यु के 120 वर्ष बाद, मॉस्को के महान राजकुमार दिमित्री

[5811] मॉस्को के राजकुमारों के पूर्वज सेंट अलेक्ज़ेंडर नेवस्की के सबसे छोटे बेटे, दानियिल अलेक्ज़ेंड्रोविच थे।

इवानोवचि डॉन्स्कोय के अधीन, रूसी लोगों ने डॉन नदी के तट पर ततारों पर अपनी पहली जीत हासलि की[5812] । यह जीत रूसी लोगों के लिए बहुत बड़ी कीमत पर मिली, लेकिन यह उनके लिए बहुमूल्य भी थी, क्योंकि इसने लोगों का मनोबल बढ़ाया और यह विश्वास जगाया कि तातारों के प्रभुत्व का युग समाप्त होने वाला है। और इस महत्वपूर्ण ऐतिहासिक क्षण पर, पवित्र रूस के स्वर्गीय संरक्षक, धर्मनिष्ठ राजकुमार अलेक्जेंडर यारोस्लावचि, उसकी सहायता के लिए आए। धर्मनिष्ठ राजकुमार की प्राचीन जीवनी में यह वर्णित है कि उन्होंने अपने संबंधी, महा राजकुमार दमित्री इवानोवचि को चमत्कारिक सहायता प्रदान की।

व्लादिमीर में परमेश्वर की अति पवित्र माता के मठ में, जहाँ धर्मनिष्ठ राजकुमार की अवशेषें रखी थीं, एक ईश्वर-भयभीत भिक्षु, जो एक धार्मिक और तपस्वी जीवन जीता था, ने एक रात चर्च के बरामदे में आँसू भरी प्रार्थना की कि रूसी को tatar नेता मामई की सेनाओं से मुक्ति मिले। अपनी प्रार्थना में, उसने धर्मी राजकुमार अलेक्जेंडर से महा राजकुमार दमित्री की सहायता के लिए आने का आह्वान किया। और जब वह प्रार्थना कर रहा था, तो उसने देखा कि धर्मात्मा राजकुमार की कफ़न के सामने रखे मोमबत्ती अपने आप जल उठे थे; फिर वेदी से दो भव्य वृद्ध निकले और संत की कब्र के पास आकर कहा: 'उठो, और अपने संबंधी, धर्मात्मा राजकुमार दमित्री इवानोवचि की सहायता के लिए जल्दी करो।' और पवित्र राजकुमार अलेक्जेंडर तुरंत उठे और अदृश्य हो गए। इस चमत्कार से चकित, भिक्षु चुप रह गया; और जब यह ज्ञात हुआ कि डॉन पर गौरवपूर्ण विजय उसी क्षण हुई थी, तब उसने अपनी यह दृष्टि व्लादिमीर के संत को बताई। बिशप के आदेश पर, धर्मनिष्ठ राजकुमार की अवशेषों की तुरंत जांच की गई और वे अपरिवर्तित पाए गए। अस्वस्थ लोगों की भीड़ प्रार्थना करने के लिए ईश्वर के नव-प्रकट हुए संत की ओर मुड़ी, और उनके पवित्र अवशेषों वाले ताबूत पर कई चमत्कारिक उपचार हुए।

डॉन पर प्रसिद्ध विजय—टैटार के शासन के कठिन युग के दौरान हमारे पूर्वजों के जीवन के सबसे आनंददायक क्षणों में से एक—ने अभी तक रूस को विदेशी शासन से मुक्त नहीं किया था। होर्ड कमजोर हो गया था, लेकिन रूस अपनी स्वतंत्रता की रक्षा करने के लिए अभी भी पर्याप्त मजबूत नहीं था। टैटार का शासन जारी रहा, हालांकि उसने पहले से ही अपना पुराना स्वरूप खो दिया था। तातारों को खुद एहसास हो गया था कि मास्को के राजकुमारों ने पहले बिखरी हुई रूसी रियासतों से एक मजबूत, एकीकृत राज्य बना लिया था, एक ऐसा राज्य जो अपनी ताकत का, साथ ही तातारों के बीच हो रहे संघर्ष और विभाजन का भी फायदा उठाने में विफल नहीं होगा, जिसने उनकी पूर्व शक्ति को कमजोर कर दिया था। डॉन पर विजय को सौ साल बीत चुके थे, और दमित्री इवानोवचि डोंस्कोय के परपोते, महान राजकुमार जॉन तृतीय ने, बिना किसी लड़ाई के, ततारों के जुए को नष्ट कर दिया और रूसी को दो सदियों के एशियाई शासन से मुक्त कर दिया। अब रूसी और टाटारों के बीच पूर्व संबंध हमेशा के लिए बदल गए थे। रूस, जो धर्मपरायण राजकुमार अलेक्जेंडर नेवस्की के शासनकाल के दौरान टाटार खान का एक आज्ञाकारी सामंत था, ने अब टाटारों के खिलाफ अपना आक्रामक अभियान शुरू किया और धीरे-धीरे उन्हें अपने अधीन कर लिया। एक समय के शक्तिशाली tatar साम्राज्यों को, एक के बाद एक, हमारे राज्य में शामिल कर लिया गया, और लोगों की सामूहिक स्मृति में रूस पर अधीन किए गए विदेशियों के शासन की केवल स्मृति के टुकड़े ही बचे। तातारों के खिलाफ इस लंबे और निरंतर संघर्ष में, हमारी मातृभूमि, हमेशा की तरह, अपने स्वर्गीय रक्षक, धर्मनिष्ठ राजकुमार अलेक्जेंडर नेवस्की की मदद और सुरक्षा से वंचित नहीं रही।

1552 में, जब उन्होंने काज़ान खानते को जीतने के लिए अभियान शुरू किया, तो ज़ार इवान वासिलीयेविच ने व्लादिमीर में पवित्र राजकुमार अलेक्जेंडर के अवशेष-पात्र के सामने प्रार्थना की और उनसे मदद की गुहार लगाई। जैसे कि अपनी सहायता का वादा करते हुए, पवित्र राजकुमार ने निम्नलिखित चमत्कार किया।

ज़ार के बोयार भी उनके साथ प्रार्थना कर रहे थे, जिनमें धर्मात्मा राजकुमार के चमत्कारों के भावी वृत्तांतकार भी शामिल थे। जब वह, अन्य लोगों के साथ, संत की अवशेषों को चूम रहा था, तो उसने अपने बीमार हाथ की तीन उंगलियाँ अवशेष-पात्र के एक छोटे से छेद में डाल दीं। उसे ऐसा लगा जैसे उसने उन्हें किसी सुगंधित मरहम में डुबो दिया हो, और जब उसने अपना हाथ निकाला, तो उसकी पुरानी बीमारी का कोई निशान भी नहीं बचा था। इस चमत्कारी उपचार के गवाह बने सभी लोगों ने भक्तिपूर्वक धर्मात्मा राजकुमार अलेक्जेंडर की स्तुति की, जिन्हें प्रभु ने उपचार का वरदान प्रदान किया था, और उन पर अपनी आशा रखकर, वे अपनी यात्रा के शेष भाग के लिए रवाना हो गए।

[5812] मॉस्को के महा राजकुमार दमित्री इवानोवचि डोंस्कोय ने 1363 से 1389 तक शासन किया। तातारों के खिलाफ डॉन की प्रसिद्ध लड़ाई, जिसके लिए महा राजकुमार ने 'डोंस्कोय' की उपाधि प्राप्त की, 8 सितंबर 1380 को हुई।

काज़ान अभियान सफलतापूर्वक समाप्त हुआ। मॉस्को के पास स्थिति तातार साम्राज्य, जो एक पूरी सदी से अपनी छापों से रूसी सीमा क्षेत्रों को परेशान कर रहा था, मॉस्को के ज़ार के अधीन हो गया। टैटर मस्जिदों के स्थानों पर और उनके बगल में पवित्र चर्च स्थापित हुए; इस मुस्लिम भूमि में संत ए द्वारा सुसमाचार का प्रचार शुरू हुआ, और हमारे पूर्वज अब मन की शांति के साथ भविष्य की ओर देख सकते थे। काज़ान के बाद, एक और तातार राज्य – अस्त्रखान – को विलय कर लिया गया, और 'रूसी नदियों की रानी' – वोल्गा, अपने सभी धन-संपत्ति के साथ – अपनी पूरी लंबाई में एक रूसी नदी बन गई। रूसियों ने सुदूर पूर्व में, साइबेरिया में, अपनी सत्ता का सफलतापूर्वक विस्तार करना शुरू कर दिया, और वे धीरे-धीरे महासागर के तटों की ओर बढ़ रहे थे। लेकिन दक्षिण में, क्रीमिया में, एक शक्तिशाली दुश्मन अभी भी मौजूद था - क्रीमियाई तातार, जिनके खिलाफ रूसी राज्य को एक लंबा संघर्ष करना पड़ा[5813] । काज़ान और अस्त्रखान के विलय से पहले मास्को के ज़ार का एक सहयोगी, क्रीमिया का ख़ान अब, रूस की बढ़ती ताकत को देखकर, उसके खिलाफ लड़ने लगा; यह संघर्ष हमारे लिए और भी खतरनाक था क्योंकि उसे इस्लाम के सर्वोच्च रक्षक - तुर्की के सुल्तान का समर्थन प्राप्त था। और इस पूरे संघर्ष के दौरान, रूस के स्वर्गीय संरक्षक, धर्मनिष्ठ राजकुमार अलेक्जेंडर यारोस्लाविच, ने अपनी सहायता प्रदान करना कभी बंद नहीं किया।

1571 में, क्रीमिया के खान देवलेट गिरिई द्वारा मॉस्को पर हमले के दौरान, व्लादिमीर के क्रिसमस मठ के एक वरिष्ठ—प्रार्थना और उपवास के व्यक्ति—एंथनी को, ईश्वर की माता की एक प्रतिमा के सामने प्रार्थना करते समय, अपने देश पर उस भयानक खान के आक्रमण को टालने के लिए निम्नलिखित चमत्कारी दर्शन प्राप्त हुए। जब वह अपनी मातृभूमि पर आई आपदाओं पर शोक मना रहे थे, तभी उन्होंने अचानक दो युवकों को चमकदार वस्त्रों में, सफेद घोड़ों पर सवार होकर बिजली की रफ्तार से मठ की ओर आते देखा। घोड़ों से उतरकर, उन्होंने अपने घोड़ों को मठ के द्वार पर छोड़ दिया और चर्च में प्रवेश किया। (ये धर्मपरायण राजकुमार बोरिस और ग्लेब थे)। एल्डर एंथनी उनके पीछे चले गए। जैसे ही धर्मपरायण राजकुमार चर्च में प्रवेश किए, शाही द्वार खुल गए और मोमबत्तियाँ जला दी गईं। धर्मपरायण राजकुमार अलेक्जेंडर के अवशेष-पात्र के पास आकर, संत बोरिस और ग्लेब ने उनसे निम्नलिखित शब्द कहे: 'उठो, हमारे भाई, महाप्रतापी राजकुमार अलेक्जेंडर; आइए हम अपने कुल के भाई, धर्मनिष्ठ सम्राट जॉन वासिलीविच की सहायता के लिए शीघ्रता करें।' धर्मनिष्ठ अलेक्जेंडर तुरंत उठे और उनके साथ चर्च से बाहर निकलकर मठ के द्वार की ओर बढ़े। वहाँ तीन सफेद घोड़े खड़े थे, जो युद्ध के लिए तैयार थे, जिन पर धर्मनिष्ठ राजकुमार सवार हो गए। वे चल पड़े और कहा: 'आओ हम परम पवित्र माता परमेश्वर की कैथेड्रल चर्च जाएँ और अपने संबंधियों, धर्मनिष्ठ राजकुमारों एंड्रे[5814] , वसेवोलोड[5815] , जॉर्ज[5816] और यारोस्लाव[5817] को हमारे साथ शामिल होने के लिए बुलाएँ।'

बड़का उनका अनुसरण करने लगा। और यहाँ, ठीक मठ के चर्च की तरह, जब पवित्र राजकुमार प्रवेश कर रहे थे, तो शाही द्वार खुल गए; धर्मी राजकुमार अपनी कब्रों से उठे और चमत्कारिक रूप से हवा में यात्रा करते हुए शहर की दीवारों के ऊपर से रोस्तोव की ओर बढ़े, कहते हुए: 'आओ हम राजकुमार पीटर[5818] के पास रोस्तोव जाएँ; हो सके तो वह भी हमारी मदद करे।' इन दिव्य योद्धाओं की मदद से ही क्रीमिया के खान पर विजय प्राप्त हुई।

इस प्रकार धर्मपरायण राजकुमार अलेक्जेंडर यारोस्लाविच ने अपने देश को तातारों से बचाया; उनका संपूर्ण सांसारिक जीवन इसी उद्देश्य - भयानक विजेता से पवित्र रूस की रक्षा - को समर्पित था।

रूसी राज्य के लिए एक दिव्य मध्यस्थ, जो अपने जीवनकाल में अपनी महान दया और हर बेसहारा और पीड़ित आत्मा की सहायता के लिए प्रसिद्ध थे, धर्मनिष्ठ राजकुमार अलेक्जेंडर ने अपनी मृत्यु के बाद भी उन सभी जरूरतमंदों पर अपनी कृपा बरसाना बंद नहीं किया, जो मदद के लिए प्रार्थना में उनकी ओर मुड़े। उनकी पवित्र अवशेषों वाले संदूक के पास, बीमारों को आरोग्य प्राप्त हुआ, जबकि शोकग्रस्त और कष्टग्रस्त लोगों को कृपापूर्ण सांत्वना और सहायता

[5813] सम्राज्ञी कैथरीन द्वितीय 1783 में

[5814] आंद्रेई यूरीविच, व्लादिमीर के महाप्रिंस (1169–1174)।

[5815] व्लादिमीर के महाप्रिंस वसेवोल्द तृतीय (1176–1212)

[5816] जॉर्जी या यूरी वसेवोदोविच, धन्य राजकुमार अलेक्जेंडर के चाचा, व्लादिमीर के महाप्रिंस (1219–1238)।

[5817] यारोस्लाव वसेवोदोविच, धन्य राजकुमार अलेक्जेंडर के पिता, 1238 से 1246 तक व्लादिमीर के महाप्रिंस।

[5818] हॉर्ड के राजकुमार सेंट पीटर, खान बर्के के भतीजे, हॉर्ड में मौजूद रोस्तोव के बिशप सिरिल के शब्दों से प्रेरित होकर, गुप्त रूप से अपने परिवार से चले गए और रोस्तोव की यात्रा की, जहाँ उन्होंने बपतिस्मा ग्रहण किया। उन्होंने अपनी मृत्यु से पहले संन्यास का व्रत लिया था और 1290 में उनकी मृत्यु हो गई। उनका पर्व 29 जून को मनाया जाता है।

मलिी। ये सभी चमत्कार दर्ज नहीं कएि गए थे, लेकनि पवत्रि राजकुमार के प्राचीन जीवनीकारों द्वारा वर्णति वह छोटा सा अंश भी यह स्पष्ट रूप से दर्शाता है कि धर्मनष्ठि राजकुमार अलेक्जेंडर के पवत्रि अवशेषों से चंगाई और चमत्कारों का कतिना प्रचुर स्रोत प्रवाहति हुआ, और पवत्रि रूस ने अपने स्वर्गीय संरक्षक और नेता में ईश्वर की दया का कतिना कीमती पात्र प्राप्त कयिा था। कई मौकों पर, संत अलेक्जेंडर के पर्व के स्थापति होने से पहले भी, नेटीवटिी मठ के भक्षिुओं को धार्मकि राजकुमार की पवत्रिता और ईश्वरत्व का पूर्वाभास देने वाले स्वर्गीय संकेतों के दर्शन हुए; एक से अधकि मौकों पर, उन्होंने, मठ और व्लादमिीर शहर ने पवत्रि राजकुमार से स्वर्गीय सहायता प्राप्त की।

1491 में, व्लादमिीर में एक भयंकर आग लग गई, जसिमें वह चर्च नष्ट हो गया जहाँ धर्मवीर राजकुमार अलेक्जेंडर के अवशेष रखे गए थे। इस आग के दौरान, प्रार्थना कर रहे लोगों ने धर्मात्मा राजकुमार अलेक्जेंडर को, मानो, घोड़े पर सवार होकर हवा में स्वर्ग की ओर जाते हुए देखा। और आग के बाद, यह पता चला कि चर्च का पूरा आंतरकि भाग राख हो जाने के बावजूद, धर्मात्मा राजकुमार के अवशेष आग से अप्रभावति रहे।

1541 में, परम पवत्रि ईश्वर की माता के नद्रिोत्सव के पर्व के बाद, संध्या प्रार्थना के समापन के पश्चात्, धर्मनष्ठि राजकुमार अलेक्जेंडर के अवशेष-पात्र के सामने मोमबत्तयिाँ अपने आप जल उठीं, और मठ के समुदाय तथा उपासकों में से कई ने इसे आश्चर्य से देखा। मठ के सेxton ने, अपनी सादगी में, इसमें कुछ भी असामान्य नहीं देखा, इसलिए वह गया और मोमबत्तयिाँ बुझा दीं। तब इस घटना की सूचना मठाधीश, आर्चमिंड्राइट यूफ्रोसनिस को दी गई, और जब वे कब्र के पास गए और एक मोमबत्ती को छुआ, तो उन्होंने देखा कि वह एक अजीब गर्माहट दे रही थी। सभी ने इस चमत्कार को धर्मात्मा राजकुमार अलेक्जेंडर की पवत्रिता का एक वशिष संकेत समझा।

जन्म मठ के एक भक्षिु, वृद्ध डेवडि, गंभीर और पुरानी बीमारी से पीड़ति थे। अपने बस्तिर पर लेटे आँसू बहाते हुए, उन्होंने उपचार के लिए धर्मात्मा राजकुमार अलेक्जेंडर से प्रार्थना की। जल्द ही उन्हें राहत महसूस हुई और उन्होंने अपनी प्रार्थना और भी जोरों से की। अपनी प्रार्थना समाप्त करने पर, वह अपनी बीमारी से पूरी तरह ठीक हो गए।

उसी मठ का एक भक्षिु, उपनाम क्रैसोवत्सेव, लंबे समय से पक्षाघात से पीड़ति था। उसे पवत्रि राजकुमार अलेक्जेंडर के अवशेष-स्थल तक ले जाया गया, और जैसे ही उसने गहरी भावना के साथ उसे नहिारा, गर्म आँसू बहाते और अपने पापों पर चतिन करते हुए, उसने अपने लकवाग्रस्त अंगों में शक्ति लौटती हुई महसूस की, और जल्द ही वह पूरी तरह से स्वस्थ हो गया।

टेरेन्टयिस नामक एक भक्षिु पर दैवीय आत्मा का साया था। जब उसे धर्मात्मा राजकुमार की अवशेष-पेटी के सामने लाया गया और उसके लिए प्रार्थनाएँ की गईं, तो वह तुरंत वनिम्र हो गया और अपने ठीक होने के लिए ईश्वर और उनके संत का धन्यवाद करने लगा।

प्राचीन जीवनीकारों ने वभिन्नि सामाजकि दर्जों और उम्र के आम लोगों के बीच हुई और भी अधकि उपचारों के उदाहरण दर्ज कएि हैं।

एक बोयार के बेटे, सेम्योन ज़ाबेलनि, जो पस्कॉव में रहता था, वह इतना बीमार था कि वह अपने हाथ-पैरों का इस्तेमाल नहीं कर पाता था और खाने-पीने में भी पूरी तरह से असमर्थ था। धर्मपरायण राजकुमार अलेक्जेंडर में गहरी आस्था रखने के कारण—जनिकी प्राचीन प्सकोव में हमेशा श्रद्धापूर्वक स्मृति संरक्षति रखी गई थी—उसने अपने परविार से धर्मपरायण राजकुमार की अवशेष-पेटी के सामने प्रार्थना करने के लिए उसे व्लादमिीर ले जाने का आग्रह करना शुरू कर दयिा, और वहाँ, प्रार्थना करते समय, वह अपनी बीमारी से ठीक हो गया।

एक दूसरे बोयार के बेटे, गोलोवकनि, को भी वही बीमारी थी; उसे ठीक होने की कोई उम्मीद नहीं थी और वह केवल मृत्यु के बारे में सोचता था। उसने अपने लगभग सभी सामान डॉक्टरों को दे दएि थे, लेकनि इलाज से उसे कोई राहत या लाभ नहीं मलिा। और इस प्रकार, धर्मात्मा राजकुमार अलेक्जेंडर के मध्यस्थता से, उनके पवत्रि अवशेषों के संदूक के पास, उन्हें प्रभु से वह मलिा जो चकित्सिा वज्ञिान नहीं दे सका: उनकी असाध्य बीमारी से पूर्ण स्वास्थ्य लाभ।

व्लादमिीर जलि के एक गाँव से पक्षाघात से पीड़ति एक महलिा को लाया गया और उसे धर्मात्मा राजकुमार की पवत्रि अवशेषों के पास सीढ़ियों पर लटिा दयिा गया। उपचार के लिए ईश्वर के संत से भक्तपिूर्वक प्रार्थना करते समय, उसने अचानक महसूस कयिा कि पवत्रि राजकुमार, चमत्कारकि रूप से उसके सामने प्रकट होकर, उसका हाथ पकड़कर उसे उसके बस्तिर से उठा रहे थे।

व्लादमिीर के एक कुलीन व्यक्ति, मैक्सिम निकितिनि, का एक बेटा, जॉन नाम का एक छोटा लड़का था, जो गूंगा और लकवाग्रस्त दोनों था। धर्मात्मा राजकुमार में आस्था के साथ उसके माता-पिता अपने दुर्भाग्यपूर्ण बेटे को नेटीवटिी मठ ले आए, और वहाँ वह ठीक हो गया।

धर्मपरायण राजकुमार अलेक्ज़ेंडर के मध्यस्थता से कई लोग अंधापन से मुक्त हुए। उदाहरण के लिए, व्लादमिीर शहर के एक अंधे व्यक्ति, डेवडि इओसफिोव ने, चर्च में सुसमाचार पढ़े जाने के दौरान अचानक प्रकाश देखा। अपने भीतर जगी उपचार की अचानक आशा से गहराई तक प्रभावित होकर, उसने संत से अपनी प्रार्थनाएँ दोगुनी कर दीं और उनसे अपने पवित्र अवशेषों वाले तीर्थस्थल तक ले जाने का अनुरोध किया। जब वहाँ पवित्र अवशेषों पर उस पर पवित्र जल छड़िका गया, तो उसकी दृष्टि पूरी तरह से वापस आ गई।

व्लादमिीर प्रांत के क्रास्नोये गाँव से एक अंधी महिला को लाया गया, और धर्मात्मा राजकुमार के पवित्र अवशेषों के संदूक के पास उसे पूरी तरह से ठीक हो गई, जैसे कि वह कभी बीमार ही न हुई हो।

कई मौकों पर, धर्मात्मा राजकुमार की चमत्कारी अवशेषों से पशिाच-ग्रस्तता की भयानक पीड़ा से पीड़ित लोगों पर कृपा बरसी। यहाँ प्राचीन जीवनीकारों द्वारा दर्ज कुछ उदाहरण दिए गए हैं।

भूत-प्रेत के वश में एक व्यक्ति को स्टारोये गाँव से मठ में लाया गया; उसके भयानक रूप को देखकर हर कोई दहशत में आ गया: वह भयानक शब्द बोलता था और एक जंगली जानवर की तरह लोगों पर झपटता था। उसे बाँधकर मठ में लाया गया था, और प्रार्थना सभा के दौरान वह ठीक हो गया।

एक और व्यक्ति, जिस पर राक्षसों का साया था, वह अपने सबसे करीबी रिश्तेदारों को भी नहीं पहचान पाता था; वह अपने ही बाल उखाड़ता और अपनी जीभ काटता था; अपने ही द्वारा दी गई पिटाई से उसका शरीर घावों से ढका हुआ था। और धर्मात्मा राजकुमार अलेक्ज़ेंडर के हस्तक्षेप से, उसे अपनी भयानक पीड़ा से पूर्ण रूप से ठीक होने का वरदान मिला।

व्लादमिीर जिले के उग्र्यूमोवा नामक मठ गाँव में, अफनासी निकितिनि नामक एक किसान को पागलपन के दौरे पड़ते थे, इस हद तक कि वह अपने आस-पास के लोगों को पहचान नहीं पाता था, खाना खाने से इनकार कर देता था, और उसकी सोने की सारी क्षमता चली गई थी। अचानक, एक क्षण की स्पष्टता में, उसने अपने परिवार से उसे नेटीवटिी मठ में धर्मात्मा राजकुमार अलेक्ज़ेंडर के अवशेषों के पास ले जाने के लिए कहना शुरू कर दिया। उसके परिवार ने उसकी इच्छा पूरी की, और मठ के रास्ते में उस बीमार व्यक्ति ने खुद को स्वस्थ महसूस किया; मठ पहुँचने पर, उसने सभी को भावुक होकर बताया कि कैसे संत राजकुमार अलेक्ज़ेंडर उसके सामने प्रकट हुए थे और कैसे स्वयं संत ने उसे उनके पवित्र अवशेषों के संदूक से उपचार पाने के लिए कहा था।

धर्मनिष्ठ राजकुमार में विश्वास के माध्यम से बीमारों और आत्मा में कड़वाहट महसूस करने वालों पर ऐसे अनुग्रह हुए! और हमारे पूर्वजों के बीच हमारे देश की महिमा के लिए इस ईश्वर-पुरुष के परोपकार और उनके सांसारिक कार्यों की स्मृति कभी फीकी नहीं पड़ी। धर्मनिष्ठ राजकुमार अलेक्ज़ेंडर यारोस्लावचि का जीवन उनके निधन के तुरंत बाद ही प्रेरणादायक कथाओं का विषय बन गया। धर्मनिष्ठ राजकुमार के एक समकालीन द्वारा लिखित जीवनी के बाद, अन्य, अधिक विस्तृत जीवनियाँ सामने आईं, जो रूसी भूमि के विभिन्न हिस्सों में संकलित की गई थीं और विशेष रूप से उन स्थानों में जहाँ पवित्र राजकुमार ने रहकर अपने परोपकारी कार्य किए थे: व्लादमिीर और नोवगोरोड-पस्कोव क्षेत्र में। भविष्य की पीढ़ियों के शिक्षा-प्रदान के लिए, रूसी भूमि के इस शहीद के जीवन और कार्यों के सभी विवरणों को संरक्षित करने का हर संभव प्रयास किया गया—यह एक उज्ज्वल तारा था जिसने तातारों के शासन के सबसे अंधकारमय और कठिन समय में हमारे पूर्वजों के जीवन का मार्ग रोशन किया। जीवनीकारों के साथ-साथ, प्राचीन रूसी वंशावलीकारों ने भी अपने कार्यों में धर्मनिष्ठ राजकुमार के जीवन के वृत्तांत शामिल किए; और इस वजह से, उत्तर-पूर्वी रूस के किसी अन्य राजकुमार पर धर्मनिष्ठ राजकुमार अलेक्ज़ेंडर जितनी जानकारी और कहानियाँ नहीं हैं।

पवित्र राजकुमार के परमधाम जाने के लगभग तुरंत बाद, उनकी संत-घोषणा शुरू हो गई। उनके दफन के समय जो चमत्कार हुआ, उसने स्पष्ट रूप से उनकी संपूर्ण पवित्रता और ईश्वरत्व की गवाही दी; इसकी और भी पुष्टि अन्य चमत्कारों से हुई, जो उनके पवित्र अवशेषों वाले संदूक से एक अक्षय झरने की तरह अनवरत रूप से प्रवाहित हो रहे थे। 1547 में, ज़ार इवान वासिलीविच के आदेश पर, मास्को में एक चर्च परिषद आयोजित की गई, जिसकी अध्यक्षता सर्व-रूस के प्रसिद्ध मेट्रोपॉलिटिन मकरियस ने की, जिसमें यह आदेश दिया गया कि रूसी संतों, जिन्हें अब तक केवल स्थानीय रूप से पूजित किया जाता था, का पूरे रूस में उत्सव मनाया जाए। इस परिषद में धन्य राजकुमार अलेक्ज़ेंडर नेव्स्की के

सम्मान में एक सर्व-रूसी पर्व दविस भी स्थापति कयिा गया, और, मेट्रोपॉलटिन के आदेश से, एक नई, अधकि वसि्तृत जीवनी के साथ एक प्रार्थना-वधि (23 नवंबर, धन्य राजकुमार के नधिन के दनि के लएि) भी रची गई। 17वीं शताब्दी की शुरुआत में, मास्को में धन्य राजकुमार अलेक्जेंडर को समर्पति एक चर्च भी था।

1724 में, धन्य राजकुमार के अवशेषों को व्लादमिीर से सेंट पीटर्सबर्ग ले जाने के उपलक्ष्य में एक नया पर्व दविस - 30 अगस्त - स्थापति कयिा गया।

नेवा के तट पर, संत अलेक्जेंडर की मृत्यु के लगभग 500 साल बाद, सम्राट पीटर प्रथम ने रूस के पुराने दुश्मन - स्वीडशि लोगों पर और शानदार वजिय प्राप्त की। यहीं 1703 में रूसी राज्य की नई राजधानी की नींव रखी गई थी, और 1717 में एक नए रूसी तीर्थस्थल – अलेक्जेंडर नेवस्की लाव्रा – की। सम्राट पीटर प्रथम चाहते थे कि धर्मात्मा राजकुमार के अवशेष व्लादमिीर से सेंट पीटर्सबर्ग में स्थानांतरति कएि जाएँ, और जैसे ही रूस ने नव-वजिति क्षेत्र में सुरक्षति महसूस कयिा, अवशेषों के स्थानांतरण का आदेश जारी कर दयिा गया। सम्राट ने स्वयं इस स्थानांतरण को कैसे अंजाम देना है, इस पर एक वसि्तृत फरमान तैयार कयिा, और व्यक्तगित रूप से नए मठ और चर्च के नर्मिाण की देखरेख की जहाँ धर्मनषि्ठ राजकुमार अलेक्जेंडर के पवत्रि अवशेषों को रखा जाना था। हालाँकि, स्वीडशि और तुर्कों के साथ युद्धों ने इस फरमान के कार्यान्वयन में देरी कर दी, और 1723 में जाकर इसके नषि्पादन का काम शुरू हुआ।

व्लादमिीर ने अपने पूजनीय अवशेष को वदिाई दी, जो लगभग पाँच शताब्दयिों से इस प्राचीन शहर की एक अनमोल शोभा रहा था। 10 से 11 अगस्त तक सभी चर्चों में एक रात्रि-व्यापी जागरण आयोजति कयिा गया, जसिके बाद अगली सुबह दैवीय लटिर्जी हुई। शहर और आसपास के मठों के पुरोहति, लोगों की एक बड़ी भीड़ के साथ, नेटीवटिी मठ के लएि रवाना हुए, और एक प्रार्थना सभा के बाद, पवत्रि अवशेषों से भरा अवशेष-पात्र पुरोहतिों द्वारा चर्च से बाहर ले जाया गया और शहर से बाहर तक उसका साथ दयिा गया। 17 अगस्त को, धर्मनषि्ठ राजकुमार की अवशेषों को मॉस्को में और भी अधकि भव्यता के साथ स्वीकार कयिा गया, जसिके बाद चर्च की शोभायात्रा ट्वेर और नोवगोरोड होते हुए सेंट पीटर्सबर्ग के लएि रवाना हुई। धर्मनषि्ठ राजकुमार अलेक्जेंडर के अवशेषों का स्थानांतरण एक सर्व-रूसी उत्सव था। सभी कस्बों और गांवों में धार्मकि सेवाएं आयोजति की गईं, और लोगों की भीड़ पूरे मार्ग में अवशेषों के साथ चलती रही। यह तय कयिा गया था कि पवत्रि अवशेषों को 30 अगस्त को सेंट पीटर्सबर्ग लाया जाना चाहएि, उस दनि जब हाल ही में स्वीडशि लोगों के साथ संपन्न हुई नस्िताद की संधि का जश्न मनाया जाता था। हालांकि, यात्रा की लंबाई के कारण इस योजना को ठीक वैसे ही लागू करना असंभव हो गया जैसा कि सोचा गया था, और पवत्रि अवशेष 1 अक्टूबर को ही श्लसिेलबर्ग पहुँचे। सम्राट के आदेश से, उन्हें स्थानीय कैथेड्रल ऑफ द एनन्शएिशन में रखा गया, और उन्हें सेंट पीटर्सबर्ग ले जाने को अगले वर्ष (1724) के 30 अगस्त तक के लएि स्थगति कर दयिा गया।

सेंट पीटर्सबर्ग में अवशेषों का स्वागत वशिेष गंभीरता से कयिा गया। सम्राट, अपने अनुचर दल के साथ, इज़ोरा नदी के मुहाने पर गली (नाव) से पहुँचे। पवत्रि अवशेषों को श्रद्धापूर्वक गली पर रखने के बाद, शासक ने अपने कुलीनों को चप्पू पकड़ने का आदेश दयिा, जबकि उन्होंने स्वयं, नाव के पछिले हस्सि में खड़े होकर, नाव को चलाया। सेंट पीटर्सबर्ग में एक वशिेष घाट बनाया गया था, जहाँ पवत्रि अवशेषों को लाने वाली नौका रुकी। पादरयिों और लोगों के साथ, सबसे प्रतषि्ठति कुलीनों ने पवत्रि अवशेषों से भरा संदूक उठाया। घंटयिों की आवाज़ और तोपों की गोलीबारी ने इस अवसर की गंभीरता को और बढ़ा दयिा। पवत्रि अवशेषों को धर्मपरायण राजकुमार को समर्पति एक चर्च में रखा गया। अगले दनि, अलेक्जेंडर नेवस्की मठ में उत्सव जारी रहा: ज़ार ने उपस्थति लोगों को मठ में प्रस्तावति भवनों की एक योजना वतिरति की, और उसी अवसर पर यह आदेश दयिा गया कि अब से पवत्रि अवशेषों के स्थानांतरण का उत्सव 30 अगस्त को मनाया जाएगा।

इस प्रकार ज़ार की प्रयि इच्छा पूरी हुई। वह नए मठ के लएि बनाई गई अपनी योजना को पूरा होते नहीं देख सके: इस समारोह के छह महीने बाद, पीटर का नधिन हो गया। लेकनि पीटर के उत्तराधकिारयिों ने उनके द्वारा शुरू कएि गए कार्य को पूरा कयिा। उनकी बेटी, महारानी एलजिाबेथ पेट्रोवना ने एक शानदार चांदी का अवशेष-पात्र बनवाया, जसिमें आज भी पवत्रि अवशेष रखे गए हैं। सम्राज्ञी कैथरीन द्वतिीय ने पुराने गरिजाघर की जगह पर एक नया गरिजाघर बनाने का आदेश दयिा, और 30 अगस्त 1790 को नए गरिजाघर का अभषिेक कयिा गया और धर्मात्मा राजकुमार की अवशेषों को वहाँ स्थानांतरति कर दयिा गया।

और आज भी, धर्मी राजकुमार अलेक्जेंडर यारोस्लावचि ईश्वर द्वारा उन्हें सौंपी गई वरिासत - हमारी मातृभूमि - की रक्षा करते हैं। और आज भी वह उन सभी के नकिट और उत्तरदायी हैं जो वशि्वास के साथ उनके पवत्रि नाम का

स्मरण करते हैं, अपनी दया लुटाते हुए और सर्वशक्तिमान परमेश्वर के सिंहासन के सामने मध्यस्थता करते हुए – उसी को, जो अपने संतों को महिमामय करता है, अनंत काल तक सम्मान और महिमा। आमीन।

ट्रोपारियन, स्वर 4:

क्योंकि आप एक धार्मिक मूल की अति सम्मानित कली थे, धन्य अलेक्जेंडर: क्योंकि मिसीह ने आपको रूसी भूमि का एक दिव्य खजाना, एक नया चमत्कार-कर्ता, महिमामय और परमेश्वर को प्रिय, के रूप में प्रकट किया। और आज, विश्वास और प्रेम के साथ आपकी स्मृति में एकत्रित होकर, हम भजनों और स्तोत्रों में आनंदित होते हैं, उस प्रभु की महिमा करते हैं जिसने आपको चंगा करने की कृपा प्रदान की: उससे इस नगर को बचाने के लिए प्रार्थना करें, और आपकी जाति ईश्वर को प्रिय जीवन जिए, और रूस के पुत्र उद्धार पाएँ।

एक और ट्रोपारियन, स्वर 4:

हे विश्वासयोग्य राजकुमार अलेक्जेंडर, अपने रूसी भाइयों, जोसेफ को पहचानें, जो मिस्र में नहीं बल्कि स्वर्ग में राज्य कर रहे हैं, और उनकी प्रार्थनाओं को स्वीकार करें, तथा अपनी भूमि की उर्वरता के द्वारा लोगों के लिए फसलों को बढ़ाकर, अपने मध्यस्थता द्वारा अपने अधिकार के नगरों की रक्षा करते हुए, और अपने वफादार उत्तराधिकारियों, हमारे सम्राटों, के लिए उनके विरोधियों के विरुद्ध दृढ़ खड़े रहो।

कॉन्टाकियन, स्वर 8:

क्योंकि हम आपको एक अत्यंत तेजस्वी तारे के रूप में सम्मानित करते हैं, जो पूर्व से प्रकाशित होकर पश्चिम में आया: क्योंकि आप इस पूरे देश को चमत्कारों और भलाई से समृद्ध करते हैं, और उन लोगों को प्रबुद्ध करते हैं जो विश्वास के साथ आपकी स्मृति का सम्मान करते हैं, हे धन्य अलेक्जेंडर। इसी कारण, हे आपके लोग, हम आज आपका निधन दिवस मनाते हैं: अपने स्वदेश के उद्धार के लिए प्रार्थना करें, और हमारे ऑर्थोडॉक्स सम्राट निकोलस अलेक्जेंड्रोविच के राज्य के लिए, और उन सभी के लिए जो आपके पवित्र अवशेषों के संदूक के पास आते हैं, और जो विश्वासपूर्वक आपसे पुकारते हैं: आनंदित हो, हमारे नगर की शक्ति।

एक अन्य कोंटाकियन:

जिस प्रकार आपके सम्बन्धी, बोरिस और ग्लेब, स्वeden में वेल्गर में परिश्रम कर रहे व्यक्ति और उसकी सेना की सहायता के लिए स्वर्ग से आपके पास आए थे: उसी प्रकार अब, धन्य अलेक्जेंडर, अपने संबंधियों की सहायता के लिए आओ, और उन लोगों को परास्त करो जो हमसे लड़ते हैं।

हमारे पूजनीय पिता स्वर के अलेक्जेंडर की स्मृति।

30 अगस्त को स्मरणोत्सव

[5819]धन्य अलेक्जेंडर का जन्म वेलकिी नोवगोरोड[5820] के क्षेत्रों में, ओबोनेज़ क्षेत्र[5821] में हुआ था, जो ओयात नदी[5822] के कनिारे, मंडरा नामक गाँव में स्थति था, जो परम पवत्रि ईश्वर की माता के ओस्त्रोव्स्की मठ के सामने था, जो उनके गौरवपूर्ण आगमन[5823] को समर्पति था। वह स्टेफ़न नामक पति और वासलिसिा नामक माता के घर एक दव्यि शक्तिके प्रकट होने से[5824] जन्मे थे, और पवत्रि बपतस्मिा द्वारा पवत्रि कएि गए थे। जब उन्हें पढ़ना और लखिना सीखने का समय आया, तो उनके माता-पति ने उन्हें पवत्रि शास्त्रों का अध्ययन करने के लएि भेजा। लेकनि जब उसके सहपाठी अपनी पढ़ाई में अच्छी प्रगतिकर रहे थे, तो वह सामग्री को समझने में धीमा था। यह ईश्वर की वशिेष कृपा से था, ताकिउसे मनुष्यों से नहीं बल्कि ईश्वर से समझ प्राप्त हो, और वास्तव में ऐसा ही हुआ। एक दनि वह चर्च आया और हमारे प्रभु यीशु मसीह तथा उनकी परम पवत्रि माता की प्रतमिा के सामने साष्टांग दण्डवत करके, पवत्रि धर्मग्रंथों के अध्ययन के लएि समझ प्रदान कएि जाने की प्रार्थना करने लगा। और उसकी प्रार्थना का तुरंत ही उत्तर मलिा – उसे एक आवाज़ सुनाई दी जसिने उससे कहा: 'उठो, डरो मत। तुम्हें वही मलिेगा जो तुमने माँगा है।"

उत्साहति लड़का उठा और अपने पति के पास गया। उसके पति और माता ने उसके हृदय में आनंद को देखा और यह महसूस कयिा कियह ईश्वर की उस पर हुई दया के कारण था; और, ऐसा सोचकर, उन्होंने इसके लएि ईश्वर का धन्यवाद कयिा। उस समय से, उस धन्य लड़के ने अपनी पढ़ाई में तेजी से प्रगतिकरना शुरू कर दयिा, पवत्रि धर्मग्रंथों के पाठ को ध्यान से सुनता और हर बात में अपने माता-पति की आज्ञा मानता। साथ ही, उसने इतना सख्त उपवास रखा कि वह दनि में केवल एक बार रोटी का एक टुकड़ा खाता था, और वह भी संयम से; रात में, वह बहुत कम सोता था। लड़के के माता-पति इससे चकति थे, और उसकी माँ ने उसे मनाने की कोशशि करते हुए, एक बार उससे कहा:

'मेरे बेटे! तुम इस तरह अपना शरीर क्यों कष्ट में डाल रहे हो? हमारे साथ खाओ और हमारी तरह सोओ।' लेकनि उस लड़के ने अपनी माँ को उत्तर दयिा:

'माँ, आप मुझसे ऐसा क्यों कह रही हैं, मुझे उस आत्म-संयम से हटने के लएि क्यों कह रही हैं जो मुझे प्रसन्न करता है? क्योंकि धर्मग्रंथ में लखिा है कि तो भोजन और न ही पेय हमें परमेश्वर के नकिट लाता है (1 कुरन्थियों 8:8)। मुझे वैसे ही जारी रहने दो जैसे मैंने शुरू कयिा है।'

अपने बेटे के बुद्धमिानी भरे जवाब से चकति होकर, और खासकर यह देखकर कि उसमें ऐसा कारनामा करने की सच्ची इच्छा थी, उसकी माँ ने उससे कहा:

'जैसा तुम्हें ठीक लगे, वैसा ही करो, मेरे बेटे।'

लेकनि उस अद्भुत युवक को दखिाई देने वाली संपत्तिकी तुलना में वीरतापूर्ण कार्यों के प्रतिअधकि आकर्षण था; वह धन-संपत्तिकी प्रचुरता को केवल एक छाया मानता था और पृथ्वी पर सभी मानवीय चीजों को व्यर्थ और तुच्छ समझता था।

जब वह परपिक्वता की आयु में पहुँचा, तो उसके माता-पति उसके लएि एक वैध ववािह का प्रबंध करना चाहते थे, लेकनि ईश्वर-प्रेमी युवक ने मना कर दयिा। वह हमेशा से ही दुनयिा को पीछे छोड़ने और उस चीज़ को प्राप्त करने की इच्छा रखता था और केवल उसी के बारे में सोचता था जसिकी वह लालसा करता था। अपने पति का आशीर्वाद प्राप्त कर, दखिावे के तौर पर पास के एक गाँव जाने के लएि, वह अपने पारविारकि घर से नकिल गया और ईश्वर के मार्गदर्शन—

[5819] आदरणीय अलेक्जेंडर का जन्म 15 जून 1448 को हुआ था।

[5820] वेलकिी नोवगोरोद का क्षेत्र उत्तर-पश्चमिी रूस के एक वशिाल कोने को कवर करता था, जो उत्तर की ओर व्हाइट सी तक और पूर्व की ओर यूराल पर्वत के पार तक फैला हुआ था। इसमें नोवगोरोड, सेंट पीटर्सबर्ग, ओलोनेत्स का एक हस्सिा, अर्खान्गेल्स्क, परम, व्यातका का एक हस्सिा, वोल्गोडा, यारोस्लावल का एक हस्सिा, टवर और प्सकोव का एक हस्सिा के वर्तमान गवर्नरेट शामलि थे, और 18वीं शताब्दी की शुरुआत तक इसे पाँच भागों, या 'प्यातनि' में वभिाजति कयिा गया था।

[5821] यह, बेशक, ओबोनेज़ी, या ओबोनेज्स्काया प्यैतनि को संदर्भति करता है, जो सभी नोवगोरोड प्यैतनिाओं में सबसे व्यापक था। यह नोवगोरोड से उत्तर और उत्तर-पूर्व की ओर फैला हुआ था, जसिका एक ओर वोल्खोव नदी और लादोगा झील, और दूसरी ओर इल्मेन झील तथा मेट्या और मदा नदयिाँ थीं। चूँकियह ओनेगा झील को चारों ओर से घेरे हुए था, इसलएि इसका यही नाम पड़ा।

[5822] ओयात नदी स्वरि नदी की बाएँ तट की सहायक नदी है और यह वर्तमान में ओलोनेत्स गवर्नरेट में स्थति है।

[5823] ईश्वर की माता का वेवेंस्की मठ ओयात नदी पर स्थति था। 1581 में, इसे 'जर्मन लोगों' द्वारा पूरी तरह से जला दयिा गया था, जसिके कारण मठ के समुदाय के छह सदस्य मठ के पीछे एक द्वीप पर बंजर भूमि में रहने लगे।

[5824] आदरणीय अलेक्जेंडर के माता-पति कुछ समय से संतान नहीं पा रहे थे, और उन्होंने संतानोत्पत्तिकी अपनी क्षमता की बहाली के लएि ईश्वर से प्रार्थना की; इसके बाद, उनका पुत्र एमोस पैदा हुआ, जो बाद में आदरणीय अलेक्जेंडर बने।

या यूँ कहें कि एक देवदूत के साथ—माउंट वालाम पर स्थित 'होली सेवियर एंड हजि डिवाइन ट्रांसफिगरेशन मठ' ([5825]) में आ गया। उसने इस मठ के मठाधीश से एक भिक्षु के रूप में सिर मुंडवाने का आग्रह किया। उस समय, उसकी उम्र 26 वर्ष थी। मठ में प्रवेश करने के बाद, उसने एक सदाचारी जीवन के अनुशासन में इतनी लगन से खुद को समर्पित कर दिया कि हर कोई उसके बारे में बात करने लगा। ऐसी प्रसिद्धि से परेशान होकर, उन्होंने वहाँ के मठाधीश का आशीर्वाद लिया और अपने साथ केवल आवश्यक कपड़े लेकर, रात में मठ छोड़ दिया। वे उस स्थान पर आए जहाँ उन्होंने अपने माता-पिता को छोड़ते समय पहली बार बसने का इरादा किया था। यह स्थान झील[5826] के तट पर, नदी स्विर से चार पोप्रीश्चा की दूरी पर स्थित था। यहाँ रेवरेंड फादर ने अपने लिए एक छोटा सा सेल (कोठरी) बनाया, जिसका उपयोग वह अपने तपस्वी कार्यों से संक्षिप्त विश्राम के लिए करते थे।

एक दिन, जब वह रहने के लिए जगह की तलाश में आसपास के इलाके की खोज कर रहे थे, तो उन्हें एक सुंदर स्थान मिला, जो एक दिव्य प्रकाश से प्रकाशित था, और जिस पर आज भी मठ स्थित है। जब वह वहाँ थे, एक अवसर पर वह अपनी कुटिया से निकलकर झील से पानी भरने के लिए नीचे गए, तभी उन्होंने स्वर्ग से एक आवाज़ सुनी जिसने उन्हें नाम से पुकारा और उनसे कहा: 'चूँकि तुम मेरे आज्ञाओं के एक वफादार अनुयायी रहे हो, मैं तुम्हारे पास अनगिनत लोगों को इकट्ठा करूँगा; उन्हें दूर मत भगाना, बल्कि उन्हें खुले हाथों से स्वागत करो और मोक्ष की ओर उनका मार्गदर्शन करो।'

ये शब्द सुनते ही, आदरणीय संत जमीन पर लोटकर गिर पड़े और ईश्वर को धन्यवाद की प्रार्थना की, जिसके बाद, कुछ पानी भरकर, वे अपनी कुटिया में लौट आए।

कुछ समय बाद, उनके अपने भाई, जिनका नाम जॉन था, जो उन्हें ढूंढ रहे थे, वे पूजनीय पिता के पास आए। अपने भाई को देखकर, पूजनीय पिता प्रसन्न हुए, और वे दोनों ने अपने लिए एक अधिक विशाल आवास बनाने का काम शुरू कर दिया, क्योंकि वे एक साथ रहना चाहते थे। लेकिन जल्द ही पूजनीय के भाई का निधन हो गया, और अलेक्जेंडर ने उनके लिए अंतिम संस्कार के भजन गाकर उन्हें दफना दिया। इसके बाद, पूजनीय ने फिर से कठोर तपस्या में खुद को समर्पित कर दिया, और उनके भाइयों की संख्या बढ़ गई। वे मौन में रहते थे, एक-दूसरे से अलग रहते थे और प्रत्येक ने अपनी क्षमता के अनुसार पूजनीय की नकल की।

इस प्रकार आदरणीय पिता ने अपना जीवन यापन किया और उस स्तर को प्राप्त किया जहाँ, अपनी प्रार्थनाओं के द्वारा, उन्होंने दुष्ट आत्माओं को भगाया और स्वर्गदूतों से वार्तालाप किया। एक अवसर पर, उन्हें स्वयं ईश्वर को देखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ, जो उन्हें तीन व्यक्तियों में प्रकट हुए, और उन्होंने उनसे एक चर्च स्थापित करने, एक मठ बनाने और भिक्षुओं के एक समुदाय को इकट्ठा करने के बारे में वार्तालाप किया। बाद में जब उन्होंने चर्च बनाने के स्थान के बारे में प्रार्थना की, तो प्रभु के एक स्वर्गदूत ने उन्हें वह स्थान दिखाया। भाइयों ने उन्हें पुरोहित पद स्वीकार करने के लिए मनाया, और कुछ समय बाद उन्होंने पवित्र त्रिमूर्ति को समर्पित एक चर्च का निर्माण किया और उसका अभिषेक किया, जिसके बाद भाइयों की संख्या और भी बढ़ने लगी।

यद्यपि रेवरेंड ने भाइयों के ऊपर मठाधीश का पद ग्रहण कर लिया था, उसने अपने जीवन-यापन के तरीके को नहीं बदला; और, मठाधीश के रूप में सेवा करते हुए, उसने सभी के लिए नम्रता का एक उदाहरण स्थापित किया, प्रभु के वचनों को ध्यान में रखते हुए, जिन्होंने कहा था: 'जो कोई पहला होना चाहता है, उसे सभी का अंतिम और सभी का सेवक बनना चाहिए' (मरकुस 9:35; तुलना करें 10:43)। इसलिए, आदरणीय पिता ने स्वयं को नम्र किया, सभी से छोटा बनने का प्रयास किया, और सभी की सेवा की। उन्होंने सभी के लिए एक उदाहरण स्थापित किया और कड़ी मेहनत की, वे काम पर निकलने में हमेशा सबसे पहले होते थे। वे हमेशा सब कुछ अपने हाथों से स्वयं करते थे: वे रसोई में जाते, आटा गूंथते और रोटी सेंकते थे; कभी-कभी वे झील से पानी लाते, लकड़ियाँ काटते और उन्हें मठ तक ले जाते थे। कभी-कभी वह चक्की पर जाता था जहाँ भिक्षु राई पीस रहे थे; जब वे अभी भी सो रहे होते थे, तो वह पीसने के लिए तैयार राई लेता, प्रत्येक भिक्षु के लिए आवंटित हिस्सा पीसता, पिसा हुआ अनाज उसकी सही जगह पर रखता, और फिर अपनी कोठरी में लौट आता। वह चर्च में सबसे पहले पहुँचता और सबसे आखिरी में निकलता था। उसे कभी कोई लेटे हुए नहीं देख पाया, यहाँ तक कि पुआल की चटाई पर भी नहीं, और न ही अपने शरीर पर पानी डालते हुए। उनका एकमात्र वस्त्र मोटे कपड़े का एक कासक (cassock)

[5825] वालाम लेडोगा झील पर इसके उत्तरी तट के पास एक द्वीप है, जो अब उत्तरी रूस में वहाँ बने मठ के लिए प्रसिद्ध है।

[5826] इस झील को पहले रोशनस्कोए के नाम से जाना जाता था।

था, जो इतना पुराना था कि उस पर कई पैबंद लगे हुए थे। कई मूर्ख लोग उनका मज़ाक उड़ाते और उन्हें गाली देते थे, लेकिन वह उनके ऐसे अपमान को खुशी-खुशी स्वीकार कर लेते थे।

कुछ समय बीत जाने के बाद, ईश्वर की इच्छा से, आदरणीय महंत ने परम पवित्र जीवन-दायक त्रिमूर्ति[5827] को समर्पित एक पत्थर का चर्च बनाया, मठ का विस्तार किया, चारों ओर कोठरियों का निर्माण करवाया, और केंद्र में एक बड़े चर्च के साथ एक भोजनशाला बनवाई, और भाईचारे की जरूरतों के लिए अन्य सभी उपयोगी चीजों का प्रबंध किया।

इस प्रकार रेवरेंड फादर ने ईश्वर को प्रसन्न करने वाला जीवन जिया और अपने जीवन के अंत तक अपने कार्यों को जारी रखा, जिसके लिए उन्हें जीवित रहते हुए चमत्कार करने का वरदान मिला। अंत में, यह महसूस करते हुए कि ईश्वर के पास जाने का समय निकट आ गया है, उन्होंने भाइयों को अपने पास बुलाया और उनसे कहा:

'हे भाइयो! अब मेरे जीवन का अंत निकट आ गया है, और मैं इस जीवन से विदा हो रहा हूँ। मैं आपको ईश्वर के सुपुर्द करता हूँ। ईश्वर आपको सुरक्षित रखे और अपने प्रेम में आपको बलवान बनाए।'

ये वचन कहने के बाद, रेवरेंड फादर ने भाइयों को एक-दूसरे के प्रति प्रेम बनाए रखने, एक-दूसरे के प्रति सहिष्णु रहने और अन्य गुणों का अभ्यास करने के लिए प्रोत्साहित किया। निष्कर्ष में, उन्होंने उन्हें यह वसीयत की कि, उनकी मृत्यु के बाद भी, उनमें से कोई भी अपने पास कोई मादक पेय न रखे। जब रेवरेंड की आत्मा के ईश्वर के पास जाने का समय आया, तो उन्होंने अपने हाथ स्वर्ग की ओर उठाए और एक प्रार्थना की, जिसका समापन उन्होंने इन शब्दों से किया:

'हे प्रभु! मैं अपनी आत्मा तेरे हाथों में सौंपता हूँ।'

इस प्रकार, अपने होठों पर प्रार्थना के साथ, रेवरेंड फादर ने अपनी धार्मिक आत्मा को प्रभु के हवाले कर दिया। यह 1533 में, 30 अगस्त को हुआ। वे 85 वर्ष के थे। उनके पवित्र शरीर को सम्मान के साथ प्रभु के रूपांतरण के चर्च में, वेदी के दाईं ओर दफनाया गया। यह उन लोगों को कई चंगाइयाँ प्रदान करता है जो आदरणीय[5828] के पवित्र समाधि पर विश्वास के साथ आते हैं।

ट्रोपारियन, स्वर 4:

हे ईश्वर-ज्ञानी, अपने युवा काल से ही, आध्यात्मिक तड़प से प्रेरित होकर, आपने केवल मसीह के पदचिह्नों पर चलने की तीव्र इच्छा से मरुभूमि में निवास किया। इसलिए, स्वर्गदूतों के दल जिन्होंने आपको देखा, वे इस बात पर चकित रह गए कि आप देह में रहते हुए भी शत्रु की अदृश्य युक्तियों से कैसे संघर्ष करते थे; आपने आत्म-संयम द्वारा वासनाओं के दलों पर विजय प्राप्त की, और हे पूजनीय अलेक्ज़ेंडर, पृथ्वी पर स्वर्गदूतों के समान प्रकट हुए। हमारे ईश्वर मसीह से प्रार्थना करें कि वह हमारी आत्माओं को बचाए।

कॉन्टाकियन, स्वर 8:

हे पिता, आज आप रूस के प्रदेशों में एक तेजस्वी तारे के समान प्रकाशित हुए; मरुस्थल में निवास कर, आपने ईसा मसीह के पदचिह्नों पर चलने की दृढ़ इच्छा की, और इस प्रकार आपने अपने कंधों पर सम्मानित क्रूस का पवित्र बोझ उठाया, और अपने श्रम और संघर्षों द्वारा देहिक वासनाओं को मार डाला। इसलिए हम आपसे पुकारते हैं: अपनी उस भेड़-बकरियों के झुंड को बचाएँ, जिसे आपने इतनी बुद्धिमानी से इकट्ठा किया है, ताकि हम आपसे कह सकें: आनंदित हो, आदरणीय अलेक्ज़ेंडर, हमारे पिता।

[5827] इस चर्च का अभिषेक 1526 में आर्चबिशप मकाराइस के आशीर्वाद से किया गया था।

[5828] आदरणीय अलेक्ज़ेंडर को 1547 से एक संत के रूप में पूजा जाने लगा, और उस समय उनके सम्मान में एक प्रार्थना सभा रची गई थी; 1559 में, मॉस्को में उनके सम्मान में एक पार्श्व-गिरिजाघर बनाया गया था। उनकी अवशेष 17 अप्रैल 1641 को खोजे गए थे, और 1643 में ज़ार मिखाइल फेडोरोविच ने उनके लिए एक चांदी का अवशेष-पात्र बनवाया, जिसमें वे आज भी विराजमान हैं।

हमारे पूजनीय पिता क्रिस्टोफ़र का स्मरणोत्सव

३० अगस्त को स्मरणोत्सव

लिमोनार नामक पुस्तक के लेखक, जॉन और सोफ्रोनीयस, इस पूजनीय क्रिस्टोफ़र के बारे में निम्नलिखित का वर्णन करते हैं:

'जब हम अलेक्ज़ेंड्रिया में थे, तो हम अब्बा थियोडुलस के पास गए, जो फारान में सेंट सोफिया के मठ में ठहरे हुए थे; वृद्ध ने हमें बताया, कहते हुए:

मैंने हमारे पूजनीय पिता थियोडोसियस के सेनोबियम में मठीय संन्यास ग्रहण किया; यह सेनोबियम मसीह के पवित्र नगर, यरूशलेम के रेगिस्तान में स्थित है; वहाँ मैं रोम के मूल निवासी, क्रिस्टोफ़र नामक एक लंबे साधु से मिला। एक दिन मैं उनके सामने झुककर बोला, 'पिताजी, मुझे अपना प्रेम दिखाइए; बताइए, अपनी युवावस्था के दिनों से आपकी तपस्या की क्या-क्या कठिनाइयाँ थीं?'

जब मैंने उनसे काफी विनती की, तो बड़े भाई को एहसास हुआ कि मैं यह सब अपने आध्यात्मिक लाभ के लिए पूछ रहा था; तब उन्होंने मुझे अपने बारे में इस प्रकार बताया:

'जब मैंने संसार का त्याग किया, मेरे बच्चे, तो मठवासी जीवन के लिए मेरे मन में महान प्रेम और उत्साह था:

दिन के समय मैं ईश्वर की सेवा में स्वयं को समर्पित कर देता था, जबकि शाम को, देर रात तक, मैं उस गुफा में जाता था जहाँ पूजनीय थियोडोसियस और अन्य पवित्र संत पहले प्रार्थना किया करते थे। गुफा में प्रवेश करने पर, मैं सौ प्रणाम करता था, प्रत्येक सीढ़ी पर ईश्वर के सामने मुंह के बल गिरता था: वहाँ कुल अठारह सीढ़ियाँ थीं। गुफा के अंदर, मैं सुबह के भजन के लिए बुलाने वाली घंटी बजने तक प्रार्थना में समय बिताता था; तभी मैं गुफा से निकलकर चर्च की ओर जाता था।

मैंने ग्यारह वर्षों तक इस तपस्या को जारी रखा, इस नियम से कभी विचलित नहीं हुआ, अपने विचारों पर बड़ी श्रद्धा और सतर्कता के साथ काबू पाने का प्रयास किया, मुझे सौंपी गई सभी जिम्मेदारियों में शारीरिक रूप से परिश्रम किया, और सांसारिक वस्तुओं से मेरी उदासीनता के कारण बड़ी कमी सहन की।

एक रात, जब मैं गुफा में आया, तो मैंने सीढ़ियों पर अपनी प्रार्थनाएँ करना शुरू किया; आखिरी सीढ़ी पर पहुँचकर, मैं ठहर गया – अचानक, मैंने खुद को आनंद की एक ऐसी अवस्था में पाया: मैंने देखा कि पूरी गुफा दीयों से भरी हुई थी, जिनमें से कुछ जल रहे थे, जबकि कुछ नहीं। मैंने दो पुरुषों को भी देखा, जो प्रकाश की किरणों की तरह थे, सफेद वस्त्र पहने हुए और दीपक जला रहे थे, और मैंने उनसे पूछा:

'तुमने ये दीपक यहाँ क्यों रखे हैं, जिससे मैं प्रवेश करके प्रार्थना न कर सकूँ?'

उन्होंने उत्तर दिया:

'ये उन पूर्वजों के दीपक हैं जो ईश्वर की सेवा करते हैं।'

तब मैंने उनसे फिर पूछा:

'तो फिर, कुछ दीपक जल रहे हैं जबकि अन्य नहीं जल रहे?'

उन्होंने उत्तर दिया:

'जो उत्साहपूर्वक प्रभु की सेवा करते हैं, उन्होंने अपने दीपक जलाए हैं, जबकि आलसी लोगों ने अपने नहीं जलाए।'

तब मैंने उनसे कहा:

'मुझ पर कुछ दया दिखाओ; मुझे बताओ: क्या मेरा दीपक जल रहा है या नहीं?'

उन्होंने मुझसे कहा:

'कठोर परिश्रम करो और प्रार्थना करो, और फिर हम इसे जलाएंगे।'

लेकिन मैंने कहा:

'मैं हमेशा प्रार्थना करता रहा हूँ और अब तक मैंने कुछ और नहीं किया है।'

इन शब्दों के बाद, मैं होश में आया और मुझे कोई और दिखाई नहीं दिया। फिर मैंने खुद से कहा:

'हे क्रिस्टोफ़र! अपने दीपक को जलाने के लिए तुम्हें और भी अधिक कठिनाइयों को सहना होगा!'

अगली सुबह मैं मठ से निकल पड़ा और माउंट सिनाई के लिए चल पड़ा, अपने साथ पहने हुए कपड़ों के सिवा कुछ भी नहीं लिया। माउंट सिनाई पर पचास साल बिताने और कई तपस्वी कर्मों में परिश्रम करने के बाद, मुझे एक आवाज़ सुनाई दी, जो कह रही थी:

'क्रिस्टोफ़र! अपने मठ में जाओ, जहाँ तुमने कभी तपस्या की थी, ताकि तुम वहाँ अपने पितरों के साथ विश्राम कर सको।'

अपने बारे में यह बताने के बाद, आदरणीय क्रिस्टोफ़र कुछ समय और जीवित रहे और अपनी पवित्र आत्मा को ईश्वर के हाथों में सौंप दिया।

बाद में, उन्हीं अब्बा थियोडुलस ने हमें (जैसा कि जॉन और सोफ्रोनीयस द्वारा वर्णित है) उन्हीं पिता क्रिस्टोफ़र के बारे में बताया, कि एक अन्य अवसर पर, अपनी मृत्यु से पहले, आदरणीय क्रिस्टोफ़र ने निम्नलिखित कहा था:

'एक दिन,' उन्होंने कहा, 'मैं अपने मठ से निकला और प्रभु के जीवन-दायक क्रूस की पूजा करने और उसे चूमने के लिए पवित्र नगर यरूशलेम गया। और जब मैं वहाँ था, अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करके और जैसे ही मैं वहाँ से जा रहा था, मैंने एक भाई को चर्च के आँगन के बीच में, द्वार के पास खड़ा देखा – न तो अंदर आ रहा था और न ही बाहर जा रहा था। मैंने दो काले कौवों को भी उसके सामने निडर होकर उड़ते और उसे अंदर जाने से रोकते हुए देखा। मुझे एहसास हुआ कि वे कौवे राक्षस थे। तब मैंने वहाँ खड़े व्यक्ति से कहा:

'मुझे बताओ, भाई, तुम द्वार के बीच में क्यों खड़े हो और अंदर क्यों नहीं जा रहे?'

उसने उत्तर दिया:

'मुझे क्षमा करें, पिताजी, मैं विरोधी विचारों से पीड़ित हूँ; एक विचार मुझसे कहता है: जाओ और पवित्र क्रूस की पूजा करो और उसे चूमो; जबकि दूसरा विचार कहता है: नहीं, मत जाओ, पहले अपना कर्तव्य पूरा करो; तुम किसी और समय आकर इसकी पूजा करना।'

यह सुनकर (संत क्रिस्टोफ़र कहते हैं), मैंने उस भाई का हाथ पकड़ा और उसे चर्च के अंदर ले गया, और तुरंत ही वे कौवे गायब हो गए; मैंने सुझाव दिया कि वह पवित्र क्रूस और प्रभु के पवित्र समाधिस्थल की पूजा करे, और फिर मैंने उसे शांति से विदा कर दिया।

यह मुझे (थियोडुलस कहता है) पूजनीय क्रिस्टोफ़र ने सुनाया, क्योंकि उन्होंने देखा कि मैं मठ के कर्तव्यों में तो बहुत सक्रिय था लेकिन प्रार्थना पर कम ध्यान देता था – ताकि मैं यह जान सकूँ कि सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण आध्यात्मिक सेवा करनी चाहिए, और उसके बाद ही शारीरिक आवश्यकताओं का कार्य करना चाहिए।

यह जानकर, धन्य पिता जॉन और सोफ्रोनीउस ने इसे पढ़ने और सुनने वालों के लाभ के लिए, हमारे ईश्वर मसीह की महिमा के लिए लिखा[5829] ।

हमारे पूजनीय पिता फैंटिन की स्मृति

30 अगस्त को स्मरणोत्सव

यह सम्माननीय पिता कैलाब्रिया[5830] में जन्मे थे और जॉर्ज तथा वीरीना के पुत्र थे। अपनी युवावस्था से ही उन्होंने स्वयं को ईश्वर की सेवा के लिए समर्पित कर दिया। एक मठ[5831] को सौंपे जाने और मठवासी संन्यास ग्रहण करने के बाद, उन्होंने सभी प्रकार के सद्गुणों में स्वयं को प्रशिक्षित किया और ईश्वर की आज्ञाओं का पालन करने में इतने निपुण हो गए कि उन्हें महान दैवीय प्रकटीकरण प्राप्त हुए। मरुभूमियों और पहाड़ों में भटकते हुए, वह एक समय में बीस दिनों तक बिना भोजन के रहा और चार साल तक पूर्णतः नग्न रहा। सारासेनों[5832] द्वारा दी गई कई विपत्तियों से पीड़ित होकर, उन्होंने साठ वर्षों तक धैर्यपूर्वक उन्हें सहन किया; फिर, अपने शिष्यों विटालियस और निकिफोरस को साथ

[5829] आदरणीय क्रिस्टोफ़र पाँचवीं शताब्दी में रहते थे।

[5830] कैलाब्रिया, एक प्राचीन रोमन प्रांत, एपेनाइन प्रायद्वीप के दक्षिणी भाग में स्थित था।

[5831] एक प्रोलॉग में कहा गया है कि आदरणीय फैंटिन ने आठ वर्ष की आयु में मठ में प्रवेश किया।

[5832] सख्त मायनों में, सारासेन अरब के निवासी हैं। मूल रूप से, यह नाम अरब में घूमने वाले एक डाकू कबीले को संदर्भित करता था, लेकिन बाद में ईसाई लेखकों ने इस शब्द को सामान्य रूप से सभी अरबों और मुसलमानों पर लागू कर दिया। अफ्रीकी सारासेनों ने लगभग 828 में सिसिली और कैलाब्रिया पर हमला किया।

लेकर, वे पेलोपोनेस[5833] के लिए रवाना हो गए। वे अक्सर कोरथि[5834] जाते थे और कई लोगों के उद्धार के कार्य में सहायक थे। उन्होंने एथेंस[5835] की भी यात्रा की, जहाँ उन्होंने 'ईश्वर की माता' के चर्च में प्रार्थना की, जिसके बाद वे थ्रेसलॉनिकी[5836] के लिए रवाना हुए और वहाँ उन्होंने महान शहीद डेमेट्रियस की अवशेषों द्वारा किए गए चमत्कारों को देखा। वे वहाँ आठ वर्षों तक अपने सामान्य तपश्चर्यापूर्ण जीवन में रहे, अपनी पारंपरिक नियम-पालना करते हुए, और अपनी वृद्धावस्था में उन्होंने[5837] में देहांत किया।

13 सितंबर

31 अगस्त (पुराने कैलेंडर के अनुसार)

सितंबर

पवित्र शहीद साइप्रियन, कार्थेज के बिशप का जीवन और शहादत

31 अगस्त को स्मरणोत्सव

कार्थेज के बिशप, संत साइप्रियन, तीसरी शताब्दी के चर्च के सबसे प्रतिष्ठित धर्मपिता और शिक्षकों में से एक हैं। वे ऐसे समय में रहे और सेवा की जब मसीह की कलीसिया बाहरी उत्पीड़न - मूर्तिपूजकों से - और आंतरिक कलह - विधर्मी और फूट डालने वालों से - दोनों से घिरी हुई थी। संत सिप्रियन ने एक ओर एक साहसी महा-चरवाहे के रूप में उदाहरण स्थापित किया, जिन्होंने मसीह के नाम के लिए दुख उठाया और अपने झुंड के लिए अपना जीवन दे दिया, और दूसरी ओर चर्च के आंतरिक जीवन के एक बुद्धिमान आयोजक के रूप में भी। उन्होंने अपने पीछे अनगिनत लेख छोड़े हैं जिनमें उन्होंने विभिन्न धर्मशास्त्रीय मुद्दों को संबोधित किया है और चर्च के जीवन के आंतरिक संगठन के संबंध में अपने समय में उत्पन्न हुए लगभग सभी संदेहों को सुलझाया है। इस कारण से, उनका जीवन और उनके दुखों की कहानी विशेष रूप से शिक्षाप्रद है।

साइप्रियन का जन्म तीसरी शताब्दी की शुरुआत में[5838] में हुआ था। उनके माता-पिता मूर्तिपूजक थे और कार्थेज के प्रतिष्ठित और कुलीन नागरिकों में से थे। उनका मूल नाम फासियस साइप्रियन था। अपनी युवावस्था में, साइप्रियन ने अच्छी सांसारिक शिक्षा प्राप्त की। साइप्रियन ने वाक्पटुता में काफी सफलता हासिल की, इसीलिए उन्हें कार्थेज के स्कूल में वाक्पटुता का शिक्षक नियुक्त किया गया; इसी कारण, कई लोगों ने कानूनी कार्यवाहियों में उन्हें अपना वकील चुना। यह माना जा सकता है कि साइप्रियन को एक बड़ी संपत्ति विरासत में मिली थी; इसके अलावा, एक वकील के रूप में उनकी कमाई ने उन्हें एक भव्य जीवन शैली जीने के लिए पर्याप्त साधन प्रदान किए, यही कारण है कि शुरू में, एक पैगन रहते हुए, साइप्रियन ने एक पापी जीवन जिया। इसका परिणाम यह हुआ कि साइप्रियन, जैसा कि वे स्वयं कहते हैं, 'अपने जुनून के आगे झुककर, अनजाने में अपनी ही बदकिस्मती का कारण बने, मानो यह उनकी प्रकृति में ही लिखा हो'[5839] ।

साइप्रियन ऐसा पापी जीवन तब तक जीते रहे जब तक कि ईश्वर की कृपा उनकी आत्मा को प्रबुद्ध करने और उन्हें मोक्ष के लिए बुलाने के लिए प्रसन्न नहीं हुई। ऐसा माना जाता है कि साइप्रियन तब तक एक मूर्तिपूजक रहे जब तक वे पूर्ण परिपक्वता तक नहीं पहुँचे, बहुत संभव है कि छियालीस वर्ष की आयु तक[5840] ।

[5833] प्राचीन काल में, पेलोपोनेस नाम बालकन प्रायद्वीप के दक्षिणी भाग को दिया गया था। सम्राट बेसिल के कैलेंडर के अनुसार, आदरणीय फैंटिनस कैलाब्रिया से थेस्सली के लिए रवाना हुए और, एथेंस (और, संभवत; कोरिथ), उन्होंने इसकी राजधानी, लारिसा में, संत अचिलियस की कब्र के पास काफी समय तक ठहरे, जिनका पर्व 15 मई को मनाया जाता है।

[5834] कोरिथ प्राचीन ग्रीस का एक प्रसिद्ध शहर था। यह प्राचीन आर्गोलीस में, कोरिथ की खाड़ी के तटों के पास स्थित था।

[5835] एथेंस का शहर – प्राचीन ग्रीस की राजधानी – एटिका में, भूमध्य सागर के तट के पास स्थित था।

[5836] थेस्सालोनिकी मैसेडोनिया का एक शहर है। यह एजियन सागर के तट पर स्थित था।

[5837] प्रतिष्ठित फैंटिनि का निधन 9वीं शताब्दी के अंत या 10वीं शताब्दी की शुरुआत में हुआ था।

[5838] साइप्रियन का जन्म लगभग 200 ईस्वी वर्ष में हुआ माना जाता है।

[5839] 'डोनाटस को पत्र', अध्याय 4।

[5840] सामान्यतःमाना जाता है कि साइप्रियन का ईसाई धर्म में परिवर्तन वर्ष 246 में हुआ था।

तीसरी शताब्दी की शुरुआत तक, कार्थेज में पहले से ही कई ईसाई थे। साइप्रियन को इस बात का पता था; वह ईसाई धर्म की उत्कृष्ट शिक्षाओं में रुचि लेने से खुद को रोक नहीं सका, क्योंकि वह स्वभाव से ही एक जिज्ञासु और कुलीन मन का धनी था। ईसाई धर्म में परिवर्तित होने से पहले ही, साइप्रियन टर्टुलियन के कुछ लेखों से परिचित हो गया था[5841] , और इसने उसे सत्य के मार्ग पर ला खड़ा किया।

अभी भी एक मूर्तिपूजक होते हुए, साइप्रियन को मूर्तिपूजक जीवन से अरुचि होने लगी। उन्होंने ग्लैडिएटरियन प्रदर्शनों की हानिकारकता और पापिता को पहचाना, जहाँ कुछ लोगों की हत्या से दूसरों को आनंद मिलता था; साइप्रियन को मूर्तिपूजक त्रासदियों और कॉमेडी से भी अरुचि हुई, जो लोगों को अतीत की अत्याचारों की याद दिलाती थीं और उन्हें भ्रष्ट करती थीं। अभी भी एक मूर्तिपूजक होते हुए भी, वह न्यायाधीशों द्वारा की जाने वाली अन्याय और अत्याचारों के साथ-साथ निजी व्यक्तियों के बीच धोखे और झगड़ों को दुख के साथ देखता था; अभी भी एक मूर्तिपूजक होते हुए भी, वह यह महसूस कर गया था कि कुलीनता, सम्मान और धन—जो कई लोगों को बहुत आकर्षक और लुभावना लगता है—वास्तव में आत्मा को केवल खाली और पीड़ादायक भयों और चिंताओं से भरते हैं। इन सब बातों ने साइप्रियन को इस निष्कर्ष पर पहुँचाया कि मूर्तिपूजक धर्म में कोई मोक्ष नहीं है, कि मूर्तिपूजक धर्म किसी व्यक्ति को मानसिक शांति नहीं दे सकता और ईसाई धर्म की तुलना में इस पर थोड़ी सी भी ध्यान देने की पात्रता नहीं थी।

फिर भी, नैतिक पतन की गहराई और व्यापकता की जागरूकता ने अस्थायी रूप से साइप्रियन के ईसाई धर्म में परिवर्तन को रोक दिया। वह अक्सर अपने नैतिक पतन, सुधार करने और ईसाई धर्म में एक नया जीवन शुरू करने की आवश्यकता पर विचार करता था, लेकिन साथ ही वह ईसाई धर्म की शुरूआती उच्च मांगों से हतोत्साहित भी था; वह ईसाई धर्म द्वारा प्रदान किए गए आध्यात्मिक पुनर्जन्म को अत्यंत कठिन मानता था, क्योंकि उसने पहले ही मूर्तिपूजक धर्म में कई साल बिता दिए थे। वह 'डोनाटस को पत्र' में इस मामले पर अपने संदेहों और भ्रमों को प्रभावशाली ढंग से व्यक्त करता है। साइप्रियन यहाँ कहते हैं: 'क्या यह संभव है कि कोई व्यक्ति अपनी पूर्व की सभी आदतों को त्याग दे, और वही शारीरिक रूप बनाए रखते हुए, मन और हृदय से एक अलग व्यक्ति बन जाए? … क्या यह संभव है कि उस स्वभाव को त्यागा जाए जो गहन भौतिकता से जन्म लेने के बाद कठोर हो गया है, या जो लंबे समय से चली आ रही आदत के कारण वर्षों से जड़ें जमा चुका है… क्या कोई जो शानदार दावतों और उत्तम व्यंजनों का आदी है, कभी मितव्ययिता सीख पाएगा? क्या कोई जिसने हमेशा कीमती, सोने से जड़ी पोशाकें पहनी हों, कभी एक साधारण और सादा वस्त्र धारण करेगा? 'नहीं,' साइप्रियन ने तर्क दिया, 'विलासिता का पुत्र, सम्मान का आदी, कभी खुद को एक साधारण और गुमनाम व्यक्ति नहीं बनाएगा। हमेशा अपने नौकरों के साथ, सम्मान के प्रतीक के रूप में उसके सामने चापलूसी करने वाली लोगों की एक विशाल भीड़ से घिरा, वह अकेले होने को एक सज़ा मानता है। अनवरत मनोरंजन का कैदी, वह आमतौर पर शराब में डूब जाता है, घमंड से भर जाता है, गुस्से में आग-बबूला हो जाता है, चोरी के विचार पालता है, क्रूरता के आगे झुक जाता है, और वासना में बहक जाता है। साइप्रियन लिखते हैं, 'इस प्रकार मैं अक्सर अपने आप से तर्क करता था, क्योंकि मैं स्वयं भी कई गलतियों का शिकार था'[5842] ।

इस तरह के नैतिक संघर्ष और अनिश्चितता के बीच, साइप्रियन बाहरी मदद और सलाह की आवश्यकता को महसूस किए बिना नहीं रह सका; और साइप्रियन ने अपने संदेहों को दूर करने के लिए कैक्टसियाई पुरोहित काइकेलियस की ओर रुख किया। सेसिलियस यह विश्वास दिलाने में सफल रहे कि मूर्तिपूजक बहुदेववाद पूरी तरह से निरर्थक है और यह कि मनुष्य की सबसे दुष्ट प्रवृत्तियों को भी ईश्वर की सर्वशक्तिमान कृपा की शक्ति से बदला जा सकता है। इस प्रकार, साइप्रियन ने दृढ़ संकल्प के साथ ईसाई बनने का निर्णय लिया।

प्रारंभिक चर्च में प्रचलित प्रथा के अनुसार, साइप्रियन को अपने बपतिस्मा से पहले तथाकथित 'कैटेकुमेनेट'[5843] में कुछ समय बिताना आवश्यक था। यह ज्ञात नहीं है कि साइप्रियन ने कैटेकुमेनेट में कितना समय बिताया; यह माना जा सकता है कि यह कोई लंबा समय नहीं था।

ईसाई बनने का संकल्प लेने के बाद, साइप्रियन ने अपने जीवन के तरीके में एक मौलिक परिवर्तन करके अपने निर्णय की सच्ची निष्ठा का प्रदर्शन किया। अभी भी कैटेकुमेनेट में रहते हुए, साइप्रियन ने अपनी सारी संपत्ति बेच दी और उससे प्राप्त धन गरीबों में बाँट दिया, अपने लिए कुछ भी नहीं रखा। इसके बाद, प्रेस्बिटर सेसिलियस, जो साइप्रियन

[5841] साइप्रियन टर्टुलियन की *अपोलॉजी* से परिचित था।

[5842] 'डोनटस को पत्र', अध्याय 3 और 4।

[5843] कैटेकेसिस – ईसाई धर्म की सच्चाइयों में मौखिक शिक्षण।

के आध्यात्मिक जीवन की देखरेख कर रही थीं, अब अपने शिष्य के धर्मांतरण की ईमानदारी पर संदेह नहीं कर सकीं। बेशक, साइप्रियन का बपतिस्मा इसके तुरंत बाद ही होने वाला था।

बपतिस्मा की संस्कार के माध्यम से प्राप्त आध्यात्मिक परिवर्तन की तीव्र अनुभूति ने साइप्रियन पर गहरा प्रभाव डाला। अपने मित्र डोनाटस को लिखे एक पत्र में उन्होंने बपतिस्मा की संस्कार की उद्धारकारी शक्ति का वर्णन इस प्रकार किया है:

'जब बपतिस्मा के जीवन-दायक जल ने मेरे पूर्व जीवन के दाग धो दिए, और स्वर्गीय प्रकाश मेरे शुद्ध और धर्मी ठहराए गए हृदय में प्रवाहित हुआ; जब पवित्र आत्मा प्राप्त करने के बाद, मैं एक नया मनुष्य बन गया, तब, एक अद्भुत तरीके से, मैं उस बात का पूरी तरह से आश्वस्त हो गया, जिस पर मैं पहले संदेह करता था; रहस्य प्रकट होने लगे, और अंधकार छंटने लगा; जो पहले कठिन लगता था वह आसान हो गया, और जो असंभव था वह संभव हो गया... स्वर्गीय उपहारों की प्राप्ति की कोई सीमा नहीं है। बशर्ते कि हमारे हृदय तरसते हों और खुले हों, हमारे पास अनुग्रह प्राप्त करने के लिए पर्याप्त विश्वास होता है। यह संयमपूर्ण पवित्रता, निर्दोष विचार, शुद्ध वाणी और सच्चे सद्गुण के माध्यम से पाप की विषाक्त शक्ति को नष्ट करने की क्षमता प्रदान करता है: यह भ्रष्ट हृदयों की अशुद्धियों को शुद्ध करता है, और उन्हें स्वास्थ्य की ओर लौटाता है; यह शत्रुओं को सुलह करने, बेचैन लोगों को शांत करने, और, भयानक मंत्रों के माध्यम से, किसी व्यक्ति के भीतर डेरा डाले हुए अशुद्ध आत्माओं को कबूल कराने की शक्ति देता है। जिन लोगों में दुष्ट आत्माएँ वास करती हैं, उन पर अनुग्रह की क्रिया का तरीका अदृश्य है; वे प्रहार जिनसे यह उन्हें मारता है, अप्रत्यक्ष हैं, फिर भी दंड दृश्यमान और प्रभावशाली है। इस प्रकार अनुग्रह का आत्मा, हमारे भीतर वास करने के बाद, अपनी सामर्थी शक्ति को प्रकट करना शुरू कर देता है; और यद्यपि हमने अभी तक अपने शरीरों और उनके अंगों को किसी अन्य से नहीं बदला है, फिर भी हमारी आँखें इस युग के अंधकार से अब अछूती नहीं हैं। आत्मा की क्या महिमा, क्या शक्ति है! 'जो शुद्ध हो गया है और शुद्ध बना रहता है, वह न केवल स्वयं को सांसारिक प्रलोभनों से बचाता है, न केवल उस शत्रु के किसी भी जाल में फँसने से बचता है जो उस पर आक्रमण करता है, बल्कि अपनी शक्तियों में इतनी हद तक सुदृढ़ हो जाता है कि वह विरोधी की पूरी सेना पर एक शासक के रूप में राज करता है'[5844] ।

इस प्रकार, साइप्रियन के बपतिस्मा के तुरंत बाद, ईश्वर की कृपा ने उसमें एक आंतरिक आध्यात्मिक पुनर्जन्म के माध्यम से स्वयं को प्रकट किया। हालाँकि, जैसा कि ऊपर उल्लेख किया गया है, उन्होंने अपने बपतिस्मा से पहले ही, कैटेकुमेनेट (शिक्षण-काल) के दौरान अपने जीवन-यापन के तरीके को बदल लिया था, फिर भी, उनकी अपनी स्वीकारोक्ति के अनुसार, उनका विश्वास पूर्ण दृढ़ता को और उनकी इच्छाशक्ति अपनी पूर्ण शक्ति और अडिगता को केवल बपतिस्मा के समय ही प्राप्त कर सकी। उन्हें संभवतः ईस्टर या पेंटेकोस्ट के पर्व पर बपतिस्मा दिया गया था[5845] ।

अपने बपतिस्मा के बाद, साइप्रियन ने कठोर सदाचार का जीवन जीना शुरू कर दिया। उन्होंने सभी के लिए अनासक्ति का उदाहरण प्रस्तुत किया, क्योंकि, दरिद्रों और गरीबों के प्रति करुणा से, उन्होंने उन्हें दान दिया, और अपनी सारी संपत्ति बाँट दी। अपने बपतिस्मा के बाद संत साइप्रियन के मुख्य कार्य प्रार्थना और पवित्र धर्मग्रंथों का अध्ययन थे।

जरूरतमंद सभी के प्रति दिया और परोपकार के कार्य करते हुए, साइप्रियन अपने गुरु, पादरी सेसिलियस के प्रति एक विशेष प्रेम और कृतज्ञता महसूस किए बिना नहीं रह सके, जिन्होंने उन्हें ईसाई धर्म के रहस्यों का खुलासा किया था और ईसाई धर्म में उनके परिवर्तन को सुगम बनाया था। और पुरोहित सेसिलियो ने, साइप्रियन में अपनी ओर ऐसी भक्ति और स्नेह देखकर, अपनी मृत्यु से पहले अपने शेष परिवार की देखभाल और कल्याण का भरोसा और आशा के साथ सौंपने के लिए उसे छोड़कर और किसी को नहीं पाया।

ईसाई धर्म अपनाने के बाद, साइप्रियन सेसिलियो के साथ उसी घर में रहते थे, क्योंकि उन्होंने अपना सारा धन गरीबों को दे दिया था; इसके अलावा, साइप्रियन और सेसिलियो दोनों ने कठोर सदाचार का जीवन जिया।

उनके बपतिस्मा के लगभग एक साल बाद, साइप्रियन को कार्थेज की कलीसिया का पुरोहित नियुक्त किया गया।

[5844] 'डोनाटस को पत्र', अध्याय 4 और 5।

[5845] प्रारंभिक चर्च में, इन दिनों को उनकी गंभीरता के कारण परिवर्तित हो रहे मूर्तिपूजकों के बपतिस्मा के लिए विशेष रूप से उपयुक्त माना जाता था।

एक पुरोहति के रूप में, संत साइप्रयिन ने और भी अधकि उत्साह के साथ धर्मपरायणता में खुद को समर्पति करना शुरू कर दयिा। डकिन पोंटयिस[5846] की गवाही के अनुसार, साइप्रयिन ने एक पुरोहति के रूप में सेवा करते हुए, प्राचीन धर्मी पुरुषों की बहुत नकल की और स्वयं अनुकरण के योग्य बन गए।

कुछ ही समय बाद, कार्थेज के बशिप डोनाटस की मृत्यु हो गई। खाली पड़े बशिप के पद को भरने के लिए संपूर्ण मंडली द्वारा संत साइप्रयिन को सर्वसम्मत सि चुना गया। इस प्रकार, साइप्रयिन एक वर्ष से अधकि समय तक प्रेस्बटिर के पद पर नहीं रहे।

साइप्रयिन ने शुरू में इस सम्मान को अस्वीकार कर दयिा, क्योंकि वे खुद को इतना उच्च पद स्वीकार करने के लिए अयोग्य मानते थे। उन्होंने कहा कि ऐसे प्रेस्बटिर थे जो उनसे बड़े और उनसे अधकि योग्य थे। लेकनि लोगों ने, जो अपने अच्छे चरवाहे से प्यार करते थे, इस बात पर जोर दयिा कि संत साइप्रयिन को बशिप नयिुक्त कयिा जाए। जब नयिुक्ति का नरि्धारति समय आया, तो ईसाइयों ने उस घर को घेर लयिा जहाँ साइप्रयिन ठहरे हुए थे और उन्होंने तब तक प्रवेश और नकिास मार्गों को नहीं छोड़ा जब तक कि साइप्रयिन चर्च जाने के लिए उनसे जाने पर सहमत नहीं हो गए। अपनी महान वनिम्रता के बावजूद, साइप्रयिन को भाईचारे के प्रेम के आगे झुकना पड़ा; वह चर्च गए और, सभी की प्रसन्नता के लिए, बशिप के रूप में अभषिक्ति हुए।

इस प्रकार संत साइप्रयिन को, एक दीपक की तरह, एक दीवान पर रख दयिा गया, ताकि वे अपनी सद्गुणों से दुनयिा को प्रकाशति कर सकें[5847] ।

एक बशिप के रूप में, साइप्रयिन ने सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण रूप से चर्च के पुनर्गठन पर अपना ध्यान केंद्रति कयिा। यह ध्यान दयिा जाना चाहिए कि उस समय कई ऐसे ईसाई थे जो केवल खुद को ईसाई कहते थे, लेकनि वास्तव में एक सच्चे ईसाई के जीवन जीने के अयोग्य थे। चूंकि मूर्तपिूजकों द्वारा ईसाइयों पर अत्याचार बहुत पहले ही बंद हो चुके थे, और चर्च को लगभग चालीस वर्षों का शांतपिूर्ण समय मलिा था, कुछ ईसाइयों ने लापरवाही से खुद को सख्त ईसाई रीति-रिवाजों से भटकने दयिा। साइप्रयिन स्वयं अपने समय की नैतकि कमयिों का वर्णन इस प्रकार करते हैं:

'हर कोई अपनी संपत्ति बढ़ाने में लगा हुआ था। पुरोहतिों में उनके व्रतों से अपेक्षति भक्ति की कमी थी; पादरयिों में शुद्ध आस्था की कमी थी; उनके कार्यों में परोपकार की कमी थी; और उनके आचरण में मर्यादा की कमी थी[5848] । कई ईसाई ईसाई धर्म के सत्यों का दृढ़ता से पालन नहीं करते थे और मसीह से मुंह मोड़ लयिा। 'लापरवाह शपथें, अधष्ठिाताओं के प्रति तिरिस्कार और अवज्ञा, बदनामी और पारस्परकि शत्रुता में अक्सर लप्ति रहा जाता था'[5849] .

इन सब को देखते हुए, संत साइप्रयिन को बशिप के रूप में चर्च के आंतरकि पुनर्गठन के लिए बहुत मेहनत करनी पड़ी।

बशिप के रूप में अभषिेक के तुरंत बाद, संत साइप्रयिन ने ईसाइयों के जीवन में फैल चुकी अव्यवस्था को जड़ से उखाड़ फेंकने का काम शुरू कयिा।

साइप्रयिन ने सबसे पहले अपना ध्यान पादरयिों पर, यानी स्वयं चर्च के चरवाहों पर केंद्रति कयिा, जो लोगों के नेता थे। साइप्रयिन कसिी को भी, पादरयिों के सबसे नचिले पद पर भी, प्रत्येक व्यक्ति की क्षमताओं और आचरण की पूरी जांच कए बनिा स्वीकार नहीं करते थे; वे चर्च की सेवा में प्रवेश करने के इच्छुक लोगों से तैयारी के एक नश्चिति स्तर की मांग करते थे; साइप्रयिन ने प्रेस्बटिरों की उपस्थति में ईसाई धर्मशास्त्र के ज्ञान की परीक्षा ली, जैसा कि ऑप्टानस के मामले में ज्ञात है, जसिे साइप्रयिन ने अपने बशिप के पदभार संभालने की शुरुआत में कैटेकुमेन का शक्षिक नयिुक्त कयिा था।

साथ ही, साइप्रयिन ईसाइयों के बीच नैतकिता में सुधार को लेकर भी चतिति थे। डीकन पोंटयिस संत साइप्रयिन की बशिप के रूप में सेवा के बारे में इन शब्दों में कहते हैं: 'उनमें कतिनी धार्मकिता थी! कतिनी सतर्कता! क्या दया! क्या कठोरता! उनके होठों से ऐसी पवत्रिता और अनुग्रह झरता था कि जो भी उन्हें देखता, वह चकति रह जाता था।"

[5846] डीकन पोंटयिस ने संत साइप्रयिन की जीवनी लखिी।

[5847] सायप्रयिन को संभवत:248 के अंत के आसपास बशिप के रूप में अभषिक्ति कयिा गया था।

[5848] 'पतन पर', अध्याय 6.

[5849] 'पतन पर पुस्तक', अध्याय 6.

अपने बाहरी रूप में, संत साइप्रयिन सीधे और कुलीन मुखमंडल वाले थे, क्योंकि उनकी आत्मा में छिपी पवित्रता उनके चेहरे पर झलकती थी। जैसे सभोपदेशक के वचन के अनुसार बुद्धि मनुष्य के मुख को सुशोभित करती है (सभो. 8:1), वैसे ही पवित्रता भी; और इस ईश्वर के पुरुष—संत साइप्रयिन—में दोनों ही गुण थे: वह बुद्धिमान भी थे और पवित्र भी। उनके कपड़े न तो बहुत भड़कीले थे और न ही बहुत साधारण, क्योंकि संत घमंड और दंभ से दूर रहते थे, फिर भी वे धर्माध्यक्षीय पद का अपमान नहीं करना चाहते थे। उनका चरित्र बहुत संतुलित था: वे न तो बहुत कठोर थे और न ही बहुत नरम, और न ही अत्यधिक विनम्र थे; जहाँ दंड की आवश्यकता होती थी, वहाँ वे, यद्यपि दयालुतापूर्वक, अपना क्रोध दिखाते थे, और यही कारण था कि सभी उनका सम्मान और आदर करते थे। इसके अलावा, संत सिप्रियन उन सभी के प्रति महान दया और करुणा दिखाते थे जो अन्याय के शिकार थे और संकट में थे: वे अनाथों, यात्रियों, गरीबों और बीमारों के सहायक थे।

अपने महाधर्मोपालक के आदेशों और कार्यों में, संत साइप्रयिन ने इतनी सूझबूझ और बुद्धिमानी दिखाई कि अन्य चर्चों के प्रमुख भी उनसे सलाह लेते थे।

उदाहरण के लिए, नोवोसेल के बिशप रोगेशियन ने एक निश्चित डिकिन द्वारा उन पर की गई अपमान के संबंध में संत साइप्रयिन से सलाह ली। साइप्रयिन ने जवाब दिया:

'यदि वह डिकिन आपको अवज्ञा करना और अपमानित करना जारी रखता है, तो आप अपने अधिकार के बलबूते, या तो उसे पदच्युत कर सकते हैं या उसे चर्च से बहिष्कृत कर सकते हैं; हालाँकि,' उन्होंने आगे कहा, 'हम चाहेंगे कि आप अपने धार्मिक अधिकार से उसे दंडित करने के बजाय, उन अपमानों और तिरिस्कारों को नम्र धैर्य से सहन करें।'

एक अन्य बिशप, यूक्रैटियस ने साइप्रयिन से पूछा:

'क्या एक अभिनेता को चर्च की संप्रदायिकता में स्वीकार किया जाना चाहिए, यदि वह ईसाई बनने के बाद भी, युवाओं को वह कला सिखाता रहा है जो वह मूर्तिपूजक काल में करता था?'

साइप्रयिन ने उत्तर दिया:

'गरीबी इस अभिनेता (जो अब एक ईसाई है) के लिए बहाना नहीं बन सकती; उसे चर्च की भेंटों से सहारा दिया जा सकता है, बशर्ते वह एक अधिक साधारण आजीविका, लेकिन पाप रहित आजीविका से संतुष्ट रहने को तैयार हो। इसलिए, उसे चर्च के सहयोग से संतुष्ट रहने के लिए मनाएँ: हालाँकि, यदि आपके चर्च के दान श्रमिकों की ज़रूरतों को पूरा करने के लिए अपर्याप्त हैं, तो उसे हमारे पास आने दें, और हमसे वह भोजन और वस्त्र के लिए आवश्यक चीज़ें प्राप्त करेगा।

संत साइप्रयिन ने उन सभी को बहुत सी अन्य सलाहें दीं जो उनसे परामर्श मांगते थे, क्योंकि वह अपनी बुद्धि और समझ को छिपाना नहीं चाहते थे, बल्कि सभी की सेवा करने का प्रयास करते थे।

ईश्वर की इच्छा से, संत साइप्रयिन ने अपने धर्मप्रांत का कुछ वर्षों तक शांतिपूर्वक शासन किया। चर्च के बिशप का पदभार संभालने के तुरंत बाद, डेसियस के उत्पीड़न[5850] का तूफान की तरह प्रकोप हुआ। सिंहासन पर बैठते ही, इस अधर्मी सम्राट ने एक फरमान जारी किया जिसके द्वारा सभी ईसाइयों को मूर्तिपूजक धर्म अपनाने और देवताओं को बलिदान चढ़ाने के लिए मजबूर किया गया।

इस उत्पीड़न के शुरू होने से बहुत पहले, साइप्रयिन को प्रभु द्वारा एक दृष्टि के माध्यम से इस विपत्ति की पूर्व चेतावनी दी गई थी; अर्थात्, साइप्रयिन ने एक वृद्ध व्यक्ति को देखा, जिसके दाईं ओर एक युवक बैठा था जो एक प्रकार के भ्रम, आक्रोश और दुख से भरा था, जबकि उसके बाईं ओर किसी ने एक जाल पकड़ा हुआ था और वह उसके आसपास खड़े लोगों को पकड़ने की धमकी दे रहा था। साइप्रयिन इस दृष्टि से चकित रह गए। उन्हें इस प्रकार समझाया गया: दाईं ओर बैठे व्यक्ति दुखी थे और इस बात पर शोक मना रहे थे कि ईसाई उनके आज्ञाओं का पालन नहीं कर रहे थे, जबकि बाईं ओर वाला इस बात पर प्रसन्न था कि एक अवसर आ गया था और लोगों पर अपना क्रोध उतारने की अनुमति मिल गई थी। संत साइप्रयिन को एहसास हुआ कि जो आकृतियाँ उन्हें इस दर्शन में दिखाई दी थीं, वे परमेश्वर पिता, हमारे प्रभु यीशु मसीह, और दुनिया के पुराने शत्रु – शैतान थे।

इस उत्पीड़न के माध्यम से, ईसाइयों को आग में सोने की तरह परखा गया, ताकि ईसाई सद्गुणों का वैभव हर जगह और भी अधिक चमकदार और शक्तिशाली रूप से प्रकट हो सके।

[5850] सम्राट डेसियस ने 249 से 251 तक शासन किया।

जब सम्राट का फरमान कार्थेज पहुँचा, तो मूर्तपिूजकों ने सबसे पहले साइप्रयिन को यातनाएँ देना चाहा। चूँकि वह अपने सद्गुणों और ईसाइयों के बीच अपने प्रभाव के लिए सबसे अधिक प्रसिद्ध थे, मूर्तपिूजकों ने किसी और से पहले उन्हें यातनाएँ देने का इरादा किया, ताकि शेष ईसाइयों के दिलों में डर पैदा किया जा सके। लेकिन चूँकि संत साइप्रयिन की शहादत का समय अभी नहीं आया था, इसलिए उन्होंने कुछ समय के लिए कार्थेज से हटने का फैसला किया, ताकि वे pagans के लिए अज्ञात स्थान से, अपने उपदेशों और निर्देशों के माध्यम से, ईसाइयों के विश्वास को बनाए रख सकें और उन्हें दृढ़ता से मसीह के नाम का प्रचार करने के लिए प्रोत्साहित कर सकें। कार्थेज को कुछ समय के लिए छोड़ने का निर्णय लेने के बाद, साइप्रयिन ने अपने प्रेस्बिाइटर्स और डीकनों के साथ-साथ रोम के चर्च के नेताओं को भी एक पत्र लिखा। इस पत्र में, साइप्रयिन ने कहा कि वह कारथेज छोड़ रहे थे ताकि उनकी उपस्थिति से उत्पीड़न का क्रोध और न बढ़े; कि, यद्यपि वे शारीरिक रूप से अपने झुंड से अनुपस्थित थे, वह प्रभु में उनके साथ उपस्थित था; और उसने मज़बूतों को सांत्वना देने, कमज़ोरों को प्रोत्साहित करने, चर्च के आंतरिक जीवन में विभिन्न व्यवधानों को सुलझाने, और डगमगा रहे लोगों को आश्वस्त करने के लिए तेरह पत्र लिखे थे।

साइप्रयिन ने अपने कार्य की व्याख्या इस प्रकार की: 'विजय की पहली सीढ़ी मूर्तपिूजकों के हाथों पकड़े जाने के बाद प्रभु की स्वीकारोक्ति करना है। महिमा की दूसरी सीढ़ी समझदारी से पीछे हटकर प्रभु के लिए स्वयं को बचाना है। स्वीकारोक्ति का एक रूप—सार्वजनिक—और दूसरा—निजी है। पहला रूप नागरिक न्यायाधीश पर विजय प्राप्त करता है; दूसरा रूप परमेश्वर, जो न्यायाधीश हैं, को अधिक प्रसन्न करता है, क्योंकि यह हृदय की पवित्रता में एक निर्मल अंतरात्मा को बनाए रखता है। एक मामले में, एक अधिक दृढ़ स्थिरता प्रकट होती है; दूसरे में, एक अधिक सुनिश्चित विवेक। एक, जब उसका समय नज़दीक आता है, तो वह पहले से ही मृत्यु के लिए तैयार होता है; दूसरे के लिए, शायद, इसे टाल दिया जाता है – उदाहरण के लिए, उस व्यक्ति के लिए, जिसने अपनी विरासत को पीछे छोड़ दिया, और इसीलिए अलग हो गया ताकि वह भटक न जाए, लेकिन यदि उसे भी (पगानों द्वारा) पकड़ा जाता तो निस्संदेह वह खुद को एक ईसाई स्वीकार करता।"

इसमें कोई संदेह नहीं है कि अपने अस्थायी निर्वासन द्वारा, साइप्रयिन ने चर्च को उस सेवा से कहीं अधिक सेवा प्रदान की, जितनी उन्होंने तुरंत शहीद हो जाने पर दे पाते।

अपनी पदच्युति से पहले, संत साइप्रयिन ने चर्च के उन कोषों को, जो अब तक उनकी देखरेख में थे, कार्थेज में शेष सभी पुरोहितों में बाँट दिया, ताकि वे अधिक सहजता से बेसहारा और गरीबों की सहायता कर सकें। पादरियों ने, अपनी ओर से, स्वेच्छा से अपने बिशप को उनके झुंड की स्थिति के बारे में सभी जानकारी प्रदान की और उनकी आज्ञा का पालन किया, ठीक वैसे ही जैसे वे उनकी व्यक्तिगत उपस्थिति में करते। यह कहना उचित है कि इतने कठिन समय के दौरान केवल वही कार्थेज की चर्च का शासन करने में सक्षम थे।

उनके जीवनीकार, डिकिन पोंटियस, टिप्पणी करते हैं: 'आइए कल्पना करें कि उन्हें (साइप्रयिन को) तब (यानी, यदि वे कार्थेज से भाग नहीं गए होते) शहीद की मृत्यु का वरदान मिला होता... 'पापियों को पश्चाताप करना, विधर्मियों को सत्य, फूट डालने वालों को एकता, और ईश्वर की संतानों को शांति बिनाए रखना और प्रार्थना करना सिखाता?'

इस प्रकार संत साइप्रयिन अपने झुंड के साथ निरंतर संपर्क में रहे और उन्होंने पुरोहितों, डिकिनों, शहीदों और धर्म-स्वीकारकों को कई पत्र और संदेश भेजे। सबसे पहले, उन्होंने उनसे कहा कि जैसे ही ईश्वर उन्हें यह दिखाएंगे कि यही उनकी इच्छा है, वे उनके पास आएंगे। उन्होंने उनसे विधवाओं, बीमारों, यात्रियों और सभी गरीबों की देखभाल करने के लिए कहा। हालांकि उसने इस उद्देश्य के लिए एक निश्चित राशि छोड़ रखी थी, यह डरते हुए कि वह पहले ही खर्च हो चुकी होगी, उसने अपने सेवक नारिसि को एक नई मौद्रिक भेंट के साथ भेजा। सबसे बढ़कर, साइप्रयिन इस बात को लेकर चिंतित थे कि क्रिष्टों के तूफान के बीच ईसाई हतोत्साहित न हो जाएं। उतनी ही निष्ठा के साथ, संत साइप्रयिन ने स्वीकार करने वालों और शहीदों को भी लिखा। उन्होंने उनका साहस बढ़ाया और उनकी निष्ठा की प्रशंसा की; उन्होंने सभी ईसाइयों से आग्रह किया कि यह सुनिश्चित करें कि शहीदों के शरीरों को उनके निधन के बाद उचित सम्मान दिया जाए और उनके दुश्मनों के दौरान उन्हें हर संभव राहत प्रदान की जाए।

साइप्रयिन ने पवित्र कन्फेशर्स की बहुत प्रशंसा की। उन्होंने अपने पुरोहितों से आग्रह किया कि वे यह सुनिश्चित करें कि, जैसे कन्फेशर्स को महिमा की कोई कमी न हो, वैसे ही उन्हें सहायता की भी कोई कमी न हो, और उन्होंने अपने पुरोहितों से उनके निधन के दिनों के बारे में सूचित करने के लिए कहा, ताकि वह उनकी स्मृति में प्रार्थना और बलिदान अर्पित कर सकें।

संत साइप्रयिन के कार्थेज से नष्किासति होने के बाद के शुरुआती दनिों में, ईसाइयों पर अत्याचार करने वाले मूर्तपिूजकों का क्रोध कुछ हद तक कम हो गया। लेकनि कुछ समय बाद, यह और भी तीव्र हो गया। ईसाइयों को उनके धर्म से मुंह मोड़ने के लएि मजबूर करने हेतु, मूर्तपिूजकों ने वभिन्नि क्रूर यातनाएं और कष्ट devised कएि। जो मसीह का नाम स्वीकार करते थे, उन्हें कोड़ों से पीटा जाता, लाठयिों से मारा जाता, लोहे के औजारों से चीर-फाड़ कयिा जाता, और खंभे पर जला दयिा जाता था। कारागार ईसाइयों से खचाखच भरे थे; कुछ कैदयिों को जल्द ही उनके वजिय के मुकुट प्राप्त हुए, जबकि अन्य इन मुकुटों को प्राप्त करने के करीब थे, क्योंकि वे उसी साहस से प्रेरति थे और युद्ध की इस वीरता के लएि उसी उत्साह के साथ प्रयासरत थे। लेकनि ऐसे ईसाई भी थे जो यातनाओं को सहन नहीं कर सके और उन्होंने बलदिान चढ़ाया, या मूर्तयिों को धूप जलाई, या शहर के मजस्ट्रिेटों से पैसे देकर ऐसे दस्तावेज़ खरीदे जनिमें लखिा था कि उन्होंने मूर्तयिों को बलदिान चढ़ाया है और मसीह का त्याग कयिा है, हालाँकि वास्तव में ऐसा नहीं था। कुछ ने तो बनिा पूछे ही स्वेच्छा से वधिर्मी देवताओं को बलदिान चढ़ा दयिा। दूसरों को शाम ढलते ही मूर्तपिूजक न्यायाधीशों द्वारा घर भेज दयिा जाता था और उन्हें बलदिान करने के लएि मजबूर नहीं कयिा जाता था, फरि भी वे स्वयं ही बलदिान करने की अनुमति मांगते थे, और इसे अगले दनि तक के लएि टालते नहीं थे। ऐसे भी कई थे जन्होंने अपने दोस्तों को भी उसी तरह ईसाई धर्म त्यागने के लएि मनाया, जैसे उन्होंने स्वयं कयिा था।

संत साइप्रयिन के लएि अपनी मंडली के कमजोर सदस्यों के पतन के बारे में सुनना बहुत कड़वा और दर्दनाक था! उन्होंने उनके पतन का वर्णन अपने ही हृदय के एक हस्सि के कट जाने के रूप में कयिा। उन्होंने बाद में इस वषिय पर लखिा: 'भाइयों, मैं शोक मनाता हूँ, मैं शोक मनाता हूँ, आपके साथ, और मेरे दुख को मेरी अपनी सुरक्षा या मेरे अपने स्वास्थ्य से राहत नहीं मलिती; एक चरवाहे के रूप में, मैं अपने झुंड पर पड़े प्रहार से घायल हूँ। मेरा हृदय आप में से प्रत्येक के साथ एक है; प्रत्येक के साथ मैं पीड़ति होता हूँ और मरता हूँ! मेरे शरीर पर भी क्रूर शत्रु के प्रहार लगे हैं! और एक हथयिार ने मेरी आत्मा को भेद दयिा है! मेरा हृदय, यद्यपि दूर और उत्पीड़न से मुक्त है, उसे शांति नहीं मलिी है; जब मेरे भाइयों पर प्रहार होता है तो प्रेम ने मुझे भी मारा है'[5851] .

इस समय के आसपास, एक और घटना घटी जसिने संत साइप्रयिन को काफी कष्ट पहुँचाया।

यह ध्यान देने योग्य है कि प्राचीन काल में, कार्थेज के चर्च में, अन्य चर्चों की तरह ही, स्वीकारकर्ताओं के बीच यह प्रथा थी कि जिन्होंने धर्म से भटक गए थे, उन्हें एक वशिेष प्रकार की याचकिा, या 'शांति पत्र' दयिा जाता था, जसिके माध्यम से पापयिों को वशि्वासयिों के साथ संप्रदाय में अधकि आसानी से स्वीकार कयिा जाता था। और अब मसीह से भटक गए कई लोगों ने स्वीकारकर्ताओं और शहीदों की मध्यस्थता में बहुत उम्मीद लगाई। हालाँकि, कई स्वीकारकर्ताओं ने, भटक गए लोगों के प्रति अत्यधकि उदारता के कारण, उनके पश्चाताप की ईमानदारी पर कोई ध्यान नहीं दयिा और उचति वचिार या सावधानी के बनिा मध्यस्थता के ये पत्र ('शांति पत्र') जारी कर दएि। केवल कुछ ही कन्फेशर्स ने, उत्पीड़न समाप्त होने के बाद, बशिप की स्वयं की वापसी पर, और धर्मत्यागी की नैतकि स्थति की गहन जांच के बाद, बशिप से कुछ धर्मत्यागयिों को शांति प्रदान करने का अनुरोध कयिा। पतनकारी लोगों के प्रति ऐसी उदारता उस समय दखिाई गई जब कार्थेज में उत्पीड़न अभी भी जारी था; परणिामस्वरूप, इस उदारता ने उन अन्य ईसाइयों के वशि्वास की दृढ़ता को कमजोर करने का जोखमि उठाया, जो अभी तक उत्पीड़न के अधीन नहीं हुए थे।

जब संत साइप्रयिन को यह सब पता चला, तो उन्होंने कार्थेज में पुरोहतिों, कन्फेशर्स और लोगों के नाम तीन पत्र भेजे; और चूँकि प्रेस्बटिर (पुरोहति) प्राचीन चर्च व्यवस्था के मुख्य उल्लंघनकर्ता पाए गए, साइप्रयिन ने इन सभी पत्रों में सबसे अधकि उनकी नदिा की; सभी से सामान्य रूप से – पादरयिों और आम लोगों दोनों से – साइप्रयिन ने आग्रह कयिा कि वे गरि चुके लोगों को चर्च में फरि से शामलि करने पर एक परषिद के नर्णिय का इंतजार करें, और उन्होंने वादा कयिा कि जैसे ही उत्पीड़न समाप्त हो जाएगा और वह कार्थेज लौट आएगा, तो वह स्वयं परषिद बुलाएगा। साइप्रयिन ने स्वीकार करने वालों से उन लोगों के लएि, जनिके लएि वे मध्यस्थता करेंगे, प्रत्येक व्यक्ति के कर्मों और गुणों के साथ-साथ उनके पतन की प्रकृति और परस्थितियिों पर वशिेष ध्यान देने का आग्रह कयिा।

फरि भी संत साइप्रयिन के ये सभी पत्र पूरी तरह से सफल नहीं हुए। यह सच है कि अपने चरवाहे के आज्ञाकारी पुरोहतिों ने गरि चुके लोगों को वशि्वासयिों के बराबर चर्च में संप्रभुता में स्वीकार करना बंद कर दयिा, और उन्हें सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण रूप से सच्ची पश्चाताप के माध्यम से अपने पाप का प्रायश्चति करने के लएि प्रोत्साहति

[5851] 'शहीदों की पुस्तक', अध्याय 4.

कयिा; लेकनि कुछ पतति लोग फरि भी पश्चाताप करने से इनकार कर रहे थे, वे उत्पीड़न के अंत तक अपने मामले के फैसले का इंतजार करने के इच्छुक नहीं थे, और अपने पापों के लिए तत्काल क्षमा की मांग कर रहे थे।

हालाँकि, पतति कुछ ईसाइयों की ओर से ऐसी अवज्ञा की खबर मलिने के बाद भी संत साइप्रयिन ने अपनी मांगों में ढील नहीं दी।

चर्च की अनुशासन को इतनी दृढ़ता से बनाए रखते हुए, संत साइप्रयिन ने, अपने नर्विासन की जगह से, पड़ोसी बशिपों के साथ पत्राचार शुरू कयिा ताकि वे भी अपने अनुमोदन से धर्मत्यागयिों से पश्चाताप की उनकी मांग को और सुदृढ़ कर सकें। उनके पत्रों के उत्तर में, बशिपों ने बताया कि वे उनकी मांगों का पूरी तरह से समर्थन करते हैं और उन्होंने उन्हें लखिा कि जब तक उत्पीड़न समाप्त होने के बाद परषिद नहीं हो जाती, तब तक उन्हें कसिी भी परस्थितिि में अपने नर्णिय से वचिलति नहीं होना चाहए।

जहाँ पड़ोसी बशिपों ने खुले तौर पर पाप में पड़े लोगों के संबंध में संत साइप्रयिन की मांगों की पुष्टि और समर्थन कयिा, वहीं कन्फेशर्स ने उनसे असहमति व्यक्त की। उनमें से एक, लूसयिन ने सभी की ओर से साइप्रयिन को एक पत्र लखिा, जसिमें उसने साइप्रयिन को सूचति कयिा कि सभी कन्फेशर्स ने धर्मत्यागयिों को शांति प्रदान कर दी है; इसी लूसयिन ने रोमन कन्फेशर सेलेरनिस को भी इसी तरह का एक पत्र लखिा।

इक्कीसयिों के ऐसे समर्थन से उत्साहति होकर, अफ्रीकी प्रांत के कई शहरों में धर्मत्यागी पुरोहतिों के खलिाफ वद्रिोह कर उठे और धमकयिों से यह मांग करने लगे कि वे उन्हें वह शांति प्रदान करें जो, उनके दावे के अनुसार, इक्कीसयिों और शहीदों द्वारा पहले ही प्रदान कर दी गई थी। खुद कार्थेज में, बेचैन धर्मनरिपेक्ष लोगों ने बाद में और भी अधकि नर्भीकता के साथ चर्च के साथ सुलह की मांग करना शुरू कर दयिा।

इस बीच, संत साइप्रयिन ने पुरोहतिों और लोगों को वैसे ही कार्य करने के लिए प्रोत्साहति कयिा जैसा उन्होंने पहले उन्हें नर्देश दयिा था।

इसके मद्देनज़र, भटक गए लोगों में से अधकि सद्भावनापूर्ण लोगों ने पूरी तरह से आत्म-नम्रता दखिाई और बशिप के प्रति पूर्ण आज्ञाकारति का वादा कयिा। इसके तुरंत बाद, उनमें से कुछ ने संत साइप्रयिन को लखिा, जसिमें उन्होंने कहा कि वे अपनी कृपा से पतन को पहचानते हैं, चर्च के नयिमों द्वारा नर्धिारति प्रायश्चति कर रहे हैं, वश्विासयिों के साथ जल्दबाज़ी या अनुचति समय पर मेल-मलिाप नहीं चाहते, बल्कि अपने बशिप की वापसी का इंतज़ार कर रहे हैं, और कह रहे हैं कि उनकी उपस्थतिि में मेल-मलिाप उनके लिए अधकि सुखद होगा।

थोड़ी ही देर बाद, साइप्रयिन को एक दर्शन में यह प्रकट हुआ कि चर्च में जल्द ही शांति बहाल होगी, कि उत्पीड़न कुछ और समय के लिए, और थोड़े समय के लिए ही जारी रहेगा, और यह कि उनकी प्रार्थनाओं के उत्साह के आधार पर, शांति में तेजी लाई जा सकती है।

और वास्तव में, सेंट साइप्रयिन की यह दृष्टि स्वयं घटनाओं से सच साबति हुई। यद्यपि कार्थेज में ईसाइयों पर अत्याचार अभी भी जारी था, यह कम हो रहा था; मूर्तपिूजकों ने उन लोगों को, जन्हिोंने मसीह के नाम का अंगीकार कयिा था, और अधकि स्वतंत्रता का आनंद लेने की अनुमति देना शुरू कर दयिा। कालकोठरयिों में बंद लोगों को रहिा कर दयिा गया, और नर्वासन पर भेजे गए लोग अपने देश लौट आए।

हालाँकि, उत्पीड़न अभी समाप्त नहीं हुआ था। गौरवशाली महा-धर्मगुरु, संत साइप्रयिन के लिए और भी कई चंतिाएँ और परेशानयिाँ आने वाली थीं। कार्थेज से साइप्रयिन की अनुपस्थतिि के दौरान, पुरोहतिों और पादरयिों की आवश्यकता उत्पन्न हुई। साइप्रयिन ने, यूं कहें, चार उप-आचार्यों की नयिुक्ति की, जन्हिें उन्होंने उन व्यक्तयिों की उम्र, परस्थितियिों और योग्यताओं का सावधानीपूर्वक आकलन करने का काम सौंपा, जन्हिें साइप्रयिन कसिी न कसिी पदानुक्रमति पद पर नयिुक्त करने वाले थे। चुने गए प्रतनिधि कार्थेज के सबसे करीबी धर्मप्रांतों के दो बशिप – काल्डोनयिस और हर्क्यूलानस – थे, जनिके बाद कार्थेज के एक पुरोहति और स्वीकारकर्ता, रोगेशयिन, और धर्मकर्मी नुमडिकिस थे।

उपर्युक्त व्यक्तयिों ने तुरंत अपने बशिप के नर्देशों को पूरा करना शुरू कर दयिा। हालाँकि, जब वे उन्हें सौंपा गया कार्य कर रहे थे, तो उन्हें उन लोगों से कड़ी वरिोध का सामना करना पड़ा, जन्हिें चर्च के योग्य सेवकों का चयन करने में साइप्रयिन की पूरी तरह से वैध और आवश्यक सावधानी से आपत्ति थी। ऐसे व्यक्तयिों में एक सामान्य वश्विासी फेलसिमिस और पुरोहति नोवाटस थे; उनके साथ चार अन्य पुरोहति भी शामलि हो गए जो साइप्रयिन के उनके खलिाफ

न्यायसंगत नरि्णय से डरते थे। उन्होंने, और वशिेष रूप से पुरोहति नोवाटस ने, फेलसिसिमिस को अपने बशिप के खलिाफ वदि्रोह करने के लिए उकसाया।

जब यह सब साइप्रयिन के ध्यान में आया, तो उन्होंने फेलसिसिमिस को चर्च से बहष्कृत कर दयिा और उसके सभी साथयिों को भी उसी सज़ा देने की धमकी दी; इसके अलावा, उन्होंने आदेश दयिा कि इस अवसर पर उनके द्वारा लखिा गया पत्र लोगों को पढ़कर सुनाया जाए और कार्थेज के पुरोहतिों को भेज दयिा जाए। उस समय, फेलसिसिमिस के केवल छह कट्टर समर्थकों की पहचान हुई थी, और उन्हें तुरंत चर्च से बहष्कृत कर दयिा गया था; लेकनि जैसे-जैसे फेलसिसिमिस के नए समर्थक सामने आते गए, उसके कारण हुई अशांति अभी तक शांत नहीं हुई थी।

साइप्रयिन ईस्टर के पर्व के लिए कार्थेज लौटने का इरादा रखते थे, लेकनि चूँकि फेलसिसिमिस और उसके समर्थकों द्वारा मचाई गई अशांति अभी खत्म नहीं हुई थी, इसलिए उन्होंने अपनी उपस्थति से अशांति को और बढ़ाना उचति नहीं समझा और अपने नरि्वासन स्थल पर ही ईस्टर का पर्व मनाने का नरि्णय लयिा; और यह सुनश्चिति करने के लिए कि उनकी अनुपस्थति में उनके दुश्मन और भी अधकि लाभ न उठा सकें, उन्होंने अपने अनुयायियों को पत्र लखिा, जसिमें उन्हें उपद्रवयिों के हानकिारक शब्दों पर भरोसा न करने के लिए प्रोत्साहति कयिा।

इस समय संत साइप्रयिन अपनी मंडली के लिए गहराई से दुखी थे। इस अवसर पर लखिे गए एक पत्र में उनके दुख को अभवि्यक्ति मिली:

'मैं अब कतिना कष्ट भोग रहा हूँ,' उन्होंने कार्थेज के ईसाइयों को लखिा, 'कि मैं स्वयं आप लोगों के पास नहीं आ सकता और प्रभु तथा उनके सुसमाचार की शकि्षा के अनुसार, आप में से प्रत्येक को व्यक्तगित रूप से प्रोत्साहति नहीं कर सकता। मेरे लिए दो साल के नरि्वासन और आप लोगों से एक कड़वी वरिह-पीड़ा सहना ही काफी नहीं था; आपकी अनुपस्थति में मुझे जो दुख और शोक लगातार सताता रहा, उसे सहना भी काफी नहीं था; न ही वे आँसू काफी थे, जो दनि-रात इस बात पर बहते रहे कि वह चरवाहा जसिे आपने इतने प्रेम और उत्साह से चुना है, वह व्यक्तगित रूप से आपका अभविादन नहीं कर सकता, न ही आपकी बाँहों में आ सकता है। हमारे हृदयों पर एक और भी बड़ी पीड़ा आ पड़ी है, जो पहले से ही दुख से पघिल रहे हैं। ऐसी उथल-पुथल और संकट के बीच, मैं स्वयं जल्दबाजी में आपके पास नहीं आ सकता... लेकनि यहाँ से मैं आपसे वनिती और प्रार्थना करता हूँ, प्रयि भाइयों: हानकिारक शब्दों पर भरोसा न करें, कपटी बातों पर अंधवशि्वास न करें, प्रकाश के बजाय अंधकार को, दनि के बजाय रात को, भोजन के बजाय भूख को, पेय के बजाय प्यास को, दवा के बजाय जहर को, स्वास्थ्य के बजाय मृत्यु को न चुनें... जो स्वयं शांति से वंचति हैं, वे हमें शांति नहीं दे सकते... कोई भी तुम्हें प्रभु के मार्ग से भटकाकर न ले जाए। जो अपने ही वनिाश के मार्ग पर चले गए हैं, वे ही नाश हों; जो चर्च से अलग हो गए हैं, वे ही चर्च के बाहर रहें; जो बशिपों के वरिुद्ध वदि्रोह कर चुके हैं, वे ही बशिपों के साथ न रहें... मैं आपसे वनिती करता हूँ: ऐसे लोगों से अलग हो जाइए; मेरी सलाह मानिए। मैं दनि-प्रतदिनि प्रभु के समक्ष आपके लिए अवरिाम प्रार्थनाएँ अर्पति करता हूँ; मैं आपको चर्च के साथ पुनर्मलिन कराना चाहता हूँ; मैं ईश्वर से पहले केवल माता (चर्च) की शांति के लिए प्रार्थना करता हूँ, और उसके बाद ही उसके बच्चों के लिए। अपनी प्रार्थनाओं को मेरी प्रार्थनाओं के साथ, और अपने आँसुओं को मेरे वलिाप के साथ मलिाएँ[5852] ।

जो लोग उनके शब्दों में एक पति के प्रेम की आवाज़ को पहचान सकते थे, उन्हें इतनी मार्मकिता से प्रोत्साहति करते हुए, संत साइप्रयिन ने उन लोगों पर दंड – चर्च से बहष्कार – की धमकी दी, जो उनका आज्ञापालन करने से इनकार करते थे।

बेशक, इस पत्र ने सद्भावना रखने वालों को बशिप के पक्ष में बनाए रखा।

थोड़ी ही देर बाद, जब नोवाटस ने अपने सहयोगयिों के माध्यम से और संत साइप्रयिन की सहमति या जानकारी के बनिा, फेलसिसिमिस को एक डकिन के रूप में नयिुक्त कयिा, तो साइप्रयिन ने इस अवैध नयिुक्ति के संबंध में पादरयिों और लोगों को दो और पत्र लखिे। ये नरि्वासन की जगह से उनके अंतमि पत्र थे। साइप्रयिन की वापसी के बाद कार्थेज में आयोजति परषिद में फेलसिसिमिस के वदि्रोह का अंत हो गया[5853] ।

कार्थेज लौटने के तुरंत बाद, साइप्रयिन ने इस परषिद की अध्यक्षता की, जसिमें दो मामलों पर वचिार कयिा गया: फेलसिसिमिस का फूट डालना और गरि चुके लोगों को वशि्वासयिों के साथ संप्रदाय में प्रवेश देना।

[5852] पत्र 40.

[5853] यह परषिद 251 में हुई थी।

बहुत और लंबी वचिार-वमिर्श के बाद, परषिद के धर्मपतिागण ने सर्वसम्मतसि ेयह नर्णिय लयिा कपिाप में पड़े लोगों को चर्च के साथ सहभागतिा से वंचति नहीं कयिा जाना चाहए, कहीं ऐसा न हो कवि ेईश्वर की दया से नराश हो जाएं और वधिर्मी की तरह जीने लगें; फरि भी उन्हें समय से पहले सहभागतिा के लए स्वीकार भी नहीं कयिा जाना चाहए - चर्च के साथ उनके पुनर्मलिन से पहले लंबे समय तक पश्चाताप होना चाहए, आँसुओं के साथ ईश्वर से प्रार्थना, और प्रत्येक व्यक्तकी नैतकि स्थतिकी परीक्षा। इसके अलावा, जो लोग पतति हुए थे, उनकी वभिन्नि परस्थितियिों के अनुसार पश्चाताप के वभिन्नि स्तर नर्धिारति कए गए थे। हालाँकि, फेलसिसिमिस और उसके समान वचिारधारा वाले अनुयायियों को, बशिप के अधकिार के खलिाफ वद्रिोह करने के कारण, चर्च से बहष्कृत कर दयिा गया।

हालाँकि, साइप्रयिन के दुश्मन संतुष्ट नहीं थे। पुजारी नोवाटस जल्द ही रोम के लए रवाना हो गया और वहाँ, फेलसिसिमिस के खलिाफ हो गया, और नोवाटयिन के गुट में शामलि हो गया[5854] , जसिसे रोमन और कार्थेजयिन दोनों चर्चों में बहुत उथल-पुथल मच गई। फेलसिसिमिस ने अपने समान वचिारधारा वाले अनुयायियों के साथ, एक साल बाद पवत्रि साइप्रयिन के खलिाफ एक नया वद्रिोह भड़काया।

नोवाटयिन ने रोम में वधिर्म फैलाना शुरू कर दयिा, यह दावा करते हुए कजिो लोग पाप में गरि गए हैं, उन्हें कसिी भी परस्थतिमिें संप्रभुता (कॉम्युनयिन) में प्रवेश नहीं दयिा जाना चाहए, भले ही उन्होंने पश्चाताप कर लयिा हो; साथ ही, नोवाटयिन ने रोम के पुरोहति कोर्नेलयिस, जन्हिें वैध रूप से बशिप चुना गया था, से बशिप के पद का सम्मान छीनने का प्रयास कयिा। रोम पहुँचे नोवाटस की सहायता से, नोवाटयिन तीन इतालवी बशिपों को उसे बशिप के रूप में नयिुक्त करने के लए मनाने में सफल रहा।

संत सप्रियिन ने, सच्ची ईसाई बुद्धमिानी से, सभी चर्च-सम्बंधी कलह और अशांतको आरंभ में ही दबाने का प्रयास कयिा। सप्रियिन ने एक परपित्र पत्र में अफ्रीकी बशिपों को कॉर्नेलयिस के बशिप के रूप में वैध अभषिक और नोवाटयिन के अवैध कार्यों के बारे में सूचति कयिा। ईश्वर के इस पवत्रि पुरुष ने सभी पर यह सत्य स्थापति करना कभी बंद नहीं कयिा कजिहाँ एक बशिप को वैध रूप से चुना और अभषिक्ति कयिा गया है, वहाँ दूसरे बशिप की स्थापना नहीं की जा सकती, और उन्होंने चर्च की शांतभिंग करने वालों से अपने वनिाशकारी मतभेद और ववािदों को त्यागने और एकमात्र सच्ची सार्वभौमकि चर्च की गोद में लौटने का आग्रह कयिा। वभिाजनवादयिों नोवाटयिन और फेलसिमिस के प्रलोभन से वश्विासयिों की रक्षा करने के लए, संत साइप्रयिन ने *चर्च की एकता पर* नामक पुस्तक लखिी।

साइप्रयिन की परीक्षाएँ यहीं समाप्त नहीं हुईं। ऐसे भी थे जो चर्च के भीतर कलह और उथल-पुथल की जड़ें फैलाते रहे। इस प्रकार, प्रवेिट नामक एक वधिर्मी, फेलसिसिमिस के गुट में शामलि होकर, ने कार्थेज के बशिप के रूप में फोरचुनाटस का गैरकानूनी अभषिक करवाया। हालाँकि, साइप्रयिन के उपदेशों का पालन करते हुए, फोरचुनाटस के समर्थकों ने उसे छोड़ना शुरू कर दयिा और धार्मकि शांतमिें लौट आए।

चर्च की शांतकि ेदुश्मनों द्वारा पैदा कए गए सभी संघर्ष और कलह को हमेशा के लए समाप्त करने के लए, पवत्रि साइप्रयिन ने कार्थेज में एक स्थानीय परषिद बुलाने का फैसला कयिा। कार्थेज में इस तरह की कई परषिदें आयोजति की गईं। इस परषिद में गरि चुके सदस्यों को वापस स्वीकार करने, वधिर्मयिों का बपतस्मिा, और इसी तरह के कई मुद्दों को सुलझाया गया, जो चर्च के आंतरकि जीवन से संबंधति थे। धीरे-धीरे, अवज्ञाकारी सदस्यों द्वारा चर्च के जीवन में पैदा कयिा गया उथल-पुथल शांत हो गया, और चर्च में शांतऔर सुकून बहाल हो गया।

प्रभु को संत साइप्रयिन की एक बार फरि परीक्षा करना उचति लगा: अवश्विासयिों के हाथों उत्पीड़न से हुई वपित्तयिों की जगह एक प्राकृतकि आपदा - प्लेग ने ले ली।

यह वपित्त, जो अप्रत्याशति रूप से आई, ईसाइयों और वधिर्मी दोनों के लए समान रूप से गंभीर थी। प्लेग हर प्रांत, हर शहर और लगभग हर घर में काफी समय तक लगातार फैली रही।

इस सार्वभौमकि वपित्तने साइप्रयिन को सबसे नस्विार्थ और उत्तम कार्य करने के लए प्रेरति कयिा। जहाँ एक ओर मूर्तपिूजक अपने स्वार्थ में और अधकि गहरे धँस गए, और ऐसा प्रतीत हुआ कवि ेपूरी तरह से भय के आगे झुक गए थे—जसिने उन्हें अपने सबसे प्रयि रश्तिेदारों को छोड़ने और मृतकों को सड़कों पर बनिा दफनाए छोड़ देने के लए

[5854] नोवाटयिन – एक रोमन पुरोहति – ने पहले ही पूरे रोमन पुरोहति वर्ग की ओर से साइप्रयिन को गरि चुके लोगों को चर्च में प्रवेश देने के संबंध में लखिा था।

मजबूर कर दिया—वहीं साइप्रियन के नेतृत्व में ईसाई अडिग रहे। साइप्रियन ने स्वयं केवल उपदेश देने तक ही सीमित नहीं रहे, बल्कि अपने व्यक्तिगत उदाहरण से सभी ईसाइयों के लिए अनुसरण करने हेतु एक आदर्श स्थापित किया।

महामारी अपने साथ अपने सामान्य भयानक साथियों - सूखा और अकाल - के साथ आई; इसके अलावा, नुमिडियन बर्बरों की भीड़ रोमन साम्राज्य की सीमाओं पर घूमती थी और छापे मारती थी, जिसके दौरान वे कई लोगों को बंदी बना लेते थे; संत साइप्रियन के नेतृत्व में कार्थेज के ईसाइयों ने इन कैदियों में से कम से कम कुछ को छुड़ाने के लिए धन दान किया।

इस प्रकार, इस भयानक सार्वजनिक विपत्ति के दौरान, साइप्रियन ने हर संभव तरीके से पीड़ितों की दुर्दशा को कम करने के लिए हर संभव उपाय किया।

इसके बावजूद, कुछ विधर्मी ऐसे थे जिन्होंने यह दावा करने की हिम्मत की कि प्लेग, अन्य सार्वजनिक विपत्तियों की तरह, विधर्मी देवताओं द्वारा ईसाइयों द्वारा उनकी पूजा करने में विफल रहने की सजा के रूप में भेजा गया था। इस तरह की अफवाहें विशेष रूप से कार्थेज के न्यायाधीशों में से एक, डिमिट्रियन द्वारा फैलाई गई थीं। उनके उदाहरण का पालन करते हुए, अन्य विधर्मियों ने ईसाइयों के खिलाफ यह बदनामी दोहराई।

संत साइप्रियन ने इस भ्रांति का खंडन करते हुए इस विषय पर एक विशेष ग्रंथ लिखा। उन्होंने डिमिट्रियन और उनके विचारों से सहमत सभी लोगों को लिखा, 'दुनिया की विपत्तियों का कारण मानव जाति की भ्रष्टता में निहित है; इन विपत्तियों की भविष्यवाणी नबियों ने उन विकृतियों के दंड के रूप में की थी जो विशेष रूप से मूर्तिपूजकों के बीच व्यापक हैं और जो स्वयं में, हमेशा राष्ट्रों के साथ-साथ व्यक्तियों की भी समृद्धि को नष्ट कर देती हैं। साइप्रियन ने तर्क दिया, "मूर्तिपूजक देवता अपनी रक्षा नहीं कर सकते, और इस प्रकार जब उन्हें ईसाइयों द्वारा लोगों से भगा दिया जाता है तो वे स्पष्ट रूप से ईसाइयों पर अपनी निर्भरता प्रदर्शित करते हैं[5855] ; संत साइप्रियन ने तर्क दिया, 'हम ईसाई, यद्यपि हम भी बाहरी विपत्तियों के अधीन हैं, दुर्भाग्य से पीड़ित नहीं होते, बशर्ते हम बिना शिकायत के उन्हें सहन करें और आने वाले जीवन में अपनी आशा रखें।'

इस बीच, संत साइप्रियन के कष्टों का समय नजदीक आ रहा था। सम्राट वैलेरियन सिंहासन पर आसीन हुआ[5856] , और उसने ईसाइयों के खिलाफ एक क्रूर उत्पीड़न शुरू किया।

ईसाइयों के नए उत्पीड़न की खबर जल्द ही अफ्रीकी चर्च तक पहुँच गई और, जैसा कि प्रथा थी, जहाँ इसने डरपोकों के दिलों में डर पैदा कर दिया, वहीं यह विश्वास में दृढ़ लोगों में साहसी सहनशीलता के लिए उसी उत्साह को प्रज्वलित कर गई। 'हमारी इस से बड़ी और महत्वपूर्ण चिंता क्या हो सकती है कि हम अपनी अथक उपदेशों के माध्यम से, हमारे सुपुर्द किए गए लोगों को शैतान के तीरों से बचाने के लिए तैयार करें?' उस समय संत साइप्रियन ने टुकाबोर के बिशप फॉर्चुनाटस को लिखा। लेकिन मौखिक और लिखित उपदेशों के अलावा, संत साइप्रियन ने अपने कार्यों के माध्यम से भी मूर्तिपूजकों के सामने निडरता से अपने विश्वास की घोषणा करने का एक उदाहरण स्थापित किया।

ईसाइयों पर अत्याचार की घोषणा के बाद, कार्थेज के प्रोकॉन्सल, अस्पासियस पैटरनस को एक शाही फरमान मिला जिसमें आदेश दिया गया था कि ईसाइयों को मूर्तियों की पूजा करने के लिए मजबूर किया जाए; इसके अलावा, ईसाई बिशपों को निर्वासित किया जाना था, और ईसाई सभाओं पर प्रतिबंध लगाया जाना था। प्रोकॉन्सल का इरादा, सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण, संत साइप्रियन को ईसाई धर्म त्यागने के लिए मजबूर करना था, और इसलिए उन्होंने उन्हें पूछताछ के लिए बुलाया।

जब साइप्रियन आए, तो प्रोकोन्सल ने उनसे पूछा:

'सम्राट ने मुझे सभी ईसाइयों को मूर्तियों की पूजा करने के लिए मजबूर करने का आदेश दिया है: इस बारे में आप क्या कहते हैं?'

संत साइप्रियन ने उत्तर दिया:

'मैं एक ईसाई और एक ईसाई बिशप हूँ; मैं उस एक सच्चे ईश्वर के सिवा किसी अन्य देवता को नहीं जानता, जिसने स्वर्ग, पृथ्वी, समुद्र और उनमें जो कुछ भी है, उसे बनाया है; यही ईश्वर है जिसकी हम ईसाई दिन-रात सेवा करते हैं।'

प्रोकॉन्सल ने कहा:

[5855] यह, बेशक, उन राक्षसों के निष्कासन को संदर्भित करता है जो लोगों में वास कर चुके थे।

[5856] सम्राट वैलेरियन ने 253 से 259 तक शासन किया।

'तो क्या तुम अपने संकल्प पर अडिग रहोगे?'

साइप्रियन ने उत्तर दिया:

'एक अच्छा निर्णय, जो प्रभु को ज्ञात है, उसे अपरिवर्तित रहना चाहिए।' उप-प्रांतपाल ने कहा:

'ऐसे में, सम्राट की आज्ञा के अनुसार, तुम्हें निर्वासन में जाना होगा।' साइप्रियन ने उप-प्रांतपाल से उत्तर दिया:

'मैं खुशी-खुशी निर्वासन स्वीकार करूँगा।'

इसके बाद, उप-प्रांतपाल ने साइप्रियन से फिर पूछा:

'मुझे सम्राट से न केवल बिशपों के बारे में, बल्कि पुरोहितों के बारे में भी आदेश मिला है; इसलिए, मुझे बताओ, इस शहर में कौन से पुरोहित हैं?'

इस पर साइप्रियन ने उत्तर दिया:

'आपके कानून निंदा करने की मनाही करते हैं; इसलिए मैं आपको किसी भी पुरोहित का नाम या पता नहीं बता सकता, लेकिन यदि आप उन्हें खोजेंगे तो निश्चित रूप से उन्हें शहर में पा लेंगे।'

उपनरपालक ने जोड़ा:

– मुझे यह भी निर्देश दिया गया है कि मैं यह सुनिश्चित करूँ कि ईसाई कहीं भी अपनी सभाएँ न करें और न ही अपनी प्रार्थना सभाएँ आयोजित करें।

संत साइप्रियन ने उप-प्रांतपाल से उत्तर दिया:

'जो आज्ञा है, वही करो।'

थोड़ी ही देर बाद, संत साइप्रियन को कुरूबिज़[5857] में निर्वासन के लिए भेज दिया गया। डिकिन पोंटियस, जिन्होंने संत साइप्रियन के जीवन का वृत्तांत लिखा था, स्वेच्छा से उनके निर्वासन स्थल तक उनके साथ गए।

वहाँ पहुँचने के ठीक पहली ही रात, संत साइप्रियन ने एक दर्शन देखा जिसमें उनके शहादत का पूर्वाभास था। साइप्रियन ने यह दर्शन डीकन पोंटियस को सुनाया, और कहा:

'जैसे ही मैं थोड़ा झपकी लिया, मैंने एक बदसूरत और भद्दे रूप वाले युवक को देखा, जिसने मुझे मुकदमे के लिए प्राटोरियम में ले जाकर खड़ा कर दिया; मुझे लगा कि मुझे हेगेमोन की अदालत के सामने पेश होना है। हेगेमोन ने मुझे देखकर कुछ नहीं कहा, लेकिन तुरंत कुछ लिख दिया। मुझे नहीं पता था कि उसने क्या लिखा था; लेकिन मैंने हेगेमोन के पीछे एक और युवक को खड़ा देखा, जिसका मुखमंडल सुंदर था; यह युवक हेगेमोन को लिखते हुए देख रहा था, और हेगेमोन ने जो लिखा था उसे अपने लिए पढ़ रहा था। लिखा हुआ पढ़ने के बाद, उस युवक ने एक इशारे से मुझे बताया कि मेरे खिलाफ मौत की सज़ा सुनाई गई है, क्योंकि मुझे तलवार से सिर कलम किया जाना था। मेरी ओर से, मैंने भी उस युवक को इशारे से बताया कि मैं समझ गया था कि वह मुझे क्या समझा रहा था; उसी समय, मैंने न्यायाधीश से विनम्रतापूर्वक एक और दिन की जान की भीख माँगी, ताकि मैं अपने मामलों को व्यवस्थित कर सकूँ। उसी क्षण जब मैं न्यायाधीश से यह विनती कर रहा था, न्यायाधीश ने मुझे उत्तर दिए बिना, लेकिन मानो मेरी विनती के जवाब में, कुछ लिखना शुरू कर दिया। न्यायाधीश के पीछे खड़ा एक युवक, जो यह देख रहा था कि न्यायाधीश क्या लिख रहे थे, ने एक इशारे से मुझे बताया कि मेरी जान एक और दिन के लिए माफ कर दी जाएगी। मैं इस पर अत्यंत प्रसन्न हुआ, फिर भी मैं बड़े भय और भ्रम से भर गया था।'

संत साइप्रियन ने इस दृष्टि की व्याख्या अपने संबंध में इस प्रकार की कि ईश्वर ने उन्हें मसीह के नाम की गवाही देने के लिए तलवार से मरने के लिए पूर्वनिर्धारित किया था। साइप्रियन ने इस दृष्टि के अनुसार, अपने को दिए गए जीवन के 'एक दिन' की व्याख्या एक वर्ष के रूप में की। और वास्तव में, वह उस दृष्टि के एक वर्ष बाद, तलवार से सिर कलम किए जाने पर, मसीह के नाम का प्रचार करने के कारण शहीद हो गए।

निर्वासन के दौरान, संत साइप्रियन ने अपना सारा समय ईश्वर के चिंतन में बिताया, और मृत्यु के लिए स्वयं को तैयार किया। अपनी कैद के दौरान, साइप्रियन ने कई धर्मपरायण ग्रंथ लिखे; उन्होंने आत्मा-मोक्ष संबंधी वार्ता के लिए उनके पास आने वाले सभी लोगों को उपदेश दिया, सभी को विश्वास में दृढ़ रहने, अपने उत्पीड़कों की धमकियों या मसीह के नाम का इकरार करने के लिए सहन की गई पीड़ाओं से न डरने के लिए प्रेरित किया; उन्होंने मसीहियों को इस जीवन के अस्थायी और क्षणिक सुखों से आसक्त न होने, बल्कि अनंत जीवन की खोज करने के लिए प्रोत्साहित किया।

[5857] कुरूबिस कार्थेज से कुछ दिनों की यात्रा की दूरी पर स्थित था।

नर्विासन के दौरान, संत साइप्रयिन ने मसीह के नाम के लिए धैर्यपूर्वक सभी कठनिाइयों को सहन कयिा, और अपनी कैद को अपनी मातृभूमि में वापसी माना। एक ऐसे ईसाई के लिए जसिने अपनी सारी आशा ईश्वर में रखी है, उसका स्वदेश और उसका मूल नविास केवल एक पड़ाव का स्थान है, जैसा कि कहा गया है: 'मैं तेरे संग एक परदेशी और एक यात्री हूँ, जैसा कि मेरे सब पूर्वज थे' (भजन संहति 38:13); दूसरी ओर, ऐसे ईसाई के लिए, नर्विासन और प्रवास का स्थान भी उसकी मातृभूमि है, क्योंकि हर जगह वह अपने नकिट परमेश्वर को उपस्थति देखता है, जैसा कि कहा गया है: 'मैंने प्रभु को सदा अपनी आँखों के सामने रखा है' (भजन 15:8)।

एक और साल बीत गया, और उपर्युक्त अस्पासयिा स्टर्न की जगह गैलेरयिस मैक्समिस को प्रोकंसुल नयिुक्त कयिा गया। उस समय, सम्राट वैलेरयिन ने ईसाइयों के उत्पीड़न के संबंध में एक और भी क्रूर फरमान जारी कयिा, अर्थात्: वैलेरयिन ने मांग की कि सभी ईसाई बशिपों, प्रेस्बटिरों और वास्तव में, सभी ईसाई नेताओं को उनके पदों और संपत्ति से वंचति कर दयिा जाए, और यदि वे ईसाई धर्म का अभ्यास जारी रखते हैं, तो उन्हें मृत्युदंड दयिा जाए।

सम्राट का फरमान अफ्रीका में तब पता चला जब प्रोकॉन्सल गैलेरयिस मैक्समिस यूटकिा शहर में थे, जहाँ वभिन्नि स्थानों से बहुत से ईसाइयों को नर्विासति कयिा गया था। प्रोकॉन्सल वहाँ ईसाइयों पर अत्याचार शुरू करना चाहते थे और उन्होंने अपने सैनकिों को सेंट साइप्रयिन को उसी स्थान पर लाने का आदेश दयिा।

हमेशा पूरी शांति और नडिरता के साथ शहीद होने के लिए तैयार रहने वाले संत साइप्रयिन ने फरि भी अपने अनुयाययिों के बीच शहादत देना उचति और लाभकारी समझा। इस प्रकार तर्क करते हुए, और अपने दोस्तों की सलाह पर भी, जन्होंने उसे सूचति कयिा था कि उसके पीछे एक पहरेदार भेजा जा रहा है, साइप्रयिन कुछ समय के लिए एक अज्ञात स्थान पर छपि गए, लेकनि केवल तब तक जब तक कि प्रोकोन्सुल कार्थेज वापस नहीं आ गया। और यह सुनश्चिति करने के लिए कि इस अस्थायी वापसी से आलोचना न हो, साइप्रयिन ने पुरोहतिों और लोगों को एक पत्र लखिा, जसिमें उन्होंने अपने प्रस्थान का कारण समझाया; उसी पत्र में, साइप्रयिन ने पुरोहतिों और मंडली को अपने अंतमि नर्दिेश दए।

जैसे ही उप-प्रांतपाल गैलेरयिस मैक्समिस कार्थेज पहुँचे, साइप्रयिन अपने एकांतवास से बाहर आ गए। कुछ ही समय बाद, उप-प्रांतपाल ने दो सम्मानति लोगों को भेजा, और उन्हें साइप्रयिन को हरिासत में लेने का आदेश दयिा। साइप्रयिन ने बहादुरी से अपने शहीद होने के सफर पर नकिल पड़े और उन दो लोगों के साथ रथ से उप-प्रांतपाल के पास गए। हालाँकि, प्रोकन्सल के आदेश से, ईश्वर के संत का मुकदमा अगले दनि तक के लिए स्थगति कर दयिा गया, इसलिए साइप्रयिन को रात के लिए उन लोगों में से एक के घर ले जाया गया था जन्हें प्रोकन्सल ने उसे गरिफ्तार करने भेजा था। यहाँ संत ने अपनी अंतमि रात बतिाई; उस पर दया और भरोसे के कारण, उसे लगभग बनिा पहरे के छोड़ दयिा गया था।

इस बीच, पूरे शहर में यह अफवाह फैल गई कि बशिप साइप्रयिन को शहीद होने के लिए कैद से वापस लाया गया है; और तुरंत ही ईसाई अपने चरवाहे और शकि्षक को आखरिी बार देखने की इच्छा से उस घर पर उमड़ पड़े जहाँ साइप्रयिन ठहरे हुए थे। इस अवसर पर, ईसाइयों ने संत साइप्रयिन के प्रति और भी अधकि प्रेम और भक्ति दखिाई, जतिनी उन्होंने तब दखिाई थी जब उन्हें बशिप चुना गया था। वे अपने प्रयि आर्चपास्टर से उनकी मृत्यु तक अलग नहीं होना चाहते थे, और इसलिए उन्होंने उनके घर के दरवाजों के बाहर पूरी रात जागकर बतिाई। ईसाइयों ने ऐसा इसलिए नहीं कयिा क्योंकि वे संत साइप्रयिन को मूर्तपिूजकों के हाथों और अधकिार से बचाना चाहते थे, बल्कि इसलिए ताकि वे उनसे, अपने आध्यात्मकि पति के रूप में, अंतमि आशीर्वाद प्राप्त कर सकें।

अगली सुबह, साइप्रयिन को उस घर से बाहर नकिालकर पूछताछ के लिए उप-राज्यपाल के सामने लाया गया।

प्रोकॉन्सल ने साइप्रयिन से पूछा:

'क्या आप साइप्रयिन हैं?'

साइप्रयिन ने उत्तर दयिा:

'हाँ, मैं वही हूँ।'

तब उप-प्रांतपाल ने कहा:

'क्या आप ही बशिप हैं, जो उन पागल लोगों का नेतृत्व करते हैं जो खुद को ईसाई कहते हैं?'

साइप्रयिन ने उत्तर दयिा:

'हाँ, मैं मसीह के लोगों का बशिप हूँ।'

प्रोकॉन्सल ने अपनी पूछताछ जारी रखते हुए कहा:

'सबसे धर्मपरायण और गौरवशाली सम्राट आपको देवताओं को बलदिान चढ़ाने का आदेश देते हैं।'

इस पर साइप्रयिन ने उत्तर दयिा:

'मैं कसिी भी परस्थितिमें ऐसा नहीं करूँगा।'

प्रोकॉन्सल ने कहा:

'इस पर ध्यान से वचिार करो और चुनो कि तुम्हारे हति में क्या है।'

इस पर, ईश्वर के पवत्रि पुरुष ने उत्तर दयिा:

'जो आज्ञा दी गई है, उसे करो। जहाँ तक मेरी बात है, मेरे लिए इतनी स्पष्ट बात में, वचिार-वमिर्श की कोई आवश्यकता नहीं है।'

इसके बाद, उप-प्रांतपाल ने पूछताछ में उपस्थति अन्य न्यायाधीशों से सलाह-मशवरिा कयिा और मूर्तयिों के प्रतिअनादर के लिए साइप्रयिन को फटकार लगाने के बाद, यह नर्णिायक सजा सुनाई कि उसे तलवार से सरि कलम कर दयिा जाए, और इस प्रकार कहा:

'साइप्रयिन, ईसाई बशिप, को तलवार से सरि कलम कर दयिा जाए।'

लेकनि मसीह के पवत्रि जन, अपने वरिुद्ध यह नर्णिय सुनाए जाने पर, प्रसन्न हुए और जोर से कहा:

'प्रभु का धन्यवाद करो!'

लोगों ने, जन्हिोंने हुई सारी घटना देखी थी, प्रोकन्सल की ओर मुड़कर चल्लिाना शुरू कर दयिा:

'हम भी उसके साथ मरना चाहते हैं!'

और लोगों में बड़ा हलचल मच गई।

इस बीच, साइप्रयिन को मृत्युदंड के स्थान पर ले जाया गया। ईसाई भी परमेश्वर के संत के पीछे-पीछे चले गए, और अपने चरवाहे को मृत्यु की ओर जाते देख आँसू बहा रहे थे।

नयित स्थान पर पहुँचने पर, ईश्वर के उस पवत्रि पुरुष ने अपना बाहरी वस्त्र उतार दयिा, घुटने टेक दिए और ईश्वर से प्रार्थना करने लगे। पर्याप्त समय तक प्रार्थना करने के बाद, मसीह के पवत्रि शहीद ने सभी को शांतिऔर आशीर्वाद दयिा और अपने मत्रिों को जल्लाद को पच्चीस सोने के सक्कि देने का नर्देश दयिा, इस प्रकार मृत्यु के मुंह में भी एक परोपकारी कार्य कयिा; फरि उन्होंने अपनी आँखें एक रूमाल से बाँध लीं और अपने बगल में खड़े पुरोहति और उप-डीकन को अपने हाथ बाँधने की अनुमतिदी। इस बीच, कुछ ईसाइयों ने संत के सामने रूमाल और तौलयि बछिा दिए, ताकि वे उन पर मसीह के पवत्रि शहीद का रक्त एक कीमती खजाने के रूप में प्राप्त कर सकें। अंत में, परमेश्वर के संत ने अपना सरि झुकाया और तलवार से उनका सरि कलम कर दयिा गया।

इस प्रकार परमेश्वर के इस पवत्रि व्यक्तिने हमारे ईश्वर मसीह की महमिा के लिए दुख सहते हुए अपना जीवन समाप्त कयिा[5858] ।

मसीह के संत का पवत्रि शरीर रात के समय, मोमबत्ती की रोशनी में और उपयुक्त भजनों के साथ, मैक्रोवयिस कैंडडियिनस नामक एक प्रोकीयरेटर के नजिी कब्रस्तिान में ले जाया गया, और वहाँ दफनाया गया। बाद में, राजा चार्लेमेन के शासनकाल में, पवत्रि शहीद साइप्रयिन के अवशेष फ्रांस के शहर आर्ल्स में स्थानांतरति कर दिए गए, और राजा चार्ल्स द बाल्ड के शासनकाल में - शहर कंपग्नि में, सेंट कॉर्नेलयिस के मठ में।

जहाँ तक दुष्ट यातना देने वालों का सवाल है, वे दंड से नहीं बचे; जल्द ही, ईश्वर का न्याय उन पर हुआ।

संत साइप्रयिन की शहादत के कुछ दनिों बाद, ईश्वर की इच्छा से, उप-राज्यपाल गैलेरयिस मैक्समिस का देहांत हो गया। सम्राट वैलेरयिस, जसिने क्रूरतापूर्वक ईसाइयों का उत्पीड़न कयिा था, को फारसयिों के खलिाफ युद्ध में भारी पराजय का सामना करना पड़ा और शत्रु द्वारा पकड़े जाने के बाद वह जेल में ही मर गया।

संत साइप्रयिन ने बहुत सारी रचनाएँ पीछे छोड़ीं, जनिमें उन्होंने सैद्धांतकि और नैतकि दोनों सच्चाइयों की व्याख्या की। इनमें से अधकिांश पत्र हैं (साइप्रयिन ने कुल मलिाकर लगभग 80 पत्र लखि); इसके अलावा, साइप्रयिन ने कई अलग-अलग प्रबंध या कृतयिाँ लखिीं। उनके लेखन के वषिय थे: कलीसयिा का चरवाहा और कुंवारी, पीड़ति और पतति, मूर्तपिूजक और यहूदी, वधिर्मी और संप्रदायवादी। चर्च के पादरयिों के लिए, साइप्रयिन ने 'उत्साह और ईर्ष्या की पुस्तक' लखिी – जो वास्तव में एक प्रेरतिीय भावना का फल है – जसिमें चर्च की शांतिऔर भलाई के लिए कैसे कार्य

[5858] संत साइप्रयिन की मृत्यु 258 में हुई।

कयिा जाए, इस पर दशिानरि्देश शामलि हैं। कुंवारी कन्याओं के लिए, उन्होंने 'कुंवारी कन्याओं के आचरण की पुस्तक' लखिी। दुख-तकलीफ के प्रतिउनके प्रेम ने संत साइप्रयिन को तीन उल्लेखनीय ग्रंथ लखिने के लिए प्रेरति कयिा: 'धैर्य की पराकाष्ठा पर', 'दया पर' और 'मृत्यु पर'। 'पतन पर पुस्तक' में पश्चाताप पर शकि्षाप्रद चतिन शामलि है। सेंट साइप्रयिन के उन रक्षात्मक कार्यों में, जनिमें उन्होंने मूर्तपिूजकों के हमलों के खलिाफ ईसाई धर्म का बचाव कयिा, 'डेमेट्रयिन के लिए पुस्तक' और 'मूर्तयिों की व्यर्थता पर' शामलि हैं। 'यहूदयिों के वरिुद्ध गवाहयिों की तीन पुस्तकें' ईसाई वशि्वास और प्रथाओं की एक संक्षपि्त रूपरेखा, और हठी यहूदयिों का खंडन प्रस्तुत करती हैं। मशि्रणवाद और फूट को खारजि करने के लिए, साइप्रयिन ने 'चर्च की एकता पर प्रबंध' और 'बपतस्मिा पर डोनाटस को प्रबंध' लखिा। अपने ग्रंथ 'टू फॉर्चुनाटस: शहादत के लिए प्रोत्साहन पर' में, साइप्रयिन सभी ईसाइयों से सामान्य रूप से आग्रह करते हैं कि वे उत्पीड़न सहते हुए आत्मा में दृढ़ रहें। संत साइप्रयिन ने कई अन्य गौरवशाली रचनाएँ भी छोड़ीं। जैसा कि धन्य जेरोम ने कहा, साइप्रयिन की रचनाएँ स्वयं सूर्य से भी अधकि प्रसदि्ध थीं; उनकी कृतयिों से, एफ़सिुस और कैलसीडोन के सार्वभौमकि परषिदों के फादर्स[5859] ने वधिर्मीयों के हमलों के खलिाफ ईसाई धर्म की रक्षा करने और उनके वधिर्मों का खंडन करने के लिए साक्ष्य नकिाले।

चर्च का सदि्धांत संत साइप्रयिन की कृतयिों में अधकि पूर्ण रूप से और वसि्तार से व्यक्त कयिा गया है। संक्षेप में, इस मामले पर संत साइप्रयिन के तर्क इस प्रकार थे:

चर्च लोगों का एक समुदाय है जसिे प्रभु यीशु मसीह ने स्थापति कयिा और प्रेरतिों द्वारा संगठति और स्थापति कयिा गया, जो आंतरकि और बाहरी दोनों रूप से एक एकल संपूर्णता बनाता है, जसिका नेतृत्व एक ही प्रमुख, हमारे प्रभु यीशु मसीह करते हैं। जसि प्रकार कलीसयिा की आंतरकि एकता वशि्वास और प्रेम की एकता पर आधारति है, उसी प्रकार उसकी बाहरी एकता पदानुक्रम (और उसमें, मुख्य रूप से, बशिप के अधकिार) और कलीसयिा के संस्कारों पर आधारति है। संत साइप्रयिन के तर्क के अनुसार, इस एक सच्ची और उद्धार देने वाली कलीसयिा के बाहर न तो कोई उद्धार है और न ही हो सकता है; केवल यही एक चर्च वास्तव में प्रेरतिकि चर्च है, और इसलिए यह अचूक है। संत साइप्रयिन तर्क देते हैं, 'हम उस बात का पालन करते हैं, जो हमें प्रेरतिों से प्राप्त हुई है, और उन्होंने हमें केवल एक ही चर्च सौंपी है।' केवल यही एक चर्च, जीवन की कृपा प्राप्त करके, अनंत काल तक जीवति रहती है और ईश्वर के लोगों को जीवन प्रदान करती है[5860] । इसी एक सच्चे चर्च में, जीवन की कृपा प्राप्त करके, सभी दव्यि आशीर्वाद केंद्रति हैं, और केवल उसी में मोक्ष संभव है। संत साइप्रयिन तर्क देते हैं, 'कि कलीसयिा एक है,' यह पवत्रि आत्मा द्वारा गीतों के गीत में यीशु मसीह की ओर से कहा गया है: "वह अद्वतिीय है, मेरी कबूतर, मेरी नष्किलंक; वह अपनी माता के लिए अद्वतिीय है, उसे ने जन्म दयिा है, उसी ने उसे अलग कयिा है" (अध्याय 6, पद 8); और वह फरि से उसके बारे में कहते हैं: 'मेरी बहन, मेरी दुल्हन एक घरिा हुआ बगीचा है; एक सीलबंद झरना, जीवति जल का झरना' (4:12 और 15)। और यदि मसीह की दुल्हन, जो कि कलीसयिा है, एक 'घरिा हुआ बगीचा' है, तो जो कुछ घरिा हुआ है उसे अजनबयिों और बाहरी लोगों के लिए नहीं खोला जाना चाहिए। यदि वह एक 'सीलबंद झरना' है, तो कोई भी जो बाहर है और जसिके पास उस झरने तक पहुँच नहीं है, वह न तो उससे पी सकता है और न ही उससे मुहरबंद हो सकता है। यदि कलीसयिा जीवति जल का एकमात्र भंडार है, तो कलीसयिा के बाहर के लोग उस जल से पवत्रि या पुनर्जीवति नहीं हो सकते, जसिका उपयोग और जसिे पीना कलीसयिा के भीतर के लोगों को प्रदान कयिा गया है। प्रभु जोर से पुकारते हैं, कि जो कोई भी प्यासा है वह आकर उनसे बहने वाले जीवन के जल के झरने से पीए। तो फरि, प्यासे व्यक्ति को कहाँ जाना चाहिए? वधिर्मयिों के पास, जनिके पास जीवन-दायक जल का न तो कोई झरना है और न ही कोई नदी, या चर्च के पास, जो अकेली—और प्रभु के वचन के अनुसार—उस एक के ऊपर स्थापति है जसिे उसकी कुंजयिाँ मलिी हैं? केवल वही अपने वधू-वर और प्रभु के सभी अधकिारों को संरक्षति रखती है और उन पर अधकिार रखती है; कलीसयिा का सच्चा, उद्धार-दायक और पवत्रि जल न तो भ्रष्ट हो सकता है और न ही अपवत्रि, ठीक वैसे ही जैसे कलीसयिा स्वयं अक्षय, शुद्ध और पवत्रि है'[5861] .

[5862]जीवन और उद्धार का पूर्ण माप मसीह की कलीसयिा में नहिति है। जसि प्रकार, महाप्रलय के समय, उद्धार केवल नूह की कश्ती में संभव था, या, यरीहो के वनिाश के समय, केवल राहाब के घर में (यहोशू 2), उसी प्रकार कलीसयिा

[5859] तीसरा सार्वभौमकि परषिद एफसिुस में हुआ, और चौथा काल्सेडोन में।

[5860] पत्र 71 और 73।

[5861] पत्र 73.

[5862] पत्र 62.

मानवजाति के लिए उद्धार का एकमात्र स्थान है। संत साइप्रियन तर्क देते हैं, 'ईश्वर का केवल एक ही घर है, और कलीसिया के अलावा कहीं भी कोई उद्धार नहीं पा सकता। वे यह न सोचें कि बिशपों और पुरोहितों की आज्ञाकारिता के बिना जीवन और मुक्ति की विरासत प्राप्त की जा सकती है।

जो चर्च के बाहर हैं, जो इसकी एकता और इससे सहभागिता से खुद को अलग करते हैं, उनके पास सच्चा जीवन नहीं है। संत साइप्रियन कहते हैं, 'यह स्पष्ट है कि जो मसीह के चर्च में नहीं हैं, उन्हें मृतकों में गिना जाता है, और जो स्वयं जीवित नहीं है, वह दूसरे को जीवन नहीं दे सकता'[5863] ।

लेकिन केवल विश्वास, प्रेम के बिना, चर्च के सभी सदस्यों को एकजुट करने वाला एक पूर्ण रूप से मजबूत और स्थायी बंधन नहीं बन सकता। 'केवल कुछ प्राप्त करना पर्याप्त नहीं है,' संत साइप्रियन तर्क देते हैं, 'प्राप्त की गई चीज़ को संरक्षित कर पाना अधिक महत्वपूर्ण है।' विश्वास स्वयं और उद्धारकारी पुनर्जन्म जीवन-दायक हैं, न कि इसलिए कि हमने उन्हें प्राप्त किया है, बल्कि मुख्यतःइसलिए कि हमने उन्हें संरक्षित रखा है'[5864] . केवल एक सच्चा, जीवित और सक्रिय विश्वास, जो प्रेम के साथ जुड़ा हो, ही किसी व्यक्ति को मसीह और संपूर्ण ईसाई भाईचारे दोनों के साथ एक जीवित मिलन में प्रवेश करने का अधिकार देता है: जहाँ इनमें से कोई एक भी कमी हो, वहाँ मसीह के साथ जीवन नहीं है, और परिणामस्वरूप, कोई उद्धार नहीं है।

संत साइप्रियन के तर्क के अनुसार, प्रेम सभी सद्गुणों की नींव है। संत साइप्रियन का तर्क है, 'प्रेम, भाईचारे का बंधन, शांति की नींव, एकता का किला और पुष्टि है;... यह परोपकार और शहादत के कार्यों से पहले आता है; यह स्वर्ग के राज्य में परमेश्वर के साथ हमारे साथ हमेशा रहेगा'[5865] .

संत साइप्रियन अपने लेखों में प्रभु परमेश्वर और हमारे उद्धारकर्ता यीशु मसीह की महिमा के लिए, आत्मा-उद्धार के कई अन्य सत्य प्रकट करते हैं। आमीन।

कॉन्स्टेंटिनोपल के पैट्रिआर्क, संत जेनेडियस की स्मृति

31 अगस्त को स्मरण किया जाता है

संत जेनाडियस ने सम्राट लियो महान[5866] के शासनकाल में, संत अनातोलीयस[5867] के बाद कॉन्स्टेंटिनोपल के सिंहासन पर पदभार संभाला। उनके ईश्वरीय जीवन की गवाही 'लिमोनार' नामक एक पुस्तक में दी गई है; इस पुस्तक में, पूजनीय फादर्स सोफ्रोनीयस और जॉन निम्नलिखित का वर्णन करते हैं।

वे कहते हैं, 'हम अलेक्जेंड्रिया से नौ स्टेडियम दूर स्थित, सलामा के नाम से जाने जाने वाले मठ[5868] आए, और वहाँ हमें दो वृद्ध मिले जो पहले कॉन्स्टेंटिनोपल की कलीसिया के पुरोहित रह चुके थे। इन पुरोहितों ने हमें कॉन्स्टेंटिनोपल के धन्य पैट्रिआर्क जेनाडियस के बारे में बताया कि वह अत्यंत विनम्र थे, शारीरिक शुद्धता का पालन करते थे और अपनी संयमशीलता के लिए प्रसिद्ध थे। उन्होंने उनके बारे में यह भी कहा कि किई लोगों ने उन्हें एक निश्चित क्लेरिक, जिसका नाम कैरसीमा था, के कारण बहुत परेशानी दी, जिसने बहुत बड़ा पाप किया था। यह पुरोहित पवित्र शहीद एलेउथेरीउस के चर्च में सेवा करता था, और उसके बारे में कहा जाता था कि वह न केवल आलस्य, लापरवाही और पापी अशुद्धता का जीवन जीता था, बल्कि डिकैती में भी शामिल था और जादू-टोना भी करता था। इस पुरोहित को बुलाकर, धर्मगुरु ने उसे फटकारना शुरू किया, और उसे एक पिता की तरह नम्रता की भावना से सुधारने लगे; लेकिन जब उन्होंने देखा कि वह सुधरने वाला नहीं है, तो उन्होंने आदेश दिया कि उसे हल्की सजा दी जाए। जब, तथापि, वह व्यक्ति सुधरने से इनकार करता रहा और उस पर दंड का कोई प्रभाव नहीं पड़ा, तो पैट्रिआर्क ने अपने एक सेवक को शहीद के चर्च में भेजा, जहाँ कैरसीमस ठहरे हुए थे, ताकि वह शहीद से विनती करे कि वे या तो अपने चर्च के पादरी—जो पाप में डूबा हुआ था—को

[5863] पत्र 71.

[5864] पत्र 6.

[5865] 'धैर्य के गुण पर', अध्याय 15.

[5866] लियो महान ने 457 से 474 तक शासन किया।

[5867] अनातोलियस ने 449 से 458 तक पैट्रिआर्क के रूप में कार्य किया।

[5868] किनोवियि (ग्रीक शब्द xoinos – 'साझा' और bios – 'जीवन' से) उन सामुदायिक मठों को संदर्भित करता है जिनमें भाइयों को मठ द्वारा समर्थित किया जाता है और बदले में वे मठ की सामान्य भलाई के लिए अपनी मेहनत प्रदान करते हैं।

सुधारें, या उसे चर्च से बहिष्कृत कर दें। संदेशवाहक, चर्च में पहुँचने पर, वेदी के सामने खड़ा हुआ और शहीद की कब्र की ओर अपना हाथ बढ़ाते हुए, कहा:

'हे पवित्र शहीद एलेउथेरीअस! पितृपति जेनाडियस मुझ पापी के माध्यम से आपको सूचित करते हैं कि आपके चर्च में सेवा करने वाला पुरोहित कैरसिमि कई अपराध कर रहा है और कलंक लगा रहा है; अत; या तो उसे सुधारें या उसे चर्च से बहिष्कृत कर दें।'

इसके बाद, अगली सुबह, कैरसिमस मृत पाया गया।

इससे हम देख सकते हैं कि धन्य जेनाडियस परमेश्वर और उनके संतों को कितने प्रिय थे, क्योंकि संदेशवाहक के माध्यम से पवित्र शहीद को संबोधित उनका वचन शीघ्र ही सुना गया और उसे व्यवहार में लाया गया।

उस समय, प्राचीन रोम से आए एक सेनेटर, स्ट्यूडियस नामक व्यक्ति द्वारा कॉन्स्टेंटिनोपल में प्रभु के अग्रदूत संत जॉन के सम्मान में एक चर्च का निर्माण किया गया; एक मठ भी स्थापित किया गया, जिसे सेनेटर स्ट्यूडियस के नाम पर स्ट्यूडाइट मठ का नाम दिया गया; इस मठ में, सर्व-रात्रि जागरण का संप्रदाय स्थापित किया गया था।

पितृगुरु जेनाडियस के अधीन, पूजनीय मार्शियन ने चर्च के कोषाध्यक्ष के रूप में सेवा की। इस मार्कियन ने अपना अंतिम वस्त्र उतारकर एक भिखारी को दे दिया; और इस पूजनीय मार्कियन को अपनी फेलोनिया (felonia) के नीचे एक शाही बैंगनी चोगा पहने हुए देखा गया, जैसा कि उनके जीवन में वर्णित है[5869] । उसी पैट्रिआर्क के शासनकाल में, पवित्र स्टाइलाइट डैनियल ने भी सेवा की, जिन्हें उन्होंने एक प्रेस्बिटिर (presbyter) के रूप में नियुक्त किया था।

कॉन्स्टेंटिनोपल के पैट्रिआर्क सेंट जेनाडियस के दिनों में, इस प्रकार का एक चमत्कार हुआ।

एक चित्रिकार ने उद्धारकर्ता मसीह की एक प्रतिमा को मूर्तिपूजक देवता ज्यूस[5870] के सदृश चित्रित करने का दुस्साहस किया; और तुरंत ही उस चित्रिकार पर ईश्वर का दंड आ पड़ा, क्योंकि उसका वह हाथ, जिसने प्रभु को इस प्रकार चित्रित करने का दुस्साहस किया था, सूख गया। उसने स्वयं पर ईश्वर का शीघ्र प्रकोप अनुभव करके, परम पावन पैट्रिआर्क जेनाडियस के पास दौड़ता हुआ गया और उनके समक्ष पश्चाताप करते हुए, आँसुओं के साथ अपने पाप का सबके सामने स्वीकार किया। परम पावन पैट्रिआर्क ने उसकी ओर से प्रभु से प्रार्थना की और उसके हाथ को चंगा कर दिया, जिससे वह पहले की तरह स्वस्थ हो गया।

संत पैट्रिआर्क जेनाडियस की आदत थी कि वे किसी भी व्यक्ति (जो पुरोहित बनना चाहता था) को तब तक पुरोहित नहीं बनाते थे, जब तक कि वह संपूर्ण भजन संहिता (Psalter) को कंठस्थ न कर ले; क्योंकि ईश्वर के यह महान बिशप धार्मिक अनुष्ठानों के सख्त पालन को सुनिश्चित करने में बहुत उत्साही थे; उन्हें एहसास था कि यह आदेश तभी पूरी तरह से लागू हो सकता है जब सभी पुरोहितों और धर्मकर्मियों को शास्त्रीय समझ सिखाई गई हो और वे दैवीय धर्मग्रंथों को तर्कसंगत रूप से समझने में सक्षम हों। क्योंकि धर्मग्रंथों में अनभिज्ञ एक पुरोहित दूसरों को सिखा नहीं सकता; न ही वह उन्हें मोक्ष के मार्ग पर सुधार या मार्गदर्शन कर सकता है, क्योंकि वह स्वयं मोक्ष के मार्ग को नहीं जानता। ऐसे मामले में, मसीह के शब्द सच होते हैं: 'क्या अंधा अंधे का मार्गदर्शन कर सकता है? क्या वे दोनों एक गड्ढे में नहीं गिर जाएँगे?' (लूका 6:39)।

संत जेनाडियस ने कॉन्स्टेंटिनोपल में एक स्थानीय परिषद बुलाई, आंशिक रूप से यूटिकियन विधर्म को खत्म करने के लिए, और आंशिक रूप से चर्च में सुधार करने के लिए; इस परिषद में, सिमोनी (धार्मिक पदों की खरीद और बिक्री), जो बिशपों के बीच व्यापक हो गई थी, पर प्रतिबंध लगा दिया गया।

संत जेनाडियस ने तेरह वर्षों तक अपने सुपुर्द किए गए झुंड का मार्गदर्शन किया; उन्होंने उसी लियो महान के शासनकाल में प्रभु के पास गमन किया[5871] ।

अपने निधन से ठीक पहले, जब संत जेनाडियस चर्च में रात को प्रार्थना कर रहे थे, तो उन्हें एक भयानक दैवीय आकृति दिखाई दी; संत जेनाडियस ने पवित्र क्रॉस के चिह्न से इस आकृति को भगा दिया; शैतान, क्रॉस के चिह्न से

[5869] उनका पर्व दिवस पवित्र चर्च द्वारा 10 जनवरी को मनाया जाता है।

[5870] ज़ीउस को प्राचीन यूनानियों द्वारा सर्वोच्च देवता और अन्य देवताओं (और मानव जाति) के पूर्वज के रूप में माना जाता था।

[5871] संत जेनाडियस ने 458 से 471 तक पैट्रिआर्क के रूप में कार्य किया। संत जेनाडियस को कई धर्मशास्त्रीय ग्रंथों का लेखक माना जाता है। मेसालिया के जेनाडियस ने संत जेनाडियस के बारे में टिप्पणी की है: 'वाक्पटुता और तीव्र बुद्धि के धनी, वह प्राचीन लेखकों के लेखन में इतने पारंगत थे कि उन्होंने भविष्यवक्ता दानियेल की व्याख्या शब्दशः की, और कई प्रवचन रचे।' इन सभी कृतियों का अब कोई अस्तित्व नहीं है; केवल सिमोनी के विरुद्ध उनका परिपत्र, जिसे 459 की परिषद में अनुमोदित किया गया था, ही हमारे पास पहुँचा है।

डरकर, भाग गया, यह कहते हुए: 'मैं इस जगह को हमेशा के लिए छोड़ रहा हूँ और जब तक तुम जीवित हो, मैं यहाँ किसी को कोई नुकसान नहीं पहुँचाऊँगा; लेकिन तुम्हारी मृत्यु के बाद मैं वापस आऊँगा और चर्च को परेशान करने के लिए अपनी पूरी कोशिश करूँगा, जिससे कई लोग विनाश की ओर ले जाया जाएँगे।'

संत जेनाडियस, अपने मृत्यु के दिन तक अविराम आँसू बहाते हुए, प्रभु से प्रार्थना करते थे कि वे अपनी कलीसिया की रक्षा करें ताकि वह नरक के द्वारों से पराजित न हो। और जैसे अपने जीवनकाल में वह पवित्र कलीसिया की ओर से प्रभु के समक्ष एक उत्साही मध्यस्थ थे, वैसे ही, अपने निधन के बाद भी, वह कलीसिया के लिए अपनी अनवरत प्रार्थनाएँ अर्पित करते हैं, और अन्य पवित्र धर्मगुरुओं के साथ कलीसिया के प्रमुख, हमारे प्रभु मसीह के समक्ष खड़े हैं, जिन्हें पिता और पवित्र आत्मा के साथ, युगानुयुग महिमा दी जाती है।

परम पवित्र थिओटोकोस के पवित्र पट्टे का पर्व।

31 अगस्त को स्मरणोत्सव

परमेश्वर की परम पवित्र माता का पवित्र कमरबंद, कॉन्स्टेंटिनोपल में अपने आगमन पर, धर्मनिरपेक्ष सम्राट थियोडोसियस द यंगर द्वारा निर्मित एक चर्च में, शाही मुहर के नीचे एक सुनहरे अवशेष-पात्र में रखा गया था; यह चर्च चाल्कोप्राटिया नामक स्थान पर परम पवित्र ईश्वर की माता को समर्पित किया गया था, जिसका अर्थ है 'तांबे का बाज़ार'।

कई वर्षों बाद, लियो द वाइज़ के शासनकाल के दौरान, ऐसा हुआ कि उनकी पत्नी, ज़ोए, एक अशुद्ध आत्मा से पीड़ित थीं; इस कारण से, सम्राट और उनके रिश्तेदार गहराई से दुखी थे, और वे सभी पीड़ित सम्राज्ञी के लिए प्रभु से प्रार्थना करने लगे।

इसके बाद, रानी ज़ोई को एक दिव्य दर्शन हुआ, जिसमें यह संकेत मिला कि यदि परम पवित्र मसीह की माता का कमरबंद उन पर रखा जाए तो वह ठीक हो जाएँगी।

रानी ने यह दृष्टि अपने पति, राजा लियो को सुनाई। तुरंत, राजा ने पादरी से सर्वपवित्र परमेश्वर की माता के कमरबंद वाली तिजोरी खोलने का आग्रह किया: मुहर हटाई गई और तिजोरी खोली गई; और सर्वपवित्र परमेश्वर की माता का पवित्र कमरबंद समय के साथ बिल्कुल भी क्षतिग्रस्त हुए बिना, सुरक्षित पाया गया; सभी ने उसे श्रद्धापूर्वक चूमा। और जैसे ही पैट्रिआर्क ने इसे रानी पर फैलाया, वह तुरंत अपने दैवीय कष्ट से मुक्त हो गई और अपनी बीमारी से पूरी तरह ठीक हो गई।

तब, महान आनंद के साथ, सभी ने मसीह परमेश्वर और उनकी परम पवित्र माता की महिमा की; और, धन्यवाद और स्तुति के भजन गाने के बाद, उन्होंने पवित्र कमरबंद को फिर से उसी सुनहरे अवशेष पात्र में रखा, उसे शाही मुहर से सील कर दिया, और परम धन्य कुँवारी मरियम के सम्मान में एक पर्व स्थापित किया, उनकी पवित्र कमरबंद द्वारा किए गए चमत्कार की स्मृति में, हमारे ईश्वर मसीह की कृपा, दया और मानवजाति के प्रति प्रेम के द्वारा, जो उनसे ही उत्पन्न हुए।

ट्रोपारियन, स्वर 8:

हे परमेश्वर की सदा-कुँवारी माता, मानव जाति की रक्षक, आपने अपने राजसी नगर को अपने परम पवित्र शरीर का वस्त्र और कमरबंद प्रदान किया है; आपके बिना बीज के जन्म के द्वारा अक्षुण्ण रहते हुए, क्योंकि आपके द्वारा प्रकृति और समय दोनों का नवीनीकरण होता है। इसलिए हम आपसे विनती करते हैं कि आप अपने नगर को शांति और हमारी आत्माओं को महान दया प्रदान करें।

कॉन्टाकियन, स्वर 2:

हे परमेश्वर की माता, तुम्हारा परमेश्वर-प्रसन्न गर्भ, तुम्हारा सम्माननीय कमरबंद, तुम्हारे नगर की शक्ति अजेय है, और हे सदा-कुंवारी, जो अकेली ही प्रसव कर चुकी हो, भलाई की एक ऐसा खजाना है जो कभी समाप्त नहीं होता।

एक और कोंटाकयिन, स्वर 4:

आज, हे अतमिहमिामय मंदरि, हम आपकी सम्मानति कमर-पट्टकिा के बँधने का उत्सव मनाते हैं, और हम आपसे वनिम्रतापूर्वक पुकारते हैं: हे कुँवारी, आनंदति हो, ईसाइयों की स्तुति।

14 सतिंबर

1 सतिंबर (पुराने कैलेंडर के अनुसार)

इंडकि्शन के पहले दनि का वचन, या नव वर्ष

1 सतिंबर को स्मरणोत्सव
1 सतिंबर

युगों के राजा, हमारे प्रभु परमेश्वर *ने, 'समय और ऋतुएँ ठहराई हैं'* (प्रेरतिों के काम 1:7)[5872] , और स्वयं ने इन समयों पर अपनी महमिा के लिए और लोगों को उनके सांसारकि कार्यों से वश्रिाम देने के लिए वभिन्नि पर्व स्थापति कएि हैं। यहाँ तक कि पुराने नयिम में भी, उन्होंने आज्ञा दी कि सातवें महीने की शुरुआत का हर साल वशिेष रूप से उत्सव मनाया जाए, ताकि लोग, दैनकि जीवन की भागदौड़ से मुक्त होकर, उस दनि एकमात्र ईश्वर की सेवा कर सकें। क्योंकि मूसा की पुस्तकों में लखिा है: *'प्रभु ने मूसा से कहा: "इस्राएलयिों से कह दो: सातवें महीने के पहले दनि तुम वश्रिाम का दनि मनाओगे; उस दनि तुम अपने कसिी भी घर में कोई काम नहीं करोगे, और तुम प्रभु के लिए बलदिान चढ़ाओगे"* (लैव. 23:24–31)।[5873] जैसे सृष्टकिर्ता स्वयं, जन्हिोंने अपने वचन से छह दनिों में संसार की सृष्टि की, सप्तम दनि को आशीष दी और पवत्रि कयिा, सृष्टि के कार्य से वश्रिाम करते हुए (उत्पत्ति 2:2–3; नर्गिमन 20:11; इब्रानयिों 4:4); और जैसे उन्होंने बाद में मनुष्य को आज्ञा दी: *'छह दनि परश्रिम करो, परन्तु सातवें दनि—शब्बाथ—अपने परमेश्वर के लिए कोई काम न करना'* (नर्गिमन 20:9–10)[5874] , उसी प्रकार उसने सातवें महीने को भी आशीषति और पवत्रि कयिा और लोगों को इस समय सांसारकि परश्रिम से वश्रिाम करने की आज्ञा दी। प्रभु ने मूसा को इस संबंध में दूसरी बार आज्ञा दी, *'कहते हुए, "सातवें महीने में, जब तुम देश का उपज इकट्ठा कर लो, तब तुम प्रभु का पर्व मनाओगे"* (लैव्य. 23:39)[5875] ।

तो फरि, यह त्योहार कसि कारण से स्थापति कयिा गया था?

इसी महीने में, जब प्रलय के जल उतरने लगे, तब नूह की कश्ती अरारात के पहाड़ों पर आकर ठहरी[5876] ।

[5872] देखें दानयिेल 2:21। – 'समय' का अर्थ लंबी समयावधि से है; 'मौसम' का अर्थ वर्षों, या छोटी अवधयिों से है।

[5873] दहन-बलि एक वशिषि्ट प्रकार की बलि के लिए बाइबलि में प्रयुक्त शब्द है। जबकि अन्य बलदिानों में केवल एक हसि्सा जलाया जाता था, और शेष भाग पुरोहतिों या स्वयं बलदिान करने वालों को दे दयिा जाता था, दहन-बलि के रूप में अर्पति बलि को पूरी तरह से जला दयिा जाता था। दहन-बलि इस बात का संकेत देती थी कि उसे चढ़ाने वाला व्यक्ति अपना सम्पूर्ण अस्तत्वि—आत्मा और शरीर दोनों—ईश्वर को बलदिान कर रहा था, और यह मसीह की बलदिान की एक पूर्व-छाया थी (तुलना करें इब्रानयिों 9:9–14)।

[5874] लैव. 23:3; व्यवस्थावविरण 5:13.

[5875] प्राचीन काल से ही पतझड़ नए वर्ष की शुरुआत का प्रतीक रहा है। इसके कारण स्वयं प्रकृति में ही पाए जा सकते हैं। गर्मयिों के अंत के साथ, फसल की कटाई और पूरे वर्ष की मेहनत आमतौर पर समाप्त हो जाती है (नर्गिमन 23:16)। एक बार फलों को इकट्ठा कर लेने के बाद—जब प्रकृति और कृषि अपने लक्ष्य तक पहुँच जाती हैं—गतविधियिों का एक नया चक्र शुरू होता है, जो भवषि्य की उर्वरता के लिए नई आशाएँ लाता है।

[5876] बाढ़-पूर्व की दुनयिा के अंतमि पुरखों, नूह, और सार्वभौमकि बाढ़ की कहानी बताई गई है (उत्पत्ति 5:29–32, 6–9)। प्रेरति संत पतरस, नूह के जहाज़ में बाढ़ से लोगों के उद्धार का वर्णन करते हुए, मसीह में बपतस्मिा के माध्यम से हमारे उद्धार की ओर इशारा करते हैं। (1 पतरस 3:19-22)। – अरारत – आर्मेनयिा में सबसे ऊँचे पहाड़, जो रूस, तुर्की और फारस की सीमा पर स्थति हैं, जनिकी दो चोटयिाँ हैं: ग्रेटर अरारत, जसिे फारसी लोग माउंट नोआ कहते हैं, और लेसर अरारत।

इस महीने में, पवत्रि नबी मूसा पहाड़ से उतरे, उनका चेहरा परमेश्वर की महमिा से दमक रहा था, और उन्होंने नई पट्टयिाँ लाईं जनि पर स्वयं प्रभु द्वारा दयिा गया वधिान अंकति था[5877] (नरि्ग. 34:29)।

इस महीने, इस्राएलयिों के शविरि में प्रभु के तम्बू का नरि्माण शुरू हुआ (नरि्गमन 35:1–35)[5878] ।

उसी महीने, महायाजक, पूरे वर्ष में एकमात्र अवसर पर, परम पवत्रि स्थान में प्रवेश कयिा *'और वह बनिा खून के नहीं जाता, जसिे वह अपने लएि और अज्ञानता में लोगों द्वारा कएि गए पापों के लएि चढ़ाता है*[5879] ।

इस महीने, परमेश्वर के लोगों ने उपवास के द्वारा अपनी आत्मा को नम्र करके और प्रभु को होमबलि चढ़ाकर, वर्ष के दौरान उन्होंने जो पाप कएि थे, उनके लएि प्रायश्चति प्राप्त कयिा[5880] .

इस महीने, राजा सुलैमान द्वारा नरि्मति प्रभु का भव्य मंदरि वधिवित समर्पति कयिा गया, और वाचा का सन्दूक उसमें लाया गया (1 राजा 8:1–66)।

इस महीने, इस्राएल के लोगों के सभी गोत्र त्योहार मनाने के लएि दूर-दूर से यरूशलेम में इकट्ठा हुए, *और* प्रभु की आज्ञा को पूरा कयिा: *'यह तुम्हारे लएि वशि्राम का एक सब्त होगा; तुम अपने प्राणों को दीन करोगे'* (लैव. 23:32)।[5881]

इसी महीने से वर्षों की गनिती की जाती थी, और हर पचासवाँ वर्ष वशिेष होता था। जब इस्राएल के लोग प्रतजि्ञात देश में प्रवेश कएि, तो प्रभु ने आज्ञा दी कि वे पचासवें वर्ष को एक वशिेष तरीके से मनाएँ; और न केवल उन्हें स्वयं इस उत्सव में भाग लेना था, बल्कि उनके सेवकों और पशुओं को भी; यहाँ तक कि वह भूमि भी, जहाँ इस्राएलयिों ने बस्ती बसाई थी, उसे अछूता छोड़ दयिा जाना था: उस पर ना हल जोता जाना था, ना बीज बोया जाना था, और ना ही फसल काटी जानी थी—ना अनाज, ना अंगूर, और ना ही बगीचों के फल इकट्ठे कएि जाने थे; यह सब गरीबों के साथ-साथ जंगली जानवरों और पक्षयिों के भोजन के लएि छोड़ दयिा जाना था। यह मूसा की पुस्तकों में लखिा है: *'अपने सारे देश में तुरही बजाओ और पचासवां वर्ष पवत्रि ठहराओ, और सारे देश में उसके सब नविासयिों के लएि स्वतंत्रता की घोषणा करो; जो अपने आप उग आए उसे बोओ या काटो नहीं, और उसकी अनाड़ी बेलों से अंगूर इकट्ठे न करना, ताकि तुम्हारे लोगों के दरदि्र खाएं, और जंगली जानवर उनके बाद जो कुछ बचे उसे खाएं; अपनी दाख की बारी और अपने जैतून के वृक्ष के साथ भी ऐसा ही करना* (लैव. 25:9–11; नरि्ग. 23:11)। इस पचासवें वर्ष में, ऋण माफ कर दएि जाते थे, दासों को मुक्त कर दयिा जाता था, और प्रत्येक व्यक्ति वशिेष रूप से ध्यान रखता था कि वह कसिी भी पाप से प्रभु को क्रोधति न करे, और न ही अपने पड़ोसी को दुख पहुँचाए। यह पापों से सार्वभौमकि क्षमा और शुद्धि का वर्ष था। प्रभु की आज्ञा से, इस पचास-वर्षीय चक्र को सात वार्षकि चक्रों (यानी सात-सात वर्ष की सात अवधयिों) में वभिाजति कयिा गया था, और हर सातवें वर्ष को सब्बाथ या वशि्राम का वर्ष कहा जाता था। इसके वषिय में, प्रभु ने मूसा के द्वारा यह आज्ञा दी: *'छह*

[5877] पट्टयिाँ – पत्थर की पट्टयिाँ जनि पर स्वयं ईश्वर ने दस आज्ञाएँ अंकति कीं।

[5878] मण्डप (तम्बू) यहूदी लोगों का वह पवत्रि स्थल है जसिे कहीं भी ले जाया जा सकता है। इसे सनिाई पर्वत पर परमेश्वर द्वारा मूसा को दखिाए गए नमूने के अनुसार बनाया गया था (नरि्गमन 25:8–9, 40), और इसे 'भेंट का तम्बू' कहा जाता था, क्योंकि लोग उपासना के लएि वहाँ इकट्ठा होते थे, और 'प्रकट होने का तम्बू' या 'साक्ष्य का तम्बू' इसलएि कहा जाता था, क्योंकि यहीं पर परमेश्वर ने स्वयं को और अपनी इच्छा को लोगों के सामने प्रकट कयिा।

[5879] पवत्रि-स्थल परम पवत्रि स्थान तम्बू का तीसरा, सबसे भीतरी भाग था। यहाँ वाचा का संदूक रखा था, जसिमें व्यवस्था की पट्टयिाँ, मन्ना से भरा एक सुनहरा पात्र (स्टाम्ना), और हारून की लाठी रखी गई थीं। केवल महापुजारी को इस भाग में प्रवेश करने की अनुमति थी, वह भी प्रायश्चति के दनि, जो साल में एक बार होता था; वह एक बलि कि पशु का रक्त लाता और लोगों के पापों का प्रायश्चति करने के लएि उसे वाचा के संदूक पर छड़िकता था (देखें लेवी 16:29–34)। इस पवत्रि अनुष्ठान के अर्थ और महत्व को प्रेरति पौलुस ने अपने इब्रानयिों के नाम पत्र में समझाया है (इब्रानयिों 9:3–7, 8–15, 24–28, 10:1–39)।

[5880] यह 10वें दनि होता था, जसिे प्रायश्चति का दनि कहा जाता था। इस दनि, महापुजारी तम्बू के सामने दो बकरयिाँ पेश करता था; पासे द्वारा, वह उनमें से एक को वध कर पूरे लोगों के पापों के लएि बलदिान के रूप में चढ़ाता था, जबकि दूसरी पर वह लोगों के पापों का इक़रार करता और उसे नरि्जन प्रदेश में भेजने का आदेश देता था (लैव. 23:26–32. तुलना करें इब्रानयिों 11:11–14)।

[5881] यहूदी वर्ष में 12 चंद्र महीने होते थे। अवबि या नसिान का महीना (नहे. 2:1, एस्ट. 3:7), जो हमारे मार्च के महीने के अनुरूप है, पवत्रि वर्ष की शुरुआत का प्रतीक था (नरि्ग. 12:2, 13:4), जबकि तशि्री का महीना, जो सातवां महीना था और हमारे सतिंबर के अनुरूप था, उसे नागरकि वर्ष का पहला महीना माना जाता था। यह पूरी तरह से एक उत्सव का महीना था। पहले दनि, नए वर्ष की शुरुआत, को तुरही का पर्व कहा जाता था (नरि्गमन 23:24); 10वां दनि प्रायश्चति का दनि था; 15वां दनि झोपड़यिों का पर्व था, जसिे यहूदयिों के मरुभूमि में भटकने के दौरान ईश्वर की सुरक्षा की याद में स्थापति कयिा गया था, जब वे तंबुओं या झोपड़यिों में रहते थे (लैव. 23:33–34; गनिती 29:12–39)। इसी महीने में प्रत्येक सातवें, या सबात्तकि, वर्ष और पचासवें, या जूबलिी, वर्ष का पालन शुरू हुआ (लैव. 25:9)। इसलएि, सातवें महीने को 'सबाथों का सबाथ', यानी 'उत्सवों का उत्सव' कहा जाता है।

वर्ष तक तुम अपने खेत में बोवनी करना और अपनी दाख की बारी की छाँट-छँटाई करना, और उनकी उपज इकट्ठी करना; परन्तु सातवें वर्ष में देश के लिये विश्राम का सब्त होगा, यह प्रभु के लिये सब्त होगा; तुम अपने खेत में बोवनी न करना, और अपनी दाख की बारी की छाँट-छँटाई न करना। यदि तुम कहो, "सातवें वर्ष हम क्या खाएँगे, जब हम न बोएँगे और न ही अपने खेतों की उपज इकट्ठा करेंगे?", तो मैं छठे वर्ष में तुम पर अपना आशीर्वाद भेजूँगा, और वह तीन वर्ष की पर्याप्त उपज देगा (लैव. 25:3–4, 20–21)। ये सभी वर्ष, जिनके दौरान प्रभु ने लोगों और भूमि दोनों के लिए एक उत्सवपूर्ण विश्राम स्थापित किया, प्रभु की आज्ञा से ही, सितंबर महीने में शुरू हुए। *'और तुम तुतारी बजाओगे,'* यहोवा ने कहा, *'सातवें महीने में विश्राम के वर्ष का प्रचार करने के लिए'* (लैव्य. 25:9), यानी सितंबर में[5882] , क्योंकि सितंबर, मार्च से गिनती करने पर सातवां महीना है, जो दुनिया की सृष्टि का पहला महीना है।

लेकिन वर्ष 1 सितंबर को न केवल पुराने नियम के कानूनों के अनुसार, बल्कि मूर्तिपूजक इंडिक्शन के अनुसार भी शुरू हुआ। इस इंडिक्शन के संबंध में निम्नलिखित वर्णित है।

जब रोम के सीज़र, ऑगस्टस[5883] , ने मिस्र पर शासन करने वाले एंटनी और क्लियोपेट्रा[5884] पर विजय प्राप्त की, और पूरे ब्रह्मांड का एकमात्र शासक बन गया, तो उसने सभी भूमि से करों के संग्रह को सुविधाजनक बनाने के लिए पंद्रह-वर्षीय इंडिक्शन[5885] की स्थापना की। ऑगस्टस ने इस इंडिक्शन को तीन अवधियों में विभाजित किया, प्रत्येक पांच साल की, ताकि पूरे इंडिक्शन के दौरान, हर पांचवें वर्ष में तीन बार कर एकत्र किए जा सकें। यह कानून मुख्य रूप से साम्राज्य के दूर-दराज के क्षेत्रों के लिए लागू किया गया था, जहाँ से हर साल कर वसूलना मुश्किल था, क्योंकि वसूला गया कर पाँच साल बाद भी राजधानी - रोम - तक मुश्किल से पहुँच पाता था। हर पाँच साल की अवधि को लस्ट्रम (lustrum) कहा जाता था, यानी 'उज्ज्वल', क्योंकि 'सीज़र की चीज़ें सीज़र को दो' (लूका 20:25), इस समय लोग उत्सव मनाते और मोमबत्तियाँ जलाते थे। लोगों को यह कर बोझ नहीं लगता था, क्योंकि कर की वसूली कम और हल्की होती थी, और इसे स्वेच्छा से चुकाया जाता था। हालाँकि, इंडिक्शन (indiction) पंद्रह साल तक इसलिए चला। पहले पाँच-वर्षीय काल में, श्रद्धांजलि लोहे और तांबे में दी जाती थी, जिनका उपयोग तलवारें, भाले, हेलमेट, ढाल, कवच और सभी प्रकार के सैन्य हथियार बनाने के लिए किया जाता था; दूसरे पाँच-वर्षीय काल में, सैनिकों के वेतन का भुगतान करने के लिए श्रद्धांजलि चांदी में एकत्र की जाती थी; जबकि तीसरे पाँच-वर्षीय काल में, मूर्तियों की सजावट के लिए श्रद्धांजलि सोने में रोम लाई जाती थी। पंद्रह साल के इंडिक्शन चक्र के पूरा होने पर, यह फिर से शुरू हो जाता था, और इंडिक्शन का पहला वर्ष नए साल के रूप में नामित किया जाता था। यह रविज 1 सितंबर से शुरू करने के लिए स्थापित किया गया था, क्योंकि इसी दिन एंटनी पर विजय प्राप्त हुई थी और अगस्टस के एकमात्र शासन की घोषणा की गई थी। पवित्र चर्च ने भी 1 सितंबर को इंडिक्शन की शुरुआत का जश्न मनाने की प्रथा अपनाई। यह इसलिए स्थापित किया गया था क्योंकि जिस समय यहूदिया और पूरी दुनिया में नए साल का जश्न मनाया जाता था, उसी समय हमारे प्रभु यीशु मसीह नासरत आए थे[5886] , जहाँ उनका

[5882] सितंबर लैटिन शब्द से आया है जिसका अर्थ 'सातवाँ' है।

[5883] जब ऑक्टेवियन, रोमन सीज़र या सम्राट († ईस्वी 14), पूरे रोमन साम्राज्य के एकमात्र शासक बने, तो सीनेट ने उन्हें अगस्तस की उपाधि प्रदान की। इस शब्द का अर्थ है 'महिमा', 'महान', 'पूजनीय' और 'पवित्र'। यह उपाधि बाद में अन्य रोमन सम्राटों द्वारा भी अपनाई गई।

[5884] ईसा पूर्व 42 से 31 तक, रोमन दुनिया पर तीन जनरलों: ऑक्टेवियन, एंटनी और लेपिडिस का शासन था, जिन्हें ट्रायम्विरिस के रूप में जाना जाता था। उन्होंने सर्वोच्च शक्ति और रोमन प्रांतों को आपस में विभाजित किया; ऑक्टेवियन को पश्चिम, एंटनी को पूर्व और लेपिडिस को अफ्रीका मिला। हालांकि, लेपिडिस को जल्द ही राज्य के मामलों से हटा दिया गया, और फिर ऑक्टेवियन और एंटनी के बीच सत्ता के लिए संघर्ष छिड़ गया। बाद वाला (एंटनी) मिस्र की रानी क्लीओपेट्रा के प्रभाव में पूरी तरह से था, जिसने अपनी असाधारण सुंदरता से उसे मोहित कर लिया था, और उसने अपना समय भोज-विलास में बिताया। ऑक्टेवियन ने इसका फायदा उठाया और एंटनी और क्लीओपात्रा पर युद्ध की घोषणा कर दी। एक्टियम की समुद्री लड़ाई (ईसा पूर्व 31 में), क्लीओपात्रा भाग गई और उसने अपनी जान ले ली। एंटनी, दुनिया पर अपना साम्राज्य खोने के बाद, ने भी ऐसा ही किया। मिस्र को एक रोमन प्रांत बना दिया गया, और ऑक्टेवियन एकमात्र शासक बन गया।

[5885] इंडिक्शन, या इंडिक्शन – एक रोमन शब्द जिसका अर्थ है 'घोषणा', 'नियुक्ति' या 'कर'। इंडिक्शन से तात्पर्य सितंबर महीने के पहले दिन से था; यह नाम आज भी हमारे चर्च कैलेंडर में बना हुआ है और यह चर्च वर्ष की शुरुआत को चिह्नित करने का काम करता है। ईसाई इंडिक्शन में भी 15 वर्ष होते हैं।

[5886] नाज़रेथ का छोटा सा शहर फिलिस्तीन के उत्तरी भाग में स्थित था, जिसे गलील कहा जाता था। इसके निवासी गरीब थे और अन्य यहूदियों द्वारा तुच्छ समझा जाते थे (यूहन्ना 1:46)। फिर भी यह धन्य कुँवारी के मंगेतर, यूसुफ का पैतृक स्थान था; यहीं पर परमेश्वर की माता को शुभसमाचार दिया गया था; यहाँ यीशु मसीह ने अपना बचपन और यौवन बिताया; यहाँ उनका पालन-पोषण हुआ; यहाँ वे अपनी सार्वजनिक सेवकाई की शुरुआत में रहे, और इसी कारण उन्हें नासरी कहा गया। उस समय से, नासरत, जो पहले अज्ञात था, पूरे गलील का सबसे प्रसिद्ध स्थान बन गया। लेकिन 1263 में तुर्कों ने इसे पूरी तरह से खंडहर में बदल दिया। कई शताब्दियों बाद इसे फिर से बनाया गया और यह लंबे समय तक सबसे

पालन-पोषण हुआ था। यह एक सब्बाथ के दिन था, और उस दिन यहूदी सिनेगॉग में इकट्ठा होने और भविष्यद्वक्ताओं की पुस्तकों को पढ़ने में अपना समय बिताने की आदत रखते थे। प्रभु, *'जैसा कि उनकी प्रथा थी'*, सिनेगॉग में भी गए[5887] और शिक्षकों के बीच खड़े हो गए। उन्होंने उन्हें भविष्यद्वक्ता यशायाह की पुस्तक[5888] दी; और उन्होंने पुस्तक खोलकर वह अंश पाया जहाँ लिखा था: 'परमेश्वर का आत्मा मुझ पर है, क्योंकि परमेश्वर ने मुझे गरीबों को सुसमाचार सुनाने के लिए अभिषिक किया है; उन्होंने मुझे टूटे हुए दिल वालों को चंगा करने, बंदियों को स्वतंत्रता और बंधे हुए लोगों को जेल से रिहाई की घोषणा करने, और यहोवा की अनुग्रह की वर्षगांठ की घोषणा करने के लिए भेजा है।' (यशायाह 61:1-2)[5889] । और, जब उन्होंने पुस्तक को बंद करके सहायक को लौटा दी, तो वे यह कहने लगे कि जिसे भविष्यवाणी को उन्होंने पढ़ा था, वह उनमें पूरी हुई है, कि वे ही सच्चे मसीहा हैं[5890] , जिन्हें परमेश्वर पिता ने मानव जाति के उद्धार के लिए और उनके जीवन के नवीनीकरण के लिए भेजा है। *'और सभी ने उसकी गवाही दी, और उसके होठों से निकले अनुग्रह के वचनों पर अचंभित हुए'* (लूका 4:16–22)।

नए वर्ष का पर्व पवित्र पिताओं द्वारा निकिया में प्रथम सार्वत्रिक परिषद[5891] में स्थापित किया गया था। यह ठीक उसी समय था जब सम्राट कॉन्स्टेंटिन महान ने मैक्सेंशियस को हराया था[5892] , दुनिया को धर्मपरायणता के प्रकाश

गरीब गांवों में से एक रहा। आज नासरत की आबादी लगभग 6,000 है, यह ईसाई कांसुलों के विशेष संरक्षण में है, और यह ईसाई दुनिया के सभी कोनों से तीर्थयात्रा का स्थान है।

[5887] एक सिनेगॉग (स्लावोनिक में 'सभा' या 'समागम' का अर्थ) यहूदियों के लिए धार्मिक सभा का स्थान है। कानून के अनुसार, पूजा तम्बू (Tabernacle) में और बाद में यरूशलेम के मंदिर में की जानी थी। हालाँकि, यहूदी निर्वासन के दौरान, यरूशलेम का मंदिर नष्ट हो गया, और यहूदी पूजा के लिए निजी घरों में इकट्ठा होने लगे। इन निजी सभाओं के धीरे-धीरे निश्चित स्थान और समय होने लगे, एक मान्यता प्राप्त पूजा-विधि का क्रम बन गया, और इस प्रकार सिनागॉग (synagogues) का उदय हुआ। यीशु मसीह और प्रेरितों के समय में, जहाँ भी यहूदी रहते थे, वहाँ सिनागॉग व्यापक रूप से फैले हुए थे, और बड़े शहरों में कई सिनागॉग थे। सिनागॉग में सभाएँ सबाथ और पर्व के दिनों में होती थीं।

[5888] सभाघर की सभाओं में, कानून—अर्थात् मूसा की पुस्तकों—और भविष्यद्वक्ताओं—अर्थात् पुराने नियम की भविष्यद्वाणी वाली पुस्तकों—के विशिष्ट अंशों का आमतौर पर पाठ किया जाता था; इन पठनों पर व्याख्यान भी दिए जाते थे, यानी, जो पढ़ा और सुना गया था, उस विषय पर भाषण दिए जाते थे। जो कोई भी ऐसा करना चाहता था, उसे सिनागॉग के प्रमुख (आर्चीसिनेगॉग) और बुजुर्गों की सहमति से पढ़ने और व्याख्या करने का अधिकार था। पढ़ना चाहने वाला कोई भी व्यक्ति अपने इरादे की घोषणा करते हुए खड़ा हो जाता था, और पवित्र पुस्तकों से एक विशिष्ट अंश पढ़ते समय खड़ा ही रहता था। जब प्रभु ने संकेत दिया कि वे पढ़ना और उपदेश देना चाहते हैं, तो ऐसा प्रतीत होता है कि व्यवस्था से पाठ पहले ही समाप्त हो चुका था, और भविष्यद्वक्ताओं से पाठ शुरू होने वाला था।

[5889] मसीहा की ओर से बोलते हुए, भविष्यवक्ता उनके संसार में आने के उद्देश्य का वर्णन करता है – मानवता के जीवन में एक नए युग की शुरुआत करना, उन लोगों के लिए एक धन्य समय जो, विश्वास द्वारा, यीशु मसीह की शिक्षा को स्वीकार करते हैं और उस शिक्षा की महान आज्ञाओं को अपने जीवन में पूरा करते हैं। – 'प्रभु का वर्ष अनुग्रह का वर्ष है' – यहूदियों द्वारा यह नाम ज्यूबिली, या पचासवें वर्ष (ऊपर देखें) को दिया गया था, जो सार्वभौमिक स्वतंत्रता की घोषणा के कारण, एक अत्यंत आनंदमय वर्ष था और जिसे भविष्यवक्ता ने मोक्ष प्राप्त मानवता के लिए मसीह के राज्य के सुखद समय का प्रतीक बनाने के लिए चुना था।

[5890] 'मसीहा' एक हिब्रू शब्द है और इसका अर्थ ग्रीक 'मसीह' के समान ही है – यानी, 'अभिषिक्त' – और यह पवित्र तेल से अभिषेक करने से लिया गया है। इस अभिषेक के माध्यम से, पवित्र आत्मा के वरदान उन लोगों को प्रदान किए गए थे जिन्हें ईश्वर ने एक विशिष्ट सेवकाई के लिए चुना या बुलाया था। राजाओं, भविष्यवक्ताओं और महापुजारियों को 'अभिषिक्त' कहा जाता था। लेकिन यह उपाधि विशेष रूप से यीशु मसीह की है, क्योंकि पवित्र आत्मा के सभी वरदान उन पर उंडेले गए हैं (यशायाह 11:1-2)। उच्चतम स्तर पर, उन पर महायाजक की पवित्रता, जो बुराई से मुक्त है और एक शाश्वत याजकीय पद रखता है (देखें इब्रानियों 7:10), और भविष्यवक्ता की बुद्धि, जिसने उच्चतम स्वर्गीय शिक्षा से दुनिया को प्रबुद्ध किया (देखें लूका 1:79, 2:32; मत्ती 4:16; यूहन्ना 1:4–10, 8:12, 9:5, 12:35–36, 46) और राजा के अधिकार और सामर्थ्य से, जिसके पास स्वर्ग और पृथ्वी की सारी शक्तियाँ हैं और जो सभी चीजों को मानव उद्धार के महान उद्देश्यों की ओर निर्देशित करता है (देखें मत्ती 28:18; लूका 1:33; 1 कुरिन्थियों 15:25–26)।

[5891] पहला सार्वभौमिक परिषद 326 में संत कॉन्स्टेंटिन द ग्रेट (जिनका स्मरण 21 मई को किया जाता है) द्वारा पादरी एरियस और उनके अनुयायियों के खिलाफ बुलाई गई थी, जो इस विधर्मी सिद्धांत का प्रचार करते थे कि यीशु मसीह ईश्वर नहीं हैं। इस परिषद, जिसमें 318 बिशप शामिल थे, ने एरियन संप्रदाय को निंदा किया, पुत्र के परमपिता परमेश्वर के साथ एकसार होने के सिद्धांत की पुष्टि की, और धर्मविश्वास के पहले सात अनुच्छेदों का निर्माण किया, जिसका उपयोग आज भी ऑर्थोडॉक्स चर्च द्वारा किया जाता है। – निकिया – एशिया माइनर का एक शहर, जो कभी समृद्ध और फलता-फूलता था, अब गरीब और कम आबादी वाला है। 1330 में (दूसरी बार) इसे जीतने के बाद, तुर्कों ने इसकी सबसे अच्छी इमारतों को नष्ट कर दिया और चर्चों को मस्जिदों में बदल दिया।

[5892] मैक्सेंटियस एक रोमन सम्राट (306–312) था। उसने ईसाइयों का उत्पीड़न किया और अपनी क्रूरता के लिए कुख्यात था। धैर्य खोने पर, रोमनों ने मदद के लिए कॉन्स्टेंटाइन को बुलाया; क्रूस के उद्धारक चिह्न के अधीन, उसने मैक्सेंटियस की सेनाओं को हराया, जो टिबर नदी के पानी में डूब गया। 313 में, सम्राट कॉन्स्टेंटाइन और लिकिनियस (जो साम्राज्य के पूर्वी भाग पर शासन करते थे) ने एक फरमान जारी किया जिसमें ईसाई धर्म को प्राचीन मूर्तिपूजक धर्म के समकक्ष, राज्य धर्म घोषित किया गया। हालाँकि, लिसिनियस ने जल्द ही ईसाइयों का उत्पीड़न

से प्रबुद्ध कयि, मूर्तपिूजक त्योहारों को समाप्त कयि, ईसाई धर्म को गंभीर उत्पीड़न से मुक्त कयि, और अपने इंडक्शि्न्स की स्थापना की। उस समय, पवत्रि पतिाओं ने इस दनि ईसा मसीह के यहूदी सभा-गृह में आगमन और उनके द्वारा प्रभु के सुखद ग्रीष्मकाल के उपदेश की स्मृतमिें, नए वर्ष के उत्सव को ईसाई स्वतंत्रता की शुरुआत के रूप में स्थापति कयि। तब से, हम भी सतिंबर का पहला दनि मनाते आए हैं। लेकनि यह अब पुराने नयिम का पर्व नहीं है, बल्कि नए अनुग्रह का पर्व है[5893] । क्योंकि इस दनि स्वयं व्यवस्था देने वाले, स्वर्ग से उतरकर और अपने भीतर पति की आत्मा को धारण करके, ने स्वयं को संसार के सामने प्रकट कयि और परमेश्वर की व्यवस्था न तो उंगली से, बल्कि अपनी दव्यि जीभ और मीठे होठों से, और न तो पत्थर की पट्टयिों पर, बल्कि *'मांस की पट्टयिों पर'* (2 कुरन्थियिों 3:3) अंकति की[5894] । अपनी कलीसयिा की स्थापना करते हुए, जसिकी पुरानी वाचा का नविास-स्थान केवल एक पूर्व-छाया था[5895] , ने हमारे पापों के लिए एक बलदिान के रूप में स्वयं को परमेश्वर पति को अर्पति कयि—एक ऐसा बलदिान जसिमें लहू शामलि था। महान महायाजक स्वयं, जो स्वर्गों से होकर गए हैं (इब्रानयिों 4:14), ने हमारे लिए बहाए गए अपने लहू से हमें हमारे पापों से शुद्ध करके, हमें पवत्रि मंदरि बनाया है, प्रेरति के शब्दों में: *'परमेश्वर का मंदरि पवत्रि है, और तुम वही मंदरि हो'* (1 कुरन्थियिों 3:17)[5896] .

इन सब के लिए प्रभु का धन्यवाद करते हुए, हम आनन्द के साथ प्रभु का पर्व मनाते हैं: उससे अनेक अगणति आशीषें प्राप्त करके, हम स्वयं भी उसे प्रसन्न करने के लिए शीघ्रता करें। क्योंकि हम उस उद्घोषणा का उत्सव मना रहे हैं, जो रोम के सम्राटों द्वारा स्थापति नहीं, बल्कि महमिा के स्वर्गीय राजा - मसीह द्वारा अनुमोदति है। हालाँकि मसीह की की घोषणा उनके पवत्रि आज्ञाओं से मलिकर बनी है, जनिका हमें पालन और उन्हें पूरा करना चाहिए। हमारे राजा मसीह हमसे न तो कांस्य, न लोहा, न चाँदी और न सोना माँगते हैं, जैसा कि दाऊद ने एक बार कहा था: *'हे प्रभु, तू मेरा प्रभु है; मेरी संपत्ति तुझे किसी काम की नहीं'* (भजन संहति 15:2)[5897] । लेकनि लोहे और तांबे के बजाय, प्रभु हमसे एक दृढ़ और अटूट सद्गुण की मांग करते हैं: ईश्वर में ऑर्थोडॉक्स वश्विास। क्योंकि हमारा वश्विास पवत्रि शहीदों के रक्त

करना शुरू कर दयि। तब कॉन्स्टेंटाइन ने अपनी सेनाएँ लसिनियिस के खलिाफ मोड़ दीं और, सतिंबर 323 में अंततः उसे हराकर, रोमन साम्राज्य का एकमात्र शासक बन गया। यह वही घटना थी जसिने सतिंबर में नए साल का जश्न स्थापति करने के लिए तत्काल प्रेरणा प्रदान की।

[5893] पवत्रि शास्त्र में 'अनुग्रह' शब्द बहुत बार आता है और इसका उपयोग वभिन्नि अर्थों (कृपा, दया, प्रेम) में कयि जाता है, लेकनि वशिेष रूप से यह परमेश्वर की उद्धार करने वाली शक्ति को दर्शाता है, जो यीशु मसीह के योग्यों के द्वारा हम पर प्रदान की जाती है, हमें आध्यात्मकि जीवन में पुनर्जीवति करती है और हमारे पवत्रिकिरण और उद्धार को साकार करती है। इसे 'अनुग्रह' कहा जाता है क्योंकि यह स्वर्गीय पति की ओर से एक अनुग्रहपूर्ण उपहार है। (देखें इफसियिों 2:8)। – पुराने नयिम के कानून और अनुग्रह के बीच के वरिोधाभास को संत पौलुस प्रेरति ने रोमयिों, गलातयिों और इब्रानयिों के नाम अपनी पत्रयिों में समझाया है। मुख्य अंतर यह है: मूसा की व्यवस्था ने ऐसे आज्ञाओं का वधिान कयि था जन्हिें पूरी तरह से पूरा करना असंभव था और उसने अपराधी पर शाप लगाया, हालाँकि, उसने उसे व्यवस्था के अनुसार धार्मकिता प्राप्त करने के लिए पर्याप्त शक्ति नहीं दी (गला. 3:10); मसीह की अनुग्रह मनुष्य से वधिवित अभशिाप को दूर करती है, उन्हें परमेश्वर के सामने धर्मी ठहराती है, और उन्हें उससे मलिाती है (गलातयिों 3:13; रोमयिों 5:9–10), पापों को क्षमा करता है और शुद्ध करता है, और नए नयिम के कानून को इस तरह पूरा करने की शक्ति देता है कि यह एक अच्छा जुआ और एक हल्का बोझ प्रतीत होता है (1 यूहन्ना 1:9; मत्ती 11:30)।

[5894] देखिए यहेजकेल 11 और इब्रानयिों 8:10।

[5895] मॉस्को के मेट्रोपॉलटिन, फलिारेट द्वारा समझाए अनुसार, तम्बू चर्च का प्रतनिधित्वि करता था, जो सामान्य रूप से मानव जाति के बीच और वशिेष रूप से प्रत्येक वश्विासी की आत्मा में धीरे-धीरे स्थापति हो रहा था। सब लोगों के लिए खुला आँगन बाहरी चर्च और उसमें सार्वभौमकि आमंत्रण का प्रतीक था, जबकि वेदी और जलपात्र रक्त और जल के ईसाई संस्कारों का पूर्वाभास देते थे, जो उसमें प्रवेश करते हैं और उसके साथ एकता को सील करते हैं। पुरोहतिों के लिए आरक्षति पवत्रि स्थान, आंतरकि चर्च का प्रतनिधित्वि करता था, जसिमें मसीह सच्चा प्रकाश और जीवन की रोटी दोनों हैं, और वह वेदी जो वश्विासयिों द्वारा उस पर अर्पति प्रार्थनाओं और धन्यवाद को परमेश्वर के पास ले जाती है। परम पवत्रि स्थान, जसिमें केवल महापुजारी ही प्रवेश कर सकता था, मसीहा, यानी ईश्वर-मानव, के सहिासन और प्रभुत्व का प्रतीक था, जसिकी यहाँ कानून की पट्टयिों, हारून की छड़ी से नकिले मन्ना द्वारा पूर्व-छवि प्रस्तुत की गई थी, और जो हमारे उद्धार, औचत्यि, शुद्धकिरण और पवत्रिता के लिए कार्य करता है। हमारी आत्मा के संबंध में, जसिके तीन भाग हैं, तम्बू ने परमेश्वर के प्रति हमारी नकिटता के तीन चरणों को दर्शाया: बाहरी शुद्धकिरण, आंतरकि प्रबोधन और मसीह के साथ रहस्यमय मलिन।

[5896] देखें 1 कुरन्थियिों 6:19। प्रेरति कहते हैं कि मसीही संपूर्ण पवत्रि त्रमिूर्ति के साथ आध्यात्मकि और रहस्यमय एकता में हैं, क्योंकि परमेश्वर पति, जो अपनी सभी प्राणयिों के प्रभु हैं, ने अपने एकलौते पुत्र को संसार में भेजा, ताकि वह अपने बहुमूल्य लहू से, पापयिों को शैतान के बंधन से छुड़ा सकें, जबकि पवत्रि आत्मा, घर का नर्मिाता होने के नाते, भटकते हुए दासों को परमेश्वर के घर में ले जाता है, उन्हें मसीह के साथ एक करता है, और पवत्रि संस्कारों में प्रदान कए गए अपने अनुग्रह-भरे उपहारों के माध्यम से, प्रत्येक आत्मा का नर्मिाण आत्मा और शरीर की सभी शक्तयिों के साथ परमेश्वर की सेवा के लिए एक आध्यात्मकि नविास स्थान के रूप में करता है।

[5897] अर्थात्, हे प्रभु, आपको कसिी चीज़ की कमी नहीं है; यदि कोई अच्छा करता है, तो उसे स्वयं उससे लाभ होता है; परन्तु आपको उससे कुछ भी प्राप्त नहीं होता।

पर आधारति है, जनि्हें लोहे और तांबे के हथयिारों से चीर-फाड़ दयिा गया था, जनिमें से प्रत्येक के बारे में कहा जा सकता है कि *'उसकी आत्मा लोहे में चली गई'* (भजन संहति 104:18)। स्वर्गीय राजा और हमारे ईश्वर ने हमें एक धर्मी और ईश्वरभक्त हृदय से उन पर वशि्वास करने की आज्ञा दी है: *'क्योंकि हृदय से वशि्वास करके धार्मकि ठहराया जाता है'* (रोमयिों 10:10)[5898] । आइए हम भी इस वशि्वास से शत्रु को परास्त करें, जैसे लोहे के हथयिार और कांसे की ढाल से। आइए हम अपने पवत्रि पूर्वजों का अनुसरण करें, जनि्होंने *'वशि्वास के द्वारा राज्यों पर वजिय प्राप्त की, न्याय का प्रबंध कयिा, प्रतज्ञिाएँ प्राप्त कीं, सहिों के मुँह बंद कए, आग की शक्ति को बुझाया, तलवार की धार से बचाए गए, दुर्बलता में बलवान हुए, युद्ध में पराक्रमी बने, और वदिेशी सेनाओं को भागने पर मजबूर कयिा'* (इब्रानयिों 11:33-34)[5899]

चाँदी के बजाय, हमारे राजा मसीह हमसे एक दूसरा गुण चाहते हैं: ईश्वर में अटूट आशा। यह गुण, चाँदी से भी अधकि, एक व्यक्ति के लिए एक समृद्ध जीवन सुनश्चिति करता है। यदि कोई व्यक्ति जसिने चाँदी में बहुत बड़ा धन इकट्ठा कर लयिा है, इस बात का आश्वस्त है कि उसे सभी सांसारकि आशीर्वाद प्राप्त होंगे, और, अपनी संपत्ति पर भरोसा करके, अपने दनि आनंद-मस्ती में बताता है; तो और भी अधकि वह धन्य होगा जो परमेश्वर में अटूट आशा से धनी है—और जसिने अपना सारा भरोसा केवल उसी पर रखा है—उसे वह सब कुछ प्राप्त होगा जसिकी वह इच्छा करता है, और वह आनंद से जएिगा, संसार, शरीर और शैतान से उत्पन्न होने वाली सभी वपित्तयिों और दुःखों की परवाह कए बनिा, और आने वाले जीवन में मलिने वाले पुरस्कार के लिए यह सब आनंदपूर्वक सहन करेगा। अक्सर चाँदी अपने स्वामी को धोखा देती है और, अचानक गायब हो कर, उसे गरीबी में छोड़ देती है; और जसिने अपने जीवन के बाकी दनिों के लिए हर चीज़ में प्रचुरता देखने की आशा की थी, वह अचानक अपनी रोज़ी से वंचति हो जाता है। – परन्तु जो यहोवा पर भरोसा रखता है, *'सयिोन पर्वत के समान, जो कभी नहीं हलिता'* (भजन संहति 124:1)[5900] *'लज्जति नहीं होगा, क्योंकि परमेश्वर का प्रेम हमारे हृदय में डाल दयिा गया है'* (रोमयिों 5:5)। यह ठीक यही अमूर्त चांदी है जो प्रभु हमसे चाहते हैं, और वह हमें आज्ञा देते हैं कि हम अपनी आशा क्षणभंगुर धन-संपत्ति में न रखें, *'बल्कि जीवते परमेश्वर में रखें'* (1 तीमुथयिुस 6:17), *'प्रभु का वचन शुद्ध है, चाँदी की तरह परष्कृित'* (भजन संहति 11:7)[5901] । उन्होंने हमें अपने राज्य में अकथनीय अनंत आशीर्वादों का वशि्वासयोग्य रूप से वादा कयिा है, ताकि हम अपने होठों से उस महान भलाई का इकरार कर सकें जो उन्होंने हम पर दखिाई है—जसि पर हमने अपने हृदय में वशि्वास कयिा है—*'और अपने होठों से हम उद्धार का इकरार करते हैं'* (रोमयिों 10:10)[5902] । अतः हम मसीह के अच्छे सपिाहयिों के रूप में[5903] , अपने इनाम की आशा से महान पराक्रम करने के लिए स्वयं को प्रोत्साहति करें। क्योंकि पुरस्कार की आशा योद्धा को युद्ध के लिए प्रेरति करती है, जैसा कि सेंट जॉन ऑफ़ डेमास्कस शहीदों के बारे में कहते हैं: 'हे प्रभु, तेरे शहीदों ने वशि्वास में दृढ़ रहकर और आशा से स्वयं को मज़बूत करके, अपने शत्रुओं के अत्याचार पर वजिय प्राप्त की और अपने मुकुट प्राप्त कए'[5904] ।

सोने के बजाय, हमारे राजा मसीह हमसे सबसे कीमती सद्गुणों में से एक की मांग करते हैं: ईश्वर और हमारे पड़ोसयिों के प्रति सच्चा प्रेम। इसकी महान महत्वता के कारण, चर्च के शक्षिकों द्वारा प्रेम को हमेशा सोने के रूप में प्रस्तुत कयिा जाता है; क्योंकि जैसे चांदी, तांबे और लोहे से सोना अधकि कीमती होता है, वैसे ही प्रेम आशा और वशि्वास

[5898] अर्थात्, उद्धारकर्ता मसीह के द्वारा धर्मी ठहराए जाने की प्राप्ति, उन पर दृढ़, हार्दकि वशि्वास और इस दृढ़ वशि्वास के प्रति पूर्ण समर्पण के द्वारा होती है कि वे हमारे उद्धार के लिए पृथ्वी पर आए और कब्र से जीवन-दायक रूप से पुनर्जीवति हुए।

[5899] हमें धैर्य और वशि्वास के लिए प्रोत्साहति करते हुए, प्रेरति पौलुस ने समझाया कि एक ईसाई के लिए वशि्वास इतना आवश्यक क्यों है; यह आशा की गई बात को वास्तवकिता बनाता है और अदृश्य को दृश्यमान बनाता है; इसने महान धर्मी पुरुषों को उत्पन्न कयिा है और उनमें कार्य कयिा है, जसिसे वे खतरे के सामने अजेय बने और उन्हें दुख सहने के लिए प्रेरति कयिा है। वशिेष रूप से, शब्द: 'उन्होंने सहिों के मुँह बंद कर दए' का संदर्भ पैगंबर दानयिेल से है (देखें दानयिेल 6:1–28); 'उन्होंने आग की शक्ति को बुझा दयिा' – बेबीलोन की भट्टी में तीन युवकों से (दानयिेल 3:1–100); 'वे तलवार की धार से बच नकिले' – दाऊद और पैगंबर एलयि्याह; 'वे अपनी दुर्बलता में बलवान हुए' – अय्यूब और हजिकयि्याह के लिए (2 राजा 20:1–21)।

[5900] ज़यिोन – वह पर्वत जसि पर यरूशलेम बना है।

[5901] परमेश्वर के वचन शुद्ध हैं, झूठ या धोखे के कसिी भी मश्रिण से रहति, आग में परष्कृित शुद्ध चांदी के समान।

[5902] एक ईसाई के लिए, अपनी मुक्ति के लिए, न केवल वशि्वास रखना आवश्यक है, बल्कि उसे व्यक्त करना भी आवश्यक है, जो जब वशि्वास प्रचुर होता है, तो स्वाभावकि रूप से प्रवाहति होता है (घोषति कयिा जाता है)।

[5903] मसीह के एक सैनकि और उसके कवच का चत्रिण (इफसियिों 6:10–18)।

[5904] बुधवार की संध्या के लिए तीसरे स्वर के भजन।

से श्रेष्ठ है। शास्त्र में कहा गया है, *'अब ये तीनों स्थिर रहते हैं: विश्वास, आशा और प्रेम; पर इन सब में महानतम प्रेम है'* (1 कुरिन्थियों 13:13)[5905] । यह ठीक यही 'सोना' है जो प्रभु हमसे चाहते हैं, और वह हमें कपट के बिना उनसे प्रार्थना करने की आज्ञा देते हैं—केवल अपने हृदय में विश्वास करके और अपने होठों से स्वीकार करके ही नहीं, बल्कि अपने कर्मों में इस प्रेम को प्रदर्शित करके। हमें उनके लिए अपनी आत्मा तक बलिदान करने और हमारे प्रति उनके दिव्य प्रेम के लिए मृत्यु को स्वीकार करने के लिए तैयार रहना चाहिए। इसके अलावा, हमें अपने पड़ोसियों से प्रेम करना चाहिए, जैसा कि मसीह के प्रिय शिष्य यूहन्ना द थियोलोजियन सिखाते हैं। उन्होंने कहा, *'मेरे बच्चों, आइए हम केवल वचन या बातों में ही नहीं, बल्कि कर्म और सत्य में प्रेम करें'* (1 यूहन्ना 3:18)[5906] । ऐसे प्रेम को हमारे ईश्वर मसीह स्वयं एक आभूषण के रूप में स्वीकार करते हैं, जो मनुष्यों के पुत्रों से अधिक सुंदर हैं, जैसा कि स्वयं ईश्वर की बुद्धि कहती है: 'उसने स्वयं को सजाया है और प्रभु और मनुष्यों के सामने सुंदर हो गई है; यह भाइयों के बीच सामंजस्य और पड़ोसियों के बीच प्रेम है' (सिरिकस 25:1–2)[5907] ।

यह वह ईसाई इंडिक्शन है जिसे ऑर्थोडॉक्स चर्च अब मनाती है, प्राचीन मूर्तिपूजक इंडिक्शन के स्थान पर, *'अपने पुराने स्व को उसके कर्मों सहित उतारकर और नए स्व को पहनकर, जो अपने सृष्टा की प्रतिमा में नया किया जा रहा है'* (कुलु. 3:9–10)। इसलिए आइए हम नए साल का उत्सव मनाएँ जैसा कि प्रेरित हमें सलाह देते हैं: आइए हम जीवन की नूतनता में चलें, ताकि हम *'आत्मा की नूतनता* में सेवा करें, *और न कि पुरानी अक्षरता में'* (रोमियों 7:6)[5908] । आइए हम प्रभु हमारे परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करके इंडिक्शन का उत्सव मनाएँ, जो मूसा के द्वारा दी गई हैं, जिनकी पुस्तकों में हम अब पढ़ते हैं: *'यदि तुम मेरी आज्ञाओं पर चलो, और मेरी आज्ञाओं का पालन करो और उन्हें पूरा करो: तब मैं तुम्हें समय पर वर्षा दूँगा, और भूमि अपनी उपज देगी, और मैं तुम्हारे देश में शान्ति दूँगा, और तुम अपने शत्रुओं को निकाल भगाओगे, और मैं तुम पर अनुग्रह की दृष्टि रखूँगा और तुम्हें आशीष दूँगा, और मेरी आत्मा तुम से घृणा न करेगी, और मैं तुम्हारे बीच में चलूँगा, और मैं तुम्हारा परमेश्वर होऊँगा, और तुम मेरी प्रजा होओगे'* (लैव. 26:3–4, 6–7, 11, 12)[5909] .

इंडिक्शन का ट्रॉपारियन, स्वर 2:

हे सर्वसृष्टि के स्रष्टा, जिन्होंने ऋतुओं और वर्षों को अपनी शक्ति के अधीन कर रखा है, हे प्रभु, अपनी दया से ग्रीष्मकाल के मुकुट को आशीषित करें, सम्राट को शांति में सुरक्षित रखें, और परमेश्वर की माता की प्रार्थनाओं द्वारा अपने नगर को बचाएँ, और हमें बचाएँ।

[5905] प्रेरित प्रेम को उस सद्गुण के रूप में प्राथमिकता देते हैं जो अपने भीतर विश्वास की जड़ और आशा के फल दोनों को समाहित करता है; फिर भी, विश्वास और आशा को इसके साथ रखकर, वे उनकी महान महत्ता को भी प्रदर्शित करते हैं।

[5906] प्रेरित नकली प्रेम, केवल शब्दों में व्यक्त होने वाले प्रेम की आज्ञा नहीं देते, बल्कि एक शुद्ध और सच्चे प्रेम की आज्ञा देते हैं, जो स्वयं कर्मों द्वारा प्रदर्शित होता है।

[5907] पवित्र शास्त्र में प्रयुक्त 'ज्ञान' शब्द का अर्थ बहुत व्यापक है और कभी-कभी यह स्वयं मसीह की ओर संकेत करता है, जो परमेश्वर का पूर्व-शाश्वत और सदा-विद्यमान वचन है (देखें नीतिवचन 8:1–22, 36; और 1 कुरिन्थियों 1:24, 30 आदि)।

[5908] पुरानी वाचा का विधान, एक ऐसी चिट्ठी के रूप में जो किसी भी आन्तरिक शक्ति से रहित है, केवल अपने नियमों से मनुष्य को बाँधता है, परन्तु उसे उन्हें पूरा करने की शक्ति नहीं देता; परन्तु अब जब जीवन का आत्मा प्रकट हो चुका है, तो हमें इस जीवन के नए आत्मा के अनुसार परमेश्वर की सेवा करनी चाहिए, और परमेश्वर की सहायता की आशा के साथ स्वतंत्रता और आनन्द से सेवा करनी चाहिए।

[5909] पवित्र धर्मग्रंथ के ये वचन इंडिक्शन के दिन दिव्य सेवा के दौरान तीन निर्धारित दृष्टान्तों में से एक में पढ़े जाते हैं। यशायाह 61:1–9 – एक भविष्यवाणी जो मसीह यीशु को अभिषिक्त, शिक्षक, उद्धारकर्ता और पृथ्वी पर पीड़ित सभी लोगों के पुनर्स्थापक के रूप में बताती है; राष्ट्रों के बीच उनकी कलीसिया के प्रसार के बारे में; और इसके सदस्यों के धन्य होने और महिमा के बारे में। ठीक यही भविष्यवाणी, जैसा कि हमने ऊपर देखा है, जिसे उद्धारकर्ता ने स्वयं नासरत की सभा-गृह में पढ़ा था। – दूसरी रीडिंग (लेवी 26:3–12, 14–17, 19–20, 22, 33, 40–41) में प्रभु के उन लोगों के प्रति वचन हैं जो उसकी आज्ञाओं का पालन करते हैं और उन लोगों के प्रति उसकी चेतावनियाँ हैं जो उन्हें तोड़ते हैं; इन आज्ञाओं का उत्साही पालन पृथ्वी पर समृद्धि के लिए मुख्य शर्त है, जिसकी हम आमतौर पर नए साल की शुरुआत में अपने और अपने पड़ोसियों के लिए कामना करते हैं। – तीसरी पैरिया (ज्ञान 4:7–25 से) संत सिमियन द स्टाइलाइट की स्मृति से संबंधित है, जिन्होंने अपने पूरे जीवन में, सच्ची बुद्धि के पाठों को मूर्त रूप दिया और भक्ति की विजय का प्रदर्शन किया, जैसा कि ज्ञान की पुस्तक में प्रशंसित है। – 8वीं शताब्दी में, दमास्कस के संत जॉन ने 1 सितंबर के लिए कई भजन रचे।

कॉन्टाकयिन, स्वर 2:

हे मसीह, उच्चतम पर वास करने वाले राजा, दृश्य और अदृश्य सभी वस्तुओं के सृष्टकिर्ता और रचयति, जन्हिोंने दनि और रात, ऋतुएँ और वर्ष बनाए हैं, अब ग्रीष्मकाल के मुकुट को आशीर्वाद दें; हे परम दयालु, ऑर्थोडॉक्स सम्राट, और अपने नगर तथा लोगों को संरक्षति कर शांतमिें रखें।

हमारे पूजनीय और ईश्वर-वाहक पति समियिन द स्टाइलाइट का जीवन

1 सतिंबर को स्मरण कयिा जाता है

कैपाडोसयिा की भूममिें[5910] , ससिान गाँव में, सुसोटयिन और मार्था नामक ईसाई रहते थे। ईश्वर ने उनके ववािह को एक पुत्र के जन्म से धन्य कयिा, जसिका उन्होंने सकिीमोन नाम रखा और ईसाई रीतरिवािज के अनुसार, उसे बपतस्मिा के जल में स्नान कराया[5911] । इस लड़के का पालन-पोषण वद्वितापूर्ण शक्षिा में नहीं, बल्कि सादगी और नम्रता में हुआ; फरि भी, ईश्वर की बुद्धि अक्सर साधारण लोगों में समाहति होती है और उन्हें अपना साधन चुनती है, ताकि इस युग की बुद्धि को लज्जति कयिा जा सके (1 कुरन्थियिों 15:21)। वचन के झुंड का भावी चरवाहा[5912] जब सिमिओन तेरह वर्ष का हुआ, तो उसने अपने पति के भेड़ों के झुंड की देखभाल करनी शुरू कर दी। याकूब, मूसा और दाऊद की तरह, जन्हिोंने भी भेड़ों की देखभाल की और जन्हिें दव्यि प्रकटकिरण प्राप्त हुए, सिमिओन को भी परमेश्वर ने बुलाया। एक दनि, सर्दयिों के दौरान, बहुत अधकि बर्फबारी होने के कारण भेड़ों को कई दनिों से चरागाह में नहीं ले जाया गया था[5913] । अपने कर्तव्यों से मुक्त होकर, वह धन्य युवक रववािर को अपने पति और माता के साथ चर्च गया। शमिोन ने चर्च में गाए और पढ़े जा रहे भजनों को ध्यान से सुना, और पवत्रि सुसमाचार सुना, जसिमें गरीबों, शोक करने वालों, नम्र लोगों और हृदय से पवत्रि लोगों को धन्य कहा गया था[5914] । उसने अपने बगल में खड़े एक धर्मपरायण वृद्ध से इन शब्दों का अर्थ पूछा। ईश्वर की आत्मा द्वारा नर्दिेशति होकर, बुजुर्ग ने सिमिओन को समझाना शुरू कयिा और उसे वस्तिार से उपदेश दयिा, उसे आध्यात्मकि गरीबी, पवत्रिता, ईश्वर के प्रतपि्रेम और एक सदाचारी जीवन के मार्ग का मार्गदर्शन करते हुए। वरष्ठि की शक्षिाओं के शुभ बीज उपजाऊ भूमपि गरि: क्योंकि तुरंत ही सिमिओन की आत्मा में परमेश्वर के लिए एक तीव्र लालसा उत्पन्न हुई, और उसके भीतर उनकी ओर ले जाने वाले संकीर्ण मार्ग पर चलने की एक दृढ़ इच्छा पनपी (लूका 13:24; मत्ती 7:14)। उसने अपने हृदय में संकल्प लयिा कि वह सब कुछ तुरंत त्याग देगा और केवल उसी के लिए प्रयासरत रहेगा जसिकी वह इच्छा करता था। सम्माननीय वृद्ध के सामने सरि झुकाकर और उनकी उपयोगी शक्षिा के लिए धन्यवाद देकर, सिमिओन ने उनसे कहा:

'अब आप मेरे लिए एक पति और एक माता, सत्कर्मों के शक्षिक और मेरे उद्धार के मार्गदर्शक बन गए हैं।'

तुरंत बाद, सिमिओन चर्च से नकिल गए और घर जाने के बजाय, प्रार्थना के लिए उपयुक्त एक स्थान पर चले गए। वहाँ उन्होंने खुद को क्रूस के आकार में जमीन पर लटिा दयिा[5915] और रोते हुए प्रभु से उद्धार का मार्ग दखिाने के लिए प्रार्थना की। वे वहाँ लंबे समय तक प्रार्थना करते रहे; अंत में, वे सो गए और सोते समय उन्हें एक दर्शन हुआ।

[5910] कैपाडोसयिा – एशयिा माइनर का एक क्षेत्र। कैपाडोसयिा पहले एक स्वतंत्र राज्य था। ईसा पूर्व 363 से 370 तक, यह पहले फारसी शासन और फरि मैसेडोनयिाई शासन के अधीन था। इसके बाद, ईसा के 16वें वर्ष तक, इसके फरि से अपने राजा थे। वर्ष 17 में, सम्राट टबिेरयिस के अधीन, इसे पोंटस और लघु आर्मेनयिा के साथ मलिाकर एक रोमन प्रांत बना दयिा गया। 11वीं शताब्दी के अंत (1074) में, कैपाडोसयिा तुर्की के शासन में आ गया और तब से उनके नयिंत्रण में बना हुआ है। सेंट समियिन के समय में, यहाँ ईसाई धर्म का खूब प्रचार-प्रसार हुआ। चर्च के महान शक्षिक—नाज़यिान्ज़स के संत ग्रेगरी, उनके मत्रि महान संत बेसलि, और संत बेसलि के भाई नस्सिा के संत ग्रेगरी—सभी काप्पाडोसयिा के मूल नविासी थे।

[5911] अर्थात्, उन्हें पवत्रि बपतस्मिा का संस्कार दयिा गया था, जसिे पवत्रि शास्त्र में 'स्नान' कहा गया है (देखें तीतुस 3:5; इफसियिों 5:26)।

[5912] वास्तव में, संत समियिोन वचन के झुंड के चरवाहे नहीं थे—अर्थात्, उन्होंने पुरोहति का पद नहीं संभाला—और उन्हें ऐसा इसलिए कहा जाता है क्योंकि, अपने जीवन और शक्षिा (प्रवचनों) के माध्यम से, उन्होंने लोगों को मोक्ष की ओर नर्दिेशति कयिा।

[5913] पूर्व में, पशुओं को आज भी साल भर चराया जाता है और उन्हें केवल भारी बर्फबारी और तूफानों के दौरान घर के अंदर रखा जाता है, जब वे वशिेष बाड़ों में रहते हैं।

[5914] सुसमाचार की धन्यवादतिाएँ सुसमाचारों में पाई जाती हैं: मत्ती 5:3–12 और लूका 6:20–23।

[5915] प्राचीन ईसाई प्रार्थना के दौरान घुटनों के बल जमीन पर गरि पड़ते थे, और क्रूस का आकार बनाते थे, अर्थात् अपनी बाहों को बगल में फैला लेते थे; यह उनके सूली पर चढ़ाए गए प्रभु में वशि्वास और मानव पापीपन के प्रतजिागरूकता को व्यक्त करता था।

उन्होंने सपना देखा कि वह किसी तरह की इमारत के लिए एक खाई खोद रहे थे। और फिर उन्होंने एक आवाज़ सुनी, जो कह रही थी, 'और गहरा खोदो!' उन्होंने और गहरा खोदना शुरू कर दिया; फिर, यह सोचकर कि इतना काफी है[5916] , वह रुक गए, लेकिन फिर से उन्होंने उस आवाज़ को यह आदेश देते हुए सुना कि वह और भी गहरा खोदें। उसने फिर से खोदना शुरू किया, और जब वह एक बार फिर रुका, तो तीसरी बार भी वही आवाज़ उसे उसी काम को करने के लिए प्रेरित कर रही थी। अंत में, उसने सुना:

'रुक जाओ। अब, यदि तुम कोई ढाँचा बनाना चाहते हो, तो उसे बनाओ, लेकिन परिश्रम से काम करो, क्योंकि परिश्रम के बिना तुम कुछ भी हासिल नहीं कर पाओगे।'

यह अद्भुत दृष्टि स्वयं सिमीओन में सच हुई। अपनी गहरी विनम्रता में, उन्होंने अपने और दूसरों के कल्याण के लिए ऐसी नींव रखी कि उनके सद्गुण और कर्म मानवीय स्वभाव से परे प्रतीत हुए[5917] ।

[5918]इस दृष्टि के बाद, सिमियोन उठे और अपने देश के एक मठ की ओर चल पड़े। इस मठ के मठाध्यक्ष धन्य टिमोथी थे। सिमियोन मठ के द्वार के सामने जमीन पर गिर पड़े और सात दिनों तक भूखे-प्यासे वहीं पड़े रहे। आठवें दिन, मठाध्यक्ष मठ से बाहर आए और उन्होंने सिमीओन से पूछना शुरू किया: वह कहाँ से आया है, कहाँ जा रहा है, उसका नाम क्या है, क्या उसने कोई बुराई की है, और क्या वह अपने मालिकों से भागकर आया है। सिमीओन ने मठाध्यक्ष के पैरों पर गिरकर रोते हुए कहा:

'नहीं, पिताजी, मैं उन लोगों में से नहीं हूँ; मैंने किसी को कोई नुकसान नहीं पहुँचाया है, परन्तु मैं परमेश्वर की पूरी आत्मा से सेवा करना चाहता हूँ। मुझ पापी पर दया करें: मुझे आज्ञा दें कि मैं मठ में प्रवेश करूँ और सभी का सेवक बनूँ।'

उसमें ईश्वर की पुकार को पहचानकर, मठाध्यक्ष ने उसका हाथ पकड़कर उसे मठ में ले गए और भाइयों से कहा:

'उसे मठ के जीवन का तरीका और मठ के नियम व विधान सिखाओ।'

मठ में बस जाने के बाद, सिमोन ने बिना किसी सवाल के सभी की आज्ञा मानी और उनकी सेवा की। कुछ ही समय में, वह पूरा भजन संहिता (Psalter) कंठस्थ कर गया। यद्यपि उसकी आयु केवल अठारह वर्ष थी, उसने पहले ही मठीय संन्यास की शपथ ले ली थी और जल्द ही, अपने कठोर जीवन के कारण, वह उस मठ के सभी संन्यासियों से श्रेष्ठ हो गया। जहाँ कुछ भाई दिन में केवल एक बार, शाम को भोजन करते थे, और अन्य हर तीसरे दिन, वहीं सिमोन स्वयं पूरे सप्ताह तक बिना भोजन के रहते थे।

सिमियोन के माता-पिता ने दो साल तक उसकी तलाश की लेकिन उसे ढूंढ नहीं सके, क्योंकि ईश्वर ने उसे छिपा दिया था। वे अपने बेटे के लिए बहुत रोए और इतना शोक मनाया कि उसके पिता दुख से मर गए। हालाँकि, सिमियोन ने ईश्वर को अपना पिता पाकर, अपनी युवावस्था से ही अपना पूरा जीवन उसी को समर्पित कर दिया।

लावरा[5919] में रहते हुए, धन्य सिमोन एक बार पानी भरने के लिए कुएँ पर गए। उन्होंने डुबकी से रस्सी[5920] – जो खजूर की टहनियों से बुनी हुई एक बहुत सख्त रस्सी थी[5921] – निकाली और उसे अपनी नग्न देह पर, अपनी जाँघों से लेकर गर्दन तक, इतनी कसकर लपेट लिया कि रस्सी उसके मांस में धँस गई। दस दिन बीत गए, और उसका शरीर फोड़ों से सड़ने लगा, और इन फोड़ों में कीड़ों की भरमार हो गई। भाइयों ने एबट से शिकायत करनी शुरू कर दी:

'तुम इस आदमी को कहाँ से लाए हो? इसे सहना असंभव है: इससे बदबू आती है। कोई भी इसके पास नहीं खड़ा हो सकता। जब यह चलता है, तो इससे कीड़े गिरते हैं: इसका बिस्तर भी कीड़ों से भरा है।'

[5916] यानी, उसने ठोस (मुख्यभूमि) जमीन तक खोदा था।

[5917] धन्य थियोडोरेट, साइरस के बिशप, जो सेंट सिमियन के समय में रहते थे, ने जब वह स्तंभ पर थे तो व्यक्तिगत रूप से उनसे मुलाकात की। वे लिखते हैं: 'यद्यपि मैं उनके सभी कर्मों की गवाही दे सकता हूँ, फिर भी मैं विवरण शुरू करने से डरता हूँ, कहीं वे भावी पीढ़ियों को काल्पनिक और अविश्वसनीय न लगें, क्योंकि वे मानवीय स्वभाव से परे हैं'।

[5918] हेगुमेन (ग्रीक शब्द से, जिसका अर्थ है 'नेता') – एक मठवासी समुदाय का प्रमुख।

[5919] लावरा (ग्रीक शब्द से, जिसका अर्थ है 'शहर का एक हिस्सा' या 'गली') एक घेरे के भीतर कोशों (सेलों) की एक पंक्ति है, जो मठाधीश के आवास के चारों ओर स्थित होती है, और शहर की गलियों की तरह व्यवस्थित होती है। सप्ताह के पहले और आखिरी दिनों में, संन्यासी दिव्य सेवा के लिए एक साथ इकट्ठा होते थे; शेष दिनों में, वे मौन का पालन करते थे। लावरा में जीवन अन्य मठों की तुलना में कहीं अधिक कठिन था। प्राचीन काल से ही 'लावरा' नाम बड़े और महत्वपूर्ण मठों के लिए प्रयुक्त होता आया है। यह सबसे पहले मिस्र में, और फिर फिलिस्तीन में प्रकट हुआ।

[5920] अर्थात्, कुएँ से पानी निकालने के लिए इस्तेमाल की जाने वाली बाल्टी से।

[5921] खजूर की टहनियों से बनी रस्सी – हमारे 'मोजल' के समान।

यह सुनकर मठाधीश चकति रह गए; लेकनि, यह जानने के बाद कि उन्होंने जो कुछ भी कहा था वह सब सच था, उन्होंने समिोन से पूछा:

'मुझे बताओ, मेरे बच्चे, तुझसे ऐसी बदबू क्यों आती है?'

लेकनि समिोन, अपनी दृष्टि झुकाए, मौन रूप से महाधर्माध्यक्ष के सामने खड़ा रहा। महाधर्माध्यक्ष को क्रोध आ गया और उन्होंने आदेश दयिा कि समिोन का बाहरी वस्त्र जबरदस्ती उतार दयिा जाए। तब उन्होंने देखा कि वह जो रस्सी का वस्त्र पहने हुए था[5922] , वह खून से लथपथ था, और रस्सी उसके मांस में गहरी चुभ गई थी, हड्डी तक। महाधर्माध्यक्ष और उनके साथ मौजूद सभी लोग भयभीत हो गए। बड़ी कठनिाई से ही वे इस रस्सी को समियिन से नकिाल पाए, क्योंकि ऐसा करते ही उसका सड़ता हुआ मांस भी उसके साथ ही उधड़ गया। समियिन ने, तथापि, इन कष्टों को धैर्यपूर्वक सहते हुए, कहा:

'मुझे जाने दो, एक बदबूदार कुत्ते की तरह: मैंने अपने पापों के लिए इन कष्टों को भुगतना ही था।'

मठाधीश ने उससे कहा, "तुम्हारी उम्र तो केवल अठारह साल है, तुमने आखरि कौन से पाप कए होंगे?"

'पतिाजी!' समिोन ने उत्तर दयिा, 'नबी ने कहा है: "मैं अन्याय में गर्भ में लयिा गया था, और मेरी माँ ने मुझे पाप में जन्म दयिा" (भजन संहति 50:7)।'

यह उत्तर सुनकर, मठाधीश समिोन की बुद्धमित्ता पर चकति रह गया और यह देखकर हैरान हुआ कि एक इतना साधारण युवक ईश्वर के भय से इतनी गहराई तक युक्त हो सकता है। हालाँकि, उसने उसे खुद पर ऐसे कष्ट न डालने के लिए मनाना शुरू कर दयिा।

उसने कहा, 'अपनी शक्ति से परे का प्रयास करने का कोई अर्थ नहीं है: एक शष्यि के लिए अपने गुरु के समान होना ही पर्याप्त है (देखें मत्ती 10:24)।'

समियिोन के घाव भरने में बहुत समय लगा। लेकनि जब समिीओन ठीक हो गया, तो मठाधीश और अन्य भक्षिुओं ने फरि से देखा कि वह पहले की तरह ही अपने शरीर को थका रहा था। तब, इस डर से कि अन्य, कमजोर भक्षिु उसकी नकल कर सकते हैं और इस प्रकार अपनी मृत्यु को आमंत्रति कर सकते हैं, मठाधीश ने समिीओन को मठ छोड़ने का आदेश दयिा। मठ छोड़ने के बाद, समियिोन लंबे समय तक रेगस्तिान और पहाड़ों में भटकता रहा, जब तक कि अंत में वह सरीसृपों से आबाद एक सूखे कुएँ पर नहीं पहुँचा। इस कुएँ में उतरकर, समियिोन ने वहाँ ईश्वर से प्रार्थना करना शुरू कर दयिा।

इसके कुछ समय बाद, एक रात मठाधीश को एक दर्शन हुआ जसिमें उन्होंने मठ के चारों ओर हथयिारबंद और मोमबत्तयिाँ थामे लोगों की एक बड़ी भीड़ को चल्लिाते हुए देखा:

'ईश्वर का सेवक समिोन कहाँ है? हमें वह दखिाओ जो ईश्वर और स्वर्गदूतों का इतना प्रयि है। यदि तुम उसे हमें नहीं दखिाओगे, तो हम तुम्हें और तुम्हारे पूरे मठ को जला देंगे। समिोन तुम सभी से महान है, और उसके माध्यम से ईश्वर पृथ्वी पर कई चमत्कार करेंगे।'

नींद से चौंककर जागने पर, मठाधीश ने अपने भयानक स्वप्न के बारे में भाइयों को बताया और उन्हें समिोन के कारण झेली गई अपनी दहशत के बारे में सुनाया। उन्होंने समिोन को खोजने के लिए हर दशिा में खोजी दलों को भेजा और स्वयं भी उसकी तलाश में नकिल पड़े। कुछ भाइयों को अपने साथ लेकर, मठाधीश तपस्वी की तलाश में रेगस्तिान और गुफाओं में भटकते रहे। जल्द ही उसे कुछ चरवाहे मलि जो अपनी भेड़ों के झुंड की रखवाली कर रहे थे, और उनसे पूछताछ करने पर उसे पता चला कि सकिीमोन एक सूखे कुएँ में था। कुएँ की ओर दौड़ते हुए, मठाधीश ने सकिीमोन को पुकारना शुरू कर दयिा:

'क्या तुम यहाँ हो, हे ईश्वर के सेवक?'

'मुझे अकेला छोड़ दें, हे पवत्रि पतिाओं,' समिोन ने उत्तर दयिा, 'बस थोड़ी देर के लिए, जब तक मैं अपनी आत्मा नहीं छोड़ देता: मेरी आत्मा थकी हुई है, क्योंकि मैंने प्रभु को क्रोधति कयिा है।'

लेकनि भक्षिुओं ने जबरदस्ती उसे कुएँ से बाहर नकिाला और मठ में ले आए। वहाँ थोड़ी देर रहने के बाद, धन्य समिीओन चुपके से मठ छोड़कर एक बार फरि पहाड़ों और रेगस्तिान में भटकने लगे। ईश्वर की आत्मा के मार्गदर्शन

[5922] घोड़े की लगाम से बनी कमीज़ एक अंतर्वस्त्र है जसिे संन्यासी सीधे त्वचा से सटाकर पहनते थे।

से, वह तालानसिा गाँव के पास एक पहाड़ पर आया और वहाँ चट्टान में तराशी गई एक छोटी सी कोठरी[5923] पाकर, उसमें खुद को बंद कर लयिा। वह इस कोठरी में तीन साल तक रहा। वहाँ उसने याद कयिा कि कैसे मूसा और एलयिा ने चालीस दनिों तक उपवास कयिा था (नरि्गमन 24:18; 3 राजा 19:8), और उसी उपवास से स्वयं को आज़माना चाहता था। उस समय, उस क्षेत्र के बशिप, जसिका नाम वास था, जो नगरों और गांवों में चर्चों का दौरा कर रहे थे, तालाणसिा आए। धन्य समिोन के बारे में सुनकर, बशिप उनसे मलिने आए। समिोन ने उनसे वनिती करनी शुरू कर दी कि वे चालीस दनिों तक बनिा कोई भोजन दएि उनकी कोठरी के दरवाज़े बंद कर दें। लेकनि बशिप मानने को तैयार नहीं हुए।

उसने कहा, 'कसिी व्यक्ति के लिए अत्यधकि उपवास से अपनी जान लेना उचति नहीं है: क्योंकि यह सद्गुण के बजाय एक पाप है।'

'तो, फादर,' पूजनीय ने उत्तर दयिा, 'मुझे केवल रोटी और पानी छोड़ दें, ताकि, यदि आवश्यक हो, तो मैं थोड़े से भोजन से अपने शरीर को बनाए रख सकूँ।'

वास ने ठीक वैसा ही कयिा: सेल में रोटी और पानी रखकर, उसने दरवाज़ों को पत्थरों से बंद कर दयिा और अपने रास्ते चल पड़ा। जैसे ही चालीस दनि बीत गए, वह सम्माननति पति के पास लौटा और, पत्थरों को हटाकर, दरवाज़े खोले और सेल में प्रवेश कयिा। वहाँ उन्होंने देखा कि सम्माननीय पति मृतक की भाँति जिमीन पर पड़े थे, जबकि रोटी और पानी जस का तस वहीं पड़े थे जहाँ उन्हें रखा गया था: महान तपस्वी ने उन पर हाथ तक नहीं लगाया था।

एक स्पंज लेकर, वास ने पूज्य पति के होंठ धोकर उन्हें तरोताज़ा कयिा, और जैसे ही उन्हें थोड़ा होश आया, उन्होंने उन्हें दव्यि रहस्य प्रदान कयिा। इसके बाद, समियिन ने एक हल्का भोजन करके अपनी ताकत वापस पा ली। बशिप ने भाइयों में से कई लोगों के लाभ के लिए समियिन की महान आत्म-त्याग की कथा सुनाई। उस समय से, पूजनीय व्यक्ति ने हर साल पवत्रि लेंट के दौरान उसी तरह उपवास करना शुरू कर दयिा, कुछ भी नहीं खाते-पीते और अपने समय को अखंड प्रार्थना में बतिाते हुए, अपनी अत्यधकि थकान के कारण बीस दनि खड़े रहते और बीस दनि बैठे रहते।

अपने तंग पत्थर के कोठरी में तीन साल बतिाने के बाद, समिोन पहाड़ की चोटी पर चढ़ गए। और इस स्थान को छोड़ने से बचने के लिए, उन्होंने बीस कोहनी लंबी एक लोहे की ज़ंजीर ली[5924] , और एक सरि से उन्होंने अपने पैरों को जकड़ लयिा, जबकि दूसरे सरि को पहाड़ से जोड़ दयिा। इस स्थति में, आदरणीय ने लगातार अपनी दृष्टि स्वर्ग की ओर केंद्रति रखी, उनका मन उस परमपति की ओर उठता रहता था जो स्वर्गों से भी ऊपर है।

अंतयिोकयिा के चर्च के महाधर्माध्यक्ष, धन्य मेलेटयिस, ने तपस्वी के बारे में सुना और उनसे मलिने आए। जब उन्होंने देखा कि समिोन पहाड़ से जंजीरों में जकड़े हुए थे, तो उन्होंने कहा:

'एक व्यक्ति बनिा बेड़ियों के भी आत्म-नयिंत्रण का अभ्यास कर सकता है; लोहे का उपयोग करने की आवश्यकता नहीं है, बल्कि केवल तर्क और इच्छाशक्ति से ही स्वयं को एक स्थान पर बाँधा जा सकता है।'

यह सुनकर, पूजनीय ने इस आज्ञा को तुरंत व्यवहार में उतारने की जल्दी की और, मसीह के एक स्वैच्छकि कैदी बनने की इच्छा से, अपनी बेड़ियाँ उतार दीं और केवल अपनी इच्छा से ही स्वयं को बाँध लयिा, *'तर्क-वतिर्क और परमेश्वर के ज्ञान के वरिुद्ध उठाई गई हर एक ऊँची चीज़ को ध्वस्त करते हुए, और हर एक वचिार को मसीह की आज्ञाकारति का कैदी बनाते हुए'* (2 कुरन्थियिों 10:5)।[5925]

उस पवत्रि तपस्वी की कीर्ति दूर-दूर तक फैल गई। और लोग चारों ओर से उसके पास आने लगे – न केवल आसपास रहने वाले, बल्कि दूर-दूर के देशों से भी, जनिमें से कुछ को ऐसा करने के लिए लंबा सफर तय करना पड़ा। उनमें से कुछ अपने बीमारों को उनके पास लाए; अन्य ने घर पर पड़े बीमारों के लिए चंगाई की प्रार्थना की; कुछ स्वयं दुर्भाग्य और दुख से पीड़ति थे; अन्य राक्षसों द्वारा पीड़ति थे। और जो भी आदरणीय पति के पास आए, वे में से कोई भी सांत्वना के बनिा वापस नहीं गया, बल्कि प्रत्येक को वही मलिा जसिकी उन्होंने याचना की थी: कुछ को आरोग्य, कुछ को सांत्वना, कुछ को उपयोगी सलाह, और अन्य को कसिी अन्य प्रकार की सहायता मलिी। सभी आनंदपूर्वक परमेश्वर की महमिा

[5923] 'केली' मधुमक्खी के छत्ते की कोषकिा के लिए लैटनि शब्द से आया है।

[5924] एक 'लोकोट' या 'लाकोट' लंबाई की एक इकाई है जो 10.5 वर्शोक्स के बराबर होती है।

[5925] ईश्वर के मन के वरिुद्ध उठाए गए वचिार, प्रकाशन की सच्चाइयों और चर्च की शक्षिाओं के वपिरीत, अहंकारी वचिार हैं। प्रत्येक वचिार को मसीह की आज्ञाकारति में बंदी बनाना, मन को मसीह की सच्चाई के प्रति समर्पति होने, उसकी महानता और शक्ति को स्वीकार करने के लिए बाध्य करना है।

करते हुए अपने-अपने घर लौट गए। जहाँ तक आदरणीय पिता की बात है, जब भी उनकी प्रार्थनाओं से कोई चंगा होता था, तो वे हमेशा कहते थे:

'प्रभु का गुणगान हो, जिन्होंने तुम्हें चंगा किया है, और किसी भी तरह यह कहने का साहस मत करना कि यह शिमोन था जिसने तुम्हें चंगा किया – कहीं ऐसा न हो कि तुम पर कोई बड़ी विपत्ति आ पड़े।'

नदियों की तरह, विभिन्न जातियाँ और कबीले सिमीओन के पास उमड़ पड़े: वे अरब और फारस से, अर्मेनिया और इबेरिया से[5926] , इटली, स्पेन और ब्रिटेन से आए। इस प्रकार ईश्वर ने उस व्यक्ति को महिमामय किया जिसने उसे महिमामय किया। जब इतने बड़े जनसमूह ने सिकंदर के चारों ओर इकट्ठा हो लिया, और सभी उसके आशीर्वाद को प्राप्त करने के लिए उसे छूने का प्रयास कर रहे थे, तो उस धन्य व्यक्ति को इस श्रद्धा और भीड़-भाड़ को एक बोझ सा लगने लगा। और इस प्रकार उसने दुनिया की व्यर्थता से मुक्त होने के लिए एक अभूतपूर्व उपाय सोचा: जो लोग उसे छूने आते थे, उन्हें रोकने के लिए, उसने एक स्तंभ बनाने और उस पर खड़े होने का निश्चय किया। ऐसा स्तंभ खड़ा करने के बाद, उन्होंने उस पर दो कुहनी के आकार का एक तंग आवास बनाया, और वहाँ उपवास और प्रार्थना में अपना जीवन व्यतीत करने लगे। और वे पहले स्तंभ तपस्वी थे। स्तंभ छह कुहनी ऊँचा था, और संत सिमोन कई वर्षों तक उस पर खड़े रहे। बाद में, स्तंभ की ऊँचाई बढ़ाकर बीस कोहनी कर दी गई, और बाद में इसे छत्तीस कोहनी कर दिया गया। इस प्रकार, पूजनीय पिता ने विभिन्न ऊंचाइयों वाले स्तंभों का उपयोग सीढ़ियों की तरह करते हुए, कष्ट सहते हुए स्वर्गीय लोक में आरोहण किया: गर्मी में, बारिश में भीगते और गर्मी से झुलसते हुए; सर्दियों में, ठंड सहते हुए; उनका भोजन भीगे हुए अंजीर थे[5927] , और उनका पेय पानी था। जल्द ही उनके स्तंभ के चारों ओर दो पत्थर के घेरे बनाए गए[5928] ।

मरुभूमियों में रहने वाले पवित्र पिताओं ने सिमोन के जीवन-यापन के तरीके के बारे में सुना और उसकी असाधारण उपलब्धियों पर आश्चर्यचकित हुए: क्योंकि अभी तक किसी ने भी अपने लिए स्तंभ पर खड़े रहने जैसा जीवन-यापन का तरीका नहीं निकाला था। उसे परखने की इच्छा से, उन्होंने उसे संदेश भेजा:

'तुम हमारे पूर्वजों के पदचिन्हों पर क्यों नहीं चलते, बल्कि एक अलग—एक नया—जीवन का मार्ग क्यों अपना लिया है? स्तंभ से उतर आओ और प्राचीन मरुभूमि के पिताओं के जीवन के मार्ग का अनुसरण करो।'

उन्होंने दूतों को यह भी निर्देश दिया कि, यदि सिमोन आज्ञा न माने, तो वे उसे ज़बरदस्ती स्तंभ से नीचे उतार लाएँ; लेकिन यदि वह आज्ञा मानकर नीचे आना चाहे, तो वे उसे उसी अवस्था में रहने दें जिसमें उसने शुरुआत की थी: क्योंकि तब, उन्होंने कहा, यह स्पष्ट हो जाएगा कि उसका नया जीवन-मार्ग ईश्वर की ओर से आया है। जब दूत सिमीओन के पास आए और उन्होंने पवित्र मरुभूमि के पिता-पुरुषों की परिषद के निर्णय की घोषणा की, तो वह तुरंत सीढ़ी पर चढ़ गया, नीचे उतरने की इच्छा से।

यह देखकर, दूतों ने पुकार लगाई:

'नहीं, पवित्र पिता, नीचे न उतरें, बल्कि स्तंभ पर ही बने रहें: अब हम जानते हैं कि आपने जो कार्य शुरू किया है वह ईश्वर का है। ईश्वर ही अंत तक आपकी सहायता करें।'

डोमन्स[5929] , अंतीयक के पैट्रिआर्क और संत मेलेटियस के उत्तराधिकारी, भी सिमोन के पास आए; उनके जीवन के कार्य को देखकर, वे आश्चर्यचकित हुए और उन्होंने आत्मा के लिए लाभकारी मामलों पर उनके साथ लंबी बातचीत की। इसके बाद, पैट्रिआर्क ने दिव्य लिटिर्जी का अनुष्ठान किया, और दोनों ने पवित्र रहस्यों को ग्रहण किया।

इसके बाद, पैट्रिआर्क अंकोइया लौट गए; परन्तु आदरणीय ने स्वयं को और भी बड़े तपस्या के कार्यों में लगा दिया, और अदृश्य विरोधी के विरुद्ध स्वयं को सशस्त्र किया। तब शैतान, जो हर भलाई का शत्रु है, ने एक तेजस्वी स्वर्गदूत का रूप धारण किया और स्तंभ के पास आग के घोड़ों द्वारा खींचे गए एक अग्निमय रथ में संत के सामने प्रकट हुआ, मानो स्वर्ग से उतर रहा हो, और कहा:

[5926] इबेरिया आज का जॉर्जिया है।

[5927] भिगोए हुए अनाज – सूखे मेवे, चावल, गेहूं और इसी तरह की अन्य चीजें जिन्हें भिगोया या उबाला गया हो।

[5928] ये घेराबंदियाँ वहाँ आए लोगों द्वारा सूखे पत्थरों से बनाई गई थीं। इस प्रकार की घेरियों को 'मंद्रास' कहा जाता था, और चूँकि संत सिमियन के मार्गदर्शन में तपस्या में संलग्न होना चाहने वाले लोग वहाँ बस गए, इसलिए उन्हें एक 'आर्कमैंड्राइट' (उदाहरण के लिए, मेनायोन में) कहा जाता है।

[5929] संत मेलेटियस 358 से 381 तक अंतीयक के पैट्रिआर्क थे, और डोमनस II, या डोमनिन, 441 से 448 तक थे।

'सुनो, शमिोन!' स्वर्ग और पृथ्वी का परमेश्वर, जैसा कि आप देख रहे हैं, मुझे रथ और घोड़ों के साथ आपके पास भेज चुका है, ताकि मैं आपको स्वर्ग में उठा ले जाऊँ, जैसे इलयिास को उठाया गया था (2 राजा 2:11); क्योंकि आप अपने जीवन की पवत्रिता के कारण ऐसे सम्मान के योग्य हैं, और अब समय आ गया है कि आप अपने परश्रिम का फल चखें और प्रभु के हाथ से महमिा का मुकुट प्राप्त करें। तब हे प्रभु के सेवक, शीघ्र कर, अपने सृष्टकिर्ता को नहिारने और उसी की आराधना करने के लिए जसिने तुझे अपनी प्रतमिा में बनाया; स्वर्गदूत और महादूत, भवष्यिवक्ताओं, प्रेरतिों और शहीदों सहति, तुझे भी देखने के लिए लालायति हैं।

संत ने शत्रु की छल को नहीं पहचाना और कहा:

'प्रभु! क्या मैं, एक पापी, हूँ जसिे आप स्वर्ग में ले जाना चाहते हैं?'

और समिीओन ने अग्नमिय रथ पर पैर रखने के लिए अपना दाहनिा पैर उठाया, लेकनि उसी समय उसने क्रॉस का चह्नि बनाया। तब शैतान और उसका रथ हवा से उड़ते धूल की तरह गायब हो गए। समिोन को, जब यह एहसास हुआ कि यह एक शैतानी प्रलोभन था, तो उसने पश्चाताप कयिा और उसी पैर को एक पूरे साल तक उसी पैर पर खड़े रहकर दंडति कयिा, जसिसे वह शैतान के रथ पर कदम रखने का इरादा रखता था।

शैतान, ऐसा करतब सहन न कर सका, और उसने उस पूजनीय के पैर पर एक भयंकर फोड़ा डाल दयिा; उसके पैर का मांस सड़ने लगा, ढेरों कीड़े नकिल आए, और कीड़ों से मलिा हुआ पीप घाव से स्तंभ पर टपकता हुआ जमीन पर गरिने लगा। एंथनी नाम का एक युवक[5930] गरिने वाले कीड़ों को इकट्ठा करता और पवत्रि शहीद के आदेश पर उन्हें स्तंभ पर उनके पास वापस ले जाता था। संत, दूसरे यॉब की तरह, बहुत धैर्य से अपनी बीमारी को सहते हुए, घाव पर कीड़े रखते हुए कहते थे: 'जो कुछ ईश्वर ने तुम्हें भेजा है, उसे खाओ।'

उस समय, सारासेन राजकुमार एंटोनी[5931] वासलिकि, संत समियिन के बारे में बहुत कुछ सुनकर, उनके पास आए और उनसे बातचीत करने के बाद, उन्हें बहुत लाभ हुआ और उन्होंने मसीह में वश्विास करना शुरू कर दयिा। लेकनि जब उन्होंने संत के घाव से जमीन पर गरिा एक कीड़ा देखा, तो राजकुमार ने उसे अपने हाथ में ले लयिा और चल दए। आदरणीय संत ने उन्हें वापस बुलाया और कहा:

'हे राजकुमार, आपने मेरे सड़ते हुए शरीर से गरि उस बदबूदार कीड़े को अपने सम्मानति हाथों में क्यों उठाया?'

हालाँकि, वासलिकि ने अपना हाथ खोला और उसमें एक कीमती मोती पाया, और कहा:

'यह कोई कीड़ा नहीं, बल्कि एक मोती है।'

'यह तुम्हारे वश्विास के कारण तुम्हें प्रदान कयिा गया है,' पूजनीय ने कहा।

और सारासेन, उनका आशीर्वाद लेकर, अपने रास्ते चला गया।

कई साल बीत गए, और पादरी की माँ, मार्था, अपने बेटे के बारे में जानकर, उसे देखने आई और, बाड़े के प्रवेश द्वार पर रुककर, फूट-फूट कर रो पड़ी। लेकनि समिोन उसे देखना नहीं चाहता था और उसने उसे संदेश भेजा:

'अब मुझे परेशान मत करो, मेरी माँ; अगर हम योग्य हुए, तो अगले जन्म में मलिेंगे।'

वह उसे देखने के लिए और भी अधकि लालायति हो उठीं; और एक बार फरि धन्य व्यक्तनि ने उन्हें संदेश भेजा, जसिमें उनसे वनिती की गई कि वे थोड़ी देर चुपचाप प्रतीक्षा करें।

वह घेरे के द्वार के सामने लेट गईं और वहीं उन्होंने अपना प्राण प्रभु को सौंप दयिा। संत समिोन को उनके नधिन की तुरंत ही खबर मलि गई और उन्होंने उनके शरीर को स्तंभ के पास लाने का आदेश दयिा। अपनी माँ को देखकर, वह आँसुओं के साथ उनके लिए प्रार्थना करने लगे। जब वह प्रार्थना कर रहे थे, तो संत मार्था के शरीर में हलचल दखिाई दी, और उनके चेहरे पर एक मुस्कान उभर आई। यह सब देखने वाले चकति हो गए और उन्होंने ईश्वर की स्तुति की। उन्हें स्तंभ के पास ही दफनाया गया, और संत अपनी माँ के लिए दनि में दो बार प्रार्थना में स्मरण करते थे। कुछ ही समय बाद, संत के स्तंभ को एक बार फरि से बदला गया, और उनके लिए चालीस कोहनी ऊँचा एक नया स्तंभ खड़ा कयिा गया। पूजनीय संत अपने धन्य नधिन तक इसी स्तंभ पर खड़े रहे।

जहाँ पादरी ने अपना चमत्कारी जीवन व्यतीत कयिा, उसके पास पानी नहीं था - इसे दूर से लाना पड़ता था, जसिसे मलिने आने वालों और उनके जानवरों को बहुत कष्ट होता था। पानी की कमी से होने वाले इस कष्ट को देखकर, रेवरेंड

[5930] एंथोनी संत समियिन के शष्यि थे और उन्होंने उनकी जीवनी लखिी।

[5931] सारासेन – अरब के नविासी। मूल रूप से, यह नाम एक खानाबदोश डाकू जनजाति को संदर्भति करता था, लेकनि बाद में ईसाई लेखकों ने इस शब्द को सामान्य रूप से सभी मुसलमानों पर लागू कर दयिा।

फादर ने ईश्वर से विनम्रतापूर्वक प्रार्थना की कि वे पानी भेजें, ठीक वैसे ही जैसे उन्होंने एक बार मरुभूमि में प्यासे इस्राएलियों के लिए किया था (गिनती 20:2–10)। और इस प्रकार, सुबह लगभग दस बजे, घेरे के पूर्वी हिस्से में धरती अचानक हिल उठी और फट गई, जहाँ एक गुफा जैसी खोह प्रकट हुई, जिसमें, सभी की उम्मीद से परे, भरपूर पानी था। संत ने आदेश दिया कि उस क्षेत्र को सात कोहनी की त्रिज्या तक खोदा जाए, और वहाँ से पानी प्रचुर मात्रा में बहने लगा।

एक महिला, रात के दौरान प्यास लगने पर, पानी के साथ एक छोटा सा साँप निगल गई। यह साँप महिला के गर्भ में बढ़ने लगा और बड़ा हो गया। महिला का रंग घास की तरह हरा हो गया, आउ कई डॉक्टरों ने उसका इलाज किया, लेकिन उसे ठीक नहीं कर सके। वे उसे संत सिमीओन के पास ले आए। धन्य संत ने कहा, 'उसे यह पानी पिला दो।' और जब उस महिला ने पीना शुरू किया, तो एक बड़ा सा साँप उसके अंदर से बाहर निकला; और जैसे ही वह स्तंभ की ओर रेंगने लगा, वह साँप तुरंत टुकड़े-टुकड़े हो गया।

कुछ लोग, रेवरेंड फादर को देखने के लिए दूर से यात्रा करते हुए, गर्मी से बचने के लिए एक पेड़ के नीचे कुछ देर आराम करने के लिए रुके। छाँव में बैठे-बैठे, उन्होंने एक गर्भवती हिरण को गुजरते हुए देखा और उसे पुकारा:

'संत सिमीओन की प्रार्थनाओं के लिए, हम आपसे विनती करते हैं, थोड़ी देर रुकिए!'

और एक अद्भुत चमत्कार हुआ: हिरण रुक गई। इस प्रकार संत के नाम पर जानवर भी कोमल और आज्ञाकारी हो गए! यात्रियों ने उस हिरण को पकड़ लिया, उसे मार डाला, उसका चमड़ा उधेड़ लिया, और उसके मांस से भोजन तैयार किया। लेकिन जैसे ही उन्होंने खाना शुरू किया, अचानक ईश्वर के क्रोध से ग्रस्त होकर, उन्होंने अपनी मानवीय आवाज़ खो दी और हिरणों की तरह चीखने लगे। वे अपनी पाप की गवाही के रूप में हिरन की खाल को साथ लेकर संत समियिन के पास भागे। वे दो साल तक स्तंभ के पास रहे और मुश्किल से ही ठीक हो सके और फिर से इंसानों की तरह बोल सके; और उन्होंने जो कुछ हुआ था उसकी गवाही के रूप में हिरन की खाल को स्तंभ पर लटका दिया।

जिस पहाड़ पर संत समियिन एक तपस्वी के रूप में रहते थे, उस पर स्तंभ के पास ही एक भयानक साँप ने अपना आवास बना लिया था, जिसके कारण उस जगह पर घास भी नहीं उगती थी। एक दिन, कोहनी की लंबाई की एक टहनी साँप की दाहिनी आँख में घुस गई, जिससे उसे बहुत दर्द हुआ। तब साँप संत के स्तंभ पर रेंगकर आया और बाड़े के द्वार पर लेटकर पूरी तरह से झुक गया, मानो विनम्रता दिखा रहा हो और संत समियिन से दया की भीख माँग रहा हो। और जब संत ने उस पर दृष्टि डाली, तो उसकी आँख से वह टहनी तुरंत बाहर गिर गई, और साँप वहाँ तीन दिनों तक एक भेड़ की तरह द्वार पर लेटा रहा। सब लोग बिना किसी डर के आते-जाते थे और उन्हें उससे कोई हानि नहीं हुई। जब आँख पूरी तरह से ठीक हो गई, तो साँप अपने बिल में लौट गया। और सभी ने उस अद्भुत चमत्कार को देखा और आश्चर्यचकित हुए।

उस देश में एक तेंदुआ रहता था[5932] , एक बड़ा और बहुत भयानक जानवर, जो मनुष्यों और मवेशियों दोनों को खा जाता था। जिस जगह उस दानव ने अपना डेरा डाल रखा था, उसके पास से गुजरने की कोई हिम्मत नहीं करता था - और उसने आसपास के इलाके में बहुत तबाही मचाई। संन्यासी को इसकी सूचना दी गई। उन्होंने आदेश दिया कि उनके घेरे से मिट्टी और उसी जगह से पानी लिया जाए, और उस जगह के चारों ओर चक्कर लगाने के बाद, उसे दूर से छिड़क दिया जाए। और उन्होंने संत के आदेशानुसार किया। कुछ ही समय बाद, जब उन्होंने देखा कि वह दानव कहीं नहीं दिख रहा था, तो वे उसे खोजने गए और उसे मृत पाया, वह ठीक उसी मिट्टी पर पड़ा था जिसे संत की बाड़ से लिया गया था। और सभी ने ईश्वर की स्तुति की।

कुछ ही समय बाद, उस देश में पहले वाले से भी ज़्यादा क्रूर एक और जानवर प्रकट हुआ—वचन का एक जानवर। वह अंफ़ियापोलीस का एक डाकू था[5933] , जिसका नाम योना था। उसने सड़कों पर और उनके घरों में कई लोगों को मार डाला, और चुपके से और बिना किसी चेतावनी के गाँवों और उपनगरों पर हमला किया। कोई भी उसे पकड़ नहीं सका, हालांकि कई लोग सड़क पर उसकी प्रतीक्षा में पड़े रहते थे; वह अत्यंत शक्तिशाली और बहादुर था, इसलिए कोई भी उसके सामने टिक नहीं सका। जब अंताकिया में हलचल मच गई और उसे पकड़ने के लिए सैनिक भेजे गए, तो उस डाकू के

[5932] पार्ड, या तेंदुआ, एक मांसाहारी जानवर है जो बाघ जैसा दिखता है, लेकिन उसकी खाल धारियों वाली नहीं बल्कि धब्बेदार होती है और उसका कद छोटा होता है।

[5933] परम पूजनीय के जीवनकाल में, कई शहर इस नाम से जाने जाते थे; उनमें से वह शहर जो उनके आश्रय स्थल के सबसे करीब था, वह सेल्यूकिया का एंटिओक (पेरिया में सेल्यूकिया शहर के पास) था।

पास अपने कई पीछा करने वालों से बचने का कोई रास्ता नहीं था, इसलिए वह परम पूजनीय समिोन के आंगन में भाग गया। मसीह के चरणों पर रोई स्त्री (लूका 7:37–38) की तरह स्तंभ से चपिके हुए, वह फूट-फूट कर रोया।

और संत ने स्तंभ के ऊपर से उस पर पुकारा:

'तुम कौन हो, कहाँ से आए हो, और यहाँ क्यों आए हो?'

उसने उत्तर दयिा:

'मैं जोनाथन डाकू हूँ, जसिने हर तरह के बुरे काम कए हैं, और मैं यहाँ अपने पापों का प्रायश्चति करने आया हूँ।'

जैसे ही वह बोल रहा था, अंताकयि के सैनकि धावा बोलकर अंदर आ गए और पादरी पर चल्लिाने लगे:

'हमें दे दो, पतिाजी, हमारे दुश्मन, उस डाकू को, क्योंकि शहर के जानवर पहले ही उसे चीर-फाड़ करने के लिए तैयार हैं!'[5934]

लेकनि धन्य समिोन ने उनसे कहा:

'मेरे बच्चों! उसे यहाँ लाने वाला मैं नहीं हूँ, बल्कि ईश्वर हैं, जो उसके पश्चाताप के इच्छुक थे, जन्हिोंने उसे मेरे पास भेजा है; यदि तुम भीतर जा सकते हो, तो उसे ले लो; परन्तु मैं उसे तुम्हारे पास नहीं ला सकता, क्योंकि मैं उस से डरता हूँ जसिने उसे मेरे पास भेजा है।'

यह सुनकर, न केवल घेरे में प्रवेश करने की हम्मित बल्कि संत के वरिुद्ध एक शब्द भी बोलने की हम्मित न करते हुए, सैनकि डरकर लौट गए और एंटओिक में सब कुछ बता दयिा।

हालाँकि, चोर सात दनिों तक स्तंभ के पास रहा, कड़वा रोता रहा, ईश्वर से प्रार्थना में दंडवत प्रणाम करता रहा और अपने पापों का इकरार करता रहा। वहाँ मौजूद सभी लोग, उसकी पश्चाताप और रोना देखकर, स्वयं भी दयालु हो गए। सात दनि बीत जाने के बाद, चोर ने संत से पुकारा:

'पतिाजी! क्या आप मुझे जाने नहीं देंगे?'

'क्या तुम फरि से अपने बुरे कर्मों पर लौट रहे हो?' पवत्रि पति ने उससे कहा।

'नहीं, पतिाजी,' उसने उत्तर दयिा, 'मेरा समय आ गया है।'

और इस प्रकार उससे बात करते-करते, उसने अपनी आत्मा ईश्वर को सौंप दी। जब संत समियिन के शष्यि उस डाकू के शरीर को दीवार के पास दफनाने जा रहे थे, तो अंताकयि से सैन्य कमांडर आ गए और चल्लिाने लगे:

'हमें हमारा दुश्मन दे दो, पतिाजी, जसिके कारण पूरा शहर उथल-पुथल में पड़ गया है।'

लेकनि पूजनीय ने उत्तर दयिा:

'जो उसे मेरे पास लाया है, वह स्वर्ग के योद्धाओं की सेना के साथ आया है और उसे, पश्चाताप से शुद्ध होकर, अपने पास ले गया है; इसलिए, मुझे परेशान मत करो।'

मृत डाकू को देखकर, सेनापति विस्मिति हो गए और उन्होंने उस परमेश्वर की स्तुति की, जो कसिी पापी की मृत्यु नहीं चाहता। शहर लौटकर, उन्होंने उस सब की घोषणा की जो उन्होंने पूजनीय पति से सुना था और जो उन्होंने देखा था।

दीपक पर रखी मोमबत्ती की तरह स्तंभ पर खड़े होकर, हमारे पूजनीय पति समियिन संसार के लिए एक प्रकाश के रूप में प्रकट हुए, जन्हिोंने मूर्तपिूजा के अंधकार में रहने वाले लोगों को ज्ञान का प्रकाश दखिाया और उन्हें सच्चे ईश्वर के ज्ञान के प्रकाश की ओर मार्गदर्शन कयि। ईश्वर की उस अद्भुत कृपा का यश हो, जसिने उनमें कार्य कयि! एक ही स्थान पर खड़े होकर, उस तपस्वी ने इतने लोगों को वश्विास की ओर ले गए मानो वह पूरे ब्रह्मांड में घूम-घूम कर उपदेश दे रहे हों। क्योंकि, सूर्य की भाँति, उन्होंने अपने सदाचारी जीवन और अपनी मधुर वाणी की करिणें बखिेरीं, और आसपास के देशों को प्रकाशति कयि। उनके स्तंभ पर फारसी और अर्मेनयिाई लोगों को पवत्रि बपतस्मिा लेते हुए देखा जा सकता था; जबकि इसमाइलयिों[5935] के झुंड-झुंड में—दो सौ, तीन सौ, और कभी-कभी एक समय में एक हजार तक—आते थे; वे पुकार लगाते हुए अपने पूर्वजों की गलतयिों का परत्यिाग कर देते थे और, जनि मूर्तयिों की उन्होंने प्राचीन काल से पूजा की थी, उन्हें स्तंभ पर लाकर स्तंभ से पटकते और पैरों तले कुचलते थे; और पादरी की मधुर वाणी से सच्चे धर्म का वधिान ग्रहण करने तथा दव्यि रहस्यों में भाग लेने के योग्य समझे जाने के बाद, वे पवत्रि सुसमाचार के प्रकाश से प्रकाशति होकर, महान आनंद के साथ लौट गए।

[5934] जंगली जानवरों द्वारा अपराधयिों को चीर-फाड़ करना – जो एक प्रकार की फांसी थी – आमतौर पर सर्कस नामक वशिेष इमारतों में होता था, और यह, मूर्तपिूजक काल की वरिासत के रूप में, एक सार्वजनकि तमाशा था।

[5935] इश्माएलयिों – कुलपति अब्राहम और हागर के पुत्र इश्माएल की संतानें: देखें उत्पत्ति 25:12 ff.

एक सरैसेन कमांडर, जसिका रश्तिेदार लकवाग्रस्त था, ने संत से इस बीमार व्यक्तकिो ठीक करने का आग्रह कयिा। संत ने उसे स्तंभ के पास लाने का आदेश दयिा और पूछा:

'क्या तुम अपने पूर्वजों की दुष्टता का परत्यिाग करते हो?'

उसने उत्तर दयिा:

'मैं करता हूँ।'

और संत ने फरि पूछा:

'क्या तुम पतिा, पुत्र और पवत्रि आत्मा में वश्विास करते हो?'

लकवाग्रस्त व्यक्तने स्वीकार कयिा कवि बनिा कसिी संदेह के वश्विास करता था।

तब संत ने कहा, 'उठो,' और तुरंत वह युवक उठ खड़ा हुआ, इतना स्वस्थ मानो वह कभी बीमार ही न हुआ हो। और अपनी स्वस्थता को और भी स्पष्ट रूप से प्रदर्शति करने के लिए, धन्य संत ने उस युवक को आदेश दयिा कवि सैन्य कमांडर—जो एक भारी-भरकम शरीर वाला व्यक्तथिा—को अपने कंधों पर उठाकर अपने शविरि तक ले जाए, और युवक ने वैसा ही कयिा, उसे इस तरह कंधों पर उठाया मानो वह अनाज का एक पुटला हो। यह देखकर, सभी ने ईश्वर की स्तुतकिी, जो अपने संत के माध्यम से अद्भुत चमत्कार करते हैं।

सम्मानति पतिा के पास भवष्यिवाणी का वरदान भी था, क्योंकउिन्होंने दो साल पहले ही सूखे, अकाल और महामारी की भवष्यिवाणी की थी, और यह भी कहा था कतिीस दनिों में टड्डियों का झुंड आएगा; और यह सब सच हो गया। एक बार, एक दर्शन में, उन्होंने स्वर्ग से दो लाठी उतरती हुई देखीं, जनिमें से एक पूर्व की ओर और दूसरी पश्चमि की ओर गरि गई। पूजनीय पतिा ने यह दर्शन उपस्थति लोगों को सुनाया और भवष्यिवाणी की कपिर्शयिाई और स्कैथयिन[5936] यूनानी और रोमन क्षेत्रों के खलिाफ उठ खड़े होंगे। और बहुत से आँसुओं और अखंड प्रार्थना के साथ, रेवरेंड फादर ने ईश्वर से वनिती की कवि वे अपना धार्मकि क्रोध मोड़ दें और ईसाइयों पर उस दंड को न आने दें। और उन्होंने ईश्वर से इस बात की वनिती की: कपिूरी फारसी सेना, जो पहले से ही युद्ध के लिए तैयार थी, ईश्वर की इच्छा से अभयिान पर नकिलने में देरी करे, और जैसे ही फारसयिों के बीच आंतरकि कलह छड़ि गया, वे अपनी योजना को त्याग दें।

एक अवसर पर, रेवरेंड के ध्यान में यह बात आई कसिम्राट थयिोडोसयिस द यंगर[5937] ने ईसाइयों को दयिा गया एक प्रार्थनालय यहूदयिों को वापस कर दयिा था। उन्होंने तुरंत राजा को एक पत्र भेजा और राजा के अधकिार की परवाह कएि बनिा, उसे ईश्वर के क्रोध से डराया। पत्र पढ़ने के बाद, सम्राट भयभीत हो गया; उसने फरि से ईसाइयों को प्रार्थनालय पर कब्ज़ा करने का आदेश दयिा, उस शहर के राज्यपाल को उसके पद से हटा दयिा जसिने यहूदयिों को चर्च वापस करने की सलाह दी थी, और रेवरेंड को एक व्यक्तगित वनिती भेजी, जसिमें उनसे अपने लिए क्षमा मांगने और ईश्वर से प्रार्थना करने का अनुरोध कयिा गया। राजा की पत्नी, रानी यूडोक्सयिा, जो अपने पतकिी मृत्यु के बाद यूटकियिन वधिर्म[5938] में पड़ गई थीं, को रेवरेंड ने अपने पत्रों में फटकार लगाई, और चार महीने के भीतर उन्होंने उसे धर्मपरायणता में वापस ला दयिा। उसके धर्म परविर्तन के बाद, पश्चाताप में और चार वर्ष जीवन व्यतीत करने के पश्चात्, उसे यरूशलेम में एक धन्य वश्राम प्राप्त हुआ और उसे सेंट स्टीफन प्रथम शहीद के चर्च में दफनाया गया, जसिकी स्थापना उसने स्वयं की थी। मार्सयिन[5939] , जो सहिासन पर थयिोडोसयिस द यंगर का उत्तराधकिारी हुआ, अक्सर गुप्त रूप से रेवरेंड से मलिने आता था और उससे उसे बहुत लाभ होता था।

फ़ारस की रानी ने, पूजनीय समिोन के चमत्कारों और पवत्रिता के बारे में सुनकर, उन्हें अपना आशीर्वाद लेने के लिए बुलवाया और उनसे पवत्रि तेल प्राप्त कयिा, जसिे उसने एक महान उपहार माना और सम्मान के साथ रखा।

इश्माएलयिों की रानी, जो बाँझ थी, ने आदरणीय महंत को संदेश भेजा, उनसे अपने लिए प्रार्थना करने का आग्रह करते हुए और यह आशा करते हुए कउिनकी पवत्रि प्रार्थनाओं के माध्यम से वह माँ बन सके। और ऐसा ही हुआ: क्योंकजिल्द ही उसकी बाँझपन दूर हो गया, और उसने एक पुत्र को जन्म दयिा। शशिु को अपने साथ लेकर, रानी आदरणीय महंत के पास अपनी यात्रा पर नकिल पड़ी। लेकनि यह सुनकर कमिहलिाओं को रेवरेंड फादर से मलिने की अनुमतनिहीं थी—

[5936] स्कुथाई मुख्य रूप से काले सागर के उत्तरी तट पर रहते थे।

[5937] वह 408 से 450 तक शासन कयिा।

[5938] चौथे सार्वभौमकि परषिद द्वारा नदिति यूटकीस ने यह सखिाया कयिीशु मसीह में एक ही स्वभाव—दव्यि स्वभाव—था, जबकपिवत्रि चर्च ने हमेशा से यीशु मसीह में दो स्वभावों को स्वीकार कयिा है, और करती रहेगी, जो एकसार और अवभिाज्य हैं—दव्यि और मानवीय।

[5939] उन्होंने 450 से 457 तक शासन कयिा।

क्योंकि उन्होंने अपनी ही माँ को भी अपने पास आने की इजाज़त नहीं दी थी—उसने अपने बेटे को अपने नौकरों की गोद में भेज दिया, और उन्हें यह कहने का निर्देश दिया:

'हे पिता, देखिए, यह आपकी पवित्र प्रार्थनाओं का फल है; इस शिशु पर आशीर्वाद कीजिए।'

उस आदरणीय की अगम्य लीलाओं के विषय में क्या कहा जा सकता है? उनका वर्णन करना असंभव है, क्योंकि वे मानवीय शक्ति से परे हैं।

धन्य थियोडोरेट कहते हैं, 'मैं सबसे अधिक उनके धैर्य से चकित हूँ: दिन-रात वे इस तरह खड़े रहते हैं कि हर कोई उन्हें देख सके। एक बार ऐसा हुआ कि जिर्जर होने के कारण दरवाज़ा और ऊपरी दीवार का एक बड़ा हिस्सा ढह गया, और जब तक दीवार और दरवाज़े को फिर से नहीं बनाया गया, संत कुछ समय के लिए सभी को दिखाई देते रहे। फिर उन्होंने एक नया और अद्भुत दृश्य देखा: कभी-कभी वह लंबे समय तक अचल खड़े रहते थे, जबकि अन्य समय में वह बार-बार प्रणाम करते हुए ईश्वर से प्रार्थना करते थे। स्तंभ के पास खड़े एक व्यक्ति ने बताया कि वह उस तपस्वी द्वारा बिना रुके किए गए प्रणामों को गिनना चाहता था; और एक हजार दो सौ चवालीस गिनने के बाद, वह थक गया और स्तंभ की ऊँचाई पर ऊपर देखने में असमर्थ होकर, गिनना बंद कर दिया। हालाँकि संत रुकुअटों से थकते नहीं थे; बल्कि, सप्ताह में केवल एक बार भोजन करने—और वह भी बहुत कम और हल्का—से उनके पैर हल्के हो गए थे और वे बार-बार रुकुअट कर सकते थे। इतनी देर तक खड़े रहने के कारण, उनकी दूसरी टांग पर भी एक न भरने वाला अल्सर हो गया, और उससे बहुत सारा खून बह रहा था। फिर भी यह पीड़ा भी उन्हें ईश्वर में अपने ध्यान से भटका नहीं सकी।

स्वैच्छिक शहीद ने यह सब बहादुरी से सहन किया, लेकिन उसे अपना घाव दिखाने के लिए मजबूर होना पड़ा। अरब का एक पुजारी, जो एक दयालु और ईश्वर-प्रेरित व्यक्ति था, उसके पास आया और कहा:

'मैं आपसे स्वयं सत्य के नाम पर पूछता हूँ, जिसने मानव जाति को अपनी ओर आकर्षित किया: बताइए, क्या आप एक मनुष्य हैं या एक निर्देह प्राणी?'

'आप मुझसे यह क्यों पूछ रहे हैं?' पूजनीय ने कहा।

'मैंने आपके बारे में सुना है,' पादरी ने उत्तर दिया, 'कि आप न खाते हैं, न पीते हैं, न सोते हैं: लेकिन यह एक मनुष्य के लिए असामान्य है, और एक मनुष्य भोजन, पानी और नींद के बिना नहीं रह सकता।'

और पूज्यनीय ने पुरोहित को अपने स्तंभ पर चढ़ने का आदेश दिया और उसे उस फोड़े को देखने और छूने की अनुमति दी, जो पीप और कीड़ों से ढका हुआ था। फोड़ा देखकर और पूज्यनीय से यह सुनकर कि वह सप्ताह में केवल एक बार ही भोजन करते थे, पुरोहित संत के धैर्य और तपस्या को देखकर चकित रह गया।

ऐसे कारनामों, इतने सारे चमत्कार करने और इतना पुण्य जीवन जीने के बावजूद, आदरणीय विनम्र और नम्र थे, मानो वे सभी अन्य लोगों से भी नीच और अधिक अयोग्य हों। सबके प्रति उनका मुख समान रूप से दीप्तिमान और उनके शब्द प्रेमपूर्ण थे—चाहे वह एक कुलीन व्यक्ति हो या एक दास, अमीर हो या गरीब, और यहाँ तक कि सबसे नीचले बहिष्कृत ' ' के प्रति भी: क्योंकि वह किसी के प्रति पक्षपात नहीं करते थे। और सभी तृप्त नहीं हो पाते थे—न तो उनके पवित्र मुखमंडल के ध्यान से, और न ही उनके मधुर वाणी वाले प्रवचन से, क्योंकि उनके होंठ पवित्र आत्मा की कृपा से परिपूर्ण थे। ज्ञान के वरदान से युक्त, वह हर दिन अपने श्रोताओं के हृदयों को शिक्षा की बाढ़ से भर देता था, और कई लोग, उसकी शिक्षा से शिक्षित होकर, सभी सांसारिक चीजों को पीछे छोड़कर, पक्षियों की तरह ऊँची उड़ान भर गए – कुछ मठों में चले गए, कुछ रेगिस्तान में, जबकि अन्य उसके साथ रहने के लिए ठहर गए।

आदरणीय पादरी की दैनिक दिनचर्या इस प्रकार थी। वह पूरी रात और दिन नौवें घंटे तक प्रार्थना में बिताता था; नौवें घंटे के बाद, वह स्तंभ पर इकट्ठा हुए लोगों को उपदेश देता था; फिर वह उसके पास आने वाले किसी भी व्यक्ति की जरूरतों और विनतियों को सुनता और बीमारों को ठीक करता था। फिर वे लोगों के झगड़ों और विवादों को सुलझाते और शांति बहाल करते; अंत में, सूर्यास्त के समय, वे प्रार्थना के लिए लौट आते। इस प्रकार के कार्यों को करते हुए, वे चर्च की शांति का ख्याल रखने से कभी नहीं चूकते थे, मूर्तिपूजक अधर्मीपन का नाश करते, यहूदी अपमानों का खंडन करते, और विधर्मी शिक्षाओं को जड़ से उखाड़ते थे; जबकि अपने बुद्धिमानी भरे और शिक्षाप्रद पत्रों के माध्यम से उन्होंने राजाओं, राजकुमारों और सत्ता में रहने वालों सभी का मार्गदर्शन ईश्वर के भय, दया और प्रेम की ओर किया, और उन्हें ईश्वर की कलीसिया की रक्षा के लिए प्रेरित किया, तथा सभी को आत्मा के लिए लाभकारी मामलों में विस्तार से शिक्षित किया। इस प्रकार, एक अद्भुत जीवन जीते हुए, जो मानव स्वभाव के लिए असहनीय प्रतीत होता था, वह सौ से अधिक वर्ष जीवित रहने के बाद अपने अंत के करीब पहुँचे। वे अस्सी वर्षों तक स्तंभ पर खड़े रहे, जैसा कि पूरी तरह से

वशि्वसनीय खाते वाले लोग बताते हैं। उन्होंने पूरण सद्गुण प्राप्त कर लयिा था - वे एक सांसारकि देवदूत और एक स्वर्गीय मनुष्य थे।

उनके शषि्य एंथनी, आदरणीय संत के परमधाम गमन का वर्णन इस प्रकार करते हैं।

वे कहते हैं, 'एक दनि, अर्थात् शुक्रवार को, नौवें घंटे के बाद, जब हम उनके सामान्य उपदेश और आशीर्वाद की प्रतीक्षा कर रहे थे, तो वे स्तंभ से हमारी ओर नहीं देखे; और न ही उन्होंने शनविार या रवविार को प्रचलति अपनी पतिृवत् वचन-भेंट हमें दी।' मैं डर गया, इसलएि मैं स्तंभ पर चढ़ गया, और वहाँ मैंने रेवरेंड को सरि झुकाए, जैसे प्रार्थना में हों, और हाथ छाती पर बँधे हुए खड़े देखा। यह सोचकर कि वे प्रार्थना कर रहे हैं, मैं चुपचाप खड़ा रहा; फरि, उनके सामने आकर, मैंने कहा:

'पतिाजी! हमें आशीर्वाद दीजएि, क्योंकि लोग तीन दनि और तीन रातों से इस स्तंभ के चारों ओर आपके आशीर्वाद की प्रतीक्षा में खड़े हैं।' लेकनि उन्होंने मुझे उत्तर नहीं दयिा। और मैंने उनसे फरि कहा:

'पतिाजी, आप अपने दुखी बेटे का जवाब क्यों नहीं दे रहे? क्या मैंने कसिी तरह से आपको दुख पहुँचाया है? अपना हाथ मेरी ओर बढ़ाएँ, ताकि मैं उसे चूम सकूँ।'

लेकनि कोई जवाब नहीं आया। आधे घंटे तक उनके सामने खड़े रहने के बाद, मुझे संदेह होने लगा और मैंने सोचा: क्या वह पहले ही प्रभु के पास नहीं चले गए थे? मैंने अपना कान उनके पास लगाया, और मुझे कोई सांस सुनाई नहीं दी; केवल उनके शरीर से एक तेज सुगंध आ रही थी, मानो वभिन्नि सुगंधति तेलों से उत्पन्न हुई हो।

तब, यह महसूस करते हुए कि वह प्रभु के पास चले गए हैं, मैं दुख से भर गया और जोर-जोर से रोया। और उनके पास आकर, मैंने उनके अवशेषों को अलग रखकर छपिा दयिा, और उनकी आँखों, उनकी दाढ़ी, उनके होठों और उनके हाथों को चूमा, यह कहते हुए:

'पति जी, आप मुझे कसिके हवाले कर गए? मैं आपकी मीठी शकि्षाएँ कहाँ सुनूँगा? मैं आपके दैवीय प्रवचनों से कहाँ तृप्त होऊँगा? या आपके आशीर्वाद की प्रतीक्षा कर रहे लोगों को आपके बारे में क्या उत्तर दूँगा? मैं उन बीमारों से क्या कहूँगा जो यहाँ उपचार की तलाश में आते हैं? और आपका स्तंभ, बनिा आपके दीपक के, खाली देखकर कौन नहीं रोएगा? और जब दूर-दूर से बहुत से लोग आपको खोजने यहाँ आएँगे, और आपको न पाएँगे – तो क्या वे आँसू न बहाएँगे? हाय मेरी दुर्दशा! आज मैं आपको देखता हूँ, पर कल – चाहे मैं दाहनिे जाऊँ या बाएँ – मैं आपको न पा सकूँगा!

उसके लएि इस प्रकार वलिाप करते हुए, अपने प्राणों की पीड़ा में मैं सो गया, और देखो, वह आदरणीय व्यक्ति सूर्य के समान प्रकट हुए और कहा:

मैं इस स्तंभ, न इस स्थान, न ही इस धन्य पर्वत को छोड़ूँगा। नीचे जाओ और लोगों पर आशीर्वाद डालो, क्योंकि मैं तो पहले ही चल चुका हूँ। प्रभु की यही इच्छा है; और उन्हें मत बताना, कहीं अफवाहें न फैलें, परन्तु मेरे बारे में शीघ्रता से अँटीओक को खबर भेजो। तुम्हारे लएि इस स्थान पर सेवा करना उचति है, और प्रभु तुम्हारी मेहनत के अनुसार तुम्हें पुरस्कृत करेंगे।

और मैं अपनी नींद से जागा, और काँपते हुए कहा, 'पति जी, अपने पवत्रि वशि्राम में मुझे न भूलएिगा' – और मैं उनके पैरों पर गरि पड़ा, और उनके पवत्रि पैरों को चूमा, और, उनका हाथ लेकर, उसे अपनी आँखों पर रखा, और कहा, 'मुझे आशीर्वाद दीजएि, पति जी' – और फरि से जोर-जोर से रो पड़ा। तब, उठकर मैंने अपने आँसू पोंछे, कहीं कोई यह न जान जाए कि क्या हुआ था; मैं नीचे गया और गुप्त रूप से एक भरोसेमंद भाई को परमपावन की नधिना की खबर लेकर पैट्रआिर्क मार्टायर[5940] के पास अंत्योखयिा भेजा। और जल्द ही पैट्रआिर्क तीन बशिपों के साथ, और गवर्नर अपनी सेना के साथ पहुँच गए, और लोगों की एक बड़ी भीड़, न केवल अंतीयक से बल्कि सभी पड़ोसी कस्बों और गांवों से भी, साथ ही मठों के भकि्षु मोमबत्तयिाँ और धूपदान लेकर, और सरैसेनों की एक वशिाल भीड़ जल्द ही नदयिों की तरह वहाँ उमड़ पड़ी, क्योंकि पूजनीय की मृत्यु की खबर हवा द्वारा दूर-दूर तक फैल गई थी। और पैट्रआिर्क, बशिपों के साथ, स्तंभ पर चढ़े; और, पवत्रि अवशेष लेकर, वे उन्हें नीचे उतार लाए और स्तंभ के पैर में रख दयिा। और सभी लोग रोए; यहाँ तक कि पक्षयिों की एक भीड़, सबके सामने, एक चीख के साथ स्तंभ के चारों ओर उड़ने लगी, मानो दुनयिा के लएि प्रकाश के ऐसे स्तंभ के नधिन पर शोक मना रही हो। पूरे लोगों के रोने की आवाज़ सात स्टेडयिम[5941] तक सुनी जा सकती थी, और आसपास

[5940] मार्तरियिस 456 से 468 तक अंतीयक के पैट्रआिर्क थे।

[5941] स्टेडयिम लंबाई की एक इकाई है, जो लगभग 88 फथॉम होती है; सात स्टेडयिम लगभग 1.25 वर्स्ट होते हैं।

के पहाड़, खेत और पेड़ भी लोगों के साथ शोक मनाते और रोते हुए प्रतीत हो रहे थे, क्योंकि हर जगह वातावरण उदास था और काले बादल छा रहे थे। जहाँ तक मेरी बात है, मैंने पवित्र अवशेषों के सामने एक स्वर्गदूत को प्रकट होते देखा; उसका चेहरा बिजली की तरह और उसके वस्त्र बर्फ की तरह थे, और उसके साथ सात वृद्ध वार्तालाप कर रहे थे; मैंने उनकी आवाज़ें सुनीं, लेकिन यह समझ नहीं सका कि क्या कहा जा रहा था, क्योंकि मुझ पर भय और आतंक छा गया था।'

जिस दिन आदरणीय सिमोन का निधन हुआ, संत के जीवन-मार्ग पर उनके शिष्य और अनुयायी, आदरणीय डैनियल—उस समय से ठीक पहले जब वह भी कॉन्स्टेंटिनोपल के पास ब्लैक सी के मुहाने पर स्तंभ पर चढ़ने का इरादा रखता था— – उसने, आदरणीय सिमोन के स्तंभ की दिशा से, स्वर्गदूतों की एक बड़ी सेना को पृथ्वी से स्वर्ग की ओर बढ़ते हुए देखा, और उनके बीच संत सिमोन की आनंदित आत्मा को ऊँचाई की ओर उड़ते हुए देखा। और केवल आदरणीय दानियल ही नहीं, बल्कि धन्य ऑक्सेनटियस ने भी, जिन्हें मरुस्थल से काल्सेडोन परिषद[5942] के लिए बुलाया गया था, वही दृश्य देखा जब वे उस समय बेथनी[5943] में थे।

जब संत सिमियन के पवित्र अवशेषों को तैयार किए गए ताबूत पर रखा गया, तो पैट्रिआर्क ने एक पवित्र स्मृति चिन्ह के रूप में संत की दाढ़ी के कुछ बाल लेने के लिए अपना हाथ बढ़ाया, और तुरंत ही उनका हाथ सूख गया। सभी द्वारा ईश्वर और संत से की गई प्रार्थनाओं के बाद ही पैट्रिआर्क का हाथ फिर से स्वस्थ हुआ। संत सिमियन के पवित्र अवशेषों को लेकर, वे भजन गाते हुए उन्हें अंतीयक ले गए, और पूरा शहर उनका स्वागत करने के लिए बाहर आया। वहाँ एक व्यक्ति था जो लगभग चालीस वर्षों से बहरा और गूंगा था। जैसे ही उसने पूज्य संत के पवित्र शरीर को देखा, उसकी सुनने और बोलने की शक्ति तुरंत लौट आई, और वह पवित्र अवशेषों के सामने गिर पड़ा और चिल्लाया: 'हे ईश्वर के सेवक, आप मेरे भले के लिए आए हैं, क्योंकि आपके आने से मैं चंगा हो गया हूँ।'

अंतियोकिया के निवासियों ने संत के शरीर को—जो सोने या चांदी से भी अधिक कीमती था—प्राप्त कर, उसे महान पैट्रिआर्कल चर्च[5944] में ले गए, और उनकी कब्र पर कई चमत्कार और चंगाई हुई। कुछ वर्षों बाद, आदरणीय साइमन द स्टाइलाइट के सम्मान में एक चर्च बनाया गया, और उनके पवित्र अवशेष वहाँ स्थानांतरित कर दिए गए।

परम पूज्य की मृत्यु महान् लियो के शासनकाल[5945] के चौथे वर्ष में हुई। यह वर्ष 460 ईस्वी था। सम्राट लियो ने एंटिओक के लोगों के पास दूत भेजे, उनसे संत की पवित्र अवशेष सौंपने के लिए कहा ताकि उन्हें कॉन्स्टेंटिनोपल ले जाया जा सके; लेकिन उन्होंने, ऐसे मध्यस्थ से वंचित नहीं होना चाहकर, सम्राट के दूतों से कहा:

'चूँकि हमारे शहर में पत्थर की दीवारें नहीं हैं—क्योंकि वे गिर गई हैं, आंशिक रूप से राजा के क्रोध से तबाह और आंशिक रूप से एक बड़े भूकंप से चूर-चूर हो गई हैं[5946] —इसी कारण से हमने सिमोन का पवित्र शरीर लाया है, ताकि यह हमारे लिए एक दीवार और रक्षा का काम कर सके[5947] ।'

जिस स्थान पर पूजनीय सिमोन का स्तंभ खड़ा था, उसी स्थान पर उनके नाम पर एक सुंदर क्रूसीफॉर्म चर्च बनाया गया और एक बड़ा मठ स्थापित किया गया[5948] । और पूजनीय ने अपने शिष्य एंथनी से एक दर्शन में किया गया वादा पूरा किया, अर्थात् कि वह अपनी जगह नहीं छोड़ेंगे: क्योंकि वहाँ चमत्कार और बीमारों के ठीक होने की घटनाएँ कम नहीं थीं। और हर साल उनकी स्मृति के दिन, स्तंभ के ऊपर एक बड़ा तारा प्रकट होता था और पूरे देश को रोशन कर देता था। कई ऐतिहासिक लेखक उस तारे के प्रकट होने की गवाही देते हैं, विशेष रूप से इवाग्रियस स्कॉलैस्टिकस[5949] , जिन्होंने इसे अपनी आँखों से देखा था। उसी इवाग्रियस लिखते हैं कि यह पवित्र स्थान महिलाओं के लिए वर्जित था, और यह

[5942] काल्सेडोन की परिषद – चौथी सार्वभौमिक परिषद – 451 में हुई थी।

[5943] बेथनी – यरूशलेम के दक्षिण-पूर्व में, दो वर्स्ट से कुछ अधिक दूरी पर, जैतून के पहाड़ की तलहटी में स्थित एक गाँव।

[5944] पूर्व के 'महान चर्च' वे हैं जो पैट्रिआर्केट्स के भीतर स्थित हैं और जिन्हें दिव्य सेवाओं के आयोजन के लिए स्वयं पैट्रिआर्कों द्वारा नामित किया गया है।

[5945] लियो महान ने 457 से 474 तक शासन किया।

[5946] यह, बेशक, सीरिया के एंटिओक (Antioch) को संदर्भित करता है, जो कभी सीरियाई राज्य की शानदार राजधानी थी, लेकिन अब एशियाई तुर्की में एक गरीब छोटा सा शहर है।

[5947] संत सिमियन के अवशेषों का एक हिस्सा बाद में उनकी प्रार्थनाओं के माध्यम से सम्माननीय डेनियल द स्टाइलाइट को हस्तांतरित किया गया, जैसा कि इस संत की जीवनी – 11 दिसंबर – में दर्ज है।

[5948] 8वीं शताब्दी में, दमिश्क के संत जॉन ने आदरणीय सिमियन के सम्मान में एक कैनन रचा, और चर्च ने पैट्रिआर्क जर्मनस से आदरणीय के सम्मान में पवित्र भजन अपनाए।

[5949] छठी शताब्दी में रहे इवाग्रियस स्कॉलैस्टिकस ने *चर्च इतिहास* लिखा।

सुनश्चिति करने के लिए हर संभव सावधानी बरती जाती थी कि कोई महिला भी दहलीज को छूने की हिम्मत न करे; यहाँ तक कि संत की अपनी माँ को भी इसे पार करने की अनुमति नहीं थी। कहा जाता है कि एक महिला ने पुरुष का वेश धारण किया ताकि वह सेंट साइमन के चर्च में बिना पहचानी प्रवेश कर सके, और जब उसने चर्च की दहलीज को छुआ, तो वह तुरंत पीठ के बल गिरकर मर गई। हालांकि, यदि महिलाएँ वहाँ आती भी थीं, जैसा कि निकिफोरस लिखते हैं[5950] , तो भी वे बाड़ के पास जाने की हिम्मत नहीं करती थीं, बल्कि दूर खड़ी होकर स्तंभ को निहारते हुए अपनी प्रार्थनाएँ अर्पित करती थीं।

और जो भी विश्वास के साथ आए, वे संत की कृपा से वंचित नहीं रहे, बल्कि उन्हें सहायता और विभिन्न प्रकार के चंगाई प्राप्त हुई और वे आनंद के साथ लौटे, और त्रिमूर्ति में एक परमेश्वर, पिता और पुत्र और पवित्र आत्मा का धन्यवाद करते हुए, जिनके लिए सम्मान और महिमा और आराधना हो, अब और हमेशा और युगों-युगों तक। आमीन।

लुगा से एक वचन[5951]

मिनस नामक एक डीकन के बारे में, जिसने संन्यासी का वेश त्याग दिया था और जो, संत सिमियन के माध्यम से, उसे फिर से धारण करके उद्धार पाया।

जॉर्जी रैफ्स्की[5952] ने हमें मिना नामक एक भाई के बारे में बताया, जो पहले वहाँ एक डिकन थे:

'वह मठ छोड़ गया, और—मुझे नहीं पता कि उसके साथ क्या हुआ—लेकिन उसने मठीय जीवन त्याग दिया और एक सामान्य व्यक्ति बन गया। कई दिनों बाद, वह परमेश्वर के नगर, एंटिओक की यात्रा कर रहा था, और जब वह सेलुसिया[5953] से गुज़रा, तो उसने दूर से आदरणीय साइमन द स्टाइलाइट का मठ देखा और अपने आप से कहा: 'मैं महान साइमन से मिलने जाऊँगा, क्योंकि मैंने उन्हें पहले कभी नहीं देखा है।' जैसे ही वह स्तंभ के पास पहुँचा और संत उसे देख सकें, सिमोन को ईश्वर से पता चला कि मीना एक भिक्षु था और उसने डीकन के रूप में सेवा की थी; और, अपने परिचारक को बुलाकर, उन्होंने कहा:

'मुझे एक कैंची ला दो।'

सेवक उन्हें ले आया। सिमोन ने उससे कहा:

'प्रभु धन्य हैं; उसके बाल काट दो,' और स्तंभ के पास कई लोगों के खड़े होने के बीच उन्होंने अपनी उंगली से मीना की ओर इशारा किया।

मिनस, संत के शब्दों से चकित और बहुत डरकर, उसने बिल्कुल भी आपत्ति नहीं की, यह समझते हुए कि ईश्वर ने उसके बारे में सब कुछ उस वृद्ध को बता दिया था। उसके सिर मुंडवाने के बाद, महान सिमियन ने उससे कहा: 'एक प्रार्थना कहो, डिकिन,' और जब उसने प्रार्थना कह ली, तो संत ने उससे कहा: 'राइफा जाओ, जहाँ से तुम आए हो।'

जब उसने कहना शुरू किया, 'मैं अपने पूर्वजों के सामने यह लज्जा सहन नहीं कर सकता', तो शिमोन ने उससे कहा:

'मेरे बच्चे, मुझ पर भरोसा रखो – जो अभी हुआ है उसमें तुम्हारे लिए कोई लज्जा नहीं है, और पितागण तुम्हारा खुली बाहों से स्वागत करेंगे; वे तुम्हारी वापसी पर आनंदित होंगे। और जान लो कि ईश्वर तुम्हें एक संकेत दिखाएगा जिससे तुम जान पाओगे कि उसने तुम्हारे पाप को क्षमा कर दिया है, क्योंकि उसकी कृपा शब्दों से परे है।'

जब वह राइफा पहुँचा, तो संतों ने खुले बाहुओं से उसका स्वागत किया और उसे डिकिन के पद पर बने रहने दिया। एक रविवार, जब वह महान ईश्वर और हमारे उद्धारकर्ता यीशु मसीह के जीवन-दायक रक्त को ले जा रहा था, तो उसकी आँख अचानक बाहर निकल आई। और इस चिह्न से पादरियों ने समझ लिया कि प्रभु ने उसके पाप को क्षमा कर दिया था, जैसा कि संत सिमियन ने कहा था[5954] ।

[5950] 14वीं सदी में रहे निकिफ़ोरस कैलिस्टोस ने *द हिस्ट्री ऑफ़ द चर्च* लिखा।

[5951] *द स्पिरिचुअल पास्चर* – एक संन्यासी जॉन मॉस्कस की रचना – में पूर्वी संन्यासियों के जीवन के वृत्तांत शामिल हैं।

[5952] राइफा सिनाई प्रायद्वीप के पूर्वी तट पर एक गाँव है।

[5953] सेलुसिया सीरिया में भूमध्य सागर के तट पर, एंटिओक के पश्चिम में और ओरोन्टेस नदी के मुहाने पर स्थित एक तटीय शहर है।

[5954] डीकन मीना से जुड़ी घटना को इस प्रकार समझा जा सकता है। किसी अज्ञात कारण से, मीना ने अपनी मर्ज़ी से संन्यासी जीवन और डिकिन पद को त्याग दिया और एक सामान्य व्यक्ति के रूप में अपना समय बिताया। बेशक, उनकी यह स्वच्छंदता एक गंभीर पाप था; फिर भी, चर्च के

एक पुरोहति पर संत समिोन द्वारा कयि गया चमत्कार

एक दनि एक पुरोहति चर्च के बरामदे में पवत्रि सुसमाचार पढ़ते हुए बैठे थे। और देखो, एक दुष्ट आत्मा एक काले और उदास बादल के रूप में उसके पास आया और, एक हुड की तरह, उसके सरि को घेर लयि; और उसके लएि प्रकाश बुझ गया, और उसका मन उससे छनि गया, और उसकी सारी हड्डयिाँ ढीली पड़ गईं, और वह बोल नहीं सका। जो लोग अंदर गए उन्हें वह मृतक की तरह पड़ा हुआ मलि; और वह नौ साल तक उसी हालत में रहा, जब तक कोई उसकी मदद न करे, वह अपनी दूसरी ओर मुड़ भी नहीं सकता था। उसके घर वालों ने संत समिोन के बारे में सुनकर, उस बीमार व्यक्तकिो एक पलंग पर लादकर संत के मठ के लएि रवाना हुए; और, मठ की ओर तीन स्टेडयिम से भी कम दूरी तय करने के बाद, वे वहाँ आराम करने के लएि रुके। और प्रार्थना में खड़े संत समिोन को उस पुरोहति के बारे में प्रकट हुआ। आधी रात को, संत ने अपने शष्यिों में से एक को बुलाया और उससे कहा:

'यहाँ से कुछ पानी ले जाओ और जल्दी जाओ; तुम्हें एक पुरोहति बस्तिर पर ले जाते हुए मलिेंगे। इस पानी को उन पर छड़िकना और उनसे कहना: "पापी समिोन तुमसे यह कहते हैं: हमारे प्रभु यीशु मसीह के नाम पर, उठो, अपना बस्तिर छोड़ो, और अपने पैरों पर मेरे पास आओ।"'

शष्यि गया और जैसा संत ने नर्दिेश दयि था, वैसा ही कयि। और वह वृद्ध व्यक्तपिूरी तरह से स्वस्थ होकर उठ खड़ा हुआ, और आगे आकर संत के सामने साष्टांग दंडवत प्रणाम कयि।

संत ने उससे कहा:

'उठो, डरो मत! यद्यपि शैतान ने तुम्हें नौ वर्षों तक दुख दयि है, परन्तु परमेश्वर का मानवजाति के प्रतिप्रेम तुम्हें पूरी तरह से नष्ट नहीं होने दयि है। क्योंकि तुमने पवत्रि वेदी के भीतर, ईश्वर के भय के बनि—और यहाँ तक कि पवत्रिस्थान के अपमानजनक तरीके से—व्यवहार कयि, और सत्य प्रकट होने से पहले, तुमने उन बदनाम करने वालों की बात सुनी जन्हिोंने गुप्त रूप से अपने पड़ोसयिों की नंदिा की, और जनिके खलिाफ उन्होंने बदनामी की, उन लोगों का अन्यायपूर्वक अपमान कयि, और उन्हें पवत्रि रहस्यों से बहष्कृत कर दयि; और ऐसा करते हुए, तुमने मानवता के प्रेमी, ईश्वर को, बहुत दुख पहुँचाया, जसिसे शैतान को अत्यधकि प्रसन्नता हुई – और इसी कारण शैतान ने आप पर अधकिार कर लयि। फरि भी, मानवजाति के प्रति ईश्वर का प्रेम और उनकी दया आप पर प्रचुर मात्रा में बरसी है। जनि लोगों को आपने बहष्कार करके दुखी कयि है, उन्हें आप बहुत बीमार पाएंगे: वे आपके लएि प्रार्थना कर रहे हैं, कि आप, ठीक होकर, उन्हें क्षमा कर दें; और जैसे परमेश्वर ने आप पर दया दखिाई है, वैसे ही आप भी उन पर दया करें, और, यहाँ से कुछ मट्टिी लेकर, उन पर छड़िकें।

[5955]और पुरोहति आनन्द से परमेश्वर का धन्यवाद करते हुए अपने मार्ग पर चला गया, और जैसा संत ने उसे आज्ञा दी थी, वैसा ही कयि। और तुरंत वे चंगे हो गए, और उन्होंने ईसा मसीह की महमिा की।

मुकदमे के बनि, उन्हें अभी तक डकिन पद की कृपा खोने वाला नहीं माना जा सकता था। तदनुसार, आदरणीय के आदेश पर मीना का मुंडन और मीना द्वारा प्रार्थना—अर्थात् एक्टेनयि—का पाठ, दोनों ही केवल मीना के लएि उस मठवासी जीवन और डकिन मंत्रालय की एक प्रतीकात्मक, दृश्यमान याद के रूप में काम करते थे, जसिे उसने जानबूझकर त्याग दयि था; इस अनुस्मारक के माध्यम से, माननीय पति स्पष्ट रूप से मीना में पश्चाताप जगाना चाहते थे और, इसके अलावा, शायद मठवासी समुदाय के बीच मीना की डकिन मंत्रालय जारी रखने की क्षमता के बारे में कसिी भी संदेह को दूर करना चाहते थे। जहाँ तक मीना की आँख के बीमार पड़ने की बात है, इसने संकेत दयि कि मीना को उसके पाप के लएि स्वयं ईश्वर द्वारा दंडति कयि गया था और, परणिामस्वरूप, अब वह (मठवासी चार्टर और चर्च के नयिमों के अनुसार) आगे की सजा के अधीन नहीं था।

[5955] इस वृत्तांत में जो बात उल्लेखनीय है, वह यह है कि पादरी द्वारा बदनामी के आधार पर बहष्कृत कएि गए लोग, यद्यपि नर्दिोष होते हुए भी पवत्रि रहस्यों से वंचति थे, फरि भी एक गंभीर बीमारी से पीड़ति हुए; इसके अलावा, उन्होंने स्वयं, मानो अपनी नर्दिोषति भूलकर, अपने बहष्कृतकर्ता के ठीक होने के लएि प्रार्थना की, ताकि उसकी क्षमा प्राप्त करके, वे पवत्रि रहस्यों में भाग ले सकें। इस प्रकार, पवत्रि रहस्यों की शक्ति ऐसी है कि उनसे वंचति होना—भले ही कसिी की अपनी गलती से न हो—कभी भी व्यक्तिको अछूता नहीं छोड़ता!

ट्रोपारयिन, स्वर 1:

हे पूज्यनीय, आप धैर्य के एक स्तंभ थे, पूर्वजों के प्रति उत्साही: यॉब के दुखों में, यूसुफ के प्रलोभनों में, और देह में रहते हुए भी अदेह लोक में रहने वालों के लिए, हे हमारे पिता समिऔन: हमारे परमेश्वर मसीह से प्रार्थना करें कि हमारी आत्माओं का उद्धार हो।

कॉन्टाकयिन, स्वर 2:

आपने स्वर्गीय वस्तुओं की खोज की, आप स्वर्गदूतों के साथ एकजुट हुए, और अग्निमय रथ के लिए एक स्तंभ बने: इस प्रकार आप स्वर्गदूतों के सहचर बने, हे पूजनीय, हम सभी के लिए हमारे ईश्वर मसीह से उनके साथ अविराम प्रार्थना करते हुए।

धर्मी यहोशू की स्मृति

1 सितंबर को स्मरणोत्सव

मूसा के बाद यहोशू यहूदी लोगों का नेता था। उसने पूरे लोगों को सूखी यॉर्डन नदी के पार ले गया, ठीक वैसे ही जैसे मूसा ने उन्हें लाल सागर के पार ले गया था (यहोशू 3:14-17; निर्गमन 14:1-31)। उन्होंने स्वर्गदूतों की सेना के सेनापति, महादूत माइकल को आमने-सामने देखा (यहोशू 5:13–16), और तुरहियों की ध्वनि से यरीहो की शहर की दीवारें गिरा दीं (यहोशू 6:1–26)[5956] । शत्रु के साथ एक लड़ाई के दौरान, उन्होंने अपने शत्रुओं को पूरी तरह से पराजित करने तक सूर्य को रोक दिया (यहोशू 10:12–14)[5957] । लोगों को प्रतिज्ञात देश में ले जाने के बाद, यहोशू ने इसे लॉटरी द्वारा यहूदियों के बीच बाँट दिया और 110 वर्ष की आयु में शांतिपूर्वक निधन कर गए[5958] ।

मियासनि मठ में परमेश्वर की अति पवित्र माता के कैथेड्रल का स्मरणोत्सव

1 सितंबर को स्मरणोत्सव

जब मूर्तिभंजन की विधिर्मिता[5959] , सम्राट लियो इसाउरियन[5960] के समर्थन से, जो स्वयं सबसे प्रमुख मूर्तिभंजक थे, पूर्व में काफी मजबूत हो गई थी, तब सबसे पवित्र कुँवारी मरियम की चमत्कारी प्रतिमा, जिसे मियासनि मठ में रखा

[5956] यरिहो का शहर यॉर्डन नदी के पश्चिमी तट पर, एक उपजाऊ घाटी में, खजूर के पेड़ों से लदे बगीचों के बीच स्थित था, और यही कारण था कि इसे 'खजूरों का शहर' कहा जाता था। यह कनान देश का एक शाही शहर था, जो समृद्ध और किलेबंदी किया हुआ था, और एक चौड़ी दीवार से घिरा हुआ था। जब इस्राएलियों ने प्रतिज्ञात देश में प्रवेश किया, तो यह सबसे पहले उनके द्वारा जीता गया और एक चमत्कारिक तरीके से लिया गया था। आज, प्राचीन यरीहो के पास रिचा नामक एक छोटा, गरीब और गंदा गाँव है, जिसमें कुछ मामूली झोपड़ियाँ और इसके दयनीय निवासी हैं।

[5957] यहोशू की प्रार्थना के बाद दिन के चमत्कारिक रूप से लंबा हो जाने के वृत्तांत के लिए, यहोशू 10:12–14 देखें।

[5958] यहूदी लोगों के नेता के रूप में धर्मी यहोशू की गतिविधियों को 'यहोशू की पुस्तक' में विस्तार से बताया गया है, जिसे उनकी ही रचना माना जाता है। यह बाइबिल में पेंटेटेच के बाद आती है और मूसा की पुस्तकों में शुरू हुए इतिहास को जारी रखते हुए, प्रतिज्ञात भूमि पर विजय, इस्राएल के गोत्रों के बीच इसके विभाजन, और यहोशू की मृत्यु का वर्णन करती है, जो 1556 से 1550 ईसा पूर्व की अवधि को कवर करती है। यहोशू की पुस्तक का प्रकारात्मक और भविष्यसूचक महत्व भी है। प्रेरित पौलुस यशायाह को यीशु मसीह का एक प्रकार कहते हैं (देखें इब्रानियों 4:8-9)। जैसे यशायाह ने इस्राएल को प्रतिज्ञात देश में प्रवेश कराया, वैसे ही मसीह भी उन लोगों को स्वर्ग के राज्य में उनकी विरासत में प्रवेश कराते हैं जो उन पर विश्वास करते हैं। इस्राएलियों द्वारा यॉर्डन नदी को पार करना हमारे बपतिस्मा का एक प्रकार है। राहाब – एक अन्यजाति जो उद्धारकर्ता की पूर्वज बनी (देखें मत्ती 1:5) – मसीह की कलीसिया में प्रवेश करने वाले अन्यजातियों का एक प्रकार है। कलीसिया की दैवीय सेवाओं में, यहोशू की पुस्तक से तीन पैरिया पढ़े जाते हैं (5 जनवरी को, महा शनिचर को और स्वर्गदूतों के सम्मान में पर्वों पर)।

[5959] वे विधिर्मी जिन्होंने प्रतिमाओं की आराधना को मूर्तिपूजा मानकर अस्वीकार किया और उसका उत्पीड़न किया, ठीक उसी प्रकार जैसे उन्होंने पवित्र अवशेषों की आराधना का भी किया। प्रतिमा-भंजन की विधिर्मता 8वीं शताब्दी की शुरुआत में पूर्वी चर्च में उभरी और लंबे समय तक पूर्व में प्रचलित रही, जब तक कि इसे अंततः787 में निसीया में आयोजित सातवें सार्वभौमिक परिषद में निंदा नहीं कर दिया गया। प्रतिमाओं की पूजा को 842 में कॉन्स्टेंटिनोपल की परिषद में निर्णायक रूप से बहाल किया गया।

[5960] वह 716 से 741 तक शासन किया।

गया था, को अज़ुरोवो झील में फेंक दिया गया था। मियासिनि मठ का सटीक स्थान संत अकाकियोस, मेलटिनि के बिशप, के जीवन में दर्ज है। इस विवरण में, हम निम्नलिखित पढ़ते हैं। आर्मेनियाई शहर मेलटिनि[5961] से 18 पोप्रीश्ची[5962] की दूरी पर मियासिनि नामक एक छोटा सा ग्रीक बस्ती था। यह दो पहाड़ियों के बीच एक बहुत ही सुंदर, समतल और चौड़ी घाटी थी जो दोनों ओर बहुत दूर तक फैली हुई थी। इस घाटी से होकर पूर्व की ओर बहती थी तीव्र और निर्मल अज़ूर नदी, जिसने अपने चारों ओर की पूरी घाटी को झीलों से भर दिया था। यहाँ, एक विशेष रूप से सुंदर स्थान पर, एक मूर्तिपूजक मंदिर और उत्तम फल देने वाले पेड़ों का एक बगीचा था। इस बगीचे में दुष्ट मूर्तिपूजक यज्ञ किए जाते थे। महाधर्माध्यक्ष सेंट अकाकियोस ने इस स्थान को मूर्तिपूजा की अशुद्धता से शुद्ध किया और यहाँ सर्वपवित्र कुँवारी मरियम के नाम पर एक चर्च का निर्माण किया। नव-निर्मित चर्च को समर्पित करने के बाद, सेंट अकाकियोस ने उस स्थान को, जहाँ कभी राक्षस रहते थे, पवित्र स्वर्गदूतों के निवास में बदल दिया। जहाँ कभी शैतान के सम्मान में खूनी बलिदान चढ़ाए जाते थे, वहाँ सच्चे ईश्वर को शुद्ध रक्तहीन बलिदान चढ़ाया जाने लगा, और परम पवित्र ईश्वर की माता की प्रतिमा के माध्यम से चमत्कार हुए।' इस प्रकार यह स्पष्ट है कि मठ, जिसका नाम उसके स्थान के नाम पर मियासिनि रखा गया था, परम पवित्र ईश्वर की माता के उपर्युक्त चर्च में स्थापित किया गया था। प्रतिमा-भंजकों द्वारा ईश्वर की माता की प्रतिमा को झील में फेंके हुए कई वर्ष बीत चुके थे। धर्मनिष्ठ ज़ार माइकल और उनकी माता थियोडोरा[5963] के शासनकाल के दौरान, यह प्रतिमा झील की सतह पर तैर आई और सितंबर के पहले दिन भक्तों द्वारा इसे बरामद कर लिया गया, पानी में लंबे समय तक रहने के बावजूद यह पूरी तरह से क्षति-मुक्त थी। इस चमत्कारी घटना के सम्मान में , उस मठ में हमारी निर्दोष माता, परमेश्वर की अति शुद्ध कुंवारी माता[5964] का सम्मान और महिमा करने के लिए एक वार्षिक उत्सव आयोजित किया गया था।

ट्रोपारियन, स्वर 1:

हे परमेश्वर की आनंदित माता, कुँवारी, मानव जाति की शरण और मध्यस्थ, आनंदित हो, क्योंकि तुमसे ही संसार के उद्धारकर्ता ने देह धारण किया: क्योंकि केवल तुम ही माता और कुँवारी, सदा धन्य और अति महिमामयी हो। मसीह परमेश्वर से प्रार्थना करो कि वह सम्पूर्ण ब्रह्मांड को शांति प्रदान करें।

चालीस उपवास करने वाली कुंवारी कन्याओं और उनके शिक्षिक अम्मून की स्मृति

1 सितंबर को स्मरण किया जाता है

[5965]ये पवित्र कुंवारीयाँ एड्रियिनोपोलिस, मैसेडोनिया की थीं[5966] और, डिकिन अम्मून द्वारा शिक्षिति होकर, मसीह में विश्वास करने लगीं। उस नगर के शासक वावद ने उन्हें न्याय के लिए अपने सामने पेश होने का आदेश दिया और उन्हें

[5961] रोमन सम्राट ट्राजन द्वारा निर्मित; कैपाडोसिया में स्थित, उसी नाम के देश की राजधानी, जो कभी लघु आर्मेनिया का हिस्सा था।

[5962] एक 'पोप्राइश्चे' लगभग 690 सैज़ेन का था; परिणामस्वरूप, 18 पोप्राइश्चे लगभग 23 वर्स्ट के बराबर होते थे।

[5963] बाइज़ेंटाइन सम्राट थियोफिलिस द आइकनोक्लास्ट की पत्नी। उनकी मृत्यु के बाद, उनके पुत्र माइकल तृतीय (जो 842 से 867 तक शासन किया) के शासनकाल में, 842 में कॉन्स्टेंटिनोपल की परिषद ने प्रतिमाओं की पूजा को बहाल किया और ऑर्थोडॉक्सी का पर्व स्थापित किया, जो महा-उपवास के पहले सप्ताह में मनाया जाता है।

[5964] इस घटना का जश्न कॉन्स्टेंटिनोपल में चाल्कोप्रेटिया में स्थित 'चर्च ऑफ द मदर ऑफ गॉड' में भी मनाया गया था। 17वीं सदी के स्लावोनिक पांडुलिपियों और मुद्रित कैलेंडर में प्रतिमा की खोज की तारीख के रूप में वर्ष 6364 दिया गया है। आम तौर पर स्वीकृत कैलेंडर के अनुसार, दुनिया की रचना से लेकर मसीह के जन्म तक 5,508 वर्ष बीते; हालाँकि, चूँकि 17वीं सदी के मुद्रित कैलेंडर में ऐतिहासिक वृत्तांत अक्सर 5,508 वर्ष नहीं गिनते, लेकिन सटीक रूप से 5,500, यहाँ दी गई संख्या को 856 नहीं, बल्कि 864 ईस्वी के रूप में समझना चाहिए। सम्राज्ञी थियोडोरा उस समय (855–867) पहले से ही निजी जीवन जी रही थीं।

[5965] वे सम्राट लिकिनियस के अधीन पीड़ित हुए, जिन्होंने 311 से 324 ईस्वी तक कॉन्स्टेंटाइन महान के साथ सह-शासन किया।

[5966] मैसडोनिया – ग्रीस के उत्तर में स्थित बीजान्टिन साम्राज्य का एक प्रांत। एड्रियिनोपल की स्थापना मूल रूप से सम्राट हैड्रियन ने की थी और इसका नाम उनके नाम पर रखा गया था; यह कॉन्स्टेंटिनोपल से बहुत दूर नहीं, उस स्थान पर स्थित है जिसे अब पूर्वी रुमेलिया कहा जाता है। हाल ही में, यह शहर, जो कभी बहुत महत्व का शहर था, पतन की ओर चला गया है। आधी आबादी बुल्गारियाई और सर्ब हैं।

मूर्तियों की पूजा करने के लिए मजबूर करने हेतु अनेक यातनाएँ दीं। उन्होंने ईश्वर से प्रार्थना की, और अचानक मूर्तिपूजक पुरोहित को एक अदृश्य शक्ति द्वारा हवा में उठा लिया गया; वहाँ काफी देर तक रहने के बाद, वह जमीन पर गिर पड़ा और मर गया। इसके बाद, यातना देने वाले ने संत अम्मोन को फाँसी देने और उनकी पसलियों को रौंदने का आदेश दिया; फिर उनके सिर पर एक लाल-गरम हेलमेट रखा गया, लेकिन पवित्र शहीद चमत्कारिक रूप से इससे बच गए। फिर संत अम्मोन को पवित्र कुँवारियों के साथ, हेराक्लिया[5967] में एक दूसरे यातना देने वाले के पास भेजा गया। उसके आदेश पर, उनमें से दस को आग में फेंक दिया गया; आठ को उनके शिक्षक के साथ तलवार से सिर कलम कर दिया गया; कुछ की मृत्यु मुँह और हृदय में तलवार लगने से हुई; उनमें से छह को चाकू से गोदा गया; और शेष छह के मुँह में लाल-गरम लोहा डालने के बाद वे प्रभु के पास चले गए।

पवित्र शहीदों कैलसि्टा और उनके भाइयों, इवोड और हर्मोजेनेस की स्मृति

1 सितंबर को स्मरण

[5968]ये पवित्र शहीद, पवित्र बपतिस्मा के संस्कार के माध्यम से आध्यात्मिक पुनर्जन्म प्राप्त करने के बाद, एक मूर्तिपूजक शासक के समक्ष ईसाई होने का आरोप लगाया गया। जब शासक ने देखा कि वे मसीह की स्वीकारोक्ति में अडिग थे, तो उसने उन्हें तलवार से सिर कलम करने की सज़ा सुनाई, और उन्होंने अपनी शहादत पूरी करके प्रभु के पास प्रस्थान किया।

15 सितंबर

2 सितंबर (पुराना कैलेंडर)

शहीद संत मामंत की जीवन और कष्ट

2 सितंबर को स्मरणोत्सव

मसीह के पवित्र शहीद, मामंत, का जन्म पाफ्लागोनिया में हुआ था[5969] । उनके माता-पिता – थियोडोटस और रूफिना – कुलीन वंश के लोग थे: दोनों एक अभिजात परिवार से थे[5970] , उन्हें बहुत सम्मान प्राप्त था, वे धनी थे और भक्ति से प्रकाशमान थे। वे लंबे समय तक मसीह में अपने विश्वास और उनके प्रति अपने तीव्र प्रेम को छिपा नहीं सके; उन्होंने सभी के सामने खुले तौर पर अपनी भक्ति का इज़हार किया और कई लोगों को मसीह के धर्म में परिवर्तित किया। परिणामस्वरूप, उनकी शिकायत गंग्रा शहर के राज्यपाल अलेक्जेंडर ([5971]) से की गई। इस राज्यपाल को राजा से एक फरमान मिला था कि वह मूर्तिपूजक देवताओं की पूजा को फैलाने और स्थापित करने के लिए हर संभव साधन का उपयोग करे, और साथ ही ईसाइयों और उन सभी लोगों को यातना दे और मार डाले जो इस शाही फरमान की अवज्ञा करते थे।

थेओडोटस को मुकदमे के लिए अपने सामने पेश होने का आदेश देने के बाद, अलेक्जेंडर ने उसे मूर्तियों को बलिदान चढ़ाने के लिए मजबूर करना शुरू कर दिया। लेकिन थेओडोटस ने तो गवर्नर की बात सुनने तक से इनकार कर दिया। हालाँकि अलेक्जेंडर उस अवज्ञाकारी व्यक्ति को तुरंत यातना देने के लिए तैयार था, फिर भी उसने थेओडोटस के

[5967] हेराक्लेया मार्मारा सागर के तट पर एक शहर है।

[5968] उन्होंने निकोमेडिया में, एशिया माइनर के उत्तर-पश्चिमी भाग में, जो सम्राट डायोक्लेटियन का निवास स्थान था, शहादत प्राप्त की। इन संतों की मृत्यु की सटीक तारीख अज्ञात है। कुछ लोग इसे डियोक्लेटियन के उत्पीड़न (चौथी शताब्दी की शुरुआत) के समय का मानते हैं – पैट्रिआर्क अलेक्सियस के 11वीं सदी के स्टुडाइट निियम में कहा गया है कि उनके अवशेष स्टुडाइट मठ में रखे गए थे और 1 सितंबर को उनके सम्मान में एक सेवा आयोजित की जाती थी।

[5969] पाफ्लागोनिया एशिया माइनर के दक्षिण में स्थित रोमन साम्राज्य का एक प्रांत था।

[5970] रोमन साम्राज्य में सबसे ऊँची सामाजिक श्रेणी, जो हमारी वंशानुगत कुलीनता के अनुरूप थी, को पैट्रिशियिंस के नाम से जाना जाता था।

[5971] गंग्रा पफ्लागोनिया की राजधानी थी।

कुलीन जन्म के कारण ऐसा करने से परहेज कयि; क्योंकि उसे वशिेष शाही अनुमति के बनि कुलीनों के वंशजों का अपमान करने और उन्हें यातना देने का अधकिार नहीं था। इसलिए, अलेक्जेंडर ने थयिोडोटस को कैपैडोसयि के सेसरयि[5972] में, राज्यपाल फाउसटस के पास भेज दयि। यह राज्यपाल ईसाइयों के प्रति जितिना क्रूर था, उतना ही अपने अधर्मी दुष्टता में उत्साही भी था। थयिोडोतस को देखते ही फावस्टस ने उसे तुरंत कैद कर दयि। थयिोडोतस की पत्नी, धन्य रूफनि, अपने पति के पीछे-पीछे चली आईं, भले ही वह उस समय गर्भवती थीं: वह उनके साथ जेल गईं और वहाँ मसीह के लिए दुख सहन कयि। थेओडोटस अपने शरीर की दुर्बलता से अवगत था और अपने यातनाकर्ता की उग्र क्रूरता को देखता था, फरि भी उसने धर्म के वरिुद्ध कसिी भी प्रकार का पाप करने के बजाय मरना पसंद कयि। हालाँकि, यह डरते हुए कि आगे आने वाली कठोर यातनाओं को सहने की उसमें शक्ति नहीं होगी, वह परमेश्वर के पास प्रार्थना में लग गया।

'हे प्रभु, हे सामर्थ्य के परमेश्वर,' थयिोडोतस ने प्रार्थना की, 'हे अपने प्रयि पुत्र के पति! मैं तुझे धन्य और महमिामय ठहराता हूँ कि तू मुझे अपने नाम के लिए इस कालकोठरी में डालने के योग्य समझा। परन्तु हे प्रभु, मैं तुझ से वनिती करता हूँ: तू मेरी दुर्बलता को जानता है; इस कालकोठरी में मेरी आत्मा को ग्रहण कर, कहीं ऐसा न हो कि मेरा शत्रु मुझ पर घमण्ड करे।

ईश्वर, जो *'सभ के हृदय रचता है... और सब कुछ परखता है'* (भजन संहति 32:15), ने अपने वशि्वासी सेवक की प्रार्थना सुनी और शीघ्र ही उसे धन्य वमिोचन प्रदान कयि; उसकी आत्मा को शरीर की कैद से मुक्त कर, उसे स्वर्ग के प्रकाशमान नविासों में बसा दयि। जहाँ तक थयिोडोतस की पत्नी, धन्य रूफनि का प्रश्न है, उसने कालकोठरी में कठनिाइयों और पीड़ाओं को सहते हुए और अपने पति के लिए गहरे शोक से अभभिूत होकर, समय से पहले एक पुत्र को जन्म दयि। नवजात शशिु और अपने पति के नरि्जीव शरीर को नहिारते हुए, उसने टूटे हुए दलि और आँसुओं के साथ ईश्वर से प्रार्थना की:

'हे ईश्वर, जसिने मनुष्य की रचना की और उसकी पसली से एक पत्नी बनाई, कृपा करें कि मैं भी अपने पति के समान पथ का अनुसरण करूँ, और मुझे इस क्षणकि जीवन से मुक्त कर, मुझे अपने शाश्वत धाम में स्वीकार करें! जहाँ तक नवजात शशिु का प्रश्न है, कृपया आप ही उसका पालन-पोषण करें, जैसा कि आप सर्वोत्तम जानते हैं! उसके लिए पति और माता, और उसके जीवन के संरक्षक बनो!

अपने दुख में ईश्वर से इस प्रकार पुकारने पर, इस सम्मानति और पवत्रि पत्नी की प्रार्थना ईश्वर ने सुनी और उसे शरीर के बंधनों से मुक्त कर दयि, तथा उसने अपना प्राण प्रभु के हाथों में सौंपते हुए अनंत स्वतंत्रता प्राप्त की। हालाँकि, शशिु अपने मृत माता-पति के बीच जीवति रहा।

तब *प्रभु 'जो छोटे बच्चों की रक्षा करते हैं'* (भजन संहति 114:5), ने कैसरयि में रहने वाली अम्मयि नामक एक कुलीन और धार्मकि महलि को यह प्रकट करने की कृपा की कि क्या हुआ था। एक सपने में, अपने स्वर्गदूत के माध्यम से, उसने उसे आदेश दयि कि वह गवर्नर से कालकोठरी में नधिन हो चुके संतों के शवों को मांगे और उन्हें सम्मान के साथ दफनाए; और शशिु को अपने घर ले जाकर उसे अपने ही पुत्र के रूप में पाल-पोसे। जागने पर, अम्मयि प्रभु की आज्ञा का पालन करने के लिए जल्दी से आगे बढ़ी और गवर्नर से मृत कैदयिों के शवों को कालकोठरी से नकिालने की अनुमति मांगने लगी। ईश्वर ने गवर्नर के कठोर हृदय को नरम कर दयि, और उसने उस सम्माननीय महलि के अनुरोध में कोई बाधा नहीं डाली। और इस प्रकार अम्मयि, तहखाने में प्रवेश करके, दोनों कैदयिों के शवों को एक-दूसरे के बगल में पड़े हुए पाया, और उनके बीच में - - एक सुंदर और प्रसन्न शशिु था। संतों के शवों को उठाकर, उसने उन्हें अपने बगीचे में सम्मानपूर्वक दफनाया, और शशिु को अपनी देखभाल में ले लयि। वह एक संतानहीन वधिवा थी और एक पवत्रि जीवन जीती थी। उस शशिु से अपने ही पुत्र की तरह प्रेम करने लगी, और उसे ईसाई धर्म में पाला।

वह शशिु बड़ा हुआ, लेकनि पाँच साल का होने तक उसने एक भी शब्द नहीं बोला। उसने अपना पहला शब्द अम्मयि से कहा, जो उसके लिए एक तरह से दूसरी माँ बन चुकी थीं, वह था 'माँ' (ग्रीक: 'सोसी' या 'माँ'), और इसी शब्द से उसका नाम मामंत रखा गया। अम्मयि ने उसे पढ़ना-लखिना सीखने के लिए भेजा, और वह जल्द ही अपने साथयिों से इतना आगे नकिल गया कि हर कोई उसकी बुद्धमित्ता से चकति हो गया।

[5972] कई शहरों का नाम कैसरयि था। कैसरयि, कैपाडोसयि के रोमन प्रांत की राजधानी, बाद में एक भूकंप से नष्ट हो गई।

उस समय, रोम में अधर्मी ऑरेलियन[5973] का शासन था। वह सभी को मूर्तियों की पूजा करने के लिए मजबूर करता था—न केवल वयस्क पुरुषों और महिलाओं को, बल्कि छोटे लड़कों को भी—और वह बच्चों पर विशेष ध्यान देता था, इस उम्मीद में कि, कम उम्र और अनुभवहीन होने के कारण, उन्हें आसानी से बहकाया जा सकता है और सभी प्रकार के बुरे कामों में लगाया जा सकता है। इसके अलावा, वह अधर्मी राजा मानता था कि बच्चे, जो छोटी उम्र से ही बलि का मांस खाने के आदी हो जाएँगे, वे अपनी वृद्धावस्था में और अधिक उत्साही मूर्तिपूजक बन जाएँगे। इसलिए, उसने उन्हें विभिन्न प्रलोभनों से अपनी दुष्टता में फँसाया। वास्तव में कई युवा और यहाँ तक कि जवान पुरुष भी इस प्रलोभन के आगे झुक गए और राजा की इच्छा का पालन किया। लेकिन जो मामंत के सहपाठी थे, उन्होंने उसकी आज्ञाओं का पालन करते हुए राजा के आदेशों का पालन नहीं किया। क्योंकि मामंत के पास अपनी युवावस्था में *'पुरुषों के सफेद बालों के समान बुद्धि, और एक निष्पाप जीवन—वृद्धावस्था की आयु'* थी (सभोपदेश 4:9), ने अपने साथियों को मूर्तिपूजक देवताओं की व्यर्थता साबित कर दी, जो निर्जीव और शक्तिहीन थे, और उन्हें एक सच्चे ईश्वर को जानने का उपदेश दिया—जिसका वह स्वयं सम्मान करता था—और उसे एक आध्यात्मिक बलिदान अर्पित करने का: एक पश्चातापी आत्मा और एक विनम्र हृदय (भजन संहिता 50:19)।

उस समय, राजा ने फाविस्टस की जगह लेने के लिए डेमोक्रिटस नामक एक अन्य राज्यपाल को केसरिया भेजा। वह अपने दुष्ट और अधर्मी विश्वास का एक बड़ा कट्टरपंथी था और, मानो, ईसाइयों के प्रति उत्पीड़न और हत्या की सांसें लेता था। उसे मामंत के बारे में सूचित किया गया कि न केवल वह स्वयं देवताओं की पूजा करने से इनकार करता था, बल्कि वह अपने साथ पढ़ रहे अन्य युवकों को भी भ्रष्ट कर रहा था और उन्हें ईसाई धर्म की शिक्षा दे रहा था। उस समय मामंतस अपनी पंद्रहवीं वर्षगांठ में था। वह एक बार फिर अनाथ हो गया था, क्योंकि उसकी दूसरी माँ, अम्मिया, ने अपने दत्तक पुत्र—संत मामंतस—को अपना एकमात्र उत्तराधिकारी बनाकर एक विशाल संपत्ति विरासत में दी थी और वह ईश्वर से प्रेम करने वालों के लिए तैयार स्वर्गीय धन-संपत्ति में चली गई थी।

डेमोक्रिटस ने मामंत के बारे में सुनकर उसे बुलवाया और जब उसे उसके सामने लाया गया, तो सबसे पहले उसने पूछा कि क्या वह ईसाई है, और क्या यह सच था कि वह न केवल स्वयं देवताओं की पूजा नहीं करता था, बल्कि अपने साथियों को भी राजा की आज्ञा की अवज्ञा करना सिखाकर उन्हें गुमराह कर रहा था।

युवा मामंत ने, एक परिपूर्ण और परिपक्व पुरुष की तरह, निडर होकर उत्तर दिया:

'मैं ही वह हूँ जो तुम्हारी बुद्धिमत्ता को कुछ भी नहीं समझता। तुम सही मार्ग से भटक गए हो और ऐसी अंधकार में भटक रहे हो कि तुम सत्य के प्रकाश को भी नहीं देख सकते; सच्चे और जीवित ईश्वर को त्यागकर, तुम राक्षसों की ओर मुड़ गए हो और निर्जीव तथा बधिर मूर्तियों के सामने सिर झुकाते हो। जहाँ तक मेरी बात है, मैं अपने मसीह से कभी मुँह नहीं मोड़ूँगा, और मैं यथासंभव अधिक से अधिक लोगों को उनके पास ले जाने का प्रयास करता हूँ।

मामान्त के साहसी उत्तर से स्तब्ध होकर, डेमोक्रीटस क्रोध से आग-बबूला हो गया और उसे तुरंत उनके नीच देवता सेरापिस के मंदिर[5974] ले जाने का आदेश दिया और वहाँ, जबरदस्ती, मूर्ति को बलिदान चढ़ाने के लिए मजबूर करने का हुक्म दिया। हालाँकि, मामान्त ने शासक के क्रोध से बिल्कुल भी डर नहीं दिखाते हुए, शांतिपूर्वक उत्तर दिया:

'तुम मुझे अपमानित नहीं कर सकते: मैं एक प्रतिष्ठित सेनेटोरियल परिवार से आए माता-पिता का पुत्र हूँ।'

तब डेमोक्रिटस ने उपस्थित लोगों से मामंत की उत्पत्ति के बारे में पूछा और यह जानकर कि वह प्राचीन रोमन गणमान्य व्यक्तियों के वंशज थे, और एक कुलीन तथा धनी महिला अम्मिया ने उनका पालन-पोषण किया था और उन्हें अपनी विशाल संपत्ति का उत्तराधिकारी बनाया था, उसने उन्हें यातना देने की हिम्मत नहीं की, क्योंकि वास्तव में उसे ऐसा करने का कोई अधिकार नहीं था। इसलिए, उसे लोहे की बेड़ियों में जकड़कर, उसने उसे राजा ऑरेलियन के पास भेज दिया, जो उस समय ईगे शहर में थे[5975] , और एक पत्र में उसे मामंत के बारे में सब कुछ समझाया। राजा ने डेमोक्रिटस का पत्र प्राप्त कर और ममांत के बारे में पढ़कर, तुरंत ही युवा ममांत को अपने समक्ष पेश करने का आदेश दिया। जब शहीद

[5973] सम्राट ऑरेलियन ने 270 से 275 तक शासन किया।

[5974] सेरापिस एक मूर्तिपूजक देवता थे, जिन्हें सिंहासन पर बैठे एक पुरुष के रूप में दर्शाया जाता था, जिसके हाथों में राजदंड होता था और पैरों में एक चील होती थी; उसके सिर पर एक टोकरी होती थी, जो प्रचुरता का प्रतीक थी। वह प्रकृति की पौरुष और उत्पादक शक्ति का प्रतीक थे। शहीद मामंत के समय, इस मूर्ति की पूजा रोमन साम्राज्य में विशेष रूप से व्यापक थी।

[5975] एगी शहर एशिया माइनर में, सिलिसिया प्रांत में, इसस की खाड़ी पर स्थित था।

उसके सामने उपस्थति हुआ, तो राजा ने हर संभव तरीके से उसे अपनी दुष्टता अपनाने के लिए मनाने की कोशशि की, कभी धमकयिों से, कभी चापलूसी से, उपहार और सम्मान का वादा करते हुए, और कहा:

'हे सुंदर युवक, यदि तुम महान सेरापसि के पास जाकर उसकी बलि चढ़ाओगे, तो तुम हमारे साथ महल में रहोगे, शाही ढंग से पाले जाओगे, और सभी तुम्हारा सम्मान और प्रशंसा करेंगे, और तुम सचमुच खुश रहोगे; लेकनि अगर तुम मेरी आज्ञा नहीं मानोगे, तो तुम्हारा क्रूर अंत होगा।'

लेकनि युवा मामंत ने साहसपूर्वक उत्तर दयिा:

'हे राजा! मुझसे दूर रहे कि मैं उन नर्जिीव मूर्तयिों के सामने सरि झुकाऊँ जन्हिें आप देवताओं के रूप में पूजते हैं। आप कतिने मूर्ख हैं, जीवति ईश्वर के बजाय एक पेड़ और एक नर्जिीव पत्थर के सामने सरि झुकाते हैं! मुझे चापलूसी भरी बातों से बहकाना बंद करो, क्योंकि जब तुम सोचते हो कि तुम मुझ पर कृपा कर रहे हो, तो वास्तव में तुम मुझे यातना दे रहे होते हो; और जब तुम मुझे यातना देते हो, तो उससे ही तुम मुझ पर कृपा कर रहे होते हो। तब जान लो, कि तुमने मुझे जो भी अनुग्रह, उपहार और सम्मान देने का वादा कयिा है, वे सब मेरे लिए दुखद यातनाएँ बन जाएँगी यदि मैं उन्हें मसीह के स्थान पर प्रेम करने लगूँ; जबकि वे दुखद यातनाएँ, जनिका तुम मसीह के नाम के लिए मुझे देने का वादा करते हो, वे मेरे लिए एक बड़ी आशीष होंगी, क्योंकि अपने मसीह के लिए मृत्यु कसिी भी सम्मान या सांसारकि लाभ से अधकि प्रयि है।

इस प्रकार संत मामंत ने राजा के सामने नडिर होकर कहा, क्योंकि उनके युवा शरीर में एक परपिक्व व्यक्ति का मन और हृदय था: क्योंकि परमेश्वर की शक्ति एक छोटे लड़के को भी एक अजेय गोलयिथ बना सकती है[5976] , *'शशिुओं और स्तनपान करने वालों के मुँह से तूने स्तुति स्थापति की है'* (भजन संहति 8:3), और एक छोटे बच्चे को ऐसी बुद्धि दी जा सकती है कि वह बड़ों से भी बेहतर समझता है। यह सब युवा मामंत में पूरा हुआ: अधर्मी राजा के शब्दों ने उसे मना नहीं लयिा, न तो उपहारों ने उसे लुभाया, और न ही यातनाओं ने उसे डराया, जन्हिें उसने महान सम्मानों से भी अधकि आनंद के साथ स्वीकार कयिा।

क्रोधति यातनाकर्ता ने तुरंत आदेश दयिा कि उसे बेरहमी से पीटा जाए। लेकनि संत मामंत ने यातनाओं को इतनी सहनशीलता से सहन कयिा जैसे उसे बलि्कुल भी दर्द महसूस नहीं हो रहा हो।

राजा ने उससे कहा:

'बस वादा करो कि तुम देवताओं को बलदिान दोगे,' उसने कहा, 'और तुम तुरंत अपनी पीड़ा से मुक्त हो जाओगे।'

लेकनि शहीद ने उत्तर दयिा:

'न तो मैं अपने दलि से और न ही अपने होठों से ईश्वर और अपने राजा – यीशु मसीह – का त्याग करूँगा, भले ही वे मुझ पर दस हजार गुना ज्यादा घाव क्यों न कर दें; क्योंकि ये घाव मुझे मेरे प्रयि प्रभु से मलिाते हैं, और मैं प्रार्थना करता हूँ कि मेरे यातना देने वालों के हाथ कभी थकें नहीं; क्योंकि वे मुझ पर जतिना अधकि प्रहार करते हैं, मेरे सह-शहीद मसीह से वे मुझ पर उतनी ही अधकि कृपाएँ बरसाते हैं।

ऑरेलयिन ने, यह देखकर कि मामंत पीड़ा से बलि्कुल भी नहीं डर रहा था, आदेश दयिा कि उसके शरीर को मोमबत्तयिों से झुलसा दयिा जाए। लेकनि आग, जैसे कि शहीद के शरीर से लज्जति हो, उसे छू नहीं सकी, बल्कि उसके उत्पीड़क के चेहरों पर लग गई। और राजा क्रोध से भर गया और शारीरकि आग से मसीह के शहीद से भी अधकि तीव्रता से भड़क उठा: क्योंकि जैसे बाद वाले ने आग की परवाह नहीं की, वैसे ही यातना देने वाले का हृदय आग में जल उठा। और राजा ने आदेश दयिा कि संत मामंत पर पत्थर फेंके जाएँ। लेकनि यह पीड़ा उस शहीद के लिए इतनी सुखद थी, जो मसीह के प्रेम से भरपूर था, जैसे कोई उस पर सुगंधति फूलों की वर्षा कर रहा हो। तब राजा ने, यह देखकर कि वह कुछ भी हासलि नहीं कर सकता, शहीद को मृत्युदंड सुनाया और उसे समुद्र में फेंकने का आदेश दयिा। उसके गले में एक भारी सीसे का बोझ बाँधकर, राजा के सेवकों ने उसे समुद्र तक ले गए। लेकनि यहाँ भी प्रभु ने अपने सेवक को नहीं छोड़ा, *'क्योंकि वह तुम्हारे वषिय में अपने स्वर्गदूतों को आज्ञा देता है—कि वे तुम्हारी रक्षा करें'* (भजन संहति 90:11)। समुद्र के रास्ते में, प्रभु का एक स्वर्गदूत बजिली की तरह चमकता हुआ प्रकट हुआ। उसे देखकर, सेवकों ने संत मामंत को छोड़ दयिा और डरकर भाग गए। हालाँकि, स्वर्गदूत ने शहीद को उठा लयिा, सीसे का बोझ खोल दयिा और उसे केसरयिा के पास रेगस्तिान में एक ऊँचे पहाड़ पर ले जाकर, वहाँ रहने की आज्ञा दी।

[5976] गोलयिाथ एक प्रसद्धि बाइबलि का वशिालकाय, एक फलस्तीनी था, जसिे अजेय माना जाता था और उसे दाऊद के साथ एक-एक करके लड़ाई में मार गरिाया गया था (1 शमूएल 17:1–58)।

संत मामंत ने अपने जीवन की शुरुआत रेगस्तिान में उपवास से की। उस पहाड़ पर उन्होंने चालीस दनि और चालीस रातें उपवास कयिा और वे, मानो, दूसरे मूसा (नरि्गमन 24:18) के रूप में प्रकट हुए, जनि्हें एक नया वधिान दयिा गया था: क्योंकि स्वर्ग से एक आवाज और एक लाठी उनके पास उतरी। यह छड़ी प्राप्त करने के बाद, ममान्त ने, स्वर्ग से प्राप्त आज्ञा के अनुसार, उससे जमीन पर प्रहार कयिा, और तुरंत ही पृथ्वी की गहराइयों से सुसमाचार प्रकट हुआ। इसके बाद, उन्होंने एक छोटा सा चर्च बनाया और वहाँ पवत्रि सुसमाचार पढ़ते हुए प्रार्थना की। ईश्वर की आज्ञा से, उस रेगस्तिान से जंगली जानवर संत मामंत के चारों ओर भेड़ों की तरह चरवाहे के पास आकर इकट्ठा हो गए, और मानो वे बुद्धमिान प्राणी हों, उन्होंने उनकी बात सुनी और उनका आज्ञापालन कयिा। वह जंगली जानवरों के दूध पर जीवति रहते थे, जसिसे वे पनीर बनाते थे - न केवल अपने लिए, बल्कि गरीबों के लिए भी; क्योंकि, बहुत सारा पनीर तैयार करने के बाद, वे उसे सेज़रयिा शहर में ले जाकर गरीबों में बाँट देते थे।

शीघ्र ही, ममान्त की अफवाहें पूरे सेज़रयिा में फैल गईं। तब अलेक्जेंडर – ऊपर उल्लेखति नहीं, बल्कि एक और – जो उस समय कैपैडोसयिा का राज्यपाल नयिुक्त था, एक क्रूर और बहुत दुष्ट व्यक्ति, ममांत के बारे में सब कुछ जानकर, उसे एक जादूगर समझ बैठा और उसे खोजने तथा अपने सामने लाने के लिए रेगस्तिान में घुड़सवार भेज दिए। पहाड़ से उतरते हुए, संत मामंत स्वयं घुड़सवारों से मलि और पूछा कि वे कसिकी तलाश कर रहे हैं। यह सोचकर कि वह पहाड़ पर अपनी भेड़ों का चराई करने वाला एक गड़रयिा है, उन्होंने जवाब दयिा:

'हम मामंत को ढूंढ रहे हैं, जो इसी रेगस्तिान में कहीं रहता है; क्या आप उसे जानते हैं, या वह कहाँ है?'

'तुम उसे क्यों ढूंढ रहे हो?' मामंत ने उनसे पूछा।

योद्धाओं ने उत्तर दयिा:

'कसिी ने राज्यपाल को सूचति कयिा है कि वह एक जादूगर है, और इसलिए राज्यपाल ने हमें उसे यातना देने के लिए पकड़ने के लिए भेजा है।'

तब मामंत ने उनसे कहा:

'मैं तुम्हें उसके बारे में बताऊँगा, मेरे दोस्तों, लेकनि पहले मेरी झोपड़ी में आओ और अपने काम से थोड़ा आराम करने के बाद, कुछ खा लो।'

योद्धा उसके साथ उसके आवास में गए, और उसने उन्हें कुछ पनीर दयिा। जैसे ही उन्होंने खाना शुरू कयिा, हरिणयिाँ और जंगली बकरयिाँ आ पहुंचीं, ये वे जानवर थे जो उस पवत्रि तपस्वी द्वारा दुहने के आदी थे। मामेंट ने जानवरों का दूध नकिाला और योद्धाओं को पीने के लिए दयिा, जबकि वह स्वयं प्रार्थना करने लगा। और और भी अधकि जानवर इकट्ठा होने लगे। उन्हें देखकर, योद्धा डर गए और अपना भोजन छोड़कर मामेंट के पास आए। उन्होंने उन्हें आश्वस्त कयिा, और फरि घोषणा की कि वही मामेंट हैं जसिकी वे तलाश कर रहे थे। तब उन्होंने उससे कहा:

'यदि आप स्वयं राज्यपाल के पास जाना चाहते हैं, तो हमारे साथ चलिए; लेकनि यदि आप नहीं चाहते, तो हमें अकेले जाने दीजिए, क्योंकि हम आपको नेतृत्व करने की हमि्मत नहीं करते। लेकनि हम आपसे वनिती करते हैं कि सुनश्चिति करें कि ये जानवर हमें नुकसान न पहुँचाएँ।'

योद्धाओं को आश्वस्त करने के बाद, मामंत ने उन्हें आगे बढ़ने के लिए कहा।

उसने कहा, 'जाओ, तुम पहले जाओ, और मैं अकेला तुम्हारे पीछे आऊँगा।'

उस जगह से नकिलने के बाद, सैनकि शहर के द्वार पर मामंत के आने का इंतजार करने लगे, क्योंकि वे ऐसे अद्भुत व्यक्ति के शब्दों पर पूरा भरोसा करते थे और उनके बारे में बुरा सोचने की हमि्मत भी नहीं कर सकते थे। हालाँकि मामंत, शेर को अपने साथ लेकर, योद्धाओं के पीछे चल पड़ा। जब वह शहर के दरवाजों से अंदर गया, तो शेर शहर के बाहर ही रह गया; योद्धाओं ने मामंत को पकड़ लयिा और उसे गवर्नर अलेक्जेंडर के सामने पेश कर दयिा।

राज्यपाल ने संत को देखते ही तुरंत उनसे पूछताछ शुरू कर दी:

उसने कहा, 'क्या तुम वही जादूगर हो जसिके बारे में मैंने सुना है?'

संत ने उत्तर दयिा:

'मैं यीशु मसीह का सेवक हूँ, जो उन सभी को मुक्ति भेजते हैं जो उन पर वशि्वास करते हैं और उनकी इच्छा को पूरा करते हैं, लेकनि जो जादूगरों और जादू-टोना करने वालों को अनंत आग में डाल देते हैं। बताओ: तुमने मुझे यहाँ क्यों बुलाया है?'

'क्योंकि,' राज्यपाल ने उत्तर दिया, 'मुझे नहीं पता कि तुमने किस जादू-टोने और माया से उन जंगली और क्रूर जानवरों को इतना वश में कर लिया है कि तुम उनके बीच रहते हो और, जैसा मैंने सुना है, उनसे ऐसे आज्ञा करते हो मानो वे तर्कशील प्राणी हों।'

इस पर, संत ममेंट ने उत्तर दिया:

'जो एक, जीवित और सच्चे ईश्वर की सेवा करता है, वह कभी भी मूर्तिपूजकों और दुष्टों के बीच रहने के लिए सहमत नहीं होगा। इसीलिए मैंने पापियों के बस्तियों में आपके साथ रहने के बजाय रेगिस्तान में जानवरों के साथ रहना पसंद किया।' क्योंकि ये जानवर जादू-टोने से नहीं पले-बढ़े हैं और मेरी आज्ञा नहीं मानते, जैसा आप सोचते हैं—मुझे तो यह भी नहीं पता कि जादू-टोना क्या होता है—लेकिन यद्यपि वे अकल वाले प्राणी हैं, फिर भी वे जानते हैं कि ईश्वर से कैसे डरना है और उनके सेवकों का सम्मान कैसे करना है। तुम, हालाँकि, जानवरों से भी कहीं अधिक मूर्ख हो, क्योंकि तुम सच्चे परमेश्वर का सम्मान नहीं करते और उनके सेवकों का अपमान करते हो, उन्हें बेरहमी से यातना देते और मार डालते हो।

ये शब्द सुनकर राज्यपाल क्रोध से आग-बबूला हो गया और तुरंत आदेश दिया कि पवित्र शहीद को फांसी दी जाए, कोड़ा मारा जाए और लोहे की पंजाओं से उसके शरीर को खुरच दिया जाए। लेकिन शहीद, भले ही गंभीर रूप से घायल था, ने इसे इतनी बहादुरी से सहन किया मानो उसे कोई पीड़ा ही न हो रही हो: वह न तो चिल्लाया और न ही कराहा, बल्कि केवल भक्तिपूर्वक अपनी आँखें स्वर्ग की ओर उठाईं, वहाँ से मदद की उम्मीद कर रहा था, जो उसे वास्तव में मिली: क्योंकि अचानक स्वर्ग से एक आवाज आई, जो कह रही थी:

'मजबूत रहो और हिम्मत रखो, मामंत!'

उपस्थित कई विश्वासियों ने यह आवाज़ सुनी और अपने विश्वास में और अधिक दृढ़ हो गए। उस आवाज़ से पूरी तरह से दृढ़ हुए संत मामंत ने अपने यातनाओं की ओर एक पल के लिए भी ध्यान नहीं दिया। संत को लंबे समय तक यातना दी गई, उनके शरीर पर बुरी तरह कोड़ों की बरसात की गई; अंत में, उन्हें एक कालकोठरी में फेंक दिया गया, जबकि वे वह भट्टी तैयार कर रहे थे जिसमें राज्यपाल उन्हें जलाने का इरादा रखता था। उस कालकोठरी में चालीस अन्य कैदी भी थे। जब वे भूख और प्यास से थक गए, तो संत मामंत ने प्रार्थना की - और देखो, एक कबूतर एक छोटी सी खिड़की से कालकोठरी में उड़कर आया, जिसके चोंच में मोतियों की तरह चमकदार और शहद से भी मीठा भोजन था; संत मामंत के सामने उसे रखकर, वह कबूतर फिर से उड़ गया। वह भोजन सभी कैदियों के लिए बढ़ गया, ठीक वैसे ही जैसे रेगिस्तान में एक बार बहुत बड़ी भीड़ को खिलाने के लिए कुछ रोटी के टुकड़े बढ़ गए थे (मत्ती 14:19-20)। इस चमत्कारी भोजन का स्वाद चखने के बाद, कैदियों ने अपनी ताकत वापस पा ली। और एक बार फिर, संत मामंत की प्रार्थनाओं के द्वारा, आधी रात को कालकोठरी के दरवाज़े खुल गए, और सभी कैदी बाहर आ गए; केवल संत मामंत ही रह गए। जब भट्टी प्रचंड रूप से जल उठी, तो शहीद को कालकोठरी से बाहर निकालकर उस आग की भट्टी में फेंक दिया गया। लेकिन परमेश्वर, जिन्होंने एक बार तीन जवानों के लिए बेबीलोन की भट्टी को ठंडा किया था (दानिय्येल 3:49-50), उन्होंने मामंत के लिए भी आग को ठंडा किया और भड़कती लपटों के बीच, अपने सेवक को ठंडक प्रदान की। शहीद, उस भट्टी के भीतर ईश्वर का भजन और स्तुति करते हुए, तीन दिन तक वहाँ रहे, जब तक कि भट्टी पूरी तरह से ठंडी नहीं हो गई और कोयले राख नहीं हो गए। तीन दिनों के बाद, राज्यपाल ने जब देखा कि मामंत अभी भी जीवित थे, तो वह चकित हो गया और बोला:

'क्या इस जादूगर की शक्ति इतनी महान है कि आग भी उसे छू नहीं सकती?'

कई लोग, यह देखकर कि आग ने संत को बिल्कुल भी नहीं छुआ और न ही उन्हें कोई नुकसान पहुँचाया, सच्चे ईश्वर को जान गए और इस चमत्कार का श्रेय केवल उन्हीं को देते हुए, उनकी शक्ति की स्तुति की।

हालाँकि, पागल गवर्नर सर्वशक्तिमान ईश्वर को स्वीकार नहीं करना चाहता था; लेकिन, शहीद को भट्टी से बाहर निकालने और यह देखने के बाद कि आग ने उसे कोई नुकसान नहीं पहुँचाया था, उसने इसे जादू-टोने का परिणाम माना और सत्य के विरुद्ध कई अपमानजनक बातें कहीं। अंत में, उसने शहीद को जंगली जानवरों द्वारा खाए जाने की सज़ा सुना दी। उन्होंने संत को सर्कस में लाया[5977] और उस पर एक भूखी मादा भालू छोड़ दी; लेकिन वह पास आकर संत के सामने झुक गई और उनके पैरों के पास लेटकर उन्हें कसकर पकड़ लिया। फिर उन्होंने एक तेंदुआ छोड़ा, लेकिन उसने भी कोमलता से उनकी गर्दन पकड़ ली, उनके चेहरे को चूमा और उनके माथे से पसीना चाटा। उसी क्षण एक शेर दौड़ता

[5977] सर्कस एक पंक्ति में बेंचों या दीवार से घिरे एक चौकोर मैदान को दिया गया नाम था। वहीं योद्धाओं के बीच और योद्धाओं और जंगली जानवरों के बीच मुकाबले होते थे। ईसाइयों को भी इस चौकोर मैदान या अखाड़े में फेंका जाता था, और फिर सर्कस में विशेष पिंजरों में रखे गए जंगली जानवरों को वहाँ छोड़ दिया जाता था।

हुआ आया – वही शेर जो संत के साथ रेगिस्तान से आया था – और अखाड़े में कूदकर, एक मानव आवाज़ में संत से निम्नलिखित शब्द बोले (क्योंकि ईश्वर ने, अपनी सर्वशक्तिमान शक्ति के प्रकटीकरण में, उस जानवर का मुँह खोल दिया था, ठीक वैसे ही जैसे उन्होंने एक बार बलाम की गधी का मुँह खोला था):

'तुम मेरे चरवाहे हो, जिसने मुझे पहाड़ पर चराया था!'

और ये शब्द कहने के बाद, वह तुरंत उन लोगों पर झपट पड़ा, जो वहाँ अनगनित संख्या में मौजूद थे—ग्रीक और यहूदी, वयस्क और बच्चे सभी। ईश्वर की इच्छा से, अखाड़े के दरवाज़े अपने आप बंद हो गए, और वहाँ उस जानवर ने भीड़ को चीर-फाड़ डाला, यहाँ तक कि स्वयं राज्यपाल भी बड़ी मुश्किल से बच पाया: अखाड़े में मौजूद बहुत कम लोग ही सिंह के क्रोध से बचे, क्योंकि उसने सभी को क्रूरता से पकड़कर नोच डाला। लेकिन संत ने सिंह को वश में कर लिया और उसे वापस रेगिस्तान में भेज दिया। अधिकारियों ने संत को एक बार फिर से पकड़ लिया, उसे कुछ समय के लिए जेल में रखा और दूसरी बार सर्कस में लाकर उस पर सबसे ज़्यादा खूंखार शेर छोड़ दिया। लेकिन यह शेर भी, तुरंत ही वश में हो गया और संत के पैरों तले लेट गया। यह देखकर भीड़ ने गुस्से में संत पर दाँत पीसे और अधिकारियों से चिल्लाकर कहा:

'शेर को हटाओ, और हम इस जादूगर पर पत्थर बरपा करेंगे!'

और उन्होंने शहीद पर पत्थर बरसाने लगे। एक विधर्मी पुरोहित ने, यातना देने वाले के आदेश पर, त्रिशूल से संत के पेट में जोर से वार किया, जिससे उनका पेट फट गया और उनकी सारी आंतें बाहर गिर पड़ीं। उन्हें इकट्ठा करके और उन्हें अपने हाथों में थामकर, संत मामंत शहर से बाहर चले गए। एक विश्वासी महिला ने उसके बहते हुए रक्त को एक पात्र में इकट्ठा किया, जो पानी की तरह बह रहा था। लगभग 200 सैज़ेन चलने के बाद, संत मामंत को एक चट्टानी पहाड़ी में एक गुफा मिली और वह वहाँ सो गए। वहाँ उन्होंने स्वर्ग से एक आवाज़ सुनी जो उन्हें स्वर्गीय निवासों में बुला रही थी, और उन्होंने आनंदपूर्वक अपना प्राण प्रभु के हाथों में सौंप दिया, जिनके लिए उन्होंने इतनी उत्कटता से पीड़ा सहन की थी[5978] ।

इस प्रकार संत मामंत को शहीद का मुकुट प्राप्त हुआ। उनके पवित्र अवशेषों को विश्वासियों ने उनके निधन के स्थान पर दफनाया, और वहाँ कई चमत्कार और उपचार हुए, जैसा कि संत बेसिल द ग्रेट के शब्दों से स्पष्ट रूप से स्पष्ट है, जो पवित्र शहीद मामंत की स्मृति में लोगों को दिए गए अपने प्रवचन में कहते हैं:

– पवित्र शहीद को याद करो – जिन्होंने उन्हें एक दर्शन में देखा है, इस स्थान पर रहने वाले जिन्हें वह सहायक हैं, जिन्होंने उनके नाम का आह्वान किया है और जिन्हें उन्होंने अपने कर्मों से मदद की है, जिन्हें उन्होंने जीवन में खो जाने पर मार्गदर्शन दिया है, जिन्हें उन्होंने उनके रोगों से ठीक किया है, जिनके बच्चे, जो पहले ही मर चुके थे, उन्हें उन्होंने जीवन में वापस लाया है, जिनके जीवन उन्होंने लंबा किया है, – आप सभी, एकत्रित होकर, शहीद की स्तुति करें।

जब जूलियन धर्मद्रोही[5979] , अपनी युवावस्था में ही, धर्मपरायणता का एक स्मारक पीछे छोड़ना चाहता था (हालांकि तब भी वह भेड़ की खाल में भेड़िया था), ने पवित्र शहीद मामंत के सम्मान में उनकी कब्र के ऊपर एक भव्य चर्च का निर्माण शुरू किया (ऐसा उन्होंने धर्मपरायणता से नहीं, बल्कि अहंकार और पाखंड से किया), तो वास्तव में एक अद्भुत चमत्कार देखा गया। क्योंकि जो कुछ दिन में बनाया जाता था, वह रात में नष्ट हो जाता था: खड़े किए गए स्तंभ एक ढेर में बदल जाते थे; कुछ पत्थर दीवार में ठीक से नहीं टिक पा रहे थे, कुछ इतने कठोर हो गए कि उन्हें काटा नहीं जा सकता था; कुछ और धूल में टूट गए; जबकि हर सुबह मोर्टार और ईंटें इस तरह बिखरी हुई मिलती थीं मानो हवा से उड़कर अपनी जगह से उड़ गई हों। और यह जूलियन की मूर्तिपूजा की निंदा और ईश्वर की कलीसिया पर उसके भविष्य के उत्पीड़न का एक संकेत था। संत की कब्र पर ऐसा ही एक चमत्कार हुआ: क्योंकि संत नहीं चाहते थे कि उनके सम्मान में एक चर्च का निर्माण किया जाए, उन लोगों के लिए जो जल्द ही सच्चे विश्वास के लिए उत्पीड़न का सामना करने वाले थे।

हे प्रभु, अपने शहीद मामंत की प्रार्थनाओं के द्वारा, हम में आशीष का एक चिह्न दिखाओ और हमें उन लोगों से बचाओ जो हमारा उत्पीड़न करते हैं, ताकि हम तुझे पिता और पवित्र आत्मा के साथ युगानुयुग महिमामय कर सकें, आमीन।

[5978] मम्मंत की 275 में मृत्यु हो गई।

[5979] सम्राट जूलियन ने 361 से 363 तक शासन किया। सम्राट बनने पर, उन्होंने ईसाई धर्म का त्याग कर दिया और मूर्तिपूजा को पुनर्स्थापित करना अपना जीवन कार्य बना लिया। इस कारण से, उन्हें धर्मत्यागी के नाम से जाना जाता है।

कॉन्टाकयिन, स्वर 3:

भगवान द्वारा आपको दिए गए पवित्र दण्ड से, जीवन-दायक चरागाहों पर अपने लोगों की रक्षा करें; और जो आपकी स्तुति करते हैं, उनके पैरों तले अदृश्य और अजेय जानवरों को कुचल दें: क्योंकि संकट में पड़े सभी के लिए आप, मामंत, उनके दयालु मध्यस्थ हैं।

कॉन्स्टेंटिनोपल के पैट्रआर्क, तपस्वी संत जॉन का जीवन

२ सितंबर को स्मरणोत्सव

संत जॉन का जन्म कॉन्स्टेंटिनोपल में हुआ था[5980] ; वह सम्राट जस्टिनि[5981] , टबिेरियस[5982] और मॉरसियिस[5983] के शासनकाल में रहते थे। मूल रूप से, वह एक सुनार थे; अपने सदाचारी जीवन के कारण, वह एक धर्मपरायण, परोपकारी, मेहमाननवाज़ और ईश्वर-भयभीत व्यक्ति थे।

यूसेबियस नामक एक फलिस्तीनी भिक्षु को अपने घर में आश्रय देने के बाद, जॉन उसके साथ रहने लगा। एक दिन, जब वे साथ-साथ चल रहे थे, यह भिक्षु जॉन के दाहिने हाथ की ओर था। अचानक, उसने किसी अनजान व्यक्ति को यह कहते सुना: 'आपको, पितिाजी, महान व्यक्ति के दाहिने हाथ की ओर नहीं चलना चाहिए।' यह जॉन के लिए ईश्वर की ओर से एक संकेत था, जो यह दर्शाता था कि उसे बशिप के महान पद की जिम्मेदारी सौंपी जाएगी। यह सुनकर, भिक्षु ने कॉन्स्टेंटिनोपल के धन्य यूटकियिस, पैट्रआर्क[5984] को बताया, जिन्होंने तब जॉन को संन्यासी की शपथ लेने के लिए प्रेरित करना शुरू कर दिया, क्योंकि वह उन्हें धार्मिक पुरोहित वर्ग के योग्य मानते थे।

और इस प्रकार, सेंट लॉरेंस के चर्च में, प्रार्थना करते हुए, सेंट जॉन को निम्नलिखित प्रकटवाणी प्राप्त हुई: वेदी के भीतर उन्होंने संतों की एक भीड़ देखी, जो सभी सफेद, शानदार वस्त्रों में लिपटे हुए थे और सुंदर भजन गा रहे थे। तब वेदी से एक आदमी एक पात्र लेकर निकला, जिससे उसने वहाँ इकट्ठा कई भिखारियों में उदारतापूर्वक दान बाँटा; फिर भी पात्र खाली नहीं हुआ। जब भीड़ से परेशान एक भिखारी ने पुकारा: 'हे प्रभु, दया करो! यह पात्र कब तक भरा रहेगा?', तो पात्र तुरंत खाली हो गया। इस प्रकटवाणी ने रेवरेंड को विचार करने के लिए बहुत कुछ दिया, और वे उस दर्शन से चकित रह गए, जिसने उनके भविष्य के पद और गरीबों के प्रति उनकी महान उदारता, दोनों का पूर्वाभास दिया।

कुछ समय बाद, कॉन्स्टेंटिनोपल के पैट्रआर्क यूटकियिस की मृत्यु हो गई और, ईश्वर की इच्छा से, जॉन को एक योग्य उम्मीदवार के रूप में नर्विाचित और अभिषेक के लिए नियुक्त किया गया; फिर भी उन्होंने तब तक इनकार कर दिया, जब तक कि, उन्होंने निम्नलिखित भयानक दर्शन नहीं देखा: एक तरफ उन्होंने आकाश तक उठते हुए समुद्र और एक भयानक आग की भट्टी देखी; दूसरी ओर, स्वर्गदूतों की एक भीड़ उससे बात कर रही थी: 'क्या तुम सिंहासन स्वीकार नहीं करोगे? – किसी और को लेने दो, लेकिन तुम्हें हम सभी द्वारा दंडित किया जाएगा।' स्वर्गदूतों द्वारा जॉन से ये धमकी भरे शब्द कहने के बाद, उसने, यद्यपि अपनी इच्छा के विरुद्ध, आज्ञा मानी और उसे कॉन्स्टेंटिनोपल का पैट्रआर्क नियुक्त किया गया। इस पद पर, उन्होंने अपने मृत्यु तक उपवास और सदाचार का जीवन जिया, जैसा कि उनके चमत्कार गवाही देते हैं। उन्होंने प्रार्थना और क्रॉस के चिह्न से समुद्र में एक बड़े तूफान को शांत किया। उन्होंने गाज़ा के जॉन नामक एक अंधे व्यक्ति की आँखों पर मसीह के शरीर का एक अंश रखकर उसकी दृष्टि वापस कर दी[5985] , यह कहते हुए: 'जिसने जन्म से अंधे व्यक्ति को चंगा किया, वही आपको भी चंगा करे' - और अंधे व्यक्ति की दृष्टि तुरंत वापस आ गई।

[5980] कॉन्स्टेंटिनोपल – बीजान्टिन साम्राज्य की राजधानी, अब इस्तांबुल; कॉन्स्टेंटाइन द ग्रेट द्वारा बाइजेंशियिम शहर के स्थान पर स्थापित।

[5981] जस्टिनि द्वितीय युवा – पूर्वी रोमन सम्राट, 565 से 578 तक शासन किया।

[5982] टबिेरियस – जस्टिनि द्वितीय का उत्तराधिकारी; 578–582 तक शासन किया।

[5983] टबिेरियस का उत्तराधिकारी; 582–602 तक शासन किया।

[5984] यूटकियिस ने पहली बार 552 से 565 तक पैट्रआर्क के रूप में कार्य किया; उनके उत्तराधिकारी के रूप में जॉन तृतीय द स्कॉलैस्टिकिस ने पाँच वर्षों तक यह पद संभाला; तत्पश्चात् यूटकियिस को फिर से पादरी प्रमुख के रूप में बहाल किया गया और वे 582 में अपनी मृत्यु तक इस पद पर रहे, जब उनके उत्तराधिकारी के रूप में संत जॉन चतुर्थ द फास्टर ने पदभार संभाला।

[5985] गाज़ा भूमध्य सागर के तट पर स्थित है; प्राचीन काल में यह पाँच सबसे प्रसिद्ध फ़िलिस्तीनी शहरों में से एक था और फ़िलिस्तीन में कनानी लोगों की दक्षिणी सीमा को चिह्नित करता था। नए नियम में, गाज़ा का उल्लेख केवल इथियोपिया की रानी कैंडस के एक नपुंसक के धर्म परिवर्तन

एक बार, ईश्वर की अनुमति से, कॉन्स्टेंटिनोपल में एक बड़ी महामारी फैली। सम्माननीय पिता ने प्रार्थना की कि ईश्वर अपना धार्मिक क्रोध टाल दें। उन्होंने अपने एक वफादार सेवक को आदेश दिया कि वह दो पात्र ले जाए - एक छोटे-छोटे पत्थरों से भरा और दूसरा खाली - और दिन भर उस स्थान पर खड़ा रहे जहाँ मृतकों को लाया जा रहा था, और भरे पात्र से खाली पात्र में पत्थर डालकर उनकी गिनती करे। उनकी गिनती करने के बाद, सेवक ने पाया कि पहले दिन तीन सौ तेईस शव ले जाया गए थे, और उसने यह बात संत को बताई। हालांकि, संत जॉन ने भविष्यवाणी की थी कि प्लेग समाप्त हो जाएगा; और यह हर बीतते दिन सच होने लगा, क्योंकि दूसरे दिन वहाँ खड़े होकर गिनती करते हुए सेवक को कम मृत शरीर ले जाते हुए मिले; तीसरे दिन, और भी कम; और रविवार को, संत की भविष्यवाणी के अनुसार और उनकी प्रार्थनाओं के माध्यम से, प्लेग अंततःसमाप्त हो गया।

संत जॉन का संयम इतना था कि उन्होंने छह दिनों तक कुछ भी नहीं खाया; हालाँकि, सातवें दिन उन्होंने बगीचे से थोड़ा सा फल खाया: या तो खरबूजा, या अंगूर, या अंजीर। इस प्रकार उन्होंने अपने संपूर्ण पवित्र जीवन भर अपना जीवन यापन किया। वे बहुत कम सोते थे, और वह भी केवल बैठे-बैठे ही; वे एक मोमबत्ती से एक छोटी रस्सी बाँध देते थे और पास में पानी का एक टब रख देते थे, ताकि जब मोमबत्ती जलकर खत्म हो जाए और रस्सी टब में गिर जाए, तो उसकी आवाज़ से उनकी नींद खुल जाए। संत लगातार प्रार्थना में लगे रहते थे और कई तपस्या के प्रयासों के माध्यम से, अपने भावों के विरुद्ध लड़ते थे। कई मौकों पर उन्होंने अपनी प्रार्थनाओं और उपवास के द्वारा विदेशी जनजातियों के आक्रमण को विफल किया और शहर को विनाश से बचाया; उन्होंने अपने अनुयायियों को दिखाई देने वाले और अदृश्य दोनों तरह के दुश्मनों से बचाया; वह अत्यंत दयालु, अनाथों के पिता, गरीबों के पालनहार, उत्पीड़ितों के रक्षक, ईश्वर के उत्साही सेवक, और सभी द्वेष के नाशक थे। एक शुक्रवार को संत को सूचित किया गया कि अगले दिन एक घोड़ों की दौड़ होगी: यह वास्तव में पेंटेकोस्ट का सब्बाथ था। और संत ने उत्तर दिया: 'पेंटेकोस्ट के पवित्र दिन कोई घोड़ों की दौड़ न हो,' और, घुटनों के बल झुककर, उन्होंने ईश्वर से प्रार्थना की कि रोकथाम के लिए और ऐसी घटना को समाप्त करने के लिए, कोई संकेत प्रकट हो। और देखो, जब सभी उस स्थान पर इकट्ठा हो गए जहाँ दौड़ें आमतौर पर होती थीं, और जब दौड़ शुरू हो गई थी, तो अचानक गरज और बिजली के साथ एक तेज तूफान आ गया; बारिश और बड़े ओले गिरे, जिससे हर कोई डरकर उस दृश्य से भाग गया।

रेवरेंड फादर में अशुद्ध आत्माओं को भगाने की शक्ति भी थी। इस प्रकार, एक महिला जिसने अपने पति पर भूत सवार होने का शक किया था, उसे एक तपस्वी के पास ले गई, लेकिन उसने उससे कहा: 'उनकी पवित्रता जॉन, कॉन्स्टेंटिनोपल के पैट्रिआर्क के पास जाओ—वह तुम्हारे पति को ठीक कर देंगे।' ऐसा करने पर, उस महिला को वह मिला जिसकी उसने मांग की थी, और अपने पति के साथ, जो रेवरेंड की प्रार्थनाओं से ठीक हो गया था, वह खुशी-खुशी घर लौट आई। वास्तव में, कई बीमार लोग संत द्वारा ठीक किए गए थे। उनकी प्रार्थनाओं के माध्यम से, कई महिलाएं बांझपन से मुक्त हुईं।

इस प्रकार अपने शब्दों से अपने अनुयायियों का बुद्धिमानी से मार्गदर्शन करने के बाद, आदरणीय पिताजी, अपने सम्मानित वृद्धावस्था में, एक धन्य विश्राम प्राप्त कर इस पृथ्वी से स्वर्गीय निवासों में चले गए[5986] । जब संत का शरीर निर्जीव पड़ा था, तो नील नामक एक प्रसिद्ध प्रांतीय गवर्नर उन्हें अंतिम विदाई देने आए और, झुककर, उन्हें चूमा। संत, यद्यपि मृत थे, ने सभी के सामने और उन्हें चकित करते हुए, प्रांतीय राज्यपाल नील के कान में कुछ शब्द फुसफुसाए; वे शब्द जिन्हें राज्यपाल ने किसी के सामने प्रकट नहीं किया। संत जॉन को पवित्र प्रेरितों के वेदी के भीतर दफनाया गया, एक ऐसे सम्मान के योग्य व्यक्ति के रूप में, जो संतों के बीच अद्भुत परमेश्वर - पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा - की महिमा और आशीर्वाद करते हैं। आमीन।

निकोमेडिया में पीड़ित 3,618 शहीदों की स्मृति

2 सितंबर को स्मरणोत्सव

के वृत्तांत में मिलता है (प्रेरितों के काम 8:25)। चौथी शताब्दी से ही गाज़ा एक ईसाई शहर था, और सातवीं शताब्दी में इस पर मुसलमानों ने विजय प्राप्त की।

[5986] यह 2 सितंबर 595 ईस्वी को हुआ था।

रोमन सम्राटों डायोक्लेटियिन और मैक्समियिन के शासनकाल के दौरान[5987] , अलेक्जेंड्रयिा के 3,618 शहीदों[5988] ने नकिोमेडयिा में मसीह के लिए कष्ट सहे। अलेक्जेंड्रयिा के आर्चबशिप संत पीटर की हत्या के बाद, उनके हत्यारे प्रभु में वशि्वास करने लगे, साथ ही उनके पूरे परविार और कई अन्य लोग जो मसीह के लिए मरना चाहते थे। अपनी पत्नयिों, बच्चों और सभी रशि्तेदारों को अपने साथ लेकर, वे स्वेच्छा से मसीह के लिए पीड़ा सहने हेतु नकिोमेडयिा गए और सम्राट के सामने आकर चल्लिा उठे: 'हम मसीही हैं!' यह सुनकर, डायोक्लेटियिन भ्रमति हो गया और पहले तो उसने चापलूसी करके उन्हें सूली पर चढ़ाए गए मसीह का त्याग करने के लिए मनाने की कोशशि की; लेकनि जब उन्होंने आज्ञा मानने से इनकार कर दयिा, तो उसने सैनकिों को आदेश दयिा कि वे उसकी मौजूदगी में उनकी तलवारों से गर्दन काट दें और उनके शवों को पहाड़ों की खाइयों में फेंक दें। कई वर्षों बाद, पवत्रि शहीदों द्वारा कए गए चमत्कारों के परणिामस्वरूप उनके पवत्रि अवशेष पाए गए।

16 सतिंबर

3 सतिंबर (पुराने कैलेंडर के अनुसार)

नकिोमेडयिा के बशिप संत एम्फमिस और उनके साथ कई अन्य लोगों का जीवन और शहादत

3 सतिंबर को स्मरणोत्सव

संत अम्फमिस का जन्म नकिोमेडयिा नगर में हुआ था[5989] । अपनी युवावस्था में ही उन्होंने एक पूर्ण वकिसति पुरुष के गुण प्रदर्शति कए और अपनी द्वेषरहतिता के लिए वशिष्टि थे। जैसे-जैसे उनका शरीर बढ़ा, वैसे-वैसे उनकी आत्मा भी वकिसति हुई। वयस्कता प्राप्त करने पर, उन्होंने अपने सदाचारी जीवन के कारण सभी से अलग दखिना शुरू कर दयिा; और मानव जीवन के उन वर्षों में जब व्यक्ति के भीतर आमतौर पर वासनाएँ उठती हैं, जैसे गेहूँ के बीच खरपतवार, अंफमिस पहले से ही नरि्लप्तिता का आदर्श थे। उनके शरीर को पापी इच्छाओं में वश में कर लयिा गया था, और उनकी आत्मा वनिम्रता से भर गई थी। उसने अपनी आत्मा से ईर्ष्या, क्रोध और आलस्य के सभी रूपों को पूरी तरह से मटिा दयिा था, और न ही उसने अपने शरीर को लालच और मद्यपान से तृप्त होने दयिा। इसके वपिरीत, अपने उदाहरण द्वारा, उसने सभी चीजों में संयम, सभी के साथ प्रेम और शांति, और ईश्वर की महमिा के लिए ववेक और उत्साही देखभाल का प्रदर्शन कयिा। इतने धर्मपरायण और सदाचारी जीवन के कारण, उन्हें जल्द ही पुरोहति पद की दीक्षा दी गई। इस पद पर, अम्फमिस ने अपना सम्पूर्ण जीवन भक्तपिूर्ण प्रार्थना और आत्मा के लिए लाभकारी कार्यों को समर्पति कर दयिा, और सभी को वचन और कर्म से सदाचार के उद्धारकारी मार्ग के बारे में शकि्षति कयिा। जब नकिोमेडयिा के चर्च के महा-पड़ोसी संत सरिलि का नधिन हो गया, तो अम्फमिस को उनका उत्तराधकिारी नयिुक्त कयिा गया। एक योग्य व्यक्ति के रूप में उनकी बशिप के पद पर नयिुक्ति की पुष्टि स्वर्ग से हुई: उनके अभषिेक के दौरान, चर्च पर स्वर्गीय प्रकाश चमका और ऊपर से एक दव्यि आवाज सुनी गई। नकिोमेडयिा के चर्च का प्रभार संभालने के बाद, संत एंफमिस ने एक तूफान में एक कुशल नावकि की तरह, इसे इस तरह संरक्षति रखा जैसे कि यह बाढ़ से अछूता एक जहाज हो। क्योंकि यद्यपि मसीह के लिए कई ईसाइयों को समुद्र में फेंक दयिा गया था, वे दुर्भाग्य में डूब नहीं गए: न तो मूर्तपिूजा का तूफान उन पर हावी हो सका, और न ही वे पाताल लोक की गहराइयों में नगिल लिए गए; बल्कि अपने पवत्रि महा-गड़रयिे, अम्फीमस, के मार्गदर्शन और नेतृत्व के माध्यम से, वे स्वर्ग के शांतपिूर्ण और शांत बंदरगाह तक

[5987] वर्ष 284 में, रोमन साम्राज्य को पूर्वी और पश्चमिी भागों में वभिाजति कयिा गया था: पूर्व पर डायोक्लेटियिन और पश्चमि पर उनके मत्रि मैक्समियिन का शासन था; उन्होंने 284 से 305 तक शासन कयिा।

[5988] नकिोमेडयिा – पूर्वी साम्राज्य की राजधानी, सम्राट डायोक्लेटियिन का नविास, एशयिा माइनर के उत्तर-पश्चमिी भाग में बथिनियिा प्रांत में प्रोपोंटसि (मार्मारा सागर) के तट पर एक भव्य शहर।

[5989] नकिोमेडयिा – पूर्वी साम्राज्य की राजधानी, सम्राट डायोक्लेटियिन का नविास, एशयिा माइनर के उत्तर-पश्चमिी भाग में बथिनियिा प्रांत में प्रॉपोंटसि (मार्मारा सागर) के तट पर स्थति एक भव्य शहर।

पहुँच गए। मसीह के इस अच्छे गड़रिये ने अपने लगभग पूरे झुंड को शहादत की मालाओं से सजाकर ईश्वर तक पहुँचाया। जब मूर्तिपूजकों ने पूरे पूर्व में, और विशेष रूप से निकोमेडिया में - जहाँ दुष्ट सम्राट डायोक्लेटियन और मैक्सिमियन[5990] उस समय रहते थे - ईसाइयों के खिलाफ एक बड़ा उत्पीड़न शुरू किया, तो संत एंथिमिस ने सभी विश्वासियों को शहीद होने के लिए तैयार किया और उन्हें मजबूत बनाया।

वे कहते थे, 'अब, हमारे लिए यह उचित है कि हम खुद को सच्चे ईसाई साबित करें; अब वीरता का समय है; अब जो कोई भी वास्तव में यीशु मसीह का सैनिक है, वह साहसपूर्वक लड़ने के लिए आगे बढ़े। यहाँ हम मसीह के लिए केवल थोड़ा सा दुख सहने आए हैं, जिन्होंने हमारे लिए इतना कुछ सहा; आइए हम यहाँ मनुष्यों के सामने उनकी गवाही दें, ताकि वहाँ वे स्वर्गीय पिता के सामने हमारी गवाही दें। यहाँ, मनुष्यों के सामने, आइए हम उन्हें महिमामय करें, ताकि वहाँ वे अपने स्वर्गदूतों के सामने हमें महिमामय करें। आओ, हम अपने शरीरों में दुख सहकर परमेश्वर की महिमा करें; आओ, हम एक क्षणिक मृत्यु मरें ताकि हम अनंतकाल तक जी सकें; आओ, हमें मारने वाले यातना देने वालों से न डरें। क्योंकि भले ही वे हमें मार डालें, वे हमारे आगामी आनंद का कारण बनेंगे: हमारे प्रमुख, हमारे पराक्रम के दाता, हमारे धड़ से अलग किए हुए सिर पर एक अक्षय मुकुट धारण करेंगे; हमारे बिखरे हुए अंग उनके राज्य में सूर्य की भाँति चमकेंगे; हम पर किए गए घाव हमारे अनंत पुरस्कार को बढ़ा देंगे; और हमारे खूनी कष्ट हमें स्वर्गीय वधू के महल में ले जाएँगे। अतः आइए हम अपना रक्त बहाने के लिए भी तैयार रहें; आइए हम स्वर्गदूतों और मनुष्यों की दृष्टि में निन्दा और अपमान का एक तमाशा बनें।

संत के इन और इसी तरह के शब्दों से प्रोत्साहित होकर, बहुत से विश्वासियों ने अपने प्रभु, परम मधुर यीशु की खातिर बहादुरी से स्वयं को कठोर यातनाओं के अधीन कर लिया। एक ईसाई, जो अपने विश्वास में विशेष रूप से उत्साही और ईश्वर के प्रति जोशीला था, ने ऐसा साहसी कार्य करने का संकल्प लिया। जब निकोमेडिया में पार्चमेंट पर लिखा गया शाही फरमान, जिसमें ईसाइयों को मृत्युदंड देने का आदेश था, पढ़कर सुनाया गया और फिर एक प्रमुख स्थान पर दीवार पर ठोक दिया गया, – वह सभी के सामने आगे बढ़ा, मसीह की गवाही दी, दीवार से फरमान को फाड़ा और उसे टुकड़े-टुकड़े कर दिया, और जोरदार शब्दों में मूर्तिपूजक दुष्टता की निंदा की – और इस प्रकार निकोमेडिया में पहला शहीद बन गया।

इसके बाद, बहुत से कुलीनों और वरिष्ठ दरबारी अधिकारियों ने खुले तौर पर मसीह की आराधना करना शुरू कर दिया, और खुद को ईसाई घोषित कर दिया: उनमें डोरोथियस, मार्डोनियस, मिगिडोनियस, पीटर, इंडिसि, ईGorgonius[5991] और अन्य कई लोग शामिल थे; जिन सभी ने स्वेच्छा से मसीह के लिए यातनाएं झेलीं, और उनमें से कई को उनके अत्याचारियों द्वारा विभिन्न प्रकार की फांसी के जरिए मौत के घाट उतार दिया गया।

ठीक उसी समय, ईसाइयों के गहरे दुख के लिए, एक और घटना जुड़ गई। अज्ञात कारणों से, शाही महलों में आग लग गई, और उनका अधिकांश भाग जलकर राख हो गया। दुष्ट मूर्तिपूजकों ने ईसाइयों पर यह आरोप लगाकर बदनामी की कि उन्होंने घृणा के कारण शाही महल में आग लगा दी थी। तब राजा का क्रोध चरम पर पहुँच गया और, एक जंगली जानवर से भी अधिक क्रूर होकर, उसने बड़ी संख्या में ईसाइयों का संहार किया, उन्हें कभी तलवार से सिर कलम करने की, तो कभी फांसी पर जलाने की सज़ा सुनाई। इन सबके बावजूद, विश्वासियों ने अपने साथी विश्वासियों की शहादत देखी और जानते हुए कि वही भाग्य उनका भी इंतजार कर रहा है, वे दैवीय प्रेम से भर गए और अपने अत्याचारियों के सामने जीवित जलने के लिए आत्मसमर्पण कर दिया, मानो वे किसी सुखद और ठंडी जगह में प्रवेश कर रहे हों। जहाँ तक अन्य अनगिनत ईसाइयों का सवाल है, उन्हें उनके अत्याचारियों ने बाँधा, नावों पर चढ़ाया और समुद्र की गहराई में डुबो दिया। अपने अनियंत्रित क्रोध में, राजा ने न केवल यह आदेश दिया कि जीवित लोगों को डुबो दिया जाए, बल्कि यह भी कि पिहले

[5990] यह, बेशक, मैक्सिमियन नहीं था, जो डियोक्लेशियन का सह-शासक था, बल्कि पूर्व वाला दामाद, मैक्सिमियन गैलेरियस था, जो पूर्वी रोमन साम्राज्य में डियोक्लेशियन का सह-शासक और बाद में, उसका उत्तराधिकारी (305–311) था। डायोक्लेटियन के अधीन ईसाइयों पर अत्याचार 303 में शुरू हुआ। इस अत्याचार का कारण गैलेरियस था, जिसने डायोक्लेटियन को ईसाइयों के खिलाफ एक सामान्य फरमान जारी करने के लिए मनाया। इस फरमान में आदेश दिया गया कि ईसाई पूजा स्थलों को नष्ट किया जाए, पवित्र धर्मग्रंथों को जला दिया जाए, और ईसाइयों से सभी नागरिक अधिकार और पद छीन लिए जाएं। डायोक्लेटियन के अधीन उत्पीड़नों की विशेषताएँ थीं, पहली, यातनाओं की क्रूरता, और दूसरी, शहीदों की भारी संख्या, जिसमें एक ही दिन में 10 से 100 या उससे अधिक लोगों को मौत के घाट उतार दिया गया।

[5991] डोरोथियस एक प्रीपोसिटस (अधिकारी) थे; पीटर और गोरगोनियस दरबारी गणमान्य व्यक्ति थे। गोरगोनियस के अवशेष रोम भेज दिए गए थे। मिगिडोन का नाम उनके मूल स्थान के नाम पर रखा गया है: मिगिडोनियन, यानी फ्राइजियन या मसीयन (एशिया माइनर के पश्चिमी और उत्तर-पश्चिमी भागों में)। इंडिसि – एक नपुंसक। उनके बारे में और विवरण बाद में इसी संतों के जीवन-चरित्र में देखें।

दफनाए गए पवत्रि शहीदों के शवों को जमीन से खोदकर समुद्र में फेंक दयिा जाए, ताकि बचे हुए ईसाई उनकी पूजा न कर सकें। उत्पीड़न की क्रूरता इतनी थी कि संत एम्फमिस का शकिार *'वध के लिए* ले जाई गई *भेड़ के बच्चे की तरह'* कयिा गया (यशायाह 53:7)। चरवाहे के टुकड़े-टुकड़े कए जाने से पहले, भेड़यिों ने उसकी भेड़-बकरयिों पर धावा बोल दयिा; लेकनि ईश्वर की कृपा और संरक्षण ने उसे सेमाना नामक एक गाँव में सुरक्षति रख लयिा, ताकि वह पहले अपनी आध्यात्मकि भेड़-बकरयिों को ईश्वर तक ले जा सके, और फरि स्वयं उनके पास जा सके, और अपने ही रक्त का बलदिान देकर नकिोमेडयिा की कलीसयिा के वशि्वास को दृढ़ कर सके। उसी समय, कलीसयिा में, मसीह के जन्म के दनि, लगभग बीस हज़ार पवत्रि शहीदों को ज़दिा जला दयिा गया, जबकि संत अम्फीमस के झुंड के शेष लोगों को कैद कर दयिा गया। हालाँकि, संत ने अपने बार-बार लखिे संदेशों के माध्यम से, जो उन्होंने गुप्त रूप से ईसाइयों को भेजे, उन्हें सखिाया और वशि्वास में मजबूत कयिा; ताकि यद्यपि वह शरीर से उनके साथ नहीं थे—ईश्वर की इच्छा से कुछ समय के लिए उनसे अलग—वह जेलखानों के भीतर आत्मा से उनके साथ मौजूद थे, और अपने संदेशों के माध्यम से उन्हें आध्यात्मकि पोषण प्रदान कर रहे थे। झुंड ने भेड़यिों से खुलेआम लड़ाई की, जबकि उनका चरवाहा उनसे गुप्त रूप से लड़ रहा था; और संत ने यातनाओं से डरकर नहीं, बल्कि शकि्षा और प्रार्थना के माध्यम से वशि्वास में सबसे कमजोर को मजबूत करने, सबसे दुर्बल और डरपोक ईसाइयों को दृढ़ करने और उन्हें साहसी बनाने के लिए खुद को छपिा लयिा, जब तक कि उन्होंने उन सभी को मसीह के पास प्रस्तुत नहीं कर दयिा, और केवल तब ही खुद को उन्हीं यातनाओं के अधीन कयिा।

[5992]वशि्वासयिों में से एक, संत एम्फमिस द्वारा दृढ़ कयिा गया, जनिका नाम ज़निोन था और जो पेशे से एक सैनकि था, ने सम्राट मैक्समियिन की दुष्टता की नम्निलखिति प्रकार से सभी के सामने नंदिा की। नकिोमेडयिा में, सर्कस के पास, मूर्तपिूजक देवी सीरेस के नाम एक मंदरि था। एक अवसर पर, मैक्समियिन अपने सैनकिों और सभी लोगों के साथ, इस देवी की मूर्ति को भव्य बलदिान दे रहा था। हालाँकि, इस अधार्मकि उत्सव के दौरान, ज़निोन ऊँचे स्थान पर खड़ा होकर, ज़ोर से चल्लिाया:

'हे राजा, तुम एक नर्जिीव पत्थर और एक बधरि वृक्ष की पूजा करके स्वयं को धोखा दे रहे हो, क्योंकि यह राक्षसों का एक छल है, जो इसकी पूजा करने वालों के वनिाश की ओर ले जाता है।' सत्य को जानो, मैक्समियिन, और अपनी भौतकि आँखों को, अपनी आध्यात्मकि आँखों के साथ, स्वर्ग की ओर मोड़ो: देखो, और इस सबसे तेजस्वी सृष्टि पर मनन करके, इसके स्रष्टा को समझो, जैसा कि वह है—स्रष्टा। सृष्टि के अवलोकन से इसे समझो; इस ईश्वर का सम्मान करना सीखो, जसिे बधरि पशुओं के रक्त में कोई आनंद नहीं आता, जन्हिें घुटन भरे धुएँ में वध कर जलाया जाता है, बल्कि वह तर्कशील प्राणयिों की पवत्रि आत्माओं और पवत्रि हृदयों में आनंदति होता है।

यह सुनकर, मैक्समियिन ने ज़ेनो को पकड़ने का आदेश दयिा और सम्राट से इस तरह की दुस्साहसी बातें कहने के लिए, उसे चेहरे और मुँह पर पत्थर मारने का आदेश दयिा। उसके यातना देने वालों ने उसके दाँत तोड़ दए, उसके चेहरे को नोच डाला, उसकी जीभ काट दी—जन्हिोंने मसीह की गवाही दी थी—और, अंत में, उसे शहर से बाहर घसीट लयिा जब वह मुश्कलि से जीवति था, और, राजा की आज्ञा से, उसका पवत्रि सरि काट दयिा।

उस समय, संत एम्फमिस ने अपनी छपिने की जगह से, अपने पत्रों के साथ एक डकिन को जेल में बंद डोरोथयिस और मसीह के लिए उसके साथ कैद अन्य लोगों के पास भेजा, और उन्हें धैर्य रखने के लिए प्रोत्साहति कयिा, ताकि वे जीवन-दाता - प्रभु - के लिए मरने के लिए आनंदपूर्वक तैयार हो सकें। दुष्टों ने इस डकिन को पकड़ लयिा और उसे संत एम्फमिस के पत्रों के साथ राजा मैक्समियिन के पास ले गए। राजा ने ये पत्र पढ़े और उनकी सामग्री उसे अप्रयि लगी: पत्रों में शहीदों के लिए संत के हार्दकि अभविादन, उनके प्रति उनकी गहरी सहानुभूति, उनके लिए उनकी पतिृवत् चेतावनी, उनका पादरीय उपदेश, उनकी शहादत के लिए उनका पवत्रि आशीर्वाद, और मूर्तयिों को उखाड़ फेंकने के लिए प्रोत्साहन शामलि था। इस सब से गहराई से क्रोधति होकर, राजा ने सभी शहीदों को कालकोठरी से बाहर नकिालकर अपने सामने न्याय के लिए पेश करने का आदेश दयिा। उन पर एक घमंडी और क्रूर दृष्टि डालते हुए, उसने उन्हें लंबी-चौड़ी फटकार लगाई। फरि उसने सेंट एम्फमिस के पत्रों को, उनकी फटकार और नंदिा के रूप में, पढ़ने का आदेश दयिा।

उसने कहा, 'तुम इस दुष्ट आदमी की छलपूर्ण कहानयिों पर वशि्वास करते हो, और राजा की आज्ञा की बजाय उसकी वकि्रत शकि्षाओं पर ध्यान देते हो!'

[5992] सेरेस या डेमेटोर – प्रजनन, कृषि और ववािह की रोमन और ग्रीक देवी। इस देवी के सम्मान में अनैतकि अनुष्ठान वशिेष रूप से फ्राइजयिा में व्यापक थे, जो बथिनियिा के समीप स्थति था।

वशि्वासयिों ने जब यह पत्र पढ़ा सुना, तो वे अत्यंत प्रसन्न हुए और आनंद के आँसू बहाते हुए, दूर खड़े डीकन अंफमि का उज्ज्वल आँखों, प्रसन्न चेहरों और झुके सरिों के साथ अभविादन कयिा; जबकि संत अंफमि के वे वचन, जो उन्हें फटकारने के लिए पढ़े गए थे, उन्होंने अपने हृदय में संजो लिए।

तब राजा ने डकिन से कहा:

'बताओ, तुम कहाँ से आए हो? कसिने तुम्हें ये संदेश दिए जो लोगों को भ्रष्ट कर रहे हैं? और जसिने तुम्हें भेजा है, वह कहाँ छपिा है?'

दीकन ने, अनुग्रह से परपिूर्ण होकर, मुख खोलकर इस प्रकार कहना आरंभ कयिा:

जो ये संदेश भेजता है वह एक चरवाहा है। लेकनि चूंकि वह अपनी भेड़ों से दूर है, वह उन्हें पत्रों के माध्यम से नरि्देश देता है और उन्हें धार्मकिता के लिए प्रेरति करता है; वशिेष रूप से जब वह वचन की भेड़ों पर कई भेड़यिों के आक्रमण के बारे में सुनता है, तो वह भेड़ों को जोर से बताता है कि उन्हें क्या करना चाहिए। वह उन्हें प्रधान चरवाहे के ये वचन सुनाता है: *'उनसे मत डरो जो शरीर को तो मार सकते हैं, पर आत्मा को नहीं मार सकते'* (मत्ती 10:28)। मैं इस मसीह की भेड़ों के झुंड के पास यह संदेश इसीलिए लाया हूँ कि इसकी बातें उन्हें सुना सकूँ; लेकनि जहाँ तक उस बात का सवाल है कि जिसे यह संदेश भेजा गया है वह अब कहाँ है—उस बारे में मैं कुछ नहीं कहूँगा, क्योंकि यह पूर्ण मूर्खता होगी यदि मैं अपने चरवाहे का वशि्वासघात करूँ, जिनसे सभी को महान लाभ प्राप्त होता है, और जो, मेरे द्वारा उनकी घोषणा कए बनिा भी, जल्द ही प्रकट हो जाएँगे, क्योंकि *'पहाड़ पर स्थति एक नगर छपिा नहीं रह सकता'* (मत्ती 5:14)।

इन साहसी शब्दों से क्रोधति होकर, यातना देने वाले ने पवत्रि डकिन, जनिका नाम थयिोफेंस था, को मृत्युदंड दे दयिा। सबसे पहले, उन्होंने उसकी जीभ काट दी, जसिने इतनी सुंदरता से बात की थी, और फरि उन्होंने उसे पत्थर मारकर और तीरों से भेदकर मार डाला। इसके बाद, राजा ने आदेश दयिा कि अदालत में लाए गए शहीदों को भी वभिन्नि यातनादायक तरीकों से मार डाला जाए: संत डोरोथयिस का सरि कलम कर दयिा जाना था, मार्डोनीयस को खंभे से बाँधकर जलाया जाना था, मग्डिोनयिस को जीवति एक गड्ढे में फेंककर ज़दिा दफ़नाया जाना था, गोरगोनयिस, इंडसि और पीटर को गर्दन में चक्की का पाट लटकाकर समुद्र में डुबो दयिा जाना था, और बाकी सभी को मृत्युदंड के कई अन्य तरीकों से मार डाला जाना था। इस प्रकार, वे सभी मृत्यु के वभिन्नि साधनों से प्रभु के पास चले गए। शहीदों के शव, जन्हिें समुद्र में फेंक दयिा गया था, बाद में मछली पकड़ने वालों ने अपनी जालयिों से खींचकर बाहर नकिाला, और डोम्ना नाम की एक युवती ने उन्हें दफनाया। यह जानने पर, मूर्तपिूजकों ने उसे तलवार से मार गरिाया जब वह पवत्रि शहीदों की अवशेषों पर प्रार्थना कर रही थी। उसी समय, यूथमिीयस, जन्होंने अपने उपदेश के माध्यम से कई लोगों को मसीह की गवाही देने और शहीद के पथ पर चलने के लिए प्रेरति कयिा था, ने नकिोमेडयिा में भी, वभिन्नि यातनाओं को सहने के बाद, तलवार से सरि कलम करके शहादत प्राप्त की। इन सब के बाद, संत एन्फमिस के लिए यीशु मसीह की गवाही पर कष्ट सहने का समय आ गया।

जबकि वह उपर्युक्त सेमेन गाँव में छपिे हुए थे, और गुप्त रूप से परमेश्वर के वचन का प्रचार कर रहे थे तथा मसीह में वशि्वास बढ़ा रहे थे, मैक्समियिन को उनके बारे में पता चल गया और उसने तुरंत उन्हें पकड़ने के लिए बीस सैनकि भेजे। इस गाँव में पहुँचने पर, वे वहाँ संत अम्फमिस से मलिे और उनसे सीधे पूछा:

'ईसाई शक्षिक अम्फमिस कहाँ है?'

जब वह योद्धाओं से मलिा, तो अंफमि उन्हें अपनी झोपड़ी तक ले गया और कहा:

'मैं तुम्हें अंफमि के बारे में बताऊँगा और उसे तुम्हारे हवाले कर दूँगा, लेकनि पहले अपनी यात्रा के बाद थोड़ा आराम कर लो।'

फरि उसने उन्हें कुछ भोजन दयिा और उनके लिए एक साधारण भोजन तैयार कयिा, उन्हें गर्मजोशी से स्वागत करते हुए। इसके बाद, संत ने उन्हें बताया कि वह अंफमि ही था।

उसने कहा, 'मैं ही वह हूँ जसिकी तुम तलाश कर रहे हो; तो मुझे ले चलो और मुझे उस तक ले जाओ जसिने तुम्हें भेजा है।'

यह सुनकर सैनकि हैरान रह गए और वे अंफमि के पवत्रि सफेद बालों की ओर अपनी नज़रें उठाने में भी शर्मदिगी महसूस करने लगे, क्योंकि उन्होंने उनके गर्मजोशी भरे स्वागत और मेहमाननवाज़ी को देखा था। और इस प्रकार वे आपस में इस बात पर चर्चा करने लगे कि वे इस मासूम और अच्छे आदमी को इस जीवन में उसकी भलाई के लिए नहीं, बल्कि उसके यातना देने वाले के पास, अत्यधकि दुख और उन भयंकर यातनाओं के बाद नश्चिति मृत्यु की ओर ले जा रहे थे। उन्हें अंफमिस पर दया आई और वे उसके सामने लज्जति थे, और उन्होंने संत से कहा:

'हम तुम्हें अपने साथ नहीं ले जाएँगे, परन्तु हम तुम्हें छपि रहने की सलाह देते हैं; और हम मैक्समिनिस से कहेंगे कि हमने नकिोमेडयिा के आसपास अंफमि को हर जगह खोजा और वह हमें कहीं नहीं मलिा।'

लेकनि अंफमिस ने उत्साहपूर्वक प्रभु की आज्ञाओं का पालन कयिा और इसलिए उन्होंने उन्हें सच बोलने के लिए कहा, क्योंकि वह नहीं चाहता था कि वे उसके लिए झूठ बोलें; इसके अलावा, वह मसीह के लिए दुख सहने और मरने के लिए तरसता था; इसलिए, वह उनके साथ चला गया। रास्ते में, उसने उनके बीच परमेश्वर का वचन प्रचार कयिा, और उन्हें हमारे प्रभु यीशु मसीह में वश्विास करना सखिाया। अनफमि द्वारा बोया गया परमेश्वर के वचन का बीज व्यर्थ नहीं गया, बल्कि अच्छी भूमि पर पड़ा: यह सैनकिों के हृदयों में जड़ पकड़ गया, वहाँ फल-फूल गया, और उन्हें वश्विास में पूर्णता तक पहुँचाने के लिए बढ़ा। जब वे नदी पर पहुँचे, तो अनफमि ने उनके लिए प्रार्थना की और उन्हें पता, पुत्र और पवत्रि आत्मा के नाम पर बपतस्मिा दयिा। तब वे फरि से चल पड़े और धर्म-संबंधी बातें करते हुए नकिोमेडयिा पहुँचे। जब एंफमिस शहर में प्रवेश कयिा, तो उसकी खबर मैक्समियिन को मलिी, जसिने आज्ञा दी कि उसे हथकड़यिों में जकड़कर उसके सामने लाया जाए।

और इस प्रकार संत अपने हाथ पीठ में बँधे हुए यातना देने वाले के सामने उपस्थति हुए: क्योंकि, सत्य की गवाही के रूप में, दुष्ट मूर्तपिूजकों की अदालत के सामने उन्हें ठीक इसी तरह उपस्थति होना था—बंधे हुए, मानो वे कोई अपराधी हों; फरि भी वे आत्मा से स्वतंत्र थे और अपनी आत्मा को स्वर्ग की ओर मोड़ दयिा, जहाँ से वे मदद की प्रतीक्षा कर रहे थे। यातना देने वाले ने यातना के सभी उपकरण लाने का आदेश दयिा, ताकि वह सबसे पहले केवल उनकी दृष्टि से ही अंफमिस को भयभीत कर सके, यह सोचकर कि संत उन्हें देखकर डर जाएगा और राजा की इच्छा पूरी करने के लिए राजी हो जाएगा। फरि उन्होंने उससे पूछताछ शुरू की:

'क्या तुम वही अंफमि हो, जो मसीह नामक एक साधारण मनुष्य के वषिय में भटक कर, आम लोगों को भी उसी भूल में डालता है, उन्हें धोखा देता है और हमारे शाही आदेश का वरिोध करने के लिए उकसाता है, जबकि हमारे देवताओं का अनगनित अपमान करते हुए उनकी नदिा और गाली-गलौज करता है?'

हालाँकि, अंफमि ने लाए गए यातना के औज़ारों और राजा की बातों पर हँसते हुए कहा:

'हे राजा, जान ले कि यदि दैवीय प्रेरति की सलाह न होती, तो मैं तेरे प्रश्न का उत्तर बलि्कुल भी न देता, जो हमें यह सखिाते हैं कि *"जो कोई* तुमसे *तुम्हारे भीतर की आशा का कारण पूछे, उसे उत्तर देने के लिए* तैयार रहो" (1 पतरस 3:15), क्योंकि परमेश्वर ने हमें *'ऐसे शब्द और ज्ञान* देने का वादा कयिा है *जसिका हमारे कोई भी वरिोधी वरिोध या खंडन नहीं कर पाएगा'* (लूका 21:15)। और मैं ही पहला था जसिने तुम्हारी मूर्तयिों का, जनि्हें तुम देवता कहते हो, मज़ाक उड़ाया; परन्तु अब मैं तुम्हारी उस बड़ी मूर्खता का मज़ाक उड़ाता हूँ, जसिमें तुमने मुझे मेरे सृष्टकिर्ता से हटाने की आशा की, जनि्होंने तुम्हें, एक कृतघ्न प्राणी को भी, अपनी ही प्रतमिा से सम्माननति कयिा है। तुम मुझे बँधकर अपनी अदालत में क्यों लाए हो और मेरे सामने यातना के उपकरण क्यों रख दिए हैं? क्या तुम इनसे मुझे डराना नहीं चाहते, ताकि डर के मारे मैं तुम्हारी अधर्मी आज्ञा का पालन करूँ? परन्तु इससे तुम उसको डरा नहीं सकते जो स्वयं अपने प्रभु के लिए मरना चाहता है। इसे उन लोगों के सामने पेश करो जो हृदयहीन और कायर हैं, जनि्हें यह क्षणकि जीवन एक बड़ी सांत्वना और इस क्षणकि जीवन का नुकसान एक बड़ा दुख लगता है: उन्हें डराओ, मुझे नहीं। परन्तु मेरे लिए, यह नाशवान देह और यह क्षणकि जीवन, मानो भारी बेड़यिाँ और एक कारागार हैं, जो मेरी आत्मा को उस परमेश्वर के पास जाने से रोकते हैं जसिकी मैं लालसा करता हूँ; जबकि आपकी धमकयिाँ, सज़ाएँ और यातनाएँ कसिी भी सांसारकि सुख से कहीं अधकि मुझे प्रयि हैं, क्योंकि उनके बाद मृत्यु आएगी, जो मुझे देह के बंधनों से मुक्त कर, मुझे उस स्थान पर ले जाएगी जसिकी ओर मेरी सारी इच्छाएँ केंद्रति हैं।

संत के ये वचन कहने के बाद, यातना देने वाले ने आदेश दयिा कि उसकी गर्दन पत्थरों से मारी जाए। हालाँकि एम्फमिस ने, इन प्रहारों को मसीह के लिए अपने दुखों की शुरुआत और अपने शहीद के मुकुट की नींव के रूप में कृतज्ञतापूर्वक स्वीकार करते हुए, उच्चतम पुरस्कार का वारसि बनने की इच्छा में और भी बड़े दुखों की लालसा की; और, कभी यातना देने वाले का मज़ाक उड़ाते और उसे चढ़ाते हुए, तो कभी उसे अत्यधकि क्रोध के लिए उकसाते हुए, ताकि वह उसे सबसे भयानक यातनाओं का आदेश दे सके, उसने उन अशुभ भवष्यिवाणी वाले शब्दों को दोहराया: *'जो देवता न तो आकाश को और न ही पृथ्वी को बनाते हैं, वे पृथ्वी से और आकाश के नीचे से लुप्त हो जाएँगे'* (यरि्म. 10:11)।

ये शब्द यातना देने वाले के हृदय में क्रोध से घुस गए, और उसने आदेश दयिा कि पवत्रि शहीद के पैरों को लाल-गरम, तेज लोहे की कीलें पार-पार से ठोक दयिा जाए। लेकनि यह यातना भी संत के लिए आनंद की बात थी, क्योंकि वह

आनंदति होकर उस परमेश्वर की महमिा करने लगा, जसिने उसे प्रभु यीशु मसीह के नाम के लिए ऐसी पीड़ा सहने के योग्य समझा था। तब मैक्समियिन ने मट्टिी के बर्तनों के तीखे टुकड़ों को जमीन पर बछिाने, शहीद को नग्न होकर उन पर लटिाने, और इस हालत में लाठयिों से और भी बेरहमी से पीटने का आदेश दयिा, ताकि उसका हृदय दोहरी पीड़ा से भेद जाए: ऊपर से लाठयिों के प्रहारों से, और नीचे से तीखे टुकड़ों से। फरि भी तब भी संत ने अपने अत्याचारी पर वजिय की आशा नहीं छोड़ी, और गा उठे: 'मैं तुझे धन्यवाद देता हूँ, हे युगों के राजा प्रभु, *क्योंकि तूने मुझे युद्ध के लिए बल से कमर कस दी है और मेरे वरिुद्ध उठने वालों को मेरे पाँवों तले दबा दयिा है; तूने मेरे शत्रुओं की पीठ मुझ पर मोड़ दी है, और मैं उन्हें नाश कर देता हूँ जो मुझ से बैर रखते हैं* (भजन संहति 17:40–41)।

तब यातना देने वाले ने एक और यातना सोची: उसने तांबे के जूते गरम करके उन्हें अंफमि के पैरों पर पहना दयिा। लेकनि स्वर्ग से दव्यि अनुग्रह उस पीड़ति पर छा गया, जसिने उसकी पीड़ा में उसे बल दयिा, और उसने एक आवाज़ सुनी जसिने उसे समय आने पर स्वर्गीय मुकुट का वादा कयिा, और इस आवाज़ ने उसके हृदय को आनंद से भर दयिा। इस दैवी सांत्वना से, संत ने सभी के सामने अपने कष्टों की ओर ध्यान न देना शुरू कर दयिा, और उनका चेहरा दव्यि आनंद से चमक उठा, मानो वे कोई पीड़ा सह ही नहीं रहे हों। यह देखकर, यातना देने वाला चकति हो गया और उसने संत एंफमिस के बारे में कहा कि वह एक जादूगर है और कसिी जादू के ज़रिए, जलने की आग की शक्ति पर काबू पा रहा था। उन्होंने उससे पूछना शुरू कयिा: इतनी यातनाएँ सहते हुए वह आनंदति क्यों था?

'मैं इसलिए बहुत प्रसन्न हूँ,' संत ने उत्तर दयिा, 'क्योंकि ये ही कष्ट वादा कए गए आशीर्वादों के लिए एक दृढ़ आशा के रूप में काम करते हैं; और बहुत जल्द मैं आपके अहंकारी घमंड पर वजिय प्राप्त कर लूंगा और यह साबति कर दूंगा कि आपके देवता मानवीय शक्ति से भी कहीं अधकि असहाय हैं, और आप अपनी दुर्भावना के लिए हमेशा के लिए पश्चाताप करेंगे, लेकनि व्यर्थ, – और जब तक तुम्हें शाश्वत नरक की सज़ा नहीं दी जाती, तब तक तुम इस जीवन से नहीं जाओगे।

इन शब्दों से और भी क्रोधति होकर, यातना देने वाले ने आदेश दयिा कि संत को पहयि से बाँधा जाए और पहयि की धुरी को, उनके साथ, घुमाया जाए, जबकि उनके शरीर को आग से जलाया जाए। लेकनि जब नौकरों ने राजा के आदेश को पूरा करना शुरू कयिा, अंफमि को पहयि से बाँधा और उसके नीचे आग जलाई, तो वे खुद अचानक मृतक की तरह गरि पड़े। चक्का रुक गया, और आग उनकी ओर बढ़ी और उन्हें झुलसा दयिा; बाद में, उन्होंने यातना देने वाले को यह बताया:

'जब हमने पहयि को घुमाना शुरू कयिा और उससे बँधे आदमी को आग लगाई, तो हमारे पास तीन तेजस्वी पुरुष प्रकट हुए और उन्होंने कहा: "डरो मत, अंफमि, परमेश्वर के सेवक!" लेकनि जब उन्होंने अपनी दृष्टि हम पर डाली, तो हमें डर सता गया, और पहयि के नीचे की आग हमारी ओर मुड़कर हमें झुलसा गई।'

यह सुनकर यातना देने वाला चकति हो गया, लेकनि उसने इसे सब जादू-टोने का काम मान लयिा। इसके बाद, संत अंफमि को पहयि से उतार लयिा गया, और राजा ने उसे तलवार से सरि कलम करने की धमकी दी यदि उसने मूर्तयिों को बलदिान नहीं चढ़ाई। हालाँकि, शहीद ने यह सुनकर कि उसका सरि कलम कयिा जाएगा, प्रसन्न होकर परमेश्वर से वनिती की कि वह उसे अपने झुंड के पास शीघ्र लौटने की अनुमति दे, जो उससे पहले शहादत के माध्यम से स्वर्ग में चढ़ गए थे, ताकि वह भी कह सके: *'मैं यहाँ हूँ और वे बच्चे जिन्हें प्रभु ने मुझे दयिा है'* (यशायाह 8:18)।

लेकनि दुष्ट राजा ने पहले ही आदेश दे दयिा था कि संत को जेल में डाल दयिा जाए और लोहे की जंजीरों से बाँध दयिा जाए। जब अंफमिस को जेल ले जाया जा रहा था, तो वह हर चीज़ के लिए परमेश्वर की महमिा और स्तुति कर रहा था। – और अचानक स्वर्ग से उस पर एक प्रकाश चमका, उसकी जंजीरें टूट गईं, और उसे ले जा रहे सेवक डर के मारे ज़मीन पर गरि पड़े। लेकनि अंफमिस ने उन्हें उठाया और उन्हें वह करने का आदेश दयिा जो उन्हें करने के लिए कहा गया था। तहखाने में पहुँचकर, संत उसमें प्रवेश कर गए और वहाँ कैद कए गए दुष्ट लोगों और डाकुओं के बीच रहे; फरि भी वह इस तरह प्रसन्न थे जैसे उन्हें कसिी दावत या ववािह समारोह में ले जाया गया हो। कैदयिों को परमेश्वर के वचन का आध्यात्मकि भोजन और भक्ति का पान प्रदान करके, उन्होंने उन्हें मसीह के प्रति आकर्षति कयिा और उन्हें उनकी पवत्रि कलीसयिा में लाया, और उन्हें वशि्वास और अच्छे कामों की शकि्षा दी; वहीं, उसी कालकोठरी में, उन्होंने उन्हें पवत्रि बपतस्मिा के जल द्वारा नया जन्म दयिा। और वह कालकोठरी एक तेजस्वी चर्च बन गई, जो पवत्रि आत्मा के वरदानों से परपिूर्ण थी, जहाँ वशि्वासयिों ने दनि-रात परमेश्वर को स्तुति का बलदिान अर्पति कयिा।

यह जानकर, मैक्समियिन ने संत एम्फमिस को अपने सामने लाने का आदेश दयिा और चापलूसी से उन्हें मूर्तपिूजक देवताओं की पूजा करने के लिए मनाने की कोशशि की, यह वादा करते हुए कि वह उन्हें मूर्तपिूजक पुरोहतिों का प्रमुख बना देगा। लेकनि एम्फमिस ने, अपनी प्रथागत साहस के साथ, राजा को जवाब दयिा:

'तुम्हारे शब्दों से भी पहले, मैं परमेश्वर के याजकों में महायाजक हूँ[5993] ; क्योंकि मैं मसीह का याजक हूँ, जो प्रधान चरवाहा हैं, जन्हिोंने मेरे लिए और मेरे कारण अपना शरीर धारण कयिा और स्वर्ग से अवतरण कयिा।' वे मानव जाति के लिए परमेश्वर पति के समक्ष एक बलदिान के रूप में प्रस्तुत हुए, क्रूस पर मरे, दफनाए गए, और तीसरे दनि पुनर्जीवति हुए, और महमिा में स्वर्ग में आरोहण कयि, और जो कोई भी उन पर वश्विास करता है, उन्हें वहाँ ले गए। मैं उनका याजक हूँ, और इसलिए मैं स्वयं को एक जीवति बलदिान के रूप में उन्हें अर्पति करता हूँ। परन्तु तुम्हारा याजकपद, तुम्हारी बलदिानें, और तुम्हारे तथाकथति देवता अंधकार हैं, और वे अनन्तकाल के अंधकार में चले जाएँगे।

यह सुनकर, यातना देने वाले ने अंफमि को मृत्युदंड दे दयिा। और संत स्वर्गीय आनंद से परपिूर्ण होकर अपनी मृत्यु की ओर बढ़ गए।

उसने कहा, 'अब मेरे आनंद का समय है; अब मेरी इच्छा की पूर्ति हुई है; अब मेरे लिए अनंत जीवन का द्वार खुल गया है; हाँ, इस शरीर से वदिा होकर, मैं प्रभु की उपस्थति में प्रवेश करूँगा, और मैं तृप्त हो जाऊँगा जब उनकी महमिा मेरे सामने प्रकट होगी।'

जब वे फाँसी के स्थान पर पहुँचे, जहाँ से वह क्षणकि मृत्यु के द्वारा अनंत जीवन में प्रवेश करने वाला था, तो संत ने प्रार्थना करने के लिए समय माँगा; और प्रार्थना करने के बाद, उन्होंने अपना पवत्रि सरि कुल्हाड़ी के नीचे झुका दयिा, जसिसे राजा की आज्ञा के अनुसार उनका सरि कलम कर दयिा गया, और इस प्रकार उन्होंने 3 सतिंबर को मसीह के लिए अपना शहादत का अंत कयि। जब शाम हुई, तो कुछ वश्विासी चुपके से फाँसी के स्थान पर आए, उन्होंने संत एम्फमिस के धैर्यवान शरीर को अपने साथ ले लयि, और उसे सम्मान के साथ दफनाया, तथा पवत्रि त्रमिूर्ति, पति, पुत्र और पवत्रि आत्मा, एकमात्र परमेश्वर की महमिा की, जसिकी महमिा युगों-युगों तक होती रहे, आमीन[5994] ।

कॉन्टाकयिन, स्वर 4:

पुरोहति वर्ग के बीच ईश्वरभक्त जीवन जीकर और दुःखों का मार्ग पूरा करके, आपने मूर्तपिूजा का अंत कयि, हे ईश्वर-वदिवान, अपने झुंड के रक्षक बनकर। अतः हम आपको अब सम्मानति करते हैं, गुप्त रूप से पुकारते हुए: हमें अपनी प्रार्थनाओं द्वारा हमारे कष्टों से उबारें, सदा स्मरणीय अंफमि।

उसी दनि, पवत्रि शहीद वासलिसिा की शहादत

3 सतिंबर को स्मरणोत्सव

धर्मद्रोही रोमन सम्राट डायोक्लेटयिन के शासनकाल के दौरान, शायद ही कसिी अन्य शहर में नकिोमेडयिा जतिना शहीदों का रक्त बहाया गया हो: इसमें मसीह के लिए इतने अधकि वश्विासयिों को मार डाला गया कि केवल एक महीने में ही शहीद होने वालों की संख्या सत्रह हजार तक पहुँच गई, और इसमें वे बीस हजार लोग शामलि नहीं हैं जन्हिें मसीह के जन्म के दनि चर्च में जला दयिा गया था। और इस क्रूर उत्पीड़न के दौरान वश्विासयिों की इस प्रकार की अन्यायपूर्ण हत्या केवल एक महीने तक ही नहीं, बल्कि लंबे समय तक जारी रही। तो फरि, , कौन गनि सकता है कि इस

[5993] अर्थात् एक बशिप।

[5994] संत एम्फमिस की शहादत का समय वर्ष 303 माना जाता है: उस वर्ष, डायोक्लेटयिन ने नकिोमेडयिा में एक चर्च को वहाँ मौजूद सभी ईसाइयों के साथ जलाने का आदेश दयिा; उन्होंने ईसाइयों को पूजा के लिए इकट्ठा होने से रोकने वाला एक फरमान जारी कयि, और बाद में एक और फरमान जारी कयि जसिमें बशिपों, प्रेस्बटिरों और डीकनों को कैद करने और उन्हें मूर्तपिूजक देवताओं को बलदिान चढ़ाने के लिए मजबूर करने का आदेश दयिा गया, और, मना करने पर, उन्हें यातना देने और मार डालने का आदेश दयिा। – बीजान्टनि सम्राट जस्टनियिन (527–565) ने पवत्रि शहीद अम्फीमस के सम्मान में गोल्डन हॉर्न के कनिारे एक भव्य चर्च का नरि्माण कयि, जसिे उन्होंने संगमरमर और सोने से सजाया। सम्राट लयिो द ग्रेट ने ज़ायरोपाइर्का के पास उनके लिए एक चर्च का नरि्माण कयि। 10वीं शताब्दी में, संत अम्फमिस का सरि नकिोमेडयिा में रखा गया था, जहाँ कई चमत्कार हुए और उससे लगातार बाल उगते रहे।

समय में कतिने ईसाई मारे गए, सविाय एकमात्र परमेश्वर के, जो तारों की भीड़ को भी गनिता है! नकिोमेडयिा में भी, पवत्रि शहीद वासलिसिा ने कष्ट सहे। सर्वशक्तमिान परमेश्वर की महमिा हो, जो अपनी महान शक्तकिा प्रदर्शन न केवल वयस्कों में बल्कछिोटे बच्चों में भी करता है! पवत्रि शहीद केवल नौ साल की थीं जब उन्हें हेगेमोन, या नकिोमेडयिा के राज्यपाल, के सामने लाया गया, अलेक्जेंडर, जसिके सामने इस युवा शहीद ने, जो स्वर्गीय वधू के नर्दिोष वधू थे, मसीह की इतनी नडिरता से गवाही दी कसिभी उसकी बुद्धऔर उसके यातनाकर्ता के साथ उसकी सहज बातचीत से चकति रह गए, जसिके साथ उसने मसीही वशि्वास पर इस तरह बहस की जैसे वह एक पूर्ण रूप से परपिक्व व्यक्तहिो। गवर्नर को उम्मीद थी कवि चापलूसी और वादों से उसे अपने देवताओं की पूजा करने के लिए मना लेगा, लेकनि संत अडगि रहीं; जसि पर गवर्नर ने आदेश दयिा कउिनके चेहरे पर थप्पड़ मारा जाए: इस पवत्रि कन्या ने इसके लिए ईश्वर का धन्यवाद कयिा। तब राज्यपाल ने आदेश दयिा कउिसके कपड़े उतार दिए जाएँ और उसे कोड़ों से पीटा जाए: इसके लिए उसने प्रभु का और भी अधकि धन्यवाद कयिा। इससे राज्यपाल क्रोधति हो गया, और उसने आदेश दयिा कउिसे और भी बुरी तरह पीटा जाए; और जब उसका पूरा शरीर, मानो, एक लगातार चकत्ते से ढक गया, तो वह चल्लिाई: 'हे ईश्वर, मैं इन सब के लिए आपका धन्यवाद करती हूँ।' तब राज्यपाल ने आदेश दयिा कउिसकी पडिलयिों में छेद कयिा जाए, उसे उल्टा लटका दयिा जाए, और उसके नीचे जलाई गई आग पर तारकोल, गंधक, तेल और टनि फेंका जाए, इस वशि्वास के साथ कवि जल्द ही इस भयंकर पीड़ा और बदबूदार धुएं से अपनी अंतमि सांस लेगी; लेकनि इन यातनाओं के बीच भी, मानो स्वर्ग की ठंडक में हो, संत प्रभु की स्तुतकिरना बंद नहीं हुईं। जब गवर्नर ने देखा कसिंत ने उसकी रची गई यातनाओं को तरिस्कार से लयिा, तो उसने उसे एक जलती हुई भट्टी में फेंकने का आदेश दयिा। पवत्रि क्रॉस के चह्नि से स्वयं की रक्षा करते हुए, संत बेसलिसिा आग में प्रवेश कर गईं और वहाँ बनिा कसिी हानकि लंबे समय तक रहीं। वहाँ मौजूद सभी लोग भयभीत हो गए और इस अद्भुत दृश्य को देखकर हैरानी में पड़ गए। तब, उसे भट्टी से बाहर नकिालकर, उन्होंने उसे चीर-फाड़ करने के लिए दो शेरों पर छोड़ दयिा; लेकनि संत ने प्रार्थना करने पर, वह बनिा कसिी चोट के बच गई: उस कन्या की प्रार्थना, ठीक वैसे ही जैसे एक बार भवष्यिवक्ता दानयिेल की प्रार्थना ने शेरों के मुँह बंद कर दिए थे (दानयिेल 6:1–100)। तब शासक अलेक्जेंडर स्वयं भयभीत हो गया, जो लंबे समय तक जैसे समाधमिें रहा हो, अंततःबोला: 'ईश्वर की यही इच्छा है!' तत्पश्चात्, पवत्रि शहीद के चरणों में गरिकर, वह चल्लिाया: 'हे स्वर्गीय राजा और ईश्वर के सेवक, मुझ पर दया करो और इन सभी यातनाओं के लिए मुझे क्षमा करो; अपने ईश्वर से प्रार्थना करो कप्रिभु तुम्हारे कारण मेरा नाश न करें, क्योंकअिब मैं भी उन पर वशि्वास करता हूँ।' तब पवत्रि शहीद ने उस दयालु प्रभु की ऊँचे स्वर में स्तुतकिी, जसिने शासक की अंधापन दूर कर दयिा था और उसे सत्य का प्रकाश दखिाया था, और बशिप एंटोननिस को आज्ञा दी कवि अलेक्जेंडर को सच्चे धर्म की व्याख्या करें और उसे उसका उपदेश देकर बपतस्मिा दें। वहाँ मौजूद सभी ईसाई राज्यपाल अलेक्जेंडर के धर्म परविर्तन पर सच्चे मन से प्रसन्न हुए, जन्होंने अपने बपतस्मिा के बाद अपनी पूर्व दुष्टता और ईसाइयों पर कए गए अत्याचारों पर पश्चाताप कयिा, और संत वासलिसिा से वनिती की कवि प्रभु से उनके लिए क्षमा माँगें। पवत्रि शहीद, शासक अलेक्जेंडर की मध्यस्थता और प्रार्थनाओं के द्वारा, पूर्ण वशि्वास में आकर, जल्द ही सच्चे पश्चाताप से परपिूर्ण होकर देहांत हो गया, और ईसाइयों द्वारा सम्मान के साथ दफनाया गया; संत, उसकी दफन के बाद, शहर से तीन पोपरीशी (लगभग 4 कमिी) की दूरी पर चले गए। वहाँ, प्यास लगने पर और एक चट्टान पाकर, संत उस पर खड़ी हुईं और प्रभु से प्रार्थना की, जसिके फलस्वरूप चट्टान से तुरंत पानी बहने लगा। अपनी प्यास बुझाने के बाद, वह उस स्थान से थोड़ी दूर चली गईं और प्रार्थना में घुटने टेककर, उन्होंने अपना प्राण ईश्वर को सौंप दयिा। यह जानकर, बशिप एंटोननिस वहाँ आए और संत को उस पत्थर के पास दफनाया, जसिसे उनकी प्रार्थना से पानी नकिला था। हे प्रभु, पवत्रि शहीद की प्रार्थनाओं के द्वारा, हम पर अपनी महान और प्रचुर दया उंडेलिए, आमीन।

उसी दनि, पवत्रि पुरोहति-शहीद अरस्टियिन की स्मृत

3 सतिंबर को स्मरण कयिा जाता है

यह संत अरस्टियिन सीरयिा में, इसुस और एंटओिक शहरों के बीच स्थति तटीय अलेक्जेंड्रयिा के बशिप थे। उन्होंने उत्साहपूर्वक मसीह और उनके उद्धारकारी दुख, मृत्यु और पुनरुत्थान के बारे में प्रचार कयिा, और लोगों को यह भी सखिाया कपृथ्वी पर सभी चीजें क्षणकि और नश्वर हैं, जबकि केवल भवष्यि के स्वर्गीय आशीर्वाद ही शाश्वत और अमर हैं। इस शक्षिा के लिए, उन्हें अलेक्जेंड्रयिा शहर के राज्यपाल के सामने लाया गया और मसीह को सच्चा ईश्वर

स्वीकार करने के बाद, उन्हें खंभे पर जलाने की सज़ा दी गई; और शहादत के इस कार्य में उन्होंने अपना धन्य जीवन समाप्त कर दिया।

17 सितंबर

4 सितंबर (पुराने कैलेंडर के अनुसार)

संत बवलिा ह्यरोमार्टायर की शहादत, तीन युवकों के साथ

4 सितंबर को स्मरणोत्सव

दुष्ट राजा नुमेरियिन[5995] , जब अंकोनयिा शहर में ठहरा था, तो उसने मूर्तियों के सम्मान में एक बड़ा उत्सव आयोजति कयिा। मूर्तियों को चढ़ाए गए बलदिानों में एक छोटे लड़के, राजा के बेटे, का नरि्दोष रक्त भी था, जसिे नुमेरियिन ने एक वदिेशी राजा के साथ दृढ़ और अटूट शांतकिी गारंटी के रूप में रखा था। उसने एक बार इस राजा के खलिाफ युद्ध छेड़ा था, और चूंककिोई भी दूसरे पर हावी नहीं हो सका, इसलिए उन्होंने आपस में शांतसिंधकिी, उसे पारस्परकि शपथों से पुख्ता कयिा, और दोस्त बन गए। इस अटूट शांतऔिर दोस्ती के प्रतीक के रूप में, वदिेशी राजा ने अपने छोटे बेटे को नुमेरियिन की देखभाल में सौंप दयिा, ताकवि वह उसके पतिा की जगह ले सके और उसे अपने ही बच्चे की तरह पाल सके। चापलूसी से इस राजकुमार का स्वागत करने के बाद, नुमेरियिन ने जल्द ही अमानवीय क्रूरता दखिाई: उसने राजा के साथ शांतभिंग कर दी, उसकी कसम को ठुकरा दयिा, उनकी दोस्ती को ठुकरा दयिा, और अपने ही हाथों से राजा के बेटे को अपने घृणति देवताओं के मंदरि में मार डाला।

उस समय, कलीसयिा एंटओिक के महा-गड़रयिे पवत्रि और ईश्वर-भयभीत बशिप बाबलिा थे। दैवीय कृपा से बशिप के पद पर चुने जाने के बाद, संत बाबलिा *'वचन, आचरण, प्रेम, वशि्वास, पवत्रिता में वशि्वासयिों के लिए एक आदर्श थे'* (1 तीमुथयिुस 4:12)। जब मूर्तपिूजक त्योहार और अमानवीय कत्लेआम हो रहे थे, तो बशिप ने अंतीयक के सभी ईसाइयों को पवत्रि मंदरि में इकट्ठा कयिा, जहाँ उन्होंने सच्चे परमेश्वर को एक नरि्मल बलदिान अर्पति कयिा, और अपनी भेड़ों के लिए प्रार्थना की ताकवि वे आत्मा-वनिाशकारी भेड़यिों द्वारा नष्ट न हो जाएँ; साथ ही, उन्होंने अपनी मंडली को वशि्वास में दृढ़ रहने और क्लेश के समय में कलीसयिा से न दूर होने के लिए प्रोत्साहति कयिा। अपने घृणति और हत्यारे बलदिान से लौटकर, दुष्ट राजा दव्यि रहस्यों के उत्सव का साक्षी बनने की इच्छा से ईसाई चर्च की ओर बढ़ा, और चर्च में अपने प्रवेश मात्र से ही प्रभु के पवत्रि स्थल का अपमान करने की धमकी देने लगा। यह सुनकर कदिुष्ट राजा अपनी पूरी दरबार के साथ चर्च आ रहा था, ईश्वर की महमिा के उत्साही रक्षक, महान संत बावलिा, दव्यि वेदी से उठे और राजा से मलिने के लिए चर्च के दरवाजों पर रुक गए। जैसे ही राजा चर्च के पास पहुँचा, संत ने ऊँचे स्वर में पुकारा:

'हे मूर्तपिूजक राजा, यह तुम्हारे लिए नहीं है कतिुम जीवति ईश्वर के पवत्रि स्थल में प्रवेश करो और अपनी उपस्थतिि से उसे अपवत्रि करो।'

राजा की मूर्तपिूजक दुष्टता का पर्दाफाश करते और उसे डाँटते हुए, संत बाबलिा ने साहसपूर्वक राजा के रास्ते में खड़े होकर उसे चर्च में प्रवेश करने से रोक दयिा। और जब राजा चर्च के दरवाजों के और भी करीब आया, तो संत बाबलिा ने अपना दाहनिा हाथ राजा की छाती पर रखकर उसे ईश्वर के मंदरि से दूर धकेल दयिा, जसिसे राजा बड़ी शर्मदिगी के साथ पीछे हट गया। चूंकउिसके साथ नौकर और एक सेना थी, उसने जबरदस्ती चर्च में प्रवेश करने का प्रयास कयिा; लेकनि संत बाबलिुस के माध्यम से कार्य कर रही दैवी शक्तनि े उस दुष्ट व्यक्तकिो चर्च की दहलीज़ को छूने भी नहीं दयिा: बाबलिुस के शब्द उस अधर्मी व्यक्तकि लिए एक देवदूत के शब्दों जतिने ही भयानक थे। इसके अलावा, लोगों की बड़ी भीड़ और वशि्वासयिों की संख्या को देखते हुए, राजा को डर था कि कहीं संघर्ष और अशांतनि फैल जाए। इसलिए, चुपचाप अपनी नाराज़गी को दबाकर, वह गुस्से में अपने कक्षों में लौट गया। लेकनि ठीक अगले ही दनि उसने चर्च में आग

[5995] रोमन सम्राट, 283 से 284 तक शासन कयिा।

लगाने का आदेश दिया, और संत को अपनी उपस्थिति में बुलाकर, उनके इस दुस्साहसी कार्य के लिए उन पर ताना मारने लगा।

'हे सभी नश्वर प्राणियों में सबसे नीच!' ज़ार ने कहा। 'जब तुमने मेरी सर्वोच्च सत्ता को चुनौती देने और मुझे चर्च में प्रवेश करने से रोकने की हिम्मत की, तो तुम किस पर भरोसा कर रहे थे? क्या तुम नहीं जानते कि ज़ार को उकसाना कितना बड़ा पाप है, और ज़ार के व्यक्ति का अपमान करने की हिम्मत करने वाले किसी भी व्यक्ति का क्या हश्र होता है?'

संत बावलिा ने निडर होकर उत्तर दिया:

'मैं सांसारिक राजा को नहीं देखता और न ही मुझे उसकी उपस्थिति से शर्म आती है, बल्कि मैं स्वर्गीय राजा को देखता हूँ और उसी पर अपना भरोसा रखता हूँ। मैं उस परमेश्वर से डरता हूँ जिसने मुझे अपनी भेड़ों का चरवाहा नियुक्त किया है और मुझे भेड़ों को भेड़िये के हमलों से बचाने और उस जानवर को झुंड में प्रवेश करने न देने का आदेश दिया है। मैंने राजा का अपमान नहीं किया है, क्योंकि मैं जानता हूँ कि ऐसी धृष्टता पागलपन के समान है, लेकिन मैंने उस व्यक्ति को रोका है जिसने प्रवेश करके ईश्वर के पवित्र स्थल का अपमान करने और उसे अपवित्र करने का प्रयास किया। इसलिए, निष्पक्षता से, तुम्हें मुझसे ऐसे दुष्ट इरादे से रोकने के लिए मेरा धन्यवाद करना चाहिए: यदि तुम इसे पूरा कर लेते, तो तुम खुद को पूरी तरह से बर्बाद कर देते, क्योंकि तुम अपने स्रष्टा का अनंत रूप से अपमान करते, जिससे दूर होना किसी भी मृत्यु से बदतर है।

न्यूमेरियन ने कहा, 'तुम्हारे लिए यह अधिक उपयुक्त होता कि तुम कल हमारे प्रति अपनी अभद्रता पर पश्चाताप करते और क्षमा मांगते, फिर भी तुम अब भी हमें सताते रहते हो।'

बाबिला ने उत्तर दिया, 'हम ईसाइयों के लिए किसी भी मनुष्य को कोसना या किसी को परेशान करना उचित नहीं है। और न ही हम आपको परेशान करते हैं: क्योंकि ईश्वर की प्रतिमा और समानता में बनाई गई उसकी रचना का अपमान करना सही नहीं है। हालाँकि, यदि कोई परमेश्वर के विरुद्ध विद्रोह करता है और उसकी पवित्र मंडप का अपमान करता है, तो ऐसा व्यक्ति न केवल सम्मान का पात्र नहीं है, बल्कि दाऊद के वचनों के अनुसार, उसे प्रभु के शत्रु के रूप में घृणा करना पूरी तरह से न्यायसंगत है: *'हे प्रभु, क्या मैं तुझ से बैर न करूँ और तेरे विरोधियों से घृणा न करूँ?' मैं उनसे पूर्ण घृणा करता हूँ; वे मेरे शत्रु हैं* (भजन संहिता 138:21-22)।

'अपनी बकवास बंद करो,' राजा ने उससे कहा, 'और हमारी बात सुनो: यदि तुम अपने अपराध की सज़ा से बचना चाहते हो और क्षमा प्राप्त करना चाहते हो, तो हमारे देवताओं को बलिदान चढ़ाओ और उनकी पूजा करो।'

'मेरे सुपुर्द किए गए झुंड के लिए,' संत ने उत्तर दिया, 'मैं किसी भी पीड़ा को सहने और यहाँ तक कि मरने के लिए भी तैयार हूँ।'

और एक संक्षिप्त विराम के बाद, उन्होंने कहा:

'मैं अपने ईश्वर का त्याग नहीं कर सकता और झूठे देवताओं की सेवा नहीं कर सकता, जिनकी दुष्टता का विचार करना भी अत्यंत लज्जास्पद है।'

राजा ने कहा, "मैं तुम्हें एक बार फिर कहता हूँ, अपनी बकवास बंद करो और देवताओं को बलिदान चढ़ाओ। अगर तुम ऐसा नहीं करोगे, तो मेरी शक्ति तुम्हें उतनी ही दुष्टता से नष्ट कर देगी जितना दुष्ट तुम खुद हो।"

बावलिा ने उत्तर दिया:

'मैं तुम्हें उस अंधकार से मुक्त करना चाहता था जो तुम्हें घेरे हुए है, ताकि तुम अनंत यातनाओं से बच सको, परन्तु तुम स्वयं पर और भी बड़ी यातना ला रहे हो और दूसरों को भी इसमें शामिल होने के लिए बुला रहे हो। मैं तुमसे सच कहता हूँ: तुम जीवित परमेश्वर के हाथों से नहीं बच सकते।'

तब यातना देने वाले ने नम्रता का दिखावा किया और संत बाबिलस से शांत भाव से पूछने लगा:

उसने कहा, 'क्या तुम हमें समझा सकते हो कि ईश्वर क्या है?'

बावलिा ने उत्तर दिया:

'ईश्वर की प्रकृति को समझना असंभव है, भले ही आप ऐसा करने का हर संभव प्रयास करें; क्योंकि ईश्वर सभी चीजों के शाश्वत रूप से मौजूद राजा और सृष्टिकर्ता हैं, अकथनीय, अगम्य, मानव मन की पहुँच से परे, सभी चीजों का स्रोत और शक्ति। उसने स्वर्गदूतों, महादूतों और अन्य सभी अदेह प्राणियों को बनाया; उनके बाद, उसने मनुष्य को बनाया और उस पर अनगिनत आशीर्वादों की वर्षा की, उसे पृथ्वी पर एक राजा बनाया, ठीक उसी प्रकार जैसे वह स्वयं

स्वर्ग में राज्य करता है, और उसे जन्नत में बसाया। इसके अलावा, ताकि मनुष्य अपनी उच्च आह्वान को समझ सके और यह जान सके कि वह जानवरों से कितना श्रेष्ठ है, ईश्वर ने उन्हें उसके पास लाया और उसे उनका नाम रखने का आदेश दिया। ईश्वर ने मनुष्य के लिए एक सहायक बनाया और उसे स्वयं के साथ संवाद का सौभाग्य प्रदान किया। अकृतज्ञ मनुष्य ने अपने स्रष्टा को ठुकरा दिया और उसकी आज्ञाओं का तिरस्कार किया, जबकि उसने अपने शत्रु की बात मानी, जिसने कभी उसका कोई भला नहीं किया था, बल्कि केवल उसे बहकाया था। उनकी चापलूसी भरी बातों पर विश्वास करके, उसे ईश्वर के धर्मी निर्णय द्वारा स्वर्ग से निकाल दिया गया। फिर भी, दयालु और कृपालु ईश्वर, यद्यपि उन्होंने मनुष्य को अपनी उपस्थिति से वंचित कर दिया था, उस पर अपनी कृपा बनाए रखते हैं, यह स्पष्ट रूप से दिखाते हुए कि हमारी अनगिनत अवज्ञाओं के बावजूद, वे हमारी विनाश की कामना नहीं करते, बल्कि हर तरह से हमारे उद्धार की व्यवस्था करते हैं।

ऐसे शब्द सुनकर, नुमेरियन उन्हें समझ नहीं सका। और वास्तव में, उसकी आत्मा, जो अनुग्रह के बारे में कुछ नहीं जानती थी और जिसे विश्वास की शिक्षा नहीं दी गई थी, उन्हें कैसे समझ सकती थी? हालाँकि, अपने चारों ओर खड़े लोगों के सामने शर्म के मारे—कहीं वे उसकी समझ की कमी पर ध्यान न दें—उसने ऐसा दिखावा किया मानो उसने बाबिलि की कही हर बात को पूरी तरह समझ लिया हो, और उसकी प्रशंसा एक ऐसे व्यक्ति के रूप में की जो बहुत अच्छी तरह तर्क करता है। फिर उसने उससे फिर पूछा:

'और मनुष्य क्या है?'

बाबिलि ने उत्तर दिया, 'एक मनुष्य, एक सांसारिक और नश्वर प्राणी है, फिर भी सभी नश्वर जानवरों से श्रेष्ठ है; अपने पड़ोसियों के प्रति कोमल और दयालु है, हालांकि हिम एक-दूसरे के प्रति जानवरों से भी अधिक क्रूर हो गए हैं।'

वाबिलि की बातों से चकित, फिर भी उसी समय खुद को बुद्धिमान होने का नाटक करते हुए, नुमेरियन ने अपने देवताओं की कसम खाई कि वाबिलि सच बोल रहा था और अगर वह देवताओं को बलिदान दे दे तो वह अपनी बुद्धिमानी साबित कर देगा।

राजा ने कहा, 'बाबिलि में बस एक ही कमी है, और वह है कि वह हमारे देवताओं का सम्मान करे। यह असंभव है कि इतना बुद्धिमान व्यक्ति देवताओं का अपमान कर सकता है या उनके खिलाफ बोलने की हिम्मत कर सकता है।'

और बाबिलि की ओर स्नेहपूर्वक देखते हुए, उसने उससे कहा:

'हे परम बुद्धिमान बूढ़े! देवताओं को बलिदान चढ़ाओ, और मैं तुम्हें तुरंत अपना पिता मान लूँगा। मैं देवताओं की शपथ खाता हूँ कि मैं सत्य कह रहा हूँ, और मैं तुम्हें अपने राज्य में कई संपत्तियों से पुरस्कृत करूँगा।'

और हर तरह की चापलूसी, बड़े सम्मान और धन-संपत्ति के वादों से, अधर्मी राजा ने इस धर्मी पुरुष को लुभाने की कोशिश की। लेकिन मसीह का सच्चा स्वीकारकर्ता अपने विश्वास में अडिग रहा। अपने यातना देने वाले के चापलूसी भरे शब्दों का उसने जवाब दिया:

'सभी अच्छाइयों की शुरुआत और नींव धर्मपरायणता है: इसके बिना, आप जो भी आशीर्वाद मुझे देने का वादा करते हैं, वे केवल गरीबी, पूर्ण दुख, और मेरे पास जो कुछ भी है उसका भी नुकसान हैं।'

यह मानकर कि संत बाबिलस को बुराई करने के लिए राज़ी नहीं किया जा सकता, नुमेरियन फिर से क्रोधित हो गया और उसने अपने कमांडर, विक्टोरिनस को आदेश दिया कि वह संत के गले और पैरों में भारी बेड़ियाँ डाल दे और उन्हें पूरे शहर में घुमाकर सभी के सामने अपमानित करे। तानाशाह को यह उम्मीद थी कि यह सम्माननीय व्यक्ति, जिसे सभी की प्रसिद्धि और सम्मान प्राप्त था, इस अपमान से शर्मिंदा हो जाएगा और राजा की अधर्मी इच्छा को पूरा करने के लिए सहमत हो जाएगा। जब संत पर बेड़ियाँ डाली गईं, तो राजा ने उनका मज़ाक उड़ाना शुरू कर दिया:

उसने कहा, 'ईश्वर मेरी गवाही है, कि तुम, बाबिला, इन बेड़ियों में बिल्कुल अपने घर की तरह दिख रहे हो: ये तुम्हारी वृद्धावस्था के बिल्कुल उपयुक्त हैं।'

'हे राजा,' संत ने उत्तर दिया, 'तुम ये शब्द उपहास में कह रहे हो, लेकिन मैं तुम्हें सच बताऊँगा: ये बेड़ियाँ मेरे लिए उतनी ही सम्मानजनक हैं जितना तुम्हारा राजसी मुकुट तुम्हारे लिए है, और मसीह के लिए कष्ट सहना मेरे लिए उतना ही आनंददायक है जितना तुम्हारी राजसी शक्ति तुम्हारे लिए है; और अमर राजा के लिए मृत्यु उतनी ही वांछनीय है, जितना कि तुम्हारा जीवन तुम्हारे लिए है।

संत बाबिलि के तीन युवा शिष्य थे, जो जन्म से भाई थे। वे उम्र में छोटे लेकिन मन से परिपक्व थे, और बाबिलि, जिन्होंने उनका आध्यात्मिक रूप से पालन-पोषण किया था, उन्हें अपने ही बच्चों की तरह मानते थे। अपने गुरु का अनुसरण

करते हुए, उन्होंने उन्हें तब भी नहीं छोड़ा जब उन्हें बेड़ियों में जकड़ा गया था। उन पर एक नज़र डालते हुए, राजा ने संत से कहा:

'मुझे लगता है, वावलिा, कि ये बच्चे तुम्हें अपना गुरु कहकर केवल तुम्हारे अहंकार को बढ़ा रहे हैं, और इनकी वजह से तुम हमारी इच्छा के प्रति अपनी अवज्ञा में अडिग बने हुए हो।'

'यदि आप,' संत ने उत्तर दिया, 'इन बच्चों से पूछने की जहमत उठाएँ, तो आप देखेंगे कि वे आपसे भी अधिक बुद्धिमान हैं, और आपको एहसास होगा कि वे मेरी शिक्षा का फल हैं।'

'तो ये किसके बच्चे हैं?' राजा ने पूछा।

'ये मेरे आध्यात्मिक बच्चे हैं,' बाबिला ने उत्तर दिया, 'मैंने उन्हें सुसमाचार के माध्यम से पुनर्जीवित किया है, शिक्षा से पोषित किया है, और मार्गदर्शन से पाला है; और यहाँ, आपके सामने, उनके छोटे शरीरों में, महान पुरुष और पूर्ण ईसाई खड़े हैं। उन्हें परखिए और आप देखेंगे।'

राजा ने आदेश दिया कि वावलिा को चौक पर ले जाया जाए और कैद कर दिया जाए; उसने युवकों को अपने पास बुलाया और सबसे पहले उनसे पूछा कि क्या उनकी कोई माँ है।

बच्चों ने उत्तर दिया, 'बाबिलस हमारी माँ, हमारे पिता और हमारे शिक्षक हैं। हम उनसे अपनी माँ से भी अधिक प्रेम करते हैं: उन्होंने तो केवल हमें जन्म दिया, लेकिन वह हमें ज्ञान और धार्मिकता सिखाते हैं और हमारी आत्माओं की परवाह करते हुए, हमें उच्चतम सद्गुणों तक पहुँचाते हैं।'

लेकिन राजा ने आदेश दिया कि इन युवकों की माँ को तुरंत ढूंढकर उसके सामने लाया जाए। जब उसे उसके सामने लाया गया, तो राजा ने उससे पूछा कि उसका नाम क्या है और क्या वह वास्तव में इन बच्चों की माँ है।

उसने उत्तर दिया:

'मेरा नाम क्रिस्टोडुला है; ये बच्चे वास्तव में मेरे ही हैं। मैंने उन्हें अपने दुखों के प्रथम फल के रूप में, ईश्वर को एक उपहार के रूप में अर्पित किया है, और मुझे उम्मीद है कि परम बुद्धिमान बाबिला, जिनकी देखभाल में मैंने अपने बच्चों को सौंपा है, उन्हें स्वर्गीय कोष में ले जाएँगी।'

न्यूमेरियस क्रोध से आग-बबूला हो गया और उसने आज्ञा दी कि उस धर्मनिष्ठ माँ के गालों पर थप्पड़ मारा जाए, और उससे कहा:

– राजा से इतनी अभद्रता से बात मत करो।

बच्चों ने अपनी माँ को मारा जाता देख कहा:

'राजा का दिमाग खराब हो गया है: वह सच बोलने के लिए हमारी माँ को मार रहा है।'

इसके बाद, राजा ने बच्चों से उनके नाम और उम्र पूछना शुरू कर दिया।

उन्होंने कहा कि सबसे बड़ा बारह साल का था और उसका नाम उर्वन था, दूसरा – प्रलिडियिन – नौ साल का था, और तीसरा, जिसका नाम एप्पोलोनियिस था, सात साल का था।

यातना देने वाले ने उन्हें दयालु शब्दों और उपहारों से लुभाने की कोशिश की, और मूर्तियों की पूजा करने के लिए कहा। लेकिन उन्होंने एक स्वर में जवाब दिया:

'हम ईसाई हैं, और हमारे लिए मूर्तियों को प्रणाम करना उचित नहीं है। हमें एकमात्र ईश्वर को जानना सिखाया गया है, जिसने स्वर्ग और पृथ्वी की रचना की। हम उसी की पूजा करते हैं, राक्षसों की नहीं।'

बहुत मनाने के बाद, जब देखा कि बिच्चे अडिग हैं, तो यातना देने वाले ने उन्हें कोड़ों से पीटने का आदेश दिया, और प्रत्येक के घाव उनकी उम्र के बराबर थे। इस प्रकार, पहले लड़के को बारह गहरे घाव लगे, दूसरे को नौ, और तीसरे को सात। लड़कों ने साहस के साथ अपनी पीड़ा सहन की और उन्हें केवल इस बात का अफ़सोस था कि वे और बड़े नहीं थे, ताकि वे मसीह के लिए और अधिक घाव प्राप्त कर सकें।

उन्होंने कहा, 'भले ही आप हमें मार डालें, हम झूठे देवताओं की पूजा नहीं करेंगे: हम एकमात्र ईश्वर, प्रभु यीशु मसीह की सेवा करते हैं।'

उनकी माँ को रिहा करके और बच्चों को स्वयं एक दूसरे स्थान पर ले जाने के बाद, राजा ने बाबिलस को एक बार फिर अपने पास बुलाया।

'देखो,' उसने कहा, 'तुम्हारे बच्चों ने तो पहले ही हमारे देवताओं की पूजा कर ली है; यह उचित है कि तुम भी तुरंत उनकी पूजा करो।'

बाबलिस ने राजा को उत्तर दिया, 'तुमने भी झूठों के पिता, शैतान से झूठ बोलना सीखा है। मैं जानता हूँ कि बच्चों को मसीह से दूर करना, न तो प्रलोभन से और न ही यातना से, असंभव है: क्योंकि मैंने उन्हें एक सच्चे परमेश्वर का सम्मान करना और उसी पर विश्वास करना अच्छी तरह सिखाया है।'

तब राजा ने आदेश दिया कि बाबलिस और बच्चों को एक पेड़ पर लटका कर आग में जला दिया जाए।

बेबलिास ने स्वर्ग की ओर अपनी आँखें उठाकर ईश्वर से प्रार्थना की कि वे इन छोटे बच्चों को अपनी शक्ति दें और आने वाले कष्टों में उन्हें अडिग धैर्य प्रदान करें। और उन्होंने उन्हें अपने कष्टों को साहसपूर्वक सहने के लिए प्रोत्साहित किया, और मसीह से एक महान पुरस्कार का वादा किया। मासूम बच्चों ने अपने शिक्षक के साथ बहादुरी से अपनी पीड़ा को सहन किया, और ईश्वर की सहायता ने उनके धैर्य को और मजबूत किया।

शहीदों को पेड़ से उतारने और बाबलिस को यातना स्थल के पास एक घर में जंजीरों में बांधने का आदेश देने के बाद, यातनाकर्ता ने एक बार फिर बच्चों को चापलूसी से लुभाने का निश्चय किया। उसने उन्हें अपना ही बच्चा, सभ्य और सुंदर युवक कहा, और उन पर सोना और चांदी लुटाई। लेकिन उन्होंने एक स्वर में उससे कहा:

'हे चालाक चापलूस! हमारे सामने अपनी प्रलोभनों का यह जटिल जाल क्यों बिछा रहे हो? क्या तुम्हें सच में लगता है कि तुम हमें वैसे ही पकड़ सकते हो जैसे तुम पक्षियों को पकड़ते हो? निश्चिंत रहो कि तुम्हें कोई सफलता नहीं मिलेगी, भले ही तुम अपनी पूरी कोशिश कर डालो; क्योंकि हम मसीह की शक्ति द्वारा संरक्षित और सुरक्षित हैं - और उसी शक्ति से तुम्हारा जाल जल्द ही नष्ट हो जाएगा, और हम मुक्त हो जाएंगे।

तब युवकों ने पुकारा:

'हे हमारी माता, धर्मपरायणता, हम तुमसे विमुख नहीं होंगे! हे हमारे प्रिय शिक्षक, बाबिला, हम आपके उपदेश के प्रति विफादार रहेंगे! क्योंकि न केवल यह एक राजा, बल्कि यदि यहाँ बहुत से और सबसे क्रूर राजा और यातना देने वाले भी हों, तो वे भी हमें हमारे ईश्वर से दूर नहीं कर सकते।'

संत बेबीलस, जो पास ही कैद थे, अपने शिष्यों के ये वचन सुनकर अकथनीय आनंद से भर गए और ईश्वर का धन्यवाद किया, जो बच्चों के मुख से स्तुति ग्रहण करते हैं।

थोड़ी ही देर बाद, राजा ने बबीला को अपने सामने लाने का आदेश दिया और उससे कहा:

"क्या ये तुम्हारे ही बच्चे नहीं हैं, वाविला? मुझे लगता है कि ये तुम्हारी संतान हैं, क्योंकि अपनी दुष्टता में ये तुमसे बहुत मिलते-जुलते हैं।"

– 'सत्य कहता हूँ,' संत ने उत्तर दिया, 'ये युवक मेरे पुत्र हैं, परंतु शरीर से नहीं, बल्कि आत्मा से: क्योंकि आज तक मैं कामुक इच्छा के प्रलोभन में नहीं पड़ा, न ही मैंने वैवाहिक जीवन का अनुभव किया है।'

'हे अवज्ञाकारी वाविला!' राजा ने कहा, 'तू आज तक अपनी कठोरता पर क्यों अड़ा हुआ है, जो स्वयं को और हमें पीड़ा देता रहता है? तुरंत देवताओं को बलिदान अर्पित कर, ताकि हम और परेशान न हों, और ताकि तू और तेरे बच्चे अपने दुखों से मुक्त हो जाएँ और हमसे सम्मान और उपहार प्राप्त करें। स्वेच्छा से स्वयं को और इन छोटे बच्चों को पीड़ा और मृत्यु के हवाले करने से तुम्हें क्या लाभ? क्या एक बुद्धिमान शिक्षक के रूप में यह उचित नहीं है कि तुम बच्चों की उतनी ही देखभाल करो जितनी तुम अपने जीवन की करते हो, ताकि वे समय से पहले नष्ट न हो जाएँ, और समय से पहले मुरझाकर, अपनी जवानी के पूरे चरम पर न मर जाएँ?

लेकिन ईश्वर-ज्ञानी बाबिला ने उत्तर दिया:

'हे राजा, क्या यह उचित नहीं है कि आप अपने राज्य की देखभाल करें, अपने दुश्मनों के खिलाफ खुद को सशस्त्र करें और उनसे युद्ध करें, बजाय इसके कि आप हम निर्दोषों को पीड़ा दें? फिर भी आप, सभी सांसारिक चिंताओं को त्यागकर, अपनी दृष्टि हम पर केंद्रित कर ली है और देश को लूटने वाले दुश्मनों को भूलकर, हमसे युद्ध कर रहे हैं और हमारा उत्पीड़न कर रहे हैं। और आप यह सब अपने राज्य के भले के लिए नहीं, बल्कि केवल अपनी पशु-सदृश क्रोध और उग्र स्वभाव को शांत करने के लिए कर रहे हैं।

इन शब्दों से क्रोधित होकर, राजा ने बाबलिस और बच्चों दोनों को मृत्युदंड सुना दिया। सैनिकों ने संतों को सिर कलम करने की जगह ले जाया, जबकि बाबलिस ने उसी क्षण दाऊद के वचन गाए:

'हे मेरी आत्मा, अपने विश्राम में लौट आ, क्योंकि यहोवा ने तेरे साथ अनुग्रह किया है' (भजन संहिता 114:6)।

जिस स्थान पर संतों को मसीह के लिए अपनी जान देनी थी, वहां पहुंचकर, बाबिला ने युवकों को अपने सामने खड़ा किया और उन्हें पहले तलवार के पास ले गया। उसे डर था कि, अगर उनमें से कोई उसके बाद बचा रहता, तो वे मृत्यु से

डरकर प्रभु से मुंह मोड़ लेते। इसलिए, उन्होंने युवकों को स्वर्ग की ओर आगे भेजा और उन्हें सांत्वना दी, यह सिखाते हुए कि उन्हें तलवार से कटने का डर नहीं होना चाहिए, क्योंकि उन्हें मसीह से अनंत जीवन प्राप्त होगा। जब युवकों ने तलवार से मृत्यु को स्वीकार कर लिया, तो बेबीलस ने आनंदपूर्वक उद्घोष किया:

'देख, मैं और मेरी संतान, जिन्हें यहोवा ने मुझे दिया है' (यशायाह 8:18)।

इसके बाद, उन्होंने स्वयं अपनी गर्दन तलवार के हवाले कर दी। उसी क्षण, उन्होंने अपने शरीर को दफनाने वालों को यह वसीयत की कि वे उनके साथ ताबूत में उनकी बेड़ियाँ और हथकड़ियाँ रख दें:

उन्होंने कहा, 'वे मेरे शरीर की शोभा बनें।'

शिरच्छेदित होकर, संत बाबिला स्वर्गीय धामों के लिए प्रस्थान कर गए और अपने बच्चों के साथ स्वर्गीय पिता के समक्ष प्रकट हुए। उनके पवित्र शरीर को जंजीरों सहित दफनाया गया, ठीक वैसे ही जैसे उन्होंने मरते समय आज्ञा दी थी; तीन पवित्र शिशुओं को भी उनके साथ दफनाया गया।

[5996][5997]कई साल बाद, महान कॉन्स्टेंटिन के पुत्र राजा कॉन्स्टेंटियस द्वितीय ने जूलियन के भाई और अपने चाचा मैग्नस मैक्सिमिस के बेटे गैलियस को अपने राज्य का सह-शासक नियुक्त किया (क्योंकि उसके अपने कोई संतान नहीं थी)। एंटीओक पहुंचने पर, गैलस ने संत बैबिलस और उनके साथ पीड़ित तीन युवकों के अवशेषों को एंटीओक के एक उपनगर, डैफ्नी में स्थानांतरित कर दिया। कहा जाता है कि उस स्थान का नाम डाफ्ने नामक एक युवती के नाम पर पड़ा, जो ग्रीक मूर्तिपूजक मिथकों में वर्णित अनुसार अपोलो[5998] से बचने के लिए वहां छिपी रही थी। यह स्थान बहुत सुंदर है, जहाँ सरू के पेड़ लगे हैं और अन्य ऊँपेड़ों के झुरमुटों से घिरा हुआ है; यह एक विशाल क्षेत्र में फैला हुआ था, अपनी उर्वरता के लिए प्रसिद्ध था, और यहाँ से एक तेज बहाव वाली झरना निकलती थी। डैफ्नी के केंद्र में एक मूर्तिपूजक मंदिर था, जिसमें देवता अपोलो की कलात्मक रूप से तराशी गई एक मूर्ति थी। यह मूर्ति उन लोगों को उत्तर देती थी जो उससे प्रश्न करते थे, क्योंकि इसके भीतर एक राक्षस छिपा हुआ था[5999] । मूर्तिपूजक यहाँ इकट्ठा होते थे, मूर्ति को बलिदान चढ़ाते थे, और विभिन्न अधार्मिक खेलों और गैरकानूनी कृत्यों में संलग्न रहते थे। उपर्युक्त गैलियस, जो एक धर्मनिष्ठ ईसाई था और मूर्तिपूजकों को उनके अधर्म से दूर करने का प्रयास करता था, डैफ्नी में स्थित मूर्तिपूजक मंदिर को नष्ट करना चाहता था, लेकिन उसे डर था कि इससे यूनानियों के बीच विद्रोह भड़क सकता है, क्योंकि वहाँ अभी भी कई मूर्तिपूजक थे जो अपने दुष्ट देवताओं के लिए मरने को भी तैयार थे। इसलिए, गैलियस ने वहाँ एक छोटा चर्च बनवाया और, जैसा कि पहले ही उल्लेख किया जा चुका है, संत बाबिलस और तीन युवकों के अवशेषों को उसमें स्थानांतरित किया, और उन्हें एक बड़े पत्थर के अवशेष-पात्र में रखा। उसे उम्मीद थी कि उस स्थान पर इकट्ठा होने वाले अधर्मी, संतों के अवशेषों से निकलने वाले चमत्कारों को देखकर धीरे-धीरे मसीह की ओर मुड़ जाएँगे। गैलियस की हत्या और कॉन्स्टैंटियस की मृत्यु के बाद, जूलियन अपोस्टेट[6000] सिंहासन पर बैठा। फारिसियों के खिलाफ अपनी मुहिम के दौरान, वह एंटिओक गया और अपोलो के मंदिर में प्रवेश किया। मूर्ति के सामने बलिदान चढ़ाने के बाद, जूलियन ने उससे पूछा कि क्या वह फारिसियों को हरा देगा। लेकिन मूर्ति ने उसे कोई जवाब नहीं दिया, क्योंकि जब से संत बाबिलस के अवशेष डाफ्ने में स्थानांतरित कर दिए गए थे, दानव गायब हो गया था और मूर्ति पूरी तरह चुप हो गई थी, और किसी भी सवाल का जवाब नहीं दे रही थी। अपोलो के पुरोहितों से यह जानने के बाद, जूलियन ने 'गलीलियों'[6001] को वहां से संतों के अवशेषों वाली पत्थर की संदूक को हटाने का आदेश दिया। अंतियोकिया के ईसाई, जवान और बूढ़े, सभी एक साथ इकट्ठा हुए, और भजनों तथा स्तोत्रों के साथ, संत बेबिलास और तीन युवकों के अवशेषों को शहर में ले गए। सभी ओर से संदूक को घेरे हुए, ईसाइयों

[5996] रोमन सम्राट, 361 तक कॉन्स्टेंटाइन महान का दूसरा पुत्र।

[5997] जूलिया कॉन्स्टेंस, कॉन्स्टेंटाइन महान की बहन। इन सह-शासकों को सीज़र के नाम से जाना जाता था।

[5998] एपोलो – प्राचीन यूनानियों और रोमनों का एक देवता, जिन्हें प्रकाश, विशेष रूप से सूर्य के प्रकाश, साथ ही बौद्धिक प्रबोधन, कविता और संगीत के देवता के रूप में पूजा जाता था; भविष्यवाणी के देवता, रोगों के उपचारक और सभी नागरिक व्यवस्था के संरक्षक।

[5999] दूसरे शब्दों में, यह तथाकथित ओरेकल (भविष्यवाणी केंद्र) का स्थल था, एक ऐसी जगह जहाँ, प्राचीन यूनानियों और रोमनों की मान्यताओं के अनुसार, देवता पवित्र पेड़ों की पत्तियों के सरसराहट, पानी की कलकल आदि के माध्यम से लोगों को भविष्य बता देते थे। ये भविष्यवाणियाँ रहस्यमयी कथनों के रूप में होती थीं, और उनकी व्याख्या पुजारियों द्वारा की जाती थी, जो अपने स्वार्थ के लिए लोगों के बीच अंधविश्वास और भ्रांतियों को बढ़ावा देते थे।

[6000] जूलियन फ्लावियस, धर्मत्यागी के नाम से जाना जाने वाला रोमन सम्राट।

[6001] मसीह के अनुयायियों को गलीलियाई कहा जाता था; उन्हें 'गलील का यीशु' (मत्ती 26:69) कहा जाता था, क्योंकि उन्होंने अपना बचपन और यौवन गलील के एक छोटे से शहर नासरत में बिताया था।

ने गाया: *'जो मूरतियों की सेवा करते हैं और उन पर घमंड करते हैं, वे लज्जति हों'* (भजन संहति 96:7)। संतों के अवशेषों को डाफ्ने से शहर में लाए जाने के तुरंत बाद ही स्वर्ग से अपोलो के मंदरि पर आग बरस पड़ी, जसिने मूर्त सिहति उसे नष्ट कर दयि। इस प्रकार दुष्ट लज्जति हुए; परन्तु वशि्वासयिों ने आनंद मनाया और परमेश्वर की स्तुत कि। युगानुयुग प्रभु की महमि हो। आमीन।

संत मूसा दैवदृष्टधिारी का जीवन

4 सतिंबर को स्मरण कयि जाता है

यूसुफ की मृत्यु के बाद, उसके पति याकूब की संतानें मस्रि की भूम में कई सौ वर्षों के दौरान इतनी अधकि संख्या में बढ़ गईं[6002] क पूरी भूम इस्राएलयिों से भर गई, और युद्ध के समय वे अकेले ही छह लाख तक सैनकिों की सेना उतार सकते थे। तब मस्रि के फरौन को यह डर सताने लगा क कहीं इस्राएल के लोग मस्रि के शत्रुओं के साथ मलिकर, स्वतंत्रता की चाह में, उसके वरिुद्ध हथयिार न उठा लें। उसने इस्राएलयिों पर वशिेष नगिराना नयिुक्त कयि, जनिका काम उन्हें कठोर परशि्रम से थका देना था। उन्होंने इस्राएलयिों को वशिेष क्रूरता से पीड़ति कयि, उन्हें भूम जोतने, ईंटें बनाने और शहरों का नरि्माण करने के लिए मजबूर कयि, यह सब अहंकार की संतुष्ट के लिए और वशिेष रूप से यहूदी लोगों को जल्द से जल्द नष्ट करने के उद्देश्य से था। लेकनि जतिना अधकि वे इस्राएलयिों के प्रत द्वेष रखते थे और उन्हें थकाते थे, उतना ही अधकि इस्राएली बढ़ते गए: क्योंक वे उन लोगों की संख्या कम नहीं कर सकते थे जन्हिें स्वयं परमेश्वर ने बढ़ाने और गौरवान्वति करने के लिए चुना था। और यद्यप राजा ने दाइयों को गुप्त आज्ञा दी क वे यहूदी बालकों को जन्मते ही मार डालें, परन्तु उन्होंने परमेश्वर से डरकर ऐसा नहीं कयि। तब राजा ने मस्रि के सारे देश में एक क्रूर आदेश जारी कयि, जसिके अनुसार जो कोई भी यहूदी नवजात शशिु को देखे, उसे नदी में फेंक दे (नरि्गमन, अध्याय 1)।

उस समय वहाँ लेवी के कुल का एक मनुष्य अमरम नामक रहता था, जसिकी पत्नी भी उसी कुल की थी जसिका नाम योकेबेद था; उस समय तक उन्हें पहले ही एक पुत्र हारून और एक पुत्री मरयिम का आशीर्वाद मलि चुका था[6003] । उसी बड़े उत्पीड़न के समय, जब यहूदी नवजातों का कत्ल कयि जा रहा था, उन्हें एक दूसरा बेटा हुआ; बच्चा इतना सुंदर था क उसकी माँ, सभी यहूदी नवजातों को मारने के क्रूर कानून को जानकर, शशिु के लिए दुखी हुई और उसे घर पर छपिाने का संकल्प लयि, जो उसने तीन महीने तक कयि। लेकनि जब वह बच्चे को और छपिा नहीं सकी, तो उसने एक टोकरी ली, उसे गोंद से लेपति कयि, उसमें बच्चे को रखा और नदी के कनिारे कमल के तनों के बीच रख दयि। उसका भाई क्या होगा यह देखने के लिए उसकी बहन दूर खड़ी रही (नरि्गमन 2:2)। और फरौन की बेटी[6004] स्नान करने के लिए नदी[6005] पर उतरी, जबक उसकी दासयिाँ नदी के कनिारे टहल रही थीं। उसने कमल के पौधों के बीच टोकरी देखी और उसे लाने के लिए अपनी एक दासी को भेजा। टोकरी खोलकर जब उसने उसमें एक रोता हुआ शशिु देखा, तो उस पर दया आई और उसने कहा, 'यह तो हब्रिू बच्चों में से एक है।' राजकुमारी उस शशिु को गोद लेना चाहती थी और हब्रिू महलिाओं में से उसके लिए एक दुधमुंही दाई ढूंढना चाहती थी। जोसेफस के वृत्तांत के अनुसार[6006] , कई यहूदी दुधमुंही दाइयाँ उस अनाथ बच्चे के पास लाई गईं, लेकनि वह उनका दूध नहीं पीता था। तब मरियिम, मूसा की बहन, ने हम्मित करके फरौन की बेटी के पास जाकर उससे कहा:

'क्या मैं आपके लिए एक यहूदी दूध माँ को बुला लाऊँ, ताक वह इस शशिु को पाल सके?'

[6002] पैट्रआर्क जोसेफ की मृत्यु लगभग 1923 ईसा पूर्व में हुई मानी जाती है। मस्रि में इस्राएलयिों का प्रवास लगभग 398 वर्ष तक चला, जसिकी शुरुआत याकूब के अपने परविार के साथ वहाँ प्रवास करने से हुई थी।

[6003] अम्राम लेवी (कुलपति याकूब का पुत्र) के वंश से थे और वे कोहत के पुत्र थे, जो लेवी के पुत्र थे (नरि्गमन 6:20; गनिती 3:29, 26:58–59)। जोकेबेद लेवी की पुत्री थीं (नरि्गमन 6:20; गनिती 26:59)।

[6004] अर्थात् मस्रि के राजा की बेटी। मस्रि के राजा फराओ कहलाते थे।

[6005] यह, बेशक, नील नदी को संदर्भति करता है – जो पृथ्वी पर सबसे बड़ी नदी है। नील नदी को 6,000 वर्स्ट लंबी माना जाता है; यह इथयिोपयिा से शुरू होकर पूर्वोत्तर अफ्रीका से होकर बहती है, और भूमध्य सागर में मलि जाती है।

[6006] जोसेफस, यहूदी इतहिासकार (जन्म वर्ष 37 ईस्वी), *एंटीक्वटिीज़ ऑफ़ द ज्यूज़* के लेखक, जसिमें उन्होंने मूसा के बारे में कुछ कविदंतयिों का वर्णन कयि है जो बाइबलि की पवत्रि पुस्तकों में नहीं पाई जाती हैं।

फ़रौन की पुत्री ने उत्तर दिया, 'जाओ,' और उसने अपनी माँ को उसके पास ले आई। और फ़रौन की पुत्री ने उससे कहा:

'बच्चे को ले जाओ और उसका पालन-पोषण करो; मैं तुम्हें इसके लिए भुगतान करूँगी।'

योकेबेद ने बच्चे को ले लिया, और वह उससे चिपक गया, क्योंकि उसने उसे अपनी माँ के रूप में पहचान लिया। उसने उसे अपने घर में पाला; और जब बच्चा बड़ा हो गया, तो वह उसे फरौन की बेटी के पास ले आई, जिसने उसे गोद ले लिया और उसका नाम मूसा रखा, *क्योंकि* उसने कहा, *'मैंने उसे पानी से निकाला है'* (यह नाम मिस्र की भाषा में 'पानी' के अर्थ में आता है) (निर्गमन 2:7-10)।

[6007]कुछ प्राचीन कथाएँ[6008] बताती हैं कि एक अवसर पर फरौन की पुत्री मूसा को अपने पिता के पास ले आई, और उसके साथ खेलते समय उसने अपने सिर पर एक राजसी मुकुट रखा, जिस पर एक छोटा मूर्ति था; मूसा ने मुकुट को उसके सिर से फाड़ दिया, उसे जमीन पर फेंक दिया और पैरों तले कुचल दिया। एक मूर्तिपूजक पुरोहित, जिसे मगियों से यह भविष्यवाणी मिली थी कि जब इस्राएलियों में एक नेता का जन्म होगा तो मिस्र कई विपत्तियों का सामना करेगा, ने फरौन को उस शिशु को मार डालने की सलाह दी ताकि जब वह बड़ा हो तो वह उनके देश पर कोई आपदा न लाए। लेकिन, ईश्वर की इच्छा और व्यवस्था से, अन्य लोग इसके विरोध में खड़े हो गए, उन्होंने कहा कि शिशु ने ऐसा जानबूझकर नहीं, बल्कि अज्ञानता के कारण किया था। उसके शिशुवत् अज्ञानता की परीक्षा के लिए, उन्होंने गर्म कोयले लाए, और उसने उन्हें लेकर अपने मुँह में डाल लिया, जिससे उसकी जीभ जल गई और परिणामस्वरूप, वह जीभ का भारी हो गया।

जब मूसा वयस्क हुए, तो राजा की बेटी ने उन्हें मिस्र के सबसे प्रतिष्ठित ऋषियों में से एक को सौंपा ताकि वह उन्हें मिस्र की सारी बुद्धिमत्ता सिखाए, और वह वाणी और कर्म दोनों में उत्कृष्ट हुए, थोड़े ही समय में अपने शिक्षकों से आगे निकल गए और राजा तथा अपने सभी करीबी दरबारियों के प्रिय बन गए (प्रेरितों के काम 7:21-22). लेकिन जब उसे अपनी उत्पत्ति के बारे में पता चला—कि वह एक इस्राएली था—और उसने स्वर्ग में एकमात्र परमेश्वर, जो संसार का सृष्टिकर्ता है, जिसे उसकी प्रजा पूजती थी, को जान लिया, तो वह मिस्र की मूर्तिपूजक दुष्टता से घृणा करने लगा (इब्रानियों 11:24–26)।

[6009]कुछ इतिहासकार लिखते हैं कि जब इथियोपियाई लोगों ने मिस्र पर युद्ध छेड़ा, तो मूसा, जो तब तक परिपक्व हो चुके थे, को मिस्रवासियों ने एक सैन्य कमांडर के रूप में चुना और अपनी वीरता के कारण उन्होंने दुश्मन को हरा दिया। हालाँकि, आभार व्यक्त करने के बजाय, फरौन उसे और भी अधिक नफरत करने लगा, क्योंकि कुछ मिस्र के पुरोहितों ने अपने भविष्य-दर्शन में भविष्यवाणी की थी कि मूसा भविष्य में मिस्र पर विपत्तियाँ लाएगा, और फरौन को उसे मार डालने की सलाह दी थी। उनकी सलाह से प्रभावित होकर, मिस्र के फ़राओ ने वास्तव में मूसा को मारने का निश्चय किया, लेकिन वह तुरंत आगे नहीं बढ़ा, क्योंकि वह अपनी बेटी को नाराज़ नहीं करना चाहता था, और यह उम्मीद कर रहा था कि या तो उसे मूसा में कोई दोष मिल जाएगा या वह किसी अधिक अनुकूल क्षण की प्रतीक्षा करेगा।

ऐसा हुआ कि मूसा अपने देशवासियों, इस्राएल के बेटों, के पास गए और उनकी कठोर मेहनत को देखते हुए, उन्होंने एक मिस्रवासी को एक हिब्रू पर प्रहार करते हुए देखा। यह देखकर कि आसपास कोई और नहीं था, उन्होंने उस मिस्रवासी को मार डाला और उसके शव को रेत में छिपा दिया। अगले दिन वह फिर बाहर गया और दो यहूदियों को झगड़ते हुए देखकर, जिसने झगड़ा शुरू किया था, उससे कहा:

'तुम अपने पड़ोसी को क्यों मार रहे हो?'

और दूसरे ने उत्तर दिया:

'तुम्हें हमारा नेता और न्यायी किसने बनाया? क्या तुम मुझे भी मार डालने का इरादा रखते हो, जैसे तुमने कल मिस्री को मारा था?'

[6007] प्राचीन काल में, 'मागी' शब्द का अर्थ उन बुद्धिमान पुरुषों से था जिनके पास गहरा और व्यापक ज्ञान होता था, विशेष रूप से प्रकृति की छिपी हुई शक्तियों, खगोलीय पिंडों, पवित्र ग्रंथों और इसी तरह की चीजों के बारे में। वे प्राकृतिक घटनाओं का अवलोकन करते थे, सपनों की व्याख्या करते थे और भविष्य की भविष्यवाणी करते थे; अधिकांशत; वे पुरोहित भी होते थे और शाही दरबारों तथा लोगों के बीच उन्हें बहुत सम्मान प्राप्त था। विशेष रूप से मिस्र के मागी ऐसे ही थे।

[6008] यह विवरण जॉर्ज केड्रिन द्वारा दर्ज किया गया है, जो 11वीं शताब्दी के अंत या 12वीं शताब्दी की शुरुआत के एक बाइज़ेंटाइन लेखक थे और तथाकथित 'हिस्टोरिकिल सिंओप्सिस' के लेखक थे, जो दुनिया की रचना से लेकर 1059 ईस्वी तक के वृत्तांतों का एक संग्रह है।

[6009] जोसेफस, *एंटीक्विटीज़ ऑफ़ द ज्यूज़*, पुस्तक 2, अध्याय 10।

जब मूसा ने यह सुना, तो वह डर गया और अपने मन में कहा:

'निश्चित रूप से हर किसी ने इस घटना के बारे में सुना है।'

जब फरिऔन को इस बात का पता चला, तो वह मूसा को मारना चाहता था; परन्तु मूसा फरिऔन से भागकर मद्यिान देश में बस गया (नर्गिमन 2:11–15)।

लंबी यात्रा से थके हुए, मूसा एक कुएँ के पास बैठ गए। और देखो, मद्यिान के याजक[6010] के सात बेटियाँ कुएँ पर आईं, अपने पिता के झुंड की देखभाल करने। वे भेड़ों को पानी पिलाने के लिए पात्रों को पानी से भरने लगीं। लेकिन दूसरे झुंड के चरवाहें आकर उन्हें भगा दिया। तब मूसा उठ खड़ा हुआ और उन कन्याओं की रक्षा की, उनके लिए पानी खींचा और उनकी भेड़ों को पानी पिलाया।

जब वे युवतियाँ घर लौटीं, तो उन्होंने अपने पिता को बताया कि एक मिस्री ने चरवाहों से उनकी रक्षा की और उनके लिए पानी भी खींचा तथा उनकी भेड़ों को पानी पिलाया। जेथ्रो तुरंत मूसा को अपने घर आमंत्रित करने के लिए दौड़े, उन्होंने उनका अपने घर में स्वागत किया, और फिर अपनी बेटी सिपोरा का विवाह उनसे कर दिया, जिससे मूसा के दो पुत्र हुए। उसने पहले का नाम गेरशोम रखा, 'क्योंकि,' उसने कहा, 'मैं एक परदेस में परदेशी हो गया हूँ', और दूसरे का नाम एलीएज़र रखा, यह कहते हुए, 'मेरे पिता का परमेश्वर मेरा सहायक रहा है और मुझे फरिऔन के हाथ से छुड़ाया है' (नर्गिमन 2:16-22)।

बहुत दिन के बाद मिस्र का राजा मर गया। और इस्राएल के पुत्र अपने काम के बोझ के नीचे कराहने लगे, और उनके भारी जुए के कारण उनकी पुकार परमेश्वर के पास पहुँची। और परमेश्वर ने उनकी कराह सुनी, और परमेश्वर ने अब्राहाम, इसहाक और याकूब के साथ अपनी वाचा को स्मरण किया। और परमेश्वर ने मनुष्यों के बेटों पर दृष्टि की, और उन्हें छुड़ाने के लिए प्रेरित हुआ (नर्गिमन 2:23-25)।

मोशे अपने ससुर जित्रो के भेड़ों की रखवाली कर रहे थे। एक दिन वह भेड़ों के झुंड को दूर जंगल में ले गया और परमेश्वर के पर्वत होरेब पर पहुँचा[6011] । और देखो, यहोवा का दूत झाड़ी के बीच से आग की ज्वाला में उसके पास प्रकट हुआ[6012] , और मोशे ने देखा कि झाड़ी आग में जल रही थी पर वह नष्ट नहीं हुई।

मूसा ने कहा:

'मैं जाकर इस अद्भुत दृश्य को देखूँगा; यह झाड़ी क्यों नहीं जल रही?'

तब प्रभु ने झाड़ी के भीतर से उसे पुकारा:

'मोशे, मोशे!'

उसने उत्तर दिया:

'मैं यहाँ हूँ, प्रभु!'

और परमेश्वर ने उससे कहा:

'और पास मत आओ; अपने पैरों से जूते उतार दो, क्योंकि जिस जगह पर तू खड़ा है, वह पवित्र भूमि है।'

और उसने जोड़ा:

'मैं तुम्हारे पूर्वजों का परमेश्वर, इब्राहीम का परमेश्वर, इसहाक का परमेश्वर और याकूब का परमेश्वर हूँ।'

मोशे ने अपना चेहरा ढक लिया, क्योंकि वह परमेश्वर को देखने से डरता था।

'मैंने,' प्रभु ने मूसा से कहा, 'मिस्र में अपने लोगों की पीड़ा देखी है, उनके कामवालों के अधीन उनकी पुकार सुनी है, और उनकी व्यथा जानता हूँ। और मैं मिस्रियों के हाथ से उन्हें छुड़ाने, उस देश से उन्हें ऊपर उठाने और उन्हें दूध और शहद की धारा से बहते हुए देश में लाने के लिए आया हूँ, कनानी, हित्ती, एमोरी, हिवी, परिज्जी, यबूसी और यबूसी लोगों का

[6010] मद्यिानी, या मद्यिानी लोग, अब्राहम और केतुरा के चौथे पुत्र मद्यिान के वंशज थे; वे विभिन्न अरब जनजातियों से मिलकर बने एक विशाल जनसमूह थे जो खानाबदोश जीवन जीते थे। मदियन की भूमि, जहाँ उनकी मुख्य बस्ती थी, अरब में लाल सागर पर एलानटि की खाड़ी के पूर्वी तट पर एक मरुस्थलीय क्षेत्र था। अब्राहम के पुत्र मदियन के वंशज होने के नाते, जोफर और उसका परिवार सच्चे ईश्वर के उपासक थे।

[6011] होरेब अरब रेगिस्तान में एक पहाड़ है, जो उसी पर्वत श्रृंखला की पश्चिमी चोटी है, जिसका पूर्वी भाग माउंट सिनाई है।

[6012] स्लावकि में: कुपिना – अरब प्रायद्वीप की एक कांटेदार अकेशिया, जो विशेष रूप से होरेब और सिनाई के पहाड़ों के पास प्रचुर मात्रा में उगती है, जो कि तेज कांटों वाला एक छोटा झाड़ी है। मोशे को जो जलता हुआ परन्तु न भस्म होनेवाला झाड़ दिखाई दिया, वह पवित्र चर्च की शिक्षाओं के अनुसार, परमेश्वर की माता – कन्या मरियाम का प्रतीक था, जो मसीह के अवतार और उनके गर्भ से परमेश्वर के पुत्र के जन्म के बाद भी अक्षुण्ण रहीं।

देश, दूध और शहद की धारा से बहता हुआ देश[6013] । और अब, इस्राएलियों की पुकार मेरे पास आई है, और मैं ने वह अत्याचार देखा है जिससे मिस्रियों ने उन पर अत्याचार किया है। इसलिए, जाओ: मैं तुम्हें फिरौन के पास भेजूँगा, और तुम मेरे लोगों, इस्राएलियों को मिस्र से बाहर निकालोगे।

मूसा ने परमेश्वर से कहा:

'मैं कौन हूँ जो फिरौन के पास जाऊँ और इस्राएलियों को मिस्र से बाहर निकालूँ?'

'मैं तेरे संग रहूँगा,' परमेश्वर ने उत्तर दिया, 'और यह एक चिन्ह है कि मैं तुझे भेजता हूँ: जब तू मेरी प्रजा को मिस्र से निकाल ले आएगा, तब तुम इस पहाड़ पर परमेश्वर की उपासना करोगे।'

मोशे ने परमेश्वर से कहा:

'मैं इस्राएलियों के पास जाऊँगा और उनसे कहूँगा: "तुम्हारे पूर्वजों का परमेश्वर, मुझे तुम्हारे पास भेजने वाला है।" परन्तु वे मुझसे पूछेंगे, "उसका नाम क्या है?" मैं उनसे क्या कहूँ?'

[6014]ईश्वर ने मूसा से उत्तर दिया, 'मैं 'मैं हूँ' हूँ, इसलिए इस्राएलियों से कहना: 'प्रभु, तुम्हारे पूर्वजों का ईश्वर, इब्राहीम का ईश्वर, इसहाक का ईश्वर और याकूब का ईश्वर[6015] ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है।' यही मेरा नाम सदा के लिए है, और इसी प्रकार पीढ़ी-दर-पीढ़ी मुझे याद किया जाएगा।' जाओ, इस्राएल के बुजुर्गों को इकट्ठा करो, और उनसे कहो: 'परमप्रभु, तुम्हारे पूर्वजों का परमेश्वर, मुझ पर प्रकट हुआ है और कहा है: "मैंने तुम पर दृष्टि डाली है... और मैं तुम्हें मिस्र के बोझ से बाहर निकाल लूंगा।"' और वे तुम्हारी सुनेंगे, और तुम मिस्र के राजा के पास जाकर उससे कहोगे: 'यहोवा, हिब्रूओं के परमेश्वर, ने हमें बुलाया है।' 'इसलिए, हम तीन दिन का सफर तय करके जंगल में हमारे परमेश्वर यहोवा के लिए बलिदान चढ़ाने चलें।' 'लेकिन मैं जानता हूँ कि मिस्र का फिरौन तुम्हें जाने नहीं देगा। तब मैं मिस्र पर चमत्कार करूँगा, और फिरौन तुम्हें जाने देने के लिए मजबूर हो जाएगा।'

मूसा ने उत्तर दिया, 'लेकिन क्या होगा यदि वे मुझ पर विश्वास न करें, और मेरी बात न मानें, बल्कि कहें, "यहोवा तुझ पर प्रकट नहीं हुआ है"?'

प्रभु ने कहा, 'तेरे हाथ में क्या है?'

उसने उत्तर दिया, 'एक लाठी।'

प्रभु ने कहा, 'इसे ज़मीन पर फेंक दे।'

मूसा ने उसे फेंक दिया, और वह लाठी एक साँप में बदल गई। मूसा उससे डरकर पीछे हट गया, परन्तु परमेश्वर ने उससे कहा कि वह साँप की पूँछ पकड़े, और साँप उसके हाथों में फिर से लाठी बन गया।

[6013] कुछ संदर्भों में, 'कनान की भूमि' से तात्पर्य भूमध्य सागर के पूर्वी तट के साथ पश्चिमी एशिया में स्थित विशाल क्षेत्रों से है - विशेष रूप से, जॉर्डन के इस पार की भूमि, फिनिसिया और फिलिस्तीनियों की भूमि, जबकि ट्रांसजॉर्डन क्षेत्र को कनान की भूमि से अलग माना जाता है। आधुनिक समय में, 'कनान की भूमि' से आमतौर पर पूरा प्रतिज्ञात देश – यॉर्डन के दोनों किनारों पर इस्राएलियों द्वारा बसाई गई सभी भूमि – का तात्पर्य है। कनान की भूमि अपनी असाधारण उपजाऊ क्षमता और पशुपालन के लिए उपयुक्त चरागाहों की प्रचुरता के लिए विशिष्ट थी, और इस अर्थ में धर्मग्रंथों में इसे दूध और शहद से ओत-प्रोत भूमि कहा गया है। कनानी कनान की भूमि के मूल निवासी थे, जो हाम के पुत्र कनान के वंशज थे, और वे ग्यारह गोत्रों में विभाजित थे, जिनमें से पाँच—हिवाई, यबूसी, अमोरी, गिर्गाशी और हित्ती—उस भूमि में रहते थे जिसे बाद में इस्राएलियों ने अपने कब्जे में ले लिया, या, सख्ती से कहें तो, प्रतिज्ञात भूमि में। हिवी, एक विशाल कनानी जनजाति, कनान देश के केंद्र में और आंशिक रूप से दक्षिण में निवास करती थी; अमोरी – मूसा के समय की सबसे मजबूत कनानी जनजाति – यॉर्डन के इस पार, कनान की भूमि में बड़े पैमाने पर फैले हुए थे; वे उस भूमि के केंद्र और अमोरी पहाड़ी क्षेत्र में बसे थे, और उत्तर तथा दक्षिण में बहुत दूर तक फैले हुए थे; हित्ती लोग अमोरी लोगों के पास पहाड़ी देश में रहते थे और वे भी एक शक्तिशाली और बड़ी जनजाति थे; मूसा के समय में, यबूसी लोग प्रतिज्ञात भूमि के दक्षिणी भाग में बसे हुए थे; गिरगाशी लोग यॉर्डन के पश्चिम में रहते थे। पेरीज़ी लोग फ़िलिस्तीन के प्राचीन, स्वदेशी निवासियों में से थे, और वे कनानी जनजाति से नहीं थे; वे मुख्य रूप से फ़िलिस्तीन के केंद्र में, या कनान की भूमि में रहते थे।

[6014] स्व-अस्तित्वमान, या हिब्रू में यहोवा, ईश्वर के नामों में से एक है, जो दिव्य सत्ता की विशिष्टता, अनंतता और अपरिवर्तनीयता को व्यक्त करता है।

[6015] पृथ्वी पर विश्वास बनाए रखने के लिए अब्राहम को चुनने और उसके साथ अपना वाचा करने के बाद, ईश्वर ने बाद में इसहाक और याकूब को भी अपने वचन दोहराए। इसलिए, इन पुरखों का अक्सर पवित्र शास्त्र में एक साथ उल्लेख किया जाता है, न केवल यहूदी लोगों के पूर्वजों के रूप में, बल्कि दैवीय वादों और प्रतिज्ञाओं के उत्तराधिकारी और संरक्षक, विश्वास और धर्मपरायणता के महान योद्धा, और परमेश्वर के सामने मध्यस्थ और वकील के रूप में भी, जिन्होंने अपने विश्वास और सद्गुणों के माध्यम से परमेश्वर से विशेष अनुग्रह प्राप्त किया है। इसी कारण से, उनके नाम पवित्र धर्मग्रंथ में और ईश्वर के लोगों को हुए दर्शनों और प्रकटनों के संबंध में बार-बार उल्लेखित और दोहराए गए हैं, जिसके द्वारा ईश्वर को इस अर्थ में अब्राहम, इसहाक और याकूब के ईश्वर के रूप में संदर्भित किया जाता है।

प्रभु ने कहा:

'यह तेरे लयि एक चन्हि है, जसि से वे वशि्वास करें कि तेरा पिता-पुरखाओं का परमेश्वर यहोवा तुझ पर प्रगट हुआ है। पर यदि वे इस बात पर भी वशि्वास न करें, तो यह करना: अपना हाथ अपनी ओढ़नी में डाल।'

मूसा ने अपना हाथ अपनी चादर में डाला, फरि उसे बाहर नकिाला, और देखा कि वह कोढ़ से सफेद हो गया था[6016], बर्फ की तरह। यहोवा ने उससे कहा कि वह अपना हाथ फरि से अपनी चादर में डाले, और वह फरि से स्वस्थ हो गया।

'यदि वे इस चमत्कार पर भी वशि्वास नहीं करते,' प्रभु ने कहा, 'तो नदी से पानी लेकर सूखी भूमि पिर डाल दो, और भूमि पिर जो पानी डाला जाएगा वह रक्त में बदल जाएगा।'

मोशे ने फरि से ईश्वर से वनिती की कि उसे न भेजें, क्योंकि वह वाक्पटु नहीं था और उसे बोलने में कठनिाई होती थी।

प्रभु ने कहा:

'मनुष्य को मुँह कसिने दयिा? मूक या बधरि, देखनेवाला या अंधा कसिने बनाया? क्या यह मैं, यहोवा परमेश्वर नहीं हूँ? तो जा, और मैं तेरे संग रहूँगा और तुझे यह सखिाऊँगा कि तुझे क्या कहना है।'

मूसा ने मना करना जारी रखा और कहा कि उनकी जगह कोई और अधकि सक्षम भेजा जाए। तब प्रभु मूसा पर क्रोधति हुए और कहा:

[6017]क्या तुम्हारे पास तुम्हारा भाई हारून नहीं है? मुझे पता है कि वह तुम्हारी ओर से बोल सकता है। और वह तुम्हें मलिने के लिए बाहर आएगा, और तुम्हें देखकर उसे खुशी होगी। तू उससे बात कर और मेरे वचन उसके मुँह में डाल; और मैं तेरे मुँह और उसके मुँह के संग रहूँगा, और मैं तुझे सखिाऊँगा कि तुझे क्या करना है। और वह तेरी ओर से लोगों से बात करेगा और तेरा मुँह होगा, और तू उसके लिए परमेश्वर के समान होगा। यह छड़ी (जो सर्प में बदल गई थी) अपने हाथ में ले; इसके द्वारा तू चन्हि दखिावेगा।

इसके बाद मूसा यत्रिो के पास लौट आए और उनसे कहा, 'मैं मस्रि में अपने भाइयों के पास जा रहा हूँ, यह देखने के लिए कि वे अभी भी जीवति हैं या नहीं।'

'शांति से जाओ,' जत्रिो ने उत्तर दयिा।

और मूसा बनि कसिी डर के मस्रि चला गया, क्योंकि वह राजा जसिने उसे मारने की कोशशि की थी, और जो कोई भी उसकी तबाही चाहता था, वे पहले ही मर चुके थे। प्रभु की आज्ञा से, हारून मूसा से मलिने के लिए बाहर आया और उसे खुशी से चूमा। मूसा ने हारून को प्रभु के सभी वचन बता दिए। मस्रि पहुँचने पर, उन्होंने इस्राएल के सभी बुज़ुर्गों को इकट्ठा कयिा और उन्हें वे सब वचन बताए जो यहोवा ने मूसा से कहे थे, और मूसा ने उनके सामने ही चन्हि और अद्भुत काम कए। इस्राएलयिों ने उन पर वशि्वास कयिा और इस बात पर आनंदति हुए कि परमेश्वर ने इस्राएल के बेटों पर ध्यान दयिा था और उनके दुख को देखा था।

इसके बाद मूसा और हारून फरिौन के पास गए और उससे कहा:

'इस्राएल के परमेश्वर यहोवा का यह वचन है: मेरे लोगों को जाने दे, ताकि वे जंगल में मेरा पर्व मना सकें।'

परन्तु फरिौन ने उत्तर दयिा:

'यह इस्राएल का परमेश्वर कौन है, कि मैं उसकी आज्ञा मानूँ? मैं यहोवा को नहीं जानता, और मैं इस्राएलयिों को जाने न दूँगा। और हे मूसा और हारून, तुम लोगों को उनके काम से क्यों वचिलति कर रहे हो? अपने-अपने काम पर लौट जाओ।'

और उसी समय उसने हब्रिूओं के नगिरानों को आज्ञा दी कि वे उन पर कठोर परशि्रम का बोझ और भी भारी कर दें और ईंटें बनाने के लिए उन्हें पुआल न दें; और तब से उन्हें स्वयं ही पुआल इकट्ठा करना पड़ा, फरि भी ईंटों की रोज़ की संख्या कम नहीं की गई।

राजा ने कहा, 'हब्रिू आलसी हैं; इसीलिए वे चल्रिा रहे हैं: "हम जाकर अपने परमेश्वर को बलदिान चढ़ाएँगे।"'

[6016] कुष्ठ सभी संक्रामक रोगों में सबसे भयानक और घृणति है; यह मुख्य रूप से गर्म जलवायु वाले देशों में, वशिेष रूप से मस्रि, फलिस्तीन, सीरयिा, अरब, भारत और, सामान्य रूप से, पूरे पूर्व में प्रचलति है। जैसे-जैसे यह रोग बढ़ता है, त्वचा सफेद हो जाती है, फरि सूज जाती है, सूख जाती है, और बदबूदार छाले और घावों से ढक जाती है; बाद में, अंग गरि जाते हैं, और अधकिांशत; इस रोग से ग्रस्त लोग अंततःभयानक पीड़ा में मर जाते हैं।

[6017] मूसा के सामने परमेश्वर के प्रकट होने और उनकी बुलाही के वृत्तांत के लिए, नर्गिमन 3:1–4:17 देखें।

इसके बाद यहूदियों पर और भी अधिक अत्याचार किया गया। अपनी सामग्री खुद इकट्ठा करनी पड़ने के कारण, वे उनसे अपेक्षित ईंटों का दैनिक कोटा पूरा नहीं कर सके; इसके लिए यहूदी निरीक्षकों को पीटा गया, और उनसे कोई स्पष्टीकरण स्वीकार नहीं किया गया, और उन्होंने मूसा और हारून के विरुद्ध पुकार लगाई, यह कहते हुए: 'प्रभु तुम्हारा न्याय करें क्योंकि तुमने हमें फिरौन और उसके सेवकों की दृष्टि में घृणित बना दिया है, और हमारे मार डालने के लिए उनके हाथों में हथियार दे दिया है।'

मूसा ने प्रभु की ओर मुड़कर कहा:

'हे प्रभु! तूने इस लोगों पर यह विपत्ति क्यों लाई? तूने मुझे क्यों भेजा? क्योंकि जब से मैं फिरौन के पास आया और तेरे नाम से बोलना शुरू किया, तब से उसने इन लोगों के साथ और भी कठोरता से व्यवहार किया है।'

प्रभु ने मूसा से उत्तर दिया:

'अब तुम देखोगे कि मैं फिरौन के साथ क्या करने जा रहा हूँ: एक शक्तिशाली हाथ से वह इस्राएलियों को जाने देगा, वास्तव में वह उन्हें अपनी भूमि से बाहर निकाल देगा। उन्हें कह दो: 'मैं, यहोवा, तुम्हें मिस्रियों के बोझ से बाहर निकालूँगा, और मैं तुम्हें बचाऊँगा; मैं तुम्हें अपना लोग बनाऊँगा और तुम्हारा परमेश्वर बनूँगा, और मैं तुम्हें उस देश में ले आऊँगा जिसे मैं ने अब्राहाम, इसहाक और याकूब को देने की शपथ खाई थी, और मैं उसे तुम्हें विरासत में दूँगा।'

मोशे ने ये बातें इस्राएलियों से दोहराईं, परन्तु उन्होंने, अपनी निर्भयता की कमी और अपने कठोर परिश्रम के कारण, मोशे पर विश्वास नहीं किया। तब यहोवा ने मोशे को आज्ञा दी कि वह फिरौन के पास जाए और उससे कहे कि वह इस्राएलियों को अपनी भूमि से जाने दे। मोशे ने उत्तर दिया कि यदि इस्राएलियों ने भी उसकी नहीं सुनी, तो फिर फ़िरौन कैसे सुनेगा, जबकि उसकी अपनी ही बात अस्पष्ट थी।

इस पर प्रभु ने उत्तर दिया:

'मैंने तुम्हें फिरौन के लिए एक ईश्वर के समान बना दिया है, और तुम्हारा भाई हारून तुम्हारा भविष्यवक्ता होगा। तुम उसे वह सब कुछ बताना जो मैं तुम्हें आज्ञा दूँ, और तुम्हारा भाई फिरौन से बात करेगा, और उसे कहेंगे कि वह इस्राएलियों को जाने दे। परन्तु मैं फिरौन को उसकी हठीलता पूरी तरह दिखाने दूँगा, और वह तुम्हारी नहीं सुनेगा। इसी कारण मैं मिस्र पर अपना हाथ फैलाऊँगा और चमत्कारिक विपत्तियों के द्वारा उस पर एक भयानक न्याय लाऊँगा; तब सब मिस्री जान लेंगे कि मैं परमेश्वर हूँ! और मैं उन्हें उनके बीच से बाहर निकालूँगा। और यदि फिरौन तुमसे कोई चिह्न मांगे, तो हारून से कहो कि वह अपनी लाठी फेंक दे – और वह एक साँप बन जाएगी।

ईश्वर द्वारा स्वयं प्रोत्साहित होकर, मूसा और हारून फिर से फिरौन और उसके अधिकारियों के सामने आए और उन्होंने वैसा ही किया जैसा प्रभु ने उन्हें आज्ञा दी थी। हारून ने फिरौन के सामने अपना डंडा फेंका, और वह डंडा एक साँप बन गया। फिरौन ने मिस्र के बुद्धिमानों और जादूगरों को बुलाया, और उन्होंने भी अपनी जादू-टोने से वही करतब दिखाया; परन्तु हारून की लाठी ने उनक उनकी लाठियों को निगल लिया। फिरौन का हृदय कठोर हो गया, और उसने उनकी नहीं सुनी, जैसा कि यहोवा ने पूर्व में बताया था, और वह इब्रानियों को जाने देने को तैयार नहीं था। तब, परमेश्वर की आज्ञा से, मूसा और हारून ने मिस्र के देश पर विपत्तियाँ लाना शुरू किया[6018] ।

अगले दिन, मूसा की आज्ञा से, हारून ने अपनी लाठी ली और फिरौन तथा उसके सेवकों के सामने नदी के पानी पर मारी, और नदी का सारा पानी खून में बदल गया; नदी की मछलियाँ मर गईं, और नदी से बदबू आने लगी, और मिस्रियों ने नदी का पानी नहीं पी सका। दूसरी विपत्ति मेंढक थे[6019] : हारून ने अपना हाथ मिस्र के जल पर फैलाया, और उनसे मेंढक निकले, जो घरों, शयनकक्षों, बिस्तरों, भट्टियों और आटे गूंथने के कूड़ों में भर गए, और राजा, उसके सेवकों और उसके लोगों पर गिर पड़े, और किसी को कहीं भी चैन नहीं मिलने दिया। और मिस्र का सारा देश मेंढकों से भर गया; और जब मूसा की आज्ञा से वे मर गए, तो मिस्रियों ने उन्हें ढेरों में इकट्ठा किया, और सारा देश मरे और सड़े हुए मेंढकों की बदबू से भर गया। तीसरी विपत्ति लोगों और पशुओं पर, फिरौन और उसके घर-परिवार और उसके सेवकों पर मक्खियों की थी,

---

[6018] मिस्र की विपत्तियों के लिए, निर्गमन 7–12 देखें।

[6019] बड़े, बिना पूंछ वाले मेंढकों की एक जाति। मेंढक स्वयं में हानिरहित और खतरनाक नहीं होते हैं, लेकिन वे बहुत घृणित और घिनौने होते हैं; वे अक्सर मिस्र की भूमि पर अनगिनत संख्या में छा जाते थे और दलदलों, नील नदी की नहरों, खेतों और आँगनों को भर देते थे, तथा घरों, बेडरूम, बिस्तरों, भट्टियों और मटकों में रेंगकर घुस जाते थे, और इस प्रकार वे वहाँ के निवासियों के लिए एक वास्तविक अभिशाप बन गए।

और मिस्र देश की मिट्टी पूरी तरह से मक्खियों से भर गई थी[6020] । चौथी विपत्ति घोड़ों की मक्खियाँ थीं[6021] । पाँचवीं विपत्ति मिस्र देश भर में पशुओं पर एक बहुत ही भयंकर फोड़ा थी। छठी मारी मनुष्यों और पशुओं दोनों पर फोड़े थे। सातवीं मारी आग मिली ओले की थी[6022] , और उस ओले ने खुले आकाश के नीचे की हर चीज़ को नष्ट कर दिया: घास, पेड़, पशु और लोग। आठवीं महामारी टिड्डियाँ और कीड़े-मकोड़े[6023] थे, जिन्होंने मिस्र की सभी वनस्पतियों को चट कर दिया। नौवाँ प्रकोप मिस्र की सारी भूमि में तीन दिन का अंधकार था, इतना घना कि आग की रोशनी में भी कोई रोशनी नहीं थी, ताकि कोई तीन दिनों तक एक-दूसरे को न देख सके, और उस समय कोई भी अपने बिस्तर से न उठा। दसवाँ और अंतिम प्रकोप मिस्र के पहलौठों की मृत्यु थी।

और ये सभी विपत्तियाँ—जिनमें से किसी ने भी इस्राएलियों को थोड़ा भी नुकसान नहीं पहुँचाया, बल्कि केवल मिस्रियों को ही पहुँचाया—परमेश्वर द्वारा मूसा और हारून के माध्यम से लाई गईं क्योंकि फिरौन ने परमेश्वर के लोगों को परमेश्वर की उपासना करने के लिए जंगल में जाने नहीं दिया; क्योंकि, यद्यपि उसने महामारियों के डर से कई बार उन्हें जाने देने का वादा किया था, लेकिन जब भी महामारी थम जाती थी, वह फिर से अपना हृदय कठोर कर लेता था और इस प्रकार उसने उन्हें दसवीं महामारी तक जाने नहीं दिया। दसवें प्रकोप से पहले, मूसा की आज्ञा के अनुसार, इस्राएलियों ने मिस्रियों से चाँदी और सोने के बर्तन और बढ़िया वस्त्र मांगे, जितना वे अपने साथ ले जा सकते थे।

तब मूसा ने प्रभु की आज्ञा के अनुसार, मिस्र से उनके निकलने की स्मृति में इस्राएलियों के लिए पासका पर्व स्थापित किया। प्रभु ने मूसा और हारून से कहा:

'यह महीना[6024] , तुम्हारे लिए वर्ष का पहला महीना होगा। इस्राएलियों की सारी मंडली से कहो कि इस महीने के नौवें दिन, हर घर अपने झुंड में से एक मेमना अलग रखे। मेमना निर्दोष, नर और एक वर्ष का हो। उसे इस महीने के चौदहवें दिन तक तुम्हारे पास रखा जाए। फिर, संध्या के समय, प्रत्येक घर मेमने की बलि चढ़ाए। फिर वे उसके कुछ रक्त लेकर उस घर के द्वार के दोनों खंभों और ऊपर की लकड़ी पर लगाएं, जहाँ वे मेमना खाने के लिए इकट्ठा होते हैं। वे उसका मांस पानी में उबाला हुआ नहीं, बल्कि आग पर भुना हुआ, बिना खमीर की रोटी और कड़वी जड़ी-बूटियों के साथ खाएँ। सुबह तक उसका कुछ भी बचा न छोड़ें, और उसकी हड्डियाँ न तोड़ें; जो कुछ भी बच जाए, उसे आग में जला दें। इसे जल्दी से खाओ, , कमर में कमरबंद बाँधे, पैरों में जूते पहने और हाथों में लाठी लिए हुए। यह यहोवा का पासका है[6025] । मैं आज रात मिस्र के देश में होकर जाऊँगा और मिस्रियों के सब पहलौठों को, मनुष्य से लेकर पशु तक, मार डालूँगा; और जब मैं तुम्हारे घरों पर लहू देखूँगा, तब मैं तुम्हें छोड़ दूँगा और विनाशक तुम्हारे घरों में तुम्हें मारने के लिए प्रवेश नहीं करेगा। और यह दिन

[6020] यहाँ 'मक्खियों' से अधिकांश टीकाकारों का तात्पर्य मच्छरों से है, जिनके झुंड पूर्व में और सामान्यतः गर्म देशों में, विशेषकर नदियों के पास, अनगिनत होते हैं, और वे अक्सर भूमि पर एक विपत्ति बन जाते हैं। अन्य व्याख्याओं के अनुसार, ये मनुष्यों और पशुधन को प्रभावित करने वाले विभिन्न प्रकार के परजीवी हैं।

[6021] 'डॉग फ्लाईज़' काटने वाले मक्खी या कीटों का एक वंश है, जो विशेष रूप से कुत्तों के लिए हानिकारक माना जाता है। हालाँकि, यहाँ इस अभिव्यक्ति के स्थान पर उपयोग किया गया हिब्रू शब्द वास्तव में 'मिश्रण' या 'भीड़' का अर्थ रखता है, और इसलिए इसे यहाँ सामान्य रूप से हानिकारक कीटों की भीड़ के रूप में समझा जाना चाहिए।

[6022] कुछ लोग सातवीं महामारी की व्याख्या खम्सीन के रूप में करते हैं, जो कि एक झुलसा देने वाली दक्षिणी हवा है जो मरुभूमि से मिस्र में रेत के पूरे ढेर लाती है, और अक्सर विनाशकारी तूफानों और साथ ही भारी ओलों के साथ आती है। खम्सीन मिस्र के निवासियों के लिए भयानक आपदाओं के साथ आती है।

[6023] झींगुर कूदने वाले, शाकाहारी कीड़ों के क्रम से संबंधित एक कीट है। यह अपनी अत्यधिक भूख के लिए जाना जाता है और इसलिए इसे पूर्व में ईश्वर की सबसे भयानक विपत्तियों में से एक माना जाता है। यह हमेशा पूर्वी हवा पर झुंड के रूप में आता है, अपने रास्ते में आने वाली सभी वनस्पतियों को खा जाता है, और जब तक वही हवा इसे समुद्र में नहीं ले जाती, तब तक कोई भी इसका सामना नहीं कर सकता, जहाँ यह नष्ट हो जाता है। शास्त्रों में अक्सर टिड्डी को ईश्वर के क्रोध का एक विशेष साधन बताया गया है। – एक इल्ली (कैटरपिलर) पंख उगने से पहले, टिड्डी का लार्वा (भ्रूण) चरण होता है।

[6024] हिब्रू में, यह आवि या निसान का महीना है, जो हमारे मार्च के दूसरे भाग और अप्रैल के पहले भाग के अनुरूप है।

[6025] पेसाच – हिब्रू से अनुवादित – का अर्थ है 'पार करना', किसी चीज़ का पार हो जाना, मुक्ति, और इस प्रकार पार होने, मुक्ति का बलिदान। पेसाच पुराने नियम के यहूदी त्योहारों में सबसे बड़ा है, जिसे मिस्र की दासता से यहूदियों की चमत्कारिक मुक्ति की याद में स्थापित किया गया था। पुरानी वाचा का पासओवर दिव्य मेमने – मसीह – के दुख और मृत्यु के माध्यम से मानव जाति के पापों से छुटकारे का पूर्वसंकेत था, और यह यहूदियों के लिए विश्वास का एक बड़ा रहस्य था (इब्रानियों 11:28)।

स्मरण किया जाएगा, और तुम इसे अपनी पीढ़ियों तक यहोवा के लिए एक पर्व के रूप में मनाओगे, यह एक अनिवार्य विधान होगा[6026] ।

परमेश्वर की आज्ञा के अनुसार, इस्राएल के हर घर में एक मेमना अलग रखा गया और नियत समय के लिए तैयार किया गया। इस्राएल के सभी पुत्रों के द्वार के चौखटों पर खून का लेप लगाया गया और उन्हें सील कर दिया गया; सुबह तक कोई भी उनसे बाहर नहीं निकला। आधी रात को, मृत्यु का दूत मिस्र से होकर गुज़रा और मिस्र के सभी पहलौठों को मार डाला, फरौन के पहलौठे से लेकर कुंड में बंद कैदी के पहलौठे तक, और पशुओं के सभी पहलौठों को भी। लेकिन हिब्रू लोगों में से, सभी बच गए।

उस रात फरौन अपने सब सेवकों और सब मिस्रियों के साथ उठ खड़ा हुआ, और मिस्र के देश में एक बड़ा शोर मच गया, क्योंकि ऐसा कोई घर न था जहाँ कोई मरा हुआ न हो। फरौन ने तुरन्त मूसा और हारून को बुलाया और कहा:

'उठो, मेरे लोगों को छोड़ दो, तुम और इस्राएल के सब पुत्र, और जाओ और यहोवा अपने परमेश्वर की सेवा करो, जैसा तुमने कहा था; अपनी भेड़ें और बैल ले लो। जाओ, और मुझे आशीष दो।'

मिस्रियों ने इस्राएलियों से अपनी भूमि जल्दी छोड़ने के लिए आग्रह करना शुरू कर दिया, क्योंकि उन्होंने कहा, 'अन्यथा हम सब उनके कारण मर जाएँगे।'

और इस्राएलियों ने अपना आटा खमीर होने से पहले ही उठा लिया; उनके घड़े, जो उनके कपड़ों में लिपटे हुए थे, उनके कंधों पर थे, क्योंकि मिस्रियों द्वारा दबाए जाने के कारण, उनके पास यात्रा के लिए आटा तैयार करने का समय नहीं था। वे चाँदी, सोना और कीमती सामान लेकर चले; बहुत सारे विदेशी, छोटे और बड़े पशु भी उनके साथ चले। घर के सदस्यों और अन्य विदेशियों को छोड़कर, पैदल चलने वाले सभी पुरुषों की संख्या 600,000 थी। मूसा अपने साथ यूसुफ की अस्थियाँ ले गए, जो मिस्र में मर गए थे और अपनी मृत्यु से पहले, एक भविष्यद्रष्टा आत्मा के द्वारा भविष्य की भविष्यवाणी करके, इस्राएल के पुत्रों से यह शपथ खिलवाई थी, कहते हुए: *'परमेश्वर तुम्हारा अवश्य ध्यान रखेगा, और तुम मुझे यहाँ से अपने साथ ले जाओगे'* (उत्पत्ति 50:24–25)।

प्रभु परमेश्वर इस्राएलियों के सामने-सामने चलता था: दिन में बादल के स्तंभ में और रात में आग के स्तंभ में, ताकि वह दिन-रात उनका मार्गदर्शन करे। न तो दिन का बादल का स्तंभ और न ही रात का आग का स्तंभ कभी भी पूरे लोगों की दृष्टि से ओझल नहीं हुआ (निर्गमन 13:16–32)।

जब मिस्र के राजा को यह खबर मिली कि इस्राएल के लोग भाग गए हैं, तो उसका और उसके कर्मचारियों का मन उन लोगों के विरुद्ध हो गया, और उन्होंने कहा, 'हमने यह क्या किया? हमने इस्राएलियों को क्यों जाने दिया, ताकि वे अब हमारे लिए काम न करें?' फरौन ने अपना रथ तैयार किया और अपने लोगों को अपने साथ ले लिया—छह सौ चुने हुए रथ और मिस्र के सब अन्य रथ, जिनके प्रधान उनके साथ थे। वे इस्राएलियों के पीछे लग गए और जब वे समुद्र के किनारे डेरा डाले हुए थे तो उनसे मिल गए[6027] , परन्तु वे उन पर चढ़ाई नहीं कर सके: परमेश्वर का दूत, जो इस्राएलियों के डेरे के आगे-आगे चल रहा था, उनके पीछे चला गया, और मिस्रियों के डेरे और इस्राएलियों के डेरे के बीच आ गया, और एक के लिए बादल और अँधेरा बन गया, जबकि दूसरे के लिए रात को प्रकाशित कर रहा था; और वे एक-दूसरे के पास नहीं आए। मूसा ने समुद्र पर अपना हाथ फैलाया, और यहोवा ने रात भर चली एक प्रबल पूर्वी हवा से समुद्र को पीछे हटा दिया, जिससे समुद्र सूखी भूमि बन गया और जल अलग हो गया। इस्राएली सूखी भूमि पर समुद्र के बीच से चले, जबकि जल उनके दाहिने और बाएँ ओर दीवार की तरह खड़ा रहा। मिस्रियों ने उनका पीछा किया, और फरौन के सभी घोड़े, उसकी रथ सेना और उसके घोड़सवार समुद्र के बीच में चले गए। जब इस्राएलियों को समुद्र से पार ले जाया गया, तब प्रभु की आज्ञा से मूसा ने समुद्र पर अपना हाथ फैलाया, और सुबह तक पानी अपनी जगह पर लौट आया, जबकि मिस्री पानी की ओर भाग गए। और यहोवा ने मिस्रियों को समुद्र के बीच में डुबो दिया: लौटते हुए पानी ने फरौन की पूरी सेना के रथों और घोड़सवारों को ढक लिया, जो उनके पीछे समुद्र में गए थे, ताकि उनमें से एक भी न बचे। और उसी दिन यहोवा ने इस्राएलियों को मिस्रियों के हाथ से छुड़ाया; उन्होंने मिस्रियों को समुद्र के किनारे मरा हुआ देखा, और उनके शव सूखी भूमि पर पड़े थे,

---

[6026] पसका की स्थापना के लिए, निर्गमन 12:1–51, 13:1–16 देखें।

[6027] उस समय, इस्राएली पी-हाहिरोफ में, बालग-जेफोन के सामने डेरा डाले हुए थे (निर्गमन 14:9)। बालग-जेफोन लाल सागर पर, इसके उत्तरी तट के पश्चिमी हिस्से पर एक मिस्र का शहर था। पी-हाहीरोथ लाल सागर की उत्तरी (यरूशलेम) खाड़ी के अंत में, बालग-ज़ेफ़ोन के पूर्व में एक स्थान है, जिसे अगिरुड या अगुरुड के नाम से जाना जाता है; आज यह एक किला है जिसमें एक झरना है जिसका पानी इतना कड़वा है कि ऊँट भी, जो बिल्कुल भी नखरे नहीं करते, मुश्किल से ही इसे पी सकते हैं।

कि उन में से एक भी न बचा। तब इस्राएलियों ने वह महान सामर्थ्य देखा जो यहोवा ने मिस्रियों के विरुद्ध दिखाई थी, और लोगों ने यहोवा से डरकर उसी और उसके दास मूसा पर विश्वास किया (निर्गमन, अध्याय 14)। मूसा और इस्राएलियों ने आनंदित होकर और उत्सव मनाते हुए प्रभु का एक धन्यवाद गीत गाया:

– *'मैं यहोवा का गीत गाऊँगा, क्योंकि उसने महिमा से विजय प्राप्त की है; उसने घोड़े और उसके सवार को समुद्र में फेंक दिया है...'*[6028] (निर्गमन 15:1–18)।

और मूसा और हारून की बहन मरियम ने इस्राएल की स्त्रियों को इकट्ठा किया और उन्हें एक नृत्य में अगुवाई की, अपने हाथ में तम्बूरा लेकर[6029] ; उन्होंने सभी ने अपने-अपने तम्बूरे बजाए और, उसकी अगुवाई में, वही गीत गाया।

इसके बाद, मूसा ने इस्राएलियों को लाल सागर से निकाला[6030] , और वे शूर के जंगल में पहुँचे[6031] ; और वे जंगल में तीन दिन तक चले और उन्हें पानी नहीं मिला। जब वे माराह पर पहुँचे और वहाँ एक झरना पाया, तो वे उसका पानी नहीं पी सके, क्योंकि वह कड़वा था। और लोगों ने मूसा के विरुद्ध यह कहकर शिकायत की: 'हम क्या पिएँ?' मूसा ने प्रभु से पुकारा, और प्रभु ने उसे एक वृक्ष दिखाया; उसने उसे पानी में डाल दिया, और पानी मीठा हो गया[6032] । और मूसा ने चालीस वर्षों तक विभिन्न रेगिस्तानों में इस्राएलियों का नेतृत्व किया, उनके लिए आवश्यक सभी चीज़ें परमेश्वर से माँगते हुए। जब वे अपने भोजन के कारण मूसा और हारून के विरुद्ध बड़बड़ाए, और मिस्र में खाए हुए मांस को याद किया, तो मूसा ने परमेश्वर से विनती की, और यहोवा ने उन पर मन्ना बरसाया और उनके मन के अनुसार बटेर भेजे[6033] । इज़राइलियों ने अरब के रेगिस्तान में चालीस वर्षों तक यह मानना खाया, जब तक कि वे प्रतिज्ञात देश कनान की सीमाओं में प्रवेश नहीं कर गए। जब वे अपनी प्यास के कारण बड़बड़ाए, तो मूसा ने उनके लिए चट्टान से पानी निकाला: उन्होंने अपनी लाठी से चट्टान पर प्रहार किया, और पानी का एक झरना फूट पड़ा[6034] । जब अमालेकियों ने इस्राएलियों पर हमला किया, तो मूसा ने प्रार्थना में अपने हाथ उठाए, और इस्राएली अपने शत्रुओं पर हावी होने और उन्हें परास्त करने लगे, जिनकी सेनाओं को उन्होंने तलवार से पूरी तरह नष्ट कर दिया[6035] . और चाहे उन्होंने जंगल में परमेश्वर का क्रोध कितनी ही बार भड़काया हो, हर बार मूसा ने प्रभु के सामने उनके लिए मध्यस्थता की, जो उन्हें नष्ट कर देते यदि मूसा, उनके चुने हुए, उनके क्रोध को शांत करने के लिए उनके सामने न खड़े होते, कहीं कि वे उन्हें नष्ट न कर दें!

[6028] निर्गमन 15:1–18। इस संपूर्ण धन्यवाद और स्तुति के गीत के शब्द श्रद्धापूर्ण आनंद से परिपूर्ण हैं और पवित्र भव्यता की छाप लिए हुए हैं। प्रभु के प्रति इस्राएलियों का यह गंभीर गीत हमारे ऑर्थोडॉक्स चर्च में उन नौ पवित्र गीतों में प्रथम स्थान रखता है, जो प्रसिद्ध भजन संहिताओं की आधारशिला हैं, और जिन्हें चर्च द्वारा ईश्वर और उनके संतों की महिमा के लिए प्रतिदिन गाया जाता है।

[6029] टिम्पन सबसे प्राचीन वाद्ययंत्रों में से एक है, जिसका उपयोग आज भी पूरे पूर्व में और कुछ हद तक पश्चिम में भी व्यापक रूप से किया जाता है। यह हथेली की चौड़ाई की एक लकड़ी या धातु की डिस्क है, जो चमड़े से ढकी होती है, जिसके किनारों के चारों ओर आमतौर पर विभिन्न धातु की डिस्क, छल्ले या तबोरा लटकाए जाते हैं। और अब, प्राचीन काल की तरह, यह वाद्ययंत्र मुख्य रूप से महिलाओं द्वारा बजाया जाता है, जो गाते और नाचते हुए, इसे अपने बाएं हाथ में पकड़कर हिलाती हैं, जबकि संगीत की लय के साथ अपने दाहिने हाथ से इस पर थपथपाती हैं।

[6030] लाल सागर, या तथाकथित 'लाल' सागर, हिंद महासागर का एक लंबा, संकरा जलडमरूमध्य है जो अरब प्रायद्वीप को मिस्र से और एशिया को अफ्रीका से अलग करता है। लाल सागर तट से सबसे कम दूरी पर भी बहुत गहरा है।

[6031] सूर फिलिस्तीन और मिस्र के बीच का रेगिस्तान है, जो लाल सागर की खाड़ी से भूमध्य सागर तक, फिलिस्तीन की दक्षिण-पश्चिमी सीमा तक फैला हुआ है। इसे अब एल-जफिर रेगिस्तान के नाम से जाना जाता है।

[6032] निर्गमन 15:22–25। मारा (जिसका अर्थ है 'कड़वाहट') – लाल सागर के पूर्वी तट पर, सुर के रेगिस्तान में एक स्थान। अब ऐसा माना जाता है कि यह इलाका आयुन मूसा से सिनाई जाने वाले मार्ग पर, गौरा या गवावेर के खनिज झरने पर स्थित है, जहाँ का पानी इतना अप्रिय, कड़वा और खारा है कि खानाबदोश अरब इसे सभी झरनों में सबसे बुरा मानते हैं।

[6033] निर्गमन 16:1–36। यह अरब में, सिनाई के पास, सिन के रेगिस्तान में हुआ था। – मन्ना – हिब्रू से अनुवादित, का अर्थ है: 'यह क्या है?', क्योंकि जब इस्राएलियों ने पहली बार इसे आकाश से बारीक और बर्फ़ जैसी किसी चीज़ के रूप में गिरते देखा, तो उन्होंने हैरानी से एक-दूसरे से पूछा: 'यह क्या है?' यहाँ उल्लेखित मानना प्राकृतिक मानना की किसी भी ज्ञात किस्म के रूप में नहीं समझा जा सकता, जो किसी विशेष अनाज के पौधे के छोटे दानों से उत्पन्न होता है। यह एक विशेष, चमत्कारिक भोजन था जिसे परमेश्वर ने स्वर्ग से इस्राएलियों के लिए भेजा था। मोशे ने मन्ना के स्वाद का वर्णन ऐसा किया कि वह शहद या तेल में मिले आटे जैसा था; यह विभिन्न व्यंजन बनाने के लिए भी उपयुक्त था।

[6034] निर्गमन 17:1–7। यह घटना अरब मरुभूमि में, माउंट होरेब के पास, रेफिदीम में हुई थी। चट्टान से पानी के चमत्कारिक रूप से निकलने के बाद, मूसा ने इस स्थान का नाम मसा और मरिबाह (अर्थात् 'परीक्षा और झगड़ा') रखा, क्योंकि इस्राएलियों ने झगड़ा किया था, और क्योंकि उन्होंने यह कहकर प्रभु की परीक्षा की, 'क्या यहोवा हमारे बीच है या नहीं?'

[6035] निर्गमन 17:8–16। अमालेकी एक खानाबदोश लोग थे जो सिनाई प्रायद्वीप के उत्तर में, एदोम और मिस्र के बीच, अरब के चट्टानी क्षेत्र में, फिलिस्तीन के दक्षिण में, सीन और पारान के रेगिस्तानों में रहते थे।

इस बीच, मूसा के ससुर जत्रि ू ने, मस्रि से उनके नकिलने के समय परमेश्वर ने मूसा और इस्राएल के लोगों के लिए जो कुछ कयिा था, वह सुनकर, अपनी पत्नी सप्पिोरा और अपने दो बेटों को लेकर, होरेब पर्वत की ओर चल पड़े, जहाँ इस्राएलयिों ने अपना डेरा डाला था। मूसा उससे मलिने बाहर गया और उन्होंने एक-दूसरे को नमस्कार करने के बाद, मूसा ने उसे वह सब कुछ बताया जो प्रभु ने इस्राएल की खातरि फरिौन और सभी मस्रियिों से कयिा था, और अपनी यात्रा में आई सभी कठनिाइयों के बारे में भी बताया। योफोर यह सुनकर कि परमेश्वर ने इस्राएल पर कतिनी कृपा की है, बहुत प्रसन्न हुआ; उसने उस परमेश्वर की महमिा की, जसिने अपने लोगों को मस्रियिों के वश से छुड़ाया था; उसने सबके सामने यह स्वीकार कयिा कि यहोवा महान है, सब देवताओं से महान, और उसने उसकी बलि चढ़ाई।

अगले दनि, मूसा लोगों का न्याय करने के लिए बैठ गए; लोग सुबह से शाम तक उनके सामने खड़े रहे।

यह देखकर योफोर ने मूसा से कहा कि वह व्यर्थ ही स्वयं को और लोगों को थका रहे हैं, क्योंकि यह कार्य अकेले उनके लिए बहुत भारी था।

'मेरी बात सुनो,' एहय्यिाह ने कहा, 'परमेश्वर के सामने लोगों के लिए एक मध्यस्थ बनो और उनके मामले उसकी उपस्थति में पेश करो; इस्राएल के पुत्रों को परमेश्वर की व्यवस्था और उसके नयिम सखिाओ, उन्हें उसका मार्ग दखिाओ, जसिका उन्हें पालन करना है, और वे काम जो उन्हें करने हैं; और अपने लिए सक्षम पुरुषों को चुनें, ऐसे पुरुष जो परमेश्वर का भय मानते हों, सत्यनष्ठि हों और लालच से घृणा करते हों, और उन्हें लोगों पर हजारों, सौ, पचासों और दस के अधपति तथा लेखपाल नयिुक्त करें; वे हर समय लोगों का न्याय करें और हर महत्वपूर्ण मामले को आपके ध्यान में लाएँ, जबकि वे स्वयं सभी छोटे मामलों का न्याय करें: इससे आपका काम आसान हो जाएगा, और वे आपके साथ बोझ साझा करेंगे।

मोशे ने अपने ससुर की सलाह मानी, जसिके बाद जेथ्रो ने उनसे वदिा लेकर अपनी भूमि पर लौट गए (नर्गिमन 18)।

मस्रि से इस्राएलयिों के नकिलने के बाद तीसरे महीने की अमावस्या के दनि ही, वे सनिाई के रेगस्तिान में आ पहुँचे और पहाड़ के सामने डेरा डाला। मूसा सनिाई पहाड़ पर चढ़ गए[6036] , और यहोवा ने पहाड़ से उन्हें पुकारा, और उन्हें आज्ञा दी कि वे उनके नाम पर इस्राएलयिों से यह घोषणा करें: 'तुमने देखा कि मैंने मस्रियिों के साथ क्या कयिा, और कैसे मैं तुम्हें चीलों के पंखों पर उठाकर अपने पास ले आया। यदि तुम मेरी आज्ञा का पालन करोगे और मेरी वाचा को नभिाओगे, तो तुम सब लोगों में से मेरे चुने हुए लोग होगे, और तुम मेरे लिए एक पवत्रि राज्य और एक पवत्रि जन होगे।'

लोगों ने परमेश्वर की हर आज्ञा का पालन करने के लिए अपनी सहमति दे दी। तब यहोवा ने मूसा से कहा कि वह लोगों को पवत्रि करे और दो दनि के शुद्धकिरण द्वारा उन्हें तीसरे दनि के लिए तैयार करे। तीसरे दनि, सुबह से ही, गरज की आवाज़ सुनाई दी, बजिली चमकी, और घना अंधकार पर्वत को घेर लयिा; एक तुरही की ध्वनि गूंजी, जो लगातार तेज होती गई। सारा जनसमूह कांप उठा। और मूसा उन्हें प्रभु से मलिने के लिए छावनी से बाहर ले गया; वे सब पहाड़ की तलहटी में रुक गए। पहाड़ को हर ओर से एक सीमा ने घेरा हुआ था, जसिे मृत्युदंड के भय से पार करने की कसिी को भी अनुमति नहीं थी। लोगों ने देखा कि सनिाई पर्वत अपनी नींव तक काँप रहा था, और उससे भट्टी की तरह धुआँ उठ रहा था; क्योंकि यहोवा घने बादल और आग में उस पर उतर आए थे। हालाँकि, मूसा और हारून लोगों की दृष्टि के सामने ही पर्वत पर खड़े रहे, जैसा यहोवा ने आज्ञा दी थी (नर्गिमन 19:3–25)।

तब सब लोगों ने यहोवा की यह वाणी सुनी:

'मैं यहोवा तुम्हारा परमेश्वर हूँ जसिने तुम्हें मस्रि देश से, दासत्व के घर से नकिाला; मेरे सवि और कोई देवता न मानना। अपने लयि कोई मूर्ति या ऊपर आकाश में, या नीचे पृथ्वी पर, या पृथ्वी के नीचे जल में कसिी भी वस्तु का सादृश्य न बनाना; उनके सामने दण्डवत न करना और न उनकी उपासना करना; क्योंकि मैं, यहोवा तुम्हारा परमेश्वर, एक ईर्ष्यालु परमेश्वर हूँ जो मुझ से बैर रखने वालों में माता-पति के अधर्म का बदला उनके बच्चों से तीसरे और चौथे घराने तक लेता हूँ और मुझ से प्रेम करने और मेरी आज्ञाओं को मानने वालों पर हजारों घराने तक प्रेम करता हूँ। तुम यहोवा अपने परमेश्वर का नाम व्यर्थ में नहीं लेना, क्योंकि यहोवा उस मनुष्य को नर्दिोष नहीं ठहराएगा जो उसका नाम व्यर्थ में लेता है। सब्त के दनि को स्मरण करना, उसे पवत्रि रखना; छह दनि परश्रिम करके अपने सब काम करना, परन्तु

[6036] सनिाई पर्वत वास्तव में ग्रेनाइट चट्टानों से बने पहाड़ों का एक समूह है, जो ऊँची और खुरदरी घाटयिों से घरि हुआ है; अरब अब इसे माउंट तुर या जेबेल तुर-सनिा कहते हैं; यह लाल सागर की प्रसदि्ध भुजाओं के लगभग केंद्र में स्थति है, जो मलिकर सनिाई प्रायद्वीप का नर्मिाण करती हैं। इसमें तीन पर्वत श्रृंखलाएँ शामलि हैं। स्वयं माउंट सनिाई—जहाँ इस्राएलयिों ने ईश्वर के साथ एक वाचा की और उनसे कानून की आज्ञाएँ प्राप्त कीं—केंद्रीय श्रृंखला की सबसे ऊँची दक्षणि-पूर्वी चोटी है, जबकि सबसे नचिली, उत्तर-पश्चमिी चोटी माउंट होरेब है।

सातवां दिन यहोवा अपने परमेश्वर के लिए सब्त का दिन है: जिस दिन न तो तू, और न तेरा पुत्र, और न तेरी बेटी, और न तेरा दास, और न तेरी दासी, और न तेरा बैल, और न तेरा गधा, और न तेरे किसी पशु, और न तेरे द्वार के भीतर रहने वाला कोई परदेशी कोई काम करे; क्योंकि खुदावंद ने छह दिन में आकाश और पृथ्वी, समुद्र और उन सब में जो कुछ भी है, बनाया, और सातवें दिन विश्राम किया; इसलिये खुदावंद ने सब्त के दिन को आशीष दी और उसे पवित्र किया। अपने पिता और अपनी माता का आदर कर, [ताकि तेरा भला हो और] जिस देश को खुदावंद तेरा परमेश्वर तुझे देता है, उसमें तेरी आयु लंबी हो। तुम हत्या न करना। तुम व्यभिचार न करना। तुम चोरी न करना। तुम अपने पड़ोसी के विरुद्ध झूठी गवाही न देना। तुम अपने पड़ोसी का घर लालच न करना; तुम अपने पड़ोसी की पत्नी को, [न उसके खेत को,] न उसके दास को, न उसकी दासी को, न उसकी साँड़ को, न उसकी बैल की सन्तान को, [न उसकी किसी भी पशुधन को,] न अपने पड़ोसी की किसी भी वस्तु को लालच करना (निर्गमन 20:2–17; व्यवस्थाविवरण 5:5)।

इसके बाद, इस्राएल के बुजुर्ग मूसा के पास आए और उन्होंने कहा:

'देखो, परमेश्वर ने हमें अपनी महिमा दिखाई है; हमने आग के बीच से उसकी वाणी सुनी है... हमें लगता है कि किसी भी नश्वर प्राणी के लिए हमारे जैसे सर्व-सदैव जीवित परमेश्वर को सुनना और जीवित रहना असंभव है। यह बेहतर है कि आप आगे जाएँ और वह सब सुनें जो हमारा परमेश्वर आपसे कहेगा, और फिर हमें बताएं: हम सुनेंगे और आज्ञा मानेंगे।'

मूसा ने कहा, 'डरो नहीं, परमेश्वर तुम्हारी परीक्षा कर रहा है, ताकि वह तुम में अपना भय स्थापित करके तुम्हें अपनी आज्ञाओं का उल्लंघन करने से रोके।'

तब मूसा उस अंधकार में प्रवेश किया जहाँ प्रभु की प्रत्यक्ष उपस्थिति थी, और वहाँ उन्होंने प्रभु से परमेश्वर के लोगों के धार्मिक और नागरिक संगठन के संबंध में विभिन्न नियम प्राप्त किए; और पहाड़ से उतरकर, उन्होंने वह सब कुछ जो प्रभु ने कहा था, लोगों को बता दिया और उसे एक पुस्तक में लिख लिया। अगली सुबह, मूसा ने पहाड़ की तलहटी में मिट्टी का एक वेदी बनाया और उसके बगल में इस्राएल के बारह गोत्रों के अनुरूप बारह पत्थर खड़े किए; और उसने पूरे लोगों की ओर से, जो इसके द्वारा यह वादा करते थे कि वे प्रभु की आज्ञाओं का पालन करेंगे, वध किए गए बछड़ों और बकरियों से परमेश्वर को होमबलि और अन्नबलि अर्पित की। (व्यवस्थाविवरण 5:23–31; निर्गमन 20:18–21, 24:1–11)। तब यहोवा ने मूसा से कहा:

'पहाड़ पर मेरे पास ऊपर आ और वहीं रह, और मैं तुझे पत्थर की पट्टियाँ[6037] और व्यवस्था और आज्ञाएँ दूँगा, जो मैंने लोगों को सिखाने के लिए लिखी हैं।'

मूसा, अपने मंत्रालय में अपने सहायक के साथ, नुन का पुत्र यहोशू[6038] सिनाई पर्वत पर चढ़ा, और एक बादल ने पर्वत को ढा लिया, और यहोवा की महिमा ने उसे छा लिया; और वह बादल छह दिन तक सिनाई पर छाया रहा, और सातवें दिन यहोवा ने मूसा को बुलाया, और वह सीधे शिखर पर चढ़ गया, जहाँ वह चालीस दिन और चालीस रात तक रहा। उस समय, उन्हें तम्बू, या पोर्टेबल पवित्र स्थान, के निर्माण के निर्देश मिले, जिसमें लोगों को बलिदान चढ़ाने और परमेश्वर से प्रार्थना करने थे। चालीस दिनों के अंत में, प्रभु ने उसे दो पट्टियाँ दीं, जिन पर परमेश्वर की उँगली से वे सभी दस आज्ञाएँ अंकित थीं जो प्रभु ने पूरे लोगों के सामने जोर से घोषित की थीं (निर्ग. 24:12–18, 31; व्यवस्थाविवरण 9:9–11)।

इस बीच, लोगों ने जब देखा कि मूसा पहाड़ से उतरने में लंबा समय लगा रहे थे, तो वे हारून के पास इकट्ठा हो गए और उनसे एक ऐसा देवता बनाने की मांग की जो उनके आगे-आगे चले, 'क्योंकि,' उन्होंने कहा, 'मूसा के साथ कुछ तो हुआ होगा'। उन्होंने उसे अपनी पत्नियों और बेटियों के सोने के बालियाँ दीं, और हारून ने उनके लिए एक सोने का बछड़ा गढ़ा। लोगों ने कहा, 'यह वही देवता है जिसने हमें मिस्र देश से बाहर निकाला।' अगले दिन उन्होंने बछड़े के सामने वेदी पर बलिदान चढ़ाया, और पीने, खाने और नाचने लगे[6039] । ईश्वर उन पर क्रोधित हुए, और उन्होंने मूसा से कहा कि यह हठीली प्रजा, जिसे उन्होंने मिस्र से बाहर निकाला था, रास्ते से भटक गई थी, ईश्वर की आज्ञाओं को तोड़ दिया था और एक

[6037] अर्थात् पत्थर की पट्टियाँ।

[6038] यहोशू – मूसा के उत्तराधिकारी, इस्राएल के नेता जिन्होंने यहूदियों को प्रतिज्ञात देश में प्रवेश कराया। उनका पर्व दिवस 1 सितंबर है।

[6039] बेशक, यह नहीं माना जा सकता कि इस्राएलियों का इरादा धातु से एक देवता बनाकर उसे मिस्र से अपनी मुक्ति का श्रेय देने का था, जबकि ईश्वर ने हाल ही में उन्हें अपना विधान सुनाया था; नहीं, वे प्रभु की सेवा करना चाहते थे (निर्गमन 32:5), लेकिन, ईश्वर की स्पष्ट मनाही (20:4) का उल्लंघन करते हुए, वे अन्यजातियों के उदाहरण से भटक गए, जो मूर्त रूपों में देवताओं की पूजा करते थे; इसका सबसे करीबी उदाहरण मिस्रियों ने दिया, जो काले सांड एपिस की पूजा करते थे—जो देवता ओसिरिस का प्रतिनिधित्व करता था—और उसकी मूर्ति धातु में ढलवाते थे। फिर भी, उनका यह अपराध मूर्तिपूजा था और इसके लिए कठोर दंड का प्रावधान था।

झूठे ईश्वर की पूजा कर रही थी। मोशे ने लोगों के लिए प्रार्थना करना शुरू कर दिया, और परमेश्वर ने उनकी विनती सुनी। पहाड़ की तलहटी में उतरकर, मोशे और यहोशू ने बछड़े और नृत्य को देखा। मोशे क्रोध से भर गए और, गोलियाँ फेंककर, उन्हें पूरे लोगों के सामने पहाड़ की तलहटी में तोड़ डाला। फिर उन्होंने जो बछड़ा उन्होंने बनाया था, उसे उठाकर टुकड़े-टुकड़े कर दिया और उसे पीसकर धूल बना दिया, जिसे उन्होंने पहाड़ से बहने वाली धारा में डाल दिया; और, उस मानव-निर्मित मूर्ति को लज्जित करने के लिए, उन्होंने इस्राएलियों को वह पानी पिलाया। मोशे की फटकार के जवाब में हारून ने उथल-पुथल मचाने वाले लोगों की अव्यवस्था और हठीलापन को दोष दिया, और मोशे ने देखा कि लोगों के पास कोई बचाव नहीं था। वह शिविर के द्वार पर खड़ा हुआ और पुकार कर बोला:

'जो कोई यहोवा के प्रति विश्वासयोग्य रहता है—मेरे पास आओ!'

और लेवी के सभी वंशज उसके चारों ओर इकट्ठा हो गए। मूसा ने उनमें से प्रत्येक को आज्ञा दी कि वे एक तलवार लेकर छावनी में जाएँ और वापस आ जाएँ, और जिसे भी वे पाएं उसे मार डालें। और तीन हजार दोषी मारे गए (निर्गमन 32:1–29; व्यवस्थाविवरण 9:12–17, 21)।

अगले दिन मूसा फिर से पहाड़ पर चढ़े, परमेश्वर के सामने दण्डवत किया और चालीस दिन और चालीस रात उपवास करके लोगों के पाप के लिए मध्यस्थता की, यह कहते हुए:

'यदि आप उनके पाप को क्षमा नहीं करते, तो मुझे भी अपनी पुस्तक से मिटा दें, जिसमें आपने शाश्वत आनंद के लिए नियत लोगों को दर्ज किया है।'

प्रभु ने उत्तर दिया कि जो लोग उनके सामने पाप कर चुके थे, उन्हें वह अपनी पुस्तक से मिटा देंगे, और मूसा को लोगों को प्रतिज्ञात देश में ले जाने की आज्ञा देते हुए, यह भी बता दिया कि वह अब विशेष अनुग्रह के साथ उनके साथ नहीं रहेंगे। यह धमकी सुनकर, लोग रो पड़े, और उन्होंने सभी ने पश्चाताप के वस्त्र धारण कर लिए। मूसा ने अपनी प्रार्थनाएँ और भी जोरों से कीं, और ईश्वर ने इस्राएलियों पर अपनी कृपा बहाल कर दी।

इसके बाद, मूसा को सिनाई पर्वत पर प्रभु की महिमा देखने का सौभाग्य मिला।

प्रभु ने उससे कहा, 'तू मेरा मुख नहीं देख सकता, क्योंकि कोई भी मुझे देखकर जीवित नहीं रह सकता। परन्तु मैं अपनी सारी महिमा तेरे सामने से गुज़रने दूँगा, और मैं अपना नाम यहोवा… घोषित करूँगा। जब मेरी महिमा गुज़रने लगेगी, तो मैं तुझे चट्टान की दरार में रखूँगा और जब तक मैं गुज़र न जाऊँ, तब तक तुझ पर अपना हाथ ढाँपूँगा। और जब मैं अपना हाथ हटा लूँगा, तब तू मुझे पीछे से देखेगा, परन्तु मेरा मुख तुझ से नहीं देखा जाएगा।

तब मूसा को आज्ञा दी गई कि वह वाचा के वचन एक पुस्तक में लिखें, और उसने फिर से पट्टियाँ प्राप्त कीं, जिन पर परमेश्वर ने फिर से वही दस आज्ञाएँ अंकित की थीं जो पिछली पट्टियों पर लिखी गई थीं।

परमेश्वर की महिमा को देखने से मूसा के चेहरे पर उसका प्रभाव पड़ गया। जब वह पहाड़ से नीचे आया, तो हारून और सभी इस्राएली उसके पास आने से डर गए, क्योंकि उन्होंने देखा कि उसका चेहरा चमक रहा था। मूसा ने उन्हें अपने पास बुलाया और उन्हें वह सब कुछ बताया जो परमेश्वर ने उसे आज्ञा दी थी। इसके बाद, उन्होंने अपने चेहरे पर एक आवरण डाल लिया, जिसे उन्होंने केवल तब हटाया जब वे परमेश्वर के सामने खड़े हुए (निर्ग. 32:30–33, 33:1–6, 12–23, 34:1–8, 10–18, 22–24, 26–35; व्यव. 9:18–19, 10:1–4; 2 कुरि. 3:13)।

मूसा ने इस्राएलियों को तम्बू के विषय में परमेश्वर की इच्छा की घोषणा की और इसकी निर्माण प्रक्रिया शुरू की, यह काम परमेश्वर द्वारा नियुक्त कारीगरों को सौंप दिया, और इसके लिए उन्होंने उस नमूने का उपयोग किया जो उन्होंने सिनाई पर्वत पर अपनी चालीस दिन की वासभूमि के दौरान देखा था। इस्राएलियों ने भी सोने, चाँदी, पीतल, ऊन, बारीक सन, चमड़े, लकड़ी, मसालों, कीमती पत्थरों और जो कुछ भी वे दे सकते थे, उसकी उदारतापूर्वक भेंट की। जब निवास तैयार हो गया और अभिषेक के तेल से उसके सभी सामान के साथ उसे पवित्र किया गया, तो एक मेघ ने उसे ढक लिया और पूरे निवास को भर लिया, यहाँ तक कि मूसा भी उसमें प्रवेश नहीं कर सके। और मूसा ने तम्बू के भीतर वाचा का

संदूक रखा, जो सोने से मढ़ा हुआ था[6040] , जिसमें उन्होंने मन्ना वाला सोने का घड़ा[6041] , फूल खिला हुआ हारून का डंडा[6042] , और वाचा की पट्टियाँ रखीं; और संदूक के ऊपर उन्होंने दो स्वर्ण करूबों के चित्र[6043] रखे, और बलिदानों तथा होमबलि के लिए आवश्यक सभी चीज़ों की व्यवस्था की। तब मूसा ने इस्राएलियों के लिए पर्व और नए चंद्रमा[6044] स्थापित किए और उनके लिए पुरोहितों और लेवियों की नियुक्ति की, परमेश्वर की आज्ञा के अनुसार लेवी के पूरे कुल को उनकी सेवा के लिए चुनकर, और उन्हें हारून और उसके पुत्रों के अधिकार के अधीन कर दिया[6045] ।

परमेश्वर के सेवक, मूसा ने, और भी बहुत से चिन्ह और चमत्कार किए, इस्राएलियों का बड़ी सावधानी से पालन-पोषण किया, और उन्हें कई कानून और बुद्धिमानी भरे आदेश दिए; जिन सभी का वर्णन उन्होंने लिखी पवित्र पुस्तकों में किया है: निर्गमन, लेवियों, गिनती और व्यवस्थाविवरण; ये पुस्तकें उनके जीवन और इस्राएल के बच्चों का नेतृत्व करते हुए उनके द्वारा किए गए कार्यों का विस्तार से वर्णन करती हैं।

जब इस्राएली कादेश-बरनिया में अमोरी पर्वत पर आए[6046] , तो मूसा ने उनसे कहा कि वह भूमि जिसे यहोवा ने उन्हें विरासत में दी थी, अब उनके सामने पड़ी थी; लेकिन इस्राएलियों ने पहले भूमि का सर्वेक्षण करने के लिए जासूस भेजने की इच्छा व्यक्त की, और ईश्वर की आज्ञा से मूसा ने इस्राएल के नेताओं में से प्रत्येक कुल से एक व्यक्ति, जिसमें यहोशू भी शामिल थे, को कनान की भूमि का सर्वेक्षण करने के लिए चुना। वापस आने पर, जासूसों ने बताया कि वह भूमि फलों, चरागाहों, पशुधन और मधुमक्खियों से भरपूर थी; लेकिन उनमें से कुछ उस भूमि के निवासियों से डर गए, जो अपनी असाधारण ऊंचाई और ताकत के लिए प्रसिद्ध थे, और उन्होंने इस्राएलियों को मिस्र लौटने की सलाह दी, ताकि वे अमोरीयों के हाथों नष्ट न हो जाएं; जहाँ तक यहोशू और अन्य लोगों का सवाल है, जिन्होंने उन्हें उस सुन्दर देश में जाने के लिए उकसाया, इस्राएलियों ने उन्हें पत्थर मार कर मार डालना चाहा। लेकिन परमेश्वर ने मूसा की प्रार्थना के उत्तर में इस्राएलियों को उनका पाप क्षमा कर दिया, जबकि विद्रोह के दोषी अचानक मृत्यु से मार डाले गए (गिनती 13:1–34, 14:1–45; व्यवस्थाविवरण 1:19–46)।

[6040] पेटिका, या यूनानी में, वाचा की पेटिका—मंडप में सबसे पवित्र वस्तु—शमी के काठ (देवदार की सबसे अच्छी किस्म) से बनी एक संदूक थी।

[6041] स्टाम्ना, जिसका अनुवाद ग्रीक से किया गया है, का अर्थ है एक घड़ा या, अधिक सामान्य रूप से, एक पात्र। इस सुनहरे स्टाम्ना में उस मन्ना का कुछ हिस्सा रखा गया था, जिस पर इस्राएलियों को अरब रेगिस्तान में अपनी चालीस साल की भटकन के दौरान चमत्कारिक रूप से जीवित रखा गया था।

[6042] हारून की इस लाठी की उत्पत्ति संख्याओं की पुस्तक में वर्णित है। एक अवसर पर, लेवी कुल के कोरह और रूबेन कुल के दो पुरुषों, दफन और अबीराम के नेतृत्व में मूसा और हारून के खिलाफ एक खतरनाक विद्रोह भड़का, जिसमें 250 और सामुदायिक नेताओं ने भी भाग लिया। कोरह, हारून से ईर्ष्या करके, ने अपने लिए महायाजक का पद मांगा और अपने साथियों के साथ मिलकर यह दावा करने लगा कि पूरा समुदाय पवित्र था, और यह कि मूसा और हारून ने खुद को बाकी सभी से ऊपर रखना गलत था। दोषियों को ईश्वर के न्याय द्वारा दंडित किया गया: उन्हें पृथ्वी निगल गई; लेकिन विद्रोह जारी रहा, और ईश्वर के क्रोध ने 14,700 और लोगों को मार गिराया। पुजारी का अधिकार किसे मिलना चाहिए, इस पर विवाद को रोकने के लिए, परमेश्वर ने आज्ञा दी कि इस्राएल के कुल के बारह नेताओं में से प्रत्येक से एक लाठी ली जाए और उसे मिलाप-वासन में रखा जाए, यह वादा करते हुए कि जिसे वह चुनेगा उसकी लाठी में फूल खिलेंगे। अगले दिन, मूसा ने देखा कि हारून की लाठी पर फूल आ गए थे और उस पर बादाम लगे हुए थे। तब मूसा ने हारून की लाठी को भविष्य की पीढ़ियों के लिए एक गवाही के रूप में, यह दर्शाने के लिए कि परमेश्वर ने हारून और उसकी संतान को याजक पद के लिए चुना है, वाचा के संदूक के सामने रख दिया।

[6043] चेरुबिम का मानव रूप में, फिर भी पंखों के साथ चित्रण, और इन छवियों को वाचा के सन्दूक के ऊपर रखने का यह संकेत था कि, सर्वोच्च आध्यात्मिक प्राणी होने के नाते, उन्हें ईश्वर के प्रति एक विशेष निकटता प्रदान की गई थी, वे उनके सिंहासन के सामने खड़े थे और भक्तिपूर्वक उनकी सेवा करते थे, तथा हमारे उद्धार के रहस्यों में अंतर्दृष्टि रखते थे।

[6044] ये पर्व इस प्रकार थे: सब्बाथ, पसका और अखमीरा पर्व, पेंटेकोस्ट (सीनाई पर व्यवस्था देने की स्मृति में और पृथ्वी के नए फलों के लिए परमेश्वर का धन्यवाद करने हेतु स्थापित), तुरही का पर्व, प्रायश्चित का दिन, झोपड़ियों का पर्व, और अमावस्या – प्रत्येक नए महीने की शुरुआत, जिसे बलिदानों द्वारा पवित्र किया जाता था। इसके अतिरिक्त, इस्राएलियों के लिए विशेष पर्व थे: सप्तम वर्ष, या सप्तम वर्ष, और ज्यूबिली वर्ष, या पचासवां वर्ष।

[6045] गिनती 3:5–13, 8:5–22, 1:5–53। सबसे पहले, हारून और उसके बेटों ने तम्बू में परमेश्वर के सामने याजकीय सेवा के लिए एक विशेष अभिषेक प्राप्त किया; बाद में, लेवी का पूरा कुल उनके साथ मिला दिया गया। पुरोहित का पद स्वयं हारून और उसके पुत्रों और उनके वंशजों का था; महायाजक का पद उसकी वंशावली के सबसे बड़े का था; उसके अन्य वंशज पुरोहित थे, जबकि लेवी के कुल के बाकी लोगों को आम तौर पर लेवीय कहा जाता था, जो मिलाप-वासे में छोटी-मोटी सेवाएँ करते थे: वे मिलाप-वासे और उसके सामान को उठाते थे, उसकी रखवाली करते थे, पूजा में पुरोहितों की सहायता करते थे, और उनमें से कुछ गायक और संगीतकार, लिपिक और नागरिक मामलों में न्यायाधीश आदि थे।

[6046] कादेश, या कादेश-बरनिया – प्रतिज्ञात देश की सीमा पर, माउंट सेइर के पास, फिलिस्तीन के दक्षिण में एक स्थान।

जैसे ही वे अपनी यात्रा जारी रखे हुए थे, इस्राएलियों ने एक बार फरि अपनी कायरता दखिाई और परमेश्वर के वरिुद्ध शकिायत और बड़बड़ाना शुरू कर दयिा। तब प्रभु ने वषिैले साँप भेजे, जनिके काटने से मृत्यु हो जाती थी, और उनमें से कई इस्राएली मर गए। लोगों ने स्वयं को नम्र कयिा और परमेश्वर के वरिुद्ध पाप करने तथा मूसा के वरिुद्ध बड़बड़ाने पर पश्चाताप कयिा। तब मूसा ने प्रार्थना की कि प्रभु साँपों को उनसे दूर कर दे, और प्रभु ने उससे कहा: 'एक साँप बना और उसे एक खंभे पर लगा; तब, जो कोई डँसा हुआ हो, वह उसे देखे – और वह जीवति रहेगा।' मोशे ने एक खंभे पर साँप की एक काँसे की मूर्ति लगाई, और तब से जो भी डँसा हुआ था और जसिने वश्विास के साथ इस मूर्ति को देखा, वह सुरक्षति रहा[6047] ।

इस प्रकार मूसा ने इज़राइल के लोगों का कनान देश की यात्रा में नेतृत्व कयिा, और अपनी प्रार्थनाओं और चमत्कारों के द्वारा उन्हें वभिन्नि वपित्तयिों और ईश्वर की सजाओं से बचाया।

मूसा स्वयं नयित था कि वह प्रतज्ञि़ात भूमि के बाहर ही मर जाए। जब उसकी मृत्यु का समय नकिट आया, तो प्रभु ने उसे उसके नकिटवर्ती नधिन की भवष्यिवाणी की और कहा:

[6048]'अबारमि पर्वत पर चढ़ जाओ[6049] , जो मोआब देश में, यरीहो के सामने है, और कनान देश को देखो, जसिे मैं इस्राएलियों को उनकी वरिासत के रूप में दे रहा हूँ; और उसी पहाड़ पर मर जाओ, और अपने लोगों के पास जा मलिो, जैसे हारून, तुम्हारा भाई, होर पर्वत पर, और अपने लोगों में मलि गया; क्योंकि तुमने कादेश में, जंगल के ज़नि में, मरबिाह के जल पर इस्राएलियों के बीच मेरे वरिुद्ध पाप कयिा, इस्राएलियों के बीच मेरी पवत्रिता बनाए रखने में असफल होकर; तुम उस देश को दूर से देखोगे जसिे मैं इस्राएलियों को दे रहा हूँ, परन्तु तुम स्वयं उसमें प्रवेश न करोगे (व्यवस्थावविरण 31:14–30, 32:1–52, 33:1–29)।

अपनी मृत्यु से पहले, मूसा ने इस्राएलियों को, प्रत्येक गोत्र को व्यक्तगित रूप से, आशीष दी, और उनके भवष्यि के भाग्य के बारे में भवष्यिवाणी की (व्यवस्थावविरण 3:23–28; गनिती 27:12–23)। इसके बाद, परमेश्वर की आज्ञा से, वह पहाड़ पर चढ़ गया, और यहोवा ने उसे गलिाद का सारा देश दान तक, और नप्ताली का सारा देश, और एप्रैम और मनश्शे का सारा देश, और यहूदा का सारा देश पश्चमिी समुद्र और नेगेव तक, और यरीहो की नाली का मैदान, खजूर के नगर तक, Sigor[6050] तक दखिाया। और वहीं परमेश्वर के सेवक मूसा मोआब देश में परमेश्वर के वचन के अनुसार मर गया। उनका शव मोआब देश में बेथ-पेओर के सामने घाटी में दफनाया गया[6051] , और आज तक कसिी को भी उनके दफन की जगह का पता नहीं चला है। जब मूसा की मृत्यु हुई तब उनकी आयु एक सौ बीस वर्ष थी; फरि भी उनकी दृष्टि कमजोर नहीं हुई थी, और न ही उनकी शक्ति उनसे चली गई थी। इस्राएलियों ने मोशे की मृत्यु पर तीस दनि तक शोक मनाया। और इस्राएलियों में मोशे के समान कोई अन्य नबी कभी नहीं हुआ, जसिे यहोवा ने आमने-सामने जाना था, उन सभी चह्निों और आश्चर्यों के द्वारा जो उसने सारे इस्राएल की आँखों के सामने कए थे (व्यवस्थावविरण 34:1–12)।

पवत्रि भवष्यिवक्ता मूसा की प्रार्थनाओं के द्वारा, प्रभु हमें भी हर दुख से छुड़ाएँ, और हमें मस्रि – इस अनेक क्लेशों वाली दुनयिा – से बाहर नकिालकर, हमें शाश्वत नविासों में बसाएँ। आमीन।

[6047] गनिती 21:4–9। जंगल में उठाया गया सर्प, जैसा कि सेंट ग्रेगरी ऑफ नस्सिा कहते हैं, क्रूस के संस्कार का एक संकेत है, जैसा कि ईश्वर का वचन स्पष्ट रूप से सखिाता है जब यह कहता है: *'जसि प्रकार मूसा ने जंगल में सर्प को उठाया, उसी प्रकार मनुष्य के पुत्र को भी उठाया जाना चाहिए'* (यूहन्ना 3:14)।

[6048] होर पर्वत मृत सागर के दक्षणि में, कादेश के पास, एदोम और फलिस्तीन की सीमा पर स्थति था। – हारून की मृत्यु मूसा की मृत्यु से एक साल पहले हुई थी।

[6049] होरेब वास्तव में मोआब के देश में, यॉर्डन के दूसरी ओर यरीहो के वपिरीत एक पर्वत श्रृंखला है। मूसा ने माउंट नेबो की चोटी से प्रतज्ञि़ात देश को देखा; इस चोटी को पस्गिाह कहा जाता था।

[6050] गलिाद का प्रदेश जॉर्डन के पूर्व में स्थति क्षेत्र का नाम है – हर्मोन पर्वत से लेकर अर्नोन नदी तक। दान का नगर फलिस्तीन के उत्तर में स्थति था और यह प्रतज्ञि़ात देश की उत्तरी सीमा को चहिनति करता था। नप्ताली का प्रदेश कनान के भूमि के सबसे उत्तरी भाग में स्थति था। प्रतज्ञि़ात भूमि के वभिाजन पर, एप्रैम का कुल इसके ठीक केंद्र में बस गया। मनश्शे का कुल इसके उत्तरी भाग में, गलिाद के समीप बस गया, जसिे बाद में उन्होंने अपने अधकिार में ले लयिा। यहूदा का कुल कनान की भूमि के सबसे बड़े और महत्वपूर्ण हस्सिे पर बसा था, जो भूमध्य सागर से मृत सागर तक और मस्रि की नहर से एप्रैम की सीमाओं तक फैला हुआ था। – यहाँ 'पश्चमिी सागर' से, बेशक, भूमध्य सागर का तात्पर्य है। – दक्षणिी क्षेत्र। सगिोर मृत सागर के पूर्वी कनिारे पर, यहूदी मरुभूमि के दक्षणि में, सदि्दीम की घाटी का एक नगर है। इस प्रकार, मूसा को वह संपूर्ण भूमि दखिाई गई जसिे ईश्वर की इच्छा से यहूदयिों को बसाना था।

[6051] बेथ-पेओर, एमोरीयों के राजा सीहोन के शहरों में से एक है, जो यरीहो के सामने पूर्वी ओर है।

ट्रोपारयिन, स्वर 2:

हे नबी मूसा, आप सद्गुणों की ऊँचाइयों पर आरोहण कर गए हैं, और इसी कारण आप ईश्वर की महमिा को देखने के योग्य माने गए: आपने अनुग्रह-पूर्ण व्यवस्था की पट्टकिाएँ ग्रहण कीं, और अपने भीतर आज्ञाओं का अनुग्रह धारण कयिा, आप नबयिों की सम्मानति प्रशंसा और धार्मकिता का महान रहस्य थे।

कॉन्टाकयिन, स्वर 2:

भवष्यिवक्ताओं का दल, मूसा और हारून के साथ, आज हर्षति है, क्योंकि उनकी भवष्यिवाणयिों की पूर्ति हिम में हुई है: आज क्रूस प्रकाशति होता है, जसिसे तूने हमें बचाया है। उनकी प्रार्थनाओं के द्वारा, हे मसीह हमारे परमेश्वर, हम पर दया कर।

पवत्रि शहीदों थयिोडोर, मयिान, जूलयिन और कअिॉन की स्मृति

4 सतिंबर को स्मरण कयिा जाता है

ये पवत्रि शहीद मॅक्समियिन के शासनकाल में रहते थे और कंदावली गाँव के मूल नवािसी थे[6052] । मसीह में अपने वश्विास की घोषणा करने के कारण उन्हें गरिफ्तार कयिा गया और वभिन्नि प्रकार के यातनाओं का शकिार बनाया गया। पहले तो उनकी देहों पर इतनी बेरहमी से कोड़े बरसाए गए कि उनकी हड्डयिाँ तक उजागर हो गईं। फरि उन्हें एक बहुत गर्म स्नानागार में बंद कर दयिा गया, जसिके दरवाज़ों को शाही मुहर से सील कर दयिा गया ताकि पवत्रि शहीद भाग न सकें। लेकनि परमेश्वर के एक स्वर्गदूत ने उन्हें बुलाया, और वे बनिा कसिी चोट के बाहर नकिल आए, जबकि दरवाज़े सील ही रहे। सैनकिों ने उन्हें पकड़ लयिा और शहर से बाहर ले गए। संतों के अनुरोध पर, उन्हें प्रार्थना के लिए समय दयिा गया। उन्होंने लंबी प्रार्थना की और ईश्वर का धन्यवाद कयिा कि उन्होंने उन्हें मसीह के लिए यातनाएँ सहने के योग्य समझा। इसके बाद, उनके शरीर के टुकड़े-टुकड़े कर दिए गए, उनके घुटने चकनाचूर कर दिए गए, और अंत में, उन्हें स्वयं आग में फेंक दयिा गया, जहाँ उन्होंने खुशी-खुशी अपना प्राण प्रभु को सौंप दयिा।

नकिोमेडयिा के संत बावलि और उनके साथ 84 बच्चों का स्मरणोत्सव

4 सतिंबर को स्मरणोत्सव

जब सम्राट मैक्समियिन ईसाइयों को सताने के लिए नकिोमेडयिा में ठहरे हुए थे, तो उनमें से कई अपने सताने वालों से छपि रहे थे। और इस प्रकार सम्राट को यह सूचना मलिी कि एक सुनसान जगह पर बवलि नाम का एक वृद्ध व्यक्ति था, जो बच्चों को यह सखिा रहा था कि वे मूर्तपिूजक देवताओं की नहीं, बल्कि सूली पर चढ़ाए गए मसीह की पूजा करें। तुरंत सैनकि भेजे गए और उन्होंने संत बावलि और उनके शष्यिों को सम्राट के सामने लाया, जसिने उनसे पूछा: 'हे बूढ़े, तुम न केवल यहूदयिों द्वारा सूली पर चढ़ाए गए व्यक्ति को सम्मान देकर और हमारे देवताओं की पूजा करने से इनकार करके खुद को धोखा देते हो, बल्कि इन मूर्ख बच्चों को भी यही सखिाते हो?' संत बाबलि ने राजा को उत्तर दयिा: 'पैगन देवता राक्षस हैं, लेकनि हमारे ईश्वर ने स्वर्ग और पृथ्वी की रचना की है। हे राजा, और आपके सभी दरबारी अंधे हैं, क्योंकि आप सत्य को नहीं देख पाते।' मैक्समियिन ने चार सैनकिों को संत के चेहरे, पसलयिों और घुटनों पर वार करने का आदेश दयिा। अपने दुख-कष्ट के दौरान, जब उनका पूरा शरीर खून से लथपथ था, संत बावलि ने प्रभु से पुकारा: 'हे प्रभु, मैं आपको धन्यवाद देता हूँ कि आपने मुझे, एक बूढ़े और कमजोर आदमी को, जवान और मजबूत बनाया है—खुद राजा से भी अधकि मजबूत!' मैक्समियिन ने आदेश दयिा कि उन्हें कंधों और पैरों पर पत्थरों से मारा जाए। फरि, उसके सभी अंगों को कुचलने के बाद, उन्होंने उसके गले में एक भारी जुआ डाल दयिा, उसके पैरों को लोहे की बेड़यिों में जकड़ दयिा, और

[6052] यहाँ 'मैक्समियिन' से, बेशक, हमारा तात्पर्य मैक्समियिन गेलेरयिस से है। कंदवला नकिोमेडयिा के पास एक गाँव है। पवत्रि शहीदों के दुख और मृत्यु 305 और 311 ईस्वी के बीच हुई।

उसे कैद कर दयिा। इसके बाद, संत के युवा शष्यिों—लड़के और लड़कयिों सहति चौरासी की संख्या में—को राजा के सामने लाया गया। राजा ने उन्हें मूर्तयिों की पूजा करने के लयि धीरे-धीरे मनाना शुरू कर दयिा। लेकनि उन्होंने उसे कोई जवाब नहीं दयिा, बस बार-बार एक-दूसरे की ओर देखते रहे। यह देखकर कि वे चुप रहे, मैक्समियिन ने उनमें से दस को—सबसे बड़े को—चुना और उनसे कहा: 'तुम बाकी लोगों से ज्यादा समझदार हो; इसलयि, मेरी बात मानो और देवताओं को बलदिान चढ़ाओ, और बदले में तुम मेरे महल में मेरे साथ रहोगे और मुझसे कई कीमती उपहार प्राप्त करोगे।' तब उनमें से दो, अम्मोनयिस और डोनाटस, ने उससे उत्तर दयिा: 'हम ईसाई हैं और बहरे और गूंगे राक्षसों को बलदिान नहीं चढ़ाते।' राजा ने उन्हें कोड़े मारने का आदेश दयिा। जब उन्हें कोड़े मारे जा रहे थे, तो वे लगातार दोहराते रहे: 'हम ईसाई हैं और आपके देवताओं की सेवा नहीं करते।' तब राजा ने दूसरे बच्चों को मनाना शुरू कयिा, लेकनि उन्होंने दृढ़ता से अपने वशि्वास की घोषणा की और मूर्तयिों को बलदिान देने से इनकार कर दयिा। जब देखा कि बच्चों को मनाया नहीं जा सकता, तो राजा ने उन्हें जेल में डालने का आदेश दयिा, और उनके शकि्षक को फांसी देने और लोहे की छड़ों से पीटने का आदेश दयिा। जब इन सभी यातनाओं से भी वे मसीह का त्याग नहीं कर पाए, तो पवत्रि बच्चों और उनके शकि्षक पर मृत्युदंड सुनाया गया, जसिके तहत उन्हें तलवार से सरि कलम करने की सजा दी गई। जब वे अपने शष्यिों के साथ उनके नष्पिादन की जगह जा रहे थे, तो संत बावलिा ने गाया: *'मैं यहाँ हूँ और ये वे बच्चे हैं जन्हिें परमेश्वर ने मुझे दयिा है!'* फाँसी के स्थान पर पहुँचने पर, पहले संत बावलिा को मृत्युदंड दयिा गया, और उसके बाद उसके सभी शष्यि बच्चों को। रात में वशि्वासयिों आए, उन्होंने उनकी पवत्रि अवशेषों को एक जहाज पर लादकर उन्हें बज़िन्टयिम ले गए, और उन्हें तीन संदूकचों में रखकर ईश्वर की स्तुति और धन्यवाद कयिा।

पवत्रि शहीद हर्मयिोना की स्मृति

4 सतिंबर को स्मरणोत्सव

संत फलिपि प्रेरति, जन्होंने इथयिोपयिा की रानी कैंडस के नपुंसक का बपतस्मिा दयिा था (प्रेरतिों के काम 8:26–40), की चार बेटयिाँ थीं, जनिके बारे में संत लूक सुसमाचार प्रचारक ने लखिा है कि वे भवष्यिवक्ता और कुंवारी थीं (प्रेरतिों के काम 21:9)। इनमें से, हर्मयिोनयिा और यूटकियिा सेंट जॉन द थयिोलोजयिन की तलाश में एशयिा[6053] के लयि रवाना हुईं, लेकनि उन्हें वह नहीं मलिा, क्योंकि प्रभु ने उन्हें *'ले लयिा था'*[6054] , जैसा कि उन्होंने एक बार हनोक (उत्पत्ति 5:24) और एलयिाह (2 राजा 2:11) के साथ *कयिा था*। वहाँ उनकी मुलाकात प्रेरति पौलुस की शष्यिा पेट्रोनयिा से हुई, और वे उनके शष्यि बन गए, उनके जीवन-पथ का अनुसरण करते हुए। संत हर्मयिोना उपचार की कला में नपिुण थीं, और इसलयि बहुत से ईसाई उनके पास आने लगे, और उन्होंने सभी को मसीह की शक्ति से चंगा कयिा। उस समय, सम्राट ट्राजन[6055] फारसियिों के खलिाफ युद्ध कर रहे थे। जब उन्हें यह बताया गया कि हर्मयिोना एक ईसाई थी, तो उन्होंने उसे अपने सामने लाने का आदेश दयिा और उससे दयालुता से बात करना शुरू कयिा, ताकि उसे लुभाकर मसीह से दूर कर सकें। लेकनि वह उनकी वनितयिों के आगे नहीं झुकी। फरि सम्राट ने आदेश दयिा कि उसे लंबे समय तक चेहरे पर मारा जाए। इस तरह की यातनाओं के बीच, संत को एक सांत्वना देने वाला दर्शन हुआ: उन्होंने प्रभु को न्याय के सहिासन पर वरिाजमान देखा, जनिका चेहरा पेट्रोनयिस जैसा था, जो उनसे बात कर रहे थे और उन्हें मजबूत बना रहे थे, और उन्होंने खुशी-खुशी अपनी पीड़ा को सहन कयिा। उसकी दृढ़ता से आश्वस्त होकर, सम्राट ने उसे रहिा कर दयिा। उसने एक धर्मशाला स्थापति की जहाँ उसने पूरे ट्राजन के शासनकाल के दौरान बीमारों की देखभाल की, और उन्हें शरीर तथा आत्मा दोनों से स्वस्थ कयिा। उनके उत्तराधकिारी, हैड्रयिन ने फरि से उन्हें न्याय के लयि अपने सामने लाने का आदेश दयिा और, मसीहा मसीह के प्रति उनके दृढ़ वशि्वास के कारण, उन्होंने आदेश दयिा कि उनके को बेरहमी से कोड़ा मारा जाए। हालाँकि, उन्होंने यह पीड़ा अपने होंठों पर प्रार्थना के साथ सहन की। जब संत को कोड़ा मारने वाले नौकर थक गए, तो सम्राट ने अन्य नौकरों को उनके पैरों के तलवों में लंबे कील ठोकने का आदेश दयिा। और संत ने ईश्वर की स्तुति करते हुए इस यातना को सहन कयिा। फरि उन्हें टनि और सल्फर के साथ उबलते हुए पचि के एक कड़ाही में फेंक दयिा गया। इस कड़ाही में रहते

[6053] एशयिा रोमन साम्राज्य का एक प्रांत था, जो एशयिा माइनर प्रायद्वीप के पश्चमि में स्थति था, जसिकी राजधानी एफेसस थी।

[6054] अर्थात्, उन्होंने उसे जीवति ही स्वर्ग में ले लयिा।

[6055] ट्राजन, एक रोमन सम्राट, ने 98 से 117 तक शासन कयिा।

हुए, संत हर्मयिोनयिा ने अपनी आँखें स्वर्ग की ओर उठाईं, प्रार्थना की, और तुरंत आग बुझ गई, टनि पघिल गया, और संत को कोई चोट नहीं लगी। हैड्रयिन ने उस कड़ाही में और भी ज़ोर से आग डालने का आदेश दयिा, ताकि उसमें मौजूद पवत्रि शहीद को नष्ट कयिा जा सके। लेकनि, सभी को बहुत आश्चर्य हुआ, वह कड़ाही में ऐसे खड़ी थी जैसे ओस के बीच में हो। सम्राट इस चमत्कार से चकति हो गया और अपने सहिासन से उठकर, यह जानने के लिए कि क्या वह ठंडी हो गई है, उसने कड़ाही को अपने हाथ से छुआ। और इस प्रकार उसके हाथ की त्वचा और उसके नाखून बुरी तरह जल गए। संत ने कहा, 'महान है ईसाई ईश्वर!' तब यातना देने वाले ने एक कड़ाही को लाल-गरम करने और नग्न पवत्रि शहीद को उस पर रखने का आदेश दयिा। लेकनि प्रभु के स्वर्गदूत ने अंगारों को बखिेर दयिा, जसिसे कड़ाही के चारों ओर खड़े कई लोग झुलस गए। हालाँकि संत, उस पर जैसे हरी घास पर खड़ी हों, प्रभु का भजन गाती रहीं और उनकी महमिा करती रहीं। इस शानदार चमत्कार को देखकर राजा वस्मिति रह गया और उसने उसे तवे से नीचे उतारने का आदेश दयिा। तब पवत्रि शहीद ने ऐसा दखिावा कयिा मानो वह देवता हरक्यूलसि[6056] को बलदिान चढ़ाना चाहती हो। राजा खुशी-खुशी उसे मूर्तपिूजक मंदरि में ले गया। उसने सच्चे ईश्वर से प्रार्थना की, और अचानक गरज के साथ एक ज़ोर की आवाज़ हुई, और मंदरि में रखी सभी मूर्तयिाँ गरिकर चकनाचूर हो गईं। राजा बहुत क्रोधति हुआ और उसने आदेश दयिा कि हर्मयिोनयिा को शहर के बाहर ले जाकर उसका सरि कलम कर दयिा जाए। दो सेवकों, थयिोडुलस और टमिोथी ने, पवत्रि शहीद को लेकर शहर के बाहर ले गए। उसे मृत्युदंड देने से पहले, वे उस पर हमला करने के इरादे से उसकी ओर दौड़े, लेकनि अचानक उनके हाथ सूख गए। तब वे हमारे प्रभु यीशु मसीह पर वश्विास करने लगे, पवत्रि शहीद के चरणों में गरि पड़े और उनसे अपने लिए प्रार्थना करने की वनिती की, कि प्रभु उन्हें उनसे पहले अपने पास बुला लें - जो उनकी प्रार्थनाओं से पूरा हुआ। इसके बाद, संत ने अपने लिए प्रार्थना की और उसी स्थान पर शांतपिूर्वक देहांत कर दयिा। कुछ धर्मनष्ठि ईसाइयों ने उसकी अवशेषों को लयिा और उन्हें एफ़सिुस में एक सम्मानति स्थान पर रख दयिा, और ईश्वर की महमिा की।[6057]

18 सतिंबर

5 सतिंबर (पुराना तरीका)

पैगंबर सेंट जकरयिाह का जीवन

5 सतिंबर को स्मरणोत्सव

पैगंबर सेंट जकरयिाह, जो हारून के पुत्र इथामार की वंशावली के एक याजक थे, का ववािह एलजिाबेथ से हुआ था, जो स्वयं हारून के घराने की थीं और परम पवत्रि थयिोटोकोस की माता अन्ना की बहन थीं। पवत्रि सुसमाचार गवाही देता है कि जकरयिाह और एलजिाबेथ हर प्रकार के सद्गुणों से सुसज्जति थे, और उन्होंने अपना जीवन नष्किलंक रूप से जयिा। पवत्रि प्रेरति और सुसमाचार लेखक लूका उनके बारे में कहते हैं: *'वे दोनों परमेश्वर के सामने धर्मी थे, और प्रभु की सभी आज्ञाओं और नयिमों का नष्किलंक रूप से पालन करते थे'* (लूका 1:6)। उनके जीवन के वास्तव में धार्मकि होने की गवाही उनके पवत्रि वंशज, आदरणीय और महमिामय नबी, प्रभु के अग्रदूत और बपतस्मिादाता यूहन्ना भी देते हैं। पवत्रि शास्त्र कहता है: *'उनके फल से तुम उन्हें पहचानोगे'* (मत्ती 7:16): एक अच्छे वृक्ष का फल वास्तव में बुरा नहीं हो सकता, क्योंकि जैसा कि वही धर्मग्रंथ कहता है: *'यदि जड़ पवत्रि है, तो डालयिाँ भी पवत्रि हैं'* (रोमयिों 11:16)। इसलिए, पवत्रि डाल—यूहन्ना—केवल एक पवत्रि जड़ से ही आ सकती थी।

[6056] हरक्यूलसि – प्राचीन ग्रीक पौराणकि कथाओं का एक नायक, जो मानवीय शारीरकि शक्ति का प्रतीक था और बाद में प्राचीन ग्रीकों द्वारा अपने सबसे प्रयि देवताओं में से एक के रूप में उसकी पूजा की गई।

[6057] शहीद की मृत्यु लगभग 117 ईस्वी में हुई। दूसरी शताब्दी के मध्य में सम्राट डेसयिस के शासनकाल में जीवति रहीं शहीद मायरोपयिा की जीवनी में कहा गया है कि संत मायरोपयिा को एफसिुस में संत हर्मयिोनयिा के मकबरे के प्रति विशिेष भक्ति थी, और उनके अवशेषों से नरिंतर उपचार करने वाला मूरा (myrrh) बहता था।

पूर्ववर्ती के पिता, संत जकरयिाह, ने हेरोद के शासनकाल में यरूशलेम में एक याजक के रूप में सेवा की[6058] । वह अबीयाह की दैनकि पाली से थे, अर्थात् अबीयाह के कुल से, जनिकी बारी आठवें सप्ताह में आती थी।

इन वभिाजनों के संबंध में नम्निलखिति वर्णति है।

राजा दाऊद ने, यह देखकर कि हारून का घराना इतना बड़ा हो गया था कि उन सभी के लिए एक साथ मंदरि में सेवा करना असंभव था, हारून के वंशजों को चौबीस पालयिों में वभिाजति कयिा, ताकि वे एक के बाद एक, अपनी-अपनी पालयिों में, मंदरि की सेवाएँ कर सकें। प्रत्येक अलग-अलग वभिाग में, राजा ने उच्चतम ईमानदारी वाले एक व्यक्ति को चुना और उसे वभिाग का प्रमुख नयिुक्त कयिा, ताकि प्रत्येक वभिाग का अपना मुख्य पुरोहति हो; और इन वभिागों में पाँच हज़ार से अधकि पुरोहति थे। मुख्य पुरोहतिों के बीच इस बात पर कोई ववािद न हो कि उनमें से कौन, अपने समूह के साथ, पहले सप्ताह, दूसरे, तीसरे, और इसी तरह के दौरान सेवा करे, इसे रोकने के लिए चौबीसवें तक, उन्होंने पासे फेंके और पासे द्वारा क्रम आवंटति कयिा; और उन्होंने नए नयिम के आने तक इस स्थापति क्रम का पालन कयिा, ताकि प्रत्येक पुरोहति के वंशज अपने पूर्वज पर पड़े हुए पासे के अनुसार अपनी बारी का पालन करें। आठवाँ भाग याजक अबीयाह को मलिा (1 इतहिास 24:10), जनिके वंशजों में संत जकरयिाह भी थे; इसीलिए उन्होंने अपने पूरे कुल के साथ आठवें सप्ताह में मंदरि में सेवा की, क्योंकि वे अपने पद के अन्य याजकों में प्रमुख थे।

एक दनि, जब ज़कारयिाह अपनी बारी के अनुसार परमेश्वर के सामने सेवा कर रहे थे, तो याजकों की रीति के अनुसार उन्हें धूप जलाने के लिए प्रभु के मंदरि में प्रवेश करना पड़ा; और उस समय बहुत सारी भीड़ प्रार्थना कर रही थी। पवत्रि स्थान में प्रवेश करने पर, ज़कारयिाह ने धूप के वेदी के दाहनिी ओर प्रभु के स्वर्गदूत को खड़ा देखा। दूत को देखकर ज़करयिा भयभीत हो गए; परन्तु परमेश्वर के दूत ने उन्हें आश्वस्त करते हुए कहा, 'ज़करयिा, मत डर।' और उसने उस धर्मी याजक को सांत्वना दी, यह घोषणा करते हुए कि उसकी प्रार्थना परमेश्वर के अनुग्रह में स्वीकार हुई है; इसके उत्तर में, प्रभु उसे एक वरदान देंगे: उसने उसकी पत्नी एलज़िाबेथ को भी आशीर्वाद दयिा था, और उसकी उन्नत आयु के बावजूद उसे बाँझपन के बंधन से मुक्त कर दयिा था, और वह एक पुत्र को जन्म देगी, जसिे परमेश्वर की कृपा से योनाह नाम रखा जाएगा[6059] , जसिका जन्म न केवल उसके माता-पति के लिए बल्कि बहुत से लोगों के लिए भी आनंद लाएगा: 'कई लोग,' देवदूत ने कहा, 'उसके जन्म पर प्रसन्न होंगे।' देवदूत ने जकरयिाह को यह भी बताया कि उनका पुत्र प्रभु के सामने महान होगा, शरीर से नहीं बल्कि आत्मा से; वह उपवास करने वाला व्यक्ति होगा और इतनी आत्म-संयम वाली जीवन शैली जीएगा जैसा कोई और नहीं; और वास्तव में, स्वयं परमेश्वर के पुत्र की भी उनके बारे में यही गवाही थी: *'क्योंकि बपतस्मिा लेने वाले यूहन्ना आ गया है: वह न रोटी खाता है, न दाखरस पीता है'* (लूका 7:33)। देवदूत ने भवष्यिवाणी की कि, अपनी माँ के गर्भ में रहते हुए ही, यूहन्ना पवत्रि आत्मा से भर जाएगा और इस्राएल के बहुत से पुत्रों को सच्चे प्रभु परमेश्वर की ओर फेर देगा; कि वह एलीया नबी की आत्मा और सामर्थ्य में मसीह का अग्रदूत होगा[6060] और लोगों को प्रभु उद्धारकर्ता को ग्रहण करने के लिए तैयार करेगा।

यह सब सुनकर ज़कारयिाह चकति और हैरान हो गया, यहाँ तक कि वह जो कहा गया था उस पर वश्विास नहीं कर सका; यह उसे अजीब लगा क्योंकि एलज़िाबेथ बाँझ थी, और वे दोनों ही पहले से ही वृद्ध थे। और उसने स्वर्गदूत से कहा:

'मैं इसे कैसे मानूँ? क्योंकि मैं तो बूढ़ा हो चुका हूँ, और मेरी पत्नी भी वृद्धा है, और उसके कोई संतान नहीं हुई।'

तब दूत ने उससे उत्तर दयिा:

'मैं गब्रयिल हूँ, जो परमेश्वर के सामने खड़ा रहता हूँ; मुझे तुम्हें यह बात बताने और यह शुभ समाचार देने के लिए भेजा गया है। और चूँकि तुमने मेरी बातों पर वश्विास नहीं कयिा, इसलिए तुम बोल नहीं पाओगे और जब तक यह सब पूरा नहीं हो जाता, तब तक एक शब्द भी नहीं बोलोगे।'

[6058] हेरोद, जसिे इतहिास में महान के नाम से जाना जाता है, यहूदयिों का राजा और एंटपिेटर का पुत्र था, जो शुरू में गलील का राज्यपाल था, लेकनि पहले रोमन सम्राट, ऑक्टेवयिन अगस्टस के अधीन, बाद वाले के सहिासन पर बैठने से पहले ही, 40 ईसा पूर्व में, उन्हें यहूदयिों के राजा का खतिाब दयिा गया और उन्होंने पूरे यहूदयिा पर शासन कयिा, जो उस समय रोमन साम्राज्य के अधीन था।

[6059] ग्रीक में 'जॉन' शब्द का अर्थ 'ईश्वर की कृपा' है; (यहूदी नाम योहानान का ग्रीक रूप [योआनेस], जसिका अर्थ है 'यहोवा अनुग्रहशील है')।

[6060] अर्थात् उसी अडगि उत्साह और नैतकि शक्ति के साथ, जसिके साथ ईश्वर के पुरुष, महान उत्साही भवष्यिवक्ता एलयिा ने एक बार कार्य कयिा था।

जब ज़कारयिा स्वर्गदूत से बात करते हुए मंदरि में देर तक रुके रहे, तो मंदरि में खड़े लोग इस पर अचंभति हो गए। जब वह लोगों के पास बाहर आए, तो ज़कारयिा को उन्हें इशारों से बताना पड़ा कि वह गूंगा हो गए हैं; तब वहाँ मौजूद लोगों को एहसास हुआ कि उन्हें मंदरि में एक दर्शन हुआ था।

अपनी बारी का काम पूरा करने के बाद, ज़करयिाह अपने घर लौट आए, जो यहूदा के एक नगर हेब्रोन में पहाड़ी देश में स्थति था। यह नगर यहूदा के वंशजों को लॉटरी द्वारा आवंटति कएि गए नगरों में से एक था और इसे पुरोहतिों के नविास के लएि नामति कयिा गया था[6061] ।

जब स्वर्गदूत ने जो घोषणा की थी, उसके पूर्ण होने का समय आया, और एलजिाबेथ, जो पहले बाँझ थी, ने जॉन को जन्म दयिा—एक नाम जसिे जकरयिाह ने उसे दएि गए पटरे पर लखिा—तब जकरयिाह का मुँह खुल गया, उसकी जीभ सुलग उठी, और वह परमेश्वर की स्तुति करते हुए बोलने लगा। पवत्रि आत्मा से भरकर, वह यह कहते हुए भवष्यिवाणी करने लगा: *'धन्य है इस्राएल का परमेश्वर यहोवा, क्योंकि उसने अपने लोगों पर दृष्टि की है और उनका उद्धार कयिा है, और दाऊद अपने दास के घराने में हमारे लएि उद्धार का एक सींग उत्थापति कयिा है, जैसा उसने अपने पवत्रि भवष्यिद्वक्ताओं के मुख से पहले कहा था, कि वह हमें हमारे शत्रुओं और हमें घृणा करने वालों के हाथ से बचाएगा; वह हमारे पतिरों पर दया करेगा और अपनी पवत्रि वाचा को याद करेगा, उस शपथ को जो उसने हमारे पति इब्राहीम से खाई थी, कि हमारे शत्रुओं के हाथ से छुड़ाए जाने के बाद, वह हमें नडिर होकर, अपने जीवन भर उसके सामने पवत्रिता और धार्मकिता में उसकी सेवा करने का अनुग्रह देगा। और तुम, हे बालक, तुम्हें परमप्रभु का भवष्यिवक्ता कहलाओगे; क्योंकि तुम प्रभु के मुख के सामने उसकी राहें तैयार करने को जाओगे, और अपने परमेश्वर की कोमल दया से अपने लोगों को उनके पापों की क्षमा द्वारा उद्धार का ज्ञान दोगे, जसिसे स्वर्ग से उदय होने वाला हमें देखने आया है, ताकि वह अंधकार और मृत्यु की छाया में बैठे लोगों को प्रकाश दे, और हमारे पैरों को शांति के मार्ग पर चलाए।'* (लूका 1:68–79)।

लेकनि वह समय आ गया जब हमारे प्रभु यीशु मसीह का जन्म बेतलहम में हुआ, और पूर्व से आए मगसि, जो एक अद्भुत तारे के दर्शन का अनुसरण कर रहे थे, ने हेरोद को नवजात राजा के जन्म की घोषणा की। तब हेरोद ने बेतलहम में सभी बच्चों का वध करने के लएि सैनकि भेजे और ज़कारयिाह के पुत्र—जसिके बारे में उसने बहुत कुछ सुना था—को भी मार डालने का आदेश दयिा। हेरोद को यूहन्ना के जन्म के समय हुई हर बात की जानकारी थी; क्योंकि यूहन्ना के जन्म के समय हुई सभी घटनाओं ने स्थानीय नविासयिों में भय और आश्चर्य पैदा कर दयिा था। सभी यहूदी इन चमत्कारकि घटनाओं के बारे में बात कर रहे थे; यह खबर हेरोद तक भी पहुँच गई थी। जो भी इसे सुनते थे, वे अपने मन में इस बात पर वचिार करते थे कि क्या हुआ होगा और कहते थे, *'यह बच्चा बड़ा होकर क्या बनेगा?'* (लूका 1:66)। हेरोद, अब यूहन्ना को याद करते हुए, ने सोचा: 'क्या यह यहूदयिों का राजा हो सकता है?' उसे मार डालने का नश्चिय करके, राजा ने गुप्त रूप से जकरयिाह के घर पर हत्यारों को भेजा, लेकनि भेजे गए लोगों को संत यूहन्ना वहाँ नहीं मलि। क्योंकि जब बेतलेहेम में बच्चों का नर्दियी कत्लेआम शुरू हुआ, तो यहूदा के एक नगर हेब्रोन में कराह और चीखें सुनी गईं, जहाँ पुरोहति रहते थे, क्योंकि यह बेतलेहेम से बहुत दूर नहीं था; जल्द ही, बेशक, हेब्रोन के लोगों को ऐसी चीखों का कारण पता चल गया। तब संत एलजिाबेथ, अपने पुत्र, छोटे जॉन, जसिे तब तक डेढ़ साल हो चुका था, को लेकर पहाड़ों में भाग गईं। इस बीच, संत जकरयिा उस समय यरूशलेम में पुरोहतिों की बारी के अनुसार अपने नयिमति कर्तव्यों का पालन कर रहे थे। पहाड़ों में छपिकर, एलजिाबेथ ने अपने और अपने बेटे की रक्षा के लएि ईश्वर से आँसू भरी प्रार्थना की। पहाड़ से भगोड़ों की लगन से खोज कर रहे और पास ही मौजूद सैनकिों को देखकर, वह भय से नकिटतम चट्टानी पहाड़ से चलि्लाई: 'हे ईश्वर के पहाड़, इस माँ और उसके बेटे को आश्रय दो!' पहाड़ तुरंत फट गया, और उन्हें अपने भीतर समा लयिा, और इस प्रकार वे उन हत्यारों की नज़रों से ओझल हो गए जो उन पर घरि रहे थे। जन्हिें वे ढूंढ रहे थे, उन्हें न पाकर, दूत खाली हाथ राजा के पास लौट गए। तब हेरोद ने मंदरि में ज़कार्याह को एक आज्ञा भेजी, जसिमें उसे अपना पुत्र यूहन्ना उसे सौंपने का आदेश दयिा गया।

संत जकरयिा ने उत्तर दयिा, 'मैं अब इस्राएल के प्रभु परमेश्वर की सेवा करता हूँ, और मुझे नहीं पता कि मेरा बेटा इस समय कहाँ है।'

[6061] यहोशू 21:13; 1 इतहिास 6:65। हेब्रोन कनान देश के सबसे पुराने शहरों में से एक था। यह आज भी मौजूद है और इसकी आबादी दस हजार तक है, जो व्यापार, कृषि, फल-उगाने और शराब बनाने में लगे हुए हैं। यह शहर यरूशलेम से एक हजार फीट ऊपर एक गहरी और संकरी घाटी में स्थति है, जो दोनों ओर से पहाड़ों से घरिा हुआ है, और यह एक समृद्ध रूप से वकिसति और उपजाऊ क्षेत्र में है। कस्बे के चारों ओर का पूरा ग्रामीण इलाका जैतून, अनार, अंजीर और पस्ति के पेड़ों से ढका हुआ है; हेब्रोन वशिेष रूप से अपने वशिाल और शानदार अंगूर के बागों के लएि प्रसद्धि है।

क्रोधित होकर, हेरोद ने दूसरी बार उसे बुलवाया और आदेश दिया कि यदि उसने अपने बेटे को नहीं सौंपा तो ज़करियाह को ही मार डाला जाए। क्रूर हत्यारे, राजा के आदेश को तुरंत पूरा करने के लिए, जानवरों की तरह आगे बढ़े और परमेश्वर के याजक पर क्रोध से चिल्लाए:

'तुमने अपने बेटे को कहाँ छिपाया है? उसे हमें सौंप दो, क्योंकि राजा ने ऐसा ही आज्ञा दी है; परन्तु यदि तुम अपने बेटे को नहीं सौंपोगे, तो तुम स्वयं एक क्रूर मृत्यु के शिकार हो जाओगे।'

इस पर, संत जकरियाह ने उत्तर दिया:

'तुम मेरा शरीर तो मार सकते हो, परन्तु प्रभु मेरी आत्मा ग्रहण करेंगे।'

तब हत्यारों ने ज़कारियाह पर धावा बोल दिया और उन्हें चर्च और वेदी के बीच मार डाला, जैसा कि राजा ने उन्हें आदेश दिया था; और संत का बहा हुआ खून संगमरमर पर जम गया और पत्थर की तरह कठोर हो गया, हेरोद की गवाही और शाश्वत निंदा के रूप में; जबकि एलिजाबेथ, ईश्वर की सुरक्षा में, अपने बेटे के साथ पहाड़ की दरार में रह गईं। ईश्वर की आज्ञा से, वहाँ उनके लिए एक गुफा तैयार की गई; पानी का एक झरना फूट पड़ा; और गुफा के ऊपर खजूर का एक पेड़ उगा, जिस पर भरपूर फल लगे। जब भी माँ और उसके बेटे को खाने की इच्छा होती, तो पेड़ झुककर अपना फल भोजन के रूप में अर्पित करता, और फिर सीधा हो जाता।

ज़कारियाह की हत्या के चालीस दिन बाद, अग्रदूत की माता, संत एलिजाबेथ का उस गुफा में निधन हो गया, जबकि संत जॉन को एक स्वर्गदूत द्वारा तब तक पोषित किया गया जब तक वे परिपक्व नहीं हो गए और इज़राइलियों के सामने प्रकट होने के दिन तक उन्हें जंगल में रखा गया।

संत जकरियाह के लिए ट्रॉपारियन, स्वर 4:

हे अति प्राज्ञ, परमेश्वर के विधान के अनुसार याजकीय वस्त्र धारण करके, हे जकरियाह, तुमने पवित्र गरिमा के साथ होमबलि चढ़ाई; और तुम एक दीपक और रहस्यों के द्रष्टा थे, अपने भीतर अनुग्रह के चिह्नों को धारण करते हुए, जो सर्व-प्राज्ञ के लिए प्रकट थे: और परमेश्वर के मंदिर में तलवार से वध किए जाने के बाद, हे मसीह के भविष्यवक्ता, अग्रदूत के साथ मिलकर प्रार्थना करें कि हमारी आत्माएँ उद्धार पाएँ।

कॉन्टाकियन, स्वर 3:

आज, सर्वोच्च के नबी और याजक, अग्रदूत के पिता, ज़कारियाह, अपनी स्मृति का पर्व अर्पित करते हैं, विश्वासियों को पोषण देते हुए, सभी के लिए सत्य का पान मिलाते हुए: इसी कारण आप, परमेश्वर की कृपा के दैवीय प्रबंधक के रूप में, स्वर्ग सिधार गए।

संत एलिजाबेथ के लिए कोंटाकियन, स्वर 4:

पूर्ण चंद्रमा की तरह, तुमने मसीहा के आध्यात्मिक सूर्य से सत्य का प्रकाश प्राप्त किया है, और ज़करियाह के साथ तुम प्रभु की सभी आज्ञाओं में चलीं, हे ईश्वर-प्रिय एलिजाबेथ: अत; जैसे हम तुम्हारी योग्य भजनों से स्तुति करते हैं, हम सर्व-उदार प्रभु की महिमा करते हैं, जो सभी को प्रकाशित करते हैं।

पवित्र शहीदों उर्वान, थियोडोरस और मेडमिनस, तथा उनके साथ अनेक अन्य की स्मृति

5 सितंबर को स्मरणोत्सव

दुष्ट वैलेंस के शासनकाल में[6062] , कॉन्स्टेंटिनोपल में एरियिनों ने बहुत शक्ति हासिल कर ली और अपना अधिकार बढ़ा लिया, क्योंकि सम्राट, उसी संप्रदाय से अंधा हो गया था, ने उनकी सहायता की। ऑर्थोडॉक्स ईसाइयों के खिलाफ एक उत्पीड़न शुरू करने के बाद, उन्होंने बिशप इवाग्रियस को निर्वासित कर दिया और विश्वासियों पर बुरी तरह अत्याचार किया: कुछ को पीटना, दूसरों को कालकोठरियों में डालना, दूसरों की संपत्तियों को लूटना; संक्षेप में, उन्होंने उन पर हर संभव तरीके से अत्याचार किया। इससे गहराई से दुखी होकर, विश्वासियों ने गुप्त रूप से इकट्ठा होकर राजा को एक याचिका भेजने का संकल्प लिया, जो उस समय निकोमेडिया में था, जिसमें यह अनुरोध किया गया था कि यदि उन्हें एरियिनों से पूरी तरह से छुटकारा दिलाना संभव नहीं है, तो वह कम से कम यह आदेश दे कि उनके खिलाफ अत्याचार कम किया जाए, ताकि लोग पूरी तरह से नष्ट न हो जाएं। इस उद्देश्य के लिए, उन्होंने पुरोहित वर्ग के सत्तर तक योग्य पुरुषों को चुना, जो विश्वास में दृढ़, वाक्पटु और अपनी बुद्धि के लिए प्रसिद्ध थे, जिनका नेतृत्व उर्वान, थियोडोर और मेडमिनस कर रहे थे। अपनी यात्रा शुरू करके, वे निकोमेडिया पहुँचे और राजा के सामने खड़े होकर, उन्होंने उससे विनम्रतापूर्वक दया दिखाने और उन्हें एरियिनों के हाथों से बचाने की प्रार्थना की। राजा उन पर बहुत क्रोधित हुआ; हालाँकि, उसने यह नहीं दिखाया कि वह गुस्से में है, बल्कि गुप्त रूप से उन्हें एपार्क के पास भेज दिया[6063] , मोडेस्टस, और उसे आदेश दिया कि वह उन्हें गिरफ्तार करे और उन्हें मौत की सजा दे। एपार्क ने उन्हें जब्त कर लिया, लेकिन वह सभी के सामने खुलेआम उन्हें मौत की सजा देने से डर रहा था; और, लोगों के बीच अफवाहों को रोकने के लिए, उसने सभी को एक जहाज पर चढ़ाने का आदेश दिया और यह अफवाह फैला दी कि जिन्हें पकड़ा गया था, उन्हें निर्वासन के लिए भेजा जा रहा है; इस बीच, उन्होंने नाविकों को यह निर्देश दिया कि, एक बार समुद्र में पहुँचने के बाद, वे एक छोटी नाव में चले जाएँ और सत्तर लोगों वाली जहाज में आग लगा दें, जिसे उन्होंने ठीक वैसे ही किया: अस्ताकियन डीप तक पहुँचने पर, उन्होंने पहले से ही उस उद्देश्य के लिए तैयार की गई एक नाव में उतरकर, जहाज़ में सवार पवित्र शहीदों को आग लगा दी, और राज्यपाल के पास लौट आए, तथा उन लोगों की मृत्यु की सूचना दी। जहाज़ एक मशाल की तरह जल उठा और हवा से प्रेरित होकर समुद्र के पार तेज़ी से चल पड़ा; जलती हुई नाव एक स्थान पर पहुँची जिसे अस्ताकीय खाई ( ) के नाम से जाना जाता है; वहाँ रुकने के बाद, जहाज पूरी तरह जलकर राख हो गया, और पवित्र शहीदों के जलते हुए शरीरों से धूप की तरह धुआँ निकलकर ईश्वर तक पहुँचा। इस प्रकार संत स्वर्ग सिधार गए, और उनके विषय में धर्मग्रंथ का वचन पूरा हुआ: (भजन संहिता 65:12)। जल पर आग से जलकर, इन पवित्र पुरुषों ने स्वर्गीय निवास[6064] में अपनी जगह बनाई, जहाँ वे प्रभु के सिंहासन के सामने खड़े होकर हमारे लिए प्रार्थना करते हैं; उनकी प्रार्थनाओं के द्वारा, हे प्रभु, यह अनुग्रह प्रदान करें कि हम भी अनंत जीवन प्राप्त करें। आमीन।

पवित्र शहीद उबादीया की स्मृति

5 सितंबर का स्मरणोत्सव

यह पवित्र शहीद फ़ारस में रहे और कष्ट सहते हुए बलिदान हुए। क्योंकि उनकी शिक्षाओं ने कई लोगों को मसीह में विश्वास की ओर प्रेरित किया, मगियों के प्रमुख ने आदेश दिया कि उन्हें पकड़ लिया जाए और सूर्य तथा अग्नि की पूजा करने तथा मसीह का त्याग करने के लिए मजबूर किया जाए। सच्चे ईश्वर की दृढ़ स्वीकारोक्ति के लिए, उन्हें तीखे काँटों से ढकी काँटेदार छड़ियों से कमर पर पीटा गया। चार सैनिकों ने उसे इतनी देर तक पीटा कि वे उसे बेहोश अवस्था में अपने घर ले गए, जहाँ उसने जल्द ही अपना पवित्र और धन्य आत्मा ईश्वर को सौंप दिया, उनकी महिमा करते हुए और उन्हें धन्यवाद देते हुए, और इस बात की प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कि उसे हमारे प्रभु यीशु मसीह के नाम के लिए पीड़ा सहने का योग्य समझा गया था[6065] .

[6062] वैलेन्स – 364 से 378 ईस्वी तक का रोमन सम्राट, जिसने साम्राज्य के पूर्वी हिस्से पर शासन किया और वह एरियिनों का एक उत्साही संरक्षक था।

[6063] एपार्क – एक ग्रीक शब्द जिसका अर्थ है 'राज्यपाल'। यह रोमन प्रांतों के शासकों को दिया गया खिताब था।

[6064] यह वर्ष 370 का था।

[6065] पवित्र शहीद ऑडियस ने फारसी राजा इज़्दगिर्ड (408–420) के शासनकाल में यातनाएँ झेलीं।

पवत्रि शहीदों फफिाएल और फविाए की स्मृत

5 सतिंबर को स्मरण कयिा जाता है

इन पवत्रि शहीदों ने सभी के सामने नडिरता से स्वीकार कयिा कमिसीह ही सच्चे ईश्वर, सभी चीजों के सृष्टकिर्ता और प्रदाता हैं, और मूर्तयिों को बधरि मूर्तयिाँ कहा। उन्होंने कई लोगों को सच्चे धर्म में परविर्तति कयिा। pagans ने उन्हें पकड़ लयिा और उन्हें बुरी तरह यातना दी। अंत में, संत फफिाइल को एक पेड़ से लटका कर आरी से चीर दयिा गया, जबकि उनकी बहन, फविाइया, को गर्दन में भाले से घोंपकर मार डाला गया। दोनों ने अपनी पवत्रि और धन्य आत्माओं को परमेश्वर के हाथों में सौंप दयिा, और उनके होंठों पर स्तुति की प्रार्थना थी: '[6066] '।

संत राजकुमार ग्लेब की शहादत

5 सतिंबर को स्मरणोत्सव

संत राजकुमार ग्लेब के भाई, स्वयितोपोलक ने, उसे धोखे से मुरोम से बाहर नकिाला, और उसे संदेश भेजा: 'तुम्हारे पति मर रहे हैं और तुम्हें बुला रहे हैं।' उस समय तक, स्वयितोपोलक पहले ही ग्लेब के भाई, संत बोरसि को मार चुका था, और वह संत ग्लेब की हत्या की भी साजशि रच रहा था[6067] । उसने अपने लिए सारी सत्ता हथयिाने के लिए अपने सभी भाइयों को मारने का दुष्ट इरादा कयिा था, लेकनि इस दुष्ट कृत्य का परणिाम भवष्यिवक्ता के वचनों के अनुसार शाश्वत यातना थी: *'दुष्ट अपने ही हाथों के कामों में फँस जाते हैं* (भजन संहति 9:17)। जबकि राजकुमार ग्लेब पहले ही कीव के रास्ते पर थे और स्मोलेंस्क के पास, स्मायडनि में[6068] पर थे, तब उन पर स्व्यातोपोलक द्वारा भेजे गए उनके शापति हत्यारों ने हमला कर दयिा, जनिकी दुष्टता क्रूर जानवरों के समान थी। संत ग्लेब को उनसे अभविादन की उम्मीद थी, लेकनि वे उसकी जान के पीछे पड़े थे और ने अचानक उसे चारों ओर से घेर लयिा। फरि संत ग्लेब के रसोइए, जो टॉर्चनि का रहने वाला था[6069] , ने सतिंबर के पांचवें दनि चाकू से अपने मालकि की हत्या कर दी[6070] । उसके शरीर को एक सुनसान जगह पर फेंक दयिा गया। लेकनि प्रभु परमेश्वर ने अपने सेवक को नहीं छोड़ा; बल्कि, उन्होंने उसे महमिामय बनाया, ठीक वैसे ही जैसे उन्होंने एक बार पहले शहीद सेंट स्टीफन[6071] को महमिामय बनाया था: कभी-कभी उस स्थान के ऊपर एक अग्नि स्तंभ देखा गया जहाँ पवत्रि राजकुमार का शरीर पड़ा था; तो कभी जलती हुई मोमबत्तयिाँ दखिाई देती थीं, या स्वर्गदूतों का गायन सुना जा सकता था। इन चनि्हों के साक्षी बने लोगों ने यह समाचार पूरे नगर में फैला दयिा, जसिके नविासयिों ने संत का शरीर उठाया और उसे वशिगोरोद ले गए[6072] ।

[6066] उन्होंने दूसरी शताब्दी की शुरुआत में सम्राट ट्राजन के शासनकाल में शहादत प्राप्त की।

[6067] ग्लेब, संत व्लादमिीर महान, प्रसि एपोस्टल्स के बराबर, के सबसे छोटे बेटे थे, जो उनकी ग्रीक राजकुमारी अन्ना के साथ हुए ईसाई ववािह से पैदा हुए थे। वह प्राचीन मुरोम का राजकुमार था, जो उत्तरी रोस्तोव-सुज़दल क्षेत्र का केंद्र था (अब व्लादमिीर गवर्नरेट में एक अपेक्षाकृत तुच्छ जलिा शहर है)। बोरसि – संत ग्लेब का एक ही माँ से जन्मा सगा भाई, रोस्तोव का राजकुमार (रोस्तोव – अब यारोस्लावल गवर्नरेट में एक जलिा शहर है); 1015 में व्लादमिीर की मृत्यु के तुरंत बाद, उसे भाड़े के हत्यारों ने अल्ता नदी पर हत्या कर दी, जहाँ उसने पेचेनेग्स के खलिाफ एक अभयिान से लौटते समय अपना शविरि लगाया था। स्वयितोपोलक, व्लादमिीर का अपने भाई यारोपोलक की वधिवा से हुआ बेटा था; अपने दुष्कर्मों के लिए, वह इतहिास में 'शापति' के रूप में कुख्यात हुआ। बोरीस और ग्लेब की हत्या के बाद, उसे यारोस्लाव द वाइज़ ने हरा दयिा, जसिने उसे कीव से नकिाल दयिा; वह पोलैंड भाग गया और बाद में पोलैंड और बोहेमयिा के बीच जंगली इलाके में 'हसिक मौत' मारा।

[6068] स्म्यादनि – स्मोलेंस्क के पास डेन्येपर की एक छोटी सहायक नदी।

[6069] टर्क आशयिाई मूल के खानाबदोश लोगों में से एक थे[4], जो प्राचीन रस में अपानगे-वेचे प्रणाली के तहत मुख्य रूप से इसके दक्षणि-पश्चमिी क्षेत्रों में रहते थे।

[6070] संत ग्लेब, धर्मनष्ठि राजकुमार की मृत्यु 1015 में हुई। उनके पवत्रि बपतस्मिा पर, ग्लेब का नाम डेवडि रखा गया था।

[6071] पहले शहीद स्टीफन के पवत्रि अवशेषों के महमिामंडन का वर्णन, अन्य बातों के अलावा, चेटीय मनिेय में इस प्रकार कयिा गया है: 'रात में, संत के अवशेषों के ऊपर एक प्रकाश दखिाई दयिा, और अवशेष-पात्र (अवशेषों वाले संदूक) से एक तेज सुगंध नकिली, जबकि हवा में स्वर्गदूतों का गायन सुना जा सकता था।' 2 अगस्त देखें।

[6072] वशिोरोड – एक प्राचीन और पूर्व में महत्वपूर्ण रस शहर, कीव से डेन्येपर नदी के ऊपरी प्रवाह में 15 वर्स्ट दूर; यह उत्तर से कीव के लिए एक मजबूत कलिाबंदी के रूप में काम करता था और महान कीव राजकुमारों, वशिेष रूप से व्लादमिीर महान का पसंदीदा शहर था। – 1019 में कीव में यारोस्लाव द वाइज़ के शासनकाल के दौरान, संत राजकुमार ग्लेब के अवशेषों को वशिगोरोद में स्थानांतरति कयिा गया और संत राजकुमार

अथरि में संत पतरस प्रेरति का पर्व

5 सतिंबर को स्मरणोत्सव

संत पतरस प्रेरति का यह चर्च पतरस का उल्लेख कन्स्टेंटनिोपल के पैट्रआिर्क सेंट यूटकियिस (6 अप्रैल) के जीवन में मलिता है, जहाँ बताया गया है कि 552 में इस पैट्रआिर्क के चुनाव से पहले, सम्राट जस्टनियिन[6073] को एक दर्शन हुआ, जसिे उन्होंने शपथ लेकर दूसरों को बताया: एक सपने में उन्होंने खुद को सेंट अपोस्टल की चर्च में देखा अथरि में पतरस[6074] ; स्वयं पवत्रि प्रेरति उसे दखिाई दिए और संत यूटकियिस की ओर इशारा करते हुए कहा: 'इस व्यक्ति को तुम्हारे लिए बशिप नयिुक्त कयिा जाए।'

पवत्रि शहीदों जुवेनाल और मैक्समिस का स्मरणोत्सव

5 सतिंबर को स्मरण कयिा जाता है

पवत्रि शहीदों जुवेनटिस और मैक्समिस, जो सैनकि थे, ने रोमन सम्राट जूलयिन अपोस्टेट के शासनकाल में यातनाएँ भोगीं, जनिकी सेवा में वे ढाल-वाहक के रूप में कार्यरत थे। एक अवसर पर, जूलयिन, अंतीयक आकर, बाजार में बकि्री के लिए रखे गए सभी भोजन और पेय पर मूर्तपिूजक बलदिानों के पानी का छड़िकाव कर दयिा, ताकि इस प्रकार वह ईसाइयों को अपने अधर्मी बलदिानों में भागीदार बना सके। उस समय, मसीह के ये दो सेवक, अन्य सैनकिों के साथ एक भोज में शामलि होते हुए, उन्होंने दुख के साथ उन से राजा के अधर्म के वषिय में बात की और बेबीलोन में एक बार बोले गए तीन पवत्रि युवकों के वचनों को दोहराया: *'और उसने हमें नरि्दयी शत्रुओं, सबसे घृणति धर्मत्यागयिों, और पृथ्वी पर सबसे अन्यायी और दुष्ट राजा के हाथ में सौंप दयिा है'* (दानयि्येल 3:32)।

अगली सुबह, उनके साथ भोजन करने वालों में से एक ने ये शब्द राजा को बता दिए।

तब राजा ने पवत्रि योद्धाओं को बुलाया और पूछा:

'तुमने कल भोज में क्या कहा था?'

उन्होंने सत्य कहा और, वही शब्द दोहराते हुए, राजा की नदिा की और उसे उसके अधर्मी धर्मत्याग के लिए फटकारा।

राजा क्रोध से आग-बबूला हो गया, और उसने पहले तो उन्हें बेरहमी से पटिवाकर जेल में डालने का आदेश दयिा; फरि, आधी रात को, उसने एक जल्लाद को कालकोठरी में भेजा, जसिने जेल की अँधेरी में उन्हें मौत के घाट उतार दयिा।

19 सतिंबर

6 सतिंबर (पुराने कैलेंडर के अनुसार)

चोने में संत माइकल महादूत के चमत्कार का स्मरणोत्सव

6 सतिंबर को स्मरणोत्सव

बोरसि के अवशेषों के बगल में दफनाया गया। 1072 में, पवत्रि राजकुमारों के सम्मान में एक पर्व दविस स्थापति कयिा गया। 1240 में मंगोल खान बटू द्वारा कीव पर आक्रमण के दौरान उनके अवशेष खो गए थे।

[6073] जस्टनियिन महान – प्रसद्धि बाइजेंटाइन सम्राट, जन्होंने 527 से 565 तक शासन कयिा।

[6074] अफरि या अफरि का शहर अफरि नदी के मुहाने पर स्थति था, जहाँ यह मार्मारा सागर में मलिती है और इसे पोरोस के नाम से भी जाना जाता था; यह कॉन्स्टेंटनिोपल से 24,000 परस (paces) की दूरी पर था।

फ्राइजयिाई शहर कोलोसाई[6075] में, हएिरापोलसि[6076] शहर के पास, एक चर्च था जो संत माइकल द आर्कएन्जेल को समर्पति था और यह चमत्कारी पानी के एक झरने के ऊपर स्थति था। बीमारों को इस झरने के पानी से कई बीमारयिों से ठीक होने का आशीर्वाद मलिा – यहाँ तक कि सलिोम के पोखरी[6077] से भी अधकि। उस तालाब पर, प्रभु का स्वर्गदूत पानी को हलिाने के लएि साल में केवल एक बार उतरता था, जबकि यहाँ स्वर्गदूतों के मुखयिा का अनुग्रह सर्वदा उपस्थति था। वहाँ, पानी हलिने के बाद तालाब में प्रवेश करने वाला केवल पहला व्यक्ति ही चंगा होता था, लेकनि यहाँ, जो भी वशि्वास के साथ आए—चाहे पहला हो या आखरिी—वे सभी स्वास्थ्यलाभ कर गए। वहाँ, बीमारों के लएि प्रतीक्षा कक्षों की आवश्यकता होती थी, जो चंगा होने के लएि लंबा समय तक प्रतीक्षा करते थे, क्योंकि कुछ को तो 38 वर्षों के बाद ही स्वास्थ्य लाभ मलिा; यहाँ, हालाँकि, एक ही दनि में, या यहाँ तक कि एक ही घंटे में, बीमार व्यक्ति को स्वास्थ्य लाभ हो जाता था। इस झरने की उत्पत्ति इस प्रकार बताई गई है।

जब संपूर्ण ब्रह्मांड मूर्तपिूजक बहुदेववाद के अंधकार में डूबा हुआ था और लोग सृष्टकिर्ता के बजाय प्राणयिों की पूजा करते थे – उस समय, हएिरापोलसि में, मूर्तपिूजकों ने एक वशिाल और भयानक इचडिना[6078] की पूजा की, और पूरा देश, दैवीय भ्रम से अंधा होकर, इसकी पूजा करता था। अधर्मी लोगों ने इस इचडिना के सम्मान में एक मंदरि बनाया, जहाँ उन्होंने उसे रखा और अनेक प्रकार के बलदिान चढ़ाकर इस वषिैले प्राणी को खलिाया, जसिने इतने लोगों को हानि पहुँचाई थी। एकमात्र सच्चे ईश्वर ने, अपनी ज्ञान की ज्योति से संसार को प्रबुद्ध करने और भटक गए लोगों को सच्चे मार्ग पर लाने की इच्छा से, अपने पवत्रि शष्यिों और प्रेरतिों को सभी देशों में सभी लोगों को सुसमाचार का प्रचार करने के लएि भेजा। प्रेरतिों में से दो – संत जॉन द थयिोलोजयिन और संत फलिपि – एक एफेसस[6079] गए और दूसरे हएिरापोलसि, जहाँ उन्होंने मसीह के सुसमाचार का प्रचार करने में परश्रिम कयिा। उस समय, एफेसस में प्रसद्धि मूर्तपिूजक देवी आर्टेमसि[6080] को समर्पति एक भव्य मंदरि था। इस देवी के पुरोहतिों और पूजकों के वरिुद्ध आध्यात्मकि तलवार – परमेश्वर के वचन – से लैस, संत जॉन द थयिोलोजयिन ने उन पर वजिय प्राप्त की: मसीह के नाम की शक्ति से, उन्होंने मंदरि को नष्ट कर दयिा और मूर्ति को धूल में मलिा दयिा, इस प्रकार पूरे शहर को पवत्रि वशि्वास की ओर ले आए। आर्टमिसि की मूर्ति के वनिाश के बाद, संत जॉन द थयिोलोजयिन अपने साथी कार्यकर्ता, संत फलिपि प्रेरति की सहायता के लएि एफेसस से हेरापोलसि के लएि रवाना हुए; उस समय संत बार्थोलोम्यू प्रेरति और फलिपि की बहन मारयिामयिा भी वहाँ थे। उनके साथ मलिकर, संत जॉन द थयिोलोजयिन ने मानव जाति के मोक्ष के लएि कार्य कयिा। सबसे पहले, वे उस वषिैले साँप का मुकाबला करने नकिले, जसिे पागल लोग बलदिान चढ़ा रहे थे, और इस प्राणी की एक देवता के रूप में पूजा कर रहे थे। अपनी प्रार्थनाओं के द्वारा, उन्होंने इस वषिैले साँप को मार डाला और उसकी पूजा करने वालों को एकमात्र

[6075] कोलोसाई – फ्रीजयिा के दक्षणि-पश्चमिी भाग में, लाओदकियिा और हेरापोलसि के पास, लकिस नदी पर स्थति एक शहर। नीरो के शासन के 10वें वर्ष (64 ईस्वी) में, कोलोसाई एक भूकंप से नष्ट हो गया था; बाद में इसे फरि से बनाया गया, लेकनि यह कभी भी अपनी पूर्व महमिा को पुनःप्राप्त नहीं कर सका। बाद में इसे कोनी के नाम से जाना गया। आज यह माउंट कोनास की ढलानों में से एक पर एक छोटा सा गाँव है, जसिके पास प्राचीन शहर कोलोसाए के खंडहर आज भी मौजूद हैं। संत पॉल का एक पत्र इस शहर के नविासयिों के लएि लखिा गया था। – संत माइकल द आर्कएंजल का चर्च इस शहर में प्राचीन काल से मौजूद है।

[6076] हएिरापोलसि (ग्रीक में 'पवत्रि शहर' के लएि) – एशयिा माइनर में, फ्रीजयिा में एक शहर। यह कोलोसा और लाओदकियिा के शहरों से बहुत दूर नहीं, लगभग मींडर और लाइक्स नदयिों के संगम पर स्थति था। इस शहर का आधुनकि नाम रंबुक-कालेसी ('कपास का शहर') है। एक समय में हएिरापोलसि का एक बशिप था जो 325 में नीकयिा की पहली परषिद में शामलि हुआ था। संयोग से, जैसा कि हम यहाँ प्रस्तुत ववरिण से देखते हैं, हएिरापोलसि में संत फलिपि प्रेरति ने उपदेश दयिा और शहीद होकर अपनी मृत्यु पाई।

[6077] सलिोम – सलिोम का झरना या तालाब, और उसके बगल में बना सलिोम का स्नानागार – यरूशलेम के दक्षणि-पूर्वी हस्सि में, मउंट सयिोन और मउंट मोरयिाह के तल पर स्थति थे। सलिोम के पोखरे का उल्लेख पवत्रि शास्त्र में तीन या चार बार कयिा गया है, जसिमें यूहन्ना और लूका की सुसमाचार भी शामलि हैं। (देखें यूहन्ना 5 और 9:7–11; लूका 13:4)।

[6078] एकडिना एक जहरीली साँप है, जसिकी लंबाई लगभग 12 फीट या उससे अधकि होती है। इसका एक काटा अत्यंत खतरनाक होता है और, अधकिांश मामलों में, इससे त्वरति और अपरहिार्य मृत्यु हो जाती है। पवत्रि शास्त्र में, साँपों को आम तौर पर भयानक और खतरनाक प्राणयिों के रूप में चत्रिति कयिा गया है, जनिसे मनुष्य को लगातार शत्रुता बनाए रखनी चाहएि। वे उन सभी चीजों के प्रतीक के रूप में काम करते हैं, जो अपने स्वभाव से ही हानि और वनिाश का कारण बनती हैं (उपदेशक 10:11; नीतविचन 21:31–33; मत्ती 7:10)।

[6079] एजयिन सागर पर स्थति एफ़सिुस, एशयिा माइनर का एक महत्वपूर्ण व्यापारकि शहर था।

[6080] आर्टमिसि – जन्हिें डायना के नाम से भी जाना जाता था – यूनानयिों के बीच एक प्रसद्धि मूर्तपिूजक देवी थीं; वह चंद्रमा का प्रतीक थीं और उन्हें जंगलों तथा शकिार की संरक्षक माना जाता था। इस देवी की पूजा बड़े वैभव और धूमधाम से की जाती थी; उन्हें वशिेष रूप से एफेसस शहर में पूजति कयिा जाता था।

सच्चे ईश्वर, जिसने स्वर्ग और पृथ्वी की सृष्टि की, के प्रति परिवर्तित किया। 'चेरोटोपा' नामक एक स्थान पर खड़े होकर, उन्होंने भविष्यवाणी की कि वहाँ परमेश्वर का अनुग्रह चमकेगा, कि इस स्थान पर स्वर्ग के सैन्यों के सेनापति, महादूत सेंट माइकल, का आगमन होगा, और वहाँ चमत्कार होंगे। यह सब जल्द ही घटित हुआ। जब संत जॉन द थियोलोजियन ने अन्य शहरों में सुसमाचार का प्रचार करने के लिए प्रस्थान किया, और संत फिलिप प्रेरित ने अधर्मी लोगों के हाथों दुख उठाया, जबकि बार्थोलोम्यू और मरियाम्निया भी अन्य देशों में अपने-अपने रास्ते चले गए - तब, ठीक उसी स्थान पर, पवित्र प्रेरित की भविष्यवाणी के अनुसार, चमत्कारिक जल प्रकट हुआ। इस प्रकार धर्मग्रंथ के वचन पूरे हुए: *'मरुभूमि में पानी फूटेगा, और सूने प्रदेश में नदियाँ बहेंगी। मृगतृष्णा एक सरोवर बन जाएगी, और सूखी भूमि में जल के सोते उभरेंगे; जहाँ सियार रहते और विश्राम करते हैं, वहाँ सरकंडों और खरपतवारों के लिए एक स्थान होगा।' और वहाँ एक बड़ा मार्ग होगा, और उस मार्ग का नाम 'पवित्र मार्ग' होगा*[6081] (यशायाह 35:6–8)। केवल विश्वासियों ने ही नहीं बल्कि अविश्वासियों ने भी इस झरने पर आना शुरू कर दिया, क्योंकि वहां होने वाले चमत्कार, एक गरजती तुरही की तरह, सभी को वहां बुला रहे थे; और इस झरने से जो भी पिए और नहाए, वे अपनी बीमारियों से चंगे हो गए, और कई लोगों ने, अपना स्वास्थ्य पुनःप्राप्त कर, पवित्र त्रिमूर्ति के नाम पर बपतिस्मा लिया।

उस समय, लाओदीकिया[6082] में, एक यूनानी व्यक्ति रहता था जिसकी एकमात्र बेटी जन्म से मूक थी। उसके पिता इस बात से बहुत दुखी थे और उन्होंने उसे उसकी मूकता से ठीक करने के लिए हर संभव प्रयास किया; लेकिन, इस संबंध में कुछ भी हासिल न कर पाने के कारण, वह गहरे निराश में पड़ गया। एक रात, जब वह अपने बिस्तर पर सो रहा था, तो उसने एक दर्शन में सूर्य की तरह चमकते हुए परमेश्वर के एक स्वर्गदूत को देखा। यह दर्शन उसे इसलिए नहीं मिला क्योंकि वह इसके योग्य था, बल्कि इसलिए मिला ताकि वह इसके माध्यम से सत्य के ज्ञान को प्राप्त करे और दूसरों को भी अपने साथ परमेश्वर की ओर ले जाए। देवदूत को देखकर वह डर गया, लेकिन उसी समय उसने उससे ये शब्द सुने:

'यदि तुम चाहते हो कि तुम्हारी बेटी की जीभ खुल जाए, तो उसे मेरे झरने पर लाओ, जो हेरापोलिस के पास "चेरोटोप" में स्थित है; उसे इस झरने का पानी पिलाओ, और तब तुम परमेश्वर की महिमा देखोगे।'

जब वह जागा, तो वह आदमी अपने देखे हुए से चकित हो गया और, उससे कहे गए शब्दों पर विश्वास करके, तुरंत अपनी बेटी को लेकर चमत्कारी पानी की ओर दौड़ पड़ा। वहाँ उसने बहुत से लोगों को यह पानी निकालते, उसमें बपतिस्मा लेते और अपनी बीमारियों से चंगा होते हुए पाया। उसने उनसे पूछा:

'इस पानी में स्नान करते समय आप किसका आह्वान कर रहे हैं?'

उन्होंने उत्तर दिया:

'हम पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम का आह्वान करते हैं; हम सहायता के लिए महादूत सेंट माइकल का भी आह्वान करते हैं।'

तब उस आदमी ने स्वर्ग की ओर अपनी आँखें उठाकर और अपने हाथ उठाकर कहा:

'पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा – हे ईसाई देवता – हम पर दया करें! संत माइकल, ईश्वर के सेवक, मेरी बेटी की मदद करो और उसे चंगा करो!'

इतना कहकर, उसने झरने से पानी निकाला और, आस्था के साथ, उसे अपनी बेटी के मुँह में डाल दिया; तुरंत ही उसकी जीभ, जो गूंगी होने के कारण बँधी हुई थी, परमेश्वर की महिमा करने के लिए खुल गई, और वह स्पष्ट रूप से बोलने लगी:

'हे ईसाई ईश्वर, मुझ पर दया करो! संत माइकल, मेरी मदद करो!'

उपस्थित सभी लोग ईश्वर की शक्ति से चकित रह गए और, पवित्र त्रिमूर्ति की महिमा करते हुए, पवित्र महादूत माइकल की सहायता की प्रशंसा की। ग्रीक व्यक्ति ने, यह देखकर कि उसकी बेटी चंगी हो गई है, अत्यधिक प्रसन्नता

[6081] यहाँ, भविष्यवक्ता यशायाह उन महान परिणामों की ओर इशारा करते हैं जो उद्धारकर्ता के संसार में आगमन के साथ आएँगे। तब 'मरुभूमि में नदियाँ बहेंगी, और सूखी भूमि में एक घाटी दिखाई देगी', और फिर 'बाँझ भूमि झीलों में बदल जाएगी, और सूखी भूमि में पानी का एक सोता फूटेगा: (जिसमें) पक्षी वहाँ आनंद मनाएँगे, सरकंडे उगेंगे, और वहाँ घास के मैदान होंगे'।

[6082] लाओदिकिया फ्राइजिया का प्रमुख शहर था, जो लिकस नदी पर, कोलोसाए शहर के पास, इसके दक्षिण-पश्चिम में स्थित था। लाओदिकिया की कलीसिया एशिया माइनर की सात प्रसिद्ध कलीसियाओं में से एक थी, जिसका उल्लेख प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में किया गया है। चर्च के इतिहास में, लाओदिकिया वहां आयोजित परिषद (लगभग 365 ईस्वी) के लिए जानी जाती है, जिसमें पूजा के क्रम, पुरोहितों और आम लोगों के नैतिक आचरण, और उस समय की विभिन्न त्रुटियों के संबंध में विस्तृत नियम निर्धारित किए गए थे।

व्यक्त की और तुरंत बपतस्मिा ले लयिा, साथ ही उसकी बेटी और उसके साथ आए उसके पूरे परविार ने भी बपतस्मिा लयिा। अपनी कृतज्ञता के प्रतीक स्वरूप, उसने स्वर्गीय सेनाओं के सेनापति, सेंट माइकल द आर्कएंजेल के नाम पर उस चमत्कारी झरने के ऊपर एक सुंदर चर्च का नर्मिाण कयिा। इस चर्च को बड़ी भव्यता से सजाने और उसमें लंबे समय तक प्रार्थना करने के बाद, वह ग्रीक अपने घर लौट गया।

चर्च के बनने के 90वें वर्ष में, हायरैपोलसि से अर्कप्पिस नाम का एक दस वर्षीय लड़का वहाँ आया; उसके माता-पतिा धर्मनष्ठि ईसाई थे और उन्होंने अपने बेटे का पालन-पोषण धर्मपरायणता से कयिा था। अर्कप्पिस ने सेंट माइकल द आर्कएन्जेल के चर्च में नविास कर लयिा, और वहाँ एक सेक्सटन (चर्च का नौकर) के रूप में सेवा करने लगा। इस लड़के ने नम्निलखिति नयिम के अनुसार जीन ना शुरू कर दयिा: जब से वह उस चर्च में ईश्वर की सेवा करते हुए बस गया, उसने सांसारकि भोजन या पेय का स्वाद तक नहीं चखा: न तो मांस, न ही शराब, और न ही रोटी खाई, बल्कि केवल जंगली साग-सब्जयिों पर जीवति रहा, जन्हिें वह स्वयं इकट्ठा करता और पकाता था; वह सप्ताह में केवल एक बार ही भोजन करता था, और वह भी बनिा नमक के; उसका एकमात्र पेय थोड़ी मात्रा में पानी था। इस प्रकार के संयम के द्वारा, इस युवक ने अपने शरीर को वश में कयिा, और अपने युवा काल से लेकर वृद्धावस्था तक इन सद्गुणों में दृढ़ रहा, अपनी पूरी आत्मा से ईश्वर के साथ एक हो गया और अमर प्राणयिों के जीवन का अनुकरण कयिा। उसके कपड़े बहुत ही मामूली थे: उसके पास केवल दो बोरी के वस्त्र थे[6083] , जनिमें से एक वह अपने शरीर पर पहनता था, जबकि दूसरे का उपयोग वह अपने बस्तिर को ढकने के लिए करता था, जो तीखे पत्थरों से बछिा होता था। वह उस पर एक बोरा बछिा देता था ताकि उसके घर में प्रवेश करने वाले यह न देख सकें कि वह नुकीले पत्थरों पर सोता है; कांटों से भरा एक छोटा थैला उसका तकयिा था। इस धन्य तपस्वी का बस्तिर ऐसा था। जहाँ तक उसकी नींद और आराम की बात है, वह इस प्रकार थी: जब उसे नींद की आवश्यकता महसूस होती, तो वह पत्थरों और तीखे कांटों पर लेट जाता - ताकि यह नींद से अधकि जागने जैसा हो, और उसका आराम वश्राम की तुलना में अधकि यातना हो। क्योंकि कठोर पत्थरों पर लेटने में शरीर को क्या आराम मलिता है, और जब कसिी का सरि तीखे कांटों पर टकिा हो तो वह कसि प्रकार की नींद है? हर साल, अर्चप्पिस अपने वस्त्र बदल देता था: वह अपने बस्तिर को उस बोरी से ढक देता था जो उसने अपने शरीर पर पहनी होती, और जो बस्तिर पर होती थी उसे पहन लेता था; एक साल बीत जाने के बाद, वह उन बोरी को फरि से बदल देता था। इस प्रकार, दनि-रात कोई वश्राम न पाते हुए, उन्होंने अपने शरीर को कष्ट दयिा और शत्रु के जालों से अपनी आत्मा की रक्षा की। जब वे जीवन के इस संकीर्ण और दुखद मार्ग पर चल रहे थे, तो धन्य अर्चप्पिस ने ईश्वर को पुकारते हुए प्रार्थना की:

हे प्रभु, मुझे पृथ्वी पर व्यर्थ के सुखों में आनंद लेने न देना; मेरी आँखें इस संसार के कसिी भी आशीर्वाद को न देखें, और इस क्षणकि जीवन में मेरे लिए कोई सांत्वना न हो। हे प्रभु, मेरी आँखों को आध्यात्मकि आँसुओं से भर दे; मुझे हृदय में पश्चाताप का वरदान दे; और मेरे मार्गों को सीधा कर, ताकि मैं अपने दनिों के अंत तक अपने शरीर को दंडति कर सकूँ और उसे आत्मा के अधीन कर सकूँ। मट्टिी से बने मेरे इस नश्वर शरीर से मुझे क्या लाभ होगा? यह उस फूल के समान है जो सुबह खलिता है और शाम तक मुरझा जाता है! परन्तु हे प्रभु, मुझे यह अनुग्रह दे कि मैं आत्मा और अनंत जीवन के लिए लाभदायक कार्यों में लग जाऊँ।

इस प्रकार प्रार्थना करते और स्वयं को उपदेश देते हुए, धन्य अर्चप्पिस परमेश्वर के एक स्वर्गदूत के समान हो गए, जो पृथ्वी पर स्वर्गीय जीवन व्यतीत कर रहे थे। और संत न केवल अपनी ही मुक्ति के लिए, बल्कि दूसरों की मुक्ति के लिए भी चतिति थे, क्योंकि उन्होंने कई अवश्विासयिों को मसीह के प्रति परविर्तति कयिा और उनका बपतस्मिा दयिा। ईश्वर-वहिीन यूनानयिों ने यह सब देखकर धन्य अर्चप्पिस से ईर्ष्या की और पवत्रि झरने से प्रकट हुए महमिामय चमत्कारों को सहन न कर सके, और वहाँ रहने वाले इस धर्मी मनुष्य से घृणा करने लगे। वे अक्सर संत अर्चप्पिस पर हमला करते थे, उन्हें उनके बालों और दाढ़ी से खींचते थे; वे उन्हें ज़मीन पर फेंक देते, पैरों तले कुचलते, और वभिन्नि यातनाएँ देने के बाद, उन्हें वहाँ से भगा देते थे। लेकनि, ईadamant[6084] की तरह आत्मा में दृढ़ रहते हुए, धन्य अर्चप्पिस ने मूर्तपिूजकों के हाथों यह सब साहसपूर्वक सहन कयिा और पवत्रि मंदरि से दूर नहीं हुआ, अपने हृदय की पवत्रिता और कोमलता में परमेश्वर की सेवा करते हुए और मानव आत्माओं के उद्धार की परवाह करते हुए।

एक दनि, अधर्मी यूनानयिों ने बड़ी संख्या में इकट्ठा होकर, आपस में कहा:

[6083] 'व्रेतशि' मोटे कपड़े या रस्सी से बनी एक बोरी है – एक फटी-पुरानी पोशाक, एक बालों वाली कमीज़।

[6084] एडामेंट (हीरा) – एक ऐसा पत्थर जो इतना कठोर होता है कि वह स्वयं को नुकसान पहुँचाए बनिा अन्य पत्थरों को खरोंच सकता है। धार्मकि साहत्यि में, यह नाम चर्च के कई फादरों और शकि्षकों को दयिा गया है जो अपने वश्विास या चरत्रि की दृढ़ता के लिए प्रसद्धि थे।

'यदि हम इस झरने को मिट्टी से नहीं ढकते और उन फटेहाल कपड़ों वाले आदमी को नहीं मारते, तो वहाँ ठीक होने वालों के कारण हमारे सभी देवता पूरी तरह से अपमानित हो जाएँगे।'

तब वे उस चमत्कारी जल को मिट्टी से ढकने और निर्दोष व्यक्ति - धन्य अर्चिपस को मारने के लिए निकल पड़े। वे दो ओर से पवित्र स्थान पर पहुँचे - उनमें से कुछ चर्च और झरने की ओर दौड़े, जबकि अन्य धन्य अर्चिपस को मारने के लिए उनके निवास की ओर भागे। लेकिन प्रभु, जो धर्मी लोगों की तकदीर की परवाह करते हैं और उन्हें पापियों के हाथों नहीं सौंपते, ने अपने सेवक को उन हत्यारों से बचाया: अचानक उनके हाथ लकवाग्रस्त हो गए, जिससे वे उस पूजनीय व्यक्ति को छू भी नहीं सके। जहाँ तक उस झरने का सवाल है, एक असाधारण चमत्कार हुआ: जैसे ही दुष्ट उसके पास पहुँचे, पानी से एक अग्नि की लपट फूटी और वह अन्यायी लोगों पर टूट पड़ी, और उन्हें झरने से बहुत दूर भगा दिया; इस प्रकार ये अन्यायी लोग झरने और पूजनीय अर्चिपस से लज्जित होकर भाग गए, और उन्होंने उन्हें कोई हानि नहीं पहुँचाई। हालाँकि, इस चमत्कार से वे विचलित नहीं हुए: दाँत पीसते हुए, वे यह घमंड करते रहे कि वे उस झरने, चर्च और चर्च के मंत्री को नष्ट कर देंगे। उस स्थान पर क्रिसोस नामक एक नदी थी, जो चर्च के बाईं ओर से बहती थी। अधर्मी लोगों ने इसे पवित्र स्थल पर मोड़ने का निश्चय किया, ताकि पवित्र झरना, नदी के पानी के साथ मिश्रित होकर, अपनी चमत्कारी शक्ति खो दे। लेकिन जब उन्होंने अपनी दुष्ट योजना को अंजाम देना शुरू किया और नदी का बहाव झरने की ओर मोड़ दिया ताकि वह उसे बाढ़ में डुबो दे, तो नदी ने, ईश्वर की आज्ञा से, अपने बहाव का मार्ग बदल दिया और चर्च के दाहिनी ओर से बहने लगी। और एक बार फिर, दुष्ट लोग शर्मिंदगी के साथ घर लौट गए।

वहाँ दो अन्य नदियाँ भी थीं, जो पूर्व से बहती हुई तीन स्टेडियम की दूरी पर उस पवित्र स्थान के समीप आ रही थीं; एक नदी का नाम लिकोकापर था, और दूसरी का नाम कुफ़ोस था। ये दोनों नदियाँ एक बड़े पहाड़ की तलहटी में मिलकर एक साथ हो गईं और दाईं ओर मुड़कर लिकिया की भूमि में बह गईं[6085] । सब-चतुर शैतान ने अधर्मी लोगों के मन में एक दुष्ट योजना डाली: उसने उन्हें उन दोनों नदियों के पानी को चमत्कारिक स्थल की ओर मोड़ना सिखाया, जिसके परिणामस्वरूप पवित्र महादूत माइकल का चर्च नष्ट हो जाना था, और पानी पवित्र झरने में बाढ़ लाकर संत अर्चिपस को डुबा देना था। हालाँकि, उस इलाके की बनावट पानी को वहाँ मोड़ने के लिए बहुत उपयुक्त थी, क्योंकि नदियाँ पहाड़ की चोटी से नीचे बहती थीं, जबकि चर्च पहाड़ की तलहटी में स्थित था। साजिश रचने के बाद, दुष्ट लोग सभी शहरों से बड़ी संख्या में लाओडिसिया गाँव में आए और चर्च की ओर चल पड़े। चर्च के वेदी के पास एक विशाल पत्थर पड़ा था; उन्होंने इस पत्थर से एक गहरी और चौड़ी खाई खोदनी शुरू की जो उस पहाड़ तक जाती थी जिसके नीचे नदियाँ मिलती थीं। फिर, बहुत मेहनत से, उन्होंने एक नहर खोदी जिसके माध्यम से चर्च पर पानी डाला जा सके, और उन्होंने उन नदियों पर बाँध बना दिया ताकि अधिक पानी जमा हो सके; दस दिनों तक दुष्टों ने इस व्यर्थ प्रयास में परिश्रम किया। दुष्टों को ऐसा करते देखकर, पूजनीय आर्किपिस गिरिजाघर में ज़मीन पर गिर पड़े और आँसुओं के साथ ईश्वर से प्रार्थना की, उन्होंने पवित्र स्थान को बाढ़ से बचाने और प्रभु के मंदिर को नष्ट करने की कोशिश कर रहे दुश्मनों को प्रसन्न न होने देने के लिए, स्वर्गदूतों के सरदार सेंट माइकल के शीघ्र हस्तक्षेप का आह्वान किया।

धन्य अर्चिपस ने कहा, 'मैं इस स्थान को नहीं छोड़ूँगा, मैं चर्च को नहीं छोड़ूँगा, परन्तु यदि प्रभु इस पवित्र स्थान को बाढ़ में डूबने दें तो मैं यहीं मर जाऊँगा।'

दस दिन बाद, जब पानी काफी बढ़ गया था, तो दुष्ट लोगों ने उस जगह को खोद दिया जिससे पानी उनके द्वारा तैयार किए गए चैनल के साथ बहने वाला था, और रात के पहले घंटे में उन्होंने पवित्र मंदिर पर पानी छोड़ दिया; वे खुद वहां से हट गए और बाईं ओर ऊँची जमीन पर अपना स्थान ले लिया, ताकि वे पवित्र स्थान में बाढ़ को देख सकें। तब पानी, नीचे की ओर तेज़ी से बहते हुए, गरज की तरह गूँज उठा। आदरणीय अर्चिपस, चर्च में प्रार्थना करते समय, पानी की गर्जना सुनकर ईश्वर और महादूत सेंट माइकल से और भी अधिक भक्तिपूर्वक प्रार्थना करने लगे, कि यह पवित्र स्थान बाढ़ से न बहे और दुष्ट शत्रु न तो प्रसन्न हों बल्कि लज्जित हों; और यह कि प्रभु का नाम महिमामय हो, और स्वर्गदूतों की शक्ति और मध्यस्थता की महिमा हो। और उन्होंने दाऊद का एक भजन गाया:

[6085] लिसिया – एशिया माइनर का एक प्रांत। इसकी उत्तरी सीमा पिसिडिया, पूर्वी सीमा पम्फिलिया, दक्षिणी सीमा पम्फिलियाई सागर या सामान्यतः भूमध्य सागर, और पश्चिमी सीमा कैरिया से मिलती है। लिसिया के शहरों में, पवित्र शास्त्र में पतारा और मायरा का उल्लेख मिलता है। प्रेरित पौलुस यरूशलेम की अपनी तीसरी यात्रा से लौटते समय पतारा में थोड़ी देर के लिए रुके थे (प्रेरितों के काम 21:1)। पतरा और मयरा के शहर संत निकोलस, मयरा के आर्चबिशप की कहानी के माध्यम से विश्वासियों के लिए विशेष रूप से प्रसिद्ध हैं। लिकिया में पतरा उनका जन्मस्थान था, जबकि उन्होंने मयरा में बिशप के रूप में सेवा की।

'हे प्रभु, नदियाँ अपना स्वर उठाती हैं; नदियाँ अपनी लहरें उठाती हैं। परन्तु बहुत जल के गर्जन से भी महान, समुद्र की प्रबल लहरों से भी महान, है ऊँचे पर प्रभु। आपके प्रगटवचन निस्संदेह सत्य हैं। हे प्रभु, पवित्रता सदा-सदा के लिए आपके घर की है' (भजन संहिता 92:3–5)।

जैसे ही धन्य अर्चिपस ये शब्द गा रहे थे, उन्होंने एक आवाज़ सुनी जिसने उन्हें चर्च छोड़ने का आदेश दिया। चर्च से बाहर निकलते ही, उसने ईसाई जाति के महान मध्यस्थ और संरक्षक – आर्कएन्जेल सेंट माइकल – को एक सुंदर और तेजस्वी पुरुष के रूप में देखा, ठीक वैसे ही जैसे वह एक बार भविष्यवक्ता दानियेल के सामने प्रकट हुए थे (दानियेल 10:1–21)। धन्य अर्कपिप्स, उन्हें देख न पाकर, डर के मारे जमीन पर गिर पड़े।

तब महादूत ने उससे कहा:

'डरो मत—उठो, मेरे पास आओ, और तुम इन जलों पर परमेश्वर की सामर्थ्य देखोगे।'

धन्य अर्चिपस उठे और, दिव्य सेनाओं के सेनापति के पास भय के साथ आकर, आज्ञा के अनुसार उनके बाईं ओर खड़े हो गए; उसी क्षण उन्होंने एक अग्नि का स्तंभ पृथ्वी से स्वर्ग की ओर उठता हुआ देखा। जब पानी पास आया, तो अर्चिस्ट्रेटेगोस ने अपना दाहिना हाथ उठाया और पानी की सतह पर क्रॉस का चिह्न बनाकर कहा:

'यहीं रुक जाओ!'

और तुरंत ही जल पीछे हट गया। इस प्रकार भविष्यवाणी के वचन पूरे हुए: *'जल ने तुझे देखा और डर गया'* (भजन संहिता 76:17)। नदियाँ पत्थर की दीवार की तरह स्थिर खड़ी रहीं और एक ऊँचे पहाड़ की तरह ऊँची उठ गईं। इसके बाद, महादूत ने मंदिर की ओर मुड़कर, वेदी के पास स्थित एक विशाल पत्थर को अपनी लाठी से मारा और उस पर क्रॉस का चिह्न बनाया। तुरंत गरज के साथ एक प्रचंड गड़गड़ाहट हुई, पृथ्वी कांप उठी, और पत्थर दो भागों में टूट गया, जिससे उसके भीतर एक विशाल खाई बन गई। इस पर, महादूत माइकल ने निम्नलिखित शब्द बोले:

'यहाँ हर विरोधी शक्ति निष्ट हो जाए, और जो भी विश्वास के साथ यहाँ आए, वह हर बुराई से मुक्त हो!'

यह कहकर, उन्होंने आर्चिपस को दाहिनी ओर जाने का आदेश दिया। जब आदरणीय वहाँ पहुँच गए, तो संत माइकल ने पानी से ज़ोर से पुकारा:

'इस घाटी में बह जाओ!'

और तुरंत ही पानी शोर मचाते हुए चट्टानी दरार में घुस गया और तब से चट्टान के भीतर इसी रास्ते से बहता आ रहा है। बाईं ओर खड़े दुश्मन, जो पवित्र मंदिर को बाढ़ में डूबा हुआ देखने की उम्मीद कर रहे थे, डर के मारे पत्थर के हो गए। अपनी कलीसिया और आदरणीय अर्कपिप्स को बाढ़ से बचाने के बाद, महादूत सेंट माइकल स्वर्ग में आरोहण कर गए, और धन्य अर्कपिप्स ने उस गौरवशाली चमत्कार के लिए परमेश्वर का धन्यवाद किया, और महान रक्षक, महादूत माइकल की उनकी शक्तिशाली मध्यस्थता के लिए स्तुति की। तब सभी विरोधी लज्जित हुए, जबकि विश्वासियों में महान आनंद भर गया; और, दैवीय चर्च और चमत्कारी झरने पर आकर, उन्होंने, पूजनीय आर्चिप्स के साथ मिलकर, ईश्वर की स्तुति की। उस समय से यह आदेश दिया गया कि जिस दिन स्वर्गदूत के प्रकट होने से यह चमत्कार हुआ था, उस दिन का उत्सव मनाया जाए। आदरणीय अर्चिपस उस स्थान पर कई वर्षों तक रहे, उन्होंने ईश्वर की निष्ठापूर्वक सेवा की, और 70 वर्ष की आयु में शांतिपूर्वक निधन कर गए। विश्वासियों ने उन्हें उसी स्थान पर दफनाया, जिसे उपरोक्त चमत्कार के कारण 'खोनी' कहा जाता है, जिसका अर्थ है 'डूबना'[6086] , क्योंकि वहाँ पानी चट्टान में समा गया था।

ईसाई लोगों के कल्याणकर्ता, संत माइकल महादूत के अन्य चमत्कारों का उल्लेख करना भी उचित है।

एड्रियाटिक सागर और गारगन नामक पहाड़[6087] के बीच सिपोंटम नामक शहर स्थित है, जो पहाड़ से 12,000 फीट की ऊँचाई पर है[6088] । उस शहर में एक अमीर आदमी रहता था जिसके झुंड माउंट गारगन के नीचे चरते थे। एक दिन, उसकी एक साँड़, झुंड से भटककर, लापता हो गई। उसने अपने नौकरों के साथ बहुत देर तक इस बैल को खोजा और अंततः उसे पहाड़ की चोटी पर, एक गुफा के मुहाने पर पाया। खोज से क्रोधित और थका हुआ, उस आदमी ने एक धनुष और तीर उठाया और उसे मारने के इरादे से अपने बैल पर निशाना साधा। अचानक, तीर वापस मुड़ गया और उसे मार गया जिसने उसे छोड़ा था। यह देखकर उसके साथी डर गए और उस गुफा के पास जाने की हिम्मत न करते हुए, शहर लौट आए और

[6086] 'खोनास' (ग्रीक) – एक उद्घाटन, एक खोखलापन, एक दरार।

[6087] गार्गानो मध्य इटली के पूर्वी तट पर स्थित एक चूना पत्थर का पर्वत है। माउंट गार्गानो का उल्लेख प्राचीन ईसा-पूर्व लेखकों जैसे स्ट्रैबो, मेला, वर्जिल और अन्य ने किया है।

[6088] एक फुट दूरी की एक इकाई है; हमारी माप प्रणाली में, यह लगभग 4 वर्शोक्स के बराबर है। 12,000 फुट लगभग 2 वर्स्ट के बराबर होते हैं।

वहाँ जो हुआ था, उसका वर्णन कयिा। यह सुनकर, उस शहर के बशिप ने प्रार्थना में ईश्वर से इस रहस्य को प्रकट करने का अनुरोध कयिा। और इस प्रकार महादूत माइकल एक दर्शन में उसके सामने प्रकट हुए और घोषणा की कि उन्होंने उस स्थान को अपने लिए चुना है, कि वह उसकी रक्षा करते हैं, और वह अक्सर वहाँ आना चाहते हैं और प्रार्थना करने आए लोगों की मदद करना चाहते हैं। बशिप ने लोगों को इस दर्शन के बारे में बताया और पूरे शहर को तीन दनिों तक उपवास करने का आदेश दयिा, जसिके बाद वह अपने पुरोहतिों और सभी लोगों के साथ उस पहाड़ के लिए रवाना हो गए। शखिर पर पहुँचने पर, उन्हें चट्टान में एक संकरी गुफा मलिी; वे अंदर जाने की हम्मित नहीं कर सके, लेकनि प्रवेश द्वार पर एक प्रार्थना अर्पति की। उस समय से, लोग वहाँ ईश्वर और महादूत सेंट माइकल से प्रार्थना करने के लिए अक्सर आने लगे।

एक दनि, नेपोलटिन्स के सेनापति[6089] , जब वे अभी भी अवशि्वासी थे, ने अपनी सेना को इकट्ठा कयिा और अप्रत्याशति रूप से सपिोंटम शहर के पास पहुँचे, जसिका उद्देश्य उसे जीतना और लूटना था। नागरकि बहुत डरे हुए थे। तब बशिप ने उस शहर के नविासयिों को तीन दनि का उपवास रखने और अपने चारों ओर घरि दुश्मनों से मुक्ति के लिए प्रार्थना करने का आदेश दयिा। दुश्मनों द्वारा शहर के अंतमि वनिाश के लिए नरि्धारति दनि की भोर से पहले, स्वर्ग के सेनाओं के कमांडर, आर्कएन्जेल सेंट माइकल, बशिप को एक दर्शन में दखिाई दिए और कहा:

'कल दोपहर 4 बजे, अपने नागरकिों से कहो कि वे हथयिारबंद हों और दुश्मनों का सामना करने के लिए शहर से बाहर नकिलें, और मैं तुम्हारी सहायता के लिए आऊँगा।'

जागने पर, बशिप ने सभी को इस दर्शन के बारे में बताया और ईश्वर द्वारा भवषि्यवाणी की गई मूर्तपिूजकों पर वजिय के समाचार से उन्हें अत्यधकि हर्षति कयिा। जब दनि का चौथा घंटा आया, तो गड़गड़ाहट की एक तेज आवाज़ सुनाई दी, और ऊपर देखने पर, सभी ने माउंट गारगन पर एक बादल को उतरते हुए देखा। उसी समय, ठीक वैसे ही जैसे एक बार सनिाई पर्वत पर (नरि्गमन 19:1-25) आग, धुआं, बजिली और गरज दखिाई दी थी, जसिसे पूरा पर्वत कांप उठा और बादलों से ढक गया। दुश्मनों ने यह देखकर भय से कांप उठे और भाग खड़े हुए; हालाँकि, नागरकिों ने यह महसूस कयिा कि उनके अच्छे रक्षक और शीघ्र मध्यस्थ, महादूत सेंट माइकल, अपनी स्वर्गीय सेनाओं के साथ उनकी सहायता के लिए आए थे, तो उन्होंने शहर के द्वार खोल दिए और दुश्मनों का पीछा कयिा, उन्हें ऐसे गरिा दयिा जैसे वे घास के तने हों; वे उनका पीछा करते रहे, जबकि पवत्रि महादूत माइकल ने उन्हें ऊपर से गरज और बजिली से मारा; उस दनि 600 पुरुष गरज और बजिली से मारे गए। सपिोंटयिम के नागरकिों ने दुश्मनों का पीछा नेपल्स तक कयिा और स्वर्ग के सैन्य दल के सेनापति की मदद से उन्हें हराकर, वजिय प्राप्त कर अपने शहर लौट आए। उस समय से, नेपोलटिन्स ने सर्वशक्तमिान ईश्वर के शक्तशिाली दायें हाथ को जानकर, पवत्रि धर्म को अपना लयिा। जहाँ तक सपिोंटम के नागरकिों का सवाल है, वे अपने बशिप और पुरोहतिों के साथ इकट्ठा हुए, और उस पहाड़ की ओर चल पड़े जहाँ वह भव्य दव्यि दर्शन हुआ था, ताकि वे वहाँ ईश्वर और अपने सहायक, पवत्रि महादूत माइकल, और सभी स्वर्गदूतों को धन्यवाद दे सकें। जब वे उस गुफा के मुहाने पर पहुँचे, तो उन्हें संगमरमर पर एक छोटे मानव पैर का नशिान मलिा, जो दलदली जमीन पर बने नशिान की तरह स्पष्ट रूप से अंकति था। तब उन्होंने एक-दूसरे से कहा:

'देखो, सचमुच पवत्रि महादूत माइकल ने यहाँ अपने आगमन का एक चहि्न छोड़ा है, क्योंकि वह स्वयं यहाँ थे, जो हमें हमारे शत्रुओं से मुक्ति दिला रहे थे।'

वे झुककर उस पदचहि्न को चूमने लगे और एक प्रार्थना सेवा गाने के बाद, इस बात पर प्रसन्न हुए कि उनके पास ऐसा रक्षक और मध्यस्थ है, और उन्होंने ईश्वर का धन्यवाद कयिा। उस स्थान पर उन्होंने संत माइकल महादूत के नाम पर एक चर्च बनाने का नरि्णय लयिा। जब उन्होंने नरि्माण कार्य शुरू कयिा, तो संत माइकल महादूत बशिप के समक्ष एक बार फरि प्रकट हुए और कहा:

'चर्च भवन की चति तुम मत करो: मैंने वहाँ तुम्हारी कसिी भी मेहनत के बनिा अपने लिए एक पवत्रि स्थल तैयार कर लयिा है; तुम्हें बस उसमें प्रवेश करना है। जहाँ तक तुम्हारा सवाल है, अगले दनि वहाँ पवत्रि अनुष्ठान मनाओ और वशि्वासयिों को पवत्रि रहस्य प्रदान करो।'

इस दर्शन के बाद, बशिप ने सभी लोगों को पवत्रि रहस्यों की प्राप्ति के लिए तैयार होने का नरि्देश दयिा और उनके साथ प्रार्थनाएँ जपते हुए चल पड़े। जब वे उस पवत्रि स्थान पर पहुँचे जहाँ संगमरमर पर पवत्रि पदचहि्न अंकति

[6089] यानी, नेपल्स का नविासी। नेपल्स, इटली के साम्राज्य के उसी नाम के प्रांत की राजधानी, नेपल्स की खाड़ी के उत्तरी तट पर स्थति है।

थे, तो उन्होंने चट्टान में से तराशी गई एक छोटी सी गुफा के आकार की चर्च पाई; इसकी दीवारें चकिनी नहीं थीं, और इसकी ऊँचाई बदलती रहती थी: एक जगह कोई अपने सरि से छत तक पहुँच सकता था, जबकि दूसरी जगह कोई अपने हाथ से भी छत तक नहीं पहुँच सकता था। इससे लोगों को यह स्पष्ट हो गया कि ईश्वर चर्च में कीमती पत्थरों की नहीं, बल्कि एक शुद्ध हृदय की खोज करते हैं। इस चर्च में वेदी बैंगनी पर्दे से ढकी हुई थी; बशिप ने इसी वेदी पर पवत्रि धर्मवधिि का अनुष्ठान कयिा और वशि्वासयिों को परम पवत्रि रहस्य प्रदान कयि। इस बीच, उत्तरी ओर स्थति वेदी से ऊपर से पानी बहने लगा – जो शुद्ध, स्वादष्टि, बहुत साफ और चमत्कारी था; इसे चखने वाले सभी बीमार, पवत्रि रहस्यों को प्राप्त करने के बाद, ठीक हो गए, और सेंट माइकल द आर्कएन्जेल की प्रार्थनाओं के द्वारा उस चर्च में कई अन्य अनगनित चमत्कार हुए। बशिप ने चर्च के बगल में कोठरयिाँ बनवाईं और वहाँ पुरोहतिों, डकिनों, भजन गायकों और पाठकों को बसाया, ताकि ईश्वर की महमिा और महादूत सेंट माइकल के सम्मान में दविय लतिर्जी का प्रतदिनि अनुष्ठान हो सके।

आइए माउंट अथोस पर घटति एक चमत्कार का भी उल्लेख करें[6090] । धर्मपरायण बुल्गारयिाई सम्राटों के दनिों में, डोहयिार नामक एक धनी और कुलीन व्यक्ति रहता था। एक बार, ईश्वर को प्रसन्न करने की इच्छा से, उन्होंने भकि्षु बनने का नरि्णय लयिा। अपने साथ बहुत सारा सोना लेकर, वे पवत्रि पर्वत की ओर रवाना हुए, वहाँ के मठों का दर्शन करने और बसने के लिए उपयुक्त स्थान खोजने के लिए। कई मठों का दौरा करने और बहुत दान देने के बाद, वह धन्य अथानासयिस की लाव्रा से नकिलकर थ्रेसैलॉनीकी[6091] से तट के कनिारे चल पड़ा। वहाँ उसे ताज़े पानी और हरी-भरी वनस्पति वाला एक बहुत ही सुंदर स्थान मलि; उस जगह पर अभी तक कोई नविासी नहीं थे। उन्हें इस स्थान से बहुत लगाव हो गया और उन्होंने वहीं बसने और एक मठ बनाने का संकल्प लयिा। बड़ी लगन से काम में जुटकर, उन्होंने जल्द ही अपनी महत्वाकांक्षा को साकार कर लयिा। सबसे पहले, उन्होंने संत नकिोलस को समर्पति एक भव्य चर्च का नरि्माण कयिा, और फरि उन्होंने मठ की स्थापना की और उसे पत्थर की दीवारों से घेर लयिा। इन सभी को उचति व्यवस्था में लाने के बाद, उन्होंने स्वयं उस मठ में मठवासी संन्यास की शपथ ली। लेकनि इतनी सारी इमारतें बनाने के कारण, उनका सोना अपर्याप्त साबति हुआ, इसलिए वे चर्च को उसकी योग्य भव्यता से नहीं सजा सके। ईश्वर की मदद में अपनी आशा रखते हुए, उन्होंने कहा:

'यदि प्रभु ईश्वर इस स्थान को महमिामय बनाना चाहते हैं, तो वे स्वयं ही चर्च की शोभा के लिए साधन प्रदान करेंगे; उनकी इच्छा पूरी हो!'

पवत्रि पर्वत के सामने लुग नामक एक द्वीप है, जो एक दनि की नौका यात्रा की दूरी पर स्थति है; वहाँ चरवाहे रहते थे जो अपने झुंडों की देखभाल करते थे, क्योंकि वह स्थान चराई के लिए बहुत उपयुक्त था। इस द्वीप पर, एक नरि्जन स्थान पर, एक ऊँचा पत्थर का स्तंभ खड़ा कयिा गया था; स्तंभ पर एक पत्थर की मूर्ति खड़ी थी, जसि पर ग्रीक में अंकति था: 'जो कोई मेरे सरि पर प्रहार करेगा, उसे बहुत सारा सोना मलिेगा।' कई लोगों ने यह पता लगाने की कोशशि की कि यह सच था या नहीं – और मूर्ति के सरि पर प्रहार कयिा – लेकनि उन्हें कुछ नहीं मलि। उस समय ऐसा हुआ कि एक युवक अपने बैलों को उसी स्तंभ के पास चरा रहा था; वह युवक बहुत बुद्धमिान और शकि्षति था। स्तंभ पर अंकति शलिालेख को पढ़ने के बाद, उसने सोने को खोजने की उम्मीद में मूर्ति के सरि पर प्रहार कयिा, ठीक वैसे ही जैसे दूसरों ने कयिा था, लेकनि उसे कुछ नहीं मलि। तब उसे लगा कि शायद सोना जमीन में दफ़न है; और जैसे ही सूर्य अस्त हो रहा था, उसने ध्यान दयिा कि स्तंभ की परछाईं जमीन पर कहाँ खत्म हो रही थी। जसि बदिु पर मूर्ति के सरि की परछाईं खत्म हो रही थी, वहाँ उसने खजाने की तलाश में जमीन खोदना शुरू कर दयिा, लेकनि वहाँ भी उसे कुछ नहीं मलि। जब सूरज नकिला, तो उसने फरि से देखा कि स्तंभ की छाया कहाँ खत्म होती है और वहाँ खोदना शुरू कर दयिा। जब वह खोद रहा था, तो उसे उस जगह से एक आवाज़ सुनाई दी और यह समझते हुए कि वहाँ खजाना छपिा है, उसने और भी लगन से खोदना शुरू कर दयिा, जब तक कि उसे एक ऐसा चक्की का पाट नहीं मलि गया जो इतना बड़ा था कि वह उसे उठा भी नहीं सकता था। पत्थर में एक छेद से अपना हाथ डालकर, उसे वहाँ बहुत सारा सोना मलि और वह सोचों में खो गया कि इसके साथ क्या करे।

[6090] माउंट अथोस एक संकीर्ण, पहाड़ी प्रायद्वीप है जो द्वीपसमूह में आगे नकिला हुआ है। माउंट अथोस (जसि अथोस भी कहा जाता है) पूर्वी ऑर्थोडॉक्स दुनयिा के सबसे पूजनीय पवत्रि स्थलों में से एक है और इसे सालाना हजारों तीर्थयात्री देखते हैं। वर्तमान में, माउंट अथोस पर 20 बड़े मठ, कई स्केट और कई व्यक्तगित सेल हैं।

[6091] थेस्सालोनकिी (जसि थेस्सालोनकिा भी कहा जाता है) मैसेडोनयिा के क्षेत्रों में से एक की राजधानी है। यही वह स्थान था जहाँ प्रेरति पौलुस ने सुसमाचार का प्रचार कयिा था; उनके दो पत्र इस क्षेत्र और शहर के नविासयिों के लिए लखि गए थे।

उसने सोचा, 'अगर मैं कसिी को इस सोने के बारे में बताऊँ, तो वे मुझे इसके लिए मार भी सकते हैं।'

लेकनि ईश्वर ने, पवत्रि मंदरि की सजावट को लेकर चतिति उपर्युक्त बुजुर्ग की प्रार्थनाओं पर ध्यान देते हुए, उस युवक को पवत्रि पहाड़ पर, एक मठ में जाने और अपने द्वारा खोजे गए खजाने के बारे में मठाधीश को बताने के लिए प्रेरति कयिा। उस युवक ने ठीक वैसा ही कयिा। अपनी खोज के प्रमाण के रूप में कुछ सोने के सक्कि लेकर, वह समुद्र के पास एक गाँव में गया और वहाँ एक आदमी को करिाए पर लेकर उसे पवत्रि पहाड़ पर ले जाने को कहा। ईश्वर की कृपा से, वह उपर्युक्त, नए बने मठ के घाट पर रुका, जसिका नाम इसके नरि्माता, डोहयिार के नाम पर रखा गया था। नावकि अपने गाँव लौट गया, जबकि वह युवक मठ में चला गया। वहाँ मठाधीश को देखकर, उसने उन्हें अपने द्वारा खोजे गए खजाने के बारे में वसि्तार से बताया। मठाधीश ने इसे ईश्वर का कार्य माना; उन्होंने तीन भक्षिुओं को बुलाया और उस युवक से जो कुछ सुना था, वह उन्हें बताया, और उन्हें उस युवक के साथ मठ में पाया गया सोना लाने के लिए भेज दयिा। भक्षिु नाव से जल्दी से रवाना हुए और द्वीप पर पहुँचकर, उस खंभे की ओर बढ़े जसिके पास सोना गाड़ा गया था। जब उन्होंने चक्की का पाट हटाया, तो उन्हें उसके नीचे सोने से भरा एक पात्र मलिा और वे अत्यंत प्रसन्न हुए। लेकनि मानव जाति का प्राचीन शत्रु, जो सभी भलाई का घृणक है—शैतान—ने इन भक्षिुओं में से एक के मन में एक दुष्ट वचिार डाला, और उसने दूसरे भक्षिु से कहा:

'भाई, हम यह सोना मठाध्यक्ष के पास क्यों ले जाएँ? ईश्वर ने हमें यह भेजा है: इस सोने से हम अपने लिए आवास बनाएँगे और एक मठ बनाएँगे।'

जब दूसरे ने आपत्ति जताई, 'हम इस सोने को छपिाएँगे कैसे?', तो उसने जवाब दयिा:

'यह पूरी तरह हम पर नरि्भर है: हम इस युवक को समुद्र में फेंक सकते हैं, और फरि हमारे खलिाफ कोई गवाह नहीं रहेगा।'

इस पर सहमत होकर, उन्होंने तीसरे भक्षिु को बताया; लेकनि उसने, ईश्वर-भयभीत होने के कारण, कहा:

'नहीं, भाइयों, ऐसा करने की हम्मित मत करो: सोने के लिए न तो उस लड़के को नष्ट करो, और न ही अपनी आत्माओं को।'

लेकनि उन्होंने उसकी वनिती पर कोई ध्यान नहीं दयिा और उसे अपने साथ सहमत होने के लिए मजबूर करने लगे; और अंत में उन्होंने कहा:

'यदि तुम हमारी बात नहीं मानोगे, तो हम तुम्हें भी उस लड़के के साथ मार डालेंगे।'

भाई ने, उनके अडगि दुष्ट इरादे को देखकर, यह डर सताने लगा कि वे उसे भी नष्ट कर देंगे, और कहा:

'अगर आपने यही तय कर लयिा है, तो आप जो चाहें करें; लेकनि मैं ईश्वर के नाम की कसम खाता हूँ कि मैं इस बारे में कसिी को नहीं बताऊँगा और आपसे कोई सोना नहीं माँगूँगा।'

इस प्रकार, उसकी बात की कसम लेकर, वह चुप हो गया। हालाँकि, उन्होंने सोना और उस पर चढ़ा पत्थर ले लयिा, उसे नाव में ले गए और लड़के के साथ नाव में बैठकर मठ के लिए रवाना हो गए। जब वे गहरे पानी में पहुँचे, तो उन्होंने लड़के पर हमला कयिा और उसके गले में पत्थर बाँधना शुरू कर दयिा। लड़के ने जब यह समझ लयिा कि वे उससे क्या करना चाहते हैं, तो वह रोने और वलिाप करने लगा, उनसे अपनी जान न लेने की मन्नितें करने लगा, लेकनि कोई फायदा नहीं हुआ: उन दुष्ट भक्षिुओं ने, जनिके दलि पत्थर के और आत्मा सोने की लालच में डूबी हुई थी, न तो ईश्वर का भय माना, न ही लड़के के आँसुओं से उनका हृदय पसीजा, और न ही उन्होंने उसकी वनिम्र प्रार्थनाओं पर ध्यान दयिा; लड़के को पकड़कर, उन्होंने उसे एक पत्थर के साथ समुद्र की गहराई में फेंक दयिा, और वह तुरंत तल में डूब गया। यह अत्याचार रात में हुआ था। दयालु ईश्वर ने, ऊपर से उस लड़के के कड़वे रोदन को देखकर और उसके अन्यायपूर्ण डूबने का साक्षी बनकर, मानव जाति के संरक्षक, पवत्रि महादूत माइकल को, समुद्र की गहराई से डूबे हुए लड़के को नकिालने और उसे जीवति चर्च में लाने के लिए भेजा। और ऐसा ही हुआ। अचानक, लड़का खुद को पवत्रि मेज़ के पास पाया, उसके गले में एक पत्थर लटका हुआ था। जब मैटनि्स सेवा का समय आया, तो चर्च का परचिारक[6092] , चर्च में मोमबत्तयिाँ जलाने और सुबह की सेवा के लिए घंटयिाँ बजाना शुरू करने के लिए आया। उसी क्षण, उसे गर्भगृह से एक मानव आवाज़ और कराहने की आवाज़ सुनाई दी; वह बहुत डरा हुआ था और इस बारे में बताने के लिए मठाधीश के पास गया। मठाधीश ने उसे कायर

[6092] इक्लेसयिार्क (ग्रीक में 'चर्च के प्रमुख' के लिए) चर्च भवन और उसकी सफाई, साथ ही मठ में पूजा के क्रम की देखरेख के लिए, चर्च के वधिान के अनुसार जम्मिेदार था।

और डरपोक कहा और उसे चर्च में वापस जाने का आदेश दिया। दूसरी बार वहाँ लौटने पर, उसने फिर से वही आवाज़ सुनी और एक बार फिर मठाधीश के पास गया। तब मठाधीश स्वयं उसके साथ चर्च गए और आवाज़ सुनते ही वे पवित्र स्थल में प्रवेश कर गए; वहाँ उन्होंने उस लड़के को पवित्र मेज़ के पास पड़ा हुआ पाया, जिसके गले में एक पत्थर बँधा हुआ था; उसके कपड़ों से समुद्र का पानी टपक रहा था। मठाधीश ने उस लड़के को पहचान लिया और पूछा:

'बेटा, तुम्हें क्या हुआ है, और तुम यहाँ कैसे पहुँचे?'

वह लड़का जैसे नींद से जागा और बोला:

'उन दुष्ट संतों ने, जिन्हें तुमने मेरे साथ वह सोना लाने के लिए भेजा था जो हमें मिला था, मेरे गले में यह पत्थर बाँधा और मुझे समुद्र में फेंक दिया। जब मैं नीचे डूब रहा था, तो मैंने दो पुरुषों को सूर्य की तरह चमकते देखा, और मैंने उन्हें एक-दूसरे से बात करते सुना; एक ने दूसरे से कहा: "आर्चेन्जेल माइकल! इस लड़के को दोहियारी के मठ ले आओ!' यह सुनकर मैं बेहोश हो गया, और मुझे नहीं पता कि मैं यहाँ कैसे पहुँचा।

लड़के का वृत्तांत सुनकर, मठाधीश चकित रह गए और उन्होंने ईश्वर की स्तुति की, जो अद्भुत और शानदार चमत्कार करते हैं। फिर उन्होंने लड़के से कहा:

'मेरे बेटे, सुबह तक यहीं रहो, जब तक कि यह दुष्टता उजागर न हो जाए।'

फिर वह बाहर गया, चर्च को बंद कर दिया, और चर्चवार्डन को किसी को भी इस बारे में न बताने का निर्देश दिया; जहाँ तक मैटिन्स की बात है, मठाधीश ने इसे नार्टेक्स में मनाने का आदेश दिया। उन्होंने चर्चवार्डन से कहा:

'यदि कोई पूछे, "मटिन्स चर्च के बजाय नार्टेक्स में क्यों गाया जा रहा है?", तो उत्तर देना कि मठाधीश ने ऐसा ही आदेश दिया था।'

जैसे ही सुबह हुई, हत्यारे सोना कहीं और छिपाकर मठ के पास आ गए। उन्हें देखते ही, मठाधीश अन्य भिक्षुओं के साथ उनका स्वागत करने बाहर आए और पूछा:

'तुम में से चार लोग कल क्यों गए थे, फिर अब केवल तीन ही लौटे हो? चौथा कहाँ है?'

इस पर उन्होंने गुस्से में जवाब दिया:

'फादर, उस लड़के ने आपसे और हमसे यह कहकर धोखा दिया कि उसे सोना मिल गया है; वह हमें कुछ भी नहीं दिखा सका, क्योंकि उसे खुद कुछ भी नहीं पता है और शर्म के मारे वह कहीं छिप गया है; हमने उसे बहुत ढूंढा लेकिन वह हमें नहीं मिला, इसलिए हम खुद ही आपके पास लौट आए हैं।'

मठाधीश, 'ईश्वर की इच्छा पूरी हो' कहकर, उनके साथ मठ में गए। उन्हें उस चर्च में ले जाकर, जहाँ वह युवक पड़ा था और जिसके कपड़ों से अभी भी पानी टपक रहा था, उन्होंने उसे उनके सामने दिखाया और पूछा:

'और यह कौन है?'

उस युवक को देखकर, वे भय से भर गए और पत्थर की मूर्ति की तरह खड़े रह गए: वे लंबे समय तक जवाब नहीं दे सके, लेकिन अंत में, अपनी इच्छा के विरुद्ध, उन्होंने अपने दुराचार को कबूल कर लिया और बताया कि उन्होंने जो सोना पाया था उसे कहाँ छिपाया था। फिर मठाधीश ने कुछ अधिकारियों को भेजा, और उन्होंने सोना मठ में लाया। इस चमत्कारी घटना की खबर पूरे पवित्र पर्वत में फैल गई: सभी मठों के भिक्षु इस शानदार चमत्कार को देखने के लिए इकट्ठा हुए। एक परिषद बुलाने के बाद, उन्होंने उस चर्च का नाम बदलकर संत माइकल द आर्कएन्जेल के नाम पर रख दिया, और संत निकोलस द वंडरवर्कर के सम्मान में एक और चर्च का निर्माण किया। उन दो दुष्ट हत्यारों को शाप देकर मठ से निकाल दिया गया, जबकि तीसरे भिक्षु, जिसने लड़के को डुबाने के लिए सहमत होने से इनकार कर दिया था और इस अपराध में भाग लेने से मना कर दिया था, को निर्दोष पाया गया। लड़के को डूबने से बचने के बाद, उसने भिक्षु का संन्यास ग्रहण किया और एक धर्मपरायण तपस्वी और एक सख्त भिक्षु बन गया। इसके बाद, मठाधीश ने अपने पास लाए गए सोने का उपयोग चर्च को भव्य रूप से सजाने और एक बहुत ही सुंदर नार्टेक्स (प्रवेश कक्ष) का पुनर्निर्माण करने के लिए किया; जिस पत्थर से उस युवक को समुद्र में फेंका गया था, उसे दीवार में लगा दिया गया, ताकि सभी को हुई चमत्कार के बारे में पता चल सके। जब मठाधीश का निधन हो गया, तो डूबने से बचे भिक्षु, ' ' को उनके स्थान पर मठाधीश नियुक्त किया गया। ईश्वर को प्रसन्न करने वाला जीवन जीने के बाद, वह भी प्रभु के पास चला गया, संत माइकल महादूत की बाहों में उठाया गया, ठीक वैसे ही जैसे उसे पहले महादूत ने समुद्र से चर्च तक उठाया था।

इन सब के लिए, आइए हम पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा की महिमा करें, और महादूत सेंट माइकल की अनंत काल तक स्तुति करें।

महादूत के लिए ट्रॉपारयिन, स्वर 4:

स्वर्गीय सेनाओं के महादूत, हम अयोग्य लोग सदा तुम्हें वनिती करते हैं: अपनी प्रार्थनाओं से, हमें अपनी अदेह महमिा के पंखों की छाया में ढककर सुरक्षति रखो, और हमें बचाओ, क्योंकि हम नम्रतापूर्वक प्रणाम कर पुकारते हैं: हमें वपित्तयिों से उबारो, हे स्वर्गीय सेनाओं के सेनापति।

कॉन्टाकयिन, स्वर 2:

ईश्वर के महादूत, दव्यि महमिा के सेवक, स्वर्गदूतों के सेनापति और मानव जाति के मार्गदर्शक, हमारे लिए मध्यस्थता करें और हमें महान दया प्रदान करें, क्योंकि आप अदेह सेनाओं के महादूत हैं।

शहीद संत रोमलि का कष्टकथा

6 सतिंबर को स्मरणोत्सव

संत रोमलि सम्राट ट्राजन के शासनकाल में रहते थे[6093] और वे पूरे शाही परविार के प्रमुख कुलीन व्यक्ति थे।

ऐसा हुआ कि जब ट्राजन पूर्वी देशों में अपने बहुत से सैनकिों के साथ आइबेरयिनों, सौरोमैटयिनों, अरबों और अन्य लोगों को वश में करने के लिए गया हुआ था[6094] , तो उसने अपने सैनकिों की जनगणना करने का नर्णिय लयिा, और सैन्य रेजमिेंटों में ग्यारह हजार ऐसे पुरुष पाए जो मसीह की शक्षिाओं को मानते थे और मूर्तयिों की पूजा को अस्वीकार करते थे। ट्राजन ने उन्हें अपमानति कर सभी को अर्मनियिा वापस भेज दयिा, इस उम्मीद में कि यह उन्हें मसीह का त्याग करने और मूर्तयिों को बलदिान चढ़ाने के लिए मजबूर कर देगा, ताकि वे अपनी सैन्य पंक्तयिों में लौट सकें और अपने पूर्व सैन्य सम्मान को फरि से प्राप्त कर सकें।

तब रोमलि, एक सैन्य कमांडर के रूप में, राजा के पास गया और उसने उसकी अधर्मीता और मूर्खता के लिए उसे फटकारा, यह बताते हुए कि युद्ध में जाकर वह स्वयं अपनी सेना को कमजोर कर रहा था; रोमलि ने, अपनी ओर से, एक ईसाई होने का दावा कयिा, जो अपने प्रभु, यीशु मसीह के नाम के लिए मरने को तैयार था।

ट्राजन संत पर बहुत क्रोधति हुआ, उसने उन्हें बुरी तरह कोड़े लगवाने का आदेश दयिा और उन्हें मृत्युदंड दे दयिा। उसी क्षण, पवत्रि शहीद का माननीय सरि धड़ से अलग कर दयिा गया[6095] । नर्विासन में भेजे गए ईसाइयों को भी वभिन्नि तरीकों से मार डाला गया: उनमें से नौ हज़ार को आर्मेनयिा में अरारत पर्वत के पास रेगस्तिान में सूली पर चढ़ाया गया, जबकि बाकी अन्य प्रकार की यातनाओं को सहते हुए मर गए।

संत यूडोक्सयिस की शहादत

6 सतिंबर को स्मरणोत्सव

संत यूडोक्सयिस, ईश्वर की कलीसयिा के एक क्रूर उत्पीड़क, डायोक्लेटयिन के शासनकाल में रहते थे। इस सम्राट ने एक अधर्मी फरमान जारी कयिा जसिमें अपनी साम्राज्य में एक सच्चे ईश्वर की उपासना पर प्रतबिंध लगाया गया और यह मांगा गया कि ईश्वर को मलिने वाला सम्मान मूक, नर्जिीव मूर्तयिों को अर्पति कयिा जाए। इस आदेश के

[6093] ट्राजन एक रोमन सम्राट था जो 98 से 117 ईस्वी तक राज करता था। वह सबसे उत्कृष्ट रोमन सम्राटों में से एक था। हालाँकि, उसने भी ईसाइयों का उत्पीड़न कयिा और दो कानून जारी कए जनिका ईसाइयों के खुले उत्पीड़न की शुरुआत पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा: उनमें से एक ने सभी गुप्त सभाओं पर प्रतबिंध लगा दयिा, जबकि दूसरे ने उन सभी को मृत्युदंड देना वैध कर दयिा जो ईसाई धर्म की अपनी आस्था के कारण मूर्तपिूजक देवताओं को बलदिान देने से जदि पर अड़े रहे।

[6094] आइवरीय आधुनकि जॉर्जयिाई लोग हैं। सौरोमैटयिन या सारमाटयिन आइवरीय लोगों के पड़ोसी थे, जो कॉकेसस और कैस्पयिन सागर से लेकर और भी पूर्व में रहते थे; अरब लोग अरब प्रायद्वीप पर रहते थे।

[6095] पवत्रि शहीद का धन्य नधिन लगभग 107 या 115 ईस्वी में हुआ था, जब सम्राट ट्राजन अपनी सेनाओं के साथ पूर्व में थे।

जारी होते ही, कई विश्वासी शहरों में कानूनहीन लोगों के बीच रहने के बजाय जंगली जानवरों के बीच रेगिस्तानों और पहाड़ों में रहने को प्राथमिकता देते हुए भाग गए। इसी तरह, कई गणमान्य व्यक्तियों और कुलीनों ने अपने पदों और घरों को छोड़ दिया और अज्ञात स्थानों पर छिप गए। ऐसा ही एक व्यक्ति सैन्य कमांडर यूडॉक्सियस था, जो यीशु मसीह का एक वफादार सेवक था; अपने पद को छोड़कर, वह राजा के क्रोध से बचने के लिए दुष्टों से छिपने हेतु अपनी पत्नी और बच्चों के साथ छिप गया। इस बीच, मेलिटिनि के राज्यपाल द्वारा भेजे गए सैनिक—जिसके पास संत यूडॉक्सियस के बारे में झूठी अफवाहें भेजी गई थीं—उनकी हर जगह तलाश कर रहे थे। एक जगह, सैनिकों की मुलाकात मैले कपड़े पहने यूडॉक्सियस से हुई, और उन्होंने उससे पूछा कि क्या वह जानता है कि सैन्य कमांडर यूडॉक्सियस कहाँ है।

संत ने यह समझते हुए कि वे उसे यातना देने के लिए सौंपने के लिए ढूंढ रहे थे, उनसे कहा:

'मेरे घर आओ, मेरी रोटी खाओ और अपनी यात्रा से विश्राम लो – और फिर मैं तुम्हें यूडॉक्सियस दिखाऊंगा, क्योंकि मैं जानता हूँ कि वह अपने परिवार के साथ कहाँ छिपा है।'

सैनिक मान गए और पवित्र शहीद के पास गए।

यूडोक्सियस ने उनका स्वागत किया, उदारतापूर्वक उनका सत्कार किया, और फिर उन्हें बताया कि वे जिस व्यक्ति की तलाश कर रहे थे, वह वही था।

संत के व्यवहार से चकित सैनिकों ने उत्तर दिया:

'आपकी दया के लिए, हम आपको नहीं ले जाएँगे, लेकिन हम हमें भेजने वाले से कहेंगे कि हमने बहुत देर तक खोज की लेकिन आपको नहीं पाया; हालाँकि, आपको छिपकर रहना होगा ताकि कोई और आपको ढूंढ न सके और आपके ठिकाने का पता न लगा सके।'

सैनिक जाने ही वाले थे, लेकिन संत ने उन्हें रोकते हुए कहा:

'भाइयों, मेरा इंतज़ार करो, और मैं तुम्हारे साथ चलूँगा; अब मेरे लिए छिपना उचित नहीं है, क्योंकि स्वयं ईश्वर मुझे शहीद होने के लिए बुला रहे हैं, ताकि मैं भी एक स्वीकारकर्ता बनूँ और उनके पवित्र नाम की गवाही दूँ।' और यदि ईश्वर की इच्छा यह न होती कि मैं प्रकट होऊँ, तो न तो आप लोग रास्ते में मुझसे मिलते, और न ही आपको मुझे खोजने के लिए भेजा जाता, और न ही मुझे आप लोगों से मिलना पड़ता; यह सब ईश्वर की कृपा का ही संकेत है, ताकि मैं उनके लिए अपना रक्त बहाने तक भी कष्ट सह सकूँ।

तब, अपनी पत्नी वासिलिसा, अपने बच्चों, अपने परिवार और अपने दोस्तों को बुलाकर, यूडोक्सियस ने उनसे कहा:

'एक समय था जब मैं छिपकर रहता था; अब, हालाँकि, समय आ गया है कि मैं खुद को प्रकट करूँ और यीशु मसीह के लिए स्वेच्छा से अपने यातना देने वालों के हवाले हो जाऊँ, जिन्होंने स्वयं हमारे लिए दुख सहने को स्वीकार किया; और इसलिए मैं जा रहा हूँ, और जैसा मेरा प्रभु चाहेगा, वैसा ही वह मेरे लिए सब कुछ व्यवस्थित करेगा और मेरी मदद करेगा; जहाँ तक आपकी बात है, मैं आपको उनकी सुरक्षा में छोड़ता हूँ।'

फिर, घर के लिए विभिन्न व्यवस्थाएँ करने के बाद, संत ने अपने बच्चों और नौकरों को सिखाया कि उनके बिना सदाचार से कैसे जिया जाए, ईश्वर के भय और प्रेम में जीने के लिए; और उन्होंने अपनी पत्नी को वसीयत की कि जब उसे उनकी मृत्यु का समाचार मिले तो वह न रोए और न विलाप करे, बल्कि वह दिन महान आनंद और प्रसन्नता के साथ बिताए, ईश्वर का धन्यवाद करते हुए कि उन्होंने अपने सेवक को शहीद के मुकुट का योग्य समझा।

अपने घर से विदा लेकर और अपने पद के अनुरूप वस्त्र, कवच और सैन्य पट्टा धारण करके—जैसा कि सेना के एक कमांडर के लिए उचित था—संत ने प्रभु के प्रति अपने प्रेम के लिए सब कुछ त्यागते हुए अपना घर, अपनी पत्नी और बच्चों, अपने सेवकों, अपने दोस्तों और अपनी सारी संपत्ति छोड़ दी।

यह एक हृदय विदारक विदाई थी, क्योंकि एक पत्नी अपने पति से, बच्चे अपने पिता से, और मित्र अपने प्रिय साथी से वंचित हो गए थे! वे सभी उससे बिछड़ते समय जोर-जोर से रोए, क्योंकि वे जानते थे कि वह कभी उनके पास वापस नहीं आएगा। उनके दुख में एक ही सांत्वना थी: कि यूडोक्सियस मसीह के लिए दुख सहना चाहता था, एक विजयी शहीद बनना चाहता था, और अपने प्रभु मसीह के सामने शहीद के मुकुट से सुसज्जित होकर प्रकट होना चाहता था।

इस प्रकार अपने सभी प्रियजनों से विदा लेकर, धन्य यूडॉक्सियस सैनिकों के साथ अपनी यात्रा पर रवाना हुए, जबकि उनकी पत्नी वासिलिसा, उनकी पीड़ा को देखने की इच्छा से, उन्हें दूर से पीछे-पीछे चल रही थीं। उनके साथ

यूडॉक्सियस के दो सबसे प्रयि मत्रि, ज़निोन और मकारयिोस भी थे, जनिके लिए प्रभु ने शहीद का मुकुट भी तैयार कयिा था।

जब धन्य यूडॉक्सियस को राज्यपाल के सामने लाया गया, तो राज्यपाल ने उसे वनिम्रता से अभविादन कयिा और कहा:

'हमने तुम्हें इसलिए बुलाया है ताकि तुम राजा की आज्ञा का पालन करो और पूजनीय देवताओं को बलदिान चढ़ाओ, सबसे बढ़कर सभी देवताओं के पति, महान ज़्यूस को, सूर्य-सदृश अपोलो को, और प्रयि देवी आर्टेमसि को।'

संत यूडोक्सियस ने उत्तर दयिा:

'मैं जानता हूँ कि बलदिान एकमात्र परमेश्वर को अर्पति करना चाहिए, जो तीन व्यक्तयिों में महमिामय हैं, जन्हिोंने संसार की रचना की और जीवन तथा मोक्ष प्रदान करते हैं। मैं उसी को स्तुति का बलदिान अर्पति करूँगा, न कि उन लोगों को जन्हिें आप देवता कहते हैं, क्योंकि वे तो केवल पेड़ और पत्थर हैं और कसिी भी नर्जिीव वस्तु से कसिी भी प्रकार भन्नि नहीं हैं।'

शासक ने यूडॉक्सियस से एक बार फरि कहा:

'मैं तुम्हें आदेश देता हूँ कि तुम देवताओं का उचति सम्मान करो; फरि भी तुम, जैसा कि मैं देख रहा हूँ, न केवल देवताओं का तरिस्कार करते हो, बल्कि स्वयं राजा को भी कुछ नहीं समझते। मैंने सुना है कि तुम कोई नया धर्म फैला रहे हो और बहुतों को उसमें भटका रहे हो।'

यह कहकर, राज्यपाल ने पास खड़े सैनकिों की भीड़ को देखा और गुस्से में कहा:

'जो कोई भी राजा की आज्ञा का पालन करने में वफिल रहता है, उससे उसका सैन्य वर्दी छीन लयिा जाएगा, क्योंकि वह इसे पहनने के लायक नहीं है; और उसे यह भी बता दो कि उसकी सैन्य पदवी का सम्मान उससे छीन लयिा जाएगा।'

इस प्रकार उस अधर्मी राज्यपाल ने कहा, वह संत यूडॉक्सियस को शर्मदिा करना चाहता था; क्योंकि उसे उम्मीद थी कि राजा की आज्ञा का वरिोध करने के लिए कोई और नहीं मलिेगा, और यूडॉक्सियस अकेला ही अवज्ञाकारी रहेगा, और इसलिए, शर्म के मारे, वह अपने पद का सम्मान खोने से बचने के लिए राजा की आज्ञा का पालन करेगा। लेकनि इसके बजाय, वह यातना देने वाला स्वयं ही शर्मदिा हो गया। वे अभी बोल ही रहे थे कि संत यूडॉक्सियस ने अपने अधकिार का प्रतीक पट्टा उतारकर राज्यपाल के चेहरे पर फेंक दयिा। यह देखकर, एक हजार चार सैनकि, जो गुप्त रूप से ईसाई थे और परमेश्वर के प्रति उत्साह से भरपूर थे, ने ठीक वैसा ही कयिा जैसा उनके कमांडर यूडॉक्सियस ने कयिा था: उन्होंने अपने सैन्य प्रतीक चन्हि उतारकर राज्यपाल के सामने फेंक दिए, और यीशु मसीह के नाम के लिए अपनी आत्मा तक बलदिान करने को तैयार थे।

यातना देने वाले ने मसीह के इतने सारे स्वीकार करने वालों को अचानक प्रकट होते देख, वह भ्रम में पड़ गया और उनसे पूछताछ करना बंद कर दयिा। उसने तुरंत सम्राट डायोक्लेटयिन को जो हुआ था, उसकी सूचना भेज दी और आगे क्या करना है, इस बारे में नर्देश मांगे। सम्राट ने जल्द ही उसे जवाब में नम्निलखिति आदेश भेजा: कि कमांडरों को कठोर यातनाएँ दी जाएँ, जबकि आम सैनकिों को चैन से रहने दयिा जाए।

सम्राट की आज्ञा प्राप्त कर, राज्यपाल ने न्यायपीठ पर अपनी सीट ली, यूडोक्सियस को मुख्य सैन्य कमांडर के रूप में अपने सामने लाने का आदेश दयिा, और उससे फरि से बात करना शुरू कयिा:

'मैं तुम्हें सलाह देता हूँ, यूडोक्सियस, कि तुम अपना दुष्ट अनादर और पागल प्रतरिोध त्याग दो और अपनी इच्छा से देवताओं को बलदिान अर्पति करो; लेकनि अगर तुम इनकार करोगे, तो तुम्हें अपनी इच्छा के वरिुद्ध, गंभीर यातना की धमकी के तहत ऐसा करने के लिए मजबूर कयिा जाएगा।'

यह सुनकर, राज्यपाल ने उन कारावासों, भयानक काल-कोठरयिों, घावों, शरीर की खाल उधेड़ने, आग से जलाने और अन्य क्रूर यातनाओं का वर्णन करना शुरू कयिा, जनिका नाम मात्र लेने से ही दलि में दहशत पैदा हो जाती थी।

शहीद ने उत्तर दयिा:

'गवर्नर, यह कहकर तुम मेरा मज़ाक उड़ा रहे हो। मैं तुम्हारे यातनाओं को एक बच्चे के खलिौने की तरह मानता हूँ, क्योंकि मैं अपनी आशा उस भवष्यि के पुरस्कार में रखता हूँ जो मुझे पुरस्कारों के उदार दाता मसीह से मलिेगा।' मैं उस आग से नहीं डरता जसिकी तुमने बात की है, बल्कि उस आग से डरता हूँ जो कभी बुझती नहीं, और न ही दाँत पीसने से, और न ही उन अन्य भयानक यातनाओं से जो सच्चे ईश्वर की अवज्ञा करने वालों और उसे अस्वीकार करने वालों के लिए

तैयार की गई हैं। तुम्हारे यातनाएँ, तुलनात्मक रूप से, बच्चों का खेल हैं, और जिस आग से तुम मुझे डरा रहे हो, वह गेहेना की आग की तुलना में पानी से भी ज़्यादा ठंडी है: 'तुम्हारी तलवार,' संत ने जारी रखा, 'मेरे लिए आकांक्षित भूमि के द्वारों की कुंजी होगी, जहाँ, इस दृश्यमान, जल्द ही अस्त होने वाले सूरज के बजाय, मैं एक ऐसी रोशनी देखूँगा जो कभी अस्त नहीं होती और कभी झिलमिलाती नहीं है, और क्षणिक आशीर्वादों के बजाय, मैं शाश्वत आशीर्वादों का वारिस बनूँगा। तुम्हें यह जान लेना चाहिए कि मैं तुम्हारे देवताओं की पूजा नहीं करूँगा, क्योंकि किसी कलाकार के हाथ से निर्मित पेड़ों, पत्थरों, सोने और चांदी को देवता मानना पूर्ण मूर्खता है।

संत का उत्तर सुनकर, शासक ने उनसे कहा:

'तुम्हारे मूर्खतापूर्ण उत्तर के लिए मेरी सहनशीलता दोषी है, क्योंकि यही सहनशीलता तुम्हें इतनी बेधड़क होकर देवताओं, राजा और मेरा अपमान करने की अनुमति देती है; मैं अपने ऊपर किए गए अपमान को तो सहन कर सकता हूँ, लेकिन देवताओं और राजा का अपमान अब और बर्दाश्त नहीं किया जा सकता।'

इसके बाद, शासक ने संत को हाथ-पैरों से बाँधकर एक मोटे फंदे से बेरहमी से पीटने का आदेश दिया; फिर उसे फाँसी दी जानी थी और उसके शरीर को तेज लोहे के औजारों से खुरचवाया जाना था। इन यातनाओं के बाद, संत को एक कालकोठरी में डाल दिया गया।

कुछ दिनों बाद, उसे एक बार फिर पूछताछ के लिए लाया गया, और उसके यातनाकर्ता ने यूडॉक्सियस को अपनी आस्था में पहले की तरह ही अडिग पाया, एक अटूट स्तंभ और एक अभेद्य शहर की तरह; इसलिए उसने आदेश दिया कि शहीद की गर्दन पर लोहे की छड़ों से वार किया जाए और उसके सभी अंगों को जोड़ों से तोड़ दिया जाए, एक यातना जो स्वयं मृत्यु से भी अधिक पीड़ादायक थी।

इसके बाद, यातना देने वाले ने यूडॉक्सियस को तलवार से सिर कलम करने की सज़ा सुनाई।

जब संत को मृत्युदंड के स्थान पर ले जाया जा रहा था, तो पवित्र शहीद ने इस प्रकार प्रार्थना की:

'हे ईश्वर, जिन्होंने हाबिल और इब्राहीम की बलिदानों पर अनुग्रह की दृष्टि डाली, और जिन्होंने कई शहीदों के दीर्घकालीन कष्टों को कृपापूर्वक स्वीकार किया, अपनी दयालु दृष्टि मेरी बलिदान पर भी डालें, और मेरे रक्त को अस्वीकार न करें, जिसे मैं एक प्रेमपूर्ण हृदय की आत्मा की गर्माहट से आपको अर्पित करता हूँ।'

इस प्रकार प्रार्थना करते हुए, यूडॉक्सियस ने अपनी पत्नी को देखा, जो रोते हुए उसका पीछा कर रही थी, और उससे पूछा कि क्या सब कुछ वैसा ही किया गया है जैसा उसने आदेश दिया था; और उसने उसे निर्देश दिया कि उसकी मृत्यु के बाद ही वह उसके शरीर को लेकर अमीनमा नामक स्थान पर दफनाए; तब उसने उसे एक बार फिर हिदायत दी – कि वह उसकी मृत्यु पर विलाप न करे, बल्कि उस दिन को रंग-बिरंगे वस्त्रों से सम्मानित करे और विभिन्न आभूषणों से स्वयं को सजाए।

तब, अपने मित्र ज़िनोन को अपने लिए रोते हुए देखकर, यूडॉक्सियस ने उससे कहा:

'प्रिय ज़ेनो, रोओ मत: ईश्वर, जिसकी हम सेवा करते हैं, हमें अलग नहीं करेगा, बल्कि जैसे एक ही नाव में हम साथ में शाश्वत जीवन की ओर प्रस्थान करेंगे।'

इन शब्दों का ज़िनोन पर इतना गहरा प्रभाव पड़ा कि वह ज़ोर से चिल्लाने लगा:

'मैं भी एक ईसाई हूँ; मैं मसीह की गवाही देता हूँ और उनके लिए मरना चाहता हूँ।'

उसे तुरंत दुष्ट सेवकों ने पकड़ लिया, और उसकी रिपोर्ट राज्यपाल के पास भेजी गई। राज्यपाल ने आदेश दिया कि उसे यूडोक्सियस के साथ तलवार से सिर कलम कर दिया जाए। जब उन्हें फांसी के स्थान पर ले जाया गया, तो पहले ज़िनोन का सिर कलम किया गया, जबकि यूडोक्सियस उसके लिए प्रार्थना कर रहे थे; इस प्रकार, अपने दोस्त को स्वर्ग में पहले भेजने के बाद, यूडोक्सियस ने तलवार के नीचे अपना सिर झुकाया और एक धन्य अंत प्राप्त किया।

उनके साथ-साथ, अन्य शहीदों को भी, जिन्होंने साहसपूर्वक मसीह की गवाही दी थी, सिर से अलग कर दिया गया, और उनके शवों को बिना दफनाए छोड़ दिया गया। हालाँकि, यूडॉक्सियस की पत्नी वासिलिसा ने निडर होकर उसका शव उठाया और उसी स्थान पर सम्मान के साथ दफनाया जहाँ उसने स्वयं इशारा किया था।

इस कृत्य के लिए, उसे गिरफ्तार कर राज्यपाल के सामने लाया गया, जिसके सामने उसने स्पष्ट रूप से ईश्वर में अपने विश्वास की स्वीकारोक्ति की और मूर्तियों तथा उनके पूजकों का तिरस्कार किया, और वह जल्द से जल्द अपने पति के पीछे उसी शहादत के मार्ग से प्रभु तक पहुँचना चाहती थी।

हालाँकि, यातना देने वाले ने उससे कहा:

'मैं जानती हूँ कि तुम अपने पति का अनुसरण करके गलीलियों (अर्थात् ईसाइयों) से प्रशंसा पाना चाहती हो, लेकिन यद्यपि तुम मृत्यु की पात्र हो, मैं तुम्हें मृत्युदंड नहीं दूँगी।'

वासिलिसा ने यातना देने वाले से उत्तर दिया:

'मेरे प्रभु यीशु मसीह मेरी इस इच्छा को जानते हैं और इसे स्वयं कृत्य के स्थान पर स्वीकार करेंगे; भले ही आप मुझे यातना न दें, फिर भी मैं प्रभु परमेश्वर के सामने अपने पति के साथ आनंद से वंचित नहीं रहूँगी।'

इन शब्दों के बाद, राज्यपाल ने उसे जाने दिया।

सात दिन बाद, संत यूडोक्सियस उसे सपने में दिखाई दिए और कहा:

'हमारे मित्र और व्यवस्थापक, मकरियस से कहो कि वह दरबार में जाए और हमारे अनुकरण का अनुसरण करे; हम उसका इंतजार कर रहे हैं।'

जैसे ही वासिलिसा ने मक□□□ओस को इस दर्शन के बारे में बताया, वह तुरंत राज्यपाल के पास गया और खुद को एक ईसाई और यूडोक्सियस का शिष्य घोषित कर दिया। राज्यपाल ने, उसे देखकर और उससे ऐसा साहसी कबूलनामा सुनकर, आदेश दिया कि उसकी भी तलवार से गर्दन काट दी जाए। (वर्ष 311 में)

इस प्रकार मकरियुस, यूडॉक्सियस और ज़िनोन के पीछे हमारे प्रभु मसीह और सदाचार का अच्छा प्रतिफलदाता की ओर चल पड़ा। वासिलिसा ने भी, सच्चे विश्वास में निधन करके, उनके अनुग्रह को प्राप्त किया, और परमेश्वर की महिमा के सिंहासन के सामने संतों की भीड़ में प्रकट हुई, और सदा और सदा के लिए पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा की महिमा करती रही। आमीन।

गॉर्टिना के बिशप, पवित्र शहीद सिरिल की स्मृति

गॉर्टिना के बिशप, पवित्र शहीद सिरिल का स्मरणोत्सव

6 सितंबर को स्मरण किया जाता है

ये धन्य करिल सम्राट मैक्सिमियन के शासनकाल में, एग्रिप्पिना के राज्यपालत्व के दौरान रहे। हर गुण से सुसज्जित, वह पचानबे वर्ष की आयु तक जीवित रहे। एक दिन, अपने दो सेवकों, थियोफेनेस और थियोक्टीस्ट के साथ, वह एक मठ के लिए रवाना हुए। रास्ते में, उन्होंने मूर्तिपूजकों को मूर्तियों के लिए बलिदान के रूप में बैल और भेड़ की बलि चढ़ाते देखा; उन्होंने ऐसी मूर्खता पर आह भरी और, , मूर्तिपूजकों को फटकार लगाई। इसके लिए, उन्होंने उसे पकड़ लिया और एक कालकोठरी में डाल दिया। जब संत सिरिल आधी रात को वहाँ ईश्वर से प्रार्थना कर रहे थे, तो उन्होंने स्वर्ग से एक आवाज सुनी जो कह रही थी: 'सिरिल, रोम जाओ!' अगली सुबह, कालकोठरी के दरवाजे खुले पाए गए, और आसपास की सभी मूर्तियाँ टूटी-फूटी पड़ी थीं। संत सिरिल मठ की ओर बढ़े और वहाँ उन्होंने एक दर्शन में परम पूज्य फिलोक्सनस को देखा, जिन्होंने उनसे कहा: 'तुम्हें दो मुकुट मिलेंगे - एक बिशप के रूप में और दूसरा शहीद के रूप में।' इसके बाद संत रोम गए और वहाँ अपने उपदेश के माध्यम से विश्वासियों के विश्वास को मजबूत किया। जब उत्पीड़न शुरू हुआ, तो उन्होंने यरूशलेम जाने का निश्चय किया। रास्ते में, मेलियोन द्वीप पर, एक सफेद पोशाक पहने व्यक्ति उनके सामने प्रकट हुआ और उन्हें क्रीट द्वीप को रास्ते से न हटाने का आदेश दिया, और उन्होंने वैसा ही किया। क्रीट के गॉर्टिना शहर में, उन्हें बिशप के रूप में अभिषिक्त किया गया; उस समय उनकी आयु साठ वर्ष थी। जब ईसाइयों पर फिर से अत्याचार शुरू हुआ, तो संत को मुकदमे के लिए हेगेमोन (राज्यपाल) के सामने लाया गया, जिसने उसे मसीह का त्याग करने के लिए मनाने की कोशिश की; और चूंकि पवित्र स्वीकारकर्ता ने उसकी विनतियों के आगे झुकने से इनकार कर दिया, इसलिए उसे तलवार से सिर कलम करने की सज़ा सुनाई गई। तब उन्होंने उसके मुँह में घोड़े की लगाम डाल दी और, उसे एक गाड़ी पर बिठा दिया (क्योंकि वह अपनी वृद्धावस्था के कारण चल नहीं सकता था), और उसे ले गए। जब वे उसे राक्स नामक स्थान पर ले आए, तो स्वर्ग से एक आवाज आई: 'बस!' गाड़ी रुक गई, और संत का सिर काट दिया गया।

परम पूजनीय डेवडि का जीवन

६ सतिंबर को स्मरण कयि जाता है

पवत्रि और पूजनीय डेवडि पहले एक डाकू थे और, हर्मोपोलसि रेगस्तिान[6096] में रहते हुए, उन्होंने बहुत नुकसान पहुँचाया, कई लोगों को मारा, और वे कसिी भी अन्य से अधकि दुर्भावनापूर्ण और क्रूर थे। उसके अधीन तीस से अधकि आदमी थे जो उसके साथ लूटपाट करते थे। एक दनि, पहाड़ पर उनके साथ बैठे हुए, उसने अपने जीवन पर वचिार कयि और यह याद करके कि उसने लोगों को कतिना बुरा और दुख पहुँचाया था, वह ईश्वर से बहुत डर गया। अपने साथ रहे सभी डाकुओं को छोड़कर, वह एक मठ में चला गया।

जब दाऊद ने द्वार पर दस्तक दी, तो द्वारपाल बाहर आया और उससे कहा:

'तुम्हें क्या चाहिए?'

दाऊद ने उत्तर दयि:

'मैं एक भक्षिु बनना चाहता हूँ।'

दरबान गया और उसे भक्षिु-प्रधान के पास ले गया। भक्षिु-प्रधान उसके पास आए, लेकनि यह देखकर कि वह एक बूढ़ा आदमी है, उन्होंने कहा:

'तुम यहाँ नहीं ठहर सकते, क्योंकि भाई कड़ी मेहनत करते हैं और बड़े संयम से रहते हैं; तुम, हालांकि, एक अलग स्वभाव के हो और मठ के नयिमों का पालन नहीं कर सकते।'

डेवडि मठ में प्रवेश के लिए वनिती करता रहा।

उसने कहा, 'आप जो भी आज्ञा देंगे, मैं करूंगा, बस मुझे स्वीकार कर लें।'

मठाध्यक्ष ने मना कर दयि, कहते हुए:

'तुम हमारे साथ नहीं रह सकते।'

तब दाऊद ने मठाध्यक्ष से कहा:

'पतिाजी, यह जान लीजए: मैं डाकूओं का सरगना डेवडि हूँ; मैं अपने पापों का प्रायश्चति करने आपके पास आया हूँ। लेकनि अगर आप मुझे स्वीकार नहीं करेंगे, तो मैं आपसे दृढ़तापूर्वक शपथ लेता हूँ कि मैं वापस जाऊँगा, अपने डाकूओं को साथ लेकर आऊँगा, और आप सभी का कत्ल कर दूँगा और आपके मठ को तबाह कर दूँगा।'

यह सुनकर, मठाधीश ने डेवडि को मठ में स्वीकार कर लयि और उसे एक भक्षिु के रूप में दीक्षा दी। और डेवडि ने संयम का अभ्यास करना और स्वयं को नम्रता में प्रशक्षिति करना शुरू कर दयि। जल्द ही, वह मठ के अन्य भक्षिुओं से सद्गुणों में आगे नकिल गया और अपने जीवन-यापन के तरीके और अपने शब्दों के माध्यम से सभी की सेवा की।

एक दनि, जब दाऊद अपनी कोठरी में बैठे थे, तो महादूत गब्रयिल उनके सामने प्रकट हुए और कहा:

'दाऊद, प्रभु ने तुम्हारे पापों को क्षमा कर दयि है, और अब से तुम चमत्कार करोगे।'

डेवडि ने देवदूत से उत्तर दयि:

'मुझे वश्विास नहीं हो रहा है कि प्रभु ने मेरे पापों को इतनी जल्दी क्षमा कर दयि है, क्योंकि वे बहुत गंभीर हैं और समुद्र के रेत से भी अधकि हैं।'

महादूत ने उससे कहा:

'मैं गब्रयिल महादूत हूँ, जसिने जकरयिाह ([6097]) को भी नहीं बख्शा जब उसने मेरे शब्दों पर वश्विास नहीं कयि, बल्कि दंड स्वरूप उसकी जीभ को बाँध दयि ताकि वह उस पर वश्विास करे जो मैंने कहा था। क्या मैं तुम्हें बख्श दूँ? इसलिए, अब से तुम गूंगे हो जाओगे!'

दाऊद ने झुककर स्वर्गदूत से कहा:

'जब मैं एक डाकू था, अन्यायपूर्ण कृत्य कर रहा था और बहुत खून बहा रहा था, तब तुमने मेरी जीभ नहीं बाँधी, जसिने परमेश्वर की महमिा नहीं की। लेकनि अब, जब मैं प्रभु की सेवा करने और उनकी स्तुति करने की इच्छा रखता हूँ, तब तुम मेरी जीभ बाँध देते हो ताकि मैं बोल न सकूँ!'

तब स्वर्गदूत ने कहा:

[6096] हर्मोपोलसि मरुभूमि मिस्र में स्थति थी और इसका नाम प्राचीन मस्रि के शहर हर्मोपोलसि के नाम पर पड़ा था।

[6097] यह, बेशक, पुरोहति जकरयिाह, यानी संत यूहन्ना बपतस्मिादाता के पति, को संदर्भति करता है। देखें लूका 1:11–22।

'बोल, पर केवल तब जब तू नयित समयों पर परमेश्वर की महमिा कर रहा हो और उनसे प्रार्थना कर रहा हो; और अन्य सभी समयों में, तू मौन रहेगा!'

इस प्रकार उसे डाँटने के बाद, देवदूत उससे चला गया। दाऊद ने अपने पापों की क्षमा के लिए परमेश्वर का धन्यवाद कयिा। इसके बाद, परमेश्वर की कृपा से, उसने कई चमत्कार कए: उसने अंधों की दृष्टि लौटाई, लंगड़ों को उनके पैरों पर खड़ा कयिा, और भूत-प्रेत ग्रस्त लोगों को चंगा कयिा। वे प्रार्थना के दौरान चर्च में ईश्वर के लिए भजन गाते थे, लेकनि अन्य कोई शब्द नहीं बोल पाते थे। सभी के लिए एक उदाहरण बनकर कई वर्षों तक इस प्रकार जीवन जीने के बाद, वे प्रभु के पास चले गए[6098] , और अब, उनके सामने खड़े होकर, वे हमारे लिए अनवरत प्रार्थना करते हैं।

उनकी प्रार्थनाओं के द्वारा, हम भी प्रभु की दया प्राप्त करें। आमीन।

पवित्र शहीदों सरियिकस, फावस्टस और अवधि की स्मृति

6 सतिंबर को स्मरण कयिा जाता है

इन पवित्र शहीदों ने सम्राट डेसयिस[6099] के अधीन, अलेक्जेंड्रयिा[6100] में, उसी उत्पीड़न के दौरान यातनाएँ सहन कीं जसिमें रोम के पोप, संत फैबयिन[6101] , और अलेक्जेंड्रयिा के संत अलेक्जेंडर[6102] शहीद हुए थे। उन्हें शहर के राज्यपाल वैलेरयिस के समक्ष लाया गया और मसीह के नाम की दृढ़ स्वीकारोक्ति तथा मूर्तपिूजक चापलूसी और व्यर्थता की साहसी नंदिा के कारण उनका सरि कलम कर दयिा गया। उनके साथ तेरह अन्य शहीदों को भी मार डाला गया। अलेक्जेंड्रयिा के कुछ ईसाइयों ने उनकी अवशेषों को लेकर श्रद्धापूर्वक अपने नगर में दफनाया, हमारे सच्चे ईश्वर मसीह की महमिा के लिए।

20 सतिंबर

7 सतिंबर (पुराने कैलेंडर के अनुसार)

संत सोज़ोंट की शहादत

7 सतिंबर को स्मरणोत्सव

मॅक्समियिन[6103] , सलिसियिा का राज्यपाल, शाही फरमान द्वारा अधर्मी मूर्तपिूजक बहुदेववाद का प्रसार करते हुए, पोम्पेओपोलसि शहर आया और वहाँ की सुनहरी मूर्ति को नमन करके, कई बलदिान चढ़ाए। उस समय वहाँ लाइसोनयिा का एक युवक था, जसिका नाम सोज़ोंट था, जो लकिाओनयिा का मूल नविासी था,[6104] , वशि्वास में ईसाई, , अच्छे चरित्र वाला और अच्छे कर्मों से परपिूर्ण था, क्योंकि वह दनि-रात प्रभु की व्यवस्था का अध्ययन करता था। वह मूक भेड़ों के झुंडों की देखभाल करता था, फरि भी उसी समय वह मसीह की बोलने वाली भेड़ों को अच्छे चरागाह की ओर ले जाता था।

[6098] वह 6वीं शताब्दी में जए और मरे।

[6099] डेसयिस – ईसाइयों का एक क्रूर उत्पीड़क; उसने 249 से 251 तक शासन कयिा।

[6100] अलेक्जेंड्रयिा – अपनी शक्षिा, राजनीतकि महत्व और व्यापार के लिए प्रसद्धि एक शहर, जसिकी स्थापना लगभग 333 ईसा पूर्व में मस्रि में महान अलेक्जेंडर ने की थी।

[6101] संत फेबयिन – 236 से 250 तक रोम के पोप।

[6102] संत अलेक्जेंडर – 212 से 250 तक अलेक्जेंड्रयिा के पैट्रआर्क।

[6103] कुछ प्राचीन मेनोलॉजी (सम्राट बेसलि और अन्य) में, 'मैक्समियिन' के बजाय 'मैक्समिस' आता है। ऐसा माना जाता है कि यह नुमेरस मैक्समिस था, जसिने 304 में सलिसियिा के गवर्नर के रूप में कार्य कयिा था।

[6104] सम्राट बेसलि के कैलेंडर में, शहीद सोज़ोंट के जन्मस्थान के रूप में लसियिा दयिा गया है; प्रोलॉग में, जैसा कि चेती-मनिेई में है, इसे लाइकोनयिा बताया गया है; शहादत के कार्यों के अनुसार, यह सलिसियिा है, जहाँ तटीय शहर पोंपेओपोलसि स्थति था, जसिे पहले सोली के नाम से जाना जाता था।

वह अपने भेड़ों के साथ जहाँ भी होता, दूसरे चरवाहे, जवान और बूढ़े, उसके चारों ओर इकट्ठा हो जाते; और वह उन्हें एक ईश्वर के बारे में सिखाता था, और कई लोगों को पवित्र बपतिस्मा तक ले गया, क्योंकि पवित्र आत्मा का अनुग्रह उस पर था। एक बार, जब वह एक झरने के पास अपनी भेड़ों की देखभाल कर रहा था, जिसके पास एक बड़ा ओक का पेड़ खड़ा था, सोज़ोंट गहरी नींद में सो गए और उन्होंने एक दैवीय दर्शन देखा, जिसमें उन्हें शहादत के पराक्रम के लिए बुलाया गया और यह घोषणा की गई कि वह स्थान कई लोगों के लिए लाभदायक होगा, क्योंकि यह स्वर्ग से उतरने वाली कृपा से पवित्र हो जाएगा, और वहाँ कई लोग उद्धार पाएँगे और पवित्र त्रिमूर्ति की महिमा करेंगे। अपनी नींद से जागने पर, इस नेक चरवाहे ने अपनी भेड़ों को दूसरों के हवाले कर दिया और, अपने लिए एक स्मृति के रूप में उस स्थान पर अपना धनुष और तीन तीर छोड़कर, पोम्पेओपोलिस शहर के लिए रवाना हो गया। वहाँ उसने देखा कि दुष्टता बढ़ गई थी, जबकि पवित्र विश्वास को पैरों तले रौंदा गया था, और इस पर उसका हृदय दुख से भर गया। जहाँ एक सुनहरी मूर्ति खड़ी थी, उस मंदिर में प्रवेश करके, उसने उसकी एक बाँह तोड़ दी, उसे टुकड़े-टुकड़े कर दिया, और उसके टुकड़े गरीबों में बाँट दिए। मूर्ति से सुनहरी बाँह को हटाने से शहर में बड़ा हड़कंप मच गया, और कई लोगों से पूछताछ की गई और उन्हें यातनाएँ दी गईं। लेकिन संत सोज़ोंट, यह नहीं चाहकर कि कोई और उसकी जगह पीड़ित हो, स्वयं गवर्नर मैक्सिमियिन के पास गए और घोषणा की कि वह इस कृत्य के लिए जिम्मेदार थे। 'मैंने तुम्हारे देवता की भुजा ली,' उसने कहा, 'उसे तोड़ दिया और सोना ज़रूरतमंदों में बाँट दिया।' जब उन्होंने उससे पूछना शुरू किया कि उसने ऐसा करने की हिम्मत कैसे की और उसकी भुजा लेकर उसे तोड़कर उनके देवता का अपमान कैसे किया, तो उसने जवाब दिया:

'मैंने यह आपके देवता की असहायता देखने के लिए किया। क्योंकि जब मैंने उसका हाथ उससे लिया, तो उसने कोई प्रतिरोध नहीं किया, कुछ नहीं कहा, दर्द का कोई संकेत नहीं दिखाया, और न ही कराह निकाली।' वास्तव में, मूक और निर्जीव होने के नाते, क्या वह विरोध कर सकता था? अगर वह एक सच्चा ईश्वर और जीवित होता, तो वह मेरे सामने खड़ा हो जाता और मुझे उसे नुकसान पहुँचाने की अनुमति नहीं देता। मैंने, हालाँकि, यह जानते हुए कि यह एक मूर्ति थी, न कि कोई देवता, उसकी बाँह तोड़ दी, और उसे पूरी तरह से भी तोड़ देता, ताकि आप मानव हाथों के काम की पूजा न करें, जिसमें, यद्यपि आँखें, कान, एक मुँह, हाथ और पैर हैं, फिर भी न देखता है, न सुनता है, न बोलता है, न महसूस करता है, न चलता है, और जब उस पर वार किया जाता है या उसे टुकड़े-टुकड़े कर दिया जाता है तो वह किसी भी तरह से अपनी मदद नहीं कर सकता।

यह सुनकर, राज्यपाल ने सोज़ोंट को बेरहमी से यातना देने का आदेश दिया। पहले उन्होंने उसे एक पेड़ से लटकाया और लोहे के पंजों से उसकी पसलियों को खुरचना शुरू किया; फिर उन्होंने उसके पैरों में तेज कीलों से जड़े लोहे के जूते पहनाए और उसे शहर में घुमाया; संत, उनमें चलते हुए, ईश्वर की स्तुति कर रहे थे। फिर उन्होंने उसे एक बार फिर से पेड़ से लटकाया और लोहे की छड़ों से बुरी तरह पीटा, जिससे न केवल उसका शरीर बल्कि उसकी हड्डियाँ भी चकनाचूर हो गईं। इन यातनाओं के बीच, संत ने अपनी आत्मा ईश्वर को सौंप दी[6105] । यह देखकर कि वह पहले ही मर चुका था, उसके यातनाकारों ने उसके शरीर को पेड़ से उतार लिया और, राज्यपाल के आदेश पर, शरीर को जलाने के लिए एक भयंकर आग जलाई, इस डर से कि यह विश्वासियों के लिए पूजा का विषय बन सकता है। और जब इस अत्यधिक पीड़ित शरीर को आग में फेंका गया, तो अचानक बिजली की एक चमक चमकी, गरज की गड़गड़ाहट हुई, और ओलों के साथ मूसलाधार बारिश हुई, जिससे आग तुरंत बुझ गई; उपस्थित लोग डरकर भाग गए, और संत का शरीर अक्षुण्ण बना रहा। जब रात हुई, तो श्रद्धालु उसके पवित्र अवशेष लेना चाहते थे, लेकिन वे ऐसा नहीं कर सके, क्योंकि घोर अंधकार था, और वे इस पर गहराई से शोक मनाने लगे। लेकिन आधी रात को, स्वर्ग से एक प्रकाश अवशेषों पर चमका, और श्रद्धालुओं ने उन्हें लेकर सम्मानपूर्वक दफना दिया। शहीद की ताबूत से कई चमत्कार हुए; और न केवल ताबूत से, बल्कि ओक के पेड़ के नीचे बहने वाले झरने से भी, जहाँ संत को एक बार, सोते समय, एक दर्शन हुआ था—मसीह की कृपा और पवित्र शहीद की प्रार्थनाओं के द्वारा बीमारों पर विभिन्न प्रकार के चंगाई के चमत्कार हुए। इसलिए, बाद में वहाँ उनके नाम पर एक चर्च बनाया गया, ताकि त्रिमूर्ति में एक, सच्चे ईश्वर की महिमा की जा सके। सदा और अनंत काल तक प्रभु की महिमा हो, आमीन।

[6105] पवित्र पर्व के भिक्षु निकोडेमस के ग्रीक सिनैक्सारियन के अनुसार, पवित्र शहीद सोज़ोंटास के दुख और मृत्यु वर्ष 288 में हुई। अन्य स्रोतों के अनुसार, यह लगभग वर्ष 304 में हुआ।

संत का कोंटाकयिन, स्वर 2:

आओ, आज हम सब एकत्र होकर, सोजोंट की, जो सच्चे और ईश्वर-ज्ञानी शहीद, धर्मपरायणता के लिए कुशल कष्ट-भोगी, अनुग्रह के व्यवस्थापक और चंगाई के परम उदारदाता हैं, जोरदार प्रशंसा करें: वे हमारे सभी के लिए मसीह हमारे ईश्वर से प्रार्थना करें।

पवित्र प्रेरितों इवोद और ओनेसफिोरस का स्मरणोत्सव।

7 सितंबर को स्मरणोत्सव

सत्तर प्रेरितों में से एक, संत इवोद, संत प्रेरित पतरस के बाद महान अंकोवयिा के पहले बशिप थे, और परमेश्वर के वचन के एक महान प्रचारक थे। संत इग्नाजयिस द गॉड-बेयरर ने उन्हें अंकोवयिावासयिों को लखि अपने पत्र में इन शब्दों में उल्लेख कयिा है: 'अपने धन्य पति एवोद को याद करो, जन्हिें प्रेरतिों ने तुम्हारा पहला चरवाहा नयिुक्त कयिा था; उसके सच्चे पुत्र बनो, न कि व्यभचिारी, कहीं ऐसा न हो कि तुम्हारा पति तुमसे लज्जति हो।' इस संत एवोद ने परम पवित्र कुँवारी के बारे में लखिा कि उन्होंने पंद्रह वर्ष की आयु में संसार के उद्धारकर्ता मसीह को जन्म दयिा। वे लखिते हैं, 'तीन वर्ष की आयु में, उन्हें प्रभु के मंदरि में लाया गया था, जहाँ वे ग्यारह वर्षों तक रहीं; और जब वे चौदह वर्ष की आयु में पहुँच गईं, तो पुरोहतिों ने उन्हें जोसेफ के हवाले कर दयिा, ताकि वह उनकी रक्षा कर सकें। वह चार महीने तक उनके साथ रहीं, जब उन्हें स्वर्गदूत से आनंद का समाचार मलिा और, अपने पंद्रहवें वर्ष के अंत में, उन्होंने संसार के प्रकाश - मसीह को जन्म दयिा।" इसके अलावा, संत इवोड ने कई अन्य उपयोगी कृतयिाँ भी छोड़ीं, लेकनि वे सभी उस महान क्लेश के समय में खो गईं, जब परमेश्वर की कलीसयिा पर अत्याचार कयिा गया था, और इसलिए वे आज तक संरक्षति नहीं रह सकीं। वर्तमान में, केवल 'द ल्यूमनिरी' नामक एक पुस्तक ही ज्ञात है; हालाँकि, इसका उल्लेख केवल प्राचीन इतहिासकार नकिफ़ोरस[6106] द्वारा ही कयिा गया है। स्वयं संत इवोद के बारे में जानकारी रोमन मार्टायरोलॉजी[6107] में मलिती है, जहाँ यह कहा गया है कि उन्होंने मसीह के लिए अपना रक्त बहाया और एक शहीद की मृत्यु पाई। कुछ का मानना है कि संत ने सम्राट वेस्पासयिन के शासनकाल के दौरान एंटओिक में कष्ट सहे[6108] । उनका कहना है कि उस समय, एंटओिकस नामक एक यहूदी ने शहर में भारी अशांति फैला दी; अपने धर्म को त्यागने के बाद, उसने मूर्तयिों की बलि चढ़ाना शुरू कर दयिा, और मूर्तयिों की पूजा करने से इनकार करने पर कई यहूदयिों को मार डाला गया। इसके बाद, बहुत से यहूदयिों ने ईसाई धर्म अपना लयिा और उनका बशिप धन्य इवोड था, जसिे उनके नेता और चरवाहे के रूप में जल्द ही मृत्युदंड दे दयिा गया[6109] ।

संत ओनेसफिोरस भी सत्तर प्रेरितों में से एक थे। प्रेरति पौलुस ने तमिोथी को लखिी अपनी पत्री में उनके बारे में कहा है: *'प्रभु ओनेसफिोरस के घराने पर दया करें, क्योंकि उसने मुझे कई बार तरोताज़ा कयिा और मेरी बेड़यिों से लज्जति नहीं हुआ, बल्कि रोम में बड़ी लगन से मुझे खोजा और मुझे पा भी लयिा। प्रभु करें कि वह उस दनि प्रभु की कृपा पाए; और तुम किसी से बढ़कर जानते हो कि उसने एफ़सिुस में मेरी कतिनी सेवा की'* (2 तीमु. 1:16–18)। ये ओनेसफिोरस कोलोफोन के एक बशिप थे[6110] और उन्होंने अपने वशि्वास के लिए कष्ट उठाया, और शहीद होकर अपनी जान दे दी। उनकी शहादत 'एक्ट्स ऑफ द मार्टयर्स' (शहीदों के कृत्यों) द्वारा प्रमाणति है, जो यह वर्णन करते हैं कि संत ओनेसफिोरस को, बहुत यातनाओं के बाद, जंगली घोड़ों द्वारा चीर-फाड़ दयिा गया और, इवोड के साथ, उन्होंने स्वर्गीय नविासों में परमेश्वर के स्वीकारकर्ताओं (confessors) के समूह में अपनी जगह बनाई।

[6106] नकिफिोरस कैलस्टिोस।

[6107] मृतकों की वंशावलयिाँ, या शहादत के वृत्तांत, शहीदों के दुखों के सबसे शुरुआती ववरिणों का संग्रह हैं। शहादत के वृत्तांतों की उत्पत्ति और प्राथमकि स्रोत मूर्तपिूजक अधकिारयिों द्वारा शहीदों से पूछताछ, उनकी नदिा और उन्हें मृत्युदंड देने के ववरिण हैं। रोमन सम्राट डेसयिस ट्राजन (250 ईस्वी) के अधीन उत्पीड़न के समय से, शहीदों के भाग्य से संबंधति औपचारकि चर्च रकिॉर्ड रोम और अन्य जगहों पर रखे जाने लगे, लेकनि इनमें से केवल छोटे-छोटे अंश ही आज तक बचे हैं।

[6108] वेस्पासयिन – एक रोमन सम्राट जसिने 70 से 79 ईस्वी तक शासन कयिा।

[6109] संत इवोद का धन्य नधिन 66 ईस्वी वर्ष में हुआ।

[6110] कोलोफोन – एशयिा माइनर के उत्तर-पश्चमिी भाग में, लडियिा का एक प्राचीन शहर। इस शहर के खंडहर हाल ही में खोजे गए हैं।

पवत्रि शहीद यूप्साइशयिस की स्मृत

7 सतिंबर को स्मरण कयिा जाता है

संत यूप्सकियिस का जन्म और पालन-पोषण कैपैडोसयिा के सेसरयिा में हुआ था। सम्राट हैड्रयिन के शासनकाल में[6111] , उनके खलिाफ एक शकियत दर्ज की गई, जसिमें उन पर यह आरोप लगाया गया कि वे पगन देवताओं की पूजा नहीं करते थे, बल्कि मसीह का सम्मान करते थे। इस शकियत के परणिामस्वरूप, यूप्सकियिस को कैपाडोसयिा के राज्यपाल द्वारा गरिफ्तार कर लयिा गया और यातनाएं दी गईं: लोहे की पंजाओं से उनके शरीर को तब तक खुरचा गया जब तक कि उनकी पसलयिां उजागर नहीं हो गईं। अपनी यातनाओं के बाद, सेंट यूप्साइचयिस, जो मुश्कलि से जीवति थे , को एक कालकोठरी में फेंक दयिा गया। वहाँ उन्होंने परमेश्वर से भक्तपिूर्वक प्रार्थना की, और जब वे प्रार्थना कर रहे थे, तो एक स्वर्गदूत प्रकट हुआ और स्पर्श मात्र से शहीद के घावों को चंगा कर दयिा।

थोड़ी ही देर बाद, संत यूप्सकियिस को जेल से रहिा कर दयिा गया। यह रहिाई ईश्वर की इच्छा से हुई, ताकि यूप्सकियिस की संपत्ति दुष्टों के हाथ न लगे, बल्कि गरीबों में बांटी जा सके। और वास्तव में, संत यूप्सकियिस ने अपनी सारी संपत्ति—जो उनके परदादा-पतिामहों ने इकट्ठी की थी—बेसहारा और गरीबों में बाँट दी; वास्तव में, उन्होंने अपने दुश्मनों को भी एक हस्सिा दयिा, जन्होंने उनकी बदनामी की थी, और इस प्रकार जन्होंने उन्हें कष्ट पहुँचाया था, उन्हें उपहार देकर सम्मानति कयिा, मानो वे उनके उपकारी हों।

बाद में, जब राजकुमार सैप्रसियिस कैसरयिा पर शासन कर रहा था, तो संत यूप्सकियिस को एक बार फरि पकड़ लयिा गया। उन्हें लटकाया गया और लंबे समय तक यातना दी गई, जसिके बाद उन्हें तलवार से सरि कलम करके शहीद कर दयिा गया। कहा जाता है कि उनके शरीर के घावों से खून के बजाय दूध और पानी बह रहा था।

हमारे पवत्रि पति जॉन, नोवगोरोड के आर्चबशिप का जीवन

7 सतिंबर को स्मरण कयिा जाता है

संत जॉन, एक नए रूसी चमत्कार करने वाले, का जन्म वेलकिी नोवगोरोड में हुआ था। उनके माता-पति - नकिोलस और क्रस्टिीना - धर्मपरायण लोग थे। इसलए, उन्हें और उनके भाई गेब्रयिल को ईश्वर के भय में पाला गया। कम उम्र से ही, संत जॉन ने खुद को ईश्वर को समर्पति कर दयिा और एक सदाचारी जीवन जयिा; जब वह वयस्क हुए, तो उन्हें चर्च ऑफ द होली मार्टायर ब्लासयिस में एक पादरी के रूप में नयिुक्त कयिा गया। नव-नयिुक्त पादरी ने और भी अधकि उत्साह के साथ प्रभु की सेवा करना शुरू कर दयिा, और ईश्वर की सभी आज्ञाओं का सख्ती से और बारीकी से पालन कयिा। इस बीच, संत जॉन के माता-पति का नधिन हो चुका था। वह हमेशा एक शांत, चतिनशील जीवन पसंद करते थे और उन्होंने मठवासी संन्यास ग्रहण करने का इरादा भी कयिा था; लेकनि अब, अपने भाई गेब्रयिल से सलाह-मशवरिा करने के बाद, संत जॉन ने अपने माता-पति द्वारा छोड़ी गई धनराशि का उपयोग करके एक नया मठ स्थापति करने का संकल्प लयिा। सबसे पहले, उन्होंने उसकी महमिामय घोषणा की स्मृति में परमेश्वर की अतपिवत्रि माता को समर्पति एक लकड़ी का चर्च बनाया और मठ की स्थापना की; फरि उन्होंने एक पत्थर का चर्च भी बनाने की योजना बनाई। भाइयों ने उत्सुकता से अपने इस नेक इरादे को पूरा करना शुरू कयिा: उन्होंने बड़ी सावधानी से पत्थर का चर्च बनाना शुरू कयिा और उसका आधा हस्सिा पहले ही पूरा कर लयिा था, लेकनि उन्हें काम बंद करने के लिए मजबूर होना पड़ा: उनके पास धन खत्म हो गया था; धन्य जॉन और उनके भाई गेब्रयिल इस बात से बहुत दुखी हुए, और वे बहुत परेशान थे। और इस प्रकार, खुद को ऐसी कठनि स्थति में पाते हुए, फरि भी परमेश्वर की परम पवत्रि माता के प्रति दृढ़ वश्विास और महान भक्ति रखते हुए, वे प्रार्थना में उन सभी के इस त्वरति सहायक और सांत्वना देने वाले की ओर मुड़े जो दुख में हैं:

भाइयों ने प्रार्थना की, 'हे हमारी माता! आप अपने पुत्र और हमारे ईश्वर के प्रति हमारे वश्विास और प्रेम को जानती हैं; आप उस उत्साह को देखती हैं, जसिसे हम आपकी ओर मुड़ते हैं, हे हमारी माता; हम आपसे वनिती करते हैं, इस

[6111] हैड्रयिन एक रोमन सम्राट था जसिने 117 से 138 ईस्वी तक शासन कयिा। यद्यपि उसने ईसाइयों का कोई वशिष दीर्घकालीन उत्पीड़न शुरू नहीं कयिा, फरि भी उसके शासनकाल में कई ईसाई शहीदों को पीड़ा सहनी पड़ी, और वह स्वयं अंधवश्विास और रहस्यमय मूर्तपिूजक शक्षिाओं का शौकीन था।

चर्च को पूरा करने में हमारी मदद करें; हे परमेश्वर की माता, हम अपनी सारी आशा आप पर ही रखते हैं; हे माता, हमें, अपने सेवकों को, न छोड़िए और हमें लज्जित न कीजिए: हमने इस चर्च का निर्माण शुरू किया है, लेकिन हम आपकी मदद के बिना इसके निर्माण को पूरा नहीं कर सकते।

इस प्रकार उन्होंने ईश्वर की माता से प्रार्थना की और अपना दुख उनके सामने व्यक्त किया। उनकी विनम्र प्रार्थना सुनी गई। स्वर्ग की रानी उन्हें एक सपने में प्रकट हुईं और कहा:

'हे मेरे प्रिय ईश्वर के सेवको, तुम क्यों इतने दुख में डूब गए हो और इतनी विलाप में क्यों लगे हो कि चर्च का निर्माण विलंबित हो गया है? मैं तुम्हारी प्रार्थना को अनसुनी नहीं करूँगी, क्योंकि मैं तुम्हारा विश्वास और प्रेम देखती हूँ: शीघ्र ही तुम्हारे पास साधन होंगे, जो न केवल चर्च के निर्माण के लिए पर्याप्त होंगे, बल्कि शेष भी बचेंगे; केवल इस पुण्य कार्य को न छोड़ना और अपने विश्वास में ठंडा न पड़ना।

यह दर्शन, जो दोनों भाइयों को मिला, उन्हें शक्ति और हर्ष प्रदान कर गया; जागने पर वे परम आनंद से भर गए। मातिन्स के बाद, भाइयों ने एक-दूसरे को बताया कि उन्होंने क्या देखा था, और उनकी आशा और भी प्रबल हो गई। ईश्वर की कृपा से, उसी सुबह वे मठ से निकले, और अचानक, मठ के द्वार पर, उन्होंने सोने से जड़ा लगाम पहने एक सुंदर घोड़ा देखा; काठी भी उसी धातु से जड़ी हुई थी; घोड़ा चुपचाप और बिना हिले-डुले खड़ा था, जबकि उसका सवार, जो शायद उसका मालिक था, कहीं दिखाई नहीं दे रहा था। भाइयों ने घोड़े की सुंदरता और भव्य सज्जा को देखकर बहुत आश्चर्य किया; उन्होंने बहुत देर तक इंतजार किया कि कहीं उसका मालिक कहीं से प्रकट हो जाए। हालाँकि, कोई नहीं आया, और घोड़ा उसी एकलौते , स्थान पर अचल खड़ा रहा। फिर वे इसके और करीब गए और देखा कि काठी के दोनों ओर दो कसकर भरे हुए बोरे लटके हुए थे। यह समझते हुए कि यह उन्हें स्वर्ग से भेजा गया था, उन्होंने घोड़े से बोरी उतार लीं, और तुरंत ही घोड़ा अदृश्य हो गया। भाइयों ने बोरी खोलकर देखी तो वह सोने से लबालब भरी हुई थी, जबकि दूसरी चांदी से भरी हुई थी। ईश्वर और परमेश्वर की परम पवित्र माता की ऐसी दिव्य कृपा से चकित होकर, उन्होंने कृतज्ञतापूर्वक भक्तिपूर्ण प्रार्थनाएँ करना शुरू कर दिया। जल्द ही, ईश्वर की मदद से, उन्होंने चर्च का निर्माण पूरा किया और उसे भव्य रूप से सजाया; फिर उन्होंने मठ के भरण-पोषण के लिए कई गाँव खरीदे, और इसके बावजूद भी उनके पास एक बड़ी रकम बची रह गई, जिसे उन्होंने मठाध्यक्ष और भाइयों को दे दिया। इस मठ में, उन्होंने स्वयं मठवासी संन्यास की शपथ ली, जिसमें जॉन को एलियाह और गैब्रियल को ग्रेगरी नाम दिया गया; उनका जीवन उपवास और प्रार्थना में, विभिन्न मठवासी श्रम और तपस्या के कार्यों से भरा, ईश्वर को प्रसन्न करने वाले तरीके से व्यतीत हुआ।

जब नोवगोरोड के आर्चबिशप, संत अर्काडी का निधन हो गया, तो धन्य एलिया को मठ से बुलाया गया और उनकी इच्छा के विरुद्ध, आर्चबिशप के पद पर पदोन्नत किया गया। अपने आपको इतने ऊँचे पद के अयोग्य समझते हुए, एलियाह ने उसे त्याग दिया; लेकिन, स्वयं ईश्वर के मार्गदर्शन में, राजकुमार ने धर्मनिरपेक्ष और धार्मिक अधिकारियों और नोवगोरोड के सभी नागरिकों के साथ मिलकर, सर्वसम्मति से एलियाह को आर्चपास्टोरल पद के लिए चुना: क्योंकि वह ईश्वर और मनुष्य दोनों को प्रिय थे। गंभीर विनतियों और प्रार्थनाओं के साथ, सभी ने उस विनम्र भिक्षु को आर्चबिशप के सिंहासन पर बैठने के लिए आग्रह किया; सभी ने इसकी मांग की। अंततः अपनी इच्छा के विरुद्ध, वह नागरिकों की इच्छा के आगे झुक गया और परम पावन जॉन, कीव और समस्त रूस के मेट्रोपॉलिटन द्वारा नोवगोरोड के आर्चबिशप के रूप में अभिषिक्त हुआ। उसने मसीह के भेड़ों के झुंड का निष्ठापूर्वक पालन-पोषण किया, पवित्रता और धार्मिकता में जीवन यापन किया[6112] । अपने महाधर्माध्यक्ष के कार्यकाल के दौरान, सुज़दाल के राजकुमार रोमन ने रूसी भूमि के कई अन्य राजकुमारों के साथ—जो संख्या में बहत्तर थे—वेलिकी नोवगोरोड के खिलाफ विद्रोह कर दिया, जिसका उद्देश्य उसे उजाड़ना और अपने रक्त और विश्वास के भाइयों को पकड़कर मार डालना था। वे एक बड़ी सेना के साथ शहर आए और उसे घेरकर तीन दिनों तक उस पर प्रचंड घेराबंदी की। नागरिकों ने घेराबंदी करने वालों की भारी संख्या देखकर हिम्मत हार ली; उनकी शक्ति क्षीण होती जा रही थी, वे गहराई से दुखी हुए और भय से भर गए, उन्हें किसी भी ओर से कोई मदद की उम्मीद नहीं थी - उन्होंने केवल ईश्वर की दया की कामना की और अपने पवित्र बिशप की प्रार्थनाओं में अपनी आशा रखी। हालाँकि, बिशप एक सच्चे अच्छे चरवाहे की तरह, अपने झुंड को बर्बाद करने के लिए तैयार भेड़ियों को आते देख, पहरा देते रहे, निरंतर ईश्वर की ओर देखते रहे और अपनी पवित्र प्रार्थनाओं को दीवारों की तरह मानकर शहर की रक्षा करते रहे। तीसरी रात, जैसा कि उनका रिवाज था, जब वह प्रभु यीशु मसीह की प्रतिमा के

[6112] कहा जाता है कि जॉन ने एक परिषद में भाग लिया, जहाँ उन्होंने 'प्रमुख सुधार पेश किए'।

सामने प्रार्थना कर रहे थे और आँसू भरी आँखों से प्रभु से शहर को बचाने की विनती कर रहे थे, तब उन्होंने एक आवाज़ सुनी जो उनसे कह रही थी:

'इल्यिन्स्काया सड़क पर स्थित प्रभु यीशु मसीह के चर्च में जाओ, परमेश्वर की परम पवित्र माता की प्रतिमा को लाओ, और शत्रुओं का सामना करने के लिए इसे शहर की दीवारों पर ले जाओ; फिर, तुरंत ही, तुम शहर की मुक्ति देखोगे।'

ये शब्द सुनकर, एलियाह आनंद से भर गए और पूरी रात जागते रहे; सुबह, उन्होंने सभी को बुलाया और जो कुछ हुआ था, उसे बताया। यह सुनकर, लोगों ने ईश्वर और उनकी परम पवित्र माता की स्तुति की और, मानो उन्हें कोई सहायता मिली हो, वे उत्साहित हो गए; इस बीच, आर्चबिशप ने अपने प्रोटोडीकन को पुरोहितों के साथ भेजा, उन्हें उस पूजनीय प्रतिमा को अपने पास लाने का निर्देश देते हुए, जबकि उन्होंने स्वयं, पवित्र सिनिड के साथ, सेंट सोफिया - ईश्वर की बुद्धि - को समर्पित महान चर्च में एक प्रार्थना सेवा का आयोजन किया। दूतों ने उद्धारकर्ता के चर्च में पहुँचकर, जहाँ परमेश्वर की परम पवित्र माता की चमत्कारी प्रतिमा रखी थी, पहले, रीति के अनुसार, उसे प्रणाम किया; फिर उन्होंने प्रतिमा को उठाने का प्रयास किया, लेकिन वे उसे उसकी जगह से हिला भी नहीं सके; उन्होंने प्रतिमा को उठाने का चाहे जितना भी प्रयास किया, वे सफल नहीं हो सके। फिर वे आर्चबिशप के पास लौटे और उन्हें इस अद्भुत घटना के बारे में बताया। आर्चबिशप सभी को साथ लेकर उद्धारकर्ता के चर्च के लिए रवाना हुए; वहाँ पहुँचने पर, वे ईश्वर की माता की प्रतिमा के सामने घुटनों के बल झुक गए और इस प्रकार प्रार्थना की:

'हे परम दयालु देवी, ईश्वर की कुंवारी माता, आप हमारे नगर की आशा, विश्वास और मध्यस्थ हैं; आप सभी ईसाइयों की दीवार, ढाल और शरण हैं; इसलिए हम पापी अपनी आशा आप में रखते हैं; हे माता, हमारे नगर के लिए अपने पुत्र और हमारे ईश्वर से प्रार्थना करें; हमारे पापों के कारण हमें हमारे शत्रुओं के हाथ में न सौंपें, बल्कि अपने लोगों के रोने और हाय-हाय करने को सुनें; हम पर दया करें, जैसे आपके पुत्र ने एक बार निनिवे के लोगों पर उनके पश्चाताप के कारण दया की थी; हे माता, हम पर भी अपनी दया दिखाएँ।

अपनी प्रार्थना समाप्त करने के बाद, संत ने प्रार्थना सेवा शुरू की – और जब पुरोहितों ने कोंटाकियन 'ईसाइयों का मध्यस्थता शर्म से रहित है' गाया, तो अचानक परमेश्वर की अति पवित्र माता का पवित्र प्रतिमा अपने आप हिल गया। सभी लोगों ने, ऐसा अद्भुत चमत्कार देखकर, एक स्वर में पुकारा: 'हे प्रभु, दया करें!' और महाधर्माध्यक्ष ने पवित्र प्रतिमा को अपने हाथों में लेकर और श्रद्धापूर्वक चूमकर, लोगों के साथ प्रार्थना सेवा ' ' गाते हुए रवाना हुए, प्रतिमा को शहर की दीवार पर चढ़ाया और उसे दुश्मनों की ओर मुख करके रख दिया। उस समय, दुश्मन शहर पर और भी ज़ोरदार तरीके से दबाव डाल रहे थे, और उस पर तीरों की बौछार कर रहे थे। और देखो, परमेश्वर की अति पवित्र माता ने दुश्मनों से अपना मुख मोड़ लिया और अपनी दृष्टि शहर पर टिका दी, जो घेराबंदी में पीड़ित लोगों के प्रति माता की महान दया का एक स्पष्ट संकेत था। आर्चबिशप ने पवित्र प्रतिमा को निहारते हुए, परमेश्वर की माता की आँखों में आँसू देखे; उन्होंने अपना स्तोल (पादरी का चोगा) लेकर, प्रतिमा से टपक रहे आँसुओं को इकट्ठा करना शुरू कर दिया, और पुकार उठे:

'हे अति महिमामय चमत्कार – एक सूखे पेड़ से आँसू बह रहे हैं! इससे, हे रानी, आप हमें यह संकेत देती हैं कि आप अपने पुत्र और हमारे ईश्वर से शहर की मुक्ति के लिए आँसुओं से प्रार्थना कर रही हैं।'

और सबसे पवित्र परमेश्वर की माता को आँसू बहाते देख, सभी लोगों ने विलाप और हार्दिक भावना के साथ परमेश्वर से प्रार्थना की। अचानक, शत्रुओं पर भय छा गया; अंधकार उन्हें घेर लिया; परमेश्वर का क्रोध उन्हें भ्रम में डाल दिया; और वे एक-दूसरे को मारने लगे। दुश्मनों के बीच भ्रम को देखकर, नोवगोरोड के निवासियों ने शहर के द्वार खोल दिए और हाथों में हथियार लेकर अपने विरोधियों पर टूट पड़े; कुछ को उन्होंने अपनी तलवारों से मार गिराया, दूसरों को जीवित बंदी बना लिया, और इस प्रकार, परम पवित्र माता के ईश्वर की मदद से, उन्होंने सभी दुश्मन रेजिमेंटों को हरा दिया। उस समय से, परमेश्वर के संत एलियाह ने नोवगोरोड के महानगर में परमेश्वर की अति पवित्र माता के अद्भुत चिह्न के सम्मान में एक भव्य पर्व दिवस स्थापित किया, और उस दिन को मुक्ति और दंड का दिन घोषित किया; क्योंकि, परमेश्वर की अति पवित्र माता की प्रार्थनाओं के द्वारा, ईश्वर ने नागरिकों को उद्धार दिया और उन लोगों को दंड दिया जिन्होंने अपने ही लोगों और साथी विश्वासियों के विरुद्ध अहंकारपूर्वक विद्रोह किया था और गृहयुद्ध भड़काया था। उस समय से, अपने सच्चे चरवाहे के शासन में, महान नोवगोरोड में पूर्ण शांति और गहरी शांति बनी रही। आर्चबिशप के पद

पर अपने कई वर्षों के कार्यकाल के दौरान, धन्य एलियाह ने ईश्वर के पवित्र नाम की अधिक महिमा के लिए अपनी उत्कट चिंता में भव्य चर्चों का निर्माण किया; उनके द्वारा निर्मित सभी चर्चों की संख्या सात थी।

पहली चर्च, जिसे उन्होंने संन्यास का व्रत लेने से पहले ही स्थापित किया था, परम पवित्र ईश्वर की माता की घोषणा को समर्पित थी; दूसरी, प्रभु के प्रकट होने के उत्सव के उपलक्ष्य में, उनके महाधर्माध्यक्ष के रूप में कार्यकाल के दौरान बनाई गई थी; तीसरा संत भविष्यवक्ता एलियाह को समर्पित था; चौथा स्टुडियो के आदरणीय थियोडोर, एबॉट को; पांचवां तीन पवित्र युवकों: अनानियास, अजारीयास और मिसाएल, और संत भविष्यवक्ता दानियेल को; छठा संत लाजरस धर्मी को, जिन्हें चार दिनों के बाद मृतकों में से जिलाया गया था; और सातवां संत निकोलस चमत्कार करने वाले को समर्पित था।

चर्चों का निर्माण करते हुए, एलिया अपने धार्मिक जीवन के लिए भी प्रसिद्ध हुए: वे सभी के प्रति अत्यंत दयालु थे, असाधारण नम्रता और सच्चे प्रेम से विशिष्ट थे; वह, मानो, मसीह की कलीसिया में सूर्य थे, जो अपने पुण्य कार्यों द्वारा प्रकाश फैलाते थे, दुष्टता के अंधकार को दूर करते थे और अंधकार के राजकुमार – शैतान, जो हमेशा शत्रुता पालता है और मानव जाति के उद्धार से ईर्ष्या करता है, का सिर कुचलते थे; संत एलिया के पास अशुद्ध आत्माओं पर भी ऐसी शक्ति थी कि वह उन्हें अपने वचन से बांध सकते थे, जैसा कि निम्नलिखित अद्भुत कथा से प्रमाणित होता है।

एक रात, जैसा कि उनका रिवाज था, संत आधी रात को अपनी कोठरी में प्रार्थना कर रहे थे। एक राक्षस, संत को डराने की इच्छा से, उनकी कोठरी में लटके हुए पानी के पात्र में प्रवेश कर गया और पानी को उबालते हुए, शोर मचाने लगा। संत को, यह महसूस करते हुए कि यह शैतान का काम था, पात्र के पास गए और उस पर क्रॉस का चिह्न बनाया; और अपने आदेश से उन्होंने राक्षस को पात्र के भीतर बाँध दिया, ताकि वह वहाँ लंबे समय तक फँसा रहा, भागने में असमर्थ; अंत में, जब क्रॉस के चिह्न की शक्ति उसे जला रही थी और वह और अधिक यातना सहन नहीं कर सका, तो राक्षस एक मानव आवाज़ में चिल्लाने लगा।

'हाय, मेरी दुर्दशा! क्रूस की शक्ति मुझे जला रही है; मैं अब और इस पीड़ा को सहन नहीं कर सकता। हे ईश्वर के पवित्र सेवक, मुझे तुरंत मुक्त कर दो।'

तब एलियाह ने पूछा:

'तुम कौन हो, और तुम यहाँ कैसे आए?'

शैतान ने उत्तर दिया:

– मैं एक चालाक राक्षस हूँ और तुम्हें सताने आया हूँ, क्योंकि मैंने सोचा था कि एक इंसान के रूप में तुम डर जाओगे और प्रार्थना करना बंद कर दोगे; लेकिन तुमने मुझे इस पात्र में बंद कर दिया है, और अब मैं बहुत कष्ट में हूँ। हाय मेरा दुर्भाग्य, मैं धोखा खा गया और यहाँ आ गया। मुझे जाने दो, हे ईश्वर के सेवक; अब से मैं फिर कभी यहाँ नहीं आऊँगा।

इस प्रकार राक्षस ने बहुत देर तक पुकारा।

अंत में, संत ने कहा:

'तुम्हारी इस निर्लज्ज हिम्मत के लिए, मैं आज ही रात तुम्हें आदेश देता हूँ कि मुझे यरूशलेम ले जाओ और मुझे उस मंदिर के पास उतार दो जहाँ प्रभु का कब्रिस्तान है; यरूशलेम से तुम्हें उसी रात मुझे तुरंत वापस यहाँ मेरी कोठरी में ले आना होगा, और तब मैं तुम्हें मुक्त कर दूँगा।' दैत्य ने हर तरह से संत की इच्छा पूरी करने का वादा किया, बशर्ते कि संत उसे उस पात्र से मुक्त कर दें। संत ने उसे मुक्त करते हुए कहा:

'एक काठी वाले घोड़े में बदल जा और मेरी कोठरी के सामने खड़ा हो जा।'

अंधकार की तरह, दानव पात्र से निकला और संत के आदेश पर, एक घोड़े में बदल गया। धन्य इलियास, अपनी कोठरी से बाहर निकलकर, दानव पर सवार हो गए, और उसी रात वे खुद को पवित्र शहर यरूशलेम में, पवित्र सेपल्चर चर्च के पास पाया, जहाँ प्रभु का मकबरा स्थित था। वहाँ, ईश्वर के पुरुष ने राक्षस को उस स्थान को छोड़ने से मना कर दिया; और राक्षस एक जंजीर से जकड़े हुए की तरह खड़ा रहा, उस जगह से हिल भी नहीं सका, जब तक कि इलियाह ने प्रभु के मकबरे और पवित्र क्रूस की सम्मानित लकड़ी को प्रणाम नहीं किया। चर्च के पास पहुँचकर, संत दरवाजों के सामने घुटनों के बल बैठ गए और प्रार्थना करने लगे; अचानक बंद दरवाज़े अपने आप खुल गए, और प्रभु के मकबरे पर मोमबत्तियाँ और दीपक जल उठे। आर्चबिशप ने ईश्वर को धन्यवाद देते हुए प्रार्थना की और आँसू बहाते हुए, प्रभु के मकबरे के सामने नमन किया और श्रद्धापूर्वक उसे चूमा; उन्होंने जीवन-दायक वृक्ष, सभी पवित्र प्रतिमाओं और पवित्र स्थानों के सामने भी प्रणाम किया। अपनी इच्छा पूरी करने के बाद, वह चर्च से निकल गए और एक बार फिर चर्च

के दरवाजे अपने आप बंद हो गए; इस बीच, राक्षस उस स्थान पर खड़ा रहा जहाँ उसे आदेश दिया गया था, एक काठी वाले घोड़े के रूप में; उस पर सवार होकर, जॉन उसी रात ग्रेट नोवगोरोड वापस पहुँचे और खुद को अपनी कोठरी में पाया। जब वे संत से विदा हो रहे थे, तो राक्षस ने उनसे विनती की कि वे किसी को यह न बताएं कि उसने उनकी कैसे सेवा की थी, कैसे वह एक शपथ से बंधा था, या कैसे उसने एक कैदी की तरह उनका आज्ञापालन किया था।

'लेकिन अगर तुम किसी को यह बताओगे,' अशुद्ध आत्मा ने कहा, 'कि तुम मेरी पीठ पर कैसे सवार हुए, तो मैं तुम्हारे खिलाफ साज़िश करना बंद नहीं करूंगा और तुम्हारे ऊपर एक बड़ी परीक्षा लाऊंगा।'

इस प्रकार राक्षस ने धमकी दी, लेकिन संत ने क्रॉस का चिह्न बनाया, और तुरंत राक्षस धुएँ की तरह उससे ओझल हो गया।

एक समय, संत जॉन सम्मानित पुरुषों - मठाध्यक्षों, पुरोहितों और धर्मपरायण नागरिकों - के साथ आध्यात्मिक बातचीत में लगे हुए थे; उन्होंने संतों के जीवन का वर्णन किया, आत्मा-रक्षक कारनामों के बारे में विस्तार से बात की और, अन्य बातों के अलावा, जो उनके साथ हुआ था - यानी यरूशलेम की उनकी यात्रा - उसका भी वर्णन किया; फिर भी जब वह बोल रहे थे, तो उन्होंने अपना नाम नहीं लिया, बल्कि ऐसे बोले मानो किसी और के बारे में बात कर रहे हों।

उसने कहा, 'मैं एक ऐसे व्यक्ति को जानता हूँ जो एक ही रात में नोवगोरोड से यरूशलेम तक यात्रा कर गया; पवित्र सेपल्चर और प्रभु के क्रूस के जीवन-दायक वृक्ष को श्रद्धांजलि अर्पित करने के बाद, वह उसी रात नोवगोरोड के महानगर लौट आया; अपनी यात्रा के दौरान वह एक भालू पर सवार हुआ, जिसे उसने अपनी आज्ञा से बाँध रखा था, और उसे, मानो, अपना बंदी बना लिया था।

संत के इस वृत्तांत को सुनकर उसके श्रोता बहुत हैरान थे, जबकि शैतान महाधर्माध्यक्ष पर दाँत पीसते हुए कह रहा था:

'चूंकि तुमने यह रहस्य प्रकट कर दिया है, मैं तुम्हारे ऊपर ऐसा प्रलोभन लाऊँगा कि तुम्हारे सभी सह-नागरिक तुम्हें व्यभिचारी घोषित कर देंगे।'

और उस समय से, ईश्वर की अनुमति से, उस दानव ने वास्तव में संत के विरुद्ध अपनी चालाक योजनाएँ बनाना शुरू कर दिया, उसका अच्छा नाम कलंकित करने की कोशिश में। उसने जॉन से आशीर्वाद लेने आए लोगों की भीड़ को संत की कोठरी में विभिन्न दृश्य दिखाए: कभी एक महिला के जूते, कभी हार, तो कभी कुछ महिलाएं के कपड़े। जो लोग आर्चबिशप के पास आए, उन्होंने यह देखकर भटक गए और सोचने लगे कि क्या संत अपनी कोठरी में किसी वेश्या को रखे हुए हैं; वे इससे बहुत परेशान हो गए और आपस में जो उन्होंने देखा था, उस पर चर्चा करते हुए, एक-दूसरे से कहने लगे:

'एक व्यभिचारी के लिए प्रेरितीय पद पर आसीन होना अनुचित है।'

एक बार, जब लोग इकट्ठा हो गए और संत की कोठरी की ओर जा रहे थे, तो राक्षस ने खुद को एक युवती में बदल लिया, जो भीड़ के आगे दौड़ने लगी, मानो वह धन्य संत की कोठरी से भाग रही हो। जिन्होंने यह देखा, वे चिल्ला उठे और उस युवती को पकड़ने के लिए उसका पीछा करने वाले थे, लेकिन राक्षस संत की कोठरी के पीछे भाग गया और अदृश्य हो गया। लोगों के चिल्लाहट और हंगामे को सुनकर, संत अपनी कोठरी से बाहर आए और इकट्ठा हुए लोगों से पूछा:

'क्या हुआ, मेरे बच्चों? तुम इतना हंगामा क्यों मचा रहे हो?'

उन्होंने उस पर चिल्लाया, उसे व्यभिचारी कहकर गाली-गलौज करने लगे, उसे पकड़ लिया, उसका मज़ाक उड़ाने लगे और, यह न जानते हुए कि उसके साथ और क्या करें, वे आपस में चर्चा करने लगे:

'आओ, हम उसे नदी पर ले चलें और एक फट्टे पर बिठा दें, ताकि वह नदी के बहाव के साथ शहर से बाहर चला जाए।'

एक-दूसरे से सलाह-मशविरा करने के बाद, उन्होंने ईश्वर के पवित्र और ब्रह्मचारी बिशप को वोल्खोव नदी के बड़े पुल पर ले गए और संत को एक फट्टे पर बिठा दिया। इस प्रकार उस धूर्त शैतान का वचन पूरा हुआ, जिसने घमंड करते हुए कहा था:

'मैं तुम्हारे ऊपर ऐसा प्रलोभन लाऊँगा कि तुम सभी के द्वारा व्यभिचारी घोषित कर दिए जाओगे।'

अब, संत के ऐसे अपमान को देखकर, मानव जाति का धूर्त शत्रु अत्यंत प्रसन्न हुआ; लेकिन, ईश्वर की कृपा से, धर्मात्माओं की निर्दोषता की विजय हुई और उसने धूर्त शत्रु को शर्मिंदा कर दिया; क्योंकि जब संत को राफ्ट पर रखा गया, तो वह धारा के साथ नीचे की ओर नहीं, बल्कि धारा के विपरीत, ऊपर की ओर तैरने लगी, जबकि यह तथ्य था कि

बड़े पुल के पास धारा बहुत तेज थी; और राफ्ट को कोई खींच नहीं रहा था, बल्कि वह ईश्वर की इच्छा से अपने आप तैर रही थी और संत जॉर्ज के मठ की ओर बढ़ी, जो शहर से तीन पोप्रीश्चा की दूरी पर स्थित था। ऐसा चमत्कार देखकर लोग विस्मित हो गए; अपनी द्वेषभावना को भूलकर, उन्होंने अपने कपड़े फाड़े और पुकार उठे:

'हमने पाप किया है और एक अन्यायपूर्ण कार्य किया है, क्योंकि हम, भेड़ें, ने तुम्हें, हमारे चरवाहे को, गलत तरीके से दोषी ठहराया है।'

किनारे-किनारे चलते हुए, उन्होंने संत से अपने पापों को क्षमा करने और अपने धर्मपीठ पर लौटने की विनती की।

वे चिल्लाए, 'हे पिता, हमें क्षमा करें, हमने अपनी अज्ञानता में आपसे पाप किया है; हमारी दुर्भावना को याद न रखें, और अपने बच्चों को न छोड़ें।'

इसी तरह, सभी पुरोहित वर्ग, आगे बढ़कर धन्य व्यक्ति के सामने साष्टांग प्रणाम करके, उन्हें रोते हुए अपने पद पर लौटने की विनती करने लगे। हालाँकि, महाधर्माध्यक्ष ने, पहले शहीद स्तेफन की तरह, उन लोगों के लिए प्रार्थना की जिन्होंने उनके साथ अन्याय किया था, यह कहते हुए:

'प्रभु, इसे उनके खिलाफ न गिनिए!'

उपरोक्त मठ से आधा खेत की लंबाई[6113] दूर तट पर पहुँचने पर, वह नाव से उतरकर किनारे पर आ गए। लोग, आँसुओं के साथ उनके पैरों पर गिर पड़े, क्षमा याचना करने लगे, और जब पवित्र बिशप ने उन्हें क्षमा दे दी तो बहुत खुशी हुई; वे और भी अधिक प्रसन्न हुए कि प्रभु ने उनके निर्दोष और पवित्र जीवन को प्रकट किया था। दयालु चरवाहे ने सभी को क्षमादान करने के बाद, यह बताया कि कैसे वह यरूशलेम गए थे, कैसे वे उत्सव में गए थे, और कैसे शैतान ने उन्हें डराने की कोशिश की थी। यह सुनकर, सभी ने परमेश्वर की स्तुति की।

इस प्रकार, संत बड़े सम्मान और महिमा के साथ अपने धर्मप्रांत में लौट आए और लोगों को उपदेश देना शुरू किया:

'मेरे बच्चों, हर काम विवेक से करो, कहीं शैतान तुम्हें धोखा दे, कहीं कोई बुरा काम तुम्हारे सद्गुण को कलंकित कर दे, और कहीं तुम प्रभु को क्रोधित न कर दो।'

वर्णित सभी बातों के बाद, संत केवल थोड़े समय तक जीवित रहे। यह महसूस करते हुए कि उनका अंत निकट था, उन्होंने अपना बिशप का ओमोफोरीयॉन अलग रख दिया और स्कीमा ग्रहण किया, उस समय उन्हें जॉन नाम दिया गया, जो नाम उन्होंने भिक्षु के रूप में मुंडन तक धारण किया। इस दैवीय रूप में, वे प्रभु के पास शांतिपूर्वक प्रस्थान कर गए[6114]। उनके शरीर को सेंट सोफिया चर्च - ईश्वर की बुद्धि[6115] में दफनाया गया था। उनके बाद, उनके अपने भाई ग्रेगरी को महा-धर्मोपदेशाध्यक्ष के सिंहासन पर पदोन्नत किया गया, और उन्होंने भी वचन के झुंड का निष्ठापूर्वक पालन-पोषण किया।

हमारे ईश्वर की महिमा हो, अब और सदा और युगों-युगों तक! आमीन।

ट्रोपारियन, स्वर 8:

आज सबसे गौरवशाली और महान नोवगोरोड, हे संत जॉन, आपके अवशेषों को अपने भीतर पाकर, सूर्य की किरणें बिखेरती हुई और आपके पवित्र अवशेषों के संदूक के पास विश्वास के साथ आने वालों को चंगा करने वाली, उज्ज्वल रूप से चमकती है। हे पवित्र ईश्वर-ज्ञानी और चमत्कार-कर्ता, स्वर्गीय मनुष्य और पृथ्वी पर दूत, हमारे ईश्वर मसीह से प्रार्थना करें कि वे इस नगर को बर्बर कैद, गृह युद्ध, और भयानक विनाश से बचाएँ: ताकि, प्रेम में एकत्रित होकर

[6113] अर्थात्, 345 सैज़ेन, या एक वर्स्ट के दो-तिहाई से थोड़ा अधिक।

[6114] 7 सितंबर 1186

[6115] 1439 में, यूथमियस के आर्चबिशप रहते हुए, सेंट जॉन के अवशेष खोजे गए। समय के साथ, नागरिक पवित्र आर्चबिशप को भूल गए; उन्हें उनके मकबरे का स्थान भी नहीं पता था। उसी वर्ष, सेंट सोफिया कैथेड्रल के नार्टेक्स में एक छोटा पत्थर अपनी जगह से टूटकर पूजनीय संत की कब्र पर गिर पड़ा और बड़े पत्थर के कब्र-पट्टे को चकनाचूर कर दिया। यह एक अद्भुत घटना लग रही थी; इसलिए उन्होंने टूटी हुई स्लैब को हटा दिया और उसके नीचे, इस ईश्वर-पुरुष के अक्षय अवशेष पाए; लेकिन किसी को भी इस तपस्वी का नाम नहीं पता था। फिर जॉन स्वयं आर्चबिशप यूथमियस के सपने में प्रकट हुए और अपना नाम बताया। उस समय से संत जॉन की स्थानीय पूजा शुरू हुई; इस तपस्वी की सामान्य स्मृति 1547 में मेट्रोपॉलिटन मैकारियस द्वारा स्थापित की गई थी।

आपका स्मरण करते हुए, हम गीतों और भजनों के साथ आनंदपूर्वक उत्सव मनाएँ, मसीह की जय-जयकार करते हुए और उनकी महिमा करते हुए, जिन्होंने आपको चंगा करने की ऐसी कृपा प्रदान की है, और नोवगोरोड के महानगर को मध्यस्थता और शक्ति प्रदान की है।

कॉन्टाकियन, स्वर 4:

हे मसीह की अति सम्मानित कलीसिया, आनन्द मनाओ, क्योंकि आज तुम संत योहन का स्मरण कर रही हो, जो नोवोिhrad के महानगर से प्रकट हुए और अपने महिमामय चमत्कारों से सारी भूमि को चकित कर गए, और जो हर सद्गुण से सुसज्जित थे: क्योंकि उनके निधन के बाद, उनका पवित्र शरीर अक्षत पाया गया, जो महान चमत्कार करता था। इसलिए हम उनसे प्रार्थना करते हैं: हे सर्व-धन्य, हम सभी के लिए हमारे परमेश्वर मसीह से अनवरत प्रार्थना करें।

21 सितंबर

8 सितंबर (पुराना संस्करण)

ईश्वर माता के जन्म पर प्रवचन

8 सितंबर को स्मरणोत्सव

[6116]प्रभु, जो स्वर्ग में निवास करते हैं, पृथ्वी पर प्रकट होने और मानवजाति के बीच रहने की इच्छा से, पहले ही अपनी महिमा के लिए इस पर एक निवास स्थान तैयार किया – अपनी परम पवित्र माता: क्योंकि यह राजाओं की प्रथा है कि जब वे किसी नगर का भ्रमण करना चाहते हैं, तो वहाँ अपने प्रवास के लिए एक महल तैयार करवाते हैं। और जैसे पृथ्वी के राजाओं के महल सबसे कुशल कारीगरों द्वारा सबसे कीमती सामग्रियों से, सबसे ऊँचे स्थान पर, अन्य सभी मानवीय आवासों से अधिक सुंदर और विशाल बनाए जाते हैं, वैसे ही स्वर्गीय राजा की महिमा का महल भी रचा जाना था। पुराने नियम में, जब परमेश्वर यरूशलेम में वास करना चाहता था, तो सोलोमन ने उनके लिए एक मंदिर बनवाया। (1 राजा 5:1–18, 7:1–51; 2 इतिहास 2:1–18, 3:1–17, 4:1–22) सबसे कुशल निर्माता, हीराम[6117] के माध्यम से, जिन्हें हर प्रकार के काम में कला, बुद्धि और ज्ञान की प्रतिभा प्राप्त थी। सुलैमान ने मंदिर का निर्माण सबसे कीमती सामग्रियों से, उत्तम पत्थर से (1 राजा 5:17–18), लेबनान से लाए गए सुगंधित पेड़ों—देवदार और सरू (2 राजा 6:9–10)[6118] से, और शुद्ध सोने से, सबसे ऊँची जगह पर, मोरिया पर्वत पर[6119] किया। मंदिर और भी भव्य था क्योंकि इसकी दीवारों को भी करूबों, विभिन्न पेड़ों और फलों की नक्काशी से सजाया गया था (3 राजा 6:18–35, 7:18–22, 29–42)। मंदिर इतना विशाल था कि यह

[6116] सुलेमान – इज़राइल के राजा, राजा दाऊद (भजन संहिताकार) के सबसे छोटे बेटे और उत्तराधिकारी – ने 993 से 953 ईसा पूर्व तक बड़ी महिमा से शासन किया। उन्होंने राज्य की सीमाओं को मजबूत किया, आंतरिक अशांति को शांत किया, और पड़ोसी राज्यों के साथ जीवंत व्यापार स्थापित किया। सुलैमान का युग विज्ञान और कलाओं के लिए सबसे शानदार था। उसकी संपत्ति और उससे भी अधिक, उसकी बुद्धिमानी की प्रसिद्धि इस्राएल के राज्य की सीमाओं से बहुत दूर तक फैली। बाद में सुलैमान का नाम एक बुद्धिमान व्यक्ति का पर्याय बन गया। उनकी दैवीय प्रेरित रचनाएँ (नीतिवचन, प्रवचन और गीतों का गीत) सभी लोगों के लिए हमेशा ज्ञान और सद्गुण का पाठशाला बनी रहेंगी। – सोलोमन के जीवन का अंत उसके पतन से कलंकित हो गया; फिर भी, अपने जीवन के अंतिम क्षणों में, वह सभी सांसारिक चीजों की व्यर्थता को समझ गया।

[6117] बाइबिल के इतिहास में, हिराम नाम के दो व्यक्ति जाने जाते हैं, जो दोनों ही यरूशलेम में मंदिर के निर्माण से निकट रूप से जुड़े थे: 1) टायर का राजा, जो सुलैमान के साथ मैत्रीपूर्ण संबंधों में था और जिसने अपनी असाधारण इमारतों के माध्यम से अपना नाम बनाया; उसने सोलोमन को देवदार और सरू की लकड़ी, साथ ही मंदिर के निर्माण के लिए बढ़ई और कारीगर भेजे; और 2) टायर का वास्तुकार, जिसके डिजाइन के अनुसार सोलोमन के मंदिर के लिए बर्तन बनाए गए थे। यहाँ बाद वाले का उल्लेख करना अधिक स्वाभाविक है। उसके पास हर तरह की वस्तुएँ बनाने की कला और कौशल था – सोने, चांदी, तांबे और लोहे से, और पत्थरों और लकड़ी से, और सूत, बारीक सनी और बैंगनी रंग से। देखें 3 राजा 7:13–40 और 2 इतिहास 2:13–14, 4:11, 16।

[6118] लेबनान – फ़िलिस्तीन के उत्तरी भाग में यहूदिया और सीरिया की सीमा पर एक पर्वत शृंखला, जो फ़िनिसिया को बाद वाले से अलग करती है और पूरी लंबाई में फैली हुई है; यह अपने सुंदर पेड़ों, विशेष रूप से देवदार, सरू और ओक के लिए प्रसिद्ध है।

[6119] मोरियाह – यरूशलेम के पास एक पहाड़। यह पहाड़ उन पहाड़ियों में से एक है जिन पर यरूशलेम बना है; यह सियोन के उत्तर-पूर्व में स्थित है।

इस्राएल के लोगों की संपूर्ण भीड़ को आराम से समा सकता था, और प्रभु की महिमा आग और बादल के रूप में उस पर अवतरित हुई (1 राजा 8:10–11)। हालाँकि, यह मंदिर अकल्पनीय परमेश्वर को समाने के लिए अपर्याप्त था। सुलैमान ने उनके लिए एक मंदिर बनाया, लेकिन सर्वोच्च परमेश्वर मनुष्य के हाथों से बने मंदिरों में नहीं वास करते। *'तुम मेरे लिए किस प्रकार का घर बनाओगे,' प्रभु कहते हैं, 'या मेरे वास करने के लिए क्या स्थान?'* (प्रेरितों के काम 7:49)। और इसलिए परमेश्वर को यह उचित लगा कि नए नियम की अनुग्रह की शुरुआत में, एक ऐसा मंदिर बनाया जाए जो हाथों से न बना हो – सर्व-शुद्ध, परम धन्य कुँवारी मरियम। तो फिर, उस मंदिर का निर्माण किस निर्माणकर्ता ने किया? निश्चय ही, सभी में सबसे बुद्धिमान ने, स्वयं दिव्य बुद्धि ने, जैसा कि पवित्रशास्त्र कहता है: *' ' 'ज्ञान ने अपने लिए एक घर बनाया है'* (नीतिवचन 9:1), और जो कुछ भी परमेश्वर के ज्ञान द्वारा बनाया गया है वह सुंदर और परिपूर्ण है। और चूँकि परमेश्वर की बुद्धि ने वचन का जीवित वासस्थान बनाया, इस प्रकार सिद्ध परमेश्वर के लिए एक सिद्ध मंदिर, अति तेजस्वी राजा के लिए एक अति तेजस्वी वासस्थान, अति शुद्ध और निर्दोष वर के लिए एक अति शुद्ध और निर्दोष महल, निर्दोष मेमने के लिए एक निर्दोष निवास बन गया। इसके लिए स्वर्ग में एक विश्वसनीय गवाह है, जो उससे कहता है: *'तुम पूरी तरह से सुंदर हो, मेरी प्रिये, और तुममें कोई दाग नहीं है!'* (प्रेम गीत 4:7)। और संत दमास्कस लिखते हैं: 'वह संपूर्ण रूप से आत्मा का महल है, संपूर्ण रूप से परमेश्वर का नगर है, अनुग्रहों का सागर है, संपूर्ण रूप से अच्छी है, संपूर्ण रूप से परमेश्वर के समीप है' (होमीली 1, परम पवित्र थिओटोकोस के जन्म पर)।

तो, यह महल किस पदार्थ से निर्मित था? निस्संदेह, सबसे कीमती से: क्योंकि वह एक कीमती पत्थर के समान, एक राजसी वंश से, दाऊद से उत्पन्न हुईं, जिन्होंने अपनी गुलेल में रखा एक पत्थर—जो पत्थर, यानी मसीह, का पूर्वसंकेत था—से गोलियाथ को मार गिराया था[6120] (1 शमूएल 17:39–51); और, ठीक वैसे ही जैसे देवदार और सरू के सुगंधित पेड़ों से, परमेश्वर की कुँवारी माता एक पुरोहित वंश में उत्पन्न हुईं, जो परमेश्वर को सुगंधित बलिदान अर्पित करती थीं। उनके पिता, पवित्र और धर्मी जोकिम, बरलाफिरा के पुत्र थे, जिनकी वंशावली दाऊद के पुत्र नाथान तक जाती थी; और उनकी माता, पवित्र और धर्मी अन्ना, हारून के वंश के याजक मत्थान की पुत्री थीं; इस प्रकार, परम पवित्र कुँवारी माता अपने पिता की ओर से राजसी वंश की और अपनी माता की ओर से याजकीय वंश की थीं। अहो, महिमा के राजा का जीवित मंदिर कितनी अनमोल सामग्रियों—मेरा तात्पर्य उनकी अति सम्मानित वंशावली से है—से निर्मित हुआ था! और ठीक वैसे ही जैसे सुलैमान के मंदिर में पत्थर और लकड़ी की संरचनाओं को उस शुद्ध सोने से विशेष मूल्य मिला था जिससे उन्हें सुसज्जित किया गया था; इसी प्रकार, परमेश्वर की अति पवित्र माता के जन्म में, उनके राजसी और पादरिया वंश की कुलीनता ने उनके पवित्र माता-पिता की पवित्रता के माध्यम से और भी अधिक सम्मान अर्जित किया, जो *'सोने से भी अधिक कीमती है: वह कीमती पत्थरों से भी अधिक कीमती है; और जो कुछ भी आप चाहते हैं, उसकी तुलना उससे नहीं की जा सकती'* (नीतिवचन 3:15)। क्योंकि परम पवित्र कुँवारी पवित्र माता-पिता से जन्मी थीं, जो किसी भी कुलीनता से श्रेष्ठ है। इस बारे में, संत दमास्कस, पवित्र और धर्मी ईश्वर-वाहकों को संबोधित करते हुए, इस प्रकार कहते हैं:

'हे धन्य दम्पती, योआकिम और अन्ना! सचमुच, तुम्हारे गर्भ के फल द्वारा तुम निर्दोष दिखाए गए हो, प्रभु के वचन के अनुसार: *"उनके फल से तुम उन्हें पहचानोगे"* (मत्ती 7:16, 20)। तुमने अपना जीवन वैसे ही व्यवस्थित किया है जैसा परमेश्वर को प्रसन्न है और जैसा तुमसे उत्पन्न होने वाले के लिए उपयुक्त है। क्योंकि, पवित्रता और धार्मिकता से जीवन यापन करते हुए, आपने कुँवारीपन के खजाने का पोषण किया है—अर्थात् कुँवारी: जन्म से पहले कुँवारी, जन्म के समय कुँवारी, जन्म के बाद कुँवारी, और सदैव कुँवारी, जो मन, आत्मा और शरीर से सदा-कुँवारी हैं। तब यह उचित था कि पवित्रता से जन्मी यह कुँवारी अवस्था स्वयं एकमात्र पुत्र प्रकाश को देह में अर्पित की जाए। हे शब्द-कबूतरों की अति पवित्र जोड़ी, योआकिम और अन्ना! आपने, पवित्रतापूर्वक प्रकृति के नियम का पालन करते हुए, दैवीय रूप से अलौकिक वरदान प्राप्त किए, और संसार के लिए ईश्वर की कन्या माता को जन्म दिया। आपने, मानव स्वभाव में धार्मिकता और सत्यनिष्ठा से जीवन यापन करते हुए, उस कन्या को जन्म दिया जो स्वर्गदूतों से भी उच्च है और अब स्वर्गदूतों पर शासन करती है। हे अति सुन्दर और मधुर कन्या! हे उस कमल के फूल की जो काँटों के बीच उत्तम राजसी मूल से उत्पन्न

[6120] इस घटना में, पवित्र पिताओं—एफ्रेम सीरियाई, ऑगस्टीन और अन्य—मसीह के पूर्वाभास देखने को मिलते हैं: दाऊद ने एक गुलेल से फेंके गए पत्थर से गोलियाथ को मार गिराया—'मसीह के सदृश'; गोलियाथ – शैतान के सदृश: शैतान को परमेश्वर के वचन और नम्रता द्वारा गिराया गया था, और अंततः गोलगोथा में कुचल दिया गया'।

हुआ! तेरे द्वारा पुरोहतिों के राज्य को समृद्ध कयिा गया है'[6121] । इन शब्दों के साथ, संत दमास्कस स्पष्ट रूप से बताते हैं कि ईश्वर की माता कनि माता-पतिा से जन्मीं, और स्वर्गीय राजा का महल कनि सबसे कीमती पदार्थों से बना है।

तो यह जीवंत महल कसि स्थान पर स्थापति कयिा गया था? वास्तव में, सर्वोच्च स्थान पर, क्योंकि कलीसयिा उसकी गवाही इस प्रकार देती है: 'सत्य में, हे पवत्रि कुँवारी, तू सभी से ऊँची है'[6122] ; लेकनि ऊँची—स्थान के संदर्भ में नहीं, बल्कि सद्गुणों और ईश्वर के उपहारों की महानता के संदर्भ में। जहाँ परम धन्य कुँवारी का जन्म हुआ, उस स्थान के वषिय में, यह गलील देश का एक छोटा सा नगर था, जसिे नाज़रथ कहा जाता था, जो बड़े नगर कैफ़र्नम[6123] का एक हस्सिा था, और उसके नविासयिों को तुच्छ समझा जाता था; इसीलएि मसीह के वषिय में कहा गया: *'क्या नाज़रथ से कोई अच्छा कुछ नकिल सकता है?'* (यूहन्ना 1:46)। लेकनि प्रभु, *'जो यद्यपि ऊँचे नविास करते हैं, फरि भी स्वर्ग और पृथ्वी पर दृष्टि डालते हैं'* (भजन संहति 112:5–6), इस बात से प्रसन्न थे कि उनकी परम पवत्रि माता का जन्म कैफ़र्नम में नहीं, जो अपने गर्व में स्वर्ग तक पहुँच गया था, बल्कि नम्र नासरत में हुआ, *'क्योंकि जो बात मनुष्यों में आदर की है, वह परमेश्वर की दृष्टि में घृणा की है'* (लूका 16:15), जबकि जो बातें उनके द्वारा तुच्छ जानी और अपमानति की जाती हैं, वे उसकी दृष्टि में अत्यंत सम्मानति और मूल्यवान हैं। इस प्रकार नासरत का नाम स्वयं परम पवत्रि कुंवारी के गुणों की महानता का प्रतीक है। क्योंकि जैसे, अपने जन्म के समय, प्रभु ने बेतलहम—जसिका अर्थ है 'रोटी का घर'[6124] —के माध्यम से गुप्त रूप से यह संकेत दयिा था कि वे स्वर्ग से उतरी रोटी हैं[6125] ताकि मानव जाति को जीवन और शक्ति दे सकें; वैसे ही, अपनी परम पवत्रि माता के जन्म में, उन्होंने नासरत के माध्यम से, उत्कृष्ट चीजों का प्रतीक प्रस्तुत कयिा; क्योंकि 'नज़रेथ' नाम एक ऐसी जगह को दर्शाता है जो फल-फूल रही है, घरिी हुई, मुकुटधारी और छपिी हुई है[6126] : और यह सब स्पष्ट रूप से परम पवत्रि कुंवारी का पूर्वाभास देता है। वह एक ऐसा फूल है जो एक सूखे पेड़ की बाँझ और लंबे समय से नष्क्रिय गर्भ से उगा है, एक ऐसा फूल जो कभी मुरझाता नहीं, अपनी कुँवारी अवस्था में हमेशा खलिता रहता है, एक सुगंधति फूल, जो एकमात्र राजा की सुगंध बखिेरता है - एक ऐसा फूल जो फल देता है: मसीह ईश्वर प्रभु, एकमात्र सुगंधति फल। वह पवत्रि आत्मा की कृपा से पवत्रि की गई हैं, जो उन पर आईं और उन पर छा गईं, और वह सभी संतों में सबसे पवत्रि हैं, जन्होंने 'सभी संतों में सबसे पवत्रि वचन'[6127] को जन्म दयिा। वह पापी मनुष्यों की भीड़ से अलग हैं, क्योंकि वे पवत्रि और नष्कलंक हैं; और न केवल वे स्वयं पाप से मुक्त हैं, बल्कि वे पापयिों को उनके अधर्म से भी दूर करती हैं, जैसा कि कलीसयिा उनसे पुकारती है: 'हे जो दुष्ट कर्मों को दूर करती हैं, आनन्दति हो'[6128] . उन्हें महमिा और सम्मान का मुकुट पहनाया गया है: महमिा का मुकुट, क्योंकि वे एक राजसी वंश से थीं; सम्मान का मुकुट, क्योंकि वे एक पुरोहति वंश से थीं। महमिा का मुकुट, क्योंकि वे पवत्रि माता-पतिा से जन्मी थीं; सम्मान का मुकुट, क्योंकि उन्हें सुसमाचार की घोषणा और महादूत की सेवा द्वारा सम्मानति कयिा गया था। ईश्वर की माता के रूप में महमिा का मुकुट धारण कयिा; क्योंकि ईश्वर को जन्म देने से अधकि गौरवपूर्ण क्या हो सकता है? सदा कुंवारी के रूप में सम्मान का मुकुट धारण कयिा; क्योंकि प्रसव के बाद भी कुंवारी बने रहने से अधकि सम्माननीय क्या हो सकता है? महमिा का मुकुट धारण कयिा, 'अत्यंत महमिामय सेराफमि' के रूप में, क्योंकि उसने ईश्वर से सेराफकि प्रेम कयिा। सम्मान का मुकुट धारण कयिा, 'सबसे सम्मानति करूबों'[6129] , क्योंकि उन्होंने दव्यिता की बुद्धि और ज्ञान में करूबों को भी पीछे छोड़ दयिा: *'जो भलाई करते*

[6121] संत जॉन ऑफ डेमास्कस का परम पवत्रि थिओटोकोस के जन्म पर एक प्रवचन।

[6122] मंदरि में परम पवत्रि थिओटोकोस के प्रवेश की सेवा से। कैनन, इरमोस 9।

[6123] कफ़र्नाम – गेनेसरेथ झील या टबिेरयिास की समुद्र के उत्तर-पश्चमिी तट पर स्थति एक नगर, जो गलील का था और नाफ्थली तथा ज़ेबुलून जनजातयिों की सीमा पर था। यह एक प्रायद्वीप पर स्थति था, जहाँ से यॉर्डन नदी समुद्र में मलिती है, वहाँ से अधकि दूर नहीं। उद्धारकर्ता के सांसारकि जीवन के दौरान, कफ़र्नम समृद्धि और धन-संपत्ति से परपिूर्ण था। रोमनों के साथ युद्धों में, कफ़र्नम को पूरी तरह से उजाड़ दयिा गया था, और अब यहाँ केवल कुछ मछली पकड़ने वालों की झोपड़यिाँ और कुछ दयनीय खंडहर ही बचे हैं।

[6124] बेथलहम - यहूदा के कुल में एक छोटा, तुच्छ शहर, यरूशलेम से बहुत दूर नहीं, दक्षणि की ओर लगभग दो घंटे की यात्रा पर, संभवतः भूमि की उर्वरता के कारण इसका नाम पड़ा - मसीह के जन्मस्थान का स्थल है।

[6125] स्वयं उद्धारकर्ता के शब्दों में, जन्होंने अपने बारे में कहा: *'मैं स्वर्ग से उतर आया जीवति रोटी हूँ: जो कोई इस रोटी को खाएगा वह अनंतकाल तक जीवति रहेगा'* (यूहन्ना 6:51)।

[6126] नज़रेथ, हब्रि से अनुवादति, का अर्थ हो सकता है *'वंशज'*, *'अंकुर'*, *'शाखा'*, *'झाड़ी'*, या 'एक *घरि हुआ, एकांत* स्थान'।

[6127] परमेश्वर की अति पवत्रि माता को अकथस्टि, कोंटाकयिन 13।

[6128] अकाथस्टि, इकोस 5।

[6129] ईश्वर की माता को प्रार्थना, 'यह उचति है'।

हैं, उन पर महिमा, सम्मान और शांति हो' (रोमियों 2:10), प्रेरित कहते हैं। लेकिन क्या पृथ्वी पर जन्मी किसी अन्य व्यक्ति में इस अति-पवित्र कुँवारी से अधिक सदाचारी कोई है? उन्होंने प्रभु की सभी आज्ञाओं का पालन किया, प्रभु की संपूर्ण इच्छा को पूरा किया, उनकी सभी आज्ञाओं का पालन किया, उनके सभी वचनों को अपने हृदय में संजोया, और अपने पड़ोसियों के प्रति सभी दया के कार्य दिखाए। इसलिए, उन्हें सही मायने में उस व्यक्ति के रूप में मुकुट पहनाया गया है जो सब अच्छा करती है। वह एक प्रकार की कोष-भंडार भी हैं; क्योंकि उन्होंने अपनी कुँवारी पवित्रता के खजाने की इतनी सावधानी से रक्षा की कि वे इसे स्वर्गदूत को सौंपना भी नहीं चाहती थीं, क्योंकि स्वर्गदूत को देखकर वे उसके वचनों से चकित हो गईं और सोचने लगीं कि इस अभिवादन का क्या अर्थ हो सकता है (लूका 1:29)। यह सब नासरत में परम पवित्र कुँवारी में उनके नाम से ही पूर्व संकेतित था। और कौन नहीं कहेगा कि ईश्वर की गुणों और वरदानों के द्वारा मसीह का वह निवास स्थान कितना ऊँचा उठाया गया है? वह गौरवान्विति हैं, क्योंकि उन्हें स्वर्ग से प्रदान किया गया था, यद्यपि वे पृथ्वी पर सांसारिक माता-पिता से जन्मी थीं; – स्वर्ग से, क्योंकि, जैसा कि कुछ ईश्वर-प्रकाशित पुरुष कहते हैं, महादूत गब्रियल, जिन्होंने जकर्याह को यूहन्ना के जन्म की घोषणा की थी, उन्होंने जोकियाम और अन्ना को परमेश्वर की परम पवित्र माता की गर्भधारण की भी घोषणा की और उन्हें स्वर्ग से एक अति धन्य नाम लाए, और उन्होंने बांझ माँ से कहा: 'अन्ना, अन्ना! तुम एक अति धन्य पुत्री को जन्म दोगी, और उसका नाम मरियम रखा जाएगा।' इस प्रकार, उसे निस्संदेह पवित्र नगर, नया यरूशलेम, जो स्वर्ग से परमेश्वर के पास से उतरता है (प्रकाशितवाक्य 21:2), परमेश्वर का निवासस्थान कहा जा सकता है। ईश्वर का यह निवास स्थान उत्तम है, क्योंकि मसीह राजा को जन्म देने के बाद, इसे सेराफिम से भी ऊँचा उठाया गया है। हे ऊँचाई, जो मानवीय विचारों की पहुँच से परे है!

और मसीह के उस आध्यात्मिक कक्ष की सुंदरता के बारे में – उसी वाक्पटु दमिश्क के जॉन को सुनें, जो इसके बारे में इस प्रकार कहते हैं: 'उसे सभी के राजा परमेश्वर के समक्ष प्रस्तुत किया गया है, जो गुणों के वैभव से सुसज्जित है, मानो स्वर्ण वस्त्र में, पवित्र आत्मा की कृपा से अलंकृत, और उसकी महिमा उसी के भीतर है: क्योंकि जैसे हर स्त्री की महिमा उसके पति में होती है जो बाहर से आता है, वैसे ही परमेश्वर की माता की महिमा उसी के भीतर है, अर्थात्, उसकी कोख का फल'[6130] . और दमास्कसिन भी उनसे संबोधित होकर कहते हैं: 'हे ईश्वर-धन्य कुंवारी, हे ईश्वर की पवित्र कलीसिया, जिन्हें संसार के सृष्टा (संसार के सर्व-प्रज्ञावान सृष्टा) सोलोमन ने आध्यात्मिक रूप से सृजित किया और जिनमें निवास किया!' वह न तो सोने से, न ही निर्जीव पत्थरों से सुसज्जित है, बल्कि सोने के स्थान पर वह पवित्र आत्मा से दमकती है; कीमती पत्थरों के स्थान पर, उसके पास एक अनमोल मोती है - मसीह[6131] । उस पवित्र स्थल की यही शोभा है, जो सुलैमान के मंदिर में जो कुछ था, उससे कहीं अधिक सुंदर है, जहाँ करूबों, पेड़ों और फूलों की छवियाँ अंकित थीं। फिर भी इस जीवित चर्च, परम पवित्र कुँवारी में, करूबों का स्वरूप स्पष्ट रूप से दिखाई देता है; क्योंकि अपने करूब-सदृश जीवन द्वारा उसने न केवल करूबों के बराबर का स्थान प्राप्त किया है, बल्कि उनसे भी आगे निकल गई है। यदि चर्च अन्य संतों को 'करूब' कहने की आदी है, यह गाते हुए: 'हे संतों, हम आपको क्या कहें; हे खेरूबिम, क्योंकि मसीह ने तुम पर विश्राम किया है'[6132] , तो फिर परमेश्वर की कुँवारी माता खेरूबिम से भी कहीं अधिक खेरूबिम हैं, क्योंकि उनमें मसीह ने अपने शरीर सहित विश्राम किया, और उनके अति पवित्र हाथों पर परमेश्वर सिंहासन पर विराजमान हुए: वह कुँवारी एक खेरूबिक सिंहासन बन गईं। वह अपने भीतर फलदार वृक्षों की समानता को धारण करती हैं, क्योंकि वह आध्यात्मिक रूप से परमेश्वर के घर में एक फलदार जैतून का पेड़ और एक खिलती हुई खजूर की लता बन गई हैं (भजन संहिता 55:10), और यही कारण है कि अब उन्हें जीवन-दायक बगीचा कहा जाता है, जब कलीसिया गाती है: 'एक बाँझ जड़ से, हमारे लिए एक जीवन-दायक बगीचा उगाओ, हे ईश्वर की माता, चमत्कारों के ईश्वर'[6133] । यह सब उनकी आध्यात्मिक सुंदरता के बारे में बताता है। फिर भी वह शारीरिक सुंदरता से भी वंचित नहीं थीं, जैसा कि कई चर्च पिताओं ने गवाही दी है, जो घोषणा करते हैं कि पूरी दुनिया में कभी भी, न ही कभी होगी, ईश्वर की कुँवारी माता जितनी सुंदर कन्या; उन्हें देखकर,

---

[6130] ईश्वर की माता के जन्म पर उपदेश।

[6131] उपरोक्त।

[6132] ऑक्टोएकोस, शुक्रवार को शहीद की सेवा, अध्याय 8।

[6133] ईश्वर की माता के जन्म के लिए दिव्य लिटर्जी, 'हे प्रभु, मैंने पुकारा है' पर पहला स्टिचेरा।

संत डायोनसियिस द एरोपागटि[6134] उन्हें ईश्वर कह देते, यदि वह उनसे उत्पन्न हुए ईश्वर को न जानते। क्योंकि वह दिव्य अनुग्रह जिससे वह भीतर से परिपूर्ण थी, उसकी अत्यंत तेजस्वी मुखमंडल पर भी झलकता था। स्वर्ग के राजा ने पृथ्वी पर अपने लिए ऐसा निवास तैयार किया – एक ऐसा निवास जो आत्मा और शरीर दोनों में सुंदर था, *'अपने पति के लिए सजी हुई वधू के समान तैयार किया गया'* (प्रकाशितवाक्य 21:2), – और इसके अलावा, एक विशाल निवास: 'उसकी कोख को उसने स्वर्गों से भी विशाल बनाया' ([6135]), और उसमें 'अकथनीय मसीह ईश्वर' वास करते थे।

शाही महल आमतौर पर बड़े पैमाने पर बनाए जाते हैं, ताकि उनमें न केवल राजा, बल्कि उसकी सेवा करने वाले सेवकों की भीड़ और चारों ओर से आने वाले लोगों के लिए भी जगह हो सके। वचन का विशाल निवास-स्थान, सर्व-पवित्र कुँवारी, न केवल राजा के रूप में परमेश्वर वचन के लिए, बल्कि परमेश्वर के हम सेवकों के लिए भी विशाल है, जिन्हें वह अपने में ग्रहण करती हैं: वह परमेश्वर को अपनी कोख में धारण करती हैं, और हमें अपनी कृपा में। ईश्वर के चुने हुए पात्र, पवित्र प्रेरित पौलुस ने, प्रेम से प्रेरित होकर, अपने प्रिय बच्चों से कहा: *'हमारे हृदय विस्तृत हो गए हैं। तुम हमारे भीतर संकुचित नहीं हो'* (2 कुरिन्थियों 6:11–12)। लेकिन संतों में से किसके पास मरियम और ईश्वर के समान इतना विशाल गर्भ है? यहाँ पवित्र लोगों के लिए स्थान है, और पापी को यहाँ कोई संकीर्णता महसूस नहीं होती। पश्चातापी लोगों के लिए उसमें स्थान है, और निराश और अपश्चातापी लोगों के लिए वह एक निर्बाध आश्रय है, ठीक वैसे ही जैसे नूह की कश्ती न केवल स्वच्छ जानवरों के लिए बल्कि अशुद्ध जानवरों के लिए भी एक आश्रय थी। उनके दया के गर्भ में, सभी दुखी, अन्यायग्रस्त, भूखे, यात्रियों, परेशान और बीमार लोगों को बिना किसी रोक-टोक के स्थान मिलता है: क्योंकि जिस गर्भ ने हमारे परम दयालु ईश्वर को जन्म दिया है, वह दयालु ही हो सकता है। पृथ्वी के राजाओं के महलों की रक्षा एक बड़ी सशस्त्र सेना करती है, जो प्रवेश करने के इच्छुक सभी को अंदर नहीं आने देती, बल्कि यह सावधानी से जाँच करती है कि वे कहाँ से आए हैं और किस उद्देश्य से आए हैं। लेकिन मसीह का जीवंत महल, यद्यपि करूबों और सेराफों और स्वर्गदूतों और सभी संतों की अनगिनत सेनाओं से घिरा हुआ है, फिर भी जो कोई भी इच्छा रखता है, उसे उसकी दयालु गर्भ के द्वारों से बिना किसी बाधा के प्रवेश करने देता है: न तो पहरेदार उन्हें पीछे हटाते हैं, और न ही योद्धा उन्हें भगाते हैं या यह पूछते हैं कि वे क्यों आए हैं, बल्कि हर कोई एक प्रार्थना के साथ बिना किसी बाधा के प्रवेश करता है और एक योग्य निवेदन के उत्तर में एक उपहार प्राप्त करता है।

आओ, अतःहम उस दया में शरण लें, जो एक बाँझ गर्भ से जन्मीं, इस अभिवादन के साथ:

हे सर्व के राजा के सर्व-शुद्ध वास, आनन्दित हो! हे परमेश्वर और वचन के वास, आनन्दित हो, जिनके प्रति पिता और पवित्र आत्मा के साथ, और आपके प्रति हे पिता की बेटी, पुत्र की माता, पवित्र आत्मा की वधू, हम नश्वर प्राणियों से अनन्त काल तक सम्मान और महिमा हो। आमीन।

ट्रोपारियन, स्वर 4:

हे परमेश्वर की कुंवारी माता, आपकी जन्मतिथि संपूर्ण ब्रह्मांड के लिए आनंद का कारण है: क्योंकि आपसे धर्म का सूर्य, मसीह हमारे ईश्वर, प्रकट हुए, जिन्होंने श्राप को तोड़कर आशीर्वाद प्रदान किया, और मृत्यु को समाप्त कर हमें अनंत जीवन प्रदान किया।

कॉन्टाकियन, स्वर 4:

हे सर्वशुद्ध एक, आपकी पवित्र जन्मतिथि के द्वारा, जोकिम और अन्ना बाँझपन के कलंक से, और आदम और हव्वा नश्वर क्षय से मुक्त हुए। इस प्रकार आपके लोग भी, अपने पापों के दोष से मुक्त होकर, आपको पुकारते हुए उत्सव मनाते हैं: 'बाँझ ने परमेश्वर की माता को जन्म दिया, जो हमारे जीवन की पोषक हैं।'

[6134] डियोनसियिस द एरोपागटि – एथेन्स के एरोपागस के एक सदस्य, जो प्रेरित पौलुस द्वारा ईसाई धर्म में परिवर्तित हुए (प्रेरितों के काम 17:34); वे एथेन्स के पहले बिशप थे और उन्होंने कई व्यक्तियों और चर्चों को पत्र लिखे। उन्होंने लगभग 96 ईस्वी में डोमिशियन के शासनकाल के दौरान शहीद होकर अपनी सेवा को मुकम्मल किया। उनका पर्व दिवस 3 अक्टूबर है।

[6135] संत बेसिल द ग्रेट की धर्मविधि, भजन 'तुम्हारे में आनन्दित हों' से।

22 सतिंबर

9 सतिंबर (पुराना कैलेंडर)

पवत्रि और धर्मी ईश्वर-वाहक योआकमि और अन्ना का जीवन

9 सतिंबर को स्मरणोत्सव

पवत्रि और धर्मी योआकमि यहूदा के कुल से, राजा दाऊद के घराने से थे। उनका वंशावली इस प्रकार है: दाऊद के पुत्र नातान ने लेवी नामक एक पुत्र को जन्म दयिा; लेवी ने मल्कीयाह और पंफरि को जन्म दयिा; पंफरि ने बर्फरि को जन्म दयिा; और बर्फरि ने परमेश्वर की माता के पति, योआकमि को जन्म दयिा।

संत योआकमि गलील के नासरत नगर में रहते थे और उनका ववािह लेवी के कुल, हारून की वंशज, पुजारी मत्थान की बेटी अन्ना नामक महलिा से हुआ था, जो एंटपिाटर के पुत्र हेरोद के शासन से पहले रहते थे। यह पुजारी, मत्थान, का ववािह बेथलहम नगर की यहूदा कुल की मरयिम से हुआ था, और उनकी तीन बेटयिाँ थीं: मरयिम, सोफयिा और अन्ना। इनमें से, मरयिम सबसे पहले बेतलेहेम में ववािहति हुईं और उन्होंने सलोमे को जन्म दयिा; फरि सोबयिा ने, भी बेतलेहेम में, ववािह कयिा और उन्होंने यूहन्ना बपतस्मिादाता की माता एलजिाबेथ को जन्म दयिा; तीसरी, जैसा कि हम पहले ही कह चुके हैं, परम पवत्रि थओिटोकोस की माता, का ववािह गलील देश के नासरत नगर में योआकमि के साथ हुआ था। ये पति-पत्नी, योआकमि और अन्ना, कुलीन वंशज थे, प्रभु के वधिान में पारंगत थे और परमेश्वर के सामने धर्मी थे। हालाँकि उनके पास सांसारकि धन था, फरि भी वे आध्यात्मकि धन से वंचति नहीं थे। हर सद्गुण से सुसज्जति, उन्होंने ईश्वर के वधिान की सभी आज्ञाओं का नर्दिोष रूप से पालन कयिा। प्रत्येक पर्व के दनि, यह धर्मात्मा दंपति अपनी संपत्ति का दो भाग अलग रखता था: एक भाग वे चर्च की आवश्यकताओं के लिए देते थे, और दूसरे को गरीबों में बाँट देते थे।

अपने धार्मकि जीवन के द्वारा, योआकमि और अन्ना ने परमेश्वर को इतना प्रसन्न कयिा कि उन्होंने उन्हें परम पवत्रि कुँवारी, प्रभु की पूर्व-चुनी माँ के माता-पति बनने के योग्य समझा। इसी से स्पष्ट है कि उनका जीवन पवत्रि, ईश्वर को प्रयि और शुद्ध था, क्योंकि उन्होंने एक ऐसी पुत्री को जन्म दयिा, जो सभी संतों में सबसे पवत्रि, कसिी और से अधकि ईश्वर को प्रसन्न करने वाली, और सर्बों से अधकि सम्मानति थी। उस समय, अपने नर्दिोष जीवन के कारण, पृथ्वी पर योआकमि और अन्ना से अधकि ईश्वर को प्रयि कोई और नहीं था। यद्यपि उस समय बहुत से लोग थे जो धार्मकिता से जीवन यापन करते थे और परमेश्वर को प्रसन्न करते थे, फरि भी ये दोनों अपने गुणों में सभी से श्रेष्ठ थे और परमेश्वर के समक्ष परमेश्वर की माता के माता-पति बनने के लिए सबसे योग्य के रूप में प्रकट हुए। यदि उन्होंने धार्मकिता और पवत्रिता में वास्तव में सभी से बढ़कर न कयिा होता, तो परमेश्वर द्वारा उन पर यह अनुग्रह न कयिा गया होता। लेकनि जैसे प्रभु स्वयं परम पवत्रि और नर्मिल माता से अवतार लेने वाले थे, वैसे ही यह उचति था कि ईश्वर की माता पवत्रि और शुद्ध माता-पति से जन्म लें। जैसे सांसारकि राजाओं के पास उनके शाही परधिान होते हैं, जो साधारण कपड़े से नहीं बल्कि सोने से बुने हुए कपड़े से बने होते हैं, वैसे ही स्वर्गीय राजा ने भी अपनी परम पवत्रि माता के रूप में ऐसी ही एक को चाहा, जसिके शरीर में, एक शाही परधिान की तरह, उन्हें एक साधारण, असंयमी माता-पति से, मानो साधारण कपड़े से, नहीं बल्कि पवत्रि और धर्मी माता-पति से, मानो सोने से बुने हुए कपड़े से, वस्त्र धारण करना था, जसिका पूर्व-प्रतीक पुराने नयिम का मंडप था, जसि बनाने के लिए परमेश्वर ने मूसा को नीले और बैंगनी रंग के कपड़े और बारीक सन से बनाने की आज्ञा दी थी (नर्गिमन 27:16)। यह मंडप कन्या मरयिम का पूर्वसंकेत था, जनिमें ईश्वर *'मनुष्यों के बीच'* वास करते थे, जैसा कि लखिा है: *'देखो, परमेश्वर का मंडप मनुष्यों के साथ है, और वह उनके साथ वास करेगा'* (प्रकाशतिवाक्य 21:3)। जो करmesīn और scarlet कपड़ा और महीन सूती कपड़ा, जसिसे यह मंडप बनाया गया था, ईश्वर की माता के माता-पति का पूर्वसंकेत था, जो पवत्रिता और संयम से अस्तत्वि में आईं और जन्म लीं, मानो करmesīn और scarlet वस्त्रों से, और प्रभु की सभी आज्ञाओं के पालन में उनकी पूर्णता से, मानो महीन सूती कपड़े से।

लेकनि ये पवत्रि पति-पत्नी, ईश्वर की इच्छा से, लंबे समय तक संतानहीन रहे—ताकि ऐसी पुत्री की गर्भधारण और जन्म में ही ईश्वर की कृपा की शक्ति, जन्म लेने वाले की महमिा, और उसके माता-पति की गरमिा, तीनों प्रकट हों;

क्योंकि एक बाँझ और वृद्ध स्त्री के लिए ईश्वर की कृपा की शक्ति के सिवाय जन्म देना असंभव है: यहाँ अब प्रकृति कार्य नहीं करती, बल्कि ईश्वर कार्य करते हैं, जो प्रकृति के नियमों को पार करते हैं और बाँझपन के बंधनों को तोड़ते हैं। बांझ और वृद्ध माता-पिता से जन्म लेना स्वयं बच्चे के लिए एक बड़ा सम्मान है, क्योंकि वह ऐसे माता-पिता से नहीं जन्मी है जिनमें आत्म-नियंत्रण की कमी हो, बल्कि पवित्र और वृद्ध माता-पिता से, जैसे योआकिम और अन्ना, जो पचास साल तक विवाह में रहे और जिनके कोई संतान नहीं थी। अंत में, इस प्रकार के जन्म के माध्यम से, माता-पिता की गरिमा भी प्रकट होती है, क्योंकि, एक लंबे समय की बाँझपन के बाद, उन्होंने पूरी दुनिया को खुशी दी, इस प्रकार वे पवित्र पुरखों अब्राहम और उनकी धर्मपरायण पत्नी सारा के समान हो गए, जिन्होंने ईश्वर के वचन के अनुसार, अपनी वृद्धावस्था में इसहाक को जन्म दिया (उत्पत्ति 21:2)। हालाँकि, यह निस्संदेह कहा जा सकता है कि परमेश्वर की माता का जन्म अब्राहम और सारा के इसहाक के जन्म से श्रेष्ठ है। जैसे स्वयं कुँवारी मरियम, जिन्होंने जन्म दिया, इसहाक से श्रेष्ठ और सम्मान की अधिक योग्य हैं, वैसे ही योआकिम और अन्ना की गरिमा भी अब्राहम और सारा की गरिमा से अधिक और ऊँची है। वे इस पदवी को तुरंत प्राप्त नहीं कर सके, बल्कि केवल कठोर उपवास और प्रार्थना के माध्यम से; वे आध्यात्मिक पीड़ा और हार्दिक दुख में परमेश्वर से इसके लिए विनती करते रहे: और उनका दुख आनंद में बदल गया, उनकी कलंकित प्रतिष्ठा महान सम्मान की अग्रदूत साबित हुई, उनकी गंभीर विनती आशीर्वाद प्राप्त करने का मार्गदर्शक बनी, और प्रार्थना सबसे अच्छा मध्यस्थ बन गई।

जोकिम और अन्ना को लंबे समय से इस बात का दुख और शोक था कि उनके कोई संतान नहीं थी। एक दिन, एक बड़े पर्व के दिन, जोकिम यरूशलेम के मंदिर में प्रभु परमेश्वर के लिए भेंटें लेकर आए; जोकिम के साथ, सभी इस्राएलियों ने भी परमेश्वर के लिए अपनी-अपनी भेंटें बलिदान के रूप में चढ़ाईं। उस समय के महापुजारी इसाखार ने जोआकिम की भेंट स्वीकार करने से इनकार कर दिया क्योंकि वह निस्संतान था।

उसने कहा, 'यह उचित नहीं है कि हम तुमसे बलिदान स्वीकार करें, क्योंकि तुम्हारे कोई संतान नहीं है और इसलिए परमेश्वर का कोई आशीर्वाद तुम पर नहीं है: निश्चय ही तुम्हारे कुछ गुप्त पाप होंगे।'

इसी प्रकार, रूबेन के कुल का एक यहूदी, जो अन्य लोगों के साथ अपनी भेंट चढ़ा रहा था, ने जोकिम को डाँटते हुए कहा:

"तुम मेरे सामने ईश्वर को बलिदान क्यों चढ़ाना चाहते हो? क्या तुम्हें नहीं पता कि तुम हमारे साथ उपहार चढ़ाने के अयोग्य हो, क्योंकि तुम इस्राएल में कोई वंशज नहीं छोड़ोगे[6136] ?"

इन अपमानों से योआकीम को गहरा दुख हुआ, और बड़े शोक में वह ईश्वर के मंदिर से निकल गया, लज्जित और अपमानित होकर; उत्सव उसके लिए शोक में बदल गया, और उत्सवी आनंद दुख में परिवर्तित हो गया। गहरे दुख से व्यथित, वह घर नहीं लौटा, बल्कि अपनी भेड़ों का चरागाह संभाल रहे चरवाहों के पास निर्जन स्थान में चला गया, और वहाँ उसने अपनी संतानहीनता और उसे मिली निंदा और फटकारों पर रोया। अपने पूर्वज अब्राहम को याद करते हुए, जिन्हें ईश्वर ने उनके वृद्धावस्था में भी एक पुत्र प्रदान किया था, जोकिम ने प्रभु से भक्तिपूर्वक प्रार्थना करना शुरू कर दिया कि वह उसे भी वही अनुग्रह दे, उसकी प्रार्थना सुने, उस पर दया करे, और उससे लोगों की निंदा दूर करे, और उसके वृद्धावस्था में उसके विवाह को एक संतान का फल प्रदान करे, जैसे उसने एक बार अब्राहम के लिए किया था।

उसने प्रार्थना की, 'हे प्रभु, मुझे एक बच्चे का पिता कहलाने का सौभाग्य दें, बजाय इसके कि एक संतानहीन व्यक्ति के रूप में, जिसे आपने अस्वीकार कर दिया है, मुझे लोगों की निंदा सहनी पड़े!'

योआकिम ने इस प्रार्थना के साथ उपवास भी किया और चालीस दिनों तक रोटी नहीं खाई।

उसने कहा, 'मैं न तो कुछ खाऊँगा और न ही अपने घर लौटूँगा; मेरी आँसू ही मेरा भोजन हों और यह सुनसान जगह मेरा घर, जब तक कि इस्राएल का प्रभु परमेश्वर मेरी न सुने और मुझ से यह अपमान न हटा दे।'

इसी तरह, उसकी पत्नी ने घर पर रहते हुए यह सुनकर कि महापुजारी ने उनकी भेंट स्वीकार करने से इनकार कर दिया था, उन्हें उनकी संतानहीनता के लिए डांटा था, और यह कि उसका पति अत्यधिक दुख के कारण निर्जन स्थान में चला गया था, अथाह आँसू बहाए।

[6136] इज़राइल के पुरखों को भी बार-बार अपने वंशज बढ़ाने का ईश्वर का वचन मिला था; इसलिए, इस्राएलियों ने बहुत सारे संतान को परमेश्वर की सबसे बड़ी खुशी और आशीर्वाद माना। दूसरी ओर, ईश्वर के प्राचीन वचन के अनुसार, इस्राएलियों को आशा थी कि उन्हें अपने वंशजों में ईश्वर द्वारा प्रतिज्ञा किया गया 'स्त्री का वंशज' - मसीहा - मिलेगा। इसीलिए यहूदियों द्वारा बाँझपन को एक गंभीर दुर्भाग्य और पापों के लिए ईश्वर की ओर से एक दंड माना जाता था, और यहूदी बाँझ लोगों को बड़े पापी मानते थे।

उसने कहा, 'अब, मैं सबसे अधिक दुखिया हूँ: ईश्वर द्वारा त्यागी गई, लोगों द्वारा निंदा की गई, और अपने पति द्वारा परित्यक्त! अब मुझे किस बात पर रोना चाहिए: अपनी विधवा होने पर, या अपनी संतानहीनता पर, अपनी अनाथता पर, या इस बात पर कि मुझे माँ कहलाने योग्य नहीं समझा गया?!'

इस प्रकार वह उन सभी दिनों में कड़वे आँसू बहाती रही।

अन्ना की दासी, जिसका नाम जूडिथ था, ने उसे सांत्वना देने की कोशिश की, लेकिन वह ऐसा नहीं कर सकी: क्योंकि समुद्र जितनी गहरी दुख वाली को कौन सांत्वना दे सकता है?

एक दिन, दुखी अन्ना अपने बगीचे में गई, एक लॉरेल के पेड़ के नीचे बैठ गई, अपने दिल की गहराई से एक आह भरी और, अपनी आँसुओं से भरी आँखें उठाकर स्वर्ग की ओर देखा, तो पेड़ में छोटे चूजों वाला एक पक्षी का घोंसला देखा। इस दृश्य से उनका दुख और भी बढ़ गया, और वह चिल्लाने लगी:

'हाय मेरी किस्मत! मैं इस्राएल की सभी बेटियों में सबसे पापी हूँ, क्योंकि सभी महिलाओं में से केवल मैं ही इतनी अपमानित हूँ। हर कोई अपनी कोख के फल को अपनी बाहों में उठाए रहता है – हर कोई अपने बच्चों में सांत्वना पाता है: फिर भी मैं ही इस आनंद से अनजान हूँ। हाय मेरी किस्मत! ईश्वर के मंदिर में सभी की बलिदान स्वीकार की जाती है, और उन्हें संतान होने पर सम्मानित किया जाता है; फिर भी मुझे ही मेरे प्रभु के मंदिर से निकाल दिया गया है। हाय मुझ पर! मैं अपनी तुलना किससे करूँ? न तो आकाश के पक्षियों से और न ही पृथ्वी के जानवरों से: क्योंकि वे भी, हे प्रभु ईश्वर, आपको अपनी मेहनत का फल देते हैं, जबकि मैं अकेली ही बाँझ हूँ। मैं तो स्वयं की तुलना धरती से भी नहीं कर सकती: क्योंकि वह फलती-फूलती है और अंकुर देती है, और फल लाकर, हे स्वर्गीय पिता, आपको आशीष देती है; परन्तु मैं अकेली पृथ्वी पर बाँझ हूँ। हाय मुझ पर, हे प्रभु, हे प्रभु! मैं अकेली, एक पापी, संतान से वंचित हूँ। हे सर्वशक्तिमान प्रभु! आपने एक बार सारा को उसके वृद्धावस्था में एक पुत्र, इसहाक, दिया (उत्पत्ति 21:1–8), आपने, जिन्होंने अपने भविष्यवक्ता शमूएल की माता हन्नाह की कोख खोली (1 शमूएल 1:20), अब मेरी ओर देखें और मेरी प्रार्थना सुनें। हे सेनाओं के प्रभु! आप जानते हैं कि संतानहीनता का तिरस्कार कैसा होता है: मेरे हृदय के दुख को समाप्त करें और मेरी कोख खोलें, और मुझे, जो बाँझ हूँ, फलदायी बनाएं, ताकि हम मेरे द्वारा जन्म दिए गए बच्चे को आपके लिए एक भेंट, आशीर्वाद के रूप में ला सकें, और भजन गाते हुए तथा एकमत होकर आपकी दया की महिमा कर सकें।

जब अन्ना इस प्रकार रोती-बिलखती पुकार रही थी, तब प्रभु का दूत उसके पास प्रकट हुआ और कहा:

'अन्ना, अन्ना! तुम्हारी प्रार्थना सुनी गई है; तुम्हारी आहें बादलों से पार हो गई हैं; तुम्हारे आँसू परमेश्वर के सामने पहुँच गए हैं; और तुम गर्भधारण करोगी और एक अति धन्य पुत्री को जन्म दोगी; उसके द्वारा पृथ्वी के सभी कुल धन्य होंगे, और सारी दुनिया को उद्धार मिलेगा; उसका नाम मरियम होगा।'

दूत के वचन सुनकर, अन्ना ने परमेश्वर के सामने सिर झुकाया और कहा:

'जिस प्रकार यहोवा परमेश्वर जीवित है, यदि मेरे कोई संतान हुआ, तो मैं उसे परमेश्वर की सेवा के लिए अर्पित कर दूँगा। वह अपने पूरे जीवन दिन-रात उनकी सेवा करे और परमेश्वर के पवित्र नाम का महिमामंडन करे।'

इसके बाद, अनुग्रहपूर्ण मुलाकात के लिए ईश्वर की प्रार्थना में धन्यवाद करने हेतु, संत अन्ना अपार आनंद से भरकर यरूशलेम की ओर तेज़ी से चलीं।

उसी समय, स्वर्गदूत जोकिम के पास जंगल में प्रकट हुआ और कहा:

'योआकिम, योआकिम! ईश्वर ने तुम्हारी प्रार्थना सुनी है और तुम पर अपनी कृपा करने के लिए प्रसन्न हैं: तुम्हारी पत्नी अन्ना गर्भधारण करेंगी और तुम्हें एक पुत्री देंगी, जिसका जन्म सारी दुनिया के लिए एक आनंद होगा। और यहाँ एक संकेत है कि मैं तुम्हें सत्य बता रहा हूँ: यरूशलेम में परमेश्वर के मन्दिर में जाओ, और वहाँ, स्वर्ण द्वार पर, तुम्हें अपनी पत्नी अन्ना मिलेगी, जिसे मैंने भी यही समाचार दिया है।"

जोकिम, इस दैवीय घोषणा से चकित होकर, परमेश्वर की महिमा करने लगा और अपनी महान दया के लिए हृदय और वचन से उनकी धन्यवाद करने लगा; आनंद और प्रसन्नता के साथ, वह यरूशलेम के मंदिर की ओर तेज़ी से चल पड़ा। वहाँ, ठीक वैसे ही जैसे स्वर्गदूत ने उसे बताया था, उसे अना का स्वर्ण द्वार पर प्रार्थना करते हुए मिला, और उसने उसे स्वर्गदूत का संदेश सुनाया। उसने भी उसे वह सब बताया जो उसने उस स्वर्गदूत से देखा और सुना था जिसने उसकी बेटी के जन्म की घोषणा की थी। तब जोकिम और अन्ना ने परमेश्वर की महिमा की, जिन्होंने उन पर इतनी बड़ी दया दिखाई थी, और पवित्र मंदिर में उसकी आराधना करके अपने घर लौट आए।

और संत अन्ना को दसिंबर के नौवें दनि गर्भधारण हुआ, और सतिंबर के आठवें दनि उन्होंने एक पुत्री को जन्म दयिा, जो सर्व-शुद्ध और परम धन्य कुँवारी मरयिम थीं, जो हमारे उद्धार की शुरुआत और मध्यस्थ हैं, जनिके जन्म पर स्वर्ग और पृथ्वी दोनों आनंदति हुए। उनके जन्म के अवसर पर, जोकमि ने ईश्वर को महान उपहार, बलदिान और होमबलि अर्पति की, और ईश्वर के आशीर्वाद के योग्य समझे जाने के लिए उन्होंने महापुजारी, पुरोहतिों, लेवयिों और सभी लोगों का आशीर्वाद प्राप्त कयिा। फरि उन्होंने अपने घर पर एक भव्य दावत का आयोजन कयिा, और सभी ने आनंद के साथ ईश्वर की महमिा की।

उनके माता-पति ने बढ़ती हुई कुँवारी मरयिम को अपनी आँख के तारे की तरह लाड़-प्यार से पाला, क्योंकि उन्हें ईश्वर से एक वशिष प्रकटवाणी द्वारा पता था कि वह पूरी दुनयिा की रोशनी और मानव जाति का नवीनीकरण होंगी। इसलिए, उन्होंने उनका पालन-पोषण इतनी सावधानी और ध्यान से कयिा, जैसा कि हमारी मुक्ति के की माँ बनने वाली के लिए उचति था। वे न केवल एक लंबे समय से प्रतीक्षति बेटी के रूप में उनसे प्रेम करते थे, बल्कि उन्हें अपनी देवी के रूप में भी सम्मानति करते थे, उनके बारे में स्वर्गदूत द्वारा कहे गए शब्दों को याद करते हुए, और अपने हृदय में यह पूर्वानुमान लगाते हुए कि उनके माध्यम से क्या पूरा होना था। वह, दैवीय अनुग्रह से परपिूर्ण, ने रहस्यमय तरीके से अपने माता-पति को उसी अनुग्रह से समृद्ध कयिा। जसि प्रकार सूर्य अपनी करिणों से स्वर्ग के तारों को प्रकाशति करता है, और उन पर अपनी रोशनी के कण प्रदान करता है, उसी प्रकार ईश्वर द्वारा चुनी गई मरयिम ने भी, सूर्य की तरह, अपने ऊपर प्रदान की गई अनुग्रह की करिणों को योआकमि और अन्ना पर चमकाया, ताकि वे भी ईश्वर की आत्मा से भर गए और स्वर्गदूत के शब्दों के पूर्ण होने पर दृढ़ वशि्वास कयिा।

जब युवा मरयिम तीन वर्ष की हुईं, तो उनके माता-पति उन्हें बड़ी सम्मान के साथ, जले हुए दीयों के साथ ले जाकर प्रभु के मंदरि में ले आए और उन्हें परमेश्वर की सेवा के लिए समर्पति कर दयिा, जैसा कि उन्होंने वादा कयिा था। मंदरि में मरयिम के समर्पण के कुछ वर्षों बाद, संत योआकमि की अस्सी वर्ष की आयु में मृत्यु हो गई। वधिवा होने के बाद, संत अन्ना ने नासरत छोड़ दयिा और यरूशलेम आ गईं, जहाँ वह अपनी परम पवत्रि पुत्री के पास रहीं और परमेश्वर के मंदरि में नरिंतर प्रार्थना करती रहीं। यरूशलेम में दो साल रहने के बाद, 79 वर्ष की आयु में प्रभु में नधिन हो गया।[6137]

हे पवत्रि माता-पति, योआकमि और अन्ना, अपनी परम धन्य पुत्री के लिए आप सचमुच धन्य हैं!

आप अपनी पुत्री के पुत्र, हमारे प्रभु यीशु मसीह के कारण वशिष रूप से धन्य हैं, जनिके द्वारा पृथ्वी के सभी राष्ट्रों और लोगों को आशीर्वाद मलिा है! पवत्रि चर्च ने आपको सही ही ईश्वर-वाहक का नाम दयिा है[6138] , क्योंकि हम जानते हैं कि ईश्वर आपके परम पवत्रि पुत्री से जन्म हुए थे। अब जब आप स्वर्ग में उनके समीप हैं, तो प्रार्थना करें कि हमें भी आपकी अनंत आनंद का एक अंश प्राप्त हो। आमीन।

ट्रोपारयिन, स्वर 1:

धर्म से और पवत्रि अनुग्रह में जीवन व्यतीत करके, योआकमि और अन्ना ने हमारे लिए परमेश्वर द्वारा दयिा गया शशिु को जन्म दयिा; इसलिए, आज दव्यि कलीसयिा आनन्दपूर्वक आपकी सम्मानति स्मृति का उत्सव मनाती है, परमेश्वर की स्तुति और महमिा करते हुए, जनि्होंने दाऊद के घराने में हमारे लिए उद्धार का सींग उत्पन्न कयिा है।

कॉन्टाकयिन, स्वर 2:

अब अन्ना आनंदति है, उसकी बाँझपन की बेड़ी खुल गई है, और वह परम पवत्रि को पोषति करती है, सभी को उस की स्तुति करने के लिए बुलाती है, जसिने उसकी कोख से मानव जाति को एकमात्र माता और नर्मिल माता प्रदान की।

[6137] चर्च 25 जुलाई को धर्मी अन्ना के नधिन का स्मरण करता है।

[6138] हर दनि, दव्यि सेवाओं के अंत में, वदिाई पर, चर्च प्रभु से, परमेश्वर की माता और पवत्रि और धर्मी धर्म-माता-पति योआकमि और अन्ना की प्रार्थनाओं के द्वारा, चर्च से जाने वालों के लिए दया और उद्धार की याचना करती है; और वार्षकि रूप से उन्हें परमेश्वर की माता के जन्म के बाद वाले दनि स्मरण करती है, क्योंकि परमेश्वर की माता के जन्म के पर्व के बाद उनके पवत्रि माता-पति को सम्मानति करना उचति है।

पवत्रि शहीद सेवेरयिन का कष्टकथा

9 सतिंबर को स्मरणोत्सव

दुष्ट राजा लसिनियिस के शासनकाल में, जब सेबास्टे के राज्यपाल एग्रकिोला[6139] ने चालीस पवत्रि शहीदों को गरिफ्तार कर जेल में डाल रखा था, उस क्षेत्र में सेवेरयिन नाम का एक कुलीन वंशज व्यक्ति रहता था।

सेवेरयिन एक ईसाई था। जेल में चालीस शहीदों से अक्सर मलिने जाकर, उसने उन्हें मसीह के नाम के लिए शहीद होने में प्रोत्साहति कयिा; और वे अपने प्रभु के प्रति इतने प्रेम से भर गए थे कि सेबास्टे झील के ठंडे पानी भी उनके भीतर के इस दविय प्रेम को बुझा नहीं सके; अधर्मी शासक के आदेश पर झील के पानी में प्रवेश करने के बाद, उन्होंने सर्वसम्मति से अपने यातनाकर्ता के सामने यीशु मसीह के नाम का अंगीकार कयिा और शहीद हो गए[6140] ।

सेबास्टे के शहीदों के दुख-कष्ट के बाद – जब लाइसयिस, एक जंगली जानवर जतिना उग्र और क्रूर व्यक्ति, जसिने वशि्वासयिों का संहार कयिा और ईसाईयों का खून बहाया – संत सेवेरयिन के लिए भी वही पराक्रम और वही संघर्ष करने का समय आ गया, जसिके लिए उन्होंने अपने शब्दों से दूसरों को उत्तेजति कयिा था।

नदिक प्रांत के राज्यपाल के सामने आकर उससे कहने लगे:

'सेवरयिन इस शहर में हमारे महान देवताओं का अपमान कर रहा है: न केवल वह स्वयं उनका सम्मान करने या उनकी पूजा करने में वफिल रहता है, बल्कि वह कई अन्य लोगों को भी उनका अपमान करने और उनसे घृणा करने की सलाह देता है। स्वयं मसीह में वशि्वास करते हुए, वह दूसरों को भी वही वशि्वास सखिाता है, और पहले ही काफी लोग उससे जुड़ गए हैं; इसलिए यदि आप उसे मार नहीं डालते, तो पूरा शहर जल्द ही उसके धर्म को अपना लेगा: और देवता हमारे शहर से क्रोधति हो जाएंगे और अपनी कृपा वापस ले लेंगे, और राजा, जब उसे यह खबर मलिेगी, तो हम पर कोई दया नहीं करेगा।"

यह सुनकर, राज्यपाल लाइसयिस ने सेवरयिन को पकड़ने और अपने सामने लाने के लिए अपने सेवकों को भेजा। परन्तु मसीह का सैनकि, दूतों के आने और उसे ले जाने का इंतजार कए बनिा, उनके आने से पहले ही स्वेच्छा से उनके सामने उपस्थति हो गया, और लाइसयिस के सामने खड़ा होकर, साहस और नरि्भीकता से उससे बोला:

'क्या तुम्हारे लिए अपनी ही वनिाश का सामना करना पर्याप्त नहीं है, कि तुम हमारी आत्माओं को भी नष्ट करना चाहते हो और उन्हें कसिी इनाम की तरह राक्षसों की शक्ति के हवाले करना चाहते हो?' लेकनि यह जान लो: तुम यहाँ साहसी पुरुषों से भड़ि हो, न कि कायरों से; क्योंकि मेरे लिए, जैसा कि मेरे दैवीय शक्षिक पौलुस कहते हैं, *'जीना मसीह है, और मरना लाभ है'* (फलिि. 1:21)।

गवर्नर लाइसयिस, ये शब्द सुनकर, एक पल के लिए रुका; फरि, अपने सामने खड़े सेवकों पर नज़र डालते हुए और सेवेरयिन की ओर हाथ से इशारा करते हुए, उसने उनसे गुस्से में कहा:

'इसे ले जाओ और बुरी तरह कोड़ो—ताकि यह सीख जाए कि एक राज्यपाल से कसि नम्रता से बात करनी चाहए।'

जब उन्होंने संत को यातना देना शुरू कयिा, तो वह इस बात पर प्रसन्न हुआ कि उसे मसीह के लिए पीड़ति होने का योग्य समझा गया था, और उसने भजन के वचन गाए, जो उसकी पीड़ा में उसके लिए एक तरह से सांत्वना थे: *'मेरी पीठ पर हल चलाने वालों ने हल चलाया, और अपनी लंबी खादें खींचीं'*[6141] (भजन संहति 128:3)।

यातना देने वाले ने, यह देखकर कि उसके नौकर पहले ही थक चुके थे, फरि भी शहीद के चेहरे पर वही शांति और साहस देख, उन्हें उसे पीटना बंद करने का आदेश दयिा; फरि, उसकी ओर मुड़कर, उसने कहा:

'देखो, अब, तुम्हारे घावों के कारण, तुम यह महसूस कर सकते हो कि तुम्हारा मसीह तुम्हें जीवन में न तो आनंद देता है और न ही समृद्धि।'

शहीद ने उत्तर दयिा:

[6139] सेबास्टे आर्मेनयिा का एक शहर है।

[6140] सेबास्टे के शहीदों ने 320 ईस्वी में कष्ट सहे। उनकी स्मृति 9 मार्च को मनाई जाती है। उनकी जीवनी में वर्णति है कि, अपने अटूट वशि्वास की गवाही के लिए, उन्हें यातनाएँ दी गईं; फरि उन्हें एक तीव्र उत्तर की हवा में, बर्फ से ढके एक झील पर रात बतिाने के लिए सज़ा दी गई, और अगले दनि, और भी कठोर यातनाओं के बाद, उन्हें जला दयिा गया।

[6141] यहाँ भवष्यिसूचक वचन उनके दुष्ट अत्याचारयिों द्वारा वजियी शहीदों पर दी गई पीड़ाओं और घावों को संदर्भति करता है।

'यदि तुम्हारी आत्मा की आँखें अधर्म के अन्धकार से ढकी न होतीं, तो मैं तुम्हें बता सकता था कि मेरे दुख मसीह के सामने मेरे लिए कितनी मध्यस्थता करते हैं। परन्तु अब, तुम्हारी दुष्टता को देखते हुए, मैं क्या प्राप्त कर सकता हूँ, जैसे कोई अंधे के सामने मोमबत्ती जलाए या बहरे के सामने गीत गाए? हे न्यायाधीश! यदि तुम इतने अंधे और बहरे न होते, तो तुम मसीह की कृपा और उस शक्ति को जान जाते जो मुझे बनाए रखती है।

पवित्र शहीद के ये और कई अन्य शब्दों ने राज्यपाल को और भी अधिक क्रोधित कर दिया। शहीद को एक पेड़ पर लटकाने के बाद, उसने उसके शरीर को लोहे की पंजाओं से खुरचने का आदेश दिया। संत सेवेरियन, अपनी भीषण पीड़ा के बीच, ईश्वर से इस प्रकार प्रार्थना करने लगे:

'हे यीशु मसीह, आप जिन्होंने एक बार क्रूस पर प्राण त्यागे, जिन्होंने शत्रु के घमंड को चूर कर दिया और आज भी अपने सभी अद्भुत कार्यों के लिए महिमा पाते हैं, आओ और मेरी सहायता करो, और इस दुष्ट यातना देने वाले की शक्ति को कुचल दो; मेरे क्षत-विक्षत अंगों को चंगा करो और यह वरदान दो कि मैं बहादुरी से शहादत का कार्य पूरा कर सकूँ!'

और संत को यातना देने वाले सेवक बारी-बारी से यातना देते रहे; अंत में, उसे लंबे समय तक यातना देने के बाद, उन्होंने उसे राज्यपाल के आदेश पर जेल ले गए। कारागार जाते समय, पवित्र शहीद ने स्वयं को एक वाक्पटु वक्ता साबित किया और, जैसे कि उन्हें अपने कष्टों से कोई पीड़ा न हो, उन्होंने मसीह के लिए प्राप्त घावों का बखान किया। जब वह शहर से होकर जा रहा था, तो अपने फोड़ों की ओर इशारा करते हुए, एक तेजस्वी चेहरे और मधुर शब्दों के साथ, उसने दर्शकों की भीड़ को संबोधित करते हुए इस प्रकार कहा:

'हे लोगों, मुझ पर नज़र डालो और उस आनंद को महसूस करो जिसमें मैं आज हूँ! तुम, मुझे लगता है, अब मुझे सबसे दुखी और सबसे गरीब इंसान समझते हो, क्योंकि मुझे न केवल मेरे सांसारिक सम्मान और धन से, बल्कि अपनी सेहत से भी वंचित कर दिया गया है। और फिर भी मैं अब आप सभी से अधिक खुश हूँ। क्योंकि मसीह के नाम के लिए मुझे जो घाव मिले हैं, वे किसी भी सांसारिक आनंद से अधिक प्रिय हैं; जो रक्त मैंने बहाया है, और जो दाग वह छोड़ता है, वह एक राजा के बैंगनी चोगे से भी अधिक कीमती है; और मेरे प्रभु के लिए मैं जो कष्ट सहता हूँ, वह आपके सभी सांसारिक आरामों से, जिन्हें आप इतनी प्रिय मानते हैं, अतुलनीय रूप से अधिक प्रसन्न करने वाला है। और जहाँ तक मेरी उच्च पदवी और धन-संपत्ति का सवाल है—वे तो केवल व्यर्थता, धूल और इस संसार का मोह थे, जिन्हें मैं अपने पैरों की धूल की तरह झाड़ देता हूँ, जब मैं सर्वोच्च शहीद के सम्मान पर चढ़ता हूँ और अक्षय धन-संपत्ति प्राप्त करता हूँ? मेरे लिए, शहीद कहा जाना किसी भी राजसी पद से अधिक गौरवशाली है, जबकि मसीह के लिए धन-संपत्ति का त्याग पृथ्वी के सभी राजाओं के खजाने से अधिक कीमती है। और यहाँ तक कि वह स्वास्थ्य, शक्ति और सुंदरता भी जो कभी मेरे पास थी—वे तो बीमारी, कमजोरी और कुरूपता ही हैं? यदि मेरे शरीर के अंग अब मसीह के लिए घायल नहीं हो रहे होते, और रक्त से लथपथ नहीं होते, तो वे मेरे अंग नहीं होते, बल्कि मेरी आत्मा के लिए केवल बंधन और एक कारागार होते; परन्तु अब, जब वे मसीह के लिए पीड़ित हो रहे हैं, तो वे वास्तव में मेरे अंग हैं। अब, जब मेरे शरीर को मृत्यु दी जा रही है, तो वह स्वस्थ और मजबूत है; मेरी सुंदरता मेरे साथ है, अभी भी – जब मेरा कोई मानवीय रूप नहीं है और मैं, मानो, एक बड़े घाव के रूप में प्रकट होती हूँ, क्योंकि मसीह भी सिर से पाँव तक घावों से भर गए थे। *'अब मैं तुम्हारे लिए अपने दुखों में आनंदित हूँ और अपने शरीर में मैं मसीह की पीड़ाओं में से जो कुछ कमी रह गई है, उसे उसके शरीर के लिए पूरा कर रही हूँ'* (कुलुस्सियों 1:24). जहाँ तक आपकी बात है, मेरे घावों को निहारते हुए, उनके प्रतिफल पर मनन करें: न तो मन उन आशीर्वादों को समझ सकता है, न ही शब्द उनका वर्णन कर सकते हैं, जो अमर राजा अब उन पर प्रदान करते हैं जो उनके लिए पीड़ा सहते हैं, और जिन्हें वह स्वर्ग में शाश्वत आनंद के लिए उनके लिए तैयार करते हैं। मसीह के लिए दुख सहना अपने आप में एक आनंद है, और उनके लिए मरना और भी अधिक वांछनीय है। हे मित्रो! यदि हिम में से कोई है, यदि मसीह के कोई विश्वासयोग्य सेवक इस अविश्वासी लोगों के बीच पाए जाते हैं, तो, जब आप मुझे दुख सहते हुए देखें, तो अपने हृदयों को मज़बूत करें, हिम्मत करें और निडर बने रहें। एक भी यातना तुम्हें यीशु मसीह के परम मधुर नाम से दूर न करे: न तलवारों की धार, न भट्टियों की तपिश, और न ही जंगली जानवरों का क्रोध तुम्हें डराए! न तो यातना देने वाले की चापलूसी, और न ही उपहारों और सम्मानों का वादा, तुम्हें बहकाए। इन सबको भूसी की तरह पैरों तले रौंद डालो, ताकि तुम मसीह के साथ राज्य कर सको।

जब सेवेरियन ऐसा कह रहे थे, तो एक बड़ी भीड़ उनका अनुसरण करने लगी। उन्हें सुनकर, लोग पवित्र शहीद के साथ सीधे कालकोठरी तक गए। उसमें डाले जाने पर, मसीह के उस सिपाही ने जैसे किसी भव्य महल में हो, वैसे आनंद

मनाया, और उसी स्थान को चूमा जहाँ चालीस पवित्र शहीदों को कैद किया गया था, जिनके साथ वह पहले अक्सर बातचीत करने आया करता था। वह पाँच दिन तक कालकोठरी में रहा, और फिर उसे एक बार फिर अदालत के सामने लाया गया।

मुकदमे में, लाइसियस भेड़ के भेस में भेड़िये की तरह, संत के प्रति सहानुभूति दिखाने का नाटक करने लगा और चालाकी से उनसे बात करने लगा:

'सभी देवता देख सकते हैं, सेवेरियन, कि मैं तुम्हारे लिए कितनी सहानुभूति रखता हूँ, और मैं बहुत आश्चर्यचकित हूँ कि तुम, इतने प्रतिष्ठित, सम्माननीय और आदरणीय व्यक्ति, अपनी इच्छा से इस आनंदमय दुनिया से खुद को वंचित कर रहे हो। मैं तुम्हारे धैर्य और साहस की प्रशंसा करता, लेकिन केवल तभी जब तुम उन्हें अपने दुश्मनों के खिलाफ लगाते; लोहे और आग, जानवरों और पत्थरों से लड़ना और इस प्रकार खुद को नष्ट करना वास्तव में एक पागलपन भरा प्रयास है। और अब, तुम्हारी ताकत पहले ही टूट चुकी है और तुम्हारा शरीर टुकड़ों में बिखर चुका है।"

इस प्रकार कहकर, उस अधर्मी यातनाकर्ता ने चालाकी से मसीह के सच्चे सेवक को धोखा देने की कोशिश की, लेकिन बाद वाले ने बहादुरी से जवाब दिया:

'मेरे शरीर को, जो घावों से ढका हुआ है, क्षमा न करो, बल्कि मेरे दुखों को और भी बढ़ाओ। न केवल मुझे मारो और मेरे शरीर की खाल उधेड़ो, बल्कि मुझ पर पत्थर भी फेंको, मुझे आग से जलाओ, और जो कुछ भी तुम चाहते हो और कर सकते हो, वह सब करो। तुम मुझे मेरे प्रभु से कभी भी विमुख नहीं कर सकते। मसीह के नाम के लिए पीड़ा सहने से मैं पहले थकूँगा नहीं, इससे पहले तुम मुझे यातना देने से थक जाओगे।

तब यातना देने वाले ने अपनी चालाकी छोड़कर, अपने सामान्य क्रोध के आगे आत्मसमर्पण कर दिया और आदेश दिया कि संत सेवेरियन के मुँह पर पत्थर मारे जाएँ, और घोषणा की:

'अपनी जीभ से मसीह का नाम उच्चारण मत करो, और उस नाम का उल्लेख करके शासकों के कानों को परेशान मत करो।'

पवित्र शहीद ने, जिसके होंठ प्रहारों से पहले ही फट चुके थे, यातना देने वाले को उत्तर दिया:

'दुर्भाग्यशाली मनुष्य! यदि तूने अपनी आत्मा में राक्षसों का वास बनाया है, तो निश्चित रूप से तेरे कान अब मसीह के नाम को सहन नहीं कर सकते!'

लाइसियस ने शहीद को एक बार फिर से पेड़ से लटकाने और लोहे की पंजाओं से खुरचने का आदेश दिया। सेवेरियन ने, क्रूर यातनाओं के बावजूद, घोषणा की:

'मैं केवल एक घाव को क्रूर मानता हूँ—वह जो मनुष्य को मसीह से अलग करती है: फिर भी ये सभी घाव मुझे पीड़ा से अधिक आनंद देती हैं, क्योंकि ये मुझे सभी सांसारिक चीजों से अलग करके मसीह के साथ मिलाती हैं।'[6142]

और राज्यपाल ने उससे फिर कहा:

'सेवेरियन, देवताओं को बलिदान चढ़ाओ, और तुम्हें तुम्हारी यातना से मुक्ति मिल जाएगी।'

इस पर, मसीह के सैनिक ने कोई उत्तर नहीं दिया; उसने केवल शांति से कहा:

– *'क्योंकि मैं यह मानता हूँ कि इस समय की कष्ट-पीड़ा उस महिमा के बराबर नहीं है जो हम पर प्रकट होने वाली है*' (रोमियों 8:18)।

लाइसियस ने यह अपमान समझा कि शहीद ने उसके शब्दों का जवाब नहीं दिया था, इसलिए उसने उसके लिए यातना का एक नया तरीका सोचा: संत को पेड़ से उतारकर, वे उसे शहर की दीवार तक ले गए और, उसके गले और पैरों में भारी पत्थर बांधकर—और उसके शरीर को एक रस्सी से बांधकर, उसे दीवार से बहुत ऊँचा लटका दिया।

इस प्रकार लटके हुए, संत ने अपना धर्मी आत्मा शहादत के दाता—उनके Lord[6143] , मसीह—के हाथों में सौंप दिया; कुछ ईसाइयों ने रात में उनके पवित्र शरीर को दीवार से उतारकर उस स्थान पर ले गए जहाँ शहीद पहले रहते थे। जब वे भजन गाते हुए श्रद्धापूर्वक उसे उठाकर उस गाँव में पहुँचे जहाँ सेवेरियन का घर था, तो लगभग सभी निवासी पवित्र अवशेषों से मिलने के लिए बाहर आए: बूढ़े और जवान सभी एक-दूसरे से आगे बढ़ते हुए जल्दी से आए, और इस प्रकार, मानो परमेश्वर के दीर्घ-सहिष्णु सेवक से आशीर्वाद पाने वाले पहले व्यक्ति बिनने की कोशिश कर रहे थे। केवल सेवेरियन

[6142] इस अभिव्यक्ति का अर्थ यह है कि पवित्र शहीद ने, प्रेरित पौलुस की तरह, यह महसूस किया कि मसीह द्वारा सहन किए गए दुखों और कष्टों में उसका अपना शरीर अभी भी कमी था, इसलिए उसने इसकी भरपाई करने का अवसर खोजा, और इस बात पर प्रसन्न हुआ कि उसे मसीह के नाम की गवाही के लिए अपने कष्टों में ऐसा अवसर मिल गया।

[6143] सेवेरियन की शहादत 320 ईस्वी में, सेबास्टे के 40 शहीदों के समान ही उत्पीड़न के दौरान, लेकिन केवल छह महीने बाद हुई।

के एक दास की पत्नी ही घर पर अपने पति के शव के पास रोती हुई रह गई थी: वह अभी-अभी मर गया था और अभी भी घर पर ही पड़ा था, जिसे दफ़नाया नहीं गया था। और वह उस पर रोती थी, उससे ऐसे बात कर रही थी जैसे वह अभी भी जीवित हो:

'देखो, हमारे स्वामी घर के पास आ रहे हैं, और सभी उनसे मिलने बाहर गए हैं; केवल तुम नहीं गए—और मैं तुम्हारी वजह से रुक गया। इसलिए उठो और अपने स्वामी से मिलने चलो।'

जैसे ही उसने ये शब्द कहे, मृत व्यक्ति तुरंत सोकर उठने के समान खड़ा हो गया, पवित्र अवशेषों को लाने वालों से मिलने बाहर गया, और उनके सामने साष्टांग दंडवत प्रणाम करके, आनंदपूर्वक अपने स्वामी के शरीर को चूमा। जहाँ तक लोगों की बात है, जब उन्होंने देखा कि उनके गाँव में पवित्र देह के आगमन से मृतक जीवित हो उठा है, तो वे इस चमत्कार से चकित हो गए, प्रभु की महिमा करने लगे, और और भी अधिक उत्साह के साथ पवित्र अवशेषों को चूमने लगे।

उस गाँव के निवासियों के बीच पवित्र शहीद के शरीर को दफनाने को लेकर विवाद खड़ा हो गया: कुछ लोग उसे एक स्थान पर दफनाना चाहते थे, जबकि अन्य किसी दूसरे स्थान को प्राथमिकता दे रहे थे। सुंदर फूलों से बुनी गई एक माला सेवेरियन की अवशेषों पर रखी हुई थी; अचानक, एक गरुड़ कहीं से प्रकट हुआ और उस माला को उठा ले गया; थोड़ी दूरी तक उड़ने के बाद, गरुड़ फिर से जमीन पर उतर आया। जो भी इस सब के साक्षी थे, वे सभी चील के पीछे-पीछे चले, और जब वे उसके पास पहुँचे, तो वह धीरे-धीरे उस माला के साथ उड़ता गया; लोग भी उसके पीछे-पीछे चले। और इस प्रकार चील ने भक्त ग्रामीणों को नजदीकी रेगिस्तान तक पहुँचाया, और वहाँ, एक ऊँचे, सुंदर पहाड़ पर बैठकर उस माला को उस पर रख दिया, और फिर वह नज़रों से ओझल हो गया। लोगों ने पहाड़ पर शहीद की माला पाकर यह निष्कर्ष निकाला कि प्रभु ने सेवेरियन के पवित्र शरीर को वहीं विश्राम करने के लिए चुना था; और, अवशेषों को लेकर, उन्होंने उन्हें उचित सम्मान के साथ उसी पहाड़ पर दफना दिया; और मसीह के शहीद[6144] की कब्र पर कई चमत्कार हुए।

जहाँ तक उस पूर्वोक्त दास का प्रश्न है, जिसे सेवरियन के पवित्र अवशेषों के स्थानांतरण के समय मृतकों में से जलिया गया था, वह और पंद्रह वर्ष तक जीवित रहा, और अपने स्वामी की कब्र के पास ही लगातार रहा।

इन सब के लिए, महिमा हो परमेश्वर की, त्रिमूर्ति में एक: पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा, अब और सदा और युगानुयुग! आमीन।

धन्य निकिता की स्मृति, जो परमेश्वर के एक गुप्त सेवक थे, जिन्हें डिकिन सोज़ोंट ने देखा था

9 सितंबर को स्मरणोत्सव

ईश्वर के गुप्त सेवक, धन्य निकिता, जिन्हें 'चार्टुलारियस'[6145] के नाम से जाना जाता था, का जन्म और पालन-पोषण कॉन्स्टेंटिनोपल में कुलीन माता-पिता द्वारा हुआ था; दुनिया में रहते हुए और गुप्त रूप से ईश्वर की सेवा करते हुए, वह उन्हें इतना प्रसन्न हुआ कि जब वह आधी रात को प्रार्थना करने आते तो चर्च के दरवाजे अपने आप खुल जाते, और एक दीपक, जिसे मानव हाथों ने नहीं जलाया था, उसे रोशन कर देता था; और वह डीकन सोज़ोंट को एक मृतक पुरोहित को जीवित दिखाने में सक्षम थे, जिसके बारे में एक किंवदंती है।

एक धर्मपरायण पुरोहित और एक भक्तिमय डीकन परस्पर ईश्वर में प्रेम करने लगे थे, लेकिन कुछ समय बाद, दोनों ने एक शैतानी बदनामी के प्रभाव में आकर अपने प्रेम को शत्रुता में बदल दिया। डीकन का नाम सोज़ोंट था, जबकि पुरोहित का नाम अज्ञात है। वे लंबे समय तक शत्रुता में रहे, और पुरोहित इन भावनाओं को मन में लिए ही चल बसे। फिर डीकन इस विचार से परेशान और अपने अंतर्मन की पीड़ा से त्रस्त होने लगा कि उसने पुरोहित के साथ अपनी शत्रुता को समाप्त नहीं किया था और क्षमा के माध्यम से अपने क्रोध को शांत नहीं किया था। इसलिए, वह एक ऐसे बुद्धिमान आध्यात्मिक पिता की तलाश में निकल पड़ा, जिससे वह अपने अंतर्मन की बात कह सके, और वह अपने हृदय की बीमारी

[6144] शहीद के पवित्र अवशेषों का स्थानांतरण उनकी मृत्यु के 15 साल बाद हुआ।

[6145] ग्रीक चर्च में, 'चार्टौलारी' चर्च के अधिकारियों से जुड़े लिपिक थे। – परमेश्वर के एक गुप्त सेवक, धन्य निकिता का जीवन और कर्म 12वीं शताब्दी के हैं।

के लिए एक उपचारक की तलाश में सुनसान स्थानों में भटकता रहा; अंतत; एक महान सदाचारी पवित्र वृद्ध को खोज लेने पर, उसने उनसे अपने क्रोध के पाप और पादरी के प्रति अपने मन में पाल रखी शत्रुता का इकबालिया बयान किया, और क्षमा मांगी।

वरिष्ठ ने उससे कहा: *'जो कोई माँगता है, उसे मिलता है, और जो खोजता है, वह पाता है, और जो खटखटाता है, उसके लिए दरवाज़ा खोला जाएगा'* (मत्ती 7:7; लूका 11:10-11)। भाई, तुम इस गंभीर पाप का शीघ्र समाधान खोजकर अच्छा कर रहे हो; प्रभु तुम्हारी सहायता करें, क्योंकि मेरे लिए तुम्हें मृतक से मिलाना उचित नहीं है, मेरे बच्चे। हालाँकि, कोंस्टेंटिनोपल लौट जाओ, जहाँ से तुम आए हो; जब तुम रात में सेंट सोफिया के महान चर्च[6146] पहुँचो, तो महान और सुंदर दरवाजों के पास खड़े हो जाओ, और जो भी तुम पहले दरवाजों की ओर आते देखो, उसके सामने झुकना, उसे हमारे बारे में बताना और यह मुहरबंद पत्र देना; उससे तुम अपने पाप का सुधार प्राप्त करोगे।

दीकन, अपने आध्यात्मिक पिता की आज्ञा का पालन करते हुए, शहर में गया, रात के समय सेंट सोफिया के चर्च के दरवाजों पर पहुँचा, और एक अज्ञात व्यक्ति के आने का इंतजार करने लगा। और देखो, उसने दरवाजों की ओर एक व्यक्ति को आते हुए देखा – वह धन्य निकिता थे, जिनके बारे में यह कहानी बताई जाती है। डीकन ने उनके सामने झुककर उन्हें चूमा, एल्डर का पत्र उन्हें सौंपा, और अपने दुःख का इज़हार किया। उस व्यक्ति ने डीकन का इकबालिया बयान सुनने, और एल्डर से प्राप्त पत्र पर चर्चा करने और उसे पढ़ने के बाद, फूट-फूट कर रो पड़ा और कहा:

'मैं अपनी ताकत से बढ़कर काम करने का साहस कैसे करूँ? फिर भी, आपको भेजने वाले की प्रार्थनाओं पर भरोसा करते हुए, और जहाँ तक ईश्वर मेरी मदद करेंगे, मैं उस काम को करने का प्रयास करूँगा जिसका मुझे आदेश दिया गया है।' यह कहकर, वह दरवाज़े पर खड़ा हुआ और, अपने हाथ आसमान की ओर उठाकर, फुसफुसाते हुए प्रार्थना करने लगा। फिर, घुटने टेककर और अपना सिर ज़मीन पर झुकाकर, वह चुपचाप प्रार्थना करता रहा; और कुछ समय बीत जाने के बाद, उठकर खड़ा हो गया, और कहा:

'हे प्रभु, हमारे लिए अपनी दया के द्वार खोल!'

तुरंत ही गिरजाघर का प्रवेश-कक्ष अपने आप खुल गया, और धन्य निकिता ने डिकन का हाथ पकड़कर बरामदे में प्रवेश किया और गिरजाघर के दरवाजों के बिल्कुल पास आकर उससे कहा: 'यहीं स्थिर खड़े रहो,' और वे स्वयं गिरजाघर की दहलीज़ पर झुक गए; दरवाजे खुल गए, और वे अंदर चले गए। जब उसने चर्च के बीच में प्रार्थना करना शुरू किया, तो चर्च की छत से उसके सिर के ऊपर एक जलता हुआ दीपक उतरा और पूरे चर्च को रोशन कर दिया; फिर वह वेदी पर गया, और वहाँ दरवाज़े अपने आप खुल गए; सिर झुकाकर और चुपचाप प्रार्थना करते हुए, वह डिकन के पास गया, और एक बार फिर सभी दरवाज़े अपने आप बंद हो गए। यह देखकर, डीकन भयभीत हो गया और उस आदमी के पास जाने की हिम्मत नहीं कर सका, क्योंकि उस पर एक महान भय छा गया था; इसके अलावा, डीकन को उसका चेहरा प्रार्थना से गौरवान्वित एक देवदूत के चेहरे जैसा प्रतीत हुआ। और डीकन ने मन ही मन सोचा: 'क्या यह कोई देवदूत नहीं है?' लेकिन यह बात उस आदमी की नज़र से नहीं छूटी, और उसने डीकन से कहा:

'मेरे बारे में सोचकर तुम क्यों परेशान हो? विश्वास करो कि मैं भी मांस और रक्त का एक मनुष्य हूँ, जो एक सम्मानित परिवार में जन्मा और इसी शहर में पला-बढ़ा हूँ। ईश्वर की कृपा, यदि वह चाहें, तो कमज़ोरी में भी प्रभावी होती है। आइए हम उस यात्रा पर चलें जो हमारे सामने है!'

इसके बाद, वह बाज़ार की ओर चल पड़ा, और डीकन उसके पीछे हो लिया। जब वे वहाँ परमेश्वर की अति पवित्र माता के चर्च पहुँचे, तो प्रार्थना के उत्तर में चर्च के दरवाज़े फिर से खुल गए; प्रार्थना करने के लिए चर्च में ठहरने के बाद, परमेश्वर के संत बाहर निकले, और दरवाज़े अपने आप बंद हो गए। यह सब देखकर डीकन भयभीत होकर अपने मन में केवल इतना कह सका : 'हे प्रभु, दया करें!' इस प्रकार वे ब्लाचर्ना के चर्च पहुँचे। बाद में, डीकन को एहसास हुआ कि उसने जिन चर्चों में जुलूस देखा था, वे इतनी तेजी से हुए कि ऐसा लगा मानो संत पक्षियों की तरह उड़ रहे हों। जब वे ब्लाचेर्ना के चर्च के दरवाजों के पास पहुँचे[6147] , और उस आदमी ने आँसुओं से भरी आँखों से प्रार्थना की, तो तुरंत—

[6146] यहाँ, बेशक, सेंट सोफिया - ईश्वर की बुद्धि - को समर्पित सबसे भव्य गिरजाघर स्थित है, जिसे 537 में कॉन्स्टेंटिनोपल में बाइजेंटाइन सम्राट जस्टिनियन महान ने बनवाया था। 1453 में, तुर्कों द्वारा कॉन्स्टेंटिनोपल पर विजय प्राप्त करने के बाद, हागिया सोफिया को एक मस्जिद में बदल दिया गया था।

[6147] ब्लाचेर्ना – कॉन्स्टेंटिनोपल का एक जिला जो शहर के पश्चिमी कोने में स्थित था – बाइज़ेन्टाइन साम्राज्य के दौरान अपनी पवित्र स्थलों के लिए पूरे पूर्व में प्रसिद्ध था। ब्लाचेर्ना विशेष रूप से सम्राट लियो द ग्रेट द्वारा निर्मित 'चर्च ऑफ द मदर ऑफ गॉड' (ईश्वर की माता का

ठीक वैसे ही जैसे अन्य चर्चों में—दरवाजे अपने आप खुल गए; डकिन को दरवाजे पर खड़ा करके और उसे अंदर ध्यान से देखने का नरि्देश देकर, वह स्वयं चर्च में प्रवेश कयिा, घुटने टेक दिए और लगन से प्रार्थना करने लगा। द्वार पर खड़े डीकन ने देखा कि चर्च के अंदर एक रोशनी थी जो उसके चारों ओर सब कुछ प्रकाशति कर रही थी, और एक वशिेष प्रकाशमान डीकन जो पवत्रि स्थान से नकिला था और पूरे चर्च में धूप छड़िक रहा था। थोड़ी देर बाद, उसने सफेद वस्त्रों में लपिटे पुरोहतिों को देखा जो पवत्रि स्थान से नकिलकर चर्च के केंद्र में आ गए थे; उसने पादरयिों के एक और समूह को भी देखा, जो लाल परधिान पहने हुए थे; वे सभी चर्च के केंद्र में एकत्रति हुए और सुंदर और कुछ असामान्य चर्च भजन गाए, जनिमें से डीकन को 'आल्लेलुया' को छोड़कर एक भी याद नहीं रह सका।

हालाँकि, वह आदमी अपनी प्रार्थना के बाद उठकर डीकन से बोला:

'भाई, बनिा भय के चर्च में प्रवेश करो और बाईं ओर खड़े पुरोहतिों को देखो: क्या तुम उस पुरोहति को नहीं पहचानते जसिके साथ तुम्हारा ववािद था?'

दीकन, भय के साथ चर्च के अंदर प्रवेश करके और ईश्वर के पुरुष के पास जाकर, उसने बाईं ओर देखा और उस पुजारी को नहीं पाया जसिे वह ढूंढ रहा था। देवदूत जैसे दखिने वाले व्यक्ति ने दीकन को पुजारयिों के बीच दाईं ओर भी देखने का नरि्देश दयिा। दीकन ने देखा और उस पुरोहति को देखा जसिके साथ उसका ववािद था, और उसने उसे ईश्वर के पुरुष को दखिाया। बाद वाले ने दीकन से कहा:

'जाकर उस पुरोहति से कहो जसिे तुमने पहचान लयिा है: लेखक नकिति चर्च के बाहर खड़ा है और तुम्हें अपने पास बुला रहा है!'

डीकन ने नरि्देशानुसार जाकर, पुरोहति का दाहनिा हाथ पकड़ा और उसे ईश्वर के पुरुष के पास ले गया, जो तब तक चर्च से बाहर आ चुके थे। उन्होंने पुरोहति की ओर कोमलता से देखा और नरम स्वर में कहा:

'फादर प्रेस्बटिर, अपने भाई से बात करें और अपने बीच की दुश्मनी को समाप्त करें।'

तुरंत, पादरी और डीकन एक-दूसरे की ओर मुंह करके घुटनों के बल बैठ गए और, लंबी अभविादन-वनिमिय के बाद, उन्होंने अपने ववािद को समाप्त कर दयिा। सुलह के बाद, पुरोहति चर्च में प्रवेश कर अपने स्थान पर बैठ गया, जबकि नकिति, ईश्वर के पुरुष, ने चर्च की दहलीज़ पर झुककर प्रणाम कयिा, और तुरंत ही चर्च के दरवाज़े बंद हो गए। फरि, डकिन के साथ, वह वापसी की यात्रा पर नकिल पड़ा। कुछ दूरी तय करने के बाद, धन्य नकिति ने डकिन से कहा:

'भाई सोज़ोंट, अपने और मेरे लिए अपना आत्मा बचाओ; और तुम्हें भेजने वाले पति से कह दो कि उनकी पवत्रि प्रार्थनाओं की पवत्रिता और ईश्वर में उनका वश्विास मृतकों को भी जीवति कर सकता है!'

यह कहकर, आदरणीय व्यक्ति डीकन की दृष्टि से ओझल हो गए। डीकन, उस स्थान पर प्रणाम करके जहाँ इस अद्भुत व्यक्ति के पैर पड़े थे, भय और आनंद दोनों के साथ बूढ़े—अपने आध्यात्मकि पति—के पास गया, और ईश्वर की महमिा करते हुए और धन्यवाद देते हुए कि उन्होंने उसे, एक अद्भुत और चमत्कारी तरीके से, दविंगत पुरोहति के साथ मेल-मलिाप करने का अवसर प्रदान कयिा, ईश्वर के गुप्त सेवक, नकिति द चार्टुलारयिस की प्रार्थनाओं के द्वारा, जन्हिोंने संसार के लोगों और हलचल के बीच ईश्वर को अत्यंत प्रसन्न कयिा था।

एफ़सिुस में पवत्रि तृतीय सार्वभौमकि परषिद का स्मरणोत्सव

9 सतिंबर को स्मरण कयिा जाता है

सम्राट थयिोडोसयिस द्वतिीय (आर्काडयिस के पुत्र) के शासन के एकीसरे वर्ष में, तीसरा सार्वत्रकि परषिद एफ़सिुस में[6148] नम्निलखिति कारण से आयोजति की गई। नेस्टोरयिस, जसिने अयोग्य रूप से कॉन्स्टेंटनिोपल के

चर्च) के लिए प्रसद्धि था, जसिके शासनकाल में, 474 में, पवत्रि भूमि से लाए गए ईश्वर की परम पवत्रि माता के पवत्रि वस्त्र इस चर्च में स्थापति कए गए थे।

[6148] थेओडोसयिस द्वतिीय, या युवा – एक पूर्वी रोमन (बाइज़ेंटाइन) सम्राट, जो 408 से 450 तक शासन करने वाले महान थेओडोसयिस के पोते थे – के शासनकाल में 431 में तीसरी सार्वभौमकि परषिद बुलाई गई थी। – एफ़सिुस – एशयिा माइनर के पश्चमिी तट पर स्थति एक आयोनयिन शहर, जो मूल रूप से एशयिा माइनर में यूनानी उपनविेशों का केंद्र था, और रोमन शासन के दौरान एशयिा के प्रोकॉन्सुलेर प्रांत का प्रमुख शहर था; यह अपने व्यापक व्यापार, वद्विता और कला के लिए, और मूर्तपिूजक देवी डायना को समर्पति अपने भव्य मंदरि के लिए प्रसद्धि था। इसके बाद, एफ़सिस का पतन तेजी से हुआ। आज, इस कभी प्रसद्धि और शानदार शहर के केवल खंडहर ही बचे हैं।

पैट्रआर्क का पद धारण कयि[6149] , ने पहले के वधिर्मी पॉल ऑफ़ सामोसाटा की शक्षिाओं के समान एक झूठी शक्षिा का प्रचार करना शुरू कर दयि, साथ ही टारस के डायोडोरस[6150] की शक्षिाओं का भी। उन्होंने यह दावा करने में संकोच नहीं कयि कि मसीह, परमेश्वर के एकलौते पुत्र, जन्हिोंने हमारे लिए और हमारे उद्धार के लिए अवतार लयि और मानव रूप धारण कयि, जो बनि माँ के परमेश्वर पति से अनंत काल से उत्पन्न हुए, लेकनि पृथ्वी पर एक मनुष्य के रूप में बनि पति के पैदा हुए, का एक व्यक्तित्व या एक ही हाइपोस्टेसिस नहीं है, बल्कि दो अलग-अलग व्यक्तित्व हैं: एक दव्यि और दूसरा मानवीय। और हमारे प्रभु यीशु मसीह की परम पवत्रि माता के वषिय में, उसने अधर्मी ढंग से यह सखिाया कि उन्हें परमेश्वर की माता नहीं, बल्कि मसीह की माता कहा जाना चाहिए, और इस बात को स्वीकार करने से इनकार कर दयि कि उन्होंने वास्तव में देह में परमेश्वर के वचन को जन्म दयि था। अलेक्जेंड्रयि के आर्चबशिप सेंट सरिलि[6151] ने उन्हें वस्तिार से लखिा, और उनसे ऐसी गलती से इनकार करने का आग्रह कयि; लेकनि यह देखकर कि उन्होंने न केवल उनके आग्रह पर कोई ध्यान नहीं दयि, बल्कि अपनी वधिर्म में और भी अधकि दृढ़ हो रहे थे, – उन्होंने रोम के पोप सेलेस्टनि[6152] और अन्य पैट्रआर्क को पत्र लखिा, उनसे नेस्टोरयिस को अपनी झूठी शक्षिा छोड़ने के लिए मनाने को कहा। जब वे भी धर्मात्मा नेस्टोरयिस को उसकी झूठी शक्षिा से दूर करने में असमर्थ रहे, तो ऑर्थोडॉक्स बशिपों ने सम्राट थयिोडोसयिस से एक इक्यूमेनकिल परषिद बुलाने का आग्रह कयि। थेओडोसयिस ने आदेश दयि कि ऐसा एक परषिद एफ़सिस में बुलाया जाए। इस परषिद में दो सौ पवत्रि धर्मगुरु उपस्थति थे, जनिमें सबसे प्रमुख थे: अलेक्जेंड्रयि के संत सरिलि, संत जुवेनाल, एफ़सिस के मेमनोन और कई अन्य (रोम के पोप, संत सेलेस्टाइन, बीमारी के कारण परषिद में शामलि नहीं हो सके)।नेस्टोरयिस भी एफ़सिस पहुँचा। हालाँकि एफ़सिस परषिद के धर्मगुरुओं ने उसे परषिद में शामलि होने के लिए तीन बार नमिंत्रण भेजा था, उसने हर बार जदि करके मना कर दयि। तब पवत्रि धर्मगुरुओं ने उसके बनि ही परषिद की कार्यवाही शुरू करने का नर्णिय लयि। नेस्टोरयिस और उसके वधिर्मी उपदेशों की नंदिा करने के बाद, उन्होंने वधिवित रूप से इस सुस्थापति सद्धिांत की पुनःपुष्टि की कि हमें अपने प्रभु यीशु मसीह में एक स्वभाव और दो स्वभावों की स्वीकारोक्ति करनी चाहिए, और उनकी अति पवत्रि माता की एक सदा कुँवारी और परमेश्वर की सच्ची माता के रूप में महमिा करनी चाहिए। नेस्टोरयिस की दुष्टता को और उजागर करने के लिए, इस परषिद के पवत्रि पतिाओं ने अलेक्जेंड्रयि के संत सरिलि के 'नेस्टोरयिस के वरिुद्ध बारह शाप' नामक ग्रंथ को मंजूरी दी और उसे पवत्रि चर्च को उसके मार्गदर्शन के लिए सौंप दयि।

वोलोकलाम के पूजनीय जोसेफ की स्मृति

9 सतिंबर को स्मरण कयि जाता है

संत जोसेफ वोलोका-लाम्स्का शहर के आसपास के मूल नविासी थे[6153] । उनके परदादा लथिुआनयिाई मूल के थे, और उनके माता-पति का नाम जॉन और मरीना था[6154] । सात साल की उम्र में, उन्हें स्कूल भेजा गया[6155] और उन्होंने

[6149] नेस्टोरयिस 428 से 431 तक कॉन्स्टेंटनिोपल के पैट्रआर्क थे।

[6150] सामोसता के पॉल (सामोसता – सीरयि में एक प्राचीन शहर) – एंटओक के बशिप (260 ईस्वी) – ने यह सखिाया कि यीशु मसीह एक मनुष्य थे जन्हिोंने दव्यिता प्राप्त की थी, और पवत्रि आत्मा ईश्वर की शक्ति थी; उन्हें 269 ईस्वी में एंटओक की परषिद में दोषी ठहराया गया था। – डायोडोरस, तारस के बशिप (तारस – एशयि माइनर में एक दक्षणि-पूर्वी रोमन प्रांत, सलिसियि की राजधानी) – चौथी शताब्दी के प्रसद्धि ईसाई धर्मशास्त्रयिों में से एक, जो अपनी भक्ति और वद्विता के लिए प्रसद्धि थे। हालांकि, उन्होंने यीशु मसीह में दो स्वभावों—दैवीय और मानवीय—के मलिन को केवल नैतकि माना, न कि सारभूत—अर्थात, अस्पष्ट और अवभिाज्य—और यही कारण है कि कई लोग, बनि कसिी कारण के नहीं, उन्हें नेस्टोरयिनवाद के प्रत्यक्ष अग्रदूत के रूप में मानते हैं।

[6151] अलेक्जेंड्रयि के सरिलि – 5वीं सदी में ईसाई चर्च के सबसे उल्लेखनीय और वद्विान धर्मशास्त्री, रूढ़विाद के एक समर्थक और वभिन्नि संप्रदायों, वशिष रूप से नेस्टोरयिनवाद के खंडनकर्ता; उन्होंने कई कृतयिाँ छोड़ीं; उनकी मृत्यु 444 में हुई।

[6152] संत सेलेस्टीन प्रथम – 422 से 432 तक पोप।

[6153] 'वोल्ोक लाम्स्की', जसिे सामान्यतः'वोल्ोक' के नाम से जाना जाता है, मॉस्को प्रांत में स्थति आज का जलिा शहर वोल्कोलामस्क है। इसकी स्थापना मूल रूप से नोवगोरोड के उपनविेशवादयिों द्वारा लाम्बा नदी की सहायक नदी गोरोडेनका पर की गई थी, और यह 1135 में ही अस्तत्वि में था। प्राचीन काल में, वोल्ोक लाम्स्की बहुत वशिाल, घनी आबादी वाला और समृद्ध था।

[6154] संत जोसेफ, जनिका जन्म इवान सानन के रूप में हुआ था, का जन्म 1439 या 1440 में हुआ था।

[6155] संत जोसेफ को वोज़्द्वज़्हेन्स्की मठ में पढ़ना और लखिना सखिाया गया था।

बहुत जल्दी पवत्रि शास्त्रों में महारत हासलि कर ली। उन्हें बार-बार ईश्वर के घर जाने का शौक था और अपने साथयिों से दूरी बनाए रखकर उन्होंने अपने सभी वचिार ईश्वर को प्रसन्न करने पर केंद्रति कर लिए। दुनयिावी दखिावे से मुंह मोड़कर, वह बोरोव्स्क[6156] में आदरणीय पाफनुटयिस के मठ में चले गए, जनि्होंने उन्हें एक भकि्षु के रूप में दीक्षा दी[6157] । उन्होंने हमेशा उपवास और प्रार्थना को समर्पति कयिा और वह एक कुशल तपस्वी थे, जो हर बात में अपने आध्यात्मकि गुरु के आज्ञाकारी थे। कुछ समय बीत जाने के बाद, उन्होंने अपने पति—जनि्होंने भी संन्यास की शपथ ली थी—को उसी मठ में ले आए, और उनकी मृत्यु तक उनकी सेवा और देखभाल की। वे अठारह वर्षों तक संत पाफनुटयिस के प्रतआिज्ञाकारी रहे। अपने शकि्षक और मार्गदर्शक की मृत्यु के बाद, उन्हें मठ का मठाधीश नयिुक्त कयिा गया, जसिका उन्होंने लगभग दो वर्षों तक प्रबंधन कयिा। फरि वह कुछ भाइयों के साथ वोल्ोक-लाम्स्की शहर के आसपास के जंगल में चले गए, और वहाँ एक मठ बनाया, जसिमें उन्होंने परमेश्वर की माता के सोने (डोर्मशिन) को समर्पति एक पत्थर का चर्च बनाया[6158] । उन्होंने भकि्षुओं का एक बड़ा समुदाय इकट्ठा कयिा और एक बहुत ही सख्त सामुदायकि जीवन स्थापति कयिा। वह स्वयं भखिारी की तरह कपड़े पहनते थे, ताकि कोई भी उन्हें मठाधीश के रूप में पहचान न सके। उन्होंने 'यहूदीकरणकर्ताओं'[6159] की वधिर्म के खलिाफ जोश के साथ लड़ाई लड़ी और इसे खंडति करने के लिए एक कतिाब लखिी। इसके अलावा, उन्होंने अपने मठ के लिए एक नयिम बनाया। अकाल के दौरान, उनके मठ ने कई गरीब लोगों को भोजन प्रदान कयिा। परम पूज्य की मृत्यु 9 सतिंबर को, दुनयिा की सृष्टि के 7094वें वर्ष[6160] में, ग्रैंड प्रंसि वासलिी इओआनोवचि के शासनकाल के दौरान हुई, और वे कुल पचहत्तर वर्ष के थे; उनके पवत्रि शरीर को उनके मठ के कैथेड्रल चर्च के वेदी के पास सुलाया गया[6161] ।

आदरणीय थयिोफानेस, उपवासी और स्वीकारकर्ता की स्मृति

9 सतिंबर को स्मरण कयिा जाता है

थेओफेंस के माता-पति मूर्तपिूजक थे, लेकनि वह स्वयं बचपन में ही ईसा मसीह की ओर मुड़ गए। शशिु अवस्था में ही, उन्होंने ठंड से मरते हुए एक बच्चे को देखा; उस पर दया करके, उन्होंने अपने कपड़े उतारकर उस बच्चे को पहना दिए। जब वह बाद में घर लौटे, तो उनके माता-पति ने उनसे पूछा: 'मेरे बच्चे, तुम्हारे कपड़े कहाँ हैं?'

उसने उत्तर दयिा:

'मैंने उन्हें पहनाकर मसीह को वस्त्र पहनाए।'

उनके पति ने उनसे पूछा:

'यह मसीह कौन है? हम मर्करी और अपोलो की पूजा करते हैं।'

इसके बाद, वह लड़का अपने माता-पति से चला गया। प्रभु का एक स्वर्गदूत उसे ले गया और उसे माउंट डायवसि पर ले गया, जहाँ उसने उसे एक संन्यासी के हवाले कर दयिा जो पचहत्तर वर्षों से संन्यासी जीवन जी रहा था। वरषि्ठ ने

[6156] बोरोव्स्क – जो अब कलुगा गवर्नरेट का एक जलिा शहर है – नदी प्रोट्वा के एक तीखे मोड़ के दाहनिे कनिारे पर स्थति है, जो मास्को से 80 वर्स्ट और कलुगा से लगभग उतनी ही दूरी पर है। यह शहर 13वीं शताब्दी से अस्ततित्व में है और इसका नाम उन बड़े चीड़ के जंगलों (बोरोव) के नाम पर पड़ा है जो आज भी इसे घेरे हुए हैं।

[6157] यह लगभग 1459 का समय था।

[6158] यह लगभग 1479 का समय था।

[6159] 'यहूदीकरणवादयिों' का वधिर्म 15वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में नोवगोरोड में उत्पन्न हुआ, जहाँ इसका प्रचार स्खारयिा नामक एक आगंतुक यहूदी द्वारा कयिा गया था, और वहाँ से यह मास्को तक फैल गया, जहाँ यह व्यापक रूप से फैल गया और ऑर्थोडॉक्स चर्च के लिए बड़ी उथल-पुथल का खतरा बन गया। इस वधिर्म के सबसे उत्कृष्ट और ऊर्जावान वरिोधी वोलोकलामस्क के संत जोसेफ थे, जनि्होंने उनके खलिाफ तथाकथति 'प्रोस्वेटतिेल' (प्रकाशक) लखिा, जो 16 पुस्तकों की एक रचना है जो उनके झूठे सद्धिांतों का पूरी तरह से खंडन करती है। 'यहूदीकरणकर्ताओं' के संप्रदाय ने यहूदी धर्म से बहुत कुछ उधार लयिा, जसिसे इसका नाम पड़ा; 'यहूदीकरणकर्ताओं' ने यीशु मसीह के अवतार और दव्यिता से इनकार कयिा; उन्होंने मठवाद और आध्यात्मकि पदानुक्रम, संस्कारों, संतों और प्रतमिाओं की पूजा को अस्वीकार कर दयिा, और परलोक आदि को नकार दयिा। 1504 की परषिद ने इन वधिर्मयिों को चर्च से बहषि्कृत कर दयिा, उनमें से कुछ को खंभे पर जलाने की सज़ा दी, और इस वधिर्म के आगे फैलाव को रोक दयिा।

[6160] 1515 के क्रसिमस दविस से

[6161] वोलोकलामस्क के संत जोसेफ की अवशेष वर्तमान में उनके मठ की एक क्रप्टि में रखी गई हैं।

उस लड़के को अपने पास रख लिया और उसे साधु जीवन तथा पवित्र शास्त्रों की शिक्षा देने लगे। देवदूत ने उन दोनों की आवश्यकताओं की पूर्ति की। पाँच वर्ष बाद, वरिष्ठ का निधन हो गया। उनकी मृत्यु के बाद, वह लड़का एक गुफा में रहने लगा और अड़तालीस वर्षों तक तपस्या का जीवन व्यतीत करने लगा। तब, परमेश्वर के स्वर्गदूत से आज्ञा पाकर, वह गुफा से बाहर निकला और एक सिंह पर सवार होकर, मसीह के धर्म का प्रचार करते हुए साठ पड़ावों की यात्रा की। राजा कार, करिनि और नुमेरियन ने[6162] को उसे पकड़कर कोड़े मारने का आदेश दिया: आदरणीय संत को गर्दन पर सौ कोड़े पड़े, जिसके बाद उन्होंने और भी कई यातनाएँ सहन कीं। जब उनके यातना देने वालों ने देखा कि वह कितने चमत्कार कर रहे थे, और कितनी बड़ी संख्या में लोग उनके पास आ रहे थे और पवित्र बपतिस्मा ग्रहण कर रहे थे, तो वे अपनी असहायता पर लज्जित हो गए और उन्हें शांतिपूर्वक रिहा कर दिया। वह अपनी गुफा में लौट आए और वहाँ सख्त उपवास में और सत्रह वर्ष बिताने के बाद, प्रभु के पास चले गए[6163] ।

23 सितंबर

10 सितंबर (पुराने कैलेंडर के अनुसार)

पवित्र शहीदों मिनोडोरा, मित्रोडोरा और निम्फोडोरा का जीवन और कष्ट

10 सितंबर को स्मरणोत्सव

तीन कुंवारी – मिनोडोरा, मित्रोडोरा और निम्फोडोरा – ने स्वयं को परम पवित्र त्रिमूर्ति को एक उपहार के रूप में अर्पित किया। कुछ लोग अपनी संपत्ति से ईश्वर को उपहार अर्पित करते हैं – ठीक वैसे ही जैसे पूर्व के तीन बुद्धिमान लोगों ने एक बार उन्हें सोना, लोबान और मूर अर्पित किया था[6164] (देखें मत्ती 2:11); लेकिन पवित्र कुंवारीयों ने अपने हृदय के खजाने से परमेश्वर को उपहार अर्पित किए। सोने के बजाय, उन्होंने उसे अपनी आत्माएँ अर्पित कीं, जो नाशवान सोने से नहीं बल्कि निर्दोष मेमने के बहुमूल्य रक्त से छुड़ाई गई थीं[6165] (देखें 1 पतरस 1:19); धूप के बजाय, उन्होंने एक शुद्ध अंतरात्मा अर्पित की, प्रेरित के साथ कहती हुईं: *'क्योंकि हम मसीह की सुगंध हैं'*[6166] (2 कुरिन्थियों 2:15); लोहबान के बदले, उन्होंने अपना शरीर ही प्रभु को भेंट कर दिया, और अपनी निर्मल कुँवारी अवस्था में ही मसीह के लिए घाव सहने हेतु उन्हें समर्पित कर दिया। पवित्र कुंवारी दृढ़ता से इस बात पर विश्वास रखती थीं कि प्रभु हमारी अस्थायी संपत्ति नहीं, बल्कि स्वयं हम चाहते हैं, जैसा कि दाऊद ने एक बार कहा था: *'आप मेरे प्रभु हैं; मुझे आपकी देन की कोई आवश्यकता नहीं'* (भजन संहिता 15:2)। इसलिए, उन्होंने स्वयं को परमेश्वर के लिए एक बलिदान के रूप में अर्पित कर दिया, जैसा कि उनके पवित्र जीवन और साहसी कष्टों से स्पष्ट रूप से स्पष्ट है।

[6162] कारस, न्यूमेरियन और कैरिनस क्रमशः रोमन सम्राट थे: कारस ने 282 से 283 तक शासन किया, जबकि न्यूमेरियन और कैरिनस, कारस के पुत्र, ने 283 से 284 तक संयुक्त रूप से शासन किया।

[6163] संत थियोफेनेस की मृत्यु लगभग 300 ईस्वी के आसपास हुई।

[6164] मगसि फ़ारस के मूल निवासी थे और बुद्धिमान तथा विद्वान पुरुषों की सम्मानित श्रेणी से संबंधित थे। परंपरा के अनुसार, वे लोगों के नेता थे और इसलिए यहाँ उन्हें राजा कहा गया है।

[6165] प्रेरित, लोगों की मसीह में परिवर्तित होने से पहले की स्थिति की तुलना दासता से करते हैं। किसी को फिरौती देकर दासता से मुक्त किया जा सकता था; लेकिन पाप और व्यर्थ जीवन की दासता से, हमें निर्दोष मसीह के लहू द्वारा छुटकारा मिला है, जिन्हें पवित्र धर्मग्रंथ में मेमना कहा जाता है।

[6166] यीशु मसीह का ज्ञान, जो उनकी प्रचार-सेवा के द्वारा संसार भर में फैला, उसे प्रेरित पौलुस ने इस प्रकार वर्णित किया है: जैसे कि पुराने नियम में पवित्र तेल से अभिषिक्त पवित्र पात्र और तम्बू के सेवक अपने चारों ओर एक सुगंधित सुगंध फैलाते थे, ठीक उसी प्रकार नए नियम में प्रेरित, मानो सबसे सुगंधित तेल – मसीह के ज्ञान – के पात्र हों, सुगंध से परिपूर्ण थे और मसीह के विषय में प्रचार करते हुए इस सुगंध को दूर-दूर तक फैलाया।

पवत्रि कुंवारी बहनिें बथिनियिा में जन्मीं[6167] । जन्म से बहनें, वे आत्मा में भी बहनें बनी रहीं: क्योंकि एक ही मन से उन्होंने दुनिया और उसकी सारी व्यर्थता की दास बनने के बजाय ईश्वर की सेवा करना चुना। अपनी आत्मा और शरीर दोनों को नरि्मल बनाए रखने तथा अपने पवत्रि वरा, प्रभु मसीह, के साथ पूर्ण पवत्रिता में एक होने की इच्छा से, पवत्रि कुंवारीयों ने उनकी पुकार पर ध्यान दिया: *'इसलयि उन में से नकिल आओ और अलग हो जाओ, प्रभु कहते हैं, और अशुद्ध वस्तु को न छूओ; और मैं तुम्हें ग्रहण करूँगा'* (2 कुरन्थियिों 6:17)। सभी चीज़ों से बढ़कर कुँवारी पवत्रिता से प्रेम करने, और यह जानते हुए कि व्यभचिार और अनवरत पाप के प्रति प्रवृत्त लोगों के बीच इस पवत्रिता को बनाए रखना कितिना कठनि है, पवत्रि कुँवारयिों ने मानव समाज को छोड़ दिया और, पूरी दुनिया से अलग होकर, एक एकांत स्थान पर बस गईं। जैसे नदी का पानी जब समुद्र में बहता है, तो समुद्र के पानी में मलिते ही वह अपनी मठिास खो देता है और खारा हो जाता है, वैसे ही आत्मा की पवत्रिता भी, संसार में रहते हुए, अनविार्य रूप से सुख की लालसा से कलंकति हो जाती है। इस प्रकार याकूब की बेटी, दीना, ने अपनी कुँवारी पवत्रिता तब तक बनाए रखी जब तक वह शेchem के वधिर्मी शहर में नहीं गई; लेकनि जैसे ही वह उस शहर में रहने वाली बेटयिों से परचिति हुई और उनके साथ मेलजोल में आ गई, उसने तुरंत ही अपनी कुँवारी पवत्रिता खो दी[6168] । यह संसार अपनी तीन बेटयिों—शरीर की वासना, आँखों की वासना और life[6169] के घमंड (देखें 1 यूहन्ना 2:16) के साथ – स्वयं शेchem के सविा और कुछ नहीं है, और वह अपने प्रेमयिों को नुकसान पहुँचाने के अलावा कसिी और चीज़ की परवाह नहीं करता; जैसे कोयला उसे छूने वालों को काला कर देता है, वैसे ही संसार अपने प्रशंसकों को घृणति और अशुद्ध बना देता है। इसलिए धन्य है वह जो संसार से दूर रहता है, ताकि वह उसकी अशुद्धता से स्वयं को कलंकति न कर ले; और धन्य हैं ये तीन कुँवारयिाँ, , जो संसार और उसकी दुष्ट बेटयिों से भाग गईं। पवत्रि कुंवारी दुनिया की गंदगी से कलंकति नहीं हुईं, और वे सफेद कबूतरों की तरह शुद्ध रहीं, जो सदाचार और ईश्वर के दर्शन के पंखों पर पहाड़ों और रेगस्तिानों के पार उड़ रही थीं, और दविय प्रेम में एक घोंसले की तरह शरण पाने की लालसा रखती थीं। इस प्रकार, व्यर्थ की दुनिया से अलग रहने वाले संन्यासयिों के लिए, केवल एक ही अनंत लालसा है: ईश्वर के लिए।

अपने नविास के लिए, पवत्रि कुंवारी महलिाओं ने फफियिा[6170] के गर्म झरनों से दो 'पोपरीश्चा'[6171] दूर स्थति एक ऊँची और सुनसान पहाड़ी को चुना। यहाँ बस जाने के बाद, उन्होंने एक शांत आश्रय और सुरक्षति शांति पाई, और अपना जीवन उपवास और अखंड प्रार्थना में बताया। पवत्रि कुंवारीयों ने रेगस्तिान में पुरुषों की दृष्टि से अपनी कन्या की पवत्रिता को छपिाया और इस पवत्रिता को ऊँचे पहाड़ पर ले गईं ताकि स्वर्गदूत इसे देख सकें; वे पहाड़ की चोटी पर चढ़ गईं ताकि पृथ्वी की धूल को झाड़कर, वे स्वर्ग के और करीब जा सकें। जसि स्थान पर वे रहती थीं, वह ही उनके जीवन की सदाचारति का प्रमाण है। क्योंकि मरुभूमि का क्या अर्थ है, यदि यह सभी चीजों का त्याग और एकांत नहीं है? ऊँचे पहाड़ का क्या प्रमाण है, यदि यह ईश्वर का चतिन नहीं है? गर्म पानी, जहाँ पवत्रि कुंवारी बसी थीं, का क्या अर्थ है, यदि यह ईश्वर के प्रति उनके हृदय की गर्माहट नहीं है? जैसे मस्रि की दासता से मुक्त हुए इस्राएलयिों को मरुभूमि से होकर गुजरना पड़ा ([6172]); वैसे ही पवत्रि कुंवारीयों ने, संसार से अलग होकर, मरुभूमि के जीवन से प्रेम कयिा। जैसे मूसा, पहाड़ पर चढ़कर, ईश्वर को नहिारते थे (देखें नरि्गमन 34:4, 6); इसी प्रकार उन्होंने भी, एक ऊँचे पहाड़ पर नविास करते हुए और प्रभु की ओर अपनी आँखें उठाकर, अपने मन की आँखों से उन्हें स्पष्ट रूप से देखा। जैसे मरुभूमि में लाठी से चोट लगने पर चट्टान से पानी नकिला (गनिती 20:2–11); वैसे ही, अपने सीने पर लगे नम्रता के प्रहारों से, पवत्रि कुँवारयिों की आँखों से आँसुओं की धाराएँ बहीं। और इन उत्कट आँसुओं में एक ऐसी शक्ति थी जो गर्म झरनों में नहीं थी: पानी केवल शारीरकि अशुद्धि को धो सकता था, जबकि आँसू आत्मा के दुर्गुणों को शुद्ध करते थे और आत्मा को बर्फ से भी अधकि

[6167] उस समय बथिुनयिा एशयिा माइनर का एक उत्तर-पश्चमिी प्रांत था; यह ब्लैक सी, बोस्फोरस और कॉन्स्टेंटनिोपल की जलडमरूमध्य के तटों पर स्थति है।

[6168] दीना का उल्लेख उत्पत्ति की पुस्तक में (उत्प. 30:21, 34:1, 48:15) मलिता है। जब याकूब शेchem के देश में ठहरे हुए थे, तब दीना जज्ञिासावश स्थानीय कन्याओं को देखने गईं। उस समय, शेchem के राजकुमार का पुत्र, उसकी सुंदरता से मोहति होकर, उसे बनिा अनुमति के अगवा कर ले गया, उसे अपने घर ले गया और उसका अपमान कयिा।

[6169] प्रेरति ने मसीहयिों से आग्रह कयिा कि वे संसार से प्रेम न करें या उससे आसक्त न हों। संसार में तीन प्रकार की कामनाएँ सक्रयि हैं: शरीर की कामना, आँखों की कामना, और मन की कामना, या सांसारकि अहंकार।

[6170] यह नकिोमेडयिा शहर के पास एक इलाके का नाम था। बाद में, सम्राट जस्टनियिन (527–565) ने यहाँ एक महल, एक अस्पताल और आर्कएन्जेल माइकल को समर्पति एक चर्च का नरि्माण कयिा।

[6171] दो स्टेडयिम – लगभग 3 कमिी।

[6172] यहूदयिों के अरब रेगस्तिान में भटकने का इतहिास गनिती 11:21 में वर्णति है।

श्वेत बना देते थे। लेकिन उन लोगों के लिए आँसुओं से शुद्ध करने के लिए क्या बचा था, जिन्होंने देह और आत्मा दोनों की हर अशुद्धि से स्वयं को शुद्ध कर लिया था (1 कुरिन्थियों 7:1), और पृथ्वी पर स्वर्गदूतों की तरह जीवन यापन किया था? यदि किसी के हृदय में अपने अनेक पापों की स्मृति से आँसू फूट सकते हैं, तो इन पवित्र कुँवारियों में विलाप केवल ईश्वर के प्रति प्रेम से उत्पन्न हुआ। क्योंकि जहाँ ईश्वर के प्रति प्रेम अग्नि की ज्वाला के साथ जलता है, वहाँ आँसुओं की धाराएँ अवश्य ही बहती हैं। इस अग्नि की शक्ति ऐसी है कि जब यह किसी के हृदय में भट्टी की तरह प्रज्वलित होती है, तो जितनी अधिक लौ बढ़ती है, ओस उतनी ही बड़ी होती जाती है: क्योंकि प्रेम जितना महान है, करुणा भी उतनी ही महान है। आँसू प्रेम से उत्पन्न होते हैं: इसीलिए, जब मसीह मर गए लाजरुस पर रोए, तो उन्होंने कहा: *'देखो, वह उससे कितना प्रेम करता था'* (यूहन्ना 11:36)। पवित्र कुँवारियाँ अपनी प्रार्थनाएँ करते और ईश्वर पर ध्यान लगाते समय रोती थीं: क्योंकि वे अपने प्रभु से प्रेम करती थीं और उन्हें निहारकर तृप्त होना चाहती थीं; वे आँसुओं के साथ उस समय का इंतजार करती थीं जब वे अपने प्रिय स्वर्गीय वधूवर को देखेंगी। उनमें से प्रत्येक ने दाऊद के शब्दों को दोहराया: *'जब मैं आकर परमेश्वर के सामने उपस्थित होऊँगा, तो मेरे आँसू दिन-रात मेरा भोजन रहे हैं'* (भजन संहिता 41:3–4)[6173] । पवित्र कुंवारी कहती हैं, "हम दिन-रात रोती हैं, क्योंकि वह समय आने में बहुत लंबा हो गया है जब हम अपने सबसे प्रिय वर, यीशु मसीह के साक्षात दर्शन के सामने प्रकट होंगी, जिनके दर्शन से तृप्त होने की हमें उतनी ही लालसा है जितनी एक हिरण को जलधाराओं की लालसा होती है (भजन संहिता 41:1)।"

लेकिन *'पहाड़ पर बसा नगर छिपा नहीं सकता* (मत्ती 5:14)[6174] ; उसी प्रकार पवित्र कुंवारी, यद्यपि अपने विशेष जीवन-मार्ग द्वारा वे पूरी तरह संसार से अलग हो गई थीं, स्वयं ईश्वर द्वारा लोगों के सामने प्रकट की गईं। पवित्र कुंवारीयों की प्रार्थनाओं से हुए बीमारों के चमत्कारी चंगाईयों ने तुरही की ध्वनि की तरह पूरे देश में उनकी खबर फैला दी। उस समय दुष्ट मैक्सिमियिन का राज था, और बिथुनिया प्रांत का शासन प्रिसि फ्रोंटन के पास था। पवित्र कुंवारीयों के बारे में सुनकर, राजकुमार ने उन्हें पकड़कर अपने सामने लाने का आदेश दिया। मसीह के ये मेमने, जिन्हें जंगली जानवरों ने भी नुकसान नहीं पहुँचाया था, उन्हें ऐसे मनुष्यों ने पकड़ लिया जो रूप और स्वभाव से जानवरों जैसे थे, और उनके यातनाकर्ता के सामने लाया गया। तीन देवदूतों की तरह, तीनों कुंवारी कन्याएं दुष्ट के न्याय के सामने खड़ी थीं। उन्हें स्वयं परमपिता परमेश्वर के सामने खड़ा होना चाहिए था, जो त्रिमूर्ति में महिमामय हैं, न कि पापी पुरुषों के सामने, जो पवित्र कुंवारी कन्याओं के मुख पर एक दृष्टि डालने के भी अयोग्य थे, जो दैवीय सुंदरता और पवित्र आत्मा की कृपा से दमक रहे थे। यातना देने वाला स्वयं इस बात पर हैरान था कि ऐसी सुंदरता—जैसी उसने शाही महलों में भी कभी नहीं देखी थी—मरुभूमि में कैसे संरक्षित रह सकी। क्योंकि यद्यपि पवित्र कुँवारियों के शरीर उपवास और कई तपस्या के कार्यों से पूरी तरह थके हुए थे, उनके चेहरे न केवल अपनी कुँवारी सुंदरता खोने से बचे, बल्कि उससे और भी अधिक चमक उठे। जहाँ हृदय आध्यात्मिक आनंद और प्रसन्नता से भरा था, वहाँ चेहरे की सुंदरता फीकी नहीं पड़ सकती थी: जैसा कि पवित्र धर्मग्रंथ में कहा गया है, एक प्रसन्न हृदय चेहरे को प्रसन्न बनाता है (नीतिवचन 15:13)। परहेज़ में कुछ ऐसा भी है जो थकान पैदा करने के बजाय, मानवीय चेहरों पर सुंदरता प्रदान करता है; इस प्रकार, पुराने दिनों में, दानियेल और उसके साथ के तीन युवक, यद्यपि वे उपवास और परहेज़ में रहते थे, अपनी सुंदरता के कारण राजा के सभी युवकों में सबसे अलग खड़े थे (दानियेल 1:5-16)। यही बात पवित्र कुँवारियों के विषय में भी सत्य थी, और इन 'मरुभूमि के फूलों', अर्थात् परमेश्वर की पुत्रियों की सुंदरता, जो संसार की पुत्रियों की सारी सुंदरता से बढ़कर थी, मानव मन की समझ से परे थी।

राजकुमार ने सबसे पहले पवित्र कुँवारियों से पूछा कि उनका नाम क्या है और वे कहाँ से आई हैं।

उन्होंने उत्तर दिया कि मसीह के नाम पर उन्हें ईसाई कहा जाता है, और उनके पवित्र बपतिस्मा में उन्हें मिनोडोरा, मिट्रोडोरा और निम्फोडोरा नाम दिए गए थे; कि वे जन्म से बहनें थीं और इसी बिथुनिया की भूमि में जन्मी थीं।

राजकुमार ने अपनी बात जारी रखी और चापलूसी से पवित्र कन्याओं को अपने पाप में फंसाने की उम्मीद करते हुए, उनसे कहा:

'हे सुन्दर कन्याओं! हमारे महान देवताओं ने तुमसे प्रेम किया है और तुम्हें ऐसी सुन्दरता से सम्मानित किया है; वे तुम्हें महान धन-संपत्ति से और अधिक सम्मानित करने के लिए तैयार हैं, बशर्ते कि तुम उनका सम्मान करो और, हमारे साथ मिलकर, उनकी पूजा करो और उन्हें बलिदान अर्पित करो; और मैं, अपनी ओर से, राजा के सामने तुम्हारी प्रशंसा

[6173] अर्थात्, मेरे आँसू, मानो, मेरे स्थायी आहार बन गए हैं। देखें भजन संहिता 41:3–4।

[6174] मसीहा के वचन, जो उन्होंने प्रेरितों से कहे (मत्ती 5:14)। इसका अर्थ है कि सद्गुणों से सुसज्जित एक आत्मा, परमेश्वर के समीप आकर, चौकस आँखों से छिपी नहीं सकती।

करूँगा। और जब राजा आपको देखेगा, तो वह आपसे प्रेम करेगा और आपको अनेक उपहारों से सम्मानित करेगा; वह आपका विवाह महान पदाधिकारियों से कराएगा, और आप, अन्य पत्नियों की तुलना में अधिक, सम्मान, कीर्ति और धन का आनंद लेंगी।

तब बड़ी बहन, मिनोडोरा, ने कहा:

'ईश्वर ने हमें अपनी ही छवि और समानता में बनाया है; हम उसी की उपासना करते हैं, और हम किसी अन्य देवता के बारे में सुनना भी नहीं चाहते; जहाँ तक आपके उपहारों और सम्मानों की बात है, वे हमारे लिए पैरों तले कुचले हुए पुआल की तरह अनावश्यक हैं।' तुम हमें अपने राजा से कुलीन पुरुषों का वादा करती हो, लेकिन हमारे प्रभु यीशु मसीह से बेहतर कौन हो सकता है, जिसे हमने विश्वास में स्वयं को सगाई कर ली है? हमने उनके साथ एक पवित्र विवाह किया है, हम उनसे अपनी आत्मा से चिपके हैं, हम उनसे प्रेम में एक हुए हैं; वह हमारा सम्मान, हमारी महिमा, हमारी संपत्ति हैं, और किसी में—न केवल आप और आपके राजा में, बल्कि पूरी दुनिया में—हमें अलग करने की शक्ति नहीं है।

दूसरी बहन, मित्रोडोरा, ने कहा:

'*एक मनुष्य को सारी दुनिया प्राप्त करने से क्या लाभ, यदि वह अपनी आत्मा खो दे?*' (मत्ती 16:26)। हमारे प्रिय वरा और प्रभु की तुलना में यह संसार हमारे लिए क्या है? यह सोने की तुलना में कीचड़, सूर्य की तुलना में अंधकार, और शहद की तुलना में पित्त के समान है। क्या हम इस व्यर्थ संसार के लिए, प्रेम में प्रभु से मुंह मोड़कर अपनी आत्माओं को नष्ट करेंगे? कभी नहीं!

'तुम बहुत ज्यादा बोल रही हो,' यातना देने वाले ने कहा, 'क्योंकि तुमने न तो यातनाएँ देखी हैं, और न ही घाव झेले हैं; जब तुम उन्हें जान लोगी तो कुछ और ही बोलोगी।'

'क्या तुम्हें सच में लगता है,' छोटी बहन, निम्फिडोरा ने साहसपूर्वक जवाब दिया, 'कि तुम हमें यातनाओं और क्रूर घावों से डरा सकते हो?' सम्पूर्ण ब्रह्मांड से यातना के उपकरण इकट्ठा करो—तलवारें, खंभे, लोहे के पंजे—दुनिया के हर कोने से सभी यातना देने वालों को बुलाओ, यातना के हर संभव रूप को मिला दो, और हमारे नाजुक शरीरों को उनके हवाले कर दो; तुम देखोगे कि उन सभी यंत्रों के टूटने, सभी यातना देने वालों के हाथों के थकने, और तुम्हारी यातना के सभी रूपों के समाप्त होने से पहले, हम अपने मसीह से मुंह मोड़ेंगे: उनके लिए कड़वी यातनाएं हमारे लिए एक मीठा स्वर्ग होंगी, और क्षणिक मृत्यु – अनंत जीवन।

लेकिन राजकुमार उन्हें मनाने की कोशिश करता रहा।

उसने कहा, 'मैं तुम्हें एक पिता की तरह सलाह देता हूँ: मेरी बात सुनो, मेरे बच्चों, और हमारे देवताओं को बलिदान चढ़ाओ। तुम खून से बहनें हो: निश्चित रूप से तुम एक-दूसरे को शर्म, अपमान और यातना में नहीं देखना चाहती हो, न ही अपनी सुंदरता को फीकी पड़ती देखना चाहती हो। क्या मैं सच नहीं बोल रहा हूँ? क्या मेरे शब्द तुम्हारे अपने भले के लिए नहीं हैं? सचमुच, मैं तुम्हें यह पितृवत् सलाह देता हूँ, क्योंकि मैं तुम्हें नग्न, पीटा हुआ, प्रताड़ित और टुकड़ों में बँटा हुआ नहीं देखना चाहता। तो मेरी आज्ञा का पालन करो, ताकि तुम न केवल मेरी बल्कि राजा की भी कृपा प्राप्त कर सको, और हर आशीर्वाद पाकर, समृद्धि में अपना जीवन यापन करो। लेकिन यदि तुम अब मेरी बात नहीं मानोगे, तो तुम तुरंत ही कड़वी यातनाओं और गंभीर बीमारियों के शिकार हो जाओगे, और तुम्हारी सुंदरता नष्ट हो जाएगी।

'आपकी अदालत!' – मिनोडोरा ने कहा, – हमें तुम्हारी चापलूसी में कोई आनंद नहीं मिलता, और न ही तुम्हारी धमकियाँ हमें डराती हैं: हम जानते हैं कि तुम्हारे साथ धन, महिमा और सभी सांसारिक सुखों का आनंद लेना हमारे लिए नरक में शाश्वत दुख लाने के समान है, जबकि मसीह के लिए अस्थायी पीड़ा सहना स्वर्ग में शाश्वत आनंद प्राप्त करने का मार्ग है। आपके द्वारा हमें वचन दी गई समृद्धि क्षणभंगुर है; ' ' के वे यातनाएँ जिसे आप हमें डराते हैं, अस्थायी हैं; लेकिन हमारे प्रभु द्वारा उनके लिए तैयार की गई यातनाएँ जो उनसे घृणा करते हैं, शाश्वत हैं, और जो उन पर दया रखते हैं, उनके लिए उनकी प्रचुर कृपा अनंत है। हम आपकी क्षणभंगुर आशीर्वादों की कामना नहीं करते, और न ही हम आपके अस्थायी यातनाओं से डरते हैं; लेकिन हम नरक की यातनाओं से डरते हैं और स्वर्ग के आशीर्वादों की लालसा करते हैं, क्योंकि वे शाश्वत हैं। लेकिन सबसे महत्वपूर्ण बात यह है – चूँकि हम मसीह, हमारे वधू-वर से प्रेम करते हैं – हम सर्वसम्मति से उनके लिए मरना, और साथ में मरना चाहते हैं, ताकि यह स्पष्ट हो सके कि हम देह में तो क्या, आत्मा में तो और भी अधिक बहनें हैं। जिस प्रकार एक ही गर्भ ने हमें इस संसार में लाया है, उसी प्रकार एक ही मृत्यु हमें इस संसार से ले जाए; उद्धारकर्ता का एक ही महल हमें स्वीकार करे, और वहाँ हम सदा के लिए निवास करें।

इन शब्दों के बाद, उन्होंने अपनी आँखें स्वर्ग की ओर उठाईं और कहा:

'हे यीशु मसीह, हमारे परमेश्वर! हम मनुष्यों के सामने तुझे इनकार नहीं करते; तू भी हमें अपने स्वर्गीय पिता के सामने इनकार न करना।'

और फिर, अपने यातना देने वाले की ओर मुड़कर, वह कहने लगी:

'तो हमें यातना दो, हे न्यायाधीश! उस शरीर को घायल करो जो तुम्हें सुंदर लगता है; क्योंकि हमारे शरीर के लिए हमारे मसीह के घावों से बेहतर कोई आभूषण नहीं हो सकता—न सोना, न मोती, न ही कीमती वस्त्र—जिन्हें हम लंबे समय से प्राप्त करने की इच्छा रखते हैं।'

राजकुमार ने उससे कहा, 'तुम उम्र और बुद्धि में सबसे बड़ी हो, और तुम्हें दूसरों को राजा और हमारे आदेशों का पालन करना सिखाना चाहिए; फिर भी तुम खुद उनका पालन नहीं करती और उन्हें गुमराह कर रही हो।' मैं आपसे विनती करती हूँ: मेरी बात सुनें, जैसा मैं आपको आज्ञा देती हूँ वैसा करें, और देवताओं की पूजा करें, ताकि आपकी बहनें, आपके अनुकरण करते हुए, वैसा ही करें।

'राजकुमार, तुम व्यर्थ में परिश्रम कर रहे हो,' संत ने उत्तर दिया, 'तुम हमें मसीह से दूर करने और उन मूर्तियों की पूजा करने के लिए मनाने का व्यर्थ प्रयास कर रहे हो जिन्हें तुम देवता कहते हो। न मैं और न मेरी बहनें ऐसा करेंगी: क्योंकि हमारी एक आत्मा, एक मन, एक हृदय है जो मसीह से प्रेम करता है।' इसलिए मैं तुम्हें सलाह देता हूँ कि और शब्द बर्बाद मत करो, बल्कि अपने कर्मों से हमें आज़माओ: हमें मारो, हमें काट डालो, हमें जला दो, हमें टुकड़े-टुकड़े कर दो; तब तुम देखोगे कि क्या हम तुम्हारी अधर्मी आज्ञा का पालन करेंगे। हम मसीह के हैं, और हम मसीह के लिए मरने को तैयार हैं।"

ये शब्द सुनकर, राजकुमार फ्रोंटन क्रोध से आग-बबूला हो गया और अपना सारा गुस्सा मिनोडोरा पर उतार दिया। दो छोटी बहनों को हटाने के बाद, उसने मिनोडोरा को नग्न करके पीटने का आदेश दिया। चार जल्लादों ने संत को पीटना शुरू कर दिया, जबकि उद्घोषक चिल्लाया: 'देवताओं का सम्मान करो और राजा की स्तुति करो, और हमारे कानूनों का उल्लंघन मत करो।'

उन्होंने संत मिनोडोरा को दो घंटे तक पीटा। अंत में, उसके यातना देने वाले ने उससे कहा:

'चलो, देवताओं को बलिदान चढ़ाओ।'

'मैं कुछ और नहीं करती,' शहीद ने उत्तर दिया, 'सिवाय बलिदान चढ़ाने के। क्या तुम नहीं देख सकते कि मैंने अपना पूरा अस्तित्व अपने ईश्वर को बलिदान के रूप में अर्पित कर दिया है?'

तब यातना देने वाले ने अपने सेवकों को संत मिनोडोरा को और भी बुरी तरह पीटने का आदेश दिया। और उन्होंने उसके पूरे शरीर पर निर्दयता से प्रहार किया, उसके जोड़ तोड़े, उसकी हड्डियाँ तोड़ी और उसके शरीर को चूर-चूर कर दिया। लेकिन पवित्र कन्या, जो अपने अमर वर के प्रति तीव्र प्रेम और लालसा से परिपूर्ण थी, ने अपने कष्टों को वीरतापूर्वक सहा, मानो उसे कोई दर्द ही न हो।

अंत में, उसने अपने हृदय की गहराई से पुकारा:

'हे प्रभु यीशु मसीह, मेरी आनन्द और मेरे हृदय के प्रेम, मैं तेरे शरण आती हूँ; हे मेरी आशा, मैं तुझ से विनती करती हूँ: मेरी आत्मा को शान्तिपूर्वक ग्रहण कर।'

इस प्रार्थना के साथ, संत ने अपनी अंतिम सांस ली और अपने प्रिय वधूवर के पास चली गईं, उनका शरीर कीमती आभूषणों के बजाय घावों से ढका हुआ था।

चार दिन बाद, यातना देने वाले ने मित्रोडोरा और निम्फोडोरा को मुकदमे के लिए बुलाया और आदेश दिया कि उनकी बड़ी बहन की लाश लाकर उनके पैरों तले रख दी जाए। संत मिनोडोरा का पवित्र शरीर नग्न पड़ा था, उस पर कोई आवरण नहीं था; वह सिर से पैर तक घावों से ढका हुआ था, और उसके सभी जोड़ कुचले हुए थे। यह दृश्य सभी के मन में गहरी करुणा जगा गया। यातना देने वाले को ऐसा प्रतीत हुआ मानो वह उन युवतियों से कहना चाहता हो: 'देखो तुम्हारी बहन का क्या हाल हुआ है; तुम्हारे साथ भी यही होगा'; उसे उम्मीद थी कि अपनी बहन का इतना क्रूरता से यातनाग्रस्त शरीर देखकर, वे युवतियाँ भयभीत हो जाएँगी और उसकी आज्ञा का पालन करेंगी। मौजूद सभी लोग, उस बर्बाद मृत शरीर को निहारते हुए, अपनी स्वाभाविक दया को दबा नहीं सके और अपने आँसू नहीं छिपा सके: केवल यातना देने वाला पत्थर की तरह कठोर बना रहा, और और भी अधिक क्रोधित हो गया। यद्यपि मानव स्वभाव और अपनी बहन के प्रति प्रेम ने पवित्र कन्याओं, मित्रोडोरा और निम्फोडोरा को रुला दिया, फिर भी मसीह के प्रति उनका और भी गहरा प्रेम उन्हें रोने से रोक रहा था। उन्हें दृढ़ विश्वास था कि उनकी बहन पहले ही अपने वर के महल में आनंद मना रही थी और

उस क्षण की प्रतीक्षा कर रही थी जब वे भी, उन्हीं घावों से सुसज्जित होकर, सर्व-आकांक्षित प्रभु के साक्षात उपस्थिति होने के लिए शीघ्रता से आएँगी। अत; अपने सामने पड़े पवित्र शरीर को निहारते हुए, उन्होंने कहा:

'धन्य है तू, हमारी बहन और माँ: तुझे शहीद के मुकुट का योग्य समझा गया है और तू अपने वधू-वर के महल में प्रवेश कर गई है।' तब, परम धन्य प्रभु से प्रार्थना करो, जिन्हें तुम अब देख रही हो, कि वह हमें तुरंत आज्ञा दें कि हम तुम्हारे मार्ग द्वारा उनके पास आएं, और हमें उस महान ईश्वर की उपासना करने तथा उनके साथ उनके प्रेम और अनंत आनंद का आनंद लेने की कृपा दें। और तुम, हमारे यातना देने वालों, क्यों देरी कर रहे हो और हमें मार क्यों नहीं रहे हो? तुम हमें हमारी प्रिय बहन के भाग्य से वंचित क्यों कर रहे हो? तुम हमें मृत्यु का प्याला तुरंत क्यों नहीं पिलाते, जिसकी हम सबसे मीठी पेय के रूप में लालसा करते हैं? देखो, हमारी हड्डियाँ कुचलने के लिए, हमारी पसलियाँ जलाने के लिए, हमारे शरीर फाड़े जाने के लिए, हमारे सिर काटे जाने के लिए, और हमारे हृदय वीरतापूर्ण सहनशीलता के लिए तैयार हैं। तो आगे बढ़ो और अपना काम करो; हमसे और कुछ उम्मीद मत करो: हम झूठे देवताओं के सामने अपने घुटने नहीं टेकेंगे। तुम देख सकते हो कि हम कितनी बेताबी से मृत्यु की कामना करते हैं। तुम्हें और क्या चाहिए? हमारे प्रभु मसीह, हमारे सबसे प्रिय वरा के लिए अपनी बहन के साथ मरना—यही हमारी एकमात्र इच्छा है।

न्यायाधीश ने देखा कि वे कितनी निडर थीं और उसने मान लिया कि मसीह के लिए मरने की उनकी इच्छा अटूट थी; फिर भी उसने चापलूसी से उन्हें अपनी सोच के अनुसार बनाने की कोशिश की और चालाकी से उन्हें मनाते रहे।

लेकिन बहनों ने उत्तर दिया:

'हे शापित यातनाकर्ता, तुम हमारे दृढ़ संकल्प का विरोध करना कब बंद करोगे? तुम जानते हो कि हम एक ही मूल की शाखाएँ हैं, हम रक्त से बहनें हैं: तो निश्चित रहो, कि हम एक ही मन की हैं। आप यह हमारी अपनी बहन से ही समझ सकते थे, जिसे आपने यातना दी है। यदि उसने, अपने सामने पीड़ा में साहस का कोई उदाहरण न होते हुए भी, इतना अजेय धैर्य दिखाया, तो फिर हमें क्या करना चाहिए, जब हमारी वह बहन हमारे लिए एक आदर्श बन चुकी है? क्या तुम यह नहीं देख सकते कि वह, यद्यपि अपने होठों को सीले हुए लेटी है, अपने खुले घावों के माध्यम से हमें शिक्षा देती है और हमें पीड़ा सहने के पराक्रम के लिए प्रोत्साहित करती है? नहीं, हम उससे अलग नहीं होंगे, न ही हम अपना नाता तोड़ेंगे, बल्कि हम मसीह के लिए वैसे ही मरेंगे जैसे वह मरी। हम उन धन-संपत्तियों का त्याग करते हैं जिनका आपने वादा किया है; हम महिमा और पृथ्वी की सभी चीज़ों का त्याग करते हैं जो पृथ्वी पर लौट जाएँगी; हम नश्वर वर-वधू को त्यागते हैं, क्योंकि हमारे पास अक्षय वस्तु है: हम केवल उसी से प्रेम करते हैं, और दहेज के स्थान पर हम अपनी मृत्यु अर्पित करते हैं, ताकि हम उनके शाश्वत, शुद्ध और पवित्र महल में अमरत्व के योग्य माने जाएँ।

इस प्रकार सारी आशा खोने पर, यातना देने वाले क्रोध से पागल हो गया और छोटी बहन को हटाकर, उसने आदेश दिया कि मित्रोडोरा को फांसी दी जाए और उसके शरीर को मोमबत्तियों से जला दिया जाए। इस प्रकार मित्रोडोरा को दो घंटे तक यातना दी गई। इस यातना को सहते हुए, संत ने अपनी निगाहें अपने एकमात्र प्रिय वर पर टिकाईं, जिनके लिए वह कष्ट झेल रही थी, और उनसे सहायता की विनती की। उसे पेड़ से उतार लिया गया, कोयले की तरह झुलसा हुआ, लेकिन यातना देने वाले ने आदेश दिया कि उसे लोहे की छड़ों से बुरी तरह पीटा जाए, जिससे उसके सभी अंग कुचल जाएँ। ऐसी यातनाओं के बीच, संत मित्रोडोरा ने प्रभु का स्मरण करते हुए, अपनी पवित्र आत्मा को उनके हाथों में सौंप दिया।

जब उसकी मृत्यु हो गई, तो उन्होंने मसीह की तीसरी भेड़ें, निफिोडोरा को लाया, ताकि वह अपनी दो बहनों के निर्जीव शरीरों को देखे और उनकी क्रूर मृत्यु से भयभीत होकर मसीह का त्याग कर दे।

राजकुमार ने उससे चालाकी से बात करनी शुरू की:

'हे सुन्दर कन्या! मैं तुम्हारी सुंदरता से दूसरों की तुलना में अधिक प्रभावित हूँ, और मुझे तुम्हारी युवावस्था पर दया आती है। मैं देवताओं की शपथ खाता हूँ कि मैं तुम्हें अपनी बेटी की तरह प्यार करने लगा हूँ। देवताओं की पूजा करो, और तुम तुरंत राजा की महान कृपा प्राप्त करोगी: वह तुम्हें एक संपत्ति से पुरस्कृत करेगा और सम्मानों की वर्षा करेगा। यदि, हालाँकि, तुम ऐसा नहीं करती हो, तो तुम भी अपनी बहनों की तरह ही मर जाओगी, जिनके शव तुम्हारे सामने पड़े हैं।"

ये शब्द उस पवित्र कन्या के कानों से हवा की तरह निकल गए: उसने न केवल इन पर कोई ध्यान नहीं दिया, बल्कि उसने मूर्तियों और मूर्तिपूजकों के बारे में तिरस्कारपूर्वक कहा और दाऊद की तरह कहा: *'मूर्तियाँ चाँदी और*

सोने की हैं, मनुष्यों के हाथों का काम हैं: जो उन्हें बनाते हैं और जो उन पर भरोसा करते हैं, वे भी उनके जैसे हों (भजन संहिता 113:12, 16)[6175] .

दुष्ट व्यक्ति ने, यह देखकर कि वह बातों से सफल नहीं हो पाएगा, उसे नग्न लटकाने और उसके शरीर को लोहे की पंजों से खुरचने का आदेश दिया। फिर भी, इतनी यातना में भी उसने अधीरता का कोई लक्षण नहीं दिखाया; न तो उसने कोई चीख निकाली और न ही कोई कराह, बल्कि केवल स्वर्ग की ओर अपनी आँखें उठाईं और चुपचाप अपने होंठ हिलाए, जो उसकी प्रचंड प्रार्थना का संकेत था। और जब उद्घोषक ने पुकारा, 'देवताओं को बलिदान चढ़ाओ, और तुम अपने कष्टों से मुक्त हो जाओगे,' तो संत ने कहा:

'मैंने स्वयं को अपने ईश्वर के लिए बलिदान के रूप में अर्पित कर दिया है; उनके लिए दुख सहना मेरी मिठास है, और मृत्यु मेरा लाभ है।'

अंत में, यातना देने वाले ने आदेश दिया कि उसे लोहे की छड़ों से पीट-पीट कर मार डाला जाए, और संत निम्फोडोरा को यीशु मसीह की स्वीकारोक्ति के लिए मार डाला गया।

इस प्रकार, कन्याओं के इस तिकड़ी ने अपने बलिदान के माध्यम से परम पवित्र त्रिमूर्ति की महिमा की।

हालांकि, यातना देने वाला युवतियों की पीड़ा से संतुष्ट नहीं था, बल्कि उसने उनके मृत शरीरों पर भी अपना बेकाबू क्रोध उतारा। उसने एक बड़ी चिता बनाने और पवित्र शहीदों के शवों को उसमें फेंकने का आदेश दिया। यह होते ही, गरज के एक ज़ोरदार कड़क के साथ, स्वर्ग से आग की वर्षा हुई और उसने तुरंत राजकुमार फ्रोंटन और उसकी सभी नौकरों को भस्म कर दिया, जिन्होंने पवित्र कन्याओं को यातनाएँ दी थीं। जहाँ तक उस चिता की बात है जो बनाई गई थी, उस पर मूसलाधार बारिश हुई और उसने लपटों को बुझा दिया। पवित्र लोगों के शरीरों को, जो आग से अछूते रहे, विश्वासियों ने गरम पानी के पास एक ही ताबूत में रखकर सम्मानपूर्वक दफनाया। इस प्रकार, जिन्हें एक ही गर्भ ने जन्म दिया था, उन्हें एक ही ताबूत में रखा गया, ताकि जो जीवन में अविभाज्य थे, वे मृत्यु में भी एक साथ रह सकें। पृथ्वी पर बहनें, वे स्वर्ग में भी बहनें रहीं; ताबूत में बहनें, अपने वधू-स्वामी के महल में बहनें। उनके सम्मान में उनके शरीरों के ऊपर एक चर्च का निर्माण किया गया[6176] , और उनके अवशेषों से नदियों की तरह चंगाई होती थी, परम पवित्र त्रिमूर्ति की महिमा के लिए और तीन पवित्र कुंवारीयों की स्मृति में, जिनकी प्रार्थनाओं द्वारा हम भी योग्य ठहराए जाएँ कि हम पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा, एक परमेश्वर को देख सकें। उसकी सदा महिमा हो। आमीन।

कॉन्टाकियन, स्वर 4:

पवित्र त्रिमूर्ति के लिए धैर्यपूर्वक कष्ट सहकर, आपने कपटी शत्रु को पराजित किया, आत्मा में भ्रातृ-भगिनी के वस्त्र धारण किए: इस प्रकार, पाँच कुँवारियों के साथ[6177] , आपने पीड़ा-वाहकों के स्वर्गीय मठ में अपना स्थान ग्रहण किया है, और स्वर्गदूतों के साथ आनंदपूर्वक सर्वशक्तिमान के समक्ष अनवरत खड़े हैं।

रानी संत पुलकेरिया का जीवन

10 सितंबर को स्मरणोत्सव

[6178]ग्रीक सम्राट आर्कैडियस[6179] ने अपनी मृत्यु पर एक आठ वर्षीय पुत्र, थियोडोसियस, और तीन बेटियों – पुलकेरिया, आर्केडिया और मरीना को पीछे छोड़ दिया। पुलकेरिया, जो अपने भाई से बड़ी थीं, अपनी बुद्धिमत्ता और विनम्रता के लिए प्रसिद्ध थीं। वह यूनानी साम्राज्य के लिए दैवीय प्रावधान का एक महान उपहार थीं – युवा थियोडोसियस की सहायता करने और विधर्मियों के हमलों से ऑर्थोडॉक्सी की रक्षा करने के लिए[6180] । अपने समय से अधिक बुद्धिमान,

---

[6175] मूर्तियाँ मानव हाथों का काम हैं, और मूर्तिपूजक स्वयं मूर्तियों के समान हो जाते हैं – तर्कहीन, असंवेदनशील, ठीक अपनी मूर्तियों की तरह।

[6176] पवित्र शहीदों के सम्मान में एक सेवा है, और इसका कैनन पूजनीय जोसेफ द हाइमनोग्राफर (मृत्यु 883) द्वारा रचित था।

[6177] यह स्पष्ट रूप से उद्धारकर्ता की दृष्टांत में उल्लेखित पाँच बुद्धिमान कुँवारियों (मत्ती 25:1–13) का संदर्भ देता है।

[6178] अर्थात्, पितृसत्तात्मक धर्मप्रांत में।

[6179] उन्होंने 395 से 408 तक शासन किया।

[6180] नेस्टोरियन और यूटकियिन; उनके बारे में अधिक जानकारी के लिए नीचे देखें।

उन्हें उनके भाई ने सह-शासक के रूप में स्वीकार किया और ऑगस्टा की उपाधि प्रदान की[6181] । जब सत्ता में आईं, तो वह 16 वर्ष की थीं और उन्होंने ग्रीक साम्राज्य का शासन एक पत्नी की समझ से नहीं, बल्कि एक पति की बुद्धिमत्ता से किया, जिससे उस समय की पूरी दुनिया चकित रह गई: यह उनके जीवन की पवित्रता के लिए ईश्वर द्वारा उन्हें प्रदान किया गया था। क्योंकि ईश्वर के प्रति अपने प्रेम से, और साथ ही अपने प्रजा की शांति और सुव्यवस्था की चिंता से, उसने विवाह से त्याग दिया ताकि उसके पति और उसके भाई के बीच कोई कलह न हो; और, ईश्वर को अपना वर मानकर, वह अपनी मृत्यु तक कुंवारी रही: और अपनी कुँवारी अवस्था को ईश्वर को समर्पित करने के चिह्न के रूप में, उसने सेंट की कैथेड्रल में सोने और कीमती पत्थरों का एक सिंहासन लगवाया, जो अद्भुत ढंग से तैयार किया गया था और अत्यधिक मूल्यवान था। उसने अपनी बहनों को भी अपनी कुँवारी अवस्था बनाए रखने के लिए मनाया, और उन्होंने ईश्वर से अपने जीवन के अंत तक अपनी कन्या की पवित्रता बनाए रखने की प्रतिज्ञा की; वे उसके साथ उपवास और प्रार्थना में रहे, और उन्होंने उसका पालन न केवल अपनी बड़ी बहन, बल्कि अपनी माँ और रानी के रूप में भी किया।

पुलकेरिया ने अपने भाई, सम्राट थियोडोसियस के लिए एक माँ की भूमिका निभाई, और हर तरह से उसकी देखभाल की, उसे ईश्वर का भय सिखाया। ग्रीक और लैटिन में अच्छी तरह से निपुण होने के कारण, वह स्वयं उसकी शिक्षिका थीं और उन्होंने उसे न केवल किताबों में बल्कि अच्छे आचरण में भी प्रशिक्षित किया; उन्होंने उसे मार्गदर्शन दिया कि उसे बातचीत में कैसा व्यवहार करना चाहिए, सामान्य रूप से कैसा आचरण करना चाहिए, दोषियों को कैसे दंड देना है और उन पर कैसे दया दिखानी है—संक्षेप में, उन्होंने उसे एक अच्छे शासक के लिए आवश्यक सभी बातें सिखाईं। और अच्छा बीज बाँझ जमीन पर नहीं गिरा, क्योंकि वह हर बात में उसकी आज्ञा का पालन करता था; और उसे जो उत्तम परवरिश मिली, उसके कारण, परिपक्वता तक पहुँचने पर, वह किसी भी अन्य राजा से अधिक दयालु, सौम्य, धैर्यवान, द्वेष से मुक्त, बुद्धिमान, विवेकी और दयालु था; लेकिन, उसकी परवरिश के अलावा, संत पुलकेरिया की प्रार्थनाओं ने भी उसके जीवन में उसकी मदद की। उन्होंने ब्लाचर्ना में परमेश्वर की परम पवित्र माता को समर्पित एक भव्य चर्च[6182] और कई अन्य चर्चों और मठों की स्थापना की, और गरीबों में उदारतापूर्वक दान दिया। उनकी देखरेख में, ग्रीक साम्राज्य, आंतरिक विधर्मी उथल-पुथल को छोड़कर, शांति और सुकून में बना रहा।

जब थियोडोसियस बीस वर्ष का हुआ और उसकी शादी का समय आया, तो धन्य पल्केरिया उसके लिए एक उपयुक्त पत्नी खोजने को लेकर चिंतित थीं। उस समय, एथेनाइडा नाम की एक युवती एथेंस से कॉन्स्टेंटिनोपल[6183] आई; वह मूर्तिपूजक धर्म की, रूप में सुंदर, विनम्र और बुद्धिमान थी, वह प्रसिद्ध एथेनियन दार्शनिक[6184] लियोन्टियस ऑफ एथेन्स की बेटी थी, जिन्होंने उसे खगोल विज्ञान, ज्यामिति और सभी प्रकार की हेलेनिक[6185] बुद्धिमत्ता सिखाई थी, और जिनकी बुद्धि कई ऋषियों से बढ़ी हुई थी। वह निम्नलिखित कारण से कॉन्स्टेंटिनोपल आई। मरणासन्न होने पर, उनके पिता ने अपनी सारी संपत्ति अपने दो बेटों, वैलेरियस और एटियस के बीच बाँट दी, और अपनी बेटी के लिए कुछ सोने के सिक्कों के अलावा कुछ नहीं छोड़ा; और जब रिश्तेदारों और पड़ोसियों ने उनसे पूछा कि वह अपनी बेटी के लिए क्या छोड़ रहे हैं, तो लियोन्टियस ने जवाब दिया: 'उसकी सुंदरता और बुद्धि उसके लिए काफी हैं।'

उनके पिता की मृत्यु के बाद, दोनों भाइयों ने अपने पिता की सारी संपत्ति आपस में बाँट ली और अपनी बहन को कुछ भी नहीं दिया: अपने भाइयों के खिलाफ शिकायत दर्ज कराने के लिए ही वह कॉन्स्टेंटिनोपल आई थी। उसे देखते ही, संत पलकेरिया ने उसकी सुंदरता, अच्छे चरित्र और बुद्धिमत्ता पर ध्यान दिया, और उसे अपने भाई से शादी कराने का निश्चय किया। लेकिन पहले उन्होंने उसे ईसाई धर्म ग्रहण कराया और उसे अपनी देखभाल में ले लिया, जैसे कि वह उनकी अपनी बेटी हो; केवल तभी, जब उन्होंने उसे सम्राट से विवाह के लिए योग्य समझा, तब उन्होंने उसका विवाह थियोडोसियस के साथ तय किया। उनके पवित्र बपतिस्मा के समय, उन्हें यूडोक्सिया नाम दिया गया था। थियोडोसियस से

[6181] यह उपाधि मूर्तिपूजक रोमन सम्राटों से ईसाई ग्रीक सम्राटों को मिली, जिन्हें उनके अपने नामों के अलावा, उस नाम वाले पहले रोमन सम्राट के सम्मान में 'ऑगस्टस' भी कहा जाता था; इसी से हमारा शब्द 'मोस्ट ऑगस्ट' बना है।

[6182] कॉन्स्टेंटिनोपल में एक जिला।

[6183] ग्रीस का एक शहर, जो अब राजधानी है।

[6184] दार्शनिक – एक बुद्धिमान व्यक्ति।

[6185] हेलेनिक – ग्रीक; कभी-कभी इस शब्द का अर्थ 'पैगन' होता है; मसीह के जन्म के समय तक, यूनानी प्राचीन काल के सबसे शिक्षित लोग थे।

उनके ववािह से, यूडोक्सिया नाम की एक बेटी का जन्म हुआ, जसिने बाद में रोमन सम्राट वैलेंटाइनयिन तृतीय से ववािह कयिा[6186] ।

सम्राट थयिोडोसयिस और वैलेंटाइनयिन[6187] के शासनकाल के दौरान, धन्य पुलकेरिया के प्रयासों से, वधिर्मी नेस्टोरयिस[6188] के खलिाफ एफ़सिुस में तीसरी सार्वभौमकि परषिद बुलाई गई थी। पुलकेरिया धर्मपरायणता के लिए गहरी लगन रखती थीं और अपनी प्रेरणाओं के द्वारा अपने भाई को वापस धर्म में लाईं—वह जो वधिर्म की ओर आकर्षति होने और सच्चे धर्मशास्त्र से भटकने लगा था—और उसे ऑर्थोडॉक्सी (सही आस्था) में मजबूत कयिा, जसिके लिए उन्हें पवत्रि पतिाओं से बहुत प्रशंसा मलिी। लेकनि कई साल बीत गए, और मानव जातकिा शत्रु, जो अब संत पल्केरिया द्वारा वधिर्म पर लगाए गए प्रहारों को सहन करने के लिए तैयार नहीं था, उसके खलिाफ उठ खड़ा हुआ और उसे शाही सहिासन और सत्ता से हटाने की साजशि रची, जसिमें वह कुछ समय के लिए सफल हो गया, क्योंकि ईश्वर कभी-कभी अपने पवत्रि सेवकों को परीक्षाओं के अधीन होने की अनुमतदिेते हैं। संत पुलखेरिया का परीक्षण इस प्रकार शुरू हुआ। सम्राट थयिोडोसयिस के पास क्रसिाफयिस नाम का एक ख़ास[6189] था, जो सम्राट का प्रयि और सलाहकार था, एक ऐसा व्यक्ति जो चालाक, दुर्भावनापूर्ण और लालची था। वह संत प्रोक्लस के उत्तराधकिारी, पैट्रआर्क फ्लैवयिन[6190] के प्रतशित्रुतापूर्ण था। फ्लैवयिन अपनी धार्मकिता और नर्दिोष जीवन के कारण पतित्व के पद के लिए पूरी तरह से योग्य थे, जबकि क्रसिाफयिस एक वधिर्मी[6191] था और इसलिए वह फ्लैवयिन की पतित्व के पद पर नयिुक्ति को स्वीकार नहीं करता था। फ्लावयिन पर कोई आरोप लगाने की इच्छा से, क्रसिाफयिस ने मांग की कि वह एक नए स्थापति बशिप के रूप में, सम्राट को 'उनके आशीर्वाद के लिए' एक उपहार प्रस्तुत करें। फ्लावयिन ने, शुद्ध आटे से कई रोटी बनाने का आदेश देकर, उन्हें महल भेज दयिा; लेकनि क्रसिाफयिस ने उन्हें स्वीकार करने से इनकार कर दयिा, यह कहते हुए कि 'आशीर्वाद के लिए' पैट्रआर्क को सोना भेजना चाहिए, न कि रोटी के लोटे। पैट्रआर्क ने अपने दूतों के माध्यम से जवाब दयिा: 'क्रसिाफयिस अच्छी तरह जानता है कि चर्च का सोना और चांदी ईश्वर की है, और इसे कसिी को भी नहीं दयिा जा सकता, सवािय शायद गरीबों के'।

इससे उसने क्रसिाफयिस को और अधकि नाराज़ कर दयिा, जो अब पादरी को नष्ट करने का कोई रास्ता खोजने लगा; लेकनि यह देखकर कि धन्य पुलकेरिया, अपनी धार्मकिता के कारण, पादरी का पुरज़ोर समर्थन कर रही थीं—जसिके कारण उन्हें कसिी भी तरह से नुकसान पहुँचाना मुश्कलि था—उसने उनके खलिाफ भी नई साजशिें रचनी शुरू कर दीं: उसने उसकी और सम्राज्ञी यूडोक्सिया के बीच कलह पैदा करना शुरू कर दयिा, और हर संभव तरीके से उनके पारस्परकि स्नेह को कमजोर करने की कोशशि करने लगा।

इस बीच, नम्निलखिति घटना घटी। सम्राट थयिोडोसयिस की आदत थी कि वे दस्तावेज़ों पर लखिी बातों को पढ़े बनिा ही उन पर हस्ताक्षर कर देते थे। पल्केरिया, उसके प्रतअिपनी नरिंतर चतिा के कारण, उसे इस कमी से भी सुधारना चाहती थी: उसने सम्राट के नाम एक पत्र तैयार कयिा, जसिमें लखिा था कि पल्केरिया के अनुरोध पर, सम्राट अपनी पत्नी को उसकी दासी के रूप में सौंप रहे थे और यह घोषणा कर रहे थे कि उस समय से उसकी यूडोक्सिया पर कोई अधकिार नहीं रहेगी, – उसने यह पत्र दस्तखत के लिए थयिोडोसयिस के सामने पेश कयिा। उन्होंने, अपनी आदत के अनुसार, पत्र को पढ़े बनिा और यह जाने बनिा कि उसमें क्या लखिा था, उस पर अपना दस्तखत कर दयिा। पुलकेरिया ने वह दस्तावेज़ लेकर सम्राज्ञी यूडोक्सिया को अपने महल में आमंत्रति कयिा और सुखद बातचीत तथा सम्मानपूर्वक व्यवहार से उन्हें वहाँ लंबे समय तक रोके रखा; और जब सम्राट ने अपनी पत्नी को बुलाया, तो उसने उन्हें जाने नहीं दयिा; भेजे गए दूसरे दूत को पुलकेरिया ने मुस्कुराकर जवाब दयिा:

'सम्राट को यह बता दो कि अब उनकी पत्नी पर उनका अधकिार नहीं रहा, क्योंकि उन्होंने उसे दासी के रूप में मुझे सौंप दयिा है और अपने शाही फरमान से इसकी पुष्टि कर दी है।'

[6186] 423 से 455 तक शासन कयिा।

[6187] यह, बेशक, वैलेंटाइनयिन तृतीय को संदर्भति करता है, जो थयिोडोसयिस द्वतिीय का समकालीन था।

[6188] थेओडोसयिस ने नेस्टोरयिस को कॉन्स्टेंटनिोपल का आर्चबशिप नयिुक्त कयिा था।

[6189] यूनानी शब्द से, यूनाउक का अर्थ है 'शय्यापाल'; यह खतिाब बाइजेंटाइयम में वशिेष दरबारी अधकिारयिों को दयिा जाता था जो सम्राट के शयनकक्ष के प्रभारी होते थे; साथ ही, वे आमतौर पर सम्राट के सबसे करीबी व्यक्ति होते थे।

[6190] संत फ्लावयिन ने 447 से 449 तक पैट्रआर्क के रूप में कार्य कयिा।

[6191] क्रसिाफयिस एक यूटकियिन था।

उसके बाद, वह स्वयं अपने भाई के पास गई और उससे कहा:

'देखो तुम कितने मूर्ख हो कि दस्तावेज़ों को पढ़े बिना उन पर हस्ताक्षर कर देते हो,' और उसने उसे वह फरमान दिखाया।

अपनी सूझबूझ से, उसने सम्राट को उस समय से अधिक सतर्क होने के लिए मजबूर कर दिया – उसे उन दस्तावेजों की जांच और पढ़ने के लिए जिन्हें उस पर हस्ताक्षर करने की आवश्यकता थी।

यह जानकर, चालाक क्रिसिफियस महारानी यूडोक्सिया के पास गया और उससे कहा:

'देखो पल्केरिया तुम्हारे साथ क्या कर रही है, वह तुम्हें कैसे अपमानित कर रही है: वह तुम्हें अपना दास बनाना चाहती है; तुम उससे यह सब कितनी देर तक बर्दाश्त करोगी? क्या तुम उसकी ही तरह रानी नहीं हो? क्या तुम सभी में सम्राट के सबसे करीब नहीं हो, उससे एक होकर?'

इन और इसी तरह के शब्दों से, उसने यूडोक्सिया के मन में पल्केरिया के प्रति क्रोध भर दिया, और उसने अपने पति को अपनी बहन से उसका अधिकार छीनने के लिए उकसाना शुरू कर दिया ताकि वह अकेले राज कर सके। हालाँकि राजा, अपनी पत्नी और क्रिसिफियस के प्रभाव में, उनकी इच्छानुसार करने के लिए तैयार था, लेकिन उसे अपनी बहन और शिक्षिका, जो उससे कई साल बड़ी थी, का अपमान करने में शर्म आती थी। इसलिए, यूडोक्सिया और क्रिसिफियस ने पैट्रिआर्क से विनती करना शुरू कर दिया कि वे पल्केरिया को, जब वह चर्च में आएँ, उनके शुद्ध और पवित्र जीवन को देखते हुए, डीकोनेस का पद स्वीकार करने के लिए मनाएँ। उस समय, यह प्रथा थी कि जिन युवतियों और विधवाओं को उनके पवित्र जीवन के लिए जाना जाता था, उन्हें उनकी इच्छा के विरुद्ध भी, डीकोनेस के रूप में सेवा करने के लिए मजबूर किया जाता था; सेंट पुलकेरिया के दुश्मनों को ठीक इसी माध्यम से उम्मीद थी कि वे उसे सत्ता से हटा देंगे[6192] । पैट्रिआर्क ने उन्हें उनकी साजिशों के बारे में गुप्त रूप से सूचित किया। लेकिन पल्केरिया ने अपने भाई के इरादों को भाँप लिया और यूडोक्सिया तथा क्रिसिफियस द्वारा अपनी ओर निर्देशित शत्रुता को देखकर, स्वेच्छा से अपना राजसी अधिकार त्याग दिया; वह अपनी सेवा करने वाली दासियों के साथ महल छोड़कर एक एकांत स्थान पर चली गई, जहाँ उसने मौन में एक धार्मिक जीवन व्यतीत किया।

इस बीच, विधर्मी क्रिसिफियस, जो अपनी दुर्भावनापूर्ण साजिशों को अंजाम देने के लिए समय का इंतजार कर रहा था, ने राजा को महाधर्माध्यक्ष के खिलाफ कर दिया। और इस प्रकार, परमेश्वर की कलीसिया के लिए उथल-पुथल का समय आ गया, क्योंकि पुल्केरिया, जो धर्म की रक्षक थी, की अनुपस्थिति में, मूर्तिभंजकों ने बिना किसी डर के काम करना शुरू कर दिया, जब तक कि ईश्वर ने राजा की आध्यात्मिक आँखें नहीं खोल दीं, जिससे वह अंततः अपनी गलती का एहसास करने लगा, संत पुलकेरिया के प्रति अपनी पत्नी के क्रोध के अन्याय से आश्वस्त हो गया, और क्रिसिफियस की दुर्भावना को समझ गया।

एक दिन, सम्राट थियोडोसियस के पास एक सेब लाया गया—जो असाधारण रूप से सुंदर और असामान्य रूप से बड़ा था। उसकी सुंदरता और आकार से चकित होकर, उन्होंने इसे अपनी पत्नी को भेज दिया; उन्होंने, हालांकि, इसे कुछ समय के लिए रखा लेकिन खुद नहीं खाया, बल्कि इसे राजा के प्रिय, सेनेटर पॉलिनस को भेज दिया, जो उस समय बीमार थे। पव्लिन, इस बारे में कुछ नहीं जानते हुए, ने सेब वापस सम्राट को भेज दिया। सेब प्राप्त करने पर, सम्राट ने उसे पहचान लिया, महारानी के पास गए और उनसे पूछा:

'वह सेब कहाँ है जो मैंने तुम्हें भेजा था?' वह यह न समझ सकी कि सेब फिर से उसके पति के हाथ लग गया था, और उसने उत्तर दिया:

मैंने इसे खा लिया।

फिर राजा ने सेब दिखाते हुए उससे पूछा:

[6192] एक डिकिनेस – ग्रीक शब्द से, जिसका अर्थ है 'स्त्री सेविका'। डिकिनेस की संस्था प्रेरितों के समय से चली आ रही है (देखें रोमियों 16:1)। वृद्ध (40 वर्ष से कम आयु की नहीं) कुंवारी या विधवाओं को डिकिनेस के पद के लिए चुना जाता था। उनके कर्तव्य थे: दिव्य सेवाओं के दौरान महिलाओं के बीच शिष्टाचार और व्यवस्था सुनिश्चित करना, ईसाई धर्म अपनाने वाली महिलाओं को बपतिस्मा के समय अपने आचरण के बारे में निर्देश देना, महिलाओं के बपतिस्मा के दौरान बिशप की सहायता करना, और उनकी ओर से, ललाट के अलावा शरीर के अन्य अंगों पर अभिषेक करना, आदि। डीकोनेस (स्त्रैण-सेविकाओं) के संबंध में कई कैननिक (चर्च-कानूनी) आदेश हैं, अर्थात्: चौथा सार्वभौमिक परिषद, कैनन 15; छठा सार्वभौमिक परिषद, कैनन 14; और वास की परिषद।महान 44. – एक ऐसी डिकिनेस जो शादी कर लेती, वह अपने पति के साथ शाप की पात्र होती; इस प्रकार, संत पलचेरिया के लिए, यदि वह डिकिनेस बन जातीं, तो शाही सिंहासन का मार्ग पूरी तरह से बंद हो जाता।

'और यह क्या है?'

वह अपनी पत्नी पर बहुत क्रोधित हो गया और उसे हर तरह से गालियाँ देने लगा, यह सोचकर कि वह पावलिन के साथ व्यभिचार कर रही थी। सम्राट ने पावलिन को कैपाडोसिया में निर्वासित कर दिया, और अपनी पत्नी को अपने सामने आने से मना कर दिया। लेकिन साथ ही, वह क्रिसाफियस पर भी बहुत क्रोधित हो गया, जब उसे पता चला कि वह कई बुराइयों का कारण था। सबसे पहले, सम्राट ने क्रिसाफियस की संपत्ति ज़ब्त कर ली, और फिर उसे निर्वासन की सज़ा सुनाई। ईश्वर ने स्वयं सेंट पल्केरिया का अपमान करने के लिए क्रिसाफियस को दंडित किया। निर्वासन स्थल जाते समय, क्रिसाफियस समुद्र में डूब गया, जबकि पावलिन, जो किसी भी गलत काम में निर्दोष था, को सम्राट के आदेश पर निर्वासन के दौरान तलवार से सिर कलम कर दिया गया। बाद में, यूडोक्सिया ने स्वयं, अपनी मृत्युशय्या पर, शपथ लेकर पॉलिनस और अपनी अपनी बेगुनाही की गवाही दी। हालाँकि, ईश्वर ने उन्हें ऐसी दुर्भाग्यपूर्ण घटनाओं से गुज़रने दिया था - पॉलिनस के लिए, उसकी आत्मा की मुक्ति के लिए, और महारानी के लिए, एक दंड के रूप में। पालिनस की मृत्यु की खबर सुनकर, सम्राज्ञी इस बात से बहुत दुखी हुई कि उसकी गलती से एक इतना समझदार और पवित्र व्यक्ति अन्यायपूर्ण ढंग से मारा गया था, और उसने अपने पति से पवित्र स्थलों की यात्रा करने की अनुमति मांगनी शुरू कर दी। अनुमति मिलने पर, वह यरूशलेम के लिए रवाना हुई, जहाँ उन्होंने उदार दान दिया, कई चर्च बनाए और मठों की स्थापना की। वह लंबे समय तक यरूशलेम में रहीं, जब तक कि अपनी लगातार विनतियों से उन्होंने अपने पति के क्रोध को शांत नहीं कर लिया और संत पलकेरिया के साथ सुलह नहीं हो गई। शांति और अटूट प्रेम के प्रतीक के रूप में उन्होंने संत पलकेरिया को परमेश्वर की परम पवित्र माता की एक प्रतिमा भेजी, जिसे परंपरा के अनुसार, संत ल्यूक सुसमाचार लेखक ने चित्रित किया था।

सम्राज्ञी यूडोक्सिया के यरूशलेम के लिए प्रस्थान करने के बाद, थियोडोसियस ने सेंट पुलकेरिया से शाही दरबार में लौटने का आग्रह किया; लेकिन उन्होंने मना कर दिया, और कई देशों पर शासन करने की बजाय एकमात्र ईश्वर की एकांत सेवा को प्राथमिकता दी। तब सम्राट ने दूसरी बार उससे विनती की कि वह महल लौट आए और उसके साथ साम्राज्य का शासन साझा करें, और वह अपनी मंशा पूरी होने तक अपनी विनती से नहीं रुके: संत पल्केरिया बड़े सम्मान के साथ अपने शाही महल लौट आईं। एक बार फिर, विधिर्म से उत्पन्न तूफ़ान शांत हो गया और उथल-पुथल समाप्त हो गई: चर्च में शांति लौट आई, और यूनानी साम्राज्य ने एक शांत काल का आनंद लिया। काफी लंबे समय के बाद, महारानी यूडोक्सिया भी यरूशलेम से लौट आईं, और अपने साथ संत स्टीफन प्रथम शहीद का हाथ लाईं। जब यूडोक्सिया इसे अपनी यात्रा के दौरान काल्सेडोन लाईं[6193] , तो उसी रात संत स्टीफन पुलकेरिया को दिखाई दिए और कहा:

'देखो, तुम्हें वह मिल गया है जिसकी तुमने इच्छा की थी, क्योंकि मैं पहले ही कालसेडोन आ चुका हूँ।'

अगली सुबह उठकर, पुलकेरिया, थियोडोसियस के साथ, पवित्र प्रथम शहीद के हाथ से मिलने के लिए रवाना हुईं; वहाँ उन्होंने सम्राज्ञी यूडोक्सिया का भी गर्मजोशी से स्वागत किया।

अपने शासन के 42वें वर्ष में, सम्राट थियोडोसियस बीमार पड़ गए और, यह महसूस करते हुए कि मृत्यु निकट आ रही है, उन्होंने संत पल्केरिया को एफिसुस में, संत जॉन द थियोलोजियन के चर्च में प्राप्त एक प्रकटवाणी के बारे में बताया। जब वह वहाँ प्रार्थना में खड़े थे, तो उन्हें यह प्रकट हुआ कि उनकी मृत्यु के बाद, सैनिक मार्शियन उनका उत्तराधिकारी बनेगा। इसलिए, थियोडोसियस ने पुलकेरिया से मार्शियन को सिंहासन पर चढ़ने में सहायता करने के लिए कहा।

मार्सियन थ्रेस[6194] का मूल निवासी था, जो एक सैनिक का पुत्र और स्वयं एक बहादुर योद्धा था; एक परिपक्व आयु का, बुद्धिमान और अच्छे चरित्र वाला व्यक्ति। अपने युवा काल से ही शासन करने के लिए पूर्वनिर्धारित, वह चमत्कारिक रूप से मृत्यु से बचाया गया था। एक बार, फिलिपोपोलिस[6195] की यात्रा करते समय, वह हाल ही में मारे गए एक व्यक्ति के शव पर आया, और मारे गए व्यक्ति के प्रति दया से प्रेरित होकर, वह उसे देखने के लिए रुक गया। दया का कार्य करने – मृतक को उचित दफन देने – की इच्छा से, उसने इस उद्देश्य के लिए एक कब्र खोदना शुरू कर दिया; और अचम्भित करने वाली बात यह है कि, कुछ राहगीरों ने मार्शियन को मृतक को दफनाते हुए देखा; यह सोचकर कि उसने हत्या की है, उन्होंने उसे पकड़ लिया और, उसे शहर में लाकर, उस पर मुकदमा चलाया। चूँकि उसकी बेगुनाही की गवाही

[6193] एशिया माइनर में एक शहर, बोस्फोरस के तट पर (इसके विपरीत कॉन्स्टेंटिनोपल स्थित है)।

[6194] बाल्कन प्रायद्वीप के उत्तर-पूर्वी भाग में स्थित बीजान्टिन साम्राज्य का एक प्रांत।

[6195] थ्रेस के पश्चिमी भाग में एक शहर।

देने वाला कोई नहीं था, और उसकी अपनी दलीलों पर वशि्वास नहीं कयिा गया , इसलएि उसे एक हत्यारे के रूप में मौत की सजा सुनाई गई। जैसे ही वे उसकी फांसी देने वाले थे, उसी क्षण दव्यि प्रकटोक्ति के माध्यम से असली हत्यारे का खुलासा हो गया। बाद वाले को उसके अपराधों के लएि हरिासत में ले लयिा गया, जबकि मार्शयिन को सम्मानपूर्वक रहिा कर दयिा गया। बाद में उन्होंने अस्पार के अधीन ग्रीक सेना में सेवा की। वंडल्स के साथ युद्ध के दौरान[6196] , जब बाद वालों ने ग्रीकों को हराया और कई कैदी बना लएि, तो मार्शयिन को भी अन्य लोगों के साथ पकड़ लयिा गया और वंडल नेता, गसिरचि के सामने पेश कयिा गया। एक दनि, गसिरकि, बंदयिों का नरीक्षण करने की इच्छा से, दोपहर के समय तीव्र गर्मी में एक ऊँचे स्थान पर चढ़ा और दूर से उसने मार्शयिन को जमीन पर सोते हुए देखा, जबकि एक गरुड़ उसके ऊपर आकर बैठ गया था और अपने पंख फैलाकर एक तरह की छतरी बना ली थी, जो उसे सूरज की करिणों से बचा रही थी। यह देखकर, गसिरखि को अपने बंदी के भवषि्य का एहसास हुआ और, उसे अपने पास बुलाकर और उसका नाम व उत्पत्ति पूछकर, कहा:

'यदि तुम जीवति, सुरक्षति और स्वतंत्र रहना चाहते हो, तो मुझसे यह वचन दो कि जब तुम शाही सहिासन पर बैठोगे, तो तुम कभी भी वान्डल्स के खलिाफ युद्ध नहीं छेड़ोगे, बल्कि हमारे साथ शांति से रहोगे।'

मार्शयिन ने गसिरखि की इच्छानुसार करने की कसम खाई और उसे सम्मानपूर्वक अपने देश लौटने के लएि रहिा कर दयिा गया।

बंदीत्व से लौटने पर, मार्शयिन ने एक बार फरि से ग्रीक सेना में एक प्रमुख स्थान ग्रहण कयिा। एक दनि, फारसियिों के खलिाफ एक ग्रीक अभयिान के दौरान, मार्शयिन मार्च के दौरान बीमार पड़ गया और लाइकयिा के एक नश्चिति शहर - सडिीन में ठहर गया; वहाँ उसे कुछ दयालु लोगों—दो भाइयों, टाटयिन और जूलयिन—के घर ले जाया गया, जो उससे बहुत स्नेह करने लगे और उन्होंने उसके स्वास्थ्य का पूरा ध्यान रखा। ठीक होने के कुछ ही समय बाद, दोनों भाई उसके साथ पक्षी-शकिार के लएि नकिले। जब दोपहर हुई और सूरज की गर्मी तेज हो गई, तो वे आराम करने के लएि लेट गए और सो गए। सबसे पहले तातयिन जागा और, ठीक वैसे ही जैसे कभी गसिरचि ने कयिा था, उसने सोए हुए मार्शयिन के ऊपर एक बड़ी चील को उड़ते हुए देखा, जो अपने पसारे हुए पंखों से उसका आश्रय दे रही थी और उसे सूरज की गर्मी से बचा रही थी। यह देखकर, तातयिन ने अपने छोटे भाई जूलयिन को जगाया, और दोनों इस चमत्कारकि दृश्य को देखकर हैरान रह गए। जब मार्शयिन उठे, तो गरुड़ उड़ गया, और भाइयों ने मार्शयिन से भवषि्यवाणी की कि वह राजा बनेगा, और पूछा कि सहिासन पर बैठने पर वह उनका क्या उपकार चुकाएगा। उसने उनसे कहा:

'यदि आपकी भवषि्यवाणी सच हुई, तो आप मेरे लएि एक पति के समान होंगे।'

इसके बाद, मार्सयिन की ख्याति और भी बढ़ने लगी, क्योंकि स्वयं ईश्वर ने उस व्यक्ति को महमिामय बनाया जसिे उन्होंने अपने हृदय के अनुसार चुना था। इस बीच, धर्मपरायण सम्राट थयिोडोसयिस युवा का नधिन हो गया, और उनकी पत्नी यूडोक्सयिा एक बार फरि यरूशलेम चली गईं; वहाँ, कई वर्षों तक एक धर्मपरायण जीवन जीने के बाद, उनका भी नधिन हो गया और उन्हें सेंट स्टीफन द फर्स्ट मार्टायर के चर्च में दफनाया गया, जसिकी उन्होंने स्थापना की थी। थेओडोसयिस की मृत्यु के बाद, सेंट पुलकेरयिा ने दरबारयिों और सैन्य कमांडरों के साथ सहमति से, मार्सयिन को शासन करने के लएि चुना, क्योंकि वह ईश्वर के योग्य और प्रयि पुरुष थे। सहिासन पर बैठने पर, मार्सयिन ने उपर्युक्त दोनों भाइयों, टेटयिन और जूलयिन को दरबार में बुलाया और उन्हें उच्च पदों से सम्मानति करने के बाद, उन्हें क्रमशः थ्रेस और लसियिा का राज्यपाल नयिुक्त कयिा[6197] । उन्होंने गेसरचि के प्रति अपनी कसम भी पूरी की, और अपने शासन के अंत तक उसके साथ अटूट शांति बनाए रखी। मार्शयिन के सहिासनारोहण पर, संत पुलकेरयिा अपने एकांत में लौटना चाहती थीं, लेकनि नव-नर्विाचति सम्राट और संपूर्ण सकि्लाइट ने उनसे अनुरोध कयिा कि वे उन्हें न छोड़ें, बल्कि साम्राज्य के शासन में सहायता करें, क्योंकि वे राजकीय मामलों में अत्यंत बुद्धमिान और अनुभवी थीं; फरि भी, यह उनके लएि केवल सम्राट की सहधर्मणिी बनने पर ही संभव था। उन्होंने उन्हें उस ब्रह्मचर्य के व्रत की याद दलिाई जो उन्होंने ईश्वर से लयिा था, और जसिे वह अपनी मृत्यु तक नभिाने के लएि बाध्य थी। लेकनि मार्सयिन ने भी घोषणा की कि उसने भी अपनी पवत्रिता बनाए रखने का व्रत ईश्वर से लयिा था। फरि, पवत्रि चर्च की आवश्यकताओं के लएि, जसिे वधिर्मी लोगों के प्रसार से परेशानी हो रही थी, संत पल्केरयिा ने मार्सयिन से ववािह करने के लएि इस शर्त पर सहमति दे दी, कि वह,

---

[6196] वैंडल्स – एक लोग जो पहले दक्षणिी स्पेन और बाद में उत्तरी अफ्रीका में रहते थे; वे एक जर्मनकि जनजाति से थे और, सेंट पलकेरयिा के समय में, एरयिनवाद का अनुसरण करते थे।

[6197] दक्षणि-पश्चमिी एशयिा माइनर में बाइज़ेंटाइन साम्राज्य का एक प्रांत।

तथापि, अपने शेष जीवन के लिए कुंवारी रहे, क्योंकि यह ईश्वर से किए गए उसके वचन, दोनों जीवनसाथियों की स्वाभाविक पवित्रता, और साथ ही उनकी अधिक आयु के कारण भी आवश्यक था: उस समय उसकी उम्र 51 वर्ष थी, और सम्राट भी अब युवा नहीं रहे थे। इस प्रकार पुलकेरिया को उसकी पत्नी कहा जाता था, लेकिन वास्तव में वह उसकी पत्नी नहीं, बल्कि उसकी बहन थी, जो उसके साथ शासन कर रही थी और ईश्वर की संपूर्ण कलीसिया तथा पूरे साम्राज्य के महान लाभ के लिए शासन कर रही थी; इसी तरह, मार्शियन को उसका पति कहा जाता था, लेकिन वास्तव में वह उसका पति नहीं, बल्कि उसका भाई था, जो साम्राज्य की राजकुमारी के रूप में उसके साथ शासन कर रहा था, जिसने अपने पिता का सिंहासन विरासत में लिया था। इस प्रकार, उस समय, ऐसा देखा जा सकता था, मानो यूनानी सिंहासन पर कुँवारी पवित्रता का राज हो, क्योंकि वहाँ एक राजा, जो आत्मा और शरीर से शुद्ध था, और एक रानी—एक कुँवारी जो स्वयं को निर्दोष रखती थी—दोनों का राज था।

अहो, एक कुंवारी का विवाह, जो विरल ही देखा या सुना गया है! अशुद्ध कामनाओं से भरी दुनिया इस पर आश्चर्य करे! जो लोग सांसारिक वासनाओं और सुखों की सेवा करते हैं, उन्हें इस धर्मपरायण शाही जोड़े के ऐसे विवाह के बारे में सुनकर लज्जित होना चाहिए, जिसकी तुलना दैवीय पवित्रता से की गई थी!

पवित्र रानी के प्रयासों से, एफ़िसुस की उपरोक्त परिषद के अलावा, धर्मविरुद्ध डियोस्कोरस और आर्चिमांड्राइट यूटिकिस के खिलाफ कालसेडॉन में पवित्र पिताओं की एक परिषद भी बुलाई गई थी[6198] । उन्होंने अपनी पूरी ताकत से ऑर्थोडॉक्सी (सही आस्था) की रक्षा की, इतना कि कुछ लेखक इन दोनों परिषदों में आस्था की रक्षा का श्रेय उन्हें देते हैं।

पुलकेरिया का धार्मिक उत्साह और उनकी महान बुद्धिमत्ता इस तथ्य से उपजी थी कि पवित्र आत्मा उनके आत्मा और पवित्र हृदय में, अपने पवित्र मंदिर के रूप में, वास करता था, और उन्हें अपने महान उपहारों से भर देता था।

54 वर्ष की आयु जीतने और अपनी सारी संपत्ति चर्चों, मठों और गरीबों में बाँटने के बाद, संत पुलकेरिया प्रभु के पास चली गईं, जिनकी उन्होंने पूरे दिल से सेवा की थी[6199] ।

उनकी प्रार्थनाओं से, हे प्रभु, हमें न तो अपने स्वर्गीय राज्य से वंचित करें। आमीन।

एक मरुस्थलीय पहाड़ पर पाई गई तीन पवित्र महिलाओं का स्मरणोत्सव[6200]

10 सितंबर को स्मरणोत्सव

मोनेमवसिया के बिशप पॉल[6201] ने निम्नलिखित कथा सुनाई।

जब मैं एक सामान्य व्यक्ति था, मुझे राजसी कर वसूलने के लिए पूर्व भेजा गया था। रास्ते में, मैंने एक सुनसान मठ देखा और उसमें प्रवेश करने की इच्छा हुई। मठाध्यक्ष और भ्रातागण मेरा स्वागत करने के लिए मठ से बाहर आए, और अभिवादन के आदान-प्रदान के बाद, हम मठ के आंगन में बैठ गए, जहाँ एक बगीचा था। और देखो, हमने पक्षियों को पेड़ों की ओर उड़ते, फल से लदी टहनियाँ तोड़ते और तेजी से उड़ जाते देखा।

मैंने मठाधीश से पूछा:

'पक्षी फल को यहीं, उसी जगह क्यों नहीं खाते, बल्कि टहनियों के साथ ही ले जाते हैं?'

मठाधीश ने उत्तर दिया:

'अब ग्यारह साल हो गए हैं जब से ये पक्षी ऐसा कर रहे हैं।'

[6198] अलेक्जेंड्रिया के पैट्रिआर्क डायोस्कोरस और यूटिचिस ने यह सिखाया कि यीशु मसीह में एक ही दिव्य स्वभाव है, क्योंकि उनकी मानवता उनकी दिव्यता में समाहित हो गई थी। उनके अनुयायियों को यूटिचियन या मोनोफिसाइट कहा जाता था (ग्रीक शब्दों से जिनका अर्थ है 'एक' और 'स्वभाव')। चतुर्थ कैलसीय सार्वत्रिक परिषद 451 में हुई थी।

[6199] कॉन्स्टेंटिनोपल की रानी, संत पुलकेरिया की मृत्यु 453 में हुई – सम्राट लियो (457–474) ने उनकी मृत्यु के तुरंत बाद उनकी स्मृति में अनुष्ठान करना शुरू कर दिया।

[6200] वे 10वीं शताब्दी में सक्रिय थे।

[6201] मोनेम्वासिया – आर्गोस की खाड़ी में, मिनोआ द्वीप पर एक शहर, जो कभी एक मजबूत किला और पूर्व के साथ बाइजेंटाइम के व्यापार का मुख्य केंद्र था। आजकल, यह अपनी किलेबंदी के खंडहरों वाला एक तुच्छ सा छोटा शहर है।

तब, मानो दिव्य प्रकटिकरण से, मैंने कहा कि पास के पहाड़ों में कहीं ईश्वर के तपस्वी—पुरुष हों या महिलाएँ—रहते हैं, और प्रभु की आज्ञा से पक्षी इन्हीं लोगों के लिए ये फल ला रहे थे। जैसे ही मैं यह कह रहा था, एक कौआ उड़कर आया और फल लिए हुए एक टहनी को चोंच से काट लिया। तब मैंने मठाधीश से सुझाव दिया कि हम उस पक्षी का पीछा करें, और हम कौए के पीछे चल पड़े, जो फल लेकर हमारे आगे उड़ रहा था; लेकिन फिर कौआ एक पहाड़ी पर उड़कर उतर गया और टहनी को जमीन पर रख दिया। जैसे ही हम पहाड़ी पर चढ़ने लगे, काग ने फिर से टहनी उठाई और एक ऐसे गहरे दर्रे में उड़ गया, जो एक खाई जैसा था, और बाद में वह टहनी के बिना ही उससे बाहर आ गया। तब हम उस दर्रे के पास गए और उसमें एक पत्थर फेंका। अचानक, भीतर से एक आवाज़ हमें सुनाई दी:

'अगर तुम ईसाई हो, तो हमें मत मारो।'

हमने पूछा:

'तुम कौन हो?'

उन्होंने उत्तर दिया:

'यदि आप हमें देखना चाहते हैं, तो हमारे लिए तीन कपड़े नीचे फेंकें, क्योंकि हम महिलाएं हैं और नग्न हैं; फिर पहाड़ के चारों ओर घूमें और आपको वहां एक संकरी राह मिलेगी जो हमें तक जाएगी।'

तब हमारे साथ आए समुदाय के तीन भिक्षुओं ने अपने वस्त्र उतारकर उनमें पत्थर लपेटे और वे वस्त्र उनके पास फेंक दिए; जहाँ तक हमारी बात है, पहाड़ी से उतरने पर हमें, जैसा कि हमें बताया गया था, एक संकरी गुज़रगाह मिली, जिससे मुश्किल से ही कोई गुज़र सकता था, और इसी मार्ग से हम उस घाटी में पहुँचे जहाँ तीन पवित्र महिलाएँ थीं। हमसे मिलते ही, उन महिलाओं ने जमीन पर सिर झुकाया; हमने प्रार्थना की और बैठ गए; उन महिलाओं में से एक भी बैठ गई, जबकि बाकी दो खड़ी रहीं। फिर मठाधीश ने बैठी हुई महिला से प्रश्न किया:

'आप कहाँ से हैं, और आप इतनी दूर कैसे आ पहुँचीं?'

उस महिला ने उत्तर दिया:

'मैं कॉन्स्टेंटिनोपल से हूँ, जहाँ मेरा विवाह एक दरबारी से हुआ था; लेकिन मेरे पति की युवावस्था में ही मृत्यु हो गई, और मैं बीस वर्ष की आयु से कुछ अधिक में ही विधवा रह गई, और अपनी विधवा होने तथा संतानहीनता दोनों पर शोक मना रही थी।' कुछ दिनों बाद, एक कुलीन व्यक्ति ने मेरे बारे में सुनकर अपने नौकरों को भेजा, जो मुझे जबरदस्ती अपने घर ले जाना चाहते थे, और दूतों ने मांग की कि मैं तुरंत उनके मालिक के पास चली जाऊँ। तब, अपने प्रभु यीशु मसीह से प्रार्थना करने के बाद कि वे मुझे उस आदमी से बचाएँ जो जबरदस्ती मेरे आत्मा और शरीर को अपवित्र करना चाहता था, मैंने नौकरों से कहा: 'क्या तुम्हें सच में संदेह है कि मैं खुशी-खुशी तुम्हारे सबसे महत्वपूर्ण स्वामी के पास जाऊँगी? लेकिन इस समय मैं स्त्रियों के रोग से पीड़ित हूँ और लगातार रक्तस्राव के कारण अशुद्ध हूँ। जब तक मैं अपनी बीमारी से ठीक नहीं हो जाती और शुद्ध नहीं हो जाती, तब तक थोड़ी देर प्रतीक्षा करो, और फिर मैं खुशी-खुशी आपके स्वामी के पास जाऊँगी।' मेरी बात सुनकर, दूत चले गए और कहने लगे, 'ठीक है, हमारे स्वामी चालीस दिनों तक आपका इंतजार करेंगे।' उनके जाने के बाद, मैंने अपने पुरुष और महिला दासों को आजाद कर दिया, उन्हें सोना दिया, और केवल उन दो को रखा जिन्हें आप यहाँ देख रहे हैं, क्योंकि मैंने अपनी सारी संपत्ति गरीबों में बाँट दी थी। फिर मैंने अपने एक रिश्तेदार, जो ईश्वर-भयभीत व्यक्ति था, को अपने घर आमंत्रित किया, और एक गंभीर शपथ दिलाकर उससे मेरी जागीरों और घरों को बेचने और उसकी आय गरीबों में बाँटने का वादा कराया। थोड़ी ही देर बाद, रात में, मैं इन दो दासियों को—जो अब मेरी बहनें हैं—अपने साथ लेकर एक जहाज पर चढ़ गया, जिस पर, ईश्वर की कृपा से, मैं इस स्थान पर पहुँचा; और अब आज आप के अलावा, हमें किसी इंसान का चेहरा देखे ग्यारह साल हो गए हैं। जहाँ तक हमारे कपड़ों की बात है, एक साल के पहनने से वे घिस-घिस कर हमारे शरीर से अलग हो गए हैं।

मठाधीश ने उससे पूछा:

'तुम्हारा भोजन कहाँ से मिलता है?'

पवित्र महिला ने उत्तर दिया:

'हमारे दयालु और कृपालु ईश्वर, जिन्होंने चालीस वर्षों तक निर्जन स्थान में अपने लोगों का पालन-पोषण किया, वे हमें, अपनी इन अयोग्य दासियों को भी, भोजन भेजते हैं। हर दिन, उनकी दैवीय व्यवस्था से, पक्षी हमारे लिए हमारी आवश्यकता से कहीं अधिक मात्रा में भोजन लाते हैं। वही परम कृपालु प्रभु हमें नग्न होने पर वस्त्र प्रदान करते हैं और

अपनी कृपा से हमें गर्मी देते हैं, क्योंकि हिम न तो सर्दियों में ठंड से और न ही गर्मियों में गर्मी से डरते हैं, बल्कि स्वर्ग के समान जीवन जीते हैं, और निरंतर पवित्र त्रिमूर्ति की महिमा करते हैं।

जो कुछ उसने सुना था, उस पर आश्चर्य करते हुए, मठाध्यक्ष ने कहा:

'यदि आप अनुमति दें, तो मैं मठ में भोजन के लिए भाइयों में से एक को भेजूँगा – और हम साथ में भोजन करेंगे।'

लेकिन पवित्र महिला ने उत्तर दिया:

'यह बेहतर होगा यदि आप एक पादरी को बुला भेजें ताकि, यहाँ पवित्र लिटिर्जी का अनुष्ठान करने के बाद, वह हमें मसीह के परम पवित्र रहस्यों की पवित्र सहभागिता प्रदान कर सकें; क्योंकि जब से हम शहर से निकले हैं, हम पवित्र सहभागिता से वंचित हैं।'

मठाधीश ने बिना देरी किए एक भिक्षु को मठ में एक पादरी और कुछ भोजन के लिए भेजा। आए हुए पादरी ने धर्मोपदेश किया, और फिर उस महिला ने स्वयं सबसे पहले परम पवित्र रहस्यों को ग्रहण किया, जिसके बाद उसकी दासियों ने ग्रहण किया। उसके बाद, हमारे साथ भोजन करने के बाद—जैसा कि बिशप पॉल अपने वृत्तांत का समापन करते हैं—उस पवित्र महिला ने मठाधीश से तीन दिन तक उनके साथ रहने का अनुरोध किया, जिसे मठाधीश ने स्वीकार कर लिया। फिर उस धन्य महिला ने उठकर एक प्रार्थना की और अपना प्राण ईश्वर को सौंप दिया। हमने, अपनी ओर से, आँसुओं के साथ अंतिम संस्कार के भजन गाए और फिर उसे दफना दिया। अगले दिन, दूसरी महिला ने प्रार्थना करने के बाद, वह भी शांतिपूर्वक निधन कर गई, और तीसरे दिन, तीसरी महिला ने भी ऐसा ही किया। उन्हें दफनाने के बाद, हम मठ लौट आए, अपने ईश्वर मसीह की महिमा करते हुए, जो अपने संतों के माध्यम से महिमामय चिह्न और चमत्कार करते हैं। उसकी महिमा और आराधना युगों-युगों तक हो। आमीन।

पवित्र शहीद वारीप्सव की स्मृति

10 सितंबर को स्मरणोत्सव

इस संत को किसी तपस्वी से हमारे प्रभु यीशु मसीह के परम पवित्र पार्श्व से बहने वाला रक्त प्राप्त हुआ, और उन्होंने उससे कई चंगाइयाँ कीं। विधर्मीयों ने रात के समय संत वरीप्साव[6202] को मार डाला, लेकिन महान खजाना, मसीह का रक्त, उनके शिष्यों द्वारा संरक्षित किया गया।

पवित्र प्रेरितों एपेलियस, लूका और क्लेमेंट की स्मृति

10 सितंबर को स्मरण किया जाता है

पवित्र प्रेरित एपेलस स्मyrna[6203] में एक बिशप थे; उनका उल्लेख प्रेरित पौलुस ने अपनी रोमियों की पत्रिका (रोमियों 16:10) में किया है। संत लूका (लुकियस) – जिनके बारे में प्रेरित पौलुस ने रोमियों को लिखी अपनी पत्री (15:21) में भी इसकी गवाही दी है, वह सीरिया के लाओदिकिया का बिशप था[6204] । संत क्लेमेंट, जिनका उल्लेख प्रेरित पौलुस ने फिलिप्पियों को लिखी अपनी पत्री (Phil. 4:3) में किया है, सार्डिस के बिशप थे[6205] ।

[6202] संत वरीप्सावस की शहादत और उनके कार्य दूसरी शताब्दी के हैं।

[6203] स्मyrna – आयोनिया का एक प्रसिद्ध व्यापारिक शहर, जो एजियन सागर (या द्वीपसमूह) के पूर्वी तट पर, एफ़िसुस से लगभग 56 वर्स्ट की दूरी पर, मेलेस नदी के मुहाने पर स्थित है, एशिया माइनर के सबसे पुराने शहरों में से एक है; चर्च की स्थापना स्मyrna में संत जॉन द थियोलोजियन, प्रेरित द्वारा की गई थी। स्मyrna वर्तमान में तुर्की के शासन में है, लेकिन ऑर्थोडॉक्स ईसाई धर्म आज भी वहाँ संरक्षित और फल-फूल रहा है। यह शहर साम्राज्य के सबसे समृद्ध और घनी आबादी वाले शहरों में से एक बना हुआ है।

[6204] सीरिया में लाओदिकिया – एक समय में फ्राइजिया का प्रमुख शहर, जो एशिया माइनर के दक्षिण-पश्चिमी भाग में, लिकिस नदी पर स्थित था; यह अपने व्यापक व्यापार के लिए प्रसिद्ध था। आज, केवल एस्की-गस्सारा नामक सुनसान गाँव के पास एक छोटी सी पहाड़ी पर खंडहर ही इस प्राचीन शहर की स्मृति में खड़े हैं।

[6205] सार्डिका – प्राचीन सार्डिस, या सार्डी, एशिया माइनर के उत्तर-पश्चिमी भाग में लिडिया का एक समृद्ध शहर, जो कभी अपने धन के लिए प्रसिद्ध राजा क्रोइसस की राजधानी और निवास स्थान था; प्रेरितों के समय में यह अभी भी एक महत्वपूर्ण शहर था; वहाँ प्रारंभिक चरण में ही

24 सतिंबर

11 सतिंबर (पुराने कैलेंडर के अनुसार)

हमारी पूज्य माता थयिोडोरा का जीवन और कर्म, जनि्होंने पुरुष के रूप में जीवन यापन कयिा

11 सतिंबर को स्मरणोत्सव

'प्रभु की आँखें सूर्य से दस हजार गुना अधकि तेज हैं; वे मनुष्यों के सभी मार्गों पर दृष्टि डालती हैं और छपिी हुई जगहों में प्रवेश करती हैं। वे सभी वस्तुओं को उनके बनाए जाने से पहले ही जानते थे' (सीराख 23:27–29)।

थेओडोरा, अलेक्जेंड्रयिा में रहने वाली एक कुलीन कुल की महलि[6206] , इस सत्य से अनभज्ञि थी। वह शत्रु—शैतान—पर वशि्वास कर बैठी, जसिने गुप्त रूप से उसके मन में यह वचिार डाला कि अँधेरे में कयिा गया पाप—सूर्य द्वारा न देखा गया पाप—भगवान को ज्ञात नहीं होगा। लेकनि जब उसे अपने ही अनुभव से यह एहसास हुआ कि ईश्वर से कुछ भी छपिाया नहीं जा सकता, तो अहो, उसने कतिनी महान पश्चाताप की प्रकट की!

अपने पति के साथ ववािह में वफादारी से रहते हुए, थयिोडोरा एक ऐसे प्रलोभन में पड़ गई। एक अमीर, जवान और लापरवाह आदमी, जो शैतान के उकसावे में था, उसे पाने की लालसा करने लगा और हर तरह से उसे व्यभचिार के लिए लुभाने की कोशशि करने लगा: उसने उसे कीमती उपहार भेजे, उससे और भी महंगे उपहारों का वादा कयिा, और अपने शब्दों से उसे बहकाया। लेकनि जब वह स्वयं कुछ नहीं कर सका, तो उसने एक बहकाने वाली—एक जादूगरनी—को काम पर रखा ताकि वह पवत्रि थयिोडोरा को बहका सके और उसे उस दुष्ट योजना में शामलि होने के लिए मना सके जो उसने रची थी। और इस प्रकार इस बहकाने वाली ने, शैतान को अपना साथी बनाकर, एक अनुकूल क्षण का लाभ उठाया और थयिोडोरा से उस युवक के बारे में बात करना शुरू कर दयिा।

हालाँकि थयिोडोरा ने कहा:

'ओह, काश मैं इस आदमी से छुटकारा पा सकती, जो इतने लंबे समय से मुझे परेशान कर रहा है! अगर मैं उसकी आज्ञा मानूँ, तो हम पर चमकता सूरज भी ईश्वर के सामने मेरे पाप का गवाह होगा!'

तब प्रलोभी ने सलाह दी, 'ऐसे में, जब सूरज डूब जाए और घनी रात छा जाए, तो उस युवक की इच्छा कसिी सुनसान जगह पर पूरी कर दो, और तुम्हारे इस काम के बारे में कोई नहीं जान पाएगा, और न ही ईश्वर के सामने कोई गवाह होगा, क्योंकि रात बहुत गहरी है और अंधेरा सब कुछ ढक लेगा।'

थयिोडोरा ने कहा:

'ओह, कतिना अच्छा होता अगर ईश्वर को रात में कए गए पाप का पता न चलता!'

'ऐसा ही होगा,' प्रलोभी ने उत्तर दयिा, 'क्योंकि ईश्वर केवल उन्हीं पापों को देखता है जनि्हें सूर्य प्रकाशति करता है; लेकनि वह अंधकार में कए गए कर्मों को कैसे देख सकता है?'

थयिोडोरा, एक युवा, भोली-भाली और अनुभवहीन महलि होने के कारण, प्रलोभनकर्ता के प्रलोभनों के आगे झुक गई; शैतान के प्रलोभन ने एक बड़ी भूमकि नभिाई, क्योंकि उसकी शक्ति महान है, जबकि हमारी प्रकृति वासनाओं की ओर झुकी हुई है और हमारी शक्ति कमजोर है। और इस प्रकार, थयिोडोरा ने उस दुष्ट सलाह पर ध्यान दयिा और रात के अंधेरे में एक पाप कयिा। लेकनि भोर होते ही, ईश्वर की दया की रोशनी तुरंत उसके हृदय में चमक उठी: क्योंकि, अपने पाप को समझते हुए, वह पश्चाताप करने लगी, अपने चेहरे पर मुक्का मारने लगी, अपने बाल नोचने लगी, खुद से शर्मदिा

ईसाई चर्च की स्थापना हो गई थी। 10वीं शताब्दी में, एशयिाई वजिेता तैमूर ने सार्डकिा को धूल चटा दी। अब यहाँ एक छोटे से गाँव के अलावा कुछ नहीं है, और केवल खंडहर ही शहर की पूर्व भव्यता की गवाही देते हैं।

[6206] अलेक्जेंड्रयिा – एक प्रसद्धि शहर जसिकी स्थापना लगभग 333 ईसा पूर्व में महान अलेक्जेंडर ने भूमध्य सागर के दक्षणिी तट पर एक उभरी हुई भूमि पर की थी (वर्तमान उसी नाम के शहर से कुछ दक्षणि में); यह कभी शक्षिा का केंद्र और पृथ्वी पर सबसे प्रमुख व्यापारकि शहर था; चौथी शताब्दी की शुरुआत में, यह ईसाई धर्म का केंद्र और पादरी-प्रमुख का आसन बन गया।

होने लगी, और खुद को घृणति समझने लगी। इस प्रकार ईश्वर की दया, जो पापी की मृत्यु नहीं चाहती, और उसकी पूर्व पवत्रिता के कारण, उसे शीघ्र पश्चाताप और सुधार के लिए प्रेरति किया; क्योंकि ईश्वर कभी-कभी किसी व्यक्ति को एक निश्चति हद तक गरिने देता है, ताकि, फरि से उठने पर, वे सदाचार और सुधार का एक और भी बड़ा कार्य प्रदर्शति कर सकें, और पापों को क्षमा करने वाले ईश्वर के प्रति और भी अधकि उत्साह दखिा सकें।

अपनी की गई पाप पर पछतावा करते और रोते हुए, थयिोडोरा ने यह सोचकर खुद को थोड़ी सी सांत्वना देने की कोशशि की:

'ईश्वर को मेरे पाप का पता नहीं है; फरि भी, भले ही उसे पता न हो, मुझे फरि भी शर्म और दुख महसूस होता है।'

अपने दुख को शांत करने के लिए, थयिोडोरा एक मठ में अपनी परचिति मठाधीश से मलिने गई। उसका उदास चेहरा देखकर, मठाधीश ने पूछा:

'मेरी बेटी, तुम्हारे दुख का कारण क्या है? क्या तुम्हारे पति ने तुम्हारा अहति किया है?'

थयिोडोरा ने उत्तर दिया:

'नहीं, माता; पर मुझे खुद नहीं पता कि मेरा दलि क्यों उदास है।'

अबेस, उसे सांत्वना देना चाहती हुईं, और परमेश्वर की आत्मा से प्रेरति होकर, ने उसके साथ आत्मा को पोषण देने वाली बातचीत शुरू की और पवत्रि शास्त्र पढ़ने लगीं। जब वह एक अंश (एक शकि्षा) पढ़ रही थीं, तो वह सुसमाचार के इस वचन पर आईं: *'कुछ भी छपिा नहीं है जो प्रकट न किया जाएगा, और न ही कुछ गुप्त है जो जाना न जाएगा। इसलिए, जो कुछ तुमने अँधेरे में कहा है, वह रोशनी में सुना जाएगा; और जो कुछ तुमने घर के अंदर नजिी तौर पर फुसफुसाया है, वह छतों से घोषणा किया जाएगा'* (लूका 12:2-3; मत्ती 10:26)।

सुसमाचार में ये वचन सुनकर, थयिोडोरा ने अपने सीने पर हाथ मारा और उद्वेगपूर्वक कहा:

'हाय, मैं दुर्भाग्यपूर्ण स्त्री! मैं अब बर्बाद हो गई हूँ; मैं ठगी गई थी, यह सोचकर कि ईश्वर को मेरे पाप का पता नहीं चलेगा।'

और वह छाती पीटने लगी, रोती-बलिखती हुई।

तब मठाधीश को एहसास हुआ कि थयिोडोरा पाप में गरि गई है, और उन्होंने उससे पूछना शुरू किया कि उसके साथ वास्तव में क्या हुआ था।

थयिोडोरा, जो रो-रो कर मुश्कलि से बोल पा रही थी, ने मदर सुपीरयिर को सब कुछ वस्तिार से बताया, और उनके पैरों पर गरिकर बोली:

'माँ, इस खोई हुई आत्मा पर दया करें, और मुझे सखिाएँ कि मुझे क्या करना चाहिए। क्या मैं बच सकती हूँ, या मैं हमेशा के लिए पहले से ही खो चुकी हूँ? क्या मुझे ईश्वर की दया की आशा करनी चाहिए, या मुझे नरिाश हो जाना चाहिए?'

मदर सुपीरयिर उससे बात करने लगीं:

'तुमने गलत किया, मेरी बेटी, दुश्मन की बात सुनकर; तुम यह सोचकर गलत थीं कि तुम ईश्वर से छपि सकती हो—वह जो हृदयों और मन को परखता है, जो दूर से ही मानव वचिारों को जानता है, और अपनी दृष्टि से वह देखता है जो अभी तक हुआ नहीं है: न तो रात और न ही कोई छपिी हुई या अंधेरी जगह एक पापी को उसकी सर्व-द्रष्टा आँख से छपिा सकती है। तुमने गलत किया है, मेरी बेटी: तुमने ईश्वर का क्रोध भड़काया है, अपने पति के प्रति वफादार नहीं रह सकीं, अपने शरीर को अपवत्रि किया है, और अपनी आत्मा को नुकसान पहुँचाया है। जब तुम्हें बहकाया जा रहा था, तब तुमने मुझे यह पहले क्यों नहीं बताया, ताकि मैं तुम्हारी मदद कर सकूँ और तुम्हें दुश्मन के जालों से बचने का तरीका सखिा सकूँ? लेकनि चूँकि यह घटना तुम्हारे साथ पहले ही हो चुकी है, तो कम से कम अब सुधार करो और ईश्वर की दया माँगो, एक पछतावा भरे दलि से प्रार्थना करो, कि वह तुम्हारे पाप को क्षमा कर दे। नरिाश न हो, मेरी बेटी: यद्यपि तुमने एक बड़ा पाप किया है, परन्तु परमेश्वर की दया और भी महान है, और ऐसा कोई पाप नहीं है जो मनुष्यों के प्रति परमेश्वर के प्रेम पर वजिय प्राप्त कर सके; बस हम्मित रखो, और तुम बच जाओगी।

उसके प्रति ये और इसी तरह के शब्द कहकर, महाधर्मप्राचारकिा ने उसे ज्ञान दिया, उसे सखिाया और उसे पश्चाताप के मार्ग पर स्थापति किया; साथ ही, उन्होंने उसे परमेश्वर की दया और उनकी अनुपम भलाई के बारे में बताकर सांत्वना दी, जसिके साथ वह पश्चाताप करने वालों को स्वीकार करने और पाप करने वालों को क्षमा करने के लिए तैयार हैं। उन्होंने उसे सुसमाचार में वर्णति उस पापी स्त्री की भी याद दलिाई जसिने अपने आँसुओं से मसीह के पैरों को धोया और अपने सरि के बालों से उन्हें पोंछा, और परमेश्वर से अपने पापों की क्षमा प्राप्त की।

थियोडोरा ने अपनी दयालु मार्गदर्शक के सभी वचन सुनकर और उन्हें हृदय से ग्रहण करके कहा:

'मैं अपने ईश्वर में विश्वास करती हूँ, मैडम, और अब से मैं ऐसा पाप नहीं करूँगी; और जो कुछ मैंने पहले कर दिया है, उसके लिए मैं भरपाई करूँगी, जहाँ तक मैं कर सकती हूँ।'

अपने दिल को कुछ सुकून मिलने पर, वह अपने घर लौट आई। लेकिन जब उसका विवेक उसे कोसने लगा, तो उसे अपने पति की आँखों में सीधे देखने में शर्म आई और वह सोचने लगी कि वह ईश्वर को कैसे प्रसन्न कर सकती है: उसने एक मठ में जाने का भी विचार किया था, लेकिन वह जानती थी कि उसका पति इसकी अनुमति नहीं देगा। और इस प्रकार, अपने पति और सभी परिचितों से छिपने के लिए, उसने निम्नलिखित योजना बनाई।

जब उसके पति देर शाम किसी काम से घर से बाहर गए, तो उसने अपने बाल छोटे काट लिए, पुरुषों के कपड़े पहन लिए और ईश्वर की इच्छा पर भरोसा करके, चुपके से घर से निकल पड़ी और जैसे जाल से बचकर निकली चिड़िया की तरह तेजी से चल पड़ी। शहर से अठारह वर्स्ट दूर स्थित 'ऑक्टोडेकटन' नामक एक सुनसान मठ में पहुँचकर[6207] , उसने द्वार पर दस्तक दी और द्वारपाल को देखकर कहा:

'फादर, मुझ पर दया करें: कृपया जाकर मठाध्यक्ष से कहें कि वे मुझे, एक पापी को, मठ में ले लें, क्योंकि मैं अपने बुरे कर्मों पर पश्चाताप करना चाहती हूँ, और इसीलिए मैं यहाँ आई हूँ; मुझे आपके पवित्र चरण धोने दें और दिन-रात आपकी सेवा करने दें, जो भी आप मुझे करने का आदेश दें।'

द्वारपाल गया और इस बात की सूचना मठाध्यक्ष को दी। मठाध्यक्ष ने उत्तर दिया:

– हमें उसकी परीक्षा लेनी होगी – क्या ईश्वर ने उसे हमारे पास आने के लिए प्रेरित किया है? इसलिए, सुबह तक उसे कोई जवाब मत देना और उसे मठ में मत आने देना; अगर वह नहीं जाता, बल्कि मठ के द्वार पर धैर्यपूर्वक रहकर दया की प्रतीक्षा करता है, तो हमें पता चल जाएगा कि वह सचमुच और ईमानदारी से ईश्वर की सेवा करने आया है।

दरबान ने ठीक वैसा ही किया, उसने थियोडोरा पर कोई ध्यान नहीं दिया, और उसके साथ तिरस्कार से पेश आया मानो वह एक बेकार दासी हो। वह, हालांकि, द्वार के पास बैठी और रोती रही। रात हो गई, और जंगली जानवर निकलने लगे (क्योंकि वह मरुभूमि जानवरों से भरी थी); लेकिन थियोडोरा, ईश्वर की कृपा से, सुरक्षित रही, मानो उसने खुद को ढाल की तरह क्रॉस के चिह्न और प्रार्थना से लैस कर लिया हो।

सुबह, द्वारपाल ने छोटी खिड़की से झाँककर देखा कि थियोडोरा द्वार पर बैठी थी, और कहा:

'तुम यहाँ किसका इंतज़ार कर रही हो? हम तुम्हें अंदर नहीं लेंगे, क्योंकि तुम हमारे किसी काम की नहीं हो।'

जिस पर उसने उत्तर दिया:

'भले ही मैं यहाँ द्वार पर मर जाऊँ, मैं तब तक नहीं जाऊँगी जब तक आप मुझ पर दया न करें और मुझे मठ में प्रवेश न दें।'

तब द्वारपाल ने, उसका धैर्य और विनम्रता देखकर, द्वार खोल दिया और उसे मठाध्यक्ष के पास ले गया। मठाध्यक्ष ने उससे पूछा कि वह कहाँ से आई है, उसका नाम क्या है, और वह क्यों आई है। उसने उत्तर दिया:

'पिताजी, मैं अलेक्जेंड्रिया से हूँ; मेरा नाम थियोडोर है; मैं पापों और अधर्म से भरा हूँ; लेकिन, होश में आकर और अपने अपराधों को पहचानकर, मैं पश्चाताप करना चाहता था: और इसलिए मैं आपके पवित्र निवास पर आया हूँ, ताकि आप मुझे अपने संप्रदाय में स्वीकार करें और इस मरणासन्न पापी को बचाएँ।' 'तो, पिताजी, मुझे स्वीकार कीजिए, जैसे प्रभु ने चोर, महसूल वसूलने वाले और व्यर्थ पुत्र को स्वीकार किया था।'

तब मठाध्यक्ष ने उसे मठ के श्रम और तपस्या के कार्यों के बारे में समझाना शुरू किया, और कहा:

'मेरी संतान, तुम इसे सहन नहीं कर पाओगी, क्योंकि मैं देखती हूँ कि तुम जवान हो और सांसारिक सुखों के बीच पली-बढ़ी हो; फिर भी हमारे मठ में कोई आराम नहीं है, हमारे नियम में कठिनाई भरे जीवन की मांग है, और हमारे साथ रहने के लिए महान संयम और उपवास की आवश्यकता है। हमारे भाई-बंधु आज्ञाकारिता में महान श्रम करते हैं, और चर्च के नियमों, जैसे: मध्यरात्रि का कार्यालय और मैटिन्स, घंटियाँ और वेस्पर्स, कई निजी प्रार्थनाएँ और प्रणाम, साथ ही प्रार्थना में अक्सर पूरी रात जागना, की अवहेलना नहीं करते। लेकिन, आप शरीर के आराम के आदी हैं, और आप हमारे

[6207] ग्रीक में 'ओक्टोडेका' का अर्थ 'अठारह' होता है। यहीं से मठ का नाम पड़ा है। यह ध्यान देने योग्य है कि शुरुआती शताब्दियों में, मिस्र मठवासी तपस्या के लिए प्रसिद्ध था, जिसका मूल उद्भव वहीं हुआ था, और मठवासी बस्तियाँ प्रचुर मात्रा में थीं, जैसा कि इस संतों के जीवन-चरित के बाद के विवरण से स्पष्ट है; यही कारण है कि कुछ मठों का नाम किसी भी महत्वपूर्ण आकार के निकटतम केंद्र से उनकी दूरी के अनुसार रखा गया था।

साथ संन्यासी जीवन का बोझ नहीं उठा सकते। यद्यपि मैं देखता हूँ कि आप उत्साह के साथ आए हैं, मुझे डर है कि आप अपना मन बदल लेंगे, क्योंकि कई लोग अक्सर उत्साह के साथ एक अच्छा काम शुरू करते हैं, लेकिन जल्द ही, उसे सहन न कर पाने के कारण, अपने अच्छे प्रयास को त्याग देते हैं और सभी में सबसे आलसी बन जाते हैं। इसलिए, मैं तुम्हें संसार में लौटने की सलाह देता हूँ, और ईश्वर तुम्हारे उद्धार की व्यवस्था अपनी इच्छा के अनुसार करें।

तब थियोडोरा, मठाध्यक्ष के चरणों में गरिकर, आँसुओं के साथ बोली:

'पिताजी, मुझे अपने पवित्र मठ से बाहर न निकालें; आप लोगों के बीच मेरे स्वर्गदूत समान जीवन से मुझे वंचित न करें; मुझे उस संसार में वापस न भेजें जिससे मैं भाग रही हूँ, ठीक वैसे जैसे यहूदी मिस्र से भागे थे, और कभी वापस नहीं आए।' मेरी युवावस्था से विचलित न हों, क्योंकि आपकी पवित्र प्रार्थनाओं के माध्यम से मैं आत्म-त्याग के हर रूप की आदी हो जाऊँगी और, ईश्वर की सहायता से, मैं सभी कठिनाइयों को सहन करूँगी और जो कुछ भी आप मुझसे कहेंगे, उसे उत्साह और लगन से करूँगी - बस मुझे स्वीकार कर लें, जो अपने पापों से पश्चाताप करना चाहती है।"

उसकी विनतियों को मानते हुए, मठाध्यक्ष ने उसे स्वीकार कर लिया और उसे सभी मठ संबंधी कर्तव्यों को निभाने का आदेश दिया। इस प्रकार, एक पत्नी पुरुषों के बीच रहने आई, पुरुष के भेष में और पुरुष के नाम से, और यह रहस्य ईश्वर के सिवा कोई नहीं जानता था। और उसकी महान परिश्रम से भरे जीवन की कहानी कौन सुना सकता है? भाइयों ने उसके कर्तव्यों में उसकी मेहनत, संयम में उसका धैर्य, आज्ञाकारिता में उसकी नम्रता देखी; लेकिन उसके छिपे और गुप्त कर्म, उसकी सारी रात की प्रार्थनाएँ, उसकी दिल की आहें, उसके आँसू, उसका घुटने टेकना, और उसके जुड़े हुए हाथ—इन्हें केवल स्वयं ईश्वर ने ही देखा: और दिन-रात वह उनकी दया की याचना करती रही, ठीक वैसे ही जैसे प्राचीन काल की वेश्या ने अपने आँसुओं से प्रभु के पैर धोए थे। और उसका पश्चाताप उसके द्वारा किए गए पाप से भी बड़ा था: क्योंकि नम्रता के द्वारा उसने अपनी सभी वासनाओं और कामनाओं को मार डाला, सभी के सामने स्वयं को नम्र किया, आत्म-त्याग के द्वारा अपनी इच्छा पर विजय प्राप्त की, और, मानो, देह में एक स्वर्गदूत बन गई। उसका शरीर, जो कभी कलंकित था लेकिन अब पश्चाताप के कार्यों और प्रचुर आँसुओं से शुद्ध हो गया था, परमेश्वर का एक पवित्र मन्दिर, पवित्र आत्मा का वासस्थान बन गया।

आठ साल बाद, मठ में तेल की कमी हो गई, और थियोडोरा को तेल खरीदने के लिए ऊँटों के साथ अलेक्जेंड्रिया शहर भेजा गया। इस बीच, उसके पति, यह न जानते हुए कि उसकी पत्नी कहाँ गई थी या उसका क्या हुआ था, उसे बहुत खोजा। जब उसे वह नहीं मिली, तो वह दिन-रात विलाप करने लगा, और उसने ईश्वर से विनम्रतापूर्वक प्रार्थना की कि वह उसे बता दें कि उसकी पत्नी कहाँ है। और एक रात उसने एक देवदूत को देखा, जिसने उसे घोषणा की:

'अपनी पत्नी के लिए शोक मत करो, क्योंकि वह ईश्वर की सेवा उनके सेवकों के बीच कर रही है। यदि तुम उसे देखना चाहते हो, तो सुबह जाकर संत पीटर के चर्च के पास खड़े हो जाओ – वहाँ तुम उसे देखोगे: क्योंकि जो कोई भी चर्च के पास से गुज़रे और तुम्हें नमस्ते करे, वही तुम्हारी पत्नी है।'

थियोडोर के पति इस दैवीय दर्शन से प्रसन्न हुए, जिसने उन्हें अपनी पत्नी और उसे देखने के तरीके के बारे में बताया था। सुबह-सुबह वह सेंट पीटर चर्च की ओर भागा और वहाँ खड़ा होकर, दाईं-बाईं देखने लगा, इस उम्मीद में कि उसे वह दिखाई दे जिसकी वह चाहत रखता था। उसी क्षण, धन्य थियोडोरा अपने ऊंटों के साथ, एक पुरुष भिक्षु की वेशभूषा में सजी, वहाँ से गुज़री; उसके पति उसे पहचान नहीं पाए, और न ही पहचान पाते: एक ओर, उसके पुरुषों के वस्त्रों के कारण; दूसरी ओर, उसके चेहरे में आए बदलाव के कारण; वह कभी खूबसूरत थी, लेकिन उपवास और संन्यासी तपस्या से उसकी सुंदरता फीकी पड़ गई थी। हालाँकि, थियोडोरा ने उसे दूर से ही पहचान लिया, एक चुपके आँसू बहाया और मन ही मन कहा:

'हाय, मैं पापी! क्या मैंने अपने पति के विरुद्ध पाप करने के कारण ईश्वर की कृपा खो दी है?'

जब वह उसके पास से गुज़री, तो उसने सिर झुकाकर कहा:

'शुभ दिन, महोदय!'

और उसने भी, कहकर उसे प्रणाम किया:

'ईश्वर आपके साथ हो, फादर!'

और इस प्रकार वे अलग हो गए। वहाँ लगभग पूरा दिन बिताने के बाद, थियोडोरा का पति घर लौटा, इस बात पर दुखी था कि उसे वह नहीं मिला जिसकी वह कामना करता था, और दैवीय दर्शन को एक धोखा मानता था। घर पर, वह फिर से आँसुओं के साथ प्रार्थना करने लगा:

'हे प्रभु! आप मेरी पीड़ा देख रहे हैं; मेरी प्रार्थना सुनें और मुझे बताएं कि मेरी पत्नी जीवित है या नहीं। क्या वह सही मार्ग पर है या गलत?'

और इस प्रकार, अगली रात, उसने फिर से एक स्वर्गदूत को एक दर्शन में देखा, जिसने कहा:

'तुम क्यों रो रहे हो? क्या तुमने कल अपनी पत्नी को नहीं देखा, जैसा मैंने तुमसे कहा था?'

उसने उत्तर दिया:

'नहीं, मेरे प्रभु।'

देवदूत ने उत्तर दिया:

'क्या मैंने तुम्हें नहीं बताया था कि जो गुज़रते हुए तुम्हारे सामने झुकती और तुम्हें नमस्ते करती है—वह तुम्हारी पत्नी है?'

तब पति ने, यह महसूस करते हुए कि उसने अपनी पत्नी को देखा था लेकिन उसे पहचान नहीं पाया था, ईश्वर का धन्यवाद किया कि उसकी पत्नी जीवित है और ईश्वर की सेवा कर रही है; उसने आशा की कि वह भी उसकी प्रार्थनाओं के माध्यम से उद्धार पा सके। और धन्य थियोडोरा ने ईश्वर का धन्यवाद किया कि उसने अपने पति को देखा था और उसके पति ने उसे नहीं पहचाना था। कन्वेंट लौटकर, उन्होंने अपनी मुक्ति के लिए खुद को समर्पित कर दिया, पहले एक दिन, फिर दो, फिर तीन और चार दिन का उपवास रखा; कभी-कभी वह पूरे एक सप्ताह तक बिना भोजन के रहती थीं, और अपने पाप की क्षमा के लिए विनम्रता से प्रार्थना करती थीं।

उस मठ के पास एक झील थी जहाँ एक मगरमच्छ[6208] रहता था, जो अक्सर झील से बाहर निकलकर रास्ते से गुजरने वाले लोगों और पशुओं को खा जाता था। गिरिजाघर के प्रमुख ग्रिगोरी[6209] , जिन्हें राजा ज़िनोन[6210] ने अलेक्जेंड्रिया शहर पर शासन करने के लिए नियुक्त किया था, ने झील के पास से गुजरने वाली सड़क पर पहरेदार तैनात कर दिए ताकि कोई भी उस मार्ग से न गुज़रे। थियोडोरा के भीतर निवास करने वाले ईश्वर की कृपा को जानने की इच्छा से, मठाधीश ने उसे बुलाया और कहा:

'भाई थियोडोर, हमें पानी चाहिए; पानी का घड़ा ले जाओ, झील से कुछ पानी भरकर लाओ, और मुझे दे दो।'

थेओडोरा, एक अच्छी नवोदित होने के नाते, पानी का घड़ा लेकर चल पड़ी। उससे मिलने वाले पहरेदार ने कहा:

'वहाँ पानी लेने के लिए मत जाओ, पतिजी, क्योंकि एक जानवर आपको टुकड़े-टुकड़े कर देगा।'

लेकिन उसने उत्तर दिया:

'मेरे मठाधीश ने मुझे भेजा है, और मुझे वह करना ही है जो आज्ञा दी गई है।'

जब वह झील के किनारे पहुँची, तो एक मगरमच्छ निकला और उसे अपनी पीठ पर बिठाकर झील के बीच में ले गया। जब उसने पानी भर लिया, तो वह जीव उसे वापस किनारे पर ले आया। उसने उस जीव से प्रार्थना की, और उसे आज्ञा दी कि वह फिर कभी किसी को नुकसान न पहुँचाए – और तुरंत ही वह जीव मृत पाया गया। रक्षक, यह चमत्कार देखने के बाद, इस बात की सूचना मठाधीश और बिशप को दी, और सभी ने ईश्वर की स्तुति की। हालाँकि, भाइयों ने इस बात पर आश्चर्य व्यक्त किया कि उस जानवर ने उस धन्य महिला को कोई नुकसान नहीं पहुँचाया और उन्होंने आज्ञाकारिता की शक्ति की प्रशंसा की।

लेकिन कुछ भाइयों ने, शैतान के उकसावे पर (क्योंकि कोई भी दुश्मन के प्रलोभनों से मुक्त नहीं है), जो हुआ था उस पर विश्वास नहीं किया और थियोडोरा से नफरत करने लगे, यह कहते हुए:

[6208] पीठ पर हड्डी की पट्टियों वाला एक विशाल छिपकली जैसा सरीसृप, एक विशाल जबड़ा और तेज, विशाल दाँत। मगरमच्छ न केवल बड़ी मछलियाँ और सड़ी-गली लाशें, बल्कि जानवरों और मनुष्यों को भी निगल जाते हैं। दुनिया की सबसे बड़ी नदी – नील नदी, जो पूरे मिस्र में सिंचाई करती है – उन से भरी रहती थी, और वे काफी नुकसान पहुँचाते थे। इसके बावजूद, प्राचीन मिस्रवासियों ने उन्हें देवता का दर्जा दिया और अक्सर उन्हें तालाबों में रखा, जहाँ उन्हें जानवरों और मनुष्यों का मांस खिलाया जाता था। इसलिए यह आश्चर्य की बात नहीं है कि यह नदी सरीसृप एक झील में दिखाई दिया हो, और न ही यह कि अधिकारियों ने—शायद अलेक्जेंड्रिया में अभी भी बहुत सारे pagans (पगनों) के डर से—इस खतरनाक जानवर को पकड़ने और नष्ट करने की हिम्मत नहीं की। माना जाता है कि यह झील मोरियोटिस झील, या मारियट झील थी, जो अलेक्जेंड्रिया या नील नदी से बहुत दूर नहीं स्थित थी, जहाँ से मगरमच्छ अपने आप काफी आसानी से रेंगकर आ सकता था।

[6209] ग्रीको-रोमन साम्राज्य में एक प्रांतीय गवर्नर।

[6210] एक बीजान्टिन सम्राट जिसने 474 से 491 तक शासन किया।

'हम इतने वर्षों से मठ में रह रहे हैं और कोई चमत्कार नहीं करते, फिर भी वह कल ही आया है और पहले से ही चमत्कार कर रहा है; क्या वह हमसे बड़ा नहीं बनना चाहता? क्या उसने किसी तरह की जादू-टोने से उस जानवर को नहीं मारा?'

इस मठ से कुछ वर्स्ट दूर, सुनसान जंगल में एक और मठ था। ईर्ष्यालुओं ने, अपने मठाधीश की जानकारी के बिना उस मठ को गुप्त रूप से एक पत्र लिखकर, शाम को देर से धन्य थियोडोरा की कोठरी में आकर उससे कहा:

'भाई थियोडोर, मठाध्यक्ष का आदेश है कि तुम यह पत्र तुरंत उस मठ में ले जाओ।'

थियोडोरा उठी, पत्र लेकर उसी रात मठ की ओर चल दी। लेकिन द्वेषियों ने ऐसा इसलिए किया था ताकि रास्ते में जंगली जानवर उसे चीर-फाड़ डालें, क्योंकि वहाँ अनगिनत जानवर थे[6211] , और इसलिए कोई भी रात में उस मार्ग पर यात्रा नहीं कर सकता था। द्वेषियों ने आपस में तर्क किया:

'आओ देखें कि क्या यह पवित्र महिला, जिसके आगे जानवर आज्ञाकारी हैं, सुरक्षित लौटेगी।'

जब थियोडोरा उस रास्ते पर चल रही थी, तो उसे एक विशालकाय जानवर मिला जिसने उसे प्रणाम किया, और फिर मुड़कर उसके सामने-सामने चलने लगा, और उसे मठ के द्वार तक ले गया। उस दानव ने दरवाज़े को धक्का दिया; द्वारपाल ने उसे खोला, और संत थियोडोरा पत्र लेकर मठाधीश के पास चली गईं। लेकिन चूँकि द्वारपाल ने दरवाज़ा बंद नहीं किया था, दानव मठ में घुस गया और द्वारपाल को पकड़कर उसे नोचना शुरू कर दिया।

द्वारपाल चिल्लाया:

'हाय रे मेरी किस्मत, हाय रे मेरी किस्मत, मेरी मदद करो!'

उस चीख से सभी जाग गए। यह जानकर कि क्या हुआ था, संत मठाधीश की कोठरी से लौट आईं और उस भाई के पास गईं जिसे वह जानवर नोच रहा था। जानवर का गला पकड़कर, उन्होंने द्वारपाल को आजाद कराया और जानवर से कहा:

'तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई ईश्वर की प्रतिमा पर हमला करने और उसे मारने की कोशिश करने की? तो खुद मर जा।'

और तुरंत वह जानवर थियोडोरा के पैरों तले गिर पड़ा और उसकी प्राण-श्वास रुक गई। जहाँ तक उस भाई का सवाल है, जिसे जानवर ने नोचा था, उसने मसीह का नाम लेकर उस पर पवित्र तेल का अभिषेक किया, उसके घावों पर स्वस्तिक का चिन्ह बनाया, और उसे स्वास्थ्य और सुरक्षा प्रदान की। यह चमत्कार देखकर, सभी ने धन्य व्यक्ति के सामने सिर झुकाया और उस ईश्वर की स्तुति की, जिसने अपनी दासी थियोडोरा के लिए जंगली जानवरों को वश में कर दिया था। उस मठ से रिहा होने के बाद, थियोडोरा बहुत जल्दी अपने मठ लौट आई और, अपने आगमन पर, उसने किसी को नहीं बताया कि वह कहाँ गई थी या उसने क्या किया था।

अगले दिन, भिक्षु एक भेंट लेकर उस मठ में आए; उन्होंने मठाध्यक्ष और पूरे समुदाय को जो कुछ हुआ था, वह सुनाया, फिर मठाध्यक्ष के सामने नतमस्तक होकर धन्यवाद दिया कि उनके शिष्य थियोडोर ने द्वारपाल को जानवर के जबड़ों से बचाया था, उसके घावों को भर दिया था, और जानवर को मार गिराया था। यह सुनकर, मठाधीश और सभी भिक्षु बहुत आश्चर्यचकित हुए। आए हुए भिक्षुओं को विदा करने के बाद, मठाधीश ने सभी भिक्षुओं को एक साथ इकट्ठा किया और उनसे पूछा:

'भ्राता थियोडोर को उस मठ में किसने भेजा था?'

उन्होंने सभी ने इनकार कर दिया, कहते हुए:

'हमें नहीं पता।'

तब मठाध्यक्ष ने थियोडोर से पूछा, कहा:

'भैया, कल रात तुम्हें उस मठ में किसने भेजा था?'

अपने दुश्मनों को उजागर नहीं करना चाहती थी, जो उसे भेज चुके थे, थियोडोरा ने मठाधीश से कहा:

[6211] मिस्र के रेगिस्तान, सामान्यतः अफ्रीका के अन्य रेगिस्तानों की तरह, विशेष रूप से उग्र शेरों से भरे हुए हैं। निम्नलिखित विवरण में जिस जानवर का उल्लेख है, उसे शेर ही समझना चाहिए।

'मुझे क्षमा करें, पिताजी! मैं अपनी कोठरी में सो गई थी और मुझे याद नहीं कि कौन मेरे पास आया था, जिसने आपके नाम पर मुझे उस मठाधीश के पास पत्र जल्द से जल्द पहुँचाने का आदेश दिया, और मैं आज्ञा का पालन करते हुए चली गई।'

तब जो लोग उससे द्वेष रखते थे, उन्होंने धन्य थियोडोरा में ईश्वर की कृपा को पहचान लिया और अपने दुर्भाव पर पश्चाताप करने लगे तथा उसके चरणों में गिरकर उससे क्षमा याचना करने लगे। हालाँकि, वह द्वेष से मुक्त थीं, इसलिए वह इस बात के लिए उन पर बिल्कुल भी क्रोधित नहीं हुईं; वास्तव में, उन्होंने किसी को उनके बारे में बताया भी नहीं, बल्कि इसके विपरीत, उन्होंने स्वयं को एक पापी और भाइयों के प्रेम के अयोग्य समझकर स्वयं को नम्र किया।

एक दिन, जब थियोडोरा अपने कर्तव्य निभा रही थीं, तो एक राक्षस उनके सामने प्रकट हुआ और क्रोधित होकर बोला:

'हे घृणित व्यभिचारिणी, जिसने अपने पति को त्याग दिया है—क्या तू मुझसे लड़ने के लिए यहाँ आई है? 'मैं अपनी सारी शक्ति का उपयोग करूँगा कि तुम न केवल संन्यास जीवन, बल्कि सूली पर चढ़ाए गए के प्रति अपने विश्वास को भी त्याग दो, और इस स्थान से भाग जाओ! और यह मत सोचो कि मैं यहाँ नहीं हूँ, क्योंकि मैं तुम्हें तब तक चैन से नहीं छोड़ूँगा जब तक मैं तुम्हारे पैरों को अपने जाल में न फँसा दूँ और तुम्हें एक ऐसे गड्ढे में न फेंक दूँ जिसकी तुम उम्मीद नहीं करते।'

हालाँकि थियोडोरा ने, क्रॉस का चिह्न बनाते हुए, कहा:

'ईश्वर तुम्हारी शक्ति को चूर-चूर कर दे, शैतान!'

और राक्षस गायब हो गया।

कुछ समय बाद, धन्य थियोडोरा को एक बार फिर मठ की ज़रूरतों के लिए गेहूं खरीदने के लिए ऊंटों के साथ अलेक्जेंड्रिया शहर भेजा गया।

जब उन्होंने उन्हें विदा किया, तो मठाध्यक्ष ने कहा:

'यदि, मेरी बच्ची, तुम अपनी यात्रा में देर से पहुँचो, तो एनात मठ की ओर मुड़ जाना और ऊँटों के साथ वहाँ रात बिताना (क्योंकि रास्ते में, शहर के पास, "एनात" नाम का एक मठ था[6212])।'

रवाना होने के बाद, थियोडोरा वास्तव में अपनी यात्रा में देर से चल पड़ी और, मठाधीश के निर्देशों के अनुसार, एनाट मठ गई; उस मठ के मठाधीश को प्रणाम करने के बाद, उसने उनसे सुबह तक ऊंटों को आराम करने देने का आशीर्वाद माँगा। मठाधीश ने उसे अतिथि गृह में एक जगह दी, जहाँ ऊँटों के लिए एक बाड़ा था। उस समय, अतिथि गृह में एक युवती ठहरी हुई थी, जो अब युवती नहीं रही थी; वह मठाधीश की बेटी थी, जो अपने पिता को प्रणाम करने और उनसे मिलने आई थी। उस युवा भिक्षु (अर्थात् धन्य थियोडोरा) को देखकर, वह युवती, शैतान के प्रभाव में, उसके प्रति कामवासना से भर गई; वह रात में थियोडोरा के पास आई, जो ऊँटों के पास सो रही थी, और यह न समझते हुए कि वह एक महिला है, उसने उसके प्रति अश्लील इशारे करना शुरू कर दिया और उसे पाप में फँसाने की कोशिश करने लगी। लेकिन थियोडोरा ने कहा:

'मुझसे दूर हो जाओ, बहन, क्योंकि मैं ऐसी बातों की आदी नहीं हूँ; इसके अलावा, मुझमें एक दुष्ट आत्मा है और मुझे डर है कि वह तुम्हें मार सकती है।'

शर्म के मारे पीछे हटने के बाद, उस युवती को एक और आगंतुक मिला, जिसके साथ उसने अनैतिक संबंध बनाए और वह गर्भवती हो गई। इस बीच, जब दिन चढ़ा, तो थियोडोरा शहर के लिए रवाना हो गई और, अपना कर्तव्य पूरा करके, अपने मठ लौट आई और अपनी मोक्ष के लिए अपने तपस्या के प्रयासों को जारी रखा। छह महीने बाद, यह स्पष्ट हो गया कि वह युवती गर्भवती थी, और उसके परिवार ने उसे पीटना और उससे पूछताछ करना शुरू कर दिया: यह किसने किया था? उसने, हालांकि, शैतान के उकसावे पर, धन्य थियोडोरा पर आरोप लगाया, यह कहते हुए:

'ऑक्टोडेकाटोस का संन्यासी थियोडोर, ऊँटों के साथ शहर जाते समय एक सराय में रात बिताई; वह रात में मेरे पास आया, और मैं उससे गर्भवती हो गई।'

यह सुनकर, उनके पिता, एनाट के मठाधीश ने अपने भिक्षुओं को ऑक्टोडेकट के मठ में भेजा ताकि वहाँ के मठाधीश से शिकायत दर्ज करा सकें, आरोप लगाते हुए कि उनके एक भिक्षु ने उस कन्या का अपमान किया था।

मठाधीश ने थियोडोरा को बुलाया और उससे पूछा:

[6212] संभवतः स्वयं शहर के पास – वास्तव में, जैसा कि मिठ के ग्रीक नाम से पता चलता है, एक वर्स्ट की दूरी के भीतर।

'क्या तुमने सुना है कि ये लोग तुम्हारे बारे में क्या कह रहे हैं, दावा कर रहे हैं कि तुमने उस कन्या को कलंकित किया है और वह अब गर्भवती है?'

थियोडोरा ने उत्तर दिया:

'मुझे माफ़ करें, पिताजी, लेकिन ईश्वर मेरी गवाही है कि मैं इसमें निर्दोष हूँ।'

मठाधीश, भाई थियोडोरा के शुद्ध, दैवी जीवन को जानते हुए, भिक्षुओं द्वारा कही जा रही बातों पर विश्वास नहीं कर सके। जब उस युवती ने एक पुत्र को जन्म दिया, तो एनाट के भिक्षु ऑक्टोडेकेटन मठ में आए और बच्चे को मठ के बीचों-बीच छोड़कर, वहाँ रहने वाले भाइयों को फटकारते हुए कहने लगे:

'अपने बच्चे को पालो!'

तब मठाध्यक्ष ने शिशु को देखकर विश्वास कर लिया कि वास्तव में जैसा उन्होंने कहा था वैसा ही है, और वह थियोडोरा पर बहुत क्रोधित हो गया, जो आत्मा और शरीर से निर्दोष और पवित्र थी। भाइयों को इकट्ठा करके और थियोडोरा को बुलाकर, उसने उससे पूछा:

'बताओ, हे दुर्भाग्यपूर्ण, तुमने क्या किया है? तुमने हमारे मठ पर अपमान लाया है और हमारे संन्यासी समुदाय पर कलंक लगाया है! तुम्हें ईश्वर का कोई भय नहीं है। हमने तुम्हें एक देवदूत के समान माना था, फिर भी तुम राक्षसों की सहयोगी साबित हुई हो। इसलिए, अपनी दुष्टता स्वीकार करो।'

लेकिन धन्य थियोडोरा, अपने ऊपर आई इस विपत्ति से स्तब्ध होकर, विनम्रता से बोलीं:

'मुझे क्षमा करें, हे पवित्र पिताओं, मैं एक पापी हूँ!'

आपस में सलाह-मशविरा करने के बाद, भिक्षुओं ने उसे अपमानित करके और पीट-पीट कर मठ से निकाल दिया, और शिशु को उसके हवाले कर दिया। धन्य एक की सहनशीलता अद्भुत थी! वह एक ही शब्द कहकर अपनी बेगुनाही साबित कर सकती थीं, लेकिन यह राज़ उजागर नहीं करना चाहती थीं कि वह एक महिला थीं, इसलिए उन्होंने अपने अतीत के पाप के प्रायश्चित के रूप में किसी और का पाप अपने ऊपर ले लिया। शिशु को लेकर, वह मठ के द्वार पर बैठ गईं, और स्वर्ग से निकाले गए आदम की तरह रो रही थीं। मठ के सामने, उसने बच्चे के लिए एक छोटी झोपड़ी बनाई और, चरवाहों से दूध भीख माँगकर, पूरे सात साल तक बच्चे का पोषण किया; जबकि उसने खुद भूख, प्यास, नग्नता, ठंड और गर्मी को सहन किया, समुद्र का पानी पिया और जंगली जड़ी-बूटियों पर गुज़ारा किया।

इतनी पीड़ा सहन न कर पाने पर, शैतान ने थियोडोरा को लुभाने का एक अलग तरीका सोचा: उसने अपने पति का रूप धारण किया और उस झोपड़ी में प्रवेश किया जहाँ वह शिशु के साथ बैठी थी, और कहा:

'क्या आप यहाँ हैं, मेरी मालकिन? इतने सालों से मैं आँखों में आँसू लिए आपको ढूँढ़ता रहा, फिर भी आप मुझसे मिलने का विचार भी नहीं करतीं, मेरी मालकिन? क्या आपको नहीं पता कि मैंने आपके लिए अपना पिता-माता छोड़ दिया, फिर भी आपने मुझे छोड़ दिया है?' तुम्हें इस जगह आने के लिए किसने मनाया? तुम्हारे चेहरे का रंग कहाँ गया? तुमने खुद को इतना क्यों थका लिया है? तो चलो, मेरे प्रिय, हम अपने घर चलते हैं। क्योंकि अगर तुम चाहो, तो घर पर भी पवित्र रह सकती हो: मैं तुम्हारे रास्ते में नहीं आऊँगी। मेरे प्यार को याद करो, मेरी प्रिय, और मेरे साथ हमारे घर चलो।

उस धन्य स्त्री को यह एहसास नहीं हुआ कि यह एक राक्षस था, बल्कि वह समझी कि यह सचमुच उसका पति है, और उससे कहा:

'मैं उस दुनिया में तुम्हारे पास वापस नहीं जा सकती, जहाँ से मैं अपने पाप के कारण भाग आई हूँ; मुझे डर है कि मैं और बड़े पापों में पड़ जाऊँगी।'

लेकिन जब उसने प्रार्थना करने के लिए क्रॉस का चिह्न बनाने के लिए अपना हाथ उठाया, तो राक्षस तुरंत गायब हो गया। तब धन्य स्त्री को एहसास हुआ कि यह शैतान था और उसने कहा:

'हे शैतान, तुमने तो मुझे लगभग धोखा दे ही दिया था।'

वह शैतान से बात करने पर पछती, और तब से उसने शैतान की चालाकियों से बचने के लिए और भी अधिक सावधानी बरती। लेकिन शैतान थियोडोरा के खिलाफ साजिश रचने से नहीं रुका। तो उसने राक्षसों की एक भीड़ इकट्ठी की, जिन्होंने विभिन्न जानवरों का रूप धारण कर, मानव आवाज़ों में चिल्लाते हुए उस पर हमला किया:

– आओ इस व्यभिचारिणी को चीर-फाड़ डालें!

हालाँकि, थियोडोरा ने खुद पर क्रॉस का चिह्न बनाते हुए कहा: *'उन्होंने मुझे घेरा, उन्होंने मुझे घेर लिया, परन्तु मैं प्रभु के नाम से उन्हें नीचे फेंक देती हूँ'* (भजन संहिता 117:11), और राक्षस तुरंत ही गायब हो गए। तब शैतान, उसे धन

के लालच से लुभाने की इच्छा से, उसे बहुत सारा सोना और उसे इकट्ठा करते हुए लोग दिखाया – लेकिन यह सब भी क्रूस के चिन्ह के संकेत पर गायब हो गया।

तब शैतान ने एक राजकुमार का रूप धारण किया; और उसके आगे-आगे घोड़सवारों की एक फौज, थिओडोरा की झोपड़ी के पास से गुज़रते हुए, चिल्ला रही थी:

'राजकुमार आ रहे हैं, राजकुमार आ रहे हैं!'

तब उन्होंने थियोडोरा से कहा:

'राजकुमार के सामने झुक जाओ।'

लेकिन उसने उत्तर दिया:

'मैं एकमात्र ईश्वर को प्रणाम करती हूँ।'

तब, उसे झोपड़ी से बाहर घसीटते हुए, वे जबरदस्ती उसे अंधकार के राजकुमार के पास ले गए (ईश्वर ने उन्हें संत पर हाथ उठाने की अनुमति दी ताकि वह *'भट्टी में सोने की तरह'* (भजन संहिता 3:6) परखी जा सके) और उसे उसके सामने झुकने के लिए मजबूर किया। लेकिन उसने इनकार कर दिया, और कहा:

'मैं अपने प्रभु परमेश्वर की आराधना करती हूँ और केवल उसी की सेवा करती हूँ।'

तब राक्षसों ने उसे बेरहमी से पीटना शुरू कर दिया और उसे मुश्किल से जीवित छोड़कर चले गए। चरवाहों ने थियोडोरा के पास आकर उसे मृतक की तरह पड़ा हुआ पाया और यह सोचकर कि वह मर गई है, उसे झोपड़ी में ले जाकर लिटा दिया। उन्होंने मठ में भी इसकी सूचना दी, कहते हुए:

'तुम्हारे भिक्षु थियोडोर की मृत्यु हो गई है; उसका शरीर ले जाओ और उसे दफना दो।'

मठाधीश और अन्य भिक्षु थियोडोरा की झोपड़ी पर आए और यह देखकर कि उसकी आत्मा अभी भी उसमें है, उन्होंने कहा:

'उसे रहने दो, क्योंकि वह जीवित रहेगा।'

और वे मठ लौट गए। जहाँ तक थियोडोरा की बात है, आधी रात को होश में आने पर, वह रोने और छाती पीटने लगी, और कहने लगी:

'हाय रे मुझ पापी! हाय रे असहाय! हे भगवान, आप मेरे पापों के लिए मुझे कितना दंडित करते हैं।'

और, स्वर्ग की ओर अपने हाथ उठाकर, वह ऊँचे स्वर में चिल्लाई:

'हे दयालु ईश्वर, मुझे शैतान के चंगुल से बचाओ और मेरे पापों को क्षमा करो!'

उस स्थान के पास रात बिता रहे कुछ चरवाहों ने, धन्य थियोडोरा—जिसे वे मृत समझते थे—की प्रार्थना करते हुए आवाज़ सुनकर, यह देखकर आश्चर्यचकित हो गए कि वह जीवित थी, और उन्होंने ईश्वर की स्तुति की।

इसके बाद, मठाधीश ने आदेश दिया कि शिशु को उससे मठ ले जाया जाए, जिस पर थियोडोरा बहुत प्रसन्न हुई, क्योंकि इस प्रकार वह बच्चे को पालने की मेहनत और चिंताओं से मुक्त हो गई। जहाँ तक उसकी बात है, वह रेगिस्तान में भटकती रही। ठंड और गर्मी से उसका शरीर काला पड़ गया था, कड़वे आँसुओं से उसकी आँखें धुंधली हो गई थीं, और वह जंगली जानवरों के बीच रहती थी, जो भेड़ों की तरह उसकी आज्ञा मानते थे और शांत थे।

एक बार फिर शैतान ने उसे लुभाने की कोशिश की। यह देखकर कि वह बहुत भूखी थी, वह एक योद्धा के भेष में स्वादिष्ट भोजन लेकर उसके पास आया, और कहा:

'वह राजकुमार जिसने तुम्हें मारा था, अब पछताता है और उसने तुम्हारे लिए यह भोजन भेजा है, और तुमसे निवेदन करता है कि तुम उसे माफ कर दो और यह स्वीकार कर लो।'

लेकिन थियोडोरा, शैतान की चाल को पहचानते हुए, उसने क्रॉस का चिह्न बनाया और कहा:

'हे शत्रु, ईश्वर तेरी चालाकी को नष्ट कर दे और उसे व्यर्थ कर दे! ईश्वर मेरा सहायक है, और तू मुझे धोखा नहीं दे पाएगा।'

उस समय से शैतान ने उसे बहकाना बंद कर दिया।

थेओडोरा के सात वर्षों के कठिन जीवन के बाद, भिक्षुओं को उस पर दया आ गई और वे मठाधीश के पास गए, और कहा:

'पिताजी, भाई थियोडोरा पर दया करें, क्योंकि वह पहले ही अपने पाप से पश्चाताप कर चुका है; उसे क्षमा करें और उसे मठ में प्रवेश दें।'

मठाध्यक्ष ने उत्तर दिया:

'भाई थियोडोर, ईश्वर ने तुम्हारे द्वारा किए गए पाप को क्षमा कर दिया है। मठ में हमारे साथ रहो और तपस्या में स्वयं को समर्पित करो; मठ को फिर कभी मत छोड़ना, कहीं शैतान तुम्हें फिर से प्रलोभन में न ले जाए; और अपने बेटे का पालन-पोषण करो, ताकि वह तुम्हारी तपस्या का एक उत्साही अनुयायी बने।'

और मठाधीश ने उसे एक कोठरी दी, और उसे सभी मठ के कामों से मुक्त कर दिया, ताकि वह शांति से ईश्वर से प्रार्थना कर सके और इतनी बड़ी परीक्षाओं के बाद विश्राम पा सके। और थियोडोरा अपने दत्तक पुत्र, ईTheod के साथ उस कोठरी में दो साल तक रही, उसे पढ़ना-लिखना, ईश्वर का भय, साथ ही विनम्रता, आज्ञाकारिता और अन्य मठवासी सद्गुण सिखाती रही।

एक गर्मी में भीषण सूखा पड़ा, जिससे मठ के कुएँ सूख गए और झीलें भी सूख गईं। तब मठाध्यक्ष ने कुछ भाइयों से कहा:

'फादर थियोडोर के अलावा और कोई भी हमसे पानी देने के लिए ईश्वर से प्रार्थना नहीं कर सकता, क्योंकि वह ईश्वर की महान कृपा से परिपूर्ण हैं।'

धन्य व्यक्ति को अपने पास बुलाकर, मठाधीश ने कहा:

'फादर थियोडोर, एक पात्र लो और कुएँ से हमारे लिए कुछ पानी निकालो।'

लेकिन कुआँ सूखा था और उसमें पानी की एक बूँद भी नहीं थी।

थियोडोरा ने कहा, 'फादर, मुझे आशीर्वाद दीजिए!' और वह कुएँ की ओर चली गई।

उसने पात्र को कुएँ में उतारा, उसे साफ़ पानी से भर लिया और उसे मठाध्यक्ष और भाइयों के पास ले आई; यह देखकर वे सभी चकित रह गए। वे तुरंत कुएँ पर गए, जहाँ पानी बहुत पहले ही सूख चुका था, और उसमें झाँककर देखा कि वह पानी से भरा हुआ था, और उन्होंने ईश्वर की स्तुति की। वह पानी मठ की सभी आवश्यकताओं के लिए पर्याप्त था, जब तक कि बारिश नहीं आ गई और सभी सूखे हुए जलाशयों को पानी से भर दिया।

धन्य थियोडोरा, आत्मा में विनम्र होकर, भाइयों से कहा:

यह मेरे लिए नहीं किया गया था, बल्कि हमारे मठाधीश की खातिर किया गया था, जिन्होंने मुझे भेजा था और जिनका ईश्वर में दृढ़, अटूट विश्वास है – जबकि मैंने तो बस वही किया जो मुझे आदेश दिया गया था, हमारे मठाधीश की प्रार्थनाओं पर भरोसा करते हुए।

और थियोडोरा अपनी कोठरी में ही रहती रहीं, ईश्वर से प्रार्थना करती रहीं और अपने पालित पुत्र का पालन-पोषण करती रहीं।

एक शाम, सभी के सामने लड़के को अपने साथ लेकर, थियोडोरा ने उसे अपने साथ अपनी कोठरी में बंद कर लिया और उसे पढ़ाना शुरू कर दिया। हालाँकि, ईश्वर की प्रेरणा से, मठाधीश ने कुछ भाइयों को चुपके से सेल के बाहर सुनने के लिए भेजा कि वह अपने छोटे लड़के से क्या कह रही थी। थियोडोरा, लड़के को अपनी छाती से लगाकर और उसे गले लगाकर, उसे चूमते हुए बोली:

'मेरे प्रिय पुत्र!' मेरा समय आ गया है, मेरा अंत आ गया है, और मैं तुम्हें छोड़कर जा रही हूँ; लेकिन मेरे लिए मत रोना, और अपने आप से यह मत कहना, 'मैं अनाथ हूँ'—क्योंकि तुम्हारा पिता परमेश्वर है, जो अपनी कृपा से तुम्हें ढकता है, और मैं भी (यदि मैं उनके सामने साहस जुटा सकूँ) तुम्हारे लिए उनसे प्रार्थना करूँगी। मेरे अंतिम शब्दों को सुनो और उन्हें अपने हृदय पर उकेर लो: किसी भी प्राणी से और स्वयं से भी अधिक ईश्वर से प्रेम करो; पूरे हृदय से उसी से चिपके रहो; अपने होठों, हृदय, जीभ और मन से उसकी महिमा करना और उससे प्रार्थना करना कभी बंद मत करो। सामुदायिक नियमों की कभी उपेक्षा न करें, बल्कि अन्य भाइयों के साथ चर्च जाएँ: घंटों—पहली, तीसरी, छठी और नौवीं, वेस्पर्स, मैटिन्स और मध्यरात्रि की प्रार्थना के लिए। आपकी सभी प्रार्थनाएँ पश्चात्तापी हृदय, आँसुओं और आहों के साथ हों। हर दिन ईश्वर के सामने रोएँ, ताकि आपको अनंत सांत्वना प्राप्त हो। मठाधीश और भाइयों की आज्ञा का पालन करें; अपनी इच्छा का त्याग करें; अब से लेकर अपने जीवन के अंत तक द्वेष-रहित भावना बनाए रखें; अपने होठों को मौन में सीला हुआ रखें; ध्यान रखें कि किसी को दोष न लगाएँ या दूसरे के पाप का मज़ाक न उड़ाएँ; और जब आप किसी को पाप करते देखें, तो उनके लिए उस एक निर्दोष ईश्वर से प्रार्थना करें, कि वह उन्हें सुधार दे, और आपको आपके अपने पापों और शैतान के प्रलोभनों से बचाए। ना तो व्यर्थ बोलो, ना ही दुष्टता से, और ना ही ईश्वर-निंदा करके: तुम्हारे होठों से ऐसा कोई भी शब्द न निकले जिसके लिए तुम्हें न्याय के दिन जवाब देना पड़े; हृदय से नम्र और विनम्र बनो, सभी का

सम्मान अपने पूर्वजों और उपकारियों के समान करो, और स्वयं को सभी से नीच समझो। यदि आप सुनें कि कोई भाई बीमार है, तो उसे देखने में आलसी न हों और उत्साह के साथ उसकी सेवा करें, और आपको सौंपी गई हर जिम्मेदारी को बिना शिकायत के निभाएँ। गरीबी और अनासक्ति से प्रेम करें जैसे कि वे कोई अनमोल खजाना हों। मेरे जीवन को याद करो, मैं तुम्हारे साथ कैसे भटका: मठ की दीवार के पास अपनी झोपड़ी में मैंने क्या कमाया? भोजन या वस्त्र? बर्तन या कोई खजाना? ईश्वर के सिवा कुछ भी नहीं। क्योंकि किसी व्यक्ति के लिए ईश्वर और उनके दिव्य प्रेम से अधिक महत्वपूर्ण क्या है? वही हमारा खजाना है, वही हमारी संपत्ति है, वही हमारा भोजन और पेय है, वही हमारे वस्त्र और आश्रय है, वही हमारा स्वास्थ्य और बल है, वही हमारी खुशी और प्रसन्नता है, वही हमारी आशा और विश्वास है; मेरे पुत्र, उसे प्राप्त करने का प्रयत्न करो। यदि तुम उसे प्राप्त कर लेते हो, तो वही तुम्हारे लिए पर्याप्त है, और तुम उस में इस से भी अधिक आनन्दित होओगे जितना कि यदि तुमने सारी दुनिया प्राप्त कर ली होती। अपनी पवित्रता बनाए रखने का प्रयास करो: जैसे तुम अब शरीर और आत्मा से शुद्ध हो, वैसे ही अपने जीवन के अंत तक बने रहो। अपना ध्यान रखना, मेरे बच्चे, कहीं तुम परमेश्वर की आत्मा को ठेस न पहुँचाओ और उसे अपनी कामुकता और देह के भोगों में लिप्त रहने के कारण अपने से दूर न कर दो। अपने अंगों को वश में रखो; अपने शरीर को न तो विश्राम करने दो और न ही उसे मनमानी करने दो: एक अवज्ञाकारी गधे की तरह, उसे भूख, प्यास, परिश्रम और घावों से वश में रखो, जब तक कि तुम अपनी आत्मा को मसीह के सामने एक पवित्र वधू के रूप में प्रस्तुत न कर दो। शैतान की युक्तियों से सावधानीपूर्वक अपना बचाव करो; संयमी और चौकस रहो: क्योंकि शैतान कभी नहीं सोता, वह परमेश्वर की सेवा करने वाले हर एक को निगल जाना चाहता है। परमेश्वर की सहायता तुम्हें इसी शत्रु से बचाए! साथ ही, मेरे बच्चे, अपनी प्रार्थनाओं में मेरा स्मरण रखना , ताकि मुझे धर्मी न्यायी के पास दया मिले, जो न केवल खुले पापों बल्कि गुप्त पापों का भी न्याय करेंगे, और जिनके पास मैं अब जा रहा हूँ।

लड़के ने समझदारी से कहा:

'निश्चय ही, मेरे पिता, क्या आप मुझे छोड़कर जा रहे हैं, मुझे अनाथ छोड़कर? मैं आपके बिना क्या करूँगा? हाय मेरी दुर्भाग्य! हाय, मैं अनाथ हो गया हूँ, क्योंकि मैं आपसे वंचित हो गया हूँ, मेरे प्यारे पिता!'

हालाँकि थियोडोरा ने उसे सांत्वना देते हुए कहा:

'क्या मैंने तुम्हें यह नहीं कहा था कि खुद को अनाथ मत कहो, क्योंकि ईश्वर तुम्हारे संरक्षक हैं, जो तुम्हारी देखभाल करते हैं: वे तुम्हारे पिता और माता, तुम्हारे शिक्षक और मार्गदर्शक, तुम्हारे रक्षक और मोक्ष के मार्गदर्शक होंगे।'

इसके बाद, थियोडोरा उठी और, आँखों में आँसू लिए, प्रार्थना करने लगी, और कहा:

'हे ईश्वर, आप मेरे पापों और मेरे पश्चाताप को जानते हैं! आप मेरे हृदय के दुख को जानते हैं – आप जानते हैं कि मैंने आपको दुखी करने के लिए, हे प्रभु, निरंतर शोक मनाया है! आप जानते हैं कि मैंने अपने पापी शरीर को कि-कि कष्टों से विनिम्र किया है – क्योंकि मैंने दुष्टता करने और आपकी भलाई का दुख पहुँचाने की हिम्मत की, आप मेरी आत्मा के दुख को जानते हैं; आप जानते हैं कि जब से मुझे अपने पाप का एहसास हुआ है, मेरी आत्मा ने आपके क्रोध को भड़काने के लिए विलाप करना और कड़वे दुख में डूबना कभी बंद नहीं किया है। इसलिए, अब मेरी कराह सुनो, मेरी प्रार्थना पर ध्यान दो; देखो मेरा हृदय कैसे मोम की तरह पिघल रहा है; इसकी परीक्षा करो; मेरे आँसू देखो और मेरी दीन आत्मा पर दया करो! मेरे अपराधों को क्षमा करें, मेरे पापों को माफ करें, और मेरे दुष्ट कर्मों को याद न रखें: *'हे प्रभु, अपनी दया के अनुसार मुझे स्मरण करें; हे प्रभु, अपनी भलाई के निमित्त!*' (भजन संहिता 24:7)। मेरे पश्चाताप को स्वीकार करें; मेरी प्रार्थना और मेरे विलाप को स्वीकार करें; मेरी आत्मा को भी स्वीकार करें!

इस प्रकार उसने बहुत देर तक प्रार्थना की, और उसकी कही हर बात समझ में नहीं आ रही थी – केवल उसका विलाप और छाती पीटना ही सुना जा सकता था। लड़का भी उसके साथ रोया, अपनी अनाथता पर शोक मनाते हुए। उसने उसे फिर से सांत्वना दी और फिर प्रार्थना की। अंत में, उसने आनंदपूर्वक कहा:

'मैं तुझे धन्यवाद देती हूँ, हे मेरे परम दयालु सृष्टिकर्ता, कि तूने मेरी सुनी और मुझ पर दया की, और मेरी आत्मा को मृत्यु से तथा मेरी आँखों को आँसुओं से बचाया है।'

धन्यवाद के अन्य शब्द कहने और उसका हृदय प्रसन्न होने के बाद, थियोडोरा चुप हो गई। कोई यह सोच सकता था कि उसने अपनी पवित्र आत्मा अपने प्रभु के हाथों में सौंप दी है, क्योंकि अब उसकी आवाज़ नहीं सुनाई दे रही थी; केवल लड़के का रोना सुना जा सकता था। ठीक उसी क्षण, मैटिन्स (प्रार्थना सभा) का आह्वान शुरू हुआ। भिक्षुओं ने

थियोडोरा की कही सारी बातें सुनकर, मठाधीश के पास गए और उन्हें सब कुछ बता दिया। मठाधीश ने उनकी बात सुनकर आँसुओं भरी आँखों से कहना शुरू किया:

'मेरे बच्चों, आज ही रात मुझे एक दर्शन हुआ, मानो दो तेजस्वी पुरुष प्रकट हुए और मुझे स्वर्ग की ऊँचाइयों पर ले गए, जहाँ से एक आवाज़ मुझे सुनाई दी, जो कह रही थी: "आओ और देखो कि मैंने अपनी दुल्हन, थियोडोरा के लिए क्या आशीर्वाद तैयार किए हैं।"' और मैंने एक दिव्य स्वर्ग देखा, जिसकी सुंदरता और वैभव का वर्णन नहीं किया जा सकता। जो पुरुष प्रकट हुए थे, उन्होंने मुझे स्वर्ग में ले जाकर महल और वहाँ तैयार सोने का पलंग दिखाया, जिसके पास एक देवदूत खड़ा होकर उसकी रखवाली कर रहा था। मैंने मुझे मार्गदर्शन कर रहे लोगों से पूछा: 'यह महल और यह पलंग किसके लिए तैयार किया गया है?' और उन्होंने मुझसे कहा: 'थोड़ी देर प्रतीक्षा करो, और तुम ईश्वर की महिमा को देखोगे।' शीघ्र ही मैंने स्वर्गदूतों, शहीदों और पवित्र पुरुषों की कतारें देखीं, जो आनंददायक गायन के साथ चल रहे थे, जिसकी मधुरता का वर्णन नहीं किया जा सकता; उनके बीच मैंने एक सुंदर महिला को महान महिमा में देखा; उसे हॉल में ले जाकर, उन्होंने उसे पलंग पर बिठाया, और अत्यंत मधुर गीत गाए; और मैं, श्रद्धापूर्वक, उस सम्माननीय पत्नी के सामने झुक गया। और देवदूत ने मुझसे कहा: 'क्या तुम जानते हो यह कौन है?' मैंने उत्तर दिया: 'मैं नहीं जानता, मेरे प्रभु।' तब उन्होंने मुझसे कहा: 'यह तुम्हारा भिक्षु, थियोडोर है; स्वभाव से वह एक महिला थी, लेकिन रूप में वह एक पुरुष था। थोड़े समय तक विवाहित जीवन जीने के बाद, थियोडोरा ने ईश्वर के लिए संसार त्याग दिया और आपके मठ में कठोर परिश्रम किया; और जब उस पर एक बच्चे को जन्म देने वाली कुंवारी होने का झूठा आरोप लगाया गया, तो उसने यह प्रकट नहीं किया कि वह एक महिला है; जैसे कि वह बच्चे की सच्ची पिता हो, उसने बच्चे को अपने पास रख लिया और उसका पालन-पोषण किया। जब उन्हें आपके मठ से निकाल दिया गया, तो उन्होंने बहुत कष्ट सहे, घास और समुद्र के पानी पर जीवित रहीं, ठंड, गर्मी और गरीबी को सहन किया, और राक्षसों के हाथों कई परीक्षाओं को झेला। इन सब के लिए, दयालु ईश्वर ने उन्हें इतना ऊँचा उठाया है: क्योंकि उन्होंने उन्हें अपनी वधू के रूप में प्रिय माना और सभी संतों के साथ उन्हें अपने राज्य की वारिस बना दिया।' यह सुनकर, मैं रोने लगा, क्योंकि मैं इस रहस्य से अनजान था और एक झूठ पर विश्वास करके, मैंने उस संत का अपमान करते हुए उन्हें अपमानपूर्वक मठ से निकाल दिया था; रोते-रोते, मैं जाग गया। इसलिए, मेरे बच्चों, इस क्षण मेरा हृदय आनंद और दुख दोनों से भर गया है। मैं इस बात पर प्रसन्न हूँ कि मुझे एक अति महिमामय दर्शन देखने का, जैसा किसी मानव नेत्र ने कभी नहीं देखा, और पवित्र भजनों की अति मधुर ध्वनियों को सुनने का, जैसा किसी कान ने कभी नहीं सुना, योग्य समझा गया; फिर भी मैं इस बात पर दुखी हूँ और रोता हूँ कि हमने परमेश्वर की दासी और उनकी प्रिय वधू को, जो हमारे बीच रहती थी, पहचाना नहीं, और अनजाने में, लंबे समय तक उसका अपमान किया।

इसके बाद, मठाधीश ने भ्राताओं को इकट्ठा किया और धन्य थियोडोरा की कोठरी में गए और दरवाज़ा खटखटाते हुए कहा:

'माँ थियोडोरा, मुझे आशीर्वाद दीजिए!'

लेकिन कोई जवाब नहीं आया, क्योंकि थियोडोरा पहले ही प्रभु के पास जा चुकी थीं। उस छोटे लड़के ने, उनके लिए रोते-रोते, सो लिया था, और वे उसे बड़ी मुश्किल से जगा पाए। सेल में प्रवेश करने पर, भाइयों ने धन्य थियोडोरा को फर्श पर लेटे हुए देखा; उनके हाथ छाती पर जुड़े हुए थे और उनकी आँखें बंद थीं, जबकि उनका चेहरा एक देवदूत की तरह सुंदरता से चमक रहा था। जब उन्होंने उनके पवित्र शरीर को दफ़नाने के लिए तैयार करना शुरू किया, तो मठाधीश ने उनके स्तनों को ढक दिया, जो लंबे समय तक उपवास करने से मुरझा गए थे; और सभी को एहसास हुआ कि वह एक महिला थीं। मठाधीश ने भ्राताओं को आज्ञा दी कि वे इस रहस्य को किसी से न खोलें, जब तक कि उन लोगों को बुलाया न जाए जिन्होंने पूजनीय पर उनकी कुँवारीपन का अपमान करने का आरोप लगाकर बदनामी की थी, और उन्होंने भ्राताओं को एनाट के मठाधीश के पास भेजते हुए कहा:

'हे पिता, हम आपसे विनती करते हैं: अपने भ्राताओं के साथ हमारे पास आइए, क्योंकि आज हमारे लिए एक बड़ा पर्व का दिन है और हम चाहते हैं कि आप हमारे साथ इसका उत्सव मनाएँ।'

और एनात के मठाध्यक्ष अपने भिक्षुओं के साथ आए; और उन्होंने उन्हें धन्य थियोडोरा के पवित्र शरीर के पास ले जाकर कहा:

'पिताजी, आपकी पुत्री का पति मर गया है।'

उस पवित्र व्यक्ति का शव दिखाने के बाद, उन्होंने पूछा:

'क्या यह थियोडोरा नहीं है?'

और एनात के मठाधीश ने उत्तर दिया:

'निस्संदेह, वही है।'

उन्होंने उसके साथ आए भिक्षुओं से पूछा:

'क्या आप उसे जानते हैं?'

उन्होंने उत्तर दिया:

'हम उसे अच्छी तरह जानते हैं: वह कपटी भाई थियोडोर है, जिसने कुंवारी का अपमान किया; ईश्वर उसे उसके कर्मों के अनुसार फल दे!'

तब ऑक्टोडेकाटोस के मठाधीश ने उसकी चोगा खोली और, उसके स्त्री स्तनों को प्रकट करते हुए, कहा:

'क्या यह पुरुष का शरीर है? हाँ, हमसे भूल हुई, फादर: हमने सोचा कि वह पुरुष है, लेकिन वास्तव में वह एक महिला थी; उसने अपना रूप बदल लिया था और पुरुष का नाम ले लिया था, और वह हम पापियों के बीच एक देवदूत की तरह रहती थी, जो इस रहस्य से अनजान थे, और उसने हमारे हाथों बहुत कष्ट सहे। अब, हालाँकि उसकी मृत्यु ने यह प्रकट कर दिया है कि वह कौन थी और क्या है, क्योंकि वह धर्मी और धर्मपरायण और हमारे परमेश्वर मसीह को प्रसन्न करने वाली है, जैसा कि मैंने उसे स्वर्गीय महल में बड़ी महिमा और प्रकाश के साथ स्वर्गदूतों और सभी संतों के साथ आनंदित होते देखा है।

तब वहाँ उपस्थित सभी लोग इस महान रहस्य से भय और आश्चर्य से भर गए; जबकि जिन्होंने उस पाप के लिए उसकी बदनामी की थी, जिसमें वह निर्दोष थी, वे गहराई से लज्जित हुए, और हम सभी फूट-फूट कर रो पड़े, यह कहते हुए:

'हाय हम पर, कि हमने इतने लंबे समय तक परमेश्वर की दासी का अपमान किया!'

और, उनके पवित्र अवशेषों के सामने साष्टांग दंडवत प्रणाम करके, उन्होंने अपने आँसुओं के बीच कहा:

'हे ईश्वर की दासी, हमें क्षमा करें, क्योंकि हमने अपनी अज्ञानता में आपके विरुद्ध पाप किया है!'

इसके बाद, ऑक्टोडेकेटन के मठाधीश के पास परमेश्वर का एक स्वर्गदूत प्रकट हुआ, और कहा:

'एक घोड़ा लो और नगर की ओर प्रस्थान करो; रास्ते में जो भी सबसे पहले मिले, उसे साथ लेकर यहाँ आओ।'

मठाधीश तुरंत चल पड़े, और सड़क पर अपनी ओर आते हुए एक आदमी को देखकर उससे पूछा:

– तुम कहाँ जा रहे हो?

उसने उत्तर दिया:

'मैंने सुना है कि मेरी पत्नी किसी मठ में मर गई है, और मैं उसे देखने जा रहा हूँ।'

मठाधीश उस आदमी को अपने साथ लेकर उसे एक घोड़े पर बिठाकर मठ लौटा और उसे पूज्य नन के पवित्र अवशेषों के पास ले गया। थियोडोरा को देखकर, उसके पति ने उसके अवशेषों के सामने जोर-जोर से और बेकाबू होकर रोना शुरू कर दिया। ऑक्टोडेकाटन मठ के आसपास रहने वाले अनगिनत संतों ने, जो कुछ भी हुआ था वह सब सुनकर, मोमबत्तियों और धूपदानों के साथ इकट्ठा हुए; और पूजनीय थियोडोरा के पवित्र शरीर पर अनुष्ठान करने के बाद, उन्होंने उसे उसी मठ में सम्मान के साथ दफनाया जहाँ उन्होंने इतनी भक्ति से सेवा की थी। और उन्होंने कई दिनों तक आनंदपूर्वक उत्सव मनाया, मसीह ईश्वर की महिमा की और उनकी प्रिय वधू - आदरणीय थियोडोरा की स्तुति की। जहाँ तक उनके पति का सवाल है, उनके दफ़न के बाद, उन्होंने वह कोठरी माँगी जिसमें उनकी पत्नी—या यूँ कहें कि मसीह की दुल्हन—रहती थीं; और, संन्यास का व्रत लेने के बाद, उन्होंने वहाँ उपवास, प्रार्थना और आँसुओं को समर्पित कर दिया, पूजनीय थियोडोरा के कार्यों को याद करते हुए, और, थोड़े ही समय बाद, प्रभु के पास चले गए। जहाँ तक युवा थियोडोरस का सवाल है, जिसे पूजनीय थियोडोरा अपना पुत्र मानती थीं, उसने अपने पालक पिता—या, बल्कि, अपनी माता, पूजनीय थियोडोरा—के चरित्र, कर्म और संपूर्ण सदाचारी जीवन को विरासत में पाया। उन्होंने इतनी पूर्णता प्राप्त की कि, मठाधीश की मृत्यु पर, सभी संतों ने उन्हें उनका उत्तराधिकारी चुना; वह एक अच्छे पिता थे, जो अपने बच्चों को मोक्ष के मार्ग पर मार्गदर्शन करते थे, और उन्होंने स्वयं आदरणीय थियोडोरा के पदचिह्नों पर चलकर स्वर्गीय निवासों में उनके साथ निवास किया।

हे प्रभु, अपने संतों की प्रार्थनाओं के द्वारा, हमें अपने स्वर्ग के राज्य से वंचित न करें। आमीन।

कॉन्टाकियन, स्वर 2:

उपवास से अपने शरीर को क्षीण करके, आपने अपने पापों के लिए सतर्क प्रार्थनाओं के साथ सृष्टकिर्ता से पूर्ण क्षमा प्राप्त करने हेतु वनिती की; और आपको पापमोचन प्राप्त हुआ, जसिसे आपने पश्चाताप का मार्ग दखिाया।

पूज्य यूफ्रोसीन की स्मृति

11 सतिंबर को स्मरणोत्सव

आदरणीय यूफ्रोसनिस[6213] का जन्म वनिम्र माता-पतिा से हुआ था, फरि भी उन्होंने अपने गुणों से कुलीन जन्म वालों को भी पीछे छोड़ दयिा। कई लोग, अपनी वंशावली की कुलीनता के बावजूद, कसिी भी प्रकार के सद्गुणों से रहति होते हैं, और इस प्रकार वे नरक की गहराइयों में गरि जाते हैं। इसके वपिरीत, यह असामान्य नहीं है कि वनिम्र पृष्ठभूमि के लोग, अपनी धन्य वनिम्रता के माध्यम से, परमेश्वर के स्वर्ग में उठा लिए जाएँ। इसी प्रकार इस पूजनीय यूफ्रोसनिस को भी एक दर्शन में स्वर्ग में देखा गया था, जसिे उन्होंने अपने पवत्रि जीवन के माध्यम से प्राप्त कयिा।

मठ में, यूफ्रोसनिस रसोई में अपने भाइयों की सेवा करते थे, और उन्होंने यह सेवा लोगों की सेवा करने की तरह नहीं, बल्कि ईश्वर की सेवा करने की तरह - महान वनिम्रता और आज्ञाकारति के साथ की। आज्ञाकारति में दनि-रात परशि्रम करते हुए, उन्होंने प्रार्थना या उपवास को कभी भी अनदेखा नहीं कयिा। उनका धैर्य आश्चर्यजनक था: क्योंकि उन्होंने बड़ी कठनिाइयों, अपमान, दुर्व्यवहार और बार-बार होने वाली परेशानयिों को सहन कयिा। जैसे वह रसोई में शारीरकि आग जलाते थे, वैसे ही वह ईश्वर के प्रतपि्रेम की आध्यात्मकि अग्नि से प्रज्वलति थे, और उनका हृदय उनके लिए जलता था। भाइयों के लिए भोजन तैयार करते हुए, उसने अपने सदाचारी जीवन के द्वारा, अपने लिए परमेश्वर के राज्य में एक भोजन तैयार कयिा, ताकि वहाँ वह उन लोगों के साथ स्वर्गीय आनंद से परपिूर्ण हो सके जनिके बारे में कहा गया है: *'धन्य है वह जो परमेश्वर के राज्य का भोजन चखेगा'* (लूका 14:15)। उन्होंने गुप्त रूप से प्रभु की सेवा की, ताकि उन्हें खुले तौर पर पुरस्कृत कयिा जा सके, जैसा कि वास्तव में हुआ भी।

इस प्रकार प्रभु ने प्रकट कयिा कि उनके सेवक यूफ्रोसनिस ने क्या कमाया था।

एक नश्चिति पुरोहति, जो यूफ्रोसनिस के साथ उसी मठ में रहता था, हमेशा ईश्वर से प्रार्थना करता था कि वह उसे मूर्त रूप में वे भवष्यि की आशीर्वादें दखिाएँ जो उनके प्रेम करने वालों के लिए तैयार की गई हैं। और इस प्रकार, एक रात, उसे एक दर्शन हुआ: उसे ऐसा प्रतीत हुआ कि वह स्वर्ग में खड़ा था, और उसकी अकथनीय सुंदरता को वस्मिय और आनंद के साथ नहिार रहा था; वहाँ उसने अपने मठ के रसोइए, यूफ्रोसनिस को देखा।

उसके पास आकर, पुरोहति ने पूछा:

'भाई यूफ्रोसनिस, यह क्या है? क्या यह सचमुच स्वर्ग है?'

यूफ्रोसनिस ने उत्तर दयिा:

'हाँ, फादर, यह स्वर्ग ही है।'

पुरोहति ने उससे फरि पूछा:

'और आप यहाँ कैसे पहुँचे?'

यूफ्रोसनिस ने उत्तर दयिा:

'ईश्वर की महान दया से मैं यहाँ रहने आया हूँ, क्योंकि यह ईश्वर के चुने हुओं का नविास है।'

पुरोहति ने पूछा:

'क्या तुम्हारे पास इन सुंदरीओं पर कोई शक्ति है?'

यूफ्रोसनिस ने उत्तर दयिा:

'मैं तुम्हें जो दखि रहा है, उसमें से जतिना दे सकती हूँ, उतना देती हूँ।'

पुरोहति ने कहा:

'क्या आप मुझे भी इन आशीर्वादों में से कुछ नहीं दे सकतीं?'

यूफ्रोसनिस ने उत्तर दयिा:

[6213] वह 9वीं शताब्दी में अमोराइटों के प्रदेशों में, फलिस्तिीन में, जॉर्डन के पास अपने तपस्वी श्रम करता और रहता था।

'मेरे ईश्वर की कृपा से, जो चाहो ले लो।'

तब पुजारी ने सेबों की ओर इशारा करते हुए उन्हें माँग लिया। यूफ्रोसिनिस ने तीन सेब उठाए और उन्हें पुजारी की रूमाल में रख दिया, कहते हुए:

'जो तुमने माँगा है, वह लो और उसका आनंद लो।'

उसी क्षण, चर्च की घंटी मैटिन्स (प्रार्थना सभा) के लिए बजने लगी। पुजारी, होश में आकर, सोचने लगा कि उसने जो देखा था वह केवल एक सपना था; लेकिन, जब उसने अपनी रूमाल निकाली, तो उसमें उसे वही सेब मिले जो उसे अपनी दिव्यदृष्टि में यूफ्रोसिनिस से प्राप्त हुए थे, और उसने उनसे एक अकथनीय सुगंध आती हुई महसूस की, जिसने उसे आश्चर्यचकित कर दिया। अपने बिस्तर से उठकर उन सेबों को उस पर रखकर, वह चर्च गया और सुबह की प्रार्थना सभा में यूफ्रोसिनिस को खड़ा हुआ देखा। उसके पास जाकर, पुरोहित ने उससे उसके सम्मान की कसम देकर विनती की कि वह बताए कि वह उसी रात कहाँ था।

यूफ्रोसिनिस ने उत्तर दिया:

'मुझे क्षमा करें, फादर, कल रात मैं वहीं थी जहाँ आपने मुझे देखा था।'

पुरोहित ने कहा:

'यही कारण है कि मैंने आपसे ईश्वर की इच्छा प्रकट करने की कसम खिलवाई थी, ताकि आप सत्य को छिपा न सकें।'

तब विनम्र यूफ्रोसिनिस ने कहा:

'आपने, पिताजी, प्रभु से प्रार्थना की थी कि वे आपको मूर्त रूप में अपने चुने हुओं का प्रतिफल दिखाएँ, और प्रभु ने कृपा करके यह आपके आदरणीय के दर्शन के लिए मुझ जैसे नीच और अयोग्य मनुष्य के माध्यम से दिखाया, और इस प्रकार आपने मुझे मेरे ईश्वर के स्वर्ग में देखा।'

पुरोहित ने पूछा:

'और जब मैंने आपसे स्वर्ग में कुछ माँगा, तो आपने मुझे क्या दिया, पिताजी?'

यूफ्रोसिनिस ने उत्तर दिया:

'मैंने तुम्हें तीन सेब दिए – वही जो तुमने अपनी कोठरी में अपने बिस्तर पर रखे थे; लेकिन मुझे माफ कर दो, पिताजी, क्योंकि मैं एक कीड़ा हूँ, इंसान नहीं।'

मैटिन्स के अंत में, पुरोहित ने भाइयों को इकट्ठा किया और उन्हें तीन स्वर्गीय सेब दिखाते हुए, विस्तार से बताया कि उसने क्या देखा था। फिर सभी ने उन सेबों से एक अकथनीय सुगंध और आध्यात्मिक आनंद का अनुभव किया, और भावनाओं से भरकर, पुरोहित द्वारा बताई गई बातों पर आश्चर्यचकित हुए। वे यूफ्रोसिनिस के पास परमेश्वर के सेवक को प्रणाम करने के लिए भोजनशाला गए, लेकिन उन्हें वह फिर नहीं मिला, क्योंकि वह चर्च छोड़कर मानव महिमा से दूर, छिपने के लिए चला गया था, और वे उसे किसी भी तरह से ढूंढ नहीं सके। वह ठीक-ठीक कहाँ गया था, इस बारे में गहराई से जानने की कोई ज़रूरत नहीं है: क्योंकि अगर स्वर्ग उसके लिए खुल गया था, तो वह और कहाँ जा सकता था? भाइयों ने उन सेबों को आपस में बाँट लिया और उन्हें कई लोगों को एक आशीर्वाद के रूप में, और विशेष रूप से उपचार के लिए वितरित किया: क्योंकि उन्हें चखने वाले बीमार लोग अपने रोगों से ठीक हो गए। और सेंट यूफ्रोसिनिस के इस उपहार से सभी को बहुत लाभ हुआ; और, न केवल पर्चमेंट पर बल्कि अपने हृदयों में भी वर्णित अद्भुत दृष्टि को संरक्षित करते हुए, उन्होंने महान कार्यों के लिए प्रयास किया और ईश्वर को प्रसन्न किया।

आदरणीय यूफ्रोसीन की प्रार्थनाओं के द्वारा, प्रभु हमें भी स्वर्गीय आवासों में एक स्थान प्रदान करें! आमीन।

पवित्र शहीद ॥ की स्मृति

11 सितंबर को स्मरणोत्सव

संत शहीद इया वज़िाडा शहर की मूल नविासी थीं[6214] ; 9,000 ईसाइयों के साथ, उन्हें फारसी राजा सावर द्वारा बंदी बना लयिा गया था[6215] । मसीह में अपने वशि्वास की घोषणा करने के लिए, उन्हें मगों के प्रमुख के सामने लाया गया, जसिने उन्हें मसीह का त्याग करने के लिए मजबूर करने का प्रयास कयिा। लेकनि वह उसकी वनितयिों के आगे नहीं झुकी और सच्चे धर्म पर अडगि रही। इसके लिए, उसे एक पूरे साल तक कैद में रखा गया और भूखा रखा गया। फरि उसे उसकी कोठरी से बाहर नकिाला गया और गाँठदार लाठयिों से बुरी तरह पीटा गया, जसिके बाद उसे वापस जेल ले जाया गया, जहाँ वह पंद्रह साल तक रही। इस समय के बीत जाने के बाद, उसे एक बार फरि बाहर लाया गया और उसके घुटनों, जांघों और बाहों को रस्सयिों से इतनी कसकर बांधा गया कि उसकी हड्डयिाँ टूट गईं। फरि उन्होंने उसकी कमर और पेट पर मोटे चमड़े के पट्टों से उसे पीटना शुरू कर दयिा, और अंत में उन्होंने उसका सरि काट दयिा[6216] ।

पवत्रि शहीदों डायोडोरस और डडिमिस की स्मृति

11 सतिंबर को स्मरणोत्सव

ये पवत्रि शहीद सीरयिा के लाओदकियिा से थे। मसीह में वशि्वास की घोषणा करते हुए, उन्होंने मूर्तपिूजकों को मसीह के बारे में सखिाया और उनमें से कई को धर्मांतरति कर बपतस्मिा दयिा। इसके लिए, उन्हें मुकदमे के लिए लाओदकियिा के राज्यपाल के सामने लाया गया, और वहाँ उन्होंने नडिर होकर मसीह की गवाही दी। उन्हें भयानक यातनाएँ दी गईं, लेकनि उन्होंने मसीह का त्याग नहीं कयिा; नडिर होकर उन्होंने मूर्तपिूजक चापलूसी की नदिा की और राज्यपाल को झूठे देवताओं की पूजा के लिए सच्चे ईश्वर को त्याग देने के लिए फटकारा। अपने होठों पर प्रार्थना लिए, उन्होंने अपने दुखों के बीच अपना प्राण प्रभु के हवाले कर दयिा।

25 सतिंबर

12 सतिंबर (पुराना कैलेंडर)

पवत्रि ह्येरोमार्टायर ऑटोनोमस का जीवन और शहादत

12 सतिंबर को स्मरणोत्सव

संत ऑटोनोमस डायोक्लेटयिन के शासनकाल में इटली में एक बशिप थे। जब ईसाइयों पर एक भयंकर उत्पीड़न शुरू हुआ, तो ऑटोनोमस ने पवत्रि सुसमाचार में प्रभु द्वारा कहे गए शब्दों को याद कयिा: *'जब वे तुम्हें एक नगर में सताएँ, तो दूसरे नगर में भाग जाओ'* (मत्ती 10:23), और, इटली छोड़कर, वे बथिुनयिा चले गए, जहाँ, ईश्वर की व्यवस्था से, वे सोरेओस नामक एक गाँव में बस गए[6217] । वहाँ, संत ऑटोनमस को कोर्नेलयिस नामक एक आतथि्यशील व्यक्ति ने आश्रय दयिा। वे कुछ समय तक उनके साथ रहे और मसीह का प्रचार करते हुए, कई ग्रीकों को ईसाई धर्म में परविर्तति कयिा। और वहाँ उन्होंने ईश्वर के लिए कई आत्माओं को जीता, क्योंकि संत ऑटोनमस की शकि्षा सुनने के लिए कोर्नेलयिस के घर पर बड़ी भीड़ इकट्ठा होती थी। प्रेरतिों की तरह, उन्होंने नडिरता से ईश्वर का वचन प्रचार कयिा, क्योंकि उसी पवत्रि आत्मा का उनमें कार्य कर रहा था जो एक बार पवत्रि प्रेरतिों पर आग की जीभों के रूप में अवतरति हुआ था। ऑटोनोमस के उपदेश के माध्यम से, पवत्रि आत्मा ने लोगों के हृदयों में ईश्वर के प्रति प्रेम और धार्मकिता की ज्योति प्रज्वलति की, ताकि जो भी उसकी शकि्षा सुनते थे, वे भावुक हो उठते और स्वेच्छा से उसका संदेश स्वीकार करते हुए,

---

[6214] वज़िाड फारसी साम्राज्य के मुख्य प्रांत का एक शहर है।

[6215] सापor II, जनि्हें महान के नाम से जाना जाता है, एक फारसी राजा थे जनि्होंने 310 से 381 ईस्वी तक शासन कयिा; वे रोमनों के खलिाफ अपनी सफल युद्धों के लिए जाने जाते हैं; वे ईसाई धर्म के एक क्रूर उत्पीड़क थे।

[6216] संत इज़ेक की शहादत का समय 362–384 माना जाता है।

[6217] बत्थिनियिा – एशयिा माइनर का एक प्रांत। – सोरेओस, या सोरेई – नकिोमेडयिा की खाड़ी या अस्ताके की खाड़ी में प्रवेश करने वाले जहाजों के दाहनि (स्टारबोर्ड) पक्ष पर स्थति था।

उससे पवित्र बपतस्मिा का अनुरोध करते थे। और उस क्षेत्र में उन्होंने इतने लोगों को पवित्र वश्विास की ओर ले आए कि कोर्नेलयिस के घर में वश्विासयिों की पूरी मंडली के लिए जगह नहीं रह गई; जसि पर संत ऑटोनमस ने स्वर्गीय सेनाओं के सेनापति, महादूत संत माइकल के नाम पर ईसाइयों के लिए एक चर्च का नर्मिाण कयिा, और उनसे प्रकाशति हुए उन सभी नए लोगों को उनकी सुरक्षा में सौंप दयिा; जबकि उन्होंने स्वयं कोर्नेलयिस को एक डकिन के रूप में नयिुक्त कयिा और उसे मसीह के झुंड की देखभाल सौंपी, और लाइकोनयिा और इसौरयिा[6218] के लिए रवाना हो गए, यह इच्छा रखते हुए कि वे वहाँ भी धर्म के प्रचारक बनें।

इन प्रदेशों में कुछ समय तक परमेश्वर का वचन प्रचार करने के कार्य में परश्रिम करने के बाद, संत ऑटोनमस एक बार फरि कॉर्नेलयिस के पास लौटे: वह मसीह के उस झुंड से मलिना चाहते थे जसिे उन्होंने इकट्ठा कयिा था। उन्होंने कॉर्नेलयिस को एक प्रेस्बटिर के रूप में नयिुक्त कयिा और, उनके साथ मलिकर, मानव जाति के उद्धार के लिए सेवा करने लगे।

जब अधर्मी सम्राट डायोक्लेटयिन नकिोमेडयिा में मसीह के सभी अनुयायियों को नष्ट करने के उद्देश्य से पहुँचे, तो मूर्तपिूजकों ने संत ऑटोनॉमस की भी तलाश शुरू कर दी, क्योंकि वह ईसाइयों में सबसे प्रसद्धि थे। लेकनि संत, और भी अधकि लोगों को शैतान के अंधकार से नकिालकर सच्चे ईश्वर के ज्ञान के प्रकाश में लाने की इच्छा रखते हुए, अपने अत्याचारयिों के हाथों में आत्मसमर्पण नहीं हुए। चर्च के भले के लिए स्वयं को सुरक्षति रखते हुए, संत ऑटोनमस ने यूक्सनि सागर[6219] के तट पर स्थति क्लॉडयिोपोलसि की ओर नौकायन कयिा, जहाँ उन्होंने परमेश्वर के वचन के बीज बोए; ये, मानव हृदयों की अच्छी भूमि पिर गरिकर, परमेश्वर की कृपा से शीघ्र ही बहुत आध्यात्मकि फल दए। वहाँ भक्ति से संबंधति सभी मामलों को वधिवित व्यवस्थति करने और वश्विासयिों को मोक्ष के मार्ग पर स्थापति करने के बाद, संत ऑटोनोमोस एक बार फरि सोरेओस लौट आए।

जब उन्होंने देखा कि वहाँ वश्विासयिों की संख्या और भी बढ़ गई है, तो संत ने कोर्नेलयिस को बशिप नयिुक्त कयिा, जबकि वे स्वयं एशयिा की भूमि[6220] के लिए रवाना हो गए, जहाँ उन्होंने अधर्मीपन की काँटों को उखाड़ना और एक ईश्वर में पवित्र वश्विास फैलाना शुरू कयिा। और यहाँ, ईश्वर की कृपा से, उन्होंने अपने उपदेश द्वारा मूर्तपिूजा की वेदयिों को नष्ट करते हुए और लोगों के हृदयों में - पवित्र आत्मा के लिए - आध्यात्मकि मंदरिों का नर्मिाण करते हुए, कई लोगों को भ्रम और अनंत वनिाश से बचाया।

इसके तुरंत बाद, संत ऑटोनमस ने एक बार फरि कॉर्नेलयिस और उनके सुपुर्द कए गए झुंड का दौरा कयिा। यह देखकर कि वहाँ सभी को परमेश्वर के वधिान की शक्षिा दी जा रही थी और वे सद्गुणों में फल-फूल रहे थे, ऑटोनमस को इससे सांत्वना मलिी और उन्होंने परमेश्वर का धन्यवाद कयिा कि उनकी मेहनत व्यर्थ नहीं गई थी और उनके आध्यात्मकि बच्चे—जन्हिें उन्होंने सुसमाचार के माध्यम से जन्म दयिा था—बढ़ गए थे।

सोरेओस नगर के पास लमि्ना नामक एक गाँव था; इस गाँव के नविासी अभी भी मूर्तपिूजा के अंधकार में डूबे हुए थे। और इस प्रकार, उनके पास पहुँचकर, संत ऑटोनॉमस ने उन पर मसीह का उपदेश देना शुरू कयिा और वहाँ कई लोगों को ईसाई धर्म में परविर्तति करने के बाद, उन्हें पवित्र वश्विास के रहस्य सखिाए, बपतस्मिा के माध्यम से उन्हें प्रबुद्ध कयिा, और इस प्रकार उन्हें मसीह के चुने हुए झुंड में लाया।

एक दनि, अवश्विास में बने रहे स्थानीय नविासी अपनी एक दुष्ट मूर्ति के सम्मान में एक त्योहार मना रहे थे; राक्षसों को बलदिान देते हुए, वे अपने मूर्तपिूजक मंदरि में आनंद मना रहे थे; तब ईसाई—जो तब तक पहले से ही बड़ी संख्या में थे—एकत्रति हुए, उत्सव मना रहे मूर्तपिूजकों के पास गए, उनके वेदयिों को उलट दयिा, उनकी सभी मूर्तयिों को तोड़ दयिा, और उनके मंदरि को धूल चटा दी। इससे उन्होंने अवश्विासयिों को दखिा दयिा कि उनके देवता बेकार थे, क्योंकि जब उन्हें कुचल दयिा गया तो वे वरिोध नहीं कर सके, और जब उन्हें तोड़ दयिा गया तो वे चल्लिाए भी नहीं।

[6218] लकिोनयिा – एशयिा माइनर का एक क्षेत्र, जो इसौरयिा, जो कि एशयिा माइनर का ही एक क्षेत्र था, के समीप था, और जसिका एक ही नाम का शहर भी था। इसौरयिा पहले क्रमशः फ्राइजयिा, पसिीडयिा और लकिोनयिा का हस्सिा रहा था।

[6219] यूक्सनि सागर, या पोंटस – काला सागर का प्राचीन नाम, जसि परंपरा के अनुसार, पहले 'एक्सनि' कहा जाता था, यानी तूफानों के कारण अतथि-वरिोधी; जब, 7वीं शताब्दी से, इसके तटों पर यूनानी उपनविेशों द्वारा बस्ती बसाना शुरू कयिा गया, तो इसे 'यूक्सनि' के नाम से जाना जाने लगा, यानी अतथि-सत्कार करने वाला।

[6220] एशयिा एक रोमन प्रांत था जसिमें एशयिा माइनर का पश्चमिी भाग शामलि था, जसि अन्यथा 'प्रोकॉन्सुलेर एशयिा' के नाम से जाना जाता था।

ऐसी अपमानजनक पराजय से क्रोधित होकर, मूर्तिपूजकों ने ईसाइयों से उनके देवताओं की मूर्तियों को नष्ट करने का बदला लेने का संकल्प लिया और एक उपयुक्त अवसर की प्रतीक्षा करने लगे।

जब उन्हें उस दिन के बारे में पता चला जिस दिन प्रभु के सेवक, ऑटोनम, को सोरेओस शहर में स्थित महादूत माइकल के चर्च में ईश्वर को एक रक्तहीन बलिदान अर्पित करना था, वे लिम्ना से बड़ी संख्या में एकत्रित हुए, साथ ही अन्य पड़ोसी गांवों के मूर्तिपूजकों के साथ, और गुप्त रूप से ईश्वर के घर पर अचानक हमला करने और ईसाई पादरी, संत ऑटोनमस को मारने की तैयारी करने लगे, जिसमें वे सफल रहे।

जब दिव्य लिटिर्जी का अनुष्ठान हो रहा था, तब बहुदेववादियों की भीड़ ने चर्च पर हमला कर दिया: उनमें से कुछ ने हथियार उठा रखे थे, तो कुछ ने लाठियाँ या पत्थर; उन्होंने वहाँ मौजूद सभी ईसाइयों को चर्च से बाहर खदेड़ दिया और संत ऑटोनॉमस की निर्दयता से हत्या कर दी: उन्होंने पवित्र स्थल के भीतर उनका अत्याचार किया, जिससे पूरा पवित्र स्थल उनके पवित्र रक्त से लथपथ हो गया। इस प्रकार, एक रक्तहीन बलिदान अर्पित करते हुए, संत स्वयं को स्वर्गीय वेदी पर एक रक्तरंजित बलिदान के रूप में अर्पित कर दिया गया[6221] ।

संत ऑटोनमस की हत्या करने के बाद, मूर्तिपूजकों ने उन पर पत्थरों की बौछार कर दी, जिससे उनकी मृत्यु हो गई। अपने देवताओं के अपमान का बदला लेने के लिए ईसाइयों से बदला लेने में सफल होने पर अपनी विजय का जश्न मनाने के बाद, वे सभी तितिर-बितिर हो गए। और संत वधस्थल पर पड़े थे - और तब चर्च में उनके पिता और अच्छे चरवाहे की हत्या पर बड़ी हलचल मच गई और श्रद्धालुओं का अपार शोक छा गया। मरियम नाम की एक डीकोनेस ने पवित्र शहीद के पवित्र शरीर को लिया और श्रद्धापूर्वक उसे अंतिम संस्कार के लिए रख दिया।

संत ऑटोनोमस के दफ़न के कई साल बाद, जब कॉन्स्टेंटाइन महान सिंहासन पर बैठे, तो राजा ने सेवेरियन नामक एक कुलीन व्यक्ति को अलेक्जेंड्रिया भेजा। समुद्र के ख़राब मौसम के डर से, वह समुद्र मार्ग से नहीं बल्कि तट के किनारे ज़मीनी मार्ग से यात्रा किया। ईश्वर की व्यवस्था से, वे उस स्थान से गुज़र रहे थे जहाँ पवित्र शहीद ऑटोनमस का शरीर पड़ा था; और अचानक घोड़े रुक गए और आगे बढ़ने से इनकार कर दिया। चाहे उन्हें कितना भी कोड़ा मारा जाए, उनमें से एक भी उस जगह से हिल नहीं सका; उनके कंधों से वह बोझ हटा दिया गया जो वे उठाए हुए थे, लेकिन तब भी वे अपनी राह पर आगे नहीं बढ़ सके: ऐसा लगा मानो कोई अदृश्य हाथ उन्हें पीछे रोक रहा हो; और सेवेरियन बहुत हैरान रह गया।

सेवेरियन के साथ यात्रा कर रहा था एक धार्मिक व्यक्ति, जिसे ईश्वर के रहस्यों को जानने की क्षमता प्राप्त थी। उसने सेवेरियन से कहा:

'तुम्हें इस जगह पर उस शहीद के सम्मान में एक चर्च बनाना चाहिए, जिसका शरीर यहाँ दफ़न है; और अगर तुम ऐसा करने का व्रत लेते हो, तो तुम देखोगे कि तुम्हारे घोड़े फिर से तुरंत चल पड़ेंगे।'

सेवरियन ने खुशी-खुशी ऐसा करने का वादा किया, और उसके घोड़े सचमुच तुरंत ही चल पड़े और तेज़ी से दौड़ पड़े। अलेक्जेंड्रिया से लौटने से पहले, सेवरियन ने उस पवित्र शहीद के सम्मान में उस स्थान पर एक छोटा सा चैपल बनवाया; और लौटने पर, उसने उसकी कब्र के ऊपर एक भव्य चर्च का निर्माण किया।

कई साल बाद, एक पादरी, जिसे इस बात की जानकारी नहीं थी कि संत ऑटोनमस के पवित्र अवशेष इस चर्च के नीचे दबे हुए थे, ने इसे जर्जर होने के कारण ध्वस्त करवा दिया और समुद्र के पास एक अलग जगह पर एक नया चर्च बनवाया[6222] । जिस स्थान पर संत के अवशेष दफ़न थे, वह साठ वर्षों तक खाली रहा – जब तक कि बीजान्टिन सम्राट ज़ेनो की मृत्यु नहीं हो गई[6223] – और किसी को भी उस अनमोल खजाने के बारे में नहीं पता था जो पृथ्वी के गर्भ में छिपा हुआ था। उस समय, सम्राट के एक अंगरक्षक, जिसका नाम जॉन था, एक विशेष शाही आदेश का पालन करते हुए, उपर्युक्त क्षेत्रों - सोरेओस और लिम्ना के शहरों में पहुँच गया; एक दिन वह शिकार करने गया और ऐसा हुआ कि, ठीक उसी जगह पर जहाँ कभी संत की अवशेषों के ऊपर एक चर्च हुआ करता था, उसने एक खरगोश देखा; अपना धनुष तानकर और एक तीर चलाकर, उसने उसे मार डाला; कई अन्य जानवरों को भी मारने के बाद, वह घर लौट आया। लेकिन उस रात, जब वह अपने बिस्तर पर सो रहा था, तो पवित्र शहीद ऑटोनोमस उसे सपने में दिखाई दिए और उन्होंने उसे उसी जगह पर एक चर्च बनाने का आदेश दिया जहाँ उसने कल खरगोश मारा था। जागने पर, जॉन ने उसे दिए गए आदेश को पूरा करने

[6221] संत ऑटोनमस की शहादत लगभग 312 ईस्वी में, डियोक्लेटियन के उत्पीड़न के तुरंत बाद हुई।

[6222] यह लगभग 430 का समय था; संत ऑटोनोमस के अक्षुण्ण अवशेषों की खोज लगभग 60 साल बाद हुई।

[6223] बाइज़ेंटाइन सम्राट ज़ेनो ने 474 से 491 तक शासन किया।

के लिए अपने सभी प्रयासों को समर्पित करने का संकल्प लिया, और उचित समय पर उसने पवित्र शहीद ऑटोनमस के नाम पर एक अद्भुत चर्च का निर्माण किया; उसे जमीन में संत की अस्थियाँ अक्षुण्ण और पूरी तरह से अपरिवर्तित मिलीं, और उनके माध्यम से कई चमत्कार होने लगे, और वहाँ कई बीमार लोग ठीक हो गए।

संत ऑटोनमस के अवशेषों की खोज के संबंध में, धन्य सिमियन मेटाफ्रastes[6224] निम्नलिखित कहते हैं:

'मानवीय प्रकृति की प्रवृत्तियों पर विजय प्राप्त करने वाले उस महिमामय तपस्वी को देखकर, मैं ईश्वर की महिमा करने के लिए उठा; और देखो, पवित्र शहीद ऑटोनमस की कब्र पर एक बार दृष्टि डालते ही, मैंने देखा कि उनके पवित्र अवशेष मृत्यु की शक्ति द्वारा अजेय रहे। मृत्यु, जो तीन दिनों में किसी जीवित प्राणी के पूरे अस्तित्व को नष्ट करने का घमंड करती है, इतने वर्षों तक इस गौरवशाली पुरुष के एक भी बाल को नष्ट नहीं कर सकी थी। उसका सिर और बाल अछूते थे, उसका चेहरा अक्षुण्ण था, उसकी त्वचा तनी हुई थी – उसकी पलकों का एक भी बाल सड़ नहीं गया था: केवल उसकी आँखें बंद थीं। और जैसे ही मैंने उस पर दृष्टि डाली, मुझे ऐसा लगा कि मृत्यु ने उसे केवल मौन रहने के लिए विवश किया था, जबकि उसका संपूर्ण शरीर और उसके सभी अंग अक्षुण्ण बने रहे: उसके सिर से कुछ भी नहीं गिरा था, और न ही उसके शरीर के अन्य भागों से कुछ भी अलग हुआ था। इस प्रकार प्रभु उन लोगों को महिमामय बनाते हैं जो अपने पवित्र शरीरों में उनकी महिमा करते हैं। उसी को सारी महिमा, सम्मान और आराधना हो, अब और सदा के लिए और युगों-युगों तक। आमीन।

पवित्र शहीद कोर्नटस, निकोमेडिया के बिशप की स्मृति

12 सितंबर को स्मरण

पवित्र शहीद संत कोर्नोटस निकोमेडिया के आसपास, सताला (सर्सला, सुरसाना) गाँव में रहते थे। वे मसीह के नाम के उत्साही स्वीकारकर्ता थे। ईसाइयों के उत्पीड़न के दौरान, इकोनियम के राज्यपाल पेरेनियस[6225] को उस क्षेत्र में भेजा गया था। जबकि कई ईसाई उसके उत्पीड़न से बचकर छिपे स्थानों में भाग गए, संत कॉर्नटस, जो पहले ही सम्माननीय आयु को प्राप्त कर चुके थे, स्वयं उसके सामने उपस्थित हुए। जब राज्यपाल ने उससे पूछा कि वह कौन है, तो वृद्ध संत ने साहसपूर्वक उत्तर दिया, 'मैं एक ईसाई हूँ', और उन्होंने खुलेआम यह स्वीकार करना शुरू कर दिया कि मसीह सच्चे ईश्वर हैं, सभी चीजों के सृष्टिकर्ता हैं, और मूर्तिपूजक चापलूसी की निंदा की। उसके पैरों को पतली रस्सियों से बांधकर उसे शहर की सड़कों पर घसीटा गया, जिससे रस्सियों से कटकर उसके पैरों से खून की धाराएँ बह रही थीं। अपने यातनाओं के बीच, पवित्र शहीद ने ईश्वर का धन्यवाद किया। फिर, और यातनाओं के बाद, उसे तलवार से सिर से अलग कर दिया गया[6226] ।

संत जूलियन शहीद का पर्व दिवस

12 सितंबर को स्मरण किया जाता है

डायोक्लेटियन और मैक्सिमियन के शासनकाल के दौरान, एंटोनिस[6227] को गलातिया प्रांत का राज्यपाल नियुक्त किया गया था। उसे यह सूचना मिली कि जूलियन पहाड़ों में चालीस अन्य ईसाइयों के साथ एक गुफा में छिपा हुआ था, और वे वहां ईसाई पूजा कर रहे थे। जब, राज्यपाल के आदेश पर, उसे गिरफ्तार कर लिया गया और उन्होंने उसे अपने साथ

[6224] सिमियन मेटाफ्रैस्टस – 10वीं शताब्दी (मृत्यु 940) के एक प्रसिद्ध चर्च-संबंधी लेखक, संतों के जीवन के संकलक और संग्राहक: इस क्षेत्र में उनके कार्यों ने बाद में सेंट डेमेट्रियस ऑफ रोस्टोव के चेती-मिनेई के लिए मुख्य स्रोत के रूप में काम किया। मेटाफ्रास्टस यहाँ एक अन्य व्यक्ति के वृत्तांत को दोहराते हैं जो सेंट ऑटोनमस की मृत्यु के 200 साल बाद रहते थे और जिन्होंने खुद को सम्राट जस्टिन (518–527) का समकालीन बताया था।

[6225] इकोनियम – एशिया माइनर के केंद्र में, माउंट टॉरस की तलहटी में एक ऊँचे, उपजाऊ मैदान पर स्थित एक शहर; यह कभी लाइकोनिया की राजधानी था, और अब एशिया माइनर में तुर्की प्रांत करमन की राजधानी कोन्या है।

[6226] संत कॉर्नूटस की शहादत रोमन सम्राट डेसियस (249–251) के शासनकाल के दौरान हुई थी।

[6227] गलातिया एशिया माइनर का एक छोटा, पहाड़ी लेकिन उपजाऊ प्रांत है, जो फ्राइजिया, बिथिनिया, पोंटस और कैपैडोसिया के बीच स्थित है। सेंट जूलियन का दुख-कष्ट और शहादत एंकीरा के बहुत पुराने शहर में हुई – जो अब अंकारा है।

मौजूद अन्य ईसाइयों पर वशि्वासघात करने के लिए मनाना शुरू कयिा, तो उसने इनकार कर दयिा। अदालत में पेश होने से पहले, संत जूलयिन ने गुफा में बचे अपने साथी वशि्वासयिों को संबोधति करते हुए ऊँचे स्वर में पुकारा:

'देखो, मेरा मुकदमा तो पहले ही हो चुका है, और मैं तुम्हें धोखा दिए बिना मसीह के लिए शहादत भुगतने जा रहा हूँ! लेकिन मेरी शहादत में मेरा अनुसरण करने का प्रयास करना!'

जब संत जूलयिन राज्यपाल एंटोनिनिस के समक्ष उपस्थति हुए, तो उन्होंने उनसे कहा:

'देवताओं की पूजा करो और उन्हें बलदिान चढ़ाओ।'

पवत्रि शहीद ने साहसपूर्वक उत्तर दयिा:

'तुम्हारी सलाह मेरे लिए अस्वीकार्य है; क्योंकि हम ईसाइयों के लिए उस पवत्रि वशि्वास के लिए मरने से बेहतर कोई भाग्य नहीं है जिसमें हम पले-बढ़े हैं।'

तब राज्यपाल ने एक लोहे के पलंग को लाल-गरम करने और संत को नग्न करके उस पर लटिा देने का आदेश दयिा। उस पवत्रि शहीद को उस स्थान पर ले जाया गया, उसने क्रॉस का चहि्न बनाया और लाल-गरम पलंग पर कदम रखा। फरि प्रभु का एक स्वर्गदूत प्रकट हुआ, उसने लपटों को ठंडा कर दयिा और पवत्रि शहीद को बिना किसी चोट के सुरक्षति रख दयिा।

'तुम कौन हो?' एंटोनिनिस ने शहीद से पूछा, 'और तुमने आग को इतनी आसानी से कैसे बुझाया?'

'मैं ईश्वर का सेवक हूँ; मेरा नाम जूलयिन है,' पवत्रि पीड़ति ने उत्तर दयिा। राज्यपाल ने उससे फरि पूछा:

'आपके माता-पति कौन हैं?'

शहीद ने उत्तर दयिा:

'मेरी माँ एक वृद्ध महलिा हैं, और मेरे पति प्रभु के पास चले गए हैं।'

एंटोनिनि अपनी माँ को अपने सामने लाने का आदेश दयिा और, गुस्से से उनकी ओर घूरते हुए, उनसे कहा:

'अपने दुष्ट पुत्र को देवी को धूप दखिाने के लिए मनाओ; यदि तुम ऐसा नहीं करोगी, तो मैं तुम्हारे शरीर को सार्वजनकि अपमान के लिए उजागर कर दूँगा।'

पवत्रि शहीद की वीर माता ने राज्यपाल से उत्तर दयिा:

– 'यदि मेरा शरीर मेरी इच्छा के वरिुद्ध अपवत्रि कयिा जाता है, तो यह न केवल मेरे खलिाफ नहीं गनिा जाएगा, बल्कि यह मेरे लिए शाश्वत महमिा और धन्य पुरस्कार का वादा होगा।'

बुजुर्ग महलिा के इन शब्दों से लज्जति होकर, राज्यपाल ने उसे रहिा करने का आदेश दयिा, जबकि सेंट जूलयिन को तलवार से सरि कलम करने की सज़ा सुनाई गई। सैनकिों के साथ फांसी के स्थान पर पहुंचने पर, पवत्रि शहीद ने उनसे प्रार्थना करने के लिए समय मांगा।

'हे प्रभु, मैं आपको धन्यवाद देता हूँ,' उन्होंने प्रार्थना की, 'कि आपने मुझे दृढ़ कयिा और मेरे रक्त का बहाव होने तक अडगि बने रहने में मेरी मदद की। हे प्रभु, जो मेरे दफन स्थल से मट्टिी लेंगे, उन्हें पापों की क्षमा और वासनाओं से मुक्ति प्रदान करें। और उनके खेतों में कोई वनिाशकारी कीट न पाया जाए: न टड्डियिाँ, न कीड़े-मकोड़े, न ही कुछ और; और वे इसी तरह शकिारी पक्षयिों के हमलों से भी बचे रहें! और मेरी आत्मा को शांति से ग्रहण करें!

और स्वर्ग से एक स्वर सुना गया:

'तुम्हारे सह-संघर्षकर्ता, मसीह ने तुम्हारे लिए अपने राज्य के द्वार खोल दिए हैं। उनमें प्रवेश करो, क्योंकि तुमने उनके नाम के लिए वधिवित संघर्ष कयिा है!'

वह आवाज़ उन चालीस ईसाइयों ने भी सुनी जो गुफा में छपि हुए थे। वे उस स्थान पर गए जहाँ पवत्रि शहीद ने यातनाएँ झेली थीं, लेकिन उन्होंने उसे पहले ही मृत पाया। सभी सैनकिों के सामने, उन्होंने ज़ोर से मसीह, सच्चे परमेश्वर की गवाही दी। फरि सैनकिों ने उन्हें बाँध दयिा और राज्यपाल के सामने ले आए, जिसने उनके सरि कलम करने का आदेश दयिा[6228] ।

[6228] संत जूलयिन और उनके साथ मसीह के 40 अन्य शहीदों की मृत्यु चौथी शताब्दी के शुरुआती वर्षों में हुई।

26 सतिंबर

13 सतिंबर (पुराने कैलेंडर के अनुसार)

यरूशलेम में पवत्रि सेपल्चर चर्च के पुनर्नरि्माण पर उपदेश[6229]

13 सतिंबर को स्मरणोत्सव

इस दनि हम यरूशलेम में गौरवशाली और भव्य चर्च के पुनर्स्थापन का उत्सव मनाते हैं – वह नहीं जो राजा सुलैमान ने मौरयिा पहाड़ पर बनवाई थी, बल्कि वह जसिे धर्मपरायण राजा कॉन्स्टेंटाइन ने अपनी प्रशंसनीय माता हेलेना के साथ मलिकर, मूर्तपिूजक दुष्टता द्वारा अपवत्रि कएि गए पवत्रि स्थान को शुद्ध और पुनर्स्थापति करके, गोलगोथा पर्वत पर अद्भुत रूप से स्थापति कयिा था।

हमारे प्रभु यीशु मसीह के स्वैच्छकि दुःख और मृत्यु, उनके पुनरुत्थान और स्वर्ग में आरोहण के बाद, वह पवत्रि स्थान जहाँ हमारा उद्धार पूरा हुआ था, मसीह के शत्रुओं द्वारा अपवत्रि और कलंकति कर दयिा गया था। वशिेष रूप से, दुष्ट रोमन सम्राट हेड्रयिन ने सभी पवत्रि स्थानों को दैवीय मूर्तयिों और बलदिानों से अपवत्रि कर दयिा। यरूशलेम के स्थल पर, जसिे टाइटस द्वारा उजाड़ दयिा गया था, एक शहर बनाने के बाद[6230] , उसने प्रभु के कब्र को मट्टिी और अनेक पत्थरों से ढकने का आदेश दयिा; और उसी पहाड़ी पर जहाँ प्रभु को सूली पर चढ़ाया गया था, उसने व्यभचिार की मूर्तपिूजक देवी वीनस का एक मंदरि बनाया और वहाँ उसकी मूर्तस्थिापति की, जबकि प्रभु के कब्र के ऊपर उसने दयिा नामक देवता की एक मूर्तरिखी (जुपीटर)। इस प्रकार, ठीक उसी स्थान पर जहाँ परमेश्वर के मेम्ने ने हमारे पापों के लिए परमेश्वर पति को स्वयं को बलदिान के रूप में अर्पति कयिा था, वहाँ राक्षसों को अशुद्ध बलदिान चढ़ाए गए और हर प्रकार के दुराचार कएि गए। इसी तरह, बेथलहम में, जहाँ परम पवत्रि कन्या के गर्भ से परम पवत्रि का जन्म हुआ था, दुष्ट राजा ने एडोनसि की एक मूर्त[6231] स्थापति की, ताकि यह पवत्रि स्थान भी शर्मनाक कृत्यों द्वारा अपवत्रि हो गया; और जहाँ कभी सुलैमान का मंदरि था, वहाँ उसने एक मूर्तपिूजक पूजा स्थल बनाया। उसने स्वयं के नाम पर शहर का नाम एलयिा रखा—क्योंकि उसका नाम एलयिा-हैड्रयिन था—और आदेश दयिा कि कोई भी इसे यरूशलेम कहने की हम्मित न करे। उसने यह सब यीशु मसीह के नाम की स्मृति को पृथ्वी के चेहरे से मटिा देने की इच्छा से कयिा। उसने उस शहर का नाम बदल दयिा जसिमें यीशु मसीह ने कई चमत्कार कएि थे, और उनके जन्म, क्रूस पर चढ़ाए जाने और दफनाए जाने की जगहों पर राक्षसों के अड्डे बना दएि, ठीक इस उद्देश्य के साथ कि आने वाली पीढ़ियाँ मसीह को पूरी तरह से भूल जाएँ और उन स्थानों को फरि कभी याद न करें जहाँ प्रभु ने जीवन यापन कयिा और शक्षिा दी थी। हालाँकि, हड्रयिन स्वयं नष्ट हो गया, जबकि महिमा के राजा ने एक बार फरि उस पवत्रि स्थान को महमिामय कयिा।

प्रभु ने, राजा कॉन्स्टेंटाइन और उनकी माता हेलेना को पवत्रि वश्विास के प्रकाश से प्रबुद्ध करके, उनके हृदयों में पवत्रि नगर यरूशलेम को पुनर्स्थापति करने की इच्छा जगाई – ठीक उसी स्थान पर जहाँ मसीह के शरीर का अपवत्रि कयिा गया मंदरि तीन दनिों में उठाया गया था (देखें यूहन्ना 2:19, 21; मत्ती 26:16, 27:40; मरकुस 14:58, 15:29), ईश्वर का एक भव्य मंदरि बनाने के लिए, और सभी पवत्रि स्थानों को शैतानी अशुद्धता से शुद्ध करके उन्हें पवत्रि करने के लिए। इस उद्देश्य के लिए, धर्मनष्ठि सम्राट ने अपनी माता को बड़ी मात्रा में सोने के साथ यरूशलेम भेजा और परम पावन पैट्रआिर्क मकाराईयस[6232] को पत्र लखिकर उनसे चर्च के पुनर्नरि्माण के लिए अपने सभी प्रयास समर्पति करने का आग्रह कयिा। यरूशलेम पहुँचने पर, संत हेलेना ने वहाँ के सभी मूर्तपिूजक मंदरिों को ध्वस्त कर दयिा, मूर्तयिों

[6229] इस पर्व को 'वचन का पुनरुत्थान', अर्थात् तथाकथति पुनरुत्थान कहा जाता है। नाम से ही यह स्पष्ट है कि यह न तो पुनरुत्थान रविवार है और न ही कोई सामान्य रविवार, बल्कि एक वशिेष पर्व है, जो यद्यपि रविवार को नहीं पड़ता, फरि भी आम बोलचाल में 'पुनरुत्थान' के नाम से जाना जाता है, क्योंकि इसका संबंध मसीह के पुनरुत्थान के चर्च से है।

[6230] टाइटस – 79 से 81 ईस्वी तक का रोमन सम्राट। यरूशलेम पर 70 ईस्वी में टाइटस द्वारा, उनके पति वेस्पासयिन के शासनकाल के दौरान, वजिय प्राप्त की गई थी।

[6231] एडोनसि – एक प्राचीन यूनानी देवता जो सूर्य का प्रतीक थे, जो सर्दयिों में मरते थे और वसंत में फरि से उठते थे; उनकी पूजा बहुत व्यापक थी और इसके साथ भव्य उत्सव होते थे, जसिमें अनैतकि अनुष्ठान और खेल शामलि थे।

[6232] मकाराईयस प्रथम 313 से 333 तक यरूशलेम के पैट्रआिर्क थे।

को नष्ट कर दिया, और पूरे शहर को मूर्तिपूजक अशुद्धता से शुद्ध कर उसे पवित्र कर दिया। उन्होंने प्रभु के पवित्र क्रूस और कब्र को खोज निकाला, उस पर ढकी हुई मिट्टी और पत्थरों को हटा दिया, और उस स्थान पर एक इतनी बड़ी चर्च का निर्माण किया कि एक ही इमारत में सूली पर चढ़ाए जाने का स्थान और कब्र दोनों समा गए। और मसीह के दफ़नाए जाने की जगह, क्योंकि वे एक-दूसरे से बहुत दूर नहीं थे, जैसा कि सुसमाचार लेखक यूहन्ना उल्लेख करते हैं: *'जहाँ उन्हें सूली पर चढ़ाया गया था, वहाँ एक बगीचा था, और बगीचे में एक नई कब्र थी, जिसमें अभी तक किसी को नहीं रखा गया था। उन्होंने यीशु को यहूदी तैयारी के दिन के कारण वहीं रखा, क्योंकि कब्र पास ही थी'* (यूहन्ना 19:41-42)। और इस प्रकार, एक ही चर्च के साथ, उसने गोलगोथा और प्रभु की कब्र दोनों को घेर लिया। इस चर्च को 'मार्टिरियम' कहा जाता है, यानी 'गवाही' – विशेष रूप से मसीह के पुनरुत्थान की गवाही, क्योंकि ठीक उसी स्थान पर मसीह मरे और फिर से जी उठे थे[6233] । संत हेलेना ने अन्य चर्च भी बनवाए: बेथलहम में, जैतून के पहाड़ पर[6234] , गेथ्सेमनी में[6235] और कई पवित्र स्थलों पर, जिन्हें उन्होंने भव्य और विविध तरीकों से सजाया। हालाँकि, पवित्र सेपल्चर के ऊपर स्थित चर्च उन सभी में सबसे सुंदर और सबसे बड़ा था। फिर भी रानी हेलेना स्वयं इसके पूरा होने तक जीवित नहीं रहीं: अपने पुत्र के पास लौटने के बाद, चर्च के अभी भी निर्माणाधीन होने के दौरान ही उनका प्रभु में निधन हो गया[6236] , क्योंकि इतने कम समय में इतनी बड़ी और अद्भुत इमारत बनाना असंभव था, और यह केवल दस साल बाद ही पूरा हुआ।

एक बार जब चर्च पूरी तरह से स्थापित हो गया, तो धर्मनिष्ठ राजा ने सभी देशों के बिशपों को चर्च के अभिषेक के लिए यरूशलेम में इकट्ठा होने का आदेश दिया। और वहाँ बिशपों की एक बड़ी भीड़ पहुँची: बिथिनिया, थ्रेस, सिलिसिया, कैपडोसिया, सीरिया, मेसोपोटामिया से, फ़िनिसिया, अरब, फ़िलिस्तीन, मिस्र और अफ्रीका के अन्य भागों से, और फ़ारस से एक बिशप; दुनिया भर से लोगों की एक अनगिनत भीड़ भी इकट्ठा हुई, ताकि यरूशलेम की शहर की सीमाओं के भीतर सभी को समाया नहीं जा सका। पुनरुत्थान के चर्च का अभिषेक 13 सितंबर 335 को, कांस्टेंटिन के शासन के 30वें वर्ष में किया गया था, जब पूरे यरूशलेम का भी नवीनीकरण किया गया था। इस उत्सव के लिए एकत्रित पवित्र पिताओं ने, पुराने नियम के आदेश के उदाहरण का पालन करते हुए, हमेशा के लिए चर्च के नवीनीकरण के दिन का उत्सव मनाने का संकल्प लिया। क्योंकि ठीक वैसे ही जैसे पुराने नियम में, यहूदा मक्कबाउस ने सीरियाई मूर्तिपूजा के कारण हुई अशुद्धि से सबसे पवित्र स्थल – परम पवित्र स्थान – को शुद्ध करने के बाद, इसके पुनर्स्थापना का उत्सव सर्वकाल के लिए स्थापित किया (1 मक्कबाउस 4:36–59), एक तथ्य जिसका उल्लेख सुसमाचार में भी किया गया है: *'तब यरूशलेम में समर्पण का पर्व आया'* (यूहन्ना 10:22); और इसी प्रकार नए नियम में, सम्राट कॉन्स्टेंटाइन, जो प्रेरितों के समान थे, ने, मानो, एक दूसरी परम पवित्र पवित्रस्थली का निर्माण कर, पवित्र पिताओं के साथ मिलकर यह आदेश दिया कि यरूशलेम की महान कलीसिया का समर्पण—जो सभी कलीसियाओं की जननी है—सम्पूर्ण ब्रह्मांड में मनाया जाए।

तो अब हम इसका नवीनीकरण मनाएँ, मसीह परमेश्वर का धन्यवाद करें, जिन्होंने अपने दुख-क्लेश और पुनरुत्थान के द्वारा सारी सृष्टि को नया किया और अपनी पवित्र कलीसिया को मूर्तिपूजा की अशुद्धियों से शुद्ध किया। हम भी नए हों, जीवते परमेश्वर के मंदिर होकर, पुराने मनुष्य को उतार फेंकें और नए को पहनें; आओ हम अपने भीतर गहरे बैठे बुरे गुणों से स्वयं को शुद्ध करें और नए, ईश्वरीय जीवन की शुरुआत करते हुए अच्छे कर्म करना आरंभ करें। तब – जैसे लोग मनुष्य द्वारा निर्मित मंदिर के नवीनीकरण का उत्सव मनाते हैं – वैसे ही स्वर्गदूत हमारे आध्यात्मिक मंदिर के नवीनीकरण का उत्सव मनाएंगे; क्योंकि जब भी कोई पापी पश्चाताप के द्वारा नवीनीकृत होता है, तो स्वर्ग में

[6233] यरूशलेम के संत किरिल ने पुनरुत्थान के स्थल, जिसे मार्टाय्रियन के नाम से जाना जाता है, की भी भविष्यवाणी की थी। गोलगोथा और पुनरुत्थान के इस स्थान को अन्य चर्चों की तरह चर्च क्यों नहीं कहा जाता, बल्कि मार्टाय्रियन क्यों कहा जाता है? शायद भविष्यवक्ता के इन शब्दों के आधार पर: 'मेरे पुनरुत्थान के दिन, एक गवाही के रूप में (मार्टाय्रियन में)'।

[6234] जैतून का पहाड़ – यरूशलेम के पूर्व में स्थित यहूदियाई पहाड़ों में से एक, जिसे किद्रोन घाटी द्वारा यरूशलेम से अलग किया गया है; इसका नाम उन जैतून के पेड़ों की बहुतायत के कारण पड़ा जो कभी यहाँ उगते थे। यह ज़ीअन और मोरियाह जैसे अन्य निकटवर्ती पहाड़ों से ऊँचा है; और इसकी चोटी से चारों ओर के शानदार दृश्य दिखाई देते हैं। यीशु मसीह अपने पुनरुत्थान के चालीसवें दिन जैतून के पहाड़ की चोटी से स्वर्ग में आरोहण हुए थे। यहाँ रानी हेलेना द्वारा निर्मित भव्य चर्च को बाद में तुर्कों ने मस्जिद में बदल दिया था।

[6235] गेथ्सेमनी जैतून पहाड़ के पैर में, सीडर्स स्ट्रीम के पार स्थित एक गाँव या स्थान है, जहाँ यहूदा द्वारा उनका विश्वासघात किया गया था (मत्ती 26:36; यूहन्ना 18:1-3)। रूसी में गेथ्सेमनी का अर्थ है: 'जैतून का स्थान', या 'जैतून का रस निकालने का प्रेस'। गेथ्सेमनी का बगीचा आज भी जैतून पहाड़ के पैर में - इसके दक्षिणी हिस्से में दिखाया जाता है; बगीचे के भीतर, कैल्वरी पर अपने दुखों से पहले गेथ्सेमनी में प्रभु की प्रार्थना की जगह को दर्शाया गया है, और साथ ही परमेश्वर की माता की समाधि गुफा भी है, जहाँ अब उनकी कब्र रखी गई है।

[6236] रानी हेलेना की मृत्यु वर्ष 327 में हुई।

स्वर्गदूतों के बीच आनंद होता है, और उनके साथ स्वर्गदूतों का स्रष्टा स्वयं—हमारे प्रभु मसीह—जो पापियों की मृत्यु नहीं चाहते—खुश होते हैं, जनिका महमिा युगानुयुग हो, आमीन।

ट्रोपारयिन, स्वर 4:

हे प्रभु, जैसे आपने स्वर्गीय क्षेत्रों की भव्यता प्रकट की है और पृथ्वी पर अपनी महमिा के पवत्रि नविास-स्थान की सुंदरता दखिाई है, वैसे ही इसे हमेशा के लिए स्थापति करें, और परमेश्वर की माता, जो सभी जीवन और पुनरुत्थान का स्रोत हैं, के माध्यम से हम जो प्रार्थनाएँ नरिंतर आपसे करते हैं, उन्हें स्वीकार करें।

कॉन्टाकयिन, स्वर 4:

चर्च प्रकाश से दमकते स्वर्ग के समान प्रकट हुई है, जो सभी वशि्वासयिों को प्रकाशति करती है; इसके भीतर खड़े होकर, हम पुकारते हैं: 'हे प्रभु, इस घर को स्थरि करो।'

पवत्रि शहीद सैकड़यिाध्यक्ष कोर्नेलयिस का जीवन

13 सतिंबर को स्मरणोत्सव

हमारे प्रभु यीशु मसीह के दुख भोगने के तुरंत बाद, और उनके पुनरुत्थान तथा स्वर्ग में आरोहण के पश्चात्, थ्रेसयिन इटली[6237] का नविासी, कोर्नेलयिस नामक एक शतपति, फलिस्तिीन के सेज़रयिा में बस गया। यद्यपि वह अवशि्वास के अंधकार में था, फरि भी वह पहले से ही प्रकाश के कर्म कर रहा था और, एक यूनानी होते हुए भी, वह एक ईसाई के समान था। वह मसीह को नहीं जानता था, लेकनि अपने दया के कार्यों के माध्यम से उसने अचेतन रूप से उनका सम्मान कयिा। एक भ्रष्ट दुनयिा के बीच रहते हुए, वह सदाचारी था, जैसा कि संत लूकस प्रेरतिों के काम में उसकी गवाही देते हैं: *'केसरयिा में कोर्नेलयिस नाम का एक मनुष्य था, जो इतालवी कोहोर्ट के नाम से प्रसद्धि कोहोर्ट का एक शतपति था'*[6238] (प्रेरतिों के काम 10:1)। ईश्वर ने उसके गुणों को अनदेखा नहीं कयिा और उसे वशि्वास के प्रकाश से प्रकाशति करने तथा सत्य के ज्ञान की ओर ले जाने में प्रसन्न हुए, ताकि उसके अच्छे कर्म अवशि्वास के अंधकार से ढक न जाएँ।

एक दनि, जब वह अपने घर में परमेश्वर से प्रार्थना कर रहा था, तो इस परमेश्वर-भयभीत मनुष्य ने परमेश्वर के एक स्वर्गदूत को देखा, जसिने उसे यह घोषणा की कि उसकी प्रार्थनाएँ और दान परमेश्वर द्वारा स्वीकार कर लिए गए थे। दूत ने उसे आज्ञा दी कि वह योपा जाकर[6239] से पतरस नामक समिोन को बुलावा भेजे और जो कुछ वह कहे, वही करे। उसने तुरंत पतरस को बुलाने के लिए दूत भेजे। जब कोर्नेलयिुस के दूत योपा के रास्ते में थे, तब पतरस प्रार्थना करने के लिए दनि के छठे घड़ी[6240] पर घर की ऊपरी मंजलि पर गया। उस समय वह भूखा था, और उसके सामने एक दर्शन प्रकट हुआ, जसिमें उसे एक अनसर्जति गैर-यहूदी के पास जाने से इनकार न करने का नर्दिेश दयिा गया – क्योंकि यहूदी गैर-यहूदयिों के साथ मेलजोल नहीं करते थे और उन्हें तरिस्कार की दृष्टि से देखते थे। जो दर्शन पीटर के सामने प्रकट हुआ, वह इस प्रकार था। तीन बार स्वर्ग से एक पात्र उतरा, जो चारों कोनों से बँधी एक बड़ी चादर की तरह था, और एक आवाज़ ने पतरस को उस पात्र में मौजूद जानवरों, दरदिों, रेंगने वाले जीवों और पक्षयिों को ज़बि़ह करके खाने का आदेश

6237 मेसेडोनयिा के उत्तर-पूर्व में रोमन साम्राज्य का एक प्रांत। थ्रेस को अब रोमानयिा के नाम से जाना जाता है।

6238 केसरयिा – फलिस्तिीन में भूमध्य सागर के कनिारे एक बड़ा शहर, जहाँ रोमन अधीक्षक रहते थे। स्परि इटालकिा – स्वदेशी रोमनों से बनी एक रेजमिेंट।

6239 योप्पीया (जसिका हब्रि से अनुवाद 'सुंदर, ऊँची जगह' है) - एक प्राचीन फनिशियिाई शहर जो प्रतज्ञिात भूमि पर वजिय के बाद दान के गोत्र के अधकिार में आ गया; यह भूमध्यसागरीय तट पर एक ऊँची पहाड़ी पर, उपजाऊ सैरोनकि मैदान के दक्षणि में स्थति है, और यरूशलेम से बारह घंटे की यात्रा पर है। यह शहर हमेशा से एक बहुत ही महत्वपूर्ण बंदरगाह और व्यापारकि केंद्र रहा है; आज यह यफ़ा के नाम से जाना जाता है।

6240 यहूदी आमतौर पर प्रार्थना करने के लिए घर की छत पर स्थति ऊपरी कमरे (जो हमारे मेज़ानाइन के समान है) में चले जाते थे। लेकनि पतरस खुले आकाश के नीचे, सीधे छत पर ही ठहरा रहा। छठा घंटा हमारे दनि के बारहवें घंटे के समान होता है।

दयिा। जब पतरस ने यह कहते हुए मना कर दयिा कि उसने कभी कोई अशुद्ध वस्तु नहीं खाई है, तो आवाज़ ने स्वर्ग से फरि उससे कहा:

'जसिको परमेश्वर ने शुद्ध ठहराया है, उसे अशुद्ध न कहो।'

यह दृष्टि कोर्नेलयिस और अन्य गैर-यहूदयिों के धर्मांतरण का संकेत थी। पतरस की भूख ने भवष्यिवक्ता आमोस द्वारा वर्णति भूख का प्रतीक प्रस्तुत कयिा – *'रोटी की भूख नहीं, न ही पानी की प्यास, बल्कि यहोवा के वचन सुनने की प्यास'*[6241] (आमोस 8:11)। कोर्नेलयिुस के घर में और सभी गैर-यहूदयिों के बीच ऐसी ही भूख थी: जैसे पतरस को शरीर के लिए आवश्यक रोटी की लालसा थी, वैसे ही उन्हें आत्मा के लिए रोटी की लालसा थी। अपने चारों कोनों पर बँधी हुई पात्र ने मसीह की कलीसयिा का प्रतीक दयिा, जसिे चार सुसमाचार प्रचारकों द्वारा वश्विास में स्थापति कयिा गया था। पात्र में पाए जाने वाले वभिन्नि अशुद्ध जानवर, दरदिे, रेंगने वाले जीव और पक्षी मूर्तपिूजकों का प्रतनिधित्वि करते थे, जो अपनी नीच सांसारकि इच्छाओं में, चार-पांव वाले जानवरों की तरह थे, जो अपनी मानसकि दृष्टि से केवल पृथ्वी को नहिार रहे थे, स्वर्गीय वषियों के बारे में कुछ भी नहीं जानते थे और सांसारकि से परे की खोज करने में असमर्थ थे; अपनी क्रूरता में वे जानवर थे, और अपनी दुष्टता में—जो आत्मा के लिए हानकिारक थी—वे वषिैले सरपट थे; जबकि अपने घमंडी अहंकार में वे ऊँची उड़ान भरने वाले पक्षयिों के समान थे। उन्हें मार डालने और खाने की आज्ञा दी गई थी—अर्थात्, परमेश्वर के वचन की तीक्ष्ण तलवार से, वासना और पशुवत रीति-रिवािजों के प्राचीन मूर्तपिूजक जानवरों को मार डालना, और बपतस्मिा द्वारा शुद्ध कएि गए उनके आत्मा और शरीर को, *'एक जीवति बलदिान, जो पवत्रि और परमेश्वर को भाता है'* बनाना (रोमयिों 12:1)। पात्र का तीन बार नीचे जाना बपतस्मिा में तीन बार डूबने का प्रतीक था। और जब स्वर्ग से यह आवाज़ आई कि उन्हें परमेश्वर ने शुद्ध कर दयिा है, तो इसका यह अर्थ था कि मसीह ने न केवल इस्राएलयिों के लिए, बल्कि अन्यजातयिों के लिए भी, पाप के दाग धोने के लिए अपना लहू बहाया था।

जब पतरस इस दर्शन पर वचिार कर रहा था और उलझन में था, तब कौर्नलियिस द्वारा भेजे गए दूत उसके घर पर पहुँचे और उसे ढूँढ़ने लगे। परमेश्वर की आत्मा ने उसे बनिा हचिकचिाहट उनके साथ जाने की आज्ञा दी, ताकि पहला गैर-यहूदी मसीह की कलीसयिा में लाया जाए: अन्य गैर-यहूदी भी उसके पीछे मसीह के पास आएँगे। जब पतरस घर में दाखलि हुआ, तो कोर्नेलयिुस ने, अपने सब कुटुम्बयिों और मत्रिों के घेरने पर, उसे आदर से ग्रहण कयिा और पतरस के पाँवों पर गरिकर उसे दण्डवत् कयिा। तब पतरस ने उसे उठाया और कहा:

'आप जानते हैं कि यह एक यहूदी के लिए उचति नहीं है कि वह कसिी गैर-यहूदी के घर में प्रवेश करे या उनसे मेलजोल करे; हालाँकि, परमेश्वर ने मुझे यह प्रकट कयिा है कि किसिी भी व्यक्ति को अशुद्ध या अपवत्रि नहीं कहना चाहिए। इसलिए, मैं बनिा कसिी हचिकचिाहट के आपके पास आया हूँ, और अब मैं पूछता हूँ: आपने मुझे क्यों बुल्या?'

कोर्नेलयिस ने उसे वस्तिार से बताया कि उसने स्वर्गदूत को कैसे देखा था और उससे क्या सुना था, और पतरस से उसे मोक्ष प्राप्त करने का मार्ग सखिाने के लिए कहा। तब पतरस ने अपना मुँह खोलकर उसे यीशु मसीह के वषिय में प्रचार करना आरंभ कयिा: कि वह देहधारी परमेश्वर थे, जो पृथ्वी पर लोगों के बीच रहे, उन्हें सखिाया और स्वर्ग के राज्य की ओर ले जाने वाले मार्ग पर उनका मार्गदर्शन कयिा, और कई चह्नि और अद्भुत काम कएि, हर प्रकार की बीमारी को चंगा कयिा और अपने वचन से मरे हुओं को जलिाया। पतरस ने उसे यह भी बताया कि मसीह ने स्वेच्छा से दुख उठाया और मृत्यु भोगी, और फरि से जी उठे ताकि मानव जाति को दुख से मुक्त कर सकें और उन्हें मृतकों में से जलि सकें, उन्हें अनंत जीवन प्रदान कर सकें – कि वह जीवतिों और मृतकों का न्याय करेंगे, कि सभी भवष्यिवक्ताओं ने उनकी गवाही दी, और जो कोई भी उनके नाम पर वश्विास करेगा, उसे पापों की क्षमा मलिेगी। जब पतरस ये बातें कह ही रहे थे, तब पवत्रि आत्मा ने, सुनने वालों के हृदयों में उनके वचन बोकर, उन्हें वश्विास की ओर ले जाया, और कोर्नेलयिुस अपने पूरे घर-परविार सहति बपतस्मिा ले लयिा। वह हमारे प्रभु यीशु मसीह पर वश्विास करने वाला पहला गैर-यहूदी था और बपतस्मिा ग्रहण करने पर, उसने सब कुछ छोड़ दयिा और पतरस का अनुसरण कयिा, जन्हिोंने उसे एक बशिप के रूप में नयिुक्त कयिा। पतरस और अन्य प्रचारकों के साथ वभिन्नि देशों की यात्रा करते हुए, उन्होंने मसीह के बारे में प्रचार करते हुए उत्साहपूर्वक परश्रिम कयिा। जब पतरस, तमिोथी और कोर्नेलयिुस के साथ, एफेसुस नगर में थे, तो उन्हें पता चला कि सेप्सडिसि नगर में मूर्तपिूजा वशिेष रूप से प्रचलति थी[6242] , और उन्होंने इस पर चर्चा की कि उनमें से कसिी वहाँ

[6241] अर्थात् ईश्वर और मोक्ष के बारे में सच्ची शक्षिा सुनने की इच्छा।

[6242] एशयिा माइनर के पश्चमिी प्रांत मसियिा में एक शहर।

प्रचार करने जाना चाहिए। उन्होंने पासा फेंका, और पासा कॉर्नेलियस के हिस्से में आया; उसने मदद के लिए ईश्वर से प्रार्थना करके उस शहर की ओर शीघ्रता से प्रस्थान किया। वहाँ डेमेट्रियस नाम का एक राजकुमार रहता था, जो एक दार्शनिक था और जिसने हेलेनिक ज्ञान का अध्ययन किया था, जो ईसाई धर्म से गहराई से घृणा करता था, लेकिन मूर्तिपूजक देवताओं, विशेष रूप से अपोलो और ज्यूस का सम्मान करता था। नगर में कॉर्नेलियस के आगमन की सूचना पाकर, राजकुमार ने तुरंत उसे बुलाया और पूछा कि वह कहाँ से आया है और वह वहाँ क्यों आया है।

कोर्नेलियस ने उत्तर दिया:

'मैं जीवित परमेश्वर का सेवक हूँ, और मैं तुम्हें अज्ञानता के गहरे अंधकार से बाहर निकालने, सत्य के प्रकाश में लाने, और तुम्हारी आत्मा में ज्ञान की एक शुद्ध किरण डालने के लिए भेजा गया हूँ।'

हालाँकि राजकुमार कोर्नेलियस की बातों का कुछ भी समझ नहीं पाया, वह क्रोधित हो गया और गुस्से में बोला:

'मैं आपसे एक बात पूछ रहा हूँ, फिर भी आप मुझसे दूसरी बात कर रहे हैं। मैं देवताओं की शपथ खाकर कहता हूँ कि अगर आपने मेरे हर सवाल का जवाब नहीं दिया, तो मैं आपकी वृद्धावस्था पर कोई दया नहीं दिखाऊँगा और आपके सफेद बालों को भी नहीं बख्शूँगा। तो बताइए: आप किसकी सेवा करते हैं, और आप यहाँ क्यों आए हैं?'

कोर्नेलियस ने उत्तर दिया:

'यदि आप मेरी सेवा के बारे में जानना चाहते हैं, तो यह जान लीजिए: मैं एक शताब्दीपति हूँ; जब मैंने तुम्हारे बारे में सुना—कि तुम, तुम्हारी पत्नी और तुम्हारे क्षेत्र के सभी निवासी बड़ी भ्रांति में पड़ गए थे—तो मैं तुम्हें दैवीय धोखे से बचाने, तुम्हें सच्चे मार्ग पर लाने और तुम्हें उस एक जीवित ईश्वर से मिलाने आया हूँ, जिसने स्वर्ग और पृथ्वी और उनमें जो कुछ भी है, सब कुछ बनाया है।

इस पर, डेमेट्रियस ने उत्तर दिया:

'मैं देखता हूँ कि बुढ़ापे ने तुम्हें थका दिया है, और मैं तुम्हारी उम्र के लिहाज़ से तुम्हें माफ़ कर देता हूँ; झूठ बोलना बंद करो; हमारे देवताओं के सामने आओ और उनकी पूजा करो। लेकिन अगर तुम ऐसा करने से इनकार करते हो, तो जान लो कि मैं तुम्हें भयंकर यातनाओं में डाल दूँगा, और मेरे देवताओं के अलावा कोई भी देवता तुम्हें मेरे हाथ से नहीं बचा पाएगा।'

'मेरे ईश्वर,' कॉर्नेलियस ने उत्तर दिया, 'न केवल मुझे हर बुराई से सुरक्षित रख सकते हैं और मनुष्यों के हाथों से बचा सकते हैं, बल्कि आपके देवताओं को नष्ट कर सकते हैं और उनकी मूर्तियों को धूल में मिला सकते हैं, और आपको—जो उनमें व्यर्थ ही आशा रखते हैं—उसके ज्ञान की ओर ले जा सकते हैं!' जहाँ तक मेरी बात है, मैं कभी भी राक्षसों या उनकी निर्जीव मूर्तियों की पूजा नहीं करूँगा। क्योंकि लिखा है: *'जो देवता न तो आकाश रचते हैं और न पृथ्वी, वे नाश हो जाएँगे'* (यिर्म. 10:11)। और फिर: *'प्रभु अपने परमेश्वर की उपासना करो और उसी की सेवा करो'* (मत्ती 4:10)। मैं तुम्हें पश्चाताप की ओर ले जाने और [ताकि] *'वे शैतान के फंदे से छुड़ाए जाएँ, जिसने उन्हें अपनी इच्छा के अधीन कैदी बना लिया है'* (2 तीमुथियुस 2:26) के लिए यहाँ आया हूँ।

तब राजकुमार ने कहा:

'मैंने अपने देवताओं की शपथ खाई है कि मैं तुम पर कोई दया नहीं दिखाऊँगा, बल्कि तुम्हें कठोर यातनाओं में डाल दूँगा, जब तक कि तुम देवताओं को बलिदान न चढ़ाओ।'

कोर्नेलियस ने पूछा, 'आप मुझे किन देवताओं को बलिदान चढ़ाने का आदेश देते हैं?'

और राजकुमार ने कहा:

'अपोल्लो और डायोस को बलि चढ़ाओ।'

तब कोर्नेलियस ने कहा:

'मुझे अपने उन देवताओं को दिखाओ।'

राजकुमार प्रसन्न हुआ, यह सोचकर कि वह उनकी पूजा करना चाहता है, और उसे Dios के मंदिर में ले गया।

लोग उनके पीछे-पीछे चल रहे थे, यह देखने के लिए उत्सुक कि कॉर्नेलियस मूर्तियों की पूजा कैसे करेगा। मंदिर पहुँचने पर, वे सभी अंदर गए – राजकुमार कॉर्नेलियस और अन्य लोगों के साथ, जिनमें राजकुमार की पत्नी, जिसका नाम इवान्थिया था, और उसका बेटा, जिसका नाम उसके पिता के नाम पर डेमेट्रियस रखा गया था, शामिल थे। मूर्तिपूजक

मंदरि में प्रवेश करने पर, कॉर्नेलियस ने अपना चेहरा पूर्व की ओर कियि[6243] और, जमीन पर घुटने टेककर, इस प्रकार प्रार्थना की:

हे ईश्वर, जो पृथ्वी को हलिाता है और पर्वतों को समुद्र की गहराइयों में बदल देता है! दानयिेल के हाथ से, आपने बाअल को कुचल दयिा, साँप को मार डाला और, सहिों के मुँह पर मुहर लगाकर, अपने सेवक को अक्षुण्ण रखा (दानयिेल 14)। और अब, इन मूर्तयिों को उखाड़ फेंको और लोगों को अपनी सामर्थी शक्ति का ज्ञान कराओ!

इस प्रकार प्रार्थना करने के बाद, संत मंदरि से बाहर नकिल गए। राजकुमार डेमेट्रयिस और वहाँ इकट्ठा हुआ सारा जनसमूह उनके साथ बाहर नकिला। हालाँकि, इवान्थयिा डेमेट्रयिन के साथ मंदरि के अंदर ही रह गई। और देखो, अचानक एक भूकंप आ गया; मूर्तयिों वाला मंदरि ढह गया, और जनि देवताओं में वधिर्मी अपनी आशा रखते थे, वे धूल में मलिकर चूर-चूर हो गए; लेकनि राजकुमार की पत्नी और उसका बेटा गरिती हुई दीवारों में फंस गए। मंदरि के ढहने का दृश्य देखकर सभी लोग भय से भर गए, जबकि राजकुमार को यह नहीं पता था कि उसकी पत्नी और बेटा मलबे के नीचे दब गए थे।

जीवति परमेश्वर की शक्ति में आनंदति होकर, कोर्नेलयिस ने राजकुमार से कहा:

'अब कहाँ हैं, राजकुमार, तुम्हारे महान देवता?'

क्रोध से भरकर राजकुमार ने उत्तर दयिा:

'बताओ हमें, जादूगर, कसि जादू से तुमने मंदरि का ध्वंस और हमारे देवताओं का पतन कयिा?'

और उसने अपने दरबारयिों से परामर्श करना शुरू कर दयिा कि कोर्नेलयिस को नष्ट करने के लिए कसि यातना का उपयोग कयिा जा सकता है।

दनि ढलने को था और सूरज अस्त हो रहा था, इसलिए कोर्नेलयिस को यातना देने का समय नहीं बचा था। राजकुमार ने आदेश दयिा कि उसके हाथ-पैर बांध दिए जाएँ, और उसे इस अवस्था में कालकोठरी में लटका दयिा जाए, ताकि वह पूरी रात लटका रहे और सुबह तक पीड़ा सहता रहे; सुबह, राजकुमार का इरादा उसे क्रूरता से यातना देकर मौत के घाट उतारने का था। जब संत को कालकोठरी में ले जाया गया और यातना देने वाले के आदेश पर, उसके हाथ-पैर बाँधकर वहाँ लटका दयिा गया, तो राजकुमार के एक दास, जसिका नाम टेलफिोन था, राजकुमार के पास दौड़कर आया और कहा:

'महाशय! मेरी स्वामनिी और आपका एकमात्र पुत्र मंदरि में मारे गए हैं, जो भूकंप में ढह गया।'

यह सुनकर राजकुमार दमित्रिी ने अपने कपड़े फाड़े[6244] और जोर-जोर से रोया। शहर के बुजुर्ग उसके साथ रोए, जबकि अन्य लोग उसे सांत्वना देने की कोशशि कर रहे थे। लेकनि अपनी पत्नी और बेटे की अचानक मौत की खबर पाकर उसके दलि में जो दुख था, उसमें कौन सांत्वना दे सकता था?

तब राजकुमार ने अपने दरबारयिों से कहा:

'जाओ, गरि हुए मंदरि के मलबे को हटा दो, मेरी प्रयि पत्नी और मेरे प्यारे बेटे की हड्डयिाँ ढूंढो, और उन्हें मेरे पास ले आओ।'

यह कहकर, वह फरि से जोर-जोर से रो पड़ा। उसी क्षण, मुख्य पुरोहति वरवत उसके पास दौड़े आए और कहा:

'मैंने आपकी पत्नी और पुत्र की आवाज़ें सुनीं, जो गरिी हुई दीवारों के बीच से पुकार रहे थे: "महान है ईसाई ईश्वर: उसने अपने सेवक कॉर्नेलयिस के माध्यम से हमें एक भयानक मृत्यु से बचाया है।" इसलिए इस पवत्रि व्यक्ति से हमें यहाँ से बाहर ले चलने के लिए कहो, कहीं हम यहाँ मर न जाएँ। क्योंकि हम उसके परमेश्वर के अद्भुत चमत्कार देखते हैं और स्वर्गदूतों को यह गाते हुए सुनते हैं: 'परम ऊँचे में परमेश्वर की महमिा, और पृथ्वी पर शांति, और मनुष्यों में प्रीति' (लूका 2:14)।

वरवता से यह सुनकर, राजकुमार अपने सभी परचिारकों के साथ जेल में परमेश्वर के सेवक के पास दौड़ा और उसे वहाँ स्वतंत्र रूप से चलते हुए पाया: प्रभु के स्वर्गदूत ने उसके बंधन खोल दिए थे। और राजकुमार ने कोर्नेलयिस के पैरों पर गरिकर कहा:

[6243] प्रारंभकि ईसाई पूर्व की ओर मुख करके प्रार्थना करते थे, जहाँ से सूर्य उदय होता है, जो धार्मकिता के सूर्य - मसीह का प्रतीक था।

[6244] प्राचीन लोग शोक के चन्हि स्वरूप अपने कपड़े फाड़ देते थे।

'महान है, कोर्नेलियस, तुम्हारा ईश्वर, जो गिरे हुए मंदिर में मेरी पत्नी और मेरे पुत्र को सुरक्षित रख रहा है। इसलिए, मैं तुमसे विनती करता हूँ, सर्वोच्च ईश्वर के सेवक, आओ और उन्हें वहाँ से बाहर निकालो: मैं, अपने सभी अनुचरों सहित, उस क्रूस पर चढ़ाए गए मसीह में विश्वास करता हूँ, जिसका तुम प्रचार करते हो।'

संत कोर्नेलियस उनके साथ ढह चुके मूर्तिपूजक मंदिर में गए और, स्वर्ग की ओर अपनी दृष्टि उठाकर, कहा:

'हे सेनाओं के प्रभु परमेश्वर, जो *"पृथ्वी पर दृष्टि डालता है, और वह काँप उठती है"* (भजन संहिता 103:32), जिसके मुख के सामने पहाड़ पिघल जाते हैं और गहरे सागर सूख जाते हैं! हे प्रभु, बंदियों की प्रार्थना सुनें; एवानिया को खंडहरों से छुड़ाएँ, और अपने पुत्र से अपना मुख न मोड़ें, बल्कि अपने नाम के लिए उनकी सुनें।

जब वह इस प्रकार प्रार्थना कर रहा था, अचानक एक जगह खुल गई जहाँ इवान्थिया और उसका बेटा गिरी हुई दीवारों के बीच फँसे हुए थे, और दोनों वहाँ से सुरक्षित बाहर निकल आए, और ईश्वर की स्तुति करने लगे। वहाँ मौजूद सभी लोगों ने, जिन्होंने इस शानदार चमत्कार को देखा, उद्घोष किया:

'महान है ईसाई ईश्वर!'

डेमेट्रियस का, उसकी पत्नी, उसके पुत्र और उसके पूरे परिवार के साथ बपतिस्मा हुआ; दो सौ सत्तावन अन्य नागरिकों का भी उसके साथ बपतिस्मा हुआ। संत कोर्नेलियस उस शहर में काफी समय तक रहे, लोगों के दिलों से अविश्वास की काँटों को उखाड़ते हुए और धार्मिकता के बीज बोते हुए। कुछ ही समय में, उन्होंने पूरे शहर को मसीह के धर्म में परिवर्तित कर दिया और यूनोमियस नामक एक सम्मानित व्यक्ति को वहाँ का पुरोहित नियुक्त किया। एक वृद्ध आयु तक जीवन यापन करने के बाद, जब उनकी मृत्यु निकट आई—जिसकी उन्होंने पहले से ही भविष्यवाणी कर रखी थी—तो उन्होंने परमेश्वर के पास जाने की अपनी यात्रा के लिए खुद को तैयार करते हुए, भक्तिपूर्वक प्रार्थना की। जिन सभी को उसने मूर्तिपूजा से ईसाई धर्म में परिवर्तित किया था, उन्हें एकत्र करके, उसने उन्हें विश्वास और प्रेम में बने रहने तथा हर सद्गुण का अभ्यास करने, और प्रभु की आज्ञाओं के पालन में उत्कृष्टता प्राप्त करने की शिक्षा दी। उन्हें विस्तार से उपदेश देने के बाद, उसने स्वर्ग से एक आवाज सुनी:

'कोर्नेलियस! मेरे पास आ, क्योंकि *"धर्म का मुकुट"* तेरे लिए तैयार है' (2 तीमुथियुस 4:8)।

यह सुनते ही, कोर्नेलियुस तुरंत प्रार्थना करने लगा और घुटनों के बल गिर पड़ा, और कहा:

'हे प्रभु हमारे परमेश्वर! आपने मुझे विश्वास बनाए रखने, पराक्रम का काम करने और अपने विरोधियों पर विजय प्राप्त करने में सक्षम बनाया है। मैं हर बात के लिए आपका धन्यवाद करता हूँ! परन्तु हे प्रभु, मैं तुझ से विनती करता हूँ, कि तू अपनी पवित्र ऊँचाइयों से अपने दासों पर दृष्टि कर और उन पर दया कर; उन्हें विश्वास में स्थिर कर, उनके कामों में उन्हें बल दे, और तेरी पवित्र आज्ञाओं का पालन करने में उनकी सहायता कर, ताकि वे तेरे अति पवित्र नाम की अब और अनन्तकाल तक अविराम महिमा करें।

और जब सभी ने 'आमीन' कहा, तो उसने आनन्दपूर्वक अपना प्राण प्रभु के हाथों में सौंप दिया, जो उसे स्वर्ग बुला रहे थे।

राजकुमार डेमेट्रियस, अपनी पत्नी यूफेमिया, अपने पुत्र डेमेट्रियस ([6245]), पुरोहित यूनोमियस और सभी विश्वासियों के साथ, अपने पिता और शिक्षक के लिए अंततः रो पड़े; मोमबत्तियाँ जलाकर और अंतिम संस्कार के भजन गाकर, उन्होंने उनके शरीर को ईश्वर के खंडहर हो चुके चर्च के पास सम्मान के साथ दफनाया। और हर दिन विश्वासी, उसकी कब्र पर आकर, धूप जलाते और प्रार्थना करते थे, और उसकी कब्र से कई बीमारों को स्वास्थ्य लाभ मिला।

कई साल बीत गए - और जो भी इन वर्णित घटनाओं के साक्षी थे, वे प्रभु के पास चले गए थे। सेंट कॉर्नेलियस के अवशेषों को दफनाए गए स्थान की जानकारी बाद की पीढ़ियों से अनजान रह गई, क्योंकि उनकी कब्र के चारों ओर कांटे और घना झाड़-झंखाड़ उग आया था, और वहां रखे गए उस कीमती खजाने के बारे में कोई नहीं जानता था। एक दिन, ट्रॉयस के बिशप सिलुआन[6246] उस स्थान पर पहुँचे; उस रात संत कोर्नेलियस उन्हें सपने में दिखाई दिए और कहा:

'मैं यहाँ बहुत समय से रह रहा हूँ, और कोई मुझसे मिलने नहीं आया।'

बिशप, जागने पर, जो उन्होंने देखा था उससे चकित हो गए और सोचने लगे कि उनके सामने कौन प्रकट हुआ था। अगले दिन रात को, संत फिर से उनके सामने प्रकट हुए और कहा:

[6245] तीनों ने मसीह के लिए कष्ट सहे और संतों में गिने जाते हैं; उनका पर्व 11 सितंबर को मनाया जाता है।

[6246] ट्रॉड – माइशिया के पश्चिमी एशिया माइनर प्रांत में प्राचीन शहर ट्रॉय का क्षेत्र। ट्रॉड के बिशप सिलुआन की मृत्यु 425 में हुई।

'मैं सेंचुरियन कॉर्नेलियस हूँ; मेरे अवशेष उस झाड़ी में पड़े हैं जो उस स्थान के पास उग रही है जहाँ कभी डिया का मंदिर था। मेरे लिए डेमेट्रियस के स्थान के पास एक चर्च बनाओ; उस स्थान को पंडोचियम कहा जाता है[6247] और वहाँ कई श्रद्धेय और पवित्र भाइयों के शरीर दफ़न हैं।'

अगली सुबह, बिशप ने अपने पुरोहितों को वह दर्शन सुनाया और उन सभी के साथ उस काँटेदार झाड़ी की ओर चल पड़ा जिसे संत ने उन्हें दर्शन में दिखाया था। प्रार्थना करने के बाद, उन्होंने जमीन खोदना शुरू किया और जल्द ही एक अवशेष-पात्र मिला, जिसमें संत कोर्नेलियस के अखंड और अपरिवर्तनीय अवशेष थे, जिनसे एक असाधारण सुगंध निकल रही थी, और इस महान खजाने की खोज से हर कोई अत्यंत हर्षित हो गया। हालाँकि, बिशप उस चर्च को लेकर असमंजस में थे जिसे संत ने उन्हें बनाने का आदेश दिया था, क्योंकि उनके पास इसके निर्माण की लागत को पूरा करने के लिए पर्याप्त पैसा नहीं था। फिर भी इस मामले में भी, संत कोर्नेलियस बिशप की मदद के लिए तुरंत आगे आए। अगली रात, वह यूजीन नामक एक धार्मिक और बहुत अमीर आदमी के सपने में आए और उन्हें निर्देश दिया कि वे बिशप सिलुआन को चर्च बनाने के लिए आवश्यक धनराशि दें। अपनी ओर से, यूजिनियस ने बिशप को अपने दर्शन के बारे में बताया और उसे आवश्यक सब कुछ दे दिया, जिसके बाद पवित्र चर्च का निर्माण हुआ और उसे हर वैभव से सजाया गया। जब काँटों के झाड़ी से पूजनीय अवशेषों को नए बने चर्च में स्थानांतरित करने का समय आया, तो बिशप सिलुआन और यूजिनियस के साथ विश्वासियों की एक बड़ी भीड़ अपने हाथों में जलती मोमबत्तियाँ लेकर इकट्ठा हो गई। जैसे ही बिशप और पुरोहितों ने 'ट्रिसैगियन' गाना शुरू किया, वैसे ही अवशेष-पात्र अचानक अपने आप उठ गया और अदृश्य हाथों द्वारा चर्च की ओर ले जाया गया; लोगों में से किसी ने भी उसे छूने की हिम्मत नहीं की। यह देखकर कि अवशेष-पात्र अपने आप चल रहा था, सभी चकित और विस्मित हो गए, और एक स्वर में वे चिल्ला उठे:

'पवित्र, पवित्र, पवित्र, सेनाओं के प्रभु, जो अपने सेवक कोर्नेलियस के द्वारा हमें अपनी शक्ति और अद्भुत कार्य प्रकट करते हैं!'

उस समय वहाँ कई अविश्वासी भी मौजूद थे, जिन्होंने इस चमत्कार को देखकर हमारे प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास कर लिया। जब सभी लोग गिरिजाघर पहुँचकर अंदर गए, तो वे दोनों ओर खड़े हो गए, यह देखने की इच्छा से कि अवशेषों वाली संदूक कैसे चलेगी और कहाँ रुकेगी। सीधे आगे बढ़ते हुए, यह वेदी के पास, दाईं ओर आकर रुक गई। बिशप इसे पवित्रस्थान के भीतर रखना चाहते थे, लेकिन कोई भी उस स्थान से पवित्र अवशेष-पात्र को हिला नहीं सका जहाँ यह आकर रुका था। और उस समय और बाद में भी इस ईश्वर-पुरुष की पवित्र और चमत्कारी अवशेषों के माध्यम से कई चमत्कार हुए। बिशप सिलुआन की मृत्यु के बाद, उनके उत्तराधिकारी फिलोस्टॉर्जियस ने एनक्रैटिया नामक एक प्रतिमाकार को पूरी चर्च को पवित्र छवियों से चित्रित करने के लिए मना लिया और सबसे बढ़कर, स्वयं संत कॉर्नेलियस की प्रतिमा को चित्रित करने में विशेष सावधानी बरतने के लिए कहा। हालाँकि, जब प्रतिमाकार ने संत कोर्नेलियस की प्रतिमा बनाना शुरू किया, तो वह किसी भी तरह से उनका चेहरा चित्रित नहीं कर सका, और कई बार उसने प्रतिमा पर जो कुछ भी चित्रित किया था, उसे धो डाला, क्योंकि उसे महसूस हो रहा था कि वह संत के मुखमंडल को उसकी पूरी भव्यता में उकेरने में असमर्थ है। एन्क्रैटिया का गुस्सा सातवें आसमान पर चढ़ गया; उसने संत के खिलाफ अपमानजनक शब्द बोले, प्रतिमा को छोड़ दिया और चर्च की दीवार पर कुछ और चित्र बनाने का इरादा कर सीढ़ी पर चढ़ गया, लेकिन वह फिसल गया, जमीन पर गिर पड़ा और इतना बुरी तरह घायल हो गया कि वह मृतक समान लेटा रहा। चर्च में मौजूद लोगों ने उसे उठाया, घर के अंदर ले गए और उसे एक बिस्तर पर लिटा दिया, वह मुश्किल से ज़िंदा था और एक भी शब्द नहीं बोल पा रहा था। उसके मुँह के चारों ओर कीड़े दिखाई दे रहे थे; कुछ अंदर रेंग रहे थे, जबकि अन्य उसके होठों से बाहर निकल रहे थे। यह अपने ही होठों से संत के खिलाफ अपमानजनक शब्द कहने की हिम्मत करने का उसका दंड था। हालाँकि, न तो प्रभु स्वयं और न ही उनके पवित्र सेवक हमेशा के लिए क्रोधित रहते हैं, और न ही वे अनंत काल तक रंजिश पालते हैं। क्योंकि ठीक अगली सुबह, वह आदमी जिसने डेमेट्रियस की पत्नी और बेटे को गिरती हुई दीवारों से बचाया था, एनक्रैटियस के सामने प्रकट हुआ; उसने उसका हाथ पकड़कर उसे बिस्तर से ऐसे उठाया जैसे वह सो रहा हो, और फिर ओझल हो गया। एन्क्रैटियस, स्वास्थ्य पुनःप्राप्त करने का अनुभव करते हुए, संत के चर्च की ओर तेज़ी से गया और उस पवित्र अवशेष-पात्र के सामने साष्टांग प्रणाम किया, जिसमें कॉर्नेलियस के चमत्कारी अवशेष रखे थे। उसने अपने अपराध के लिए क्षमा याचना करते हुए और उस संत को उनकी दया दिखाने तथा मृत्यु के द्वार पर पहुँचने पर उसे उसकी

[6247] आतिथ्य गृह के लिए ग्रीक नाम।

बीमारी से ठीक करने के लिए धन्यवाद देते हुए रोया। उस प्रतिमा-चित्रकार को संत के प्रकट होने से दोहरा लाभ हुआ : वह अपनी बीमारी से ठीक हो गया और यह जान गया कि संत कैसे दिखते थे। इसके बाद, उसने संत कोर्नेलियस को एक प्रतिमा पर ठीक वैसे ही चित्रित किया जैसा उसने उन्हें प्रकट रूप में देखा था, और मसीह परमेश्वर की महिमा की, जो पिता और पवित्र आत्मा के साथ हमेशा के लिए महिमामय हैं। आमीन।

पवित्र शहीदों गॉर्डियिन, मैक्रोबियिस, एलियाह, ज़ोटीकस, लूसियिन और वैलेरियिन का स्मरणोत्सव

पवित्र शहीदों गॉर्डियिन, मैक्रोवियिस, एलियाह, ज़ोटीकस, लूसियिन और वैलेरियिन का स्मरणोत्सव

13 सितंबर को स्मरणोत्सव

इन शहीदों ने लिसिनियिस के अधीन यातनाएँ सहन कीं। गॉर्डियिन कैपैडोसिया के और मैक्रोवियिस पाफ्लागोनिया के थे; दोनों युवक थे और उन्होंने पहले टॉमिस शहर में मसीह में अपने दृढ़ विश्वास के लिए यातनाएँ सहन की थीं। राजकुमार मैक्सिमिस के आदेश पर, बहुत यातनाओं के बाद, उन्हें तलवार से सिर कलम कर दिया गया। संत वैलेरियिन शहीदों की कफ़न पर फूट-फूट कर रोए और सिसकते हुए परलोक सिधार गए[6248] ।

अत्रे में परम पूजनीय पीटर की स्मृति

13 सितंबर को स्मरणोत्सव

ये पूजनीय व्यक्ति अपनी माता के गर्भ से ही ईश्वर द्वारा पवित्र किए गए थे। उन्होंने अपना पूरा जीवन उपवास और अखंड प्रार्थना में बिताया; उन्होंने कई चमत्कार किए; अन्य बातों के अलावा, उन्होंने गालिस नदी को सूखी भूमि की तरह पार किया। उन्होंने अपने शरीर को लोहे की जंजीरों से इतनी कसकर बाँध रखा था कि वे आदमी से अधिक एक छाया जैसे प्रतीत होते थे। ईश्वर को प्रसन्न करके, कुछ समय बाद उन्होंने शांतिपूर्वक देह त्याग दिया[6249] ।

पवित्र शहीदों सेलेवकोस, स्ट्रैटोनिकोस, क्रोनडिोस, लियोन्टियिस और सेरापियिन की स्मृति

13 सितंबर को स्मरणोत्सव

संत सेल्यूकस गालाटिया के, स्ट्रैटोनिकिस बिथिनिया के निकोमेडिया के थे; क्रोनडिेस, लियोन्टियिस और सेरापियिन मिस्र के थे। बहुत यातनाओं के बाद, यातना देने वालों ने संतों क्रोनडिेस, लियोन्टियिस और सेरापियिन के हाथ-पैर बांधकर उन्हें समुद्र में फेंक दिया। लहरों ने उनके पवित्र अवशेषों को किनारे पर लाकर रख दिया। स्वर्गदूतों ने ईसाइयों को उनके उचित दफन करने का आदेश दिया। संत सेल्युकस ने गलाटिया में यातनाएँ सहन कीं। उन्हें यातना के विभिन्न रूपों से गुजारा गया और अंत में, उन्हें खा जाने के लिए जंगली जानवरों के सामने फेंक दिया गया। जहाँ तक संत स्ट्रैटोनिकिस का सवाल है, उन्होंने इस प्रकार कष्ट सहे: बहुत यातनाओं के बाद, बिथुनिया के राज्यपाल ने उन्हें एक पेड़ की दो मुड़ी

[6248] उन्होंने चौथी शताब्दी की शुरुआत में शहादत प्राप्त की। काप्पाडोसिया और पाफलोगोनिया एशिया माइनर के क्षेत्र हैं। 'स्किथिया' शायद ब्लैक सी तट पर इसकी बस्तियों को संदर्भित करता है। टॉमिस शहर को अब रोमानिया में एक बंदरगाह शहर कॉन्स्टांज़ा के नाम से जाना जाता है।

[6249] गालिस उत्तर-पश्चिमी एशिया माइनर में एक नदी है, जो कैपाडोसिया और गलाटिया से होकर बहती है और काला सागर में मिल जाती है। 'एट्रोएआ' संभवतः एशिया माइनर के एक ऐसे शहर को संदर्भित करता है जो अब अज्ञात है। आदरणीय पीटर का जीवन कांस्टेंटिनोपल के पैट्रिआर्क (784–806) तारासियस के शासनकाल में और बाइज़ेंटाइन सम्राट निकिफोरोस (802–811) के अधीन व्यतीत हुआ।

हुई शाखाओं से बांधने का आदेश दिया; फिर उसने शाखाओं को छोड़ दिया, और पवित्र शहीद दो भागों में टूट गए और इस प्रकार उन्होंने अपनी आत्मा ईश्वर को अर्पित कर दी[6250] ।

27 सितंबर

14 सितंबर (पुराना तरीका)

प्रभु के बहुमूल्य और जीवन-दायक क्रूस के उत्थान का पर्व

14 सितंबर को स्मरण किया जाता है

जब रोम में मैक्सेंटियस का शासन था, तो उसने लोगों को बहुत हानि पहुँचाई, न केवल ईसाइयों को सताया और यातना दी, बल्कि मूर्तिपूजकों को भी मारा, उनकी संपत्ति लूटी और एक व्यभिचारी जीवन जिया, कुलीन परिवारों का अपमान किया। अपनी क्रूरता और भ्रष्ट जीवन शैली के कारण वह पूरे रोम के लिए एक बोझ और एक घृणास्पद वस्तु था। इसलिए, रोमनों ने गुप्त रूप से राजा कॉन्स्टेंटिन को, जो उस समय अपनी माँ के साथ ब्रिटेन में थे, एक याचिका भेजी, जिसमें वे उनसे आग्रह कर रहे थे कि वे आकर उन्हें इस अत्याचारी से मुक्ति दिलाएँ। कॉन्स्टेंटिन ने पहले मैक्सेंटियस को लिखा, और मैत्रीपूर्ण ढंग से उसे अपनी उत्पीड़न की नीति समाप्त करने के लिए समझाया। लेकिन मैक्सेंटियस ने न केवल उनकी बात मानने से इनकार कर दिया और सुधरने में विफल रहा, बल्कि और भी बुरा हो गया, और उसे सह-शासक के रूप में स्वीकार करने के लिए तैयार न होकर, उसने स्वयं कॉन्स्टेंटाइन के खिलाफ हथियार उठा लिए। जहाँ एक ओर कॉन्स्टेंटाइन को पूरी सेना द्वारा शाही सिंहासन पर चुना गया था, वहीं मैक्सेंटियस ने अपनी मर्जी से सिंहासन पर चढ़ गया। लोग उससे प्यार नहीं करते थे, और केवल कुछ ही कुलीनों ने, जिनसे उसने महान उपहार और कई सम्मान का वादा किया था, उसकी नियुक्ति की इच्छा व्यक्त की; हालाँकि, कॉन्स्टेंटाइन को सर्वसम्मत रूप से राजा घोषित किया गया।

यह सुनकर कि मैक्सेंटियस सुधर नहीं रहा था बल्कि और भी अधिक दुर्भावनापूर्ण होता जा रहा था, कॉन्स्टेंटाइन ने एक सेना इकट्ठी की और उसके खिलाफ़ चढ़ाई कर दी। अपनी सेना को कम पाकर और मैक्सेंटियस की दुष्ट साज़िशों को ध्यान में रखते हुए, उसे अपनी सफलता पर संदेह होने लगा। वह जानता था कि मैक्सेंटियस ने जादू-टोना करने के लिए बहुत मानव रक्त बहाया था और उसने उन झूठे देवताओं को प्रसन्न करने के लिए, जिन पर वह अपनी आशा रखता था, राक्षसों को कई युवकों, कुंवारी लड़कियों और गर्भवती महिलाओं की बलि चढ़ाई थी। यह जानते हुए कि मैक्सेंटियस को राक्षसी शक्ति का समर्थन प्राप्त था, कॉन्स्टेंटाइन ने स्वर्ग और पृथ्वी पर राज करने वाले एकमात्र ईश्वर से प्रार्थना करना शुरू कर दिया, जिन्हें संपूर्ण ईसाई जाति पूजती है, और उनसे अपने उत्पीड़क पर विजय का संकेत देने के लिए विनती की। और जब वह इतनी लगन से प्रार्थना कर रहा था, तो दोपहर के समय आकाश में प्रभु के क्रूस की एक आकृति उसे दिखाई दी, जो सूर्य के प्रकाश से भी अधिक चमकते हुए तारे की तरह दमक रही थी; उस पर एक लेख था: 'इस चिह्न से तू विजय प्राप्त कर'। सभी सैनिकों ने इस चमत्कारिक दृश्य को देखा, जिनमें कमांडर आर्टेमियस (जिन्हें बाद में जूलियन के अधीन मसीह के लिए शहीद किया गया था)[6251] भी शामिल थे, और वे आश्चर्य से भर गए। हालाँकि, उनमें से अधिकांश भय से भर गए थे: मूर्तिपूजकों के बीच, क्रूस की छवि दुर्भाग्य और मृत्यु का संकेत थी, क्योंकि डाकू और दुष्टों को, जिन्हें मृत्युदंड दिया जाता था, क्रूस पर चढ़ा दिया जाता था; इसलिए, सैनिकों को डर था कि उनका युद्ध तबाही में समाप्त हो जाएगा। सम्राट कॉन्स्टेंटाइन स्वयं बहुत हैरान थे। लेकिन उस रात, प्रभु मसीह स्वयं उन्हें एक सपने में दिखाई दिए और दिन के दौरान दिखाई दिए थे, उस पवित्र क्रूस के चिह्न को एक बार फिर से दिखाते हुए उनसे कहा:

'इस चिह्न की एक प्रतिकृति बनाओ, और आदेश दो कि इसे तुम्हारी सेनाओं के आगे ले जाया जाए – और तब तुम न केवल मैक्सेंटियस को, बल्कि अपने सभी शत्रुओं को पराजित करोगे।'

[6250] उनकी शहादत तीसरी शताब्दी की है। क्रोनडिस, लियोन्टियस और सेरापियन, बहुत यातनाओं के बाद, लगभग 237 ईस्वी में मक्सिमिनस प्रथम के शासनकाल में मिस्र में समुद्र में डूब गए; स्ट्रैटोनिकिस ने बिथिनिया के निकोमेडिया में यातनाएँ झेलीं (उनका पर्व दिवस 9 सितंबर को भी मनाया जाता है)।

[6251] आर्टेमियस की स्मृति 20 अक्टूबर को मनाई जाती है; उनकी शहादत 363 में हुई थी।

सम्राट ने अपने दृष्टांत को अपने सबसे करीबी सलाहकारों को सुनाया और कुशल सुनारों को बुलाकर उन्हें आदेश दिया कि वे सोने, मोतियों और कीमती पत्थरों से, प्रकट हुए चिह्न के समान, प्रभु का पवित्र क्रूस बनाएं। उन्होंने अपने सभी सैनिकों को यह भी आदेश दिया कि वे अपने सभी हथियारों, हेलमेट और ढालों पर क्रॉस का चिह्न अंकित करें।

दुष्ट मैक्सेंटियस, रोम की ओर इटली में कॉन्स्टेंटाइन के अभियान के बारे में सुनकर, महान कॉन्स्टेंटाइन के खिलाफ रोमन सेनाओं के साथ साहसपूर्वक मार्च कर गया। कांस्टेंटिन ने आदेश दिया कि पवित्र क्रॉस को उसकी रेजिमेंटों के आगे-आगे ले जाया जाए। जब वे मैक्सेंटियस से मिले और युद्ध में लगे, तो मैक्सेंटियस पवित्र क्रॉस की शक्ति से पराजित हो गया, और उसके कई सैनिक मारे गए, जबकि वह स्वयं भाग गया। सम्राट कॉन्स्टेंटाइन द्वारा पीछा किए जाने पर, वह एक पुल से टिबर नदी पार कर रहा था जिसे उसने स्वयं बनाया था; लेकिन उसी क्षण, ईश्वर की शक्ति से, पुल ढह गया, और वह दुष्ट उत्पीड़क अपने सैनिकों के साथ नदी में डूब गया, ठीक उसी तरह जैसे , प्राचीन फिरौन, के साथ हुआ था, और नदी घुड़सवारों, घोड़ों और हथियारों से भर गई[6252] । कांस्टैंटिन महान विजयी होकर रोम में प्रवेश किया, और सभी लोगों ने बड़े सम्मान के साथ खुशी-खुशी उनका स्वागत किया। तस्कर ने, अपनी ओर से, ईश्वर को अपनी गहरी कृतज्ञता अर्पित की, जिन्होंने सम्माननीय और जीवन-दायक क्रूस की शक्ति द्वारा उसे उत्पीड़क पर विजय प्रदान की थी; और उस गौरवशाली विजय की स्मृति में, उसने रोम के केंद्र में एक ऊँचे पत्थर के स्तंभ पर एक क्रूस स्थापित किया, जिस पर उसने अंकित किया: 'इस उद्धारक चिह्न द्वारा, इस शहर को उत्पीड़क के जुए से मुक्त कर दिया गया है।'

[6253]एक अन्य अवसर पर, कॉन्स्टेंटाइन ने बाइज़ेंटाइन के खिलाफ युद्ध छेड़ा, जिनके छोटे से शहर—बाइज़ेंटीयम—की स्थापना यहूदियों के राजा मनस्सेह के शासनकाल में विज़ास नामक एक ग्रीक व्यक्ति ने की थी[6254] , जिसने इसका नाम अपने नाम पर रखा था। उनसे दो बार पराजित होने के बाद, कॉन्स्टेंटाइन अत्यंत दुख से भर गया। जैसे ही शाम हुई, उसने स्वर्ग की ओर अपनी दृष्टि उठाई, और देखा कि एक मुड़ा हुआ पत्र है जिस पर लिखा था: *'संकट के दिन मुझको पुकार; मैं तुम्हें छुड़ाऊँगा, और तुम मेरी महिमा करना* (भजन संहिता 49:15)। भयभीत होकर, उसने एक बार फिर स्वर्ग की ओर अपनी आँखें उठाईं, और जैसा पहले देखा था, वैसे ही आकाश में तारों से बना एक क्रॉस देखा, और उसके चारों ओर यह शिलालेख देखा: 'इस चिह्न से तू विजय प्राप्त कर।' इसके बाद, जब क्रॉस को युद्ध में ले जाया गया, तो कॉन्स्टेंटाइन ने डैन्यूब नदी पर स्कैथियनों से लड़ाई लड़ी; एक बार फिर यह रक्षक हथियार आकाश में दिखाई दिया, और एक बार फिर, पहले की तरह, कॉन्स्टेंटाइन विजयी हुआ।

इससे सूली पर चढ़ाए गए मसीह की शक्ति को समझते हुए और यह मानते हुए कि वही एक सच्चे ईश्वर हैं, कॉन्स्टेंटाइन ने अपनी प्रशंसनीय माता हेलेना के साथ मिलकर उनके नाम पर बपतिस्मा लिया, जिन्हें उन्होंने उनकी महान धार्मिकता के कारण, प्रभु के पवित्र क्रूस को खोजने के लिए बड़ी संपत्ति के साथ यरूशलेम भेजा था। रानी हेलेना, यरूशलेम के लिए प्रस्थान करने के बाद, पवित्र स्थानों में गईं, उन्हें मूर्तिपूजा की अशुद्धियों से शुद्ध किया और कई संतों के अवशेषों को प्रकाश में लाया। उस समय यरूशलेम के पैट्रिआर्क मकरियस थे, जिन्होंने रानी का उचित सम्मान के साथ स्वागत किया। धन्य रानी हेलेना, यहूदियों द्वारा छिपाए गए प्रभु के जीवन-दायक क्रूस को खोजने की इच्छा से, सभी यहूदियों को बुलाया और उनसे प्रभु के बहुमूल्य क्रूस को छिपाए गए स्थान को दिखाने के लिए कहा। जब उन्होंने यह कहना शुरू कर दिया कि वे नहीं जानते, तो रानी हेलेना ने उन्हें यातना और मृत्यु की धमकी दी। तब उन्होंने रानी को यहूदा नामक एक वृद्ध व्यक्ति की ओर इशारा करते हुए कहा कि वह रानी को वह स्थान दिखा सकता है जिसकी वह तलाश कर रही थीं, क्योंकि वह एक सम्मानित नबी का पुत्र था।

[6252] यह घटना 28 अक्टूबर 312 को हुई थी।

[6253] स्कूथियाई – एक जंगली खानाबदोश लोग जो एशिया से आए थे और शुरू में वर्तमान रूस के दक्षिणी मैदानों में घूमते थे, जहाँ से वे बाद में डैन्यूब की ओर पश्चिम की ओर बढ़ गए, और रोमन साम्राज्य के डैन्यूबियाई क्षेत्रों पर विनाशकारी छापों से तबाही मचाई।

[6254] बाइज़ेन्टियम, जिसे बाद में कॉन्स्टेंटिनोपल या तारग्राद के नाम से जाना गया, की स्थापना सबसे पहले कॉन्स्टेंटाइन द ग्रेट ने की थी; इसकी स्थापना लगभग 658 ईसा पूर्व में हुई थी और इसका नाम इसके मुख्य संस्थापक के नाम पर रखा गया था (इसकी स्थापना एशिया माइनर के ग्रीक शहर मिलिटस के बसाहनों ने की थी, जो उस समय फारसी शासन के अधीन था)।

[6255]लंबे समय तक यातना दिए जाने के बावजूद, यहूदा ने प्रभु के क्रूस का स्थान बताने से इनकार कर दिया। तब रानी हेलेना ने उसे एक गहरे गड्ढे में फेंकने का आदेश दिया। वहाँ कुछ समय बिताने के बाद, यहूदा ने अंततः जमीन में दफन मसीह के क्रूस के बारे में जो कुछ भी वह जानता था, बताने का वादा किया। फिर उसे गड्ढे से बाहर निकाला गया और उसकी निशानदेही पर वे एक ऐसी जगह पर पहुँचे जहाँ मिट्टी और पत्थरों का एक बड़ा टीला था, जिस पर रोमन सम्राट हैड्रियन ने पहले ही विधर्मी देवी वीनस के सम्मान में एक मंदिर बना दिया था और उसमें एक मूर्ति स्थापित कर दी थी। यहूदा ने इशारा किया कि मसीह का क्रूस ठीक यहीं छिपा था।

रानी हेलेना ने मूर्तिपूजक मंदिर को ध्वस्त करने और मिट्टी व पत्थरों को बिखेरकर खोदने का आदेश दिया। उस स्थान पर पैट्रिआर्क मकरियस द्वारा प्रार्थना करने के बाद, हवा में एक सुगंधित खुशबू फैल गई, और तुरंत ही, पूर्व की ओर, मसीह की कब्र और कोड़ों से पीटने का स्थान खोजा गया; उसके पास, तीन क्रूस दबे हुए पाए गए, और बाद में वे कीलें भी मिलीं जिनसे प्रभु को क्रूस पर ठोंका गया था। जब वे यह निर्धारित नहीं कर सके कि मिले हुए क्रॉस में से कौन सा मसीह का क्रॉस है, तो ऐसा हुआ कि उसी क्षण एक मृतक को दफनाने के लिए बाहर ले जाया जा रहा था। तब पैट्रिआर्क मकरियस ने शव को उठाने वालों को रुकने का आदेश दिया, और क्रॉस को एक-एक करके मृतक के ऊपर रखा गया। जब मसीह का क्रूस उस पर रखा गया, तो मृतक तुरंत मृतकों में से जी उठा और प्रभु के दिव्य क्रूस की शक्ति से जीवित खड़ा हो गया[6256] । रानी ने, सम्मानित क्रूस को आनंदपूर्वक प्राप्त करके, इसके सामने नमन किया और इसे चूमा – जैसा कि उसके साथ मौजूद सभी सैन्य और नागरिक कमांडरों और कुलीनों ने भी किया। हालाँकि कुछ लोग उस समय भीड़ के कारण पवित्र क्रॉस को देख या चूम नहीं सके, और उन्होंने अनुरोध किया कि इसे कम से कम दूर से ही उन्हें दिखाया जाए। तब यरूशलेम के पैट्रिआर्क मकरियस ने सबसे ऊँचे स्थान पर खड़े होकर क्रॉस को उठाया और लोगों को दिखाया।

और लोगों ने पुकारा:

– हे प्रभु, दया करें!

इस प्रकार प्रभु के पवित्र क्रूस के उत्थान का पर्व[6257] स्थापित हुआ।

रानी ने प्रभु के क्रूस की पवित्र लकड़ी का एक हिस्सा, साथ ही कीलें भी अपने पास रखीं, और क्रूस को एक चांदी के संदूक में रखकर, उन्होंने इसे भविष्य की पीढ़ियों के लिए संरक्षित करने हेतु पैट्रिआर्क मकरियस को दे दिया। यहूदा, यहूदियों की एक बड़ी भीड़ के साथ, मसीह में विश्वास करने लगा और बपतिस्मा लिया; पवित्र बपतिस्मा में उसका नाम स्यरियाकस रखा गया; बाद में, वह यरूशलेम का पैट्रिआर्क बना और जूलियन द एपोस्टेट के अधीन मसीह के लिए एक शहीद के रूप में मर गया[6258] । और पवित्र सम्राज्ञी हेलेना ने यरूशलेम में पवित्र स्थलों पर चर्चों का निर्माण करने का आदेश दिया; सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण, उन्होंने हमारे प्रभु यीशु मसीह के पुनरुत्थान के चर्च के निर्माण का आदेश दिया, जहाँ मसीह की कब्र और पवित्र क्रूस की खोज हुई थी। फिर उन्होंने गेथ्सेमनी में एक चर्च बनवाने का आदेश दिया, जहाँ परमेश्वर की परम पवित्र माता का मकबरा था, जो उनकी महिमामय निद्रा को समर्पित था। इसके बाद, धर्मपरायण महारानी ने और अठारह चर्चों की स्थापना की और उन्हें विभिन्न कीमती खजाने से सजाने तथा

[6255] प्रेम, सौंदर्य, कामुकता और अशुद्ध इच्छाओं की ग्रीको-रोमन देवी। दो शताब्दियों पहले, रोमन सम्राट हेड्रियन के आदेश पर पवित्र सेपल्चर की गुफा को भर दिया गया था, जिसका उद्देश्य मसीह के सूली पर चढ़ाए जाने और दफनाए जाने की जगह को पूरी तरह से अज्ञात बना देना था। यह 119 ईस्वी में हुआ था।

[6256] रोस्तोव के संत डेमेट्रियस, अपने 'पवित्र क्रूस के उत्थान पर उपदेश' (एक फुटनोट में), में निम्नलिखित विवरण देते हैं: 'कई लोग उस चमत्कार के बारे में एक-दूसरे से असहमत बातें कहते हैं, जिसके द्वारा मसीह के सच्चे क्रूस को पहचाना गया था। कुछ कहते हैं कि एक मृत कन्या को उसकी कब्र तक ले जाया जा रहा था और उसे क्रूस की शक्ति से जीवित कर दिया गया। अन्य लोग एक दिवंगत विधवा के बारे में बताते हैं जो जीवन-दायक वृक्ष के माध्यम से जीवित हो उठी। अन्य लोग बताते हैं कि (उस समय) एक मृतक को कब्रिस्तान ले जाया जा रहा था, लेकिन वह प्रभु के क्रूस को छूने से मृतकों में से जी उठा। अन्य लोग बताते हैं कि (उस समय) एक मृतक को कब्रिस्तान ले जाया जा रहा था, लेकिन प्रभु के क्रूस के संपर्क में आने से वह मृतकों में से जी उठा। निकिफ़ोरस कैलिस्टोस (पुस्तक VIII, अध्याय 29) का कहना है कि उस समय प्रभु के क्रूस द्वारा दोनों चमत्कार किए गए थे: एक तो वह विधवा, जो घर में बीमार पड़ी थी और मरणासन्न थी, उसे मृत्यु के द्वार से जीवन और स्वास्थ्य वापस मिला, और दूसरा वह मृतक, जिसे दफनाने के लिए ले जाया जा रहा था, उसे मृतकों में से जिलाया गया।

[6257] हागियोग्राफर्स (संत-चरित्र लेखकों) के शोध के अनुसार, यह वर्ष 326 में लगभग मई के अंत में हुआ था। वर्ष 335 से, जब 13 सितंबर को पवित्र सेपल्चर चर्च का अभिषेक किया गया, यह स्थापित किया गया कि पवित्र क्रूस के उत्थान का पर्व अगले दिन, 14 सितंबर को मनाया जाना चाहिए।

[6258] करियिकस का पर्व 28 अक्टूबर को मनाया जाता है।

आवश्यक सभी चीजें प्रदान करने के बाद, प्रभु के क्रूस के जीवन-दायक वृक्ष का एक टुकड़ा और वे कीलें, जिनसे मसीह के शरीर को एक बार उसमें ठोंका गया था, अपने साथ लेकर बज़िान्टियम लौट आईं।

धन्य सम्राट कॉन्स्टेंटिन ने जीवन-दायक वृक्ष को एक सुनहरे अवशेष-पात्र में रखा, जबकि प्रभु के एक कील को संत हेलेना ने कॉन्स्टेंटिनोपल लौटते समय उत्पन्न हुए प्रचंड तूफान और उथले समुद्र को शांत करने के लिए एड्रियाटिक सागर में फेंक दिया[6259] , एक और कील को सम्राट ने अपने हेलमेट में गढ़वा लिया, तीसरे को उन्होंने ज़ेकार्याह की भविष्यवाणी की पूर्ति के लिए अपने घोड़े की लगाम के मुँह वाले हिस्से से बाँध दिया: *'उस दिन घोड़े के लगाम पर भी लिखा होगा: "यहोवा के लिए पवित्र"'* (ज़ेकार्याह 14:20), और चौथा कील रानी हेलेना ने सम्राट के सबसे करीबी सलाहकारों को सुरक्षित रखने के लिए सौंप दिया।

यरूशलेम से बाइज़ेन्टियम लौटने पर, मसीह-प्रेमी सम्राट कॉन्स्टेंटाइन ने तीन बड़े क्रॉस स्थापित किए, जो युद्ध में उसे मिली विजयों की संख्या के अनुरूप थे: एक रोम में, जब उसने मैक्सेंटीयस को हराया था; दूसरा बाइज़ेन्टियम में, जब उसने शहर पर कब्जा किया था; और तीसरा तब, जब उसने डैन्यूब नदी पर स्कैथियाई लोगों को हराया था। इन तीनों विजयों के अनुरूप, उन्होंने कीमती सामग्रियों से तीन पवित्र क्रॉस बनवाए, और उन पर सोने के अक्षरों में निम्नलिखित शब्द अंकित करवाए: IS XS NIKA, यानी, 'यीशु मसीह ने विजय प्राप्त की है'। अपनी धार्मिक निष्ठा का प्रदर्शन करते हुए और यह दिखाते हुए कि उसने क्रूस की शक्ति से अपने शत्रुओं को हराया था, सम्राट ने पूर्वी बाज़ार चौक में एक ऊँचे मंच पर एक क्रूस स्थापित किया, और मुख्य शहर के चौक में रोमन '[6260] ' के बैंगनी स्तंभ के ऊपर दूसरा क्रूस स्थापित किया, और एक तीसरा ब्रेड मार्केट में एक भव्य संगमरमर के मंच पर, जहाँ मसीह के पवित्र क्रूस के लिए कई चमत्कार और संकेत किए गए थे। कई लोग गवाही देते हैं कि प्रभु का स्वर्गदूत रात में उस स्थान पर स्वर्ग से एक तेजस्वी प्रकाश में अवतरित हुआ और उसके चारों ओर घूमते हुए, एक मधुर स्वर में त्रिसिगियोन का गायन करते हुए पवित्र क्रूस को धूप दी, जिसके बाद वह वापस स्वर्ग में आरोहण कर गया। यह साल में तीन बार होता था: सितंबर के महीने में मसीह के पवित्र क्रूस के उत्थान की रात को; दूसरी बार 7 मई को स्वर्ग में प्रभु के क्रूस के प्रकट होने की स्मृति में; और तीसरी बार पवित्र चालीस दिनों के महा-उपवास के दौरान, क्रूस की श्रद्धा ( ) के सप्ताह में। और कई धर्मनिष्ठ लोगों ने, जो धार्मिकता और पवित्रता से जीवन यापन करते थे, इस स्वर्गदूत के अवतरण को देखा और उसका गायन सुना, और बाद में दूसरों को इसके बारे में बताया।

अब हमें यह भी याद करना चाहिए कि कैसे प्रभु के क्रूस के सम्माननीय और जीवन-दायक वृक्ष को एक बार फारसियों ने ले जाया था और फिर विश्वासियों के आनंद के लिए यरूशलेम वापस कर दिया गया था[6261] ।

बाइज़ेंटाइन सम्राट फोकास के शासनकाल के दौरान, फारस के राजा खुसरो ने मिस्र, अफ्रीका और फिलिस्तीन पर विजय प्राप्त करने के बाद यरूशलेम पर कब्जा कर लिया, और इस प्रक्रिया में कई ईसाइयों को मार डाला[6262] । इस प्रक्रिया में विभिन्न चर्च के खजाने और वेस्टमेंट्स लूटने के बाद, उन्होंने अन्य चीजों के साथ इस अनमोल खजाने – प्रभु के जीवन-दायक क्रूस की लकड़ी – को भी ले लिया और इसे फारस ले गए। कुछ समय बाद, राजा फोकास की मृत्यु के बाद, हेराक्लियस सिंहासन पर चढ़ा[6263] ; यद्यपि उसने खसरौ को हराने का प्रयास किया, वह स्वयं कई बार उससे पराजित हुआ और इसलिए उसने शांति की मांग की, लेकिन अपने अहंकारी शत्रु से उसे कोई शांति नहीं मिली। तब, बड़े दुख में, सम्राट ने ईश्वर से मदद माँगी: उन्होंने सभी विश्वासियों को प्रार्थना, जागरण और उपवास करने का आदेश दिया, ताकि प्रभु उन्हें दुश्मन से बचा लें, जो अपने अहंकार में सभी ईसाइयों का संहार करने का घमंड करता था और प्रभु के नाम का अपमान करता था, और ताकि दुश्मन यह न कह सकें: 'हमारा हाथ (अर्थात् हमारी शक्ति) मज़बूत है, और

[6259] एड्रियाटिक सागर भूमध्य सागर का एक खाड़ी जैसा हिस्सा है, जो एपेनाइन प्रायद्वीप और पश्चिमी बाल्कन के तटों को छूता है। यरूशलेम की संत रानी हेलेना ने शायद पहले रोम की यात्रा की, और वहां से साम्राज्य की नई राजधानी, कॉन्स्टेंटिनोपल की यात्रा की।

[6260] आज भी, इस 'बैंगनी स्तंभ' का एक अवशेष, जिसे कभी कॉन्स्टेंटिन द ग्रेट द्वारा रोम से लाया गया था, कॉन्स्टेंटिनोपल में संरक्षित है। इस अवशेष को 'जला हुआ स्तंभ' के नाम से जाना जाता है, जो वास्तव में वैसा ही प्रतीत होता है।

[6261] निम्नलिखित वृत्तांत का अनुवाद सेंट डेमेट्रियस ऑफ रोस्टोव के *चेट'ई-मिनेई* से किया गया है, जो थियोफेंस, द कन्फेशर और कैनन के रचनाकार (जिनकी मृत्यु 9वीं शताब्दी के पहले भाग में हुई थी), और जॉर्ज केड्रिन, जो 11वीं शताब्दी के अंत और 12वीं शताब्दी की शुरुआत के एक बाइजेंटाइन धार्मिक इतिहासकार थे, की रचनाओं पर आधारित है।

[6262] बाइज़ेंटाइन सम्राट फोकास ने 602 से 610 तक शासन किया – फारस के राजा खुसरो द्वितीय ने अपने सहयोगी सम्राट मॉरिस और उनके बच्चों की मृत्यु का बदला लेने के बहाने यूनानियों पर युद्ध घोषित किया, जिनकी हत्या तानाशाह सम्राट फोकास द्वारा क्रूरतापूर्वक की गई थी।

[6263] हेराक्लियस ने 610 से 641 तक शासन किया।

हमारे देवता सामर्थी हैं' – परन्तु यह कि अन्यजाति जान जाएँ कि केवल एक ही सच्चा परमेश्वर है, जिसकी सामर्थ्य और शक्ति का कोई भी सामना नहीं कर सकता। और राजा स्वयं आँसुओं के साथ प्रार्थना करने लगा और बड़े मनोयोग से उपवास किया। फिर, अपने सभी योद्धाओं को इकट्ठा करके और क्रूस की शक्ति से स्वयं को सशस्त्र करके, ईश्वर की सहायता की आशा में, हेराक्लियस ने फारसियों के खिलाफ युद्ध छेड़ा और खसरो के साथ युद्ध में, उसे हराकर भागने पर मजबूर कर दिया, जिसके बाद, सात वर्षों तक, उसने फारसी साम्राज्य को तहस-नहस किया, शहरों और गांवों पर विजय प्राप्त की और खसरो की कई रेजिमेंटों पर जीत हासिल की। अंततः खुसरौ, जो अब यूनानी सेनाओं का विरोध नहीं कर सकता था, अपनी भूमि से भाग गया और, टिग्रिस नदी पार करते समय[6264] , ने अपने छोटे बेटे मेदार्स को सह-शासक नियुक्त किया। इससे क्रोधित होकर, उसके बड़े बेटे सिरोस ने अपने पिता और भाई दोनों को मारने की साजिश रची, जिसे उसने जल्द ही अंजाम दे दिया। इसके बाद, फारसी साम्राज्य का उत्तराधिकारी और शासक बनने पर, सिरोस ने ग्रीक सम्राट हेराक्लियस के पास एक राजदूत भेजा, जिसमें याचिकाएँ और कई उपहार थे, जिनके माध्यम से उसने सम्राट के प्रति अपनी समर्पण व्यक्त की और उनसे अपने विनाशकारी युद्ध को समाप्त करने की विनती की। तब राजा हेराक्लियस ने फारस के राजा से शांति स्थापित करने के बाद, प्रभु के क्रूस के जीवन-दायक वृक्ष को अपने साथ ले लिया, जिसे खसरू ने यरूशलेम से चुराया था और जो चौदह वर्षों तक फारसियों के कब्जे में था। और यूनानी राजा बड़ी लूट-खसूट के साथ लौटा, और ईश्वर की महान सहायता के लिए आनंदित होकर और उनकी महिमा करते हुए।

यरूशलेम पहुँचने पर, राजा ने पवित्र क्रूस को अपने कंधों पर रख लिया, उसका इरादा इसे उसके पूर्व स्थान पर वापस ले जाने का था, और उसने इसे सोने और कीमती पत्थरों से जड़े शाही बैंगनी चोगा पहनकर और सिर पर राजसी मुकुट धारण करके उठाया। तब एक बड़ा चमत्कार हुआ: राजा अचानक खोपड़ी की जगह (Place of the Skull) की ओर जाने वाले द्वारों पर रुक गया, और, सभी को आश्चर्यचकित करते हुए, मसीह के पवित्र क्रूस के साथ एक भी कदम आगे नहीं बढ़ सका। कॉन्स्टेंटिनोपल के पैट्रिआर्क ज़कारियास, यरूशलेम के सभी निवासियों के साथ, जैतून के पहाड़ तक शाखाओं और खजूर के साथ राजा से मिलने के लिए बाहर गए, और राजा के साथ-साथ चले। और देखो, उसने परमेश्वर के तेजस्वी स्वर्गदूत को उन द्वारों पर खड़ा रास्ता रोकते हुए देखा।

और स्वर्गदूत ने उससे कहा:

'हमारे स्रष्टा ने क्रूस को उस तरीके से यहाँ नहीं लाया जिस तरीके से आप इसे ले जा रहे हैं।'

यह देखकर और सुनकर, धर्मगुरु काँप उठे और, राजा की ओर मुड़कर, कहा:

'हे राजा, जान लो कि भव्य वस्त्रों में लिपटे और शाही आभूषणों से सजे हुए व्यक्ति के लिए इस पवित्र क्रूस को उठाना असंभव है, जिसे मसीह—जो हमारे लिए गरीब हो गए—ने नम्रता की अवस्था में उठाया था; यदि आप इसे लाना चाहते हैं, तो उनकी गरीबी का अनुकरण करें।'

तब धर्मपरायण राजा हेराक्लियस ने अपना बैंगनी चोगा उतार दिया और साधारण, विनम्र वस्त्र धारण कर लिए, और बिना किसी और बाधा के, नंगे पैरों चलते हुए, पवित्र क्रूस की कीमती लकड़ी को ले गए, – और उसे चर्च में उसी स्थान पर ले गए जहाँ से उसे फारस के राजा खुसरो ने ले जाया था, और एक बार फिर वहाँ क्रूस को स्थापित किया[6265] ।

और प्रभु के क्रूस की वापसी पर विश्वासियों में बहुत आनंद और हर्ष हुआ, और वे आनंदित हुए (जैसे इस्राएलियों ने एक बार फिलिस्तीयों से वाचा के संदूक की वापसी पर आनंद मनाया था) (1 शमूएल 7), महिमा के राजा, मसीह की स्तुति करते हुए, जिन्हें क्रूस पर चढ़ाया गया था, और उनके पवित्र क्रूस के पैर में आराधना करते हुए। महिमा, कीर्ति और आराधना उन्हें हमसे भी मिले, अब और युगानुयुग, आमीन।

ट्रोपारियन, स्वर 1:

हे प्रभु, अपने लोगों को बचाओ, और अपनी विरासत को आशीष दो; हमारे विश्वासयोग्य सम्राट निकोलस अलेक्जेंड्रोविच को उनके शत्रुओं पर विजय प्रदान करो, और अपने क्रूस द्वारा उनके राज्य की रक्षा करो।

[6264] टिग्रिस फारस और मेसोपोटामिया से होकर बहने वाली एक नदी है; अपने मार्ग के अंत में, यह यूफ्रेटिस से मिलती है और फारस की खाड़ी में बहती है।

[6265] यह वर्ष 629 ईस्वी में हुआ था। उस समय यरूशलेम के पैट्रिआर्क संत ज़कारियास थे, जिन्होंने 609 से 633 तक यह पद संभाला (वह 614 से 628 तक फ़ारसियों द्वारा बंदी बनाए गए थे)।

कॉन्टाकयिन, स्वर 4:

हे मसीह परमेश्वर, आपने अपनी स्वैच्छकि इच्छा से क्रूस पर चढ़कर, अपने नए नविास, जो आपके नाम पर रखा गया है,[6266] को अपनी कृपा प्रदान करें: हमारे वशि्वासयोग्य सम्राट नकिोलस अलेक्जेंड्रोवचि को अपनी शक्ति से प्रसन्न करें, उन्हें उनके वरिोधयिों पर वजिय प्रदान करें, और अपने शांति के हथयिार को उनके सहायक के रूप में, एक अजेय वजिय दें।

पवत्रि शहीद पापयिास की स्मृति

14 सतिंबर को स्मरणोत्सव

संत पापयिास ने मैक्समियिन के शासनकाल में, मैग्नस के राज्यपालत्व में, लाइकोनयिा की भूमि में यातनाएँ सहन कीं। उन्हें कई और वभिन्नि तरीकों से यातनाएँ दी गईं: उनके जबड़े और गाल कुचल दिए गए, उन्हें लटकाया गया और उनके मांस को पंजे से खुरच दिया गया; फरि उन्हें कीलों से जड़े लोहे के जूते पहनाने और उनमें चलने के लिए मजबूर किया गया। इस प्रकार की यातनाओं के बीच, उन्होंने अपना प्राण प्रभु को सौंप दिया[6267] ।

28 सतिंबर

15 सतिंबर (पुराना तरीका)

पवत्रि शहीद नकिति का कष्टकथा

१५ सतिंबर को स्मरणोत्सव

जब प्रभु का सम्माननीय और जीवन-दायक क्रूस, जो वजिय का प्रतीक है, संसार के ऊपर ऊँचा उठाया गया, तब संत नकिति, जनिका नाम 'वजिय' है, उसकी छाया में आए। इस दनि की पूर्व संध्या पर, हमने पवत्रि क्रूस की उन्नति का पर्व मनाया, जो संसार के लिए अजेय वजिय है, और अब हम संत नकिति का सम्मान करते हैं, जनिके नाम का अर्थ 'वजिेता' ([6268]) है। यीशु मसीह का यह पराक्रमी योद्धा, उस पर सूली पर चढ़ाए गए की आदर में, पवत्रि क्रूस के शत्रुओं से युद्ध करने के लिए, मानो एक ध्वज के नीचे, क्रूस के नीचे खड़ा था। कोई सांसारकि राजा के लिए लड़ता है , कोई अपनी जान और व्यर्थ की महमिा के लिए, कोई अस्थायी धन-संपत्ति के लिए; लेकनि संत नकिति ने अपने एकमात्र प्रभु, यीशु मसीह के लिए लड़ा, जो सभी सृष्टि के राजा, हमारी महमिा और हमारा अक्षय धन हैं। जहाँ और कैसे इस योद्धा ने मसीह के लिए लड़ा, इसकी कहानी नम्निलखिति वृत्तांत में बताई गई है।

जब संत कॉन्स्टेंटनि द ग्रेट, एपोस्टल्स के बराबर, के शासनकाल में, पवत्रि वशि्वास पूरे ब्रह्मांड में फैलने लगा, तब गोथकि भूमि[6269] में, इस्ट्रा नदी[6270] (डैन्यूब) के दूसरी ओर, पवत्रि भक्ति अंधकार में प्रकाश की तरह चमकी। उसी भूमि में संत नकिति का जन्म, बपतस्मिा और पालन-पोषण हुआ था। गोथकि बशिप थयिोफलिस[6271] , जन्हिोंने नकियि

[6266] अर्थात् ईसाइयों के लिए।

[6267] संत पापयिास ने तीसरी शताब्दी के अंत या चौथी शताब्दी की शुरुआत में शहादत दी। वह लकिाओनयिा (एशयिा माइनर का एक क्षेत्र, जो उत्तर में गलातयिा, पश्चमि में फ्राइजयिा और इसौरयिा, पूर्व में कैपैडोसयिा, और दक्षणि में लसियिा से सटा हुआ था) के लारांडा शहर से था, जहाँ उनके कष्ट शुरू हुए; ये बाद में डयिोकेसैरयिा में जारी रहे और इसौरयिा की सेलेउकयिा में समाप्त हुए।

[6268] नकिति – ग्रीक से अनुवादति 'वजिेता'।

[6269] गोथकि साम्राज्य नचिले वस्तिुला से काला सागर तक फैला हुआ था; गोथ मुख्य रूप से आज के रोमानयिा में, डैन्यूब नदी के कनिारे रहते थे।

[6270] इस्ट्र – डैन्यूब नदी का एक प्राचीन नाम।

[6271] लगभग 340 में नधिन।

की प्रथम परिषद में भाग लिया था, ने ऑर्थोडॉक्स धर्म के सिद्धांतों की घोषणा की और परिषद के फरमानों पर हस्ताक्षर किए – उन्होंने निकिता को विश्वास के प्रकाश से प्रबुद्ध किया और उन्हें पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम पर बपतिस्मा दिया।

थोड़ी ही देर बाद, प्राचीन शत्रु—शैतान—जो मसीह के पवित्र विश्वास के प्रसार और मसीहियों की लगातार बढ़ती संख्या को सहन नहीं कर सका, ने मूर्तिपूजा से अंधकारमय इस बर्बर भूमि में, मसीह के नाम का प्रचार करने वालों और प्रभु में विश्वास करने वालों के विरुद्ध, कलह और कठोर उत्पीड़न भड़काया। दुष्टता की आत्मा ने उस देश के राजकुमार, जिसका नाम फनारिच था, को ईसाइयों को मारने और उनके स्मरण को भी अपने देश से मिटा देने के लिए प्रेरित किया। उस समय, गोथों के बीच एक विभाजन और गृहयुद्ध उत्पन्न हुआ। वे दो गुटों में बंट गए: एक का नेतृत्व एक निश्चित फ्रिटिगिर्न कर रहा था, जबकि दूसरे का नेतृत्व क्रूर यातनाकर्ता अफानारिच कर रहा था। जब इन संबंधियों के बीच युद्ध हुआ और भारी रक्तपात हुआ, तो अधिक शक्ति और वीरता से संपन्न अफानारिच ने अपने प्रतिद्वंद्वी को हरा दिया और अपनी सेना को भागने पर मजबूर कर दिया। पराजित फ्रिटिगिरन ग्रीस भाग गया, जहाँ उसने मसीह-विरोधी सम्राट वैलेंस[6272] से मदद मांगी; सम्राट ने थ्रेस में तैनात पूरी सेना को फ्रिटिगिरन की सहायता के लिए भेजने का आदेश दिया। इसके बाद, फ्रिटिगिर्न अपने सभी बचे हुए योद्धाओं और थ्रेस में इकट्ठी की गई ग्रीक सेना के साथ अपने प्रतिद्वंद्वी के खिलाफ़ मार्च कर गया। जब वह इस्टर नदी (डैन्यूब) पार कर रहा था, तो उसने पवित्र क्रॉस की एक मूर्ति बनवाने और उसे अपनी रेजिमेंटों के आगे ले जाने का आदेश दिया। इस प्रकार उसने अथानारिक पर हमला किया। एक भयंकर युद्ध छिड़ गया, लेकिन ईसाइयों ने, क्रूस की सहायता से, अथानारिक को हरा दिया और उसकी पूरी सेना को पराजित कर दिया: कुछ मारे गए, अन्य कैद कर लिए गए, इसलिए वह स्वयं, केवल थोड़े से अनुयायियों के साथ, बड़ी मुश्किल से बच पाया। उस समय से, ईसाई ऑर्थोडॉक्स धर्म गोथों के बीच और अधिक फैलने लगा, क्योंकि कई लोगों ने युद्ध में प्रकट हुई क्रूस की अजेय शक्ति को देखकर, क्रूस पर चढ़ाए गए प्रभु में विश्वास करने लगे।

जब बिशप थियोफिलस की मृत्यु हुई, तो एक विवेकी और धार्मिक व्यक्ति, उर्फिल[6273] , ने उनके बाद पद संभाला। उन्होंने गोथों के लिए एक लिपि बनाई और कई किताबों का ग्रीक से गोथिक में अनुवाद किया, जिससे हर गुजरते दिन के साथ गोथों के बीच पवित्र ईसाई धर्म का और अधिक प्रसार हुआ। उस भूमि के सबसे कुलीन और प्रतिष्ठित व्यक्तियों में से एक, संत निकिता ने भी अपने उत्साह के माध्यम से वहाँ मसीह में विश्वास की स्थापना में योगदान दिया। अपनी भक्ति और दैवीय प्रेरित शब्दों के माध्यम से, उन्होंने कई लोगों को मसीह की ओर ले आए।

कुछ समय बाद, दुष्ट अफ़ानारिह एक बार फिर अपने देश लौट आया। सत्ता और अधिकार प्राप्त करने के बाद, शैतान के बहकावे में आकर, उसने अपने क्षेत्र में ईसाइयों पर एक भयानक अत्याचार शुरू कर दिया, वह अपनी अपमान का बदला लेना चाहता था, क्योंकि उसे युद्ध में ईसाइयों द्वारा हराया और अपमानित किया गया था।

तब परमेश्वर के प्रति उत्साह से प्रेरित संत निकिता, अदृश्य और दृश्य दोनों शत्रुओं के विरुद्ध युद्ध के लिए आगे बढ़े: उन्होंने अविश्वासियों को सच्चे धर्म में परिवर्तित करके और विश्वासियों को शहीद होने के कार्य के लिए तैयार करके अदृश्य शत्रु के विरुद्ध युद्ध छेड़ा; जबकि दृश्य शत्रु के विरुद्ध उनका संघर्ष यातनाकर्ता अफ़ानारिख की निंदा करने, उसकी अधर्मीता और अमानवीयता के लिए तथा कई विश्वासियों को विभिन्न यातनाएँ देने के लिए उसे फटकारने में निहित था; इस प्रकार संत निकिता दोनों पर विजयी हुए: उन्होंने शैतान को पैरों तले कुचल दिया और यातनाकर्ता की क्रूरता पर विजय प्राप्त की। उन विभिन्न यातनाओं का, जिनसे उन्होंने मसीह के इस नेक पीड़ित को मसीह का त्याग करने के लिए मजबूर करने का प्रयास किया, कोई असर नहीं पड़ा, और यातना देने वाला स्वयं इस बात से हैरान था कि अपनी पूरी ताकत के बावजूद वह मसीह के एक भी सेवक को मना नहीं सका, जो अपने इकरार में एक मजबूत और अटूट स्तंभ की तरह डटा रहा।

तब उस अधर्मी ने क्या उपाय सोचा? उसने उस व्यक्ति को आग से नष्ट करने का निश्चय किया जिसे वह अनेक घावों, शरीर की यातना, या उसके अंग-प्रत्यंग तोड़कर मार नहीं सका था। लेकिन उस दुष्ट मनुष्य को क्या मिला? उसने शहीद को आग की लपटों से जितना जलाया, उससे कहीं ज़्यादा अपनी ही क्रूरता से खुद को जलाया: संत निकिता, यद्यपि वह आग में थे, उनका शरीर लपटों में भस्म नहीं हुआ, जबकि उनकी आत्मा एक नए, शाश्वत और अमर जीवन के लिए

[6272] सम्राट वैलेन्स ने 364 से 378 तक शासन किया।

[6273] उर्फ़िल या उल्फिलास – पहले गोथिक बिशप और गोथों के बीच ईसाई धर्म के एक उत्साही प्रचारक; वह 311 से 383 तक जीवित रहे।

पुनर्जीवति हुई। इस बीच, यातना देने वाला आग के बनिा ही अपनी अधर्मीता से भस्म हो गया: उसने अपनी आत्मा को सुन्न कर दयिा था और अपने शरीर को नरक के लिए तैयार कर लयिा था। इस प्रकार संत नकिति ने क्रूस के चह्निन के नीचे मसीह के लिए संघर्ष कयिा और खुद को एक वजिेता साबति कयिा; वह न केवल नाम के लिए बल्कि वास्तवकिता में भी ऐसा था।

संत का शरीर, आग से अछूता, बनिा दफनाए वहीं अपमानपूर्वक फेंका हुआ पड़ा रहा। उस समय, उस क्षेत्र में मैरयिन नाम का एक धार्मकि ईसाई रहता था। यह व्यक्ति सिलिसियिा की भूमि, मोप्सुएस्टयिा शहर का मूल नविासी था[6274]। अपने कसिी नजिी काम के सलिसलिे में, वह गोथों के देश में आया था, और वहाँ काफी समय तक रहा। मारयिन की मुलाकात संत नकिति से हुई और उसने उनकी दोस्ती और स्नेह जीता; वशिेष रूप से, जब उसने देखा कि वह पवत्रि तपस्वी मसीह के पवत्रि धर्म के लिए दृढ़ खड़ा था, यहाँ तक कि उसके लिए अपना खून बहाने को भी तैयार था, तो वह उससे और भी अधकि प्रेम करने लगा। और इस प्रकार, जब संत का शरीर बनिा दफ़नाए पड़ा था, मारयिन ने अपने प्रयि मत्रि और मसीह के शहीद के शरीर को चुराकर अपनी मातृभूमि ले जाने की योजना बनाई। लेकनि वह राजकुमार के डर से अपनी योजना को अंजाम देने से डर रहा था, जसिने आदेश दयिा था कि कोई भी शहीद के शरीर को दफ़नाने की हम्मित न करे। इसलिए मारयिन ने रात के अँधेरे में गुप्त रूप से शव को ले जाने का नश्चिय कयिा।

जब रात हुई, तो मारयिन अपने मशिन पर नकिलने के लिए तैयार था; लेकनि रात अँधेरी और बरसाती थी, इसलिए उसके लिए चलना मुश्कलि हो गया। मारयिन इस बात से बहुत दुखी था, क्योंकि वह यह नहीं देख पा रहा था कि कहाँ जाएँ या शहीद का शरीर कहाँ पाएँ जसिकी वह तलाश कर रहा था। जब वह इस पर गहराई से शोक मना रहा था, तब परमेश्वर, जो सभी सांत्वना का स्रोत है, जसिने एक बार मगों को एक तारे द्वारा बेथलहम तक मार्गदर्शन दयिा था (मत्ती 2:2), ने मारयिन को उसके दुःख में सांत्वना दी और उसे संत का शरीर खोजने का मार्ग दखिाया: उन्होंने एक तारे के रूप में एक दव्यि शक्ति भेजी, जो मैरयिन के सामने चमकते हुए उसे उस स्थान पर ले गई जहाँ उसे जाना था। यह तारा मारयिन के आगे-आगे चलता गया और रात के अंधकार को दूर कर दयिा; उसने भी खुशी-खुशी उसका अनुसरण कयिा। जब वह उस स्थान पर पहुँचा जहाँ संत का शरीर पड़ा था, तो तारा उसके ऊपर आकर ठहर गया। फरि मारयिन ने शहीद के शरीर को एक साफ कफ़न में लपेटकर, उसे उस घर में ले गया जहाँ वह रहता था।

इस प्रकार मारयिन को वह खजाना मलि गया जसिकी वह तलाश कर रहा था। उसे कुछ समय के लिए अपने घर में बड़ी सावधानी से छपिाने के बाद, वह जल्द ही अपने देश लौट आया और अपने साथ पवत्रि शहीद[6275] का शरीर ले आया। मोप्सुएस्टयिा शहर पहुँचने पर, मारयिन ने उन्हें अपने घर में सम्मानपूर्वक दफनाया।

ईश्वर ने अपने कष्ट-भोगी संत नकिति के कारण मारयिन के घर पर अपना आशीर्वाद प्रदान कयिा, ठीक वैसे ही जैसे उन्होंने एक बार यूसुफ के कारण पोटफिर के घर को महान धन-संपत्ति से आशीर्वादति कयिा था (उत्पत्ति 39:5) और वाचा के संदूक के कारण अबेद-तारैयों के घर को भी (2 शमूएल 6:11)। मारयिन का घर भौतकि और आध्यात्मकि दोनों प्रकार की महान संपदा से भर गया; क्योंकि संत की ताबूत से जरूरतमंद सभी लोगों को कई उपहार बांटे गए, और बीमारों पर कई चंगाइयाँ हुईं। पूरा शहर और आसपास के नविासी संत की कब्र पर इकट्ठा हो गए, इसलिए मरयिम का घर वहाँ आए सभी वशि्वासयिों के लिए पर्याप्त नहीं था; इसलिए, उन्होंने सभी ने संत नकिति के नाम पर एक चर्च बनाने और वहाँ शहीद के अवशेष रखने का फैसला कयिा। इस कार्य को लगन से शुरू करते हुए, वशि्वासयिों ने जल्द ही चर्च का नर्मिाण कर दयिा। जब भवन बनकर तैयार हो गया, और चर्च को उपयुक्त भव्यता से सजाया गया, तो पवत्रि शहीद की कफ़न खोली गई; उन्होंने अवशेष-पात्र को लेकर उसे नव-नर्मिति चर्च में ले गए, जहाँ उन्होंने उसे जमीन में दफना दयिा। केवल मारयिन ही संत की अवशेषों में से एक उँगली अपने घर के लिए आशीर्वाद के रूप में ले जाने में सफल रहा, जसिे उसने श्रद्धापूर्वक रखा; कोई और संत नकिति के अवशेषों में से एक भी कण नहीं ले सका।

एक अवसर पर, मोप्सुएस्टयिा के धन्य बशिप ऑक्सेनटयिस ने, पवत्रि शहीदों ताराच, प्रोबस और एंड्रोनकिस के सम्मान में एक चर्च की स्थापना की, जहाँ इन तीनो संतों के अवशेष रखे गए थे, और उन्होंने अनाज़रवा के नागरकिों को एक पत्र भेजकर उनसे नव-नर्मिति चर्च के लिए पवत्रि शहीदों के अवशेषों का एक हस्सिा देने का अनुरोध कयिा। तब अनाज़ार्वे के नागरकिों ने ऑक्सेनटयिस से बदले में अपने शहर के लिए आशीर्वाद स्वरूप संत नकिति के अवशेषों का

[6274] मोप्सुएस्टयिा शहर परिामा नदी के तट पर एक मैदान में स्थति था।

[6275] संत नकिति का 15 सतिंबर 372 को नधिन हो गया।

एक हिस्सा देने के लिए कहा। उनकी विनती को स्वीकार करते हुए, बिशप ने पवित्र शहीद निकिता की कब्र खोलने का आदेश दिया। और अचम्भे की बात यह थी कि, बिना किसी स्पष्ट कारण के, संत की कफ़न को ढकने वाली संगमरमर की पट्टिका दो भागों में टूट गई। उपस्थित लोगों में से एक ने हिम्मत करके पवित्र अवशेषों को अपने हाथ से छू लिया, लेकिन तुरंत ही उसका हाथ सूख गया, और वह भय से कांप उठा। उसी क्षण, स्वर्ग से गरज की एक तेज आवाज़ गूँजी और आकाश में बिजली की एक तेज़ चमक चमकी; सभी भय से कांप उठे। तब बिशप को एहसास हुआ कि ईश्वर संत की अवशेषों को तोड़ने के पक्ष में नहीं हैं, और उन्होंने अपने इरादे पर पश्चाताप किया। उस व्यक्ति का मुरझाया हुआ हाथ थामकर जिसने अहंकारपूर्वक संत की अवशेषों को छुआ था, उन्होंने एक बार फिर उन्हीं अवशेषों को उससे छुआ और प्रार्थना करने लगे:

'हे मसीह के पवित्र शहीद, निकिता! तुम्हारे लिए हानि पहुँचाने से अधिक उपयुक्त है कि तुम चंगा करो, क्योंकि तुम भले हो और सर्व-भले प्रभु का अनुसरण करते हो; और यदि तुमने इस मनुष्य को शीघ्रता से दंड दिया है, तो क्या तुम उसे और भी शीघ्रता से दया नहीं दिखाओगे?'

जैसे ही बिशप ने ये शब्द कहे, उस आदमी का मुरझाया हुआ हाथ तुरंत ठीक हो गया, और सभी पवित्र शहीद निकिता के चमत्कारों से चकित हो गए और परमेश्वर की स्तुति करने लगे। ईश्वर के प्रिय सेवक के अवशेषों को छूने का साहस न करते हुए, बिशप[6276] ने उनकी श्रद्धापूर्वक सेवा करने के बाद, एक बार फिर से अपने मकबरे को सम्मानपूर्वक सील कर दिया, और पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा, त्रिमूर्ति में एक ईश्वर की महिमा की, जिनके लिए सर्वदा और सर्वदा महिमा, सम्मान और आराधना उचित है। आमीन।

पुरोहित और चमत्कार-कर्ता संत फिलोथियस की स्मृति

१५ सितंबर को स्मरण

आदरणीय फिलोथियस मूल रूप से मुरव्योव (म्रावनी) नामक गाँव के रहने वाले थे[6277] । वयस्क होने पर, उन्होंने विवाह किया और उनके बच्चे हुए। तब उन्हें पुरोहित पद के लिए योग्य माना गया। उस समय से, संत ने निरंतर उपवास और प्रार्थना की। अपने पवित्र जीवन के द्वारा, उन्हें चमत्कार करने का वरदान मिला और उन्होंने मसीह के नाम पर कई चमत्कार किए: उदाहरण के लिए, उन्होंने पानी को शराब में बदल दिया, एक ही शब्द से एक चट्टान को उसकी जगह से हटा दिया, और कई अन्य चमत्कार किए। साथ ही, उन्होंने ईसाई परोपकार के कार्य भी किए: उन्होंने भूखों को भोजन कराया और ज़रूरतमंदों की मदद की। जब उनकी मृत्यु के एक वर्ष बाद[6278] , और विश्वासियों ने उनके अवशेषों को किसी अन्य स्थान पर ले जाने की इच्छा व्यक्त की, तो संत, जैसे जीवित हों, ने अपनी बाहें फैलाईं और उनके शरीर को ले जा रहे दो पुरोहितों के कंधों को पकड़कर उठ खड़े हुए और तीन कदम चले। उन्हें उसी स्थान पर वापस लिटा दिया गया, जहाँ उनके पवित्र अवशेषों से प्रचुर मात्रा में मिरा (एक प्रकार का सुगंधित द्रव) निकलने लगा।

शहीद संत पोर्फीरियस की स्मृति

शहीद संत पोर्फीरियस की स्मृति

15 सितंबर को स्मरणोत्सव

एक अवसर पर, सम्राट जूलियन द एपोस्टेट का जन्मदिन मनाया जा रहा था। एक अभिनेता के रूप में, पोरफिरियस को रंगमंच पर ईसाइयों का मज़ाक उड़ाने और उनकी निंदा करने के लिए कहा गया था। जैसे ही वह इस उद्देश्य के लिए

[6276] बिशप ऑक्सेनटियस द्वितीय मध्य-5वीं शताब्दी में रहते थे; उन्होंने 451 में कालसीडोन में चौथे सार्वभौमिक परिषद में भाग लिया।

[6277] ग्रीक से अनुवादित, जहाँ यह लिखा है: 'मिरिमिक्स' – जिसका अर्थ है 'चींटी'; इसलिए 'मुराव्येवो' या 'म्रावनी'। यह बस्ती एशिया माइनर में, बिथिनिया के क्षेत्र में स्थित थी।

[6278] माना जाता है कि सेंट फिलोथियस का निधन लगभग 10वीं शताब्दी में हुआ था।

पानी में कूदा और चल्लिाया, 'पोर्फ़रियिस को पति, पुत्र और पवत्रि आत्मा के नाम पर बपतस्मिा दयिा जा रहा है', वह अचानक सच्चे ईश्वर में वश्विास करने लगा और पानी से बाहर नकिलकर खुले तौर पर मसीह की घोषणा करने लगा। इसके लिए उसे यातना दी गई और तलवार से उसका सरि कलम कर दयिा गया[6279] ।

पवत्रि शहीदों मैक्समिस, अस्क्लयिाइदा और थयिोडोतस की स्मृत

15 सतिंबर को स्मरणोत्सव

पवत्रि शहीद मैक्समिस और अस्क्लयिाइदा मसियिा के मार्सयिानोपोलसि नगर में अधर्मी मैक्समियिन के शासनकाल में रहते थे। वे अपनी धार्मकिता के लिए प्रसद्धि थे और उन्होंने कई लोगों को सच्चा धर्म सखिाया, जसिसे वे पवत्रि बपतस्मिा ग्रहण करने लगे। यह जानने पर, उस समय मार्सयिनोपोलसि में आए हुए थ्रेस के राज्यपाल टायरस्ि ने उन्हें मुकदमे के लिए लाने का आदेश दयिा। मक्समिस के साथ वश्विास को लेकर एक लंबी चर्चा के बाद, यातना देने वाले ने चार आदमयिों को उसके पूरे शरीर पर पीटने का आदेश दयिा; फरि, जब अस्क्लयिादा ने मसीह में अपने वश्विास की गवाही दे दी, तो उसने आदेश दयिा कि उसे भी अपने पैरों के तलवों से पीटा जाए। तब धर्मनष्ठि थयिोडोटस ने बोलकर यातनाकर्ता की अमानवीयता की नदिा की; जसिके लिए उसे एक पेड़ से लटका दयिा गया और उसके शरीर पर कोड़ों की बरसात की गई। तेरह दनि बाद, एड्रयिानोपल पहुँचने पर टायरस्ि ने उन तीनों शहीदों को, जन्हिें उसी शहर में लाया गया था, नए यातनाओं से पीड़ति कयिा, उन्हें लाल-गरम तांबे की प्लेटों से जलाया, जसिसे उनके शरीर पघिल गए; लेकनि स्वर्ग से एक आवाज़ ने उन्हें सांत्वना और प्रोत्साहन दयिा। कई दनिों तक जेल में रहने के बाद, उन्हें एक वशिाल भीड़ के सामने सर्कस में जानवरों के सामने फेंक दयिा गया। लेकनि माक्समिस और थयिोडोटस पर छोड़ी गई मादा भालू ने उन पर स्नेह दखिाया, जबकि वह सांड जसि पर एस्क्लयिाडस को बांधा गया था, बंधा हुआ खड़ा रहा और अपनी जगह से नहीं हलिा। क्रोधति राज्यपाल पवत्रि शहीदों के साथ फलिपिोपोलसि के लिए रवाना हुआ और शहर पहुँचने से पहले, साल्टसि गाँव में, उन्हें मसीह का त्याग करने के लिए मनाने के और प्रयासों के बाद, उनके सरि कलम करने का आदेश दयिा। कुछ ही देर बाद, न्यायपीठ पर बैठे हुए, यातना देने वाले पर बजिली गरि गई[6280] ।

29 सतिंबर

16 सतिंबर (पुराने कैलेंडर के अनुसार)

सर्व-स्तुत्य महान शहीद यूफेमयिा की शहादत

16 सतिंबर को स्मरणोत्सव

[6279] संत पोर्फरियस शहीद ने 361 में एशयिा माइनर के एफेसस शहर में जूलयिन द अपोस्टेट के शासनकाल के दौरान शहादत प्राप्त की।

[6280] पवत्रि शहीदों थयिोडोटस, मैक्समिस और अस्क्लयिादास (जन्हिें अस्क्लपियिोडोٹس भी कहा जाता है) ने चौथी शताब्दी की शुरुआत में शहादत प्राप्त की, जब पूर्वी रोमन साम्राज्य में गैलेरयिस मैक्समियिन का शासन था। यहाँ 'मसियिा' शब्द का तात्पर्य उत्तर-पश्चमिी क्षेत्र से नहीं, बल्कि डेन्यूब नदी के कनिारे स्थति रोमन प्रांत से है, जो पश्चमिी (ऊपरी) और पूर्वी (नचिले) भाग में वभिाजति था। मार्सयिानोपोलसि नचिली मसियिा में कॉन्स्टेंटनिोपल से डेन्यूब तक जाने वाले रास्ते पर एक शहर था; यह बाद में प्रेस्लाव बना और अब बुल्गारयिा में प्रावोदी गाँव के नाम से जाना जाता है। एड्रयिनोपल (तुर्की में एडरिने) एक प्रसद्धि शहर है जसिकी स्थापना दूसरी शताब्दी के पहले भाग में रोमन सम्राट हैड्रयिन ने की थी। फलिपिोपोलसि थ्रेस में एक प्राचीन कलिबंदी शहर है, जो अब पूर्वी रुमेलयिा में मारत्सिा नदी पर स्थति है; आज भी यह अपने उद्योग और जनसंख्या के मामले में एक काफी महत्वपूर्ण शहर बना हुआ है।

धर्मद्रोही डायोक्लेटियिन[6281] के शासनकाल में, काल्सेडॉन[6282] का शासन उनके द्वारा नियुक्त प्रोकॉन्सल प्रस्किस[6283] के अधीन था। पैगन देवता एरेस[6284] के सम्मान में एक त्योहार आयोजित करने का इरादा रखते हुए, जिसके लिए काल्सेडन में एक मंदिर समर्पित किया गया था और जिसमें उसकी एक मूर्ति स्थापित की गई थी, प्रस्किस ने अपनी अधिकार से सभी पड़ोसी कस्बों और गांवों के लिए एक फरमान जारी किया, जिसमें सम्राट के नाम पर आदेश दिया गया कि हर कोई त्योहार के लिए काल्सेडन में इकट्ठा हो और प्रत्येक व्यक्ति, अपनी क्षमता के अनुसार, एरेस को बलिदान अर्पित करे। अपने फरमान में, प्रस्किस ने उन लोगों के लिए कठोर दंड की धमकी दी जिन्होंने उसके आदेश की अवहेलना की और त्योहार में शामिल नहीं हुए, जिसे उसने फरमान जारी होने के नौवें दिन के लिए निर्धारित किया था। और इस प्रकार, जब इस दानवी उत्सव के लिए निर्धारित दिन आ गया, तो बलिदान के लिए लाए गए जानवरों सहित लोगों की एक बड़ी भीड़ काल्सेडोन में इकट्ठा हो गई, और सभी ने भेड़ें और बैल बलिदान करके और उस निर्जीव मूर्ति की पूजा करके—या यूँ कहें कि उसमें निवास करने वाले दानव की—अपनी उत्सव की धूमधाम शुरू कर दी। तब उस प्रदेश के ईसाइयों ने, इस अधर्मी पर्व से घृणा करते हुए और प्रोकन्सल के भयानक क्रोध से डरकर, छिप गए और गुप्त स्थानों में इकट्ठा होकर, सच्चे परमेश्वर, हमारे प्रभु यीशु मसीह की सेवा का अनुष्ठान किया। इस बीच, उत्पीड़क ने यह पता लगाने के लिए एक गहन तलाशी का आदेश दिया कि क्या कोई उसके आदेश की अवहेलना कर रहा था, और क्या ऐसे कोई लोग थे जो एरेस की मूर्ति की पूजा नहीं करते थे। और यह पाया गया कि ईसाई उत्पीड़क की अवहेलना कर रहे थे, क्योंकि उन्होंने प्रोकंसुल के आदेश का पालन नहीं किया और राक्षस को वह सम्मान नहीं दिया जो केवल एक सच्चे परमेश्वर को ही मिलना चाहिए। उत्पीड़क, इस बात से क्रोधित कि ईसाई उसकी आज्ञा नहीं मान रहे थे, ने आदेश दिया कि उन्हें ढूंढकर यातना दी जाए।

उस समय, उनचास ईसाई एक गुप्त स्थान पर प्रार्थना करते हुए छिपे हुए थे; उनमें यूफेमिया नाम की एक सुंदर युवती थी, जो कुलीन जन्म की थी और सेनेटर फिलोफ्रोन और उनकी पत्नी थियोडोरा की बेटी थी, जो दोनों धर्मपरायण लोग थे। उत्पीड़क को इन छिपे हुए ईसाइयों के बारे में सूचना मिली, और उसने आदेश दिया कि उन सभी को पकड़कर निर्णय के लिए उसके सामने लाया जाए। तुरंत, उसके क्रूर सेवक, हाथों में हथियार लेकर, मसीह के वचन से इकट्ठी हुई भेड़ों के झुंड पर जानवरों की तरह अपने शिकार पर टूट पड़े। उन्होंने उस घर को चारों ओर से घेर लिया जहाँ विश्वासियों ने गुप्त रूप से ईश्वर की पूजा की थी, ताकि कोई भी भाग न सके; दरवाज़े तोड़कर, उन्होंने निर्दयता से ईसाइयों को एक-एक करके बाहर खींचना शुरू कर दिया और, उन सभी को पकड़कर, अपमान और उपहास के बीच उन्हें प्रोकॉन्सल के पास ले गए। कसाई के पास भेड़ों की तरह ले जाए गए, मसीह के पवित्र और नम्र सेवक अपने घमंडी अत्याचारी के सामने खड़े थे, अपने प्रभु के लिए अपना रक्त बहाने तक पीड़ा सहने को तैयार।

उन्हें देखकर, घमंडी शासक ने कहा:

'क्या तुम ही सम्राट और हम सब के आदेश को ठुकरा रहे हो, और महान देवता एरेस के सम्मान में चढ़ाए गए बलिदान का तिरस्कार कर रहे हो?'

ईसाइयों ने उत्तर दिया:

'चाहे वह राजा का आदेश हो या आपका, प्रोकन्सल—यदि वह स्वर्ग के ईश्वर के विरुद्ध नहीं है—तो उसका पालन निस्संदेह किया जाना चाहिए; लेकिन यदि वह ईश्वर के विरुद्ध है, तो न केवल हमें उसका पालन नहीं करना चाहिए, बल्कि हमें उसका विरोध भी करना चाहिए। यदि हमें वह करने का आदेश दिया जाता है, जिसके पालन के लिए हम प्राधिकरणों के प्रति बाध्य हैं, तो हम सीज़र की चीज़ें सीज़र को देंगे (मत्ती 22:20)। लेकिन चूँकि आपका आदेश ईश्वर के प्रति अपमानजनक और घृणित है—क्योंकि आप हमें सृष्टिकर्ता के बजाय प्राणी का सम्मान करने, और सर्वोच्च ईश्वर के बजाय एक राक्षस की पूजा करने और बलिदान चढ़ाने के लिए मजबूर करते हैं—हम आपके इस आदेश का कभी पालन नहीं करेंगे, क्योंकि हम स्वर्ग में वास करने वाले सच्चे ईश्वर के सच्चे उपासक हैं।

[6281] तीसरी शताब्दी की शुरुआत में।

[6282] रोमन प्रांत बिथिनिया की राजधानी, प्रोपोंटिस (मार्मारा सागर) के दक्षिणी तट पर, बिज़ान्टियम के सामने।

[6283] 'प्रोकॉन्सल' शब्द प्रांतों या क्षेत्रों में सम्राट के राज्यपालों को संदर्भित करता था।

[6284] एरेस या मंगल – एक मूर्तिपूजक देवता; उन्हें युद्ध के देवता तथा सभी हानिकारक चीज़ों से लोगों और खेतों के रक्षक के रूप में माना जाता था।

तब यातनाकर्ता ने अपना कपटी मुख खोला और चापलूसी भरी जीभ को ब्लेड की तरह तेज कर, चालाकी भरी भाषा में उनसे कहा, उपहारों और सम्मानों का वादा करके उन्हें सीधे मार्ग से हटाकर मूर्तियों की विनाशकारी पूजा की ओर ले जाने का प्रयास किया, जिन्हें प्रभु ने 'अपने अनमोल रक्त से छुड़ाया था'[6285] । साथ ही, उप-प्रांतपाल ने उन्हें भयानक यातनाओं की धमकी दी यदि वे उसकी सलाह और आज्ञाओं का पालन करने से इनकार करते।

लेकिन संतों ने उत्तर दिया:

'प्रोकंसुल, जो उपहार और सम्मान आप हमें देने का वादा करते हैं, उन्हें हमने बहुत पहले ही अस्वीकार कर दिया है, उनसे नफरत करने लगे हैं, और *उन्हें "कचरा" के रूप में*पहचान लिया है, *ताकि मैं मसीह को प्राप्त करूँ और उसमें पाया जाऊँ*"[6286] (फिलि. 3:8), क्योंकि हमारे पास स्वर्गीय आशीर्वाद हैं, जो सांसारिक आशीर्वादों से कहीं बड़े और बेहतर हैं। पार्थिव आशीर्वाद अस्थायी और क्षणिक हैं, जबकि स्वर्गीय आशीर्वाद शाश्वत और अपरिवर्तनीय हैं (2 कुरिन्थियों 4:18); हम न केवल उन भयानक यातनाओं से नहीं डरते जिनसे आप हमें डराते हैं, बल्कि हम उन्हें सहने की बहुत इच्छा रखते हैं, ताकि हमारे परमेश्वर की सामर्थ्य और शक्ति हम में प्रकट हो, जिस पर आप चकित हों और अपने घृणित देवताओं की दुर्बलता को पहचानकर लज्जित हों। लेकिन हमें इस मौखिक विवाद को और क्यों जारी रखना चाहिए? जो करने की तुमने योजना बनाई है, उसे करो, और तुम देखोगे कि हमारे पास तुम्हारे यातनाओं के उत्साह से कहीं अधिक दृढ़ता है।

तब यातना देने वाले ने उन्हें विभिन्न यातनाएँ देना शुरू कर दिया, और पूरे उन्नीस दिनों तक संतों को विभिन्न प्रकार की यातनाएँ दी गईं, उन्हें हर दिन नए घाव मिले और उन्होंने भूख और प्यास को सहन किया। उनके साथ पवित्र कन्या यूफेमिया भी थीं, जो जवान और सुंदर थीं; उन्हें प्रोत्साहित करते हुए उन्होंने कहा:

'हे कन्या, स्वर्गीय वधू-वर के लिए प्रयत्न करो; दुःख के द्वारा उन्हें प्रसन्न करने का प्रयत्न करो; बुद्धिमान कुँवारियों के साथ उनसे मिलने का प्रयत्न करो, ताकि वह तुम्हें अपनी वधू के रूप में प्रेम करें और तुम्हें अपने महल में ले जाएँ[6287] ।'

तब, बीसवें दिन, उन्हें अदालत के सामने लाया गया, जहाँ उप-राज्यपाल ने उनसे पूछा:

'शायद, अपने दुःखों से सीखकर, अब आप हमारे आदेश का पालन करना चुनेंगी?'

तब पवित्र शहीदों ने, संत यूफेमिया के साथ, उत्तर दिया:

'प्रोकॉन्सल, यह आशा मत करो कि तुम हमें सीधे रास्ते से भटका सकते हो: इससे पहले कि तुम हमारे दिलों को सच्चे ईश्वर से हटा सको, तुम धरती पर पहाड़ों को पलट दोगे और आकाश में तारों को हिला दोगे।'

इन शब्दों से चिढ़कर, यातना देने वाले ने आदेश दिया कि उनके चेहरे पर बार-बार वार किया जाए; फिर, जब देखा कि इससे कोई फायदा नहीं हो रहा है, तो उसने उन्हें राजा के पास भेजने का फैसला किया, लेकिन इस बीच उन्हें कैद में डालने का आदेश दिया। जब उन्हें वहाँ ले जाया जा रहा था, तो प्रोकॉन्सल ने संत यूफेमिया को देखा, जो एक युवा और सुंदर कन्या थी, जो पवित्र शहीदों के बीच तारों के बीच चंद्रमा की तरह चमक रही थी, और एक भेड़िये की तरह उसने मसीह के झुंड से इस भेड़ को झपट लिया। हालाँकि, उसने अपनी आँखें और हाथ स्वर्ग की ओर उठाकर पुकारा:

'हे मेरे अति प्रिय वर, हे ईसा मसीह, मुझे न छोड़ो, क्योंकि मैं आप में ही आशा रखती हूँ; मेरी आत्मा को—जो आप से प्रेम करती है और आपके पवित्र नाम का प्रचार करती है—जंगली जानवरों के हाथ न सौंपो; मेरे शत्रु को मुझ पर प्रसन्न न होने दो; हे प्रभु, अपनी दीन दासी को बल दीजिए, कहीं ऐसा न हो कि अधर्म मुझ पर हावी हो जाए।'

उसे अपने अधर्मीपन की ओर मोड़ने की इच्छा से, यातना देने वाले ने उसे लुभाने के लिए हर तरह के साधन सोचे, और दयालु शब्दों, उपहारों और विभिन्न वादों से उसकी कन्या के हृदय को जीत लिया।

लेकिन उसने दृढ़ता से कहा:

'हे यातनाकर्ता, यह मत सोच कि तू चालाकी भरी बातों से आसानी से मेरी कमज़ोरी को अपनी दुष्टता और अधर्म की ओर मोड़ सकता है; क्योंकि यद्यपि मैं स्वभाव से एक महिला हूँ, शरीर से दुर्बल और आयु में युवा हूँ, फिर भी मेरा हृदय तेरे से अधिक दृढ़ है, और मेरे विश्वास की शक्ति तेरी बहादुरी से कहीं अधिक है; इसके अलावा, मेरे मसीह की कृपा से, मुझमें तुम्हारी सारी विधर्मी तुर्क-तर्क से कहीं अधिक समझ है, जिसके आधार पर तुम स्वयं को बुद्धिमान समझते हो,

---

[6285] प्रभु की प्रस्तुति के लिए कैनन, ओड 3, इरमोस।

[6286] अर्थात्, हम इसे मसीह के द्वारा प्राप्त आशीर्वादों की तुलना में, कमरे से झाड़ दिए जाने वाले कूड़े के समान मानते हैं।

[6287] यह, बेशक, उद्धारकर्ता की बुद्धिमान कुँवारियों की दृष्टांत कथा (देखें मत्ती 25:1–13) को संदर्भित करता है।

जबकि वास्तव में तुम सभी अज्ञानियों से भी अधिक मूर्ख हो, क्योंकि तुम सच्चे ईश्वर को जानने से इनकार करते हो, और एक राक्षस की पूजा एक देवता के रूप में करते हो। इसलिए, आप चालाकी भरी बातों से मुझे धोखा नहीं देंगे, जैसे साँप ने एक बार हमारी पहली माँ को धोखा दिया था; आप इस कड़वी दुनिया को इसके सुखों से मेरे लिए मीठा नहीं बनाएंगे, जिन्हें मैं अपने सबसे प्यारे यीशु की खातिर कड़वाहट मानती हूँ; और न ही आप *'कमज़ोरी में सिद्ध हुई शक्ति पर* विजय प्राप्त करेंगे[6288] (2 कुरिन्थियों 12:9), चाहे तुम्हारे हमले कितने भी प्रचंड क्यों न हों। क्योंकि मुझे अपने मसीह पर भरोसा है कि वह मुझे न छोड़ेंगे और न ही मुझसे अपनी सहायता का दृढ़ हाथ हटाएंगे, जब तक कि स्त्री का गर्वित सिर महिला के पैरों तले कुचल नहीं दिया जाता।

तब यातना देने वाला, संत यूफेमिया के उत्तर से लज्जित होकर, अत्यंत क्रोधित हो गया और अब तक दिखाए गए घृणित स्नेह को क्रोध में बदलकर, उसने अनेक तीखे छुरों से जड़ी एक यातना चक्र तैयार करने का आदेश दिया। जब परिचारकों ने पवित्र कन्या को इस पहिये से बांधा, तो उसने अपनी रक्षा के लिए क्रॉस का चिह्न बनाया। और उन्होंने पहिये को घुमाना शुरू कर दिया, जिससे शहीद के शरीर के टुकड़े-टुकड़े हो गए और उसके जोड़ चूर-चूर हो गए।

फिर भी उसने परमेश्वर से मन लगाकर प्रार्थना की।

पवित्र कन्या ने पुकारा, 'हे प्रभु यीशु मसीह, मेरी आत्मा के प्रकाश, जीवन के स्रोत, जो उन पर आशा रखने वालों को मुक्ति प्रदान करते हैं! अब मेरी सहायता करो, ताकि सभी जान सकें कि तुम ही एकमात्र सच्चे ईश्वर हो और उन लोगों के लिए निश्चित आशा हो जो तुम पर भरोसा करते हैं – *'कोई बुराई तुम्हें नहीं पहुँचाएगी, न कोई विपत्ति तुम्हारी कोठरी के पास आएगी'*[6289] (भजन संहिता 90:9-10)।

जब उसने प्रार्थना की, तो पहिया अचानक रुक गया और नौकर थकान से ग्रस्त होकर गिर पड़े; क्योंकि परमेश्वर का स्वर्गदूत प्रकट हुआ, पहिये को तोड़ दिया, पवित्र कन्या को उससे उठा लिया, उसके घावों को चंगा किया और उसे स्वस्थ कर दिया। वह, पहिये से बिना किसी चोट के और अच्छे स्वास्थ्य में उतरकर, आनंदपूर्वक गाई, परमेश्वर का धन्यवाद करते हुए और उनकी सर्वशक्तिमान शक्ति की महिमा करते हुए।

यह देखकर, यातना देने वाला और वहाँ मौजूद सभी लोग चकित रह गए और इस चमत्कार पर बहुत आश्चर्यचकित हुए। हालाँकि, जहाँ दुष्टता ने आत्मा की आँखों को अंधा कर दिया था, वहाँ इतना बड़ा चमत्कार कोई लाभ नहीं पहुँचा सकता था; वे सच्चे ईश्वर के शक्तिशाली हाथ को पहचान नहीं सके: *'इन लोगों का हृदय कठोर हो गया है; उनके कान सुनने के लिए बहरे हैं, और उन्होंने अपनी आँखें बंद कर ली हैं* (यशायाह 6:10), और उन्होंने इस चमत्कारिक संकेत को जादू-टोने का काम माना।

इसके बाद, यातना देने वाले ने एक विशेष भट्टी में बड़ी आग जलाने और संत को उसमें फेंकने का आदेश दिया। जब भट्टी में ईंधन डाला जा रहा था और उसमें एक प्रचंड आग पहले से ही भड़क रही थी, तो पवित्र शहीद ने एक बार फिर प्रार्थना में स्वयं को समर्पित कर दिया, जिसने एक बार आग की भट्टी में तीन युवकों की रक्षा के लिए एक ढाल का काम किया था; पवित्र कन्या ने भीतर आग के विरुद्ध ईश्वर के प्रति अपने तीव्र प्रेम की आग प्रज्वलित की और स्वर्ग की ओर अपनी दृष्टि उठाकर कहा:

'हे परमेश्वर, जो ऊँचे पर वास करते हो और दीनों पर दृष्टि डालते हो (यशायाह 33:5; भजन संहिता 137:6)! बाबेल में, आपने अपने कानून के लिए आग में डाले गए तीन युवकों को अपने पवित्र स्वर्गदूत के माध्यम से आग से सुरक्षित और अक्षुण्ण रखा, और उन्हें स्वर्ग से ओस भेजी: हे मेरे मसीह, मेरी भी मदद करें, अपनी दासी की, जब मैं आपके महिमा के लिए प्रयास कर रही हूँ!

इस प्रकार उसने कहा, और, हथियार के रूप में क्रॉस के चिह्न से स्वयं की रक्षा करते हुए, वह शांतचित्त होकर आग में फेंके जाने की प्रतीक्षा करने लगी।

तब दो सैनिक, विक्टर और सोस्पेन, जो शहीद को भट्टी में डालने वाले थे, ने आग के भीतर एक अद्भुत दर्शन देखा; उनके सामने परमेश्वर के स्वर्गदूत प्रकट हुए, जिन्होंने भट्टी की लपटों को बिखेर दिया और उन्हें मसीह की वधू को छूने से रोक दिया। यह चमत्कार देखकर, उन्होंने यातना देने वाले से कहा:

[6288] अर्थात् ईश्वर की शक्ति, जो दुर्बलों को बल प्रदान करती है।

[6289] अर्थात्, उन पर कोई विपत्ति नहीं आएगी, और न ही किसी घाव से उन लोगों के शरीर को पीड़ा होगी जिन्होंने परमेश्वर को अपना शरणस्थान बनाया है (भजन संहिता 90:9–10)।

'प्रोकॉन्सल, हम इस पवित्र कन्या को अपने अपवित्र हाथों से छूने और उसे आग में फेंकने की हिम्मत नहीं करते, भले ही आप हमारे सिर कटवाने का आदेश दें, क्योंकि हम एक अद्भुत चमत्कार देख रहे हैं जिसे आपकी आँखें नहीं देख सकतीं। और हमारे लिए आपके क्रोध को सहना, उन तेजस्वी पुरुषों के क्रोध से बेहतर है जो हमें आग की लपटों से धमका रहे हैं।"

यह सुनकर, यातना देने वाला उन पर क्रोधित हो गया; यह सोचकर कि वे ईसाई थे और यही कारण था कि वे युवती को भट्टी में फेंकने से इनकार कर रहे थे, उसने उन्हें बांधने का आदेश दिया, और यूफेमिया के संबंध में अपने आदेश को पूरा करने का काम दो अन्य सैनिकों को सौंप दिया, जिनमें से एक का नाम सीज़र और दूसरे का नाम वैरियस था। इन दोनों ने युवती को पकड़कर भट्टी में फेंक दिया; लेकिन तुरंत ही भट्टी से एक प्रचंड ज्वाला फूटी और वह युवती को भट्टी में डालने वाले सैनिकों पर टूट पड़ी, और उन्हें उसी जगह राख कर दिया, जबकि अन्य नौकर भागने पर मजबूर हो गए। फिर भी संत, भट्टी के बीच में आनंदित होकर, मानो किसी उज्ज्वल महल और ठंडी ओस में हो, ने तीन युवकों का गीत गाया: *'धन्य हैं आप, हे हमारे पूर्वजों के प्रभु परमेश्वर, और सदा के लिए प्रशंसनीय और उत्तम'* (दानियेल 3:52)। और एक अद्भुत चमत्कार हुआ: आग ने उसे छुआ भी नहीं, और न ही उसके वस्त्रों को भी छुआ, क्योंकि उसके स्वयं के अमर वर, प्रभु मसीह, चुपके से भट्टी में अपनी पवित्र वधू के पास उतर आए थे और उस पर स्वर्गीय शीतलता की वर्षा की थी। जब भट्टी बुझी, तो संत सुरक्षित और कुशलता से बाहर निकलीं, जिससे सभी चकित रह गए। क्या करें यह न जानते हुए, यातना देने वाले ने उसे एक कालकोठरी में फेंकने का आदेश दिया, और मन ही मन कहा: 'मैं आज रात इस जादूगरनी के साथ क्या करना है, इस पर विचार करूँगा।' फिर, विक्टर और सोस्थेनेस को अपने पास बुलाकर, उसने उन पर अपना सारा क्रोध उगल दिया और उन्हें विनाश की धमकी दी यदि उन्होंने मूर्तियों की पूजा नहीं की।

उन्होंने उत्तर दिया:

'अब तक हम भ्रम में थे, सत्य से अनजान; अब हम उस एक ईश्वर को जान गए हैं जिसने स्वर्ग और पृथ्वी की रचना की: उसी पर हमारा विश्वास है और उसी की हम पूजा करते हैं, लेकिन तुम्हारे देवताओं का—जिनकी हम भी कभी पूजा करते थे, यह न समझते हुए कि राक्षस हमें धोखा दे रहे थे—हम अब से सम्मान नहीं करेंगे। हमारे साथ जो चाहो करो: हमारे शरीर तुम्हारे हाथ में हैं, लेकिन हमारी आत्माएँ ईश्वर की सुरक्षा में हैं।

और यातना देने वाले ने उन्हें जंगली जानवरों द्वारा फाड़े जाने की सज़ा सुना दी। जब संत उस स्थान की ओर जा रहे थे जहाँ जानवरों द्वारा उन्हें चीर-फाड़ कर मार दिया जाना था, तो उन्होंने ईश्वर से विनम्रतापूर्वक प्रार्थना की कि वह उन पर दया करें और उनके उन पापों को क्षमा करें जो उन्होंने भ्रम और अविश्वास में रहते हुए किए थे, तथा उनके प्राणों को उस स्थान पर ले जाएँ जहाँ वे लोग वास करते हैं जो उन पर विश्वास करते हैं। और तुरंत स्वर्ग से एक दिव्य स्वर गूँजा, जो उन्हें विश्राम के लिए बुला रहा था; उसे सुनकर, उन्होंने आनंदपूर्वक अपनी आत्माएँ ईश्वर के हाथों में सौंप दीं। जहाँ तक जंगली जानवरों का सवाल है, उन्होंने उनके शरीरों को नहीं छुआ, जिन्हें बाद में विश्वासियों ने गुप्त रूप से दफना दिया।

जब रात बीत गई और सुबह हुई, तो यातना देने वाले ने न्यायाधीश की कुर्सी पर अपनी जगह ले ली, और संत यूफेमिया को कालकोठरी से बाहर लाया गया; जब वह अपने मुकदमे के लिए चल रही थी, तो उसने खुशी से गाया:

– *'हे परमेश्वर, मैं तेरे लिए एक नया गीत गाऊँगी'* (भजन संहिता 143:9)। हे प्रभु, मैं तेरा महिमा करूँगी, जो मेरी शक्ति है! मैं राष्ट्रों के बीच तेरा भजन करूँगी और तेरे नाम की स्तुति करूँगी, क्योंकि केवल तू ही सच्चा परमेश्वर है, और तेरे सिवा कोई और परमेश्वर नहीं है।

इस प्रकार गाते हुए वह अदालत के सामने उपस्थित हुई। वहाँ उसे लंबी पूछताछ के लिए रखा गया, यातनाएँ दी गईं और बलिदान करने के लिए मजबूर किया गया। जब उसने अंततः आज्ञा मानने से इनकार कर दिया, तो उसके यातनाकर्ता, उसकी दृढ़ता से आश्वस्त होकर, आदेश दिया कि उसे फाँसी दी जाए और उसके शरीर को तेज चाकुओं से काटा जाए। फिर भी, इस यातना के बाद भी, ईश्वर की शक्ति से, वह अक्षुण्ण रही। तब, एक गहरी खाई खोदकर उसमें पानी भरने के बाद, उन्होंने उसमें अनगिनत साँप, इचिडना, जहरीले समुद्री जीव और सभी प्रकार के सरीसृप, भूमि और जल दोनों के, डाल दिए; जब खाई उन से भर गई, तो यातना देने वाले ने सेंट यूफेमिया को उसमें फेंकने का आदेश दिया।

लेकिन उसने, क्रॉस का चिह्न बनाते हुए, कहा:

'हे मेरे प्रकाश, हे ईसा मसीह! आपने योनह को समुद्र के राक्षस के पेट में सुरक्षित रखा; आपने दानियेल को शेरों के मुँह से बचाया; मुझे भी अपने शक्तिशाली हाथ से बचाएँ, ताकि आपके पवित्र नाम की महिमा मुझमें हो।'

इन शब्दों के साथ वह खुद को खाई में फेंक दिया; लेकिन साँप और विषैले सर्प, उसके पास आकर, उसे बिल्कुल भी नुकसान नहीं पहुँचाए; बल्कि, वे उसकी देखभाल करते प्रतीत हुए, क्योंकि उन्होंने उसे अपनी पीठ पर उठा लिया, और पानी से भरी खाई की गहराई में डूबने से बचाया: पवित्र कन्या ईश्वर की कृपा से, इससे अछूती बाहर निकली। अब यातना देने वाला पूरी तरह से असमंजस में था, उसे समझ नहीं आ रहा था कि उसके साथ और क्या किया जाए। फिर भी उसे नष्ट करने की इच्छा से, और यह सोचकर कि संत में, उसकी दृष्टि में, जो जादू था, वह केवल स्पष्ट खतरों पर काबू पा सकता था, न कि छिपी हुई साजिशों पर, उसने एक और खाई खोदने और उसे तीखी भालों से भरने का आदेश दिया, तलवारों और छुरियों से, इन सभी हथियारों को उनकी नोकें ऊपर की ओर करके खाई के तले में ठोक दिया, और बाहर से थोड़ी-सी टहनियों और मिट्टी से ढक दिया। फिर उसने शहीद से उस खाई को पार करने का आदेश दिया, यह सोचकर कि, उसके बारे में कुछ भी न जानने के कारण, वह जमीन में गड़े तीखे हथियारों पर गिर जाएगी और अपनी चोटों से मर जाएगी। लेकिन संत उस पर ऐसे पार हो गई जैसे कोई पक्षी जाल के ऊपर से उड़ता है; हालाँकि, कुछ विधर्मी, खाई के बारे में अनजान, उसमें गिर पड़े और मर गए। यह देखकर, यातना देने वाला लज्जित हो गया, और धर्मग्रंथ के वचन यहाँ पूरे हुए: *'उसने एक गड्ढा खोदा और उसे खोखला किया, और उसी गड्ढे में गिर पड़ा जिसे उसने तैयार किया था'* (भजन संहिता 7:16)।

तथापि संत ने ईश्वर की स्तुति करते हुए गाया:

– *'प्रभु की महत्ता कौन बयां कर सकता है, या उसकी सारी स्तुति कौन प्रचार कर सकता है?'* (भजन संहिता 105:2), क्योंकि आपने अपनी पीड़ित दासी को घावों से अक्षुण्ण रखा, उसे आग से बचाया, जंगली जानवरों, पानी और पहिये से सुरक्षित रखा, और उसे कुएँ से बाहर निकाला। और अब, हे प्रभु, मेरी आत्मा को उस के हाथ से छुड़ाएँ जो प्राचीन काल से ही उन सभी का शत्रु रहा है जो आपकी आज्ञा मानते हैं; *'मेरी जवानी के पापों या मेरी अवज्ञाओं को याद न करो'* (भजन संहिता 24:7), परन्तु अपने उस लहू की बूंदों से, जो मेरे लिए बहाया गया, मेरे शरीर और आत्मा की अशुद्धता को शुद्ध कर, क्योंकि आप ही अपने सेवकों का शोधन, पवित्रता और ज्ञान हैं (इब्रानियों 1:3; लूका 2:32)।

उप-राज्यपाल ने एक बार फिर उसे दयालु शब्दों से बहकाने की कोशिश की।

उसने कहा, 'अपनी वंश-परंपरा का अपमान मत करो; अपने यौवन की शोभा को बर्बाद मत करो, और खुद को मृत्यु की सजा मत दो। महान एरेस को श्रद्धांजलि दो, और हम सभी तुम्हें बड़ी महिमा और धन-संपत्ति से सम्मानित, प्रशंसित और पुरस्कृत करेंगे।'

उसने उसे लुभाने के लिए और भी बहुत कुछ कहा, लेकिन उसने उस पर हँसकर उसे पागल कहा।

तब उसने एक बार फिर उसे यातना देना शुरू किया और डंडों से क्रूरतापूर्वक पीटने के बाद, आदेश दिया कि उसे एक तेज आरी से दो टुकड़ों में काट दिया जाए; लेकिन आरी उसके पवित्र शरीर को कोई हानि नहीं पहुँचा सकी। तब उसने उसे एक लाल-गरम तवे पर भुनाने का आदेश दिया, लेकिन तवा ठंडा हो गया, क्योंकि स्वर्गदूत मसीह की दुल्हन के साथ थे, और उसकी सभी यातनाओं के दौरान उसकी रक्षा कर रहे थे। अंत में, उप-राज्यपाल ने यूफेमिया को जंगली जानवरों द्वारा खाए जाने की सजा सुनाई।

जब संत को सर्कस में ले जाया गया, जहाँ उसे जंगली जानवरों द्वारा चीर-फाड़ कर मार दिया जाना था, तो उसने प्रार्थना की कि प्रभु उसके दुख को समाप्त करें, उसकी आत्मा को अपने हाथों में स्वीकार करें, और उसे अपने लंबे कष्टों से भरे शरीर से उसकी लालसा की भूमि में जाने का आदेश दें।

उसने कहा, 'हे शक्ति के प्रभु! आपने मुझ पर अपनी अजेय शक्ति और अपने अविजित दहिने हाथ को प्रकट किया है; आपने दानवों की दुर्बलता और मेरे यातनाकर्ता की मूर्खता दिखाई है, और आपने मुझे सभी यातनाओं से ऊपर उठाया है। जिस प्रकार आपने मुझसे पहले आए शहीदों की हत्या और उनके रक्त का बहाव होने दिया, उसी प्रकार अब मेरे इस बलिदान को स्वीकार करें, जो एक पश्चात्तापी हृदय और एक विनम्र आत्मा से आपके लिए अर्पित है, और मेरी आत्मा को संतों के निवासों में और शहीदों की संगति में विश्राम प्रदान करें, 'क्योंकि आप सदा के लिए धन्य हैं'।

जब सेंट यूफेमिया ने अपनी प्रार्थना समाप्त कर ली, तो जंगली जानवर—शेर और भालू—उस पर टूट पड़े; लेकिन जब वे उसके पास पहुँचे, तो उन्होंने उसके पैरों को चाटा। केवल एक मादा भालू ने उसे एक छोटा सा घाव लगाया, जिससे खून बहने लगा; उसी क्षण स्वर्ग से एक आवाज़ सुनाई दी, जो उसे स्वर्गीय निवासों में बुला रही थी, और तुरंत उसने अपना प्राण प्रभु को सौंप दिया, जिसके लिए उसने परम भक्ति के साथ दुख उठाया था। और पृथ्वी हिल उठी, और नगर काँप गया; दीवारें ढह गईं, मंदिर ध्वस्त हो गए, और सभी पर एक महान आतंक छा गया। जब सभी भय से सर्कस से भाग गए, तो शहीद का पवित्र शरीर जमीन पर पड़ा रहा।

यूफेमिया के माता-पिता अपनी पवित्र पुत्री को लेकर शहर के पास, एक स्टेडियम की दूरी पर सम्मान के साथ दफनाया[6290] । उन्होंने ईश्वर का धन्यवाद किया, इस बात पर प्रसन्न होकर कि उन्हें ऐसी पुत्री के माता-पिता बनने का सम्मान मिला था, जो, अपने रक्त के बहाए जाने के द्वारा, स्वर्गीय वधू-वर, सर्व के मसीह और राजा की वधू बनीं, जिन्हें पिता और पवित्र आत्मा के साथ, अब और हमेशा और युगों-युगों तक सम्मान और महिमा मिले। आमीन।

कॉन्टाकियन, स्वर 4:

हे सर्व-स्तुत्य, अपने कष्टों में आपने सराहनीय संग्राम लड़ा, और मृत्यु के पश्चात् अपने चमत्कारों की वर्षा द्वारा हमें पवित्र करती हैं: अतः हम आपके पवित्र विश्राम का गान करते हैं, विश्वास के साथ आपके दिव्य मंदिर की ओर दौड़ते हुए, ताकि हम आत्मा की दुर्बलताओं से मुक्त हों और आपके चमत्कारों की कृपा प्राप्त करें।

शहीद सेबास्टियाना की स्मृति

१६ सितंबर को स्मरणोत्सव

संत सेबास्टियाना डोमिशियिन[6291] के शासनकाल में रहती थीं और वे प्रेरित पौलुस की शिष्या थीं। गवर्नर जॉर्ज ने मार्सियानोपोलिस[6292] शहर में उन्हें गिरफ्तार करने का आदेश दिया। उन्हें पीटा गया और एक लाल-गरम भट्टी में फेंक दिया गया, लेकिन वे वहाँ सुरक्षित रहीं। फिर उसे हेराक्लिया[6293] ले जाया गया, जहाँ उसे एक पेड़ से लटका दिया गया, जिसके बाद उसे जंगली जानवरों के सामने फेंक दिया गया। फिर भी, वह बिना किसी चोट के बच निकली। अंत में, उसकी गर्दन तलवार से काट दी गई; ऐसा होते ही, उसके शरीर से खून के बजाय दूध बहने लगा[6294] ।

शहीद संत मेलटिनिा का पर्व दिवस

16 सितंबर को स्मरणोत्सव

संत मेलटिनि थ्रेस के मार्शियिनोपोलिस शहर की रहने वाली थीं; वह एंटोनिनस[6295] के शासनकाल में, हेगेमोन एंटिओकस के अधीन रहती थीं। उन्होंने कई चमत्कार किए: उदाहरण के लिए, अपनी प्रार्थनाओं के द्वारा उन्होंने मूर्तियों को गिरा दिया, अपोलो और हरक्यूलिस की मूर्तियों को तोड़ दिया, और कई लोगों को सच्चे धर्म की ओर ले गईं। फिर उन्होंने हेगेमोन की पत्नी को ईसाई धर्म में परिवर्तित कर दिया। इसके लिए उनका सिर कलम कर दिया गया। उनका पवित्र शरीर पहले बिना दफनाए पड़ा रहा। अकाकियोस नामक एक मैसेडोनियाई, जो घर जाते समय उस जगह से गुजर रहा था, ने उनके पवित्र अवशेष लेने की अनुमति मांगी, उन्हें एक अवशेष पात्र में रखा और उन्हें अपने देश ले जाने का इरादा किया। समुद्र पार करते समय, वह बीमार पड़ गया और उसकी मृत्यु हो गई। जब जहाज लेम्नोस द्वीप के सिर

[6290] बाद में यहाँ पर महान शहीद यूफेमिया के सम्मान में एक चर्च बनाया गया। चौथा सार्वभौमिक परिषद (कांस्टेंटिनोपल का परिषद) 451 ईस्वी में इसी चर्च में आयोजित किया गया था। 5वीं शताब्दी में, महान शहीद के सम्मान में रोम और मेडिओलानम में चर्च बनाए गए थे। उनकी अवशेषों को थियोडोसियस महान के शासनकाल के दौरान अलेक्जेंड्रिया ले जाया गया, और बाद में उन्हें काल्सेडोन वापस कर दिया गया। फारसियों द्वारा काल्सेडोन पर कब्जा करने (617) के बाद, सेंट यूफेमिया की अवशेषों को कॉन्स्टेंटिनोपल स्थानांतरित कर दिया गया, जहाँ वे आज भी मौजूद हैं।

[6291] डोमिशियिन – एक रोमन सम्राट जिसने 81 से 96 तक शासन किया, जो ईसाइयों का एक क्रूर उत्पीड़क था।

[6292] मार्सियानोपोलिस – लोअर मिसिया में कॉन्स्टेंटिनोपल से डेन्यूब जाने वाले रास्ते पर एक शहर; बाद में प्रेस्लाव के नाम से जाना गया, जो अब बुल्गारिया में प्रावोदी गाँव है।

[6293] हेराक्लिया या हेराक्लिया – शहरों के लिए एक अक्सर प्रयुक्त नाम। यहाँ, प्रॉपोंटिस (मार्मारा सागर) पर स्थित थ्रेस के उस शहर को समझना चाहिए, जिसके पास एक उत्कृष्ट बंदरगाह था। यह सामोसवासियों की एक प्राचीन बस्ती है – जिसे अब एरेग्लि के नाम से जाना जाता है। हेराक्लिया में, गवर्नर पोंपियन सेबास्टियाना का अत्याचारी था।

[6294] ग्रीक वृत्तांतों के अनुसार, उसके शरीर को समुद्र में फेंक दिया गया था, लेकिन तीन स्वर्गदूतों ने इसे रिज़िस्ट (रेडेस्ट - मार्मारा सागर के किनारे थ्रेस में, अब रोडोस्टो) तक ले गए।

[6295] रोमन सम्राट एंटोनिनस पियस ने 138 से 161 तक शासन किया।

(cape) पर पहुँचा[6296] , तो पवत्रि शहीद के शरीर को वहीं दफनाया गया। अक्काकयिोस के शरीर को भी उसकी कब्र के पास दफनाया गया।

पवत्रि शहीद लुडमीला का पर्व दविस

16 सतिंबर को स्मरणोत्सव

धन्य लुडमलिा सर्बयिा की मूल नविासी थीं, एक सर्बयिाई राजकुमार की बेटी। उनका ववािह चेक राजकुमार बोरीवोय से हुआ था। उस समय, चेक लोगों का बपतस्मिा नहीं हुआ था; राजकुमार बोरीवोय स्वयं और उनकी युवा पत्नी मूर्तपिूजक थे। उनके ववािह के बाद, वे मसीह में वशि्वास करने लगे और उन्हें पति, पुत्र और पवत्रि आत्मा के नाम पर बपतस्मिा दयिा गया; उन्होंने चर्च बनवाए और उनमें सेवा करने के लिए पुरोहति नयिुक्त कए। उनके तीन बेटे और एक बेटी थी। बोरीवोय की छत्तीस वर्ष की आयु में मृत्यु हो गई। धन्य लुडमीला ने ईश्वर की इच्छा के प्रतपिूर्ण समर्पण के साथ अपने शोक को सहन कयिा और अपने सभी संपत्त-िसंपत्तकिो गरीबों में बाँट दयिा। उनके पुत्र व्रातस्लिाव अपने पति के बाद सहिासन पर बैठे और तेईस वर्षों तक अपने लोगों पर शासन कयिा, जसिके बाद उनकी भी मृत्यु हो गई। तब सत्ता ल्यूडमलिा के पोते, व्याचेस्लाव के हाथों में चली गई। उस समय, व्याचेस्लाव की माँ अपनी सास, ल्यूडमलिा से नफरत करने लगी, और हर संभव तरीके से उसका नाश करने की कोशशि करने लगी। यह जानकर, ल्यूडमलिा टेकनि शहर में चली गईं। उसकी बहू ने दो बोयारों को उकसाया और उन्हें धन्य ल्यूडमलिा को मारने के लिए टेकनि भेज दयिा। वहाँ पहुँचने पर, इन दो दुष्टों ने अपने जैसे कई अन्य दुष्ट लोगों को इकट्ठा कर लयिा। जब शाम हुई, तो उन्होंने उस आँगन और स्वयं महल को घेर लयिा, जहाँ धन्य ल्यूडमलिा ठहरी हुई थीं, दरवाज़े तोड़ दए और महल में घुस गए। उन्होंने पवत्रि राजकुमारी को पकड़ लयिा, उसके गले में रस्सी डालकर उसका गला घोंट दयिा। इस प्रकार, धन्य ल्यूडमलिा, ईश्वर को प्रसन्न करके, शहीद हो गईं; यह घटना शनविार को, रात के पहले प्रहर में हुई; उस समय उनकी आयु एकानबे वर्ष थी। ईश्वर ने उनके दफ़न स्थल को कई चमत्कारों से गौरवान्वति कयिा (उन्हें चर्च में नहीं, बल्कि शहर की दीवार के नीचे दफ़नाया गया था): हर रात, उस स्थान के ऊपर जलती हुई मोमबत्तयिाँ दखिाई देती थीं; एक अंधे आदमी को दृष्टि वापस मलि गई जब उसने संत लुडमलिा की कब्र की मट्टिी को छुआ। इन चमत्कारकि संकेतों के बारे में सुनकर, उनके पोते व्याचेस्लाव ने उनके अवशेषों को प्राग शहर में स्थानांतरति करवाया और उन्हें सेंट जॉर्ज चर्च में रखवाया, जहाँ वे आज भी कई संकेतों और चमत्कारों का स्रोत बने हुए हैं। जहाँ तक व्याचेस्लाव की दुखी माँ का सवाल है, उसकी भयानक मृत्यु हुई[6297] ।

सेंट साइप्रयिन, कीव के मेट्रोपॉलटिन की स्मृति

16 सतिंबर को स्मरणोत्सव

[6296] लेम्नॉस – एजयिन सागर में सबसे बड़े द्वीपों में से एक, जसिे थ्रेसयिन क्षेत्र का हस्सिा माना जाता है, माउंट एथोस से 87 मील दूर।

[6297] धन्य लुडमलिा, बोहेमयिा के ईसाई राजकुमार बोरीवोय की पत्नी, 9वीं शताब्दी के अंत और 10वीं शताब्दी की शुरुआत में रहती थीं। वह संत राजकुमार वेंसेस्लॉस (926–935, ड्यूक व्रातस्लिाव और पैगन ड्रैगोमरि के पुत्र) की दादी थीं; उन्होंने एक पवत्रि जीवन जयिा, लोग उन्हें बहुत पसंद करते थे और, उनकी मृत्यु के बाद, उन्हें देश के संरक्षक संत के रूप में पूजा जाने लगा); उन्होंने बोहेमयिा के पड़ोसी देश मोरावयिा में, प्रेरतिों के समकक्ष संत मेथोडयिस से अपने पति के साथ पवत्रि बपतस्मिा ग्रहण कयिा; अपने पति की मृत्यु के बाद, बोहेमयिा की राजधानी प्राग में रहते हुए, उन्होंने अपने पोते, राजकुमार व्याचेस्लाव को वशि्वास की सच्चाइयों में सावधानीपूर्वक पाला। संत लुडमलिा की 927 में अपनी बहू ड्रगोमरि द्वारा लगाए गए झूठे आरोपों के परणिामस्वरूप शहादत हुई, जो पुनःमूर्तपिूजक धर्म में लौट आई थी। उनकी कब्र पर चह्नि और चमत्कार हुए; इनकी अफवाहों ने राजकुमार वेनसेस्लॉस को प्रेरति कयिा कि वह उनके अक्षत शरीर को भक्तपिूर्वक प्राग में उनके पति द्वारा नर्मिति, सेंट जॉर्ज द ग्रेट मार्टायर के चर्च में स्थानांतरति कर दें, जहाँ उन्हें बोहेमयिा की संरक्षक संत माना जाता है।

संत साइप्रयिन, कीव और समस्त रूस के मेट्रोपॉलटिन, चमत्कारकर्ता, सर्बयिा के टर्नोवो नगर के मूल नविासी थे, और अपने पवत्रि जीवन[6298] , अपनी महान बुद्धमित्ता और पवत्रि धर्मग्रंथों[6299] के व्यापक ज्ञान के लिए वख्यिात थे। उन्होंने अपनी दैवीय प्रेरति शक्षिाओं और आत्मा-उद्धारक उपदेशों से सभी का नरि्माण कयिा। उन्होंने अथक शक्षिण के कार्य को उत्साहपूर्वक समर्पति कयिा[6300] ; उन्होंने अपने झुंड को ईश्वर के भय में रहने, हर तरह की तुच्छता और व्यर्थ की बातों से दूर रहने, और सबसे बढ़कर प्रार्थना और सच्चे पश्चाताप में लगनशील रहने की शक्षिा दी। वे एक शांत, चतिनशील जीवन से प्रेम करते थे और इसलिए अक्सर अपने मेट्रोपॉलटिन गाँव गोलेनश्चिेवो[6301] में चले जाते थे। यह वशिेष रूप से शांत स्थान दो नदयिों, सेतुन् और रामेनसि्, के बीच स्थति था और घने जंगलों से घरिा हुआ था। यहाँ उन्होंने तीन पवत्रि पतिाओं: बेसलि द ग्रेट, ग्रेगरी द थयिोलोजयिन और जॉन क्रसिोस्टोम को समर्पति एक चर्च का नरि्माण कयिा।

इस स्थान पर रहते हुए, संत साइप्रयिन ने बशिपों और पुरोहतिों का अभषिेक कयिा और ग्रीक से स्लावोनकि में कई पवत्रि पुस्तकों की प्रतलिपिि बिनाने और अनुवाद करने में लगन से खुद को समर्पति कर दयिा[6302] । उन्होंने सभी रूस के मेट्रोपॉलटिन, महान चमत्कार-कर्ता संत पीटर की जीवनी भी लखी[6303] । संत साइप्रयिन ने प्रार्थना और पवत्रि धर्मग्रंथों के पाठ में बहुत मन लगाया[6304] । उन्होंने हमेशा मृत्यु की स्मृति, मसीह के अंतमि न्याय, पापयिों के कष्ट और धर्मी लोगों के आनंद को अपने मन में रखा। ऐसे दैवीय कार्यों में उत्कृष्टता प्राप्त करते हुए, मेट्रोपॉलटिन साइप्रयिन ने वृद्धावस्था प्राप्त की और अपने ही गाँव गोलेनश्चिेवो में बीमार पड़ गए। अपनी मृत्यु से चार दनि पहले, उन्होंने एक वदिाई पत्र लखिा जसिमें उन्होंने सभी वश्विासयिों को क्षमा कयिा और उन पर आशीर्वाद दयिा, और स्वयं उनसे क्षमा मांगी, इस प्रकार सच्ची ईसाई बुद्धमित्ता और वनिम्रता का प्रदर्शन कयिा। उन्होंने ऐसा इसलिए कयिा क्योंकि वह वनिम्रता की शक्ति को जानते थे: यह पापों को क्षमा करती है और सभी चीजों को भलाई की ओर नरि्देशति करती है। अपने नधिन से पहले, संत ने अपने आसपास के बशिपों और करीबी सहयोगयिों को यह नरि्देश दयिा कि वे उनके अंतमि

[6298] संत साइप्रयिन ने शुरू में माउंट अथोस पर मठवासी तपस्या का अभ्यास कयिा, जहाँ, माउंट अथोस पर भक्षिु साइप्रयिन को टर्नोव के पैट्रआर्क यूथमियिस द्वारा लखिे गए एक पत्र से यह स्पष्ट होता है कि उन्होंने अपने परश्रिम से प्रसद्धि प्राप्त की।

[6299] वे माउंट एथोस पर अपनी वद्विता, जज्ञिासा और पवत्रि ग्रंथों के ज्ञान के लिए पहले से ही प्रसद्धि थे; यहीं से उन्होंने उपर्युक्त पैट्रआर्क यूथमियिस को लखिा, उनसे कुछ 'चर्च-संबंधी मामलों' के बारे में लखिने का अनुरोध करते हुए, अर्थात् नम्निलखिति प्रश्नों पर: पेंटेकोस्ट के दनिों के दौरान और क्रसिमस और एपफिेनी के बीच बारह दनिों के दौरान प्रणाम करने के संबंध में, और रेगस्तिान में एक पुजारी की अनुपस्थतिि में पवत्रि रहस्यों को ग्रहण करने के संबंध में। उनकी वद्विता, साथ ही उनके पवत्रि जीवन ने, कॉन्स्टेंटनिोपल के पैट्रआर्क, फलिोथयिस का वशिेष ध्यान आकर्षति कयिा, जन्हिोंने उन्हें अपने वश्विास में लयिा और एक वश्विसनीय सलाहकार बनाया, और बाद में उन्हें मेट्रोपॉलटिन के रूप में नयिुक्त कयिा, शुरू में कीव और लथिुआनयिा का; संत एलेक्सयिस की मृत्यु के बाद, साइप्रयिन सभी रूस के मेट्रोपॉलटिन बने, और दो साल के चर्च-व्यवस्था और पदानुक्रम संबंधी उथल-पुथल के बाद, 1390 में उन्होंने रूसी चर्च का नेतृत्व संभाला।

[6300] उनकी शक्षिा की वरिासतों में, अन्य बातों के अलावा, उनके वभिन्नि पत्र शामलि हैं, जो सच्ची ईसाई बुद्धमित्ता की भावना और उन पर सौंपी गई मंडली की आध्यात्मकि जरूरतों के लिए उत्साही पास्टोरल देखभाल से ओत-प्रोत हैं। इन पत्रों में, नम्निलखिति पर वशिेष ध्यान देने योग्य है: मठाधीश अथेनासयिस और प्सकोव के पुरोहति वर्ग को लखिे पत्र।

[6301] गोलेनश्चिेवो मॉस्को के पास एक गाँव है, जो मॉस्को जलि में वोरोब्योवी पहाड़यिों के पार एक मनोरम, ऊँचे स्थान पर स्थति है; यह आज भी मौजूद है। अन्य समयों में, संत व्लादमिीर वोल्स्ट में तथाकथति 'पवत्रि झील' में एकांतवास करते थे, जहाँ उन्होंने प्रभु के रूपांतरण को समर्पति एक चर्च भी बनाया था।

[6302] इस प्रकार, संत साइप्रयिन ने ट्रेब्नकि और सर्वसि बुक का ग्रीक से अनुवाद कयिा, जन्हिें कुछ हस्सिों में रूसी धार्मकि अनुष्ठान की जरूरतों के अनुसार आंशकि रूप से अनुकूलति कयिा गया था; उन्होंने कैनन और प्रार्थनाओं के साथ-साथ कोर्मचाया का भी अनुवाद कयिा, जसिे 16वीं शताब्दी में भी मॉस्को कैथेड्रल ऑफ द डॉर्मशिन में रखा जाता था। संत साइप्रयिन को कुछ छोटे पूजा-संबंधी ग्रंथों का श्रेय भी दयिा जाता है, जनिमें से कुछ अनुवाद हैं और अन्य मौलकि कृतयिाँ हैं। संत ने रूसी संतों और राजकुमारों द्वारा कैननकिल लेखन संकलति कएि, पूजा-वधिि और अन्य पवत्रि अनुष्ठानों की सूचयिाँ वतिरति कीं, इन अनुष्ठानों की व्याख्या की, उनके प्रदर्शन में मनमाने तौर-तरीकों की नदिा की, और इसी तरह अन्य कार्य कएि। आम तौर पर, मेट्रोपॉलटिन साइप्रयिन रूसी चर्च के इतहिास में एक महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं, वशिेष रूप से पूजा-संबंधी पुस्तकों और चर्च की रस्मों को संशोधति करने के क्षेत्र में एक व्यक्ति के रूप में। संत साइप्रयिन के एक प्राचीन वृत्तांत में कहा गया है कि उन्होंने 'कई पवत्रि पुस्तकों का ग्रीक से रूसी में अनुवाद कयिा और हमारे लाभ के लिए काफी संख्या में रचनाएँ पीछे छोड़ गए'।

[6303] संत साइप्रयिन द्वारा रचति, महान संत पीटर की जीवनी एक जीवंत भक्ति से ओत-प्रोत है और यह दुर्भाग्यों और एक गंभीर बीमारी से मुक्ति के लिए कृतज्ञता का फल है, जैसा कि साइप्रयिन ने स्वयं गवाही दी थी। – साइप्रयिन कई ऐतहिासकि कृतयिों के लेखक भी हैं जो आज तक संरक्षति हैं, जनिमें से कुछ तथाकथति 'डग्रिी की पुस्तक' में शामलि की गई थीं; यह दर्ज है कि संत साइप्रयिन ने रूसी संतों के कई जीवन लखिे।

[6304] क्रॉनकिल के अनुसार, वह 'सभी ज्ञान और समझ' से परपिूर्ण थे और 'अत्यंत वद्विान और परम धार्मकि थे; उन्होंने अपने हाथ से पुस्तकें लखिीं और अक्सर प्रार्थना और पवत्रि धर्मग्रंथों के अध्ययन में स्वयं को समर्पति कयिा'।

संस्कार के समय उनकी कफ़न पर यह पत्र पढ़ें[6305] । और ऐसी वनिम्रता में, अपने होठों पर एक धन्यवाद की प्रार्थना के साथ, वे संसार की सृष्टि के 6914वें वर्ष में, 16 सतिंबर को प्रभु में सुलाए गए[6306] ।

आदरणीय तपस्वी डोरोथयिस की स्मृति

16 सतिंबर को स्मरणोत्सव

आदरणीय डोरोथयिस थेबाइड के मूल नविासी थे और अलेक्जेंड्रयिा के पास रेगस्तिान में, 'द हर्मट्सि सेल्स' नामक स्थान पर नविास करते थे[6307] । हेलेनोपोलसि के बशिप पैलाडयिस[6308] , जन्हिोंने अपनी युवावस्था में उनके तपस्या के कठोर कार्यों को प्रत्यक्ष रूप से देखा था, उनके बारे में नम्निलखिति का वर्णन करते हैं।

साठ वर्षों तक वह एक ही गुफा में रहे, और उन्होंने अत्यंत कठोर जीवन व्यतीत कयिा; हर दनि, दोपहर की तीव्र गर्मी में, समुद्र के कनिारे भटकते हुए, वे पत्थर इकट्ठा करते और उनसे कोठरयिाँ बनाते, और उन्हें उन लोगों को दे देते जो स्वयं उन्हें नहीं बना सकते थे। पल्लैडयिस कहते हैं, 'मैंने स्वयं एक बार उनसे कहा:

'पतिाजी, इतनी वृद्धावस्था में आप इस भीषण गर्मी में अपने शरीर को क्यों कष्ट देते हैं?'

और उन्होंने मुझसे उत्तर दयिा:

'ताकि यह मुझे सताए नहीं, बल्कि मैं इसे सता सकूँ।'

वह हर दनि संयम से खाते थे, दनि में केवल एक बार सूखी रोटी और थोड़ी जंगली हरी सब्ज़ी; वे पानी भी संयम से पीते थे। ईश्वर मेरी गवाही है कि किसी ने उन्हें कभी चटाई पर लेटे या सोते हुए नहीं देखा; वे पूरी रात खजूर की टहनयिों से टोकरी बुनते हुए बैठते थे और उन्हें बेचकर अपना भोजन खरीदते थे। और मैं सोचता था कि क्या वह केवल मेरी उपस्थति में ही इतना कठोर जीवन जीता था, और उसके पूरे जीवन के बारे में जानने की इच्छा से, मैंने उसके कई शष्यिों से पूछा कि क्या उसका जीवन जीने का तरीका हमेशा इतना सख्त था। और उन्होंने मुझे बताया कि उसने बचपन से ही ऐसा जीवन जयिा था, और यह कि, जैसा कि उसका रवािज था, वह कभी सोता नहीं था; सवािय, शायद, कुछ करते या खाते समय, जब वह कभी-कभी अपनी आँखें बंद कर लेता था, इतना कि कई मौकों पर खाते समय उसके मुँह से रोटी गरि जाती थी। जब एक बार, हमने उसे चटाई पर कम से कम थोड़ी देर सोने के लिए कहा, तो उसने, मानो हम पर तरस खाकर, हमसे कहा:

'अगर तुम कभी कसिी देवदूत को सोने के लिए मना ही ले सको, तो समझो कि तुम मुझे भी मना ही ले लोगे।'

एक दनि, जैसा कि पल्लैडयिस बताते हैं, उन्होंने मुझे – लगभग नौ बजे – अपने कुएँ पर भोजन के लिए पानी का एक छोटा पात्र लाने के लिए भेजा। और ऐसा हुआ कि जब मैं कुएँ के पास गया और झुका, तो मैंने उसमें एक वषिैला साँप[6309] देखा – और डर के मारे मैंने पानी बलि्कुल भी नहीं नकिाला, बल्कि उसके पास वापस दौड़ गया, जो मैंने देखा था उसकी सूचना देते हुए और कहने लगा:

[6305] संत साइप्रयिन का वदिाई, या आध्यात्मकि, पत्र उनकी इच्छानुसार उनके अंतमि संस्कार के समय पढ़ा गया था, ठीक उसी प्रकार जैसे बाद में उनके उत्तराधकिारयिों के अंतमि संस्कार पर भी पढ़ा गया था। यह ईसाई ज्ञान से परपिूर्ण है, गहरी भक्ति की भावना से ओत-प्रोत है, और सभी सांसारकि चीजों की क्षणभंगुरता, व्यर्थता और तुच्छता, तथा मनुष्य की नश्वरता के बारे में मार्मकि वाक्पटुता से बताता है।

[6306] ईस्वी वर्ष 1406 में – उनकी अवशेषों की खोज 1472 में हुई और वे मॉस्को कैथेड्रल ऑफ द डॉर्मशिन के वेदी के नीचे वशि्राम करते हैं (उनकी अवशेषों की खोज और स्थानांतरण का स्मरणोत्सव 27 मई को मनाया जाता है)। – सेंट साइप्रयिन के रूसी चर्च के नेतृत्व के दौरान, मास्को और पूरे रूस की चमत्कारकि मुक्ति, ईश्वर की माता की रक्षा के द्वारा, एशयिाई वजिेता तैमूरलंग के भयानक आक्रमण से, जो सेंट साइप्रयिन के आदेश और अनुरोध पर ईश्वर की माता के चमत्कारी व्लादमिीर आइकन को व्लादमिीर से मास्को ले जाने के साथ हुआ था।

[6307] थेबाइड प्राचीन काल में प्रसद्धि थेब्स शहर का क्षेत्र है; इस नाम का प्रयोग इसके प्रमुख शहर, थेब्स के नाम पर पूरे ऊपरी (दक्षणिी) मस्रि के लिए भी कयिा जाता था। 'संन्यासयिों की कुटयिा' से तात्पर्य नील नदी के पश्चमिी तट पर स्थति मस्रि के एक रेगस्तिान से था।

[6308] हेलेनोपोलसि के पल्लाडयिस (368–430), जो परम पूज्य डोरोथयिस के शष्यि और गलाटयिा के मूल नविासी थे, 388 में अलेक्जेंड्रयिा पहुँचे, जहाँ से वे बाद में पास के एक रेगस्तिान में चले गए—जहाँ परम पूज्य डोरोथयिस भी रहे थे—और बाद में बेथलहम चले गए। 399 में, उन्हें एशयिा माइनर के बथिनियिा में हेलेनोपोलसि का बशिप चुना गया। बाद में, सम्राट आर्कैडयिस ने उन्हें सेंट जॉन क्रसिोस्टोम के समर्थक होने के कारण ऊपरी मस्रि में नर्विासति कर दयिा, जहाँ से, 408 में, उन्हें एंटनिोए भेज दयिा गया; और 412 में, उन्होंने संतों के जीवन और उनके बारे में ववरिणों का एक संग्रह संकलति कयिा, जसिका उन्होंने उनके सम्मान में 'लौसीयाकोन' नाम रखा।

[6309] एस्प या बेसलिस्कि सबसे ज़हरीले साँपों में से एक है, जसिका ज़हर घातक होता है; यह आमतौर पर अरब, मस्रि और सहारा के रेतीले रेगस्तिानों में पाया जाता है।

'हम बर्बाद हो गए, फादर, क्योंकि मैंने कुएँ में एक विषैला साँप देखा है।'

हालाँकि, पादरी ने हल्की मुस्कान के साथ सिर हिलाया और मुझसे कहा:

'अगर शैतान सभी कुओं और सभी झरनों में इचिड्स, विषैले साँप और अन्य जहरीले सरीसृप डाल दे, तो तुम कभी पानी नहीं पिओगे और प्यास से मर जाओगे।'

यह कहकर, वह उठे और स्वयं कुएँ पर चले गए; कुछ पानी निकालकर, उन्होंने उस पर क्रॉस का चिह्न बनाया, और उसे चखकर कहा:

'जहाँ क्रॉस है, वहाँ शैतान की शक्ति कोई हानि नहीं पहुँचाती[6310] ।'

30 सितंबर

17 सितंबर (पुराना तरीका)

पवित्र शहीदों फेथ, होप और लव तथा उनकी माता सोफिया का कष्टकथा

17 सितंबर को स्मरणोत्सव

सम्राट हैड्रियन के शासनकाल में, रोम में सोफिया नाम की एक इतालवी मूल की विधवा रहती थी, जिसका अर्थ है 'ज्ञान'। वह एक ईसाई थी, और अपने नाम के अनुरूप, उसने अपना जीवन विवेक से जिया - प्रेरित याकूब द्वारा प्रशंसित बुद्धिमत्ता के अनुसार, जो कहते हैं: *'ऊपर से आने वाली बुद्धिमत्ता सबसे पहले शुद्ध है, फिर शांतिपूर्ण, सौम्य, विवेकशील, दया और अच्छे फलों से भरपूर है'*[6311] (याकूब 3:17). इस बुद्धिमान सोफिया ने, एक पवित्र विवाह में रहते हुए, तीन बेटियों को जन्म दिया, जिनका नाम उसने तीन ईसाई सद्गुणों के नाम पर रखा: उसने अपनी पहली बेटी का नाम विश्वास, दूसरी का नाम आशा और तीसरी का नाम प्रेम रखा। और ईसाई बुद्धि से परमेश्वर को प्रसन्न करने वाले गुणों के सिवा और क्या उत्पन्न हो सकता है? अपनी तीसरी बेटी के जन्म के कुछ ही समय बाद, सोफिया विधवा हो गई। विधवा होने के बाद भी, उन्होंने एक धार्मिक जीवन जीना जारी रखा, प्रार्थना, उपवास और दान द्वारा ईश्वर को प्रसन्न करती रहीं; जहाँ तक उनकी बेटियों का सवाल है, उन्होंने उन्हें वैसे ही पाला जैसा केवल एक अत्यंत बुद्धिमान माँ ही कर सकती थी: उन्होंने उन्हें उन ईसाई सद्गुणों को अपने जीवन में उतारना सिखाने का प्रयास किया जिनके नाम उनके थे।

जैसे-जैसे बच्चे बड़े हुए, वैसे-वैसे उनके सद्गुण भी बढ़े। वे पहले से ही भविष्यवाणी और प्रेरितों की रचनाओं से अच्छी तरह परिचित थीं, अपने शिक्षकों की शिक्षाओं को मानने की आदी थीं, पढ़ाई में लगन से जुटी रहती थीं, और प्रार्थना तथा अपने घरेलू कर्तव्यों में उत्साही थीं। अपनी पवित्र और ईश्वर-ज्ञानी माँ की आज्ञा मानते हुए, वे हर काम में निपुण हुईं और दिन-ब-दिन और अधिक शक्तिशाली होती गईं। और चूँकि वे असाधारण रूप से सुंदर और समझदार थीं, लोगों ने जल्द ही उन पर ध्यान देना शुरू कर दिया।

उनकी बुद्धि और सुंदरता की ख़बर पूरे रोम में फैल गई। अंतीयकिया प्रांत के राज्यपाल ने उनके बारे में सुना और उन्हें देखना चाहा। जैसे ही उसने उन्हें देखा, वह तुरंत ही यह मान गया कि वे ईसाई थीं; क्योंकि वे मसीह में अपने विश्वास को छिपाना नहीं चाहती थीं, न ही उनमें मसीह के प्रति आशा में कोई हिल-डुल हुई, और न ही मसीह के प्रति प्रेम में वे डगमगाईं, बल्कि उन्होंने सबके सामने खुले तौर पर प्रभु मसीह की महिमा की, और अधर्मी मूर्तिपूजक मूर्तियों से घृणा की।

[6310] लवसाइक, अध्याय 2। – परम आदरणीय डोरोथियस का निधन चौथी शताब्दी के अंत में थियोडोसियस महान (379–395) के शासनकाल में हुआ।

[6311] प्रेरित पृथ्वी की, सांसारिक बुद्धि की तुलना ऊपर से आने वाली बुद्धि से करते हैं, अर्थात् ईश्वर से उतरने वाली, और बाद वाली की विशेषताओं की ओर इशारा करते हैं: यह सभी पाप और वासना से मुक्त है; यह शांति-प्रिय है, स्वयं शांति से प्रेम करती है, और सभी शत्रुताओं को सुलझाने का प्रयास करती है; शांति भंग न करने के लिए, यह नम्रतापूर्वक सभी अन्यायों को सहन करती है; यह विवादों और बहसों के किसी भी जुनून से रहित है, और दूसरों में भी यह नम्रता (आज्ञाकारिता) के माध्यम से इस जुनून को शांत करने का प्रयास करती है; यह दया और अच्छे कार्यों से भरी है।

अंतयिोकस ने यह सब राजा हैड्रयिन को बताया, और बाद वाले ने इन कुंवारी लड़कयिों को अपने सामने लाने के लिए अपने सेवकों को भेजने में कोई समय बर्बाद नहीं कयिा। राजा की आज्ञा का पालन करते हुए, सेवक सोफयिा के घर के लिए रवाना हो गए, और जब वे पहुँचे, तो उन्होंने देखा कि वह अपनी बेटयिों को सखिाने में व्यस्त थी। दासों ने उसे बताया कि राजा उसे और उसकी बेटयिों को अपनी उपस्थतिि में बुला रहा है। यह समझते हुए कि राजा उन्हें कसि उद्देश्य से बुला रहा है, वे सभी इस प्रार्थना के साथ ईश्वर की ओर मुड़े:

'हे सर्वशक्तमिान ईश्वर, अपनी पवत्रि इच्छा के अनुसार हमारे साथ व्यवहार करो; हमें न छोड़ो, बल्कि हमें अपनी पवत्रि सहायता भेजो, ताकि हमारा हृदय गर्वीले यातना देने वाले से न डर जाए, ताकि हम उसके भयानक यातनाओं से न डरें, न ही मृत्यु से भयभीत हों; कुछ भी हमें आपसे, हमारे ईश्वर से, अलग न कर सके।'

अपनी प्रार्थना कहने और प्रभु परमेश्वर के सामने सरि झुकाने के बाद, चारों—माँ और उसकी बेटयिों ने—एक-दूसरे का हाथ एक बुनी हुई माला की तरह पकड़ा, राजा के पास गईं और बार-बार स्वर्ग की ओर देखते हुए, हार्दकि आहों और गुप्त प्रार्थनाओं के साथ, स्वयं को उसकी सहायता के भरोसे छोड़ दयिा जसिने हमें *'उनसे* न डरने की आज्ञा दी है *जो शरीर को तो मारते हैं पर आत्मा को नहीं मार सकते*' (मत्ती 10:28)। जब वे शाही महल के पास पहुँचे, तो उन्होंने क्रूस का चन्हि बनाया, यह कहते हुए:

'हे परमेश्वर, हमारे उद्धारकर्ता, हमें सहायता करें, अपने पवत्रि नाम की महमिा के लिए।'

उन्हें महल में ले जाया गया और राजा के सामने पेश कयिा गया, जो गर्व से अपने सहिासन पर वरिाजमान था। राजा को देखकर उन्होंने उचति सम्मान अर्पति कयिा, फरि भी बनिा कसिी भय के उसके सामने खड़े रहे, उनके चेहरे पर कोई परविर्तन नहीं था, हृदय में साहस था, और वे सभी को प्रसन्न दृष्टि से देख रहे थे, मानो उन्हें कसिी भोज के लिए बुलाया गया हो; अपने प्रभु की खातरि यातना सहने के लिए वे इतनी प्रसन्नता से राजा के सामने उपस्थति हुए।

उनके कुलीन, तेजस्वी और नडिर चेहरे देखकर, राजा ने पूछना शुरू कयिा कि वे कसि कुल से हैं, उनके नाम क्या हैं, और उनका धर्म क्या है। अत्यंत बुद्धमिान होने के कारण, माँ ने इतनी सूझबूझ से उत्तर दयिा कि उपस्थति सभी लोग उनके उत्तर सुनकर उनकी बुद्धमित्ता से चकति हो गए। अपनी वंशावली और नाम का संक्षेप में उल्लेख करने के बाद, सोफयिा ने मसीह के बारे में बोलना शुरू कयिा, जनिकी उत्पत्ति कोई भी समझा नहीं सकता[6312] , लेकनि जनिके नाम की हर कुल को आराधना करनी चाहिए[6313] । उन्होंने खुले तौर पर परमेश्वर के पुत्र, यीशु मसीह में अपने वशि्वास की घोषणा की, और खुद को उनकी दासी कहकर, उनके नाम का महमिामंडन कयिा।

उसने कहा, 'मैं एक ईसाई हूँ, यह वह कीमती नाम है जसि पर मैं गर्व कर सकती हूँ।'

उसने यह भी कहा कि उसने अपनी बेटयिों का ववािह मसीह से कर दयिा था, ताकि वे अपने अमर वर - परमेश्वर के पुत्र - के लिए अपनी अमर पवत्रिता बनाए रखें।

तब राजा ने, अपने सामने इतनी बुद्धमिान महलिा को देखकर, फरि भी उसके साथ लंबी बातचीत करने या उसका न्याय करने की इच्छा न रखते हुए, इस मामले को बाद के लिए टाल दयिा। उसने सोफयिा को उसकी बेटयिों के साथ पल्लाडयिा नामक एक कुलीन महलिा के पास भेज दयिा, और उसे यह नर्दिेश दयिा कि वह उनकी देखभाल करे और तीन दनिों में उन्हें न्याय के लिए उसके सामने पेश करे।

पैलाडयिा के घर में रहते हुए और अपनी बेटयिों को सखिाने के लिए पर्याप्त समय होने के कारण, सोफयिा ने दनि-रात उन्हें वशि्वास में दृढ़ कयिा, और उन्हें ईश्वर से प्रेरति शब्दों से शकि्षा दी।

वह कहती थीं, 'मेरी प्रयि बेटयिों, अब तुम्हारे वशि्वास के पराक्रम का समय आ गया है; अब तुम्हारे अमर वर के साथ तुम्हारे सगाई का दनि आ गया है; अब, अपने नामों के अनुरूप, तुम्हें दृढ़ वशि्वास, अटूट आशा, और सच्चा और शाश्वत प्रेम दखिाना होगा।' आपकी वजिय का समय आ गया है, जब शहीद की माला से सुसज्जति होकर, आप अपने सबसे प्रयि वर के साथ ववािह करेंगी और, महान आनंद के साथ, उनके सबसे तेजस्वी महल में प्रवेश करेंगी। मेरी बेटयिों, मसीह के इस सम्मान के लिए, अपने युवा शरीरों को न बचाओ; अपनी सुंदरता और जवानी की परवाह न करो, उस के लिए

[6312] *'उसकी वंशावली का वर्णन कौन कर सकता है?'* – यह बात यशायाह नबी की पुस्तक में कही गई है (यशा. 53:8); अर्थात्, यीशु मसीह की उत्पत्ति या जन्म (परमेश्वर पति से उनका शाश्वत जन्म और परम पवत्रि कुँवारी मरयिम से उनका सांसारकि जन्म) ऐसी चीज़ है जसिे कोई भी पर्याप्त रूप से वर्णति नहीं कर सकता। यह महान रहस्य तो स्वर्गदूतों को भी पूरी तरह से प्रकट नहीं कयिा गया है (देखें 1 पतरस 1:12)।

[6313] देखें फलिप्पियों 2:10। यह, बेशक, परमेश्वर के पुत्र के नाम का संदर्भ है, जसिके द्वारा सभी प्राणी, स्वर्गीय और पृथ्वी के, और यहां तक कि अधोलोक के नविासी—दुष्ट आत्माएँ—मसीह की आराधना करेंगे।

जो अपनी भलाई में मनुष्यों के बेटों से अधकि सुंदर है, और शाश्वत जीवन के लिए, इस क्षणकि जीवन से वंचति होने पर शोक न करो। क्योंकि तुम्हारा स्वर्गीय प्रयितम, यीशु मसीह, शाश्वत स्वास्थ्य, अगणति सुंदरता और अनंत जीवन है। और जब तुम्हारे शरीर उनके लिए यातनाओं से मर जाएँगे, तो वह उन्हें अक्षयत्व के वस्त्र से परधिान कर देंगे और तुम्हारे घावों को स्वर्ग के तारों की तरह चमका देंगे। जब उनके लिए दुख सहने के कारण तुम्हारी सुंदरता छीन ली जाएगी, तो वह तुम्हें स्वर्गीय सुंदरता से सजाएँगे, जैसी मानव नेत्र ने कभी नहीं देखी। और जब आप अपने प्रभु के लिए अपनी आत्मा अर्पण करके अपना सांसारकि जीवन खो देंगे, तो वह आपको अनंत जीवन का प्रतफिल देगा, जसिमें वह आपको अपने स्वर्गीय पति और अपने पवत्रि स्वर्गदूतों के सामने सदा के लिए महमिामय बनाएगा, और सभी स्वर्गीय सेनाएं आपको मसीह की वधू और स्वीकारकर्ता कहकर पुकारेंगी। सभी पवत्रिजन आपकी प्रशंसा करेंगे; बुद्धमिान कुँवारयिाँ आप पर आनन्दति होंगी और आपको अपनी संगति में स्वागत करेंगी। मेरी प्रयि पुत्रयिों! शत्रु की चालाकयिों से बहकने न पाओ: क्योंकि, जैसा मैं सोचती हूँ, राजा तुम पर कृपा की वर्षा करेगा और तुम्हें महान उपहारों का वादा करेगा, तुम्हें महमिा, धन-संपत्ति और सम्मान, इस क्षणभंगुर और व्यर्थ संसार की सारी सुंदरता और मठिास की पेशकश करेगा; परन्तु ऐसी कसिी भी वस्तु की लालसा न करो, क्योंकि यह सब धुएँ की नाईं लुप्त हो जाता है, हवा से उड़ने वाली धूलि के समान बखिर जाता है, और फूलों तथा घास के समान मुरझाकर पृथ्वी पर लौट जाता है। जब तुम भयंकर यातनाएँ देखो तो न डरना, क्योंकि थोड़ा सा दुख सहकर तुम शत्रु को परास्त कर सदा के लिए वजियी हो जाओगी। मैं अपने परमेश्वर, यीशु मसीह में वश्विास रखता हूँ; मैं वश्विास करता हूँ कि वह तुम्हें नहीं छोड़ेगा जो उसके नाम के लिए दुख उठाते हैं, क्योंकि उसने स्वयं कहा है: *'क्या कोई माँ अपने स्तनपान करने वाले बच्चे को भूल सकती है, या अपने गर्भ के पुत्र पर दया नहीं दखिा सकती? परन्तु यदि वह भी भूल जाए, तो मैं तुझे न भूलूंगा'* (यशायाह 49:15); वह तुम्हारी सभी परीक्षाओं में दृढ़ता से तुम्हारे साथ रहेगा, तुम्हारे कर्मों को नहिारता हुआ, तुम्हारी कमजोरयिों को मजबूत करता हुआ और तुम्हारे पुरस्कार के लिए एक अक्षय मुकुट तैयार करता हुआ। हे मेरी सुन्दर बेटयिों! मुझे तुम्हारे जन्म के समय झेली गई पीड़ा याद करो; मुझे वे कष्ट याद करो जनिसे मैंने तुम्हारा पालन-पोषण कयिा; मुझे वे शब्द याद करो जनिसे मैंने तुम्हें ईश्वर का भय सखिाया; और मसीह में अपने वश्विास की अच्छी और साहसी स्वीकारोक्ति के द्वारा अपने वृद्ध होने पर अपनी माँ को सांत्वना दो। यदि मुझे शहीदों की माँ कहलाने का योग्य समझा जाए, तो यह सभी वश्विासयिों के बीच मेरे लिए उत्सव, आनंद, सम्मान और महमिा का कारण होगा; यदि मैं मसीह के लिए आपकी वीरतापूर्ण सहनशीलता, उनके पवत्रि नाम की आपके दृढ़ नश्चिय वाले स्वीकारोक्ति और उनके लिए आपके मरने को देखूँ। तब मेरी आत्मा आनंदति होगी, और मेरा मन प्रसन्न होगा, और मेरा वृद्धावस्था बल पाएगी। तब तुम भी सचमुच मेरी बेटयिाँ होओगी, यदि अपनी माँ की बात मानकर, तुम अपने प्रभु के लिए रक्तपात तक दृढ़ रहो और उत्साह के साथ उनके लिए मरो।

अपनी माता से ऐसी शक्षिा को गहरी भावना के साथ सुनकर, कन्याओं ने अपने हृदयों में मठिास महसूस की और आत्मा में आनंदति हुईं, वे अपने शहीद होने के समय की प्रतीक्षा कर रही थीं मानो यह उनका ववािह का समय हो। क्योंकि, एक पवत्रि मूल से पवत्रि शाखाएँ होने के नाते, वे अपनी पूरी आत्मा से उस बात की इच्छा करती थीं जो उनकी सबसे बुद्धमिान माता सोफयिा ने उन्हें सखिाई थी। उन्होंने उनकी सभी बातों को हृदय से ग्रहण कयिा और शहादत के इस महान कार्य के लिए स्वयं को तैयार कयिा, मानो वे कसिी दव्यि महल में एकत्र हो रही हों, वश्विास से स्वयं की रक्षा करते हुए, आशा से स्वयं को बल प्रदान करते हुए, और प्रभु के प्रति प्रेम की अग्नि को अपने भीतर प्रज्वलति कर रहे हों। एक-दूसरे को प्रोत्साहति और मजबूत करते हुए, उन्होंने अपनी माँ से वादा कयिा कि वे मसीह की मदद से वास्तव में उनकी सभी आत्मा-रक्षक सलाह को व्यवहार में लाएंगे।

जब तीसरा दनि आया, तो उन्हें न्याय के लिए नर्दियी राजा के सामने लाया गया। यह सोचकर कि वे उसके प्रलोभन भरे शब्दों के आगे आसानी से झुक जाएँगे, राजा ने उनसे इस प्रकार कहना शुरू कयिा:

'मेरी संतानो! तुम्हारी सुंदरता को देखकर और तुम्हारी जवानी की कदर करते हुए, मैं तुम्हें एक पति की तरह सलाह देता हूँ: देवताओं की पूजा करो, जो संसार के शासक हैं; और यदि तुम मेरी आज्ञा मानोगी और जैसा कहा जाए वैसा करोगी, तो मैं तुम्हें अपनी संतान कहूँगा। मैं सरदारों और राज्यपालों और अपने सभी सलाहकारों को बुलाऊँगा, और उनकी उपस्थति में मैं तुम्हें अपनी बेटयिाँ घोषति करूँगा, और तुम सभी की प्रशंसा और सम्मान का आनंद लोगी। लेकनि अगर तुम आज्ञा का पालन नहीं करोगी और मेरा हुक्म नहीं मानोगी, तो तुम अपने ऊपर बहुत बड़ा संकट लाओगी, और अपनी माँ को उनके बुढ़ापे में दुखी करोगी, और तुम स्वयं उस समय नष्ट हो जाओगी जब तुम सबसे अधकि आनंद ले सकती थीं, बेफक्रि और खुशी से जी सकती थीं। क्योंकि मैं तुम्हें एक क्रूर मृत्यु के हवाले कर दूँगा और, तुम्हारे शरीरों को टुकड़ों में

फाड़कर, मैं उन्हें कुत्तों को खाने के लिए फेंक दूँगा, और तुम सभी के पैरों तले कुचली जाओगी। इसलिए, अपने ही भले के लिए मेरी बात सुनो: क्योंकि मैं तुमसे प्रेम करता हूँ, और न केवल मैं तुम्हारी सुंदरता को नष्ट करना या तुम्हें इस जीवन से वंचित करना नहीं चाहता, बल्कि मैं तुम्हारा पति बनना चाहता हूँ।

लेकिन पवित्र कुंवारी कन्याओं ने एक स्वर में और एक साथ उत्तर दिया:

'हमारा पति वह ईश्वर है जो स्वर्ग में वास करता है। वह हम पर और हमारे जीवन पर दया करता है और हमारी आत्माओं पर करुणा रखता है; हम उसकी ओर से प्रेम पाना चाहते हैं और उसके सच्चे बच्चे कहलाना चाहते हैं। हम उसकी आराधना करते हैं और उसकी आज्ञाओं तथा उपदेशों का पालन करते हैं, हम तुम्हारे देवताओं पर थूकते हैं, और हम तुम्हारी धमकियों से नहीं डरते, क्योंकि हमारी एकमात्र इच्छा है कि हम हमारे परमेश्वर, परम मधुर यीशु मसीह के लिए दुख सहें और कष्टदायक यातनाओं को झेलें।

उनसे ऐसा उत्तर सुनकर, राजा ने माता सोफिया से पूछा कि उनकी बेटियों के नाम क्या हैं और उनकी उम्र कितनी है।

संत सोफिया ने उत्तर दिया:

'मेरी पहली बेटी का नाम वेरा है, और वह बारह साल की है; दूसरी नादेज़्दा है, जो दस साल की है; और तीसरी ल्यूबॉव है, जो केवल नौ साल की है।'

राजा यह देखकर बहुत आश्चर्यचकित हुआ कि इतनी कम उम्र में, उनमें इतनी हिम्मत और बुद्धि थी और वे इस तरह उसका जवाब दे सकीं। उसने एक बार फिर उनमें से प्रत्येक को अपनी मूर्तिपूजा के लिए मजबूर करना शुरू किया और सबसे बड़ी बहन, वेरा की ओर मुड़कर कहा:

'महान देवी आर्टेमिस को बलिदान चढ़ाओ।'

लेकिन वेरा ने इनकार कर दिया। फिर राजा ने आदेश दिया कि उसे नग्न कर दिया जाए और पीटा जाए। यातना देने वालों ने, बिना किसी दया के उसे पीटते हुए, कहा:

'महान देवी आर्टेमिस को बलिदान अर्पित करो।'

लेकिन उसने चुपचाप उस पीड़ा को सहन किया, मानो प्रहार उसके अपने शरीर पर नहीं बल्कि किसी और के शरीर पर हो रहे हों। कोई सफलता न मिलने पर, यातना देने वाले ने उसके कुँवारी स्तनों को काट देने का आदेश दिया। लेकिन घावों से खून के बजाय दूध बहने लगा। वेरा के यातनाओं के सभी साक्षी इस चमत्कार और शहीद की सहनशक्ति से चकित रह गए। और, सिर हिलाते हुए, उन्होंने गुप्त रूप से राजा को उसके पागलपन और क्रूरता के लिए फटकारा, कहते हुए:

'इस सुंदर कन्या ने कौन सा पाप किया है, और वह इतनी यातना क्यों झेल रही है? ओह, राजा के पागलपन और उसकी पशुवत क्रूरता का क्या दुख है, जो अमानवीय रूप से न केवल बड़ों बल्कि छोटे बच्चों को भी नष्ट कर देती है।'

इसके बाद, एक लोहे की जाली लाई गई और उसे तेज़ आग पर रखा गया। जब वह जलते हुए कोयले की तरह लाल-गरम हो गई और उससे चिंगारियाँ उड़ने लगीं, तो उन्होंने पवित्र कन्या वेरा को उस पर लिटा दिया। वह दो घंटे तक इस जाली पर पड़ी रही और अपने प्रभु को पुकारती रही, परन्तु वह जरा भी नहीं झुलसी, जिससे सभी चकित रह गए। फिर उसे आग के ऊपर रखे एक बड़े बर्तन में डाल दिया गया, जो उबलते हुए गोंद और तेल से भरा था, लेकिन वह वहाँ भी सुरक्षित रही, और उसमें बैठकर, जैसे कि ठंडे पानी में हो, उसने ईश्वर की स्तुति की। यातना देने वाले को यह समझ नहीं आ रहा था कि उसके साथ और क्या किया जाए, या वह उसे ईसाई धर्म से कैसे भटकाए, इसलिए उसने उसे तलवार से सिर कलम करने की सज़ा सुनाई।

यह सज़ा सुनकर, संत वेरा आनंदित हो गईं और उन्होंने अपनी माँ से कहा:

'मेरी माँ, मेरे लिए प्रार्थना करो, कि मैं अपना सफर पूरा कर सकूँ, प्रियतम अंत तक पहुँच सकूँ, अपने प्रिय प्रभु और उद्धारकर्ता को देख सकूँ, और उनकी दिव्यता के दर्शन का आनंद ले सकूँ।'

और अपनी बहनों से उसने कहा:

'मेरी प्रिय बहनों, याद रखो कि हमने किसके प्रति अपना व्रत लिया है, किसके प्रति हमने स्वयं को वधू के रूप में अर्पित किया है; तुम जानती हो कि हम अपने प्रभु के पवित्र क्रूस के चिह्न से अंकित हैं और हमें सदैव उनकी सेवा करनी है; अत; हमें अंत तक धैर्य रखना चाहिए। हम सबको एक ही माँ ने जन्म दिया, एक ही माँ ने हमारा पालन-पोषण किया और हमें सिखाया; इसलिए, हमारा अंत भी एक जैसा ही होना चाहिए; एक ही गर्भ की बहनें होने के नाते, हमारी इच्छा भी एक

होनी चाहिए। मैं तुम्हारे लिए एक उदाहरण बनूँ, ताकि तुम दोनों भी हमारे वरा के पास मेरे पीछे चली आओ, जो हमें बुलाता है।

इसके बाद, उसने अपनी माँ को चूमा; फिर, अपनी बहनों को गले लगाकर, उसने उन्हें भी चूमा और तलवार से मिलने चली गई। जहाँ तक उसकी माँ की बात है, वह अपनी बेटी के लिए बिल्कुल भी दुखी नहीं हुई, क्योंकि ईश्वर के प्रति उसका प्रेम उसके हृदय के दुख और अपने बच्चों के प्रति उसकी मातृ स्नेह पर हावी हो गया। उसकी एकमात्र चिंता यह थी कि उसकी बेटियों में से कोई भी यातनाओं से डरकर अपने प्रभु से मुंह न मोड़ दे।

और उसने वेरा से कहा:

'मैंने तुम्हें जन्म दिया, मेरी बेटी, और तुम्हारे कारण बीमारी झेली। लेकिन तुम मुझे इसके बदले एक आशीर्वाद देती हो, मसीह के नाम के लिए मरकर और उसके लिए वही रक्त बहाकर जो तुम्हें मेरी कोख में मिला था। मेरी प्रिय, उसके पास जाओ, और अपने ही रक्त से रंगे हुए, मानो बैंगनी वस्त्र पहने हुए, अपने वधू-वर की आँखों के सामने अपनी सारी सुंदरता में प्रकट होओ; उसके सामने अपनी दीन माँ को याद करो, और अपनी बहनों के लिए उससे प्रार्थना करो, कि वह उन्हें भी उसी धैर्य से मजबूत कर दे जो तुम दिखा रही हो।

इसके बाद, संत वेरा का सिर कलम कर दिया गया और वह अपने सिर, यानी मसीह ईश्वर, के पास चली गईं। उनकी माँ ने उनके लंबे कष्टों से ग्रस्त शरीर को गले लगाकर और चूमकर, मसीह ईश्वर की महिमा की, जिन्होंने अपनी बेटी वेरा को अपने स्वर्गीय महल में स्वीकार किया था।

तब दुष्ट राजा ने उसकी दूसरी बहन, नादेज्दा को, अपने सामने बुलाया और उससे कहा:

मेरे प्रिय बच्चे! मेरी बात मानो: मैं यह वही प्रेम से कह रहा हूँ जो एक पिता अपने बच्चे के लिए रखता है – महान आर्टेमिस को श्रद्धांजलि अर्पित करो, नहीं तो तुम्हारा भी वही हश्र होगा जो तुम्हारी बड़ी बहन का हुआ। तुमने उसकी भयानक यातनाएँ देखीं, तुमने उसकी पीड़ादायक मृत्यु देखी; निस्संदेह तुम भी उसी तरह पीड़ित नहीं होना चाहती। मेरी बात मानो, मेरी प्यारी बच्ची, मैं तुम्हारी जवानी पर दया करती हूँ; यदि तुम मेरी आज्ञा का पालन करोगी, तो मैं तुम्हें अपनी बेटी घोषित कर दूँगी।

संत होप ने उत्तर दिया:

'हे राजा! क्या मैं उस की बहन नहीं हूँ जिसे आपने मार डाला? क्या मैं उसकी ही माँ से नहीं जन्मी? क्या मैं उसी दूध से पोषित नहीं हुई, और क्या मुझे अपनी पवित्र बहन के समान ही बपतिस्मा नहीं मिला? मैं उसके साथ पली-बढ़ी और, उन्हीं किताबों से और अपनी माँ के निर्देश से, मैंने ईश्वर और हमारे प्रभु यीशु मसीह को जानना, उन पर विश्वास करना और केवल उनकी ही उपासना करना सीखा। हे राजा, यह मत सोचो कि मैं कुछ अलग करती हूँ या सोचती हूँ, या मेरी बहन वेरा के अलावा कुछ और चाहती हूँ; नहीं, मैं उसके पदचिन्हों पर चलना चाहती हूँ। देरी मत करो, और मुझे बहुत सी बातों से मनाने की कोशिश मत करो, बल्कि सीधे काम पर आओ, और तुम देखोगे कि मैं अपनी बहन के साथ एकमत हूँ।

यह उत्तर सुनकर, राजा ने उसे यातना देने की सज़ा सुना दी।

उसे नग्न कर दिया गया, ठीक वैसे ही जैसे वेरा के साथ किया गया था, और ज़ार के नौकरों ने उस पर तब तक बेरहमी से लंबे समय तक पिटाई की - जब तक कि वे थक नहीं गए। लेकिन वह चुप रही, मानो उसे बिल्कुल भी दर्द महसूस नहीं हो रहा हो, और वह केवल अपनी माँ, धन्य सोफिया की ओर देखती रही, जो वहाँ बहादुरी से अपनी बेटी के कष्ट को देख रही थीं और ईश्वर से प्रार्थना कर रही थीं कि वह उसे अटूट धैर्य प्रदान करें।

अन्यायपूर्ण राजा के आदेश पर, संत नादेज्दा को आग में फेंक दिया गया और तीन युवकों की तरह अक्षुण्ण रहते हुए, उन्होंने ईश्वर की महिमा की। इसके बाद, उन्हें फांसी दी गई और उनके शरीर को लोहे के पंजों से चीर-फाड़ दिया गया: उनका मांस टुकड़ों में गिर गया और खून की धारा बही, लेकिन उनके घावों से एक अद्भुत सुगंध निकली, और उनके चेहरे पर, पवित्र आत्मा की कृपा से उज्ज्वल और दीप्तिमान, एक मुस्कान थी। संत नादेज्दा ने अपने यातनाकर्ता को यह बताकर और भी लज्जित किया कि वह इतनी कम उम्र की कन्या के धैर्य को हराने में असमर्थ था।

उसने कहा, 'मसीह मेरी सहायता हैं, और मैं न केवल यातनाओं से नहीं डरती, बल्कि मैं उन्हें स्वर्ग की मिठास के रूप में चाहती हूँ: मसीह के लिए कष्ट सहना मेरे लिए इतना सुखद है। और जहाँ तक तुम्हारा सवाल है, यातनाकर्ता, तुम्हारा इंतज़ार आग की गेहेना में उन राक्षसों के साथ है जिन्हें तुम देवताओं के रूप में पूजते हो।'

ऐसे शब्दों से यातना देने वाले को और भी अधिक क्रोध आया, और उसने कड़ाही में गोंद और तेल भरकर उसे आग लगाने का आदेश दिया, और संत को उसमें फेंकने का हुक्म दिया। लेकिन जब वे संत को उबलती कड़ाही में फेंकने ही वाले

थे, तो वह तुरंत मोम की तरह पघिल गई, जबकि गोंद और तेल बाहर गरिकर पास खड़े सभी लोगों को झुलसा गया। इस प्रकार, ईश्वर की चमत्कारी शक्ति ने कभी भी संत नादेज़्दा को नहीं छोड़ा।

घमंडी यातनाकर्ता, यह सब देखकर, सच्चे ईश्वर को स्वीकार करने से इनकार कर दिया, क्योंकि उसका हृदय दैवीय भ्रम और हानिकारक त्रुटि से ढका हुआ था। लेकिन, एक युवती द्वारा उपहास उड़ाए जाने पर, उसे बहुत शर्म आई। और अधिक अपमान सहन करने के इच्छुक न होते हुए, उसने अंततः संत को तलवार से सिर कलम करने की सजा सुना दी। युवती ने अपनी आसन्न मृत्यु के बारे में सुनकर, खुशी-खुशी अपनी माँ के पास जाकर कहा:

'मेरी माँ! आप पर शांति बनी रहे; स्वस्थ रहें, और अपनी बेटी को याद रखना।'

उसकी माँ ने उसे गले लगाकर चूमा और कहा:

'मेरी बेटी नादेज़्दा! सर्वोच्च प्रभु परमेश्वर ने तुम्हें धन्य किया है, क्योंकि तुम अपनी आशा उसी में रखती हो और, उसी के लिए, अपने रक्त की परवाह नहीं करती; अपनी बहन वेरा के पास जाओ और, उसके साथ, अपने प्रियतम के सामने प्रकट होओ।'

नादेज़्दा ने अपनी बहन ल्यूबॉव को भी चूमा, जो उसके कष्ट सहने को देख रही थी, और उससे कहा:

'बहन, तुम भी यहाँ मत ठहरो; आइए हम पवित्र त्रिमूर्ति के सामने एक साथ प्रकट हों।'

यह कहने के बाद, वह अपनी बहन फेथ के निर्जीव शरीर के पास गई और उसे प्यार से गले लगाकर, अपनी प्रकृति में निहित स्वाभाविक मानवीय करुणा से रो पड़ी; फिर भी, मसीह के प्रति प्रेम के कारण, उसने अपने आँसुओं को आनंद में बदल दिया। इसके बाद, अपना सिर झुकाकर, संत होप का सिर एक तलवार से काट दिया गया।

अपनी बेटी का शरीर लेकर, माँ ने अपनी बेटियों के साहस पर प्रसन्न होकर ईश्वर की स्तुति की, और अपने मीठे शब्दों और बुद्धिमानी भरी प्रेरणाओं से अपनी सबसे छोटी बेटी को भी उसी धैर्य को दिखाने के लिए प्रोत्साहित किया।

तब यातना देने वाले ने तीसरी कन्या, लव, को बुलाया और उसे भी पहली दो बहनों की तरह ही, सूली पर चढ़ाए गए की निंदा करने और आर्टेमिस की पूजा करने के लिए मनाने की कोशिश की। लेकिन प्रलोभी के प्रयास व्यर्थ गए। क्योंकि अपनी प्रिय प्रभु के लिए पीड़ा सहने में प्रेम के सिवा और कौन इतना दृढ़ हो सकता है, जैसा कि धर्मग्रंथ में लिखा है: *'प्रेम मृत्यु के समान बलवान है... बहुत से जल प्रेम को बुझा नहीं सकते, और न ही नदियाँ इसे डुबा सकती हैं'* (प्रेम गीत 8:6-7)।

दुनियावी प्रलोभनों के कई जल इस कन्या के भीतर ईश्वर के प्रति प्रेम की अग्नि को बुझा नहीं सके, और न ही दुर्भाग्य और पीड़ा की नदियाँ उसे डुबा सकीं; उनका महान प्रेम इस तथ्य में विशेष रूप से स्पष्ट था कि वह अपने प्रियतम, प्रभु यीशु मसीह के लिए अपना जीवन बलिदान करने को तैयार थीं; क्योंकि अपने मित्रों के लिए अपना जीवन देना उससे बढ़कर प्रेम नहीं है (यूहन्ना 15:13)।

यातना देने वाले ने, यह देखकर कि मनाने से कुछ हासिल नहीं हो सकता, प्रेम को भी कष्ट देने का निश्चय किया, यह सोचकर कि विभिन्न यातनाओं के माध्यम से उसे मसीह के प्रति अपने प्रेम से हटा देगा; लेकिन उसने प्रेरित के शब्दों में उत्तर दिया:

'कौन हमें परमेश्वर के प्रेम से अलग कर सकता है? क्या संकट, या क्लेश, या उत्पीड़न, या अकाल, या नग्नता, या संकट, या तलवार?' (रोमियों 8:35)।

यातना देने वाले ने आदेश दिया कि उसे चक्की पर बिछाया जाए और लाठी से पीटा जाए। उसे इतनी ज़ोर से खींचा गया कि उसके अंग जोड़ों से अलग हो गए, और जब लाठी से उस पर वार किया गया, तो वह खून से ऐसे लथपथ हो गई जैसे कोई गाढ़े रंग की पोशाक हो, और ज़मीन उस खून से ऐसे भीग गई मानो बारिश से भीग गई हो।

तब एक भट्टी जलाई गई। उसे दिखाते हुए, यातना देने वाले ने संत से कहा:

'हे कन्या! बस इतना कह दे कि देवी आर्टेमिस महान है, और मैं तुझे जाने दूँगा; परन्तु यदि तू यह नहीं कहेगी, तो तुझे इसी जलती हुई भट्टी में तुरंत जला दिया जाएगा।'

लेकिन संत ने उत्तर दिया:

'महान है मेरा ईश्वर, यीशु मसीह; पर आर्टमिस और तुम उसके साथ ही नष्ट हो जाओगे!'

इन शब्दों से क्रोधित होकर, यातना देने वाले ने वहाँ मौजूद लोगों को उसे तुरंत भट्टी में फेंकने का आदेश दिया।

लेकिन संत, किसी के द्वारा उसे भट्टी में फेंके जाने का इंतजार किए बिना, स्वयं उसमें प्रवेश करने के लिए दौड़ीं; और, बिना किसी चोट के, वह उसमें ऐसे चलीं मानो कोई ठंडी जगह हो, ईश्वर का भजन करते हुए, उन्हें धन्य कहते हुए और आनंदित होते हुए।

उसी समय, भट्टी से एक ज्वाला निकलकर उसके चारों ओर खड़े अविश्वासियों पर टूट पड़ी; उसने कुछ को राख कर दिया, कुछ को झुलसा दिया, और राजा तक पहुँचकर उसे भी जला दिया, जिससे वह दूर भाग गया।

उस भट्टी में, प्रकाश से दमकते अन्य चेहरे भी दिखाई दिए, जो शहीद के साथ आनंद मना रहे थे। और मसीह का नाम ऊँचा किया गया, जबकि दुष्ट लज्जित हुए।

जब भट्टी बुझ गई, तो शहीद, मसीह की सुन्दर वधू, उससे बिना किसी चोट के और आनंदित होकर निकली, जैसे किसी महल से निकली हो।

तब, राजा की आज्ञा पर, उसके यातना देने वालों ने उसके अंगों में लोहे की छेनी से छेद कर दिए, लेकिन ईश्वर ने इन यातनाओं में भी संत को अपनी सहायता से जीवित रखा, ताकि वह उनसे भी न मरे।

ऐसी यातनाओं को झेलकर तुरंत न मर जाए, यह कौन कर सकता है?!

हालाँकि, उनके प्रिय वर, यीशु मसीह ने, संन्यासिनी को जीवित रखा ताकि दुष्टों को यथासंभव अधिक लज्जित किया जा सके, उन पर एक महान पुरस्कार प्रदान किया जा सके, और एक नाजुक मानवीय देह में परमेश्वर की महान शक्ति की महिमा हो सके।

यातना देने वाला, जो अपनी जलन से बीमार पड़ गया था, ने अंततः संत का सिर तलवार से कलम करने का आदेश दिया।

लेकिन जब उसने यह सुना, तो वह प्रसन्न हुई और बोली:

'हे प्रभु यीशु मसीह, जिन्होंने अपनी दासी लव से प्रेम किया, मैं तेरे बहुतेरे स्तुति-योग्य नाम का गायन और आशीर्वाद करती हूँ, क्योंकि तूने मुझे अपनी बहनों के साथ जोड़ दिया, और मुझे भी उनके समान तेरे नाम के लिए दुख सहने की कृपा प्रदान की।'

उसकी माँ, संत सोफिया, अपनी सबसे छोटी बेटी के लिए ईश्वर से अविराम प्रार्थना करती रहीं, कि वह उसे अंत तक धैर्य प्रदान करें, और उससे कहा:

'मेरी तीसरी टहनी, मेरी प्रिय संतान, अंत तक धैर्य रखो। तुम सही मार्ग पर चल रही हो, और तुम्हारे लिए एक मुकुट पहले से ही बुना जा चुका है, और तैयार महल खोल दिया गया है; वधू का वर पहले से ही तुम्हारा इंतजार कर रहा है, जो ऊँचे से तुम्हारे संघर्ष को निहार रहा है, ताकि जब तुम तलवार के नीचे अपना सिर झुकाओ, तो वह तुम्हारी पवित्र और निर्दोष आत्मा को अपनी बाहों में ले ले और तुम्हें अपनी बहनों के साथ विश्राम प्रदान करे। मुझे भी, अपनी माँ को, अपने वधू-वर के राज्य में याद रखना, ताकि वह मुझ पर भी दया करे और मुझे उसकी पवित्र महिमा में तुम्हारे साथ रहने और भाग लेने से वंचित न करे।

और तुरंत ही संत लव का सिर तलवार से काट दिया गया।

उनकी माँ ने, उनका शरीर प्राप्त करने के बाद, उसे संतों फेथ और होप के शरीरों के साथ एक कीमती ताबूत में रख दिया; उनके शरीरों को उचित रूप से सजाने के बाद, उन्होंने ताबूत को एक शव वाहन पर रखा, उन्हें शहर से कुछ दूरी पर ले गईं, और अपनी बेटियों को सम्मान के साथ एक ऊँची पहाड़ी पर दफनाया, और आनंद के आँसुओं में डूबी रहीं। तीन दिन तक उनकी कब्र के पास रहने के बाद, उन्होंने परमेश्वर से प्रार्थना की और प्रभु में निद्रामग्न हो गईं। विश्वासियों ने उन्हें वहाँ उनकी बेटियों के बगल में दफनाया। इस प्रकार वह भी उनके साथ स्वर्ग के राज्य में सहभागी होने और शहीद के मुकुट से वंचित नहीं रहीं, क्योंकि यदि शरीर से नहीं, तो अपने हृदय में उन्होंने भी मसीह के लिए दुख उठाया।

इस प्रकार अति बुद्धिमान सोफिया ने अपने जीवन का अति बुद्धिमानी से अंत किया, और पवित्र त्रिमूर्ति को अपनी तीन सद्गुणी बेटियों: विश्वास, आशा और प्रेम को उपहार स्वरूप अर्पित किया।

हे पवित्र और धर्मी सोफिया! आपकी तरह और कौन सी महिला मातृत्व के माध्यम से बचाई गई है[6314] , जिन्होंने ऐसे बच्चों को जन्म दिया जो उद्धारकर्ता के लिए वधू बनाए गए थे और, उनके लिए पीड़ा सहने के बाद, अब उनके साथ

[6314] हव्वा के पतन के कारण स्त्रियों के लिए प्रसव का दर्द एक दंड था, परन्तु उसी में उनके उद्धार की शर्त भी निहित है। इसलिए प्रेरित पौलुस कहते हैं: 'वह *संतानोत्पत्ति से उद्धार पाएगी* (1 तीमुथियुस 2:15), बशर्ते *कि वह 'विश्वास, प्रेम और पवित्रता के साथ संयम बनाए* रखे'। संत सोफिया ऐसी ही थीं।

राज्य करते हैं और महिमामय हैं? सचमुच, आप एक ऐसी माँ हैं जो आश्चर्य और सम्मानजनक स्मरण के योग्य हैं; क्योंकि, अपने प्रिय बच्चों के भयानक, दुखद यातनाओं और मृत्यु को देखते हुए, आप न केवल एक माँ के लिए स्वाभाविक रूप से शोक नहीं करती रहीं, बल्कि, ईश्वर की कृपा से सांत्वना पाकर, और भी अधिक प्रसन्न हुईं; आपने स्वयं अपनी बेटियों को सिखाया और विनती की कि वे इस क्षणिक जीवन को संजोकर न रखें, और प्रभु मसीह के लिए बिना हिचकिचाहट अपना रक्त बहा दें।

अब जब आप अपनी पवित्र पुत्रियों के साथ उनके परम तेजस्वी मुख दर्शन में आनंदित हैं, तो हमें भी ज्ञान प्रदान करें, ताकि विश्वास, आशा और प्रेम के सद्गुणों को संरक्षित करके, हम परम पवित्र, अकल्पित और जीवन-प्रदात्री त्रिमूर्ति के समक्ष खड़े होने के योग्य ठहरें और सदा-सदा उनकी महिमा करें। आमीन।

कॉन्टाकियन, स्वर 1:

सोफिया की सबसे पवित्र शाखाएँ—विश्वास, आशा और प्रेम—प्रकट करके उन्होंने हेलेनिक ज्ञान[6315] को अनुग्रह से अलंकृत किया; और पीड़ा सहने तथा विजयी होकर प्रकट होने के बाद, सभी के प्रभु द्वारा उन्हें अमर पुष्पमाला से भूषित किया गया।

पवित्र शहीद अगाथोकलिया की स्मृति

17 सितंबर को स्मरणोत्सव

संत अगथोकलिया निकोलस नामक एक ईसाई की दासी थीं। उनकी पत्नी, पावलिना, जो एरियन विधर्म[6316] की अनुयायी थी, ने आठ वर्षों तक अगथोकलिया को बुरी तरह सताया, और उसे ऑर्थोडॉक्स धर्म को त्यागने और विधर्मी शिक्षाओं को स्वीकार करने के लिए मजबूर किया: कभी-कभी उसे पत्थरों से गर्दन पर मारना, कभी-कभी उसे तेज पत्थरों पर नंगे पैर चलने के लिए मजबूर करना, एक अवसर पर लोहे की हथौड़ी से उसकी पसलियों को कुचलना, और अंत में उसकी जीभ काट देना। पवित्र शहीद अपने स्वामी की विनतियों के आगे नहीं झुकीं और इसलिए उन्हें कैद में डाल दिया गया और भूखा रखा गया। लेकिन, ईश्वर की कृपा से, पक्षियों ने उनके लिए पेड़ों से छोटे फल लाए। अंत में, उनकी स्वामी ने उन्हें लोहे की छड़ से मार डाला[6317] ।

पवित्र शहीद थियोडोटा की स्मृति

17 सितंबर को स्मरणोत्सव

जब रोम में अलेक्जेंडर सेवेरस का शासन था[6318] , तो गवर्नर सिम्विलकियस को कैपैडोसिया भेजा गया। उसे एक ईसाई महिला, थियोडोटा के बारे में बताया गया, जो पोंटस के क्षेत्र से आई थी[6319] और बहुत अमीर थी। गवर्नर ने उसे ईसाई धर्म त्यागने के लिए बहुत समझाया, लेकिन वह नहीं मानी। तब उसे फांसी दी गई, और वे उसका शरीर उधेड़ने लगे। उसने इस यातना को सहन किया, ईश्वर की स्तुति करती रही और ऐसा प्रतीत होता था कि उसे कोई पीड़ा नहीं हो रही थी। इसके बाद, उसे बेड़ियों में जकड़कर एक कालकोठरी में ले जाया गया। आठ दिनों के बाद, कालकोठरी अपने आप खुल गई। यह देखकर, पहरेदार भयभीत हो गए और दौड़कर सिम्विलकियस को बताने चले गए; लेकिन उसने उनकी बात पर विश्वास

[6315] अर्थात्, मूर्तिपूजक ज्ञान मूर्खता में बदल गया। तुलना करें यशायाह 33 और 1 कुरिन्थियों 1:20, 3:16 से।

[6316] अलेक्जेंड्रिया के एक पुरोहित एरियस ने परमेश्वर के पुत्र के पूर्व-शाश्वत अस्तित्व, परमेश्वर पिता के साथ उनकी समानता और एकसारता से इनकार किया, यह दावा करते हुए कि परमेश्वर का पुत्र परमेश्वर पिता द्वारा सभी युगों से पहले नहीं जन्मा था, बल्कि बनाया गया था। इस विधर्म की 325 में नीकिया के प्रथम सार्वभौमिक परिषद में निंदा की गई थी।

[6317] ग्रीक मेनोलॉजी के अनुसार, पॉलिना ईसाई धर्म से धर्मत्यागी थी और मूर्तियों की पूजा करती थी। – पवित्र शहीद के दुख और मृत्यु की सटीक तिथियाँ अज्ञात हैं।

[6318] अलेक्जेंडर सेवेरस – एक रोमन सम्राट जिसने 222 से 235 तक शासन किया।

[6319] पोंटस का क्षेत्र, या पोंटस, ब्लैक सी के किनारे एशिया माइनर का एक उत्तर-पूर्वी प्रांत था।

नहीं कयिा और संत को अपने सामने लाने का आदेश दयिा। जब उसने देखा कि वह अपने घावों से पूरी तरह से अछूती थी, हालांकि उसके पछिले कष्टों के कुछ नशिान थे, तो उसने उससे पूछा:

'तुम कौन हो?'

संत ने उत्तर दयिा:

'तुम्हारा दमिाग़ खराब हो गया है; अगर तुम्हारा दमिाग़ सही होता, तो तुम नश्चिति रूप से पहचान जाती कि मैं थयिोडोटा हूँ।'

तब सम्विलकियिस ने संत को एक जलती हुई भट्टी में फेंकने का आदेश दयिा। अचानक, भट्टी से आग फूट पड़ी और सत्तर लोगों को झुलसा दयिा; बाकी, जो भट्टी के पास खड़े थे, उन्होंने उसका मुँह ढक दयिा और भाग गए। गवर्नर ने कुछ अन्य लोगों के साथ दो मूर्तपिूजक पुरोहतिों को पवत्रि शहीद के शरीर की राख बखिेरने के लिए भेजा। जब उन्होंने भट्टी खोली, तो एक ज्वाला फूट पड़ी और पुरोहतिों को भस्म कर दयिा, जबकि भेजे गए बाकी लोगों ने देखा कि संत भट्टी के बीच में सफेद वस्त्रों में दो युवकों के साथ बैठी हुई गा रही थीं; इस दृश्य से वे इतने भयभीत हो गए कि वे मृतक की तरह गरि पड़े। संत भट्टी से आनंदति होकर और ईश्वर की स्तुति करते हुए बाहर नकिलीं। उन्हें एक बार फरि कैद कर लयिा गया, क्योंकि सम्विलकियिस बज़िन्टयिम की यात्रा करना चाहता था और वह पवत्रि शहीद को ज़ंजीरों में बाँधकर अपने साथ ले जाना चाहता था। वहाँ से लौटते समय, एन्सीरा में, राज्यपाल ने संत को फरि से न्याय के लिए अपने सामने पेश होने के लिए बुलाया और उनसे कहा:

'यदि तुम मेरी आज्ञा नहीं मानतीं और देवताओं को बलदिान नहीं चढ़ातीं, तो मैं आदेश दूँगा कि तुम्हें तपे हुए लोहे पर रखा जाए।'

उसने उत्तर दयिा:

'यदि लिवियिस[6320] डोरोथयिस मेरे साथ गर्म लोहे की प्लेट पर कदम रखता है, और यदि आग उसे नहीं जलाती है, तो मैं देवताओं को बलदिान दूँगी।'

[6321]सम्विलकियिस इस बात के लिए सहमत हो गया, और डोरोथेउस लाल-गरम लोहे की प्लेट पर चढ़ गया, लेकनि वह तुरंत जलकर मर गया, जबकि पवत्रि शहीद को कोई चोट नहीं लगी। गवर्नर यह देखकर हैरान था कि क्या करे, लेकनि फरि उसने पवत्रि शहीद को बाँधकर नकिीआ ले जाने का आदेश दयिा। वहाँ उसने उसे मूर्तयिों के एक मंदरि में ले जाकर मूर्तयिों को बलदिान चढ़ाने के लिए मजबूर करने की कोशशि की। उसने प्रार्थना की, और अचानक सभी मूर्तयिाँ जमीन पर गरिकर टूट-फूट गईं। यह सब देखने वालों में भय छा गया। मूर्तयिों के इस अपमान से गहराई से क्रोधति होकर, राज्यपाल ने चार सैनकिों को संत को खींचकर आरी से दो टुकड़ों में काटने का आदेश दयिा। लेकनि आरी कुंद हो गई, और नौकर थक गए, जबकि संत एक बार फरि सुरक्षति रहीं और उन्होंने ईश्वर की महमिा की। फरि सम्विलकियिस ने तलवार से उनका सरि कलम करने का आदेश दयिा, और इस नष्पिादन के माध्यम से संत थयिोडोटा को शहीद का मुकुट प्रदान कयिा गया[6322] ।

अक्टूबर

1 अक्टूबर

18 सतिंबर (पुराना तरीका)

[6320] लविास – राज्यपाल का नजिी सचवि।

[6321] नकिाया (अब इज़्नकि) – प्राचीन काल में एशयिा माइनर के बथिनियिा का एक समृद्ध और फलता-फूलता शहर, अब बहुत गरीब और कम आबादी वाला।

[6322] लगभग 230 ईस्वी में।

हमारे पूजनीय पिता यूमेनियस, गॉर्टिना के बिशप

18 सितंबर को स्मरण किया जाता है

अपने युवा काल से ही, संत यूमेनेस ने अपने सदाचारी जीवन से ईश्वर को प्रसन्न किया। उन्होंने स्वर्ग के राज्य की ओर ले जाने वाले संकीर्ण मार्ग पर चलना जारी रखा, प्रभु के वचनों का पालन करते हुए: *'संकीर्ण द्वार से प्रवेश करने का यत्न करो'* (लूका 13:24)। जो कोई भी इस द्वार से प्रवेश करना चाहता है, उसे दो भारी बोझों को त्यागना होगा: संपत्ति की चिंता और शरीर की देखभाल। यूमेनियस ने अपनी संपत्ति का त्याग कर दिया और उसे गरीबों में बाँट दिया, यह याद करते हुए कि अमीरों के लिए परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना कितना कठिन है। क्योंकि धन के प्रेम से दबे हुए, स्वर्ग के संकीर्ण द्वार से कौन प्रवेश कर सकता है? प्रभु ने उस जवान से, जिसने उनसे पूछा था कि उसे अनंत जीवन का वारिस बनने के लिए क्या करना चाहिए, एक उत्तम सलाह दी: *'यदि तुम सिद्ध होना चाहते हो,'* प्रभु ने उससे कहा, *'तो जाओ, अपनी संपत्ति बेच दो और गरीबों को दे दो, और तुम्हारे लिए स्वर्ग में खज़ाना होगा'* (मत्ती 19:21)। जो मम्मोन की सेवा करता है[6323] वह परमेश्वर की सेवा नहीं कर सकता, और जो धन के बोझ से दब जाता है वह स्वर्ग के संकीर्ण द्वारों से नहीं गुज़रेगा, ठीक वैसे ही जैसे एक ऊँट सुई की नोक से नहीं गुज़र सकता। जिस प्रकार संकरी जगह से गुजरने की इच्छा रखने वाले को कभी-कभी न केवल अपना बोझ बल्कि अपने कपड़े भी उतारने पड़ते हैं, उसी प्रकार स्वर्ग में जाने की इच्छा रखने वाला व्यक्ति न केवल अपनी संपत्ति का अधिशेष—जो एक असहनीय बोझ है—गरीबों को देता है, बल्कि अपनी मूलभूत आवश्यकताओं, यहाँ तक कि शरीर को ढकने वाले कपड़ों को भी दे देता है, और इस प्रकार प्रभु का अनुकरण करता है। संत यूमेनियस ऐसे ही थे: उन्होंने मसीह का अनुसरण करने, और केवल उन्हें ही पाने तथा प्राप्त करने के लिए, सभी सांसारिक लगावों को तिरिस्कार किया, सब कुछ त्याग दिया और सब कुछ पीछे छोड़ दिया। अपनी संपत्ति का त्याग करके, उन्हें जैसे कपड़े हों, वैसे ही उतार फेंककर, उन्होंने उन कपड़ों से गरीबों, नंगों और ज़रूरतमंदों को पहनाया। सभी सांसारिक बंधनों से खुद को मुक्त करने के बाद, वह गरीबी के संकीर्ण मार्ग पर चल पड़ा, और स्वर्गीय धन-संपत्ति की ओर ले जाने वाले संकीर्ण द्वार से होकर गुज़रा। उस पूजनीय ने एक और बोझ – शरीर की चिंता – का भी त्याग कर दिया; अपने तपस्वी कर्मों, परिश्रम, संयम, उपवास और जागरणों के द्वारा, उन्होंने कामुक वासनाओं को मार डाला और अपने शरीर को परिष्कृत किया, सभी इंद्रिय सुखों और आनंद की लालसा से मुंह मोड़ लिया; क्योंकि, जैसा कि प्रेरित कहते हैं, "*जो लोग प्रतियोगिता के लिए प्रशिक्षण लेते हैं, वे सब कुछ से परहेज़ करते हैं*" (1 कुरिन्थियों 9:25)। उन्होंने शरीर को मोटा करने वाली, मन पर बोझ डालने वाली और वासनाओं को जन्म देने वाली हर चीज़ से परहेज़ किया। उन्होंने अपनी आत्मा और शरीर को वासनाओं से शुद्ध कर पवित्र आत्मा का निवास स्थान बनने तक अपनी आँखों को नींद से वंचित रखा। इस प्रकार, धन के भारी बोझ और सभी सांसारिक वासनाओं को त्यागकर, उन्होंने स्वयं को संकीर्ण मार्ग पर चलने और अनंत जीवन की ओर ले जाने वाले संकीर्ण द्वार से गुजरने के योग्य बनाया।

चूंकि संत यूमेनेस का पुण्य जीवन एक दीपक की भाँति जगमगाया और सभी के लिए अत्यधिक लाभदायक था, इसलिए उन्हें गॉर्टिना के चर्च के बिशप के रूप में चुना गया और सिंहासनारूढ़ किया गया[6324] , और, एक मोमबत्ती की तरह जो एक मोमबत्तीदान पर रखी हो, उन्होंने अपने अनुयायियों को प्रकाशित किया, सूर्य की भाँति, अपने कर्मों और शिक्षाओं से मसीह की कलीसिया को: क्योंकि जगत के प्रकाश के लिए यह उचित है कि कर्म वचन से पहले हों, ठीक वैसे ही जैसे देखने वाले की दृष्टि में दीपक की रोशनी स्वयं दीपक से पहले होती है। और इस प्रकार संत यूमेनियस ने, अपने बिशप के पद पर रहते हुए, सबसे पहले अपने कर्मों द्वारा अपने आध्यात्मिक बच्चों को सिखाया, अपने शुद्ध और ईश्वर-प्रसन्न जीवन के माध्यम से अपने झुंड के लिए एक आदर्श बने, और फिर उन्हें अपने शब्दों से उपदेश दिया। सबसे पहले, स्वयं एक प्रकाश बनकर, उन्होंने दूसरों को प्रकाशित किया; उन्होंने स्वयं दिन-रात प्रभु की व्यवस्था का अध्ययन किया, और फिर दूसरों को उसी में शिक्षित किया; अपने लिए एक निर्मल अंतरात्मा प्राप्त करके, उन्होंने

[6323] शब्द 'मम्मोन' – जिसका मूल कैल्डियन या सीरियाई में है – संपत्ति, धन और सांसारिक वस्तुओं को दर्शाता है, क्योंकि एक व्यक्ति उन पर अपनी आशा रखता है और इस प्रकार न केवल धन बल्कि उससे प्रेम और लगाव को भी व्यक्त करता है। नए नियम में, मम्मोन को एक प्रकार के देवता के रूप में प्रस्तुत किया गया है जो धन का अध्यक्ष है (देखें मत्ती 6:24)।

[6324] गॉर्टिना, या गॉर्टिन, प्राचीन काल में क्रीट द्वीप पर एक महत्वपूर्ण शहर था, जो लेफ़िया नदी (अब इएरोपोतमोस) पर स्थित था। इस प्राचीन शहर के खंडहर आज भी मौजूद हैं।

दूसरों की अंतरात्मा को शुद्ध कयि। वे अपने नाम '[6325] ' के अर्थ के अनुरूप अत्यंत दयालु थे, और उनका जीवन दया के कार्यों से भरा था। वे अनाथों के लिए एक पिता, गरीबों के लिए धन का स्रोत, मांगने वालों को देने वाले, दुखी लोगों के लिए सांत्वना देने वाले, पीड़ितों के लिए उपचारक, और एक अद्भुत चमत्कार करने वाले थे। एक अवसर पर, अपनी प्रार्थना के द्वारा, संत ने एक बड़े सर्प को मार डाला जो उस पर झपट पड़ा था; लेकिन उन्होंने एक और भी बड़ा चमत्कार कयि, उस पाताल सर्प—शैतान—को वश में करके, प्रार्थना के द्वारा उसे पराजित कयि और उसे मसीह के झुंड से दूर भगा दयि, जिसकी उन्हें जिम्मेदारी सौंपी गई थी। और केवल गोरटिना में ही नहीं, बल्कि रोम में भी[6326] , संत यूमेनियस ने राक्षसों के खिलाफ हथियार उठाए। रोम पहुँचने पर, उन्होंने अपने चमत्कारों और अद्भुत कार्यों से कई लोगों को चकित कर दयि: उन्होंने लोगों से दुष्ट आत्माओं को भगाया, बीमारों को ठीक कयि, और शत्रुता में पड़े लोगों के बीच मेल-मिलाप कराकर क्रोधित लोगों को शांत कयि। बाद में, वह थेबाइड[6327] भी गए, जहाँ, सूखे के दौरान, उन्होंने अपनी प्रार्थना के द्वारा स्वर्ग से वर्षा कराई – और उस भूमि में बाद में उन्होंने शांतिपूर्वक देह त्याग दयि, इस अस्थायी जीवन से शाश्वत और अनंत जीवन में प्रवेश कयि[6328] । उनके पवित्र शरीर को उनके मंत्रालय के स्थान, गॉर्टनि में स्थानांतरित कयि गया, और वहाँ सम्मान के साथ दफनाया गया।

कॉन्टाकयिन, स्वर 2:

हे सर्व-धन्य, दिव्य प्रकाश से प्रबुद्ध होकर, आप हमें भी प्रबुद्ध करते हैं, जब हम आपके सम्मानित, गौरवशाली और पवित्र प्रस्थान का गायन करते हैं, हे पवित्र-धर्माध्यक्ष यूमेनियस, हम सभी के लिए अथक प्रार्थना करते हुए।

पवित्र शहीद अराइडनी की स्मृति

18 सितंबर को स्मरणोत्सव

पवित्र शहीद अरिआडने ने दुष्ट सम्राट हैड्रियिन के शासनकाल में मसीह के लिए यातनाएँ भोगीं[6329] । वह फ्रीजयि के प्रमिनसि शहर के राज्यपाल टर्टलिस नामक एक व्यक्ति की दासी थी[6330] ।

जब यह टर्टलिस, अपने पुत्र के जन्म के अवसर पर, एक मूर्तिपूजक मंदिर में उत्सव मना रहा था, वहाँ बलिदान चढ़ा रहा था, राक्षसों की पूजा कर रहा था और अपने पूरे परिवार, दोस्तों और पड़ोसियों के साथ आनंद मना रहा था, तब संत एरियाडने घर पर ही रहीं और अपने स्वामी के साथ उत्सव मनाने के लिए मूर्तिपूजक पूजास्थल में प्रवेश करने से इनकार कर दयि। तब उसके स्वामी ने, उससे क्रोधित होकर, उसे बिना किसी दया के पीटना शुरू कर दयि और अंत में, उसे लटका कर, उसे लोहे से खुरचने का आदेश दयि। इसके बाद, उसने अरिआडने को कैद कर दयि और उसे लंबे समय तक भूखा रखा, उसे मसीह का त्याग करने और निर्जीव मूर्तियों की पूजा करने के लिए मजबूर कयि; लेकिन फिर उसने उसे उसके कालकोठरी से रिहा कर दयि, और वह शहर से भाग गई। तब टर्टलिस को उसे जाने देने का पछतावा हुआ और वह अपने नौकरों के साथ उसका पीछा करने निकल पड़ा। एरिआडने, पीछे मुड़कर अपने पीछा करने वालों को देखकर,

---

[6325] यूमेनियस, ग्रीक से अनुवादित, का अर्थ है: अनुकूल, दयालु, कृपालु।

[6326] यहाँ, 'रोम' नाम को कॉन्स्टेंटिनोपल के संदर्भ में समझना चाहिए, जिसे 'नया रोम' या 'दूसरा रोम' के नाम से जाना जाने लगा; यह व्याख्या संपूर्ण जीवनी और उसमें वर्णित घटनाओं के क्रम के अर्थ से सबसे अधिक मेल खाती है।

[6327] चर्च के भजनों के अनुसार, संत यूमेनियस अपनी मर्जी से थेबाइड नहीं गए, बल्कि उन्हें ऑर्थोडॉक्स धर्म के दुश्मनों द्वारा वहाँ निर्वासित कयि गया था (कैनन, ओड 7, ट्रॉपारियन 2)। उन्हें मोनोफिसाइट्स की 'अंधकारमय विधर्मों' (सेडालेन) का खंडन करने के लिए निर्वासित कयि गया था, जो मसीह में केवल एक ही इच्छा - दिव्य इच्छा - को मानते थे।

[6328] संत यूमेनेस का जीवन और मृत्यु 7वीं शताब्दी के हैं।

[6329] पवित्र शहीद की मृत्यु हैड्रियिन के शासनकाल के अंत के आसपास हुई।

[6330] फ्रीजयि - एशिया माइनर का एक बड़ा क्षेत्र - मूल रूप से प्रायद्वीप के पश्चिमी हिस्से के पूरे मध्य भाग के साथ-साथ प्रोपोंटिस (मारमारा सागर) के दक्षिणी तट को हेलेस्पांट (डार्डानेल्स) तक शामिल करता था, जिसे बाद में मिसिया में शामिल कर लिया गया। इसके सीमाएँ थीं: पश्चिम में – मिसिया, लिडिया और कैरिया; दक्षिण में – लिसिया, पिसीडिया और लिकाओनिया; पूर्व में – कैपाडोसिया; और उत्तर में – गैलाटिया और बिथिनिया।

भाग गई; एक चट्टान पर आकर, उसने ईश्वर से प्रार्थना करना शुरू कर दिया कि वह उसे उसके दुश्मनों के हाथों से बचा ले। और तुरंत, दैवीय आज्ञा से, चट्टान फट गई; संत पत्थर के भीतर चली गईं, और फटी हुई चट्टान के दोनों हिस्से फिर से जुड़ गए। यह चमत्कार प्रभु के स्वर्गदूत द्वारा किया गया था जो वहाँ प्रकट हुए थे। तब जो उनका पीछा कर रहे थे, वे भयभीत हो गए: वे आपस में लड़ने लगे और अपनी-अपनी भालों से एक-दूसरे को घायल कर, नष्ट हो गए। इस प्रकार प्रभु ने अपनी दासी को दुष्टों के हाथों से बचाया, जैसे एक पक्षी शिकारियों के जालों से बचता है। उनकी प्रार्थनाओं के द्वारा, हे प्रभु, हमें भी हमारे शत्रुओं से बचाओ और संत एरियाडने के साथ हमें सदा-सदा के लिए स्वर्गीय आनंद में आनंदित होने का वरदान दें। आमीन।

2 अक्टूबर

19 सितंबर (पुराना तरीका)

पवित्र शहीदों ट्रॉफिमस, साव्वेटियस और डोरीमेडोन का कष्टकथा

19 सितंबर को स्मरणोत्सव

रोमन सम्राट प्रोबस[6331] के शासनकाल में और जब अटकिस, जिन्हें इलिओडोरस के नाम से भी जाना जाता था, अंकोन के राज्यपाल थे, अंकोन के लोगों ने एक बार डाफ्नी के अपोलो के सम्मान में एक त्योहार मनाया और, जैसा कि उनका रिवाज था, पूरा दिन मूर्तियों को बलिदान चढ़ाने, शराब और हुल्लड़बाजी में, और हर तरह के व्यभिचार में बिताया। उस समय, दो अज्ञात पुरुष दूसरे देश से अंओक में आए: ट्रॉफिमस और साव्वातियस – धर्मपरायण पुरुष, सच्चे ईश्वर के उपासक। इतने सारे आत्माओं की अंधता और विनाश को देखकर, उन्होंने केवल एक आह भरी और, ईश्वर की ओर मुड़कर, आँसुओं के साथ प्रार्थना की, कहते हुए:

'हे ईश्वर, जिसने अपने एकमात्र वचन से शून्य से सारी सृष्टि की रचना की, और मनुष्य को अपनी ही प्रतिमा में बनाया! स्वर्ग से इन पर दृष्टि डालो और इन लोगों को शत्रु के हाथों से बचाओ।'

जब वे इस प्रकार बात कर ही रहे थे, तो मूर्तिपूजकों ने देखा कि वे मूर्तिपूजक देवताओं की पूजा नहीं करते थे; इसलिए, उन्हें पकड़कर वे उन्हें अपने शासक और न्यायाधीश, एटकिस-इलियोडोरस के सामने ले गए। उसने आदेश दिया कि उन्हें एक-दूसरे से अलग कर दिया जाए और सबसे पहले, संत ट्रॉफिमस को उसके सामने लाया जाए, जिससे उसने उसके नाम, उसके जीवन और उसके विश्वास के बारे में पूछना शुरू कर दिया।

संत ने उत्तर दिया:

'मेरा नाम ट्रोफिमिस है; मैं स्वतंत्र और कुलीन माता-पिता से पैदा हुआ था, लेकिन पाप की शक्ति के अधीन हो जाने के कारण, मैंने शुरू में एक अधर्मी जीवन जिया, जब तक कि पवित्र बपतिस्मा के माध्यम से मुझे सच्ची स्वतंत्रता और कुलीनता प्राप्त नहीं हुई।'

तब न्यायाधीश ने पूछा:

'तुम्हारा विश्वास क्या है?'

ट्रोफिमिस ने उत्तर दिया:

'मैं तुम्हें पहले ही बता चुका हूँ, लेकिन सुनो – मैं इसे और भी स्पष्ट कर दूँगा: मैं एक ईसाई हूँ, मसीह का सेवक हूँ, और मैं मसीह के लिए एक बलिदान बनना चाहता हूँ।'

न्यायाधीश ने पूछा:

'क्या आपने ईसाइयों के संबंध में शाही फरमान पढ़े हैं?'

– मैंने उन्हें पढ़ा है, – संत ने उत्तर दिया, – लेकिन उनका हमसे क्या लेना-देना? धर्मपरायणता और शैतानी भ्रम में उतना ही अंतर है जितना दिन और रात में होता है।

[6331] रोमन सम्राट प्रोबस ने 276 से 282 तक शासन किया।

इन शब्दों से यातनाकर्ता क्रोधित हो गया; उसने संत त्रोफिमि को नग्न कर देने और उसके हाथ-पैरों को फैलाकर बेरहमी से पीटने का आदेश दिया। शहीद को इतनी देर तक पीटा गया कि जमीन खून से लथपथ हो गई। फिर न्यायाधीश ने पीटना बंद करने का आदेश दिया और कहा:

'हे ट्रॉफिमि, देवताओं को बलिदान चढ़ाओ, नहीं तो मैं तुम्हें फ्रीजिया[6332] के यातनाकर्ता डायोनिसियस के पास भेज दूँगा।'

यह डायोनिसियस अपनी क्रूरता और अमानवीयता के लिए दूर-दूर तक प्रसिद्ध था।

संत ट्रोफिमि ने उत्तर दिया:

'मुझे इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता कि मुझे तुम मारो या कोई और, चाहे तुम मुझे या डायोनिसियस मुझे यातना दे: किसी भी हाल में केवल एक ही मृत्यु होगी, क्योंकि तुम दोनों का एक ही इरादा है: सच्चे ईश्वर की सेवा करने वालों को मारना।'

न्यायाधीश और भी अधिक क्रोधित हो गया और संत को एक पेड़ से लटकाने तथा उसके शरीर को यातना देने का आदेश दिया। तुरंत, जल्लादों ने उसे तेज औज़ारों से घेर लिया, जिनसे उन्होंने शहीद को पीड़ा दी, उसके शरीर की खाल हड्डी तक और यहाँ तक कि उसकी आंतों तक उधेड़ दी। फिर भी, वह सब कुछ सहते हुए, शांत और नम्र स्वर में बोला:

'हे प्रभु, अपने सेवक की सहायता करो!'

तब न्यायाधीश ने पूछा:

'तो फिर, तुम्हारा मसीह कहाँ है?'

शहीद ने उत्तर दिया:

'मेरा मसीह उन सभी के साथ है जो उन्हें पुकारते हैं - वह मुझे कभी नहीं छोड़ता, और मेरे साथ मसीह की उपस्थिति का स्पष्ट संकेत इस बात में है कि मैं उन यातनाओं को आसानी से सहन कर लेता हूँ जिन्हें मानव स्वभाव सहन नहीं कर सकता था, यदि स्वयं ईश्वर पीड़ितों की सहायता न करते।'

इन यातनाओं के बाद, संत ट्रोफिमि को जेल में डाल दिया गया।

तब धन्य सव्वातियुस को अदालत में लाया गया, और न्यायाधीश ने उससे कहा:

'मैं आपसे यह नहीं पूछ रहा हूँ कि आप ईसाई हैं या नहीं, बल्कि पहले मुझे बताएं: आपका पेशा क्या है?'

'ईसाई' शब्द ही मूर्तिवादियों को इतना घृणित लगता था कि यातना देने वाले ने इसे सुनना भी नहीं चाहा; जैसे कोई बीमार व्यक्ति उस प्रकाश को देखना बर्दाश्त नहीं कर सकता जो सभी स्वस्थ लोगों के लिए सुखद होता है, वैसे ही वह, जिसकी आध्यात्मिक आँखें से धुंधली हो गई थीं, मसीह के नाम के प्रकाश को निहार नहीं सका, और इसीलिए उसने कहा: 'मैं यह नहीं पूछ रहा हूँ कि तुम ईसाई हो।'

संत साव्वेटियस ने उत्तर दिया:

'मेरा खिताब, मेरा सम्मान, मेरा देश, मेरी महिमा और मेरा धन-संपत्ति मसीह हैं, जो परमेश्वर के पुत्र, सनातन हैं: उनकी दिव्य व्यवस्था से ही यह ब्रह्मांड टिका हुआ और संचालित होता है।'

न्यायाधीश ने शहीद के साहसी उत्तर को अपने लिए अपमान समझकर, क्रोध से आग-बबूला हो गया और उसे गाल पर थप्पड़ मारते हुए कहा:

'तुम्हें जो प्रश्न पूछे गए हैं, उनका उत्तर दो, और इससे पहले कि मैं तुम्हें यातनाओं से नष्ट कर दूँ, देवताओं के पास जाओ और उनके लिए बलिदान चढ़ाओ।'

लेकिन संत ने देवताओं की निंदा की, अधर्मी लोगों की मूर्खता का मज़ाक उड़ाया और उनके अधर्मीपन की निंदा की।

तब, यातना देने वाले के आदेश पर, सव्वातियस को लटकाया गया और लोहे की पंजाओं से तब तक खुरच दिया गया जब तक कि उसकी हड्डियाँ नंगी नहीं हो गईं। चूँकि उसके शरीर से मांस के पूरे-पूरे टुकड़े पहले ही गिर चुके थे और उसके सभी आंतरिक अंग फाड़े जा चुके थे, इसलिए यातना देने वालों के पास उसे और पीड़ा पहुँचाने के लिए कुछ भी नहीं बचा था। इसलिए, शहीद को पेड़ से खोल दिया गया, और संत साव्वतियस ने तुरंत अपनी आत्मा अपने प्रभु के हाथों में सौंप दी।

[6332] फ्रायजिया एशिया माइनर का एक क्षेत्र है।

जब संत साव्वतयिास प्रभु के पास चले गए, तो केवल धन्य ट्रोफमिस अपने अत्याचारयिों के हाथों में रह गया। एटकिस, मूर्तपिूजा में उसके परविर्तति होने की आशा खोकर, उसे फ्रीजयिा में यातना देने वाले डायोनसियिस के पास भेजने का नर्णिय लयिा। उन्होंने डायोनसियिस को एक पत्र लखिा, जसिमें उन्होंने ट्रॉफमि के बारे में बताया और कहा कि उसने चाहे जतिना भी यातनाएँ झेली हों, फरि भी वह अपने अत्याचारयिों से अधकि शक्तशिाली साबति हुआ था; कि वह केवल मसीह की पूजा करता था, देवताओं का मज़ाक उड़ाता था, और उन्हें बलि्कुल भी महत्त्व नहीं देता था। फरि उसने संत को कालकोठरी से बाहर नकिालने का आदेश दयिा, उसे ऊपर की ओर नुकीले कई कीलों से भरे लोहे के जूते पहनाए और उन्हें पहने ही फ्रजियिा ले जाया गया। सैनकिों ने संत को पकड़कर उसे साथ-साथ चलने के लिए मजबूर कर दयिा: वे घोड़ों पर सवार थे, जबकि संत कीलों से जड़े लोहे के जूतों में पैदल चल रहे थे, उसके पैरों में छेद हो गए थे – वह पैदल चलने वालों और घोड़े पर सवार दोनों से आगे नकिल रहे थे, और अपने रक्त से पूरा रास्ता रंगा जा रहा था। यह वास्तव में एक दुखद यात्रा थी जो एक धन्य जीवन की ओर ले गई: क्योंकि उसने जो भी कदम उठाया, उसके पैरों पर एक नया घाव हो गया, और हर नए घाव के लिए, उसने उतनी ही बीमारी और यातना सहन की। लेकनि प्रभु स्वयं उसके साथ थे: उन्होंने इस मार्ग पर अपने सेवक को मजबूत कयिा और हर कदम के साथ उसके लिए एक पुरस्कार तैयार कयिा।

तीन दनि की यात्रा के बाद, सैनकि, पवत्रि शहीद के साथ, 'Sinad[6333] ' नामक एक फ्राइजयिन शहर पहुँचे, और वहाँ उन्होंने हेलयिोडोरस का संदेश डायोनसियिस को दयिा। संदेश पढ़ने के बाद, डायोनसियिस ने आदेश दयिा कि संत ट्रॉफमिस को तुरंत उसके सामने लाया जाए और पूछा:

'क्या तुम ट्रॉफमिस हो?'

शहीद ने उत्तर दयिा:

'मैं त्रोफमिस हूँ और सच्चे परमेश्वर का सेवक हूँ, जनि पर वशि्वास करने वालों को कभी लज्जति नहीं कयिा जाएगा।'

डायोनसियिस ने कहा:

'तुम आज भी अवज्ञा कर रहे हो और फरि भी उस व्यर्थ और नरिर्थक मसीह का आह्वान करते हो, जो कई मौतों का कारण था; लेकनि अगर तुम पहले उससे इनकार करने के लिए तैयार नहीं थे, तो अब उस आशा को त्याग दो जो तुमने उसमें रखी थी: देवताओं को बलदिान चढ़ाओ, ताकि तुम्हें भयंकर यातनाओं और मृत्यु से बचाया जा सके और तुम अपना जीवन शांति से जी सको।'

साहसी त्रोफमि ने उत्तर दयिा:

'भले ही मैं मृत्यु से बचने की इच्छा रखूँ, यह असंभव होगा: क्योंकि यदि आप मुझे नहीं मारते, तो भी मेरी प्रकृति, वैसे भी, नश्वर है। कनि्तु मृत्यु के द्वारा ही अनन्त जीवन प्राप्त करना होता है, जो इस सांसारकि जीवन से अतुलनीय रूप से बेहतर और दीर्घ है, जो दुष्टताओं से भरा और क्षणकि है; और आने वाले जीवन के वरदानों को हमारी नश्वर आँखें नहीं देख सकतीं, न हमारे कान सुन सकते हैं, और न ही मानव मन की कल्पना कर सकता है। मैं इस जीवन के लिए महान लालसा से भरा हूँ और आप द्वारा मुझे दी जाने वाली मृत्यु के बारे में सुनकर प्रसन्न हूँ।

तब दयिोनसियिस, क्रोध से उबलता हुआ, ने आदेश दयिा कि संत ट्रोफमि को मोटे रस्सयिों से कोड़ा मारा जाए; और जब उसे कोड़ा मारा जा रहा था, तो यातना देने वाले ने कहा:

'बस देवताओं को बलदिान चढ़ाने का वादा कर दो, और तुम्हें तुरंत इस यातना से मुक्ति मिलि जाएगी।'

लेकनि उन्होंने, अपने घावों या यातना देने वाले के शब्दों की परवाह कए बनि, मौन बनाए रखा।

यातना देने वाले के आदेश पर नौकरों ने सरिका लयिा, उसे सरसों में मलिाया, और उसे ट्रोफमि की नाक में डाल दयिा। इसके बाद, उसे एक पेड़ से लटकाकर, उन्होंने उसकी पसलयिों में गहरे, लंबे घाव कए, और उसकी पसलयिों से खून की धाराएँ बहने लगीं।

संत ने इन यातनाओं को मौन रूप से सहन कयिा, अपने मन में कहते हुए: *'धर्मयिों पर बहुत सी वपित्तयिाँ आती हैं, परन्तु प्रभु उन सब से उन्हें बचाता है'* (भजन संहति 33:20)।

यह सुनकर डायोनसियिस ने कहा:

[6333] सनिाड, या सन्निाडा, फ्रीजयिा के उत्तर में एक पहाड़ी श्रृंखला के पास एक शहर था, जहाँ प्रसद्धि सन्निाड संगमरमर की खदानें स्थति थीं। आज यह एस्ककिारा के पास खंडहरों में पड़ा है।

'ट्रोफमि, तेरी आशा व्यर्थ है, और तेरे वचिार नरिर्थक हैं: क्योंकि इन वर्तमान कष्टों से तुझे बचाने के लिए स्वर्ग से कौन उतरेगा? इसलयि मैं तुझे सलाह देता हूँ कि देवताओं को बलदिान चढ़ा, और तब तू अपनी ही मदद करेगा।'

संत ने अपने यातना देने वाले की मूर्खता पर हँसते हुए उत्तर दयिा:

'मैं अपने परमेश्वर, जो सच्चा और जीवति है, को कभी नहीं त्यागूँगा।'

तब डायोनसियिस ने क्रोधति होकर अपने सेवकों से कहा:

'उसे और यातना दो।'

और उन्होंने उसे और भी अधकि क्रूरता से यातना देना शुरू कर दयिा।

लेकनि संत ने प्रार्थना की और कहा: *'हे मेरे परमेश्वर! मुझे दुष्टों के हाथ से, अधर्मी और अत्याचारी के हाथ से बचाओ, क्योंकि हे प्रभु परमेश्वर, आप ही मेरी आशा हैं'* (भजन संहति 70:4-5)।

यातना देने वाले ने आदेश दयिा कि पवत्रि शहीद के घावों पर नमक मलिा हुआ सरिका डाला जाए, ताकि उसका कष्ट बढ़ जाए।

तब धन्य ने यातना देने वाले से कहा:

'तुम तो अब केवल मेरे शरीर को मजबूत कर रहे हो, ताकि तुम्हारे दिए घावों से वह नष्ट न हो जाए।'

तब उन्होंने उसकी पसलयिों को जलती हुई मोमबत्तयिों से जलाना शुरू कर दयिा, लेकनि इससे भी मसीह के अजेय योद्धा को हराया नहीं जा सका; इसके बाद, संत ट्रॉफमिस को जेल में डाल दयिा गया।

सनिाद में डोरीमेडोन नाम का एक सेनेटर और मुख्य सलाहकार था; वह एक धर्मनष्ठि ईसाई था, लेकनि यातना देने वाले के डर से इस बात को छपिाए हुए था। वह अक्सर गुप्त रूप से सेंट ट्रॉफमि के पास कालकोठरी में आता था, उसके घावों से खून धोता था और साफ तौलयिों से पपड़ी को पोंछता था, उसके घावों पर पट्टी बांधता था और आम तौर पर उसकी हर तरह से देखभाल करता था। लेकनि उसे यातना देने वाले से ज्यादा समय तक छपिना नहीं पड़ा। जल्द ही 'डायोस्कुरा' नामक अधर्मी त्योहार आया, यानी कास्टर और पोलक्स का दनि[6334] : यह त्योहार सनिाडा का पूरा शहर मनाता था। डायोनसियिस ने अपने सभी दरबारयिों और सलाहकारों के साथ मलिकर मूर्तयिों की पूजा की, और यह देखकर कि डोरीमेडोन उनके साथ नहीं था, उसने उसे संदेश भेजा कि वह त्योहार में उपस्थति हो।

धन्य डोरीमेडोन ने दूतों को उत्तर दयिा:

'मैं एक ईसाई हूँ, और इसलिए मुझे इन शैतानी त्योहारों में शामलि नहीं होना चाहिए।'

यह सुनकर डायोनसियिस ने उसे जबरदस्ती अपने सामने लाने का आदेश दयिा और उससे पूछताछ करने के बाद, वह इस बात से आश्वस्त हो गया कि वह वास्तव में एक ईसाई था; हालाँकि, उसी दनि उसका न्याय नहीं करना चाहकर, उसने उसे हरिासत में लेने का आदेश दयिा।

तब उसने अपने मत्रिों को उसके पास भेजा ताकि वे उसे पश्चाताप करने और उनके देवताओं की ओर मुड़ने के लिए मनाएँ। लेकनि डोरीमेडोन ने उन पर एक कठोर दृष्टि डालते हुए कहा: 'हे *सब अधर्म करने वालों, मुझ से दूर हो जाओ*' (भजन संहति 6:9)।

तब वह चुप हो गया और *'ऐसे मनुष्य के समान* हो *गया जो न सुनता है और जसिके होठों पर कोई उत्तर नहीं'* (भजन संहति 37:15)।

अगले दनि, यातना देने वाला अदालत गया और डोरमिडोन को उसके सामने लाने का आदेश दयिा।

उसने पवत्रि शहीद से कहा, "हे मूर्ख मनुष्य! कल तुझमें ऐसा क्या हुआ कि तू देवताओं से मुंह मोड़ बैठा और राजा की आज्ञाओं को मानने से इनकार कर दयिा? क्या तू सभी से सम्मान पाकर और हमारे बीच सम्मान का स्थान रखकर थक गया है?"

इस पर संत ने उत्तर दयिा:

[6334] ग्रीक और रोमन मान्यताओं के अनुसार, कास्टर और पोलक्स ज्यूस (जनि्हें डायस भी कहा जाता है), जो स्वर्ग के शासक और सर्वोच्च देवता थे, के पुत्र थे; इसीलिए उन्हें डायोस्कुरी कहा जाता था। इन मान्यताओं के अनुसार, मृत्यु के बाद वे एक दनि के लिए जीवति रहते हैं और फरि फरि से मर जाते हैं, जो प्रकाश के लोपोनयिन देवताओं जैसा है। साथ ही, उन्हें राज्य के संरक्षक के रूप में भी पूजति कयिा जाता था। उनके सम्मान में वशिेष त्योहार आयोजति कएि जाते थे, जनि्हें 'डायोस्कुरी' (उनके नाम पर) और साथ ही 'अनाकाई' (शासकों और संप्रभुओं के त्योहार, क्योंकि कुछ क्षेत्रों में कैस्टर और पोलक्स को ऐसा कहा जाता था) के नाम से जाना जाता था।

'जो सच्चे परमेश्वर से प्रेम करता है, वह सांसारिक सम्मान और महिमा को कोई महत्व नहीं देता। दूसरों के सामने घमंड करने, कीमती वस्त्र पहनने, और मूर्तियों की पूजा करने से क्या लाभ? यह सब अस्थायी और व्यर्थ है; यह सब मनुष्य को परमेश्वर से अलग करता है और उसे आग की गेहन्ना में डाल देता है।'

यातना देने वाले ने बहुत प्रयास किया, चापलूसी और धमकियों दोनों का इस्तेमाल कर संत डोरीमेडोन को मसीह से विमुख करने की कोशिश की; लेकिन, कुछ हासिल न होने पर, उसने उसे नग्न कर के लटकाने और उसकी पसलियों को लाल-गरम लोहे की कीलें से झुलसाने का आदेश दिया, और कहा:

'देखते हैं कि क्या मसीह तुम्हारी मदद के लिए आते हैं।'

फिर भी इन यातनाओं के बीच, संत ने अपने प्रभु परमेश्वर का नाम लिया, मूर्तिपूजक देवताओं का मज़ाक उड़ाया, और अपने शब्दों से यातना देने वाले के हृदय को उतनी गहरी चोट पहुँचाई, जितनी गहरी उसने अपनी भालों से संत के शरीर को चोट पहुँचाई थी।

तब डायोनिसियस ने संत को यातना देने वाले सेवकों पर अपना क्रोध उतारा, और उन्हें डाँटा कि वे अपने देवताओं का अपमान करने वाले एक भी व्यक्ति को चुप नहीं करा सके। दासों ने, क्रोधित होकर, लोहे के पंजों से संत के चेहरे को नोचा और उसके दांत तोड़ दिए; फिर भी यह भी उन ईश्वर-वक्ता होंठों को चुप नहीं करा सका, जिन्होंने मसीह की गवाही दी और निर्जीव मूर्तियों का तिरस्कार किया। तब उन्होंने पवित्र शहीद के नीचे आग जलाई और उसे जलते हुए कोयलों पर रख दिया; फिर भी वह उन पर ऐसे चला जैसे वे सुंदर फूल हों, इन यातनाओं में आनंदित और मसीह के लिए सबसे बड़ी और सबसे भयानक यातनाएँ सहने को तैयार था। इसके बाद, यातना देने वाले ने उसे वापस कालकोठरी में ले जाने का आदेश दिया, जबकि संत ट्रोफिमि को यातना देने के लिए बाहर लाया गया। उसे फांसी दी गई; उन्होंने लोहे की पंजों से उसके शरीर को नोचना शुरू कर दिया, जिससे उसके पुराने घाव फिर से खुल गए, और फिर लाल-गरम सलाखों से उसकी आँखें निकाल दीं। फिर भी, इतनी पीड़ा के बीच भी, संत ने मसीह का धन्यवाद किया, जिसके बाद उसे वापस कालकोठरी में ले जाया गया।

डायोनिसियस ने अपने दरबारियों से सलाह-मशविरा किया कि ट्रॉफिमिस और डोरीमेडोन को किस प्रकार की मृत्यु दी जाए, क्योंकि उन्होंने किसी भी प्रकार की यातना से डर नहीं दिखाया था, और शहीदों को दरिंदों के सामने फेंकने का निर्णय लिया। इसके लिए, यातनाकर्ता ने आदेश दिया कि भूखे जानवर तैयार किए जाएँ और एक सार्वजनिक तमाशा आयोजित किया जाए। जब वह दिन आया जिस दिन संतों को जानवरों के सामने फेंकना था, तो डायोनिसियस अपने सभी सलाहकारों और नौकरों के साथ तमाशे में उपस्थित हुआ, और एक बड़ी भीड़ इकट्ठा हो गई थी। पवित्र शहीदों ट्रॉफिमिस और डोरीमेडोन को नग्न और घावों से ढके हुए कालकोठरी से बाहर लाया गया, ताकि उनके पूरे शरीर, मानो, एक ही लगातार घाव हों। जब संतों को जानवरों के शिकार के लिए बने अखाड़े में उतारा गया, तो उन पर एक मादा भालू छोड़ दी गई; वह क्रोध से उन पर झपटी, लेकिन जैसे ही वह पास आई, वह तुरंत वश में हो गई। संत डोरीमेडोन, जल्द से जल्द 'शरीर से *मुक्त* होकर *मसीह के साथ*' (फिलि. 1:23) *होने* की इच्छा से, ने उस मादा भालू का कान पकड़कर उसे उकसाया, ताकि वह उसे जल्दी से फाड़ डाले; लेकिन वह मादा भालू, मानो शर्मिंदा हो, अपना सिर झुकाकर उससे मुंह मोड़ गई। तब यातना देने वाला जानवर से भी अधिक क्रोधित हो गया और, यह देखकर कि संतों को मादा भालू से कोई चोट नहीं लगी, उसने उन पर एक तेंदुआ छोड़ दिया; लेकिन उसने भी कुत्ते की तरह उनके पैरों को चाटा। फिर उन्होंने एक शेर छोड़ा; हालाँकि, यह जानवर भी, अपने से पहले वालों की तरह, एक मेमने की तरह शांत हो गया। यातना देने वाला जानवरों के रखवाले पर आग-बबूला हो गया और उसने उसे जान से मारने की धमकी दी अगर वह इन दो ईसाइयों को खा जाने के लिए जानवरों को उकसा नहीं सका; लेकिन जब रखवाले ने शेर को उकसाना शुरू किया, तो शेर उस पर झपट पड़ा और उसे चीर-फाड़ कर रख दिया। ऐसा चमत्कार देखकर वहाँ मौजूद सभी लोग विस्मित हो गए और उन्होंने सच्चे ईश्वर और हमारे उद्धारकर्ता की शक्ति को पहचान लिया। केवल वह अधर्मी यातनाकर्ता ही इसे स्वीकार करने से इनकार कर गया, बल्कि वह और भी गहरे पागलपन के अंधकार में डूब गया, मसीह की निंदा करता रहा और उनके सेवकों को जादूगर कहता रहा। फिर उसने संतों के सिर तलवार से काटकर उतारने का आदेश दिया। इस प्रकार संत ट्रोफिमिस और डोरिमीडोन के कष्टों का अंत हुआ, जो अनेक और भयंकर यातनाओं के बाद तलवार से मारे गए; और, संत साव्वेटियस के साथ अमर जीवन में मिलकर, वे अब स्वर्गदूतों के साथ आनंद मनाते हैं, पवित्र त्रिमूर्ति की महिमा करते हुए, – पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा, एक ही ईश्वर, जिसकी सर्वदा और युगानुयुग सबके द्वारा महिमा की जाती है। आमीन।

ट्रोपारयिन, स्वर 8:

हे त्रत्वि में स्तुत्य परमेश्वर, शहीदों के त्रय, ट्रॉफमिस, सव्वातयिस और डोरीमेडोन का गौरव बढ़ाओ: क्योंकि उन पर वश्विास करके, उन्होंने शत्रु को परास्त कयिा। उनकी प्रार्थनाओं द्वारा, हे हमारे प्रभु मसीह, हम पर दया करो।

कॉन्टाकयिन, स्वर 8:

शहीदों की नींव और धार्मकिता की पुष्टि के रूप में, कलीसयिा आपके प्रकाशमय कष्टों का सम्मान और महमिामंडन करती है, हे सदा-स्तुत्य धन्य शहीद, पराक्रमी और बुद्धमिान ट्रॉफमि: आपके साथ पीड़ा सहने वालों के साथ, हमारे लिए शुद्धकिरण की प्रार्थना करें, क्योंकि आप अजेय हैं।

संत ज़ोसमिा तपस्वी, पवत्रि शहीद का कष्टकथा

19 सतिंबर को स्मरणोत्सव

एक बार, सलिसिया के राज्यपाल डोमेटयिन, अपने सेवकों के साथ शकिार के लिए नकिले और कई रेगस्तिानों, पहाड़यिों और पहाड़ों से होकर गुज़रे, जंगली जानवरों का पीछा करते और उन्हें पकड़ते हुए। और देखो, एक जगह उन्होंने जानवरों की एक भीड़ देखी, जनिके बीच एक वृद्ध व्यक्ति चल रहा था और उनसे इस तरह बात कर रहा था जैसे वे इंसान हों। शकिारी उन पर टूट पड़े और जब जानवर भाग गए, तो उन्होंने उस बूढ़े आदमी को पकड़ लयिा और उसे राजकुमार के सामने ले आए, यह सोचकर कि वह एक जादूगर है जो रेगस्तिान में जादू-टोना कर रहा है।

उन्होंने उससे पूछा कि वह कौन था और उसका नाम क्या था।

संत ने उत्तर दयिा:

'मैं एक ईसाई हूँ; मेरा नाम ज़ोसमिा है।'

तब उन्होंने उसे बाँध दयिा और मुकदमे के लिए शहर ले आए। वहाँ, राजकुमार ने उससे जादू-टोने के बारे में पूछना शुरू कयिा: उसने जानवरों को कैसे वश में कर लयिा था कि वह उनके बीच बनिा कसिी नुकसान के रह सके और उनसे ऐसे बात कर सके जैसे वे इंसान हों?

ज़ोसमिा ने उत्तर दयिा:

मैं जादू-टोने के लिए रेगस्तिान में नहीं रहता; लेकनि, एक ईसाई होने के नाते, मैं शहर में अवश्विासयिों के बीच नहीं रह सकता – इसीलिए मैं रेगस्तिान में चला गया, और दुष्ट लोगों – मेरे प्रभु यीशु मसीह के शत्रुओं – के बजाय जानवरों के साथ रहना पसंद कयिा। मैंने अन्य ईसाइयों—उन पवत्रि संतों—के जीवन को अपना आदर्श बनाया, जो संसार से अलग हो गए और रेगस्तिान में रहे, और मैंने भी यथासंभव उनका अनुकरण करने का प्रयास कयिा। लेकनि परमेश्वर, जो उनकी सेवा करने वालों को जानते हैं और उनके लिए प्रबंध करते हैं, ने अपनी कृपा और भलाई से मेरे लिए भी प्रबंध कयिा है, और मेरे आराम के लिए जंगली जानवरों को वश में कर दयिा है – और इस प्रकार मैं उनके साथ रहता हूँ, प्रभु में आनंदति होकर और अपनी सारी आशा उसी पर रखता हूँ।

इस पर राजकुमार ने उससे कहा:

'तो तुम, दुष्ट बूढ़े आदमी, नासरी की पूजा करते हो? बहुत अच्छा। तो मैं नासरत जाऊँगा और वहाँ मैं तुम्हें क्रूरता से यातना दूँगा, ताकि तुम या तो नासरी का त्याग करो या भयानक पीड़ा में अपनी जान गंवा दो; और, साथ ही, नासरयिों को, तुम्हारी यातनाएँ देखकर, डर सताए।'

और इस प्रकार उसने पहले सेंट ज़ोसीमस को बेड़यिों में जकड़कर नासरत भेजा, और फरि स्वयं भी वहाँ चल दयिा। मुकदमे के लिए समय चुनने के बाद, डोमेटयिन ने ज़ोसीमस को अपने सामने लाने का आदेश दयिा और उससे पूछा:

'मुझे अपनी जादू-टोने के बारे में बताओ: तुमने जानवरों को कैसे मंत्रमुग्ध कयिा?'

इसके जवाब में, ज़ोसमिा ने स्वीकार कयिा कि वह एक ईसाई था।

तब राजकुमार ने संत को उल्टा लटकाने, उसकी गर्दन में एक बड़ा पत्थर बांधने और उसे लोहे की पंजाओं से खुरचने का आदेश दिया।

इसके बाद, उसने फिर पूछा:

'क्या अब तुम हमें अपनी जादू-टोने के बारे में बताओगे?'

इस पर ज़ोसिमा ने उत्तर दिया:

'मसीह, मेरे ईश्वर – वही हैं जिन्होंने मुझे रेगिस्तान में सांत्वना देने के लिए जानवर भेजे।'

राजकुमार ने उससे कहा:

'यदि जिंगली जानवर आपके ईश्वर की आज्ञा मानते हैं, तो उनमें से किसी एक को यहाँ आने का आदेश दें: तब हम सभी आपके धर्म को स्वीकार कर लेंगे।'

ज़ोसिमा ने अपने धर्मपरायण हाथ स्वर्ग की ओर उठाकर प्रार्थना करना शुरू कर दिया।

'हे प्रभु यीशु मसीह, परमेश्वर के पुत्र!' उसने कहा, 'मुझे, अपने दास को, सुनो; मेरी सेवा करने के लिए यहाँ एक सिंह भेजो।'

और अचानक एक भयंकर सिंह शहर में घुस आया – और उसे देखकर सभी भयभीत होकर भाग गए। लेकिन वह सिंह ज़ोसिमा के पास आया और उसके गले में बँधे पत्थर को सहारा देने लगा।

तब राजकुमार संत से विनती करने लगा:

'ज़ोसीमा! इस जानवर को वश में करो, और हम तुम्हें खोल देंगे।'

ज़ोसिमा ने उस जानवर को शांत रहने का आदेश दिया, और राजकुमार ने संत को खोलने का आदेश दिया और उसे ज़ार के पास भेजने का इरादा किया। लेकिन ज़ोसिमा ने अपना प्राण ईश्वर को सौंप दिया[6335] । ईसाइयों ने संत के शरीर को सम्मान के साथ दफनाया, और पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा की महिमा की, जिसकी सदा-सदा महिमा होती है। आमीन।

पवित्र और धर्मी राजकुमार थियोडोर, स्मोलेंस्क और यारोस्लाव के चमत्कार करने वाले, और उनके पुत्र दाऊद और कॉन्स्टेंटिन की स्मृति

उपवास 19 सितंबर को मनाया जाता है

पवित्र और धन्य राजकुमार थियोडोर, जिन्हें 'काला' के नाम से जाना जाता है, स्मोलेंस्क के राजकुमार रोस्टिस्लाव म्स्टिस्लावविच के पुत्र थे और संत व्लादिमीर, राजकुमार प्रेरितों के समान के नौवीं पीढ़ी के वंशज थे[6336] । थेओडोर के दो भाई थे, ग्लेब और माइकल, जिन्होंने अपने पिता की मृत्यु पर, उसे केवल मोजाइस्क शहर ही अपानज के रूप में देकर उसके साथ अन्याय किया[6337] । इसके बावजूद, उसने उनके प्रति कोई द्वेष नहीं रखा और धैर्यपूर्वक इस अपानज पर

[6335] संत ज़ोसिमा की शहादत चौथी शताब्दी की शुरुआत में, रोमन सम्राट डायोक्लेटियन के शासनकाल के दौरान हुई थी। संत ज़ोसिमा तपस्वी की स्मृति 4 जनवरी को संत अथानासियस कमेंटेटर (कैदियों के संरक्षक जो उनका रिकॉर्ड रखते थे) के साथ भी मनाई जाती है, जिन्होंने भयानक यातनाओं के बाद ज़ोसिमा को अछूता देखकर मसीह में विश्वास किया और प्रार्थनापूर्ण भक्ति के जीवन के बाद, रेगिस्तान में प्रभु को अपनी आत्मा अर्पित कर दी। संत डेमेट्रियस ऑफ रोस्टोव द्वारा संक्षेप में वर्णित संतों के जीवन-चरित के अनुसार, संत ज़ोसिमा की मृत्यु डोमेटियन द्वारा दी गई यातनाओं से नहीं हुई, बल्कि उन्होंने संत अथानासियस के साथ, रेगिस्तान में एक चट्टान की दरार में, शांतिपूर्वक अपना प्राण प्रभु को अर्पित कर दिया।

[6336] पवित्र और धर्मी राजकुमार थियोडोर के जन्म के सटीक वर्ष का निर्धारण नहीं किया जा सकता है, लेकिन यह निस्संदेह 1240 और 1245 के बीच का था। – उनके जीवनीकार (15वीं सदी के दूसरे भाग के हायरोमोंक एंथनी) के अनुसार, कम उम्र से ही उनका पालन-पोषण धर्मपरायणता में किया गया और उन्हें दैवीय सिद्धांत सिखाए गए, जिन्होंने उनके हृदय को प्रेम से भर दिया, जैसे शुद्ध जल से तृप्त होंठ; लड़के के रूप में भी वह बच्चों के खेलों और रीति-रिवाजों से दूर रहता था, और सबसे बढ़कर पवित्र पुस्तकों के अध्ययन तथा आत्मा और शरीर की पवित्रता बनाए रखने में स्वयं को समर्पित कर देता था।

[6337] मोज़ाइसक (जो अब मास्को गवर्नरेट में एक छोटा जिला शहर है) उस समय एक बहुत छोटा, गरीब और कम आबादी वाला शहर था, जिसके आसपास का इलाका छोटा और पड़ोसी गाँव थे। लेकिन थियोडोर ने अपनी नियति को, उनकी जीवनी के लेखक के शब्दों में, बिना किसी शिकायत के स्वीकार कर लिया, और सबसे बढ़कर उस खजाने को प्राप्त करने के बारे में सोचा जो न तो चोरी होता है, न नश्वर है और न ही क्षणभंगुर। थोड़े ही समय में, इस बुद्धिमान और दयालु राजकुमार ने अपनी रियासत को आबाद और समृद्ध बनाने में सफलता हासिल कर ली, और लोगों का श्रद्धायुक्त प्रेम अर्जित किया।

शासन कयिा। ऐसी उदारता के लिए, ईश्वर ने बाद में उन्हें गौरवशाली यारोस्लावल नगर का शासन सौंपा। यह इस प्रकार हुआ: यारोस्लावल में रस्तोव के राजकुमार वासलिी की पत्नी राजकुमारी क्सेनयिा रहती थीं, जनिकी एकमात्र पुत्री थी। धर्मनष्ठि राजकुमार थयिोडोर ने रोस्तोव के राजकुमार की इस बेटी से ववािह कयिा, जसिसे बाद में उन्हें एक पुत्र, माइकल, और एक बेटी हुई, और उन्हें यारोस्लावल शहर प्रदान कयिा गया[6338] । और अपने भाई माइकल की मृत्यु पर, उन्हें स्मोलेंस्क का राजसी क्षेत्र भी वरिासत में मलिा[6339] ।

राजकुमार थयिोडोर ने यारोस्लावल में एक धार्मकि और ईश्वर-भयभीत जीवन जयिा, क्योंकि अपने युवा से ही वह मसीह और उनकी सबसे पवत्रि माता से प्रेम करते थे। वह पुरोहतिों और भक्षिुओं को वशिेष सम्मान देते थे और गरीबों को दान देते थे। मसीह के एक बहादुर योद्धा के रूप में, उन्होंने हर बात में अपने प्रभु को प्रसन्न कयिा और सभी अधर्म से दूर रहे।

उन दनिों, जब रूसी भूमि पर ततारों का जुआ भारी था, रूसी राजकुमारों के लिए खान से मलिकर अपनी राजकुमार की हैसयित की पुष्टि करवाने के लिए हॉर्ड की यात्रा करना प्रथा थी। जब एक अवसर पर कुछ राजकुमार हॉर्ड के लिए रवाना हुए, तो यारोस्लाव के धन्य राजकुमार थयिोडोर खान और उनकी रानी[6340] के लिए कई उपहार लेकर उनके साथ गए। हॉर्ड में, उनका बहुत सम्मानपूर्वक स्वागत कयिा गया और वे खान के दरबार में एक प्रयिजन के रूप में, उच्च सम्मान में रखे गए। उसकी मर्दाना सुंदरता और बुद्धमित्ता ने खान की पत्नी को इतना मोहति कर लयिा कि वह अपनी बेटी का ववािह उससे करना चाहती थी। लेकनि उसने उसे बता दयिा कि यारोस्लावल में उसकी एक पत्नी है, और वह उसकी वनितयिों के आगे नहीं झुका।

यारोस्लाव में शासन करने के लिए खान की स्वीकृति प्राप्त करने के बाद, धन्य थयिोडोर ने होर्ड छोड़कर घर लौट आए। जब वह यारोस्लाव पहुँचे, तो उन्हें पता चला कि उनकी पत्नी, , का नधिन हो चुका था। वह उस शहर में प्रवेश करना चाहता था, जहाँ उस समय उसका पुत्र माइकल और उसकी सास रहती थीं; लेकनि बोयारों और उसकी सास ने उसे अंदर नहीं आने दयिा और उसके बारे में बेतुकी बातें करने लगे: 'यह हमारी परंपरा नहीं है,' उन्होंने कहा, 'कि हम कसिी वदिेशी देश से आए व्यक्ति को अपना राजकुमार स्वीकार करें; हमारे लिए तो थयिोडोर का उत्तराधकिारी, माइकल, ही हमारे राजकुमार के रूप में काफी है।' संत थयिोडोर एक बार फरि ओद्रा के लिए रवाना हुए और उन्होंने खान से यारोस्लावल के राजतंत्र को उन्हें वापस करने का अनुरोध कयिा। खान ने यारोस्लावल के लोगों को अपने राजकुमार को स्वीकार करने का एक सख्त आदेश भेजा, लेकनि उन्होंने इस आदेश की अवज्ञा की और जदि पर थयिोडोर को स्वीकार करने से इनकार कर दयिा। जब पवत्रि राजकुमार खान के अतथिि के रूप में होर्डे में ठहरे हुए थे, तब खान की पत्नी ने फरि से अपने पति को सुझाव देना शुरू कयिा कि उन्हें अपनी बेटी का ववािह थयिोडोर से कर देना चाहिए। लेकनि खान लंबे समय तक मना करते रहे, यह कहते हुए कि खान की बेटी का ववािह एक सामंत से करना उचति नहीं था, और वह भी एक अलग धर्म वाले से। तब खान की पत्नी ने अपने पति से अपनी इच्छा व्यक्त की कि उनकी बेटी ईसाई धर्म अपनाए और बपतस्मिा ग्रहण करे, और फरि थयिोडोर से ववािह करे। खान इस पर सहमत हो गए[6341] । खान की बेटी का बपतस्मिा हुआ और बाद में उन्होंने यारोस्लाव के राजकुमार से ववािह कयिा। बपतस्मिा के समय उन्हें अन्ना नाम दयिा गया। इस ववािह के बाद, खान सेंट थयिोडोर के और भी अधकि प्रशंसक हो गए। वे अक्सर उन्हें अपनी मेज पर बठिाते, प्रतदिनि उनके सरि पर खान का ताज पहनाते, उन्हें अपना बैंगनी चोगा पहनाते, उनके लिए एक शानदार महल बनवाते, और उन्हें महमिा और धन-

---

[6338] यारोस्लावल कोटोरॉसल नदी और वोल्गा के संगम पर स्थति है, मास्को से 244 वर्स्ट दूर; यह सबसे प्राचीन रूसी शहरों में से एक है; यह शुरू में रोस्तोव के अधकिार में था, लेकनि बाद में इसके अपने राजकुमारों द्वारा शासति होने लगा। – सेंट थयिोडोर ने लगभग 1267 में रोस्तोव की राजकुमारी मारयिा वासलीयेवना से ववािह कयिा और उसी समय यारोस्लावल के राजतंत्र का नयिंत्रण अपने हाथ में ले लयिा।

[6339] यह 1279 की बात है। हालाँकि, धर्मनष्ठि राजकुमार थयिोडोर स्वयं स्मोलेंस्क में नहीं रहते थे और केवल स्मोलेंस्क के राजकुमार का खतिाब धारण करते थे, यद्यपि कुछ समय के लिए उन्होंने वहाँ पत्र भेजे, वभिन्नि कानूनी मामलों का नपिटारा कयिा और अपने राजकुमार के रूप में स्मोलेंस्क के लोगों की भलाई का ध्यान रखा; उन्होंने जल्द ही स्मोलेंस्क अपने भतीजे अलेक्जेंडर ग्लेबोवचि को सौंप दयिा।

[6340] राजकुमार थयिोडोर की होर्डे की यात्रा आंशकि रूप से अन्य कारणों से भी की गई थी: गोल्डन होर्डे के खान मेंगु-तेमरि ने थयिोडोर को—अन्य रूसी राजकुमारों के साथ—यासयिंस और काम बुलगारों को शांत करने के लिए बुलाया, जो ततारों को कर देने के इच्छुक नहीं थे। राजकुमार ने खान के दरबार में होर्डे में लगभग तीन साल बतिाए।

[6341] खान ने स्वयं इस ववािह की अनुमति के लिए कॉन्स्टेंटनिोपल के पैट्रआर्क से नविेदन करने का बीड़ा उठाया और इस उद्देश्य के लिए सराय के बशिप थयिोग्नोस्टस के नेतृत्व में एक राजदूत दल भेजा; पैट्रआर्क ने इस शर्त पर अनुमति दे दी कि खान की बेटी ईसाई धर्म अपना ले।

संपत्ति से घेरते थे[6342] । फिर भी इस सारी वैभव के बीच, धन्य राजकुमार का हृदय घमंडी नहीं हुआ, न ही इस दुनिया के वैभव ने उसे मसीह के प्रेम से भटकाया; और वह प्रभु की आज्ञाओं का पालन करने में दिन-ब-दिन अधिक सफल हुआ। जब वह अभी भी होर्डे में रह रहा था, तो उसे एक पुत्र हुआ, जिसका पवित्र बपतिस्मा में डेविड नाम रखा गया। फिर उसे एक दूसरा पुत्र हुआ, जिसका पवित्र बपतिस्मा में कॉन्स्टेंटिन नाम रखा गया।

कुछ ही समय बाद, रूस से संदेशवाहक आए जिन्होंने यह खबर लाई कि उनके पुत्र माइकल की यारोस्लावल में मृत्यु हो गई है। तब राजकुमार ने खान से राजकुमारी और उनके बच्चों के साथ रूसी भूमि पर लौटने की अनुमति मांगी। खान ने उन्हें बड़े सम्मान के साथ अनुमति दे दी, उनके सिर पर एक ताज रखा, और उन्हें यारोस्लावल के महान राजकुमार पद से सम्मानित किया। पवित्र राजकुमार बड़े सम्मान के साथ यारोस्लावल पहुँचे; उनके साथ खान के दरबार के कई तातार कुलीनों ने भी साथ दिया, जिन्हें उन्होंने कुछ समय बाद सम्मानपूर्वक होर्डे वापस भेज दिया।

संत राजकुमार थियोडोर ने अपने शहर यारोस्लावल में एक पवित्र जीवन जिया और बुढ़ापे तक ईश्वर को प्रसन्न करने वाले तरीके से शासन किया[6343] । बीमार पड़ने और यह महसूस करने पर कि यह बीमारी जानलेवा है, उन्होंने अपनी पत्नी, राजकुमारी और अपने बच्चों को अपने पास बुलाया और उन्हें यह वसीयत दी कि वे प्रेम और शांति में रहें[6344] । फिर उन्होंने आदेश दिया कि उन्हें मठ ले जाया जाए, जहाँ उन्होंने बहुत प्रसन्नता के साथ मठाधीश से मठीय वस्त्र ग्रहण किया; और उस पूरे दिन वे आनंदित रहे और इस उपहार के लिए ईश्वर का धन्यवाद करते रहे, जिसकी उनकी आत्मा लंबे समय से इच्छा कर रही थी। अपने निधन से ठीक पहले, उन्होंने स्कीमा ग्रहण करने की इच्छा व्यक्त की; जिसके बाद, सभी को क्षमा करने और स्वयं सभी से क्षमा मांगने के बाद, उन्होंने क्रॉस का चिह्न बनाया और अपनी आत्मा को ईश्वर के हाथों में सौंप दिया[6345] । उन्हें हमारे प्रभु के रूपांतरण के चर्च में बड़े सम्मान के साथ दफनाया गया। उनकी पवित्र अवशेष आज भी हमारे प्रभु, मसीह यीशु की महिमा के लिए अनेक चमत्कार करती रहती हैं, जिनकी महिमा अब और हमेशा और युगों-युगों तक हो।

ट्रोपारियन, स्वर 4:

हे संतगण, अपने यौवन से ही मसीह के प्रेम से चिपके रहकर, आपने उत्साहपूर्वक व्यवस्था और उसकी धार्मिकता को संरक्षित रखा; अत; चमत्कारी वरदानों से समृद्ध होकर, आप उपचार प्रदान करते हैं, थियोडोर, डेविड

[6342] इस अवसर पर, खान ने अपने दामाद और बेटी को उनके भरण-पोषण के लिए कई शहर दिए: चेर्नहिवि, बुल्गारिया, कुमां, कुर्सुन, अर्स्क, कज़ान और अन्य – कुल मिलाकर 36 तक शहर। राजकुमार थियोडोर ने ख़ान से होर्डे के भीतर कई चर्च बनाने की अनुमति मांगी, ईसाई धर्म का प्रसार करने के लिए अपनी शक्ति भर सब कुछ किया, और पादरियों की रक्षा की।

[6343] संत थियोडोर ने रियासत पर कोमलता, बुद्धिमानी और निष्पक्षता से शासन किया, उत्पीड़ितों, विधवाओं और अनाथों के लिए खड़े हुए, और गरीबों और बेसहारों पर दया दिखाई। इतिहास-पुस्तकें विशेष रूप से उनकी सच्ची और विनम्र भक्ति, उनके कठोर उपवास और प्रार्थनाओं, चर्चों के निर्माण और धार्मिक वैभव के संबंध में उनके कठिन परिश्रम और देखभाल, साथ ही धर्माध्यक्षीय और पुरोहित वर्ग के प्रति उनके सम्मान को उजागर करती हैं - जिसका अनुकरण उनके धर्मपरायण बेटों ने भी किया: डेविड और कॉन्स्टेंटिन, जिनमें से छोटे ने बाद में बिना शादी किए ही देहांत कर लिया, जबकि बड़े ने 23 वर्षों तक यारोस्लावल के प्रिंसिपिल्टी पर शांतिपूर्वक शासन किया।

[6344] धन्य राजकुमार सेंट थियोडोर की अंतिम वसीयत और आज्ञापत्र अत्यंत मार्मिक और शिक्षाप्रद है। इसे स्पस्की मठ (उनका और उनके परिवार का पसंदीदा मठ, जिसकी स्थापना उनकी धर्मपरायण पत्नी अन्ना ने की थी) में एक प्राचीन आइकन पर पूरी तरह से दर्शाया गया है; आइकन पर, संत थियोडोर को मठ की पोशाक में पूरे कद में, अपने बेटों से घिरे हुए, अपने बाएं हाथ में एक लपेटा पकड़े हुए दर्शाया गया है।

[6345] यह 19 सितंबर 1299 था। संत राजकुमार थियोडोर के पुत्र और उत्तराधिकारी राजकुमार डेविड की मृत्यु 1321 में हुई, जबकि राजकुमार कॉन्स्टेंटिन की मृत्यु का वर्ष वृत्तों में दर्ज नहीं है। जीवित रहते हुए उनकी व्यक्त इच्छा के अनुसार, उनके शरीर उनके पिता के बगल में चर्च के गुंबदों के नीचे स्थित क्रिप्ट में रखे गए, जमीन में नहीं बल्कि उसके ऊपर कब्रों में। यारोस्लाव के पवित्र और धर्मी राजकुमारों—थियोडोर, डेविड और कॉन्स्टेंटिन—की अक्षुण्ण अवशेषों की खोज, जिसके पहले और साथ ही साथ कई चमत्कारी उपचार हुए, लगभग 200 साल बाद, 1467 में हुई। 1658 में, उनके अवशेषों को स्थानांतरित किया गया, जिससे 13 जून को एक स्थानीय पर्व दिवस की स्थापना हुई। 1704 में, रोस्तोव के मेट्रोपॉलिटिन, सेंट दिमित्री ने यारोस्लावल के चमत्कार-कर्मियों की पवित्र अवशेषों के लिए एक सरू की रिलिक्वरी बनवाई, जिसमें संत ने 22 जून को अवशेष स्थानांतरित किए, और यह स्थापित किया कि इस दिन को अनंत काल तक मनाया जाना चाहिए। बाद में, संतों के पवित्र अवशेषों वाले देवदार के अवशेष-पात्र को एक नए चाँदी के अवशेष-पात्र के भीतर रखा गया, और उसी समय पवित्र अवशेषों को यारोस्लावल के पवित्र चमत्कार-कर्मियों, प्रिंस थियोडोर को समर्पित, नव-निर्मित चर्च में स्थानांतरित कर दिया गया, डेविड और कॉन्स्टेंटिन को समर्पित, जहाँ वे आज भी बाएँ कोरस के पास विश्राम करते हैं।

और कॉन्स्टेंटनि। जो लोग वशि्वास के साथ आपका सम्मान करते हैं, उनके लिए मसीह परमेश्वर से प्रार्थना करें, कि हमारी आत्माएं बच सकें।

संतों की अवशेषों के स्थानांतरण के लिए ट्रॉपारयिन, स्वर 8:

अपने यौवन से ही चमकते हुए उज्ज्वल तारों के समान, आपने अपने सम्माननित अवशेषों के स्थानांतरण के द्वारा वशि्वासयिों के हृदयों को प्रकाशति कयिा है; देह में आप पृथ्वी पर स्वर्गदूतों के समान प्रकट हुए; अपने तपस्या-मार्ग द्वारा आप संयम के जल के कनिारे वृक्षों के समान रोपति हुए, जो आपके आँसुओं की धाराओं से सचिति हुए, और कलंक से शुद्ध हुए: इसी कारण तुम, थयिोडोर, डेवडि और कॉन्स्टेंटनि, परमेश्वर के पवत्रि आत्मा के वासस्थान बन गए हो। हमारे प्रभु मसीह से प्रार्थना करो कि हमारी आत्माओं का उद्धार हो।

कॉन्टाकयिन, स्वर 8:

हे अति दीप्तमिान दीपों, आप देह में स्वर्गदूतों के समान प्रकट हुए; और स्वर्ग के जीवन के वृक्षों के समान, उपवास, जागरण और वशि्वास से पोषति होकर, आप अपने प्रार्थनाओं द्वारा दविय अनुग्रह प्राप्त कर फलते-फूलते रहे: अपने आपको शक्तशिाली चकित्सिक साबति करते हुए, आप उन लोगों की पीड़ति आत्माओं को चंगा करते हैं जो वशि्वास के साथ, हे महमिामय चमत्कार-कर्ताओं, थयिोडोर, डेवडि और कॉन्स्टेंटनि, आपके पवत्रि अवशेषों के अवशेष-पात्र में शरण लेते हैं। हमारे प्रभु मसीह से प्रार्थना करें कि जो लोग वशि्वास और प्रेम के साथ आपकी स्मृति का सम्मान करते हैं, उन्हें वे पापों की क्षमा प्रदान करें।

3 अक्टूबर

20 सतिंबर (पुराना कैलेंडर)

महान शहीद संत यूस्टाथयिस प्लाकडिास, उनकी पत्नी और बच्चों का जीवन और शहादत

20 सतिंबर को स्मरणोत्सव

सम्राट ट्राजन[6346] के शासनकाल में, रोम में प्लाकडिास नामक एक गवर्नर रहता था[6347] । वह एक कुलीन परविार से था और उसके पास बहुत धन-संपत्ति थी। युद्ध में उसकी वीरता इतनी प्रसद्धि थी कि प्लाकडिास का नाम ही उसके दुश्मनों के दलिों में दहशत पैदा कर देता था। यहाँ तक कि जब सम्राट टाइटस यहूदयिा की भूमि में युद्ध कर रहे थे[6348] , तब भी प्लाकडिा एक उत्कृष्ट रोमन कमांडर थे और उन्होंने अपनी नडिर बहादुरी से हर युद्ध में खुद को वशिष्टि साबति कयिा।

[6346] ट्राजन रोम के सबसे उत्कृष्ट सम्राटों में से एक थे: उन्होंने अपने लोगों की भलाई का बहुत ध्यान रखा, राज्य के प्रशासन में पूरी तरह से सुधार कयिा, सफल युद्धों के माध्यम से साम्राज्य की सीमाओं का वस्तिार कयिा, और नए शहरों की स्थापना की। हालाँकि, उन्होंने भी ईसाइयों का उत्पीड़न कयिा।

[6347] संत यूस्टैथयिस का मूर्तपिूजक नाम—या, अधकि सटीक रूप से, रोमन उच्चारण के अनुसार 'प्लासडियिस'—लैटनि शब्द placidus से लयिा गया है, जसिका अर्थ है 'शांत', 'समतोल स्वभाव वाला', 'प्रशान्त', 'सौम्य' और 'वनिम्र'। एक नाम जो ईसाई धर्म में परविर्तति होने से पहले भी संत यूस्टैथयिस के उच्च नैतकि गुणों का पूरी तरह से वर्णन करता था।

[6348] टाइटस – एक रोमन सम्राट, सम्राट वेस्पासयिन का पुत्र और उत्तराधकिारी, ने 79 से 81 ईस्वी तक शासन कयिा। अपने पति के शासनकाल के दौरान, उसे रोमन शासन के खलिाफ वद्रिोह करने वाले यहूदयिों को दंडति करने के लिए एक बड़ी सेना के साथ यहूदयिा भेजा गया था। यहाँ इसी वशिेष युद्ध का उल्लेख है। यह युद्ध वर्ष 70 में यरूशलेम और सुलैमान के मंदरि के वनिाश के साथ समाप्त हुआ।

अपने धर्म के मामले में, प्लाकडिा मूर्तपिूजक था, लेकनि उसने अपने जीवन में कई अच्छे, ईसाई कार्य कएि: उसने भूखे को खाना खलिाया, नग्न को कपड़े पहनाए, जरूरतमंदों की मदद की, और कई लोगों को बंधन और जेल से मुक्त कराया। उसे संकट या कष्ट में पड़े कसिी की मदद करने में सच्ची प्रसन्नता होती थी, और वह अपने शत्रुओं पर शानदार वजियों से भी अधकि इस पर आनन्दति होता था। प्राचीन काल के कोर्नेलयिुस की तरह, जसिके वषिय में प्रेरतिों के काम की पुस्तक में (प्रेरतिों के काम 10:1–48) बताया गया है, प्लैकडिास ने हर अच्छे काम में पूर्णता प्राप्त कर ली थी, फरि भी उसके पास हमारे प्रभु यीशु मसीह में पवत्रि वशि्वास नहीं था—वह वशि्वास जसिके बनिा सभी अच्छे काम मृतक हैं (याकूब 2:17)। प्लैकडिास की एक पत्नी थी, जो स्वयं जतिनी सदाचारी थी, और दो पुत्र थे। प्लकदिास सभी के प्रतबिहुत दयालु और दयावान था; उसमें केवल एक सच्चे परमेश्वर के ज्ञान की कमी थी, जसिे वह, यद्यपवि अभी तक उसे नहीं जानता था, अपने अच्छे कर्मों के माध्यम से पहले ही सम्मानति कर रहा था। लेकनि दयालु और परोपकारी प्रभु सभी का उद्धार चाहता है और जो अच्छा करते हैं उन पर अनुकूल दृष्टि रखिता है: *'हर जाति में जो कोई भी उस का भय मानता है और जो धार्मिकिता करता है, वह उस के ग्रहणयोग्य है'* (प्रेरतिों के काम 10:35)। और उसने इस धर्मी मनुष्य को तुच्छ नहीं जाना; उसने उसे मूर्तपिूजक भ्रम के अंधकार में नष्ट होने नहीं दयिा, बल्कि स्वयं उस पर कृपा करके उसे उद्धार का मार्ग दखिाया।

एक दनि, प्लाकडिास, अपनी आदत के अनुसार, अपने सैनकिों और नौकरों के साथ शकिार के लएि नकिले। हरिणों के एक झुंड से मलिने पर, उन्होंने अपने घुड़सवारों को तैनात कयिा और उनका पीछा शुरू कयिा। जल्द ही उन्होंने देखा कि उनमें से एक, जो सबसे बड़ा था, झुंड से अलग हो गया था। अपने सैनकिों को पीछे छोड़कर, प्लाकडिा ने अपने कुछ साथयिों के साथ हरिण का पीछा करते हुए रेगस्तिान में प्रवेश कयिा। प्लाकडिा के साथी जल्द ही थक गए और उससे बहुत पीछे छूट गए। हालाँकि, प्लाकडिा, जसिके पास एक मजबूत और तेज़ घोड़ा था, अकेले ही पीछा करता रहा, जब तक कि हरिण एक ऊँची चट्टान पर नहीं कूद गया। प्लाकडिा चट्टान के पैर में रुक गया और, हरिण को घूरते हुए, यह सोचने लगा कि वह उसे कैसे पकड़ सकता है। उसी क्षण, सर्व-दयालु ईश्वर—जो लोगों को अनेक साधनों से मोक्ष की ओर ले जाता है और उन्हें केवल वही जानने वाले भाग्यों के माध्यम से सत्य के मार्ग पर मार्गदर्शन करता है—ने स्वयं शकिारी को पकड़ लयिा, और प्लाकडिा के सामने ठीक वैसे ही प्रकट हुआ जैसे वह एक बार प्रेरति पौलुस के सामने प्रकट हुआ था (प्रेरतिों के काम 9:3-6)। जैसे ही वह हरिन को घूरता रहा, प्लाकडिा ने उसके सींगों के बीच एक चमकता हुआ क्रॉस देखा, और उस क्रॉस पर हमारे लएि सूली पर चढ़ाए गए प्रभु यीशु मसीह का स्वरूप देखा। इस अद्भुत दर्शन से चकति, राज्यपाल ने अचानक एक आवाज़ सुनी जो कह रही थी:

'प्लाकदिा, तुम मेरा पीछा क्यों कर रहे हो?'

और इस दैवीय आवाज़ के साथ ही, प्लैकडिा पर तुरंत भय छा गया: अपने घोड़े से गरिकर, प्लैकडिा मृतप्राय होकर ज़मीन पर लेट गया। अपने भय से मुश्कलि से उबरते हुए, उसने पूछा:

'प्रभु, आप कौन हैं, जो मुझसे बात कर रहे हैं?'

और प्रभु ने उससे कहा:

मैं यीशु मसीह हूँ – परमेश्वर, जो मानव जाति के उद्धार के लएि देहधारी हुआ और जसिने स्वेच्छा से दुख और क्रूस पर मृत्यु को सहन कयिा, जसिे तुम अनजाने में सम्मान देते हो। तेरे पुण्य कर्म और प्रचुर दान मेरे ध्यान में आए हैं, और मैं तुझे बचाना चाहता हूँ। और इसलएि मैं यहाँ प्रकट हुआ हूँ ताकि तुझे मेरा ज्ञान प्रदान करूँ और तुझे अपने वशि्वासयोग्य सेवकों में सम्मलिति करूँ। क्योंकि मैं नहीं चाहता कि कोई धर्मात्मा शत्रु के जालों में फँसकर नष्ट हो जाए।

ज़मीन से उठकर और अपने सामने कसिी को न देखकर, प्लाकडिा ने कहा:

'अब मैं वशि्वास करता हूँ, हे प्रभु, कि आप स्वर्ग और पृथ्वी के परमेश्वर हैं, सभी प्राणयिों के सृष्टकिर्ता हैं। आज से मैं केवल आपकी ही आराधना करता हूँ, और आप के सवि कसिी अन्य देवता को नहीं जानता। मैं आपसे वनिती करता हूँ, हे प्रभु, मुझे सखिाएँ कि मुझे क्या करना चाहए।'

और एक बार फरि उसने एक आवाज़ सुनी:

'एक ईसाई पुरोहति के पास जाओ, उससे बपतस्मिा लो, और वह तुम्हें मोक्ष का मार्ग दखिाएगा।'

आनंद और भावनाओं से भरकर, प्लाकडिा आँसुओं में जमीन पर गरि पड़ा और प्रभु के सामने झुक गया, जन्होंने अपनी उपस्थति से उसे सम्मानति कयिा था। वह इस बात पर दुखी हुआ कि तब तक वह सत्य को नहीं जानता था और न ही सच्चे ईश्वर को पहचानता था, और साथ ही उसकी आत्मा इस बात पर आनंदति हुई कि उसे ऐसी कृपा प्रदान की गई

थी, जिसने उसे सत्य का खुलासा किया और सही मार्ग पर स्थापित किया। एक बार फिर अपने घोड़े पर सवार होकर, वह अपने साथियों के पास लौट आया, लेकिन, अपनी महान खुशी को गुप्त रखते हुए, उसने किसी को नहीं बताया कि उसके साथ क्या हुआ था। जब वह शिकार से घर लौटा, तो उसने अपनी पत्नी को एक तरफ बुलाया और अकेले में, उसे वह सब कुछ बताया जो उसने देखा और सुना था। उसकी पत्नी ने, बदले में, उससे कहा:

'कल रात मैंने किसी को मुझसे ये शब्द कहते सुना: "तू, तेरा पति और तेरे पुत्र कल मेरे पास आएँगे और मुझे, यीशु मसीह, सच्चे परमेश्वर को पहचान लेंगे, जो मुझसे प्रेम करने वालों को उद्धार भेजता है।"' 'तो फिर हम देरी न करें; जैसा हमें आज्ञा दी गई है, वैसा ही तुरंत करें।'

रात हो गई। प्लैकिडा ने यह पता लगाने के लिए खोज शुरू की कि एक ईसाई पुरोहित कहाँ रहता था। जब उन्हें उसके घर का पता चल गया, तो प्लैकिडा अपनी पत्नी, बच्चों और कुछ वफादार सेवकों को साथ लेकर उस पुरोहित से मिलने चल पड़ा, जिसका नाम जॉन था। जब वे पहुँचे, तो उन्होंने पुरोहित को प्रभु के प्रकट होने के बारे में विस्तार से बताया और बपतिस्मा लेने का अनुरोध किया। उन्हें सुनने के बाद, याजक ने परमेश्वर की महिमा की, जो मूर्तिपूजकों में से भी अपने लिए आने वालों को चुनता है, और, उन्हें पवित्र धर्म की शिक्षा देने के बाद, परमेश्वर की सभी आज्ञाएँ उन्हें प्रकट कीं। फिर उन्होंने प्रार्थना की और उन्हें पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम पर बपतिस्मा दिया। और उनके पवित्र बपतिस्मा पर उन्हें निम्नलिखित नाम दिए गए: प्लाकिडस का नाम यूस्टैथियस, उसकी पत्नी का नाम थिओपिस्टिया, और उनके बेटों का नाम अगैपियस और थिओपिस्टस रखा गया। उनके बपतिस्मा के बाद, याजक ने उन्हें दिव्य रहस्य प्रदान किए और उन्हें यह कहते हुए शांति से विदा किया:

'ईश्वर, जिसने आपको अपने ज्ञान के प्रकाश से प्रबुद्ध किया है और आपको अनंत जीवन की विरासत के लिए बुलाया है, वह हमेशा आपके साथ रहे! और जब आप उस जीवन में ईश्वर को साक्षात देखने के योग्य ठहरेंगे, तो मुझे भी, अपने आध्यात्मिक पिता को याद करना।'

इस प्रकार पवित्र बपतिस्मा द्वारा पुनर्जन्म पाकर, वे अकथनीय आनंद से भरकर अपने घर लौट आए। दिव्य अनुग्रह ने उनके आत्माओं को एक कोमल प्रकाश से प्रबुद्ध किया और उनके हृदयों को इतनी परमानंद से भर दिया कि उन्हें ऐसा लगा मानो वे पृथ्वी पर नहीं बल्कि स्वर्ग में हों।

अगले दिन, यूस्टैथियस अपने घोड़े पर सवार होकर और कुछ नौकरों को साथ लेकर, जैसे शिकार पर निकलता हो, उसी स्थान के लिए रवाना हो गया जहाँ प्रभु उसे प्रकट हुए थे, ताकि वह उनके अथाह उपहारों के लिए उनका धन्यवाद कर सके। उस स्थान पर पहुँचने पर, उसने अपने नौकरों को शिकार खोजने के लिए भेज दिया। जहाँ तक उसकी बात है, घोड़े से उतरकर, वह जमीन पर मुँह के बल गिर पड़ा और आँसुओं के साथ, प्रभु से उनकी अनुपम दया के लिए प्रार्थना की और धन्यवाद दिया, कि उन्होंने कृपा करके उसे विश्वास के प्रकाश से प्रबुद्ध किया था। अपनी प्रार्थना में, उन्होंने स्वयं को अपने प्रभु के हवाले कर दिया, हर बात में उनकी शुभ और पूर्ण इच्छा के प्रति स्वयं को समर्पित कर दिया और उनसे विनती की कि, अपनी दया में, वे सभी चीजों को उनके लाभ के लिए व्यवस्थित करें, जैसा कि वे स्वयं जानते हैं और उचित समझते हैं। और वहाँ उन्हें उन कष्टों और दुखों के बारे में एक प्रकटवाणी मिली जो उन पर आने वाले थे।

प्रभु ने उससे कहा, 'यूस्टैथियस, तुम्हें अपने कर्मों द्वारा अपने विश्वास, अपनी दृढ़ आशा और मुझसे अपने उत्कट प्रेम को प्रदर्शित करना चाहिए। यह सब अस्थायी धन-संपत्ति और व्यर्थ समृद्धि के बीच नहीं, बल्कि गरीबी और कष्टों में प्रकट होता है। यॉब की तरह, तुम्हें भी बहुत दुख सहने और कई विपत्तियों को झेलने का है, ताकि कड़ाही में सोने की तरह परखे जाने के बाद, तुम स्वयं को मेरे योग्य साबित कर सको और मेरे हाथों से एक मुकुट प्राप्त कर सको।

'हे प्रभु, तेरी इच्छा पूरी हो,' यूस्टाथियस ने उत्तर दिया, 'मैं तेरे हाथों से सब कुछ कृतज्ञतापूर्वक स्वीकार करने के लिए तैयार हूँ।' मैं जानता हूँ कि आप भले और दयालु हैं, और एक पिता की तरह, आप प्रेम के कारण अनुशासित करते हैं; तो क्या मैं आपके दयालु हाथों से अपनी पितृसुलभ अनुशासनात्मक सजा स्वीकार नहीं करूँगा? सचमुच, मैं एक सेवक के रूप में, जो कुछ भी मुझ पर डाला जाता है, उसे धैर्य से सहन करने के लिए तैयार हूँ, बशर्ते कि आपकी सर्वशक्तिमान सहायता मेरे साथ हो।

और एक बार फिर उसने एक आवाज़ सुनी:

'क्या तुम इन परीक्षाओं को अब सहना चाहते हो, या अपने जीवन के अंतिम दिनों में?'

यूस्टाथियस ने कहा, 'प्रभु, यदि इन परीक्षाओं से पूरी तरह बचना असंभव है, तो मुझे ये कष्ट अब ही झेलने दें; बस मुझे अपनी सहायता भेजें, कहीं ऐसा न हो कि बुराई मुझ पर हावी हो जाए और मुझे आपके प्रेम से दूर कर दे।'

प्रभु ने उससे कहा:

'हौसला रखो, यूस्टाथियस, क्योंकि मेरी कृपा तुम्हारे साथ रहेगी और तुम्हारी रक्षा करेगी। तुम्हें गहरी अपमानिता का सामना करना होगा, लेकिन मैं तुम्हें गौरवान्विति करूँगा – और मैं न केवल स्वर्ग में अपने स्वर्गदूतों के सामने तुम्हारा गौरव बढ़ाऊँगा, बल्कि मैं मनुष्यों के बीच तुम्हारा सम्मान भी बहाल करूँगा: कई दुखों के बाद, मैं तुम्हें फिर से सांत्वना भेजूँगा और तुम्हारा पूर्व पद बहाल करूँगा। हालाँकि, तुम्हें अस्थायी सम्मान में नहीं, बल्कि इस बात में आनंदित होना चाहिए कि तुम्हारा नाम जीवन की शाश्वत पुस्तक में अंकित है।

इस प्रकार संत यूस्टाथियस ने अदृश्य प्रभु से संवाद किया और दिव्य अनुग्रह से परिपूर्ण होकर, उनसे प्रकाशन प्राप्त किए। आत्मा में आनंदित और परमेश्वर के प्रति प्रेम से अग्निमय होकर, वह अपने घर लौट आए। यूस्टाथियस ने अपनी धर्मपरायण पत्नी को वह सब कुछ बताया जो ईश्वर ने उसे प्रकट किया था। उसने उससे यह नहीं छिपाया कि उनके सामने कई परीक्षाएँ और दुख आने वाले हैं, और उसने उसे प्रभु के लिए साहसपूर्वक उन्हें सहने के लिए प्रोत्साहित किया, जो इन दुखों को शाश्वत आनंद और प्रसन्नता में बदल देंगे।

अपने पति की बात सुनकर, इस बुद्धिमान महिला ने कहा:

'प्रभु की इच्छा पूरी हो; हम तो उनसे पूरे हृदय से प्रार्थना करेंगे, केवल यह निवेदन करते हुए कि वे हमें धैर्य प्रदान करें।'

और वे धार्मिकता और सम्मान से जीने लगे, उन्होंने उपवास और प्रार्थना में स्वयं को समर्पित कर दिया, गरीबों को पहले से भी अधिक उदारता से दान देने लगे, और सभी सद्गुणों में स्वयं को परिपूर्ण करने के लिए पहले से कहीं अधिक गंभीरता से प्रयास करने लगे।

थोड़ी ही देर बाद, ईश्वर की इच्छा से, यूस्टाथियस के घर में बीमारी और मृत्यु आ गई। उसका सारा परिवार बीमार पड़ गया, और थोड़े ही समय में न केवल उसके लगभग सभी नौकर बल्कि उसके सारे मवेशी भी मर गए। और चूँकि जो लोग जीवित बचे थे वे बिस्तर पर पड़े थे, इसलिए यूस्टाथियस के खजाने की रखवाली करने के लिए कोई नहीं बचा, और चोरों ने रात में उसकी संपत्ति लूट ली। शीघ्र ही वह प्रतिष्ठित और धनी राज्यपाल लगभग कंगाल हो गया। हालाँकि, यूस्टाथियस इससे बिल्कुल भी परेशान नहीं हुआ, न ही वह अवर्णनीय दुख में डूबा: इन सभी परीक्षाओं के बीच, उसने परमेश्वर के सामने कोई पाप नहीं किया, और, उसकी कृपा से, जैसा योब ने कहा था, वैसे ही कहा:

'प्रभु ने दिया, और प्रभु ने लिया; प्रभु का नाम धन्य हो!' (अय्यूब 1:21)।

और यूस्टैथियस ने अपनी पत्नी को सांत्वना दी, और उससे कहा कि जो कुछ उन पर आ रहा है, उस पर वह शोक न करे, और उसने भी बदले में अपने पति को सांत्वना दी; और इस प्रकार उन दोनों ने ईश्वर के प्रति कृतज्ञता के साथ अपने दुखों को सहा, स्वयं को पूरी तरह से उनकी इच्छा के हवाले कर दिया और उनकी दया में अपनी आशा से शक्ति प्राप्त की। यह देखकर कि उसने अपनी संपत्ति खो दी है, यूस्टैथियस ने यह संकल्प लिया कि वह अपने सभी परिचितों से दूर किसी दूर देश में कहीं छिप जाएगा, और वहाँ, अपने कुलीन जन्म और उच्च पद को प्रकट किए बिना, सामान्य लोगों के बीच विनिम्रता और गरीबी में रहेगा। उसे उम्मीद थी कि इस तरह का जीवन जीकर, वह हमारे प्रभु मसीह की—जो हमारे उद्धार के लिए गरीब हो गए और स्वयं को नम्र बनाया—बिना किसी बाधा के और दुनिया की अफवाहों से दूर, सेवा कर पाएगा। यूस्टैथियस ने इस बारे में अपनी पत्नी से चर्चा की, जिसके बाद उन्होंने उसी रात अपना घर छोड़ने का फैसला किया। और इस प्रकार, अपने घर वालों को बिना बताए – जिनमें से बहुत कम ही बचे थे, और वे भी बीमार थे – वे अपने बच्चों को लेकर चले गए, अपने अच्छे कपड़ों को फटे-पुराने कपड़ों से बदल लिया, और अपना घर छोड़ दिया। एक कुलीन परिवार से आने वाले, एक उच्च पदस्थ अधिकारी, राजा के प्रिय और सभी का सम्मानित, यूस्टैथियस आसानी से अपनी खोई हुई महिमा, सम्मान और धन-संपत्ति को फिर से पा सकता था; लेकिन, उन्हें तुच्छ समझते हुए, उसने ईश्वर के लिए सब कुछ पीछे छोड़ दिया और केवल उन्हीं को अपना रक्षक बनाना चाहा। पहचाने न जाएँ, इस लिए छिपते हुए, यूस्टैथियस अनजान जगहों में घूमते रहे, और सबसे साधारण तथा अनपढ़ लोगों के बीच रहे। इस प्रकार, अपने भव्य महलों को पीछे छोड़कर, मसीह के यह अनुयायी इधर-उधर भटकते रहे, और उन्हें कहीं भी कोई आश्रय नहीं मिला। जल्द ही राजा और सभी कुलीनों को पता चला कि उनका प्रिय राज्यपाल प्लाकिडा बिना किसी सुराग के गायब हो गया था। हर कोई हैरान था और यह नहीं समझ पा रहा था कि क्या सोचे: क्या किसी ने प्लाकिडा को मार डाला था, या वह खुद किसी दुर्घटना का शिकार हो गया था? वे उनके लिए गहराई से शोक मनाए और उन्हें खोजा, लेकिन यूस्टाथियस के जीवन में पूरी हो रही ईश्वर

की इच्छा के रहस्य को नहीं समझ सके: *'क्योंकि प्रभु का मन कौन जानता है? या उसका परामर्शदाता कौन रहा है?'* (रोमियों 11:34)।

जब यूस्टाथियस अपने परिवार के साथ किसी अज्ञात स्थान पर रह रहे थे, तो उनकी पत्नी ने उनसे कहा:

'प्रभु, हम यहाँ और कितनी देर तक रहेंगे? हमें इस जगह को छोड़कर दूर के देशों में चले जाना चाहिए, कहीं कोई हमें पहचान न ले, और हम अपने परिचितों के बीच उपहास का विषय न बन जाएँ।'

और इस प्रकार, वे अपने बच्चों के साथ मिस्र की ओर जाने वाले मार्ग पर चल पड़े[6349] । कई दिनों तक यात्रा करने के बाद, वे समुद्र के पास पहुँचे और बंदरगाह में मिस्र के लिए रवाना होने को तैयार एक जहाज देखकर उसमें चढ़ गए और प्रस्थान कर गए। जहाज का कप्तान एक विदेशी[6350] और एक बहुत ही क्रूर व्यक्ति था। यूस्टैथियस की पत्नी की सुंदरता से मोहित होकर, वह उसके प्रति जुनून में डूब गया और अपने दिल में इस गरीब आदमी से उसे छीनकर अपना बनाने का एक दुष्ट इरादा रखता था। जिस किनारे पर यूस्टैथियस को उतरना था, वहाँ पहुँचने पर, जहाज के कप्तान ने समुद्री यात्रा के भुगतान को स्वीकार करने के बजाय, यूस्टैथियस की पत्नी को खुद के लिए ले लिया। यूस्टैथियस ने विरोध करने की कोशिश की, लेकिन वह कुछ नहीं कर सका, क्योंकि उस क्रूर और अमानवीय अजनबी ने अपनी तलवार खींचकर, यूस्टैथियस को मारने और उसे समुद्र में फेंक देने की धमकी दी। यूस्टैथियस के पक्ष में खड़ा होने वाला कोई नहीं था। रोते हुए, वह उस दुष्ट व्यक्ति के पैरों में गिर पड़ा, और उससे अपने प्रिय साथी से उसे अलग न करने की विनती करने लगा। लेकिन उसकी सारी विनती व्यर्थ गई, और उसे एक दृढ़ उत्तर सुनाई दिया:

'यदि तुम जीवित रहना चाहते हो, तो चुप रहो और इस जगह से चले जाओ, या यहाँ तलवार से तुरंत मर जाओ, और यही समुद्र तुम्हारी कब्र हो।'

रोते हुए, यूस्टैथियस अपने बच्चों को लेकर जहाज़ से उतर गया; जहाज़ के कप्तान ने, किनारे से दूर होकर, पाल फहराए और जहाज़ को रवाना कर दिया। इस ईश्वर-भयभीत व्यक्ति के लिए अपनी पवित्र और वफादार पत्नी से बिछिड़ना कितना दर्दनाक था! आँखों में आँसू और हृदय में गम से भरे, उन्होंने एक-दूसरे से विदा ली। यूस्टैथियस तट पर रहकर रोया, जबकि उसकी पत्नी जहाज पर रोई, जिसे जबरदस्ती अपने पति से अलग किया गया था और एक अज्ञात भूमि पर ले जाया गया। उनके दुख, रोने और सिसकने का वर्णन कैसे किया जा सकता है? यूस्टैथियस लंबे समय तक किनारे पर खड़ा रहा, और जहाज को तब तक देखता रहा जब तक वह नज़रों से ओझल नहीं हो गया। फिर वह अपने छोटे बच्चों को साथ लेकर अपनी यात्रा पर निकल पड़ा; और पति अपनी पत्नी के लिए रो रहा था, जबकि बच्चे अपनी माँ के लिए रो रहे थे। यूस्टैथियस की धार्मिक आत्मा के लिए एकमात्र सांत्वना यह थी कि उसने इन परीक्षाओं को प्रभु के हाथ से स्वीकार किया, जिनकी इच्छा के बिना कुछ भी उसके साथ नहीं हो सकता था। यूस्टैथियस को इस विचार से भी सांत्वना मिली कि उसे मसीह के विश्वास के लिए विशेष रूप से इसलिए बुलाया गया था ताकि वह धैर्य के साथ स्वर्गीय स्वदेश के मार्ग पर चले।

लेकिन यूस्टाथियस का दुख अभी खत्म नहीं हुआ था; बल्कि, उसे जल्द ही पहले से भी बड़े नए दुखों का सामना करना था। जैसे ही उसने अपना पहला दुख भूलना शुरू किया, एक नया शोक उसके पास आ गया। वह अभी अपनी पत्नी से दिल दहला देने वाले वियोग को ही सहन कर पाया था, और पहले ही उसके बच्चों के नुकसान की आशंका उसके सामने मंडराने लगी थी। अपना रास्ता जारी रखते हुए, यूस्टैथियस एक नदी के पास पहुँचा जो चौड़ी और बहुत तेज़ बहाव वाली थी। इस नदी पर न तो कोई नाव थी और न ही कोई पुल, और उसे इसे पार करना था। दोनों बेटों को एक साथ दूसरी तरफ ले जाना असंभव साबित हुआ। इसलिए यूस्टैथियस ने उनमें से एक को उठाया और उसे अपने कंधों पर लादकर दूसरी तरफ ले गया। उसे वहाँ उतारने के बाद, वह अपने दूसरे बेटे को भी पार ले जाने के लिए वापस चल पड़ा। लेकिन जैसे ही वह नदी के बीच में पहुँचा, अचानक एक चीख गूँजी। यूस्टैथियस मुड़ा और उसने भयभीत होकर देखा कि एक शेर ने उसके बेटे को पकड़ लिया

[6349] अर्थात् - भूमध्य सागर की दिशा में, जिसे मिस्र पहुँचने के लिए जहाज से पार करना पड़ता था। मिस्र अफ्रीका के उत्तर-पूर्वी भाग में स्थित एक देश है। वर्णित समय में, मिस्र रोमन शासन के अधीन था, जो निश्चित रूप से 30 ईसा पूर्व में इसके अधीन आ गया था।

[6350] उनकी जीवनी में, उन्हें एक 'असभ्य' कहा गया है। यह शब्द सामान्य रूप से सभी विदेशियों का वर्णन करने के लिए ग्रीकों और बाद में रोमनों द्वारा उपयोग किया जाता था। यह एक अपमानजनक उपनाम था जो अन्य लोगों की असभ्यता और अज्ञानता को दर्शाता था। साथ ही, इस शब्द को धर्मग्रंथों में एक सामान्य रूप से अमानवीय और क्रूर व्यक्ति की अवधारणा से जोड़ा गया है। वह शायद उन समुद्री लुटेरों में से एक था जो उस समय भी अक्सर भूमध्यसागर के तटों पर आतंक मचाते थे, सुंदर महिलाओं और कुंवारी लड़कियों को अगवा करके गुलामी में बेच देते थे, और अपने रास्ते में आने वाले किसी भी व्यक्ति को निर्दयता से मार डालते थे।

था और उसे लेकर रेगस्तिान की ओर भाग रहा था। एक कड़वी और दयनीय चीख के साथ, यूस्टैथयिस उस जानवर को तब तक देखता रहा जब तक कि वह अपने शकिार के साथ नज़रों से ओझल नहीं हो गया। यूस्टैथयिस अपने दूसरे बेटे के पास वापस भागा। लेकनि इससे पहले कि वह कनिारे पर पहुँच पाता, एक भेड़यिा अचानक बाहर नकिला और उस लड़के को जंगल में खींच ले गया। हर ओर से दुखद शोकों से अभभिूत, यूस्टैथयिस नदी के बीच में खड़ा था, मानो वह अपने ही आँसुओं के सागर में डूब रहा हो। क्या कोई यह बयान कर सकता है कि उसका हृदय-वषिाद और वलिाप कतिना गहरा था? उसने अपनी पत्नी को खो दयिा था, जो पवत्रि, वफादार और धर्मनष्ठि थी; उसने अपने बच्चों को खो दयिा था, जन्हिें वह अपने ऊपर आई परीक्षाओं के बीच अपना एकमात्र सांत्वना मानता था। सचमुच, यह एक चमत्कार था कि यह व्यक्ति इतनी बड़ी दुखों के बोझ के आगे नहीं झुका और जीवति रहा। इसमें कोई संदेह नहीं है कि केवल सर्वशक्तमिान परमेश्वर के दव्यि हस्तक्षेप ने ही यूस्टैथयिस को इन दुखों को सहने के लिए शक्ति दी: क्योंकि केवल वही, जसिने उसे ऐसी परीक्षाओं में पड़ने दयिा, वही उसे इतना धैर्य भी दे सकता था।

कनिारे पर पहुँचने पर, यूस्टैथयिस ने लंबे समय तक कड़वाहट भरी रुलाई बहाई, और फरि, हृदय में गहरे दुख के साथ, वह पुनःप्रस्थान कर गया। उसके लिए केवल एक ही सांत्वनादाता था – ईश्वर, जसि पर वह दृढ़ता से वश्विास करता था और जसिके लिए उसने यह सब सहन कयिा। यूस्टाथयिस ने ईश्वर के वरिुद्ध तनकि भी शकिायत नहीं की, न ही उसने कहा: 'हे प्रभु, क्या आपने मुझे यह जानने के लिए बुलाया था कि मैं अपनी पत्नी और बच्चों से वंचति हो जाऊँ? क्या यह आप में वश्विास का लाभ है, कि मैं सभी लोगों में सबसे दयनीय बन जाऊँ? क्या आप अपने वश्विासयिों से इसी तरह प्रेम करते हैं, कि वे एक-दूसरे से अलग होकर नष्ट हो जाएँ?' इस धर्मी और धैर्यवान मनुष्य ने ऐसा वचिार भी मन में नहीं लाया। इसके वपिरीत, उसने गहरी नम्रता से प्रभु का धन्यवाद कयिा कि उन्हें अपने सेवकों को सांसारकि समृद्धि और व्यर्थ के सुखों में नहीं, बल्कि दुखों और कष्टों में देखकर प्रसन्नता होती है, ताकि वह आने वाले जीवन में उन्हें शाश्वत आनंद और हर्ष के साथ सांत्वना दे सकें।

परन्तु सर्वशक्तमिान परमेश्वर सब बातों को भलाई के लिए मोड़ देता है, और यदि वह धर्मी लोगों को वपित्ति में पड़ने देता है, तो यह उन्हें दंड देने के लिए नहीं, बल्कि उनके वश्विास और धैर्य की परीक्षा लेने के लिए है, और वह आँसुओं के बजाय अटूट धैर्य को और उनकी धन्यवाद-अर्पण को महत्व देता है। जैसे प्रभु ने एक बार योना को व्हेल की पेट में सुरक्षति रखा था (योना, अध्याय 2), वैसे ही उन्होंने यूस्टाथयिस के बच्चों को, जन्हिें जंगली जानवर उठा ले गए थे, सुरक्षति रखा। जब एक शेर एक छोटे लड़के को लेकर रेगस्तिान में चला गया, तो कुछ चरवाहों ने उसे देख लयिा और चल्लिाते हुए उसका पीछा कयिा। लड़के को छोड़कर, शेर भागकर सुरक्षति स्थान पर चला गया। इसी तरह, एक और लड़के को उठा ले गए भेड़यिे को कुछ खेत मजदूरों ने देख लयिा, जो चल्लिाकर उसके पीछे पड़ गए। भेड़यिे ने भी लड़के को छोड़ दयिा। चरवाहे और खेत मजदूर दोनों एक ही गाँव के थे। उन्होंने बच्चों को अपने पास रख लयिा और उनका पालन-पोषण कयिा।

लेकनि यूस्टैथयिस को इस सब की कोई खबर नहीं थी। जैसे-जैसे वह अपने रास्ते पर आगे बढ़ता गया, वह कभी-कभी धैर्यपूर्वक ईश्वर का धन्यवाद करता और कभी-कभी, मानवीय स्वभाव के वश में होकर, रोते हुए पुकार उठता:

हाय मेरे लिए! कभी मैं अमीर था, लेकनि अब मैं दरदि्र और सब कुछ से वंचति हूँ। हाय मेरे लिए! कभी मैं महमिा में था, लेकनि अब मैं अपमान में हूँ। हाय मेरे लिए! कभी मैं संपन्न व्यक्ति था और मेरे पास बड़ी जागीरें थीं, लेकनि अब मैं एक भटकता हुआ हूँ। मैं कभी एक ऐसे पेड़ की तरह था जसिके बहुत सारे पत्ते थे और जो बहुत फल देता था, लेकनि अब मैं एक मुरझाई हुई टहनी की तरह हूँ। घर पर दोस्तों, सड़कों पर नौकरों और युद्ध में योद्धाओं से मेरा घेराव था, लेकनि अब मैं नर्जिन स्थान में अकेला रह गया हूँ। लेकनि हे प्रभु, मुझे न छोड़ो! हे सर्व-द्रष्टा, मुझे तुच्छ न समझो! हे सर्व-सत्पुरुष, मुझे न भूलें! हे प्रभु, मुझे अंत तक न छोड़ें! हे प्रभु, मैंने उस स्थान पर आपके वचन याद कयि हैं जहाँ आप मुझ पर प्रकट हुए थे: 'तुम्हें भी यॉब की तरह कष्ट सहने हैं'। फरि भी जो मुझ पर पड़ा है, वह अय्यूब पर पड़े हुए से भी बड़ा है: क्योंकि यद्यपि उसने, , अपना धन-संपत्ति और सम्मान खो दयिा, वह अपनी ही खाद के ढेर पर लेटा था, जबकि मैं परदेश में हूँ और नहीं जानता कि कहाँ जाऊँ; उसके पास सांत्वना देने के लिए मत्रि थे – परन्तु मेरी सांत्वना, मेरे प्रयि बच्चे, जंगल में से छीन लिए गए और जंगली जानवरों द्वारा खा लिए गए; हालाँकि उसने अपने बच्चों को खो दयिा था, फरि भी वह अपनी पत्नी से कुछ सांत्वना और सहारा पा सकता था; लेकनि मेरी अच्छी पत्नी एक नर्दियी अजनबी के हाथों पड़ गई है, और मैं, रेगस्तिान में एक खंभा की तरह, अपने कड़वे दुखों के तूफान से इधर-उधर उछाला जा रहा हूँ। हे प्रभु, मुझसे क्रोधति न हों कि मैं अपने हृदय के दुख के कारण ऐसा बोल रहा हूँ; क्योंकि मैं एक मनुष्य के रूप में बोलता हूँ। परन्तु आप में, जो

मेरे प्रबंधक और मेरे मार्ग के मार्गदर्शक हैं, मैं अपना आधार रखता हूँ; आप में ही मैं अपनी आशा रखता हूँ; और आपके प्रेम से, जो शीतल ओस और हवा की लहर के समान है, मैं अपने दुख की आग बुझाता हूँ, और आपके लिए अपनी लालसा से, मानो वह एक प्रकार की मिठास हो, मैं अपनी विपत्तियों की कड़वाहट को मीठा करता हूँ।

आहों और आँसुओं के साथ इस प्रकार बोलते हुए, यूस्टैथियस वादसिसि नामक एक गाँव में पहुँचा। वहाँ बस जाने के बाद, उसने काम करना शुरू कर दिया, और अपनी आजीविका कमाने के लिए स्थानीय निवासियों के यहाँ हाथ का काम करके मजदूरी पर लग गया। वह एक ऐसे काम में मेहनत कर रहा था जिससे वह अपरिचित था और जिसके बारे में उसने अब तक कुछ भी नहीं जाना था। बाद में, यूस्टैथियस ने उस गाँव के निवासियों से अपने अनाज की रखवाली का काम सौंपने के लिए कहा, जिसके लिए उन्होंने उसे थोड़ी सी मजदूरी दी। इस प्रकार वह पंद्रह वर्षों तक उस गाँव में बड़ी गरीबी और विनम्रता में और कई परिश्रमों के बीच रहा, ताकि वह अपने माथे के पसीने की कमाई से अपनी रोटी कमाता था। लेकिन उसके गुणों और कार्यों का वर्णन कौन कर सकता है? कोई भी उनकी प्रशंसा कर सकता है यदि वे यह कल्पना करें कि इतनी गरीबी और भटकन भरे जीवन के बीच, उन्होंने स्वयं को केवल प्रार्थना, उपवास, आँसुओं, जागरण और हार्दिक आहों के लिए समर्पित कर दिया, अपनी आँखें और हृदय ईश्वर की ओर उठाए हुए और उनकी अनुपम दया से अनुग्रह की प्रतीक्षा कर रहे थे। हालाँकि यूस्टैथियस के बच्चे वहाँ से बहुत दूर नहीं, एक दूसरे गाँव में पाले-पोसे जा रहे थे; लेकिन वह उनके बारे में कुछ नहीं जानता था, और न ही वे एक-दूसरे के बारे में जानते थे, भले ही वे एक ही गाँव में रहते थे। और उसकी पत्नी, प्राचीन काल की सारा[6351] की तरह, परमेश्वर द्वारा उस परदेशी की अश्लीलता से सुरक्षित रखी गई, जो, ठीक उसी क्षण जब उसने उसे उसके धर्मी पति से छीन लिया था, बीमारी से ग्रस्त हो गया और अपने देश लौटकर मर गया, अपनी बंदी को अछूती और पवित्र छोड़ते हुए। इस प्रकार ईश्वर ने अपनी विश्वासी दासी की रक्षा की, ताकि जाल में फँसने के बावजूद, वह फँस न सके, बल्कि एक पक्षी की तरह, शिकारियों के जाल से बच निकली: जाल टूट गया, और वह सर्वोच्च की सहायता से मुक्त हो गई। उस विदेशी की मृत्यु के बाद, वह सदाचारी महिला स्वतंत्र हो गई और शांति से जीवन यापन करने लगी, दुर्भाग्य से मुक्त, और अपने हाथों की मेहनत से अपनी आजीविका कमाती थी।

उस समय, विदेशी जनजातियाँ रोम के खिलाफ युद्ध कर रही थीं और बहुत नुकसान पहुँचा रही थीं, उन्होंने कुछ शहरों और क्षेत्रों पर नियंत्रण कर लिया था[6352] । इसलिए, सम्राट ट्राजन बहुत दुखित थे और, अपने वीर कमांडर प्लाकिडास को याद करते हुए, कहा:

'काश हमारा प्लाकिडा हमारे साथ होता, तो हमारे दुश्मन हम पर हँस नहीं पाते; क्योंकि वह हमारे शत्रुओं के लिए आतंक था, और दुश्मन उसके नाम से ही डरता था, क्योंकि वह युद्ध में पराक्रमी और सफल था।'

और राजा, अपने सभी कुलीनों के साथ, इस अजीब परिस्थिति पर हैरान था कि प्लाकिडा अपनी पत्नी और बच्चों के साथ कहाँ गायब हो गए, यह किसी को पता नहीं था। अपने पूरे राज्य में उनकी खोज भेजने का निश्चय करके, ट्राजन ने अपने आसपास के लोगों से कहा:

'जो कोई मेरे लिए मेरा प्लाकिडा ढूंढ लाएगा, मैं उस पर बड़ा सम्मान दूँगा और उसे बहुत सारे उपहार दूँगा।'

और इस प्रकार दो पराक्रमी योद्धा, एंटिओकस और अक्काकियोस, जो कभी प्लैकिडा के वफादार मित्र थे और उसके घर में रहते थे, ने कहा:

'हे सर्वशक्तिमान राजा, हमें इस व्यक्ति को खोजने का आदेश दें, जिसकी संपूर्ण रोमन साम्राज्य को बहुत आवश्यकता है। भले ही हमें उसे सबसे दूर-दराज के क्षेत्रों में खोजना पड़े, फिर भी हम इस कार्य के लिए अपना पूरा उत्साह समर्पित करेंगे।'

राजा उनकी तत्परता से प्रसन्न हुआ और तुरंत उन्हें प्लाकिडा को खोजने के लिए भेज दिया। वे चल पड़े और कई क्षेत्रों से होते हुए, कस्बों और गांवों में अपने प्रिय कमांडर की तलाश करते हुए गए और हर मिलने वाले से पूछते गए कि क्या किसी ने ऐसा आदमी कहीं देखा है। अंत में, वे उस गांव के पास पहुँचे जहाँ यूस्टैथियस रहता था। उस समय

[6351] यहाँ, बेशक, पुराने नियम के पुरखों अब्राहम और उनकी पत्नी सारा के जीवन से एक समान उदाहरण याद आता है, जो कनान की भूमि में उनके प्रवास के तुरंत बाद का है। जब अकाल के समय अब्राहम मिस्र आए, तो फिरौन, सारा की सुंदरता से मोहित होकर, उसे अपनी पत्नी बनाने का प्रयास करने लगा, लेकिन प्रभु ने इसकी अनुमति नहीं दी और सारा के कारण राजा और उसके दरबार दोनों को गंभीर कष्टों से पीड़ित कर दिया (उत्पत्ति 12:11–20)।

[6352] यह घटना ट्राजन की मृत्यु से ठीक पहले हुई, जैसा कि स्वयं वृत्तांत से स्पष्ट है। वृत्तांत से पता चलता है कि उस समय रोम के अधीन विभिन्न एशियाई लोगों ने रोमन शासन के खिलाफ विद्रोह कर दिया था, और सम्राट मेसोपोटामिया में एक अभियान की तैयारी कर रहा था।

यूस्टेथयिस खेत में अपने अनाज की देखभाल कर रहा था। जब उसने सैनकिों को अपनी ओर आते देखा, तो वह ध्यान से देखने लगा और उन्हें दूर से पहचानकर प्रसन्न हुआ और आनंद के आँसू बहाने लगा। यूस्टेथयिस ने अपने हृदय की गहराई में ईश्वर को गहरी आह भरते हुए, उस सड़क पर खड़ा हो गया जसिसे वे सैनकि गुजरने वाले थे; और उन्होंने, यूस्टैथयिस के पास आकर और उसे नमस्कार करके, उससे पूछा कि यह कसि तरह का गाँव है और इसका मालकि कौन है। फरि उन्होंने यह पूछना शुरू कयिा कि क्या यहाँ कसिी यात्री का आगमन हुआ है, जसिकी उम्र और रूप-रंग ऐसा था, जसिका नाम प्लकडिा था।

यूस्टाथयिस ने उनसे पूछा:

'तुम उसे क्यों ढूंढ रहे हो?'

उन्होंने उत्तर दयिा:

'वह हमारा दोस्त है, और हमने उसे बहुत समय से नहीं देखा है; हमें नहीं पता कि वह कहाँ है, या उसकी पत्नी और बच्चे कहाँ हैं। अगर कोई हमें उसके बारे में बता दे, तो हम उस व्यक्ति को बहुत सारा सोना देंगे।'

यूस्टैथयिस ने उनसे कहा:

'मैं उसे नहीं जानता, और न ही मैंने कभी प्लाकडिीज़ के बारे में सुना है। हालाँकि, मेरे स्वामनिो, मैं आपसे वनिती करता हूँ कि आप गाँव में आकर मेरी झोपड़ी में वशि्राम करें, क्योंकि मैं देख सकता हूँ कि आप और आपके घोड़े यात्रा से थके हुए हैं। तो मेरे साथ यहाँ वशि्राम करें, और फरि आप जसि व्यक्ति की तलाश में हैं, उसके बारे में आप कसिी ऐसे व्यक्ति से पूछ सकते हैं जो उसे जानता हो।'

सैनकिों ने यूस्टैथयिस की बात मानकर उसके साथ गाँव में चले गए; लेकनि उन्होंने उसे नहीं पहचाना; परन्तु उसने उन्हें तुरंत पहचान लयिा, यहाँ तक कि वह लगभग रो पड़ा, लेकनि उसने खुद को रोक लयिा। उस गाँव में एक दयालु व्यक्ति रहता था, जसिके घर में यूस्टैथयिस को आश्रय मलिा। उसने योद्धाओं को उस व्यक्ति के पास ले जाकर उससे आतथि्य देने और उन्हें भोजन कराने का अनुरोध कयिा।

उसने आगे कहा, 'जहाँ तक मेरी बात है, मैं उनकी मेहमाननवाज़ी पर जो कुछ भी आप खर्च करेंगे, उसके लिए मैं अपनी मेहनत से आपका हसिाब चुका दूँगा, क्योंकि ये लोग मेरे परचिति हैं।'

उस व्यक्ति ने, अपनी दयालुता से और यूस्टैथयिस के अनुरोध पर, अपने मेहमानों पर भरपूर आतथि्य लुटाया। और यूस्टाथयिस उनकी सेवा कर रहा था, उनके सामने भोजन लाकर परोस रहा था। ऐसा करते समय, उसके मन में अपना पूर्व जीवन आ गया—जब ये लोग, जनिकी वह अब सेवा कर रहा था, खुद भी इसी तरह उसकी सेवा करते थे—और, मानव स्वभाव की स्वाभावकि दुर्बलता के कारण, वह मुश्कलि से अपने आँसू रोक सका, लेकनि पहचान से बचने के लिए वह सैनकिों से छपि गया; कई बार वह झोपड़ी से बाहर नकिलता और थोड़ा रोकर अपने आँसू पोंछकर, तुरंत वापस अंदर चला जाता, और एक दास तथा एक साधारण ग्रामीण की तरह उनकी सेवा करता। हालाँकि, सैनकि बार-बार उसके चेहरे पर नज़रें गड़ाए हुए, धीरे-धीरे उसे पहचानने लगे और एक-दूसरे से फुसफुसाने लगे: 'यह आदमी प्लैकडिास जैसा दखिता है... क्या यह सच में वही है...?' और उन्होंने यह भी जोड़ा: 'हमें याद है कि प्लैकडिास की गर्दन पर एक गहरा घाव था, जो उसे युद्ध में लगा था। अगर इस आदमी को ऐसा घाव है, तो वह सचमुच खुद प्लाकडिास ही है।' उसकी गर्दन पर वह घाव देखकर, सैनकि तुरंत मेज़ से कूद पड़े, उसके पैरों पर गरि पड़े, उसे गले लगाना शुरू कर दयिा और खुशी से बहुत रोने लगे, उससे कहते हुए:

'आप प्लाकडिा हैं, जन्हिें हम ढूंढ रहे थे! आप राजा के प्रयि हैं, जसिके लिए वह इतने लंबे समय से शोक मना रहा था! आप रोमन कमांडर हैं, जसिके लिए सभी सैनकि शोक मना रहे हैं!'

तब यूस्टेथयिस को एहसास हुआ कि वह समय आ गया है जसिकी भवषि्यवाणी प्रभु ने उनसे की थी, और जसिमें उन्हें अपना पूर्व पद, महमिा और सम्मान फरि से प्राप्त करना था, और उन्होंने सैनकिों से कहा:

'मैं, मेरे भाइयो, वही हूँ जसिकी तुम तलाश कर रहे हो! मैं प्लैकडिा हूँ, जसिके साथ तुमने इतने लंबे समय तक हमारे दुश्मनों से लड़ाई लड़ी थी। मैं वह व्यक्ति हूँ जो कभी रोम का गौरव था, जसि वदिेशी डरते थे, जो तुम्हारे लिए प्रयि था, लेकनि अब—एक भखिारी, दीन-हीन और सभी के लिए अज्ञात!'

उनके बीच परस्पर बहुत आनंद हुआ, और उनके आँसू भी आनंद के थे। उन्होंने यूस्टाथयिस को उनके सेनापति के योग्य सुंदर वस्त्र पहनाए, उन्हें राजा का संदेश सौंपा, और वनिम्रतापूर्वक उनसे तुरंत राजा के पास जाने का आग्रह कयिा, कहते हुए:

'हमारे दुश्मन हम पर हावी होने लगे हैं, और आप जैसे बहादुर कोई नहीं है जो उन्हें हराकर भगा सके!'

यह सुनकर घर का स्वामी और उसके पूरे घर वाले चकित और हैरान रह गए। और पूरे गाँव में यह खबर फैल गई कि वहाँ एक महान व्यक्ति मिला है। सभी गाँव वाले एक बड़े चमत्कार की तरह घटनास्थल पर उमड़ पड़े, और उन्होंने राज्यपाल के वेश में सैनिकों से सम्मान ग्रहण कर रहे यूस्टैथियस को आश्चर्य से देखा। अंतियोकुस और अकाकियस ने लोगों को प्लाकडिा के कारनामों, उसकी बहादुरी, महिमा और कुलीनता के बारे में बताया। यह सुनकर कि यूस्टाथियस इतना बहादुर रोमन गवर्नर था, लोग चकित हो गए और कहने लगे: 'अरे, हमारे बीच कितना महान व्यक्ति रहता था, जो हमारे लिए एक भाड़े का सैनिक बनकर सेवा कर रहा था!' और वे उसके सामने जमीन पर सिर झुकाकर बोले:

'सर, आपने हमें अपने कुलीन जन्म और पद के बारे में क्यों नहीं बताया?'

प्लाकडिा के पूर्व स्वामी, जिनके घर में वह रह रहा था, उसके पैरों पर गिर पड़े और विनती करने लगे कि वह उसके अनादर के लिए उससे क्रोधित न हो। और उस गाँव के सभी निवासी इस विचार से लज्जित थे कि उन्होंने ऐसे महान व्यक्ति के साथ एक भाड़े के मजदूर, एक दास की तरह व्यवहार किया था। सैनिकों ने यूस्टाथियस को एक घोड़े पर बिठाया और रोम लौटते समय उसके साथ सवारी की, जबकि सभी गाँव वाले उसे बड़ी सम्मान के साथ काफी दूर तक साथ ले गए। यात्रा के दौरान, यूस्टाथियस ने सैनिकों से बातचीत की, और उन्होंने उससे उसकी पत्नी और बच्चों के बारे में पूछा। उसने उन्हें सब कुछ क्रम से बताया, कि उसके साथ क्या हुआ था, और उसकी दुर्भाग्य की कहानी सुनकर वे रो पड़े। बदले में, उन्होंने उसे बताया कि राजा उसके लिए कितना दुखी था, और सिर्फ राजा ही नहीं, बल्कि उसका पूरा दरबार और सैनिक भी। इस तरह की बातचीत करते हुए, वे कुछ दिनों बाद रोम पहुँचे, और सैनिकों ने राजा को घोषणा की कि उन्हें प्लासडिस मिल गया है – और यह भी बताया कि ऐसा कैसे हुआ। राजा ने अपने सभी कुलीनों के साथ प्लाकडिास का सम्मानपूर्वक स्वागत किया, और खुशी से उसे गले लगा लिया, तथा उससे उसकी सभी विपत्तियों के बारे में पूछा। यूस्टाथियस ने राजा को वह सब कुछ बताया जो उसके, उसकी पत्नी और बच्चों के साथ हुआ था, और जो भी उसे सुन रहे थे, वे गहराई से भावुक हो गए। इसके बाद, राजा ने यूस्टैथियस को उसके पूर्व पद पर बहाल कर दिया और उस पर शुरुआत में जितनी संपत्ति थी, उससे भी अधिक संपत्ति प्रदान की। पूरे रोम में यूस्टैथियस की वापसी पर खुशी का माहौल था। राजा ने उससे बर्बर लोगों के खिलाफ युद्ध करने और अपनी वीरता से रोम को उनके आक्रमण से बचाने के लिए कहा, साथ ही कुछ शहरों पर कब्जा करने का बदला उनसे लेने के लिए भी कहा। सभी सैनिकों को इकट्ठा करने के बाद, यूस्टैथियस को एहसास हुआ कि ऐसे युद्ध के लिए वे पर्याप्त नहीं थे; इसलिए, उन्होंने राजा से प्रस्ताव रखा कि उनके राज्य के सभी प्रांतों में आदेश भेजे जाएं ताकि किस्बों और गांवों से सैन्य सेवा के लिए उपयुक्त युवा पुरुषों को इकट्ठा किया जाए, और फिर उन्हें रोम भेजा जाए; और ऐसा ही किया गया। राजा ने आदेश जारी किए, और युद्ध के लिए उपयुक्त बहुत सारे युवा और मजबूत पुरुष रोम में इकट्ठा किए गए। उनमें यूस्टेथियस के दो बेटे, अगैपियस और थियोपस्टिस भी थे, जो उस समय तक वयस्क हो चुके थे और सुंदर चेहरे, भव्य कद-काठी और मजबूत शरीर वाले थे। जब उन्हें रोम लाया गया और राज्यपाल ने उन्हें देखा, तो उसे वे बहुत पसंद आए, क्योंकि उसकी अपनी पितृसुलभ प्रकृति उसे बच्चों की ओर खींचती थी, और वह उनके प्रति गहरा स्नेह महसूस करता था। हालाँकि वह यह नहीं जानता था कि वे उसके बच्चे थे, फिर भी वह उनसे अपने बच्चों की तरह ही प्यार करता था, और वे हमेशा उसके साथ रहते थे और एक ही मेज पर उसके साथ बैठते थे, क्योंकि वे उसके दिल के बहुत करीब थे। इसके बाद, यूस्टेथियस ने बर्बर लोगों के खिलाफ़ युद्ध किया और मसीह की शक्ति से उन्हें हरा दिया। उसने न केवल उनसे छीने गए शहरों और क्षेत्रों को वापस लिया, बल्कि उसने पूरे शत्रु क्षेत्र पर विजय प्राप्त की और उनकी सेना को बुरी तरह परास्त कर दिया। अपने प्रभु की शक्ति से सुदृढ़ होकर, उसने पहले से भी अधिक वीरता दिखाई और एक ऐसी शानदार विजय हासिल की जो उसने पहले कभी नहीं प्राप्त की थी।

जब युद्ध समाप्त हो गया, और यूस्टेथियस पहले ही शांतिपूर्वक अपने देश लौट रहे थे, तो वे संयोग से नदी के किनारे एक मनोरम स्थान पर बसे एक गाँव में पहुँच गए। चूंकि यह जगह रुकने के लिए उपयुक्त थी, यूस्टाथियस अपने सैनिकों के साथ तीन दिन वहीं रुका: क्योंकि ईश्वर को यह प्रसन्न था कि उनका विश्वासयोग्य सेवक अपनी पत्नी और बच्चों से फिर से मिल जाए, और जो बिछड़ गए थे वे एक बार फिर से एक साथ इकट्ठा हो जाएं। उसकी पत्नी उसी गाँव में रहती थी, जहाँ उसके पास एक बगीचा था जिससे वह बड़ी मुश्किल से अपना गुज़ारा करती थी। ईश्वर की व्यवस्था से, अगपियस और थियोपस्टिस, अपनी माँ के बारे में कुछ भी न जानते हुए, ने अपनी माँ के बगीचे के पास अपना तम्बू लगा लिया; एक ही गाँव में पले-बढ़े होने के कारण, वे एक ही तम्बू में रहते थे और एक ही गर्भ के भाइयों की तरह एक-दूसरे से प्रेम करते थे। वे नहीं जानते थे कि वे खून के भाई थे; फिर भी, अपने करीबी रिश्ते से अनजान होने के बावजूद, वे एक-दूसरे के प्रति भाईचारे का प्यार रखते थे। दोनों अपनी माँ के बगीचे के पास, उस जगह से बहुत दूर नहीं जहाँ राज्यपाल का शिविर

स्थिति था, आराम करने के लिए लेट जाते थे। एक दिन, दोपहर के आसपास, उनकी माँ अपने बगीचे में काम कर रही थीं और उन्होंने अगापियस और थियोपस्टिस के बीच एक बातचीत सुन ली, जो उस समय अपने तंबू में आराम कर रहे थे। उनकी बातचीत इस प्रकार थी: वे एक-दूसरे से अपनी-अपनी उत्पत्ति के बारे में पूछ रहे थे, और बड़े वाले ने कहा:

'मुझे धुंधला सा याद है कि मेरे पिता रोम में एक वोइवोड थे, और मुझे नहीं पता कि वह मेरी माँ के साथ उस शहर को क्यों छोड़ गए, मुझे और मेरे छोटे भाई को अपने साथ ले गए (क्योंकि हम दो थे)।' मुझे यह भी याद है कि हम समुद्र तक पहुँचे और एक जहाज पर चढ़े। फिर, समुद्र में रहते हुए, जब हम तट पर पहुँचे, तो हमारे पिता जहाज से उतर गए, और हम और मेरा भाई उनके साथ चले गए, जबकि हमारी माँ, किसी कारण से जो मुझे नहीं पता, जहाज पर ही रहीं। मुझे यह भी याद है कि मेरे पिता उसके लिए बहुत रोए; हम भी उनके साथ रोए, और वह रोते हुए अपने रास्ते पर आगे बढ़ते रहे। जब हम नदी पर पहुँचे, तो मेरे पिता ने मुझे किनारे पर उतारा, जबकि वह मेरे छोटे भाई को अपने कंधे पर लादकर दूसरी तरफ के किनारे पर ले गए। जब वह उसे पार करके मेरी ओर वापस आ रहा था, तो एक शेर दौड़ता हुआ आया, मुझे पकड़ लिया और रेगिस्तान में ले गया; लेकिन कुछ चरवाहों ने मुझे उससे बचा लिया, और मैं उसी गाँव में पला-बढ़ा जिसे आप जानते हैं।

तब मेरा छोटा भाई, कूदकर खड़ा हो गया, और खुशी के आँसुओं से उसकी गर्दन पर बाहें डालते हुए बोला:

'सचमुच, तुम मेरे भाई हो, क्योंकि मुझे भी वह सब कुछ याद है जो तुमने मुझे बताया है, और मैंने खुद देखा था जब शेर तुम्हें उठाकर ले गया था; जबकि उस समय एक भेड़िया मुझे उठाकर ले गया था, लेकिन किसानों ने मुझे उससे बचा लिया था।'

अपना आपसी नाता पहचानकर, भाई अत्यंत प्रसन्न हो गए और एक-दूसरे को गले लगाकर और चूमकर आनंद के आँसू बहाने लगे। और उनकी माँ, यह बातचीत सुनकर, स्तब्ध रह गईं और आह भरकर आँखें उठाकर स्वर्ग की ओर देखने लगीं, क्योंकि उन्हें यकीन हो गया था कि वे वास्तव में उनके बच्चे ही हैं, और अपने सभी कड़वे दुखों के बाद उनके दिल को मिठास और खुशी महसूस हुई। हालाँकि, एक समझदार महिला होने के नाते, वह और अधिक निश्चित सबूत के बिना उनसे मिलने और अपनी पहचान बताने की हिम्मत नहीं कर सकी, क्योंकि वह बेसहारा थी और फटेहाल कपड़े पहने हुए थी, जबकि वे प्रतिष्ठित और बहादुर योद्धा थे। इसलिए उसने सेनापति के पास जाकर उसकी सेना के साथ रोम लौटने की अनुमति माँगने का निश्चय किया: उसे आशा थी कि वहाँ अपने बेटों के सामने अपनी पहचान बताना उसके लिए आसान होगा, और यह भी पता चल जाएगा कि उसका पति जीवित है या नहीं। वह सेनापति के पास गई, उसके सामने खड़ी हुई, उसे प्रणाम किया और कहा:

'मैं आपसे विनती करती हूँ, महोदय, कि आप आदेश दें कि मैं आपकी रेजिमेंट के साथ रोम जा सकूँ; क्योंकि मैं एक रोमन महिला हूँ और इस भूमि में विदेशियों द्वारा कैद कर ली गई थी—अब सोलह साल हो गए हैं; और अब, यद्यपि मैं आज़ाद हूँ, मैं एक विदेशी भूमि में भटक रही हूँ और अत्यधिक गरीबी झेल रही हूँ।'

यूस्टैथियस ने अपने दिल की अच्छाई के कारण, तुरंत उसकी विनती मान ली और उसे सुरक्षित रूप से अपने देश लौटने की अनुमति दे दी। फिर वह महिला, राज्यपाल को देखकर, पूरी तरह से आश्वस्त हो गई कि वही उसके पति हैं, और वह आश्चर्य से वहीं खड़ी रह गई, मानो किसी तंद्रा में हो। लेकिन यूस्टैथियस अपनी पत्नी को पहचान नहीं पाया। उसने, जैसा कि पहले उसने एक के बाद एक दुख झेला था, अचानक एक के बाद एक खुशियाँ पाकर, मन ही मन एक आह भरकर ईश्वर से प्रार्थना की और अपने पति के सामने खुद को प्रकट करने और उन्हें बताने से डर रही थी कि वह उसकी पत्नी है; क्योंकि वह अब बड़ी भव्यता में था और दरबारियों की भीड़ से घिरा हुआ था, जबकि वह सबसे नीचली भिखारी जितनी दरिद्र थी। और वह उसके तंबू से निकल आई, प्रभु और अपने ईश्वर से प्रार्थना करते हुए कि वे स्वयं ही उसके पति और बच्चों को उसे पहचानने का प्रबंध करें। फिर उसने एक अधिक उपयुक्त क्षण चुना, एक बार फिर यूस्टैथियस के तंबू में प्रवेश किया, और उसके सामने खड़ी हो गई। और उसने, उसे देखते हुए, पूछा:

'बड़ी बुढ़िया, तू मुझसे और क्या चाहती है?'

वह उसके सामने ज़मीन पर झुक गई और कहा:

उसने उससे कहा: 'मैं आपसे विनती करती हूँ, मेरे स्वामी, कि एक बात पूछने की इच्छा रखने के लिए अपनी दासी पर क्रोध न करें। कृपया धैर्य रखें और मेरी बात सुनें।'

उसने उससे कहा:

'ठीक है, बोलो।'

तब उसने अपना भाषण इस प्रकार शुरू किया:

क्या तुम प्लाकडिा नहीं हो, जनि्हें तुम्हारे पवत्रि बपतस्मिा में यूस्टैथयिस नाम दयिा गया था? क्या तुमने हरिण की सींगों के बीच क्रूस पर मसीह को नहीं देखा? क्या तुमने प्रभु परमेश्वर के लिए अपनी पत्नी और दो बच्चों, अगपयिस और थयिोपस्टिस के साथ रोम नहीं छोड़ा? क्या एक अजनबी ने तुम्हारी पत्नी को जहाज पर तुम्हारे ही सामने नहीं ले गया था? स्वर्ग में मेरा वशि्वासयोग्य साक्षी स्वयं प्रभु मसीह हैं, जनिके लिए मैंने बहुत कष्ट सहे हैं, कि मैं तुम्हारी पत्नी हूँ, और मसीह की कृपा से मैं कलंक से बची रही; क्योंकि वह अजनबी, उसी क्षण जब उसने मुझे तुमसे छीन लयिा, परमेश्वर के क्रोध से मार गरिाया गया, जबकि मैं पवत्रि रही, और अब मैं संकट में और भटक रही हूँ।

यह सब सुनकर, यूस्टैथयिस जैसे नींद से जागा और तुरंत अपनी पत्नी को पहचान लयिा; वह उठा और उसे गले लगा लयिा, और दोनों अत्यधकि आनंद के मारे बहुत रोए। और यूस्टैथयिस ने कहा:

'हम अपने उद्धारकर्ता मसीह की स्तुति और धन्यवाद करें, जनि्होंने अपनी दया से हमें नहीं छोड़ा, बल्कि ठीक वैसे ही कयिा जैसा उन्होंने वादा कयिा था—हमारे दुःखों के बाद हमें सांत्वना देने के लिए!'

और आनंद के अनेक आँसुओं के साथ उन्होंने ईश्वर का धन्यवाद कयिा। इसके बाद, जब यूस्टाथयिस रोना बंद कर चुका था, तो उसकी पत्नी ने उससे पूछा:

'तो फरि हमारे बच्चे कहाँ हैं?'

उसने गहरी आह भरते हुए उत्तर दयिा:

'जंगली जानवरों ने उन्हें खा लयिा है।'

तब उसकी पत्नी ने उससे कहा:

'दुखी न हों, मेरे स्वामी! ईश्वर ने हमें संयोग से एक-दूसरे को खोजने में मदद की है; तो वह हमें हमारे बच्चों को खोजने में भी मदद करेगा।'

उसने उससे कहा:

'क्या मैंने तुम्हें नहीं बताया था कि जंगली जानवरों ने उन्हें खा लयिा था?'

तब उसने उसे वह सब कुछ बताना शुरू कयिा जो उसने कल अपने बगीचे में काम करते समय सुना था – तंबू में दो सैनकिों के बीच हुई सारी बातें, जसिसे उसे पता चला था कि वे उनके बेटे थे।

यूस्टैथयिस ने तुरंत उन योद्धाओं को बुलाया और उनसे पूछा:

'तुम्हारी पृष्ठभूमि क्या है? तुम कहाँ पैदा हुए थे? तुम कहाँ पले-बढ़े?'

तब उन दोनों में से बड़े ने उत्तर दयिा:

'महाशय, जब हमने अपने माता-पति को खोया तब हम बहुत छोटे थे और इसलिए हमें अपने बचपन की बहुत कम याद है। हालाँकि, हमें यह याद है कि हमारे पति भी आप की तरह एक रोमन कमांडर थे, लेकनि हमें नहीं पता कि हमारे पति के साथ क्या हुआ, और न ही यह कि वह हमारी माँ और हम दोनों के साथ रात में रोम क्यों छोड़ गए; और हमें यह भी नहीं पता कि जब हम जहाज से समुद्र पार कर रहे थे, तो हमारी माँ उस जहाज पर ही क्यों रह गईं। और हमारे पति, उनके लिए रोते हुए, हमारे साथ एक नदी तक आए। जबकि वह हमें एक-एक करके नदी पार ले जा रहा था और नदी के बीच में था, हमें जंगली जानवरों ने छीन लयिा: मुझे एक शेर ने, और मेरे भाई को एक भेड़यिे ने। लेकनि हम दोनों जानवरों से बच गए: क्योंकि मुझे चरवाहों ने बचाया और पाला, और मेरे भाई को कसिानों ने।

यह सुनकर, यूस्टैथयिस और उसकी पत्नी ने अपने बच्चों को पहचान लयिा और, उन्हें अपनी बाहों में भरकर, बहुत देर तक रोए। और यूस्टैथयिस के शविरि में बहुत आनंद हुआ, ठीक वैसे ही जैसे एक बार मस्रि में हुआ था जब यूसुफ के भाई उसे पहचान गए थे (उत्पत्ति 45:1–15)। सभी रेजमिेंटों में यह खबर फैल गई कि उनके कमांडर की पत्नी और बच्चे मलि गए हैं, और सभी सैनकि खुशी से एक साथ इकट्ठा हो गए, और पूरी सेना में बहुत उत्सव मना। वे अपनी जीत पर जतिना आनंदति हुए, उससे कहीं ज्यादा इस खुशी की घटना पर आनंदति हुए। इस प्रकार परमेश्वर ने अपने वशि्वासयोग्य सेवकों को सांत्वना दी, क्योंकि वह *'प्रभु मारता भी है और जलिाता भी है... प्रभु गरीब बनाता और धनी करता है'* (1 शमूएल 2:6–7), दुःख में गरिाता है और आनंद व प्रसन्नता तक उठाता है। और तब यूस्टाथयिस दाऊद से कह सकता था: *'आओ, सुनो, हे परमेश्वर के सब भयमानों, और मैं तुम्हें बताऊँगा कि उसने मेरी आत्मा के लिए क्या कयिा है।* मैं उसकी कृपा को याद करूँगा जो उसने मुझ पर दखिाई है। *यहोवा का दाहनिा हाथ ऊँचा कयिा जाता है; यहोवा का दाहनिा हाथ बड़े काम करता है!'* (भजन संहति 65:16, 10:16, 117:16)।

जब यूस्टैथियिस युद्ध से लौट रहा था, दो कारणों से प्रसन्न—अपनी विजय और अपनी पत्नी व बच्चों की खोज—रोम पहुँचने से पहले ही सम्राट ट्राजन की मृत्यु हो गई; उनके स्थान पर हैड्रियिन आया, जो अत्यंत क्रूर था, सज्जन लोगों से घृणा करता था और धर्मपरायणों का उत्पीड़न करता था। जब यूस्टैथियिस रोम में बड़े वैभव के साथ प्रवेश किया, रोमन कमांडरों की प्रथा के अनुसार, अपने साथ कई बंदी और युद्ध के समृद्ध लूट के सामान के साथ, सम्राट और सभी रोमनों ने उसका सम्मानपूर्वक स्वागत किया[6353] , और उसकी वीरता पहले से भी अधिक महिमामय हो गई, और हर किसी ने उसे पहले से कहीं अधिक सम्मान दिया। लेकिन परमेश्वर, जो नहीं चाहते कि उनके सेवकों को इस अस्थिर और क्षणिक संसार में व्यर्थ और अस्थायी सम्मान से सम्मानित और गौरवान्वित किया जाए, क्योंकि उन्होंने स्वर्ग में उनके लिए शाश्वत और अविनाशी सम्मान और महिमा तैयार की है, – यूस्टाथियिस को शहादत का मार्ग दिखाया, क्योंकि जल्द ही उन्होंने उसे फिर से अपमान और दुख भेजा, जिसे उसने मसीह के लिए आनंदपूर्वक सहन किया। दुष्ट हैड्रियिन अपने शत्रुओं पर विजय की कृतज्ञता स्वरूप राक्षसों को बलिदान चढ़ाना चाहता था। जब वह अपने कुलीनों के साथ मूर्तिपूजक मंदिर में प्रवेश किया, तो यूस्टाथियिस उनके पीछे नहीं गया, बल्कि बाहर ही ठहरा रहा। सम्राट ने उससे पूछा:

'तुम हमारे साथ मंदिर में प्रवेश करके देवताओं की पूजा क्यों नहीं करना चाहते? निस्संदेह तुम्हें, किसी और से बढ़कर, उनका धन्यवाद करना चाहिए, क्योंकि उन्होंने न केवल तुम्हें युद्ध में सुरक्षित रखा और तुम्हें विजय प्रदान की, बल्कि तुम्हें अपनी पत्नी और अपने बच्चों को खोजने में भी मदद की।'

यूस्टैथियिस ने उत्तर दिया:

'मैं एक ईसाई हूँ और अपने एकमात्र ईश्वर, यीशु मसीह को जानता हूँ; मैं उनका सम्मान करता हूँ, उनका धन्यवाद करता हूँ और उनकी आराधना करता हूँ। क्योंकि उन्होंने मुझे सब कुछ दिया है: स्वास्थ्य, विजय, एक पत्नी और बच्चे। लेकिन मैं बहरे, गूंगे और शक्तिहीन मूर्तियों की पूजा नहीं करूँगा।'

और यूस्टेथियिस घर चला गया। राजा आग-बबूला हो गया और यह सोचने लगा कि वह अपने देवताओं का अपमान करने के लिए यूस्टेथियिस को कैसे दंड दे सकता है। सबसे पहले, उसने उसे राज्यपाल के पद से हटा दिया और उसे अपनी पत्नी और बच्चों के साथ एक आम आदमी की तरह अदालत में बुलाया, और उन्हें मूर्तियों को बलिदान चढ़ाने के लिए कहा; लेकिन, जब वह उन्हें ऐसा करने के लिए मना नहीं सका, तो उसने उन्हें जंगली जानवरों द्वारा नोच-नोच कर खाने की सज़ा सुना दी। और इस प्रकार संत यूस्टैथियिस, वह गौरवशाली और पराक्रमी योद्धा, अपनी पत्नी और बेटों के साथ मृत्युदंड के लिए सर्कस में गए। फिर भी वह इस अपमान से लज्जित नहीं हुआ, न ही उसने मसीह के लिए मृत्यु से डर महसूस किया, जिसकी वह लगन से सेवा करता था, और सभी के सामने उनके पवित्र नाम का अंगीकार करता था। उन्होंने अपनी पवित्र पत्नी और अपने बच्चों दोनों को बल दिया, ताकि वे सभी के जीवनदाता प्रभु के लिए मृत्यु से न डरें; और वे एक भोज के लिए जाते हुए अपनी मृत्यु की ओर बढ़े, एक-दूसरे को भविष्य के पुरस्कार की आशा से बल देते हुए। उन पर जानवर छोड़े गए, लेकिन उन्होंने उन्हें छुआ तक नहीं; क्योंकि जैसे ही कोई जानवर उनके पास आता, वह तुरंत मुड़ जाता और उनके सामने अपना सिर झुका लेता। जानवरों का क्रोध शांत हो गया, लेकिन राजा और भी अधिक क्रोधित हो गया और उसने उन्हें जेल में डालने का आदेश दिया। अगले दिन, उसने एक कांसे के बैल को आग में तपाकर लाल कर देने और संत यूस्टाथियिस को उनकी पत्नी और बच्चों सहित उसमें फेंक देने का आदेश दिया[6354] । लेकिन यह लाल-तपा हुआ बैल

[6353] अर्थात्, रोमन रीति के अनुसार प्लासडिस के लिए एक तथाकथित विजय-जुलूस—या एक भव्य, शानदार स्वागत, जैसा कि महिमा से भूषित एक कमांडर के लिए उपयुक्त है—का आयोजन किया गया था।

[6354] मेट्रोपॉलिटिन मकारियोस की *ग्रेट चेती-मिनेई* यहाँ निम्नलिखित विवरण जोड़ती है, जो सेंट डेमेट्रियिस ऑफ रोस्टोव की रचना में नहीं मिलते हैं। जैसे ही पवित्र शहीदों ने अपने भयानक निष्पादन के स्थान के पास पहुँचे, उन्होंने स्वर्ग की ओर अपने हाथ उठाए और प्रभु से एक भक्तिपूर्ण प्रार्थना की, मानो कोई स्वर्गीय दर्शन देख रहे हों, जैसा कि उनकी प्रार्थना के आरंभिक शब्दों से स्पष्ट है। यह प्रार्थना इस प्रकार थी: 'हे सेनाओं के प्रभु परमेश्वर, जो सभी के लिए अदृश्य परन्तु हमसे लिए दृश्यमान हैं! जब हम आपसे प्रार्थना करते हैं तो हमारी प्रार्थना सुनें, और हमारी अंतिम प्रार्थना स्वीकार करें। यहाँ हम एकत्रित हुए हैं, और आपने हमें अपने संतों का भाग प्रदान किया है; जैसे बेबीलोन में आग में डाले गए तीन युवकों को आपने अस्वीकार नहीं किया, वैसे ही अब हमें इस आग में मरने का वरदान दें, ताकि आप कृपा करके हमें एक प्रसन्नतादायक बलिदान के रूप में स्वीकार करें। इसलिए, हे प्रभु परमेश्वर, उन सभी को जो हमें याद करते हैं, स्वर्ग के राज्य में एक हिस्सा प्रदान करें; और इस आग के प्रचंड क्रोध को ठंडक में बदल दें, और यह अनुग्रह करें कि हम इसमें ही समाप्त हो जाएँ। हम और भी प्रार्थना करते हैं, हे प्रभु: यह अनुग्रह करें कि हमारे शरीर अलग न हों, बल्कि एक साथ ही पड़े रहें।' इस प्रार्थना के उत्तर में, स्वर्ग से एक दिव्य स्वर गूँजा: 'जैसा तुमने माँगा है, वैसा ही हो! और तुम इससे भी अधिक प्राप्त करोगे, क्योंकि तुमने कई परीक्षाएँ सहन की हैं और तुम पर विजय नहीं मिली है। शांति से जाओ, अपने दुखों के लिए अपनी विजय की माला प्राप्त करो, और हमेशा के लिए विश्राम करो।'

पवत्रि शहीदों के लिए वैसा ही था जैसा ओस से ठंडा कयिा गया खलदीय भट्ठा पवत्रि युवकों के लिए था (दानयिेल 3:21)। बछड़े के अंदर रहते हुए, पवत्रि शहीदों ने प्रार्थना करने के बाद, अपनी आत्माएँ ईश्वर को सौंप दीं और स्वर्ग के राज्य में प्रवेश कर गए। तीन दनि बाद, हैड्रयिन जले हुए शहीदों की राख देखने की इच्छा से बछड़े के पास गया; दरवाज़े खोलने पर, यातना देने वालों ने उनके शरीरों को पूरे और सुरक्षति पाया; उनके सरिों पर एक भी बाल झुलसा नहीं था, और उनके चेहरे सोए हुए लोगों की तरह थे, जो अद्भुत सुंदरता से दमक रहे थे। वहाँ मौजूद सभी लोगों ने पुकार लगाई:

'महान है ईसाई ईश्वर!'

राजा लज्जति होकर अपने महल लौट गया, और सभी लोगों ने उसकी दुष्टता के लिए उसकी नदिा की – कि उसने रोम के लिए इतने आवश्यक राज्यपाल को बेवजह मौत के घाट उतार दयिा था। हालाँकि, ईसाइयों ने पवत्रि शहीदों के सम्मानति शरीरों को लयिा और उन्हें उचति दफन दयिा[6355] , और परमेश्वर की महमिा की, जो अपने संतों में अद्भुत हैं, पति, पुत्र और पवत्रि आत्मा; उसे हम सभी की ओर से सम्मान, महमिा और आराधना मलि, अब और हमेशा और युगों-युगों तक। आमीन।

कॉन्टाकयिन, स्वर 2:

हे यूस्टाथयिस, मसीह के कष्टों का अनुकरण करके और उत्साह के साथ उनका प्याला पीकर, आप उनके सह-भागदिार और उनकी महमिा के सह-वारसि बने, और सर्व के परमेश्वर स्वयं से, स्वर्गीय दव्यि वर प्राप्त कयिा।

चेर्नविोव के राजकुमार, पवत्रि शहीदों माइकल और उनके बोयार थयिोडोर का दुख, जनि्होंने दुष्ट बटू के हाथों कष्ट सहे

20 सतिंबर को स्मरण कयिा जाता है

जब आप उथल-पुथल और युद्ध या अन्य वपित्तयिाँ देखें, तो यह न सोचें कि यह सब इस क्षणभंगुर दुनयिा में केवल एक सामान्य घटना है, या कि यह संयोग से उत्पन्न हुई है; बल्कि यह जान लें कि वपित्तयिों को सर्वशक्तमिान ईश्वर की इच्छा से हमारे पापों के कारण अनुमति दी जाती है, ताकि पापी होश में आएं और अपने रास्ते सुधार लें। पहले, प्रभु हमें पापयिों को छोटी-छोटी सज़ाओं से फटकारते हैं; लेकनि अगर हम अपने रास्ते नहीं सुधारते हैं, तो वह हम पर और भी बड़ी सज़ाएँ भेजते हैं, जैसा उन्होंने एक बार इस्राएलयिों पर कयिा था। क्योंकि प्रभु ने उन लोगों पर क्या होने दयिा जनि्होंने मसीह की कोड़े की चाबुक से सुधारने से इनकार कर दयिा था? (यूहन्ना 2:15) – 'और *उन्हें लोहे की छड़ी से तोड़ डालना,'* उसने कहा (भजन संहति 2:9)। प्रारंभ में प्रभु जो मामूली दंड अनुमति देते हैं, वे इस प्रकार हैं: वद्रिोह, अकाल, अचानक मृत्यु, गृहयुद्ध और इसी तरह की अन्य चीजें। लेकनि यदि ऐसी सजाएँ पापयिों को होश में नहीं लाती हैं, तो प्रभु उन पर वदिेशी जनजातयिों द्वारा एक क्रूर और दुखद आक्रमण भेजता है, ताकि, कम से कम इस महान वपित्ति में, लोग होश में आकर अपने दुष्ट मार्गों से मुड़ जाएँ – जैसा कि भवषि्यवक्ता ने कहा: *'जब उसने उन्हें मार डाला, तब उन्होंने उसे ढूँढा'* (भजन संहति 77:34)। हमारे साथ, हमारी संपूर्ण रूसी भूमि के साथ भी ऐसा ही हुआ। जब हमने अपने दुष्ट मार्गों से सर्वदयालु ईश्वर की भलाई को उकसाया और उनकी दया का गंभीर रूप से अपमान कयिा, फरि भी पश्चाताप करने, बुराई से दूर होने और भलाई करने से इनकार कर दयिा – तब प्रभु ने अपने धर्मी क्रोध में हम पर क्रोध कयिा और हमारी अधर्मों के लिए हमें सबसे कठोर दंड देने की इच्छा की। और इस प्रकार उन्होंने तातार नामक नास्तकि और क्रूर बर्बर लोगों को, जनिका नेतृत्व उनके सबसे दुष्ट और कानूनवहिीन राजा बटू[6356] कर रहा था, हम पर आक्रमण करने की अनुमति

[6355] संत यूस्टेथयिस और उनके परविार के अवशेष रोम में उनके नाम पर बने चर्च में रखे गए हैं।

[6356] बाटू – महान चंगेज खान का पोता, तातारों का खान। बाटू ने वोल्गा नदी के कनिारे अपना दरबार स्थापति कयिा, और अपनी राजधानी का नाम 'सरay' रखा। यहाँ उसका हॉर्ड (हॉर्ड – एक तातार शविरि), जसिे गोल्डन हॉर्ड या कपिचक हॉर्ड के नाम से जाना जाता था, ने डेरा डाला। लेकनि बटू स्वयं एक संप्रभु शासक नहीं था: वह, बदले में, चंगेज के उत्तराधकिारी, ग्रेट खान के अधीन था, जो मध्य एशयिा के रेगस्तिानों में ग्रेट होर्ड के साथ घूमता था, जहाँ कई रूसी राजकुमारों ने ग्रेट खान को श्रद्धांजलि देने के लिए यात्रा की।

दे दी। असंख्य की संख्या में रूसी भूमि पर आक्रमण करते हुए[6357] , उन्होंने वफादार रूसी राजकुमारों को हराया और उनकी सेना को कुचल दिया; उन्होंने सभी शहरों को लूट लिया और तलवार और आग से रूसी भूमि को उजाड़ दिया, क्योंकि कोई भी उन धर्महीन दलों का विरोध नहीं कर सकता था, जिनके हवाले परमेश्वर ने हमें हमारे पापों के कारण कर दिया था, वही जिसने एक बार भविष्यवक्ता के माध्यम से कहा था: *'यदि तुम इच्छुक और आज्ञाकारी हो, तो तुम इस देश की अच्छी वस्तुएँ खाओगे; परन्तु यदि तुम इनकार करोगे और विद्रोह करोगे, तो तलवार तुम्हें खा जाएगी'* (यशायाह 1:19–20)। तलवार और कैद से बच निकले ईसाइयों ने पहाड़ों और दुर्गम रेगिस्तानों में शरण ली; और उस समय रूसी की सारी भूमि एक दुखद दृश्य प्रस्तुत कर रही थी: जहाँ कभी लोग रहते थे - शहर और गाँव - वे सुनसान पड़े थे, जबकि जहाँ कभी जंगली जानवर रहते थे, वहाँ अब लोगों ने बसेरा किया, ताकि वे बर्बरों से सुरक्षा की तलाश कर सकें।

[6358]उस समय धर्मनिष्ठ और सदा-स्मरणीय माइकल रहते थे, जो चेरनिगोव के राजकुमार थे और वेसेवोल्द चेरम्नी के पुत्र थे। अपनी युवावस्था से ही वे एक सदाचारी जीवन के लिए प्रसिद्ध थे; मसीह से प्रेम करने के बाद, उन्होंने पूरे दिल से उनकी सेवा की – और हर कोई राजकुमार की दयालुता को देख सकता था: उनकी नम्रता, विनम्रता, सभी के प्रति शिष्टाचार, और गरीबों के प्रति दया। प्रार्थना और उपवास के द्वारा हमेशा ईश्वर को प्रसन्न करते हुए, और हर प्रकार के पुण्य कार्यों से अपनी आत्मा को सजाते हुए, राजकुमार माइकल ने अपने सृष्टिकर्ता, ईश्वर के लिए अपनी आत्मा को एक सुंदर निवास स्थान बना दिया।

इस धर्मनिष्ठ राजकुमार का थियोडोर नाम का एक प्रिय बोयार था, जो उतना ही सदाचारी था जितना कि वह स्वयं था; राजकुमार माइकल ने दुष्ट बटू के हाथों उसके साथ मिलकर कष्ट सहे और मसीह के लिए अपना जीवन बलिदान कर दिया।

जब विश्वासपात्र और मसीह-प्रेमी माइकल कीव के प्रिंसिपिल्टी पर शासन कर रहे थे, तो दुष्ट बटू ने कीव शहर का निरीक्षण करने के लिए अपने तातारों को भेजा। दूत कीव शहर की भव्यता और सुंदरता को देखकर चकित थे, और बटू के पास लौटने पर उन्होंने इस प्रसिद्ध शहर के बारे में बताया। तब बटू ने फिर से माइकल के पास दूत भेजे, ताकि वे चापलूसी करके राजकुमार को अपनी इच्छा से उसके सामने आत्मसमर्पण करने के लिए मना सकें। धर्मपरायण राजकुमार माइकल को एहसास हो गया कि तातार शहर पर कब्जा करने और उसे बर्बाद करने की साजिश रच रहे थे: राजकुमार ने पहले सुना था कि ये क्रूर बर्बर लोग उन लोगों को भी निर्दयता से मार डालते थे जो स्वेच्छा से आत्मसमर्पण करते थे, और इसलिए उन्होंने बटू के दूतों को मौत की सजा देने का आदेश दिया। थोड़ी ही देर बाद, माइकल को एक विशाल टाटार सेना के आने की सूचना मिली, जो टिड्डियों की तरह, बड़ी संख्या में (क्योंकि उसमें 600,000 योद्धा थे), रूसी भूमि पर आक्रमण कर दिया और उसके कलिबंद शहरों पर कब्जा कर लिया। यह समझते हुए कि कीव आगे बढ़ रहे दुश्मनों के सामने नहीं टिक सकता, राजकुमार माइकल, बोयार थियोडोर के साथ, अपने देश के लिए सहायता मांगने के लिए हंगरी भाग गए[6359] । ऐसी कोई सहायता न मिलने पर, माइकल कुछ समय तक एक विदेशी भूमि में भटकता रहा; *'एक क्षण के लिए अपना आप छिपा लो, जब तक क्रोध समाप्त न हो जाए'*[6360] (यशायाह 26:20)।

राजकुमार माइकल के कीव से प्रस्थान के बाद, अन्य रूसी राजकुमारों ने कीव के प्रिंसिपिल्टी पर शासन किया; हालाँकि, वे भी दुष्ट बटू से कीव की रक्षा करने में असमर्थ थे। अपनी पूरी सेना के साथ पहुँचकर, बटू ने कीव, चेर्निहिव और अन्य कलिबंद शहरों और प्रिंसिपिल्टी पर कब्जा कर लिया; उन सभी को आग और तलवार से बुरी तरह तबाह कर दिया गया। – यह दुनिया की सृष्टि के 6748वें वर्ष में, और मसीह के जन्म के 1240वें वर्ष में हुआ। – तब मसीह-द्वेषी शत्रुओं के हाथों प्रसिद्ध और गौरवशाली शहर कीव को पूरी तरह से उजाड़ दिया गया; कुख्यात लोगों की तलवार से

[6357] रूसी भूमि पर यह तातार आक्रमण 1238 में हुआ था।

[6358] चेरनिगोव के राजकुमार वसेवोलॉड, उपनाम चेरमनी, कीव के महा राजकुमार स्वयितोस्लाव वसेवोलोदोविच के पुत्र। 1210 से 1214 तक, वसेवोलॉड ने कीव पर शासन किया; उनकी मृत्यु 1215 में हुई।

[6359] हंगरी (स्लाविक: उग्रिया) – एक साम्राज्य, ऑस्ट्रो-हंगेरियन राजशाही का प्रमुख भूभाग। चेरनिगोव के माइकल के पुत्र रोस्टिस्लाव का विवाह हंगरी के राजा बेला की बेटी से हुआ था। अपने रिश्तेदार में एक वफादार सहयोगी खोजने की उम्मीद में, राजकुमार माइकल ने राजा से अपने सामान्य दुश्मन के खिलाफ उठने के लिए उसके साथ हाथ मिलाने की विनती की, लेकिन वह न तो उसे और न ही उन अन्य लोगों को मनाने में सफल रहा जिनसे उसने मदद मांगी।

[6360] इस बिंदु पर, भविष्यवक्ता यशायाह गंभीर विपत्तियों को धैर्यपूर्वक सहने का आह्वान करते हैं, क्योंकि ये विपत्तियाँ लोगों की दुष्टता के लिए ईश्वर के क्रोध का परिणाम हैं। *भविष्यवक्ता कहते हैं, 'अपने आप को छिपा लो, थोड़ी देर के लिए, जब तक कि प्रभु का क्रोध तुम पर से न बीत जाए।'*

वशिष्टि नागरकि मारे गए – कुछ को मार डाला गया, जबकि अन्य को बंदी बना लिया गया। ईश्वर के भव्य मंदिरों का अपमान किया गया और उन्हें जला दिया गया, ताकि दाऊद के वचन पूरे हों: *'हे ईश्वर! अविश्वासियों ने आपकी विरासत पर आक्रमण किया है, आपके पवित्र मंदिर का अपमान किया है, और यरूशलेम को खंडहर में बदल दिया है; तेरे दासों के शव को आकाश के पक्षियों के खाने के लिए छोड़ दिया गया है, तेरे पवित्र लोगों के शरीर पृथ्वी के जानवरों के लिए; उन्होंने यरूशलेम के चारों ओर उनका लहू पानी की तरह बहाया है, और उन्हें □□ नाने वाला कोई नहीं था'* (भजन संहिता 78:1–3)।

उस समय विदेश यात्रा पर रहे राजकुमार माइकल ने रूसी भूमि में हो रही सभी घटनाओं को सुनकर अपने साथी विश्वासियों और अपनी भूमि की तबाही पर गहरा शोक व्यक्त किया। जल्द ही माइकल के ध्यान में आया कि दुष्ट ज़ार ने नगरवासियों—जो तलवार और कैद से बच गए थे—को आदेश दिया था कि वे अपने घरों में बिना किसी डर के रहें, बशर्ते वे उसे कर देते रहें। और कई रूसी राजकुमार, जो दूर-दराज और विदेशी भूमि में भाग गए थे, इस बात को सुनकर अपने मूल देश लौटने लगे। अधर्मी ज़ार को श्रद्धांजलि अर्पित करने के बाद, वे अपने सामंती राज्यों में बस गए और, बटू को कर देते हुए, अपने तबाह कस्बों में बस गए। धार्मिक राजकुमार माइकल भी अपने भटकने के बाद अपने बोयार थियोडोर और अपने सभी लोगों के साथ लौट आए, उन्होंने एक विदेशी भूमि में अजनबी होने के बजाय, अधर्मी ज़ार को कर देकर कम से कम अपनी सुनसान मातृभूमि में रहने को प्राथमिकता दी। सबसे पहले वह कीव पहुँचे, जहाँ उन्होंने पवित्र स्थानों को सुनसान पड़े और पेचेर्स्क चर्च, जो स्वर्ग के समान था[6361] , को धूल-चटा हुआ देखकर जोर-जोर से रोया। तब मिखाइल चेरनिगिव के लिए रवाना हो गया। और जैसे ही राजकुमार मिखाइल को अपनी यात्रा से वहाँ आराम करने का मौका मिला, तातारों ने, उसकी वापसी की खबर सुनकर, बटू से आकर उसे (साथ ही अन्य रूसी राजकुमारों को भी) अपने खान के पास बुलाना शुरू कर दिया, कहते हुए:

'तुम बटू की भूमि में उसकी अधीनता स्वीकार किए बिना नहीं रह सकते। इसलिए, जाओ और उसकी अधीनता स्वीकार करो और उसके सामंत बन जाओ – और फिर तुम अपने घरों में रह सकते हो।'

उस दुष्ट राजा की यह प्रथा थी: यदि कोई रूसी राजकुमार उनसे मिलने आता था, तो तातार जादूगर और पुरोहित उन्हें आग से गुज़रने के लिए मजबूर करते थे[6362] ; और यदि कोई राजकुमार अपने साथ ज़ार के लिए कोई उपहार लाता था, तो जादूगर उन सभी उपहारों का एक छोटा सा हिस्सा लेते थे और उसे बलिदान के रूप में आग में डाल देते थे। उन्हें आग से गुजारने के बाद, वे उन्हें सूर्य, एक झाड़ी और मूर्तियों की पूजा करने के लिए मजबूर करते थे - और केवल तभी उन्हें ज़ार के पास जाने दिया जाता था। रूस के कई राजकुमार, ज़ार के डर से और अपनी रियासतों को बनाए रखने के लिए, इन सब बातों का पालन कर लेते थे: वे आग से गुज़रते और मूर्तियों की पूजा करते थे – और बदले में ज़ार से वही सब कुछ प्राप्त करते थे जो वे माँगते थे।

यह सुनकर कि इस संसार के वैभव से मोहित होकर कई रूसी राजकुमारों ने मूर्तियों की पूजा की थी, धर्मनिष्ठ राजकुमार माइकल को इस पर गहरा दुख हुआ और प्रभु परमेश्वर के प्रति उत्साही होकर, उन्होंने सबसे अन्यायपूर्ण और विश्वासघाती व्यक्ति—ज़ार—के समक्ष जाने और निडर होकर मसीह की स्वीकारोक्ति करने तथा प्रभु के लिए अपना रक्त बहाने का संकल्प लिया। यह योजना बना लेने और अपने हृदय में आग लग जाने पर, माइकल ने अपने वफादार सलाहकार, बोयार थियोडोर को बुलाया और उसे अपने इरादे के बारे में बताया। वह, जो धर्मपरायण और आस्था में दृढ़ था, अपने स्वामी के निर्णय को मंजूरी दे दी और वादा किया कि वह मृत्यु तक उसका साथ नहीं छोड़ेगा, और उसके साथ मसीह के लिए अपना जीवन देगा। इस परामर्श के बाद, वे अपने उद्देश्य में अडिग रहते हुए, दृढ़ संकल्प कर चुके थे कि वे आगे

[6361] कीव-पेचेर्स्क लावरा में 'चर्च ऑफ द मदर ऑफ गॉड' की स्थापना 1073 में, बिशप माइकल के धर्मपरायण शासनाकाल के दौरान, पवित्र राजकुमार स्वियातोस्लाव यारोस्लाविच के दिनों में, सम्माननीय फादर्स एंथनी और थियोडोसियस ऑफ द केव्स द्वारा की गई थी। चर्च का निर्माण, जो विभिन्न चमत्कारों और संकेतों के बीच शुरू हुआ था, पूजनीय स्टीफन और पूजनीय निकोन के अधिष्ठातृत्व के दौरान जारी रहा, और अधिष्ठाता जॉन के अधीन पूरा हुआ। इस चर्च की सुंदरता और भव्यता ने अपने समकालीनों को चकित कर दिया। इसका आंतरिक भाग सोने और मोज़ेक से जगमगाता था और अपनी आइकनोग्राफी से आँखों को मोहित करता था। फर्श पर सुंदर पैटर्न में व्यवस्थित बहुरंगी पत्थरों का मोज़ेक बिछाया गया था। चर्च के ऊपरी हिस्सों पर सोने की परत चढ़ाई गई थी; मुख्य गुंबद पर लगाई गई क्रॉस शुद्ध सोने से बनी थी; इसलिए यह आश्चर्य की बात नहीं है कि समकालीन लोगों ने पेचेर्स्क चर्च को 'स्वर्ग-सा' बताया और कहा कि यह पूरी रूसी भूमि की महिमा और शोभा थी।

[6362] तातार पुजारी खान से मिलने आने वाले सभी लोगों को आग के रास्ते से ले जाते थे: उनका मानना था कि यह उनके शासक के पास आने वालों के दिलों में किसी भी बुरे इरादे को नष्ट कर देगा। उनकी मान्यताओं के अनुसार, आग 'सभी बुरी साज़िशों के लिए एक शोधन-स्थल' थी और यह छिपे हुए ज़हर की ताकत को भी खत्म कर देती थी।

बढ़कर यीशु मसीह की गवाही के लिए मरेंगे। तुरंत वे यह सूचित करने के लिए अपने आध्यात्मिक पिता, जॉन नामक व्यक्ति के पास गए। उसके निवास पर पहुँचने पर, राजकुमार ने कहा:

'पिताजी, मैं ज़ार के पास जाना चाहता हूँ, जैसे सभी रूसी राजकुमार करते हैं।'

स्वीकारकर्ता ने, दुख के साथ इन शब्दों को सुनकर और गहरी आह भरते हुए, कहा:

'कई राजकुमार वहाँ गए हैं और उन्होंने बटू की आज्ञा मानकर और आग, सूर्य और अन्य मूर्तियों के सामने सिर झुकाकर अपनी आत्मा खो दी है; और तुम, माइकल, यदि चाहो, तो शांति से जाओ, लेकिन मैं तुमसे विनती करता हूँ—उनकी मिसाल का अनुसरण मत करना और वह मत करना जो उन्होंने अपनी सांसारिक शक्ति को बनाए रखने के लिए किया: दुष्टों की आग से मत गुज़रना, न ही उनकी घृणित देवताओं की पूजा करना, क्योंकि हमारा ईश्वर एक है, यीशु मसीह; न ही किसी भी अपवित्र मूर्तिपूजा वाले भोजन का सेवन करो, कहीं तुम अपनी आत्मा को नष्ट न कर बैठो।

राजकुमार और बोयार ने उत्तर दिया:

'हम मसीह के लिए अपना रक्त बहाना चाहते हैं और उनके लिए अपनी आत्मा अर्पित करना चाहते हैं, ताकि हम उनके लिए एक प्रसन्नतादायक बलिदान बन सकें।'

यह सुनकर, यूहन्ना अपने हृदय में आनन्दित हुआ और, उन्हें एक आनंदित दृष्टि से देखते हुए, कहा:

'यदि तुम ऐसा करोगे, तो तुम धन्य होओगे, और इस अंतिम पीढ़ी में तुम्हें नव-प्रकट शहीद कहा जाएगा।'

तब, उन्हें सुसमाचार और अन्य दिव्य प्रेरित पुस्तकों से उपदेश देने के बाद, उन्होंने राजकुमार और बोयार को मसीह के शरीर और रक्त के दिव्य रहस्य प्रदान किए, उन्हें आशीर्वाद दिया, और कहा:

'प्रभु परमेश्वर तुम्हें बल दें और पवित्र आत्मा का वरदान भेजें, ताकि तुम विश्वास में दृढ़ रहो, मसीह के नाम का प्रचार करने में साहसी और कष्ट सहने में धैर्यवान रहो; और स्वर्ग का राजा तुम्हें प्रथम पवित्र शहीदों की पंक्ति में गिने।'

इसके बाद, माइकल और थियोडोर घर के लिए रवाना हुए; अपनी यात्रा के लिए सभी आवश्यक तैयारियाँ करने और अपने परिवारों से विदा लेने के बाद, वे ईश्वर से प्रार्थना करते हुए अपने मार्ग पर तेजी से आगे बढ़े, उनके हृदय उनके प्रति प्रेम और शहीद के मुकुट की लालसा से जल रहे थे: *'जैसे हिरण नदियों के लिए तरसता है, वैसे ही हे परमेश्वर, मेरी आत्मा आपकी लालसा करती है!'* (भजन संहिता 41:2)।

जब वे उस स्थान पर पहुँचे जहाँ अधर्मी ज़ार बटू ठहरे हुए थे, तो उनके आगमन की सूचना तुरंत उन्हें दे दी गई। अपने मगों और पुरोहितों को बुलाकर, बटू ने उन्हें आदेश दिया कि वे चेरनिहिव के राजकुमार को रीति के अनुसार आग से होकर ले जाएँ, और उसे मूर्तियों की पूजा करने के लिए मजबूर करें, और केवल तभी उसे उसके सामने लाएँ। राजकुमार के पास पहुँचकर, मगों ने उससे कहा:

'महान खान तुम्हें बुला रहे हैं।'

और उसे लेकर वे चले गए। उसका बोयार, थियोडोर, उसी के पीछे-पीछे चला, जैसे कोई अपने स्वामी के पीछे चलता है। जल्द ही वे उस स्थान पर पहुँचे जहाँ दोनों ओर आग जलाई गई थी, और बीच में एक रास्ता था, जिस पर पहले ही कई लोग गुज़र चुके थे; यही वह रास्ता था जिस पर जादूगरों ने राजकुमार माइकल को ले जाने का इरादा किया था। तब राजकुमार ने कहा:

'ईसाइयों के लिए उस आग से गुजरना उचित नहीं है जिसे अधर्मी लोग ईश्वर मानते हैं; मैं, हालांकि, एक ईसाई हूँ; इसलिए मैं आग से होकर नहीं गुजरूँगा और न ही किसी प्राणी की पूजा करूँगा, क्योंकि मैं सृष्टिकर्ता की पूजा करता हूँ - पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा - त्रिमूर्ति में एक ईश्वर, स्वर्ग और पृथ्वी के सृष्टिकर्ता।

राजकुमार के ये शब्द सुनकर, मग और पुरोहित क्रोध से आग-बबूला हो गए; माइकल को वहीं छोड़कर, वे खान को उसकी बातें बताने चले गए। उस समय, राजकुमार माइकल के साथ बटू को श्रद्धांजलि देने आए कुछ रूसी राजकुमार उसके पास आए; उनमें रोस्तोव के राजकुमार बोरिस[6363] भी थे। वे माइकल पर तरस खाए और उसके लिए बहुत दुखी हुए,

---

[6363] बोरीस वासिल्कोविच (वासिलियेविच) – रोस्तोव के राजकुमार, चेरनिगोव के मिखाइल के पोते, वासिल्को कॉन्स्टेंटिनोविच के दो बेटों में बड़े, जो चेरनिगोव की राजकुमारी मारिया मिखाइलोव्ना से उनके विवाह से पैदा हुए थे। 1238 में श्चेरेन्स्की जंगल में रोस्तोव के पास तातारों द्वारा मारे गए अपने पिता की मृत्यु के बाद, बोरिस को रोस्तोव अपानज के रूप में मिला। इतिहास में यह राजकुमार स्वर्ण हorde के खान के सामने रूसी भूमि के 'शोककर्ता' के रूप में जाना जाता है। वह आठ बार से अधिक हॉर्ड गया; बटू के आदेश पर, वह खान सरताक (1245) से मिलने के लिए ग्रेट तार्टरी तक भी गया। बोरिस की मृत्यु 1277 में हॉर्ड में हुई। उन्हें रोस्तोव के डॉर्मिशन कैथेड्रल में दफनाया गया था।

फरि भी, साथ ही यह भी डरते थे कि कहीं उन पर भी ज़ार का क्रोध न आ पड़े, और इसलिए उन्होंने माइकल को बटू की इच्छा का पालन करने की सलाह दी।

उन्होंने कहा, 'तुम आज्ञा का पालन करने का दिखावा कर सकते हो और आग तथा सूर्य को प्रणाम कर सकते हो, बस ज़ार के क्रोध और क्रूर मृत्यु से बचने के लिए।' 'और जब आप सुरक्षित अपने घर लौट आएँ, तो आप अपनी इच्छा के अनुसार कार्य कर सकते हैं: प्रभु आपको इसके लिए दंडित नहीं करेंगे, और न ही उन पर आपका क्रोध आएगा, क्योंकि वह जानते हैं कि आपने यह जबरदस्ती में किया था। हालाँकि, यदि आपके पादरी आपके इस कार्य को पाप मानते हैं, तो हम सभी दोष अपने ऊपर ले लेंगे - बस हमारी बात मानिए और आग से होकर गुजरने के बाद, तातार देवताओं के सामने सिर झुकाइए; इससे आप खुद को और हमें ज़ार के क्रोध और क्रूर मृत्यु से मुक्त कर देंगे, और आप अपनी भूमि के लिए बहुत सारी आशीर्वादों की प्रार्थना करेंगे।

उन्होंने यह सब माइकल से कड़वी आँसुओं के साथ कहा। धर्मपरायण बोयार थियोडोर, उनके शब्द सुनकर, गहराई से दुखी हुआ, उसे डर था कि राजकुमार अपने आसपास के लोगों की सलाह मानकर धर्म से भटक जाएगा। राजकुमार के पास जाकर, उसने उसे उसके व्रत और उसके कन्फेशर के शब्दों की याद दिलाना शुरू किया:

'धर्मनिष्ठ राजकुमार, याद करो,' उन्होंने कहा, 'कि तुमने मसीह के लिए अपनी आत्मा बलिदान करने का व्रत लिया था; सुसमाचार के उन शब्दों को याद करो जिनसे हमारे आध्यात्मिक पिता ने हमें उपदेश दिया था: *"क्योंकि जो कोई अपना प्राण बचाना चाहे, वह उसे खोएगा, परन्तु जो कोई मेरा और सुसमाचार का निमित्त अपना प्राण खोएगा, वह उसे बचाएगा। क्योंकि मनुष्य को क्या लाभ यदि वह सारी दुनिया तो पा ले, पर अपनी आत्मा खो दे?'* (मरकुस 8:35–36) – *'इसलिये, जो कोई मनुष्यों के सामने मेरा इकरार करेगा, मैं भी अपने स्वर्गीय पिता के सामने उसका इकरार करूँगा; परन्तु जो कोई मनुष्यों के सामने मुझ से इनकार करेगा, मैं भी अपने स्वर्गीय पिता के सामने उससे इनकार करूँगा"* (मत्ती 10:32–33)।

राजकुमार माइकल ने अपने बोयार के इन शब्दों को आनंदपूर्वक सुना और ईश्वर के प्रति उत्साह से भरकर, जीवन-प्रदाता मसीह के लिए मरने को तैयार, आनंदपूर्वक अपनी शहादत की प्रतीक्षा करने लगा। हालाँकि, पहले उल्लेख किए गए राजकुमार बोरिस, माइकल पर ज़ार की इच्छा को पूरा करने के लिए ज़ोरदार आग्रह करते रहे।

माइकल ने उनसे उत्तर दिया, 'मैं केवल नाम का ईसाई नहीं बनना चाहता, जबकि काम से काम मैं मूर्तिपूजकों जैसा करूँ।'

और, अपनी तलवार खींचकर, उसने उसे उन पर फेंक दिया और कहा:

'इस संसार का गौरव ले लो: मुझे इसकी कोई आवश्यकता नहीं है।'

थोड़ी ही देर बाद, बटू का एक प्रतिष्ठित दरबारी, जिसका नाम एल्डेगा था, आया और उसने राजकुमार माइकल को अपने ज़ार के निम्नलिखित शब्द सुनाए:

महान् ज़ार तुमसे यह कहते हैं: एक या दूसरे का चुनाव करो। यदि तुम मेरे आदेश का पालन करते हो – आग से होकर गुज़रते हो और मेरे देवताओं की पूजा करते हो – तो न केवल तुम जीवित रहोगे, बल्कि तुम मुझसे महान अनुग्रह भी प्राप्त करोगे और अपने सामंती राज्य के पूर्ण शासक बनोगे। लेकिन अगर तुम मेरा अवज्ञा करते हो और मेरे देवताओं की पूजा नहीं करते हो, तो तुम एक भयानक मृत्यु मरेगा।

एल्डेगी से राजा के शब्द सुनकर, राजकुमार माइकल बिलकुल भी नहीं घबराए, बल्कि उन्होंने साहसपूर्वक उत्तर दिया:

'राजा से कहो: मसीह के सेवक, राजकुमार माइकल का यही वचन है: यदि, हे राजा, इस संसार का राज्य और महिमा परमेश्वर द्वारा आपको सौंपी गई है, और सर्वशक्तिमान के दहिने हाथ ने हमारे पापों के कारण हमें आपके अधीन कर दिया है, तो हमें राजा के रूप में आपको प्रणाम करना चाहिए और आपके राजसी सम्मान के अनुरूप सम्मान देना चाहिए; लेकिन मसीह का परित्याग करना और आपके देवताओं की पूजा करना—यह नहीं होगा: क्योंकि वे देवता नहीं, बल्कि प्राणी हैं। हमारे भविष्यसूचक धर्मग्रंथों में यह लिखा है: *'जो देवता न तो आकाश रचते हैं और न पृथ्वी, वे पृथ्वी से और आकाश के नीचे से लुप्त हो जाएँगे'* (यिर्मयाह 10:11)। सृष्टिकर्ता को त्यागकर सृष्टि की पूजा करने से अधिक मूर्खतापूर्ण और क्या हो सकता है?

हालाँकि, एल्डेगा ने उससे कहा:

– तुम, माइकल, सूर्य को एक सृष्टि कहकर भूल कर रहे हो: क्योंकि—मुझसे कहो—उस असीम दिव्य ऊँचाई पर कौन चढ़ा और ऐसी महान ज्योति का सृजन किया, जो पूरे ब्रह्मांड को प्रकाशित करती है?

'यदि आप मेरी बात सुनने को तैयार हैं,' संत ने उत्तर दिया, 'तो मैं आपको बताऊँगा कि किसने सूर्य और जो कुछ भी दृश्यमान और अदृश्य है, उसे बनाया। — ईश्वर, जो अनंत और अदृश्य हैं, और उनके एकमात्र पुत्र, हमारे प्रभु यीशु मसीह, जो उसी प्रकार अविनाशी हैं और जिनका न कोई आरंभ है न कोई अंत, साथ ही पवित्र आत्मा, – तीन व्यक्तियों में एक ईश्वर, फिर भी एक ही सार में – उन्होंने स्वर्ग और पृथ्वी, और उस सूर्य को जिसकी आप पूजा करते हैं, और चंद्रमा और तारों को, साथ ही समुद्र और भूमि को भी बनाया; उन्होंने पहले मनुष्य, आदम को भी बनाया, और सारी सृष्टि को उसकी सेवा में रख दिया। परन्तु प्रभु ने मनुष्यों को यह व्यवस्था दी, कि वे किसी भी सृष्टि की उपासना न करें – न पृथ्वी पर, न स्वर्ग में – बल्कि वे एक परमेश्वर की उपासना करें जिसने सभी चीजों को बनाया; मैं उसी की उपासना करता हूँ। और यदि राजा मुझे एक रियासत और इस संसार का वैभव का वादा करे, तो मैं इन चीज़ों की खोज नहीं करता, क्योंकि राजा स्वयं शाश्वत नहीं है, और न ही वह शक्ति जिसे वह मुझे प्रदान करता है—जिसकी मुझे कोई आवश्यकता नहीं है। मुझे आशा है कि मेरा परमेश्वर, जिस पर मैं विश्वास करता हूँ, मुझे एक ऐसा शाश्वत राज्य प्रदान करेगा जिसका कोई अंत नहीं है।

तब एल्डेगा ने कहा:

'यदि तुम, माइकल, अपनी अवज्ञा पर अड़े रहे और राजा की इच्छा का पालन नहीं करते, तो तुम्हें तुरंत मौत की सजा दी जाएगी।'

संत ने उत्तर दिया:

'मैं उस मृत्यु से नहीं डरता, जिसके द्वारा मुझे ईश्वर के साथ अनंत जीवन प्राप्त हो सकता है। – और हम लंबा-चौड़ा क्यों बात करें? मैं एक ईसाई हूँ; मैं स्वर्ग और पृथ्वी के सृष्टिकर्ता की आराधना करता हूँ, मैं उन पर दृढ़ता से विश्वास करता हूँ, और मैं उनके लिए खुशी-खुशी मर जाऊँगा।'

तब एल्डेगा ने, यह देखकर कि न तो चापलूसी और न ही धमकियाँ माइकल को राजा की आज्ञा मानने के लिए मना सकती हैं, बाटू के पास जाकर माइकल से जो कुछ भी सुना था, उसकी पूरी रिपोर्ट दी।

एल्डेगा की बात सुनकर, बटू क्रोध से आग-बबूला हो गया और उसने अपने नौकरों को आदेश दिया कि वे राजकुमार माइकल को तुरंत मार डालें। और यातना देने वाले के नौकर शिकार पर निकले शिकारी कुत्तों की तरह या भेड़ का पीछा करते भेड़ियों की तरह उस पर टूट पड़े। उस समय, मसीह के पवित्र शहीद थियोडोर के साथ थे, जो मृत्यु से अछूते थे; उन्होंने भजन गाए और परमेश्वर से भक्तिपूर्वक प्रार्थना की। हत्यारों को आते देख, उन्होंने गाना शुरू कर दिया: 'हे प्रभु, तेरे शहीदों ने बहुत कष्ट सहे हैं और तेरे प्रेम के द्वारा, उन्होंने अपनी आत्माओं को संतों के साथ मिला दिया है।' जहाँ राजकुमार माइकल खड़ा था, उस जगह पर पहुँचने पर, हत्यारों ने, जानवरों की तरह, उसे उसकी बाँहों और पैरों से पकड़ लिया और, उसे ज़मीन पर फेंककर, उसके पूरे शरीर पर बहुत देर तक निर्दयता से पीटा , यहाँ तक कि ज़मीन उसके खून से लथपथ हो गई। हालाँकि, माइकल ने यह सब बहादुरी से सहन किया, और केवल एक बात दोहराता रहा: 'मैं एक ईसाई हूँ!'

उस स्थान पर ज़ार के नौकरों में से एक मौजूद था, जो पहले एक ईसाई था लेकिन बाद में धर्मत्यागी बन गया था और उसने अधर्मी तातार धर्म अपना लिया था। यह धर्मत्यागी, यह देखकर कि संत ने कितनी बहादुरी से अपने यातनाओं को सहन किया, उस पर क्रोधित हो गया; और, ईसाइयों का शत्रु होने के नाते, उसने एक चाकू निकाला, माइकल के सिर को पकड़कर उसे काटकर अलग कर दिया और एक तरफ फेंक दिया – जबकि पवित्र स्वीकारकर्ता के होंठ यह दोहराते रहे: 'मैं एक ईसाई हूँ'।

हे अद्भुत चमत्कार! शरीर से अलग हो जाने के बाद भी, उसका सिर मसीह की गवाही देता रहा।

इसके बाद, दुष्ट यातना देने वालों ने धर्मनिष्ठ थियोडोर के पास आकर उससे कहा:

'राजा की आज्ञा मानो और हमारे देवताओं की पूजा करो: इसके लिए न केवल तुम्हें क्षमा किया जाएगा, बल्कि तुम्हें राजा से बड़ा सम्मान भी मिलेगा और अपने स्वामी का साम्राज्य विरासत में मिलेगा।'

लेकिन संत थियोडोर ने उत्तर दिया:

'मैं अपने प्रभु का राजपद नहीं चाहता, न ही मुझे आपके राजा से किसी सम्मान की आवश्यकता है; मैं केवल अपने प्रभु के समान उसी मार्ग पर मसीह का अनुसरण करना चाहता हूँ, – पवित्र शहीद राजकुमार माइकल; क्योंकि, जैसे

उन्होंने कयि, मैं भी स्वर्ग और पृथ्वी के सृष्टकिर्ता, एकमात्र मसीह में वश्विास करता हूँ; मैं भी उनके लिए दुख सहना चाहता हूँ, और न तो मुझे यातनाओं का भय है और न ही मृत्यु का।

थियोडोर की दृढ़ता को देखकर, हत्यारों ने उसे पकड़ लिया और सेंट माइकल के साथ जतिनी क्रूरता से उन्होंने यातना दी थी, उतनी ही क्रूरता से उसे यातना देने लगे। अंत में, उन्होंने उसका उत्तम सरि काट दिया, और ऐसा करते हुए कहा:

'जसिने सबसे तेजस्वी सूर्य की पूजा करने से इनकार कयि, वह सूर्य को देखने के भी योग्य नहीं है।'

इस प्रकार, सम्मानपूर्वक कष्ट सहने के बाद, पवत्रि शहीदों माइकल और थियोडोर ने अपना प्राण प्रभु के हाथों में सौंप दिया – संसार की सृष्टि के 6753वें वर्ष में, और मसीह के जन्म के 1245वें वर्ष में, 20 सतिंबर के दनि। उनके पवत्रि शरीर कुत्तों को खाने के लिए फेंक दिए गए थे, फरि भी कई दनिों तक वे अक्षुण्ण और कसिी के भी छुए बनिा रहे। – इस प्रकार मसीह की कृपा ने उन्हें सुरक्षति रखा। – इसके अलावा, शहीदों के शरीरों के ऊपर आग का एक स्तंभ प्रकट हुआ, जो तेजस्वी प्रकाश से चमक रहा था, और हर रात जलती हुई मोमबत्तयिाँ देखी जा सकती थीं। यह सब देखकर, उस समय हॉर्ड में मौजूद ईसाइयों ने गुप्त रूप से शहीदों के शरीरों को ले लिया और उन्हें सम्मान के साथ दफना दिया[6364] ।

पवत्रि शहीदों की हत्या के बाद, दुष्ट बटू एक बार फरि अपनी सभी सेनाओं के साथ युद्ध में गया, पहले पोलैंड के खलिाफ, फरि हंगरी के खलिाफ, लेकनि उसे हंगरी के राजा व्लादस्लिाव ने मार गरिाया, इस प्रकार उसके दुष्ट जीवन का एक दयनीय अंत हुआ। – इस प्रकार यातना देने वाले बटू को अपना भाग्य के रूप में नरक मलिा, जबकि पवत्रि शहीदों को स्वर्ग का राज्य प्राप्त हुआ और वे सदा के लिए पति, पुत्र और पवत्रि आत्मा की महमिा करते हैं। आमीन।

ट्रोपारयिन, स्वर 4:

हे सर्वज्ञ माइकल और पराक्रमी थियोडोर, आपने शहीदों के रूप में अपना जीवन व्यतीत कयि और वश्विास की घोषणा के मुकुटों से भूषति होकर स्वर्ग में आरोहण कयि है: मसीह ईश्वर से प्रार्थना करें कि वे अपनी महान दया से आपके देश, सम्राट और लोगों की रक्षा करें।

कॉन्टाकयिन, स्वर 8:

पृथ्वी के राज्य को तुच्छ समझकर, और महमिा को क्षणकि मानकर, हे माइकल ([6365]), जन्हिोंने स्व-घोषतिों का पक्ष लयि, आप अपने कर्म करने और दुष्ट यातनाकर्ता के समक्ष त्रमिूर्त का उपदेश देने आए, हे कष्ट-भोगी माइकल, अपने साथी थियोडोर ( ) के साथ। शक्तमिंदों के राजा के समक्ष खड़े होकर, प्रार्थना करें कि आपका स्वदेश, सम्राट और उनके लोग हानि से सुरक्षति रहें, ताकि हम आपको अनवरत सम्मान दे सकें।

[6364] धर्मनष्ठि राजकुमार माइकल और उनके बोयार थियोडोर की पवत्रि अवशेषों को ईश्वर-भयभीत ईसाइयों द्वारा हॉर्ड से पहले व्लादमिीर और फरि राजकुमार माइकल के गृह नगर, चेर्निहिभि में स्थानांतरति कर दिया गया। फरि, 14 फरवरी 1572 को, ज़ार इवान वासलिीवचि द टेरबिल के आदेश पर, यह डर होने के कारण कि चेरनगिोव के पोलशि शासन के अधीन आने के बाद कैथोलकिों द्वारा इन पवत्रि अवशेषों का अपमान कयि जा सकता है, इन्हें मॉस्को ले जाया गया। इन्हें क्रेमलनि में, टायनट्स्की द्वार के पास स्थति, चेरनगिोव के चमत्कारकारयिों के कैथेड्रल चर्च में दफनाया गया। जब इस कैथेड्रल को समाप्त कर दिया गया, तो महारानी कैथरीन द्वतिीय के आदेश से, 25 अगस्त 1770 को पवत्रि अवशेषों को भव्यता से 'सेनी' पर स्थति महल में स्थति स्रेटेंस्की कैथेड्रल में स्थानांतरति कर दिया गया; वहाँ से, 21 नवंबर 1774 को, उन्हें आर्कएन्जेल कैथेड्रल में स्थानांतरति कर दिया गया, जहाँ उन्हें शुरू में तुर्की के साथ शांति का जश्न मनाने के लिए बनवाई गई एक शानदार चांदी की अवशेष-पेटी में स्थापति कयि गया था, और 1812 के बाद (जब यह अवशेष-पेटी दुश्मन द्वारा चुरा ली गई थी) वे आज तक एक चांदी की परत चढ़ी तांबे की अवशेष-पेटी में ही हैं।

[6365] अर्थात्, अपनी स्वेच्छा से, न कि जबरदस्ती में।

4 अक्टूबर

21 सतिंबर (पुराना संस्करण)

प्रेरति सेंट कोड्रैटस

21 सतिंबर को स्मरणोत्सव

संत कोड्रैटस प्रेरति, सत्तर में से एक, ने एथेन्स और मैग्नेशिया[6366] में परमेश्वर का वचन प्रचार कयि, जहाँ उन्होंने बशिप के रूप में सेवा की; अपने प्रचार के माध्यम से उन्होंने कई लोगों को दविय ज्ञान के प्रकाश की ओर ले गए। सरिक के शब्दों में, वह *'बादलों के बीच भोर का तारा' जैसा* था (सरिक 50:6): 'काले बादलों' से हमारा तात्पर्य मूर्तपिूजक अधर्मीपन से है, जो भक्ति के प्रकाश से अपरचिति है; इसके वश में आए लोग अंधकार और मृत्यु की छाया में बैठे थे। लेकनि संत कोड्रैटस प्रेरति, परमेश्वर के वचन का प्रचार करते हुए, उनके सामने एक महान प्रकाश के समान चमके; उन्होंने उन्हें घेरे हुए अंधकार को दूर कयि, मूर्तपिूजक बलदिानों को नष्ट कयि, मूर्तयिों को गरिा दयि, और अपनी प्रार्थना के द्वारा राक्षसों के मंदरिों को उजाड़ दयि; जैसे एक तारे ने एक बार पूर्व के राजाओं का मार्गदर्शन कयि था, वैसे ही उसने मसीह का मार्ग दखिाया; और जैसे भोर का तारा सूर्य से पहले आता है, वैसे ही उसने संसार में महान प्रकाश का प्रचार कयि और मानव आत्माओं को घेरने वाले अंधकार को दूर कयि। लेकनि अंधकार प्रकाश का स्थायी शत्रु है; इसलएि, धर्महीन यूनानयिों ने, यह देखकर कि कोड्रैटस उनकी मूर्तयिों को नष्ट कर रहा था, दुष्टात्माओं को भगा रहा था और दुष्टता का उन्मूलन कर रहा था, पवत्रि प्रेरति के खलिाफ एक उत्पीड़न शुरू कयि और उस पर पत्थर बरसाए, ठीक वैसे ही जैसे यहूदयिों ने एक बार स्तेफन पर कयि था (प्रेरतिों के काम 7:59); हालाँकि संत कोद्रत पर पत्थर चलाए गए, वह मसीह की कृपा से सुरक्षति जीवति रहे। फरि उन्हें कैद कर दयि गया और लंबे समय तक भूखा रखा गया; दुष्ट मूर्तपिूजकों ने उस व्यक्ति को प्राकृतकि भोजन से वंचति कर दयि जसिने उनकी आत्माओं को नश्वर रोटी से, बल्कि उस भोजन से पोषति कयि था जो अनंत जीवन की ओर ले जाता है। उन्होंने संत को भूखा रखा, फरि भी वे स्वयं उसी भूख से नष्ट हो गए जसिकी पवत्रि धर्मग्रंथ में चर्चा है: *'रोटी की भूख, न पानी की प्यास, बल्कि यहोवा के वचन सुनने की प्यास'* (आमोस 8:11)। वे भूख से ऐसे व्यक्ति को नष्ट नहीं कर सके जो हमेशा स्वर्ग से पोषति होता था, बल्कि उन्होंने स्वयं को अनंत मृत्यु की सजा दी। लंबी यातनाओं के बाद, संत कोड्रैटस की मृत्यु हो गई, लेकनि उनकी आत्मा स्वर्ग के राज्य में जीवति है और स्वर्ग की आनंदमयता का अनुभव करती है। उन्होंने सम्राट हैड्रयिन के अधीन अपने दुखों का कार्य पूरा कयि, और महमिा के राजा, यीशु मसीह के सामने अनंतकाल तक जीवति रहने लगे: उनके साथ उन्होंने दुख उठाया, और उनके साथ वे उनके राज्य में महमिामय हैं। उनके पवत्रि शरीर को मैग्नेशिया में दफनाया गया, और उन्होंने बीमारों को अनेक चंगाइयाँ प्रदान कीं। आमीन।

कॉन्टाकयिन, स्वर 8:

हे प्रभु, सबसे सम्मानति पुरोहति और शहीदों में सबसे अटल, कोड्रैटस प्रेरति को संपूर्ण संसार आपको अर्पति करता है, और भजनों के साथ उनकी पवत्रि स्मृति का सम्मान करता है, और सदैव यह वनिती करता है कि जो उनकी भलाई का गायन करते हैं, उन्हें पापों की क्षमा प्रदान की जाए।

पवत्रि शहीदों हाइपैटयिस और एंड्रयू की स्मृति

21 सतिंबर को स्मरणोत्सव

[6366] मैग्नेशिया – थेस्साली का एक पूर्वी प्रायद्वीप और क्षेत्र।

ये संत लडिया की भूमि में पैदा हुए थे[6367] । अपने बचपन में, उन्होंने दोनों ने एक ही मठ में एक साथ विज्ञान का अध्ययन किया और, हर सद्गुण से स्वयं को सुसज्जित करते हुए, विश्वास में और भी मज़बूत होते गए। परिपक्वता प्राप्त करने पर, हाइपैटियस ने मठवासी संकल्प लिए; उन्होंने लगातार मौन में रहने और परमेश्वर के सामने परिश्रम करने का प्रयास किया । एंड्रयू ने, अपनी ओर से, दूसरों की सेवा में स्वयं को समर्पित कर दिया: उन्होंने एक धर्मकर्मी का पद ग्रहण किया, परमेश्वर के वचन के एक उत्साही प्रचारक बने, और चर्च में ईसाइयों को लगन से उपदेश दिया। दोनों महान आत्म-संयम, विनम्रता और सभी के प्रति सच्चे प्रेम के लिए विशिष्ट थे। एफ़िसुस के आर्चबिशप ने जब इन धर्मनिष्ठ पुरुषों के सदाचारी जीवन के बारे में सुना, तो उन्हें अपने पास बुलाया; उनसे बातचीत करके उन्हें बहुत लाभ हुआ, और इस प्रकार वे उनसे अत्यधिक स्नेह करने लगे। फिर उन्होंने हिपाटियस को, उनकी इच्छा के विरुद्ध, एशिया की कलीसिया का बिशप नियुक्त किया, यह कहते हुए:

'ऐसे दीपक का जंगल में छिपा रहना उचित नहीं है; उसे मसीह की शिक्षाओं से कलीसिया को प्रकाशित करने के लिए बिशप के सिंहासन पर बैठना चाहिए।'

उन्होंने एंड्रयू को पुरोहित नियुक्त किया। इस प्रकार ये दोनों संत अपनी बुद्धिमानी भरी शिक्षाओं और अपने जीवन की पवित्रता से लोगों को प्रकाशित करते हुए चमक उठे। इस बीच, ग्रीक सम्राट लियो द इसाउरियन[6368] ने पवित्र प्रतिमाओं के खिलाफ उत्पीड़न शुरू किया; उसने आदेश दिया कि पूरे साम्राज्य में उन्हें ईश्वर की चर्चों से हटा दिया जाए और सबसे कठोर फरमान जारी किया कि कोई भी उनकी पूजा करने की हिम्मत न करे। तब संत हिपैटियस और एंड्रयू ने प्रतिमा-भंजकों के खिलाफ खड़ा होकर अपने अनुयायियों से कहा कि वे इस अधर्मी शाही आदेश की अवहेलना करें। यह सुनकर सम्राट ने उन्हें अपने सामने पेश करने का आदेश दिया, और लंबे समय तक उन्हें पवित्र प्रतिमाओं की पूजा त्यागने के लिए मनाने की कोशिश की; उसने अपने विद्वानों को भी इन मसीह के बहादुर योद्धाओं के साथ बहस करने का आदेश दिया, लेकिन सच्चे विश्वास के इस उत्पीड़क ने चर्च के इन दृढ़ स्तंभों को किसी भी तरह से हिला नहीं सका। फिर उसने उन्हें कैद कर लिया और लंबे समय तक उन्हें वहीं रखा, इस उम्मीद में कि यह उन्हें अपने विश्वास से मुंह मोड़ने के लिए मजबूर कर देगा। जब उसकी उम्मीदें टूट गईं, तो उसने आदेश दिया कि उन्हें बेरहमी से पीटा जाए, उनके सिरों से उनके बालों सहित खाल उधेड़ दी जाए, उनकी दाढ़ियों पर तारकोल लगाकर आग लगा दी जाए, और फिर उनके सिरों पर उनके कीमती पवित्र आइकन को आग के हवाले कर दिया जाए। उन्होंने यह सब साहस के साथ सहन किया, और ईश्वर की शक्ति से जीवित रहे। फिर लियो ने आदेश दिया कि उन्हें शहर में घसीटकर ले जाया जाए, और संतों को सबके उपहास के लिए घुमाया गया। अंत में, पवित्र प्रतिमाओं के लिए पीड़ा सहने के बाद, उन्हें मेमनों की तरह वध कर दिया गया और उन्होंने अपनी आत्माएँ ईश्वर के हाथों में सौंप दीं। उनके सम्मानित शरीरों को कुत्तों द्वारा खाए जाने के लिए फेंक दिया गया, लेकिन विश्वासियों ने उन्हें गुप्त रूप से ले जाकर ऐसे शहीदों के लिए उचित सम्मान के साथ दफना दिया।

पवित्र शहीदों यूसेबियस और प्रिस्का की स्मृति

21 सितंबर को स्मरण किया जाता है

संत यूसेबियस फोएनिशिया में रहते थे[6369] और शुरू में मसीह के एक गुप्त अनुयायी थे। उस समय, विधर्मीयों ने ईसाइयों पर एक भयंकर उत्पीड़न शुरू कर दिया था, और वे विश्वासियों को जहाँ भी पाते, उन्हें विभिन्न यातनाओं से पीड़ित करते थे; इसलिए बहुत से विश्वासियों ने दुष्टों के हाथों से भागकर गुप्त स्थानों में शरण ली। संत यूसेबियस, मसीह के वचनों पर मनन करते हुए: *'जो कोई मनुष्यों के सामने मेरा स्वीकार करेगा, मैं भी अपने स्वर्गीय पिता के सामने उसका स्वीकार करूंगा'* (मत्ती 10:32), दिव्य उत्साह से भर गए; वे शहर के राज्यपाल के पास गए और उसके सामने खड़े होकर कहा:

'तुम एक पागल की तरह व्यवहार क्यों कर रहे हो, हे ईश्वर के शत्रु, मसीह के झुंड का उत्पीड़न क्यों कर रहे हो?'

[6367] लडिया – एशिया माइनर के पश्चिमी तट पर एक क्षेत्र।

[6368] सम्राट लियो तृतीय इसौरीय ने 717 से 741 तक शासन किया।

[6369] फ़िनिसिया – फ़िलिस्तीन के उत्तर में एक प्राचीन देश; यह समुद्र और लेबनान पर्वत के बीच एक संकीर्ण तटीय पट्टी से बना था; इस क्षेत्र के सबसे उल्लेखनीय शहर टायर और सिडोन थे।

राजकुमार ने उसे देखकर पूछा:

'तुम कौन हो?'

उसने उत्तर दिया:

'मैं मसीह का सेवक हूँ, जिसके विरुद्ध तुम विद्रोह कर रहे हो।'

इन शब्दों से गहराई से क्रोधित होकर, राजकुमार ने कहा:

'तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई, हे अभद्र मनुष्य, यहाँ आकर राजकुमार होने के नाते मेरा अपमान करने की?'

इस पर यूसेबियस ने उत्तर दिया:

'मेरे प्रभु यीशु मसीह के प्रति मेरे उत्साह ने मुझे तुम्हारी अंधापन को उजागर करने के लिए प्रेरित किया है: क्योंकि तुम पागल हो गए हो, परमेश्वर के बजाय एक राक्षस की पूजा कर रहे हो।'

तब राजकुमार ने आदेश दिया कि उसे नग्न कर दिया जाए, फांसी दी जाए और उसके शरीर को खुरच दिया जाए; संत को एक तेज लोहे से तब तक खुरचा गया जब तक कि उसकी हड्डियाँ नंगी नहीं हो गईं; फिर उन्होंने उस पर नमक मिला हुआ सिरका डालना और उसके घावों पर रगड़ना शुरू कर दिया। मसीह के इस स्वीकारकर्ता ने यह सब बहादुरी से सहन किया – मानो यह उसके अपने शरीर को सताने वाला कष्ट न हो – और इन यातनाओं के बीच इस बात से प्रसन्न हुआ कि वह मसीह के विश्वास के लिए कष्ट झेल रहा था। जब उसने ये यातनाएँ सहन कर लीं, तो राजकुमार ने उससे कहा:

'देवताओं को बलिदान चढ़ाओ और तुम जीवित रहोगे; लेकिन अगर तुम ऐसा नहीं करते हो, तो हम तुम्हें मौत की सजा देंगे।'

जिस पर उन्होंने उत्तर दिया:

'तुम मेरा शरीर तो नष्ट कर सकते हो, लेकिन मसीह मेरी आत्मा को ग्रहण करेंगे; उनके लिए मैं सब कुछ सहने को तैयार हूँ, क्योंकि *"जो अंत तक धीरज धरेगा, वह उद्धार पाएगा"* (मत्ती 24:13)।'

उसकी दृढ़ता को देखकर, दुष्ट लोगों ने तलवार से उसका सिर काट दिया। इस प्रकार वह स्वर्ग में प्रवेश कर गया और प्रभु के हाथ से महिमा का मुकुट प्राप्त किया।

संत प्रिस्कस ने फ्रिगिया में मसीह के नाम का प्रचार किया और कई मूर्तिपूजकों को मसीह के पास लाए। तब दुष्टों ने उन्हें पकड़ लिया, उन्हें फांसी दे दी, और लोहे की पंजों से उनकी पसलियों को गहराई से खुरचना शुरू कर दिया, जिससे संत प्रिस्कस का पूरा शरीर जोते हुए खेत की तरह घावों से भर गया। वहाँ खड़े कुछ दुष्ट लोग, इतनी भयंकर यातनाएँ और शहीद के बहते हुए रक्त को देखकर, क्रोध से भर गए: उन्होंने अपनी तलवारें खींचीं, संत पर टूट पड़े और उनका सिर काट दिया।

इस प्रकार इस पुण्य आचरण वाले साक्षी ने यीशु मसीह की गवाही देने के लिए दुख उठाया, और अब मसीह स्वर्गीय पिता के समक्ष उसकी गवाही देते हैं।

सदैव और अनन्तकाल तक परमेश्वर की महिमा। आमीन।

महाधर्माध्यक्ष सेंट इसाकियस और मेलेटियस की स्मृति

21 सितंबर को स्मरणोत्सव

हमारे पूजनीय और धर्मनिष्ठ पिता, इसाक और मेलेटियस, मसीह की कलीसिया के बिशप थे। दोनों ने एक ही बिशप की सेवा का निर्वहन किया और अपनी धर्मपरायणता और ईसाई सद्गुणों के लिए विख्यात थे। उनका अथक श्रम लोगों को दिव्य, आध्यात्मिक वचन में शिक्षित करना और परमेश्वर की आज्ञाओं के अनुसार चलना था। दोनों अपनी परोपकारिता के लिए विख्यात थे; उन्होंने अपने धन-संपत्ति को गरीबों में बाँट दिया और उन पर दया दिखाई, उन्हें न केवल भौतिक रोटी से बल्कि अपनी शिक्षाओं और उपदेशात्मक सलाह के माध्यम से आध्यात्मिक रोटी से भी पोषित किया। अपने जीवन के माध्यम से, उन्होंने चमत्कार करने का वरदान प्राप्त किया और वृद्धावस्था में, विभिन्न वर्षों में लेकिन एक ही दिन[6370] को शांतिपूर्वक निधन किया।

[6370] सेंट आइज़ैक साइप्रस के बिशप थे और साइप्रस में ही उनकी मृत्यु हुई (जो भूमध्य सागर के उत्तर-पूर्वी भाग में एक बड़ा द्वीप है); मेलेटियस की मृत्यु बाद में, एक अज्ञात शहर में हुई।

रोस्तोव के मेट्रोपॉलटिन, चमत्कार करने वाले संत डेमेट्रयिस का जीवन

21 सतिंबर को स्मरणोत्सव

संत दमित्रिी, जनिका जन्म का नाम डैनयिल था, का जन्म दसिंबर 1651 में कीव शहर से चालीस वर्स्ट (लगभग 40 कलिोमीटर) दूर स्थति मकारोव[6371] गाँव में हुआ था। उनके पतिा, सावा ग्रगिोर्येवचि तुपालो, साधारण कोसैक के पद से सेंचुरयिन के पद तक पहुँचे और अपने शेष जीवन को चर्च की सेवा के लिए समर्पति कर दयिा, तथा करिलिोव मठ के क्टटिर (स्थापक) का पदभार संभाला[6372] । वे और उनकी पत्नी, मारयिा मखिाइलोव्ना, दोनों ही धर्मपरायण लोग थे और उन्होंने एक अच्छा ईसाई जीवन जयिा। लेकनि उनके पतिा सैन्य कर्तव्यों के कारण लगातार घर से दूर रहते थे, और लड़के का पालन-पोषण मुख्य रूप से उसकी माँ के मार्गदर्शन में हुआ। संत ने स्वयं उनकी मृत्यु के अवसर पर उनके प्रतिकोमल प्रेम और प्रशंसा व्यक्त की: 'पवत्रि शुक्रवार को, उद्धारकर्ता के दुख-क्लेश के दनि, मेरी माँ दनि के नौवें घंटे पर, ठीक उसी घड़ी पर स्वर्गवास हो गईं, जब हमारे उद्धारकर्ता, हमारे उद्धार के लिए क्रूस पर पीड़ा सहते हुए, अपनी आत्मा परमपतिा परमेश्वर के हाथों में सौंप दी थी। उनकी आयु सत्तर वर्ष से अधकि थी… हे प्रभु, अपनी स्वर्गीय राज्य में उनकी स्मृतिको याद करें! वे एक अच्छे मानसकि संतुलन में, एक clear के साथ, और अपनी वाणी अक्षुण्ण रखते हुए परलोक सधिार गईं। हे प्रभु, उनकी प्रार्थनाओं के द्वारा, मुझे भी ऐसी ही धन्य मृत्यु प्रदान करें! और सचमुच, उनकी मृत्यु ईसाई-सुलभ थी: क्योंकियह सभी ईसाई संस्कारों और प्रथागत संस्कारों के साथ, नडिर, नर्भिय और शांतपिूर्ण रूप से हुई। प्रभु उसे अपने भयानक न्याय के दनि अनुकूल न्याय भी प्रदान करें; क्योंकिमुझे ईश्वर की दया पर, और उसके उद्धार पर कोई संदेह नहीं है, उसकी नरिंतर, सदाचारी और धार्मकि जीवन को जानते हुए। इसके अलावा, मैं इसे उनके मोक्ष का एक अच्छा संकेत मानता हूँ कि उसी दनि और उसी घड़ी जब प्रभु मसीह ने अपने दुख-संकट के दौरान चोर के लिए स्वर्ग के द्वार खोले, उन्होंने उनकी आत्मा को उनके शरीर से अलग होने का आदेश दयिा[6373] । ऐसी सदाचारी माँ के प्रभाव में, युवा दानयिल ईश्वर के भय और धार्मकिता में पला-बढ़ा, दनि-ब-दनि मजबूत होता गया और सदाचार में और अधकि दृढ़ होता गया।

दानयिेल ने अपनी प्रारंभकि शक्षिा घर पर प्राप्त की। उनके माता-पतिा ने उन्हें पढ़ना सखिाया, और जब वह 11 साल के थे, तो उन्होंने उन्हें कीव ब्रदरहुड स्कूल[6374] में भेज दयिा। अपनी उत्कृष्ट क्षमताओं और पढ़ाई में गहन लगन के कारण, दानयिेल ने जल्द ही अपनी पढ़ाई में उत्कृष्टता हासलि करना शुरू कर दयिा और अपने सभी साथयिों से आगे नकिल गए। अपनी वाक्पटुता की कक्षाओं में, उन्होंने कवति और वाक्पटुता में अपनी कुशलता के माध्यम से वशिेष ध्यान आकर्षति कयिा। प्रसदि्ध उपदेशक और ववािदास्पद धर्मशास्त्री गैलयिाटोव्स्की[6375] के मार्गदर्शन में, डेनयिल ने उन वाक्पटुता की तकनीकों और वाक्यांशों में महारत हासलि की जो बाद में उनके उपदेशों के श्रोताओं को बहुत प्रभावति करतीं, और उन्होंने वह ऊर्जा और मनाने की अप्रतरिोध्य शक्तिप्राप्त की जो बाद में संप्रदायवादयिों के खलिाफ उनके संघर्ष में प्रकट हुई। फरि भी, अपनी पढ़ाई में उत्कृष्टता प्राप्त करते हुए, डैनयिल उसी समय अपने असाधारण सद्गुणों के लिए भी वख्यिात थे और उन्होंने चतिन और तपस्या के जीवन की ओर प्रारंभकि झुकाव दखिाया। उन्होंने बच्चों के खेलों में कोई भाग नहीं लयिा और मनोरंजन के सभी रूपों से दूर रहे। उन्होंने स्कूल के समय के बाद अपना

[6371] मकारोव – जो अब कीव गवर्नरेट और जलि का एक शहर है – उस समय लथिुआनयिा के हेत्मान के क्षेत्रों में आता था।

[6372] कीव में करिलिोव मठ की स्थापना 12वीं शताब्दी में चेरनखिवि के राजकुमार वसेवोल्द ओल्गोवचि ने की थी; इसे बटू खान ने तबाह कर दयिा था; 17वीं शताब्दी में इसका पुनर्नरि्माण कयिा गया और 1786 में इसे समाप्त कर दयिा गया।

[6373] 29 मार्च 1689 के लिए डायरी (संत के दैनकि नोट्स)।

[6374] कीव ब्रदरहुड स्कूल (अब कीव थयिोलॉजकिल अकादमी) 1615 में एपफिेनी ब्रदरहुड मठ के साथ ही खोला गया था और उसे उसी मठ से संलग्न कर दयिा गया था; इसे मेट्रोपॉलटिन पीटर मोहलि (1633–1647) द्वारा सुधार कयिा गया और उस समय से यह लंबे समय तक रूस में आध्यात्मकि और धर्मनरिपेक्ष शक्षिा का केंद्र बन गया। कीव स्कूल ने कई प्रबुद्ध पादरयिों और ऑर्थोडॉक्सी के उत्साही रक्षकों को तैयार कयिा।

[6375] इओनकियि गैलयिाटोव्स्की († 1688), जो शुरू में एक शक्षिक और बाद में कीव स्कूल के रेक्टर (1657–1665) थे, जनि्होंने इसकी समृद्धिसुनश्चति करने के लिए बहुत कुछ कयिा, अपने समय के सबसे प्रसदि्ध धर्मशास्त्रयिों, वाद-ववािदकारों और उपदेशकों में से एक थे। लैटनिों और यूनएिट्स के खलिाफ नरि्देशति, इओनकिी के असंख्य लेख ऑर्थोडॉक्स सत्य की रक्षा करने में उनके उत्साह की गवाही देते हैं।

समय पवत्रि धर्मग्रंथों, संतों के लेखन और जीवन को पढ़ने तथा प्रार्थना में बताया। वह वशिेष उत्साह के साथ चर्च जाता था, जहाँ वह श्रद्धापूर्वक प्रभु से अपनी प्रार्थनाएँ करता था। जतिनी अधकि बार और लगन से वह पवत्रि धर्मग्रंथों और पवत्रि संतों के जीवन को पढ़ता था, उतनी ही अधकि तीव्र इच्छा उसके मन में पवत्रि तपस्वयिों का अनुकरण करने की होती जाती थी।

पंद्रह वर्ष की आयु में, डैनयिल को स्कूल छोड़ने के लिए मजबूर होना पड़ा। कीव के लिए उस परेशान करने वाले समय के दौरान, शहर लगातार पोलशि से रूसी शासन में और वापस बदलता रहा। इसका स्कूल की स्थतिि पर भी प्रभाव पड़ा, जो 1665 में, जब पोलशि लोगों ने कीव पर नयिंत्रण कर लयिा, तो पूरी तरह से नष्ट हो गया और लंबे समय तक उपेक्षा की स्थतिि में रहा।

परणिामस्वरूप, डैनयिल अपनी पढ़ाई पूरी नहीं कर सका और उसे अपनी पढ़ाई छोड़ने के लिए मजबूर होना पड़ा, जबकि उसने स्कूल में केवल तीन साल ही बताए थे।

अपनी युवावस्था से ही संन्यास जीवन की ओर झुकाव रखने वाले दानयिल ने स्कूल छोड़ने के तुरंत बाद ही दुनिया और उसकी सभी सुख-सुवधिाओं का त्याग कर दयिा। माता-पिता का आशीर्वाद प्राप्त करने के बाद, अठारह वर्ष की आयु में उन्होंने करिलिोव मठ में नविास ग्रहण कयिा। मठ के प्रधान मेलेटयिस ज़कि, जो पहले कीव स्कूल के रेक्टर रह चुके थे, डेनयिल को लंबे समय से जानते थे। 9 जुलाई 1668 को उन्होंने डेनयिल का मुंडन कर उसे भक्षिु बनाया और उसे दमित्रिी नाम दयिा। नव-मुंडति भक्षिु ने स्वयं को पूरी तरह से ईश्वर की इच्छा और प्रबंध के हवाले कर दयिा। उन्होंने सभी मठ के नयिमों का सख्ती से और अटूट रूप से पालन करना शुरू कर दयिा, और वनिम्रता और आज्ञाकारति में उत्साहपूर्वक अपने मठ के कार्यों को कयिा। उन्होंने परम पूजनीय एंथनी और थयिोडोसयिस और पेचोरा के अन्य तपस्वयिों के गुणों का अनुकरण करने के लिए अपनी पूरी शक्ति से प्रयास कयिा। उन्हें संपत्ति या धन प्राप्त करने में कोई रुचि नहीं थी, बल्कि वे अपनी पूरी आत्मा से केवल ईश्वर को प्रसन्न करना चाहते थे, केवल उन्हीं की नष्ठिापूर्वक और कपट के बनिा सेवा करना चाहते थे, और इस प्रकार अक्षय धन प्राप्त करना चाहते थे।

दमित्रिि के मुंडन के एक साल से भी कम समय बाद, मठाधीश के अनुरोध पर, उन्हें एक हाइरोडीकन के रूप में अभषिक्ति कयिा गया। यह अभषिेक 1669 में परम पवत्रि थओिटोकोस के घोषणा के पर्व पर हुआ था , जोसेफ तुकालस्की[6376] द्वारा, जो कीव के मेट्रोपॉलटिन के पद पर थे और उस समय कनीव शहर में रह रहे थे। दमित्रिी हएिरोडीकन के पद पर रहते हुए काफी समय तक करिलिोव मठ में रहे। उन्होंने हर बात में मठाधीश की आज्ञा मानी, भाइयों की नम्रता और लगन से सेवा की, हर काम बनिा सवाल के कयिा, चर्च में सबसे पहले पहुँचते और सबसे आखरि में नकिलते थे; चर्च में वह वनिम्रता से खड़ा रहता था, पवत्रि धर्मग्रंथ के शब्दों को श्रद्धापूर्वक सुनता था; अपनी कोठरी में वह अक्सर प्रार्थना करता था, लखिता था और जो कुछ भी मठाधीश ने उसे सौंपा था, उसकी रचना करता था, और लगन से अपने वद्विान होने के नाते अपने कार्यों को जारी रखता था।

इस प्रकार दमित्रिि ने 1675 तक परश्रिम कयिा। उस समय, चेर्नगिोव के आर्चबशिप, लाज़ार बारानोवचि, गुस्तनि मठ में ठहरे हुए थे[6377] । यहीं पर संत दमित्रिि को एक हाइरोमोंक के रूप में अभषिेक के लिए उनके सामने प्रस्तुत कयिा गया, जो 23 मई को, पवत्रि आत्मा के अवतरण के पर्व पर हुआ। उस समय संत दमित्रिी केवल 24 वर्ष के थे, लेकनि वे पहले से ही परमेश्वर के वचन का उपदेश देने में नपिुण थे। उन्हें बेहतर तरीके से जानने और उनके उच्च आध्यात्मकि गुणों को पहचानने के बाद, आर्चबशिप ने संत दमित्रिी को चेर्नगिोव कैथेड्रल में एक उपदेशक[6378] के रूप में सेवा करने के लिए आमंत्रति कयिा। दो साल से अधकि समय तक, संत डेमेट्रयिस ने चेरनहिभि धर्मप्रांत के कैथेड्रल और अन्य चर्चों में उपदेश दयिा। लोगों को मसीह के वधिान में शक्षिति करके, उन्होंने अपने सभी श्रोताओं को महान

[6376] जोसेफ (नेल्युबोवचि - तुकालस्की), 1661 से मोगलिव के आर्चबशिप, बाद में कीव के मेट्रोपॉलटिन; उन्हें पोलशि लोगों ने बंदी बना लयिा था और 1676 में चहिरिनि में उनकी मृत्यु हो गई।

[6377] लाज़ार बारानोवचि (मृत्यु 1693) 1657 से चेर्नगिोव के आर्चबशिप थे। कीव अकादमी (1650–1656) के एक पूर्व छात्र और रेक्टर, लाज़ार ईश्वर के वचन का प्रचार करने के लिए प्रसद्धि थे और उन्होंने लटिलि रूस को वश में करने में मस्कोवाइट सरकार की सहायता की। संत डेमेट्रयिस ने उन्हें 'चर्च का एक महान स्तंभ' कहा।

[6378] 16वीं शताब्दी के अंत तक, रूस में उपदेश शायद ही कभी मौखकि रूप से दए जाते थे: अधकिांशत; पवत्रि पताओं की अनुवादति शक्षिाओं या संतों के जीवन को पढ़कर सुनाया जाता था। हालाँकि, जब से दक्षणि-पश्चमिी रूस में स्कूलों का उद्भव होने लगा, मौलकि उपदेश के उदाहरण सामने आने लगे; उसी समय, उपदेशक का एक वशिेष पद स्थापति कयिा गया, यह भूमकिा कैथेड्रल, मठों और भाईचारे में शक्षिति पुरोहतिों द्वारा नभिाई जाती थी।

आध्यात्मकि लाभ पहुँचाया और उन्हें बहुत प्रसन्नता दी: उनका जीवंत और आकर्षक भाषण ज्ञान के नमक से परपिूर्ण था, इसलएि हर कोई उन्हें सुनने के लएि लालायति रहता था।

एक महान उपदेशक के रूप में सेंट डमिट्रिी की ख्याति शीघ्र ही लटिलि रूस और लथिुआनयिा में फैल गई, और एक के बाद एक मठों ने उनके वाक्पटु उपदेशों से लाभ उठाने के लएि उन्हें अपने यहाँ आमंत्रति करना शुरू कर दयिा। इन नमिंत्रणों का तत्काल कारण नम्निलखिति घटना थी। जून 1677 में, धार्मकि उत्साह से प्रेरति होकर, दमिट्रिी चेरनहिवि से नोवोद्वोरस्की मठ[6379] के लएि परमेश्वर की परम पवत्रि माता की चमत्कारी प्रतमिा का सम्मान करने के लएि रवाना हुए, जो मॉस्को के मेट्रोपॉलटिन, संत पीटर द्वारा बनाई गई थी, और उन्हें लथिुआनयिा में ही रहना था। संत दमिट्रिी के आगमन के समय, मठ इस प्रतमिा को पुरानी चर्च से नई चर्च में भव्य रूप से स्थानांतरति करने की तैयारी कर रहा था। इस उद्देश्य के लएि, बेलारूस के बशिप थयिोडोसयिस और वलिनयिस में होली स्परिटि मठ के मठाधीश क्लेमेंट आ चुके थे। उत्सवों के अंत में, क्लेमेंट दमिट्रि को अपने मठ में अपने साथ ले गए। दमिट्रिी दो महीने से अधकि समय तक वल्निायिस में रहे और वहाँ उन्होंने दो उपदेश दएि। हालाँकि, इसके तुरंत बाद, बशिप थयिोडोसयिस के अनुरोध पर, संत दमिट्रिी स्लुत्स्क के लएि रवाना हो गए और ब्रदरहुड ट्रांसफगिरेशन मठ[6380] में नविास करने के बाद, उन्होंने चौदह महीने तक परमेश्वर का वचन प्रचार करने के लएि अथक परश्रिम कयिा। दमिट्रिी को मठ के संरक्षक, इओआन स्कोटकेवचि द्वारा बहुत प्यार और समर्थन मलिा, जनिके धन का उपयोग रूपांतरण मठ के नर्मिाण के लएि कयिा गया था। संत दमिट्रिी भी अपने संरक्षक का बहुत सम्मान करते थे और उनसे बहुत प्यार करते थे; वे उनके नधिन तक स्लुत्स्क में रहे और उनके अंतमि संस्कार पर एक प्रवचन देकर उनकी स्मृति को सम्माननति कयिा।

इस बीच, संत दमिट्रिी को पहले ही कई मौकों पर लटिलि रूस लौटने के लएि आमंत्रति कयिा जा चुका था। उन्हें हेतमैन सामोइलोवचि[6381] और उनके पूर्व मठाधीश, मेलेटयिस द्वारा बुलाया गया था, जो अब कीव में सेंट माइकल मठ के प्रभारी थे। फरवरी 1679 में, संत दमिट्रिी बट्यूरनि[6382] पहुँचे और हेतमैन[6383] द्वारा बड़ी गर्मजोशी और दयालुता से स्वागत कयिा गया । बटुरीन से बहुत दूर नहीं स्थति सेंट नकिोलस करुपति्स्की मठ[6384] में नविास करने के बाद, दमिट्रिी ने उत्साहपूर्वक उपवास, प्रार्थना और शकि्षाप्रद पुस्तकों के नरिंतर अध्ययन को समर्पति रहना जारी रखा; और उन्होंने वशिेष उत्साह के साथ परमेश्वर के वचन का प्रचार कयिा। उनके सदाचारी जीवन की खबर सभी मठों में फैल गई। उनमें से कई ने संत दमिट्रिी को आने और उनका नेतृत्व करने के लएि आमंत्रति कयिा। इस प्रकार, करिलिोव मठ के भाइयों ने उनसे अपना नेतृत्व संभालने का एक गंभीर अनुरोध कयिा। लेकनि संत दमिट्रिी ने, शायद वनिम्रता के कारण, और हेतमैन द्वारा रोके जाने के कारण भी, इस अनुरोध को अस्वीकार कर दयिा और करिलिोव मठ को एक धन्यवाद पत्र भेजा। इसके तुरंत बाद, 1681 में, Maksakovo,[6385] में स्थति ट्रांसफगिरेशन मठ के मठाधीश का नधिन हो गया। मठवासी समुदाय ने भी संत डेमेट्रयिस से उनके मठाधीश बनने का अनुरोध कयिा। अपनी एकांतवादी स्थति के कारण, माक्सकोवो मठ डेमेट्रयिस के कठोर मठवासी जीवन के लएि आदर्श रूप से उपयुक्त था। इसलएि, हेत्मान की सहमति से, उन्होंने मक्सकोवका के भक्षिुओं का प्रस्ताव स्वीकार कर लयिा और हेत्मान का पत्र लेकर चेरनहिभि के लएि रवाना हो गए ताकि आर्चबशिप लाज़ार बारानोवचि से एक फरमान प्राप्त कर सकें।

[6379] संघ का मुकाबला करने के लएि 1618 में स्थापति नोवोद्वोरस्की मठ, लथिुआनयिाई क्षेत्र (जो अब पस्कि जलिा है) के भीतर स्थति था और यह वल्निायिस में होली स्परिटि मठ के अधकिार क्षेत्र में था।

[6380] मन्स्कि गवर्नोरेट में स्लुत्स्क शहर। ट्रांसफगिरेशन मठ, जसिकी स्थापना लगभग 1600 में हुई थी, स्लुत्स्क ब्रदरहुड का हस्सिा था, जसिने अन्य ब्रदरहुड की तरह, कैथोलकिों और यूनएिट्स द्वारा कएि गए उत्पीड़न के खलिाफ ऑर्थोडॉक्सी की रक्षा की।

[6381] एक पुजारी के बेटे इवान सामोइलोवचि को 1672 में हेतमैन चुना गया था; 1687 में उन्हें हेतमैन के पद से हटा दयिा गया और 1690 में तोबोल्स्क में उनकी मृत्यु हो गई।

[6382] बट्यूरनि – जो अब सेइमा नदी पर, जलि के शहर कोноторо से 27 वर्स्ट दूर एक छोटा सा शहर है – की स्थापना 1575 में पोलशि राजा स्टीफन बटॉरी ने की थी, जन्होंने इसका नाम अपने नाम पर रखा (बटोरनि)। लटिलि रूस के वलिय के बाद, ज़ार अलेक्सी मखिाइलोवचि ने बट्यूरनि को हेतमन का नविास स्थान नयिुक्त कयिा।

[6383] हेटमैन (कोसैकों का नेता) लटिलि रूस में सर्वोच्च और स्वतंत्र प्राधकिारी था।

[6384] 15वीं शताब्दी में स्थापति, क्रीमयिा के तातारों द्वारा तबाह कयिा गया, और 16वीं शताब्दी में पुनर्नर्मिति, इस मठ का नाम अकाल के दौरान मठ के पास गरि अनाज के नाम पर करुपति्स्की रखा गया है। इस संबंध में कविदंती सेंट डेमेट्रयिस की खुद की लखिावट में वेदी पर रखे सुसमाचार में दर्ज है।

[6385] अब एक महलिा ऑर्थोडॉक्स मठ, यह सोसनति्स्की जलि में, बोर्ज़ना शहर के पास, देसना नदी के तट पर स्थति है।

आर्चबशिप ने डमिट्रिी का बहुत आदरपूर्वक स्वागत कयिा। जैसे भवष्यि का पूर्वानुमान लगाते हुए, लाजर ने हेटमैन का पत्र खोलते ही दमित्रिी से कहा: 'पत्र पढ़े बनिा ही मैं कहता हूँ: ईश्वर आपको न केवल मठाधीश का पद दे, बल्कि दमित्रिी नाम के सम्मान में, मैं आपके लिए माइट्र (मट्रिे) की कामना करता हूँ: दमित्रिी माइट्र प्राप्त करे।'

उसी दनि, एबॉट के रूप में '[6386] ' के अभषिेक के बाद, लज़ारस ने दमित्रिी का इस प्रकार अभविादन कयिा: 'आज दैवी-दृष्टि वाले भवष्यिवक्ता मूसा का पर्व है; आज के दनि प्रभु परमेश्वर ने आपको उस मठ में एबॉट के पद के लिए योग्य समझा है जहाँ प्रभु के रूपांतरण का चर्च स्थति है, ठीक उसी प्रकार जैसे मूसा तabor पर्वत पर खड़े थे। और जसिने मूसा को अपनी राहें प्रकट कीं, वही इस टाबर पर्वत पर आपको भी शाश्वत टाबर पर्वत की अपनी राहें प्रकट करे।"

'इन शब्दों को,' स्वयं संत दमित्रिी गवाही देते हैं, 'मैंने, एक पापी ने, एक शुभ संकेत और एक भवष्यिवाणी के रूप में लयिा, और उन्हें हृदय से स्वीकार कयिा। ईश्वर करे कि उनके महा-धर्मोपदेशात्मक पद की भवष्यिवाणी पूरी हो।'

अगले दनि, जब वह दमित्रिी से वदिा हो रहा था, तो लाजरस ने उसे एक सुंदर लाठी भेंट की।

संत डेमेट्रयिस कहते हैं, 'और उन्होंने मुझे इतनी दयालुता से वदिा कयिा, जैसे कोई पतिा अपने ही बेटे को वदिा करता है। हे प्रभु, उन्हें वह सब कुछ प्रदान करें जो उनके हृदय के अनुकूल हो।'

मठ का प्रभार संभालने पर, संत डेमेट्रयिस ने अपने कठोर मठवासी अनुशासन वाले पूर्व जीवन में बल्किुल भी बदलाव नहीं कयिा। जाग-प्रार्थना, प्रार्थना और अच्छे कार्यों में खुद को समर्पति करते हुए, उन्होंने सभी के लिए ईसाई वनिम्रता का एक उदाहरण प्रस्तुत कयिा। प्रभु के वचन को हमेशा ध्यान में रखते हुए: *'तुम में जो बड़ा होना चाहता है, वह तुम्हारा सेवक बने'* (मत्ती 20:26), उन्होंने स्वयं इस प्रकार जीवन जयिा और दूसरों को भी ऐसा करने की शकि्षा दी, और सभी के लिए वश्विास और धार्मकिता का एक आदर्श बने रहे। इसमें कोई संदेह नहीं है कि ऐसे मठाधीश अपने द्वारा शासति मठों का गौरव और शोभा होते हैं। इसीलिए संत दमित्रिी कसिी एक मठ में अधकि समय तक नहीं रहे, और जैसा कि हम आगे देखेंगे, उन्हें एक मठ से दूसरे मठ में स्थानांतरति कयिा जाता रहा।

माक्साकोवो के भकि्षु लंबे समय तक दमित्रिी के शब्दों और पवत्रि जीवन से प्रेरणा नहीं ले सके। 1 मार्च 1682 को, उन्हें बट्यूरनि में सेंट नकिोलस मठ का मठाधीश नयिुक्त कयिा गया। लेकनि उन्होंने स्वयं जल्द ही इस मठ से इस्तीफा दे दयिा। वे एक शांत और चतिनशील जीवन की लालसा रखते थे, ताकि वे स्वयं को बनिा कसिी बाधा के ईश्वर के चतिन, प्रार्थना और अन्य धार्मकि कार्यों के लिए समर्पति कर सकें। इसलिए, बटुरीन में अपनी मठाधीश के पद पर रहते हुए अगले ही वर्ष, अपने नाम दविस, 26 अक्टूबर 1683 को, उन्होंने मठ का प्रशासन छोड़ दयिा और एक साधारण भकि्षु के रूप में वहीं रहे। हालाँकि, जल्द ही, ईश्वर की कृपा से, संत डेमेट्रयिस को 'मनिेई-चेती' संकलति करने के महान कार्य के लिए बुलाया गया, जसिके माध्यम से उन्होंने संपूर्ण रूसी लोगों को अपार लाभ पहुँचाया।

1684 में, वरलाम यासनिस्की को कीव-पेचेरस्क लाव्रा का आर्कमिंड्राइट नयिुक्त कयिा गया। अपने पूर्ववर्तयिों - पीटर मोहलि और इनोसेंट गज़िल[6387] - से, उन्हें आर्कमिंड्राइट की उपाधि के साथ-साथ संतों के जीवन संकलति करने के महान कार्य का वचिार भी वरिासत में मलिा। यह कार्य और भी आवश्यक हो गया था क्योंकि तातारों के हमलों और लथिुआनयिाई तथा पोलशि लोगों द्वारा की गई तबाही के परणिामस्वरूप, चर्च ने कई कीमती आध्यात्मकि पुस्तकें और संतों के जीवन खो दएि थे। इस महत्वपूर्ण और महान कार्य को करने में सक्षम व्यक्ति की तलाश करते समय, वरलाम का ध्यान संत डेमेट्रयिस पर गया, जन्हिोंने आत्माओं के उद्धार के उद्देश्य से कएि गए कार्यों के प्रति अपने उत्साह के लिए पहले ही ख्याति प्राप्त कर ली थी। उनके इस चुनाव को लाव्रा के अन्य पादरयिों और भाइयों की सर्वसम्मति से मंजूरी मलि गई। इसके बाद वरलाम, डेमेट्रयिस के पास कीव लाव्रा में जाने और संतों के जीवन का संकलन और संशोधन करने का कार्यभार संभालने का अनुरोध लेकर गए।

अपने सुपुर्द कएि गए कार्य के बोझ से अभभिूत, उस वनिम्र तपस्वी ने इसे अस्वीकार करने का प्रयास कयिा। हालाँकि, अवज्ञा के पाप के भय से और चर्च की ज़रूरतों से अच्छी तरह वाकफि होकर, उन्होंने बारलाम की ज़ोरदार मांगों के आगे झुकना चुना। ईश्वर की सहायता और परमेश्वर की परम पवत्रि माता तथा सभी संतों की प्रार्थनाओं में आशा रखते हुए, दमित्रि ने जून 1684 में अपने नए प्रयास को शुरू कयिा और उन्हें सौंपा गया कार्य बड़ी लगन से करने लगे। उनकी आत्मा, उन संतों की छवयिों से भरी हुई, जनिके जीवन का उन्होंने अध्ययन कयिा था, उनकी नींद में आध्यात्मकि

[6386] 1 सतिंबर 1681 (डायरी, 1681 की प्रवष्टि)।

[6387] यासनिस्क, मोगलिा और गज़िल के बारे में – इस पुस्तक की प्रस्तावना देखें।

दर्शनों से धन्य हुई, जिन्होंने उन्हें उच्चतम आध्यात्मिक पूर्णता के मार्ग पर मजबूत किया और उनके महान कार्यों में उन्हें प्रोत्साहित किया।

संत डेमेट्रियस स्वयं कहते हैं, '10 अगस्त 1685 को, सोमवार को, मैंने मैटिन्स (प्रार्थना सभा) के लिए घंटियों की आवाज़ सुनी, लेकिन अपनी आदत की आलस्य के कारण, देर तक सो जाने के कारण, मैं समय पर नहीं पहुँच पाया और भजन-संग्रह के पाठ के समय भी सोया रहा। उस समय, मुझे निम्नलिखित दर्शन हुआ: ऐसा लगा जैसे मुझे एक निश्चित गुफा की देखभाल का काम सौंपा गया था जिसमें पवित्र अवशेष रखे हुए थे। जब मैं मोमबत्ती की रोशनी में संतों की ताबूतों की जाँच कर रहा था, तो मैंने वहाँ पवित्र महा शहीद बार्बरा को देखा, मानो वह वहाँ विश्राम कर रही हों। उसकी कफ़न के पास जाकर, मैंने उसे एक तरफ़ लेटे हुए देखा, और उसकी कफ़न में क्षय के लक्षण दिखाई दे रहे थे। इसे साफ़ करने की इच्छा से, मैंने उसके अवशेषों को रिलिक्वरी से निकालकर कहीं और रख दिया। रिलिक्वेरी को साफ़ करने के बाद, वह उनके अवशेषों के पास गया और उन्हें वापस अंदर रखने के लिए अपने हाथों में ले लिया; लेकिन अचानक उसने सेंट बारबरा को जीवित देखा।

'हे पवित्र कुंवारी बार्बरा, मेरी संरक्षक! मेरे पापों के लिए ईश्वर से प्रार्थना करो,' मैंने पुकारा।

संत ने उत्तर दिया, मानो उन्हें कोई संदेह हो:

'मुझे नहीं पता कि मैं मध्यस्थता करूँगी या नहीं, क्योंकि तुम रोमन रीति से प्रार्थना करते हो।'

मुझे लगता है कि यह मुझसे इसलिए कहा गया क्योंकि मैं प्रार्थना के मामले में काफी आलसी हूँ, और इस मामले में मैं रोमनों की तरह था, जिनकी प्रार्थनाएँ बहुत संक्षिप्त होती हैं, ठीक वैसे ही जैसे मेरी अपनी प्रार्थनाएँ संक्षिप्त और विरले होती हैं। संत के ये शब्द सुनकर मैं दुखी हो गया और, मानो, निराश हो गया। लेकिन संत ने थोड़ी देर बाद प्रसन्न और मुस्कुराते हुए चेहरे से मेरी ओर देखा और कहा: 'डरो मत' – और कुछ अन्य सांत्वना देने वाले शब्द बोले, जिन्हें मैं याद नहीं कर सकता। फिर, उसे अवशेष-पात्र में रखकर, मैंने उसके हाथ-पैरों को चूमा; उसका शरीर जीवित और बहुत गोरा प्रतीत हो रहा था - लेकिन अवशेष-पात्र जर्जर और खस्ताहाल था। इस बात का पछतावा करते हुए कि मैंने अपवित्र और गंदे हाथों और होठों से पवित्र अवशेषों को छूने की हिम्मत कैसे की, और यह कि मैं एक उचित अवशेष-पात्र नहीं देख सका, मैं सोचने लगा कि मैं इस ताबूत को कैसे सजा सकता हूँ, और पवित्र अवशेषों को स्थानांतरित करने के लिए एक नए और सबसे शानदार अवशेष-पात्र की तलाश करने लगा: लेकिन ठीक उसी क्षण मैं जाग गया। 'जागने पर मुझे पछतावा हुआ, पर मेरे हृदय में आनंद भी था।'

[6388]इस वृत्तांत का समापन करते हुए, संत डेमेट्रियस विनम्रतापूर्वक टिप्पणी करते हैं: 'ईश्वर जानें कि यह सपना क्या संकेत करता है, और इससे क्या घटनाएँ घटेंगी! ओह, काश, संत बारबरा, मेरी संरक्षक, की प्रार्थनाओं के माध्यम से, ईश्वर मुझे मेरे दुष्ट और दयनीय जीवन की मुक्ति प्रदान करें!'

पहले सपने के तीन या चार महीने बाद एक और सपना आया, जो इस प्रकार था: '1685 में, संत फिलिप के उपवास के दौरान, – संत डेमेट्रियस लिखते हैं – एक रात, पवित्र शहीद ओरस्टिस के दुखों के बारे में लिखना समाप्त करने के बाद, जिनकी स्मृति 10 नवंबर को मनाई जाती है, मैटिन्स से एक घंटे या उससे कम समय पहले, मैं बिना कपड़े उतारे सोने लेट गया, और एक सपने में मैंने पवित्र शहीद ओरस्टिस को देखा, जो मुस्कुराते हुए मुख से मुझसे इन शब्दों में बात कर रहे थे:

'मैंने मसीह के लिए तुम्हारे लिखे से भी अधिक यातनाएँ सहन की हैं।'

यह कहकर, उन्होंने अपनी चोगा खोली और मुझे अपने बाएँ पार्श्व में एक बड़ा घाव दिखाया, जो भीतर तक भेद गया था, और कहा:

'इसे लोहे से दागा गया था।'

तब, अपनी दाहिनी बांह को कोहनी तक उघाड़कर, उन्होंने कोहनी के ठीक विपरीत एक घाव दिखाया और कहा:

'इसे चीर दिया गया था।'

[6388] संत डेमेट्रियस ने महा शहीद संत बार्बरा को विशेष रूप से बहुत सम्मान दिया। 1678 में ही, जब वह स्लुट्स्क में थे, तो एबॉट मेलेटियस ने उन्हें संत बार्बरा के अवशेषों का एक हिस्सा उपहार के रूप में भेजा था। और वर्णित दृष्टि के कुछ वर्षों बाद, अर्थात् 13 जनवरी 1691 को, सेंट डेमेट्रियस ने उसी महान शहीद के अवशेषों के एक हिस्से का भव्य स्थानांतरण किया, जिन्हें तुकालस्की की मृत्यु के बाद बट्यूरिन राज्य खजाने में 'जैसे कि गुप्त रूप से' रखा गया था, निकोलेव्स्की मठ में – और उन्होंने हर मंगलवार को संत बार्बरा के सम्मान में एक प्रार्थना सभा आयोजित करने की स्थापना की।

कटकर अलग हुए टेंडन साफ़ तौर पर दखिाई दे रहे थे। उन्होंने अपनी बाईं बांह भी दखिाई, उसी जगह पर एक ऐसे ही घाव की ओर इशारा कयिा, और कहा:

'वह भी काट दयिा गया है।'

फरि, झुककर, उसने अपनी टांग को नंगा कयिा और अपने घुटने के मोड़ पर एक घाव की ओर इशारा कयिा; इसी तरह, अपनी दूसरी टांग को घुटने तक नंगा करके, उसने उसी जगह पर उसी तरह का घाव दखिाया और कहा:

'और इस पर दरांती से वार कयिा गया है।'

और सीधा खड़े होकर, मेरे चेहरे की ओर देखते हुए, उन्होंने कहा:

'देखते हो? मैंने मसीह के लिए तुम्हारे लखिे से कहीं ज़्यादा कष्ट सहे हैं।'

मैं, जवाब में कुछ कहने की हम्मित न करते हुए, चुप रहा और मन ही मन सोचा: यह ओरस्टिसि कौन है, क्या वह 'पाँचों' (13 दसिंबर) में से एक नहीं है? मेरे इस वचिार का पवत्रि शहीद ने उत्तर दयिा:

'मैं वह ओरस्टिसि नहीं हूँ, जो पाँचों में से एक है, बल्कि वही हूँ जसिका जीवन आप अभी लखि रहे हैं।'

मैंने उनके पीछे एक और प्रतष्ठिति दखिने वाले व्यक्ति को खड़ा देखा, और मुझे लगा कि वह भी एक शहीद था, लेकनि उसने कुछ नहीं कहा। ठीक उसी क्षण, मैटनि्स (प्रार्थना सभा) के लिए घंटी बजने से मैं चौंक गया, और मुझे अफ़सोस हुआ कि यह सबसे सुखद दर्शन इतनी जल्दी समाप्त हो गया।

'इस दृष्टि के बारे में,' संत डेमेट्रयिस ने तीन साल से अधकि समय बाद इसे दर्ज करते हुए कहा[6389] , 'मैं, यद्यपि अयोग्य और पापी हूँ, वास्तव में इसे ठीक वैसे ही देखा जैसा मैंने लखिा है, और कसिी अन्य प्रकार से नहीं; मैं यह अपने पुरोहति के शपथ के तहत स्वीकार करता हूँ: क्योंकि मुझे यह सब अब भी उतनी ही स्पष्ट रूप से याद है जतिना तब था।'

[6390]संत दमित्रिी को अपना मठाधीश का पद छोड़कर एक एकांत कोठरी में अपना महान कार्य करते हुए दो साल से अधकि समय बीत चुका था। ऐसा हुआ कि वह आर्चमिैंड्राइट वरलाम के साथ बट्यूरनि में पहुँचे। हेतमैन और नए मेट्रोपॉलटिन गेडयिन ने उनका खुशी-खुशी स्वागत कयिा और एक बार फरि से उन्हें नकिोलेव्स्की मठ का प्रभार संभालने के लिए आग्रह करने लगे। दमित्रिी ने लंबे समय तक मना कयिा, लेकनि अंततः उन्हें उनकी सच्ची वनितियों के आगे झुकना पड़ा और 9 फरवरी 1686 को वे बट्यूरनि चले गए। हालाँकि, कीव लावरा छोड़ने के बाद, संत दमित्रिी ने अपना काम नहीं छोड़ा। लाव्रा में दखिाए गए उसी उत्साह के साथ, उन्होंने संतों के जीवन संकलति करना जारी रखा, और यहीं उन्होंने माइनी-चेट्टी का पहला भाग पूरा कयिा, जसिमें सतिंबर, अक्टूबर और नवंबर के तीन महीने शामलि थे।

संत डेमेट्रयिस ने अपना कार्य आर्चमिांड्राइट वरलाम को प्रस्तुत कयिा। मठ के बुज़ुर्गों और अन्य वद्विानों के साथ मलिकर पांडुलपि को पढ़ने और जांचने के बाद, वरलाम ने संतों के जीवन के मुद्रण के साथ आगे बढ़ने का फैसला कयिा। संत दमित्रिी बट्युरनि से लाव्रा पहुँचे, और उनकी व्यक्तगित देखरेख में, 'मनिेई-चेती' का पहला खंड 1689 में मुद्रति कयिा गया था।

[6391][6392]इसके तुरंत बाद, सेंट डमिट्रिी को मास्को जाने का अवसर मलिा। प्रसि गोलत्सिनि ने हेतमैन मजेपा को क्रीमयिा में अभयिान के समापन की रपिोर्ट के साथ मास्को भेजा। हेटमैन के साथ सेंट डमिट्रिी और करिलिोव मठ के मठाधीश इनोकेन्टी थे, जनि्हें पैट्रआर्क के साथ कुछ धार्मकि मामलों पर चर्चा करने के लिए भेजा गया था। यह 21 जुलाई 1689 को हुआ था। मॉस्को पहुंचने पर, उन्हें ज़ार इवान अलेक्ज़ेवचि और राजकुमारी सोफयिा के समक्ष पेश कयिा गया। उसी दनि, संत दमित्रिी का परचिय पैट्रआर्क जोआकमि से हुआ[6393] । अपने आगमन के एक महीने बाद, संत

[6389] डायरी, 1689 की प्रवष्टि

[6390] गेदेओन चेर्तवेर्टनि्स्की († 1690) का जुलाई 1685 में कीव में चुनाव हुआ; उन्हें उसी वर्ष 8 नवंबर को मास्को में अभषिक्ति कयिा गया। मास्को से लौटने पर, मेट्रोपॉलटिन गेदेओन बट्यूरनि में रुके।

[6391] इवान स्टेपानोवचि माज़ेपा-कोलेडस्की († 1709) का पालन-पोषण पोलशि राजा यान काज़मिरि्ज़ के दरबार में हुआ और उन्होंने वदिेश में अपनी शक्षिा पूरी की। सामोइलोवचि के पदच्युत होने के बाद, उन्हें 1687 में हेतमैन चुना गया और उन्होंने गोलत्सिनि के दूसरे क्रीमयिा अभयिान में भाग लयिा। 1708 में, उन्होंने ज़ार पीटर और रूस के साथ वश्वािसघात कयिा, जसिके लिए उन्हें चर्च से बहष्कृत कर दयिा गया।

[6392] राजकुमार वासलिी वासलिीवचि गोलत्सिनि (1643–1714) राजकुमारी सोफयिा (1682–1689) के सात वर्षीय शासन के दौरान प्रमुख राजनेता थे। यह, बेशक, 1689 में क्रीमयिा में उनकी मुहमि को संदर्भति करता है, जो 1687 में हुई पहली मुहमि की तरह ही असफल थी, लेकनि जसिसे गोलत्सिनि को एक वजिेता के रूप में सम्मान मलिा।

[6393] जोआचमि (1674–1690), सर्व रूस के नौवें पैट्रआर्क, ने शुरू में सेंट डेमेट्रयिस को संदेह की दृष्टि से देखा, जैसा कि उन्होंने दक्षणि-पश्चमिी रूस के सभी वद्विानों को देखा।

दमित्रिी, हेतमैन के साथ, ट्रनिटिी-सर्गीस लाव्रा गए। उस समय ज़ार पीटर अलेक्सेवचि वहाँ रह रहे थे, जो राजकुमारी सोफयिा के उन पर जानलेवा हमलों से बच रहे थे। उन्होंने दमित्रिी का गर्मजोशी से स्वागत कयिा। लाव्रा में रहते हुए, दमित्रिी को पैट्रआर्क से मलिने का अवसर मलिा। स्वयं संत कहते हैं, 'हम उनसे अक्सर मलिने जाते थे, और उन्होंने मुझे, एक पापी को, संतों के जीवन लखिना जारी रखने का आशीर्वाद दयिा, और मुझे आशीर्वाद स्वरूप, एक फ्रेम में परमेश्वर की परम पवत्रि माता की एक प्रतमिा दी।'

अपने मठ लौटने पर, संत डेमेट्रयिस ने संतों के जीवन संकलति करने का कार्य बड़े उत्साह से शुरू कयिा। अपने धर्मपरायण कार्य को आसान बनाने के लिए, उन्होंने अपने मठाधीश के क्वार्टर छोड़ दिए और करुपत्स्किी के सेंट नकिोलस चर्च के पास एक सुनसान जगह पर अपने लिए एक वशिेष कोठरी बना ली, जसिे वे अपनी टप्पिणयिों में 'स्केट' कहते हैं।

जब संत दमित्रिी मेनायोन-चेती के दूसरे खंड पर काम कर रहे थे, तब मास्को के नए पैट्रआर्क, एड्रयिन[6394] ने उन्हें एक प्रशंसा पत्र भेजा। यह पत्र वरलाम द्वारा दयिा गया था, जन्हिें मास्को में (31 अगस्त 1690 को) कीव के मेट्रोपॉलटिन के पद पर पदोन्नत और अभषिक्ति कयिा गया था।

पैट्रआर्क ने लखिा, 'ईश्वर स्वयं, हे भाई, आपको हर आशीष से पुरस्कृत करेंगे, आपको जीवन की पुस्तक में अंकति करेंगे, क्योंकि आपने पहले तीन महीनों: सतिंबर, अक्टूबर और नवंबर: ईश्वर आपको आशीर्वाद देते रहें, आपको शक्ति दें और पूरे वर्ष परश्रिम के लिए आपको प्रेरति करते रहें, ताकि आप संतों के जीवन पर ऐसी अन्य पुस्तकों का पूर्ण रूप से संशोधन करके उन्हें मुद्रति रूप में प्रकाशति कर सकें।"

साथ ही, पैट्रआर्क ने नए मेट्रोपॉलटिन और लावरा के भावी आर्चमिांड्राइट दोनों से सेंट डमिट्रिी की हर बात में सहायता करने के लिए कहा, और उन्हें 'एक कुशल, समझदार और उत्साही कार्यकर्ता' बताया।

पतृिसत्ता के इस ध्यान से प्रोत्साहति होकर, संत डेमेट्रयिस ने मॉस्को के धर्मगुरु को वनिम्र कृतज्ञता की भावना के साथ उत्तर दयिा: 'संतों में और उनके द्वारा परमेश्वर की स्तुति और महमिा हो, क्योंकि उन्होंने अब अपनी पवत्रि कलीसयिा को एक ऐसा अच्छा और कुशल चरवाहा प्रदान कयिा है, आपके महाधर्म-गौण कार्यालय, जो अपनी सेवा के आरंभ में ही, ईश्वर और उनके संतों की महमिा की परवाह करने और उसे बढ़ाने के लिए सबसे पहले प्रयासरत हैं, यह इच्छा रखते हुए कि उनके जीवन को संपूर्ण रूसी ऑर्थोडॉक्स ईसाई लोगों के लाभ के लिए, दुनयिा के लिए एक आदर्श के रूप में प्रकाशति कयिा जाए। यह महमिा सभी पूजनीयों की है। अब मैं भी, यद्यपि अयोग्य हूँ, अधकि उत्साह के साथ, और प्रभु की सहायता से, इस कार्य के लिए अपना दुर्बल और पापी हाथ बढ़ाऊँगा, इस मामले में आपकी पवत्रि सेवा मेरे सहायक के रूप में होगी—एक ऐसा आशीर्वाद जो मुझे मजबूत करता है और मार्गदर्शन देता है, जो मुझे आलस्य की नींद से जागने और मुझसे जो आज्ञा दी गई है उसे लगन से पूरा करने के लिए अत्यधकि प्रेरति करता है। यद्यपि मैं इस कार्य को पूर्ण करने के लिए अकुशल हूँ, और मेरे पास पर्याप्त ज्ञान और क्षमता का अभाव है: तथापि, उस यीशु के द्वारा जो मुझे बल देता है, मुझे पवत्रि आज्ञाकारति का जुआ उठाना ही होगा, उसको अपनी न्यूनतम क्षमता से पूरा करते हुए, जो हमने सभी ने उनके पूर्णत्व से प्राप्त कयिा है और प्राप्त करते रहना है – ताकि आपके महा-धर्मगुरुत्व की ईश्वर-प्रसन्न प्रार्थना ईश्वर के आशीर्वाद से मेरी सहायता करती रहे, जसिमें मैं बड़ी आशा रखता हूँ'।

अब संत डेमेट्रयिस ने स्वयं को पूरी तरह से चेती-मनिेई को समर्पति करने का संकल्प लयिा। वे स्वयं बताते हैं, '14 फरवरी (1692) को, लेंट के पहले सप्ताह में, दैवीय धर्मवधि से पहले, मैंने बाट्युरनि मठ में मठाध्यक्ष के अपने पद से इस्तीफा दे दयिा और उसे सौंप दयिा ताकि मैं शांति का जीवन जी सकूँ और संतों के जीवन लखि सकूँ।' अपनी कोठरी के एकांत में रहते हुए, उन्होंने अगले तीन महीनों - दसिंबर, जनवरी और फरवरी - को कवर करते हुए दूसरा खंड संकलति कयिा और 9 मई 1693 को इसे व्यक्तगित रूप से कीव-पेचेरस्क मुद्रणालय ले गए।

लेकनि वह मेहनती भक्षिु जतिना भी एक शांत और एकांत जीवन का आकांक्षी था, जो लोग उसके महान चरत्रि का सम्मान करते थे, वे उसे चैन से नहीं रहने देते थे। इस प्रकार, जब संत डेमेट्रयिस अपने काम की छपाई की देखरेख कर रहे थे, तो चेर्नगिोव के नए आर्चबशिप, उग्लचि के संत थयिोडोसयिस ने उन्हें ह्लुखवि शहर से 27 वर्स्ट की दूरी पर स्थति पीटर और पॉल मठ का प्रभार संभालने के लिए मना लयिा[6395] । इस मठ में अपने प्रवास के दौरान, जनवरी 1695 में,

---

[6394] एड्रयिन (1690–1700) सर्व रूस के अंतमि पैट्रआर्क थे।

[6395] चेर्नगिोव गवर्नरेट के ग्लुखोव में स्थति पेट्रो-पावलोव्स्की मठ की स्थापना कसिी अज्ञात व्यक्ति ने कसिी अज्ञात तथि पिर की थी। 17वीं शताब्दी के मध्य तक यह पहले से ही मौजूद था। सेंट डेमेट्रयिस ने मठ के भीतर एक पत्थर का गरिजाघर बनाया।

चेती-मनिेई के दूसरे भाग की छपाई पूरी हुई। और इस खंड के लिए, पैट्रआिर्क एड्रयिन ने डमिट्रिी को पहले की तरह ही प्रशंसा दी और उन्हें एक और प्रशंसा पत्र भेजा। इससे डमिट्रिी को अपने काम को उत्साह के साथ जारी रखने के लिए प्रोत्साहन मलिा, और उन्होंने मार्च, अप्रैल और मई महीनों को कवर करने वाला तीसरा खंड तैयार करना शुरू कर दयिा।

1697 की शुरुआत में, सेंट दमित्रि को कीव सरिलि मठ का मठाधीश नयिुक्त कयिा गया, और पांच महीने बाद, 20 जून को, उन्हें चेर्नहिवि येलेट्स डॉर्मशिन मठ का आर्चमिैंड्राइट नयिुक्त कयिा गया[6396] । इस प्रकार, लाज़ार बारानोवचि की इच्छा अंततःपूरी हुई: दमित्रि को माइट्र प्राप्त हुआ। हालाँकि, आर्चमिैंड्राइट के पद पर पदोन्नत होने के बाद, संत दमित्रि ने धर्मग्रंथ के वचनों: 'जसिे बहुत कुछ दयिा गया है, उससे बहुत कुछ माँगा जाएगा' (लूका 12:48) को ध्यान में रखते हुए, और भी अधकि उत्साह और लगन के साथ अपने श्रम और तपस्या के प्रयासों को समर्पति कर दयिा। संतों के जीवन का अध्ययन जारी रखते हुए, उन्होंने मठ की भलाई की भी अनदेखी नहीं की और जहाँ भी आवश्यकता होती, वचन और कर्म से, परामर्श और ववि ेकपूर्ण नर्णिय के माध्यम से मदद की।

[6397]इसके बाद दो और वर्ष बीते, और संत डेमेट्रयिस को स्पस्की नोवगोरोड-सेवर्सकी मठ ([6398]) में स्थानांतरति कर दयिा गया। यह आखरिी मठ था जसिका उन्होंने नरीक्षण कयिा। यहीं उन्होंने *माइनी-चेती* का तीसरा भाग पूरा कयिा, जो जनवरी 1700 में प्रकाशति हुआ था। इसके बाद, लाव्रा के आर्चमिंड्राइट जोआसाफ क्रोकॉव्स्की ने मठवासी समुदाय के साथ मलिकर, संतों के जीवन के संकलक के प्रति विशिष सम्मान के प्रतीक के रूप में, उन्हें उपहार में परमेश्वर की परम पवत्रि माता का एक आइकन भेजा, जो जार अलेक्सी मखिाइलोवचि द्वारा कीव के मेट्रोपॉलटिन पीटर मोहलि को उनके राज्याभषिेक के दौरान प्रदान कयिा गया था।

उसी वर्ष, 1700 में, सम्राट पीटर महान, अपने वशिाल साम्राज्यों के दूरदराज के क्षेत्रों के लिए चतिति, ने कीव के मेट्रोपॉलटिन वर्लाम को नर्दिेश दयिा कि वे आर्चमिैंड्राइट्स, मठाधीशों या अन्य भक्षिुओं में से, जो अच्छे चरत्रि, वद्विान और नष्किलंक आचरण वाले हों, जो टोबोल्स्क में मेट्रोपॉलटिन के रूप में सेवा कर सकें और, ईश्वर की कृपा से, चीन और साइबेरयिा में उपदेश देकर मूर्तपिूजा और अन्य प्रकार के अज्ञान के अंधकार में डूबे लोगों को सच्चे जीवति ईश्वर के ज्ञान, सेवा और पूजा की ओर ले जा सकें'। इस संबंध में बार्लाम को नोवगोरोड-सेवेर्स्की के आर्चमिांड्राइट से बेहतर कोई नहीं पता था - और इसलिए, 1701 की शुरुआत में, सेंट दमित्रि को मास्को बुलाया गया। वहाँ उन्होंने सम्राट को एक स्वागत भाषण दयिा, जसिमें उन्होंने सांसारकि ज़ार की गरमिा का बखान कयिा, जो पृथ्वी पर मसीह - स्वर्गीय राजा - की छवि का प्रतनिधित्वि करते हैं। इसके तुरंत बाद - 23 मार्च को - सेंट डमिट्रिी को साइबेरयिा और टोबोल्स्क के मेट्रोपॉलटिन के रूप में अभषिक्ति कयिा गया। यह उच्च सम्मान वनिम्र डमिट्रिी को प्रदान कयिा गया, लेकनि यह उनकी पसंद के अनुसार नहीं था। साइबेरयिा एक कठोर और ठंडी भूमि है, और सेंट डमिट्रिी का स्वास्थ्य कमजोर था, जो उनके अथक परश्रिम से और बगिड़ गया था। साइबेरयिा एक दूर की भूमि थी, फरि भी संत डेमेट्रयिस के दलि के बहुत करीब एक कारण था, जसिे उन्होंने कीव में शुरू कयिा था और जसिे केवल वहीं या उन स्थानों के पास जारी रखा जा सकता था जहाँ उस समय शक्षिा केंद्रति थी, न कि दूर-दराज और अलग-थलग साइबेरयिा में। इस सब से वह इतना परेशान हो गए कि वे बस्तिर पर पड़ गए। ज़ार स्वयं उस बीमार व्यक्ति से मलिने आए और उसकी बीमारी का कारण जानने के बाद, उन्होंने उसे आश्वासन दयिा और अगली धर्मप्रांत की खाली होने की प्रतीक्षा के दौरान, कुछ समय के लिए मास्को में रहने की अनुमति दे दी। जल्द ही ऐसे एक धर्मप्रांत के लिए एक रक्ति उत्पन्न हो गई: रोस्तोव के मेट्रोपॉलटिन जोआसाफ का नधिन हो गया था, और 4 जनवरी 1702 को सेंट दमित्रि को उनका उत्तराधकिारी नयिुक्त कयिा गया।

संत दमित्रि 1 मार्च को, महा-उपवास के दूसरे सप्ताह के दौरान, रोस्तोव पहुँचे। शहर में प्रवेश करने पर, उन्होंने सबसे पहले स्पासो-याकोवलेव्स्की मठ का दौरा कयिा। ईश्वर की माता के गर्भाधान के कैथेड्रल में प्रवेश कयिा, जहाँ रोस्तोव के संत जेम्स के अवशेष रखे हैं, नए आर्चपास्टर ने प्रथागत प्रार्थना की; ठीक उसी क्षण, स्वर्ग से एक वशिेष प्रकटोक्ति के माध्यम से यह जानकर कि रोस्तोव में अपने परश्रिम-पूर्ण और अत्यंत लाभकारी जीवन का अंत करना ही उनके भाग्य में लखिा था, उन्होंने कैथेड्रल के दाहनि ेकोने में अपने लिए एक कब्र नर्धिारति की और अपने आसपास

[6396] चेर्नगिोव के परे, बोल्डनि पहाड़ों पर स्थति येलेट्स असम्प्शन मठ की स्थापना 1069 में राजकुमार स्वयितोस्लाव यारोस्लावचि द्वारा, 'मां ईश्वर' की प्रतमिा के प्रकट होने के स्थान पर, 'केव्स के सेंट एंथनी' की सलाह पर की गई थी; इसे तातारों ने तबाह कर दयिा था और 1500 में फरि से स्थापति कयिा गया; 1635 से 1649 तक यह यूनएिट्स के नयिंत्रण में था; 1671 में इसे बहाल कयिा गया।

[6397] इओसाफ क्रोकॉव्स्की ने 1697 से 1708 तक पेचेर्स्क लाव्रा के आर्चमिांड्राइट के रूप में कार्य कयिा।

[6398] यह मठ, जो स्वयं नोवगोरोड-सेवर्सकी में स्थति है, का नर्मिाण 17वीं शताब्दी के मध्य में आर्चबशिप लाज़ार बारानोवचि ने कयिा था।

के लोगों से कहा: 'यह मेरी वशि्राम-स्थली है: यहाँ मैं सदैव और अनंतकाल तक नविास करूँगा'[6399] । बाद में डॉर्मशिन कैथेड्रल में दैवीय लटिर्जी का अनुष्ठान करने के बाद, संत ने अपने नए झुंड को एक प्रभावशाली और मार्मकि उपदेश दयिा, जसिमें उन्होंने चरवाहे और झुंड के पारस्परकि कर्तव्यों को स्पष्ट कयिा।

'तुम्हारे हृदय मेरे आने से व्यथति न हों,' संत ने कहा, 'क्योंकि मैं द्वार से भीतर आया हूँ, न कि कहीं और से चढ़कर; मैंने तुम्हें नहीं खोजा, फरि भी मैंने तुम्हें खोज नकिाला, और मैं तुम्हें वैसे नहीं जानता, जैसे तुम मुझे जानते हो; परन्तु प्रभु के मार्ग अगम्य हैं; उन्होंने मुझे आपके पास भेजा है, और मैं इस लिए नहीं आया हूँ कि आप मेरी सेवा करें, बल्कि इस लिए आया हूँ कि मैं आपकी सेवा करूँ, प्रभु के वचन के अनुसार: 'जो कोई तुम में पहलि होना चाहता है, वह सभी का सेवक बने।'"

रोस्तोव के मेट्रोपोलसि का प्रशासन संभालने पर, संत दमिति्री ने इसे बहुत बड़े अव्यवस्था की स्थतिि में पाया। एलयिाह के उत्साह के साथ, उन्होंने चर्च के पुनर्गठन और मानव आत्माओं के उद्धार के लिए अथक रूप से खुद को समर्पति कर दयिा। एक सच्चे चरवाहे के रूप में, सुसमाचार के शब्दों का पालन करते *हुए: 'तुम्हारा प्रकाश इस प्रकार मनुष्यों के सामने चमके, कि वे तुम्हारे भले काम देखकर तुम्हारे स्वर्गीय पति की महमिा करें* (मत्ती 5:16), संत स्वयं हर तरह से धर्मपरायणता का एक आदर्श थे। साथ ही, उन्होंने सभी वर्गों के लोगों से बुरी आदतें, ईर्ष्या, झूठ और अन्य दुर्गुणों को मटिाने का प्रयास कयिा। संत को पादरयिों के अज्ञान और ईश्वर के वचन के प्रचार की उपेक्षा से वशिेष रूप से दुख हुआ।

संत डेमेट्रयिस ने अपने एक उपदेश में कहा, 'हाय हमारे दुर्भाग्यपूर्ण समय पर, क्योंकि परमेश्वर के वचन के बोने का इतना बुरी तरह से उपेक्षा की गई है—मुझे नहीं पता कि सबसे पहले कसिकी नदिा करूँ: बोने वालों की या मटि्टी की, याजकों की या मानव हृदयों की, या दोनों की एक साथ? वे सब मलिकर नरिर्थक हो गए हैं; एक भी ऐसा नहीं है जो भलाई करे। बीजारोपण करने वाला बीज नहीं बोता, और भूमि उसे ग्रहण नहीं करती; पुरोहति लापरवाह हैं, और लोग भटक गए हैं; पुरोहति नहीं सखिाते, और लोग अज्ञानी बने रहते हैं; पुरोहति परमेश्वर का वचन नहीं प्रचार करते, और लोग न तो सुनते हैं और न सुनना चाहते हैं।'

धर्मगुरुओं में से कई में तो संत को एक ठोस नैतकि परवरशि भी नहीं मलिी। इसके वपिरीत, उन्हें यह देखकर दुख हुआ कि परविारों के मुखयिा यह सुनश्चति करने में लापरवाह थे कि उनके घर के सदस्य अपने प्राथमकि ईसाई कर्तव्यों को पूरा करें।

संत डेमेट्रयिस आगे कहते हैं, 'और जो बात और भी अधकि आश्चर्यजनक है, वह यह है कि कई पुरोहतिों की पत्नयिाँ और बच्चे कभी भी पवत्रि संस्कार ग्रहण नहीं करते, जैसा कि मैंने यहाँ से जाना है: पुरोहतिों के बेटे अपने पतिाओं की जगह लेने आते हैं, और जब हम उनसे पूछते हैं कि उन्होंने आखरिी बार पवत्रि संस्कार कब ग्रहण कयिा था, तो कई सचमुच कहते हैं कि उन्हें याद नहीं कि उन्होंने आखरिी बार ऐसा कब कयिा था। उन दयनीय पुरोहतिों का वनिाश हो जो अपने ही घरों का ध्यान नहीं रखते! वे पवत्रि चर्च की देखभाल कैसे कर सकते हैं, जबकि वे अपने ही घर वालों को पवत्रि कम्युनयिन तक नहीं ले जाते? वे अपने ही घरों में आत्माओं की मुक्ति की परवाह कएि बनिा, अपने अनुयाययिों को मुक्ति तक कैसे ले जा सकते हैं?"

पुरोहति अपने कर्तव्यों से अच्छी तरह परचिति नहीं थे। उनमें से कुछ ऐसे थे जो भोज के अवसर पर, नदिा और फटकार के साथ, अपने आध्यात्मकि बच्चों के उन पापों का वर्णन करते थे, जो पाप-स्वीकार में प्रकट हुए थे। अन्य इतने आलसी थे कि वे बीमारों से उनके पाप-स्वीकार सुनने और पवत्रि रहस्यों को प्रदान करने, वशिेष रूप से गरीबों को, के लिए मलिने भी नहीं जाते थे।

संत धर्मपरायण उत्साह से और भी अधकि भर गए, और उनका दुख और भी गहरा हो गया, जब उन्हें पता चला कि कुछ पादरी, ईश्वर के भय को भूलकर, मसीह के परम शुद्ध और जीवन-दायक रहस्यों के प्रति उचति श्रद्धा नहीं दखिाते थे। अपने एक पत्र में, संत ऐसी ही एक घटना का वर्णन करते हैं।

'संयोग से जनवरी 1702 में हम यारोस्लावल शहर की यात्रा कर रहे थे। रास्ते में, मैं एक गाँव के चर्च में गया। अपनी नयिमति प्रार्थनाएँ करने के बाद, मैंने मसीह के परम पवत्रि रहस्यों को उचति सम्मान और पूजा अर्पति करना चाहा और स्थानीय पादरी से पूछा:

[6399] रोस्तोव में स्पासो-याकोवलेव्स्की मठ की स्थापना 14वीं शताब्दी के अंत में रोस्तोव के बशिप जैकब († 1392) द्वारा की गई थी; 17वीं शताब्दी की शुरुआत में, लथिुआनयिाई आक्रमण के दौरान, इसे बर्बाद कर दयिा गया था। संत एनी की गर्भाधान को समर्पति कैथेड्रल चर्च, जसिमें संत डेमेट्रयिस के अवशेष रखे गए हैं, 1691 से मौजूद है।

'मसीह के जीवन-दायक रहस्य कहाँ हैं?'

पुजारी, जैसे कि मेरी बात समझ ही नहीं पाया हो, उलझन में खड़ा रहा और कुछ नहीं बोला। फिर मैंने उससे फिर पूछा:

'मसीह का शरीर कहाँ है?'

पुजारी इस सवाल को भी नहीं समझा। फिर मेरे साथ चल रहे एक अनुभवी पुजारी ने उससे पूछा:

'आरक्षित कहाँ है?'

तब पुजारी ने एक कोने से एक 'अत्यंत घृणित पात्र' निकाला और हमें उसमें रखे गए उस महान अवशेष को इतनी उपेक्षा से दिखाया, एक ऐसा अवशेष जिस पर स्वर्गदूत भी भय से दृष्टि डालते हैं।

संत कहते हैं, 'और इस पर मेरा हृदय गहराई से दुखी हुआ, क्योंकि मसीह का शरीर इतनी अनादर की स्थिति में रखा जाता है, और वे परम पवित्र रहस्यों के योग्य कोई नाम भी इस्तेमाल नहीं करते। इस पर स्वर्ग चकित हो जाए, और पृथ्वी के छोर भयभीत हो जाएं!'

संत ने ऐसी स्पष्ट कमियों के तत्काल उन्मूलन को सुनिश्चित करना शुरू कर दिया। यह इच्छा व्यक्त करते हुए कि पुरोहित अपनी लापरवाही त्याग दें और परम सावधानी तथा ईश्वर के भय के साथ अपनी सेवा का निर्विहन करें, संत डेमेट्रियस ने पादरियों को दो परिपत्र लिखे। ये पत्र पुरोहितों को अनेक प्रतियों में भेजे गए ताकि वे उन्हें स्वयं की प्रतिलिपि बिना सकें, उन्हें बार-बार पढ़ सकें, और उनके अनुसार अपने कर्तव्यों को सुधार सकें।

पहली पत्रिका में, संत ने पादरियों को पिता समान समझाते हुए अपने दुष्ट मार्गों को त्यागने का आग्रह किया, और उन्हें अपने आध्यात्मिक बच्चों के पापों के बारे में बोलने या आध्यात्मिक पिता के रूप में अपने पद और पदवी का घमंड करने से मना किया। प्रभु के नाम पर, उन्होंने उनसे विनती की कि वे गरीबों और ज़रूरतमंदों को तुच्छ न समझें, बल्कि अपनी देखरेख में आने वाले सभी लोगों की आत्माओं की समान और निरंतर देखभाल करें।

अपने दूसरे पत्र में, संत डेमेट्रियस ने अपने सर्व-धर्मोपकारी अधिकार के नाते आज्ञा दी कि पुरोहित, ईश्वर के भयानक न्याय के भय के अधीन, न केवल स्वयं पवित्र और जीवन-दायक रहस्यों की उचित उपासना करें, बल्कि दूसरों को भी ऐसा करने का निर्देश दें; उन्होंने उन्हें पवित्र संस्कारों को उनकी पवित्रता के अनुरूप स्थानों और पात्रों में रखने और उन्हें 'भंडार' न कहने के लिए प्रोत्साहित किया; उन्होंने पुरोहितों से अपनी पवित्र सेवा के लिए योग्य रूप से स्वयं को तैयार करने का आग्रह किया और उनसे विनती की कि वे लोगों को यथासंभव अधिक बार उपदेश दें और अपने कर्तव्यों को अत्यंत सावधानी से पूरा करें।

पुरोहित वर्ग की कमियों को हमेशा के लिए खत्म करने के प्रयास में, संत डेमेट्रियस ने महसूस किया कि इसे प्राप्त करने का सबसे प्रभावी साधन ठोस शिक्षण और पालन-पोषण था। इसलिए उन्होंने अपने बिशप के आवास पर एक स्कूल[6400] की स्थापना की। इस स्कूल में दो सौ से अधिक छात्र—पुरोहितों के बच्चे—इकट्ठा करने के बाद, उन्होंने उन्हें तीन वर्गों में विभाजित किया और प्रत्येक वर्ग के लिए एक अलग शिक्षक नियुक्त किया। यह स्कूल संत के लिए विशेष चिंता का विषय था। वह अक्सर कक्षाओं का दौरा करते थे, स्वयं छात्रों की बात सुनते थे और उनके ज्ञान की परीक्षा लेते थे। यदि कोई शिक्षक अनुपस्थित रहता, तो वह स्वयं उसकी भूमिका निभाते। अपने सामान्य कर्तव्यों से अलग, अपने खाली समय में संत प्रतिभाशाली छात्रों को इकट्ठा करते और उन्हें पुराने नियम (Old Testament) की कुछ पुस्तकों की व्याख्या करते; गर्मियों के दौरान, जब वे बिशप के गाँव डेमियानी में रहते थे, तो वे अपने छात्रों को नए नियम (New Testament) की व्याख्या करते थे। संत अपने छात्रों के नैतिक पालन-पोषण के बारे में भी समान रूप से चिंतित थे। रविवार और त्योहारों के दिनों में, उन्हें कैथेड्रल चर्च में पूरी रात की प्रार्थना सभा और दैवीय पूजा में शामिल होना अनिवार्य था। पहले कैथिस्मा के अंत में, जब कोई अंश या संत-चरित पढ़ा जा रहा होता था, तो छात्रों को संत के पास आकर उनका आशीर्वाद लेना होता था, इस प्रकार वे अपनी उपस्थिति दिर्ज कराते थे। आर्चपास्टर ने अपने शिष्यों को न केवल महा-उपवास बल्कि अन्य उपवासों का भी सख्ती से पालन करने का आदेश दिया; वह स्वयं उनके पाप-स्वीकार सुनते थे और उन्हें पवित्र रहस्य प्रदान करते थे। अपनी पढ़ाई पूरी करने पर, संत ने उनकी योग्यता के अनुसार उन्हें चर्चों में पद

[6400] स्कूल में कक्षाएं 1 सितंबर 1702 को शुरू हुईं। हालाँकि, सेंट डेमेट्रियस द्वारा स्थापित यह स्कूल अधिक समय तक नहीं चला; यह 1705 में समाप्त हो गया।

दिए। उनमें अपने पद के प्रति सम्मान की भावना जगाने के लिए, उन्होंने डिकिन्स और सेक्सटन्स को स्टिचैरियन पहनाया, जो रोस्तोव में पहले कभी नहीं किया गया था।

हालाँकि संत अपनी असंख्य चिंताओं और कर्तव्यों के बोझ से कितना भी दबे हुए थे, उन्होंने अपने नए मंत्रालय में भी संतों के जीवन पर अपने कार्य को नहीं छोड़ा। संत डेमेट्रियस के रोस्तोव आने को लगभग तीन साल बीत चुके थे, और रोस्तोव कैथेड्रल में रखे गए रोस्तोव के बिशपों के वृत्तांत में, संत डेमेट्रियस द्वारा इस महान कार्य के समापन के बारे में निम्नलिखित प्रविष्टि की गई थी: 'ईश्वर वचन के अवतार के 1705वें वर्ष में, फरवरी महीने के 9वें दिन, संत निकिफोरस शहीद, जिन्हें विजयी के नाम से जाना जाता है, के पर्व के दिन, और प्रभु के मंदिर में समर्पण के पर्व पर, संत सिमोन ईश्वर-स्वीकर्ता को अपनी प्रार्थना अर्पित करने के पश्चात्: 'अब हे प्रभु, अपने दास को शान्ति में जाने दे', प्रभु के कष्ट-सप्ताह के शुक्रवार को, जिस दिन मसीह ने क्रूस पर कहा: 'यह पूरा हो गया' – प्रस्थान के स्मरण के शनिवार से पहले और अंतिम न्याय के सप्ताह से पहले, ईश्वर और ईश्वर की अति पवित्र माता की सहायता से, और सभी संतों की प्रार्थनाओं द्वारा, अगस्त का महीना दर्ज किया गया। आमीन।"

उसी वर्ष के सितंबर में, जून, जुलाई और अगस्त के महीनों को कवर करने वाला यह अंतिम खंड, कीव-पेचेरस्क लाव्रा में मुद्रित किया गया था। इस प्रकार मेनायोन संकलन का महान कार्य पूरा हुआ, जिसके लिए संत द्वारा बीस से अधिक वर्षों की तीव्र मेहनत की आवश्यकता पड़ी थी।

लेकिन रोस्तोव में मंडली के बीच संत डेमेट्रियस के सामने एक और महत्वपूर्ण कार्य था। उस समय वहाँ कई संप्रदायवादी थे, जिनके प्रमुख शिक्षक, ब्रिन के जंगलों में छिपे हुए[6401] , अपने गुप्त प्रचारकों के माध्यम से अपनी हानिकारक शिक्षाओं को दूर-दूर तक फैला रहे थे। झूठी व्याख्याओं और गुप्त उपदेशों के माध्यम से, वे मसीह के भेड़ों को अपने विनाशकारी जालों में फँसा रहे थे। कई लोग, उनकी चापलूसी भरी शिक्षाओं पर विश्वास करके, सच्चे विश्वास में डगमगा गए।

'हे हमारे अंतिम दिनों के दुष्टो!' संत पुकार उठते हैं, 'क्योंकि अब पवित्र कलीसिया बहुत दबी और घटी हुई है, आंशिक रूप से बाहरी उत्पीड़कों द्वारा, आंशिक रूप से आंतरिक फूट डालने वालों द्वारा, जो, जैसा कि प्रेरित कहते हैं, *"हमसे निकल गए, परन्तु वे हम में से नहीं थे"* (1 यूहन्ना 2:19)। और पहले से ही, केवल इसी फूट के कारण, स्वयं सच्ची, कैथोलिक, प्रेरितिक कलीसिया क्षीण हो गई है, क्योंकि कलीसिया का कोई सच्चा पुत्र कहीं भी मिलना मुश्किल है: क्योंकि लगभग हर नगर में कोई अन्य, विशेष आस्था गढ़ी जा रही है, और यहाँ तक कि विश्वास के संबंध में भी, साधारण पुरुष और महिलाएँ, जो सच्चे मार्ग के बारे में बहुत कम जानते हैं, कट्टरता से सिखा रहे हैं और उपदेश दे रहे हैं—जैसे जब वे तीन उंगलियों को जोड़ने को एक झूठे और नए क्रूस के रूप में कहते हैं—और अपनी हठधर्मिता में वे दुखी प्राणियों की तरह खड़े हैं, जिन्होंने चर्च के सच्चे शिक्षकों को तुच्छ समझकर अस्वीकार कर दिया है'।

ईसाई धर्म के इस प्रबुद्ध रक्षक के लिए ऐसी घटनाएँ अत्यंत चिंताजनक थीं। संत ने अपने धर्मप्रांत का कई बार दौरा करने और यारोस्लाव में लंबे समय तक रहने का संकल्प लिया, ताकि वे अपने शब्दों के माध्यम से ऑर्थोडॉक्स चर्च से धर्मत्याग करने वालों की गहरी जड़ें जमा चुकी अज्ञानता की निंदा कर सकें। यारोस्लावल की अपनी एक यात्रा के दौरान, संत डेमेट्रियस ने रविवार को कैथेड्रल में लिटिर्जी का अनुष्ठान करने के बाद अपने घर लौट रहे थे। उसी क्षण, उनके दो अज्ञात व्यक्ति उनके पास आए और पूछा:

'हे पवित्र बिशप, आपकी आज्ञा क्या है? वे हमें अपनी दाढ़ियाँ मुंडवाने का आदेश दे रहे हैं[6402] , लेकिन हम अपनी दाढ़ियों के लिए अपनी जान भी दे सकते हैं।'

संत इस अप्रत्याशित प्रश्न से चकित हो गए और उन्होंने पूछा:

'क्या तुम्हें लगता है कि अगर तुम्हारा सिर काट दिया जाए तो वह फिर से उग आएगा?'

'नहीं,' उन्होंने उत्तर दिया।

'और दाढ़ी फिर से उगेगी?' संत ने पूछा।

'दाढ़ी फिर से उग आएगी,' उन्होंने जवाब दिया।

'तो फिर, उन्हें आपकी दाढ़ियाँ काट लेने दो; आप दूसरी उगा लेंगे।'

[6401] घने ब्रिन के जंगल ब्रिनी नदी के किनारे तक फैले हुए थे, जो कालूगा गवर्नरेट में ओका नदी की एक सहायक नदी, झिजिद्रा में मिलती है। संप्रदायवादियों ने इन जंगलों में शरण ली। यहीं से इस संप्रदाय का नाम, 'ब्रिन धर्म' पड़ा।

[6402] उस समय, पीटर महान ने पुरुषों को अपनी दाढ़ी मुंडवाने का आदेश देते हुए फरमान जारी किए।

जब संत और उनके साथ आए प्रतिष्ठित नागरिक उनकी कोठरी में दाखिल हुए, तो उन्होंने दाढ़ियाँ मुंडवाने के बारे में काफी देर तक बात की। संत डेमेट्रियस को पता चला कि उनके अनुयायियों में से कई लोग अपनी मुक्ति पर संदेह कर रहे थे क्योंकि ज़ार के आदेश से उनकी दाढ़ियाँ मुंडवा दी गई थीं। वे मानते थे कि अपनी दाढ़ियों के साथ ही उन्होंने ईश्वर की प्रतिमा और समानता भी खो दी है। संत ने उन्हें विस्तार से इन संदेहों को त्यागने के लिए प्रेरित किया, यह साबित करते हुए कि ईश्वर की प्रतिमा और समानता दाढ़ी या चेहरे में नहीं, बल्कि मानव आत्मा में निहित है। बाद में संत डेमेट्रियस ने 'मनुष्य में ईश्वर की प्रतिमा और समानता पर' शीर्षक से एक ग्रंथ लिखा और उसे अपने पूरे धर्मप्रांत में वितरित किया। शासक के आदेश पर, इस ग्रंथ को तीन बार मुद्रित किया गया।

इसके तुरंत बाद, संत डेमेट्रियस ने 'ब्रिनि धर्म की जांच'[6403] नामक एक विस्तृत ग्रंथ लिखा, जिसने इस विभाजन की मूल भावना को उजागर कर दिया।

इस ग्रंथ में, संत ने स्पष्ट और विश्वसनीय रूप से यह प्रदर्शित किया कि मतभेदवादियों का विश्वास झूठा था, उनके उपदेश आत्मा के लिए हानिकारक थे, और उनके कर्म ईश्वर को प्रसन्न नहीं करते थे।

चर्च और राज्य के लाभ के लिए अथक प्रयास करते हुए, संत दमित्री ने अन्य कार्य भी किए। उदाहरण के लिए, उनका इरादा 'दुनिया की शुरुआत से लेकर मसीह के जन्म तक की घटनाओं का वृत्तांत' संकलित करने का था। संत इस पुस्तक को अपने निजी पठन के साथ-साथ अन्य विशिष्ट उद्देश्यों के लिए भी संकलित करना चाहते थे। वे अच्छी तरह से जानते थे कि न केवल लिटिल रूस में बल्कि ग्रेट रूस में भी, बहुत कम लोगों के पास स्लावोनिक बाइबिल थी। केवल अमीर ही इसे खरीदने का जोखिम उठा सकते थे, जबकि गरीब इस दिव्य रूप से प्रेरित पुस्तक को पढ़ने से प्राप्त होने वाले आध्यात्मिक लाभ से पूरी तरह वंचित थे। कई लोग, यहाँ तक कि पादरियों में भी, बाइबिल के वृत्तांत की अनुक्रमणिका से अनभिज्ञ थे। इसी कारण से, संत बाइबिल का एक संक्षिप्त इतिहास संकलित करना चाहते थे, ताकि हर कोई इसे किफायती कीमत पर प्राप्त कर सके और बाइबिल की सामग्री से परिचित हो सके[6404] । संत डेमेट्रियस ने तुरंत काम शुरू कर दिया और पवित्र धर्मग्रंथ और विभिन्न वृत्तांतों से अंशों का चयन करना शुरू कर दिया[6405] ।

संत ने कहा, 'मैं ईश्वर की सहायता से, नैतिक शिक्षाओं और, कुछ स्थानों पर, पवित्र धर्मग्रंथों की व्याख्याओं को लिख रहा हूँ, जहाँ तक मेरी मामूली क्षमताएँ अनुमति देती हैं; और मैं बाइबिल की कहानियों को केवल एक परिचय के रूप में संक्षेप में प्रस्तुत करता हूँ, उनसे, स्रोतों की तरह, नैतिक शिक्षा की धाराएँ निकालता हूँ'[6406] .

चाहे संत 'क्रॉनिकल' को पूरा करने की कितनी भी इच्छा रखते हों, वे अपनी मंशा पूरी नहीं कर सके। उनके लिए एक बड़ी बाधा उनकी पूरी तरह से बिगड़ चुकी सेहत थी। वे केवल 4,600 वर्षों की घटनाओं का वर्णन कर सके। इस बीच, इस कार्य के बाद, संत ने ईश्वर की सहायता से, भजन संहिता पर एक संक्षिप्त टीका संकलित करने का इरादा किया था[6407] ।

[6403] 'विभाजनकारी ब्रिनि धर्म की जांच' पहली बार 1745 में मास्को में प्रकाशित हुई थी। यह कृति तीन भागों में विभाजित है। पहले भाग में, संत दो प्रश्नों को संबोधित करते हैं: 'क्या विभाजनवादियों का धर्म सत्य है?' और 'क्या उनका धर्म पुराना धर्म है?' पहले प्रश्न का उत्तर देते हुए, संत डेमेट्रियस यह साबित करते हैं कि संप्रदायियों के पास सच्चा विश्वास नहीं है, क्योंकि उनका विश्वास पुरानी किताबों और प्रतिमाओं, आठ-नुकीले क्रॉस, क्रॉस का चिह्न बनाने के अपने तरीके, और धर्मविधि में प्रॉस्फोरा में संख्या सात तक ही सीमित है - जिनमें से कोई भी विश्वास का निर्माण नहीं करता है। दूसरे प्रश्न का उत्तर देते हुए, संत कहते हैं कि विभाजनवादियों का विश्वास या तो नया है या पुरानी विधर्म और त्रुटियों का पुनरुद्धार है। *द इन्क्वायरी* के दूसरे भाग में, लेखक कहते हैं कि विभाजनवादियों की शिक्षा, जो झूठे शिक्षकों से उत्पन्न होती है, 1) झूठी, 2) विधर्मी और 3) ईश्वरनिंदापूर्ण है। तीसरे भाग में – विच्छेदवादियों के कर्मों के संबंध में – यह दर्शाया गया है कि उनके प्रतीत होने वाले अच्छे कर्म अनुमान, अहंकार और पाखंड से कलंकित हैं; फिर पाठ विच्छेदवादियों के दुष्ट, स्पष्ट रूप से गैरकानूनी कर्मों की सूची देता है।

[6404] संत का यह इरादा उनकी 'एपिस्टोलरी' (पत्र संग्रह) से ज्ञात होता है।

[6405] 'क्रोनोग्राफ' शब्द ग्रीक है (xroyos – समय, grapo – लिखना) और इसका अर्थ है 'कालानुक्रमिक रिकॉर्ड'। यह नाम बाइजेंटाइयम में ऐतिहासिक सामग्री के विभिन्न संग्रहों को दिया गया था, जिनमें बाइबिल का इतिहास भी बताया गया था। वे हमें बाइजेंटाइयम से प्राप्त हुए।

[6406] डायरी के अनुसार 1708 दिनांकित एक पत्र।

[6407] संत डेमेट्रियस की अनेक कृतियों में से कुछ धर्मशास्त्रीय, कुछ आध्यात्मिक और नैतिक, तथा कुछ ऐतिहासिक हैं। – I. धर्मशास्त्रीय कृतियों में शामिल हैं: 1) 'विश्वास पर संक्षिप्त प्रश्नोत्तर'; 2) 'ऑर्थोडॉक्स धर्मोपदेश का दर्पण' (ये दोनों कृतियाँ ऑर्थोडॉक्स चर्च के सिद्धांत और नैतिक शिक्षाओं की धर्मशिक्षा संबंधी व्याख्या हैं); 3) 'रोटी और शराब के हमारे प्रभु यीशु मसीह के शरीर और रक्त में रूपांतरण पर बारह अनुच्छेद'; 4) 'ब्रिनि विश्वास की एक जांच'। – II. आध्यात्मिक और नैतिक कृतियों में शामिल हैं: 1) 'विचारों के विक्षोभ के लिए आध्यात्मिक औषधि' (द लैडर, द पैटेरिकॉन, द लाइव्स ऑफ द सेंट्स, आदि से लिया गया); 2) 'संकट में पड़े व्यक्ति के दुख को कम करने के लिए एक प्रतिरक्षा' (शोकग्रस्त व्यक्ति और सांत्वना देने वाले के बीच एक संवाद); 3) 'आंतरिक मनुष्य, अपने हृदय की कोठरी में एकांत में, गुप्त

संत डेमेट्रियस अपने समय के एक प्रसद्धि उपदेशक थे और अक्सर अपने अनुयायियों को शक्षिाप्रद वाक्पटुता से संबोधति करते थे। कोई भी परश्रिम या कर्तव्य कभी भी उसे परमेश्वर का वचन प्रचार करने से वचिलति नहीं कर सके। उन्होंने जो ईसाई धर्म के सत्य प्रचार कए, जो सीधे उपदेशक की आत्मा से नकिलते थे, वे हमेशा जीवंत और प्रभावी होते थे, और अपने श्रोताओं को एक पति द्वारा अपने बच्चों से या एक शक्षिक द्वारा अपने छात्रों से बात करने की सादगी से मंत्रमुग्ध कर देते थे। यदि इस रूसी क्रसिोस्टोम के सभी प्रवचनों को ढूंढकर संकलति करना संभव होता, तो नश्चिति रूप से उनकी संख्या बहुत बड़ी होती। लेकनि, दुर्भाग्य से, संत डेमेट्रियस के बहुत से प्रवचन खो गए हैं[6408] ।

संत दमित्री ने अपने अनुयायियों का बुद्धमिानी से नेतृत्व कयिा और कभी भी कठोर उपायों का सहारा नहीं लयिा। अपनी नम्रता के लिए प्रसद्धि, उन्होंने सभी के साथ - कुलीन और वनिम्र दोनों के साथ - समान प्रेम और बनिा कसिी पक्षपात के व्यवहार कयिा। चर्च के सभी नष्ठिावान पुत्रों ने उन्हें एक पति के रूप में प्यार और सम्मान दयिा। स्वयं शासक और पूरा शाही परविार उनके वास्तव में सदाचारी जीवन के लिए रोस्तोव के मेट्रोपॉलटिन को सर्वोच्च सम्मान देते थे। संत डेमेट्रियस के ईसाई सद्गुण उनकी मठ की कोठरी में और बशिप के सहिासन पर, दोनों जगह समान रूप से चमके। उनकी प्रार्थना, उपवास, वनिम्रता, सांसारकि संपत्ति से लगाव की कमी, और गरीबों तथा अनाथों के प्रति प्रेम उनके जीवन में वशिेष रूप से चमके।

धर्मप्रांत के प्रशासन में अपने कई कर्तव्यों के बावजूद, संत डेमेट्रियस प्रार्थना करने के लिए प्रतदिनि चर्च जाते थे; हर रवविार और पर्व के दनि वे धर्मवधिि का अनुष्ठान करते और उपदेश देते थे; वे स्वयं जुलूसों में हमेशा भाग लेते थे, चाहे वे कतिने भी लंबे या दूर के क्यों न हों। हालाँकि, यदि उन्हें अस्वस्थ महसूस होता—जो अक्सर होता था—तो वे सेमनिरी को बुलाते ताकि छात्र, मसीह के पाँच घावों[6409] की स्मृति में, उनके लिए पाँच बार प्रभु की प्रार्थना ('हमारे पति') पढ़ें। सेमनिरी जाने पर, उन्होंने छात्रों को सहायता के लिए ज्ञान के मार्गदर्शक और समझ के दाता, सर्वशक्तमिान प्रभु से लगातार प्रार्थना करने के लिए प्रोत्साहति कयिा। संत ने अपने सेवकों और उनके साथ रहने वाले सभी लोगों को नर्दिेश दयिा कि वे घड़ी की हर घंटी बजने पर क्रॉस का चनि्ह बनाएं और चुपचाप 'हे परमेश्वर की कुंवारी माता, आनन्दति हो' ('Rejoice, O Virgin Mother of God') की प्रार्थना करें। वे अपने सेवकों के साथ बहुत दयालुता से पेश आते थे। जब भी उनका नाम दविस होता था, तो वे उन्हें एक आइकन (चत्रि) का आशीर्वाद देते या उन्हें पैसे देते थे। उन्होंने उन्हें लगन से उपवास करना और अधकि खाने तथा शराब पीने से बचना सखिाया। संत डेमेट्रियस ने स्वयं अपने जीवन में इसका उदाहरण प्रस्तुत कयिा। केवल शारीरकि शक्ति बनाए रखने के लिए उपवास करते हुए, संत ने महा-उपवास के पहले सप्ताह के दौरान केवल एक बार भोजन कयिा – और पवत्रि सप्ताह में, माउंडी गुरुवार को भी केवल एक बार भोजन कयिा।

उद्धारकर्ता के वचनों को लगातार ध्यान में रखते हुए: *'जो कोई भी अपने आप को बड़ा करता है, वह नीचा कयिा जाएगा, और जो कोई अपने आप को नीचा करता है, वह बड़ा कयिा जाएगा'* (लूका 18:14), संत डेमेट्रियस अपने पूरे जीवन में महान वनिम्रता के लिए प्रसद्धि थे।

संत ने अपने बारे में कहा, 'मैं वैसा व्यक्ति नहीं हूँ, जैसा आपकी कृपा चाहती है। मेरा चरत्रि अच्छा नहीं, बल्कि बुरा है, मैं बुरी आदतों से भरा हूँ, और समझदारी में मैं बुद्धमिानों से बहुत दूर हूँ; मैं जंगली और अज्ञानी हूँ; और मेरी रोशनी

रूप से अध्ययन और प्रार्थना कर रहा है' (इस कृति का उद्देश्य ईसाई को प्रार्थना का आदी बनाना है); 4) 'पवत्रि त्रमिूर्ति की उपासना'; 5) 'ईश्वर की परम पवत्रि माता की उपासना'; 6) 'ईश्वर के प्रति दैनकि प्रार्थना और पापस्वीकृति'; 7) 'सामान्य पापस्वीकृति'; 8) 'पवत्रि रहस्यों के ग्रहण पर' (पवत्रि रहस्यों के पास योग्य रूप से कैसे जाएँ, इस पर एक चतिन, और कम्युनयिन से पहले और बाद की प्रार्थनाएँ); ९) प्रभु के दुख-क्लेश पर प्रार्थनात्मक चतिन (वभिन्नि शीर्षकों के साथ); १०) दो पादरीय पत्र (पश्चाताप और पवत्रि कम्युनयिन के पवत्रि संस्कारों के उचति प्रशासन पर); ११) 'द स्परिचिुअल अल्फाबेट' (स्लावोनकि वर्णमाला के अनुसार व्यवस्थति संक्षप्ति आध्यात्मकि और नैतकि नयिम, जो जॉन क्लाइमक्स की *लैडर ऑफ डविाइन एसेन्ट* पर आधारति हैं); 12) 'स्परिचिुअल साल्म्स या हाइम्स' आदि। – III. ऐतहिासकि कृतयिों में शामलि हैं: 1) 'डायरी' (1681 से 1703 तक के दैनकि नोट्स और संत के वद्वितापूर्ण कार्यों से संबंधति पत्र); 2) 'द वॉटरड फ्लीस' (चेर्नहिभि में सेंट जॉन मठ में ईश्वर की माता की प्रतमिा द्वारा कए 24 चमत्कारों का एक वृत्तांत); 3) 'क्रॉनकिल, जो दुनयिा की शुरुआत से मसीह के जन्म तक की घटनाओं का वर्णन करता है'; 4) 'कीव के मेट्रोपॉलटिन की सूची'; और 5) 'मनी-चेती'।

[6408] लटिलि रूस में संत की उपदेशात्मक गतविधि से पाँच उपदेश ज्ञात हैं। कुल मलिाकर, संत डेमेट्रियस के लगभग 100 उपदेश प्रकाशति हुए हैं।

[6409] यह मसीह के सबसे पवत्रि हाथों, पैरों और पार्श्व पर पड़े घावों (स्टग्मिाटा) को संदर्भति करता है।

कुछ भी नहीं बल्कि अंधकार और धूल है... इसलिए मैं आपके भ्रातृत्व प्रेम से विनती करता हूँ कि आप मेरे प्रकाश, प्रभु से मेरे लिए प्रार्थना करें, कि वह मेरे अन्धकार को दूर कर दें, और यह कि जो सम्माननीय है वह अयोग्य से प्रकट हो'[6410] ।

एक संत के सर्वोच्च पद को प्राप्त करने के बाद भी, संत डेमेट्रियस ने वही विनम्रता बनाए रखी: वह अपने वरिष्ठों के प्रति सम्मानजनक, अपने समकक्षों के प्रति दयालु, अपने अधीनस्थों के प्रति दयालु और दुर्भाग्यशाली लोगों के प्रति सहानुभूतिपूर्ण थे।

यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि, इतने उच्च नैतिक गुणों के साथ, संत में पूर्ण निस्वार्थता भी निहित थी। वास्तव में, उनके हृदय में कंजूसता, लालच या धन के प्रेम के लिए कोई स्थान नहीं था। अपने पूरे जीवन में, उन्होंने अपना सारा दान और आय या तो चर्च की जरूरतों के लिए या बेसहारों के लिए धर्मार्थ कार्यों पर खर्च की। संत अनाथों, विधवाओं, भिखारियों और गरीबों की उस तरह देखभाल करते थे जैसे एक पिता अपने बच्चों की करता है। उन्होंने जो कुछ भी प्राप्त किया, वह सब उन लोगों में बाँट दिया, अंधों, बधिरों, लंगड़ों और बेसहारा लोगों को अपने 'क्रूस के कक्ष' में आमंत्रित किया, उन्हें भोजन परोसा, उन्हें कपड़े दिए और उनके प्रति अन्य दयालुता के कार्य दिखाए। संत ने अपनी आध्यात्मिक वसीयत में, जिसे उन्होंने अपनी मृत्यु से ढाई साल पहले तैयार की थी, स्वयं अपनी निस्वार्थता और लालच की कमी की गवाही दी।

'मैंने निर्णय लिया है,' वह कहता है, 'कि इस आध्यात्मिक वसीयत को उन सभी को ज्ञात कराऊँ जो मेरी मृत्यु के बाद मेरी निजी संपत्ति का दावा करना चाहें, ताकि वे व्यर्थ में परिश्रम न करें, और न ही उन लोगों को सताएँ जिन्होंने ईश्वर के लिए मेरी सेवा की है, क्योंकि मेरा सच्चा खजाना और धन वह है जिसे मैंने अपनी जवानी से नहीं इकट्ठा किया है (मैं यह घमंड के लिए नहीं कह रहा, बल्कि उन लोगों को बताने के लिए कह रहा हूँ जो मेरे बाद मेरी संपत्ति की तलाश करेंगे)। क्योंकि जब से मैंने अपने जीवन के अठारहवें वर्ष में कीव के सेंट सिरिल मठ में पवित्र संन्यासी की शपथ ली और सिर मुंडवाया, और ईश्वर से स्वेच्छा से गरीबी में जीने का व्रत लिया: उस समय से लेकर अपनी मृत्यु के ठीक पहले तक, मैंने कोई संपत्ति या भौतिक वस्तुएँ अर्जित नहीं कीं[6411] , सिवाय पवित्र पुस्तकों के[6412] ; मैंने सोना या चांदी जमा नहीं की, न ही मैंने अनावश्यक कपड़ों या बुनियादी जरूरतों के अलावा किसी अन्य सामान का स्वामित्व चुना; बल्कि मैंने, जहाँ तक संभव था, आध्यात्मिक और भौतिक रूप से मठ के अनासक्ति और गरीबी के सिद्धांत का पालन करने का प्रयास किया, अपने बारे में चिंता किए बिना खुद को ईश्वर की व्यवस्था के हवाले कर दिया, जो कभी मेरा साथ नहीं छोड़ती। जहाँ तक मेरे परोपकारियों से मेरे हाथों में आए दान और मेरे अधिकार के अधीन सेलों से प्राप्त आय की बात है, मैंने इसे अपनी और मठ की ज़रूरतों पर खर्च किया, चाहे मैं एक मठाधीश या आर्चिमैंड्राइट के रूप में सेवा कर रहा था, या वास्तव में इस बिशप पद पर: मैंने मठ की आय—जो कि बहुत कम थी—एकत्र नहीं की, बल्कि उन्हें अपनी जरूरतों और जरूरतमंदों की जरूरतों पर खर्च किया, जहाँ भी ईश्वर ने आज्ञा दी। इसलिए, मेरी मृत्यु के बाद कोई भी मेरे मठ संबंधी दान की जाँच-पड़ताल या खोज में अपना समय बर्बाद न करे: क्योंकि मैं अपने पीछे कुछ भी नहीं छोड़ता, न तो मेरे अंतिम संस्कार के लिए और न ही मेरी स्मृति के लिए; बल्कि, मेरी मृत्यु के समय मौजूद गरीबी स्वयं ईश्वर के सामने प्रकट होगी। क्योंकि मेरा मानना है कि यह उनके लिए अधिक प्रसन्नतादायक होगा यदि मेरे लिए एक भी सिक्का[6413] न बचे, बजाय इसके कि मेरे भाइयों में बहुत कुछ वितरित किया जाए।

उन्होंने यह वसीयत अपने मित्र, यावोर्स्क के मेट्रोपॉलिटन स्टीफन[6414] को बताई—जिसमें संत ने एक बार फिर से स्पासो-याकोवलेव्स्की मठ में दफनाए जाने की अपनी इच्छा दोहराई थी। साथ ही, उन्होंने आपस में एक संधि की: यदि

[6410] यह वही है जो संत डेमेट्रियस ने अपने मित्र, मठाधीश थिओलोगस को लिखा था, जो मास्को में मुद्रणालय में प्रूफरीडर थे।

[6411] Msheloimstvo का अर्थ है 'स्वार्थ'।

[6412] रोस्तोव के विद्वान आर्चपास्टर द्वारा छोड़ी गई विशाल पुस्तकालय, जिसमें पांडुलिपि और मुद्रित, ग्रीक, लैटिन, पोलिश और स्लावोनिक पुस्तकें शामिल थीं, को मास्को पैट्रिआर्कल (अब सिनोडल) पुस्तकालय में स्थानांतरित कर दिया गया। सेंट डेमेट्रियस की कई पुस्तकें मॉस्को सिनोडल प्रिंटिंग हाउस की पुस्तकालय में रखी गई हैं।

[6413] एक छोटा सिक्का।

[6414] स्टेफान यावोर्स्की (1658–1722), रियाज़ान के मेट्रोपॉलिटन और पैट्रिआर्कल सिंहासन के कार्यवाहक, पेट्रिन युग के सबसे प्रमुख व्यक्तियों में से एक थे; वह एक उपदेशक के रूप में जाने जाते हैं। उनकी मुलाकात सेंट डिमिट्री से 1684 में हुई थी।

उनकी उत्कृष्टता स्टीफन पहले निधन कर जाएं, तो मेट्रोपॉलिटन दमित्रि उनके अंतिम संस्कार का नेतृत्व करेंगे; यदि, हालांकि, दमित्रि पहले प्रभु के पास चले जाएं, तो स्टीफन उन्हें दफनाएंगे।

संत दमित्रि का निधन 28 अक्टूबर 1709 को, अपने नाम दिवस के अगले दिन, अस्सी वर्ष की आयु में हुआ। अपनी मृत्यु से कुछ दिन पहले, उन्हें रोस्तोव में ज़ारिना परास्केवा फेडोरोवना[6415] के शीघ्र आगमन की सूचना दी गई, जो टोल्गस्क की परमेश्वर की माता के चमत्कारी आइकन की पूजा करने आई थीं, जिसे इस अवसर पर वहाँ से रोस्तोव में स्थानांतरित किया जाना था, क्योंकि पतझड़ के खराब मौसम ने ज़ारिना की यारोस्लावल[6416] की यात्रा को कठिन बना दिया था। यह सुनकर, संत ने अपने कोषाध्यक्ष, हायरोमोंक फिलारेट को बुलाया, और उसे भविष्यवाणी करते हुए बताया कि उसकी मृत्यु निकट है: 'दो रानियाँ रोस्तोव आ रही हैं: स्वर्ग की रानी और पृथ्वी की रानी; लेकिन मैं उन्हें देखने के योग्य नहीं रहूँगा, और यह तुम्हारा, मेरे कोषाध्यक्ष, दायित्व है कि तुम उनका स्वागत करने के लिए तैयार रहो।'

संत डेमेट्रियस के निधन से तीन दिन पहले, उनकी छाती में लंबे समय से छिपी बीमारी खांसी के रूप में विशेष रूप से गंभीर हो गई। इसके बावजूद, संत ने प्रसन्न दिखने का प्रयास किया। अपने नाम दिवस, 26 अक्टूबर को, उन्होंने स्वयं कैथेड्रल में लिटिर्जी का अनुष्ठान किया, लेकिन अब वे अपना प्रवचन देने में सक्षम नहीं थे, और उन्होंने अपने एक गायक से उसे एक नोटबुक से पढ़वाया। वे अपने मेहमानों के साथ खाने की मेज पर बैठे, हालांकि बिड़ी कठिनाई से। अगले दिन, पेरस्लाव में दानिलोव मठ के आर्चिमंड्राइट संत वरलाम से मिलने आए। उनकी बातचीत के दौरान, बहन वरसोनोफिया—जो उस समय रोस्तोव में रहती थीं और स्वयं संत दमित्रि द्वारा नन बनने की दीक्षा लेकर राजकुमार अलेक्सी पेट्रोविच की दुधमाँ रह चुकी थीं—ने संत को एक संदेश भेजा। वह रोस्तोव के आर्चबिशप का बहुत सम्मान करती थीं और अक्सर उनकी आध्यात्मिक मार्गदर्शन लेती थीं। इस अवसर पर भी, वरसोनोफिया ने संत से विनम्रतापूर्वक निवेदन किया कि वे उसी दिन उनसे मिलने आएं। संत दमित्रि, आर्चिमंड्राइट बरलाम के साथ, उनसे मिलने के लिए रवाना हुए। वापसी पर, वे मुश्किल से अपनी कोठरी तक पहुँच पाए, और उन्हें सहारे के लिए अपने सेवकों पर निर्भर रहना पड़ा।

उन्होंने तुरंत भजन गायकों को बुलाने का आदेश दिया ताकि वे उनके द्वारा रचित आध्यात्मिक भजन गा सकें, जैसे: 'मेरे प्रिय यीशु', 'मैं अपनी आशा परमेश्वर में रखता हूँ', और 'हे यीशु, तू मेरा परमेश्वर है, तू मेरी आनन्द है'। इस गायन ने उन शब्दों से उसकी आत्मा को आनंदित किया जो स्वयं उसी से निकले थे, और वह चूल्हे के पास खुद को गर्म करते हुए गायकों को सुनता रहा।

जब गायन समाप्त हो गया, गायकों को विदा करने के बाद, संत ने उनमें से एक—साव्वा याकोवलेव, जिसे वह बहुत प्यार करते थे और जो उनके लेखों का एक परिश्रमी प्रतिलिपि बनाने वाला था—को पीछे रोक लिया। संत डेमेट्रियस ने उन्हें अपने जीवन के बारे में बताना शुरू किया, कि उन्होंने अपनी जवानी और वयस्कता में कैसे जीवन व्यतीत किया, उन्होंने ईश्वर और उनकी परम पवित्र माता तथा सभी संतों से कैसे प्रार्थना की, और कहा: 'और तुम भी, मेरे बच्चों, इसी तरह प्रार्थना करो।'

तब उन्होंने कंटर को आशीर्वाद दिया और, उसे अपनी कोठरी से बाहर जाते हुए देखकर, लगभग जमीन तक झुककर उसे प्रणाम किया और उनके ग्रंथों की नकल करने में उनकी लगन के लिए धन्यवाद दिया।

जब कँटोर ने देखा कि महाधर्माध्यक्ष इतनी विनम्रता और असामान्य रूप से उसे विदा कर रहे थे, और उससे इतनी नीची झुककर नमस्ते कर रहे थे, तो वह काँप उठा और श्रद्धापूर्वक बोला:

'हे पवित्र बिशप, आपके सबसे नीचले सेवक, मुझ पर आप इतनी नीची झुक रहे हैं?'

इस पर संत ने उसी कोमलता से उत्तर दिया:

'धन्यवाद, मेरे बच्चे!'

कैंटर फूट-फूट कर रोया और वहाँ से चला गया। इसके बाद, संत डेमेट्रियस ने सेवकों को अपने-अपने पदों पर लौटने का आदेश दिया, जबकि वे स्वयं एक निजी कमरे में चले गए, मानो आराम करना चाहते हों, और एकांत में उन्होंने ईश्वर से भक्तिपूर्वक प्रार्थना में खुद को समर्पित कर दिया। सुबह, सेवकों ने इस कमरे में प्रवेश किया और संत को

[6415] ज़ार इवान अलेक्ज़ेविच की विधवा, जिनकी मृत्यु 1696 में हुई।

[6416] परमेश्वर की माता के टोल्गस्क प्रतिमा के सम्मान में पर्व का दिन 8 अगस्त को मनाया जाता है। टोल्गस्क मठ वोल्गा नदी पर यारोस्लाव से 9 वर्स्ट दूर स्थित है; इसकी स्थापना 1314 में रोस्तोव के बिशप प्रोकहोर (जिन्होंने मठवासी नाम त्रिफिोन अपनाया था) ने उस स्थान पर की थी जहाँ उन्हें यह प्रतिमा प्रकट हुई थी।

प्रार्थना की मुद्रा में, घुटनों के बल नधिन कर चुके पाया। इस प्रकार, जसि प्रार्थना ने संत के जीवन को मधुर बनाया था, वही मृत्यु तक उनके साथ रही।

स्वर्गीय संत के पवत्रि शरीर को उस बशिप के परधिान में लपेटा गया था जसिे उन्होंने स्वयं तैयार कयि था[6417] , और उसी दनि उन्हें घर की चर्च में ले जाया गया। संत डेमेट्रयिस की अंतमि इच्छा के अनुसार, उनके ड्राफ्ट के कागजात उनके सरि के नीचे और ताबूत के चारों ओर रख दए गए। संत के नधिन की खबर तुरंत पूरे रोस्तोव में फैल गई। उनके ताबूत के चारों ओर एक बड़ी भीड़ इकट्ठा हो गई, जो अपने प्रयि चरवाहे और शक्षिक की अपूरणीय क्षत पिर सच्चे दलि से रो रही थी। उसी दनि, ज़ारनिा परास्केवा फेओदोरोवना अपनी बेटयिों, राजकुमारयिों एकातेरनिा, परास्केवा और अन्ना (भवषि्य की ज़ारनिा) इओआनोव्ना के साथ रोस्तोव पहुँचीं। चूंकि संत जीवति नहीं मलि, जैसा कि उन्होंने स्वयं भवषि्यवाणी की थी, वह इस बात पर फूट-फूट कर रोईं कि उन्हें उनका आशीर्वाद प्राप्त करने का योग्य नहीं समझा गया था, और उन्होंने एक कैथेड्रल स्मरणोत्सव आयोजति करने का आदेश दयिा।

30 अक्टूबर को, महारानी के आदेश पर, संत के शरीर को उचति सम्मान के साथ कैथेड्रल में स्थानांतरति कर दयिा गया। महारानी दूसरी बार स्मारक सेवा में शामलि हुईं, उन्होंने ईश्वर के सेवक को आखरिी बार वदिाई दी, और मास्को के लिए रवाना हो गईं।

मेट्रोपॉलटिन स्टीफन जल्द ही संत के अंतमि संस्कार के लिए पहुँचे। सीधे कैथेड्रल में प्रवेश करते हुए, उन्होंने अपने दविंगत मत्रि के शव के सामने झुककर उस पर जोर-जोर से रोया। बाद में, उन्होंने कोषाध्यक्ष, फलिारेट को याकोवलेव्स्की मठ में दफन के लिए सभी आवश्यक तैयारयिाँ करने का आदेश दयिा। फरि रोस्तोव के मठों के मठाधीश, कैथेड्रल के पुरोहति और शहर के कई लोग स्टीफन के पास दमित्रिी को कैथेड्रल में दफनाने की वनिती लेकर आए, जहाँ पूर्व बशिपों को परंपरागत रूप से सुलाया जाता था। लेकनि स्टीफन ने यह कहते हुए इनकार कर दयिा: 'उनकी उत्कृष्टता दमित्रिी ने, रोस्तोव का पदभार संभालने पर, सबसे पहले याकोवलेव्स्की मठ का दौरा कयिा और स्वयं वहां एक दफन स्थल चुना। तो फरि मैं उनकी इच्छा के वरिुद्ध कैसे जा सकता हूँ?'

अंत्येष्टि के लिए नर्धिारति दनि, 25 नवंबर को, मेट्रोपॉलटिन स्टीफन ने अपनी दोस्ती के वादे के प्रति सच्चे रहते हुए, लटिर्जी और अंतमि संस्कार की सेवा का आयोजन कयिा, जसिके दौरान उन्होंने एक उपदेश दयिा, और बार-बार उद्घोष कयिा: 'पवत्रि दमित्रिी, पवत्रि!' इसके बाद, रोते हुए लोगों की भीड़ के साथ, संत दमित्रिी का शरीर याकोवलेव्स्की मठ ले जाया गया, और वहाँ, कॉन्सेप्शन कैथेड्रल में, उसे अंतमि संस्कार के लिए रखा गया। उनकी उत्कृष्टता स्टीफन ने एक शलिालेख रचा, जसिमें, अन्य बातों के अलावा, उन्होंने लखिा:

रोस्तोव नगर के सभी लोगों, रोओ,
अपने दविंगत चरवाहे के लिए आँसुओं से शोक मनाओ,
महाधर्माध्यक्ष डेमेट्रयिस, परम पूजनीय,
मेट्रोपॉलटिन, वनिम्र और नम्र।

लगभग तैंतीस वर्षों तक, संत दमित्रिी का शरीर भूमि के नीचे पड़ा रहा। सतिंबर 1752 में, कॉन्सेप्शन कैथेड्रल के जर्जर फर्श को हटाते समय, एक सड़ी हुई लकड़ी के लट्ठों की संरचना मलिी; छत के स्थान पर इसके ऊपर मोटे लट्ठे बछिाए गए थे, जो बाद में ढहकर संरचना के अंदर गरि गए थे। उन्होंने सड़ी हुई फ्रेम को हटाया, जमा हुई मट्टिी को हटाया, और संत की कफ़नबंद को खोज नकिाला। यह क्षतग्रिस्त हो गई थी: गरि हुए लट्ठों से इसका ढक्कन टूट गया था, और दरारों के बीच से कफ़न, माइट्र (धर्मगुरु का मुकुट) और संत के सभी वस्त्र दखिाई दे रहे थे, जो क्षय से अछूते रहे। जब पवत्रि अवशेषों की जांच की गई, तो पता चला कि संत के हाथ, जो उनकी छाती पर क्रॉस के आकार में जुड़े हुए थे, पूरी तरह से अपरविर्तति थे; केवल उनके दाहनि हाथ की चार उंगलयिां ताबूत में गरि गई एक तख्ती से टूट गई थीं, और उनकी बाईं बांह कोहनी से कट गई थी; शरीर के अन्य सभी अंग अक्षुण्ण थे।

[6417] संत दमित्रिी से ज़ारनिा परास्केवा फेडोरोवना और ज़ार अलेक्सी मखिाइलोवचि की बेटयिाँ अक्सर मलिने आती थीं, जो उन्हें पादरी के चोगा (कसाक) भेंट करती थीं। इन उपहारों से, संत ने अपने लिए एक बशिप का वस्त्र बनाया और वसीयत की कि उन्हें इन्हीं वस्त्रों में दफनाया जाए।

पवित्र अवशेषों की खोज की खबर सुनकर, लोगों की भीड़ ईश्वर के नव-प्रकट संत के पास दौड़ी चली आई, और उनके ताबूत के पास चंगाई का एक प्रचुर स्रोत प्रकट हुआ[6418] , जो आज भी विश्वासियों को त्रिमूर्ति ईश्वर—पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा—की महिमा के लिए प्रदान किया जाता है, जो अपने संतों में अद्भुत हैं। आमीन।

ट्रोपारियन, स्वर 8:

ऑर्थोडॉक्सी के उत्साही, संप्रदायवाद के उन्मूलनकर्ता, रूसी उपचारक, और परमेश्वर के सामने नए मध्यस्थ, आपने अपने लेखनों के माध्यम से पवित्रता को दुराचार से संरक्षित रखा है, आध्यात्मिक झरना, धन्य डेमेट्रियस, हमारे परमेश्वर मसीह से हमारे सम्राट निकोलस अलेक्ज़ेंड्रोविच, उनके पूरे राज्य और उनके साम्राज्य को बचाने के लिए प्रार्थना करें।

कॉन्टाकियन, स्वर 8:

रूस का वह तारा जो कीव से प्रकट हुआ, और नोवगोरोड-सेवर्सकी के रास्ते रोस्तोव तक पहुँचा, जिसने इस पूरे देश को शिक्षाओं और चमत्कारों से प्रकाशित किया—आओ हम वाक्पटु शिक्षक दिमित्री की स्तुति करें: क्योंकि उन्होंने सभी के उपदेश के लिए सभी बातें लिखी हैं, ताकि वे सभी को मसीह की ओर आकर्षित कर सकें, जैसा कि पौलुस ने किया, और सच्चे विश्वास के द्वारा हमारी आत्माओं को बचा सकें।

5 अक्टूबर

२२ सितंबर (पुराना कैलेंडर)

संत फोकास, सिनोप के पवित्र शहीद और बिशप का कष्टकथा

22 सितंबर को स्मरणोत्सव

सिनोपो नगर ([6419]) में पंफलिस नामक एक व्यक्ति अपनी पत्नी मारिया के साथ रहता था; वे धन्य फोकास के माता-पिता थे। बचपन से ही, उस संत को पवित्र आत्मा से इतनी कृपा प्राप्त थी कि वह लोगों से दुष्टात्माओं को भगाता और उनकी बीमारियों को ठीक करता था। जब फोकास वयस्क हुए, तो उन्हें उनके पुण्य जीवन के कारण अपने गृह नगर का बिशप चुना गया और उन्होंने उत्साहपूर्वक अपने झुंड का मार्गदर्शन करना शुरू कर दिया; वचन द्वारा उन्हें उपदेश देते हुए, उन्होंने अपने उदाहरण से उन्हें सुसज्जित किया; पहले एक सदाचारी जीवन जीने के बाद, बिशप का पद प्राप्त करने पर उन्होंने और भी अधिक लगन से प्रयास किया, ताकि सभी, उनके अच्छे कर्म देखकर, स्वर्गीय पिता की महिमा करें। उन्होंने कई लोगों को भ्रांति में पड़ने से बचाया, कई मूर्तिपूजकों को मूर्तिपूजा से दूर किया, और उन्हें एक ईश्वर की उपासना की ओर ले गए। प्रभु ने अपने वफादार सेवक पर शहीद का मुकुट प्रदान करने की कृपा की और उसे एक दर्शन में यह प्रकट किया, इस प्रकार: एक कबूतर ऊपर से उड़कर नीचे आया, जिसकी चोंच में फूलों का एक हार था; उसने यह हार धन्य व्यक्ति के सिर पर रखा और मानव आवाज़ में बोला:

'तुम्हारा प्याला अब भर गया है; यह उचित है कि तुम उसे पीओ।'

इस दर्शन से, संत फोकास ने समझ लिया कि उन्हें मसीह के लिए कष्ट सहना है। हम, बदले में, इससे यह सीखते हैं कि वह ईश्वर के बहुत प्रिय थे, क्योंकि, देह में रहते हुए भी, उन्हें स्वर्ग से मुकुट पहनाए जाने के योग्य माना गया। इस

[6418] 22 अप्रैल 1757 को, सेंट दिमित्री को संत घोषित किया गया। पवित्र सिनिड के आदेश पर, उस समय रोस्तोव के मेट्रोपॉलिटन आर्सेनियस ने संत की जीवनी लिखी, जबकि उनके सम्मान में दिव्य सेवा पेरियास्लाव के बिशप एम्ब्रोज़ द्वारा रचित की गई थी, जो बाद में मॉस्को के आर्चबिशप बने।

[6419] सिनोप शहर काले सागर के दक्षिणी तट पर स्थित है।

प्रकार परम धन्य ईश्वर अपने संतों को गौरवान्वति करते हैं, उन पर महमिा और सम्मान प्रदान करते हैं, और उनके सरि पर मुकुट धारण कराते हैं। संत फोका, अपनी आत्मा और शरीर की पवत्रिता के कारण, एक सच्चे स्वर्गीय वधू थे: स्वर्ग उनसे एक होना चाहता था और उनके सरि पर मुकुट रखना चाहता था; लेकनि यह मुकुट एक बेहतर मुकुट का पूर्वाभास था—उद्धारकर्ता के महल में, जनिके साथ उन्हें हमेशा के लिए मुकुट पहनाया जाना है और जनिके साथ उन्हें स्वर्गीय ववािह भोज में प्रकट होना है। इस शानदार संकेत के बाद, ट्राजन के शासनकाल के दौरान, फोकास को गवर्नर अफ्रकिनस द्वारा यातनाओं के हवाले कर दयिा गया; इस शासक ने लंबे समय तक उसे मूर्तयिों को बलदिान करने के लिए मजबूर कयिा, लेकनि संत ने इसके बजाय खुद को परमेश्वर के लिए बलदिान करने का वकिल्प चुना। उसने राजकुमार के आदेश का पालन नहीं कयिा – उसने मनुष्य के हाथों की रचना को वह सम्मान देने से इनकार कर दयिा जो सर्बोन्माय पर वरिाजमान एकमात्र परमेश्वर का है; जसि पर राजकुमार ने संत को एक पेड़ से बांधकर यातना देने का आदेश दयिा। उसका पूरा शरीर घावों से ढक गया था; जैसे भूखे शकिारी पक्षी कसिी लाश पर हमला करते हैं और उसे नोच-नोच कर खा जाते हैं: वैसे ही यातना देने वालों ने मसीह के शहीद के पवत्रि शरीर को नोचा। लेकनि संत फोकास ने यह सब धैर्यपूर्वक सहन कयिा; ऊपर से उन्हें एक आवाज़ सुनाई दी जो उन्हें बल दे रही थी; यीशु मसीह का नाम लेते हुए, उन्होंने सभी कष्टों को तरिस्कार करते हुए यातनाएँ झेलीं। उसने उस प्रभु के लिए अपने शरीर की भी परवाह नहीं की, जसिने स्वयं की परवाह नहीं की और हमारे लिए क्रूस पर पीड़ा सहन की; यह पीड़ा संत फोकास के लिए, मानो, एक स्वर्गीय शीतलता थी: उन्होंने हमारे लिए पीड़ति प्रभु के नाम का इकरार करते हुए, इतनी बहादुरी से यातनाएँ सहन कीं। अपने प्रभु के लिए पीड़ति उस वश्विासी सेवक के लिए कुछ भी असहनीय नहीं था। भले ही दुनयिा के सभी यातना देने वाले उसके खलिाफ़ हो जाएँ, भले ही यातना का हर रूप ईजाद कर दयिा जाए, वह फरि भी अपने प्रयि प्रभु के लिए यह सब सहने को तैयार रहता था, और भवष्यिवक्ता दाऊद के साथ पुकारता था: *'हे परमेश्वर, मेरा हृदय तैयार है'* (भजन संहति 107:2)। उसके यातना देने वालों ने उसे लोहे की एक लाल-गरम चादर पर लटिा दयिा, लेकनि लोहा तुरंत ठंडा हो गया, क्योंकि संत का हृदय ईश्वर के प्रेम से जल रहा था, और इस आध्यात्मकि अग्नि ने भौतकि अग्नि की शक्ति को परास्त कर दयिा। और उनके लिए रची जा सकने वाली सभी यातनाओं में, संत फोका वजियी रहे: क्योंकि स्वर्गदूतों की सेना और अनुपम दव्यि प्रकाश उनके चारों ओर प्रकट हुआ। अपने काल-कोठरयिों में, वह स्वर्गीय प्रकाश से प्रबुद्ध हुआ; अपने बंधनों में, वह स्वर्गीय स्वतंत्रता की आशा में आनंदति हुआ; अपने दुखों में, उसे स्वर्गदूतों द्वारा सांत्वना मलिी; और अपने घावों में, उसे यीशु मसीह द्वारा बल मलिा। कई और वभिन्नि प्रकार की यातनाओं के बाद, उन्हें एक जलते हुए स्नानागार में डाल दयिा गया, जहाँ, प्रार्थना करते हुए, उन्होंने अपनी आत्मा ईश्वर के हाथों में सौंप दी[6420] और उन्हें आनंदति लोगों की कलीसयिा में वजिेता का मुकुट प्राप्त करने के योग्य माना गया । उनके पवत्रि शरीर को वश्विासयिों द्वारा सम्मान के साथ दफनाया गया, और उनकी कब्र पर कई चमत्कार हुए[6421] ।

कॉन्टाकयिन, स्वर 6:

पति का बलदिान अर्पति करने वाले एक बशिप के रूप में, अंत में आपने स्वयं को एक जीवति बलदिान के रूप में अर्पति कयिा, हमारे ईश्वर मसीह की वधिवित गवाही देते हुए, स्वर्गदूतों द्वारा बल प्राप्त कर, और स्वेच्छा से मृत्यु को स्वीकार करते हुए, जबकि जो लोग आपसे पुकार रहे थे वे कह रहे थे: 'आओ, फोकास, हमारे साथ रहो, और कोई भी हमारे वरिुद्ध न हो।'

पवत्रि शहीद फोकास का जीवन और कष्ट, जन्हिें 'बाग़ के रक्षक' के नाम से जाना जाता है[6422]

22 सतिंबर को स्मरणोत्सव

[6420] शहीद फोकास का नधिन वर्ष 117 में हुआ।

[6421] 22 जुलाई को, उनके पवत्रि अवशेषों का पोंटस से कॉन्स्टेंटनिोपल में स्थानांतरण मनाया जाता है।

[6422] एक 'वर्टोग्राडरी' बगीचे या सब्जी के खेत का रखवाला, यानी एक माली होता है।

उसी सनिोपे नगर में, परन्तु एक अलग समय में, एक अन्य फोकास रहते थे; उन्होंने समुद्र के पास अपने लिए एक बगीचा बनाया था और उसमें वभिन्नि जड़ी-बूटयिाँ लगाकर उन्हें बेचते थे, जसिसे वे स्वयं और गरीबों दोनों का भरण-पोषण करते थे। वे अपने बगीचे की कुछ जड़ी-बूटयिाँ सड़क के कनिारे रख देते थे ताकि सभी राहगीर उन्हें ले सकें; क्योंकि वह अपने पड़ोसी के प्रति अपने महान प्रेम और अपनी आतथि्य-सत्कार के लिए वख्यिात था, और उसने अपनी आत्मा के भीतर के बगीचे की देखभाल भौतकि बगीचे की तुलना में अधकि सावधानी से की: भक्ति में फलते-फूलते और अपने हृदय में शुद्ध वचिारों को पोषति करते हुए, उसने सद्गुणों के फल दिए, ताकि उसकी पवत्रि आत्मा को पवत्रि आत्मा का बगीचा कहा जा सके, जैसा कि धर्मग्रंथ में लखिा है: *'एक बगीचा बंद, हे मेरी बहनि, हे मेरी दुल्हनि'* (प्रेम गीत 4:12); और फरि: *'आत्मा का फल प्रेम, आनन्द, शान्ति, धीरज, सौम्यता, भलाई, वशि्वास, नम्रता और आत्मसंयम है'* (गलातयिों 5:23)।

धन्य फोकास सद्गुणों से इतने दृढ़ थे कि प्राचीन चोर—शैतान, जसिने ईडन के बगीचे में हमारी पूर्व-माता से आनंद छीन लयिा था—संत फोकास से सद्गुणों को चुरा नहीं सका। संत ने अपने स्वयं के उद्धार के लिए लगन से प्रयास कयिा, प्रेरति के शब्दों को श्रद्धापूर्वक सुना: *'संयमी और सतर्क रहो; क्योंकि तुम्हारा वरिोधी शैतान गरजने वाले सहि की नाईं इस खोज में रहता है, कि किसि को फाड़ खाए'* (1 पतरस 5:8)। इस प्रकार संत ने परश्रिम कयिा, और उनके धर्मपरायण जीवन की खबर लोगों में फैल गई। सद्गुण, जलती हुई मोमबत्ती की तरह, छपिा नहीं रह सकता, बल्कि रात के अंधेरे में भी दूर से चमकता है; उसी प्रकार संत फोका भी, अवशि्वासयिों और भ्रष्ट लोगों के बीच अंधकार में अपनी धार्मकिता से चमकते थे, और कई लोगों को प्रकाश के ज्ञान की ओर ले जाते थे। संत का समाचार उस देश के अधर्मी राजकुमार तक भी पहुँचा। राजकुमार को बताया गया कि फोका न केवल स्वयं क्रूस पर चढ़ाए गए मसीह में वशि्वास रखता था, बल्कि अपने पीछे दूसरों को भी उनके पास ले जा रहा था। तब राजकुमार ने मसीह के सेवक को मार डालने के लिए अपने सेवकों को भेजा; वे तुरंत नकिल पड़े और फोका को ढूँढ़ने लगे, ताकि उसे मार डाल सकें।

फोका स्वयं उनसे मलिा और पूछा:

'तुम कसिको ढूंढ रहे हो?'

उन्होंने उत्तर दयिा:

'हम फोका को ढूंढ रहे हैं।'

तब फोका ने कहा:

'मेरे साथ चलो, मेरे स्वामनिो, और मैं तुम्हें उसके बारे में बताऊँगा।'

यह कहकर, वह उन्हें अपने घर में ले गया और उनका सत्कार कयिा, क्योंकि शत्रुओं के साथ ऐसा ही व्यवहार करना चाहिए, जैसा कि धर्मग्रंथ में लखिा है: *'यदि तेरा शत्रु भूखा हो, तो उसे रोटी खलिा; और यदि वह प्यासा हो, तो उसे पानी पलिा'* (नीतविचन 25:22)।

जब नौकरों ने शराब का स्वाद चखा, तो फोकास ने उनसे पूछा:

'तुम इस आदमी को क्यों ढूंढ रहे हो?'

तब उन्होंने अपना रहस्य उसके सामने प्रकट कयिा:

'हम उसे यातना देने के लिए सौंपने के लिए ढूंढ रहे हैं, क्योंकि राजकुमार ने हमें उसे मारने के लिए भेजा है क्योंकि वह हमारे देवताओं की पूजा नहीं करता, बल्कि सूली पर चढ़ाए गए की आराधना करता है।'

फोका ने उनसे वनिती करनी शुरू की:

'मैं आपसे वनिती करता हूँ, मेरे स्वामयिों, मेरे घर में सुबह तक प्रतीक्षा करें; मन भर खाएँ-पएिँ, और कल मैं उसे आपके हवाले कर दूँगा: क्योंकि उसे मुझसे बेहतर कोई नहीं जानता; वह यहीं पास में ही रहता है; वह इस समय कहीं गया है, लेकनि जल्द ही लौट आएगा; तब मैं उसे आपके हाथों में सौंप दूँगा।'

दूत मान गए और संत फोका के घर में दावत करने लगे। इस बीच, उन्होंने अपने बगीचे में एक ताबूत तैयार कर लयिा था, अपनी कब्र के लिए आवश्यक सभी चीजें व्यवस्थति कर ली थीं, अपने धन को गरीबों में बाँट दयिा था, और मृत्यु की तैयारी में पूरी रात प्रार्थना में बतिाई थी। जब सुबह हुई, तो राजकुमार द्वारा भेजे गए नौकर उठे और उनसे पूछा:

'क्या फोका यहाँ है, वह आदमी जसिे आप हमें सौंपना चाहते थे?'

संत ने उन्हें प्रसन्नतापूर्वक उत्तर दयिा:

'वह यहाँ हैं, मेरे स्वामनिो – आप इनके साथ जैसा चाहें वैसा करें।'

तब नौकरों ने पूछा:

'तो वह कहाँ है?'

उस धन्य व्यक्ति ने उत्तर दिया:

'मैं ही फोका हूँ, जिसे तुम ढूँढ़ रहे हो; मैं यीशु मसीह का सेवक हूँ... मैं तुम्हारे घृणित देवताओं का परित्याग करता हूँ; मुझे मार डालो।'

यह सुनकर दूत चकित हो गए; उन्हें शर्म आई और वे इस आदमी के खून से अपने हाथ मैले नहीं करना चाहते थे, क्योंकि उसने उन्हें इतनी गर्मजोशी से स्वागत किया था और इतनी उदारता से व्यवहार किया था; वे जाने की इच्छा जताते हुए उससे कहने लगे:

'हम राजकुमार से कहेंगे कि हमने फोका को हर जगह खोजा, लेकिन वह हमें कहीं नहीं मिला।'

लेकिन वह उनसे विनती करने लगा, उनके पैरों पर गिर पड़ा और उनसे प्रार्थना करने लगा कि वे वही करें जिसकी उन्हें आज्ञा दी गई थी, यह कहते हुए:

'मेरी मेहमाननवाज़ी का बदला मुझे इससे बेहतर किसी भी तरह से नहीं मिल सकता, सिवाय इसके कि आप वही करें जो मैं आपसे चाहता हूँ; क्योंकि इससे आप मुझे देह के बंधनों से मुक्त कर देंगे, और मैं अपने प्रिय मसीह से एक हो सकूँगा।'

इस प्रकार संत फोकास शरीर के बंधनों से मुक्त होकर मसीह के साथ रहने के लिए लालायित थे। मसीह के लिए अपना रक्त बहाने की उनकी इच्छा इतनी प्रबल थी; ईश्वर के प्रति उनका प्रेम इतना गहरा था कि उन्होंने कहा:

– *'तुम्हारी दया जीवन से भी उत्तम है'* (भजन संहिता 62:4)।

और इस प्रकार, अपने सेवकों से विनती करने के बाद, उन्होंने शहीद का मुकुट प्राप्त किया; तलवार से सिर कलम किए जाने के बाद, वे पृथ्वी से स्वर्ग चले गए[6423] । उनके पवित्र अवशेष एक ताबूत में दफनाए गए थे जिसे उन्होंने स्वयं तैयार किया था। बाद में, जैसे-जैसे उन देशों में धार्मिकता और अधिक फलती-फूलती गई, शहीद के मकबरे पर उनके नाम एक चर्च का निर्माण किया गया। और मसीह के लिए इस पीड़ित के पवित्र अवशेषों से कई विश्वासियों ने अनुग्रह प्राप्त किया: कुछ अपने रोगों से चंगे हो गए, दूसरों को अपने दुःखों में सांत्वना मिली, जबकि कुछ अन्य को पवित्र शहीद फोकास की प्रार्थनाओं के माध्यम से अपनी परेशानियों में मदद मिली। सिनोप शहर में ही नहीं, बल्कि पूरे विश्व में, जमीन और समुद्र पर, उन सभी के लिए जिन्होंने भक्तिपूर्वक उनके नाम का स्मरण किया और अपनी प्रार्थनाओं को सौंप दिया, संत आवश्यकता के समय में एक महान उपकारी और एक त्वरित सहायक साबित हुए। नाविकों के लिए संत फोकास से मदद माँगना एक रिवाज था; क्योंकि वे कई मौकों पर उन्हें दिखाई दिए: कभी-कभी रात में, जब लहरें उठती थीं, तो वे सो रहे नाविक को जगा देते थे; अन्य समयों में उन्होंने उन्हें खुद पाल चढ़ाते हुए देखा; कभी-कभी उन्हें जहाज के अग्रभाग पर देखा गया; और अन्य समयों में वे समुद्र पर चलते हुए दिखाई दिए। काला सागर, एड्रियाटिक सागर और महासागर में चलने वाले कई जहाजों पर संत फोकास का नाम गौरवान्वित किया गया; अपने सामान्य गीतों के बजाय, नाविकों ने संत फोकास के सम्मान में स्तुति गीत गाना शुरू कर दिया, ताकि उनका नाम हर समय नाविकों की जुबान पर बना रहे। वे संत फोकास को न केवल संकट के समय में, बल्कि अपने सुख-समृद्धि के बीच भी याद करते थे। उनकी एक प्रथा थी: जब भी वे भोजन या किसी प्रकार के भोज के लिए बैठते, तो वे संत फोकास के सम्मान में भोजन या पेय का एक हिस्सा अलग रख देते थे। भोजन में मौजूद कोई व्यक्ति इस हिस्से को खरीद लेता था, और बिक्री से प्राप्त धन को एक विशेष घड़े में इकट्ठा किया जाता था। इस प्रकार, वे हर दिन संत के लिए अपने भोजन का एक हिस्सा अलग रख देते थे, और एक के बाद एक वे इस हिस्से को खरीदते थे: आज एक, कल दूसरा, फिर तीसरा – पहले से लेकर आखिरी तक, हर किसी की बारी होती थी कि वह उस हिस्से को खरीदे और उसके लिए पैसे इकट्ठा करे। जब वे तट पर उतरते, तो इन हिस्सों की बिक्री से एकत्र की गई धनराशि गरीबों, बीमारों, अनाथों और यात्रियों में बाँट दी जाती थी।

यह रिवाज कई वर्षों तक चला, जब तक कि पवित्र क्रूस के शत्रुओं ने, ईश्वर की अनुमति से हमारे पापों के कारण, इन सभी भूमिओं पर कब्ज़ा नहीं कर लिया[6424] ; उन्होंने पवित्र धर्म का बहुत क्रूरता से उत्पीड़न करना शुरू कर दिया और ईसाइयों की संख्या कम कर दी। फिर भी, आज भी संत फोकास, जो सभी के साझा मध्यस्थ हैं, इस संसार के समुद्रों में यात्रा करने वालों की मदद करना बंद नहीं करते; वे हमें स्वर्गीय बंदरगाह तक ले जाते हैं, और प्रभु से हमारे

[6423] यह लगभग 320 ईस्वी के आसपास हुआ था।

[6424] यह मुसलमानों - तुर्कों को संदर्भित करता है। 1214 में, सिनॉप सेल्जूक तुर्कों के शासन में आ गया, और 2.5 सदी बाद (1461 में) इसे एक बार फिर मुसलमानों (ओटोमन तुर्कों) ने जीत लिया, अर्थात् मेहमद द्वितीय, जिसने कॉन्स्टेंटिनोपल पर विजय प्राप्त की और बीजान्टिन साम्राज्य के खंडहरों पर तुर्की (मुस्लिम) साम्राज्य की स्थापना की।

लिए विनम्रतापूर्वक प्रार्थना करते हैं। ईसा मसीह के इस शहीद की प्रार्थनाओं के द्वारा, हम हर डूबने, उथल-पुथल और तूफान से मुक्त हों, अब और हमेशा और युगों-युगों तक। आमीन।

पैगंबर सेंट योना का जीवन

स्मरणोत्सव २२ सितंबर को

पवित्र नबी योना अमाफयिन के पुत्र थे और गाफ्चेफर शहर के रहने वाले थे[6425] । परंपरा के अनुसार, उनकी माँ ज़रेफ़थ की वही वधिवा थीं[6426] , जिन्होंने अकाल के दौरान भविष्यवक्ता एलियाह को भोजन प्रदान किया और स्वयं भी उनके द्वारा जीवित रहीं, क्योंकि उनके घड़े का आटा समाप्त नहीं हुआ और उनके पात्र का तेल तब तक कम नहीं हुआ जब तक कि प्रभु ने पृथ्वी पर वर्षा नहीं भेजी। इस बीच, योनह, जो तब भी एक छोटा लड़का था, बीमार पड़कर मर गया; जिस पर वधिवा ने एलिया से कहा:

'हे परमेश्वर के मनुष्य, मैंने तुझसे क्या किया है? तू मेरे पास मेरे पापों का स्मरण दिलाने और मेरे पुत्र की मृत्यु से मुझे दण्ड देने के लिए आया है।'

परन्तु उसने उससे कहा:

'मुझे अपना पुत्र दे दो।'

लड़के को उससे लेकर, एलिया उसे अपने रहने वाले ऊपरी कमरे में ले गए और उसे अपने बिस्तर पर लिटा दिया; फिर उन्होंने प्रभु से पुकार लगाई और कहा:

'हे प्रभु मेरे परमेश्वर! क्या आप सचमुच इस वधिवा पर, जिसके यहाँ मैं ठहरा हूँ, उसके पुत्र की जान लेकर विपत्ति लाएँगे?'

और, उस लड़के पर तीन बार अपना थूक फूँककर, उन्होंने प्रार्थना करना शुरू कर दिया:

'हे प्रभु मेरे परमेश्वर! इस लड़के की आत्मा उसके शरीर में लौट आए।'

प्रभु ने अपने पवित्र नबी की प्रार्थना सुनी और उसकी विनती मान ली: लड़के की आत्मा उसके शरीर में लौट आई, और वह मरे हुओं में से जी उठा।

वयस्क होने पर, योना ने एक सदाचारी जीवन जिया और प्रभु की सभी आज्ञाओं का दृढ़ता से पालन किया। वह परमेश्वर को इतना प्रसन्न हुआ कि, परंपरा के अनुसार, उसे जल्द ही भविष्यवाणी का वरदान मिला और उसने अन्य भविष्यवाणियों के अलावा, प्रभु के दुखों, यरूशलेम के उजाड़ होने और दुनिया के अंत की भविष्यवाणी की।

उन्होंने कहा, 'जब तुम एक पत्थर को कोमल और विलापपूर्ण स्वर में रोते हुए सुनोगे, जब एक पेड़ से परमेश्वर के लिए संदेश बोला जाएगा, तब उद्धार निकट आएगा और सभी राष्ट्र प्रभु की उपासना करने के लिए यरूशलेम जाएँगे; हालाँकि, पशुओं से भरा यरूशलेम, उजाड़ने वाली घृणा में पड़ा रहेगा: तब सभी जीवित प्राणियों का अंत आ जाएगा।

स्वर्ग के परमेश्वर से भविष्यद्वाणी का वरदान प्राप्त करने के बाद, योनह ने भविष्यवक्ता एलिशा के पदचिन्हों पर चलते हुए अपनी सार्वजनिक भविष्यद्वाणी की सेवकाई शुरू की, और एलिशा के काम को उसी प्रकार जारी रखा, जैसे एलिशा ने स्वयं एलिया का काम जारी रखा था – क्योंकि वह एलिया के साथ एक ही आत्मा में था। प्राचीन यहूदी परंपरा पवित्र नबी योना को एलीशा का शिष्य बताती है[6427] , जो नबियों के पुत्रों के उस स्कूल से संबंधित थे, जिसका नेतृत्व पहले नबी एलिया और फिर एलीशा ने किया; योना नबियों के उन पुत्रों में से एक थे जिन्हें एलीशा द्वारा यहू को इज़राइल का राजा बनाने के लिए भेजा गया था [6428] । एलिशा की मृत्यु के बाद, योना ने उनकी जगह ले ली। शक्तिशाली सीरियाई साम्राज्य के

[6425] योनह 1:1; 4 राजा 14:25। यहोशू की पुस्तक के अनुसार, जब प्रतिज्ञात देश को इज़राइल के पुत्रों के बीच लॉटरी द्वारा विभाजित किया गया था, तब गथ-हेफ़ेर ज़बूलून के गोत्र को मिला और यह नाज़रेथ के उत्तर में, तिबेरियास जाने वाले रास्ते पर, गलील (फ़िलिस्तीन के उत्तरी भाग) के उत्तरी भाग में स्थित था।

[6426] 3 राजा 17:14–23। सिदोन का ज़रेफ़ाथ – सिदोन से बहुत दूर नहीं स्थित एक फ़िनिशियाई नगर।

[6427] एलिशा – एक प्रसिद्ध इस्राएली नबी, जो नबी एलिया के शिष्य और उत्तराधिकारी थे

[6428] 4 राजा 9:9–22। – 'नबियों के पुत्र' वह नाम था जो इस्राएलियों ने नबियों के शिष्यों को दिया था, जो समुदाय बनाते थे और नबियों के प्रत्यक्ष प्रभाव में पले-बढ़े थे। यद्यपि ये सख्त मायनों में स्कूल नहीं थे, फिर भी इस पेशे के लिए बुलाए गए युवा पुरुष इनके भीतर भविष्यवाणी की सेवकाई के लिए तैयार किए जाते थे, और इन केंद्रों से लोगों के बीच धार्मिक शिक्षा का प्रसार होता था।

खलिाफ आने वाले युद्ध के लिए, इस्राएल के राजा यरोबाम में साहस भरने के लिए, भविष्यवक्ता योना ने, इस उद्देश्य के लिए ईश्वर से आज्ञा प्राप्त करके, उनके लिए इस युद्ध में बड़ी सफलताओं की भविष्यवाणी की, और यरोबाम ने, उनके वचन के अनुसार, हमाथ से लेकर मृत सागर तक इस्राएल के राज्य की सीमाओं को बहाल कयिा, इस प्रकार अपने राज्य के उन प्राचीन क्षेत्रों को वापस हासलि कयिा जो सीरयिाईयों द्वारा जब्त कर लिए गए थे[6429] ।

उसी यरोबाम के राज्यकाल में, योना को एक नए मंत्रालय के लिए बुलाया गया। उन्हें परमेश्वर से आज्ञा मलिी कि वे जाकर दुष्टों और उन वदिेशयिों को, जो इस्राएलयिों के प्रतशित्रुतापूर्ण थे, पश्चाताप का प्रचार करें।

'उठ,' प्रभु ने उससे कहा, 'ननिेवे—उस बड़े नगर[6430] —में जाकर उसके वरिुद्ध प्रचार कर, क्योंकि उसकी दुष्टता मेरे पास आई है।'

लेकनि भविष्यवक्ता ने परमेश्वर की आज्ञा का पालन नहीं कयिा। उसने सोचा कि परमेश्वर, जो भला, दयालु, धीरजवान और अनुग्रह से भरपूर है, यदि निनिेवे के लोग अपने पापों से मन फरिा लें तो उन पर दया करेगा। इसलिए, उसे डर था कि निनिेवे के वनिाश के बारे में उसकी भविष्यवाणी पूरी नहीं होगी, और उसे एक धोखेबाज़ माना जाएगा, और इस्राएल के परमेश्वर का नाम ही अपमान और नदिा का वषिय बन जाएगा। अपने दलि में, वह इस दुष्ट शहर पर दया नहीं चाहता था, जसिके नविासी इस्राएलयिों के प्रति इतने शत्रुतापूर्ण और खतरनाक थे। साथ ही, परमेश्वर के प्रति अपनी अवज्ञा के पूरे बोझ को महसूस करते हुए, योनह, भय और दुःख में, परमेश्वर की उपस्थतिि से भाग गया। लेकनि कोई भी परमेश्वर से नहीं छपि सकता, क्योंकि *'पृथ्वी यहोवा की है, और उसकी सम्पूर्ण सामग्री'* (भजन संहति 23:2): उससे कौन भाग सकता है, 'जो सर्वत्र है और सर्व में व्याप्त है'?

भागते हुए, योना योपा पहुँचे और वहाँ उन्हें दूरस्थ शहर तर्शीश[6431] के लिए रवाना होने वाली एक नाव मलिी; करिाया चुकाने के बाद, वह नाव पर चढ़ गए और लंबी यात्रा पर नकिल पड़े। परन्तु यहोवा, अपने दास को होश में लाने के इच्छुक होकर, एक प्रबल वायु उत्पन्न की, और समुद्र में एक बड़ा तूफान उठ खड़ा हुआ। वशिाल लहरों ने जहाज को इधर-उधर उछाला, जसिसे वह डूबने की कगार पर आ गया। नावकिों पर भय छा गया, और वे अपने-अपने देवता से, जसिकी वे पूजा करते थे और जसि अपना रक्षक मानते थे, पुकारने लगे। उसी समय, जहाज़ के अतरिक्ति वजन को कम करके आने वाले खतरे को कम करने के लिए, उन्होंने माल को समुद्र में फेंकना शुरू कर दयिा। केवल योना नष्क्रयि रहे; वे जहाज़ के नचिले हस्सि में चले गए, वहाँ लेट गए और गहरी नींद में सो गए।

इस बीच, नावकि जोनाह के पास आया और इतनी बड़ी वपित्ति के बीच उसे सोया हुआ देखकर, उसे जगाया और भयभीत होकर उससे कहा:

'तुम सो क्यों रहे हो? उठो, अपने ईश्वर को पुकारो: शायद ईश्वर हमें याद कर लें, और हम नष्ट न हों।'

लेकनि तूफ़ान शांत नहीं हुआ, और न ही उससे उत्पन्न खतरा कम हुआ। तब नावकिों ने एक-दूसरे से कहा:

'आओ, हम पासा फेंककर पता लगाएँ कि हम पर आई इस वपित्ति के लिए कौन दोषी है।'

उन्होंने पासा फेंका, और पासा योना पर पड़ा। तब उन्होंने उससे पूछा:

'बताओ, यह वपित्ति हम पर क्यों आई है? तुम्हारा काम क्या है? तुम कहाँ से हो? तुम्हारा देश कहाँ है, और तुम कसि जाति के हो?'

योनह ने उत्तर दयिा:

'मैं एक हब्रिू हूँ, और मैं स्वर्ग के प्रभु परमेश्वर की उपासना करता हूँ, जसिने समुद्र और सूखी भूमि को बनाया है।'

[6429] 2 राजा 14:25। यह योना की भविष्यवाणी की सेवकाई की अवधि को भी स्थापति करता है, जो यरोबाम और उसके पूर्ववर्ती योआश के शासनकाल के दौरान पड़ती है। परणिामस्वरूप, योना इज़राइल के सबसे शुरुआती भविष्यवक्ताओं में से एक थे और 9वीं शताब्दी ईसा पूर्व में रहते थे।

[6430] ननिेवे शहर अश्शूरयिों की राजधानी था, जनिके साथ यहूदी उस समय संघर्ष में थे। यह शहर मेसोपोटामयिा में टग्रिसि नदी के पूर्वी तट पर स्थति था। यह प्राचीन दुनयिा का सबसे अधकि आबादी वाला और सबसे अमीर शहर था और इसकी परधि लिगभग 84 वर्स्ट थी, जो योनह की पुस्तक में दए गए बाइबलि के ववरिण, तीन दनि के सफर (योनह 3:3), से पूरी तरह मेल खाती है, क्योंकि पूर्व के लोगों के लिए एक दनि का सफर हमारे हसिाब से 25-30 वर्स्ट के बराबर होता है।

[6431] फ़ारससि या टार्टेसस – प्राचीन इबेरयिा (स्पेन) के दक्षणि-पश्चमिी कोने में बेटसि नदी (गुआडलक्वविर) पर स्थति एक प्राचीन फ़नि‍िशियिाई उपनविश।

फरि उसने उन्हें ईश्वर की इच्छा के प्रति अपनी अवज्ञा के बारे में बताया और कैसे, ईश्वर के विरुद्ध पाप करने के बाद, वह डर गया था और अब ईश्वर की उपस्थिति से भाग रहा था। यह सुनकर नाविक ईश्वर की इच्छा के विरुद्ध उसके अपराध से बहुत डरे और भयभीत हो गए, और चिल्ला उठे:

'तुमने ऐसा क्यों किया?'

यूनस पर पड़ी उस किस्मत के बावजूद, जो उसे मौत की सज़ा देती थी और उन्हें विनाश की धमकी देती थी, वे उसके खिलाफ सज़ा लागू करने के लिए तैयार नहीं थे, मानवता के प्रति अपने प्रेम और इस्राएल के सर्वशक्तिमान ईश्वर के भय, दोनों के कारण, जिसने यूनस की अवज्ञा के कारण उनके खिलाफ तूफान खड़ा किया था। उसमें इस ईश्वर के एक दूत को देखकर, उन्होंने उससे पूछना शुरू कर दिया:

'हम तुम्हारे साथ क्या करें कि समुद्र हमारे लिए शांत हो जाए?'

लेकिन तूफ़ान शांत नहीं हुआ, और लहरें और भी प्रबल होती गईं। तब योना ने उनसे कहा:

'मुझे उठाकर समुद्र में फेंक दो, और समुद्र तुम्हारे लिए शांत हो जाएगा, क्योंकि मैं जानता हूँ कि इस बड़े तूफान का कारण मुझ ही से हुआ है।'

लेकिन नाविक अभी भी हिचकिचा रहे थे, क्योंकि वे योना को एक असाधारण व्यक्ति मानते थे और डरते थे कि उसे नुकसान पहुँचाकर वे सर्वशक्तिमान इस्राएल के परमेश्वर को नाराज़ कर देंगे। इसके बजाय, उन्होंने पूरी ताकत से नौका चलाकर तट तक पहुँचने की कोशिश की, जबकि समुद्र उन पर उग्र रूप से टूटता रहा। फिर उन्होंने अंततः योना पर अपना निर्णय लागू करने का निश्चय किया। लेकिन ऐसा करने से पहले, उन्होंने प्रभु से पुकारा:

'हे प्रभु, हम तुझ से विनती करते हैं, कि इस मनुष्य के प्राण के कारण हम नाश न हों, और निर्दोष लहू का दोष हम पर न लगा; क्योंकि हे प्रभु, तूने जैसा चाहा, वैसा ही किया है।'

इसलिए उन्होंने योना को उठाकर समुद्र में फेंक दिया, और तुरंत ही आँधी थम गई। तब जहाज पर सवार सभी लोग और भी अधिक विश्वास कर बैठे कि यह तूफान यहोवा ने योना के पाप के दंड स्वरूप भेजा था; और वे उसकी सर्वशक्तिमानता से डर गए, और उसके प्रति भक्ति से भरकर, धन्यवाद के बलिदान चढ़ाए और उसकी महिमा करने के लिए व्रत किए।

इस बीच, ईश्वर की आज्ञा से, नबी योना को एक व्हेल ने निगल लिया, और योना तीन दिन और तीन रात इस व्हेल के पेट में रहे[6432] । समुद्र में फेंके जाने और व्हेल द्वारा निगल लिए जाने पर, योना घोर पीड़ा महसूस किए बिना नहीं रह सका; फिर भी उसने अपनी शांति नहीं खोई, खासकर जब उसे कोई चोट नहीं लगी: उसके भीतर यह आशा जागी कि प्रभु उसे एक बार फिर से परमेश्वर का प्रकाश देखने का सौभाग्य देंगे और उसे समुद्र की गहराइयों से बचा लेंगे। इस आशा

[6432] नबी योना का व्हेल की पेट में तीन दिन का प्रवास, उद्धारकर्ता मसीह के पृथ्वी में तीन दिन के प्रवास का पूर्वसंकेत था। यीशु मसीह स्वयं इन शब्दों में भविष्यद्वक्ता योना के प्रकाशात्मक महत्व की गवाही देते हैं: *'जिस प्रकार योना तीन दिन और तीन रात बड़े मछली के पेट में था, उसी प्रकार मनुष्य का पुत्र पृथ्वी के हृदय में तीन दिन और तीन रात रहेगा'* (मत्ती 12:39–40)। मसीहा स्वयं का तुलना योनह से करते हैं: *'निनिवे के लोग इस पीढ़ी के साथ न्याय के समय उठ खड़े होंगे और इसकी निंदा करेंगे, क्योंकि उन्होंने योनह की प्रचार से पश्चाताप किया था; और देखो, योनह से भी बड़ा यहाँ है'* (मत्ती 12:41)। इस प्रकार, अपनी सेवकाई और जीवन में, योंह ने यीशु मसीह की मृत्यु, पुनरुत्थान और प्रचार की पूर्वसूचना दी। कलीसिया के पिता इस बारे में निम्नलिखित बात कहते हैं: 'भागने वाला भविष्यद्वक्ता एक जहाज पर चढ़ा; मसीह वृक्ष पर चढ़ा; समुद्र पर एक प्रचंड आँधी आई; समुद्र का यह उथल-पुथल यहूदियों के अविश्वास का प्रतिनिधित्व करता है। नबी के भाग में समुद्र में फेंके जाने का हिस्सा पड़ा; यह भाग पिता की इच्छा को दर्शाता है, जिसके द्वारा मसीह दुख और मृत्यु की गहराई में उतरते हैं। योनह स्वेच्छा से समुद्र में फेंके जाने के लिए सहमत हो जाता है; यीशु मसीह स्वेच्छा से क्रूस पर चढ़ते हैं। योनह जहाज से समुद्र में उतरता है; मसीह क्रूस से कब्र में और पृथ्वी की गहराइयों में उतरते हैं। योनह तूफान में पीड़ित लोगों को बचाने के लिए स्वयं को बलिदान करते हैं; मसीह मानव जाति के उद्धार के लिए मरते हैं, जो पाप की लहरों से उछाले जा रहे हैं। नबी, जिसे दानव ने पकड़ लिया पर निगल नहीं पाया, उसकी कोठरी के भीतर प्रार्थना करते हैं; यीशु मसीह, मृत्यु द्वारा पराजित परन्तु उस पर विजय प्राप्त नहीं, सभी लोगों के लिए प्रार्थना करते हैं। योना व्हेल की उदर में सुरक्षित रहता है; यीशु मसीह का शरीर कब्र में सुरक्षित रहा। योना तीन दिन और तीन रात व्हेल की उदर में रहा; यीशु तीन दिन और तीन रात पृथ्वी के हृदय में रहे। तीसरे दिन, योन्याह व्हेल की पेट से बिना किसी नुकसान के बाहर निकलता है; तीसरे दिन, यीशु मसीह, अपनी दिव्यता की शक्ति से, कब्र से अक्षुण्ण उठते हैं। मृत्यु से अपने चमत्कारी उद्धार के बाद, योन्याह निनिवे के लोगों को पश्चाताप का उपदेश देने जाता है; मसीह के पुनरुत्थान के बाद, उनकी शिक्षा अन्यजातियों में प्रचारित होती है। योनह की संकटपूर्ण यात्रा के समय तक, निनिवे ने पश्चाताप का संदेश नहीं सुना था और अपने ऊपर परमेश्वर का क्रोध लाया था; लेकिन बाद में, उनके उपदेश के माध्यम से, भविष्यवक्ता ने निनिवे के लोगों को प्रभु के क्रोध से बचाया; इस प्रकार केवल मसीह की मृत्यु और पुनरुत्थान के द्वारा ही मानव जाति, जो पाप की गहराई में डूबी हुई है, पाप, शाप और मृत्यु से मुक्ति पाती है, और परमेश्वर से मेल-मिलाप करती है।

से परपिूर्ण होकर, उसने प्रभु परमेश्वर से प्रार्थना करना आरंभ कयि, और अपने पाप के लिए प्रभु के सामने पश्चाताप कयि। ईश्वर के प्रतअिपनी दुख्ति, पश्चातापी और साथ ही कृतज्ञ भावनाओं को व्यक्त करते हुए, योना ने व्हेल की कोठरी से पुकारा:

'मैंने अपनी तंगी में यहोवा को पुकारा, और उसने मुझे सुना; मैं पाताल के गर्भ से पुकारा, और तूने मेरी आवाज़ सुनी। तूने मुझे गहराई में, समुद्र के बीचोबीच डाल दयि, और धाराएँ मुझे घेरा लेतीं; तेरे सब पानी और तेरी लहरें मुझ पर से होकर गुज़र गईं। और मैंने कहा, 'मैं तेरी दृष्टि से नकिाल दयि गया हूँ,' और जलप्रवाह ने मुझे चारों ओर से घेर लयि; तेरे सारे जल और तेरी लहरों ने मुझे ढाँप लयि। पानी ने मुझे मेरी आत्मा की गहराइयों तक डुबा दयि; गहरिाई ने मुझे घेर लयि; समुद्र की शैवाल मेरी खोपड़ी के चारों ओर लपिट गई। मैं पहाड़ों की जड़ तक उतर गया; धरती ने अपनी जंजीरों से मुझे हमेशा के लिए बंद कर दयि; फरि भी हे यहोवा मेरे परमेश्वर, तू मेरी आत्मा को कब्र से ऊपर उठाएगा। जब मेरे भीतर मेरी आत्मा थक गई, तब मैं प्रभु को याद करने लगा, और मेरी प्रार्थना आपके पास, आपके पवत्रि मंदरि में पहुँची। जो व्यर्थ और झूठे देवताओं की पूजा करते हैं , उन्होंने अपने दयालु उपकारी को त्याग दयि है। परन्तु मैं आपको स्तुतकिी आवाज़ के साथ बलदिान चढ़ाऊँगा; मैं अपनी मन्नत पूरी करूँगा: उद्धार प्रभु के पास है[6433] ।

योनह की प्रार्थना सुनी गई: दयालु प्रभु ने अपनी इच्छा की अवज्ञा करने के लिए अपने सेवक को दंड दयि, लेकनि, उसे मरना नहीं चाहकर, व्हेल को योनह को कनिारे पर उगलने का आदेश दयि। दनि का उजाला, आकाश, पृथ्वी और समुद्र को देखकर, योनह ने उस परमेश्वर का हार्दकि धन्यवाद कयि, जसिने उसे मृत्यु से बचाया था।

इसके बाद, प्रभु का वचन दूसरी बार योना के पास आया।

'उठो, बड़े नगर ननिवे को जाओ, और वहाँ वही प्रचार करो जो मैं ने तुम्हें आज्ञा दी है।'

इस प्रकार योना उठकर ननिवेह को गया। ननिवेह एक बड़ा नगर था, जसिका परधि-मार्ग तीन दनि का था। और योना नगर में एक दनि के चलने के मार्ग तक चलने लगा, और यह प्रचार करने लगा:

'चालीस दनि और, और ननिवेह नष्ट हो जाएगा।'

नबी योना के शब्द संक्षप्ति और भयानक थे; ऐसा प्रतीत हुआ कि वह नश्चियपूर्वक ननिवे के नकिटवर्ती वनिाश की भवष्यिवाणी कर रहे थे। लेकनि नगर के नविासयिों ने यह समझ लयि कि परमेश्वर, उनके वनिाश का आदेश देते हुए भी, एक समय के लिए इस आदेश को पूरा करने में देरी कर रहे थे; कि चालीस दनि नसि्संदेह उन्हें पश्चाताप के लिए दिए गए थे - और उन्होंने भवष्यिवक्ता योना के द्वारा परमेश्वर से सुसमाचारति वचन पर वश्विास कयि। उन्होंने उपवास का ऐलान कयि और सबने, सबसे बड़े से लेकर सबसे छोटे तक, बोरी का कपड़ा पहन लयि। योंह की शकि्षा शक्तशिाली ननिवे के राजा तक भी पहुँची; – वह अपने सहिासन से उठ गया, अपने शाही वस्त्र उतार दिए, बोरी का वस्त्र पहन लयि और राख में बैठ गया[6434] । फरि उसने अपने, यानी राजा के, और कुलीनों के नाम पर पूरे ननिवे में यह घोषणा करवाई कि न तो लोग और न ही पशु, न तो सांड और न ही भेड़ कुछ भी खाएं, न चरागाह जाएँ, न पानी पएिँ; और मनुष्य और पशु दोनों बोरी का कपड़ा पहनकर राख में बैठें और परमेश्वर से वनितीपूर्वक पुकारें, और हर कोई अपने बुरे मार्गों और अपने हाथों के हसिात्मक कामों से लौट आए।

ननिवे के लोगों ने कहा, 'कौन जाने, शायद परमेश्वर फरि भी दया करें और अपने प्रचंड क्रोध को हमसे हटा लें, और हम नष्ट न हो जाएँ।'

पश्चाताप करने वाले ननिवेवासयिों की आशा व्यर्थ नहीं हुई: ईश्वर, उनकी पश्चातापी अवस्था और उनके पश्चाताप के कार्य को देखकर, अपने नर्णिय को वापस ले लयि, उन पर दया की, और उस वपित्तकिो उन पर नहीं लाया जसिकी उन्होंने अपने भवष्यिवक्ता के मुख से भवष्यिवाणी की थी।

[6433] व्हेल की पेट में योना की प्रार्थना कैनन के छठे ओड का आधार बनाती है। पवत्रि चर्च योना की यात्रा में न केवल उद्धारकर्ता के दुखों और कब्र में उनके समय की पूर्वछाया देखती है, बल्कि हमारे अपने जीवन से एक समानता भी देखती है। वह तूफ़ान में फँसे और लहरों में डूबे योना के जहाज की तुलना हमारे आत्मा से करती है, जो जीवन के सागर की लहरों से इधर-उधर उछाला जाता है, पापों में डूब जाता है, और आध्यात्मकि जानवर - शैतान - द्वारा पकड़ लयि जाता है। यह उस उद्धारकर्ता तट की तुलना उस शांत आश्रय से करती है जो हमारी आत्मा को ईश्वर में मलिता है। इस वचिार को ध्यान में रखते हुए, हर दनि मैटनि्स में, कैनन की छठी ओड में, वह हमें उनके पश्चाताप के गीत की याद दलिाती हैं और, उसे हमारे होठों पर रखकर, हमें उतनी ही लगन से प्रार्थना करने के लिए प्रेरति करती हैं जतिनी लगन से योनह ने व्हेल की पेट में प्रार्थना की थी, कि ईश्वर हमारी आत्मा को आध्यात्मकि क्षय से उबारें।

[6434] ये दुख और पश्चाताप की अभव्यिक्तयिाँ थीं जो पूर्व के लोगों में आम थीं।

लेकिन जहाँ एक ओर परमेश्वर को निनिवे के लोगों का पश्चाताप देखकर उन पर दया करना भाया, वहीं योना—जो भविष्यवाणी के अपरिवर्तनीय होने के बारे में अपनी पुरानी मान्यताओं पर अभी भी अड़ा था और मानव दुर्बलता के कारण परमेश्वर की असीम दया को समझ नहीं पाया था—पश्चाताप करने वाले पापियों के लिए दया की इस त्वरित घोषणा से गहराई से व्यथित हो गया। चालीस दिन का प्रचार का समय बीत जाने के बाद, वह शहर से निकल गया और शहर के पूर्वी हिस्से में एक पहाड़ पर चढ़कर, वहाँ अपने लिए एक आश्रय बना लिया और उसकी छाया में बैठ गया ताकि यह देख सके कि शहर का क्या होगा। लेकिन जब उसने देखा कि शहर को कुछ भी नहीं हुआ है, तो उसने गहरे दुख में अपने प्रार्थना में परमेश्वर से पुकारा:

'हे प्रभु! क्या मैंने अपने देश में रहते हुए यही नहीं कहा था? इसीलिए मैं तarshish भाग गया था; क्योंकि मैं जानता था कि आप कृपा और दया से भरपूर, धीमी क्रोध करने वाले और स्थिर प्रेम से परिपूर्ण परमेश्वर हैं। और अब, हे प्रभु, मेरी जान ले लो; क्योंकि मेरे लिए जीने से तो मरना ही बेहतर है।'

और प्रभु परमेश्वर ने उसी रात योना के सिर पर एक बेल उगाई[6435] , ताकि वह उसे झुलसाने वाली गर्मी से और साथ ही उसकी पीड़ा से बचा सके; क्योंकि भविष्यवक्ता को इसमें अपनी व्याकुल आत्मा के लिए सांत्वना मिली। यूहन्ना ने इसमें परमेश्वर की इच्छा का एक संकेत देखा होगा कि उसे उसी स्थान पर रहना चाहिए और यह देखने के लिए इंतजार करना चाहिए कि शहर का क्या होगा; इसने उसमें यह आशा भी जगाई होगी कि परमेश्वर किसी चमत्कारी तरीके से निनिवे पर अपने न्याय को सही ठहराएगा। साथ ही, छायादार पौधे के स्पष्ट रूप से चमत्कारिक रूप में प्रकट होने पर, योना ने अपने प्रति ईश्वर की विशेष देखभाल को पहचाना। उसका हृदय आनंदित हुआ, और यह सोचकर उत्पन्न हुई दुख कि परमेश्वर ने उसे त्याग दिया है, आनंद में बदल गया, और योना उस पौधे के नीचे रहा जो पूरे दिन में उग आया था, और वह तपती धूप से बचता रहा।

लेकिन छाया देने वाले पौधे पर योना की खुशी अल्पकालिक थी। अगले दिन, भोर में, ईश्वर की आज्ञा से एक कीड़ा पौधे को चबा गया, और वह मुरझा गया।

जब सूरज निकला, तो ईश्वर ने एक झुलसा देने वाली पूर्वी हवा भेजी, और सूरज की तपिश योनह के सिर पर पड़ने लगी, जिससे वह बेहाल हो गया और मृत्यु की याचना करने लगा।

उसने कहा, 'मेरे लिए जीने से तो मरना ही बेहतर है।'

और परमेश्वर ने योना से कहा:

'क्या तुम सचमुच इस पौधे के मुरझा जाने से इतना दुखी हो?'

यूहन्ना ने उत्तर दिया:

'मैं अत्यंत व्यथित हूँ, यहाँ तक कि मृत्यु के कगार पर।'

तब, पैगंबर को पितृवत् बुद्धिमत्ता से समझाते हुए, ईश्वर ने कहा:

'तू उस पौधे के लिए शोक करता है, जिसके लिए तूने न तो परिश्रम किया, न ही जिसे तूने उगाया; जो एक ही रात में उगा और उसी रात नष्ट हो गया। क्या मैं उस निनिवेह पर दया न करूँ, जो महान नगर है, जिसमें एक लाख से अधिक लोग रहते हैं, जो अपना दाहिना-बायाँ नहीं जानते[6436] , और बहुत से पशु भी हैं?'

इसके बाद, जब चालीस दिन बीत गए और निनिवे का विनाश नहीं हुआ, बल्कि इसके विपरीत सूरज चमक उठा, तो निनिवे के लोगों ने इसमें ईश्वर की दया और क्षमा का संकेत देखा; वे शहर से बाहर नबी योना के पास गए और अपने उद्धार के लिए कृतज्ञता स्वरूप यरूशलेम में मंदिर के लिए उपहार दिए। निनिदेह के लोगों की कृतज्ञता के साथ, जिन्हें उसने ईश्वर के क्रोध की घोषणा करके समय रहते होश में लाया था, योना शांतिपूर्वक निनिदेह से अपने स्वदेश के लिए प्रस्थान कर गया। वहाँ पर्याप्त समय तक एक ईश्वरीय जीवन जीने के बाद, पवित्र नबी योना का शांतिपूर्वक निधन हो

[6435] हिब्रू पाठ में, यहाँ 'किकायोन' शब्द आता है, जो आइवी (बेल) के समान एक विशेष छायादार पेड़ को दर्शाता है, या, जैसा कि कुछ लोग इसका अनुवाद करते हैं, अरंडी का पौधा, जो कुछ ही दिनों में छायादार पेड़ की ऊँचाई तक बढ़ जाता है; लेकिन यह उतनी ही जल्दी मुरझा भी सकता है, क्योंकि कीड़े अक्सर इसकी जड़ को ही खा जाते हैं।

[6436] यह शब्द सबसे अधिक संभावना नवजात शिशुओं को संदर्भित करता है, ऐसी स्थिति में निनिवे की आबादी को आम तौर पर 645,000 माना जाता है।

गया और उन्हें उनके पैतृक नगर[6437] में दफनाया गया; अब, स्वर्ग में मसीह ईश्वर के सामने खड़े होकर, वे उनके मुख के दर्शन से परिपूर्ण हैं और भविष्यद्वक्ताओं, प्रेरितों और सभी संतों के साथ हमेशा के लिए उनकी महिमा करते हैं[6438] । आमीन।

आदरणीय जोनाह द प्रेस्बिटिर की स्मृति

22 सितंबर को स्मरण किया जाता है

परम पूज्य योना द प्रेस्बिटिर फिलिस्तीन में रहते थे और वे परम पूज्य थियोडोर और थियोफेनेस 'द इन्सक्राइब्ड' के पिता थे, जिन्होंने पवित्र प्रतिमाओं की पूजा के लिए प्रतिमा-विरोधी सम्राटों के हाथों बहुत कष्ट सहे[6439] । इओना अपनी ईश्वर-भक्ति और सदाचारी जीवन के लिए विशिष्ट थे, और वे अपने आतिथ्य तथा अन्य ईसाई परोपकार के कार्यों में विशेष रूप से उत्साही थे। उन्होंने अपने बेटों के पालन-पोषण की प्रेमपूर्वक देखभाल की; जब वे अभी भी घर पर थे, तो उन्होंने स्वयं उन्हें विद्वितापूर्ण ज्ञान सिखाया, साथ ही उन्हें भक्ति के नियमों में और अधिक शिक्षित किया। अपने जीवन के अंतिम वर्षों में, वृद्धावस्था के करीब पहुँचने पर, योना ने ईश्वर की इच्छा से अपनी पत्नी को खो दिया और अपने शेष दिनों को ईश्वर की पूर्ण और परिपूर्ण सेवा के लिए समर्पित करने का संकल्प लिया। वह संत साव्हा द सैंक्चुअड के एकांत मठ में चले गए, जो अपने सम्मानित संतों के तपस्या के कारनामों के लिए प्रसिद्ध था, जहाँ उनके अपने पवित्र पुत्र पहले संन्यासी के रूप में रहते थे। वहाँ उन्होंने मठवासी संन्यास की शपथ ली और उस मठ के संतों के पवित्र, तपस्वी जीवन का अनुकरण करते हुए, उन्होंने और भी अधिक ईश्वर-भक्ति प्राप्त की और भय के साथ अपनी मुक्ति अर्जित की।

आयोना ने लगातार कठोर उपवास किया और खुद को उत्कट, ईश्वर-केंद्रित प्रार्थनाओं में समर्पित कर दिया। अपने लिए प्रार्थना करते हुए, उन्होंने उस दुनिया को नहीं भुलाया जिसे वे पीछे छोड़ आए थे; और, अपने हृदय में उसके लिए शोक करते हुए और अपने पड़ोसियों के प्रति प्रेम से जलते हुए, उन्होंने दुनिया की ईसाई भलाई, पवित्र चर्च की शांति और राजाओं की धार्मिकता के लिए ईश्वर से भक्तिपूर्वक प्रार्थना की, क्योंकि तब तक बीजान्टिन राजा आइकॉनोकलास्टिक चर्च की ओर मुड़ चुके थे और ईश्वर के चर्च की शांति भंग कर रहे थे[6440] । इस प्रकार का पुण्य

[6437] लगभग 800 ईसा पूर्व निधन – पैगंबर योना का उपदेश देने के बाद का जीवन केवल परंपरा से ही ज्ञात है; सबसे पुराने विवरणों के अनुसार उनकी मृत्यु उनके मूल नगर में हुई, जहाँ उनकी कब्र आज भी स्थित मानी जाती है और जहाँ मुसलमानों ने उनके सम्मान में एक भव्य मस्जिद का निर्माण किया है। एक अन्य परंपरा के अनुसार, पैगंबर नीनवे में ही रहे, जिसके खंडहरों में, मोसुल के पास, उनकी कब्र भी स्थित होने की बात कही जाती है; यह ईसाइयों, यहूदियों और मुसलमानों, सभी के लिए समान रूप से सार्वभौमिक श्रद्धा का विषय है। पहले दृष्टिकोण की पुष्टि मैकाबियस की तीसरी पुस्तक के वृत्तांत से होती है, जिसमें कहा गया है कि ईश्वर ने *'यूनुस को प्रकट किया, जब वह समुद्र की गहराई में रहने वाले व्हेल की पेट में निराशा में तड़प रहा था, और जो कोई भी उसे देखता था, वह सभी के लिए सुरक्षित था'* (3 मैक. 6:6)।

[6438] लघु भविष्यवक्ताओं की पाँचवीं पुस्तक भविष्यवक्ता योना से संबंधित मानी जाती है; इसका विषय नीनवे को पश्चाताप के संदेश के साथ योना का मिशन है। योना के मिशन का उद्देश्य केवल नीनवे का उद्धार नहीं था, बल्कि यहूदियों को स्वयं यह सिखाना भी था, जिनमें उस समय विदेशियों के प्रति असहिष्णुता विकसित हो गई थी। प्रभु भविष्यवक्ता को निर्देश देते हैं कि उद्धार अन्यजातियों का भी भाग है, और यहूदियों को सुधार करने की चेतावनी देते हैं, क्योंकि यदि वे पश्चाताप नहीं करते हैं तो वे भी नाश हो सकते हैं, और उनकी जगह अन्यजातियों द्वारा ले ली जाएगी। इस प्रकार योना के उपदेश का एक नया, भविष्यसूचक महत्व है, जिसने सभी राष्ट्रों को मसीह की कलीसिया में बुलाने वाले नए नियम के प्रेरितों के उपदेश का पूर्वाभास दिया। यूहन्ना की पुस्तक और स्वयं यूहन्ना की इस महत्ता का एक संकेत स्वयं उद्धारकर्ता के शब्दों में पाया जा सकता है, जो यहूदियों—और विशेष रूप से फरीसियों—की पश्चाताप की कमी, अविश्वास और यूहन्ना बपतिस्मादाता के पश्चाताप पर उपदेश की उपेक्षा के लिए डाँटते हुए कहते हैं: *'निनिवे के लोग इस पीढ़ी के साथ न्याय के दिन उठ खड़े होंगे और इसे दोषी ठहराएंगे, क्योंकि उन्होंने योना के प्रचार पर पश्चाताप किया था; और देखो, योना से भी बड़ा यहाँ है'* (मत्ती 12:41)। – महा शनिवार को संध्या सेवा के दौरान, उद्धारकर्ता के पुनरुत्थान से संबंधित अन्य पुराने नियम की भविष्यवाणियों के साथ, योना की पुस्तक का संपूर्ण पाठ किया जाता है।

[6439] चर्च 27 दिसंबर को संत थियोडोर द इंस्क्रिप्टिड की स्मृति मनाता है। उन्हें "द इंस्क्रिप्टिड" कहा जाता है क्योंकि आइकनों की उनकी श्रद्धा के लिए बाइजेंटाइन प्रतिमा-भंजक सम्राटों द्वारा दी गई यातनाओं के बीच, उनके गालपन के बारे में अपमानजनक श्लोक उन पर उकेरे गए थे; ये श्लोक लाल-गरम सुइयों से उनके चेहरों पर दर्दनाक रूप से उकेरे गए थे, जिससे स्थायी निशान रह गए। संत थियोफेंस को लेखक और कैनन के रचनाकार के रूप में भी जाना जाता है।

[6440] संत योना के समय के बाइज़ेंटाइन सम्राट थे: लियो पंचम अर्मेनियाई (813–820), माइकल द्वितीय हकला (820–829) और थियोफिलस (829–842)। मूर्तिभंजनवाद की विधिमता 8वीं शताब्दी के पहले भाग में बीजान्टियम में उभरी और 9वीं शताब्दी के मध्य (842) तक जारी रही।

जीवन जीते हुए, योना ने वृद्धावस्था प्राप्त की और अपने ईश्वर-भक्त जीवन के लिए, ईश्वर से चंगा करने का अनुग्रह-पूर्ण वरदान प्राप्त किया। अपने दिनों के अंत तक शांतिपूर्वक पहुँचने के बाद, उन्होंने आनंदपूर्वक अपनी पवित्र और धन्य आत्मा को प्रभु[6441] के हवाले कर दिया, जिनके लिए उनका हृदय हमेशा शुद्ध और उत्कट प्रेम से जलता था।

संत पतरस का जीवन, जो पहले एक कर वसूलने वाले थे[6442]

22 सितंबर को स्मरणोत्सव

अफ्रीका में पीटर नाम का एक क्रूर और निर्दयी कर-संग्रहकर्ता रहता था; वह कभी गरीबों पर दया नहीं करता था, मृत्यु के बारे में कभी नहीं सोचता था, ईश्वर की कलीसियाओं में कभी नहीं जाता था, और भीख मांगने वालों के प्रति उसका हृदय हमेशा कठोर रहता था। लेकिन दयालु और करुणामय ईश्वर पापियों की मृत्यु नहीं चाहता; बल्कि वह सभी के उद्धार की परवाह करता है और अपनी अगाध लीला के द्वारा सभी को बचाता है। उसने इस पीटर पर भी अपनी दया दिखाई और उसे निम्नलिखित प्रकार से बचाया।

एक दिन, भिखारी और बेसहारा लोग, सड़क पर बैठे, उन लोगों की प्रशंसा करने लगे जिन्होंने उनके साथ दया से व्यवहार किया था, और उनके लिए ईश्वर से प्रार्थना करने लगे, जबकि उन लोगों की निंदा करने लगे जो निर्दयी थे; जैसे ही वे इस तरह बात कर रहे थे, उन्होंने पतरस के बारे में भी बात करना शुरू कर दिया, यह बताते हुए कि उसने उनके साथ कितना क्रूर व्यवहार किया था, और एक-दूसरे से पूछा कि क्या किसी ने कभी पतरस के घर से कोई भीख प्राप्त की है; और जब ऐसा कोई व्यक्ति नहीं मिला, तो उन दरिद्रों में से एक खड़ा हुआ और कहा:

'अगर मैं अभी जाकर उससे भीख माँगूँ तो तुम मुझे क्या दोगे?'

सहमत होने के बाद, उन्होंने जमा राशि के रूप में कुछ पैसे इकट्ठा किए, और भिखारी चल पड़ा और पीटर के द्वार पर खड़ा हो गया। जल्द ही पीटर घर से बाहर आया। वह राजकुमार के खाने के लिए रोटी के लोथों से लदा एक गधा ले जा रहा था। भिखारी ने उसे प्रणाम किया और ज़ोर से भीख माँगने लगा। पीटर ने रोटी छीन ली, उसे भिखारी के चेहरे पर फेंक दिया और चल दिया। रोटी उठाकर, भिखारी अपने साथियों के पास लौट आया और कहा:

'मुझे यह रोटी पीटर के अपने हाथों से मिली है।'

इतना कहकर, वह प्रभु की स्तुति करने लगा और पीटर की महान दया के लिए उनका धन्यवाद करने लगा। दो दिन बाद, कर वसूलने वाला इतना बीमार पड़ गया कि वह मृत्यु के कगार पर था, और फिर उसे एक दर्शन हुआ जिसमें उसने खुद को न्याय की सीट के सामने खड़ा देखा, और उसके कर्मों को तराजू पर रखा जा रहा था। तराजू के एक तरफ़ दुष्ट और बुरे आत्मा खड़े थे, जबकि दूसरी तरफ़ चमकदार और महान पुरुष थे। दुष्ट आत्माओं ने वे सभी दुष्ट कर्म लाए जो कर-संग्रहकर्ता पतरस ने अपने जीवन में, अपने शुरुआती वर्षों से किए थे, और उन्हें पलड़े पर रख दिया; हालाँकि, तेजस्वी पुरुषों को पतरस का एक भी अच्छा कर्म नहीं मिला जिसे पलड़े के दूसरे तरफ रखा जा सके; इसलिए, वे दुखी हो गए और एक-दूसरे से हैरानी में कहने लगे:

'हमारे पास तराजू पर रखने के लिए कुछ भी नहीं है।'

तब उनमें से एक ने कहा:

'वास्तव में, हमारे पास वहाँ रखने के लिए कुछ भी नहीं है, सिवाय एक रोटी के जो उसने दो दिन पहले मसीह के लिए दी थी, और वह भी केवल जबरदस्ती में।'

उन्होंने उस रोटी को तराजू के दूसरे पलड़े पर रखा, और वह उसके पक्ष में झुक गया। तब सफेद वस्त्रधारी लोगों ने कर वसूलने वाले से कहा:

'जा, हे गरीब पतरस, और इस रोटी में कुछ जोड़, नहीं तो दुष्टात्माएँ तुझे उठा ले जाएँगी और तुझे अनंतकालिक यातनाओं में डाल देंगी।'

होश में आते हुए, पतरस इस पर विचार करने लगा और उसे एहसास हुआ कि जो उसने देखा था वह कोई भूत-प्रेत नहीं, बल्कि सत्य था; उस क्षण उसे अपने सभी पाप याद आए, यहाँ तक कि वे भी जिन्हें वह पहले ही भूल चुका था –

[6441] संत योना द प्रेस्बटिर की मृत्यु 9वीं शताब्दी के पहले भाग में हुई।

[6442] एक 'म्यतार' कर वसूलने वाला होता है।

उसके सभी अपराध उसके सामने स्पष्ट रूप से प्रकट हो गए – और ठीक इन्हीं को दुष्ट दानवों ने इकट्ठा करके तराजू पर रख दिया था। तब पतरस, चकित होकर, सोचने लगा:

'यदि रोटी का एक टुकड़ा, जो मैंने एक गरीब आदमी के चेहरे पर फेंका था, मेरी इतनी मदद कर गया कि दुष्टात्माएँ मुझे ले नहीं जा सकीं, तो धर्म और उत्साह के साथ की गई उदार दान-पुण्य उन लोगों की कितनी अधिक मदद करेगा, जो बिना कंजूसी के अपना धन गरीबों में बाँटते हैं।'

और उस समय से वह अत्यंत परोपकारी हो गया, इतना कि वह स्वयं को भी नहीं बख्शता था। एक दिन वह अपने टोल-हाउस[6443] की ओर जा रहा था। रास्ते में उसकी मुलाकात एक जहाज मालिक से हुई: वह नग्न था, क्योंकि अपना जहाज खोने के कारण वह पूरी तरह से बेसहारा हो गया था। और इस प्रकार, वह आदमी पीटर के पैरों पर गिर पड़ा और उससे कुछ कपड़े देने की विनती करने लगा ताकि वह अपनी नग्नता को ढक सके। पीटर ने अपना सुंदर और महँगा बाहरी वस्त्र उतारकर उसे दे दिया; लेकिन वह आदमी, ऐसे कपड़ों में घूमने में शर्म महसूस करते हुए, उसे एक व्यापारी को बेच दिया। पतरस, अपनी सीमा-शुल्क की चौकी से लौटते हुए, संयोग से उस वस्त्र को बाज़ार में बिक्री के लिए रखा हुआ देख लिया; इससे उसे इतना दुख हुआ कि, घर पहुँचने पर, उसने भोजन का एक निवाला भी नहीं चखा, बल्कि रोते और विलाप करते हुए अकेले हो गया, और कहने लगा:

'ईश्वर ने मेरी दान-दक्षिणा स्वीकार नहीं की है; मैं इस लायक नहीं हूँ कि कोई गरीब मुझे याद रखे।'

इस प्रकार रोते और शोक मनाते हुए, वह कुछ देर के लिए सो गया, और फिर एक कुलीन रूप वाला व्यक्ति उसके सामने प्रकट हुआ, जो सूर्य से भी अधिक चमक रहा था; उसके सिर पर एक क्रॉस था और उसने वही कपड़े पहने हुए थे जो पीटर ने उस जहाज के मालिक को दिए थे जो मुश्किल में पड़ गया था; उस व्यक्ति ने पीटर से कहा:

'भाई पतरस, तुम क्यों दुखी और रो रहे हो?'

कर वसूलने वाले ने उत्तर दिया:

'मैं कैसे न रोऊँ, हे प्रभु, जब मैं गरीबों को उसी में से देता हूँ जो आपने मुझे दिया है, और वे बदले में जो उन्हें दिया गया है उसे बाज़ारों में बेच देते हैं?'

तब जो प्रकट हुआ था, उसने उससे कहा:

'क्या तुम इन कपड़ों को पहचानते हो जो मैंने पहने हैं?'

पतरस ने उत्तर दिया:

'हाँ, प्रभु, मैं उन्हें पहचानता हूँ; वे मेरे हैं; इन्हीं से मैंने नग्न व्यक्ति को वस्त्र पहनाए।'

प्रकट हुए ने कहा:

'अपना दुख त्याग दो, क्योंकि वह वस्त्र जो तुमने भिखारी को दिया था, वह मुझे मिल गया है और मैं उसे पहने हुए हूँ, जैसा कि तुम देख रहे हो; मैं तुम्हारे इस पुण्य कार्य की प्रशंसा करता हूँ, क्योंकि तुमने मुझे वस्त्र पहनाया, जो ठंड से मर रहा था।'

जब वह जागा, तो कर वसूलने वाला चकित हो गया और गरीबों पर तरस खाकर कहने लगा:

'यदि गरीब मसीह के समान हैं, तो, प्रभु की कसम, मैं तब तक नहीं मरूँगा जब तक कि मैं उनमें से एक नहीं बन जाता।'

तुरंत उसने अपनी सारी संपत्ति गरीबों में बाँट दी और अपने दासों को आज़ाद कर दिया, केवल एक को अपने पास रखा; इस दास से उसने कहा:

'मैं तुम्हें एक रहस्य बताना चाहता हूँ; इसे सुरक्षित रखो और मेरी आज्ञा मानो; परन्तु यदि तुम यह रहस्य नहीं रखोगे और मेरी आज्ञा नहीं मानोगे, तो जान लो कि मैं तुम्हें अविश्वासियों को बेच दूँगा।'

इस पर दास ने उत्तर दिया:

'मालिक, जो कुछ भी आप मुझसे कहते हैं, मुझे वह करना ही होगा।'

तब पतरस ने उससे कहा:

'चलो हम पवित्र नगर चलते हैं, प्रभु के जीवन-दायक समाधि की पूजा करें, और वहाँ तुम मुझे किसी ईसाई को बेच देना, और बिक्री से मिली रकम गरीबों को दे देना; तब तुम स्वयं एक स्वतंत्र मनुष्य हो जाओगे।'

[6443] कस्टम हाउस वह स्थान है जहाँ शुल्क या कर एकत्र किए जाते थे।

दास अपने मालकि के इस अजीब इरादे पर चकति हो गया; वह उसकी आज्ञा मानना नहीं चाहता था और बोला:

'मुझे आपके साथ पवत्रि नगर जाना ही होगा, क्योंकि मैं आपका दास हूँ; लेकनि मैं आपको बेच नहीं सकता, मेरे स्वामी, और मैं ऐसा कभी नहीं करूँगा।'

तब पतरस ने उससे कहा:

'यदि तुम मुझे नहीं बेचोगे, तो मैं तुम्हें मूर्तपिूजकों को बेच दूँगा, जैसा कि मैं तुम्हें पहले ही बता चुका हूँ।'

और वे यरूशलेम के लिए रवाना हो गए। पवत्रि स्थानों को नमन करने के बाद, पतरस ने एक बार फरि सेवक से कहा:

'मुझे बेच दो; लेकनि अगर तुम मुझे नहीं बेचोगे, तो मैं तुम्हें बर्बर लोगों को कठोर दासता में बेच दूँगा।'

अपने स्वामी के अडगि संकल्प को देखकर, नौकर के पास उसकी इच्छा के वरिुद्ध भी, उसकी आज्ञा मानने के सवि कोई चारा नहीं था। एक ईश्वर-भयभीत व्यक्तसि मलिने पर जसिे वह जानता था, जो पेशे से रजवाला था और जसिका नाम ज़ोइलस था, नौकर ने उससे कहा:

'ज़ोइलस, मेरी बात सुनो – मुझसे एक अच्छा दास खरीद लो।'

चाँदी के कारीगर ने उत्तर दयिा:

'भाई, मेरी बात मानो: मैं गरीबी में पड़ गया हूँ, इसलए मेरे पास उसे खरीदने के लिए पैसे नहीं हैं।'

तब दास ने उससे सुझाव दयिा:

'कसिी से उधार लेकर उसे खरीद लो, क्योंकि वह बहुत बढ़यिा इंसान है, और ईश्वर तुम्हें उसके बदले आशीर्वाद देगा।'

उसकी बातों पर वश्विास करके, ज़ोइल ने अपने एक दोस्त से तीस सोने के सक्कि उधार लिए और, इस पैसे से, पीटर को उसके दास से खरीद लयिा, यह जाने बनिा कि पीटर वास्तव में दास का अपना मालकि था। दास ने, अपने मालकि की ओर से पैसे ले लेने के बाद, कॉन्स्टेंटनिोपल चला गया और, यह बताए बनिा कि उसने क्या कयिा है, पैसे गरीबों में बाँट दिए। उस समय से, पीटर ज़ोइलस की सेवा करने लगा; उसे ऐसी चीजें करनी पड़ती थीं जनिका वह आदी नहीं था: कभी-कभी वह रसोई में काम करता, कभी-कभी ज़ोइलस के घर से खाद ढोता, और कभी-कभी वह दाख की बारी में मट्टिी खोदता; इन और अन्य कठनि परश्रिमों के माध्यम से, अपनी असीम वनिम्रता में, उसने अपने शरीर को थका दयिा। ज़ोइलस ने, अपनी ओर से, देखा कि पीटर उसके घर पर आशीर्वाद ला रहा था, ठीक वैसे ही जैसे एक बार पेंटेफ्री का घर यूसुफ के कारण धन्य हुआ था; उसने देखा कि उसकी संपत्ति बढ़ गई थी; इसलिए वह पीटर से प्रेम करने लगा, और साथ ही, उसकी असाधारण वनिम्रता को देखकर, उसके प्रति सम्मान महसूस करने लगा। एक दनि उसने उससे कहा:

'पीटर, मैं तुम्हें आज़ाद करना चाहता हूँ; मेरा भाई बन जाओ।'

हालाँकि, पीटर अपनी आज़ादी नहीं चाहता था, बल्कि दास के रूप में सेवा करना पसंद करता था; अक्सर दूसरे दास उसे गाली देते, कभी-कभी उसे पीटते और हर तरह से अपमानति करते थे, फरि भी वह बनिा एक शब्द बोले धैर्यपूर्वक यह सब सहन करता था। एक दनि, पीटर ने एक सपने में एक तेजस्वी पुरुष को देखा जो एक बार अफ्रीका में अपने ही कपड़ों में उसके सामने प्रकट हुए थे; इस पुरुष ने, अब अपने हाथ में तीस सोने के सक्कि पकड़े हुए, उससे कहा:

'भाई पतरस, दुखी मत हो, क्योंकि मैंने स्वयं तुम्हारे लिए पैसे प्राप्त कए हैं; तब तक धैर्य रखो जब तक तुम्हें पहचाना न जाए।'

कुछ समय बाद, चाँदी के कुछ व्यापारी अफ्रीका से पवत्रि स्थलों पर श्रद्धांजलि अर्पति करने आए; ज़ोएल, पीटर के स्वामी, ने उन्हें दोपहर के भोजन के लिए अपने घर आमंत्रति कयिा। भोजन के दौरान, मेहमानों ने पीटर को पहचानना शुरू कर दयिा और एक-दूसरे से कहा:

'यह आदमी कर वसूलने वाले पीटर से कतिना मलिता-जुलता है।'

उनकी बातचीत सुनकर, पीटर ने उनसे अपना चेहरा छपिाना शुरू कर दयिा, ताकि वे उसे बलि्कुल भी पहचान न सकें। हालाँकि, उन्होंने उसे पहचान लयिा और घर के मालकि से कहने लगे:

'ज़ोइलस, हम तुम्हें एक महत्वपूर्ण बात बताना चाहते हैं: क्या तुम जानते हो कि एक महान व्यक्ति – पीटर – तुम्हारे घर में सेवा कर रहा है? अफ्रीका में वह बहुत प्रतष्ठिति व्यक्ति था; उसने अपने सभी दासों को मुक्त कर दयिा। राजकुमार बहुत दुखी है और इस बात का पछतावा करता है कि पीटर हमें छोड़ गया है; इसलिए, हम उसे अपने साथ ले जाएँगे।'

दरवाज़ों के बाहर खड़े पीटर ने हर बात सुनी; वह जसि थाल को उठाए हुए था, उसे नीचे रखकर, वह भागने के लिए फाटक की ओर भागा; फाटक का रखवाला जन्म से मूक और बधरि था, इसलिए वह केवल पहले से तय संकेतों के ज़रिए ही फाटक खोलता और बंद करता था।

संत पीटर, जाने की अपनी जल्दबाज़ी में, मूक व्यक्ति से बोले:

'मैं तुम्हें हमारे प्रभु यीशु मसीह के नाम पर कहता हूँ: तुरंत मेरे लिए दरवाज़े खोलो।'

तब मूक आदमी के होंठ खुले, और उसने कहा:

'बहुत अच्छा, महोदय, मैं तुरंत ही खोल देता हूँ।'

यह कहकर, उसने तुरंत द्वार खोल दिया, और पतरस जल्दी से निकल गया। फिर वह मूक व्यक्ति अपने स्वामी के पास गया और सभी के सामने बोलने लगा; घर में मौजूद सभी लोग उसे बोलते हुए सुनकर चकित रह गए; तुरंत ही, सभी ने पतरस को खोजना शुरू कर दिया, लेकिन वे उसे नहीं ढूंढ सके। तब मूक व्यक्ति ने कहा:

'देखो, क्या वह भाग नहीं गया? जान लो कि यह परमेश्वर का एक महान सेवक है; जब वह द्वार के पास आया, तो उसने मुझसे कहा, "प्रभु यीशु मसीह के नाम पर, मैं तुझे आज्ञा देता हूँ, द्वार खोल।" और मैंने तुरंत उसके मुँह से एक ज्वाला निकलती हुई देखी, जो मुझसे टकराई, और मैं बोलने लगा।'

सब लोग तुरंत पीटर के पीछे दौड़े, लेकिन वे उसे पकड़ नहीं सके; उन्होंने हर जगह उसकी अच्छी तरह से तलाश की, लेकिन वह उन्हें नहीं मिला। तब ज़ोएल के घर में सभी लोग रो पड़े और कहने लगे, 'यह कैसे हुआ कि हम नहीं जानते थे कि वह परमेश्वर का इतना महान सेवक था?' और उन्होंने परमेश्वर की महिमा की, जिनके कई गुप्त सेवक हैं। पतरस, तथापि, मानवीय महिमा से भागते हुए, अपने जीवन के अंत तक गुप्त स्थानों में छिपकर रहे[6444] ।

सदैव और युगानुयुग प्रभु का महिमा हो। आमीन।

6 अक्टूबर

23 सितंबर (पुराना तरीका)

प्रभु के आदरणीय और महिमामय नबी, अग्रदूत और बपतस्मा देने वाले, यूहन्ना के गर्भधारण पर वचन

23 सितंबर को स्मरणोत्सव

जैसे-जैसे हमारे उद्धारकर्ता के गर्भधारण का समय निकट आया, वैसे-वैसे संतों में अग्रदूत, सेंट जॉन का गर्भधारण एक महिमामय और चमत्कारिक तरीके से हुआ। कई माताएँ संतान को गर्भ में धारण करती हैं, लेकिन बहुत कम ऐसी हैं जिनके गर्भाधान को पवित्र चर्च द्वारा महिमामंडित और मनाया जाता है। केवल तीन माताओं के बारे में पता है जिनका गर्भाधान, उनके गर्भ में होने के कारण, पूरी दुनिया के लिए आश्चर्य का स्रोत बना। ये हैं धर्मी अन्ना, संत एलिजाबेथ और सर्व-पवित्र कुँवारी मरियम। धर्मनिष्ठ अन्ना ने परमेश्वर की माता को गर्भ में धारण किया, एलिजाबेथ ने अग्रदूत को, और कुँवारी मरियम ने हमारे उद्धारकर्ता मसीह को। इन सभी गर्भधारणों की घोषणा एक स्वर्गदूत द्वारा की गई थी और ये परमेश्वर की कृपा से हुए, लेकिन केवल वार्तालाप के माध्यम से, जो संदेशवाहक और संबंधित महिलाओं के बीच हुआ, क्योंकि स्वयं परमेश्वर को उनकी सहमति की आवश्यकता थी। इसलिए, दूत, पवित्र महादूत गब्रियल, उस समय परमेश्वर के सामने सेवा कर रहे याजक जकरियाह के मंदिर में प्रवेश करके, कहा:

'ज़ेखरियाह, डरो मत: तुम्हारी प्रार्थना सुन ली गई है, और तुम्हारी पत्नी एलिज़ाबेथ तुम्हें एक पुत्र देगी, और तुम उसका नाम यूहन्ना रखना। और उसके जन्म से बहुत लोग आनन्दित होंगे।'

ज़कारियाह ने उत्तर दिया:

[6444] संत की मृत्यु 6वीं शताब्दी में कॉन्स्टेंटिनोपल में हुई।

'हे शुभ समाचार लाने वाले दूत, जो आप मुझसे कह रहे हैं, वह अप्रत्याशित और अजीब है, क्योंकि वृद्धावस्था में संतान को जन्म देना अस्वाभाविक है; मैं बूढ़ा हूँ, और मेरी पत्नी भी वृद्ध है: हम गर्भधारण करके पुत्र को कैसे जन्म दे सकते हैं?'

परन्तु स्वर्गदूत ने उत्तर दिया:

'ज़ेखरियाह, तुम्हारे पहले शब्दों से ही मैं देख सकता हूँ कि तुम्हारे पास आस्था की कमी है; तुम विश्वास नहीं करते कि मेरे वचन पूरे होंगे। यह सच है कि जो मैं घोषित कर रहा हूँ वह तुम्हारे स्वभाव के अनुकूल नहीं है, लेकिन यह परमेश्वर की इच्छा है, जिसके लिए कुछ भी असंभव नहीं है: *"परमेश्वर इन पत्थरों से भी अब्राहम के लिए संतान उत्पन्न कर सकता है"* (मत्ती 3:9)। क्या तुम्हें यह नहीं पता कि परमेश्वर मिट्टी से आदम को बना सकता है, आदम की पसली से हव्वा को उत्पन्न कर सकता है, और वृद्ध सारा को एक पुत्र, इसहाक, दे सकता है? इसलिए, सर्वशक्तिमान परमेश्वर तुम्हारी पत्नी को उसकी वृद्धावस्था में एक पुत्र का जन्म देगा; क्योंकि तुम्हारी प्रार्थना सुनी गई है।

ज़कार्याह ने कहा, 'मैं अब उस दीर्घ-प्रतीक्षित मसीहा के आगमन के लिए परमेश्वर से अपनी प्रार्थनाएँ अर्पित करता हूँ, जिसके विषय में उन्होंने अपने पवित्र भविष्यद्वक्ताओं के मुख से प्रतिज्ञा की थी; मैं प्रार्थना करता हूँ कि परमेश्वर उसे शीघ्र ही पृथ्वी पर भेज दे ताकि वह अब्राहम की संतान को विदेशी राष्ट्रों की दासता से बचाए; मैं उनसे यह भी प्रार्थना करता हूँ कि वे मेरे अपराधों और सारी प्रजा के पापों को क्षमा करें; परन्तु पुत्र होने के विषय में मैं अब प्रार्थना नहीं करता, क्योंकि मैं स्वयं वृद्धावस्था को पहुँच चुका हूँ, और मेरी पत्नी भी आयु में वृद्ध है।

परन्तु स्वर्गदूत ने उससे कहा:

'मैं जिब्रिइल हूँ, जो परमेश्वर के सामने खड़ा रहता हूँ; दिव्य प्रकटवाणी से मुझे पता है कि आप अभी पुत्र के वरदान के लिए नहीं, बल्कि उस बात के लिए प्रार्थना कर रहे हैं जो आपने मुझसे कही है; फिर भी, अतीत में, जब न तो आप बूढ़े थे और न ही आपकी पत्नी, तब आपने प्रभु से बड़ी विनती की थी कि वह आपको एक पुत्र दे। परम दयालु प्रभु, जिनसे मनुष्य के हृदय की एक भी छोटी सी हलचल भी छिपी नहीं रह सकती, उनकी सुनते हैं जो उनसे प्रार्थना करते हैं और उनके मनोरथ पूरे करते हैं जो उनका भय मानते हैं। आपकी पूर्व प्रार्थनाओं को सुनकर, वह आपको '[6445] ' नामक अनुग्रह के नाम पर एक पुत्र प्रदान करता है; क्योंकि प्रभु अपनी इच्छा के अनुसार जानते हैं कि अपने संतों की प्रार्थनाओं को कब पूरा करना है: और देखो, तुम्हारे यहाँ एक पुत्र पैदा होगा, जो प्रभु की दृष्टि में महान होगा।

इस पर ज़कारियाह ने उत्तर दिया:

'अब मैं देखता हूँ, हे दूत, कि तुम परमेश्वर के स्वर्गदूत हो; क्योंकि तुम्हारी बात इस बात की गवाही देती है, तुम्हारा रूप इसे स्पष्ट रूप से दिखाता है, और तुम्हारे शब्दों की शक्ति इसे पुष्ट करती है। हालाँकि, पहली बार जब आप अचानक मेरे सामने प्रकट हुए और बोलना शुरू किया, तो मैं बहुत डर गया, ठीक वैसे ही जैसे नबी दानिय्येल एक बार स्वर्गदूत को देखकर डर गए थे: उन्होंने कहा, *'मैंने इस महान दर्शन को देखा, परन्तु मुझ में कोई बल न रहा'* (दानिय्येल 10:8); इसी प्रकार, शमिशोन की माता ने कहा: *'मेरे पास परमेश्वर का एक पुरुष आया, जिसका रूप परमेश्वर के स्वर्गदूत के समान था, जो अत्यंत भयानक था'* (न्यायियों 13:6)। इसीलिए मैं डर गई और आपके दैवीय वचनों का विरोध करने की हिम्मत नहीं करती; फिर भी मुझे पूछना ही होगा, कि मुझसे उत्पन्न होने वाला पुत्र महान क्यों होगा? क्या वह भविष्यवक्ता यिर्मयाह से भी महान और पवित्र होगा, जिसके पास यहोवा का वचन आया: *'मैंने तुम्हें गर्भ में बनने से पहले जाना, और तुम्हारे जन्म से पहले ही मैंने तुम्हें अलग कर रखा था; मैंने तुम्हें राष्ट्रों का भविष्यवक्ता नियुक्त किया'* (यिर्म. 1:5)।

परन्तु स्वर्गदूत ने उत्तर दिया:

'तुम्हारा पुत्र प्रभु की दृष्टि में महान होगा, और अपनी आध्यात्मिक महानता में वह न केवल यिर्मयाह नबी के बराबर होगा, बल्कि उससे भी बढ़कर होगा; क्योंकि यिर्मयाह को तो जन्म से पहले ही अलग किया गया था, जबकि यह तो अपनी माँ के गर्भ में ही पवित्र आत्मा से और भी अधिक परिपूर्ण होगा;' यिर्मयाह का भाग केवल मसीहा के विषय में भविष्यद्वाणी करना था, जबकि इस व्यक्ति को उस पर हाथ रखकर उसे बपतिस्मा देने का सम्मान प्राप्त होगा। और वह न केवल यिर्मयाह से, बल्कि अन्य महान संतों से भी परमेश्वर की अनुग्रह की महिमा में श्रेष्ठ होगा; क्योंकि हमारी स्वर्गदूतों की पदानुक्रम में भी, जो हमेशा सेनाओं के प्रभु का मुख देखते हैं, परमेश्वर अपनी सुसमाचार की रहस्यमय बातें सभी को समान रूप से प्रकट नहीं करते, बल्कि उन्हें उच्च पदों वालों के माध्यम से निम्न पदों वालों को प्रकट करते

[6445] 'जॉन' का अर्थ 'कृपा' है।

हैं। सूर्य के उदय होने से पहले कई तारे दिखाई देते हैं, लेकिन केवल प्रभात तारा ही स्वयं सूर्य से पहले आता है। कई भविष्यवक्ताओं ने मसीहा के आगमन की भविष्यवाणी की है, लेकिन आप से जन्मा बच्चा न केवल शब्दों से प्रचार करेगा, बल्कि अपनी उंगली से लोगों को परमेश्वर के उस मेम्ने की ओर भी इशारा करेगा जो संसार के पापों को दूर करता है। इसीलिए आपका पुत्र महान होगा और स्त्रियों से जन्मे सभी लोगों में सबसे महान होगा। जिस प्रकार शुभ समाचार की पूर्ति स्वयं समाचार से अधिक आनंददायक होती है, उसी प्रकार आप से जन्म लेने वाले भविष्यवक्ता का सम्मान अन्य भविष्यवक्ताओं से अधिक होगा। सभी भविष्यवक्ताओं और स्वयं व्यवस्था ने भी उनके आगमन की भविष्यवाणी की थी, लेकिन वह सभी भविष्यवक्ताओं का चरमोत्कर्ष, पुरानी वाचा का समापन और नए अनुग्रह का अग्रदूत होगा।

ज़कार्याह ने उत्तर दिया:

'हे प्रभु के दूत, आपका संदेश अच्छा और आनंददायक है! यदि हर बुद्धिमान पुत्र अपने पिता को आनंद देता है, तो सबसे बुद्धिमान पुत्र, जो सभी नबियों से महान है, मुझे, एक बूढ़े आदमी को, कितना अधिक आनंद देगा!' लेकिन मैं कैसे आनंदित होऊँ जब मुझे आपके वचनों पर संदेह है? संदेहपूर्ण बातों में कोई आनंद या प्रसन्नता नहीं होती, बल्कि केवल निश्चित बातों में होती है। और इसलिए मैं आपसे विनती करता हूँ, हे परमेश्वर के दूत, मुझे बताइए कि मैं आपके द्वारा मुझे बताई जा रही बात का आश्वासन कैसे पा सकता हूँ?

तब गब्रियल ने उत्तर दिया:

'ज़ेखरियाह, तुम अभी भी संदेह करते हो और मेरी बातों पर विश्वास नहीं करते; क्या मैं, परमेश्वर का दूत, झूठ बोलूँगा, [क्योंकि] *"प्रभु अपनी बातों में सच्चा और अपने कामों में पवित्र है"* (भजन संहिता 144:13), ताकि *'ईश्वर का कहा हुआ कुछ भी व्यर्थ न जाए'* (लूका 1:37)। तुम इस्राएल के याजक और शिक्षक हो; क्या तुम नहीं जानते कि वह समय आ गया है, जिसकी मैंने गणना सप्ताहों में तब की थी जब मुझे बेबीलोन में भविष्यवक्ता दानियेल के पास भेजा गया था? क्या तुमने उसकी भविष्यवाणियाँ नहीं पढ़ीं? विचार करो और यह समझो कि इस्राएल का उद्धारकर्ता पहले ही आ चुका है, और उसके सामने देह में एक स्वर्गदूत जाएगा—तुम्हारा पुत्र, जो मसीह के लिए मार्ग तैयार करेगा, और एलियाह की आत्मा और सामर्थ्य में उसके सामने-सामने जाएगा। परन्तु क्योंकि तुमने मेरी बातों पर विश्वास नहीं किया, इसलिये तुम गूंगे हो जाओगे और जब तक यह पूरा न हो जाए, तब तक एक भी शब्द नहीं बोलोगे।

और तुरन्त ज़करियाह के होठों पर मूकता छा गई, और एलिज़ाबेथ की बाँझपन दूर हो गया। तब स्वर्गदूत सर्वशक्तिमान के सिंहासन पर लौट गया। युगानुयुग प्रभु की महिमा हो। आमीन।

ट्रोपारियन, स्वर 4:

हे बाँझ, आनंदित हो, क्योंकि तूने सूर्य के प्रकट होने वाले प्रकाश-वाहक को गर्भ में धारण किया है, जो अंधकार से ग्रस्त संपूर्ण ब्रह्मांड को प्रकाशित करेगा। हे जकरियाह, निडर होकर पुकार कर आनंदित हो: 'परमप्रभु का भविष्यवक्ता जन्म लेने वाला है।'

कॉन्टाकियन, स्वर 1:

हे महान ज़कारियाह, अपनी अति महिमामय पत्नी एलिज़ाबेथ के साथ आनन्द मनाओ, जिन्होंने योग्य रूप से अग्रदूत यूहन्ना को गर्भ में धारण किया है: जिनके बारे में महादूत ने आनन्द के साथ शुभ समाचार दिया, और जिन्हें हम अनुग्रह के प्रबंधक के रूप में सम्मानित करेंगे।

पवित्र शहीदों एंड्रयू, जॉन, पीटर और एंटोनिस की स्मृति

23 सितंबर को स्मरणोत्सव

ये पवत्रि शहीद उस समय यातनाएँ सहन कर रहे थे जब क्रूर राजकुमार इब्राहीम अफ्रीका पर शासन कर रहा था। ससिलियिन शहर सरिाक्यूज़[6446] के कब्जे और वनिाश के बाद, इब्राहीम जॉन और उसके दो बच्चों, पीटर और एंटोननिस को वहाँ से अफ्रीका ले गया। उसने आदेश दयिा कि इन दो छोटे लड़कों को अगारयिन भाषा और वज्ञिान सखिाया जाए। जैसे-जैसे वे बड़े हुए, राजकुमार इब्राहमि उन्हें उनकी बुद्धमित्ता और सदाचारी जीवन के लिए इतना पसंद करने लगा कि उसने एंटोननि को अपना रश्तिेदार घोषति कर दयिा और पीटर को सैकैलारयिोस[6447] का पद दयिा। वे गुप्त रूप से ईसाई धर्म का पालन करते थे, लेकनि राजकुमार से यह बात छपिा नहीं सके। जब उन्हें यह पता चला कि वे मसीह में वश्विास करते हैं, तो वह बहुत क्रोधति हो गए और उन्हें लोहे की बेड़यिों में जकड़ने और गाँठदार लाठयिों से पीटने का आदेश दयिा। लंबे समय तक यातना देने वालों ने संत एंटोननि को मारा; फरि उन्होंने उन्हें एक गधे पर बठिाया और, उन्हें मजबूत पट्टयिों से बांधकर, पूरे शहर में घुमाया, उन्हें मारते हुए और हर तरह की गालयिाँ देते हुए। संत एंटोननिस ने यह सब सहन कयिा, और ईश्वर का धन्यवाद कयिा। जहाँ तक संत पीटर का सवाल है, उन्होंने उन्हें नग्न कर दयिा और उनकी हड्डयिों और पेट पर लंबे समय तक डंडों से पीटा। इसके बाद, शहीदों को कैद कर दयिा गया। कुछ समय बीत जाने के बाद, राजकुमार ने उन्हें बाहर लाने और उनके ऊपर भारी लकड़ी की तख्तयिाँ रखने का आदेश दयिा, ताकि उनके हाथ उनके शरीर से कट जाएँ, और उनके जांघ और घुटने पूरी तरह से कुचल जाएँ; पवत्रि शहीदों के शरीर उनके ही खून से लथपथ हो गए, और उनकी सभी हड्डयिाँ चकनाचूर हो गईं। तब वे उनके पति जॉन को ले आए; राजकुमार ने अपने बाएँ हाथ से उनकी गर्दन पकड़ ली, जबकि अपने दाहने हाथ से उसने उनके गले में चाकू घुसा दयिा; इस प्रकार पवत्रि शहीद ने अपने बच्चों के शवों पर अपनी अंतमि साँस ली। फरि इब्राहीम ने एक बड़ी चति बनाने और पवत्रि शहीदों के शवों को उस पर जलाने का आदेश दयिा। जहाँ तक संत एंड्रयू का सवाल है, जो पहले से ही वृद्ध थे, क्रूर यातना देने वाले ने उनके साथ नम्निलखिति व्यवहार कयिा। पहले, उसने उन्हें काफी समय तक भूखा और प्यासा रखा, और उनके कपड़े उतार दएि; फरि, एक घोड़े पर सवार होकर और एक भाला उठाकर, वह पवत्रि शहीद पर टूट पड़ा और उन्हें सीने में भाला घोंप दयिा। संत एंड्रयू ने ज़ोर से ईश्वर की स्तुति करना शुरू कर दयिा। क्रूर राजकुमार ने संत पर दूसरी बार हमला कयिा और उन्हें कंधों के बीच भेद दयिा। खून से लथपथ, वह धन्य व्यक्ति ज़मीन पर गरि पड़ा, जसिके बाद तलवार से उसका सरि कलम कर दयिा गया।

शहीद संत इराइडा का पर्व दविस

23 सतिंबर को स्मरणोत्सव

पवत्रि कुंवारी इराइडा अलेक्जेंड्रयिा में रहती थीं। एक दनि, पानी भरने के लिए एक झरने पर जाते समय, उन्होंने कनिारे पर एक जहाज को लंगर डालते देखा; इस जहाज पर कई युवतयिाँ, पुरुष, पुरोहति, डकिन और भक्षिु थे; जनि सभी को बेड़यिों में जकड़ा गया था, क्योंकि उन्हें यीशु मसीह के नाम की गवाही देने के लिए यातनाएं दी जाने वाली थीं। अचानक, इराइदा प्रभु के प्रति महान प्रेम से भर गईं; अपनी पानी की घड़ा एक ओर रखकर, वह स्वेच्छा से मसीह के बंदयिों में शामलि हो गईं और उन्हें भी बेड़यिों में जकड़ लयिा गया। जब जहाज़ मस्रि के शहर एंटनिोपोलसि पहुँचा, तो संत इराइडा ने सबसे पहले क्रूर यातनाएँ सहन कीं और तलवार से उसका सरि कलम कर दयिा गया[6448] , और उसके बाद, बाकी सभी ने अपने रक्त से यीशु मसीह में अपने वश्विास की गवाही दी।

पूजनीय पॉलीक्सनियिा का जीवन

23 सतिंबर को स्मरणोत्सव

[6446] सरिैक्यूज़ पर कब्ज़ा 868 में हुआ था।

[6447] मुख्य परचिारक।

[6448] संत इराइदा का नधिन लगभग 308 ईस्वी में हुआ था। उनका पर्व दविस 5 सतिंबर को राइसा नाम से भी मनाया जाता है।

संत पॉलीक्सनियिा मूल रूप से स्पेन की थीं। वह पहली शताब्दी ईस्वी में, पवत्रि प्रेरतिों के समय में रहती थीं, और उनकी शष्यि थीं। जन्म से और अपने पूरे युवा जीवन में, पॉलीक्सनियिा एक मूर्तपिूजक थी। अपनी बड़ी बहन, ज़ैंथपि्पे[6449] , जो उस क्षेत्र के शासक प्रोबस की पूर्व पत्नी थीं, के साथ मलिकर, कन्या पॉलीक्सनियिा ने स्पेन में उपदेश देते समय पवत्रि प्रेरति पौलुस से मसीहा मसीह की दव्यि शक्षिा के बारे में सुना। उसी क्षण ज़ैंथपि्पे और प्रोव ने ईसाई धर्म अपना लयिा, जबकि पॉलीक्सनियिा एक मूर्तपिूजक बनी रही।

इसके बाद, पॉलीक्सनियिा पर वपित्तयिाँ आईं। वह असाधारण रूप से सुंदर थी; उसकी सुंदरता से मोहति होकर, एक नीच व्यक्ति ने पॉलीक्सनियिा का जबरदस्ती अपहरण कर लयिा और उसे ग्रीस ले गया। लेकनि असहाय और नर्दिोषों के दयालु और सर्वशक्तमिान रक्षक, प्रभु ने, उस युवती को सुरक्षति रखा और दुष्ट अपहरणकर्ता की आपराधकि साजशिों को सफल नहीं होने दयिा। प्रभु ने तो उस दुष्ट व्यक्ति के बुरे इरादे को पॉलीक्सनियिा के लाभ में ही बदल दयिा। ग्रीस की यात्रा के दौरान, एक जहाज पर पॉलीक्सनियिा ने मसीह के एक और महान शष्यि, संत पतरस प्रेरति का उपदेश सुना। उद्धारकर्ता मसीह की उच्च दव्यि शक्षिा के प्रति अनुकूल भाव रखते हुए, ग्रीस पहुँचने पर वह पूरे वशि्वास के साथ ईसाइयों के संरक्षण और सुरक्षा की ओर मुड़ गई। उस समय वहाँ उपदेश दे रहे मसीह के प्रेरति संत फलिपि ने, पॉलीक्सनियिा को उसके अपराधी अपहरणकर्ता से छपिाने का कार्य एक धर्मनष्ठि परविार को सौंपा। बड़ी कठनिाइयों और बाधाओं के बीच, इन सदाचारी ईसाइयों ने पॉलीक्सेनयिा को अchaea क्षेत्र के ग्रीक शहर पत्रास में छपिाने में कामयाबी हासलि की, जहाँ के अधकिांश नविासी तब तक उद्धारकर्ता ईसा मसीह के पहले बुलाए गए शष्यि, संत एंड्रयू प्रेरति की उपदेश द्वारा पहले ही ईसाई धर्म में परविर्तति हो चुके थे।

पैट्रास में, पॉलीक्सनियिा—जो मसीह के पवत्रि प्रेरतिों, पौलुस, पतरस और फलिपि द्वारा प्रचारति सुसमाचार से पहले से ही तैयार थी, और अब उसने स्वयं मसीहयिों की सक्रयि परोपकारति का अनुभव कयिा था—ने उद्धारकर्ता मसीह की शक्षिाओं की दव्यिता में जीवति वशि्वास के साथ ईसाई धर्म को स्वीकार कयिा और स्वयं सेंट एंड्रयू द फर्स्ट-कॉल्ड द्वारा बपतस्मिा लयिा। वहाँ, पॉलीक्सेनयिा ने संत एंड्रयू प्रथम-आहूत द्वारा कएि गए गौरवशाली चमत्कारों को देखा। उसने देखा कि कैसे यह वृद्ध भक्षिु, जो पहले से ही बुढ़ापे में था, ने नम्रतापूर्वक कठोर यातना और पीड़ा को सहन कयिा, और कैसे उसने प्रभु यीशु मसीह का परत्यिाग करने से इनकार करने और ईसाइयों के साहसी बचाव के लिए क्रूस पर मृत्यु को प्राप्त कयिा।

'खुद मसीह पर वशि्वास करो,' पवत्रि प्रेरति ने शहर और प्रांत के क्रोधति मूर्तपिूजक शासक से कहा, जब उसने मृत्यु की धमकी देकर संत एंड्रयू से मसीह का त्याग करने, मूर्तपिूजक देवताओं की पूजा करने और उनके सम्मान में बलदिान चढ़ाने की मांग की थी। 'मुझे तुम्हारे वनिाश के लिए मेरी प्रतीक्षा कर रहे दुखों से भी अधकि शोक है,' पवत्रि प्रेरति ने कहना जारी रखा, 'क्योंकि मेरे दुख एक या दो दनि तक ही रहेंगे, परन्तु तुम्हारे कष्ट हमेशा के लिए रहेंगे।'

लेकनि, संत एंड्रयू की वनिम्र प्रार्थनाओं की ओर ध्यान दएि बनिा, उस दुष्ट शासक ने पहले तो उन्हें क्रूर यातनाओं की सज़ा सुनाई और फरि उन्हें सूली पर चढ़ाकर मौत की सज़ा दे दी; और, उनके दुख को यथासंभव लंबा खींचने के लिए, यह आदेश दयिा कि उन्हें कीलों से ठोंकने के बजाय क्रूस से बांध दयिा जाए।

जब परमेश्वर के प्रेरति को सूली पर चढ़ाने की जगह ले जाया जा रहा था, तो भीड़—जसिमें युवा पॉलीक्सेनयिा भी शामलि थी—उनके चारों ओर बड़ी संख्या में इकट्ठी हो गई, और ज़ोर-ज़ोर से चल्लिाने लगी:

'इस धर्मी मनुष्य, इस ईश्वर के मत्रि ने, ऐसा कौन सा पाप कयिा है, कि उसे हमारे देश में मृत्युदंड के सबसे लज्जास्पद रूप के लिए ले जाया जा रहा है, जसिके लिए केवल सबसे दुष्ट अपराधयिों को ही दंडति कयिा जाता है?'

लेकनि संत एंड्रयू ने भीड़ को शांत कयिा और आश्वस्त कयिा, और मसीह के प्रति अपने वशि्वास की गवाही के लिए आनंदपूर्वक अपने शहादत स्थल की ओर बढ़े।

संत एंड्रयू के भक्त शष्यिों ने, जनिमें पॉलीक्सनियिा भी शामलि थीं, उनका साथ नहीं छोड़ा, यहाँ तक कि जब उन्हें सूली पर चढ़ाया गया और क्रूस पर लटकाया गया। नर्दिोष रूप से सूली पर चढ़ाए गए संत एंड्रयू के चारों ओर एक बड़ी भीड़ इकट्ठा हो गई, जो शासक के फैसले से आक्रोशति थी और बढ़ती नाराज़गी के साथ चल्लिा रही थी:

'यह पवत्रि व्यक्ति व्यर्थ में कष्ट सह रहा है!'

[6449] आदरणीय ज़ैंथपि्पे का पर्व दविस उसी दनि मनाया जाता है।

हालाँकि, प्रेरित ने उत्तेजित भीड़ को शांत करने का प्रयास किया और परमेश्वर के वचन का प्रचार करना जारी रखा:

उन्होंने कहा, 'यहाँ खड़े लोग,' 'पत्नियों और बच्चों, बूढ़ों और जवानों, दासों और स्वतंत्र लोगों!' मेरे शब्दों को सुनो और इस सांसारिक जीवन की व्यर्थता के बारे में और मत सोचो, बल्कि मुझ पर नज़र डालो, जो मसीह के लिए क्रूस पर लटका हुआ हूँ और इस शरीर को छोड़ने के लिए पहले से ही तैयार हूँ। जो इस दुनिया में सत्य के लिए मृत्यु का सामना करते हैं, उन्हें इससे डरने की आवश्यकता नहीं है: वे धन्य विश्राम प्राप्त करते हैं। अपने आप को शुद्ध करो; मेरी शिक्षा को न भूलो; पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा में अपने पूरे हृदय से विश्वास करो। हमारे प्रभु यीशु मसीह की आज्ञाओं का पालन करो, और इस प्रकार स्वयं को उस अनंत आनंद के योग्य साबित करो जिसे प्रभु ने अपने प्रेम करने वालों के लिए तैयार किया है!

इस प्रकार दिन और रातें बीत गईं। पवित्र वृद्ध, अपनी कठोर यातनाओं के बावजूद, लोगों को उपदेश देना कभी बंद नहीं करते थे। और क्रूस से दिया गया यह कोमल yet जीवंत उपदेश, जो सच्चे प्रेम से पूर्ण था, का पॉलीक्सेनिया नामक युवती पर विशेष रूप से शक्तिशाली प्रभाव पड़ा। कुछ ही दिनों में, उसने एक पूरा जीवन अनुभव कर लिया, और ईसाई धर्म उसके भीतर दृढ़ता से जड़ पकड़ गया।

इस बीच, संत एंड्रयू के लंबे समय से चले आ रहे कष्ट ने लोगों की आलोचना और आक्रोश को इतना बढ़ा दिया था कि एक भीड़ चिल्लाते हुए गवर्नर एजियटस के आवास के चारों ओर इकट्ठा हो गई, और वे संत एंड्रयू की रिहाई की मांग कर रहे थे, जो अब तीन दिनों से बिना भोजन के क्रूस पर लटके हुए थे।

लोगों ने कहा, 'यह नम्र, पवित्र और शांतिपूर्ण व्यक्ति व्यर्थ में पीड़ा सह रहा है। अब दो दिनों से अधिक समय से वह क्रूस पर लटका हुआ है और उसने हमें भलाई और सत्य सिखाना बंद नहीं किया है; उसे नीचे उतारा जाना चाहिए!'

अशांतियों से डरकर, एजियटस ने लोगों की मांग मान ली और खुद फांसी के स्थान पर गया ताकि सेंट एंड्रयू को सूली से उतारने का आदेश दे सके। प्रथम-आहूत प्रेरित ने, उन्हें देखकर, कहा:

'तुम क्यों आए हो, एजियट?' यदि यह प्रभु यीशु मसीह में अपने विश्वास की घोषणा करने के लिए है, तो निस्संदेह आपको क्षमा मिलेगी; लेकिन यदि आप मुझे इस वृक्ष से खोलने आए हैं, तो अब आपके प्रयास व्यर्थ होंगे - मैं पहले ही स्वर्ग के राजा के दर्शन का आनंद ले रहा हूँ, पहले ही उनकी आराधना कर रहा हूँ, पहले ही उनके सामने खड़ा हूँ! लेकिन जब तक समय है, अपनी आत्मा का ध्यान रखो और अपने ऊपर अनंतकालिक यातना मत लाओ।

गवर्नर के आदेश पर, सैनिक संत एंड्रयू को सूली से खोलने ही वाले थे, लेकिन प्रेरित ने स्वर्ग की ओर अपनी आँखें उठाकर पुकार लगाई:

हे प्रभु, मुझे क्रूस से उतारने न दें; यह अनुग्रह करें कि मैं आपके लिए उसी प्रकार दुख सहूँ, जैसे आपने दुख सहने की इच्छा की। जिन लोगों ने मेरे उपदेश के माध्यम से आपको जाना और प्रेम किया है, उन्हें डगमगाने न दें; उन्हें संरक्षित करें और उन्हें अपने पवित्र विश्वास में मजबूत करें, ताकि वे भी आपको, सच्चे परमेश्वर को, महिमामय कर सकें; और मुझे भी शांति से स्वीकार करें!

और वास्तव में, जल्लादों ने सूली पर चढ़े व्यक्ति को सूली से खोलने के लिए उसके पास जाने की व्यर्थ कोशिश की – एक अदृश्य शक्ति ने उन्हें रोक दिया। एक तेज प्रकाश, जो सूर्य से भी अधिक चमकीला था, ने संत एंड्रयू को पूरी तरह से घेर लिया और लगभग आधे घंटे तक, पास खड़े लोगों से उन्हें छिपाए रखा। जब यह प्रकाश फीका पड़ा, तो यह स्पष्ट हो गया कि पवित्र प्रेरित एंड्रयू पहले ही ईश्वर में अपना प्राण दे चुके थे, और केवल उनका चेहरा ही स्वर्गीय प्रकाश से दमक रहा था।

जिस प्रकार यीशु मसीह के पुनरुत्थान ने पवित्र प्रेरितों को उनकी दिव्य शिक्षाओं का प्रचार करने के लिए अत्यधिक प्रेरित किया, उसी प्रकार पवित्र प्रेरित एंड्रयू के निधन का संत पॉलीक्सेनिया पर भी फलदायी प्रभाव पड़ा। चूंकि उन्होंने संत एंड्रयू प्रेरित जैसे मसीह की कलीसिया के स्तंभ से ईसाई धर्म ग्रहण किया था, और उनके ही मार्गदर्शन में उद्धारकर्ता के दिव्य सिद्धांत में प्रशिक्षित और सुदृढ़ की गई थीं, संत पॉलीक्सेनिया स्वयं उद्धारकर्ता मसीह की दिव्य शिक्षाओं का प्रचार करने की इच्छा रखती थीं। और जब उन्हें पता चला कि संत ओनेसिमस, जो प्रेरित एंड्रयू की मृत्यु के तुरंत बाद पत्रास शहर गए थे, स्पेन में उपदेश देने जा रहे थे, तो संत पॉलीक्सेनिया खुशी-खुशी उनके साथ अपने देश क , अपने धर्म-प्रचार के कार्य को अंजाम देने के लिए चली गईं। वह अपने देशवासियों को, जो अभी तक सुसमाचार के प्रकाश से प्रबुद्ध नहीं हुए थे, मसीह के पास ले जाना चाहती थीं।

संत ओनेसमिस और अपनी मत्रि रेबेका, जो उनके साथ बपतस्मिा ले चुकी थीं, के साथ स्पेन लौटने पर, संत पॉलीक्सेनयिा ने अपने जनजाति के लोगों के बीच ईसाई धर्म के सक्रयि प्रसार के लिए खुद को उत्साहपूर्वक समर्पति कर दयिा। उनकी बहन, जैंथप्पिे, ने भी उनके धर्म प्रचार के कार्यों में उनका साथ दयिा। परंपरा के अनुसार, उन्होंने वशिष रूप से टॉलेडो के घनी आबादी वाले शहर में अक्सर उपदेश दयिा।

इस प्रकार, अपने शेष जीवन—लगभग चालीस वर्षों तक—संत पॉलीक्सेनयिा ने इस महान प्रयास को समर्पति कयिा, और उन लोगों के लिए एक ईश्वरीय जीवन का उदाहरण प्रस्तुत कयिा जो मसीह में वशि्वास करने लगे थे। उनकी ईश्वरीय प्रेरतिीय सेवा का फल यह हुआ कि स्पेन में बहुत से मूर्तपिूजक उनके द्वारा परविर्तति हुए और ईसाई धर्म में दृढ़ हुए।

लगभग 109 ईस्वी वर्ष में, संत पॉलीक्सनियिा का शांतपिूर्वक नधिन हो गया, उन्होंने अपने सांसारकि जीवन के अंत तक अपनी कुँवारी अवस्था को बनाए रखा था।

7 अक्टूबर

24 सतिंबर (पुराना तरीका)

संत थेक्ला का जीवन और शहादत, प्रथम शहीद और प्रेरतिों के समान

24 सतिंबर को स्मरणोत्सव

पवत्रि प्रेरति पौलुस और बरनबास, संसार में सुसमाचार का प्रचार करते हुए, इकोनयिम[6450] आए और ओनेसफिोरस के यहाँ ठहरे, जनिका उल्लेख संत पौलुस ने तमिोथी को लखि अपने पत्र में करते हुए कहा: *'प्रभु ओनेसफिोरस के घर पर दया करें, क्योंकि उसने मुझे कई बार तरोताज़ा कयिा और मेरी बेड़यिों से लज्जति नहीं हुआ'* (2 तीमु. 1:16)। ओनेसफिोरस के घर में रहते हुए, वे अक्सर यहूदी सभा-गृह में जाते थे, नडिर होकर परमेश्वर का वचन प्रचार करते थे, लोगों को उद्धार के मार्ग पर ले जाते थे, और उन्हें यीशु मसीह के प्रति वशि्वास में परविर्तति करते थे। तब कई लोग, उनकी शक्षिा सुनकर और उनके द्वारा कए गए चन्हिों और अद्भुत कामों को देखकर, हमारे प्रभु यीशु मसीह पर वशि्वास करने लगे। यह प्रेरतिों के काम की पुस्तक में वर्णति है: *'इकोनयिम में वे* (अर्थात् पौलुस और बरनबास) *एक साथ यहूदयिों के सभाघर में गए और इस प्रकार बोले कि यहूदयिों और यूनानयिों की एक बड़ी भीड़ वशि्वास करने लगी। परन्तु अवशि्वासी यहूदयिों ने उठाया और भाइयों के वरिोध में अन्यजातयिों को भड़काया। तथापि, वे [वहाँ] काफी समय तक रहे, प्रभु के नाम में नर्भिय होकर काम करते रहे, जो अपनी कृपा के वचन की गवाही के रूप में, उनके हाथों से चन्हि और अद्भुत काम कर रहे थे'* (प्रेरतिों के काम 14:1-3)।

उस समय, इकोनयिम में थयिोक्लयिा की बेटी, थक्िला नाम की अठारह वर्षीय एक अत्यंत सुंदर कन्या रहती थी, जो एक कुलीन और प्रतष्ठिति परविार से थी। उसकी सगाई शहर के सबसे प्रतष्ठिति युवकों में से एक, फामीर नामक व्यक्ति से हुई थी, जो अपनी संपत्ति और सुंदरता के लिए प्रसद्धि था। प्रेरतिों द्वारा कए गए चमत्कारों को देखकर, थक्िला ने दूसरों के साथ मलिकर ओनेसफिोरस के घर में खड़िकी से उनके उपदेश को सुना, और उन्होंने जो कुछ भी उपदेश दयिा, उस पर उन्होंने बारीकी से ध्यान दयिा। ईश्वर के वचन का बीज अच्छी भूमि पर पड़ा; पवत्रि आत्मा के कार्य द्वारा, यह थस्किेला के हृदय में गहराई से जड़ पकड़ गया और बढ़ा: उसने ईश्वर के पुत्र पर वशि्वास कयिा, उससे प्रेम कयिा, और अपनी पूरी आत्मा से उसी से चपिकी रही। हालाँकि, पवत्रि आत्मा से प्रेरति होकर, पॉल ने कुँवारीपन और पवत्रिता के बारे में बोलना शुरू कयिा; उन्होंने अन्य बातों के अलावा कहा कि एक युवती जो मसीह के प्रति अपने प्रेम के लिए अपना कुँवारीपन बनाए रखती है, वह स्वर्गदूतों के समान है; वह मसीह की वधू है, और मसीह उसके वर हैं,

---

[6450] यह ईस्वी 45–46 के वर्षों में संत पौलुस प्रेरति की पहली यात्रा के दौरान हुआ था। इकोनयिम शहर कैपाडोसयिा के दक्षणि-पश्चमि में एशयिा माइनर के एक क्षेत्र लाइकोनयिा में स्थति था। प्रेरति संत पौलुस की पहली यात्रा प्रेरतिों के काम की पुस्तक, अध्याय 13–14 में वर्णति है। संत पौलुस पसिीडयिा के एंटओक से इकोनयिम पहुँचे।

जो उसे अपने स्वर्गीय महल में ले जाएँगे। संत पौलुस ने इस वषिय पर वस्तिार से बात की और थक्ला को अपनी कुँवारी अवस्था बनाए रखने के लिए प्रोत्साहति कयिा, जसिसे उस पवत्रि कन्या ने उसी क्षण अपने मंगेतर को त्यागने, इस संसार के सभी सुखों को ठुकराने, और अपने जीवन के अंत तक पवत्रिता से मसीह की सेवा करने का संकल्प ले लयिा। इस प्रकार, वह बुद्धमिान कन्या स्वर्गीय वधू बन गई और उसने परम प्रेम से उनका अनुसरण कयिा; अपने अमर वरा के लिए तरसते हुए, वह मोम की तरह पघिल गई, ताकि दाऊद के वचन उसके भीतर पूरे हुए: *'मेरा हृदय मोम के समान हो गया है; वह मेरे भीतर पघिल गया है'* (भजन संहति 21:15)। थैक्ला पौलुस के प्रवचन से इतनी मोहति हो गई कि तीन दनि और तीन रातों तक *वह* भोजन, पेय और शारीरकि वश्रिाम को पूरी तरह से भूल गई। जैसे मरयिम एक बार *'यीशु के पैरों में बैठ गई थी'* (लूका 10:39), और ईश्वर के सवािय कसिी और चीज़ के बारे में नहीं सोची। इसी प्रकार थेकला ने भी केवल उसी के वचन पर जीवन यापन कयिा, क्योंकि पवत्रि धर्मग्रंथ में लखिा है: *'मनुष्य केवल रोटी से नहीं, बल्कि परमेश्वर के मुख से नकिलने वाले प्रत्येक वचन से जीवति रहेगा'* (मत्ती 4:4)। जब थयिोक्लयिा को पता चला कि उसकी बेटी मसीह में वश्विास कर चुकी है और परमेश्वर के वचन को लगन से सुन रही है, तो वह आई और, अपने क्रोध में, उसे इस आत्मा-रक्षक कार्य से जबरदस्ती अलग कर दयिा; उसने पवत्रि प्रचारकों—अपोस्तलों—की फटकार लगाई और, उन्हें गाली देते हुए, अपनी बेटी को, जो पहले से ही मसीह की भेड़ थी, मसीह के झुंड से बाहर नकिाल दयिा। तब, अपने मंगेतर, फामीर को बुलाकर, उसने उससे कहा:

'क्या तुम्हें अपनी दुल्हन की कोई परवाह नहीं है, कि वह कसिी तरह के उन्माद में है? देखो: वह इन अजनबयिों—धोखेबाजों—के बहकावे में आ गई है, जो अपनी फूल-फूलकर बातों से मूर्ख लोगों को मोहति कर लेते हैं; अब तीन दनिों से वह उनके साथ से नहीं हटी है, और अपना घर ही भूल बैठी है।'

तब फामीर ने टेक्ला से कोमलता और स्नेह से बात करनी शुरू की; पर वह उससे कसिी भी बात पर बात नहीं करना चाहती थी; वह उसे देखना भी नहीं चाहती थी, क्योंकि उसके हृदय में एक अन्य वधू-वर बसता था, जो 'मनुष्यों के बेटों से भलाई में अधकि सुंदर' था। आत्मकि नेत्रों से उस पर दृष्टि डालकर, वह मन ही मन उससे संवाद करती थी, जबकि यह नश्वर और क्षणकि वर उसे केवल घृणा ही उत्पन्न कराता था। फामरि, यह देखकर कि थेक्ला ने उसे अस्वीकार कर दयिा और उससे प्रेम नहीं करती थी, गहराई से दुखी हो गया, जबकि थयिोक्लयिा, अपने गुस्से में, अपनी बेटी को पीटने लगी, उसके बाल खींचकर और उसे पैरों तले रौंदकर; फरि उसने उसे अकेले में बंद कर दयिा और उसे भूखा रखा। हालाँकि, वह स्वयं, स्वाभावकि मातृत्व के प्रेम से अभभिूत होकर, अपनी बेटी के लिए रो पड़ी; उसे गले लगाकर, उसने उसे चूमना शुरू कर दयिा, और आँसुओं से भरी आँखों के साथ थेक्ला से वनिती की कि वह अपने मंगेतर—जो सुंदर, अमीर, कुलीन और सभी द्वारा सम्मानति था—को न ठुकराए और उसे फामीर के बगल में मेज पर बठिाए। हालाँकि, थेकला उससे मुँह मोड़कर चुपचाप नीचे की ओर ताकती हुई बैठ गई; उसने अपने होठों को कुछ भी नहीं छुआ, पर अपने हृदय की गहराई में वह लगातार अपने स्वर्गीय वधूवर के बारे में सोचती रही। जब फामरि ने उसे लाड़-प्यार करते हुए जबरदस्ती गले लगाने और चूमने की कोशशि की, तो उसने उसके आँखों में थूक दयिा और जाल से छूटे पक्षी की तरह उसकी पकड़ से छूट गई। तब उसकी माँ फरि से आग-बबूला हो गई और उसे फरि से पीटने लगी, जबकि फामरि, गहराई से दुखी होकर, प्रेरति पौलुस के खलिाफ शकिायत करने के लिए राजकुमार के पास गया।

फामरि ने कहा, 'हमारे शहर में एक अजनबी आ गया है; अपनी जादू-टोने से वह लोगों को बहकाता है और उन्हें देवताओं की पूजा से हटाकर, मसीह यीशु की ओर ले जाता है, जसिे यहूदयिों ने क्रूस पर चढ़ा दयिा था।' उसने मेरी मंगेतर, कन्या थेक्ला को भी जादू से मोहति कर लयिा है; पहले वह मुझसे बहुत प्यार करती थी, लेकनि अब वह न केवल मुझसे आँखें मलिाने से इनकार करती है, बल्कि मुझसे ऐसे दूर भागती है जैसे मैं कोई कोढ़ी हूँ और कसिी जंगली जानवर से भी ऐसे भागती है; उस जादूगर ने इस तरह मेरे लिए उसके प्यार को खत्म कर दयिा है; और मैं यह समझ नहीं पा रहा हूँ कि उसने उसके साथ क्या कयिा है।

राजकुमार ने पौलुस को बुलाया और उससे पूछा: वह कहाँ से आया था और वह उनके शहर में क्या कर रहा था। तब पौलुस ने अपने प्रेरति ओठ खोले और, जैसा कि उनका रवािज था, उसे परमेश्वर के वचन में शक्षिा देना शुरू कयिा, यीशु मसीह के बारे में उपदेश देते हुए। हालाँकि, राजकुमार ने मामले को तुरंत सुलझाने की कोशशि नहीं की, बल्कि पौलुस के मुकदमे को बाद की तारीख के लिए टाल दयिा; उसने आदेश दयिा कि पौलुस को बाँधा जाए, कैद कयिा जाए और तब तक वहाँ रखा जाए जब तक कि उससे वस्तिार से पूछताछ करना संभव न हो सके। थक्ला ने यह सुनकर कि पौलुस को उसकी वजह से कैद कयिा गया है, रात में उठकर चुपके से घर से नकिल गई और जेल की ओर चल दी। जब उसे वह पहरेदार मलि

जो कालकोठरी के दरवाज़े की रखवाली कर रहा था, तो उसने अपना हार और अन्य सोने के आभूषण उतारकर पहरेदार को दे दिए और उससे दरवाज़ा खोलने तथा उसे पॉल के पास जाने देने के लिए कहा।

संत क्रिसोस्टोम इस बात का उल्लेख करते हुए कहते हैं:

'संत थेक्ला की कहानी सुनो; उसने पॉल से मिलने के लिए जेलर को अपना सोना दे दिया; परन्तु तुम एक भी kat[6451] देने को तैयार नहीं हो, ताकि तुम Christ[6452] को देख सको।'

कारागारपाल ने उसकी प्रार्थना मान ली – वह उस कीमती हार और सोने के आभूषणों से बहुत प्रसन्न हुआ – और उसे संत पौलुस के पास ले गया। थकिला, आनंद के आँसुओं के साथ, उनके सामने गिर पड़ी और मसीह के बंदी की बेड़ियों को चूमने लगी। पहले तो पौलुस उसे देखकर भयभीत हो गए, लेकिन फिर, जब उन्हें पता चला कि उसने अपनी पवित्रता के लिए अपनी ही माँ और अपने मंगेतर के हाथों क्या-क्या सहा था, वह उस युवती के साहस से अत्यंत प्रसन्न हुआ और उसने उसके सिर पर आशीर्वाद देते हुए चुंबन किया, उसकी आस्था और कन्या-शुद्धता की प्रशंसा की; उसने उसे मसीह की वधू और अपनी पहली बेटी कहा, जिसे उसने सुसमाचार के माध्यम से नया जन्म दिया था। और थेक्ला पावलो के साथ कॅल्वरी की जेल में एक बेटी की तरह अपने पिता के साथ बैठी, उनकी पितृवत् शिक्षा सुनती और उनके शब्दों को अपने हृदय में एक अनमोल खजाने की तरह संजोती थी; उन्होंने, अपनी ओर से, उन्हें प्रभु यीशु मसीह में विश्वास के बारे में विस्तार से सिखाया, उन्हें परमेश्वर के प्रेम में मार्गदर्शन दिया, उन्हें अपनी पवित्र कुँवारी अवस्था बनाए रखने के लिए प्रोत्साहित किया, और उन्हें मसीह की शिक्षा में पूरी तरह से स्थापित किया, जैसा कि सेंट ग्रेगरी ऑफ नसिा लिखते हैं[6453] , कहते हुए:

'ऐसी थी वह मूरा (अर्थात् शिक्षा) जिसे पौलुस ने एक बार पवित्र कन्या के कानों में डाला था, शुद्धता की श्वेत कमल[6454] के साथ; हृदय के कमल से बहने वाली इन बूंदों से, थेक्ला ने बाहरी मनुष्य—सभी व्यर्थ विचारों—को मार डाला और अपनी इच्छाओं को बुझा दिया।'

इसी प्रकार, संत एपफिानियस[6455] लिखते हैं:

'थेक्ला, जिसके एक सुंदर मंगेतर थे—जो शहर में सबसे उत्तम, अत्यंत धनी, बहुत सम्मानित और कुलीन वंशज थे—उसकी मुलाकात पॉल से हुई, जिन्होंने उसे इस व्यक्ति से सगाई से मना किया; इस प्रकार उस पवित्र कन्या ने स्वर्गीय आशीर्वादों की पात्र बनने के लिए सभी सांसारिक आशीर्वादों का त्याग कर दिया।'

इस बीच थियोक्लिया के घर में उन्होंने थेक्ला की तलाश शुरू की, लेकिन उसे नहीं ढूंढ सके। तब चीख-पुकार, रोना-धोना और विलाप का कोलाहल मच गया; उसकी माँ अपनी बेटी के लिए रोई, फामीर अपनी दुल्हन के लिए, और दास अपनी मालकिन के लिए; नौकर-चाकर चारों ओर बिखर गए, सड़कों और घरों में खोजते और पूछते हुए—लेकिन वे उसे कहीं नहीं ढूंढ सके। काफ़ी समय बाद उन्हें पता चला कि वह कालकोठरी में है; वे तुरंत उसकी ओर दौड़े; वहाँ पहुँचने पर, दूतों ने देखा कि वह पौलुस के बगल में बैठी है और मंत्रमुग्ध-सी, पूरी तन्मयता से उसकी शिक्षाओं को सुन रही है; तब उन्होंने उसे पकड़ लिया और कालकोठरी से बाहर ले आए, और जो कुछ भी हुआ था, उसकी सारी रिपोर्ट राजकुमार को दी। राजकुमार, न्यायाधीश की कुर्सी पर बैठकर, ने पॉल को अपने सामने लाने का आदेश दिया। जैसे ही भीड़ ने देखा कि उसे लाया गया है, उन्होंने राजकुमार से पुकार कर कहा:

'राजकुमार, यह आदमी एक जादूगर है; इसे मार डालो!'

विशेष रूप से फामीर ने जोर देकर कहा कि पौलुस को मार डाला जाए; अपनी शिकायत में, उसने बताया कि पौलुस ने उसकी मंगेतर को उससे दूर कर दिया था। जब थकिला को बुलाया गया, तो राजकुमार ने उससे पूछा:

'तुम अपने मंगेतर का तिरस्कार क्यों करती हो, जो इतना सुंदर और कुलीन है? तुम उससे शादी क्यों नहीं करना चाहती?'

[6451] एक त्साता 10 कोपेक के बराबर का एक सिक्का है।

[6452] थेक्ला का यह वृत्तांत प्रेरितों के काम पर संत जॉन क्राइसोस्टोम के 25वें प्रवचन में पाया जाता है।

[6453] गीत-गिट्ठी पर चौथे प्रवचन में।

[6454] क्रिनि – एक लिली।

[6455] संत एपफिानियस – संत जॉन क्राइसोस्टोम के समकालीन; वे 36 वर्षों तक साइप्रस द्वीप के बिशप रहे।

लेकिन उसने केवल पॉल की ओर देखा और कुछ नहीं कहा। फिर थियोक्लिया, अपनी बेटी के प्रति अपने स्वाभाविक प्रेम को भूलकर, अपनी मातृ-भावना के प्रति विश्वासघात किया, और एक उग्र सिंहनी या एक क्रोधित मादा भालू की तरह राजकुमार पर पागलों की तरह चिल्लाने लगी:

'इस दुष्ट दासी को जला दो; वह ऐसी ही मौत की हकदार है। वह मेरी बेटी नहीं है, क्योंकि वह मुझसे, अपनी माँ से, नहीं सुनती; उसे दूसरों के लिए एक उदाहरण के तौर पर जला दो—ताकि शहर की सभी कुंवारी लड़कियाँ इसे देखकर डर जाएँ; ताकि वे अपनी माताओं की अवज्ञा करने और उनका विरोध करने की हिम्मत न करें, जैसा कि इस बेहद दुष्ट और विद्रोही ने किया है।' नहीं, वह मेरी संतान नहीं है, मेरे गर्भ का फल नहीं है, बल्कि एक शापित संतान और एक मुरझाई हुई टहनी है – इसे जला दो!

इसलिए माँ ने अपनी बेटी को जलाने पर जोर दिया, जबकि फामीर ने पौलुस को मौत की सजा देने की मांग की। राजकुमार ने पवित्र प्रेरित से लंबी पूछताछ की, लेकिन मसीह के उपदेश देने के अलावा उसे उसमें कोई दोष नहीं मिला; और इसलिए उसने उसे मौत की सजा नहीं दी, बल्कि उसे कोड़े मारने और शहर से निर्वासित करने का आदेश दिया, कहीं वह अन्य कुंवारी लड़कियों को अपनी कुँवारीपन बनाए रखने के लिए मना न ले। पौलुस के साथ-साथ बरनाबास और ओनेसफिोरुस को भी उनके बेटों सहित निर्वासित कर दिया गया। हालाँकि, पौलुस स्वयं शहर छोड़ने के लिए उत्सुक थे, न केवल इसलिए कि राजकुमार, फामीर और थियोक्लिया द्वारा उनका उत्पीड़न किया जा रहा था, बल्कि इसलिए भी कि लोग उन पर हमला कर रहे थे और उन्हें परमेश्वर का वचन प्रचार करने और यीशु मसीह की गवाही देने के लिए मारना चाहते थे। संत लूकस ने प्रेरितों के काम में इसका उल्लेख करते हुए कहा है: *'लेकिन अविश्वासी यहूदियों ने भाइयों के विरुद्ध अन्यजातियों को भड़काया। इस बीच, शहर के लोग बंट गए: कुछ यहूदियों के पक्ष में थे, जबकि अन्य प्रेरितों के पक्ष में थे। जब अन्यजातियों और यहूदियों ने अपने अगुवों के साथ मिलकर उन पर हमला करने का निश्चय किया, और उनका अपमान करके उन्हें पत्थर मारना चाहा, तो प्रेरितों ने यह जानकर लिकाओनिया के नगरों लूस्त्रा और डर्बे में पीछे हट गए*[6456] (प्रेरितों के काम 14:2, 4–6), और वहाँ से अंताकिया गए। शुरुआत में वे कई दिनों तक इकोनियम शहर के पास, डाफ्ने जाने वाले रास्ते पर एक गुफा में रहे[6457] , यह जानने की इच्छा से कि थिक्ला का क्या होगा; वहाँ उन्होंने उसके लिए उपवास किया और विनम्रता से प्रार्थना की, कि प्रभु उसे बल दें और अपनी दया दिखाएँ, जैसा कि वास्तव में हुआ।

काफी समय तक, राजकुमार ने थिक्ला को अपने मंगेतर के प्रति अपने पूर्व प्रेम से पेश आने के लिए मनाने की कोशिश की, लेकिन उसकी कोशिशें व्यर्थ रहीं; जिस पर, थियोक्लिया के अनुरोध पर, उसने पवित्र कन्या को खंभे पर जलाए जाने की सजा सुना दी। इस उद्देश्य के लिए, उन्होंने बड़ी मात्रा में सूखी लकड़ी, पुआल और झाड़-झंखाड़ लाया और एक बड़ी चिता बनाई; फिर नौकरों ने संत को वहाँ ले जाने के लिए पकड़ लिया; लेकिन उसने खुद को वहाँ ले जाने की अनुमति नहीं दी; इसके बजाय, वह खुद तैयार चिता की ओर दौड़ी और, क्रॉस का चिह्न बनाकर, उस पर चढ़ गई और जलने के लिए तैयार होकर चिता के शीर्ष पर खड़ी हो गई: भौतिक आग ने उसे डराया नहीं, क्योंकि वह स्वयं दिव्य प्रेम की अमूर्त आग से जल रही थी। मशवरे पर रहते हुए, उन्होंने आगे देखा और प्रभु को पॉल के सदृश देखा, जो खड़े थे और उन्हें दृढ़ रहने का आदेश दे रहे थे। अतः संत साइप्रियन अपनी प्रार्थना में इसे इस प्रकार व्यक्त करते हैं: 'हमारे पास वैसे ही प्रकट हो जैसे पॉल के पास बेड़ियों में, और थेक्ला के पास आग में'[6458] ।

इस बीच, उन्होंने लकड़ी रखकर चारों ओर से चिता को आग लगा दी थी; लेकिन सभी को चकित करते हुए, लपटें ऊंची उठ गईं और थेक्ला को घेर लिया; सभी और भी अधिक हैरान रह गए जब अचानक तेज बारिश और ओलावृष्टि होने लगी, जिससे आग बुझ गई; राजकुमार और सभी लोग उस मूसलाधार बारिश और तेज ओलावृष्टि से डरकर अपने-अपने घरों को भाग गए। हालाँकि, थेक्ला सुरक्षित बच निकली: आग ने उस पवित्र कन्या को जरा भी छुआ तक नहीं। इसके बाद, वह न तो अपनी माँ के घर गई और न ही इकोनियम में ठहरी, बल्कि अपने आध्यात्मिक पिता, पॉल को खोजने के लिए शहर से निकल पड़ी। रास्ते में उसकी मुलाकात ओनेसफिोरस के घर के पॉल के एक शिष्य से हुई, जो शहर में रोटी खरीदने जा रहा था; पवित्र कन्या ने उसे पहचान लिया और पूछा:

'यीशु मसीह के प्रेरित पौलुस कहाँ हैं?'

[6456] लाइस्ट्रा और डर्बे के शहर एशिया माइनर के लिकिोनिया क्षेत्र में, इकोनियम से बहुत दूर नहीं, स्थित थे।

[6457] अंतियोकिया के उपनगर।

[6458] ये शब्द संत साइप्रियन के शहीदों पर उपदेश में पाए जाते हैं।

फरि वह थक्ि ला को उस गुफा तक ले गया जहाँ पॉल अन्य लोगों के साथ ठहरे हुए थे, और उपवास करने के बाद, उन्होंने उसके लिए ईश्वर से वनिम्रतापूर्वक प्रार्थना की। थक्ि ला को जीवति और कुशल देखकर, वे सभी बहुत प्रसन्न हुए और, अपनी आँखें उठाकर और स्वर्ग की ओर अपने हाथ फैलाकर, उस ईश्वर का धन्यवाद कयि, जसिने अपनी दासी को सुरक्षति रखा था; फरि उन्होंने उसे कुछ रोटी दी और स्वयं भी कुछ भोजन कयि। वहाँ से, पौलुस और बरनबास लूस्त्र और डर्बे से होकर गए, सुसमाचार का प्रचार करते और बीमारों को चंगा करते हुए; थकिला उनके पीछे अंताकयि तक चली आई। जैसे ही वे शहर में प्रवेश कर रहे थे, उनकी मुलाकात उस शहर के एक बुज़ुर्ग, अलेक्जेंडर से हुई। वह जवान था, इंद्रयि सुख में डूबा हुआ जीवन जीता था और मूर्तपिूजकों की प्रथा के अनुसार, खुद को अधार्मकि कृत्यों के हवाले कर दयि था। पवत्रि कन्या थेकला को देखकर और उसकी सुंदरता से मोहति होकर, वह उसके प्रतएिक अशुद्ध इच्छा से भर गया। यह सोचकर कथिकिला पौलुस की पत्नी है, अलेक्जेंडर ने पहले पौलुस को बहुत सारा सोना देने की पेशकश की, और उसे अपने बुरे इरादों के रास्ते में न खड़े होने के लिए मनाने की कोशशि की; फरि, जब उसे पता चला कथिकिला पौलुस की पत्नी नहीं बल्कएिक अवविाहति कुंवारी है, तो वह उसके लिए और भी अधकि जुनूनी हो गया और उसे अपनी पत्नी बनाने की इच्छा रखने लगा। उसने संत थेकला को उससे प्रेम करने के लिए मनाना शुरू कर दयि, लेकनि वह उससे ऐसे भागी जैसे कोई दहाड़ता हुआ शेर उसकी आंतरकि अच्छाई को नगिलने की कोशशि कर रहा हो। अलेक्जेंडर ने, अपनी ओर से, उसे हर तरह से पकड़ने की कोशशि की। तो एक बार, एक बड़ी भीड़ के बीच सड़क पर थस्क्ि ला से मलिने पर, वह अपने दलि में जलती कामुक आग को रोक नहीं सका: सारी शर्म भूलकर, उसने जबरदस्ती उसे पकड़ लयि और उस पर टूट पड़ा; पवत्रि कन्या, आँसू भरी आँखों से, अलेक्जेंडर से उसे अकेला छोड़ देने की मन्नितें करने लगी।

'मुझे जबरदस्ती मत करो, यात्री, मुझे जबरदस्ती मत करो, हे ईश्वर के सेवक; मैंने अपने मंगेतर का त्याग कर दयि है; मैं तुम्हारी इच्छा के लिए कैसे सहमतदि े सकती हूँ?'

यह कहकर, थेकला ने उसकी पकड़ से छूटने के लिए छटपटाई, सबके सामने उसके कपड़े फाड़ दिए और इस प्रकार उस पर बहुत बड़ा अपमान लाया। अलेक्जेंडर बहुत क्रोधति हो गया और, यह जानकर कवि ह भी एक ईसाई थी, उसे न्याय के लिए राजकुमार के सामने ले आया। जब उससे पूछा गया कवि ह ववािह से क्यों घृणा करती है, तो थेकला ने जवाब दयि:

'मेरा वरोंवर मसीह, परमेश्वर का पुत्र है; मैं उससे एक आध्यात्मकि ववािह में एकजुट हुई हूँ।'

राजकुमार ने उसे मसीह का त्याग करने और ववािह करने के लिए मजबूर करना शुरू कर दयि। जब उसने दृढ़ता से इनकार कर दयि, तो राजकुमार ने उसे जंगली जानवरों द्वारा खाए जाने की सज़ा सुनाई – दो अपराधों के लिए: उसकी भक्तऔि र उसकी पवत्रिता के लिए – मसीह में वश्विास करने और जवान और सुंदर होते हुए भी ववािह से इनकार करने के लिए। इस फांसी को सुबह तक के लिए टाल दयि गया; इस बीच, त्रफिना नामक एक महलि ा ने उसे रात के लिए अपने घर में सुरक्षति रखने के लिए ले लयि। ट्रफिना शाही वंश की थी और उसे बहुत सम्मान दयि जाता था; बाद में, वह भी ईसाई बन गई ; यही वह महलि ा है जसिका उल्लेख संत पौलुस ने रोमवासयिों के नाम अपने पत्र में कयि है: वे कहते हैं, *'ट्रफिना और ट्रफिस को नमस्कार कहए*[6459] (रोमयिों 16:12)।

त्रफिना, थैक्ला को अपने घर में ले जाकर, पूरी रात उसके साथ आध्यात्मकि वार्ता में बतिाई। अगले सुबह, यह दृश्य देखने के लिए एक बड़ी भीड़ इकट्ठा हुई: राजकुमार आया, और सभी शहर के अधकिारी भी आए; संत थैक्ला को वध के लिए भेड़ के बच्चे की तरह बाहर लाया गया और वह उस जगह खड़ी हुई जहाँ जानवर उसे खा जाने वाले थे। जब जानवरों को उस पर छोड़ दयि गया, तो वे सभी उसके चारों ओर चक्कर लगाने लगे, लेकनि एक ने भी उसे छुआ नहीं, क्योंकि परमेश्वर ने जानवरों के मुँह पर मुहर लगा दी थी, ठीक वैसे ही जैसे उन्होंने एक बार दानयिेल की खाई में कयि था। यह अद्भुत दृश्य देखकर सभी दर्शक चकति रह गए: खून के प्यासे जानवर अपनी क्रूरता त्यागकर भेड़ों की तरह शांत हो गए थे; और जहाँ कुछ लोग उस ईश्वर की स्तुतकिर रहे थे जसिकी थेकला ने स्वीकारोक्तकि ी थी, वहीं अन्य लोग ईश्वर की नदिा करते हुए कहने लगे:

'उसने अपने कपड़ों में कोई जादू कर रखा है, और इसलिए जानवर उसे छू नहीं रहे हैं।'

[6459] इन दोनों महलि ाओं का उल्लेख रोमन मेनोलॉजयिन में 10 नवंबर के अंतर्गत मलिता है, अर्थात्: 'पवत्रि महलि ाओं ट्रफिना और ट्रफिोसा की स्मृत,ि जो लाइकोनयिा के इकोनयिम में रहती थीं; संत पौलुस के उपदेश से शक्षिति और संत थेक्ला के उदाहरण से प्रेरति होकर, उन्होंने ईसाई धर्मशास्त्र में महान प्रगतकि ी'।

राजकुमार स्वयं, शहर के अधिकारियों के साथ, यह भी दावा करने लगे कि वह एक जादूगरनी थी जिसने जानवरों पर जादू कर दिया था ताकि वे उसे नुकसान न पहुँचा सकें। इसलिए, उन्होंने अगले दिन थैक्ला को जानवरों के सामने फेंकने का फैसला किया—ऐसे जानवर जो अधिक संख्या में और कहीं ज्यादा भूखे थे—लेकिन फिलहाल उन्होंने उसे वापस ट्रफिना के पास भेज दिया; जो यह देखकर अत्यंत प्रसन्न हुई कि वह पवित्र कन्या निष्पादन स्थल से बिना किसी चोट के वापस आ गई थी। जब तक थैक्ला सुबह तक त्रफिना के घर में रही, राजकुमार ने जानवरों को खाना देने पर रोक लगा दी, ताकि भूखे होने पर वे अपने शिकार पर और भी तेजी से झपट सकें। और इस प्रकार, अगले दिन सुबह, संत को फिर से मृत्युदंड के स्थान पर ले जाया गया; त्रफिना उनके पीछे-पीछे रोती हुई चली आई कि कैसे एक इतनी पवित्र कन्या को उसकी किसी गलती के बिना ही मृत्युदंड दिया जा रहा था। थैक्ला को एक प्रमुख स्थान पर खड़ा किया गया, और निर्लज्ज राजकुमार ने संत को नग्न करने का आदेश दिया:

'उसके कपड़े,' उसने कहा, 'जादू किए हुए हैं; इसीलिए जानवर उसे छूते नहीं हैं; इस जादूगरनी को नग्न कर दो और देखते हैं कि क्या वह सुरक्षित रहती है।'

[6460]तब उस पवित्र कन्या को नग्न कर लोगों के देखने के लिए इस प्रकार खड़ा किया गया कि केवल उसकी लज्जा ही उसकी आवरण बनी रहे, और उसने भविष्यवक्ता दाऊद के वचन दोहराए: *'लज्जा मेरे मुख पर आवरण करती है...'* (भजन संहिता 43:16)। भूले-भूखे, क्रोधित जानवर—शेर और भालू—उस पर टूट पड़े; अपने पिंजरों से निकलकर जब उन्होंने उस कन्या को नग्न खड़ी देखी, तो उन्होंने अपने सिर जमीन की ओर झुका लिए, अपनी दृष्टि नीचे कर ली और मानो उसकी कन्यावती नग्नता से लज्जित होकर, उससे पीछे हट गए। क्या अद्भुत दृश्य था! जानवरों को लज्जा आई: उन्होंने कन्या की नग्नता से अपनी दृष्टि हटा ली, जबकि मनुष्यों ने निर्लज्जता से उसे घूरा – इस प्रकार, इस तमाशे में ये मूक जानवर मानव जाति के अभियोजक और न्यायाधीश के रूप में काम करते थे: स्वभाव से रक्तपिपासु होते हुए भी, जानवरों ने एक पवित्र व्यक्ति का सद्गुण दिखाया, जबकि मनुष्य, जो विवेकी हैं, जंगली जानवरों जैसे हो गए। लेकिन इससे उन्हें क्या हासिल हुआ? सभी की आँखों के सामने उस पवित्र कन्या को उजागर करके, उन्होंने उसका अपमान करने की कोशिश की, लेकिन केवल उसके सम्मान को बढ़ाया ही। संत क्रिसोस्टोम इस पर अच्छी तरह से बात करते हैं, दो महिलाओं के उजागर होने की याद दिलाते हुए - पेंटेफ्रिया की पत्नी को उसके शयनकक्ष में और थेकला को पूरे लोगों की उपस्थिति में: 'वासनापूर्ण मिस्र की पत्नी को अपने शयनकक्ष में नग्न किए जाने से क्या लाभ हुआ? प्रथम शहीद थेक्ला को एक बड़ी भीड़ की आँखों के सामने नग्न किए जाने से क्या हानि हुई?' थेक्ला, यद्यपि निग्न कर दी गईं, उन्होंने उस मिस्र की महिला की तरह पाप नहीं किया, न ही वे कलंकित हुईं, बल्कि एक संत के रूप में सम्मानित हुईं; कई लोगों की उपस्थिति में इस नग्नता को मुकुट पहनाया गया – जबकि वह नग्नता, एक बंद शयनकक्ष के भीतर भी, कलंकित कर दी गई।

जब संत थेक्ला उस स्थान पर नग्न खड़ी थीं, तो एक सिंहिनी उनके पास आई, उनके सामने लेट गई और उनके पैरों को चाटने लगी, मानो उनकी कुंवारी पवित्रता को श्रद्धांजलि दे रही हो। संत एम्ब्रोज़ इस घटना का उल्लेख करते हैं[6461], और कहते हैं: 'एक जानवर को ज़मीन पर प्रणाम करते और संत के पैरों को चाटते हुए देखा जा सकता था; इस प्रकार उसने मौन रूप से गवाही दी कि वह उसकी कुंवारी देह को नुकसान नहीं पहुँचा सकता था; वह जानवर उस व्यक्ति के सामने झुक गया जिसे उसे टुकड़े-टुकड़े करने के लिए दिया गया था, और अपनी प्राकृतिक प्रवृत्तियों को भूलकर, एक ऐसा चरित्र अपना लिया जो मनुष्यों ने खो दिया था।'

इस बीच, लोगों ने जब देखा कि जानवर पवित्र कन्या को छूने की हिम्मत नहीं कर रहे थे, तो वे ऊँचे स्वर में चिल्लाने लगे:

'महान है वह ईश्वर जिसकी थिस्क्ला घोषणा करती है।'

तथापि, यातना देने वाले ने ईश्वर की शक्ति को न पहचानते हुए, अन्य साधनों से थैक्ला को नष्ट करने का प्रयास किया: उसने एक गहरी खाई खोदने का आदेश दिया, जो सभी प्रकार के रेंगने वाले जीवों, साँपों और विषैले सर्पों से भरी थी, और संत को उसमें फेंकने का आदेश दिया। लेकिन जिसने एक बार सिंहों के मुँह बंद कर दिए थे, और अब साँपों के विषदंत कुंद कर दिए थे, उनके क्रोध को शांत कर दिया और उनके विष को निष्क्रिय कर दिया: संत कुएँ से बिना किसी

[6460] क्रिसोस्टोम के ये शब्द अंधा जन्मजात व्यक्ति पर उनके प्रवचन में पाए जाते हैं।

[6461] मिलान के बिशप, संत एम्ब्रोज़, एरियनों के खिलाफ अपने विजयी संघर्ष और अपने झुंड की भलाई के प्रति अपनी चिंता के लिए जाने जाते हैं। उनकी मृत्यु 397 में हुई। उनका पर्व दिवस 7 दिसंबर है। कुँवारीपन पर दूसरी पुस्तक में संत थेक्ला का उल्लेख है।

चोट के बाहर नकिलीं, जसिसे सभी ऐसे चमत्कार को देखकर चकति रह गए। बहुत समय तक, दुष्ट यातना देने वाले को समझ नहीं आया कि और क्या करे; अंत में, उसने दो मजबूत सांडों को लाने का आदेश दयिा, ताकि थेकला को उसके पैरों से उन दोनों के बीच बांध दयिा जाए, और सांडों को लाल-गरम डंडों से गोदा जाए, ताकि वे अलग-अलग दशिाओं में भागते हुए उसे चीर-फाड़ दें। लेकनि इसके बाद भी, संत सुरक्षति रहीं, क्योंकि जब उन्हें मजबूत रस्सयिों से सांडों से बांधा गया और उन्होंने सांडों को लाल-गरम लोहे से गोदना शुरू कर दयिा, तो रस्सयिाँ मकड़ी के जाले की तरह टूट गईं, सांड भाग गए, और संत उसी जगह पर बनिा कसिी चोट के बनी रहीं। तब राजकुमार स्वयं, जो हुआ देखकर चकति हो गया, उसने उस कन्या में ईश्वर की शक्ति को पहचाना और थेकला को अपने पास बुलाकर उससे पूछा:

'तुम कौन हो? और तुम्हारे पास ऐसी कौन सी शक्ति है कि तुम्हें कुछ भी नुकसान नहीं पहुँचा सकता?'

उसने उत्तर दयिा:

'मैं जीवति ईश्वर की दासी हूँ!'

और उसने इससे अधकि कुछ नहीं कहा। राजकुमार, उस ईश्वर से भयभीत होकर, जसिने थेक्ला को हर तरह के नुकसान से बचाया था, ने आदेश दयिा कि उसे सम्मानपूर्वक वस्त्र पहनाए जाएं और उसे मुक्त कर दयिा जाए, यह नर्णिय सुनाते हुए: 'मैं ईश्वर की दासी थेक्ला को मुक्त करता हूँ।'

संत त्रफिेना के घर गईं, और थैक्ला की रहिाई पर त्रफिेना के पूरे घर में बहुत खुशी हुई। वहाँ कुछ समय रहने के बाद, थस्लिा ने परमेश्वर का वचन प्रचार कयिा और कई लोगों को मसीह में वश्विास करना सखिाया। वह अपने पति और शक्षिक पॉल से मलिने के लिए बहुत उत्सुक थी, और उन्हें खोज लेने के बाद, उनकी अनुयायी बनना चाहती थी, लेकनि उन्होंने उसे ऐसा करने की अनुमति नहीं दी, यह कहते हुए:

'कोई भी ववािहति व्यक्ति युद्ध में नहीं जाता।'

तब, प्रेरति का आशीर्वाद प्राप्त करके, वह सेलेउकयिा[6462] गईं और सेलेउकयिा के पास एक पहाड़ पर रेगस्तिान में बस गईं; वहाँ उपवास, प्रार्थना और ध्यान में स्वयं को समर्पति करते हुए, उन्होंने कई चमत्कार कए और हर तरह की बीमारयिों को ठीक कयिा। आसपास के इलाकों के नविासयिों को जब यह पता चला, तो वे उसके पास आए और अपने बीमारों को लाए, जन्हिें संत थेकला ने हमारे प्रभु यीशु मसीह के धर्म की शक्षिा दी और उन्हें चंगा कयिा। एक दनि, एक मूर्तपिूजक पुरोहति घोड़े पर सवार होकर सेल्यूकयिा से उस स्थान के पास से गुजर रहा था जहाँ संत रहती थीं। थैक्ला को देखते ही, जो उस समय अपने भोजन के लिए जड़ी-बूटयिाँ इकट्ठा कर रही थीं, वह उसकी सुंदरता से मोहति हो गया और एक अशुद्ध इच्छा से भर गया: उसने अपने घोड़े को तेज कयिा और अपने बुरे इरादे को पूरा करने के लिए उसकी ओर दौड़ा। हालाँकि, संत, ईश्वर की शक्ति से सुदृढ़ होकर, उस पर झपट पड़ीं, उसे ज़मीन पर फेंक दयिा और उसे इतनी ज़ोर से ज़मीन पर पटक दयिा कि वह तीन दनिों तक वहाँ बेसुध और बेसुध पड़ा रहा। राहगीरों ने, जब पुजारी को मृतप्राय पड़ा देखा, तो यह सोचकर हैरान रह गए कि उसका क्या हुआ। तीसरे दनि, इस बात की खबर नगर में फैल गई; तब वहाँ से एक बड़ी भीड़ यह देखने आई कि उसके साथ क्या हुआ था और उसे घर ले जाने के लिए। जैसे ही पुजारी को होश आया, वह तुरंत खड़ा हो गया और बोला:

'मैंने एक देवी को देखा, और उसी के कारण मुझे यह कष्ट हुआ।'

बड़ी कठनिाई से, दर्द से बहुत पीड़ति होकर, वह घर पहुँच सका। उसने एक चत्रिकार को बुलाया और उसे एक पैनल पर अठारह साल की एक युवती का चत्रि बनाने का आदेश दयिा। जब चत्रिकार ने अपना काम शुरू कयिा, तो ईश्वर की कृपा से, वह संत थेकला की आकृति को बहुत अच्छी तरह से चत्रिति करने में सफल हो गया: चत्रि असाधारण रूप से जीवंत था; अपना काम पूरा करने के बाद, उस व्यक्ति ने प्रतमिा को पुरोहति के पास ले आया; उस पुरोहति ने, इतनी सजीव आकृति को देखकर, कहा:

'यह बलि्कुल वही युवती है जसिे मैंने देखा था!'

उसने प्रतमिा को लेकर उसे चूमा और तुरंत और पूरी तरह से ठीक हो गया; और उसने संत थेकला की इस प्रतमिा को अपने घर में श्रद्धापूर्वक रखना जारी रखा; बाद में, उस पवत्रि कन्या के उपदेश के माध्यम से, वह अपने पूरे परविार के साथ मसीह में वश्विास करने लगा। प्रेरतिों के समान थक्लिा उस क्षेत्र में लंबे समय तक रहीं, उन्होंने कई लोगों को मोक्ष के मार्ग पर मार्गदर्शन कयिा, कई लोगों की दुर्भाग्य में मदद की, और कई बीमारयिों को ठीक कयिा। सेल्यूकयिा

[6462] सेलेवकयिा लकिोनयिा के दक्षणि और एंटओिक के उत्तर में स्थति है।

के डॉक्टरों और जादूगरों ने देखा कि कोई भी किसी भी बीमारी से पीड़ित व्यक्ति उनके पास नहीं जाता था, बल्कि सीधे थेकला के पास जाता था, जिससे उनकी धूर्त योजनाएँ समाप्त हो गईं। अपना आय का स्रोत खोने के बाद, वे गरीबी में पड़ गए; परिणामस्वरूप, वे बहुत दुखी हो गए और दयालु उपचारक थेकला के प्रति द्वेष रखने लगे, जो उसके पास आने वाले सभी को बिना किसी शुल्क के ठीक करती थी। ईर्ष्या और क्रोध से प्रेरित होकर, उन्होंने कुछ दुष्ट युवकों को उसके साथ बलात्कार करने के लिए उकसाने की साजिश रची; उसके दुश्मन आपस में इस प्रकार बोले:

'कुँवारी थेकला पवित्र है, और इसी कारण से महान देवी आर्टेमिस उसकी कृपा करती हैं; देवी उसकी प्रार्थनाओं को सुनती हैं और उसे बीमारों को ठीक करने की शक्ति प्रदान करती हैं। लेकिन अगर उसकी पवित्रता भंग हो जाती है, तो आर्टेमिस उससे मुंह मोड़ लेंगी; उससे उसकी उपचार की शक्ति छीन ली जाएगी, और फिर हमारी चिकित्सा कला एक बार फिर से प्रमुखता में आ जाएगी।'

ऐसा सोचकर, उन्होंने इस घिनौने काम के लिए बेशर्म युवकों की तलाश शुरू की और, उन्हें शराब पिलाकर, उन्हें थेकला के पास जाकर उसे अपवित्र करने के लिए उकसाया। उन्होंने उन्हें बहुत सारा पैसा दिया और वादा किया कि अगर उन्होंने उनकी मांग पूरी की तो उन्हें और भी अधिक देंगे। वे इतने मूर्ख और अविश्वासी थे कि उन्हें यह एहसास नहीं हुआ कि थेक्ला हर बीमारी और हर रोग को आर्टेमिस की शक्ति से नहीं, बल्कि मसीह की कृपा से ठीक करती थी!

विलासी युवा, शराब के नशे में, चिकित्सकों और जादूगरों की आज्ञा मान गए; वे वासना से प्रेरित होकर और दुष्ट विचारों तथा बुरे इरादों से भरे, थिक्ला की ओर बढ़े।

उन्हें देखकर, थेक्ला ने पूछा:

'मेरे बच्चों! तुम क्या चाहते हो?'

उन्होंने जवाब में अश्लील शब्द कहना शुरू कर दिया। यह सुनकर और उनके दुष्ट इरादे को भांपकर, संत थेकला उनसे भाग गईं; उन्होंने, जो कभी जंगली जानवरों से नहीं डरी थीं, इन निर्लज्ज पुरुषों से अपनी जान बचाने के लिए भागना शुरू कर दिया। वे थेकला का पीछा करने लगे और भेड़ियों की तरह उसका पीछा करते रहे; जब वे उसे पकड़ने ही वाले थे, तो उसने ईश्वर से प्रार्थना की कि वह उसे इन अधर्मी लोगों के हाथों से बचा ले। तुरंत, ईश्वर की आज्ञा से, वहाँ खड़ा चट्टानी पहाड़ फट गया, संत को अपनी गोद में ले लिया, और उसकी कुँवारी अवस्था की रक्षा की। यह पहाड़ उनके सम्मानित शरीर का मकबरा बन गया: वहाँ उन्होंने अपना आत्मा ईश्वर के हाथों में सौंप दिया। वे नब्बे वर्ष की आयु तक जीवित रहीं। अब, अनंत जीवन में, वे जीवन-दाता मसीह ईश्वर की महिमा करती हैं, जो पिता और पवित्र आत्मा के साथ महिमामय हैं, अब और हमेशा और युगानुयुग। आमीन।

ट्रोपारियन, स्वर 4:

हे धर्मनिष्ठ थैक्ला, परमेश्वर के वचन द्वारा शिक्षित और पितरस द्वारा विश्वास में दृढ़ होकर, आप स्त्रियों में प्रथम-बुलाई गई शहीद और प्रथम पीड़ित के रूप में प्रकट हुईं। आप अग्नि में ऐसे उतरीं जैसे किसी आनंद के स्थान में; पशु और युवक आपसे पहले ही भयभीत हो गए, क्योंकि आप क्रूस से सुसज्जित थीं: अत; हे सर्व-स्तुत्य मसीह परमेश्वर, प्रार्थना करें कि हमारी आत्माएँ बच जाएँ।

कॉन्टाकियन, स्वर 8:

तुम कुँवारीपन के सद्गुण से प्रकाशित हुईं, और शहादत के मुकुट से सुशोभित हुईं; हे कन्या, तुम्हें सबसे गौरवशाली रूप में प्रेरितत्व का कार्य सौंपा गया है: क्योंकि तुमने आग की लपटों को ओस में बदल दिया; और तुमने अपने प्रार्थना द्वारा, प्रथम पीड़ित के रूप में, उस युवक के क्रोध को वश में कर लिया।

आदरणीय कोप्रियस की स्मृति

24 सितंबर को स्मरणोत्सव

[6463]संत कोप्रयिस का जन्म समुदाय के मठाधीश, परम पूजनीय थयिोडोसयिस महान के मठ की दीवारों के पास कूड़े के ढेर पर हुआ था। उनकी माँ, कई अन्य लोगों के साथ, एगारयिों के उत्पीड़न से बचने के लिए परम पूजनीय के मठ की दीवारों के भीतर शरण लेने के लिए भागी थीं। जब एगारयिन चले गए, तो भक्षिु मठ से बाहर नकिले और उन्हें गोबर के ढेर पर एक नवजात शशिु मलिा। अपने मठाधीश, महान थयिोडोसयिस के आदेश पर, उन्होंने उस शशिु को उठा लयिा और उसका नाम कोपेरयिन रखा। बच्चे को बकरी के दूध पर पाला गया। इस उद्देश्य के लिए, भक्षिुओं ने जानबूझकर झुंड में से एक वशिष बकरी को चुना। जब भी बच्चा खाना मांगता, तो यह बकरी भेड़ों के झुंड, जसिमें वह चरती थी, से अलग हो जाती, पहाड़ से नीचे आकर बच्चे को दूध पलिाती, और फरि झुंड में वापस लौट जाती। उसने तब तक ऐसा करना जारी रखा जब तक कि बच्चा ठोस भोजन खाने में सक्षम नहीं हो गया। जब युवा कोप्रीज वयस्क हो गया, तो परम पूजनीय थयिोडोसयिस महान को उस पर वशिष स्नेह हो गया। अपने धार्मकि जीवन के कारण, वह जल्द ही पवत्रि आत्मा का वासस्थान बन गया; यहाँ तक कि जंगली जानवर भी उसकी आज्ञा मानते थे। इस प्रकार, एक अवसर पर, उसने मठ के बगीचे में एक भालू को सब्जयिाँ खाते हुए देखा; संत ने उस जानवर को पकड़ा और उसे बगीचे से बाहर ले गए, और उसे फरि कभी वहाँ प्रवेश न करने की आज्ञा दी। एक अन्य अवसर पर, वे मठ में लकड़ी लाने के लिए एक गधे के साथ पहाड़ पर चढ़ रहे थे। जब वे लकड़ी इकट्ठा कर रहे थे, तो एक भालू ने गधे की जांघ पर काट लयिा। तब संत कोप्रयिस ने लकड़ी भालू की पीठ पर रख दी और उससे कहा:

'तुम्हें अब तब काम करना होगा जब तक गधा ठीक नहीं हो जाता।'

भालू ने उनकी आज्ञा मानी और जब तक गधा ठीक नहीं हो गया, तब तक लकड़ी और पानी ढोता रहा; केवल तभी पूज्य ने उस जानवर को क्षमा कयिा।

कुछ समय के लिए, संत कोप्रयिस ने मठ की रसोई में सेवा की; एक अवसर पर, हांडी में खाना उबलकर कनिारे से बाहर बहने लगा। पास में कोई चम्मच न पाकर, पूजनीय ने अपने नंगे हाथ से झाग हटाना शुरू कर दयिा; फरि उन्होंने उसी हाथ से हांडी में खाना चलाया, जसिसे उबलना रुक गया, जबकि वे स्वयं पूरी तरह से सुरक्षति रहे। आदरणीय 90 वर्ष की आयु तक पहुँचे और संतों के बीच सूर्य की तरह चमके। उन्हें पवत्रि पद से सम्मानति कयिा गया और वे हर सद्गुण से सुशोभति थे; अक्सर, एकांत स्थान पर जाकर, वे ईश्वर से भक्तपिूर्वक प्रार्थना करते थे। आदरणीय थयिोडोसयिस महान, जो उस समय तक पहले ही नधिन कर चुके थे, कभी-कभी उनके सामने प्रकट होते थे और उनके बगल में खड़े होकर उनके साथ प्रार्थना करते थे। अंतमि बार प्रकट होकर, उन्होंने उनसे कहा:

'हे कोप्रीज, देखो, तुम्हारे लिए इस सांसारकि जीवन को छोड़ने का समय आ गया है; हमारे पास उस वश्रिाम स्थल पर आओ जो तुम्हारे लिए तैयार कयिा गया है।'

इस दर्शन के तुरंत बाद, थोड़ी बीमारी के बाद और तपस्वयिों को वदिा कहने के बाद, यह अद्भुत संत प्रभु के पास प्रस्थान कर गए[6464] ।

हमारे पूजनीय पति नकिैंडर ऑफ़ प्सकोव का जीवन

24 सतिंबर को स्मरणोत्सव

मॉस्को के महा राजकुमार वासलिी इओआनोवचि[6465] के दनिों में, प्सकोव क्षेत्र में, जंगली, दलदली इलाके के बीच, वडिेलेब्ये गाँव में, फलिपि नाम का एक धार्मकि व्यक्ति रहता था। वह और उनकी पत्नी, अनास्तासयिा, दोनों एक ईश्वर-भक्त जीवन जीते थे, अक्सर प्रभु का वचन सुनने और मसीह की आज्ञाओं को सीखने के लिए चर्च जाते थे। उनके सबसे बड़े बेटे, आर्सेनयिस ने, अपने माता-पति का धार्मकि आदर्श लगातार देखते हुए, सांसारकि मोह-माया का त्याग कर दयिा और संन्यास की शपथ ली। लेकनि उनका भाई नकिोन, जो बाद में हमारे पूजनीय पति नकिान्ड्र बने, अपने पराक्रम और चमत्कारों के लिए और भी अधकि प्रसद्धि हुए।

[6463] नाम कोप्रयिस ग्रीक है, जो 'कोप्रा' से लयिा गया है – जो गोबर का ढेर या खाद का ढेर है।

[6464] संत कोप्रयिस का नधिन लगभग 530 ईस्वी में हुआ।

[6465] राजकुमार वासलिी इओनोवचि, 1505–1533।

नकिॉन का जन्म 1507 में हुआ था, और बहुत कम उम्र से ही ईश्वर की कृपा उन पर बनी रही; अपनी युवावस्था में ही उन्होंने अपने माता-पिता से पवित्र शास्त्रों का अध्ययन करने के लिए उन्हें भेजने का आग्रह किया। ईश्वर के महान संत, मायरा के आर्चबिशप निकोलस, को समर्पित चर्च में अक्सर जाने और इस गौरवशाली तपस्वी के चमत्कारों को सुनने से, युवा निकोन में कम उम्र से ही मसीह का अनुसरण करने की इच्छा जागृत हुई; वह अपने भाई आर्सेनियस के शांत मठवासी जीवन से भी बहुत प्रभावित था, जो श्रम और प्रार्थना के प्रति समर्पित था; हाल ही में दिवंगत हुए पूजनीय सावा और प्सकोव की यूफ्रोसीन का उदाहरण, जो अपने कर्मों और चमत्कारों से चमके थे, ने उस युवक के संकल्प को मजबूत किया; निकोन इन संतों के अक्षुण्ण अवशेषों की पूजा करना और प्सकोव के पास उन स्थानों का दौरा करना चाहता था जहाँ उन्होंने सेवा की थी। पवित्र युवक अक्सर और भक्तिपूर्वक सृष्टिकर्ता से प्रार्थना करता था, कि वह उसे संसार की हानिकारक व्यर्थताओं से बचाए और उसे अपने शाश्वत राज्य का योग्य बनाए; निकॉन को अपनी युवावस्था के विशिष्ट खेलों में, न ही अच्छे कपड़ों में कोई आनंद नहीं आता था; वह व्यर्थ की बातचीत में भाग नहीं लेता था, हमेशा साधारण वस्त्र पहनता था, और आध्यात्मिक गरीबी और हृदय की पवित्रता को संजोता था; उसने मानव जाति के शत्रु के खिलाफ एक निरंतर संघर्ष किया, इस प्रकार खुद को भविष्य के, और भी बड़े आध्यात्मिक कारनामों के लिए तैयार किया। इस बीच, ईश्वर की इच्छा से, उनके पिता का निधन हो गया। प्रभु की सेवा करने की प्रबल इच्छा से जलते हुए सत्रह वर्षीय युवक ने अपनी माँ को आँसुओं और विनम्रता के साथ मना लिया कि वे अपनी संपत्ति का एक हिस्सा गरीबों में बाँट दें, एक हिस्सा ईश्वर के चर्च को दान कर दें, और इस व्यर्थ संसार को पीछे छोड़ दें। एक मठ में पहुँचने पर, अनास्तासिया ने वहाँ अपना संन्यास ग्रहण किया और जल्द ही अनंत जीवन में प्रवेश कर गईं, जहाँ सदाचारी और धर्मात्माओं को आदिकाल से एक अक्षय मुकुट प्राप्त करने का विधान है। फिर निकॉन प्सकोव शहर के लिए रवाना हुआ, वहाँ के सभी चर्चों और मठों में गया, आसपास के मठों का भी दौरा किया, और अंत में, उन स्थानों पर पहुँचा जो संतों यूफ्रोसीन और सव्वा के कार्यों से चिह्नित थे; धार्मिक युवक इस बात पर अत्यंत प्रसन्न हुआ कि प्रभु ने उसे अपने इन सेवकों के अवशेषों की पूजा करने के लिए प्रेरित किया था—कुछ ऐसा जिसकी वह लंबे समय से इच्छा करता था—और उसके सामने आने वाले कार्य के लिए उसकी आत्मा और भी अधिक दृढ़ हो गई। निकोन का एकमात्र बड़ा दुख यह था कि उसे पवित्र धर्मग्रंथों में पूरी तरह से शिक्षित नहीं किया गया था; और इस प्रकार उस युवा तपस्वी ने सभी के प्रभु और शिक्षक से मन की आँखें खोलने के लिए प्रार्थना की। और इस प्रकार, पवित्र आत्मा के मार्गदर्शन में, वह एक बार फिर स्कोव के लिए रवाना हुआ; वहाँ, निकोन का फिलिप नामक एक धार्मिक व्यक्ति से सामना हुआ, जिसने उसे काम करने के लिए अपने घर में आश्रय दिया। पवित्र शास्त्रों को समझने की निकोन की महान इच्छा को देखकर, फिलिप ने उसे ज्ञान और बुद्धि के लिए प्रसिद्ध एक डीकन के संरक्षण में भेज दिया। संत अक्सर और गंभीरता से प्रार्थना करते थे, कहते हुए:

'हे प्रभु, मुझे अपनी सच्चाई में मार्ग दिखाओ, और मुझे अपने वचन समझना सिखाओ।'

और मानव जाति के प्रेमी, ईश्वर ने अपने विनम्र सेवक की उत्कट प्रार्थना सुनी: उन्होंने निकोन के मन को दिव्य धर्मग्रंथों की समझ के लिए खोल दिया, उस पर अपनी कृपा बरसाई, और उसे समझ की आत्मा प्रदान की, जिससे हर कोई इस बात पर चकित रह गया कि निकोन ने कितनी जल्दी और कितनी अच्छी तरह से धर्मग्रंथों में महारत हासिल कर ली थी। जिस प्रकार आग सोने को शुद्ध करती है, उसी प्रकार विपत्तियाँ भी एक व्यक्ति को शुद्ध करती हैं और उसे और भी ऊँचा उठाती हैं। शैतान, मानव जाति का प्राचीन शत्रु, पादरी के धार्मिक जीवन को सहन न कर सका, और उसने कुछ दुष्ट पुरुषों को उनके विरुद्ध खड़ा कर दिया; लेकिन संत निकोन ने मसीह की आज्ञा का पालन करते हुए, इन सभी हमलों को प्रार्थना और धन्यवाद के साथ सहन किया, और अपनी नम्रता के द्वारा उन पर विजय प्राप्त की जो उनके विरुद्ध उठे थे।

एक बार, चर्च में प्रार्थना करते समय, रेवरेंड ने सुसमाचार के ये शब्द सुने: 'मेरे पास आओ, हे सब जो परिश्रमित और बोझिल हो, और मैं तुम्हें विश्राम दूँगा; मेरा जूआ अपने ऊपर ले लो और मुझसे सीखो, क्योंकि मैं मन में कोमल और नम्र हूँ, और तुम अपने प्राणों को विश्राम पाओगे; क्योंकि मेरा जूआ सुगम है और मेरा बोझ हल्का है' (मत्ती 11:28–30)। इन शब्दों ने निकोन के हृदय को गहराई से छू लिया, और उन्होंने बिना किसी देरी के अपनी लंबे समय से संजोई हुई इच्छा को पूरा करने का संकल्प लिया। वह लंबे समय से प्सकोव और पोर्खोव के बीच[6466] , जंगली जंगलों और पार न हो सकने

[6466] अब प्सकोव गवर्नरेट में एक जिला शहर।

वाले दलदलों के बीच, शहरों और गांवों से दूर, एक सुनसान जगह के बारे में सुन रहा था; लेकिन निकोन ऐसे किसी को नहीं जानता था जो उसे निश्चित रूप से उस जगह का पता बता सके; धर्मी भविष्यवक्ता और राजा दाऊद के द्वारा पवित्र आत्मा के वचन को व्यवहार में लाने के लिए उत्सुक होकर: *'मैं दूर जाकर जंगल में बस जाऊँगा; मैं आँधी और तूफ़ान से बचने के लिए शीघ्र शरण लूँगा* (भजन संहिता 54:8–9), उस विनम्र तपस्वी ने प्रभु से भक्तिपूर्वक प्रार्थना की, और कहा:

– हे मेरे जीवन के प्रभु और स्वामी, परमेश्वर के पुत्र यीशु मसीह, मेरी प्रार्थना सुनों; मुझे उस निर्जन स्थान को देखने का अनुग्रह प्रदान करो; मुझे एक ऐसा पुरुष भेजो जो मुझे मोक्ष के मार्ग पर मार्गदर्शन करे और मुझे वह एकांत स्थान दिखाए।

संत की प्रार्थना सुनी गई, और, पवित्र आत्मा के प्रेरित होने पर, वह प्सकोव से अपने पैतृक गांव वडिलब्ये के लिए रवाना हो गए। वहाँ, निकोन को पता चला कि थियोडोर नाम का एक व्यक्ति उस जगह के बारे में जानता था। थियोडोर के घर पहुँचने पर, आदरणीय ने उससे पूछना शुरू किया:

'मैंने अपनी जवानी से ही एक सुनसान जगह के बारे में सुना है, लेकिन मुझे उसे दिखाने वाला कोई नहीं था। आप इस जगह को जानते हैं; ईश्वर के महान नाम की खातिर, मुझे वह दिखाएँ; इसके लिए आपको स्वयं प्रभु से पुरस्कार मिलेगा, और आप मेरी पापी आत्मा के मार्गदर्शक बनेंगे।'

निकॉन की तीव्र इच्छा को देखकर, धर्मपरायण व्यक्ति थियोडोर उसे गुप्त रूप से, दूसरों से दूर, रेगिस्तान में ले गया। एक छोटी सी झोपड़ी बनाकर, वे दोनों वहीं बस गए और खुद को श्रम और प्रार्थना में समर्पित कर दिया। कुछ समय बाद, रेवरेंड अपने रिवाज़ के अनुसार, प्सकोव लौट आए और पवित्र और गौरवशाली एपिफेनी के चर्च में दैवीय लिटिर्जी में शामिल हुए; उस चर्च में, वेदी से निकोन से एक आवाज़ बोली:

'निकॉन, निकॉन, मेरे सेवक, धर्मनिष्ठ थियोडोर द्वारा बताए गए मरुस्थल में जाओ, और वहाँ तुम्हें शांति मिलेगी; तुम्हारे द्वारा वह मरुस्थल फल-फूल उठेगा, और वहाँ कई लोग बचेंगे; जो वहाँ आएँगे उन्हें अनुग्रह प्राप्त होगा और वे मेरे नाम का महिमामंडन करेंगे।'

[6467]आदरणीय पिता तुरंत चर्च से निकल पड़े, आध्यात्मिक आनंद से भरकर, और स्वयं प्रभु द्वारा बताए गए स्थान के लिए रवाना हो गए। रास्ते में, निकोन की मुलाकात प्सकोव के धन्य निकोलस से हुई, जो एक मसीही संन्यासी थे; उन्होंने भविष्यवाणी की कि उस निर्जन स्थान में उस तपस्वी को राक्षसों द्वारा विभिन्न प्रलोभनों और दुष्ट लोगों के हमलों का सामना करना पड़ेगा; लेकिन कुछ भी निकोन को रोक नहीं सका; एक योद्धा की तरह युद्ध में जाते हुए, रेवरेंड अपने रेगिस्तान में लौट आए और वहाँ 15 वर्षों तक परिश्रम, प्रार्थना, उपवास, पवित्र शास्त्र के पाठ और निरंतर जागरण में लगे रहे, और राक्षसों तथा दुष्ट लोगों के हाथों बहुत कष्ट सहते रहे।

इस बीच, उनके कारनामों की खबर फैलने लगी, और स्थानीय निवासी उनके पास आने लगे। यह विनम्र तपस्वी के लिए एक बोझ था: वह अपना इनाम लोगों से नहीं बल्कि ईश्वर से चाहता था; सांसारिक महिमा उसके लिए एक बोझ थी। इस प्रकार, आँसुओं और गहरे दुख के साथ—इस स्थान को छोड़ना न चाहकर, फिर भी एक ही समय में मानवीय प्रशंसा से भागते हुए—संत पस्कोव के लिए एक बार फिर रवाना हुए। वहाँ उन्हें उस फिलिप के घर ले जाया गया जिसके साथ सम्माननीय व्यक्ति ने अपनी पढ़ाई के दौरान रहा था; यह जानकर कि निकोन ईश्वर को समर्पित होने का दृढ़ संकल्प कर चुका था, उन्होंने उस धन्य व्यक्ति को संत जॉन द थियोलोजियन के मठ में ले जाया, जहाँ मठ के संस्थापक, क्रीपेट्स के आदरणीय सावा के अवशेष रखे थे। ईश्वर के इस तपस्वी का स्वरूप देखकर और उनके अवशेषों से युक्त संदूक के सामने प्रणाम करके, निकोन ने इस प्रकार प्रार्थना करना शुरू किया:

'हे परमेश्वर के सम्मानित सेवक, सव्वा, हमारे प्रभु मसीह से प्रार्थना करो कि वे कृपा करके मुझे, उनके पापी और अयोग्य सेवक को, उसी मार्ग पर चलने का वरदान दें जिस पर आप चले; वे इस प्रयास में मेरी सहायता करें और मेरे मध्यस्थ बनें।'

इसके बाद, निकोन ने विनम्रता और आँसुओं के साथ, इस मठ के मठाधीश से उसे भ्रातृत्व में स्वीकार करने का आग्रह किया। लेकिन मठाधीश ने उसे रोकते हुए कहा:

[6467] पस्कोव के धन्य निकोलस का 28 फरवरी 1576 को निधन हो गया।

'हमारा मठ गरीब है, और आप स्वयं भी अच्छे स्वास्थ्य में नहीं हैं; अत; अपने ऊपर इतना भारी बोझ न लें। आप हमारे साथ रह सकते हैं, लेकिन संन्यास की शपथ लेने की जल्दी न करें।'

लेकिन निकॉन ने केवल एक बात की विनती की – कि उसकी प्रार्थना स्वीकार की जाए। तब मठाध्यक्ष ने, संत में इतना उत्साह और संन्यास ग्रहण करने की इतनी अदम्य इच्छा देखकर, अंततः संत की गंभीर प्रार्थनाओं के आगे झुकने के लिए मजबूर हो गए: उन्होंने एक मठाधीश को निकॉन का मुंडन करने का आदेश दिया, और उन्हें निकिंडर नाम दिया गया।

इसके पश्चात्, आदरणीय संत ने नए उत्साह के साथ अपने तपस्वी कार्यों में स्वयं को झोंक दिया; वे सदाचार में दिन-प्रतिदिन अधिक प्रगत हुए, और प्रभु के लिए सौ गुना फल दिए। मसीह के प्रति प्रेम से जलते हुए, उन्होंने अपनी इच्छा का पूर्णतःत्याग कर दिया, स्वयं को पूरी तरह से ईश्वर को समर्पित कर दिया, और परम पवित्र आत्मा का एक अनुकूल मंदिर बन गए; वे लगातार ऐसे धर्मपरायण चिंतन से स्वयं को मजबूत करते थे: संन्यासी जीवन गेहूं के खेत के समान है; इसके लिए आँसुओं की बारंबार वर्षा और महान परिश्रम की आवश्यकता होती है। यदि आप काँटों के बजाय भरपूर फल देना चाहते हैं, तो अपने मन को सतर्क रखें और परिश्रम करें। कोशिश करो कि तुम अच्छी मिट्टी बनो, पथरीली ज़मीन नहीं, ताकि जो कुछ तुम्हारे हृदय में ऊपर से बोया जाता है, वह फल दे, और ताकि वह निराशा और उपेक्षा की गर्मी से मुरझा न जाए। ऐसे उद्धारकारी चिंतन से अपनी आत्मा को पोषित करते और प्रार्थना के माध्यम से उसे आध्यात्मिक आनंद प्रदान करते हुए, पूजनीय निकिन्डर ने अपने शरीर को वश में करने का प्रयास किया; दाऊद के वचनों को हमेशा ध्यान में रखते हुए: *'मेरी कष्ट और थकान पर दृष्टि करो, और मेरे सभी पापों को क्षमा करो'* (भजन संहिता 24:18), आदरणीय ने कभी भी शारीरिक श्रम की उपेक्षा नहीं की। भाइयों और मठाधीश ने संत के जीवन और कार्यों पर आश्चर्य किया और ऐसे तपस्वियों को भेजने वाले परमेश्वर की महिमा की। उपरोक्त दोनों पुरुष, फिलिप और थियोडोर, संत के अनुकरण पर चले और उसी मठ में संन्यासी की शपथ ली; पहले का नाम फिलारेट और दूसरे का नाम थियोडोसियस रखा गया; कुछ समय बाद, दोनों का शांतिपूर्वक परलोक में निधन हो गया।

इस बीच, पूजनीय निकिंडर ने यह महसूस किया कि उनका तपस्वी जीवन भाइयों के बीच आश्चर्य पैदा कर रहा था, और वे संन्यासियों के बीच जीवन से ऊबने लगे: मानवीय प्रसिद्धि ने उन पर भारी बोझ डाल दिया था। भाइयों की प्रशंसा से भागते हुए और एक तपस्वी के रूप में अपने पूर्व जीवन की लालसा में, वह अपने रेगिस्तानी एकांतवास के लिए निकल पड़े, जहाँ उन्होंने पूरे 15 साल बिताए; वह अक्सर केवल 'उझ' नामक एक पौधे पर ही जीवन यापन करते थे[6468] , उन्होंने अथक प्रार्थना और परिश्रम किया, और हर तरह से अपनी आत्मा के मोक्ष के लिए खुद को समर्पित कर दिया। उनका जीवन अक्सर खतरे में पड़ जाता था। इस प्रकार, एक अवसर पर, शैतान के उकसावे पर दुष्ट लोगों ने संत की साधारण झोपड़ी पर हमला किया, संन्यासी का थोड़ा-बहुत सामान चुरा लिया, उससे उसका अंतिम सहारा—पवित्र प्रतिमाएँ और पुस्तकें—भी छीन लीं, और उसे भाले से पसलियों में बुरी तरह घायल कर दिया, जिससे वह मुश्किल से जीवित बचा। ईश्वर की सहायता से, संत खड़े हुए और इस प्रकार प्रार्थना करने लगे:

'हे प्रभु, मेरे ईश्वर, यीशु मसीह, जो आप पर भरोसा करते हैं उनकी शक्ति और कृपा! आपने, जो निर्दोष हैं, यहूदियों के हाथों अनुचित रूप से स्वेच्छा से पीड़ा सहन की; लेकिन मैंने, आपके अयोग्य सेवक ने, अपने अनगिनत पापों के कारण यह सब पूरी तरह से न्यायसंगत रूप से भुगता है। मैं हर चीज़ के लिए आपका धन्यवाद करता हूँ, और आँसुओं तथा पश्चात्तापी हृदय के साथ मैं इन लोगों के लिए आपसे प्रार्थना करता हूँ: उन्हें क्षमा करें, क्योंकि वे नहीं जानते कि वे क्या कर रहे हैं; दोष उनका नहीं है, बल्कि शत्रु का है, जो सभी -ईवल का बीजारोपण करने वाला है, जिसने उन्हें ऐसा कार्य करने के लिए उकसाया; हे प्रभु, उन्हें मेरे, एक पापी के कारण, विनाश को प्राप्त न होने दें: उन्होंने यह अज्ञानता में किया है।

प्रभु, जो मदद के लिए तत्पर हैं, ने अपने दीन सेवक को चमत्कारिक रूप से आरोग्य प्रदान किया, लेकिन डाकुओं को भी दंडित किया गया। संत की कुटिया से डेढ़ मील दूर डेम्यानोवो झील थी, जिसमें डेम्यांका नदी का पानी आता है; ईश्वर की इच्छा से, डाकू इस झील के किनारों पर अपना रास्ता भूल गए; तीन दिनों तक वे भटकते रहे, अपना रास्ता खोजने की व्यर्थ कोशिश करते रहे और भूख से बहुत कष्ट उठाते रहे। उनमें से दो ने अपने अपराध पर पश्चाताप किया और अपने साथियों से कहने लगे:

[6468] उज़ या उज़ेव्निक जंगली सरसों है; इस पौधे का एक अन्य नाम ब्रिलिना है।

'हम अपना रास्ता इसलिए नहीं ढूंढ पा रहे हैं क्योंकि हमने अन्याय किया है: हमने संत का सामान चुराया और उन्हें गंभीर घाव पहुँचाए।'

हालाँकि, अन्य दो पूरी तरह से निराश हो गए और कहने लगे:

'वह अपना बचाव भी नहीं कर सका।'

लेकिन सर्वदर्शी ईश्वर ने ये शब्द सुने और जिन्होंने उस पवित्र पुरुष का अपमान किया था, उन्हें दंड दिया; डेम्यान्का नदी पार करते समय वे पैदल पुल से गिरकर डूब गए। यह देखकर, शेष दो भयभीत हो गए और प्रभु से प्रार्थना करने लगे कि वे उनके अपराध को क्षमा करें। उनकी प्रार्थना स्वीकार हुई, और वे शीघ्र ही निकिंडर की झोपड़ी तक पहुँच गए। उन्होंने आदरणीय पिताजी के पास से जो कुछ भी लिया था, वह सब वापस कर दिया, और वे कड़वी रुलाई और सिसकियों के साथ संत के समक्ष साष्टांग दण्डवत कर पड़े तथा उनसे क्षमा याचना करने और उनके लिए प्रभु से प्रार्थना करने का निवेदन करने लगे। पिता समान स्नेह से, आदरणीय निकिंदर ने पश्चातापी पुरुषों को स्वीकार किया; उन्होंने उन्हें क्षमा किया, उन्हें भोजन कराया, और उन्हें अपने दुष्ट धंधे को छोड़ने के लिए प्रेरित किया, यह बताते हुए कि मानवता का शत्रु उन्हें इस विनाशकारी मार्ग पर चलने के लिए उकसा रहा था, और उन्होंने उन्हें शांतिपूर्वक विदा किया। अपने घरों को सुरक्षित लौटने पर, उन्होंने सभी को बताया कि उनके साथ क्या हुआ था, और साथ ही दयालु ईश्वर और उनके सेवक, आदरणीय निकिंडर की महिमा की। उस समय से, संत की प्रसिद्धि और भी बढ़ गई; कई लोग आदरणीय संत के पास आने लगे, उनके लिए भोजन लाने लगे और उनका आशीर्वाद मांगने लगे।

निकिंद्रोस ने रेगिस्तान में कई साल बिताए, वहाँ कई कठिनाइयों को सहन किया, फिर भी सांसारिक प्रसिद्धि उसके लिए पहले की तरह ही बोझिल और असहनीय बनी रही, और यही चीज़ उसे सबसे ज़्यादा डराती थी। वह मनुष्यों की प्रशंसा से उतना नहीं डरता था जितना वह डाकुओं से डरता था। इसलिए, पूज्यनीय संत ने एक बार फिर से रेगिस्तान छोड़ दिया और क्रिपिट्स मठ के लिए रवाना हो गए, जहाँ उन्होंने मठवासी संन्यास की शपथ ली। मठ पहुँचने पर, संत ने अपना तपस्वी जीवन जारी रखा; वह केवल सूखी रोटी खाता था, अपनी प्यास साधारण पानी से बुझाता था, और न तो शराब का स्वाद चखा और न ही मछली का; केवल शनिवार और रविवार को ही वह अपने लिए थोड़ा पका हुआ भोजन लेने देता था, हालांकि अक्सर वह भी उपलब्ध नहीं होता था; यह विनम्र तपस्वी अपने पुण्य और कठोर जीवन के कारण मठ में सभी से श्रेष्ठ था; वह हमेशा सभी की सेवा और सहायता के लिए तैयार रहता था, दूर से पानी और लकड़ी लाता था, वह अपनी रातें निरंतर जागरण में बिताता था; अक्सर रात में वह जंगल में जाता और अपना शरीर खोलकर मच्छरों और तिलचट्टों को खुद को काटने देता, जिससे उसका शरीर खून की धाराओं से ढक जाता था; ऐसा करते समय, वह अचल बैठता, ऊन कातने और दाऊद के भजन गाने में लगा रहता। जब सुबह होती, तो पूजनीय पिता मठ लौट आते, चर्च में सबसे पहले पहुँचते, जहाँ वे पूरी प्रार्थना सभा तक बिना अपनी जगह छोड़े खड़े रहते, और चर्च से निकलने में सबसे आखिरी होते। उनके कार्यों से चकित होकर, भाइयों ने उन्हें सेxton नियुक्त कर दिया। संत को प्रोस्फोरा पकाने का कठिन और श्रमसाध्य कार्य सौंपा गया था, लेकिन पूजनीय निकिंडर ने यह कहते हुए इस कार्य को खुशी-खुशी शुरू कर दिया:

'यदि हमारे प्रभु यीशु मसीह ने अंतिम भोज के लिए तैयार रोटी को अपना शरीर कहा, तो मुझे इस बात पर आनंदित होना चाहिए कि परमेश्वर ने मुझे ऐसी रोटी तैयार करने के योग्य समझा है, जिस पर महान और भयानक रहस्य संपन्न होता है: एक अद्भुत और अकल्पनीय तरीके से, यह मसीह के पवित्र शरीर में परिवर्तित हो जाती है।'

और ईश्वर के तपस्वी ने अथक परिश्रम करना जारी रखा; भाइयों ने, उनके बढ़ते उत्साह को देखकर और उनकी विनम्रता तथा नम्रता के लिए उनसे प्रेम करने लगे, एबॉट से निवेदन किया कि वे निकिन्डर को सेलरर[6469] नियुक्त करें। एबॉट ने भिक्षुओं के अनुरोध को स्वीकार कर लिया और आदरणीय को सेलरर के पद पर नियुक्त कर दिया; फिर भी, इस पदोन्नति के बावजूद, उस पवित्र व्यक्ति ने अपने जीवन के पूर्व तरीके को नहीं बदला, बल्कि अपने नए कर्तव्य को विनम्रता और उत्साह के साथ पूरा किया, मानो यह स्वयं प्रभु द्वारा सौंपा गया कार्य हो; वह अपने को दिए गए अधिकार से घमंडी नहीं हुआ, बल्कि हमेशा धर्मग्रंथ के वचनों को याद रखता था: *'तुम में जो बड़ा होना चाहता है, उसे तुम्हारा सेवक बनना चाहिए'* (मत्ती 20:26)। लेकिन संत निकिन्डर लंबे समय तक कोषाध्यक्ष नहीं रहे: उन्हें अपने नए पद पर किसी को ठेस पहुँचाने का डर था; इसके अलावा, वे अपने एकांत के पूर्व जीवन के लिए तरसते थे, और इसलिए उन्होंने एक बार फिर मठ छोड़ने का संकल्प लिया। मठ छोड़ने के बाद, वह मठ से चार वर्स्ट दूर स्थित एक द्वीप पर बस गए; यहाँ संत ने

[6469] कोषाध्यक्ष (ग्रीक 'केलारोस' से) मठ के भंडारों को संग्रहीत करने के लिए जिम्मेदार था।

एक बार फरि से अपने सामान्य कार्यों को समर्पति कर दयिा और उनमें साढ़े तीन साल बतिाए। तपस्वी के तपस्वी जीवन की ख्यातिने कई लोगों को उनकी ओर आकर्षति करना शुरू कर दयिा, जो नकिान्डर पर एक बार फरि से एक बोझ बन गया। इस बीच, शैतान—जो मानव जातिका शत्रु और ईर्ष्यालु, झूठ और मथि्या का पतिा है—ने क्रपिेट्स्की मठ के मठाधीश के मन में यह वचिार डाला कि नकिान्डर मठ की आय कम कर रहा था। इसलिए उन्होंने उस पूजनीय संत से कहीं और चले जाने के लिए कहा। संत ने अत्यंत वनिम्रता से, भक्षिु के अनुचति आरोप के बावजूद, भक्षिु की प्रार्थना मानी: वह एक बार फरि उस रेगस्तिान के लिए रवाना हो गए जसिे पवत्रि आत्मा ने पहले उन्हें दखिाया था।

अपनी यात्रा के दौरान, पूजनीय नकिान्ड्र लोकोटी नामक एक गाँव में पहुँचे; दनि ढलने को था, और संत एक ग्रामीण के घर रात बतिाने के लिए रुके, जो उसी समय एक भोज का आयोजन कर रहा था। यह पनीर सप्ताह के दौरान सोमवार का दनि था, जब संत, अपनी प्रथा के अनुसार, उपवास कर रहे थे। उस कसिान ने नकिंदर को भोजन परोसना शुरू कयिा, लेकनि आदरणीय संत ने उसे स्वीकार करने से इनकार कर दयिा। हालाँकि, मानव उद्धार के शत्रु ने संत का मज़ाक उड़ाने की एक योजना बनाई: गाँव में संत के आगमन से ठीक पहले, उसने कुछ दुष्ट पुरुषों के मन में एक ग्रामीण के घर को लूटने का वचिार डाल दयिा था; और उन्होंने वैसा ही कयिा: उन्होंने उसके घर पर हमला कयिा, लूटपाट की और उसमें आग लगा दी। इसलिए, उस कसिान ने जसिने संत का स्वागत कयिा था, संत के इनकार से नाराज़ होकर, कहना शुरू कर दयिा:

'तुम शायद उन्हीं लोगों में से एक हो जन्होंने मेरे पड़ोसी का घर जला दयिा था; और मुझे लगता है कि तुम मेरे साथ भी कुछ ऐसा ही करने का सोच रहे हो, क्योंकि तुम मेरा खाना छूने से इनकार कर रहे हो।'

उसने अपने पड़ोसयिों को यह बात बताई; वे इकट्ठा हो गए और संत को बेरहमी से डंडों से उसके पूरे शरीर और सरि पर पीटना शुरू कर दयिा। लेकनि हमारे उद्धारकर्ता मसीह ने संत को अधकि समय तक पीड़ति रहने या शैतान की बदनामी के कारण नष्ट होने नहीं दयिा; बल्कि, हमारी परम पवत्रि माता, ईश्वर की माता और सदा कुंवारी मरयिम की प्रार्थनाओं के द्वारा, उन्होंने जल्द ही उसे उसके कष्ट से मुक्त कर दयिा: संत नकिेंडर की कराहें और उनके यातना देने वालों के चल्लिाहटें राहगीरों द्वारा सुनी गईं; वे आकर बोले:

'इस बूढ़े आदमी ने तुम्हारा कोई बुरा नहीं कयिा है; तुम क्या कर रहे हो, तुम मूर्खों, एक नर्दिोष आदमी को मारने की कोशशि कर रहे हो?'

वे लोग लज्जति हो गए और संत से क्षमा मांगने लगे; उन्होंने संत को उनकी इच्छानुसार भोजन भी दयिा; लेकनि संत ने खाने से इनकार कर दयिा और जन्हिोंने उन्हें यातना दी थी, उनके लिए इस प्रकार प्रार्थना करने लगे:

'हे प्रभु यीशु मसीह, परमेश्वर के पुत्र, इनसे यह दोष न लगाओ: ये नहीं जानते कि ये क्या कर रहे हैं।'

अगली सुबह ही नकिान्डर ने थोड़ी सी रोटी खाई और, अपने अज्ञान में उसे पीटने वाले ग्रामीणों को वनिम्रतापूर्वक और पूरे हृदय से क्षमा करने के बाद, अपनी यात्रा पर चल पड़ा। एक बार, अपनी यात्रा जारी रखते हुए, संत, थके हुए, लेट गए और झपकी लेने लगे; अचानक उन्होंने दो वशिाल और शक्तशिाली भेड़यिों को अपने ऊपर झपटने के लिए तैयार देखा। उठकर, संत ने क्रॉस का चह्नि बनाया और, अपनी लाठी से जमीन पर टक्कर मारते हुए, कहा:

'दुष्टाओं, मुझसे दूर हो जाओ' (भजन संहति 6:9)।

और वे जानवर तुरंत ही गायब हो गए। अपने रेगस्तिान में पहुँचने पर, संत ने एक बार फरि से तपस्या में स्वयं को समर्पति कर दयिा; वह वहाँ पूरे 15 वर्ष तक रहे, दैत्य और दुष्ट मनुष्यों के हाथों कई परीक्षाओं को सहते हुए, फरि भी उन्होंने अपनी नरिंतर प्रार्थनाओं और अपने पापों के लिए अश्रुपूर्ण वलिाप के द्वारा उनकी चालाकयिों पर वजिय प्राप्त की, अपने तपस्वी कर्मों से अपनी आत्मा को जैसे उज्ज्वल मोतयिों से सजाया, और हमेशा आत्मा-रक्षक चतिन से स्वयं को संवारते रहे।

हमारे ईश्वर, सर्व के स्रष्टा, के आशीर्वाद महान हैं। उन्होंने न केवल अपने सेवक को उनके नधिन के बाद स्वर्ग में महमिामय बनाया, बल्कि जब वह जीवति थे तब भी उन्होंने उन्हें दूरदर्शता का वरदान प्रदान कयिा, जैसा कि नम्निलखिति से स्पष्ट है। एसुकोव नामक एक व्यक्ति, जो संत के झोपड़ी से बारह वर्स्ट दूर रहता था, इस बात से बहुत दुखी था कि उसके कोई संतान नहीं थी। और इस प्रकार एक दनि एक हरिण सीधे पीटर के आँगन में आ गया। यह संयोग से नहीं हुआ, बल्कि ईश्वर की इच्छा से हुआ, क्योंकि सुसमाचार में लखिा है: *'पहाड़ पर स्थति नगर छपि नहीं सकता। और लोग दीपक जलाकर उसे टोकरी के नीचे नहीं रखते, बल्कि दीवट पर रखते हैं, और वह घर में सबको प्रकाश देता है'* (मत्ती 5:14)। और इस प्रकार दयालु प्रभु ने पूजनीय नकिेंडर का मार्ग मूस के माध्यम से दखिाया। अपने घोड़े पर सवार होकर,

पीटर अपने लोगों के साथ उस जानवर का पीछा करने निकल पड़े; उनके साथी धीरे-धीरे उनसे पीछे छूटते गए, और अंत में, वे अकेले रह गए; पतरस ने उस जानवर का लंबे समय तक पीछा किया जब वह जंगल में छिपने की कोशिश कर रहा था; एक दूरस्थ, अतिकठिन झाड़ी में घुसने के बाद, पतरस की नज़र हिरन से ओझल हो गई; ठीक उसी क्षण उसने एक छोटी सी झोपड़ी देखी; यह सोचकर कि वहाँ कोई रहता होगा, पतरस ने दरवाज़ा खटखटाया, और कहा:

'प्रभु यीशु मसीह, हमारे ईश्वर, हम पर दया करें।'

लेकिन कोई जवाब नहीं आया; तीसरी बार खटखटाने पर ही (संत की यही रीति थी) दरवाज़ा खुला, और निकैंडर ने पीटर का—जिन्होंने पहले कभी उस पूजनीय को नहीं देखा था—इन शब्दों के साथ अभिवादन किया:

'मेरे बेटे, पीटर, ओक के पेड़ पर जाओ, जहाँ आगंतुकों के लिए एक कमरा तैयार किया गया है; मैं थोड़ी ही देर में वहाँ तुम्हारे पास आऊँगा।'

निर्दिष्ट स्थान पर पहुँचने पर, पीटर ने जल्द ही एक सम्मानित वृद्ध व्यक्ति को अपनी ओर आते देखा; उसने उन्हें प्रणाम किया और उनका आशीर्वाद माँगा।

'प्रभु का आशीर्वाद आप और आपकी पत्नी पर हो,' बुजुर्ग ने उत्तर दिया।

हालाँकि, पीटर ने मन ही मन सोचा:

'सचमुच, ईश्वर की कृपा इस व्यक्ति में वास करती है; सचमुच, वह पवित्र आत्मा से परिपूर्ण है, क्योंकि, यद्यपि उसने मुझे पहले कभी नहीं देखा है, वह मेरा नाम और यह भी जानता है कि मैं विवाहित हूँ।'

वरिष्ठ के सामने झुककर, पीटर ने पूछा कि उनका नाम क्या है और वे कितने समय से रेगिस्तान में रह रहे हैं।

'मेरा नाम पापी निकैंडर है, लेकिन यह मत पूछो कि मैं यहाँ कितने समय से हूँ: यह तो केवल ईश्वर ही जानता है,' बुजुर्ग ने नम्रता से उत्तर दिया।

तब पतरस संत के सामने घुटनों के बल गिर पड़ा और अपनी बदकिस्मती पर कड़वाहट से विलाप करने लगा:

'मैं पहले से ही बूढ़ा हो चुका हूँ, फिर भी मेरा कोई बेटा नहीं है।'

इस पर, पूजनीय निकान्डर ने उत्तर दिया:

'उठो, मेरे बच्चे, और अपने घर लौट जाओ: परमेश्वर की परम पवित्र माता की प्रार्थनाओं के द्वारा, तुम्हें एक पुत्र होगा।'

और वास्तव में, संत की भविष्यवाणी सच हुई। तब से, पीटर ने उस पूजनीय संत से अक्सर मिलना शुरू कर दिया और उनकी आत्मा को मोक्ष देने वाली शिक्षाओं से पोषित हुआ।

एक दिन, ईश्वर के पुरुष ने उससे कहा:

'मेरे परलोक गमन के बाद, यह सुनसान स्थान महिमामय और गौरवशाली हो जाएगा; उस कब्र के ऊपर जहाँ मेरा पापी शरीर विश्राम करेगा, हमारे परम पवित्र प्रभु की माता, की महिमामय घोषणा के सम्मान में एक चर्च का निर्माण किया जाएगा।'

एक अन्य अवसर पर, सिमीओन नामक एक व्यक्ति संत का आशीर्वाद और मार्गदर्शन प्राप्त करने की इच्छा से निकैंडर के पास आया। हालाँकि, रेवरेंड फादर ने यह भांपते हुए कि सिमीओन की मृत्यु निकट है, कहा:

'मेरे पुत्र सिमीओन, तुम्हारे जीवन का समय समाप्त होने को है,' और, उसे एक कैंची देते हुए, उन्होंने आगे कहा:

'जिस मठ में प्रभु तुम्हें भेजते हैं, वहाँ जाओ और संन्यास का व्रत ग्रहण करो, क्योंकि तुम्हारे जीवन का अंत समीप आ गया है।'

यह सुनकर, सिमीओन एक मठ के लिए रवाना हो गए, वहाँ उनका मुंडन किया गया और, कुछ ही समय बाद, पवित्र सहभाग प्राप्त करने के बाद, वे शांतिपूर्वक अनंत जीवन में प्रवेश कर गए।

इस बीच, पूज्य निकान्डर के तपस्वी जीवन के बारे में सुनकर लोग उन्हें बार-बार मिलने आने लगे; जब वे चुपचाप उनकी कुटिया के पास पहुँचते, तो वे संत को प्रार्थना करते और बार-बार प्रणाम करते हुए सुन सकते थे। जैसे ही संत ने उनके आगमन को देखा, वह सोने का नाटक करने लगता। जब कोई आगंतुक उसके दरवाजे पर दस्तक देकर कहता, 'मुझे आशीर्वाद दीजिए, फादर', निकैंडर मौन रहता; न ही दूसरी बार उत्तर देता; केवल तीसरी बार, जैसे नींद से जागते हुए, संत उत्तर देता:

'ईश्वर हमारे प्रभु यीशु मसीह तुम्हें आशीर्वाद दें, मेरे बच्चे।'

[6470]संत अपने सभी दनि और रात ऐसे तपस्वी कार्यों में बतिाते थे; आदरणीय संत कभी लेटकर नहीं सोते थे, लेकनि अगर नींद हावी हो जाती, तो वे बैठे-बैठे ही झपकी ले लेते थे, और वह भी केवल थोड़ी देर के लिए, फरि अपनी प्रार्थना फरि से शुरू कर देते थे; नकिैंडर की देह की उपेक्षा इस हद तक थी कि वे पानी से केवल अपने हाथ और चेहरा ही धोते थे; वह अधकितर पौधों पर ही जीवति रहते थे; फरि भी जब धर्मपरायण लोग उनके लिए रोटी लाते, तो आदरणीय संत उस भेंट को कृतज्ञतापूर्वक स्वीकार कर लेते थे; फरि वे रोटी को सूखने देते और सूर्यास्त के समय उसे उसी अवस्था में खा लेते थे; वह अपनी प्यास पानी से बुझाता था; यद्यपि उसने इतना कठोर जीवन जयिा, फरि भी उसका चेहरा कभी उदास नहीं देखा गया, बल्कि वह हमेशा आनंद और शांति से दमकता था; पूरे बड़े उपवास के दौरान, संत सप्ताह में केवल एक बार ही भोजन करते थे, और गुड फ्राइडे को वे डेम्यान्स्क मठ जाते थे; वहाँ मसीह के भव्य और जीवन-दायक रहस्यों में भाग लेने के बाद, वे रेगस्तिान में अपने तपस्थल पर लौट आते थे, और खुद को उस मठ के भाइयों में गनिे जाने के अयोग्य मानते थे। केवल ईश्वर ही जानते हैं कि संत नकिैंडर ने रेगस्तिान में कतिनी कठनिाइयों और कारनामों को सहन कयिा। दुष्ट आत्माएँ अक्सर आदरणीय पति को परेशान करने के लिए प्रकट होती थीं और यहाँ तक कि उन्हें घाव भी पहुँचाती थीं, जैसा कि मस्रि के संत एंथनी के साथ हुआ था[6471] । अपने तपस्वी को मजबूत करने के लिए, प्रभु ने उन्हें स्वरि के आदरणीय अलेक्जेंडर का एक दर्शन भेजा; ईश्वर के इस सेवक ने नकिान्डर को अपने अदृश्य शत्रुओं से लड़ने के लिए प्रोत्साहति कयिा। सुसमाचार में कहा गया है कि इस प्रकार की आत्मा को प्रार्थना और उपवास के अलावा कसिी भी चीज़ से बाहर नहीं नकिाला जा सकता - और इन्हीं हथयिारों से पूजनीय नकिंदर ने अंधकार के राजकुमार पर वजिय प्राप्त की। लेकनि उन्हें दुष्ट आत्माओं से लंबे समय तक संघर्ष करना पड़ा: जब भी नकिान्डर अपने श्रम से वशि्राम करना चाहते, तो उनकी कोठरी के चारों ओर एक ऐसा कोलाहल मच जाता कि ऐसा लगता जैसे कई रथ गुजर रहे हों, या ढोलक और बांसुरी की ध्वनि सुनाई दे रही हो। तब परम पूजनीय व्यक्ति दाऊद के भजन पढ़ना शुरू कर देते, और कोलाहल थम जाता; इस प्रकार दुष्ट आत्माओं ने संत को दनि-रात लंबे समय तक आराम नहीं करने दयिा, जब तक कि ईश्वर की कृपा से, उन्होंने अंततः उन पर वजिय प्राप्त नहीं कर ली। एक बार, एक बड़ा भालू संत के सेल के पास आया और इतनी ज़ोर से उससे रगड़ने लगा कि सेल हलिने लगा और ढहने की कगार पर था। अपनी कोठरी की खड़िकी से बाहर नकिलकर और अपने ऊपर धर्मचनि्ह बनाकर, संत ने बाहर देखा – और कोठरी के पास उस बड़े जानवर को खड़ा देखा। फरि उस पूजनीय पति ने, एक बार फरि धर्मचनि्ह बनाकर, कोठरी से बाहर कदम रखा और उस जानवर पर धर्मचनि्ह बनाया। जैसे कसिी अदृश्य शक्ति से प्रभावति होकर, भालू संत के सामने गरि पड़ा, उनके पवत्रि पैरों को धीरे-धीरे चाटने लगा, और फरि जंगल में चला गया। और एक अन्य अवसर पर, स्वरि के पूजनीय अलेक्जेंडर उनकी कोठरी के बरामदे में उन्हें दखिाई दिए; उन्होंने उनके तपस्या के प्रयासों में उनका उत्साह बढ़ाते हुए कहा:

'डरो मत, मेरे भाई नकिैंडर: इस समय से, प्रभु तुम्हें शत्रु के सभी जालों से बचाएंगे।'

उस समय से, संत को राक्षसों पर इतनी शक्ति प्राप्त हो गई कि वे उनके कक्ष के पास आने की हम्मित भी नहीं करते थे।

नाज़ारयिस नाम का एक व्यक्ति, जो पूज्य के कोठरी से ज्यादा दूर नहीं रहता था, गंभीर रूप से बीमार पड़ गया: उसका पूरा शरीर कीड़ों से ढक गया था, और उसकी छाती पर एक बहुत बड़ा अल्सर हो गया था, जसिसे उसके आंतरकि अंग दखिाई देते थे; इसके अलावा, बीमार व्यक्ति तीव्र पीड़ा के बनिा एक भी मांसपेशी नहीं हलिा सकता था; नाज़ारयिस एक साल और छह महीने तक इस गंभीर पीड़ा से पीड़ति रहा। उसके परविार ने, यह देखकर कि नाज़ारयिस इतनी لاعلاج बीमारी में पड़ गया था, उस बीमार व्यक्ति की पीड़ा को कम करने का कोई उपाय न जानते हुए, रो पड़े। हालाँकि, नाज़ारयिस ने संत नकिैंडर के चमत्कारों और तपस्वी जीवन के बारे में सुनकर, अपने घर वालों को उसे उस पूजनीय संत के पास ले जाने का आदेश दयिा; उन्होंने नाज़ारयिस की बात मानी और वहाँ पहुँचकर उस बीमार व्यक्ति को तपस्वी की कुटयिा के सामने लटिा दयिा। जब नकिान्डर अपने आवास से बाहर आए, तो नाज़ारयिस ने अपनी सारी शक्ति जुटाकर संत के पैरों को गले लगाना और उन्हें अपने आँसुओं से धोना शुरू कर दयिा, और उस धन्य संत से अपने लिए प्रभु से प्रार्थना करने का आग्रह कयिा। सम्माननीय संत ने उत्तर दयिा:

[6470] टपिन एक संगीत वाद्ययंत्र है जो चमड़े से ढका होता है और इसमें दो धातु की थाली होती हैं, जनिके कनिारों से खड़खड़यिाँ जुड़ी होती हैं। पाइप एक वायु वाद्ययंत्र है।

[6471] आदरणीय महान एंथनी का पर्व दविस, जन्हिोंने दुर्भावना की आत्माओं के खलिाफ बहादुरी से लड़ाई लड़ी, 17 जनवरी को मनाया जाता है।

'नाज़ारियस, मेरे पैरों को मत छूना; तुम व्यर्थ ही उन्हें चूमते हो, तुम व्यर्थ ही मुझसे चंगाई मांगते हो, क्योंकि मनुष्य के लिए तुम्हारा चंगा होना असंभव है, परन्तु परमेश्वर के लिए संभव है; तुम्हें चंगाई के लिए विश्वास से उसी से प्रार्थना करनी चाहिए।' यह सुनकर, बीमार व्यक्ति यह देखकर चकित रह गया कि पूजनीय पिताजी को उसका नाम पता था, भले ही उन्होंने उसे पहले कभी नहीं देखा था; इसलिए वह उनसे और भी अधिक विनती करने लगा।

नाज़ारियस ने आगे कहा, 'लेकिन अगर आप, पिताजी, मुझे छोड़ देंगे, तो मैं इस जगह को नहीं छोड़ूँगा और आपकी कोठरी के सामने ही मर जाऊँगा।'

तब पूज्य पिता ने, नाज़ारियस की दृढ़ आस्था को देखकर, आदेश दिया कि उसे यात्रियों के लिए बने कमरे में ले जाया जाए, और उससे कहा कि वह वहाँ सोने का प्रयास करे। लेकिन उस बीमार व्यक्ति ने उत्तर दिया:

'हे पवित्र पिता, अपनी पूरी बीमारी के दौरान मैं एक बार भी अपनी आँखें नहीं बंद कर सका; आप अब मुझे सोने की सलाह कैसे दे सकते हैं?'

इस पर निकिंडर ने कहा:

'तुम्हारे आने से पहले ही मैंने कमरा गर्म करवा दिया था, क्योंकि मुझे पता था कि तुम मेरे पास आओगे; अब, जब मैं प्रार्थना करने जाऊँ, तो सोने की कोशिश करना, और बाद में तुम मुझे अपने घाव दिखाना।'

नज़ारियस तुरंत अपना घाव खोलने ही वाला था, लेकिन वह ऐसा नहीं कर सका, क्योंकि उसकी कमीज़ उसके शरीर से इतनी कसकर चिपकी हुई थी कि उसे फाड़कर अलग नहीं किया जा सकता था। यह देखकर, संत ने घाव पर क्रॉस का चिह्न बनाया और नज़ारियस को उस स्थान पर भेज दिया जिसे उन्होंने इंगित किया था, जहाँ वह जल्द ही गहरी नींद में सो गया। जहाँ तक स्वयं पूज्य की बात है, उन्होंने अपने कोठरी में खुद को बंद कर लिया और पूरी रात प्रभु से भक्तिपूर्वक प्रार्थना की, कि वे, जो सभी पीड़ितों के एकमात्र चिकित्सक हैं, उस बीमार व्यक्ति को स्वास्थ्य प्रदान करें और साथ ही, उसकी आत्मा की आँखें ज्ञान से भर दें और उसे विश्वास में मजबूत करें। जो भी विश्वास के साथ उनके पवित्र नाम का आह्वान करते हैं, उनकी सहायता के लिए शीघ्रता से आने वाले प्रभु ने अपने सेवक की प्रार्थना सुनी: अगले सुबह, जब नज़ारियस जागा, तो वह पूरी तरह से स्वस्थ महसूस कर रहा था; वह तुरंत अपने पैरों पर खड़ा हो गया: उसकी कमीज़ के साथ छाला ऐसे छिल गया जैसे कोई भूसी; जिस पर उसने उस ईश्वर का आभार व्यक्त करना शुरू कर दिया, जिसने उसे चंगा किया था, और उनके पवित्र सेवक, संत निकिंडर की महिमा करने लगा; हालाँकि, आदरणीय संत, मनुष्यों से महिमा प्राप्त नहीं करना चाहते थे, इसलिए उन्होंने उसे जो हुआ उसके बारे में बोलने से मना कर दिया - 'अन्यथा तुम्हारे लिए और भी बुरा हो सकता है,' उन्होंने कहा।

एक अन्य अवसर पर, प्रसि कोस्त्रोव के एक सेवक, सिमीओन वासिलीव नामक एक किसान, निकान्डर के पास आया और उसने पूजनीय संत से यह कहकर कड़वी शिकायत की कि उसका घोड़ा चोरी हो गया था; यह सुनकर संत ने गहरी आह भरी; हालाँकि, सिमोन शिकायत करता रहा और कहा कि तब से पाँच दिन बीत चुके थे। फिर निकिंदर ने, बड़ी विनम्रता और नम्रता के साथ, बोलना शुरू किया:

'मेरे पुत्र, तुम्हें अपने घोड़े की चोरी पर शोक नहीं करना चाहिए; नहीं, तुम्हें चोरी हुई वस्तु पर नहीं, बल्कि चोर पर शोक करना चाहिए, क्योंकि उसने यह सब शैतान की उकसावे पर किया।'

तथापि सिमीओन ने आश्चर्यपूर्वक उससे कहा:

'तो, पिताजी, क्या आप उस आदमी के लिए शोक मना रहे हैं जिसने चोरी की?'

तब निकान्डर ने उत्तर दिया:

– मेरे पुत्र सिमीओन, घर जाओ; जो तुमसे चोरी हुआ है, वह वापस मिल जाएगा।

संत की बात सच हुई: उसी रात, घोड़ा अपने आप घर आ गया। सिमोन दूसरी बार आदरणीय पिता के पास गया, उन्हें धन्यवाद दिया और जो हुआ था, वह बता दिया।

'और जिसने मेरा घोड़ा चुराया था,' उन्होंने आगे कहा, 'वह नदी में डूब गया।'

यह सुनकर निकान्डर उदास हो गया और उसने सीमोन को इस प्रकार उपदेश देना शुरू किया:

'मेरे पुत्र, हमें उन ईसाइयों के लिए शोक मनाना चाहिए जो अपने पापों से पश्चाताप करने का मौका पाए बिना ही मर गए; और हमें इस व्यक्ति के लिए प्रार्थना करनी चाहिए, क्योंकि प्रभु ने कहा है: *"यदि तुम पश्चाताप नहीं करते, तो तुम भी सब नाश हो जाओगे"* (लूका 13:3)।

आदरणीय ने वस्तिार से कहा, और अपने प्रेम से परपिूर्ण, शकि्षाप्रद शब्दों के द्वारा उन्होंने समियिोन की आत्मा की आँखें खोल दीं; समियिोन ने प्रभु की और भी अधकि उत्साह से महमिा करना शुरू कर दयिा, क्योंकि उन्होंने अपने एक ऐसे प्रयि सेवक को पृथ्वी पर भेजा था।

इस बीच, पादरी नकिान्ड्र ने, यह देखकर कि उनके सांसारकि जीवन का अंत नकिट आ रहा है, हर सद्गुण से सुसज्जति होकर स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करने के लिए स्वयं को तैयार करना शुरू कर दयिा। दनि-रात वे प्रार्थना करते और वनिती करते कि सर्व-दयालु प्रभु उनके पापों को क्षमा करें; अपने जीवन के सामान्य तपस्या से संतुष्ट न होकर, उन्होंने स्वर्गदूतों के समान बनने और महान स्कीमा ग्रहण करने का संकल्प लयिा। इस उद्देश्य के लिए, पूजनीय पतिा डेम्यान्स्क मठ के लिए रवाना हुए और वहाँ मठाध्यक्ष के हाथों से महान स्कीमा प्राप्त की; यह उनके नधिन से आठ साल पहले हुआ, जसिके बाद संत अपने एकांतवास में लौट आए।

उस समय, पोर्खोव नगर का पीटर नामक एक डकिन, आदरणीय संत से अक्सर मलिने आने लगा। संत ने उनसे धर्मग्रंथों, मसीह के वशि्वास और ईसाई सद्गुणों के बारे में वस्तिार से बात की। एक अवसर पर, नकिान्डर ने पीटर को एक वशिेष चमत्कार के बारे में बताया जो उनके साथ हुआ था।

'मुझे अपने पैरों में बहुत दर्द हुआ करता था, लेकनि अब, ईश्वर की कृपा से, मैं इस पीड़ा से मुक्त हो गया हूँ।'

संत के पैरों पर नज़र डालते ही, पीटर ने देखा कि उनकी पंडिलयिाँ पूरी तरह से खाली थीं, उनका मांस गायब था – और वह इस पर बहुत हैरान रह गया। एक अन्य अवसर पर, नकिंडर ने पीटर से कहा:

'जल्द ही प्रभु मेरी पापी आत्मा को अपने पास बुला लेंगे; जब तुम मेरे नधिन के बारे में सुनो, तो आकर मेरे नश्वर शरीर को दफ़ना देना।'

पतरस ने पूछा, 'क्या जो आप कह रहे हैं वह जल्द ही होगा? और जब यह हो जाएगा तो आप मुझे कैसे बताएँगे?'

'मैं नहीं जानता कि मैं आपको कैसे सूचति करूँगा, क्योंकि उस समय युद्ध होगा: पोलशि और लथिुआनयिाई सेनाएँ यहाँ आएँगी और प्सकोव और पोर्खोव की घेराबंदी करेंगी; लेकनि जब आपको मेरे परमेश्वर के पास जाने की खबर मलि, तो मेरे शरीर को जहाँ भी पाएँ, बनिा कसिी डर के वहीं दफना देना; और महान और गौरवशाली घोषणा के सम्मान में मेरी कब्र पर एक चर्च का नर्मिाण कयिा जाएगा।

इस प्रकार नकिान्डर ने शांतपिूर्वक इस क्षणभंगुर संसार को छोड़ने की तैयारी की। जब वह बीमार पड़ा, तो रेवरेंड फादर के अपने तपस्थल में नविास करने को सैंतालीस वर्ष और दो महीने बीत चुके थे; जल्द ही संत ने मृत्यु के आगमन का अनुभव कयिा और, आँसू बहाते हुए, प्रभु से अपने सभी पापों के लिए क्षमा देने का अनुरोध करने लगे; उन्होंने अपनी प्रार्थनाओं में सभी संतों का आह्वान कयिा और अपने आश्रम को परमेश्वर की अतपिवत्रि माता की देखभाल में सौंप दयिा। तब पूजनीय नकिान्डर अपने बस्तिर पर लेट गए, उन्होंने क्रॉस के चन्हि में अपने हाथ जोड़ लिए और, 'धन्य हो परमेश्वर, जन्हिोंने यह चाहा; महमिा तुम्हारी हो' यह कहते हुए, अपनी आत्मा प्रभु को सौंप दी।

इस प्रकार, 24 सतिंबर 1582 को, हमारे पूजनीय पतिा, रेवरेंड नकिंदर, प्रभु में शांतपिूर्वक देहांत कर गए।

ईश्वर की इच्छा से, पोलशि राजा स्टीफन बटॉरी ([6472]) ने अपनी सेनाओं को रूसी भूमि में प्रवेश कराया; शत्रु ने प्सकोव और पोर्खोव शहरों की घेराबंदी की, और उस क्षेत्र में इतने सारे पोलशि और लथिुआनयिाई लोग थे कि नगिरवासी शहर की दीवारों से बाहर नहीं जा सके। उस समय, बोरोवचिी नामक गाँव का एक कसिान, जसिका नाम जॉन था और जसि 'लंबा' उपनाम से जाना जाता था, संत का आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए उस मरुस्थल में आया जहाँ वह आदरणीय संत रहते थे। नकिंडर की कोठरी के दरवाज़े पर एक, दो, तीन बार खटखटाने पर भी जॉन को उस तपस्वी से कोई जवाब नहीं मलिा; फरि, कोठरी में प्रवेश करने पर, उसने देखा कि संत नकिंडर प्रभु के पास चले गए थे, और पूरी झोपड़ी एक असाधारण सुगंध से भर गई थी। तब जॉन ने श्रद्धापूर्वक संत के पवत्रि शरीर को उठाया और उसे हार्दकि भक्ति के साथ दफनाया; इसके बाद, संत की प्रार्थनाओं के कारण पोलशि सैनकिों की नज़रों से बचते हुए, वह पोर्खोव शहर पहुँचा और सभी नविासयिों को उस पवत्रि संत के नधिन के बारे में बताया। यह समाचार सुनते ही, पोर्खोव के नागरकि रोने और शोक मनाने लगे, क्योंकि उन्होंने ईश्वर के समक्ष ऐसा गौरवशाली मध्यस्थ और प्रार्थनाशील वकील खो दयिा था; वे संत के अंतमि संस्कार में शामलि होने के लिए बहुत इच्छुक थे, लेकनि उन्हें दुश्मन से डर था। तब डीकन पीटर ने, अपने साथी नागरकिों की हचिकचिाहट को देखकर, उनसे इन शब्दों में कहा:

[6472] स्टेफन बटॉरी 1576 से 1586 तक पोलैंड के राजा थे।

'मेरे भाइयो, जो कुछ मैं हमारे नूतन निधन को प्राप्त हुए पिता निकान्डर के विषय में कहता हूँ, उसे सुनो, क्योंकि मैंने स्वयं अपनी आँखों से इस वरिष्ठ का कठिन और तपस्वी जीवन देखा है; इस पिता के सभी गुणों का वर्णन मानव ओठों के लिए असंभव है। स्वयं आदरणीय पिता ने मुझे उनके ईश्वर के पास जाने की भविष्यवाणी की थी; उन्होंने भविष्यवाणी की थी कि उनका निधन लिथुआनियाई लोगों के आक्रमण के दौरान होगा; लेकिन डरो मत और निराश मत हो, बल्कि साहस के साथ जाओ और इस तपस्वी के सम्मानित शरीर को उचित अंतिम संस्कार दो, क्योंकि आदरणीय व्यक्ति ने स्वयं मुझसे कहा कि प्रभु ईश्वर तुम्हें तुम्हारे दुश्मनों के हाथों में नहीं सौंपेंगे, और तुम्हें कोई हानि नहीं होगी।

इन शब्दों के साथ, पीटर ने अपने साथी नागरिकों को निर्भय होकर उस मरुस्थल में जाने के लिए मना लिया, जहाँ इस ईश्वर-पुरुष ने अपने सांसारिक जीवन भर इतनी लगन से परिश्रम किया था। किसी के भी रोकने पर ध्यान दिए बिना, सभी नागरिक—सामान्य लोग और पुरोहित, पुरुष और महिलाएँ, बूढ़े और जवान—मरुभूमि में आए, उस स्थान पर जहाँ आदरणीय संत के शरीर को मिट्टी से ढक दिया गया था, और उन्होंने उन्हें सम्मानपूर्वक दफनाया।

आदरणीय निकान्डर 75 वर्ष और 8 महीने तक जीवित रहे। अपने पूरे जीवन में, उन्होंने प्रभु की निष्ठापूर्वक और कपट रहित सेवा की, और हमें एक अच्छे और ईश्वर-प्रसन्न जीवन का उदाहरण दिया; आइए हम भी उनके पदचिन्हों पर चलें और इस संत का धैर्य और विनम्रता में लगातार अनुकरण करें, ताकि वह उन सभी पर अपनी सहायता और सुरक्षा भेज सकें जो विश्वास के साथ उनसे प्रार्थना करते हैं: 'आदरणीय फादर निकिंडर, हमारे लिए ईश्वर से प्रार्थना करें'।

1585 में, इसाइया नामक एक भिक्षु, आदरणीय निकिंडर के उदाहरण का अनुसरण करने की इच्छा से, उस स्थान पर आया जहाँ ईश्वर के इस सेवक ने निवास किया था और तपस्या की थी। लंबे समय से, इसाइया पैरों की एक बीमारी से पीड़ित था और अंततः आदरणीय संत की प्रार्थनाओं के माध्यम से, वह अपनी दुर्बलता से चंगा हो गया। इसीयाह ने पूज्य निकिंदर के तपस्या के श्रम के स्थल पर एक मठ[6473] स्थापित किया और वहाँ एक बड़ी समुदाय को इकट्ठा किया। समुदाय के जोरदार अनुरोध पर, इसैयाह ने एबॉट का पद स्वीकार किया और नोवगोरोड के बिशप अलेक्जेंडर द्वारा उन्हें बिशप के रूप में अभिषिक्त किया गया। बिशप ने नए मठ का बहुत ध्यान रखा, उसे धन मुहैया कराया, और परम पवित्र ईश्वर माता की घोषणा के सम्मान में, आदरणीय निकिंडर के मकबरे के ऊपर एक चर्च बनाने का आदेश दिया।

ट्रोपारियन, स्वर 4:

हे आदरणीय पिता निकिन्डर, सुसमाचार में दिव्य स्वर सुनकर: 'मेरे पास आओ, हे सभी जो परिश्रम करते हो और बोझिल हो, और मैं तुम्हें विश्राम दूँगा', और क्रूस उठाकर, आप मसीह के अनुयायी बने: दुनिया को पीछे छोड़कर, आप मरुस्थल में रहे; उपवास और जागरण के द्वारा आपने एक स्वर्गीय वर प्राप्त किया, और आप विश्वास के साथ आपके पास आने वाले पीड़ितों की आत्माओं को चंगा करते हैं। इसलिए, हे पूजनीय, आपकी आत्मा स्वर्गदूतों के साथ आनंदित होती है।

कॉन्टाकियन, स्वर 1:

क्योंकि मसीह ने आपको, हे पूजनीय, सूर्य की एक किरण के रूप में प्रकट किया है: क्योंकि आप चमत्कारों की कृपा से रूस की भूमि में प्रकाशित होते हैं, और विश्वास के साथ आपके पास आने वालों से जुनून और दुख के अंधकार को दूर करते हैं। इसलिए हम आपके स्मरण को सम्मानित करते हैं, निकान्डर, हमारे पिता, और आपसे पुकारते हैं: आनंदित हो, रे मरुभूमिवासियों की शोभा, और हमारी भूमि की स्तुति और शक्ति।

8 अक्टूबर

२५ सितंबर (पुराना संस्करण)

[6473] घोषणा निकिंद्रोव हरमिटेज, जो अब बंद हो चुका है, पोरखोव से 20 वर्स्ट की दूरी पर स्थित है।

हमारी पूज्य माता यूफ्रोसीन का जीवन

२५ सितंबर को स्मरणोत्सव

एक समय अलेक्जेंड्रिया नगर में पाफनुटियस नाम का एक व्यक्ति रहता था। वह धनी, प्रसिद्ध और बहुत सम्मानित था; वह ईश्वर का भय मानता था, प्रभु की आज्ञाओं का पालन करता था और एक ईश्वरीय जीवन जीता था। उनकी पत्नी भी एक दयालु, धार्मिक और ईश्वर-भयभीत महिला थीं। उन्हें केवल एक बात से कष्ट था: उनके कोई संतान नहीं थी; वे इस बात से बहुत दुखी थे, क्योंकि उनकी संपत्ति को विरासत में देने के लिए कोई नहीं था, और न ही कोई ऐसा था जो उनकी मृत्यु के बाद उसका अच्छी तरह से प्रबंधन कर सके। अपने संतानहीन होने के दुख में, वे निरंतर प्रभु से प्रार्थना करते रहे कि वह उन्हें एक संतान दें; उन्होंने गरीबों को उदारतापूर्वक दान दिया, चर्चों और मठों में उदार दान किया, और इसके अलावा, उन्होंने उपवास और प्रार्थना के लिए खुद को समर्पित कर दिया, ईश्वर के घरों में गए और उनसे अपनी इच्छा पूरी करने के लिए कहा। एक दिन, पाफनुटियस एक निश्चित मठ के लिए रवाना हुआ, जिसके मठाधीश, जैसा उसने सुना था, अपने पवित्र जीवन के लिए प्रसिद्ध थे; और इस मठ को उसने एक बड़ी दान-राशि भी दी। मठाधीश के साथ बातचीत करते हुए, पाफनुटियस को उनसे सांत्वना मिली। यह महसूस करते हुए कि यह भिक्षु ईश्वर को प्रसन्न करता है, उसने अपने दुख, अर्थात् कि उसके कोई संतान नहीं थी, के बारे में मठाधीश से अपनी व्यथा कही। सिर झुकाकर, उसने मठाधीश से अपने भाइयों के साथ मिलकर ईश्वर से प्रार्थना करने का अनुरोध किया, कि प्रभु उसे एक संतान का आशीर्वाद दें। अत्यंत कृपालु ईश्वर, जो दयालुतापूर्वक उन सभी की प्रार्थनाओं को स्वीकार करते हैं जो उनसे भक्तिपूर्वक प्रार्थना करते हैं और उनका आह्वान करते हैं, ने मठाधीश की प्रार्थनाओं पर ध्यान दिया और पाफनुटियस को आशीर्वाद दिया। इसके बाद, उनकी पत्नी की बाँझपन दूर हो गया, और ईश्वर ने उन्हें एक बेटी का वरदान दिया, जो रूप में अत्यंत सुंदर थी। माता-पिता, परम आनंद से भरकर, ईश्वर का हार्दिक धन्यवाद करने लगे। उसके बपतिस्मा पर, शिशु का नाम यूफ्रोसीन[6474] रखा गया। उस समय से, पाफ़नुटियस उस मठ में अक्सर जाने लगा, सभी भिक्षुओं को दान देने लगा, और उसने मठाध्यक्ष के प्रति उनके शिक्षाप्रद उपदेशों के लिए और इस तथ्य के लिए भी बहुत प्रेम रखा कि, उनकी प्रार्थनाओं के माध्यम से, उन्हें ईश्वर से वह मिला था जो वे चाहते थे। यूफ्रोसीन के जन्म के बारह वर्ष बाद, उसकी माँ का परलोकवास हो गया; हालाँकि, पाफ़नुटियस ने पहले की तरह ही अपनी बेटी को पवित्र शास्त्रों का ज्ञान देना जारी रखा। उनमें पारंगत हो जाने के बाद, वह युवती पवित्र ग्रंथों के परिश्रमपूर्वक अध्ययन में स्वयं को समर्पित कर दी। इस बीच, उसकी बुद्धि और सुंदरता की ख्याति पूरे अलेक्जेंड्रिया में फैल गई। परिणामस्वरूप, कई कुलीन और प्रतिष्ठित नागरिकों ने उसे अपने बेटों के लिए पत्नी बनाने की इच्छा व्यक्त की, और उसकी इच्छा उसके पिता को बताने के लिए एक-दूसरे से होड़ करने लगे। हालाँकि, पाफनुटियस कहते थे:

'जैसा प्रभु की इच्छा!'

यूफ्रोसीन का हाथ माँगने वालों में एक व्यक्ति था जो अपनी कुलीनता, पद, धन और प्रसिद्धि के कारण सभी से अलग था। उसने पाफ़नुटियस से विनती की कि वह अपनी बेटी का विवाह उसके बेटे से कर दें, जिसे पाफ़नुटियस मान गए। समझौता होने के बाद, उन्होंने शादी की तारीख़ तय की।

शादी से पहले ही, पाफनुटियस अपनी बेटी को उस मठ में ले गए जहाँ उपरोक्त मठाध्यक्ष रहते थे—जिनका वह एक पिता के रूप में सम्मान करते थे—और उनसे कहा:

'हे पवित्र पिता, मैं अपनी बेटी आपके पास लाया हूँ, वही जिसे ईश्वर ने मुझे आपकी प्रार्थनाओं से प्रदान किया है; मैं आपसे विनती करता हूँ कि आप उसके लिए प्रार्थना करें, क्योंकि मैं उसे विवाह के लिए देना चाहता हूँ।'

मठाधीश ने यूफ्रोसीन को आशीर्वाद दिया और फिर पाफनुटियस से आत्मा के मोक्ष के बारे में बात करने लगे, साथ ही अपनी बेटी को पवित्रता, विनम्रता, ईश्वर के भय और सृष्टिकर्ता के प्रति प्रेम की शिक्षा दी, और उसे दान-पुण्य करने के लिए भी प्रोत्साहित किया। ये सभी शब्द उस बुद्धिमान और समझदार युवती के हृदय में गहराई से उतर गए, जिसकी आयु तब अठारह वर्ष थी। पाफनुटियस अपनी बेटी के साथ मठ के अतिथि गृह में तीन दिन रहे। इस दौरान,

---

[6474] आदरणीय यूफ्रोसीन पाँचवीं शताब्दी के मध्य में रहती थीं।

यूफ्रोसीन ने प्रतदिनि चर्च के पाठ और मंत्रोच्चारण को सुना; वह संन्यासयिों के तपस्वी कार्यों को देखकर चकति हुई और मन ही मन कहा:

'धन्य हैं ये लोग, क्योंकि वे यहाँ पृथ्वी पर भी स्वर्गदूतों की तरह रहते हैं, और आने वाले जीवन में वे स्वर्गदूतों के साथ नविास करेंगे।'

और वह उनके पवत्रि जीवन का अनुकरण करने के लिए गहराई से प्रेरति हुई। तीन दनि बीत जाने के बाद, पाफनुटयिस ने मठाधीश से कहा:

'हम शहर जाना चाहते हैं; हमें शांति से जाने दें, सम्माननीय पति।'

हालाँकि, यूफ्रोसीन मठाध्यक्ष के पैरों पर गरि पड़ी और कहा:

'मैं आपसे वनिती करती हूँ, पताजी, मेरे लिए प्रार्थना करें, कि प्रभु मेरी आत्मा को बचाएँ।'

मठाधीश ने उस पर आशीर्वाद दयिा और उसके लिए प्रभु से इस प्रकार प्रार्थना की:

'हे ईश्वर, जो प्रत्येक व्यक्ति के जन्म से पहले ही उसकी नयिति को जानते हैं, इस अपने सेवक को वह पुरस्कार और प्रतफिल प्रदान करें जो समय की शुरुआत से अब तक तुझसे प्रसन्न हुए सभी लोगों के बराबर हो।'

इसके बाद, मठाधीश को प्रणाम करके, पाफनुटयिस और उसकी बेटी शहर में चले गए। यह धर्मी व्यक्ति मठ के संन्यासयिों को इतना मान देता था कि जब भी वह रास्ते में या शहर में कसिी संन्यासी से मलिता, तो वह उसे अपने घर आमंत्रति करता, उसका आतथि्यपूर्वक सत्कार करता, और उससे अपने और अपनी बेटी के लिए ईश्वर से प्रार्थना करने का आग्रह करता।

कुछ ही समय बाद, मठ के संस्थापक की स्मृति का दनि आ गया, और मठाध्यक्ष ने मठ के परोपकारी, पाफनुटयिस को समारोह में आमंत्रति करने के लिए भाइयों में से एक को भेजा। संयोग से, जसिे भेजा गया था वह भक्षिु पाफनुटयिस को घर पर नहीं मलिा; यूफ्रोसीन ने, यह जानकर कि एक भक्षिु उनके घर आया है, उसे अंदर बुलाया और उससे पूछना शुरू कयिा कि उनके मठ में कतिने भक्षिु हैं। उसने उत्तर दयिा:

'तीन सौ बयालीस पुरुष।'

तब उसने उससे पूछा:

'यदि कोई आपके मठ में आकर आपके साथ रहने की इच्छा करे, तो क्या आपका मठाधीश उसे स्वीकार करेगा?'

इस पर भक्षिु ने उत्तर दयिा:

'बेशक, वह प्रभु के वचन को ध्यान में रखते हुए उन्हें खुशी-खुशी स्वीकार कर लेगा: "*जो कोई मेरे पास आता है, मैं उसे कभी भी बाहर नहीं नकिालूंगा*" (यूहन्ना 6:37)।'

तब उस युवती ने उससे एक और सवाल पूछा:

'क्या आप सब मलिकर गाते हैं, और क्या आप सब एक ही तरह से उपवास करते हैं?'

'हाँ, हम सभी एक साथ गाते हैं,' भक्षिु ने उत्तर दयिा, 'लेकनि हम में से प्रत्येक जतिना चाहे और जतिना कर सके, उतना उपवास करता है।'

भक्षिु से भक्षिु जीवन के बारे में सब कुछ पूछ लेने के बाद, उस युवती ने उससे कहा:

मैं भी ऐसा जीवन शुरू करना चाहती हूँ, लेकनि मुझे अपने पति की अवज्ञा करने से डर लगता है, क्योंकि वे इस व्यर्थ संसार की दौलत के मोह में अंधे होकर मुझे शादी कराना चाहते हैं।

भक्षिु ने उससे कहा:

'कसिी नश्वर प्राणी के साथ क्षणकि और अल्पकालकि मलिन की इच्छा मत करो, बल्कि स्वयं को मसीह को समर्पति कर दो: वह, सभी क्षणकि और व्यर्थ आशीर्वादों के स्थान पर, तुम्हें स्वर्ग का राज्य और स्वर्गदूतों के बीच एक स्थान प्रदान करेगा। अपने घर को गुप्त रूप से छोड़ दो और मठ में चली जाओ; अपने सांसारकि वस्त्रों को त्याग दो और संन्यासी का वेश धारण करो, ताकि तुम्हें कोई पहचान न सके।'

संत यूफ्रोसीन भक्षिु से ये शब्द सुनकर प्रसन्न हुईं और उनसे पूछा:

'तो फरि, मेरा मुंडन कौन करेगा?'

उसने उत्तर दयिा:

जब वे इस तरह एक-दूसरे से बात कर रहे थे, तब पाफनुटयिस आ गया और, काले भेष वाले भक्षिु को देखकर, उसने उससे पूछा:

जब वे इस प्रकार बातें कर रहे थे, तब पाफनुटियिस आ पहुँचा और भिक्षु को काले वस्त्रों में देखकर उससे पूछा:

'आप यहाँ क्या लाए हैं, पतिाजी?'

भिक्षु ने उत्तर दियिा:

'हमारे मठ के संस्थापक का पर्व नकिट आ रहा है, और मठाध्यक्ष आपसे आकर हमारे उत्सव में भाग लेने का आग्रह करते हैं; इसके लिए आपको ईश्वर का आशीर्वाद प्राप्त होगा।'

पाफनुटियिस खुशी-खुशी भिक्षु के साथ मठ जाने के लिए राजी हो गया और अपने साथ मठ के चर्च और भाइयों के लिए कई उपहार ले गया। उसकी अनुपस्थतिि में, उसकी बेटी, संत यूफ्रोसीन ने अपने एक वफादार सेवक को बुलाया और उससे कहा:

'प्रतष्ठिति थयिोडोसयिस के मठ में जाओ, वहाँ चर्च में प्रवेश करो, और जो पहला भिक्षु मलि उसे मेरे पास बुला लाओ।'

ईश्वर की वशिेष कृपा से, दास को एक भिक्षु मलिा जो मठ से हस्तशलि्प बेचने के लिए ले जा रहा था; उसने भिक्षु से अपने स्वामी के घर तक साथ चलने के लिए कहा, और भिक्षु मान गया। यूफ्रोसीन, सम्माननीय भिक्षु को देखकर, उनका स्वागत करने के लिए आगे आई और उनके सामने झुक गई, और उनसे अपने लिए प्रार्थना करने का अनुरोध कयिा। भिक्षु ने प्रार्थना की, उसे आशीर्वाद दयिा, और वे बैठ गए। पवत्रि कन्या ने उनसे इस प्रकार कहना शुरू कयिा:

'महाराज, मेरे पतिा एक ईसाई और ईश्वर के वफादार सेवक हैं; मेरी माता अब जीवति नहीं हैं। मेरे पतिा, जनिके पास बहुत धन-संपत्तहै, वे मेरा ववािह कराना चाहते हैं ताकि उनकी सारी संपत्तबिर्बाद न हो जाए; फरि भी मैं सांसारकि मोह-माया से अपना अपमान नहीं करना चाहती, लेकनि मैं अपने पतिा की अवज्ञा करने से डरती हूँ और इसलिए मुझे समझ नहीं आ रहा कि क्या करूँ। मैंने पूरी पछिली रात जागकर बतिाई, ईश्वर से मेरी ओर अपनी दया बरसाने का आग्रह करते हुए। और जब सुबह हुई, तो मुझे एक तपस्वी पतिा को अपने पास बुलाने की प्रबल इच्छा हुई, ताकि मैं उनसे यह सुन सकूँ कि मुझे क्या करना चाहिए। उसने कहा, 'मैं आपसे वनिती करती हूँ, पतिाजी, मुझे प्रभु का मार्ग सखिाएँ, क्योंकि मैं जानती हूँ कि आप मुझे परमेश्वर द्वारा भेजे गए हैं।'

तब वृद्ध ने उसे इस प्रकार उपदेश देना आरंभ कयिा:

'प्रभु पवत्रि सुसमाचार में कहते हैं: *"यदि कोई मेरे पास आता है और अपने पतिा और माता, अपनी पत्नी और बच्चों, अपने भाइयों और बहनों—और वास्तव में अपने प्राणों से भी अधकि प्रेम नहीं करता है—तो वह मेरा चेला नहीं हो सकता*" (लूका 14:26)। मैं तुम्हें इससे अधकि क्या कहूँ। यदि तुम देह के वरिुद्ध संघर्ष सहन कर सकती हो, तो सब कुछ पीछे छोड़ दो और इस संसार से भाग जाओ, जैसे इस्राएल फरिौन के श्रम से भागा था। और आपके पतिा की संपत्तके कई वारसि हैं: चर्च, मठ, अस्पताल, अतथिि गृह, अनाथ, वधिवाएं, यात्री, जो लोग कालकोठरयिों में बंद हैं और जो बंदी बनाए गए हैं। आपके पतिा अपनी संपत्तजिसि चाहें, बाँट सकते हैं; आप अपनी आत्मा का ध्यान रखें।

इस पर युवती ने उत्तर दियिा:

'मैं अपनी आशा ईश्वर और आपकी प्रार्थनाओं में रखती हूँ, पतिाजी, क्योंकि मैं ऊपर से मलिी सहायता से, स्वयं को ईश्वर को समर्पति करने का इरादा रखती हूँ।'

'इस इरादे में देरी मत करो, मेरी बेटी,' बुजुर्ग ने उत्तर दियिा, 'क्योंकि जो कोई भी ईश्वरीय कार्य को टालता है, वह आमतौर पर बाद में उस देरी पर पछताता है; पछताने का समय अभी है।'

संत यूफ्रोसीन ने बूढ़े से कहा:

'इसीलिए मैंने आपसे, पतिाजी, मुझसे मलिने आने को कहा था; मैं चाहती थी कि आप मेरे हृदय की इच्छा पूरी करें, और मेरे लिए प्रार्थना करने के बाद, मुझे आशीर्वाद दें और मेरा मुंडन करें।'

तब वृद्ध उठे, प्रार्थना की, और ईश्वर की कृपा से, उन्होंने यूफ्रोसीन को मठवासी जीवन के लिए दीक्षा दी, और उन पर मठवासी वस्त्र ओढ़ा दयिा। ऐसा करते हुए उन्होंने उससे कहा:

'ईश्वर, जनि्होंने अपने सभी संतों को मोक्ष प्रदान कयिा है, आपको सभी बुराइयों से बचाए।'

इसके बाद, वह आनंदति होकर और परमेश्वर की महमिा करते हुए अपने मठ के लिए रवाना हो गया। इस बीच, यूफ्रोसीन अपने मन में वचिार करने लगी:

'अगर मैं कसिी मठ में चली गई, तो मेरे पतिा मुझे वहाँ ढूंढ लेंगे, मुझे मठ छोड़ने और शादी करने के लिए मजबूर करेंगे; इसलिए, मेरे लिए पुरुषों के मठ में जाना बेहतर है, जहाँ कोई भी मुझे नहीं पहचान पाएगा।'

अपनी योजना को अंजाम देने का नश्चिय करके, वह देर रात को पुरुषों के कपड़े पहनकर, कसिी को भी बताए बनिा घर से नकिल गई, और अपने साथ केवल पचास सोने के सकि्के ले गई, और उस रात के लिए एक जगह पर छपि गई। सुबह, उसका पति शहर में आया और ईश्वर की वशिष कृपा से, सीधे चर्च चला गया। इस बीच यूफ्रोसीन उस मठ की ओर चल दी जहाँ उसके पति जाने जाते थे। मठ के द्वार पर पहुँचकर, उसने खटखटाया और द्वारपाल से कहा:

'जाओ और मठाध्यक्ष से कहो कि राजसी महल से एक eunuch[6475] has आई है और वह द्वार पर खड़ी है, जो उनसे बात करना चाहती है।'

जब मठाध्यक्ष बाहर आए, तो यूफ्रोसीन ज़मीन पर गरि पड़ी और उनके सामने झुक गई। उन्होंने उसे उठाया और रस्म के अनुसार एक प्रार्थना की, जसिके बाद वे दोनों बैठ गए। फरि उन्होंने उससे पूछना शुरू कयि:

'बेटा, तुम हमारे पास क्यों आए हो?'

यूफ्रोसीन ने उत्तर दयि:

'पतिाजी, मैं शाही महल में एक नपुंसक के रूप में सेवा करती थी और मुझे संन्यासी जीवन से गहरा लगाव हो गया, लेकनि मुझे शहर में वह नहीं मलि जसिकी मेरी आत्मा को तलाश थी। आपके मठ के संन्यासयिों के तपस्वी जीवन के बारे में जानकर, मैं आपके इस पवत्रि नविास में आई हूँ, ताकि मैं आपके साथ तपस्या कर सकूँ।'

इस पर मठाध्यक्ष ने उत्तर दयि:

'मेरी संतान, तुमने हमारे पास आकर बहुत अच्छा कयि। यदि तुम हमारे मठ में रहना चाहती हो, तो यहीं ठहरो।'

तब उन्होंने पूछा, 'उसका नाम क्या है?' यूफ्रोसीन ने उत्तर दयि कि उसका नाम इज़्मारग्ड है।

'मेरी बेटी, इस्मारैग्ड,' मठाध्यक्ष ने कहा, 'तुम जवान हो और इसलिए अकेले एक कोठरी में नहीं रह सकतीं; तुम्हें मठीय जीवन में मार्गदर्शन करने और मठीय नयिम तथा सभी रीति-रिवाजों को सखिाने के लिए एक आध्यात्मकि गुरु की आवश्यकता है।'

इस पर उस युवती ने उत्तर दयि:

'पतिाजी, जैसा आपको उचति लगे, मेरे लिए व्यवस्था कर दीजिए।'

उसी समय, उसने पचास सोने के सकि्के नकिाले, उन्हें मठाधीश को दे दिए और कहा:

'यह लीजिए, पतिाजी; बाद में, मैं शहर में बची हुई अपनी बाकी सारी संपत्ति मठ को दान कर दूँगी।'

मठाधीश ने अगपटिस नामक एक संन्यासी को बुलाया, जो एक पवत्रि जीवन वाले व्यक्ति थे, और इज़्मारग्डा को नम्निलखिति शब्दों के साथ उसके हवाले कर दयि:

'अब से यह युवक आपका आध्यात्मकि पुत्र और शष्यि रहे; उसे सद्गुणों का उपदेश दें, ताकि वह अपने गुरु से भी आगे नकिल जाए।'

घुटनों के बल प्रार्थना करने के बाद, वृद्ध अगपटि इज़्मारग्ड को अपनी कोठरी में ले गए और उन्हें मठवासी जीवन का प्रशक्षिण दयि। 'नए भक्षिु का चेहरा बहुत सुंदर था; जब वह दव्यि प्रार्थना के लिए चर्च में आया, तो शैतान ने कई भाइयों को अशुद्ध वचिारों से परेशान कयि, नए भक्षिु की सुंदरता से उनके हृदय को आहत कयि; इसलिए, भाइयों ने मठाधीश से शकिायत की, कहते हुए:

'तुमने सबसे कमजोर भक्षिुओं के लिए प्रलोभन बनने के लिए मठ में इतना सुंदर भाई क्यों लाया है?'

यह सुनकर, मठाधपिति ने इज़्मारग्ड को बुलाया और उससे कहा:

'तुम्हारी सुंदरता के कारण, भाईचारे के सबसे कमजोर सदस्य भटक रहे हैं; इसलिए, तुम्हारे लिए बेहतर है कि तुम अपनी कोठरी में अकेले रहो, खुद को मौन और प्रार्थना के लिए समर्पति करो, और चर्च में न आओ। तुम्हारे आध्यात्मकि पति तुम्हारा भोजन तुम्हारी कोठरी में ले आएंगे, ताकि तुम्हें उसे बलि्कुल भी छोड़ना न पड़े।'

यूफ्रोसीन ने उत्तर दयि:

'जैसा आप आज्ञा देते हैं, पतिाजी, वैसा ही मैं करूँगी।'

मठाधीश ने अगपयिस को इज़्मारग्ड के लिए एक एकांत कोठरी तैयार करने का आदेश दयि; अगपयिस ने मठाधीश के आदेश का पालन कयि और इज़्मारग्ड को उस कोठरी में ले गया, जहाँ उसने प्रार्थना, उपवास और जागरण में अपना

[6475] प्राचीन काल में, नपुंसक वे पुरुष होते थे जो शाही दरबारों में खजाने और शाही कोषागार के रक्षक के रूप में सेवा करते थे और, वशिष रूप से (जैसा कि दरबार में प्रथा थी), रानयिों और राजकुमारयिों के शयनकक्षों में पहरेदार के रूप में काम करते थे। अधकिांशत; नपुंसक खतना कएि हुए पुरुष होते थे। बाइज़ेंटाइन दरबार में, ख़ास का पद अत्यंत सम्मानति था।

समय बताना शुरू कर दिया, और एक शुद्ध हृदय से दिन-रात ईश्वर की सेवा करने लगा। धन्य अगपटिस उनके पराक्रम और परिश्रम को देखकर चकित रह गए और समुदाय के निर्माण के लिए उन्हें सभी के सामने बयां किया; बदले में, समुदाय ने इन पराक्रमों से शिक्षा ग्रहण की और उस ईश्वर की महिमा की, जिसने उस युवा तपस्वी को इतनी शक्ति प्रदान की थी।

इस बीच, यूफ्रोसीन के पिता, पाफ़नुटियस, घर लौटने पर, अपनी बेटी के कमरे में दौड़े और वहाँ उसे न पाकर, गहरा शोक मनाने और विलाप करने लगे; क्रोध में उन्होंने अपने नौकरों से पूछा कि यूफ्रोसीन के साथ क्या हुआ और वह कहाँ चली गई। नौकरों ने उत्तर दिया:

'हमने उसे कल शाम को ही देखा था, लेकिन आज वह हमें दिखाई नहीं दी; इसीलिए हमने सोचा कि उसके मंगेतर के पिता ने उसे अपने घर बुलाया होगा।'

पाफनुटियस ने अपने नौकरों को अपनी बेटी के मंगेतर के घर भेजा, लेकिन उन्हें भी वह वहाँ नहीं मिली। यूफ्रॉसिनी के लापता होने की खबर सुनकर मंगेतर और उसके पिता दोनों बहुत दुखी हुए; और जब वे पाफनुटियस के पास आए, तो उन्होंने उन्हें गहरे दुख में, जमीन पर लेटे और रोते हुए पाया।

"क्या किसी ने उसे बहकाया नहीं है, या उसके साथ भाग नहीं गया है?" उन्होंने उससे पूछा।

तुरंत ही यूफ्रोसीन की तलाश में अलेक्ज़ेंड्रिया भर में घुड़सवार भेजे गए; उन्होंने पड़ोसियों के घरों में, सड़कों पर, समुद्र तट पर और जहाजों पर उसकी खोज की; उन्होंने कई मठों, खेतों, रेगिस्तानों, पहाड़ों और गुफाओं की छानबीन की – हर जगह उन्होंने अपनी दुखी पिता की बेटी की तलाश की। जब उसे कहीं नहीं मिला, तो दूत दुखित होकर लौट आए। और हर कोई उसके लिए ऐसे रोया मानो वह मर गई हो। दूल्हा अपनी दुल्हन के लिए रोया, ससुर अपनी बहू के लिए शोक मनाया, और पिता अपनी बेटी के लिए कड़वे आँसू बहाए, ठीक वैसे ही जैसे एक बार याकूब ने यूसुफ के लिए किया था, और ये दुखद शब्द बोले:

हाय मेरे लिए, मेरी प्यारी संतान! हाय मेरे लिए, मेरी आँखों की रोशनी! हाय मेरे लिए, मेरी आत्मा का सहारा! किसने मेरे खजाने को चुरा लिया? किसने मेरी टहनी को मुरझा दिया? किसने मेरे दीपक को बुझा दिया? किसने मेरी आशा छीन ली? किसने मेरी बेटी का अपमान किया? किस भेड़िये ने मेरे मेमने को चीर-फाड़ डाला है? किस जगह ने उसका तेजस्वी चेहरा मुझसे छिपा लिया है? वह मेरी वंशावली को आगे बढ़ाती, मेरी वृद्धावस्था का सहारा बनती, और मेरे दुखों में सांत्वना देती। जब तक मुझे यह न पता चल जाए कि मेरी बेटी यूफ्रोसीन का क्या हुआ है, तब तक यह धरती मेरा शरीर न छिपाए!

पाफनुटियस के घर इकट्ठा हुए सभी दोस्तों और पड़ोसियों ने भी उसकी बेटी की अप्रत्याशित मृत्यु पर उसके साथ विलाप किया और जोर-जोर से रोए। अपने दुख का कोई सहारा न पाकर, पाफनुटियस उस मठ में गया जहाँ उसकी बेटी एकांत में रह रही थी, और मठाधीश के पैरों पर गिरकर कहा:

'पिताजी, ईश्वर से प्रार्थना करना बंद न करें कि वह मेरी प्रार्थनाएँ सुनें, क्योंकि मुझे नहीं पता कि मेरी बेटी का क्या हुआ है—क्या उसे किसी ने अगवा कर लिया है, या वह किसी अन्य प्रकार से मर गई है।'

ये शब्द सुनकर, आदरणीय वरिष्ठ बहुत परेशान हो गए और पूरे समुदाय को इकट्ठा करके कहा:

'हे भाइयो, अपना प्रेम दिखाओ; प्रभु से प्रार्थना करो कि वे कृपा करके हमारे मित्र और उपकारक, पाफनुटियस की पुत्री के भाग्य का हमें पता बता दें।'

पूरे एक सप्ताह तक संन्यासी उपवास और प्रार्थना करते रहे, लेकिन उन्हें कोई प्रकटवाणी नहीं मिली, जैसा कि उनकी अन्य प्रार्थनाओं के साथ हुआ था; क्योंकि यूफ्रोसीन दिन-रात ईश्वर से प्रार्थना करती थी कि वह इस सांसारिक जीवन में उसके बारे में किसी को कुछ भी प्रकट न करें, और उसकी प्रार्थनाएँ पूरे समुदाय की प्रार्थनाओं से अधिक शक्तिशाली थीं।

यूफ्रोसीन के संबंध में कोई प्रकटवाणी न मिलने पर, मठाधीश ने पफ़नुतीयस को इन शब्दों से सांत्वना देना शुरू किया:

'मेरे पुत्र, *प्रभु की अनुशासना को तुच्छ न समझ... क्योंकि प्रिभु जिसे प्रेम करते हैं, उसे अनुशासित करते हैं* (इब्रानियों 12:5, 6)। यदि प्रिभु की इच्छा के बिना एक भी पक्षी जमीन पर नहीं गिरता, तो तुम्हारी बेटी के साथ कुछ भी हो जाना तो दूर की बात है। मुझे विश्वास है कि उसने बेहतर हिस्सा चुना है; और इसीलिए हमें उसके बारे में ईश्वर से कोई प्रकटवाणी नहीं मिली है। यदि वह पाप में पड़ गई होती (भगवान न करे!), तो ईश्वर हमारे मठ के पूरे समुदाय की प्रार्थना

के महान प्रयास को अनदेखा नहीं करते, और हमें उसकी खबर दे देते; लेकिन मुझे आशा है कि इस सांसारिक जीवन में भी प्रभु आपको उसे प्रकट कर देंगे।

पफनुटियस इन शब्दों से कुछ सांत्वना पाकर ईश्वर का धन्यवाद करते हुए अपने घर लौट आया। वह हर दिन प्रभु से लगन से प्रार्थना करता और गरीबों को उदारतापूर्वक दान देता था। कुछ दिन बीत जाने के बाद, वह फिर से मठ गया और भाइयों से उनकी प्रार्थनाओं के लिए निवेदन किया। एक दिन, मठाध्यक्ष से मिलने पर, वह उनके सामने झुककर बोला:

'पिताजी, मेरे लिए प्रार्थना करें, क्योंकि मेरी बेटी के लिए मेरा दुख अभी भी कम नहीं हुआ है; मेरी आत्मा को कोई सांत्वना नहीं मिली है, मेरे दिल का घाव बढ़ता जा रहा है, और हर बीतते दिन के साथ मेरा दुख और गहरा होता जा रहा है।'

मठाधीश ने, उसकी महान दुख को देखकर, हर तरह से उसका सांत्वना दी; उसके साथ अपनी एक बातचीत में, उन्होंने इसमार्ग्ड को याद किया और कहा:

'हमारे यहाँ एक भिक्षु है जो बहुत कठोर जीवन व्यतीत करता है; वह सम्राट थियोडोसियस के महल से हमारे पास आया था[6476] , और हम सभी उसके पवित्र जीवन से चकित हैं। क्या आप उससे बात करना चाहेंगे? शायद आपको इस बातचीत से कुछ तो सांत्वना मिले, क्योंकि वह पवित्र आत्मा से परिपूर्ण है।'

– 'हाँ, मैं चाहूँगा,' पाफनुटियस ने उत्तर दिया।

तब मठाधीश, यह न जानते हुए कि इज़मार्ग्ड पाफ़्नुतियस की बेटी थी, ने अगापतिस को बुलाया और उससे कहा:

'पाफनुतीस को इज़मारग्ड के पास ले जाओ ताकि वह उससे बात कर सके।'

अगापटिस और पाफनुतियुस इज़मार्गड की कोठरी में गए; जब यूफ्रोसीन ने अपने पिता को देखा, तो वह उन्हें पहचान गई और फूट-फूट कर रो पड़ी; जबकि पाफनुटियस ने सोचा कि वह धार्मिक भावना से रो रही है; फिर भी वह उसे पहचान नहीं सका, क्योंकि उसकी कठोर तपस्या और पूरी रात की प्रार्थनाओं के कारण उसका रंग फीका पड़ गया था, और यूफ्रोसीन ने खुद ही जानबूझकर अपने चेहरे को एक हुड से ढक लिया था ताकि उसे पहचाना न जा सके। प्रार्थना करने के बाद, वे दोनों बैठ गए, और इसमराग्ड ने पफनुतीस से बातचीत शुरू की, उससे स्वर्ग के राज्य और उस अनंत महिमा के बारे में बात की जिसे कोई व्यक्ति विनम्रता, पवित्रता, पवित्रता, दान और प्रेम के माध्यम से प्राप्त कर सकता है; उसने उससे संसार को त्यागने और इस तथ्य के बारे में भी बात की कि किसी को भी अपने बच्चों से सभी चीजों के स्रष्टा, ईश्वर से अधिक प्रेम नहीं करना चाहिए; उसने प्रेरित के उन वचनों की ओर इशारा किया कि "*दुख सहनशीलता उत्पन्न करता है; सहनशीलता, चरित्र*" (रोमियों 5:3–4)। अपने पिता का महान दुख देखकर, इज़मारग्ड ने उनके प्रति सहानुभूति व्यक्त की और उन्हें सांत्वना देते हुए कहा:

'मेरा विश्वास करो: परमेश्वर तुम्हें नहीं छोड़ेंगे। क्योंकि यदि तुम्हारी बेटी विनाश के मार्ग पर होती, तो प्रभु ने यह बात तुम्हें पवित्र पिताओं की प्रार्थनाओं के द्वारा बता दी होती, जिन्होंने इसके लिए बहुत विनती की थी; नहीं, मुझे दृढ़ विश्वास है कि तुम्हारी बेटी ने उस भले शिक्षक की बात मानी है, जो सुसमाचार में कहते हैं: *'जो मुझसे अधिक अपने पिता या माता से प्रेम करता है, वह मुझ योग्य नहीं; और जो अपनी सब वस्तुओं को त्याग नहीं करता, वह मेरा चेला नहीं हो सकता* (मत्ती 10:37; लूका 14:33)। ईश्वर उसे आपको इसी जीवन में भी प्रकट कर सकते हैं। अत; शोक करना बंद करें। आप स्वयं को दुख से क्यों पीड़ा पहुँचा रहे हैं? इसके विपरीत, हर बात के लिए परमेश्वर का धन्यवाद करो और आशा न खोओ; क्योंकि जब मेरे शिक्षक अगापटिस ने मुझे मठ में आपके आगमन और आपके दुख के बारे में बताया, तो मैंने परमेश्वर से विनतीपूर्वक प्रार्थना की कि वह आपको धैर्य और साहस दे, कि वह सब कुछ आपके और आपकी बेटी के लाभ के लिए व्यवस्थित करे, और कि वह आपको सांत्वना दे। मुझे विश्वास है कि परमेश्वर, जो सभी सांत्वना का स्रोत है, आपको अंत तक दुख में रहने के लिए नहीं छोड़ेगा: भले ही जल्द नहीं, फिर भी वह आपको अपनी बेटी का भाग्य बताएगा, जिसके लिए आप इतनी गहराई से शोक मना रहे हैं।

तब यूफ्रोसीन, इस डर से कि उसके पिता उसे पहचान न लें, क्योंकि वह उनसे बहुत देर तक बात कर चुकी थी, ने पाफ़्नुतियुस से कहा:

'हे स्वामी, अब शांति से घर जाइए।'

[6476] यह, बेशक, थियोडोसियस द्वितीय (408–450) को संदर्भित करता है।

ये शब्द सुनकर, पाफनुटयिस रोया भी और प्रसन्न भी हुआ, क्योंकि उसका हृदय इसमारग्ड के प्रति स्वाभाविक प्रेम से जल रहा था, और उसे उसके साथ हुई बातचीत से बहुत लाभ हुआ था; फिर वह मठाधीश के पास गया और उससे कहा:

'हे पिता, ईश्वर ही जानता है कि मुझे इस भिक्षु से क्या लाभ मिला है, और ईश्वर की कृपा से, उसके शब्दों ने मेरे हृदय को इतनी प्रसन्नता से भर दिया है जैसे मुझे कोई प्रिय संतान मिल गई हो।'

इसके बाद, पाफनुटयिस ने सभी भिक्षुओं से अपने लिए प्रार्थना करने का अनुरोध किया और घर लौट आए। – जहाँ तक इस्मारैग्ड की बात है, वे उस मठ में अड़तीस वर्षों तक रहे, और ईश्वर को प्रसन्न करने वाला जीवन जिया; इस समय के बाद, वे गंभीर रूप से बीमार पड़ गए, जिसके बाद उन्होंने अपना प्राण प्रभु को अर्पित कर दिया। उनके निधन से पहले ही, पाफनुटयिस एक बार फिर से पूजा करने और भाइयों से मिलने के लिए मठ आए। मठाध्यक्ष के साथ अपनी सामान्य बातचीत के बाद, उन्होंने उनसे कहा:

'पिताजी, यदि संभव हो तो मुझे भाई इज़मारग्ड से मिलने की अनुमति दें, क्योंकि मैं उनसे बहुत प्रेम करता हूँ।'

मठाधीश ने अगापितुस को बुलाया और उसे पाफनुतियुस को इज़मारग्ड के पास ले जाने का निर्देश दिया। जब पाफनुतियुस उसकी कोठरी में प्रवेश किया और इज़मारग्ड को बिस्तर पर गंभीर रूप से बीमार पड़ा देखा, तो वह उसके बिस्तर पर गिर पड़ा और कड़वाहट भरे आँसुओं के साथ बोलने लगा:

'हाय मेरे भाग्य! तुम्हारे वे मीठे शब्द कहाँ गए, वे वादे कहाँ गए कि मैं अपनी खोई हुई बेटी को देखूँगा? देखो, मैं न केवल उसे नहीं देख पा रहा हूँ, बल्कि मैं तुम्हारे, मेरे सांत्वनादाता, से भी वंचित हो गया हूँ। हाय मेरे भाग्य! अब मेरी वृद्धावस्था में मेरा सांत्वनादाता कौन होगा? मैं किसके पास जाऊँगा, और मेरे दुख में मेरा सहारा कौन होगा? मैं आपसे बिछड़ने पर रोता और गहराई से शोक मनाता हूँ; अब अड़तीस साल हो गए जब मैंने अपनी बेटी को आखिरी बार देखा था और मुझे कहीं से भी उसकी कोई खबर नहीं मिली है, और अब मेरी प्यारी एमराल्ड मुझे छोड़ रही है – एमराल्ड, जिसमें मुझे इतनी बड़ी खुशी मिली थी, मानो मुझे अपनी खोई हुई बेटी मिल गई हो। और अब मेरे लिए उम्मीद करने को क्या बचा है? मुझे सांत्वना कहाँ मिल सकती है? मेरे लिए बस एक ही चीज़ बची है: अपने दुख के साथ अपनी कब्र में जाना!

जब इस्मराग्ड ने देखा कि पाफनुतयिस कितना असहनीय रूप से रो रहा था, तो उसने उससे कहा:

'तुम इतने व्यथित और इतने गहरे शोक से व्याकुल क्यों हो? क्या प्रभु का हाथ सामर्थी नहीं है? या परमेश्वर के लिए कुछ भी असंभव है? इसलिए, अपना शोक-संतap छोड़ दो। याद करो कि प्रभु ने एक बार याकूब को यूसुफ को जीवित दिखाया था, जिसके लिए वह ऐसे रोया था जैसे वह मर गया हो; वही परमेश्वर तुम्हें भी सांत्वना देगा। अब मैं तुमसे एक बात कहता हूँ: तीन दिन यहाँ रहो और मुझे मत छोड़ना।

पाफनुटयिस मठ में ही रहा, और ऐसा करते हुए उसने मन ही मन सोचा:

'क्या प्रभु शायद इस्मारैग्ड को मेरी बेटी के बारे में कुछ प्रकट करेंगे?'

आखिरकार, तीसरा दिन आ गया, और यूफ्रोसीन ने, प्रभु के पास अपने प्रस्थान के समय के बारे में एक प्रकटवाणी प्राप्त करने के बाद, अपने पिता पाफ़नुतयिस को बुलाया और उनसे कहा:

'सर्वशक्तिमान ईश्वर ने अपनी इच्छा के अनुसार मेरी नियति निर्धारित की है और मेरी इच्छा को पूरा किया है; अब मैं अपने श्रम के अंत तक पहुँच गई हूँ, मठवासी मार्ग पर न तो अपनी शक्ति से, बल्कि उस की सहायता से चली हूँ जिसने मुझे शत्रु के जालों के बीच सुरक्षित रखा; मैं नहीं चाहती कि आप अपनी बेटी के लिए और अधिक शोक करें।' मैं यूफ्रोसीन हूँ, तुम्हारी बेटी, और तुम मेरे पिता हो। मैं ही वह हूँ जिसकी तुम तलाश कर रहे हो। ईश्वर के प्रति प्रेम के कारण, मैंने आपको, मेरे पिता, अपनी पूरी विरासत और अपने मंगेतर को छोड़ दिया, और यहाँ आ गई, यह छिपाते हुए कि मैं एक महिला हूँ। अब मैं आपसे विनती करती हूँ: मुझे किसी और को अपना शरीर धोने की अनुमति न दें; मैं आपसे यह भी विनती करती हूँ कि आप इस मठ के मठाधीश से किया गया मेरा वादा पूरा करें: जब मैंने उनसे यहाँ मुझे स्वीकार करने का अनुरोध किया था, तो मैंने कहा था कि मेरे पास एक बड़ी संपत्ति है, जिसे मैं इस मठ को दान करने का इरादा रखती थी; अत; मेरा वादा पूरा करें, शेष संपत्ति इस मठ को हस्तांतरित कर दें, और मेरे लिए प्रार्थना करें।

इन शब्दों के बाद, यूफ्रोसीन ने अपनी आत्मा प्रभु को सौंप दी। यह सब सुनकर और अपनी बेटी की मृत्यु देखकर, पाफ़नुटयिस भय और महान शोक से अभिभूत होकर, ढेर हो गया और मृतक की भाँति ज़मीन पर लेट गया। जब अगपियस आए और उन्होंने देखा कि इसमराग्ड का निधन हो चुका है, और पाफनुतयिस मुश्किल से जीवित हैं, तो उन्होंने पाफनुतयिस के चेहरे पर पानी छिड़का, उन्हें जमीन से उठाया और उनसे पूछा:

'पाफनुतीयस, क्या बात है?'

इस पर उन्होंने उत्तर दिया:

'मुझे यहाँ मरने के लिए छोड़ दो, क्योंकि मैंने एक अद्भुत चमत्कार देखा है।'

तब पाफनुटियस ज़मीन से उठा और दिविंगत के मुख पर अपना सिर झुकाकर, कड़वी रुदन करते हुए कहने लगा:

'हाय मेरे प्रिय बच्चे, इस घड़ी से पहले तुमने मुझे अपना रूप क्यों नहीं दिखाया? ओह, मैं तो तुम्हारे साथ ही मर जाना चाहता था! हाय मेरे लिए कि तुमने मुझसे अपना रूप छिपाया, मेरी प्रिय बेटी! तुमने शत्रु के फंदों से कितनी अच्छी तरह बचकर, इस संसार की व्यर्थता से स्वयं को छिपाकर, अनंत जीवन में प्रवेश किया है!'

पाफनुतीस के शब्द सुनकर, अगपीतस ने इस अद्भुत रहस्य को समझ लिया; वह भय से भर गया और तुरंत जाकर मठाध्यक्ष को सूचित किया; मठाध्यक्ष बिना किसी देरी के वहाँ दौड़े, यूफ्रोसीन के पवित्र शरीर के सामने साष्टांग दंडवत प्रणाम किया और रोते हुए कहने लगे:

'यूफ्रोसीन, मसीह की वधू और पवित्र कुंवारी, अपने साथी संतों और इस मठ को न भूलना, बल्कि प्रभु यीशु मसीह से हमारे लिए प्रार्थना करना, कि वह हमें भी, अच्छे कर्मों के बाद, मोक्ष प्रदान करें और अपने संतों के साथ रहने का सौभाग्य दें।'

तब मठाधीश ने पूरे समुदाय को इकट्ठा होने का आदेश दिया ताकि उनके पवित्र शरीर को उचित सम्मान के साथ सुलाया जा सके। जब सभी भिक्षु इकट्ठा हो गए और इस अद्भुत चमत्कार को देखा, तो उन्होंने परमेश्वर की स्तुति की, जिन्होंने दुर्बल देह में अपनी महान शक्ति प्रकट की थी। भाइयों में से एक की एक आँख से दृष्टिहीन था। वह पूजनीय की अवशेषों के पास आया और आँसुओं के साथ, उनके पवित्र शरीर को चूमने लगा - और तुरंत उसकी आँख खुल गई, और उसे अपनी दृष्टि वापस मिल गई। इस चमत्कार को देखकर, पूरे समुदाय ने ईश्वर की दया की स्तुति की, उनकी पवित्र सेविका यूफ्रोसीन की महिमा की, और उनके पवित्र जीवन से प्रेरणा ली। इसके बाद, उन्होंने उन्हें पवित्र पिताओं—तपस्वियों—के विश्राम स्थल पर दफनाया, और आध्यात्मिक आनंद के साथ, उनके लिए एक स्मारक सेवा का आयोजन किया। जहाँ तक उनके पिता, पाफनुटियस का सवाल है, वे अपने घर लौट आए, उन्होंने अपनी संपत्ति चिर्चों और मठों, गरीबों और यात्रियों में बाँट दी, और शेष बड़ी राशि उस मठ की ज़रूरतों के लिए ले आए, जहाँ उन्होंने स्वयं मठवासी संन्यास का संकल्प लिया। उन्होंने अपनी बेटी की कोठरी अपने लिए माँगी और उसमें दस साल तक ईश्वर को प्रसन्न करने वाले तरीके से रहे; इस समय के बीत जाने के बाद, उनका निधन उसी चटाई पर हुआ जिस पर उनकी पुत्री, पूजनीय यूफ्रॉसीन का भी निधन हुआ था। उन्हें सम्मान के साथ अपनी पुत्री के बगल में दफनाया गया, और यह आदेश दिया गया कि उनकी स्मृति को प्रतिवर्ष परम पवित्र त्रिमूर्ति—पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा—ईश्वर, जो अपने संतों में अद्भुत हैं, की महिमा के लिए मनाया जाए। सदैव उसकी महिमा हो। आमीन।

कॉन्टाकियन, स्वर 2:

हे परम सुंदर, स्वर्गीय जीवन को प्राप्त करने की लालसा में, तुमने इस जीवन की मधुरता को सावधानीपूर्वक त्याग दिया, और हे[6477] , तुमने मनुष्यों के बीच स्वयं को नम्र बनाया: अपने वधूवर मसीह के लिए, तुमने अपनी अस्थायी सगाई की उपेक्षा नहीं की।

हमारे पूजनीय और ईश्वर-वाहक पिता सेर्गीयस, राडोनेज़ के चमत्कार-कर्ता का जीवन और चमत्कार[6478]

25 सितंबर को स्मरणोत्सव

[6477] अर्थात्, दिव्य जीवन प्राप्त करने की इच्छा से, आपने सांसारिक सुखों को त्यागने में शीघ्रता की।

[6478] संत सेरजियस के जीवन, जिसे उनके शिष्य एपिफानियस ने 15वीं शताब्दी में लिखा था, और अन्य स्रोतों के आधार पर संकलित।

हमारे पूजनीय और ईश्वर-धारी पिता सेरгий का जन्म रोस्तोव क्षेत्र में धर्मपरायण माता-पिता सिरिल और मैरी के यहाँ हुआ था[6479] । अपनी माता के गर्भ में रहते हुए ही, ईश्वर ने उन्हें अपनी सेवा के लिए चुन लिया था। उनके जन्म से ठीक पहले, उनकी माँ, अपनी प्रथा के अनुसार, रविवार को गिरजाघर में लिटुर्गी में भाग लेने गईं। पवित्र सुसमाचार के पाठ से पहले, उसकी कोख में शिशु ने इतनी ज़ोर से पुकारा कि उसकी आवाज़ चर्च में खड़े सभी लोगों को सुनाई दी; केरूबिक भजन के दौरान, शिशु ने दूसरी बार पुकारा; और जब पुरोहित ने 'पवित्र को पवित्र' का उच्चारण किया, तो शिशु की आवाज़ तीसरी बार उसकी माँ के गर्भ से सुनी गई। इसे देखकर सभी ने समझ लिया कि संसार के लिए एक महान प्रकाश और परम पवित्र त्रिमूर्ति का एक सेवक पैदा होगा। जैसे संत यूहन्ना अग्रदूत परमेश्वर की माता के गर्भ में आनन्द से उछला था (लूका 1:41), वैसे ही यह शिशु भी प्रभु के पवित्र मंदिर में उनके सामने आनन्द से उछला। इस चमत्कार पर, संत की माता भय और आतंक से ग्रस्त हो गईं; जो भी इस आवाज को सुनने वाले थे, वे भी अत्यंत चकित हुए। जब उनके जन्म का दिन आया, तो ईश्वर ने मरियम को एक पुत्र प्रदान किया, जिसका नाम उन्होंने बार्थोलोम्यू रखा। अपने जीवन के पहले ही दिनों से, शिशु ने खुद को एक कठोर तपस्वी साबित कर दिया। उसके माता-पिता और शिशु के आसपास के लोगों ने यह देखना शुरू कर दिया कि वह बुधवार और शुक्रवार को अपनी माँ का दूध नहीं पीता था; और न ही उन अन्य दिनों में जब उसकी माँ मांस खाती थीं, वह उसकी छाती को छूता था; यह देखकर, उसकी माँ ने पूरी तरह से मांस खाना छोड़ दिया।

जब वह सात वर्ष का हुआ, तो बार्थोलोम्यू के माता-पिता ने उसे पढ़ना-लिखना सीखने के लिए भेजा; उसके दो भाई, बड़े स्टीफन और छोटे पीटर, उसके साथ पढ़ते थे। वे अच्छी तरह से पढ़ाई करते थे और उन्होंने बहुत प्रगति की, जबकि बार्थोलोम्यू उनसे बहुत पीछे रह गया: उसे सीखने में कठिनाई होती थी, और यद्यपि शिक्षक ने उसके साथ बहुत लगन से काम किया, फिर भी उसने बहुत कम प्रगति की।

यह ईश्वर की कृपा से था, ताकि उस बच्चे को लिखित वचन की समझ मनुष्यों से नहीं, बल्कि ईश्वर से प्राप्त हो। बार्थोलोम्यू इस पर बहुत दुखी हुआ, और उसने गहरी प्रार्थना और आँसुओं के साथ ईश्वर से प्रार्थना की कि वह उसे लिखित वचन की समझ प्रदान करें। और प्रभु ने उस भक्तिमय लड़के के हृदय की गहराई से निकली प्रार्थना को सुना।

एक दिन उनके पिता ने बारथोलोम्यू को घोड़े लाने के लिए भेजा; बिना किसी सवाल के अपने माता-पिता की इच्छा का पालन करने का आदी, वह लड़का तुरंत निकल पड़ा; ऐसा काम उसके लिए और भी उपयुक्त था क्योंकि वह हमेशा से ही एकांत और शांति से प्यार करता था। उसका रास्ता जंगल से होकर गुज़रता था; वहाँ उसे एक संन्यासी मिला—या यूँ कहें कि, संन्यासी के भेष में ईश्वर द्वारा भेजा गया एक देवदूत—जो जंगल के बीचों-बीच खड़ा होकर प्रार्थना कर रहा था। बार्थोलोम्यू उस वृद्ध के पास गया, उसे प्रणाम किया, और तब तक प्रतीक्षा करने लगा जब तक उसने अपनी प्रार्थना समाप्त नहीं कर ली। जब उसने प्रार्थना समाप्त कर ली, तो साधु ने लड़के को आशीर्वाद दिया, उसके गाल पर चूम लिया और पूछा कि उसे क्या चाहिए।

बार्थोलोम्यू ने उत्तर दिया:

'पिताजी, मुझे पढ़ना-लिखना सिखाया जा रहा है, लेकिन मेरे शिक्षक जो कहते हैं, मैं उसमें से बहुत कम ही समझ पाता हूँ; मैं इस बात से बहुत परेशान हूँ और मुझे समझ नहीं आ रहा कि क्या करूँ।'

यह कहकर, लड़के ने साधु से उसके लिए प्रभु से प्रार्थना करने को कहा। साधु ने बार्थोलोम्यू की प्रार्थना स्वीकार कर ली। अपनी प्रार्थना समाप्त करने के बाद, उन्होंने लड़के को आशीर्वाद दिया और कहा:

'अब से, मेरे बच्चे, ईश्वर तुम्हें वह समझ देंगे जिसकी तुम्हें आवश्यकता है, ताकि तुम दूसरों को भी सिखा सको।'

इतना कहकर, वृद्ध ने एक छोटा पात्र निकाला और बार्थोलोम्यू को प्रॉस्फोरा का एक छोटा सा टुकड़ा दिया; उन्होंने उससे इसे चखने के लिए कहा:

'इसे लो, मेरे बच्चे, और खा लो; यह तुम्हें ईश्वर की कृपा के प्रतीक के रूप में और पवित्र धर्मग्रंथ की समझ के लिए दिया गया है। इस बात से निराश न हो कि यह निवाला बहुत छोटा है: अगर तुम इसका स्वाद चखोगे तो तुम्हारी खुशी बहुत बड़ी होगी।'

इसके बाद, साधु अपने रास्ते पर आगे बढ़ने ही वाले थे, लेकिन उस प्रसन्न लड़के ने साधु से विनती करनी शुरू कर दी कि वे उसके माता-पिता के घर पधारें।

[6479] संत सेरजियस के जन्म का सटीक वर्ष अज्ञात है; यह संभवतः1314 में हुआ था।

बारथोलोम्यू ने वनिती की, 'हमारे घर से न जाएँ, मेरे माता-पिता को आपके पवत्रि आशीर्वाद से वंचति न करें।'

बारथोलोम्यू के माता-पिता, जो भकि्षु का बहुत सम्मान करते थे, ने उस प्रयि अतथिकिा सम्मानपूर्वक स्वागत कयिा। उन्होंने उसे भोजन परोसना शुरू कयिा, लेकनि उन्होंने उत्तर दयिा कि पहले आध्यात्मकि भोजन ग्रहण करना चाहएि – और जब सभी प्रार्थना करने लगे, तो भकि्षु ने बारथोलोम्यू को भजन-संग्रह पढ़ने का नरि्देश दयिा।

'मुझे नहीं पता कैसे, पतिाजी,' लड़के ने उत्तर दयिा।

लेकनि भकि्षु ने भवषि्यवाणी की तरह कहा:

'अब से, प्रभु तुम्हें साक्षरता का वरदान देंगे।'

और वास्तव में, उस लड़के ने तुरंत ही धाराप्रवाह रूप से भजन-संग्रह पढ़ना शुरू कर दयिा। अपने बेटे में आई इस तरह की परविर्तन देखकर उसके माता-पिता बहुत हैरान रह गए।

जैसे ही वे वदिा हुए, वृद्ध ने संत के माता-पिता से कहा:

'तुम्हारा पुत्र ईश्वर और मनुष्यों के सामने महान होगा; वह एक दनि पवत्रि आत्मा का चुना हुआ वासस्थान और परम पवत्रि त्रमिूर्तकिा सेवक बनेगा।'

जसि प्रकार वर्षा से पर्याप्त रूप से सचिति पृथ्वी फलदायी हो जाती है, उसी प्रकार उस समय से उस पवत्रि लड़के ने बनिा कसिी कठनिाई के पुस्तकें पढ़ीं और उनमें लखिा सब कुछ समझ गया; साक्षरता उसके लिए आसान हो गई, क्योंकि *'उसका मन धर्मग्रंथों को समझने के लिए खोल दयिा गया था'* (लूका 24:45)। वह युवक आयु में बढ़ता गया, और साथ ही उसके ज्ञान और सद्गुण में भी वृद्धि हुई। कम उम्र में ही उसमें प्रार्थना के प्रतपि्रेम वकिसति हो गया और अपने शुरुआती वर्षों से ही वह ईश्वर से संवाद करने की मठिास को जानने लगा; इस कारण, वह इतनी लगन से ईश्वर के घर जाने लगा कि वह एक भी प्रार्थना सभा नहीं छोड़ता था। उसे बच्चों के खेलों में कोई रुचि नहीं थी और वह उनसे बचने का पूरा ध्यान रखता था; उसके साथयिों का हँसना-बोलना और मस्ती करना उसे पसंद नहीं था, क्योंकि वह जानता था कि *'बुरी संगत अच्छा चरति्र बगिाड़ देती है'* (1 कुरनि्थयिों 15:33)। वह दृढ़ता से याद रखता था कि *'प्रभु का भय ज्ञान की आरम्भ है'* (भजन संहति 110:10), और इसलिए वह हमेशा इस ज्ञान को प्राप्त करने का प्रयास करता था। वशिेष लगन और उत्साह के साथ, उसने दविय और पवत्रि पुस्तकों को पढ़ने के लिए खुद को समर्पति कर दयिा। यह जानते हुए कि वासनाओं पर संयम के माध्यम से ही सबसे अच्छी तरह से काबू पाया जा सकता है, उस युवा ने खुद पर एक सख्त उपवास थोप लयिा: वह बुधवार और शुक्रवार को कुछ नहीं खाता था, और अन्य दनिों में वह केवल रोटी और पानी पर ही जीवति रहता था। अपनी आत्मा को बचाने के लिए, वह अपने ही शरीर से इतना घृणा करता था। यदि उसे कोई ज़रूरतमंद मलिता, तो बार्थोलोम्यू खुशी-खुशी अपने कपड़े उनके साथ बाँट देता और उनकी सेवा करने के लिए अपनी पूरी शक्ति लगा देता। मठ में प्रवेश करने से पहले ही, वह एक संन्यासी जीवन जीता था, इसलिए हर कोई उस युवक के आत्म-अनुशासन और धार्मकिता को देखकर चकति था। शुरुआत में, अपने बेटे की सेहत को लेकर चतिति उसकी माँ ने उसे जीवन के ऐसे कठोर तरीके को छोड़ने के लिए मनाने की कोशशि की। लेकनि उस समझदार लड़के ने वनिम्रता से अपनी माँ को जवाब दयिा:

'मुझे संयम से वंचति मत करो, क्योंकि यह मेरी आत्मा के लिए अति मधुर और लाभदायक है।'

इस बुद्धमिानी भरे उत्तर से चकति होकर, उनकी माँ अब अपने बेटे के अच्छे इरादों के रास्ते में नहीं आना चाहती थीं। इस प्रकार, संयम के माध्यम से अपने शरीर को वश में रखते हुए, बार्थोलोम्यू ने अपने माता-पिता की इच्छाओं की अवहेलना नहीं की।

इस बीच, सरिलि और मैरी उपर्युक्त रोस्तोव शहर से 'राडोनेज़' नामक स्थान पर चले गए[6480] ; ऐसा इसलिए नहीं था क्योंकि वह स्थान कसिी भी चीज़ के लिए प्रसद्धि या जाना-माना था, बल्कि इसलिए क्योंकि ईश्वर की यही इच्छा थी: इसी स्थान पर उन्होंने अपने भक्त की महमिा करने का नरि्णय लयिा।

बारथोलोम्यू, जो उस समय लगभग 15 वर्ष का था, ने भी अपने माता-पिता का अनुसरण करते हुए राडोनेज़ की यात्रा की। उस समय तक उसके भाइयों की शादी हो चुकी थी। जब वह युवक 20 वर्ष का हो गया, तो उसने अपने माता-पिता से मठवासी संन्यास ग्रहण करने का आशीर्वाद देने के लिए कहना शुरू कर दयिा: वह लंबे समय से प्रभु को अपना

[6480] गोरोदशि्चे या गोरोदोख नामक गाँव अब प्राचीन राडोनेज़ की जगह पर स्थति है; यह मॉस्को और ट्रनिटिी-सर्गीय लावरा के बीच, लावरा से 12 वर्स्ट दूर है।

जीवन समर्पित करना चाहता था। यद्यपि उसके माता-पिता मठवासी जीवन को बहुत मान-सम्मान देते थे, फिर भी उन्होंने अपने बेटे से थोड़ी देर प्रतीक्षा करने के लिए कहा।

उन्होंने उससे कहा, 'बेटा, तुम जानते हो कि हम बूढ़े हैं; हमारे जीवन का अंत नज़दीक आ रहा है, और हमारी वृद्धावस्था में हमारी देखभाल करने के लिए तुमसे सिवा कोई नहीं है; थोड़ा और धैर्य रखो, हमें हमारी अंतिम संस्कार तक पहुँचा दो, और फिर कोई तुम्हें अपनी प्रिय इच्छा को पूरा करने से नहीं रोकेगा।'

बार्थोलोम्यू, एक आज्ञाकारी और स्नेही पुत्र के रूप में, ने अपने माता-पिता की इच्छाओं का पालन किया और वृद्धावस्था में उनकी देखभाल करने के लिए पूरी लगन से प्रयास किया, ताकि वह उनकी प्रार्थनाएँ और आशीर्वाद प्राप्त कर सके। उनके निधन से कुछ समय पहले, सिरिल और मैरी ने राडोनेज़ से लगभग तीन वर्स्ट की दूरी पर स्थित पोक्रोव्स्की-खोटकोव मठ में मठवासी संन्यास ग्रहण किया[6481] । बारथोलोम्यू के बड़े भाई स्टीफन, जो उस समय विधुर हो गए थे, भी यहाँ आए और मठ समुदाय में शामिल हो गए। इसके तुरंत बाद, इस पवित्र युवक के माता-पिता, एक के बाद एक, प्रभु में शांतिपूर्वक निधन कर गए और इस मठ में दफनाए गए। अपने माता-पिता की मृत्यु के बाद, भाइयों ने यहाँ चालीस दिन बिताए, और ईश्वर के उन सेवकों की आत्मा की शांति के लिए प्रभु से भक्तिपूर्वक प्रार्थना की जो हाल ही में परलोक सिधार गए थे। सिरिल और मारिया ने अपनी सारी संपत्ति बार्थोलोम्यू को दे दी। अपने माता-पिता के निधन को देखकर, आदरणीय संत ने अपने मन में विचार किया: 'मैं भी नश्वर हूँ, और मैं भी मर जाऊँगा, ठीक वैसे ही जैसे मेरे माता-पिता मर गए।' इस जीवन की क्षणभंगुरता पर इस प्रकार मनन करते हुए, समझदार युवक ने अपने माता-पिता की सारी संपत्ति बाँट दी, अपने लिए कुछ भी नहीं रखा ; उसने अपने भरण-पोषण के लिए भी कुछ नहीं रखा, क्योंकि वह ईश्वर पर भरोसा रखता था, *'जो भूखों को भोजन देता है'* (भजन संहिता 145:7)।

[6482]एक तपस्वी के रूप में रहने के इच्छुक, बार्थोलोम्यू अपने भाई स्टीफन के साथ एकांत जीवन के लिए एक उपयुक्त स्थान की तलाश में निकल पड़े। भाई लंबे समय तक आसपास के जंगलों में भटकते रहे, जब तक कि वे उस स्थान पर नहीं पहुँचे जहाँ अब परम पवित्र त्रिमूर्ति का मठ स्थित है, जो आदरणीय सेरजियस के नाम के लिए बहुत प्रसिद्ध है। उस समय, यह स्थान घने, आदमि जंगल से ढका हुआ था, जो मानव हाथों द्वारा अछूता था; इस जंगल से होकर कोई रास्ता नहीं गुजरता था, इसके भीतर कोई आवास नहीं था, और केवल जंगली जानवर और पक्षी ही वहाँ रहते थे। भाइयों ने परमेश्वर से भक्तिपूर्वक प्रार्थना की, अपने भविष्य के निवास स्थान पर उनकी कृपा की कामना की, और अपनी किस्मत उनकी पवित्र इच्छा के हवाले कर दी। एक झोपड़ी बनाने के बाद, उन्होंने खुद को तपस्या के लिए लगन से समर्पित कर दिया और परमेश्वर से प्रार्थना करने लगे। उन्होंने एक छोटा सा चर्च भी बनाया और, आपसी सहमति से, इसे परम पवित्र त्रिमूर्ति के नाम पर समर्पित करने का फैसला किया; इस उद्देश्य के लिए, वे मास्को गए और मेट्रोपॉलिटिन थियोग्नोस्टुस से चर्च के अभिषेक के लिए अपनी कृपा प्रदान करने का अनुरोध किया। संत ने उन्हें स्नेहपूर्वक स्वीकार किया और चर्च का अभिषेक करने के लिए उनके साथ पुरोहितों को भेजा। इस प्रकार, पवित्र त्रिमूर्ति मठ की नींव इतने विनम्र तरीके से रखी गई।

अब बारथोलोम्यू ने लगन और अटूट उत्साह के साथ खुद को आध्यात्मिक तपस्या के लिए समर्पित कर दिया: जब उस युवा तपस्वी ने देखा कि उसकी प्रिय इच्छा पूरी हो गई है तो वह बहुत प्रसन्न हुआ।

हालांकि, उनके बड़े भाई स्टीफन ने, इतने सुनसान स्थान पर जीवन को एक बोझ समझते हुए, बारथोलोम्यू को छोड़ दिया, मॉस्को के एपिफेनी मठ में चले गए, और वहाँ अलेक्सियस के करीबी दोस्त बन गए, जो बाद में मॉस्को के मेट्रोपॉलिटिन बने।

पूर्ण एकांत में रहकर, बार्थोलोम्यू ने भिक्षु जीवन की तैयारी में और भी अधिक मन लगा दिया; केवल तब उसने भिक्षु संन्यास ग्रहण करने का निर्णय लिया, जब वह अपने श्रम और तपस्या के प्रयासों में दृढ़ हो गया था और उसने स्वयं को भिक्षु नियमों का सख्ती से पालन करने के लिए प्रशिक्षित कर लिया था।

उस समय, मिट्रोफान नामक एक मठाधीश उनके पास आए; उन्होंने ही धन्य बार्थोलोम्यू को उनके जीवन के तेइसवें वर्ष में मठवासी संप्रदाय में दीक्षा दी। दीक्षा संस्कार का अनुष्ठान पवित्र शहीदों सर्जियस और बक्कस के पर्व के दिन किया गया था, और बार्थोलोम्यू को सर्जियस नाम दिया गया। शिरच्छेदन के बाद, मित्रोफ़ान ने पवित्र

[6481] उस समय, इस मठ के दो भाग थे – एक भिक्षुओं के लिए और दूसरा भिक्षुणियों के लिए।

[6482] थियोग्नॉस्ट 1328 से 1353 तक मेट्रोपॉलिटिन थे।

त्रमिूर्तकि चर्च में दैवीय धर्मवधिकिा अनुष्ठान कयिा और नए भक्षिु को पवत्रि सहभाग दयिा; उसी क्षण, चर्च एक असाधारण सुगंध से भर गया, जो चर्च की दीवारों से भी परे फैल गया। सात दनिों तक, शरिच्छेदन कराए गए नए भक्षिु चर्च से बाहर नहीं नकिले। हर दनि, मfrpoफ़ान लटिर्जी का अनुष्ठान करते थे और उन्हें प्रभु का पवत्रि शरीर और रक्त प्रदान करते थे। इस पूरे समय के दौरान, सर्गयिस का एकमात्र भोजन मfrpoफ़ान द्वारा उन्हें प्रतदिनि दयिा जाने वाला प्रॉस्फोरा था। सर्गेई ने अपना सारा समय ईश्वर की प्रार्थना और चतिन में बतिाया, अपने शुद्ध हृदय की गहराई से लगातार ईश्वर को पुकारते हुए, प्रभु के महान नाम की महमिा करते हुए, और दाऊद के भजन तथा आध्यात्मकि भजन गाते हुए: वह पूरी तरह से आनंद से भर गया था, और उसकी आत्मा दैवीय अग्नि और धार्मकि उत्साह से जल रही थी। सर्गेई के साथ कुछ दनि बतिाने के बाद, मfrpoफान ने उससे कहा:

'मेरे पुत्र, मैं इस स्थान को छोड़ रहा हूँ और तुम्हें ईश्वर के हाथों में सौंपता हूँ; प्रभु तुम्हारे मध्यस्थ और रक्षक हों।'

और, भवषि्य की भवषि्यवाणी करते हुए, उन्होंने भवषि्यवाणी की:

'इसी स्थान पर, ईश्वर एक महान और गौरवशाली मठ स्थापति करेंगे, जहाँ उनके महान और भव्य नाम का महमिामंडन होगा और सद्गुण चमकेगा।'

एक प्रार्थना करने और मठवासी जीवन पर कुछ नर्दिेश देने के बाद, मfrpoफ़ान वदिा हो गए। संत सर्जयिस, उस स्थान पर अकेले रहकर, तपस्या में लगन से जुट गए, और उपवास, जागना और अनेक कठोर परशि्रमों के द्वारा अपने शरीर को वश में कयिा; और कठोर सर्दयिों के दौरान, जब पाला पड़ने से जमीन दरारें छोड़ देती थी, तब उन्होंने केवल एक वस्त्र पहनकर ठंड को सहन कयिा। मरुभूमि में अपने एकांत के आरंभ में उन्होंने राक्षसों से बहुत सी कष्टप्रद परीक्षाओं और प्रलोभनों को सहा। ये अदृश्य शत्रु उस संन्यासी पर क्रोध से प्रचंड रूप से टूटे; उसकी तपस्या को सहन न कर पाकर, उन्होंने संत को उस स्थान को छोड़ने के लिए डराने का प्रयास कयिा। वे कभी खुद को जानवरों में तो कभी साँपों में बदल लेते थे। हालाँकि, सर्जयिस ने प्रार्थना से उन्हें भगा दयिा: प्रभु का नाम लेकर, उसने राक्षसों के भ्रम को इस तरह चकनाचूर कर दयिा जैसे वे मकड़ी का नाजुक जाला हों। एक रात, राक्षस, मानो एक पूरी सेना की तरह, धमकी देते हुए उसके पास आए और भयानक क्रोध से चल्लिाए:

'इस जगह को छोड़ दो, इसे छोड़ दो, नहीं तो तुम एक भयानक मृत्यु से मारे जाओगे!'

जब राक्षसों ने ये शब्द बोले, तो उनके मुँह से आग की लपटें नकिलने लगीं। हालाँकि, पूजनीय पति, प्रार्थना से लैस, ने शत्रु की शक्ति को पीछे धकेल दयिा और, ईश्वर की स्तुति करते हुए, बनिा कसिी भय के वहाँ रहे।

एक रात, जब तपस्वी अपने नयिम पढ़ रहे थे, तो जंगल से अचानक हलचल मची; राक्षसों की भीड़ ने एक बार फरि से कोठरी को घेर लयिा और पूजनीय सेरजयिस को धमकयिाँ देते हुए चल्लिाने लगे:

'यहाँ से नकिल जाओ! तुम इस सुदूर जंगल में क्यों आए हो? तुम क्या ढूंढ रहे हो? यहाँ और ज्यादा समय जीने की उम्मीद मत करो; तुम खुद देख सकते हो - यह जगह सुनसान और पार करना असंभव है! क्या तुम्हें भूख से मरने या डाकुओं के हाथों मारे जाने का डर नहीं लगता?'

ऐसे शब्दों से राक्षसों ने पूजनीय पतिाजी को डराने की कोशशि की, लेकनि उनकी सारी कोशशिें व्यर्थ गईं: संत ने प्रभु से प्रार्थना की, और तुरंत राक्षसों का झुंड गायब हो गया।

इन दृश्यों के बाद, तपस्वी के लिए जंगली जानवरों का दखिना इतना भयानक नहीं रहा; भूखे भेड़यिों के झुंड, जो संन्यासी को चीर-फाड़ डालने के लिए तैयार थे, उसकी एकांत कुटयिा के पास से दौड़ते हुए गुजर जाते थे, और भालू भी अंदर आ जाते थे। लेकनि प्रार्थना की शक्ति ने यहाँ भी इस तपस्वी को बचाया। एक दनि, पूजनीय सेरजयिस ने अपनी कुटयिा के सामने एक भालू देखा; भालू को बहुत भूखा देखकर, उन्होंने उस पर दया की, उसे रोटी का एक टुकड़ा लाकर एक पेड़ के ठूंठ पर रख दयिा। तब से, भालू अक्सर कुटयिा में आने लगा, अपने नयिमति भक्षिा की प्रतीक्षा करता और संत की ओर वनिम्रता से देखता; आदरणीय सेरजयिस अपना भोजन उसके साथ बाँटते, अक्सर अपना आखरिी नविाला भी उसे दे देते। और वह जंगली जानवर इतना पालतू हो गया कि वह संत की पुकार पर भी आ जाता था।

इस प्रकार प्रभु ने अपने सेवक को रेगस्तिान में नहीं छोड़ा: वे उसकी सभी दुखों और परीक्षाओं में उसके साथ थे, उसकी मदद करते हुए, उसे प्रोत्साहति करते हुए और अपने परशि्रमी और वफादार सेवक को मजबूत करते हुए।

इस बीच, पूजनीय पति की ख्याति दूर-दूर तक फैलने लगी। कुछ लोग उनके कठोर तप, लगन और अन्य कारनामों के बारे में बात करते थे; अन्य उनकी सादगी और द्वेष की कमी से चकति थे; और कुछ ने दुष्ट आत्माओं पर उनकी शक्ति

का वर्णन किया - और सभी उनकी विनम्रता और हृदय की पवित्रता से प्रभावित थे। परिणामस्वरूप, पड़ोसी कस्बों और गांवों से कई लोग रेवरेंड के पास आने लगे। कुछ उनके उपदेश चाहते थे; अन्य उनकी आत्मा-उद्धारक बातचीत में भाग लेना चाहते थे। हर किसी को उनके पास से अच्छी सलाह मिली; हर कोई सांत्वना और आश्वासन लेकर लौटा; हर किसी का मन हल्का हो गया: यही प्रभाव था उन कोमल और अनुग्रह-पूर्ण शब्दों का, जिनसे सर्जियस उन सभी का स्वागत करते थे जो उनसे सलाह या धार्मिक शिक्षा के लिए आते थे। रेवरेंड फादर ने सभी का प्रेम से स्वागत किया; कुछ ने तो उनके साथ रहने की अनुमति भी मांगी, लेकिन संत ने उन्हें मठ जीवन की कठिनाइयों का हवाला देते हुए ऐसा करने से मना कर दिया।

'ये स्थान,' पूज्य पिताजी ने कहा, 'उजाड़ और जंगली हैं; यहाँ हमें कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा।'

संत के प्रति गहरे सम्मान की भावना से ओत-प्रोत, इन आगंतुकों ने केवल एक ही बात माँगी: कि सेरजियस उन्हें यहाँ बसाने की अनुमति दें। उनके दृढ़ संकल्प और ईश्वर को समर्पित होने के अटूट संकल्प को देखकर, पूजनीय पिता के पास उनकी मांगों को मानने के अलावा कोई चारा नहीं था। शीघ्र ही, पूज्य पिताजी के मार्गदर्शन में, बारह पुरुषों का एक समूह इकट्ठा हो गया, और यह संख्या लंबे समय तक अपरिवर्तित रही: यदि कोई भाई निधन कर जाता, तो कोई दूसरा उसकी जगह ले लेता, इसलिए कई लोगों ने इस संख्या में एक संयोग देखा: पूज्य पिताजी के शिष्यों की संख्या हमारे प्रभु यीशु मसीह के शिष्यों की संख्या के बराबर थी; जबकि अन्य लोग इसकी तुलना इस्राएल के बारह कुल के संख्या से करते थे। जो लोग आए थे उन्होंने बारह कोठरियाँ बनाईं। सेरजियस ने भाइयों के साथ मिलकर उन कोठरियों को लकड़ी की बाड़ से घेर दिया। इस प्रकार मठ का निर्माण हुआ, जो ईश्वर की कृपा से आज भी मौजूद है।

एकांतवासियों का तपस्वी जीवन शांति और सुकून से बीतता था; वे हर दिन अपनी छोटी सी चर्च में इकट्ठा होते और वहाँ प्रभु से भक्तिपूर्वक प्रार्थना करते थे; दिन में सात बार चर्च अपने छत के नीचे भिक्षुओं का स्वागत करता था: वे वहाँ मैटिन्स, तीसरी, छठी और नौवीं घंटा, वेस्पर्स और कॉम्पलाइन का अनुष्ठान करते थे, जबकि दैवीय धर्मविधि के अनुष्ठान के लिए वे निकटतम गांवों से एक पुरोहित को आमंत्रित करते थे।

भाइयों के सर्गियस के पास आने के एक साल बाद, उपर्युक्त पुरोहित-भिक्षु मित्रofान, जिसने पूजनीय सर्गियस पर मुंडन संस्कार किया था, ने नव-स्थापित मठ में निवास कर लिया; भाइयों ने उनका हर्षोल्लास के साथ स्वागत किया और सभी ने सर्वसम्मति से उन्हें मठाधीश चुना। भिक्षुओं ने इस बात पर प्रसन्नता व्यक्त की कि अब पहले की तुलना में बहुत अधिक बार लिटिर्जी का अनुष्ठान करना संभव था। लेकिन मीट्रोफान ने जल्द ही अपना प्राण प्रभु को अर्पित कर दिया। तब भाइयों ने परम पूज्य से याचना की कि वे पुरोहित का पद ग्रहण करें और उनके मठाध्यक्ष के रूप में सेवा करें। सर्गेई ने यह अस्वीकार कर दिया: वह प्रभु का अनुकरण करना चाहते थे और सभी के सेवक बनना चाहते थे; उन्होंने स्वयं कई कोठरियाँ बनाईं, एक कुआँ खोदा, पानी लाए और उसे प्रत्येक भाई की कोठरी के बाहर रख दिया, लकड़ी काटी, रोटी पकाई, कपड़े सिलें, भोजन बनाया और विनम्रतापूर्वक अन्य कार्य किए। सर्गेयस अपना खाली समय प्रार्थना और उपवास में लगाते थे, और केवल रोटी और पानी पर ही जीवन यापन करते थे, वह भी बहुत कम मात्रा में; वह हर रात प्रार्थना और जागरण में बिताते थे, और केवल थोड़ी देर के लिए ही सोते थे। सभी को बहुत आश्चर्य हुआ कि इतना कठोर जीवन न केवल तपस्वी के स्वास्थ्य को कमजोर नहीं कर रहा था, बल्कि उसके शरीर को मजबूत करता हुआ और उसे नए और भी बड़े कारनामों के लिए शक्ति प्रदान करता हुआ प्रतीत हो रहा था। अपनी संयम, विनम्रता और धार्मिक जीवन के माध्यम से, पूजनीय सेरजियस ने पूरे समुदाय के लिए एक उदाहरण स्थापित किया। तपस्वी इस 'मनुष्य रूपी देवदूत' को विस्मय से निहारते थे और उसकी नकल करने के लिए जी-तोड़ प्रयास करते थे; ठीक उसी तरह जैसे वह करते थे, उन्होंने खुद को उपवास, प्रार्थना और निरंतर परिश्रम के लिए समर्पित कर दिया: कभी-कभी कपड़े सिलना, कभी-कभी किताबें लिखना, कभी-कभी अपने छोटे-छोटे सब्जी के बगीचों की देखभाल करना, और इसी तरह के अन्य कार्य करना। मठ में पूर्ण समानता थी, लेकिन आदरणीय सभी से ऊपर थे: वे इस मठ के सबसे प्रमुख तपस्वी थे, या यूँ कहें कि प्रथम और अंतिम, क्योंकि उनके समय में और बाद में कई लोगों ने यहाँ परिश्रम किया, लेकिन कोई भी उनसे तुलना नहीं कर सका: वे तारों के बीच चंद्रमा की तरह चमकते थे। उनके तपस्वी जीवन की ख्याति बढ़ती, जड़ें जमाती और फैलती रही: उनके भाई स्टीफन ने अपना बारह वर्षीय पुत्र जॉन उनके पास लाया; लड़का, सर्जियस के पवित्र जीवन के बारे में सुनकर, उनके पदचिन्हों पर चलने की प्रबल इच्छा से भर गया; उसने मठवासी संन्यास की शपथ ली और उसका नाम थियोडोर रखा गया; थियोडोर इस मठ में लगभग 22 वर्षों तक रहा और उसने खुद को आइकन चित्रकला (चित्रों की पेंटिंग) को समर्पित कर दिया।

पहले साथी सेरजियिस के पास आए हुए दस साल से अधकि समय बीत चुका था, और हर बीतते दनि के साथ एक मठाधीश और एक पुरोहति की आवश्यकता अधकि तीव्रता से महसूस की जाने लगी। मठ में पुरोहतिों को आमंत्रति करना हमेशा संभव नहीं था, और इसके अलावा, एक ऐसे नेता की आवश्यकता थी जसिे मठाधीश का अधकिार प्राप्त हो। इस मठ के संस्थापक से अधकि योग्य कोई और इस पद को संभालने के लिए नहीं था, लेकनि आदरणीय सेरजियिस को मठाध्यक्ष का पद डरावना लगता था: वह मठ का मुखयिा नहीं, बल्कि अपने स्वयं के परश्रिम से स्थापति मठ में सबसे वनिम्र भक्षिु बनना चाहते थे। अंत में, संन्यासी एकत्रति हुए, आदरणीय सेरजियिस के पास गए और कहा:

– पतिाजी, हम एक मठाध्यक्ष के बनिा नहीं रह सकते; हम चाहते हैं कि आप हमारे मार्गदर्शक और संरक्षक बनें; हम चाहते हैं कि हम पश्चाताप के साथ आपके पास आएँ और अपने सभी वचिारों को आपके सामने खोलकर, हर दनि आपसे अपने पापों की क्षमा प्राप्त करें। हमारे लिए पवत्रि धर्मवधि का अनुष्ठान करें, ताकि हम आपके सम्मानति हाथों से दैवीय रहस्यों में भाग ले सकें।

सर्गीयस ने दृढ़तापूर्वक और वसि्तार से इनकार कयिा:

उन्होंने कहा, 'मेरे भाइयो, मैंने कभी मठाध्यक्ष बनने का वचिार भी नहीं कयिा; मेरी आत्मा केवल एक ही बात चाहती है—कि मैं एक साधारण भक्षिु के रूप में अपना जीवन समाप्त करूँ। तो मुझे मजबूर न करें। आइए हम यह सब ईश्वर पर छोड़ दें; आइए वह स्वयं हमें अपनी इच्छा प्रकट करें, और फरि हम देखेंगे कि हमें क्या करना है।'

लेकनि भक्षिुओं ने रेवरेंड फादर से उनकी इच्छा पूरी करने के लिए वनिम्रतापूर्वक नविेदन करना जारी रखा, यह कहते हुए:

'यदि आप हमारी आत्माओं की देखभाल नहीं करना चाहते और हमारे चरवाहे नहीं बनना चाहते, तो हम सभी को यह स्थान छोड़ने और अपने द्वारा कए गए व्रत को तोड़ने के लिए मजबूर होना पड़ेगा; तब हमें बनिा चरवाहे के भेड़ों की तरह भटकना पड़ेगा।'

बहुत समय तक भक्षिुओं ने मनाने, वनिती करने और यहाँ तक कि ज़िद करने का सलिसलिा जारी रखा। आखरिकार, उनकी वनितयिों से भावुक होकर और उन्हें मना कर, संत दो बुजुर्गों के साथ पेरयिास्लाव-ज़ालेस्की[6483] के लिए वोलनि के बशिप अथानासयिस से मलिने चल पड़े, क्योंकि संत अलेक्सयिस मेट्रोपॉलटिन के कॉन्स्टेंटनिोपल प्रस्थान के बाद, वही मेट्रोपोलसि के मामलों का प्रबंधन कर रहे थे। संत ने उस तपस्वी का गर्मजोशी से स्वागत कयिा, जसिके बारे में उसे बहुत पहले से ही अफवाहें मलि चुकी थीं। उसे चूमने के बाद, उन्होंने उसके साथ आत्मा के उद्धार के बारे में लंबी बात की। उनकी बातचीत के अंत में, परम पूजनीय सर्गयिस ने वनिम्रता से अथानासयिस के सामने झुककर उनसे अपने मठ के लिए एक मठाधीश नयिुक्त करने का अनुरोध कयिा। इस अनुरोध पर, संत ने उत्तर दयिा:

'अब से, जीवन-दायक त्रमिूर्ति के नए मठ में उन भाइयों के लिए एक पतिा और मठाधीश बनो, जन्हिें तुमने इकट्ठा कयिा है!'

इस प्रकार उन्होंने सबसे पहले आदरणीय सेरजियिस को एक हायरोडीकन, फरि एक हायरोमोंक के रूप में अभषिक्ति कयिा; परम श्रद्धा, भक्ति और गहरे भाव के साथ, सेरजियिस ने अपनी पहली लटिर्जी का अनुष्ठान कयिा, जसिके बाद उन्हें मठाध्यक्ष के रूप में स्थापति कयिा गया। अथेनासयिस ने नव-स्थापति मठाध्यक्ष से लंबी बात की और उनसे कहा:

'मेरे पुत्र, अब जब तुमने पुरोहतित्व का महान पद प्राप्त कर लयिा है, तो जान लो कि महान प्रेरति की आज्ञा के अनुसार तुम्हारे लिए यह उचति है: *'हमें जो बलवन्त हैं, उन्हें चाहिए कि हम नर्बिलताओं को सहें, और न कि अपने को प्रसन्न करें'* (रोमयिों 15:1); उनके वचनों को याद रखो: *'एक दूसरे के बोझ उठाओ, और इस प्रकार मसीह की व्यवस्था को पूरा करो'* (गलातयिों 6:2)।

इसके बाद, संत अथेनासयिस ने पूजनीय पतिा को चूमकर और आशीर्वाद देकर, उन्हें परम पवत्रि त्रमिूर्ति के मठ के लिए शांतपिूर्वक वदिा कयिा। संन्यासयिों ने अपने पहले मठाध्यक्ष का बड़े आनंद के साथ स्वागत कयिा; वे अपने गुरु और पतिा से मलिने बाहर नकिले और पुत्रवत प्रेम से उनके सामने नतमस्तक हुए। मठाध्यक्ष भी अपने आध्यात्मकि बच्चों को देखकर प्रसन्न हुए। चर्च में प्रवेश करने पर, उन्होंने परमेश्वर से प्रार्थना की और नविेदन कयिा कि ईश्वर उन पर आशीर्वाद करें और उनकी नई और कठनि सेवा में सर्वशक्तमिान सहायता भेजें। प्रार्थना करने के बाद, पूज्य

[6483] पेरयिास्लाव-ज़ालेस्की अब व्लादमिीर गवर्नरेट का एक जलिा शहर है।

पिता ने भाइयों को उपदेश देते हुए संबोधित किया, उन्होंने भिक्षुओं से उनके तपस्या के प्रयासों में ढिलाई न करने का आग्रह किया, उनसे समर्थन मांगा, और पहली बार उन पर अपना मठाधीश का आशीर्वाद प्रदान किया। उनका उपदेश सरल और संक्षिप्त था, फिर भी अपनी स्पष्टता और प्रभावशीलता के कारण यह लोगों के दिलों में हमेशा के लिए बस गया। हालाँकि, रेवरेंड फादर ने अपने शब्दों से काम करने की तुलना में अपने जीवन के उदाहरण से सभी को प्रेरित किया। मठाधीश बनने के बाद, उन्होंने न केवल अपनी पूर्व की कठोरता को नहीं बदला, बल्कि उन्होंने सभी मठवासी नियमों का पालन और भी अधिक उत्साह से करना शुरू कर दिया; उन्होंने उद्धारकर्ता के इन शब्दों को हमेशा अपने हृदय में रखा: *'तुम में जो पहिला होना चाहे, वह सबका सेवक बने।'* (मरकुस 10:44)। वह हर दिन दैवीय पूजा का अनुष्ठान करते थे, और हमेशा स्वयं प्रॉस्फोरा तैयार करते थे; वह उनके लिए गेहूं अपने हाथों से पीसते थे और हर तरह के अन्य कार्य करते थे। आदरणीय संत का सबसे पसंदीदा कार्य प्रॉस्फोरा बनाना था; वे इस काम को करने के लिए किसी और को अनुमति नहीं देते थे, भले ही कई भाइयों ने इसे स्वयं करने की इच्छा व्यक्त की हो। वे चर्च में सबसे पहले पहुँचते थे, जहाँ वे सीधे खड़े रहते, खुद को दीवार से टिकाने या बैठने की अनुमति कभी नहीं देते थे; वे ईश्वर के घर से निकलने वाले अंतिम व्यक्ति होते थे; वे अपने भाइयों को अथक और प्रेमपूर्वक उपदेश देते थे, उन्हें ईश्वर के महान तपस्वियों के पदचिह्नों पर चलने के लिए प्रेरित करते थे, जिनके जीवन के बारे में वे अक्सर अपने आध्यात्मिक बच्चों को सुनाते थे। इस प्रकार वे अपने शब्दों से अपने झुंड का उत्साहपूर्वक पालन करते थे, उन्हें मोक्ष के मार्ग पर मार्गदर्शन करते थे और प्रार्थना के माध्यम से मन के भेड़ियों को भगा देते थे।

कुछ समय बीत जाने के बाद, दुष्टात्माएं, संत के पुण्य जीवन को सहन न कर सकीं, और एक बार फिर से उन पर आक्रमण करने लगीं। वे खुद को साँपों में बदलकर इतनी बड़ी संख्या में उनकी कोठरी में रेंगकर आ गए कि उन्होंने पूरा फर्श ढक लिया। तब धन्य व्यक्ति ने प्रभु की ओर प्रार्थना में मुड़कर, आँसुओं के साथ उनसे इस दानवी यातना से मुक्ति की याचना की, और तुरंत ही दुष्टात्मा धुएँ की तरह गायब हो गए। उस समय से, ईश्वर ने अपने सेवक को अशुद्ध आत्माओं पर इतनी शक्ति प्रदान की कि वे उस पूजनीय व्यक्ति के पास आने की हिम्मत भी नहीं करते थे।

लंबे समय तक, मठ में बारह भिक्षु थे। लेकिन फिर स्मोलेंस्क से सिमियन नामक एक आर्चिमैंड्राइट आए। एक प्रमुख पद का त्याग कर, सिमियन ने गहरी विनम्रता की भावना से, पूज्य पिता से एक साधारण भिक्षु के रूप में उन्हें स्वीकार करने का अनुरोध किया। सर्जियस इस अनुरोध से गहराई से प्रभावित हुए और उन्होंने नए आगंतुक का स्नेहपूर्वक स्वागत किया। आर्किमंड्राइट सिमियन अपने साथ बहुत सारी संपत्ति लाए और उसे पूजनीय पिता को सौंप दिया ताकि संत एक बड़ा चर्च बना सकें। सिमियन के दान से, पूजनीय पिता ने ईश्वर की मदद से, जल्द ही एक नया चर्च बनाया, मठ का विस्तार किया और अपने भाइयों के साथ मिलकर दिन-रात ईश्वर की महिमा की।

उस समय से, इस गौरवशाली तपस्वी के मार्गदर्शन में अपने आत्मा को बचाने के लिए कई लोग पूजनीय सेरजियस के पास इकट्ठा होने लगे; पवित्र मठाधीश ने प्रेम से आने वाले सभी का स्वागत किया, लेकिन, मठवासी जीवन की कठिनाइयों को अनुभव से जानते हुए, उन्होंने उन्हें तुरंत दीक्षा नहीं दी। आमतौर पर, वह आदेश देते थे कि नए आए व्यक्ति को काले कपड़े की लंबी चोगा पहनाई जाए और उसे अन्य भिक्षुओं के साथ किसी प्रकार की सेवा करने का निर्देश देते थे। वह ऐसा इसलिए करते थे ताकि आगंतुक संपूर्ण मठवासी नियमों से परिचित हो सके; एक लंबे परीक्षण काल के बाद ही परम पूज्य सेरजियस आगंतुक के सिर पर मठवासी चोगा पहनाकर उसे एक काउल (मठवासी टोपी) देते थे।

इतनी गहन परीक्षा के बाद संतों ने भिक्षुओं को स्वीकार कर लिया, फिर वे उनके दैनिक जीवन का ध्यान रखते थे। इस प्रकार, आदरणीय ने भिक्षुओं को संध्या के बाद अपनी कोठरियों से बाहर निकलने या एक-दूसरे से बात करने से सख्त मनाही कर दी थी; उनमें से प्रत्येक को उस समय अपनी कोठरी में ही रहना होता था, या तो सिलाई-कढ़ाई का काम करना या प्रार्थना करनी। शाम के देर से, विशेषकर अँधेरी और लंबी रातों में, वह अथक और उत्साही मठाधीश अपनी निजी प्रार्थना के बाद, कोठरियों का चक्कर लगाते और यह देखने के लिए छोटी खिड़की से झाँकते कि प्रत्येक भिक्षु क्या कर रहा है। यदि उन्हें कोई भिक्षु प्रार्थना करते, सुई का काम करते, या आत्मा के मोक्ष पर किताबें पढ़ते हुए मिलता, तो वे खुशी-खुशी उसकी ओर से ईश्वर से प्रार्थना करते और प्रभु से उसे शक्ति प्रदान करने के लिए कहते। हालाँकि, यदि वह कोई अनधिकृत बातचीत सुनता या किसी को तुच्छ गतिविधि में लगा हुआ पाता, तो वह दरवाज़े या खिड़की पर दस्तक देता, और फिर आगे बढ़ जाता। ठीक अगले दिन, वह उस भिक्षु को अपने पास बुलाता और उससे बातचीत करता। आज्ञाकारी भिक्षु अपने दोष का स्वीकार करता और क्षमा मांगता, और सेरजियस उसे पितृवत प्रेम से क्षमा

कर देता; लेकिन अवज्ञाकारियों पर वह प्रायश्चित लगाता। इस प्रकार आदरणीय सेरजियस ने अपने सुपुर्द किए गए झुंड की देखभाल की; इस प्रकार वह कोमलता को कठोरता के साथ मिलाना जानता था। वह अपने मठ के भिक्षुओं के लिए एक सच्चा चरवाहा था।

एक सच्चे ईसाई जीवन के उदाहरणों से समृद्ध, आदरणीय सेरजियस का मठ, अपने शुरुआती दिनों में, सबसे बुनियादी आवश्यकताओं से भी वंचित था; अक्सर तपस्वियों को बुनियादी आवश्यक वस्तुओं की अत्यधिक कमी का सामना करना पड़ता था। बस्तियों से दूर और हर तरह के जंगली जानवरों से भरे एक घने, आदिम जंगल द्वारा बाहरी दुनिया से कट गया यह मठ, मानवीय सहायता पर भरोसा नहीं कर सकता था। अक्सर भाइयों के पास दिव्य लिटिर्जी के समारोह के लिए शराब नहीं होती थी, और उन्हें गहरे खेद के साथ इस आध्यात्मिक सांत्वना से खुद को वंचित करना पड़ता था; अक्सर प्रॉस्फोरा के लिए पर्याप्त गेहूं, धूपदान के लिए धूप, मोमबत्तियों के लिए मोम या दीयों के लिए तेल नहीं होता था - ऐसे समय में भिक्षु मशालें जलाते और, इस रोशनी में, चर्च में सेवाएँ आयोजित करते थे। गरीब और कम रोशनी वाले चर्च में, वे स्वयं ईश्वर के प्रति प्रेम से सबसे तेज मोमबत्तियों से भी अधिक प्रज्वलित और दहकते थे। संन्यासियों का बाहरी जीवन सरल और सादा था, ठीक वैसे ही जैसे उनके आसपास की हर चीज़ और जिसका वे उपयोग करते थे; फिर भी, इन सबकी सादगी भव्य थी: पवित्र सहभागिता के संस्कार के लिए उपयोग किए जाने वाले पात्र लकड़ी के बने होते थे, वेषभूषा सादे रंगे कपड़े की होती थी, और धार्मिक अनुष्ठान की पुस्तकें बर्च की छाल पर लिखी जाती थीं। कभी-कभी, इस मठ के भिक्षु—जिसमें उस समय कोई सामूहिक भोजन कक्ष नहीं था—भोजन की कमी से पीड़ित होते थे; यहाँ तक कि स्वयं मठाधीश को भी अक्सर ज़रूरत पड़ती थी। इस प्रकार, एक अवसर पर, पूजनीय के पास एक भी रोटी का टुकड़ा नहीं बचा था, और पूरे मठ में भोजन की कमी थी; फिर भी, पूज्य पिता ने भिक्षुओं को आम लोगों से भोजन भीख में मांगने के लिए मठ छोड़ने से सख्त मनाही कर रखी थी: उन्होंने मांग की कि वे अपनी आशा ईश्वर में रखें, जो हर जीवित प्राणी का पालन-पोषण करता है, और उससे विश्वास के साथ वह सब कुछ मांगें जो आवश्यक था; और जो कुछ भी वे भाइयों को आज्ञा देते थे, उसे वे स्वयं बिना किसी छोटी-मोटी चूक के पूरा करते थे। इसलिए, संत ने तीन दिन तक सहन किया। लेकिन चौथे दिन की भोर में, भूख से त्रस्त होकर, उन्होंने एक कुल्हाड़ी ली और उस मठ में रहने वाले दानियिल नामक एक वरिष्ठ के पास गए, और उनसे कहा:

'मैंने सुना है, बड़भाई, कि आप अपनी कोठरी से सटाकर एक बरामदा बनवाना चाहते हैं; मैं नहीं चाहता कि मेरे हाथ बेकार रहें, और इसलिए मैं आपके पास आया हूँ—मुझे वह बरामदा बनाने की अनुमति दें।'

इस पर दानियिल ने उत्तर दिया:

'हाँ, मैं लंबे समय से एक बरामदा बनाना चाहता हूँ; मैंने तो सभी ज़रूरी चीज़ें भी तैयार कर रखी हैं; मैं बस गाँव के एक बढ़ई का इंतज़ार कर रहा हूँ; लेकिन मैं आपको इतना बड़ा काम सौंपने की हिम्मत नहीं करता, क्योंकि आपको अच्छा-खासा भुगतान मिलना चाहिए।'

लेकिन सेर्गीयस ने कहा कि उसे बस कुछ पुरानी, फफूंदी लगी रोटी के टुकड़ों की ही ज़रूरत है। फिर बुज़ुर्ग ने रोटी के टुकड़ों वाली एक छलनी निकाली, लेकिन पादरी ने कहा:

'काम पूरा होने तक मैं भुगतान स्वीकार नहीं करता।'

तब वह लगन से काम में जुट गया; उसने इस काम में पूरा दिन लगाया और ईश्वर की मदद से इसे पूरा कर दिया। शाम को, सूर्यास्त के समय, उन्होंने रोटी स्वीकार की; प्रार्थना करने के बाद, संत ने उसे खाना शुरू किया, जबकि कुछ भिक्षुओं ने देखा कि सिड़ी हुई रोटी का चूरा संत के मुँह से उड़ रहा था। यह देखकर, संन्यासियों ने उनकी विनिम्रता और धैर्य पर आश्चर्य व्यक्त किया।

एक अन्य अवसर पर, भोजन की कमी थी; भिक्षुओं ने इस अभाव को दो दिनों तक सहन किया; अंत में, उनमें से एक, जो भूख से बहुत पीड़ित था, संत से शिकायत करने लगा, कहते हुए:

'आप हमें मठ से बाहर जाकर अपनी ज़रूरत की चीज़ें माँगने से कितनी देर तक रोकेंगे? हम एक और रात और सह लेंगे, लेकिन सुबह हम इस जगह को छोड़ देंगे, कहीं हम भूख से मर न जाएँ।'

संत ने भाइयों को सांत्वना दी, उन्हें पवित्र पुरखों के पराक्रमों की याद दिलाई, और बताया कि कैसे उन्होंने मसीह के लिए भूख, प्यास और कई कष्टों को सहन किया था; उन्होंने उनके सामने मसीह के ये वचन उद्धृत किए: *'आकाश के पक्षियों को देखो: वे न बोते हैं, न काटते हैं, और न ही किसी कोठरी में इकट्ठा करते हैं; और तुम्हारा स्वर्गीय पिता उन्हें खिलाता है'* (मत्ती 6:26)।

संत ने कहा, 'यदि वह पक्षियों को खिलाता है, तो क्या वह हमारे लिए भोजन का प्रबंध नहीं कर सकता? अब परीक्षा का समय है, फिर भी हम शिकायत करते हैं। यदि हम इस संक्षिप्त परीक्षा को कृतज्ञता के साथ सहन करें, तो यही परीक्षा हमारे लिए बहुत फायदेमंद होगी; क्योंकि सोना भी आग के बिना शुद्ध नहीं होता।'

इतना कहकर, उन्होंने भविष्यवाणी की भाँति कहा:

'हम अब अभाव के एक संक्षिप्त दौर से गुजर रहे हैं, लेकिन सुबह भरपूर होगा।'

और संत की भविष्यवाणी सच हुई: अगली सुबह, एक अज्ञात व्यक्ति ने मठ में ताज़ा बेकी हुई ब्रेड, मछली और अन्य ताज़ा तैयार भोजन की बड़ी मात्रा भेज दी। जिन्होंने यह सब पहुँचाया, उन्होंने कहा:

– 'यह मसीह के एक प्रेमी द्वारा अब्बा[6484] , सेर्गीयस और उनके साथ रहने वाले भाइयों के लिए भेजा गया है।'

तब भिक्षुओं ने दूतों से उनके साथ भोजन करने के लिए कहा, लेकिन उन्होंने मना कर दिया, यह कहते हुए कि उन्हें तुरंत वापस जाने का आदेश दिया गया था - और वे जल्दी से मठ से चले गए। तपस्वियों ने लाए गए भोजन की प्रचुरता को देखकर यह महसूस किया कि प्रभु अपनी दया के साथ उनके पास आए थे, और ईश्वर को हार्दिक धन्यवाद देने के बाद, उन्होंने भोजन तैयार किया: इस पर, भिक्षु रोटी की असाधारण कोमलता और उत्कृष्ट स्वाद से बहुत आश्चर्यचकित हुए। यह भोजन भाइयों के समुदाय के लिए लंबे समय तक पर्याप्त था। रेवरेंड एबॉट ने इस अवसर का लाभ उठाते हुए भिक्षुओं को उपदेश दिया:

'हे भाइयो, देखो और उस पुरस्कार पर आश्चर्य करो जो परमेश्वर धैर्य के लिए भेजता है: *"हे प्रभु, हे मेरे परमेश्वर, उठ; अपना हाथ उठा; दुखियों को न भूल"* [वह अपने दरिद्रों को सदा के लिए नहीं भूलेगा] (भजन संहिता 9:33)। वह इस पवित्र स्थान को और यहाँ रहने वाले अपने सेवकों को, जो दिन-रात उसकी सेवा करते हैं, कभी नहीं त्यागेगा।

अन्य कई अवसरों पर भी, अपने भाइयों के प्रति पूजनीय पिता की पितृसुलभ देखभाल और उनकी परम विनम्रता स्पष्ट रूप से दिखाई दी, जैसा कि निम्नलिखित से देखा जा सकता है।

मरुभूमि में पहुँचने पर, पूजनीय सेरजियस ने एक जलहीन स्थान पर निवास किया। संत ने यहाँ बिना किसी उद्देश्य के नहीं रुका: दूर से पानी लाकर, वह अपने श्रम को और भी अधिक कठिन बनाना चाहता था, क्योंकि वह अपने शरीर को और अधिक थकाना चाहता था। हालाँकि, जब ईश्वर की इच्छा से समुदाय बढ़ा और एक मठ स्थापित हुआ, तो पानी की भारी कमी स्पष्ट हो गई; इसे दूर से और बड़ी कठिनाई से लाना पड़ता था। परिणामस्वरूप, कुछ लोगों ने संत के खिलाफ शिकायत करना शुरू कर दिया, कहते हुए:

'आपने इस स्थान को बिना ठीक से सोचे-समझे क्यों बसाया? आपने यहाँ मठ क्यों स्थापित किया जब पास में पानी ही नहीं है?'

सम्माननीय फादर ने विनम्रतापूर्वक इन आक्षेपों का उत्तर दिया:

'भाइयो, मैं इस स्थान पर एकांत में रहना चाहता था, लेकिन ईश्वर को यह उचित लगा कि यहाँ एक मठ स्थापित हो। वह हमें भी पानी दे सकते हैं; बस हिम्मत न हारो, बल्कि विश्वास के साथ प्रार्थना करो: क्योंकि यदि उन्होंने जंगल में अवज्ञाकारी यहूदी लोगों के लिए चट्टान से पानी निकाला, तो वे तुम पर, जो उनकी निष्ठापूर्वक सेवा करते हो, कितने अधिक मेहरबान होंगे।

इसके बाद, एक बार उन्होंने भाइयों में से एक को अपने साथ लिया और उसके साथ गुप्त रूप से मठ के नीचे झाड़ियों में चले गए, जहाँ कभी कोई बहता पानी नहीं था। एक خندق में थोड़ा सा बारिश का पानी पाकर, संत घुटनों के बल बैठ गए और इस प्रकार प्रार्थना करने लगे:

'हे हमारे प्रभु यीशु मसीह के पिता, हे परमेश्वर, जिन्होंने स्वर्ग और पृथ्वी और सभी दृश्य और अदृश्य चीजों को बनाया, जिन्होंने मनुष्य को बनाया और पापी की मृत्यु नहीं चाहता, हम, आपके पापी और अयोग्य सेवक, आपसे विनती करते हैं: इस घड़ी हमें सुनें और अपनी महिमा प्रकट करें; जैसे मरुभूमि में मूसा के माध्यम से आपके सामर्थी दहिने हाथ ने चमत्कार किया था, और चट्टान से जल निकाला था, वैसे ही यहाँ भी अपनी शक्ति प्रकट कीजिए, – हे स्वर्ग और पृथ्वी के सृष्टिकर्ता, हमें इस स्थान पर जल प्रदान करें, और सभी को यह समझ आवे कि आप उन लोगों की प्रार्थना सुनते हैं जो आपसे प्रार्थना करते हैं और पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा को महिमा देते हैं, अब और हमेशा के लिए। आमीन।

[6484] अब्बा – पिता।

तब, अचानक, एक प्रचुर झरना फूट पड़ा। भाई लोग बहुत चकित हो गए; असंतुष्टों का बड़बड़ाना पवित्र मठाधीश के प्रति श्रद्धा की भावना में बदल गया; संन्यासियों ने यहाँ तक कि इस झरने को 'सर्जियस का झरना' कहना शुरू कर दिया। लेकिन उस विनम्र तपस्वी को ऐसी मानवीय प्रशंसा बोझिल लगी; इसलिए उन्होंने कहा:

'भाइयो, यह पानी मैंने आपको नहीं दिया है, बल्कि स्वयं प्रभु ने इसे हम जैसे अयोग्य लोगों के पास भेजा है। इसलिए, इसका नाम मेरे नाम पर न रखें।'

अपने आध्यात्मिक पिता के इन शब्दों पर ध्यान देते हुए, भाइयों ने उस झरने को 'सर्गीयस' कहना बंद कर दिया।

उस समय से, भिक्षुओं को पानी की कमी नहीं हुई, बल्कि वे मठ की सभी जरूरतों के लिए इसी कुएँ से पानी निकालते थे; और जो लोग श्रद्धा से यह पानी निकालते थे, उन्हें अक्सर इससे आरोग्य प्राप्त होता था।

पूजनीय सेरजियस द्वारा मठ की नींव रखने के बाद से कई साल बीत चुके थे। इस महान तपस्वी के पवित्र जीवन को अनदेखा नहीं किया जा सकता था, और इसलिए बहुत से लोग उन जगहों पर बसने लगे, जो घने जंगल से पूरी तरह ढकी हुई थीं; कई लोग पूजनीय व्यक्ति की ओर मुड़ने लगे, उनसे प्रार्थना और आशीर्वाद मांगने लगे; कई ग्रामीणों ने अक्सर मठ आने और भोजन लाने की शुरुआत कर दी। संत की ख्याति और भी बढ़ गई। पूज्य ने अपने जीवनकाल में ही कई चमत्कार किए। प्रभु ने अपने सेवक को एक असाधारण चमत्कारिक शक्ति प्रदान की: इस प्रकार, एक अवसर पर, पूज्य ने एक मृत व्यक्ति को जीवित कर दिया। यह इस प्रकार हुआ: मठ के आसपास के इलाके, ' ' में, एक व्यक्ति रहता था जिसे सेरजियस में बहुत आस्था थी; उसका एकमात्र पुत्र एक असाध्य रोग से पीड़ित था; दृढ़ता से यह आशा करते हुए कि संत उसके बेटे को ठीक कर देंगे, यह ग्रामीण रेवरेंड फादर से मिलने के लिए निकल पड़ा। लेकिन जैसे ही वह संत के कक्ष में प्रवेश किया और बीमार लड़के की मदद के लिए उनसे विनती करने लगा, लड़का, जो अपनी गंभीर बीमारी से थका हुआ था, मर गया। सारी आशा खोकर, लड़के के पिता जोर-जोर से रोने लगे:

'हाय मेरी किस्मत,' उसने संत से कहा, 'मैं आपके पास, हे ईश्वर के पुरुष, इस दृढ़ विश्वास के साथ आया था कि आप मेरी मदद करेंगे; यह बेहतर होता अगर मेरा बेटा घर पर ही मर गया होता, क्योंकि तब आप में मेरी आस्था, जो अब तक अटूट रही है, कम नहीं होती।'

इस प्रकार, दुखी और रोते हुए, वह अपने बेटे के अंतिम संस्कार के लिए आवश्यक सभी चीजें लाने बाहर गया।

उस आदमी को रोते हुए देखकर, पूजनीय ने उस पर दया की और एक प्रार्थना करने के बाद, उस लड़के को मृतकों में से जीवित कर दिया। जल्द ही वह ग्रामीण अपने बेटे के लिए एक ताबूत लेकर लौट आया।

तब संत ने उससे कहा:

'तुम व्यर्थ और मूर्खतापूर्ण रूप से शोक कर रहे हो: लड़का मरा नहीं है, बल्कि जीवित है।'

चूंकि इस आदमी ने अपने बेटे को मरते हुए देखा था, इसलिए वह संत की बातों पर विश्वास नहीं करना चाहता था; लेकिन पास आने पर, उसने आश्चर्य के साथ देखा कि लड़का वास्तव में जीवित था; तब अत्यंत प्रसन्न पिता ने अपने बेटे को मृतकों में से जीवित करने के लिए रेवरेंड को धन्यवाद देना शुरू कर दिया।

सर्गेयस ने कहा, 'तुम गलत हो, और तुम्हें यह एहसास नहीं है कि तुम क्या कह रहे हो। जब तुम लड़के को यहाँ लाए, तो वह कड़कती ठंड से कमजोर पड़ गया था - और तुम्हें लगा कि वह मर गया है; अब, गर्म कोठरी में, वह गर्म हो गया है - और तुम्हें ऐसा लग रहा है कि वह मृतकों में से जी उठा है।'

लेकिन गाँववाला इस बात पर ज़ोर देता रहा कि उसके बेटे को संत की प्रार्थनाओं से मृतकों में से जीवित कर दिया गया था। तब सेर्गीयस ने उसे इस बारे में बोलने से मना किया और कहा:

'अगर तुम लोगों को इसके बारे में बताने लगोगे, तो तुम अपने बेटे को हमेशा के लिए खो दोगे।'

अत्यंत प्रसन्न होकर, वह व्यक्ति ईश्वर और उनके सेवक सेरजियस की महिमा करते हुए घर लौट आया। रेवरेंड के एक शिष्य को इस चमत्कार के बारे में पता चला और उसने इसका वर्णन किया।

सम्माननीय सेरजियस ने और भी कई चमत्कार किए। उदाहरण के लिए, स्थानीय निवासियों में से एक गंभीर रूप से बीमार पड़ गया; कुछ समय तक वह सो या खा नहीं सका। उसके भाइयों ने, पूजनीय सेरजियस के चमत्कारों के बारे में सुनकर, उस बीमार व्यक्ति को उस तपस्वी के पास ले आए और उससे उस पीड़ित को ठीक करने की विनती की; संत ने प्रार्थना की, उस बीमार व्यक्ति पर पवित्र जल छिड़का, जिसके बाद वह सो गया, और जागने पर, वह पूरी तरह से स्वस्थ और चुस्त-दुरुस्त हो उठा, मानो वह कभी बीमार ही न हुआ हो; महान तपस्वी की स्तुति और धन्यवाद करते हुए, यह ग्रामीण घर लौट गया।

लोग न केवल पड़ोसी गांवों से, बल्कि दूर-दराज के क्षेत्रों से भी पूजनीय संत के पास आने लगे। इस प्रकार, एक अवसर पर, वोल्गा नदी के तट का एक कुलीन व्यक्ति, जो एक अशुद्ध आत्मा के वश में था, को सरगियस के पास लाया गया। वह बहुत कष्ट सहता था: कभी-कभी वह काटता, कभी-कभी इधर-उधर मारा करता, और कभी-कभी सभी से भाग जाता था; दस आदमी भी मुश्किल से उसे रोक पाते थे। उसके रिश्तेदारों ने, सरगियस के बारे में सुनकर, इस भूतग्रस्त व्यक्ति को संत के पास लाने का फैसला किया। ऐसा करने में बहुत मेहनत और काफी प्रयास लगा। जब उस पीड़ित व्यक्ति को मठ के पास लाया गया, तो उसने असाधारण शक्ति से अपनी लोहे की बेड़ियाँ तोड़ दीं और इतनी ज़ोर से चिल्लाने लगा कि उसकी आवाज़ मठ के अंदर भी सुनी जा सकती थी। यह जानकर, सेरजियस ने उस पीड़ित व्यक्ति के लिए प्रार्थना सेवा की; उसी क्षण, वह पीड़ित कुछ शांत होने लगा; उसे मठ के भीतर भी ले जाया गया। प्रार्थना सेवा के अंत में, पादरी ने क्रॉस के साथ उस दैत्य-ग्रस्त व्यक्ति के पास जाकर उसे आशीर्वाद देना शुरू कर दिया; उसी क्षण, वह व्यक्ति एक ज़ोर की चीख के साथ बारिश के बाद पास में जमा हुए पानी में कूद गया। जब रेवरेंड फादर ने उसे पवित्र क्रॉस से आशीर्वाद दिया, तो वह पूरी तरह से ठीक हो गया और उसकी मानसिक संतुलन वापस आ गई। जब उससे पूछा गया कि उसने खुद को पानी में क्यों फेंका, तो ठीक हुआ व्यक्ति ने जवाब दिया:

'जब मुझे पादरी के सामने लाया गया और उन्होंने मुझ पर क्रॉस का चिह्न बनाना शुरू किया, तो मैंने क्रॉस से एक बड़ी सी ज्वाला निकलते देखा, और यह सोचकर कि आग मुझे जला देगी, मैं पानी में कूद पड़ा।'

इसके बाद, वह कई दिनों तक मठ में रहा, ईश्वर की दया की प्रशंसा करता रहा और उस संत का धन्यवाद करता रहा कि उन्होंने उसे ठीक कर दिया।

अक्सर, अन्य भूतग्रस्त लोगों को संत के पास लाया जाता था, और उन सभी को मुक्ति मिली।

दयालु प्रभु ने अपने उत्साही और वफादार सेवक को इतनी शक्ति प्रदान की कि दुष्टात्माएँ पीड़ितों को संत के पास लाए जाने से पहले ही उन्हें छोड़ देती थीं। तपस्वी की प्रार्थनाओं के माध्यम से कई अन्य चमत्कार भी हुए। *'अंधे देखते हैं और लंगड़े चलते हैं; कोढ़ी शुद्ध होते हैं'* (मत्ती 11:5); संक्षेप में, जो भी भक्त के पास विश्वास के साथ आए, उन्हें चाहे जो भी रोग हो, उन्हें शारीरिक स्वास्थ्य और आध्यात्मिक संवर्धन प्राप्त हुआ, जिससे उन्हें बहुत लाभ हुआ।

आदरणीय सेरजियस द्वारा किए गए ऐसे चमत्कारों की खबरें दिन-ब-दिन और दूर-दूर तक फैलती गईं; उनके महान तपस्यापूर्ण जीवन की अफवाहें और भी व्यापक होती गईं; मठ में आने वालों की संख्या लगातार बढ़ती गई। हर कोई आदरणीय सेरजियस की महिमा करता था; हर कोई उन्हें गहरी भक्ति के साथ पूजता था; कई लोग विभिन्न शहरों और स्थानों से यहाँ आए, इस पवित्र तपस्वी को देखने की इच्छा से; कई लोग उनका मार्गदर्शन प्राप्त करना चाहते थे और उनके प्रेरणादायक संवाद का आनंद लेना चाहते थे; कई भिक्षु, अपने-अपने मठ छोड़कर, आदरणीय द्वारा स्थापित मठ में आ गए, ताकि वे उनके मार्गदर्शन में तपस्या कर सकें और उनके साथ रह सकें; आम जनता और कुलीनों दोनों ही उनके आशीर्वाद को प्राप्त करने के लिए लालायित थे, जबकि राजकुमार और बोयार इस धन्य पिता के पास आते थे। सब उसका सम्मान करते थे और उसे मानो प्राचीन पवित्र पिताओं में से एक या एक पैगंबर के रूप में मानते थे।

सभी द्वारा सम्मानित और पूजित, आदरणीय सेरजियस वही विनम्र भिक्षु बने रहे: सांसारिक ख्याति का उन पर कोई आकर्षण नहीं था; वे पहले की तरह परिश्रम करते रहे और सभी के लिए एक आदर्श प्रस्तुत करते रहे। उन्होंने अपना सब कुछ गरीबों के साथ बाँट दिया; उन्हें मुलायम या बढ़िया कपड़ों की परवाह नहीं थी, बल्कि वे हमेशा मोटे कपड़े का चोगा पहनते थे, जिसे उन्होंने स्वयं सिला था। एक बार, मठ में कोई अच्छा कपड़ा नहीं बचा था; केवल एक टुकड़ा बचा था, और वह इतना घटिया और सड़ा हुआ था कि भिक्षुओं ने उसे लेने से इनकार कर दिया। तब सेरजियस ने उसे अपने लिए ले लिया, उससे एक वस्त्र बनाया, और जब तक वह टुकड़े-टुकड़े नहीं हो गया, तब तक उसे पहने रहे।

आम तौर पर, संत हमेशा फटे-पुराने और साधारण कपड़े पहनते थे, इसलिए कई लोग उन्हें पहचान नहीं पाते थे और उन्हें एक साधारण भिक्षु समझते थे। दूर के एक गाँव का एक किसान, संत सेरजियस के बारे में बहुत कुछ सुनकर, उन्हें देखना चाहता था। तो वह आदरणीय के मठ में आया और संत कहाँ हैं, यह पूछने लगा। संयोग से, ठीक उसी समय आदरणीय शाक-बाग़ में खोदाई कर रहे थे। भाइयों ने आए हुए किसान को यह बात बताई; वह तुरंत सब्जी के बगीचे में गया और वहाँ उसने संत को पतले, फटे-पुराने कपड़ों में, जो हर तरफ से पैबंद लगे हुए थे, मिट्टी खोदते हुए देखा। उसे लगा कि जिन्होंने इस बूढ़े आदमी को उसकी ओर इशारा करके बताया था, वे उसका मज़ाक उड़ा रहे थे, क्योंकि वह संत को बड़ी महिमा और सम्मान में देखने की उम्मीद कर रहा था।

इसलिए, मठ में लौटने पर, उसने फिर पूछा:

'संत सेरजयिस कहाँ हैं? मुझे उन्हें दखिाइए, क्योंकि मैं उन्हें देखने और उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए दूर से आया हूँ।'

लेकिन भिक्षुओं ने उत्तर दिया:

'जिस बूढ़े आदमी को आपने देखा है, वह हमारे पूजनीय पिता हैं।'

उसके बाद, जब संत सब्जी के बगीचे से बाहर आए, तो वह किसान उनसे मुँह मोड़ गया और उस धन्य व्यक्ति को देखने से इनकार कर दिया; क्रोधित होकर, उसने मन ही मन सोचा:

'मेरी मेहनत तो बर्बाद हो गई! मैं महान संत की एक झलक पाने आया था और उम्मीद कर रहा था कि उन्हें बड़े सम्मान और महिमा में देखूँगा - और अब मैं तो किसी साधारण, गरीब बूढ़े आदमी को देख रहा हूँ।'

उसकी मनोवृत्ति को भांपते हुए, संत ने मन ही मन प्रभु का हार्दिक धन्यवाद किया; क्योंकि जैसे एक व्यर्थ व्यक्ति अपनी प्रशंसा और सम्मान में स्वयं को बड़ा समझता है, वैसे ही एक विनम्र व्यक्ति अपमान और तिरस्कार में आनंदित होता है। गाँव वाले को अपने पास बुलाकर, पूज्य ने उसके लिए भोजन परोसा और उसे गर्मजोशी से आतिथ्य देने लगे; अन्य बातों के अलावा, संत ने उससे कहा:

'दुखी मत हो, मेरे मित्र; तुम जल्द ही उस व्यक्ति को देखोगे जिसे तुम देखना चाहते थे।'

संत के ये शब्द कहते ही एक दूत आ पहुँचा, जिसने मठ में राजकुमार के आगमन की सूचना दी। सर्जियस उठे और उस विशिष्ट अतिथि से मिलने बाहर गए, जो नौकरों की एक टोली के साथ मठ आए थे। मठाध्यक्ष को देखते ही राजकुमार ने दूर से ही जमीन पर सिर झुकाया और विनम्रतापूर्वक उनका आशीर्वाद माँगा। संत ने राजकुमार को आशीर्वाद देने के बाद, उसे उचित सम्मान के साथ मठ में बुलवाया, जहाँ वरिष्ठ और राजकुमार बगल-बगल बैठकर बातचीत करने लगे, जबकि बाकी सभी खड़े रहे। किसान, जिसे राजकुमार के नौकरों ने बहुत दूर धकेल दिया था, वह अपनी पूरी कोशिशों के बावजूद उस वरिष्ठ को दूर से पहचान नहीं सका, जिसे उसने पहले तुच्छ समझा था। फिर उसने पास खड़े एक व्यक्ति से चुपचाप पूछा:

'महाराज, राजकुमार के साथ वह बूढ़ा व्यक्ति कौन है?'

उस आदमी ने उत्तर दिया:

'क्या तुम यहाँ के अजनबी हो, जो तुम इस बूढ़े आदमी को नहीं जानते? ये आदरणीय सेरजियस हैं।'

तब उस गाँव वाले ने स्वयं को कोसना और फटकारना शुरू कर दिया:

उसने कहा, 'सचमुच, मैं अंधा था, जब मैंने उन लोगों पर विश्वास नहीं किया जिन्होंने मुझे इस पवित्र पिता के बारे में बताया था।'

जब राजकुमार मठ से चला गया, तो वह ग्रामीण जल्दी से पूजनीय पिताजी के पास गया और, उनके चेहरे में देखने की हिम्मत न करते हुए, उस बूढ़े आदमी के पैरों पर झुक गया, और अपनी ही मूर्खता से पाप करने के लिए क्षमा मांगी। हालाँकि, संत ने उसे सांत्वना देते हुए कहा:

'मेरे बच्चे, दुखी मत हो, क्योंकि केवल तुमने ही मेरे बारे में सही सोचा, यह कहते हुए कि मैं एक साधारण व्यक्ति हूँ, जबकि अन्य सभी यह मानकर गलत हैं कि मैं महान हूँ!'

इससे यह स्पष्ट रूप से स्पष्ट है कि पूजनीय सेरजियस की विनम्रता कितनी महान थी: उन्होंने उस किसान से, जिसने उन्हें अनदेखा किया था, उस राजकुमार से भी अधिक प्रेम किया, जिसने उन्हें सम्मानित किया था। इन कोमल शब्दों से, संत ने उस साधारण ग्रामीण को सांत्वना दी; कुछ समय संसार में रहने के बाद, वह व्यक्ति जल्द ही मठ में लौट आया और वहाँ अपने संन्यासी संकल्प ले लिए: महान तपस्वी की विनम्रता ने उसे इतना गहराई से प्रभावित किया था।

एक देर शाम, आदरणीय सेरजियस, अपनी आदत के अनुसार, अपनी दैनिक प्रार्थना कर रहे थे और अपने शिष्यों के लिए ईश्वर से भक्तिपूर्वक प्रार्थना कर रहे थे, तभी अचानक उन्होंने एक आवाज़ सुनी जो उन्हें बुला रही थी:

'सर्गीयस!'

रेवरेंड रात के समय ऐसी असाधारण घटना से बहुत हैरान थे; उन्होंने खिड़की खोलकर यह देखने की कोशिश की कि उन्हें कौन बुला रहा है। और देखो, उन्होंने स्वर्ग से एक महान प्रकाश देखा, जिसने रात के अंधकार को इतना दूर कर दिया कि वह दिन की तरह उज्ज्वल हो गया। वह आवाज दूसरी बार सुनाई दी:

'सर्गेयस! तुम अपने बच्चों के लिए प्रार्थना करते हो, और तुम्हारी प्रार्थना सुनी गई है: देखो – क्या तुम पवित्र त्रिमूर्ति के नाम पर तुम्हारे मार्गदर्शन में इकट्ठा हो रहे संन्यासियों की भीड़ को देखते हो?'

मुड़कर, संत ने मठ के अंदर और उसके आसपास सुंदर पक्षियों की एक बड़ी भीड़ को बैठे हुए देखा, जो अकथनीय मधुरता से गा रहे थे। और एक बार फिर वह आवाज़ सुनाई दी:

'इस प्रकार तुम्हारे शिष्यों की संख्या इन पक्षियों की तरह बढ़ेगी; और तुम्हारे बाद, यह न तो घटेगी और न ही कम होगी, और जो भी तुम्हारे पदचिन्हों पर चलना चाहेंगे, वे अपने गुणों के लिए अद्भुत और कई तरीकों से सुशोभित होंगे।'

संत इस अद्भुत दर्शन से चकित थे; यह इच्छा लेकर कि कोई और भी उनकी खुशी में भागीदार बने, उन्होंने दूसरों की तुलना में सबसे पास रहने वाले सिमियन को ऊँचे स्वर में पुकारा। मठाधीश के असामान्य बुलावे से चकित होकर, सिमियोन उनके पास दौड़ पड़े, लेकिन उन्हें उस दिव्यदृष्टि का पूरा दर्शन नहीं हुआ; उन्होंने उस दिव्य प्रकाश का केवल एक अंश ही देखा। पूजनीय पिता ने सिमियोन को वह सब कुछ विस्तार से बताया जो उन्होंने देखा और सुना था, और दोनों ने पूरी रात जागकर, आनंदित होते और ईश्वर की स्तुति करते हुए बिताई।

कुछ ही समय बाद, कॉन्स्टेंटिनोपल के पैट्रिआर्क, उनकी पवित्रता फिलोथियोस[6485] के दूत, रेवरेंड फादर के पास आए और उन्होंने संत को पैट्रिआर्क की ओर से आशीर्वाद के साथ उपहार प्रदान किए: एक क्रॉस, एक पारामांड[6486] और एक मठवासी चोगा।

'क्या तुम्हें किसी और के पास नहीं भेजा गया था?' विनम्र मठाधीश ने उनसे कहा। 'मैं कौन हूँ, एक पापी, जो परम पावन पैट्रिआर्क से उपहार प्राप्त करूँ?'

इस पर दूतों ने उत्तर दिया:

'नहीं, फादर, हमने कोई गलती नहीं की है; हमें किसी और के पास नहीं भेजा गया है, बल्कि आपको, सर्जियस को भेजा गया है।'

उन्होंने पैट्रिआर्क का निम्नलिखित संदेश लाया:

'ईश्वर की कृपा से, कन्स्टेंटिनोपल के आर्चबिशप, सार्वभौमिक पैट्रिआर्क, प्रभु फिलोथेओस की ओर से, हमारे पुत्र और पवित्र आत्मा के विषय में विनम्रता से सह-सेवक, सेरजियस को: अनुग्रह और शान्ति, और हमारी आशीष!' हमने परमेश्वर की आज्ञाओं के अनुसार आपके सदाचारी जीवन के बारे में सुना है, और हमने परमेश्वर की स्तुति की है और उनके नाम की महिमा की है। लेकिन आप में अभी एक चीज़ की कमी है, और वास्तव में सबसे महत्वपूर्ण चीज़: आपके पास कोई समुदाय नहीं है। आप जानते हैं कि परमेश्वर के पिता, भविष्यवक्ता दाऊद ने भी, जिन्होंने अपने मन से सभी चीज़ों को ग्रहण किया था, घोषणा की थी: *'भाइयों का एकता में एक साथ रहना कितना अच्छा और सुखद है!'* (भजन संहिता 132:1)। अत; हम भी आपको यह उत्तम परामर्श देते हैं – एक सामुदायिक जीवन स्थापित करें, और ईश्वर की दया और हमारा आशीर्वाद आप पर बना रहे।"

यह पितृसत्तात्मक संदेश प्राप्त करने के बाद, रेवरेंड धन्य मेट्रोपॉलिटन एलेक्सियस के पास गए और उन्हें यह पत्र दिखाकर उनसे पूछा:

'हे पवित्र प्रभु, आपकी आज्ञा क्या है?'

मेट्रोपॉलिटन ने वरिष्ठ के प्रश्न का उत्तर दिया:

'ईश्वर स्वयं अपने वफादार सेवकों को महिमामय बनाता है! उसने आपको इतना अनुग्रह दिया है कि आपके नाम और आपके जीवन की खबर दूर-दराज के देशों तक पहुँच गई है, और जैसे महान सार्वभौमिक पैट्रिआर्क सलाह देते हैं, वैसे ही हम भी उसी सलाह को देते और उसी को मंजूरी देते हैं।'

उस समय से, पूजनीय सेरजियस ने अपने मठ में एक सामुदायिक जीवन स्थापित किया और कड़ाई से आदेश दिया कि मठ के नियमों का पालन किया जाए: अपने लिए कुछ भी अर्जित न करना, किसी भी चीज़ को अपना न कहना, बल्कि, पवित्र संतों के आज्ञाओं के अनुसार, सभी चीजों को साझा रखना।

इस बीच, परम पूजनीय मानव की प्रसिद्धि से ऊब चुके थे। सामुदायिक जीवन स्थापित करने के बाद, वह एकांत में रहना चाहते थे और मौन व शांति के बीच, ईश्वर के समक्ष तपस्या करना चाहते थे। इसलिए, वह गुप्त रूप से अपने मठ से निकल पड़े और मरुभूमि की ओर चल दिए। लगभग साठ वर्स्ट की यात्रा करने के बाद, उन्हें करिज़ाच नदी के पास एक जगह मिली[6487] जो उन्हें बहुत पसंद आई। भाइयों को, यह एहसास होते ही कि उनके पिता ने उन्हें छोड़ दिया है, अत्यधिक

[6485] फिलोथेउस 1354 से 1355 तक, और दूसरी बार 1362 से 1376 तक पैट्रिआर्क थे।

[6486] पैरामंड एक छोटा वर्गाकार पैनल है जो मसीह के कष्टों को दर्शाता है।

[6487] व्लादिमीर गवर्नोरेट का पोक्रोव्स्की जिला।

दुख और कष्ट हुआ; बिना चरवाहे के भेड़ों की तरह छोड़ दिए गए, भिक्षुओं ने उन्हें हर जगह खोजना शुरू कर दिया। कुछ समय बीत जाने के बाद, उन्हें पता चल गया कि उनका चरवाहा कहाँ बसा था और वहाँ पहुँचकर, उन्होंने आँसुओं से भरी आँखों के साथ संत से मठ में लौटने का आग्रह किया। लेकिन आदरणीय संत, मौन और एकांत से प्रेम करते हुए, अपने नए निवास में ही रहना पसंद करते थे। इसलिए, उनके कई शिष्यों ने लावरा छोड़कर, उस रेगिस्तान में उनके साथ बस गए, वहाँ एक मठ की स्थापना की, और परम पवित्र ईश्वर की माता को समर्पित एक चर्च का निर्माण किया। लेकिन महान मठ के भिक्षुओं ने, अपने पिता के बिना रहना नहीं चाहकर और फिर भी उन्हें वापस आने के लिए मनाने में असमर्थ होकर, महामहिम मेट्रोपॉलिटन अलेक्सियस के पास गए और उनसे आदरणीय पिताजी को परम पवित्र त्रिमूर्ति के मठ में वापस आने के लिए मनाने का अनुरोध किया। तब धन्य अलेक्सियस ने दो आर्चिमांड्राइट्स को पूजनीय के पास भेजा, उनसे भाइयों की विनतियों पर ध्यान देने और लौटकर उनका मन शांत करने का अनुरोध करते हुए। उन्होंने सर्गियस को ऐसा करने के लिए प्रोत्साहित किया ताकि उनके द्वारा स्थापित मठ के भिक्षु एक चरवाहे के अभाव में बिखर न जाएँ, और ताकि वह पवित्र स्थान सुनसान न हो जाए। आदरणीय सर्गियस ने धन्य संत के इस अनुरोध को बिना किसी प्रश्न के पूरा किया: वे लावरा, अपनी पहली वासस्थली पर लौट आए, जिससे भाइयों को बहुत सांत्वना और प्रसन्नता हुई।

परम के बिशप संत स्टीफन[6488] , जो परम पूज्य के प्रति बहुत प्रेम रखते थे, एक बार अपनी धर्मप्रांत से मास्को शहर की यात्रा कर रहे थे; जिस सड़क से संत यात्रा कर रहे थे, वह सेर्गेव मठ से लगभग आठ वर्स्ट दूर थी; चूँकि स्टीफन शहर पहुँचने के लिए बहुत जल्दबाजी में थे, वे मठ के पास से गुज़र गए, यह सोचकर कि वे अपनी वापसी की यात्रा में इसकी यात्रा करेंगे। लेकिन जब वह मठ के सामने पहुँचे, तो वे अपने रथ से उतर गए, 'यह उचित है' का पाठ किया, और प्रथागत प्रार्थना करने के बाद, उन्होंने परम पूज्य सर्गियस को प्रणाम करते हुए कहा:

'शांति आपके साथ हो, आध्यात्मिक भाई।'

संयोगवश उस समय धन्य सेरगियस भाइयों के साथ भोजन पर बैठे थे। अपने आत्मा में बिशप की प्रणाम-मुद्रा का अनुभव कर, वे तुरंत उठ खड़े हुए; एक क्षण ठहरकर उन्होंने प्रार्थना की और फिर बिशप को भी प्रणाम किया, जो मठ से काफी दूर जा चुके थे, और कहा:

'हे मसीह के झुंड के चरवाहे, आनन्दित हो, और प्रभु का आशीर्वाद आप पर हो।'

भाईगण संत के इस असाधारण कार्य से चकित रह गए; हालाँकि, कुछ को एहसास हुआ कि परम पूजनीय पिता को एक दर्शन प्राप्त हुआ था। जब भोजन समाप्त हो गया, तो भिक्षुओं ने उनसे जो हुआ था उसके बारे में पूछना शुरू कर दिया, और उन्होंने उनसे कहा:

'ठीक उसी घड़ी, मॉस्को जाते समय बिशप स्टीफन हमारे मठ के सामने रुके, सर्वपवित्र त्रिमूर्ति के सामने नमन किया और हम पापियों को आशीर्वाद दिया।'

बाद में, आदरणीय के कुछ शिष्यों को पता चला कि वास्तव में ऐसा ही था - और वे अपने पिता सर्गियस पर ईश्वर द्वारा प्रदान की गई दिव्य अंतर्दृष्टि से चकित हुए[6489] ।

आदरणीय के मठ में कई धर्मपरायण पुरुष महिमा से दमक उठे; उनमें से कई, अपने महान सद्गुणों के कारण, अन्य मठों में मठाध्यक्ष नियुक्त किए गए, जबकि अन्य को बिशप का पद प्राप्त हुआ। वे सभी अपने महान गुरु, सर्जियस द्वारा निर्देशित और मार्गदर्शित होकर, सद्गुणों में निपुण थे।

आदरणीय के शिष्यों में इसाक नाम का एक शिष्य था; वह मौन के तपस्वी अभ्यास को अपनाना चाहता था और इसलिए अक्सर संत से इस महान कार्य के लिए आशीर्वाद मांगता था। एक बार, उसकी विनती के जवाब में, बुद्धिमान चरवाहे ने कहा:

'यदि तुम, मेरे बच्चे, मौन का पालन करना चाहते हो, तो कल मैं तुम्हें इसके लिए अपना आशीर्वाद दूँगा।'

अगले दिन, दिव्य लिटिर्जी के बाद, पूजनीय सेरजियस ने उनके ऊपर क्रॉस का चिह्न बनाया और कहा:

'प्रभु आपकी इच्छा पूरी करें।'

[6488] परम के प्रबोधक संत स्टीफन का पर्व 27 अप्रैल को मनाया जाता है; उनके अवशेष मॉस्को में हिल पर स्थित उद्धारकर्ता कैथेड्रल में विराजमान हैं।

[6489] इसके स्मरण में, ट्रिनिटी-सर्गीय लावरा में एक रिवाज आज भी मनाया जाता है: अंतिम व्यंजन से पहले, एक छोटी घंटी की आवाज पर, सभी भिक्षु खड़े हो जाते हैं, और अध्यक्षता करने वाले हयरोमोंक कहते हैं: 'हमारे पवित्र पिताओं की प्रार्थनाओं के द्वारा, हे प्रभु यीशु मसीह, हम पर दया करो', – जिसके बाद हर कोई अपना भोजन समाप्त करने के लिए फिर से बैठ जाता है।

उसी क्षण, इसाक ने पूज्य व्यक्ति के हाथ से निकलती और उसे, इसाक को, घेरे हुए एक असाधारण ज्वाला देखी; उस समय से वह मौन ही रहा, सिवाय एक अवसर के जब एक चमत्कारी साक्षात्कार ने उसे बोलने की अनुमति दी।

अवश्य ही जीवित रहते हुए, देह में रहते हुए, पूजनीय सेरजियस को अदेह प्राणियों के साथ सहभागिता प्राप्त हुई। यह इस प्रकार हुआ। एक दिन, पवित्र मठाधीश अपने भाई स्टीफन और अपने भतीजे थियोडोर के साथ दिव्य लिटिर्जी का अनुष्ठान कर रहे थे। उस समय चर्च में उपस्थित अन्य लोगों में मौन इज़ाक भी थे। भय और श्रद्धा के साथ, हमेशा की तरह, संत महा-सacrament का अनुष्ठान कर रहे थे। अचानक, इसाक ने वेदी में एक चौथे व्यक्ति को देखा, जो अद्भुत रूप से दमकते हुए वस्त्रों में लिपटा हुआ था और असाधारण प्रकाश से दीप्तिमान था; सुसमाचार के साथ छोटे प्रवेश के दौरान, इस स्वर्गीय सह-आयोजक ने माननीय फादर का अनुसरण किया; उसका चेहरा बर्फ की तरह चमक रहा था, इसलिए उसे देखना असंभव था। इस अद्भुत साक्षात्कार से इसाक चकित रह गया; उसने अपना मुँह खोला और अपने बगल में खड़े फादर मकारियस से पूछा:

'यह अद्भुत दृश्य क्या है, फादर? यह असाधारण व्यक्ति कौन है?'

सद्गुणों से अलंकृत मैकारियस को भी यह दर्शन प्राप्त हुआ था; वह इस पर चकित और स्तब्ध होकर, उत्तर दिया:

'मुझे नहीं पता, भाई; मैं स्वयं इस अद्भुत दर्शन को देखकर विस्मित हूँ; क्या कोई पुरोहित राजकुमार व्लादिमीर के साथ आया था?'

उस समय राजकुमार व्लादिमीर एंड्रीविच[6490] अपने बोयारों के साथ चर्च में थे; बुजुर्गों ने उनमें से एक से पूछा कि क्या राजकुमार के साथ कोई पादरी आया है; उस व्यक्ति ने जवाब दिया कि राजकुमार के साथ कोई पादरी नहीं था। तब भिक्षुओं को एहसास हुआ कि ईश्वर का एक देवदूत पूजनीय सर्गियस के साथ सह-आराधना कर रहा था। लितyपजी के अंत में, संत के उपर्युक्त शिष्य उसके पास आए और उन्होंने उससे इस बारे में पूछा। पहले तो, मठाधीश ने उन्हें यह रहस्य बताना नहीं चाहा:

'हे मेरे बच्चों, तुमने क्या असाधारण दृश्य देखा है? स्टीफन, थियोडोर और मैंने, एक पापी ने, लिटिर्जी का अनुष्ठान किया; वहाँ कोई और मौजूद नहीं था।'

लेकिन शिष्यों ने विनती करना जारी रखा; तब पूजनीय पिता ने उनसे कहा:

'मेरे बच्चों, यदि प्रिभु परमेश्वर स्वयं ने यह तुम्हें प्रकट किया है, तो मैं इसे कैसे छिपा सकता हूँ? जिसे तुमने देखा वह प्रभु का एक स्वर्गदूत था; न केवल अब, बल्कि हमेशा, जब भी मैं, जो कि अयोग्य हूँ, लिटिर्जी का अनुष्ठान करता हूँ, वह, परमेश्वर की इच्छा से, मेरे साथ सेवा करता है। जब तक मैं जीवित हूँ, तुम्हें इसे पूरी तरह से गुप्त रखना होगा।'

आदरणीय के शिष्यों में एंड्रोनिकोस नाम का एक शिष्य था, जो स्वयं आदरणीय की ही तरह रोस्तोव नगर का निवासी था। अपनी युवावस्था में ही, वह मठ में धन्य पिता सर्गियस के पास आए और उन्हें भिक्षुओं के समुदाय में स्वीकार कर लिया गया। यहाँ उन्होंने कई वर्षों तक परिश्रम किया, स्वयं को अनेक सद्गुणों से सुसज्जित किया और बहुत काम किया; इस कारण से, संत अपने उत्साही शिष्य से बहुत प्रेम करते थे और उनके लिए प्रभु से विनम्रतापूर्वक प्रार्थना करते थे। उस समय, संत अलेक्सियस अभी भी मॉस्को के मेट्रोपॉलिटन थे; एक घनिष्ठ मित्रता और भाईचारे के प्रेम के बंधन इस पवित्र धर्मगुरु को धन्य सर्गियस के साथ जोड़ते थे; वे अक्सर धर्मोपदेशात्मक वार्तालाप करते थे, और पवित्र मेट्रोपॉलिटन अक्सर आदरणीय मठाधीश से सलाह लेते थे। एक अवसर पर, मठ का दौरा करते समय, अलेक्सियस ने सर्गियस से कहा:

'मेरे प्रिय, मैं आपसे एक निवेदन करना चाहता हूँ, और मुझे विश्वास है कि आप मेरे प्रति अपने प्रेम के कारण मेरी विनती को अस्वीकार नहीं करेंगे।'

वरिष्ठ ने बिशप से उत्तर दिया:

'हे पवित्र प्रभु, हम सभी आपकी सेवा में हैं; इस मठ में आपके लिए कुछ भी वर्जित नहीं है।'

तब मेट्रोपॉलिटन ने कहा:

[6490] सर्पुखोव के राजकुमार व्लादिमीर आंद्रेविच, जिनके अधिकार क्षेत्र में ट्रिनिटी लावरा स्थित था, कूलिकोवो की लड़ाई में दिमित्री इओआनोविच डॉन्स्कोय के साथी योद्धा थे।

मैं ईश्वर की सहायता से एक मठ बनाना चाहता हूँ। क्योंकि जब हम कॉन्स्टेंटिनोपल से नौकायन कर रहे थे, तो एक भयंकर तूफान आ गया, जिससे जहाज डूबने के खतरे में पड़ गया, और हमारा निश्चित विनाश हो गया था। सभी ने ईश्वर से प्रार्थना करनी शुरू कर दी; मैंने भी उनसे हमें आने वाली मृत्यु से बचाने की विनती करनी शुरू कर दी। उसी क्षण, मैंने उस संत के नाम पर एक चर्च बनाने का संकल्प लिया, जिनका पर्व का दिन उसी दिन आता है जिस दिन प्रभु हमें सुरक्षित रूप से तट पर पहुँचाएँगे। उसी घड़ी से तूफ़ान थम गया, शांति लौट आई, और हम 16 अगस्त[6491] को तट पर पहुँचे; अब मैं अपना व्रत पूरा करना चाहता हूँ - हमारे प्रभु यीशु मसीह के नाम पर, उनकी 'हस्तनिर्मित न हुई प्रतिमा' के सम्मान में एक चर्च का निर्माण करना; इसके साथ ही, मैं एक मठ स्थापित करना और उसमें एक सामुदायिक आवास बनाना चाहता हूँ। अतः मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ कि आप मुझे अपना प्रिय शिष्य एंड्रोनिकोस प्रदान करें।

संत ने मेट्रोपॉलिटन की विनती तुरंत स्वीकार कर ली। मठ की आवश्यकताओं के लिए दान देने के बाद, अलेक्सियस मॉस्को के लिए रवाना हो गए और वहाँ, याउज़ा नदी के तट पर, '[6492] ' मठ की स्थापना की, जहाँ उन्होंने उपर्युक्त एंड्रोनिकोस को मठाध्यक्ष का पद सौंपा। कुछ समय बाद, आदरणीय सेरजियस स्वयं नए मठ में आए; अपने शिष्य को आशीर्वाद देने के बाद, उन्होंने कहा:

'हे प्रभु, स्वर्ग से इस स्थान पर दृष्टि डालो और अपनी दया से इसे आशीर्वाद दो।'

उसी संत अलेक्सियस ने, अपनी विनम्र प्रार्थनाओं के माध्यम से टाटार रानी ताइदुला के ठीक होने के लिए प्रभु का धन्यवाद करते हुए, मास्को में एक और मठ की स्थापना की – आर्कएन्जेल माइकल के चमत्कार के स्मरणार्थ; और इस चुदोव मठ के लिए, मेट्रोपॉलिटन ने सर्गियस से कई वरिष्ठों का अनुरोध किया।

आदरणीय संत का नाम मॉस्को में एक और मठ की स्थापना से जुड़ा है, अर्थात् समिोनोव मठ[6493] । उपर्युक्त थियोडोर, सर्गियस के भतीजे, ने महान तपस्वी के मठ में बहुत समय बिताया, सद्गुणों में फलते-फूलते हुए और संयम के माध्यम से अपने शरीर को वश में करते हुए। उन्होंने अपने आध्यात्मिक पिता, मठाधीश से कभी कुछ भी नहीं छिपाया, बल्कि हर विचार का उनसे इक़रार किया। जब वे पहले ही एक पुरोहित-भिक्षु बन चुके थे, तो वे कहीं एक मठ की स्थापना करना चाहते थे; उन्होंने इस बारे में परम पूजनीय सेरगियस को बताया। कुछ समय बाद, संत सेरगियस ने इसमें ईश्वर की इच्छा देखकर, थियोडोर को आशीर्वाद दिया और उसे कुछ भाइयों के साथ भेज दिया। मोस्क्वा नदी के पास साइमनोवो नामक एक स्थान खोजने के बाद, थियोडोर ने वहाँ एक मठ स्थापित करने का संकल्प लिया। जब आदरणीय सेंट सर्जियस को इस बात की जानकारी मिली, तो वे आए, उन्होंने थियोडोर को आशीर्वाद दिया और उनके इरादे की प्रशंसा की। थियोडोर ने उनकी महिमामय जयंती के सम्मान में, परम पवित्र देवी, हमारे ईश्वर की माता को समर्पित एक चर्च का निर्माण किया; वहाँ एक मठ स्थापित करने के बाद, थियोडोर ने उसमें सामूहिक जीवन की भी शुरुआत की। थियोडोर के सदाचारी जीवन की ख़बर दूर-दूर तक फैल गई, और उनके मठ में भिक्षुओं की संख्या बढ़ती गई। आदरणीय सर्जियस स्वयं कई मौकों पर इस मठ में आए और, परंपरा के अनुसार, उन्होंने भाईचारे के कार्यों में भाग लिया। कुछ समय बाद, पूजनीय थियोडोर को रोस्तोव के आर्चबिशप के पद पर पदोन्नत किया गया और, अपने सद्गुणों के द्वारा, वे 28 नवंबर 1394 को अपनी मृत्यु तक वहाँ एक उज्ज्वल दीपक की तरह चमकते रहे।

न केवल मास्को में, बल्कि कई अन्य स्थानों पर भी, मठ—जो सच्चे धर्म के प्रकाशस्तंभ हैं—उभरने लगे, जिन्हें पूजनीय सर्गियस के शिष्यों द्वारा स्थापित किया गया या स्वयं महान तपस्वी द्वारा स्थापित किया गया। इस प्रकार, महा राजकुमार दिमित्री इवानोविच, कोलोमना में गोलुत्विनो नामक स्थान पर एक मठ बनवाना चाहते थे, और उन्होंने संत सेरगियस से उस स्थान को आशीर्वाद देने तथा वहाँ एक चर्च बनाने का आग्रह किया। महान राजकुमार के विश्वास से प्रेरित और उनके प्रति अपने प्रेम से प्रेरित होकर, पूज्यनीय संत ने पैदल ही कोलोमना की ओर प्रस्थान किया – जैसा कि उनका रिवाज था – उस स्थल का आशीर्वाद दिया और वहाँ प्रभु के एपिफेनी (प्रकट होने के पर्व) को समर्पित एक चर्च का निर्माण किया। महान राजकुमार के अनुरोध पर, उन्होंने अपने शिष्यों में से एक, मठवासी पुरोहित ग्रेगरी—जो एक भक्तिपूर्ण और धर्मनिष्ठ व्यक्ति थे—को नए मठ में नियुक्त किया; और जल्द ही, ईश्वर की कृपा से, यह मठ,

---

[6491] 16 अगस्त को, हमारे प्रभु यीशु मसीह की चमत्कारी प्रतिमा का एडेसा से कॉन्स्टेंटिनोपल में स्थानांतरण, जो 944 में हुआ था, मनाया जाता है।

[6492] स्पासो-एंड्रोनिकोव मठ की स्थापना 1361 में हुई थी।

[6493] समिोनोव मठ लगभग 1370 का है।

जहाँ एक सामुदायकि आवास भी स्थापति कयि गया था, एक ईश्वर की महमि के लिए फल-फूल उठा, जो त्रमिूर्त में महमिामय है[6494] ।

एक अन्य राजकुमार, व्लादमिीर आंद्रेवचि के अनुरोध पर, परम पूजनीय ने सर्वपवत्रि परमेश्वर की माता के गर्भाधान के सम्मान में सेरपुखोव में एक मठ के लिए एक स्थल का आशीर्वाद दयि। इस मठ में, जसि वसिोट्स्की के नाम से जाना जाता है, संत ने अपने सबसे प्रयि शष्यिों में से एक, अथेनासयिस को नर्मिाता के रूप में भेजा; वह दव्यि धर्मग्रंथों का पारंगत था, अपनी असाधारण आज्ञाकारति और अन्य गुणों के लिए प्रसद्धि था, और उसने पुस्तकों की प्रतलिपि बनाने में लगन से परश्रिम कयि[6495] । इस प्रकार, पूजनीय सर्गयिस ने कई मठों को आशीर्वाद देते हुए और अपने शष्यिों को वहाँ भेजते हुए, चर्च के लाभ और हमारे प्रभु यीशु मसीह के पवत्रि और महान नाम की महमि के लिए परश्रिम कयि। परम पूज्य की दैवीय जीवनशैली, उनकी असाधारण वनिम्रता, और चर्च के हति के लिए उनके कार्यों ने मेट्रोपॉलटिन संत अलेक्सयिस में यह इच्छा जगाई कि धन्य सर्गयिस उनके उत्तराधकिारी और प्रतनिधि बनें।

मसीह के झुंड के इस योग्य चरवाहे ने, यह महसूस करते हुए कि उनका अंत नकिट आ गया है, पूजनीय सेरगयिस को अपने पास बुलाया और सोने व कीमती पत्थरों से सुसज्जति अपना बशिप का क्रॉस लेकर उसे पूजनीय को भेंट कर दयि। लेकनि महान तपस्वी ने नम्रता से सरि झुकाते हुए कहा:

'मुझे क्षमा करें, हे पवत्रि प्रभु; मैं अपनी जवानी से ही सोना धारण करने वाला नहीं रहा हूँ, और अपनी वृद्धावस्था में मैं और भी अधकि गरीबी में रहने की इच्छा रखता हूँ।'

संत अलेक्सयिस ने उससे कहा:

'प्रयि, मैं जानता हूँ कि ऐसा ही हमेशा से आपका जीवन-मार्ग रहा है; परन्तु अब आज्ञाकारति दखिाओ और हम जो आशीर्वाद तुम्हें देते हैं, उसे स्वीकार करो।'

इतना कहकर, उन्होंने स्वयं संत पर एक क्रॉस रखा, और फरि बोलना शुरू कयि:

'क्या आप जानते हैं, आदरणीय पति, कि मैंने आपको क्यों बुलाया है, और मैं आपसे क्या प्रस्ताव रखना चाहती हूँ? देखए, मैंने रूस के मेट्रोपॉलटिन पद को, जो ईश्वर ने मुझे सौंपा था, उतने समय तक धारण कयि है, जतिना प्रभु को उचति लगा; लेकनि अब मेरा अंत नकिट है, यद्यपि मुझे अपने नधिन का दनि नहीं पता। मैं चाहता हूँ कि जब तक मैं जीवति हूँ, मुझे एक ऐसा व्यक्ति मलि जाए जो मेरे बाद मसीह के झुंड का चरवाहा बन सके, और मुझे आप के सवि कोई नहीं मलिता। मैं भली-भाँति जानती हूँ कि राजकुमार, बोयार और पुरोहति वर्ग - संक्षेप में, हर कोई बनि कसिी अपवाद के - आपसे प्रेम करते हैं; वे सभी आपसे आर्चपास्टोरल सहिासन पर आरोहण करने का आग्रह करेंगे, क्योंकि आप ही इसके एकमात्र पूर्ण योग्य हैं। अत; अभी बशिप का पद स्वीकार करें, ताकि मेरी मृत्यु के बाद आप मेरे उत्तराधकिारी बन सकें।

ये शब्द सुनकर, आदरणीय, जो स्वयं को ऐसे पद के अयोग्य मानते थे, आत्मा में बहुत व्याकुल हो गए।

'मुझे क्षमा करें, महाशय,' उसने संत से कहा, 'आप मुझ पर मेरी शक्ति से परे एक बोझ डालना चाहते हैं। यह असंभव है: मैं एक पापी हूँ और सभी मनुष्यों में सबसे नीच हूँ; मैं ऐसी उच्च पदवी स्वीकार करने की हम्मित कैसे करूँ?'

धन्य संत अलेक्सयिस ने उस आदरणीय को मनाने के लिए बहुत समय लगाया। लेकनि सेरजयिस, जो वनिम्रता का पालन करते थे, अडगि रहे।

उन्होंने कहा, 'हे पवत्रि बशिप, यदि आप मुझे इन क्षेत्रों से भगाना नहीं चाहते, तो इस बारे में और बात न करें और न ही कसिी और को मुझे ऐसी बातों से परेशान करने दें: कोई भी मुझे इस बात के लिए राज़ी नहीं पाएगा।'

जब संत ने अपनी बात पर अडगि रहना जारी रखा, तो महाधर्माध्यक्ष ने इस मामले पर उनसे बात करना बंद कर दयि: उन्हें डर था कि वे आदरणीय कहीं और दूर-दराज के स्थानों और रेगस्तिानों में चले जाएँगे, और मॉस्को को प्रकाश के ऐसे दीपक से वंचति होना पड़ सकता है। एक आध्यात्मकि वार्ता के साथ उनका सांत्वना देने के बाद, संत ने उन्हें शांतपिूर्वक उनके मठ में वापस भेज दयि।

कुछ समय बाद, मेट्रोपॉलटिन संत अलेक्सयिस का नधिन हो गया; जसिके बाद सभी ने सर्गयिस से रूसी मेट्रोपोलसि का पदभार संभालने का आग्रह कयि। लेकनि आदरणीय संत अडगि रहे। इस बीच, आर्चमैंड्राइट माइकल

[6494] मूल रूप से, लगभग 1385 में स्थापति कोलोमना गोलुट्वनि मठ, कोलोमना शहर से चार वर्स्ट दूर मस्क्वा और ओका नदयिों के संगम पर स्थति था; लेकनि 18वीं शताब्दी में, इस मठ को शहर के भीतर ही स्थानांतरति कर दयि गया, और इसीलिए इसे 'नोवो गोलुट्वनि' के नाम से जाना जाने लगा।

[6495] वशिोट्स्की मठ, जसिका नाम नारा नदी के ऊँचे तट पर स्थति होने के कारण पड़ा, की स्थापना 1374 में हुई थी।

मेट्रोपॉलटिन के पद पर आसीन हुए; उसने संतों के वस्त्र धारण करने और अपने अभषिेक से पहले अपने सरि पर सफेद मुकुट रखने की हम्मित की। यह मानकर कि सर्गयिस उसकी इस दुस्साहसी योजना को वफिल कर देंगे और स्वयं मेट्रोपॉलटिन का पद ग्रहण करना चाहेंगे, उसने आदरणीय संत और उनके मठ के खलिाफ षड्यंत्र रचना शुरू कर दयिा। यह जानकर, आदरणीय संत ने अपने शष्यिों से कहा:

'माइकल, जो इस मठ और हमारी गरीबी पर हुकूमत करता है, वह जो चाहता है उसे हासलि नहीं कर पाएगा और त्सारग्राद को देख भी नहीं पाएगा, क्योंकि वह घमंड से ग्रस्त है।'

संत की भवषि्यवाणी सच हुई: जब माइकल अपने अभषिेक के लिए जहाज से कॉन्स्टेंटनिोपल जा रहा था[6496] , तो वह बीमार पड़ गया और उसकी मृत्यु हो गई, और उसकी जगह साइप्रयिन[6497] को सहिासन पर बठिाया गया।

एक सौ पचास वर्षों से अधकि समय तक, रूसी भूमि एक भयानक वपित्ति को सहती रही: तातारों द्वारा उन पर कब्ज़ा कए हुए एक सौ पचास वर्ष से अधकि समय बीत चुका था। इन भयानक वजिताओं का जुआ दुखद और अपमानजनक था; पूरे क्षेत्रों पर बार-बार हमले, आबादी की लूटपाट, नविासयिों की पटिाई, ईश्वर के चर्चों का वनिाश, और भारी कर – यह सब रूसी भूमि पर एक असहनीय जुआ था; राजकुमारों को अक्सर श्रद्धांजलि देने के लिए होर्डे की यात्रा करने के लिए मजबूर होना पड़ता था, जहाँ उन्हें वभिन्नि अपमानों का सामना करना पड़ता था। रईसों के बीच भी अक्सर असहमति और झगड़े होते थे, जसिसे वे वदिेशी आक्रमणकारयिों के जुए को उखाड़ फेंकने के लिए एकजुट नहीं हो सके।

उस समय, लोगों के पापों की सजा के रूप में ईश्वर की अनुमति से, टाटार ख़ानों में से एक, दुष्ट मामई, अपनी सभी अनगनित सेनाओं के साथ रूसी पर चढ़ आया। उस घमंडी ख़ान ने तो ऑर्थोडॉक्स धर्म को भी नष्ट करने का प्रयास कयिा; अपने अहंकार में, उसने कुलीनों से कहा:

'मैं रूसी भूमि पर कब्ज़ा कर लूँगा, ईसाई चर्चों को धूल चटा दूँगा, और सभी रूसी राजकुमारों का कत्ल कर दूँगा।'

धार्मकि राजकुमार दमित्रिी इवानोवचि ने उपहारों और वनिम्रता से ततारों के क्रोध को शांत करने का व्यर्थ प्रयास कयिा; खान अडगि था; दुश्मनों की सेनाएं पहले ही रूसी भूमि की सीमाओं की ओर एक तूफानी बादल की तरह बढ़ रही थीं। महान राजकुमार ने भी अभयिान की तैयारी शुरू कर दी, लेकनि नकिलने से पहले, वह प्रभु की पूजा करने और आने वाले अभयिान के लिए उस मठ के पवत्रि मठाधीश का आशीर्वाद लेने के लिए जीवन-दायक त्रमिूर्ति के मठ गए; सर्वपवत्रि त्रमिूर्ति की प्रतमिा के सामने भक्तपिूर्वक प्रार्थना करने के बाद, दमित्रिी ने आदरणीय सर्गयिस से कहा:

'आप जानते हैं, पतिाजी, कि मुझ पर और सभी ऑर्थोडॉक्स पर कतिनी बड़ी पीड़ा है: अधर्मी खान मामई ने अपनी सारी सेनाएँ जुटा ली हैं, और अब वे मेरे पूर्वजों की भूमि पर पवत्रि चर्चों को लूटने और रूसी लोगों का संहार करने के लिए मार्च कर रहे हैं। अतःप्रार्थना करें, पतिाजी, कि ईश्वर हमें इस महान वपित्ति से बचाए।'

यह सुनकर, पूजनीय ने राजकुमार को प्रोत्साहति करना शुरू कयिा और उससे कहा:

'यह तुम्हारे लिए उचति है कि तुम ईश्वर द्वारा तुम्हें सौंपी गई भेड़ों की देखभाल करो और अधर्मी के वरिुद्ध खड़े हो जाओ।'

इसके बाद, पवत्रि संन्यासी ने राजकुमार को दैवीय लतिुर्गी में शामलि होने के लिए आमंत्रति कयिा; इसके समापन पर, सर्गयिस ने दमित्रिी इवानोवचि से अपने मठ में भोजन करने का अनुरोध कयिा; यद्यपि महाप्रभु अपनी सेना में वापस जाने के लिए जल्दबाजी में थे, फरि भी उन्होंने पवत्रि मठाधीश की आज्ञा मानी। फरि संन्यासी ने उनसे कहा:

'यह भोजन, महा राजकुमार, आपके लिए लाभकारी होगा। प्रभु ईश्वर आपके सहायक हैं; आपके स्वयं वजिय के मुकुट धारण करने का समय अभी नहीं आया है, लेकनि कई लोगों के लिए—आपके अनगनित साथी योद्धाओं के लिए—शहीदों के मुकुट तैयार हैं।'

भोजन के बाद, पूजनीय पतिाजी ने महा-ड्यूक और उनके साथयिों पर पवत्रि जल छड़िककर उनसे कहा:

'शत्रु पूर्ण वनिाश का सामना कर रहा है, जबकि आपके लिए ईश्वर की ओर से दया, सहायता और महमिा है। अतः प्रभु और ईश्वर की अति पवत्रि माता में वश्विास रखें।'

तब, महा राजकुमार को पवत्रि क्रॉस से आशीर्वाद देने के बाद, रेवरेंड फादर ने भवषि्यवाणी करते हुए कहा:

[6496] उस समय, रूसी चर्च अभी भी कॉन्स्टेंटनिोपल के पैट्रआर्क के अधीन था।

[6497] उन्होंने 1354 से 1391 तक मेट्रोपॉलटिन के रूप में कार्य कयिा।

'जाइए, मेरे प्रभु, नडिर होकर: प्रभु अधर्मी लोगों के वरिुद्ध आपकी सहायता करेंगे; आप अपने शत्रुओं को पराजति करेंगे।'

उन्होंने ये आखरिी शब्द केवल राजकुमार से कहे; रूसी भूमकिा रक्षक तब आनंद से भर गया, और संत की भवष्यिवाणी ने उसे भावनात्मक आँसुओं से भर दयिा। उसी समय, दो भक्षिु, अलेक्जेंडर पेरेश्वेट और आंद्रेई ओस्ल्याब्या, सेंट सर्जयिस के मठ में रह रहे थे: अपने सांसारकि जीवन में, वे योद्धा रहे थे, जो युद्ध की कला में अनुभवी थे। ये ही योद्धा भक्षिु थे जन्हिें महा राजकुमार ने पूजनीय सर्गयिस से मांगा था; वृद्ध ने तुरंत दमित्रिी इओआनोवचि की प्रार्थना स्वीकार कर ली: उन्होंने आदेश दयिा कि इन भक्षिुओं को मसीह के क्रूस की छवि वाले स्कीमा से वभिूषति कयिा जाए:

'देखो, मेरे बच्चों, एक अजेय हथयिार: यह युद्ध में आपके लिए कवच और ढाल के स्थान पर काम करे!'

तब महा राजकुमार ने गहरी भावना के साथ उद्घोष कयिा:

'यदि प्रभु मेरी सहायता करें और मैं अधर्मी पर वजिय प्राप्त करूँ, तो मैं परमेश्वर की अतपिवत्रि माता के नाम पर एक मठ की स्थापना करूँगा।'

इसके बाद, पूजनीय पति ने एक बार फरि राजकुमार और उसके साथयिों को आशीर्वाद दयिा; परंपरा के अनुसार, उन्होंने उन्हें सर्वशक्तमिान प्रभु की एक प्रतमिा दी और मठ के दरवाजों तक उनका साथ दयिा। इस प्रकार, पवत्रि मठाधीश ने इस कठनि समय में राजकुमार को प्रोत्साहति करने का प्रयास कयिा, जब अधर्मी दुश्मनों ने रूसी नाम को पृथ्वी के चेहरे से मटिा देने और ऑर्थोडॉक्स धर्म को नष्ट करने की धमकी दी थी।

इस बीच, रूसी राजकुमार एकजुट हो गए थे, और एकत्रति सेना अपनी मुहमि पर नकिल पड़ी; 7 सतिंबर को, मलिशियिा डॉन नदी तक पहुँची, उसे पार की, और प्रसद्धि कुलकिोवो मैदान[6498] , पर जबरदस्त दुश्मन का सामना करने के लिए तैयार हो गई। 8 सतिंबर की सुबह, परम पवत्रि ईश्वर माता के जन्मोत्सव के दनि, सेना ने युद्ध की तैयारी शुरू कर दी। युद्ध से ठीक पहले, संन्यासी नेक्टारयिोस, सेंट सर्जयिस मठ से दो अन्य भाइयों के साथ पहुंचे। पवत्रि मठाधीश राजकुमार के साहस को मजबूत करना चाहते थे: उन्होंने उन्हें परम पवत्रि त्रमिूर्तकिा आशीर्वाद दयिा, और संतों के साथ ईश्वर माता को समर्पति एक प्रॉस्फोरा और एक पत्र भेजा जसिमें उन्होंने उन्हें ईश्वर की सहायता की आशा से सांत्वना दी और भवष्यिवाणी की कि प्रभु उन्हें वजिय प्रदान करेंगे। सेंट सर्जयिस के दूतों की खबर रेजमिेंटों में तेजी से फैल गई और सैनकिों में साहस भर दयिा; सेंट सर्जयिस की प्रार्थनाओं पर भरोसा करते हुए, वे ऑर्थोडॉक्स धर्म और अपनी मातृभूमकि लिए मरने को तैयार होकर नडिर होकर युद्ध में मार्च कर गए।

ततारों का एक अनगनित दल बादल की तरह बढ़ रहा था; उसके बीच से वशिालकाय योद्धा चेलूबेय नकिला, जो अपनी असाधारण शक्तकि लिए प्रसद्धि था। प्राचीन गोलयिाथ की तरह अहंकार से, उसने कसिी भी रूसी को एक-एक करके लड़ने की चुनौती दी। इस योद्धा का भयानक रूप डरावना था। लेकनि उनके सामने सामना करने के लिए वनिम्र संन्यासी पेरेस्वेत आगे बढ़ा। अपने आध्यात्मकि पति, अपने साथी योद्धा ओस्ल्याबा और महा राजकुमार को मौन वदिाई देकर, मसीह का यह बहादुर योद्धा, हाथ में भाला लिए, तेजी से अपने प्रतद्विंद्वी पर टूट पड़ा; वे भयानक ताकत से भड़ि, और दोनों ही मृत पड़े। तब एक भयंकर युद्ध छड़ि गया; रूस में पहले कभी ऐसा कत्लेआम नहीं देखा गया था: उन्होंने चाकुओं से लड़ाई की, एक-दूसरे का गला अपने नग्न हाथों से घोंटा; एक-दूसरे पर चढ़ते हुए, वे घोड़ों के खुरों के नीचे मारे गए; धूल और तीरों की भीड़ से सूरज ढक गया, और दस वर्स्ट तक के क्षेत्र में खून की नदयिाँ बहने लगीं। उस दनि कई बहादुर रूसी योद्धा मारे गए, लेकनि उनसे दोगुने तातार मारे गए – यह लड़ाई दुश्मन की पूर्ण पराजय में समाप्त हुई: अधर्मी और अहंकारी दुश्मन भाग गए, पीछे एक ऐसा रणक्षेत्र छोड़ गए जो मारे गए लोगों की लाशों से पटा हुआ था; मामई खुद मुश्कलि से अपने कुछ साथयिों के साथ बच पाया।

उस भयानक युद्ध के पूरे समय, पूजनीय सर्गयिस ने अपने भाइयों को इकट्ठा कयिा और उनके साथ प्रार्थना में खड़े रहे और प्रभु से ऑर्थोडॉक्स सेना को वजिय प्रदान करने के लिए वनिम्रतापूर्वक प्रार्थना की। दूरदर्शति का वरदान प्राप्त होने के कारण, संत स्पष्ट रूप से, मानो अपनी आँखों के सामने, अपने से बहुत दूर की हर चीज़ को देख सकते थे; यह सब पूर्वानुमान लगाते हुए, उन्होंने भाइयों को रूसी लोगों की जीत के बारे में बताया, शहीदों के नाम लिए, और स्वयं उनके लिए प्रार्थना की। इस प्रकार प्रभु ने अपने वफादार सेवक को सब कुछ प्रकट कर दयिा।

[6498] कुलीकोवो मैदान तुला प्रांत के एपफिानोव्स्की जलि में स्थति है।

महान राजकुमार, जिसने तातारों पर ऐसी शानदार विजय के लिए 'ऑफ़ द डॉन' की उपाधि अर्जित की थी, अत्यधिक आनंद के साथ मास्को लौटा और तुरंत पूजनीय सर्गियस से मिलने के लिए रवाना हो गया। मठ में पहुँचने पर, उसने पूरे दिल से प्रभु का धन्यवाद किया, 'युद्ध में पराक्रमी', ने पवित्र मठाध्यक्ष और भ्रातओं को उनकी प्रार्थनाओं के लिए धन्यवाद दिया, आदरणीय सर्गियस को युद्ध का विस्तार से वर्णन किया, कुलिकोवो क्षेत्र[6499] में मारे गए सभी योद्धाओं के लिए स्मारक प्रार्थना सभा और शोक संस्कार आयोजित करने का आदेश दिया, और मठ को उदार दान दिया। युद्ध से पहले दिए गए अपने वादे – एक मठ बनाने के – को याद करते हुए, महाप्रसि ने, आदरणीय सर्गियस की मदद से, जिन्होंने स्थल का चयन किया था और नए मठ के चर्च को समर्पित किया था, डुबेनका नदी पर परम पवित्र परमेश्वर की माता के डोर्मशिन के सम्मान में एक मठ का निर्माण किया[6500] , जहाँ एक सामुदायिक आवास भी स्थापित किया गया था।

थोड़ी ही देर बाद, शैतान के उकसावे पर, नए खान तोखतामिश के नेतृत्व में तातारों ने विश्वासघातपूर्वक रूसी भूमि पर आक्रमण किया[6501] ; तोखतामिश ने अचानक मास्को पर कब्जा कर लिया और कई अन्य नगरों को तबाह कर दिया। सम्माननीय सेरजियस ट्वेर चले गए; भयानक शत्रु पहले ही मठ के निकट आ चुके थे, लेकिन ईश्वर का शक्तिशाली दाहिना हाथ मठ को इन भयंकर विजेताओं के दुस्साहसी हाथ से बचाए रखता रहा: जब तोखतामिश को पता चला कि महा राजकुमार अपनी सेना के साथ आ रहे हैं, तो वह तुरंत पीछे हट गया।

तातार, जो अपने आप में ही भयानक थे, रूसी भूमि के लिए और भी अधिक भयावह और खतरनाक थे, जब राजकुमारों के बीच महा-राजकुमार के सिंहासन और अन्य क्षेत्रों को लेकर विभिन्न विवाद और झगड़े हो रहे थे। कुछ राजकुमारों ने तो रूसी भूमि के दुश्मनों - टाटर्स और लिथुआनियाई लोगों - के साथ गठबंधन भी कर लिया; हमारे दुश्मनों ने अक्सर इस तरह के आंतरिक संघर्ष का फायदा उठाया, जिससे रूसी भूमि विनाश का सामना करने लगी; इस बीच, इसे बचाने और भयंकर दुश्मनों को पीछे हटाने के लिए, सभी के लिए यह आवश्यक था कि वे घनिष्ठ रूप से एकजुट हों और सभी आपसी मतभेदों को भुलाकर विधर्मियों के खिलाफ अपने मातृभूमि की दृढ़ता से रक्षा करें। इस उद्देश्य के लिए, सर्वोच्च अधिकार एक ही महा राजकुमार के हाथों में होना चाहिए था, ताकि अन्य राजकुमार उसके अधीन रहें और उसकी इच्छा का पालन करें। आदरणीय सर्गियस ने कुलिकोवो की लड़ाई, से पहले और बाद में, इस बात को बढ़ावा देने का प्रयास किया, और इस प्रकार उन्होंने अपनी मातृभूमि के प्रति महान सेवा की। कई मौकों पर उन्होंने किसी न किसी राजकुमार से मुलाकात की और ईश्वर की मदद से, अक्सर अपने प्रेरित शब्दों के माध्यम से झगड़ों को समाप्त कर दिया। इस प्रकार, 1365 में, उन्होंने निज़नी नोवगोरोद का दौरा किया और राजकुमार बोरिस कॉन्स्टेंटिनोविच को, जिसने अपने भाई दिमित्री से उस शहर पर कब्जा कर लिया था, ग्रैंड प्रिंस दिमित्री इओआनोविच के अधीन होने के लिए मना लिया, जो निज़नी नोवगोरोद को राजकुमार दिमित्री को वापस करने की मांग कर रहे थे।

आदरणीय सर्जियस ने रियाज़ान के राजकुमार ओलेग और मास्को के महान राजकुमार के बीच भी सुलह कराई। ओलेग ने रूसी भूमि के दुश्मनों के साथ गठबंधन करके बार-बार संधियों का उल्लंघन किया था। दिमित्री इओआनोविच ने, मसीह की आज्ञा का पालन करते हुए, कई मौकों पर ओलेग को शांति की पेशकश की, लेकिन ओलेग ने महाप्रसि के सभी प्रस्तावों को अस्वीकार कर दिया। तब उन्होंने सम्माननीय सर्गियस से ओलेग को शांति करने के लिए मनाने का अनुरोध किया। 1385 में, विनम्र मठाधीश, अपनी आदत के अनुसार, पैदल ही रियाज़ान के लिए रवाना हुए और ओलेग से लंबी बात की। रियाज़ान का राजकुमार गहराई से प्रभावित हुआ: वह उस पवित्र व्यक्ति से लज्जित हो गया और महाप्रसि के साथ एक शाश्वत शांति संधि की।

दिमित्री इओनोविच स्वयं परम पूज्य के प्रति विशेष प्रेम और सम्मान रखते थे: वे अक्सर पवित्र मठाधीश से सलाह लेते थे और उनका आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए अक्सर उनसे मिलने आते थे। उन्होंने सर्गियस को अपने बच्चों के गॉडफादर बनने के लिए आमंत्रित किया; वास्तव में, राजकुमार की वसीयत को पूजनीय की हस्ताक्षर से मुहरबंद किया गया था; इस वसीयत में, महा राजकुमार के सिंहासन के उत्तराधिकार का क्रम सर्वकाल के लिए स्थापित किया गया था: महा राजकुमार का अधिकार सबसे बड़े बेटे को विरासत में मिलेगा।

[6499] तभी सेंट डेमेट्रियस का शनिवार (अक्टूबर में) स्थापित किया गया था – यह उस लड़ाई में मारे गए सैनिकों और सामान्य रूप से दिवंगत सभी लोगों की स्मृति का दिन था।

[6500] डुबेनका नदी पर, जो डुबना नदी में मिलती है, लावरा से 40 वर्स्ट दूर बना डुबेन्स्की मठ अब मौजूद नहीं है।

[6501] तोखतामिश का आक्रमण 1382 में हुआ था।

उपरोक्त राजकुमार व्लादिमीर आंद्रेविच का धन्य संत के प्रति पुत्रवत प्रेम और अटूट विश्वास था: वह अक्सर उनसे मिलने आते थे और उन्हें अक्सर रोजमर्रा की आवश्यकताओं के उपहार भेजते थे। एक अवसर पर, अपनी प्रथा के अनुसार, उन्होंने एक नौकर को विभिन्न स्वादिष्ट व्यंजनों के साथ आदरणीय संत के मठ में भेजा। रास्ते में, शैतान के बहकावे में आकर, नौकर ने प्रलोभन में पड़कर भेजे गए भोजन में से थोड़ा खा लिया। मठ पहुँचने पर, उसने संत से कहा कि ये स्वादिष्ट व्यंजन राजकुमार ने भेजे हैं। हालाँकि, दूरदर्शी संन्यासी ने उन्हें स्वीकार करने से इनकार कर दिया, और कहा:

'बेटा, तुमने दुश्मन की आज्ञा क्यों मानी? उस भोजन को चखकर तुम भटक क्यों गए, जिसे तुम्हें बिना आशीर्वाद के छूना भी नहीं चाहिए था?'

इस तरह सामना किए जाने पर, नौकर पवित्र साधु के चरणों में गिर पड़ा और, आँसू भरी आँखों से, अपने अपराध पर पछताते हुए क्षमा याचना करने लगा। तब जाकर पूजनीय वृद्ध ने यह उपहार स्वीकार किया; उन्होंने सेवक को क्षमा कर दिया, उसे फिर कभी ऐसा कुछ न करने की मनाही की, और उसे शांति से विदा कर दिया, साथ ही उसे सबसे पवित्र त्रिमूर्ति के मठ की कृतज्ञता और आशीर्वाद भक्त राजकुमार तक पहुँचाने का निर्देश दिया।

कई लोग आदरणीय संत के पास उनकी मदद और मध्यस्थता के लिए आते थे, और सेरजियस हमेशा संकट में पड़े लोगों की मदद करते थे और उत्पीड़ितों तथा गरीबों की रक्षा करते थे। मठ के पास एक कंजूस और कठोर-हृदय व्यक्ति रहता था; उसने अपने पड़ोसी, एक अनाथ के साथ अन्याय किया था: उसने उससे बिना पैसे दिए एक सूअर ले लिया था और उसे ज़बिह करने का आदेश दिया था। अन्याय सहने वाले व्यक्ति ने शिकायत करने के लिए रेवरेंड फादर के पास जाकर उनसे मदद मांगी; तब रेवरेंड फादर ने उस व्यक्ति को अपने पास बुलाया और उससे कहा:

'मेरे बच्चे, क्या तुम विश्वास करते हो कि ईश्वर है? वह धर्मी और पापी का न्यायी है, अनाथों और विधवाओं का पिता है; वह प्रतिशोध लेने के लिए तैयार है – परन्तु उसके हाथों में पड़ना एक भयानक बात है। तो फिर ऐसा कैसे है कि हम दूसरों की चीज़ लेने, अपने पड़ोसी पर अत्याचार करने, और हर प्रकार के बुरे काम करने से नहीं डरते? क्या हम तब तक उससे प्रसन्न नहीं हैं जो वह हमें अपनी कृपा से देता है, जब हम दूसरों की संपत्ति के प्रलोभन में पड़ते हैं? हम उसकी दीर्घ सहनशीलता का तिरस्कार कैसे कर सकते हैं? क्या हम यह नहीं देखते कि जो अन्याय करते हैं वे दरिद्र हो जाते हैं, उनके घर खाली रह जाते हैं, और उनकी स्मृति हमेशा के लिए मिट जाती है; और आने वाले युग में, उनका अनंतकाल कि कष्ट प्रतीक्षा कर रहा है?

और संत ने उस मनुष्य को विस्तार से उपदेश देना जारी रखा, उसे अनाथ को उसका हक़ चुकाने की आज्ञा देते हुए, और कहा:

'अनाथों पर अत्याचार कभी न करो।'

उस आदमी ने पश्चाताप किया, सुधार करने और पैसे अपने पड़ोसी को देने का वादा किया; लेकिन कुछ समय बाद वह अपने वचन से मुकर गया और पैसे अनाथ को नहीं दिए। और इस प्रकार, जब वह उस गोदाम में गया जहाँ कसाईखाने वाले सूअर का मांस पड़ा था, तो उसने अचानक देखा कि कीड़ों ने उसे खा-खाकर खत्म कर दिया था, जबकि उस समय बहुत ठंड थी। डर के मारे, उसने तुरंत अनाथ को उसका हक़ चुका दिया, और मांस कुत्तों को फेंक दिया।

एक दिन, कॉन्स्टेंटिनोपल से मॉस्को में एक बिशप आया; उसने ईश्वर के उस पवित्र पुरुष के बारे में बहुत कुछ सुना था, लेकिन उस पर विश्वास नहीं किया।

'क्या इतने बड़े दिग्गज,' उसने सोचा, 'वास्तव में इन इलाकों में प्रकट हो सकते हैं?'

इस प्रकार तर्क करते हुए, उसने मठ जाने और स्वयं वृद्ध से मिलने का निश्चय किया। जैसे ही वह मठ के पास पहुँचा, उसे डर सताने लगा; और मठ में प्रवेश करते ही और संत पर अपनी दृष्टि डालते ही वह तुरंत अंधा हो गया। तब आदरणीय संन्यासी ने उसका हाथ पकड़कर उसे अपनी कोठरी में ले गए। बिशप, आँसू भरी आँखों से, सर्जियस से विनती करने लगे, उन्होंने अपने अविश्वास का इकरार किया, अपनी दृष्टि लौटाने की प्रार्थना की, और अपने पाप पर पश्चाताप किया। विनम्र मठाधीश ने उनकी आँखों को छुआ, और बिशप की दृष्टि तुरंत लौट आई। फिर पूजनीय पिताजी ने उनसे धीरे और दयालुता से बात करनी शुरू की, और कहा कि उन्हें घमंडी नहीं होना चाहिए; बिशप, जो पहले संदेह में था, अब सभी को आश्वस्त करने लगा कि संत वास्तव में ईश्वर के पुरुष थे, और प्रभु ने उन्हें एक सांसारिक देवदूत और एक स्वर्गीय मनुष्य को देखने की कृपा प्रदान की थी। सम्माननीय ने बिशप को उचित सम्मान के साथ अपने मठ से विदा किया, और बिशप ईश्वर और उनके सेवक सर्गियस की महिमा करते हुए अपने स्थान पर लौट गया।

एक रात, धन्य सेरजियिस परमेश्वर की परम पवित्र माता की प्रतिमा के सामने अपने नियमित भक्ति कार्य कर रहे थे, और उनके पवित्र मुखमंडल को निहारते हुए, उन्होंने इस प्रकार प्रार्थना की:

हे हमारे प्रभु यीशु मसीह की परम पवित्र माता, मानव जाति की मध्यस्थ और दृढ़ सहायिका, हमारी अयोग्य मध्यस्थ बनो; अपने पुत्र और हमारे परमेश्वर से सदैव प्रार्थना करो, कि वह इस पवित्र स्थान पर दृष्टि डालें। हम, तेरे सेवक, हे परम मधुर मसीह की माता, तेरी सहायता के लिए पुकारते हैं; क्योंकि तू सभी के लिए शरण और आशा है।

इस प्रकार पादरी ने प्रार्थना की और परम पवित्र को धन्यवाद गीत गाया। अपनी प्रार्थना समाप्त करने के बाद, वे थोड़ी देर आराम करने के लिए बैठ गए। अचानक उन्होंने अपने शिष्य माइकल से कहा:

'मेरे पुत्र, जागते रहो और होशियार रहो! इसी घड़ी हमें एक अप्रत्याशित और अद्भुत मुलाकात मिलेगी।'

जैसे ही उन्होंने ये शब्द कहे, अचानक एक आवाज़ सुनाई दी, जो कह रही थी:

'देखो, परम पवित्र कुँवारी आ रही हैं।'

यह सुनकर, संत अपनी कोठरी से बाहर बरामदे में दौड़ पड़े; वहाँ वे सूर्य की किरणों से भी अधिक तेज प्रकाश में नहा उठे, और उन्हें परम पवित्र कुँवारी का दर्शन हुआ, जिनके साथ दो प्रेरित, पतरस और यूहन्ना थे: ईश्वर की माता के चारों ओर एक असाधारण तेज प्रकाश था। इतनी अद्भुत दिव्य-ज्योति को सहन न कर पाने के कारण, संत प्रणाम कर भूमि पर लेट गए। तब सर्व-पवित्र कन्या ने अपने हाथों से संत को छुआ और कहा:

'डरो मत, मेरे चुने हुए! मैं तुम्हें मिलने आई हूँ, क्योंकि शिष्यों के लिए तुम्हारी प्रार्थनाएँ सुनी गई हैं। इस मठ के लिए अब शोक मत करो: अब से यहाँ हर चीज़ की प्रचुरता होगी, न केवल तुम्हारे जीवनकाल में, बल्कि ईश्वर के पास तुम्हारे प्रस्थान के बाद भी। जहाँ तक मेरी बात है, मैं इस स्थान को कभी नहीं छोड़ूँगी।'

ये वचन कहने के बाद, परमेश्वर की अति पवित्र माता अदृश्य हो गईं। संत बड़े भय और विस्मय से भर गए। कुछ समय बाद जब उन्होंने अपना संभल लिया, तो उन्होंने देखा कि उनका शिष्य मृतक की भाँति पिड़ा था। संत ने उसे उठाया; तब मीकाह वृद्ध के चरणों में झुकने लगा, यह कहते हुए:

'पिताजी, प्रभु के वास्ते, मुझे बताइए कि यह अद्भुत दर्शन क्या है; मेरा प्राण तो लगभग शरीर से अलग हो गया था, यह दृश्य इतना अद्भुत था।'

हालाँकि, संत परम आनंद से भर गए; वास्तव में, उनका चेहरा अकथनीय प्रसन्नता से दमक रहा था; वे कुछ और नहीं कह सके सिवाय इसके:

'मेरे बच्चे, थोड़ी देर प्रतीक्षा कर, क्योंकि यह अद्भुत दर्शन देखकर मेरी अपनी आत्मा काँप रही है!'

और कुछ समय के लिए पूज्य मौन रहे; इसके बाद उन्होंने अपने शिष्य से कहा:

'इज़ाक और साइमन को मेरे पास बुलाओ!'

जब वे पहुँचे, तो संत ने उन्हें सब कुछ क्रम से सुनाया: कि उन्होंने परमेश्वर की परम पवित्र माता को प्रेरितों के साथ कैसे देखा था, और उन्होंने उनसे क्या कहा था। यह सुनकर, वे महान आनंद से भर गए, और उन्होंने मिलकर परमेश्वर की माता के लिए एक प्रार्थना सभा की; हालाँकि, संत ने परम पवित्र देवी के अनुग्रहपूर्ण आगमन पर ध्यान करते हुए पूरी रात जागकर बिताई।

एक अवसर पर, पूज्य पिता जी दैवीय धर्मविधि का अनुष्ठान कर रहे थे। उनके पूर्वोक्त शिष्य साइमन, जो एक सिद्ध सदाचार वाले व्यक्ति थे, उस समय गिरिजाघर-प्रमुख के रूप में सेवा कर रहे थे। अचानक, उन्होंने पवित्र वेदी पर आग को फैलते हुए देखा, जो उसे प्रकाशित कर रही थी और सेरगियिस को उनकी सेवा के दौरान घेरे हुए थी, ताकि संत सिर से पैर तक आग की लपटों में घिर गए। और जब माननीय पिता पवित्र रहस्यों को ग्रहण करने के लिए आगे बढ़े, तो आग ऊपर उठी और, एक अद्भुत घूंघट की तरह मुड़कर, पवित्र प्याले में उतर गई, जिससे मसीह के इस योग्य सेवक, संत सेरजियिस ने पवित्र परमप्रसाद ग्रहण किया।

यह देखकर, साइमन भय से भर गया और मौन खड़ा रहा। कम्यूनियन ग्रहण करने के बाद, सेरजियिस पवित्र वेदी से कुछ दूर हट गए और यह महसूस करते हुए कि साइमन को एक दर्शन मिला है, उन्होंने उसे बुलाया और पूछा:

'मेरे बच्चे, तुम्हारी आत्मा इतनी भयभीत क्यों है?'

'पिताजी, मैंने एक अद्भुत दर्शन देखा है: मैंने आप में पवित्र आत्मा की कृपा को कार्य करते देखा।'

तब आदरणीय ने उसे यह किसी को न बताने का आदेश दिया, कहते हुए:

'जब तक प्रभु मुझे अपने पास न बुला लें, तब तक इस बारे में किसी से बात मत करना।'

और उन दोनों ने उस सृष्टकिर्ता का हार्दकि धन्यवाद करना शुरू कर दयिा, जसिने उन पर इतनी दया दखिाई थी।

अनवरत परश्रिमों के बीच महान तपस्या में कई वर्ष बताने और अनेक गौरवशाली चमत्कार करने के बाद, आदरणीय पता परपिक्व वृद्धावस्था को प्राप्त हुए। उनकी आयु अस्सी वर्ष की हो चुकी थी। अपने नधिन से छह महीने पहले, ईश्वर के पास प्रस्थान की पूर्वदृष्टि से, उन्होंने भ्राताओं को अपने पास बुलाया और उनका नेतृत्व अपने शष्यि नकिॉन को सौंप दयिा: यद्यपि आयु में युवा, वह आध्यात्मकि अनुभव से बुद्धमिान था। अपने पूरे जीवन में, इस शष्यि ने अपने गुरु और मार्गदर्शक, आदरणीय सर्जयिस का अनुकरण कयिा था। इन्हीं नकिोन को संत ने मठाधीश नयिुक्त कयिा, जबकि वे स्वयं पूर्ण मौन में चले गए और इस क्षणकि जीवन से अपने प्रस्थान की तैयारी करने लगे। सतिंबर के महीने में, वे गंभीर रूप से बीमार पड़ गए और जब उन्हें अपने अंत के नकिट होने का आभास हुआ, तो उन्होंने अपने भ्राताओं को अपने पास बुलाया। जब वे इकट्ठा हो गए, तो आदरणीय ने उन्हें आखरिी बार एक उपदेश और शकि्षा के साथ संबोधति कयिा; उन्होंने भकि्षुओं को आस्था और मन की एकता में दृढ़ रहने के लिए प्रोत्साहति कयिा, उनसे आत्मा और शरीर की पवत्रिता बनाए रखने का आग्रह कयिा, और सभी के लिए सच्चा प्रेम रखने का आदेश दयिा। उन्हें बुरी इच्छाओं और जुनून से दूर रहने, भोजन और पेय में संयम बरतने की सलाह दी, और उन्हें आतथि्य न भूलने तथा सांसारकि महमिा से दूर रहते हुए वनिम्र बने रहने के लिए प्रेरति कयिा। अंत में, उन्होंने उनसे कहा:

'मैं उस ईश्वर के पास जा रहा हूँ, जो मुझे बुला रहे हैं, और मैं आपको सर्वशक्तमिान प्रभु और उनकी परम पवत्रि माता के हवाले करता हूँ; काश वह आपके लिए शरण और दुष्ट के बाणों से बचाव की दीवार बनें।'

[6502]अपने अंतमि क्षणों में, रेवरेंड फादर ने मसीह के पवत्रि रहस्यों को ग्रहण करने की इच्छा व्यक्त की। अब वह अपने बस्तिर से अकेले नहीं उठ सकते थे: उनके शष्यिों ने सम्मानपूर्वक अपने गुरु को बाहों से सहारा दयिा जब उन्होंने अंतमि बार मसीह के शरीर और रक्त को ग्रहण कयिा; फरि, अपने हाथ उठाकर, उन्होंने अपनी शुद्ध आत्मा को प्रभु के हवाले कर दयिा। संत के नधिन होते ही उनकी कोठरी में एक अकथनीय सुगंध भर गई। उस धर्मात्मा का चेहरा दव्यि आनंद से दमक रहा था – ऐसा लग रहा था मानो वह गहरी नींद में सो गया हो।

अपने गुरु और मार्गदर्शक को खोने के बाद, भाइयों ने कड़वे आँसू बहाए और गहरा शोक मनाया, जैसे भेड़ों ने अपने चरवाहे को खो दयिा हो; अंतमि संस्कार के भजनों और भजन-गायन के साथ, उन्होंने संत के पूजनीय शरीर को दफनाया और उसे उसी मठ में सुला दयिा जहाँ उन्होंने अपने पूरे जीवन में इतनी लगन से सेवा की थी।

अब पवत्रि सेरजयिस के नधिन को तीस वर्ष से अधकि समय बीत चुका था। प्रभु अपने सेवक को और भी अधकि महमिामय बनाना चाहते थे। उस समय, मठ के पास एक धार्मकि व्यक्ति रहता था; संत में गहरी आस्था रखने के कारण, वह अक्सर सर्गयिस की कब्र पर आता था और ईश्वर के सेवक से भक्तपिूर्वक प्रार्थना करता था। एक रात, प्रार्थना के बाद, वह हल्की नींद में चला गया; अचानक, संत सर्गयिस उसके सामने प्रकट हुए और कहा:

'इस मठ के मठाधीश से कहो: मुझे इतने लंबे समय तक धरती के नीचे एक कब्र में क्यों छोड़ा जा रहा है, जहाँ मेरा शरीर पानी से घरिा हुआ है?'

जागने पर, वह व्यक्तभिय से भर गया और फरि भी उसके हृदय में एक असाधारण आनंद महसूस हुआ; उसने तुरंत यह दर्शन पूजनीय सर्गयिस के शष्यि, नकिोन को सुनाया, जो उस समय मठाधीश थे। नकिोन ने इसे भाइयों को बताया – और सभी भकि्षुओं में बहुत हर्ष हुआ। इस दृष्टि की खबर दूर-दूर तक फैल गई, और बहुत से लोग मठ में आने लगे; उनमें राजकुमार यूरी दमित्रिीवचि[6503] भी थे, जो पूज्यनीय को एक पता के रूप में सम्मान देते थे और पवत्रि मठ की बहुत देखभाल करते थे। जैसे ही इकट्ठा हुए लोगों ने पूज्यनीय की कफ़न-पेटी खोली, चारों ओर एक अद्भुत सुगंध फैल गई। तब उन्होंने एक अद्भुत चमत्कार देखा: न केवल आदरणीय सर्जयिस का पवत्रि शरीर पूर्ण और अक्षुण्ण रूप से संरक्षति था, बल्कि क्षय ने उनके वस्त्रों को भी छुआ तक नहीं था; ताबूत के दोनों ओर पानी था, फरि भी वह न तो आदरणीय के अवशेषों को और न ही उनके वस्त्रों को छू सका। यह देखकर, सभी ने आनंद मनाया और उस ईश्वर की स्तुति की, जसिने अपने सेवक को इतनी अद्भुत रूप से महमिामय बनाया था। बड़ी प्रसन्नता के साथ, परम पूज्य के पवत्रि अवशेषों को एक नए अवशेष-पात्र में रखा गया। परम पूज्य सेरजयिस के अवशेषों की यह खोज 5 जुलाई 1428 को हुई थी, जसिकी स्मृति में उत्सव दविस की स्थापना की गई।

[6502] संत सर्गयिस का नधिन 25 सतिंबर 1392 को हुआ।

[6503] ज्वेनगिोरोड के राजकुमार।

दयालु प्रभु ने अपने महान संत को अद्भुत रूप से महिमामंडित किया है: जो भी श्रद्धा के साथ उनके पवित्र नाम का स्मरण करते हैं और उनके सर्व-रोग-निवारक तथा चमत्कारी अवशेषों वाले संदूक के सामने प्रणाम करते हैं, उन सभी पर अनगिनत और विविध चमत्कारों की वर्षा होती है। इस विनम्र तपस्वी ने सांसारिक महिमा से परहेज़ किया, लेकिन ईश्वर के सामर्थी दायें हाथ ने उन्हें अत्यधिक गौरवान्वित किया; और जितना अधिक उन्होंने स्वयं को नम्र बनाया, उतना ही ईश्वर ने उन्हें महिमामय बनाया। पृथ्वी पर रहते हुए, पूज्य सेरजियस ने कई चमत्कार किए और उन्हें अद्भुत दर्शन प्राप्त हुए; लेकिन, नम्रता और विनम्रता की भावना से परिपूर्ण, उन्होंने अपने शिष्यों को इन बातों के बारे में बोलने से मना कर दिया; हालाँकि, उनके निधन के बाद, उन्हें प्रभु से ऐसी शक्ति प्राप्त हुई कि उनकी प्रार्थनाओं के द्वारा किए गए विभिन्न चमत्कार एक महान नदी के समान हैं, जिसका पानी कभी बहना बंद नहीं होता। धर्मग्रंथ के वचन सत्य और निर्विवाद हैं: *'हे परमेश्वर, तेरा भय तेरे मन्दिर में हो'* [परमेश्वर अपने संतों में अद्भुत है] (भजन संहिता 67:36)। इस संत के माध्यम से सभी पर प्रदान किए गए चमत्कार अद्भुत हैं; अंधों को दृष्टि मिलती है, लंगड़ों को चंगा किया जाता है, बधिरों को वाणी का वरदान मिलता है, दुष्टात्माओं से ग्रस्त लोग दुष्ट आत्माओं से मुक्त हो जाते हैं, बीमारों को स्वास्थ्य लाभ मिलता है, संकट में पड़े लोगों को मदद और मध्यस्थता मिलती है, दुश्मनों से घिरे लोगों को सुरक्षा मिलती है, और दुख में डूबे लोगों को राहत और सांत्वना मिलती है; संक्षेप में, जो कोई भी आदरणीय प्रति की ओर मुड़ता है, उसे सहायता प्रदान की जाती है। सूर्य तेज़ी से चमकता है और अपनी किरणों से पृथ्वी को गर्म करता है, लेकिन यह चमत्कार-कर्ता उससे भी अधिक तेज़ी से चमकता है, जो अपने चमत्कारों और प्रार्थनाओं से मानव आत्माओं को प्रबुद्ध करता है। और यद्यपि सूर्य अस्त हो जाता है, इस चमत्कार करने वाले की महिमा कभी फीकी नहीं पड़ेगी - यह हमेशा के लिए चमकेगी, क्योंकि *जैसा कि* पवित्र धर्मग्रंथ में लिखा है: *'धर्मी हमेशा के लिए जीवित हैं'* (सोलोमन की बुद्धि 5:15)।

इस संत के चमत्कारों के बारे में चुप रहना असंभव है, फिर भी उनका वर्णन करना कोई आसान काम नहीं है; उनकी संख्या इतनी बड़ी है, और वे इतने विविध हैं; आइए हम केवल सबसे महत्वपूर्ण चमत्कारों का उल्लेख करें, जिनके माध्यम से ईश्वर अपने महान तपस्वी[6504] को महिमामंडित करने में प्रसन्न हुए।

हालाँकि वे भाइयों से दृश्य रूप में अलग हो गए थे, फिर भी पूजनीय सेरजियस ने अदृश्य रूप से उनके साथ संवाद करना बंद नहीं किया; इस महान चमत्कार करने वाले ने अपनी मृत्यु के बाद भी अपने मठ की देखभाल करना जारी रखा, और वे कई मौकों पर भाइयों के सदस्यों के सामने प्रकट हुए। इस प्रकार, एक अवसर पर, इस मठ के एक भिक्षु, जिसका नाम इग्नाटियस था, को ऐसा दर्शन हुआ: संत सेरजियस पूरी रात की प्रार्थना के दौरान अपनी सामान्य जगह पर खड़े थे और अन्य भाइयों के साथ चर्च में भजन-कीर्तन में भाग ले रहे थे। आश्चर्यचकित होकर, इग्नाटियस ने तुरंत भाइयों को यह बात बताई, और उन्होंने सभी एक महान मध्यस्थ और सहायक प्रदान करने के लिए प्रभु का बड़ी प्रसन्नता से धन्यवाद किया।

1408 के पतझड़ में, जब सम्माननीय निकोन के उपर्युक्त शिष्य मठाधीश थे, तब उग्र एडिगेई के नेतृत्व में तातार Moscow की सीमाओं के पास आने लगे। सम्माननीय निकोन ने प्रभु से लंबी प्रार्थना की कि वे इस स्थान को सुरक्षित रखें और इसे इन भयानक शत्रुओं के आक्रमण से बचाएं; ऐसा करते समय, उन्होंने इस मठ के महान संस्थापक – आदरणीय सर्गियस के नाम का स्मरण किया। एक रात, प्रार्थना के बाद, वे विश्राम करने के लिए बैठ गए – और उनींदे में चले गए। अचानक उन्होंने संत पतरस और अलेक्सियस को देखा, और उनके साथ आदरणीय सर्गियस को भी देखा, जिन्होंने कहा:

'यह प्रभु की इच्छा थी कि विदेशी भी इस स्थान पर आएं; लेकिन तुम, मेरे बच्चे, दुखी या निराश न हो: मठ खंडहर नहीं होगा, बल्कि और भी अधिक फल-फूल जाएगा।'

तब, अपना आशीर्वाद प्रदान करने के बाद, संत अदृश्य हो गए। होश में आते ही, परम पूज्य निकोन दरवाजों की ओर भागे, लेकिन वे बंद थे; उन्हें खोलने पर, उन्होंने संतों को अपनी कोठरी से चर्च की ओर जाते हुए देखा। तब उन्हें एहसास हुआ कि यह कोई सपना नहीं, बल्कि एक सच्चा दर्शन था। आदरणीय सेरजियस की भविष्यवाणी जल्द ही सच साबित हुई: तातारों ने मठ को लूट लिया और उसे जला दिया। लेकिन इस तरह के चमत्कारी तरीके से चेतावनी मिलने के

[6504] संत सर्गियस के मरणोत्तर चमत्कारों का वृत्तांत सर्व-रूस के मेट्रोपॉलिटन मकारी द्वारा रचित 'चेती-मिनेई' से, मेट्रोपॉलिटन प्लाटन और फिलारेट द्वारा संकलित सर्गियस के जीवन-चरित से, और साइमन अज़ारिन द्वारा मरणोत्तर चमत्कारों के वृत्तांत पर आधारित है; पोलिशों द्वारा लाव्रा की घेराबंदी के दौरान चमत्कारों का विवरण सेलरर अव्रामियि पालित्सिन की 'ट्रिनिटी मठ की घेराबंदी की कथा' से लिया गया है; पूजनीय सर्गियस के प्रारंभिक मुद्रित जीवन और अन्य ऐतिहासिक स्रोतों को भी ध्यान में रखा गया है।

बाद, नकिोन और अन्य भकि्षु अस्थायी रूप से मठ से चले गए, और जब तातार मास्को की सीमाओं से पीछे हट गए, नकिॉन ने ईश्वर की मदद और परम पूज्य सेरजयिस की प्रार्थनाओं से मठ का पुनर्नरि्माण कयिा और परम पवत्रि त्रमिूर्त के सम्मान में एक पत्थर का चर्च बनाया, जहाँ परम पूज्य सेरजयिस के अवशेष आज भी वरिाजमान हैं[6505] । इस अवसर पर, कई योग्य पुरुषों ने संत अलेक्सयिस और परम पूज्य सेरजयिस को मठ की नई इमारतों के अभषिेक के लिए आते हुए देखा।

उसी पूज्य नकिोन के मठाधीश रहते, एक भकि्षु कोठरयिों के नरि्माण के लिए लकड़ी काट रहा था; उसने कुल्हाड़ी से अपने चेहरे पर गंभीर चोट लगा ली। तीव्र दर्द के कारण वह अपना काम जारी नहीं रख सका और अपनी कोठरी में लौट आया; शाम हो चुकी थी; हालांक,ि उस समय मठाधीश मठ में नहीं थे। अचानक, इस भकि्षु ने अपनी कोठरी के दरवाज़े पर कसिी के खटखटाने की आवाज़ सुनी और दरवाज़े पर खटखटाने वाले ने खुद को मठाधीश बताया; दर्द और रक्तस्राव से थके हुए, वह दरवाज़ा खोलने के लिए उठ नहीं सका; फरि वह अपने आप खुल गया, और एक अद्भुत प्रकाश अचानक पूरी कोठरी को रोशन कर दयिा, और इस प्रकाश के बीच भकि्षु ने दो पुरुषों को देखा, जनिमें से एक ने बशिप के वस्त्र पहने हुए थे। पीड़ति भकि्षु ने मन ही मन आगंतुकों से आशीर्वाद मांगना शुरू कर दयिा। दीप्तमिान वृद्ध ने संत को कोठरी की नींव दखिाई, जबकि संत ने उन पर आशीर्वाद दयिा। फरि, उसे बहुत आश्चर्य हुआ जब बीमार भकि्षु ने देखा कि उसके घाव से खून बहना बंद हो गया था, और वह खुद को पूरी तरह से स्वस्थ महसूस करने लगा। इससे उसे एहसास हुआ कि उसे संत अलेक्सयिस और परम आदरणीय सेरजयिस को देखने का योग्य समझा गया था। इस प्रकार ये पवत्रि पुरुष, जो जीवन में भाईचारे के गहरे बंधन में बँधे हुए थे, अपनी मृत्यु के बाद भी अक्सर कई लोगों के सामने एक साथ प्रकट हुए।

मास्को का एक नविासी, जसिका नाम समिीओन था, जो संत की भवषि्यवाणी के अनुसार ही पैदा हुआ था, वह इतना गंभीर रूप से बीमार पड़ गया कि वह न तो हलि सकता था, न सो सकता था और न ही कुछ खा सकता था, बल्कि अपने बस्तिर पर मृतक की तरह पड़ा था। इस तरह पीड़ति, एक रात उसने मदद के लिए संत सर्गयिस को पुकारना शुरू कर दयिा:

'हे पूजनीय सेरजयिस, मेरी मदद करो, मुझे इस बीमारी से मुक्ति दो; जब आप जीवति थे, तब आप मेरे माता-पतिा पर बहुत दयालु थे और उन्हें मेरे जन्म की भवषि्यवाणी की थी; मुझे मत भूलिए, जो इतनी भयंकर बीमारी से पीड़ति है।'

अचानक, उसके सामने दो साधु प्रकट हुए; उनमें से एक नकिोन था; बीमार व्यक्ति ने उसे तुरंत पहचान लयिा, क्योंकि वह इस संत को उनके जीवति रहते हुए व्यक्तगित रूप से जानता था; तब उसे एहसास हुआ कि प्रकट होने वालों में से दूसरे व्यक्ति स्वयं आदरणीय सेरजयिस थे। उस चमत्कारी संत ने बीमार व्यक्ति पर क्रॉस का चहि्न बनाया, और बाद में नकिोन को बस्तिर के पास रखी प्रतमिा लेने का नरि्देश दयिा – यह प्रतमिा कभी नकिोन द्वारा ही समिोन को दी गई थी। तब उस बीमार व्यक्ति को ऐसा लगा मानो उसकी सारी त्वचा उसके शरीर से उतर गई हो; इसके बाद, संत अदृश्य हो गए। ठीक उसी क्षण, समियिोन ने महसूस कयिा कि वह पूरी तरह से ठीक हो गया है: वह अपने बस्तिर पर बैठ गया, और अब कोई भी उसका सहारा नहीं दे रहा था; तब उसे एहसास हुआ कि यह उसकी त्वचा नहीं थी जो उतर गई थी, बल्कि बीमारी उससे दूर हो गई थी। उसकी खुशी बहुत बड़ी थी; अपने पैरों पर खड़ा होकर, उसने सेंट सर्जयिस और पूजनीय नकिॉन को अपनी अप्रत्याशति और अद्भुत चकित्सिा के लिए उत्साहपूर्वक धन्यवाद देना शुरू कर दयिा।

एक दनि, जैसा कि रिवािज था, आदरणीय संत के मठ में एक बड़ी भीड़ इकट्ठा हुई, क्योंकि परम पवत्रि त्रमिूर्त के सम्मान में एक बड़ा पर्व नकिट आ रहा था। आए हुए लोगों में एक गरीब अंधा आदमी भी था जसिने सात साल की उम्र में अपनी दृष्टि खो दी थी; वह चर्च के बाहर खड़ा था, जहाँ उस समय एक गंभीर प्रार्थना सभा भक्तपिूर्वक चल रही थी; हालाँकि, उसका मार्गदर्शक एक पल के लिए उससे दूर चला गया था; चर्च के भजन को सुनते हुए, अंधे आदमी को इस बात का दुख हुआ कि वह प्रवेश करके पूजनीय व्यक्ति के अवशेषों की पूजा नहीं कर सकता था, जसिने, जैसा कि उसने अक्सर सुना था, इतने सारे चमत्कार कए थे। अपने मार्गदर्शक द्वारा अकेला छोड़ दए जाने पर, वह जोर-जोर से रोने लगा; अचानक, संकट में पड़े सभी लोगों के त्वरति सहायक—संत सेरजयिस—उसके सामने प्रकट हुए; संत ने उसका हाथ पकड़कर उस व्यक्ति को चर्च के अंदर ले गए और उसे अवशेष-पेटकिा के पास लाए—अंधा व्यक्ति उसके सामने झुक गया, और उसकी अंधापन तुरंत ही दूर हो गया। बहुत से लोगों ने इस शानदार चमत्कार को देखा; सभी ने ईश्वर का धन्यवाद कयिा और उनके संत की महमिा की; और जो व्यक्ति चंगा हुआ था, वह कृतज्ञतावश, हमेशा के लिए पूजनीय के मठ में रह गया और, अपने चंगे होने के बदले में, भाइयों की उनकी मेहनत में मदद करने लगा।

[6505] इस चर्च का अभषिेक 25 सतिंबर 1412 को कयिा गया था।

1551 में, ज़ार इवान वसीलीयेवचि द टेरबिल[6506] ने टाटारों के खलिाफ रक्षा के रूप में स्वयिाज्स्क[6507] शहर की स्थापना की; इस शहर में पवत्रि त्रमिूर्त कि समर्पति एक मठ बनाया गया, जसिमें सेंट सर्जयिस की एक प्रतमिा रखी गई; इस प्रतमिा को न केवल श्रद्धालुओं के बीच बल्कि अवशि्वासी मूर्तपिूजकों के बीच भी कई चमत्कारों का श्रेय दयिा गया। एक दनि, पहाड़ी चेरेमसि लोगों के बुज़ुर्ग आत्मसमर्पण के लएि स्वयिाज्स्क आए[6508] ; उन्होंने नम्निलखिति बातें बताईं: 'इस शहर की स्थापना से लगभग पाँच साल पहले, जब यह जगह सुनसान थी, हम यहाँ अक्सर रूसी चर्च की घंटयिों की आवाज सुनते थे; हमने यह देखने के लएि यहाँ तेज दौड़ने वाले युवकों को भेजा कि क्या हो रहा है; उन्होंने एक चर्च में गाए जाने वाले गीतों की तरह सुमधुर स्वरों में गायन की आवाज़ें सुनीं, लेकनि कसिी को नहीं देखा—सर्फि एक भक्षिु को क्रॉस के साथ चलते हुए, चारों ओर आशीर्वाद देते हुए और, मानो, उस स्थान को चह्निति करते हुए जहाँ अब यह शहर खड़ा है, और पूरा स्थान एक मीठी सुगंध से भर गया था। जब उन पर तीर चलाए गए, तो वे उन्हें घायल नहीं कर पाए, बल्कि ऊपर उड़कर टूट गए और जमीन पर गरि पड़े। हमने इसकी सूचना अपने राजकुमारों को दी, और उन्होंने इसे रानी और कुलीनों तक पहुँचाया।'

लेकनि पोलशि लोगों द्वारा ट्रनिटिी मठ की घेराबंदी के कठनि समय के दौरान आदरणीय सेरजयिस ने कई चमत्कार कएि। अपनी प्रकटयिों के माध्यम से, संत ने इस गौरवशाली मठ के रक्षकों के साहस को बढ़ावा देने और सभी ऑर्थोडॉक्स ईसाइयों को मजबूत करने का प्रयास कयिा। लसिोव्स्की और सापएिहा के नेतृत्व में दुश्मन ने 23 सतिंबर 1608 को मठ पर घेराबंदी शुरू कर दी; उनकी संख्या बहुत बड़ी थी, जो लगभग 30,000 तक थी, जबकि रक्षकों की संख्या दो हजार से कुछ अधकि थी; इसलएि मठ में मौजूद सभी लोगों का हौसला बहुत गरि गया; सर्वत्र रोने-धोने के बीच, 25 सतिंबर की रात एक रात्रि जागरण आयोजति कयिा गया – वह दनि जसि दनि संत सर्गयिस की स्मृति मनाई जाती है । लेकनि आदरणीय संत ने दुख और शोक में डूबे लोगों को सांत्वना देने की जल्दी की: उसी रात, पमिेन नामक एक भक्षिु ने एक दव्यि दर्शन देखा। यह भक्षिु सर्व-दयालु उद्धारकर्ता और परमेश्वर की अति-पवत्रि माता से प्रार्थना कर रहा था; अचानक, उसकी कोठरी दनि की तरह प्रकाशमान हो गई; यह सोचकर कि शत्रुओं ने मठ में आग लगा दी है, पमिेन अपनी कोठरी से बाहर नकिला, और उसकी आँखों के सामने एक अद्भुत दृश्य उपस्थति हुआ: उसने जीवन-प्रद त्रमिूर्ति के चर्च के गुंबद के ऊपर, स्वर्ग तक उठता हुआ एक अग्नि का स्तंभ देखा; आश्चर्यचकति होकर, पमिेन ने अन्य भक्षिुओं और कुछ गृहस्थों को बुलाया - और सभी इस असाधारण दृश्य को देखकर चकति रह गए: कुछ समय बाद, वह स्तंभ नीचे आने लगा और आग के बादल में लपिटकर, प्रवेश द्वार के ऊपर की खड़िकी से होकर पवत्रि त्रमिूर्ति के चर्च में प्रवेश कर गया।

इस बीच, घेराबंदी करने वालों ने मठ पर तोप के गोले बरसाए; लेकनि सर्वशक्तमिान परमेश्वर के दैवीय हस्तक्षेप ने परम पवत्रि त्रमिूर्ति के मठ की रक्षा की: तोप के गोले खाली जमीन पर या तालाबों में गरि और घेराबंदी में फंसे लोगों को बहुत कम नुकसान पहुँचा। मठ की दीवारों की सुरक्षा में लोगों की एक बड़ी भीड़ इकट्ठी हो गई थी, इसलएि मठ के अंदर असाधारण भीड़भाड़ हो गई थी; कई लोगों के पास, मौसम के इस देर से होने के बावजूद, कोई आश्रय नहीं था। इस बीच, दुश्मनों ने मठ के नीचे एक सुरंग खोदनी शुरू कर दी और बार-बार छापामारी करके घेराबंदी में फंसे लोगों की ताकत कम कर दी। मठ के अंदर के लोगों को प्रोत्साहति करने के लएि, रेवरेंड फादर एक रवविार को सेक्सटन, इरनिार्ख को दखिाई दएि और उन्होंने दुश्मन के हमले की भवषि्यवाणी की। बाद में, उसी वृद्ध ने संत सेरजयिस को परसिर की दीवार के कनिारे चलते हुए और उस पर पवत्रि जल छड़िकते हुए देखा। ठीक उसी रात, दुश्मनों ने वास्तव में मठ पर एक भयंकर हमला कयिा, लेकनि रक्षकों ने, इस तरह के चमत्कारी तरीके से चेतावनी मलिने के बाद, दुश्मनों को पीछे हटने पर मजबूर कर दयिा और उन्हें भारी पराजय दी।

भले ही सुरंग के बारे में पता था, घेराबंदी में फंसे लोगों को इसकी दशिा नहीं पता थी: हर मनिट उनका नशि्चति वनिाश उनके सामने था; हर घड़ी हर कोई अपनी आँखों के सामने मौत को देख रहा था; इस दुख के समय में, सभी उत्साह के साथ जीवन-दायक त्रमिूर्ति के चर्च में उमड़ पड़े, सभी ने पूरे दलि से ईश्वर से मदद की पुकार लगाई, और सभी ने अपने पापों से पश्चाताप कयिा; एक भी व्यक्ति ऐसा नहीं था जसिने महान मध्यस्थों सर्जयिस और नकिोन की अवशेषों

[6506] इवान वसیلیवचि द टेरबिल ने 1533 से 1584 तक शासन कयिा।

[6507] स्वयिाज्स्क अब कज़ान गवर्नोरेट में एक जलिा शहर है।

[6508] चेरेमसि एक फनिो-उग्रकि जनजाति है, जो मुख्य रूप से व्याटका, कज़ान, ओरेनबर्ग, पर्म, कोस्ट्रोमा और नज़िनी नोवगोरोड प्रांतों में बखिरी हुई है।

की ओर आस्था से न मुड़कर प्रार्थना न की हो; सभी, प्रभु के पवित्र देह और रक्त का सेवन कर, मृत्यु के लिए तैयारी कर रहे थे। इन कठिन दिनों के दौरान, आदरणीय सर्जियस आर्चमिंड्राइट जोआसाफ के सपने में प्रकट हुए[6509] ; एक दिन, परम पवित्र त्रिमूर्ति की प्रतिमा के सामने प्रार्थना करने के बाद, जोआसाफ हल्की नींद में पड़ गए; अचानक उन्होंने संत को अपने हाथ उठाए हुए, परम पवित्र त्रिमूर्ति से आँसू भरी प्रार्थना करते देखा; अपनी प्रार्थना समाप्त करने के बाद, वे आर्चमिंड्राइट की ओर मुड़े और उनसे कहा:

'उठो, भाई; अब प्रार्थना करने का समय है: "*जागते रहो और प्रार्थना करो, कहीं तुम परीक्षा में न पड़ो*" (मत्ती 26:41); सर्वशक्तिमान और सर्वदयालु प्रभु ने तुम पर दया की है, ताकि तुम हर समय प्रार्थना और पश्चाताप में लगे रहो।'

आर्किमैंड्राइट ने यह दर्शन भाइयों को सुनाया और लोगों को बहुत सांत्वना दी, जो भय से ग्रस्त और दुख से अभिभूत थे।

थोड़ी ही देर बाद, उसी आर्चमिंड्राइट जोसाफ को एक और दर्शन हुआ: एक दिन, जब वे अपनी कोठरी में अपनी दैनिक प्रार्थनाएँ कर रहे थे, तो पूजनीय सेरजियस अचानक अंदर आए और कहा:

'उठो और दुख मत करो, बल्कि आनंद के साथ अपनी प्रार्थनाएँ अर्पित करो, क्योंकि परमेश्वर की अति पवित्र माता, सदा कुँवारी मरियम, स्वर्गदूतों के दल और सभी संतों के साथ, तुम सभी के लिए परमेश्वर से प्रार्थना कर रही हैं।'

आदरणीय सेरजियस न केवल पवित्र मठ के भीतर के लोगों को, बल्कि लाव्रा की घेराबंदी कर रहे कोसैकों को भी दिखाई दिए। शत्रु शिविर का एक कोसैक मठ में आया और उसने पूज्यनीय की प्रकटियों का वर्णन किया: कई सैन्य कमांडरों ने मठ की दीवारों के साथ-साथ चलते हुए दो तेजस्वी संतों को देखा था, जो चमत्कारी सर्जियस और निकोन जैसे दिख रहे थे; उनमें से एक मठ में धूप जला रहा था, जबकि दूसरा उस पर पवित्र जल छिड़क रहा था। फिर उन्होंने कोसैक रेजिमेंटों को संबोधित किया, और उन्हें विधर्मियों के साथ मिलकर सर्वपवित्र त्रिमूर्ति के गृह को नष्ट करने का प्रयास करने के लिए फटकारा। कुछ पोलिश सैनिकों ने साधुओं पर गोली चलाना शुरू कर दिया, लेकिन तीर और गोलियाँ खुद गोली चलाने वालों पर ही आकर लगीं, जिससे उनमें से कई घायल हो गए। उसी रात, वह पूजनीय भिक्षु कई पोलिश लोगों के सपने में प्रकट हुए और उनके विनाश की भविष्यवाणी की[6510] । इस प्रकट होने से भयभीत होकर कुछ कोसैक दुश्मन के शिविर से चले गए और घर लौट आए, और उन्होंने ऑर्थोडॉक्स के खिलाफ फिर कभी हथियार न उठाने की कसम खाई। ईश्वर की कृपा से, घेराबंदी में फंसे लोग सुरंग की दिशा का पता लगाने में सफल हो गए। उन्होंने इसे नष्ट कर दिया, जिसमें कई रक्षकों ने मसीह की आज्ञा के पालन के लिए अपनी जान न्यौछावर कर दी: '*मनुष्य का प्रेम अपने मित्रों के लिए अपना प्राण देना है, इससे बढ़कर और कोई प्रेम नहीं है*' (यूहन्ना 15:13)। इस बीच, सर्दियों की शुरुआत ने दुश्मन को अपने बार-बार हमले बंद करने के लिए मजबूर कर दिया, लेकिन घेराबंदी में फंसे लोग एक भयानक आंतरिक दुश्मन से बहुत अधिक पीड़ित होने लगे: मठ में तंग जगह और खराब भोजन के कारण, एक भयानक बीमारी - स्कर्वी[6511] - फैल गई। रक्षक दल की छोटी सेना हर गुजरते दिन के साथ घटती जा रही थी; संन्यासियों से मरणासन्न लोगों को अंतिम संस्कार देने का काम भी नहीं संभल पा रहा था; केवल लगभग 200 पुरुष ही हथियार उठाने के काबिल बचे थे। घेराबंदी में फंसे लोग निराशा के साथ शत्रुता के फिर से शुरू होने का इंतजार कर रहे थे। लेकिन ईश्वर ने अपने महान संत द्वारा स्थापित मठ को चमत्कारिक रूप से सुरक्षित रखा। अपनी मामूली सेना के साथ, रक्षकों ने लंबे समय तक दुश्मन के हमलों को रोके रखा; लेकिन जैसे-जैसे समय बीतता गया, घेराबंदी में फंसे लोगों का मनोबल और गिरता गया; कमजोर और अनिर्णायक लोगों ने तो दुश्मन के सामने स्वेच्छा से आत्मसमर्पण करने की भी सलाह दी; उन्होंने कहा कि अब किसी को मदद मांगने के लिए मास्को भेजना संभव नहीं था - दुश्मन ने मठ को इतनी कसकर घेर रखा था। इस बड़बड़ाहट और निराशा के बीच, पूजनीय सेरजियस ने उनका साहस बढ़ाने और हतोत्साहित लोगों को प्रोत्साहित करने का प्रयास किया। वह एक बार फिर से चर्च के परिचारक, इरिनार्ख, के पास प्रकट हुए और कहा:

'भाइयों और सभी योद्धाओं से कहो: यह संदेश मस्कोवियों को भेजना असंभव है, इस बात का शोक क्यों मना रहे हो? 'आज, रात के तीसरे पहर में, मैंने अपने तीन शिष्यों—मिखाइल, बार्थोलोम्यू और नाउम—को अपनी ओर से मास्को

[6509] इओआसाफ 1608 से 1610 तक आर्चमिंड्राइट थे।

[6510] वास्तव में, दोनों प्रमुख पोलिश कमांडर - सापिएहा और लिसोव्स्की - जल्द ही मारे गए; सापिएहा की मृत्यु 1611 में मास्को में हुई, जबकि लिसोव्स्की, 25 सितंबर 1616 को - सेंट सर्जियस के पर्व के दिन - अपने घोड़े से गिरने के बाद अचानक मृत्यु हो गई।

[6511] स्कर्वी – एक ऐसी बीमारी जिसमें मसूड़े सूज जाते हैं और पैरों में छाले हो जाते हैं।

भेजा, परमेश्वर की परम पवत्रि माता के घर और सभी मास्को के चमत्कार करने वालों के पास, ताकि वे वहाँ एक प्रार्थना सभा कर सकें। दुश्मन ने मेरे भेजे हुए लोगों को देखा; उनसे पूछो कि उन्होंने उन्हें क्यों नहीं पकड़ा?'

इरनिारह ने इस घटना का वर्णन कयिा; सभी ने रक्षकों और दुश्मनों से पूछना शुरू कर दयिा, यह पूछते हुए कि क्या किसी ने मठ से भेजे गए लोगों को देखा था। तब यह पता चला कि दुश्मनों ने वास्तव में तीनों संतों को देख ही लयिा था; वे उनका पीछा करने नकिल पड़े, इस उम्मीद में कि वे जल्दी ही उन तक पहुँच जाएँगे, क्योंकि संतों द्वारा सवारी कएि गए घोड़े बहुत खराब हालत में थे। लेकनि उनका पीछा करने वाले नरिाश हो गए: साधुओं के घोड़े पंखों की तरह दौड़े; दुश्मन चाहे कुछ भी कर लें, वे उन तक नहीं पहुँच सके।

उस समय मठ में एक बीमार वृद्ध थे; यह सुनकर, वे सोचने लगे कि सेरजयिस द्वारा भेजे गए वृद्ध किसी तरह के घोड़ों पर सवार थे, और क्या यह सब वास्तव में हुआ था। तभी, अचानक, रेवरेंड उसके सामने प्रकट हुए; उन्होंने कहा कि उन्होंने बुज़ुर्गों को उन अंधे घोड़ों पर भेजा था, जिन्हें चारे की कमी के कारण मठ की दीवारों के बाहर चरने के लिए छोड़ दयिा गया था, और उन्होंने उस बुज़ुर्ग को उसकी बीमारी से और साथ ही उसके अवश्विास से भी ठीक कर दयिा।

उसी दनि, मास्को में एक भकि्षु देखा गया, जिसके पीछे पकी हुई रोटी से लदी बारह गाड़ियाँ थीं। उस समय मास्को भी दुश्मन के घेराबंदी में था। वह भकि्षु एपफिेनी मठ जा रहा था, जहाँ उस समय लाव्रा की एक शाखा थी। जो लोग उस वृद्ध को देखे, वे चकति रह गए और सोचने लगे कि दुश्मन की सेनाओं के बीच बनिा देखे नकिल जाना कैसे संभव था।

मॉस्को के लोगों ने उस साधु से पूछा, 'आप कौन हैं, और आप इतनी वशिाल सेना के बीच से गुज़रने में कैसे कामयाब हुए?'

उसने उत्तर दयिा:

'हम सभी सर्वपवत्रि और जीवन-दायक त्रमिूर्ति के घर से हैं।'

जब उनसे पूछा गया कि सेंट सेरजयिस के मठ में क्या हो रहा था, तो वृद्ध ने उत्तर दयिा:

'प्रभु अपने नाम को अवश्विासयिों द्वारा कलंकति नहीं होने देंगे; केवल आप स्वयं, भाइयों, नरिाश न हों या हताशा में न पड़ें।'

इस बीच, मॉस्को में सेंट सेरजयिस के मठ से आए लोगों के बारे में एक अफवाह फैलने लगी; ज़ार वासलिी स्वयं[6512] ने पूछा कि उन्हें उनके पास क्यों नहीं लाया गया; बड़ी संख्या में लोग एपफिेनी मठ में आने लगे, लेकनि वहाँ किसी ने भी नए आगंतुकों को नहीं देखा था। हालाँकि, जब उस मठ में अचानक रोटी की प्रचुरता दखिाई दी, तब यह एहसास हुआ कि यह एक दविय दर्शन था।

[6513][6514]मास्को ने भी घेराबंदी की कठनिाइयों को सहा; दुश्मन ने शहर तक पहुंच के सभी साधन काट दएि थे, जिससे रोटी की कीमत आसमान छूने लगी। ज़ार वासलिी और पैट्रआिर्क हर्मोजेनेस ने त्रनिटिी मठ के व्यवस्थापक, अव्रामी पलचिनि को एपफिेनी मठ के भंडार से आटे का एक हस्सिा कम कीमत पर बेचने के लिए मना लयिा। अव्रामी ने यह आदेश पूरा कयिा; लेकनि कुछ समय बाद, आटे की कीमत फरि से बहुत बढ़ गई। ज़ार और पैट्रआिर्क ने फरि से लाव्रा की बाहरी इमारत से रोटी जारी करने के लिए कहा। हालाँकि, अव्राम को डर था कि रोटी का भंडार बहुत जल्द ही समाप्त हो जाएगा; फरि भी, ईश्वर की दया पर भरोसा करते हुए और उनके महान संत, परम पूजनीय सेरजयिस के नाम का स्मरण करते हुए, उन्होंने ज़ार के अनुरोध को मान लयिा। उस समय, स्परिडिोन नामक एक व्यक्ति एपफिेनी मठ के अनाज भंडार में सेवा कर रहा था; ब्रेड की ढुलाई करते समय, उसने देखा कि दीवार की एक दरार से राई का आटा बह रहा था; उसने उसे हटाने के लिए फावड़ा चलाना शुरू कर दयिा - लेकनि यह और भी अधकि प्रचुर मात्रा में बहने लगा। इस चमत्कार को देखकर, उसने अन्य नौकरों और स्वयं कोषाध्यक्ष को बताया; यह वास्तव में आश्चर्यजनक है कि पूरे घेराबंदी के दौरान मठ की रोटी की आपूर्ति में कोई कमी नहीं आई, जिससे वहाँ रहने वाले और कई आगंतुक इसी रोटी से पेट भरते रहे। अंतत; कई बार पराजति होने के बाद, शत्रु 12 जनवरी 1610 को त्रमिूर्ति मठ की दीवारों से भयभीत होकर पीछे हट गए[6515] ।

[6512] वासलिी इओआनोवचि शुइस्की ने 1606 से 1610 तक शासन कयिा।

[6513] हर्मोजेनेस, जो अपनी शहादत के लिए जाने जाते हैं, 1606 से 1612 तक पैट्रआिर्क थे।

[6514] सेलरर, जो ग्रीक शब्द 'केलारोस' से आया है, मठ के भंडारण का प्रभारी था। अव्राम पालत्सिनि, जिन्होंने पोलशि लोगों द्वारा ट्रनिटिी लाव्रा की घेराबंदी का एक ववरिण छोड़ा था, की मृत्यु 1625 में हुई।

[6515] उनकी स्मृति में, लाव्रा में महीने की 12 तारीख के सबसे नकिट रवविार को एक जुलूस नकिाला जाता है।

उस समय संपूर्ण रूसी भूमि एक कठिन दौर से गुज़र रही थी: शत्रु सर्वत्र फैले हुए थे; कुछ नगर घेराबंदी में थे, जबकि अन्य यह नहीं जानते थे कि क्या करें, किसका अनुसरण करें या किसकी सुनें; शत्रुओं ने बहुत रक्तपात किया था, और रूसी भूमि विनिष्ट हो रही थी। इस कठिन समय के दौरान, ट्रिनिटी लावरा ने मातृभूमि की महान सेवा की। इसके आर्चिमंड्राइट डायोनिसियस ([6516]) और सेलरर अव्राम पालित्सिन ने अपने चारों ओर तेज और समझदार लिपिकों को इकट्ठा किया, प्रेरक पत्र तैयार किए और उन्हें नगरों को भेज दिया। इन पत्रों में, आर्चिमंड्राइट और सेलरर ने रूस के सभी लोगों से एकजुट होने और रूसी भूमि तथा ऑर्थोडॉक्स धर्म के दुश्मनों के खिलाफ दृढ़ता से खड़े होने का आह्वान किया। ऐसा ही एक पत्र निज़िनी नोवगोरोड पहुँचा। उस समय, वहाँ कोज़्मा मिनिन नाम का एक धर्मपरायण व्यक्ति रहता था; वह अक्सर एक विशेष चैपल में अकेलापन पसंद करता था और वहाँ एकांत में ईश्वर से अपनी प्रार्थनाएँ करता था। एक दिन, इसी चैपल में, पूजनीय सेरजियस उसे सपने में दिखाई दिए; महान चमत्कार करने वाले ने कोज़्मा को योद्धाओं के लिए धन जुटाने और उनके साथ मास्को राज्य को उसके दुश्मनों से मुक्त कराने के लिए जाने का आदेश दिया। जागने पर, कोज़्मा ने इस दृष्टि पर भय के साथ विचार करना शुरू कर दिया, लेकिन यह मानते हुए कि सेना इकट्ठा करना उसकी जिम्मेदारी नहीं थी, वह यह तय नहीं कर सका कि क्या करे। कुछ समय बाद, आदरणीय सेरगियस दूसरी बार उसके सामने प्रकट हुए – लेकिन तब भी कोज़्मा अनिश्चित रहा। फिर संत सेरगियस तीसरी बार उसके सामने प्रकट हुए और कहा:

क्या मैंने तुम्हें हथियारबंद लोगों को इकट्ठा करने के लिए नहीं कहा था? दयालु प्रभु को ऑर्थोडॉक्स ईसाइयों पर दया करना, उन्हें उथल-पुथल से बचाना और उन्हें शांति और सुकून देना पसंद था। इसीलिए मैंने तुम्हें रूसी भूमि को उसके दुश्मनों से मुक्त कराने के लिए निकलने को कहा था। यह मत डरना कि बुज़ुर्ग तुम्हारी बात पर कम ध्यान देंगे: जवान लोग खुशी-खुशी तुम्हारा अनुसरण करेंगे – इस पुण्य कार्य का सुखद अंत होगा।"

इस अंतिम दर्शन से कोज़्मा भयभीत हो गया; वह बीमार भी पड़ गया, और इसलिए, यह मानकर कि उसकी बीमारी उसके संदेह के दंड के रूप में भेजी गई थी, उसने परम पूज्य सेरजियस से क्षमा के लिए विनम्रतापूर्वक प्रार्थना करना शुरू कर दिया, जिसके बाद उसने उत्साह के साथ अपना कार्य शुरू कर दिया। उन्होंने अपने साथी नागरिकों को एक सेना खड़ी करने और दुश्मनों के खिलाफ मार्च करने के लिए मनाना शुरू कर दिया; विशेष रूप से युवाओं ने उनकी मदद की। शीघ्र ही कोज़्मा को नगर के बुज़ुर्गों में से एक चुना गया, और नागरिकों ने सभी मामलों में उनकी सलाह मानने का संकल्प लिया; जिस पर इस धर्मपरायण व्यक्ति ने अपनी सारी संपत्ति योद्धाओं को दान कर दी, और निज़िनी नोवगोरोड के सभी लोगों ने उनके उदाहरण का अनुसरण किया। इस प्रकार उन्होंने एक सेना तैयार की, उसके साथ नास्तिक दुश्मनों के खिलाफ मार्च किया, और पोलिश और लिथुआनियाई लोगों से अपनी मातृभूमि की मुक्ति में बहुत बड़ा योगदान दिया। कई और वर्षों तक, ईश्वर की अनुमति से, उन्होंने रूसी भूमि में तबाही मचाई और ऑर्थोडॉक्स लोगों का खून बहाया; लेकिन सर्वशक्तिमान प्रभु, जो एक पापी की मृत्यु नहीं चाहते, ने अपनी दयालु दृष्टि रूसी राज्य पर डाली, और अपने महिमामय सेवक, आदरणीय सर्जियस की प्रार्थनाओं के माध्यम से इसे बचाया और संरक्षित किया।

ईश्वर के इस सेवक ने और भी कई चमत्कार किए, और आज भी उनकी कब्र चमत्कारों का एक अक्षय स्रोत बनी हुई है; जो भी श्रद्धा के साथ आते हैं, उन्हें विभिन्न और प्रचुर अनुग्रह प्राप्त होते हैं: आइए हम भी संत सेरजियस की सर्व-चंगा करने वाली अवशेषों के संदूक के सामने प्रणाम करें और, हार्दिक भक्ति के साथ, पुकारें: 'पूज्य पिता सेरजियस, हमारे लिए ईश्वर से प्रार्थना करें'।

ट्रोपारियन, स्वर 4:

हे सदाचार के तपस्वी, हमारे परमेश्वर मसीह के एक सच्चे योद्धा के रूप में, आपने इस क्षणिक जीवन के संघर्षों में, अपने भजनों, जागरणों और उपवासों में, उनके शिष्य के रूप में एक उदाहरण स्थापित करते हुए, बहुत परिश्रम किया: इसीलिए परम पवित्र आत्मा आपके भीतर वास किया, और उनके कार्य द्वारा आप प्रकाश से सुशोभित हुए। किन्तु चूंकि आपको पवित्र त्रिमूर्ति के समक्ष साहस प्राप्त है, उस झुंड को याद कीजिए जिसे आपने इतनी बुद्धिमानी से एकत्रित किया था; और जैसा आपने वादा किया था, अपने बच्चों से मिलने आना न भूलिए, सेरजियस, हमारे पूजनीय पिता।

[6516] डायोनिसियस 1610 से ट्रिनिटी मठ में आर्चिमैंड्राइट थे और उनका निधन हो गया।

कॉन्टाकयिन, स्वर 8:

हे पूजनीय, मसीह के प्रेम से व्याप्त होकर और अटूट इच्छा के साथ उसका अनुसरण करते हुए, आपने हर सांसारकि सुख से घृणा की; और जैसे आप अपने देश पर सूर्य की भाँतचिमके, वैसे ही मसीह ने आपको चमत्कारों के वरदान से समृद्ध कयिा। हमारी याद रखें जो आपकी अतदिीप्तमिान स्मृतकिा सम्मान करते हैं, ताकहिम आपसे पुकार सकें: आनंदति हो, सर्गयिस, ईश्वर-ज्ञानी।

सुज़दाल की पूज्य यूफ्रॉसीन का जीवन

२५ सतिंबर को स्मरणोत्सव

आदरणीय यूफ्रोसीन, ख्रनगिोव के राजकुमार माइकल की पुत्री थीं, जो ईसाई धर्म के एक कन्फेशर (स्वीकारकर्ता) थे। काफी समय तक राजकुमार की पत्नी को संतान नहीं हुई; प्रसि माइकल और राजकुमारी ने परम पवत्रि मसीह की माता और पूजनीय संत एंथनी और थयिोडोरस की ओर गहरी आस्था के साथ रुख कयिा, और आँसुओं के साथ प्रार्थना की कउिन्हें एक संतान का आशीर्वाद मलि। एक रात, परम पवत्रि मसीह की माता उनके सामने प्रकट हुईं और कहा:

'हौसला रखो, प्रार्थना करो; तुम्हारी प्रार्थना स्वीकार की जाएगी, और इसके संकेत के रूप में तुम्हें एक सुगंधति भेंट मलिेगी।'

यह दृष्टउिन्हें भयभीत कर गई। जागने पर, उन्होंने अपने बस्तिर के सरिहाने धूप की एक गुच्छा पाई; उन्होंने तुरंत इसे एक धूपदान में डाल दयिा, और पूरा घर एक अद्भुत सुगंध से भर गया। राजकुमार के कुलीनों और उसके परविार दोनों ही इस अकथनीय सुगंध से चकति रह गए। राजकुमार माइकल और उनकी पत्नी ने ईश्वर से और भी अधकि भक्तपिूर्वक प्रार्थना करना शुरू कर दयिा। इसके बाद, परमेश्वर की अतपिवत्रि माता एक बार फरि उनके सामने प्रकट हुईं और उनके हाथों में एक कबूतर रखा, जसिसे सारा घर एक मधुर सुगंध से भर गया। और तीसरी बार, परमेश्वर की अतपिवत्रि माता, पूजनीय एंटनी और थयिोडोसयिस के साथ, उनके सामने प्रकट हुईं और कहा:

'तुम्हारी प्रार्थनाएँ सुनी गई हैं: तुम्हें एक बेटी होगी, जसिका नाम तुम थयिोडुलयिा रखना; वह ब्लाचेर्ना की कलीसयिा की सेवकिा होगी।'

आखरिकार इस पुत्री के जन्म का समय आ गया[6517] और उसके माता-पति ने ईश्वर की माता के वचन के अनुसार उसका नाम थयिोडुलयिा रखा। जब भी उसकी दाई मांस खाती थी, तो संत, जब वह अभी लंगोटों में लपिटी थी, पूरे दनि दाई के स्तनों का दूध पीने से इनकार कर देती थी। यह देखकर उसकी माँ यह सोचती थी कउिसकी बेटी का क्या होगा। और इस प्रकार, एक दनि उन्हें एक दर्शन हुआ: वे स्वयं पंखों पर सवार होकर स्वर्ग की ओर उड़ीं और अपनी छोटी बेटी को ईश्वर को अर्पति कर दयिा। जागने पर, उन्होंने ईश्वर की परम पवत्रि माता को उनके सभी चमत्कारकि संकेतों के लिए धन्यवाद दयिा। नवजात कन्या का पेचेर्स्क मठ में, परमेश्वर की अतपिवत्रि माता के चर्च में बपतस्मिा हुआ। जैसे-जैसे वह बड़ी हुई, धर्मनष्ठि राजकुमार माइकल ने स्वयं उसे पवत्रि धर्मग्रंथों की शक्षिा दी। बाकी, युवा राजकुमारी के शक्षिक बोयार थयिोडोर थे, जो अपनी बुद्धऔिर वज्ञिान के ज्ञान के लिए वख्यिात थे। धार्मकि कन्या ने अपनी शैक्षणकि उपलब्धयिों और अपने मुख की सुंदरता में अपने सभी समकालीनों को पीछे छोड़ दयिा। उसकी बुद्धऔिर सुंदरता के बारे में सुनकर, कई लोगों ने बड़ी लगन से उससे ववािह का प्रस्ताव रखा, लेकनि उन्हें मना कर दयिा गया। उस समय, सुज़दाल में एक अत्यंत धार्मकि राजकुमार मीना रहते थे। उसने पवत्रि कन्या के माता-पति से थयिोडुलयिा को ववािह के लिए देने के लिए कहा। वे मान गए, लेकनि कन्या स्वयं इस बात से बहुत दुखी हुई और उसने परमेश्वर की परम पवत्रि माता से अपनी कुँवारी अवस्था की रक्षा के लिए भक्तपिूर्वक प्रार्थना की। परम पवत्रि देवी उसे दखिाई दीं, उन्होंने उसे अपने माता-पति की आज्ञा मानने का आदेश दयिा, और कहा:

'कोई अपवत्रिता तुम्हारे शरीर को नहीं छू सकती।'

उस पवत्रि कन्या ने अपने माता-पति की इच्छा का पालन कयिा और सुज़दाल के लिए रवाना हो गई; जब वह अभी भी रास्ते में थी, तब उसका मंगेतर मर गया। उस शहर में पहुँचने पर, उसने ब्लाचेर्ना में परमेश्वर की अतपिवत्रि माता

[6517] संत का जन्म 1212 में हुआ था।

के वस्त्र के अवतरण को समर्पित स्थानीय मठ में वेला ग्रहण किया, और उसके मुंडन के समय उसे यूफ्रोसीन नाम दिया गया। उसने इस मठ की ननियों के प्रति महान आज्ञाकारिता दिखाई; उसने अपने शरीर को कठोर तपस्या से दंडित किया, अपनी आत्मा की अथक देखभाल की, और हर सद्गुण से प्रकाशमान हुई। अपने पवित्र जीवन के लिए, यूफ्रोसीन को ईश्वर से भविष्यवाणी का वरदान मिला; वह अक्सर सभी को सुसमाचार के वचनों से उपदेश देती थी और कई बीमार लोगों को ठीक करती थी। दुष्ट बटू खान के आक्रमण के दौरान, संत ने अपनी प्रार्थनाओं के द्वारा मठ को विनाश से बचाया। उन्होंने 25 सितंबर को इस संसार से विदा ली – ठीक उसी दिन जब उन्होंने अपना संन्यास का व्रत लिया था[6518] ।

आदरणीय शहीद पाफनुटियस की स्मृति।

25 सितंबर को स्मरणोत्सव

पवित्र पूजनीय शहीद पाफनुतियुस सम्राट डायोक्लेटियन के शासनकाल में रहते थे और मिस्र के मूल निवासी थे। मिस्र के राज्यपाल एरियन, जो ईसाइयों का उत्पीड़न करता था, जेंटरिया (टेन्टरा) शहर में पहुँचा और 200 सैनिकों को आदेश दिया कि वे तपस्वी पाफनुतियुस को ढूंढकर उसके सामने लाएँ। लेकिन, एक स्वर्गदूत द्वारा पहले से आगाह किए जाने के कारण, वह स्वयं उपस्थित हुआ और मसीह की गवाही देने के बाद, उसे जेल में डाल दिया गया। फिर उसे एक बार फिर राज्यपाल के सामने लाया गया, जिस पर उसके हाथों और पैरों की बेड़ियाँ अपने आप गिर गईं। फिर उसे इतनी कठोर यातना दी गई कि उसकी आंतें बाहर निकल आईं, लेकिन एक स्वर्गदूत ने उसे चंगा कर दिया। दो सैनिक, डायोनिसियस और कैलमिाकस, जो संत को यातना दे रहे थे, ने यह देखा, ईमान लाए, और तुरंत उनका सिर कलम कर दिया गया। कैद में रहते हुए, पफनुटियस ने उन 40 अधिकारियों को ईसाई धर्म अपनाने के लिए प्रेरित किया जिन्हें राज्यपाल ने कालकोठरी में डाल दिया था। मसीह की घोषणा करने के लिए उन सभी को खंभे पर जला दिया गया। इसके बाद, संत, हिरासत से चमत्कारिक रूप से मुक्त होकर और नेस्टोरियस नामक एक धनी व्यक्ति के घर में खुशी-खुशी स्वागत किए जाने के बाद, ने उन्हें, उनकी पत्नी और उनकी बेटी स्टेफ़ाना को शहादत के पराक्रम के लिए प्रेरित किया; उनका सिर अरियन द्वारा कलम कर दिया गया। बाद में, संत पाफनुटियस ने 16 युवा शिष्यों को, जो कुलीन माता-पिता की संतान थे, धर्मांतरित किया; जिन्हें भाले मारकर घायल किया गया, और उनमें से एक ने चिता पर प्राण त्याग दिए; 80 मछुआरों को, जो शहादत के लिए प्रेरित थे, कुल्हाड़ी से मार डाला गया। पाफनुटियस ने स्वयं 400 और सैनिकों को, उनके कमांडर यूसेबियस के साथ मिलकर, धर्मांतरित किया, जिन्हें गड्ढों में जिंदा जला दिया गया। इसके बाद, संत को एक पत्थर के साथ नदी में फेंक दिया गया, लेकिन वह उसी पत्थर पर तैरते हुए किनारे पर पहुँच गए; अंत में, स्वयं डायोक्लेटियन के सामने भेजे जाने के बाद, संत पाफनुटियस को उसी ने एक खजूर के पेड़ से कीलें ठोक दीं और उन्होंने अपनी आत्मा ईश्वर को सौंप दी।

9 अक्टूबर

26 सितंबर (पुराना तरीका)

संत जॉन प्रेरित और सुसमाचार प्रचारक, धर्मशास्त्री का जीवन

26 सितंबर को स्मरण किया जाता है

संत योहन धर्मवज्ञिानी, प्रेरित और सुसमाचार प्रचारक, ज़ेबेदी और सलोमी, जो मंगेतर यूसुफ की पुत्री थीं, के पुत्र थे[6519] । उन्हें मछली पकड़ने के अपने जालों के साथ काम करते समय सुसमाचार प्रचार करने के लिए बुलाया गया

[6518] संत यूफ्रोसीन का 1250 में निधन हो गया; उनके पवित्र अवशेष सुज़दल के रज़ोपोल्जेन्स्की मठ में विराजमान हैं।

[6519] योहन द थियोलोजियन का जन्म बेथसैदा में हुआ था। उनके माता-पिता धर्मपरायण लोग थे जो मसीहा के आगमन की प्रतीक्षा में रहते थे। अपने युवा दिनों में ही, उन्होंने योहन को मूसा का विधान सिखाया। बचपन से ही, संत योहन अपने पिता को एक मछुआरे और व्यापारी के रूप में उनके काम में सहायता करते थे। जॉन के साथी और समान विचारधारा वाले वही बेथसैदा के निवासी, पवित्र भाई पतरस और अन्द्रियास थे, जो बाद

था। जब हमारे प्रभु, यीशु मसीह, गलील की झील के कनिारे से गुजर रहे थे, मछुआरों में से अपने प्रेरतिों को चुन रहे थे और पहले ही दो भाइयों, पतरस और अन्द्रयिास को बुला चुके थे, तब उन्होंने दो अन्य भाइयों को देखा, जे़बेदी के पुत्र याकूब और यूहन्ना, जो अपनी नाव में अपने पति जे़बेदी के साथ अपने जाल की मरम्मत कर रहे थे, और उन्हें बुलाया[6520] । तुरंत, नाव और अपने पति को छोड़कर, वे यीशु मसीह के पीछे हो लिए।

अपने बुलाए जाने के ठीक उसी क्षण, प्रभु ने यूहन्ना को 'गरज का पुत्र' नाम दयिा, क्योंकि उसकी धर्मशास्त्र गरज की तरह संसार भर में सुना जाएगा और सारी पृथ्वी को भर देगा[6521] । और यूहन्ना ने अपने प्रयि गुरु का अनुसरण कयिा, उनके होठों से नकिलने वाली बुद्धि को सीखा; और अपने पूर्ण सौम्य स्वभाव तथा कुंवारी पवत्रिता के कारण वह अपने प्रभु मसीह द्वारा अत्यंत प्रयि था। प्रभु ने उन्हें , बारह प्रेरतिों में से सबसे योग्यों में से एक, के रूप में सम्मानति कयिा: वह मसीह के उन तीन सबसे करीबी शष्यिों में से एक थे, जन्हिें प्रभु ने कई अवसरों पर अपने दैवीय रहस्य प्रकट कए। इस प्रकार, जब उन्होंने यायरस की बेटी को मृतकों में से जीवति करने की इच्छा व्यक्त की, तो उन्होंने पतरस, याकूब और यूहन्ना के अलावा कसिी को भी अपने पीछे आने की अनुमति नहीं दी। जब वह तabor पर्वत पर अपनी दव्यिता की महमिा प्रकट करना चाहते थे, तो वह पतरस, याकूब और यूहन्ना को अपने साथ ले गए। जब उन्होंने बगीचे में प्रार्थना की, तो यूहन्ना भी वहाँ था, क्योंकि उन्होंने चेलों से कहा: *'तुम यहाँ बैठो, जब तक मैं वहाँ जाकर प्रार्थना करूँ' और पतरस और ज़ेबेदी के दोनों बेटों को अपने साथ ले गए'* (मत्ती 26:36–37), अर्थात्, याकूब और यूहन्ना। हर जगह, प्रयि चेल े के रूप में, यूहन्ना मसीह से कभी अलग नहीं हुए। और मसीह उन्हें कतिना प्यार करते थे, यह इस तथ्य से स्पष्ट है कि यूहन्ना उनकी छाती पर सरि रखकर लेटे थे। क्योंकि जब अंतमि भोज के समय, प्रभु ने अपने वश्विासघाती की भवष्यिवाणी की, और शष्यि एक-दूसरे की ओर हैरानी से देखने लगे, यह सोचते हुए कि वह कसिके बारे में बात कर रहे हैं, तो यूहन्ना अपने प्रयि शक्षिक की छाती पर सरि टेककर लेटा था; जैसा कि वह स्वयं अपनी सुसमाचार में वर्णन करता है: *'उनके एक चेले, जसिे यीशु प्रेम करते थे, यीशु की छाती पर सरि टेककर लेटा था; शमिोन पतरस ने उसे इस इशारे से कहा कि वह पूछे कि वह कसिके वषिय में कह रहे हैं; उसने, यीशु की छाती पर सरि टेककर, उनसे कहा, "प्रभु! यह कौन है?'* (यूहन्ना 13:23-25)। प्रभु यीशु ने यूहन्ना से इतना गहरा प्रेम कयिा था कि केवल वही बनिा कसिी बाधा के प्रभु की छाती पर सरि रखकर नश्चिंकोच इस रहस्य के बारे में उनसे पूछ सका। लेकनि यूहन्ना ने भी अपने आपसे प्रेम करने वाले गुरु के प्रति अपना पारस्परकि प्रेम दखिाया, जो अन्य प्रेरतिों के प्रेम से कहीं बढ़कर था: क्योंकि मसीह के स्वैच्छकि दुखों के दौरान, जब अन्य सभी ने अपने चरवाहे को छोड़ दयिा और भाग गए, वह अकेले ही दृढ़ता से उनके साथ रहे, मसीह के सभी कष्टों को देखते हुए, हृदय से उनके प्रति सहानुभूति रखते हुए, और अत्यंत पवत्रि कुँवारी मरयिम के साथ रोते और वलिाप करते हुए, प्रभु की माता, और वह तब तक उनके पास से नहीं हटा जब तक वह परमेश्वर के पुत्र के साथ खड़ी रहीं, जन्होंने हमारे लिए क्रूस तक और उद्धारकर्ता की मृत्यु तक दुख उठाया। इसके लिए, उसे क्रूस पर, परम पवत्रि कन्या मरयिम की उपस्थति में, प्रभु द्वारा पुत्र के रूप में अपनाया गया: जब प्रभु क्रूस पर लटके हुए थे, *'अपनी माता और उस शष्यि को जसिे वह प्रेम करता था, वहाँ खड़े देख कर, उसने अपनी माता से कहा: "हे स्त्री! 'देख, तेरा पुत्र!" फरि उसने चेलवा से कहा, 'देख, तेरी माता!' और उसी घड़ी से वह चेला उसे अपने घर ले गया* (यूहन्ना 19:26-27)। और उसने उन्हें अपनी माता के समान, परम सम्मान के साथ रखा, और उनकी सम्मानति तथा गौरवमय नद्रिोपागम तक उनकी सेवा की। उनके नद्रिोपरांत के दनि, जब परमेश्वर की माता के सम्मानति और पवत्रि शरीर को दफनाने के लिए ले जाया जा रहा था, संत योहन उनके शव-वाहक सेवकों के आगे प्रकाश की तरह चमकने वाले एक राजसी राजदंड के साथ चल रहे थे, जसिे महादूत गब्रयिल ने परम पवत्रि कुँवारी के पास लाया था, और उन्हें यह सूचति कयिा था कि उन्हें पृथ्वी से स्वर्ग में ले जाया जाएगा।

में पवत्रि प्रेरति भी बने। जब सन्त यूहन्ना बपतस्मिा देने वाले ने प्रचार करना शुरू कयिा, तो ये सभी धर्मनष्ठि युवक स्वेच्छा से उनके शष्यि बन गए, यद्यपि उन्होंने अभी तक न तो अपने घर छोड़े थे और न ही अपने कार्य। उन्होंने यह सब तब ही छोड़ दयिा जब प्रभु ने उन्हें अपना शष्यि बनाया।

[6520] धन्य जेरोम के वृत्तांत के अनुसार, जब प्रभु ने उन्हें अपने शष्यिों में से एक बनने के लिए बुलाया, तब यूहन्ना अभी भी बहुत युवा थे। उनके धर्मपरायण माता-पति ने यूहन्ना, या उनके भाई याकूब को दव्यि शक्षिक के शष्यि बनने से नहीं रोका।

[6521] 'बोएनर्जसि' (गरज के पुत्र) नाम पवत्रि प्रेरति के चरत्रि के कुछ गुणों की ओर भी इशारा करता था। यद्यपि वह पवत्रि, दयालु, सौम्य और भरोसेमंद था, वह एक ही समय में परमेश्वर की महमिा के लिए एक प्रबल उत्साह से भरपूर था। वह अपने मासूम दलि की पूरी ताकत से प्रभु से प्रेम करता था। इसीलिए प्रभु ने जॉन से अपने अन्य कसिी भी शष्यि से अधकि प्रेम कयिा। अपनी बुलावा के ठीक एक साल बाद, प्रभु ने अपने कई शष्यिों में से जॉन को बारह प्रेरतिों में से एक के रूप में चुना।

परम पवत्रि थिओटोकोस की नदि्रोपागम के बाद, संत जॉन अपने शष्यि प्रोकोरस के साथ एशयिा माइनर के लिए रवाना हुए, जहाँ भाग्य से उन्हें परमेश्वर का वचन प्रचार करने का कार्य मलि[6522] । वहाँ जाते समय, संत जॉन दुखी थे, क्योंकि उन्होंने समुद्र में खतरों की भवष्यिवाणी की थी, जसिकी उन्होंने अपने शष्यि प्रोकोरस को चेतावनी दी थी। ऐसा हुआ कि, जब वे योपा में एक जहाज पर चढ़े और समुद्र यात्रा आरंभ की, तो दनि के ग्यारहवें घंटे पर एक बड़ी आंधी उठी, और रात के दौरान जहाज टूट गया, और जहाज पर सवार सभी लोग लहरों से इधर-उधर उछाले गए, प्रत्येक व्यक्ति उसी चीज़ से चपिका हुआ था जसिे वे पकड़ सकते थे। दनि के छठे घंटे पर, समुद्र ने प्रोखोरस सहति उन सभी को सेलेउकयिा से पाँच स्टेडयिम दूर कनिारे पर फेंक दयिा[6523] : केवल जॉन समुद्र में ही रह गया। प्रोखोरस ने लंबे समय तक बहुत रोया और अकेले एशयिा के लिए नकिल पड़ा। अपनी यात्रा के चौदहवें दनि, वह समुद्र के कनिारे बसे एक गाँव में पहुँचा और वहाँ आराम करने के लिए रुका। और इस प्रकार, एक दनि जब वह समुद्र की ओर देख रहा था और यूहन्ना के लिए तरस रहा था, तो एक झागदार लहर ज़ोरदार गर्जना के साथ तट पर टकराई और यूहन्ना को जीवति ही कनिारे पर बहा ले आई। प्रोखोरस यह देखने के लिए गया कि समुद्र ने कनिारे पर कसि फेंका है, और जॉन को पाकर, उसे जमीन से उठा लयिा; और एक-दूसरे को गले लगाकर, वे रोए और हर बात के लिए परमेश्वर का धन्यवाद कयिा। इस प्रकार संत जॉन ने समुद्र में चौदह दनि और रातें बतिाई थीं, और परमेश्वर की कृपा से जीवति रहे। गाँव में प्रवेश करने पर, उन्होंने पानी और रोटी माँगी; और, तरोताज़ा होकर, वे एफ़सिुस के लिए रवाना हो गए[6524] ।

जब वे एक साथ शहर में दाखलि हुए, तो उनका सामना रोमाना (रोमेका) नाम की एक महलिा से हुआ, जो अपने बुरे कामों के लिए रोम तक कुख्यात थी, और जो उस शहर में सार्वजनकि स्नानागार चलाती थी। और इस प्रकार, जॉन और प्रोकोरस को काम पर रखकर, उसने उन्हें स्नानागारों में काम पर लगा दयिा और उन्हें सताया। अपनी चालाकी से, उसने दोनों को अपनी सेवा में फँसा लयिा : उसने जॉन को आग संभालने और प्रोखोरस को पानी खींचने का काम सौंपा, दोनों को जीवन भर के लिए, और वे लंबे समय तक बहुत कष्ट में रहे। उस स्नानागार में एक राक्षस था, जो हर साल वहाँ स्नान करने वालों में से कसिी एक को मार डालता था – चाहे वह कोई युवक हो या युवती। जब उस स्नानागार का नरि्माण हो रहा था और नींव रखी जा रही थी, तो राक्षसी प्रभाव के तहत एक युवक और एक युवती को वहाँ ज़दिा दफ़ना दयिा गया था; उस समय से ही, ऐसे हत्याकांड होने लगे। ऐसा हुआ कि उस समय शहर के बुज़ुर्ग डायोस्कोराइड्स का बेटा, डोमनस नाम का एक लड़का, स्नानागार में गया। जब डोमनस स्नान कर रहा था, तो एक राक्षस ने उस पर हमला कयिा और उसका गला घोंट दयिा, और उसके लिए बहुत शोक मनाया गया। इसकी खबर पूरे एफ़ेसस शहर में फैल गई; यह सुनकर, डयिोस्कोराइड्स खुद इतने दुख से भर गए कि वे भी शोक से मर गए। रोमाना ने, अपनी ओर से, डोमन को मृतकों में से जीवति करने के लिए आर्टेमसि से मन से प्रार्थना की, और प्रार्थना करते हुए, उसने अपने शरीर को कष्ट दयिा, लेकनि कोई फायदा नहीं हुआ। जब यूहन्ना प्रोकोरोस से यह पूछ रहा था कि क्या हुआ था, तो रोमाना ने उन्हें बात करते देख लयिा, उसने यूहन्ना को पकड़ लयिा और उसे मारने लगी, और डोमनस की मृत्यु के लिए उसे डाँटते हुए दोषी ठहराने लगी। अंत में, उसने कहा, 'अगर तुम डोमनस को मुर्दों में से जीवति नहीं करोगे, तो मैं तुम्हें मार डालूँगी।'

प्रार्थना करने के बाद, जॉन ने लड़के को मृतकों में से जीवति कर दयिा। रोमाना भय से भर गई। उसने जॉन को 'ईश्वर' या 'ईश्वर का पुत्र' कहा, लेकनि जॉन ने मसीह की शक्ति का उपदेश दयिा और उन्हें मसीह में वश्विास करना सखिाया। फरि उसने डयिोस्कोराइड्स को भी मृतकों में से जीवति कर दयिा, और डयिोस्कोराइड्स और डोमनस दोनों मसीह में वश्विास करने लगे, और वे सभी बपतस्मिा ग्रहण कर लिए। सभी लोगों पर भय छा गया, और वे जो हुआ था, उसे देखकर चकति रह गए। कुछ लोगों ने कहा कि यूहन्ना और प्रोकोरस जादूगर थे, जबकि अन्य लोगों ने सही तौर पर आपत्ति जताई कि जादूगर मृतकों को जीवति नहीं करते। यूहन्ना ने स्नानागार से एक दानव को नकिाल दयिा, और वह और प्रोकोरस

[6522] ईस्वी 50 में, यानी ईश्वर की माता के स्वर्गारोहण के दो साल बाद, संत जॉन अभी भी यरूशलेम में थे, क्योंकि यह ज्ञात है कि वह उस वर्ष यरूशलेम में आयोजति प्रेरतिों की परषिद में उपस्थति थे। ईस्वी 58 के बाद ही संत जॉन ने एशयिा माइनर के क्षेत्रों को अपने धर्म प्रचार के स्थान के रूप में चुना, जहाँ संत प्रेरति पॉल ने उनसे पहले उपदेश दयिा था।

[6523] सीरयिा में एक तटीय शहर।

[6524] यहाँ यूहन्ना बपतस्मिादाता के शष्यिों द्वारा ईसाई धर्म का पहला आधार स्थापति कयिा गया था; प्रेरति पतरस पहले ही यहाँ ईसाइयों को पा चुके थे, लेकनि मुख्य रूप से प्रेरति पौलुस ने यहाँ सुसमाचार का प्रचार कयिा; बाद में, उनके शष्यि तमिोथी ने यहाँ बशिप के रूप में सेवा की; अंत में, एफ़सिुस प्रेरति यूहन्ना का नविास स्थान था, जहाँ उनकी मृत्यु भी हुई। प्रेरति यूहन्ना की अथक देखभाल का फल यह था कि एफ़सिुस में शुद्ध सुसमाचार शक्षिा संरक्षति रही, ताकि संत आइरेनयिस के शब्दों में, एफ़सिुस की कलीसयिा प्रेरतिकि परंपरा की एक सच्ची गवाह बनी रहे।

डियोस्कोरडिीस के घर ठहरे, उन्होंने नव-प्रबुद्ध लोगों को उनके वशि्वास में मजबूत कयिा और उन्हें एक सदाचारी जीवन शैली सखिाई।

एक समय, एफ़सिुस में आर्टेमसि का पर्व मनाया गया, और सभी लोग, सफेद वस्त्र पहनकर, आर्टेमसि के मंदरि में उत्सव मना रहे थे, आनंदति और हर्षति हो रहे थे; मंदरि के सामने उस देवी की मूर्त खिड़ी थी। तो यूहन्ना, एक ऊँची जगह पर चढ़कर, मूर्त के पास खड़ा हो गया और उसने ज़ोर से वधिर्मी लोगों की अंधापन की नदिा की, यह कहते हुए कि वे नहीं जानते थे कि वे कसिकी पूजा कर रहे थे, और यह कि परमेश्वर के बजाय वे एक राक्षस का सम्मान कर रहे थे। हालाँकि, लोग इस पर क्रोध से भर गए और उन्होंने यूहन्ना पर पत्थर फेंके, लेकनि एक भी पत्थर उसे नहीं लगा: इसके वपिरीत, पत्थर उन्हीं लोगों को गरिा गए जो उन्हें फेंक रहे थे। यूहन्ना ने स्वर्ग की ओर अपने हाथ उठाकर प्रार्थना करना शुरू कयिा – और तुरंत पृथ्वी पर एक बड़ी और झुलसाने वाली गर्मी पड़ने लगी, और भीड़ में से लगभग 200 लोग गरि पड़े, और वे सभी मर गए, जबकि बाकी, जो अपने डर से मुश्कलि से उबरे थे, यूहन्ना से दया की भीख मांगने लगे, क्योंकि उन पर भय और कांपना छा गया था। लेकनि जब यूहन्ना ने परमेश्वर से प्रार्थना की, तो जो भी मर गए थे वे जीवति हो उठे; और वे सभी यूहन्ना के पैरों पर गरि पड़े और मसीह पर वशि्वास करके बपतस्मिा लयिा। वहाँ, तकिी नामक एक स्थान पर, यूहन्ना ने एक पंगु व्यक्त को चंगा कयिा जो बारह वर्षों से बस्तिर पर पड़ा था। चंगा हुआ व्यक्त परमेश्वर की महमिा करने लगा।

जब यूहन्ना ने और भी बहुत से चहि्न दखिाए, और उसके चमत्कारों की ख़बर दूर-दूर तक फैल गई, तो आर्टेमसि के मंदरि में रहने वाला दुष्टात्मा, यह डरकर कि उसे भी यूहन्ना द्वारा नकिाल दयिा जाएगा, एक योद्धा का रूप धारण कर, एक प्रमुख स्थान पर बैठ गया और जोर-जोर से रोने लगा। रास्ते से गुजरने वालों ने उससे पूछा कि वह कहाँ का है और वह इतनी बुरी तरह क्यों रो रहा है।

उसने उत्तर दयिा: 'मैं फलिस्तीन के केसरयिा से हूँ, मैं जेलों का प्रमुख हूँ। मुझे यरूशलेम से आए दो जादूगरों, यूहन्ना और प्रोकोरस की रखवाली का आदेश दयिा गया था, जन्हिें उनके कई दुष्कर्मों के कारण मृत्युदंड दयिा गया था। आज सुबह उनकी भयानक मौत होना तय थी, लेकनि अपनी जादू-टोने से वे रात में जेल से भाग नकिले, और मैं उनकी वजह से मुसीबत में पड़ गया हूँ, क्योंकि राजकुमार उनकी जगह मेरी जान लेना चाहता है। मैंने राजकुमार से उन्हें पकड़ने के लिए जाने की वनिती की, और अब मुझे सुना है कि वे जादूगर यहाँ हैं, लेकनि मुझे उन्हें पकड़ने में मदद करने के लिए कोई नहीं है।'

जैसे ही उसने यह कहा, राक्षस ने इस बात की गवाही देने वाला एक पत्र नकिाला, और सोने का एक बड़ा बंडल भी, यह वादा करते हुए कि जो भी इन जादूगरों को नष्ट करेगा, उसे यह दे देगा।

यह सुनकर, कुछ सैनकिों को उस पर तरस आ गया, उन्होंने लोगों को जॉन और प्रोकोरस के खलिाफ भड़काया, और डयिोस्कोराइड्स के घर के पास आकर कहा: 'या तो हमें उन जादूगरों को सौंप दो, या हम तुम्हारे घर में आग लगा देंगे।' डायोस्कोराइड्स ने प्रेरति और उनके शष्यि प्रोकोरस को सौंपने के बजाय अपना घर जलाने देना बेहतर समझा। लेकनि जॉन ने, अपने आत्मा में यह पूर्वानुमान लगाते हुए कि यह लोकप्रयि वद्रिोह अच्छाई की ओर ले जाएगा, खुद को और प्रोकोरस को भीड़ के हवाले कर दयिा। भीड़ के नेतृत्व में, वे आर्टेमसि के मंदरि पहुँचे। जॉन ने ईश्वर से प्रार्थना की – और अचानक उस मूर्तपिूजक मंदरि का ढाँचा ढह गया, और एक भी व्यक्त को कोई चोट नहीं लगी। और प्रेरति ने वहाँ बैठे दानव से कहा:

'मैं तुझसे कहता हूँ, हे दुष्ट दानव, मुझे बता, तू यहाँ कतिने वर्षों से रहा है, और क्या तू ही है जसिने इस लोगों को हमारे वरिुद्ध भड़काया है?'

दानव ने उत्तर दयिा:

'मैं यहाँ 109 सालों से हूँ, और मैंने ही इस भीड़ को आपके खलिाफ भड़काया है।'

तब जॉन ने उससे कहा:

'नज़रेथ के यीशु के नाम पर, मैं तुझे आज्ञा देता हूँ कि इस जगह से नकिल जा।' और तुरंत दुष्टात्मा नकिल गया।

सभी लोगों पर बड़ा भय छा गया, और वे मसीह पर वशि्वास करने लगे। यूहन्ना द्वारा और भी बड़े-बड़े चहि्न दखिाए गए, और बहुत बड़ी भीड़ प्रभु की ओर मुड़ आई।

उस समय, रोम के सम्राट डोमशियिन ने ईसाइयों के वरिुद्ध एक बड़ा उत्पीड़न शुरू कयिा, और यूहन्ना के बारे में उसके सामने बदनामी की गई। एशयिा के राज्यपाल ने संत को पकड़कर, उसे सीज़र के सामने बँधा हुआ रोम भेज दयिा,

जहाँ, मसीह की गवाही देने के लिए, यूहन्ना ने पहले तो पिटाई सहनी और फिर उसे घातक जहर से भरा एक प्याला पीने के लिए मजबूर किया गया। लेकिन जब, मसीह के वचन के अनुसार: *'यदि वे कुछ भी घातक पीते हैं, तो उससे उन्हें कोई हानि नहीं होगी'* (मरकुस 16:18), उसे उससे कोई हानि नहीं हुई, तो उसे उबलते तेल के एक बर्तन में डाल दिया गया, फिर भी वह उससे भी बिना किसी चोट के बाहर निकल आया। और लोगों ने पुकार लगाई: 'महान है ईसाई ईश्वर!' सीज़र, अब यूहन्ना को यातना देने की हिम्मत न करते हुए, उसे अमर मानकर उसे पतमोस द्वीप पर निर्वासन की सजा दे दी, ठीक वैसे ही जैसे प्रभु ने यूहन्ना से एक सपने में कहा था: 'तुम्हें बहुत कष्ट सहना होगा, और तुम्हें एक ऐसे द्वीप पर निर्वासित किया जाएगा जिसे तुम्हारी बहुत आवश्यकता है।'

सैनिकों ने जॉन और प्रोकोरस को एक जहाज पर चढ़ाया और वे चल पड़े। अपनी यात्रा के दौरान एक दिन, राजा के कुलीनों ने भोजन करने के लिए बैठकर खाने-पीने की भरमार के साथ मस्ती करना शुरू कर दिया। उनमें से एक, एक जवान आदमी, खेलते-खेलते जहाज से गिरकर समुद्र में डूब गया और उसकी मौत हो गई। तब उनकी हँसी-खुशी रोने और विलाप में बदल गई, क्योंकि वे उस लड़के की मदद नहीं कर सके जो समुद्र की गहराई में गिर गया था। जहाज पर मौजूद लड़के का पिता सबसे ज़्यादा सिसक-सिसक कर रोया: वह खुद को समुद्र में फेंक देना चाहता था, लेकिन दूसरे लोगों ने उसे रोक लिया। चमत्कार करने की जॉन की शक्ति को जानते हुए, वे सभी मदद के लिए उससे विनम्रतापूर्वक निवेदन करने लगे। उन्होंने बदले में उनमें से प्रत्येक से पूछा कि वे किस देवता की पूजा करते हैं; और एक ने कहा: 'अपोलो', दूसरे ने: 'ज्यूस', तीसरे ने: 'हरक्यूलिस', कुछ ने: 'एस्कुलेपियस', और अन्य ने: 'एफ़िसुस की आर्टेमिस'[6525] ।

और यूहन्ना ने उनसे कहा:

'तुम्हारे इतने सारे देवता हैं, और फिर भी वे एक डूबते हुए आदमी को भी नहीं बचा सकते!'

और उसने उन्हें उनकी दुख में सुबह तक छोड़ दिया। अगले दिन सुबह, जॉन ने उस युवक की दुर्दशा पर दया की और आँसुओं के साथ ईश्वर से प्रार्थना की। तुरंत समुद्र उग्र हो गया, और एक लहर जहाज तक उठकर उस युवक को, जो अभी भी जीवित था, जॉन के पैरों तले फेंक गई। यह देखकर सभी चकित हो गए और युवक के डूबने से बचने पर आनंदित हुए। उन्होंने जॉन का अत्यधिक सम्मान किया और उसकी लोहे की बेड़ियाँ खोल दीं।

एक रात, पाँच बजे, समुद्र में एक बड़ा तूफान आ गया, और सभी अपने जीवन की निराशा में चिल्लाने लगे, क्योंकि जहाज पहले ही टूटने लगा था। तब वे सभी जॉन से चिल्लाकर विनती करने लगे कि वह उनकी मदद करे और अपने ईश्वर से उन्हें विनाश से बचाने के लिए प्रार्थना करे। उनसे चुप रहने का इशारा करके, संत ने प्रार्थना करना शुरू कर दिया - और तूफान तुरंत थम गया, और एक बड़ी शांति छा गई।

एक सैनिक पेट की बीमारी से पीड़ित था और पहले ही मर रहा था; प्रेरित ने उसे स्वस्थ कर दिया।

जहाज पर पानी खत्म हो गया था, और कई लोग प्यास से थककर मौत के कगार पर थे। जॉन ने प्रोकोरस से कहा:

'पात्रों को समुद्र के पानी से भर दो।'

और जब पात्र भर गए, तो उन्होंने कहा:

'यीशु मसीह के नाम पर, कुछ पानी निकालो और पियो!'

कुछ पानी निकालने पर, उन्होंने पाया कि पानी मीठा था; और, तृप्त होकर पीने के बाद, वे विश्राम करने लगे। ऐसे चमत्कारों को देखकर, यूहन्ना के साथियों का बपतिस्मा हुआ और वे यूहन्ना को आज़ाद कराना चाहते थे। लेकिन उन्होंने स्वयं उन्हें उस स्थान पर ले जाने के लिए मना लिया जो उन्हें बताया गया था। पैटमॉस द्वीप पर पहुँचने पर, उन्होंने यह संदेश राज्यपाल को दिया। मिरॉन, जो राज्यपाल के ससुर थे, ने जॉन और प्रोकोरस को अपने घर में आश्रय दिया। मिरॉन का अपोलोनाइड्स नाम का एक सबसे बड़ा बेटा था, जिस पर भविष्य बताने वाला एक दानव सवार था; और हर कोई अपोलोनाइड्स को एक भविष्यवक्ता मानता था। जैसे ही यूहन्ना मिरोन के परिवार के घर में प्रवेश कर रहा था, अपोलोनियस तुरंत बिना कोई निशान छोड़े गायब हो गया; वह एक दूसरे शहर में भाग गया, इस डर से कि यूहन्ना उससे भविष्यवाणी की आत्मा को बाहर निकाल सकता है। जब मिरोन के घर में अपोलोनडिस को लेकर हंगामा मच गया, तो उससे एक संदेश आया जिसमें लिखा था कि जॉन ने अपनी जादू-टोने से उसे उसके घर से भगा दिया था, और जब तक जॉन नष्ट नहीं हो जाता, वह वापस नहीं आ सकता।

[6525] एस्कुलेपियस – अपोलो का पुत्र, एक पौराणिक चिकित्सक, जो अपनी मृत्यु के बाद, मूर्तिवादियों के अनुसार, चिकित्सा का देवता बन गया – को एक साँप से लिपटे हुए दंड के साथ चित्रित किया जाता था।

पत्र पढ़ने के बाद, मरिीन अपने दामाद, हेगेमोन, के पास यह बताने गया कि क्या हुआ था; हेगेमोन ने जॉन को पकड़ लिया और उसे जानवरों के सामने फेंकने का इरादा किया। लेकिन जॉन ने हेगेमोन से विनती की कि वह थोड़ी देर और धैर्य रखें और उसे अपना शिष्य अपोलोनडिस के पास भेजने की अनुमति दें, यह वादा करते हुए कि वह उसे वापस घर ले आएगा। गवर्नर ने उसे शिष्य को भेजने से नहीं रोका, लेकिन उसने स्वयं जॉन को दो ज़ंजीरों से बांधकर जेल में डाल दिया। और प्रोकोरस जॉन के संदेश के साथ अपोलोनाइडसि के पास गया, जिसमें इस प्रकार लिखा था: 'मैं, यीशु मसीह, परमेश्वर के पुत्र का प्रेरित, अपोलोनियस के भीतर निवास करने वाली भविष्यद्वाणी की आत्मा को पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम पर आज्ञा देता हूँ: परमेश्वर की सृष्टि से निकल जाओ और फिर कभी उसमें प्रवेश न करो, बल्कि इस द्वीप के बाहर अकेले निर्जल स्थानों में निवास करो, और लोगों के बीच नहीं'.

जब प्रोकोरस यह संदेश लेकर अपोलोनदिस के पास गया, तो दानव तुरंत ही उससे निकल गया। अपोलोनदिस को होश आया, और जैसे नींद से जागा हो, वह प्रोकोरस के साथ अपने नगर वापस चला गया। लेकिन वह सीधे अपने घर नहीं गया; बल्कि, वह पहले उस कालकोठरी में दौड़ा जहाँ जॉन को रखा गया था और, उसके पैरों पर गिरकर, उसे अशुद्ध आत्मा से मुक्त करने के लिए धन्यवाद दिया। अपोलोनडिस की वापसी की खबर मिलते ही, उसके माता-पिता, भाई और बहनें सभी इकट्ठा हो गए और खुशी मनाई, जबकि जॉन को उसके बंधनों से मुक्त कर दिया गया। अप्पोल्लोनडिस ने अपने बारे में यह बताया: 'मुझे गहरी नींद में बिस्तर पर लेटे हुए कई साल हो गए हैं। एक आदमी, बिस्तर के बाईं ओर खड़ा था, उसने मुझे हिलाया और जगाया – और मैंने देखा कि वह जले और सड़े हुए ठूंठ से भी ज़्यादा काला था; उसकी आँखें मोमबत्तियों की तरह जल रही थीं, और मैं डर से काँप गया। उसने मुझसे कहा, 'अपना मुँह खोलो'; मैंने मुँह खोला, और वह मेरे मुँह में प्रवेश कर गया और मेरे पेट को भर दिया; उसी क्षण से, मुझे अच्छा और बुरा, और साथ ही घर में जो कुछ भी होता था, उसकी भी समझ आ गई। लेकिन जब मसीह के प्रेरित ने हमारे घर में प्रवेश किया, तो मुझमें निवास करने वाले ने मुझसे कहा: 'यहाँ से भाग जा, अपोलोनडिस, कहीं ऐसा न हो कि तू यातना में मर जा, क्योंकि यह आदमी एक जादूगर है और तुझे मारना चाहता है।' और मैं तुरंत दूसरे नगर में भाग गया। लेकिन जब मैं वापस आना चाहता था, तो उसने मुझे नहीं आने दिया, यह कहते हुए, 'जब तक यूहन्ना नहीं मर जाता, तुम अपने घर में नहीं रह सकते।' और जब प्रोकोरस उस नगर में आया जहाँ मैं था, और मैंने उसे देखा, तो अशुद्ध आत्मा उसी प्रकार मुझसे निकल गई जैसे वह पहले मेरे शरीर में प्रवेश की थी, और मुझे एक बड़े बोझ से राहत मिली; मेरा मन स्वस्थ हो गया, और मैं ठीक हो गया।"

यह सुनकर, सभी लोग जॉन के पैरों पर गिर पड़े। उन्होंने अपना मुँह खोलकर उन्हें हमारे प्रभु यीशु मसीह के धर्म की शिक्षा दी। मरिॉन, अपनी पत्नी और बच्चों सहित, विश्वास कर लिया; वे सभी बपतिस्मा ले गए, और मरिॉन के घर में बहुत आनंद हुआ। बाद में, राज्यपाल की पत्नी, माइरोन की बेटी क्रिसिप्पिडा, ने अपने बेटे और सभी नौकरों के साथ पवित्र बपतिस्मा ग्रहण किया; उनके पति, लॉरेंस, जो उस द्वीप के राज्यपाल थे, ने भी अपने अधिकारों को त्यागकर, ताकि वह स्वतंत्र रूप से ईश्वर की सेवा कर सकें, उनके बाद बपतिस्मा लिया। और यूहन्ना, परमेश्वर का वचन प्रचार करते हुए, प्रोकोरोस के साथ मरिीन के घर में तीन साल तक रहा। वहाँ, यीशु मसीह की शक्ति से, उन्होंने कई चिह्न और अद्भुत काम किए: उन्होंने बीमारों को चंगा किया और दुष्टात्माओं को भगाया; उन्होंने एक ही वचन से अपोलो के मंदिर को उसकी सभी मूर्तियों सहित नष्ट कर दिया; और उन्होंने कई लोगों का बपतिस्मा दिया जिन्हें उन्होंने मसीह में विश्वास में परिवर्तित किया था।

उस देश में कनिोप्स नाम का एक जादूगर था, जो रेगिस्तान में रहता था और कई वर्षों से अशुद्ध आत्माओं से परिचित था। उसके द्वारा उत्पन्न की गई प्रेतमूर्तियों के कारण, द्वीप के सभी निवासी उसे एक देवता मानते थे। हालाँकि अपोलो के पुरोहित, जोहान द्वारा अपोलो के मंदिर को नष्ट करने और सभी लोगों को यीशु मसीह का अनुयायी बनाने से क्रोधित होकर, कनिॉप्स के पास गए और मसीह के प्रेरित के बारे में उससे शिकायत की, और उससे अपने देवताओं पर हुए अपमान का बदला लेने की विनती की। हालाँकि, कनिोप्स खुद शहर जाना नहीं चाहता था, क्योंकि वह उस जगह में कई सालों से बिना किसी रास्ते के फँसा हुआ था। लेकिन नागरिक उसी अनुरोध के साथ उससे मिलने और भी अधिक आने लगे। तब उसने मरिीन के घर एक दुष्ट आत्मा भेजने का वादा किया, जो जॉन की आत्मा को ले जाकर उसे शाश्वत न्याय के हवाले कर देगी। सुबह, उसने दुष्ट आत्माओं के एक राजकुमार को जॉन के पास भेजा, और उसे आदेश दिया कि वह उसकी आत्मा उसके पास ले आए। मरिीनोव के घर पहुँचने पर, राक्षस ठीक उसी जगह पर खड़ा हो गया जहाँ जॉन रहा था। हालाँकि, जॉन ने राक्षस को देखकर उससे कहा:

'मसीह के नाम पर, मैं तुम्हें आज्ञा देता हूँ कि जब तक तुम मुझे यह न बता दो कि तुम यहाँ मेरे पास क्यों आए हो, तब तक तुम इस जगह से न हलिना।'

जॉन के शब्दों से बँधा हुआ, राक्षस अचल खड़ा रहा और जॉन से बोला:

'अपोलो के पुरोहति कनिोप्स के पास आए और उन्होंने उससे वनिती की कि वह शहर में जाकर तुम्हारे ऊपर मृत्यु लाए, लेकनि उसने इनकार कर दयिा, यह कहते हुए: "मैं इस जगह पर कई वर्षों से बनिा छोड़े रहा हूँ; क्या मैं अब खुद को एक दीन और तुच्छ आदमी के लिए परेशान करूँ?" जाओ अपने रास्ते; सुबह मैं अपनी आत्मा भेजूँगा, और वह उसकी आत्मा को उठाकर मेरे पास लाएगी, और मैं उसे अनंत न्याय के हवाले कर दूँगा।'

और योहन ने दानव से कहा:

'क्या उसने कभी तुम्हें कसिी मानव की आत्मा लेने और उसे उसके पास लाने के लिए भेजा है?'

दानव ने उत्तर दयिा:

'शैतान की सारी शक्ति उसी में है, और उसका हमारे राजकुमारों के साथ समझौता है; हम उसके साथ हैं – और काइनोप्स हमारी सुनता है, और हम उसकी सुनते हैं।'

तब जॉन ने कहा:

'मैं, यीशु मसीह का प्रेरति, तुम्हें आज्ञा देता हूँ, हे दुष्ट आत्मा, कि तुम मनुष्यों के घरों में प्रवेश न करो और न ही कनिोप्स के पास लौटो, बल्कि इस द्वीप को छोड़ दो और यातना भोगो।'

और तुरंत ही राक्षस द्वीप से चला गया। कनिोप्स ने, यह देखकर कि आत्मा वापस नहीं आई, एक और भेजा; लेकनि उसका भी वही हश्र हुआ। और उसने अंधकार के दो और राजकुमार भेजे: उसने एक को यूहन्ना के पास जाने और दूसरे को बाहर खड़े होकर उसे उत्तर लाने का आदेश दयिा। जो दानव योहन से मलिने अंदर गया, उसका भी वही हश्र हुआ जो पहले वाले का हुआ था; जबकि दूसरा दानव, बाहर खड़ा, अपने साथी की दुर्दशा देखकर, कनिॉप्स के पास भाग गया और जो कुछ हुआ था, उसे बता दयिा। और कनिॉप्स क्रोध से भर गया और, अपने सभी दानवों के दल को इकट्ठा करके, शहर में आ गया। पूरा नगर कनिोप्स को देखकर आनंदति हुआ, और जो भी उसके पास आया, सबने उसके सामने झुककर प्रणाम कयिा। जॉन को लोगों को उपदेश देते हुए देखकर, कनिोप्स क्रोध से भर गया और लोगों से कहा:

'हे अंधे लोगों, जो सच्चे मार्ग से भटक गए हो, मेरी सुनो! यदि जॉन धर्मी है, और जो कुछ भी उसने कहा है वह सच है, तो उसे मेरे साथ बातचीत करने दो और वही चमत्कार करने दो जो मैं करता हूँ, और तुम देखोगे कि हिम में से कौन बड़ा है, जॉन या मैं। यदि वह मुझसे अधकि शक्तशिाली साबति होता है, तो मैं भी उसके शब्दों और कर्मों पर वशि्वास करूँगा।

और कनिोप्स ने एक जवान से कहा:

'युवा! क्या तुम्हारा पति अभी भी जीवति है?'

उसने उत्तर दयिा:

'वह मर चुका है।'

और कनिोप्स ने कहा:

'वह कैसे मरा?'

लड़के ने उत्तर दयिा:

'वह तैराक था और जब जहाज टूट गया, तो वह समुद्र में डूब गया।'

और कनिोप्स ने जॉन से कहा:

'अब, जॉन, हमें अपनी शक्ति दखिाओ ताकि हम तुम्हारे शब्दों पर वशि्वास कर सकें: पहले उसके बेटे के सामने उसके पति को जीवति कर दो।'

जॉन ने उत्तर दयिा:

'मसीह ने मुझे मृतकों को समुद्र से बाहर नकिालने के लिए नहीं भेजा, बल्कि भटक गए लोगों को सखिाने के लिए भेजा।'

और कनिोप्स ने सभी लोगों से कहा:

'अब मेरी बात मानो, जॉन एक चापलूस है और वह तुम्हें धोखा दे रहा है; उसे पकड़ लो और तब तक कसकर थामे रहो जब तक मैं लड़के के पति को जीवति नहीं कर देता।'

उन्होंने यूहन्ना को पकड़ लिया, और कनिोप्स ने अपनी बाहें फैलाईं और उनसे पानी में प्रहार किया। जब समुद्र में पानी छलकने की आवाज़ सुनाई दी, तो सभी भयभीत हो गए, और कनिोप्स नज़रों से ओझल हो गया। और वे सभी चिल्ला उठे:

'महान है तू, कनिोप्स!'

और अचानक कनिोप्स समुद्र से निकिला, और जैसा उसने कहा था, वह लड़के के पिता को पकड़े हुए था। सभी हैरान रह गए। और कनिोप्स ने कहा:

'क्या यह तुम्हारे पिता हैं?'

लड़के ने जवाब दिया, 'हाँ, सर।'

तब लोग कनिोप्स के पैरों पर गिर पड़े और जॉन को मारना चाहा। लेकिन कनिोप्स ने उन्हें रोकते हुए कहा:

'जब तुम इससे और अधिक देखोगे, तब उसे यातनाएँ दो।'

फिर, एक और आदमी को बुलाकर, उसने कहा:

'क्या तुम्हारा कोई बेटा था?'

और उस आदमी ने उत्तर दिया:

'हाँ, सर, था, लेकिन किसी ने उसे ईर्ष्या के कारण मार डाला।'

और तुरंत ही कनिोप्स ने हत्यारे और मारे गए आदमी को नाम से पुकारा – और दोनों प्रकट हो गए। और कनिोप्स ने जॉन से कहा:

'क्या तुम हैरान हो, जॉन?'

संत जॉन ने उत्तर दिया:

'नहीं, मैं इससे आश्चर्यचकित नहीं हूँ।'

कनिोप्स ने कहा:

'तुम और भी देखोगे, और तब तुम चकित रह जाओगे, और जब तक मैं अपने चिह्नों से तुम्हारे मन में भय नहीं भर देता, तब तक तुम मरेगा नहीं।'

और जॉन ने कनिोप्स से उत्तर दिया:

'तेरे चिन्ह शीघ्र ही नष्ट हो जाएँगे।'

ये शब्द सुनकर भीड़ जॉन पर टूट पड़ी और उसे तब तक पीटा जब तक वे यह न सोचने लगे कि वह मर चुका है। और कनिोप्स ने भीड़ से कहा:

'इसे बिना दफ़नाए छोड़ दो; पक्षियों को इसे नोच-नोच कर खाने दो।'

और वे कनिोप्स के साथ आनंद मनाते हुए उस स्थान से चले गए। हालाँकि, जल्द ही उन्होंने सुना कि यूहन्ना ठीक उसी जगह पर उपदेश दे रहा था जहाँ अपराधियों पर पत्थर फेंके गए थे। कनिोप्स ने उस दानव को बुलाया जिसके सामर्थ्य से वह जादू-टोना करता था, और उस स्थान पर आकर यूहन्ना से कहा:

– मैं तुम्हें इससे भी अधिक अपमान और लज्जा पहुँचाने का इरादा रखता हूँ; इसीलिए मैंने तुम्हें जिंदा छोड़ा है। रेत वाले समुद्र तट पर आओ – वहाँ तुम मेरी महिमा देखोगे और लज्जित हो जाओगे।

उसके साथ तीन राक्षस थे, जिन्हें लोग वे मनुष्य समझ रहे थे जिन्हें कनिोप्स ने मृतकों में से जीवित कर दिया था। जोर से तालियाँ बजाते हुए, कनिोप्स समुद्र में कूद गया और सभी के लिए अदृश्य हो गया।

लोगों ने पुकारा, 'महान है कनिोप्स, और तुझसे बड़ा कोई नहीं है!'

हालाँकि, यूहन्ना ने उन राक्षसों को, जो मानवीय रूप में खड़े थे, आज्ञा दी कि वे उसके पास से न जाएँ। और उसने प्रभु से प्रार्थना की कि कनिोप्स जीवित न रहे, और ऐसा ही हुआ; क्योंकि समुद्र अचानक लहरों से उफन उठा, और कनिोप्स फिर कभी समुद्र से बाहर नहीं आया, बल्कि प्राचीन शापित फिरौन की तरह समुद्र की गहराइयों में ही रह गया। और उन राक्षसों से, जिन्हें लोग मृतकों में से जी उठाए गए मनुष्य समझ रहे थे, यूहन्ना ने कहा:

'यीशु मसीह के नाम पर, जिन्हें सलीब पर चढ़ाया गया और जो तीसरे दिन पुनर्जीवित हुए, इस द्वीप से चले जाओ।' और वे तुरंत ही गायब हो गए।

इस बीच, लोग तीन दिन और तीन रात तक रेत पर बैठकर कनिोप्स का इंतजार करते रहे; उनमें से कई भूख, प्यास और धूप की तपिश से बेहाल हो गए और वहाँ बेसुध पड़े रहे, जबकि उनके तीन बच्चे मर गए। लोगों पर दया करके, यूहन्ना

ने उनके उद्धार के लिए प्रार्थना की, और उनके साथ विश्वास के बारे में लंबी बात करने के बाद, उन्होंने उनके बच्चों को मृतकों में से जलाया और बीमारों को चंगा किया – और वे सभी एक ही हृदय से प्रभु की ओर मुड़ गए, बपतिस्मा लिया, और मसीह की महिमा करते हुए अपने घर लौट गए। यूहन्ना मार्कस के घर लौट आए और लोगों से बार-बार मिलकर उन्हें यीशु मसीह में विश्वास के बारे में सिखाया। एक अवसर पर, उन्हें सड़क के किनारे एक बीमार आदमी पड़ा हुआ मिला, जो बुखार से बहुत पीड़ित था, और उन्होंने उसे क्रूस के चिन्ह से चंगा किया। फिलो नामक एक यहूदी, जो धर्मग्रंथों पर प्रेरित से बहस कर रहा था, ने यह देखकर यूहन्ना को अपने घर आमंत्रित किया। उसकी एक पत्नी थी जो कोढ़ से पीड़ित थी; वह प्रेरित के पैरों पर गिर पड़ी और तुरंत अपने कोढ़ से चंगी हो गई और मसीह पर विश्वास करने लगी। तब फिलो ने स्वयं भी विश्वास किया, और उसने तथा उसके पूरे घर ने पवित्र बपतिस्मा ग्रहण किया। इसके बाद संत योहन बाजार में गए, और लोग उनके अपने मुख से उनकी उद्धारकारी शिक्षा सुनने के लिए उनके चारों ओर इकट्ठा हो गए। मूर्तिपूजक पुरोहित भी आए, और उनमें से एक ने संत को परीक्षा में डालने के लिए कहा:

'हे गुरु! मेरा एक बेटा है जो दोनों पैरों से लंगड़ा है; मैं आपसे विनती करता हूँ कि आप उसे चंगा कर दें; यदि आप उसे चंगा कर देंगे, तो मैं भी उस ईश्वर पर विश्वास कर लूँगा, जिसकी आप शिक्षा देते हैं।'

परन्तु संत ने उससे कहा:

'तुम इस तरह ईश्वर को क्यों आजमाते हो, जबकि वह स्पष्ट रूप से तुम्हारे हृदय की कपटपूर्णता को प्रकट कर देगा?'

यह कहकर, जॉन ने लड़के को संदेश भेजा, यह कहते हुए:

'मेरे ईश्वर मसीह के नाम पर, उठो और मेरे पास आओ।'

और पुत्र, तुरंत उठकर, अच्छे स्वास्थ्य के साथ संत के पास आया; लेकिन उसी क्षण, इस प्रलोभन के कारण, उसके पिता दोनों पैरों में लकवाग्रस्त हो गए, और, बड़े दर्द से कराहते हुए, संत से विनती करते हुए जमीन पर गिर पड़े:

'हे परमेश्वर के पवित्र संत, मुझ पर दया करें और मुझे आपके ईश्वर मसीह के नाम पर चंगा करें, क्योंकि मैं विश्वास करता हूँ कि उस के सिवाय कोई अन्य ईश्वर नहीं है।'

उसकी विनतियों से प्रभावित होकर, संत ने पुरोहित को चंगा कर दिया और उसे आस्था में उपदेश देकर, यीशु मसीह के नाम का बपतिस्मा दिया।

सुबह, जॉन उस स्थान पर आए जहाँ एक व्यक्ति पिड़ा था जो व्रणरोग से पीड़ित था और 17 वर्षों से अपने बिस्तर से नहीं उठा था। प्रेरित ने एक शब्द से उसका उपचार किया और पवित्र बपतिस्मा के माध्यम से उसे ज्ञान का प्रकाश दिया। उसी दिन, एक आदमी—जो मरिॉन के दामाद, लॉरेंस, के बाद हाइगेमोन बना था—ने जॉन को बुलाया और संत से विनम्रतापूर्वक अपने घर आने का आग्रह किया; क्योंकि हाइगेमोन की पत्नी, जो गर्भवती थी, प्रसव का समय आ गया था और वह अपने बच्चे को जन्म नहीं दे पा रही थी, इसलिए वह बहुत कष्ट में थी। अपोस्तल थोड़ी ही देर बाद पहुँचे, और जैसे ही उन्होंने घर की दहलीज़ पर पैर रखा, महिला ने तुरंत ही बच्चे को जन्म दिया और उसका दर्द दूर हो गया। यह देखकर, राज्यपाल और उसका सारा घर मसीह में विश्वास करने लगे।

वहाँ तीन वर्ष तक रहने के बाद, जॉन एक दूसरे नगर में गए, जिसके निवासी मूर्तिपूजा के अंधकार में फँसे हुए थे। जब वे नगर में प्रवेश किए, तो उन्होंने लोगों को राक्षसों की पूजा करते और कई युवकों को बँधा हुआ देखा। जॉन ने वहाँ खड़े एक व्यक्ति से पूछा:

'ये जवान क्यों बँधे हुए हैं?'

उस आदमी ने उत्तर दिया:

'हम महान देवता—भेड़िये—की पूजा करते हैं, जिसके लिए हम अभी एक उत्सव मना रहे हैं; इन्हीं युवकों की बलि चढ़ाई जाएगी।'

जॉन ने उनका देवता दिखाने के लिए कहा, जिस पर उस आदमी ने जवाब दिया:

'यदि तुम उसे देखना चाहते हो, तो दिन के चौथे घंटे तक प्रतीक्षा करो; तब तुम पुरोहितों को लोगों के साथ उस स्थान पर जाते हुए देखोगे जहाँ देवता प्रकट होते हैं; उनके साथ चलो, और तुम हमारे देवता को देखोगे।'

जॉन ने उत्तर दिया:

'मैं देख सकता हूँ कि तुम एक अच्छे आदमी हो, और मैं आ गया हूँ; मैं तुमसे विनती करता हूँ, मुझे तुरंत स्वयं उस स्थान पर ले चलो: क्योंकि मैं तुम्हारे देवता को देखने की बहुत इच्छा रखता हूँ; और यदि तुम मुझे उन्हें दिखाओगे, तो मैं तुम्हें एक कीमती मोती दूँगा।'

उस आदमी ने जॉन को ले जाकर, पानी से भरा एक दलदल दिखाते हुए कहा:

'यहीं से हमारा ईश्वर प्रकट होता है और लोगों के सामने आता है।'

और यूहन्ना उस देवता के प्रकट होने का इंतजार करने लगा; और देखो, दिन के लगभग चौथे घंटे में, एक राक्षस प्रकट हुआ, जो पानी से एक विशाल भेड़िये के रूप में निकला। मसीह के नाम पर उसे रोकते हुए, संत यूहन्ना ने पूछा:

'तुम यहाँ कितने समय से रह रहे हो?'

'सत्तर साल,' शैतान ने उत्तर दिया।

लेकिन मसीह के प्रेरित ने कहा:

– पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम पर, मैं तुम्हें आज्ञा देता हूँ: इस द्वीप को छोड़ दो और यहाँ कभी वापस मत आना।

और शैतान तुरंत ही गायब हो गया। वह आदमी, यह देखकर कि क्या हुआ था, भयभीत हो गया और प्रेरित के पैरों पर गिर पड़ा। जॉन ने उसे पवित्र विश्वास में शिक्षित किया और उससे कहा:

'देखो, यह वह मोती है जो मैं तुम्हें देने का वादा किया था।'

इसी बीच, पुजारी बँधे हुए युवकों के साथ, हाथों में छुरी लिए हुए, और उनके साथ एक बड़ी भीड़ उस जगह पहुँची। वे भेड़िये के बाहर निकलने का बहुत देर तक इंतजार करते रहे, ताकि वे युवकों को उसके खाने के लिए काट डाल सकें।

अंत में, यूहन्ना उनके पास पहुँचे और उन्होंने उन निर्दोष युवकों को रिहा करने के लिए उनसे विनती करना शुरू कर दिया:

उसने कहा, 'नहीं, तुम्हारा ईश्वर भेड़िया है; वह एक राक्षस था, और मसीह की शक्ति ने उसे परास्त कर भगा दिया है।'

यह सुनकर कि भेड़िया मर गया है, वे भयभीत हो गए, और लंबी खोज के बावजूद उसका कोई निशान न पाकर, उन्होंने युवकों को आज़ाद कर दिया और उन्हें बिना चोट के जाने दिया। संत जॉन ने उन पर मसीह के बारे में उपदेश देना और उनके भ्रम की निंदा करना शुरू कर दिया, और उनमें से कई, आस्था में आकर, बपतिस्मा ग्रहण कर लिया।

उस नगर में एक स्नानागार था। एक दिन, ज्यूस के पुरोहित का पुत्र वहाँ स्नान कर रहा था जब स्नानागार में रहने वाले एक दानव ने उसे मार डाला। यह सुनकर, उसका पिता ज़ोर-ज़ोर से रोते हुए जॉन के पास आया, और उससे अपने पुत्र को मृतकों में से जीवित करने की विनती करने लगा तथा मसीह में विश्वास करने का वादा किया। संत उसके साथ गए और मसीह के नाम पर मृतक लड़के को जीवित कर दिया। फिर उन्होंने युवक से पूछा कि उसकी मृत्यु का कारण क्या था:

लड़के ने उत्तर दिया:

'जब मैं स्नानघर में स्नान कर रहा था, तो पानी से एक काला साया निकला, उसने मुझे पकड़ लिया और मेरा गला घोंट दिया।'

यह महसूस करते हुए कि उस स्नानागार में एक राक्षस रहता था, संत ने राक्षस को भगा दिया और पूछा:

'तुम कौन हो, और तुम यहाँ क्यों रहते हो?'

दानव ने उत्तर दिया:

'मैं वही हूँ जिसे तुमने एफ़िसुस के स्नानागार से निकाला था, और मैं अब छह साल से यहाँ रह रहा हूँ, लोगों को नुकसान पहुँचा रहा हूँ।'

संत जॉन ने उसे उस स्थान से भी भगा दिया। यह देखकर, पुरोहित मसीह में विश्वास करने लगा और अपने पुत्र तथा अपने पूरे परिवार के साथ बपतिस्मा ग्रहण किया।

इसके बाद, यूहन्ना बाजार के चौक पर गए, जहाँ लगभग पूरा शहर परमेश्वर का वचन सुनने के लिए इकट्ठा हुआ था। और वहाँ एक महिला उनके पैरों पर गिर पड़ी, और रोते हुए उनसे अपने दानव-ग्रस्त बेटे को चंगा करने की विनती करने लगी, जिसके इलाज पर उसने अपनी लगभग सारी संपत्ति डॉक्टरों पर खर्च कर दी थी। प्रेरित ने आज्ञा दी कि लड़के को उसके पास लाया जाए, और जैसे ही दूतों ने भूतग्रस्त लड़के से कहा, 'यूहन्ना तुम्हें बुला रहे हैं', तो भूत तुरंत

उससे निकल गया। प्रेरित के पास आकर, चंगा हुआ लड़का मसीह में अपने विश्वास का इकरार करने लगा और अपनी माँ के साथ बपतिस्मा लिया।

उसी नगर में मूर्तिपूजकों द्वारा विशेष रूप से पूजे जाने वाले बकस नामक मूर्ति का एक मंदिर था, जिसे वे 'स्वतंत्रता के पिता' कहते थे। उसके पर्व के दिन वहाँ भोजन और मदिरा के साथ इकट्ठा होकर पुरुष और महिलाएँ मस्ती करते और नशे में धुत होकर अपने घृणित देवता के सम्मान में बड़े-बड़े अन्यायपूर्ण कृत्य करते। उत्सव के दौरान वहाँ पहुँचने पर, जॉन ने उनके भ्रष्ट उत्सवों के लिए उन्हें फटकारा; लेकिन पुजारियों ने, जिनकी संख्या बहुत थी, उसे पकड़ लिया, पीटा और बाँधकर फेंक दिया, जबकि वे स्वयं अपनी घृणित कृत्यों पर लौट गए। संत जॉन ने ईश्वर से प्रार्थना की कि वह ऐसी अराजकता को सहन न करें; और तुरंत ही मूर्तिपूजक मंदिर धूल-चटा हो गया, जिसमें सभी पुरोहित मारे गए; अन्य लोग, भयभीत होकर, प्रेरित को उसके बंधनों से मुक्त कर दिया और उससे विनती की कि वह उन्हें भी नष्ट न करें।

उसी नगर में नुकीय नाम का एक प्रसिद्ध जादूगर था; मंदिर के विनाश और पुरोहितों की मृत्यु के बारे में जानकर, वह बहुत क्रोधित हो गया और संत जॉन के पास आकर बोला:

'तुमने बकस के मंदिर को नष्ट करके और उसके पुरोहितों को मारकर गलत किया है; मैं तुझसे विनती करता हूँ कि उन्हें फिर से मृतकों में से जीवित कर दे, जैसे तूने स्नानागार में पुरोहित के बेटे को जीवित किया था, और तब मैं तेरे ईश्वर पर विश्वास करूँगा।'

संत जॉन ने उत्तर दिया:

'उनके विनाश का कारण उनकी दुष्टता थी; इसलिए, वे यहाँ रहने के योग्य नहीं हैं, बल्कि उन्हें गेहेना में पीड़ा भोगने दो।'

नुकियन ने कहा, 'यदि तुम उन्हें मृतकों में से जीवित नहीं कर सकते, तो मैं अपने देवताओं के नाम पर पुरोहितों को जीवित कर दूँगा और मंदिर को पुनर्स्थापित कर दूँगा; जहाँ तक तुम्हारा सवाल है, तुम मौत से नहीं बच पाओगे।'

यह कहकर वे अलग हो गए। जॉन लोगों को सिखाने चले गए, जबकि नुकीय ढहे हुए मंदिर के स्थल पर चले गए और वहाँ जादू-टोना करते हुए चक्कर लगाकर, बारह राक्षसों को मारे गए पुरोहितों के रूप में प्रकट कर दिया, जिन्हें उन्होंने अपने पीछे आने और जॉन को मार डालने का आदेश दिया।

दानवों ने उत्तर दिया:

'हमारे लिए न केवल उसे मारना असंभव है, बल्कि उस जगह पर प्रकट होना भी असंभव है जहाँ वह है; अगर तुम चाहते हो कि जॉन मरे, तो जाओ और लोगों को यहाँ लाओ, ताकि हमें देखकर वे गुस्से में जॉन के खिलाफ हो जाएँ और उसे नष्ट कर दें।'

नुकियन, अपने रास्ते पर चलकर, संत जॉन की शिक्षा सुनने वाली एक बड़ी भीड़ के पास पहुँचा, और नुकियन ने उनसे ऊँचे स्वर में पुकारा:

'हे मूर्खों! तुम इस अजनबी से धोखा क्यों खाते हो, जिसने तुम्हारे मंदिर और उसके पुरोहितों को नष्ट किया है, और अगर तुम उसकी बात मानोगे तो वह तुम्हें भी नष्ट कर देगा? मेरे पीछे चलो और तुम अपने उन पुरोहितों को देखोगे, जिन्हें मैंने मृतकों में से जिलाया है; इसके अलावा, मैं तुम्हारे सामने ही इस खंडहर मंदिर का पुनर्निर्माण करूँगा, जो काम जॉन नहीं कर सकता।'

और वे सब पागलों की तरह उनका अनुसरण करने लगे, और यूहन्ना को पीछे छोड़ दिया। परन्तु प्रेरित, प्रोखोरस के साथ एक दूसरे रास्ते से चलकर, उनसे पहले ही उस स्थान पर पहुँच गए जहाँ दुष्टात्माएँ मृतकों में से जी उठे पुरोहितों के वेश में थीं। यूहन्ना को देखकर, दुष्टात्माएँ तुरंत ही गायब हो गईं। और इस प्रकार नुकीय भीड़ के साथ वहाँ पहुँचा; जब उसे कोई दानव नहीं मिला, तो वह बहुत दुखी हो गया और एक बार फिर वह उजड़े मंदिर के चारों ओर घूमने लगा, जादू-टोना करने लगा और उन्हें बुलाने लगा, परन्तु कोई फायदा नहीं हुआ। जब शाम हुई, तो भीड़, अपने गुस्से में, उसे धोखा देने के लिए नुकीय को मारना चाहती थी। कुछ ने कहा:

'आओ हम उसे पकड़कर जॉन के पास ले चलें, और जो कुछ भी वह हमें आज्ञा देगा, हम करेंगे।'

यह सुनकर, संत जॉन ने उन्हें उसी तरह चेतावनी दी और अपनी पूर्व स्थान पर खड़े हो गए। लोगों ने नूकियन को संत के पास लाकर कहा:

'इस धोखेबाज़ और आपके दुश्मन ने आपको नष्ट करने की साज़िश रची है; लेकिन हम उसके साथ वैसा ही करेंगे जैसा आप हमें निर्देश देंगे।'

लेकिन संत ने कहा:

'उसे जाने दो! उसे पश्चाताप करने दो।'

अगली सुबह, जॉन ने फिर से लोगों को मसीह में विश्वास का उपदेश दिया, और उनमें से कई, विश्वास कर लेने के बाद, जॉन से बपतिस्मा देने के लिए कहा। लेकिन जब जॉन उन्हें नदी तक ले गए, तो नुकीय ने अपनी जादू-टोने से पानी को खून में बदल दिया। प्रेरित ने प्रार्थना के द्वारा नुकीय को अंधा कर दिया और, पानी को फिर से साफ कर, उन सभी को बपतिस्मा दिया जो उसमें विश्वास करने आए थे। इससे पराजित होकर, नुकीय होश में आया और, सच्चे मन से पश्चाताप करते हुए, प्रेरित से दया करने के लिए कहा। संत ने, उसका पश्चाताप देखकर और उसे पर्याप्त रूप से उपदेश देकर, उसका बपतिस्मा दिया – जिसके बाद उसने तुरंत अपनी दृष्टि वापस पा ली और जॉन को अपने घर में ले गया। जब यूहन्ना अंदर आए, तो नुकीय के घर की सभी मूर्तियाँ अचानक गिर पड़ीं और चूर-चूर होकर धूल में मिल गईं। यह चमत्कार देखकर, उसके घर वाले विस्मित हो गए, और, विश्वास में आने के बाद, उन्होंने बपतिस्मा ग्रहण किया।

उस नगर में प्रोक्लानिया नाम की एक धनी और सुंदर विधवा थी। सोसपिटर नामक एक सुंदर चेहरे वाला बेटा होने के कारण, वह एक राक्षस के प्रभाव में आकर, उसके लिए प्रेम की आग में जलने लगी और हर तरह से उसे अपनी दुष्टता में खींचने की कोशिश करती थी। लेकिन उसका बेटा इस पागलपन भरे जुनून के कारण अपनी माँ से नफरत करने लगा। उससे भागकर, , वह उस स्थान पर आया जहाँ उस समय संत जॉन उपदेश दे रहे थे, और उसने प्रेरितों की शिक्षाओं को आनंदपूर्वक सुना। पवित्र आत्मा ने जॉन को सोसपिटर के साथ जो कुछ भी हुआ था, वह सब कुछ प्रकट कर दिया था, उन्होंने सोसपिटर से अकेले में मुलाकात की और उसे अपनी माँ का सम्मान करने, लेकिन उनके दुष्टता में उनकी आज्ञा न मानने, और किसी से भी इसके बारे में न बोलने, इस प्रकार अपनी माँ के पाप को छिपाने का निर्देश दिया। सोसपिटर अपनी माँ के घर वापस नहीं जाना चाहता था; लेकिन प्रोक्लानिया, उससे मिलने पर, उसके कपड़ों को पकड़कर, चिल्लाते हुए, उसे घर में खींच ले गई। इस चीख पर, हेगेमोन, जो हाल ही में उस शहर में आया था, प्रकट हुआ और उसने पूछा कि वह महिला उस युवक को इस तरह से क्यों खींच रही है। हालाँकि, माँ ने अपने दुष्ट इरादे को छिपाते हुए, झूठी तरह से अपने बेटे पर उस पर हमला करने का आरोप लगाया, और रोते-चीखते हुए अपने बाल नोचने लगी। यह सुनकर, हेगेमोन ने झूठ पर विश्वास कर लिया और निर्दोष सोसपिटर को घातक साँपों के साथ एक चमड़े के बोरे में सिलवाकर समुद्र में फेंकने की सज़ा सुना दी। यह जानकर, यूहन्ना राज्यपाल के सामने उपस्थित हुए और उन्होंने उस पर अपने अन्यायपूर्ण निर्णय के लिए फटकार लगाई, क्योंकि उसने बिना आरोप की ठीक से जांच किए एक निर्दोष युवक को मृत्युदंड दे दिया था। हालाँकि, प्रोक्लियाना ने यूहन्ना पर भी बदनामी की, यह दावा करते हुए कि इस धोखेबाज़ ने उसके बेटे को ऐसा बुरा काम करना सिखाया था। यह सुनकर, राज्यपाल ने आदेश दिया कि पवित्र प्रेरित को भी सोसपिटर और विभिन्न सरीसृपों के साथ एक ही बोरी में सिलकर डुबो दिया जाए। और संत ने प्रार्थना की – और अचानक पृथ्वी हिल गई, और राज्यपाल का वह हाथ, जिससे उसने संत के खिलाफ मौत की सज़ा पर हस्ताक्षर किया था, सूख गया; जबकि प्रोक्लियन के दोनों हाथ सूख गए और उसकी आँखें विकृत हो गईं। यह देखकर, न्यायाधीश भयभीत हो गया, और वहाँ मौजूद सभी लोग डर के मारे जमीन पर लोट गए। न्यायाधीश ने जॉन से दया करने और उसके सूखे हाथ को चंगा करने की विनती की; लेकिन संत ने, उसे न्यायपूर्ण निर्णय और मसीह में विश्वास के बारे में पर्याप्त रूप से समझाने के बाद, उसे चंगा किया और उसे पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम पर बपतिस्मा दिया। इस प्रकार निर्दोष सोसपिटर विपत्ति और मृत्यु से बच गया, और न्यायाधीश सच्चे ईश्वर को जान गया। जहाँ तक प्रोक्लियाना की बात है, वह उस युवक से भागकर अपने घर चली गई, और अपने ऊपर ईश्वर का दंड लिए हुए थी। प्रेरित, सोसपितर को अपने साथ लेकर, उसके घर गए। सोसपितर अपनी माँ के पास नहीं जाना चाहता था, लेकिन यूहन्ना ने उसे क्षमाशील होने की शिक्षा दी, और उसे आश्वासन दिया कि वह अब अपनी माँ से कोई बुराई नहीं सुनेगा, क्योंकि वह पवित्र हो गई थी। और वास्तव में ऐसा ही हुआ। क्योंकि जब यूहन्ना और सोसपितर उसके घर में प्रवेश किए, प्रोक्लानिया तुरंत प्रेरित के पैरों पर गिर पड़ी, और रोते हुए अपने पापों का स्वीकार करते हुए पश्चाताप करने लगी। प्रेरित ने उसकी बीमारी से उसे ठीक किया और उसे विश्वास तथा पवित्रता में शिक्षा दी, और उसे तथा उसके पूरे घर को बपतिस्मा दिया। इस प्रकार, पवित्र हो जाने पर, प्रोक्लानिया ने अपना समय गहरे पश्चाताप में बिताया।

उस समय, सम्राट डोमिशियिन की हत्या कर दी गई। उनके बाद, नेर्वा, जो एक अत्यंत दयालु व्यक्ति थे, रोमन सिंहासन पर बैठे; उन्होंने सभी कैदियों को रिहा कर दिया। दूसरों के साथ कारावास से रिहा होने के बाद, यूहन्ना ने एफेसुस लौटने का निश्चय किया: क्योंकि उन्होंने पहले ही पतमोस पर रहने वाले लगभग सभी लोगों को मसीह के प्रति परिवर्तित

कर दिया था। हालाँकि, ईसाइयों को जब उनके इरादे का पता चला, तो उन्होंने उनसे अंत तक उन्हें छोड़कर न जाने की विनती की। लेकिन चूँकि प्रेरित उनके साथ रहना नहीं चाहते थे, बल्कि एफ़िसुस लौटना चाहते थे, इसलिए उन्होंने उनसे अपनी शिक्षा की यादगार के रूप में कम से कम वह सुसमाचार वहाँ छोड़ जाने के लिए कहा जो उन्होंने वहाँ लिखा था। क्योंकि, एक बार सभी को उपवास करने की आज्ञा देने के बाद, वह अपने शिष्य प्रोकोरस को अपने साथ ले गया; शहर से बहुत दूर जाकर, वह एक ऊँचे पहाड़ पर चढ़ा, जहाँ वह तीन दिनों तक प्रार्थना में रहा। तीसरे दिन के बाद, गरज के साथ एक ज़ोर की आवाज़ हुई, बिजली चमकी, और पहाड़ हिल गया; प्रोकोरस डर के मारे ज़मीन पर गिर पड़ा। उसकी ओर मुड़कर, यूहन्ना ने उसे उठाया, उसे अपने दाहिने हाथ बिठाया, और कहा:

'जो कुछ भी तुम मेरे होठों से सुन रहे हो, उसे लिख लो।'

और, स्वर्ग की ओर अपनी आँखें उठाकर, उन्होंने एक बार फिर प्रार्थना की; और अपनी प्रार्थना के बाद, वे बोलने लगे:

'"आरंभ में वचन था" और इसी तरह।'

शिष्य ने, अपनी ओर से, उनके मुख से जो कुछ भी सुना, उसे सावधानी से लिख लिया; इस प्रकार पवित्र सुसमाचार लिखा गया, जिसे प्रेरित ने पहाड़ से उतरकर, प्रोकोरस को फिर से लिखने का आदेश दिया। और उसने उनकी प्रार्थना के अनुसार, प्रतिलिपि को ईसाइयों के लिए पतमोस पर छोड़ देने और मूल पांडुलिपि अपने पास रखने के लिए सहमति दे दी। उसी द्वीप पर, संत जॉन ने प्रकाशितवाक्य[6526] भी लिखा।

हालाँकि, उस द्वीप से प्रस्थान करने से पहले, उन्होंने पड़ोसी कस्बों और गांवों का दौरा किया, और विश्वास की एकता को मजबूत किया; और ऐसा हुआ कि वह एक ऐसे गाँव में पहुँचे जहाँ यूकेरिस नाम का ज्यूस का एक पुजारी रहता था, जिसका एक अंधा बेटा था। उस पुजारी को लंबे समय से जॉन को देखने की इच्छा थी। जब उसे पता चला कि जॉन उनके गाँव में आ गए हैं, तो वह संत के पास आया और उनसे विनती करने लगा कि वे उसके घर आकर उसके पुत्र को चंगा करें। जॉन ने, यह देखकर कि वहाँ वह मसीह के लिए मानव आत्माओं को जीतेगा, पुजारी के घर गए और उसके अंधे पुत्र से कहा: 'मेरे प्रभु यीशु मसीह के नाम से, अपनी दृष्टि प्राप्त कर' – और अंधे आदमी ने तुरंत अपनी दृष्टि वापस पा ली।

यह देखकर यूकेरिस मसीह में विश्वास करने लगी और अपने पुत्र के साथ बपतिस्मा लिया। और उस द्वीप के सभी नगरों में, संत जॉन ने पवित्र चर्चों की स्थापना की और उनके लिए बिशप और पुरोहित नियुक्त किए; निवासियों को पर्याप्त रूप से शिक्षित करने के बाद, उन्होंने सभी को अलविदा कहा और एफ़ेसस लौटने के लिए निकल पड़े। विश्वासियों ने उसे रोते-धोते और बड़े विलाप के साथ विदा किया, क्योंकि वे ऐसे सूर्य से वंचित नहीं होना चाहते थे, जिसने अपनी शिक्षा से उनकी भूमि को प्रकाशित किया था; लेकिन संत, जहाज पर चढ़कर और सभी को विदा कहकर, अपनी यात्रा के लिए रवाना हो गए। जब वह एफ़िसुस पहुँचा, तो विश्वासियों ने उसे अनुपम आनंद के साथ स्वागत किया, और चिल्लाकर कहा: 'धन्य है वह जो प्रभु के नाम पर आता है!'

और उनका सम्मानपूर्वक स्वागत किया गया। जब तक वे वहाँ रहे, वे कभी भी परिश्रम करना बंद नहीं करते थे, हमेशा लोगों को सिखाते और उन्हें मोक्ष के मार्ग पर मार्गदर्शन करते रहे।

हमें अलेक्जेंड्रिया के क्लेमेंट द्वारा संत जॉन के बारे में बताई गई बात का उल्लेख करना नहीं भूलना चाहिए[6527]। जब प्रेरित एशिया के शहरों में यात्रा कर रहे थे, तो उनमें से एक में उन्होंने एक ऐसे युवक को देखा जिसका हृदय अच्छे कार्यों की ओर झुका हुआ था; पवित्र प्रेरित ने उसे उपदेश दिया और बपतिस्मा दिया। सुसमाचार का प्रचार करने के लिए उस स्थान को छोड़ने का इरादा रखते हुए, उन्होंने सभी की उपस्थिति में इस युवक को उस शहर के बिशप के हवाले कर दिया, ताकि चरवाहा उसे हर अच्छे काम में शिक्षित कर सके। हालाँकि, बिशप ने उस युवक को अपनी देखरेख में ले

[6526] परंपरा बताती है कि एक अवसर पर यूहन्ना, अपने शिष्य प्रोकोरस के साथ, शहर से एक सुनसान गुफा में चले गए, जहाँ उन्होंने प्रोकोरस के साथ दस दिन और अकेले दस दिन और बिताए। उन अंतिम दस दिनों के दौरान उन्होंने कुछ भी नहीं खाया, बल्कि केवल ईश्वर से प्रार्थना की, उनसे यह प्रकट करने का अनुरोध किया कि उन्हें क्या करना चाहिए। और स्वर्ग से योहन के पास एक आवाज़ आई: 'योहन, योहन!' योहन ने उत्तर दिया: 'प्रभु, आपकी आज्ञा क्या है?' और स्वर्ग की आवाज़ ने कहा: 'और दस दिन सहन करो, और तुम्हें बहुत सी महान बातों का प्रकाशन दिया जाएगा।' योहन ने वहाँ बिना भोजन के और दस दिन बिताए। और फिर एक अद्भुत बात घटी: परमेश्वर के स्वर्गदूत उसके पास उतरे और उन्होंने उसे कई अवर्णनीय बातें प्रकट कीं। और जब प्रोकोरस उसके पास लौटा, तो उसने उसे स्याही और कागज के लिए भेजा, और फिर दो दिनों तक उसने प्रोकोरस से उन प्रकाशनों के बारे में बात की जो उसे मिले थे, जबकि प्रोकोरस उन्हें लिखता रहा।

[6527] अलेक्ज़ेंड्रिया के क्लेमेंट – ईसाई धर्म की शुरुआती शताब्दियों के सबसे प्रसिद्ध ईसाई विद्वानों में से एक – की मृत्यु लगभग 217 ईस्वी में हुई।

लिया और उसे धर्मग्रंथों का ज्ञान दिया; फिर भी, उसने उसकी उतनी देखभाल नहीं की जितनी करनी चाहिए थी, और न ही उसे एक युवक के लिए उपयुक्त परवरिश प्रदान की; इसके विपरीत, उसने उसे अपनी मर्ज़ी से जीने के लिए छोड़ दिया। जल्द ही उस लड़के ने व्यभिचारी जीवन जीना शुरू कर दिया, शराब में डूब गया और चोरी करने लगा। आखिरकार, वह डाकुओं के एक गिरोह का दोस्त बन गया, जिन्होंने उसे बहकाकर रेगिस्तान और पहाड़ों में ले गए, उसे अपना सरदार बना लिया, और रास्तों पर डकैती करने लगे। कुछ समय बाद लौटकर, जॉन उस शहर में आया और उस लड़के के बारे में सुनकर—कि वह रास्ते से भटक गया था और एक डाकू बन गया था—उसने बिशप से कहा:

'मुझे वह खज़ाना लौटा दो जिसे मैंने तुम्हें संरक्षण के लिए सौंपा था, मानो वफादार हाथों में; मुझे वह युवक लौटा दो जिसे मैंने सभी के सामने तुम्हें सौंपा था, ताकि तुम उसे ईश्वर का भय सिखा सको।'

और बिशप ने रोते हुए उत्तर दिया:

'वह युवक खो गया है; उसकी आत्मा मर चुकी है, जबकि उसका शरीर एक डाकू की तरह सड़कों पर घूम रहा है।'

तब जॉन ने बिशप से कहा:

'क्या अपने भाई की आत्मा की रक्षा करने का यही तरीका था? मुझे एक घोड़ा और एक मार्गदर्शक दो, ताकि मैं जाकर उस व्यक्ति को ढूंढ सकूँ जिसे तुमने बर्बाद कर दिया है।'

जब जॉन डाकुओं के पास पहुँचे, तो उन्होंने उनसे अपने नेता के पास ले जाने का आग्रह किया, जो उन्होंने किया। हालाँकि, उस युवक ने संत जॉन को देखते ही शर्म से भरकर, उठकर रेगिस्तान में भाग गया। अपनी वृद्धावस्था को भूलकर, जॉन उसका पीछा करते हुए चिल्लाए:

'मेरे पुत्र! अपने पिता की ओर मुड़ आओ और अपनी गरिमा से निराश न हो; मैं तेरे पापों को स्वयं अपने ऊपर ले लूंगा; इसलिए रुक जा और मेरा इंतज़ार कर, क्योंकि प्रभु ने मुझे तेरे पास भेजा है।'

वह युवक रुक गया और बड़ी घबराहट और शर्म के साथ संत के पैरों पर गिर पड़ा, और उसकी ओर देखने की हिम्मत नहीं कर सका। लेकिन जॉन ने, एक पिता के स्नेह से उसे गले लगाते हुए, उसे चूमा और उसे वापस शहर ले गए, इस बात की खुशी मनाते हुए कि उसे अपनी खोई हुई भेड़ मिल गई थी। और उन्होंने उसे बहुत कुछ सिखाया, उसे पश्चाताप का उपदेश दिया; जिसके द्वारा, गंभीर प्रयास करके, उस युवक ने परमेश्वर को प्रसन्न किया, अपने पापों की क्षमा प्राप्त की, और शांति में परलोक सिधार गया।

उस समय एक ईसाई था जो इतनी गरीबी में पड़ गया था कि उसके पास अपने लेनदारों का कर्ज चुकाने के लिए कुछ भी नहीं था; तीव्र दुख से मारा-मारा, उसने अपनी जान लेने का निश्चय किया और एक जादूगर—जो एक यहूदी था—से उसे एक घातक जहर देने के लिए कहा। और ईसाइयों का यह शत्रु और दानवों का मित्र उसकी प्रार्थना स्वीकार कर गया और उसे एक घातक विष दे दिया। ईसाई ने वह घातक विष पी लिया और अपने घर के लिए चल पड़ा, लेकिन रास्ते में वह सोचने लगा और डर गया, यह न जानते हुए कि क्या करे। अंत में, उसने प्याले पर क्रॉस का चिह्न बनाया, उसे पी लिया और उसे उससे बिल्कुल भी नुकसान नहीं हुआ, क्योंकि क्रॉस के चिह्न ने प्याले से सारा ज़हर हटा दिया था। और वह अपने मन में बहुत आश्चर्य हुआ कि वह स्वस्थ रहा और उसे बिल्कुल भी कोई नुकसान नहीं हुआ। लेकिन, एक बार फिर अपने लेनदारों के उत्पीड़न को सहन न करते हुए, वह एक यहूदी के पास सबसे जहरीला ज़हर देने के लिए गया। यह देखकर हैरान कि वह आदमी अभी भी जीवित था, जादूगर ने उसे सबसे जहरीला ज़हर दे दिया। ज़हर पाकर, वह आदमी घर चला गया। और इसे पीने से पहले काफी देर तक सोचने के बाद, उसने पहले की तरह ही इस प्याले पर क्रॉस का निशान बनाया और इसे पी लिया, लेकिन एक बार फिर उसे कोई नुकसान नहीं हुआ । वह यहूदी के पास वापस गया और अच्छे स्वास्थ्य में उसके सामने प्रकट हुआ। और उसने जादूगर का मज़ाक उड़ाते हुए कहा कि वह अपनी जादू-टोने में अकुशल था। हालाँकि, यहूदी डर गया और उससे पूछा कि उसने पीते समय क्या किया था। उसने जवाब दिया: 'कप पर क्रॉस का चिह्न बनाने के अलावा कुछ नहीं।' और यहूदी को एहसास हुआ कि पवित्र क्रूस की शक्ति ने मृत्यु को दूर भगा दिया था; और, सत्य का पता लगाने की इच्छा से, उसने उस जहर में से कुछ एक कुत्ते को दे दिया – और कुत्ता उसकी आँखों के सामने तुरंत मर गया। यह देखकर, यहूदी उस ईसाई के साथ प्रेरित के पास गया और उन्हें बताया कि उनके साथ क्या हुआ था। संत जॉन ने यहूदी को मसीह के धर्म की शिक्षा दी और उसका बपतिस्मा दिया; जहाँ तक उस गरीब ईसाई का सवाल है, उन्होंने उससे एक बाँह भर सूखी घास लाने को कहा, जिसे उन्होंने क्रूस के चिह्न और प्रार्थना के द्वारा सोने में बदल दिया, ताकि वह अपने कर्ज चुका सके और बचे हुए धन का उपयोग अपने परिवार के भरण-पोषण के लिए कर सके। इसके

बाद प्रेरति एक बार फरि एफ़सिुस लौटे, जहाँ डोमनस के घर में ठहरने के दौरान उन्होंने बहुत से लोगों को मसीह के धर्म में परविर्तति कयिा और अनगनित चमत्कार कएि[6528] ।

[6528] अपने जीवन के अंतमि वर्षों के दौरान, जॉन ने एक तपस्वी का कठोर जीवन जयिा: वह केवल रोटी और पानी पर ही जीवति रहता था, अपने बाल नहीं काटता था, और साधारण लनिन के वस्त्र पहनता था। अपनी उन्नत आयु के कारण, उसमें एफ़सिुस के आसपास भी ईश्वर के वचन का उपदेश देने की शक्ति नहीं बची थी। अब वह केवल चर्च के बशिपों को नर्दिेश देते थे और उन्हें लोगों को सुसमाचार का संदेश अथक रूप से सखिाने के लएि प्रोत्साहति करते थे, और वशिेष रूप से पहले और सबसे महत्वपूर्ण सुसमाचार की आज्ञा: प्रेम की आज्ञा को याद करने और प्रचार करने के लएि कहते थे। जैसा कि धन्य जेरोम बताते हैं, जब पवत्रि प्रेरति इतने कमजोर हो गए थे कि उनके शष्यि उन्हें बड़ी मुश्कलि से चर्च तक ले जा पाते थे, और वह अब लंबा उपदेश देने में सक्षम नहीं थे, तो उन्होंने अपने प्रवचनों को इस एक अनुनय के अनवरत दोहराव तक सीमति कर दयिा: 'मेरे बच्चों, एक दूसरे से प्रेम करो!' और जब एक बार उनके शष्यिों ने उनसे पूछा कि वह यह बात बार-बार क्यों दोहराते रहते हैं, तो यूहन्ना ने अपने अनुरूप नम्निलखिति शब्दों में उत्तर दयिा: 'यह प्रभु की आज्ञा है, और यदि तुम इसका पालन करते हो, तो वही काफी है।' अपने जीवन के अंत के करीब, पवत्रि प्रेरति को संपूर्ण ईसाई जगत में वशिेष सम्मान प्राप्त था। उस समय, वह एकमात्र प्रेरति थे जन्होंने प्रभु को अपनी आँखों से देखा था, क्योंकि अन्य सभी प्रेरति पहले ही नधिन कर चुके थे। पूरी ईसाई दुनयिा जानती थी कि संत योहन प्रभु के सबसे प्रयि शष्यि थे। इसलएि, कई लोग प्रेरति को देखने का अवसर खोजते थे और उनके वस्त्रों को छूना सम्मान और आशीर्वाद मानते थे। पगनों के बीच ईसाई धर्म का प्रसार करने में अपने महान कार्यों के अलावा, संत योहन प्रेरति ने अपनी लखिति कृतयिों के माध्यम से मसीह की कलीसयिा की भी सेवा की। उन्होंने पवत्रि सुसमाचार, तीन पत्र और प्रकाशतिवाक्य, या प्रकाशन की पुस्तक लखिी।

पहली शताब्दी ईस्वी के ठीक अंत में, वृद्धावस्था में यूहन्ना द्वारा सुसमाचार लखिा गया था। एफ़सिुस और समूचे एशयिा माइनर के बशिप, उस समय बढ़ चुकी हमारे प्रभु, यीशु मसीह के व्यक्तित्व के बारे में झूठी शक्षिाओं से डरकर, और पवत्रि प्रेरति की नकिट मृत्यु की पूर्वानुमान लगाते हुए, उनसे अपना सुसमाचार (पहले से मौजूद तीन की तुलना में एक नया) देने के लएि कहा। वे इस सुसमाचार को मसीह की दव्यिता को नकारने वाले वधिर्मयिों के खलिाफ अपने संघर्ष में एक मार्गदर्शक के रूप में चाहते थे। यूहन्ना ने बशिपों की प्रार्थना स्वीकार की और उन्हें वह सुसमाचार दयिा जो उन्होंने पवत्रि आत्मा की प्रेरणा से लखिा था, जो मत्ती, मरकुस और लूका के सुसमाचारों से भन्नि था। अपनी सुसमाचार में, संत योहन मुख्य रूप से उन मामलों के बारे में बात करते हैं जो उन अन्य सुसमाचार लेखकों द्वारा कवर नहीं कएि गए थे। वह उनके ववरिणों में पूरकता करते हैं, जो उन्होंने दर्ज कयिा है उसे छोड़ देते हैं और जो उन्होंने छोड़ दयिा है उसका वर्णन करते हैं। योहन द्वारा उल्लेख कएि गए उद्धारकर्ता के पृथ्वी पर जीवन की सभी घटनाओं को उन्होंने अत्यंत सटीकता और वस्तिार से वर्णति कयिा है। अपने सुसमाचार के लएि, सेंट जॉन को 'द थयिोलॉजस्टि' (ईश्वरशास्त्री) की उपाधि दी गई, अर्थात्, एक कथावाचक जो, अपने सुसमाचार में, मुख्य रूप से प्रभु के सांसारकि जीवन की घटनाओं को नहीं, बल्कि ईश्वर, ईश्वर के वचन पर, ऊँचे और गहरे प्रवचनों को प्रस्तुत करता है, अर्थात्, ईश्वर के पुत्र, और उद्धारकर्ता के पवत्रि आत्मा में आध्यात्मकि पुनर्जन्म (यूहन्ना 3:1–36) पर, जीवन-दायक जल (जीवति जल) जो लोगों की आध्यात्मकि प्यास बुझाता है (यूहन्ना 4:1–54), पर प्रवचन। जीवन का वह रोटी जो मानव आत्मा को पोषण देती है (यूहन्ना 6:1–71), सत्य की ओर ले जाने वाला रहस्यमय मार्ग, वह द्वार जसिसे हम प्रवेश और नकिास करते हैं (यूहन्ना 10:1–42), प्रकाश और गर्माहट, और इसी तरह। इन सभी नामों से, संत जॉन का हमेशा स्वयं प्रभु यीशु मसीह का तात्पर्य होता है, क्योंकि केवल वही वास्तव में जीवति जल, आत्मकि रोटी, प्रकाश, हमारे उद्धार का द्वार, सत्य, धार्मकिता और परमेश्वर हैं। वह हमारे उद्धारकर्ता हैं, जो परमेश्वर के साथ, परमेश्वर में, और स्वयं परमेश्वर होकर, अनंत काल से वद्यिमान हैं। और परमेश्वर परम प्रेम हैं, जन्होंने जगत से इतना प्रेम कयिा कि उन्होंने अपने ही पुत्र को भी नहीं बख्शा, बल्कि उसे मनुष्यों के उद्धार और पाप, शाप और मृत्यु से उनकी मुक्ति के लएि दुख सहने हेतु संसार में भेज दयिा। यूहन्ना के सुसमाचार की उत्कृष्ट सामग्री के कारण, इसे 'आध्यात्मकि' सुसमाचार कहा जाता है, और संत जॉन द थयिोलोजयिन को आइकन (चत्रिों) में एक गरुड़ के साथ दर्शाया गया है: जैसे एक गरुड़ आकाश में ऊँचा उड़ता है, वैसे ही जॉन, अपने सुसमाचार में, सबसे ऊँचे धार्मकि सच्चाइयों तक पहुँचते हैं। 'हे प्रेरति, तेरे सम्मानति होठों से धर्मशास्त्र की नदयिाँ बहती हैं,' – पवत्रि चर्च संत जॉन को समर्पति अपने भजनों में गाती है; वहाँ वह उसे स्वर्गीय गीतों का ईश्वर-प्रेरति माध्यम, रहस्यमय लपिकिार, वह मुख जसिसे ईश्वर बोलते हैं, अकथनीय रहस्यों का प्रत्यक्षदर्शी, अकथनीय का संरक्षक, वह जो धर्मशास्त्र की ऊँचाइयों पर चढ़ा है, आदि कहती है। संत जॉन अपने तीन पत्रों में इसी प्रकार के वचिार व्यक्त करते हैं। ये सभी पत्र उन्होंने एफ़सिुस नगर में लखिे थे। इनमें, वह वधिर्मयिों की झूठी शक्षिाओं का खंडन करते हैं, संसार के उद्धारकर्ता के रूप में यीशु मसीह की गरमिा, उनके अवतार की वास्तवकिता और उनकी शक्षिा के सत्य की रक्षा करते हैं, और वश्विासयिों से आग्रह करते हैं कि वे केवल नाम के लएि नहीं बल्कि कर्म में मसीही बनें। चूँकि उस समय ऐसे वधिर्मी उभर आए थे जो मसीह के देहधारी होने को अस्वीकार करते थे, प्रेरति यूहन्ना वश्विासयिों को ऐसी झूठी शक्षिाओं से आगाह करते हैं और कहते हैं कि केवल *'हर आत्मा जो यह स्वीकार करती है कि यीशु मसीह देह में आया है, परमेश्वर की है'* (1 यूहन्ना 4:2)। फरि वे अपनी पत्रयिों में दोहराते हैं कि *'ईश्वर प्रेम है'* (1 यूहन्ना 4:16), और इसलएि लोगों को ईश्वर से प्रेम करना चाहिए। केवल *'जो प्रेम में बना रहता है, वह ईश्वर में बना रहता है, और ईश्वर उसमें'* (1 यूहन्ना 4:16)। लेकनि ईश्वर के लएि प्रेम क्या है? – *'प्रेम इस में है कि हम उसकी आज्ञाओं को मानें'* (2 यूहन्ना 1:6)। और प्रभु की आज्ञाएँ प्रेम की आज्ञा में नहिति हैं (1 यूहन्ना 4:7-8)। हमें *'शब्द या वाणी में* नहीं, *बल्कि कर्म और सत्य में'* प्रेम करना चाहिए (1 यूहन्ना 3:18)। *'जो कोई कहता है, 'मैंने उसे* (अर्थात् परमेश्वर को) *जान लयिा है, परन्तु उसकी आज्ञाओं को नहीं मानता, वह एक झूठा है, और* सत्य *उसमें नहीं है'* (1 यूहन्ना 2:4), ठीक वैसे ही जैसे सत्य उस में नहीं है जो *'कहता है, "मैं परमेश्वर से प्रेम करता हूँ" परन्तु अपने भाई से बैर रखता है'* (1 यूहन्ना 4:20)। *'जो कोई परमेश्वर से प्रेम करता है, वह अपने भाई से भी प्रेम करता है'* (1 यूहन्ना 4:21)। प्रकाशतिवाक्य, या प्रकटकिरण की पुस्तक, मसीह की कलीसयिा के भवष्यि के भाग्य, मसीह के वरिोधी के वरिुद्ध मसीह के संघर्ष और मसीह के वरिोधी की पराजय को दर्शाती है। मसीह की कलीसयिा का भवष्यि का भाग्य यहाँ पवत्रि धर्मग्रंथ की कसिी भी अन्य पुस्तक की तुलना में अधकि पूर्ण रूप से चत्रिति कयिा गया है।

जब प्रेरति सौ वर्ष से अधकि आयु के हो गए, तो वे अपने सात शष्यिों के साथ डोमनस के घर से नकिल गए और एक नश्चिति स्थान पर पहुँचकर, उन्होंने उन्हें वहीं बैठने के लिए कहा। सुबह होने को थी, और वे, एक पत्थर की दूरी पर जाकर, प्रार्थना करने लगे। तब, जब उसके शष्यिों ने उसकी इच्छानुसार उसके लिए एक क्रूस के आकार की कब्र खोद ली, तो उसने प्रोखोरुस को यरूशलेम जाने और मृत्यु तक वहाँ रहने का आदेश दयिा। अपने शष्यिों को और नर्दिेश देकर और उन्हें चूमकर, प्रेरति ने कहा: 'इस मट्टिी को लो, मेरी माँ, और मुझे इससे ढक दो।' और उसके शष्यिों ने उसे चूमा और उसके घुटनों तक ढक दयिा; और जब उसने उन्हें फरि से चूमा, तो उन्होंने उसे उसकी गर्दन तक ढक दयिा, उसके चेहरे पर एक कफ़न ओढ़ाया, और एक बार फरि उसे चूमकर, वे जोर-जोर से रोते हुए उसे पूरी तरह से ढक दयिा। यह सुनकर, भाई शहर से आए और कब्र खोदकर बाहर नकिाली, लेकनि उन्हें वहाँ कुछ भी नहीं मलिा और वे बहुत रोए; तब, प्रार्थना करने के बाद, वे नगर में लौट गए। और हर साल, मई के आठवें दनि, उनकी कब्र से सुगंधति मूर नकिलता था और, पवत्रि प्रेरति की प्रार्थनाओं के द्वारा, बीमारों को चंगा करता था[6529] , परमेश्वर की महमिा के लिए, जो सदा और अनंतकाल तक त्रत्विं में महमिामय है। आमीन।

ट्रोपारयिन, स्वर 2:

हमारे परमेश्वर मसीह के प्रयि प्रेरति, असहायों को बचाने के लिए शीघ्रता करो; उन लोगों को स्वीकार करो जो आपके सामने साष्टांग दण्डवत करते हैं, जैसे आपने उन लोगों को स्वीकार कयिा जो आपके वक्ष पर गरि थे: हे धर्मवज्ञिानी, उनसे प्रार्थना करो, और राष्ट्रों के व्याप्त अंधकार को दूर करो, हमारे लिए शांतऔिर महान दया माँगते हुए।

कॉन्टाकयिन, स्वर 2:

हे कुँवारी, तुम्हारी महानता का वर्णन कौन कर सकता है? क्योंकतिुम चमत्कार करती हो और चंगाई प्रदान करती हो, और मसीह की एक धर्मशास्त्री और मत्रि के रूप में, तुम हमारी आत्माओं के लिए प्रार्थना करती हो।

10 अक्टूबर

27 सतिंबर (पुराना संस्करण)

शहीद संत कैलस्ट्रिेटस का जीवन और कष्टकथा

27 सतिंबर को स्मरणोत्सव

जब यह देखकर कमिसीह का चुना हुआ झुंड दनि-ब-दनि बढ़ रहा था, ईर्ष्यालु शत्रु—शैतान—बड़ी क्रोध के साथ उसके वरिुद्ध उठ खड़ा हुआ, उसका इरादा वचन के सभी भेड़ों को लूटने और नष्ट करने का था[6530] । इस उद्देश्य के लिए, उसने नर्दियी रोमन सम्राटों, डायोक्लेटयिन और मैक्समियिन को चुना, जो अपनी क्रूरता में अमानवीय जानवरों जैसे थे। उसने उन्हें मसीह के झुंड पर दरदिों की तरह छोड़ दयिा और उनके माध्यम से, उसे क्रूरतापूर्वक और नर्दियता से चीर-फाड़ डाला: क्योंकतिउसने उनके हृदयों में ईसाइयों के प्रतइितना तीव्र क्रोध भर दयिा कइिन सम्राटों ने, अपने साम्राज्य संबंधी सभी अन्य चतिाओं को एक तरफ रखकर, अपनी सारी ऊर्जा बनिा कसिी अपवाद के सभी ईसाइयों के वनिाश में लगा दी। वे इस दुष्ट इरादे और कर्म को अपने सभी अन्य महान शाही कार्यों, गौरवशाली वजियों और अपने दुश्मनों पर मलिी कामयाबयिों से भी बड़ी और उच्च उपलब्धि मानते थे। इसी कारण, उन्होंने पृथ्वी के चारों कोनों में

[6529] इस अद्भुत घटना की स्मृतमिें, 8 मई को संत जॉन प्रेरति के सम्मान में एक वार्षकि पर्व दविस मनाया जाता है।

[6530] अर्थात् तर्कशील प्राणी – वे लोग जन्हिें मसीह की रक्षा करते हैं, ठीक वैसे ही जैसे एक चरवाहा अपनी भेड़ों की रक्षा करता है।

राज्यपाल और यातना देने वालों को भेजा—ऐसे पुरुष जो अपनी दुष्टता में उनसे समान थे, या उनसे भी बढ़कर थे—ताकि वे हर जगह ईसाइयों को मूर्तियों को बलिदान चढ़ाने के लिए मजबूर करें, और जो आज्ञा न माने उन्हें विभिन्न प्रकार की मृत्युदंड की सजा देकर यातना दें, मार डालें और नष्ट कर दें। जब यह आदेश लागू किया जाने लगा, तो कई विश्वासी और जो मसीह के प्रति अपने पूरे हृदय से समर्पित थे, शहीद के मुकुट से विभूषित होकर, संघर्षरत कलीसिया से विजयी कलीसिया में चले गए[6531] , और अपने शत्रुओं पर विजय का गीत गाते हुए। अन्य कई लोगों में से , मसीह के पराक्रमी योद्धा, कैलसिट्रेटस, एक ऐसा ही व्यक्ति था; न केवल उसने स्वयं, बल्कि अपने अनेक अनुयायियों के साथ, शहादत के गौरवशाली पथ पर चला और, शत्रु को पराजित कर, मसीह, जो संसार के विजेता हैं, के समक्ष उपस्थित हुआ, अपने लिए प्राप्त घावों को लिए हुए और अपने पराक्रम के लिए सम्मान प्राप्त करते हुए।

मसीह के लिए इस पीड़ित का मूल स्थान कार्थेज था[6532] ; वहाँ से उसे सैन्य सेवा में भर्ती किया गया और कमांडर पर्सेंटिन की रेजिमेंट में नियुक्त किया गया; उस रेजिमेंट में, कालसिट्रेटस अपनी भक्ति के कारण एक अंधेरी रात में तारे की तरह चमका, क्योंकि उसके सभी साथी सैनिक मूर्तिपूजा के अंधकार में डूबे हुए थे। केवल वही पवित्र विश्वास के प्रकाश से प्रबुद्ध था, जिसे उसने अपने पिता से सीखा था, जो एक ईसाई था; उसके पिता को, बदले में, यह विश्वास उनके दादा, जिनका नाम नेओकोर था, ने सिखाया था, जो हमारे प्रभु यीशु मसीह के स्वैच्छिक दुख-भोग के समय पोंतियस पिलातुस के अधीन यरूशलेम में सैनिकों के बीच थे। प्रभु की मृत्यु और पुनरुत्थान के समय घटित हुए सभी चमत्कारों को देखने के बाद, वह उन पर विश्वास करने लगा और प्रेरितों द्वारा बपतिस्मा ग्रहण करने के बाद घर लौट आया; यहाँ वह अपने साथ एक अनमोल मोती – मसीह में विश्वास – लाया, जिसे उसने अपने पुत्र, फादर कैलसिट्रेटस, और अपने पूरे परिवार को समृद्ध किया, और उन्हें मसीह यीशु के बारे में वह सब कुछ सौंप दिया जो उसने अपनी आँखों से देखा था और प्रेरितों से सुना था। अपने दादा और पिता से आस्था की वह आध्यात्मिक संपत्ति विरासत में पाने के बाद, जिसे चुराया नहीं जा सकता, संत कैलसिट्रेटस ने उससे हर उस व्यक्ति को समृद्ध किया जिसे वह कर सकते थे, गुप्त रूप से सत्य का ज्ञान सिखाते हुए और मानव आत्माओं को ईश्वर की ओर मोड़ते हुए। इसी कारण से, उनके साथियों द्वारा उन पर संदेह किया जाता था, जो यह पता लगाने के लिए उन पर बारीकी से नज़र रखते थे कि वह ईसाई थे या नहीं।

जब वह अपने कमांडर[6533] के साथ रोम में था, तो उसकी ईसाई भक्ति इस प्रकार प्रकट हुई। धन्य व्यक्ति की आदत थी कि वह हर रात प्रार्थना करने के लिए उठता और लंबे समय तक गुप्त रूप से प्रार्थना करता था। एक रात, जब वह प्रार्थना करने के लिए हमेशा की तरह उठे, तो उनके पास सो रहे कुछ सैनिक जाग गए और उन्होंने यह देखा: उन्हें बार-बार यीशु मसीह का नाम लेते सुनकर, वे इस बात से आश्वस्त हो गए कि वह एक सच्चे ईसाई थे। एक उपयुक्त क्षण का लाभ उठाते हुए, उन्होंने जो सुना था, उसकी सूचना कमांडर पर्सेंटिनिस को दे दी। गवर्नर ने तुरंत कैलसिट्रैटस को बुलाया और उससे पूछा:

'क्या यह सच है, कैलसिट्रेटस, जो तुम्हारे साथी तुम्हारे बारे में कह रहे हैं?'

संत ने उत्तर दिया:

'मुझे नहीं पता कि उन्होंने मेरे बारे में क्या कहा होगा, क्योंकि मुझे किसी भी गलत काम को करने का पता नहीं है।'

जब पर्सेंटिन ने सैनिकों को खुलकर बोलने का आदेश दिया, तो उन्होंने राज्यपाल से कहा:

'महाशय, केवल उसे देवताओं को बलिदान चढ़ाने का आदेश दें, और आप तुरंत उसके विचारों और उसकी आस्था को जान जाएंगे।'

गवर्नर ने कैलसिट्रेटस को देवताओं को बलिदान चढ़ाने और उनकी पूजा करने का आदेश दिया; लेकिन संत कैलसिट्रेटस ने उत्तर दिया:

'मुझे कई देवताओं को बलिदान चढ़ाना नहीं सिखाया गया है, बल्कि केवल एक सच्चे और जीवित ईश्वर को, जिसने शून्य से सभी चीज़ों को अस्तित्व में बुलाया और मनुष्य को मिट्टी से बनाया; जहाँ तक उन देवताओं का सवाल है जिन्हें

[6531] लड़ाकू कलीसिया पृथ्वी पर रहने वाले मसीहियों से मिलकर बनी है, जबकि विजयी कलीसिया स्वर्ग में निवास करने वाले महिमामय विश्वासियों का समुदाय है।

[6532] कार्थेज उत्तरी अफ्रीका में एक शहर है।

[6533] यह बिज़ान्टियम को संदर्भित करता है, जो रोमन साम्राज्य की पूर्वी राजधानी बन जाने के बाद, नई रोम के नाम से जाना जाने लगा। प्राचीन रोम में, सेंट कैलसिट्रेटस की पूजा नहीं की जाती थी। इसके अलावा, यहाँ उल्लेखित रोम, जैसा कि आगे से स्पष्ट है, सीधे समुद्र तट पर स्थित था, जबकि समुद्र प्राचीन रोम से काफी दूरी (लगभग 4 वर्स्ट) पर था।

आप पूजते हैं, जो मानव हाथों द्वारा बनाए गए हैं, मैं उन्हें देवता नहीं कहता, बल्कि राक्षस कहता हूँ, जैसा कि मैंने पवित्र शास्त्र से सीखा है, जो कहता है: *'जाति-जाति के सब देवता तो मूरतियाँ हैं'* (भजन संहिता 95:5) और: *'उनकी मूरतियाँ चाँदी और सोने की हैं, मनुष्यों के हाथों की बनाई हुई'* (भजन संहिता 113:12)। इसके अलावा, धर्मग्रंथ से मैंने उस परमेश्वर को जानना सीखा है जो स्वर्ग में वास करता है, स्तुति का बलिदान चढ़ाना और परमप्रभु के प्रति अपनी प्रतिज्ञाएँ पूरी करना सीखा है। तो, क्या इन्हीं बातों के लिए ये लोग मुझ पर आरोप लगाते हैं—कि मैं कई झूठे देवताओं के बजाय एक सच्चे ईश्वर की पूजा करता हूँ? उन्हें मुझ पर तभी आरोप लगाना चाहिए जब उन्हें यह पता चले कि मैं अपने सैन्य कर्तव्यों का निर्वहन ठीक से नहीं करता, कि मैं एक कायर हूँ और दुश्मन के सामने से भाग गया हूँ; ऐसे ही कर्म वे आपके सामने मेरे विरुद्ध ला सकते हैं, और ऐसे आरोप, राज्यपाल, आपके लिए सुनना उचित होगा। यह जानते हुए कि मैं इस प्रकार के किसी भी अपराध का दोषी नहीं हूँ, आप बदनाम करने वालों की बात क्यों सुनते हैं और मुझे केवल इसलिए मुकदमे में क्यों लाते हैं क्योंकि मैं जिस विश्वास के सिद्धांत का पालन करता हूँ, वह आपके सिद्धांत के अनुरूप नहीं है?

इन शब्दों के जवाब में, राज्यपाल ने गुस्से से कहा:

'अब वक्त भाषणबाज़ी का नहीं, बल्कि भयानक यातनाओं और क्रूर सज़ाओं का है, जिन्हें तुम जल्द ही झेलोगे, जब तक कि तुम मेरे आगे समर्पण नहीं कर लेते और उन देवताओं को बलिदान नहीं चढ़ाते जिनकी पूजा स्वयं राजा करता है। क्या तुम नहीं जानते कि मैं कितना क्रूर हूँ, क्योंकि मुझमें इतनी शक्ति है कि मैं यातनाएँ शुरू होने से पहले ही, एक नज़र या आवाज़ से किसी में भी डर पैदा कर सकता हूँ?'

संत कैलिस्ट्रेटस ने उत्तर दिया:

'तुम्हारा क्रोध और दाँत पीसना भय पैदा कर सकता है, पर वह केवल क्षणिक होगा; परन्तु एक ऐसा भय और दाँत पीसना है जो शाश्वत है, और मैं सबसे बढ़कर उसी से डरता हूँ; इसका विचार मात्र ही मुझे भयभीत कर देता है।'

अपना क्रोध नियंत्रित न कर पाने पर, राज्यपाल ने संत को ज़मीन पर फेंककर पीटने का आदेश दिया; फिर भी, उस लंबे कष्ट के दौरान, उन्होंने अधीरता का कोई संकेत नहीं दिखाया, बल्कि ईश्वर की ओर मुड़कर कहा: *'मैंने आपके धर्मी निर्णयों का पालन करने की शपथ ली है, और मैं उन्हें पूरा करूँगा'* (भजन संहिता 118:106-107)। और फिर: 'हे प्रभु, मैं निर्बल हो गया हूँ; *"अपने वचन के अनुसार मुझे जीवित कर"* (भजन संहिता 118:25), और इस दुष्ट मनुष्य को मुझ पर हँसने न दे; हे प्रभु, मुझे इन यातनाओं को सहने के लिए बल दे, मेरे दीन और दुर्बल शरीर को शक्ति प्रदान कर और मुझ में धैर्य की आत्मा जगा।

शहीद के घावों से रक्त की धारा बहते देख, राज्यपाल ने आदेश दिया कि उसे उसके यातनाओं से मुक्त कर दिया जाए और उससे कहा:

'कैलिस्ट्रेटस, यह तुम्हारी अवज्ञा के दंडों की केवल शुरुआत है; इसलिए मैं तुम्हें एक अच्छी सलाह देता हूँ – मेरी आज्ञा का पालन करो, ताकि तुम और भी बड़े यातनाओं से बच सको। लेकिन अगर तुम समर्पण नहीं करते, तो मैं देवताओं की कसम खाता हूँ कि तुम्हारे यातना देने वाले तुम्हारे शरीर को टुकड़े-टुकड़े कर देंगे, और कुत्ते तुम्हारा खून चाटेंगे, जबकि शेर तुम्हारे मांस को नोच-नोच कर खाएँगे: इस प्रकार तुम एक भयानक मृत्यु का सामना करोगे।"

लेकिन पराक्रमी कैलिस्ट्रेटस ने उत्तर दिया:

'मैं अपनी आशा पराक्रमी ईश्वर, जीवित ईश्वर में रखता हूँ, कि वह मुझे सिंह के मुँह से बचाएगा और *"मेरी एकाकी [आत्मा] को कुत्तों से* बचाएगा" (भजन संहिता 21:21), जो इन सभी योद्धाओं में से अकेले सच्चे परमेश्वर को जानते हैं, जिनसे मुझे आशा है कि वे न केवल मेरी एक आत्मा को, बल्कि कई अन्य आत्माओं को भी अपने पास ले जाएँगे, उन्हें अपने परम पवित्र name[6534] को जानने के योग्य समझकर!

इन शब्दों से और भी क्रोधित होकर, राज्यपाल ने कैलिस्ट्रस को नग्न कर देने और जमीन पर बिखरे मिट्टी के बर्तनों के तीखे टुकड़ों पर घसीटने का आदेश दिया, जिससे उसके पहले से ही घायल शरीर को और भी अधिक पीड़ा हुई। जब संत ने इन यातनाओं को भी सहन कर लिया, तो उसके यातना देने वाले ने एक फनल के माध्यम से उसके मुँह में पानी डालने का आदेश दिया, जैसे कि किसी चमड़े की थैली में। इस यातना के दौरान, राज्यपाल ने संत से कहा:

'कैलिस्ट्रेटस, यदि तुम देवताओं को बलिदान नहीं चढ़ाओगे, तो मैं तुम्हें तुरंत समुद्र में फेंक दूँगा; क्योंकि मुझे डर है कि यदि मैं तुम्हें तुरंत नहीं मार डालूँगा तो तुम अन्य सैनिकों को गुमराह कर दोगे।'

[6534] ईश्वर का नाम जानना, संसार और मानव जीवन के शासन में प्रकट हुए दैवीय गुणों और पूर्णताओं को जानना है।

'हे महान कानून तोड़ने वाले,' शहीद ने उत्तर दिया, 'तुम्हें इस बात की चिंता है कि तुम्हारे पिता, शैतान, के शासन के अधीन मंडली कम न हो जाए, लेकिन मुझे ईश्वर पर भरोसा है कि मैं इस मंडली को अपने मसीह के लिए जीत लूँगा, उन्हें सच्चे विश्वास में स्थापित करूँगा, और इस शहर के बीचोबीच उनके लिए एक चर्च का निर्माण करूँगा[6535] ।'

क्रोध से आग-बबूला होकर, राज्यपाल ने कहा:

'हे अधर्मी और शापित मनुष्य! मौत पहले से ही तेरे सिर पर मंडरा रही है, फिर भी तू एक चर्च बनाने और बहुतों को अपने ईश्वर के धर्म में धर्मांतरित करने का सोचता है!'

यह कहकर, राज्यपाल ने तुरंत एक चमड़े का थैला लाने का आदेश दिया, शहीद को उसमें बाँधकर समुद्र की गहराइयों में फेंक दिया जाए, जबकि वह स्वयं किनारे पर खड़ा रहा, संत की मृत्यु का साक्षी बनने की इच्छा से। लेकिन जिस थैले में संत कैलिस्ट्रेटस लेटे थे, जो यों तो व्हेल की पेट में योनह की तरह प्रार्थना कर रहे थे, वह ईश्वर की इच्छा से धारा के साथ एक तीव्र समुद्री चट्टान पर जा टकराया और फट गया; और संत कैलिस्ट्रेटस को दो डॉल्फ़िनों ने अपनी पीठ पर उठा लिया[6536] और उन्हें धीरे से किनारे पर ले आए। शहीद ने आनंदपूर्वक गाया: *'मैं समुद्र की गहराइयों में आया हूँ'* (भजन संहिता 68:3), लेकिन तूफानी पानी ने मुझे डुबोया नहीं, और हे प्रभु, आपके प्रति मेरी प्रार्थनाएँ थकी नहीं; आपने शीघ्रता से मेरी प्रार्थना सुनी और चमत्कारिक रूप से मुझे अजेय बंधनों और समुद्र की गहराइयों से बचाया, जब आशा समाप्त हो चुकी थी: *'आपने मुझसे जुआ हटा दिया है और मुझे आनंद से परिपूर्ण किया है'* (भजन संहिता 29:12)। जब संत ने यह आनंदित स्वर में गाया, तो सैनिकों की भीड़ चकित रह गई, और उनमें से कुछ संत के पैरों पर गिर पड़े, उनसे निवेदन करने लगे कि वे उन्हें राक्षसों के धोखे से बचाएँ और उन्हें उनके ईश्वर मसीह के पास ले जाएँ। वे उनचास थे, और उन्होंने कहा:

'हम यह समझ गए हैं कि आपका ईश्वर महान और सच्चा है, क्योंकि उन्होंने आपको चमत्कारिक रूप से समुद्र की गहराई से बचाया है।'

धन्य शहीद ने उत्तर दिया:

'मेरे प्रभु यीशु मसीह उनके मुँह नहीं फेड़ेंगे जो उनके पास आते हैं, क्योंकि वे कहते हैं: *"मेरे पास आओ, हे सब जो परिश्रमित और बोझिल हो, और मैं तुम्हें विश्राम दूँगा"* (मत्ती 11:28)।'

ये वचन कहने के बाद, उसने स्वर्ग की ओर अपने हाथ फैलाए और अपनी आँखें उठाकर प्रार्थना की:

'हे प्रभु, जो ऊँचे पर वास करते हो और दीनों पर दृष्टि रखते हो! अपनी इस छोटी से भेड़-बकरियों की झुंड पर दृष्टि रखो, इसे हर बुराई से बचाओ, और इसे दिखाई देने वाले दानव—अत्याचारी पर्सेंटिन—और अदृश्य दानव—शैतान—से सुरक्षित रखो; क्योंकि केवल तुम्हारा ही अनंतकाल तक महिमा होनी चाहिए।'

यह देखकर कि क्या हो रहा था, राज्यपाल चकित हो गया और बोला:

'मैं तेजस्वी सूर्य की कसम खाता हूँ[6537] – इस आदमी के पास महान जादुई शक्ति है, क्योंकि वह समुद्र से बिना किसी चोट के निकला और, जैसा उसने वादा किया था, उसने अपनी जादू-टोने से मेरे सैनिकों को मोहित कर लिया।'

उसी समय, उसने संत से कहा:

'मैं जल्द ही तुम्हारा जादू तोड़ दूँगा, कैलिस्ट्रेटस, और तुम जान जाओगे कि पर्सेंटिन कौन है, महान देवताओं का सेवक, और वह सूली पर चढ़ाया गया व्यक्ति कौन है, जिसका तुम सम्मान करते हो और जिस पर तुम अपनी व्यर्थ आशा रखते हो।'

तब वह न्यायाधीश की कुर्सी पर बैठ गया और आज्ञा दी कि मिसीह में विश्वास करने वाले सभी सैनिकों को बुरी तरह पीटा जाए, और उनके जोड़ तोड़े जाएँ। यातना दिए जाने के दौरान, इन सैनिकों ने एक स्वर में कहा:

'हे प्रभु यीशु मसीह, अपने दासों की सहायता करो और हमें अंत तक सहन करने की शक्ति प्रदान करो, क्योंकि हम ने तेरे ही निमित्त ऐसी पीड़ा सहन की है।' हमारे शिक्षक और चरवाहे कैलिस्ट्रेटस की रक्षा करें, ताकि उनके द्वारा हम आपको, एकमात्र परमेश्वर को, और भी अधिक जान सकें, क्योंकि अब हम आपके सामने, हे प्रभु, खोए हुए भेड़ों की तरह खड़े हैं।

[6535] अर्थात्, एक चर्च जिसमें शहीदों – योद्धाओं – का श्रद्धालुओं द्वारा सम्मान किया जाएगा।

[6536] डॉल्फ़िन शिकारी समुद्री स्तनधारी हैं।

[6537] पगानों ने सूर्य की एक देवता के रूप में पूजा की, जिसे अपोलो कहा जाता था।

जब पर्सेंटनि का क्रोध कुछ शांत हुआ, तो उसने यातनाएँ बंद करने और शहीदों को जेल ले जाने का आदेश दयिा, जब तक कि वह यह तय न कर ले कि उनके साथ क्या करना है; क्योंकि वह इस बात से बहुत परेशान था कि उसकी रेजमिंट पचास सैनकिों के कम हो गई थी।

जब उन्हें संत कैलस्टि्रेटस के साथ कालकोठरी में डाल दयिा गया, तो उन्होंने उनसे परमेश्वर के ज्ञान की सभी बारीकयिाँ सीखनी शुरू कर दीं; क्योंकि संत ने, अपना मुख खोलकर, उन्हें सब कुछ समझाया, जसिमें दुनयिा की रचना और स्वर्ग में पहले मनुष्यों द्वारा कएि गए पाप से लेकर, मसीह के अवतार, उनकी स्वेच्छा से हुई पीड़ा और उनके पुनरुत्थान तक सब कुछ शामलि था। उन्होंने उन्हें अंतमि न्याय, आत्मा और आने वाले जीवन के बारे में बताया; धर्मात्माओं के लएि पुरस्कार और नरक में पापयिों की सज़ा के बारे में; और, उन्हें वश्विास के सभी पवत्रि रहस्यों की व्याख्या करने के बाद, उन्होंने उन्हें उनके शहीद होने के लएि मज़बूत कयिा।

अगले दनि, राज्यपाल, सैनकिों की भीड़ से घरिा, न्यायाधीश की कुर्सी पर बैठ गया, सेंट कैलस्टि्रेटस और उनके साथयिों को कालकोठरी से लाने का आदेश दयिा, और उनसे ये शब्द कहे:

'मुझसे कहो, कैलस्टि्रेटस! क्या तुम अपनी भयानक यातनाओं से मुक्त होने के लएि देवताओं को बलदिान दोगे, या अपनी पूर्व की हठधर्मति पर ही अड़े रहोगे?'

इस पर, संत कैलस्टि्रेटस ने उत्तर दयिा:

'जहाँ तक मेरी बात है, मैं कसम खाता हूँ कि मैं मृत्यु तक अपने प्रभु का त्याग नहीं करूँगा; जहाँ तक इनकी बात है, ये खुद बोलें; इनसे पूछो और तुम सुनोगे कि इनके पास क्या कहना है।'

तब राज्यपाल ने उनसे कहा:

'हे मार्गभ्रष्ट, तुम क्या कहोगे?'

उन्होंने उत्तर दयिा:

'हम ईसाई हैं; हम एक ही ईश्वर की गवाही देते हैं जसिने स्वर्ग और पृथ्वी की रचना की, और हम उसी में, उसके एकमात्र पुत्र, प्रभु यीशु मसीह में, और पवत्रि आत्मा में वश्विास करते हैं, जैसा कि हमारे अच्छे शक्षिक, कैलस्टि्रैटस ने हमें सखिाया है।'

जब संतों ने एक स्वर में ये शब्द कह दएि, तो राज्यपाल ने उन्हें एक के बाद एक बुरी तरह कोड़े मारने का आदेश दयिा। फरि उसने आज्ञा दी कि उनके हाथ-पैर बाँधकर उन्हें वहाँ से कुछ दूर एक तालाब में फेंक दयिा जाए।

इस आदेश को पूरा कएि जाने से पहले, संत कैलस्टि्रेटस ने ईश्वर से प्रार्थना करते हुए कहा:

'हे प्रभु, जो ऊँचे पर वास करते हैं और दीनों पर अनुग्रह की दृष्टि रखते हैं, अपनी दयालु दृष्टि अपनी इस छोटी से भेड़-बकरयिों पर फेरीं और कृपा करके इन्हें इन जलों में धो दें, जैसे पुनर्जन्म और दत्तक ग्रहण के फोंट में[6538] अपने पवत्रि आत्मा के आगमन द्वारा, ताकि, पुराने मनुष्य के सभी कलंक[6539] को धोकर, वे वरिासत के सहभागी बन सकें (कुलुस्सयिों 1:12) उन लोगों की वरिासत के सहभागी बनें, जन्हिोंने प्राचीन काल से आपको प्रसन्न कयिा है।

जब शहीदों को बाँधकर पानी में फेंका गया, तो उनके बंधन तुरंत टूट गए, और वे जल में दीप्तमिान चेहरों के साथ खड़े हो गए, अपने बपतस्मिा में आनंदति होते हुए। और उसी क्षण स्वर्ग से उन पर एक सुंदर मुकुट उतरता हुआ देखा गया, और एक आवाज सुनाई दी जो कह रही थी:

'कैलसिट्रस, अपने झुंड के साथ धैर्य रखो, और उनके साथ शाश्वत नविासों में वश्विराम करो।'

और इन शब्दों के तुरंत बाद, एक भयंकर भूकंप आया, जसिसे वहाँ से कुछ दूर खड़ी कसिी दुष्ट मूर्तपिूजक देवता की मूर्ति गिरिकर धूल में मलि गई। यह देखकर, अन्य एक सौ पैंतीस सैनकि, जन्हिोंने स्वर्ग से कैलस्टि्रैटस के पास आई उस आवाज़ को सुना था, हमारे प्रभु पर वश्विास करने लगे। रैजमिंट में अफवाहों और अशांति के डर से, कमांडर ने उनसे कुछ नहीं कहा, लेकनि कैलस्टि्रेटस के साथ पहले उनचास सैनकिों को वापस जेल में डालने का आदेश दयिा। वहाँ, संत कैलस्टि्रेटस ने अपने साथयिों से कहा:

'हे भाइयों, मसीह की कृपा से आप पवत्रि बपतस्मिा के योग्य ठहरे हैं, जसिके लएि यह उचति है कि आप परमेश्वर को एक योग्य तरीके से धन्यवाद दें; अत; आइए हम उठें और उनसे प्रार्थना करें!'

[6538] यह बपतस्मिा को संदर्भति करता है, जो प्राचीन काल से वशिष बपतस्मिा के कुंडों या स्नान-स्थलों में कयिा जाता रहा है। – बपतस्मिा के माध्यम से, एक व्यक्ति एक नए, पवत्रि जीवन में पुनर्जीवति होता है और परमेश्वर की संतान बन जाता है।

[6539] 'पुराना मनुष्य' वह व्यक्ति है जसिने ईसाई बपतस्मिा नहीं लयिा है और वह आदम के पाप के अधीन रहता है। (देखें कुलुस्सयिों 1:12)।

जब वे सभी उठ खड़े हुए और उन्होंने अपने हाथ और आँखें स्वर्ग की ओर उठाईं, तो कैलस्ट्रेटस ने इन शब्दों से प्रार्थना की:

'हे प्रभु परमेश्वर, *"जो चाहता है कि सब लोग बचें"* (1 तीमुथियुस 2:4), जिसने इस झुंड को सहि के मुँह से छीन लिया है और हमें अनंतकाल के उद्धार के लिए बुलाया है! यह अनुग्रह करें कि हम अपने ईश्वर, आप में पवित्र विश्वास के साथ इस जीवन से विदा लें, और यह अनुग्रह करें कि हम आपकी पवित्र उपस्थिति के सामने निर्दोष और शुद्ध होकर प्रकट हों और आपको, जो सदा धन्य हैं, आराधना करें।

उन्होंने संत कैलस्ट्रेटस और सभी पवित्र शहीदों के साथ मिलकर विनम्रता से प्रार्थना की। जब रात हुई, तो यातना देने वाले के आदेश पर तलवारें खींचे हुए सैनिक कालकोठरी में घुसे और उन्हें सबके टुकड़े-टुकड़े कर डाला[6540] । इस प्रकार संत कैलस्ट्रेटस और उनके साथियों ने अपने प्रभु के लिए बहादुरी से संघर्ष किया, और रक्तपात तक दृढ़ खड़े रहे (देखें इब्रानियों 12:4)। उनके पवित्र अवशेषों को एकत्र किया गया और उन एक सौ पैंतीस सैनिकों द्वारा सम्मान के साथ दफनाया गया, जो मसीह में विश्वास करने लगे थे; और इन्हीं सैनिकों द्वारा बाद में उनके पवित्र अवशेषों के ऊपर एक चर्च का निर्माण किया गया। इस प्रकार संत कैलस्ट्रेटस द्वारा पर्सेंटनिस से कहा गया वचन पूरा हुआ: 'मैं इस नगर के बीच में एक गिरिजाघर बनाऊँगा', यद्यपि यह उनके जीवनकाल में नहीं बल्कि उनके शहीद होने के बाद बनाया गया था; और उसमें प्रभु परमेश्वर और हमारे उद्धारकर्ता यीशु मसीह के नाम का गौरव हुआ, जिसकी महिमा हम सदा और सदा के लिए करते हैं। आमीन।

कॉन्टाकियन, स्वर 4:

अनेक घाव सहने और परमेश्वर से मुकुट प्राप्त करने के बाद, हे मसीह के धन्य संतगण, हमारे लिए प्रार्थना करें, क्योंकि हम आपकी सबसे उत्सवपूर्ण स्मृति मिनाते हैं, हे अति महिमामय कैलस्ट्रेटस और आपके साथ पीड़ा सहने वालों, कि आप झुंड और लोगों को शांति प्रदान करें: क्योंकि वही[6541] , विश्वासियों की शक्ति हैं।

हमारे पूजनीय पिता सोलोव्की के सव्वाती, चमत्कारिक संत का जीवन

27 सितंबर को स्मरण किया जाता है

[6542][6543]इस बात का कोई रिकॉर्ड नहीं बचा है कि आदरणीय सव्वाती किस शहर या गाँव के रहने वाले थे, उनके माता-पिता कौन थे, या उन्होंने किस उम्र में संन्यास का व्रत लिया था। केवल इतना ज्ञात है कि सर्व-रूसी मेट्रोपॉलिटन फोटियुस के समय में, प्रशंसनीय वरिष्ठ साव्वतियुस ने नोवगोरोड क्षेत्र में स्थित, आदरणीय सिरिल के बेलोजेर्स्क मठ में सेवा की। इस धर्मनिष्ठ तपस्वी ने प्रार्थना, अखंड जागरण, भूख और प्यास तथा कठोर साधु जीवन के अन्य अनगिनत कष्टों के द्वारा अपने शरीर को वश में किया, और सभी साधु-संन्यासी कर्तव्यों को आलस्य के बिना निभाते हुए, मठाध्यक्ष और साधु-संघ के प्रति निरंतर आज्ञाकारिता बनाए रखी। अपने मठ के व्रतों के अटूट पालन के लिए, परम पूज्य सावतिय सभी के प्रिय और पूजनीय थे, और मठ के अन्य भिक्षुओं के लिए एक सदाचारी और परिश्रमी जीवन का आदर्श बने, इसलिए उनके नाम की मठ के समुदाय और मठाधीश द्वारा सदैव महिमा की जाती थी। लेकिन, यह दृढ़ता से जानते हुए कि इस सांसारिक जीवन में प्रशंसा लोगों से नहीं बल्कि ईश्वर से मांगी जानी चाहिए, आदरणीय व्यक्ति उस महिमा से परेशान थे जो उन पर प्रदान की गई थी और इसलिए उन्होंने निरंतर किरिलोव मठ छोड़ने पर विचार किया, जहाँ उन्होंने कई वर्षों तक परिश्रम किया था, और अपने मठ के श्रम के लिए एक नई जगह खोजने का, जहाँ वह लोगों से दूर गुमनामी और एकांत में रह सकें।

[6540] संत कैलस्ट्रेटस और उनके साथियों ने लगभग 304 ईस्वी में शहादत प्राप्त की।

[6541] अर्थात्, प्रभु यीशु मसीह।

[6542] मेट्रोपॉलिटन फोतिउस, जो मोरिया के मूल के एक ग्रीक थे, ने 1408 से 1431 तक यह पद संभाला।

[6543] नोवगोरोड गवर्नरेट के किरिलोव शहर में, बेलोये झील के दक्षिण में स्थित किरिलो-बेलोज़ेर्स्की मठ की स्थापना 1397 में आदरणीय सिरिल († 9 जून 1427) द्वारा की गई थी।

यह सुनकर कि नोवगोरोड क्षेत्र में नेवो झील[6544] थी, और उस पर वालाम नामक एक द्वीप[6545] था, जहाँ प्रभु के रूपांतरण को समर्पित एक मठ था, जिसके भिक्षु कठोर तपस्या का जीवन जीते थे, ईश्वर से अखंड प्रार्थना करते थे और अपने हाथों की मेहनत से अपना जीवन यापन करते थे, – आदरणीय साव्वतीय ने बेलोझेरो झील पर स्थित करिलिव मठ के मठाध्यक्ष और भ्राताओं से आशीर्वाद देने और उन्हें वालाम मठ में निवास करने की अनुमति देने का अनुरोध किया। उनका आशीर्वाद प्राप्त करने के बाद, आदरणीय साव्वती वलाम द्वीप पर पहुँचे, जहाँ मठ के भाइयों ने उनका हर्षोल्लास के साथ स्वागत किया। यहाँ भी, इस तपस्वी ने काफी समय बिताया। स्थानीय संतों के कठिन तपस्या अभ्यासों का अनुकरण करते हुए और अपनी मेहनत को लगातार बढ़ाते हुए, यहाँ भी, करिलिव मठ की तरह ही, आदरणीय साव्वती ने तपस्या में सभी को पीछे छोड़ दिया, जिससे उनका पुण्य जीवन वालाम में भी सभी को ज्ञात हो गया, क्योंकि उन्होंने अपने शरीर को पूरी तरह से थका दिया था और, अपने जीवनकाल में ही, पवित्र आत्मा का वासस्थान बन गए थे।

अपने नए निवास स्थान, वालाम मठ में, ठीक करिलिव मठ की ही तरह, आदरणीय सव्वती को सम्मानित और प्रशंसित किया गया; इसलिए आदरणीय पिता ने एक बार फिर से गहराई से दुख मनाना शुरू कर दिया, क्योंकि उन्हें भाइयों का सम्मान और प्रशंसा एक बोझ लगने लगी, और उन्होंने एक बार फिर से अपने तपस्या के प्रयासों के लिए एक शांत और एकांत स्थान खोजने पर विचार किया। इससे पहले, परम पूज्य पिताजी ने श्वेत सागर के ठंडे पानी के बीच बसे हुए, मुख्य भूमि से दो दिन की नौका यात्रा की दूरी पर स्थित, निर्जन सोलोवेत्स्की द्वीप[6546] के बारे में सुना था। उस सुनसान द्वीप की कहानियाँ सुनकर, परम पूज्य पिताजी की आत्मा प्रसन्न हुई, और वे मौन में अपने तपस्या के प्रयासों के लिए वहाँ बसने की तीव्र इच्छा से भर गए। उन्होंने वालाम मठ के मठाधीश से उन्हें रिहा करने के लिए विनम्रतापूर्वक अनुरोध करना शुरू कर दिया। हालाँकि, मठाधीश और अन्य संन्यासियों ने, उस आदरणीय व्यक्ति से प्रेम करते हुए और उन्हें ईश्वर के दूत के रूप में सम्मान देते हुए, ऐसे प्रशंसनीय सह-संन्यासी से वंचित होना नहीं चाहा, जो सभी के लिए सदाचार का आदर्श थे[6547] , और उन्होंने आदरणीय वरिष्ठ से उन्हें छोड़कर न जाने का आग्रह किया। वालाम के भिक्षुओं की विनतियों के आगे झुकते हुए, आदरणीय महंत कुछ और समय के लिए उनके मठ में रुके रहे; फिर, ईश्वर से प्रार्थना करने और स्वयं को उनकी पवित्र सहायता के हवाले करने के बाद, वे किसी के ध्यान में आए बिना, रात के अँधेरे में चोरी-छिपे मठ से निकल गए।

ईश्वर के मार्गदर्शन और संरक्षण से, वे सोलोवेत्स्की द्वीप के लिए रवाना हुए। समुद्र पहुँचने पर, आदरणीय संत की मुलाकात सोलोवेत्स्की द्वीप के विपरीत तट पर रहने वाले कुछ लोगों से हुई और उन्होंने उनसे द्वीप के बारे में पूछना शुरू किया। उन्होंने रेवरेंड फादर को बताया कि सोलोवेत्स्की द्वीप तट से बहुत दूर स्थित था, वहाँ की यात्रा कठिन और खतरनाक थी, और नावकि मुश्किल से ही दो दिनों की नौकायन के बाद द्वीप तक पहुँच पाते थे, और वह भी केवल शांत मौसम में। द्वीप के बारे में विस्तार से पूछताछ करने के बाद, आदरणीय सव्वतीय इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि यह मौन और मठवासी एकांत जीवन के लिए सबसे उपयुक्त स्थान था। उन्होंने जाना कि द्वीप की परिधि सौ वर्स्ट से अधिक थी; इसके आसपास मछलियाँ और समुद्री जीव पकड़े जाते थे; इसमें पीने योग्य मीठा पानी, मछलियों से भरे झील, ऐसे पहाड़ जिनकी चोटियाँ घने जंगलों से ढकी हैं, और युवा जंगलों से घिरी घाटियाँ हैं; यहाँ कई प्रकार की बेरी पाई जाती हैं; रेवरेंड ने जाना कि सोलोवेत्स्की द्वीप मानव आवास के लिए पूरी तरह से उपयुक्त है; फिर भी यह निर्जन है क्योंकि मुख्यभूमि तक पहुँच अत्यंत कठिन है। कई लोग, जइस , जो बार-बार वहाँ बसावट करने की इच्छा रखते थे, समुद्र के खतरों के डर से ऐसा नहीं कर सके। केवल कभी-कभार, अच्छे मौसम में, मछुआरे मुख्य भूमि से नाव चलाकर द्वीप पर जाते हैं, लेकिन एक बार उनकी मछली पकड़ने का काम पूरा हो जाने पर, वे तुरंत मुख्य भूमि पर वापस लौट आते हैं। तटीय निवासियों से

[6544] जिससे नेवा नदी निकलती है, झील लादोगा का मूल नाम झील लादोगा के प्राचीन नाम से लिया गया है।

[6545] लादोगा झील के उत्तरी भाग में। वलाम पर रूपांतरण मठ की स्थापना चौदहवीं शताब्दी की शुरुआत में आदरणीय सर्गियस और हर्मन ने की थी। यह ठीक से ज्ञात नहीं है कि दोनों तपस्वी कब निधन कर गए।

[6546] सफेद सागर में, अर्कांगेल्स्क प्रांत में स्थित छह सोलोवेत्स्की द्वीप, केम्स्की जिले के तट से 150 वर्स्ट और अर्कांगेल्स्क शहर से 400 वर्स्ट दूर स्थित हैं। इनमें से सबसे बड़ा सोलोव्की है, जो उत्तर से दक्षिण तक 23 वर्स्ट लंबा और 18 वर्स्ट चौड़ा है; तटरेखा के साथ द्वीप की परिधि 175 वर्स्ट है।

[6547] एक अनुभवी तपस्वी के रूप में, आदरणीय साव्वती, वलाम मठ में रहते हुए, नए भिक्षुओं के आध्यात्मिक पिता के रूप में कार्य करते थे, और उन्हें उनके तपस्या के प्रयासों में मार्गदर्शन देते थे। उनके शिष्यों में गेनाडी थे, जो बाद में नोवगोरोड के आर्चबिशप बने, और उन्होंने 1484 से 1504 तक यह पद संभाला।

यह सब सुनकर, आदरणीय सव्वतीय सोलोवेत्स्की द्वीप पर बसने की प्रबल इच्छा से भर गए। उस आदरणीय के इरादे के बारे में जानकर, तटीय लोगों ने उन्हें इस वचिार से रोकने की कोशशि की, कहते हुए:

'हे वरष्ठि! इतनी वृद्धावस्था में और कुछ भी न होते हुए, आप द्वीप पर क्या खाएंगे और पहनेंगे? और जब आप अब अपनी देखभाल भी नहीं कर सकते, तो आप इस ठंडी भूमि में, अन्य लोगों से दूर, अकेले कैसे रहेंगे?'

रेवरेंड ने उनसे उत्तर दयिा:

'मेरे बच्चों, मेरा एक प्रभु है जो एक बूढ़े आदमी को फरि से जवान कर देता है, ठीक वैसे ही जैसे वह एक शशिु का पालन-पोषण करके उसे वृद्धावस्था तक पहुँचाता है। वह गरीबों को समृद्ध करता है, ज़रूरतमंदों की ज़रूरतों को पूरा करता है, नंगों को कपड़े पहनाता है, और थोड़े से भोजन से भूखों को पूरी तरह तृप्त कर देता है, ठीक वैसे ही जैसे उसने एक बार रेगस्तिान में पाँच रोटियों से पाँच हज़ार लोगों को खाना खलिाया था (यूहन्ना 6:5-13)।

पवत्रि पुस्तकों से वृद्ध के वचन सुनकर, कुछ पोमोरी लोग उसकी बुद्धमिानी पर चकति हुए, जबकि अन्य, अपनी अज्ञानता में, उसका मज़ाक उड़ाते थे। इस बीच, रेवरेंड फादर, *'अपनी चतिाएँ प्रभु पर डालकर'* (भजन संहति 54:23), व्यागा नदी[6548] के कनिारे चले गए, जहाँ उनकी मुलाकात भक्षिु हरमन[6549] से हुई, जो वहाँ एक चैपल के पास रहते थे। रेवरेंड फादर साव्वती कुछ समय के लिए हरमन के साथ रहे। उनसे उन्होंने सोलोवेत्स्की द्वीप के बारे में वही बातें सीखीं जो उन्होंने पोमोरी लोगों से सीखी थीं। एक-दूसरे से परामर्श करने और ईश्वर में अपना वश्विास रखने के बाद, दोनों तपस्वयिों ने सोलोवेत्स्की द्वीप पर एक साथ जाने और बसने का संकल्प लयिा। एक नाव तैयार करके और अपने साथ थोड़ा भोजन और कपड़े, साथ ही आवश्यक काम के लिए औजार लेकर, उन्होंने ईश्वर से भक्तपिूर्वक प्रार्थना की और, अपनी सारी आशा उन पर रखकर, नाव पर चढ़ गए और शांत मौसम में प्रस्थान कयिा।

ईश्वर की मदद से, तीसरे दनि वे द्वीप पर पहुँचे और, आनंदति होकर और अपने आत्माओं को प्रसन्न करते हुए, उस ईश्वर का धन्यवाद कयिा, जसिने उन्हें यह सुनसान जगह दखिाई थी[6550] । तट पर उस स्थान पर जहाँ संन्यासयिों की नाव लगी थी, उन्होंने एक क्रॉस खड़ा कयिा। द्वीप के भीतरी हस्सि में कुछ दूरी तक यात्रा करने के बाद[6551] , पूजनीय भक्षिुओं ने झील के कनिारे एक अत्यंत सुंदर पहाड़ी क्षेत्र देखा, जहाँ उन्होंने स्थायी रूप से बसने का नरि्णय लयिा। वहाँ, एक कोठरी बनाकर, वे प्रभु के लिए जीने लगे, और कुदालों से मट्टिी खोदकर[6552] अपने लिए एक साधारण, तपस्वी आहार जुटाने के लिए परश्रिम करने लगे। पूजनीय भक्षिुओं ने अपने हाथों से काम कयिा और अपने होठों से प्रभु की स्तुति की, अनवरत प्रार्थना और दाऊद के भजनों के गायन के द्वारा आत्मा में उनके और नकिट आ गए।

कुछ समय बीत जाने के बाद, द्वीप के सबसे करीबी रहने वाले पोमोरी लोगों ने वहाँ बसे पूजनीय बुज़ुर्गों से ईर्ष्या करना शुरू कर दयिा; उन्होंने उन्हें भगा देने का संकल्प लयिा और आपस में कहा: 'हम इस द्वीप के सबसे करीबी पड़ोसी हैं, मानो इसके मालकि हों, क्योंकि हम करेलयिा की भूमि के मूल नविासी हैं; और इसलिए यह उचति है कि हमें, और हमारे बाद हमारी पीढ़ी-दर-पीढ़ी आने वाले बच्चों को, इस द्वीप के स्वामत्वि में हस्सि मलि।'

कुछ समय बाद, एक मछुआरा अपने दोस्तों की सलाह पर अपनी पत्नी और पूरे परविार के साथ उस द्वीप पर आया और संतों के कोठों के पास ही बस गया। वहाँ रहते हुए, उसने और उसके परविार ने झीलों में मछली पकड़ना शुरू कर दयिा। धन्य पति, हालांकि, अपनी मुक्ति की चति में मौन रहे और वहाँ बसे मछुआरे के परविार से अनभज्ञि रहे।

एक रवविार की सुबह, अपनी नयिमति प्रार्थनाएँ करने के बाद, पूज्य सव्वती ने एक धूपदान लयिा और अपनी कोठरी के पास स्थापति पवत्रि क्रॉस को धूप दखिाने के लिए बाहर गए। उसी क्षण, उन्होंने प्रहारों और चीखों की आवाज़ सुनी, मानो कसिी को पीटा जा रहा हो। रेवरेंड उन चीखों से भयभीत हो गए और यह मानकर कि यह केवल एक सपना था, उन्होंने खुद पर क्रॉस का नशिान बनाया, अपनी कोठरी में लौट आए, और उनके साथ रहने वाले धन्य हरमन को उन प्रहारों और चीखों के बारे में बताया जो उन्होंने सुनी थीं। अपनी कोठरी से बाहर नकिलकर और वही आवाज़ें सुनकर,

---

[6548] वगि नदी ओलोनेत्स और अरखांगेल्स्क प्रांतों से होकर बहती है और श्वेत सागर की ओनेगा खाड़ी में मलि जाती है। वह स्थान जहाँ आदरणीय सावतीय ने नविास कयिा, वगि नदी के मुहाने पर स्थति है (अब कैरेलयिन तट पर सोरोकी गाँव)।

[6549] सोलोव्की के पूजनीय जरमन की मृत्यु 1479 में हुई; उनका पर्व दविस 30 जुलाई है।

[6550] आदरणीय सव्वाती और जरमन 1429 में सोलोवेत्स्की द्वीप पर पहुँचे।

[6551] वर्तमान मठ से बारह वर्स्ट दूर, माउंट सेकरिनाया के पास; बाद में इस स्थल पर आदरणीय साव्वती को समर्पति एक चैपल के साथ एक आश्रम बनाया गया।

[6552] मोतगिा एक वशिेष प्रकार की कुदाल है।

आदरणीय हरमन ने उन चीखों का पीछा कयि, एक रोती हुई महलि को देखा और उससे पूछा कि उसके साथ क्या हुआ है और वह क्यों रो रही है। अपने आँसुओं के बीच, उस महलि ने बताया कि उसके साथ क्या हुआ था।

उसने कहा, 'जब मैं अपने पति से मलिने के लिए झील की ओर जा रही थी, तो मेरे सामने दो तेजस्वी युवक आए जिन्होंने मुझे पकड़ लिया और डंडों से बुरी तरह पीटा, और कहा: "इस जगह को छोड़ दो; तुम यहाँ रहने के लायक नहीं हो, क्योंकि ईश्वर ने इसे भिक्षुओं के निवास के लिए निर्धारित किया है; इसलिए इस जगह को तुरंत छोड़ दो, नहीं तो तुम्हें एक भयानक मृत्यु मिलेगी।' इसके बाद, वे तेजस्वी युवक नज़रों से ओझल हो गए।

धन्य हरमन, आदरणीय वृद्ध साव्वती के पास लौटकर, उन्होंने उनसे वह सब कुछ बताया जो उन्होंने मछुआरे की पत्नी से सुना था, और दोनों ने ईश्वर की स्तुति की; जबकि मछुआरा अपनी पत्नी और सामान को साथ लेकर, बिना किसी देरी के उस गाँव के लिए रवाना हो गया जहाँ वे पहले रहते थे। और उस समय से, किसी भी गृहस्थ ने सोलोवेत्स्की द्वीप पर बसाने की हिम्मत नहीं की, और केवल मछुआरे ही समय-समय पर मछली पकड़ने के लिए द्वीप पर आते थे।

कई वर्ष बीत जाने के बाद, धन्य हरमन ओनेगा नदी[6553] पर चले गए, जबकि पूजनीय सव्वाती, ईश्वर में गहरी आस्था के साथ, द्वीप पर अकेले रह गए। केवल सर्वज्ञ प्रभु, जो अपनी दया से अपने सेवक की रक्षा करते थे, और उनके पवित्र स्वर्गदूत, जो साव्वती से मिलने आते थे, जो देह में रहते हुए भी अदेहियों के समान थे, वही जानते थे कि द्वीप पर उनका वास कैसा था, उनका उपवास कैसा था, और उनके आध्यात्मिक पराक्रम क्या थे! जहाँ तक हमारी बात है, हम आदरणीय के तपस्वी जीवन की कठिनाइयों और कष्टों का अनुमान उसी स्थान की प्रकृति से लगा सकते हैं जहाँ वे बसे थे। एक दूरस्थ, निर्जन समुद्री द्वीप पर अकेले रहने वाले आदरणीय वृद्ध के लिए, ईश्वर के निरंतर ध्यान के चमत्कारों का अभ्यास करने के अलावा कोई दूसरा कार्य नहीं हो सकता था। और वास्तव में, अपने मन को ईश्वर के साथ निरंतर प्रार्थनापूर्ण संवाद में डुबोकर और अपनी अश्रुपूरित आँखें उनकी ओर मोड़कर, आदरणीय संत दिन-रात आहें भरते थे, शरीर से मुक्त होकर प्रभु के साथ एक होने की लालसा करते हुए।

अपने वृद्ध वयस्क काल में और ईश्वरीय परिश्रम के जीवन के बाद, यह महसूस करते हुए कि मृत्यु निकट आ रही है, आदरणीय सव्वतीय ने इस पर विचार करना शुरू कर दिया कि वह दिव्य रहस्यों को प्राप्त करने के योग्य कैसे ठहराए जा सकते हैं, जिनसे वह वालाम मठ छोड़ने के बाद से वंचित थे। इसके लिए ईश्वर से प्रार्थना करने के बाद, वह एक छोटी नाव पर चढ़ गया और उसकी प्रार्थना के उत्तर में समुद्र के शांत हो जाने के बाद, दो दिनों में नौकायन करके दूसरी किनारे पहुँच गया। तट पर उतरने के बाद, वह व्यागा नदी पर स्थित चैपल तक पहुँचने की इच्छा से स्थल मार्ग से चल पड़ा। संयोग से, उस समय एक निश्चित एबॉट नाथनाएल व्यागा में रुके हुए थे, जो वहाँ रहने वाले ईसाइयों से मिलने आए थे।

अपनी नियोजित यात्रा के अनुसार, रेवरेंड फादर, दैवीय कृपा से, अबॉट नाथानियल से मिले, जो एक बीमार व्यक्ति को पवित्र Communion देने के लिए पवित्र रहस्यों के साथ एक दूरस्थ गाँव की यात्रा कर रहे थे। पारंपरिक मठवासी अभिवादन के बाद, यात्रियों ने बातचीत शुरू की और यह जानने पर कि वे कौन हैं, वे एक-दूसरे से मिलकर बहुत खुश हुए। आदरणीय सव्वतीय इस बात से प्रसन्न हुए कि उन्हें वह मिल गया जिसकी वे तलाश कर रहे थे, जबकि आबट नाफानैल आदरणीय सव्वतीय के पुण्य जीवन के बारे में बहुत कुछ सुन चुके थे, इसलिए उन्हें आदरणीय सव्वतीय के सम्मानित सफेद बालों और संत समान मुखमंडल को देखने का सौभाग्य प्राप्त होने की खुशी थी। और धन्य सव्वतीय ने नाफानैल से कहा:

'पिताजी, मैं आपकी पवित्रता से विनती करता हूँ: ईश्वर द्वारा आपको पापमुक्ति का अधिकार प्रदान किया गया है, कृपया उन पापों को क्षमा करें जिन्हें मैं आपसे स्वीकार करने जा रहा हूँ, और मुझे मेरे प्रभु मसीह के परम पवित्र शरीर और रक्त की पवित्र सहभागिता प्रदान करें। क्योंकि कई वर्षों से मैं अपनी आत्मा को इस दिव्य भोजन से पोषित करने की तीव्र इच्छा से जल रहा हूँ। इसलिए, हे पवित्र पिता, अब मुझे पोषण दीजिए, क्योंकि मेरे प्रभु मसीह ने मुझे ईश्वर के प्रति आपका प्रेम दिखाया है, ताकि आप मुझे उन पापों से शुद्ध कर सकें जो मैंने अपनी जवानी से लेकर आज तक, वचन, कर्म और विचार में किए हैं।

[6553] ओलोनेत्स और अर्खान्गेल्स्क प्रांतों में ओनेगा नदी; यह ओनेगा की खाड़ी में बहती है।

'भगवान आपको क्षमा करें, भाई,' मठाधीश नाथनाएल ने उत्तर दिया; और, एक क्षण रुककर, उन्होंने अपने हाथ स्वर्ग की ओर उठाए और आँसुओं के साथ कहा: 'ओह, काश कि मुझे आपके पाप मिल जाते, आदरणीय, ताकि मैं अपनी लापरवाही का प्रायश्चित कर सकूँ!'

संत सव्वती ने नाथनाएल से कहा:

'मैं आपकी विनती करता हूँ कि कृपया मुझे बिना देरी के दिव्य सहभागिता प्रदान करें, क्योंकि मेरे जीवन का अंत निकट आ गया है।'

मठाधीश ने उत्तर दिया:

'महाशय, पिता सव्वतियिस, आप अभी चैपल जाइए और वहाँ मेरा इंतज़ार कीजिए: मैं बीमार व्यक्ति से मिलने जा रहा हूँ और जल्द ही आपके पास लौट आऊँगा; मैं सुबह-सुबह आपके पास आऊँगा।'

इस पर संत साव्वतयि ने कहा:

'पिताजी, सुबह तक देरी न करें: क्योंकि हम नहीं जानते कि कल हम जीवित भी रहेंगे या नहीं, यह तो दूर की बात है कि हम बाद में क्या होगा यह कैसे जान सकते हैं।'

संत सव्वती ने ये शब्द कहे, जो उनके निकटवर्ती निधन का संकेत दे रहे थे।

संत सावती में ईश्वर के हृदय के अनुरूप एक व्यक्ति को पहचानते हुए, मठाधीश नाथनाएल अब उनका विरोध करने की हिम्मत नहीं करते थे, बल्कि, उनकी इच्छा पूरी करते हुए, उनका पाप-स्वीकार सुनने के बाद, उन्होंने उन्हें मसीह के दैवीय रहस्य प्रदान किए और, भाईचारे का चुंबन करने के बाद, कहा:

'हे ईश्वर के सेवक, मैं आपसे विनती करता हूँ: व्यागा के चैपल पर मेरा इंतज़ार करें।'

संत ने मठाधीश का वहाँ इंतज़ार करने के लिए सहमति दे दी। मठाधीश उस बीमार व्यक्ति के पास गए, जबकि पूजनीय साव्वतयि नियुक्त स्थान पर चले गए, जहाँ उन्होंने पवित्र भोज प्राप्त करने और उन पर ईश्वर की सभी कृपाओं के लिए धन्यवाद दिया, फिर वे उस कोठरी में प्रवेश कर गए जो कभी चैपल हुआ करती थी और वहाँ खुद को बंद कर लिया, और अपनी धन्य आत्मा को ईश्वर के हाथों सौंपने की तैयारी करने लगे।

उस समय, वेलिकी नोवगोरोद का जॉन नामक एक व्यापारी, अपनी समान के साथ व्यागा नदी में नाव से यात्रा करते हुए, किनारे पर बनी चैपल पर रुक गया। अपनी नाव से उतरकर, वह चैपल में पवित्र प्रतिमाओं के सामने नमन करने लगा और आदरणीय सव्वती की कोठरी में प्रवेश कर उनका आशीर्वाद प्राप्त किया। अपना आशीर्वाद देने के बाद, संत सावति ने पवित्र शास्त्रों से व्यापारी को उपदेश दिया और उसे अच्छे कर्म करने के लिए प्रेरित किया। व्यापारी बहुत अमीर था, उसके दास थे, और वह संत को अपने सामान में से उसकी आवश्यकता की हर चीज़ देकर पुरस्कृत करना चाहता था। हालाँकि, संत, व्यापारी से कुछ भी स्वीकार नहीं करना चाहते थे, उन्होंने कहा:

'यदि आप दान-पुण्य करना चाहते हैं, तो आपके बीच जरूरतमंद लोग हैं, लेकिन मुझे किसी चीज़ की आवश्यकता नहीं है।'

इसके बाद, पूज्य पिता ने जॉन को गरीबी के प्रेम, अपने घर वालों के प्रति दया, और अन्य सद्गुणों के बारे में समझाया। व्यापारी इस बात से दुखी था कि बड़े संत ने उससे कुछ भी नहीं लिया था। उसे सांत्वना देने के लिए, पूज्य पिता ने कहा:

– मेरे पुत्र जॉन! सुबह तक यहीं रुक जाओ – और तुम ईश्वर की कृपा देखोगे और सुरक्षित रूप से अपने रास्ते पर चल पड़ोगे।

लेकिन जॉन वहाँ से ही समुद्र यात्रा करना चाहता था। और अचानक गरज और बिजली के साथ एक तूफान आ गया, और नदी और समुद्र उफनने लगे। मौसम में अचानक आए बदलाव और पानी के उग्र उफान को देखकर, जॉन डर गया और रात वहीं रुक गया। जब सुबह हुई, तो वह अपनी यात्रा शुरू करने से पहले पूजनीय सव्वती से आशीर्वाद लेने की इच्छा से सेल में गया – क्योंकि अब तूफ़ान थम गया था। उसने भक्तिपूर्वक संत की कोठरी के दरवाज़े पर दस्तक दी, लेकिन कोई जवाब नहीं मिला। दूसरी और तीसरी बार दस्तक देने के बाद, दरवाज़ा खुला, और कोठरी में प्रवेश करते ही जॉन ने संत को एक लबादे और मुकुट में बैठे देखा, जिसके बगल में एक धूपदान रखा था। और व्यापारी ने संत से कहा:

'हे ईश्वर के सेवक, आपकी पवित्रता के प्रति प्रेम और विश्वास के कारण आपके सामने आने की हिम्मत करने के लिए मुझे क्षमा करें। मैं आपके श्रीचरणों से निवेदन करता हूँ कि कृपया मुझे अपनी कृपा-दृष्टि से विदा करें, ताकि आपकी पवित्र प्रार्थनाओं की सुरक्षा में, मैं सुरक्षित यात्रा कर सकूँ।'

जॉन के ये शब्द कहते ही, न तो कोई आवाज़ आई और न ही कोई प्रतिक्रिया हुई, क्योंकि पूजनीय संत की पवित्र आत्मा पहले ही प्रभु के पास जा चुकी थी, और उसी क्षण पूरी कोठरी में एक शक्तिशाली सुगंध फैल गई। जब जॉन ने देखा कि सम्माननीय फादर ने उसे कोई उत्तर नहीं दिया, और यह सोचकर कि वह सो रहे हैं, वह उनके पास गया और उन्हें अपने हाथ से छुआ; लेकिन, यह महसूस करते हुए कि वह प्रभु के पास चले गए हैं, वह भय से भर गया और, उसी समय, उसकी आँखों में आँसू आ गए, और गर्म आँसू उसकी आँखों से बहने लगे।

उसी क्षण, मठाधीश नाथनेल बीमार व्यक्ति से मिलने से लौट रहे थे। वे कोठरी में दाखिल हुए और संत के निधन की अवस्था देखकर जोर-जोर से रो पड़े तथा उनके पवित्र शरीर को चूमने लगे। मठाधीश और व्यापारी ने परम पूज्य पिता के बारे में एक-दूसरे से बात की: मठाधीश ने बताया कि कैसे उन्हें कल ईश्वर के सेवक को दिव्य रहस्य प्रदान करने के लिए योग्य समझा गया था, जबकि व्यापारी ने बताया कि कैसे उन्हें परम पूज्य पिता के साथ आत्मा के लिए लाभकारी बातचीत करने का सम्मान मिला था। अंतिम संस्कार के भजनों के बाद, उन्होंने परम पूज्य पिता के पवित्र शरीर को दफना दिया, और मिट्टी को मिट्टी के हवाले कर दिया।

आदरणीय सव्वती का निधन September[6554] के सत्ताइसवें दिन हुआ। इस दिन उनकी स्मृति का सम्मान परमेश्वर की महिमा के लिए किया जाता है, जो त्रिमूर्ति, पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा में महिमामय है, जिन्हें सदा के लिए सम्मान और पूजा प्राप्त हो। आमीन।

द्रोपारियन, स्वर 3:

जगत से अलग होकर और मरुस्थल में निवास कर, तुमने दुख, जागरण और प्रार्थना के द्वारा सत्कर्मों में परिश्रम किया: अत; अपनी मृत्यु के पश्चात् भी, हे सव्वती, हमारे पिता, तुम चंगाई प्रदान करते हो। हमारे ईश्वर मसीह से प्रार्थना करो कि हमारी आत्माओं का उद्धार हो।

कॉन्टाकियन, स्वर 2:

दुनिया के कोलाहल से भागकर, आप बुद्धिमानी से एक समुद्री द्वीप पर बस गए; अपना क्रूस उठाकर, आपने प्रार्थना, जागरण और उपवास के माध्यम से मसीह का अनुसरण किया, और तपस्या से अपने शरीर को वश में किया। इस प्रकार आप धर्मपरायण लोगों के लिए शिक्षा का स्रोत बने: इसी कारण, प्रेम से, हम आपकी स्मृति मनाते हैं, आदरणीय सव्वती; हम सभी के लिए हमारे ईश्वर मसीह से अनवरत प्रार्थना करें।

पवित्र प्रेरितों मार्क, अरिस्तार्कस और जेनस का स्मरणोत्सव

27 सितंबर को स्मरणोत्सव

पवित्र प्रेरित मरकुस, जिन्हें यूहन्ना मार्कोस ([6555]) के नाम से भी जाना जाता है, जिनके बारे में संत लूकस प्रेरितों के काम (प्रेरितों के काम 15:37) में बात करते हैं, को प्रेरितों द्वारा बेबीलोन का बिशप नियुक्त किया गया था और उन्होंने सुसमाचार का प्रचार करने में उत्साहपूर्वक परिश्रम किया। उन्होंने परमेश्वर के सामने इतनी निर्भीकता प्राप्त की कि उनकी परछाईं भी बीमारों को चंगा कर देती थी।

संत अरिस्तार्कस, जिनका उल्लेख प्रेरित पौलुस ने अपनी पत्रिकाओं में किया है (कुलुस्सियों 4:10; फिलिमोन 1:24), सीरिया के अपामिया के बिशप थे[6556] ।

[6554] 1435 में। पूजनीय एक के अवशेषों को 1465 में विगा नदी के पास उनकी मृत्यु स्थल से सोलोवेत्स्की द्वीप पर स्थानांतरित किया गया।

[6555] प्रेरित पौलुस और बरनाबास के पहले प्रेरितिक प्रवास में एक साथी; प्रेरित पौलुस के दूसरे प्रेरितिक प्रवास के दौरान, प्रेरित बरनाबास, अन्यजातियों के प्रेरित से अलग हो जाने के बाद, यूहन्ना मरकुस के साथ एक अलग प्रेरितिक प्रवास पर निकले।

[6556] सीरिया में अपमेआ दक्षिण-पश्चिमी सीरिया में, सीरिया की सबसे बड़ी नदी ओरोन्टेस के किनारे स्थित थी, जो इस शहर के पास भूमिगत से निकलती है, जिससे एक बड़ी झील बनती है। प्राचीन काल में, अपमेआ सीरिया के अपमेआ प्रांत का प्रमुख शहर था और इसका नाम सीरिया के शासक सेल्यूकस प्रथम निकेटर की पत्नी, अपमे के नाम पर पड़ा था, जिनके कारण यह शहर महत्वपूर्ण था।

संत ज़ीना एक वकील थे[6557] (अपनी प्रेरतिता से पहले), और बाद में डायोस्पोलसि के बशिप बने[6558] ।

पवत्रि शहीद एपचिारयिा की स्मृत

27 सतिंबर को स्मरण कयिा जाता है

मसीह की शहीद, एपखिारयिा, डायोक्लेटयिन के शासनकाल में रोम में रहती थीं[6559] । गवर्नर सीज़रयिस ने उन्हें गरिफ्तार करने और मुकदमे के लिए अपने सामने लाने का आदेश दयिा। मसीह के नाम की उनके दृढ़ स्वीकारोक्त के लिए, उन्हें फांसी दी गई और कोड़ों से पीटा गया, जसिके बाद 40 सैनकिों ने उन्हें टनि के हथौड़ों से मारा; लेकनि, उनकी प्रार्थनाओं के माध्यम से, एक स्वर्गदूत ने उन्हें गरिा दयिा। इन सभी यातनाओं के बाद, उसकी कलहट एक तलवार से काट दी गई। जसि पत्थर पर पवत्रि शहीद खड़ी थीं, उससे बहुत सारा पानी बह नकिला।

परम पूजनीय इग्नाशयिस की स्मृत।

27 सतिंबर को स्मरणोत्सव

ये पूजनीय संत कैपाडोसयिा में सम्राट नकिेफ़ोरस फोकास और जॉन त्समिसि्केस[6560] के शासनकाल के दौरान रहते थे। बचपन से ही, उनके माता-पतिा ने उन्हें परमेश्वर को समर्पति कर दयिा था, ठीक वैसे ही जैसे उन्होंने एक बार सैमुअल[6561] के साथ कयिा था। वयस्क होने पर, उन्होंने मठवासी संकल्प लिए और जल्द ही उन्हें एक पुरोहति (presbyter) के रूप में नयिुक्त कयिा गया, और बाद में एक मठाधीश (abbot) बनाया गया। उन्होंने अपने मठ के लिए बहुत कुछ कयिा[6562] : उन्होंने इसका वसि्तार कयिा, इसे सुशोभति और समृद्ध कयिा, इसके भीतर पवत्रि भवषि्यवक्ता इलयिाह को समर्पति दो चर्च बनाए, और एक अलग शहर में पवत्रि प्रेरतिों को समर्पति एक और चर्च स्थापति कयिा। इसके अलावा, उन्होंने अपने मठ के चारों ओर एक मजबूत और भव्य दीवार खड़ी की। एक बार कॉन्स्टेंटनिोपल की यात्रा करने के बाद, जहाँ उन्होंने एक मठ को उपहार के रूप में एक पवत्रि क्रॉस और पवत्रि सुसमाचार भेंट कयिा, वे अपनी वापसी की यात्रा पर पेट की बीमारी से ग्रस्त हो गए और अमोरयिा[6563] में नधिन हो गया। उन्हें उस शहर के एक चर्च के पास दफनाया गया था। जब सर्दी बीत गई, तो उसके मठ के पादरयिों ने उसके शरीर को स्थानांतरति करने की इच्छा व्यक्त की। सारकोफैगस खोलने पर, उन्होंने उसका शरीर पूरा और अक्षुण्ण पाया, जसिसे एक अद्भुत सुगंध नकिल रही थी। उन्होंने श्रद्धापूर्वक उसे उठाया और चर्च के बरामदे में रख दयिा, और परमेश्वर की महमिा की, जो अपने संतों में अद्भुत हैं।

11 अक्टूबर

28 सतिंबर (पुराने कैलेंडर के अनुसार)

[6557] संत ज़ीना प्रेरति पौलुस की शषि्या और सहकर्मी थीं। लगभग 64 ईस्वी में, जब प्रेरति पौलुस तितुस को अपना पत्र लखि रहे थे, तब वे तितुस के साथ क्रीट में परशि्रम कर रहे थे। 'वधि-विद्वान' (या 'लखिारी') ऐसे वद्वान पुरुष थे जो, साधारण और सरल आम लोगों के बीच, वशिषाधकिार प्राप्त व्यक्तयिों का एक वर्ग बनाते थे, जो कानून में नपिुण थे और धार्मकि न्यायालयों में कानूनी मामलों के लिए जम्मिेदार थे।

[6558] डायोस्पोल यरूशलेम से जोपा (याफ़ो) जाने वाले उत्तरी मार्ग पर एक नगर है।

[6559] यह चौथी शताब्दी की शुरुआत में था।

[6560] बाइज़ेंटाइन सम्राट नकिेफ़ोरस द्वतिीय फोकास ने 963 से 969 तक शासन कयिा; उनके उत्तराधकिारी जॉन त्समिसि्केस ने 969 से 975 तक शासन कयिा।

[6561] 1 शमूएल 1:1–28

[6562] गहरी नदी के उद्धारकर्ता का मठ; 9वीं शताब्दी ईस्वी की शुरुआत में स्थापति, यह एशयिा माइनर में, मर्मरा सागर के तट पर, कॉन्स्टेंटनिोपल के पास स्थति है।

[6563] अमोरयिा एशयिा माइनर में, फ्राइजयिा में स्थति था, और यह एक समृद्ध और घनी आबादी वाला शहर था।

हमारे पूजनीय पति चैरटिन द कन्फैसर का जीवन

28 सतिंबर को स्मरणोत्सव

आदरणीय चारटिन, लाइकोनिया के धर्मप्रांत[6564] के इकोनियम शहर में रहते थे। वे एक धर्मनष्ठि ईसाई थे, जो अपने सद्गुणों के लिए प्रसद्धि थे, और अधर्मी राजा ऑरेलियन के शासनकाल में उन्होंने स्वयं को मसीह के नाम का एक कन्फेशर (स्वीकारकर्ता) साबति किया[6565] । क्योंकि जब राजा का अधर्मी फरमान सभी प्रदेशों में फैल गया, जसिमें ईसाइयों को मूर्तियों की बलि चढ़ाने के लिए मजबूर किया गया और आज्ञा न मानने वालों को मृत्युदंड देने का आदेश दिया गया, तो चैरटिन को उस क्षेत्र के हेगेमोन द्वारा इकोनियम में हिरासत में ले लिया गया, क्योंकि वह अपनी धार्मिकता के लिए ईसाइयों में सबसे अधिक विशिष्ट थे और सद्गुणों से प्रकाशमान थे। उसे बाँधकर अधर्मी न्यायालय के सामने लाया गया, जहाँ राज्यपाल ने उससे पूछा:

'तुम उन प्रसद्धि देवताओं की पूजा क्यों नहीं करते, जिनके सामने राजा और सभी लोग सिर झुकाते हैं?'

चारटिॉन ने उत्तर दिया:

'विदेशियों के सभी देवता राक्षस हैं जो एक बार सर्वोच्च ईश्वर के समान बनने की कोशिश करते थे, और अपने अहंकार के कारण स्वर्ग से गिरकर पाताल लोक की गहराइयों में फेंक दिए गए थे; अब, हालांकि, वे मूर्ख और भ्रामक लोगों द्वारा देवताओं के रूप में सम्मानित होने का प्रयास करते हैं। हालाँकि, वे और जो उनके आगे सिर झुकाते हैं, वे दोनों जल्द ही धुएँ की तरह शीघ्रता से नष्ट हो जाएँगे और लुप्त हो जाएँगे: इसीलिए मैं उनकी पूजा नहीं करता; मैं सच्चे ईश्वर में विश्वास करता हूँ, उसकी सेवा करता हूँ और उसकी पूजा करता हूँ, क्योंकि वह सभी चीजों का सृष्टकिर्ता, संसार का उद्धारकर्ता है, जो हमेशा के लिए जीवित है।

'इस एक ही असभ्य उत्तर से,' राज्यपाल ने कहा, 'तू मौत का पात्र बन गया है, क्योंकि तूने अमर देवताओं का अपमान करने की हिम्मत की है, और हम, जो उनकी पूजा करते हैं, हमें पागल और भटका हुआ कहने की हिम्मत की है; केवल इसी एक कारण से तेरा बदनाम करने वाला सिर तलवार से काट दिया जाना चाहिए। लेकिन चूँकि हमारे देवता धीरजवान हैं और उन पर हुए अपमान का बदला लेने में कोई जल्दबाज़ी नहीं करते, मैं तुम पर दया दखिाऊँगा और तुरंत तुम्हारा नाश नहीं करूँगा; शायद, होश में आकर, आप समझदारी दखिाएँगे और हमारे साथ उन लोगों को बलदिान देंगे जिनका आप अब अपमान कर रहे हैं, और अपने द्वारा किए गए पाप के लिए उनसे क्षमा माँगेंगे; वे, जो द्वेषी नहीं हैं, आपको स्वीकार करने और आपके द्वारा किए गए अपमान के लिए आपको क्षमा करने को तैयार हैं।

चैरटिॉं ने उत्तर दिया:

'यदि तुम्हारी मूर्तियाँ देवता हैं, तो हेगेमोन, तुम गलत हो कि तुम उन अपमानों को क्षमा कर दो जिनसे मैं उनका अपमान करता हूँ; क्योंकि हर किसी को अपने देवता के सम्मान के लिए खड़ा होना चाहिए और उसके प्रति उत्साह दखिाना चाहिए। लेकिन यदि वे देवता नहीं हैं, तो तुम व्यर्थ ही लोगों को उनकी पूजा करने का आदेश देते हो। यह जान लो: कोई यातना मुझे जीवित ईश्वर से दूर नहीं कर सकती या मुझे नीच मूर्तियों का सम्मान करने के लिए प्रेरित नहीं कर सकती; क्योंकि मैं धन्य प्रथम शहीद थेकला[6566] की शष्यिा हूँ, जो हमारे इकोनियम में शहादत की उज्ज्वल भोर के रूप में चमकीं। उन्हें भी इस पराक्रम में महान शक्षिक – संत पौलुस द्वारा नर्दिेशित किया गया था, जिनके साथ मैं अब कहता हूँ: 'मुझे परमेश्वर के प्रेम से कौन अलग कर सकता है – क्या वह संकट होगा, या क्लेश, या उत्पीड़न, या अकाल, या तलवार, या कोई अन्य परीक्षा?'[6567] । तब राज्यपाल ने कहा:

[6564] एशिया माइनर में, लिकाओनिया का प्रांत, और उसके साथ ही लिकाओनिया का धर्मप्रांत, 18 शहरों से मिलकर बना था। इकोनियम लिकाओनिया के धर्मप्रांत का प्रमुख शहर था। वहाँ विधर्मियों के बपतस्मिा के संबंध में एक परिषद आयोजित की गई थी (यूसेबियस, चर्च का इतिहास, पुस्तक 7, अध्याय 6)।

[6565] प्रारंभिक चर्च में, 'कन्फेशर्स' शब्द उन ईसाइयों पर लागू किया जाता था जिन्होंने मूर्तिपूजकों के सामने मुकदमे का सामना करने के लिए बुलाए जाने पर ईसाई धर्म का त्याग नहीं किया और जिन्हें ऐसे यातनाओं से गुजारा गया, जिनका परिणाम मृत्यु नहीं हुआ। इसके अलावा, यह उपाधि उन ईसाइयों पर भी लागू की गई थी जो परम पुण्य का जीवन जीते थे, संसार और उसकी प्रलोभनों के विरुद्ध संघर्ष करते थे और इस प्रकार उद्धारकर्ता मसीह के प्रति अपनी भक्ति की गवाही देते थे।

[6566] यहाँ 'शष्यि' का अर्थ 'अनुयायी' है, क्योंकि संत चारटिॉन, प्रेरितों के समकालीन संत थेक्ला के वास्तविक शष्यि नहीं हो सकते थे: वह तीसरी शताब्दी के उत्तरार्ध और चौथी शताब्दी के पूर्वार्ध में रहते थे।

[6567] रोमियों 8:35 का एक थोड़ा बदला हुआ पाठ, जहाँ प्रेरित पौलुस मसीहा उद्धारकर्ता के प्रति अपनी भक्ति व्यक्त करते हैं।

'यदि हमारे देवता देवता नहीं होते, जैसा आप कहते हैं, तो उन्होंने हमें समृद्ध जीवन, धन, महिमा और स्वास्थ्य नहीं दिया होता।'

चारिटॉन ने उत्तर दिया:

'हे हेगेमोन, तुम यह मानकर भूल कर रहे हो कि तुमने यह सब अपने झूठे देवताओं से प्राप्त किया है, जो स्वयं दरिद्र हैं और उनके पास अपने विनाश के सिवा और कुछ भी नहीं है; क्योंकि परमेश्वर की अनुमति के बिना दुष्टात्माओं के पास भी सूअरों पर कोई शक्ति नहीं है (मत्ती 8:31–32); और क्या मूर्तियाँ स्वयं कुछ भी न होते हुए किसी को कुछ दे सकती हैं? वे अपने हाथ नहीं फैलाएंगे, न अपने पैरों से चलेंगे, न अपनी जीभ से बोलेंगे, न अपनी आँखों से देखेंगे, न अपने कानों से सुनेंगे, क्योंकि उनमें कोई आत्मा नहीं है। यदि आप सत्य जानना चाहते हैं, तो इसे आज़माएँ और आप उनकी निरर्थकता देखेंगे: मूर्ति के मुँह पर एक जलती हुई मोमबत्ती रखें और उसे जला दें - क्या उसे कोई दर्द महसूस होगा? एक कुल्हाड़ी लो और उसके पैर काट दो – क्या वह चिल्लाएगा? एक हथौड़ा लाओ और उसकी पसलियाँ कुचल दो – क्या वह कराहेगा? सचमुच, तुम कुछ भी नहीं सुनोगे, क्योंकि उसमें न तो जीवन है और न ही सांस।

यह सुनकर राज्यपाल क्रोध से आग-बबूला हो गया और एक नशे में धुत व्यक्ति की तरह गुस्से में चिल्लाने लगा, जिससे संत अपनी बात जारी नहीं रख सके। उसने तुरंत आदेश दिया कि संत को पकड़ लिया जाए, नग्न कर दिया जाए और उसे क्रूस के आकार में फैलाकर चाबुक से बेरहमी से पीटा जाए; लेकिन संत ने इसे बहादुरी से सहन किया, यह संकल्प कर लिया था कि अपने स्रष्टा का त्याग करके अन्याय में जीने से बेहतर है कि प्रभु मसीह के लिए मरना।

जब संत को कोड़े मारे जा रहे थे, तो उनके यातनाकर्ता ने उनसे पूछा:

'क्या तुम, चैरटिन, अमर देवताओं को बलिदान दोगे, या तुम और भी बड़े घाव सहना चाहते हो?'

'यदि मेरे लिए अपने उद्धारकर्ता के लिए हजार बार मरना संभव होता,' शहीद ने उत्तर दिया, 'तो मैं राक्षसों के सामने झुककर जीने की तुलना में वह करना पहले स्वीकार करता।'

संत को उसके पूरे शरीर पर इतनी बुरी तरह पीटा गया कि उसके आंतरिक अंग दिखाई दे रहे थे; क्योंकि उसका मांस हड्डियों से गिर रहा था, खून नदी की तरह बह रहा था, और उसका पूरा शरीर एक लगातार घाव बन गया था। अंत में यह महसूस करते हुए कि वह मुश्किल से जीवित है, उन्होंने उसे पीटना बंद कर दिया और यह सोचकर कि वह जल्द ही मर जाएगा, उसे अपने कंधों पर उठाकर कालकोठरी में ले गए। वह न केवल खुद से चलने में पूरी तरह असमर्थ था, बल्कि एक भी शब्द बोलने में असमर्थ था, और केवल हल्की-हल्की साँस ले रहा था: उसे इतनी बुरी तरह घायल कर दिया गया था। उसे कालकोठरी में रखकर, उसके यातना देने वाले चले गए।

अपने पीड़ित के धैर्य को देखकर, ईश्वर ने अपनी सहायता से उसे मजबूत किया, जल्द ही उसके घावों को भर दिया, और उसी व्यक्ति को जीवित और स्वस्थ कर दिया जिसे दुष्ट लोग मृत देखना चाहते थे, ताकि वह दाऊद के साथ कह सके: *'मैं मरने नहीं, पर जीने ही वाला हूँ, और यहोवा के कामों का प्रचार करूँगा'* (भजन संहिता 117:17)। तब उसे फिर से अदालत के सामने लाया गया; और, पहली बार से भी अधिक साहस दिखाते हुए, उसने अपने यातना देने वाले में और भी अधिक क्रोध जगाया। गवर्नर ने संत के शरीर को मोमबत्तियों से झुलसाने का आदेश दिया, ताकि उसका पूरा शरीर भोजन के लिए तैयार किए गए मांस की तरह भून जाए। फिर भी, अपने प्रभु मसीह के लिए ऐसे यातनाएँ सहते हुए, वह आनंदित हुआ और उसे एक बार फिर उसी कालकोठरी में डाल दिया गया।

उस समय, सम्राट ऑरेलियन की मृत्यु हो गई, क्योंकि ईसाइयों का रक्त बहाने के कारण उसे ईश्वर के क्रोध की सजा मिली थी। बाइजेंशियम और हेराक्लिआ के बीच यात्रा करते समय, वह पहले स्वर्ग से गड़गड़ाहट की एक प्रचंड गर्जना से भयभीत हुआ, जिसने उसकी निकट मृत्यु का पूर्वाभास दिया; और फिर उसी यात्रा के दौरान, उसे अपने ही गृहस्थों ने द्वारा हत्या कर दी और इस प्रकार उसका सांसारिक जीवन एक दयनीय अंत को पहुँचा। उनकी मृत्यु के बाद, ईसाइयों पर अत्याचार बंद हो गए, और मसीह के बंदियों को निर्वासन, बेड़ियों और काल-कोठरियों से मुक्त कर दिया गया; क्योंकि सम्राट टैसाइटस, जिन्होंने ऑरेलियन की मृत्यु के बाद राजदंड ग्रहण किया, अपने से पहले शासन करने वाले सीज़र की फांसी से सबक सीखकर, अपने शासन के सभी क्षेत्रों में एक फरमान जारी कर दिया कि सभी ईसाइयों को मुक्त कर दिया जाए। उसे डर था कि अगर वह ईसाइयों के प्रति कठोर हुआ तो उसका भी वही हश्र होगा जो ऑरेलियन का हुआ था। और फिर विश्वासियों पर महान आनंद छा गया: कैदियों को रिहा कर दिया गया, जिन्हें निर्वासित किया गया था वे अपने निर्वासन के स्थानों से लौट आए, और बिशप, पुरोहित और सामान्य लोग अपने अत्याचारियों के डर से वहां छिपे हुए रेगिस्तानों और गुफाओं से बाहर निकले; और, एक-दूसरे को अभिवादन करते हुए, उन्होंने चर्च की शांति पर

आनंद मनाया। तभी पूजनीय चैरटिन कन्फेशर जेल से रिहा हुए। फिर भी, उन्हें इस बात की प्रसन्नता नहीं थी कि उन्हें अंत तक पीड़ा सहने की अनुमति नहीं मिली थी, क्योंकि वे जीवित रहने के बजाय पीड़ा के माध्यम से अपना शहीद का मुकुट पूरा करना पसंद करते थे; उनके लिए मसीह के लिए मरना, रिहा होने से कहीं अधिक प्रसन्नताजनक होता। तथापि, दैवीय अनुग्रह ने कई लोगों के लाभ के लिए उनके जीवन को लंबा कर दिया, ताकि वे स्वर्गीय निवासों में परमेश्वर के सामने अकेले नहीं, बल्कि स्वेच्छा से शहीद हुए संतों के साथ, एक चरवाहे के साथ उसकी भेड़ों और एक पिता के साथ उसके बच्चों की तरह प्रकट हों।

उस समय से, मसीह के घावों से सुसज्जित एक योद्धा, संत चारिटोन ने संसार और संसार में जो कुछ भी है, उसे त्याग दिया; अपना क्रूस उठाकर, वह एक कठिन मार्ग पर चल पड़ा और एक जीवित मृत व्यक्ति बन गया - संसार के लिए मृत, परन्तु परमेश्वर के लिए जीवित। क्योंकि, प्रभु यीशु के चिन्ह (गलातियों 6:17) अपने शरीर पर धारण किए हुए, उन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन प्रभु को समर्पित कर दिया और उनके साथ क्रूस पर चढ़ाए गए; और यह सुनिश्चित करने के लिए कि वे हमेशा प्रभु के दिव्य दुखों को अपनी आँखों के सामने रखें, वे यरूशलेम के लिए रवाना हो गए, जहाँ हमारे प्रभु ने क्रूस पर अपना प्राण त्यागा था। जब वह वहाँ यात्रा कर रहा था और पहले ही यरूशलेम के पास आ चुका था, तो वह डाकुओं के हाथ लग गया, जिन्होंने उसके पास कुछ भी कीमती न पाकर, उसे पकड़ लिया और उसे अपनी गुफा में खींच ले गए ताकि वहाँ उसे क्रूर मृत्यु दे सकें। हालाँकि, उन्होंने उसे नहीं मारा, क्योंकि वे यात्रियों को लूटने के लिए उन्हें ढूँढ़ने के लिए जल्दी से निकल पड़े; और संत चारिटॉन को गुफा में बंधा हुआ छोड़ दिया। उन्होंने, हालांकि, ठीक वैसे ही जैसे पहले जब वे बंधन में और पीड़ा में थे, ईश्वर का धन्यवाद किया, ईश्वर की अनुमति से जो भी मृत्यु उन्हें प्राप्त हो, उसे स्वीकार करने के लिए तैयार थे। उसी क्षण, उन्होंने शैतान से साहसपूर्वक कहा:

'मैं जानता हूँ, हे शैतान, कि तू स्वयं मुझसे सामना करने से डरकर, मेरे विरुद्ध डाकू भेजे हैं और, मेरे उद्देश्य को विफल करने की इच्छा से, इस मार्ग पर मेरे लिए एक जाल बिछाया है। लेकिन यह जान ले, हे शापित: मुझ पर तेरी नहीं, बल्कि मेरे ईश्वर की सहायता से मैं तुझ पर विजय प्राप्त करूँगा; क्योंकि भले ही डाकू मुझे मार डालें, मुझे परमेश्वर की दया पर भरोसा है कि मुझे परमेश्वर की पवित्र विश्राम की विरासत मिलेगी, जबकि तुम्हें गेहेना की विरासत मिलेगी[6568] । मैं अनंत जीवन के लिए उठूँगा, जबकि तुम अनंत मृत्यु में मर चुके हो, और तुम्हारे कष्ट का कोई अंत नहीं होगा। हालाँकि, मेरा प्रभु मुझे लुटेरों के हाथों से जीवित बचा सकता है और मुझे मृत्यु से बचा सकता है, जैसे उसने इसहाक को बलिदान होने से बचाया (उत्पत्ति 22:1–24), युवकों को भट्टी से (दानिय्येल 2:1–49), दानिय्येल को सिंहों से (दानिय्येल 14:1–42), और संत थेक्ला को आग और जानवरों से।

जब संत ये शब्द बोल ही रहे थे, एक साँप गुफा में रेंगता हुआ आया और वहाँ शराब का एक पात्र पाकर उसमें से पीने लगा; नशे में धुत होकर, साँप ने अपनी विषैली शराब को पात्र में ही उल्टी कर दी, और फिर रेंगता हुआ चला गया। डकैत घर लौट आए और, प्यास से तड़पते हुए, एक-एक करके उस पात्र से पीने लगे, और उस विष से तुरंत ही जहरीले हो गए: क्योंकि वे सभी ज़मीन पर गिर पड़े और भयानक पीड़ा में मर गए। इस प्रकार उन्हें अपने पापों का उचित दंड मिला और उन्होंने अपने जीवन का अंत एक भयानक तरीके से किया।

मौत से बचने के बाद, संत चारिथॉन ने ईश्वर की मदद से खुद को अपनी बेड़ियों से मुक्त कर लिया और उस गुफा में उन्हें बहुत सारा सोना मिला, जिसे डाकुओं ने कई वर्षों में अपनी डकैती की गतिविधियों के माध्यम से इकट्ठा किया था। संत चारिटॉन ने उस धन को, जिसे डाकुओं ने बेईमानी के साधनों से अर्जित किया था, सामान्य भलाई के लिए खर्च कर दिया; बची हुई राशि से, उन्होंने उसी स्थान पर फेर नामक एक मठ बनवाया[6569] , और डाकुओं की गुफा को एक चर्च में बदलकर, वहाँ एक समुदाय इकट्ठा किया। उनकी ख्याति पूरे देश में फैल गई, और उनके सदाचारी जीवन के कारण कई लोग उनके पास आए; उनसे मठवासी मुंडन ग्रहण करने के बाद[6570] , उन्होंने उस मठ में एक शांत जीवन व्यतीत किया, अपने शिक्षक और मार्गदर्शक, आदरणीय चैरटिन से लाभान्वित हुए, जिनके पवित्र जीवन को वे एक उज्ज्वल दीपक मानते थे और उससे प्रेरित होते थे। क्योंकि वह सद्गुणों और संन्यासी तपस्या में परिपूर्ण थे, वे उपवास और संयम को मीठे भोजन के रूप में, परिश्रम को विश्राम के रूप में, और गरीबी को धन के रूप में मानते थे; फिर भी वे दयालु और अतिथि-

---

[6568] गेहेना का अर्थ नरक ही है।

[6569] फारे या फारस का मठ यरूशलेम के दक्षिण में छह मिलियारी, या 60,000 कदम, पर स्थित था।

[6570] टोंसुर मठवासी जीवन में प्रवेश की एक विशेष पूजा-संस्कार है, इसे ऐसा नाम इसलिए दिया गया है क्योंकि प्राचीन काल में मठवासी के रूप में दीक्षा का पहला बाहरी संकेत सिर के बाल काटना था। सिर के बाल कटाने के बाद ही उम्मीदवार को मठवासी वस्त्र पहनाए जाते थे।

सत्कार करने वाले, करुणामय, भ्रातृवत्, विनम्र, मौन और सभी के लिए सुलभ थे। उनके होठों पर भी ज्ञान के नमक से रसीले शब्द रहते थे[6571] , जिनसे वे हमेशा भाइयों को मोक्ष के मार्ग पर मार्गदर्शन करते थे। अपने मठ में, उन्होंने यह व्यवस्था की कि भोजन दिन में एक बार - शाम को - किया जाए, और वह भी विस्तृत रूप से तैयार किए गए व्यंजनों या पेय पदार्थों से नहीं, बल्कि केवल रोटी और पानी से, और वह भी संयम से, ताकि पेट में भोजन और पेय की अधिकता का बोझ न होने के कारण, भाई आधी रात को उठकर प्रार्थना करने के लिए बहुत सुस्त न हों। उन्होंने यह भी आदेश दिया कि प्रार्थना के बाद, भाइयों को शारीरिक श्रम में संलग्न होना चाहिए, और यह ध्यान रखना चाहिए कि एक भी घंटा आलस्य में न बीते, कहीं कि शैतान, किसी भिक्षु को आलसी पाकर, उसे पाप के जाल में आसानी से फंसा न ले, क्योंकि सुस्ती और आलस्य ही पाप की शुरुआत है। संत ने भाइयों को यह भी आज्ञा दी कि वे अपनी कोठरियों में ही रहें और मौन बनाए रखें, न तो एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाएँ और न ही व्यर्थ की बातचीत के लिए इकट्ठा हों; क्योंकि व्यर्थ की बातों से बहुत प्रलोभन उत्पन्न होता है, जैसा कि धर्मग्रंथ गवाही देता है: *'बुरा संगत चरित्र को बिगाड़ देता है'* ([6572] , 1 कुरिन्थियों 15:33)। आदरणीय पिता ने उन्हें यह भी सिखाया कि वे अपने विवेक की पवित्रता को अपनी आँख के तारे की तरह सुरक्षित रखें, सोने और चांदी से अधिक गरीबी से प्रेम करें, और आज्ञाकारिता को मोक्ष की ओर ले जाने वाली सहायक के रूप में मानें; साथ ही उन्होंने उन्हें नम्रता, प्रेम, धैर्य, सौम्यता और अन्य सभी मठवासी सद्गुणों को एक अनमोल खजाने के रूप में प्राप्त करने और उनसे समृद्ध होने का उपदेश दिया।

इस प्रकार भाइयों को उपदेश देकर और मठ को उचित व्यवस्था में लाकर, आदरणीय पिता ने सभी को एकत्र होने का आदेश दिया; और, भाइयों में से उस एक को चुनकर जो अपने सद्गुणों के लिए सबसे प्रसिद्ध था, उन्होंने उसे अपनी जगह उनका चरवाहा नियुक्त किया, जबकि उन्होंने स्वयं सबसे गहरी निर्जनता में जाने का निश्चय किया, मौन से प्रेम करते हुए और लोगों से दूर हो गए; क्योंकि उनमें दुर्बलताओं को ठीक करने और दुष्टात्माओं को भगाने की कृपा थी, इसीलिए लोग चारों ओर से अपने बीमारों को लेकर उनके पास आते थे। प्रमुख कुलीनों ने भी उनका आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए आना शुरू कर दिया, जिससे वे पूर्ण साधु-मौन बनाए नहीं रख सके। इस उपद्रव से ऊबकर, उन्होंने सांसारिक वैभव को त्यागकर एकांत में जाने का निश्चय किया। हालाँकि, भाइयों ने उनसे विनती की कि वे उन्हें न छोड़ें, और जब ये विनती बेकार साबित हुईं, तो वे उनके लिए वैसे ही रोए जैसे अनाथ अपने पिता के लिए रोते हैं। तथापि, परमेश्वर को प्रिय लगने वाली उस पुण्य आत्मा की प्रार्थनाएँ अपने बच्चों को नहीं छोड़तीं; क्योंकि उसकी प्रार्थनाओं के द्वारा वे सब प्रभु की आज्ञाओं का पालन करने में फलते-फूलते रहे और, जंगल में लगाए गए लिली के फूलों[6573] की तरह, पवित्रता में विकसित हुए। इस प्रकार, भाइयों को विदा कहने, उन्हें आशीर्वाद देने और ईश्वर के सुपुर्द करने के बाद, पूजनीय पिता दूर के रेगिस्तानों और दुर्गम जंगलों[6574] के लिए प्रस्थान कर गए।

एक दिन की यात्रा[6575] करने के बाद, पूज्यनीय ने यरीहो की सीमाओं से बहुत दूर नहीं एक और गुफा[6576] पाई, और वहाँ निवास कर, दिन-रात परमेश्वर की महिमा करते हुए, परमेश्वर के लिए जीवित रहे, मानो वे एक स्वर्गदूत[6577] हों। उसका भोजन उस स्थान के पास उगने वाली हरियाली से होता था, लेकिन सबसे बढ़कर वह परमेश्वर के वचन, अखंड प्रार्थनाओं और परमेश्वर के प्रति हार्दिक प्रेम से बहने वाले गर्म आँसुओं से पोषित होता था, भजन के वचन बोलते हुए: *'मेरे आँसू ही दिन-रात मेरा भोजन हो गए हैं'* (भजन संहिता 41:4)।

जब वह कुछ समय वहाँ ठहरा, तो परमेश्वर ने उसे लोगों के सामने एक खेत में छिपे हुए खजाने के रूप में प्रकट किया[6578] । चूँकि कई लोग उसके प्रस्थान पर शोकित हुए और एक अच्छे पिता के नुकसान पर विलाप किया, कुछ भाइयों ने आपस में सहमत होकर अपने चरवाहे की तलाश में रेगिस्तान में निकल पड़े: ईश्वर की यही इच्छा थी कि यह कुशल शिक्षक और अच्छा मार्गदर्शक न केवल स्वयं को, बल्कि दूसरों को भी स्वर्ग के राज्य में ले जाए। उस समय से, उनके

[6571] अर्थात्, उसकी वाणी ज्ञान से इस प्रकार परिपूर्ण थी, जैसे नमक से, जिसके बिना भोजन स्वादिष्ट नहीं होता। देखें कुलुस्सियों 4:6।

[6572] अर्थात्, अच्छी आदतें और नैतिकता अक्सर बुरी संगति और व्यर्थ की बातों से बिगड़ जाती हैं। 1 कुरिन्थियों 15:33 देखें।

[6573] अर्थात्, खेतों में उगने वाली जंगली कमल की कलियाँ।

[6574] दिसंबर – घने जंगल से ढकी एक घाटी या निम्न भूभाग, या चट्टानों से घिरा एक क्षेत्र।

[6575] अर्थात्, वह दूरी जो एक पैदल यात्री आमतौर पर एक दिन में तय करता है।

[6576] संभवतः यहूदी मरुभूमि में।

[6577] पवित्र शास्त्र के अनुसार, स्वर्गदूत निरंतर परमेश्वर की स्तुति करते हैं। भजन संहिता 21:4।

[6578] मैदान में छिपे खजाने की दृष्टांत देखें। मत्ती 13:44.

एकांतवास का स्थान ज्ञात हो गया, और भिक्षु तथा गृहस्थ उनके पास आने लगे, वे उनके साथ रहना चाहते थे, उनके दैवीय मुखमंडल को निहारना चाहते थे और उनके प्रेरणादायक प्रवचनों से पोषित होना चाहते थे। जल्द ही, आध्यात्मिक भेड़ों का एक बड़ा झुंड इकट्ठा हो गया, और पहले वाले की ही तरह के अनुशासन और नियमों के अनुसार एक और मठ स्थापित किया गया। इस प्रकार, ईश्वर की महिमा भीड़-भाड़ वाले शहरों के बीच, जहाँ अन्याय और संघर्ष व्याप्त हैं, की तुलना में सुनसान और दुर्गम स्थानों में अधिक बढ़ी और फैली। लेकिन पिता अपने आध्यात्मिक बच्चों के साथ अधिक समय तक नहीं रहे; क्योंकि, उपयुक्त रूप से संपूर्ण मठवासी व्यवस्था स्थापित करने के बाद, उन्होंने एक बार फिर से फेकुइट[6579] की भूमि से चौदह या उससे अधिक स्टेडियम दूर स्थित सबसे गहरी निर्जनता में प्रस्थान किया, और वहाँ, एलियाह और यूहन्ना अग्रदूत के उदाहरण का अनुसरण करते हुए, *'मैं दूर चला जाऊँगा और निर्जन प्रदेश में रहूँगा'* (भजन संहिता 54:8)। वह जगह-जगह भटकते रहे, झाड़ियों, तेज बहावों, पहाड़ियों, घाटियों और धरती की खाइयों से होते हुए, स्वयं को पूरी तरह से ईश्वर के हवाले कर रहे थे। रेगिस्तान में उनके परिश्रमों का कौन वर्णन कर सकता है? केवल ईश्वर ही, जो रहस्यमय बातें जानते हैं, उनके कारनामों से अवगत थे, उन्होंने उनके श्रम देखे और, इसके लिए, उनके लिए एक स्वर्गीय पुरस्कार तैयार किया।

जब आदरणीय पिता लंबे समय तक मरुभूमि में भटकते रहे, तब ईश्वर ने चाहा कि यह गुणों से दमकता दीपक एक बार फिर मरुभूमि के एकांत से उभर आए[6580] और अपने जीवन के उदाहरण द्वारा उन सभी पर प्रकाश डाले जो शाश्वत जीवन की ओर ले जाने वाले संकीर्ण मार्ग पर चलना चाहते थे। मरुस्थल से गुजर रहे कुछ तपस्वियों ने उन्हें फिर से खोज निकाला; वे उनके चरणों में गिर पड़े और उनसे विनती करने लगे कि उन्हें अपने साथ रहने और उनके धर्मपरायण कर्मों का अनुकरण करने की अनुमति दें। जब दूसरों को यह पता चला, तो व्यर्थ की दुनिया से भागकर कई लोग उस आदरणीय संत के पास इकट्ठा होने लगे। उन्होंने मसीह के भेड़ों का तीसरा झुंड इकट्ठा कर, उन्हें मठवासी जीवन का उपदेश देने के बाद, एक तीसरा मठ स्थापित किया, जिसे बाद में सीरियाई भाषा में 'सुकीया' और ग्रीक में 'ओल्ड लावरा' के नाम से जाना गया। फिर वह वहाँ स्थित पहाड़ की चोटी पर चढ़ा और एक छोटे से गुफा वाले प्रायद्वीप पर रहने लगा, जहाँ केवल एक बहुत ऊँची सीढ़ी से ही पहुँचा जा सकता था। वहाँ वह एक स्तंभ के समान खड़ा था[6581] , जो पृथ्वी से ऊपर उठकर स्वर्गीय निवासों के और करीब जा रहा था। वहाँ से, एक पहरा देते हुए अच्छे चरवाहे की तरह, उन्होंने अपने मठों के लिए प्रार्थना की और वहाँ इकट्ठा हुए भाइयों की मुक्ति पर ध्यान लगाया; जैसे किसी जहाज की पिछली पतवार पर खड़े होकर, उन्होंने इस सुगम स्थान से आत्माओं के इतने बड़े समूह की यात्रा का मार्गदर्शन किया; क्योंकि उनके द्वारा स्थापित सभी मठों से, आध्यात्मिक पोषण की आवश्यकता वाले लोग उनकी ओर खिंचे चले आए। और वह उस स्थान पर बहुत वृद्धावस्था तक उपवास, प्रार्थना और ऐसे तपस्या के चमत्कारों के साथ रहे कि उनका वर्णन करना भी असंभव है; क्योंकि, दिन-प्रतिदिन अपने कार्यों को बढ़ाते हुए, वह देह में होते हुए भी अदेह प्रतीत होते थे। उस स्थान में पानी नहीं था, फिर भी पिता नहीं चाहते थे कि कोई भाई उनकी ओर से दूर से पानी लाने के लिए परिश्रम करे, जबकि वे स्वयं इसे लाने में असमर्थ थे – एक तो ऊँचे पहाड़ पर चढ़ने की कठिनाई के कारण और दूसरे अपने श्रम से कमजोर पड़े अपने वृद्ध शरीर की दुर्बलता के कारण। इसलिए, उसने परमेश्वर से एक प्रार्थना की और उनसे चट्टान से पानी निकालने के लिए कहा, जैसा उन्होंने जंगल में इस्राएल के लिए किया था; यह हो गया, क्योंकि प्रभु अपने भय रखने वालों की इच्छाओं को पूरा करते हैं और उनकी प्रार्थनाओं को सुनते हैं - और अचानक, परमेश्वर की शक्ति से, सूखी, अटूट चट्टान से पानी का एक झरना फूट पड़ा। ईश्वर के समक्ष उस पुण्यशील पिता की प्रार्थना का यही प्रभाव था।

पूर्ण भक्ति में जीवन जीकर और एक पके अंगूर की लता की तरह अपने दिनों के अंतिम छोर पर पहुँचकर, उस पूजनीय पिता का परमधाम समीप आ गया। ईश्वर से यह जानकर, उन्होंने अपने तीन मठों के मठाधीशों और भाइयों को बुलाया—जो उनकी प्रार्थनाओं और ईश्वर के समक्ष मध्यस्थता के द्वारा उस मरुभूमि में स्वर्ग के तारों की तरह बढ़ गए थे—और उन्हें अपने निकटवर्ती निधन के बारे में बताया।

[6579] फेकुया – बेथलहम के पास स्थित एक प्राचीन यहूदी नगर।

[6580] 'स्पंड' ढीली सामग्री का एक माप है, जिसका उपयोग कभी-कभी रात में दीपक को बुझने से बचाने के लिए ढकने के लिए किया जाता है; 'स्पंड के नीचे' का अर्थ है 'गुप्त रूप से'।

[6581] यह स्पष्ट रूप से उन लकड़ी के पहरेदार मीनारों का उल्लेख करता है जिन्हें फिलिस्तीनी चरवाहों ने अपने झुंडों पर नजर रखने के लिए खड़ा किया था, जो विशाल चरागाहों में बिखरे हुए थे।

'मैं,' उन्होंने कहा, 'आप लोगों को छोड़ रहा हूँ, जैसा कि प्रभु मुझे आज्ञा देते हैं; क्योंकि वह समय आ गया है जिसका मैं लंबे समय से उत्सुकता से इंतजार कर रहा था, कि मैं देह से अपने मलिन का त्याग कर जाऊँ और अपने परमेश्वर के साक्षात उपस्थिति होऊँ। तुम्हें, मेरे बच्चों, अपनी मुक्ति का ध्यान रखना, ताकि तुम में से प्रत्येक, शत्रु के जालों से बचकर, अपने मृत्यु के समय प्रभु की उपस्थिति में प्रवेश करने और उनकी दया प्राप्त करने के योग्य समझा जाए।

यह सुनकर, वे सब रो पड़े और कहने लगे:

'आप हमें, अपने बच्चों को, हमारे पिता और शिक्षक को, छोड़ जा रहे हैं! आप हमें, हमारे चरवाहे और मार्गदर्शक को, छोड़ जा रहे हैं! आप मुरझा रहे हैं, हमारे मार्ग का दीपक और नेता!'

परन्तु उसने उन्हें यह कहकर सांत्वना दी:

'हमारे प्रभु यीशु मसीह ने युग के अंत तक हमारे साथ अविभाज्य रूप से बने रहने का वादा किया है, और वह आपको नहीं छोड़ेंगे; और यदि मैं उसे योग्य समझा गया, तो मैं उसकी दया से प्रार्थना करूँगा कि वह आपको एक-दूसरे से न अलग करे, जैसे उसकी अंतिम न्याय में भेड़ों को बकरियों से अलग किया जाता है, बल्कि वह आप सभी को अपने दाहिने हाथ पर स्थान दे[6582] और आपको अपने राज्य में एक ही झुंड में इकट्ठा करे।

भाइयों ने उससे पूछा:

'पिताजी, आप अपने शरीर के लिए क्या व्यवस्था करेंगे? हम आपको कहाँ दफनाएँगे?'

उन्होंने कहा:

'जहाँ भी आप चाहें, पृथ्वी को पृथ्वी को ही लौटा दें: "*पृथ्वी यहोवा की है, और जो कुछ उसमें भर है*"[6583] (भजन संहिता 23:1)।

उन्होंने उत्तर दिया:

'नहीं, पिताजी; आपने तीन मठों की स्थापना की है और तीन झुंडों को इकट्ठा किया है; उनमें से प्रत्येक आपके अवशेष अपने पास रखना चाहेगा[6584] ; इसलिए, ताकि हमारे बीच कोई कलह न हो, अब आदेश दीजिए कि हम आपके अवशेष कहाँ रखेंगे।'

[6585]उनकी इच्छा मानते हुए, उन्होंने अपनी पहली मठ में दफ़नाए जाने की सहमति दे दी, जहाँ उन्हें डाकुओं ने बंदी बनाया था और चमत्कारिक रूप से, ईश्वर की कृपा से, उनसे मुक्त किया गया था। तीनों मठों के भिक्षुओं ने उन्हें उठाया और उस मठ में ले आए। वहाँ, भाइयों को पूर्ण भिक्षु जीवन पर बहुत उपदेश देने और उन्हें विदा कहने के बाद, वह अपने बिस्तर पर लेट गया और बिना किसी शारीरिक क्लेश के अपनी पवित्र आत्मा प्रभु के हाथों में सौंप दी।

इस प्रकार हमारे आदरणीय पिता, मसीह के शहीद, स्वीकारकर्ता और अच्छे तपस्वी चारिटॉन का निधन हुआ। सभी मरुस्थल के संत-पुरुष उनके लिए रोए, और संपूर्ण मरुस्थल ऐसे महान पिता और शिक्षक के लिए विलाप से भर गया, जिन्होंने सूर्य की भाँति संसार को प्रकाशित किया था। पर्याप्त समय तक उनके लिए रोने के बाद, भिक्षुओं ने उनके पवित्र अवशेषों को सम्मानपूर्वक दफनाया, और सदा के लिए पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा की महिमा की। आमीन।

कॉन्टाकियन, स्वर 2:

दिव्य संयम में आनंदित होकर, और अपने शरीर की इच्छाओं को वश में कर, आप विश्वास के द्वारा लौटने वाले के रूप में प्रकट हुए; और जीवन के वृक्ष के समान, आप स्वर्ग के मध्य में फलते-फूलते रहे, अति धन्य और अति पवित्र चारिटिन।

[6582] दाहिनी ओर खड़े होने का अर्थ है परमेश्वर द्वारा धर्मी ठहराया जाना। मत्ती 25:33.

[6583] यानी, सब कुछ ईश्वर का है, हर एक टुकड़ा ज़मीन का। भजन संहिता 23:1।

[6584] अवशेष सामान्यतः किसी मृत ईसाई के शरीर को कहते हैं, और अधिक विशेष रूप से ईश्वर के महिमामय संतों के पवित्र अवशेषों को कहते हैं।

[6585] लगभग 350 ईस्वी में।

पवत्रि भवष्यिवक्ता बरोक की स्मृत

28 सतिंबर को स्मरणोत्सव

पवत्रि भवष्यिवक्ता यरि्मयाह ने 70 वर्ष की आयु में बेबीलोन की बंधुआई देखी, और उनके शष्यि संत बारूक ने कभी भी अपने गुरु का साथ नहीं छोड़ा। जब यरि्मयाह यरूशलेम के वनिाश पर रोए, तो बारूक एक गुफा में चले गए और उन्होंने भी बहुत रोया। कुछ समय बाद, वे गुफा से बाहर नकिले और, बड़े दुख के साथ, उन्होंने अपने गुरु यरि्मयाह को पत्थर मारने का दृश्य देखा। संत बारूक ने परमेश्वर के पुत्र के अवतार के बारे में वशिेष स्पष्टता के साथ भवष्यिवाणी की; उनकी यह भवष्यिवाणी इन शब्दों से शुरू होती है: *'यह हमारा परमेश्वर है, और कोई भी उससे तुलना नहीं कर सकता'* (बरुख 3:36-38)। उन्होंने यरूशलेम के भाग्य की भी भवष्यिवाणी की। संत यरि्मयाह की मृत्यु के बाद, जन्हिें उन्होंने दफनाया था, वे स्वयं भी जल्द ही चल बसे[6586] ।

पवत्रि शहीदों अलेक्जेंडर, अल्फयिस, ज़ोसीमा, मार्क, नकिॉन, नयिोन और इलओिडोरस की स्मृत

28 सतिंबर को स्मरणोत्सव

इन सभी पवत्रि शहीदों ने सम्राट डायोक्लेटयिन के शासनकाल में, पसिडिया के एंटओिक में, राज्यपाल मैग्नस के अधीन यातनाएँ सहन कीं[6587] । जब वे एक पहाड़ पर चढ़े, तो उन्होंने संत मार्क को भेड़ों के झुंड की देखभाल करते हुए देखा; और वह जानवर, जसिका सैनकि पीछा कर रहे थे, उसके पैरों तले पड़ा था और उसे चाट रहा था। यह सुनकर, मैग्नस ने तीस सैनकिों को अपने सामने लाने का आदेश दयिा; लेकनि सेंट मार्क द्वारा उपदेशति होकर, ये सभी सैनकि मसीह की ओर मुड़ गए। राज्यपाल ने उनमें से कुछ को बांधने का आदेश दयिा, जबकि बाकी को नकियिा भेज दयिा गया, जहाँ उनका सरि कलम कर दयिा गया। इसके बाद, तीन ईसाई भाई मलि: अल्फयिस, अलेक्जेंडर और ज़ोसमिा। संत मार्क को उनके साथ सूली पर चढ़ाया गया, और फरि तलवार से उनका सरि कलम कर दयिा गया। मैग्नस ने उनका सरि अपनी देवी आर्टेमसि के मंदरि में भेज दयिा; जैसे ही पवत्रि शहीद का सरि मंदरि में लाया गया, वहाँ की सभी मूर्तयिाँ गरि पड़ीं और चकनाचूर हो गईं। यह चमत्कार देखने के बाद, नकिॉन, नयिॉन और इलओिडोर ने भी मसीह में वश्विास कयिा और उन्हें वहीं पर मृत्युदंड दे दयिा गया।

बोहेमयिा के राजकुमार संत वेंसेस्लॉस का जीवन

28 सतिंबर को स्मरण कयिा जाता है

[6586] नबी बारूक मस्रि में, संभवतःनबूकदनेसर द्वारा यरूशलेम के वनिाश के 12वें वर्ष में, यानी ईसा पूर्व 595 में, नधिन हो गए। पवत्रि शास्त्र में एक वशिष्टि पुस्तक का नाम इनके नाम पर रखा गया है। इस पुस्तक को लखिने का उद्देश्य, जैसा कि इसकी सामग्री से देखा जा सकता है, यहूदयिों को यह दखिाना था कि उन पर आई सभी वपित्तयिाँ प्रभु द्वारा उनके पूर्वजों और उनके अपने पापों के कारण भेजी गई थीं, और इस प्रकार उनमें हृदय से पश्चाताप और अनुशोचन की भावना जगाना था; साथ ही साथ, उन पर आई वपित्तयिों के बीच, उन्हें बंदी से शीघ्र मुक्ति और उससे भी अधकि, धन्य मसीही युग के आगमन के वादे के माध्यम से सांत्वना प्रदान करना था। नबी बारूक की पुस्तक को, एक प्रकार से, नबी यरि्मयाह की पुस्तक का पूरक या परशिष्टि माना जाता है और यह कभी भी इससे अलग नहीं पाई जाती। चर्च फादर्स अक्सर इसे यरि्मयाह की पुस्तक के शीर्षक के अंतर्गत सीधे उससे जोड़ते हैं। क्रसिमस की पूर्व संध्या पर इस पुस्तक से ली गई रीडगि (बारूख 3:36–38, 4:1–5) भी बारूख के बजाय यरि्मयाह की भवष्यिवाणी के नाम पर पढ़ी जाती है।

[6587] ईस्वी की चौथी शताब्दी की शुरुआत में

संत वेंसेस्लॉस बोहेमयिा पर शासन करने वाले राजसी घर से थे[6588] , और वे पवत्रि शहीद लुडमलिा के पोते थे; उनके माता-पतिा – बोहेमयिा के राजकुमार व्रतस्लिाव[6589] , और उनकी पत्नी ड्रैगोमरिा – के उनके अलावा, दो अन्य बेटे थे: बोलेस्लाव और स्पटिग्निेव, और कई बेटयिाँ; उन सभी में, वे अपनी प्रतभिा और दयालुता के लएि सबसे अलग थे। जब संत व्याचेस्लाव वयस्क हुए, तो उनके पतिा ने उस समय की प्रथा के अनुसार बशिप और पुरोहतिों से, साथ ही पूरे चर्च के पादरयिों से, उनके ऊपर ईश्वर का आशीर्वाद करने का अनुरोध कयिा। बशिप ने सर्वपवत्रि परमेश्वर की माता के चर्च में लटिर्जी का अनुष्ठान करने के बाद उस युवक को चर्च की सीढ़यिों पर बठिाया और इन शब्दों से उसका आशीर्वाद कयिा:

'हे प्रभु परमेश्वर, यीशु मसीह, इस युवक को आशीर्वाद दो, जैसे तुमने अपने धर्मी लोगों—अब्राहम, इसहाक और याकूब—को आशीर्वाद दयिा है, और उसे मुकुट पहनाओ, जैसे तुमने ऑर्थोडॉक्स राजाओं, प्रेरतिों के समान कॉन्स्टेंटनि और हेलेना को मुकुट पहनाया है।'

उसी क्षण से, ईश्वर की कृपा से, लड़का बढ़ने और फलने-फूलने लगा। उनकी दादी, संत लुडमीला ने, एक पादरी, जो उनके आध्यात्मकि पतिा थे, को उन्हें स्लावोनकि वर्णमाला सखिाने का काम सौंपा, जसिे संत ने बहुत कम समय में पूरी तरह से सीख लयिा। उनकी प्रगतकिो देखकर, उनके पतिा ने उन्हें लैटनि और अन्य वषियों का अध्ययन करने के लएि बूडेच शहर भेजा; इन सभी में उन्होंने अपने शक्षिकों को आश्चर्यचकति करते हुए उत्कृष्ट प्रदर्शन कयिा।

लेकनि ईश्वर की इच्छा से, प्रंसि व्रतस्लिाव जल्द ही मर गए[6590] और संत व्याचेस्लाव, जो अभी भी एक युवा व्यक्तथि, अपने पतिा के सहिासन पर चढ़े। यहाँ, शासक के रूप में, उन्होंने वशिेष रूप से अपनी प्रतभिा का प्रदर्शन कयिा: अपनी माँ के साथ मलिकर उन्होंने देश के शासन को सुधारने का प्रयास कयिा और अपने परविार की देखभाल की: उन्होंने अपनी बहनों का ववािह पड़ोसी प्रमुख राज्यों में कर दयिा, अपने छोटे भाइयों के पालन-पोषण की देखरेख की, और अपने ज्ञान को बढ़ाने का कोई भी अवसर नहीं छोड़ा, ताकवि जल्द ही न केवल स्लावोनकि और लैटनि बल्कग्रिीक भाषा में भी पारंगत हो गए, और इस मामले में कसिी भी पुरोहति या यहां तक कबिशिप से भी आगे नकिल गए। ईश्वर ने उनके प्रयासों को आशीर्वाद दयिा और उन्हें बुद्धप्रिदान की। उन्होंने, बदले में, ईश्वर को प्रसन्न करने का पुरज़ोर प्रयास कयिा, गरीबों की देखभाल की, उन्हें खलिाया, और सुसमाचार के शब्दों के अनुसार अजनबयिों का स्वागत कयिा: *'क्योंकमिैं भूखा था और तुमने मुझे खाना दयिा; मैं प्यासा था और तुमने मुझे पानी पलिाया; मैं एक अजनबी था और तुमने मेरा स्वागत कयिा'* (मत्ती 25:35), पुरोहति वर्ग का सम्मान कयिा, चर्चों का नर्मिाण और उन्हें सजाया, सभी के साथ प्रेम से पेश आए, चाहे अमीर हों या गरीब, और अपने संक्षपि्त जीवन भर केवल अच्छाई के बारे में सोचा।

लेकनि शैतान, मानव जातकिा पुराना दुश्मन, अब हर तरह से कलह फैलाने की कोशशि करने लगा: कुछ दुर्भावनापूर्ण कुलीनों ने संत की कम उम्र का फायदा उठाने की चाहत की, क्योंकअिपने पतिा की मृत्यु के समय वह महज अठारह वर्ष का था। और इस प्रकार, उन्होंने पहले राजकुमार व्याचेस्लाव को उसकी माँ के खलिाफ कर दयिा, यह दावा करते हुए कउिसने उसकी दादी, संत ल्यूडमलिा की हत्या कर दी थी, और उसके खलिाफ साजशि रच रही थी। व्लादस्लिाव ने शुरू में इन शब्दों पर वशि्वास कयिा और अपनी माँ को बुडेत्स शहर भेज दयिा, लेकनि जल्द ही उन्हें

[6588] चेक गणराज्य मध्य यूरोपीय पठार पर स्थति है, जो लगभग सभी ओर से पहाड़ों से घरिा हुआ है और लाबे (एलबे) नदी तथा इसकी सहायक नदयिों द्वारा जल नकिासी कयिा जाता है। प्राचीन काल में, इस देश में सेल्टकि लोगों – बोई – का नविास था, जनिसे इसका वैकल्पकि नाम, बोहेमयिा, लयिा गया है। सामान्य युग से ठीक पहले, बोई लोगों को जर्मनकि मार्कोमनी लोगों ने भगा दयिा था, जन्होंने रोमनों के खलिाफ लंबे युद्ध लड़े और अंततः5वीं शताब्दी के मध्य में गायब हो गए; इसके तुरंत बाद, चेक के स्लावकि जनजातयिों ने शायद इस सुनसान भूमिमें बसावट की, और इन्हीं के नाम पर यह देश बोहेमयिा के नाम से जाना जाने लगा। जब पवत्रि भाइयों, सरिील और मेथोडयिस, स्लाव भूमि- मोरावयिा और पैनोनयिा - में थे, तो उन्होंने चेकों का बपतस्मिा भी दयिा और स्लाव भाषा में पूजा शुरू की; चेकों के बीच ईसाई धर्म बहुत व्यापक रूप से फैल गया, और उन्होंने जल्द ही पवत्रि तपस्वी दए; ऑर्थोडॉक्स चर्च मान्यता देता है: धन्य लुडमलिा, संत वेंसेस्लॉस और आदरणीय प्रोकॉपयिस, जो 11वीं शताब्दी में ही रहते थे (उनका पर्व दविस 16 सतिंबर को मनाया जाता है)। हालाँकि, चेकों के बपतस्मिा से पहले ही, स्लावों के पवत्रि प्रथम शक्षिकों के साथ-साथ, बोहेमयिा में जर्मन मशिनरी भी आ गए, जन्होंने लैटनि में पूजा शुरू की; और चूँकउिन्हें शक्तशिाली जर्मन राज्यों का संरक्षण प्राप्त था, जो चेकों के पड़ोसी थे, वे अंततःस्लावोनकि पूजा-वधिकिो पूरी तरह से वस्थिापति करने में सफल हो गए, जसिकी रक्षा संत प्रोकॉपयिस को 11वीं शताब्दी में ही करनी पड़ी, हालांकिकुछ स्थानों पर यह बाद में भी जीवति रही।

[6589] उन्होंने 9वीं शताब्दी के अंत में बोहेमयिन राजसी सहिासन पर आसीन हुए।

[6590] राजकुमार व्रातस्लिाव का 920 ईस्वी में नधिन हो गया।

प्रेरति पौलुस के शब्द याद आए: *'अपने पति और माता का सम्मान करो—यह एक वादे के साथ पहला आज्ञा है'* (एफ. 6:2); उन्होंने अपनी माँ को वापस अपने घर लाया और, कड़वे आँसुओं के साथ, पश्चाताप करते हुए कहा:

'हे प्रभु मेरे परमेश्वर, इसे मेरे लिए पाप न समझें,' और भजनकार के वचन दोहराए: *'मेरी जवानी के पापों या मेरी उल्लंघनों को याद न करें'* (भजन संहिता 24:7)।

उस समय से, उन्होंने अपनी माँ का हर तरह से सम्मान किया, जिससे वह उनकी धार्मिकता और दयालुता में आनंदित हुईं: उन्होंने विकलांगों को खिलाया, विधवाओं और अनाथों की देखभाल की, बंदियों को छुड़ाया, सभी का भला किया, और धर्मात्मा और न्यायप्रिय राजकुमार व्याचेस्लाव का नाम सर्वत्र महिमामय हो गया।

दुष्ट कुलीनों ने, यह देखकर कि संत की बुद्धि और सदाचार के कारण उनकी साजिशें विफल हो गई थीं, उसके भाई बोलेस्लाव को उसके खिलाफ भड़काना शुरू कर दिया; बोलेस्लाव, छोटा भाई होने के नाते, व्याचेस्लाव की आज्ञा मानने के लिए बाध्य था। उन्होंने बोलेस्लाव के मन में यह विश्वास भर दिया कि राजकुमार व्याचेस्लाव, अपने सलाहकारों और अपनी माँ के साथ मिलकर, उसकी हत्या की साजिश रच रहे थे, और उन्होंने उसे सलाह दी कि अपनी जान बचाने के लिए, उसे उस पवित्र राजकुमार को मार डालना चाहिए और राजसी सिंहासन खुद पर कब्जा कर लेना चाहिए। उनके उकसाने वालों की इस दुर्भावनापूर्ण सलाह ने बोलेस्लाव के विवेक को धूमिल कर दिया, और उसने अपने भाई की मृत्यु पर विचार करना शुरू कर दिया, ठीक उसी तरह जैसे लगभग सौ साल बाद[6591] , शापित स्वियातोपोलक, रूसी भूमि पर अकेले शासन करने की इच्छा से, अपने भाइयों को मारने का संकल्प लेता है।

अपनी आपराधिक योजना को अंजाम देने की इच्छा से, बोलेस्लाव ने अपने भाई को एक चर्च के अभिषेक समारोह में आमंत्रित किया, जो रविवार को होना था, और उस समय संत कोस्मास और डैमियन के पर्व के साथ मेल खा रहा था। संत व्याचेस्लाव, प्रार्थना सभा में शामिल होने के बाद, प्राग लौटना चाहते थे[6592] , लेकिन बोलेस्लाव ने उन्हें रोकने की कोशिश की, और उनसे विनती की कि उन्होंने जो दावत तैयार की थी, उसे ठुकराकर उसे आहत न करें। संत ने रुकने के लिए सहमति दे दी, हालांकि, जब वह बोलेस्लाव के आंगन में बाहर निकले, तो नौकरों ने उन्हें उनके भाई की योजनाओं के बारे में आगाह किया। संत ने उनकी बात पर विश्वास नहीं किया, और अपनी सारी आशा ईश्वर में रखी। उन्होंने पूरा दिन एक साथ आनंद में बिताया; इस बीच, रात के दौरान, दुष्ट लोग षड्यंत्रकर्ताओं में से एक, जिसका नाम ग्नेवज़ी़ था, के आंगन में इकट्ठा हुए और बोलेस्लाव के साथ मिलकर उन्होंने साजिश रची कि वे संत व्याचेस्लाव को कैसे मार सकते हैं, और उन्होंने यह संकल्प लिया कि जैसे ही वह उठकर भोर की प्रार्थना के लिए जाएँगे, उन पर हमला कर देंगे, क्योंकि वे जानते थे कि अपनी भक्ति के कारण, संत प्रार्थना सभा नहीं छोड़ेंगे। और उनकी योजनाएँ सफल हुईं: जैसे ही मैटिन्स के लिए घंटियाँ बजीं, व्याचेस्लाव तुरंत उठ खड़ा हुआ, यह कहते हुए:

'महिमा तेरी हो, हे प्रभु मेरे परमेश्वर, क्योंकि तूने मुझे आज सुबह देखने के लिए जीने का प्रकाश प्रदान किया है।'

फिर उन्होंने कपड़े पहने, अपना चेहरा धोया, और चर्च चले गए; उनके घर के द्वार पर, बोलेस्लाव उनसे मिल गया। संत मुड़े और बोले:

'नमस्ते, भाई; कल अच्छा था…'

लेकिन इससे पहले कि वह अपनी बात पूरी कर पाता, बोलेस्लाव ने, शैतान के उकसावे पर, अपनी तलवार म्यान से निकाल ली और अपने भाई के सिर पर वार कर दिया, और कहा:

'आज मैं तुम्हारा इससे भी बेहतर सत्कार करना चाहता हूँ।'

व्लादिस्लाव चिल्लाया:

'भाई, तुम क्या करने जा रहे हो?'

और उसे पकड़कर जमीन पर पटकते हुए, उसने पूछा:

'मेरे भाई, मैंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है?'

लेकिन तभी षड्यंत्रकारियों में से एक दौड़कर आया और संत के हाथ पर वार कर दिया। तो, बोलेस्लाव को पीछे छोड़कर, वह चर्च की ओर दौड़ा। साज़िशकर्ताओं ने उसका पीछा किया, और उनमें से दो – चेस्टा और टिरा – ने उसे

[6591] 1015 में।

[6592] बोहेमिया की राजधानी वल्टावा नदी पर स्थित है, जो एल्बे की एक सहायक नदी है।

चर्च के दरवाज़े पर ही काट कर मार डाला, जबकि तीसरे – ग्नेवज़िा – ने अपनी तलवार से उसकी पसलियों में घोंप दिया। उस धन्य ने अपनी अंतिम साँस लेते हुए कहा:

'हे प्रभु, मैं अपनी आत्मा तेरे हाथों में सौंपता हूँ।'

राजकुमार की हत्या के बाद, खलनायकों ने उसके अनुचर दल को पीटना, लूटपाट करना और उन सभी को भगा देना शुरू कर दिया जिन्हें संत व्याचेस्लाव ने अपने घर में आश्रय दिया था; साज़िशकर्ता तिरि ने बोलेस्लाव को अपनी माँ पर भी हमला करने की सलाह दी, ताकि वह एक ही साथ अपने भाई और अपनी माँ, दोनों से छुटकारा पा सके, लेकिन बोलेस्लाव ने जवाब दिया कि इसके लिए अभी समय है, क्योंकि उसके पास छिपने के लिए कोई जगह नहीं थी।

जहाँ तक संत व्याचेस्लाव के शरीर का सवाल है, साज़िशकर्ताओं ने उसे टुकड़ों में काट दिया और बिना दफ़नाए छोड़ दिया; केवल एक पुजारी ने ही उसे कफ़न से ढक दिया। उस समय, संत की माँ, उनके हत्या की खबर सुनकर, उन्हें खोजने के लिए बाहर भागीं और उनके खंडित अवशेषों को देखकर सिसक-सिसक कर रो पड़ीं। उन्होंने उनके शरीर के सभी अंगों को इकट्ठा किया और उन्हें घर ले जाने की हिम्मत न करते हुए, उसी चर्च के पुरोहित के आँगन में ही उन्हें धोया और कपड़े पहनाए; केवल तभी उनके शरीर को चर्च के अंदर ले जाया गया और वहीं अंतिम संस्कार के लिए रखा गया। अपने शहीद बेटे को अंतिम श्रद्धांजलि देने के बाद, संत व्याचेस्लाव की माँ अपनी जान बचाकर क्रोएट्स की भूमि में शरण लेने चली गईं[6593] , ताकि जब बोलेस्लाव ने उनके पीछे भी हत्यारों को भेजने का फैसला किया, तो वे उन्हें ढूंढ न सके।

धन्य राजकुमार के अवशेष कुछ समय के लिए दफनाने की प्रतीक्षा में चर्च में ही रहे, जब तक कि अंतत; पवित्र शहीद के लिए अंतिम संस्कार की प्रार्थना करने और उन्हें दफनाने के लिए एक पुरोहित को बुलाने की अनुमति नहीं मिल गई। जहाँ तक चर्च के दरवाजों पर बहे उसके खून का सवाल है, उन्होंने चाहे जितनी भी कोशिश की, वे उसे धो नहीं सके। हालाँकि, तीन दिनों के बाद, यह अपने आप चमत्कारिक ढंग से गायब हो गया[6594] ।

इसके तुरंत बाद, भातृहत्यारा बोलेस्लाव को अपने पाप की गंभीरता का एहसास हुआ और वह पश्चाताप करते हुए जोर-जोर से रोया और कहा:

'मैंने पाप किया है, और मैं अपने पाप और अपने अपराधों को जानता हूँ; हे ईश्वर, मेरी, एक पापी की, मदद करो।'

उसने पुरोहितों और अपने दरबारियों को संत वेंसेस्लस की अवशेषों को राजधानी प्राग ले जाने के लिए भेजा, जहाँ उन्हें संत विटस के चर्च में वेदी के दाहिनी ओर सम्मानपूर्वक दफनाया गया, जिसे स्वयं संत ने स्थापित किया था।

12 अक्टूबर

29 सितंबर (पुराने कैलेंडर के अनुसार)

हमारे पूजनीय पिता सिरियाकस का जीवन

29 सितंबर को स्मरणोत्सव

[6593] एक स्लाविक जनजाति जो बोहेमिया के दक्षिण में एड्रियाटिक सागर के तट और डेन्यूब की सहायक नदियों सावा और द्रावा के किनारे रहती थी।

[6594] बोहेमिया के राजकुमार सेंट वेंसेस्लॉस की शहादत 935 में, 28 सितंबर को हुई।

[6595]आदरणीय सरियिाकस कोरथि के मूल नविासी थे[6596] और वे कैथेड्रल चर्च के एक पुरोहति जॉन के पुत्र थे; उनकी माता का नाम यूडोक्सयिा था। उनका जन्म थयिोडोसयिस द यंगर के शासन के अंतमि वर्षों के दौरान हुआ था[6597] । आदरणीय के एक रशि्तेदार, कोरथि के बशिप पीटर ने, उन्हें अभी कशिोर ही थे, कैथेड्रल चर्च में एक रीडर नयिुक्त कयिा। करियिकस ने सुबह से रात तक और रात से सुबह तक दव्यि धर्मग्रंथों को पढ़ने में स्वयं को समर्पति कर दयिा और पवत्रि धर्मग्रंथों का अध्ययन कयिा, यह आश्चर्य करते हुए कि कैसे परमेश्वर ने दुनयिा की शुरुआत से ही मानव जाति के उद्धार के लिए सभी चीजों को बुद्धमिानी से व्यवस्थति कयिा था, और कैसे हर पीढ़ी में उन्होंने उन लोगों पर महान सम्मान प्रदान कयिा जो उन्हें प्रसन्न करते थे और उन्हें महान महमिा प्रदान की। क्योंकि उसने हनोक को उसकी भक्ति के कारण महमिामय कयिा (उत्पत्ति 4:4), जबकि उसने नोआ को उसकी धार्मकिता के कारण सम्माननति कयिा, इस मानव जाति की इस चगिारी को, महाप्रलय से बचाकर[6598] (उत्पत्ति 7:1–24, 8:1–22), ने अपने वशि्वास के कारण अब्राहम को कई राष्ट्रों का पति घोषति कयिा[6599] (उत्पत्ति 12:4–5), यह दखिाया कि वह मेल्कजिेदक के धर्मी पुरोहतित्व से प्रसन्न था[6600] (उत्पत्ति 14:18–20; इब्रानयिों 7:1–28), ने यूसुफ को उसकी पवत्रिता के कारण गौरवान्वति कयिा (उत्पत्ति 41:39–57), और अय्यूब के व्यक्तित्व में सभी मानवजाति को धैर्य का एक उदाहरण दयिा (अय्यूब; याकूब 5:10–11), ने मूसा को वधि-िदाता बनाया, यहोशू को सूर्य और चंद्रमा के मार्ग को रोकने की अनुमति दी (यहोशू 10:12–14), ने दाऊद में एक नबी, एक राजा और मसीहा उद्धारकर्ता के पूर्वज को प्रकट कयिा, और जवानों के लिए बेबीलोन की भट्टी की लपटों को ओस में बदल दयिा (दानयि्येल 3:50)। लेकनि सबसे बढ़कर, सयिराकयिस मसीह के कुँवारी गर्भधारण और अकथनीय जन्म पर मनन करते हुए चकति हुआ—कि कैसे कुँवारी ने अपनी कुँवारीपन को अक्षुण्ण रखते हुए माँ का रूप धारण कयिा, और कैसे वचन परमेश्वर ने अपनी प्रकृति को बदले बनिा मनुष्य का रूप धारण कयिा, क्रूस के द्वारा नरक पर वजिय प्राप्त की, और छल करने वाले साँप को परास्त कर, आदम को स्वर्ग में पुनर्स्थापति कयिा। जब वह इस पर मनन करता और संतों के जीवन पढ़ता, तो सरिौबामस की आत्मा आग में जल उठी, और ईश्वर का भय उसके हृदय पर छा गया; वह ईश्वर के संतों का अनुकरण करने की आकांक्षा करने लगा और इस बात पर वचिार करने लगा कि वह पवत्रि नगर यरूशलेम कैसे जा सकता है और वहाँ, संसार का परत्यिाग करके, केवल ईश्वर की सेवा कैसे कर सकता है। ऐसे वचिारों में खोए हुए, एक रवविार को उन्होंने चर्च में उस दनि के सुसमाचार पाठ के शब्द सुने: *'यदि कोई मेरे पीछे आना चाहता है, तो वह अपना इन्कार करे, और अपना क्रूस उठाए, और मेरे पीछे चले'* (मत्ती 16:24)। सरियिाकस को जब यह एहसास हुआ कि ये शब्द उसी के लिए हैं, तो वह तुरंत चर्च से नकिल गया और, अपने इरादे के बारे में कसिी को बताए बनिा, बंदरगाह के कनिारे चला गया; वहाँ उसे फलिस्तीन के लिए रवाना होने वाला एक जहाज मलिा, तो वह ईश्वर में वशि्वास करके उसमें चढ़ गया और रवाना हो गया। जब सरियिकस ने एक नए याकूब की तरह, ईश्वर के लिए सब कुछ पीछे छोड़कर, अपने पति का घर (उत्पत्ति 28:7-10) छोड़ा, तब उसकी आयु अठारह वर्ष थी। वह जल्द ही

[6595] उत्पत्ति 5:24: *'हनुक परमेश्वर के साथ चलता रहा; और वह नहीं रहा, क्योंकि परमेश्वर ने उसे उठा लयिा।*' इस वाक्यांश का सामान्यतः यह अर्थ लगाया जाता है कि हनुक को स्वर्ग में उठा लयिा गया था। मेट्रोपॉलटिन फलिारेट कहते हैं, 'यह माननना चाहिए कि हनोक में, जब उनके आंतरकि मन ने एक धन्य युग के पूर्वनर्धिारति माप को प्राप्त कर लयिा, तो नश्वरता जीवन में समा गई (2 कुरन्थियिों 5:4), एक ऐसे तरीके से जो उस तरीके से कहीं अधकि उत्कृष्ट है जसिे हम शारीरकि मृत्यु कहते हैं।'

[6596] कोरथि – प्राचीन ग्रीस का सबसे पुराना, सबसे प्रसद्धि और सबसे अमीर शहर – कोरथि जलडमरूमध्य पर स्थति था, जो पेलोपोनेस (दक्षणिी ग्रीस) को बाकी ग्रीस से जोड़ता था, और यह आयोनयिन और एजयिन सागरों के बीच कोरथि की खाड़ी के दक्षणि-पूर्वी कोने में एक सुंदर और उपजाऊ मैदान में था। कोरथि में ईसाई धर्म की नींव प्रेरति पौलुस ने रखी थी। आज, प्राचीन कोरथि के खंडहर वर्तमान कोरथि शहर के पास स्थति हैं, जसिे कोरोन्तो के नाम से जाना जाता है, जसिकी जनसंख्या केवल लगभग 5,000 है।

[6597] लगभग 448 ईस्वी

[6598] नोआ को 'मानवता की चगिारी' कहा जा सकता है, क्योंकि एक तो बाढ़ से पहले मानव जाति के सर्वव्यापी भ्रष्टाचार के बीच, केवल उसी में—राख के बीच एक चगिारी की तरह—ईश्वर का सच्चा ज्ञान और धार्मकिता संरक्षति थी, और दूसरे क्योंकि बाढ़ के बाद, उसने कई वंशज उत्पन्न कयि, ठीक वैसे ही जैसे एक ही चगिारी से एक बड़ी लौ प्रज्वलति होती है।

[6599] खुद 'अब्राहम' नाम का अर्थ 'अनेकों का पति' है। प्रभु ने यह नाम अब्राहम को—जन्हिें तब तक अब्राम कहा जाता था—सरह से इसहाक के जन्म से पहले प्रदान कयिा।

[6600] सालेम के राजा मेल्कीजेदक, एक ही समय में सर्वोच्च परमेश्वर के याजक भी थे, जन्हिोंने अपने व्यक्तित्व में शाही और याजकीय दोनों पदों को एकीकृत कयिा, और प्रभु यीशु मसीह के याजक और राजसी मंत्रालय का पूर्वाभास दयिा। इब्रानयिों 7:1–28।

पवत्रि नगर यरूशलेम पहुँचा, जहाँ अनास्तासयिस बशिप थे; यह उनके बशिप के पद पर आठवें वर्ष और सम्राट लयिो के शासन के नौवें वर्ष की बात है[6601] ।

पवत्रि स्थानों का भ्रमण करने के बाद, सरियिाकस यूस्टोर्जउिस नामक परमेश्वर के एक पुरुष के पास गया, जसिने पवत्रि सयिोन के पास एक मठ की स्थापना की थी[6602] , और, उसके द्वारा स्वागत कए जाने के बाद, उसने वहाँ सर्दी बतिाई। भक्षिुओं के तपस्वी प्रयासों को देखकर, सरियिकस ने स्वयं भी मठवासी जीवन को समर्पति करना शुरू कर दयिा और, जैसे सीढ़ी चढ़ते हुए – एक सीढ़ी से दूसरी सीढ़ी पर – सदाचार के शखिर तक पहुँच गया। यूस्टोरजयिस के मठ में रहते हुए, उन्होंने कई लोगों से संत यूथमियिस के बारे में सुना, जन्हिोंने मरुभूमि में एक मठ[6603] की स्थापना की थी, और उनके अनुकरणीय जीवन के बारे में सुना; इसलए, उन्होंने धन्य यूस्टोरजयिस से वनिती की कि उन्हें यूथमियिस के मठ में भेज दें, क्योंकि वह मरुभूमि से प्रेम करते थे और वहाँ रहना चाहते थे। करियिकस को आवश्यक नर्दिेश देने के बाद, यूस्टोर्जयिस ने उसे प्रार्थना और आशीर्वाद के साथ पूजनीय यूथमियिस के पास भेज दयिा। यूथमियिस ने उसे प्रेम से स्वागत कयिा, क्योंकि उसने उसमें परमेश्वर के उन वरदानों को पहचान लयिा जो प्रकट होने वाले थे; और जल्द ही उन्होंने स्वयं सरियिाकस का मुंडन करके उसे एक भक्षिु बनाया और उसे जॉर्डन नदी के कनिारे संत गेरासमिस के पास भेज दयिा, जो महान थयिोक्टसि्टस के उत्तराधकिारी थे, जो प्रभु के पास जा चुके थे। यह देखकर कि सरियिाकस अभी भी बहुत छोटा था, संत गेरासमिस ने उसे मठ के सामुदायकि क्वार्टरों में उनके साथ रहने और वभिन्नि कर्तव्यों में काम करने का नर्दिेश दयिा[6604] ।

सरियिाकस ने खुद को हर तरह के काम के लए तैयार साबति कयिा और रसोई में सेवा की, लकड़ी काटी, पानी लाया और भोजन तैयार कयिा; वास्तव में, उसने हर काम कृतज्ञता के साथ कयिा, खुद को एक पल का भी आराम नहीं दयिा, और इस प्रकार अपने शरीर पर अत्यधकि भार डाला। क्योंकि दनि में वह मठ के लए अपनी पूरी ताकत से काम करता था, और रात में प्रार्थना में खड़ा रहता था, केवल कभी-कभी थोड़ी देर के लए ही सो जाता था; वह इतनी कठोरता से उपवास करता था कि हर दो दनि में केवल एक बार रोटी खाता और पानी पीता था। हालाँकि, जब त्योहारों के दनिों में प्रचलति रवािज़ के अनुसार, वह थोड़ी सी शराब चख लेता, तो वह पहले उसे पानी में मलिा देता, और इसी तरह तेल में सौंफ का रस डाल देता।

इतनी कम उम्र में ऐसी संयमशीलता देखकर, पूजनीय गेरासमिस चकति हो गए और उन्हें साइरयिाकस पसंद आ गया। गेरासमिस की एक प्रथा थी कि वे पवत्रि लेंट के दौरान रूवा नामक एक दूरस्थ रेगस्तिान में एकांतवास करते थे, जहाँ पूजनीय यूथमियिस भी कभी-कभी जाते थे। धन्य सरियिाकस के प्रति प्रेम से, गेरासमिस उसे अपने साथ रेगस्तिान में ले गए, ताकि उसे भी आत्म-त्याग के इस वशिेष रूप का अभ्यास करने का अवसर मलि सके। वहाँ, हर हफ्ते, सरियिाकस गेरासमिस के हाथों से मसीह के पवत्रि रहस्यों को ग्रहण करता था; इस प्रकार वे पाम संडे तक रेगस्तिान की खामोशी में रहे, और फरि अपनी आत्माओं के लए बहुत लाभ लेकर मठ लौट आए। कुछ समय बाद, आदरणीय यूथमीियस का नधिन हो गया; संत गेरासमिस को यह उनके कक्ष में रहते हुए पता चला, क्योंकि उन्होंने परमेश्वर के स्वर्गदूतों को खुशी से आदरणीय संत की आत्मा को स्वर्ग में उठाते हुए देखा। वह तुरंत सरीकियस को अपने साथ ले गए और यूथमीियस के मठ में पहुँचे, जहाँ उन्होंने पाया कि परम पूज्य प्रभु में नद्रिामग्न हो गए थे; उनके पवत्रि शरीर को उचति संस्कार से दफनाने के बाद, गेरासमिस अपने प्रयि शष्यि के साथ अपनी कुटयिा में लौट आए।

फलिस्तीन में सरियिाकस के आगमन के नौवें वर्ष में, ईश्वर के महान सेवक, गेरासमिस, ने अपने सांसारकि नविास को त्याग दयिा और शाश्वत नविास में प्रवेश कयिा। तब सत्ताईस वर्ष की आयु में सरियिाकस एक बार फरि से आदरणीय

[6601] संत लयिो प्रथम, बाइजेंटाइन सम्राट, ने 457 से 474 तक शासन कयिा। संत अनास्तासयिस प्रथम ने 458 से 478 तक यरूशलेम के पैट्रआर्क के रूप में कार्य कयिा। परम पूजनीय सरियिकस लगभग 465 में अपने माता-पतिा से गुप्त रूप से यरूशलेम के लए रवाना हुए।

[6602] ज़यिोन यरूशलेम का दक्षणि-पश्चमिी पहाड़ है, जसि पर यरूशलेम शहर बसा है और जसि पर यरूशलेम का कलिा स्थति है। पवत्रि शास्त्र में, ज़यिोन को पवत्रि पर्वत, परमेश्वर का नविास स्थान और घर कहा गया है, और इसका अर्थ अक्सर स्वयं यरूशलेम ही लयिा जाता है; इसी अर्थ में यहाँ इस नाम का उपयोग कयिा गया है।

[6603] संत यूथमीियस की लाव्रा यरूशलेम से बहुत दूर नहीं स्थति थी।

[6604] यूथमीियस महान अपने लाव्रा में बहुत कम उम्र के भक्षिुओं को स्वीकार नहीं करते थे, क्योंकि वे लाव्रा के कठोर, मठवासी जीवन के लए अभी तैयार नहीं थे और 'महान स्कीमा' के अभषिेक के अयोग्य थे, जो लाव्रा के तपस्वयिों के लए अनविार्य था, जनिके लए, साथ ही, मठ के भीतर सख्त एकांतवास भी अनविार्य था; हालाँकि, सामुदायकि मठों में जीवन कुछ मामलों में कम कठोर था।

यूथमियिस के मठ में लौट आए, जहाँ उन्होंने एक बार उनके पवत्रि हाथों से स्वर्गदूत की प्रतमिा[6605] प्राप्त की थी। उस समय मठ का मठाधीश एलयिाह था; एकांत में रहने के लिए एक कोठरी माँगने पर, सरियिकस वहाँ मौन में रहने लगा। मठ में उसे एक मत्रि मलि, थॉमस नाम का एक भक्षिु, जो एक महान उपवासी और मठवासी जीवन में परपिूर्ण था, और उसने पवत्रि आत्मा में उसके प्रत बिहुत प्रेम वकिसति कयि: दोनों को एक-दूसरे से लाभ हुआ, क्योंकि वे दोनों परमेश्वर की कृपा से परपिूर्ण थे। लेकनि वे अपनी मैत्रीपूर्ण संगत का आनंद अधकि समय तक नहीं ले सके, क्योंकि परमेश्वर की इच्छा ने उन्हें अलग कर दयि। इस प्रकार, धन्य थॉमस को डीकन फडिस द्वारा मठ के लिए आवश्यक कुछ वस्तुएँ खरीदने के लिए अलेक्जेंड्रयिा भेजा गया। इस अवसर पर, बशिप मार्टरियिस[6606] ने उन्हें अलेक्जेंड्रयिा के आर्चबशिप टमिोथी[6607] के लिए एक पत्र सौंपा। आर्चबशिप टमिोथी ने उनके आगमन पर थॉमस को अपने पास रोक लयि, क्योंकि उन्होंने उनमें नहिति अनुग्रह को पहचान लयि था, और उन्हें पदोन्नत करने के बाद, इथयिोपयि की भूमि का बशिप नयिुक्त कयि[6608] । वहाँ पहुँचने पर, धन्य थॉमस ने उस देश के सभी क्षेत्रों को ईसाई धर्म के प्रकाश से प्रकाशति कयि और कई चह्निों और चमत्कारों को करने के बाद, उन्हें सौंपे गए झुंड के लिए एक अच्छा चरवाहा बने।

अपने मत्रि, भक्षिु थॉमस को खोने के बाद, संत साइरयिाकस ने गहरी मौन की कसम ली और अपनी कोठरी में बंद होकर रहे, जैसे कि किसी कब्र में दफ़न हों, और केवल ईश्वर से संवाद करते थे। और वे उस मठ में दस वर्षों तक रहे, जहाँ उन्हें डीकन के रूप में अभषिक्ति कयि गया था। उस समय, दोनों मठ—संत यूथमिीयस का मठ और संत थयिोकटस्टिस का मठ—एक ही सामुदायकि जीवन और एक ही प्रशासन साझा करते थे, जो महान संत यूथमिीयस के नयिम का पालन करते थे। लेकनि शत्रु ने इन मठों में अशांत भिड़काई और उनके बीच वभिाजन और कलह बो दी। मठों के बीच इस वभिाजन से दुखी होकर, संत सरियिकस सुकयि मठ में चले गए, जसिकी स्थापना आदरणीय चारटिोन ने की थी, और उन्होंने मठ के कर्तव्यों का पालन करना शुरू कर दयि। बेकरी और औषधालय में वभिन्नि सेवाओं में चार साल बतिाने और सभी संतों की स्वीकृति प्राप्त करने के बाद, उन्हें एक डकिन के कर्तव्यों का पालन करने की अनुमति दी गई; तीन साल बाद, अपने जीवन के चालीसवें वर्ष में, सरियिकस को एक प्रेस्बटिर के रूप में अभषिक्ति कयि गया और बाद में कैनोनार्क[6609] नयिुक्त कयि गया, यह पद उन्होंने अठारह वर्षों तक संभाला; कुल मलिाकर , वे सुकी मठ में तीस से अधकि वर्षों तक रहे। उन्होंने स्वयं गवाही दी कि, जब वह एक कैनोनार्क थे, तो सूर्य ने उन्हें न तो कभी खाते हुए देखा और न ही कसिी पर क्रोध करते हुए। उन्होंने यह भी कहा कि हर शाम, जब वह प्रार्थना करने के लिए अपनी कोठरी में खड़े होते थे, तो वह आधी रात की प्रार्थना के लिए घंटी[6610] बजने तक भजन-संग्रह पढ़ते और उसका जाप करते थे।

और भी कठोर जीवन जीने की इच्छा से, सरियिाकस, अपने जीवन के सत्तरवें वर्ष में, रेगस्तिान में चले गए। वे अपने साथ एक शष्यि को ले गए और, लंबे समय तक रेगस्तिान में यात्रा करने के बाद, वे उसके उस हस्सि में पहुँचे जसिे नटुफ कहा जाता है, जहाँ वे बस गए। चूंकि उसे जीवति रहने के लिए कुछ भी नहीं मलि, क्योंकि उस रेगस्तिान की वनस्पति अत्यंत कड़वी थी, उसने ईश्वर से प्रार्थना की और उनकी दया पर भरोसा करके, अपने शष्यि से कहा:

'जाओ, मेरे बच्चे, कुछ कड़वी जड़ी-बूटयिाँ इकट्ठी करो और उन्हें उबालो: सर्वशक्तमिान ईश्वर धन्य हो – वह हमें इन्हीं जड़ी-बूटयिों से जीवति रखेगा!'

शष्यि ने संत के आदेश के अनुसार कयि; और ईश्वर, जो उन सभी का पोषण करते हैं जो उन पर भरोसा करते हैं, ने उस जड़ी-बूटी की कड़वाहट को मठिास में बदल दयि, और यह चार साल तक उनका भोजन बनी रही। चौथे वर्ष के अंत

[6605] 'देवदूत रूप' से तात्पर्य मठवासी जीवन की दीक्षा से है, जसिमें लोगों को, एक तरह से, अदेह देवदूतों जैसा बनना होता है, जो अपना सारा समय ईश्वर के चतिन, प्रार्थना और शरीर पर वजिय पाने के उद्देश्य से वभिन्नि उच्च आध्यात्मकि कृत्यों को समर्पति करते हैं।

[6606] यहाँ 'बशिप' शब्द का तात्पर्य यरूशलेम के पैट्रआर्क मार्टरियिस से है, जन्होंने 478 से 486 तक यह पद संभाला।

[6607] टमिोथयिस द्वतिीय सालोफाकएिल – 460 से 482 तक अलेक्जेंड्रयिा के पैट्रआर्क।

[6608] इथयिोपयि – मस्रि के दक्षणि में स्थति एक वशिाल देश का प्राचीन नाम। यह मुख्य रूप से अबसिनियि को संदर्भति करता है, जहाँ चौथी शताब्दी की शुरुआत में ही ईसाई धर्म फैल गया था।

[6609] 'कैनोनार्क' का अर्थ है 'नर्धिारति कीर्तन शुरू करने वाला'। प्राचीन काल में, मठों की गरीबी के कारण, जसिसे वे पूजा-पाठ की कतिाबों की पर्याप्त प्रतयिाँ रखने में असमर्थ थे, और साथ ही साक्षर गायकों की संख्या कम होने के कारण, यह प्रथा बन गई कि पवत्रि भजन नर्देशानुसार गाए जाएँ। भक्षिुओं में से एक, हाथ में कतिाब लेकर, एक-एक वाक्यांश ज़ोर से पढ़ता था, जबकि अन्य गायक दल के सदस्य इन वाक्यांशों को बोले जाने पर गाते थे। 'कैनोनार्की' आज भी मठों में मौजूद है।

[6610] 'बलिो' एक धातु या लकड़ी का तख्ता होता है, जो प्राचीन काल में—और कुछ जगहों पर आज भी—भक्तों को पूजा के लिए बुलाने हेतु घंटयिों का वकिल्प के रूप में काम करता है।

में, कोमाइट्स के बुजुर्ग, फेकुआ के ए[6611] , ने रेगिस्तान में अपने झुंड चरा रहे चरवाहों से सरियिकस के बारे में सुना। रोटी का एक बोरा खच्चर पर लादकर, वह साइरियाकस के पास आशीर्वाद और प्रार्थना के लिए आया। प्रार्थना करने के बाद, साइरियाकस ने उसके साथ आत्मा के लिए लाभकारी वषियों पर बात की, और फरि उसे अपनी आशीर्वाद के साथ वदिा कयिा; उस समय से, वे उस बूढ़े द्वारा लाई गई रोटी खाने लगे। लेकनि एक दनि, करियिाकोस के शष्यिों में से एक ने आशीर्वादति संत की आज्ञा के बनिा एक औषधि बिना ली, और जब उन्होंने उसका स्वाद चखा, तो उन्हें इतनी कड़वाहट महसूस हुई कि वे एक भी शब्द नहीं बोल सके। जब वृद्ध को बोल न सकने का कारण समझ आया, तो उन्होंने उस पर प्रार्थना की, उसे परम पवत्रि रहस्य प्रदान कए, और इस प्रकार उसकी पीड़ा को ठीक कर दयिा। तत्पश्चात, उन्होंने उसे शकि्षा के रूप में कहा:

'ईश्वर हमेशा चमत्कार नहीं करते, बल्कि केवल हमारे संकट और अत्यंत आवश्यकता के समय में करते हैं; जब हमारे पास रोटी नहीं थी, तो ईश्वर ने हमारे लिए जड़ी-बूटी को मीठा बना दयिा ताकि हम उसे खा सकें; लेकनि अब हमारे पास रोटी है, और क्या कड़वी जड़ी-बूटी को मीठी चीज़ में बदलने के लिए कसिी चमत्कार की कोई आवश्यकता है?'

लेकनि फरि रोटी खत्म हो गई, और एक बार फरि भोजन की कमी हो गई; तो वृद्ध ने अपने शष्यि से एक बार फरि कहा:

'ईश्वर धन्य हो, मेरे बच्चे – जड़ी-बूटयिाँ इकट्ठी करो और पकाओ।'

शष्यि ने आज्ञा का पालन कयिा, लेकनि जब खाने का समय आया, तो वह इसे चखना नहीं चाहता था, इस डर से कि इससे उसे फरि से पीड़ा होगी; हालाँकि, बूढ़े ने भोजन पर क्रॉस का चह्नि बनाकर आशीर्वाद दयिा और पहले खुद चखा; और फरि, बूढ़े को देखते हुए, शष्यि ने भी उसे चखने की हम्मित की, और उन दोनों में से कसिी को भी कोई नुकसान नहीं हुआ, क्योंकि उन्होंने पाया कि भोजन पहले की तरह ही मीठा था, और उस समय से उन्होंने उस जड़ी-बूटी का सेवन करना शुरू कर दयिा।

सैरीकयिस के मरुभूमि में रहने के पाँचवें वर्ष में, फेकुआ का एक व्यक्ति उस धन्य पुरुष के बारे में सुनकर अपने पुत्र को उसके पास ले आया—एक लड़का जो हर अमावस्या पर एक उग्र दानव द्वारा पीड़ति रहता था—और उसने संत से अपने पुत्र पर दया करने और उस दुष्ट पीड़क को उससे भगा देने की वनिती की। एक प्रार्थना करने के बाद, सरियिाकस ने उस बीमार लड़के पर पवत्रि तेल का अभषिेक कयिा, उस पर क्रॉस का चह्नि बनाया, और इस प्रकार उस दानव को भगा दयिा। फरि वह व्यक्ति अपने चंगा हो चुके पुत्र के साथ घर लौट आया और इस चमत्कार के बारे में सभी को बताया।

संत के चमत्कार की ख़बर सारी भूमि में फैल गई, और बहुत से लोग उनके पास आने लगे – कुछ आशीर्वाद पाने के लिए, कुछ रोग मुक्ति के लिए, और कुछ उनके साथ बात करके आध्यात्मकि लाभ प्राप्त करने की इच्छा से। मानवीय महमिा से दूर रहते हुए, संत सरियिकस रुवा नामक एक भीतरी रेगिस्तान में चले गए, और वहाँ पाँच साल तक मेलाग्रयिा नामक पौधे की जड़ों और सरकंडों की ताज़ी कोंपलों पर जीवति रहे[6612] । लेकनि वहाँ भी कुछ लोग उसे ढूंढ लेते थे और अपने बीमारों और अशुद्ध आत्माओं से ग्रस्त लोगों को उसके पास लाते थे; संत ने, तथापि, उन्हें सभी को क्रॉस के चह्नि और प्रार्थना से चंगा कर दयिा।

वहाँ भी कोई शांति न पाकर, संत रुवा से चले गए और एक सुनसान तथा एकांत क्षेत्र में बस गए जहाँ एक भी तपस्वी नहीं था: इस स्थान को सुसाकमि कहा जाता था और यह सुकी मठ से नब्बे पोप्राइश्च[6613] दूर स्थति था। एक समय यहाँ दो गहरी नदयिाँ बहती थीं, लेकनि बाद में वे सूख गईं, और पीछे केवल एक गहरा और चौड़ा नदी का तल रह गया। कुछ के अनुसार, ये इफामा की नदयिाँ थीं, जनिका उल्लेख दाऊद ने भजन संहति में ईश्वर को संबोधति करते हुए कयिा था: *'तूने*

[6611] 'कोमर्टिी' शब्द का मूल रूप से उपयोग ज़ार के अंगरक्षकों को संदर्भति करने के लिए कयिा जाता था। बाद में, यह उपाधि सामान्य रूप से उच्चतम-रैंकगि अधकिारयिों - प्रोकॉन्सल, प्रांतीय गवर्नर और गवर्नर - के अनुचर दल के अधकिारयिों पर भी लागू होने लगी; बाद में कोमर्टिी के कर्तव्यों में राज्य कोषागार के लिए करों का संग्रह भी शामलि हो गया।

[6612] मेलग्रयिा फलस्तीन का एक कम-ज्ञात रेगिस्तानी पौधा है जसिका स्वाद कड़वा होता है। यहाँ 'रीड' शब्द तथाकथति सुगंधति रीड को संदर्भति करता है - एक ऐसा पौधा जसिकी जड़ सुगंधति और सुखद होती है, हालांकि स्वाद में कड़वी होती है।

[6613] हमारे हसिाब से, 90 पोप्रीश्चे लगभग 124 वर्स्ट होते हैं।

महान नदियों को सूखा दिया[6614] (भजन संहिता 73:15)। और सेंट सिरिकस वहाँ सात वर्षों तक रहे, स्वर्गदूतों के समान जीवन व्यतीत करते हुए।

ईश्वर की व्यवस्था से, उन भूमिओं पर अकाल और महामारी आई। आने वाली विपत्ति के भय से, सूकी लाव्रा के पितागण संत सिरिअिकस के पास आए और उनसे अपने मठ में आने की विनती करने लगे; क्योंकि उनका विश्वास था कि यदि संत सिरिअिकस उनके साथ होंगे, तो ईश्वर का क्रोध उनसे टल जाएगा। और ऐसा ही हुआ। भाइयों के अनुरोध पर मठ में पहुँचकर, पूजनीय सेंट साइरियाकस ने मठ के पास एक संन्यासी की गुफा में निवास किया, जहाँ पहले पूजनीय चैरटिन रहा करते थे।

उस समय, ओरजिनस्टि विधिर्म[6615] को बल मिल रहा था; संत सिरिकियिस ने इसे उखाड़ फेंकने के लिए बहुत प्रयास किया, उन्होंने अधर्मी विधिर्मी शिक्षाओं का खंडन किया, प्रार्थना और वचन के माध्यम से भटक गए लोगों को वापस सच्चे मार्ग पर लाया, और ऑर्थोडॉक्स को उनके विश्वास में मजबूत किया। इस जीवनी के लेखक, सिरिल, इस बारे में निम्नलिखित कहते हैं:

– उस समय, यूथमियस महान के मठ को छोड़कर, मैं संत सावस के मठ में आदरणीय बिशप जॉन द साइलेंट के पास आया। उन्होंने मुझे एक पत्र लेकर बाबा सिरियाकस के पास भेजा ताकि उन्हें पवित्र नगर में विधिर्मियों द्वारा पैदा की गई कलह के बारे में सूचित किया जा सके, और उनसे अनुरोध किया कि वे विधिर्मी नेताओं, नोनस और लियोन्टियस, जिनके अहंकार को ध्वस्त करने के लिए ईश्वर से अखंड प्रार्थना करें, जो मसीह के विरुद्ध ओरजिन की धर्मनिंदा को दोहरा रहे थे। सुकी के मठ में पहुँचने पर, मैं आदरणीय चारटिॉन की गुफा में गया और धन्य सिरियाकस को प्रणाम करने के बाद, उन्हें पत्र सौंपा, साथ ही यह भी बताया कि अद्भुत जॉन द साइलेंट ने मुझे क्या कहने का आदेश दिया था। संत ने मुझसे कहा:

'जिस पिता ने तुम्हें भेजा है, वह शोक न करे, क्योंकि शीघ्र ही, ईश्वर की कृपा से, हम विधिर्म के पतन के साक्षी बनेंगे।'

और उन्होंने ओरजिन के सिद्धांत के प्रचारकों, नोनस और लियोन्टियस की निकिट मृत्यु की भविष्यवाणी की। अपने शिक्षाप्रद संवाद को जारी रखते हुए, सिरियिकस ने मुझे ओरजिनिस्टिों की मूर्खता और धोखे के बारे में समझाया और बताया कि इस विधिर्म के नुकसान और इससे गुमराह हुए लोगों के विनाश का खुलासा उन्हें दिव्य प्रकटकिरण के माध्यम से कैसे हुआ था। हमारी बातचीत से यह जानने के बाद कि मैं महान यूथमियिस के मठ का एक भिक्षु था, धन्य संत ने कहा:

'तो, भाई, आप भी उसी मठ से हैं जहाँ मैं रहता हूँ।'

और उन्होंने मेरी आत्मा के हित के लिए यूथमियस के बारे में मुझसे विस्तार से बात करनी शुरू की; और, अपने मधुर प्रवचन के माध्यम से शिक्षाप्रद कथाओं से मेरी आत्मा को पोषित करने के बाद, उन्होंने मुझे शांति से विदा किया। जल्द ही धन्य सिरियाकस की भविष्यवाणी सच हुई, क्योंकि विधिर्म के नेता अचानक मर गए, विधिर्मी समुदाय भंग हो गया, और ऑर्थोडॉक्स का उत्पीड़न समाप्त हो गया। तब सिरीयाकस, अपनी चिंताओं से मुक्त होकर, पूजनीय चैरटिन की गुफा से चले गए और अपने जीवन के निन्यानवेवें वर्ष में सुसाकमि लौट आए, जहाँ उन्होंने आठ वर्ष मौन में बिताए।

एक बार फिर उस पवित्र पुरुष के पूजनीय मुख को देखने और उनके मधुर संभाषण का आनंद लेने की इच्छा से, मैं सुकिया मठ के लिए रवाना हुआ और वहाँ उनके शिष्य जॉन को पाकर, धन्य सिरियाकस से मिलने के लिए उनके साथ सुसाकमि गया। जब हम उस स्थान के पास पहुँचे, तो हमारा सामना एक विशाल और भयानक शेर से हुआ। जब संत के शिष्य जॉन ने देखा कि उस जानवर ने मुझे आतंकित कर दिया है, तो उन्होंने मुझसे कहा:

[6614] 'इफ़ाम' – हिब्रू से अनुवादित, इसका अर्थ है: पार न करने योग्य, गहरा और तीव्र।

[6615] ओरजिन – अलेक्जेंड्रिया के चर्च के प्रसिद्ध ईसाई शिक्षक (मृत्यु 254) – अपनी विशाल बुद्धि और ज्ञान की गहराई के लिए अपने युग के एक अद्भुत व्यक्ति थे। चर्च के कई सबसे प्रतिष्ठित धर्मपिताओं ने ओरजिन के धर्मशास्त्रीय कार्यों और उपलब्धियों को सर्वोच्च सम्मान दिया; फिर भी बाद में, जब वह जीवित था, तो उसे अलेक्जेंड्रिया की दो स्थानीय परिषदों में एक विधिर्मी घोषित कर दिया गया और, उसकी मृत्यु के बाद, 543 में कॉन्स्टेंटिनोपल की स्थानीय परिषद में भी ऐसा ही किया गया। हालांकि उन्होंने अपने गैर-पारंपरिक विचारों को अपरिवर्तनीय सत्य के रूप में प्रस्तुत नहीं किया, फिर भी ओरजिन ने ईसाई चर्च के कई सत्यों पर गलत विचार रखे, यही कारण है कि कुछ लोगों ने सबसे बुनियादी ईसाई सिद्धांतों के प्रति उनके दृढ़ पालन को संदिग्ध माना।

'भैया सरिलि, डरो मत: यह सहि हमारे पिता का सेवक है और उसके पास आने वाले भाइयों को कोई हानि नहीं पहुँचाता।'

वास्तव में, शेर ने यह देखकर कि हम वृद्ध के पास जा रहे थे, रास्ते से हट गया। मुझे देखकर, बाबा सरिअिकस ने कहा:

'मेरे मठ से एक भाई, सरिलि, मुझसे मिलने आ रहे हैं।'

एक प्रार्थना कहने के बाद, हम बैठ गए और बातें करने लगे। और उसके शिष्य जॉन ने उससे कहा:

'फादर! शेर को देखकर भाई सरिलि बहुत डर गए थे।'

तब वृद्ध ने मुझसे कहा:

'मेरे पुत्र सरिलि, उस शेर से मत डरना, क्योंकि वह मेरे साथ रहता है और इन थोड़ी-सी सब्जियों को जंगली बकरियों से बचाता है।'

तब संत ने मुझे महान यूथमियस और अन्य मरुभूमि के पिताओं के बारे में बहुत कुछ बताया, जिन्होंने सदाचारी जीवन जिया था, और बाद में उन्होंने मेरे लिए भोजन लाने का आदेश दिया। जब हम खा रहे थे, तो शेर आया और हमारे सामने खड़ा हो गया; वृद्ध उठे और उसे रोटी का एक टुकड़ा देते हुए कहा:

'जाओ और सब्जियों की रखवाली करो।'

और मुझसे कहा:

'क्या तुम यह शेर देखते हो, मेरे बच्चे? वह न केवल सब्जियों की रखवाली करता है, बल्कि यहाँ से चोरों और बर्बर लोगों को भी भगा देता है: दुष्ट लोगों ने इस विनिम्र स्थान पर कई बार हमला किया है, लेकिन शेर उन्हें भगा देता है।'

यह सुनकर, मैं चकित हो गया और मैंने उस ईश्वर की स्तुति की, जिसने जंगली जानवरों को अपने संत के लिए भेड़ों की तरह वश में कर रखा था। मैं उसके साथ केवल एक दिन ही रहा, फिर भी मैंने बहुत कुछ सीखा; अगले सुबह, प्रार्थना करने के बाद, उसने मुझे अपना आशीर्वाद दिया और मुझे शांतिपूर्वक विदा किया, और अपने शिष्य को मेरे साथ भेजने का निर्देश दिया। जब हम संत के निवास से निकले, तो हमें रास्ते में एक शेर मिला, जो एक जंगली बकरी खा रहा था; उसके पास से गुजरने की हिम्मत न करते हुए, हम रुक गए; लेकिन जब उसने देखा कि हम स्थिर खड़े हैं, तो वह अपना शिकार छोड़कर, सड़क से उतर गया और हमें जाने दिया।

जहाँ पूज्य रहते थे, वह जगह सूखी और पानी से वंचित थी, और वहाँ कोई कुआँ नहीं था; लेकिन उस धन्य व्यक्ति ने चट्टान में एक गड्ढा खोदकर उसमें सर्दियों के दौरान पानी जमा किया करता था, और यह पानी गर्मियों में उनके और उनकी सब्जियों को पानी देने के लिए पर्याप्त था। लेकिन एक साल, जुलाई के महीने में, तीव्र गर्मी के कारण चट्टान में जमा पानी सूख गया। पानी की कमी से दुखी होकर, संत ने स्वर्ग की ओर अपनी आँखें उठाईं और इन शब्दों से प्रार्थना की:

'हे ईश्वर, जिन्होंने मरुभूमि में प्यासे इस्राएल को पान कराया (निर्गमन 17:1–6; गिनती 20:2–12)! इस मरुभूमि में मुझे भी मेरे विनिम्र शरीर की आवश्यकताओं के लिए थोड़ा सा पानी प्रदान करें।'

और तुरंत ही सुसाकमि के ऊपर एक छोटा सा बादल दिखाई दिया; संत के आवास के चारों ओर बारिश हुई और पत्थरों के बीच की सभी खाइयों को भर दिया। ईश्वर ने अपने सेवक की प्रार्थना इतनी शीघ्रता से सुनी।

'मैं इसे उपयोगी मानता हूँ,' इस जीवनी के लेखक, सरिलि, कहते हैं, 'यहाँ वह उल्लेख करना जो धन्य स्यरीकियस के शिष्य, फादर जॉन ने मुझे बताया था। जब हम उनके साथ रेगिस्तान में चल रहे थे, तो उन्होंने मुझे एक विशेष स्थान दिखाया, और कहा:

'यह धन्य मरियम का निवास है।'

मैंने उससे उसके बारे में बताने के लिए कहा, और उसने कहना शुरू किया:

'कुछ समय पहले,' उन्होंने कहा, 'जब मैं अपने मित्र, भाई पैरामोन के साथ, फादर सरियिकस के पास जा रहा था, तो हमने दूर एक आदमी को खड़ा देखा और सोचा कि वह कोई तपस्वी होगा; हम उसे श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए उसकी ओर भागे, लेकिन जब हम उस स्थान के पास पहुँचे, तो वह तुरंत हमारी दृष्टि से ओझल हो गया। यह सोचकर कि यह एक दुष्ट आत्मा है, हम बहुत डर गए और प्रार्थना करने लगे। अपनी प्रार्थना समाप्त करने के बाद, हमने चारों ओर देखा और जमीन में एक गुफा पाई, और हमें एहसास हुआ कि वह कोई दुष्ट आत्मा नहीं, बल्कि ईश्वर का कोई सेवक था

जो हमसे छपि रहा था। गुफा के पास जाकर, हमने उससे प्रार्थना की और वनिती की कि वह हमें अपना रूप दखिाए और हमें अपनी प्रार्थनाओं और सत्संगति से वंचति न करे। और हमें गुफा के भीतर से यह उत्तर सुनाई दयिा:

'तुम मुझसे क्या लाभ चाहते हो? मैं एक पापी और साधारण स्त्री हूँ।'

और उसने हमसे पूछा:

'तुम कहाँ जा रही हो?'

हमने उत्तर दयिा:

'हम संत करियिकोस के पास जा रहे हैं; लेकनि भगवान के लिए, हमें बताओ: तुम्हारा नाम क्या है, तुम कैसे जीती हो, तुम कहाँ से हो, और तुम यहाँ क्यों आई हो?'

उसने उत्तर दयिा:

'तुम जहाँ जाना चाहते थे, वहाँ जाओ, और जब लौटोगे, तो मैं तुम्हें सब कुछ बताऊँगी।'

हमने, तथापि, उसे आश्वासन देते हुए कहा:

'जब तक हम आपका नाम और आपका जीवन-यापन नहीं जान लेते, तब तक हम नहीं जाएँगे।'

जब उसने देखा कि हमारा जाने का कोई इरादा नहीं है, तो वह गुफा से हमें दखिाई दिए बनिा, अपने बारे में बोलने लगी:

मेरा नाम मारयिा है; मैं मसीह के पुनरुत्थान के चर्च में एक स्तोत्री ([6616]) थी, और शैतान ने मेरे माध्यम से कई लोगों को भटकाया; मुझे इस डर से काँप उठा कि मैं किसी के दुष्ट वचिारों और पतन का साधन बन जाऊँगी, और, यह सोचकर कि इससे मेरे अपने पाप और बढ़ जाएँगे, मैंने ईश्वर से वनिम्रतापूर्वक प्रार्थना की कि वह मुझे इस तरह के प्रलोभन से बचाए। तो, एक दनि, जब मेरे हृदय में दया जगी और मैं ईश्वर के भय से भर गई, मैं सलिोम गई, वहाँ एक पात्र में पानी भरा, अपने साथ भगिोए हुए बीन्स की एक टोकरी ली, और, अपना सब कुछ दैवीय मध्यस्थता पर सौंपकर, पवत्रि नगर से रात में रेगस्तिान की ओर नकिल पड़ी। परन्तु, ईश्वर मुझे यहाँ लाने के लिए प्रसन्न हुए, और अब अठारह वर्षों से मैं यहीं रह रहा हूँ; और, ईश्वर की कृपा से, आज तक न तो मेरे पात्र का पानी सूखा है और न ही मेरी टोकरी के दाने कम हुए हैं। अब, मैं आपसे वनिती करता हूँ, फादर करियिाकोस के पास जाएँ और अपने मामले नपिटा लें; और जब आप लौटें, तो इस दीन आत्मा से मलिने अवश्य आएँ।

यह सुनकर हम फादर करियिाकोस के पास गए और उन्हें वह सब कुछ बताया जो हमने धन्य मरयिम से सुना था। करियिाकोस चकति हो गए और कहा:

'महमिा हो तुम्हारी, हे हमारे ईश्वर! कतिने ही गुप्त संत हैं तुम्हारे, न केवल पुरुष बल्कि महलिाएँ भी, जो गुप्त रूप से तुम्हारी सेवा करती हैं! जाओ, मेरे बच्चों, इस ईश्वर की सेवकिा के पास, और जो कुछ भी वह तुमसे कहे, उसे मन में रखो।'

आदरणीय सरियिाकस के पास से लौटकर, हम धन्य मरयिम की गुफा पर आए और उसे पुकारकर कहा:

'हे परमेश्वर की दासी मरयिम! हम आपके आज्ञानुसार आए हैं।'

लेकनि कोई जवाब नहीं आया। गुफा के मुहाने में प्रवेश करके, हमने प्रार्थना की, लेकनि मरयिम ने हमें उत्तर नहीं दयिा; हालाँकि, जब हम गुफा के अंदर गए, तो हमने मरयिम को प्रभु में सुला हुआ पाया, और उनके पवत्रि शरीर से एक अत्यंत सुगंधति खुशबू नकिल रही थी। हमारे पास उसे कपड़े पहनाने या दफ़नाने के लिए कुछ भी नहीं था, इसलिए हम मठ गए और वहाँ से आवश्यक सभी चीजें ले आए। धन्य कन्या को कपड़े पहनाकर, हमने उसे गुफा में दफ़नाया और उसके मुँह पर एक पत्थर रखकर उसे सील कर दयिा।

यह वही है जो फादर जॉन ने मुझसे कहा; और मैं, ईश्वर की उस दासी द्वारा व्यतीत जीवन से चकति होकर, अपने हृदय में यह संकल्प कयिा कि मैं इन शब्दों को उन लोगों के नरि्माण के लिए लखिूँगा जो इन्हें सुनते हैं और मानव जाति के प्रेमी, ईश्वर की महमिा के लिए, जो उनसे प्रेम करते हैं, उन्हें धैर्य प्रदान करते हैं।'

सुसाकमिा में अपने आठवें वर्ष के अंत के करीब, आदरणीय सरियिाकस बहुत वृद्ध हो गए थे, क्योंकि वे पहले ही एक सौ सात वर्ष के हो चुके थे। सुकयिा मठ के पादरी एकत्रति हुए और आपस में परामर्श कयिा:

[6616] ईसाई पूजा सेवाओं के दौरान भजन पढ़ना भजनकार का कर्तव्य था।

उन्होंने कहा, 'हमें ऐसे पिता को हमारे मठ से दूर निधन करने नहीं देना चाहिए; अन्यथा, हमें उनके सम्मानजनक निधन का पता नहीं चलेगा और हम उनके अंतिम आशीर्वाद से वंचित रह जाएँगे।'

संन्यासी से मिलने के लिए निकलकर, उन्होंने उनसे बहुत अनुरोध किया कि वे सुविधाजनक से मठ के पास स्थित पूजनीय चैरिटिन की गुफा में चले आएं, जहाँ उन्होंने पहले ओरजिनिसिस्टों से संघर्ष करते हुए निवास किया था। अंततः उनके अनुरोधों के आगे झुकते हुए, साइरियाकस ने ईश्वर के पास जाने से दो साल पहले चैरिटिन की गुफा में निवास कर लिया।

लेखक कहते हैं, 'जहाँ तक मेरी, एक निम्न आत्मा की बात है, मैं अक्सर उन्हें सांत्वना देने के लिए वहाँ जाता था और उनके पवित्र संभाषणों और महान कार्यों से अपनी आत्मा के लिए बहुत लाभ प्राप्त करता था। अपनी उन्नत आयु के बावजूद, संत सिरियिकस अपनी शारीरिक शक्ति के लिए प्रसिद्ध थे; वे मेहनती और बहुत सक्रिय थे। कभी भी निष्क्रिय न रहते हुए, वे या तो प्रार्थना कर रहे होते या काम कर रहे होते। वे सभी के लिए सुलभ, विवेकी, शिक्षाप्रद और रूढ़िवादी व्यक्ति थे, और पवित्र आत्मा तथा परमेश्वर की कृपा से परिपूर्ण थे। जब हमारे प्रभु ने, संत के अनेक कार्यों के बाद, उन्हें स्वर्गीय विश्राम में भेजने की ठानी, तो वह आदरणीय संत बीमार पड़ गए, लेकिन केवल थोड़े समय के लिए ही रहे। उस मठ के मठाधीश और भाइयों को अपने पास बुलाकर, उन्होंने आत्मा के उद्धार पर एक उपदेश दिया और सभी को चूमकर, उन पर आशीर्वाद दिया। तब, स्वर्ग की ओर देखकर और अपने हाथ फैलाकर, उन्होंने सभी भाइयों के लिए प्रार्थना की और अपनी सम्मानित तथा पवित्र आत्मा को प्रभु के हाथों में सौंप दिया, ईSeptember[6617] के उन्नीसवें दिन। उन्होंने कुल एक सौ नौ वर्ष का जीवन जिया।

भाइयों ने, उनके लिए सिसक-सिसक कर रोते हुए, उनके पवित्र शरीर को उपयुक्त भजनों और स्तोत्रों के साथ दफनाया, परमेश्वर की महिमा की और उनके सेवक के लंबे समय के परिश्रम को याद किया।

हम पापियों द्वारा भी, अब और हमेशा और युगों-युगों तक हमारे परमेश्वर को महिमा मिले! आमीन।

कॉन्टाकियन, स्वर 8:

एक शक्तिशाली योद्धा और मध्यस्थ के रूप में, पवित्र मठ सदैव आपका सम्मान करता है और आपके वार्षिक स्मरणोत्सव '[6618] ' का उत्सव मनाता है, परन्तु चूँकि आपके पास प्रभु के सामने साहस है, हमें हमारे शत्रुओं से बचाइए, ताकि हम पुकार सकें: 'हे अति धन्य पिता, आनन्दित हो।'

पवित्र शहीदों दादा, गावेडडे और काज़दोई की स्मृति

29 सितंबर को स्मरणोत्सव

फ़ारस के राजा सापर के दिनों में, जो पवित्र शहीद गावेद्दा के पिता थे, राजदरबार में दादा नाम का एक ईसाई रहता था, जो राजा के कुलीनों में सबसे प्रमुख था, और राजा द्वारा बहुत प्रिय और सम्मानित था। राजा ने उसे फारस साम्राज्य के एक प्रांत का शासन करने के लिए भेजा, यह जाने बिना कि वह एक ईसाई था। जल्द ही राजा को यह सूचना मिली कि दादा मसीह की शिक्षाओं का प्रचार करता है। तब राजा ने यह पता लगाने के लिए कि यह सच है या नहीं, एंड्रोमेलिक नामक एक कुलीन व्यक्ति को भेजा। यह सत्य पाते ही, एंड्रोमेलिक ने शपूर को यह सूचित करने के लिए लिखा। इसके बाद, राजा ने इस कुलीन को अपने राज्य के ईसाइयों पर पूरा अधिकार दे दिया, जबकि उसने स्वयं अपने बेटे गावेदाए के साथ मिलकर दादा से पूछताछ शुरू कर दी; और उनसे हुई बातचीत से, वह और भी अधिक आश्वस्त हो गया कि दादा प्रभु यीशु मसीह में पूरे दिल से विश्वास करते थे और उनके लिए मरने को तैयार थे। तब एक बड़ी आग जलाई गई, और वे संत दादा को उसमें फेंकने का इरादा कर रहे थे। आग इतनी विशाल थी कि उसे देखने वाले सभी लोग भय से भर गए। जब संत दादा जलती हुई लपटों के पास पहुँचे, तो उन्होंने क्रॉस का चिह्न बनाया। अचानक, सभी ने देखा कि आग बुझ गई थी और उसकी जगह पानी बह रहा था, और वे इतने बड़े चमत्कार को देखकर चकित रह गए। और राजा के बेटे, गावेडे ने पवित्र शहीद से पूछा:

[6617] संत सिरियिकस की मृत्यु 556 में हुई।

[6618] अर्थात्, आपकी स्मृति का वार्षिक उत्सव मनाया जाता है।

'यह जादू तुम्हें कसिने सखिाया?'

संत दादा ने उत्तर दयिा:

'यदि तुम भी उस शिक्षा का पालन करना चाहते हो जसिका मैं पालन करता हूँ, तो तुम भी ऐसे चमत्कार करने के योग्य माने जाओगे।'

गावेदई ने पूछा, 'क्या यह सचमुच सच है कि अगर मैं आपके मसीह पर विश्वास करूँ, तो मैं भी ऐसे चमत्कारकि संकेत करूँगा?' संत दादा ने उत्तर दयिा:

'तुम न केवल उन्हें करोगे, बल्कि मिसीह के साथ राज्य भी करोगे।'

तब गावेदाई ने एक बड़ी अलाव जलाने का आदेश दयिा, मसीह का नाम लयिा, और आग बुझ गई। यह चमत्कार देखकर, राजकुमार संत दादा के पैरों पर गरि पड़ा और मसीह में अपने विश्वास की घोषणा की। शाही कुलीन एंड्रोमेलकि ने यह सब राजा सपुर को बताया। जब राजा को पता चला कि उसके पुत्र गावेदा मसीह में विश्वास करता है, तो उसने चार नौकरों को राजकुमार को गाँठदार डंडों से पीटने का आदेश दयिा। जब ये चारों लंबे समय तक पीटने से थक गए, तो राजा ने दूसरों को उनकी जगह लेने का आदेश दयिा। मार खाते समय, संत गावेदा ने मदद के लिए ईश्वर से प्रार्थना की। एक देवदूत उनके सामने प्रकट हुआ और उन्हें यह कहते हुए बल दयिा:

'हौसला रखो, मैं तुम्हारे साथ हूँ।'

इसके बाद, पवित्र शहीद को एक कालकोठरी में फेंक दयिा गया, जहाँ वह पाँच दनिों तक रहा। कुछ ही समय बाद, सैपर ने अपने राज्य के सभी ईसाइयों को न्याय करने का अधकिार एक गारगल नामक व्यक्ति को सौंप दयिा, जसिने सेंट गवेदाय को बैल की खाल के फट्टों से कोड़े मारने का आदेश दयिा। ऐसी यातना सहते हुए, पवित्र शहीद ने अपने पिता के धर्म की नदिा की। तब गारगल ने आदेश दयिा कि उसके शरीर से सरि से पैर तक दो चमड़े के फट्टे उधेड़ दिए जाएँ, यह कहते हुए:

'मैं देखूँगा कि क्या तुम्हारा मसीह तुम्हें ठीक करने आता है।' लेकनि पवित्र शहीद अचानक पूरी तरह से स्वस्थ हो गए। गार्गल ने उन्हें कैद कर दयिा; लेकनि, ईश्वर की शक्ति से, उनके बंधन ढीले हो गए। न्यायाधीश क्रोध से पागल हो गया और यह सब राजा को बताने गया, जसिने उससे कहा:

'इस दुष्ट आदमी को मार डालो, क्योंकि वह अब मेरा बेटा नहीं है, बल्कि दुष्ट इरादों वाला आदमी है, क्योंकि वह मसीह में विश्वास करने लगा है।'

गार्गल ने एक लोहे की छड़ को गर्म कयिा और पवित्र शहीद के सरि को कानों से होते हुए पार कर दयिा। लेकनि जब शहीद प्रार्थना कर रहा था, एक देवदूत प्रकट हुआ, छड़ को हटाया और पवित्र पीड़ति को चंगा कर दयिा। यह देखकर गार्गल ने तीखे लोहे के कांटों से उसके शरीर को पीड़ति करना शुरू कर दयिा, कहते हुए:

'देखेंगे कि तुम्हारा मसीह आता है या नहीं और तुम्हें चंगा करता है या नहीं।'

लेकनि संत गावेदाई ने एक बार फरि प्रार्थना की और ठीक हो गए। यह सब देखकर, जेल के रक्षक डर से कांप उठे और चल्लिाए:

'महान है ईसाई ईश्वर।'

लेकनि न्यायाधीश और भी अधकि क्रोधति हो गया और उसने आदेश दयिा कि शहीद के कंधों में लोहे की कीलें ठोंकी जाएँ और उसे फांसी दी जाए, और उसे तीसरी घड़ी से लेकर नौवीं घड़ी तक उसी स्थति में छोड़ दयिा जाए। संत वहाँ लटके रहे और प्रार्थना करते रहे। फरि उन्हें उतारकर वापस कालकोठरी में ले जाया गया। उनकी माँ और बहन उन्हें कालकोठरी में मलिने आना चाहती थीं, लेकनि उन्हें राजा से डर लगता था। जहाँ तक सापोअर की बात है, जब उसे पता चला कि शहीद अभी भी जीवति है, तो उसने उसे और अधकि यातनाएँ दीं: उसने आदेश दयिा कि उसके सरि की खाल उड़ा दी जाए, उसके चेहरे को ढक दयिा जाए, और उसे एक बार फरि कैद कर दयिा जाए। संत ने ईश्वर की महमिा करते हुए यह सब सहन कयिा। यह जानकर कि शहीद अभी भी जीवति है, राजा ने आदेश दयिा कि उसकी उंगलयिों और पैरों के नाखून उखाड़ दिए जाएं और उसके सभी दांत तोड़ दिए जाएं। उसे एक बार फरि से कालकोठरी में बंद करने के बाद, उसने कसिी को भी उसे पानी देने या उससे मलिने आने से मना कर दयिा।

शहीद की बहन चुपके से कालकोठरी में आई और उसे पीने के लिए पानी दयिा, साथ ही जल्लाद को मृत्युदंड की सजा की धमकी देकर इस बारे में कसिी को न बताने की चेतावनी दी। अपनी सभी पीड़ाओं के बीच, पवित्र शहीद प्रसन्न थे और उनके पास आने वाले सभी लोगों को उनकी बीमारयिों और रोगों से ठीक करते थे, और सभी इस पर चकति थे।

उस समय, गारगल नाम का एक और आदमी, जो एक जादूगर था, वहाँ कैद था, जिसे उसके कई अपराधों के लिए दंडित किया गया था; संत गावेडा के धैर्य और उनके द्वारा किए गए चमत्कारों को देखकर, यह जादूगर उनके पैरों पर गिर पड़ा और कहा:

'मैं आपसे विनती करता हूँ, हे ईश्वर के सेवक: मुझे अपने मसीह के समक्ष याद कीजिए।'

संत ने उससे उत्तर दिया:

'उस पर विश्वास करो, और वह तुम्हें सभी बुराइयों से मुक्त कर देगा।'

गर्गल ने कहा:

'हे प्रभु यीशु मसीह, मैं आप पर विश्वास करता हूँ!'

फिर वह गवेदेउस के साथ मिल गया। अगले दिन, यातना देने वाले ने उन दोनों को न्याय के लिए अपने सामने लाने का आदेश दिया और गार्गल के कपड़े उतारकर उसे डंडों से पिटवाया। पीटे जाने के दौरान, शहीद ने स्वर्ग की ओर देखा और इस प्रकार प्रार्थना की:

'हे प्रभु यीशु मसीह, मैं तेरे नाम के लिए दुख सहता हूँ: मुझे बल दे!'

और यह कहकर, उसने अपनी आत्मा प्रभु को सौंप दी। जहाँ तक संत गावेद्दाउस का सवाल है, उन्होंने उसे एक चरखे पर बिठाया और उसके पैरों की खाल उधेड़ दी। फिर उन्होंने उसके हाथों की मांसपेशियों को लाल-गरम लोहे के हथौड़ों से जलाना शुरू किया और उसे वापस कालकोठरी में फेंक दिया।

वहाँ बंदियों ने उसके घावों से बहते हुए रक्त से स्वयं को अभिषिक्त किया और वे अपने घावों से चंगा हो गए; और सभी बीमार चंगे हो गए और उन्होंने परमेश्वर की महिमा की। जब राजकुमार गार्गल ने यह सुना, तो उसने इस पर विश्वास नहीं किया। लेकिन जब 15 दिनों के बाद, पवित्र शहीद को कालकोठरी से बाहर निकाला गया और वह सुरक्षित तथा पूर्ण स्वास्थ्य में पाया गया, तो उसकी दहशत बहुत बढ़ गई। फिर उसने उसे पिघले हुए सीसे और गंधक से भरे एक लाल-गरम कड़ाही में फेंकने का आदेश दिया, लेकिन इसके बाद भी शहीद को कोई नुकसान नहीं हुआ।

अपने दरबारियों से सलाह करने के बाद, यातना देने वाले ने पवित्र शहीद को सूली पर चढ़ाने का आदेश दिया, और फिर बड़ी भीड़ की उपस्थिति में उसे बार-बार धनुष से निशाना बनाया। फिर एक नया और अद्भुत चमत्कार हुआ: न केवल संत स्वयं सुरक्षित रहे, बल्कि उनके शरीर पर छोड़े गए तीर भी उछलकर उन्हें मारने वालों को घायल कर गए। यह सब सुनकर लोगों के दिलों में दहशत छा गई। यह खबर राजा तक पहुँची। उसने अपनी बेटी, काज़्दोया को, संत गावेदाई को सांत्वना देने के लिए भेजा। काज्डोइया, गावेद्दाई के पास आकर और उस पर जो कुछ भी बीता था, उसे देखकर, उनके द्वारा सिखाए जाने पर स्वयं मसीह में विश्वास करने लगी। सापोर् बहुत क्रोधित हो गया और उसने अपनी बेटी को जमीन पर लिटाकर लाठियों से पीटने का आदेश दिया, जिसके बाद उसे भी जेल में डाल दिया गया। जेल में पड़े और अपने घावों से पीड़ित काज्डोइया ने संत गावेद्दाई से कहा:

'मेरे लिए प्रार्थना करो, ताकि मैं इन यातनाओं को सह सकूँ।'

पवित्र शहीद ने उससे उत्तर दिया:

'मसीह में तुम्हारा विश्वास तुम्हारी मदद करेगा; दुख मत करो: मुझे प्रभु पर विश्वास है कि, उनकी इच्छा से, यह यातना तुम्हें नहीं होगी, और तुम्हें और कोई यातना नहीं सहनी पड़ेगी।'

राजा साpor ने पवित्र शहीद को बाहर लाने, उसके हाथ-पैर बाँधने और फिर उसे घुड़दौड़ के अखाड़े के बीच फेंकने का आदेश दिया, ताकि रात के दौरान संत को घोड़ों के नीचे कुचल दिया जाए। लेकिन ईश्वर की कृपा से, पवित्र शहीद उनके द्वारा अप्रभावित रहे और उन्होंने इसके लिए ईश्वर का धन्यवाद किया। जब, अगले दिन, उन्होंने देखा कि संत बंधे नहीं थे और पूरी तरह से ठीक थे, तो सभी इस चमत्कार पर चकित हो गए। फिर उन्होंने उन्हें जलते हुए अंगारों से झुलसाना शुरू कर दिया, फिर भी वह प्रार्थना करते रहे और आनंदपूर्वक निरंतर प्रभु की महिमा करते रहे। जहाँ तक दादियस और ऑडियस का सवाल है, जो ईसाई थे और वहाँ राजा के क्रोध से डरकर खड़े थे, उन्होंने गुप्त रूप से पवित्र शहीद के कष्टों को दर्ज किया। संत ने उनसे कहा:

'यदि संभव हो, तो मेरे लिए पानी और तेल लाओ ताकि मैं बपतिस्मा ले सकूँ; लेकिन यदि यह संभव नहीं है, तो प्रार्थना करो कि प्रभु मेरे पापों को क्षमा करें।'

और देखो, एक छोटा सा बादल शहीद के सिर पर पानी और तेल बरसा गया। और बादल से एक आवाज सुनाई दी:

'हे ईश्वर के सेवक, तुम्हें पहले ही पवित्र बपतिस्मा प्राप्त हो चुका है!'

और शहीद का चेहरा सूर्य की भाँति दमक उठा, और मधुर सुगंध से वातावरण भर गया। यह आवाज सुनकर, संत गावेद्दाए ने धन्यवाद दिया और ईश्वर की स्तुति की। फिर गारगल ने आदेश दिया कि उसके शरीर को तीखे भाले से भेद दिया जाए। पवित्र शहीद ने कई घंटों तक इस यातना को सहन किया और अंत में, अपने होठों पर एक प्रार्थना के साथ, अपनी आत्मा प्रभु के हाथों में सौंप दी। गार्गल ने आदेश दिया कि उसके शरीर को तीन टुकड़ों में काटकर अलग-अलग दिशाओं में बिखेर दिया जाए। दाडियस और ऑडियस, जो पुरोहित थे, और डिकिन अर्मज़ात ने उसके पवित्र अवशेषों को बड़े सम्मान से लिया, उन्हें अपने घर ले गए और सुगंधित तेलों से अभिषिक करके, ईश्वर की महिमा करते हुए, श्रद्धापूर्वक दफना दिया। जहाँ तक राजा के रिश्तेदार, पवित्र और महिमामय दादू का सवाल है, जिन्हें पहले बुरी तरह यातनाएँ दी गई थीं, उन्हें अंततः टुकड़ों में काट दिया गया, और इस प्रकार उनका प्रभु में निधन हो गया। हालाँकि, कुछ ईश्वर-प्रेमी लोगों ने उनके शरीर को उठाया, उसे सम्मान के साथ तैयार किया, और उसे एक विशेष स्थान पर रख दिया। जब उपरोक्त पुरुष (डाडियस, ऑडियस और अर्माज़ात) उस रात एक साथ भजन गा रहे थे, आधी रात के समय संत गावेडा उनके बीच में खड़े हुए और उनसे कहा:

'भाइयो, प्रभु में हौसला रखो।'

वे इस दर्शन से अत्यंत प्रसन्न हुए। तब संत ने उनसे एक बार फिर कहा:

'प्रभु तुम्हारे इस कार्य का प्रतिफल दें!'

और, दादिय की ओर सिर झुकाते हुए, उन्होंने उससे कहा:

'मेरे सिर से तेल की सींग लो और, मेरे मसीह के शरीर का एक अंश लेकर, शाही महल में प्रवेश करो और मेरी बहन काज़दा पर तेल लगाओ, और फिर उसे मसीह का पवित्र शरीर दो।'

दादियस ने जैसा पवित्र शहीद ने निर्देश दिया था, वैसा ही किया, उसे बपतिस्मा दिया और उसे पवित्र रहस्य प्रदान किए, यह कहते हुए:

'बहन, प्रभु के आने तक सो जाओ!'

और देखो, प्रभु के स्वर्गदूत ने उसकी आत्मा को ले लिया, और वह स्वर्ग में उठा ली गई। जब उसकी माँ उसके पास आईं, तो उन्होंने उसे पहले ही मृत पाया। तब वह राजा के पास गईं और उससे कहा:

'देखो तुम कितने अमानवीय और क्रूर हो—तुमने अपने ही बच्चों को भी नहीं बख्शा! इस बात की खुशी मनाओ कि तुम्हारा बेटा, बहुत यातनाओं के बाद मारा गया है, और तुम्हारी बेटी भी मार दी गई है! तुम्हारे कठोर हृदय पर धिक्कार है! लेकिन तुम्हारे बच्चे, जो इतनी अकाल मृत्यु मरे हैं, अब तुम्हारे क्रोध से नहीं डरते।'

अपनी पत्नी से ये शब्द सुनकर, उस क्रूर और निर्दयी राजा ने थोड़ी भी शोक-भावना नहीं दिखाई, भले ही उसने ये सब अपने आँसुओं के बीच कहा हो; वह उतना ही अडिग और निर्दयी बना रहा। उसकी ओर से ऐसी अमानवीयता देखकर, रानी ने कुछ कीमती इत्र लिए, अपनी बेटी के पवित्र शरीर को धूप की सुगंध से सुगंधित किया, और, उसे शाही बैंगनी वस्त्र पहनाकर, उसे अपने बेटे गावेडियास के शरीर के पास रख दिया, और धीरे-धीरे रोती हुई और शोकपूर्ण स्वर में पुकारती हुई:

'मेरे प्रिय बच्चों! अपने आनंद के दिन, जब तुम मसीह के साथ आनंदित होओगे, तब मुझे, अपनी माँ को याद करना—ताकि मैं भी, एक दुखी प्राणी होते हुए भी, हमारे परमेश्वर मसीह की महिमा में अपने पापों की क्षमा पा सकूँ!'[6619]

पूज्य थियोफानेस की स्मृति

29 सितंबर को स्मरणोत्सव

गाज़ा शहर में[6620] एक दयालु व्यक्ति थे, जिनका नाम थियोफानेस था, जो यात्रियों का स्वागत करते और उन्हें विश्राम प्रदान करते तथा अन्य पुण्य कार्य करते थे। कुछ समय बीत जाने के बाद, उनकी सारी संपत्ति गरीबों और ज़रूरतमंदों में बाँट दी गई, और वे स्वयं पूरी तरह से निर्धन हो गए। फिर भी, वे इस पर शोक नहीं मनाते थे, बल्कि केवल

[6619] पवित्र शहीदों दादा, गावेद्दाय और काज़दोई की पीड़ा और मृत्यु चौथी शताब्दी के मध्य के आसपास हुई।

[6620] गाज़ा – एशिया माइनर में, दक्षिणी सीरिया में स्थित एक प्रमुख तटीय शहर, जो कभी फ़िलिस्तीनियों के अधीन था – दुनिया के सबसे पुराने शहरों में से एक है।

अपने पापों पर आह भरते थे। इसके बाद, ईश्वर की इच्छा से, वह एक गंभीर बीमारी से ग्रस्त हो गया, जिसके कारण उसके दोनों हाथ और पैर सूज गए और सड़ने लगे, जिससे उनसे बहुत सारा पीबा निकलने लगा। फिर भी उसने यह सब विनम्रता से सहन किया, ईश्वर का धन्यवाद किया और उनकी स्तुति की। जब उसकी मृत्यु का समय आया, तो इतना भयंकर तूफान आया कि उसके शव को दफ़नाने के लिए घर से बाहर ले जाना असंभव हो गया।

उनकी पत्नी ने कड़वी आँसुओं के साथ पुकारा:

'हाय मेरे स्वामी, मैं क्या करूँ? मैं आपके शव को दफ़नाने के लिए बाहर कैसे ले जाऊँ?'

उसने उससे उत्तर दिया:

'रो मत, मेरी पत्नी: अब तक परीक्षा चलती रही है, लेकिन अब दयालु ईश्वर की दया निकट है। क्योंकि मेरी मृत्यु के समय, ईश्वर की इच्छा से, तूफान थम जाएगा।'

और ऐसा ही हुआ: ठीक उसी घड़ी जब उन्होंने अपनी आत्मा ईश्वर के हाथों में सौंपी, पृथ्वी और वायु पर पूर्ण शांति छा गई। उनके पड़ोसी आए, उन्होंने उनके शरीर को धोना शुरू किया, और देखा कि उन पर एक भी घाव या फोड़ा नहीं था; उन्होंने उन्हें श्रद्धापूर्वक दफनाया। चार दिन बाद, वह एक आदमी को सपने में दिखाई दिए और उसे अपनी कब्र से कब्र-पत्थर हटाने का निर्देश दिया। जब ऐसा किया गया, तो उनके शरीर से एक अद्भुत सुगंध फैली और मवाद के बजाय, मुर्र (एक प्रकार का इत्र) बहने लगा, जिसने संत थियोफेनेस के अवशेषों के पास आने या लाए जाने वाले सभी बीमारों को ठीक कर दिया।

13 अक्टूबर

30 सितंबर (पुराना तरीका)

अक्टूबर

महान आर्मेनिया के बिशप संत ग्रेगरी का जीवन और शहादत, तथा उनके साथ की सत्ताइस कुंवारी कन्याएं

30 सितंबर को स्मरणोत्सव

महान आर्मेनिया के प्रकाशक संत ग्रेगरी[6621] का जन्म कुलीन और प्रतिष्ठित माता-पिता के यहाँ हुआ था, जो हालाँकि अविश्वास के अंधकार में रहते थे। उनके पिता, जिनका नाम अनाक था, पार्थियन जनजाति[6622] के थे, और वे फारस के राजा आर्टबानस और उनके भाई, आर्मेनिया के राजा कर्सार के रिश्तेदार थे। अनाक निम्नलिखित परिस्थितियों में

[6621] आर्मेनिया – कूरा नदी और टाइग्रिस तथा यूफ्रेटिस नदियों के उद्गम के बीच स्थित एक पर्वतीय देश; यह आर्मेनियाई लोगों का निवास स्थान था, जिनका नाम राजा आराम् के नाम पर पड़ा, और दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व से पांचवीं शताब्दी ईस्वी तक इस पर उनके अपने ही कबीले के राजाओं का शासन रहा; इसे लघु आर्मेनिया के विपरीत, ग्रेटर आर्मेनिया के नाम से जाना जाता था – यह क्षेत्र फरात और गेलस के ऊपरी स्रोतों के बीच स्थित था, जो पोंटस के मिथ्रिडेट्स के राज्य और 70 ईस्वी से रोमन साम्राज्य का हिस्सा था। यह देश मानव जाति का दूसरा पालना था, क्योंकि नूह की कश्ती अराpaт पर्वत पर आकर रुकी (उत्पत्ति 8:4), जो ग्रेटर आर्मेनिया में स्थित है। आज तक बचे हुए स्थानों के नाम बाइबिल में वर्णित महाप्रलय के बाद के पैट्रिआर्क नूह के जीवन की परिस्थितियों के विवरण की पुष्टि करते हैं; उदाहरण के लिए: एरिवाल ('प्रकट होना') – वह स्थान जहाँ नूह ने पहली बार पृथ्वी को देखा; अकोरी – 'अंगूर की बेल लगाना' (अरारत पर्वत पर), जहाँ नूह ने पहली बार अंगूर की बेल लगाई; अर्नोइटन – 'नूह के पैरों के पास', यानी नूह के दफ़न का स्थान, और अन्य। यह देश अधिकांशतः अन्य लोगों (अश्शूरियों, बेबीलोनियों, मीदियों, फ़ारसियों, मैसेडोनियों, बाइज़ेंटाइनों और तुर्कों) के शासन में रहा। परंपरा के अनुसार, आर्मेनिया में ईसाई धर्म की शुरुआत यीशु मसीह और प्रेरितों: थदेउस, बार्थोलोम्यू, कनानी सिमोन और यहूदा लेबाउस के पृथ्वी पर जीवन के समय से हुई थी। यहाँ दूसरी शताब्दी जितनी जल्दी ईसाई धर्म के अविवादित निशान पाए जा सकते हैं, और चौथी शताब्दी तक यह देश पूरी तरह से ईसाई बन गया था और पहला ईसाई राज्य था। ग्रेगरी द इल्यूमिनेटर आर्मेनिया के पहले प्रेरित थे (लगभग 257 में जन्मे, 302 में बिशप नियुक्त)।

[6622] पार्थियन, पार्थिया में रहते थे – एक ऐसा देश जो प्राचीन काल में, आज के ईरानी प्रांत खोरासान के क्षेत्र के लगभग बराबर था। जनसंख्या मूल रूप से फारसियों के अधीन थी, लेकिन 156 ईसा पूर्व से 299 ईस्वी तक वे स्वतंत्र रूप से रहे, अपना खुद का राज्य बनाया, जिसके बाद फारसियों ने उन्हें एक बार फिर से जीत लिया।

आर्मेनिया चला गया। जब फारसी साम्राज्य पार्थियन शासन के अधीन आ गया और पार्थियन अर्तबान फारस का राजा बन गया, तो फारसियों को विदेशी शासन के अधीन होने पर आपत्ति हुई। उस समय, फ़ारसियों में सबसे प्रतिष्ठित कुलीनों में से एक अर्तासिर था, जिसने अपने दोस्तों और समान विचारधारा वाले लोगों के साथ पहले से व्यवस्था करके, राजा अर्तबानस के खिलाफ विद्रोह भड़काया, उसे मार डाला, और स्वयं फ़ारसी राजाओं के सिंहासन पर बैठ गया। जब अर्मेनियाई राजा कर्सार को अपने भाई अर्तबान की हत्या की खबर मिली, तो वह गहराई से शोकग्रस्त हो गया और पूरी अर्मेनियाई सेना को इकट्ठा करके, अपने भाई के खून का बदला लेने के लिए फारसियों के खिलाफ युद्ध पर निकल पड़ा। दस वर्षों तक, फ़ारस पर अर्मेनियाई लोगों के हमले होते रहे और उन्हें उनके हाथों से भारी क्षति पहुँची। बड़े दुख और भ्रम से ग्रस्त, अर्तासिर ने अपने सरदारों से दुश्मन के हमले को कैसे भगाया जाए, इस पर सलाह-मशविरा किया और शपथ ली कि जो कोई भी कर्सार को हराएगा, उसे सह-शासक बनाएगा। ग्रिगोरिस के पिता, अनाक, भी राजा की परिषद में उपस्थित थे; उन्होंने बिना युद्ध के कुर्सार को हराने और किसी चालाकी भरी योजना से उसे मारने का वादा किया। इस पर, आर्टासिर ने उनसे कहा:

'यदि तुम अपना वादा पूरा करते हो, तो मैं तुम्हारे सिर पर राजसी ताज रखूँगा और तुम मेरे साथ शासन करोगे; पार्थियन साम्राज्य तुम्हारा और तुम्हारी वंश का रहेगा।'

इस प्रकार आपस में शर्तों पर सहमत और पुष्टि करने के बाद, वे अलग हो गए। अपनी योजना को अंजाम देने के लिए, अनाक ने सहायता के लिए अपने भाई को बुलाया। वे अपनी सारी संपत्ति, अपनी पत्नियों और बच्चों के साथ फारस से रवाना हुए, और अर्तासिर के क्रोध से भागे हुए निर्वासित होने का बहाना बनाकर, एक रिश्तेदार के रूप में अर्मेनिया के राजा के पास अर्मेनिया आए। राजा ने उनका गर्मजोशी से स्वागत किया और अपनी भूमि पर बसने की अनुमति देकर उन्हें अपना सबसे करीबी सलाहकार बना लिया। उन्होंने अपनी सभी योजनाएँ—और यहाँ तक कि खुद को भी—अनाक के हवाले कर दिया, जिसे उन्होंने अपनी शाही परिषद का मुख्य सलाहकार नियुक्त किया। हालाँकि, अनाक ने चापलूसी करके राजा के दिल में अपनी जगह बना ली, जबकि अपने मन में राजा को मारने की साजिश रच रहा था, और ऐसा करने का एक उपयुक्त अवसर ढूँढ़ रहा था।

एक अवसर पर, जब राजा अरारत पर्वत पर थे, तो अनाक और उसके भाई ने राजा से निजी तौर पर बात करने की इच्छा व्यक्त की।

भाइयों ने कहा, 'हमारे पास आपके लिए कुछ ठोस और उपयोगी सलाह है, जो हम आपको गुप्त रूप से देना चाहते हैं।'

और इस प्रकार वे तब राजा की उपस्थिति में पहुँचे जब वह अकेला था, उन्होंने तलवार से उस पर घातक वार किया, फिर बाहर निकलकर अपने पहले से तैयार घोड़ों पर सवार हो गए और फारस की ओर जाने का इरादा कर तेज़ी से निकल पड़े। कुछ ही समय बाद, शाही अधिकारी राजा के कक्षों में गए और उन्हें वहाँ फर्श पर, मुश्किल से जीवित और खून के एक तालाब में पड़े हुए पाया। शाही अधिकारियों को बहुत डर सता गया और उन्होंने जो कुछ भी हुआ था और उन्होंने जो कुछ भी देखा था, वह सब कुछ सभी कमांडरों और कुलीनों को बता दिया। वे हत्यारों के पीछे भागे, एक नदी के पास उनसे भिड़ गए, उन्हें मार डाला और पानी में डुबो दिया। जहाँ तक घायल राजा कुर्सार का सवाल है, मरते समय उन्होंने आदेश दिया कि अनाक और उसके भाई के पूरे परिवार को, उनकी पत्नियों और बच्चों सहित, मौत की सज़ा दी जाए, जिसे पूरा किया गया।

जब अनाक के वंश का संहार हो रहा था, तो उसके एक रिश्तेदार ने अनाक के दो बेटों—संत ग्रेगरी और उसके भाई—का अपहरण कर लिया, जो अभी जन्म के कपड़ों में लिपटे थे; उसने उन्हें अपने घर में छिपा लिया और उनका पालन-पोषण किया। इस बीच, अर्मेनिया में एक बड़ा विद्रोह भड़क उठा; यह सुनकर फारसी राजा आर्टासिर अपनी सेना के साथ अर्मेनिया में घुस आया, अर्मेनियाई साम्राज्य पर विजय प्राप्त की और उसे अपने शासन के अधीन कर लिया। आर्मेनिया के राजा कर्सार की मृत्यु के बाद, तिरिडेट्स नाम का एक छोटा बच्चा बच गया; आर्तासिर ने उसे बचा लिया और उसे रोमन साम्राज्य भेज दिया, जहाँ, वयस्क होने और बहुत शक्तिशाली बनने पर, वह एक योद्धा बन गया। जहाँ तक अनाक के उन युवा बेटों का सवाल है जो नरसंहार से बच निकले थे, उनमें से एक को फारस ले जाया गया, जबकि दूसरे, जिसका नाम ग्रेगरी था—जिसके बारे में हम अभी बात करने वाले हैं—को रोमन साम्राज्य भेज दिया गया। जब वह वयस्क हुआ, तो वह कैपैडोसिया के केसरिया में रहने लगा, जहाँ उसने हमारे प्रभु यीशु मसीह में विश्वास किया, और प्रभु का एक अच्छा और वफादार सेवक बना रहा। वहाँ उसने विवाह किया और उसके दो पुत्र हुए, ऑर्फ़न और अरॉस्टन, जिन्हें उसने उनके

जन्म के दिन से ही प्रभु की सेवा के लिए समर्पित कर दिया। परिपक्वता प्राप्त करने पर, ऑर्फ़न को एक पादरी नियुक्त किया गया, जबकि अरोस्तान एक तपस्वी बन गए।

इन दो बेटों के जन्म के कुछ ही समय बाद, ग्रेगरी की पत्नी की मृत्यु हो गई, और उस समय से धन्य ग्रेगरी ने और भी अधिक उत्साह के साथ ईश्वर की सेवा की, और प्रभु की सभी आज्ञाओं और शिक्षाओं में निर्दोष होकर चले। उस समय, रोमन सेना में सेवा करते हुए, तिरिदात को एक सम्मानजनक पद मिला, क्योंकि वह शाही वंश का था। तिरिदात के बारे में सुनकर, संत ग्रेगरी उससे मिलने गए, मानो इस बात से पूरी तरह अनजान हों कि उसके पिता, अनाक ने, कर्सार - तिरिदात के पिता - को मार डाला था। कुर्सार की हत्या का रहस्य बनाए रखते हुए, वह तिरिदातेस का एक वफादार सेवक बन गया, अपने पिता के पाप का प्रायश्चित कर रहा था और अपनी निष्ठावान सेवा के माध्यम से कुर्सार के बेटे से सुलह कर रहा था। ग्रेगरी की उत्साही सेवा को देखकर, टिरीडेट्स उसे पसंद करने लगा; लेकिन बाद में, जब उसे पता चला कि ग्रेगरी एक ईसाई है, तो वह उससे नाराज़ हो गया और उसका अपमान करने लगा। हालाँकि, ग्रेगरी ने अपने मालिक के अन्यायपूर्ण क्रोध को नज़रअंदाज़ करते हुए, मसीह ईश्वर में अपना निर्दोष विश्वास बनाए रखना जारी रखा।

[6623]उन दिनों, गोथों ने रोमनों के क्षेत्रों पर आक्रमण किया, और उस समय के रोमन सम्राट को उनके खिलाफ़ युद्ध करने के लिए विवश होना पड़ा। जब रोमन और गोथ सेनाएँ एक-दूसरे के करीब आईं और आमने-सामने हुईं, तो गोथ राजकुमार ने रोमन सम्राट को एक-एक करके लड़ने की चुनौती दी। बाद वाला, स्वयं गोथिक राजकुमार की चुनौती स्वीकार करने से डरकर, एक ऐसे योद्धा की तलाश करने लगा जो उसकी जगह गोथिक राजकुमार से लड़ सके; राजा को ऐसा योद्धा पराक्रमी तिरिडेट्स के रूप में मिला, जिसे उसने शाही कवच पहनाया और राजा बताकर गोथिक राजकुमार के खिलाफ भेज दिया। गोथिक राजकुमार से एक-एक करके लड़ते हुए, तिरिदातेस ने बिना तलवार के उस पर काबू पा लिया, उसे जीवित पकड़ लिया और उसे रोमन सम्राट के सामने ले आया। इसी कृत्य से, पूरी गोथिक सेना पर विजय सुनिश्चित हो गई। इस पराक्रम के लिए, रोमन सम्राट ने तिरीदातस को उसके पिता के सिंहासन पर बिठाया, उसे आर्मेनिया का राजा बनाया, और उसकी ओर से आर्मेनियाई और फारसियों के बीच एक शांति संधि की। उसके साथ ही, उसके वफादार सेवक के रूप में, धन्य ग्रेगरी भी आर्मेनिया चले गए।

जब राजा तिरीदात मूर्तियों को बलिदान चढ़ाता था—और सबसे बढ़कर देवी आर्टेमिस को, जिनकी वह सबसे अधिक भक्ति करता था—तो वह अक्सर और गंभीरता से ग्रेगरी से मूर्तियों को बलिदान चढ़ाने में उसके साथ शामिल होने के लिए कहता था। ग्रेगरी ने मना कर दिया और यह स्वीकार किया कि मसीह के सिवा स्वर्ग में या पृथ्वी पर कोई ईश्वर नहीं है। ये शब्द सुनते ही, तिरीदातेस ने आदेश दिया कि ग्रेगरी को बुरी तरह यातना दी जाए। सबसे पहले, उसके दाँतों के बीच लकड़ी का एक टुकड़ा रखा गया, जिससे उसका मुँह खुलकर बंद न हो सके और वह बोल न सके। फिर, उसके गले में नमक के एक बड़े गोले (आर्मेनिया में ऐसे पत्थर जमीन से निकाले जाते हैं) को बांधकर, उन्होंने उसे उल्टा लटका दिया। संत इस स्थिति में सात दिनों तक धैर्यपूर्वक लटके रहे; आठवें दिन, उन्होंने ऊपर से लाठियों से बेरहमी से उनकी पिटाई करना शुरू कर दिया, और फिर, अगले सात दिनों तक, उनके नीचे गोबर में आग लगाकर निकलने वाले धुएं से उन्हें यातना दी, जबकि वह उल्टा लटका हुआ था। लटकते हुए भी, उन्होंने यीशु मसीह के नाम की महिमा की और जब उनके मुँह से लकड़ी का टुकड़ा हटा दिया गया, तो उन्होंने अपने कष्टों को देख रहे लोगों से एक सच्चे परमेश्वर में विश्वास करने का आग्रह किया। जब उन्होंने देखा कि संत अपने विश्वास में अडिग रहे और अपने दुखों को साहसपूर्वक सहन कर रहे हैं, तो उन्होंने उनके पैरों को तख्तों के बीच कस दिया, उन्हें रस्सियों से कसकर बाँध दिया, और उनके एड़ियों और तलवों में लोहे के कील ठोक दिए, और उन्हें चलने का आदेश दिया। और इस प्रकार वह भजन गाते हुए चला: *'तेरे वचन के अनुसार मैं अत्याचारी के मार्ग से दूर रहा'* (भजन संहिता 16:4)। और फिर: *'जो रोते हुए निकलता है, और बीज उठा ले जाता है, वह आनंद से लौटेगा, और अपनी पूलियों को साथ लाएगा'*[6624] (भजन संहिता 125:6)। हालाँकि, यातना देने वाले ने आदेश दिया

[6623] गोथ एक जर्मनिक जनजाति थी जो मूल रूप से बाल्टिक सागर के दक्षिण-पूर्व में रहती थी। महान प्रवासन (5वीं शताब्दी) के दौरान, यह जनजाति पूर्वी गोथ - ऑस्ट्रोगोथ, जिनका साम्राज्य (4ठी शताब्दी में) अब दक्षिणी रूस में स्थित था और पूर्व की ओर डॉन नदी तक फैला हुआ था - और पश्चिमी गोथ - विसिगोथ, जो पूर्वी गोथ के पड़ोसी थे, में विभाजित हो गई।

[6624] सेंट जॉन क्राइसोस्टोम की व्याख्या के अनुसार, भजन के इस अंश में बेबीलोन की कैद में लिए गए यहूदियों का उल्लेख है। 'जिस प्रकार जो बोते हैं वे अपने श्रम का फल काटते हैं; उसी प्रकार, नबी कहते हैं, जब आप कैद में गए, तो आप बोने वालों की तरह थे, जिन्होंने विभिन्न कठिनाइयों को सहन किया और आँसू बहाए। जिस प्रकार बीजों के लिए वर्षा होती है, उसी प्रकार पीड़ितों के लिए आँसू होते हैं। लेकिन अब, वह कहते हैं,

कि संत का सिर विशेष उपकरणों से झुकाया जाए; फिर, उसकी नाक में गंधक मिला हुआ नमक डालने और उसमें सिरका डालने के बाद, उसने उसके सिर को कोयले और राख से भरे बोरे में बाँध दिया। संत छह दिनों तक इसी स्थिति में रहे। फिर उसे एक बार फिर उल्टा लटका दिया गया, और उन्होंने जबरदस्ती उसके मुँह में बहुत सारा पानी डाल दिया, और ऐसा करते हुए संत का मज़ाक उड़ाया: क्योंकि जो लोग हर तरह की निर्लज्ज अशुद्धता से भरे हुए थे, उन्हें बिल्कुल भी शर्म नहीं थी। ऐसी यातनाओं के बाद, राजा ने एक बार फिर उस संत को चालाक शब्दों से मूर्तिपूजा के लिए लुभाने की कोशिश की; लेकिन जब संत वादों के आगे नहीं झुके, तो उनके यातना देने वालों ने उन्हें फिर से लटका दिया और लोहे के पंजे से उनकी पसलियों को खुरच दिया। इस प्रकार संत के पूरे शरीर को चीर-फाड़ करने के बाद, उन्होंने उन्हें नग्न अवस्था में जमीन पर घसीटा, जो तेज लोहे के कीलों से बिछी हुई थी। शहीद ने ये सभी यातनाएँ सहन कीं और अंततः उन्हें एक कालकोठरी में डाल दिया गया, लेकिन वहाँ, मसीह की शक्ति से, वे सुरक्षित रहे।

अगले दिन, संत ग्रेगरी को कालकोठरी से बाहर लाया गया और वह एक प्रसन्न चेहरा लिए, अपने शरीर पर एक भी घाव के बिना राजा के सामने उपस्थित हुए। यह सब देखकर राजा चकित रह गया, लेकिन यह आशा बनाए हुए कि ग्रेगरी उसकी आज्ञा मानेगा, उसने उससे शांतिपूर्वक बात करना शुरू कर दिया, ताकि उसे अपनी दुष्टता की ओर मोड़ सके। लेकिन जब संत ग्रेगरी उनके चापलूसी भरे शब्दों के आगे नहीं झुके, तो राजा ने आदेश दिया कि उनके पैरों में लोहे के जूते पहना दिए जाएँ और उन्हें बेड़ी में डालकर तीन दिनों तक पहरा दिया जाए। जब तीन दिन बीत गए, तो उसने संत को अपने पास बुलाया और कहा:

'तुम व्यर्थ ही अपने ईश्वर में आशा रखते हो, क्योंकि तुम्हें उनसे कोई सहायता नहीं मिलेगी।'

ग्रेगरी ने उत्तर दिया:

'मूर्ख राजा, तुम अपने ऊपर ही यातनाएँ ला रहे हो; परन्तु मैं, अपने परमेश्वर पर भरोसा रखकर, नहीं डगमगाऊँगा। मैं न तो उसे और न ही अपने शरीर को बख्शूँगा, क्योंकि जैसे बाहरी मनुष्य क्षीण होता है, वैसे ही भीतरी मनुष्य नया किया जाता है।'

इसके बाद, यातना देने वाले ने एक बर्तन में टिन पिघलाने और उसे संत के पूरे शरीर पर डालने का आदेश दिया, लेकिन उन्होंने यह सब सहते हुए बिना रुके मसीह की गवाही देना जारी रखा।

जब तिरिदातेस ग्रेगरी के अडिग हृदय को तोड़ने का कोई उपाय सोच रहा था, भीड़ में से किसी ने उससे कहा:

'हे राजा, इस आदमी को मत मारो—वह अनाक का पुत्र है, जिसने आपके पिता को मारा था और अर्मेनियाई राज्य को फ़ारसियों के हाथों में सौंप दिया था।'

ये शब्द सुनकर, राजा अपने पिता के खून के प्रति और भी अधिक घृणा से भर गया और उसने आदेश दिया कि ग्रेगरी को हाथ-पैरों में बाँधकर आर्टाक्साट शहर की एक गहरी खाई में फेंक दिया जाए। यह खाई सभी के लिए आतंक का प्रतीक थी, यहाँ तक कि इसके बारे में सोचने भर से ही लोग डर जाते थे। क्रूर मृत्यु के लिए खोदा गया यह खंदक दलदली कीचड़, साँपों, बिच्छुओं और सभी प्रकार के विषैले सरीसृपों से भरा था। इस खंदक में फेंके जाने के बाद, संत ग्रेगरी चौदह वर्षों तक वहाँ रहे, और सरीसृपों से उन्हें कोई हानि नहीं हुई। दिव्य कृपा से, एक विधवा हर दिन उसे एक रोटी फेंक देती थी, जिससे वह अपना जीवन यापन करता था। यह सोचकर कि ग्रेगरी बहुत समय पहले ही मर चुका है, तिरिदात ने उसके बारे में सोचना भी बंद कर दिया। इसके बाद, राजा ने फारसियों के खिलाफ युद्ध छेड़ा, सीरिया तक उनके क्षेत्रों पर विजय प्राप्त की, और एक शानदार जीत और महिमा के साथ घर लौट आया।

उन दिनों, रोमन सम्राट डायोक्लेटियन ने अपनी पत्नी बनने के लिए अपनी सारी साम्राज्य में सबसे सुंदर कन्या को खोजने के लिए संदेशवाहक भेजे। ऐसी ही एक कुंवारी ईसाई रिप्सिमिया के रूप में मिली, जिसने अपनी कुँवारी अवस्था मसीह को अर्पित कर दी थी और मठ की अधीक्षक गाइनिया की देखरेख में एक मठ में उपवास और प्रार्थना का जीवन जिया था। दूतों ने रिप्सिमिया का एक चित्र बनवाने का आदेश दिया, जिसे उन्होंने बाद में राजा के पास भेज दिया। राजा उसकी सुंदरता के कारण रिप्सिमिया के चित्र से बहुत प्रभावित हुआ; उससे उत्तेजित होकर, उसने उसे अपनी पत्नी बनने का प्रस्ताव भेजा। प्रस्ताव प्राप्त करते ही, रिप्सिमिया ने मन ही मन मसीह से पुकारा:

'हे मसीह, मेरे वधूवर! मैं आपसे मुँह नहीं मोड़ूँगी, और न ही अपनी पवित्र कुँवारीता पर कलंक लगाऊँगी।'

उन्होंने इन परिश्रमों का प्रतिफल प्राप्त कर लिया है।' संत ग्रेगरी पर लागू होने पर, भजन के इस अंश को इस प्रकार समझना चाहिए: संत, अपने कष्टों से अत्यधिक पीड़ित होकर, प्रभु से भविष्य के प्रतिफल की आशा से स्वयं को सांत्वना देते थे।

उसने मठ की बहनों और अपनी मठाधीश गाइयानयिा से सलाह-मशवरिा कयिा, और इस प्रकार, सब एकत्रति होकर, वह और सभी बहनें चुपके से मठ से भाग गईं। अपनी यात्रा के दौरान अकथनीय कठनिाइयों, भूख और अनगनित परेशानयिों को सहते हुए, वे आर्मेनयिा पहुँचीं और अरारात शहर के पास बस गईं[6625] । वहाँ उन्होंने अंगूर के बागों में रहने लगीं, जबकि उनमें से सबसे मजबूत महलिाएँ शहर में काम करने चली गईं, जहाँ उन्होंने अपने और अन्य बहनों के लिए पर्याप्त कमाई की। कुल मलिाकर सैंतीस कन्याएँ थीं जन्हिोंने अपनी कुँवारीपन की रक्षा के लिए इस तरह कष्ट सहने और अपनी भटकन की कठनिाइयों और दुःखों को सहने के लिए सहमतदिी।

जब यह खबर मलिी कि रिप्सिमियिा और मठ की अन्य बहनें आर्मेनयिा भाग गई हैं, तो डायोक्लेटयिन ने आर्मेनयिा के राजा तरिीडेट्स को नम्निलखिति संदेश भेजा, जनिके साथ उसके बहुत सौहार्दपूर्ण संबंध थे:

'कुछ ईसाइयों ने रप्सिमियिा को बहका दयिा है; मैं उसे अपनी पत्नी बनाना चाहता था, फरि भी वह मेरी पत्नी बनने के बजाय वदिेशी भूमि में शर्म के साथ भटकना पसंद करती है। तो, उसे ढूंढो, और हमें भेज दो, या, यदि तुम चाहो, तो उसे अपनी पत्नी बना लो।'

तब तरिीडेट्स ने रप्सिमियिा की हर जगह तलाश करने का आदेश दयिा और जब उसे पता चला कि वह कहाँ है, तो उसने उसके भागने को रोकने के लिए उसके नविास के चारों ओर पहरेदार तैनात करने का आदेश दयिा। जब रप्सिमियिा को देखने वालों से उसे अद्भुत सुंदरता की खबर मलिी, तो वह उसे पाने की तीव्र इच्छा से भर गया और उसने एक राजा की गरमिा के अनुरूप सभी आभूषण भेज दिए, ताकि उन्हें पहनकर उसे उसके पास लाया जा सके। अबेस गायानयिा की सलाह पर, जनिकी देखरेख में उसकी परवरशि हुई थी, रप्सिमिा ने तरिडिेट्स द्वारा भेजे गए सभी आभूषणों को ठुकरा दयिा और उसके पास जाने से इनकार कर दयिा। अबेस गायानयिा ने स्वयं राजा के दूतों से कहा:

'ये सभी कन्याएँ पहले से ही स्वर्गीय राजा से सगाईशुदा हैं, और इनमें से कसिी के लिए भी सांसारकि ववािह करना असंभव है।'

इन शब्दों के बाद, अचानक गड़गड़ाहट की एक तेज आवाज़ गूँजी, और स्वर्ग से एक आवाज़ सुनाई दी, जो कन्याओं से कह रही थी:

'हौसला रखो और मत डरो, क्योंकि मैं तुम्हारे साथ हूँ।'

भेजे गए सैनकि गरज की गड़गड़ाहट से इतने भयभीत हो गए कि वे जमीन पर लोट गए; कुछ, अपने घोड़ों से गरिकर, पैरों तले कुचलकर मर गए। दूत खाली हाथ, भय से भरकर राजा के पास लौटे, और उन्होंने उसे वह सब कुछ बताया जो हुआ था।

क्रोध से भरकर, राजा ने तब अपने एक राजकुमार को सैनकिों के एक बड़े दल के साथ भेजा ताकि वे अपनी तलवारों से सभी कन्याओं को मार डालें और रप्सिमियिा को जबरदस्ती ले आएं। जब सैनकिों ने अपनी तलवारें खींचकर कन्याओं पर हमला कयिा, तो रप्सिमियिा ने राजकुमार से कहा:

'इन कन्याओं को मत मारो; इसके बजाय मुझे अपने राजा के पास ले जाओ।'

और सैनकिों ने उसे ले लयिा और उसे ले चले गए, अन्य कुंवारी कन्याओं को बनिा चोट पहुँचाए, जो सैनकिों के चले जाने के बाद भाग गईं।

रास्ते में, रप्सिमियिा ने अपने वधू-वर, मसीह, को मदद के लिए पुकारा और उनसे पुकार कर कहा: *'मेरी आत्मा को तलवार से, और मेरे प्राण को कुत्तों से बचाओ'*[6626] (भजन संहति 21:21)। जब रप्सिमियिा को राजा के शयनकक्ष में ले जाया गया, तो उसने अपनी आँखें उठाईं—शारीरकि और आध्यात्मकि रूप से—और आँसुओं के साथ परमेश्वर से वनिम्रता से प्रार्थना की, कि वह अपनी सर्वशक्तमिान भुजा से उसकी कुँवारी अवस्था को अक्षुण्ण रखे। साथ ही, उसने उसकी अद्भुत और दयालु सहायता को याद कयिा, जो उसने अतीत में संकट में पड़े लोगों पर प्रदान की थी: कि कैसे उसने इस्राएलयिों को फरिौन के हाथ से और डूबने से बचाया (नरि्गमन 14:1–31, 15:1–27), योनह को व्हेल की उदर में सुरक्षति रखा (योनह 1:1–16), भट्टी में आग से तीन जवानों को बचाया (दानयिेल 3:1–100) और धन्य सुसन्ना को व्यभचिारी बूढ़ों

[6625] यह संभवतःआधुनकि-कालीन अक्कोरी को संदर्भति करता है - एक ऐसी जगह जो अपनी दाख की बारी के लिए प्रसद्धि थी और 1840 में एक भूकंप से नष्ट हो गई थी।

[6626] संत अथेनासयिस की व्याख्या के अनुसार, प्रभु यहूदयिों की दुर्भावना और पागलपन का प्रतीक बनाने के लिए कुत्तों के हथयिारों और हाथों का उपयोग करते हैं। 'एकमात्र' – अर्थात्, एक अकेली आत्मा, जसिे सभी ने त्याग दयिा है। इन शब्दों से प्रार्थना करते हुए, संत रप्सिमियिा ने प्रभु से राजा तरिीदातस द्वारा कए गए अत्याचार से उसे मुक्त करने का आग्रह कयिा।

से छुड़ाया (दानियेल 13:1–64), – और उसने ईश्वर से प्रार्थना की कि उसे भी उसी प्रकार तरिदितस की हिंसा से बचाया जाए।

उसी क्षण, राजा रिप्सिमिया के कक्ष में प्रवेश किया और उसकी असाधारण सुंदरता को देखकर, वह उसके लिए वासना से बहुत प्रज्वलित हो गया। एक दुष्ट आत्मा और कामुक वासना से प्रेरित होकर, वह उसके पास गया और, उसे गले लगाकर, उसके साथ बलात्कार करने का प्रयास किया; लेकिन वह, मसीह की शक्ति से सुदृढ़ होकर, दृढ़ता से उसका विरोध किया। राजा ने उसके साथ लंबा समय तक संघर्ष किया, लेकिन वह उसे कोई नुकसान नहीं पहुँचा सका। क्योंकि यह पवित्र कन्या, ईश्वर की सहायता से, प्रसिद्ध और शक्तिशाली योद्धा तरीदातस से भी अधिक शक्तिशाली साबित हुई। और इस प्रकार वह, जिसने एक बार बिना तलवार के गोथिक राजकुमार को हराया था और फारसियों को मार गिराया था, अब मसीह की कन्या पर विजय पाने में असमर्थ था, क्योंकि वह, उससे पहले की पहली शहीद थेकला की तरह, परमपिता से प्राप्त शारीरिक शक्ति से संपन्न थी।

कुछ हासिल न होने पर, राजा शयनकक्ष से निकल गया और गायाना को बुलाने का आदेश दिया, क्योंकि वह जानता था कि वह रिप्सिमिया की मार्गदर्शक थी। उसे जल्द ही ढूंढ लिया गया और राजा के सामने पेश किया गया, जिसने गायाना से विनती करना शुरू कर दिया कि वह रिप्सिमिया को उसकी आज्ञा मानने के लिए मनाए। हालाँकि, गाइयानिया उसके पास आकर उससे लैटिन में बात करने लगी, ताकि वहाँ मौजूद अर्मेनियाई लोग उसके शब्द न समझ सकें। उसने रिप्सिमिया से बिल्कुल भी वह नहीं कहा जो राजा चाहता था, बल्कि वह कहा जो उसकी कन्या-शुद्धता के लिए हानिकारक था। उसने लगन से रिप्सिमिया को सिखाया और समझाया कि वह अंत तक मसीह से सगाई की हुई अपनी कुँवारी अवस्था को बनाए रखे; अपने वधूवर के प्रेम और उसकी कुँवारी अवस्था के लिए तैयार किए गए मुकुट को याद रखे; और अंतिम न्याय और गेहेना से डरे, जो उन लोगों को निगल जाएगी जो अपना व्रत नहीं रखते।

'हे मसीह की कुँवारी, तुम्हारे लिए यही बेहतर है कि तुम थोड़े समय के लिए यहाँ मरो, बजाय इसके कि वहाँ हमेशा के लिए मरो। क्या तुम नहीं जानती कि तुम्हारे सबसे सुंदर वरा—यीशु मसीह—सुसमाचार में क्या कहते हैं: *'और जो शरीर को तो मार डालते हैं, पर आत्मा को नहीं मार सकते, उनसे मत डरना* (मत्ती 10:28)। पाप करने के लिए कभी सहमति न देना, भले ही दुष्ट राजा तुम्हें मारने का निश्चय कर ले। यह तुम्हारे पवित्र और अमर वधूवर के सामने तुम्हारी कुँवारी अवस्था के लिए सबसे उत्तम प्रशंसा होगी।

वहाँ मौजूद कुछ लोगों को लैटिन भाषा आती थी, उन्होंने समझ लिया कि गाइनिया रिप्सिमिया से क्या कह रही है और उन्होंने अन्य शाही नौकरों को इसके बारे में बताया। यह सुनकर, उस ने गायाना के मुँह पर पत्थर से मारना शुरू कर दिया, जिससे उसके दाँत टूट गए, और इस बात पर ज़ोर देने लगा कि वह वही कहे जो राजा ने आज्ञा दी थी। जब गायाना ने रिप्सिमिया को प्रभु के भय के विषय में सिखाना बंद नहीं किया, तो उसे वहाँ से ले जाया गया। रिप्सिमिया के खिलाफ अपने संघर्ष में बहुत परिश्रम करने और यह देखकर कि उससे कुछ हासिल नहीं हो सकता, राजा, जैसे कोई भूत-प्रेत सवार हो, ज़मीन पर लोटने और लुढ़कने लगा। इस बीच, जैसे ही रात हुई, रिप्सिमिया शहर से चुपके से भाग गई। उन बहनों से मिलने के बाद जो उसके साथ परिश्रम कर रही थीं, उसने उन्हें शत्रु पर अपनी विजय और इस बात के बारे में बताया कि वह अपवित्र नहीं हुई थी। यह सुनकर, उन्होंने सभी ने परमेश्वर की स्तुति की और धन्यवाद दिया, जिसने अपनी वधू को अपमान में नहीं दिया था; और उस पूरी रात उन्होंने भजन गाए, अपने वरा, मसीह से प्रार्थना करते हुए।

अगली सुबह, दुष्टों ने रिप्सिमिया को पकड़ लिया और उसे एक यातनादायक मृत्यु दी। सबसे पहले, उन्होंने उसकी जीभ काट दी; फिर, उसे नग्न करके, उन्होंने उसके हाथ और पैर चार खंभों से बांध दिए और उसे मोमबत्तियों से जलाया। उसके बाद, उन्होंने एक तेज पत्थर से उसकी योनि फाड़ दी, जिससे उसकी सारी आंतें बाहर गिर पड़ीं। अंत में, उन्होंने उसकी आँखें निकाल दीं और उसके शरीर को टुकड़ों में काट दिया। इस प्रकार, इस कड़वी मृत्यु के माध्यम से, पवित्र कुँवारी अपने प्रिय वधू-वर – मसीह[6627] – के पास चली गईं।

इसके बाद, उन्होंने सेंट रिप्सिमिया की बहनों और साथी, बत्तीस कुंवारी लड़कियों को पकड़ लिया और उन्हें तलवारों से मार डाला, तथा उनके शवों को जानवरों के खाने के लिए फेंक दिया। जहाँ तक अबेस गायाना का सवाल है, उनके साथ जो दो अन्य कुंवारी लड़कियाँ थीं, उन्हें भी सबसे क्रूर तरीके से मार डाला गया। सबसे पहले, उनके पैरों में छेद करके, उन्हें उल्टा लटका दिया गया और जीवित ही उनकी खाल उधेड़ दी गई; फिर, पीछे से उनकी गला रेतकर, उनकी जीभें

[6627] यहाँ वर्णित घटना चौथी शताब्दी की शुरुआत की है।

बाहर निकालकर काट दी गईं; फिर, एक तेज पत्थर से उनके पेट फाड़े गए, उनके आंतें निकाल दी गईं, और शहीदों के सिर काट दिए गए। इस प्रकार वे अपने वरा—मसीह—से मिलने चली गईं।

जहाँ तक तिरिदातस का सवाल है, वह पागल सा हो गया था, और इन कन्याओं की मृत्यु के छठे दिन तक ही उसे होश आया और वह शिकार पर निकला। एक अद्भुत और अद्भुत दैवीय व्यवस्था द्वारा, इस यात्रा के दौरान वह एक ऐसी क्रूर सज़ा का शिकार हुआ कि, पागलपन की स्थिति में, उसने न केवल अपना होश खो दिया बल्कि अपना मानव रूप भी खो दिया, और दिखावे में एक जंगली सूअर जैसा हो गया, जैसा कि बेबीलोन का राजा नबूकदनेस्सर एक बार हो गया था (दानिय़ेल 4:30)। और न केवल राजा स्वयं, बल्कि सभी सैन्य कमांडर, सैनिक और वास्तव में, सभी वे लोग जिन्होंने पवित्र कुंवारी कन्याओं को दी गई यातनाओं को मंजूरी दी थी, वे सब दैत्यग्रस्त हो गए और खेतों और ओक के झुरमुटों में भागने लगे, अपने कपड़े फाड़-फाड़ कर और अपना ही मांस नोच-नोच कर खाने लगे। इस प्रकार, निर्दोष रक्त बहाने के लिए ईश्वर का क्रोध उन्हें दंडित करने में तीव्र था, और किसी से भी उनकी कोई मदद नहीं हो सकती थी: क्योंकि ईश्वर के क्रोध के सामने कौन टिक सकता है?

लेकिन दयालु ईश्वर, जो *'हमेशा क्रोधित नहीं रहता, न ही हमेशा के लिए रोष रखता है'* (भजन संहिता 102:9), अक्सर लोगों को उनके अपने भले के लिए दंडित करता है, ताकि मानव हृदय को बेहतर बनाने के लिए सुधार सके। और प्रभु ने, अपनी दया में, उन पर इस प्रकार तरह किया: एक भयानक पुरुष बड़े तेजस्विता में राजा की बहन, कुसरोदुक्त के स्वप्न में प्रकट हुआ और उससे कहा:

'तिरिदातेस तब तक ठीक नहीं होगा जब तक ग्रेगरी को खाई से बाहर नहीं निकाला जाता।'

जागने पर, कुसरोदुक्ता ने अपने दरबारियों को अपना दर्शन सुनाया, और सभी को यह सपना अजीब लगा, क्योंकि किसने उम्मीद की होगी कि ग्रिगरी, जिसे कीड़ों-मकोड़ों से भरे दलदल में फेंका गया था, वहाँ चौदह साल के कठिन समय बिताने के बाद भी जीवित रहेगा! फिर भी, वे खाई के पास गए और जोर से चिल्लाए, कहते हुए:

'ग्रिगोरियस, क्या तुम अभी भी जीवित हो?'

और ग्रिगोरी ने उत्तर दिया:

'मेरे ईश्वर की कृपा से, मैं जीवित हूँ।'

और उसे—पीला-पड़ा, बाल-नाखूनों से ढका, दुबला-पतला और दलदल की कीचड़ और अत्यधिक अभाव से काला पड़ गया—खंदक से बाहर निकाला गया। संत को धोया गया, नए कपड़े पहनाए गए, और कुछ भोजन दिए जाने के बाद, उन्हें ज़ार के पास ले जाया गया, जिनका रूप एक जंगली सूअर जैसा था। सभी लोग संत ग्रेगरी से मिलने के लिए बड़ी श्रद्धा के साथ बाहर आए; उन्होंने सिर झुकाया, उनके पैरों पर गिर पड़े, और उनसे विनती की कि वे उनके ईश्वर से राजा, कमांडरों और उनकी पूरी सेना को ठीक करने के लिए प्रार्थना करें। धन्य ग्रेगरी ने सबसे पहले उनसे मारे गए पवित्र कुंवारी लड़कियों के शवों के बारे में पूछा, क्योंकि वे दस दिनों से बिना दफनाए पड़े थे।

फिर उन्होंने पवित्र कुंवारी कन्याओं के बिखरे हुए शवों को इकट्ठा किया और उनके दुष्ट अत्याचारियों की अमानवीय क्रूरता पर शोक करते हुए, उन्हें उचित अंतिम संस्कार दिया। इसके बाद, उन्होंने अत्याचारियों को उपदेश देना शुरू किया, उन्हें मूर्तियों से मुंह मोड़ने और एकमात्र ईश्वर और उनके पुत्र, यीशु मसीह पर विश्वास करने, तथा अपनी आशा उनकी दया और अनुग्रह में रखने के लिए प्रेरित किया। संत ग्रेगरी ने उनसे कहा कि प्रभु परमेश्वर ने उन्हें गड्ढे में जीवित रखा था, जहाँ परमेश्वर का स्वर्गदूत अक्सर उनसे मिलने आता था, ताकि वे उन्हें मूर्तिपूजा के अंधकार से धार्मिकता के प्रकाश की ओर ले जा सकें; इस प्रकार संत ने उन्हें मसीह में विश्वास की शिक्षा दी और उन्हें पश्चाताप के लिए बुलाया।

उनकी विनम्रता देखकर, संत ने उन्हें एक बड़ा चर्च बनाने का आदेश दिया, जिसे उन्होंने थोड़े ही समय में पूरा कर दिया। ग्रेगरी ने धन्य शहीदों के शरीरों को इस चर्च में बड़े सम्मान के साथ लाया, इसके भीतर पवित्र क्रॉस स्थापित किया, और लोगों को वहाँ इकट्ठा होकर प्रार्थना करने का आदेश दिया। फिर उन्होंने राजा तिरिदाद को उन पवित्र कुंवारीयों के शवों के पास ले जाया, जिन्हें राजा ने मृत्युदंड दिया था, ताकि वह प्रभु यीशु मसीह के सामने उनके लिए प्रार्थना कर सके। और जैसे ही राजा ने ऐसा किया, उसका मानव स्वरूप पुनःलौट आया, और सताए गए कमांडरों और सैनिकों से दुष्ट आत्माएँ निकल गईं। शीघ्र ही पूरी अर्मेनिया मसीह की ओर मुड़ गई; लोगों ने मूर्तिपूजक पूजा स्थलों को गिरा दिया और उनकी जगह पर ईश्वर के लिए चर्च बनाए। राजा ने, अपनी ओर से, सभी के सामने अपने पापों और अपनी क्रूरता का खुलकर इकरार किया, और ईश्वर के न्याय तथा उस पर प्रकट हुई कृपा की घोषणा की। इसके बाद, वह हर

अच्छे काम का नेता और प्रवर्तक बन गया। उन्होंने सेंट ग्रेगरी को कैपाडोसिया के सेसरिया में आर्चबिशप लियोन्टियस के पास भेजा ताकि वे उन्हें बिशप के रूप में नियुक्त कर सकें। अपनी नियुक्ति के बाद सेसरिया से लौटते समय, सेंट ग्रेगरी अपने साथ कई पुरोहितों को लाए जिन्हें वे सबसे योग्य मानते थे। उन्होंने राजा, गवर्नरों, पूरी सेना और बाकी सभी लोगों का, दरबारियों से लेकर सबसे सामान्य किसान तक, बपतिस्मा दिया। इस प्रकार, संत ग्रेगरी ने अनगिनत लोगों को सच्चे ईश्वर की आराधना करने के लिए प्रेरित किया, चर्चों का निर्माण किया और उनमें बिना रक्त के बलिदान चढ़ाए।

शहर-शहर घूमते हुए, उन्होंने पुरोहितों को नियुक्त किया, स्कूल स्थापित किए और उनमें शिक्षकों की नियुक्ति की - संक्षेप में, उन्होंने वह सब कुछ किया जो चर्च के हितों और जरूरतों की पूर्ति के लिए और ईश्वर की सेवा के लिए आवश्यक था; जबकि राजा ने चर्चों को समृद्ध संपत्तियाँ प्रदान कीं। संत ग्रेगरी ने न केवल अर्मेनियाई लोगों को ईसाई बनाया, बल्कि फारसियों, असीरियनों और मेडियों जैसे अन्य देशों के निवासियों को भी। उन्होंने कई मठों की स्थापना की, जहाँ सुसमाचार का प्रचार सफलतापूर्वक फलता-फूलता रहा।

इस प्रकार सब कुछ व्यवस्थित करने के बाद, संत ग्रेगरी रेगिस्तान में चले गए, जहाँ उन्होंने ईश्वर को प्रसन्न करते हुए अपना सांसारिक जीवन समाप्त किया।[6628] राजा तिरीडेट्स ने, अपनी ओर से, इतनी सद्गुण और संयम वाली जीवन शैली जी कि वह इस संबंध में भिक्षुओं के समकक्ष थे। संत ग्रेगरी के स्थान पर, उनके पुत्र, अरिस्तान—जो अपने उच्च सद्गुणों के लिए विख्यात थे—को आर्मेनिया लाया गया; उन्होंने अपने युवा काल से ही एक संन्यासी जीवन जिया था और आर्मेनिया में ईश्वर के चर्चों की स्थापना के उद्देश्य से काप्पाडोसिया में पुरोहित के रूप में अभिषिक्त हुए थे। राजा ने उन्हें निकिया में सार्वभौमिक परिषद में भेजा, जो एरियन विधर्म की निंदा के लिए बुलाई गई थी, जहाँ वे तीन सौ अठारह पवित्र पिताओं में से एक के रूप में उपस्थित थे।

इस प्रकार आर्मेनिया मसीह में विश्वास करने लगी और लंबे समय तक ईश्वर की सेवा करती रही, हर सद्गुण में फलती-फूलती रही और विनम्रता से हमारे प्रभु, मसीह यीशु की स्तुति करती रही, और ईश्वर की महिमा करती रही, जिसकी महिमा अब और हमेशा और युगों-युगों तक हो। आमीन।

कॉन्टाकियन, स्वर 2:

आज, हम विश्वासी, भजनों और गीतों से सभी के धन्य और पवित्र नेता, सत्य के लिए शहीद, दृढ़ चरवाहे और शिक्षक, सार्वभौमिक प्रकाश और योद्धा ग्रेगरी की स्तुति करें: क्योंकि वह मसीह से हमारे उद्धार के लिए प्रार्थना करते हैं।

हमारे पूजनीय पिता ग्रेगरी, पेलशमा नदी पर मठ के मठाध्यक्ष, वोल्गोडा के चमत्कार-कर्ता का जीवन

30 सितंबर को स्मरणोत्सव

आदरणीय ग्रेगरी गालिच नगर[6629] के मूल निवासी थे, जो लोपोतोव्स के कुलीन और धार्मिक गालिच परिवार में पैदा हुए थे, और उन्होंने ज्ञान की कलाओं में पूरी तरह से शिक्षा प्राप्त की। इस संसार की व्यर्थता को पहचानकर, उन्होंने इसे अस्वीकार कर दिया और अपने पिता का घर छोड़ दिया। ध्यान के लिए एक उपयुक्त स्थान की तलाश में, वे ज़ेल्टोवोडस्की मठ में आदरणीय हेग्यूमेन मकारियस[6630] के पास आए, उनसे मठवासी मुंडन प्राप्त किया, और उसी मठ में उन्होंने मठवासी जीवन की तपस्या की प्रथाएँ सीखीं, विशेष रूप से उपवास में उत्कृष्टता हासिल की। उनके कठोर और सदाचारी जीवन के कारण, धन्य मकारियस ने उन्हें पुरोहित पद प्राप्त करने के योग्य समझा। तत्पश्चात, आदरणीय ग्रेगरी को गालीच झील के पास स्थित 'मां परमेश्वरी के जन्म' के मठ का मठाधीश नियुक्त किया गया, और इस प्रकार

[6628] संत ग्रेगरी की मृत्यु का वर्ष 335 माना जाता है।

[6629] कोस्त्रोमा गवर्नरेट में एक जिला शहर।

[6630] निज़्नी नोवगोरोड गवर्नरेट में वोल्गा के बाएं किनारे पर झील ज़ेल्टे वोडी के पास स्थित मकरियेव्स्की ज़ेल्टोवोडस्की मठ की स्थापना आदरणीय मकरियस द्वारा की गई थी, जिनका 25 जुलाई 1444 को निधन हो गया था।

उनके कार्य और जिम्मेदारियाँ बढ़ गईं। आदरणीय संत के सदाचारी जीवन की खबर जल्द ही राजकुमार के दरबार तक पहुँच गई। गालिच के राजकुमार यूरी[6631] ने माननीय से अपने दो बेटों का बपतिस्मा देने का आग्रह किया, जबकि मास्को के ग्रैंड प्रिंस, वासिली दिमित्रीविच[6632] , माननीय को रोस्तोव शहर में आर्चिमैंड्राइट नियुक्त करना चाहते थे। सांसारिक महिमा को त्यागते हुए, माननीय ने माँ के जन्म के मठ में मठाध्यक्ष का पद छोड़ दिया और किसी को भी ज्ञात न होने वाली तथा सभी के लिए दुर्गम स्थानों पर चले गए। ग्लुशित्सी के पूजनीय डायोनिसियस[6633] के बारे में सुनकर, वे उनके मठ में आए और वहाँ दस वर्षों तक उनकी आज्ञा का पालन करते हुए रहे। इसके बाद, पूजनीय ग्रेगरी ग्लुशित्सी मठ के पूर्व में स्थित मरुभूमि में चले गए, जहाँ उन्होंने निरंतर परिश्रम और ईश्वर के प्रति भक्ति का जीवन जीना शुरू किया। जब वहाँ उनके चारों ओर मठवासी समुदाय इकट्ठा होने लगा, तो उन्होंने 'ईश्वर की परम पवित्र माता के माननीय सिनिड' को समर्पित एक चर्च की स्थापना की, मठ को एक दीवार से घेर दिया, और उसकी दीवारों के भीतर रहे, अथक परिश्रम और अटूट रात्रि जागरण में लगे रहे। वे विशेष रूप से उन लोगों को सुलह कराने की अपनी क्षमता के लिए जाने जाते थे जो एक-दूसरे से नाराज़ थे या क्रोध की अवस्था में थे। जब प्रिंस वासिली वासिलीविच[6634] को मास्को से निकाल दिया गया और प्रिंस यूरी ने जबरदस्ती महा-राजकुमार का सिंहासन छीन लिया, तो पूजनीय ग्रेगरी मास्को आए और साहसी तथा बुद्धिमानी भरे शब्दों में प्रिंस यूरी को दूसरे का उत्तराधिकार प्राप्त सिंहासन न रखने और अपनी खुद की रियासत - गालीच - में लौटने के लिए प्रोत्साहित किया। वहाँ, आदरणीय संत के हस्तक्षेप से, प्रिंस यूरी और वासिली के बीच शांति बहाल हुई, और वे दोनों अपने-अपने वैध राजसी सिंहासन पर वापस आ गए। उस समय, प्रिंस दिमित्री[6635] एक बड़ी सेना के साथ वोलोग्दा पहुँचे और शहरवासियों को बहुत कष्ट पहुँचाया। संत ग्रेगरी, जो शहर के ईसाई निवासियों की भलाई के लिए उत्सुक थे, राजकुमार दिमित्री के पास गए और उन्होंने ईसाइयों पर थोपी जा रही सभी विपत्तियों के लिए उनकी फटकार लगाई। पादरी की फटकार सहन करने के इच्छुक न होकर, राजकुमार ने उन्हें पुल से नदी में फेंकने का आदेश दिया। पादरी ने इस अपमान को खुशी से सहन किया और ईश्वर का धन्यवाद किया।

ईश्वर को समर्पित जीवन के कई वर्षों के बाद, यह महसूस करते हुए कि उनकी मृत्यु निकट आ रही है, रेवरेंड फादर ने मठवासी समुदाय को अपने पास बुलाया, उन्हें अपने अंतिम निर्देश दिए और अपने उत्तराधिकारी के रूप में एक मठाध्यक्ष नियुक्त किया। इसके बाद, रेवरेंड फादर कमजोर हो गए। जैसे-जैसे उनकी मृत्यु निकट आती गई, उन्होंने समुदाय को अपना अंतिम वसीयतनामा देते हुए कहा:

'जब मेरी आत्मा मेरे शरीर से अलग हो जाए, तो मुझे कोई सम्मान मत देना, बल्कि बस, मेरे शरीर को पैरों से पकड़कर दलदल में फेंक देना।'

यह कहकर, वे अपने बिस्तर पर लेट गए, उन्होंने क्रॉस का चिह्न बनाया, और अपनी पवित्र आत्मा[6636] को मसीह ईश्वर के हाथों में सौंप दिया, जिन्हें उन्होंने अपनी जवानी से प्रेम किया था और जिन्हें उन्होंने अपने पूरे जीवन में पूरी लगन, धार्मिकता और पवित्रता से प्रसन्न किया था।

अब, आदरणीय ग्रेगरी, संतों और धर्मी लोगों के समूह में, परमेश्वर के सिंहासन के सामने खड़े होकर, हम पापियों के लिए उनकी दया से प्रार्थना करते हैं, जो पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा, त्रिमूर्ति में महिमामय एक परमेश्वर में विश्वास करते हैं, और युगों-युगों तक सम्मान और आराधना प्राप्त करते हैं। आमीन।

ट्रोपारियन, स्वर 8:

हे ईश्वर-ज्ञानी, मसीह के प्रेम से प्रकाशित होकर, आप सद्गुणों से सुशोभित थे; सभी सांसारिक सुखों से घृणा करके, आप मरुभूमि में रहे, जहाँ आपने भजनों, जागरणों और उपवासों के द्वारा इस क्षणिक जीवन में गंभीरता से परिश्रम

[6631] यूरी दिमित्रीविच गालित्स्की, दिमित्री डोंस्कोय के पुत्र।

[6632] दिमित्री डोंस्कोय के पुत्र, यूरी का भाई, 1425 में निधन हो गया।

[6633] ग्लुशित्सी के परम आदरणीय डायोनिसियस, वोल्गोडा प्रांत में अपने नाम वाले मठ के संस्थापक, का 1 जून 1437 को निधन हो गया।

[6634] वासिली वसिलीयेविच टेम्नी, वासिली दमित्रियेविच के पुत्र, ने 1425 से 1462 तक शासन किया; एक अवसर पर उन्हें उनके चाचा, गालिच के राजकुमार यूरी दमित्रियेविच द्वारा मॉस्को से निकाल दिया गया था।

[6635] दिमित्री शेम्याका, यूरी दिमित्रीविच का पुत्र।

[6636] आदरणीय ग्रेगरी का 30 सितंबर 1441 को निधन हो गया।

कयिा: इसी कारण, मसीह ने आपको चमत्कारों के वरदान से समृद्ध कयिा है। परन्तु हे पूजनीय पतिा ग्रेगरी, जो आपकी अतंि तेजस्वी स्मृतंि का सम्मान करते हैं, हमें याद कीजएि और हमारे परमेश्वर मसीह से प्रार्थना कीजएि कंि हमारी आत्माओं का उद्धार हो।

कॉन्टाकयिन, स्वर 8:

हे पूज्यनीय, आप मसीह के प्रेम से व्याप्त थे, और अटूट इच्छा के साथ आपने उनका अनुसरण कयिा। सभी सांसारकि सुखों से घृणा करते हुए, आप ने मरुस्थल में नविास कयिा, जहाँ आपने अत्यंत लगन से परशि्रम कयिा; इसके लएि, मसीह ने आपको चमत्कारों के वरदान से समृद्ध कयिा है। हमारें स्मरण कीजएि जो आपकी अतंि गौरवशाली स्मृतंि का सम्मान करते हैं, ताकंि हम आप से पुकार सकें: हर्षति होइए, आदरणीय ग्रेगरी, हमारे पतिा।

कएिव और सम्पूर्ण रूस के मेट्रोपॉलटिन, चमत्कार-कर्ता संत माइकल की स्मृतंि

30 सतिंबर को स्मरणोत्सव

संत माइकल कीव और सारी रूस के पहले मेट्रोपॉलटिन थे और उन्होंने संत व्लादमिीर, राजकुमार और प्रेरतिों के समान के दनिों में हमारे चर्च का शासन कयिा।

ग्रीक शहर चेरसोनेसस[6637] को जीतने के बाद, राजकुमार व्लादमिीर ने वहाँ पवत्रि बपतस्मिा ग्रहण कयिा और बीजान्टनि सम्राटों[6638] की बहन राजकुमारी अन्ना से ववािह कयिा। लेकनि, अपने पूरे महान राज्य को ईसाई धर्म के प्रकाश से प्रबुद्ध करने के दृढ़ संकल्प के साथ, प्रेरतिों के समान राजकुमार ने बाद में कर्सुन से सम्राटों और पैट्रआिर्क के पास कॉन्स्टेंटनिोपल के लएि एक दूत भेजकर अनुरोध कयिा कंि वे रूसी भूमंि को बपतस्मिा देने के लएि चर्च के मंत्री भेजें, जो मूर्तपिूजा के अंधकार में डूबा हुआ था, और रूसी चर्च का शासन करने के लएि। कॉन्स्टेंटनिोपल के पैट्रआिर्क सेंट नकिोलस क्रसिोस्टोम[6639] ने बशिपों की परषिद के साथ मलिकर माइकल—जो एक महान वद्विान, एक शक्षिक और अपने जीवन के तरीके से एक संत थे—को रूस के मेट्रोपॉलटिन के रूप में चुना और अभषिक्ति कयिा। मेट्रोपॉलटिन के रूप में उनके अभषिेक से पहले संत माइकल के जीवन के परस्थितियिों के बारे में कोई रकिॉर्ड नहीं बचा है; यहां तक कंि वृत्तांत भी संत की उत्पत्तंि के बारे में अलग-अलग ववरिण देते हैं: कुछ उन्हें एक सीरयिाई कहते हैं, तो कुछ बुल्गेरयिाई। पतिृश्रेष्ठ की वदिाई संबंधी नर्दिेश प्राप्त करने के बाद, संत माइकल राजकुमार व्लादमिीर के पास रवाना हुए, उनके साथ उनके शासन में सहायता के लएि नयिुक्त पुरोहति वर्ग – छह बशिप और कई प्रेस्बटिर्स और क्लर्क – भी थे। राजकुमार ने संत का बड़ी खुशी और उत्सव के साथ स्वागत कयिा, और कुछ ही समय बाद, उनके और उनकी पत्नी, राजकुमारी के साथ, वे राजधानी कीव के लएि रवाना हो गए। नए बपतस्मिा प्राप्त राजकुमार और नए अभषिक्ति मेट्रोपॉलटिन का रूस के शहरों की जननी की ओर जुलूस, एक तरह से, व्लादमिीर के राज्य में मूर्तपिूजक बहुदेववाद और मूर्तपिूजा को खत्म करने के लएि एक पवत्रि धर्मयुद्ध था। वे अपने साथ पवत्रि अवशेष, क्रॉस, आइकन और पवत्रि चर्च के बर्तन लाए थे। उनके साथ क्रॉस उठाए हुए अनुचर थे - चर्च के पुरोहति जो ग्रीस से आए थे और जन्हिें जीते हुए शहर चेरसोनेसोस से लाया गया था।

रूसी चर्च पर संत माइकल के नेतृत्व का संक्षप्ति काल पूरा का पूरा प्रेरतिीय कार्यों को समर्पति था: मूर्तपिूजकों को सुसमाचार का प्रचार करना, उनका बपतस्मिा देना और नव-प्रबुद्ध लोगों को वशि्वास में मजबूत करना। चर्च के

[6637] कोर्सुन् – जसिे चेरसोनेसोस टौरकिा के नाम से भी जाना जाता है – टौरकि प्रायद्वीप, या क्रीमयिा, के दक्षणि-पश्चमिी तट पर, आज के सेवस्तोपोल के पास एक प्राचीन यूनानी शहर था। आज इसके केवल खंडहर ही बचे हैं।

[6638] यह सब 988 में हुआ। उस समय के बीजान्टनि सम्राट बेसलि द्वतिीय द बुलगार-स्लेयर और उनके भाई कॉन्स्टेंटनि आठवें थे, जो सम्राट रोमनस द्वतिीय के पुत्र थे। उन्होंने लगभग पूरे काल में संयुक्त रूप से शासन कयिा: बेसलि ने 975 से 1025 तक, और कॉन्स्टेंटनि ने 979 से 1028 तक, लेकनि वास्तवकि शासक बेसलि था - जो दोनों में अधकि सक्षम और ऊर्जावान था।

[6639] संत नकिोलस द्वतिीय क्रसिोस्टोम ने 983 से 996 तक कॉन्स्टेंटनिोपल के चर्च का नेतृत्व कयिा।

भजन '[6640] ' के अनुसार, संत माइकल ने 'राजा के शहर से मसीह का सुसमाचार रूस की भूमि में लाया, जो अविश्वास की गरीबी से पीड़ित थी, और उसे उस पर प्रदान किया'।

अपने महाधर्मप्रशासनिक मंत्रालय के मुख्यालय में संत का पहला कार्य राजकुमार के परिवार—उसके पुत्रों—का बपतिस्मा था; इसके बाद राजकुमार के अनुचर दल और बोयारों का बपतिस्मा हुआ।

हमारा चर्च संत माइकल को राजधानी कीव के बपतिस्मादाता के रूप में सम्मानित करता है और गाता है: 'हे संत, आपके द्वारा प्रदान किए गए बपतिस्मा के वस्त्र में लिपटा कीव का नगर आज भी गौरवान्वित है।' यह महत्वपूर्ण कार्य महान परिश्रम से, परंतु बड़ी सफलता के साथ पूरा हुआ। पवित्र मेट्रोपॉलिटन, बिशपों और अनेक पुरोहितों ने अनपढ़ लोगों को ईसाई धर्म की शिक्षा दी, उन्हें पवित्र बपतिस्मा ग्रहण करने के लिए तैयार किया और उनके पगन (मूर्तिपूजक) अंधविश्वासों को दूर किया, 'सुसमाचार की तलवार से, मूर्तिपूजक छवियों को ध्वस्त करते हुए'। उस समय, राजकुमार व्लादिमीर ने अपने अधिकार से उनके उपदेश की सफलता का समर्थन किया: उन्होंने अपने सेवकों को मूर्तियों को तोड़कर अपवित्र करने का आदेश दिया, और लोगों को—चाहे वे जवान हों या बूढ़े, पुरुष हों या महिलाएं, कुलीन हों या आम लोग, दास हों या स्वतंत्र—यह आदेश दिया कि वे निर्धारित दिन बपतिस्मा लेने के लिए नदी पर जाएं। और कीव के निवासी अपने बपतिस्मा के लिए डनीपर नदी के किनारे इकट्ठा हुए, जिसे संत माइकल ने, बड़ी संख्या में पुरोहितों के साथ, राजकुमार, उसके परिवार और बोयारों की उपस्थिति में संपन्न किया।

कीव का बपतिस्मा सुसमाचार की सच्चाई के प्रकाश द्वारा रूस के ज्ञानोदय के लिए एक ठोस नींव रखता है: राजकुमार और बोयारों द्वारा अपनाया गया ईसाई धर्म रूस की राजधानी का भी धर्म बन गया। लेकिन अब यह आवश्यक था कि इसे रूस की पूरी भूमि का धर्म बनाया जाए, उस पूरी भूमि का जिस पर व्लादिमीर का अधिकार था और जिसके धार्मिक प्रशासन के लिए संत माइकल को नियुक्त किया गया था। यह स्वयं संत के भाग्य में लिखा था, , कि वे आध्यात्मिक भेड़ों के झुंड को इकट्ठा करें, और उनके चरवाहे और शिक्षक बनें। और इस प्रकार, उत्साही महा-गड़रिये ने, प्रेरित एपोस्टल्स-समान की सहायता से, रूसी भूमि के सभी शहरों में मसीह के धर्म को स्थापित करने का प्रयास किया। चर्च संत माइकल को सत्य के साक्षी और मसीह के सुसमाचार के प्रचारक के रूप में सम्मानित करती है, जिन्होंने 'मूर्तिपूजा की काँटों को उखाड़ फेंका और पूरे रूस की भूमि में सद्गुण के फलदायी बीज बोए'उस समय कीव के बाद रूस के सबसे महत्वपूर्ण शहर थे: वेलिकी नोवगोरोड, जो राजकुमार व्लादिमीर के उत्तरी क्षेत्रों की राजधानी था, और वेलिकी रोस्तोव, जो ज़ालेसिए क्षेत्र का प्रमुख शहर था[6641] । संत माइकल ने इन दोनों शहरों की यात्रा की ताकि मूर्तिपूजकों को ईसाई धर्म में परिवर्तित किया जा सके। 990 में, बिशपों, राजकुमार के वोइवोड डोब्रिन्या और कुर्सुन के अनास्तास[6642] के साथ, संत ने नोवगोरोड का दौरा किया; वहाँ उन्होंने मूर्तियों को नष्ट किया, कई लोगों को बपतिस्मा दिया, कई चर्च बनाए और उनमें पादरियों की नियुक्ति की। अगले वर्ष, संत माइकल ने सुसमाचार का प्रचार करने के लिए रोस्तोव की एक समान यात्रा की। इस अवसर पर उनके प्रचार की सफलता और भी बड़ी थी: उन्होंने अनगिनत लोगों का बपतिस्मा दिया, कई चर्च बनवाए, उनमें पुरोहित और डिकिन नियुक्त किए, और दैवीय पूजा और चर्च प्रशासन की व्यवस्था स्थापित की।

992 में, मेट्रोपॉलिटन संत माइकल का निधन हो गया। संत व्लादिमीर गहराई से दुखी हुए और रोए, क्योंकि दिवंगत संत में उन्होंने न केवल एक दयालु और उत्साही चरवाहे को, बल्कि राज्य प्रशासन के मामलों में अपने बुद्धिमान सलाहकार को भी खो दिया था।

कीव के बपतिस्मा के तुरंत बाद, संत माइकल ने राजकुमार व्लादिमीर को परम पवित्र परमेश्वर की माता के सम्मान में दशांश चर्च का निर्माण करने का आशीर्वाद दिया। संत इसके निर्माण के पूरा होने तक जीवित नहीं रहे, लेकिन इस चर्च में उनके अवशेष रखे गए, जो उनके दफन स्थल के रूप में कार्य करता है[6643] ।

[6640] यहाँ और निम्नलिखित अनुभागों में, संत माइकल की सेवा से अंश उद्धृत किए गए हैं।

[6641] नोवगोरोड वोल्खोव नदी पर स्थित है, जहाँ से यह इल्मेन झील से निकलती है; यह अब एक प्रांतीय शहर है। नेरो झील पर स्थित रोस्तोव, वर्तमान में यारोस्लावल गवर्नरेट का एक जिला शहर है।

[6642] डोब्रीन्या व्लादिमीर के मामा थे। कर्सुन के अनास्तास एक ग्रीक थे जिन्होंने कर्सुन व्लादिमीर के हवाले कर दिया था। बाद में वे दसवांश चर्च के वरिष्ठ पुरोहित बने।

[6643] द चर्च ऑफ़ द टाइट्स का नाम राजकुमार व्लादिमीर द्वारा इसके रखरखाव के लिए अलग रखी गई टाइट (जायदाद का दसवां हिस्सा) के नाम पर पड़ा; इसे सात वर्षों (989 से 996 तक) की अवधि में ग्रीस से बुलाए गए कारीगरों द्वारा बनाया गया था। इसके अभिषेक से पहले, सेंट माइकल के अवशेष शायद अस्थायी रूप से कहीं और रखे गए थे; हालाँकि, यह संभव है कि उन्हें अधूरे चर्च के भीतर ही दफनाया गया हो।

12वीं शताब्दी में अक्षुण्ण पाए जाने के बाद, संत माइकल के अवशेषों को तब कीव-पेचेरस्क लाव्रा में, संत एंथनी की गुफा में स्थानांतरित कर दिया गया, और वहां से, 1730 में, लाव्रा के डॉर्मिशन के महान चर्च में ले जाया गया, जहाँ वे आज भी अक्षुण्ण हैं[6644]

14 अक्टूबर

1 अक्टूबर (पुराने कैलेंडर के अनुसार)

परमेश्वर की अतिपवित्र माता की संरक्षण पर प्रवचन

1 अक्टूबर को स्मरणोत्सव

[6645]इन हाल के कठिन समयों में, जब हमारे पापों के बढ़ने के साथ-साथ हमारी परीक्षाएँ भी बढ़ी हैं – संत पौलुस प्रेरित के वचनों की पूर्ति के अनुसार: *'चोरों से संकट, अपने ही लोगों से संकट, अन्यजातियों से संकट, नगरों में संकट, जंगलों में संकट, समुद्र में संकट, झूठे भाइयों के बीच संकट'* (2 कुरिन्थियों 11:26); जब, स्वयं प्रभु के वचनों की पूर्ति के अनुसार, राष्ट्र राष्ट्र के विरुद्ध और राज्य राज्य के विरुद्ध उठ खड़ा होता है, और विभिन्न स्थानों पर अकाल, महामारियाँ और भूकंप आते हैं (मत्ती 24:7), जब हम विदेशी लोगों के आक्रमणों, गृह युद्धों और घातक घावों से घिरे होते हैं – सर्वशुद्ध और सर्वधन्य कुँवारी मरियम, ईश्वर की माता, हम पर अपनी सुरक्षा का विस्तार करती हैं, हमें सभी विपत्तियों से बचाने के लिए, हमें अकाल, महामारियों और भूकंपों से बचाने के लिए, हमें युद्धों और घावों से बचाने के लिए, और अपनी सुरक्षा में हमें सुरक्षित रखने के लिए। यह चिह्न राजसी शहर क कॉन्स्टेंटिनोपल में, धर्मनिष्ठ सम्राट लियो द वाइज़[6646] के शासनकाल के दौरान, ब्लाचेर्ना में परम पवित्र परमेश्वर की माता के गौरवशाली चर्च में प्रकट हुआ। वहाँ, जब रविवार, 1 अक्टूबर[6647] की रात के चौथे घंटे पर, एक बड़ी भीड़ की उपस्थिति में, सर्व-रात्रि जागरण मनाया जा रहा था, तब संत एंड्रयू, मसीह के लिए पवित्र मूर्ख ने अपनी आँखें ऊपर उठाईं और स्वर्ग की रानी, संपूर्ण जगत की संरक्षिका, परमेश्वर की अतिपवित्र कुंवारी माता को हवा में खड़ी और प्रार्थना करते हुए देखा, जो सूर्य के प्रकाश से दमक रही थीं और अपने सम्मानित ओमोफोरीयॉन से लोगों को ढक रही थीं। यह देखकर, संत एंड्रयू ने अपने शिष्य, धन्य Epiphanius[6648] से कहा:

'क्या तुम देख रहे हो, भाई, सभी की रानी और स्वामिनी, जो पूरी दुनिया के लिए प्रार्थना कर रही हैं?'

एपफिनियस ने उत्तर दिया:

'मैं उसे देखता हूँ, हे पवित्र पिता, और मैं विस्मित हूँ[6649] ।'

[6644] पारंपरिक रूप से, संत माइकल का पर्व मूल रूप से 15 जून को मनाया जाता था, जो उनके निधन का दिन था। 1730 से, इसे 30 सितंबर पर स्थानांतरित कर दिया गया।

[6645] ब्लाखेर्ना कॉन्स्टेंटिनोपल का एक जिला है जो शहर के पश्चिमी कोने में स्थित है। बीजान्टिन साम्राज्य के स्वर्ण युग के दौरान, यह अपने पवित्र स्थलों के लिए पूरे पूर्व में प्रसिद्ध था।

[6646] लियो VI विद्वान 886 से 912 तक बाइजेंटाइन सम्राट थे।

[6647] यह संकेत 10वीं शताब्दी के पहले भाग में, मसीह के लिए मूर्ख संत एंड्रयू (मृत्यु लगभग 936) के जीवन के अंत के करीब हुआ था। ईश्वर की माता की सुरक्षा का पर्व रूसी चर्च में 12वीं शताब्दी के मध्य तक स्थापित हो गया था। यह उल्लेखनीय है कि यह दर्शन सेंट एंड्रयू को मिला - जो जन्म से एक स्लाव थे - और यह पर्व स्लाव भूमि में स्थापित किया गया और मनाया जाता है। स्वयं कॉन्स्टेंटिनोपल में, यद्यपि यह पर्व नहीं मनाया जाता था, सेंट एंड्रयू के दर्शन को याद किया जाता था। ब्लाचेर्ना के चर्च में माँ का एक आइकन था जो उन्हें उसी रूप में दर्शाता था जैसा वह सेंट एंड्रयू को दिखाई दी थीं।

[6648] एपफिनियस – एक कुलीन युवक और कुछ लोगों के अनुसार, संत एंड्रयू के एक शिष्य – ने बाद में पोलियिक्टस नाम से संन्यास की शपथ ली और कॉन्स्टेंटिनोपल के पैट्रिआर्क बने।

[6649] परमेश्वर की अतिपवित्र माता की सुरक्षा की कथा निम्नलिखित विवरणों के साथ समाप्त होती है। जब संत एंड्रयू और एपफिनियस इस अद्भुत दर्शन को निहार रहे थे, तब परमेश्वर की माता एक घंटे तक प्रार्थना करती रहीं, और अपने दैवीय और अति शुद्ध मुख पर आँसू बहाती रहीं। वहाँ अपनी प्रार्थना समाप्त करने के बाद, वह सिंहासन के पास गईं और अपने सामने इकट्ठा हुए लोगों के लिए वहाँ भी प्रार्थना की। अपनी प्रार्थना के अंत में, उन्होंने अपने से वह महान और भव्य आवरण हटा लिया, जो बिजली की तरह चमक रहा था और जिसे उन्होंने अपने परम

जसि प्रकार संत जॉन द थयिोलोजयिन ने एक बार स्वर्ग में एक बड़ा चह्नि देखा था—एक महलिा जो सूर्य से परधिानति थी—वैसे ही संत एंड्रयू ने भी, ब्लाचेर्ना के चर्च में, जो स्वर्ग के समान था, अदेखी वधू को देखा, जो सौर बैंगनी रंग के परधिान में थी। योहन द थयिोलोजयिन द्वारा देखा गया यह संकेत हमारी परम दयालु रक्षक की पूर्वसूचना देता था, क्योंकि वही संकेत उस समय प्रकट हुआ जब द्रष्टा को वह वनिाश दखिाया गया था जो सारी सृष्टि के लिए खतरा था: *'और वहाँ बजिली की चमक, और स्वर, और गरज, और भूकम्प, और बड़ी ओले की बौछार हुई। और स्वर्ग में एक बड़ा चह्नि दखिाई दयिा: एक स्त्री सूर्य से परधिानति'* (प्रकाशतिवाक्य 11:19, 12:1)। तो फरि, यह संकेत, जो परम पवत्रि कुँवारी का पूर्वसंकेत था, बजिली की चमक, गर्जना, आवाज़ों, भूकंप और ओलावृष्टि से पहले, जब सभी प्राकृतकि तत्व शांत थे, तब क्यों नहीं दखिाई दयिा, बल्कि स्वर्ग और पृथ्वी पर सबसे बुरे उथल-पुथल के दौरान क्यों दखिाई दयिा? यह दखिाने के लिए कि हमारी परम धन्य रक्षक सबसे कठनि समय में हमारी सहायता के लिए शीघ्रता से आती हैं, जब वनिाश हम पर मंडराता है, और हमें धोखेबाज़, क्षणभंगुर सांसारकि व्यर्थता के प्रलोभन से, सांसारकि अहंकार और व्यर्थता की आवाज़ों से, हमारे शत्रुओं के अचानक हमलों की गरज से, जुनून के तूफान से, और स्वर्ग से हमें धमकाने वाले हमारे पापों के लिए दैवीय दंड की ओलावृष्टि से बचाती है। क्योंकि जब ये सभी वपित्तयिाँ हम पर आ पड़ती हैं, तो तुरंत, एक बड़े संकेत के रूप में, ईसाई जाति की शीघ्र सहायकि प्रकट होती है, जो अपनी अदृश्य मध्यस्थता से हमारी रक्षा और हमें आश्रय देती है। ऐसा है *वह 'ध्वज* [जो प्रभु ने अपने भक्तों को दयिा है], *ताकि वे सत्य के लिए उसे फहरा सकें]'* (भजन संहति 59:6); क्योंकि इस संसार में हम, मानो, नशिानेबाजी के लिए एक नशिाना बने हुए हैं। हम पर चारों ओर से तीर बरसते हैं: कुछ दृश्यमान शत्रुओं के हथयिारों से, जो जल्दबाजी में अपनी धनुष तानते हैं और अपने अहंकार में हमारे सामने डींगें हाँकते हैं; कुछ अदृश्य शत्रुओं की धनुष से, ताकि हम दुख के साथ स्वीकार कर सकें कि हम शैतान के तीरों का सामना नहीं कर सकते; और कुछ हमारे अपने शरीर से, जो आत्मा के वरिुद्ध युद्ध करता है; और फरि कुछ तीर ईश्वर के धर्मी क्रोध की धनुष से और दंड की धमकी से भी आते हैं, जैसा कि संत दाऊद कहते हैं: *'यदि [कोई] नहीं लौटता, तो वह अपनी तलवार तेज करता है, अपनी धनुष तानता है और नशिाना साधता है, उसके लिए मृत्यु के पात्र तैयार करता है, और अपने तीरों को ज्वलंत बनाता है'*[6650] (भजन संहति 7:13–14)। ताकि हम इन सभी तीरों से घातक रूप से घायल न हों और हम खतरे से बच सकें, हमें एक नशिान दयिा गया है—अत्यंत शुद्ध और अत्यंत धन्य कुँवारी की सुरक्षा। उनकी सुरक्षा द्वारा एक ढाल की तरह ढके हुए, हम तीरों से अप्रभावति रहते हैं। क्योंकि हमारी रक्षक के पास हमारी रक्षा के लिए हज़ारों ढालें हैं, जैसा कि पवत्रि आत्मा उनके बारे में कहते हैं: *'तुम्हारी गर्दन दाऊद के स्तंभ के समान है, जो हथयिारों से सज़ा हुआ है; उस पर हज़ारों ढालें लटकी हैं—सभी शक्तशिाली लोगों की ढालें'*[6651] (प्रेम गीत 4:4)।

एक बार, दाऊद ने सयिोन, जो एक ऊँचे पहाड़ पर स्थति है, और नीचे बसे यरूशलेम, जसि सयिोन की बेटी कहा जाता है, के बीच अपना भव्य और ऊँचा स्तंभ खड़ा कयि[6652] । और वह स्तंभ उनके बीच ऐसा खड़ा था, जैसे गर्दन शरीर और सरि के बीच होती है, क्योंकि अपनी ऊँचाई के कारण वह यरूशलेम से ऊपर था और सयिोन तक पहुँचता था। उस स्तंभ पर ढालें और यरूशलेम के युद्ध तथा रक्षा के लिए आवश्यक सभी हथयिार लटकाए गए थे। पवत्रि आत्मा परम पवत्रि कुँवारी की तुलना दाऊद के इस स्तंभ से करता है: क्योंकि वह, दाऊद की बेटी होने के नाते, मसीह, जो कलीसयिा के सरि हैं, और वशि्वासयिों, जो कलीसयिा के शरीर का नरि्माण करते हैं, के बीच मध्यस्थ हैं; वह कलीसयिा से श्रेष्ठ है, क्योंकि वह वास्तव में इसके सभी सदस्यों से ऊँची है, फरि भी वह मसीह तक भी पहुँचती है, क्योंकि उसने उन्हें देह प्रदान कयि।

पवत्रि सरि पर धारण कयि हुआ था; और, उसे अपने परम पवत्रि हाथों में बड़ी गंभीरता से पकड़े हुए, उन्होंने उसे वहाँ खड़े सभी लोगों पर फैला दयिा। इन अद्भुत पुरुषों ने कुछ समय तक लोगों पर फैले इस पर्दे और प्रभु की महमिा को नहिारा, जो बजिली की तरह चमक रही थी; और जब तक परमेश्वर की अति पवत्रि माता वहाँ रहीं, तब तक वह पर्दा दखिाई देता रहा। लेकनि जब वह प्रस्थान कर गईं, तो वह भी अदृश्य हो गया। फरि भी, उसे अपने साथ ले जाकर, उन्होंने वहाँ मौजूद लोगों के लिए अपनी कृपा छोड़ दी।

[6650] सूर्य से वस्त्र-धारणी प्रलयकालीन स्त्री की प्रतमिा से, अधकिांश लोग कलीसयिा को, और सूर्य से – यीशु मसीह को समझते हैं। साथ ही, यह स्त्री परमेश्वर की परम पवत्रि माता का भी प्रतीक हो सकती थी, जो दव्यि, स्वर्गीय महमिा से सुसज्जति थीं।

[6651] दाऊद का स्तंभ, जो वजियी हथयिारों और ढालों से लदा हुआ था, परमेश्वर की परम पवत्रि माता का पूर्वसंकेत था, जैसा कि आगे चर्चा की जाएगी। इस प्रसदि्ध दाऊद के स्तंभ के बारे में पवत्रि धर्मग्रंथ से और कुछ ज्ञात नहीं है, सवािय इसके कि इसे कसिी नश्चिति पहाड़ पर स्थापति कयि गया था और इसे फाल्पयिोफ़ में बनाया गया था, एक नाम जो कलिेबंदी को भी दर्शाता है।

[6652] ज़यिोन – उन चार पहाड़यिों में से दक्षणि-पश्चमिी, सबसे बड़ी और सबसे ऊँची पहाड़ी जसि पर यरूशलेम बना है – को यहूदयिों द्वारा पवत्रि माना जाता था और यह मूल रूप से यरूशलेम का धार्मकि केंद्र और दुर्ग था। इसी कारण से, धर्मग्रंथ अक्सर यरूशलेम को 'सयि्योन की बेटी' कहता है; उदाहरण के लिए, भजन संहति 9:15; यशायाह 1:8, 67:11; यरि्मयाह 6:23; मत्ती 21:5 देखें।

वह अब भी एक मध्यस्थ बनी हुई है, जिसने स्वर्ग और पृथ्वी के बीच, परमेश्वर और मानवता के बीच, चर्च के संस्थापक—मसीह—और संघर्षरत चर्च के बीच, वायुमंडल में अपनी जगह ले ली है, ठीक वैसे ही जैसे दाऊद का स्तंभ सियोन और यरूशलेम के बीच, मजबूत ढालों से लटका हुआ खड़ा था। ये ढालें हमारे लिए ईश्वर से उनकी सर्वशक्तिमान प्रार्थनाओं का प्रतीक हैं, जिन्हें उनकी सम्मानित सुरक्षा के दर्शन के दौरान योग्य लोगों द्वारा सुना जाता है। उन्होंने अपने पुत्र और सृष्टिकर्ता के प्रति एक माँ की तरह कोमलता से प्रार्थना की, और अपनी प्रार्थना के दौरान दिव्य दया और प्रेम से परिपूर्ण निम्नलिखित शब्द बोले:

– हे स्वर्गीय राजा! हर उस व्यक्ति को स्वीकार करो जो आपकी महिमा करता है और हर स्थान पर आपके परम पवित्र नाम का स्मरण करता है – और जहाँ भी मेरा नाम याद किया जाए, उस स्थान को पवित्र करो; जो तुझे महिमामंडित करते हैं उन्हें महिमामंडित कर और मुझे, अपनी माता को, प्रेम से सम्मानित कर, उनसे हर प्रार्थना और पवित्र संकल्प स्वीकार करते हुए, और उन्हें सभी बुराइयों और विपत्तियों से बचाते हुए।"

क्या उसकी प्रार्थनाएँ चर्च मिलिटेंट की रक्षा करने वाली ढालों जैसी नहीं हैं? वास्तव में, वे अविनाशी ढालें हैं, जिनके द्वारा हम सभी अग्निबाणों[6653] को बुझा सकते हैं।

संत एम्ब्रोज़ दाऊद के स्तंभ के बारे में कहते हैं[6654] , कि यह दोहरे उद्देश्य के लिए बनाया गया था: शहर की रक्षा करने और उसे सुशोभित करने के लिए। अम्ब्रोज़ कहते हैं, 'दाऊद ने शहर की रक्षा और उसे सुशोभित करने के लिए स्तंभ स्थापित किया: यह एक रक्षा के रूप में काम करता था क्योंकि स्तंभ से कोई दूर से दुश्मन को देख सकता था और उसे शहर से दूर भगा सकता था; और एक सजावट के रूप में क्योंकि, अपनी ऊँचाई के कारण, यह यरूशलेम की सभी ऊँची इमारतों से ऊपर था।' इसलिए, इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि हमारी रक्षक को एक स्तंभ से उपमित किया गया है, क्योंकि वह हमारे शत्रुओं के सामने हमारे लिए एक दृढ़ स्तंभ हैं: वास्तव में, वह हमारी रक्षा करती हैं और हमें सुशोभित करती हैं। वह हमारी रक्षा करती हैं जब वह दृश्य और अदृश्य शत्रुओं को हमसे दूर भगाती हैं, जब वह बंदियों को उनके बंधनों से मुक्त करती हैं, जब वह अशुद्ध आत्माओं से पीड़ितों को मुक्ति दिलाती हैं, जब वह दुखी लोगों को सांत्वना देती हैं, जब वह उत्पीड़ितों के लिए एक वकील और तूफान से त्रस्त लोगों के लिए एक शांत आश्रय के रूप में खड़ी होती हैं, और जब वह भूखों को भोजन कराती हैं और बीमारों से मिलने जाती हैं। वह अपनी सर्वोच्च योग्यताएँ, सबसे कीमती वस्त्रों की तरह, और प्रचुर अनुग्रह, एक अक्षय खजाने की तरह, हमारे जीवन की लज्जास्पद नग्नता को परमेश्वर के सामने ढककर हमें सुशोभित करती हैं, हमारी गरीबी की पूर्ति करती हैं और हमें प्रभु की दृष्टि में प्रिय बनाती हैं। वह हमें तब सुशोभित करती है जब वह हमें, जिनके पास विवाह का वस्त्र नहीं है, अपने वस्त्र से ढक लेती है, और हमारी लज्जास्पद आध्यात्मिक नग्नता को—जिसे आरंभ से ही पृथ्वी द्वारा दर्शाया गया था, जो अदृश्य और आकारहीन थी, और जल से ढकी हुई थी (उत्पत्ति 1:1-2)—सर्व-दृष्टा की दृष्टि से अदृश्य कर देती है। रूपहीन और सूनी पृथ्वी पापी आत्मा का पूर्वाभास थी, जिसने अपनी आध्यात्मिक सुंदरता खो दी थी, पुण्यों से वंचित थी और परमेश्वर की कृपा से पराया था। अकारण पृथ्वी को ढकने वाले जल, बदले में, परमेश्वर की माता की दया का पूर्वाभास देते थे, जो समुद्र के समान अक्षय है, और, प्रचुर मात्रा में बहने वाली नदियों की तरह, सभी पर बहती और सभी को ढकती है। जब परमेश्वर का आत्मा जल के ऊपर मंडराया, तो वह पृथ्वी के ऊपर भी मंडराया, जो जल के नीचे छिपी हुई थी और unꢀly से सुसज्जित थी, मानो वह उसकी कुरूपता को देख ही नहीं रहा हो। यह रहस्यमय रूप से इस बात का पूर्वाभास था कि आत्मा, जो परमेश्वर की कुँवारी माता की परम दयालु सुरक्षा से ढकी हुई है, भले ही वह सद्गुणों से सुसज्जित न हो, पवित्र आत्मा की कृपा से वंचित नहीं होगा; क्योंकि परमेश्वर की परम पवित्र माता का आवरण उसकी कुरूपता को ढक लेगा, जैसे जल ने अव्यक्त पृथ्वी को ढका था, और उसी प्रकार उसे अपनी कृपा के वैभव से सुशोभित करेगा और पवित्र आत्मा को उसकी ओर आकर्षित करेगा। परम पवित्र कुँवारी हमें तब सुशोभित करती हैं जब वह पापियों को धर्मी और अशुद्धों को शुद्ध बनाती हैं, जैसा कि सिनाई के धन्य अनास्तासियस कहते हैं: 'वह जादूगरों को प्रेरितों में और कर वसूलने वालों को सुसमाचार प्रचारकों में बदल देती हैं, और व्यभिचारियों को कुँवारियों से भी अधिक सम्मान का पात्र बना देती हैं। इस प्रकार, उन्होंने मिस्र की मरियम को, जो कभी एक वेश्या थी, अब कई कुंवारीयों से भी अधिक सम्माननीय बना दिया है; वह जो कभी अंधकारमय

[6653] अर्थात्, विभिन्न सांसारिक परिस्थितियाँ और प्रलोभन: विशेष रूप से, दुष्ट की अग्नि-बाण, शैतान के हमले—जो मानव जाति का प्राचीन, भयानक शत्रु है—जो हमें घातक आग से झुलसाने के लिए प्रतीत होते हैं।

[6654] भजन संहिता 119 पर अपने उपदेश में, मिलान के अम्ब्रोस (इटली में) – पश्चिमी चर्च के सबसे प्रसिद्ध पिता और चौथी शताब्दी के एक ईसाई लेखक (मृत्यु 397)। उनका पर्व 7 दिसंबर को मनाया जाता है।

और अशुद्ध थी, अब मसीह के राज्य में सूर्य की तरह चमकती है – सर्व-पवित्र कुंवारी मरियम की मध्यस्थता से, जो उन सभी के लिए एक ढाल और आभूषण बनी रहती हैं जो उनकी शरण लेते हैं। वह संपूर्ण आध्यात्मिक यरूशलेम, या मसीह की कलीसिया को भी सुशोभित करती हैं, जो इस दिन उनकी स्तुति करती है: 'हे सभी विश्वासियों की अद्भुत शोभा, भविष्यवाणी की पूर्ति, प्रेरितों का गौरव और शहीदों का सांत्वना, कुँवारीपन की स्तुति और संपूर्ण विश्व के लिए अद्भुत सुरक्षा'[6655] .

दाऊद के स्तंभ पर, ढालों के बगल में, देश के रक्षकों के तीर रखे थे: और सर्वशुद्ध कन्या, यह जीवित स्तंभ, के पास भी शक्तिशाली लोगों के तीर हैं, अर्थात् उन संतों की प्रार्थनाएँ जो उनके साथ प्रार्थना करते हैं। क्योंकि वह मंदिर में अकेली नहीं प्रकट हुईं, हवा में खड़ी होकर, बल्कि दैवीय सेनाओं और संतों की भीड़ के साथ, जो श्रद्धापूर्वक सफेद वस्त्रों में उन्हें घेरे हुए थीं। इन सभी संतों की हमारे लिए प्रार्थनाएँ, मानो, शक्तिशाली तीर हैं, जो हमारे शत्रु – शैतान – की सभी सेनाओं को भगाने में सक्षम हैं। सर्व-पवित्र कन्या, परमेश्वर की माता, जानती हैं कि पृथ्वी पर हमारा जीवन एक युद्ध है: शत्रु हमसे अपनी पूरी शक्ति से युद्ध करता है; उसने अपनी सेनाओं को हम पर खड़ा कर दिया है और अपनी फौजों से हमें घेर लिया है, जैसा कि भजनकार कहता है: *'क्योंकि कुत्तों ने मुझे घेर लिया है; दुष्टों के एक दल ने मुझे घेरा है; उन्होंने मेरे हाथों और पैरों को भेद दिया है; उन्होंने मुझ पर अपना मुँह फाड़ दिया है, जैसे कोई शिकार के लिए भूखा और दहाड़ता हुआ सिंह'* (भजन संहिता 21:17, 21:14)। इसीलिए स्वर्ग की रानी, हमारी सहायता करने की इच्छा से, हमारे शत्रु के विरुद्ध सभी स्वर्गीय शक्तियों को खड़ा कर दिया, भविष्यद्वक्ताओं और प्रेरितों को बुलाया, शहीदों और कुँवारियों को इकट्ठा किया, पवित्र और धर्मी लोगों को एकजुट किया, और हमारे सहायतार्थ हमारे पास आईं, ताकि वे हमें एक शक्तिशाली सेना से घेर सकें और हमें हमारे शत्रुओं पर विजय प्रदान कर सकें: 'उसके द्वारा विजयें प्राप्त होती हैं, उसके द्वारा शत्रु पराजित होते हैं'[6656] । वह दैवीय सेनाओं के साथ आईं, क्योंकि वह याकूब द्वारा पूर्वदृष्टि में देखी गई सीढ़ी थीं[6657] (उत्पत्ति 28:12–15), जिसे स्वर्गदूतों की भीड़ ने घेरा हुआ है। यहाँ याकूब की सीढ़ी को याद करते हुए, कोई यह सोच सकता है: स्वर्गदूत उस पर स्थिर क्यों नहीं रहे, बल्कि लगातार ऊपर-नीचे क्यों करते रहे? हालाँकि, जब यह महसूस होता है कि यह सीढ़ी कन्या मरियम की पूर्वसूचक थी, जैसा कि एक चर्च के भजन के शब्दों में व्यक्त किया गया है: 'हे स्वर्ग तक ले जाने वाले पुल, और हे याकूब द्वारा देखी गई ऊँची सीढ़ी, आनंदित हो'[6658] , तो यह समझ आता है कि स्वर्गदूत सीढ़ी पर स्थिर क्यों नहीं रहे। क्योंकि 'प्रार्थना में सदा सतर्क रहने वाली ईश्वर की माता'[6659] स्वर्गदूतों को आज्ञा देती हैं कि वे उनकी संग-संग लोगों की अथक सहायता करें: लोगों की प्रार्थनाएँ ईश्वर तक पहुँचाने के लिए ऊपर जाकर, और उन्हें ईश्वर की ओर से सहायता और आशीर्वाद लाने के लिए नीचे उतरकर। उसी सीढ़ी ने अब स्वर्ग से उनके साथ स्वर्गदूतों की एक बड़ी सेना को नीचे लाया है, जो हमें ऊपर से सुरक्षा और रक्षा प्रदान करती है। वह स्वर्गदूतों के साथ यह आज्ञा देने आई हैं कि वे हमें हमारे सभी मार्गों में सुरक्षित रखें; वह अपने साथ सभी संतों के समूह को लाई हैं, ताकि हमारे लिए एक संयुक्त प्रार्थना करने के बाद, वे मिलकर हमारी पापी प्रार्थनाओं को उनके पुत्र और हमारे ईश्वर के समक्ष प्रस्तुत कर सकें। अत्यंत पवित्र कुँवारी के साथ कलीसिया में प्रकट होने वाले सभी संतों में दो सबसे विशिष्ट थे: संत यूहन्ना अग्रदूत, जिनके बारे में कहा गया है, *'स्त्रियों से उत्पन्न हुए लोगों में उनसे बड़ा कोई नहीं हुआ'* (मत्ती 11:11), और संत योहन धर्मविज्ञानी, *'जिन्हें यीशु प्रेम करते थे, और जो भोज में उनकी छाती पर झुके थे'* (यूहन्ना 21:20)। हमारी मध्यस्थ ने उन दोनों को अपने साथ उठाया, उन्हें ईश्वर के समक्ष महान साहस रखने वालों के रूप में स्थापित किया, ताकि उनके साथ मिलकर वह ईश्वर को दया के लिए और शीघ्रता से प्रेरित कर सकें: *'धर्मी व्यक्ति की प्रार्थना शक्तिशाली होती है'* (याकूब 5:16)। और सर्व-पवित्र कुँवारी म , दोनों कुँवारियों के बीच, जैसे दो स्वरूपों के बीच वाचा का सन्दूक[6660] , जैसे सेराफिम के बीच सेनाओं के प्रभु का सिंहासन, जैसे हारून और होर के बीच फैले हाथों के

[6655] ईश्वर माता की रक्षा के लिए दैवीय लिटर्जी, 'हे प्रभु, मैंने पुकारा' पर 3 स्टिचेरा।

[6656] अकाथिस्ट, इकोस 2।

[6657] 'प्रभु ने,' इस पूर्वप्रतीक के संबंध में सेंट जॉन ऑफ़ डेमास्कस कहते हैं, 'अपने लिए एक जीवित सीढ़ी बनाई है, जिसकी नींव पृथ्वी पर स्थापित है, जबकि इसका ऊपरी सिरा स्वयं स्वर्ग तक पहुँचता है, और जिस पर परमेश्वर स्थापित हैं। यह आध्यात्मिक सीढ़ी, अर्थात् कन्या, पृथ्वी पर स्थापित है: क्योंकि वह पृथ्वी पर जन्मी थीं; उनका सिर स्वर्ग को छूता था: क्योंकि उनका सिर परमेश्वर और पिता था।"

[6658] घोषणा की सेवा, 'हे प्रभु, मैंने पुकारा है' पर स्तिखिरा 1।

[6659] परम पवित्र थिओटोकोस के निद्रोत्सव के लिए कोंटाकियन से एक वाक्यांश।

[6660] ईश्वर की माता की तुलना सही रूप से वाचा के सन्दूक से की जाती है। पुराने नियम में, तम्बू के भीतर, और बाद में यरूशलेम के मंदिर में, एक भीतरी पवित्र स्थल था, 'अत्यंत पवित्र स्थान', जहाँ केवल महापुजारी ही जा सकता था, और वह भी केवल वर्ष में एक बार। इस पवित्र स्थल में

साथ मूसा; तब अधोलोक का अमालक, अपने पूरे अंधकारमय राज्य और अपनी सारी शक्ति के साथ गिर पड़ा[6661] (निर्ग. 17:11–14)।

और इस प्रकार, हम सर्वपवित्र थिओटोकोस की संरक्षा का उत्सव मनाते हैं, ब्लाचेर्ना की कलीसिया में उनकी महिमामय प्रकटता का स्मरण करते हुए, जिसे संतों एंड्रयू और एपिफानियस ने देखा था। हम उत्सव मनाते हैं, ईसाई लोगों पर प्रदर्शित उनकी महान दया के लिए अपनी रक्षिका को धन्यवाद देते हुए, और हम उनसे विनम्रतापूर्वक प्रार्थना करते हैं कि वह, अब और सदैव, उन लोगों की कृपापूर्वक रक्षा करें जो उनकी शरण की खोज करते हैं। हम प्रार्थना करते हैं क्योंकि, उनकी सुरक्षा के बिना, हमारे लिए—जो लगातार ईश्वर के क्रोध को भड़काते हैं—जीना असंभव होगा। बार-बार पाप करके, हम कई दंडों के अधीन हैं, जैसा कि भजनकार कहते हैं: *'दुष्टों के दुख बहुत हैं'* (भजन संहिता 31:10)। हम तो अपने पापों के कारण पहले ही नष्ट हो गए होते, यदि सर्व-दयालु देवी की मध्यस्थता न होती: 'क्योंकि यदि यह मध्यस्थ प्रार्थना में उनके सामने न खड़ी होती,' तो कौन हमें इतनी सारी विपत्तियों से बचाता, और कौन हमें इस day?[6662] तक स्वतंत्र रखता। यशायाह नबी यहूदियों को सलाह देते हैं: *'एक क्षण के लिए अपने आप को छिपा लो, जब तक कि क्रोध समाप्त नहीं हो जाता'* (यशायाह 26:20)। लेकिन प्रभु के क्रोध से कोई कहाँ शरण ले सकता है? दुख के समय में, हमें संसार की एकमात्र स्वामिनी के सिवा कहीं कोई शरण नहीं मिली है, जो पवित्र आत्मा के मुख से अपने बारे में कहती हैं कि उन्होंने *'बादल की तरह पृथ्वी को ढक लिया है'*[6663] (सीर. 24:3)। सचमुच, हम उस के आश्रय में शरण लेते हैं, जिसने एक बादल की तरह पृथ्वी को ढक लिया है। लेकिन हे परमेश्वर की अति सम्माननित कुंवारी माता, आप स्वयं को बादल जैसी किसी तुच्छ वस्तु के समान क्यों मानती हैं? क्या आपके पास स्वयं की उपमा देने के लिए सूर्य, चंद्रमा और तारे नहीं हैं, विशेष रूप से जब बुद्धिमान ने आपकी महिमा करते हुए कहा: *'यह कौन है, जो भोर के समान दीप्तिमान है, चंद्रमा के समान सुन्दर, सूर्य के समान तेजस्वी'*[6664] (प्रेम गीत 6:10)! तो फिर, एक बादल में ऐसी कौन सी सुंदरता है कि आप स्वयं की उपमा उससे देने में संकोच नहीं करतीं? रहस्य स्पष्ट है: जब एक बादल पृथ्वी पर छा जाता है और उसे ढक लेता है, तो सभी जानवर शिकारियों से सुरक्षित हो जाते हैं, क्योंकि कोई भी उन्हें पकड़ नहीं सकता। इसीलिए परम पवित्र कुँवारी स्वयं को एक बादल कहती हैं: वह हमें शिकारियों से छिपाती हैं। जहाँ तक हम पापियों का सवाल है, क्रिसोस्टोम के तर्क के अनुसार, हम अपनी अमानवीयता में मवेशियों और जानवरों की तरह हैं: हम भालुओं की तरह अपनी वासनाओं को पूरा करते हैं, गधों की तरह अपना मांस मोटा करते हैं, ऊँटों की तरह प्रतिशोधी होते हैं, भेड़ियों की तरह लूटपाट में लगे रहते

वाचा का संदूक रखा जाता था – एक संदूक, जो अंदर और बाहर दोनों ओर सोने से मढ़ा हुआ था, जिसमें ईश्वर द्वारा चुने हुए लोगों की सबसे पवित्र वस्तुएँ रखी थीं। इसके दोनों ओर 'महिमा के करूब' खड़े थे, जो ईश्वर के सबसे निकट, इन सर्वोच्च स्वर्गीय शक्तियों के स्वर्णिम प्रतिनिधित्व थे। यह वही संदूक था जिसने ईश्वर की माता की पूर्वसूचना दी, जिन्होंने स्वयं ईश्वर को अपने भीतर समाहित किया; इसीलिए कलीसिया उनकी स्तुति 'ईश्वर का जीवित संदूक' के रूप में करती है (घोषणा का कैनन, ओड 9)। महिमा के सिंहासन के समक्ष मानव जाति के लिए एक अनवरत मध्यस्थ के रूप में, वह हमारे लिए चेरुबिम के एक समूह से घिरी एक नौका हैं, जो अपनी प्रार्थनाओं से हमें सभी दुर्भाग्य और विपत्तियों से बचाते हैं।

[6661] अरब के रेगिस्तान में अपनी भटकन के दौरान, इस्राएलियों को रेफिदीम में एक शिकारी खानाबदोश लोगों - अमालेकियों के खिलाफ लड़ने के लिए मजबूर होना पड़ा। मूसा, हारून और हूर एक पहाड़ी की चोटी पर चढ़ गए। और जब मूसा ने अपने हाथ उठाए, तो इस्राएल की विजय हुई; परन्तु जब उन्होंने उन्हें नीचे किया, तो अमालेक की विजय हुई। जब मूसा के हाथ भारी हो गए, तो उन्होंने उन्हें एक चट्टान पर रख दिया, और हारून और हूर ने उनके हाथों को सहारा दिया, जो सूर्यास्त तक उठा रहे। तब नून के पुत्र यहोशू के नेतृत्व में इस्राएलियों ने अमालेकियों को हराया और उनके लोगों को तलवार से मार डाला। – इस अवसर पर मूसा के हाथों को उठाने का कार्य इस्राएल के लिए प्रार्थना की शक्ति का प्रतीक था। इस तुलना का अर्थ स्पष्ट है: अपनी अनवरत प्रार्थनाओं में, ईश्वर की माता, मानो संत यूहन्ना बप्तिस्मा देने वाले और संत यूहन्ना दैवज्ञ की शक्ति से समर्थित, मूसा की तरह, ईसाइयों के अदृश्य शत्रु - अपनी सभी शक्तियों के साथ शैतान, जो इस दुनिया में हम पर हमला करता है, जिसे एक रेगिस्तान के समान बताया गया है - को परास्त करती हैं।

[6662] जल के लघु आशीर्वाद के लिए ट्रॉपारिऑन से।

[6663] ईश्वर की माता को सामान्यतः पवित्र शास्त्र और कलीसिया के भजनों दोनों में एक बादल (धुंधली वाष्प) कहा जाता है: उनसे 'धर्मी सूर्य ने हम पर प्रकाश डाला है'; दूसरा, क्योंकि वह प्यासे लोगों पर (पापों की) 'क्षमा का जीवनदायी जल' बरसाती हैं और हमें 'मसीह की अक्षयशीलता का बादल' प्रदान किया है; तीसरा, क्योंकि अपनी दिव्य सुरक्षा और हार्दिक मध्यस्थता से वह हमें सभी बुराइयों और विपत्तियों से ढकती और बचाती हैं।

[6664] यह भविष्यसूचक संकेत केवल इसी अर्थ तक ही सीमित नहीं है। जैसे सुबह की भोर, रात के अंधकार को दूर करते हुए, तेजस्वी सूर्य से पहले आती है, जो उससे अपना प्रकाश प्राप्त करती है; वैसे ही परम पवित्र कुँवारी ने भी 'धर्म के सूर्य'—मसीह—से सीधे पहले आकर, उससे ईश्वर की माता के रूप में अपनी महिमा प्राप्त की। मसीह के जन्म के साथ, मूर्तिपूजा और बहुदेववाद का अंधकार मिट गया, और ईश्वर के ज्ञान और धार्मिकता का अनंत दिवस आरंभ हुआ।

हैं, साँपों की तरह क्रोधति होते हैं, बच्छिुओं की तरह डंक मारते हैं, लोमड़ियों की तरह चालाक होते हैं, और एक इचडिना की तरह अपने भीतर द्वेष का वषि पालते हैं। हमारे जैसे जानवरों का पीछा वभिन्नि शकिारी करते हैं: हम ईश्वर के धर्मी क्रोध से घरि जाते हैं, जो हमारे बुरे कर्मों के लिए हमें दंडति करता है – जैसा लखिा है: *'हे प्रतशिोध के ईश्वर, हे प्रभु, प्रतशिोध के ईश्वर, प्रकट हो जा!'* (भजन संहति 93:1)। हमारे अपने ही पाप भी हम पर हावी हो जाते हैं, ताकि हम में से प्रत्येक यह कह सके: *'मेरे पाप मुझ पर हावी हो गए हैं, इसलिए मैं देख नहीं सकता'* (भजन संहति 39:13)। हम एक अदृश्य शत्रु द्वारा भी पीछा कयि जाते हैं: *' ' 'वह मुझ पर घात लगाए हुए भालू [और] एक गुप्त स्थान में छपि हुए सहि के समान हो गया है'* (वलिापगीत 3:10)। हमें एक दृश्यमान शत्रु द्वारा भी धमकी दी जाती है। वह कहता है: *'मैं पीछा करूँगा, मैं पकड़ लूँगा, मैं लूट का माल बाँट लूँगा; मेरी आत्मा उनसे तृप्त होगी; मैं अपनी तलवार खींचूँगा, मेरा हाथ उन्हें नष्ट कर देगा'* (नरि्गमन 15:9)। लेकनि हमारे पास धैर्य है; हमारे ऊपर एक आध्यात्मकि बादल है जो हमें ढकता है—अत्यंत पवत्रि कुँवारी मरयिम। हम अपनी आशा उसी में रखते हैं; उसी की शरण में भागते हैं; उसकी सुरक्षा में, हमारे सरि का एक भी बाल नष्ट नहीं होगा, बशर्ते हम भक्तपिूर्वक पुकारें: 'हम पर अपनी सुरक्षा का आवरण डालयि, हे हमारी रक्षकि, अत्यंत पवत्रि कुँवारी: 'हमारे क्लेश के दनि, हम पर छा जाओ!' (देखें भजन संहति 26:5)। फरि भी हमारे जीवन के सभी दनि क्लेश से भरे हैं, जैसा कि एक बार पुरखों के पति याकूब ने कहा था: *'मेरा जीवन छोटा और दुखों से भरा रहा है'* (उत्पत्ति 47:9)। वशिेष रूप से वनिाशकारी वे दनि हैं जब हम बुराई देखते हैं और स्वयं भी बहुत बुराई करते हैं, *'क्रोध के दनि के लिए अपने ऊपर क्रोध जमा करते हैं'*[6665] (रोमयिों 2:5)। हे परम पवत्रि कुँवारी! हमारे इन सभी वनिाशकारी दनिों में आपकी दयालु रक्षा की आवश्यकता है! तब, हमारे जीवन के सभी दनिों में, और वशिेष रूप से उस भयानक दनि पर जब आत्मा शरीर से अलग होगी, हमारी रक्षा करो। अपनी सहायता से हमारे साथ रहो और हमें आकाश के नीचे वायु में रहने वाले दुष्ट आत्माओं से छपिा लो, और अंतमि न्याय के दनि, हमें अपनी सुरक्षा के गुप्त स्थानों में छपिा लो! आमीन।

ट्रोपारयिन, स्वर 4:

आज हम, वश्विासयिों, आनन्दपूर्वक उत्सव मनाते हैं, हे परमेश्वर की माता, आपके आगमन से धन्य होकर, और आपकी अति पवत्रि प्रतमिा को नहिारते हुए, हम वनिम्रतापूर्वक प्रार्थना करते हैं: हमें अपनी सम्मानति सुरक्षा से ढकें, और हमें हर बुराई से बचाएँ, और आपके पुत्र, हमारे परमेश्वर मसीह से, हमारे आत्माओं को बचाने का नविेदन करते हैं।

कॉन्टाकयिन, स्वर 3:

आज कुँवारी कन्या कलीसयिा में खड़ी हैं, और संतों के समूह के साथ वह हमारी ओर से परमेश्वर से अदृश्य रूप में प्रार्थना करती हैं: स्वर्गदूत और बशिप पूजा में नमन करते हैं, जबकि प्रेरति और भवष्यिद्वक्ता आनन्दति होते हैं; क्योंकि परमेश्वर की माता हमारी ओर से अनन्त परमेश्वर से प्रार्थना करती हैं।

प्रेरति सेंट अनानयिास की शहादत

1 अक्टूबर को स्मरण कयि जाता है

पवत्रि प्रेरति अनानयिास, सत्तरों में से एक, दमश्कि नगर के बशिप थे[6666] । वे प्रेरति पौलुस को बपतस्मिा देने के लिए जाने जाते हैं। एक बार, प्रभु उन्हें एक दर्शन में प्रकट हुए और उनसे कहा:

[6665] क्रोध के दनि, अर्थात् मसीह के दूसरे आगमन और अंतमि न्याय पर।

[6666] दमास्कस – सीरयिा का प्रमुख और सबसे अमीर व्यापारकि शहर, जो दुनयिा के सबसे पुराने शहरों में से एक है; यह फलिस्तिीन के उत्तर-पूर्व में, बरादा नदी के कनिारे स्थति है, जो इसके बीच से होकर गुजरती है, और यह एंटी-लेबनान पहाड़ों के पूर्वी ढलान पर एक सुंदर और उपजाऊ मैदान में है।

'उठो और सीधी गली नामक सड़क पर जाओ, और यहूदा के घर[6667] में तर्सस के साऊल नामक एक मनुष्य के वषिय में पूछो; वह अब प्रार्थना कर रहा है।'

अननयि्याह ने यह करने से इनकार कर दयिा, क्योंकि वह जानता था कि साऊल ने यरूशलेम में मसीहयिों को कतिना नुकसान पहुँचाया था, और यह कि वह दामास्कस में प्रभु यीशु मसीह के नाम का प्रचार करने वाले सभी लोगों को गरिफ्तार करने के इरादे से आया था। लेकनि प्रभु ने अननयि्याह को प्रोत्साहति करते हुए कहा:

'जा, क्योंकि साउल को मैंने अपनी प्रजाति और राजाओं और इस्राएल के पुत्रों के सामने मेरा नाम प्रचार करने के लिए चुना है, और मैं उसे दखिाऊँगा कि उसे मेरे नाम के लिए कतिना कष्ट सहना होगा।'

दवि्य आज्ञा का पालन करते हुए, हनन्यास सऊल के पास गया और उस पर हाथ रखकर कहा:

'भाई सऊल! प्रभु यीशु, जो तुझे मार्ग में दखिाई दिए, उन्होंने मुझे भेजा है, ताकि तू अपनी दृष्टि फिरि से पा ले और पवत्रि आत्मा से भर जाए!'

[6668]सौल ने तुरंत अपनी दृष्टि वापस पा ली, और अनानयिस ने उसका बपतस्मिा दयिा। कुछ समय बाद, जब यहूदयिों ने आपस में इस बात पर सहमति बना ली थी कि पौलुस को मार डालें क्योंकि वह एक उत्पीड़क से मसीह के नाम का प्रचारक बन गया था, तो अननयिस ने मसीह के अन्य शष्यिों के साथ मलिकर उसे एक टोकरी में डालकर शहर की दीवार से नीचे उतारा (प्रेरतिों के काम 9:10-25)। अननयिस स्वयं यहूदी सभाओं में प्रवेश करके[6669] , नडिरता से प्रभु के नाम का प्रचार करने लगा। और उसने मसीह में वशि्वास का प्रचार न केवल यहूदयिों को, बल्कि अन्यजातयिों को भी कयिा। दमशि्क से वह एलेउथेरोपोलसि[6670] गया और वहाँ, लोगों को उद्धार का मार्ग दखिाते और बीमारों को चंगा करते हुए, उसने कई लोगों को मसीह में वशि्वास के लिए परविर्तति कयिा।

उन दनिों, लूसयिन, जो सृष्टकिर्ता के बजाय सृष्टि की पूजा करता था, एलेउथेरोपोलसि का राज्यपाल था। शैतान ने उसे ईसाइयों के वरिुद्ध भड़काया और उसे अपने पूरे प्रांत में नम्निलखिति आदेश जारी करने के लिए प्रेरति कयिा:

'यदि कोई मसीह का सम्मान करता हुआ और सूली पर चढ़ाए गए की पूजा करता हुआ पाया जाता है, तो हम आदेश देते हैं कि उन्हें मृत्युदंड दयिा जाए; लेकनि जो कोई मसीह का त्याग करता है और अमर देवताओं को बलदिान चढ़ाता है, उसे हम उपहार और सम्मान प्रदान करेंगे।'

जब यह दुष्ट और वशि्वासघाती फरमान जारी कयिा गया, तब संत अनानयिा उस क्षेत्र के लोगों को सुसमाचार का प्रचार करके और हर तरह की बीमारयिों को ठीक करके ज्ञान प्रदान कर रहे थे; प्रभु उनके साथ थे, और उनके द्वारा कई चमत्कार कर रहे थे। मूर्तपिूजकों ने अननयिस को पकड़ लयिा और उसे राज्यपाल लूसयिन के सामने ले आए, जसिने उसे मूर्तयिों को बलदिान करने के लिए मजबूर करने के लिए वभिन्नि तरीकों का इस्तेमाल कयिा। लेकनि अननयिस ने उसकी आज्ञा नहीं मानी और उत्तर दयिा:

'मैं झूठे देवताओं की पूजा नहीं करूँगा; मैं एकमात्र सच्चे प्रभु और अपने परमेश्वर, यीशु मसीह की पूजा करता हूँ: मैंने उन्हें अपनी आँखों से देखा है और उनसे आमने-सामने बात की है – न केवल जब वे एक मनुष्य के रूप में पृथ्वी पर रहते थे, बल्कि स्वर्ग में उनके आरोहण के बाद भी। क्योंकि जब मैं दमशि्क में था, तो वह स्वयं मुझ पर प्रकट हुए और मुझे साऊल को चंगा करने के लिए भेजा, जसिे उन्होंने अपनी अद्भुत बुद्धि और शक्ति से सत्य के ज्ञान की ओर मोड़ दयिा

[6667] तर्cyc एशयिा माइनर के दक्षणि-पूर्वी प्रांत, सलिसियिा का एक बड़ा शहर है, जो प्रांत के दक्षणिी भाग में सडिनस नदी के कनिारे एक उपजाऊ मैदान पर स्थति है, जो वहाँ से बहुत दूर नहीं भूमध्य सागर में मलिती है। आज भी, यह एक काफी महत्वपूर्ण वाणज्यिकि केंद्र बना हुआ है।

[6668] अन्य प्राचीन स्मारकों के बीच, दमास्कस में आज भी वह स्थान संरक्षति है जहाँ प्रेरति सेंट पॉल का ईसाई धर्म में परविर्तन हुआ था: तथाकथति स्ट्रेट स्ट्रीट, यहूदा का घर, जहाँ उनकी दृष्टि वापस आई और उनका बपतस्मिा हुआ, और प्रेरति अनानयिास का घर, साथ ही वह स्थान जहाँ से उन्हें दीवार से नीचे उतारा गया था और इस प्रकार वे अपने उत्पीड़कों से बच नकिले थे।

[6669] सनिेगॉग (ग्रीक शब्द 'सभाओं' से) – यहूदयिों के लिए धार्मकि सभा के स्थान, जो सार्वजनकि पूजा और शक्षिण, ववािदास्पद धार्मकि मामलों को सुलझाने, और कानूनी कार्यवाही करने के लिए उपयोग की जाने वाली खुली-योजना वाली इमारतें थीं; ये इमारतें बहसों के लिए स्थल, बच्चों के लिए स्कूल और पुस्तकालय के रूप में भी काम करती थीं। सभा-घरों की स्थापना का समय बेबीलोन के नर्वािसन के समय से जुड़ा हुआ है।

[6670] एलेउथेरोपोलसि - दक्षणिी फलिस्तीन में, यरूशलेम और गाज़ा के बीच की सड़क पर एक शहर। आज, इस स्थल पर एक गाँव स्थति है, जो उस बदिु पर है जहाँ सेफेल् मैदान यहूदा के पहाड़ी क्षेत्र में बदल जाता है। इसके पास ही प्राचीन एलेउथेरोपोलसि के खंडहर पड़े हैं।

था। उन्होंने हम सभी को शैतान की शक्ति से छुड़ाया है और हमें अपने पिता के पास लाया है। इसलिए, मैं उनकी आराधना करता हूँ, न कि उन राक्षसों की जो पूरे मानव जाति को नष्ट करना चाहते हैं।

तब राज्यपाल ने अननयास को यातना देने की धमकी दी कि यदि उसने उसे दिया गया आदेश नहीं माना; लेकिन अननयास, एक अटूट स्तंभ की तरह, मसीह की अपनी गवाही पर दृढ़ रहा। उसने स्वर्ग की ओर अपने हाथ उठाकर कहा:

हे प्रभु यीशु मसीह, धन्य पिता के पुत्र! मेरी प्रार्थना सुनें और मुझे आने वाले जीवन में धन्य प्रेरितों के भाग में एक हिस्सा प्रदान करें। जैसे आपने साऊल को अपनी ज्योति से बचाया, वैसे ही मुझे इस दुष्ट मनुष्य के हाथ से बचाएं जो सत्य का विरोध करता है: उसकी इच्छा मुझ पर पूरी न हो, वह मुझे अपनी छल की जालों में न फंसाए; और मुझे स्वर्ग के राज्य से वंचित न करें, जो उन सभी के लिए तैयार किया गया है जो आपके द्वारा दिखाए गए आपके सत्य के मार्ग से प्रेम करते हैं, और जो आपके आज्ञाओं का पालन करते हैं!

अनानियस की बातें और सहन न कर पाने के कारण, राज्यपाल ने उसे ज़मीन पर लिटाकर पीटने का आदेश दिया। जब अधिकारी निर्दयता से संत को पीट रहे थे, तो उद्घोषक ने पुकारा:

'राज्यपाल की सुनो; उसके आदेश का विरोध मत करो; उन देवताओं को बलिदान चढ़ाओ जिन्हें सारी दुनिया पूजती है।'

जब उन्होंने संत को पीटना समाप्त कर दिया, तो राज्यपाल ने उससे कहा:

'कम से कम अब खुद पर दया करो और मेरी आज्ञा मानकर सूली पर चढ़ाए गए को त्याग दो, कहीं ऐसा न हो कि तुम्हें मेरे हाथों और भी भयंकर यातनाएँ झेलनी पड़ें।'

इस पर, संत अनानियास ने उत्तर दिया:

'जो मैंने तुम्हें पहले ही कह दिया था, वही मैं अब भी दोहराता हूँ: मैं अपने ईश्वर का त्याग नहीं करूँगा, और न ही मैं निर्जीव पत्थर और लकड़ी के आगे सिर झुकाऊँगा, जिन्हें तुम देवता मानते हो।'

जब शासक ने देखा कि संत अडिग हैं, तो उसने आदेश दिया कि उनके शरीर को लोहे की पंजाओं से चीर दिया जाए और उनके घावों पर मोमबत्तियाँ जलाई जाएँ। लेकिन संत ने इन यातनाओं को सहते हुए अपनी दृष्टि आकाश की ओर उठाई और भक्तिपूर्वक प्रार्थना की। इस यातना के बाद, यातना देने वाले ने कहा:

'तुम कितनी देर तक डटे रहोगे? क्या तुम्हें खुद पर दया नहीं आएगी और तुम महान देवताओं की पूजा नहीं करोगे? क्या यहूदियों द्वारा सूली पर चढ़ाए गए किसी मसीह के लिए इन निरर्थक कष्टों को सहना तुम्हें सचमुच अधिक प्रसन्न करता है, बजाय इसके कि तुम सुरक्षित और स्वस्थ रहो?' 'मैं कसम खाता हूँ कि अगर तुमने अपनी हठ जारी रखी तो मैं तुम्हें जिंदा नहीं जाने दूँगा!'

संत ने उत्तर दिया:

'तुम जो चाहो करो, हे ईश्वर के शत्रु और शैतान के मित्र – क्योंकि तुमने मुझसे कई बार सुना है कि मैं तुम्हारे देवताओं की पूजा नहीं करूँगा, बल्कि केवल एक ईश्वर की ही पूजा करूँगा – जो पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा हैं, जो स्वर्ग और पृथ्वी और उनमें जो कुछ भी है, उसके सृष्टिकर्ता हैं। मैंने उस पर अपना विश्वास किया है, और उसने मुझे आप सभी के सामने दिन भर दृढ़ रहने और इन यातनाओं को साहस के साथ सहने की शक्ति दी है। आप और क्यों परेशान करते हैं? आपने सुना है कि मैं आपकी इच्छा का पालन नहीं करना चाहता; तो जो आपने योजना बनाई है, उसे तुरंत करें!

क्रोध से भरकर, यातना देने वाले ने लोगों को संत अनानियास को पकड़ने, उन्हें शहर से बाहर ले जाने और पत्थर मारकर हत्या करने का आदेश दिया। यातना देने वाले के कानून तोड़ने वाले सेवकों ने उन्हें पकड़ लिया, उन्हें फांसी के स्थान पर ले गए और एक नए स्तेफन की तरह पत्थर मारकर हत्या कर दी[6671] । उन्होंने, हालांकि, जोर से चिल्लाकर कहा:

'हे प्रभु यीशु मसीह! मैं अपनी आत्मा तेरे हाथों में सौंपता हूँ।'

इस प्रकार वह अपने सभी दुखों के बाद मर गया और स्वर्गीय निवासों में प्रवेश कर गया। लोगों ने, यह देखकर कि वह पहले ही मर चुका था, उसे बिना दफ़नाए ही छोड़ दिया और तितर-बितर हो गए। उसी समय, दमिश्क के कुछ ईसाई

[6671] यानी, ठीक वैसे ही जैसे, इससे कुछ ही समय पहले, यहूदियों ने मसीह की घोषणा करने के लिए पहले ईसाई शहीद, सेंट स्टीफन द आर्चडीकन, पर पत्थर फेंका था (प्रेरितों के काम 7:59)।

वहाँ से गुज़र रहे थे; उन्होंने मसीह के प्रेरति के पवत्रि शरीर को उठाया, उसे सम्मानपूर्वक दमश्कि ले गए, और उसे उसके पैतृक नगर[6672] में दफ़ना दयिा।

आदरणीय रोमन द मेलोडस्टि की स्मृति

1 अक्टूबर को स्मरण कयिा जाता है

संत रोमन सीरयिा के मूल नविासी थे; उनका पालन-पोषण एमेसा शहर में हुआ था[6673] और कम उम्र से ही उन्होंने एक पवत्रि और सदाचारी जीवन जीकर ईश्वर को प्रसन्न करना शुरू कर दयिा था। शुरुआत में उन्होंने बेरूत शहर[6674] के एक चर्च में एक ऑकॉलटि[6675] के रूप में सेवा की, और बाद में, सम्राट अनास्तासयिस[6676] के शासनकाल के दौरान, वे कॉन्स्टेंटनिोपल चले गए और परम पवत्रि ईश्वर की माता को समर्पति कयरा चर्च[6677] में सेवा की। वहाँ उन्होंने उपवास और प्रार्थना का जीवन जयिा, अनेक तपस्वी कर्मों और पूरी रात की प्रार्थनाओं के माध्यम से अपने शरीर को संयम में रखा। शाम को वे ब्लाचेर्ना जाते और रात भर वहाँ प्रार्थना में खड़े रहते, फरि लौट आते। बाद में उन्हें सेंट सोफयिा चर्च[6678] में सेक्सटन नयिुक्त कयिा गया। संत रोमन नरिक्षर थे, लेकनि वे पुण्य कार्यों में नपिुण थे, जसिमें वे सबसे बुद्धमिान वद्विानों से भी आगे थे; उन्होंने अपने मन से ईश्वर की खोज इस संसार की बुद्धि की खोज करने वालों से कहीं अधकि की। क्योंकि वह उन लोगों में से एक था जनिके बारे में प्रेरति ने कहा था: *'ईश्वर ने संसार की दुर्बल वस्तुओं को चुन लयिा, ताकि वह बलवानों को लज्जति कर दे'* (1 कुरन्थियिों 1:27)[6679] । अपने पुण्य जीवन के कारण, पैट्रआर्क यूथमिीयस को वह भा गया[6680] और, यह देखकर कि वह चर्च में कतिनी मेहनत करता था और कतिने उत्साह से अपने

[6672] बाद में, संत प्रेरति अनानयिास के अवशेष कॉन्स्टेंटनिोपल ले जाए गए, जहाँ वे 13वीं शताब्दी की शुरुआत में थे; लगभग 1200 के आसपास, उन्हें रूसी तीर्थयात्री, भक्षिु एंथनी ने देखा था।

[6673] एमेसा सीरयिा में ओरोन्टसि नदी के पूर्व में एक शहर है, जो उत्तर-पश्चमिी सीरयिा में भूमध्य सागर में मलिती है।

[6674] बेरटिस – वर्तमान बेरूत – भूमध्य सागर के तट पर स्थति एक प्राचीन फ़नि्शियिाई शहर, जो 5वीं शताब्दी में फल-फूल रहा था और अपनी प्रतष्ठिति वाक्पटुता, कवति और कानून के स्कूल के लिए प्रसद्धि था; आज, यह एशयिाई-तुर्की सीरयिा का मुख्य प्रशासनकि केंद्र और सीरयिाई तट पर एक प्रमुख व्यापारकि केंद्र है, जसिकी आबादी लगभग 80,000 है।

[6675] एक सेक्सटन, या अधकि सही कहें तो, एक पैरामोर्नार्क – एक परचिारक जो चर्च और पवत्रि स्थानों की रक्षा करने और उनकी सफाई सुनश्चिति करने के लिए जम्मिेदार था; चर्च के नयिमों के अनुसार, उसके कर्तव्यों में यह भी शामलि था: भक्तों को पूजा के लिए बुलाने हेतु घंटयिाँ बजाना, धार्मकि दीपक जलाना और बुझाना, और धूपदान तैयार करना और प्रस्तुत करना।

[6676] अनास्तासयिस प्रथम – 491 से 518 तक का बीजान्टनि सम्राट।

[6677] सरिील – सम्राट थयिोडोसयिस द यंगर के अधीन राजधानी के एक प्रसद्धि कवि और प्रीफेक्ट, बाद में स्मर्ना के बशिप और पूर्वी ऑर्थोडॉक्स चर्च के एक स्तोत्रकार († 470) – ने राजधानी को अपनी पसंद और धार्मकिता के अनुरूप एक स्मारक प्रस्तुत कयिा: ईश्वर की माता का भव्य चर्च, जसिे उनके नाम पर रखा गया और बाद में साइरस का चर्च के नाम से जाना गया। बाद में, इस चर्च में एक मठ स्थापति कयिा गया। यह ज्ञात नहीं है कि रोमन के समय में क्यरोस के चर्च से कोई मठ संलग्न था या नहीं; हालाँकि, उनकी जीवनी का ग्रीक मूल यह बताता है कि रोमन न केवल क्यरोस के चर्च में सेवा करते थे, बल्कि उस चर्च से संबंधति भवनों में रहते भी थे।

[6678] कॉन्स्टेंटनिोपल का भव्य मुख्य कैथेड्रल, जो सेंट सोफयिा, यानी ईश्वर की बुद्धि, को समर्पति था, मूल रूप से कॉन्स्टेन्टाइन द ग्रेट द्वारा स्थापति कयिा गया था। बाद में, 537 में सम्राट जस्टनियिन द ग्रेट द्वारा इस कैथेड्रल का भव्य रूप से नवीनीकरण और वस्तिार कयिा गया; 1453 में, तुर्कों द्वारा कॉन्स्टेंटनिोपल पर कब्जा करने के बाद, इसे एक मस्जदि में बदल दयिा गया था। जस्टनियिन की हागयिा सोफयिा आज भी बाइज़ेंटाइन-शैली की ईसाई वास्तुकला का सबसे उल्लेखनीय और भव्य स्मारक है, जो इसके वकिास के स्वर्ण युग का है।

[6679] तुलना करें 1 कुरन्थियिों 3:18–19। ऐसा इसलिए है क्योंकि मानवीय बुद्धमित्ता, जब अपने ही भरोसे पर छोड़ दी जाती है, प्रकटवाक्य की आवाज़ और परमेश्वर के मन पर ध्यान देने की अभ्यस्त न होने के कारण, भूल में पड़ जाती है, उच्च, उद्धारकारी सच्चाइयों को अस्वीकार कर देती है, और सब कुछ घमंड और वनिाशकारी ढंग से आंकती है। इसके वपिरीत, मसीह पर केंद्रति मन कसिी भी बात पर संदेह नहीं करता, बल्कि वश्विास से वनिम्रतापूर्वक सभी बातों को स्वीकार करता है; यह इस संसार की दृष्टि में मूर्खता प्रतीत होती है, फरि भी यह सच्ची बुद्धि है, जो प्रेरति के अनुसार, सबसे पहले शुद्ध, फरि शान्तप्रिय, सौम्य, ववेकिशील, दया और उत्तम फलों से परपिूर्ण, नष्पिक्ष और सच्चा (याकूब 3:17)। अनपढ़ों की यह बुद्धि उन्हें इस संसार के वद्विानों से अधकि बुद्धमिान बनाती है।

[6680] संत यूथमिीयस – 490 से 496 तक कॉन्स्टेंटनिोपल के पैट्रआर्क।

कर्तव्यों का पालन करता था, उन्होंने उसे पुरोहतिों के साथ समान हस्सिा प्रदान कयिा[6681] । हालाँकि, पुरोहतिों ने पैट्रआर्क के खलिाफ बड़बड़ाया, कहते हुए:

'आपने एक अज्ञानी को हमसमान बना दयिा है!'

वे रोमन से नफरत करने लगे और उसके खलिाफ साजशि रचने लगे। एक दनि, मसीह के जन्म के पर्व की पूर्व संध्या पर, जब ज़ार चर्च आए और रोमन दीपक लगा रहा था, तो पुरोहतिों ने उसे पकड़ लयिा और उसे उपदेश-मंच पर घसीट कर ले गए[6682] , और कहा: 'तुम हमसे बराबरी का हस्सिा पाते हो - तो हमारे जैसे उपदेश-मंच से ईश्वर की स्तुतिमें एक भजन गाओ।'

उन्होंने यह ईर्ष्या के कारण कयिा, उसे अपमानति करने की इच्छा से, क्योंकि वे जानते थे कि वह धर्मग्रंथों को नहीं समझता था और यह कार्य पूरा नहीं कर सकता था। ज़ार और चर्च में इकट्ठा हुए सभी लोगों की मौजूदगी में पुरोहतिों के हाथों इतनी अपमानति होने के बाद, रोमन को शर्म आई और वह रो पड़ा। सेवा के अंत में, जब सभी लोग चर्च से चले गए, तो वह परमेश्वर की अतपिवत्रि माता की प्रतमिा के सामने साष्टांग दंडवत हो गया, और कड़वा-कड़वा रोते हुए प्रार्थना करने लगा। आँसुओं और प्रार्थना में काफी समय बतिाने के बाद, संत रोमन उठे और अपने घर चले गए; और, दुख के मारे उनकी भूख मर जाने के कारण, वे सो गए। और देखो, अपनी नींद में, हमारी परम पवत्रि माता, परमेश्वर की माता, जो शोक करने वालों सभी का सांत्वना देने वाली हैं, उनके सामने प्रकट हुईं, और उनके हाथ में एक छोटा सा लकड़ी का तख्ता था[6683] और उन्होंने कोमल स्वर में रोमन से कहा:

'अपना मुँह खोलो!'

जब रोमन ने अपना मुँह खोला, तो देवी ने उसमें पांडुलपिि रख दी और उसे इसे खाने का आदेश दयिा।

रोमन ने वह पट्टी नगिल ली और तुरंत जाग उठा, लेकनि उसने अपने सामने कसिी को नहीं देखा; क्योंकि जो प्रकट हुई थीं वे अदृश्य हो गई थीं। उसका हृदय अकथनीय मधुरता और आध्यात्मकि आनंद से भर गया, और वह उस पर वचिार करने लगा जो उसने देखा था। हालाँकि, उसके मन में अचानक एक वद्वितापूर्ण समझ उत्पन्न हुई, क्योंकि परमेश्वर की कुँवारी माता ने, ठीक वैसे ही जैसे उनके पुत्र ने एक बार अपने प्रेरतिों के लिए कयिा था, उसके मन को धर्मग्रंथों की समझ के लिए खोल दयिा था (लूका 24:27)। वह महान ज्ञान से भर गया और, अपनी आँखों में आँसू लिए, उसने अपनी मार्गदर्शक का धन्यवाद करना शुरू कर दयिा कि कैसे उन्होंने एक ही क्षण में उस पर ऐसा ज्ञान प्रदान कयिा जसिे वह कई वर्षों में भी प्राप्त नहीं कर सकता था।

सारी रात की प्रार्थना सभा का समय आ गया, और संत रोमन, परमेश्वर-धन्य कुँवारी द्वारा उन पर प्रदान की गई कृपा में आनंदति होकर, चर्च गए।

जब उत्सव के सम्मान में भजन गाने का समय आया, तो संत रोमन एम्बो पर चढ़े और अपनी मन में रचे हुए कोंटाकयिन को मधुर स्वर में गाया:

– "आज कुँवारी कन्या ने सनातन पुत्र को जन्म दयिा है, और पृथ्वी ने अगम्य को एक तृणशाला अर्पति की है। देवदूत और चरवाहे स्तुतिकर रहे हैं, जबकि ज्योतषिी तारे के साथ यात्रा कर रहे हैं: हे बालक, हमारे लिए, सनातन ईश्वर का जन्म हुआ है।"[6684] .

जो भी इसे देखे और सुने, वे सभी चकति रह गए और रोमन के गायन से प्रसन्न हुए, वे भजन के अर्थ पर मनन कर रहे थे। जब उसने अपना गीत समाप्त कर लयिा, तो पैट्रआर्क ने पूछा कि उसे इतनी बुद्धमित्ता कहाँ से मलिी। रोमन ने

[6681] यहाँ 'पादरी वर्ग' शब्द का अर्थ उन चर्च के सेवकों से है जन्हिें 'करिोटेसयिा' नामक चर्च की वशिष संस्कारकि रस्म के माध्यम से, एक वशिष बशिप के आशीर्वाद द्वारा नयिुक्त कयिा गया है – पाठक और भजन-गायक। यह स्पष्ट है कि उस समय तक संत रोमन को उनमें नहीं गनिा गया था।

[6682] अम्बो (ग्रीक शब्द, जसिका अर्थ है 'उठा हुआ मंच') वेदी के सामने एक अन्य मंच - सोलेआ - के केंद्र से शुरू होता है और चर्च के अंदर आगे की ओर बढ़ा हुआ होता है। प्राचीन चर्चों में, अम्बोन सोलेआ से काफी ऊपर नकिले होते थे, और कभी-कभी तो उन तक जाने के लिए सीढ़ियाँ भी होती थीं। अम्बो का मूल उद्देश्य केवल पादरयिों के उपदेश और प्रार्थनाओं के लिए ही नहीं, बल्कि उन गायकों और पाठकों के लिए भी था जन्होंने पवत्रि पद ग्रहण कयिा था, ताकि उन्हें उपासकों द्वारा अधकि आसानी से देखा और सुना जा सके; बाद में, इस उद्देश्य के लिए गायन मंडली (choirs) स्थापति की गईं। हालाँकि, नम्नि-श्रेणी के, गैर-पुजारी चर्च के मंत्री मंच में प्रवेश करने की भी अनुमतिनहीं थे।

[6683] ग्रीक में – कोंटाकयिन, यानी पार्चमेंट का एक पतला लकी़रा जसिमें दोनों तरफ़ लखिा होता था; यह नाम वशिष रूप से चर्च के भजन या सेवाओं वाले लकी़रों के लिए इस्तेमाल कयिा जाता था।

[6684] मसीह के जन्मोत्सव के लिए कोंटाकयिन।

परमेश्वर की माता के चमत्कार को नहीं छपिाया, बल्कि उनकी कृपा को स्वीकार कयि और उस स्वर्गीय मार्गदर्शक की महमिा की जसिने उन्हें ज्ञान प्रदान कयि था। जनि पुरोहतिों ने उनका अपमान कयि था, वे शर्मसार हुए और पश्चाताप कर, रोमन के पैरों पर गरि पड़े, उनसे क्षमा याचना करते हुए । पैट्रआर्क ने तुरंत संत रोमन को एक डीकन के रूप में नयिुक्त कयि, और उनके होठों से ज्ञान एक नदी की तरह बहने लगा; जन्हिें पहले उनकी सादगी और अज्ञानता के लिए फटकारते थे, वे बाद में स्वयं उनसे सीखने के लिए मजबूर हो गए। उन्होंने प्रभु और परमेश्वर की माता के पर्वों और कई संतों के सम्मान में कई कोंडाक[6685] रचे, ताकि उनके कोंडाकों की संख्या एक हजार से अधकि हो गई[6686] । और सभी द्वारा उनसे बहुत प्रेम और सम्मान कयि जाता था। ईश्वर को प्रसन्न करने वाले और धार्मकि तरीके से अपना जीवन जीने के बाद, वह अपने शाश्वत नविास के लिए प्रस्थान कर गए और अब, स्वदूतों के साथ मलिकर, वे हमेशा के लिए ईश्वर के लिए त्रसिगयिन का गायन करते हैं[6687] । आमीन।

कॉन्टाकयिन, स्वर 8:

हे परम बुद्धमिान रोमन, आप युवावस्था से ही पवत्रि आत्मा के दैवीय सद्गुणों से सुशोभति थे, और मसीह की कलीसयिा के एक अतसिम्मानति भूषण थे, जसिे आप अपने मनोहर गायन से सुशोभति करते थे, हे अतधिन्य। अतः हम आपसे प्रार्थना करते हैं: जो आपके दैवीय वरदान की कामना करते हैं, उन्हें यह वरदान दें कि हम आपसे पुकार सकें: हर्षति हो, हे अतधिन्य पति, कलीसयिा की शोभा।

वशिरस्क के पूजनीय सावा का जीवन

1 अक्टूबर को स्मरणोत्सव

आदरणीय साव्वा ट्वर के प्रसिपिल्टी के मूल नविासी थे, काशनि नगर ([6688]) से, और एक कुलीन तथा व्यापक रूप से सम्मानति परविार ([6689]) से थे; यहीं उन्होंने अपना पालन-पोषण कयि। अपने प्रारंभकि वर्षों में ही वह अपने पुण्य जीवन के लिए वशिष्टि थे; गृहस्थ वस्त्र धारण करते हुए भी उन्होंने संन्यासयिों के तपस्वी कर्मों का अनुकरण कयि, एक परपिूर्ण संन्यासी की तरह प्रार्थना और उपवास कयि, और बड़ी भक्ति के साथ ईश्वर के घर में उपस्थति हुए। ईश्वर के प्रति प्रेम से प्रेरति होकर, साव्हा ने संन्यास की शपथ लेने का संकल्प लयि और ट्वेर के कई मठों में एक

[6685] इस प्रकार, रोमन स्लादकोपेवेत्स कोंडाक्स रचने वाले पहले व्यक्ति थे और चर्च के पतिरों द्वारा उन्हें कोंडाक्स के स्रष्टा के रूप में सही रूप से मान्यता प्राप्त है। 'कोंडाक्स' नाम स्वयं उनके स्रष्टा का संदर्भ देता है और यह ग्रीक शब्द से लयि गया है, जो उस पार्चमेंट स्क्रॉल के लिए प्रयुक्त होता था, जसिे ईश्वर की माता ने रोमन को एक सपने में नगिलने का आदेश दयि था। तब से, यह नाम चर्च के भीतर प्रभु और परमेश्वर की माता के पर्वों के सम्मान में, साथ ही संतों के सम्मान में और दविंगतों की स्मृति में गाए जाने वाले संक्षपि्त धार्मकि भजनों को दर्शाने लगा है; ये भजन पर्वों के सार को प्रस्तुत करते हैं और, एक तरह से, संपूर्ण धार्मकि अनुक्रम के लिए वषिय-वस्तु प्रदान करते हैं।

[6686] संत रोमन ईसाई भजन-रचना के इतहिास में 'मधुर-गायक' और एक महान भजन-रचयति के रूप में प्रसद्धि हुए हैं, उनके भजनों में नहिति वचिारों की समृद्धि और उनकी काव्यात्मक प्रेरणा, भावपूर्णता, भावना की गहराई और भाषा की गरमिा, दोनों के लिए। अपने भजनों में, चर्च उनकी स्तुति मधुर-स्वर वाली लीर, दव्यि आत्मा के सुरम्य सतिार, चर्च की बांसुरी, दव्यि गीतों की कोयल, आत्मा के महमिामय शब्दों की तार के रूप में करती है, और इसी तरह (स्टचिरा)। कोंडाक्स के अलावा, सेंट रोमन द मेलोडस्टि को इकोस का नर्मिाता माना जाता है, जो 'मार्क ऑफ एफेसस' के अनुसार, कोंडाक्स और पेटास के साथ, उन बहुत सुंदर कक्षों (ग्रीक शब्द oikos - घर, कक्ष) में रखे जाते थे, जहाँ वह पवत्रि व्यक्ति प्रार्थना में अपनी रातें बतिाया करता था; और इसी से उनका नाम पड़ा है'। चर्च में, 'इकोस' कसिी पर्व दविस के सम्मान और स्मरणोत्सव में या दविंगत लोगों की स्मृति में गाए जाने वाले सबसे वस्तिृत भजनों को संदर्भति करता है। सामग्री के मामले में, वे कोन्डाक्स के समान हैं; वे उसी छंद में लखि जाते हैं और एक ही स्वर में गाए जाते हैं। एक इकोस हमेशा एक कोन्डाक के बाद आता है, क्योंकि यह बाद वाले का एक वकिास है।

[6687] संत रोमन द मेलोडस्टि का जीवन और कार्य 5वीं शताब्दी के उत्तरार्ध से संबंधति हैं। उनका नधिन उसी शताब्दी के अंत में हुआ।

[6688] काशनि – जो अब ट्वेर गवर्नोरेट में एक जलिा शहर है, और वोल्गा नदी पर ट्वेर से 188 वर्स्ट दूर है – ट्वेर के प्रसिपिल्टी का हस्सिा था; कुछ समय के लिए यह इसके भीतर एक स्वतंत्र, शक्तशिाली अपानज और एक बहुत ही महत्वपूर्ण शहर था, लेकनि बाद में इसने अपनी पूर्व महत्वता खो दी।

[6689] संत साव्वा, काशनि के एक बोयार (जागीरदार) इवान वासलिीवचि बोरोज्डा के आठ बेटों में दूसरे बेटे थे, जो युद्ध में अपने सैन्य पराक्रम के लिए प्रसद्धि एक प्रतष्ठिति परविार से थे (यही कारण है कि परविार का नाम 'बोरोज्डा' था, जो खाई या खोदी गई जगह के लिए एक प्राचीन सैन्य शब्द है)।

कठोर संन्यासी जीवन जीने लगे, जिसमें उन्होंने बिना किसी शिकायत के रसोई, बेकरी और अन्य सेवाओं में विभिन्न संन्यासी कर्तव्यों का पालन किया। ऐसा करते हुए, वह अपनी असाधारण विनम्रता के लिए विशिष्ट थे। सविस्किया ट्वर हर्मिटेज[6690] के भाइयों, जहाँ उन्होंने जल्द ही निवास कर लिया, ने सव्वा से इतना गहरा लगाव बना लिया और उनके तपस्वी जीवन के लिए उन्हें इतना सम्मान दिया कि वे उन्हें अपने बीच परमेश्वर का एक स्वर्गदूत मानने लगे और उन्हें अपना मठाधीश चुना। उस प्रदेश के बोयार और सभी निवासियों ने उन्हें एक संत के रूप में पूजना शुरू कर दिया, और उनकी विनम्रता, संयम और अन्य महान गुणों की ख्याति दूर-दूर तक फैल गई। लेकिन परम पूजनीय व्यक्ति मानवीय प्रसिद्धि से दब गए, और इससे बचने के लिए, वे अपने देश से चले गए और एक विदेशी भूमि में लंबे समय तक पूर्ण गुमनामी में रहे। भिक्षु जीवन की उच्चतम उपलब्धियों की नकल करने के लिए उत्सुक, साव्वा दूरस्थ माउंट अथोस के लिए रवाना हो गए, जो अपने तपस्वियों के पवित्र जीवन के लिए प्रसिद्ध था, और वहाँ उन्होंने आध्यात्मिक जीवन में पूर्णता हासिल की[6691] ।

माउंट अथोस से लौटने पर, रेवरेंड फादर वेलिकी नोवगोरोड आए, लेकिन उन्होंने अपनी पहचान किसी को नहीं बताई, और एक गरीब, अज्ञात यात्री के भेष में घूमते रहे। ईश्वर के मार्गदर्शन से, वह विशेरा नदी[6692] पर आए, वहाँ एक क्रॉस स्थापित किया[6693] और, एक छोटी झोपड़ी बनाकर, उन्होंने एक तपस्वी का जीवन जीना शुरू कर दिया। उसके साथ परमेश्वर की अति पवित्र माता की एक प्रतिमा थी, जिसके सामने वह निरंतर प्रार्थना करता था। संयोग से नोवगोरोड का एक व्यक्ति उस स्थान से गुजर रहा था। उस समय संत पतरस और पॉल का उपवास चल रहा था, और मौसम बहुत गर्म था। संत प्रार्थना में इतने गहरे तल्लीन थे कि वे इस बात से पूरी तरह अनजान थे कि उनका चेहरा मच्छरों से पूरी तरह ढका हुआ था, जिससे वे पूरी तरह से नज़रों से ओझल हो गए थे। नोवगोरोड का वह चकित व्यक्ति जो उसने देखा था, उसे दूसरों को बताने लगा, और इससे सभी को एहसास हुआ कि वे ईश्वर के एक सच्चे पुरुष थे। यह महसूस करते हुए कि उसे पहचान लिया गया है, पूजनीय सावा वहाँ से चले गए और सोस्नित्सा नदी के पास एक और भी अधिक एकांत स्थान पर बस गए[6694] । यहाँ उन्होंने उपवास और प्रार्थना का अभ्यास जारी रखा, और और भी अधिक कठिनाइयों से भरा जीवन जिया।

लेकिन *'पहाड़ पर स्थित नगर छिप नहीं सकता'* (मत्ती 5:14)। रेवरेंड सावा के पवित्र जीवन की ख्याति आसपास के पूरे क्षेत्र में फैल गई, और पड़ोस के निवासी उनके पास आने लगे और अपनी सामर्थ्य के अनुसार उनके भरण-पोषण के लिए आवश्यक साधारण भेंटें लाने लगे। धीरे-धीरे, इस परमेश्वर के पवित्र पुरुष की ख्याति नोवगोरोड क्षेत्र में फैल गई और यह खबर स्वयं आर्चबिशप जॉन तक भी पहुँच गई, जो उस समय नोवगोरोड के बिशप थे[6695] । परिणामस्वरूप, जॉन ने venerable सव्वा के बारे में पूछताछ करने के लिए किसी को भेजा—कि वह कौन थे, किस तरह के व्यक्ति थे, और उनका जीवन कैसा था। आर्चबिशप ने इस उद्देश्य के लिए भेजे गए विश्वसनीय दूत को सावा से पूछताछ करने और उनके बिशप के अधिकार का सम्मान न करने तथा उनकी अनुमति के बिना नोवगोरोड क्षेत्र में बस जाने के लिए फटकार लगाने का निर्देश दिया।

[6690] ट्वेर साव्विना (स्रेतेन्स्काया) हर्मिटेज की स्थापना 1397 में आदरणीय साव्वा और ट्वेर के वर्सोनोफी द्वारा की गई थी, जो विशेरस्की साव्वा के समकालीन थे (उनकी स्मृति 2 मार्च को मनाई जाती है), और यह ट्वेर से 20 वर्स्ट दूर, उस स्थान पर स्थित था जहाँ अब साव्विनो गाँव है।

[6691] माउंट अथोस पर आदरणीय सावा के जीवन के बारे में कुछ भी ज्ञात नहीं है, और यह निश्चित रूप से निर्धारित करना भी संभव नहीं है कि वह वहाँ कितने समय तक रहे; हालाँकि, आदरणीय के जीवन की शुरुआती और बाद की घटनाओं से कुछ ऐतिहासिक संकेतों के आधार पर, यह अनुमान लगाया जा सकता है कि वह लगभग 1411 में माउंट अथोस गए थे और वहाँ उनका प्रवास तीन साल से अधिक नहीं रहा। आदरणीय संत के जीवन के बाकी हिस्सों से यह स्पष्ट है कि माउंट अथोस की छाप उनके दिल में लंबे समय तक बनी रही। यह भी ज्ञात है कि वह माउंट अथोस से रूस में *कोर्मचाया कनिगा* (*द स्टीयरिंग बुक*) की एक प्रति अपने साथ लाए थे, जिसका बाद में रोस्तोव के आर्चबिशप वासियन द्वारा उपयोग किया गया था।

[6692] विशेरा नोवगोरोड गवर्नरेट में एक नदी है, जो वोल्खोव की बाएँ तट की सहायक नदी है। – जैसा कि साव्वो-विशेरा मठ के वर्तमान स्थान से देखा जा सकता है, आदरणीय साव्वा नोवगोरोड से 10 वर्स्ट उत्तर-पूर्व में, विशेरा के बाएं किनारे पर बसे थे। विशेरा पर साव्वा की बस्ती 1414 या 1415 से बाद में नहीं हुई थी।

[6693] यह क्रॉस आज भी मठ के चैपल में खड़ा है। वर्तमान में, इस क्रॉस को केवल लकड़ी की पैनलिंग में बंद किया गया है और इसके सामने संतों की ढली हुई अल्बास्टर की मूरतियों से सजाया गया है।

[6694] विशेरा के बगल से बहने वाली एक छोटी नदी एक चीड़ के जंगल से होकर गुज़रती थी, जिसके नाम पर इसका नाम पड़ा।

[6695] आर्चबिशप जॉन ने 1387 से 1415 तक नोवगोरोड का पद संभाला।

आर्चबशिप के दूत ने, मानो आर्चबशिप की ओर से कोई मनाही लेकर आया हो, पूजनीय के समक्ष उपस्थति होकर कहा:

'आर्चबशिप की अनुमति के बनिा इस क्षेत्र में बसने की तुम्हारी हम्मित कैसे हुई?'

साव्वा ने वनिम्रतापूर्वक नम्निलखिति दृष्टान्त के साथ उत्तर दयिा।

उन्होंने कहा, 'एक युवती चौक के पास एक खड़िकी के पास बैठी थी, जो नर्लिज्जता से गुजरने वाले सभी को घूर रही थी; जबकि दूसरी, एक अलग खड़िकी के पास बैठी, श्रद्धापूर्वक अपनी आत्मा की कुँवारी पवत्रिता को बनाए रखती थी। रास्ते से गुजरने वालों ने पहली युवती की नर्लिज्जता को देखकर कहा: 'अपनी चंचलता और लापरवाही को देखते हुए वह अपनी पवत्रिता बनाए नहीं रख पाएगी'; जबकि दूसरे के बारे में उन्होंने कहा कि इतनी वनिम्रता के साथ, वह अपनी आत्मा की नर्मिल पवत्रिता को बनाए रखेगी। तो फरि, हमारे लिए यह और भी अधकि कारण है कि हम अपने आप पर वशिेष ध्यान दें और जसि मार्ग पर हम चले हैं, उस पर अपनी रक्षा करें: हम यहाँ इस मरुभूमि में आपसे, हमारे महाधर्माध्यक्ष, से दूर भागने के लिए नहीं, बल्कि संसार से अलग रहने के लिए रहते हैं; फरि भी, हम हमेशा आपकी प्रार्थनाओं और आशीर्वादों की कामना करते हैं, ताकि वे हमारे साथ बनी रहें।

वापस आकर, दूत ने महाधर्माध्यक्ष को धन्य सव्वा के बारे में, उनके जीवन, उनके उपवास और उनकी गरीबी के बारे में सब कुछ बताया। यह सुनकर, महाधर्माध्यक्ष को एहसास हुआ कि वह आध्यात्मकि जीवन के एक संत थे, और इसलिए, उन्हें खुद देखने की तीव्र इच्छा से प्रेरति होकर, वह उन्हें रेगस्तिान में मलिने के लिए नकिल पड़े।

धन्य सव्वा, अपने सामान्य फटे-पुराने कपड़ों में, उनसे रास्ते में ही मलि गए। महाधर्माध्यक्ष को देखकर, सव्वा गहरी वनिम्रता से उनके सामने गरि पड़े और उनके पवत्रि पद के अनुरूप सम्मान के साथ उन्हें प्रणाम कयिा। आर्चबशिप ने उस पूजनीय पति को आशीर्वाद दयिा, यह जाने बनिा कि यह सावा थे, बल्कि उन्हें एक साधारण यात्री समझकर। उन्होंने उन्हें अपने साथ बैठने और सावा के नविास तक साथ चलने का आदेश दयिा, और उन्हें मनाने में उन्हें बड़ी मुश्कलि हुई, क्योंकि उस वनिम्र तपस्वी ने उस पवत्रि व्यक्ति के बगल में बैठने की हम्मित नहीं की। यात्रा के दौरान, सम्माननीय संन्यासी के साथ उनकी बातचीत से आर्चबशिप को पता चल गया कि यह कोई साधारण व्यक्ति नहीं, बल्कि आध्यात्मकि जीवन में अनुभवी व्यक्ति थि, और आर्चबशिप को सावा से पहले ही और भी अधकि स्नेह हो गया, इससे पहले कि वह उन्हें पहचान पाते। अपने आवास तक पहुँचने से ठीक पहले, सावा ने नम्रतापूर्वक महाधर्माध्यक्ष को प्रणाम कयिा और बताया कि वही पापी सावा है। तब संत उनकी नम्रता देखकर चकति रह गए और उन्होंने उन्हें प्रेमपूर्वक आशीर्वाद दयिा। इसके बाद, वे दोनों सावा की कुटयिा में गए और वहाँ देर तक बातचीत की।

कई घंटों तक, महाधर्माध्यक्ष ने आदरणीय संत को धैर्य और तपस्या के प्रयासों में अडगि रहने के लिए प्रोत्साहति कयिा, और उनके साथ एक साधारण तपस्वी का भोजन कयिा। नोवगोरोड लौटने पर, आर्चबशिप ने पूजनीय वरष्ठि के महान और ईश्वर-प्रसन्न जीवन की प्रशंसा की और उस समय से उन्होंने धन्य सावा को अत्यंत सम्मान देने लगे, उन्हें एक महान व्यक्ति मानते हुए; इसके बाद, उन्होंने हमेशा उन्हें रेगस्तिान में उनके जीवन के लिए आवश्यक सभी चीजें भेजीं।

इस बीच, पूजनीय सव्वा ने अपने रेगस्तिान में एक मठ स्थापति करने का संकल्प लयिा और अपने हाथों से, उनके पास आने वाले मठीय भाइयों के लिए कोठरयिाँ बनाने लगे। मानव जाति का धूर्त शत्रु यह सहन नहीं कर सका और, उनके प्रति ईर्ष्या से प्रेरति होकर, उसने डाकुओं को पूजनीय व्यक्ति को नुकसान पहुँचाने के लिए उकसाया। यह सोचकर कि उसके पास कोई संपत्ति है, वे बुरे इरादे से उसके पास आए। उस समय सावा एक कोठरी बना रहे थे। दखिावटी वनिम्रता से, लुटेरों ने बड़े भाई से आशीर्वाद मांगना शुरू कर दयिा। लेकनि उन्होंने उनकी चालाकी भरी योजना को भांप लयिा और समझ गए कि वे लुटेरे हैं। और इसलिए उन्होंने उनसे नम्निलखिति अनुरोध कयिा:

'मेरे बच्चों! थोड़ी दया दखिाओ; इस लकड़ी को दीवार पर चढ़ाने में मेरी मदद करो।'

जैसे ही उन्होंने कहा, बुजुर्ग ने उनसे लट्ठे के पतले सरि को पकड़ने के लिए कहा, जबकि उन्होंने स्वयं मोटे सरि को पकड़ लयिा। डकैत अपने हस्सि की लकड़ी को एक साथ उठा ही नहीं सके, जबकि बड़े संत ने ईश्वर की मदद से, अकेले ही लकड़ी को आसानी से दीवार पर उठा लयिा। यह देखकर, डकैतों ने शर्म और डर से एक-दूसरे की ओर देखा, और इस डर से कि उनके कारण उन्हें खुद को कोई नुकसान हो सकता है, वे सम्माननीय संत को छोड़कर भाग गए[6696] ।

[6696] इस चमत्कार का स्मरण पूजनीय व्यक्ति की सेवा में भी कयिा जाता है। कैनन, ओड 6, ट्रॉपारयिन 3।

कुछ समय बाद, फॉक्स माउंटेन के नाम से प्रसद्धि पहाड़ पर स्थति मठ के कुछ संन्यासयिों ने उस वृद्ध के उस क्षेत्र में रहने पर आपत्त जिताना शुरू कर दयिा, क्योंक वह उपर्युक्त मठ से थोड़ा ऊँचा था। तब आदरणीय सव्वा ने, भूम को लेकर उत्पन्न ववािद के बारे में सुनकर, अपने एक शष्यि, एफ्रेम[6697] नामक व्यक्त को, स्लावकि क्षेत्र के शासकों[6698] के पास नोवगोरोड भेजा, और उनसे वशिरा नदी पर एक तपस्थली के लिए अपने लिए एक स्थान आरक्षति करने का अनुरोध कयिा। उन्होंने खुशी-खुशी उसे ऐसा करने की अनुमत दे दी। इसके बाद, पूज्य सावा ने स्थायी रूप से वहीं बस गए और अपनी पूरी क्षमता से, मठ के नर्मिाण के लिए हर संभव प्रयास कयिा। भाइयों के लिए कोठरयिाँ बनाने के बाद, उन्होंने हमारे प्रभु यीशु मसीह के गौरवमय स्वर्गारोहण के सम्मान में एक चर्च बनाने का संकल्प लयिा[6699] । ईश्वर की सहायता से, चर्च जल्द ही बनकर तैयार हो गया और उसे पवत्रि कर दयिा गया। उस समय से, कई लोग आदरणीय सावा के पास आने लगे: कुछ आध्यात्मकि लाभ और शक्षिा के लिए, और अन्य उनके मठ में संन्यासी जीवन जीने के लिए। उन्होंने सभी का खुशी-खुशी स्वागत कयिा।

साथ ही, आदरणीय ने नए मठ के वकिास के लिए कसिी और से भी अधकि कड़ी मेहनत करना जारी रखा, और अपनी अथक लगन से सभी के लिए एक उदाहरण प्रस्तुत कयिा। अन्य लोगों के अलावा, उस समय रेवरेंड के मठ में एक गृहस्थ भी काम करता था जो अपने मठ के कर्तव्यों को नभिाने में अत्यधकि आलसी था। वह अक्सर बड़े भक्षिु से बहस करता था, यह दावा करते हुए क वह बहुत अधकि काम कर रहा था। हालाँक, सावा उसे यह कहते हुए सांत्वना देते थे:

'दुखी मत हो, मेरे बच्चे; बस अपने भक्षिु जीवन के कर्तव्यों को नभिाने के लिए इन कुछ दनिों तक धैर्य रखो, और फरि हम तुम्हें वादे से कहीं ज्यादा इनाम देंगे।'

उस गृहस्थ ने, वृद्ध के कोमल शब्दों से प्रभावति होकर, यह महसूस कयिा क यह दुश्मन द्वारा दयिा गया प्रलोभन था, और तब से उसने दूसरों की तुलना में कहीं अधकि मेहनत और परश्रिम कयिा।

उस समय, एक भक्षिु धन्य सावा से मलिने के लिए मठ में आया; क्योंक उसने कई लोगों से उनके महान तपस्वी जीवन के बारे में सुना था। वरष्ठि स्वयं उनका स्वागत करने के लिए बाहर गए। यह उनकी आदत थी, क जब भी कोई दूसरे मठों से उनके पास आता था, तो वे उनके मठ से काफी दूर, उस स्थान पर जहाँ एक क्रॉस लगा हुआ था, उनका स्वागत करने के लिए बाहर नकिलते थे; वहाँ एक संक्षप्ति प्रार्थना करने के बाद, वह अतथि के साथ चर्च तक चलता, जहाँ वह फरि से प्रार्थना करता, और केवल उसके बाद ही वह उसे अपनी कुटयिा में ले जाकर बातचीत करता।

जब उस भक्षिु से इस तरह सम्माननीय सव्वा, वृद्ध, ने भेंट की, तो देर शाम तक उनसे लंबी बातचीत करने के बाद, उन्होंने आगंतुक भ्राता को वश्रिाम करने के लिए छोड़ दयिा; जबक उन्होंने स्वयं, चक्की का पत्थर पकड़कर, राई पीसी। और इस प्रकार नए आए भाई ने सुना क वरष्ठि पूरी रात, मैटन्सि तक, अपनी कोठरी के पास ही ज़ोर से भजन पढ़ते हुए राई पीसते थे। भक्षिु चकति रह गया और मन ही मन कहने लगा क उसने वरष्ठि के बारे में दूसरों से जो सुना था, उससे कहीं ज्यादा वह उन्हें देख चुका था। सुबह-सुबह, बड़े भक्षिु का आशीर्वाद प्राप्त कर, वह अपने मठ वापस चल पड़ा, और सभी को संत के अत्यंत असाधारण तपस्वी जीवन के बारे में बताता गया तथा अपनी आलस्य और लापरवाही पर खुद को कोसता रहा।

एक बार मठ स्थापति हो जाने के बाद, पूज्य सावा ने अपने लिए एक स्तंभ खड़ा कयिा और उस पर चढ़कर, शनविार तक वहाँ उपवास और प्रार्थना में पूरा सप्ताह बतिाया; हालाँक, शनविार को वे भाइयों के साथ शामलि होने, उनके साथ पवत्रि कम्युनयिन ग्रहण करने, रवविार की प्रार्थना सभा में भाग लेने, दूसरों के साथ भोजन करने और भाइयों को आत्मा-

---

[6697] एफ्रेम, आदरणीय सावा के प्रयि शष्यि थे; उनके नधिन के बाद, वे इल्मेन झील के तट पर चले गए, जहाँ उन्होंने पेरकोम मठ († 1492) की स्थापना की। आदरणीय एफ्रेम की स्मृत 16 मई और 26 सतिंबर को मनाई जाती है।

[6698] महान नोवगोरोड दो जलिों में वभिाजति था: टॉर्गोवाया और सोफयिस्काया, जो बदले में तथाकथति 'एंड्स' (ends) में उपवभिाजति थे। स्लाव्यान्स्की एंड, टॉर्गोवाया जलि के दक्षणि में स्थति था। जलिों और एंड्स का अपना प्रशासन था और वे नोवगोरोड के सबसे करीब नोवगोरोड क्षेत्र के जलिों पर शासन करते थे। वह जलि जहाँ उस बदिु पर वशिरा नदी बहती थी और जहाँ लसिीचयि मठ स्थति था, स्लावकि एंड के अधकिार क्षेत्र में आता था। एक ज्ञात मुहर है जसिके केंद्र में एक क्रॉस और उसके चारों ओर 'स्लावकि एंड की मुहर' की शलिालेख है, जबक इसके दूसरी तरफ एक मुकुट पहने संत की छवि और 'पॉल द कन्फेसर' की शलिालेख है, जसिसे यह स्पष्ट होता है क स्लावकि एंड का अपना प्रशासन था।

[6699] 1418 में नोवगोरोड के आर्चबशिप († 1421) सेंट समियिन के आशीर्वाद से सेंट सावा्हा के मठ में कोठरयिों वाला एक चर्च बनाया गया था। उनके पर्व 10 फरवरी और 15 जून को मनाए जाते हैं।

नरि्माण का उपदेश देने के बाद, फरि से स्तंभ पर चढ़ जाते और उसी तरह अगली शनविार तक वहाँ अपने तपस्या कार्यों को जारी रखते थे[6700] ।

इस महान स्तंभ-उपवास के दौरान, आदरणीय सव्वा के अपने भाई, जनि्हें उन्होंने लंबे समय से नहीं देखा था, ट्वेर से मठ में उनसे मलिने आए। लेकनि वरषि्ठ को उसे देखने या उससे बात करने की कोई इच्छा नहीं थी। और जब उसका भाई लंबे समय तक स्तंभ के पास खड़ा रहा, वरषि्ठ से वनिती करता रहा कि कम से कम उसे एक झलक दखिा दें, तो वरषि्ठ अंततःस्तंभ से उतर आए और अपने भाई को आशीर्वाद दयिा; फरि भी, बनिा एक शब्द कहे, वह तुरंत वापस स्तंभ पर चढ़ गया। आदरणीय सव्वा के भाई ने उन्हें देखकर, ईश्वर की कृपा के अद्भुत संकेतों के लिए उनकी स्तुति करते हुए, प्रसन्नतापूर्वक ट्वर लौट गया, जनिके साक्षी बनने का उसे सौभाग्य मलिा था।

स्तंभ पर रहते हुए, और बौद्ध मठ तथा उसकी चतिाओं से दूर प्रतीत होते हुए भी, पूज्य सावा ने फरि भी अपनी प्रार्थनाओं से इसकी रक्षा करना जारी रखा। एक अवसर पर, लुटेरे मठ को लूटने के इरादे से मठ के पास आए। प्रार्थना में स्तंभ पर खड़े माननीय पति ने उन्हें दूर से देख लयिा और यह समझते हुए कि वे कसि बुरे इरादे से आए थे, उन्होंने अपनी लाठी से दीवार पर प्रहार करना शुरू कर दयिा। चोरों ने खटखटाहट सुनकर और डर के मारे भाग गए: क्योंकि वे आदरणीय की प्रार्थना से मठ से दूर भगा दिए गए थे[6701] । उस समय से, चोर मठ के पास आना बंद कर दिए।

इस बीच, भकि्षु और गृहस्थ दोनों ही, उन्हें प्राप्त होने वाले आध्यात्मकि लाभ के लिए, दूर-दूर से आदरणीय साव्हा के पास आते रहे; क्योंकि, प्रेरति के अनुयायी होकर, वह सभी के लिए सब कुछ थे (1 कुरनि्थयिों 9:22), सभी को उपदेश देते हुए, सभी के प्रति सहानुभूति रखते हुए और उनकी इस प्रकार देखभाल करते हुए जैसे वे उनके अपने अंग हों, बड़ों के साथ अपने भाइयों और समकक्षों की तरह और छोटों के साथ अपने बच्चों की तरह व्यवहार करते थे। और आदरणीय सावा के मठ में कोई ऐसा नहीं था जसिे अन्याय हुआ हो या जसिने दूसरों पर अन्याय कयिा हो, क्योंकि सभी को संत सावा द्वारा सांत्वना दी गई और सुलह कराई गई।

इन कार्यों में लगे हुए और हर तरह की कठनिाइयों और दुःखों को सहते हुए, आदरणीय सव्वा, अपने जीवन के सत्तरवें वर्ष में, बीमार पड़ गए। जब वे इस शरीर से वदिा लेकर प्रकृति के प्रति अपना अंतमि कर्तव्य नभिाने की तैयारी कर रहे थे, तो आदरणीय ने पूरे भाईचारे को बुलाया और शय्या पर लेटे-लेटे उन्हें आत्मा-रक्षक उपदेश दिए, वशिेष रूप से उन्हें ऑर्थोडॉक्स धर्म में और अपने मठ के संकल्पों के पालन में दृढ़ और अडगि रहने के लिए प्रेरति करते हुए, और सबसे बढ़कर वनिम्रता में उत्कृष्ट होने के लिए कहा।

अंत में, वरषि्ठ ने उनसे कहा:

'जो कुछ भी तुमने मुझे करते देखा है, वही तुम स्वयं करो।'

इसके बाद, मठ और भाइयों को नोवगोरोड के आर्चबशिप की देखभाल और पर्यवेक्षण में सौंपकर, और मठ के तत्काल प्रशासन और भकि्षुओं के मार्गदर्शन को भाइयों में सबसे बड़े—उनके सबसे करीबी शषि्यों एफ्रेम और एंड्रयू[6702] —को सौंपकर, जनि्होंने उस मठ में अपने कार्यों और कर्मों से सबसे अधकि प्रतषि्ठा अर्जति की थी, पूजनीय साव्वा, आत्मकि रूप से दनि-प्रतदिनि अधकि दृढ़ होते हुए, वे शारीरकि रूप से कमजोर होने लगे। मसीह के पवत्रि रहस्यों को ग्रहण करने के बाद, उन्होंने 1 अक्टूबर 1460 को शांतपिूर्वक अपना प्राण प्रभु को सौंप दयिा। अपने नधिन से ठीक पहले, परम पूज्य ने अपने शषि्यों को नम्निलखिति वसीयत दी: 'जब मेरी आत्मा मेरे शरीर से वदिा हो जाए, तो मेरे लिए कोई भव्य अंतमि संस्कार की रस्म न करो, बल्कि बनिा कसिी तैयारी के, शरीर को कब्र तक ले जाओ और उसे मट्टिी में सुला दो।'

आदरणीय के शषि्यों ने अपने पति और मार्गदर्शक को मृत देखकर, उनसे बछिड़ने पर गहरा शोक मनाया। तब, भजन-गायन और अंतमि संस्कार के गीतों के साथ अपने पति और मोक्ष के मार्गदर्शक के रूप में उनकी स्मृति को

[6700] संत सवा के तपस्या के कारनामों की प्रशंसा करते हुए, चर्च उन्हें 'समिओन महान' यानी संत समिओन द स्टाइलाइट के समान मानता है। उस सम्माननीय संत के लिए, उस स्तंभ ने मानो महान माउंट अथोस की जगह ले ली थी।

[6701] चर्च इस चमत्कार की प्रशंसा पूजनीय संत को समर्पति सेवा में करती है। 'हे प्रभु, मैंने पुकारा है' का श्लोक 3।

[6702] संत एफ्रेम के लिए, पृष्ठ 282 देखें। संत सवा के एक अन्य शषि्य, एंड्रयू, के बारे में यह ज्ञात है कि उसने उपवास और जागरण के द्वारा अपने शरीर को इतना थका दयिा था कि वह केवल हड्डी-चमड़ी रह गया था। हालाँकि, जल्द ही, संत सवा की मृत्यु के बाद, मठाधीश गेलासयिस सवा मठ के मठाधीश बन गए।

सम्मानति करने के बाद, उन्होंने उनके परशि्रमी और दीर्घकालीन कष्ट सहने वाले शरीर को चर्च और उस स्तंभ के बीच जमीन में दफनाया, जहाँ उन्होंने अपने जीवन के अंतमि दनि बताए थे।

अपने आध्यात्मकि पता के ईश्वर के पास जाने के बाद, आदरणीय सव्वा के शष्यिों ने मठ को व्यवस्थति करने में और भी अधकि सावधानी बरती, यह सुनश्चिति करते हुए कि उनके आध्यात्मकि पता - आदरणीय सव्वा - के मठ के नयिमों और उपदेशों में से कुछ भी अनदेखा न हो। सबसे बढ़कर, उन्होंने अपने आंतरकि आध्यात्मकि जीवन को समर्पति कयिा, इस मामले में अपने आध्यात्मकि पता और शक्षिक के उदाहरण का अनुसरण कयिा, और अपनी कमयिों को सुधारने के लिए लगन से प्रयास कयिा। और उन्होंने इस संबंध में भक्ति के ऐसे कारनामे दखिाए कि वे कई लोगों के लिए एक बेहतरीन उदाहरण बन गए।

काफी समय बीत जाने के बाद, जब ईश्वर की कृपा और पूज्य सावा की प्रार्थनाओं से उनका मठ सफलतापूर्वक फल-फूल रहा था, तो वहाँ एक भीषण आग लग गई, जसिने पूरे मठ को जला कर राख कर दयिा। आग में, कोठरयिाँ, चर्च और वह स्तंभ जसि पर पूज्य ने अपने जीवनकाल में तपस्या की थी, सब जलकर राख हो गए; फरि भी, चर्च और स्तंभ के बीच स्थति पूज्य सावा की कब्र और कब्र के ऊपर का चैपल आग से बलि्कुल भी क्षतग्रिस्त नहीं हुए, यहाँ तक कि लपटें उन्हें चारों ओर से घेरे होने के बावजूद उन तक भी नहीं पहुँच सकीं। यह संत के नधिन के बाद पहला चमत्कार था। उस समय से, आदरणीय सव्वा की कब्र पर वभिन्नि प्रकार के चमत्कार होने लगे, जनिके माध्यम से प्रभु ने वश्विासयिों को यह प्रकट कयिा कि वह वास्तव में उनके प्रयि सेवक और अनुग्रह से परपिूर्ण चमत्कार करने वाले थे। नम्निलखिति चमत्कार ने वशिेष रूप से सभी को इस बात का वश्विास दलिाया। एक ज़कारयिास, जो पूज्यनीय संत के मठ में संन्यास ग्रहण करने की तैयारी कर रहा था, ने वहाँ के भक्षिुओं से संत के पवत्रि जीवन और मृत्युोपरांत चमत्कारों के बारे में बहुत कुछ सुना था। जो कुछ उसने सुना था, उससे श्रद्धापूर्ण आश्चर्य से भरकर, ज़कारयिास ने कई दनिों तक इस पर मनन कयिा और ईश्वर से प्रार्थना की कि वह भी स्वयं इन चमत्कारों में से कसिी एक का साक्षी बनने के योग्य समझा जाए। और इस प्रकार, एक दनि जब वह प्रार्थना में खड़ा था, तो वह आराम करने के लिए बैठ गया, झपकी लेने लगा और सो गया; अचानक उसने अपने सामने एक अजनबी बूढ़े आदमी को देखा, जसिने उससे कहा: 'यदि तुम सव्वा को देखना चाहते हो, तो मेरा अनुसरण करो - और फरि तुम उन्हें देखोगे।' ज़कारयिास, या उसे ऐसा ही लगा, उस बूढ़े आदमी के पीछे चल पड़ा, संत सवा के मकबरे पर पहुँचा, और वहाँ उसने कई पवत्रि पुरुषों को देखा, जनिमें परम पूज्य सवा भी थे, जो एक ऊँचे मंच पर खड़े थे। वह परम पूज्य के सामने झुक गया, और उन्होंने उसे कुछ शक्षिाप्रद शब्द कहे और उसके वश्विास को मजबूत कयिा।

[6703]इस बीच, बीमार और वे सभी जो श्रद्धा के साथ परम पूज्य के मकबरे पर आए, उन्हें अपने दुखों में आध्यात्मकि सांत्वना और अपनी गंभीर बीमारयिों से चमत्कारी उपचार मलिता रहा। इन चमत्कारों की खबर नोवगोरोड क्षेत्र में फैल गई, वशिेष रूप से उस समय से जब सव्वस्कि मठ के मठाधीश, हेग्यूमेन गेलासयिस, संन्यासी से प्रार्थना करने पर, उन्हें उस वषि से मुक्ति मिली जो उन पर हावी हो गया था; ठीक होने के दौरान, उन्होंने एक सपने में परम पूज्य सावा को उज्ज्वल वस्त्रों में प्रार्थना करते हुए देखा, जनिकी दृष्टि चर्च की ओर थी। जागने पर और स्वस्थ हो जाने का एहसास होने पर, गेलासयिस ने ईश्वर की स्तुति की, जो अपने पवत्रि सेवकों के माध्यम से अद्भुत चमत्कार करते हैं, और नोवगोरोड के आर्चबशिप के पास दौड़े, जन्हिें उन्होंने अपना दर्शन और अपना चमत्कारी उपचार सुनाया। तब नोवगोरोड के संत योना सवस्कि वशिर मठ[6704] पहुँचे और, पूजनीय संत के मकबरे तक दौड़ते हुए, उसके सामने एक प्रार्थना सेवा का आयोजन कयिा। तब उन्होंने पूज्य सव्वा की एक प्रतमिा चत्रिति करने, उनके सम्मान में एक प्रार्थना-सेवा रचने, और उनके जीवन[6705] को दर्ज करने का आदेश दयिा, यह सब प्रभु परमेश्वर और हमारे उद्धारकर्ता यीशु मसीह की महमिा के लिए था, जो अपने संतों को उनके नधिन के बाद भी अद्भुत रूप से महमिामय करते हैं।

[6703] संत सवा का यह प्राचीन आइकन आज भी उनके मठ में रखा है। पहले, यह उनके पवत्रि अवशेषों वाले संदूक पर रखा रहता था; लेकनि अब, यह मठ के कैथेड्रल ऑफ द एसेंशन में, संत सवा को समर्पति पार्श्व चैपल में रखा गया है।

[6704] नोवगोरोड के आर्चबशिप सेंट योना ने 1458 से 1470 में अपनी मृत्यु तक नोवगोरोड चर्च का नेतृत्व कयिा। उनका पर्व 5 नवंबर को मनाया जाता है। साव्वनिोवशिर्सकी मठ का नर्मिाण 1461 में हुआ माना जाता है।

[6705] संत साव्वा की जीवनी की रचना का श्रेय 15वीं शताब्दी के दूसरे भाग के प्रसद्धि जीवनीकार, पचोमयिस लोगोफेट को दयिा जाता है, जो संत योना के समकालीन थे। हालाँकि, संतों की जीवनी की कुछ पांडुलपियिाँ, जनिमें पाचोमयिस को लेखक बताया गया है, एक उपसंहार के साथ समाप्त होती हैं जसिमें कहा गया है कि धन्य सावा का जीवन 6972 वर्ष में उस मठ के तत्कालीन मठाधीश, भक्षिु गेलासयिस द्वारा प्रतलिपि और

बाद में, पूजनीय सावा के अवशेषों को परमेश्वर की अतिपवित्र माता के मध्यस्थता के नव-निर्मित चर्च[6706] में स्थानांतरित कर दिया गया, और रूसी ऑर्थोडॉक्स चर्च[6707] में उनके सम्मान में एक पर्व दिवस स्थापित किया गया। और आज भी, उनके पूजनीय समाधिस्थल पर, उन सभी को प्रचुर चंगाई मिलती है जो विश्वास के साथ आकर पूजनीय संत की मध्यस्थता की याचना करते हैं, जो सर्वोच्च के सिंहासन के समक्ष उन सभी के लिए अथक प्रार्थना करते हैं जो विश्वास के साथ उनकी अतिपूजनीय स्मृति का सम्मान करते हैं।

ट्रोपारियन, स्वर 4:

हे धन्य, आपने अपने यौवन से ही स्वयं को पूरी तरह से ईश्वर को समर्पित कर दिया; और उस प्रेम के लिए, आपने अपना देश और स्वजन छोड़ दिया, और मरुस्थल में बस गए, जहाँ आपने एक तपस्वी जीवन व्यतीत किया: हे पूजनीय सवास, आपने प्रभु से चमत्कारों का वरदान प्राप्त किया; मसीह ईश्वर से प्रार्थना करें कि हमारी आत्माओं का उद्धार हो।

कॉन्टाकियन, स्वर 8:

हे पूज्यनीय, आप अपने स्वदेश से प्रस्थान करके मरुस्थल में निवास करने गए, वहाँ आपने एक स्तंभ पर चढ़कर तपस्वी जीवन व्यतीत किया; और अपने जीवन-यापन के द्वारा अनेक लोगों को चकित कर, आपने मसीह से चमत्कारों का वर प्राप्त किया। हम, जो आपकी स्मृति मनाते हैं, हमें स्मरण कीजिए, ताकि हम आपको पुकार सकें: हे सावास, हमारे पिता, आनंदित हो।

पवित्र शहीद डोमनिन की स्मृति

1 अक्टूबर को स्मरण किया जाता है

संत डोमनिन थिस्सलोनिका के मूल निवासी थे। जब सम्राट मैक्सिमियन[6708] थिस्सलोनिका में अपने लिए एक महल का निर्माण कर रहे थे[6709] , तब संत डोमनिन को एक ईसाई होने के आरोप में गिरफ्तार कर न्याय के लिए सम्राट के सामने लाया गया। सम्राट ने उनसे गुस्से में कहा:

'जब मैं शहर में हूँ, तो तुम खुलेआम दूसरे ईश्वर की पूजा क्यों करते हो? अगर तुम जीवित रहना चाहते हो तो देवताओं को बलिदान चढ़ाओ।'

चूँकि संत ने आज्ञा नहीं मानी, राजा ने आदेश दिया कि उनके शरीर को यातना दी जाए; और फिर, संत के धैर्य में स्वयं के प्रति एक निंदा और फटकार देखकर, उसने आदेश दिया कि उन्हें शहर के बाहर ले जाया जाए और उनके घुटनों से पैर काट दिए जाएँ। अपने पैरों के कट जाने के बाद, पवित्र शहीद सात दिनों तक पीड़ा में रहे, और उन्होंने कुछ भी नहीं खाया; और फिर, उस ईश्वर का धन्यवाद करते हुए, जिसे वे इतनी गहराई से प्रेम करते थे, उन्होंने अपनी पवित्र आत्मा उसी को सौंप दी।

संकलित किया गया था', – जिससे यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि यह जीवन मूल रूप से 1464 में मठाधीश गेलासियस द्वारा लिखा गया था और बाद में पैकोमियस लोगोफेट द्वारा संशोधित किया गया था।

[6706] यह 1523 में हुआ था।

[6707] संत सवा के सम्मान में पर्व का दिन 1549 के एक सिनोडल फरमान द्वारा रूसी चर्च में स्थापित किया गया था। उस समय से, संत सवा नोवगोरोड के चमत्कार करने वाले के रूप में जाने जाने लगे। 1570 में, इवान द टेरिबल के शासनकाल के दौरान, जब नोवगोरोड में नरसंहार हो रहा था, 'शासक के सैनिकों ने चमत्कार करने वाले की कब्र को नष्ट कर दिया'; अगले वर्ष, संत सवा के अवशेषों को एक नए अवशेष-पात्र में रखा गया और मठ की नई पत्थर की इंटरसेशन चर्च में स्थापित किया गया। वर्तमान में, पूजनीय संत के अवशेष मठ के एसेन्शन कैथेड्रल की इंटरसेशन चैपल में वेदी के नीचे विराजमान हैं। मठ में उनके नाम पर दो चर्च हैं।

[6708] मैक्सिमियन गैलेरियस, 305 से 311 तक रोमन सम्राट।

[6709] थेस्सालोनिकी - मैसेडोनिया का एक बहुत ही महत्वपूर्ण प्राचीन शहर - एजियन सागर (द्वीपसमूह) पर थेस्सालोनिकी या फर्मेआ की बड़ी खाड़ी के अंदर गहराई में स्थित था। आज, यह शहर ग्रीस में थेस्सालोनिकी के नाम से जाना जाता है।

ज़ोवी के पूजनीय माइकल और उनके साथ पीड़ितों की स्मृति

1 अक्टूबर को स्मरणोत्सव

[6710]आदरणीय माइकल ने अन्य भिक्षुओं के साथ मिलकर कॉन्स्टेंटाइन और आइरीन के शासनकाल में सेबास्टे के पास ज़ोविया नामक मठ में तपस्या का जीवन जिया।[6711] अगारियन अमीर अलीम ने उस क्षेत्र पर हमला किया और उन्हें कैद कर लिया।[6712] मसीह की शक्ति से दृढ़ होकर, पूज्यनीय पिताओं ने मसीह का त्याग करने के लिए अविश्वासियों के आग्रह के आगे आत्मसमर्पण नहीं किया। भिक्षुओं के बीच खड़े पूज्यनीय मठाध्यक्ष माइकल ने अपनी आवाज़ उठाई और उन्हें मसीह के लिए मरने का आग्रह किया। पहले, सिर झुकाए हुए, उन्हें तलवार से सिर कलम कर दिया गया, और फिर पूज्यनीय माइकल को स्वयं।

15 अक्टूबर

2 अक्टूबर (पुराने कैलेंडर के अनुसार)

पुरोहित-शहीद संत साइप्रियन और शहीद संत जस्टिना का जीवन और कष्ट-संहार

2 अक्टूबर को स्मरणोत्सव

डेसियस के शासनकाल में[6713] , अंटिओक में रहते थे[6714] एक दार्शनिक[6715] और प्रसिद्ध जादूगर[6716] , जिनका नाम साइप्रियन था, जो कार्थेज के मूल निवासी थे[6717] । नास्तिक माता-पिता से जन्मे, उन्हें बचपन में ही उनके द्वारा पैगन

[6710] यह, बेशक, एशिया माइनर के उत्तर-पूर्व में, आर्मेनिया में सेबास्टे को संदर्भित करता है।

[6711] कॉन्स्टेंटिन VI पोर्फ्योजेनिटस – 780 से 797 तक रोमन सम्राट। सम्राज्ञी आइरीन, उनकी माँ और सम्राट लियो VI की पत्नी, जो प्रतिमा पूजा की एक उत्साही रक्षक थीं, ने दस वर्षों तक अपने बेटे की ओर से राज्य पर शासन किया और उनके बाद 802 तक राज किया।

[6712] अगारियन, जिन्हें सारासेन के नाम से भी जाना जाता है, अरब बेदुइन थे। 'अगारियन' शब्द, जो मूल रूप से इस खानाबदोश, डाकू जनजाति को संदर्भित करता था, बाद में ईसाई लेखकों द्वारा सभी अरबों पर लागू किया गया, और बाद में सामान्य रूप से मुसलमानों का संकेत देने लगा। अरब बेदुइनों को 'अगारीयन' कहा जाता था क्योंकि, यहूदी परंपरा के अनुसार, वे अब्राहम की दासी हागर के पुत्र इसमाइल के वंशज थे। 'एमिर' (अरबी में 'राजकुमार' का अर्थ) वह उपाधि थी जो मुहम्मद की बेटी की संतान होने के नाते सभी स्वतंत्र, स्व-घोषित वारिसों को दी गई थी, जो अलग-अलग जनजातियों और अरब लुटेरों के अलग-अलग दलों का नेतृत्व करते थे।

[6713] डेसियस – 249 से 251 तक रोमन सम्राट।

[6714] अंतियोक – शहरों के लिए अक्सर इस्तेमाल किया जाने वाला एक नाम। यहाँ, यह सबसे अधिक संभावना फिनिसिया में स्थित अंतियोक, जो सीरिया और फिलिस्तीन के बीच है, या एशिया माइनर के पश्चिमी भाग में, फ्राइजिया की सीमा पर स्थित पिसीडिया में अंतियोक को संदर्भित करता है।

[6715] अर्थात्, एक मूर्तिपूजक ऋषि, झूठे ऋषि के अर्थ में।

[6716] प्राचीन काल में, 'मागी' या 'जादूगर' शब्द का अर्थ गहरे और व्यापक ज्ञान वाले बुद्धिमान पुरुषों से था, विशेष रूप से प्रकृति की उन गुप्त शक्तियों का, जो आम लोगों की पहुँच से बाहर थीं। साथ ही, इस नाम को जादू-टोने, तंत्र-मंत्र, भविष्यवाणी, मंत्रोच्चारण, और धोखे और अंधविश्वास के विभिन्न रूपों की अवधारणाओं से जोड़ा गया था। प्राचीन काल से ही मूर्तिपूजकों में जादू-टोना बहुत विकसित था; इसे पवित्र धर्मग्रंथ के कई अंशों में निंदा किया गया है। चर्च के कई शिक्षकों के अनुसार, मूर्तिपूजक जादूगर अंधकार की आत्माओं के प्रभाव में और उनकी सहायता से अपने, कभी-कभी उल्लेखनीय, जादू-टोने के करतब करते थे।

[6717] कार्थेज – उत्तरी अफ्रीका में सबसे पुरानी और सबसे प्रसिद्ध फ़िनिशियाई बस्ती, जो प्राचीन इतिहास में अपनी शक्ति के शिखर पर पहुँची और 146 ईसा पूर्व में नष्ट हो गई; प्राचीन कार्थेज के खंडहरों पर, प्रारंभिक रोमन सम्राटों के शासनकाल में, एक नया कार्थेज उभरा, जो बहुत लंबे समय तक बड़ी भव्यता के साथ फलता-फूलता रहा। कार्थेज में, मूर्तिपूजक ग्रीको-रोमन संप्रदाय अत्यधिक विकसित था, जिसमें सभी प्रकार की अंधविश्वास, जादू-टोना और 'जादुई कलाएँ' शामिल थीं।

देवता अपोलो की सेवा के लिए समर्पित कर दिया गया था[6718] । सात वर्ष की आयु में, उसे जादू-टोना और दैवीय ज्ञान सिखाने के लिए जादूगरों के हवाले कर दिया गया। दस वर्ष की आयु में, उसे उसके माता-पिता द्वारा माउंट ओलंपस[6719] — जिसे मूर्तिपूजक देवताओं का निवास कहते थे — पुरोहितीय सेवा के लिए भेजा गया; वहाँ अनगिनत मूर्तियाँ थीं, जिनमें राक्षस वास करते थे। इस पहाड़ पर, साइप्रियन ने सभी प्रकार की शैतानी चालाकियाँ सीखीं: उसने विभिन्न दैवीय रूप-परिवर्तन में महारत हासिल की, हवा के गुणों को बदलना, हवाओं को बुलाना, गरज और बारिश पैदा करना, समुद्र की लहरों को उकसाना, बगीचों, अंगूर के बागों और खेतों को नुकसान पहुँचाना, लोगों पर बीमारियाँ और फोड़े भेजना सीखा, और सामान्य रूप से दुष्टता से भरी हानिकारक बुद्धि और शैतानी गतिविधियाँ सीखीं। वहाँ उसने अंधकार के राजकुमार के नेतृत्व में राक्षसों की अनगिनत टोलियाँ देखीं, जिनमें से कुछ उसकी सेवा में खड़े थे, कुछ सेवा करते थे, कुछ अपने राजकुमार की प्रशंसा में चिल्ला रहे थे, जबकि अन्य लोगों को भटकाने के लिए दुनिया में भेजे गए थे। वहाँ उसने भ्रामक रूपों में, मूर्तिपूजक देवताओं और देवियों के साथ-साथ विभिन्न भूत-प्रेतों को भी देखा, जिन्हें वह सख्त चालीस-दिन के उपवास का पालन करते हुए बुलाना सीख गया; वह केवल सूर्यास्त के बाद ही खाता था, और रोटी या कोई अन्य भोजन नहीं, बल्कि ओक के अखरोट खाता था।

जब वह पंद्रह वर्ष का हो गया, तो उसने सात महान पुरोहितों से शिक्षा ग्रहण करना शुरू कर दिया, जिनसे उसने कई राक्षसी रहस्य सीखे। फिर वह आर्गोस शहर[6720] गया, जहाँ, कुछ समय तक देवी हेरा[6721] की सेवा करने के बाद, उसने उनके पुरोहित से धोखे की कई कलाएँ सीखीं। वह ताउरोपोलिस[6722] में भी रहा, जहाँ उसने आर्टेमिस की सेवा की, और वहाँ से वह लाकेडेमोन[6723] गया, जहाँ उसने जादू-टोने के विभिन्न रूप और मंत्रों के द्वारा मृतकों को उनकी कब्रों से बुलाकर उनसे बोलने के लिए मजबूर करना सीखा। बीस वर्ष की आयु में, साइप्रियन मिस्र की यात्रा पर गए, और मेम्फिस शहर[6724] में उन्हें और भी बड़ी जादू-टोना और जादू सिखाया गया। तीस वर्ष की आयु में, वह खलदानीयों[6725] के पास गया और वहाँ ज्योतिष सीखकर अपना प्रशिक्षण पूरा किया, जिसके बाद वह हर प्रकार की दुष्टता में पारंगत होकर अंओक लौट आया। इस प्रकार वह एक जादूगर, एक जादू-टोना करने वाला और एक हत्यारा बन गया, नरक के राजकुमार[6726] का एक

[6718] अपोलो सबसे सम्मानित ग्रीक-रोमन मूर्तिपूजक देवताओं में से एक था। उन्हें सूर्य और बौद्धिक प्रबोधन के देवता, साथ ही सार्वजनिक कल्याण और व्यवस्था, कानून के रक्षक, और भविष्यवाणी के देवता के रूप में पूजा जाता था। उनके पूजा के मुख्य केंद्रों में से एक, अन्य स्थानों के अलावा, उत्तरी ग्रीस में टेम्पे घाटी थी, जो ओलंपस पर्वत की तलहटी में फैली हुई है और प्राचीन काल में प्रसिद्ध थी।

[6719] माउंट ओलंपस स्वयं उत्तरी ग्रीस में मैसेडोनिया और थेस्साली के बीच सीमा बनाने वाली पर्वत शृंखला की एक पूरी (दक्षिण-पूर्वी) शाखा है। प्राचीन ग्रीकों ने माउंट ओलंपस को अपने विधर्मी देवताओं का निवास स्थान माना।

[6720] आर्गोस – पेलोपोनेस (दक्षिणी ग्रीस) के पूर्वी क्षेत्र, अर्गोलाइस, की प्राचीन ग्रीक राजधानी; इसके पास ही प्रसिद्ध विधर्मी देवी हेरा का मंदिर स्थित था।

[6721] हेरा (जूनो) को प्राचीन यूनानियों और रोमनों द्वारा उनके प्रमुख देवता ज्यूस की बहन और पत्नी के रूप में पूजा जाता था, जो सभी देवियों में सबसे उत्कृष्ट और सम्मानित थीं; उन्हें पृथ्वी और प्रजनन की देवी और विवाह की संरक्षक माना जाता था।

[6722] टैवरपोल, सख्त रूप से कहें तो, ईजियन सागर (द्वीपसमूह) के दक्षिण-पूर्वी भाग में, इकारिया द्वीप पर स्थित देवी आर्टेमिस (डायना - चंद्रमा की देवी, जिन्हें प्रकृति के ताज़े, खिलते जीवन की संरक्षक के रूप में भी पूजा जाता है) को समर्पित एक मंदिर है। इस स्थान का नाम इस तथ्य से लिया गया है कि यूनानियों ने, आर्टेमिस को टॉरियन प्रायद्वीप के प्राचीन निवासियों - टॉरी - की देवी ऑर्सिलोचस के बराबर मानकर, दोनों को बेतरतीब ढंग से टैवरॉपोल कहा।

[6723] लाकेडेमोन या लकोनिया – पेलोपोनेस (दक्षिणी ग्रीस) का दक्षिण-पूर्वी क्षेत्र। अधिक विशेष रूप से, यह नाम लकोनिया की राजधानी, जिसे अन्यथा स्पार्टा के नाम से जाना जाता था, को संदर्भित करता था, जिसके आज केवल कुछ छोटे खंडहर ही बचे हैं।

[6724] मेम्फिस – पूरे मिस्र की प्राचीन और शक्तिशाली राजधानी – मिस्र के मध्य भाग में नील नदी पर स्थित थी, मुख्य नदी और उसकी सहायक नदी के बीच, जो शहर के पश्चिमी हिस्से से होकर बहती थी। प्राचीन मिस्र की इस शानदार राजधानी में आज जो कुछ बचा है, वह मेट्रासानी और मोगन्नान गांवों के पास सबसे तुच्छ और मामूली खंडहर हैं।

[6725] खाल्डीयियन बेबीलोन के ऋषि और विद्वान थे जो विज्ञान, विशेष रूप से खगोल विज्ञान और खगोलीय पिंडों के अवलोकन का अध्ययन करते थे; वे पुजारी और जादूगर भी थे जो गुप्त शिक्षाओं, भविष्यवाणी, सपनों की व्याख्या आदि का अभ्यास करते थे। बाद में, यह नाम, विशेष रूप से पूर्व में, सभी प्रकार के भविष्यवक्ताओं, जादूगरों और सामान्य रूप से भविष्य बताने वालों पर लागू होने लगा, भले ही वे खाल्डीय न हों, यानी बेबीलोन से उत्पन्न न हुए हों।

[6726] पवित्र धर्मग्रंथ की शिक्षा के अनुसार, बुराई के अंधकारमय साम्राज्य में पतित आत्माओं का एक मुख्य शासक है, जिसे धर्मग्रंथ अक्सर 'दैत्यों का राजकुमार' कहता है, साथ ही बीलज़बूब, बेलियाल, शैतान, आदि, और उसे स्पष्ट रूप से अन्य दैत्यों से अलग करता है, जिन्हें, मानो, उसके अधीन दिखाया गया है। सामान्य रूप से, धर्मग्रंथ दुष्ट आत्माओं के बीच उनके पदक्रम और उनकी शक्ति की सीमा के अनुसार अंतर करता है।

महान मत्रि और वफादार सेवक, जसिके साथ उसने आमने-सामने बातचीत की, और जसिे उसने स्वयं खुले तौर पर महान सम्मान प्रदान कयिा था।

'मेरी बात मानो,' उसने कहा, 'मैंने स्वयं अंधकार के राजकुमार को देखा है, क्योंकि मैंने बलदिानों से उसे प्रसन्न कयिा; मैंने उसका और उसके बुज़ुर्गों का अभविादन कयिा और उनसे बात की; वह मुझसे प्रसन्न हो गया, मेरी बुद्धि की प्रशंसा की और सभी के सामने कहा: 'देखो, एक नया ज़ाम्व्रयिस[6727] , जो आज्ञा मानने के लिए सदैव तत्पर और हमारे साथी होने के योग्य है!' और उसने वादा कयिा कि इस शरीर से मेरे प्रस्थान के बाद वह मुझे एक राजकुमार बनाएगा, और मेरे सांसारकि जीवन के दौरान हर तरह से मेरी सहायता करेगा; साथ ही, उसने राक्षसों का एक दल मेरी सेवा में लगा दयिा। जब मैं उनसे वदिा ले रहा था, तो उन्होंने मुझसे कहा: 'हौसला रखो, उत्साही साइप्रयिन; उठो और मेरे साथ चलो: सभी राक्षसों के बुज़ुर्ग तुमसे चकति हों।' परणिामस्वरूप, उनके सभी राजकुमारों ने मुझ पर ध्यान दयिा, जब उन्होंने मुझ पर प्रदान कयिा गया सम्मान देखा । उसका रूप एक फूल जैसा था; उसके सरि पर सोने और चमकते पत्थरों से बनी एक माला (वास्तव में नहीं, बल्कि मायावी ढंग से) पहनी हुई थी, जो पूरे स्थान को रोशन कर रही थी – और उसके वस्त्र अद्भुत थे। जब भी वह कसिी एक दशिा या दूसरी दशिा में मुड़ता, तो पूरा स्थान काँप उठता; वभिन्नि पदों के दुष्ट आत्माओं की भीड़ उसके सहिासन के सामने आज्ञाकारी होकर खड़ी रहती थी। मैं भी, उस समय पूरी तरह से उसकी सेवा में समर्पति था, और उसकी हर आज्ञा का पालन करता था।

यही वह था जो साइप्रयिन ने स्वयं अपने धर्म परविर्तन के बाद अपने बारे में कहा।

इससे यह स्पष्ट है कि साइप्रयिन कसि तरह का व्यक्ति था: राक्षसों के मत्रि के रूप में, उसने उनके सभी कर्म कएि, लोगों को नुकसान पहुँचाया और उन्हें धोखा दयिा। एंटओिक में रहते हुए, उसने कई लोगों को हर तरह के अन्याय के मार्ग पर भटकाया, कई लोगों को जहर और जादू-टोने से नष्ट कयिा, और युवकों और कन्याओं की बलि राक्षसों को चढ़ाई। उसने कई लोगों को अपनी वनिाशकारी जादू-टोना सखिाया: कुछ को हवा में उड़ना, दूसरों को बादलों पर नावों में नौकायन करना, और कुछ को पानी पर चलना। सभी वधिर्मी उसे उनके घृणति देवताओं के मुख्य पुरोहति और सबसे बुद्धमिान सेवक के रूप में पूजते और महमिामंडति करते थे। कई लोग अपनी ज़रूरत के समय में उसके पास आते थे, और उसने उन्हें उस शैतानी शक्ति से सहायता दी जसिसे वह परपिूर्ण था: कुछ को व्यभचिार में, दूसरों को क्रोध, शत्रुता, प्रतशिोध और ईर्ष्या में सहायता दी। वह पहले से ही पूरी तरह से नरक की गहराइयों में और शैतान के जबड़ों में था; वह गेहेना का पुत्र, दानवों के उत्तराधकिार और उनकी अनंत वनिाश में भागीदार था। परन्तु प्रभु, जो पापी की मृत्यु को नहीं चाहता, अपनी अनुपम भलाई और अपनी दया से, जसि पर मानव पापों का प्रभुत्व नहीं चलता, उन्होंने इस खोए हुए मनुष्य को खोजने की कृपा की, उसे उस गहरी खाई से बाहर खींचने की जहाँ वह नरक की गहराइयों में डूब गया था, और उसे बचाने की, ताकि सभी लोगों पर अपनी दया दखिा सकें; क्योंकि कोई भी पाप मानव जाति के प्रति उनके प्रेम पर वजिय प्राप्त नहीं कर सकता। उसने नम्निलखिति तरीके से साइप्रयिन को वनिाश से बचाया।

उस समय, उसी स्थान, अंतीयकयिा में, जस्टनिा नाम की एक युवती रहती थी। वह मूर्तपिूजक माता-पति की बेटी थी: उसके पति एडेसयिस नामक एक मूर्तपिूजक पुरोहति थे, और उसकी माँ का नाम क्लयिोडोनयिा था। एक दनि, अपने घर की खड़िकी के पास बैठे हुए, इस युवती—जो तब तक वयस्क हो चुकी थी—की नज़र अचानक से गुजर रहे प्रायलयिस नामक एक डकिन द्वारा बोले गए उद्धार के शब्दों पर पड़ी। उन्होंने हमारे प्रभु यीशु मसीह के अवतार के बारे में बताया – कि कैसे वे परम पवत्रि कुँवारी से पैदा हुए, और कई चमत्कार करने के बाद, हमारे उद्धार के लिए दुख सहने की कृपा की, महमिा में मरे हुओं में से जी उठे, स्वर्ग में आरोहण कएि, पति के दाहनि हाथ बैठ गए, और हमेशा के लिए राज्य करते हैं। डीकन का यह उपदेश जस्टनिा के हृदय में उपजाऊ भूमि पर पड़ा और जल्द ही फलने लगा, जसिने उसके भीतर अवशि्वास की काँटों को उखाड़ फेंका। जस्टनिा उस डकिन से आस्था को और अधकि गहराई से और पूरी तरह से सीखना चाहती थी, लेकनि अपनी कन्या-सी शर्मीली प्रकृति के कारण उसे खोजने की हमि्मत नहीं कर सकी। हालाँकि, वह चोरी-छपिे मसीह के चर्च में जाती थी और परमेश्वर का वचन बार-बार सुनने और अपने हृदय पर पवत्रि आत्मा के प्रभाव से, मसीह में वशि्वास करने लगी। कुछ ही समय बाद, उसने अपनी माँ को इस बात के लिए मना लयिा, और बाद में अपने वृद्ध पति को भी आस्था की राह पर ला खड़ा कयिा। अपनी बेटी की बुद्धमित्ता को देखकर और उसके बुद्धमिानी भरे शब्दों

[6727] अर्थात्, एक नया दुष्ट जादूगर, एक जादूगर और शैतान का आज्ञाकारी सेवक। यहाँ ज़ाम्व्रयिा नाम स्पष्ट रूप से प्रसद्धि प्राचीन मसि्र के जादूगर, जो प्राचीन शास्त्रीय लेखकों से जाना जाता है, उसे संदर्भति करता है, जो अपने असाधारण जादू-टोनों के लिए प्रसद्धि हुआ और जो, चर्च पतिाओं के अनुसार, अंधकारमय दैवीय शक्तियों के संपर्क में था।

को सुनकर, एडीसयिस ने अपने मन में वचिार कयिा: 'मूर्तयिाँ मानव हाथों से बनी हैं और उनमें न तो आत्मा है और न ही साँस; तो फरि, वे देवता कैसे हो सकती हैं?' इस पर वचिार करते हुए, एक रात, दैवीय कृपा से, उन्होंने एक सपने में एक अद्भुत दर्शन देखा: उन्होंने चमकते हुए स्वर्गदूतों की एक बड़ी सेना देखी, और उनके बीच में संसार के उद्धारकर्ता, मसीह थे, जन्हिोंने उनसे कहा:

'मेरे पास आओ, और मैं तुम्हें स्वर्ग का राज्य दूँगा।'

सुबह उठकर, एडीउस अपनी पत्नी और बेटी के साथ ओन्टैटस नामक एक ईसाई बशिप के पास गया, और उनसे ईसाई धर्म में शक्षिति करने तथा उन्हें पवत्रि बपतस्मिा देने का अनुरोध कयिा। तब, उसने अपनी बेटी के शब्दों और स्वर्गदूत के उस दर्शन को बताया जो उसने स्वयं देखा था। यह सुनकर, बशिप उनके धर्म परविर्तन पर प्रसन्न हुए और, उन्हें ईसाई धर्म की शक्षिा देने के बाद, उन्होंने एदेउस, उसकी पत्नी क्लयिोडोनयिा और उसकी बेटी जस्टनिा को बपतस्मिा दयिा; फरि, उन्हें पवत्रि संस्कार प्रदान करने के बाद, उन्होंने उन्हें शांतसि वदिा कर दयिा। जब एडेसयिस ईसाई धर्म में दृढ़ हो गया, तो बशिप ने उसकी धार्मकिता को देखकर उसे एक पादरी नयिुक्त कयिा। इसके बाद, एक साल और छह महीने तक सदाचार और ईश्वर के भय में जीवन जीने के बाद, एडेसयिस ने पवत्रि वश्विास में अपना जीवन समाप्त कयिा। जहाँ तक जस्टनिा का सवाल है, उसने प्रभु की आज्ञाओं का पालन करने के लिए बहादुरी से प्रयास कयिा और, अपने वधू-वर, मसीह से प्रेम करने लगने के बाद, उसने लगन से प्रार्थना, कुँवारीपन और पवत्रिता, उपवास और महान आत्म-संयम के माध्यम से उनकी सेवा की। लेकनि शत्रु, जो मानव जातकिा घृणति है, ने जब उसका जीवन इस प्रकार देखा, तो वह उसकी सद्गुणों से ईर्ष्या करने लगा और उसे वभिन्नि वपित्तयिाँ और दुख देकर उसे हानपिहुँचाने लगा।

उस समय, अंतीयक में अगालाइड्स नाम का एक युवक रहता था, जो अमीर और कुलीन माता-पतिा का पुत्र था। वह ऐश्वर्यपूर्ण जीवन जीता था, और पूरी तरह से इस संसार की व्यर्थ की चीज़ों में लगा हुआ था। एक दनि उसने चर्च जाते हुए जस्टनिा को देखा और उसकी सुंदरता से मोहति हो गया। हालाँकि, शैतान ने उसके दलि में बुरे इरादे भर दिए। वासना से ग्रस्त, अग्लाइड्स ने जस्टनिा की कृपा और प्रेम जीतने के लिए अपनी पूरी ताकत लगा दी और , यानी छल-कपट से उसे लुभाकर उस पापपूर्ण पतन की ओर ले जाने की कोशशि की जसिकी उसने योजना बनाई थी। वह उस युवती के हर संभावति रास्ते पर नजर रखता था, और जब भी उससे मलिता, तो उसकी सुंदरता की प्रशंसा करते हुए और उसके गुणों का बखान करते हुए उसे लुभाने वाले शब्द कहता था। अपने प्यार का इज़हार करते हुए, उसने उसे कामुकता के एक चालाक जाल में फंसाकर व्यभचिार के लिए लुभाने की कोशशि की। हालाँकि, वह युवती मुड़ गई और उससे बचती रही, उसे तुच्छ समझते हुए और उसकी चापलूसी भरी और धोखेबाज़ी भरी बातें सुनने से भी इनकार कर दयिा। उसकी सुंदरता की लालसा में अडगि, उस युवक ने उसे एक संदेश भेजा, जसिमें उससे अपनी पत्नी बनने के लिए सहमत होने को कहा गया।

उसने उत्तर दयिा:

'मेरा वधू-वर मसीह हैं; मैं उनकी सेवा करती हूँ और उनके लिए अपनी पवत्रिता बनाए रखती हूँ। वह मेरी आत्मा और मेरे शरीर दोनों को हर तरह की अशुद्धसि बचाते हैं।'

पवत्रि कन्या से ऐसा उत्तर सुनकर, शैतान के उकसावे में आया अग्लाइडस और भी अधकि कामवासना से भर गया। उसे बहकाने में असमर्थ, उसने जबरदस्ती उसका अपहरण करने का नश्चिय कयिा। अपने जैसे लापरवाह युवकों का एक गरिोह इकट्ठा करके, वह उस युवती का उस रास्ते पर इंतज़ार करने लगा जसि पर वह आमतौर पर प्रार्थना के लिए चर्च जाती थी; वहाँ उसने उससे मुलाकात की, उसे पकड़ लयिा, और जबरदस्ती उसे अपने घर में खींच लयिा। हालाँकि, उसने ज़ोर से चल्लिाना शुरू कर दयिा, उसे चेहरे पर मारा और उस पर थूक दयिा। उसकी चीखें सुनकर, पड़ोसी अपने घरों से बाहर भागे और उस नर्दिोष मेमने, संत जस्टनिा को, उस दुष्ट युवक के हाथों से ऐसे छीन लयिा जैसे भेड़यिे के जबड़े से। गुंडे इधर-उधर भाग गए, और अग्लाइड्स शर्मदिगी के साथ अपने घर लौट गया। आगे क्या करना है यह न जानते हुए, और उसकी अशुद्ध वासना लगातार बढ़ती जा रही थी, उसने एक और दुष्ट कृत्य करने का नश्चिय कयिा: वह महान जादूगर और जादू-टोना करने वाले - मूर्तयिों के पुरोहति साइप्रयिन - के पास गया, और अपनी पीड़ा बताकर उससे मदद माँगी, और उसे बहुत सारा सोना और चाँदी देने का वादा कयिा। अगलाइडस की बात सुनकर, साइप्रयिन ने उसे सांत्वना दी और उसकी इच्छा पूरी करने का वादा कयिा।

उसने कहा, 'मैं यह सुनश्चिति करूँगा कि वह युवती स्वयं आपके प्रेम की कामना करे और उसके मन में आपके लिए आपके से भी अधकि तीव्र आकर्षण हो।'

इस प्रकार उस युवक को सांत्वना देने के बाद, साइप्रयिन ने उसे आशा से भरा हुआ विदा कयिा। फिर उसने अपनी गुप्त कला की किताबें निकालीं और एक अशुद्ध आत्मा को बुलाया, जिस पर उसे विश्वास था कि वह जल्द ही जस्टीना के हृदय में इस युवक के लिए जुनून जगा देगी। राक्षस ने खुशी-खुशी ऐसा करने का वादा कयिा और गर्व से बोला:

– यह मेरे लिए कोई कठिन कार्य नहीं है, क्योंकि मैंने कई बार शहरों को उजाड़ दिया है, दीवारें तोड़ दी हैं, घर नष्ट किए हैं, खून-खराबा और पितृहत्या का कारण बना हूँ, भाइयों और जीवनसाथियों के बीच वैमनस्य और महान क्रोध बोया है, और ब्रह्मचर्य का व्रत लेने वालों को पाप में धकेला है; पहाड़ों में रहने वाले, कठोर उपवास के आदी, और जिन्होंने कभी शरीर के बारे में सोचा भी नहीं था, उन संतों में मैंने कामवासना जगाई और उन्हें कामुक इच्छाओं में लिप्त होना सिखाया; मैंने उन लोगों को जो पाप से तौबा कर चुके थे और उससे मुंह मोड़ चुके थे, फिर से बुरे कर्मों की ओर मोड़ दिया; मैंने कई पवित्र लोगों को व्यभिचार में धकेल दिया। निश्चय ही मैं इस कन्या को अग्लाइडास से प्रेम करने के लिए राज़ी करने में असफल नहीं होऊँगा? मैं क्या कह रहा हूँ? मैं जल्द ही अपने प्रभाव को व्यवहार में दिखाऊंगा। यह लो, यह औषधि लो (उसने एक पात्र सौंपा जो किसी पदार्थ से भरा था) और इसे उस युवक को दे दो: उसे इसे जस्टिना के घर के चारों ओर छिड़कने दो, और तुम देखोगे कि जो मैंने कहा है वह सच होगा।

यह कहकर, राक्षस गायब हो गया। साइप्रयिन ने अग्लाइडा को बुलाया और उसे शैतान के पात्र की सामग्री से चुपके से जस्टिना के घर पर छिड़कने के लिए भेजा। जब यह कयिा गया, तो व्यभिचार का राक्षस कामुक वासना के जलते हुए तीरों के साथ वहाँ प्रवेश कर गया, ताकि वह उस युवती के हृदय को अश्लीलता से घायल कर दे और उसके शरीर को अशुद्ध इच्छा से प्रज्वलित कर दे।

जस्टिना की आदत थी कि वह हर रात प्रभु से प्रार्थना करती थी। और इसलिए, जब वह अपनी प्रथा के अनुसार, रात के तीसरे पहर में ईश्वर से प्रार्थना करने के लिए उठी, तो उसे अचानक अपने शरीर के भीतर एक हलचल महसूस हुई, कामुक वासना का एक तूफान और गेहेना की ज्वालाएँ। वह कुछ समय तक इस बेचैनी और आंतरिक संघर्ष की स्थिति में रही: उसके मन में अगालाइड्स नामक युवक का ख्याल आया, और उसके भीतर दुष्ट विचार उत्पन्न हुए। वह कन्या अपने आप पर स्तब्ध और लज्जित थी, उसे ऐसा लग रहा था मानो उसका खून किसी कड़ाही में उबल रहा हो; अब वह उन चीजों के बारे में सोचने लगी थी जिनसे वह हमेशा गंदगी की तरह घृणा करती थी। लेकिन, अपनी सूझबूझ की बदौलत, जस्टिना को एहसास हुआ कि उसके भीतर यह संघर्ष शैतान ने भड़काया था; उसने तुरंत क्रॉस के चिह्न के हथियार का सहारा लिया, एक भावुक प्रार्थना के साथ ईश्वर की शरण ली, और अपने दिल की गहराई से अपने वधू-वर, मसीह को पुकारा:

हे प्रभु मेरे परमेश्वर, यीशु मसीह! – देखो, मेरे शत्रु मेरे विरुद्ध उठ खड़े हुए हैं, उन्होंने मुझे फँसाने के लिए जाल बिछाया है, और उन्होंने मेरी आत्मा को थका दिया है। परन्तु मैं ने रात में तेरा नाम स्मरण कयिा और आनन्दित हुई, और अब, जब वे मुझ पर चढ़ाई करते हैं, मैं तुझ में शरण लेती हूँ और आशा करती हूँ कि मेरा शत्रु मुझ पर जय नहीं पाएगा। क्योंकि हे प्रभु मेरे परमेश्वर, आप जानते हैं कि मैं, आपकी दासी, ने अपने शरीर की पवित्रता को आपके लिए सुरक्षित रखा है और अपनी आत्मा को आपके हवाले कर दिया है। हे अच्छे चरवाहे, अपनी भेड़ को बचाएँ; मुझे उस जानवर के चारे के लिए न सौंपें जो मुझे निगलना चाहता है; मुझे अपने शरीर की दुष्ट वासनाओं पर विजय प्रदान करें।

लंबी और उत्कट प्रार्थना करने के बाद, पवित्र कुँवारी ने शत्रु को लज्जित कर दिया। उसकी प्रार्थना से पराजित होकर, वह लज्जा के मारे उससे भाग गया, और जस्टिना के शरीर और हृदय में एक बार फिर से शांति लौट आई; वासना की ज्वाला बुझ गई, संघर्ष समाप्त हो गया, और उसका उबलता हुआ खून शांत हो गया। जस्टिना ने ईश्वर की स्तुति की और विजय का गीत गाया। हालांकि, राक्षस उदास समाचार लेकर साइप्रयिन के पास लौटा कि वह कुछ भी हासिल नहीं कर सका था।

साइप्रयिन ने उससे पूछा कि वह उस कन्या पर विजय क्यों प्राप्त नहीं कर सका।

दानव ने, यद्यपि अनिच्छा से, सत्य का खुलासा कयिा:

'मैं उस पर विजय नहीं पा सका क्योंकि मैंने उसके ऊपर एक विशेष चिह्न देखा, जिसने मुझे भयभीत कर दिया।'

तब साइप्रयिन ने एक और अधिक दुष्ट राक्षस को बुलाया और उसे जस्टिना को बहकाने के लिए भेजा। वह गया और पहले वाले से भी कहीं ज़्यादा काम कयिा, और उस कन्या पर और भी ज़्यादा क्रोध से हमला कयिा। लेकिन उसने खुद को प्रार्थना के ज़ोर से सशस्त्र कयिा और एक और भी बड़ी उपलब्धि हासिल की: उसने बालों वाली कमीज़ पहनी और संयम और उपवास के ज़रिए अपने शरीर को कष्ट दिया, और केवल रोटी और पानी खाया। इस प्रकार अपने शरीर की कामनाओं पर काबू पाकर, जस्टिना ने शैतान को हरा दिया और उसे अपमानित होकर भगा दिया। वह, पहले वाले की

तरह, कुछ भी हासिल किए बिना, साइप्रियन के पास लौट आया। फिर साइप्रियन ने राक्षसों के एक प्रमुख को बुलाया, उसे उन राक्षसों की कमजोरी के बारे में बताया जिन्हें उसने भेजा था—जो एक भी कुंवारी को हराने में असमर्थ रहे थे—और उससे मदद मांगी। उसने पिछली राक्षसों को इस मामले में उनकी अक्षमता और कुंवारी के हृदय में वासना जगाने में उनकी असमर्थता के लिए बुरी तरह फटकारा। साइप्रियन को आश्वस्त करने और अन्य तरीकों से कुंवारी को बहकाने का वादा करने के बाद, राक्षसों के राजकुमार ने एक महिला का रूप धारण किया और जस्टिना के कक्ष में प्रवेश किया। और वह उसके साथ धार्मिक ढंग से बातचीत करने लगा, मानो वह उसके सदाचारी जीवन और पवित्रता के उदाहरण का अनुसरण करना चाहता हो। इस प्रकार बातचीत करते हुए, उसने उस कन्या से पूछा कि इतने कठोर जीवन और पवित्रता की रक्षा के लिए क्या पुरस्कार हो सकता है।

जस्टिना ने उत्तर दिया कि जो लोग पवित्रता से जीवन यापन करते हैं, उनका पुरस्कार महान और अकथनीय है, और यह अत्यंत आश्चर्यजनक है कि लोग स्वदूतों जैसी पवित्रता जैसे महान खजाने की बिल्कुल भी परवाह नहीं करते हैं। तब शैतान ने, अपनी निर्लज्जता प्रकट करते हुए, उसे चालाकी भरे शब्दों से बहकाना शुरू कर दिया:

'तो फिर, संसार कैसे अस्तित्व में रहता? लोग कैसे पैदा होते? क्योंकि अगर हव्वा ने अपनी पवित्रता बनाए रखी होती, तो मानव जाति कैसे बढ़ती? विवाह वास्तव में एक अच्छी चीज़ है, जिसे स्वयं ईश्वर ने स्थापित किया है; धर्मग्रंथ भी इसकी प्रशंसा करते हुए कहते हैं: *"सभी लोगों के लिए विवाह सम्माननीय हो, और विवाह का शयनपाट अशुद्ध न हो"* (इब्रानियों 13:4)। और क्या परमेश्वर के कई संत विवाहित नहीं थे, एक ऐसा मिलन जो प्रभु ने लोगों को सांत्वना के रूप में दिया, ताकि वे अपने बच्चों में आनन्दित हों और परमेश्वर की स्तुति करें?

ये शब्द सुनकर, जस्टिना ने उस धूर्त धोखेबाज़—शैतान—को पहचान लिया, और हव्वा से भी अधिक चतुराई से उस पर विजय प्राप्त की। बातचीत को आगे बढ़ाए बिना, उसने तुरंत प्रभु के क्रूस में शरण ली और उसका पवित्र चिह्न अपने चेहरे पर लगाया, और अपने हृदय को अपने वधू-वर, मसीह की ओर मोड़ लिया। और शैतान तुरंत ही गायब हो गया, और उसे पहले दो राक्षसों से भी अधिक अपमान झेलना पड़ा।

दानवों का घमंडी राजकुमार बड़ी उलझन में साइप्रियन के पास लौटा। साइप्रियन, यह महसूस करते हुए कि वह भी असफल हो गया था, ने शैतान से कहा:

'निश्चय ही तुम, एक शक्तिशाली राजकुमार और इस तरह के मामलों में किसी भी अन्य से अधिक कुशल, उस कन्या को हरा नहीं सकते थे? तुम में से कौन इस अजेय कन्या के हृदय के विरुद्ध कुछ कर सकता है? मुझे बताओ, वह किस हथियार से तुमसे लड़ती है, और वह तुम्हारी महान शक्ति को कैसे निष्प्रभावी कर देती है?'

ईश्वर की शक्ति से पराजित होकर, शैतान ने अनिच्छा से स्वीकार किया:

– हम क्रॉस के चिह्न को देख भी नहीं सकते, बल्कि उससे भागते हैं, क्योंकि वह हमें आग की तरह झुलसा देता है और दूर भगा देता है।

साइप्रियन, शैतान द्वारा अपमानित किए जाने से क्रोधित था और राक्षस का तिरस्कार करते हुए, कहा:

'तुम्हारी शक्ति इतनी महान है कि एक कमजोर कन्या भी तुम्हें हरा सकती है!'

तब शैतान, साइप्रियन को सांत्वना देने की इच्छा से, एक और प्रयास करने लगा: उसने जस्टीना का रूप धारण किया और अग्लाइडस के पास इस उम्मीद में गया कि वह उसे असली जस्टीना समझकर अपनी इच्छा पूरी कर लेगा, और इस प्रकार न तो उसकी दैवीय कमजोरी का खुलासा होगा और न ही साइप्रियन को शर्मिंदगी उठानी पड़ेगी। और इस प्रकार, जब राक्षस जस्टिना के भेष में अग्लाइडा के कमरे में प्रवेश किया, तो वह युवक, अकथनीय आनंद से भरकर, झपटकर खड़ा हो गया, उस कथित कन्या के पास दौड़ा, उसे गले लगा लिया और चूमने लगा, यह कहते हुए:

'कितना अद्भुत है कि तुम मेरे पास आई हो, सुंदर जस्टिना!'

लेकिन जैसे ही उस युवक ने 'जस्टीना' शब्द उच्चारित किया, वह राक्षस तुरंत ही गायब हो गया, क्योंकि वह जस्टीना का नाम भी सहन नहीं कर सका। वह युवक बहुत डरा हुआ था और साइप्रियन के पास दौड़कर गया, और उसे जो हुआ था वह सब बता दिया। तब साइप्रियन ने अपनी जादू-टोने से उसे एक पक्षी में बदल दिया और उसे हवा में उड़ने की शक्ति दे कर उसे जस्टिना के घर भेज दिया, और उसे खिड़की से उसके कमरे में घुसने की सलाह दी। राक्षस द्वारा हवा में उड़ाया गया, अग्लाइडास पक्षी के रूप में जस्टिना के घर पहुँचा और छत पर उतरने ही वाला था। उसी क्षण, जस्टिना ने संयोग से अपने शयनकक्ष की खिड़की से बाहर देखा। उसे देखते ही, राक्षस ने अग्लाइडस को छोड़ दिया और भाग गया। उसी समय, अग्लाइडस का भूतिया रूप—जिसमें वह एक पक्षी के रूप में प्रकट हुआ था—ओझल हो गया, और वह

युवक नीचे की ओर गरिते हुए लगभग खूनी मौत के मुंह में था। उसने अपने हाथों से छत के कनिारे को पकड़ लयिा और उससे चपिककर लटक गया; और अगर संत जस्टनिा की प्रार्थना से उसे ज़मीन पर नहीं उतारा गया होता, तो वह दुष्ट युवक गरिकर कुचल गया होता। इस प्रकार, कुछ भी हासलि कएि बनिा, वह युवक साइप्रयिन के पास लौटा और उसे अपनी बदकस्मिती के बारे में बताया। खुद को बेइज्ज़त हुआ देखकर, साइप्रयिन बहुत दुखी हुआ और उसने अपनी जादू-टोने की शक्ति पर भरोसा करते हुए खुद जस्टनिा के पास जाने का नश्चिय कयिा। वह खुद को एक महलिा और एक पक्षी दोनों में बदल लेता था, लेकनि इससे पहले कि वह जस्टनिा के घर के दरवाजे तक पहुँच पाता, सुंदर महलिा और पक्षी दोनों की भूतयिा आकृति गायब हो जाती, और वह दुख के साथ लौट आता।

इसके बाद, साइप्रयिन ने अपनी अपमान का बदला लेना शुरू कर दयिा और अपनी जादू-टोने के माध्यम से, जस्टनिा के घर और उसके सभी रश्तिेदारों, पड़ोसयिों और परचितिों के घरों पर वभिन्नि वपित्तयिाँ लाया, ठीक वैसे ही जैसे शैतान ने एक बार धर्मी अय्यूब पर कयिा था (अय्यूब 1:15–19, 2:7)। उसने उनके पशुओं को मार डाला, उनके सेवकों को फोड़ों से पीड़ति कर दयिा, और इस प्रकार उन्हें गहरे दुख में डुबो दयिा। उसने जस्टनिा को स्वयं बीमारी से ग्रस्त कर दयिा, जसिसे वह बस्तिर पर लेटी रही और उसकी माँ उस पर रोती रही। हालाँकि, जस्टनिा ने अपनी माँ को भवष्यिवक्ता दाऊद के वचनों से सांत्वना दी: *'मैं मरने नहीं, बल्कि जीने और यहोवा के कामों की घोषणा करने वाला हूँ'* (भजन संहति 117:17)।

ईश्वर की अनुमति से, साइप्रयिन ने न केवल जस्टीना और उसके परजिनों पर, बल्कि अपने अनयिंत्रति क्रोध और बड़ी अपमान के परणिामस्वरूप पूरे शहर पर भी वपित्तयिाँ ला दीं। जानवरों पर फोड़े नकिल आए और लोगों में वभिन्नि बीमारयिाँ फैल गईं; और, राक्षसों के काम के कारण, एक अफवाह फैली कि महिापुजारी साइप्रयिन, जस्टनिा द्वारा उसकी अवज्ञा करने के कारण शहर को दंडति कर रहा था। तब सबसे सम्मानति नागरकि जस्टीना के पास आए और, अपने गुस्से में, उन्होंने उससे सप्रियिन को और दुखी न करने और अग्लाइडास से शादी करने का आग्रह कयिा, ताकि उसकी वजह से पूरे शहर पर और भी बड़ी वपित्तयिाँ न आएं। हालाँकि, उन्होंने सभी को आश्वासन दयिा कि जल्द ही राक्षसों की मदद से साइप्रयिन द्वारा लाई गई सभी वपित्तयिाँ समाप्त हो जाएँगी। और ऐसा ही हुआ। जब संत जस्टनिा ने ईश्वर से मन लगाकर प्रार्थना की, तो सभी दैवीय पीड़ाएँ तुरंत समाप्त हो गईं; सभी के छाले ठीक हो गए और वे अपनी बीमारयिों से उबर गए। जब यह बदलाव हुआ, तो लोगों ने मसीह की महमिा की, जबकि उन्होंने साइप्रयिन और उसके जादुई करतबों का मज़ाक उड़ाया, जसिसे शर्म के मारे, वह अब सार्वजनकि रूप से अपना चेहरा नहीं दखिा सकता था और अपने परचितिों से भी मलिने से बचता था। यह मानते हुए कि सलीब के चह्नि और मसीह के नाम की शक्ति को कुछ भी परास्त नहीं कर सकता, साइप्रयिन होश में आया और उसने शैतान से कहा:

'हे सभी का वनिाशक और धोखेबाज़, सभी अशुद्धता और अपवत्रिता का स्रोत! अब मैं तेरी कमज़ोरी को पहचान गया हूँ। क्योंकि यदि तू सूली की छाया से भी डरता है और मसीह के नाम से काँपता है, तो तू तब क्या करेगा जब मसीह स्वयं तेरे ऊपर आएँगे? यदि तुम उन पर वजिय नहीं पा सकते जो क्रूस का चह्नि बनाते हैं, तो मसीह के हाथों से कसि छीनोगे? अब मैं समझ गया हूँ कि तुम कतिने नीच हो; तुम बदला लेने के भी काबलि नहीं हो! तुम्हारी बात मानकर, मैं, अपनी दुर्दशा में, बहक गया और तुम्हारी चालाकी पर वश्वास कर बैठा। मेरे पास से दूर हो जा, शापति, दूर हो जा—क्योंकि मुझे ईसाइयों से मेरी दया के लिए वनिती करनी है। मुझे धर्मपरायण लोगों की ओर मुड़ना है, ताकि वे मुझे वनिाश से बचाएँ और मेरे उद्धार का प्रबंध करें। दूर हो जा, मेरे पास से दूर हो जा, अधर्मी, सत्य के शत्रु, हर भलाई का वरिोधी और घृणति।

यह सुनकर, शैतान ने साइप्रयिन पर उसे मारने के लिए झपट लगाई, और उस पर हमला करके उसे पीटने और कुचलने लगा। कहीं भी कोई शरण न पाकर और यह न जानते हुए कि स्वयं की मदद कैसे करें या शैतान की क्रूर पकड़ से खुद को कैसे मुक्त करें, साइप्रयिन, जो अब मुश्कलि से जीवति था, को पवत्रि क्रॉस का चह्नि याद आया, जसिकी शक्ति से जस्टनिा ने शैतान की सारी ताकत का सामना कयिा था, और उसने पुकारा:

'हे जस्टनिा के ईश्वर, मेरी मदद करो!'

तब, उसने अपना हाथ उठाकर, क्रूस का चह्नि बनाया, और शैतान तुरंत धनुष से छोड़े गए तीर की तरह उससे दूर कूद गया। हम्मित जुटाकर, साइप्रयिन और नडिर हो गया और मसीह के नाम का स्मरण करते हुए, उसने खुद पर क्रूस का चह्नि बनाया और दृढ़ता से शैतान का वरिोध कयिा, उसे कोसते और डांटते हुए। हालाँकि, शैतान, क्रॉस के चह्नि और मसीह के नाम के भय से उससे दूरी पर खड़ा रहा और पास आने की हम्मित नहीं की, उसने साइप्रयिन को हर तरह से धमकाते हुए कहा:

'मसीह तुम्हें मेरे हाथों से नहीं बचाएगा!'

तब, साइप्रयिन पर लंबे और प्रचंड हमलों के बाद, दानव सिंह की तरह गरजा और पीछे हट गया।

तब साइप्रयिन ने अपनी सभी जादू-टोने की किताबें उठाईं और ईसाई बिशप अंफमिस के पास गया। बिशप के पैरों पर गिरकर उसने उनसे दया करने और उस पर पवित्र बपतिस्मा करने का आग्रह किया। यह जानते हुए कि साइप्रयिन एक महान जादूगर था, जिसे सभी डरते थे, बिशप ने सोचा कि वह किसी छल के साथ आया है, और इसलिए उन्होंने इनकार कर दिया, कहते हुए:

'तुम मूर्तिपूजकों के बीच बहुत बुराई फैलाते हो; ईसाइयों को चैन से रहने दो, नहीं तो तुम स्वयं जल्द ही नष्ट हो जाओगे।'

तब साइप्रयिन, आँखों में आँसू लिए, सब कुछ बिशप के सामने कबूल कर लिया और अपनी किताबें जलाने के लिए सौंप दीं। उसकी विनम्रता देखकर, बिशप ने उसे उपदेश दिया और पवित्र विश्वास में उसका मार्गदर्शन किया, और फिर उसे बपतिस्मा के लिए तैयार होने का आदेश दिया; जहाँ तक उसकी किताबों का सवाल है, उसने उन्हें सभी विश्वासियों की मौजूदगी में जला दिया।

एक पछतावा भरे हृदय से बिशप से विदा लेकर, साइप्रयिन ने अपने पापों पर रोया, अपने सिर पर राख छिड़क ली, और सच्चे ईश्वर से अपने अपराधों से शुद्ध होने का आह्वान करते हुए, सच्चे मन से पश्चाताप किया। अगले दिन जब वह चर्च आया, तो वह विश्वासियों के बीच खड़ा होकर आनंदित भक्ति के साथ परमेश्वर के वचन को सुनने लगा। लेकिन जब डिकन ने कैटेकुमेन (बपतिस्मा की तैयारी कर रहे लोगों) को जाने का आदेश देते हुए पुकारा: 'कैटेकुमेन, बाहर जाओ'[6728] – जबकि कुछ लोग पहले ही जा चुके थे, साइप्रयिन ने जाने से इनकार कर दिया और डिकन से कहा:

'मैं मसीह का सेवक हूँ; मुझे यहाँ से भगाओ मत।'

डीकन ने उत्तर दिया:

'चूंकि आपने अभी तक पवित्र बपतिस्मा नहीं लिया है, इसलिए आपको चर्च छोड़ना होगा।'

इस पर साइप्रयिन ने उत्तर दिया:

'जिस प्रकार मसीह जीवित हैं, मेरे ईश्वर, जिन्होंने मुझे शैतान से बचाया, कुंवारी जस्टीना को पवित्रता में संरक्षित रखा, और मुझ पर दया दिखाई; आप मुझे तब तक चर्च से बाहर नहीं निकालेंगे जब तक मैं एक पूर्ण ईसाई नहीं बन जाता।'

दीकन ने इसकी सूचना बिशप को दी, और बिशप ने, ईसाई धर्म के प्रति साइप्रयिन के उत्साह और भक्ति को देखकर, उसे अपनी उपस्थिति में बुलाया और तुरंत ही उसे पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम पर बपतिस्मा दे दिया।

यह जानकर, संत जस्टिना ने ईश्वर का धन्यवाद किया, गरीबों में बहुत दान दिया, और चर्च में एक भेंट चढ़ाई। जहाँ तक साइप्रयिन की बात है, आठवें दिन बिशप ने उन्हें एक रीडर नियुक्त किया; बीसवें दिन, एक सबडीकन; तीसरे दिन, एक डीकन; और एक साल बाद, उन्होंने उन्हें एक पादरी के रूप में अभिषेक किया। साइप्रयिन ने अपने जीवन को पूरी तरह से बदल दिया; प्रत्येक बीतते दिन वह अपने पुण्य कार्यों को बढ़ाता गया और, अपने पूर्व दुष्ट कर्मों पर लगातार शोक करते हुए, खुद को सुधारता गया और एक सद्गुण से दूसरे सद्गुण तक प्रगति करता गया। जल्द ही उसे बिशप का पद दिया गया और, इस पद पर, उसने इतना पवित्र जीवन जिया कि उसकी तुलना कई महान संतों से की गई; साथ ही, उन्होंने अपने सुपुर्द की गई मसीह की भेड़ों का उत्साहपूर्वक ध्यान रखा। उन्होंने संत जस्टीना, जो एक कुंवारी थीं, को एक डीकोनेस के रूप में नियुक्त किया, और बाद में उन्हें एक मठ का प्रभार सौंपा, तथा अन्य ईसाई कुंवारी लड़कियों के लिए उन्हें अधीक्षक (एबेस) नियुक्त किया। अपने आचरण और शिक्षा के माध्यम से, उन्होंने कई मूर्तिपूजकों को धर्मांतरित किया और उन्हें मसीह के चर्च में शामिल किया। इस प्रकार, उस भूमि में मूर्तिपूजा समाप्त होने लगी, और मसीह की महिमा बढ़ी।

संत साइप्रयिन के तपस्वी जीवन और ईसाई धर्म तथा मानव आत्माओं के मोक्ष के प्रति उनकी चिंता को देखकर, शैतान ने उन पर दाँत पीसे और मूर्तिपूजकों को पूर्वी भूमि के शासक के सामने उनकी निंदा करने के लिए उकसाया, यह दावा करते हुए कि उन्होंने देवताओं को शर्मिंदा किया था, कई लोगों को उनसे दूर कर दिया था, और मसीह की महिमा

[6728] प्रारंभिक चर्च में, 'कैटेकुमेन' शब्द उन वयस्कों के लिए प्रयोग किया जाता था जो बपतिस्मा लेना चाहते थे और चर्च की शिक्षाओं से खुद को परिचित करके इसकी तैयारी कर रहे थे। यद्यपि उन्हें पवित्र धर्मग्रंथों और उपदेशों को सुनने के लिए चर्च में प्रवेश करने की, और यहां तक कि अनुष्ठान के प्रारंभ में (कैटेकुमेन का अनुष्ठान) उपस्थिति रहने की भी अनुमति थी, उन्हें धर्मविधि के सबसे महत्वपूर्ण और आवश्यक भाग - विश्वासियों की धर्मविधि - के आरंभ से ठीक पहले चर्च छोड़ना आवश्यक था। यह बात उन्हें डिकन द्वारा एक उद्घोषणा के माध्यम से जोरदार तरीके से बताई जाती थी, जो आज भी चर्च में धर्मविधि के आयोजन के दौरान संरक्षित है।

की थी, जो उनके देवताओं का विरोधी था। और इस प्रकार बहुत से दुष्ट पुरुष उन प्रदेशों के शासक यूटोलमियस के पास आए, और उन्होंने साइप्रियन और जस्टीना पर ईश्वर और राजा दोनों के विरोधी होने का आरोप लगाते हुए उनकी बदनामी की, और सभी अधिकारियों के सामने यह आरोप लगाया कि वे लोगों को भ्रमित कर रहे थे, उन्हें धोखा दे रहे थे और उन्हें रास्ते से भटका रहे थे, तथा उन्हें सूली पर चढ़ाए गए मसीह की पूजा करने के लिए उकसा रहे थे। इसके साथ ही, उन्होंने राज्यपाल से इस अपराध के लिए साइप्रियन और जस्टीना को मृत्युदंड देने का अनुरोध किया। उनकी विनती सुनकर, यूटोलमियस ने साइप्रियन और जस्टिना को गिरफ्तार करके जेल में डालने का आदेश दिया। फिर, दमिश्क के लिए रवाना होते समय, वह उन्हें मुकदमे के लिए अपने साथ ले गया। जब मसीह के बंदी, साइप्रियन और जस्टिना, उसे न्याय के लिए प्रस्तुत किए गए, तो उसने साइप्रियन से पूछा:

'तुमने अपने पूर्व गौरवशाली कार्यों से मुँह क्यों मोड़ लिया, जब तुम देवताओं के एक प्रसिद्ध सेवक थे और कई लोगों को उनकी ओर ले गए थे?'

संत साइप्रियन ने शासक को बताया कि कैसे वह राक्षसों की कमजोरी और छल को पहचानने लगा था और मसीह की शक्ति को समझ गया था, जिनसे राक्षस डरते हैं और पवित्र क्रूस के चिह्न से कांपते हुए भाग जाते हैं; उसने मसीह में अपने परिवर्तन का कारण भी समझाया, जिसके लिए वह मरने को तैयार था। यातना देने वाले ने साइप्रियन के शब्दों को गंभीरता से नहीं लिया , लेकिन, उनके जवाब देने में असमर्थ होकर, उसने संत को फांसी देने और उनके शरीर की खाल उतारने का आदेश दिया, और संत जस्टिना को होठों और आँखों पर प्रहार करने का आदेश दिया। अपनी लंबी यातना के दौरान, उन्होंने लगातार मसीह की गवाही दी और सब कुछ कृतज्ञता के साथ सहन किया। फिर यातनाकर्ता ने उन्हें कैद कर दिया और कोमल उपदेशों से उन्हें मूर्तिपूजा पर लौटने के लिए मनाने की कोशिश की। जब वह उन्हें मनाने में असमर्थ रहा, तो उसने उन्हें एक कड़ाही में फेंकने का आदेश दिया; लेकिन उबलती हुई कड़ाही ने उन्हें कोई नुकसान नहीं पहुँचाया, और उन्होंने ईश्वर की स्तुति की जैसे कि वे किसी ठंडी जगह पर हों। यह देखकर, अथानासियस नामक एक मूर्तिपूजक पुरोहित ने कहा:

'अस्क्लेपियस देवता के नाम पर[6729] , मैं भी इस आग में कूदूँगा और उन जादूगरों को शर्मिंदा करूँगा।'

लेकिन आग लगते ही उसकी तुरंत मौत हो गई। यह देखकर, यातना देने वाला भयभीत हो गया और अब उन्हें न्याय देने की इच्छा न रखते हुए, उसने शहीदों को निकोमेडिया के राज्यपाल क्लॉडियस के पास भेज दिया[6730] , और उनके साथ जो कुछ भी हुआ था, उसका पूरा विवरण दिया। इस राज्यपाल ने उन्हें तलवार से सिर कलम करने की सजा सुनाई। जब उन्हें फांसी के स्थान पर ले जाया गया, तो साइप्रियन ने प्रार्थना करने के लिए थोड़ा समय मांगा, ताकि जस्टीना को पहले फांसी दी जाए: उसे डर था कि जस्टीना उसकी मृत्यु का दृश्य देखकर डर जाएगी। उसने, हालांकि, खुशी-खुशी तलवार के नीचे अपना सिर झुका दिया और अपने वधू-वर, मसीह के पास चली गई। इन शहीदों की अन्यायपूर्ण मृत्यु को देखकर, वहाँ मौजूद एक व्यक्ति थियोक्टिस्ट को उनके लिए बहुत दुख हुआ; ईश्वर की ओर उसका हृदय प्रेरित होकर, वह संत साइप्रियन के पैरों पर गिर पड़ा, उन्हें चूमा, और स्वयं को एक ईसाई घोषित कर दिया। साइप्रियन के साथ-साथ, उसे भी तुरंत सिर कलम करने की सज़ा सुनाई गई। इस प्रकार उन्होंने अपनी आत्माएँ ईश्वर के हाथों में सौंप दीं; जबकि उनके शरीर छह दिनों तक बिना दफ़नाए पड़े रहे। वहाँ मौजूद कुछ यात्रियों ने चोरी-छिपे उन्हें उठाया और रोम ले गए, जहाँ उन्हें क्लॉडियस सीज़र[6731] की एक रिश्तेदार, रूफ़िना नाम की एक सदाचारी और पवित्र महिला के हवाले कर दिया गया। उन्होंने मसीह के पवित्र शहीदों: साइप्रियन, जस्टीना और थियोकटिस्ट के शरीरों को सम्मानपूर्वक दफ़नाया। उनकी कब्रों पर, विश्वास के साथ आने वालों में कई चमत्कार हुए। ईश्वर उनकी प्रार्थनाओं के माध्यम से हमारे शारीरिक और आध्यात्मिक रोगों को ठीक करें!

[6729] एस्कलेपियस, या एस्कुलेपियस, चिकित्सा के ग्रीक-रोमन देवता थे।

[6730] निकोमेडिया – एशिया माइनर का एक शहर। – प्राचीन, समृद्ध निकोमेडिया के कई खंडहर आज भी मौजूद हैं, जो इसके गौरवशाली अतीत की गवाही देते हैं।

[6731] रोमन सम्राट क्लॉडियस द्वितीय ने 268 से 270 तक शासन किया। – संतों साइप्रियन, जस्टिना और थियोक्टिस्टस की शहादत लगभग 268 ईस्वी में हुई।

कॉन्टाकयिन, स्वर 1:

भूत-प्रेत की वद्या को त्यागकर दव्यि ज्ञान की ओर मुड़ने के बाद, हे ईश्वर-ज्ञानी, आप संसार में सबसे बुद्धमिान चकित्सिक के रूप में प्रकट हुए, और आप सप्रियिन और जस्टीना का सम्मान करने वालों को आरोग्य प्रदान करते हैं: मानवता के प्रेमी, प्रभु से उनके साथ प्रार्थना करें, कि वे हमारी आत्माओं को बचाएँ।

मसीह के लिए मूर्ख संत एंड्रयू का जीवन

2 अक्टूबर को स्मरणोत्सव

ग्रीक सम्राट लयिो द ग्रेट एंड वाइज़[6732] , जो सम्राट बेसलि द मेसेडोनयिन[6733] के पुत्र थे, के शासनकाल के दौरान, कॉन्स्टेंटनिोपल में थयिोग्नोस्टस नाम का एक व्यक्ति रहता था। उसने कई दास खरीदे, जनिमें एंड्रयू नाम का स्लाव मूल का एक युवा लड़का भी था[6734] । यह युवक सुंदर था और अपने अच्छे चरित्र के लिए वशिष्टि था। थयिोग्नोस्ट उसे अपने अन्य दासों से भी अधकि प्यार करने लगा, उसे अपना सबसे भरोसेमंद सेवक नयिुक्त कयिा, और उसे पवत्रि ग्रंथों की शक्षिा के लिए भेजा। पवत्रि शास्त्रों का अध्ययन करने के बाद, एंड्रयू अक्सर चर्चों में जाता था, ईश्वर से प्रार्थना करता था और पवत्रि ग्रंथों को पढ़ता था। एक रात, जब वह प्रार्थना कर रहा था, तो दुष्ट शैतान ने यह देखकर इस पुण्य कार्य से ईर्ष्या की और उस कमरे के दरवाजे पर जोर-जोर से धक्का देने लगा जहाँ वह युवक था। एंड्रयू भयभीत हो गया, उसने प्रार्थना करना बंद कर दयिा, जल्दी से अपने बस्तिर पर लेट गया और खुद को एक बकरी की खाल से ढक लयिा। यह देखकर शैतान प्रसन्न हुआ और एक दूसरे दानव से बोला:

'क्या तुम इस युवक को देखते हो? अभी कुछ ही समय पहले वह सेम खा रहा था, और अब देखो—वह पहले ही हमारे खलिाफ हथयिार बेल रहा है!'

यह कहकर शैतान गायब हो गया। परन्तु धन्य व्यक्ति डर के मारे गहरी नींद में पड़ गया और उसे अपनी नींद में यह दर्शन हुआ। उसे ऐसा प्रतीत हुआ मानो वह एक बड़े चौराहे पर हो, जसिके एक तरफ़ इथयिोपयिाई लोगों की भीड़ खड़ी थी, और दूसरी तरफ़ सफेद वस्त्रों में लबिड़े पवत्रि पुरुषों की भीड़। दोनों पक्षों के बीच, मानो एक प्रतस्पिर्धा और संघर्ष चल रहा था। अफ्रीकयिों ने, अपने पक्ष में एक काले वशिालकाय को खड़ा करके, गर्व से उन सफेद वस्त्रधारी लोगों को चुनौती दी कि वे अपने बीच से एक पहलवान को आगे लाएँ जो उनके काले अफ्रीकी, जो उनकी अनगनित सेना का सेनापति था, का सामना कर सके। गहरे रंग के इथयिोपयिाई अपनी ताकत का घमंड कर रहे थे, लेकनि सफेद वस्त्रधारी पुरुषों ने कोई जवाब नहीं दयिा। धन्य एंड्रयू वहाँ खड़े होकर यह देखने के लिए उत्सुक थे कि इस भयानक प्रतद्विंद्वी का सामना करने की हम्मित कौन करेगा। और फरि उन्होंने एक सुंदर युवक को ऊपर से उतरते हुए देखा, जसिके हाथों में तीन मुकुट थे: उनमें से एक शुद्ध सोने और कीमती पत्थरों से सुसज्जति था, दूसरा बड़े, चमकते मोतयिों से, और तीसरा—सबसे बड़ा—ईश्वर के स्वर्ग के अमर सफेद और लाल फूलों और टहनयिों से बुना हुआ था। ये मालाएँ इतनी अद्भुत सुंदरता वाली थीं कि मानव मन इसकी कल्पना भी नहीं कर सकता, और न ही इसे मानव भाषा में वर्णति कयिा जा सकता है। यह देखकर एंड्रयू ने सोचा कि वह उन तीन मालाओं में से कम से कम एक कैसे प्राप्त कर सकता है। प्रकट हुए उस युवक के पास जाकर, उसने कहा:

'कृपया बताइए, क्या आप ये मालाएँ बेच रहे हैं? यद्यपि मैं स्वयं इन्हें नहीं खरीद सकता, थोड़ी देर मेरा इंतज़ार कीजिए; मैं जाकर अपने मालकि से कहूँगा—वह इन मालाओं के लिए आप जो चाहें, उतनी कीमत दे देंगे।'

उस युवक ने, जसिका चेहरा प्रसन्नता से खलि उठा था, उससे कहा:

'मेरी बात मानो, मेरे प्रयि, कि यदि तुम दुनयिा का सारा सोना भी ले आओ, तो भी मैं इन मालाओं का एक भी फूल तुम्हें या कसिी और को नहीं बेचूँगा, क्योंकि ये मालाएँ मसीह के स्वर्गीय खजाने से बुनी गई हैं, न कि इस व्यर्थ संसार की

[6732] बाइज़ेंटाइन सम्राट लयिो VI द वाइज़ ने 886 से 912 तक शासन कयिा।

[6733] उनके पति, बेसलि द मेसेडोनयिन, ने 867 से 886 तक शासन कयिा और तथाकथति मेसेडोनयिन राजवंश की स्थापना की।

[6734] सभी स्लाव संतों की जीवनी-सूचयिों में, मसीह के लिए मूर्ख संत एंड्रयू को एक स्लाव बताया गया है; ग्रीक मूल के अनुसार, वह एक सीथयिन हैं; लेकनि लंबे समय तक ग्रीक लोगों ने गलती से इस शब्द को पूर्वी स्लावों पर भी लागू कयिा, उन्हें उन जंगली खानाबदोश लोगों के साथ भ्रमति करते हुए जन्हिोंने पहले पूर्वी यूरोप में नविास कयिा था - सीथयिनों के साथ।

शोभा से। ये उन लोगों को प्रदान की जाती हैं जो उन काले इथियोपियाई लोगों को हराते हैं। यदि तुम एक नहीं, बल्कि तीनों ही मालाएँ प्राप्त करना चाहते हो, तो उस काले इथियोपियाई से एक-एक करके लड़ो, और जब तुम उसे हरा दोगे, तो तुम मुझसे वे सभी मालाएँ ले लेना जो तुम देख रहे हो।

यह सुनकर एंड्रयू दृढ़ संकल्प से भर गया और उस युवक से कहा:

'मेरा विश्वास करो, मैं वैसा ही करूँगा जैसा आपने कहा है; बस मुझे इस काम की तरकीबें सिखा दीजिए।'

उस युवक ने कहा:

'क्या तुम्हें नहीं पता कि उसकी चालाकी किसमें है? क्या इथियोपियाई दिखने में भयानक और डरावने नहीं होते? – फिर भी वे ताकत में कमजोर होते हैं। उसके विशाल कद और भयानक निगाहों से मत डरो: वह मुरझाई हुई घास की तरह कमजोर और सड़ा हुआ है!'

इन शब्दों से आंद्रेई के संकल्प को मजबूत करने के बाद, उस सुंदर युवक ने उसे इथियोपियाई से लड़ना सिखाना शुरू कर दिया।

उसने कहा:

'जब इथियोपियाई तुम्हें पकड़ ले और तुमसे कुश्ती करने लगे, तो डरना मत, बल्कि क्रॉस के चिह्न से उससे जुझो, और तुम ईश्वर की सहायता देखोगे।'

उसके बाद, धन्य व्यक्ति आगे बढ़ा और ऊँचे स्वर में इथियोपियाई से पुकारा:

'आओ और लड़ो!'

एक धमकी भरे अंदाज में, इथियोपियाई आगे बढ़ा, एंड्रयू को पकड़ लिया और बहुत देर तक उसे इधर-उधर फेंकता रहा। इथियोपियाई तालियाँ बजाने लगे, जबकि सफेद वस्त्र पहने हुए लोग पीले पड़ गए, क्योंकि उन्हें डर था कि यह इथियोपियाई एंड्रयू को जमीन पर पटक सकता है। एंड्रयू पहले से ही इथियोपियाई के दबाव में आ रहा था, लेकिन, होश संभालते हुए, उसने क्रॉस के चिह्न में उस पर झपट लगाई। वह राक्षस एक विशाल काटे हुए पेड़ की तरह धड़ाम से गिर पड़ा; गिरते समय, उसका माथा एक पत्थर से टकराया और वह चिल्लाया: 'हाय, हाय!' हल्के रंग के चोगा पहने हुए लोग बहुत प्रसन्न हो गए। उन्होंने एंड्रयू को अपने हाथों पर उठा लिया, उसे चूमना शुरू कर दिया, और इथियोपियाई पर उसकी जीत का जश्न मनाया।

तब काले योद्धा, गहराई से अपमानित होकर, मुड़कर भाग गए, जबकि सुंदर युवक ने एंड्रयू को ताज सौंपे और, उसे चूमने के बाद, कहा:

'शांति से जाओ! इस समय से, तुम हमारे मित्र और भाई हो। तो जाओ, और सद्गुण का पराक्रम करो: मेरे लिए नग्न और एक पवित्र मूर्ख बनो[6735] , और तुम मेरे राज्य के दिन कई आशीर्वादों के सहभागी के रूप में प्रकट होओगे।'

उस सुंदर युवक से ये शब्द सुनकर, धन्य एंड्रयू अपनी नींद से जागा और उस असाधारण सपने पर चकित हो गया। उस समय से, वह मसीह के लिए एक पवित्र मूर्ख बन गया।

अगले दिन, जागने पर, उन्होंने प्रार्थना की, एक चाकू लिया, और कुएँ पर चले गए; वहाँ उन्होंने अपने कपड़े उतार लिए और, पागल होने का नाटक करते हुए, उन्हें टुकड़े-टुकड़े कर दिया। सुबह-सुबह, रसोइया पानी के लिए कुएँ पर आया और एंड्रयू को जैसे उन्माद में देखकर, जाकर अपने मालकिन को इस बारे में बता दिया। एंड्रयू के लिए दुखी होकर, उनका मालकिन उसके पास गया और उसे होश खोए हुए तथा बकवास करते हुए पाया। यह सोचकर कि एंड्रयू पर किसी दानव का साया है, उसने उसके हाथों में लोहे की बेड़ियाँ डाल दीं और उसे सेंट अनास्तासिया के चर्च में ले जाने का आदेश दिया। पूरे दिन, एंड्रयू ने पागल होने का नाटक किया, लेकिन रात में उसने ईश्वर और सेंट अनास्तासिया से प्रार्थना की। हालाँकि,

---

[6735] 'मसीह के लिए मूर्ख' का शाब्दिक अर्थ पागलपन है। – 'मसीह के लिए मूर्ख' होना ईसाई तपस्या के एक विशेष, सर्वोच्च रूप का प्रतिनिधित्व करता है। भगवान के प्रति तीव्र उत्साह और गहरे प्रेम से प्रेरित होकर, मसीह के लिए पवित्र मूर्खों ने, अन्य सभी कष्टों और आत्म-त्याग से संतुष्ट हुए बिना, सांसारिक प्राणियों में मनुष्य की सबसे बड़ी विशेषता - तर्क का सामान्य उपयोग - का परित्याग कर दिया, और स्वेच्छा से एक ऐसे पागल का रूप धारण कर लिया जिसे न तो शिष्टाचार का ज्ञान है और न ही शर्म की भावना, – जो कभी-कभी, प्रतीत होता है, खुद को प्रलोभनपूर्ण व्यवहार में संलग्न होने देते थे। [...] – सभी कठिनाइयों के बावजूद, पवित्र मूर्खता के इस कारनामे के लिए इन पवित्र तपस्वियों से उच्च स्तर की बुद्धिमत्ता की मांग होती थी, ताकि वे अपनी बदनामी को ईश्वर की महिमा और अपने पड़ोसियों के लिए शिक्षाप्रद बना सकें, यह सुनिश्चित करते हुए कि जो हास्यास्पद था उसमें कुछ भी पापपूर्ण न हो, और जो अश्लील प्रतीत होता था उसमें दूसरों के लिए कुछ भी प्रलोभनपूर्ण या आपत्तिजनक न हो। – पवित्र मूर्खता के पहले संन्यासी, जिन्होंने मसीह की घोषणा की, चौथी शताब्दी के उत्तरार्ध के दौरान, प्रारंभिक संन्यासवाद के पालने - मिस्र - में बहुत जल्दी प्रकट हुए।

मन ही मन वह इस बात पर विचार कर रहा था कि जिस काम को उसने हाथ में लिया था, वह ईश्वर को भाता है या नहीं, और वह इस बारे में कोई संकेत प्राप्त करना चाहता था।

जब वह इस पर विचार कर रहा था, तो उसे एक दर्शन हुआ जिसमें उसने पाँच महिलाएँ और एक वृद्ध व्यक्ति को देखा, जिसका मुखमंडल प्रकाशमान था, जो घूम-घूम कर बीमारों को ठीक कर रहे थे और उनसे मिलने जा रहे थे; वे एंड्रयू के पास भी आए, और वृद्ध व्यक्ति ने सबसे बड़ी महिला से कहा:

'लेडी अनास्तासिया! आप उसे क्यों नहीं ठीक करतीं?'

'स्वामी!' उस महिला ने उत्तर दिया। 'उसे उसी ने चंगा कर दिया है जिसने उससे कहा था: "मेरे लिए एक पवित्र मूर्ख बन जा, और मेरे राज्य के दिन तू बहुत सारे आशीर्वादों में सहभागी होगा।" उसे चंगा करने की कोई आवश्यकता नहीं है।'

यह कहकर वे चर्च में चले गए, जहाँ से वे वापस नहीं आए, हालाँकि एंड्रयू तब तक उन्हें जाते हुए देखता रहा जब तक कि प्रातःकालीन प्रार्थना के लिए घंटियाँ बजने लगीं। तब उस धन्य व्यक्ति ने, यह जानकर कि उसका तपस्या का प्रयास ईश्वर को प्रसन्न कर रहा था, आत्मा में आनंदित होकर और भी अधिक लगन से परिश्रम करना शुरू कर दिया – रात में प्रार्थना में, और दिन में पवित्र मूर्खता के कार्यों में।

एक रात, धन्य एंड्रयू, अपनी आदत के अनुसार, अपने हृदय की गहराई से ईश्वर और शहीद संत अनास्तासिया से प्रार्थना कर रहे थे। और देखो, शैतान एक स्पष्ट रूप में, राक्षसों की एक सेना के साथ, एक कुल्हाड़ी लेकर उसके पास आया; अन्य राक्षसों ने चाकू, लाठियाँ, खंभे और भाले उठा रखे थे, मानो वे उस धन्य व्यक्ति को मारने का इरादा रखते हों। पहले वाला इथियोपियाई भी उसी रूप में प्रकट हुआ जैसा वह एंड्रयू से लड़ा था, और दूर से ही उस पर गर्राया। संत पर झपटते हुए, उसने अपने हाथों में पकड़े कुल्हाड़ी से उन्हें दो भागों में चीरने की कोशिश की। बाकी सभी राक्षस भी उसके पीछे टूट पड़े। हालांकि, संत ने आँसुओं से भरे हाथ उठाकर प्रभु से पुकार लगाई:

'उस आत्मा को जानवरों के हवाले न करें जो आपको महिमा और सम्मान देती है!'

तब उसने फिर पुकारा:

'संत जॉन द थियोलोजियन, मेरी मदद करो!'

और फिर गरज हुई, लोगों की एक भीड़ प्रकट हुई, और एक सम्मानित वृद्ध, जिसका चेहरा सूर्य से भी अधिक तेजस्वी था, सेवकों की एक बड़ी भीड़ के साथ आगे आए। उन्होंने अपने साथियों से कठोरता और गंभीरता से कहा:

'दरवाज़े बंद कर दो, ताकि इनमें से कोई भी न बच सके!'

तुरंत ही फाटक बंद हो गए, और सभी इथियोपियाई पकड़े गए। और एंड्रयू ने एक दानव को अपने साथी से गुप्त रूप से फुसफुसाते हुए सुना:

'धिक् है उस घड़ी पर जब हम भटक गए थे: क्योंकि जॉन निर्दयी है और हमारा क्रूरता से उत्पीड़न करने का इरादा रखता है!'

तब संत जॉन ने अपने साथ आए सफेद वस्त्र पहने पुरुषों को एंड्रयू की गर्दन से लोहे की बेड़ियाँ हटाने का आदेश दिया। फिर वह द्वार के बाहर खड़ा हो गया और कहा:

'मुझे एक-एक करके इथियोपियाई लाओ।'

उन्होंने पहले दानव को लाया और उसे जमीन पर लिटा दिया। एक जंजीर लेकर, प्रेरित ने उसे तीन भागों में मोड़ा और दानव पर सौ बार वार किया। दानव, एक मनुष्य की तरह, चिल्लाया:

'मुझ पर दया करो!'

इसके बाद, एक और राक्षस को पेट के बल लिटाया गया, और उसे भी मारा गया; फिर एक तीसरा – और उसे भी उतने ही प्रहार मिले। जिन प्रहारों से प्रभु ने राक्षसों को मारा वे मायावी नहीं थे, बल्कि वास्तविक दंड थे जो दैवीय जाति पर पीड़ा डालते हैं। जब सभी इथियोपियाई इस प्रकार दंडित हो गए, तो जॉन ने उनसे कहा:

'जाओ और अपने पिता, शैतान को, तुम पर लगे घाव दिखाओ – उसे देखने दो कि क्या यह उसे भाता है!'

सफेद वस्त्र धारण किए हुए लोगों के चले जाने और राक्षसों के अदृश्य हो जाने के बाद, वह आदरणीय वृद्ध परमेश्वर के सेवक, एंड्रयू के पास आया, और उसकी गर्दन में बेड़ियाँ डालकर उससे कहा:

'तुम देखो कि मैं तुम्हारी सहायता के लिए कितनी जल्दी आया हूँ; क्योंकि मैं तुम्हारी बहुत परवाह करता हूँ, क्योंकि परमेश्वर ने तुम्हारी देखभाल की जिम्मेदारी मुझे सौंपी है। इसलिए धैर्य रखो: जल्द ही तुम्हें मुक्त कर दिया जाएगा और तुम जहाँ चाहो, अपनी मर्जी से जा सकोगे।'

एंड्रयू ने कहा, 'हे प्रभु, आप कौन हैं?'

बर्खुरदार ने उत्तर दिया:

'मैं वही हूँ जो प्रभु की छाती पर सिर रखकर लेटा था (यूहन्ना 13:22, 21:20)।'

यह कहकर, वह बिजली की चमक की तरह चमका और उस युवक की दृष्टि से ओझल हो गया। अपनी ओर से, धन्य एंड्रयू ने ईश्वर की स्तुति की कि उन्होंने अपने प्रिय शिष्य को उसकी सहायता के लिए भेजा।

संत योहन द थियोलोजियन के प्रकट होने, उनके साथ वार्तालाप, और राक्षसों द्वारा दी गई यातनाओं के बाद, धन्य एंड्रयू, जो अभी भी बंधा हुआ था, सोने की इच्छा से लेट गया – और उसी क्षण वह समाधि की अवस्था में चला गया। उसने खुद को शाही कक्षों में देखा। महान महिमा के साथ सिंहासन पर राजा विराजमान थे, जिन्होंने एंड्रयू को अपने पास बुलाया और पूछा:

'क्या तुम पूरे हृदय से मेरी सेवा करना चाहते हो?'

एंड्रयू ने उत्तर दिया:

'मैं चाहता हूँ, हे प्रभु!'

राजा ने उसे चखने के लिए कुछ बहुत कड़वा दिया और ऐसा करते हुए उससे कहा:

'इस संसार में मेरी सेवा करने वालों का यही दुखद मार्ग है।'

इसके बाद, उन्होंने एंड्रयू को चखने के लिए कुछ दिया जो बर्फ से भी अधिक सफेद और मन्ना से भी अधिक मीठा था। उसे चखने के बाद, एंड्रयू प्रसन्न हो गया और पहले निवाले की कड़वाहट भूल गया। और राजा ने उससे कहा:

'ऐसा ही भोजन मैं उन लोगों के लिए प्रदान करता हूँ जो मेरी सेवा करते हैं और अंत तक साहसपूर्वक सहन करते हैं। और तुम भी, जैसा तुमने शुरू किया था, वैसे ही साहसपूर्वक अपना पराक्रम पूरा करो: क्योंकि इस जीवन में थोड़ा सा दुख सहने के बाद, तुम अनंत जीवन में अनंतकाल तक निवास करोगे।'

जागने पर, एंड्रयू को एहसास हुआ कि उसने जो पहला भोजन देखा था—वह कड़वा—इस दुनिया में धैर्य का प्रतीक था, जबकि अंतिम—वह मीठा—शाश्वत जीवन का प्रतीक था।

उसके बाद, एंड्रयू के स्वामी ने उसे चार महीने तक अपने पास रखा, और फिर उसे आज़ाद कर दिया। अपनी बुद्धि भ्रम का नाटक करते हुए, आंद्रेई सड़कों पर घूमने लगा। वह शहर से होकर गुज़रा, *'कष्ट, यातना और अपमान सहते हुए; जिनके* लिए *संपूर्ण संसार* भी *योग्य नहीं था'* (इब्रानियों 11:37–38)। कुछ लोग उसका मज़ाक उड़ाते थे मानो वह पागल हो; कुछ उसे एक बदबूदार कुत्ते से घृणा करते हुए भगा देते थे; कुछ और लोग उसे एक दानव का वश में हुआ मानते थे; और छोटे लड़के उस धन्य व्यक्ति का उपहास करते और उसे पीटते थे। फिर भी उसने यह सब सहन किया और उन लोगों के लिए प्रार्थना की जिन्होंने उसका अपमान किया।

यदि कोई दयालु दाता एंड्रयू को भीख देता था, तो वह उसे स्वीकार कर लेता था, लेकिन उसे दूसरे भिखारियों को दे देता था। हालाँकि, वह इसे इस तरह से बाँटता था कि किसी को पता ही नहीं चलता था कि वह दान दे रहा है; भिखारियों पर गुस्सा होने का नाटक करते हुए और जैसे उन्हें पीटना चाहता हो, वह एक पवित्र मूर्ख की तरह अपने हाथ में रखे पैसे उनके चेहरों पर फेंक देता, और भिखारी उन्हें उठा लेते। कभी-कभी वह तीन दिन तक रोटी के बिना रहता; कभी-कभी पूरे सप्ताह का उपवास करता; और यदि उसे रोटी का एक टुकड़ा देने वाला कोई नहीं होता, तो वह दूसरे सप्ताह भी बिना भोजन के रहता। एंड्रयू का एकमात्र वस्त्र एक फटा-पुराना चोगा था, जो पहनने के लिए बिल्कुल अनुपयुक्त था और मुश्किल से उसके नग्न शरीर को ढक पाता था। हर तरह से मसीह के लिए पवित्र मूर्ख, संत सिमियन की नकल करते हुए, वह दिन में गलियों में दौड़ता और रात में प्रार्थना में बिताता था। इतने बड़े शहर में, विशाल आबादी के बीच रहते हुए, उसके पास 'सिर रखने को जगह नहीं थी'। भिखारी उसे अपनी झोपड़ियों से भगा देते थे, जबकि अमीर उसे अपने घरों के आंगनों में नहीं आने देते थे। जब उसे सोने और अपने थके हुए शरीर को कुछ आराम देने की ज़रूरत होती थी, तो वह कूड़े के ढेरों की तलाश करता था जहाँ कुत्ते लेटे होते थे और उनके बीच में ही लेट जाता था। लेकिन कुत्ते भी ईश्वर के इस सेवक को अपने पास नहीं आने देते थे। कुछ उसे भगाने के लिए काटते थे, जबकि अन्य अपने आप ही उससे भाग जाते थे। वह कभी किसी छत के नीचे नहीं सोया, बल्कि हमेशा ठंड और गर्मी में, लाजरस की तरह गंदगी और कीचड़ में पड़ा रहता था, और लोगों व जानवरों

दोनों के पैरों तले कुचला जाता था। इस प्रकार उस स्वेच्छा से शहीद हुए ने कष्ट सहे, और इस प्रकार उस पवित्र मूर्ख ने सारी दुनिया पर हँसी उड़ाई: *'क्योंकि परमेश्वर की मूर्खता मनुष्यों से अधिक बुद्धिमान है*[6736] (1 कुरिन्थियों 1:25)। और पवित्र आत्मा का अनुग्रह उसमें वास करता था, और उसे विवेक का वरदान मिला, क्योंकि वह मनुष्यों के विचारों को समझने लगा।

एक बार कॉन्स्टेंटिनोपल में एक कुलीन व्यक्ति की बेटी की मृत्यु हो गई; उसने अपना जीवन कुंवारी पवित्रता में बिताया था। मृत्युशय्या पर उसने निवेदन किया कि उसे शहर के बाहर, अपने पिता के बगीचे में स्थित गरीबों के कब्रिस्तान में दफनाया जाए। जब उसकी मृत्यु हो गई, तो उसे उस स्थान पर ले जाया गया, जहाँ उसे ईसाई रीति-रिवाज के अनुसार दफनाया गया। उस समय कॉन्स्टेंटिनोपल में एक कब्र खोदने वाला था जो कब्रें खोदते समय मृतकों के कपड़े उतार लिया करता था। सड़क के किनारे खड़ा होकर, वह यह देखने लगा कि उस युवती को कहाँ दफनाया जाएगा। उसकी कब्र की जगह देख लेने के बाद, उसने रात होने पर कब्र खोदकर उस मृत महिला के कपड़े उतारने का निश्चय किया।

संयोग से, संत एंड्रयू, मसीह के लिए अपनी प्रथागत पवित्र मूर्खता के कार्य करते हुए, उसी स्थान पर गए। जैसे ही उसने कब्र खोदने वाले को देखा, उसने पवित्र आत्मा के द्वारा उसके दुष्ट इरादे को भांप लिया। चोर को उसके नियोजित कृत्य से रोकने और उस पर आने वाली सजा की पूर्व दृष्टि रखते हुए, संत एंड्रयू ने उसे कठोरता से देखा और, मानो बहुत क्रोध में हो, कहा:

'यह उस आत्मा का वचन है जो कब्रों में पड़े मृतकों के वस्त्र चुराने वालों का न्याय करती है: तू फिर कभी सूर्य को नहीं देखेगा, न दिन को, और न किसी मनुष्य का मुख; तेरे घर के द्वार तेरे लिए बंद हो जाएंगे और फिर कभी नहीं खुलेंगे। दिन तेरे लिए फीका पड़ जाएगा और फिर कभी उज्ज्वल नहीं होगा।'

यह सुनकर, कब्र खोदने वाले को समझ नहीं आया कि संत क्या कह रहे थे, और वह उनके शब्दों पर ध्यान दिए बिना चल दिया। हालांकि, संत ने एक बार फिर उसकी ओर देखा और कहा:

'क्या तुम जा रहे हो? चोरी मत करना! क्योंकि अगर तुमने ऐसा किया, तो मैं यीशु के नाम की गवाही देता हूँ कि तुम फिर कभी सूरज नहीं देखोगे।'

यह समझते हुए कि संत उससे ही बात कर रहे थे, कब्र खोदने वाले ने यह देखकर आश्चर्य किया कि संत ने उसके इरादे को कैसे जान लिया, और संत के पास लौटकर कहा:

'तुम पर निश्चित रूप से किसी राक्षस का साया है और उसके प्रभाव में, तुम रहस्यमयी और अज्ञात बातें करते हो! मैं जानबूझकर वहाँ जाऊँगा यह देखने के लिए कि तुम्हारी बातें सच होती हैं या नहीं!'

इसके बाद, संत वहाँ से चले गए और पागल होने का नाटक करते रहे। जैसे ही शाम हुई, एक उपयुक्त क्षण चुनकर, चोर ने ताबूत से पत्थर हटा दिया, उसमें चढ़ गया और सबसे पहले, मृतक का बाहरी वस्त्र और उसके सभी आभूषण ले लिए, क्योंकि वे बहुत कीमती थे। इन चीज़ों को लेकर वह जाने ही वाला था, लेकिन एक अंदरूनी आवाज़ ने उसे उकसाया: 'उसकी कमीज़ भी उतार लो: वह भी बहुत अच्छी है।' कब्र लूटने वाले ने युवती की कमीज़ उतारने के बाद कब्र छोड़ने ही वाला था। लेकिन मृत युवती ने, ईश्वर की आज्ञा से, अपना दाहिना हाथ उठाया और कब्र खोदने वाले के चेहरे पर मारा, और वह तुरंत अंधा हो गया। उस दुखी आदमी पर तब आतंक छा गया और वह इतनी बुरी तरह कांपने लगा कि, डर के मारे, उसके जबड़े, दांत, घुटने और उसकी सभी हड्डियाँ कांपने लगीं।

तब मृत कन्या ने अपना मुँह खोला और कहा:

'हे नीच और घृणित मनुष्य! न तो तू ईश्वर से डरता था, और न ही इस बात पर विचार किया कि तू भी एक इंसान है! तुझे एक कन्या की नग्नता पर लज्जित होना चाहिए था; तू मुझसे पहले ही बहुत कुछ ले चुका है – कम से कम मेरे नग्न शरीर के लिए एक कमीज़ तो छोड़ ही सकता था। लेकिन तुमने मुझ पर कोई दया नहीं दिखाई और मेरे साथ क्रूरता से पेश आए, यह इरादा करके कि प्रभु के दूसरे आगमन के दिन मुझे सभी पवित्र कुँवारियों के सामने उपहास का पात्र बना दो। लेकिन अब मैं तुम्हारे साथ ऐसा व्यवहार करूँगा कि तुम फिर कभी चोरी नहीं करोगे, ताकि तुम जान सको कि यीशु मसीह जीवित हैं, और मृत्यु के बाद न्याय, प्रतिशोध और दंड है।

[6736] यहाँ, हालाँकि, पवित्र मूर्खता के बारे में प्रेरितों की दृष्टि को स्पष्ट रूप से समझना आवश्यक है - कि दुनिया मसीह और उनके अनुयायियों के आत्म-त्याग को पागलपन, यानी पवित्र मूर्खता के रूप में देखती है। इसलिए पवित्र मूर्खों के जीवन के तरीके की व्याख्या के लिए इन शब्दों का हवाला देना पूरी तरह से सही नहीं है, *'क्योंकि परमेश्वर उन लोगों को छोड़कर किसी से प्रेम नहीं करता जो बुद्धि से नहीं जीते'* (Wisdom 7; हिरोमोंक नाफ द्वारा टिप्पणी)।

ये शब्द कहने के बाद, वह कन्या उठी, उसने अपनी पोशाक ली, उसे पहना, और अपने सभी कपड़े और आभूषण पहनकर, लेट गई और कहा: *'हे प्रभु, केवल आप ही मुझे सुरक्षा में रहने दें'* (भजन संहिता 4:9)।

इन शब्दों के साथ, वह एक बार फिर चैन से लेट गई। जहाँ तक उस बहिष्कृत व्यक्ति का सवाल है, उसमें ताबूत से बाहर निकलने और बगीचे की बाड़ तक पहुँचने की भी हिम्मत नहीं बची थी। अपने हाथों से बाड़ की एक दीवार और फिर दूसरी को पकड़ते हुए, वह निकटतम सड़क तक पहुँचा और शहर के दरवाजों की ओर भटकता चला गया। जो लोग उससे उसकी अंधापन का कारण पूछते थे, उन्हें उसने एक कहानी सुनाई— —जो वास्तव में घटी घटना से बिल्कुल अलग थी। लेकिन बाद में उसने अपने एक दोस्त को वह सब कुछ बताया जो उसके साथ हुआ था। तब से, उसने भीख माँगनी शुरू कर दी और इसी तरह अपनी आजीविका कमाई। और वह अक्सर अपने आप से कहता था:

'धिक्कार है मेरी जीभ पर, तुम्हारे कारण ही मुझे अंधापन मिला है!'

उसे संत एंड्रयू भी याद आए और वह इस बात पर चकित था कि सब कुछ ठीक वैसे ही घटित हो गया था, जैसा संत ने पूर्व में देखा और बताया था।

एक दिन, शहर में चलते हुए, संत एंड्रयू ने एक मृत व्यक्ति को अपनी ओर आते देखा। वह मृतक बहुत अमीर आदमी था, और बहुत सारे लोग मोमबत्तियाँ और धूपदान लेकर उसके ताबूत के पीछे-पीछे चल रहे थे। पादरी पारंपरिक अंतिम संस्कार के भजन गा रहे थे, जबकि मृतक के परिवार और प्रियजन रो रहे थे और विलाप कर रहे थे। अपनी सूक्ष्म दृष्टि से उस मृतक के साथ हो रही घटना को देखकर, संत रुककर देखने लगे। और फिर, लंबे समय तक पूर्णतः अचेत रहने के बाद, उन्होंने अपनी आध्यात्मिक आँखों से ताबूत के पीछे-पीछे चलते और जोर-जोर से चिल्लाते हुए कई इथियोपियाई लोगों को देखा:

'उसके लिए विनाश, उसके लिए विनाश!'

उनमें से कुछ के हाथों में बोरी थीं, जिनसे वे मृतक के चारों ओर खड़ी भीड़ पर राख छिड़क रहे थे। अन्य राक्षस, अश्लील वेश्याओं की तरह निर्लज्जता से नाच रहे थे और हँस रहे थे; कुछ और कुत्तों की तरह भौंक रहे थे, जबकि कुछ सूअरों की तरह करहा रहे थे। वह मृतक व्यक्ति उनके लिए आनंद और हर्ष का स्रोत था। कुछ राक्षस, मृतक के चारों ओर खड़े होकर, उस पर बदबूदार पानी छिड़क रहे थे, जबकि अन्य उस बिस्तर के पास हवा में उड़ रहे थे जिस पर वह पड़ा था। मृत पापी के शव से एक घुटन भरी बदबू निकल रही थी। मृतक के पीछे-पीछे, राक्षसों ने एक भयानक शोर मचाते हुए तालियाँ बजाईं और पैर पटकते हुए, गाने वालों का अपमान करते हुए कहा:

'हे नीच ईसाइयों, ईश्वर तुम्हें कभी रोशनी न दिखाए, क्योंकि तुम इस कुत्ते के लिए गा रहे हो: "संतों के साथ, उसकी आत्मा को विश्राम दो", और फिर भी तुम उसे—जो हर तरह की बुराई में डूबा हुआ था—ईश्वर का सेवक कहते हो।'

फिर से झाँककर, एंड्रयू ने देखा कि राक्षसों के एक राजकुमार, जिसकी दृष्टि आग जैसी थी, उस बहिष्कृत की ताबूत की ओर चल रहा था, और उसके शरीर को जलाने के लिए कोयला और गंधक ला रहा था। जब दफ़न की रस्में पूरी हो गईं, तो संत एंड्रयू ने एक सुंदर युवक के रूप में एक देवदूत को चलते हुए देखा जो कड़वी आँसू बहा रहा था। जैसे ही वह पास से गुज़रा, वह देवदूत संत एंड्रयू के पास आया। संत एंड्रयू ने यह सोचकर कि यह युवक मृतक के रिश्तेदारों में से एक है और इसीलिए इतनी कड़वी आँसू बहा रहा है, उसके पास जाकर कहा:

'मैं आपसे स्वर्ग और पृथ्वी के ईश्वर के नाम की विनती करता हूँ: मुझे अपने रोने का कारण बताइए। क्योंकि मैंने कभी किसी को मृतक के लिए आपके समान इतना कड़वा रोते हुए नहीं देखा।'

देवदूत ने उत्तर दिया:

'मैं इसीलिए आँसू बहा रहा हूँ: मुझे उस मृतक की रखवाली का काम सौंपा गया था जिसे तुमने कब्रिस्तान ले जाते देखा था। लेकिन शैतान उसे ले गया। यही मेरे रोने और दुख का कारण है।'

यह सुनकर संत ने उससे कहा:

'अब मुझे समझ आ गया है कि आप कौन हैं; मैं आपसे विनती करता हूँ, हे पवित्र स्वर्गदूत, मुझे बताइए कि मृतक ने कौन से पाप किए थे, जिसके कारण शैतान उसे ले गया?'

'एंड्रयू, ईश्वर के चुने हुए!' देवदूत ने उत्तर दिया। 'चूंकि आप यह जानना चाहते हैं, मैं कुछ भी छिपाए बिना आपको बताऊंगा। मैं आपकी पवित्र आत्मा की सुंदरता को शुद्ध सोने की तरह चमकते हुए देखता हूं; आपको देखकर, मुझे अपने दुख में कुछ सांत्वना मिली है। इस व्यक्ति को राजा द्वारा बहुत सम्मान दिया जाता था। लेकिन वह एक भयंकर पापी था

और उसने एक अपराधी जीवन जयिा। वह व्यभचिारी और परस्त्रीगामी था, सोदोम के पाप से ग्रस्त था; चापलूस, नर्दियी, धन का लोभी, झूठा और मानवद्वेषी था; प्रतशिोधी, रश्वितखोर और शपथ-भंग करने वाला था। उसने अपने गरीब नौकरों को भूखा रखा, उन्हें मारा और उन्हें नग्न छोड़ दयिा, सर्दयिों में उन्हें जूतों या कपड़ों के बनिा छोड़ दयिा। उसने कई दासों को मार डाला और उन्हें अस्तबल के फर्श के नीचे दफना दयिा। ईश्वर को घृणति लगने वाली कामुकता से ग्रस्त होकर, उसने तीन सौ आत्माओं को व्यभचिार के घृणति और घनिौने पापों से कलंकति कयिा। लेकनि उसके लिए भी हसिाब-कताि का समय आ गया, और मृत्यु ने उसे तब घेर लयिा जब वह पश्चातापहीन था और अकथनीय पापों का बोझ लिए हुए था। उसकी आत्मा राक्षसों द्वारा ले ली गई, और उसका घृणति शरीर—जैसा कि आपने स्वयं देखा है—दुष्ट आत्माओं द्वारा उपहास के बीच ले जाया गया। इसीलिए, पवत्रि आत्मा, मैं शोक मनाता हूँ; गहरे दुख से अभभिूत, मैं रोता हूँ, क्योंकि जिसि व्यक्ति की मैं कभी रक्षा करता था, वह अब राक्षसों का उपहास बन गया है।

ईश्वर के दूत के ये वचन सुनकर, संत ने कहा:

'हे मेरे मत्रि, मैं तुझसे वनिती करता हूँ,' यह रोना बंद कर: मृतक ने दुष्टता से काम कयिा, और इसलिए बनिा पश्चाताप के मरा; अब उसे अपने ही कर्मों का फल भुगतने दो। और जहाँ तक तुम्हारा सवाल है, हे अग्नमिय, हर सद्गुण से परपिूर्ण, सर्वशक्तमिान प्रभु सबोथ के सेवक, अब से और हमेशा के लिए तुम अपने ईश्वर की कृपा में रहोगे।'

इन शब्दों के बाद, देवदूत अदृश्य रूप से एंड्रयू से पीछे हट गया। और रास्ते से गुजरने वालों ने सोचा कि संत अपने आप से बात कर रहे हैं, और एक-दूसरे से कहा:

'देखो उस पागल को, कैसे वह खुद को बहला रहा है और दीवार से बकवास कर रहा है।'

ऐसा कहते हुए, उन्होंने उसे धक्का दयिा और भगा दयिा, यह कहते हुए:

'तुम्हें क्या चाहिए, हे पवत्रि मूर्ख? – लोगों से बात करने के लायक भी नहीं, फरि भी दीवार से बकवास कर रहे हो?!'

संत चुपचाप चले गए और एकांत में जाकर, उस दुर्भाग्यशाली व्यक्ति के वनिाश पर जोर-जोर से रोए, जसिे उन्होंने अपनी कब्र तक ले जाया जाता देखा था।

[6737]एक बार, संत एंड्रयू तसर कॉन्स्टेंटनि द्वारा स्थापति स्तंभ के पास बाज़ार में भीड़ के बीच से गुज़र रहे थे। बार्बरा नाम की एक महलिा, जो पवत्रि आत्मा से प्रबुद्ध हुई थी, ने भीड़ में धन्य एंड्रयू को आग के स्तंभ की तरह चमकते हुए भयभीत होकर देखा। इस बीच, कुछ मूर्ख लोग उसे धक्का-मुक्की कर रहे थे, जबकि अन्य उसे मार रहे थे; फरि भी कई लोगों ने उसे देखकर कहा:

'यह आदमी पागल है: वह अपना होश खो चुका है। ईश्वर न करे कि यह हमारे दुश्मनों पर आए!'

हालाँकि, राक्षस, काले इथयिोपयिाई के भेष में संत एंड्रयू का अनुसरण करते हुए, बोले:

'हे भगवान, काश कि आप पृथ्वी पर उसकी तरह और किसी को न भेजें; क्योंकि इस आदमी ने, जो अपने मालकि के लिए काम नहीं करना चाहता, एक पवत्रि मूर्ख होने का नाटक कयिा है और पूरी दुनयिा का मज़ाक उड़ाता है, हमारे दलिों को जतिना सूखा दयिा है, उतना किसी और ने नहीं कयिा।'

और उस स्त्री ने देखा कि इथयिोपयिाई उन लोगों को इशारा कर रहे थे जो संत को पीट रहे थे और आपस में कह रहे थे:

'हमें खुशी है कि वे उसे इतनी बेरहमी से पीट रहे हैं, क्योंकि इस नर्दिोष ईश्वर के सेवक को दी जा रही यातना के लिए वे अपनी मृत्यु के समय दंडति किए जाएँगे, और उनके लिए कोई उद्धार नहीं है।'

यह सुनकर, धन्य व्यक्ति, परमेश्वर की आत्मा से प्रेरति होकर, एक ज्वाला की तरह उन पर टूट पड़ा, अद्भुत शक्ति से दुष्टात्माओं के चह्निों को नष्ट कर दयिा, और, उनके प्रति अपने क्रोध में, कहा:

'तुम मुझे पीटने वालों को दोषी मत ठहराना, क्योंकि मैं अपने प्रभु से प्रार्थना करता हूँ कि वे मुझ पर की गई इन पटिाइयों को इनके वरिुद्ध पाप न गनिें। ये यह अज्ञानता के कारण करते हैं, और अपनी अज्ञानता के कारण, इन्हें क्षमा मलिेगी।'

[6737] यह स्पष्ट रूप से उस प्रसदि्ध बैंगनी रोमन स्तंभ को संदर्भति करता है जसिे कॉन्स्टेंटाइन द ग्रेट ने मसीह के क्रूस की शक्ति से मैक्सेंशयिस पर मलिी जीत की कृतज्ञ स्मृति में खड़ा कयिा था, और जसिे बाद में उन्होंने कॉन्स्टेंटनिोपल ले जाया था।

जैसे ही संत ने ये शब्द कहे, स्वर्ग अचानक द्वारों की तरह खुल गया, और वहाँ से सबसे सुंदर गौरैयाओं का एक समूह संत पर उतर आया; और उनके बीच एक बड़ी, हमि-सी सफेद कबूतर थी, जसिकी चोंच में सुनहरी जैतून की टहनी थी। और कबूतर ने मानव भाषा में संत से कहा:

'यह पत्ता लो; सर्वशक्तमिान प्रभु ने इसे तुम्हारे प्रतअिपनी कृपा के चन्हि के रूप में स्वर्ग से भेजा है, क्योंकि तुम दया दखिाते हो और जो तुम्हें पीटते हैं उन्हें क्षमा करते हो, और उनके लिए प्रार्थना करते हो, ताकयिह उनके वरिुद्ध पाप न गनिा जाए।'

ये शब्द कहकर, कबूतर संत के सरि पर आकर बैठ गया। यह सब देखकर, वह धर्मनष्ठि महलिा चकति रह गई, और अपने दर्शन से होश में आने के बाद, उसने कहा:

'पृथ्वी पर ईश्वर के कतिने दीपक हैं, और कोई उन्हें नहीं जानता!'

कई बार उसने अपने इस दर्शन के बारे में दूसरों को बताने का इरादा कयिा, लेकनि ईश्वर की शक्तनि उसे रोक दयिा। बाद में, संत एंड्रयू उससे एक नश्चिति स्थान पर मलि और उससे कहा:

'मेरा रहस्य रखना, बारबरा, और जो तुमने देखा है वह कसिी को तब तक न बताना जब तक मैं *"अद्भुत नविास स्थान, यहाँ तक कि परमेश्वर का घर"* (भजन संहति 41:5) *तक* नहीं पहुँच जाता।'

'हे धर्मी दीपक और परमेश्वर के पवत्रि जन,' बारबरा ने उत्तर दयिा, 'भले ही मैं अपनी दृष्टकि बारे में कसिी को बताना चाहूँ, मैं नहीं बता सकती, क्योंकि परमेश्वर की अदृश्य शक्तमिुझे रोकती है।'

शहर में चलते समय, संत एंड्रयू एक बार एक कुलीन व्यक्तसि मलि और उसके जीवन का पूर्वानुमान लगाकर, उन्होंने उस पर थूक दयिा, और कहा:

'हे कपटी व्यभचिारी, कलीसयिा के अपमानकर्ता, तू कलीसयिा जाने का दखिावा करता है: तू कहता है, "मैं प्रातः स्तुतकि लिए जा रहा हूँ," फरि भी तू स्वयं दुष्ट कर्मों के लिए शैतान के पास जाता है। हे अधर्मी, जो आधी रात को उठता है और परमेश्वर को क्रोधति करता है!' अब तुम्हारे कर्मों का फल भुगतने का समय आ गया है! या क्या तुम सोचते हो कि तुम ईश्वर की भयानक, सर्व-दर्षटा और सर्व-ज्ञानी आँख से बच सकते हो?"

यह सुनकर, वह कुलीन व्यक्तअिपने घोड़े पर सवार होकर नकिल पड़ा, ताकि उसे और भी अधकि शर्मदिगी न उठानी पड़े। कुछ दनिों बाद, वह गंभीर रूप से बीमार पड़ गया और उसका शरीर क्षीण होने लगा। उसके परचिारक उसे एक चर्च से दूसरे चर्च और एक डॉक्टर से दूसरे डॉक्टर के पास ले गए; लेकनि इससे उसे कोई राहत नहीं मलिी। जल्द ही यह बहष्कृत व्यक्तशिाश्वत यातनाओं में चला गया। एक रात, संत ने कुलीन व्यक्तकि घर के पास पश्चमि से प्रभु के स्वर्गदूत को आते देखा। स्वर्गदूत एक अग्नकि समान दीप्तमिान था और उसके हाथ में एक बड़ी जलती हुई लाठी थी। जब स्वर्गदूत उस बीमार व्यक्तकि पास पहुँचा, तो उसने ऊपर से एक आवाज सुनी:

'इस ईश्वर-नन्दिक, इस घृणति सदोमी को मारो, और जब तुम उसे मारो, तो कहना: "क्या तुम अभी भी पाप करना चाहते हो और हर तरह के लोगों को कलंकति करना चाहते हो? क्या तुम शैतानी अराजकता का अभ्यास करते हुए घूमना जारी रखोगे, यह दखिावा करते हुए कि तुम मैटनि्स (प्रार्थना सभा) के लिए जा रहे हो?"'

देवदूत ने उसे दए गए आदेश को पूरा करना शुरू कर दयिा। देवदूत की आवाज़ और उसके प्रहार सुने जा सकते थे, लेकनि देवदूत स्वयं अदृश्य रहा। ऐसे यातनाओं के बीच, उस व्यक्तने अपनी अंतमि सांस ली।

एक अवसर पर, बाज़ार में रहते हुए, संत एंड्रयू की मुलाकात एक ऐसे भक्षिु से हुई जसिकी हर कोई उसके सदाचारी जीवन के लिए प्रशंसा करता था। यह सच था कि वह एक भक्षिु के अनुरूप ही रहता था, लेकनि वह धन के प्रतअिति्यधकि आसक्त था। शहर के कई नविासी, अपने पापों का इकबालयिा बयान देते समय, उसे गरीबों में बांटने के लिए बहुत सारा सोना देते थे। हालाँकि, वह धन के प्रतअितृप्त जुनून में डूबा हुआ था, इसलिए उसने कसिी को कुछ नहीं दयिा, बल्कि सब कुछ अपनी झोली में डाल लयिा, और अपनी संपत्तकि को बढ़ते हुए देखकर प्रसन्न हुआ। उस दुष्ट भक्षिु के साथ सड़क पर चलते समय, धन्य एंड्रयू ने अपनी सूक्ष्म दृष्टसि देखा कि एक भयानक सर्प इस लालची व्यक्तकि चारों ओर लपिटा हुआ था। भक्षिु के पास आकर, संत ने उस सर्प की जाँच करनी शुरू कर दी। हालाँकि, उस भक्षिु ने एंड्रयू को भीख माँगने वाले एक भखिारी समझकर, उससे कहा:

'भगवान तुम्हारी मदद करें, भाई; मेरे पास तुम्हें देने के लिए कुछ भी नहीं है।'

थोड़ी दूरी पीछे हटकर, धन्य संत ने देखा कि साँप के ऊपर हवा में, गहरे अक्षरों में नम्निलखिति शब्द लखि हुए थे:

'सभी दुष्टता की जड़ लालच का साँप है।'

पीछे मुड़कर देखने पर, संत ने दो युवकों को एक-दूसरे से बहस करते देखा – उनमें से एक का रंग साँवला और आँखें काली थीं; यह एक राक्षस था, जबकि दूसरा – ईश्वर का एक देवदूत – स्वर्ग की रोशनी की तरह सफेद था। काले ने कहा:

'संन्यासी मेरा है, क्योंकि वह मेरी इच्छा का पालन करता है। वह नश्वर और चाँदी का लालची है – उसका ईश्वर में कोई हिस्सा नहीं है और वह एक मूर्तिपूजक की तरह मेरे लिए काम करता है।'

'नहीं, वह मेरा है,' देवदूत ने आपत्ति जताई, 'क्योंकि वह उपवास करता है और प्रार्थना करता है, और इसके अलावा वह विनम्र और नम्र है।'

तो वे बहस करने लगे, और उनके बीच कोई समझौता नहीं हुआ। और स्वर्ग से उस तेजस्वी देवदूत को एक आवाज़ आई:

'उस संन्यासी में तुम्हारा कोई हिस्सा नहीं है; उसे छोड़ दो, क्योंकि वह परमेश्वर की नहीं बल्कि धन-दौलत की सेवा करता है।'

इसके बाद, प्रभु का स्वर्गदूत उससे दूर चला गया, और अँधेरे की आत्मा पर उसका अधिकार हो गया। यह देखकर, धन्य एंड्रयू चकित रह गए कि विवाद में विरोधी दानव ने तेजस्वी स्वर्गदूत पर विजय प्राप्त कर ली थी। एक दिन सड़क पर उस भिक्षु से मिलकर, संत ने उसका दाहिना हाथ पकड़ा और कहा:

हे ईश्वर के सेवक, मेरी बात सुनें, अपने सेवक की, बिना क्रोध के, और कृपापूर्वक मेरे विनम्र शब्दों को स्वीकार करें, क्योंकि आपके कारण मुझ पर महान शोक आया है, और मैं अब यह सहन नहीं कर सकता कि आप, जो कभी ईश्वर के मित्र थे, अब शैतान के सेवक और मित्र बन गए हैं। तुम्हारे पंख सेराफिम जैसे थे: तो फिर तुमने खुद को शैतान के हवाले क्यों कर दिया, ताकि वह उन्हें जड़ से काट सके? तुम्हारा मुख बिजली की तरह दमकता था: तो फिर तुम क्यों मुरझा गए हो? हाय मेरे लिए! तुम्हारी दृष्टि मानो कई आँखों वाली थी, पर अब साँप ने तुम्हें पूरी तरह अंधा कर दिया है। तुम सूर्य थे, परन्तु तुम एक अंधकारमय और विनाशकारी रात में कूद पड़े हो। हे भाई, तुमने अपनी आत्मा क्यों बर्बाद कर दी? तुमने लोभ के दैत्य से दोस्ती क्यों की, उसे अपने साथ रहने क्यों दिया? तुम सोना क्यों संचित करते हो? क्या तुम्हें इसके साथ दफनाया जाएगा? आखिरकार, तुम्हारी मृत्यु के बाद यह दूसरों के हाथों में पड़ जाएगा! क्या तुम सच में लालच से नष्ट होना चाहते हो? जब दूसरे भूख, ठंड और प्यास से मरते हैं, तब तुम अपने सोने की भरमार देखकर आनंदित होते हो। क्या यही पश्चाताप के मार्ग हैं? क्या यही संन्यासियों का नियम है, जो उन्हें जीवन की व्यर्थताओं को नज़रअंदाज़ करने का आदेश देता है? क्या आपने सचमुच संसार और उसमें जो कुछ भी है, उसे त्याग दिया है? क्या आपने सचमुच स्वयं को संसार और उसकी सारी व्यर्थता के साथ सूली पर चढ़ा दिया है? क्या आपने प्रभु को यह कहते हुए नहीं सुना: *'अपने कमरबंद में न सोना लो, न चाँदी, न तांबा; यात्रा के लिए न कोई झोला, न दो कमीजें'* (मत्ती 10:9-10)? तो फिर, आपने इन आज्ञाओं को क्यों भुला दिया है? क्योंकि हमारा जीवन आज या कल समाप्त हो जाएगा; *'तो फिर, आपके द्वारा संचित की गई वस्तुएँ किसकी होंगी?'* (लूका 12:20)? क्या तुम नहीं जानते कि तुम्हारा रक्षक स्वर्गदूत रोया है और तुमसे बहुत दूर हट गया है, जबकि शैतान तुम्हारे बगल में खड़ा है, और लालच का साँप तुम्हारी गर्दन के चारों ओर लिपट गया है, फिर भी तुम इसे महसूस नहीं करते? मैं तुम से सच कहता हूँ, जब मैं गुज़र रहा था, तो मैंने प्रभु को तुमसे अपना रिश्ता तोड़ते हुए सुना। मैं तुम से विनती करता हूँ: अपना धन गरीबों, अनाथों, विधवाओं, बेसहारा लोगों और उन मुसाफिरों में बाँट दो जिनके पास सिर रखने के लिए कोई जगह नहीं है। तो फिर, एक बार फिर से ईश्वर का मित्र बनने का प्रयास करें । लेकिन यदि आप मेरी बात नहीं मानते हैं, तो आपकी भयानक मृत्यु होगी। मैं यीशु मसीह के नाम पर गवाही देता हूँ कि आप तुरंत शैतान को देखेंगे।

इसके बाद, उन्होंने जोड़ा:

'क्या तुम उसे देख सकते हो?'

और भिक्षु की आध्यात्मिक आँखें खुल गईं, और उसने शैतान को देखा, जो एक इथियोपियाई की तरह काला, जानवर-सा, भयानक जबड़े वाला था; लेकिन वह दूर खड़ा रहा और एंड्रयू को देखकर पास आने की हिम्मत नहीं की। फिर भिक्षु ने संत से कहा:

'हे ईश्वर के सेवक, मैं उसे देखता हूँ, और मुझ पर एक भयानक भय छा गया है; मुझे बताओ: मेरी आत्मा के उद्धार के लिए क्या आवश्यक है?'

एंड्रयू ने उससे एक बार फिर कहा:

'मेरा वशि्वास करो: यदि तुम मेरी आज्ञा नहीं मानोगे, तो मैं उसे तुम्हारे ऊपर भेज दूँगा, ताकि वह तुम्हें सताए और ताकि न केवल ये नागरकि, बल्कि संसार के चारों कोनों में तुम्हारी कलंकति कथा फैल जाए; अतःसावधान रहो और जैसा मैं कहता हूँ वैसा करो।'

यह सुनकर, भकि्षु भयभीत हो गया और उसने संत के बताए अनुसार सब कुछ करने का वादा कयिा। और तुरंत एंड्रयू ने एक शक्तशिाली आत्मा को पूर्व से बजिली की चमक के रूप में आते और सांप को छूकर उसकी शक्ति को नष्ट करते देखा; सांप, इसे सहन न कर सका, एक काले कौवे में बदल गया और गायब हो गया। काला इथयिोपयिाई भी मर गया, और एक बार फरि ईश्वर के स्वर्गदूत ने उस संन्यासी पर अपना नयिंत्रण कर लयिा। जब वह उस संन्यासी से वदिा हो रहे थे, तो उस धन्य व्यक्ति ने उसे यह नरि्देश दयिा:

'ध्यान रखना कि मेरे बारे में कसिी को कुछ मत बताना, परन्तु मैं दनि-रात अपनी प्रार्थनाओं में तुम्हें याद रखूँगा, ताकि प्रभु यीशु मसीह तुम्हें सही मार्ग पर ले जाएँ।'

उसके बाद, भकि्षु ने जाकर अपना सारा सोना गरीबों में बाँट दयिा, और बाद में परमेश्वर और लोगों द्वारा उसकी महमिा और भी अधकि हुई; कई लोग उसके पास सोना लाए ताकि वह उसे गरीबों में बाँट सके। लेकनि उसने दाताओं को इसे अपने हाथों से बाँटने का नरि्देश दयिा, यह कहते हुए:

'मेरे लिए दूसरों की संपत्ति की देखभाल करने का क्या फायदा?'

जबकि वह एक भकि्षु के अनुरूप जीवन जी रहे थे, संत एंड्रयू एक आनंदमय मुखमंडल के साथ उन्हें एक दर्शन में दखिाई दिए; उन्होंने उन्हें एक खेत में एक तेजस्वी वृक्ष दखिाया, जसि पर मीठे फल का रंग था, और कहा:

'हे पति, ईश्वर का धन्यवाद करो, क्योंकि उन्होंने तुम्हें साँप के जबड़ों से छीन लयिा है और तुम्हारी आत्मा को एक खलि हुए वृक्ष की तरह बना दयिा है। अत; इस फूल को मीठे फल में बदलने का प्रयास करो। यह सुंदर वृक्ष जो तुम देख रहे हो, वह तुम्हारी आत्मा का प्रतीक है।'

जब वह होश में आया, तो भकि्षु अपने आध्यात्मकि प्रयासों में और भी दृढ़ हो गया और हमेशा ईश्वर तथा उनके संत एंड्रयू का धन्यवाद करता था, जनि्होंने उसे मोक्ष के मार्ग पर मार्गदर्शन कयिा था।

संत एंड्रयू ईश्वर को इतने प्रसन्न हुए और प्रभु के इतने प्रयि थे कि एक अवसर पर, प्रेरति पौलुस की तरह, उन्हें तीसरे स्वर्ग में उठा लयिा गया (2 कुरनि्थियों 12:2), जहाँ उन्होंने अनुपम वचन सुने और स्वर्ग की उन शोभाओं को देखा, जो मनुष्यों के लिए अदृश्य हैं। उन्होंने अपनी मृत्यु से ठीक पहले अपने वशि्वासपात्र मत्रि नकिफिोरस को यह स्वयं सुनाया था।

एक बार, एक कठोर सर्दी पड़ने लगी, और दो पूरे सप्ताह तक कोंस्टेंटनिोपल में कड़ाके की ठंड पड़ती रही; सभी आवास बर्फ में दब गए थे; तूफान से पेड़ टूट गए और पक्षी भोजन न मलि पाने के कारण जमीन पर मृत पड़े पाए गए। उस समय, सभी गरीब और बेसहारा लोग बहुत संकट और कठनिाई में थे; कराहते, रोते और ठंड से कांपते हुए, वे वंचतिता, भूख और ठंड के कारण मर रहे थे। उस समय, धन्य एंड्रयू, जसिके पास न तो आश्रय था और न ही कपड़े, ने ठंड के कारण बहुत कष्ट सहन कयिा। जब वह थोड़ी देर के लिए कसिी छत के नीचे आश्रय लेने की इच्छा से दूसरे भखिारयिों के पास गया, तो उन्होंने उसे छड़ी से भगा दयिा जैसे वह कोई कुत्ता हो, और उस पर चल्लिाए:

'यहाँ से नकिल जा, कुत्ते!'

उस पर आई इस बदकस्मिती से बचने का कोई ठकिाना न होने और अपनी जान से भी नराश होकर, उसने अपने आप से कहा:

'प्रभु ईश्वर धन्य हों! भले ही मैं इस ठंड से मर जाऊँ, पर मुझे उनके प्रति अपने प्रेम के कारण ही मरने दो – परन्तु ईश्वर इतना शक्तशिाली है कि वह मुझे इस ठंड को सहने का धैर्य दे सकता है।'

एक एकांत स्थान की ओर मुड़कर, संत ने वहाँ एक कुत्ता लेटा हुआ देखा और उससे अपना शरीर गर्म करने की इच्छा से उसके बगल में लेट गया। लेकनि जब कुत्ते ने उसे देखा, तो वह उठकर भाग गया। और एंड्रयू ने अपने आप से कहा:

'ओह, तुम कतिने पापी हो, हे नीच मनुष्य। न केवल लोग, बल्कि कुत्ते भी तुमसे घृणा करते हैं!'

जैसे ही वह वहाँ लेटा था, कड़कती ठंड और हवा से काँप रहा था, उसका शरीर जमा हुआ और नीला पड़ रहा था, उसने सोचा कि उसकी अंतमि साँस का समय आ गया है, और प्रार्थना करने लगा कि प्रभु उसकी आत्मा को शांतपिूर्वक स्वीकार करें . और अचानक उसे भीतर से एक गर्माहट महसूस हुई, और अपनी आँखें खोलने पर उसने एक सुंदर युवक

को देखा जसिका चेहरा सूर्य की तरह चमक रहा था। उसके हाथ में वभिन्नि फूलों से ढकी एक टहनी थी। आंद्रेई को देखते हुए, उस युवक ने कहा:

'अन्द्रेई, तुम कहाँ हो?'

आंद्रेई ने उत्तर दयिा:

'फलिहाल मैं *"अंधकार में, गहरिाई में"* हूँ (भजन संहति 87:7)।'

तब वह युवक जो प्रकट हुआ था, ने अपने हाथ में पकड़ी फूलों वाली टहनी से धीरे से आंद्रेई के चेहरे को छुआ, और कहा:

'अपने शरीर को पुनर्जीवति होने दे।'

संत एंड्रयू ने उन फूलों की सुगंध को सूंघा; वह उनके हृदय में समा गई, जसिसे उनका पूरा शरीर गर्म हो गया और जीवंत हो उठा। तुरंत बाद, उन्होंने एक आवाज़ सुनी जो कह रही थी:

'इसे ले जाओ, ताकि यह कुछ समय के लिए यहाँ वश्रिाम कर सके, और फरि यह वापस लौटेगा।'

इन शब्दों के साथ, उस पर एक मीठी नींद छा गई, और उसने ईश्वर के अकथनीय रहस्यों को देखा, जनिका उसने स्वयं उपर्युक्त नकिफिोरस को इन शब्दों में वस्तिृत वर्णन दयिा:

'मुझे नहीं पता कि मेरे साथ क्या हुआ। ईश्वर की इच्छा से, मैं दो सप्ताह तक एक मधुर दृष्टि में रहा, जैसे कोई व्यक्ति जो पूरी रात गहरी नींद में सोकर सुबह जागता है। मैंने खुद को एक सुंदर और अद्भुत स्वर्ग में देखा और, अपने दलि में इस पर आश्चर्य करते हुए, मैंने मन में सोचा: "इसका क्या मतलब है? मैं जानता हूँ कि मैं कॉन्स्टेंटनिोपल में रहता हूँ, लेकनि मैं यहाँ कैसे आया - मुझे नहीं पता।' और मैं यह नहीं समझ पाया, *'कि शरीर में था - मुझे नहीं पता, या शरीर से बाहर था - मुझे नहीं पता: ईश्वर जानते हैं'* (2 कुरन्थियिों 12:2)। लेकनि मैंने स्वयं को एक ऐसे वस्त्र में लपिटा हुआ देखा जो बजिली की तरह चमकता हुआ प्रतीत होता था; मेरे सरि पर कई फूलों से बुनी हुई एक माला थी; मैंने एक शाही कमरबंद बाँध रखा था और उस सुंदरता को देखकर मैं अत्यंत प्रसन्न हुआ; मैं मन और हृदय से परमेश्वर के स्वर्ग के अकथनीय आकर्षण पर चकति था और उसमें घूमने में आनंदति हुआ। वहाँ ऊँचे पेड़ों से भरे कई बगीचे थे, जनिके शीर्ष लहराने पर मेरी आँखों को आनंद मलिता था, और उनकी शाखाओं से एक अद्भुत सुगंध नकिलती थी। उनमें से कुछ पेड़ लगातार खलि रहते थे, कुछ सुनहरे पत्तों से सुशोभति थे, जबकि कुछ अन्य पर अकल्पनीय सुंदरता वाले फल लगे थे; अपनी सुंदरता में, इन पेड़ों की तुलना कसिी भी सांसारकि पेड़ से नहीं की जा सकती थी, क्योंकि इन्हें मानव हाथों से नहीं, बल्कि ईश्वर के हाथों से लगाया गया था। उन बगीचों में सुनहरे, हमि-सफेद और बहुरंगी पंखों वाले अनगनित पक्षी थे। वे स्वर्ग के पेड़ों की टहनयिों पर बैठते थे और इतनी खूबसूरती से गाते थे कि, उनके मधुर गीत की धुन से, मैं अपने आप को ही भूल गया: मेरा हृदय इतना आनंदति हो गया, और मुझे लगा कि उनका गीत स्वर्ग की ऊँची-ऊँची बुलंदयिों में भी सुना जा सकता है। वे सुंदर बगीचे कतारों में खड़े थे, ठीक वैसे जैसे एक रेजमिेंट दूसरे का सामना कर रही हो। जब मैं पूरे हर्षोल्लास के साथ उनके बीच से गुज़र रहा था, तो मैंने स्वर्ग के केंद्र से होकर बहती एक महान नदी देखी, जो उन सुंदर बगीचों को पानी देती थी। नदी के दोनों कनिारों पर बेलें उगी थीं, जनिकी शाखाएँ फैली हुई थीं, और वे पत्तों तथा अंगूरों के सुनहरे गुच्छों से सुसज्जति थीं। वहाँ, चारों दशिाओं से, कोमल और सुगंधति हवाएँ चलती थीं, जनिकी साँस से बगीचे झूम उठते थे, और उनके पत्तों से एक अद्भुत सरसराहट की ध्वनि उत्पन्न होती थी। इसके बाद, मुझ पर एक प्रकार का भय छा गया, और मुझे ऐसा लगा कि मैं आकाशमंडल के बलिकुल शीर्ष पर खड़ा था, जबकि मेरे सामने बैंगनी वस्त्र पहने एक युवक चल रहा था जसिका चेहरा सूर्य की तरह चमक रहा था। मुझे लगा कि यही वह था जसिने मुझे खलिती हुई टहनी से मेरे चेहरे पर मारा था। जब मैं उसके पदचनि्हों पर चला, तो मैंने एक बड़ा और सुंदर क्रॉस देखा, जो रूप में इंद्रधनुष जैसा था, और उसके चारों ओर आग की लपटों की तरह प्रज्वलति गायक खड़े थे, जो उस प्रभु की महमिा करते हुए एक मधुर भजन गा रहे थे, जनि्हें कभी क्रॉस पर सूली दी गई थी। मेरे आगे चल रहा वह युवक, जब क्रूस के पास पहुँचा, तो उसने उसे चूमा और मुझे भी क्रूस चूमने का इशारा कयिा। भय और महान आनंद के साथ पवत्रि क्रूस से स्वयं को सटाते हुए, मैंने उसे भक्तपिूर्वक चूमा। जब मैंने उसे चूमा, तो मैं एक अकथनीय आध्यात्मकि मठिास से भर गया और मैंने स्वर्ग की सुगंध से भी अधकि तीव्र सुगंध को सूंघा। क्रूस के पास से गुज़रते हुए, मैंने नीचे देखा और अपने नीचे वह देखा जो समुद्र की गहराई लग रहा था। मुझे ऐसा लगा जैसे मैं हवा पर चल रहा हूँ; डरकर, मैंने अपने मार्गदर्शक से पुकारा:

'प्रभु, मुझे डर है कि मैं खाई में गरि जाऊँगा।'

उन्होंने मेरी ओर मुड़कर कहा:

'डरो मत, क्योंकि हमें और भी ऊँचाई पर चढ़ना है।'

और उसने मुझे अपना हाथ बढ़ाया। जब मैंने उसे पकड़ा, तो हम पहले से ही दूसरी आकाशगंगा के ऊपर थे। वहाँ मैंने अद्भुत पुरुषों को देखा। उनकी शांति और उनके उत्सव की खुशी, जिसे मानव भाषा में व्यक्त नहीं किया जा सकता। इसके बाद, हम एक अद्भुत ज्वाला में प्रवेश किए, जिसने हमें जलाया नहीं, बल्कि केवल हमें रोशन किया। मुझमें भय समा गया, और एक बार फिर मेरे मार्गदर्शक ने मुड़कर मुझे अपना हाथ बढ़ाया और कहा:

'हमें और भी ऊँचाई पर चढ़ना होगा।'

और इस प्रकार, इन शब्दों के बाद, हम तीसरे स्वर्ग से ऊपर चढ़ गए, जहाँ मैंने स्वर्गिक सेनाओं की भीड़ को ईश्वर की स्तुति और महिमा करते हुए गाते हुए देखा और सुना। हम एक ऐसे पर्दे के पास पहुँचे, जो बिजली की तरह चमक रहा था, जिसके सामने महान और अजीब युवक खड़े थे, जो मानो एक अग्निमय ज्वाला के समान थे; उनके चेहरे सूरज से भी ज़्यादा चमकीले थे, और उनके हाथों में अग्निमय हथियार थे। वहाँ विस्मय में खड़े होकर, मैंने स्वर्गदूतों की एक अनगिनत भीड़ देखी। और जिस युवक का मार्गदर्शन मुझे कर रहा था, उसने मुझसे कहा:

'जब पर्दा हटेगा, तब तुम प्रभु मसीह को देखोगे। तब, उसकी महिमा के सिंहासन के सामने झुक जाओ।'

यह सुनकर मैं आनंदित हुआ और काँप उठा, क्योंकि मैं भय और अकथनीय आनंद दोनों से अभिभूत था। मैं खड़ा होकर देखता रहा, पर्दा उठने की प्रतीक्षा में। और देखो, एक अग्निमय हाथ ने पर्दा हटा दिया, और मैं, यशायाह नबी की तरह, अपने प्रभु को देखा, जो *'एक ऊँचे सिंहासन पर विराजमान थे... 'सराफ़ीम उसके चारों ओर खड़े थे* (यशायाह 6:1–2)। उन्होंने केसरिया वस्त्र पहन रखा था; उनका मुख अति दीप्तिमान था, और उनकी आँखें प्रेम से मेरी ओर देख रही थीं। यह देखकर, मैं उनके सामने साष्टांग दण्डवत हो गया, और उनके अति दीप्तिमान और भव्य महिमा के सिंहासन की आराधना करने लगा। जब मैंने उनका मुख देखा तो जो आनंद मुझ पर छा गया, उसे शब्दों में बयां नहीं किया जा सकता; यहाँ तक कि अब भी, जब मैं उस दर्शन को याद करता हूँ, तो मैं अनकही आनंद से भर जाता हूँ। मैं अपने प्रभु के सामने काँपता हुआ पड़ा था, और इस दया पर विस्मित था कि उन्होंने मुझे, एक दुष्ट और पापी मनुष्य को, उनके सामने खड़े होने और उनकी दिव्य सुंदरता को निहारने की अनुमति दी। अपनी अयोग्यता पर चिंतन करते और अपने प्रभु की महिमा पर मनन करते हुए, मेरी आँखों में आँसू आ गए और मैंने स्वयं से यशायाह भविष्यवक्ता के वचन दोहराए: *'हाय, मैं बर्बाद हो गया! क्योंकि मैं अशुद्ध होंठों वाला मनुष्य हूँ, और मैं अशुद्ध होंठों वाले लोगों के बीच रहता हूँ—और मेरी आँखों ने राजा, सेनाओं के प्रभु को देखा है* (यशायाह 6:5)। और मैंने अपने परम दयालु सृष्टिकर्ता को सुना, जिन्होंने अपने परम मधुर और शुद्ध होठों से मुझसे तीन दिव्य शब्द कहे, जिन्होंने मेरे हृदय को इतना मधुर कर दिया और उसमें प्रेम की ज्योति प्रज्वलित कर दी कि, आत्मा की ऊष्मा से, मैं पूरी तरह से मोम की तरह पिघल गया, और दाऊद का वचन मुझ में पूरा हुआ: *'मेरा हृदय मोम के समान हो गया है; वह मेरे भीतर पिघल गया है* (भजन संहिता 21:15)। इसके बाद, सम्पूर्ण स्वर्गदूतों ने एक अद्भुत और अकथनीय स्तोत्र गाया, और फिर—मुझे स्वयं भी समझ नहीं आता कि कैसे—मैं खुद को एक बार फिर स्वर्ग में चलता हुआ पाया। और मैंने इस तथ्य पर मनन किया कि मैंने परमेश्वर की माता, सबसे पवित्र महिला को नहीं देखा था। और देखो, मैंने एक पुरुष को देखा, जो बादल की तरह तेजस्वी था, जिसने क्रूस उठा रखा था और बोल रहा था:

'क्या तुम यहाँ स्वर्गदूतों की सेनाओं की परम तेजस्वी रानी को देखना चाहते थे? लेकिन वह यहाँ नहीं हैं। वह अनेक कष्टों की दुनिया में चली गई हैं – लोगों की मदद करने और शोक करने वालों को सांत्वना देने के लिए। मैं तुम्हें उनका पवित्र स्थान दिखाता, लेकिन अब समय नहीं है, क्योंकि तुम्हें फिर से वहीं लौटना होगा जहाँ से तुम आए हो: प्रभु तुम्हें ऐसा ही आज्ञा देते हैं।'

जब उसने ये शब्द कहे, तो मुझे ऐसा लगा मानो मैं एक मीठी नींद में सो गया होऊँ; फिर, जागने पर, मैंने खुद को उसी जगह पाया जहाँ मैं पहले था, एक कोने में पड़ा हुआ। और मैं इस बात पर चकित था कि वह दर्शन के दौरान मैं कहाँ था, और मुझे क्या देखने की अनुमति मिली थी। मेरा हृदय अकथनीय आनंद से भर गया, और मैंने अपने प्रभु का धन्यवाद किया, जिन्होंने मुझ पर ऐसी कृपा करने की कृतज्ञता दिखाई।

संत एंड्रयू ने अपनी मृत्यु से पहले यह दर्शन अपने मित्र निकिफोरस को सुनाया, और उससे शपथ करवाई कि जब तक वह देह के बंधन से मुक्त नहीं हो जाता, तब तक वह इस बारे में किसी को न बताए। हालाँकि, निकिफोरस ने संत से विनती की कि वह प्रभु द्वारा कहे गए तीन शब्दों में से कम से कम एक शब्द उसे बता दें; लेकिन संत ऐसा बताना नहीं चाहते थे। इस प्रकार संत एंड्रयू, समाधि की अवस्था में, प्रेरित पौलुस की भाँति, वह देखे जो नश्वर नेत्र ने नहीं देखा, वह सुने जो नश्वर कान ने नहीं सुना, और उन स्वर्गीय सौंदर्यों के प्रकटीकरण में आनंदित हुए जिनकी मानव हृदय कल्पना

भी नहीं कर सकता था (1 कुरन्थियों 2:9)। और चूँकि स्वर्गीय रहस्यों के प्रकाशन के दौरान, उन्होंने परमेश्वर की परम पवित्र माता को नहीं देखा, इसलिए उन्हें ब्लाचेर्ना के चर्च में एक दर्शन में पृथ्वी पर उन्हें देखने की कृपा मिली, जब वह, लोगों की मदद करने के लिए आईं, भविष्यवक्ताओं के साथ, हवा में प्रकट हुईं, प्रेरितों और स्वर्गदूतों की सेनाओं के साथ, मानवजाति के लिए प्रार्थना करते हुए और उन्हें अपने पवित्र ओमोफोरीयॉन से ढकते हुए। उन्हें देखकर, धन्य व्यक्ति ने अपने शिष्य एपफिनियस से कहा:

'क्या तुम सभी की रानी और स्वामिनी को प्रार्थना करते हुए देख रहे हो?'

एपफिनियस ने उत्तर दिया:

'मैं उन्हें देख रहा हूँ, हे पवित्र पिता, और मैं विस्मय से भर गया हूँ।'

एक चमत्कारिक जीवन जीते हुए, संत एंड्रयू ने कई चमत्कार किए और बहुत अपमान और पिटाई सहन की, जैसा कि उनके जीवन की एक अलग पुस्तक में वर्णित है, जो निकिफोरस[6738] द्वारा लिखी गई थी। उन्होंने भविष्य की भविष्यवाणी की और कई पापियों को पश्चाताप के लिए प्रेरित किया। फिर वे शाश्वत निवासों[6739] में प्रस्थान कर गए, जहाँ वे पहले अस्थायी रूप से उठा लिए गए थे; अब, वहाँ हमेशा के लिए निवास कर, वे स्वर्गदूतों के साथ आनंदित हैं और त्रिमूर्ति के एक ईश्वर: पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के सामने परमानंद में खड़े हैं, जिनका यश सदा के लिए हो। आमीन।

ट्रोपारियन, स्वर 1:

तेरे प्रेरित पौलुस की यह वाणी सुनकर कि 'हम मसीह के लिए मूर्ख हैं', तेरा दास एंड्रयू, हे मसीह परमेश्वर, तेरे ही लिए पृथ्वी पर एक मूर्ख था। अत; जब हम अब उसकी स्मृति का सम्मान करते हैं, हम तुझ से प्रार्थना करते हैं: हे प्रभु, हमारे प्राणों को बचा।

कॉन्टाकियन, स्वर 4:

तुमने अपनी ही पसंद से मूर्ख का भेष धारण किया; तुम इस संसार की सुंदरता से कतई नफरत नहीं करते थे, तुमने सांसारिक बुद्धि को मुरझा दिया; उपवास और प्यास, सूर्य की तपिश और कड़कती ठंड, वर्षा और हिमपात, तथा अन्य सभी प्राकृतिक कठिनाइयों में तुम कभी नहीं डगमगाए; तुमने स्वयं को कसौटी पर परखे सोने की तरह शुद्ध किया, हे धन्य एंड्रयू।

16 अक्टूबर

3 अक्टूबर (पुराने कैलेंडर के अनुसार)

संत डायोनसियिस द एरोपागटि, पवित्र पुरोहित-शहीद का जीवन और शहादत

3 अक्टूबर को स्मरणोत्सव

[6738] मसीह के लिए मूर्ख संत एंड्रयू के जीवन के ग्रीक मूल में, निष्कर्ष में, लेखक लिखते हैं: 'मैं, निकिफोरस, सर्वशक्तिमान ईश्वर की कृपा से, शाही शहर की महान चर्च के पुरोहितों में गिना गया, जिसे ईश्वर की बुद्धि (सोफिया) कहा जाता है (यानी हागिया सोफिया कैथेड्रल), ने परम आदरणीय पिता एंड्रयू का अद्भुत और गौरवशाली जीवन लिखा है, जैसा कि मैंने अपनी आँखों से देखा और महिमामय एपफिनियस से सीखा, जो बाद में एक बिशप बने।"

[6739] मसीह के लिए मूर्ख संत एंड्रयू का 66 वर्ष की आयु में निधन हो गया। उनका निधन लगभग 936 ईस्वी में हुआ था।

पवत्रि शहीद डायोनसियिस द एरोपागटि[6740] का जन्म कुलीन माता-पति के यहाँ हुआ था जो मूर्तपिूजक थे, और उनका पालन-पोषण एथेंस के प्रसद्धि शहर[6741] में हुआ। अपनी युवावस्था में, उन्हें हेलेनकि ज्ञान[6742] का अध्ययन करने के लिए भेजा गया, जसिमें वे इतनी सीमा तक उत्कृष्ट हुए कि पच्चीस वर्ष की आयु तक, उन्होंने दार्शनकि ज्ञान में अपने सभी समकालीनों को पीछे छोड़ दयिा था। दार्शनकि वज्ञिानों में अपने ज्ञान को और अधकि परपिूर्ण करने की इच्छा से, वह मस्रि के हेलीओपोलसि शहर[6743] में चला गया, जहाँ लंबे समय से प्रसद्धि शक्षिक रहते थे। वहाँ, अपने मत्रि अपोलोफेनेस के साथ, डायोनसियिस ने खगोल वज्ञिान का अध्ययन कयि[6744] । उसी दनि जब हमारे उद्धार के लिए प्रभु मसीह को सूली पर चढ़ाया गया था, और जब दोपहर के समय सूर्य अंधकारमय हो गया और तीन घंटे तक अंधकार छा गया, डायोनसियिस ने आश्चर्य से कहा:

'या तो संपूर्ण जगत के स्रष्टा ईश्वर ही पीड़ा भोग रहे हैं, या यह दृश्यमान संसार समाप्त हो रहा है!'

उन्होंने मसीह के दुख के बारे में ये शब्द परमेश्वर की आत्मा की प्रेरणा से बोले, न कि इस युग की बुद्धमित्ता की शक्षिाओं के अनुसार। मस्रि से एथेन्स लौटने पर, डायोनसियिस ने ववािह कयि और अपने साथी नागरकिों में कुलीनता, बुद्धि और ईमानदारी में वशिष्टि होने के कारण, एरओिपागस का सदस्य बन गया। जब पवत्रि प्रेरति पौलुस, एथेन्स आकर, वहाँ एरेओपागोस में बुजुर्गों के सामने क्रूस पर चढ़ाए गए और जी उठे मसीह[6745] के वषिय में उपदेश दे रहे थे, तो डयिोनसियिस, पवत्रि प्रेरति के वचनों को ध्यान से सुनकर, उन्हें हृदय में बसा लयिा। शहर के अन्य बुजुर्ग प्रेरति के उपदेश के प्रति संशयवादी थे और उन्होंने उनसे कहा कि वे मसीह के बारे में उनका उपदेश कसिी अन्य समय सुनेंगे। लेकनि डायोनसियिस, जो दूसरों से अधकि बुद्धमिान थे, ने इस मामले पर पॉल के साथ नजिी तौर पर चर्चा करना शुरू कर दयिा[6746] । – प्रेरति पॉल ने उनसे पूछा:

'तुम कसिको ईश्वर मानते हो?'

डायोनसियिस ने उन्हें शहर में क्रोनस, एफ्रोडाइट, ज्यूस, हेफ़ेस्टस, हर्मेस, डायोनसिस, आर्टेमसि और कई अन्य देवताओं को दखिाया[6747] । जब उन्होंने डायोनसियिस के साथ इन देवताओं को देखा, तो प्रेरति पौलुस ने एक मन्दरि देखा जसि पर लखिा था: 'अज्ञात ईश्वर को'। – उन्होंने डायोनसियिस से पूछा:

'यह "अज्ञात ईश्वर" कौन है?'

डायोनसियिस ने उत्तर दयिा, 'वह, जो देवताओं के बीच अभी तक प्रकट नहीं हुआ है, लेकनि जो समय आने पर आएगा। वह परमेश्वर है जो स्वर्ग और पृथ्वी पर राज्य करेगा, और उसके राज्य का कोई अंत नहीं होगा।'

यह सुनकर, प्रेरति ने अच्छी भूमि में परमेश्वर के वचन का बीज फलदायी रूप से बोना शुरू कर दयिा; डायोनसियिस के अपने ही शब्दों के आधार पर, प्रेरति ने उसे बताया कि यह परमेश्वर पहले ही आ चुका है, कि वह परम पवत्रि सदा-

---

[6740] एरेओपाजेट – सर्वोच्च एथेनयिन राज्य परषिद और न्यायकि अदालत – एरेओपागस का सदस्य।

[6741] एथेंस – प्राचीन यूनानी राज्य की राजधानी; यह अपनी इमारतों, मूर्तयिों, व्यापार और उद्योग के वकिास, और वशिष रूप से अपने स्कूलों के लिए प्रसद्धि था। अपेक्षाकृत हाल तक (ईसा पूर्व 6ठी सदी), यह प्रसद्धि दार्शनकि स्कूलों का घर था, जहाँ प्राचीन भूमि के लोग अपनी शक्षिा प्राप्त करते थे।

[6742] हेलेनकि – ग्रीक; कभी-कभी इस शब्द का अर्थ 'पैगन' होता है; मसीह के जन्म के समय तक, यूनानी प्राचीन काल के सबसे शक्षिति लोग थे।

[6743] हेलओिपोलसि – अफ्रीका का एक शहर; यह मस्रि की नील नदी के दक्षणिी तट पर, इसके पूर्वी प्रवाहों में से एक पर, नचिले मस्रि के दक्षणि में स्थति था।

[6744] खगोल वज्ञिान – वह वज्ञिान जो खगोलीय पंडिों की गति को नयिंत्रति करने वाले नयिमों का अध्ययन करता है। मस्रि के वद्विान, अर्थात् पुरोहति, इस वज्ञिान के अध्ययन के लिए वशिष रूप से प्रसद्धि थे।

[6745] प्रेरति पौलुस की सुसमाचार प्रचार करने की दूसरी महान यात्रा के दौरान – लगभग ईस्वी 54 के आसपास।

[6746] यह प्रेरतिों के काम की पुस्तक: 17:15–34 में वस्तिार से वर्णति है।

[6747] क्रोनस या क्रोनोस – समय के देवता, यूरेनस (स्वर्ग) के पुत्र। यूनानयिों का मानना था कि उन्होंने पृथ्वी पर स्वर्ण युग की शुरुआत की, जो मानव इतहिास की सबसे शुरुआती अवधि के दौरान अस्तत्वि में था। – एफ्रोडाइट या वीनस – नारी सौंदर्य और प्रेम की देवी। – ज्यूस (या जुपटिर, जैसा कि रोमनों ने उसे बुलाया) को यूनानयिों द्वारा मुख्य देवता, देवताओं और मनुष्यों के पति, स्वर्ग और पृथ्वी के शासक, गर्जना और बजिली, हवाओं और बारशि के रूप में पूजा जाता था। – हेफेस्टस – आग उगलने वाले पहाड़ों के देवता और लोहार के काम के संरक्षक। – हर्मीस – व्यापार और मनुष्यों तथा देवताओं के बीच सभी प्रकार के संचार के देवता और संरक्षक – देवताओं की इच्छा के दूत। – डायोनसिस या बैकस – शराब और आनंद के देवता। – आर्टेमसि या डायना, यूनानयिों के बीच एक प्रसद्धि पैगन देवी, चंद्रमा का प्रतीक थीं और उन्हें जंगलों और शकिार की संरक्षक माना जाता था।

कुँवारी मरयिम से जन्मा था और, क्रूस पर कीलों से ठोक दिए जाने के बाद, मानव जाति के उद्धार के लिए पीड़ा सहन की। उनके दुख को सहन न कर पाने से, सूर्य अंधकार में बदल गया, और तीन घंटों तक उसने ब्रह्मांड पर कोई प्रकाश नहीं डाला। यही परमेश्वर है जो मरे हुओं में से जी उठे और स्वर्ग में आरोहण किए। 'इसलिए, डायोनसियिस,' पवित्र प्रेरित पौलुस ने निष्कर्ष निकाला, 'उस पर विश्वास करो, उसे जानो, और सच्चे परमेश्वर, यीशु मसीह की धार्मिकता में सेवा करो।'

डायोनसियिस को वह अंधकार याद आया जो पूरी पृथ्वी पर छा गया था, जिसका उल्लेख संत पौलुस ने भी किया था, और वह तुरंत इस विश्वास पर पहुँच गया कि उस समय परमेश्वर ने मानव रूप में दुख उठाया था। इसके बाद, उसने उस परमेश्वर, प्रभु यीशु मसीह, के ज्ञान के लिए अपना हृदय खोल दिया जो अब तक अज्ञात थे। दिव्य अनुग्रह के प्रकाश से प्रबुद्ध होकर, डायोनसियिस ने प्रेरित से विनती करना शुरू कर दिया कि वे उसकी ओर से ईश्वर से प्रार्थना करें, कि वह उस पर दया करें और उसे अपने सेवकों में गिनें।

जब प्रेरित पौलुस एथेन्स नगर से जा रहे थे, तो एक अंधा आदमी—जिसे सभी जन्म से अंधा जानते थे—प्रेरित से अपनी दृष्टि लौटाने की विनती करने लगा। पवित्र प्रेरित ने अंधे आदमी की आँखों पर सूली का चिन्ह बनाते हुए कहा:

'हे मेरे प्रभु यीशु मसीह, जिन्होंने *"ज़मीन पर थूककर लार से कीचड़ बनाया, और अंधे के आँखों पर वह कीचड़ लगाया"* (यूहन्ना 9:6), और उसे दृष्टि प्रदान की—वे तुम्हें भी अपनी महिमा से प्रकाशित करें!'

और तुरंत बाद उस अंधे आदमी को दृष्टि प्राप्त हो गई। प्रेरित पौलुस ने उसे डायोनसियिस के पास जाकर यह कहने का आदेश दिया:

'पौलुस, जो यीशु मसीह का सेवक है, ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है, ताकि, जैसा तुमने वादा किया था, तुम उसके पास आओ और बपतिस्मा लेकर अपने पापों की क्षमा प्राप्त करो।'

अंधा चला गया और उसने वही किया जो प्रेरित पौलुस ने आज्ञा दी थी; उसी समय उसने उस अनुग्रह का प्रचार किया जो परमेश्वर ने प्रेरित के द्वारा उस पर किया था। अंधा आदमी जिसे वह जानता था, अपनी दृष्टि फिर से पा चुका था, यह देखकर डायोनसियिस का मसीह में विश्वास और भी दृढ़ हो गया। अपनी पत्नी दमारिस[6748] , अपने बेटों और अपने पूरे घर-परिवार के साथ, वह तुरंत प्रेरित पौलुस के पास गया और उनसे बपतिस्मा लिया। इसके बाद, डायोनसियिस ने अपना घर, पत्नी और बच्चों को छोड़ दिया, प्रेरित पौलुस के साथ जुड़ गए और तीन वर्षों तक उन स्थानों पर उनका अनुसरण किया जहाँ प्रेरित ठहरे थे। डायोनसियिस ने प्रेरित पौलुस से जो सीखा, उसकी गवाही उनके लेखों से मिलती है: 'दिव्य रहस्यों पर'[6749] । बाद में, डियोनसियिस को प्रेरित पौलुस द्वारा बिशप नियुक्त किया गया और उन्हें थिस्सलुनीके से एथेंस भेजा गया ताकि वहां के लोगों के उद्धार के लिए सेवा कर सकें। इस डियोनसियिस ने न केवल प्रेरित पौलुस का, बल्कि सभी प्रेरितों का उपदेश सुना। जब वे सभी परमेश्वर की अति पवित्र माता के दफन के लिए एकत्रित हुए थे, तब वह भी उनके बीच था। वह स्वयं अपनी पुस्तकों में लिखता है कि वह यरूशलेम में पवित्र सेपल्चर में था, जहाँ उसने परमेश्वर के भाई जेम्स[6750] और प्रमुख प्रेरित पतरस को देखा और सुना। वहाँ, डियोनसियिस ने धर्मप्रचारक जॉन को प्रेरित पौलुस के शिष्यों: संत तिमोथी और हिरोथियस, और कई अन्य भाइयों के साथ देखा, जब वह वहाँ विश्वास के रहस्यों पर उपदेश दे रहे थे।

[6751]मसीह के प्रति परिवर्तित होने के बाद, संत डायोनसियिस कुछ समय के लिए एथेंस में रहे और उन्होंने पवित्र प्रेरित पौलुस द्वारा वहाँ स्थापित परमेश्वर की कलीसिया का बहुत विस्तार किया। इसके बाद, डियोनसियिस ने पवित्र प्रेरितों की तरह, अन्य देशों में सुसमाचार का प्रचार करने और मसीह के नाम के लिए पीड़ा सहने की इच्छा व्यक्त की, ठीक वैसे ही जैसे उनके शिक्षक – धन्य पौलुस – ने रोम में नीरो के हाथों मसीह के लिए पीड़ा सहन की थी[6752] । एथेन्स में

[6748] दामारिस का उल्लेख प्रेरितों के काम की पुस्तक में भी मिलता है: प्रेरितों के काम 17:34।

[6749] 'रहस्यमयी धर्मशास्त्र' – जैसा कि इस कृति को भी कहा जाता है – यह तर्क देती है कि ईश्वर की सभी मानवीय धारणाएँ और परिभाषाएँ उसके सार को व्यक्त करने में असफल रहती हैं, और ईश्वर का अध्ययन अकल्पनीय दिव्य सत्ता के रहस्यमयी मनन में निहित होना चाहिए।

[6750] संत जेम्स प्रेरित (छोटे) अल्फाउस (क्लेओपास) और मरयिम के पुत्र थे, जो परमेश्वर की माता की बहन थीं (यूहन्ना 19:25; मरकुस 15:40, 47, 16:1; लूका 24:10; मत्ती 13:55; मरकुस 6:3)। उन्होंने यरूशलेम में कलीसिया के संगठन में विशेष ध्यान दिया और सन् 62 में शहीद हो गए। उन्होंने अनुष्ठान (लिटर्जी) का सबसे पुराना स्वरूप छोड़ा, जिसे उन्होंने स्वयं संकलित किया था।

[6751] बाद में, यहाँ सेंट-डेनिस का प्रसिद्ध मठ बनाया गया, जो प्राचीन फ्रांसीसी राजाओं का दफन स्थल था।

[6752] नीरो – रोमन सम्राट (54–68 ईस्वी) – ईसाइयों का पहला निर्दयी उत्पीड़क था। 66 या 67 में, इस उत्पीड़न के दौरान, प्रेरित संत पौलुस को तलवार से सिर कलम करके मृत्युदंड दिया गया और उन्होंने शहीद की मृत्यु प्राप्त की।

अपने उत्तराधिकारी के रूप में एक बिशप की नियुक्ति करने के बाद, डायोनिसियस रोम चले गए, जहाँ उन्हें रोम के बिशप संत क्लेमेंट[6753] द्वारा खुशी-खुशी स्वीकार किया गया। उनके साथ थोड़ा समय बिताने के बाद, संत डायोनिसियस को क्लेमेंट द्वारा - बिशप लूसियन, पुरोहित रस्टिकस, डीकन एलेउथेरीउस और अन्य भाइयों के साथ - गॉल[6754] भेजा गया, ताकि वहाँ के मूर्तिपूजकों को परमेश्वर का वचन प्रचारित किया जा सके। उनके साथ गॉल पहुँचने पर, संत डायोनिसियस ने उस भूमि के निवासियों को परमेश्वर का वचन प्रचार करना शुरू किया, और पेरिस शहर में[6755] उन्होंने कई लोगों को मूर्तिपूजा से हटाकर प्रभु में विश्वास दिलाया। वहाँ उन्होंने नव-धर्म परिवर्तित ईसाइयों द्वारा एकत्रित धन से एक चर्च का निर्माण किया। इस चर्च में, डियोनिसियस ने रक्तहीन बलिदान किए, और ईश्वर से प्रार्थना की कि वह उन्हें अपने झुंड के कई लोगों को चर्च की ओर आकर्षित करने की शक्ति प्रदान करें। जब वहाँ परमेश्वर का वचन इस प्रकार फैल रहा था, तो नीरो के बाद दूसरी बार, डोमिशियन[6756] द्वारा उत्पीड़न शुरू किया गया। इस सम्राट ने सैन्य कमांडर सिसीनियस को गॉल भेजा ताकि वहाँ के ईसाइयों को यातनाएँ दी जा सकें। पेरिस शहर पहुँचने पर, सिसीनियस ने सबसे पहले डायोनिसियस—जो अपने चमत्कारों और ईश्वर की बुद्धि के लिए प्रसिद्ध हो गए थे—को यातना देने के लिए गिरफ्तार करने का आदेश दिया; रस्टिकस और एलेउथेरीउस को उनके साथ ले जाया गया, जबकि बाकी भाइयों ने अन्य देशों में प्रचार करने के लिए पीछे हट गए। इस समय तक संत डायोनिसियस सुसमाचार का प्रचार करने के श्रम से बहुत बूढ़े और थके हुए थे। जब उन्हें, कसकर बाँधकर, रुस्टिकस और एलेउथेरीउस के साथ कमांडर सिसीनियस के सामने लाया गया, तो उन्होंने उन्हें एक नज़र में देखकर गुस्से से कहा:

'क्या तुम वही दुष्ट बूढ़ा डायोनिसियस हो, जो हमारे ई[6757] देवताओं की निंदा करके उनकी सभी पूजा को उलट देता है और राजा की आज्ञाओं को ठुकराता है?'

संत ने उत्तर दिया:

'यद्यपि, जैसा कि आप स्वयं देख सकते हैं, मेरा शरीर बूढ़ा हो गया है, मेरा विश्वास युवा होकर खिलता है, और मेरे विश्वास की ипостаси हमेशा मसीह के लिए नए बच्चे उत्पन्न करती है।'

जब सिसीनिया ने पूछा, 'वह किसकी पूजा ईश्वर के रूप में करता है?', तो संत डायोनिसियस ने उन्हें सत्य का वचन सुनाया और परम पवित्र त्रिमूर्ति – पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा – के महान नाम का उच्चारण किया।

लेकिन राज्यपाल, एक बहरे साँप की तरह[6758] और उद्धारकारी उपदेश सुनने को तैयार नहीं, ने तीनों—डायोनिसियस, रस्टिकस और एलेउथेरीउस—से पूछा कि क्या वे राजा की आज्ञा मानकर मूर्तिपूजक देवताओं को बलिदान चढ़ाना चाहते हैं। उन्होंने, मानो एक ही स्वर में, उत्तर दिया:

'हम ईसाई हैं; हम स्वर्ग में स्थित एकमात्र ईश्वर की आराधना करते हैं, और उसी की उपासना करते हैं; परन्तु हम राजा की आज्ञा का पालन नहीं करेंगे।'

तब सिसीनियस ने आदेश दिया कि डायोनिसियस को नग्न कर दिया जाए और रस्सियों से निर्दयतापूर्वक कोड़ा मारा जाए। संत ने यह सब सहन किया, ईश्वर का धन्यवाद करते हुए कि उन्होंने उन्हें अपने शरीर पर उसके घावों को वहन करने के योग्य समझा। रस्टिकस और एलेउथेरीअस को भी ठीक उसी तरह यातनाएँ दी गईं, लेकिन वे भी, डियोनिसियस के उदाहरण से और, सबसे बढ़कर, स्वयं ईश्वर से बल प्राप्त कर, अपनी सहनशीलता के द्वारा मसीह की महिमा करते हुए शहीद हो गए। सिसीनियस ने, यह महसूस करते हुए कि जल्लादों के हाथ जल्द ही थक जाएँगे जबकि संतों की सहनशीलता नहीं टूटेगी, शहीदों को उसी दिन जेल में डालने का आदेश दिया। अगली सुबह, नौकरों ने संत डायोनिसियस को कालकोठरी से बाहर निकाला और, यातना देने वाले के आदेश पर, उसे लाल-गरम लोहे पर लिटा दिया। इस बीच, संत ने भजन गाया: *'तेरा वचन बहुत शुद्ध है* [और अग्निमय], *और तेरा दास इसे प्रेम करता है*[6759] (भजन संहिता 118:140)।

[6753] संत क्लेमेंट, रोम के तीसरे बिशप (92–101)। उन्होंने सम्राट ट्राजन के अधीन (101 में) शहादत पाई। कोरिंथियों के नाम उनका पत्र चर्च के लाभ के लिए उनके काम का एक प्रमाण है।

[6754] गॉल – आज का फ्रांस।

[6755] पेरिस – अब फ्रांस की राजधानी, सीन नदी पर; प्राचीन काल में इसे लुटेशिया कहा जाता था।

[6756] डोमिशियन ने 81 से 96 तक शासन किया।

[6757] रोमनों के भी देवता ग्रीकों के समान ही थे, बस नाम अलग थे।

[6758] एस्प विषैले साँप की एक प्रजाति है। धार्मिक ग्रंथों में, इस शब्द का कभी-कभी शैतान को संदर्भित करने के लिए उपयोग किया जाता है।

[6759] भजन के इस छंद में, भजनकार परमेश्वर के वचन और परमेश्वर की आज्ञाओं के बारे में बात करता है, जिन्हें वह सबसे बढ़कर प्रेम करता था। आग के कष्टों को सहते हुए, संत डायोनिसियस उन्हें भूल जाते प्रतीत होते हैं, और उनके होठों पर केवल परमेश्वर का वचन ही रहता है।

इसके बाद, संत को लोहे से हटाकर, उन्हें चीजों द्वारा खाए जाने के लिए फेंक दिया गया। लेकिन संत चीजों से भी बाल-बाल सुरक्षित रहे, क्योंकि ईश्वर ने उनके मुँह पर ताला लगा दिया था। फिर संत को भड़कती आग में फेंक दिया गया, लेकिन वहाँ भी वह बाल-बाल सुरक्षित रहे, क्योंकि आग ने संत को छुआ भी नहीं और न ही उन्हें कोई हानि पहुँचाई; जिसके बाद उन्हें एक बार फिर रुस्टिकस और एलेउथेरीउस के साथ कालकोठरी में डाल दिया गया। कई विश्वासी उस कालकोठरी में आए जहाँ डायोनिसियस को रखा गया था, और वहाँ संत ने उनके लिए दिव्य लिटर्जी का अनुष्ठान किया और उन्हें मसीह के शरीर और रक्त के पवित्र रहस्यों का प्रशास□ किया। जब वे दैवीय अनुष्ठान का अनुष्ठान कर रहे थे, तो विश्वासियों ने धन्य डायोनिसियस के ऊपर एक अकथनीय प्रकाश देखा: महिमा के राजा स्वर्गदूतों की एक सेना के साथ प्रकट हुए, और, जहाँ तक विश्वासियों की भौतिक आँखों के लिए संभव था, उन्होंने उन्हें देखा। कुछ समय बीत जाने के बाद, डायोनिसियस, रस्टिकस और एलेउथेरीउस को कालकोठरी से बाहर निकालकर सैन्य कमांडर के सामने लाया गया, जिसने एक बार फिर उन्हें मूर्तियों को बलिदान चढ़ाने के लिए कहा। संतों ने आज्ञा मानने से इनकार कर दिया, लेकिन उन्होंने मसीह को सच्चे ईश्वर के रूप में स्वीकार किया। फिर यातना देने वाले ने, अपने क्रोध में, संतों को बेरहमी से पीटने का आदेश दिया, और बाद में उन्हें तलवार से सिर कलम करने की सजा सुनाई।

जैसे ही संतों को शहर से बाहर एरिया[6760] नामक पहाड़ की ओर ले जाया जा रहा था, डायोनिसियस ने पुकार कर प्रार्थना की:

'हे ईश्वर, मेरे ईश्वर, जिन्होंने मुझे बनाया और मुझे अपनी अनंत बुद्धि सिखाई, जिन्होंने मुझे अपने रहस्य बताए, और जो मेरे साथ रहे हैं, चाहे मैं कहीं भी रहा हूँ। मैं उन सभी के लिए आपका धन्यवाद करता हूँ जो आपने अपने परम पवित्र नाम की महिमा के लिए मुझसे कराये हैं, और इस लिए कि आपने मेरे वृद्धावस्था—जो परिश्रम से थकी हुई और आपको देखने की लालसा से ग्रस्त थी—पर कृपा की, और मुझे अपने मित्रों के साथ अपने पास बुलाया। इसलिए, मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ: मुझे और मेरे मित्रों को स्वीकार करें; उन पर दया करें जिन्हें आपने अपने लहू से छुड़ाया है और हमें आपकी सेवा के लिए अपने सेवकों में गिन लिया है, क्योंकि शक्ति और सामर्थ्य आपके ही हैं, पिता और पवित्र आत्मा के साथ, युगानुयुग।

तब, 'आमीन' शब्द उच्चारित करके, संत ने यीशु मसीह के परम पवित्र नाम के सामने अपना पवित्र सिर झुकाया, और एक कुंद कुल्हाड़ी से उनका सिर कलम कर दिया गया। उनके साथ, संत एलेउथेरीउस और रस्टिकस ने भी मसीह के लिए अपने प्राण न्योछावर कर दिए।

अपने सेवक डायोनिसियस की मृत्यु के बाद, ईश्वर ने एक गौरवशाली चमत्कार किया। संत का शरीर, जिसका सिर कलम कर दिया गया था, ईश्वर की शक्ति से अपने पैरों पर खड़ा हो गया और, अपना सिर हाथों में उठाकर, दो स्टेडियम[6761] तक चला, उस स्थान तक जहाँ ईसाइयों ने एक चर्च बनाया था। तब उसके सिर को कैटुला नामक एक धर्मनिष्ठ महिला के हवाले करने के बाद, वह जमीन पर गिर पड़ा। इस चमत्कार को देखकर कई अविश्वासियों ने मसीह में विश्वास करना शुरू कर दिया। संत का सिर प्राप्त करने के बाद, कैटुला ने शरीर को भी ले जाने की इच्छा व्यक्त की, लेकिन मूर्तिपूजकों ने उसे ऐसा करने की अनुमति नहीं दी। तब कैटुला ने रक्षकों को अपने घर आमंत्रित किया, उनका आतिथ्य सत्कार किया और उन्हें उपहार दिए, साथ ही ईसाइयों को दियोनिसियस के पवित्र शरीर को ले जाने का निर्देश भी दिया। ईसाइयों ने दियोनिसियस के शरीर को ले जाकर ठीक उसी स्थान पर दफनाया जहाँ कैटुला को सिर दिया गया था।

संत डायोनिसियस ने अपने जीवन के नब्बेवें वर्ष में, मसीह के जन्म के छियानबेवें वर्ष में शहादत प्राप्त की। उनके मकबरे पर मसीह और हमारे ईश्वर की महिमा के लिए कई चमत्कार हुए, जो पिता और पवित्र आत्मा के साथ युगों-युगों तक महिमामय हैं। आमीन[6762] .

[6760] एरीवा, अर्थात् मंगल का। एरेस या मंगल युद्ध का मूर्तिपूजक देवता है।

[6761] 'पॉपलसि' दूरी की एक इकाई है; यह 690 सैज़ेन के बराबर थी। इस प्रकार दो 'पॉपलसि' 1,380 सैज़ेन या 2.75 वर्स्ट के बराबर होते हैं।

[6762] उपरोक्त कृतियों के अलावा, डायोनिसियस द एरोपागिट निम्नलिखित ग्रंथों के भी लेखक हैं: क) 'दिव्य पदानुक्रम पर', जो स्वर्गदूतों के नौ आदेशों के सिद्धांत को प्रस्तुत करता है, जिसमें प्रत्येक की विशेषताओं और कर्तव्यों की व्याख्या की गई है; ख) 'चर्च की पदानुक्रम पर' – जिसमें चर्च की पदानुक्रम के पदों का सिद्धांत समान व्याख्या के साथ प्रस्तुत किया गया है; ग) 'ईश्वर के नामों पर'; यहाँ डायोनिसियस पवित्र धर्मग्रंथों में प्रयुक्त ईश्वर के नामों के अर्थ की व्याख्या करते हैं; और घ) 'विभिन्न व्यक्तियों को दस पत्र'।

ट्रोपारयिन, स्वर 4:

भलाई सीखकर और हर बात में संयमी रहकर, आप एक शुद्ध अंतरात्मा की पवित्र शोभा से परिपूर्ण हुए; आपने चुने हुए पात्र[6763] से अवर्णनीय को ग्रहण किया, और, विश्वास बनाए रखते हुए, आपने अपना मार्ग पूरा किया: हे पवित्र शहीद डायोनिसियस, हमारे ईश्वर मसीह से प्रार्थना करें कि हमारी आत्माएँ उद्धार पाएँ।

कॉन्टाकियन, स्वर 8:

[6764]पवित्र प्रेरित पॉल के शिष्य के रूप में, जो तीसरे स्वर्ग तक पहुँचे, आप, डियोनिसियस, शब्दों से परे हर प्रकार की समझ से समृद्ध हुए, और आपने अज्ञानता के अंधकार में बैठे लोगों को प्रकाशित किया। इसलिए हम पुकारते हैं: हे संपूर्ण जगत के पिता, आनंदित हो।

संत कार्पस और दो पापियों के संबंध में संत डायोनिसियस की कथा

3 अक्टूबर को स्मरणोत्सव

संत डायोनिसियस द एरोपागिट, अपने पत्र में[6765] , भिक्षु डेमोफिलिस को, जो नम्रता और दया सिखाने के उद्देश्य से लिखा गया था, निम्नलिखित घटना का स्मरण करते हैं।

वे कहते हैं, 'ऐसा हुआ कि जब मैं क्रीट द्वीप[6766] का दौरा कर रहा था, तो मैं धन्य कार्पस, जो पवित्र प्रेरित पौलुस[6767] के शिष्य थे, के घर पर ठहरा।' यह व्यक्ति अपने गुणों में महान और मन की इतनी ऊँची पवित्रता से विशिष्ट था कि उसमें दैवीय दर्शनों के लिए एक बड़ी क्षमता थी: वह तब तक परम पवित्र और जीवन-दायक रहस्यों का अनुष्ठान भी नहीं करता था जब तक उसे स्वर्ग से एक दैवीय दर्शन की कृपा प्राप्त नहीं हो जाती थी। यह पवित्र पुरुष – जैसा कि उन्होंने स्वयं संत डायोनिसियस को सुनाया था – एक अविश्वासी से दुखी थे। उनके दुख का कारण यह था कि उस अविश्वासी ने एक विश्वासी को चर्च से दूर अपनी दुष्टता की ओर ले गया था। धन्य कार्प इस घटनाक्रम से गहराई से व्यथित थे। बेशक, उन्हें धैर्य बनाए रखना चाहिए था और विश्वास से भटक गए व्यक्ति को ज्ञान के शब्दों से निरंतर प्रोत्साहित करना चाहिए था, साथ ही अपनी कोमलता से अविश्वासी को भी अपने पक्ष में करना चाहिए था; उन्हें प्रभु से विनम्रतापूर्वक प्रार्थना करनी चाहिए थी, कि वे एक बार फिर उस व्यक्ति को जो दुष्टता की ओर भटक गया था, अपनी पवित्र कलीसिया की ओर मोड़ दें और अविश्वास के अंधकार में रहने वाले को विश्वास के प्रकाश से प्रकाशित करें। लेकिन कार्प, जिन्होंने पहले कभी किसी भी बात में अधीरता नहीं दिखाई थी, इस अवसर पर अपने आत्मा में गहराई से , दुखी थे। शाम के देर से, जैसे ही आधी रात नज़दीक आई, वह प्रार्थना करने के लिए उठा। – वह प्रार्थना करने के लिए आधी रात को उठने का आदी था। – जब वह प्रार्थना कर रहा था, तो वह उन दो व्यक्तियों के कारण अपने भीतर उत्पन्न गहरे दुख पर काबू नहीं पा सका। उसे यह ख्याल आने लगा कि ये अधर्मी लोग, जो प्रभु के धर्मी मार्गों को

[6763] यहाँ संदर्भित 'चुना हुआ पात्र' संत पौलुस प्रेरित हैं, जिन्होंने संत डायोनिसियस को ईसाई धर्म के प्रकाश से प्रबुद्ध किया।

[6764] अर्थात्, प्रेरित पौलुस (2 कुरिन्थियों 12:2)।

[6765] यह पत्र, जैसा कि *ग्रेट मेनोलॉजी* से स्पष्ट है, डेमोफिलिस को लिखा गया था, जो चर्च से एक ऐसे पुरोहित के निष्कासन के संबंध में था जिसने उस समय चर्च से बहिष्कृत एक भाई को चर्च की संप्रदायिकता में स्वीकार कर लिया था।

[6766] क्रीट द्वीप (जिसे कैंडिया भी कहा जाता है – इसी नाम के राजधानी शहर के नाम पर) भूमध्य सागर के पूर्वी भाग में, ईजियन सागर के दक्षिण में स्थित है। अपनी विशालता और उर्वरता के कारण, इसे पहले भूमध्य सागर का 'द्वीपों की रानी' कहा जाता था। यहाँ मसीही धर्म प्रेरितिक युग से ही शुरू हो गया था; इसकी नींव प्रेरितों पर पवित्र आत्मा के अवतरण के प्रत्यक्षदर्शियों द्वारा रखी गई थी, क्योंकि उस घटना में क्रीटवासी उपस्थित थे (प्रेरितों के काम 2:11)। बाद में इसकी स्थापना और प्रचार यहाँ प्रेरित पौलुस द्वारा किया गया, जैसा कि तितुस को लिखे उनके पत्र से देखा जा सकता है, जिन्होंने तितुस को क्रीट में बिशप नियुक्त किया ताकि वह वह कार्य पूरा कर सके जो वे स्वयं नहीं कर सके थे और बुज़ुर्गों (presbyters) को नियुक्त कर सकें (तितुस 1:5)। 17वीं शताब्दी में, क्रीट द्वीप तुर्की के शासन में आ गया; यह अब ग्रीस का हिस्सा है।

[6767] संत कार्पस (सत्तर में से एक) संत पौलुस प्रेरित के एक शिष्य और सहकर्मी थे, जैसा कि मुख्य प्रेरित द्वारा तिमोथी को लिखी अपनी पत्रिका से स्पष्ट है: *'जब तुम आओ, तो वह ओढ़नी ले आना जो मैंने त्रोआस में कार्पस के पास छोड़ी थी, और पुस्तकें, विशेषकर चमड़े की पुस्तकें।'* (2 तीमु. 4:13)। कार्पस ने प्रेरित पौलुस के पत्रों को निर्देशानुसार पहुँचाया; उन्होंने मैसेडोनिया के शहर बेरिया में एक बिशप के रूप में सेवा की और ईसाई धर्म के प्रसार को लगन से बढ़ावा दिया। प्रेरित संत कार्पस का पर्व 26 मई को मनाया जाता है।

बगिाड़ रहे थे, उन्हें अन्यायपूर्वक पृथ्वी पर रहने दयिा गया था; और उसने परमेश्वर से प्रार्थना करना शुरू कर दयिा कि स्वर्ग से आग गरिकर उन दोनों पर पड़ जाए और उन्हें भस्म कर दे। जब वह इस प्रकार प्रार्थना कर रहा था, तो अचानक वह ऊपरी ककष जसिमें वह खड़ा था, ऊपर से हलि गया और दो भागों में टूट गया, जसिसे उसे ऐसा लगा मानो वह एक आँगन में खड़ा हो, और स्वर्ग से एक तेज, अग्नमिय ज्वाला उस पर बरस पड़ी। अपनी आँखें ऊपर उठाकर, उसने स्वर्ग खुलते देखा और उसमें यीशु मसीह को बैठे देखा, जो मानव रूप में अनगनित स्वर्गदूतों से घरि हुए थे। फरि, नीचे देखने पर, उसने पृथ्वी को फटते हुए देखा, जसिसे एक गहरी, अँधेरी खाई प्रकट हुई; और उस खाई के कनिारे वे दो व्यक्ति खड़े थे जनिके लिए कार्प ने अपने क्रोध में परमेश्वर से न्याय की माँग की थी। वे अपनी आँखों में वनिती भरी नज़रों और बड़े भय और कांपते हुए खड़े थे, क्योंकि वे खाई में गरिने की कगार पर थे; और उस खाई में एक साँप मचल रहा था, और अपने दाँत पीस रहा था। वहाँ दूसरे लोग भी थे जो उन दो पापयिों को उस भयानक साँप की ओर मारते, धकेलते और खींच रहे थे। कार्पे, यह देखकर कि जिन्होंने उसे दुखी कयिा था वे अब खाई में गरिने और साँप द्वारा नगिल लिए जाने के लिए तैयार थे, परम आनंद से भर गया; और कार्पे ने खुले आकाश और उसमें वरिाजमान यीशु मसीह पर उतना ध्यान नहीं दयिा, जतिना कि इन दो पापयिों की नकिटवर्ती वनिाश पर। लेकनि चूँकि वे गर्त में नहीं गरि, कार्प फरि से बेचैन और दुखी होने लगा, और फरि से ईश्वर से वनिती करने लगा कि वे गरिकर नष्ट हो जाएँ। जब उसने पहले की तरह स्वर्ग की ओर अपनी आँखें उठाईं, तो उसने देखा कि यीशु मसीह, स्वर्गीय सहिासन से उठकर, इन गर्त के कनिारे खड़े पुरुषों के पास आए थे और उन्हें एक सहायक हाथ दयिा था; जबकि स्वर्गदूत उन पुरुषों का सहारा दे रहे थे और उन्हें बल देते हुए, उन्हें गर्त से दूर खींच रहे थे। कार्पस से मसीह ने कहा:

'तुम अपने भाइयों के नाश की कामना क्यों करते हो? मेरे अनुकरण करो और कसिी पापी की मृत्यु की कामना न करो, क्योंकि मैं मानव जाति के उद्धार के लिए एक बार फरि दुख सहने को तैयार हूँ, बशर्ते कि लोग अपने दुष्ट मार्गों से मुँह मोड़ लें और अपने पापों से घृणा करें।'

उपरोक्त भकि्षु डेमोफलिस को लखि अपने पत्र में इस कहानी को सुनाते हुए, संत डायोनसियिस हमें यह सखिाने के लिए इसका उपयोग करते हैं कि हम पापयिों के प्रति कठोर न हों, और उनकी सज़ा की कामना न करें, बल्कि उनके पश्चाताप और मन फरिाने के लिए – ताकि हम ऐसे लोगों के लिए परमेश्वर से ईमानदारी से प्रार्थना करें, जो पापयिों की मृत्यु के इच्छुक नहीं हैं, ताकि वह स्वयं, अपनी कृपा से, उन्हें वापस मोड़ें और उन पर दया करें, क्योंकि वह धर्मी से प्रेम करते हैं, और पापयिों पर भी दया दखिाते हैं। युगानुयुग प्रभु की महमिा हो। आमीन।

केसरयिा के बशिप, पूजनीय होजेवा के जॉन की स्मृति

3 अक्टूबर को स्मरणोत्सव

हमारे पूजनीय पति जोहन द होज़ेवाइट[6768] मस्रि के थेब्स शहर के मूल नविासी थे। उनका मुंडन उनके दादा ने कयिा था और, इस वृद्ध के सलाह पर, उन्होंने यरूशलेम में पवत्रि स्थानों की तीर्थयात्रा की। वापसी पर, उन्होंने उस वरषि्ठ के साथ कई दनि बतिाए, और फरि उनसे दूर एक संकरी घाटी में चले गए, जहाँ उन्होंने एक छोटी गुफा पाई और वहाँ केवल जड़ों और जड़ी-बूटयिों पर जीवति रहे। जब ईश्वर ने अपने सेवक को महमिामय बनाना चाहा, तो उन्होंने इसे नम्निलखिति तरीके से प्रकट कयिा। उन क्षेत्रों में अनानयिा नाम का एक महान तपस्वी रहता था। एक दनि, एक व्यक्ति का बेटा, जो एक अशुद्ध आत्मा से पीड़ति था, उसके पास लाया गया। अनानयिास ने उसे स्वीकार नहीं कयिा, बल्कि बड़ी वनिम्रता से उन्हें देश के भीतरी हस्सिों में जाने और जॉन मस्रिवासी को खोजने के लिए कहा, जो उस लड़के को ठीक कर सकता था। जब भेजे गए लोग जॉन के पास पहुँचे, तो उन्होंने उन्हें बताया कि वे क्यों आए थे। पहले तो जॉन ने मना कर

[6768] परम पूजनीय जॉन को हुज़नि के मठ से 'होसेवाइट' उपनाम मलिा, जहाँ उन्होंने अपना अधकिांश संन्यासी जीवन बतिाया। यह मठ यरूशलेम और यरीहो के बीच, मुख्य सड़क के दाईं ओर, हुज़एिव या होसेवा के रेगस्तिान में स्थति था और यह नम्नि जॉर्डन घाटी में उतरने की जगह से बहुत दूर नहीं था। यह मठ एक जंगली और खुरदरे इलाके में स्थति था। चर्च और संतों की कोठरयिाँ एक घाटी के अंदर गहरी थीं और 50 सैज़ेन की ऊँचाई पर स्थति, चट्टानी पहाड़यिों से चपिकी हुई प्रतीत होती थीं। हुज़ाई मठ की स्थापना 5वीं शताब्दी में हुई थी। इसके पहले संस्थापक का नाम अज्ञात है। खुज़वि लावरा का सबसे बड़ा उत्कर्ष काल 6वीं, 7वीं और 8वीं शताब्दी था, जब यह अपने संतों के कठोर जीवन के लिए वशिेष रूप से प्रसदि्ध था। यह लावरा 12वीं शताब्दी में भी मौजूद थी। इसके बाद के भाग्य के बारे में कुछ भी ज्ञात नहीं है।

दयिा, लेकनि बहुत वनिती करने पर वह अशुद्ध आत्मा को भगाने के लिए राज़ी हो गया और उसने ईश्वर से प्रार्थना की। फरि, राक्षस की ओर मुड़कर, उसने कहा:

'यीशु मसीह के नाम पर—यह मैं नहीं, बल्कि अनन्यास है जो तुझे आज्ञा देता है, हे अशुद्ध आत्मा, कि इस लड़के से नकिल जा।'

संत के आदेश पर, अशुद्ध आत्मा लड़के से नकिल गया, और लड़का स्वस्थ हो गया तथा उसने सभी को उस शानदार चमत्कार के बारे में बताया जो उस पर कयिा गया था। इसके बाद, संत जॉन को अपनी इच्छा के वरिुद्ध, केसरयिा के बशिप का पद स्वीकार करने के लिए मजबूर कयिा गया; लेकनि, ऐसे सम्मान स्वीकार करने में असमर्थ और एक मठवासी जीवन जीने की इच्छा से, वह केसरयिा छोड़कर एक बार फरि से रेगस्तिान में चले गए, जहाँ वे अपने जीवन के अंत तक रहे।

ईश्वर ने अपने पवत्रि तपस्वी की महमिा अद्भुत चमत्कारों से की। एक व्यक्ति का छोटा बेटा एक अशुद्ध आत्मा से पीड़ति था। पति ने उसे एक टोकरी में रखा, उस पर घास बछिाई, उसे जॉन के पास ले गया और संत की गुफा के पास रख दयिा। जब बच्चा रोने लगा, तो संत उठे और तुरंत पहचान गए कि एक अशुद्ध आत्मा बच्चे के भीतर वास कर रही थी; राक्षस को भगाने के बाद, जॉन ने बच्चे को ठीक कर दयिा। लेकनि भगाया गया राक्षस शांत नहीं हुआ और मानव रूप धारण कर के तपस्वी से बदला लेने की कोशशि करने लगा। एक तटीय घाटी में संत से मलिते ही, दानव उनके पैरों पर गरि पड़ा, मानो आशीर्वाद मांग रहा हो। ईश्वर के सेवक, उसके चेहरे की एक अप्रत्याशति झलक देखकर, चौंक गए, और दानव ने संत के पैरों को पकड़कर उन्हें कनिारे की ओर फेंक दयिा; संत सरि के बल गरि, लेकनि ईश्वर की कृपा से, वे बाल-बाल बचे, जसिसे हत्यारे को कुछ भी हासलि नहीं हुआ। फरि दुष्ट आत्मा ने ईश्वर के सेवक को एक डाकू के हाथों सौंप दयिा, जसिने संत को पीटा, उनके कपड़े फाड़ दिए और यहाँ तक कि उनकी झोपड़ी भी जला दी। संत ने यह सब धैर्यपूर्वक सहन कयिा और केवल अपने आप से कहा:

'हे सर्वोच्च प्रभु! मैं आपको धन्यवाद देता हूँ, यदि यही आपकी इच्छा है।'

तब, सर्वोच्च की इच्छा से, डाकू पकड़ा गया और उसकी मृत्यु लज्जास्पद हुई, और ईश्वर के सेवक को कुछ समय के लिए राहत मलिी। लेकनि दुष्ट ने धन्य व्यक्ति के खलिाफ अपना संघर्ष बंद नहीं कयिा। एक दनि जब संत भाइयों से मलिने के लिए नकिले, तो रास्ते में एक महलिा उनसे मलिी और उनके पैरों पर गरि पड़ी, उनसे वनिती करने लगी कि वे उसके घर में आकर अपनी प्रार्थना और आशीर्वाद से उसे पवत्रि करें। संत उसकी वनितयिों से प्रभावति होकर अंदर चले गए। फरि दुष्ट प्रलोभी ने दरवाज़े बंद कर दिए और नग्न होकर, केवल उस पवत्रि व्यक्ति को कलंकति करने के उद्देश्य से, हर प्रकार के घृणति कृत्य करने लगी। लेकनि वह दृढ़ व्यक्ति शैतान की चालाकी के खलिाफ अडगि खड़ा रहा और उसे धक्का देकर अछूता बाहर नकिल आया।

धन्य जॉन, मार्शयिन नामक एक तपस्वी के बारे में सुनकर, जसिकी ख्याति दूर-दूर तक फैल रही थी, उसे देखने की इच्छा रखने लगे; इस बीच, इससे भी पहले, संत जॉन ने कसिी भी प्रलोभन से बचने के लिए, कसिी भी परस्थितिि में अपनी कोठरी न छोड़ने का संकल्प लयिा था, और इस उद्देश्य के लिए उन्होंने खुद को बाँध लयिा था और इन बंधनों को अटूट माना था। और इस प्रकार, प्रभु का एक स्वर्गदूत मार्शयिन को उसकी कोठरी से उठा ले गया और अचानक उसे धन्य योहन के सामने रख दयिा। उन्होंने एक-दूसरे का अभविादन कयिा और एक आध्यात्मकि वार्तालाप का आनंद लयिा। फरि स्वर्गदूत मार्शयिन को फरि से ले गया और वह अदृश्य हो गया।

संत जॉन ने कई लोगों से भूत-प्रेत भगाए, उन्हें गंभीर बीमारयिों से ठीक कयिा, प्रार्थना के माध्यम से पानी के झरने नकिाले, स्वर्ग से वर्षा मंगवाई, और ईश्वर की शक्ति से कई अन्य चमत्कार कएि; और अपनी वृद्धावस्था में, उन्होंने शांतपिूर्वक अपनी पवत्रि आत्मा को ईश्वर के सुपुर्द कर दयिा।

धन्य इसचियिस कोरेवाइट की स्मृति

3 अक्टूबर को स्मरणोत्सव

संत इसखियिस ने शुरू में अपनी आत्मा के उद्धार पर बलि्कुल भी ध्यान नहीं दयिा। लेकनि फरि वह बीमार पड़ गए, और अपनी बीमारी के दौरान उन्होंने पश्चाताप कयिा। फरि उन्होंने अपने आस-पास के सभी लोगों से उन्हें अकेला

छोड़ देने की विनती की, और बारह वर्षों तक पूर्ण मौन में एकांतवास में रहे[6769] , केवल रोटी और पानी पर जीवन यापन करते हुए, और अपना सारा समय प्रार्थना और आँसुओं में बिताया।

जब उनके निधन का समय निकट आया, तो मठ के भाइयों ने दरवाज़ा तोड़कर प्रवेश किया; लेकिन उन्होंने हेसिकियस से जो कुछ भी कहा, उन्हें उनसे केवल एक ही बात सुनने को मिली:

'मुझे क्षमा करो! जो कोई भी मृत्यु की स्मृति को अपने हृदय में रखता है, वह पाप नहीं करेगा।' भाई लोग परमेश्वर की कृपा से उसमें आए परिवर्तन को देखकर चकित रह गए, और उनकी मृत्यु के बाद, उन्होंने उनके शरीर को सम्मान के साथ दफनाया। कुछ समय बीत जाने के बाद , उन्होंने उनके पवित्र अवशेषों की खोज शुरू कर दी, लेकिन उन्हें कुछ भी नहीं मिला। इसके माध्यम से, प्रभु ने सभी को यह दिखाया कि जो लोग अपने उद्धार के प्रति लंबे समय की उपेक्षा के बाद भी, अपने मार्गों को सुधारना चाहते हैं, उनके लिए सच्ची पश्चाताप की शक्ति क्या है[6770] ।

17 अक्टूबर

4 अक्टूबर (पुराने कैलेंडर के अनुसार)

कज़ान के आर्चबिशप सेंट गुरी और ट्वर के बिशप सेंट वरसनोफी का जीवन।

4 अक्टूबर को स्मरणोत्सव

आदरणीय गुरी, जिनका जन्म ग्रेगरी के नाम से हुआ था, का जन्म रडोन्येज़ शहर में[6771] गरीब और कम-ज्ञात बोयारों, रूगोतिन्स, के यहाँ हुआ था। अपनी युवावस्था में, ग्रेगरी को राजकुमार इवान पेनकोव के घर में सेवा करने के लिए भेजा गया था। ग्रेगरी स्वभाव से विनिम्र और सौम्य थे; उन्हें अक्सर प्रार्थना करने के लिए चर्च जाना पसंद था, और वे घर पर भी प्रार्थना करते थे; उन्होंने अपनी पवित्रता की सावधानीपूर्वक रक्षा की और कठोर उपवास का पालन किया; उन्हें गरीबों को दान देना भी पसंद था और वे अन्य ईसाई सद्गुणों के लिए भी प्रसिद्ध थे। अपने अच्छे चरित्र और ईमानदारी के कारण, ग्रेगरी ने अपने मालिक का स्नेह जीता, जिसने उसे अपने पूरे घर का प्रबंधन सौंप दिया। लेकिन इससे ग्रेगरी के साथी नौकरों में ईर्ष्या पैदा हो गई, और उन्होंने राजकुमार के सामने उसकी बदनामी की, उस पर राजकुमार की अपनी पत्नी के साथ व्यभिचार का आरोप लगाया।

राजकुमार ने बदनाम करने वालों की बात पर विश्वास कर लिया और ग्रेगरी को मौत की सजा सुना दी। लेकिन राजकुमार का बेटा, जो अपने पिता से अधिक समझदार और विवेकी था, ने अपने पिता से विनती की कि वे ग्रेगरी को माफ कर दें और अपने निर्णय से अपने परिवार को शर्मिंदा न करें; और जब उसे पता चला कि यह सब बदनामी थी, तो उसने ग्रेगरी को मौत से बचा लिया। हालाँकि, द्वेष से ग्रस्त राजकुमार ने निर्दोष ग्रेगरी को एक गहरे कालकोठरी में कैद कर दिया। उस धन्य व्यक्ति ने वहाँ दो साल बिताए, भूख से त्रस्त, क्योंकि उसे जो भोजन दिया जाता था वह मानव उपभोग के लिए अनुपयुक्त था: हर तीन दिनों में, उसे जई का एक गुच्छा और थोड़ा सा पानी दिया जाता था। निर्दोष पीड़ित की दशा बहुत दयनीय थी, लेकिन उसने प्राचीन शहीदों के उदाहरण से शक्ति प्राप्त की और इस विचार में सांत्वना ली कि कालकोठरी ने उसे सांसारिक प्रलोभनों और चिंताओं से बचा लिया था, और उसका एकांत उसे अनंतकाल की तैयारी के लिए पूर्ण स्वतंत्रता प्रदान करता था।

[6769] आध्यात्मिक पूर्णता के लिए मौन एक महत्वपूर्ण ईसाई तपस्या अभ्यास है। पवित्र तपस्वी इस अभ्यास के महत्व से पूरी तरह से अवगत थे और मौन को संजोते थे। मिलान के संत एम्ब्रोज लिखते हैं: 'बोलने से अधिक कठिन है यह जानना कि कब चुप रहना है। मैं जानता हूँ कि कई लोग इसलिए बोलते हैं क्योंकि वे चुप रहना नहीं जानते। इसलिए, वह बुद्धिमान है जो चुप रहना जानता है। इस प्रकार, धर्मग्रंथ में ठीक ही कहा गया है: *'समय आने तक बुद्धिमान मौन रहेगा'* (सिरिक 20:7)।"

[6770] संत इसिचियस का वृत्तांत सिनाई के मठ के मठाधीश, संत जॉन क्लाइमक्स (सीढ़ी, अध्याय 6) की रचनाओं में मिलता है, जो संत इसिचियस के समकालीन थे। धन्य इसिचियस छठी शताब्दी में रहते थे और उन्होंने होरेब पर्वत पर तपस्या की, जिससे उन्हें होरेबाइट नाम मिला।

[6771] रैडोनेज़ मास्को से रोस्तोव की दिशा में 54 वर्स्ट और वर्तमान ट्रिनिटी लावरा से मास्को की दिशा में 10 वर्स्ट की दूरी पर स्थित था।

उनकी कैद का दूसरा वर्ष समाप्त होने को था, जब ग्रेगरी के एक पूर्व मित्र ने जेलर से विनती की कि उसे जेल की खिड़की तक आने और ग्रेगरी से बात करने की अनुमति दी जाए; जेलर मान गया। दोस्त रात में ग्रेगरी के पास गया और उसे अच्छा भोजन लाने की पेशकश की। लेकिन ग्रेगरी ने उसे दिए जाने वाले भोजन के अलावा कोई भी भोजन लेने से इनकार कर दिया, यह कहते हुए कि 'वह ईश्वर की प्रचुर और उमड़ती हुई कृपा से जीवित था'। तब ग्रेगरी ने अपने मित्र से कहा कि वह उसके लिए भोजन के बजाय बच्चों को पढ़ना-लिखना सिखाने वाले पाठ्यपुस्तकों को लिखने के लिए कागज, स्याही और कलमें लाए। ग्रेगरी ने अपने मित्र को इन पाठ्यपुस्तकों को बेचने का निर्देश दिया, और कहा कि उसका पैसा गरीबों में बाँट दिया जाए।

दो साल बाद, दयालु प्रभु ने, अपने उस सेवक के अटूट धैर्य को देखकर जो निर्दोष रूप से पीड़ित था, उसे उसके बंधनों से, जैसे नरक से, मुक्त करने की कृपा की, और अपनी शक्ति के अदृश्य हाथ से उसके लिए जेल का दरवाजा खोल दिया। अचानक, ग्रेगरी ने जेल के दरवाज़े में एक रोशनी देखी; वह यह सोचकर भय से भर गया कि यह एक शैतानी भ्रम है – क्योंकि वे दरवाज़े दो साल से नहीं खुले थे – और, अपने पैरों पर खड़ा होकर, वह प्रार्थना करने लगा। और एक बार फिर दरवाज़े में रोशनी दिखाई दी, जो पहले से भी ज़्यादा तेज़ थी। तब ग्रेगरी ने पास आकर अपने हाथ से दरवाज़ा छुआ, और दरवाज़ा तुरंत खुल गया। यह समझते हुए कि स्वयं ईश्वर उसे इस कालकोठरी से मुक्ति दे रहे हैं, ग्रेगरी ने प्रभु का धन्यवाद किया और ईश्वर की परम पवित्र माता की प्रतिमा, जिसे वह कालकोठरी में अपने साथ रखता था, लेकर निकल पड़ा, और किसी की नज़र में आए बिना बाहर आ गया, भले ही तब तक दिन का उजाला हो चुका था। और वह उस घर और शहर को छोड़कर, डॉर्मिशन मठ और सेंट जोसेफ मठ[6772] में आ गए। यहाँ ग्रेगरी ने गुरी नाम से मठवासी संन्यास ग्रहण किया और एक धर्मपरायण भिक्षु और तपस्वी बन गए; अपने अनुकरणीय मठवासी जीवन के लिए, उन्हें बाद में सेंट जोसेफ मठ का मठाधीश चुना गया। इस मठ में लगभग नौ वर्षों तक मठाध्यक्ष के रूप में सेवा करने के बाद, उन्होंने स्वास्थ्य खराब होने के कारण मठ छोड़ दिया और दो वर्षों तक एकांत में रहे, अपना समय उपवास और ईश्वर के चिंतन में समर्पित किया। फिर गुरिया को सेलिझारोव मठ[6773] का मठाध्यक्ष नियुक्त किया गया, लेकिन वे वहाँ एक वर्ष से अधिक नहीं रहे।

जब ईश्वर ने ज़ार इवान वासिलीविच को कज़ान का शहर प्रदान किया[6774] , तब, मेट्रोपॉलिटन मकारी की सलाह पर[6775] , रूसी मेट्रोपोलिस की संतों की परिषद ने लॉटरी द्वारा गुरी को कज़ान शहर का पहला आर्चबिशप नियुक्त किया[6776] । ज़ार ने उन्हें बड़े सम्मान के साथ काज़ान भेजा, उन्हें अनेक प्रतिमाएँ, कीमती चर्च के परिधान और कई पुस्तकें भेंट कीं; इसके अलावा, उन्होंने गुरी को स्वयं भी कई कीमती उपहार प्रदान किए। पवित्र पिताओं और विभिन्न मठों ने भी, अपनी ओर से, नव-सुसमाचारित क्षेत्र की आवश्यकताओं के लिए उपहार के रूप में बहुसंख्यक कीमती वस्तुएँ प्रस्तुत कीं[6777] । ईस्टर के बाद पवित्र पिताओं के रविवार, 26 मई 1555 को, सभी क्रेमलिन की घंटियों के बजने के बीच, मेट्रोपॉलिटन मकारी, क्रुतित्सा के बिशप निफोंट और मास्को के सभी आर्चिमैंड्राइट्स और मठाधीशों के साथ, साथ ही सेंट गुरी अपने आर्चिमैंड्राइट्स और अभिषिक्त पुरोहितों के साथ, ज़ार और संपूर्ण सिंक्लाइट की उपस्थिति में डोर्मिशन कैथेड्रल में औपचारिक रूप से एक विदाई प्रार्थना सभा का आयोजन किया। प्रार्थना सभा के समापन पर, संत गुरी, क्रॉस के एक जुलूस के साथ, मस्क्वा नदी की ओर बढ़े, जहाँ उन्होंने तैयार की गई नावों पर सवार होकर, प्रार्थनाओं के साथ, घंटियों की ग□ □ज के बीच अपनी यात्रा पर प्रस्थान किया। रास्ते में, हर शहर में, संत गुरी का पादरियों द्वारा क्रॉस

[6772] जोसेफोव मठ वोल्कोलामस्क से 18 वर्स्ट दूर स्थित है। इसकी स्थापना वोल्कोलामस्क के पूजनीय जोसेफ ने की थी। उनके सम्मान में मठ का नाम 'जोसेफोव' रखा गया था।

[6773] ट्रिनिटी सेलिज़ारोव मठ सेलिज़ारोवका नदी पर, टवर धर्मप्रांत में ओस्ताश्कोव शहर से 44 वर्स्ट दूर स्थित है; इसकी स्थापना 15वीं शताब्दी में हुई थी।

[6774] काज़ान पर 1552 में रूसी लोगों ने विजय प्राप्त की।

[6775] मकारियस – सर्व रूस के मेट्रोपॉलिटन (1542–1564) – रूसी चर्च और साहित्य के इतिहास में एक प्रमुख स्थान रखते हैं। उनके कार्यकाल के दौरान, प्रसिद्ध स्टोग्लाव परिषद (1551) का आयोजन किया गया; पवित्र पुस्तकों के लिए पहली मुद्रण प्रेस उनकी अध्यक्षता में स्थापित की गई; और, उनके आदेश पर और उनकी सीधी भागीदारी से, तथाकथित 'ग्रेट मेनाइया-चेट्टी' संकलित किए गए।

[6776] संत गुरी का अभिषेक 7 फरवरी 1555 को हुआ था।

[6777] संत गुरी की सहायता के लिए, उनके निर्देश पर दो योग्य मठवासी पुरोहित नियुक्त किए गए: जर्मन, जो स्टारित्सा मठ (ट्वर के धर्मप्रांत में) के पूर्व आर्चिमांड्राइट थे और जोसेफोव मठ में सेवानिवृत्त जीवन व्यतीत कर रहे थे, और वर्सोनोफी, जो पेस्नोश मठ के मठाध्यक्ष थे।

की शोभायात्रा के साथ स्वागत किया जाता था और वे भव्य प्रार्थनाएँ करते थे, इसलिए काज़ान तक संत गुरी की पूरी यात्रा लगभग प्रार्थना का एक निरंतर कार्य थी।

दो महीने बाद, संत गुरी काज़ान शहर पहुँचे और उन्होंने बिशप के सिंहासन पर आसीन हुए। एक बिशप के रूप में, उन्होंने वही ईश्वरीय जीवन जिया: उन्होंने बेसहारा लोगों को खिलाया, ज़रूरतमंदों को उनकी सभी आवश्यक चीज़ें प्रदान कीं, गरीबों, विधवाओं और अनाथों के लिए खड़े हुए, और उन्हें विभिन्न दुर्भाग्यों से मुक्ति दिलाई। एक के बाद एक परिश्रम करते हुए, संत गुरी ने रात प्रार्थना में बिताई, जबकि दिन के समय उन्होंने अविश्वासियों को परमेश्वर और पवित्र त्रिमूर्ति में विश्वास के बारे में सिखाया, और अपने उपदेश के माध्यम से उन्होंने कई लोगों को मसीह की ओर ले आए[6778] । संत के महान कार्यों ने, उनकी शारीरिक शक्ति की दुर्बलता के साथ मिलकर—जो उनके युवा दिनों में एक कठोर कारावास के कारण टूट गई थी—अंततः संत गुरी के स्वास्थ्य को बिगाड़ दिया, और वह बीमार पड़ गए। उनकी शारीरिक बीमारी ने उनकी आध्यात्मिक भक्ति को बिल्कुल भी कम नहीं किया: हालांकि वे स्वयं दिव्य लिटिर्जी का अनुष्ठान करने में असमर्थ थे, फिर भी वे दूसरों द्वारा संपन्न की जाने वाली सेवाओं में शामिल होते थे, जिसके लिए उन्होंने आदेश दिया कि उन्हें उनकी बनाई हुई 'चर्च ऑफ द एनन्यूशिएशन ऑफ द मदर ऑफ गॉड' में दिव्य लिटिर्जी के लिए ले जाया जाए; जहाँ वे सेवा सुनते हुए बैठते या लेट भी जाते थे। हालाँकि, अपनी बीमारी के दौरान भी, संत गुरी ने अपने सामान्य और प्रबंधनीय कर्तव्यों[6779] को नहीं छोड़ा, और साथ ही उपवास और संयम के माध्यम से अपने शरीर को नम्र करना जारी रखा। इस प्रकार पवित्र पिता ने तीन वर्षों तक परिश्रम किया। यह महसूस करते हुए कि ईश्वर के पास उनका प्रस्थान निकट आ गया है, संत गुरी ने आर्चमैंड्राइट वरसनोफी को बुलाया, जिनके प्रति उनके मन में 'गहरा आध्यात्मिक प्रेम' था, और उन्होंने उनसे महान दैवीय प्रतिमा, अर्थात् स्कीमा[6780] प्राप्त करने की अपनी इच्छा व्यक्त की। संत का परमधाम 4 दिसंबर 1564 को हुआ। उनके पवित्र शरीर को मुख्य चर्च के वेदी के पीछे, स्पासो-प्रियोब्राज़ेन्स्की मठ[6781] में दफनाया गया।

आदरणीय बार्सानुफियस, जिनका जन्म नाम जॉन था, सेरपुखोव के मूल निवासी थे[6782] । वे पादरी बेसिल के पुत्र थे, और बचपन से ही उन्हें पढ़ना-लिखना और पवित्र शास्त्र सिखाए गए। वयस्कता प्राप्त करने से पहले ही, जॉन को क्रीमियाई तातारों ने बंदी बना लिया था[6783] । प्रभु की इच्छा के प्रति समर्पित होकर, उन्होंने उन्हें सौंपी गई सभी कार्यों और श्रमों को लगन से पूरा किया। बंदी जीवन में, उन्होंने ईश्वर से बारंबार और भक्तिपूर्वक प्रार्थना करके सांत्वना पाई, और स्मृति से वे भजन-पाठ गाए जिन्हें वे याद रख सकते थे। अविश्वासियों ने, जॉन के अच्छे चरित्र, उसके कार्यों में लगन, उसकी विनम्रता और उसके काम में उन के प्रति निश्चिंदेह आज्ञाकारिता को देखकर, उसके श्रम का बोझ कम कर दिया और उसे अधिक स्वतंत्र रूप से रहने दिया। बंदी जीवन में, जॉन ने तातार भाषा सीखी, ताकि वह न केवल उसमें बोल सके बल्कि धाराप्रवाह लिख भी सके। तीन साल बाद, उनके पिता ने तातारों से जॉन को छुड़ाया। फिर वह शाही शहर

[6778] काज़ान धर्मप्रांत के अपने प्रशासन के शुरुआती दिनों में, संत गुरी ने मिशनरी उद्देश्यों के लिए काज़ान क्षेत्र में मठों की स्थापना की। वे चाहते थे कि काज़ान मठों के भविष्य के भिक्षु अपना सारा समय अविश्वासियों के बीच परमेश्वर के वचन का प्रचार करने और छोटे बच्चों की शिक्षा के लिए समर्पित करें। इस उद्देश्य के लिए, संत गुरी ने मठों को जमींदारियाँ ('वोचिन्य') प्रदान करना आवश्यक समझा; उन्होंने अपना इरादा ज़ार को लिखे एक पत्र में व्यक्त किया - जिसके विषय-वस्तु की जानकारी इवान द टेरिबल के जवाब से मिलती है। 'आपने मुझे लिखा है,' ज़ार संत को लिखते हैं, 'कि आप काज़ान शहर में एक मठ ("ज़िलानटोव") स्थापित कर रहे हैं, और अन्य मठ बनाने का इरादा रखते हैं। आप एक अच्छा काम कर रहे हैं: ईश्वर इस काम में आपकी मदद करे… आपका प्रस्ताव अच्छा है, कि बुज़ुर्ग बच्चों को सिखाएँ और अविश्वासियों को धर्म में लाएँ। बच्चों को न केवल पढ़ना और लिखना सिखाएँ, बल्कि यह भी सिखाएँ कि वे जो पढ़ते हैं उसे समझें, ताकि वे बदले में दूसरों को, यहाँ तक कि अविश्वासियों को भी सिखा सकें। हे ईश्वर! रूसी भूमि कितनी खुश होगी यदि सभी बिशप, उनकी उत्कृष्टता मकारियस और आप जैसे, बुज़ुर्ग होते।' सेंट गुरी का परिश्रम व्यर्थ नहीं गया - बड़ी संख्या में विदेशी (मुख्य रूप से टाटर्स) ईसाई धर्म में परिवर्तित हो गए।

[6779] संत गुरी ने कहा, 'वर्तमान समय परिश्रम का समय है। इसका प्रतिफल आने वाले जीवन में मिलता है। स्वर्गीय आनंद केवल उन्हीं को मिलेगा जो पृथ्वी पर प्रयास करते हैं, और जो नश्वर चीजों को त्यागकर अमर आशीर्वाद प्राप्त करते हैं। किसी को भी किसी भी कठिनाई या संकट की परवाह किए बिना प्रयास करना चाहिए, क्योंकि '*वर्तमान कष्ट उस महिमा के बराबर नहीं हैं जो हम पर प्रकट होने वाली है*' (रोमियों 9:18)।

[6780] स्कीमा – महान दैवीय रूप को अपनाना, महान स्कीमा, एक स्कीमा-धारक का जीवन – दुनिया से सबसे पूर्ण विमुखता है, दुनिया से मुक्त होने और मसीह के साथ होने की सबसे बड़ी इच्छा है। (फिलिप्पियों 1:23)। (स्कीमा एक ग्रीक शब्द है जिसका अर्थ है रूप, आकृति, पद)।

[6781] इसे 1556 में आदरणीय वरसोनोफी द्वारा स्थापित किया गया था, जिन्होंने मठ के पहले आर्चिमांड्राइट के रूप में भी सेवा की।

[6782] सरपुखोव – मॉस्को गवर्नोरेट का एक जिला शहर।

[6783] क्रीमिया – यूरोपीय रूस के दक्षिणी भाग में एक प्रायद्वीप। 1237 में टाटारों द्वारा जीता गया, 1783 में रूसीयों द्वारा अधीन किया गया।

मास्को आया और एंड्रोनिकोव नामक एक मठ में संन्यासी की शपथ ली[6784] , जहाँ उसे वर्सोनोफियस का नाम दिया गया। यहाँ, वर्सोनोफियस ने कठोर तपस्या और सदाचार का जीवन जीना शुरू कर दिया; उनके कठोर तपस्वी जीवन के सम्मान में, मेट्रोपॉलिटन मकारियस ने वर्सोनोफी को पेसनोशस्की मठ[6785] का मठाधीश नियुक्त किया। बाद में उन्होंने कज़ान शहर[6786] में आर्चमैंड्राइट के रूप में सेवा की; वहाँ उन्होंने प्रभु के गौरवमय रूपांतरण के सम्मान में एक मठ की स्थापना की और उसमें चर्च और कोठरियाँ बनवाईं। आर्कमैंड्राइट के पद पर रहते हुए, वर्सोनोफियस ने उसी दैवी जीवन को जिया: उन्होंने महान संयम और जागरण के माध्यम से अपने शरीर को वश में रखा, और अपने शरीर पर बेड़ियाँ पहनीं, हालांकि यह किसी को पता नहीं था। इस प्रकार, हर तरह से, वह भाइयों के लिए सद्गुण का एक आदर्श थे। काज़ान में, वरसोनोफियस ने मुसलमानों और मूर्तिपूजकों के बीच ईसाई धर्म का प्रसार करने के कार्य में सेंट गुरी की उत्साहपूर्वक सहायता की। भाषा का उनका ज्ञान और तातार रीति-रिवाजों से उनकी परिचितता इस प्रयास में उनके लिए बहुत फायदेमंद साबित हुई: उन्होंने कई अविश्वासियों को ईश्वर के प्रति परिवर्तित किया और उनका बपतिस्मा दिया। वरसोनोफियस संत गुरी के प्रति सच्चा प्रेम रखते थे और हर बात में उनकी आज्ञा का पालन करते थे।

काज़ान से, संत बार्सानुफीयस को ट्वर में बिशप के पद के लिए बुलाया गया[6787] । वहाँ, मसीह के भेड़ों के आध्यात्मिक झुंड के एक अच्छे चरवाहे के रूप में, उन्होंने विशेष रूप से तपस्या के लिए खुद को समर्पित किया और हमेशा अपना समय उपवास, प्रार्थना, आँसुओं और पूरी रात की प्रार्थना सभाओं में बिताया। उन्होंने कई बीमार लोगों को ठीक किया, क्योंकि वे चिकित्सा की कला में निपुण थे; फिर भी उन्होंने इसके लिए किसी से भी भुगतान स्वीकार नहीं किया, बल्कि उनका इलाज निशुल्क किया; वे विशेष रूप से आत्मा के जुनून को ठीक करने के लिए प्रसिद्ध थे, जिसे वे पवित्र आत्मा की कृपा से ठीक करते थे। उन्होंने शारीरिक श्रम की भी उपेक्षा नहीं की; उनका सामान्य कार्य काउल (धार्मिक टोपी) सिलना था, जिन्हें वे अपने भाइयों में बाँट देते थे और उनसे अपने लिए ईश्वर से प्रार्थना करने का अनुरोध करते थे।

जब संत बहुत वृद्ध हो गए, तो वे अपने अनुयायियों को छोड़कर काज़ान शहर में अपनी स्थापना की गई मठ में लौट आए। वहाँ उन्होंने ग्रेट स्कीमा ग्रहण की। अपनी उन्नत आयु और महान दुर्बलता के बावजूद, वे तपस्वी जीवन के नियमों से विचलित नहीं हुए, और जब अपनी दुर्बलता के कारण वे स्वयं दैवीय धर्मविधि का अनुष्ठान नहीं कर सके, तो उन्होंने अपने शिष्यों से उन्हें चर्च तक ले जाने के लिए कहा। जब वह अंततः बहुत कमजोर हो गया और उसे इस दुनिया से विदा होने का आभास हुआ, तो उसने पवित्र परमप्रसाद ग्रहण किया और 11 अप्रैल 1576 को प्रभु में निद्रित हो गया, और उसे वहाँ मठ में, संत गुरी के पास दफनाया गया।

[6788]संत गुरी की मृत्यु के बत्तीस साल बाद और संत बार्सानुफियस के निधन के बीस साल बाद, ज़ार थियोडोर इओआनोविच के आदेश पर, पहले की लकड़ी की चर्च की जगह पर प्रभु के रूपांतरण के सम्मान में एक पत्थर की चर्च का निर्माण शुरू हुआ। जब नींव खोदने का काम शुरू हुआ और 4 अक्टूबर 1596 को संत गुरी और वर्सोनोफी के मकबरे मिले, तो इसकी सूचना मेट्रोपॉलिटन हर्मोगेनेस[6789] को दी गई, जो उस समय कज़ान के आर्चपास्टर थे। मेट्रोपॉलिटन, लिटिर्जी और एक स्मारक सेवा का अनुष्ठान करने के बाद, पूरे पवित्र सिनिड के साथ मठ आए। सेंट गुरियस की कब्र खोलने पर, उन्होंने पाया कि वह सुगंधित मिट्टी से भरी थी; क्षय ने केवल ऊपरी होंठ के एक छोटे हिस्से को प्रभावित

[6784] एंड्रोनिकोव मठ, जिसे 'स्पासो-एंड्रोनीव' मठ के नाम से भी जाना जाता है, मॉस्को में याउज़ा नदी के तट पर स्थित है। इसकी स्थापना लगभग 1360 में सेंट अलेक्सियस, मेट्रोपॉलिटन के संरक्षण में और परम आदरणीय एंड्रोनिकोस, जो परम आदरणीय सर्गियस के शिष्य थे, के प्रयासों से हुई थी।

[6785] पेष्णोशस्की (या पेष्णोश) सेंट निकोलस और सेंट मेथोडियस मठ मॉस्को गवर्नरेट के दमित्रोव शहर से 26 वर्स्ट की दूरी पर, पेष्णोश धारा और याख्रोमा नदी के संगम पर स्थित है। इसकी स्थापना 1301 में रेडोनज़ के संत सेरगियस के शिष्य, परम पूजनीय मेथोडियस द्वारा की गई थी, जो इसके पहले मठाधीश भी थे। – परम पूजनीय वर्सोनोफी को 1544 में पेस्नोश मठ का मठाधीश नियुक्त किया गया था।

[6786] वर्सोनोफ़ी को 1555 में कज़ान में आर्चमैंड्राइट नियुक्त किया गया था, जहाँ वे सेंट गुरी के साथ यात्रा करके गए थे।

[6787] संत वरसोनोफी को 1567 में ट्वेर का बिशप नियुक्त किया गया था; उन्हें मॉस्को के मेट्रोपॉलिटन फिलिप द्वारा अभिषिक्त किया गया था।

[6788] जोब – 1589 से सर्व रूस के पहले पैट्रिआर्क। झूठे दमित्री के आदेश पर, 1605 में जोब को उनके पैट्रिआर्क पद से हटा दिया गया; उनकी मृत्यु 1607 में हुई।

[6789] 1589 में हर्मोजेनेस को कज़ान का मेट्रोपॉलिटन नियुक्त किया गया। कज़ान में, उन्होंने स्थानीय गैर-ऑर्थोडॉक्स लोगों को ऑर्थोडॉक्सी में परिवर्तित करने में बहुत उत्साह दिखाया। 1606 में, ज़ार वासिली शुइस्की के शासनकाल के दौरान, हर्मोजेनेस को पूरे रूस का पैट्रिआर्क बनाया गया। पोलिश लोगों और विद्रोही बोयारों के विरोध के कारण, उन्हें चुदोव मठ में कठोर कारावास का सामना करना पड़ा, जहाँ 17 फरवरी 1612 को उनकी भूख से मृत्यु हो गई। – काज़ान के मेट्रोपॉलिटन के रूप में अपने कार्यकाल के दौरान, हर्मोजेनेस ने संतों गुरीउस और बार्सानुफियस की एक विस्तृत जीवनी संकलित की।

कयिा था, और संत के वस्त्र भी बरकरार थे और नए वस्त्रों की तुलना में अधकि मजबूत प्रतीत हुए। इसी तरह, उन्होंने संत वरसनोफयिस की कफ़नबत्ती खोली और संत गुरीउस की तरह ही उनकी अवशेषों को भी पूरे और अपरविर्तति पाया; क्षय ने केवल पूजनीय संत के पैरों को प्रभावति कयिा था, लेकनि हड्डयिों को नष्ट नहीं कयिा था, जो पूरी तरह से सही सलामत थीं। संतों की पवत्रि अवशेषों को उन ताबूतों से नकिालकर नए अवशेष पात्रों में स्थानांतरति कयिा गया और, जब अंतमि संस्कार के भजन गाए जा रहे थे, तो उन्हें जमीन से ऊपर इस तरह रखा गया कि आने वाले सभी लोग उन्हें देख सकें और श्रद्धापूर्वक चूम सकें। इसकी घोषणा ज़ार थयिोडोर इओआनोवचि और पैट्रआर्क जॉब को लखि एक पत्र में की गई थी। धर्मपरायण ज़ार और परम पवत्रि पैट्रआर्क, पूरी शाही परषिद और लोगों की एक बड़ी भीड़ ने, यह जानकर, परमेश्वर की महमिा की, जो अपने संतों की महमिा करते हैं। धर्मनष्ठि ज़ार ने आदेश दयिा कि संतों के पवत्रि और जीवन-दायक अवशेषों को महान चर्च के वेदी के दक्षणिी हस्सि में एक वशिेष पार्श्व-गलयिारे में रखा जाए, जसिे इस पवत्रि अवशेष के लएि शीघ्र ही भव्य रूप से सजाया गया। इस पार्श्व चैपल में, तैयार हो जाने के बाद, संतों के अवशेष उपर्युक्त नए अवशेष-पात्रों में रखे गए[6790] , जो त्रमिूर्तमि में महमिामय परमेश्वर की महमिा के लएि, वशि्वासयिों को चंगाई प्रदान करते हैं, जो अब और हमेशा महमिामय है। आमीन।

संत गुरीउस और बर्सानुफयिस का ट्रोपारयिन, स्वर 3:

काज़ान नगर के प्रथम शक्षिकों, जो कभी अंधकारमय था परन्तु अब प्रकाशति और नव-प्रदीप्त है; मोक्ष के मार्ग के प्रथम प्रचारकों; प्रेरतिीय परंपराओं के सच्चे रक्षकों; अटूट स्तंभों; धर्मपरायणता के शक्षिकों और ऑर्थोडॉक्सी के मार्गदर्शकों, गुरयिस और बर्सानुफयिस, सभी के प्रभु से प्रार्थना करें कि वे संसार को शांतिऔर हमारी आत्माओं को महान दया प्रदान करें।

बर्सानुफयिुस का कोंटाकयिन, स्वर 6:

आत्म-त्याग द्वारा शरीर को आत्मा के अधीन करके, आपने एक ऐसी आत्मा का नर्मिाण कयिा जो स्वर्गदूतों के समान है: इसी कारण आपको एक संत का पद प्राप्त हुआ, और आप परम पवत्रि के समक्ष खड़े हैं। हे पवत्रि आत्मा, हमारे परमेश्वर मसीह से प्रार्थना करें कि वे हमारे सर्वशक्तमिान सम्राट, धर्मपरायणता के संरक्षक, और आपके लोगों को बचाएँ, हे पवत्रि आत्मा, ताकि हम सब आपसे पुकार सकें: आनंदति हो, पूजनीय पति बार्सानुफयिस, हमारे काज़ान नगर की स्तुतिऔर शक्ति।

गुरयिस का कोंटाकयिन, स्वर 4:

मांस के भावों पर वजिय प्राप्त कर, आप सूर्य के समान पवत्रिता से प्रकाशति हुए; अंत तक एक पवत्रि जीवन का पालन करते हुए, आपने कई लोगों को अवशि्वास से मसीह में वशि्वास की ओर ले गए; और इसी कारण से आपको ईश्वर द्वारा अक्षयत्व से सम्मानति कयिा गया, और हम आपके चमत्कारों से चकति हैं। हम आपसे प्रार्थना करते हैं, हे संत गुरीयस: अपनी प्रार्थनाओं द्वारा, हमें हमारे कष्टों से बचाएँ, ताकि हम आपसे पुकार सकें: 'हे अद्भुत पति, आनंदति हो, काज़ान नगर की स्तुतिऔर शक्ति।'

एथेंस के पवत्रि शहीद और बशिप, संत हायरोथयिोस का स्मरणोत्सव

4 अक्टूबर को स्मरण कयिा जाता है

[6790] संत गुरी और वर्सोनोफयिस की पवत्रि अवशेषों को इन संतों के सम्मान में बनी नई चर्च के एक पार्श्व-गलयिारे में लंबे समय तक रखा गया था, जब तक कि मेट्रोपॉलटिन मैथ्यू ने 1630 में उन्हें ट्रांसफगिरेशन मठ से घोषणा के कैथेड्रल में स्थानांतरति नहीं कर दयिा। यह स्थानांतरण 20 जून को बड़ी धूमधाम से हुआ। बाद में, पवत्रि अवशेषों को एक लकड़ी के अवशेष पात्र से चांदी के एक पात्र में स्थानांतरति कयिा गया। संतों गुरीउस और बार्सानुफयिस को समर्पति एक सेवा है: इसे रोस्तोव के संत डेमेट्रयिस ने रचा था (4 अक्टूबर के मेनायोन देखें)।

संत हायरोथियस एरेओपैगस के सदस्यों या परषिद के सदस्यों में से एक थे। उन्हें पवत्रि प्रेरति पौलुस द्वारा ईसाई धर्म में परविर्तति कयिा गया था, जन्हिोंने उन्हें एथेंस का बशिप भी नयिुक्त कयिा था। हमारी परम पवत्रि माता, ईश्वर की माता के अंतमि संस्कार के समय प्रेरतिों के साथ उपस्थति होकर, संत हरिोथियस ने ईश्वर की माता के परम पवत्रि शरीर को कब्र तक ले जाते समय दव्यि भजन गाए, ताकि जो भी इसे सुन और देख सके, वह उन्हें एक धर्मी और पवत्रि व्यक्तकि रूप में पहचान सके। एक संत के अनुरूप एक धार्मकि जीवन जीने और अपने जीवन-यापन के तरीके तथा अपने झुंड के अच्छे शासन द्वारा ईश्वर को प्रसन्न करने के बाद, संत हेयरोथेओस का 1वीं शताब्दी ईस्वी में शहीद के रूप में नधिन हुआ।

कॉन्टाकयिन, स्वर 8:

हे एथेन्स के बशिप, हम आपकी स्तुतकि करते हैं, क्योंकि आपको अद्भुत और अगोचर ने गुप्त रूप से शकि्षति कयिा था: क्योंकि आप परमेश्वर को प्रसन्न करने वाले एक स्तोत्रकार के रूप में प्रकट हुए। परन्तु प्रार्थना करें, हे सर्व-धन्य हरिोथियस, कि हम अपने सभी पापों से मुक्त हो सकें, ताकि हम पुकार सकें: हे ईश्वर-ज्ञानी पति, आनन्दति हो।

परम पूज्य पति अम्मोन का जीवन

४ अक्टूबर को स्मरणोत्सव

हमारे पूजनीय पति अम्मोन मस्रि में जन्मे थे। यद्यपि उन्होंने कम उम्र में ही अपने माता-पति को खो दयिा था, फरि भी उनका पालन-पोषण परमेश्वर के भय में हुआ और अपने युवा काल से ही उन्हें पवत्रि धर्मग्रंथों को पढ़ने का शौक हो गया था। जब अम्मोन वयस्क हुए, तो उनके चाचा ने उन्हें ववािह करने के लिए आग्रह करना शुरू कर दयिा। ववािह की अपेक्षा ब्रह्मचर्य को प्राथमकिता देते हुए, फरि भी अपने चाचा की इच्छा पूरी करने की चाह में, अम्मोन इस बात पर वचिार करने लगा कि वह ब्रह्मचर्य के जीवन को वैवाहकि जीवन के साथ कैसे मलिाए। और इस प्रकार, ववािह के दनि, जब उसे और उसकी दुल्हन को ववािह कक्ष में ले जाया गया और सभी चले गए, तो उसने दरवाज़े बंद कर दिए और युवती से कहा:

'बहन, मेरी बात सुनो और जो मैं कहने जा रहा हूँ, उससे सहमत हो जाओ: जसि ववािह में हम बँधे हैं, वह कसिी भी तरह से कुँवारी अवस्था से बेहतर नहीं है; इसलिए, हमारे लिए अलग-अलग सोना ही उचति होगा, ताकि अपनी कुँवारी अवस्था को बनाए रखकर हम परमेश्वर को प्रसन्न कर सकें।'

यह कहने के बाद, उसने अपनी छाती से कपड़ों के नीचे छपिाकर रखी एक कतिाब नकिाली, और उस कन्या को—जो धर्मग्रंथों के बारे में कुछ भी नहीं जानती थी—ईश्वर की शकि्षा के उद्धार करने वाले शब्दों को पढ़कर सुनाने लगा, मानो मसीह और प्रेरतिों की ओर से। जो कुछ उन्होंने पढ़ा, उसमें उन्होंने ईश्वर की कृपा से अपनी ही शकि्षाएँ जोड़ दीं, और उसे एक पवत्रि, दैवीय जीवन जीने की सलाह दी। वह, दया से प्रेरति होकर, बोली:

'हे स्वामी! मैं आपकी हर बात से सहमत हूँ, और चूँकि आप कुँवारी जीवन को पसंद करते हैं, मैं भी वही चाहती हूँ और आप जो भी आज्ञा देंगे, करने के लिए तैयार हूँ।'

तब अम्मोन ने कहा:

'मैं चाहती हूँ कि हम अलग रहें: आप एक घर में, और मैं दूसरे में।'

लेकनि कन्या, ऐसा अलगाव न चाहती हुई, बोली:

'नहीं, मेरे स्वामी, हम एक ही घर में रहेंगे, लेकनि अलग-अलग सोएँगे।'

इस प्रकार उन्होंने एक पवत्रि जीवन जीना शुरू कर दयिा। उनका ववािह, मानो, कुँवारीपन के ललिी से खलि हुए एक बगीचे के समान था, जो पवत्रिता से घरिा हुआ और पवत्रि आत्मा की ओस से तरोताज़ा था। ऐसे ववािह में वे कई वर्षों तक रहे, अपना समय महान कार्यों—उपवास, संयम, जागरण और प्रार्थना, और शारीरकि श्रम—को समर्पति करते हुए। कुंवारी परश्रिम करती और घर का ध्यान रखती थी, जबकि अम्मोन प्रतदिनि अपने शरीर को थका देता था, पूरे दनि अपने बगीचे में मेहनत करता था। शाम को घर लौटकर, वह अपनी पत्नी—या यूँ कहें कि अपनी बहन—के साथ थोड़ी सी

रोटी खाता था; आधी रात को, वे दोनों प्रार्थना करने के लिए उठते, और सुबह-सुबह अम्मोन फिर से अपने काम और श्रम के लिए शाम तक निकल पड़ता था। इस प्रकार, अपनी युवावस्था में, यद्यपि वे आग के बीच रहते हुए से थे, फिर भी यह जोड़ा जलकर नष्ट नहीं हुआ: क्योंकि उन्होंने अपने भीतर की सभी कामुक इच्छाओं पर विजय प्राप्त कर ली थी। वे अठारह वर्षों तक एक साथ ऐसा जीवन जिए और पूर्ण पवित्रता और पवित्रता प्राप्त की। और इस प्रकार एक दिन युवती ने अम्मोन से कहा:

'हे स्वामी! मैं आपको कुछ बताना चाहती हूँ, और यदि आप मेरी बात सुनेंगे, तो मुझे इससे पता चल जाएगा कि आप वास्तव में परमेश्वर के लिए मुझसे प्रेम करते हैं।'

उसने उत्तर दिया:

'बोलो, बहन, और यदि यह भलाई के लिए है, तो मैं तुम्हारी बात सुनूँगा।'

तब कन्या ने कहा:

'मेरे स्वामी, हमारे लिए अलग रहना अधिक उपयुक्त है, क्योंकि आप एक पवित्र, धार्मिक और ब्रह्मचारी पुरुष हैं, और मैं आपकी अनुकरणीय आदर्श का यथासंभव पालन करूँगी; अन्य लोग भी हमसे लाभान्वित हों; आओ हम अलग रहें: यह उचित नहीं होगा कि आपका महान सदाचार उन लोगों से छिपा रहे जो इससे लाभान्वित हो सकते हैं और आपकी पवित्रता का अनुकरण कर सकते हैं, केवल इसलिए कि हम एक साथ रहते हैं।

यह सुनकर अम्मोन ने परमेश्वर की स्तुति की, जिसने उस कन्या के हृदय को अलग रहने के जीवन की ओर झुकाया था, जिसकी वह लंबे समय से इच्छा करता था। और उसने उस कन्या से कहा:

'मेरी बहन! यदि यह तुम्हें पसंद है, तो चलो हम अलग रहने लगें: तुम इसी घर में रहो, और मैं किसी दूसरे स्थान पर चला जाऊँगा।'

ईश्वर से प्रार्थना करने के बाद, वे अलग हो गए: अम्मोन माउंट नाइट्रियिन गए[6791] और एक भिक्षु बन गए, जबकि उनकी तथाकथित पत्नी, अपने घर में ही रहकर, जल्द ही कन्याओं की एक बड़ी संख्या इकट्ठा कर लीं और उन्हें मसीह के साथ व्रतबद्ध कर, उनकी अधिष्ठात्री बन गईं।

माउंट नाइट्रियिन पर बस जाने के बाद, अमोन ने एक तपस्वी का जीवन जीना शुरू कर दिया, और वह ईश्वर के लिए परिश्रम और प्रयास करता रहा, जिसकी वह अपने पूरे आत्मा के उत्साह के साथ दिन-रात सेवा करता था। उसने रेगिस्तान में बाईस साल बिताए और साधु जीवन में पूर्णता प्राप्त की। परमेश्वर ने बदले में अपने सेवक को चंगा करने का वरदान देकर उसका गौरव बढ़ाया, और संत ने उनके पास आने वालों के विभिन्न रोगों को ठीक किया।

एक अवसर पर, एक लड़के को, जिसे एक पागल कुत्ते ने काट लिया था, उसके पास लाया गया। पागलपन के दौरे में, वह अपने ही शरीर को काटता था। लड़के के माता-पिता, संत अम्मोन के पैरों पर गिर पड़े, और उनसे अपने बेटे को ठीक करने की विनती की। लेकिन संत ने उनसे कहा:

'तुम मुझसे ऐसी बात क्यों मांगकर मुझे परेशान कर रहे हो जो मेरी शक्ति से परे है? लड़के की बीमारी और उसका इलाज दोनों तुम्हारे ही हाथ में हैं, क्योंकि एक विधवा (संत ने उसका नाम लेकर पुकारा) से एक बैल चुराकर, तुमने उसे गुप्त रूप से काटा और खा लिया; इसलिए, उसे एक जीवित बैल लौटा दो, और तुम्हारा बेटा ठीक हो जाएगा।'

उन्मत्त लड़के के माता-पिता यह सुनकर स्तब्ध रह गए, उन्हें एहसास हुआ कि संत को उनके राज़ का पता था; और, अपना जुर्म कबूल करने के बाद, उन्होंने चोरी की हुई चीज़ को वापस करने का पक्का वादा किया। तब संत ने प्रार्थना करने के बाद, लड़के को ठीक कर दिया और उन्हें शांति से विदा कर दिया। वे, खुशी-खुशी घर लौटकर, तुरंत विधवा को उसके मारे गए बैल के बदले में एक और बैल दे दिया।

एक अन्य अवसर पर, दो व्यक्ति आशीर्वाद लेने के लिए पूजनीय पिताजी के पास आए। संत ने उनसे अपने पास आने वालों की जरूरतों के लिए कुछ पानी लाने को कहा, क्योंकि उनमें से एक के पास एक ऊँट था और दूसरे के पास एक गधा था। एक बड़ा पात्र लेकर, वे पानी लाने के लिए पहाड़ से नीचे चले गए। जब उन्होंने पात्र पानी से भर लिया, तो उनमें से एक, ऊँट वाले ने, कहा:

'पात्र बड़ा है, और पहाड़ ऊँचा है; इसलिए, मैं अपनी ऊँट को इतने भारी बोझ से थकाना नहीं चाहता।'

[6791] माउंट नाइट्रिया मिस्र के निचले हिस्से में, अलेक्जेंड्रिया शहर से 70 मील दूर स्थित है।

और, अपने साथी को पीछे छोड़कर, वह संत के पास वापस न लौटकर अपने रास्ते चल पड़ा। हालाँकि, जो पीछे रह गया था, उसने पानी अपने गधे पर लाद लिया और बड़ी मुश्किल से, बड़ी कठिनाई से उसे पहाड़ पर संत के पास ले जा सका। उसे देखते ही, संत ने कहा:

'मेरे बेटे! ईश्वर तुम्हारी मेहनत का भला करे। जान लो, कि तुम्हारा साथी, जिसने हमारी ज़रूरतों के लिए पानी लाने से इनकार कर दिया था, अब मुसीबत में है, क्योंकि वह अपनी ऊँट खो चुका है।'

तब वह आदमी अपने साथी के पीछे भागा और उसे रोते हुए पाया, क्योंकि भेड़ियों ने उसकी ऊँट खा ली थी।

अलेक्ज़ेंड्रिया के संत अथानासियस ने 'संत एंथनी का जीवन' में परमपूज्य अम्मोन की इस कहानी का उल्लेख किया है, जहाँ वे उनके बारे में निम्नलिखित लिखते हैं।

एक बार, परम पूज्य अम्मोन अपने शिष्य थियोडोर के साथ चल रहे थे। जब उन्हें लाइकोस नामक एक बड़ी नदी पार करनी पड़ी[6792] , जिसके लिए उन्हें कपड़े उतारने पड़े, तो अम्मोन ने थियोडोर से थोड़ा दूर हटने के लिए कहा, ताकि वे एक-दूसरे की नग्नता न देख सकें। जब वे अलग हो गए, तो अम्मोन इस बात पर विचार करने लगा कि वह अपने कपड़े उतारे बिना नदी कैसे पार कर सकता है, क्योंकि वह इतना पवित्र और विनम्र था कि उसे अपने ही नग्न शरीर से भी शर्म आती थी, और अपने पूरे जीवन में उसने कभी अपना शरीर नहीं दिखाया। जब वह इस पर विचार कर रहा था, तो प्रभु का एक स्वर्गदूत उसे उठा ले गया और उसे नदी के उस पार ले जाकर पलक झपकते ही दूसरी तरफ़ किनारे पर उतार दिया। हालाँकि, थियोडोर बड़ी कठिनाई से बड़ी मुश्किल से नदी पार तैर सका। अम्मोन को दूसरी किनारे पर खड़ा देखकर, वह इस बात पर चकित हुआ कि उसने इतनी तेज़ बहाव वाली नदी को इतनी जल्दी पार कर लिया था; और यह देखकर कि अम्मोन के कपड़े पूरी तरह से सूखे थे, वह हैरान रह गया और, संत के पैरों पर गिरकर, उससे विनती करने लगा कि वह उसे बताए कि उसने इस तेज बहाव वाली नदी को कैसे पार किया। अपने साथी की विनती से प्रेरित होकर, अमोन ने उसे बताया कि उसे एक देवदूत ने पार किया था। साथ ही, उन्होंने अपने साथी को यह आज्ञा दी कि जब तक वे स्वयं इस संसार से न चल दें, तब तक वह इस बात को किसी और से न कहे। संत एंथनी के पास पहुँचने पर, पूजनीय ने उनसे ये शब्द सुने:

'ईश्वर ने मुझे आपके निधन का दिन बता दिया है। इसीलिए मैंने आपको बुलाया है, ताकि जब तक आप ईश्वर के पास नहीं गए हैं, हम एक-दूसरे की संगति का आनंद ले सकें: आइए हम एक-दूसरे के लिए प्रार्थना करें।'

एक-दूसरे के साथ लंबी बातचीत में कुछ समय बिताने के बाद, उन्हें पवित्र आत्मा से सांत्वना मिली, और अम्मोन ने आशीर्वाद प्राप्त करने के बाद संत एंथनी से विदा ली।

और कुछ दिनों बाद, संत एंथनी महान एक पहाड़ी पर बैठे, उन्होंने अपनी आँखें स्वर्ग की ओर उठाईं और देखा कि एम्मोन की आत्मा स्वर्गदूतों द्वारा आनंदपूर्वक स्वर्ग में ले जाई जा रही थी। यह देखकर एंथनी बहुत प्रसन्न हुए; फिर उनके शिष्यों ने उनसे पूछा:

'पिताजी, आपकी प्रसन्नता का कारण क्या है?'

उन्होंने उत्तर दिया:

'आज बाबा अम्मोन का निधन हो गया है, और मैं उनके पवित्र आत्मा को स्वर्गदूतों द्वारा स्वर्ग ले जाते हुए देख रहा हूँ।'

शिष्यों को वह दिन याद आया जिस दिन संत एंथनी ने उन्हें अम्मोन के निधन के बारे में बताया था। कुछ दिनों बाद, नित्रिया से भाई आए[6793] और उन्होंने बताया कि संत अम्मोन प्रभु के पास चले गए थे[6794] । दिनों की गिनती करने पर, एंथनी के शिष्यों को एहसास हुआ कि अम्मोन ठीक उसी दिन स्वर्ग की ओर देवदूतों के साथ अपनी आत्मा को उठते हुए देखे जाने वाले दिन ही प्रभु में निधन हो गए थे, और उन्होंने परमेश्वर की महिमा की।

[6792] तेज़ बहाव वाली नदियों के लिए एक काफी आम नाम।

[6793] अर्थात्, नाइट्रियन मरुभूमि से, जहाँ संत अम्मोन एक तपस्वी के रूप में रहते थे।

[6794] परम पूज्य अम्मोन का परमधाम लगभग 350 ईस्वी में हुआ। – परम पूज्य अम्मोन ने 19 'उपदेशात्मक अध्याय' लिखे, जो परिपक्व आध्यात्मिक ज्ञान से परिपूर्ण हैं।

हमारे पूजनीय पिता पॉल सरल का जीवन

4 अक्टूबर को स्मरण किया जाता है

यह पॉल एक गाँव में किसान था। वह एक अनपढ़ आदमी था, लेकिन अपने दिल में वह बहुत सरल और अच्छे स्वभाव का था। उसने एक ऐसी महिला से शादी की जो रूप से सुंदर थी लेकिन अपने दिल और आचरण में दुष्ट थी; वह लंबे समय से अपने पति की पीठ पीछे व्यभिचार कर रही थी। एक दिन, काम से घर लौटने पर, पॉल ने अपनी पत्नी को एक दूसरे आदमी के साथ पाया। तब, हल्की मुस्कान के साथ, उसने व्यभिचारी से कहा:

'बहुत अच्छा, बहुत अच्छा! मैं इस पर बिल्कुल भी ध्यान नहीं देता। मैं यीशु मसीह को अपना गवाह मानता हूँ कि मैं अब उसके साथ नहीं रहना चाहता। अब वह तुम्हारी है, इसलिए बच्चों का पालन-पोषण तुम्हें करना है, जबकि मैं चला जाऊँगा और एक भिक्षु बन जाऊँगा।'

और तुरंत, सब कुछ पीछे छोड़कर, पावेल घर से निकल गया; उसने इस बारे में किसी से कुछ नहीं कहा, न ही अपनी बेवफ़ा पत्नी को तनिक भी कोसा, बल्कि चुपचाप रेगिस्तान में चला गया। वहाँ वह परम पूजनीय एंथनी द ग्रेट[6795] के पास पहुँचा और उनकी कोठरी का दरवाज़ा खटखटाया। एंथनी ने उससे पूछा:

'तुम क्या चाहते हो?'

पॉल ने उत्तर दिया:

'मैं भिक्षु बनना चाहता हूँ।'

एंथनी ने, यह देखकर कि वह पहले से ही एक बूढ़ा आदमी था, उससे कहा:

'तुम, बूढ़े आदमी, लगभग 60 साल के हो चुके हो – तुम भिक्षु नहीं बन सकते; गाँव लौट जाओ और अपना काम करते रहो, ईश्वर का धन्यवाद करते हुए; क्योंकि तुम रेगिस्तान के कष्टों को सहन नहीं कर पाओगे और न ही इसके प्रलोभनों का सामना कर पाओगे।'

लेकिन पावेल ने उत्तर दिया:

'पिताजी! मैं जो भी आप आज्ञा देंगे, करने को तैयार हूँ।'

लेकिन एंथनी ने उनकी बात पर ध्यान दिए बिना कहा:

'मैं तुम्हें पहले ही कह चुका हूँ कि तुम बूढ़े हो और अब संन्यासी नहीं बन सकते। यहाँ से चले जाओ। और अगर तुम संन्यासी बनना चाहते हो, तो किसी ऐसे मठ में जाओ जहाँ कई भाई हों जो तुम्हारी कमज़ोरियों को सहन कर सकें; लेकिन मैं यहाँ अकेला रहता हूँ और एक बार में पाँच दिनों तक कुछ नहीं खाता; इसलिए, तुम मेरे साथ नहीं रह सकते।'

यह कहकर, एंथनी ने दरवाज़ा बंद कर दिया और तीन दिनों तक अपनी कोठरी से बाहर नहीं निकला। लेकिन वह बूढ़ा पूरे समय कोठरी के पास ही रहा, कहीं नहीं गया। चौथे दिन, एंथनी ने दरवाज़ा खोला और फिर से पॉल को देखा; और, उसे भगाने के लिए, उसने कहा:

'यहाँ से चले जाओ, बूढ़े आदमी। तुम मुझे परेशान क्यों कर रहे हो? मैंने तुम्हें कहा था कि तुम यहाँ नहीं रह सकते।'

'मुझे यहाँ मरना स्वीकार है, पर जाना नहीं,' बूढ़े ने उत्तर दिया।

एंथनी ने, यह देखकर कि वृद्ध के पास न तो रोटी थी और न ही पानी, और वह अब चार दिनों से बिना भोजन के था, मन ही मन सोचा: 'यह वृद्ध, जो इतने लंबे समय तक उपवास करने का आदी नहीं है, भूख से मर सकता है, और पाप मेरे अंतरात्मा पर होगा।' इसलिए, वह उसे अपने साथ रहने देने के लिए सहमत हो गया और कहा:

'यदि तुम आज्ञाकारी रहोगे और जैसा मैं तुम्हें आज्ञा दूँ, वैसा करोगे तो तुम बच सकते हो।'

पौलुस ने उत्तर दिया:

'पिताजी, मैं जो कुछ भी आप कहेंगे, करने को तैयार हूँ।'

[6795] महान संत एंथनी, मठवासी जीवन के प्रथम संस्थापक, जो मिस्र के मूल निवासी थे, नील नदी के पूर्वी तट पर, थेबाइड के पास रहते थे। वहाँ, बालों वाली खुरदरी कमीज़ पहनकर और केवल जड़ी-बूटियों व जड़ों पर जीवित रहकर, वह 20 वर्षों तक गुमनामी में रहा, निरंतर परिश्रम और प्रार्थना में लगा रहा, और ईश्वर की कृपा से, प्रलोभक की आत्मा पर विजय प्राप्त की, जो उसे प्रलोभनों और भय से परेशान करती थी। अंततः उनके जीवन की पवित्रता और उनके द्वारा किए गए चमत्कारों ने कई तपस्वियों को रेगिस्तान में एंथनी की ओर आकर्षित किया; वे उनके पास बस गए और एंथनी द्वारा निर्धारित नियमों को अपने जीवन के लिए एक आदर्श के रूप में अपना लिया, जिसने मठवासी जीवन शैली की शुरुआत को चिह्नित किया। सेंट एंथनी का 356 ईस्वी में, 105 वर्ष की आयु में निधन हो गया। उनका पर्व दिवस 17 जनवरी को मनाया जाता है।

हालाँकि, एंथोनी ने उसे परखने के लिए कहा:

'यहाँ रुको और इसी जगह प्रार्थना करो जब तक मैं वापस आकर तुम्हें वह काम न दे दूँ जिस पर तुम्हें काम करना है।'

पॉल को छोड़कर, एंथनी गुफा में चला गया।

एक पूरे सप्ताह तक वह उसके पास नहीं आया, बल्कि खिड़की से चुपके से उसे देखता रहा और देखा कि वह उस पूरे समय दिन-रात उसी जगह पर बिना हिले-डुले खड़ा रहा।

फिर, अपनी कोठरी से बाहर निकलकर, एंथनी ने वृद्ध के लिए खजूर की कुछ टहनियाँ लाईं और उन्हें पानी में डुबोकर, उससे कहा:

'एक रस्सी बुनों, बड़भागी, ठीक वैसे ही जैसे मैं बुन रहा हूँ।'

और पौलुस ने नौवें घंटे तक रस्सी बुनी और बड़ी कठिनाई से पंद्रह कोहनी[6796] बुनने में कामयाब रहे। लेकिन एंथनी ने काम को देखकर कहा:

'तुमने इसे ठीक से नहीं बुना है; इसे खोलो और फिर से बुनों।'

यह लगातार सातवाँ दिन था जब उसने उसे खाने के लिए कुछ नहीं दिया था। फिर भी एंथनी ने यह सब इसलिए किया ताकि वह पॉल को अपने से दूर भगा सके, क्योंकि उसे लगा कि पॉल इस परीक्षा को सहन न कर पाकर उसे छोड़कर चला जाएगा। लेकिन पौलुस बड़ी कठिनाई से रस्सी को खोलकर फिर से बुनता रहा; और वह कितना भी भूखा क्यों न हो, उसने हौसला नहीं खोया और न ही थोड़ी भी शिकायत की। तब अँतोनी को उस पर दया आ गई – और जैसे ही सूरज डूब रहा था, उसने पौलुस से कहा:

'वरिष्ठ, क्या आप थोड़ी रोटी लेंगे?'

'जैसा आप चाहें, पिताजी,' पॉल ने उत्तर दिया।

पॉल के इन शब्दों से एंथनी गहराई से प्रभावित हुआ, जो भूख से पीड़ित होने के बावजूद, रोटी से उसे शांत करने की कोई जल्दी में नहीं था, बल्कि खुद को पूरी तरह से एंथनी की मर्जी पर छोड़ दिया था।

उन्होंने थोड़ी रोटी पानी के साथ खाई और मेज़ से उठकर प्रभु का धन्यवाद किया।

संत एंथनी ने प्रार्थना में पॉल की परीक्षा भी ली, उन्हें पूरी रात कई प्रणामों के साथ भजन जपते हुए जागते रखा; फिर भी, इस सब में भी, पॉल धैर्यवान और सतर्क साबित हुए।

एक बार, जब वे भोजन कर रहे थे, तो एंथनी ने पॉल से खुद से भी अधिक खाने के लिए कहा, क्योंकि उसे उस पर दया आ गई थी, क्योंकि वह अभी कठोर उपवास का आदी नहीं था।

लेकिन पौलुस ने उत्तर दिया:

'अगर आप, पिताजी, और खाने वाले हैं, तो मैं भी खा लूँगा।'

एंथनी ने कहा, 'मेरा पेट भर गया है, क्योंकि मैं एक भिक्षु हूँ।'

और पौलुस ने उत्तर दिया:

'मेरा भी पेट भर गया है, क्योंकि मैं भी एक भिक्षु बनना चाहता हूँ।'

और पॉल हमेशा वही करता था जो एंथनी उससे करने के लिए कहता था।

एक बार, एंथनी ने उसे कुछ कपड़े सिलने का आदेश दिया; जब पॉल ने उन्हें सिल दिया, तो एंथनी ने कहा:

'तुमने इसे बुरी तरह सिल दिया है – इसे उधेड़ो और फिर से सीओ।'

और उसने नए सिले हुए कपड़े को फिर से खोलकर दोबारा सिलने का आदेश दिया।

एंथनी ने यह सब पॉल के धैर्य और आज्ञाकारिता की परीक्षा लेने के लिए किया था। लेकिन पॉल ने ज़रा भी शिकायत नहीं की; इसके बजाय, उन्होंने एंथनी के सभी आदेशों को उत्साह और लगन से पूरा किया।

अंतत; एंथनी पॉल की संन्यासी जीवन के प्रति योग्यता से आश्वस्त हो गए और उनसे कहा:

'अब तुम प्रभु यीशु के नाम पर एक भिक्षु बन गए हो।'

[6796] 'लाकोट' या 'लोकोट' लंबाई की एक इकाई है जो 10.5 वर्शोक्स (लगभग आधा मीटर) के बराबर होती है।

[6797]और एंथनी ने उसे एकांत में रहने का नरि्देश दयिा, और उसके लएि अपनी कुटयिा से चार पत्थर की दूरी पर एक कुटयिा बनवा दी। और धन्य पौलुस उस अलग सेल में संत एंथनी के पास रहे, और दनि-रात साधु जीवन के तप में लगे रहे; इसके लएि उन्हें परमेश्वर से अशुद्ध आत्माओं पर अधकिार मलिा, कि वे उन्हें नकिाल सकें और बीमारयिों को चंगा कर सकें।

एक बार, एक युवक को संत एंथनी के पास लाया गया जो एक अशुद्ध आत्मा—जो अत्यंत दुष्ट और शक्तशिाली, अंधकार के राजकुमारों में से एक था—के वश में था, जो ईश्वर की नदिा कर रहा था।

लेकनि एंथनी ने कहा:

'यह मेरा काम नहीं है, क्योंकि मुझे परमेश्वर से सबसे शक्तशिाली राक्षसों पर अधकिार नहीं मलिा है, बल्कि यह वरदान साधारण पौलुस के पास है।' और वह उस युवक के साथ पौलुस के पास गया और उससे कहा:

'अब्बा पौलुस! इस युवक से अशुद्ध आत्मा को नकिाल दो, ताकि वह अच्छे स्वास्थ्य के साथ अपने घर लौट जाए और परमेश्वर की स्तुति करे।'

पर पौलुस ने कहा:

'और आप, पतिाजी, आपने उसे क्यों नहीं नकिाला?'

एंथनी ने उत्तर दयिा:

'मुझे एक बहुत ही ज़रूरी काम है, और इसलएि मैं उसे आपके पास लाया हूँ।'

और, भूतग्रस्त लड़के और पौलुस को पीछे छोड़कर, अंथयिानास चले गए। लेकनि पौलुस ने परमेश्वर से प्रार्थना करके, दानव से कहा:

'शैतान! अब्बा एंथनी तुम्हें आज्ञा देते हैं कि इस मनुष्य से नकिल जाओ।'

लेकनि शैतान ने गाली-गलौज करते हुए उत्तर दयिा:

'मैं बाहर नहीं नकिलूँगा, हे दुष्ट और कपटी बूढ़े।' फरि पॉल ने वह चमड़ा, जसिमें वह चलता था, उठाकर उससे मारना शुरू कर दयिा और कहा:

'बाहर नकिल,' जैसा कि संत एंथनी ने तुम्हें आज्ञा दी है।

लेकनि शैतान ने जाने से इनकार कर दयिा। तब पॉल ने कहा:

'या तो तू बाहर नकिल, या मैं मसीह से प्रार्थना करूँगा और तुझे मुसीबत होगी।'

लेकनि दानव ने मसीह की नदिा करते हुए कहा:

'मैं बाहर नहीं नकिलूँगा।'

तब पॉल दानव से क्रोधति हो गया, और दोपहर के समय, जब मस्रि में सूरज एक आग भट्टी की तरह जलता है, वह एक चट्टान पर चढ़ा और उस पर एक अडगि स्तंभ की तरह खड़ा हो गया, और मसीह से पुकार कर कहने लगा:

'हे प्रभु यीशु मसीह, जो पोंतयिस पलिातुस के अधीन सलीब पर चढ़ाया गया! तू जानता है कि मैं इस चट्टान से नीचे नहीं उतरूँगा, भले ही मुझे इस पर मरना पड़े, और मैं न रोटी चखूँगा और न पानी, जब तक कि तू मेरी नहीं सुनता और इस जवान के भीतर से दुष्टात्मा को नहीं नकिाल देता।'

जब वह ये शब्द बोल ही रहा था, तो दैत्य चलि्लाने लगा:

'मैं जा रहा हूँ, मैं जा रहा हूँ, और मुझे नहीं पता कि मैं कहाँ रहूँगा।' और उस युवक से बाहर नकिलने के बाद, दानव एक बड़े साँप में बदल गया, जो सत्तर कोहनों (क्यूबट्सि) लंबा था, और उसने ब्लैक सी में नविास कर लयिा[6798] । इस प्रकार संत पौलुस ने अपनी सादगी और वनिम्रता के द्वारा शैतान को परास्त कयिा; क्योंकि सबसे कमजोर राक्षस लोगों द्वारा वशि्वास की शक्ति से बाहर नकिाले जाते हैं, जबकि राक्षसों के शासक लोगों द्वारा वनिम्रता की शक्ति से पराजति होते हैं, जैसा कि इस संत पौलुस के मामले में हुआ।

धन्य पौलुस के पास ववि ेक का वरदान भी था। एक बार, एक मठ में प्रवेश करते समय, वह चर्च के पास खड़े होकर यह देख रहे थे कि कौन प्रवेश कर रहा है और कसि वचिारों के साथ। वेस्पर्स का समय था, और हर कोई प्रसन्न

[6797] यानी, अपनी कोठरी से एक ऐसी दूरी जसि चार बार पत्थर फेंककर तय कयिा जा सकता है।

[6798] चेरमोन, या तथाकथति लाल सागर, हदि महासागर में एक लंबा, संकरा जलडमरूमध्य है, जो अरब प्रायद्वीप को मस्रि से और एशयिा को अफ्रीका से अलग करता है। इसी समुद्र को पार करके मूसा के नेतृत्व में यहूदी मस्रि से प्रतज्ञिात देश, यानी फलिस्तीन की अपनी यात्रा पर गए थे (नरि्ग. 14:1–31)।

मुख और प्रबुद्ध आत्मा के साथ चर्च में प्रवेश कर रहा था; और उनमें से प्रत्येक के साथ, उनका संरक्षक देवदूत भी आनंद के साथ प्रवेश कर रहा था। हालाँकि, एक भाई उदास चेहरे और कड़वे मन से चर्च में प्रवेश कर रहा था, जो राक्षसों से घिरा हुआ था, और उनमें से प्रत्येक उसे अपनी ओर खींच रहा था; जबकि उसका रक्षक देवदूत दूर से निराश और रोते हुए उसका पीछा कर रहा था। यह देखकर, संत अपने खोए हुए भाई के लिए दुखी और गहराई से व्यथित हो गए; महान दुख से अभिभूत, संत पॉल चर्च में प्रवेश भी नहीं किए, बल्कि बाहर बैठकर रोते रहे। जब प्रार्थना सभा समाप्त हुई, तो सभी भाई ठीक वैसे ही बाहर आए जैसे वे अंदर गए थे, और दिव्य प्रकाश उन पर चमका। पौलुस ने उस व्यक्ति को भी देखा जो पहले उदास था; और देखो, उसका चेहरा ऐसे चमक रहा था मानो वह किसी स्वर्गदूत का चेहरा हो, और पवित्र आत्मा की कृपा उस पर बनी हुई थी, जबकि उसका रक्षक स्वर्गदूत खुशी से उसका हाथ थामकर सहारा दे रहा था; राक्षस, हालांकि, दूर से ही रो रहा था और उसे थोड़ा भी पास आने की हिम्मत नहीं हुई।

अपने भाई में ऐसा अचानक परिवर्तन देखकर, धन्य व्यक्ति प्रसन्न हुआ और उसे रोककर, अपने आसपास वालों को वह सब बताया जो उसने देखा था; फिर उसने अपने भाई से उसके अचानक परिवर्तन का कारण पूछा।

भाई ने, यह महसूस करते हुए कि पूरी मंडली की उपस्थिति में ईश्वर के प्रकाशन द्वारा वह बेनकाब हो गया था, अपने बारे में सब कुछ कबूल कर लिया:

'मैं,' उसने कहा, 'एक बड़ा पापी हूँ; कई वर्षों तक मैं आज के दिन तक दुष्टता में जीया हूँ। आज चर्च में प्रवेश करते समय, मैंने यशायाह भविष्यवक्ता की पुस्तक पढ़ते सुना—या यूँ कहें कि स्वयं परमेश्वर भविष्यवक्ता के माध्यम से बोल रहे थे: *"अपने आप को धो लो, स्वयं को शुद्ध करो; अपनी बुरी करतूतों को मेरी आँखों के सामने से हटा दो; भलाई करना सीखो; और यद्यपि तुम्हारे पाप कत्तार के रंग के समान लाल हों, वे हिम के समान श्वेत हो जाएँगे'* (यशायाह 1:16–18)[6799] । यह सुनकर मेरी आत्मा दया से भर गई, मेरी आध्यात्मिक आँखें खुल गईं, और अपनी दुष्टता और अधार्मिकता को समझकर, मैंने एक पश्चात्तापी हृदय से परमेश्वर से कहा: 'हे प्रभु, आप पापियों के उद्धार के लिए संसार में आए, जैसा कि आपने अब अपने भविष्यवक्ता के द्वारा मुझे प्रकट किया है; इसे मेरे लिए, एक पापी के लिए, कर्म में पूरा करें। क्योंकि मैं इस दिन से यह शपथ लेता हूँ कि आपकी सहायता से न केवल किसी को कोई हानि नहीं पहुँचाऊँगा, बल्कि सभी अधर्म को भी त्याग दूँगा और हे प्रभु, आपको निर्मल अंतःकरण से सेवा करूँगा; केवल आप ही मुझे स्वीकार करें, जो पश्चातापी हूँ, और मुझे दूर न करें क्योंकि मैं आपसे ही चिपका रहता हूँ। उसने अपनी बात जारी रखते हुए कहा, 'इन वादों के साथ, मैं चर्च से निकल आया, और मैंने अपने हृदय में यह संकल्प लिया कि मैं परमेश्वर के सामने फिर कभी पाप नहीं करूँगा।'

यह सुनकर, सभी ने उस परमेश्वर की ऊँचे स्वर में स्तुति की, जो पश्चाताप करके उसकी ओर मुड़ने वाले सभी को स्वीकार करता है।

संत पौलुस की यही अंतर्दृष्टि थी, क्योंकि अपनी सादगी और द्वेष की कमी के कारण वह परमेश्वर की कृपा से परिपूर्ण थे। और द्वेष से मुक्त व्यक्ति से अधिक प्रिय परमेश्वर को और कौन है? भजन रचयिता के मुख से प्रभु कहते हैं, *'निष्ठा और सीधापन मेरी रक्षा हों'* (भजन संहिता 24:21)।

रेवरेंड कई वर्षों तक पवित्र सादगी में रहे और अनेक चमत्कार करने के बाद प्रभु के पास प्रस्थान कर गए[6800] । जो पृथ्वी पर साधारण और अनपढ़ थे, वे अब स्वर्ग में सबसे बुद्धिमान बन गए हैं, इस संसार के सभी ऋषियों से भी अधिक बुद्धिमान, और बुद्धिमान केरूबीम के साथ मिलकर मसीह, ईश्वर की शक्ति और ईश्वर की बुद्धि का चिंतन करते हैं। क्योंकि सच्ची बुद्धि परमेश्वर का भय मानने में और एक शुद्ध आत्मा तथा द्वेष से मुक्त हृदय के साथ उनकी सेवा करने और उन्हें प्रसन्न करने में निहित है।

हे प्रभु, अपने सेवक, साधारण पौलुस की प्रार्थनाओं के द्वारा, हमें भी अपने आज्ञाओं का पालन करने में बुद्धि प्रदान करें। यह अनुग्रह करें कि तेरा भय ही हमारी बुद्धि का आरंभ हो, ताकि तेरे प्रति श्रद्धा से, पाप से मुँह फेरकर, हम तेरे सामने भलाई कर सकें और सदा के लिए तेरा दयालुता प्राप्त कर सकें। आमीन।

[6799] ('क्रिमिसन', यानी गहरा लाल)। अर्थात्, मैं तुम्हारे से उन पापों के दागों को धो डालूँगा, और तुम्हें उनसे पूरी तरह शुद्ध कर दूँगा (देखें भजन संहिता 50:9)। ईश्वर, मानवजाति के प्रति अपनी दया में, उनके पापों को क्षमा करते हैं, लेकिन केवल सच्ची पश्चाताप और नैतिक सुधार की शर्त पर।

[6800] संत पौलुस महान की मृत्यु चौथी शताब्दी में हुई।

पवत्रि शहीदों गैसयिस, फावस्टस, यूसेबयिस और हेरमिोन का स्मरणोत्सव।

4 अक्टूबर को स्मरणोत्सव

ये संत अलेक्जेंड्रयिा के संत डायोनसियिस के शष्यि थे। संत गाइस और फावस्टस का उनके गुरु के साथ उत्पीड़न कयिा गया और उन्होंने शहीद की मृत्यु भोगी। यूसेबयिस और हेरमिोन ने, संत डायोनसियिस के नर्विासन के बाद, ईश्वर की मदद से, कालकोठरयिों में बंद लोगों से मुलाकात की, शहीदों के शरीरों को दफनाया, और सम्राट डेसयिस के शासनकाल तक जीवति रहे। ईसाई धर्म की शकि्षा देने के लिए, उन्होंने क्रूर यातनाएँ सहन कीं लेकनि वे अडगि रहे। उन्होंने कई पगनों को ईसाई धर्म की शकि्षा दी और उन्हें पति, पुत्र और पवत्रि आत्मा के नाम पर बपतस्मिा दयिा – कुछ को गुप्त रूप से, दूसरों को खुलेआम। फरि उन्हें पकड़ लयिा गया, तलवार से सरि कलम कर दयिा गया और उन्होंने अपने धन्य आत्माओं को प्रभु[6801] को सौंप दयिा।

पवत्रि शहीद दावकि्ट और उनकी पुत्री कैलसिथेनयिा की स्मृत

4 अक्टूबर को स्मरण कयिा जाता है

[6802]यह दावकि्ट[6803] सम्राट मैक्समियिन के शासनकाल के दौरान एफेसस का राज्यपाल था; अपने धर्महीन मूर्तपिूजक सम्राट को अपनी बेटी का ववािह करने से इनकार करने पर, दावकि्ट को उसके सम्मान और धन से वंचति कर दयिा गया, मेलटिनि[6804] में नर्विासति कर दयिा गया और वहाँ तलवार से उसका सरि कलम कर दयिा गया। कैलसिथेनयिा ने, अपनी ओर से, पहले नकिोमेडयिा में शरण ली, फरि थ्रेस[6805] चली गईं और वहाँ एक महलिा के साथ बस गईं, और अपनी प्रार्थनाओं के माध्यम से उस महलिा की बेटी की बीमार आँखों को ठीक कर दयिा। मैक्समियिन की मृत्यु के बाद, कैलसिथेनयिा अपने देश लौट आई और राजा लाइसनियिस की पत्नी कॉन्स्टेंस के पास गई, जो संत कॉन्स्टेंटनि द इक्वल-टू-द-अपोस्टल्स की बहन और एक घोषति ईसाई थीं। वहाँ उसने रानी को अपने बारे में सब कुछ बता दयिा। रानी ने उनका गर्मजोशी से स्वागत कयिा और उन्हें उनके पति की संपत्त वािपस पाने में मदद की, जसिे मैक्समियिन ने जब्त कर लयिा था। यह संपत्त प्राप्त करने के बाद, कैलस्थिेनयिा ने इसे सब गरीबों में बाँट दयिा। उसने अपने पति के शरीर को उनके कारावास के स्थान से एशयिा में स्थानांतरति कयिा और उनकी स्मृत में एक चर्च बनवाया। जहाँ तक उसकी बात है, उसने अपने शेष जीवन को ईश्वर को प्रसन्न करने वाले तरीके से जयिा और प्रभु में शांतपिूर्वक नधिन कर लयिा।

कैपेटोलयिम के पुरोहति, पवत्रि शहीद पीटर की स्मृत

4 अक्टूबर को स्मरण कयिा जाता है

संत पीटर का जन्म और पालन-पोषण कैपेटोलयिा शहर में हुआ था[6806] ; वह ववािहति थे और उनके तीन बच्चे थे, वे अपनी बुद्धमित्ता के लिए प्रसद्धि थे, और उन्होंने कई लोगों को सच्चे मार्ग पर लाया। बाद में, उन्होंने संन्यास की शपथ ली और अपनी इच्छा के वरिुद्ध, उन्हें एक पुरोहति नयिुक्त कयिा गया और बोस्ट्रा का बशिप बनाया गया[6807] । एक ईसाई

[6801] फावस्टस, यूसेबयिस और चेरीमोन, अपने ही शकि्षक, संत डायोनसियिस की गवाही के अनुसार, डकिन थे। यूसेबयिस (चर्च इतहिासकार) आगे कहते हैं कि डकिन यूसेबयिस बाद में सीरयिा में लाओडसियिा के चर्च के बशिप बने, जबकि फावस्टस, एक सम्माननति एल्डर, ने अपने जीवति रहते हुए शहीद की मौत पाई, जब उनका सरि कलम कर दयिा गया था। – वे तीसरी शताब्दी के उत्तरार्ध में मरे।

[6802] एफ़सिुस – एशयिा माइनर में एशयिा प्रांत का प्रमुख शहर; काइस्टर नदी पर स्थति। आज, एफ़सिुस के प्राचीन शहर के स्थल पर, आयशा सुलुक नामक एक गरीब तुर्की गाँव है।

[6803] ग्रीक स्रोतों में, दावकि्ट को अदाव्क्त के रूप में संदर्भति कयिा गया है।

[6804] मेलटिनि – लघु अर्मेनयिा के उत्तरी भाग में एक क्षेत्र, जो यूफ्रेट्स नदी से बहुत दूर नहीं था। सम्राट ट्राजन (98–117) के शासनकाल के दौरान, इसी नाम की एक बस्ती एक महत्वपूर्ण कस्बे के आकार तक बढ़ गई।

[6805] थ्रेस – बाल्कन प्रायद्वीप के उत्तर-पूर्वी भाग में स्थति, बीजान्टनि साम्राज्य का एक क्षेत्र।

[6806] कैपेटोलयिा – गादारा और अद्रा के बीच, यरूशलेम से दमश्कि जाने वाले मार्ग पर एक नगर।

[6807] बोस्ट्रा – अरब में एक शहर।

शिक्षक के रूप में, उन्हें अगेरयिनों ने पकड़ लिया और यातना देने के लिए दमिश्क ले गए। वहाँ, उनकी जीभ काट दी गई, लेकिन चमत्कारिक रूप से, उसके बाद भी वे और भी स्पष्ट रूप से बोलते थे। फिर उनका दाहिना हाथ और पैर काट दिए गए, उनकी आँखें निकाल दी गईं, उन्हें एक क्रूस पर ठोक दिया गया और अंत में, उनका सिर काट दिया गया, जबकि उनके शरीर को जला दिया गया[6808] ।

18 अक्टूबर

5 अक्टूबर (पुराने कैलेंडर के अनुसार)

पवित्र शहीद चैरिटीना का कष्टकथा

5 अक्टूबर को स्मरणोत्सव मनाया जाता है

डायोक्लेटियन के शासनकाल के दौरान, पोंटस में क्लॉडियस नाम का एक कुलीन और धनी व्यक्ति रहता था; स्वभाव से वह गरीबों के प्रति दयालु और करुणामय था। एक दिन, क्लॉडियस की मुलाकात चैरिटीना नाम की एक छोटी लड़की से हुई, जिसने अपने माता-पिता को बचपन में ही खो दिया था। क्लॉडियस को उस पर दया आ गई, उसने उसे अपने घर में ले लिया, उसका पालन-पोषण किया और उससे अपनी बेटी की तरह प्यार किया। वास्तव में, चैरिटीना इस तरह के प्यार की पूरी हकदार थी। जब वह बड़ी हुई, तो वह न केवल रूप से सुंदर बनी, बल्कि उत्कृष्ट नैतिक गुणों से भी विभूषित थी: कोमलता, नम्रता, आज्ञाकारिता, मौन, पवित्रता और बुद्धि। मसीह में विश्वास करने के बाद, वह उनके प्रति एक उत्कट प्रेम से भर गई और, स्वयं को उनके लिए व्रत में बाँधकर, उसने अपनी कुँवारी अवस्था की रक्षा की और इसलिए एक अलग, एकांत निवास में रहने लगी। क्लॉडियस, उसका संरक्षक और स्वामी, न केवल उसके इस नेक इरादे पर आपत्ति नहीं जताई, बल्कि उसके पवित्र और पुण्य जीवन पर बहुत प्रसन्न हुआ। उसने उसके लिए एक विशेष घर बनवाया, जहाँ वह एकांत में रहती थी, और दिन-रात प्रभु की व्यवस्था का अध्ययन करती थी। विश्वासियों ने उससे मिलने आना शुरू कर दिया, और उसने उन्हें उद्धार की ओर मार्गदर्शन किया, उन्हें आत्मा-रक्षक शिक्षाओं से शिक्षित किया। जहाँ तक अविश्वासियों की बात है, उन्होंने मसीह का उपदेश देकर उन्हें सच्चे धर्म की ओर ले जाया। इस प्रकार, चैरिटीना सभी के लिए विश्वास और ईश्वर-प्रसन्न जीवन की शिक्षिका थीं।

उस समय, अधर्मी रोमन सम्राट डायोक्लेटियन[6809] ने ईसाइयों के खिलाफ एक भयंकर उत्पीड़न शुरू किया। उसके आदेश पर, ईसाइयों को हर जगह खोजा जाता था और उन्हें यातनाएं दी जाती थीं। विशेष रूप से, उत्पीड़क उन लोगों को निशाना बनाते थे जिनके बारे में यह अफवाह थी कि वे विशेष रूप से सदाचारी और बुद्धिमान हैं। संत चारितिनि पर इस तरह शहर के राज्यपाल डोमिशियिन के सामने बदनामी की गई; उन पर खुद एक ईसाई होने और कई अन्य लोगों को मसीह के धर्म में परिवर्तित करने और ऐसा करना जारी रखने का आरोप लगाया गया। यह सुनकर, शहर के राज्यपाल ने क्लॉडियस को एक पत्र लिखा, जिसमें उसे चारितिनि को उसके पास भेजने का आदेश दिया। गवर्नर का पत्र पढ़कर क्लॉडियस को गहरा दुख हुआ; उसने बोरा पहना और उसके लिए रोया, यह पूरी तरह से समझते हुए कि गवर्नर को चुनौती देना असंभव था। फिर भी, जब उसके लिए सैनिक भेजे गए, तो वह—चैरिटीना से अलग होने में असमर्थ—उनका जितनी हो सके उतनी बहादुरी से विरोध करने लगा, रोते हुए और उसे अपने हाथों से कसकर पकड़े हुए, उसे पकड़ने वालों के हवाले करने से इनकार कर रहा था। सैनिक उसे खींचकर अपने पास ले जा रहे थे, जबकि क्लॉडियस उसके रास्ते में खड़ा था और उसे जाने देने से इनकार कर रहा था। जब उसे अलग-अलग दिशाओं में खींचा जा रहा था, तो संत चारितिनि ने अपने स्वामी से कहा:

'मुझे जाने दीजिए, मेरे स्वामी, और दुखी न हों, बल्कि आनंदित हों, क्योंकि मैं अपने और आपके पापों के लिए ईश्वर को एक प्रसन्न करने वाला बलिदान चढ़ाऊँगी।'

[6808] माना जाता है कि सेंट पीटर की मृत्यु तीसरी या चौथी शताब्दी की शुरुआत में हुई थी।

[6809] रोमन सम्राट डायोक्लेटियन ने 284 से 305 ईस्वी तक शासन किया।

सैनकि, अत्यधकि क्रोधति होकर, चैरटिना को जबरदस्ती क्लॉडयिस की पकड़ से छीनकर, भेड़ों के झुंड से मेमने को झपटने वाले भेड़यिों की तरह ले गए, और उसे राज्यपाल के पास ले गए। उसे वदिा करते समय, क्लॉडयिस ने रोते हुए कहा:

'जब तुम पवत्रि शहीदों के समूह में परमेश्वर के सामने खड़ी हो, तो मुझको स्वर्ग के राजा के समक्ष याद करना!'

संत चारटिनिा को राज्यपाल के सामने लाया गया और वह उनके सामने खड़ी हो गई, और उसने पूरे दलि से ईश्वर से अपनी सहायता के लिए प्रार्थना की।

गवर्नर ने उससे पूछा:

'क्या यह सच है, हे कन्या, जो मैंने तुम्हारे बारे में सुना है—कि तुम स्वयं एक ईसाई हो और कई अन्य लोगों को गुमराह कर रही हो, उन्हें उसी अधर्मी धर्म में परविर्तति कर रही हो?'

संत चारटिनिा ने साहसपूर्वक उत्तर दयिा:

'यह सच है कि मैं एक ईसाई हूँ, लेकनि यह झूठ है कि मैं दूसरों को भटकाती हूँ; मैं दूसरों को भटकाती नहीं हूँ, बल्कि उन्हें दुष्टता और भूल से दूर करती हूँ और उन्हें सही मार्ग पर ले जाती हूँ, उन्हें मसीह तक लाती हूँ, जनि पर वशि्वास करना दुष्ट नहीं है, जैसा आप अन्यायपूर्वक मानते हैं, बल्कि पवत्रि और धर्मी है। तुम्हारा वशि्वास तो हर तरह की अशुद्धयिों से भरा है, क्योंकि तुम घृणति और कपटी राक्षसों में वशि्वास करते हो और उनकी इच्छा को पूरा करते हो।"

संत चैरटिना की प्रतकि्रयिा सुनकर, राज्यपाल अत्यधकि क्रोधति हो गया और उसने उसे बुरी तरह कोड़े लगाने का आदेश दयिा। फरि, उसके गले में लोहे का हारा डालकर, उसने उसे प्रांतीय राज्यपाल के समक्ष मुकदमे के लिए भेज दयिा। इस अन्यायपूर्ण न्यायाधीश ने, चैरटिना को यातना के सभी उपकरण दखिाकर, उससे कहा:

'अपने ऊपर दया करो, कहीं तुम क्रूर यातनाओं में नष्ट न हो जाओ। मेरी सलाह मानो और अमर देवताओं को बलदिान चढ़ाओ, और फरि तुम अपने लिए तीन गुना लाभ प्राप्त करोगे: तुम देवताओं को प्रसन्न करोगे, राजा की कृपा प्राप्त करोगे, और अपनी खलिती हुई सुंदरता को क्रूर यातनाओं से अछूता रखोगे।'

इसके जवाब में, शहीद ने ऊपर की ओर अपनी आँखें उठाईं, और ऊपर से सुरक्षा की भीख माँगी। फरि, क्रॉस का चहि्न बनाते हुए, उसने न्यायाधीश से कहा:

'न्यायाधीश, तुम चालाक और अन्यायी हो! लेकनि तुम अपनी चालाकी या यातना के भय से मुझे फँसा नहीं पाओगे; तुम मुझे अपने पाप में नहीं खींच पाओगे, और न ही तुम मसीह के लिए पीड़ा सहने की मेरी प्रबल इच्छा को बदल पाओगे।' तुम्हारे लिए यह सोचना बेहतर होगा कि तुम्हारी अपनी आत्मा के लिए क्या अधकि लाभदायक होगा, और स्वयं ही नर्जिीव मूर्तयिों की पूजा न करना, कहीं तुम उन राक्षसों के साथ नष्ट न हो जाओ जनि्हें तुम देवताओं के रूप में पूजते हो।

ये शब्द सुनकर, न्यायाधीश ने पवत्रि शहीद का अपमान करना शुरू कर दयिा और उसके बाल काटने का आदेश दयिा। संत, अपने बाल काटने वाले के सामने भेड़ की तरह नम्र, चुप रहीं, और अपने हृदय में अपने प्रयि वधूवर, मसीह से बातें करती रहीं, तथा उनसे शहादत का कार्य पूरा करने में मदद करने की वनिती करती रहीं। जब उनके बाल काट दिए गए, तो तुरंत, सभी के सामने, उनके सरि पर नए बाल उग आए, जो पहले से भी लंबे और महीन थे। यह देखकर, न्यायाधीश क्रोध से आग-बबूला हो गया और आदेश दयिा कि शहीद के सरि पर जलते हुए कोयले बखिेरे जाएँ, जसिसे वह बुरी तरह झुलस गई। फरि, संत को और अधकि यातना देने के लिए, उसके झुलसे हुए शरीर पर पत्ति के साथ मलि हुआ सरिका डाला गया। लेकनि संत ने यह सब धैर्यपूर्वक सहन कयिा, प्रभु से प्रार्थना करते हुए और कहती रहीं:

'हे प्रभु यीशु मसीह, आप उन पर स्थरि सहायक हैं जो आप पर वशि्वास करते हैं, जनि्होंने अपनी तीन पवत्रि युवाओं को जलती हुई लपटों के बीच सुरक्षति रखा, मेरी सहायता के लिए शीघ्रता करें और मुझे आपके लिए सहने वाले इस कष्ट में मजबूत करें, ताकि मेरे शत्रु यह न कहें: "उसका ईश्वर कहाँ है?"'

प्रार्थना करने के बाद, उसे अपनी यातनाओं से राहत मलि और उसने ईश्वर का धन्यवाद कयिा। हालाँकि, उसके यातनाकर्ता ने उसके लिए और भी अधकि यातनाएँ रचीं: लोहे की छड़ों को गर्म करके, उसने आदेश दयिा कि उसके स्तन के नप्पिल छेदे जाएँ और उसकी पसलयिाँ जलती हुई मोमबत्तयिों से झुलसाई जाएँ। लेकनि संत चारतिीना, मानो उसे कोई शारीरकि आग महसूस ही न हो, दैवी प्रेम की आध्यात्मकि ज्वाला से प्रज्वलति थीं और उन्होंने अपने हृदय और होठों से यीशु मसीह की घोषणा करना कभी बंद नहीं कयिा। संत में ऐसी दृढ़ता देखकर, यातना देने वाले ने उसे समुद्र में डुबोने का आदेश दयिा। नौकरों ने उसे उठाया और समुद्र तक ले गए। जैसे ही वह चल रही थी, संत ने ईश्वर से पुकारा:

'मैं तुझे धन्यवाद देती हूँ, हे मेरे प्रभु परमेश्वर, कि तेरे पवित्र नाम के लिए, आग के कष्ट के बाद, मैं समुद्र के पानी से गुजरूँगी; यह अनुग्रह कर कि मैं पुनरुत्थान के दिन पवित्र होकर प्रकट होऊँ; परन्तु अभी भी, हमेशा की तरह, मुझमें अपने चमत्कार दिखा, ताकि तेरा अति महिमामय नाम और भी अधिक महिमामय हो जाए।'

इस बीच, नौकरों ने चैरटिना को समुद्र के पास ले गए और उसके गले में एक बड़ा पत्थर बाँधकर, उसे समुद्र की गहराई में फेंक दिया। लेकिन पत्थर तुरंत उसके गले से ढीला हो गया और समुद्र में गायब हो गया, जबकि संत, ईश्वर की शक्ति से अदृश्य रूप से सुदृढ़ होकर, लहरों पर खड़ी हो गईं और उन पर ठोस चट्टान की तरह चलीं। किनारे पर आने के बाद, वह न्यायाधीश के पास लौट आईं और उससे कहा:

'मेरे मसीह की सामर्थ्य को देखो, और उस पर विश्वास करो!'

न्यायाधीश ने जब देखा कि खारतिनि डूबी नहीं थी बल्कि जीवित थी, तो वह इतना भयभीत हो गया कि वह लगभग बेहोश हो गया और चुप हो गया। जैसे ही वह होश में आया, उसने घोषणा कर दी कि वह एक जादूगरनी थी जिसने समुद्र में डूबने से बचने के लिए जादू-टोना किया था, और उसने आदेश दिया कि उसे पकड़ लिया जाए और नग्न होकर एक पहिये से बाँध दिया जाए, जिसके नीचे विभिन्न तेज लोहे के औजार, चाकू और तलवारें, और जलते हुए कोयलों की एक बड़ी संख्या रखी गई थी। न्यायाधीश ने अपने नौकरों को आदेश दिया कि वे संत को बँधे हुए पहिये को घुमाएँ, ताकि उसके नीचे रखे गए तीखे औज़ार उसके शरीर को चीर-फाड़ दें, जबकि जलते हुए कोयले उसे झुलसा दें, जिससे संत को और भी अधिक यातना पहुँचे। लेकिन नौकर यातना देने वाले के आदेशों का पालन नहीं कर सके, क्योंकि ईश्वर की आज्ञा से, पहिया नहीं घूमा, उनके हाथ कमजोर पड़ गए, और जलते हुए कोयले बुझ गए। संत को कोई नुकसान नहीं हुआ, क्योंकि प्रभु का स्वर्गदूत मसीह की वधू की रक्षा कर रहा था। यह देखकर, न्यायाधीश फिर से क्रोधित हो गया और आदेश दिया कि उसके नाखून उखाड़े जाएं और उसके दांत तोड़ दिए जाएं - फिर भी संत ने इन यातनाओं को भी साहस के साथ सहन किया। तब उस अधर्मी न्यायाधीश ने उसकी पवित्रता ( ) को कलंकित करने का निश्चय किया, और इस उद्देश्य के लिए उसने बहुत सारे दुष्ट पुरुषों को बुलाने का आदेश दिया, ताकि वे उस संत को कलंकित कर सकें। संत चारटिनि ने, उस अन्यायपूर्ण न्यायाधीश से ऐसा अधर्मी आदेश सुनकर, कहा:

'मेरा मसीह मेरे साथ है: वह तुम्हारी सभी दुष्ट योजनाओं को विफल कर देगा और मुझे निर्दोष रूप से अपने पास ले जाएगा।'

यह कहकर, शहीद ने अपने हाथ उठाए और स्वर्ग की ओर दृष्टि स्थिर की, और ईश्वर से विनम्रतापूर्वक प्रार्थना की कि वह उसे दुष्टों के हाथों से बचाए। जैसे ही उन भ्रष्ट पुरुषों ने, जिन्हें बुलाया गया था, उसे अपवित्र करने की तैयारी की, उसने अचानक अपनी शुद्ध और निर्मल आत्मा अपने प्रभु[6810] के हाथों में सौंप दी, और उसका कुंवारा शरीर उन घृणित और कामुक भ्रष्ट पुरुषों के बीच मृत पड़ा रहा। संत को मृत देखकर, न्यायाधीश ने उसके शरीर को एक मदिरा-मशक में रखने का आदेश दिया; मशक को रेत से भरने के बाद, उसने उसे संत के शरीर के साथ समुद्र में फेंकने का आदेश दिया। इस प्रकार वह, जो जीवन में जल पर बिना किसी चोट के चली थी, समुद्र में डूब गई! तीन दिन बाद, लहरों ने संत के शरीर को किनारे पर ला दिया, जो पानी में बिल्कुल भी क्षतिग्रस्त नहीं हुआ था। क्लोडियस, जिसने संत चारटिनि को अपनी बेटी के रूप में पाला था, ने उनके सम्मानित और कष्ट-सहिष्णु शरीर को लिया और आँसुओं और आनंद के साथ, उसे एक उपयुक्त अंतिम संस्कार दिया, और परम पवित्र कुँवारी से जन्मे उद्धारकर्ता मसीह की महिमा की; महिमा और सम्मान सदा और सदा के लिए उन्हीं को हो। आमीन।

कॉन्टाकियन, स्वर 2:

अटल मन से, चैरटिना, तुमने विश्वास के द्वारा अपनी आत्मा को दृढ़ किया, और शत्रु के योद्धा को लज्जित किया; तुम मसीह के समक्ष खड़ी हो, हे सर्वधन्य, अपने ही रक्त से गर्भित शिशु को धारण करते हुए, और स्वर्गदूतों के साथ सदा आनंदित हो: हमारे लिए प्रार्थना करो, हे क्लेश-वाहक।

[6810] पवित्र शहीद चारतिनि ने लगभग 304 ईस्वी में ब्लैक सी के दक्षिणी तट पर स्थित पोंटस के अमीसस शहर में शहादत प्राप्त की।

गुफाओं के पूजनीय डेमयिन का जीवन

5 अक्टूबर को स्मरणोत्सव

जब हम, आध्यात्मकि और शारीरकि बीमारयिों से पीड़ति, धर्मगुरुओं से सहायता के लएि पुकारते हैं, जैसा कि धर्मग्रंथों में नर्दिेश दयिा गया है, ताकि वे हमें पवत्रि तेल से अभषिेक कर सकें, तो आइए हम अपने वचिारों में उस धर्मगुरु और उपचारक को भी याद करें जसिने परमेश्वर को प्रसन्न कयिा, धन्य डेमयिन, जो आदरणीय थयिोडोसयिस के मठाध्यक्षत्व के दौरान पवत्रि गुफाओं के मठ में सत्कर्मों से परश्रिम करते थे।

इस असाधारण भक्षिु ने अपने पूजनीय पति और गुरु, थयिोडोसयिस के दैवीय जीवन और सभी सद्गुणों का उत्साहपूर्वक अनुकरण कयिा। कई लोगों की गवाही के अनुसार, वह हृदय से वनिम्र, आज्ञाकारी और सभी के प्रति समर्पति थे; वशिेष रूप से, जो लोग उनके साथ एक ही कोठरी में रहते थे, वे उनकी नम्रता, रात में की जाने वाली उनकी जाग-धारण, पवत्रि ग्रंथों के प्रति उनकी लगन और प्रार्थना के लएि बार-बार उठने के प्रत्यक्षदर्शी थे। ये वही प्रत्यक्षदर्शी इस व्यक्ति के कई अन्य कारनामों का भी वर्णन करते हैं, जो इतना कठोर उपवासी था और उसने इतनी तपस्या से खुद को प्रतषि्ठति कयिा कि, रोटी और पानी के अलावा, उसने अपनी मृत्यु के दनि तक भोजन के रूप में और कुछ भी नहीं खाया। अपने धार्मकि जीवन के लएि, प्रभु ने उन्हें चमत्कार करने का वरदान दयिा, और वशिेष रूप से बीमारों को ठीक करने की कृपा, ठीक उसी तरह जैसे संत डेमयिन द अनमरसेनरी और वंडरवर्कर, जनिका नाम उन्होंने धारण कयिा था। जब भी कोई एक बीमार बच्चे को रेवरेंड फादर के पास लाता या कसिी वयस्क को जो कसिी बीमारी से पीड़ति होता, उनके पास ले जाता, थयिोडोसयिस धन्य डेमयिन को उस पीड़ति व्यक्ति के लएि प्रार्थना करने का नर्दिेश देते थे। वनिम्रता और बनिा शकियात के समर्पण के साथ, स्वयं को चंगा करने के वरदान के अयोग्य मानते हुए, डेमयिन फरि बीमारों के लएि प्रार्थना करते और उन्हें पवत्रि तेल से अभषिेक करते; और, ईश्वर की कृपा से, सभी ठीक हो जाते और अच्छे स्वास्थ्य के साथ चले जाते।

इस प्रकार, कई वर्षों तक, धन्य डेमयिन ने ईश्वर की प्रसन्नता के लएि मठ संबंधी कार्यों में परश्रिम कयिा और अपनी आत्मा के उद्धार के लएि कई कर्म करके, शाश्वत जीवन के योग्य बन गए। इस क्षणकि जीवन के अंत तक पहुँचने पर, वह बीमार पड़ गए और अपनी मृत्यु को नकिट देख, उन्होंने आँसुओं के साथ ईश्वर से प्रार्थना करना शुरू कर दयिा:

'हे मेरे प्रभु, यीशु मसीह! अनुग्रह करो कि मैं तेरे संतों के गौरव में सहभागी हो सकूँ, और उनके साथ तेरे मार्गदर्शक, आदरणीय थयिोडोसयिस के योग्य ठहरूँ; परन्तु मुझे भी उनके साथ अपनी उस ज्योति में गनि, जसिे तूने धर्मी लोगों के लएि तैयार की है।'

जब वह इस प्रकार प्रार्थना कर रहा था, तो एक स्वर्गदूत अचानक सम्माननीय थयिोडोसयिस के रूप में उसके बस्तिर के पास प्रकट हुआ; डेमयिन की ओर झुककर और उसे स्नेह से चूमकर, उसने उससे कहा:

'मेरे बच्चे! प्रभु, जनिसे तुम प्रार्थना करते हो, उन्होंने मुझे अब यह सूचति करने के लएि भेजा है कि तुम्हारी याचना स्वीकार की जाएगी: तुम्हारा नाम उनके संतों में लखिा जाएगा और तुम स्वर्गीय प्रभु के राज्य में उनके साथ नविास करोगे। और जब प्रभु तुम्हें इस संसार से चलने और उनके पास जाने की आज्ञा देंगे, तो हम उस प्रकाश में भी अवभिाज्य होंगे।'

यह कहकर, स्वर्गदूत अदृश्य हो गया। धन्य डेमयिन को एहसास हुआ कि उन्हें ईश्वर से एक दर्शन प्राप्त हुआ था, क्योंकि उन्होंने उससे बात करने वाले को दरवाजों से अंदर आते या बाहर जाते हुए नहीं देखा था, बल्कि ठीक उसी जगह पर जहाँ वह प्रकट हुआ था, वह अदृश्य हो गया। उन्होंने तुरंत एक नवसखिुआ को बुलाया और उसे पूजनीय थयिोडोसयिस के पास भेजकर उन्हें अपने पास आने के लएि कहा। जब संत तुरंत आ गए, तो धन्य डेमयिन ने प्रसन्न मुख से उनसे पूछा:

'क्या ऐसा ही होगा, हे पवत्रि पति, जैसा आपने आज मेरे दर्शन में मुझसे वादा कयिा था?'

परम पूज्य थयिोडोसयिस, इस मामले के बारे में कुछ भी न जानते हुए, ने उत्तर दयिा:

'मुझे नहीं पता, मेरे बेटे, मैंने तुम्हें क्या वादा कयिा था।'

तब धन्य डेमयिन ने उन्हें बताया कि वह कैसे प्रार्थना कर रहे थे, और कैसे कसिी ने उन्हें आदरणीय थयिोडोसयिस के सदृश रूप में प्रकट होकर वह वादा कयिा था।

यह सुनकर, ईश्वर-प्रेरित थियोडोसियस ने ईश्वर की स्तुति की और आँसुओं के साथ रेवरेंड से कहा:

'सचमुच, मेरे बच्चे, जैसा तुम्हें वचन दिया गया है, वैसा ही होगा, क्योंकि परमेश्वर का एक स्वर्गदूत मेरे सदृश तुम्हारे पास आया था; परन्तु मैं, जो स्वयं एक पापी हूँ, धर्मी लोगों के लिए सुरक्षित ऐसी महिमा का वचन कैसे दे सकता हूँ?'

धन्य डेमियन, ये वचन सुनकर, आनंद और आशा से भर गया। इस बीच, भिक्षु उसकी कोठरी में इकट्ठा हो गए थे; उसने उन सभी को चूमा और, एक अच्छा इक़रार करने के बाद, जब स्वर्गदूत उसकी आत्मा को लेने आए, तो उसने शांतिपूर्वक अपनी आत्मा को प्रभु के हाथों में सौंप दिया, और उसका चेहरा चमक उठा, जो आत्मा का शरीर से आनंदमय वियोग दर्शा रहा था[6811] । तब पूजनीय थियोडोसियस ने पूरे भाईचारे को बुलाने के लिए घंटी बजाने का आदेश दिया; गायन और बड़े सम्मान के साथ, उन्होंने मसीह के इस सेवक के पूजनीय शरीर को त्रिमूर्ति में महिमामय परमेश्वर के सम्मान में, एक गुफा में दफनाया।

इस धन्य उपचारक, डेमियन, की प्रार्थनाओं के द्वारा, प्रभु यह अनुग्रह करें कि हम भी, अनन्त काल तक, उनके राज्य में सहभागी हों, जहाँ कोई बीमारी नहीं है। आमीन।

गुफाओं के पूजनीय इरमियाह का जीवन

५ अक्टूबर को स्मरणोत्सव

और हमारी रूसी भूमि को भविष्यवक्ता यिर्मियाह द्वारा सम्मानित किया गया, प्राचीन वाले नहीं, बल्कि एक आधुनिक वाले; उनकी कहानी हम अब बताएँगे। हमारे धन्य पिता गुफाओं के यिर्मियाह एक परिपक्व वृद्धावस्था तक पहुँचे; वह तो रूसी भूमि के बपतिस्मा को भी याद करते थे, जो धर्मनिष्ठ ग्रैंड प्रिंस व्लादिमीर के दिनों में हुआ था[6812] ; तभी धन्य यिर्मियाह को पवित्र बपतिस्मा द्वारा प्रबुद्ध किया गया था। कई वर्षों बाद, वे हमारे आदरणीय पिताओं एंथनी और थियोडोसियस के पास पवित्र पेचेर्स्क मठ में आए, उन्होंने महान दैवीय रूप – स्कीमा – ग्रहण किया और उसमें परमेश्वर को प्रसन्न करने वाले तरीके से परिश्रम किया, पवित्र पिताओं के जीवन का अनुकरण करते हुए। उनके महान पुण्य के कारण, उन्हें ईश्वर से भविष्य देखने और मानव विचारों को समझने का वरदान मिला; जब भी आदरणीय महंत किसी में कोई दुष्ट विचार देख लेते, तो वे उन्हें अकेले में फटकारते और शैतान के प्रलोभनों से सावधान रहने के लिए कहते, विशेष रूप से यदि कोई भाई मठ छोड़ने का विचार कर रहा हो; ऐसे समय में यिर्मियाह, यह पूर्वानुमान लगाकर, उस भाई के पास जाता, उसकी मंशा के लिए उसे डांटता और उसे सांत्वना देता, उसे धैर्य रखने, भलाई के शत्रु और हमारे दुश्मन के खिलाफ एक दृढ़ और अनवरत संघर्ष करने, और डांवाडोल होने को न मानने के लिए प्रोत्साहित करता; और वह अपनी सलाह से उस भाई को इतनी दृढ़ता से मजबूत कर देता कि वह अपनी मंशा को हमेशा के लिए छोड़ देता। और यदि उस धन्य व्यक्ति ने किसी से कुछ भी भविष्यवाणी की, चाहे वह अच्छी हो या बुरी, तो बड़े भाई की बातें हमेशा सच होती थीं।

इतने वर्षों तक जीवित रहने और अपनी अंतर्दृष्टि से कई लोगों को लाभ पहुँचाने के बाद, संत यिर्मियाह ने अत्यधिक वृद्धावस्था में देह त्यागा[6813] और, अपनी आत्मा का वस्त्र—अपना शरीर—गुफा में छोड़कर, प्राचीन भविष्यवक्ताओं के पास चले गए, ताकि वे परम प्राचीन काल के, परमेश्वर पिता के, रहस्यों पर मुखामुखी मनन कर सकें, जिनकी महिमा हो, उनके एकलौते पुत्र और सह-तत्त्व आत्मा के साथ, अब और सदा और युगानुयुग। आमीन।

गुफाओं के पूजनीय मत्ती का जीवन

5 अक्टूबर को स्मरण किया जाता है

गुफाओं के हमारे धन्य पिता मैथ्यू का नाम न केवल प्रेरितों में प्रथम, सुसमाचार प्रचारक के नाम से मिलता-जुलता था, बल्कि जैसे बाद वाले को इथियोपिया की भूमि देखने और वहाँ के निवासियों के अविश्वास की निंदा करने का वरदान

[6811] आदरणीय डेमियन का 1070 में निधन हो गया। उनके अवशेष कीव-पेचेर्स्क लाव्रा में सेंट एंथनी की गुफा में विराजमान हैं।

[6812] रूस के क्षेत्रों का बपतिस्मा 988 में राजकुमार व्लादिमीर द होली के अधीन हुआ।

[6813] 1074 में।

मलिा था, वैसे ही इस धन्य व्यक्तकिो भी, इस मठ के पवत्रि founders[6814] के दनिों में कीव-पेचेरस्क लाव्रा में एक भकि्षु के रूप में रहते हुए, उन्हें उनके महान श्रमों के लिए ईश्वर द्वारा ऐसा वरदान प्राप्त करने के योग्य समझा गया कि वे भूमगित इथयिोपयिाई - राक्षसों - के चेहरों को स्पष्ट रूप से देख सकें, उनकी नदिा कर सकें, और मोक्ष की तलाश करने वालों के लाभ के लिए उनकी गुप्त योजनाओं को प्रकट कर सकें।

धन्य एल्डर मैथ्यू एक बार चर्च में अपनी सामान्य जगह पर खड़े थे; उन्होंने अपनी आँखें उठाईं, और दोनों कोरों में खड़े होकर भजन गा रहे भाइयों को देखा; और उन्होंने एक योद्धा के रूप में एक राक्षस को देखा जो भाइयों के बीच घूम रहा था; उसके वस्त्रों की बाँहों पर चपिचपि फूल थे। वह एक फूल तोड़कर गायकों में से कसिी एक पर फेंकता; जसि भाई पर वह फूल चपिक जाता, वह थोड़ी देर खड़े रहने के बाद, अपने मन को कमज़ोरी के आगे झुक जाने देता, और कोई बहाना बनाकर, चर्च छोड़कर अपनी कोठरी में चला जाता और सोने लग जाता, और गायन के लिए फरि कभी चर्च नहीं लौटता। यदि, हालाँकि, शैतान द्वारा फेंका गया फूल कसिी भकि्षु के कपड़ों पर नहीं चपिकता था, तो वह भकि्षु पूरे मातनि्स सेवा के अंत तक प्रसन्नचत्ति होकर खड़ा रहता था, और तभी अपनी कोठरी में जाता था। बूढ़े ने भाइयों को अपने दर्शन के बारे में बताया, और तब से उन्होंने सभी ने चर्च छोड़ने से परहेज़ करना शुरू कर दयिा।

धन्य वृद्ध की आदत थी कि मैटनि्स के अंत में, जब अन्य भकि्षु अपनी-अपनी कोठरयिों में चले जाते थे, तो वे चर्च से नकिलने वाले अंतमि व्यक्ति होते थे। एक बार, इसी तरह चर्च से नकिलने के बाद, वे चर्च की घंटी के नीचे बैठ गए, क्योंकि वे थोड़ा आराम करना चाहते थे, क्योंकि उनकी कोठरी चर्च से काफी दूर थी। और फरि उसने मठ के द्वार से एक बड़ी भीड़ आती हुई देखी; ऊपर देखने पर, उसने एक राक्षस को एक सूअर पर गर्व से बैठे देखा, जसिके साथ राक्षसों की भीड़ थी। वृद्ध ने उनसे पूछा:

'तुम कहाँ जा रहे हो?'

'मखिाइल टोबोलकोवचि के पीछे,' सूअर पर बैठे राक्षस ने उत्तर दयिा।

क्रॉस का चहि्न बनाकर, एल्डर अपनी कोठरी में चले गए। जब भोर हुई, तो संत ने अपने देखे गए दर्शन का अर्थ समझकर, अपने शषि्य से कहा:

'जाकर पूछो कि क्या मखिाइल अपनी कोठरी में है।'

शषि्य गया, और उसे बताया गया कि माइकल आज प्रातःप्रार्थना के बाद मठ की दीवारों के बाहर गए थे। तब वृद्ध ने यह दृष्टि मठाध्यक्ष और वरषि्ठ भकि्षुओं को सुनाई। मठाध्यक्ष ने उस भाई को बुलाया, उससे पूछताछ की, और उसे उपदेश का एक वचन देकर उसकी कोठरी में वापस भेज दयिा।

परम ज्ञानी फादर मैथ्यू ने अन्य भाइयों को प्रेम से उपदेश दयिा और उन्हें अपनी-अपनी कोठरयिों में रहने, नरिंतर ईश्वर को याद करने और अपने पापों की क्षमा के लिए प्रार्थना करने की सलाह दी।

आदरणीय मैथ्यू के समय में, धन्य मठाधीश थयिोडोसयिस का नधिन हो गया; उनके बाद स्टीफन मठाधीश बने, और स्टीफन के बाद, नकिोन। इसी मठाधीश के समय में धन्य मैथ्यू को नम्निलखिति दर्शन हुआ: एक दनि, भोर की प्रार्थना (मैटनि्स) में खड़े होते समय, उन्होंने मठाधीश, धन्य नकिोन को देखने की इच्छा से अपनी आँखें उठाईं, लेकनि देखा कि मठाधीश की जगह एक गधा खड़ा था; तब मैथ्यू को एहसास हुआ कि नकिोन भोर की प्रार्थना में नहीं आए थे। उस वरषि्ठ ने अपना दर्शन सुनाया; जसि पर मठाधीश को एहसास हुआ कि यह दर्शन उन्हें एक सबक के रूप में दयिा गया था, और उन्होंने कड़वे मन से पश्चाताप कयिा। उस समय से, न केवल आलस्य बल्कि हर ज़रूरी मठवासी कर्तव्य को भी त्यागकर, उन्होंने यह आदत डालने का प्रयास कयिा कि वे चर्च में सबसे पहले पहुँचें। इस प्रकार, इस दृष्टि ने उन्हें धन्य होने के लिए और भी अधकि लगन से प्रयास करने के लिए प्रेरति कयिा। इस धन्य वृद्ध को और भी कई दृष्टयिाँ हुईं, और उन्होंने उन्हें भाइयों के लाभ के लिए सुनाया। परपिक्व आयु प्राप्त करने के बाद, उन्होंने वशि्वास की एक अच्छी गवाही बनाए रखते हुए प्रभु में नदि्रावस्था प्राप्त की[6815] ; उनकी पवत्रि अवशेष पवत्रि पतिाओं के साथ एक गुफा में अक्षुण्ण अवस्था में पड़े हैं[6816] , और वे स्वयं हमारे लिए प्रभु के सहिासन के सामने खड़े होकर प्रार्थना करते हैं, कि हम शत्रु के अपमानों से छुड़ाए जाएँ और हमारे प्रभु मसीह यीशु में अनंत जीवन प्राप्त करें, जसिकी महमिा पति और पवत्रि आत्मा के साथ अब और सदा और युगानुयुग होती रहे। आमेन।

[6814] संत एंथनी और थयिोडोसयिस

[6815] 1088 में।

[6816] संत एंथनी की गुफा में।

पवत्रि शहीद मामेलखा की स्मृत

5 अक्टूबर को स्मरण कयि जाता है

पवत्रि शहीद ममेलखफा, जो फारस की रहने वाली थीं, शुरू में एक नश्चिति मूर्तपिूजक goddess[6817] की पुजारीनी थीं। एक दनि उन्होंने सपने में एक स्वर्गदूत को देखा, जसिने उन्हें ईसाई धर्म के रहस्यों के बारे में बताया। डरकर जागने पर, उन्होंने अपना सपना अपनी बहन को सुनाया, जो एक ईसाई थी। उसकी बहन उसे बशिप के पास ले गई। बशिप ने मामेलखफा का सपना सुनने के बाद, उसे ईसाई धर्म अपनाने के लिए मना लयि और उसका बपतस्मि दयि, जसिमें उसकी बहन पवत्रि बपतस्मि के कुंड पर उसकी धर्ममाता बनी। ईसाई धर्म में ममेल्खफा के धर्म परविर्तन से क्रोधति होकर, मूर्तविादयिों ने उनका तब तक पत्थरबाजी कर हत्या कर दी जब तक कि वे अपने बपतस्मि के वस्त्रों में ही लपिटी हुई थीं[6818] । उनके शरीर को एक खाई में फेंक दयि गया, जहाँ से दो ईसाइयों ने उसे नकिालकर उचति तरीके से दफनाया। बाद में, उस शहर के बशिप, जहाँ संत मामेलखफा ने शहादत प्राप्त की थी, ने पारसी राजा से वधिर्मी देवी के मंदरि को ध्वस्त करने और उसकी जगह संत मामेलखफा को समर्पति एक चर्च बनाने की अनुमति के लिए नविेदन कयि[6819] । इसी चर्च में पवत्रि शहीद के शरीर को अंतमि संस्कार के लिए रखा गया था। पवत्रि शहीद मामेलखफा के अवशेषों के स्थानांतरण के दौरान, कई चमत्कार और चंगाई हुईं, और कई मूर्तपिूजक ईसाई धर्म अपनाने लगे।

मास्को के पवत्रि धर्मगुरुओं: पीटर, एलेक्सयिस, योना और फलिपि का पर्व

5 अक्टूबर को स्मरण कयि जाता है

जसि प्रकार ऑर्थोडॉक्सी के तीन महान स्तंभ—बेसलि द ग्रेट, ग्रेगरी द थयिोलोजयिन और जॉन क्रसिोस्टोम—ने वधिर्मीयों द्वारा उस पर कए गए उत्पीड़नों के दौरान प्राचीन पूर्वी चर्च की इमारत को अडगि बनाए रखा, उसी प्रकार मास्को के चर्च के तीन महान संतों: पीटर, एलेक्सयिस और योना ने रूस की पवत्रि भूमि पर इसके आंतरकि संघर्षों और कई बाहरी शत्रुओं द्वारा लाई गई वपित्तयिों के कठनि समय के दौरान ऑर्थोडॉक्सी को अक्षुण्ण बनाए रखा। और ठीक उसी तरह जैसे सार्वभौमकि चर्च ने, प्रत्येक तीन सार्वभौमकि संतों को व्यक्तगित रूप से समर्पति उत्सवों के अलावा, सभी तीन संतों को एक साथ समर्पति एक वशिेष उत्सव स्थापति कयि है, यह दृढ़ता से ध्यान में रखते हुए कि वे सभी एक ही वशि्वास, उसके लिए एक ही उत्साह साझा करते थे, और अपने पड़ोसयिों के प्रति एक प्रेम, जसिने उन्हें समान रूप से उन पड़ोसयिों के लिए अपने जीवन को खतरे में डालने के लिए प्रेरति कयि; उसी प्रकार रूस में भी, ज़ार थयिोडोर योआनोवचि और पैट्रआर्क जॉब (1596 से) के समय से, मास्को के प्रथम पवत्रि पुरुषों के तीन पवत्रि नाम 5 अक्टूबर को एक ही सार्वभौमकि उत्सव में एकजुट हुए।

फरि भी रूसी भूमि में मॉस्को के प्रथम पदानुक्रमों में ऑर्थोडॉक्सी का एक और रक्षक, दुष्ट नैतकिता का दमनकर्ता और वशि्वास और सत्य के लिए एक शहीद था, जसिका नाम, अज्ञात कारणों से, लंबे समय तक 5 अक्टूबर की स्मृति से बाहर रखा गया था। यह थे मॉस्को के मेट्रोपॉलटिन, संत फलिपि।

[6817] प्रोलॉग के कुछ संस्करणों के अनुसार, मामेल्खा मूल रूप से यूनानी मूर्तपिूजक देवी आर्टेमसि की पुजारीनी थी, जसिकी पूजा वशिेष रूप से पूर्व में व्यापक रूप से प्रचलति थी।

[6818] प्राचीन काल में, ईसाई अपने बपतस्मि के बाद आठ दनिों तक वे सफेद वस्त्र पहनते थे जनिमें उनका बपतस्मि हुआ था। संभावना है कि इन सफेद वस्त्रों ने, मूर्तविादयिों की दृष्टि में, ममेलखफा की ईसाई समुदाय की सदस्यता का एक स्पष्ट संकेत दयि और यही उनके शीघ्र शहादत का कारण था। इसका एक अधकि वसि्तृत ववरिण यह है कि, मामेल्खा के बपतस्मि के तुरंत बाद, मूर्तविादयिों ने उससे संपर्क कयि और उससे आर्टेमसि को बलदिान चढ़ाने की मांग की; लेकनि उसने इनकार कर दयि और साहसपूर्वक खुद को एक ईसाई घोषति कर दयि, जसिके लिए उसे कई यातनाओं का सामना करना पड़ा, जनिके दौरान उसकी मृत्यु हो गई।

[6819] संत मामल्फा की शहादत का समय संभवतः 5वीं शताब्दी का माना जाता है। 422 में, बीजान्टनि सम्राट थयिोडोसयिस द्वतिीय द यंगर ने फारसियिों के साथ एक शांति संधि की, जो 502 तक चली; जो यह स्पष्ट करता है कि फारसी राजा ने एक ईसाई बशिप को उपर्युक्त मूर्तपिूजक मंदरि को ध्वस्त करने की अनुमति क्यों दी, जो स्पष्ट रूप से शक्तशिाली बाइजेंटाइन साम्राज्य के साथ अच्छे, शांतपिूर्ण संबंध बनाए रखने की इच्छा के कारण था।

उनकी उत्कृष्टता मॉस्को के मेट्रोपॉलटिन इनोसेंट ने सबसे पहले इस मामले पर ध्यान आकर्षति कयि। 1875 में, उनके अनुरोध पर, पवत्रि सनिड ने यह आदेश दयि कि मॉस्को के मेट्रोपॉलटिन—पीटर, एलेक्सयिस और जोनाह—की पवत्रि स्मृति के साथ-साथ मॉस्को के पवत्रि मेट्रोपॉलटिन फलिपि की स्मृति 5 अक्टूबर को मनाई जानी चाहए। उसी वर्ष, पवत्रि सनिड ने मेट्रोपॉलटिन इनोकेन्टी द्वारा संकलति, सभी चार संतों के संयुक्त स्मरणोत्सव के लिए सेवा की व्यवस्था को भी मंजूरी दे दी। यह स्मरणोत्सव आज भी मॉस्को में मनाया जाता है। त्योहार की पूर्व संध्या पर, यानी 4 अक्टूबर को, डोर्मशिन के महान कैथेड्रल में पवत्रि धर्मगुरुओं के सम्मान में भव्य नविेदन भजन के साथ एक लघु संध्या सेवा आयोजति की जाती है, जैसा कि मॉस्को के सभी चर्चों और मठों में संरक्षक त्योहारों पर प्रथा है। फरि, उचति समय पर, राजधानी के सभी चर्चों में शाम से ही 'लाल घंटयिों' की घंटी बजाकर एक रात्रि जागरण आयोजति कयि जाता है। वेस्पर्स की घोषणा के दौरान, संत अलेक्सयिस की स्थानीय प्रतमिा को चुदोव मठ से डोर्मशिन कैथेड्रल तक एक जुलूस में ले जाया जाता है, जहाँ यह अगले दनि वेस्पर्स तक रहती है।

ट्रोपारयिन, स्वर 4:

रूस के प्रथम-सहिासन-धारकों, प्रेरतिकि परंपराओं के रक्षकों, अटूट स्तंभों, ऑर्थोडॉक्सी के शकि्षकों, पतरस, अलेक्सयिस, योना और फलिपि, सभी के प्रभु से प्रार्थना करो कि वे ब्रह्मांड को शांति और हमारी आत्माओं को महान दया प्रदान करें।

कॉन्टाकयिन, स्वर 3:

आप संतों के बीच धर्मपरायणता से रहे, लोगों को ईश्वर के ज्ञान में शकि्षति कयि, और ईश्वर को बहुत प्रसन्न कयि: इसी कारण से आपको ईश्वर की कृपा के शष्यिों के रूप में, अक्षयत्व और चमत्कारों से महमिामंडति कयि गया।

संत डयिोनसियिस, अलेक्जेंड्रयिा के बशिप का जीवन

५ अक्टूबर को स्मरणोत्सव

संत डायोनसियिस अलेक्जेंड्रयिा के मूल नविासी थे[6820] , जनिका जन्म धनी और कुलीन माता-पति के घर हुआ था जो मूर्तपिूजक थे[6821] । अपनी युवावस्था में, उन्होंने एक ठोस मूर्तपिूजक शकि्षा प्राप्त की और मूर्तपिूजा के प्रति समर्पति थे। अपनी शकि्षा पूरी करने के बाद, डायोनसियिस ने शुरुआत में एक वाक्पटु व्यक्ति के रूप में काम कयि[6822] और उन्होंने युवा पुरुषों को वाक्पटुता की कला सखिाई, जो उन्होंने प्राप्त की थी, उस मूर्तपिूजक शकि्षा की भावना में। फरि भी, उसका स्पष्ट और तेज दमिाग उन भयानक त्रुटयिों और अंधवशि्वासों को महसूस कयि बनिा नहीं रह सका, जो उस मूर्तपिूजक धर्म में थीं जसिमें वह पैदा हुआ और पला-बढ़ा था, और मूर्तपिूजक दर्शन की उन कमयिों को भी, जनिके सद्धिांतों पर उसका पालन-पोषण हुआ था। सत्य के लिए भूखा-प्यासा उसका जज्ञिासु स्वभाव, मूर्तपिूजक ज्ञान और मान्यताओं में कोई संतुष्टि नहीं पा सका; उसके हृदय ने मूर्तपिूजा की व्यर्थता और मथि्यापन को महसूस कयि और, यद्यपि वह अभी तक सच्चे ईश्वर को नहीं जान पाया था, फरि भी वह पहले से ही उनकी ओर प्रयासरत था। और इस

[6820] अलेक्जेंड्रयिा एक प्रसद्धि शहर है जसिकी स्थापना सकिंदर महान ने 331 ईसा पूर्व में नील नदी के मुहाने पर, नचिले (उत्तरी) मस्रि में, भूमध्य सागर के तट पर की थी। अलेक्जेंड्रयिा रोम के बाद दुनयिा का दूसरा सबसे महत्वपूर्ण शहर था और यह व्यापार, उद्योग और वशिेष रूप से, मूर्तपिूजक शकि्षा का केंद्र था; ईसाई धर्म की शुरुआती शताब्दयिों में, यह ईसाई प्रबोधन का एक प्रमुख केंद्र था। परंपरा के अनुसार, ईसाई धर्म को यहाँ लगभग 59-60 ईस्वी में सुसमाचार प्रचारक मार्क द्वारा लाया गया था। आज, अलेक्जेंड्रयिा (जो तुर्की और अरबी में 'इस्केन्डर' के नाम से जाना जाता है) भूमध्यसागर के सबसे अधकि कलिबंदी वाले बंदरगाह शहरों और सबसे महत्वपूर्ण व्यापारकि केंद्रों में से एक है, जसिकी आबादी 2,30,000 से कुछ अधकि है।

[6821] अलेक्ज़ेंड्रयिा के संत डायोनसियिस का जन्म लगभग 195 में हुआ था।

[6822] अर्थात् उन्होंने सार्वजनकि भाषण की कला सखिाई, जो उस समय अपनी समृद्धि के शखिर पर थी और न केवल मूर्तपिूजक दुनयिा में बल्कि ईसाई दुनयिा में भी अत्यधकि सम्मानति थी, तथा इसका धार्मकि, राजनीतकि और शैक्षकि महत्व बहुत बड़ा था।

प्रकार डायोनसियिस, सत्य जानने की इच्छा से, वभिन्नि मानवीय शक्षिाओं और वश्विासों से खुद को परचिति कराया और उनकी एक-दूसरे से तुलना की। मानवीय शक्षिाओं की नष्पिक्ष जांच का यह वश्विासयोग्य मार्ग, सच्चे धर्म को खोजने की अपनी तीव्र इच्छा के माध्यम से, डायोनसियिस को एक सच्चे ईश्वर के ज्ञान और ईसाई धर्म की सचेत स्वीकृति की ओर ले गया। संत डायोनसियिस ने बाद में अपने बारे में कहा, कि वह 'स्वतंत्र जांच के माध्यम से, मानव शक्षिणों की नष्पिक्ष जांच करते हुए मसीह की ओर मुड़े'।

उस समय, अलेक्ज़ेंड्रयिा में—जो अपनी मूर्तपिूजक वद्यिालयों और वद्विानों के लिए प्रसद्धि थी—ईसाई शक्षिा उस समय की मूर्तपिूजक दुनयिा में ज्ञान के बहुआयामी वकिास के साथ काफी फल-फूल रही थी। वहाँ स्थापति ईसाई वद्यिालय के प्रसद्धि प्रमुख—जन्हिें तथाकथति '' (6823 , 'कैटेकुमेनल स्कूल') कहा जाता था—ने अपनी प्रतभिा की शक्ति से अपनी शक्षिाओं में धर्मशास्त्रीय और दार्शनकि ज्ञान का संयोजन कयिा और वे मूर्तपिूजक वद्विता तथा उसके प्रतनिधियिों से अच्छी तरह परचिति थे। इन ईसाई शक्षिकों के प्रभाव में, उस युग के सबसे प्रतष्ठिति मूर्तपिूजक अक्सर मसीह के सच्चे धर्म को जान गए और उन्होंने अपनी मूर्तपिूजक अधर्मीता को त्याग दयिा। डायोनसियिस, जो पहले से ही कई ईसाई लेखों से परचिति हो चुके थे, अलेक्जेंड्रयिा के ईसाई शक्षिकों के साथ घनष्ठि संबंध में आ गए, जसिका नेतृत्व हेराक्लटिस[6824] और, वशिेष रूप से, प्रसद्धि ओरजिन[6825] कर रहे थे। एक उल्लेखनीय वद्विान के रूप में, ओरजिन ने कई वधिर्मी लोगों को आकर्षति कयिा जो उन्हें दर्शन और गणति सखिाते हुए सुनने आते थे; उन्होंने इस अवसर का पूरा लाभ उठाया और मसीह के नाम की महमिा के लिए सफलतापूर्वक कार्य कयिा, अपने कार्यों और ज्ञान का उपयोग करके इन श्रोताओं को मसीह के साथ सहभागति में लाए।

6823 अलेक्जेंड्रयिा में, पैगन शक्षिा का केंद्र, जहाँ लंबे समय से उदार कला, गणति और दर्शन का एक प्रसद्धि संग्रहालय था, एक ईसाई स्कूल—जसि 'कैटेकेटकिल स्कूल' के नाम से जाना जाता था—पैगनवाद का मुकाबला करने के लिए प्रेरति युग में ही स्थापति हो गया था; ईसाई धर्म के भवष्यि पर इसका प्रभाव बहुआयामी और अपार था। परंपरा ने श्रद्धापूर्वक इस स्कूल की स्थापना का श्रेय स्वयं प्रेरति और सुसमाचार प्रचारक मरकुस को दयिा है। प्रारंभ में, यह केवल बपतस्मिा लेना चाहने वालों के लिए बुनयिादी शक्षिा प्रदान करता था—जैसा कि अलेक्जेंड्रयिाई स्कूल के नाम, 'कैटेकेटकिल' (शक्षिण संबंधी) से ही स्पष्ट है—जबकि साथ ही यह स्वयं धर्मशक्षिकों को भी प्रशक्षिति करता था। लेकनि बाद में, वैश्वकि शक्षिा और वद्विता के केंद्र में अपनी स्थति के कारण, अलेक्जेंड्रयिा के कैटेकुमेनल स्कूल ने एक धर्मशास्त्रीय और वद्वितापूर्ण शैक्षकि संस्थान का स्वरूप ले लयिा। इसमें वशिेष रूप से इसके एक धर्मशक्षिक (शक्षिक), प्रसद्धि पंतैनयिस (180–191), और उनके उतने ही उल्लेखनीय शष्यि और उत्तराधकिारी, अलेक्जेंड्रयिा के क्लेमेंट ने सहायता की, जन्होंने अपने छात्रों को आस्था के मार्गदर्शक के रूप में दर्शनशास्त्र की सफिारशि की। ओरजिन के अधीन अलेक्जेंड्रयिा का धर्मोपदेश वद्यिालय और भी अधकि समृद्ध अवस्था में पहुँच गया।

6824 हेराक्लटिस – एक प्रसद्धि ईसाई शक्षिक – शुरू में अलेक्जेंड्रयिा के कैटेकेटकिल स्कूल में ओरजिन के शक्षिण में सहायक थे। 231 में, हेराक्लटिस 'कैटेकेटकिल स्कूल' के प्रमुख के रूप में ओरजिन के उत्तराधकिारी बने; 233 में, उन्हें अलेक्जेंड्रयिा के बशिप का पद दयिा गया, † 246।

6825 ओरजिन – अलेक्जेंड्रयिा के क्लेमेंट के शष्यि और तीसरी शताब्दी के सबसे प्रमुख ईसाई शक्षिक – शुरू में अलेक्जेंड्रयिा के कैटेकेटकिल स्कूल में एक प्रतष्ठिति व्याख्याता थे, लेकनि बाद में अलेक्जेंड्रयिा के बशिप और अलेक्जेंड्रयिाई चर्च के अन्य प्रतनिधियिों के हमले के दायरे में आ गए और, कुछ वधिर्मी वचिारों को बढ़ावा देने और स्वैच्छकि ब्रह्मचर्य का अभ्यास करने के आरोपों में, उन्हें उनके पुरोहति पद से हटा दयिा गया और अलेक्जेंड्रयिा से नर्विासति कर दयिा गया, साथ ही चर्च में उनके शक्षिण पर प्रतबिंध लगा दयिा गया; बाद में वे फलिस्तिीन के केसरयिा में बस गए, जहाँ उन्होंने एक नया स्कूल स्थापति कयिा, जहाँ प्रसद्धि शक्षिक को सुनने के लिए लोग दूर-दूर से आते थे; इसके बाद उन्हें कुछ समय के लिए कैद कर लयिा गया; फरि उन्होंने अपने समय के वधिर्मी लोगों के खलिाफ उत्साहपूर्वक और सफलतापूर्वक संघर्ष कयिा; बाद में, मैक्समियिन के अधीन उत्पीड़न के दौरान, वे अपने उत्पीड़क लोगों से छपि गए; डसियिस के अधीन उत्पीड़न के दौरान, उन्होंने मसीह के एक साहसी स्वीकारकर्ता होने का सम्मान अर्जति कयिा; और उनकी मृत्यु वर्ष 254 में, अपने जीवन के 70वें वर्ष में, टायर में हुई। अपने अनगनित लेखों में, ओरजिन ने कुछ गैर-पारंपरकि और वधिर्मी प्रकृति के वचिार प्रस्तुत कएि, जसिके लिए उन्हें वधिर्मी घोषति कर दयिा गया, हालांकि ओरजिन ने अपने गैर-पारंपरकि वचिारों को अपरविर्तनीय सच्चाइयों के रूप में प्रस्तुत नहीं कयिा था, और न ही वह इस शब्द के सख्त अर्थ में एक वधिर्मी था। चर्च के सबसे प्रतष्ठिति पतिाओं ने भी ओरजिन के धर्मशास्त्रीय कार्यों और उपलब्धियिों को सर्वोच्च सम्मान दयिा। अपने स्कूलों में, उन्होंने चर्च के कई उल्लेखनीय पतिाओं और शक्षिकों को शक्षिति कयिा, जनिमें से कुछ का मूर्तपिूजक धर्म से ईसाई धर्म में धर्मांतरण उनके कारण ही हुआ; यह एक ऐसा वश्विास था जसिके साथ उन्होंने ज्ञान और दर्शन को सामंजस्यपूर्ण बनाने का प्रयास कयिा। वशिेष रूप से उल्लेखनीय हैं पवत्रि धर्मग्रंथ के अध्ययन, उसकी व्याख्या और, सबसे बढ़कर, उसके सच्चे पाठ की बहाली और शुद्धकिरण पर उनके कार्य, साथ ही धर्मद्रोही और ईसाई धर्म के शत्रुओं के खलिाफ ईसाई धर्म का बचाव करने के उद्देश्य से लखिी गई उनकी रचनाएँ। सामान्य रूप से, उन्होंने न केवल अपने युग में बल्कि आने वाली पीढ़ियों में भी बहुत बड़ा योगदान दयिा, और चौथी शताब्दी के चर्च के सभी महान शक्षिकों ने ओरजिन की कृतयिों से बहुत कुछ ग्रहण कयिा।

डायोनसियिस जल्द ही ओरजिन का एक उत्साही शष्यि बन गया और, एक जज्ञिासु मन के पूरे उत्साह के साथ, उसने ईसाई धर्म की सच्चाइयों का अध्ययन शुरू कर दयिा, जसिकी श्रेष्ठता को उसने पगन सद्धिांतों पर तुरंत पहचान लयिा। बड़े उत्साह और प्रेम के साथ, उन्होंने प्रेरतिों के पत्र पढ़े, वशिेष रूप से संत पौलुस प्रेरति के पत्र, जन्हिोंने उन पर गहरा प्रभाव डाला और उनके सभी वश्विासों और वचिारों में एक नर्णिायक परविर्तन लाया, जसिके परणिामस्वरूप वे पूरी तरह से सचेत रूप से ईसाई धर्म में परविर्तति हो गए। ईसाई धर्म की सच्चाई से पूरी तरह आश्वस्त होकर, उन्होंने (आंशकि रूप से ओरजिन के प्रभाव में) पवत्रि बपतस्मिा ग्रहण करने में कोई समय बर्बाद नहीं कयिा[6826] , और कैटेकुमेनेट में प्रवेश कयिा, और इसके लिए एक सच्ची शोभा बन गए। उस समय से, संत डायोनसियिस ने ईसाई धर्म की गहरी सच्चाइयों में और भी अधकि उत्साह के साथ डूबने के लिए खुद को समर्पति कर दयिा, और इसमें घुस आई वधिर्मी झूठे शक्षिकों और त्रुटपूर्ण सोच से इसकी पवत्रिता की रक्षा की। वे अपने शक्षिक ओरजिन के वशिेष रूप से करीब थे, उनके प्रतश्रिद्धापूर्ण कृतज्ञता और हार्दकि स्नेह रखते थे, और उन्होंने ओरजिन के साथ अपने संबंध तब भी नहीं तोड़े जब बाद में उन्हें अलेक्जेंड्रयिा छोड़ने के लिए मजबूर कयिा गया, और न ही तब जब उन्हें कैद कयिा गया [6827] । ईसाई धर्म की सच्चाइयों को समझने में संत डायोनसियिस की उल्लेखनीय प्रगतऔिर उनके धार्मकि जीवन ने अलेक्जेंड्रयिा स्कूल के एक शक्षिक हेराक्लटिस का ध्यान आकर्षति कयिा। जल्द ही, संत डायोनसियिस को एक प्रेस्बटिर के रूप में नयिुक्त कयिा गया। अलेक्जेंड्रयिा से ओरजिन के नष्किासन के बाद, हेराक्लटिस अलेक्जेंड्रयिाई धर्मशक्षिण वद्यिालय के प्रमुख के रूप में उनका उत्तराधकिारी बना। जब हेराक्लटिस को अलेक्जेंड्रयिा का बशिप नयिुक्त कयिा गया, तो डायोनसियिस धर्मशक्षिण वद्यिालय का प्रमुख बन गया; हेराक्लटिस की मृत्यु पर, वह अलेक्जेंड्रयिा के सनिडस का उत्तराधकिारी बना[6828] ।

जसि क्षण से डायोनसियिस ने अलेक्जेंड्रयिा का सहिासन संभाला, उनका पूरा जीवन चर्च के वभिन्नि शत्रुओं, बाहरी और वशिेष रूप से आंतरकि, के खलिाफ आत्म-बलदिान के कार्यों की एक नरिंतर श्रृंखला बन गया। उस समय, मसीह की कलीसयिा को मूर्तपिूजक अधकिारयिों द्वारा बाहरी उत्पीड़न से बहुत कष्ट हुआ और वह वभिन्नि संघर्षों, वधिर्मी झूठी शक्षिाओं और फूटों से और भी अधकि बखिर गई, जन्हिोंने कलीसयिाई एकता और कलीसयिा की आंतरकि शांतकिो बाधति करने की धमकी दी। ऐसे कठनि समय में, संत डायोनसियिस को स्वयं ईश्वर द्वारा वश्विासयिों के लिए एक दृढ़ स्तंभ के रूप में सेवा करने के लिए नयिुक्त कयिा गया था। वास्तव में, उनकी बदौलत, सभी खतरों और उथल-पुथल के बीच भी चर्च के भीतर शांतअिडगि बनी रही। इसके अलावा, महा-परोधर के पवत्रि और धर्मपरायण जीवन, अपने झुंड के प्रतउिनकी नस्विार्थ प्रेम, उनकी नम्रता, ईमानदारी और वनिम्रता ने उनके दुश्मनों और वधिर्मयिों के बीच भी उनके लिए सार्वभौमकि सम्मान पैदा कयिा। उनका संपूर्ण जीवन परमेश्वर की कलीसयिा की उत्साही और अथक सेवा के लिए समर्पति था। उन्होंने वशिेष रूप से उत्साही लगन के साथ अवश्विासयिों के धर्म परविर्तन के लिए प्रयास कयिा; उन्होंने भटक गए लोगों के साथ हार्दकि, पतिृसुलभ कोमलता से व्यवहार कयिा; और उन्होंने वभिाजति लोगों को सुलह कराने का ध्यान रखा। कष्ट के समय में उन्होंने उत्कृष्ट साहस का प्रदर्शन कयिा; अपने वश्विास में, अटूट दृढ़ता दखिाई; और अपने पूरे जीवन में, एक प्रभावशाली और गहरी वनिम्रता दखिाई – जबकसिंपूर्ण ईसाई जगत उनकी वद्विता और सद्गुणों से चकति था।

ओरजिन से सभी प्रकार के ज्ञान के प्रतप्रिेम वरिासत में मलिने के कारण, संत डायोनसियिस ने इसे ईसाई सद्धिांत के साथ सामंजस्य स्थापति करना संभव पाया और उन्होंने अपने समय के उन श्रेष्ठ पैगनों और वभिन्नि वधिर्मयिों की रचनाओं को ध्यान से पढ़ना और अध्ययन करना जारी रखा, जो अपनी झूठी शक्षिाओं से परमेश्वर की कलीसयिा को अस्थरि कर रहे थे। यद्यपउिन्होंने वधिर्मी झूठी शक्षिाओं और असहमतपिूर्ण वचिारों से ईसाई धार्मकि सद्धिांत की शुद्धता की रक्षा की, संत डायोनसियिस ने उन्हें खारजि कर दयिा, लेकनि ऐसा करने से पहले उन्होंने अपनी व्यक्तगित दृढ़ वश्विास से उनकी अस्थरिता को सुनश्चिति कर लयिा था; केवल तभी उन्होंने अधर्मी वधिर्मयिों के खलिाफ शक्तऔिर साहस से खुद को लैस कयिा।

[6826] संत डायोनसियिस अपेक्षाकृत अधकि उम्र में ईसाई बने। उन्हें अलेक्जेंड्रयिा के बशिप, डेमेट्रयिस (189–231) ने स्वयं बपतस्मिा दयिा था।

[6827] इस प्रकार, डयिोनसियिस ने ओरजिन को एक पत्र लखिा जब बाद वाले को डसियिस के अधीन कैद कयिा गया था। यह दर्ज है कि ओरजिन की मृत्यु के बाद, डयिोनसियिस ने सेसरयिा के बशिप थयिोटोकोस को उनकी प्रशंसा में एक पत्र लखिा।

[6828] संत डायोनसियिस 233 में प्रसद्धि अलेक्जेंड्रयिा स्कूल के प्रमुख बने और उन्होंने यह पद 14 वर्षों तक संभाला।

अपनी सारी बुद्धि और विद्वता के बावजूद, संत डायोनिसियस नम्र और विनम्र थे, और पादरी का पद संभालते हुए भी वे नम्रता और संयम की भावना से विभूषित थे। ईसाइयों के लिए उन कठिन समयों में, निर्दयी रोमन सम्राट डेसियस[6829] के क्रूर उत्पीड़न के दौरान, कुछ बिशप – उत्पीड़न और यातना के डर से नहीं, बल्कि इसलिए कि मसीह के झुंड को, जो उनकी देखरेख में सौंपा गया था, मार्गदर्शन, निर्माण और आराम के बिना न छोड़ें – – अपने शहरों से सुरक्षित स्थानों पर चले गए, और वहां से अपने झुंड का शासन किया[6830] । इस प्रकार, उन कठिन समयों में, संत डायोनिसियस ने दिव्य प्रेरणा के अनुसार कार्य किया, मसीह के नाम के लिए मृत्यु के भय से नहीं, बल्कि आवश्यकता के कारण और अलेक्जेंड्रिया की कलीसिया के भले के लिए, ताकि झुंड को बिना चरवाहे के न छोड़ दें। प्रीफेक्ट सैबिनिस ने संत डायोनिसियस को खोजने के लिए एक जासूस भेजा। संत चार दिनों तक घर पर ही रहे, लेकिन जासूस, यह मानकर कि वे भाग गए हैं, ने उन्हें खेतों में, सड़कों पर और नदियों के किनारे खोजा, और ई उसे महा-चरवाहे के घर में प्रवेश करने का विचार भी नहीं आया। इसके बाद, एक आंतरिक प्रेरणा पर, संत डायोनिसियस अपने कुछ साथी विश्वासियों के साथ भाग गए, लेकिन उन्हें पकड़ लिया गया और यातना देने के लिए तापोसिरिस भेज दिया गया। हालाँकि, ईश्वर ने अपने वफादार सेवक की रक्षा की। पूरी तरह से अप्रत्याशित रूप से, उन्हें ईसाई ग्रामीणों की भीड़ द्वारा सैनिकों के हाथों से चमत्कारिक रूप से बचाया गया। यह इस प्रकार हुआ।

एक ईसाई, जिसका नाम तिमोथी था, संत डायोनिसियस और अन्य विश्वासियों के साथ पकड़ा नहीं गया था। पहरे में रखा घर पाकर, वह पूरी तरह से स्तब्ध होकर भाग गया और एक गाँव वाले को—जो एक उत्सव समारोह में जा रहा था—सूचना दी कि आर्चपास्टर को हिरासत में ले लिया गया है। इस खबर ने उत्सव में ग्रहण लगा दिया, और सभी मेहमान इतनी जल्दी से उस जगह दौड़े जहाँ संत को रखा गया था कि पहरेदार भाग गए। डायोनिसियस और उनके दोस्तों को आधे नग्न अवस्था में नंगे बिस्तरों पर लिटा दिया गया और ग्रामीणों को लुटेरे समझकर उनसे दया की भीख माँगी कि उन्हें मौत की सजा न दें। लेकिन कुछ अज्ञात मित्रों ने संत को बाहों और पैरों से पकड़ लिया और, उनके विरोध के बावजूद, वहाँ से ले जाकर एक बिना काठी वाले गधे पर बिठा दिया। फिर उन्हें, उनकी इच्छा के विरुद्ध, एक सुरक्षित स्थान पर ले जाया गया। इन दोस्तों की पहचान जिन्होंने संत को बचाया, एक पूर्ण रहस्य बनी हुई है: स्पष्ट रूप से, प्रभु ने चर्च के भले के लिए संत डायोनिसियस को चमत्कारिक रूप से संरक्षित रखा, जिसे उस समय आंतरिक अशांति और उथल-पुथल द्वारा सताया, अपमानित और तबाह किया जा रहा था।

छिपे रहने के दौरान, संत डायोनिसियस ने विश्वसनीय पुरोहितों के माध्यम से उन्हें पत्र भेजकर अलेक्जेंड्रिया के झुंड का शासन करना जारी रखा। उस पीड़ादायक समय के दौरान, चर्च ने क्रूर मूर्तिपूजकों के हाथों भयानक पीड़ा और दुख सहन किया। यातना और कष्ट सहन न कर पाने के कारण, कई विश्वासी मसीह का त्याग कर गए। बाद में, गहरे पश्चाताप और हार्दिक दुख के साथ, वे एक बार फिर बिशप के पास लौटे, और विनम्रतापूर्वक उनसे मसीह की कलीसिया की गोद में उन्हें फिर से स्वीकार करने का निवेदन करने लगे। नरम स्वभाव के और विनम्र डायोनिसियस ने उन्हें ईसाई चर्च के झुंड में उदारतापूर्वक वापस स्वीकार कर लिया, उन पर विभिन्न प्रतिबंध और प्रायश्चित लगाए, और इस प्रकार उन्हें पूर्ण निराशा से बचाया[6831] ।

[6829] रोमन सम्राट डेसियस ने 249 से 251 तक शासन किया। वह ईसाइयों का एक क्रूर उत्पीड़क था; उसके शासनकाल के दौरान ही ईसाइयों का पहला व्यापक उत्पीड़न हुआ।

[6830] अन्य लोगों के अलावा, कार्थेज के संत साइप्रियन ने भी यह भाग्य भुगता, जिन्होंने मसीह के लिए बहादुरी से शहीद की मृत्यु को स्वीकार किया († 268)। इसी तरह, डायोनिसियस और साइप्रियन से पहले, स्मyrna के संत पॉलीकार्प (जो 167 में शहीद हुए) ने कुछ समय के लिए ऐसा ही किया, और उनके बाद, अलेक्जेंड्रिया के संत अथेनासियस († 373) ने भी ऐसा ही किया। डोमिटियस और डिडिइमस (251 ईस्वी) को, साथ ही एंटिओक के बिशप फैबियस को लिखे अपने पत्रों में, संत डायोनिसियस अलेक्जेंड्रिया के शहीदों का एक अत्यंत मार्मिक वृत्तांत सुनाते हैं, जो डेसियस के पहले उत्पीड़न के दौरान कोड़े मारने, आग या तलवार से मारे गए थे, और वह स्वयं को उन लोगों में गिनता है जिनके लिए बहुत लंबा जीवन भी प्रभु द्वारा स्वीकृति सुनिश्चित करने के लिए अपर्याप्त साबित हुआ, हालांकि वह मानता था कि मसीह ने उसे किसी अन्य अनुकूल समय के लिए सुरक्षित रखा था। जर्मनस नामक एक बिशप ने जाहिरा तौर पर उन पर कायरता और अपने झुंड को छोड़ देने के लिए फटकार लगाई, ठीक उसी तरह जैसे कार्थेज के संत साइप्रियन पर फटकार लगाई गई थी। इसके जवाब में (258–259), डायोनिसियस ईश्वर को अपना गवाह मानते हुए कहते हैं कि वह अपनी मर्जी से भागे नहीं थे, और (साइप्रियन की तरह) अपनी रक्षा में दैवीय प्रेरणा का हवाला देते हैं।

[6831] उनके प्रसिद्ध समकालीन, कार्थेज के बिशप संत साइप्रियन ने, ऐसे पतित आत्माओं के प्रति संत डायोनिसियस के साथ पूर्ण सहमति से कार्य किया। पतनशील लोगों को संप्रभुता में पुनःशामिल करने से पहले, उन्होंने उनसे पश्चाताप का प्रमाण मांगा और उन्हें क्षमा करने में संकोच नहीं किया, जो कि अपने समकालीनों में से कई के चरम विचारों के विपरीत था, जिन्होंने पतनशील लोगों के घातक पाप करने के विरोध में

मामलों को और भी बदतर बनाने के लिए, मसीह की कलीसिया को धमकी देने वाले बुराइयों के बीच, इस कठिन समय के दौरान नोवाटियन विभेद उत्पन्न हुआ, जिसने आंतरिक कलह से कलीसिया को और भी अधिक विभाजित कर दिया। नोवाटियन और उसके अनुयायियों ने धर्मत्यागियों को कलीसिया की गोद में फिर से स्वीकार करने का खुले तौर पर और दृढ़ता से विरोध किया, जिससे उसकी दुर्भाग्य और बढ़ गई और कई लोग निराशा की ओर धकेल दिए गए[6832] । उस समय, संत डायोनिसियस, जिन्होंने पतित लोगों का, विशेष रूप से मसीह के स्वीकारकर्ताओं के मध्यस्थता से, प्रेमपूर्वक स्वागत किया था, नोवाटियन के विरुद्ध उठ खड़े हुए और उन्होंने उसे इस संप्रदायवाद को छोड़ने के लिए कहा, जो परमेश्वर की कलीसिया के लिए बहुत हानिकारक था।

उत्साही महा-पशुपालक ने इस झूठे शिक्षक को लिखा, 'तुम्हें हर संभव चीज़ सहनी चाहिए थी, लेकिन परमेश्वर की कलीसिया को विभाजित नहीं करना चाहिए था।' 'कलीसिया को विभाजित न करने के लिए मरना उतना ही महिमामय है जितना मूर्तियों को बलिदान न चढ़ाने के लिए मरना।' मेरे विचार में, पहला कार्य और भी अधिक उत्तम है, क्योंकि दूसरे मामले में कोई अपनी आत्मा के उद्धार के लिए मरता है, जबकि यहाँ कोई पूरी कलीसिया की भलाई के लिए मरता है।

और उस दयालु चरवाहे ने बाद में परिषद में चर्च में उस लंबे समय से प्रतीक्षित शांति को बहाल करने के लिए अपनी सारी शक्ति लगा दी, जो इस हानिकारक विभाजन से बाधित हो गई थी; और उसने यह ईसाई नम्रता और संयम की भावना में अपने निस्वार्थ परिश्रम के माध्यम से हासिल किया[6833] ।

धर्मद्रोही डेसियस की मृत्यु के बाद, सम्राट गैलस के संक्षिप्त शासनकाल के दौरान[6834] , ईसाइयों पर अत्याचार बंद हो गए, और मसीह की कलीसिया में शांति बहाल हो गई। चर्च के भीतर यह शांति और भी स्वागत योग्य थी क्योंकि इसने संत डायोनिसियस को आर्सिनो के बिशप नेपोट द्वारा फैलाई गई अशांति को शांत करने के लिए अपनी पादरीय देखभाल को निर्देशित करने में सक्षम बनाया, जो किलीअस्म नामक एक विधर्म का प्रचार करते थे[6835] । पवित्र पिता

बहुत ज़ोरदार तरीके से विरोध किया था। उस समय गिरिजाघर के अभ्यास में पतनशील लोगों की ओर से मसीह के शहीदों और स्वीकारकर्ताओं का मध्यस्थता भी बहुत महत्व रखता था।

[6832] नोवाटियन, डिसियस के उत्पीड़न के दौरान एक उत्कृष्ट और वाक्पटु रोमन पुरोहित थे, हालाँकि, परिषद के नियमों के अनुसार, उनका अभिषेक नहीं किया जा सकता था, क्योंकि उन्होंने केवल एक क्लिनिकिल बपतिस्मा (यानी मृत्युशय्या पर बपतिस्मा) ही प्राप्त किया था, बिना बाद में क्रिस्मैशन (अभिषेक) के; बाद में, उन्होंने रोम में बिशप की पदवी प्राप्त करने के लिए जोरदार प्रयास किया; लेकिन, गलत गणना करने के कारण, उन्होंने खुद को चर्च से अलग कर लिया, एक नोवाटियन बिशप बन गए, और इस प्रकार चर्च के भीतर एक विनाशकारी विभाजन की नींव रखी, जिसका नाम उनके नाम पर रखा गया और जिसने चर्च को बड़े उथल-पुथल और विपत्तियों से धमकाया। नोवाटियन विशेष रूप से उन लोगों को चर्च में फिर से स्वीकार करने का विरोध करते थे जो उससे भटक गए थे। नोवाटियनों के अनुसार, चर्च संतों का एक समुदाय है; इसलिए, बपतिस्मा के बाद जो लोग गिर गए हैं और घातक पाप कर चुके हैं, उन्हें इससे निष्कासित कर दिया जाना चाहिए और किसी भी परिस्थिति में उन्हें फिर से स्वीकार नहीं किया जा सकता; दावा किया जाता था कि कलीसिया को गंभीर पापियों को क्षमा करने का कोई अधिकार नहीं है; यदि वह उन्हें क्षमा करती है, तो वह स्वयं अपवित्र हो जाती है और पवित्र रहना बंद कर देती है। नोवाटियन अपने समुदाय को 'काफारा' कहते थे, अर्थात् शुद्ध लोगों का समुदाय, जिसमें गंभीर पापियों को प्रवेश नहीं दिया जाता था, जबकि ऑर्थोडॉक्स चर्च से अलग हुए लोगों को केवल पुनःबपतिस्मा के माध्यम से स्वीकार किया जाता था। नोवाटियानी समुदाय कार्थेज, अलेक्जेंड्रिया, सीरिया, एशिया माइनर, गॉल और स्पेन में व्यापक रूप से फैल गए।

[6833] इस प्रकार, डायोनिसियस ने नोवाटियन को एक सौम्य, सुलह-भरा पत्र लिखा, जिसमें से अलेक्जेंड्रिया के संत के उपरोक्त शब्द लिए गए हैं—अर्थात्, कि संप्रदायवाद को रोकने के लिए सहन किया गया बलिदान उतना ही गौरवशाली है जितना मूर्तियों की पूजा करने से इनकार करने के लिए किया गया बलिदान। साथ ही, उन्होंने नोवाटियन को पता समान समझाया कि यदि वह अपने अनुयायियों को उनके द्वारा उठाए गए गलत कदम को त्यागने के लिए मना नहीं सकता था, तो कम से कम वह अपनी आत्मा को बचा सकता था; और यदि, जैसा कि नोवाटियन अपने बचाव में दावा करते हैं, उन्हें उनकी इच्छा के विरुद्ध बिशप के रूप में अभिषिक्त किया गया था, तो उन्हें अपने दावे की सच्चाई को स्वेच्छा से अपना पद त्यागकर साबित करना चाहिए था, 'ताकि परमेश्वर की कलीसिया को विभाजित होने से बचाया जा सके'। इस सुलह के संदेश के बावजूद, डायोनिसियस, अपनी ही बातों में, नोवाटियन के प्रति शत्रुतापूर्ण थे क्योंकि 'उसने चर्च को टुकड़ों में फाड़ दिया था और कुछ भाइयों को अधर्म और ईश्वर-निंदा की ओर ले गया था, ईश्वर के बारे में सबसे अवांछनीय सिद्धांत पेश किया था, और दयालु प्रभु को झूठे तौर पर निर्दयी चित्रित किया था', और इसी तरह। संत ने नोवाटियनों के खिलाफ कई पत्र लिखे और उनसे जोरदार संघर्ष किया। लेकिन यद्यपि, उनके और चर्च के कुछ अन्य प्रतिनिधियों के प्रयासों से, उसमें शांति बहाल हो गई, नोवाटियनों के कई अनुयायी थे, और उनके समुदाय 7वीं शताब्दी तक भी मौजूद रहे।

[6834] गैलस ने 251 से 253 तक शासन किया; वह अपने शांतिपूर्ण स्वभाव और ईसाइयों के प्रति सहिष्णुता के लिए जाना जाता था।

[6835] नेपोट मध्य मिस्र के अर्सीनोई, या अर्सीनोई, शहर के बिशप थे। – चिलियावाद बहुत जल्दी उभरा और दूसरी शताब्दी के अंत तक इसके पहले ही कई अनुयायी हो चुके थे। तीसरी शताब्दी के मध्य में, नेपोट इस सिद्धांत का एक ऊर्जावान समर्थक था, जिसके कई अनुयायी थे, और यह संख्या तब और भी बढ़ गई जब उसके उपदेश ने, एक तरह से, उत्पीड़न और यातना सह रहे ईसाइयों के लिए सांत्वना का सबसे करीबी स्रोत का काम किया। नेपोट ने यह सिखाया कि, प्रकाशनवाक्य (प्रकाशितवाक्य 20:2-6) के शब्दों के अनुसार, पृथ्वी पर यीशु मसीह का सहस्राब्दी

ने न केवल नेपोट के खलिाफ प्रेम की भावना में एक ग्रंथ लखिा[6836] , बल्कि उसी भावना में, इस वधिर्म के समर्थकों के साथ परषिद में वचिार-वमिर्श भी कयिा और उन सभी को चर्च की एकता में वापस लाने में सफल रहे[6837] । संत डायोनसियिस ने उस समय चर्च के भीतर वधिर्मयिों के बपतस्मिा को लेकर उत्पन्न ववािद[6838] में भी सक्रयि भाग लयिा, और उनका मुख्य उद्देश्य इस ववािद से चर्च में उत्पन्न अशांति को शांत करना था, जसिमें वे अपनी उपदेशों के माध्यम से सफल रहे। साथ ही, उन्होंने अलेक्जेंड्रयिा की कलीसयिा में उत्पन्न हुई सेबेलीउस की दुष्ट और खतरनाक वधिर्म का उत्साहपूर्वक वरिोध कयिा। मसीह की कलीसयिा में काफी भ्रम पैदा करने और अपने जालों में कुछ बशिपों को भी फँसाने वाली इसकी हानकिारक वधिर्मी झूठी शकि्षा का मुकाबला करने के लिए, संत डायोनसियिस ने परषिदों का आयोजन कयिा, उन्होंने सेबेलीउस के वरिुद्ध परपित्र लखि, उस घमंडी मन की हठधर्मति को दूर करने का प्रयास करते हुए, जो परमेश्वर में व्यक्तयिों की त्रमिूर्ति: परमपति, परमेश्वर का पुत्र और पवत्रि आत्मा को नहीं मानता था[6839] ।

लेकनि नए रोमन सम्राट वैलेरयिन[6840] द्वारा भड़काए गए उत्पीड़न के कारण संत डायोनसियिस के शांति और चर्च की भलाई के प्रयास अचानक अधूरे रह गए। इस क्रूर उत्पीड़न की शुरुआत में ही, अलेक्जेंड्रयिा के महान चरवाहे

शासन जल्द ही शुरू होने वाला था, जसिमें केवल वश्विासयोग्य और धर्मात्मा ही वास करेंगे; कलिआिस्टों ने इस शासन की कल्पना एक इंद्रयिात्मक, भौतकि अर्थ में एक सांसारकि राज्य के रूप में की थी जसिमें सांसारकि सुख होंगे। नेपोट की वधिर्मी शकि्षाएँ उनकी मृत्यु के बाद ही ज्ञात हुईं।

[6836] उनका वस्तिृत ग्रंथ *ऑन द प्रॉमसिसि* (On the Promises), जसिमें से केवल दूसरा भाग ही पूरी तरह से संरक्षति है, साथ ही पहले भाग के छोटे अंश भी मलि हैं। अपने प्रबंध में, संत डायोनसियिस ने समझाया कि मसीह के राज्य से संबंधति वादों को इंद्रयिात्मक अर्थ में नहीं, बल्कि आध्यात्मकि अर्थ में समझना चाहए, और उन्होंने इसे प्रकाशन (Revelation) और मानव स्वभाव की जांच दोनों से उत्कृष्ट रूप से प्रदर्शति कयिा; उसी कृति में, उन्होंने सामान्य रूप से प्रकाशन (Apocalypse) पर भी चर्चा की।

[6837] इस उद्देश्य के लिए, डयिोनसियिस आर्सीनोई की ओर तेज़ी से गए, जहाँ उन्होंने नेपोट के अनुयायियों से मलिने का अनुरोध कयिा और तीन दनि उनकी पुस्तक का वश्लिेषण करने में बतिाए, साथ ही उन्होंने प्रेम और सम्मान के साथ उनकी बात करने का प्रयास कयिा, उन्हें अपना पति और भाई कहा और उनके वश्विास, लगन, पवत्रि धर्मग्रंथ के लगन से अध्ययन, साथ ही भजन-संगीत में उनकी महान उपलब्धयिों के लिए, जो उनके कई भाइयों के लिए आनंद का कारण थीं। संत डायोनसियिस कहते हैं, 'मैं इस व्यक्ति से गहराई से प्रेम करता हूँ, वशिेष रूप से इसलिए क्योंकि वह हमसे पहले वश्राम करने चले गए हैं। फरि भी, सत्य को सर्वोपरि मानना और उसका सम्मान करना चाहए।' बैठक का परणिाम यह हुआ कि संत चलियिास्टों को मनाने में सफल रहे और उनके नेता, प्रस्बिाइटर कोराकयिन से अपने परामर्श के लिए हार्दकि धन्यवाद प्राप्त कयिा। बाद वाला इतना आश्वस्त हो गया कि उसने अपना ही दृष्टकिोण त्याग दयिा और अनुरोध कयिा कि अब इस पर कोई ध्यान न दयिा जाए, न ही इसकी चर्चा, उल्लेख या शकि्षण कयिा जाए। उपस्थति अन्य भाइयों को भी इस चर्चा से, साथ ही सभी द्वारा प्रदर्शति मेल-मलिाप की भावना और सामान्य सौहार्द से बहुत प्रसन्नता हुई। उस समय के बाद से, पूर्वी चर्च में चलियिावाद लगभग समाप्त हो गया।

[6838] क्लेमेंट, टर्टुलयिन, कार्थेज के संत साइप्रयिन और कुछ अन्य चर्च पतिाओं के साथ-साथ कुछ स्थानीय परषिदों ने वधिर्मयिों को उनके धर्म परविर्तन पर पुनःबपतस्मिा लेने की आवश्यकता रखी; केवल रोम में उन्हें एक ही पश्चाताप के कार्य के बाद स्वीकार कयिा गया। डायोनसियिस ने, अपने वचिारों के अनुसार, बाद वाले मत पर कायम रहे और, अपने कुछ पत्रों के बचे हुए अंशों में, उन वधिर्मयिों के पुनर्बपतस्मिा को स्पष्ट रूप से खारजि कर दयिा जो पवत्रि त्रमिूर्ति के नाम पर बपतस्मिा ले चुके थे—एक ऐसा मत जसिे बाद में प्रथम सार्वभौमकि परषिद (325 ईस्वी) में अपनाया गया। लेकनि सबसे बढ़कर, इस कड़ाई से ववािदति मुद्दे पर, उन्होंने एक बार फरि से मध्यस्थ की सराहनीय भूमकिा नभिाई। उन्होंने इस वषिय पर रोम के पोप स्टीफन को कई पत्र लखि। बचे हुए पत्रों में से एक में, उन्होंने उनसे चर्चों के बीच सामान्य शांति के बारे में बात की; लेकनि जब स्टीफन ने वरिोधी वचिार की रक्षा करने वाले कैपडोसयिा के बशिप फर्मलियिन के साथ संप्रभुता रखने से इनकार कर दयिा, तो उन्होंने उन्हें अपने इस कार्य के गंभीर परणिामों को ध्यान में रखने के लिए प्रोत्साहति कयिा। स्टीफन की मृत्यु के बाद, डायोनसियिस ने इसी वषिय पर अपने उत्तराधकिारयिों, सक्सिटस द्वतिीय और रोम के डायोनसियिस को लखि, और अपनी पुस्तक *ऑन रपिेंटेंस* (पश्चाताप पर) में इस मामले की अधकि वस्तिार से जांच की।

[6839] सेबेलीयन, ईश्वर की एकता की ईसाई अवधारणा से हटकर, एक ऐसे चरम पर पहुँच गया जसिने उसे ईसाई धर्म के मूल नींव और सद्धिांतों के वपिरीत एक वधिर्मी सद्धिांत की ओर ले गया। उन्होंने यह सखिाया कि यदि ईश्वर सार में एक हैं, तो दैवीय सत्ता की एक सह-अस्तत्वि वाली त्रमिूर्ति नहीं हो सकती, और त्रमिूर्ति को केवल एक ही व्यक्ति के दुनयिा और मानवता के संबंध में क्रमकि प्रकटीकरण के अर्थ में समझा जाना चाहए; सेबेलीउस की शकि्षा के अनुसार, ईश्वरत्व के तीन व्यक्ति नहीं हैं: पति, पुत्र और पवत्रि आत्मा केवल वे जाने-पहचाने रूप हैं जनिमें ईश्वर लोगों के सामने प्रकट होते हैं: पुराने नयिम में, उन्हें कानून देने वाले के रूप में, वे पति के रूप में प्रकट होते हैं; नए नयिम में, लोगों को बचाने वाले के रूप में, वे पुत्र के रूप में प्रकट हुए और उन्हें पवत्रि करने वाले आत्मा के रूप में प्रकट होते रहते हैं। – सैवेलयिनवाद, जो तीसरी शताब्दी के मध्य में उत्पन्न हुआ था, उस शताब्दी के अंत तक पहले ही क्षीण हो चुका था, हालांकि चौथी शताब्दी में भी इसके अनुयायी थे।

[6840] रोमन सम्राट वैलेरयिन ने 253 से 259 तक शासन कयिा। उन्होंने ईसाइयों पर जो उत्पीड़न शुरू कयिा, वह वशिेष रूप से अत्यधकि क्रूरता से भरा था।

को उनकी गंभीर बीमारी के बावजूद गरिफ्तार कर लिया गया, और उन्हें पुरोहित मैक्सिमिस[6841] तथा डिकिन फाउस्टस, यूसेबियस और चेरीमोन के साथ मिलकर प्रिफेक्ट एमिलियानुस[6842] के समक्ष पेश किया गया। इसके बाद यह उत्पीड़न पूरी ताकत से विशेष रूप से बिशपों और पुरोहितों पर पड़ा, जो चर्च के प्रतिनिधि थे। इसलिए, उसके यातनादाताओं ने हर संभव प्रयास किया कि डायोनिसियस मसीह का त्याग करे और मूर्तियों को बलिदान चढ़ाए, क्योंकि अन्य लोग उसके उदाहरण का अनुसरण करेंगे। लेकिन डायोनिसियस ने निडर होकर उत्तर दिया:

'हमें मनुष्यों के बजाय परमेश्वर की आज्ञा माननी चाहिए।'

तब एमिलीयन ने, संत को ईसाइयों से किसी भी तरह का संपर्क रखने से मना कर दिया, और उन्हें उपदेश देने या सुसमाचार का प्रचार करने की तो बात ही छोड़ दें, संत को जंगली लीबियाई रेगिस्तान के बीच स्थित एक दूरस्थ गाँव सेफ्रो में निर्वासित कर दिया[6843] । लेकिन वहाँ भी, प्रतिबंध की अवहेलना करते हुए, संत परमेश्वर के वचन का उपदेश देना जारी रखे रहे और मसीह के एक वीर शहीद के रूप में, अपने अत्याचारियों के आदेशों का पालन करने से इनकार कर दिया। इसके लिए मूर्तिपूजकों ने उन पर कई बार पत्थर चलाए। इन सब के बावजूद, डियोनिसियस को रेगिस्तान में भी कई मूर्तिपूजकों को मसीह के पवित्र धर्म में परिवर्तित करने में सांत्वना मिली। डायोनिसियस के उपदेश की सफलता ने एमिलियिनस को और भी अधिक क्रोधित कर दिया, और उसने पवित्र बिशप को लिबियाई मरुभूमि के और भी अधिक दूरस्थ और जंगली हिस्से में स्थित कोलुफो शहर में निर्वासित कर दिया[6844] । लेकिन वहाँ से भी उन्होंने मसीह के मित्रों और अपने झुंड के साथ, और न केवल अपने, बल्कि अन्य चर्चों के साथ भी संपर्क बनाए रखने में सांत्वना पाई। संत डायोनिसियस ने पहले भी हमेशा इसी तरह काम किया था, यह पूरी तरह से जानते हुए कि, प्रमुख चर्चों में से एक के प्रमुख के रूप में—जिसकी आवाज़ का अन्य चर्चों और ईसाई समुदायों पर प्रभाव था—वह न केवल अपने झुंड बल्कि मिसीह के पूरे चर्च की देखभाल के लिए कर्तव्यबद्ध थे, विशेष रूप से चर्च के भीतर सार्वभौमिक शांति को बाधित करने के किसी भी प्रयास का विरोध करने के लिए।

संत डायोनिसियस ने इस क्रूर और कठोर कारावास में तीन वर्ष बिताए – और उन्होंने वहाँ जो दुख और कष्ट सहे, वे केवल ईश्वर ही जानते हैं। गैलिनिस के सिंहासनारोहण पर[6845] , उन्हें कैद से रिहा कर दिया गया, जिससे उनके झुंड और मसीह की संपूर्ण कलीसिया को बहुत सांत्वना मिली।

हालाँकि, अलेक्जेंड्रिया में भी, मसीह के इस बहादुर पीड़ित को शांति और समृद्धि नहीं, बल्कि खूनी उथल-पुथल और भयानक पीड़ा का सामना करना पड़ा। गृहयुद्ध के दुख के बाद एक भीषण अकाल पड़ा, और अकाल के बाद एक महामारी आई जो भयानक क्रूरता के साथ फैली। सच्चे पितृत्व प्रेम के साथ, डायोनिसियस ने दुर्भाग्यपूर्ण लोगों की देखभाल की, चाहे वे कोई भी हों - मूर्तिपूजक या विश्वासी। इस विनाशकारी महामारी के दौरान अलेक्जेंड्रियाई क्षेत्र के निवासियों द्वारा झेली गई विपत्तियों का वर्णन करते हुए, संत ने अन्य बातों के अलावा, निम्नलिखित लिखा: 'हमारे कई भाई, गहरे प्रेम के कारण, अपनी जान की परवाह किए बिना एक-दूसरे की देखभाल करते हुए, निडर होकर बीमारों से मिलते हैं, उनकी लगातार सेवा करते हैं, और मसीह के नाम पर उन्हें ठीक करते हैं; वे स्वेच्छा से उनके साथ मर गए, उन्होंने उनके दुखों को अपने ऊपर ले लिया, मानो उन्होंने खुद बीमारी को अपने ऊपर खींच लिया हो और स्वेच्छा से उनके घावों को साफ़ किया। बीमारों की इतनी गहरी परवाह करने और उन्हें स्वास्थ्य प्रदान करने वालों में से कई स्वयं मर गए... और इस प्रकार की मृत्यु, धर्मपरायणता और विश्वास की दृढ़ता के कारण, शहादत से किसी भी तरह से कम नहीं है।

[6841] मैक्सिमिस को उत्पीड़ित ईसाइयों को सांत्वना देने के लिए गुप्त रूप से अलेक्जेंड्रिया भेजा गया था। बाद में वह डियोनिसियस (†282) के उत्तराधिकारी के रूप में बिशप बने।

[6842] इमिलियिनस अलेक्जेंड्रिया का प्रीफेक्ट था, यानी रोमन सम्राट का उसका गवर्नर, प्रतिनिधि और वायसराय था। हालाँकि, वास्तव में, उसने स्वतंत्र रूप से शासन किया और तथाकथित 'तीस तानाशाहों' में से एक था, जिन्होंने उस समय मिस्र में शाही सत्ता पर कब्जा कर लिया था।

[6843] लिबिया का रेगिस्तान – विशाल अफ्रीकी सहारा रेगिस्तान का पूर्वी भाग – एक काफी नीचा इलाका है, जो शहरों और गांवों वाले नखलिस्तानों से भरपूर है। जिस क्षेत्र में सेंट डायोनिसियस को निर्वासित किया गया था, उसे सख्त अर्थों में रेगिस्तान नहीं समझा जा सकता, बल्कि केवल उस स्थान के वीरान, दूर-दराज और जंगली होने के अर्थ में समझा जा सकता है।

[6844] फिर भी यह सड़क के पास स्थित था, इसलिए संत डायोनिसियस और उनके साथ निर्वासन में आए अन्य लोगों को किसी भी क्षण आसानी से पकड़ लिया जा सकता था।

[6845] गैलिनिस – 260 से 268 तक रोमन सम्राट। उन्होंने वैलेरियन द्वारा शुरू किए गए ईसाइयों के उत्पीड़न को समाप्त कर दिया और ऐसे आदेश जारी किए जिनके द्वारा निर्वासियों को वापस बुलाया गया और धर्म की स्वतंत्रता की घोषणा की गई।

उन्होंने संतों के शवों को अपने हाथों में उठाया और उन्हें अपने घुटनों पर रखा, उनकी आँखें और मुँह बंद कर दिए, उन्हें अपने कंधों पर लादकर लाद लिया, उन्हें गले लगाकर सुलाया, उन्हें धोया और उन्हें वस्त्र पहनाए'[6846] .

इस प्रकार संत डायोनिसियस ने अलेक्जेंड्रिया के इस कठिन समय के दौरान, विशेष रूप से पुरोहित वर्ग के, ईसाई प्रेम के कार्यों का मार्मिक वर्णन किया है; लेकिन वह स्वयं विश्वासियों के लिए ऐसे आत्म-बलिदान का सबसे बेहतरीन उदाहरण थे, जो शहादत के कारनामे से भी बढ़कर था: क्योंकि *'मित्रों के लिये अपना प्राण देना, मनुष्यों का प्रेम नहीं, इससे बढ़कर और कोई प्रेम नहीं है'* (यूहन्ना 15:13)। और संत डायोनिसियस ने, बीमारों को सांत्वना देने और उनकी मदद करने के लिए अपनी सारी शक्ति लगा दी, और उनके लिए अपने जीवन की भी परवाह नहीं की, उद्धारकर्ता के इन शब्दों को ध्यान में रखते हुए: *'जिस किसी ने तुम्हारे इन सबसे छोटे भाइयों में से एक के लिए किया, उसने मेरे लिए किया'* (मत्ती 25:40)।

इन दुखों और अपनी गंभीर शारीरिक बीमारियों के साथ, संत डायोनिसियस के लिए एक नया दुख जुड़ गया: ऑर्थोडॉक्स के इस अटूट स्तंभ और अविश्वास तथा विधर्मों के खिलाफ योद्धा पर विधर्म का संदेह किया गया, और वह—अपनी रक्षा के लिए कम, बल्कि चर्च को शांत करने के लिए—एक ग्रंथ लिखने के लिए मजबूर हो गया जिसमें उसने पवित्र त्रिमूर्ति के तीन व्यक्तियों पर अपने ऑर्थोडॉक्स शिक्षण को प्रस्तुत किया[6847] । सत्य की विजय हुई, और जिस उच्च सम्मान में संपूर्ण चर्च उसे और उसके सभी कट्टर रूढ़िवादी विचारों को रखती थी—जिन्होंने चर्च के इस परेशान समय के दौरान आस्था की पवित्रता की रक्षा की थी—वह अडिग बना रहा।

अंतत; मसीह के इस स्वीकारकर्ता की शारीरिक शक्ति वृद्धावस्था, दुखों और अत्यधिक परिश्रम के कारण पूरी तरह से क्षीण हो गई थी, हालांकि उसकी आत्मा मजबूत बनी रही। जब कलीसिया पॉल ऑफ सेमोसाटा[6848] की विधर्मी शिक्षाओं से परेशान होने लगी, तो कलीसिया के पवित्र पिताओं और शिक्षकों की एक परिषद अंतीयक[6849] में बुलाई गई, जिसमें संत डायोनिसियस को आमंत्रित करने वालों में सबसे पहले शामिल किया गया, क्योंकि सभी उनसे एक निर्णायक आवाज और कलीसिया में शांति की बहाली की उम्मीद कर रहे थे। लेकिन अलेक्जेंड्रिया के चर्च के महान चरवाहे, वृद्धावस्था से भारी बोझिल होकर, स्वयं को इतने लंबे सफर की कठिनाइयों को सहने में पूरी तरह से असमर्थ महसूस किया और उन्हें निमंत्रण अस्वीकार करने के लिए मजबूर होना पड़ा; हालाँकि, व्यक्तिगत रूप से बोलने के बजाय, उन्होंने

[6846] अकाल के दौरान आराम देने के लिए संत डायोनिसियस द्वारा अलेक्जेंड्रिया के चर्च को लिखा गया एक पत्र; इसका उल्लेख यूसेबियस के चर्च इतिहास में मिलता है।

[6847] संत डायोनिसियस की आर्थोडॉक्सी (सही आस्था) पर उन्हीं पत्रों के आधार पर सवाल उठाया गया जो उन्होंने साबेलीउस के खिलाफ आर्थोडॉक्स सिद्धांत के बचाव में विभिन्न व्यक्तियों को लिखे थे। पवित्र पिता पर विधर्म का आरोप लगाया जाने लगा, मानो वह परमेश्वर के पुत्र के बारे में गलत सिखा रहे हों, क्योंकि अपने पत्रों में डायोनिसियस ने पवित्र त्रिमूर्ति के संबंध में असावधान अभिव्यक्तियाँ का उपयोग किया था, जिसके लिए उन्हें अपने समकालीन और हमनाम, रोम के पोप द्वारा फटकार लगाई गई। तब अलेक्जेंड्रिया के डियोनिसियस ने अपनी रक्षा में रोम के डियोनिसियस को एक पत्र लिखने की जल्दी की, जिसमें उन्होंने उन अभिव्यक्तियों में अपने शब्दों की गलत व्याख्या की ओर इशारा किया, आंशिक रूप से उन बातों को वापस लिया जिन्हें वे गलत और बिना सोचे-समझे कही गई अभिव्यक्तियाँ मानते थे, और परमेश्वर के पुत्र के संबंध में सख्त ऑर्थोडॉक्स सिद्धांत को प्रस्तुत किया। इसके बाद, संत डायोनिसियस की धर्मपरायणता के बारे में सभी संदेह दूर हो गए, और इसके विपरीत, उन्हें पहले से भी अधिक धर्मपरायणता के स्तंभ और कलिे के रूप में माना जाने लगा।

[6848] सामोसता के पॉल (जन्म स्थान के अनुसार), जो अंफ़ियालोपोलिस के बिशप थे, ने पवित्र त्रिमूर्ति और विशेष रूप से परमेश्वर के पुत्र के संबंध में एक हानिकारक विधर्म का प्रचार किया। उनकी शिक्षा के अनुसार, ईश्वरत्व के भीतर व्यक्तियों का कोई भेद नहीं है: ईश्वर—वचन और पवित्र आत्मा—पिता में उसी प्रकार वास करते हैं जैसे मन और आत्मा एक मनुष्य में वास करते हैं। उसने स्वर्ग से अवतरित हुए परमेश्वर के पुत्र को स्वीकार नहीं किया, और यीशु को केवल एक मनुष्य माना जिसमें दिव्यता वास करती थी, ठीक वैसे ही जैसे भविष्यद्वक्ताओं में करती थी, बस एक बड़ी मात्रा में, और जिसे केवल इसी कारण से परमेश्वर का पुत्र कहा जाता था। अपने विधर्मी विचारों के साथ-साथ, पॉल ने चर्च के भीतर और भी अधिक भ्रम और प्रलोभन पैदा किया क्योंकि वह भ्रष्ट प्रवृत्तियों से ग्रस्त था, उसने विलासिता का जीवन जिया, अपने धर्मप्रांत में प्राचीन चर्च के भजनों को समाप्त कर दिया, उद्धारकर्ता के सम्मान में भजन-गीतों को अपने सम्मान में भजन-गीतों से बदल दिया, और बिशप की पदवी के अनुरूप न होने वाले हाव-भावों में लिप्त रहा, तालियाँ बजाने और इसी तरह की मांग करता था।

[6849] सामोसता के पॉल के विरुद्ध अंताकिया की परिषद 264 ईस्वी में बुलाई गई थी, जिसमें सीरिया, एशिया और अरब के बिशप शामिल थे। हालांकि, इस परिषद में पॉल अपनी विधर्मी गलतियों को छिपाने और समझौतापूर्ण लहजे में बोलकर तथा सभी प्रकार के प्रलोभनों से बचने का वादा करके परिषद के सदस्यों को शांत करने में सफल रहा; फिर भी वह इस वादे को निभाने में विफल रहा। परिणामस्वरूप, बाद में अंतीयक में दो और परिषदों (वर्ष 267 और 269 में) का आयोजन किया गया, और बाद वाली में उसे उसके बिशप पद से हटा दिया गया; उसके शिक्षण को विधर्मी घोषित कर दिया गया, और उसके द्वारा संपन्न बपतिस्मा को अमान्य ठहराया गया, क्योंकि उसने पवित्र त्रिमूर्ति के व्यक्तियों के नामों का उपयोग रूढ़िवादी अर्थ में नहीं किया था।

परिषद के पितृगणों को एक लंबा पत्र भेजा जिसमें उन्होंने सामोसता के पॉल की शिक्षाओं पर अपने रूढ़िवादी दृष्टिकोण को प्रस्तुत किया[6850] । के कुछ दिनों बाद, उन्होंने शांतिपूर्वक अपना प्राण ईश्वर को सौंप दिया (265 ईस्वी), जबकि ईसाई चर्चों के प्रमुख पॉल ऑफ सामोसाटा की निंदा करने के लिए एंटिओक में एकत्रित हुए थे। चर्च ने इस दुखद क्षति पर गहरा शोक मनाया, क्योंकि संत डायोनिसियस में उसने चर्च के एक महान शिक्षक और पिता, और ऑर्थोडॉक्सी के एक अटूट स्तंभ को खो दिया था[6851] ।

पवित्र धर्मगुरु की प्रार्थनाओं के द्वारा, प्रभु परमेश्वर अपनी कलीसिया को सभी मिथ्या ज्ञान और विभाजन से बचाएँ, और वह नम्रता और ईसाई प्रेम की भावना में कलीसियाई एकता और शांति को बनाए रखें।

19 अक्टूबर

6 अक्टूबर (पुराना कैलेंडर)

संत थॉमस प्रेरित का जीवन और कष्ट

6 अक्टूबर को स्मरण किया जाता है

प्रेरित संत थॉमस, जिन्हें जुड़वाँ[6852] के नाम से जाना जाता है, का जन्म गलीलियाई नगर पनेआस[6853] में हुआ था। जब हमारे प्रभु यीशु मसीह, पृथ्वी पर लोगों के बीच अपने समय के दौरान, नगरों और गांवों में यात्रा कर रहे थे, लोगों को सिखा रहे थे और हर तरह की बीमारियों को चंगा कर रहे थे, तो थॉमस, उनके उपदेश को सुनने और उनके चमत्कारों को देखने के बाद, पूरी आत्मा से उन पर अटूट विश्वास करने लगा। यीशु मसीह के मीठे वचनों और उनके परम पवित्र मुख के ध्यान से पोषित होकर, थॉमस उनका अनुसरण करने लगे और प्रभु ने उन्हें बारह प्रेरितों में एक स्थान देकर सम्मानित किया, जिनके साथ उन्होंने मसीह का अनुसरण उनके उद्धारकारी दुख-संकट तक किया। हालाँकि, प्रभु के पुनरुत्थान के बाद, संत थॉमस ने इस घटना के बारे में अन्य प्रेरितों के बयानों पर अपने संदेह के माध्यम से मसीह की कलीसिया के विश्वास को और मजबूत किया; क्योंकि जबकि मसीह के अन्य शिष्यों ने कहा, *'हमने प्रभु को देखा है'*, उन्होंने तब तक उन पर विश्वास करने से इनकार कर दिया जब तक कि उन्होंने स्वयं मसीह को नहीं देख लिया और उनके घावों को नहीं

[6850] अपने पत्र में, जो आज तक संरक्षित नहीं है, चौथी सदी के चर्च इतिहासकार पम्फिलिया के यूसेबियस की गवाही के अनुसार, संत डायोनिसियस ने सामोसाटा के पॉल के विधर्मी विचारों पर कठोर निर्णय सुनाया और उनकी त्रुटि को दृढ़ स्पष्टता के साथ निंदा की।

[6851] प्राचीन काल से, संत डायोनिसियस को सर्वसम्मति से 'महान' के रूप में मान्यता प्राप्त है; उनके समकालीन, अलेक्ज़ेंड्रिया के संत अथेनासियस ने उन्हें सार्वभौमिक चर्च का शिक्षक कहा, और चर्च ने उन्हें पवित्र शहीद की उपाधि प्रदान की, क्योंकि यद्यपि उन्होंने मसीह के लिए शहीद की मृत्यु नहीं भोगी, फिर भी उन्होंने अपने पूरे जीवन में मसीह और उनकी पवित्र चर्च के लिए साहस और वीरता से लड़ाई और परिश्रम किया, और निंदा को सहन किया, निंदा, खतरों, उत्पीड़न, भटकन, कठिनाइयों और सभी प्रकार की आपदाओं और दुर्भाग्यों को पवित्र शहीदों से कम नहीं सहा। – चौथी शताब्दी के धर्मशास्त्रियों पर उनके प्रभाव के कारण, ईसाई विचार के विकास के इतिहास में सेंट डायोनिसियस के लेखन का अत्यधिक महत्व था। डायोनिसियस अपनी उच्च शिक्षा के स्तर के लिए विशिष्ट थे और वे विश्वास तथा सामान्य विद्वता दोनों मामलों में निपुण थे। उनकी रचनाओं के विषय—जो हमें केवल अंशों के रूप में ही प्राप्त हुए हैं, न कि पूरी तरह से—मुख्य रूप से धर्मशास्त्र, पवित्र धर्मग्रंथ की व्याख्या, और चर्च की अनुशासन थे, जिन्हें उन्होंने न केवल मिस्र के चर्चों में, बल्कि रोम, आर्मेनिया और अन्य स्थानों में भी बनाए रखने का प्रयास किया। अपने समय की विधर्मी शिक्षाओं के विरुद्ध ऑर्थोडॉक्सी की रक्षा में उनकी उपर्युक्त पत्रिकाओं के अतिरिक्त, उनका गहन डॉगमैटिक प्रबंध *ऑन नेचर* और तथाकथित *पास्काल* पत्र, जो एक प्राचीन रिवाज़ के अनुसार लिखे गए थे, जिसके तहत एलेक्ज़ेंड्रिया के बिशप—जहाँ खगोल विज्ञान और गणित का विकास हुआ था—पूरे चर्च की ओर से ईस्टर के वार्षिक उत्सव की तारीख निर्धारित करने के लिए जिम्मेदार थे; डायोनिसियस हमेशा इस दिन की घोषणाओं के साथ पुनरुत्थित उद्धारकर्ता पर धर्मशास्त्रीय और नैतिक चिंतन शामिल करते थे; इन पत्रों को चर्चों में विश्वासियों की सभाओं में हमेशा ज़ोर से पढ़ा जाता था।

[6852] थॉमस – हिब्रू से अनुवादित, जिसका अर्थ है 'जुड़वां'; उन्हें डिडिमिस के नाम से भी जाना जाता था – एक ग्रीक शब्द जिसका वही अर्थ है।

[6853] गलील – फिलिस्तीन का उत्तरी भाग। पैनीडा – उत्तरी फिलिस्तीन में एक शहर, हर्मोन पर्वत के पैर में, जॉर्डन के पूर्वी स्रोत के पास, नाफ्थली जनजाति की उत्तरी सीमा पर, जिसका नाम पैनियन से पड़ा था, जो लेबनान पर्वत की दक्षिणी ढलान के पैर में एक गाँव और गुफा है। यहूदियों के राजा हेरोद के पुत्र फिलिप ने सीज़र (रोमन सम्राट) टिबेरियस के सम्मान में इस शहर का नाम बदलकर केसरिया (केसरिया फिलिपी) रख दिया। अब यह कभी-समृद्ध शहर खंडहरों में पड़ा है, और इसकी जगह केवल एक छोटा सा गाँव ही खड़ा है।

छू लिया। पुनरुत्थान के आठ दिन बाद, जब सभी शिष्य एक साथ इकट्ठा थे और थॉमस उनके साथ था, तो प्रभु उनके पास प्रकट हुए और थॉमस से कहा: *'अपनी उंगली यहाँ लाओ और मेरे हाथ देखो; अपना हाथ बढ़ाकर मेरी पसलियों में डालो; और अविश्वासी नहीं बनो, बल्कि विश्वास करो*।'

मसीह को देखकर और उनके जीवन-दायी पार्श्व को छूकर, थॉमस ने कहा: *'मेरे प्रभु और मेरे परमेश्वर'* (यूहन्ना 20:24–29)।

थोमा से जुड़ा यह घटनाक्रम प्रभु के पुनरुत्थान की सच्चाई को सभी को सबसे स्पष्ट रूप से विश्वास दिलाता है, क्योंकि मसीह शिष्यों के सामने न तो एक भूत के रूप में और न ही किसी अन्य शरीर में प्रकट हुए, बल्कि उसी शरीर में प्रकट हुए जिसमें उन्होंने हमारे उद्धार के लिए पीड़ा सहन की थी।

यीशु मसीह के स्वर्ग में आरोहण और पवित्र आत्मा के अवतरण के बाद, प्रेरितों ने यह निर्धारित करने के लिए अपने बीच पासा डाला कि उनमें से प्रत्येक को परमेश्वर का वचन प्रचार करने के लिए कहाँ जाना चाहिए। थोमा को भारत जाने के लिए लॉटरी द्वारा चुना गया, ताकि वह मूर्तिपूजा से अँधेरी हो चुकी भूमि को प्रकाशित करे और वहाँ रहने वाले विभिन्न लोगों - पर्थियनों और मीडियनों, फारसियों और हाइर्कैनीयों, बैक्ट्रियाईयों और ब्राह्मणों, और भारत के सबसे दूरस्थ निवासियों को सच्चा विश्वास सिखाए[6854] ।

थॉमस को इतने जंगली लोगों के पास भेजे जाने पर गहरा दुख हुआ; लेकिन प्रभु एक दर्शन में उसके पास प्रकट हुए, उन्होंने उसे मजबूत किया और साहसी बने रहने तथा न डरने की आज्ञा दी, और स्वयं उसके साथ रहने का वादा किया। उन्होंने जल्द ही उसे इन भूमिओं तक पहुँचने का एक रास्ता दिखाया।

भारतीय राजा गुंडाफोर, जो अपने लिए यथासंभव भव्य महल बनवाना चाहता था, ने अपने व्यापारी अवान को पलेस्टाइन भेजकर एक कुशल वास्तुकार की तलाश करने का आदेश दिया, जो निर्माण में अनुभवी हो और रोमन सम्राटों जैसे महल बना सके। ठीक इसी अवान के माध्यम से प्रभु ने थॉमस को भारत की भूमि पर जाने की आज्ञा दी। जब अवान पैनीअस में कुशल वास्तुकारों की तलाश कर रहा था, तब थॉमस उससे मिला और उसने खुद को निर्माण की कला में अनुभवी व्यक्ति के रूप में प्रस्तुत किया। अवान ने उसे काम पर रख लिया, उसके साथ एक जहाज पर सवार हो गया, और वे अनुकूल हवा की मदद से समुद्र यात्रा पर निकल पड़े।

जब वे एक निश्चित नगर में पहुँचे, तो उन्होंने तुरही और अन्य वाद्य यंत्रों की ध्वनि सुनी। उस नगर का राजा अपनी पुत्री का विवाह कर रहा था, और उसने नगर भर में घोषणा करने के लिए दूत भेजे थे कि अमीर और गरीब, दास और परदेशी सभी विवाह के लिए इकट्ठा हों; और जो कोई आने से इनकार करेगा, उसे राजा के निर्णय का सामना करना पड़ेगा। यह सुनकर अवान और थॉमस, अजनबियों की तरह यह डरते हुए कि यदि वे राजा की अवज्ञा करेंगे तो उससे क्रोध भड़केगा, राजा के दरबार में विवाह भोज में चले गए। जब सभी ने अपनी-अपनी जगह ले लीं और उत्सव शुरू हो गया, तो प्रेरित सबसे अंतिम स्थान पर बैठ गया और कुछ भी नहीं खाया; न ही उसने उत्सव में भाग लिया, बल्कि विचारों में खोया रहा। सबने उसकी ओर ऐसे देखा मानो वह कोई अजनबी और परदेशी हो। उसके बगल में लेटे हुए लोगों ने[6855] उससे कहा:

'तुम यहाँ क्यों आए हो, जब न तो खाते हो और न ही पीते हो?'

प्रेरित ने उत्तर दिया:

'मैं यहाँ खाने-पीने के लिए नहीं, बल्कि राजा की इच्छा पूरी करने आया हूँ, क्योंकि उद्घोषकों ने ज़ोर से घोषणा की थी कि जो कोई भी शादी में शामिल नहीं होगा, वह राजा के न्याय के अधीन होगा।'

उस समय, उत्सव मनाने वालों में एक यहूदी महिला थी जो सुंदर ढंग से बांसुरी बजाती थी, और भोज में लेटे हुए प्रत्येक व्यक्ति को अभिवादन गीत गाती थी। थोमा को देखकर, जो आनंदित नहीं था बल्कि बार-बार अपनी आँखें आकाश

[6854] आधुनिक भौगोलिक अर्थ में भारत, एशियाई महाद्वीप के दक्षिणी भाग को संदर्भित करता है, जिसमें महाद्वीप के तीन दक्षिणी प्रायद्वीपों का मध्य भाग और महाद्वीप का वह पड़ोसी भाग शामिल है जो इसे मध्य एशिया से अलग करने वाली विशाल पर्वत श्रृंखलाओं तक फैला हुआ है। हालाँकि, प्राचीन लेखकों ने अक्सर 'भारत' शब्द का उपयोग एशिया के सभी समृद्ध दक्षिणी देशों को संदर्भित करने के लिए किया, जिनके बारे में उनकी केवल एक अस्पष्ट समझ थी। मीद ईरान के पश्चिमी भाग में, कैस्पियन सागर के दक्षिण में, फारस के पड़ोसी थे, और बाद में उन पर फारसियों ने विजय प्राप्त की। पार्थियन भी फारसियों के पड़ोसी थे, जो यूफ्रेटिस से ऑक्सस तक और कैस्पियन सागर से हिंद महासागर तक फैले एक विशाल देश में रहते थे; ईसा पूर्व तीसरी शताब्दी में उन्हें रोमनों ने पराजित कर लिया था। फारसी ईरान के दक्षिणी भाग में रहते थे। हाइर्कैनीयानी फरात और टायग्रिस नदियों के किनारों पर रहते थे और उन्हें फारसियों ने पराजित कर लिया था। बैक्ट्रियाई ईरान के उत्तर-पूर्व में रहते थे। ब्राह्मण भारत के मूल निवासी थे, जो मुख्य रूप से भारतीय पुरोहित थे।

[6855] प्राचीन काल में, यहूदियों और अन्य लोगों दोनों के बीच, भोजन के समय बैठने के बजाय लेटना प्रथा थी।

की ओर उठा रहा था, उसे एहसास हुआ कि वह एक यहूदी है, और उसके सामने बजाते हुए, उसने उससे हिब्रू में यह निम्नलिखित दोहराव गाया: 'केवल एक ही ईश्वर है—यहूदियों का ईश्वर, जिसने स्वर्ग और पृथ्वी की रचना की।'

प्रेरित ने इस दोहे को आनंदपूर्वक सुनकर उससे उन शब्दों को कई बार दोहराने के लिए कहा।

जब प्याला उठाने वाले ने देखा कि प्रेरित आनंदित नहीं हो रहे थे, तो उसने उनके गाल पर थप्पड़ मारते हुए कहा:

'तुम्हें एक बियाह में बुलाया गया है – उदास मत हो, बल्कि आनंद मनाओ और पीने वालों के साथ मिलकर पियो।'

तब प्रेरित ने उस आदमी से कहा जिसने उसे मारा था:

'प्रभु तुझे इसके लिए इसी जीवन में प्रतिफल दे, और मैं वह हाथ देखूँ जो मुझ पर उठा, जिसे एक कुत्ता सबके देखने के लिए घसीटे!'

कुछ समय बाद, उस प्याला-परोसने वाले ने, जिसने प्रेरित को मारा था, मेहमानों के लिए उनकी शराब पतली करने हेतु पानी लाने के इरादे से कुएँ पर जाकर पानी भरना शुरू किया। वहाँ, एक शेर अचानक उस पर झपट पड़ा, उसे गिरा दिया और मार डाला; और, उससे खून चूसने के बाद , वह चला गया। तब कुत्ते दौड़ते हुए आए, उसके शरीर को टुकड़े-टुकड़े कर दिया, और एक काले कुत्ते ने उसका दाहिना हाथ पकड़कर उसे दावत तक घसीट लिया और सभी के सामने फेंक दिया। यह देखकर वहाँ मौजूद सभी लोग भयभीत हो गए और पूछने लगे कि यह किसका हाथ है। तब बांसुरी बजा रही महिला ने कहा:

'अब हमारे बीच कुछ असाधारण और रहस्यमय हो रहा है: या तो स्वयं ईश्वर या ईश्वर का कोई दूत हमारे बीच मौजूद है, हमारे साथ विश्राम कर रहा है।' क्योंकि मैंने देखा कि प्याला उठाने वाले ने एक आदमी को मारा, और मैंने उस आदमी को हिब्रू में कहते सुना: 'मुझे तुम्हारा दाहिना हाथ कुत्ते द्वारा खींचा हुआ सबके देखने के लिए दिखाओ', जो, जैसा कि आप सब देख सकते हैं, पूरा हो गया है।

इन शब्दों के बाद, सभी पर भय छा गया।

भोज के अंत में, राजा ने जो हुआ था वह सुनकर, पवित्र प्रेरित थॉमस को बुलाया और कहा:

'महल में जाओ और मेरी उस बेटी को आशीर्वाद दो जिसे विवाह के लिए दिया गया है।'

प्रेरित, शयनकक्ष में प्रवेश करके, नवविवाहितों को पवित्रता और अपनी कुँवारीपन की रक्षा के बारे में उपदेश देने लगे; और, उनके लिए प्रार्थना करने के बाद, उन्होंने उन पर आशीर्वाद दिया और विदा हो गए। अपनी नींद में, नवविवाहितों ने यीशु को देखा, जो प्रेरित थॉमस के रूप में उनके सामने प्रकट हुए और उन्हें स्नेहपूर्वक गले लगा लिया। पति ने यह सोचकर कि उसके सामने थोमा खड़े हैं, उनसे कहा:

'तुम हमसे सबसे पहले चले गए थे - तुम फिर से यहाँ कैसे आ गए?'

प्रभु ने उत्तर दिया:

मैं थॉमस नहीं, बल्कि उसका भाई हूँ, और जो कोई भी संसार को त्यागकर मेरी अनुयायी बनेगा, ठीक वैसे ही जैसे उसने किया, वह न केवल आने वाले जीवन में मेरा भाई होगा, बल्कि उसे मेरे राज्य का उत्तराधिकारी भी बनाया जाएगा। इसलिए, मेरे बच्चों, मेरे भाई की सलाह को मत भूलना; और यदि, उसकी सलाह के अनुसार, आप अपनी कुँवारी अवस्था को निर्दोष बनाए रखते हैं, तो आपको मेरे स्वर्गीय महल में अक्षय मुकुट प्रदान किए जाएँगे[6856] ।

यह कहने के बाद, प्रभु अदृश्य हो गए; वे, तथापि, अपनी नींद से जागकर, एक-दूसरे को वह सब बताया जो उन्होंने अपने सपने में देखा था, और उठकर, सारी रात परमेश्वर से विनम्रता से प्रार्थना की; और उन्होंने अपने हृदयों में उन से कहे गए वचनों को अनमोल मोतियों के समान संजोकर रखा।

सुबह, राजा उस शयनकक्ष में गया जहाँ नवविवाहित ठहरे हुए थे और उन्हें एक-दूसरे से अलग बैठे हुए पाया। हैरान होकर, उसने उनसे पूछा कि वे एक-दूसरे से दूरी क्यों बनाए हुए हैं। उन्होंने जवाब दिया:

[6856] कुँवारीपन के ऐसे उत्कर्ष का यह अर्थ किसी भी तरह से नहीं है कि वैवाहिक संबंधों के दौरान विवाहित जोड़ों के लिए मोक्ष असंभव है। हालाँकि, प्राचीन चर्च के पिता की शिक्षा के अनुसार, कुँवारियाँ स्वर्ग के राज्य में उच्चतम पुरस्कार प्राप्त करेंगी, जैसा कि प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में भी दर्शाया गया है (प्रकाशितवाक्य 14:1–5)। इसलिए, प्रभु, अपनी दिव्य पूर्वज्ञान में, उपर्युक्त युवा जोड़े की पवित्र जीवन जीने की आध्यात्मिक शक्ति और क्षमता—जो विशेष रूप से केवल ईश्वर को समर्पित था—को जानते हुए, उन्हें अपनी कुँवारी अवस्था बनाए रखने के लिए आग्रह करते हैं। इसके अलावा, संत थॉमस प्रेरित की शहादत के कार्यों के ग्रीक मूल के अनुसार, प्रभु ने उस युवा जोड़े को यह भी बताया कि उनके कोई भी संतान बीमार, दुष्ट और दुखी होंगे।

'हम ईश्वर से प्रार्थना कर रहे हैं कि वह हमें हमारे जीवन के अंत तक, हमारी शादी में पूर्ण ब्रह्मचर्य का पालन करने की शक्ति दे, जैसा कि हम अभी कर रहे हैं, ताकि हमें स्वर्गीय महल में अक्षय मुकुटों से विभूषित किया जा सके, जैसा कि हमारे पास प्रकट हुए प्रभु ने वादा किया था।'

तब राजा को एहसास हुआ कि यह वही अजनबी था जो एक दिन पहले महल में आया था, जिसने उन्हें अपनी पवित्रता बनाए रखने के लिए मनाया था; वह बहुत क्रोधित हो गया और तुरंत अपने नौकरों को प्रेरित को पकड़ने के लिए भेजा, लेकिन वे उसे ढूंढ नहीं सके, क्योंकि वह पहले ही अवान के साथ भारत के लिए रवाना हो चुका था।

भारतीय राजा गुंडाफोरस के दरबार में पहुँचने पर, वे उसके सामने उपस्थित हुए, और अवान ने कहा:

'महोदय, मैं आपके लिए फिलिस्तीन से एक कुशल निर्माणकर्ता लाया हूँ, ताकि वह आपकी इच्छानुसार महल बना सके।'

राजा बहुत प्रसन्न हुआ; उसने थॉमस को वह जगह दिखाई जहाँ वह महल बनवाना चाहता था, और उनके आकार निर्धारित करने के बाद, उसे निर्माण के लिए सोने की एक बड़ी मात्रा दे दी, जबकि वह स्वयं दूसरे देश के लिए रवाना हो गया।

थॉमस ने सोना प्राप्त करने के बाद, उसे ज़रूरतमंदों - बेसहारा और गरीबों - में बाँटना शुरू कर दिया, जबकि उन्होंने स्वयं सुसमाचार का प्रचार करने के लिए खुद को समर्पित कर दिया, और कई लोगों को मसीह में विश्वास की ओर लाया और उनका बपतिस्मा कराया।

उस समय, थॉमस की सलाह पर अपनी पत्नी के साथ ब्रह्मचर्य का व्रत लेने वाले उस युवक ने, यह सुनकर कि प्रेरित भारत में मसीह का उपदेश दे रहे थे, अपनी पत्नी के साथ मिलकर प्रेरित के पास आकर उनसे शिक्षा ग्रहण की। पवित्र प्रेरित द्वारा ईसाई धर्म की शिक्षा प्राप्त करने के बाद, उन्होंने उनसे पवित्र बपतिस्मा ग्रहण किया। इस अवसर पर, उस युवती का नाम पेलagia ( ) रखा गया और बाद में उसने मसीह के लिए अपना रक्त बहाया, जबकि उस युवक का नाम डायोनिसियस रखा गया और बाद में उसे बिशप नियुक्त किया गया।

प्रेरित के आशीर्वाद से अपने देश लौटकर, उन्होंने नगरों में चर्च बनाकर और अविश्वासियों को मसीह के धर्म में परिवर्तित करके परमेश्वर के नाम की महिमा फैलाई।

दो साल बाद, राजा ने प्रेरित के पास संदेशवाहक भेजे यह पूछने के लिए कि क्या महलों का निर्माण जल्द ही पूरा हो जाएगा। प्रेरित ने संदेशवाहकों को जवाब दिया कि अब केवल छत डालनी बाकी थी। राजा प्रसन्न हुआ, क्योंकि वह मानता था कि थॉमस वास्तव में उसके लिए पृथ्वी पर एक महल बना रहा था, और उसने उसे और भी बहुत सारा सोना भेजा, और उसे आदेश दिया कि वह जल्द से जल्द महलों के लिए एक भव्य छत बना दे।

थोमा ने और सोना प्राप्त करके, स्वर्ग की ओर अपनी आँखें और हाथ उठाकर कहा:

'मैं तुझे धन्यवाद देता हूँ, हे प्रभु, मानव जाति के प्रेमी, कि तू लोगों के उद्धार का प्रबंध विभिन्न तरीकों से करता है!'

और एक बार फिर उसने राजा द्वारा भेजा गया सोना उन लोगों में बाँट दिया जिन्होंने उससे मदद माँगी, जबकि वह स्वयं उत्साह के साथ परमेश्वर के वचन का प्रचार करता रहा।

कुछ समय बीत जाने के बाद, राजा को पता चला कि थॉमस ने उसका आदेश तो दूर, उसे पूरा करना शुरू भी नहीं किया था; सारा सोना गरीबों में बाँट दिया गया था; और उस निर्माणकर्ता का निर्माण कार्य करने का कोई इरादा नहीं था, बल्कि वह शहरों और गाँवों में घूम-घूम कर किसी नए ईश्वर के बारे में उपदेश दे रहा था और अद्भुत चमत्कार कर रहा था। राजा को बहुत क्रोध आया और उसने अपने सेवकों को प्रेरित को गिरफ्तार करने के लिए भेजा। जब संत थॉमस को राजा के सामने लाया गया, तो राजा ने उससे पूछा:

'क्या तुमने महल बनाए हैं?'

थॉमस ने उत्तर दिया:

'मैंने उन्हें बनवाया है, और वे भव्य और सुंदर हैं।'

तब राजा ने कहा:

'तो चलिए, अब आपका महल देखते हैं।'

प्रेरित ने उत्तर दिया:

'इस जीवन में तुम यह महल नहीं देख सकते, लेकिन जब तुम इस जीवन से विदा हो जाओगे, तब तुम इसे देखोगे, और, वहाँ आनन्दपूर्वक निवास कर, तुम वहाँ सदा के लिए रहोगे।'

राजा ने यह सोचकर कि वह उसका मज़ाक उड़ा रहा है, बहुत बुरा माना और उसे उस व्यापारी अवान के साथ जेल में डालने का आदेश दिया जिसने उसे वहाँ लाया था, जहाँ उन्हें यातनादायक मृत्यु की प्रतीक्षा में सड़ने के लिए छोड़ दिया गया था: राजा का इरादा उन्हें ज़िंदा चमड़ी उधेड़कर फांसी पर जलाने का था।

जब वे जेल में थे, तब अवान ने प्रेरित को फटकारना शुरू कर दिया:

उसने कहा, 'तुमने, सबसे कुशल निर्माता होने का दावा करके, मुझे और राजा दोनों को धोखा दिया है। और अब तुमने राजा का सोना व्यर्थ ही बर्बाद कर दिया है और मेरा जीवन बर्बाद कर दिया है। तुम्हारी वजह से, मैं कष्ट झेल रहा हूँ और मुझे एक क्रूर मौत मरनी पड़ेगी: राजा क्रूर है और हमें दोनों को मौत की सजा देगा।'

लेकिन प्रेरित ने उसे सांत्वना देते हुए कहा:

'डरो मत; हमारे मरने का समय अभी नहीं आया है; हम जीवित रहेंगे और स्वतंत्र होंगे, और राजा हमें स्वर्ग के राज्य में मेरे लिए तैयार किए गए महलों के लिए सम्मानित करेगा।'

उसी रात, राजा का भाई बीमार पड़ गया और उसने राजा को संदेश भेजा:

'तुम्हारे दुख के कारण, मैं भी दुखी हो गया हूँ, और इस दुख से मैं बीमार पड़ गया हूँ, जिससे मैं अब मर रहा हूँ।'

तुरंत बाद, राजा का भाई वास्तव में मर गया। राजा, अपनी पिछली पीड़ा को भूलकर, नए दुख से अभिभूत हो गया और अपने भाई की मृत्यु पर बेइंतहा रोया। ईश्वर का दूत, मृतक की आत्मा को ले जाकर, उसे स्वर्गीय निवासों में ले गया और वहाँ के आवासों से गुज़रते हुए, उसने उसे कई भव्य और तेजस्वी कक्ष दिखाए, जिनमें से एक इतना सुंदर और तेजस्वी था कि उसकी सुंदरता का वर्णन करना असंभव है। और दूत ने आत्मा से पूछा:

'इन सभी महलों में से तुम किसमें रहना सबसे अधिक पसंद करोगे?'

जैसे ही उसने उस अतिसुंदर कक्ष को निहारा, उसने कहा:

'काश मुझे उस कक्ष के किसी कोने में भी रहने की अनुमति मिल जाती, तो मुझे और कुछ भी नहीं चाहिए था।'

देवदूत ने उससे कहा:

'तुम इस कक्ष में नहीं रह सकतीं, क्योंकि यह तुम्हारे भाई का है, जिसके सोने से इसे थॉमस ने बनवाया था, वह अजनबी जिसे तुम जानती हो।'

और आत्मा ने कहा:

'मैं आपसे विनती करती हूँ, महोदय, मुझे अपने भाई के पास जाने दें, और मैं उससे यह कक्ष खरीद लूँगी, क्योंकि उसे अभी इसकी सुंदरता का पता नहीं है – और फिर, इसे खरीदने के बाद, मैं एक बार फिर यहाँ लौट आऊँगी।'

तब देवदूत ने आत्मा को शरीर में वापस कर दिया, और मृत व्यक्ति तुरंत जीवित हो उठा; और जैसे नींद से जागा हो, उसने अपने आसपास के लोगों से अपने भाई के बारे में पूछा और विनती की कि राजा तुरंत उसके पास आएँ। यह सुनकर कि उसका भाई जीवित हो गया है, राजा अत्यंत प्रसन्न हुआ और उसकी ओर दौड़ा; और उसे जीवित देखकर उसकी खुशी और भी बढ़ गई। फिर जो मृतक जीवित हुआ था, वह उससे बात करने लगा:

'हे राजा, मुझे यकीन है कि आप मुझसे अपने भाई की तरह प्यार करते हैं; मैं जानता हूँ कि आप मेरे लिए बेहाल होकर रोए, और अगर मुझे मौत से बचाना संभव होता, तो आप इसके लिए अपना आधा राज्य भी दे देते।'

राजा ने उत्तर दिया:

'हाँ, यह बिल्कुल सच है।'

'अगर आप मुझसे इतना प्यार करते हैं,' राजा के भाई ने कहा, 'तो मैं आपसे एक ही निवेदन करता हूँ—इसे मुझसे न कहें।'

राजा ने उत्तर दिया:

'मेरे राज्य में जो कुछ भी मेरे पास है—सब कुछ मैं तुम्हें देता हूँ, मेरे प्रिय भाई,' और उसने एक शपथ के साथ अपने वादे की पुष्टि की।

तब पुनर्जीवित भाई ने कहा:

'मुझे स्वर्ग में अपना महल दे दो, और इसके बदले में मेरी सारी संपत्ति ले लो।'

ये शब्द सुनकर राजा हक्का-बक्का रह गया और चुप हो गया, मानो उसकी बोलती ही बंद हो गई हो। फिर उसने कहा:

'मेरे पास स्वर्ग में महल कैसे हो सकता है?'

'सचमुच,' राजा के भाई ने उत्तर दिया, 'स्वर्ग में ऐसा एक कक्ष है, जिसके बारे में आप कुछ नहीं जानते और जिसे आपने इस पूरी दुनिया में कभी नहीं देखा है। यह आपके लिए थॉमस ने बनवाया था, जिसे आप जेल में बंद कर रखा है; मैंने इसे देखा और इसकी अकल्पनीय सुंदरता से चकित हो गया, और इसके एक कोने में रहने की अनुमति मांगी, लेकिन मुझे यह अनुमति नहीं दी गई; क्योंकि मुझे मार्ग दिखाने वाले स्वर्गदूत ने कहा: 'तुम वहाँ नहीं रह सकते, क्योंकि यह तुम्हारे भाई का महल है, जिसे थॉमस ने बनाया है, जिसे तुम जानते हो।' मैंने स्वर्गदूत से विनती की कि मुझे तुम्हारे पास जाने दे, ताकि मैं तुमसे वह महल खरीद सकूँ। इसलिए, यदि तुम मुझसे प्रेम करते हो, तो मुझे वह दे दो और इसके बदले में मेरी सारी संपत्ति ले लो।

तब राजा अपने भाई के जीवित हो उठने और स्वर्ग में उसके लिए बने महल पर प्रसन्न हुआ। और उसने अपने पुनर्जीवित भाई से कहा:

'प्रिय भ्राता! मैंने पृथ्वी पर अपनी शक्ति के भीतर आपको किसी भी चीज़ से इनकार न करने की कसम खाई थी, लेकिन मैंने आपको वह महल नहीं दिया था जो स्वर्ग में है। फिर भी, यदि आप चाहें, तो हमारे पास एक वास्तुकार है जो आपके लिए भी वैसा ही महल बना सकता है।'

यह कहकर, राजा ने तुरंत सेवकों को जेल में भेजा कि वे संत थॉमस को उस व्यापारी अवान के साथ बाहर लाएँ, जिसने उन्हें वहाँ लाया था। जब वे राजा के सामने उपस्थित हुए, तो राजा प्रेरित से मिलने के लिए दौड़ा और उनके पैरों पर गिर पड़ा, और अज्ञानता के कारण उनसे किए गए पाप के लिए क्षमा याचना करने लगा। प्रेरित ने ईश्वर को धन्यवाद देकर दोनों भाइयों को हमारे प्रभु यीशु मसीह के धर्म की शिक्षा देना शुरू किया, और उन्होंने, दया से प्रेरित होकर, उनके वचनों को प्रेम से ग्रहण किया। कुछ ही समय बाद, उन्होंने उनका बपतिस्मा दिया और उन्हें ईसाइयों की तरह जीना सिखाया, जबकि भाइयों ने अपने अनेक परोपकारी कार्यों के द्वारा स्वर्ग में अपने लिए अनंत निवास स्थान सुनिश्चित किया। कुछ समय तक उनके साथ रहने और उन्हें पवित्र विश्वास में दृढ़ करने के बाद, प्रेरित मानव आत्माओं के उद्धार के लिए अन्य पड़ोसी कस्बों और गांवों में चले गए।

जिस समय थॉमस सुसमाचार के अपने उपदेश के माध्यम से भारत की भूमि को प्रकाशित कर रहे थे, उसी समय परमेश्वर की माता[6857] के सम्मानजनक निधन का समय आ गया, और विभिन्न देशों से सभी प्रेरित स्वर्ग के बादलों पर उठा लिए गए और गेथ्सेमनी[6858] में, परम धन्य कुँवारी के शव-शय्या तक ले जाए गए। उस समय, पवित्र प्रेरित थोमा को भी भारत से उठा लिया गया था, लेकिन वह परमेश्वर की अति पवित्र माता के देहधारी, परमेश्वर द्वारा महिमामंडित शरीर के दफनाए जाने के दिन तक समय पर नहीं पहुँच सके। यह परमेश्वर की इच्छा से इस प्रकार व्यवस्थित किया गया था ताकि विश्वासियों को इस बात की पुष्टि हो सके कि परमेश्वर की माता अपने शरीर सहित स्वर्ग में उठा ली गई थीं। क्योंकि जैसे मसीह के पुनरुत्थान के संबंध में, थोमा के संदेह से हमारे विश्वास को बल मिला, वैसे ही परमेश्वर की अति पवित्र माता, सबसे पवित्र कुँवारी मरियम के देह सहित स्वर्ग में आरोहण के संबंध में, हमें यह थोमा के विलंब के परिणामस्वरूप जानने को मिला। प्रेरित दफ़नाने के तीसरे दिन ही पहुँचे और इस बात पर दुखित हुए कि वे दफ़नाने के दिन ही अन्य प्रेरितों के साथ अपने प्रभु की माता के शरीर को दफ़नाने के स्थान तक साथ ले जाने के लिए गथ्समनी में नहीं रह सके थे। तब, पवित्र प्रेरितों की सर्वसम्मति से, परमेश्वर की अति पवित्र माता का कब्रिस्तान संत थॉमस के लिए खोला गया, ताकि वह उनके अति सम्माननीय शरीर को देखकर उसकी पूजा कर सके और अपने दुख में सांत्वना पा सके। लेकिन जब कब्र खोली गई, तो उन्हें कोई शव नहीं मिला, केवल वह कफ़न मिला जो वहाँ पड़ा था। और इससे, सभी को दृढ़

[6857] प्राचीन, सामान्यतःस्वीकृत परंपरा के अनुसार, प्रभु के स्वर्गारोहण के पंद्रहवें वर्ष में, या ईस्वी सन् 48 में, परमेश्वर की माता का निधन हुआ।

[6858] गेथ्सेमनी यरूशलेम के पास एक गाँव या स्थान है, जो सेद्रोन नाले के पार, जैतून पहाड़ के तल पर है, जहाँ एक बगीचा था जिसमें प्रभु ने अपने कष्टों से पहले प्रार्थना की थी, और जहाँ परमेश्वर की परम पवित्र माता ने वसीयत की थी कि उनके सबसे शुद्ध शरीर को विश्राम के लिए वहीं रखा जाए। इस स्थान का नाम वहाँ उगे जैतून के पेड़ों की बहुतायत से पड़ा, जिनसे बड़ी मात्रा में जैतून का तेल निकाला जाता था (हिब्रू से अनुवादित, गथशेमनी का अर्थ है: 'जैतून का स्थान', या 'प्रेस', 'जैतून का रस निकालने के लिए प्रेस')। गेथ्सेमनी का बगीचा आज भी जैतून पहाड़ के पैर में - इसकी दक्षिणी ओर, दिखाया जाता है, जहाँ परमेश्वर की परम पवित्र माता का दफन गुफा स्थित है, और जहाँ उनका ताबूत आज भी रखा है।

वशि्वास हो गया कि परमेश्वर की माता, अपने पुत्र की तरह, तीसरे दनि पुनर्जीवति हो गई थीं और शरीर सहति स्वर्ग में उठा ली गई थीं।

इसके बाद, थॉमस भारत की भूमि पर फरि से प्रकट हुए और वहाँ मसीह का उपदेश दयिा, और चह्निों और अद्भुत कार्यों के द्वारा कई लोगों को धर्म में परविर्तति कयिा। मेलयिापोर[6859] पहुँचने पर, उन्होंने वहाँ सुसमाचार के अपने उपदेश के द्वारा कई लोगों को प्रबुद्ध कयिा और नम्निलखिति चमत्कार द्वारा उन्हें पवत्रि वशि्वास में दृढ़ कयिा। एक स्थान पर असाधारण आकार का एक पेड़ पड़ा था, जसिे न तो मनुष्य और न ही हाथी हलिा सकते थे; लेकनि थॉमस ने अपनी कमरबंद इस पेड़ से बाँधी और उसी कमरबंद का उपयोग करके, पेड़ को दस स्टेडयिम[6860] तक खींच लयिा और उसे प्रभु के मंदरि के नरि्माण के लिए दे दयिा। यह देखकर, वशि्वासयिों का वशि्वास और भी दृढ़ हो गया, और कई अवशि्वासयिों ने वशि्वास करना शुरू कर दयिा। प्रेरति ने वहाँ एक और चमत्कार कयिा, जो पहले वाले से भी बड़ा था। एक मूर्तपिूजक पुरोहति ने अपने बेटे को मार डाला था और सेंट थॉमस पर इस कृत्य का आरोप लगाया, कहते हुए:

'थॉमस ने मेरे बेटे को मारा।'

लोगों में हलचल मच गई, और इकट्ठी भीड़ ने संत थॉमस को हत्यारा मानकर पकड़ लयिा और अदालत से उसे यातना की सजा देने की मांग की। हालाँकि, जब थॉमस के हत्या में शामलि न होने की गवाही देने के लिए कोई नहीं मलिा, तो मसीह के प्रेरति ने न्यायाधीश और लोगों से वनिती करना शुरू कर दयिा:

'मुझे जाने दो, और मैं अपने ईश्वर के नाम पर मारे गए व्यक्ति से पूछूँगा ताकि वह स्वयं बता सके कि उसे कसिने मारा है।'

वे सभी उसके साथ मारे गए पुरोहति के बेटे के शव तक गए। स्वर्ग की ओर अपनी दृष्टि उठाकर, थॉमस ने ईश्वर से प्रार्थना की और फरि मृतक से कहा:

'मेरे प्रभु यीशु मसीह के नाम पर, मैं तुझे आज्ञा देता हूँ, हे युवक: हमें बता कि तुझे कसिने मारा?'

और तुरंत मृतक ने कहा:

'मेरे पति ने मुझे मारा।'

तब वे सब चलि्ला उठे:

'महान है वह ईश्वर जसिका प्रचार थॉमस करता है।'

प्रेरति को मुक्त कर दयिा गया, और इस प्रकार पुजारी उसी गड्ढे में फँस गया जो उसने प्रेरति के लिए खोदा था। इस चमत्कार के बाद, लोगों की एक बड़ी भीड़ ईश्वर की ओर मुड़ गई और प्रेरति द्वारा बपतस्मिा ग्रहण कयिा।

इसके बाद प्रेरति और दूर-दराज़ की यात्रा पर गए, कालामसि् की भूमि में, जहाँ राजा मुज़्दयिस का शासन था। वहाँ मसीह का उपदेश देते हुए, संत ने सडिकियिा नाम की एक महलिा को धर्मांतरति कयिा, जो राजा के प्रयि करीज़यिस की पत्नी मग्डिोनयिा की भतीजी थी। सडिसियिा ने मग्डिोनयिा से सत्य को पहचानने और एकमात्र ईश्वर, जो पूरे ब्रह्मांड के स्रष्टा हैं, जनिके बारे में थॉमस उपदेश दे रहे थे, उन पर वशि्वास करने का आग्रह कयिा। तब मग्डिोनयिा ने सडिसियिा से कहा:

'मैं स्वयं उस व्यक्ति को देखना चाहती हूँ जो सच्चे ईश्वर का उपदेश देता है, और उससे ही उसकी शकि्षा सुनना चाहती हूँ।'

सडिकियिा ने उत्तर दयिा:

'यदि तुम परमेश्वर के प्रेरति को देखना चाहती हो, तो फटे-पुराने कपड़े पहन लो, जैसे कि तुम कोई साधारण और गरीब महलिा हो, ताकि तुम्हें कोई पहचान न सके, और फरि मेरे साथ चली आओ।'

मग्डिोनयिा ने ठीक वैसा ही कयिा और सडिकियिा के साथ चली गई। उन्होंने प्रेरति को साधारण और गरीब लोगों की एक बड़ी भीड़ के बीच मसीह का उपदेश देते हुए पाया। भीड़ में घुल-मलिकर, उन्होंने थॉमस की शकि्षा सुनी, जनि्होंने

[6859] मेलयिापोर या मालपिुर हदिुस्तान प्रायद्वीप के पूर्वी (कोरमंडल) तट पर एक नगर है। – एशयिा के इस भाग में ईसाइयों के बीच लंबे समय से यह परंपरा रही है कि ईसाई धर्म मूल रूप से उन्हें प्रेरति थॉमस या उनके शष्यिों द्वारा परचिति कराया गया था। जब पुर्तगाली 1500 में पहली बार भारत के तटों पर पहुँचे, तो उन्होंने मालपिुर में एक ईसाई बस्ती पाई, जसिके नविासयिों ने दावा कयिा कि उन्होंने यह वशि्वास प्रेरति थॉमस से प्राप्त कयिा था; और पछिली सदी के अंत में, यह शहर संत थॉमस का शहर के रूप में जाना जाता था। आम तौर पर, भारतीय ईसाई प्राचीन काल से खुद को 'सेंट थॉमस के ईसाई' कहते आए हैं और अपने चर्च की उत्पत्ति को इसी प्रेरति से जोड़ते हैं।

[6860] एक 'स्टेडयिा' लगभग 88 साज़ेन होती है; परणिामस्वरूप, 10 'स्टेडयिा' लगभग 1 *14 वर्स्ट* होती है /

प्रभु मसीह के बारे में विस्तार से बात की और उन पर विश्वास करना सिखाया, साथ ही मृत्यु, न्याय, गेहेना और स्वर्ग के राज्य के बारे में भी बताया। यह सब सुनकर मगिदोनिया का हृदय प्रभावित हुआ और वह मसीह में विश्वास करने लगी; घर लौटने पर, उसने लगातार प्रेरित के वचनों पर ध्यान लगाया और, मसीह के बारे में अपनी भतीजी सिंडिकिया से बात करते हुए, वह उनके प्रति अपने प्रेम में और भी दृढ़ हो गई। उस समय से, उसने अविश्वासियों को ईश्वर के शत्रु के रूप में तुच्छ समझना शुरू कर दिया और उनसे हर तरह के संबंधों से बचना शुरू कर दिया, चाहे वह बातचीत हो या दावतों में, साथ ही उसने सामान्य रूप से सांसारिक सुखों से भी खुद को दूर कर लिया। उसने अपने पति के साथ पति-पत्नी के रूप में रहने को भी बंद करने का संकल्प लिया। इससे वह बहुत दुखी हुआ, और जब वह मग्निडोनिया को अपना मन बदलने के लिए मना नहीं सका, तो उसने राजा मुज़्डियस से विनती करना शुरू कर दिया कि वह अपनी पत्नी, रानी टर्टियाना को भेजें, जो मग्निडोनिया को वैवाहिक संबंधों से परहेज़ न करने के लिए मना सकें (रानी टर्टियाना और करज़ियस की पत्नी मग्निडोनिया, बहनें थीं)। रानी मगिडोनिया के पास गईं और उन्होंने उससे पूछा कि वह अपने पति की अवज्ञा क्यों कर रही है।

मगिडोनिया ने उत्तर दिया:

'क्योंकि वह एक मूर्तिपूजक और ईश्वर का शत्रु है[6861] , जबकि मैं एक सच्चे ईश्वर, यीशु मसीह की सेविका हूँ, और मैं एक अविश्वासी और एक अशुद्ध पुरुष द्वारा अपवित्र नहीं होना चाहती।'

टर्टियाना जानना चाहती थी कि यह यीशु मसीह कौन थे, जिन्हें मग्निडोनिया सच्चा ईश्वर कहती थी। फिर मग्निडोनिया ने उसे प्रेरित थॉमस का उपदेश सुनाया और उसे सच्चे विश्वास में शिक्षित किया। टर्टियाना, मसीह के बारे में और अधिक स्पष्ट रूप से जानने और विश्वास को बेहतर ढंग से सीखने की इच्छा से, स्वयं प्रेरित को देखने और उनका उपदेश सुनने के लिए लालायित थी। मगिदोनिया से सलाह करने के बाद, उसने गुप्त रूप से प्रेरित को बुलवाया और, उसे बुलाने के बाद, दोनों ने उससे उन्हें सही मार्ग पर ले जाने का आग्रह किया। उन्होंने बदले में उन्हें मसीह का उपदेश दिया, उन्हें विश्वास के प्रकाश से प्रबुद्ध किया, बपतिस्मा के पवित्र जल में उनका बपतिस्मा कराया, और उन्हें परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करने और सभी प्रकार के सद्गुणों का अभ्यास करने की शिक्षा दी। टर्टियाना और मग्निडोनिया ने, उनसे कही गई सभी बातों को अपने दिलों में उकेर कर, दोनों ने पवित्रता में प्रभु की सेवा करने और अपने पतियों को अविश्वासी मानकर उनसे कोई संबंध न रखने के लिए सहमति व्यक्त की। प्रेरित, ईश्वर की शक्ति से, अनेक चमत्कार करते रहे और हर प्रकार की बीमारियों को ठीक करते रहे; और प्रेरित द्वारा किए गए चिह्नों को देखकर और उनके उपदेश को सुनकर, बहुत से लोग, न केवल आम जनता से बल्कि शाही दरबार से भी, मसीह की ओर मुड़ गए। राजा के ही एक पुत्र, जिसका नाम अज़ान था, ने विश्वास ग्रहण किया और प्रेरित द्वारा बपतिस्मा लिया; क्योंकि प्रभु स्वयं प्रेरितों के माध्यम से कार्य कर रहे थे, अपनी कलीसिया को बढ़ा रहे थे और अपने नाम की महिमा का प्रसार कर रहे थे।

रानी टर्टियाना, मग्निडोनिया से लौटने के बाद, प्रार्थना और उपवास में लग गईं और अपने पति के साथ एक बिस्तर साझा करने से लगातार इनकार करती रहीं। अपनी पत्नी में इस तरह के बदलाव से चकित राजा ने अपने दोस्त कैरसीयस से कहा:

'तुम्हारी पत्नी को तुम्हारे पास लौटाने की चाह में, मैंने अपनी पत्नी खो दी है, और मेरी पत्नी ने मेरे साथ तुम्हारी पत्नी से भी बदतर व्यवहार किया है।'

तब, राजा और कैरसीयस ने अपनी पत्नियों में देखे गए इस बदलाव के कारण की सबसे गहन जांच की, और उन्हें पता चला कि थॉमस नाम का एक अजनबी, एक विदेशी, उन्हें ईसाई धर्म में शिक्षित करने के बाद, उन्हें अपने पतियों के साथ वैवाहिक संबंध समाप्त करने के लिए मना लिया था। उन्हें यह भी पता चला कि राजा का पुत्र अज़ान, राजसी महल के कई नौकरों के साथ-साथ अधिकारी और आम लोगों की अनगिनत भीड़, थॉमस के उपदेशों के परिणामस्वरूप मसीह में विश्वास करने लगे थे। यह सब देखकर उन्हें बहुत क्रोध आया, और उन्होंने थॉमस को पकड़कर जेल में डाल दिया। इसके बाद, प्रेरित को मुकदमे के लिए राजा के सामने लाया गया। राजा ने उससे पूछा:

'तुम कौन हो – एक दास या एक स्वतंत्र व्यक्ति?'

[6861] संत पौलुस प्रेरित (1 कुरिन्थियों 7:12–14) की शिक्षा के अनुसार, इससे एक ईसाई महिला को अपने मूर्तिपूजक पति के साथ वैवाहिक संबंध जारी रखने से नहीं रोकना चाहिए; हालाँकि, मिडोनिया और सिंडिसिया के मामले में, प्रेरित थॉमस ने एक सख्त शर्त लगाई, या, यूँ कहें कि, वे स्वयं अधिक सख्त थे और अपने मूर्तिपूजक जीवनसाथियों के साथ वैवाहिक संबंध में नहीं रहना चाहते थे। यह परिस्थिति निस्संदेह इस तथ्य से स्पष्ट होती है कि केवल इस शर्त को पूरा करने पर ही उनके पतियों का ईसाई धर्म में धर्मांतरण संभव हो सकता था, जैसा कि पूरे मामले के परिणाम से ही स्पष्ट होता है।

थॉमस ने उत्तर दिया:

'मैं उस परमेश्वर का सेवक हूँ, जिस पर तुम्हारा कोई अधिकार नहीं है।'

राजा ने कहा:

'मैं देखता हूँ कि तुम एक दुष्ट दास हो जो अपने स्वामी से भागकर इस देश में लोगों को भ्रष्ट करने और हमारी पत्नियों को बहकाने के लिए आए हो। तो मुझे बताओ, तुम्हारा स्वामी कौन है?'

– मेरे स्वामी, – प्रेरित ने उत्तर दिया, – स्वर्ग और पृथ्वी के प्रभु हैं, सभी प्राणियों के ईश्वर और सृष्टिकर्ता। उन्होंने मुझे उनका पवित्र नाम प्रचार करने और लोगों को भूल से दूर करने के लिए भेजा है।

राजा ने कहा:

'बंद करो, हे धोखेबाज, अपनी चालाकी भरी बातें और मेरी आज्ञा का पालन करो: जैसे तुमने अपनी चालाकी से हमारी पत्नियों को हमसे अलग कर दिया है, ताकि वे अब हमारे साथ मेलजोल न करें, वैसे ही उन्हें एक बार फिर से हमारे पास लौटा दो। क्योंकि यदि तुम यह सुनिश्चित नहीं करते कि हमारी पत्नियाँ अपने पूर्व प्रेम और संगति में हमारे साथ फिर से रहें, तो हम तुम्हें क्रूर मृत्यु दंड देंगे।'

प्रेरित ने उत्तर दिया:

'मसीह की दासियों के लिए अधर्मी पतियों के साथ वैवाहिक संबंध रखना उचित नहीं है, और न ही विश्वासियों के लिए दुष्टों और अविश्वासियों द्वारा अशुद्ध होना उचित है।'

यह सुनकर, राजा ने लाल-गरम लोहे की पट्टियाँ लाने और प्रेरित को नंगे पैर उन पर रखने का आदेश दिया। जब ऐसा किया गया, तो पट्टियों के नीचे अचानक पानी आ गया, जिसने उन्हें ठंडा कर दिया। फिर संत थॉमस को एक प्रचंड गर्म भट्टी में डाल दिया गया, लेकिन अगले दिन वह जीवित और सुरक्षित उसमें से बाहर निकले।

इसके बाद, कैरिसियस ने राजा को निम्नलिखित सलाह दी:

'उसे सूर्य देवता[6862] को प्रणाम करने और बलिदान चढ़ाने के लिए मजबूर करो, ताकि ऐसा करके वह अपने ईश्वर के क्रोध को भड़काए, जो उसे उसके यातनाओं के बीच सुरक्षित रखता है।'

जब प्रेरित को सूर्य की मूर्ति के सामने लाया गया, तो मूर्ति तुरंत मोम की तरह पिघल गई। स्वर्गीय ईश्वर की ऐसी शक्ति देखकर विश्वासियों ने आनंद मनाया, और अविश्वासियों की भीड़ प्रभु की ओर मुड़ गई। हालाँकि, मूर्तिपूजक पुरोहितों ने अपनी मूर्ति को नष्ट करने के लिए थॉमस के खिलाफ बगावत कर दी, और राजा स्वयं, अपमानित महसूस करते हुए, इस बात पर विचार करने लगा कि वह उसे कैसे नष्ट कर सकता है; हालाँकि, वह लोगों और अपने सेवकों, साथ ही उन कई कुलीनों से डरता था जो मसीह में विश्वास करने लगे थे।

राजा थॉमस को अपने साथ लेकर अपने सैनिकों के साथ शहर से निकल गया, और सभी ने सोचा कि वह प्रेरित से कोई चमत्कार देखना चाहता है। एक वर्स्ट (लगभग 1.6 किलोमीटर) चलने के बाद, राजा ने थॉमस को पाँच सैनिकों के हवाले कर दिया, और उन्हें आदेश दिया कि वे उसे पहाड़ पर ले जाकर अपनी भालाओं से वहाँ भेद दें, जबकि वह स्वयं अक्सिओम शहर चला गया। राजा का पुत्र असान, और सफ़ोर नाम का एक व्यक्ति प्रेरित के पीछे भागे और, उससे मिलते ही, उसके लिए रो पड़े। तब थॉमस ने सैनिकों से प्रार्थना करने की अनुमति मांगी और प्रभु से प्रार्थना की तथा सफ़ोर को पुरोहित और अज़ान को डिकन नियुक्त किया, और उन्हें विश्वासियों के विकास और मसीह की कलीसिया के प्रसार को सुनिश्चित करने का आदेश दिया। इसके बाद, सैनिकों ने उसे पाँच भालों से भेद दिया, जिससे उसकी मृत्यु हो गई। सफ़ोर और अज़ान ने लंबे समय तक उनके लिए शोक मनाया और उनके पवित्र शरीर को सम्मान के साथ दफनाया[6863]। दफनाने के बाद, वे प्रेरित की कब्र के पास बैठकर शोक मनाने लगे। और देखो, संत उन्हें दिखाई दिए, और उन्होंने उन्हें शहर में जाकर भाइयों को विश्वास में मजबूत करने का आदेश दिया। अपने शिक्षक, पवित्र प्रेरित थॉमस, के इस आज्ञा का पालन करते हुए और उनकी प्रार्थनाओं की सहायता से, उन्होंने मसीह की कलीसिया का सफलतापूर्वक शासन किया। जहाँ तक राजा मुज्डियस और राजा करसियस की बात है, उन्होंने अपनी पत्नियों को लंबे समय तक सताया, लेकिन उन्हें अपनी इच्छानुसार करने के लिए मना नहीं सके। यह महसूस करते हुए कि उनकी पत्नियाँ मृत्यु तक भी उनका

[6862] सभी सबसे प्राचीन मूर्तिपूजक धर्मों में, सूर्य के देवता बनने की अवधारणा ने एक बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। विशेष रूप से, खगोलीय पिंडों की पूजा (तथाकथित साबियनवाद) प्राचीन काल में, विशेषकर पूर्व के सभी लोगों के बीच, व्यापक रूप से प्रचलित थी।

[6863] कहा जाता है कि संत थोमस प्रेरित की शहादत का स्थल कलुरमिन में है - मालपिर से लगभग 6 वर्स्ट (लगभग 6 मील) दूर एक ऊँची चट्टान पर, जहाँ प्रेरित अक्सर प्रार्थना करने जाते थे।

आज्ञापालन नहीं करेंगी, उन्हें अपनी इच्छानुसार स्वतंत्र रूप से जीने देने के लिए मजबूर होना पड़ा। वैवाहिक बंधन के बोझ से मुक्त होकर, महिलाओं ने कठोर संयम और प्रार्थना का जीवन जिया, दिन-रात प्रभु की सेवा की, और अपने सदाचारी जीवन के माध्यम से चर्च को बहुत लाभ पहुँचाया।

कई वर्षों बाद, राजा मुज़्डियास के एक पुत्र पर एक राक्षस सवार हो गया, और कोई भी उसे ठीक नहीं कर सका, क्योंकि उसके भीतर एक अत्यंत क्रूर राक्षस वास करता था। राजा अपने बेटे की बीमारी से बहुत दुखी था और उसने पवित्र प्रेरित की कब्र खोलने का संकल्प लिया, ताकि उसकी एक हड्डी लेकर अपने बेटे के गले में बांध सके, जिससे वह दानव के कष्ट से मुक्त हो जाए; क्योंकि उसने सुना था कि संत थॉमस ने अपने जीवनकाल में कई लोगों से दानवों को भगाया था। लेकिन जब राजा ऐसा करने ही वाला था, तो संत थॉमस उसे सपने में दिखाई दिए और कहा:

'जब वह जीवित था तब तुमने उस पर विश्वास नहीं किया; क्या तुम सोचते हो कि अब वह मृतक है तो तुम उससे मदद पाओगे? लेकिन अपने अविश्वास में मत रहो, और मेरे प्रभु यीशु मसीह तुम पर दया करेंगे।'

इस सपने ने राजा की प्रेरित की कब्र खोलने की इच्छा को और भी प्रबल कर दिया। संत के दफन स्थल के लिए निकलते हुए, मुज़्डियस ने कब्र खोली, लेकिन उन्हें वहाँ उनके अवशेष नहीं मिले, क्योंकि एक ईसाई ने चुपके से पवित्र अवशेषों को ले जाकर मेसोपोटामिया में एक उपयुक्त स्थान पर रख दिया था। उस स्थान की कुछ मिट्टी लेकर, राजा ने उसे अपने बेटे की गर्दन के चारों ओर बाँध दिया, यह कहते हुए:

'हे प्रभु यीशु मसीह! आपके प्रेरित थॉमस की प्रार्थनाओं के द्वारा, मेरे पुत्र को चंगा करें, और मैं आप पर विश्वास करूँगा।'

और राक्षस तुरंत राजा के पुत्र को छोड़ गया, और लड़का ठीक हो गया। तब राजा मुज़्दीय मसीह में विश्वास करने लगा और अपने सभी कुलीनों के साथ पादरी सिफ़ोर द्वारा बपतिस्मा ग्रहण किया। विश्वासियों के हृदय में महान आनंद छा गया, क्योंकि मूर्तियों को तोड़ दिया गया था और उनके मंदिर उजाड़ दिए गए थे, और उनकी जगह मसीह के चर्च बनाए गए थे। ईश्वर का वचन फैला, और पवित्र विश्वास दृढ़ हुआ। बपतिस्मा ग्रहण करने के बाद, राजा ने अपने पूर्व पापों से पश्चाताप किया और सभी से मदद और प्रार्थनाओं के लिए कहा। हालाँकि, पुरोहित सिफ़ोर ने सभी विश्वासियों से कहा:

'राजा मुज़्डियस के लिए प्रार्थना करो, ताकि उन्हें हमारे प्रभु यीशु मसीह की दया और उनके पापों की क्षमा प्राप्त हो।'

और सारी कलीसिया ने राजा के लिए प्रार्थना की। ठीक उसी स्थान पर जहाँ प्रेरित का पवित्र शरीर दफनाया गया था, उनकी प्रार्थनाओं के द्वारा हमारे परमेश्वर मसीह की महिमा के लिए कई चमत्कार हुए[6864] । महिमा और आराधना उन्हें, पिता और पवित्र आत्मा के साथ, हमसे युगानुयुग होती रहे! आमीन।

ट्रोपारियन, स्वर 2:

मसीह के एक शिष्य और दिव्य प्रेरितिक परिषद के सदस्य: मसीह के पुनरुत्थान में अविश्वास को दूर करके, और मसीह के परम पवित्र दुख-क्लेश की अपने अनुभव से पुष्टि करके, हे अति प्रशंसनीय थॉमस, अब हमारे लिए शांति और महान दया के लिए मध्यस्थता करें।

[6864] चर्च के लेखकों के अनुसार, संत थोमस प्रेरित के अवशेष बाद में (385 में) भारत से मेसोपोटामिया के एडसा (अब ओरफा) शहर में स्थानांतरित कर दिए गए थे। प्राचीन पश्चिमी शहीद-वृत्तों में, उनके अवशेषों को इस शहर में स्थानांतरित करने की स्मृति 3 जुलाई को दर्ज है। हालांकि, चूंकि यह ज्ञात है कि भारत में संत थॉमस प्रेरित के अवशेष अभी भी मौजूद हैं, इसलिए उन्हें एडेसा ले जाने की रिपोर्ट का अर्थ यह समझना चाहिए कि केवल उनके एक हिस्से को ही भारत से स्थानांतरित किया गया था। एडेसा में, पवित्र प्रेरित के अवशेषों के ऊपर एक भव्य चर्च बनाया गया था, जहाँ दूर-दूर से तीर्थयात्री उमड़ पड़ते थे। बाद में, संत थोमस प्रेरित के अवशेषों का एक हिस्सा कॉन्स्टेंटिनोपल ले जाया गया, जहाँ सम्राट अनास्तासियस (490–518) के शासनकाल के दौरान शाही अधिकारी अमान्टियस द्वारा उनके लिए एक चर्च की स्थापना की गई। चौथी धर्मयुद्ध (1204) के दौरान, धर्मयुद्धियों ने कई अन्य पवित्र अवशेषों के बीच, संत थॉमस प्रेरित का दाहिना हाथ खोजा, जिसे हंगरी के राजा एंड्रयू II ने पांचवीं धर्मयुद्ध के बाद अपने साथ हंगरी वापस ले लिया।

कॉन्टाकयिन, स्वर 4:

अनुग्रह के ज्ञान से परपिूर्ण, हे मसीह के प्रेरति और सच्चे सेवक, आपने पश्चाताप में पुकारा: 'आप मेरे ईश्वर और मेरे प्रभु हैं।'

20 अक्टूबर

7 अक्टूबर (पुराना कैलेंडर)

पवत्रि शहीदों सर्जयिस और बक्कस का कष्टकथा

7 अक्टूबर को स्मरणोत्सव

रोमन मूल के पवत्रि शहीद सेरгийस और बक्खुस, प्रतष्ठिति गणमान्य व्यक्ति थे[6865] और सम्राट मैक्समियिन के दरबार में कुलीनों में अग्रणी थे। सम्राट उन्हें परषिद की बैठकों में उनके ववेकिपूर्ण परामर्श, युद्ध में उनके साहस और सेवा में उनकी नष्ठिा के लिए बहुत प्यार और सम्मान करता था। और उसके सबसे वश्विसनीय सलाहकारों के अलावा शायद ही कोई सम्राट के पास कोई अनुरोध लेकर जा सकता था: वे उसके इतने प्रयि थे जतिना कि कोई और नहीं। हालाँकि, सेरजयिस और बक्कस ने पृथ्वी के राजा से नहीं, बल्कि स्वर्ग के राजा से कृपा प्राप्त की: क्योंकि वे हमारे प्रभु यीशु मसीह में वश्विास रखते थे, अपने जीवन से उन्हें प्रसन्न करने का प्रयास करते थे, और उनकी नष्ठिापूर्वक सेवा करते थे। लेकनि राजा के डर से, उन्होंने कुछ समय के लिए मसीह में अपने वश्विास को छपिा रखा था, क्योंकि मैक्समियिन ईसाइयों के प्रति असीम घृणा और अनयिंत्रति क्रोध से व्यवहार करता था। हालाँकि, मसीह के वश्विास का प्रकाश उनके भीतर अधकि समय तक छपिा न रह सका, और जल्द ही यह सभी के सामने खुले तौर पर प्रकट हो गया।

कुछ लोगों ने, उनकी उच्च पदवी और राजा के प्रति उनके स्नेह से ईर्ष्या करते हुए, और उन पर राजा का द्वेष और क्रोध लाना चाहते हुए, उसे सूचति कयिा कि सेरजयिस और बक्कस ईसाई थे और वे मूर्तयिों की पूजा करने से इनकार करते थे। मैक्समियिन यह वश्विास करने को तैयार नहीं था कि उसके इतने कृपाप्राप्त पुरुष देवताओं की पूजा के मामले में उससे असहमत होंगे - और वह इस मामले पर उनसे सवाल करने या उन पर आरोप लगाने से बहुत शर्मदिा था, क्योंकि उसे अभी नश्चिति रूप से पता नहीं था। हालाँकि, उसने उन्हें नम्निलखिति तरीके से परखने का नश्चिय कयिा।

एक दनि, उसने अपने देवताओं के सम्मान में एक उत्सव का आयोजन कयिा और सभी राजकुमारों, गणमान्य व्यक्तियिों, योद्धाओं और सेवकों के साथ, अपनी सारी शाही भव्यता के बीच, मुख्य देवता ज़्यूस के मंदरि[6866] की ओर प्रस्थान कयिा, वहाँ एक गंभीर बलदिान अर्पति करने के लिए। जब वह ऐसा कर रहा था, तो उसने बारीकी से देखा कि क्या उसके प्रयि कुलीनों, सेर्जउिस और बाकस, उसके साथ मूर्तपिूजक मंदरि में प्रवेश करेंगे। लेकनि जब राजा मंदरि में प्रवेश कयिा, तो मसीह के सेवक बाहर ही रहे और उसके साथ उस घृणति मंदरि में प्रवेश नहीं कयिा; वे थोड़ी दूरी पर रुककर सच्चे परमेश्वर से प्रार्थना करने लगे, उनसे यह प्रार्थना करते हुए कि वे उन अधर्मी लोगों की अँधी हो चुकी आँखों को ज्ञान का प्रकाश दें और उनके द्वारा अपने परम पवत्रि नाम की महमिा करें। राजा ने जब देखा कि सेरजयिस और बक्कस उसके साथ उत्सव में शामलि नहीं हुए थे, तो उसने उन्हें पकड़ने और जबरदस्ती मंदरि में ले आने के लिए नौकर भेजे।

जब संतों को इस अधर्मी सभा में लाया गया, तो मैक्समियिन ने उन्हें उसके साथ मूर्तयिों की पूजा करने, बलदिान चढ़ाने और मूर्तयिों को चढ़ाए गए भोगों में हस्सिा लेने का आदेश दयिा।

लेकनि सेरजयिस और बक्कस ने राजा की आज्ञा मानने से इनकार कर दयिा।

[6865] मूल संतों के जीवन-चरति ग्रंथ में, सेरजयिस को 'प्राइमकिार' कहा गया है, यानी 'जेन्टाइल रेजमिेंट' का पहला कमांडर - जसिमें रोमनों के सहयोगी (जन्हिें 'जेन्टलि्स' कहा जाता था) शामलि थे - जबकि बैकस को 'सेकंडेटार' कहा गया है, यानी इस रेजमिेंट का दूसरा कमांडर।

[6866] ज़ीउस, या जुपटिर, एक ग्रीक-रोमन देवता थे जन्हिें मूर्तपिूजकों द्वारा स्वर्ग और पृथ्वी के शासक, सभी का पति—देवताओं और मनुष्यों दोनों का—के रूप में पूजति कयिा जाता था।

उन्होंने कहा, 'हमारा स्वर्ग में एक ईश्वर है, जो न तो झूठा है और न ही निर्जीव, जैसा कि तुम्हारी मूर्तियाँ हैं, बल्कि वह सच्चा और जीवित ईश्वर है, जो संपूर्ण जगत को अपनी शक्ति में धारण करता है, और उसी की हम पूजा करते हैं।'

और उन्होंने राजा की मूर्तिपूजा के लिए उसे फटकारना शुरू कर दिया, कि वह एकमात्र ईश्वर को मिलने वाला सम्मान मूर्तियों पर अर्पित कर रहा था—जो अंधी, बहरी और गूंगी हैं।

तब राजा ने क्रोध में आकर आदेश दिया कि उनके उच्च पद के सभी प्रतीक उनसे छीन लिए जाएँ: उनकी सैन्य पट्टियाँ, उनके सोने के हार, उनकी अंगूठियाँ और उनके सभी वस्त्र; और उपहास के लिए, उन्हें महिलाओं के अंडरगारमेंट पहनाए जाएँ और उनके गलों में लोहे की बेड़ियाँ डाल दी जाएँ। इस हालत में, संतों को शहर में घुमाया गया, – ताकि इन सबसे गौरवशाली और कुलीन रोमन गणमान्य व्यक्तियों का पूरे लोगों द्वारा एकमात्र सच्चे ईश्वर का सम्मान करने और झूठे मूर्तिपूजक देवताओं, या यूँ कहें कि स्वयं राक्षसों का अपमान करने के लिए उपहास और मज़ाक उड़ाया जा सके, जिनके लिए ईश्वर के इन सेवकों—जिन्होंने पहले ही स्वयं को मसीह के लिए बलिदान कर दिया था—बलिदान करने से इनकार कर दिया था।

जब ईश्वर-विहीन बलिदान समाप्त हो गए, तो मैक्सिमियिन अपने कक्षों में लौट आए और सर्जियस और बक्कस पर दया करके—क्योंकि वह उनसे बहुत प्रेम करते थे—उन्हें अपने पास बुलाया और कहा:

'मेरे प्रिय और विश्वासयोग्य मित्रो! तुमने हमारे देवताओं का अपमान करने और अपने राजा को दुखी करने का निश्चय क्यों किया, जो तुम पर इतने कृपालु और अनुकूल हैं? तुमने अपने ऊपर यह अपमान क्यों लाया है? यद्यपि मैं तुमसे बहुत प्रेम करता हूँ, पर मैं अपने देवताओं के अपमान को सहन नहीं कर सकता और मुझे तुम्हें यातनाएँ देनी पड़ेंगी, भले ही मेरी इच्छा इसके विरुद्ध हो। इसलिए मैं आपसे विनती करता हूँ, मेरे मित्रों, कि आप टेक्टोन के पुत्र[6867] का परित्याग करें, जिसे यहूदियों ने एक अपराधी के रूप में अन्य अपराधियों के साथ सूली पर चढ़ाया था, और ईसाई कथाओं और जादू-टोने से भटकने न दें; एक बार फिर हमारे महान देवताओं की ओर लौट आओ, और मैं तुम्हें और भी अधिक सम्मान और और भी अधिक कृपा प्रदान करूँगा, और तुम मेरे प्रेम का आनंद उठाओगे और मेरे राज्य के सभी आशीर्वादों में मेरे साथ भागीदार बनोगे।

लेकिन सेरगियस और बक्कस, राजा की कृपा के लिए परमेश्वर के प्रेम को त्यागना नहीं चाहते थे, और न ही अस्थायी आशीर्वादों के लिए शाश्वत आशीर्वाद खोना चाहते थे, इसलिए उन्होंने राजा की अवज्ञा की। पवित्र आत्मा की कृपा से परिपूर्ण होकर, उन्होंने साहसपूर्वक और प्रभावपूर्ण ढंग से राजा को उसके झूठे देवताओं की पूर्ण शक्तिहीनता साबित करनी शुरू कर दी; उन्होंने उसके सामने साहसपूर्वक यीशु मसीह की शक्ति और दिव्यता की गवाही दी, और स्वयं राजा को इस स्वर्गीय सत्य को जानने की सलाह दी। दुष्ट राजा, जिसका हृदय कठोर और मन अंधा हो गया था, ने उनकी अच्छी सलाह नहीं मानी; इसके विपरीत, वह और भी अधिक क्रोध और रोष से भर गया। उनके प्रति प्रेम से, और स्वयं उन्हें यातनाओं में नहीं डालना चाहने के कारण, उसने उन्हें पूर्वी हेगेमोन[6868] , एंटिओकस के पास भेज दिया। यह व्यक्ति ईसाइयों का एक क्रूर उत्पीड़क और यातना देने वाला था; उसने राजा के समक्ष सेरजियस और बैकस के मध्यस्थता से हेगेमोन का पद प्राप्त किया था और बाद में उसे पूर्व में भेजा गया था। संतों को अब इसी हेगेमोन के पास भेजा गया था।

राजा ने सोचा कि वे उसकी क्रूरता से डर जाएँगे—जिसकी अफवाहें पूरे साम्राज्य में फैल चुकी थीं—और साथ ही उन्हें उस व्यक्ति के वश में होने पर शर्म भी आएगी जो पहले लगभग उनका दास था; और इस प्रकार, डर और शर्म के कारण, वे मसीह का त्याग कर देंगे। लेकिन भले ही ऐसा न हुआ होता, फिर भी सम्राट के लिए यह अधिक वांछनीय था कि उन्हें उसकी आँखों के सामने की बजाय किसी दूर के प्रदेश में यातनाएँ दी जाएँ।

और इस प्रकार संतों को जंजीरों में बाँधकर रोम से ले जाया गया। पूरे दिन की यात्रा के बाद, उनकी सुरक्षा में तैनात सैनिक रात के लिए एक सराय में रुके। वहाँ, आधी रात को, जब उन्हें ले जा रहे सैनिक गहरी नींद में थे, तो सर्जियस

[6867] अर्थात्, यीशु मसीह, जिन्हें उनके समय के यहूदी भी 'टेक्टन के पुत्र' (मत्ती 13:55) कहते थे, और वे उन्हें परम पवित्र कुँवारी मरियम के मंगेतर, यूसुफ का पुत्र मानते थे, जो बढ़ई का काम करते थे ('टेक्टन' - ग्रीक से: बढ़ई, निर्माता)। यह उपाधि बाद में रोमन मूर्तिपूजकों द्वारा अपनाई गई, जिन्होंने इसे ईसा मसीह पर ईसाइयों के राजा के प्रति उपहास और तिरस्कार के रूप में लगाया।

[6868] अर्थात्, रोमन साम्राज्य के पूर्वी, एशियाई प्रांतों के शासक को।

और बक्कस प्रार्थना करने उठे और उन्होंने ईश्वर से उन सभी कष्टों को साहसपूर्वक सहने की शक्ति देने के लिए प्रार्थना करना शुरू कर दिया जो उनके सामने थे।

जब वे प्रार्थना कर रहे थे, तो प्रभु का एक स्वर्गदूत उनके पास प्रकट हुआ, जिसने उन्हें स्वर्गीय प्रकाश से प्रकाशित किया और निम्नलिखित शब्दों से उन्हें बल दिया:

'हे मसीह के सेवको, हौसला रखो, और जैसे अच्छे सिपाही हो, शैतान के विरुद्ध हथियार बान्ध लो: तुम शीघ्र ही उस पर विजय पाओगे।'

इन शब्दों के बाद, स्वर्गदूत गायब हो गया।

अनिर्वचनीय आनंद से परिपूर्ण, सेरजियस और बक्कस उस प्रभु की स्तुति करने लगे, जिन्होंने अपने सेवकों के पास ऐसे दैवीय दूत के रूप में आने की कृपा की थी।

पूर्व की ओर अपनी लंबी यात्रा के दौरान, पवित्र शहीदों ने अपना समय प्रार्थना और भजन-पाठ में बिताया, और इस प्रकार उन्होंने दुष्टता की अदृश्य आत्माओं के विरुद्ध खुद को और भी अधिक सशस्त्र किया। कई कस्बों और गांवों से होते हुए, वे अंततः पूर्वी शहर वर्बलिस्सो[6869] पहुँचे, जहाँ उस समय हेगेमोन एंटिओकस ठहरे हुए थे; उनके पास सैनिकों ने अपने साथ लाए गए बंदियों को एक शाही फरमान के साथ सौंप दिया, जिसमें इस प्रकार लिखा था:

– मैक्सिमियिन, शाश्वत राजा, से, पूर्वी साम्राज्य के शासक एंटिओकस को। – जय हो! हमारे देवता किसी भी मनुष्य को, और विशेष रूप से हमारे राज्य के योद्धाओं और सेवकों को, दुष्ट होने और उनके प्रति बलिदानों में भाग लेने से पीछे हटने की अनुमति नहीं देते; इसलिए हमने सेरजियस और बाकस को दोषी ठहराया है और दुष्ट ईसाई धर्म के अनुयायी होने के नाते, उन्हें मृत्युदंड के योग्य समझा है। लेकिन चूँकि वे स्वयं राजा से अपनी सज़ा पाने के अयोग्य हैं, हम उन्हें आपके पास भेजते हैं। यदि वे पश्चाताप करते हैं, हमारी आज्ञा मानते हैं और देवताओं को बलिदान चढ़ाते हैं, तो उन पर दया दिखाओ और उन्हें निर्धारित यातनाओं से छूट दो; साथ ही, यह वादा करो कि हम भी उनके प्रति दयालु होंगे, और उनमें से प्रत्येक अपनी पूर्व गरिमा पुनः प्राप्त करेगा और हमसे पहले से अधिक कृपा प्राप्त करेगा। यदि, तथापि, वे आज्ञा मानने से इनकार करते हैं और अपने पूर्व दुष्ट विश्वास पर बने रहते हैं, तो उन्हें उनकी योग्य सज़ा दें और उन्हें तलवार से मृत्युदंड दें। दीर्घायु की आशा में – शुभकामनाएँ।

शाही फरमान पढ़ने के बाद, एंटिओकस ने सेरजियस और बक्कस को सुबह तक हिरासत में रखने का आदेश दिया। सुबह, प्राटोरियम में प्रवेश करते ही[6870] ने न्यायाधीश की कुर्सी पर बैठकर, पवित्र शहीदों को अपने सामने खड़ा किया और उनसे इस प्रकार कहा:

'मेरे पिता और उपकारियों, जिन्होंने मेरे लिए यह पद सुनिश्चित किया, मेरी वर्तमान महिमा के निर्माता – आपकी परिस्थितियाँ कितनी बदल गई हैं! अब मैं एक न्यायाधीश के रूप में आपके सामने बैठा हूँ, जबकि आप, बँधे हुए कैदी, मेरे सामने खड़े हैं – आप जिनकी मैं कभी सेवा करता था। मैं आपसे विनती करता हूँ, अपने ऊपर ऐसा कोई आघात न लाएँ; राजा की आज्ञा का पालन करें और देवताओं को बलिदान चढ़ाएँ – और आप अपना पूर्व पद फिर से प्राप्त करेंगे और एक बार फिर सम्मानित होंगे; लेकिन यदि आप ऐसा नहीं करते हैं, तो, मेरी अपनी इच्छा के विरुद्ध भी, मुझे आपको यातना देकर इस शाही आज्ञा का पालन करने के लिए मजबूर होना पड़ेगा: क्योंकि आपने स्वयं सुना है कि राजा ने मुझे अपने पत्र में क्या आज्ञा दी है। इसलिए, हे स्वामिनो, अपनी और मुझ पर भी दया करें, क्योंकि मैं कतई नहीं चाहता कि मैं आप लोगों का, जो मेरे उपकारक हैं, क्रूर यातनादाता बनूँ।

संतों ने उनसे उत्तर दिया:

'तुम व्यर्थ ही अपने शब्दों से हमें बहकाने की कोशिश कर रहे हो: क्योंकि जो आने वाले जीवन की खोज में हैं, वे सम्मान और अपमान, जीवन और मृत्यु के प्रति पूरी तरह से उदासीन हैं: *"क्योंकि मेरे लिए जीना मसीह है, और मरना लाभ है"* (फिलि. 1:21)।

सर्गीयस और बाखुस ने दुष्टों की मूर्तिपूजा और अधर्मीपन की निंदा करते हुए और फटकार लगाते हुए विस्तार से बात की। इस पर अंटिओकस, क्रोधित होकर, ने आदेश दिया कि संत सर्गीयस को जेल में डाल दिया जाए, जबकि बाखुस को नग्न कर, जमीन पर लिटाकर, निर्दयता से पीटा गया। संत को इतनी देर तक पूरे शरीर पर पीटा गया कि उन्हें पीटने

[6869] बर्बेरिसिस – मेसोपोटामिया में, यूफ्रेटिस नदी के पश्चिमी तट पर एक शहर।

[6870] प्रेटोरीयम – रोमन प्रांतों के मुख्य शहरों में सर्वोच्च न्यायालय, जहाँ रोमन सम्राटों द्वारा नियुक्त राज्यपालों, यानी कई प्रांतों के हेगेमनी या शासकों द्वारा मामले तय किए जाते थे।

वाले सेवक भी थकान से चूर हो गए और उन्हें बारी-बारी से पीटना पड़ा। इन पिटाइयों से, पवित्र शहीद का शरीर उनकी हड्डियों से अलग हो गया प्रतीत होता था, और उनसे पानी की तरह खून बह रहा था। ऐसे यातनाओं के बीच, संत बक्कस ने अपनी आत्मा प्रभु के हाथों में सौंप दी। अंतियोकस ने मसीह के पीड़ित के शव को शहर से बाहर ले जाकर किसी दूर-दराज की जगह फेंक देने का आदेश दिया, ताकि जानवर और पक्षी उसे नोच-नोच कर खा जाएँ। लेकिन प्रभु ने उसकी हड्डियों की रक्षा की: मूर्तिपूजकों के डर से शहर के बाहर गुफाओं और घाटियों में छिपे कुछ ईसाइयों ने, रात में अपने छिपने की जगहों से निकलकर, संत का शरीर निकाला और उसे उन गुफाओं में से एक में सम्मान के साथ दफनाया जहाँ वे स्वयं छिपे हुए थे।

सर्जियस, अपने कालकोठरी में बैठे हुए अपने मित्र की मृत्यु की खबर सुनकर, बहुत दुखी हुआ और लंबे समय तक उनके बिछोह पर शोक मनाता रहा।

'हाय मेरे भाई बक्कस,' वह बार-बार दोहराता रहा, 'अब तुम और मैं फिर कभी नहीं गा सकते: *"भाइयों का एकता में एक साथ रहना कितना अच्छा और सुखद है!"* (भजन संहिता 132:1): तुम मुझे अकेला छोड़ गए हो।'

जब संत सेरजियस इस प्रकार शोक मना रहे थे, तो ठीक उसी रात संत बक्कस स्वर्गदूत के समान मुखमंडल के साथ, स्वर्गीय प्रकाश से दमकते वस्त्रों में, उन्हें एक सपने में दिखाई दिए। उन्होंने उन्हें सांत्वना देना शुरू किया, उन्हें स्वर्ग में उनके लिए तैयार किए गए पुरस्कार के बारे में बताया, और उन्हें शीघ्र ही आने वाली शहादत के लिए मजबूत किया, जिसके लिए उन्हें प्रभु मसीह से महान अनुग्रह और साहस प्राप्त होगा। इस प्रकट होने के बाद, सेरगियस आनंद से भर गया और, आनंद से भरे हृदय के साथ, प्रभु की स्तुति गाने लगा।

कुछ ही समय बाद, राज्यपाल, सुरा नामक एक अन्य शहर के लिए रवाना हुए[6871] , और उन्होंने सर्जियस को अपने साथ ले जाने का आदेश दिया। वहाँ, न्यायाधीश की कुर्सी पर बैठकर, उन्होंने संत से इस प्रकार कहा:

'बैकस नामक एक अधर्मी व्यक्ति ने देवताओं को बलिदान चढ़ाने से इनकार कर दिया और उन्हें सम्मानित करने के बजाय हिंसक मृत्यु को चुनना पसंद किया – और इस प्रकार उसे अपने कर्मों का वह दंड मिला जिसके वह पात्र थे। लेकिन आप, सेरजियस, इस अधर्मी शिक्षा से क्यों भटक गए हैं और स्वयं को इतनी बड़ी दुर्भाग्य में क्यों डाल रहे हैं? मेरे उपकारी, स्वयं को यातनाओं के अधीन न करें! मुझे उन अनुग्रहों पर शर्म आती है जो आपने कभी मुझ पर किए थे और आपके पद पर भी: क्योंकि आप मेरे सामने एक दंडित व्यक्ति के रूप में खड़े हैं, जबकि मैं, यहाँ बैठा, आपके ऊपर निर्णय सुना रहा हूँ: कभी एक तुच्छ व्यक्ति, मैं अब, राजा के सामने आपके हस्तक्षेप के कारण, एक उच्च पद पर प्रतिष्ठित हूँ और अब पहले से ही आपसे ऊपर हूँ; जबकि आप, जिन्होंने राजा से इतना कुछ माँगा और इतने लोगों पर इतना उपकार किया, अब स्वयं के लिए बुराई चाहते हैं। मैं आपसे विनती करता हूँ – मेरी सलाह मानिए – राजा की आज्ञा का पालन कीजिए, देवताओं को बलिदान चढ़ाइए, और आप अपने पूर्व पद पर पुनर्स्थापित हो जाएंगे और अपनी पूर्व महिमा से सम्मानित होंगे।

संत सेरजियस ने उनसे उत्तर दिया:

– अस्थायी सम्मान और महिमा क्षणिक हैं; अस्थायी अपमान के बाद, हालांकि, अनंत महिमा आती है, और मेरे लिए यह सांसारिक अपमान कुछ भी नहीं है; न ही मैं अस्थायी महिमा की तलाश करता हूँ, क्योंकि मुझे उम्मीद है कि मेरे उद्धारकर्ता द्वारा मुझे स्वर्गीय महिमा में सच्चा और अनंत सम्मान प्रदान किया जाएगा। आपको वे अनुग्रह याद होंगे जो मैंने कभी आप पर किए थे – कि मैंने आपके लिए एक उच्च पद सुनिश्चित करने हेतु पृथ्वी के राजा से आपके पक्ष में मध्यस्थता की थी; परन्तु अब मैं तुम से कहता हूँ: मेरी सुनो, और, सत्य को जानकर, अपने झूठे देवताओं का परित्याग करो और मेरे साथ मिलकर स्वर्गीय परमेश्वर और युगों के राजा की उपासना करो; और मैं वादा करता हूँ कि मैं तुम्हारे लिए उससे अधिक महान् आशीषों के लिए मध्यस्थता करूँगा जो मैक्सिमियन ने दी हैं।

तब अंटिओकस ने यह महसूस किया कि वह उसे मसीह से दूर करने और राजा की इच्छा के आगे झुकने के लिए मजबूर करने में असमर्थ था, उसने कहा:

'तुम मुझे, सेरजियस, मजबूर कर रहे हो कि मैं तुम्हारी सारी दयालुता को भूल जाऊं और तुम्हें क्रूर यातनाओं का शिकार बना दूं।'

सर्गीयस ने उत्तर दिया:

[6871] सुरा – फरात नदी के पश्चिमी तट पर एक शहर।

'तुम जो चाहो करो: मेरा सहायक मसीह है, जिसने एक बार कहा था: "उनसे मत डरो जो शरीर को तो मार सकते हैं पर आत्मा को नहीं मार सकते"; इसलिए अब तुम्हें मेरे शरीर पर उसे यातना देने की शक्ति है, पर न तो तुम्हें और न ही तुम्हारे पिता—शैतान—को मेरी आत्मा पर कोई शक्ति है।'

इसके बाद, क्रोधित अंटिओकस ने घोषणा की:

'मैं देखता हूँ कि मेरी दीर्घकालीन सहनशीलता तुम्हें और भी अधिक अभिमानी बनाती है,' और आदेश दिया कि उसके पैरों में लोहे के जूते पहनाए जाएँ, जिनके तलवों पर नुकीले, लंबे कील थे, जिन्होंने संत के पैरों को भेद दिया। ऐसे जूते पहनाकर, अंटिओकस ने सेरजियस को अपने रथ के आगे दौड़ाने का आदेश दिया, जबकि वह स्वयं टेट्रापाइर्जियिम शहर[6872] के लिए निकल पड़ा, जहाँ से उसे रोसाफा शहर[6873] के लिए रवाना होना था।

इस तरह के कष्ट सहते हुए, संत ने यात्रा करते समय गाया: *'मैंने प्रभु पर अपना भरोसा रखा है, और वह मेरी ओर झुका और मेरी पुकार सुनी; उसने मुझे भयानक गड्ढे और कीचड़ भरी दलदल से बाहर निकाला, और मेरे पैरों को चट्टान पर स्थिर किया और मेरे कदमों को मजबूत किया'* (भजन संहिता 39:2-3)।

जब वे सुर से बीस वर्स्ट दूर स्थित टेट्रापाइर्जियिम नगर पहुँचे, तो शहीद को जेल ले जाया गया। रास्ते में, उन्होंने गाया: *'मेरे साथ शांति रखने वाला मनुष्य, जिस पर मैं भरोसा करता था, जिसने मेरा भोजन खाया, उसने भी मुझ पर धोखा किया है। परन्तु हे प्रभु, मुझ पर अनुग्रह कर और मुझे उठा; और मैं उन्हें बदला चुकाऊँगा'* (भजन संहिता 40:10–11)।

उस रात जेल में, जब शहीद प्रार्थना कर रहे थे, तो प्रभु का एक स्वर्गदूत उनके पास प्रकट हुआ और उसने उनके घावों को चंगा कर दिया। अगले दिन, अंटिओकस ने संत सेरजियस को कालकोठरी से बाहर लाने का आदेश दिया, यह सोचकर कि दिर्द उसे एक कदम उठाने भी नहीं देगा। लेकिन जब उसने दूर से देखा कि संत पूरी तरह से स्वस्थ व्यक्ति की तरह, बिना लंगड़ाए चल रहे थे, तो यातना देने वाला भयभीत हो गया और कहा:

'सचमुच, यह आदमी एक जादूगर है, क्योंकि इतनी यातनाओं के बाद बिना लंगड़ाए कैसे चलना संभव है? फिर भी वह ऐसा दिखता है मानो उसने कभी अपने पैरों से पीड़ा ही न झेली हो।'

इसके बाद, अंटिओकस ने आदेश दिया कि शहीद को वही जूते पहनाए जाएँ और उसे रोसाफा के सामने उसके सामने ले जाया जाए, जो सूरा शहर से 70 स्टेडियिम दूर था। वहाँ, न्यायाधिकरण पर चढ़ने के बाद, एंटिओकस ने संत सेरजियस को मूर्तियों की पूजा करने के लिए मजबूर करना शुरू कर दिया; लेकिन वह उसे मसीह की स्वीकारोक्ति से हटा नहीं सका, और इस प्रकार शहीद को मृत्युदंड की सजा सुनाई। जब संत को शहर से बाहर फांसी के स्थान पर ले जाया गया, तो उन्होंने प्रार्थना करने के लिए समय मांगा। प्रार्थना करते समय, उन्होंने स्वर्ग से एक आवाज़ सुनी जो उन्हें स्वर्गीय निवासों में बुला रही थी, और, खुशी से तलवार के नीचे अपना सिर झुकाकर, वे स्वर्ग सिधार गए। उनके शरीर को उसी स्थान पर ईसाइयों द्वारा दफनाया गया।

कुछ ही समय बाद, सूरा शहर के ईसाइयों ने गुप्त रूप से संत के शरीर को रोसा से हटाकर अपने शहर में ले जाने पर सहमति व्यक्त की। जब वे रात में कब्र के पास पहुँचे, तो ताबूत से आग का एक स्तंभ उठा, जो सीधे स्वर्ग तक पहुँच गया। रोजाफा में तैनात कुछ सैनिकों ने आधी रात को अपने पूरे शहर को रोशन करते हुए आग के उस स्तंभ को देखा, तो वे हथियार लेकर उस स्थान पर गए और उन्होंने सुरा के नागरिकों को इस आग के दृश्य से भयभीत होकर कांपते हुए देखा। जल्द ही वह चमत्कारी स्तंभ गायब हो गया। उसके बाद, सूरा के नागरिकों को एहसास हुआ कि संत सेरजियस उस स्थान को छोड़ना नहीं चाहते थे जहाँ उन्होंने अपना रक्त बहाया था और मसीह के लिए अपनी जान दी थी; शहीद के सम्मान में, उन्होंने ठीक उसी स्थान पर एक अद्भुत पत्थर की कब्र बना दी। जैसे-जैसे ईसाई धर्म फैला, रोसा शहर में पवित्र शहीद सेरजियस के नाम पर एक चर्च बनाया गया। पड़ोसी शहरों के पंद्रह बिशप एकत्रित हुए और उन्होंने पवित्र शहीद के अक्षय और सुगंधित अवशेषों को गंभीरता से नव-निर्मित चर्च में स्थानांतरित किया, और यह आदेश दिया कि उनकी स्मृति का उत्सव 7 अक्टूबर, उनके निधन के दिन मनाया जाए। दोनों स्थानों पर - चर्च में, शहीद सेरजियस के अवशेषों

[6872] टेट्रापाइर्जियिस – सूरा और रोसाफा के बीच, यूफ्रेटिस नदी के पास एक शहर।

[6873] रोजाफ़ या रेज़ाफ़, जिसे बाद में प्रसिद्ध संत शहीद सेरजियस के सम्मान में वहाँ स्थापित मठ के नाम पर सेरजियोपोलिस नाम दिया गया, सूरा से 6 वर्स्ट दूर स्थित एक शहर है।

के पास, और उस स्थान पर जहाँ उनकी मृत्यु हुई और उन्हें दफनाया गया - कई दानव ग्रस्त और बीमार लोग अपने रोगों से ठीक हो गए[6874] ।

यह ध्यान देने योग्य है कि हर साल, संत के पर्व के दिन, जंगली जानवर, जैसे किसी कानून का पालन करते हुए, आसपास के रेगिस्तानों से निकल आते थे और उस स्थान पर इकट्ठा हो जाते थे जहाँ पवित्र शहीद को पहली बार दफनाया गया था। उस समय, उनकी जंगली प्रकृति भेड़ों के बच्चों जैसी कोमलता में बदल गई: उन्होंने न तो लोगों पर और न ही मवेशियों पर हमला किया, बल्कि, शांत रूप से पवित्र स्थल के चारों ओर चक्कर लगाकर, एक बार फिर से अपने रेगिस्तानों में लौट गए। इस प्रकार ईश्वर ने अपने संत को महिमामय किया, ताकि ऐसा प्रतीत हुआ कि उन्होंने न केवल लोगों को बल्कि जानवरों को भी उनकी स्मृति का जश्न मनाने के लिए प्रेरित किया।

संत सर्जियस की प्रार्थनाओं के द्वारा, प्रभु हमारे शत्रुओं के क्रोध को वश में करें, जैसे उन्होंने एक बार इन जंगली जानवरों की उग्रता को वश में किया था – उसकी महिमा के लिए युगानुयुग – आमीन।

कॉन्टाकियन, स्वर 2:

अपने मन को वीरतापूर्वक अपने शत्रुओं के विरुद्ध सशस्त्र करके, तुमने उनकी सारी चापलूसी को नष्ट कर दिया, और, हे सर्व-स्तुत्य शहीदों, स्वर्ग से विजय प्राप्त करके, तुम एक स्वर में पुकार उठे: 'परमेश्वर के साथ रहना अच्छा और आनंददायक है।'

पवित्र शहीदों जूलियन और सेसरियस का स्मरणोत्सव

7 अक्टूबर को स्मरणोत्सव

रोमन सम्राट क्लॉडियस के शासनकाल के दौरान, जिसने अपनी माँ—जो एक गुप्त ईसाई थी—को मार डाला था और तब से ईसाइयों पर कोई दया नहीं दिखाई थी, सीज़रियस नाम का एक डीकन रोमन साम्राज्य के अंतर्गत आने वाले ताराक्विनिया शहर[6875] में आया। मूर्तियों को चढ़ाए जा रहे बलिदानों को देखकर, उसने मूर्तियों पर थूक दिया और उन्हें टुकड़े-टुकड़े कर दिया। इसके लिए, उन्हें जेल में डाल दिया गया, जहाँ वे तीन दिनों तक भूख से तड़पते रहे। फिर उनके हाथ पीठ के पीछे बाँध दिए गए, और सैनिकों ने उन्हें गवर्नर के रथ के सामने से अपोलो के मंदिर तक घसीटा। जैसे ही वे मंदिर के पास पहुँचे, संत ने प्रार्थना की, और तुरंत ही मंदिर अपनी नींव तक ढह गया, जिससे पुजारी और अंदर मौजूद सभी लोग दबकर मर गए।

[6874] पवित्र शहीदों सेरजियस और बक्कस की स्मृति का प्राचीन काल से ही पूरे पूर्व में बहुत सम्मान किया जाता रहा है, और कई लोगों ने उनकी अवशेषों की भक्तिपूर्ण तीर्थयात्रा की। शहीद सेरजियस का वार्षिक पर्व दिन प्रारंभिक 5वीं शताब्दी से दर्ज किया गया है। उसी शताब्दी में, हिएरापोलिस के बिशप अलेक्जेंडर ने इन शहीदों के सम्मान में एक भव्य चर्च का निर्माण किया। उनके पवित्र, अक्षत सिर कुछ समय के लिए कॉन्स्टेंटिनोपल में रखे गए थे, जहाँ रूसी तीर्थयात्रियों: संन्यासी एंथनी (1200) और नोवगोरोड के स्टीफन (लगभग 1350) ने उन्हें देखा था। बाइज़ेंटाइन सम्राट जस्टिनियन महान (527–565) ने शहर को किलाबंद किया रोजाफा, जहाँ सेंट सर्जियस ने यातनाएँ झेली थीं और जहाँ उनके अवशेष रखे गए थे, और अपने शासन के आरंभिक काल में कॉन्स्टेंटिनोपल में अपने महल के पास संतों सर्जियस और बक्कस को समर्पित एक भव्य चर्च का निर्माण किया, उनकी कृतज्ञता के प्रतीक के रूप में कि उन्होंने उन्हें सिंहासन पर बैठने से पहले ही जेल से बचाया था। जब फारस के राजा खुसरौ (532–579) रोजाफा पर चढ़ाई कर दी—जिसे तब तक सेरजियोपोलिस का नाम दे दिया गया था—शहर में शरण लेने वाले कुछ ही निवासियों ने यह उम्मीद करते हुए अपनी सारी कीमती चीजें उन्हें सौंप दीं कि वह शहर को बख्श देगा, सिवाय पवित्र शहीद सेरजियस की अवशेषों के, जो चांदी की परत वाले एक आयताकार अवशेष-पात्र में रखे थे; यह जानने पर, खसरू ने अपनी पूरी सेना को शहर की ओर मार्च कराया, लेकिन ढालों से लैस और रक्षा के लिए तैयार अनगिनत योद्धा दीवारों पर दिखाई दिए; खसरू को एहसास हुआ कि यह शहीद द्वारा किया गया एक चमत्कार था और, डरकर, वह शहर से पीछे हट गया। प्रसिद्ध 6वीं सदी के फ्रेंकिश इतिहासकार, टूर के ग्रेगरी लिखते हैं कि उनके समय में इस संत का पश्चिम में बहुत सम्मान किया जाता था, क्योंकि उन्होंने विश्वास के साथ उनके पास आने वालों पर कई चमत्कार और दया के कार्य किए।

[6875] टारक्विनिया – अब टेरासिना – रोम के दक्षिण में इटली का एक तटीय शहर है, जो उससे 92 वर्स्ट दूर है।

यह देखकर, एफ़ोर[6876] लयिोन्टयिस संत के सामने घुटनों के बल गरि पड़ा और मसीह में वशि्वास कर लयिा। ईसाई पुरोहति जूलयिन ने सार्वजनकि रूप से उसका बपतस्मिा कयिा और उसे पवत्रि सहभाग दयिा; और तुरंत, संत की प्रार्थना के बाद, लयिोन्टयिस ने अपनी अंतमि सांस ली। लोक्सोरयिा शहर के राज्यपाल ने यह देखकर संतों को बोरी में सलिने और समुद्र में फेंकने का आदेश दयिा।

तब संतों ने उससे कहा:

'हमें समुद्र में फेंक दयिा जाएगा, लेकनि तुम्हें भी एक क्रूर साँप मार डालेगा और तुम एक भयानक मृत्यु का सामना करोगे।'

दो दनि बाद, जब लोक्सोरयिस रेत वाले कनिारे पर चल रहा था, तो एक वशिाल साँप उसके चारों ओर लपिट गया और उसके सभी अंगों को कुचल दयिा। लोक्सोरयिस ने उसी जगह प्राण त्याग दएि और वहाँ पड़ा रहा, उसका शरीर पूरी तरह सूज गया था, जो भी वहाँ से गुजरता वह एक भयानक दृश्य देखता।

[6877][6878]इस बीच, ईश्वर की शक्ति से, संतों के शरीर लहरों द्वारा कनिारे पर आ गए। ईसाइयों ने उन्हें सम्मानपूर्वक प्राप्त कर नगर के पास दफनाया। लेकनि चकित्सिक के पुत्र लयिोन्टयिस ने उनके सम्मानति सरि काटकर नदी में फेंक दएि। तब क्वासयिस, कैपुआ नगर के पुरोहति क्वार्टस, ईश्वर के दूत के मार्गदर्शन में, संतों के अवशेष लेकर ईश्वर की महमिा के लिए एक वशिेष स्थान पर रख दएि।

शहीद संत पॉलीक्रोनयिस का पर्व दविस

7 अक्टूबर को स्मरण कयिा जाता है

संत पॉलीक्रोनयिस, गामफनडिा क्षेत्र के[6879] , कसिान वर्दानयिास के पुत्र थे, जन्हिोंने युवाओं को ईसाई धर्म की सच्चाइयाँ सखिाईं, साथ ही पवत्रि धर्मग्रंथों को पढ़ना और उनमें लखिी बातों का पालन करना भी सखिाया। सूखे के दौरान, जब पानी दूर था, तो युवक पोलख्रिोनीउस की प्रार्थनाओं से उस क्षेत्र में एक झरना फूट पड़ा: क्योंकि अपने संयम और धार्मकिता के कारण उन्हें चमत्कार करने का वरदान मलिा था। जब वह वयस्क हुआ, तो उसने अंगूर की बेलों की खेती शुरू की और कॉन्स्टेंटनिोपल के लिए नकिल पड़ा, जहाँ उसे काम मलि गया और वह दूसरों के बराबर काम करता था, और केवल हर दो या तीन दनिों में एक बार थोड़ी सी पानी के साथ भोजन करता था। उसके मालकि इस ईश्वर के सेवक को देखकर चकति रह गया, उसकी सद्गुणों से गहराई से प्रभावति हुआ, और उसे बहुत सारा पैसा भेजकर यह कहने का नर्दिेश दयिा:

'घर जाओ और मेरे लिए प्रार्थना करना।'

पॉलीक्रोनयिस ने सोना ले लयिा और घर लौटने पर, उसने कई चमत्कार कएि; प्राप्त सोने से उसने एक चर्च का नर्मिाण कयिा। बाद में, वह एक रीडर के रूप में प्रथम सार्वभौमकि परषिद में शामलि हुआ, और बाद में उसे पुरोहति पद की दीक्षा दी गई। कांस्टेनटाइन महान के नधिन के बाद, जब एरयिन वधिर्म को बल मलिा, तो एक बार वे धर्मद्रोहीयों द्वारा पवत्रि वेदी पर पकड़े गए: वे उन पर टूट पड़े, उन्हें छुरा घोंपा, और अपनी तलवारों से उनके टुकड़े-टुकड़े कर दएि[6880] ।

[6876] यह नाम 'हपिाट्स' या शाही राज्यपालों की सेवा में रहने वाले व्यक्तयिों को दयिा जाता था। यहाँ उल्लेखति लयिोन्टयिस, जाहरि तौर पर उस देश के राजकुमार या शासक, लोक्सोरयिस की सेवा में था, जो उस समय सम्राट का राज्यपाल था।

[6877] कैपुआ – दक्षणिी इटली में वोल्टर्नो नदी के बाएं कनिारे पर एक शहर और कलिा, प्राचीन इतालवी क्षेत्र कैम्पानयिा की राजधानी, और पूरे इटली के सबसे पुराने शहरों में से एक।

[6878] संत सीज़रयिस शहीद के अवशेष रोम में होली क्रॉस चर्च में हैं, जबकि उनका पूजनीय हाथ होली ऑफ़ होलीज़ चर्च में वरिाजमान है।

[6879] गैम्फानयिा का क्षेत्र कॉन्स्टेंटनिोपल के समान ही धर्मप्रांत या जलि में था।

[6880] संत पोलख्रिोनीयस ने चौथी शताब्दी के मध्य में, कॉन्स्टेंटयिस द्वतिीय (337–362) के शासनकाल के दौरान शहादत प्राप्त की, जो कॉन्स्टेंटाइन द ग्रेट के पुत्र थे, जन्हिोंने एरयिनों का पक्ष लयिा और ऑर्थोडॉक्स का उत्पीड़न कयिा।

हमारे पूजनीय पिता सेरगियस ऑफ नुरोम, वोल्ग्डा और ओब्नोरा के चमत्कारकर्ता का जीवन

7 अक्टूबर को स्मरणोत्सव

आदरणीय सेरगियस ने अपना संन्यासी जीवन एथोस के पवित्र पर्वत पर शुरू किया[6881] । वहाँ से वे महान रूसी राज्य के मॉस्को क्षेत्र में आए और राडोनेज़ क्षेत्र में बस गए[6882] । और वे महान रूसी दिग्गज, चमत्कार-कर्ता सेरगियस ऑफ राडोनेज़ के मठ में आए[6883] । उस समय, संत सर्गियस जीवित थे और संपूर्ण ब्रह्मांड में सूर्य की तरह चमक रहे थे, अपने पुण्य कार्यों से दुनिया को प्रकाशित कर रहे थे और अपने भाइयों को ईश्वर के मार्ग पर मार्गदर्शन दे रहे थे। और नुरोम के आदरणीय सर्गियस महान रूसी दिग्गज सर्गियस के मार्गदर्शन में लंबे समय तक रहे, उनकी बातें सुनते और उनके पवित्र जीवन के तरीके का अनुसरण करते रहे। यहाँ उन्होंने कई तपस्या संबंधी करतब किए और कई पुण्य कार्य किए, यहाँ तक कि राडोनेज़ के आदरणीय चमत्कार करने वाले स्वयं ईश्वर के प्रति इतनी लगन देखकर आश्चर्यचकित हुए और आध्यात्मिक सुधार के बारे में उनसे बातचीत करना पसंद करते थे। नुरोम के परम पूज्य सेरगियस ने, इस महान संत के श्रम और पराक्रम को देखकर, उसी प्रकार उनका अनुकरण करने का प्रयास किया और सद्गुणों में उनके समान थे। नुरोम के परम पूज्य सेरगियस ने यह सब हृदय में ग्रहण किया, जैसे उपजाऊ भूमि बीज ग्रहण करती है और वर्षा के जल को सोखती है, और उन्होंने ईश्वर के लिए सौ गुना फल दिया। और इसी कारण सभी उसे प्यार करते थे और उसका सम्मान करते थे। लेकिन वह सांसारिक महिमा से प्यार नहीं करता था, क्योंकि वह इसे आत्मा के लिए हानिकारक देखता था, और उसने इस पर विचार करना शुरू कर दिया कि वह लोगों से कैसे दूर हो सकता है, और भविष्यवक्ता दाऊद के शब्दों को याद किया: *'मैं दूर चला जाऊँगा और जंगल में रहूँगा; मैं बवंडर और आँधी से बचने के लिए जल्दी से शरण लूँगा'* (भजन संहिता 54:8–9)। इस प्रकार निरंतर मनन करते हुए, वह अपने आध्यात्मिक पिता, सर्जियस के पास गए, उनके सामने जमीन पर सिर झुकाया और, गालों पर आँसू बहते हुए, अपने विचारों का उनसे इक़रार किया और रेगिस्तान में जाने का आशीर्वाद माँगा। राडोनेज़ के पूजनीय सेरजियस ने ज्ञान की दृष्टि से देखा कि वह पवित्र आत्मा से परिपूर्ण एक पात्र था, और वह संतों के लिए एक मार्गदर्शक तथा मसीह के झुंड के लिए एक अच्छा चरवाहा होगा; उन्होंने उस पर आशीर्वाद दिया, उसे रेगिस्तान में रहने के निर्देश दिए, और उसे शांति से विदा किया, यह कहते हुए:

'जाओ, मेरे बच्चे; ईश्वर तुम्हारे साथ हो।'

आदरणीय पिता से आशीर्वाद प्राप्त करने के बाद, नुरोम के धन्य सेरगियस ने प्रसन्नता व्यक्त की और, किसी को भी बताए बिना, मरुभूमि के लिए निकल पड़े। वे आत्मा में, एक पक्षी की तरह अपने घोंसले की ओर, ऊँचा उड़ गए, और उस स्थान की तलाश में निकले जहाँ ईश्वर उन्हें ले जाएँगे, अपने साथ अपनी आत्मा और शरीर के अलावा कुछ भी नहीं लेकर। उत्तरी भूमि की ओर बढ़ते हुए, वह जंगली इलाकों, जंगलों, काई और दलदलों से भरे एक क्षेत्र में पहुँचा। वहाँ

[6881] माउंट अथोस दक्षिणी यूरोप में एक संकीर्ण, पहाड़ी प्रायद्वीप है, जो द्वीपसमूह (एजियन सागर) में आगे बढ़ा हुआ है। वहाँ का मठवासी जीवन प्राचीन उत्पत्ति का है, यद्यपि यह सीरिया और फिलिस्तीन की तुलना में बाद में उभरा। अनादि काल से, एथोस पर कई स्लाव मठ रहे हैं (हिलेंडार – 12वीं शताब्दी में सर्बियाई सम्राट समियन और उनके पुत्र सावा द्वारा स्थापित; सेंट पैंटेलिमोन का मठ – 11वीं शताब्दी में रूसी लोगों द्वारा स्थापित; और अन्य)। एथोस के मठों ने स्लाव लोगों के लिए आध्यात्मिक ज्ञान का केंद्र के रूप में काम किया; वहाँ से अपने ज्ञान और तपस्या के लिए प्रसिद्ध भिक्षु स्लावों के पास आए, और वहाँ ग्रीक से स्लाव भाषा में पुस्तकों की नकल और अनुवाद किए गए। रूस (Rus') का माउंट अथोस के साथ संबंध बहुत जल्दी शुरू हो गया था – रूसी संन्यासवाद के संस्थापक, केव्स के संत एंथनी (1073 में) के साथ। 11वीं सदी से लेकर आज तक, माउंट अथोस की रूसी तीर्थयात्राएं और वहां का ठहराव सदियों से जारी रहा। माउंट अथोस के साथ संबंध विशेष रूप से 15वीं सदी के बाद से प्रगाढ़ हो गए, क्योंकि इसी समय से माउंट अथोस के बारे में रूसी तीर्थयात्रियों के पहले विवरण मिलते हैं। पूर्वी ऑर्थोडॉक्स दुनिया के सबसे सम्मानित पवित्र स्थलों में से एक होने के नाते, माउंट अथोस पर हर साल रूस, बाल्कन प्रायद्वीप और तुर्की के एशियाई क्षेत्रों से हजारों तीर्थयात्रियों द्वारा यात्रा की जाती है। वर्तमान में, माउंट अथोस पर 20 बड़े मठ, कई स्केट और 700 तक की संख्या में अनगिनत व्यक्तिगत सेल हैं।

[6882] प्राचीन राडोनेज़ के स्थल पर गोरॉदिश्चे या गोरॉदोक गाँव स्थित है, जो मॉस्को और ट्रिनिटी-सर्गीय लावरा के बीच, बाद वाले से 12 वर्स्ट की दूरी पर है। (नोट: 14वीं शताब्दी की शुरुआत)।

[6883] 14वीं शताब्दी के मध्य में सम्माननीय सेरगियस ऑफ़ राडोनेज़ के चारों ओर भिक्षुओं का जमावड़ा होने लगा। सम्माननीय सेरगियस का 25 सितंबर 1392 को निधन हो गया।

उसे ओब्नोर्स्क जलि में, नुरमे नदी पर[6884] , एक जगह मलिी, जहाँ उसने बाद में एक मठ बनवाया। उसी क्षेत्र में महान पॉल, ओब्नोर्स्की चमत्कारकर्ता[6885] रहते थे, जो उस समय अभी भी एकांत में, उसी नुरमे नदी पर एक भीतरी रेगस्तिान में रह रहे थे: उनके पास अभी तक कोई मठ या मसीह में कोई भाईचारा नहीं था।

उस स्थान पर पहुँचकर और उसका नरीक्षण करने पर, पूजनीय सर्जयिस को वह बहुत भाया और उन्होंने ईश्वर का धन्यवाद कयिा कि उन्होंने उनकी प्रार्थनाओं को अनसुना नहीं कयिा, बल्कि उन्हें इस स्थान पर लाया था। और उन्होंने भवष्यिवक्ता दाऊद के वचन कहे: *'यह मेरी वश्रिाम-स्थली है सदा के लिए; मैं यहाँ नविास करूँगा, क्योंकि मैंने इसे चाहा है*' (भजन संहति 131:14), और फरि: *'हे सेनाओं के यहोवा, तेरे नविास कतिने सुन्दर हैं!' मेरी आत्मा यहोवा के आंगनों के लिए तरसती है; मेरा मन और मेरा शरीर जीवते परमेश्वर के लिए पुकारते हैं। यहाँ तक कि कौवा को भी घर मलि जाता है, और गौरैया को अपने लिए घोंसला, जहाँ वह अपने बच्चों को पाल सके, हे सेनाओं के यहोवा, मेरे राजा और मेरे परमेश्वर, तेरी वेदयिों के पास!"*

'धन्य हैं वे जो तेरे भवन में वास करते हैं; वे नरिन्तर तेरी स्तुति करेंगे। धन्य है वह मनुष्य जसिका बल तुझ में है, और जसिका मन तुझ पर लगा है। जब वे रोने की घाटी से होकर गुजरते हैं, तो वे उसे झरनों का स्थान बना देते हैं; वर्षा भी उस पर आशीषों की भरमार कर देती है... हे सेनाओं के प्रभु! धन्य है वह मनुष्य जो तुझ पर भरोसा रखता है!" (भजन संहति 83:2–7, 13)।

और उस आदरणीय व्यक्ति ने सर्व-दयालु ईश्वर से प्रार्थना करना आरंभ कयिा: 'हे सर्वशक्तमिान प्रभु, हमारे पूर्वजों के परमेश्वर, जन्होंने इस्राएल को दासत्व से और तीनों युवकों को आग की भट्टी से बचाया (नरि्ग. 13:1–22, दानयि. 3:1–100), इस स्थान पर दृष्टि डालो और इसे धन्य करो; यह अनुग्रह करें कि मैं इस स्थान पर अपने जीवन के सभी दनिों तक आपकी सेवा करूँ; क्योंकि मैं हमेशा के लिए आपकी सेवा करने के लिए यहाँ आया हूँ, ताकि मेरे द्वारा भी आपका परम पवत्रि नाम महमिामय हो, अब और हमेशा और युगों-युगों तक। आमीन।"

प्रार्थना करने के बाद, संत ने उस स्थान पर एक क्रूस स्थापति कयिा और एक चैपल तथा एक छोटी कोठरी का नरि्माण कयिा। और वह धन्य व्यक्ति वहाँ कई वर्षों तक रहे, और उन्होंने कई तपस्वी कर्म कए। ईश्वर को प्रसन्न करते हुए, उन्होंने एक दैवी जीवन जयिा, सतर्कता और पूरी रात जागने के माध्यम से अपने शरीर को वश में कयिा, और प्रार्थना, उपवास और सद्गुण के द्वारा शत्रु पर वजिय प्राप्त की। इस प्रकार उन्होंने बड़ी धैर्यता से परश्रिम कयिा, और रेगस्तिान में राक्षसों और अज्ञानी लोगों द्वारा उन पर थोपी गई पीड़ाओं को सहन कयिा। जब संत ऐसे तपस्या का जीवन जी रहे थे और प्रभु की सेवा कर रहे थे, तो शैतान—जो आरंभ से ही मानव जाति से घृणा करता आया है—उनके सद्गुण से ईर्ष्यालु हो गया और उनके वरिुद्ध योजनाएँ बनाने लगा, उसने अज्ञानी, मूर्ख और दुष्ट लोगों को संत के वरिुद्ध भड़काया, ताकि उनके द्वारा उसे भयभीत करके उस स्थान से भगा दयिा जाए। लेकनि ईश्वर, जो हमेशा अपने सेवकों की मदद के लिए तैयार रहते हैं, ने उस धन्य व्यक्ति को नहीं छोड़ा।

एक दनि, दुष्ट और उन्मत्त डाकुओं ने संत पर हमला कयिा। उन्होंने उन्हें पकड़कर बेरहमी से पीटा, जसिसे वे अपने कई घावों से लगभग प्राण ही त्यागने वाले थे। उन्हें मुश्कलि से जीवति छोड़कर, वे दुष्ट डाकू चले गए। संत, अपने घावों से मुश्कलि से उबरकर, उन्होंने स्वर्ग की ओर अपने हाथ उठाए और आँसुओं के साथ कहा:

'हे प्रभु और अति दयालु राजा, स्वर्ग से उन घावों पर दृष्टि डालिए जो मुझे आपके लिए इस मरुभूमि में आ जाने के कारण लगे हैं। मैं आपको धन्यवाद देता हूँ कि आपने मुझे अपने चुने हुओं के दुख में सहभागी होने और आपके पवत्रि नाम के लिए अपने शरीर पर घाव उठाने के योग्य समझा है। मुझे अपने संतों का भाग प्रदान करें। देखो, मेरे शत्रु कैसे बढ़ गए हैं और वे मुझसे अन्यायपूर्ण घृणा करते हैं। मेरी आत्मा की रक्षा करो और मुझे बचा लो, ताकि मैं लज्जति न हो जाऊँ, क्योंकि मैंने आप पर अपना भरोसा कयिा है।

इस प्रार्थना के बाद, धन्य व्यक्ति को अपनी पीड़ा से राहत महसूस हुई और उसने प्रभु का धन्यवाद कयिा कि उसे मसीह के प्रति अपने प्रेम के कारण, अपने शरीर पर घाव पाने के लिए योग्य समझा गया था। और उसने अपने आप से कहा:

[6884] नूरमा नदी (वोलोग्दा प्रांत के ग्र्याज़ोव्स्की जलि में) ओब्नोरा नदी की एक सहायक नदी है, जो वोलोग्दा और यारोस्लाव प्रांतों से होकर बहती है और कोस्त्रोमा नदी में मलि जाती है।

[6885] आदरणीय पॉल ऑफ ओब्नोरा का 10 जनवरी 1429 को नधिन हो गया।

'मैं इस स्थान को नहीं छोड़ूँगा, भले ही शत्रु अपनी चालाकी का अंधकार मेरे विरुद्ध खड़ा कर दे। मैं इसी स्थान पर मरना चाहता हूँ, क्योंकि मसीह की खोज में ही मैं यहाँ आया था।'

इस प्रकार संत ने प्रभु के वचन से स्वयं को मजबूत करते हुए कहा: *'और जो शरीर को तो मार सकते हैं, पर आत्मा को नहीं मार सकते, उनसे मत डरो; बल्कि उस से डरो, जो आत्मा और शरीर दोनों को गेहन्ना में नाश कर सकता है। क्या दो छोटे पक्षी एक पैसा में नहीं बिकते? फिर भी तुम्हारे पिता की इच्छा के बिना उनमें से एक भी नहीं गिरेगा; और तुम्हारे सिर के सब बाल भी गिने हुए हैं; इसलिये मत डरो: तुम कई छोटे पक्षियों से बढ़कर हो। परन्तु जो कोई भी प्रकार अन्त तक सह लेगा, वही उद्धार पाएगा* (मत्ती 10:28–31, 22)।

इन सब बातों को हृदय में रखकर, धन्य व्यक्ति मज़बूत हो गया और मसीह के एक पराक्रमी सिपाही की तरह स्वयं को सशस्त्र कर लिया, और उसने अपनी आत्मा को अदृश्य आत्माओं की सेना के विरुद्ध खड़ा किया; और उसने महान पराक्रमी कार्यों के लिए यत्न किया, श्रम में श्रम, उपवास में उपवास, प्रार्थना में प्रार्थना जोड़ते हुए, स्वर्गीय राजा के पुरस्कार की आशा करते हुए।

परन्तु दुष्टात्माओं का राजकुमार, शैतान, एक बार फिर से संत के विरुद्ध सिंह की भाँति गिरजा और उसने उनकी आत्मा को अनेक क्लेशों से पीड़ित किया। फिर भी संत ने चालाक राक्षसों और अधर्मी लोगों द्वारा दी गई इन सभी परीक्षाओं को आनंदपूर्वक सहन किया, उनकी आत्मा अटूट थी, जैसे एक मजबूत अडामेंट[6886] । उनकी अपमानित दशा को देखकर, दुष्ट राक्षस ने एक बार फिर से चालाक और दुष्ट डाकुओं को संत के विरुद्ध भड़काया, और वह चाहता था कि वे इसी जगह पर उन्हें दर्दनाक मौत दें।

और इस प्रकार, एक रात, दुष्ट डाकुओं ने संत पर एक बार फिर हमला किया। उस समय, आशीषित व्यक्ति अपनी कोठरी में प्रार्थना कर रहे थे, ईश्वर से अपनी रात की विनती कर रहे थे। लेकिन दुष्ट और क्रूर डाकू, जंगली जानवरों की तरह, उस पर टूट पड़े, उसे उसकी कोठरी से बाहर खींचने और भेड़ियों की तरह उसके टुकड़े-टुकड़े करने की कोशिश कर रहे थे। उन्हें आते सुनकर, संत ने अपनी आँखें उठाकर ईश्वर से प्रार्थना की और आँसुओं के साथ कहा:

'हे मेरे प्रभु परमेश्वर, मुझे न छोड़िए; मुझ से मुंह न मोड़िए, परन्तु मेरी सुनिए, मेरी सहायता कीजिए और मेरी आत्मा को बचा लीजिए।'

परन्तु प्रभु अपने सेवकों की सहायता करने के लिए सदैव तत्पर रहते हैं, जैसा कि भविष्यवक्ता ने कहा: *'देखो, प्रभु की दृष्टि उन पर है जो उससे डरते हैं और जो उसकी दया में आशा रखते हैं, ताकि वह उनके प्राणों को मृत्यु से बचाए और अकाल के समय में उन्हें बनाए रखे'* (भजन संहिता 32:18-19)।

जब संत ने प्रार्थना में मदद के लिए परमेश्वर को पुकारा, तो दुष्ट डाकू तुरंत भय से ग्रस्त हो गए और अपनी बुरी योजना को अंजाम देने में हिचकिचाए। परमेश्वर का भय भाले की तरह उनके हृदयों को भेद गया, और परमेश्वर के न्याय से डरकर, वे उस स्थान से भाग गए, और न तो कभी वहाँ लौटे और न ही संत को कोई हानि पहुँचाई। और भविष्यवक्ता दाऊद का वचन उन पर पूरा हुआ: *'दुष्ट तलवार खींचते हैं और अपना धनुष तानते हैं, ताकि वे गरीबों और दरिद्रों को गिरा दें, और धार्मिकता के मार्ग पर चलने वालों को भेद डालें; उनकी तलवार उनके ही हृदय में घुस जाएगी, और उनके धनुष टूट जाएंगे; वे अचानक गिर पड़ेंगे'* (भजन संहिता 36:14-15, 63:8)।

यह सब संत की प्रार्थना से ही संभव हुआ। क्योंकि संतों की प्रार्थना पृथ्वी पर ईश्वर की दया को आकर्षित करती है, उनकी सहायता—एक भस्म कर देने वाली आग और आतंक—क्योंकि प्रभु अपने विरोधियों में आतंक भर देते हैं और उन्हें एक अदृश्य आग से जला देते हैं। हमें इस पवित्र पिता में प्रकट हुई ईश्वर की शक्ति और सहायता पर आश्चर्य करना चाहिए, क्योंकि प्रभु ने अपने सेवक को हथियारों या सेना से नहीं, बल्कि अपनी सामर्थी दक्षिण भुजा और बाहु से बचाया; प्रार्थना में विश्वास के हथियार के द्वारा, उन्होंने ऊपर से, अदृश्य रूप से, विजय प्रदान की। इस हथियार से लैस होकर, सभी संतों को ईश्वर की शक्ति प्रदान की गई; उन्होंने राज्यों पर विजय प्राप्त की, सिंहों के मुँह बंद कर दिए, आग बुझाई, तलवार की धार से बचे, अपनी दुर्बलता में बलवान बने, और शत्रु की सेनाओं को भागने पर मजबूर कर दिया, जैसा कि प्रेरित कहते हैं: *'हमारे पास कुछ भी नहीं, फिर भी हमारे पास सब कुछ है'* (2 कुरिन्थियों 6:10)। उनके साथ, हमें भी इस संत पर आश्चर्य करना चाहिए, जिन्होंने न तो हथियार से और न ही शक्ति से, बल्कि आशा और

[6886] अडिग (हीरा) – एक ऐसा पत्थर जो इतना कठोर होता है कि वह स्वयं को बिना कोई नुकसान पहुँचाए, अन्य पत्थरों को खरोंच सकता है और काट सकता है। धार्मिक साहित्य में, यह नाम चर्च के कई पादरियों और शिक्षकों को दिया गया है जो अपने विश्वास और चरित्र की दृढ़ता के लिए प्रसिद्ध हुए।

प्रार्थना से, उन सभी पर विजय प्राप्त की जो उनके विरुद्ध उठे थे। क्योंकि जब वे क्रूर डाकू संत के निवास में घुसे, तो उनके हाथों में जानलेवा हथियार थे, और वे उन हथियारों से संत पर विजय प्राप्त करना चाहते थे; परन्तु उनके पास ऐसा कुछ भी नहीं था, बल्कि उनके हाथों में केवल प्रार्थना की एक छोटी माला थी, जबकि उनके हृदय और होठों पर अश्रुपूर्ण पश्चाताप और प्रार्थना थी। और तुरंत ही उसने उन पर और उनके हथियारों पर विजय प्राप्त कर ली, और संत की प्रार्थना ही उसकी जीत और विजय थी: *'धर्मी व्यक्ति की प्रार्थना शक्तिशाली और प्रभावशाली होती है। धर्मी लोगों की आत्माएँ परमेश्वर के हाथ में हैं, और कोई यातना उन्हें छू नहीं सकती'* (याकूब 5:16; बुद्धिमान 3:1)।

आदरणीय सेरजियस, यह देखकर कि ईश्वर की कृपा उन पर बनी हुई थी, उन्होंने उपवास और प्रार्थना के प्रति और भी अधिक उत्साह के साथ स्वयं को समर्पित कर दिया, और परिश्रम में परिश्रम, अग्नि में अग्नि, इच्छा में इच्छा और उत्साह में उत्साह जोड़ते गए। धर्मी लोगों के भविष्य के आनंद को अपने हृदय में धारण करते हुए, उन्होंने अथक परिश्रम किया और पूरी रात जागने तथा उपवास के द्वारा अपने शरीर को वश में किया, जबकि उनकी आत्मा सदैव ऊँची चीज़ों की ओर उन्मुख रहती थी।

ईश्वर, अपनी कृपा में दयालु, ने धन्यजन की प्रार्थनाओं, परिश्रमों और पुण्यों पर ध्यान दिया। यह न चाहकर कि वह धन्य व्यक्ति और अधिक समय तक लोगों द्वारा अज्ञात और अनदेखा रहे, जैसे उनकी दृष्टि से छिपा हुआ हो, बल्कि यह इच्छा रखकर कि वह एक ऊँचे स्थान पर स्थित मजबूत किले की तरह प्रकट हो, प्रभु ने उस धन्य व्यक्ति को सभी के सामने प्रकट किया और उसे उजागर किया, जैसे वह अब तक छिपा हुआ एक प्रज्वलित दीपक हो। और इस प्रकार प्रभु ने संत को सभी के लिए प्रकट कर दिया, ताकि जो आते हैं वे किला देख सकें और जो देखते हैं वे प्रकाश देख सकें। और संत की कीर्ति पूरे रूस के प्रदेशों में फैल गई; कई लोग अपनी आत्मा के कल्याण के लिए उनके पास आने लगे, जबकि अन्य लोग उनके लिए शरीर के लिए आवश्यक वस्तुएँ लाए। कई मठों से भिक्षु संत के पास आए और उनके साथ रहने लगे, वे उनके तपस्वी कार्यों से सीख रहे थे। तथापि, पूजनीय सर्जियस ने सभी का आनंदपूर्वक स्वागत किया, मानो उन्हें ईश्वर ने भेजा हो, और उन्होंने सभी की एक प्रेमपूर्ण पिता की तरह देखभाल की, प्रेरित के वचनों के अनुसार: *'मैं सभी के लिए सब कुछ बन गया हूँ ताकि मैं हर संभव तरीके से कुछ लोगों को बचा सकूँ'* (1 कुरिन्थियों 9:22)। ईश्वर की कृपा से, संत के साथ भाइयों की संख्या चालीस पुरुषों तक बढ़ गई, हालांकि उनके पास न तो कोई चर्च था और न ही कोठरियाँ। तब संत ने एक चर्च और कोठरियाँ बनाने की शुरुआत की। और उन्होंने सर्व-दयालु उद्धारकर्ता के नाम पर एक चर्च का निर्माण किया, उनके सम्मानित और जीवन-दायक क्रूस की उत्पत्ति की स्मृति में; उन्होंने कोठरियाँ भी बनाईं और मठ की स्थापना की।

उस समय, उसी नूरमा नदी पर, भीतरी रेगिस्तान में, हमारे महान पिता पॉल एक मौन और एकांत जीवन व्यतीत कर रहे थे। वह यहाँ महान रूसी दिग्गज सर्गियस की उसी गौरवशाली लावरा से आए थे, जहाँ से आदरणीय सर्गियस, नूरमा के चमत्कार करने वाले संत, भी आए थे। जबकि वे अभी भी राडोनेज़ के आदरणीय सर्गियस के मार्गदर्शन में थे, संत पॉल ने उनसे ध्यानपूर्वक ईश्वर के बारे में सीखा। राडोनेज़ के आदरणीय सर्गियस के आशीर्वाद से, महान पॉल इस रेगिस्तान में चले गए, जहाँ उन्होंने बाद में एक मठ की स्थापना की। नुरोम के धन्य सर्गियस का मठ महान पॉल के निवास से लगभग चार वर्स्ट की दूरी पर था। नुरोम के पूजनीय चमत्कार-कर्ता अक्सर एक-दूसरे से मिलते थे और आध्यात्मिक सुधार के सभी मामलों पर बातचीत करते थे, तथा अपने आध्यात्मिक प्रयासों में एक-दूसरे को प्रोत्साहित करते थे। इसके अलावा, आदरणीय पॉल ने धन्य सेरगियस के पवित्र हाथों से पवित्र सहभाग—जीवन-दायक रहस्य, हमारे ईश्वर मसीह का शरीर और रक्त—प्राप्त किया, और अपने सभी विचारों का इक़रार उस धन्य व्यक्ति से किया; और आदरणीय सेरगियस महान पॉल के आध्यात्मिक पिता थे। इसलिए, वे हर मामले में एक-दूसरे के साथ अपने विचार साझा करते थे, क्योंकि वे एक ही प्रभु के सेवक और अनुयायी थे। रेगिस्तान की कठिनाइयों और राक्षसों के भयों के बारे में एक-दूसरे से परामर्श करते हुए, उन्होंने अपने दुखों को साझा किया और आत्मा तथा परमेश्वर के वचन से बल प्राप्त किया, तथा भविष्य की आशीर्वादों की आशा में आश्वासन पाया[6887] ।

एक दिन, परमपूज्य पॉल अपनी कोठरी से निकलकर मरुभूमि में घूमने चले गए। जब वे लौटे, तो उन्होंने देखा कि उनकी कोठरी को ऊपर से नीचे तक लूट लिया गया था। यह देखकर, हमारे महान पिता पॉल, एक मनुष्य के रूप में, भयभीत

[6887] आदरणीय पॉल, संत सेरगियस का इतना सम्मान करते थे कि वे उनके अपने निवास से वापसी के रास्ते में दो-तिहाई से अधिक दूरी तक साथ चलते थे। वह स्थान जहाँ संत आमतौर पर विदा होते थे, एक चैपल से चिह्नित है।

हो गए। दुखी और डरे हुए, वे परमपूज्य सेरजियिस के पास गए और उन्हें जो हुआ था, वह बताया। हालाँकि, पूजनीय सेरजियिस ने इसे एक दैवीय भ्रम माना और कहा:

'जाओ, भाई पॉल। तुम अपनी कोठरी को सुरक्षित पाएगा।'

और उन्होंने उन्हें भविष्यवाणी का वचन याद दिलाया: *'परमेश्वर हमारा शरणस्थान और बल हैं'* (भजन संहिता 45:2)।

वास्तव में, जब महान पॉल अपनी कोठरी में लौटे, तो उन्होंने उसे ठीक और सुरक्षित पाया, ठीक वैसे ही जैसे आदरणीय सेरजियिस ने कहा था।

एक अवसर पर, पूज्य सेरजियिस संत पॉल के पास एक आध्यात्मिक वार्ता के लिए आए और उन्हें अपनी कोठरी के पास खड़े हुए पाया, जो अपने हाथों से पक्षियों को दाना खिला रहे थे। बहुत से छोटे-छोटे पक्षी पूज्यनीय के सिर और कंधों पर बैठे थे, जबकि उनके सामने जंगली जानवर—एक भालू, एक लोमड़ी और एक खरगोश—खड़े थे। इस प्रकार, मूक प्राणी भी उनके प्रेम से आकर्षित होकर तपस्वी के पास आ गए।

धर्मपरायणता के कई कठिन कार्यों और धार्मिक कृत्यों के बाद, पूजनीय सेरजियिस बहुत वृद्ध हो गए। अपनी वृद्धावस्था और कठिन कार्यों के कारण, वे गंभीर रूप से बीमार पड़ गए और लंबे समय तक पूरी तरह से थके हुए रहे। पूजनीय सेरजियिस की बीमारी के बारे में जानकर, महान पॉल उनसे मिलने आए, यह सोचकर कि उनका सांसारिक जीवन से शाश्वत जीवन में प्रस्थान निकट है। अपने मित्र और विश्वासपात्र को खोने के डर से, पॉल जोर-जोर से रो पड़े और उनका आशीर्वाद और क्षमा याचना की। पहले तो, उनकी आँखों में आँसू भर आने के कारण वे बोल नहीं पाए। अंत में, अपनी सिसकियों को रोकते हुए, संत पॉल ने पूजनीय सेरजियिस से कहा कि उनके मरुस्थल में एक निश्चित स्थान पर, नदी नूरमे के पास एक पहाड़ के नीचे, उन्होंने एक प्रचंड घंटी की आवाज सुनी थी और एक अकथनीय प्रकाश देखा था, जो सूर्य की किरणों से भी अधिक चमक रहा था। यह सुनकर, पूजनीय सेरजियिस ने इसे महज एक संयोग नहीं माना, बल्कि इसे ईश्वर का कार्य माना।

'उस स्थान पर,' आदरणीय ने कहा, 'परम पवित्र त्रिमूर्ति की महिमा के लिए एक मठ बनाया जाएगा, और उस स्थान पर बहुतों का उद्धार होगा।'

इस प्रकार धन्य व्यक्ति ने भविष्यवाणी की। इसके बाद, नूर के चमत्कार करने वालों ने आँसुओं के साथ एक-दूसरे को चूमा, और महान पॉल अपने भीतरी रेगिस्तान में चले गए। उस समय से, उन्होंने भाइयों का स्वागत करना और एक मठ का निर्माण करना शुरू कर दिया[6888] । ठीक उसी स्थान पर जहाँ उन्होंने घंटी की आवाज सुनी थी और प्रकाश देखा था, संत पॉल ने नुरोम के चमत्कार करने वाले सर्गियिस की भविष्यवाणी के अनुसार, परम पवित्र जीवन-दायक त्रिमूर्ति के नाम पर एक चर्च का निर्माण किया।

अंत में, धन्य सेरजियिस गंभीर बीमारी और वृद्धावस्था से पूरी तरह से थक गए थे। यह महसूस करते हुए कि उनका अंत निकट है और ईश्वर के पास उनके प्रस्थान की पूर्वानुमान लगाते हुए, उन्होंने मसीह के प्रति समर्पित सभी भाइयों को बुलाया। जब वे आए और अपने पिता को अंतिम क्षणों के करीब देखा, तो वे रो पड़े और उनके पैरों पर गिर पड़े, और कहा:

'हमसे न जाएँ, हे पवित्र पिता, बल्कि हमारे साथ थोड़ी देर और ठहरें।'

तथापि, पूजनीय पिता ने स्वर्ग की ओर अपनी दृष्टि उठाकर उनसे कहा:

'भाइयों, मेरे सांसारिक जीवन का अंत निकट आ गया है, और मुझे देह के सामान्य कर्तव्य को पूरा करना है। प्रभु की यही इच्छा है। मैं तुम्हें, मेरे बच्चों, ईश्वर और परमेश्वर की अति पवित्र माता के हवाले करता हूँ। शांति के ईश्वर और उनकी अति पवित्र माता समय के अंत तक तुम्हारे साथ रहें, और वे तुम्हें अपनी कृपा में सुरक्षित रखें तथा तुम्हें बल प्रदान करें। और तुम, मेरे बच्चों, मेरे जाने पर शोक मत करो, बल्कि ईश्वर के प्रेम में निवास करो और उनकी आज्ञाओं का पालन करो, हमारे प्रभु मसीह के वचनों को भय और कांपते हुए स्मरण करते हुए: *'जिसके पास मेरी आज्ञाएँ हैं और वह उन्हें मानता है, वही मुझ से प्रेम करता है'* (यूहन्ना 14:21)। ईश्वर के भय से अपने हृदयों की रक्षा करो, ताकि वह तुम्हें हर अच्छे काम में मार्गदर्शन दे, क्योंकि *'प्रभु का भय ज्ञान की शुरुआत है'* (नीतिवचन 1:7); एक दूसरे को नम्रता

[6888] संत सेरजियिस का मठ, जो वोल्गोडा से 60 वर्स्ट दूर स्थित था (1764 में बंद हो गया), नदी के नीचे की ओर पावलोव्स्की मठ से 4 वर्स्ट दूर था।

से सुसज्जित करो, झूठी बातों से दूर रहो, एक दूसरे से सत्य बोलो, निंदा से घृणा करो, और शत्रुता से बचो। परन्तु यदि तुम में से किसी के मन में क्रोध रहता हो, तो उसे प्रेम से समझाओ, क्योंकि कहा गया है: *'क्रोध में रहकर भी सूर्य को अस्त न होने दो'* (इफिसियों 4:26)। अपने आध्यात्मिक अगुवों की आज्ञा मानो, क्योंकि वे तुम्हारी आत्माओं की रखवाली करते हैं, जैसा कि उन्हें तुम्हारे लिए परमेश्वर के सामने अपना हिसाब देना है। आलस्य के बिना कलीसिया की सेवा करो। यदि तुम इसी प्रकार जीओगे, तो तुम धन्य होओगे।

अपने पिता से यह अंतिम आज्ञा सुनकर, भाइयों ने अपनी आँखों से आँसुओं की नदी बहा दी। जब परम आदरणीय ने अपनी सारी शक्ति खो दी थी और अपने अंतिम साँस के करीब थे, तो उन्होंने हमारे ईश्वर मसीह के शरीर और रक्त के पवित्र रहस्यों को ग्रहण किया। पवित्र रहस्यों को ग्रहण करने के बाद, उन्होंने अपने हाथ स्वर्ग की ओर उठाए और एक गुप्त प्रार्थना अर्पित की। प्रार्थना करने के बाद, संत सेरजियस ने अपने हाथों को छाती पर क्रॉस के चिन्ह में जोड़कर अपना प्राण प्रभु को सौंप दिया। इस प्रकार संत अनंत जीवन में प्रवेश कर गए। और ईश्वर के पास जाने के बाद उनका चेहरा इतना तेजस्वी था कि कोई भी कह सकता था कि वे मरे नहीं हैं, बल्कि नींद में विश्राम कर रहे हैं, क्योंकि उनका जीवन निर्दोष था। अपने पिता, आदरणीय सेरजियस, के निधन की खबर पाकर, उनके शिष्य रोए और विलाप करने लगे, क्योंकि उन्होंने ईश्वर के अपने चरवाहे और शिक्षक को खो दिया था। कुछ लोग, उसके शव-पेटिका पर खुद को फेंकते हुए, सिसकियों के साथ उनके पवित्र शरीर को चूमने लगे, मानो वे संत के शरीर से अलग होना ही नहीं चाहते थे। अन्य लोग, दूर खड़े होकर, गहरी भावना के साथ परम पूजनीय के शरीर को निहार रहे थे, आँसुओं से नहाए हुए और विलाप कर रहे थे। उनके पवित्र अवशेषों को लेकर, विलाप करते हुए भाइयों ने उन्हें शव-स्तोत्रों और मोमबत्तियों की रोशनी के साथ अपने सिर पर चर्च में ले गए, और उन्होंने अपने मेढ़े के परिश्रमी और पवित्र शरीर को सम्माननीय जीवन-दायक क्रूस के आरंभ के चर्च के पास दफनाया, जिसे पूजनीय ने स्वयं स्थापित किया था[6889] । आदरणीय सर्जियस का निधन 7 अक्टूबर 1421 को, सम्माननीय शहीदों सर्जियस और बक्कस की स्मृति के दिन हुआ। इस स्थान पर हमारे आदरणीय पिता सर्जियस के श्रम और धैर्य ऐसे थे; उनके कष्ट और परीक्षाएँ भी ऐसी ही थीं। जैसे हम संत के जीवन का सम्मान करते हैं, वैसे ही हमें उनके गुणों का अनुकरण करना चाहिए और उनके श्रम तथा ईश्वर में उनके पवित्र जीवन-पथ को अपने हृदय में अंकित करना चाहिए। यदि हम ऐसा करते हैं, तो हमें ईश्वर के समक्ष उनमें एक अनवरत मध्यस्थ मिलेगा।

पहाड़ी पर बसा एक नगर के छिपा रहना असंभव है, और जलता हुआ दीपक भी सभी से छिपे नहीं सकता। न ही यह संभव है कि संतों के सद्गुण लंबे समय तक धरती के नीचे, जैसे दबे हुए हों, छिपे रहें और कई वर्षों तक भूल-भुलैया की गहराइयों में डूब जाएँ; क्योंकि प्रभु उन्हें सभी के सामने खुले तौर पर प्रकट करना चाहते हैं।

हमारे पवित्र पिता सर्जियस को भी उनकी मृत्यु के बाद यह दिव्य वरदान प्राप्त हुआ।

संत के निधन के कई वर्षों बाद, ईश्वर की व्यवस्था से, निम्नलिखित हुआ:

नुरोम मठ में निकिफिोर नाम का एक पवित्र व्यक्ति रहता था। एक रात, प्रार्थना की निगरानी के बाद, वह हल्की नींद में पड़ गया और उसने संत सेरगियस को देखा, जो उसके पास आए और कहा:

'मठाध्यक्ष और भाइयों से कहो कि वे मेरे दफ़न स्थल को साफ़ करें, क्योंकि प्रभु नहीं चाहते कि यह अज्ञात और उपेक्षित रहे।'

तब भाई निकिफिोर ने पूछा:

'आप कौन हैं, मेरे स्वामी?'

संत ने उत्तर दिया:

'मैं पापी सेरजियस हूँ, जो इस पवित्र स्थान का मठाधीश था।'

संत ने उसे अपनी समाधि का स्थान भी दिखाया।

हालाँकि, निकिफिोर ने इस दर्शन को एक सपने समझ लिया और मठाधीश से कुछ नहीं कहा। फिर संत दूसरी बार उसके सामने प्रकट हुए। निकिफिोर ने दूसरी बार भी इस दर्शन को अनदेखा कर दिया। संत तीसरी बार उसके सामने प्रकट हुए और फटकारते हुए कहा:

'यदि तुम वही नहीं करोगे जो मैंने तुमसे कहा है, तो तुम्हें दंड के लिए शैतान के हाथों में सौंप दिया जाओगे।'

[6889] आज, संत की अवशेष चर्च में विराजमान हैं।

वरष्ठि ने इस पर भी ध्यान नहीं दयिा, और फरि से इस दृष्टि को एक सपने के रूप में खारजि कर दयिा। फरि वह अचानक लकवाग्रस्त हो गया। मठाधीश और भाइयों ने उसके ठीक होने के लिए एक प्रार्थना सभा की। अपनी बीमारी से कुछ ठीक होने पर, नकिफिोर ने मठाधीश और भाइयों को वह सब कुछ बताया जो उसके साथ हुआ था और आँसुओं के साथ पश्चाताप कयिा। उसने बताया कि संत कैसे उसे दखिाई दिए थे और उन्होंने उसे अपनी समाधि के स्थान के बारे में मठाधीश और भाइयों को बताने का आदेश दयिा था, कैसे उसने उस दर्शन को सपना समझकर अवज्ञा की थी, कैसे संत दूसरी और तीसरी बार उसे दखिाई दिए थे, और उसे वही करने का आदेश दयिा था, और कैसे उसे अपनी अवज्ञा के लिए दंडति कयिा गया था। और नकिफिोर ने उन्हें वह स्थान दखिाया जहाँ संत का पवत्रि शरीर पड़ा था। तब मठाधीश और भ्राताओं ने नकिफिोर को परम पूज्य सेरजयिस के दफन स्थल पर ले गए – और वहाँ, संत की प्रार्थनाओं के द्वारा, नकिफिोर अचानक अपनी बीमारी से ठीक हो गया, और उसने परम पूज्य सेरजयिस के मठ में, उनके ताबूत पर रोते हुए अपना जीवन समाप्त कयिा।

मठाध्यक्ष और भ्राताओं ने जल्द ही उस स्थान को साफ़ कर दयिा जहाँ नकिफिोर ने संकेत कयिा था कि संत का ताबूत पड़ा था। यह ताबूत चर्च के बरामदे के नीचे स्थति था। और उन्होंने संत की कब्र के ऊपर एक अवशेष-कोश स्थापति कयिा, एक समाधि बनाई और उसे पवत्रि प्रतमिाओं और मोमबत्तयिों से सजाया। और उस समय से संत की समाधि से अनेक चमत्कार और उपचार हुए – दैत्यग्रस्त लोग ठीक हुए, अंधों को दृष्टि वापस मलिी, लंगड़ों को चलने की क्षमता प्राप्त हुई, और हर प्रकार की बीमारयिों से पीड़ति लोगों को राहत मलिी। संत के चमत्कार अनगनित थे; जैसे एक अक्षय झरना हमेशा पानी देता है, वैसे ही इस संत से आध्यात्मकि और शारीरकि दोनों तरह के रोगों का उपचार हमेशा होता रहा। कोई भी उनके सभी चमत्कारों को नहीं गनि सकता, लेकनि उनमें से कुछ यहाँ बताए गए हैं।

लेडम क्षेत्र में रहने वाला इवान नाम का एक व्यक्ति, जिसे चुखोलस्तिोव उपनाम से जाना जाता था, इतना गंभीर रूप से बीमार पड़ गया कि वह लंबे समय तक पूरी तरह से लकवाग्रस्त पड़ा रहा। जब वह अपनी बीमारी में बस्तिर पर पड़ा बहुत कष्ट सह रहा था, तो अचानक उसे हल्की नींद आ गई। और अपने सपने में उसने एक तेजस्वी साधु को अपनी ओर आते देखा और कहते सुना:

'इवान, तुम इतने सालों से अपने बस्तिर पर इतनी पीड़ा सहते हुए क्यों पड़े हो? अब तुम्हारा समय आ गया है – ओब्नोरा में सर्व-दयालु उद्धारकर्ता के मठ जाओ और सर्गयिस की कब्र पर प्रार्थना करो; वह ईश्वर से तुम्हारे लिए मध्यस्थता करेगा, और तुम ठीक हो जाओगे। लेकनि यह प्राप्त करने के लिए, तुम्हें हमेशा ब्रह्मचारी रहना होगा।'

वह व्यक्ति जाग उठा और, उस दविय दर्शन पर वशि्वास करके, उसने आदेश दयिा कि उसे सर्व-दयालु उद्धारकर्ता के मठ में, पूजनीय संत की कब्र पर ले जाया जाए। कब्र पर प्रार्थना करने के बाद, संत के मध्यस्थता से वह अपनी बीमारी से ठीक हो गया, और आनंदति होकर ईश्वर की स्तुति करता हुआ अपने घर लौट आया।

लेज्स्की वोल्चोक के नविासी इसडिोर, अपने बस्तिर पर बीमार पड़ा था – उसके जबड़े लकवाग्रस्त थे, और वह कई वर्षों से मूक और लकवाग्रस्त था। जब इज़डिोर को यह पता चला कि परम पूज्य सर्गयिस के माध्यम से ईश्वर मानव जाति को चंगा करता है, तो उसने आदेश दयिा कि उसे ओब्नोरा में सर्व-दयालु उद्धारकर्ता के चमत्कार करने वाले सर्गयिस के मठ में ले जाया जाए। जब आदरणीय संत की कफ़न पर उनके लिए प्रार्थना की गई, और मठाधीश ने पवत्रि सुसमाचार पढ़ना शुरू कयिा, तो बीमार व्यक्ति का मुँह तुरंत खुल गया और वह ऐसा बोलने लगा मानो वह कभी मूक ही न रहा हो। प्रार्थना सेवा समाप्त होने के बाद, बीमार व्यक्ति पर पवत्रि जल छड़िका गया, और तुरंत ही उसके सभी अंगों में फरि से ताकत आ गई, और वह स्वास्थ्य-लाभ कर गया, मानो उसे कभी यह बीमारी ही न हुई हो। और उसने ईश्वर की महमिा की और परम पूजनीय चमत्कार करने वाले सर्गयिस का धन्यवाद कयिा, जन्होंने ईश्वर से उसके लिए ऐसी कृपा प्राप्त की थी।

ज़नोवी नाम का एक व्यक्ति था, जो बेलोज़ेरो का रहने वाला था, जसिका मन भ्रमति हो गया था, इसलिए उसे देखते ही लोग भयभीत हो जाते थे। उसे सर्व-दयालु उद्धारकर्ता और परम पूजनीय सेरजयिस के मठ में लाया गया, और उन्होंने उसके लिए एक प्रार्थना सेवा शुरू की। उस समय, भोजनशाला में भट्टी में आग डाली जा रही थी। और इस प्रकार, जब प्रार्थना सेवा गाई जा रही थी, तो यह भूतग्रस्त व्यक्ति उन लोगों की पकड़ से छूट गया जो उसकी नगिरानी कर रहे थे, दौड़कर भोजनशाला में गया और जलते हुए भट्टी में कूद पड़ा। वे बड़ी मुश्कलि से उसे बाहर खींच पाए और उसे एक अलग कमरे में ले गए। वहाँ, उस पीड़ति व्यक्ति ने राक्षसों की भीड़ देखी। अचानक, उसने एक पवत्रि वृद्ध को अपनी बाहों में परमेश्वर की अति पवत्रि माता की प्रतमिा लिए हुए अपनी ओर आते देखा, और उन्होंने अपना परचिय सर्गयिस के रूप

में दयिा। जब राक्षसों ने परम पूजनीय सेरगयिस को परमेश्वर की अतपिवत्रि माता का प्रतमिाचत्रि धारण कएि हुए देखा, तो वे सभी तुरंत भयभीत हो गए और धुएँ की तरह गायब हो गए। उनमें से कुछ जंगली जंगल में भाग गए, कुछ उस चर्च की नींव में, जबकि कुछ अन्य, जैसा कि उस पशिाचग्रस्त व्यक्ति को लगा, दरारों में गायब हो गए। और उस समय से, उस पशिाचग्रस्त व्यक्ति को संत की प्रार्थनाओं के द्वारा चंगा कर दयिा गया।

रामेंस्कोये गाँव की मत्रोना नाम की एक महलिा भी वकि्षप्ति हो गई। उसके रश्तिेदार उसे सर्व-दयालु उद्धारकर्ता के मठ में, आदरणीय सर्गयिस के मकबरे पर ले आए। प्रार्थना सेवा के बाद, उसे घंटीघर के पास बाँध दयिा गया। फरि मानव जाति के दुश्मन, यानी राक्षस, कुत्ते और बल्लिी का रूप धारण करके उसके पास आए; उन्होंने उसे नाम से पुकारा और कहा:

'यहाँ से चली जा: तू आज़ाद है।'

जब वह मठ से चली गई, तो राक्षसों ने तुरंत उसके खलिाफ साजशि रचनी शुरू कर दी। मानव रूप धारण करके, वे उससे मलिे और उसे एक सुनसान जगह में जाने का नरि्देश दयिा, जहाँ एक दलदल था। लेकनि सर्व-दयालु प्रभु, जो पापी की मृत्यु नहीं चाहते बल्कि उसे सच्ची समझ में लाना चाहते हैं, ने अपनी सृष्टि को वधिर्मी राक्षसों के हाथों नष्ट होते हुए देखा, और इस महलिा पर दया करने का नरि्णय लयिा; क्योंकि इस वषिय में भवषि्यवक्ता ने कहा है: *'उनका क्रोध सदा के लिए नहीं रहता'* (भजन संहति 102:9)।

और इस प्रकार प्रभु, अपने प्रयि सेवक, आदरणीय सेरгийс को और भी अधकि महमिामय बनाना चाहते हुए, ने अपनी दवि्य व्यवस्था से नम्निलखिति का प्रबंध कयिा। जब यह महलिा उस गहरी नरि्जन जगह में नकिल पड़ी, जहाँ दुष्ट राक्षसों ने उसे जाने का आदेश दयिा था, तो अचानक एक पवत्रि वृद्ध, जो अद्भुत सफेद बालों से सुशोभति थे, उसके सामने प्रकट हुए। उन्होंने अपना परचिय सर्जयिस के रूप में देते हुए, उसे नाम से पुकारा और कहा:

'हे स्त्री, तू कहाँ जा रही है? लौट जा, मेरी कब्र पर जा, और उस जगह मत जा जहाँ तू जा रही है; दुष्टात्माएँ तुझे वहाँ ले जा रही हैं।'

यह कहकर, पूजनीय पति अदृश्य हो गए। महलिा तुरंत होश में आ गई, उसे एहसास हुआ कि संत ने उससे भेंट की थी और राक्षसों ने उसका मज़ाक उड़ाया था, और वह संत के मकबरे पर चली गई। वहाँ वह फरि से पूरी तरह से स्वस्थ हो गई और आनंदति होकर, ईश्वर की स्तुति करते हुए और पूजनीय चमत्कार-कर्ता सेरजयिस का धन्यवाद करते हुए अपने घर लौट आई।

संत सेरजयिस के मठ से 40 वर्स्ट दूर एक पुजारी रहता था। इस पुजारी की परास्केवा नाम की एक पत्नी थी, जो अपने सभी अंगों के पक्षाघात से पीड़ति थी। वह लंबे समय से इस बीमारी से पीड़ति थी। और इस प्रकार, एक रात, बहुत कष्ट सहने के बाद, वह हल्की नींद में चली गई। और उसने देखा कि आदरणीय सेरगयिस उसके पास आए थे, जनिके हाथों में एक लाठी थी, और उन्होंने उससे कहा:

'हे स्त्री, तू इतनी भयंकर पीड़ा क्यों सह रही है? अपने बस्तिर से उठ, लाठी उठा और नूरमा में सर्व-दयालु उद्धारकर्ता के पास, सेर्गेई के मठ में जा। यदि तू ऐसा करेगी, तो तुझे दया मलिेगी।'

तुरंत ही संत ने उसका स्वास्थ्य बहाल कर दयिा, उसकी बीमारी को ठीक कर दयिा और कहा:

'अब जब तुम ठीक हो गई हो, तो मेरे मठ जाओ और दयालु ईश्वर से प्रार्थना करो।'

यह कहकर, वे अदृश्य हो गए। महलिा, अपनी नींद से जागते ही, पूरी तरह से स्वस्थ महसूस करने लगी, मानो वह कभी बीमार ही न हुई हो। अपनी बीमारी से ठीक हो जाने के बाद, वह आदरणीय संत की मुलाकात और दया को भूल गई और उनके आदेश की अवहेलना करने लगी; वह मठ में उनके मकबरे पर नहीं गई और न ही प्रार्थना सेवा का अनुष्ठान कयिा। फरि भी, उस समय भी आदरणीय सेरजयिस को उस पर क्रोध नहीं आया; और, दयालु प्रभु के एक दयालु सेवक होने के नाते, उन्होंने उस पर दया की, ठीक वैसे ही जैसे प्रभु ने पापी स्त्री पर दया की थी (लूका 7:37–47)। वे दूसरी बार उसके सामने प्रकट हुए और उसे फटकारते हुए कहा:

'हे स्त्री, तूने मेरे वचन क्यों भुला दिए और मेरी आज्ञा का पालन क्यों नहीं कयिा—तू सर्व-दयालु उद्धारकर्ता से प्रार्थना करने क्यों नहीं गई? अब जा, और कुछ भी भय मत मान। परन्तु यदि तू नहीं गई और मेरी बात नहीं मानी, तो तू इससे भी अधकि कड़वी पीड़ा सहन करेगी।'

जागने पर, उसे याद आया कि उसने पूजनीय की बातों पर ध्यान नहीं दयिा था और, भय से ग्रस्त होकर, वह सीधे संत के मठ में चली गई और, उनके चमत्कारी ताबूत पर गरिकर, आँसू भरी आँखों से संत से अपनी अवज्ञा के लिए क्षमा

करने की विनती की; उसने उनके ताबूत पर प्रार्थना करने के लिए हर साल मठ आने का संकल्प लिया, और ईश्वर की स्तुति करते हुए अपने घर लौट आई।

ओबनॉर्स्क क्षेत्र के अलेक्सिनो गाँव की अनास्तासिया नामक एक महिला का अपने हाथ पर कोई नियंत्रण नहीं था; ऐसा लगता था मानो वह किसी और का हो: वह न तो उसे हिला सकती थी और न ही घुमा सकती थी। उसके रिश्तेदार अनास्तासिया को सर्व-दयालु उद्धारकर्ता और परम पूजनीय सर्गियस के मठ में ले गए। वहाँ, प्रथा के अनुसार, उनके स्वास्थ्य लाभ के लिए एक प्रार्थना सभा आयोजित की गई। प्रार्थना करने के बाद, उन्हें उस कुएँ तक ले जाया गया, जिसे स्वयं पूजनीय सर्जियस ने खुदवाया था, और उस पवित्र कुएँ के पानी से उनका स्नान कराया गया। तुरंत ही, उस महिला की बांह ठीक हो गई और वह दूसरी की तरह ही मजबूत हो गई। ईश्वर का धन्यवाद करते हुए और पूजनीय सर्जियस की स्तुति करते हुए, अनास्तासिया अपने घर लौट आई।[6890]

21 अक्टूबर

8 अक्टूबर (पुराने कैलेंडर के अनुसार)

हमारी पूज्य माता पेलagia का जीवन

8 अक्टूबर को स्मरणोत्सव

हमें हमेशा हमारे प्रभु का इस बात के लिए बहुत धन्यवाद करना चाहिए कि वे पापियों की मृत्यु नहीं चाहते, बल्कि धैर्यपूर्वक उनके धर्मी जीवन में परिवर्तित होने की प्रतीक्षा करते हैं। हेलिओपोलिस में स्थित[6891] चर्च के डीकन जेम्स लिखते हैं, 'हमारे दिनों में एक अद्भुत घटना घटी है; इसलिए मैं इसे आप पवित्र भाइयों को बता रहा हूँ, ताकि आप इसे ध्यान से पढ़कर महान लाभ प्राप्त कर सकें।'

उनकी पवित्रता, एंटिओक के आर्चबिशप[6892] ने चर्च की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए पड़ोसी शहरों से आठ बिशपों को अपनी उपस्थिति में बुलाया।

[6890] 1584 तक, पूजनीय पिता के नाम से 80 तक चमत्कार दर्ज किए जा चुके थे।

[6891] फिलिस्तीन में स्थित हेलीओपोलिस, जो कोएले-सीरिया में, वर्तमान में एशियाई तुर्की के सीरियाई क्षेत्र में, फिलिस्तीन के उत्तर में स्थित था, प्राचीन काल में पूरे मूर्तिपूजक पूर्व का एक केंद्रीय केंद्र था, लेकिन चौथी शताब्दी में यह ईसाई धर्म का केंद्र बन गया और इसके अपने बिशप थे; बाद में, यह शहर धीरे-धीरे नष्ट हो गया।

[6892] सीरिया में एंटिओक – सीरिया के सबसे पुराने और सबसे अमीर शहरों में से एक, और इसकी राजधानी; यह ओरोन्टिस नदी पर स्थित है, जहाँ से यह भूमध्य सागर में मिलती है, उससे लगभग 10 वर्स्ट (लगभग 10 किलोमीटर) दूर, लेबनान और टॉरस की पर्वत श्रृंखलाओं के बीच; इसकी स्थापना ईसा मसीह से 300 साल पहले सेल्यूकस निकिटर ने की थी और इसका नाम उनके पिता, एंटिओकस के नाम पर रखा गया था। ईसाई चर्च के लिए एंटिओक का एक विशेष महत्व है, क्योंकि यह यरूशलेम के बाद ईसाई धर्म का दूसरा महान केंद्र है, और यह गैर-यहूदियों के बीच स्थापित ईसाई चर्चों की जननी है। प्रसिद्ध अंत्योखिया का चर्च मूल रूप से संत पॉल और बरनबास, प्रेरितों द्वारा स्थापित किया गया था, और बाद में प्रेरित पतरस द्वारा इसकी पुष्टि की गई। एंटिओक ईसाई धर्म-विरोधी (एरियन और नेस्टोरियन) विवादों के दौरान चर्च के नेताओं की कई उल्लेखनीय परिषदों का स्थल था; आदिकाल से, एंटिओक की चर्च को अलेक्जेंड्रिया, यरूशलेम, कॉन्स्टेंटिनोपल और रोम की चर्चों के बराबर विशेष विशेषाधिकार प्राप्त थे; इसके नेताओं के पास एक पैट्रिआर्क का पद और विशेषाधिकार थे; इसलिए, संत पेलैजिया के जीवन के इस अंश में, 'आर्चबिशप' के बजाय 'पैट्रिआर्क' शब्द को समझना चाहिए। वर्तमान में, अंतीयक तुर्की के शासन में है और यह लगभग 10,000 की आबादी वाला एक छोटा, गरीब शहर है।

उनमें परमेश्वर के पवित्र पुरुष, मेरे बिशप नॉनस, एक अत्यंत प्रशंसनीय व्यक्ति थे, जो पहले टावेना के मठ[6893] में सबसे कठोर संन्यासी थे। अपने पुण्य जीवन के कारण, उन्हें मठ से निकालकर बिशप[6894] के रूप में नियुक्त किया गया। नॉनस हेलीओपोलिस से आए थे, और मुझे भी अपने साथ ले आए। जब बिशप संत जूलियन द मार्टर के चर्च में एकत्रित हुए, तो उन्होंने नॉनस का उपदेश सुनना चाहा और सभी चर्च के दरवाजों के पास अपनी-अपनी जगह पर बैठ गए। नॉनस ने तुरंत ही सुनने वालों के लाभ और मोक्ष के लिए मौखिक रूप से उपदेश देना शुरू कर दिया। सभी ने उनकी पवित्र शिक्षा को श्रद्धापूर्वक सुना। उस समय, एक विशेष महिला—एक मूर्तिपूजक, जो पूरे अंतीयक में एक वेश्या के रूप में जानी जाती थी—गर्व से महँगे वस्त्र पहनकर, सोने, कीमती पत्थरों और मोतियों से सजी, चर्च के दरवाजों के पास से गुज़र रही थी, और उसके चारों ओर सुंदर कपड़े पहने और सोने की मालाएँ पहने कई नौकरानियों और युवकों की भीड़ थी। उसका चेहरा इतना सुंदर था कि सांसारिक युवक उसकी सुंदरता को निहारते ही रह गए। जब वह हमारे पास से गुज़री, तो उसने सुगंधित धूप की महक से हवा को भर दिया। उसे इतनी निर्लज्जता से, बिना सिर ढके और नंगे कंधों के चलते हुए देखकर, बिशपों ने अपनी आँखें बंद कर लीं और धीरे से आह भरते हुए, जैसे किसी बड़े पाप से मुंह मोड़ लिया। लेकिन धन्य नॉन ने तब तक बड़ी एकाग्रता से उसे देखा, जब तक वह नज़रों से ओझल नहीं हो गई, और फिर बिशपों की ओर मुड़कर उन्होंने कहा: 'क्या तुम्हें उस महिला की सुंदरता आकर्षक नहीं लगी?'

उन्होंने कोई जवाब नहीं दिया। नोनस ने रोते हुए अपना सिर झुका लिया, और उसके आँसुओं ने न केवल उसके हाथ में पकड़े रूमाल को, बल्कि उसकी छाती को भी भीगा दिया। अपने दिल की गहराई से आह भरते हुए, उसने बिशपों से एक बार फिर पूछा: 'क्या आपको उसकी सुंदरता का दृश्य देखकर आनंद नहीं आया?'

वे चुप रहे। नॉन ने कहा: 'सचमुच, मैंने उससे बहुत कुछ सीखा है; क्योंकि प्रभु इस स्त्री को अपने भयानक न्याय में बुलाएंगे और उसके द्वारा हमें दोषी ठहराएंगे।' तुम्हारे ख्याल से, उसने अपनी शयनकक्ष में कितनी देर बिताई होगी, नहाने, कपड़े पहनने, तरह-तरह से सजने-संवरने और आईने में खुद को निहारने में, अपने सारे विचार और ध्यान इस बात पर लगाते हुए कि वह अपने क्षणिक प्रशंसकों की नजरों में सबसे खूबसूरत दिखे? और हम, जिनका स्वर्ग में एक अमर वर है, जिस पर स्वर्गदूत निहारना चाहते हैं, अपनी दयनीय आत्मा को सजाने-संवारने में व्यस्त नहीं रहते—जो अपवित्र, नग्न और लज्जित है— न ही हम इसे पश्चाताप के आँसुओं से धोने और इसे सद्गुणों की सुंदरता से सजाने का प्रयास करते हैं, ताकि यह परमेश्वर की दृष्टि में प्रिय लगे और मेम्ने की शादी[6895] में लज्जित होकर अलग न कर दिया जाए।

इस उपदेश को समाप्त करने के बाद, धन्य नॉन ने मुझे, अपने पापी डिकिन को, अपने साथ लिया और हम उसी सेंट जूलियन के चर्च में हमें दी गई कोठरी में गए। अपने शयनकक्ष में प्रवेश करते ही, मेरे बिशप जमीन पर मुंह के बल गिर पड़े और रोते हुए बोले: 'हे प्रभु यीशु मसीह! मुझे क्षमा करो, एक पापी और अयोग्य को। इस स्त्री की अपने शरीर के आभूषणों के प्रति चिंता ने मेरी दयनीय आत्मा की मेरी सारी चिंता को पार कर दिया है। उस स्त्री ने, अपने नश्वर प्रशंसकों को प्रसन्न करने के लिए, स्वयं को सजाने-संवारने में इतनी लगन दिखाई है; फिर भी मैं तुम्हें, हे मेरे ईश्वर, प्रसन्न करने का कोई प्रयास नहीं करता, बल्कि आलस्य और उपेक्षा में पड़ा रहता हूँ। मैं आपकी ओर कैसे देखूँ? किन शब्दों से मैं आपके सामने अपना पक्ष रखूँ? हाय, मैं पापी! आपके पवित्र वेदी के सामने खड़े होकर, मैं आपको वह आत्मा की सुंदरता अर्पित नहीं करता जो आप मुझसे चाहते हैं। उस स्त्री ने, अपनी व्यर्थता में, नश्वर पुरुषों को ऐसे भव्य रूप में प्रकट होकर उन्हें प्रसन्न करने का वादा किया, और वह जो वादा करती है, वह करती है; लेकिन मैंने आपसे, हे मेरे ईश्वर, प्रसन्न होने का वादा किया, और अपनी आलस्य के कारण झूठ बोला। मैं नग्न हूँ, क्योंकि मैंने आपकी आज्ञाओं का

[6893] ताबेना का मठ पहला सामुदायिक मठ था। यह ऊपरी (दक्षिणी) मिस्र में, इसकी प्राचीन राजधानी थेब्स के उत्तर में, नील नदी के तट पर, टाबेना में स्थित था; इसकी स्थापना लगभग 340 ईस्वी में संत पैकोमियस द ग्रेट द्वारा की गई थी, जिनका स्मरणोत्सव 15 मई को मनाया जाता है, और इसका नियम जल्द ही पूरे ईसाई जगत में फैल गया। प्रारंभिक ईसाई संन्यासवाद के इतिहास में तबेन्ना का मठ इतना महत्वपूर्ण था, और पाकोमियस के शासन की सफलता इतनी बड़ी थी, कि उनकी मृत्यु से पहले ही लगभग 7,000 भिक्षु तबेन्ना और उसके आसपास इकट्ठा हो गए थे। बाद में, ताबेन्ना – एक नाम जो मूल रूप से नील नदी पर एक ही द्वीप को संदर्भित करता था, लेकिन बाद में यह नदी के किनारे आसपास के क्षेत्रों तक फैल गया जहाँ सेंट पाकोमियस और उनके शिष्य बसे थे – अपने मठों के लिए प्रसिद्ध हो गया।

[6894] नॉन्स को 448 में एडसा के बिशप के पद पर पहली बार चुना गया, और उन्होंने पदच्युत हुए इवा की जगह ली; लेकिन जब 451 में काल्सेडॉन परिषद ने एडसा का पद इवा को वापस कर दिया, तो नॉन्स ने हेलियोपोलिस का पदभार संभाल लिया।

[6895] यह एक अभिव्यक्ति है जो प्रलयकारी रहस्यमय चित्रण (प्रकाशितवाक्य 19:7) से उधार ली गई है, जो समय के अंत में शैतान, विरोधी मसीह और उनके सेवकों पर अंतिम विजय के बाद, एक विवाह के रूप में मसीह विजेता और उनकी पवित्र कलीसिया की विजय को दर्शाती है।

पालन नहीं कयिा है; मैं अपनी आशा अपने कर्मों में नहीं, बल्कि आपकी दया में रखता हूँ, और उसी से मुझे मोक्ष की आशा है।'

इस प्रकार संत नोनस लंबे समय तक रोते हुए पुकारते रहे। उन्होंने उस स्त्री के लिए भी प्रार्थना की, यह कहते हुए: 'हे प्रभु, अपने हाथों के काम को नष्ट न करें: ऐसी सुंदरता को व्यभिचार में, दुष्टात्माओं की शक्ति के अधीन न रहने दें, बल्कि उसे अपनी ओर मोड़ दें, ताकि तेरा पवित्र नाम उसमें महिमामय हो: क्योंकि तेरे लिए सब कुछ संभव है।'

उस दिन और रात के बीत जाने के बाद, मैटिन्स (यह रविवार था) के बाद, संत नोनस ने मुझसे कहा: 'भाई जेम्स, वह सपना सुनो जो मुझे कल रात आया था। मुझे ऐसा प्रतीत हुआ कि मैं पवित्र वेदी के एक कोने में खड़ा था। और देखो, जब सेवा चल रही थी, एक काली कबूतर प्रकट हुई, जो गंदगी से लथपथ थी और हवा को बदबूदार गंध से भर रही थी; वह मेरे चारों ओर उड़ी, और मैं उसकी बदबू सहन नहीं कर सका। जब डिकन ने कहा, 'जो उपदेश प्राप्त कर चुके हैं, वे चले जाएँ', तो कबूतर उड़ गया, और मैंने उसे तब तक फिर नहीं देखा जब तक कि पूजा समाप्त नहीं हो गई। पूजा समाप्त होने के बाद, जब हम चर्च से बाहर जा रहे थे, तो मैंने अचानक उसी अशुद्ध कबूतर को फिर से देखा, जो एक बार फिर मेरे चारों ओर उड़ रहा था। मैंने अपना हाथ बढ़ाया, उसे पकड़ा और चर्च के बरामदे में खड़े पानी में फेंक दिया; वहाँ उस कबूतर ने अपनी सारी अशुद्धि धो ली, बर्फ की तरह शुद्ध और सफेद होकर उड़ गया, और आकाश में बहुत ऊँचा उठकर अदृश्य हो गया।"

यह स्वप्न मुझे सुनाने के बाद, धन्य नोנוס मुझे अपने साथ लेकर अन्य बिशपों के साथ कैथेड्रल गए, जहाँ उन्होंने आर्चबिशप को नमस्कार किया और दैवीय अनुष्ठान संपन्न किया। सेवा के समापन पर, एंटिओक के आर्चबिशप ने धन्य नोנוס को लोगों को उपदेश देने के लिए आमंत्रित किया। नोनस ने अपना मुँह खोला और अपने भीतर विद्यमान ईश्वर की बुद्धि की शक्ति से लोगों को उपदेश दिया। उसके शब्द इस संसार की परिष्कृत बुद्धि से युक्त नहीं थे, बल्कि सरल, सभी के समझ में आने वाले और प्रभावशाली थे: क्योंकि पवित्र आत्मा उसके होठों द्वारा बोल रहा था। उसने अंतिम न्याय और धर्मी तथा पापियों के लिए भविष्य के पुरस्कार के बारे में बताया। उसकी बातों से उपस्थित सभी लोग इतने भावुक हो गए कि वे तब तक रोते रहे जब तक कि जमीन उनके आँसुओं से भीग नहीं गई।

दयालु ईश्वर की कृपा से, ऐसा हुआ कि यह वेश्या, जिसके बारे में हम बात कर रहे हैं—जिसने पहले कभी चर्च में कदम नहीं रखा था और न ही अपने पापों पर विचार किया था—संयोग से ठीक उसी क्षण चर्च के पास से गुज़री। संत नॉन्स का उपदेश सुनकर, वह ईश्वर के भय से भर गई; अपने पापों पर चिंतन करते हुए और उन पापों के लिए उसके इंतज़ार कर रहे शाश्वत यातना के बारे में संत नॉन्स की शिक्षा सुनकर, वह निराशा में डूब गई, उसकी आँखों से आँसुओं की बाढ़ आ गई और, टूटे दिल के साथ, वह रोना बंद नहीं कर सकी। तब उसने अपने दो सेवकों से कहा, 'यहीं ठहरो, और जब वह पवित्र व्यक्ति जो उपदेश दे रहा था, बाहर आए, तो उसका पीछा करना, पता लगाना कि वह कहाँ रहता है, और लौटकर मुझे बताना।'

नौकरों ने उसकी आज्ञा का पालन किया और अपनी मालकिन को बताया कि वह संत शहीद सेंट जूलियन के चर्च में रहते थे। फिर उसने तुरंत अपने हाथ से धन्य नॉन को यह संदेश लिखा: 'एक पापी और शैतान की शिष्या की ओर से मसीह के पवित्र शिष्य को। मैंने आपके ईश्वर के बारे में सुना है, कि उन्होंने स्वर्ग को झुकाया और पृथ्वी पर आए, धर्मी लोगों के लिए नहीं, बल्कि पापियों के उद्धार के लिए। वह इतना नम्र हुआ कि उसने कर वसूलने वाले collectors[6896] के साथ भोजन किया। जिस पर खेरूबिम भी पापियों के साथ जुड़ने और वेश्याओं से बात करने की हिम्मत नहीं करते, वह ऐसा करने लगा (लूका 7:37–50; यूहन्ना 8:3–11, आदि)।

हे प्रभु! यदि आप, जैसा कि मैं मसीहियों से सुनता हूँ, मसीह के एक सच्चे सेवक हैं, तो आप मुझे अस्वीकार नहीं करेंगे, जो आपकी मदद से, संसार के उद्धारकर्ता के पास आना और उनके परम पवित्र मुख को निहारना चाहता है।'

[6896] 'कर वसूलने वाले' वह नाम था जो यहूदियों से कर वसूलने के लिए रोमनों द्वारा नियुक्त लोगों को दिया गया था। वे आमतौर पर इन शुल्कों के संग्रह का ठेका ले लेते थे और अपने लिए अधिकतम लाभ निकालने के लिए हर संभव साधन अपनाते थे। एक विधर्मी शक्ति के लालची और अभद्र एजेंटों के रूप में, कर संग्रहकर्ताओं को यहूदियों द्वारा अपने देश और प्रभु परमेश्वर के गद्दार और विश्वासघाती माना जाता था। एक पापी, एक विधर्मी और एक कर संग्रहकर्ता - उनके लिए इनका मतलब एक ही था; उनसे बात करना एक पाप माना जाता था, और उनसे मेलजोल करना एक अशुद्धता, भले ही उनमें से कुछ अच्छे और ईश्वर-भयभीत लोग थे। लेकिन मसीह ने भी उनसे घृणा नहीं की, जिसके कारण उन पर अक्सर आक्षेप लगाया जाता था (मत्ती 11:19; लूका 5:30, 7:34, 15:1–2)।

यह पत्र पढ़ने के बाद, संत नोनस ने उन्हें निम्नलिखित उत्तर लिखा: 'तुम जो भी हो, तुम परमेश्वर के लिए जानी-पहचानी हो—तुम स्वयं और तुम्हारा इरादा दोनों। इसलिए मैं तुमसे विनती करता हूँ: मुझे, जो अयोग्य हूँ, परीक्षा में न डालो; मैं परमेश्वर का एक पापी दास हूँ। यदि, हालाँकि, आप में वास्तव में मेरे ईश्वर में विश्वास करने और मुझे देखने की सच्ची इच्छा है, तो मेरे साथ यहाँ अन्य बिशप भी हैं; तो आओ, और आप मुझे उनके साथ देखोगी। लेकिन आपको मुझसे निजी तौर पर नहीं मिलना चाहिए।"

यह पत्र प्राप्त करके और पढ़कर, वह पापी महिला महान आनंद से भर गई; वह सेंट जूलियन के चर्च की ओर दौड़ी और धन्य नोनस को अपने आगमन की सूचना दी। उन्होंने अपने पास सात अन्य बिशपों को इकट्ठा किया और उसे अंदर आने का आदेश दिया। पवित्र बिशपों की परिषद के सामने उपस्थित होकर, वह रोते हुए जमीन पर गिर पड़ी और संत नॉनस के पैरों पर सिर झुकाते हुए बोली: 'हे मेरे प्रभु, मैं आपसे विनती करती हूँ कि आप अपने स्वामी, प्रभु यीशु मसीह के उदाहरण का अनुसरण करें; मुझ पर अपनी कृपा दिखाएँ और मुझे एक ईसाई बना दें: हे प्रभु, मैं पापों का समुद्र और अधर्म की गहराई हूँ; बपतिस्मा से मुझे शुद्ध कर दें।'

उपस्थित सभी बिशप और पुरोहित, इतनी पश्चाताप और विश्वास के साथ आई वेश्या को देखकर रो पड़े। धन्य व्यक्ति बड़ी मुश्किल से उसे अपने पैरों से उठने के लिए मना सके।

उन्होंने कहा, 'चर्च के नियम आदेश देते हैं कि एक वेश्या को गॉडफादर के बिना बपतिस्मा नहीं दिया जाना चाहिए, इस डर से कि वह फिर से उसी व्यभिचार के जीवन में लौट न जाए।'

यह उत्तर सुनकर, वह एक बार फिर संत के पैरों पर गिर पड़ी, उन्हें अपने आँसुओं से धोती और अपने बालों से पोंछती रही, ठीक वैसे ही जैसे सुसमाचार में पापी स्त्री ने एक बार मसीह के पैर धोए थे (लूका 7:37-38)।

उसने कहा, 'यदि आप मुझे बपतिस्मा नहीं देते हैं, तो आप मेरी आत्मा के लिए ईश्वर के समक्ष उत्तरदायी होंगे। तब ईश्वर मेरी आत्मा के लिए आपको उत्तरदायी ठहराए, और मेरे दुष्ट कर्मों का भार आपके ऊपर डाल दे। यदि आप मुझे बपतिस्मा दिए बिना अस्वीकार करते हैं, तो मेरी अनैतिकि और अशुद्ध जीवन की निरंतरता के लिए आप दोषी होंगे। 'यदि आप मुझे अभी मेरे बुरे कर्मों से नहीं बचाते, तो मैं आपके परमेश्वर से मुँह मोड़ लूँगी और मूर्तियों की पूजा करूँगी। यदि आप मुझे आज ही मसीह की वधू नहीं बनाते और मुझे अपने परमेश्वर के पास नहीं ले जाते, तो आपको न तो उनके और न ही उनके संतों के साथ कोई हिस्सा मिलेगा।'

उपस्थित सभी लोगों ने यह सुनकर और यह देखकर कि एक ऐसी वेश्या ईश्वर की लालसा से इतनी प्रबल रूप से प्रज्वलित हो गई थी, मानव जाति के प्रेमी ईश्वर की महिमा की। धन्य नोनस ने तुरंत मुझे, दीन जेम्स को, इस बात की सूचना देने के लिए आर्चबिशप के पास भेजा। आर्चबिशप ने यह सुनकर कि क्या हुआ था, बहुत प्रसन्न होकर मुझसे कहा: 'जाओ, अपने बिशप से कहो: "माननीय पिता, यह कार्य आपके लिए ही था, क्योंकि मैं आपको अच्छी तरह जानता हूँ—आप परमेश्वर के मुख हैं, उनकी इस वाणी के अनुसार: *'यदि तुम व्यर्थ की वस्तु से कीमती वस्तु निकालोगे, तो तुम मेरे मुख के समान होओगे'* (यिर्म. 15:19)।

और, चर्च की मुख्य डीकोनेस लेडी रोमाना को, जो[6897] थीं, बुलाकर, उन्होंने उन्हें मेरे साथ भेज दिया।

जब हम पहुँचे, तो हमने पेलagia को अभी भी धन्य नॉनस के पैरों तले ज़मीन पर लेटे हुए पाया, जो उन्हें उठने के लिए बड़ी मुश्किल से मना पा रहे थे, यह कहते हुए: 'उठो, मेरी बेटी, ताकि तुम्हें तुम्हारे बपतिस्मा से पहले धर्मोपदेश दिया जा सके।'

वह खड़ी हो गई, और बिशप ने उससे कहा:

'सबसे पहले, अपने पापों का इकरार करो।'

उसने रोते हुए उत्तर दिया:

[6897] डीकोनेस – ग्रीक शब्द से: 'स्त्री सेवक'। यह चर्च में सेवकों के एक विशेष वर्ग को दिया गया नाम था, जिसकी स्थापना प्रेरितों के समय से हुई थी (रोमियों 16:1; तुलना करें 1 तीमुथियुस 5:3–10)। वृद्ध (40 वर्ष से कम आयु की नहीं) कुंवारी या विधवाओं को डीकोनेस के पद के लिए चुना जाता था। उनके कर्तव्य थे, धर्म परिवर्तन करने वाली महिलाओं और छोटी लड़कियों को बपतिस्मा के दौरान अपने आचरण के बारे में निर्देश देना, उनके बपतिस्मा के समय बिशप की सहायता करना और उनकी ओर से, ललाट के अलावा शरीर के अन्य अंगों पर अभिषेक करना, आदि। ईश्वरीय अनुष्ठान के दौरान महिलाओं के बीच व्यवस्था और शिष्टाचार सुनिश्चित करना, बीमारों, जरूरतमंदों और कैदियों से मिलना, हिरासत में रखे गए धर्म-स्वीकारकों और शहीदों की सेवा करना, बेसहारा लोगों की सहायता करना, और इसी तरह। डीकोनेस (स्त्रियों के पादरी) के संबंध में, कई कैननिक नियम हैं, अर्थात्: चौथे सार्वभौमिक परिषद का नियम 15, छठे का नियम 14, और सेंट बेसिल द ग्रेट का नियम 44।

'यदि मैं अपने अंतरात्मा की जाँच करना शुरू करूँ, तो मुझे अपने भीतर एक भी अच्छा काम नहीं मिलेगा; मैं केवल इतना जानती हूँ कि मेरे पाप समुद्र के रेत से भी अधिक हैं, और मेरे दुष्ट कर्मों को धोने के लिए समुद्र में पर्याप्त पानी भी नहीं है। लेकिन मैं अपनी आशा आपके ईश्वर में रखती हूँ, कि वह मेरे अधर्म के बोझ को हल्का कर दें और मुझ पर दया की दृष्टि डालें।'

बिशप ने उससे पूछा:

'आपका नाम क्या है?'

उसने उत्तर दिया:

[6898]'मेरे माता-पिता ने मेरा नाम पेलagia रखा था, लेकिन एंटिओक के नागरिकों ने मुझे उन सुंदर और कीमती आभूषणों के कारण मार्गारिता (मणि) का नाम दिया, जिनसे मेरे पापों ने मुझे सजाया था।'

तब बिशप ने उसका उद्घोष किया, उसे पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम पर बपतिस्मा दिया, उसे पवित्र तेल से अभिषेक किया, और पापों की क्षमा के लिए, हमारे प्रभु यीशु मसीह का परम शुद्ध और जीवन-दायक शरीर और रक्त दिया। पेलagia की आध्यात्मिक माता डीकोनेस रोमाना थीं; उन्होंने उसे बपतिस्मा के कुंड से प्राप्त कर, उसे चर्च से उस कक्ष में ले गईं जहाँ कैटेकुमेन (शिक्षार्थी) इकट्ठा थे, क्योंकि हम भी वहाँ थे। धन्य नोनस ने अन्य बिशपों से कहा: 'हे भाइयों, हम अपना भोजन करें, और परमेश्वर के स्वर्गदूतों के साथ इस बात पर आनन्द मनाएँ कि हमें खोई हुई भेड़ मिल गई है: आइए हम आध्यात्मिक सांत्वना के लिए तेल और दाखमधु के साथ भोजन ग्रहण करें।'

जब सभी आ गए और नव-बपतिस्मा प्राप्त महिला के साथ भोजन करने लगे, तो दानव ने सबके सुनने के लिए चिल्लाना शुरू कर दिया। मानव स्वर में रोते हुए, उसने कहा:

'हाय, हाय, मुझे इस बकबकिया शराब-पीने वाले से क्या सहना पड़ता है! हे दुष्ट बूढ़े! क्या तुम्हारे लिए तीस हज़ार सारासेनों का बपतिस्मा देना काफी नहीं था, जिन्हें तुमने मुझसे चुराया था? क्या मेरे पास से हेलीओपोलिस लेकर उसे अपने ईश्वर के पास ले जाना काफी नहीं था – जबकि वह कभी मेरी थी, और वहाँ रहने वाले सभी लोग मेरी पूजा करते थे![6899] और अब तुमने मेरी आखिरी उम्मीद भी छीन ली है। मैं क्या करूँ, हे जिद्दी बूढ़े, हे , हे धोखेबाज़? मैं तुम्हारे करतब बर्दाश्त नहीं कर सकता। जिस दिन तुम पैदा हुए थे, वह दिन धिक्कार योग्य है, हे दुष्ट बूढ़े! तुम्हारे आँसुओं की बाढ़ मेरे निवास पर आ गिरी है और उसे खाली कर गई है[6900] ।

इस प्रकार, रोते हुए, शैतान उस कक्ष के दरवाजों के सामने चिल्लाया जहाँ हम थे, और वहाँ मौजूद सभी ने उसकी आवाज़ सुनी। और एक बार फिर, नव-बपतिस्मा प्राप्त महिला की ओर मुड़कर, शैतान ने कहा:

'तुम मेरे साथ क्या कर रही हो, लेडी पेलैजिया? तुम यहूदा की नकल कर रही हो। उसे प्रेरितों की महिमा और सम्मान प्राप्त था, फिर भी उसने अपने प्रभु को धोखा दिया, और तुमने भी मेरे साथ वही किया है।'

तब बिशप ने ईश्वर की दासी पेलगिया को क्रॉस का चिह्न बनाने का आदेश दिया। अपने मुख पर मसीह के क्रॉस का चिह्न बना लेने के बाद, उसने शैतान से कहा:

'यीशु मसीह, जो मुझे तुमसे बचाता है, तुम्हें दूर भगाए!'

जैसे ही उसने यह कहा, शैतान तुरंत गायब हो गया।

दो दिन बाद, जब पेलagia अपनी आध्यात्मिक माता, लेडी रोमाना के साथ सो रही थीं, तो शैतान उसके सामने प्रकट हुआ, उसे जगाया, और उससे बात करने लगा:

'मेरी प्रिय महारानी, मार्गरीटा, मैंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है? क्या मैंने तुम्हें सोने और चांदी से समृद्ध नहीं किया है? क्या मैंने तुम्हें कीमती पत्थरों, भव्य वस्त्रों और परिधानों से नहीं सजाया है? मैं आपसे विनती करती हूँ, मुझे बताइए:

[6898] मार्गारीटा, ग्रीक भाषा से अनुवादित, का अर्थ है 'मोती'।

[6899] 5वीं शताब्दी की शुरुआत में, हेलीओपोलिस में मूर्तिपूजा अभी भी काफी प्रचलित थी, लेकिन संत नॉन्स के प्रयासों से वहाँ उसका प्रभाव अंततः कमजोर पड़ गया। – 'सारासेन' शब्द का अर्थ अरबों से है, जिनमें से संत नॉन्स ने हेलीओपोलिस के बिशप के पद पर रहते हुए 30,000 लोगों को ईसाई धर्म में परिवर्तित किया।

[6900] यहाँ संदर्भित 'परित्यक्त निवास, जो शैतान के हवाले हो गया है', निश्चित रूप से पेलagia है। बाइबिल के दृष्टिकोण के अनुसार, जैसे एक धार्मिक व्यक्ति पवित्र आत्मा का मंदिर है (1 कुरिन्थियों 6:19), वैसे ही एक अधार्मिक व्यक्ति दुष्टता की आत्मा का मंदिर है। इसीलिए शैतान पेलagia को अपना पूर्व निवास स्थान कहता है, जो मसीह में उसके धर्मांतरण के बाद उसके लिए सुनसान हो गया था।

मैंने आपको क्या दुख पहुँचाया है? आप जो कुछ भी मुझे आज्ञा देंगे, मैं तुरंत कर दूँगी; बस मुझे न छोड़िए और मेरा मज़ाक न उड़ाइए।"

क्रॉस का चिह्न बनाते हुए, पेलagia ने उत्तर दिया:

'मेरे प्रभु यीशु मसीह, जिन्होंने मुझे तुम्हारी चंगुल से छुड़ाया है और मुझे अपने स्वर्गीय महल की दुल्हन बनाया है, तुम्हें मुझसे दूर कर दें।'

और उसी क्षण शैतान गायब हो गया।

संत रोमाना को तुरंत जगाकर, पेलagia ने उनसे कहा:

'मेरी माँ, मेरे लिए प्रार्थना करें: दुष्ट मुझे सता रहा है।'

रोमाना ने उत्तर दिया:

– मेरी बेटी, उससे मत डर, क्योंकि अब वह तुम्हारी परछाईं से भी डरता और कांपता है।

उनके बपतिस्मा के तीसरे दिन, पेलagia ने अपने एक दास को बुलाया और उससे कहा: 'मेरे घर में जाओ, मेरे सोने के संदूकों में रखी हर चीज़ और मेरे सारे आभूषणों की सूची बनाओ, और वह सब कुछ यहाँ ले आओ।'

नौकर गया और जैसा उसे निर्देश दिया गया था, वैसा ही किया। तब धन्य पेलagia ने पवित्र बिशप नोनस को बुलाकर, सब कुछ उन्हें सौंप दिया, और कहा: 'ये वे धन-दौलत हैं जिनसे शैतान ने मुझे समृद्ध किया है; मैं इन्हें आपके पवित्र हाथों में सौंपती हूँ: आप इनके साथ अपनी इच्छा के अनुसार करें, क्योंकि मुझे अपने प्रभु यीशु मसीह के खजाने की खोज करनी है।'

धन्य बिशप नोनस ने चर्च के कोषाध्यक्ष को बुलाकर, सभी की उपस्थिति में, पेलagia द्वारा सौंपे गए खजाने उसे सौंप दिए, और उससे कहा: 'मैं आपसे पवित्र और अविभाज्य त्रिमूर्ति के नाम पर विनती करती हूँ कि आप इस सोने में से कुछ भी बिशप के निवास में, न ही ईश्वर के चर्च में, न ही अपने घर में, और न ही किसी भी पुरोहित के घर में लें: परन्तु यह सब अपने हाथों से अनाथों, गरीबों और दुर्बलों में बाँट दो, ताकि जो बुराई से इकट्ठा किया गया है वह भलाई के लिए खर्च हो, और पापपूर्ण धन धार्मिकता का धन बन जाए। यदि, तथापि, आप इस शपथ को तोड़ते हैं, तो आपके घर पर शाप पड़ जाए, और आपकी नियति उन लोगों जैसी हो जो चिल्लाए थे: *'इसे ले लो, इसे ले लो, इसे सूली पर चढ़ा दो'*[6901] (लूका 23:21)।

ईश्वर की दासी, पेलagia, ने अपनी संपत्ति में से कुछ भी नहीं रखा, यहाँ तक कि अपना जीवन यापन करने के लिए भी नहीं, बल्कि उसे डीकोनेस रोमाना द्वारा सहारा दिया जाता था: क्योंकि उसने पापपूर्ण धन का किसी भी प्रकार से उपयोग न करने की कसम खाई थी। अपने सभी सेवकों और नौकरानियों को बुलाकर, उसने उन्हें आजाद कर दिया, और प्रत्येक को पर्याप्त चाँदी और सोना दिया।

उसने उनसे कहा, 'मैं तुम्हें अस्थायी दासता से मुक्त कर रही हूँ, और तुम भी, बदले में, इस पाप से भरी व्यर्थ दुनिया की दासता से खुद को मुक्त करने का प्रयास करो, ताकि हम जो इस दुनिया में एक साथ रहे हैं, आनंद के जीवन में एक साथ रहने के योग्य माने जाएँ।'

यह कहकर, पेलagia ने अपने सेवकों को जाने दिया।

आठवें दिन, जब नव-बपतिस्मा प्राप्त लोगों की प्रथा के अनुसार, उसे बपतिस्मा के समय प्राप्त हुए सफेद वस्त्र उतारने थे (यह रविवार का दिन था), तो पेलagia बहुत सुबह उठी, उसने अपने बपतिस्मा के समय पहने हुए सफेद वस्त्र उतार दिए, और एक बाल-कपड़ा पहन लिया। धन्य नोनस के फटे-पुराने वस्त्र लेकर, वह किसी को भी बताए बिना, गुप्त रूप से अंधेरे से चली गई, और तब से कोई नहीं जानता था कि वह कहाँ थी। डीकोनेस रोमाना ने उसके लिए शोक मनाया और रोई। लेकिन सर्वज्ञ ईश्वर ने धन्य नोनस को यह प्रकट किया कि पेलagia यरूशलेम चली गई थी, और उन्होंने रोमाना के माध्यम से नोनस को सांत्वना दी, और कहा: *'रोओ मत, मेरी बेटी, बल्कि आनंदित हो: पेलagia ने मरियम की तरह "बेहतर हिस्सा चुना है, जो उससे नहीं छीना जाएगा"* (लूका 10:42)।

कुछ दिनों बाद, हमें आर्चबिशप से अनुमति मिली और हम हेलीओपोलिस लौट आए। तीन साल बाद, मुझे यरूशलेम जाने की इच्छा हुई – हमारे प्रभु यीशु मसीह के पवित्र सेपल्चर[6902] में पूजा करने के लिए – और मैंने अपने बिशप, धन्य

[6901] अर्थात्, मसीह के विश्वासघातियों और ईश्वर-हत्यारों – यहूदियों के साथ। (लूका 23:21)।

[6902] अर्थात्, मसीह के पुनरुत्थान का चर्च, जो प्रभु के पुनरुत्थान के स्थल, प्रभु के मकबरे और वहाँ स्थित अन्य सबसे बड़े ईसाई तीर्थस्थलों पर बनाया गया है।

नॉन्सस से अनुमति देने के लिए कहा। जब उन्होंने मुझे अपना आशीर्वाद दिया, तो उन्होंने कहा: 'भाई जेम्स! जब तुम पवित्र स्थानों पर पहुँचो, तो वहाँ पेलagia नामक एक भिक्षु को ढूँढ़ना: वह एक नपुंसक है[6903] , अत्यंत सदाचारी है, और कई वर्षों से एकांत में रहता है। जब तुम उसे ढूँढ़ लो, तो उससे बात करना, और तुम उससे बहुत लाभ प्राप्त करोगे, क्योंकि वह मसीह का एक सच्चा सेवक और एक सिद्ध भिक्षु है।'

ईश्वर की दासी, पेलगिया के बारे में नॉन्स ने यही कहा था, जिसने यरूशलेम के पास जैतून के पहाड़ पर अपने लिए एक कोठरी बना ली थी[6904] , जहाँ हमारे प्रभु ने एक बार प्रार्थना की थी, और वहाँ एकांतवास करके ईश्वर के लिए जीवन व्यतीत किया था। लेकिन यह बात नॉन्स ने मुझे नहीं बताई थी।

अपनी तैयारियाँ करने के बाद, मैं पवित्र स्थानों पर गया, हमारे प्रभु यीशु मसीह के पवित्र पुनरुत्थान और उनके पवित्र क्रूस को प्रणाम किया, और अगले दिन मैंने अपने बिशप के निर्देशानुसार पेलैजियस नामक एक भिक्षु को खोजा; मुझे उसकी कुटिया जैतून पर्वत पर मिली। यह कोठरी चारों ओर से घिरी हुई थी और उसका कोई दरवाज़ा नहीं था; मैंने दीवार में केवल एक छोटी सी खिड़की देखी, उस पर दस्तक दी, और जब वह खुली, तो मैंने परमेश्वर की दासी को देखा। उसने मुझे पहचान लिया, लेकिन अपना परिचय नहीं दिया। हालाँकि, मैंने उसे नहीं पहचाना। और मैं उसे कैसे पहचान पाता, जिसकी महान सुंदरता एक फूल की तरह इतनी जल्दी मुरझा गई थी? उसकी आँखें बहुत अंदर धँसी हुई थीं; उसकी बड़ी और असीम आत्म-त्याग के कारण उसके चेहरे की हड्डियाँ और जोड़ दिखाई दे रहे थे। पूरा यरूशलेम उसे एक नपुंसक समझता था; एक भी व्यक्ति नहीं जानता था कि वह एक महिला थी, और न ही मैं खुद जानता था: क्योंकि मेरे बिशप ने मुझसे एक नपुंसक—एक भिक्षु—के बारे में बात की थी, और मैंने उससे एक भिक्षु—एक पुरुष—की तरह आशीर्वाद लिया। उसने मुझसे कहा:

'भाई, मुझे बताओ, क्या तुम धन्य बिशप नॉन्स के डिकन जेम्स नहीं हो?'

मैं यह देखकर चकित था कि उसने मेरा नाम लेकर मुझे बुलाया और मुझे धन्य नोनस के डिकन के रूप में पहचान लिया, और मैंने उत्तर दिया:

'हाँ, मेरे प्रभु।'

उसने मुझसे कहा:

'अपने बिशप से मेरी भी प्रार्थना करना कहिए, क्योंकि वह सचमुच एक पवित्र व्यक्ति और मसीह के प्रेरित हैं।'

'और आप भी, मेरे भाई,' उसने कहा, 'मैं आपसे भी मेरे लिए प्रार्थना करने का आग्रह करती हूँ।'

यह कहकर, उस धन्य महिला ने छोटी सी खिड़की बंद कर दी और तीसरे घंटे का भजन गाने लगी। मैंने एक प्रार्थना की और विदा ली; फिर भी, उस दैवीय तपस्वी का दर्शन और उसका मधुर संभाषण मेरे लिए बहुत लाभदायक था।

यरूशलेम लौटने पर, मैंने विभिन्न मठों का दौरा किया, मठवासी समुदाय से मिला, पवित्र पुरुषों से बातचीत की, उनकी आशीर्वाद प्राप्त की, और अपनी आत्मा के लिए बहुत लाभ प्राप्त किया। ख़सरा पेलाजिया के बारे में एक अच्छी ख्याति सभी मठों में फैल गई थी, और उसके जीवन का उदाहरण सभी के लिए लाभ का स्रोत था। इसी कारण, मैं एक बार फिर उससे मिलने और उसकी आत्मा को पोषण देने वाली बातचीत से सांत्वना पाने के लिए गया। उसकी कोठरी में पहुँचकर, मैंने प्रार्थना करते हुए छोटी सी खिड़की पर दस्तक दी, और उसे नाम से पुकारने की हिम्मत की, कहने लगा: 'खोलिए, फादर पेलैजियस!'

लेकिन उन्होंने कोई उत्तर नहीं दिया।

[6903] एक नपुंसक वह पुरुष है जो यौन इच्छा में असमर्थ होता है; उच्चतम, आध्यात्मिक अर्थ में, वह जो अपने स्वयं के अस्तित्व को समाप्त कर चुका है, जो अपनी वासनाओं के लिए मर चुका है।

[6904] जैतून का पहाड़ – यहूदिया के पहाड़ों में से एक, जिसका नाम वहाँ उगे जैतून के पेड़ों की बहुतायत के कारण पड़ा, साथ ही वहाँ अन्य कई तरह के पेड़ भी थे। यह यरूशलेम के पूर्व में स्थित है, जो किद्रोन घाटी द्वारा इससे अलग किया गया है, और यह अन्य पड़ोसी पहाड़ों से अधिक ऊँचा है; इसकी चोटी से चारों ओर का शानदार दृश्य दिखाई देता है। जैतून का पहाड़ नए नियम के इतिहास में उद्धारकर्ता के सांसारिक जीवन की विभिन्न महत्वपूर्ण घटनाओं से पवित्र है, विशेष रूप से इस पहाड़ी से जी उठे प्रभु का स्वर्ग में आरोहण। आज, यह कभी का उल्लेखनीय पहाड़, अपने आसपास के इलाकों के साथ, एक बहुत ही सुनसान दृश्य प्रस्तुत करता है और अपनी पूर्व की हरी-भरी वनस्पतियों से रहित है। संत पेलैजिया की गुफा, जो आरोहण के ठीक स्थल (पहाड़ की बीच की चोटी) के पास स्थित है, को 12वीं शताब्दी में रूसी तीर्थयात्री, एबॉट डैनियल ने देखा था। 1509 में, पश्चिमी तीर्थयात्री एंसेल्म ने लिखा: 'आरोहण के स्थल के नीचे, लगभग 20 सीढ़ियाँ या लगभग उतनी नीचे, वह स्थान या कोठरी है जहाँ संत पेलagia ने अपना प्रायश्चित किया था'।

मैंने सोचा कि वह शायद प्रार्थना कर रहे होंगे या विश्राम कर रहे होंगे, इसलिए थोड़ी देर इंतजार करने के बाद, मैंने फिर से खटखटाया, उनसे खिड़की खोलने के लिए कहा, लेकिन कोई जवाब नहीं आया; मैं थोड़ी और देर इंतजार किया, और एक बार फिर से खटखटाया। मैंने इस तरह तीन दिन बिताए, छोटी सी खिड़की के पास बैठकर बीच-बीच में खटखटाता रहा, पेलैजियस का पवित्र चेहरा देखने और उनका आशीर्वाद पाने के लिए तरसता रहा: लेकिन न तो कोई आवाज़ आई और न ही कोई जवाब मिला। फिर मैंने अपने आप से कहा: 'या तो वह यह कोठरी छोड़कर चले गए हैं और वहाँ कोई नहीं है, या उनका निधन हो गया है।'

मैंने हिम्मत करके छोटी खिड़की को ज़ोर से खोल दिया और देखा कि पेलैजियस फर्श पर मृत पड़े थे। मैं दंग रह गया, और मुझे इस बात का गहरा दुख हुआ कि मुझे उनका अंतिम आशीर्वाद नहीं मिल पाया। छोटी सी खिड़की बंद करके, मैं यरूशलेम के लिए रवाना हो गया और वहाँ रहने वाले पवित्र संतों को घोषणा की कि अब्बा पेलैजियस, ख़ास्रत, का निधन हो गया है; और तुरंत ही यह खबर पूरे यरूशलेम में फैल गई कि संत पेलैजियस, आत्मा से परिपूर्ण भिक्षु, प्रभु के पास चले गए हैं। सभी पड़ोसी मठों के भिक्षु, यरूशलेम के सभी निवासी, और यरीहो तथा यॉर्डन के उस पार से अनगिनत लोग उनके पवित्र शरीर के अंतिम संस्कार के लिए इकट्ठा हुए। उनकी कोठरी की छोटी खिड़की तोड़कर, उन्होंने एक व्यक्ति के लिए पर्याप्त बड़ा एक छेद बनाया; इस प्रकार बनाई गई खाई से होकर, श्रद्धालु पुरुषों ने उस पवित्र देह को बाहर निकाला। यरूशलेम के पैट्रिआर्क भी अन्य कई पादरियों के साथ पहुँचे। जब उन्होंने रीति के अनुसार, देह पर सुगंधित तेलों से अभिषेक करना शुरू किया, तो उन्होंने देखा कि दिवंगत तपस्वी स्वभाव से एक महिला थीं।

'हे संतों में अद्भुत परमेश्वर,' उपस्थित लोगों ने आँसुओं के साथ पुकारा, 'महिमा तेरी हो: क्योंकि तूने पृथ्वी पर संतों को छिपा रखा है, न केवल पुरुषों को, बल्कि स्त्रियों को भी।'

वे पेलagia के रहस्य को लोगों से छिपाना चाहते थे, लेकिन ऐसा नहीं कर सके: क्योंकि ईश्वर को अपनी दासी को छिपाने के बजाय, उसे प्रकट करने और महिमामय करने में ही प्रसन्नता हुई। और लोगों की एक बड़ी भीड़ इकट्ठा हो गई; नन भी अपने मठों से मोमबत्तियों और धूपदानों के साथ, भजनों और चर्च के गीतों के साथ आईं, और पेलagia के सम्मानित और पवित्र शरीर को लेकर, उसे उचित सम्मान के साथ उसी कोठरी में ले गईं जहाँ उसने अपना तपस्वी जीवन बिताया था, और वहाँ उन्होंने उसे दफनाया[6905] .

पूर्व वेश्या का जीवन ऐसा था, खोए हुए पापी का धर्मांतरण ऐसा था, ऐसे थे उसके कार्य और कर्म, जिनसे उसने परमेश्वर को प्रसन्न किया। परमेश्वर हम पर यह अनुग्रह करे कि हम भी, उसके साथ, न्याय के दिन दया प्राप्त करें! महिमा उसी की हो, पिता और पवित्र आत्मा के साथ, अब और हमेशा, और युगानुयुग। आमेन।

कॉन्टाकियन, स्वर 2:

भोजन-त्याग द्वारा अपने शरीर को क्षीण करके, आपने अपने कर्मों के लिए सतर्क प्रार्थनाओं के साथ सृष्टिकर्ता से पूर्ण क्षमा की याचना की; और इस प्रकार पश्चाताप का मार्ग दिखाकर आप एक सच्ची माता बनीं।

आदरणीय थाइस का जीवन

8 अक्टूबर को स्मरणोत्सव

मिस्र की भूमि में[6906] एक बार एक ऐसी महिला रहती थी जो अपने जीवन-यापन में भ्रष्ट, निर्लज्ज और अशुद्ध थी। उसकी एक ही बेटी थी जिसका नाम थाइसिया था, उसने उसे वही लज्जास्पद जीवन शैली सिखाई जिसकी वह स्वयं आदी हो चुकी थी; वह उसे वेश्यालय ले गई और उसे शैतान की सेवा में सौंप दिया, ताकि वह अपनी सुंदरता से कई मानव आत्माओं को लुभाकर उनका विनाश करे; क्योंकि थाइस रूप-रंग में अत्यंत सुंदरी थी और अपने मुख की सुंदरता के लिए

[6905] उनकी जीवनी के अनुसार, सेंट पेलagia की मृत्यु उस समय हुई जब नॉनस हेलीओपोलिस के बिशप थे; उन्होंने 451 से 458 तक यह पद संभाला। पेलagia का धर्मांतरण भी हेलीओपोलिस की चर्च में उनकी सेवा के उसी काल में हुआ था; परिणामस्वरूप, उनकी मृत्यु का समय हेलीओपोलिस में उनके कार्यकाल के अंत, लगभग वर्ष 457 के आसपास का माना जाता है।

[6906] उनका मूल स्थान और वह शहर, जिसने थाइस की विलासी जीवन के दौरान दुखद सफलताओं को देखा, अज्ञात हैं।

दूर-दूर तक प्रसद्धि थी। थाइस के प्रतकिामुक इच्छा से प्रेरति होकर, कई लोग उसके पास सोने और चांदी की बड़ी मात्रा, साथ ही चमचमाते और महंगे वस्त्र लाए। अपने प्रशंसकों को बहकाकर, उसने उन्हें इस कदर बर्बाद कर दयिा कि कई लोग उसकी खातरि अपनी संपत्त खिोकर गरीबी में पड़ गए, जबकि अन्य, उसके कारण आपस में लड़कर, एक-दूसरे को पीटते और अपने घर की दहलीज़ को अपने खून से लथपथ कर देते थे।

यह सुनकर, आदरणीय पाफनुटयिस[6907] , सांसारकि कपड़े पहनकर और अपने साथ एक सोने का सक्कि लेकर, उस घर में गए जहाँ तैसयिा रहती थी। उसे देखकर, उन्होंने उसे भुगतान के रूप में सक्कि दे दयिा, मानो वे उसके साथ रहना चाहते हों। तैसयिा ने पैसे लेकर उनसे कहा:

'कमरे में आओ।'

पाफनुटयिस उनके साथ अंदर गया और उसने एक सजा हुआ ऊँचा बस्तिर देखा; उस पर बैठकर उसने तैसयिा से कहा:

'क्या यहाँ कोई और कमरा नहीं है, कोई गुप्त कमरा, जहाँ हम खुद को बंद कर सकें ताकि किसी को हमारी खबर न लगे?'

ताइसयिा ने उत्तर दयिा:

'एक है; हालाँकि, अगर तुम लोगों से शर्मदिा हो, तो इस कमरे में भी तुम उनसे छपि रहोगे, क्योंकि दरवाज़े बंद हैं और कोई यहाँ नहीं आएगा या हमारे बारे में नहीं जान पाएगा; लेकनि अगर तुम ईश्वर से डरते हो, तो ऐसी कोई जगह नहीं है जो तुम्हें उनसे छपिा सके, और अगर तुम ज़मीन के नीचे भी छपि जाओ, तो भी ईश्वर तुम्हें वहाँ देखता है।'

उसकी यह बात सुनकर, पाफनुटयिस ने उससे कहा:

'क्या तुम भी ईश्वर के बारे में जानती हो?'

ताइसा ने उत्तर दयिा:

'मैं ईश्वर को जानती हूँ, और धर्मी लोगों के आनंद को, और दुष्टों की यातना को।'

तब वृद्ध ने उससे कहा:

'यदि तुम ईश्वर को, और भवष्यि के सुख तथा यातना को जानती हो, तो फरि तुम लोगों को क्यों कलंकति करती हो और पहले ही इतनी आत्माओं को क्यों नष्ट कर चुकी हो? अग्नमिय गेहेना में दण्डति होकर, तुम न केवल अपने पापों के लिए, बल्कि उन लोगों के लिए भी यातना भोगोगी जनि्हें तुमने कलंकति कयिा है।'

ये शब्द सुनते ही तैसयिा वृद्ध के चरणों में रोते हुए गरि पड़ी और बोली:

'मैं अच्छी तरह जानती हूँ कि पाप करने वालों के लिए पश्चाताप और पापों के लिए क्षमा है, और मुझे आशा है, कि आपकी प्रार्थनाओं के द्वारा, मैं अपने पापों से मुक्त हो जाऊँगी और प्रभु की दया प्राप्त करूँगी। लेकनि मैं आपसे वनिती करती हूँ, थोड़ी देर मेरे लिए प्रतीक्षा करें, बस तीन घंटे, और फरि आप मुझे जहाँ भी जाने के लिए कहेंगे, मैं चली जाऊँगी, और आप मुझे जो कुछ भी करने के लिए कहेंगे, मैं करूँगी।'

वृद्ध ने उसे वह स्थान दखिाया जहाँ वह उसका इंतजार करेगा, और चल दयिा। तब तैसयिा ने अपने सभी खजाने—जो उसने व्यभचिार से प्राप्त कयि थे, और जो चार सौ लीटर सोने के बराबर मूल्य के थे—उन्हें इकट्ठा कयिा और शहर के केंद्र में ले गई; वहाँ उसने आग लगाई, सब कुछ उस पर रख दयिा, और सभी लोगों के सामने सब कुछ जला दयिा, यह कहते हुए: 'आओ, तुम सब जो मेरे साथ पाप में लप्ति हुए हो, और देखो कि मैं तुम्हारा दयिा हुआ सब कुछ जला रही हूँ।'

अपनी अवैध रूप से अर्जति संपत्त को आग के हवाले करने के बाद, वह उस स्थान पर चली गई जहाँ पाफनुटयिस उसका इंतजार कर रहा था। वरष्ठि उसे एक मठ में ले गए और एक छोटी सी कोठरी माँगकर, ताइसयिा को उसमें बंद कर दयिा; फरि उन्होंने कोठरी के दरवाज़ों को मजबूती से सील कर के कीलें ठोक दीं, और केवल एक छोटी सी खड़िकी छोड़ दी, जसिसे उसे थोड़ी सी रोटी और पानी दयिा जा सके।

ताइसयिा ने संत पाफनुटयिस से पूछा, 'पतिाजी, मैं ईश्वर से कैसे प्रार्थना करूँ?'

[6907] यहाँ सेंट पाफनुटयिस का संदर्भ स्पष्ट रूप से हेराक्लयिा के मठ के मठाधीश को संदर्भति करता है। यूनानयिों के लिए हेराक्लयिा, यहूदयिों के लिए गानेस और अरबों के लिए अनास के नाम से जाना जाने वाला यह शहर, हेप्टानोम प्रांत के शहरों में से एक था, जो लोअर और अपर इजप्टि के बीच स्थति था, और अपर इजप्टि का हस्सिा माना जाता था। रूफनिस अपनी 'इतहिास ऑफ मोंस्टसिज़्म' (अध्याय 16) में और पल्लैडयिस अपनी 'लौसाइका' (अध्याय 57) में लखिते हैं कि पाफनुटयिस इतने महान तपस्वी थे कि उन्हें ईश्वर का एक देवदूत माना जाता था। आत्माओं के उद्धार के प्रति उत्साही, उन्होंने कई भटके हुए सामान्य लोगों को उद्धार के मार्ग पर वापस लाया।

'तुम अयोग्य हो,' बुजुर्ग ने उत्तर दिया, 'न तो प्रभु का नाम लेने के लिए और न ही स्वर्ग की ओर अपने हाथ उठाने के लिए, क्योंकि तुम्हारे होंठ गंदगी से भरे हैं और तुम्हारे हाथ अशुद्धि से अशुद्ध हैं; बस बार-बार पूर्व की ओर मुड़कर कहो: "हे सृष्टिकर्ता, मुझ पर दया करो!"'

और तैसिया तीन साल तक उसी कोठरी में रही, पाफ्नुटियस द्वारा सिखाई गई प्रार्थना के अनुसार ईश्वर से प्रार्थना करती रही, और केवल थोड़ी सी रोटी और पानी खाती रही, वह भी दिन में केवल एक बार।

[6908]तीन वर्ष बीत जाने के बाद, पाफनुटियस, उसके प्रति दिया से प्रेरित होकर, महान एंथनी के पास गए ताकि यह पता लगाया जा सके कि क्या ईश्वर ने उसे क्षमा किया था या नहीं।

वरिष्ठ के निवास पर पहुँचने पर, उन्होंने उन्हें ताइसा के जीवन के बारे में सब कुछ बताया। एंथनी ने अपने शिष्यों को बुलाया और उनमें से प्रत्येक को आज्ञा दी कि वे अकेले-अकेले अपनी-अपनी कोठरी में बंद हो जाएँ और पूरी रात ईश्वर से प्रार्थना करें, ताकि वह उनमें से किसी एक को ताइसा के बारे में सत्य प्रकट कर दे, जो अपने पापों पर पश्चाताप कर रही थी। शिष्यों ने अपने गुरु की आज्ञा का पालन किया और ईश्वर से प्रार्थना की: उन्होंने उसकी सच्चाई उनके एक शिष्य, पौलुस नामक व्यक्ति को प्रकट की, जिसे 'सबसे सरल' के नाम से जाना जाता था। उस रात प्रार्थना करते हुए, उन्होंने एक दर्शन में देखा कि स्वर्ग खुल गया, और वहाँ एक पलंग रखा हुआ था, जो शानदार ढंग से सजा हुआ था और महान महिमा से चमक रहा था; तीन कन्याएँ, जिनके चेहरे दमक रहे थे, उसकी रखवाली कर रही थीं, और उस पलंग पर एक मुकुट रखा था। यह देखकर, पॉल ने पूछा:

'निश्चय ही यह बिस्तर और मुकुट मेरे पिता एंथनी के सिवा किसी और के लिए तैयार नहीं किए गए हैं।'

तब एक आवाज़ ने उससे कहा:

'यह फादर एंथनी के लिए नहीं, बल्कि पूर्व वेश्या, थाइस के लिए है।'

होश में आते हुए, पॉल ने जो देखा था उस पर विचार करना शुरू कर दिया, और जब सुबह हुई, तो वह धन्य पिता एंथनी और पाफनुटियस के पास गया और उन्हें अपने दर्शन के बारे में बताया। यह सुनकर, उन्होंने परमेश्वर की स्तुति की, जो सच्चे मन से पश्चाताप करने वालों को स्वीकार करते हैं। तब फाफनूतियुस उस मठ में गया जहाँ थाइस एकांत में रहती थी और दरवाज़े तोड़कर उसे बाहर ले जाने का प्रयास किया। लेकिन वह उससे विनती करने लगी:

'पिताजी, मुझे अपनी मृत्यु तक यहाँ रहने और अपने पापों पर शोक मनाने की अनुमति दें: क्योंकि मेरे पाप बहुत हैं।'

वरिष्ठ ने उससे उत्तर दिया:

'ईश्वर, जो मानवता के प्रेमी हैं, ने पहले ही तुम्हारे पश्चाताप को स्वीकार कर लिया है और तुम्हारे पापों को क्षमा कर दिया है,' और उसे मठ से बाहर ले आए।

तब धन्य थाइस ने कहा:

'पिताजी, मुझ पर विश्वास करें, जैसे ही मैं कोठरी में आई, मैंने अपने सभी पापों को अपने मन की आँखों के सामने कल्पना किया और उन्हें निहारते हुए, बिना रुके रोई। मेरे सभी बुरे कर्म अभी भी मेरी दृष्टि से ओझल नहीं हुए हैं; वे अभी भी मेरे सामने खड़े हैं और मुझे डरा रहे हैं, क्योंकि मैं उनके लिए दंडित की जाऊँगी।'

भिक्षुशाला छोड़ने के पंद्रह दिन बाद, धन्य तैसिया बीमार पड़ गईं और तीन दिनों तक कष्ट सहने के बाद, ईश्वर की कृपा से, उन्होंने शांतिपूर्वक देह त्याग दिया। अपने बिस्तर से उसे उस बिस्तर पर ले जाया गया जिसे पॉल द सिंपल ने स्वर्ग में उसके लिए तैयार देखा था, जहाँ वह संतों के साथ महिमा में स्तुति पाती है और हमेशा के लिए आनंदित होती है। इस प्रकार, एक पापी और एक वेश्या हमारे से पहले परमेश्वर के राज्य में चली गई है[6909] ।

कन्या संत पेलagia की स्मृति

8 अक्टूबर को स्मरणोत्सव

[6908] महान एंथनी ने मठवासी जीवन शैली की स्थापना करने वाले पहले व्यक्ति थे।

[6909] उद्धारकर्ता के वचनों के अनुसार: *'अमीन, मैं तुम से कहता हूँ, महसूल लेने वाले और वेश्याएँ तुम से पहिले परमेश्वर के राज्य में प्रवेश कर रही हैं'* (मत्ती 21:31)। – पूजनीय थाइस की मृत्यु लगभग (340 ईस्वी के बाद नहीं) हुई, क्योंकि उनके कार्य और मृत्यु महान एंथनी († 356) और सरल पॉल († 340) के जीवित रहने के दौरान हुई थी।

संत पेलagia, जो सीरिया के एंटिओक में डियोक्लेशियन के शासनकाल में रहती थीं, कुलीन वंश की थीं[6910] । शहर के राज्यपाल को जब पता चला कि वह एक ईसाई है, तो उसने उसे गिरफ्तार करने के लिए सैनिक भेजे। राज्यपाल के आदेश का पालन करते हुए सैनिकों ने उस घर को घेर लिया जहाँ पेलagia रहती थी। तब उन्होंने सैनिकों से विनती करनी शुरू की कि वे रुकें, और जब वे मान गए, तो संत उस स्थान पर पूर्व की ओर मुड़ी जहाँ वह आमतौर पर प्रार्थना करती थीं; अपनी बाहें फैलाकर और स्वर्ग की ओर अपनी आँखें उठाकर, उन्होंने ईश्वर से विनती की कि उन्हें सैनिकों के हवाले न किया जाए, बल्कि वह एक निर्दोष और शुद्ध बलिदान के रूप में उनके पास जाएँ। इसके बाद, उसने अपने सबसे अच्छे कपड़े पहने, घर की छत से कूद गई और अपनी आत्मा ईश्वर को सौंप दी[6911] ।

22 अक्टूबर

9 अक्टूबर (पुराने कैलेंडर के अनुसार)

उसी दिन, पवित्र शहीदों एवेंटियस और मैक्सिमिस, जो सैनिक थे, का स्मरणोत्सव। उनके बारे में अधिक जानकारी के लिए 5 सितंबर देखें, जहाँ एवेंटियस को इयुवेंटिनस के रूप में भी संदर्भित किया गया है।

अपोस्तल सन्त याकूब, अल्फाउस के पुत्र का जीवन

9 अक्टूबर को स्मरण किया जाता है

संत जेम्स प्रेरित अल्फेयस के पुत्र और प्रेरित एवं सुसमाचार प्रचारक मत्ती के भाई थे, जो पहले एक कर वसूलने वाले थे। जब हमारे प्रभु यीशु मसीह, देह में पृथ्वी पर वास करते हुए, साधारण और धर्मनिष्ठ पुरुषों को प्रेरितों के पद के लिए चुन रहे थे, ताकि उन्हें संसार भर में सुसमाचार का प्रचार करने के लिए भेजा जा सके, तब उन्होंने इस याकूब को भी चुना और, एक योग्य व्यक्ति के रूप में, उसे प्रेरितों में गिन लिया। (मत्ती 10:3; मरकुस 3:18; लूका 6:15)। और याकूब बारह प्रेरितों में से एक, मसीह का एक प्रत्यक्षदर्शी और सेवक, उनके रहस्यों का प्रचारक और उनका अनुयायी बन गया[6912] । अन्य प्रेरितों के साथ पवित्र आत्मा को प्राप्त करने के बाद, जो आग की जीभों के रूप में उन पर उतरा[6913] , वह मसीह का प्रचार करने और खोए हुए लोगों को उद्धार के मार्ग पर ले जाने के लिए अन्यजातियों के पास गया। दिव्य उत्साह की अग्नि से जलते हुए, उन्होंने अधर्मीपन की काँटों को झुलसा दिया, मूर्तियों को तोड़ डाला, उनके मंदिरों को धूल-चटा कर दिया, विभिन्न रोगों को ठीक किया, लोगों से दुष्ट आत्माओं को भगाया, और एक बड़ी भीड़ को मसीह के पास ले आए, इस प्रकार उन्होंने अपने लिए एक नया नाम अर्जित किया: दैवीय बीज। क्योंकि उन्होंने मानव हृदयों में परमेश्वर का वचन बोया, विश्वास लगाया और धार्मिकता को पोषित किया: इसी कारण से उन्हें 'दिव्य बीज' कहा जाता था।

कई देशों की यात्रा करते हुए, उन्होंने दिव्य बीज बोया, मानव मोक्ष की फसल काटी, और मसीह के पदचिन्हों पर अपना सांसारिक सफर समाप्त किया: मसीह के दुखों का अनुकरण करते हुए, उन्होंने क्रूस पर कीलों से जड़े होने के दौरान अपना प्राण ईश्वर को अर्पित कर दिया[6914] ।

[6910] संत पेलagia, एंटिओक के पुरोहित († 312) और पवित्र शहीद लूसियन की शिष्या थीं, जिनकी स्मृति 15 अक्टूबर को मनाई जाती है।

[6911] संत पेलagia केवल 15 वर्ष की थीं जब उन्होंने अपनी कुँवारी अवस्था की रक्षा के लिए इतनी स्वेच्छा से कष्ट सहे। यह चौथी शताब्दी की शुरुआत में हुआ था। संत एम्ब्रोस, संत पेलagia को शहादत के एक उदाहरण के रूप में प्रस्तुत करते हैं, भले ही उन्हें मसीह के लिए अपने उत्पीड़क ون के अत्याचारों को सहने का अवसर नहीं मिला। संत जॉन क्राइसोस्टोम के पास उनके बारे में दो अंश हैं, जिनमें इस युवा धन्य शहीद की प्रशंसा की गई है।

[6912] अन्य प्रेरितों के साथ, अल्फाउस के पुत्र याकूब को प्रभु द्वारा प्रचार करने के लिए भेजा गया था (मत्ती 10:3)।

[6913] प्रभु के स्वर्गारोहण के बाद, अल्फियुस का पुत्र याकूब अन्य प्रेरितों के साथ यरूशलेम में सियोन पर्वत पर ऊपरी कक्ष (प्रेरितों के काम 1:13) में रहे, और पवित्र आत्मा के अवतरण के बाद भी कुछ समय तक वहाँ रहे (6:2)।

[6914] प्रेरित अल्फाउस के पुत्र याकूब ने अपनी प्रेरितीय सेवा सबसे पहले यहूदिया में की, फिर प्रेरित एड्रेस (एड्रेस – वर्तमान ओरफा – फरात नदी पर मेसोपोटामिया का प्राचीन और प्रसिद्ध शहर) में सबसे पहले बुलाए गए एंड्रयू ने गाजा (यहूदिया के राज्य की सीमा पर सबसे प्राचीन फ़िलिस्तीनी शहरों में से एक, जो प्रेरितों के समय में सीरिया के अधीन था) में मसीह की शिक्षाओं का प्रचार किया और एलेउथेरोपोलिस (यरूशलेम

और यह दव्यि बीज, संत जेम्स, सौगुना फल देने वाले फलों के साथ स्वर्गीय अनाजघर में एकत्रति कयिा गया; वहाँ, स्वयं परमेश्वर के मुख के दर्शन से तृप्त होकर, वह हमारे लिए अपनी प्रार्थनाओं के साथ मध्यस्थता करते हैं कि हम भी उसी प्रकार तृप्त हो सकें।

कॉन्टाकयिन, स्वर 2:

आओ हम उसकी स्तुति करें, क्योंकि उसने भक्तों की आत्माओं में ज्ञान के सद्धिांतों को दृढ़ता से स्थापति कयिा है, और हम उसे ईश्वर-वाहक, संत जेम्स के रूप में सम्मानति करते हैं: क्योंकि वह प्रभु की महमिा के सहिासन के सामने खड़ा है, और सभी स्वर्गदूतों के साथ आनंदति होता है, हम सभी के लिए अनवरत प्रार्थना करते हुए।

परम पूजनीय एंड्रोनकिस और अथानासयिस का जीवन

9 अक्टूबर को स्मरणोत्सव

बाइज़ेंटाइन सम्राट थयिोडोसयिस महान के शासनकाल के दौरान[6915]

अंतयिोकयिा में एंड्रोनकिस नाम का एक आदमी रहता था, जो एक माहरि सुनार था। उसने अपने जीवनसाथी के रूप में एक दूसरे सुनार, जॉन की बेटी को चुना, जसिका नाम अथानासयिा था, जसिका अर्थ है 'अमरत्व'[6916] । और वास्तव में, संत अथानासयिा ने अपने पवत्रि जीवन के माध्यम से – जैसा कि उनका नधिन भी दर्शाता है – अमर महमिा प्राप्त की। यह ववािहति जोड़ा – एंड्रोनकिोस और अथानासयिा – ने ईमानदार और ईश्वरवादी जीवन जयिा, और हर तरह के सद्गुणों से खुद को वशिष्टि बनाया। उन्होंने अपनी बढ़ती हुई संपत्ति को तीन भागों में बाँटा: एक हस्सिा उन्होंने गरीबों पर खर्च कयिा, दूसरा चर्च की भव्यता पर, और तीसरा घरेलू जरूरतों पर। उनकी नम्रता और पुण्य कार्यों के कारण, एंड्रोनकिोस और अथानासयिा सभी नागरकिों के प्रयि और सम्मानति थे। अपने पुत्र जॉन और पुत्री मैरी के जन्म के बाद, उन्होंने शारीरकि वैवाहकि संबंध त्याग दिए और भाई-बहन के रूप में ब्रह्मचर्य में रहे। वे गरीबों का वशिष ध्यान और चंति रखते थे। उनकी सेवा करते हुए, वे बीमारों को अपनी बाहों में उठाते, उन्हें धोते, खलिाते और कपड़े पहनाते, और अपने खर्च पर, बेसहारा और राहगीरों को हर संभव आराम प्रदान करते थे। इसके अलावा, हर हफ्ते एंड्रोनकिोस और अथानासयिा बुधवार और शुक्रवार उपवास और प्रार्थना में बतिाते थे।

जबकि वे ऐसा सदाचारी जीवन जीते रहे, ईश्वर ने उन्हें एक और भी अधकि पूर्ण जीवन के लिए बुलाना उचति समझा - ताकि सभी सांसारकि चीजों को त्यागकर, वे अपने एकमात्र प्रभु, यीशु मसीह का अनुसरण कर सकें, जन्होंने हमारे लिए एक उदाहरण छोड़ा है, जसिके द्वारा हमें उनके पदचन्हिों पर चलना है।

एक दनि, बीस साल के वैवाहकि जीवन के बाद, अथानासयिा, मैटन्सि (प्रार्थना सभा) से घर लौटकर, अपने बच्चों को बुखार की हालत में पाया और, घबराकर, बस्तिर पर उनके बगल में बैठ गई। थोड़ी देर बाद चर्च से लौटे एंड्रोनकिोस ने यह मानकर अपनी पत्नी को पुकारना शुरू कर दयिा कि वह सो रही है। अथानासयिा ने जवाब दयिा:

'मेरे स्वामी, मुझसे क्रोधति न हों, क्योंकि हमारे बच्चों को तेज बुखार है।'

यह जानकर, एंड्रोनकिोस बीमार बच्चों से दूर हट गया और कहा:

'प्रभु की इच्छा पूरी हो!'

इसके बाद, वह शहीद सेंट जूलयिन के देहाती चर्च में गया, जहाँ उसके माता-पति को दफनाया गया था। वहाँ वह छठे घंटे तक प्रार्थना में रहा।

और गाज़ा के बीच सड़क पर दक्षणिी फलिस्तिीन में एक शहर) और पड़ोसी क्षेत्रों में प्रचार कयिा; वहाँ से वह मस्रि के लिए रवाना हुए, जहाँ, ओस्ट्रैसनि (फलिस्तिीन की सीमा पर एक तटीय शहर) शहर में, उन्होंने सूली पर चढ़ाए जाने पर शहीद की मृत्यु के साथ अपनी प्रेरतिीय सेवा को मुकम्मल कयिा।

[6915] थेओडोसयिस महान – 379 से 395 तक रोमन सम्राट। उनके शासनकाल के दौरान, रोमन साम्राज्य में ईसाई धर्म को नर्णिायक रूप से स्थापति कयिा गया था।

[6916] ग्रीक 'अफानसयिा' से – अमरत्व।

जब एंड्रोनकिोस चर्च में थे, तब उनके दोनों बच्चे - उनका बेटा जॉन, जो बारह साल का था, और उनकी बेटी मैरी, जो दस साल की थी - की मृत्यु हो गई। प्रार्थना से लौटने पर, एंड्रोनकिोस ने अपने घर में रोने और वलिाप की आवाज़ें सुनीं और, घबराकर, घर की ओर दौड़े। उसने अपने घर के पास शहर के नविासयिों की एक बड़ी भीड़ जमा पाई, और अपने दोनों बच्चों को मृत पड़ा हुआ देखा। अपनी प्रार्थना कक्ष में लौटकर, एंड्रोनकिोस ने धर्मी अय्यूब के वचन बोलते हुए हमारे उद्धारकर्ता की प्रतमिा के सामने साष्टांग प्रणाम कयिा:

'मैं नंगा अपनी माता के गर्भ से आया, और नंगा ही मुझे लौटना है। प्रभु ने दयिा, और प्रभु ने ले लयिा; प्रभु का नाम धन्य हो!' (अय्यूब 1:21)।

अपने मृत बच्चों के लिए रोते हुए, अथानासयिा अपने गहरे दुख से इतनी अभभिूत हो गई कि वह मृत्यु की भी कामना करने लगी, यह कहते हुए:

– 'काश मैं भी अपने बच्चों के साथ मर जाती!'

एंड्रोनकिस और अथानासयिा के बच्चों के अंतमि संस्कार के दनि, सभी नगरवासी श्रद्धांजलि देने के लिए इकट्ठा हुए, और स्वयं पैट्रआर्क अपने सभी पुरोहतिों के साथ आए। बच्चों को संत जूलयिन के चर्च में दफनाया गया, जहाँ उनके पूर्वज भी वशि्राम करते थे। अंतमि संस्कार की रस्म पूरी होने के बाद, अथानासयिा घर लौटना नहीं चाहती थी, बल्कि अपने बच्चों की कब्र के पास बैठकर रोती रही।

आधी रात को, पवत्रि शहीद जूलयिन एक भकि्षु के भेष में उसके सामने प्रकट हुए और उन्होंने उससे नम्निलखिति शब्द कहे:

'स्त्रयिा! तुम उन लोगों को क्यों नहीं छोड़ोगी जो यहाँ शांति से वशि्राम कर रहे हैं?'

अथानासयिा ने उत्तर दयिा:

'महाराज, मुझसे क्रोधति न हों, क्योंकि मैं अत्यंत दुख में हूँ: मेरे दो बच्चे थे, और आज मैंने उन्हें दोनों को एक साथ दफना दयिा है!'

पवत्रि शहीद जूलयिन ने अथानासयिा से पूछा:

'आपके बच्चों की उम्र क्या थी?'

अथानासयिा ने उत्तर दयिा:

'एक बारह साल का था, और दूसरा दस साल का था।'

तब संत ने उससे कहा:

'तुम उनके लिए क्यों रो रही हो? तुम्हारे लिए यह अधकि लाभदायक होगा कि तुम अपने पापों के लिए रोओ। मैं तुम्हें आश्वस्त करती हूँ कि, जैसे मानव स्वभाव को भोजन की आवश्यकता होती है, वैसे ही तुम्हारे दविंगत बच्चे भी मसीह से स्वर्गीय आशीर्वादों का भक्षण करते हैं। वे उससे प्रार्थना करते हैं: "हे धर्मी न्यायाधीश! तुमने हमें सांसारकि आशीर्वादों से वंचति कर दयिा है; हमें स्वर्गीय आशीर्वादों से भी वंचति मत करना!

ये वचन सुनकर अथानासयिा दया से भर गई और शोक करने के बजाय, यह कहते हुए प्रसन्न हुई:

'अगर मेरे बच्चे स्वर्ग में जीवति हैं, तो मैं क्यों रोऊँ?'

यह कहकर अथानासयिा मुड़ी, वह उससे थोड़ी देर और बात करना चाहती थी जो उसके सामने प्रकट हुआ था, लेकनि वह उसे अब और नहीं देख सकी। अथानासयिा ने उस व्यक्ति को खोजने के लिए पूरी कलीसयिा में खोज की जो उसके सामने प्रकट हुआ था, लेकनि उसे कोई नहीं मलिा। फरि वह कलीसयिा के दरवाज़ों की रखवाली कर रहे द्वारपाल के पास गई और उससे पूछा:

'वह संन्यासी कहाँ है जो मुझसे बात कर रहा था?'

दरबान ने उत्तर दयिा:

'क्या तुम नहीं देख सकतीं कि दरवाज़े बंद हैं और यहाँ कोई नहीं आया है? तुम ऐसा क्यों कह रही हो कि किसी ने तुमसे बात की?'

तब अथानासयिा, यह समझकर कि यह केवल एक भ्रांति थी, डर गई; और, घर लौटकर, उसने अपने पति को वह सब कुछ बताया जो उसने देखा और सुना था, और ऐसा करने से उसे अपने दुख में सांत्वना मलिी।

अथानासयिा ने एंड्रोनकिोस से कहा, 'मेरे स्वामी, जब हमारे बच्चे जीवति थे, तब भी मैं आपको अपने एक इरादे के बारे में बताना चाहती थी, लेकनि मैं बहुत शर्मीली थी; अब, उनकी मृत्यु के बाद, मैं बनिा कसिी हचिकचिाहट के आपको

बताऊँगी: मुझे मठ जाने दीजिए, ताकि मैं वहाँ अपने पापों का शोक मना सकूँ।' और फिर प्रभु, जिन्होंने हमारे बच्चों को हमसे छीन लिया है, शायद हमें उनकी सेवा के लिए बेहतर रूप से तैयार कर दें।

एंड्रोनिकोस ने उत्तर दिया:

'जाओ, एक सप्ताह तक अपनी दृढ़ संकल्प की परीक्षा लो, और यदि तुम अपना मन नहीं बदलती, तो हम इस पर साथ में विचार करेंगे।'

परीक्षा पास करने के बाद अथानासिया ने अपना मन नहीं बदला; बल्कि, कई दिन बीत जाने के बाद, वह मठवास जीवन की और भी तीव्र इच्छा से भर गई और उसने एक बार फिर अपने पति से विनती करनी शुरू कर दी कि वह उसे मठ जाने दे।

तब एंड्रोनिकोस ने अफानसी के पिता को बुलाकर उनसे कहा:

'हम पवित्र स्थानों की तीर्थयात्रा करना चाहते हैं; अत; हम अपना घर और अपनी सारी संपत्ति आपको सौंपते हैं, और हम आपसे यह निवेदन करते हैं: यदि रास्ते में हमें कोई दुर्भाग्य हो जाए, तो हमारी संपत्ति को ज़रूरतमंदों में बाँट दें, और हमारे घर को गरीबों के लिए एक अस्पताल और यात्रियों के लिए एक आश्रय बना दें।'

इस प्रकार, अपने ससुर को अपना घर और संपत्ति सौंपने के बाद, एंड्रोनिकिस ने अपने सभी पुरुष और महिला दासों को भी मुक्त कर दिया।

एक रात, एंड्रोनिकोस और अथानासिया एक साथ इकट्ठा हुए, यात्रा के लिए अपनी संपत्ति का एक छोटा सा हिस्सा लिया, और किसी के ध्यान में आए बिना घर से निकल पड़े। ईश्वर की इच्छा के प्रति स्वयं को समर्पित करते हुए, वे अपनी तीर्थयात्रा पर निकल पड़े।

अगले दिन जब शहर के बाहर भोर हुई, धन्य अथानासिया ने पीछे मुड़कर देखा और दूर में अपना घर देखा; फिर, स्वर्ग की ओर अपनी दृष्टि उठाकर, उसने कहा:

'हे ईश्वर, जिसने अब्राहम और सारा से कहा: *"अपने देश, अपने कुल और अपने पिता के घर से निकल जाओ, उस देश में जाओ जो मैं तुम्हें दिखाऊँगा"* (उत्पत्ति 12:1)! हम पर भी दृष्टि डालिए, और हमें अपने भय में मार्गदर्शन दीजिए। देखिए, हमने आपके लिए अपना घर खुला छोड़ दिया है; अत; अपने राज्य के द्वार हमारे लिए बंद न करें।

इसके बाद, वे दोनों रोते हुए अपने रास्ते पर आगे बढ़े। यरूशलेम पहुँचने पर, अन्द्रोनिकुस और अथानासियुस ने पवित्र स्थानों को नमन किया और कई वृद्धों का आशीर्वाद प्राप्त कर उनसे बातचीत की। फिर वे पवित्र शहीद मीना के अवशेषों की पूजा करने के लिए अलेक्ज़ेंड्रिया चले गए। वहाँ जाते समय, एंड्रोनिकिस ने पीछे मुड़कर देखा कि एक गृहस्थ एक भिक्षु से झगड़ रहा था, और उसने उस गृहस्थ से कहा:

'तुम एक भिक्षु से क्यों झगड़ रहे हो?'

उस गृहस्थ ने उत्तर दिया:

'भिक्षु ने स्केटे जाने के लिए मुझसे एक गधा किराए पर लिया था, और मैंने उसे तुरंत निकलने की सलाह दी ताकि हम रात में यात्रा कर सकें, जब सूरज की गर्मी इतनी तेज नहीं होती, और सुबह छठे घंटे तक स्केटे पहुँच सकें। हालाँकि, भिक्षु मेरी सलाह मानने से इनकार कर रहा है।'

तब एंड्रोनिकोस ने उस गृहस्थ से पूछा:

'क्या तुम्हारे पास एक और गधा है?'

उस आदमी ने जवाब दिया:

'हाँ।'

एंड्रोनिकोस ने कहा:

'तो जाओ और उसे ले आओ,' और मैं उसे तुमसे किराए पर लूंगा, क्योंकि मैं भी स्केटे[6917] की यात्रा करना चाहता हूँ।

[6917] 'स्कटि' – एक मिस्र का शब्द – का अर्थ है: तराजू, हृदय की परीक्षा। अन्य इसे ग्रीक … से व्युत्पन्न करते हैं – 'त्वचा', एक व्युत्पत्ति जो यह सुझाव देती है कि मूल स्कटि-निवासी – तपस्वी – के पास ठीक से निर्मित आवास नहीं थे, बल्कि वे जंगली जानवरों की खाल से बने आश्रयों से काम चलाते थे। इस मामले में, बेशक, इसका मतलब एकांतवासी संन्यासियों के लिए अलग-अलग कोठरियों के अर्थ में किसी विशिष्ट प्रकार की मठवासी बस्ती से नहीं है, बल्कि मिस्र के उत्तर-पश्चिमी भाग में, माउंट नाइट्रियन से एक दिन की यात्रा (25–30 वर्स्ट) की दूरी पर स्थित एक प्रसिद्ध स्थान से है। यह एक शुष्क, चट्टानी रेगिस्तान था, जो मिस्र के संन्यासियों का एक पसंदीदा ठिकाना था, और यह उन भिक्षुओं के

एंड्रोनकिोस ने अपनी पत्नी, अथानासयिा से कहा:

'यहाँ तब तक रुको जब तक मैं वहाँ के संतों का आशीर्वाद लेकर वापस नहीं आ जाता।'

'मुझे भी साथ ले चलो,' अफ़ानसी ने कहा।

'महलिाओं,' एंड्रोनकि ने उत्तर दयिा, 'को होने की अनुमतनिहीं है

स्केट में।

तब अफ़ानसी रोते हुए अपने पतसिे बोली:

'अगर तुम मुझे एक मठ में भेजने के बनिा मुझे पीछे छोड़ दोगे, तो तुम्हें इसके लिए पवत्रि शहीद मीना के सामने जवाब देना होगा।'

एंड्रोनकिोस ने वादा कयिा कजिब तक वह उसकी इच्छा पूरी नहीं कर लेता, तब तक वह अपनी पत्नी को नहीं छोड़ेगा।

इसके बाद, एंड्रोनकिोस स्केटे के लिए रवाना हो गया, जहाँ, हर मठ[6918] में, उसे स्केटे के संतों का आशीर्वाद मलिा।

आदरणीय दानयिल[6919] के बारे में सुनकर, एंड्रोनकिस ने बड़ी कठनिाइयों को पार करके उनके पास आया, उनके सामने झुका, और प्रार्थना के बाद, उन्हें अपने और अपनी पत्नी, अथानासयिा के बारे में सब कुछ बताया। आदरणीय दानयिल ने एंड्रोनकिस से कहा:

'जाओ और अपनी पत्नी को ले आओ, और मैं तुम्हें थेबाइड[6920] के लिए एक पत्र दूँगा ताकतिुम उसे सुरक्षति रूप से वहाँ ले जा सको और उसे टावेनयिोट महलिा मठ[6921] में रख सको।'

अथानासयिा के पास लौटकर, एंड्रोनकिोस उस रात उसे पवत्रि वृद्ध दानयिल के पास ले गया। वृद्ध दानयिल ने उनसे मोक्ष के मार्गों के बारे में बात की और उन्हें महान आध्यात्मकि सांत्वना दी। फरि उन्हें पत्र सौंपने के बाद, वृद्ध ने उनका आशीर्वाद दयिा और उन्हें तावेनयिोट मठ के लिए वदिा कर दयिा।

मठ पहुँचने पर, धन्य एंड्रोनकिोस ने अपनी पवत्रि पत्नी, अथानासयिा को, महलिा मठ में रखा। वहाँ दव्यि स्वरूप धारण करने के बाद, अथानासयिा ने स्वर्गदूतों के समान जीवन जीना शुरू कर दयिा। जहाँ तक अंद्रोनकिोस की बात है, वह लौरा के सम्मानति मठाधीश, दानयिल के पास लौट आया, जन्हिोंने उसे संन्यासी पद की दीक्षा दी और सदाचारी जीवन का उपदेश देकर, उसे एक अलग कोठरी आवंटति की, ताकअिंद्रोनकिोस, अकेले वहाँ रहकर, मौन में संलग्न हो सके।

और इस प्रकार धन्य एंड्रोनकिॉस, सम्मान के साथ परश्रिम करते हुए, बारह वर्षों तक मौन के तप में रहे। इसके बाद, उन्होंने पतिा डेनयिल से पवत्रि स्थानों की पूजा करने के लिए यरूशलेम जाने की अनुमतदिेने का आग्रह कयिा। एक प्रार्थना करने के बाद, आदरणीय डेनयिल ने उन्हें अपनी आशीर्वाद के साथ वदिा कयिा।

मस्रि के क्षेत्रों में यात्रा करते समय, एंड्रोनकिस एक बार कुछ जुनपिर की झाड़ियों के नीचे थोड़ी देर आराम करने के लिए बैठ गया। और देखो, दैवीय व्यवस्था से, उसने अपनी पत्नी, धन्य अथानासयिा को पुरुषों के कपड़े पहने हुए चलते हुए देखा। उन्होंने एक-दूसरे को प्रणाम कयिा। अथानासयिा ने अपने पतएिंड्रोनकिस को पहचान लयिा, लेकनि उसने उसे नहीं पहचाना। और वह अथानासयिा को कैसे पहचान सकता था, जबकउिसका चेहरा उपवास से सूखकर कांटा हो गया

तपस्या के कारनामों के लिए प्रसद्धि हो गया जो वहाँ शरण लेने आए थे। यही स्थान था जसिसे बाद में 'स्केट्स' के नाम से जाने जाने वाले मठवासी रेगस्तिानी बस्तयिों ने अपना नाम लयिा; ये ऐसी जगहें थीं जहाँ सबसे अधकि भक्तमिय भक्षिु सबसे कठोर एकांत और अखंड मौन की खोज में बस गए थे - एकमात्र ईश्वर में नविास करने के लिए।

[6918] 'लावरा' - ग्रीक शब्द से, जसिका अर्थ है 'शहर का एक हस्सिा' या 'गली' - वशिष रूप से मठ के मुखयिा (अबॉट) के आवास के चारों ओर शहर की गलयिों की तरह व्यवस्थति कोशों (सेलों) की एक पंक्तको संदर्भति करता है, जो एक बाड़ या दीवार से घरिी होती है। लवरा में रहने वाले भक्षिु एकान्तवासी जीवन जीते थे और तपस्या करते थे, प्रत्येक अपनी-अपनी कोठरी में, सप्ताह के पहले और आखरिी दनिों में दैवीय सेवाओं के लिए एकत्रति होते थे, जबकशिेष दनिों में सख्त मौन बनाए रखते थे; लवरा में जीवन अन्य मठवासी बस्तयिों की तुलना में कहीं अधकि कठनि था। प्राचीन काल से, 'लव्रा' शब्द का प्रयोग बड़े और महत्वपूर्ण मठों के लिए कयिा जाता रहा है। यह सबसे पहले मस्रि में और बाद में फलिस्तीन में प्रकट हुआ। वर्तमान में, हमारे देश में 'लव्रा' नाम का उपयोग वशिष रूप से एक सम्मान के रूप में कयिा जाता है।

[6919] चर्च चीज़ सैटरडे पर स्केट के संत डेनयिल का स्मरणोत्सव मनाता है।

[6920] थेबाइड प्राचीन मस्रि के शहर थेब्स का क्षेत्र है, जो प्राचीन काल में प्रसद्धि था; इस नाम को इसके मुख्य शहर के नाम पर पूरे ऊपरी (दक्षणिी) मस्रि के लिए भी लागू कयिा गया था।

[6921] वहाँ की अन्य मठवासी समुदायों में, टावेनीसयिोट कन्वेंट अपने कठोर तपस्या के लिए प्रसद्धि था।

था और वह एक इथियोपियाई महिला की तरह काली पड़ गई थी? इसके अलावा, अथानासिया ने अपना रूप बदल लिया था और उसने पुरुषों के कपड़े पहन रखे थे। उसने एंड्रोनिकोस से पूछा:

'क्या तुम फादर डैनियल के शिष्य, एंड्रोनिकिस नामक व्यक्ति नहीं हो?'

'हाँ, वही मैं हूँ,' एंड्रोनिकोस ने जवाब दिया।

फिर उसने उससे फिर पूछा:

'अब्बा एंड्रोनिकोस! आप कहाँ जा रहे हैं?'

'मैं पवित्र स्थलों पर अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करने जा रहा हूँ,' एंड्रोनिकि ने जवाब दिया। 'और आप,' उसने बदले में अधीरता से पूछा, 'कहाँ जा रही हैं, और आपका नाम क्या है?'

उसने उत्तर दिया:

'मैं भी पवित्र स्थानों पर जा रही हूँ, और मेरा नाम अथानासियस है' (उसने इस तरह अपना नाम बदल लिया था और अथानासिया के बजाय अब खुद को अथानासियस कहती थी)।

"चलो साथ चलते हैं," एंड्रोनिकोस ने कहा। अथानासिया ने उत्तर दिया:

'अगर तुम मेरे साथ चलना चाहती हो, तो "अपने होठों पर पहरा लगा लो" (देखें भजन संहिता 140:3), ताकि हम चुपचाप चल सकें।'

एंड्रोनिकोस ने कहा:

'बहुत अच्छा, जैसा तुम चाहती हो वैसा ही हो।'

अथनासिया ने जारी रखा:

'चलो चलते हैं, और आपके पवित्र वृद्ध की प्रार्थनाएँ हमारे साथ रहें।'

जब एंड्रोनिकॉस और अथानासिया यरूशलेम पहुँचे, तो उन्होंने वहाँ की सभी पवित्र पूजा स्थलों का दौरा किया। उसके बाद, वे पवित्र शहीद मीना के अवशेषों को श्रद्धांजलि देने के लिए अलेक्जेंड्रिया गए। वहाँ, प्रार्थना करने के बाद, अथानासिया ने एंड्रोनिकॉस से कहा:

'पिताजी, क्या आप चाहेंगे कि हम दोनों एक ही कोठरी में रहें?'

एंड्रोनिकोस ने उत्तर दिया:

'हम रुकेंगे,' उसने कहा, 'लेकिन पहले मैं साधु से पूछूँगा कि क्या वह हमें एक ही कोठरी में रहने की अनुमति देंगे।'

अथेनासियस ने जारी रखा:

'जाकर पूछो, और मैं ऑक्टोडेकाटन नामक स्केटा में तुम्हारा इंतज़ार करूँगा[6922] , और, अगर वरिष्ठ अनुमति दें, तो मुझे लेने आना और हम उसी खलिहान में मौन में रहेंगे, जैसे हम मौन में यात्रा करके आए थे, लेकिन अगर तुम चुप्पी बनाए नहीं रख सकते, तो मेरे लिए वापस मत आना, क्योंकि मैं मौन के तपस्यात्मक अभ्यास के बिना जीना नहीं चाहता, भले ही पूजनीय पिताजी ऐसा आदेश दें।

एंड्रोनिकोस, बाबा डैनियल के पास आकर, अपने साथी अथानासियस के बारे में सब कुछ बता दिया।

तब दानियेल ने एंड्रोनिकोस से कहा:

'तो वापस जाओ, मौन से प्रेम करो, और अथानासिया के साथ रहो, क्योंकि वह एक परिपूर्ण नन है।'

इसके बाद, एंड्रोनिकोस, अथानासिया को अपने साथ लेकर, उसे अपनी कोठरी में ले गया, जहाँ वह परमेश्वर के भय में और मौन में अगले बारह वर्षों तक रही। इसके बावजूद, एंड्रोनिकोस अपनी पत्नी को नहीं पहचान सका, क्योंकि उसने परमेश्वर से विनती की थी कि उसका पति उसे न पहचान सके। अब्बा दानियेल अक्सर उनसे मिलने आते और उन्हें उपदेश देते थे। एक अवसर पर, उनके साथ ठहरने और आत्मा के लिए लाभदायक कई विषयों पर चर्चा करने के बाद, दानियेल अपनी कुटिया की ओर लौट रहे थे; लेकिन इससे पहले कि वे वहाँ पहुँच पाते, धन्य एंड्रोनिकोस उनके पास आ गए, यह कहते हुए:

'फादर डेनियल, अथानासिया प्रभु के पास जा रही है!'

बिशप के लौटने पर, उन्होंने अथानासिया को अत्यंत कष्ट की अवस्था में पाया। बिशप को देखकर, अथानासिया रो पड़ीं, और बिशप ने उनसे कहा:

[6922] स्केट मरुभूमि के मठों की गिनती अलेक्जेंड्रिया से उनकी दूरी के अनुसार की जाती थी ('ओक्टोडेकाटोस' - अठारहवाँ)।

'तुम्हें रोना नहीं, बल्कि आनंदित होना चाहिए: क्योंकि तुम प्रभु से मिलने जा रही हो।'

अथानासिया ने उत्तर दिया:

'मैं अपने लिए नहीं, बल्कि एंड्रोनिकोस के लिए रो रही हूँ। लेकिन, पिताजी, मुझ पर अपना प्रेम दिखाएँ: मेरी मृत्यु के बाद, आपको मेरे बिस्तर के पास एक पत्र मिलेगा; उसे पढ़ें और फिर एंड्रोनिकोस को दे दें।'

तब, प्रार्थना के बाद, अथानासिया ने पवित्र परमप्रसाद ग्रहण किया और प्रभु के पास चली गईं। भाई लोग शव को दफ़नाने आए और देखा कि वह एक महिला थी। अबा डैनियल ने अथानासिया के बिस्तर के सिरहाने पत्र पाया, उसे पढ़ा और अंद्रोनिकोस को दे दिया। तब उसे पता चला कि अथानासिया उसकी पत्नी थीं।

इसके बाद, सभी ने ईश्वर की महिमा की। इस बात की खबर सभी मठों में फैल गई, और बाबा डैनियल ने संदेशवाहक भेजकर सभी मिस्र के संतों और जो भी आंतरिक रेगिस्तान में तपस्या कर रहे थे, उन्हें बुलाया। अलेक्जेंड्रिया के सभी मठों के निवासी इकट्ठा हुए, साथ ही सफेद वस्त्रों में लिपटे संन्यासी भी (क्योंकि उन संन्यासियों की प्रथा थी कि वे सफेद वस्त्र पहनते थे), और उन्होंने धन्य अथानासिया के पवित्र शरीर को सम्मानपूर्वक दफनाया, उस ईश्वर की महिमा करते हुए, जिसने उन्हें इतना धैर्य प्रदान किया था।

अथानासिया के दफ़नाए जाने के बाद, वृद्ध दानिएल सात दिनों तक एंड्रोनिकोस के साथ रहे, और इस अंतिम दिन, दिवंगत आत्मा का स्मरण करने के बाद, दानिएल एंड्रोनिकोस को अपनी कोठरी में ले जाना चाहते थे। इस बीच, एंड्रोनिकोस ने वृद्ध से विनती करते हुए कहा:

'पिताजी, मुझे यहीं छोड़ दीजिए, ताकि मैं अपनी साथी अथानासिया के साथ दफ़नाया जा सकूँ।'

उसे छोड़कर, वरिष्ठ पीछे हट गए; लेकिन इससे पहले कि वह अपनी कोठरी तक पहुँच पाते, एक अन्य भिक्षु उनसे आ मिला, और कहा:

'फादर एंड्रोनिकोस प्रभु के पास जा रहे हैं।'

वरिष्ठ ने तुरंत उन पादरियों को बुलाया जो चले गए थे और उनसे कहा:

'फादर एंड्रोनिकोस के पास मेरे साथ वापस चलो।'

उनके लौटने पर, उन्होंने एंड्रोनिकोस को जीवित पाया और उनकी आशीर्वाद प्राप्त की। जब एंड्रोनिकोस का शांतिपूर्वक निधन हो गया[6923] , तो ऑक्टोडेकट मठ के स्केट्स और एक अन्य मठ के बीच एक बड़ा विवाद खड़ा हो गया, जहाँ परम पूज्य अथानासिया रहती थीं और जिसके भिक्षु सफेद वस्त्र पहनते थे।

बाद वालों ने कहा:

'मृतक हमारा भाई है, और हम उसे अपनी स्केटा में ले जाना चाहते हैं, ताकि उसकी प्रार्थनाएँ हमारी सहायता कर सकें।'

इसी तरह, ऑक्टोडेकेटन स्केट के संतों ने कहा:

'यह भाई हमारा है, और इसलिए उसे उसकी धन्य बहन अथानासिया के साथ ही दफनाया जाए।'

तब दूसरे मठ के भिक्षुओं ने कहा:

'हम ओक्टोडेकाटन स्केटा के आर्चिमांड्राइट के निर्देशानुसार ही करेंगे।'

वरिष्ठ ने आदेश दिया कि एंड्रोनिकोस को अथानासिया के साथ दफनाया जाए। इस बीच, व्हाइट-रोब्ड स्केट के भिक्षु उनके आदेश का पालन करने के लिए तैयार नहीं थे, क्योंकि वे संख्या में अधिक थे, और उन्होंने कहा:

'वरिष्ठ संवेदनाओं से ऊपर हैं, और इसके अलावा उन्हें किसी प्रतिद्वंद्विता का डर नहीं है; लेकिन हम, जो सबसे छोटे हैं, चाहते हैं कि हमारे धन्य एंड्रोनिकोस हमारे साथ रहें, ताकि वे अपनी प्रार्थनाओं से हमारी सहायता कर सकें: इतना ही काफी है कि हमने अथानासिया आपको सौंप दी है!'

इसके बाद, संन्यासियों को बड़ी मुश्किल से शांत किया गया और उन्होंने परम पूजनीय एंड्रोनिकोस को धन्य अथानासिया के साथ मिलकर दफनाया, और उस ईश्वर की स्तुति की, जो अपने संतों में अद्भुत है। युगों-युगों तक उसकी महिमा हो। आमीन।

[6923] उनकी मृत्यु 5वीं शताब्दी के पहले भाग में हुई।

धर्मनष्ठि संत अब्राहम का जीवन

९ अक्टूबर को स्मरणोत्सव

बाबेल की मीनार के समय[6924] परमेश्वर द्वारा भाषाओं को भ्रमति करने के बाद, लोग, जो पृथ्वी पर बखिर गए और कई राष्ट्रों में वभिाजति हो गए, सच्चे परमेश्वर को भूल गए और अपने बनाए हुए मूर्तयिों, जानवरों, सूर्य और चंद्रमा, और प्रकृतकिी अन्य घटनाओं की पूजा करने लगे। तब, पुराने नयिम की कलीसयिा को नया करने और उसमें परमेश्वर के सच्चे ज्ञान को बनाए रखने के लिए, प्रभु ने अब्राहम नामक एक धार्मकि व्यक्तकिो चुना। अब्राहम को मूल रूप से अब्राम कहा जाता था और वह ताराह[6925] का सबसे छोटा पुत्र था, जनिके दो अन्य पुत्र भी थे: अरान और नाहोर; जनिमें से पहला अपनी जवानी में ही मर गया, और पीछे एक पुत्र, लूत, को छोड़ गया, जसिे अब्राम ने पालने के लिए अपने पास ले लयिा। ताराह अपने पुत्रों के साथ कल्दीयनों के उर में रहता था[6926] ; लेकनि प्रभु ने धर्मनष्ठि अब्राम, अपने चुने हुए को, मूर्तपिूजकों के भ्रष्ट वातावरण से अलग करना उचति समझा। और इस प्रकार अब्राम को ईश्वर से आज्ञा मलिी:

'अपने देश, अपने रश्तिेदारों और अपने पति के घर को छोड़कर उस भूमकिें जाओ जसिे मैं तुम्हें दखिाऊँगा।' मैं तुझसे एक महान राष्ट्र बनाऊँगा; मैं तुझे आशीष दूँगा और तेरा नाम महान करूँगा, और तू आशीष का स्रोत और बहुतों के लिए एक आदर्श होगा। जो तुझे आशीष देंगे, उन्हें मैं आशीष दूँगा, और जो तुझे शाप देंगे, उन्हें मैं शाप दूँगा; और तुझ में पृथ्वी के सब कुल blessed[6927] होंगे।

अब्राहम ने वश्विास और आज्ञाकारति से परमेश्वर की आज्ञा को स्वीकार कयिा, और अपनी पत्नी सारा, अपने पति तारह और अपने भतीजे लूत के साथ कल्दीयनों के उर से प्रस्थान कयिा। हाराँ[6928] में कुछ समय रहने के बाद, जहाँ उनके पति का नधिन हुआ[6929] , उन्होंने अपने परविार और लूत के साथ अकेले अपनी यात्रा जारी रखी। कनान की भूमकिें पहुँचने पर, वे शेchem तक, मोरेह की ओक तक उस भूमकिें यात्रा करके गए[6930] । वहाँ प्रभु उन्हें दखिाई दए और उनके वंशजों को यह भूमदिेने का वादा कयिा। इस दैवीय प्रकट होने की स्मृतकिें और परमेश्वर के वादे के लिए कृतज्ञता स्वरूप, अब्राम ने उस स्थान पर एक वेदी बनाई। इसके बाद, अब्राम ने दक्षणि की ओर जाते हुए, उस भूमकिी लंबाई तक यात्रा की और बेथेल और अई के बीच प्रभु के लिए एक और वेदी स्थापति की[6931] ।

[6924] इस घटना की पहचान पैट्रआर्क एवर के पुत्र, फलेक के जन्म के समय से की जाती है, जनिका नाम इस घटना की स्मृतकिें रखा गया था (फलेक - हब्रिू से - 'काटना', 'वभिाजन' का अर्थ है); यानी, ईसा मसीह से लगभग 2,600 साल पहले।

[6925] फाराह – दसवें पैट्रआर्क, जो नूह के वंशज थे। अब्राहम का जन्म लगभग 2,000 साल ईसा पूर्व हुआ था।

[6926] कलदीयों की उर – मेसोपोटामयिा में, फरात नदी के मुहाने से बहुत दूर नहीं, चल्दीया के शाही शहरों में से एक; यह एक प्रमुख व्यापारकि केंद्र था। आज, उर नाम फरात नदी के तल से छह मील पश्चमि में स्थति खंडहरों को दयिा जाता है, उस स्थान पर जहाँ यह खट्ट-एल-खयि (टायग्रसि की एक शाखा जो फरात में मलिती है) से मलिती है।

[6927] इस दैवीय वादे का मसीही महत्व है, जैसा कसिंत पौलुस प्रेरति स्पष्ट रूप से दखिाते हैं, जो अब्राहम से परमेश्वर के इन शब्दों का संदर्भ देते हैं। वे लखिते हैं, 'तब जानो, कजिो लोग वश्विास रखते हैं, वे अब्राहम के पुत्र हैं; और धर्मशास्त्र, यह पूर्वदर्शी होकर कपिरमेश्वर अन्यजातयिों को वश्विास के द्वारा धर्मी ठहराएगा, ने पहले ही अब्राहम को सुसमाचार का प्रचार कयिा, कतिुझ में सब जातयिाँ धन्य होंगी। और इस प्रकार जो लोग वश्विास रखते हैं, वे वश्विासयोग्य अब्राहम के साथ धन्य हैं' (गलातयिों 3:9)।

[6928] हरान मेसोपोटामयिा के उत्तर-पश्चमिी भाग में, हवार (फरात नदी की एक सहायक नदी) और स्वयं फरात नदी के बीच, एडसा के दक्षणि-पूर्व में, पहाड़ों से घरि एक वस्तिृत मैदान पर स्थति एक शहर है; प्राचीन काल में यह भूमध्य सागर और पूर्व के बीच के महान व्यापार मार्ग पर एक महत्वपूर्ण व्यापारकि केंद्र था। आज, यह मेसोपोटामयिा में एक तुच्छ और छोटा शहर है।

[6929] कुछ चर्च शक्षिक फारा की हarran में मृत्यु को ईश्वर की बुद्धमिानीपूर्ण व्यवस्था का एक हस्सिा बताते हैं; क्योंकईिश्वर की इच्छा यह नहीं थी कफिारा, जो मूर्तपिूजा का दोषी था, उस पीढ़ी में अंधवश्विास का संक्रामण फैलाए जसिे उससे अलग कयिा जाना था। इसीलिए धर्मग्रंथ इस घटना को इतनी सटीकता से दर्ज करता है।

[6930] कनान की भूमसिे, सख्त और सबसे वशिष्टि अर्थ में, जॉर्डन के इस पार की भूमि, फनिसिियिा (कनान का उत्तरी भाग) और फलिस्तिीनयिों की भूमकिा तात्पर्य है; – हाल के समय में, 'कनान की भूमि' से तात्पर्य अक्सर पूरे फलिस्तिीन, संपूर्ण प्रतज्ञिात भूमसिे लयिा जाता है, जसिे बाद में यहूदयिों ने यरदन के दोनों कनिारों पर बसाया था। शेchem कनान की भूमकिें, सामरयिा में, एफ्राइम पर्वत पर एक प्राचीन शहर है, जो यरूशलेम से 18 घंटे की यात्रा पर है; इब्राहीम वास्तव में कनान की भूमकिें शकेम तक नहीं गए—जो उस समय अस्तत्वि में भी नहीं था—बल्कि उतनी दूर तक गए जहाँ बाद में शेकेम का नर्मिाण हुआ था। मोरेह शेकेम के पास एक ओक का वन है।

[6931] बेत एल् सबसे पुराना कनानी शहर है; अब्राहम के समय में इसे लूज़ कहा जाता था, यह यरूशलेम के उत्तर में एप्रैम गोत्र के पहाड़ी क्षेत्र में, एक पहाड़ के पास स्थति था, जसिका नाम शहर के नाम पर 'माउंट बेत एल्' पड़ा था; यह जगह असाधारण रूप से जंगली है और वर्तमान में खंडरों

अब्राम अपने परविार और लूत के साथ शेchem की घाटी में बस गए। शुरुआत में, वे दोनों एक साथ रहते थे और मवेशी, चांदी और सोने में अमीर थे; लेकनि बाद में, अपने घरों और नौकरों के बीच झगड़े से बचने के लिए, अब्राम ने लूत को दूर भेज दयिा, और उसे अपनी पसंद की भूमि चुनने की अनुमति दी। लोथ ने अपने लिए यॉर्डन के पानी से सचिति एक उपजाऊ मैदान चुना[6932] ।

जब लूत अब्राम से अलग हो गया, तो परमेश्वर अपने चुने हुए के पास आए और कहा:

'अपनी आँखें उठाकर इस जगह से जहाँ तुम अब हो, उत्तर, दक्षणि, पूर्व और पश्चमि की ओर देखो: जो सारी भूमि तुम पहाड़ से देख सकते हो, वह मैं तुम्हें और तुम्हारे वंशजों को हमेशा के लिए दूँगा[6933] । और मैं तुम्हारे वंशजों को पृथ्वी की रेत के समान बहुत कर दूँगा।' उठो, इस देश में लंबाई और चौड़ाई तक चल फरिो; क्योंकि मैं इसे तुझे और तेरे वंशजों को सदा के लिए दूँगा।

परमेश्वर की आज्ञा का पालन करते हुए, अब्राम दक्षणि की ओर चल पड़ा और मम्रे के ओक के पेड़ों के पास बस गया[6934] , जहाँ उसने यहोवा के लिए एक वेदी बनाई।

इस बीच, यॉर्डन घाटी में, जसिे लोत ने अपना घर चुना था, पाँच शहर थे[6935] , जो अपने स्वयं के राजाओं द्वारा शासति थे, लेकनि जो पहले से ही 12 वर्षों से एलाम के राजा[6936] के अधीन थे। तेरहवें वर्ष में, उन्होंने राजा के वरिुद्ध वद्रिोह कर दयिा, लेकनि उससे पराजति हो गए; उस देश के कई नविासी, लोत सहति, बंदी बना लिए गए। यह जानकर, अब्राम ने अपने सेवकों को हथयिारबंद कयिा, दुश्मन को परास्त कयिा, लूत और सभी बंदयिों को मुक्त कराया, और दुश्मन द्वारा ले जाई गई सारी लूटपाट को वापस ले लयिा, जसिे उसने उन राजाओं को लौटा दयिा जनिकी वह थी। जब अब्राम वजियी होकर लौटा, तो राजा उससे भेंट करने के लिए बाहर आए। शालमि के राजा और परमप्रभु परमेश्वर के याजक[6937] ने रोटी और दाखरस नकिाले और अब्राम को आशीर्वाद देते हुए कहा:

के ढेरों के बीच चरवाहों के एक शविरि के अलावा और कुछ नहीं है। गाई बेतेल के पूर्व में, बन्यिामीन गोत्र के उत्तरी भाग में स्थति एक प्राचीन कनानी शहर है।

[6932] यॉर्डन घाटी, जसिे लूत ने अपनी रहने की जगह के रूप में चुना था और जसिके माध्यम से यॉर्डन नदी का प्रवाह होता था, काफी चौड़ी थी; मृत सागर, जैसा कि अधकिांश वद्विान मानते हैं, उस समय तक अस्तत्वि में नहीं था, और यॉर्डन नदी कई धाराओं में बंटकर संभवतः घाटी के रास्ते अरब की खाड़ी, या लाल सागर तक बहती थी।

[6933] ईश्वर के वचन की पूर्ति अब्राम के वंशजों पर न केवल देह के अनुसार बल्कि वशि्वास के अनुसार भी लागू होती है, और इसीलिए इस वादे को शाश्वत कहा जाता है। इन सभी वादों की पूर्ति मसीह में नहिति है, जन्हिोंने अपने लहू से इस भूमि को पवत्रि कयिा और इसे सभी वशि्वासयिों के लिए प्राप्त कयिा, और इसे ईसाई आत्मा का आध्यात्मकि स्वदेश बना दयिा। यही कारण है कि बाद में दुनयिा भर में बखिर जाने वाले चुने हुए लोगों के अनगनित अवशेषों के बावजूद, आब्राहम के पास, वशि्वास के द्वारा, एक और संतान है जसिके लिए फलिस्तीन उद्धार की भूमि है, वास्तव में प्रतज्ञिात भूमि है।

[6934] मम्रे एक अमोरी का व्यक्तगित नाम है, जो अब्राहम का एक सहयोगी था (उत्पत्ति 14:24)। मम्रे का बाग हेब्रोन के पास स्थति था, जो कनान का सबसे प्राचीन शहर है और यरूशलेम जाने वाले रास्ते पर, एक उपजाऊ और सुंदर क्षेत्र में स्थति है।

[6935] फलीभूत जॉर्डन घाटी में, जहाँ लूत बसा था, नम्निलखिति पाँच नगर थे: सदोम, गमोरा, अदमा, ज़ेबोइम और बेला (जसिे बाला भी कहा जाता है)।

[6936] एलामी, शेम के प्रथम पुत्र एलाम की संतान थे। उनका देश मेसोपोटामयिा में, कनान की भूमि के समीप स्थति था।

[6937] मेलकीजेज़ेक संभवतः कनानी लोगों—अमोरीयों, जो उस समय फलिस्तीन में रहते थे—में से थे, क्योंकि वे उनके राजा और पुरोहति दोनों थे; उस समय, कनानी जनजातयिों के बीच धार्मकिता अभी भी बनी हुई हो सकती थी, और अमोरीयों के पापों का पूरा पैमाना अभी तक नहीं भर गया था। सलमि को वही स्थान माना जाता है जो बाद में यबूसी और फरि यरूशलेम बना (भजन संहति 75:3)। परम ईश्वर के याजक के पद से, मेलकीजेदक न केवल झूठे देवताओं के पूजकों से, बल्कि अन्य राजाओं से और यहाँ तक कि अब्राहम से भी वशिष्टि है; और इसलिए कोई भी उसमें सच्चे ईश्वर के एक वशिेष सेवक को न देख पाए, जो पूरे फलिस्तीन में प्रसद्धि था, ऐसा हो ही नहीं सकता। पवत्रि शास्त्र ने उनके और उनकी वंशावली के बारे में ववरिण छपिाए हुए हैं, और उन्हें उद्धारकर्ता मसीह की एक पूर्व-छाया के रूप में प्रकट कयिा है। यहाँ तक कि पुराने नयिम में भी, राजा और भवष्यिवक्ता दाऊद ने मेल्कीजेदक के असाधारण पुरोहतित्व में मसीहा के पुरोहतित्व की एक पूर्वछाया देखी, जब उन्होंने परमेश्वर के पुत्र के बारे में कहा: 'तू मेल्कीजेदक की रीति (अर्थात् समानता) के अनुसार सदा का याजक है' (भजन संहति 109:4); मेलकसिदिक का प्रकार्यात्मक महत्व प्रेरति पौलुस द्वारा इब्रानयिों के नाम अपनी पत्रकिा में (इब्रानयिों 7:1–28) वशिेष रूप से स्पष्ट और वस्तिार से प्रकट कयिा गया है। मेलकीजेज़ेक, अपने नाम के अर्थ के अनुसार, धार्मकिता का राजा है; उपाधि से, वह शलमि का राजा है, अर्थात् शांति का राजा, और साथ ही परमप्रभु परमेश्वर का याजक है; उसे ऐसा बताया गया है कि उसका न कोई पति है, न कोई माता, न कोई वंशावली है; उसका याजकत्व शाश्वत है; क्योंकि हम न तो उसके पूर्ववर्तयिों को देखते हैं और न ही उसके उत्तराधकिारयिों को; उसका आशीर्वाद सर्वोच्च है, क्योंकि परमप्रधान के नाम पर वह वशि्वासयिों के पति पर आशीर्वाद प्रदान करता है, और अब्राहम स्वयं ने इस आशीर्वाद को बड़े से छोटे को प्राप्त करने के रूप में अत्यधकि सम्मान और श्रद्धा के साथ स्वीकार कयिा। ये सभी उत्कृष्ट गुण और वशिेषाधकिार केवल परमेश्वर के पुत्र, यीशु मसीह में ही एकत्रति होते हैं।

'स्वर्ग और पृथ्वी का स्वामी परमप्रधान परमेश्वर आब्रम को धन्य दे। और परमप्रधान परमेश्वर धन्य हो, जिसने आपके शत्रुओं को आपके हाथ में सौंप दिया है।'

अब्राम ने मेल्कीजेदक को युद्ध के सभी लूट के माल का दसवां हिस्सा दिया; लेकिन जब सदोम का राजा उसे दुश्मनों से बरामद की गई संपत्ति की पेशकश करने लगा, तो उसने कुछ भी लेने से इनकार कर दिया।

इसके बाद, अब्राम कनान देश में बहुत प्रसिद्ध हो गया। उसकी सफलताओं ने वहाँ के निवासियों में ईर्ष्या और भय पैदा कर दिया। फिर, एक रात, प्रभु ने एक दर्शन में अब्राम से कहा:

'डरो मत, अब्राम; मैं तुम्हारा ढाल हूँ; तुम्हें बहुत बड़ा प्रतिफल मिलेगा।'

अब्राम ने कहा:

'प्रभु! आप मुझे क्या पुरस्कार देंगे? मेरे कोई संतान नहीं है: आपने मुझे कोई नहीं दिया है। दमिश्क का एलीजेर मेरे घर का प्रबंध करता है: वही मेरा वारिस होगा।'

प्रभु ने कहा, 'वह नहीं, बल्कि तुम्हारा अपना पुत्र तुम्हारा वारिस होगा।'

इसके बाद, प्रभु अब्राम को आँगन में बाहर ले गए और कहा:

'आकाश की ओर देखो और तारों को गिनो, यदि तुम गिन सकते हो: तुम्हारे वंशज इतने ही होंगे[6938] ।'

अब्राम ने उस वादे पर विश्वास किया, और इस विश्वास को उसे धार्मिकता के रूप में गिन लिया गया[6939] और यह एक धर्मी और ईश्वर-प्रसन्न जीवन की नींव के रूप में काम किया।

अगले दिन, परमेश्वर की आज्ञा पर अब्राम ने एक तीन वर्ष की गाय, एक बकरी और एक मेमने को बीच से काटकर उनके आधे हिस्से एक-दूसरे के सामने रख दिए; उनके साथ एक कबूतर और एक जवान कबूतर भी जोड़े गए[6940] । अब्राम ने शिकारी पक्षियों से उन शवों की रक्षा की[6941] । जैसे ही सूरज ढल रहा था, उस पर गहरी नींद छा गई, और वह भय और घोर अंधकार से घिर गया। तब प्रभु उसके समीप आए और कहा:

'जान लो कि तुम्हारे वंशज चार सौ वर्ष तक एक परदेश में परदेशी रहेंगे, और वहाँ उन्हें दास बनाकर उत्पीड़ित किया जाएगा[6942] । परन्तु मैं उस राष्ट्र पर न्याय करूंगा जो उन्हें दास बनाएगा, और उसके बाद वे वहाँ से बहुत धन-संपत्ति के साथ निकलेंगे। जहाँ तक आपकी बात है, आप अपने पूर्वजों के पास शांतिपूर्वक जाएँगे, और वृद्धावस्था में दफनाए

[6938] मूसा से परमेश्वर का यह वादा केवल शाब्दिक समझ, अर्थात् अब्राहम की संतानों की विशाल संख्या, तक सीमित नहीं हो सकता। इस वादे का मसीही महत्व है और यह अब्राहम से परमेश्वर के अन्य वादों से अविभाज्य रूप से जुड़ा हुआ है।

[6939] प्रेरित कहते हैं (रोमियों 4:3), 'इब्राहीम ने परमेश्वर पर विश्वास किया, और यह उसे धार्मिकता के रूप में गिन लिया गया,' जिससे यह साबित होता है कि इब्राहीम की धार्मिकता केवल उसके विश्वास के कारण ही थी (यहाँ 'धार्मिकता' शब्द, बेशक, औचित्य के अर्थ में समझा गया है)। इब्राहीम ने परमेश्वर पर विश्वास किया, अर्थात्, उसने उसकी सच्चाई, पवित्रता, ज्ञान, शक्ति और अनंतता में विश्वास किया, जब, अपनी सौ वर्ष की उन्नत आयु के बावजूद, उसने विश्वास के साथ परमेश्वर के उस वचन को स्वीकार किया कि उसे एक पुत्र होगा – और अब्राहम का यह विश्वास उसे उस चीज़ के रूप में मान लिया गया जो स्वभाव से हो ही नहीं सकती – अर्थात्, धार्मिकता। यहाँ धार्मिकता से तात्पर्य ईश्वर की इच्छा के प्रति पूर्ण आज्ञाकारिता से है, जिसे अब्राहम ने उस समय तक प्राप्त नहीं किया था; इसलिए ईश्वर ने उनके विश्वास को आज्ञाकारिता के बराबर मान लिया। – मेट्रोपॉलिटिन फिलारेट का कहना है कि अब्राहम के विश्वास को धार्मिकता के रूप में मानने की घटना एक धीमी, क्रमिक प्रकटीकरण के बाद हुई। वे कहते हैं, 'विश्वास, ईश्वर के रहस्यमय मार्गदर्शन का परिणाम और चरमोत्कर्ष दोनों था: यह ईश्वर की कृपा की शुरुआत और आधार भी था।'

[6940] यह अब्राहम के साथ परमेश्वर की वाचा का एक दृश्यमान चिह्न था, या एक वाचा थी, कि परमेश्वर वास्तव में अब्राहम के वंशजों और कनान की सारी भूमि पर उनके वारिस होने के संबंध में अपना वचन पूरा करेंगे। प्राचीन काल में, संधि करने वाले आमतौर पर जानवरों के आधे-आधे किए गए शरीरों के बीच से गुजरते थे, यह इस बात का संकेत था कि जैसे इन हिस्सों ने पहले एक जीवित प्राणी का निर्माण किया था, वैसे ही उस समय से वे एक आत्मा, एक जीवन बनाएँगे, एक ही आत्मा द्वारा निर्देशित होंगे, और एक समुदाय का गठन करेंगे। – यहाँ जिन जानवरों का उल्लेख है, वे वे हैं जिनका उपयोग प्राचीन रीति-रिवाज के अनुसार बलिदान में किया जाता था, क्योंकि यहाँ अब्राहम एक सच्चा बलिदान कर रहे हैं, विशेष रूप से उस प्रकार का बलिदान जो गंभीर संधियों के समापन में किया जाता था।

[6941] कई लोग यहाँ शिकारी पक्षियों को अब्राहम के वंशजों के दुश्मनों के एक भविष्यसूचक प्रतीक के रूप में व्याख्यायित करते हैं: वे उन सभी मूर्तिपूजक जनजातियों का प्रतिनिधित्व करते हैं जिन्होंने या तो इस्राएल के लोगों का संहार करने का प्रयास किया या उन्हें मूर्तिपूजा में फंसाकर वाचा की पूर्ति में बाधा डालने की कोशिश की।

[6942] यह, बेशक, मिस्र में यहूदियों के दासत्व को संदर्भित करता है। 405 के बजाय 400 का गोल आंकड़ा दिया गया है, क्योंकि यह उन वर्षों की संख्या है जो इसहाक के जन्म से मिस्र से यहूदियों के प्रस्थान तक बीते थे। इसहाक, अब्राहम की संतानों में से पहले प्रवासी और परदेशी के रूप में, 1901 ईसा पूर्व में पैदा हुए थे, और यहूदियों ने 1496 ईसा पूर्व में मिस्र छोड़ दिया था।

जाएँगे। परन्तु आपके वंशज चार पीढ़ियाँ बीतने तक यहाँ वापस नहीं आएँगे[6943] , क्योंकि अमोरीयों का अधर्म अभी पूरा नहीं हुआ है[6944] ।

जब सूरज डूब गया और अँधेरा छा गया, तो चीरे हुए पशुओं से धुआँ उठने लगा, जैसे भट्टी से, और एक जलती हुई आग[6945] । और उसी दिन यहोवा ने अब्राम से इस प्रकार अपना वाचा बाँधाई, कहकर:

'मैं तुम्हारे वंशजों को यह देश देता हूँ, मिस्र की नदी से लेकर फरात नदी तक'[6946] .

अब्राम के कनान देश में बसने के बाद कई वर्ष बीत चुके थे। कल्दीयों के उर में प्राप्त प्रकटोक्ति के बाद, ईश्वर ने उससे तीन बार और वचन दोहराया कि उससे अनेक वंशज उत्पन्न होंगे; परन्तु उसकी पत्नी सारा ने कोई संतान नहीं जनी थी, और तब तक दोनों ही वृद्ध हो चुके थे। संतानहीनता अब्राम के लिए एक बड़ी परीक्षा थी[6947] ।

तब सारा ने, यह सोचकर कि वह स्वयं परमेश्वर के वचन के पूरा होने में बाधा है, अब्राम से सुझाव दिया कि वह उसकी दासी, मिस्री हागर को पत्नी के रूप में ले ले; और उसने उसे एक पुत्र, इस्माइल, को जन्म दिया[6948] ।

जब अब्राम 99 वर्ष के थे, तब प्रभु उन्हें प्रकट हुए और कहा:

'मैं सर्वशक्तिमान परमेश्वर हूँ; मेरे सामने चल और निष्कलंक रह, और मैं तेरे साथ अपनी वाचा स्थापित करूँगा और तुझे बहुत से वंशज दूँगा।'

अव्राम, भक्ति और श्रद्धा से भरकर, मुँह के बल गिर पड़े। परमेश्वर ने उनसे कहा:

अब तुम्हारा नाम अब्राम नहीं रहेगा, बल्कि तुम्हारा नाम अब्राहम होगा[6949] ; क्योंकि मैं तुम्हें अनेक राष्ट्रों का पिता बनाऊँगा। तेरे से राष्ट्र और राजा उत्पन्न होंगे; और मैं तेरे और तेरे वंशजों के साथ अपनी स्थिर प्रतिज्ञा स्थापित करूँगा[6950] , कि मैं तेरा परमेश्वर और तेरे बाद तेरे वंशजों का परमेश्वर होऊँ, और मैं तुझे कनान देश का सारा प्रदेश एक स्थिर विरासत के रूप में दूँगा[6951] । और मेरे और तेरे बीच की प्रतिज्ञा के दृश्यमान चिन्ह के लिए, तुम में से हर पुरुष का खतना किया जाएगा। हर पुरुष बच्चे का जन्म के आठवें दिन खतना किया जाना चाहिए, न केवल आपके अपने बच्चों का,

---

[6943] मोटे तौर पर, एक के बाद एक आने वाली चार पीढ़ियों को याकूब के पुत्र लेवी, केहत, अमरम और मूसा के रूप में पहचाना जा सकता है, जो 268 वर्षों की अवधि तक फैली हुई थीं।

[6944] अमोरी – कनानी लोगों का एक समूह – जो हम् के पुत्र कनान के पुत्र आमोर के वंशज थे – यहूदियों के निरंतर और जिद्दी दुश्मन थे; वे पहले मृत सागर के पश्चिमी तट पर रहते थे, लेकिन बाद में अन्य क्षेत्रों में फैल गए – मृत सागर के पूर्वी तट और यॉर्डन तक; वे मुख्य रूप से कनान देश के केंद्र में बसे थे और कई शक्तिशाली राजतंत्रों का गठन किया था। – धर्मग्रंथ में, 'अधर्म का माप भर जाना' का अर्थ समाजों और राष्ट्रों का अंतिम आध्यात्मिक पतन और मृत्यु, परमेश्वर द्वारा उनका परित्याग, उन पर होने वाला न्याय और उनका विनाश है।

[6945] अब्राम कटे हुए जानवरों के बीच से नहीं गुज़रा; केवल यहोवा की दृश्यमान प्रतिमा उनके बीच से गुज़री, यानी यह अनुग्रह की एक वाचा थी, एक वादा किया गया आशीर्वाद जिसे वाचा के संस्कार द्वारा मूर्त रूप से पुष्टि की गई थी। धुआँ और लौ – ये दो प्रतीक अब्राहम की संतान, दासत्व की परीक्षाओं और कठिनाइयों के बीच, और स्वयं प्रभु का प्रतिनिधित्व करते हैं, जिनका प्रकाशन और वादा दुख के अंधकार में प्रकाश और सांत्वना है। इस प्रकार, धुआँ इस्राएल के दुखों का और लौ मुक्ति का प्रतीक था।

[6946] मिस्र की नदी, अर्थात् नील नदी। फरात मेसोपोटामिया की एक महान नदी है, जो आर्मेनिया के पहाड़ों से निकलकर फारस की खाड़ी में मिलती है। यहाँ निर्दिष्ट की गई भूमि पूरी तरह से इस्राएल की होती यदि वह परमेश्वर के साथ अपनी वाचा में विश्वासयोग्य रहता। फिर भी, इस तथ्य के बावजूद कि लोगों का पतन जो नियत किया गया था उसकी पूर्ति में बाधा डालता था, नील और फरात की पूर्वी मुहानों के बीच की सभी भूमि अस्थायी रूप से अब्राहम की संतानों के नियंत्रण में थीं।

[6947] यहूदियों के बीच बांझपन को हमेशा एक कलंक माना जाता था, जबकि प्रजनन क्षमता ईश्वर का एक विशेष आशीर्वाद माना जाता था। इसीलिए सारा ने अपने पति को अपनी दासी दे दी, ताकि यह वादा और भी जल्दी पूरा हो सके। हालाँकि, पूर्व की प्रथाओं के अनुसार, अब्राहम को प्रभु से कोई सीधी आज्ञा नहीं मिली थी कि उसका पुत्र विशेष रूप से सारा से ही होगा, इसलिए उसे अपनी पहली पत्नी को तलाक दिए बिना ही दूसरी पत्नी लेने की अनुमति मिल गई, यद्यपि तलाक न केवल प्रथा द्वारा अनुमत था, बल्कि मूसा की व्यवस्था में भी निहित था।

[6948] इश्माएल – हिब्रू में: 'ईश्वर ने सुना' – का नाम इसलिए रखा गया क्योंकि जब हगर गर्भवती थी और सारा के उत्पीड़न से बचने के लिए रेगिस्तान में भाग गई थी, तब प्रभु ने उसकी पीड़ा पर दया की; उन्होंने उसे लौटने की आज्ञा दी और उसे एक पुत्र का आशीर्वाद दिया।

[6949] अब्राम नाम एक मानद उपाधि है जिसका अर्थ है 'उंचाई का पिता' या 'महान पिता'। दूसरी ओर, अब्राहम एक ऐसा नाम है जो वादे की पूर्ति को व्यक्त करता है, जिसका अर्थ है 'एक बड़ी संख्या का पिता' या 'कई राष्ट्रों का पिता'। मेट्रोपॉलिटिन फिलारेट का कहना है कि पूर्व में राजा किसी को सम्मानित करने के लिए उसका नाम बदलते थे। इस संदर्भ में, परमेश्वर, अब्राहम को सम्मानित करते हुए, उसका नाम बदलते हैं।

[6950] शाश्वत वाचा अब्राहम के व्यक्तित्व में न केवल उनके शारीरिक वंशजों, यानी इस्राएल के लोगों के साथ, बल्कि संपूर्ण मानवता के साथ भी स्थापित की गई है, जिसमें इस नाम से उन लोगों को शामिल किया गया है जिन्हें विश्वास के माध्यम से वाचा प्राप्त हुई है; और इसी कारण इसे मसीही अर्थ में शाश्वत वाचा कहा जाता है।

[6951] कनान देश की शाश्वत विरासत को एक रहस्यमय, प्रकारात्मक अर्थ में समझना चाहिए, जो परमेश्वर के राज्य और मसीह की पवित्र कलीसिया को दर्शाता है।

बल्कि उन दासों का भी जिन्हें आपने विदेशी राष्ट्रों से चाँदी देकर खरीदा है। कोई भी बिना खतना कराए व्यक्ति, जो मेरे नियम को तोड़ने वाला है, वह अपने लोगों से अलग कर दिया जाएगा[6952] । अपनी पत्नी को सारई मत कहो, बल्कि उसका नाम साराह रखो[6953] । मैं उसे आशीष दूँगा, और उससे राष्ट्र उत्पन्न होंगे, और राष्ट्रों के राजा उससे उत्पन्न होंगे।

अब्राहम ने आनंदित होकर हँसा, फिर भी उसी समय उसने मन ही मन सोचा:

'क्या सौ साल का आदमी सच में बच्चे पैदा कर सकता है? और क्या सारा सच में नब्बे साल की उम्र में जन्म दे सकती है?'

लेकिन प्रभु ने अपना वादा दोहराया और उनके भविष्य के पुत्र का नाम—इज़हारक—भी बता दिया।

कुछ ही समय बाद, प्रभु ममरे के ओक वृक्ष के पास अब्राहम के पास फिर से प्रकट हुए – इस प्रकार। एक दिन दोपहर को, अब्राहम अपने तम्बू के पास बैठे थे। उन्होंने अपनी आँखें उठाईं, और देखा कि उनके सामने तीन यात्री खड़े हैं। वह तुरंत उनका स्वागत करने के लिए दौड़े और, जमीन पर झुककर, उनमें से पहले से कहा:

'हे स्वामी! यदि मैं आपकी दृष्टि में अनुग्रह प्राप्त कर गया हूँ, तो अपने दास के पास से न जाएँ। मुझे थोड़ा पानी लाने दें और आपके पैर धोने दें[6954] ; फिर इस वृक्ष के नीचे विश्राम करें[6955] । और मैं आपको यात्रा के लिए तरोताज़ा करने हेतु कुछ रोटी लाता हूँ।'

[6956]यात्रियों ने उसकी विनती मान ली। तब अब्राहम तंबू में सारा के पास दौड़ा और उससे कहा कि वह जल्दी से कुछ गेहूं का आटा गूंथकर बिना खमीर वाली रोटी बना दे; फिर वह झुंड के पास दौड़ा, एक नरम, सुंदर बछड़ा चुना और अपने दास को उसे तैयार करने का आदेश दिया। जब बिना खमीर की रोटी और बछड़ा तैयार हो गया, तो अब्राहम ने कुछ पनीर और दूध लाया, और यह सब अपने मेहमानों के सामने परोस दिया। वे खाने लगे, जबकि अब्राहम पेड़ के पास खड़ा होकर उनकी सेवा कर रहा था। भोजन के दौरान, यात्रियों ने अब्राहम से पूछा:

'सारा, तुम्हारी पत्नी कहाँ है?'

'वह यहाँ तंबू में है,' अब्राहम ने उत्तर दिया।

[6952] खतना (लिंग की अग्रछाला का, सबसे भीतरी मांस) परमेश्वर और अब्राहम तथा उसकी संतानों के बीच वाचा के चिन्ह के रूप में कार्य करता था, और यह एक मुहर थी जो पुराने नियम के विश्वासियों को अन्यजातियों से अलग करती थी। उच्चतम, रहस्यमय अर्थ में, खतना ईसाई बपतिस्मा की पूर्वसूचना के रूप में कार्य करता था। प्रेरित पौलुस खतना के इस महत्व को तब समझाते हैं जब वे अब्राहम के खतने को 'विश्वास की धार्मिकता की मुहर' (रोमियों 4:11) कहते हैं, और हमारे खतने के बिना होने को, जो मानव हाथों का नहीं है, 'मसीह का खतना' (कुलुस्सियों 2:11) कहते हैं। पहला वादा है; दूसरा इसका पूरा होना है, जिससे मनुष्य का भीतरी मनुष्य खतना होता है, और वह शैतान और उसके सभी कामों का त्याग करता है; यह वही खतना है जो प्रेरित के शब्दों में, हृदय में, आत्मा के अनुसार किया जाता है, न कि अक्षर के अनुसार। जिस प्रकार खतना के द्वारा कोई व्यक्ति विश्वासियों के समुदाय में प्रवेश करता था, उसी प्रकार बपतिस्मा के द्वारा कोई व्यक्ति मसीह में विश्वास करने वालों के समुदाय में प्रवेश करता है (यूहन्ना 3:5; 1 कुरिन्थियों 12:13); और जैसे खतना का अपना महान महत्व था, जो परमेश्वर के प्रति वफादारी और उसकी आज्ञाओं के सटीक पालन पर निर्भर था, वैसे ही बपतिस्मा हमें शारीरिक अशुद्धता को धोकर नहीं बचाता, बल्कि पापों को त्यागकर बचाता है, या प्रेरित के शब्दों में, मांस के पापी शरीर को त्यागकर, एक निर्मल अंतरात्मा का वचन, और मसीह का पुनरुत्थान (1 पतरस 3:21; इफिसियों 5:26–27; फिलिप्पियों 3:3, 9–11; कुलुस्सियों 2:11–13; रोमियों 6:2–14)। और चूँकि प्रेरित खतना न होने (बपतिस्मा) को उद्धारकर्ता के पुनरुत्थान के घनिष्ठ संबंध में रखता है, इसलिए चर्च के पिता पुराने नियम के खतने के लिए आठ-दिन की अवधि के ईश्वर के निर्धारण में ही एक पूर्वाभास देखते हैं, – यह मसीह के पुनरुत्थान के दिन का संदर्भ है, जो सातवें सब्बाथ के बाद आठवें दिन हुआ था, वह रविवार जिसने मसीह में हमारे औचित्य और बपतिस्मा में शारीरिक अशुद्धता के धोए जाने का पूर्वाभास दिया था। इसलिए, ईसाई धर्म की शुरुआती शताब्दियों में, शिशुओं का बपतिस्मा अक्सर जन्म के आठवें दिन किया जाता था।

[6953] पहला नाम, सारा, का अर्थ है 'स्वामित्व', यानी 'महारानी', और यह सम्मान का एक सामान्य उपाधि है। दूसरी ओर, सार्रा का अर्थ है 'राजकुमारी' या 'कुलीन महिला'; इस नाम में स्वयं एक भविष्यवाणी निहित है, जो बाद में पूरी हुई, कि उससे राजा उत्पन्न होंगे।

[6954] प्राचीन काल में, यात्री केवल चप्पलें (लकड़ी या चमड़े के तले वाली, जिन्हें पट्टियों से पैरों पर बांधा जाता था) पहनते थे, और यात्रा के बाद पैरों को धोना आतिथ्य का पहला कार्य था, विशेष रूप से पूर्व में।

[6955] धन्य जेरोम की गवाही के अनुसार, ममरे की ओक का पेड़, जिसके छाया तले अब्राहम को स्वयं प्रभु की आतिथ्य ग्रहण करने का सम्मान मिला था, सम्राट कॉन्स्टैंटियस के समय (यानी लगभग चौथी शताब्दी के मध्य तक) से भी पहले से मौजूद था और पवित्र स्थलों की यात्रा करने वाले भक्तिपूर्ण तीर्थयात्रियों को हमेशा यही दिखाया जाता था। वर्तमान में, यह पवित्र स्थल, वहाँ बचे हुए पेड़ के साथ, यरूशलेम में रूसी मिशन के अधीन है।

[6956] इन यात्रियों में से एक, जिनके रूप में स्वर्गदूत अब्राहम के पास आए थे, स्वयं प्रभु - यहोवा थे, जिन्हें उत्पत्ति की पुस्तक के इस अंश (उत्पत्ति 17:9) में अन्य स्वर्गदूतों से स्पष्ट रूप से अलग बताया गया है। कुछ लोग इन तीन स्वर्गदूतों के प्रकट होने में पवित्र त्रिमूर्ति के महान रहस्य की अभिव्यक्ति देखते हैं; यही कारण है कि अब्राहम के सामने प्रकट हुए तीन यात्रियों का चित्रण अक्सर इस रहस्य को दर्शाने के लिए उपयोग किया जाता है।

तब उनमें से एक ने—जो स्वयं प्रभु थे—कहा: 'अगले वर्ष, जब मैं इसी समय तुम्हारे पास लौटूँगा, तो तुम्हारी पत्नी सारा का एक पुत्र होगा।'

सारह तंबू के द्वार पर खड़ी थी। जब उसने यह भवष्यिवाणी सुनी, तो वह मन ही मन हँसी, यह सोचते हुए:

'क्या सचमुच मुझे अपनी इस बुढ़ापे में यह आनंद मलिेगा? और मेरा पतभिी बूढ़ा है।'

परन्तु यहोवा ने अब्राहाम से कहा:

'सारा ने हँसी क्यों उड़ाई? क्या परमेश्वर के लिए कुछ भी कठनि है? नयित समय पर मैं तुम्हारे पास आऊँगा, और सारा का एक पुत्र होगा।'

तब सारा भय से भर गई। उसे एहसास हुआ कि वह सर्वोच्च दैवीय शक्ति के सामने खड़ी थी, जो उसके सबसे गहरे वचिारों को जानती थी, और अपनी उलझन में उसने जोर देकर कहा कि वह नहीं हँसी थी। लेकनि प्रभु ने उसे डांटा और एक बार फरि कहा कि वह हँसी थी। इस प्रकार, उन्होंने स्वयं को हृदयों का जानने वाला प्रकट कयिा, और सारा को अपने वचिारों के प्रति अधकि चौकस और दैवीय वादों के प्रति अधकि आज्ञाकारी होना सखिाया।

इसके बाद, यात्री उठे और वहां से सदोम की ओर चल पड़े। जहाँ तक अब्राहम का सवाल है, प्रेरति के शब्दों में, *'उसने आशा के वपिरीत आशा में वश्विास कयिा, और इस प्रकार वह कई राष्ट्रों का पति बना, जैसा कि कहा गया है: "तो तेरा वंश ऐसा होगा।"' और, अपने वश्विास में हतोत्साहति हुए बनिा, उसने यह नहीं सोचा कि उसका शरीर, लगभग सौ साल का होकर, लगभग मृतक समान था, और न ही यह कि सारा की कोख बाँझ थी; वह अवश्विास के कारण परमेश्वर के वचन पर संदेह नहीं कयिा, बल्कि विश्विास में दृढ़ रहा, परमेश्वर की महमिा की और पूरी तरह से वश्विास रखता था कि वह जो वचन देता है, उसे पूरा करने में समर्थ है। 'इसी कारण से उसे यह धार्मकिता में गनिा गया* (रोमयिों 4:18-22)[6957] । अपने वंश से आने वाले अनगनित वंशजों के अनुग्रहकारी वचन पर वश्विास करते हुए, अब्राहम ने अपने दैवीय आगंतुकों का अत्यंत आनंद, कृतज्ञता और श्रद्धा की भावनाओं के साथ स्वागत कयिा।

रास्ते में, प्रभु ने अब्राहम को सोदम और गमोरा के नविासयिों को उनके अनगनित अधर्म के कारण नष्ट करने का अपना इरादा प्रकट कयिा। अब्राहम ने प्रभु से उन दुष्ट नगरों को क्षमा करने के लिए वनिती करना शुरू कर दयिा, इस आधार पर कि हो सकता है कि उनमें पचास धर्मी लोग हों। लेकनि उन शहरों में इतने भी धर्मी लोग नहीं मलि। इसके बाद, प्रभु ने अब्राहम की प्रार्थना का उत्तर देते हुए, वादा कयिा कि यदि उन शहरों में चालीस, फरि तीस, बीस और अंत में दस भी धर्मी लोग मलिते हैं, तो वह उन दुष्ट शहरों को बचा लेंगे। लेकनि सोदोम और गमोरा में इतने भी धर्मी लोग नहीं मलि। तब दुष्ट नगरों का भाग्य तय हो गया। हालाँकि, अब्राहम का मध्यस्थता व्यर्थ या पूरी तरह से नष्फिल नहीं थी; क्योंकि उसका भतीजा लूत सामान्य वनिाश से बच गया।

शाम को, अब्राहम से मलिने आए दो स्वर्गदूत यात्रयिों के वेश में सदोम पहुँचे, जबकि लूत नगर के द्वार पर बैठा था। यात्रयिों को देखकर, लूत उनके सामने ज़मीन पर झुक गया और कहा:

'हे स्वामनिो! कृपया अपने सेवक के घर में आओ और रात बतिाओ; अपने पैर धो लो, और सुबह तुम अपनी यात्रा पर नकिल पड़ना।'

लेकनि जब यात्रयिों ने लूत की परीक्षा लेते हुए मना कर दयिा और उसके आतथि्य को ठुकराया, तो उसने उन पर बहुत आग्रह कयिा, और वे घर में प्रवेश कर गए। लूत ने बनिा खमीर की रोटी बनाई और उनके लिए भोजन परोसा, और उन्होंने खाया। वे अभी बस्तिर पर भी नहीं गए थे कि सोदोम के लोग, शहर के हर कोने से, लोत के घर के चारों ओर इकट्ठा हो गए और यात्रयिों को उनके हवाले करने की मांग करने लगे। लोत उन्हें शांत करने और यह समझाने के लिए बाहर गया कि वे उसके मेहमानों को कोई नुकसान न पहुँचाएँ; लेकनि उन्होंने उसका अपमान कयिा और दरवाज़े तोड़ने की धमकी दी। तब स्वर्गदूतों ने, जो यात्रयिों के वेश में प्रकट हुए थे, सदोम के पुरुषों को अँधा कर दयिा, और लोत को घर के अंदर ले गए, और उसे आज्ञा दी कि वह अपने रश्तिेदारों को लेकर उस नगर से नकिल जाए, जसिे उसकी दुष्टता के कारण वनिाश के लिए दंडति कयिा गया था; इस समय स्वर्गदूतों ने लोत के सामने अपनी सच्ची पहचान का खुलासा कयिा, और स्पष्ट रूप से घोषणा की कि उन्हें प्रभु द्वारा उसके पास भेजा गया था। पहले ही भोर हो चुकी थी, फरि भी लूत अभी भी हचिकचिा

[6957] रोमयिों 4:18–22। अब्राहम के इस वश्विास के महत्व के लिए ऊपर देखें। 'धर्म' – औचतिय; 'उसने आशा के वपिरीत आशा में वश्विास कयिा', अर्थात्, आशा का कोई आधार न होते हुए भी उसने वश्विास कयिा, वह उस आशा से प्रेरति होकर जसिने न तो आँख देखी थी और न ही मन ने सोचा था – परमेश्वर और उनके वचन पर।

रहा था। तब स्वर्गदूतों ने, उसका, उसकी पत्नी और उसकी बेटियों का हाथ पकड़कर, उन्हें बाहर ले गए। स्वर्गदूतों में से एक ने लूत से कहा:

'अपनी जान बचाओ; पीछे मुड़कर मत देखना, और इस मैदान में कहीं भी मत रुकना; hill[6958] की ओर भाग जाओ, नहीं तो तुम मर जाओगे।'

लेकिन लूत ने कहा:

'नहीं, हे प्रभु! आपके दास को आपकी दृष्टि में अनुग्रह मिला है, और आपने मेरे प्राण बचाकर मुझ पर महान दया दिखाई है; परन्तु मैं पहाड़ पर नहीं भाग सकता, कहीं आपदा मुझ पर आ पड़े और मैं मर जाऊँ। यह नगर पास में है – और यह छोटा है; कृपया मुझे वहाँ भाग जाने दें, ताकि मेरी जान बच जाए।

दूत ने उत्तर दिया:

'मैं तुम्हें यह अनुग्रह दूँगा और इस नगर को नष्ट न करूँगा; वहाँ भाग जाओ, परन्तु बिलकुल भी विलम्ब न करना: क्योंकि जब तक तुम वहाँ नहीं पहुँच जाते, तब तक मैं अपना काम पूरा नहीं कर सकता।

धर्मी लोगों के प्रति ईश्वर की यही महान दया है! इरादे से कमज़ोर लेकिन आत्मा से शुद्ध लूत के लिए, और ईश्वर के चुने हुए, अब्राहम से उसके नातेदारी के लिए, प्रभु न केवल उस शहर को उद्धार प्रदान करते हैं, बल्कि अपनी दया में दुष्ट शहरों पर अपनी न्यायसंगत सज़ा को तब तक लागू करने में देरी करते हैं जब तक लूत के पास भागने का समय हो।

जब तक लूत इस नगर में पहुँचा, तब तक सूर्य अस्त हो चुका था। तब यहोवा ने स्वर्ग से सदोम, गमोरा, अदमा और सेबोईम पर गंधक और आग की वर्षा की, और इन नगरों और उस सारे मैदान को, उनके सभी निवासियों सहित नष्ट कर दिया – और सारा प्रदेश एक खारे सागर में बदल गया[6959] ।

लूत की पत्नी ने स्वर्गदूत की आज्ञा का पालन नहीं किया: содом से निकलते समय, उसने पीछे मुड़कर देखा; पर तुरंत ही वह नमक का स्तंभ बन गई। लूत स्वयं, ज़ोआर में रहने से डरकर, अपनी दो बेटियों के साथ पहाड़ों में चला गया और वहाँ एक गुफा में रहने लगा।

इस बीच, ईश्वर ने अंततः सारा पर अपनी कृपा की। जब अब्राहम सौ वर्ष के थे, तब उसने ईश्वर द्वारा स्वयं दी गई भविष्यवाणी के अनुसार उन्हें एक पुत्र दिया, जिसका नाम उन्होंने इसहाक रखा। आठवें दिन, अब्राहम ने उनका खतना किया, जैसा कि ईश्वर ने उन्हें आज्ञा दी थी। और सारा, जो नब्बे वर्ष की थी, ने कहा:

'ईश्वर ने मुझे हँसी और आनंद दिया है[6960] ; जो कोई भी मेरे बारे में सुनेगा वह आनंदित होगा। किसने अब्राहम से कहा होता, "सारा बच्चों को दूध पिलाएगी?" क्योंकि अपनी वृद्धावस्था में मैंने उसे एक पुत्र दिया है।'

जब बच्चा बड़ा होकर छुड़ा दिया गया, तो इब्राहीम ने इस अवसर का उत्सव मनाने के लिए एक बड़ी दावत दी। सारा ने देखा कि इश्माएल—जिसे मिस्र की हागर ने इब्राहीम के लिए जन्म दिया था—उसके बेटे इसहाक का मज़ाक उड़ा रहा था, तो उसने इब्राहीम से कहा:

'इस दासी को उसके बेटे के साथ भेज दो; क्योंकि इस दासी का बेटा मेरे बेटे इसहाक के साथ वारिस नहीं बनेगा।'

[6958] यहाँ संदर्भित 'पहाड़ियाँ' मोआब की पहाड़ियाँ हैं। ज़ोआर, जिसमें लूत ने विनाश से शरण पाई थी—हिब्रू ग्रंथ के अनुसार, ज़ोआर (पूर्व में बेला)—कovenant के पाँच शहरों में से एक था, जो जॉर्डन घाटी में स्थित था, और उस क्षेत्र का सबसे दक्षिणी शहर था, जो मोआब की पहाड़ियों के आधे रास्ते पर था।

[6959] लवण सागर, या मृत सागर, जॉर्डन घाटी के दक्षिणी छोर पर स्थित है, जो खुरदरी, नंगी चट्टानों से घिरा हुआ है। इसे खारे सागर कहा जाता है क्योंकि इसमें बहुत अधिक मात्रा में नमक होता है; इसके अलावा, यहाँ बिटुमेन या पत्थर के राल की प्रचुरता है, जो आज भी झील के तल से ऊपर उठकर सतह पर तैरता है और हवा में वाष्प पैदा करता है। इस सागर को मृत सागर कहा जाता है क्योंकि इसके पानी में कोई भी जानवर जीवित नहीं रह सकता। यहाँ तक कि इसके तट, जो नमक के क्रिस्टलों से ढके हुए हैं, पूर्णतः निर्जीवन का एक दृश्य प्रस्तुत करते हैं; यहाँ तक कि खारे पानी से सने पेड़ों के ठूंठ भी पत्थर हो जाते हैं। इस प्रकार, मृत सागर दुष्ट शहरों पर ईश्वर के श्राप और दंड की एक प्रभावशाली स्मृति के रूप में खड़ा है। मृत सागर अंडाकार आकार का है और उत्तर से दक्षिण तक 20 घंटे की यात्रा तक फैला हुआ है; इसके उत्तरी भाग की गहराई 1,318 फीट या लगभग 190 फाथम तक पहुँचती है, जबकि दक्षिणी भाग बहुत उथला है।

[6960] हिब्रू में इसहाक का अर्थ है 'हँसी'। इसहाक का नाम ऐसा इसलिए रखा गया क्योंकि उसकी माँ सारा, उसके जन्म के वचन को सुनकर हँसी थीं; लेकिन उसका नाम इसलिए भी रखा गया क्योंकि वह मसीह के आगमन की एक रहस्यमय पूर्वसूचना को मूर्त रूप देता है, जिसके बारे में उद्धारकर्ता स्वयं ने कहा: *'तुम्हारे पिता इब्राहीम को मेरी दिन का देखकर आनन्द हुआ; और उसने उसे देखकर प्रसन्न हुआ'* (यूहन्ना 8:56)।

अब्राहम इन बातों को सुनकर दुखी हुआ; क्योंकि एक पिता के रूप में वह इसहाक से प्रेम करता था और उस पर दया करता था। लेकिन परमेश्वर ने उससे कहा:

[6961]'लड़के और अपनी दासी के कारण दुखी न हो; जो कुछ सारा तुझसे कहे, उसकी बात मान; क्योंकि इसहाक के द्वारा तेरा वंश नामित होगा। इसके अलावा, मैं दासी के पुत्र को भी एक राष्ट्र बनाऊँगा, क्योंकि वह भी तेरा वंशज है।'

तब अब्राहम ने, ईश्वर की इच्छा के प्रति पूर्ण समर्पण के साथ, हागर को उसके पुत्र इसमाएल के साथ भेज दिया। भटकते हुए, वे रेगिस्तान में रास्ता भूल गए और प्यास से मरने की कगार पर थे, लेकिन ईश्वर ने चमत्कारिक रूप से उन्हें बचाया और उस दुखी माँ को यह वादा करके सांत्वना दी कि उसके पुत्र से एक महान राष्ट्र उत्पन्न होगा[6962] ।

उस समय, अब्राहम का कनान के पड़ोसी राजाओं और शासकों के बीच अपार प्रभाव और सम्मान था। अब्राहम पर ईश्वर की सर्वोच्च सुरक्षा और विशेष आशीर्वाद सभी के लिए इतने स्पष्ट थे कि गेरा के राजा अबीमेलेक ने उनके साथ गठबंधन करना चाहा। फिर भी, इसके बाद भी अब्राहम एक घुमक्कड़ की तरह ही रहते रहे, और उनका कहीं भी अपना कोई स्थायी घर नहीं था।

अब्राहम का पूरा जीवन विभिन्न प्रकार की परीक्षाओं से भरा रहा, जो धैर्य, ईश्वर में दृढ़ और अटूट विश्वास और आशा, और उनकी इच्छा के प्रति सबसे पूर्ण समर्पण का एक आदर्श था। फिर भी, प्रभु की उन पर हुई सभी दयालुताओं के बाद, उनका विश्वास और भी मज़बूत होने वाला था। और इस प्रकार, अपने जीवन के कई वर्षों के बाद, प्रभु ने उन्हें एक अंतिम परीक्षा दी, जो एक साधारण मनुष्य की शक्ति से परे थी। अब्राहम के विश्वास की परीक्षा लेने के लिए, परमेश्वर ने उन्हें पुकारा और कहा:

'अपने एकलौते पुत्र, जिसे तुम प्रेम करते हो, इसहाक को ले जाओ, और मोरियाह के देश में जाओ, और वहाँ उसे एक पहाड़ पर होमबलि चढ़ा दो, जिसे मैं तुम्हें दिखाऊँगा।'

इस आज्ञा की असाधारण प्रकृति और इसाक के प्रति अपने महान पितृत्व प्रेम के बावजूद, अब्राहम को एक पल के लिए भी इस बात पर संदेह नहीं हुआ कि यह ईश्वर की ओर से आई थी, और उसे बिना किसी आपत्ति के इसे पूरा करना चाहिए। ईश्वर के प्रति उनकी भक्ति इतनी महान थी कि उन्होंने अपने एकमात्र प्रिय पुत्र को उनकी बलि के रूप में अर्पित करने में संकोच नहीं किया। साथ ही, वह यह भी मानते थे कि इसहाक, जो अब संतानहीन होकर मरने वाला था, पहले दिए गए वचनों के अनुसार, एक राष्ट्र का पूर्वज और प्रतिज्ञात उद्धारकर्ता का पूर्वज बनेगा। जैसा कि प्रेरित कहते हैं, वह विश्वास करते थे कि परमेश्वर उनके प्रतिज्ञात पुत्र को मरे हुओं में से जिला सकता है (इब्रानियों 11:19)। और इस प्रकार, किसी को भी अपना इरादा बताए बिना, सुबह-सुबह अब्राहम ने अपनी गदही पर काठी डाल दी, अपने साथ इसहाक और दो नौकरों को ले लिया, होमबलि के लिए लकड़ी इकट्ठी की, और यहूबी लोगों के पहाड़ी प्रदेश की ओर, उस स्थान के लिए चल पड़ा जिसके बारे में यहोवा ने उससे कहा था[6963] । तीसरे दिन, परमेश्वर के एक विशेष संकेत से,

---

[6961] जैसा कि प्रेरित पौलुस ने गलातियों के नाम अपनी पत्री में विस्तार से समझाया है, हागर और सारा दो वाचाओं: पुरानी और नई, के प्रकार के रूप में काम करती हैं, ठीक उसी तरह जैसे इसमाएल और इसहाक पुरानी वाचा और नई वाचा की कलीसियाओं के सदस्यों का प्रतिनिधित्व करते हैं (गलातियों 4:22-31)। हागर—दासी—पुरानी वाचा की कलीसिया का एक प्रकार है, जो व्यवस्था के अधीन थी और जिसका स्वभाव दासी जैसा था। इस प्रकार, इस्माएल, जो एक दासी और देह के अनुसार इब्राहीम का पुत्र था, ने यहूदियों का पूर्वसंकेत दिया, जिन्हें मसीह से पहले परमेश्वर के वचनों का एकमात्र प्राप्तकर्ता माना जाता था। सारह नए नियम का प्रतीक थी, जैसे कि इसहाक मसीहियों का प्रतीक थे, जो नए नियम की स्वतंत्र संतानें हैं, वादे के पुत्र—इसहाक की तरह—और शरीर के नहीं; क्योंकि बपतिस्मा के संस्कार में, मसीह की कलीसिया में प्रवेश करने पर, हम शरीर से नहीं बल्कि परमेश्वर के वादे से जन्मते हैं। और जैसे हागर और इस्माएल को अब्राहम ने निकाल दिया था, वैसे ही, नए नियम के आगमन के साथ, यहूदी सभा को अस्वीकार कर दिया गया है, और मसीह की मुक्त कलीसिया के बच्चों से व्यवस्था के अधीन दासता का जुआ हटा दिया गया है; ईसाई स्वतंत्रता के पुत्रों द्वारा अनुग्रह का उत्तराधिकार और मसीह में शाश्वत जीवन के सभी वचन प्राप्त किए जाएँगे, जबकि यहूदी, जो दासता के पुत्र हैं, जिन्होंने इसे विशेष रूप से अपने लिए दावा करने का प्रयास किया, उससे वंचित कर दिए जाएँगे। जैसे सारा पहले बाँझ थी और फिर उसने प्रतिज्ञा के पुत्र को जन्म दिया, वैसे ही नए नियम की कलीसिया, जो मसीह से पहले बाँझ थी, भविष्यवक्ता (यशायाह 64:1) के वचनों के अनुसार, उससे भी अधिक पुत्रों को जन्म देगी जिसकी कोई पति है, अर्थात् यहूदी सभा; क्योंकि परमेश्वर का वादा सभी राष्ट्रों तक फैला हुआ है और अनुग्रह की शक्ति से, सभी को मसीह की नई वाचा की कलीसिया में ग्रहण किया जाता है।

[6962] वास्तव में, इस्माइल से बहुत संतान उत्पन्न हुई। उनके बारह पुत्र बारह अरब कबीलों के पूर्वज थे, जो आज भी अपने पूर्वज की स्वतंत्रता और जंगली स्वभाव को बनाए रखते हुए खानाबदोश हैं। अरब में रहते हुए, वे बाद में अरब या अरबट्स के सामूहिक नाम के तहत अन्य खानाबदोश लोगों के साथ मिल गए।

[6963] जेबुसी – एक कनानी लोग जो अपनी उत्पत्ति हाम के पुत्र जेबूस से मानते थे – कनान की भूमि के सबसे शुरुआती निवासियों में से थे। उनकी भूमि उसी क्षेत्र में स्थित थी जहाँ बाद में यरूशलेम का निर्माण हुआ, जो सियोन पर्वत पर उनके शहर जेबूस की जगह पर था। मोरियाह – हिब्रू

अब्राहम ने दूर से बलदिान के लिए नरि्दष्टि पहाड़ को देखा। तब उसने अपने सेवकों को गधे के साथ वहीं रहने का आदेश दयिा; होमबलि के लिए लकड़ी लेकर, वह उसे इज़ैक को लादने के लिए दे दयिा, जबकि उसने स्वयं आग और चाकू अपने हाथों में ले लयिा – और वे दोनों एक साथ पहाड़ पर चढ़ गए।

और इसहाक ने अब्राहम से कहा:

'पतिाजी! आग और लकड़ी तो है – होमबलि के मेम्ने के लिए भेड़ कहाँ है?'

अब्राहम ने उत्तर दयिा:

'मेरे पुत्र, होमबलि के लिए ईश्वर स्वयं एक मेमना प्रदान करेंगे।' और वे दोनों साथ-साथ आगे बढ़े।

जब वे उस स्थान पर पहुँचे जसिे परमेश्वर ने उसे दखिाया था, तो अब्राहम ने वहाँ एक वेदी बनाई, लकड़ी बछिाई, और अपने पुत्र इसहाक को बाँधकर वेदी पर लकड़ी के ऊपर लटिा दयिा। फरि अब्राहम ने अपना हाथ बढ़ाया और अपने पुत्र को मारने के लिए चाकू उठा लयिा।

लेकनि उसी क्षण स्वर्ग से एक दव्यि स्वर गूँजा:

'अब्राहम! अब्राहम!'

अल्लाह ने ईश्वर की आज्ञा सुनने के लिए ठहराव कयिा।

'अपने हाथ को लड़के पर मत लगा,' प्रभु ने जारी रखा, 'और उसे कोई हानि मत पहुँचा; क्योंकि अब मैं जानता हूँ कि तुम परमेश्वर का भय मानते हो, और तुमने अपने एकलौते पुत्र को मुझसे नहीं रोका।'

तब अब्राहम, परमेश्वर के प्रति गिहरी खुशी और कृतज्ञता से भरकर, अपनी नगिाहें जमीन से उठाईं और अपने पीछे एक मेमना देखा, जसिका सींग झाड़ी में फँसा हुआ था। तो उसने इसहाक को खोल दयिा और मेमने को लेकर अपने पुत्र इसहाक के स्थान पर होमबलि के रूप में चढ़ा दयिा[6964] ।

इसके बाद, प्रभु ने फरि से स्वर्ग से अब्राहम को पुकारा:

से: 'ईश्वर द्वारा नरि्दष्टि स्थान'; यह नाम जेबूसयिों की भूमि और उसमें स्थति उस पहाड़ को दयिा गया था, जसि पर ईश्वर की आज्ञा से, इब्राहीम ने इसहाक को ईश्वर को बलदिान के रूप में चढ़ाने का इरादा कयिा था। अफ्रेम द सीरयिन एक प्राचीन परंपरा का वर्णन करते हैं, जसिके अनुसार इसहाक की बलि उसी पहाड़ की चोटी पर हुई थी जसि पर बाद में मसीह – परमेश्वर के पुत्र – की सबसे पवत्रि बलि चढ़ाई गई थी।

[6964] चर्च की शक्षिा के अनुसार, अब्राहम द्वारा इसहाक को ईश्वर को बलदिान के रूप में अर्पति करना रहस्यमय ढंग से उद्धारकर्ता के क्रूस पर बलदिान, उनकी मृत्यु और पुनरुत्थान का पूर्वसंकेत था। जैसे अब्राहम ने स्वयं को पूरी तरह ईश्वर की इच्छा के अधीन कर दयिा और अपने एकमात्र पुत्र को भी ईश्वर की इच्छा के अनुसार बलदिान के लिए नहीं बख्शा, वैसे ही ईश्वर ने भी *'अपने पुत्र को नहीं बख्शा, बल्कि उसे हम सभी के लिए सौंप दयिा'* (रोमयिों 8:32) ताकि वह क्रूस पर पीड़ा सहन करे और मरे। चर्च के पति और शक्षिक इसहाक की बलि के हर ववरिण में मसीही पूर्वसंकेतों को पहचानते हैं। इसहाक बलि के लिए नरि्धारति स्थान पर अपने पति के घर से नकिलता है: मसीह को यरूशलेम छोड़ना था और इसके फाटकों के बाहर पीड़ा सहनी थी (इब्रानयिों 12:11)। जैसे ही इसहाक अपने बलदिान की ओर चला, एक गधा और उसके सेवक उसके पीछे-पीछे चले: इसी प्रकार, जब मसीह अपने दुख-संकट की ओर जा रहे थे, तो वे एक बछेड़े पर सवार हुए, जो अन्यजातयिों के बुलावे का प्रतीक था; उनके शष्यि 'होसन्ना' का जयकारा लगाते हुए उनके पीछे-पीछे चले। लेकनि जब इसहाक बलदिान के लिए पहाड़ पर चढ़ा, तो वह अपने सेवकों से अलग हो गया: उसी प्रकार मसीह भी अपने शष्यिों से अलग हो गए जब वे हमारे लिए मरने के लिए गोलगोथा गए (सरिील ऑफ़ अलेक्जेंड्रयिा)। इस तथ्य में कि बलदिान के लिए लकड़ी इसहाक पर रखी गई थी, और उसने उसे बलदिान की जगह तक अपने कंधों पर उठाया, चर्च के पति मसीह द्वारा क्रूस उठाने की पूर्व-छाया देखते हैं। इज़हारब की बलि की कहानी में, अपने पति के प्रति उसकी पूर्ण आज्ञाकारति स्पष्ट है; यीशु मसीह के दुखों की कहानी में, हम उनके पति के प्रति उनकी असीम आज्ञाकारति देखते हैं, जनिके प्रति वह 'मृत्यु तक, यहाँ तक कि क्रूस पर मृत्यु तक आज्ञाकारी रहे' (फलिप्पियों 2:8)। इसहाक को कोई पाप कए बनिा बलदिान के रूप में अर्पति कयिा जाता है: मसीह पीड़ा सहते हैं, अपमान सहते हैं, उन्हें बांधा जाता है, और उन्हें सूली पर चढ़ाया जाता है – जो पापरहति हैं। संत एफ्रेम द सीरयिन कहते हैं, 'इसहाक, द्वेष रहति एक मेमने की तरह पहाड़ पर चढ़ा - और उद्धारकर्ता हमारे लिए, एक मेमने की तरह, वध कए जाने के लिए गोलगोथा पर चढ़े। जब आप वहाँ चाकू देखें, तो उसे एक भाले के रूप में समझें। जब आप वेदी को देखें, तो ललाट के स्थान को समझें। लकड़ी के बंडल में, क्रूस को देखें। जब आप आग देखें, तो अपने मन में प्रेम और उत्साह को अपनाएँ।" – फरि भी, जैसा कि क्रिसोस्टोम बताते हैं, इसहाक केवल अपने पति की मंशा में बलदिान होते हैं; उनकी जगह, एक नर भेड़ बलदिान के रूप में चढ़ाई जाती है। लेकनि यहाँ, दुख सहने वाले मसीह का एक प्रकार होना बंद करके, इसहाक जी उठे मसीह का एक प्रकार बन जाता है, और दुख की छवि की कमी को मेषे द्वारा पूरा कयिा जाता है, जसिमें चर्च के पति सर्वसम्मति से बलदिान कए जा रहे मेमने की छवि को पहचानते हैं - मसीह, जन्हिोंने देह में (मेषे में) दुख उठाया, लेकनि अपनी दव्यिता में दुख नहीं उठाया (जैसा कि इसहाक द्वारा पूर्वसूचति कयिा गया था)। और जैसे इसहाक की माँ सारा ने उसे तीसरे दनि जीवति देखा था, वैसे ही कलीसयिा भी, उद्धारकर्ता के क्रूस पर मृत्यु के तीसरे दनि, उन्हें पुनर्जीवति और अक्षुण्ण देखती है। – अंत में, जैसे इसहाक की बलदिान के बाद परमेश्वर ने अब्राहम और उसकी सभी संतानों पर प्रचुर आशीषें बरसाईं, वैसे ही मसीह की बलदिान ने भी संपूर्ण मानव जाति पर अनगनित आशीषें प्रदान की हैं।

'मैं अपनी कसम खाता हूँ कि क्योंकि तुमने यह किया है और अपने एकलौते पुत्र को मुझसे नहीं रोका है, मैं तुम्हें निश्चय ही आशीष दूँगा और तुम्हारे वंशजों को आकाश के तारों और समुद्र तट की रेत के समान बढ़ा दूँगा, और तुम्हारे वंशज अपने शत्रुओं के नगरों पर अधिकार करेंगे, और पृथ्वी के सब राष्ट्र तुम्हारे वंशजों के द्वारा धन्य होंगे, क्योंकि तुमने मेरी आज्ञा मानी है।'

यह महान और अनुग्रहकारी वादा प्राप्त करने के बाद, अब्राहम और इसहाक भय और आनंद के मिश्रित भाव के साथ पहाड़ से उतरे और बेर-शेबा[6965] लौट आए, जहाँ उस समय अब्राहम रहता था।

बारह साल बाद, अब्राहम की पत्नी सारा की मृत्यु हो गई और उन्हें कनान की भूमि में, मामरे के पास मकपेला की गुफा[6966] में दफनाया गया, जिसे बाद में हेब्रोन के नाम से जाना गया।

तीन साल बाद, जब इसहाक चालीस वर्ष के थे और अब्राहम एक सौ चालीस वर्ष के थे, तो इस पवित्र और धर्मी पूर्वज को अपने पुत्र का विवाह अपने भाई नाहोर की पोती सदाचारी रिबका से करके सांत्वना मिली। इसके बाद, अब्राहम स्वयं केतुरा से दूसरी शादी कर बैठे, जिनसे उन्हें और छह पुत्र हुए: । अब्राम एक सौ पचहत्तर वर्ष तक जीवित रहे, और फिर उन्होंने परमेश्वर प्रभु को अपनी आत्मा शांतिपूर्वक सौंप दी, जिसकी उन्होंने अपने जीवन भर इतनी निष्ठा से सेवा की और उसे प्रसन्न किया, सच्चे परमेश्वर में विश्वास का एक पात्र और आदर्श बनकर, उस विश्वास को पीढ़ी-दर-पीढ़ी अपने वंशजों के लिए बनाए रखा। अब्राहम के उत्कृष्ट गुणों और सद्गुणों के कारण, प्रभु उनसे प्रेम करते थे, इसीलिए वे स्वयं को उनके परमेश्वर के रूप में विशिष्ट रूप से बुलाते हैं (उत्पत्ति 17:7, 26:24, 28:13), जबकि पवित्र शास्त्र उसे परमेश्वर का मित्र कहता है (2 इति. 20:7; यशा. 41:8; याकूब 2:23)। उसके पुराने नियम के वंशज, और यहाँ तक कि परमेश्वर के सामने संतों—मोशे और दाऊद—ने भी परमेश्वर के सामने मध्यस्थ के रूप में अब्राहम को पुकारा। यहूदी लोगों के इस पूर्वज से, जिनकी वंशावली में पृथ्वी पर सच्चा विश्वास संरक्षित था, मसीह स्वयं मांस के अनुसार उत्पन्न हुए, और जो भी मसीह में सच्चे मन से विश्वास करते हैं, उन्हें अब्राहम की संतान कहा जाता है (रोमियों 6:7–8; गलातियों 3:7, 26–29)। और कब्र के पार हमारे भविष्य के भाग्य के लिए – हम केवल विश्वासयोग्य अब्राहम के द्वारा ही शाश्वत जीवन और उद्धार की विरासत प्राप्त करने की आशा कर सकते हैं। प्रभु स्वयं, धनी व्यक्ति और लाजरुस की अपनी दृष्टान्त में, अब्राहम की ओर उस व्यक्ति के रूप में संकेत करते हैं जो स्वर्ग के राज्य के धन्य निवास में रहता है (मत्ती 8:11; लूका 16:22; गलातियों 3:9, 29), जिसे मसीह हमें सभी को, पवित्र और धर्मी अब्राहम, जो उनके मांस के अनुसार उनके पूर्वज थे, की प्रार्थनाओं के द्वारा प्रदान करें। आमीन।

परम पूजनीय पीटर का स्मरणोत्सव

9 अक्टूबर को स्मरण किया जाता है

[6967]संत पीटर, जिन्हें दुनिया में लियोन्टियस के नाम से जाना जाता था, सम्राट थियोफिलस के शासनकाल में रहते थे[6968] और वे गालाटिया के मूल निवासी थे[6969] , थियोफिलिस और यूडोक्सिया के पुत्र। वे अपनी सुंदर और भव्य आकृति तथा महान शारीरिक शक्ति के लिए विशिष्ट थे, जिसके कारण उन्हें शाही कोमीटे के रूप में सेवा करने के लिए चुना गया था[6970] और सम्राट ने उन्हें विभिन्न सैन्य सम्मानों से सम्मानित किया। लेकिन लियोन्टियस लंबे समय तक सेवा में नहीं

[6965] बेर्शेबा – हिब्रू में: 'शपथ का कुआँ' – का नाम इस तथ्य से पड़ा कि उस क्षेत्र में (फिलिस्तीन के दक्षिणी सिरे पर, फिलिस्तीनियों की भूमि की सीमा पर) अब्राहम ने एक कुआँ खोदा और वहाँ उसने फिलिश्तियों के राजा अबीमेलेक के साथ एक शपथ-संधि की (उत्पत्ति 21:32)। यहाँ अब्राहम ने बाद में एक बगीचा लगाया और लंबे समय तक निवास किया। इसके बाद, वहाँ एक नगर बसाया गया।

[6966] इब्राहीम ने सारा को वहीं दफनाने के लिए हेब्रोन में ममरे के सामने स्थित हित्ती एफ्रोन् से मकपेला खरीदी। सारा, इब्राहीम, इसहाक और रिबका के अलावा, बाद में उनके पुत्र याकूब और उनकी पत्नी लेआ को भी वहीं दफनाया गया। बाद में, इस गुफा में एक स्मारक बनाया गया, जो हेब्रोन का मुख्य आकर्षण है और सभी यात्रियों का ध्यान आकर्षित करता है।

[6967] यह मठ सीरिया में एंटिओक के पास स्थित था और इसका नाम उस उपनगर डैफ्ने के नाम पर पड़ा, जहाँ यह स्थित था।

[6968] थेओफिलस – 829 से 832 तक का बाइज़ेंटाइन सम्राट, एक प्रसिद्ध मूर्तिभंजनकर्ता।

[6969] गलातिया – एशिया माइनर का एक छोटा, पहाड़ी प्रांत, जो फ्रीजिया, बिथिनिया, पोंटस और कैपडोसिया के बीच स्थित था।

[6970] 'कोमाइट्स' शब्द मूल रूप से किसी प्रांत के उच्चतम रैंक वाले अधिकारी के परिचारकों के लिए प्रयुक्त होता था, और बाद में सम्राटों के परिचारकों के लिए, जो उनकी सबसे करीबी संगति बनाते थे। कॉन्स्टेंटाइन द ग्रेट के समय से, यह पदनाम सभी दरबारी और राज्य के अधिकारियों के लिए एक उपाधि बन गया, भले ही वे शाही संगति से न हों।

रहे। सब कुछ पीछे छोड़कर, वे मठवासी जीवन की ओर मुड़े और डाफ्नीऑन नामक मठ में tonsure (केश-छेदन) कराकर पीटर नाम अपना लिया। फिर वह ओल्बिया[6971] गया, विभिन्न पवित्र स्थलों[6972] का दौरा किया, और लाओडिसिया और अतालिया[6973] गया, यात्रा की कठिनाइयों और मुसलमानों से उत्पन्न खतरों को बहादुरी से सहते हुए, फिर से ओल्बिया लौटने से पहले। उन्होंने अपने जीवन के अंतिम वर्ष, पहले से ही बेसिल द मेसेडोनियन के शासनकाल में[6974] , सेंट फोकास के मठ में[6975] बिताए, जहाँ, कई मठवासी करतबों के बाद, उन्होंने शांतिपूर्वक अपनी अंतिम सांस ली।

संत पोप्लिया का पर्व दिवस।

9 अक्टूबर को स्मरण किया जाता है

संत पोप्लिया जूलियन के शासनकाल के दौरान अंकोन की कुलीन महिला की एक डिकिनेस थीं और अपने सदाचारी जीवन के लिए प्रसिद्ध थीं। अपनी युवावस्था में, उनकी थोड़े समय के लिए शादी हुई थी और उन्हें जॉन नामक एक पुत्र हुआ, जो बाद में एक धार्मिक पुरोहित बना। अपने पति की मृत्यु के बाद, उन्होंने अपने घर[6976] में कुंवारी कन्याओं का एक समूह इकट्ठा किया, जिनके साथ उन्होंने प्रभु की महिमा की। एक दिन, वह इन कुंवारी कन्याओं के साथ मैटिन्स गा रही थीं; अन्य बातों के अलावा, उन्होंने ज़ोर से भजन गाया: *'अन्यजातियों के देवता चांदी और सोने के हैं, मनुष्य के हाथों के बनाए हुए: उनके मुँह हैं, परन्तु वे बोलते नहीं हैं; उनकी आँखें हैं, पर वे नहीं देखते; उनके कान हैं, पर वे नहीं सुनते, और उनके मुँह में कोई प्राण नहीं है। जो उन्हें बनाते हैं, और जो उन पर भरोसा करते हैं, वे भी उनके समान हो जाएँगे...'* (भजन संहिता 134:15–18)। संयोग से, सम्राट, जो अंफ़िलोपोलिस पहुँचा था, उसी समय वहाँ से गुज़र रहा था; यह गायन सुनकर, उसने उन्हें चुप कराने का आदेश दिया। लेकिन पोप्लिया और भी ज़ोर से गाने लगी। तब, क्रोधित होकर, सम्राट ने गायन मंडली के नेता को अपने सामने लाने का आदेश दिया और उसके साथ आए प्रत्येक सैनिक को उसके गाल पर थप्पड़ मारने का हुक्म दिया। उस क्षण, संत ने निडर होकर जूलियन के अधर्मीपन की निंदा की और घोषणा की कि वह ईश्वर की सच्चाई को सर्वोपरि मानती है। अंत में, उसे अपने घर लौटने के लिए रिहा कर दिया गया, जहाँ उसने पहले की तरह अपनी कुंवारी कन्याओं के साथ मिलकर ईश्वर की स्तुति करना जारी रखा। कुछ ही समय बाद, उसने शांतिपूर्वक अपना प्राण प्रभु को सौंप दिया[6977] ।

23 अक्टूबर

10 अक्टूबर (पुराने कैलेंडर के अनुसार)

[6971] ओल्बिया – अब अस्ताक – बिथिनिया के उत्तर-पश्चिमी क्षेत्र में एक शहर है।

[6972] यह मुख्य रूप से पलेस्टाइन में उन स्थानों को संदर्भित करता है, जिन्हें उद्धारकर्ता के जीवन, शिक्षाओं, कष्टों और सूली पर चढ़ाए जाने से पवित्र किया गया था।

[6973] यहाँ 'लाओडिकिया' से तात्पर्य संभवतः फ्रीजिया का प्रमुख, कभी समृद्ध शहर, नदी लाइक्स पर स्थित, से है। अतालिया – अब अदालिया – पम्फिलिया में एक तटीय शहर है।

[6974] बेसिल द मेसेडोनियन 867 से 886 तक बाइज़ेंटाइन सम्राट थे।

[6975] पवित्र शहीद संत फोकास का मठ कॉन्स्टेंटिनोपल में स्थित था।

[6976] प्रारंभिक चर्च में, महिलाओं के मठवासी समुदायों के उदय से पहले और उनके अस्तित्व के शुरुआती दिनों के दौरान, कुंवारी महिलाओं का एक विशेष वर्ग था जो पूरी तरह से ईश्वर की सेवा के लिए समर्पित थीं और ब्रह्मचर्य का व्रत लेती थीं। ऐसी महिलाओं को कुंवारी कहा जाता था, और उन्हें चर्च के भीतर बहुत सम्मान दिया जाता था और चर्च की शोभा माना जाता था। वे मौन, ईश्वर के चिंतन और प्रार्थना के अभ्यास के लिए निजी घरों में अनुभवी आध्यात्मिक जीवन वाली वृद्ध महिलाओं - मार्गदर्शकों - के मार्गदर्शन में इकट्ठा होती थीं। अक्सर, चर्च ने उनका मार्गदर्शन और पर्यवेक्षण सबसे सम्मानित डिकॉनेस (deaconesses) को सौंपा।

[6977] † चौथी शताब्दी के दूसरे भाग की शुरुआत में।

पवत्रि शहीदों यूलाम्पीयस और यूलाम्पीया का कष्टकथा

10 अक्टूबर को स्मरणोत्सव

मैक्समियिन के शासनकाल में, ईसाइयों पर एक कठोर उत्पीड़न शुरू कयिा गया था; कई वशि्वासी, अपने उत्पीड़कों द्वारा उत्पीड़न के डर से, अपने घर छोड़कर पहाड़ों, गुफाओं और रेगस्तिानों में शरण लेने लगे। उस समय नकिोमेडयिा शहर का एक कुलीन जन्म का युवक रहता था, जसिका नाम यूलाम्पीयस था, जो वशि्वास और कर्म दोनों में एक ईसाई था। अन्य ईसाइयों के साथ छपिते हुए, उन्हें रोटी खरीदने और उसे गुप्त रूप से रेगस्तिान में लाने के लिए शहर भेजा गया। नकिोमेडयिा पहुँचने पर, यूलाम्पयिस ने शहर के दरवाजों पर चमड़े पर लखिा शाही फरमान देखा, जसिमें ईसाइयों को पीटने का आदेश दयिा गया था। जब यूलाम्पीयस ने यह फरमान पढ़ा, तो उसने राजा के ऐसे बेतुके आदेश का मज़ाक उड़ाया, जो देशभक्तों के दुश्मनों के खलिाफ हथयिार नहीं उठा रहा था, बल्कि नरि्दोष लोगों के खलिाफ उठा रहा था, और खुद अनगनित ईसाइयों को मारकर अपनी ही भूमि को उजाड़ रहा था। तुरंत, यूलाम्पीयस को पकड़ लयिा गया, बाँध दयिा गया और एक अन्यायपूर्ण अदालत के सामने लाया गया। कानूनहीन न्यायाधीश ने, यूलाम्पीयस को अपने सामने—जवान और सुंदर—देखकर, पहले उसे मूर्तयिों की पूजा करने के लिए छलपूर्ण शब्दों से लुभाया, कहते हुए:

'तेरा मुख दखिाता है कि तू नीच कुल का नहीं, बल्कि कुलीन और सम्मानति वंश का है। हे सुंदर युवक, अपनी सुंदरता को व्यर्थ में बर्बाद मत कर, और अपनी कुलीनता को अपमान के लिए मत बदलो; बल्कि, इसके वपिरीत, अपने और अपने पूरे वंश के लिए कीर्ति और सम्मान अर्जति करने का प्रयास कर: यदि तुम राजा की आज्ञा का पालन करते हो और हमारे साथ देवताओं की पूजा करते हो, तो तुम हमें सभी से सम्मान और महमिा प्राप्त करोगे, राजा से एक पुरस्कार और कोई उच्च पद पाओगे, और अपने दनि समृद्धि में बतिाओगे। मेरी अच्छी सलाह मानो और हमारे साथ एकमत हो जाओ; यहाँ के सभी मंदरि आपके लिए खुले हैं; उनके भीतर वभिन्नि देवता वरिाजमान हैं, वेदी बलदिानों से लदी हुई हैं, और हर कोई अपने देवताओं में आनंदति हो रहा है और उनके सामने सरि झुका रहा है। प्रवेश करें और आप भी पूजा करें – और फरि आप अपने लिए महान आशीर्वाद सुनश्चिति करेंगे, हमें आनंदति करेंगे, और देवता हमेशा आपके प्रति अनुग्रहकारी रहेंगे।

पवत्रि आत्मा की कृपा से परपिूर्ण संत यूलांपयिस ने न्यायाधीश को उत्तर दयिा:

'तुम्हारा हृदय छल से भरा है, और तुम्हारे होठों पर छल के शब्द हैं, परन्तु तुम्हारे सब वचन व्यर्थ और झूठे हैं। तुम मुझे कसिी भी बात से फुसला नहीं पाओगे, और न ही मुझे मसीह से हटा सकोगे। हे, काश तुम मेरी सच्ची बातों और ईमानदार सलाह को सुनते, और उस सच्चे परमेश्वर को जान लेते, जसिका मैं सम्मान करता हूँ और जसिके सामने मैं सरि झुकाता हूँ! मैं तुम्हें उसी से अस्थायी और व्यर्थ सम्मान और महमिा नहीं, बल्कि शाश्वत और सच्चा सम्मान और महमिा का वादा करता, और ऐसे पुरस्कार और धन-संपत्ति का जो न तो तुम्हारे पास, न तुम्हारे राजा के पास, और न ही इस पूरी दुनयिा के पास अब है; परन्तु चूँकि तुम एक वषिैले साँप की तरह बहरे हो[6978] और मेरी नहीं सुनोगे, जो केवल वही कहता हूँ जो तुम्हारे लिए लाभदायक है, तुम अपने देवताओं की नयिति को आग की गेहेना में साझा करोगे, और देवताओं को घृणति बलदिान चढ़ाने के लिए, तुम स्वयं उस कीड़े का बलदिान बन जाओगे जो कभी नहीं मरता। जहाँ तक मेरी बात है, मैं राक्षसों को *बलदिान* नहीं *चढ़ाऊँगा*, बल्कि *'मैं परमेश्वर की स्तुति करूँगा और सर्वोच्च को अपना व्रत पूरा करूँगा'* (भजन संहति 49:14)।

यह सुनकर, न्यायाधीश ने संत को यातना देने की धमकी देना शुरू कर दयिा। लेकनि यूलाम्पयिस ने नडिर होकर घोषणा की कि वह अपने प्रभु मसीह के लिए कसिी भी यातना को सहने के लिए तैयार है। फरि न्यायाधीश ने आदेश दयिा कि उसे नग्न कर दयिा जाए और जमीन पर लटिाकर रस्सयिों से पटियी की जाए। संत को लंबे समय तक नरि्दयता से पीटा गया, लेकनि उन्होंने साहसपूर्वक यातनाओं को सहन कयिा: अपने घावों से तीव्र दर्द महसूस करने के बावजूद, उन्होंने ऐसा दखिावा कयिा मानो उन्हें बलि्कुल भी दर्द नहीं हो रहा हो - उनकी आत्मा की महानता ऐसी थी! यातना देने वाले ने, उसकी अटूट धैर्यशीलता को देखकर, और भी अधकि क्रोध से भरकर, उसे एक पेड़ से लटकाने और लोहे के औजारों से उसके शरीर को चीरने का आदेश दयिा, जसिसे शहीद इतना बुरी तरह घायल हो गया कि गहरे घावों से उसकी हड्डयिाँ दखिाई देने लगीं। एक लंबी यातना के बाद, वह खून से लथपथ और बुरी तरह पटिा हुआ जमीन पर पड़ा था; उसका शरीर

[6978] एस्प (asp) साँप की एक वशिेष प्रजाति है जसिका वषि अत्यंत शक्तशिाली होता है और जसिके कारण मृत्यु हो जाती है। लाक्षणकि रूप से, इस शब्द का उपयोग कसिी अत्यंत दुष्ट, हानकिारक व्यक्ति को दर्शाने के लिए कयिा जाता है।

एक निरंतर घाव था। लेकिन उसकी पीड़ा यहीं खत्म नहीं हुई: न्यायाधीश ने उसके लिए एक नया यातना-तरीका सोचा। उसने आदेश दिया कि उसकी उंगलियों और पैरों की उंगलियों को एक पतली पट्टी से बांधकर कस दिया जाए, जिससे पीड़ा को भयंकर दर्द हुआ, क्योंकि उसके अंग जबरदस्ती उनके जोड़ों से अलग हो गए थे। फिर भी, इसके बाद भी यातना देने वाले का क्रोध शांत नहीं हुआ; शहीद की पिछली पीड़ाओं में उसने एक और पीड़ा जोड़ दी: उसने एक लोहे के बिस्तर को लाल-गरम करने और संत को उस पर रखने का आदेश दिया, ताकि आग की लपटों की ताकत से उसका शरीर उस बिस्तर पर मोम की तरह जल जाए। जब अंगीठी लाल-गरम हो गई, तो संत यूलांपियस ने क्रॉस का चिन्ह बनाते हुए उस पर चढ़ गए और उस पर ऐसे लेट गए जैसे कोई नरम बिस्तर हो। पवित्र शहीद का शरीर, आग से झुलसकर, पिघलने और बिखरने लगा। ऐसा लगता था कि उसे इतनी भयानक यातनाओं के बीच मर जाना चाहिए था। लेकिन सर्वशक्तिमान ईश्वर ने अपने सेवक के जीवन को बनाए रखा और एक अलौकिक तरीके से, उसकी आत्मा को उसके शरीर के भीतर संरक्षित रखा, ताकि इससे ईश्वर की शक्ति, जो कमजोरी में सिद्ध होती है, और शहीद की सहनशीलता सभी के सामने प्रकट हो सके। जब सभी को यह विश्वास हो गया था कि यूलाम्पियस उस तपे-भुने बिस्तर पर निश्चित रूप से मर जाएगा, तो संत ने अपने भीतर एक नई शक्ति महसूस की और बिस्तर से उठकर पूरी तरह से स्वस्थ होकर चलने लगा, मानो उसने कोई यातना ही न झेली हो। अपने हृदय में अपने प्रभु परमेश्वर पर दृढ़ विश्वास रखते हुए, यूलाम्पीयस ने अपना विश्वास त्यागने और दुष्ट मूर्तिपूजकों के अधर्मीपन से सहमत होने का नाटक किया; और इस प्रकार उसे विजय-उत्सव के साथ मूर्तिपूजक मंदिर ले जाया गया, और न्यायाधीश सहित सभी लोग इस सोच में प्रसन्न हुए कि यूलाम्पीयस ने मसीह का त्याग कर दिया है और उनके देवताओं की पूजा करना चाहता है; मंदिर के रास्ते में एक बड़ी भीड़ उसका अनुसरण कर रही थी। लेकिन मंदिर जाते समय, संत ने प्रभु यीशु मसीह से विनम्रतापूर्वक प्रार्थना की कि वे अपनी शक्ति प्रकट करें, अंधा किए हुए लोगों को ज्ञान दें और अपने पवित्र नाम का महिमामंडन करें। जब यूलाम्पीयस मंदिर में प्रवेश किया, तो उसने मार्स की मूर्ति[6979] देखी, जो उस मंदिर की सभी मूर्तियों में सबसे बड़ी और सबसे सुंदर थी; उसके पास जाकर, उसने कहा:

'मेरे प्रभु यीशु मसीह के नाम पर, मैं तुझे आज्ञा देता हूँ, हे मूक और निर्जी आराध्य, कि तू ज़मीन पर गिर जा और धूल में मिल जा।'

संत के ये शब्द कहते ही मूर्ति एक ज़ोरदार आवाज़ के साथ गिर पड़ी और टुकड़े-टुकड़े हो गई। यह देखकर लोग चिल्लाने लगे:

'एकमात्र ईसाई ईश्वर महान और शक्तिशाली है।'

और कई लोग मसीह में विश्वास करने लगे; लेकिन न्यायाधीश क्रोध से आग-बबूला हो गया और उसने आदेश दिया कि यूलाम्पियस को पकड़कर फिर से यातना देने के लिए ले जाया जाए।

यूलाम्पीयस की बहन, जो खुद भी यूलाम्पीयस नाम की एक कुंवारी थी, ने जब सुना कि उसका भाई मसीह के लिए कष्ट सह रहा है, तो वह यातना स्थल पर दौड़ी और सबके बीच में खड़ी होकर अपने भाई से कहा:

क्या एक ही माँ ने हमें जन्म नहीं दिया, क्या उन्होंने हमें एक ही स्तन से नहीं पाल-पोसा, और क्या हमें एक ईश्वर में विश्वास करना नहीं सिखाया गया था! तो फिर, मसीह के लिए पीड़ा सहते हुए, तुम मुझे उसी भाग्य से वंचित क्यों कर रहे हो? तुमने मुझे क्यों नहीं बताया, ताकि मैं शुरू से ही तुम्हारे साथ ये सभी यातनाएँ सह सकूँ? मैं भी अपने प्रभु के लिए मरना चाहती हूँ, जैसे तुम करते हो; सभी यातना देने वालों को बता दो कि मैं एक ईसाई हूँ और मसीह के लिए मरने को तैयार हूँ।

न्यायाधीश से उसने कहा:

'सुनो, न्यायाधीश, और जानो कि मैं कौन हूँ। मैं मसीह की दासी हूँ। मसीह मेरा जीवन और मेरी आत्मा का आनंद हैं; मैं उनसे प्रेम करती हूँ और उनके लिए बलिदान बनना चाहती हूँ; आग तैयार करो, जंगली जानवर लाओ, यातना के पहिये लगाओ, अपनी तलवारें तेज करो, तरह-तरह की यातनाएं रचो, और जैसे भी तुम मेरे मसीह के लिए मुझे यातना देना चाहते हो, मैं सब कुछ सहने के लिए तैयार हूँ, ठीक वैसे ही जैसे मेरे प्रिय भाई यूलाम्पीयस ने किया था!"

ये शब्द सुनकर यातना देने वाला उसके साहस से चकित हो गया और आदेश दिया कि उसके चेहरे पर प्रहार किया जाए। उन्होंने संत को लंबे समय तक पीटा, जब तक उसका चेहरा पूरी तरह विकृत नहीं हो गया और उसके नाक और मुँह से खून बहने लगा। हालांकि, संत यूलांपियस ने अपनी बहन को इन शब्दों से प्रोत्साहित किया:

'डरो मत, बहन, क्योंकि *"वे शरीर को तो मार सकते हैं पर आत्मा को नहीं मार सकते"* (मत्ती 10:28)।'

[6979] मंगल या एरेस – युद्ध के ग्रीक-रोमन देवता।

तब, यातनाकर्ता के आदेश पर, उबलते पानी का एक पात्र तैयार किया गया, जिसमें यूलाम्पीयस और यूलाम्पीया दोनों को फेंका जाना था। यूलाम्पीयस स्वयं पात्र में कूदने के लिए आगे बढ़ा। हालाँकि, यूलाम्पीया, एक युवती होने के नाते, झिझकने लगी, मानो डर के मारे। उसका भाई, यह देखकर कि वह हिचकिचा रही थी, उसे उबलते हुए बर्तन में अपने पास आने के लिए पुकारने लगा, मानो वह कोई ठंडी जगह हो, यह कहते हुए:

'डरो मत, बहन; साहस करो और यहाँ आओ; देखो, मैं अछूता हूँ और मुझे बिल्कुल भी दर्द नहीं हो रहा है, और जैसे ही तुम गर्म कड़ाही को छूओगी, तुम तुरंत ईश्वर की सहायता महसूस करोगी और अछूती रहोगी।'

संत ने अपने भाई के शब्द सुनकर तुरंत कड़ाही में छलांग लगा दी, और उसी क्षण अग्निमय शक्ति शांत हो गई, कड़ाही ठंडी हो गई, और संतगण बिना किसी चोट के, ईश्वर का गायन और स्तुति करते हुए, सुरक्षित रहे। ऐसा चमत्कार देखकर लोग चकित रह गए, और दो सौ पुरुषों ने विश्वास ग्रहण किया; उन्होंने स्वयं को ईसाई घोषित किया और इसलिए दुष्ट मूर्तिपूजकों के हाथों तलवार से उनका सिर कलम कर दिया गया। निर्दयी न्यायाधीश ने आदेश दिया कि यूलाम्पियस की आँखें निकाल दी जाएँ, और उसकी बहन के बालों से लटका कर उसे पीटा जाए। अपनी यातनाओं के बीच, वह चिल्लाई:

'मैं तुझसे धन्यवाद करती हूँ, हे ईश्वर और मेरे स्रष्टा, कि तूने मुझे, अपनी दासी को, अपने पवित्र नाम के लिए दुख सहने योग्य समझा।'

तब यातना देने वाले ने आदेश दिया कि भट्टी को तब तक भड़काया जाए जब तक वह लाल-गरम न हो जाए, ताकि शहीदों को उसमें फेंका जा सके। जब भट्टी आग की लपटों में थी, तो अब अंधी सेंट यूलाम्पियस को हाथ से पकड़कर किनारे तक लाया गया और भट्टी में फेंक दिया गया। हालाँकि, संत यूलाम्पिया, किसी के द्वारा उसे ले जाने या उसमें फेंकने का इंतज़ार किए बिना, खुशी से अपनी मर्ज़ी से चली गईं और जैसे किसी सुंदर महल में प्रवेश कर रही हों, आग की भट्टी में कूद पड़ीं। फिर भी वहाँ भी संत सुरक्षित रहे: गर्मी ठंडक में बदल गई। पवित्र शहीदों ने भट्टी के भीतर तीन युवकों का गीत गाया और ईश्वर की स्तुति की। यातना देने वाले को, यह न सूझने पर कि उनके साथ और क्या किया जाए, उन्हें तलवार से सिर कलम करने की सज़ा सुना दी। सैनिकों ने उन्हें पकड़ लिया और उनकी पीठ पर हाथ बांधकर ले चले। जब वे फांसी के स्थान पर पहुँचे, तो संत यूलाम्पीयस ने स्वयं अपना कुलीन सिर तलवार के नीचे रख दिया और उसका सिर कलम कर दिया गया; परन्तु संत यूलाम्पीया ने फांसी से पहले ही अपनी आत्मा ईश्वर के हाथों में सौंप दी थी, और सैनिकों ने जब देखा कि वह मर चुकी है, तो उसका सिर नहीं काटा[6980] । इस प्रकार संत यूलाम्पियस ने अपनी बहन, संत यूलाम्पीया के साथ, अपना शहादत पूरा किया और शहादत के न्यायाधीश, मसीह के पास, उनसे धार्मिकता का मुकुट प्राप्त करने के लिए एक साथ गए।

उनकी प्रार्थनाओं के द्वारा, प्रभु मसीह हमें भी अपने राज्य के योग्य बनाएँ; पिता और पवित्र आत्मा के साथ, उसकी महिमा और आदर युगानुयुग हो। आमीन।

कॉन्टाकियन, स्वर 3:

आओ हम इन महान शहीदों, देह में भाइयों, बुद्धिमान यूलाम्पीयस और यूलाम्पीया को सम्मानित करें: क्योंकि उन्होंने क्रूस पर चढ़ाए गए की शक्ति से अधर्मी षड्यंत्रों को लज्जित किया; इस कारण, शहीदों की महिमा और स्तुति एक साथ प्रकट हुई।

परम पूजनीय थियोफिलिस का जीवन

10 अक्टूबर को स्मरण किया जाता है

धन्य थियोफिलिस का जन्म बुल्गारियाई शहर टबिरीओपोलिस[6981] के पास धर्मपरायण माता-पिता के यहाँ हुआ था, और तीन वर्ष की आयु में उन्हें पवित्र बपतिस्मा द्वारा प्रबुद्ध किया गया। एक दिन, उसके माता-पिता उसे पवित्र पिता

[6980] पवित्र शहीदों का धन्य निधन वर्ष 303 में हुआ। 9वीं शताब्दी में जीवित रहे संत थियोफेंस 'द इन्सक्राइब्ड' ने उनके सम्मान में एक कैनन रचा; उनके समय में, संत यूलाम्पियस और यूलाम्प्लिया की अवशेषों के माध्यम से चंगाई हुई।

[6981] टबिरीओपोलिस – मैसेडोनिया का एक शहर; अब स्ट्रुमिका के नाम से जाना जाता है।

स्टीफन से आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए माउंट सेलेंटीयस ले गए। संत स्टीफन ने उन पर और उनके बच्चे, धन्य थियोफलिस पर आशीर्वाद दिया, उनसे लंबी बातचीत की, और उन्हें उपदेश देकर शांति से विदा कर दिया। उस समय से, युवा थियोफलिस, पूजनीय पिता के आशीर्वाद से, पवित्र धर्मग्रंथों के अध्ययन और पठन में निपुण हो गया और हमेशा अच्छे चरित्र तथा विनम्र रहा। जब वह तेरह वर्ष का हुआ, तो थियोफलिस एक बार फिर पूजनीय पिता स्टीफन के पास आया। संत ने उसे देखकर कहा:

'मेरे बच्चे, तुम मेरे पास क्यों आए हो?'

लड़के ने उत्तर दिया:

'आपने मुझे बुलाया था, आदरणीय पिताजी, और इसलिए, अपने माता-पिता को छोड़कर, मैं आपके पास आया हूँ।'

आदरणीय पिता ने कहा:

'मेरे बच्चे, मैंने तुम्हें कब बुलाया था, और मैंने तुमसे क्या कहा था?'

और लड़के ने कहा:

'जब मैं अपने नगर में था, तब आप, पिताजी, मुझे दिखाई दिए और मुझे देखते हुए कहा: "थेओफलिस! तुम प्रभु से मुंह मोड़ गए हो, जो कहते हैं: *'अपना क्रूस उठाओ और मेरा अनुसरण करो'* (मत्ती 16:24)।'" ये शब्द मेरे हृदय को छू गए, और मैं मठ के द्वार तक आपका अनुसरण करता गया; जब हम यहाँ पहुँचे, तो आप मेरी दृष्टि से ओझल हो गए, और मैंने द्वार बंद पाए; और अब, हे पवित्र पिता, मुझसे अपना मुख मत मोड़िए, जो उद्धार की लालसा करता है।"

पवित्र पिता थियोफलिस के शब्दों से चकित रह गए, क्योंकि वे जानते थे कि उसने अपनी कोठरी बिल्कुल भी नहीं छोड़ी थी; और, इस विनम्र युवक की ऐसी अद्भुत बुलावा के लिए परमेश्वर का धन्यवाद करते हुए, उन्होंने उसे परमेश्वर का भय, संन्यासी जीवन, दिव्य सेवा और उपवास के अभ्यास को सिखाने के लिए अपने यहाँ रख लिया। तीन साल बाद, जब उस लड़के को उसके दयालु गुरु द्वारा सभी मठवासी अनुशासन में पूरी तरह से प्रशिक्षित कर दिया गया, तो रेवरेंड स्टीफन ने मठ के मठाधीश को बुलाया और आज्ञाकारी और नम्र लड़के को उसके मुंडन के लिए सौंप दिया। मठाधीश, उसे अपने साथ लेकर मठ में आए, जहाँ उन्होंने उसके सिर मुंडन का संस्कार किया। सिर मुंडन की रस्म ग्रहण करने के बाद थियोफलिस एक अनुभवी भिक्षु बन गए, जो हर गुण से सुशोभित थे, भाइयों के बीच एक देवदूत की तरह रहते थे और सभी की सेवा करते थे।

उनके माता-पिता, यह न जानते हुए कि उनका प्रिय पुत्र कहाँ है, उनके लिए गहराई से दुखी थे और हर जगह लगातार उनकी तलाश करते रहे, इस उम्मीद में कि वे उस व्यक्ति को ढूंढ लेंगे जिसने ईश्वर के प्रेम के लिए, अपने सभी परिचितों से खुद को छिपा लिया था और धर्मात्मा तपस्वियों के बीच गुप्त रूप से प्रभु की सेवा कर रहा था। कई वर्षों के बाद, उनके माता-पिता को आखिरकार पता चल गया कि उनका बेटा कहाँ था; वे मठ आए और रोते हुए, मठाधीश से अपने बेटे को दिखाने के लिए विनती करने लगे। मठाधीश ने लंबे समय तक उन्हें थियोफलिस को दिखाने से इनकार कर दिया, लेकिन उनकी सच्ची विनतियों, उनके दुख और उनके कड़वे आँसुओं से द्रवित होकर, उन्होंने उन पर दया की। जब माता-पिता ने अपने बेटे को संन्यासी के वस्त्रों में देखा, तो वे प्रसन्न होने के बजाय और भी ज़ोर से रोने लगे। वे कई दिनों तक मठ में रहे, पवित्र संतों के जीवन को देखा और उनके ज्ञानवर्धक प्रवचनों को सुना। वहीं उन्होंने अपने खर्च पर एक मठ स्थापित करने का संकल्प लिया, जहाँ थियोफलिस एक संन्यासी के रूप में रह सके। इसलिए उन्होंने थियोफलिस और भाइयों को घर लौटने की अनुमति देने के लिए मठाधीश से विनम्रतापूर्वक निवेदन करना शुरू कर दिया, और वादा किया कि वे जल्द से जल्द अपनी योजना को पूरा करेंगे। मठाधीश इस बात पर सहमत नहीं हुए, उन्होंने कहा कि एक युवा भिक्षु का अपने रिश्तेदारों और परिचितों के बीच रहना अनुचित है। लेकिन ईश्वर, जो मानव जाति के भले के लिए सभी चीजों की व्यवस्था करते हैं, थियोफलिस के संबंध में अपनी इच्छा प्रकट करना चाहते थे। जब उसके माता-पिता निरंतर मठाधीश से विनती करते रहे, तो मठाधीश ने भाइयों को बुलाया और उन्हें आज्ञा दी कि वे पूरी रात उपवास और प्रार्थना करें, जब तक कि ईश्वर स्वयं उन्हें यह न बता दें कि थियोफलिस को उसके माता-पिता के अनुरोध पर रिहा किया जा सकता है या नहीं। उत्कट प्रार्थना के बाद, तीसरे दिन चर्च में एक आवाज़ सुनाई दी जिसमें थियोफलिस को रिहा करने का आदेश दिया गया। तब सभी को एहसास हुआ कि ईश्वर स्वयं यह चाहते थे, और उसके लिए प्रार्थना करने के बाद, उन्होंने उसे आशीर्वाद के साथ रिहा कर दिया, और कुछ भाइयों की सहायता प्रदान की ताकि ईश्वर की महिमा बढ़ सके। उसके माता-पिता उसे लेकर आनंदपूर्वक घर लौटे और जल्द ही उन्होंने एक मठ की स्थापना की, जिसमें उन्होंने कई भाइयों को इकट्ठा किया, उन्हें आवश्यक सभी चीजें प्रदान कीं और ईश्वर के इन सेवकों को पूर्ण शांति दी। इस मठ में रहते हुए,

थियोफलिस सद्गुणों से एक प्रकाश की तरह चमका, और जो भी उसके अच्छे कर्मों को देखते और उनसे लाभान्वित होते, उन्होंने स्वर्गीय पिता की महिमा की।

थेओफलिस कई वर्षों तक इस प्रकार परिश्रम कर रहे थे जब मानव जाति के शत्रु ने सम्माननीय और पवित्र प्रतिमाओं के विरुद्ध एक उत्पीड़न शुरू किया, और जो लोग उनकी पूजा करते थे, उन्हें कानूनविहीन राजा लियो द इसाउरियन[6982] के हाथों यातनाओं का शिकार बनाया। यह सम्राट परमेश्वर के भवन की भव्यता से घृणा करने लगा और प्रभु की कलीसियाओं को उनके आभूषणों से वंचित कर दिया: उसने पवित्र प्रतिमाओं को कीचड़ में फेंक दिया, उन्हें पैरों तले रौंदा, उन्हें आग से जलाया, और प्रतिमाओं की पूजा करने के लिए कई विश्वासियों को यातनाएँ दीं। संत थियोफलिस ने इसका पुरजोर विरोध किया और सभी को आइकन का उचित तरीके से सम्मान करने और उन पर चित्रित व्यक्ति की पूजा करने की शिक्षा दी। इस बात की जानकारी मिलने पर, निर्दयी राजा ने धन्य थियोफलिस को पकड़ने के लिए सैनिक भेजे और उसे अपने सामने लाकर, उसे पवित्र आइकन की पूजा त्यागने का आदेश दिया। जब धन्य थियोफलिस ने ऐसा करने से इनकार कर दिया, तो राजा ने आदेश दिया कि संत को बैल की खाल की रस्सियों से कोड़ा मारा जाए; फिर, उसके हाथ पीठ पीछे बाँधकर, उसे एक अपराधी की तरह शहर में उपहास और अपमान के बीच घुमाया गया। सैनिकों में से एक, जिसका नाम लोंगिनिस था, थियोफलिस के साथ मिल गया; उसने यातना देने वाले के पागलपन की निंदा की और लोगों को पवित्र प्रतिमाओं की पूजा करना सिखाया; इसके लिए, यातना देने वाले ने उसे जमीन पर लिटा दिया और उसके सिर पर कई प्रतिमाएँ जला दीं। संत थियोफलिस, निकिया के पूरे शहर में परेड कर चुके थे, , एक बार फिर न्याय के लिए उस अत्याचारी राजा के सामने उपस्थित हुए, और उन्होंने साहसपूर्वक उससे बात की, प्रतिमाओं का बचाव किया और उसकी गलती की निंदा की। राजा संत की फटकार सहन नहीं कर सका, और उसने आदेश दिया कि उन्हें दो स्तंभों पर एक क्रॉस के आकार में नग्न सूली पर चढ़ाया जाए और सूखी अस्थि-मांसपेशियों से आगे-पीछे कोड़ा मारा जाए। अपनी यातनाओं के दौरान संत के घायल शरीर से बहते हुए रक्त को देखकर, ज़ार एक क्रूर जानवर की तरह हो गया। और जैसे जंगली जानवर, खून देखकर और भी क्रूर हो जाते हैं, वैसे ही यातना देने वाला भी, शहीद का खून देखकर, और भी अधिक क्रोध में आ गया: अपने सिंहासन से उठकर, उसने स्वयं संत को लंबे समय तक पीटा। तब उसने लोहे के जूते लाल-गरम करने, संत को उनमें जबरदस्ती ठूंसने और उसे सड़क पर घसीटने का आदेश दिया। पवित्र पीड़ित ने इन सभी यातनाओं को धैर्यपूर्वक सहन किया। राजा के एक सम्मानित अधिकारी ने यह देखकर और उसके धैर्यपूर्ण सहनशीलता से चकित होकर, उसे उसके यातनाकारों के हाथों से छीन लिया, अपने पास ले आया और कहा:

'क्या केवल तुम ही, थियोफलिस, प्रतिमाओं के सामने सिर झुकाते हो—क्या तुम पागल हो—या हम सब, जो उनकी पूजा नहीं करते, पागल हैं? निस्संदेह राजा और संपूर्ण सिक्लाइट[6983] के पास यह निर्णय करने की बुद्धि की कमी नहीं है कि क्या किसी को ईश्वर की एक चित्रित प्रतिमा के सामने सिर झुकाना चाहिए या नहीं?' यदि आइकन (चित्रों) के सामने झुकना आवश्यक होता, तो ईश्वर ने व्यवस्था में यह आज्ञा न दी होती: *'अपने लिए कोई मूरत या कोई प्रतिमा मत बनाना'* (निर्गमन 20:4)।

संत ने उत्तर दिया:

'मैं देखता हूँ, राजकुमार, कि तुम धर्मग्रंथों को जानते हो; तो चलो हम बातें करें।'

संत थियोफलिस ने उनसे पवित्र प्रतिमाओं की पूजा के बारे में बात करना शुरू किया, और पवित्र धर्मग्रंथों से यह समझाया कि पुराने नियम में भी प्रतिमाओं का सम्मान करने की आज्ञा दी गई थी, जैसे कि जंगल में मूसा द्वारा उठाए गए कांसे के सांप में और वाचा के संदूक के ऊपर रखे गए स्वर्ण के करूबों में। नए नियम में भी, प्रभु ने स्वयं एदेसा के अब्गार पर एक कपड़े पर अपनी प्रतिमा प्रकट की। थियोफलिस ने विस्तार से बात की और उस अधिकारी को फटकारा, तो उस अधिकारी ने उससे कहा:

'आपके शब्द सत्य हैं, सम्माननीय एल्डर। मैं राजा को भी इस बात के लिए मनाने की पूरी कोशिश करूँगा। आप, हालाँकि, मेरी क्षमा स्वीकार करें और अपनी कोठरी में लौट जाएँ।'

[6982] लियो द इसाउरियन – बीजान्टिन सम्राट, जिसने 714 से 741 तक शासन किया।

[6983] सिक्लाइट एक सैन्य और नागरिक परिषद थी जिसमें सबसे महत्वपूर्ण शाही सलाहकार और गणमान्य व्यक्ति शामिल थे।

लेकनि संत इस बात से दुखी थे कि उनका दुख समाप्त नहीं हुआ था; फरि भी, अपने घावों के बावजूद, वे प्रेरति के शब्दों में यह कहते हुए आनंदति हुए: *'मैं तुम्हारे लिए अपने दुखों में आनंदति हूँ और अपने शरीर में मैं मसीह की पीड़ाओं में जो कमी रह गई है, उसे उसकी कलीसिया के लिए, जो उसका शरीर है, पूरा कर रहा हूँ* (कुलुस्सियों 1:24)।

फरि वह अपने मठ लौट आए, जिससे पूरे मठवासी समुदाय में बड़ी प्रसन्नता हुई। अपनी मृत्यु से पहले, जिसकी भविष्यवाणी उन्हें पहले ही दी जा चुकी थी, थियोफिलस ने अपने अनुयायियों के लिए उपदेश रचे और प्रभु के पास शांतिपूर्वक प्रस्थान किया।

संत थियोक्टिनोस की शहादत

10 अक्टूबर को स्मरणोत्सव

धर्महीन राजा मैक्सिमियिन, एक बार अंकोन में आकर, अपने दुष्ट देवताओं के सम्मान में एक उत्सव आयोजित किया और एक फरमान जारी किया कि पहले सैनिक मूर्तियों को बलिदान दें, और फरि पूरा जनसमूह। सैनिकों में कई ईसाई थे, जिन्होंने राजा की आज्ञा का पालन करने से इनकार कर दिया, अपनी सैन्य पट्टियाँ उतार दीं और मसीह के लिए दुख सहने के लिए आगे बढ़ गए। उनमें पूरे अंतीयक में प्रसिद्ध थियोटेक्नोस नाम का एक व्यक्ति था। मैक्सिमियिन ने उससे इन शब्दों में कहा:

'और तुम, थियोटेकन, देवताओं—डायस और अपोलो—में विश्वास नहीं करते; फरि भी मैं तुम्हें उनका महापुजारी बनाना चाहता था।'

इस पर थियोटेक्न ने उत्तर दिया:

'मैं मसीह परमेश्वर में विश्वास रखता हूँ, और मैं स्वयं को उसकी बलि के रूप में अर्पित करना चाहता हूँ।'

तब मैक्सिमियिन ने आदेश दिया कि उसके सैन्य वस्त्र उतारकर उसके बदले में महिलाओं के कपड़े पहना दिए जाएँ, और उसे महिलाओं के साथ सूत कातने के लिए मजबूर किया गया। तीन सप्ताह बाद, मैक्सिमियिन ने उसे फरि से बुलवाया और कहा:

'देवताओं को बलिदान चढ़ाओ, नहीं तो तुम भयानक यातना में मरोगे।'

थेओटेक्न ने जवाब में एक शब्द भी नहीं कहा। तब सम्राट ने आदेश दिया कि उसे एक पेड़ से बांध दिया जाए, उसके पैरों के नीचे लाल-गरम लोहा रखा जाए, और लोहे की छड़ों से उसकी सभी नसें काट दी जाएं। यह देखकर कि वह इसके बाद भी अडिग रहा, सम्राट ने उबलते हुए गंधक और तारकोल का एक कड़ाहा तैयार करने और संत को उसमें फेंकने का आदेश दिया। जब उसे उसमें फेंका गया, तो मसीह की शक्ति से आग तुरंत बुझ गई, कड़ाही ठंडी पड़ गई, और शहीद को कोई चोट नहीं लगी। मैक्सिमियिन भयभीत हो गया और उसने पवित्र शहीद को एक कालकोठरी में ले जाने का आदेश दिया, जहाँ उसे ज़ेग्नटस नामक एक शताब्दी के अधीन कर दिया गया, ताकि वह अपनी मर्जी से उसे यातना दे सके।

उस समय, कालकोठरी में अलेक्जेंड्रा नाम की एक युवती थी, जिसे मसीह में अपने विश्वास की घोषणा करने के लिए बंदी बनाया गया था; ज़ेग्नाटस ने थियोटेक्नोस को उसके साथ डाल दिया, और दोनों से कहा:

'लो, मैं तुम्हें विचार करने के लिए तीन दिन का समय देता हूँ। यदि तुम राजा की आज्ञा मानने के लिए सहमत हो जाओ, तो तुम्हें बड़ा सम्मान मिलेगा; यदि नहीं, तो मैं तुम्हें एक भयानक मृत्यु दूँगा।'

तीन दिन बीत जाने के बाद, ज़ेग्नाटस उन्हें कालकोठरी से बाहर ले आया और पूछा कि क्या वे राजा की आज्ञा का पालन करने और मूर्तियों की पूजा करने का इरादा रखते हैं। लेकिन वे मसीह के प्रति विफादार रहे। फरि ज़ेग्नाटस ने दो सैनिकों को पवित्र कन्या के साथ दुर्व्यवहार करने का आदेश दिया।

थेओटेक्न, अलेक्जेंड्रा को अपमान से बचाना चाहते हुए, सैनिकों के आने से पहले उसके पास आए और अपने कपड़े उतारकर उन्हें दे दिया, और कहा:

'भाग जाओ, भाग जाओ, कहीं दुष्ट तुम्हारी पवित्रता को कलंकित न कर दें।'

उसने स्वयं उसके कपड़े पहन लिए और सैनिकों का इंतज़ार करने के लिए बैठ गया। जब सैनिक तहखाने में दाखिल हुए, तो उन्होंने थियोक्टिनोस को उस युवती के बजाय महिलाओं के कपड़ों में वहाँ बैठे हुए पाया; उन्होंने उसे पकड़ लिया और ज़ेग्नटस के सामने ले आए। ज़ेग्नटस को बहुत गुस्सा आया और उसने पहले यह आदेश दिया कि उसकी जीभ काट दी जाए, फरि उसे लंबे समय तक पीटा जाए। फरि उसने आदेश दिया कि शहीद की गर्दन के चारों ओर एक पत्थर की

चक्की बाँध दी जाए और उसे नदी में फेंक दिया जाए। इस प्रकार मसीह के इस शहीद ने अपना जीवन समाप्त किया[6984]। शहीद के पवित्र अवशेष सिलिसिया में रोसा शहर के पास पाए गए; ईसाइयों ने उन्हें लेकर, त्रिमूर्ति में एक ईश्वर की स्तुति करते हुए, उन्हें सम्मान के साथ उनके स्वदेश में स्थापित किया। सदैव उसकी महिमा हो। आमेन।

परम पूजनीय वासियन की स्मृति

10 अक्टूबर को स्मरणोत्सव

आदरणीय वासियन पूर्वी सीरिया के मूल निवासी थे। धर्मपरायण सम्राट मार्सियन के शासनकाल में[6985], वे कॉन्स्टेंटिनोपल पहुँचे। सेवरस और जॉन नामक दो प्रतिष्ठित व्यक्तियों ने उन्हें कॉन्स्टेंटिनोपल में एक मठ बनाने के लिए साधन प्रदान किए। अपने जीवनकाल में ही, आदरणीय व्यक्ति अपने सद्गुणों और चमत्कारों के लिए प्रसिद्ध हो गए। कई लोगों ने उनकी शिक्षाओं पर अमल करते हुए संसार का त्याग किया और संन्यास की शपथ ली। पूजनीय वासियन के शिष्यों की संख्या 300 तक पहुँच गई। उन्होंने कई लोगों को शैतान की शक्ति से मुक्त किया और उन्हें ईश्वर की ओर ले गए; उन्होंने भूत-प्रेत भगाए, बीमारियों को ठीक किया और अनगिनत अन्य चमत्कार किए। पूजनीय संत बहुत वृद्धावस्था में परलोक सिधार गए[6986]।

24 अक्टूबर

11 अक्टूबर (पुराना कैलेंडर)

प्रेरित फिलिप का जीवन

11 अक्टूबर को स्मरणोत्सव

पवित्र प्रेरित फिलिप मूल रूप से फिलिस्तीन के केसरिया के निवासी थे[6987]। अपनी शादी के बाद, उनकी चार बेटियाँ थीं जिन्होंने भविष्यवाणी की (प्रेरितों के काम 2:19)। बाद में उन्हें पवित्र प्रेरितों द्वारा एक डिकन के रूप में चुना गया और, प्रथम शहीद और महाडिकन सेंट स्टीफन के साथ एक ही समय में अभिषिक्त होकर, उन्होंने खुद को विश्वासियों की सेवा करने, गरीबों और विधवाओं की देखभाल करने के लिए पूरी तरह से समर्पित कर दिया[6988]। के बाद, यरूशलेम में कलीसिया के उत्पीड़न के दौरान संत स्तेफन को मार डाला गया, और बारह प्रेरितों को छोड़कर सभी मसीही यहूदिया और सामरिया के क्षेत्रों में बिखर गए; उसी समय, संत फिलिप सामरिया पहुँचे[6989]। वहाँ उन्होंने मसीह का प्रचार किया, और सामरिया के सभी निवासियों ने एकमत होकर उनके उपदेश को सुना। संत फिलिप ने अपने उपदेश की पुष्टि कई चमत्कारों से की, हर प्रकार की बीमारियों को ठीक किया और दुष्ट आत्माओं को निकाल फेंका, जो जब लोगों से बाहर निकलती थीं, तो ऊँचे स्वर से चिल्लाती थीं। और उस समय उस नगर में बहुत आनन्द हुआ, क्योंकि जिन्होंने फिलिप

[6984] पवित्र शहीद की मृत्यु तीसरी शताब्दी के अंत या चौथी शताब्दी की शुरुआत में हुई थी।

[6985] मार्सियन – एक बीजान्टिन सम्राट – ने 450 से 467 तक शासन किया।

[6986] † 5वीं शताब्दी के अंत में।

[6987] केसरिया – फिलिस्तीन में भूमध्य सागर के पूर्वी तट पर स्थित एक शहर, जिसे यहूदी राजा हेरोद ने प्राचीन शहर स्ट्रैटन की जगह पर बनवाया था और इसका नाम सीज़र ऑगस्टस (रोमन सम्राट ऑक्टेवियन ऑगस्टस) के सम्मान में रखा गया था। इस शहर को कई बार नष्ट किया गया और आज केवल इसके खंडहर ही बचे हैं, जो जंगली वनस्पतियों से ढँके हुए हैं।

[6988] संत फिलिप प्रेरित, उन सात डिकन में से एक थे जिन्हें प्रेरितों ने विधवाओं और अनाथों की देखभाल करने तथा सामुदायिक ईसाई भोजन परोसने का कार्य सौंपा था। प्रेरितों के काम 6:1–5।

[6989] फ़िलिस्तीन के एक क्षेत्र या प्रांत के रूप में, सामरिया, जॉर्डन के पश्चिम में, फ़िलिस्तीन के मध्य भाग में स्थित था। इसकी उत्तरी सीमा गलील, दक्षिणी सीमा यहूदिया, पूर्वी सीमा जॉर्डन, और पश्चिमी सीमा भूमध्य सागर से मिलती थी। समरिया, जो समरिया देश का प्रमुख शहर और एक समय में इस्राएल के राज्य की राजधानी था, यरूशलेम से लगभग तीन वर्स्ट उत्तर में स्थित था। आज उस प्राचीन और गौरवशाली शहर का एक भी पत्थर नहीं बचा है; उसकी जगह सबुस्टिया (पहले सेबास्टे शहर) नाम का एक छोटा सा गरीब गाँव बसा है।

की शिक्षा ग्रहण की और सच्चे मसीहा पर विश्वास किया, वे न केवल शारीरिक व्याधियों से, बल्कि आध्यात्मिक कष्टों से भी चंगे हो गए। वहाँ सिमोन नाम का एक बहुत प्रसिद्ध और कुख्यात जादूगर भी था, जो अपनी जादूगरी से सारे सामरिया को चकित कर देता था, और सब लोग उसे बहुत महत्व का व्यक्ति समझते थे। फिलिप द्वारा किए गए महान चिह्नों और अद्भुत कामों को देखकर, और पवित्र प्रेरित की परमेश्वर के राज्य और यीशु मसीह के नाम के बारे में उपदेश सुनकर, साइमन ने विश्वास किया और अन्य लोगों के साथ बपतिस्मा लिया (प्रेरितों के काम 8:5–13)।

एक दिन, प्रभु का एक स्वर्गदूत प्रेरित फिलिप के पास प्रकट हुआ, और उसे आज्ञा दी कि वह दक्षिण की ओर, यरूशलेम से गाज़ा को जाने वाली सड़क पर जाए[6990] । इस सड़क पर यात्रा करते समय, संत फिलिप की मुलाकात इथियोपिया की रानी कैंडस के एक यूनानी (नपुंसक) से हुई[6991] , जो यरूशलेम से गाजा लौट रहा था—जहाँ वह पूजा करने गया था—जो उसके प्रशासन के अधीन था। अपने रथ में बैठे, वह यूनानी भविष्यद्वक्ता की पुस्तकें पढ़ रहा था। प्रेरित ने उन्हें हमारे प्रभु यीशु मसीह के विषय में विश्वास की शिक्षा दी और उनके साथ अपनी यात्रा जारी रखते हुए, वहीं सड़क के किनारे उन्हें बपतिस्मा दिया[6992] ।

पुनरुत्थान के बपतिस्मा के बाद, प्रेरित फिलिप को एक स्वर्गदूत ने उठा लिया और अस्दोध तक ले गया[6993] और, जैसे-जैसे वह यात्रा करता गया, उसने सभी नगरों में परमेश्वर का वचन प्रचार किया जब तक कि वह कैसरिया नहीं पहुँच गया। यहाँ उसका अपना घर था, जिसमें वह कुछ समय तक अपनी चार बेटियों के साथ रहा, जो कुँवारी और भविष्यद्वक्ता थीं। इसके बाद, वह एक बार फिर यरूशलेम लौट आए। पवित्र प्रेरितों द्वारा वहाँ बिशप नियुक्त होने के बाद, उन्हें बाद में एशिया माइनर के ट्रैल्स शहर[6994] में प्रचार करने के लिए भेजा गया। वहाँ कई लोगों को मसीह के धर्म में परिवर्तित करने और महान चमत्कार करने के बाद, प्रेरित फिलिप अपने वृद्धावस्था में प्रभु के पास चले गए।

कॉन्टाकियन, स्वर 4:

जीभों का अद्भुत वक्ता, और मसीह के शिष्यों का साथी, प्रेरितों में पूर्व-चुने हुए फिलिप, आज संसार पर चंगाई का खजाना लुटाता है, और जो उसकी स्तुति करते हैं उन्हें विपत्ति से बचाता है। इसलिए, हम एक स्वर में उसे पुकारते हैं: हे प्रेरित, अपनी प्रार्थनाओं द्वारा हम सभी को बचाओ।

परम पूज्य थियोफानेस, धर्मोपदेशक और कैनन-लेखक का जीवन

11 अक्टूबर को स्मरणोत्सव

आदरणीय थियोफानेस का जन्म पवित्र माता-पिता के घर हुआ था जो फिलिस्तीन में रहते थे। वे ईश्वर-भयभीत लोग थे और अजनबियों के प्रति अपनी आतिथ्य-सत्कार में विशेष रूप से उत्साही थे। थियोफानेस का एक भाई था, जिसका नाम ' ' (चिह्नित) था[6995] , यह नाम उन्हें बाद में प्रतिमा-भंजकों के हाथों सहन की गई यातनाओं के कारण मिला। अपने

[6990] गाज़ा सबसे प्राचीन फ़िलिस्तीनी शहरों में से एक है, जो फ़िलिस्तीन में कनानी लोगों की दक्षिणी सीमा के रूप में कार्य करता था। बाद में, इस एक समय के समृद्ध शहर ने अपना सारा महत्व खो दिया, और अब केवल रेतीले टीले और दयनीय खंडहर ही इस बात की गवाही देते हैं कि कभी यहाँ एक महान शहर बसा करता था। यहाँ से बहुत दूर नहीं, बाद में बसा एक नया शहर है जिसका नाम भी यही है।

[6991] कंडकिया – इथियोपिया या मेरो की रानी, जो अफ्रीका में मिस्र के दक्षिण में स्थित प्राचीन इथियोपिया का एक राज्य था। कंडकिया नाम इथियोपिया की रानियों के लिए एक सामान्य उपाधि थी। ख़ास – पूर्व में शाही हरम का एक रक्षक; बाद में, यह शब्द दरबारियों के लिए एक सामान्य उपाधि बन गया। संत फिलिप द्वारा धर्मांतरित किए गए नपुंसक एक धर्मपरिवर्तित था, अर्थात्, कोई ऐसा व्यक्ति जो मूर्तिपूजा से यहूदी धर्म में परिवर्तित हुआ था; इस धर्म का एक धर्मनिष्ठ अनुयायी होने के नाते, वह पूजा करने के लिए यरूशलेम आया था।

[6992] इसका विवरण प्रेरितों के काम 8:26–39 में देखें।

[6993] अजोतस – भूमध्य सागर के पूर्वी तट पर, गाज़ा से बहुत दूर नहीं, एक प्राचीन और प्रसिद्ध फ़िलिस्तीनी शहर। आज, इस स्थल पर येजुड नामक एक छोटा सा गाँव बसा है।

[6994] ट्रालिया – एशिया माइनर के उत्तर-पश्चिम में एक लिडियन शहर।

[6995] चर्च 27 दिसंबर को पवित्र शहीद थियोडोर, संत थियोफेनेस के भाई, का स्मरणोत्सव मनाता है क्योंकि, प्रतिमा पूजा के रक्षकों के रूप में उन्हें जिन क्रूर यातनाओं से गुज़रना पड़ा, बाइज़ेंटाइन सम्राट थियोफिलिस ने अपमानजनक श्लोक अंकित करने का आदेश दिया; इन श्लोकों को

माता-पिता की देखभाल से, थियोफानेस और उनके भाई थियोडोर को हर तरह के विद्वान ज्ञान में शिक्षित किया गया और वे कुशल दार्शनिक बन गए[6996] । इस वर्तमान दुनिया की व्यर्थता और क्षणभंगुरता को महसूस करते हुए, *'क्योंकि इस संसार की आकृति बीत रही है'* (1 कुरिन्थियों 7:31), भाइयों ने सब कुछ पीछे छोड़ दिया और संत सावा की लाव्रा में चले गए, जहाँ उन्होंने मठवासी जीवन को समर्पित किया, जिसमें उन्होंने प्रार्थना और सभी सद्गुणों में उत्कृष्टता प्राप्त करते हुए उत्साहपूर्वक परिश्रम किया। अपने सदाचारी जीवन के लिए, थियोफेंस को प्रेस्बिटिर (पादरी) का पद दिया गया।

उस समय, पवित्र प्रतिमाओं के प्रति एक धर्महीन उत्पीड़न शुरू हुआ[6997] , जिसने परमेश्वर की संपूर्ण कलीसिया में गहरी चिंता पैदा कर दी, और कई ईसाइयों को पवित्र प्रतिमाओं की पूजा करने के लिए उत्पीड़न और यातनाओं का सामना करना पड़ा। तब ये बुद्धिमान शिक्षक और ऑर्थोडॉक्सी के रक्षक यरूशलेम के पैट्रिआर्क[6998] द्वारा—जैसे भेड़ों को भेड़िये के पास भेजा जाता है—सम्राट लियो द आर्मेनियन[6999] के पास उनकी दुष्टता की निंदा करने के लिए भेजे गए। कॉन्स्टेंटिनोपल पहुँचने और इस ईश्वर के शत्रु के समक्ष उपस्थित होने के बाद, उन्होंने निडर होकर उसकी दुष्टता की निंदा की। परिणामस्वरूप, दार्शनिक-भाइयों ने न केवल सम्राट लियो द आर्मिनियिन के हाथों, बल्कि उनके उत्तराधिकारियों, सम्राटों माइकल बाल्बा और थियोफिलस[7000] के हाथों भी बहुत कष्ट सहे। उन्होंने तरह-तरह की यातनाएँ, घाव और बेड़ियाँ, भूख और प्यास, निर्वासन और चेहरे पर दाग, कैद और अनगिनत अन्य दुर्भाग्य सहन किए। बीस से अधिक वर्षों तक, 817 से 842 तक, उन्हें प्रतिमा-भंजकों द्वारा यातनाएँ दी गईं और उनका उत्पीड़न किया गया। इन कष्टों के बीच, संत थियोडोर का निधन हो गया[7001] , जबकि थियोफेनेस चर्च में शांति बहाल होते देखने तक जीवित रहे। बाइज़ेन्टाइन सम्राट थियोफिलस के पुत्र माइकल[7002] ने अपनी माता थियोडोरा के साथ मिलकर बाइज़ेन्टाइन सम्राटों का राजदंड ग्रहण करने के बाद, पवित्र प्रतिमाओं की पूजा को बहाल किया, उन्हें परमेश्वर के गिरिजाघरों में स्थापित किया, और प्रतिमाओं की पूजा के लिए पीड़ित हुए सभी पवित्र पुरुषों को कैद से मुक्त कर उन्हें सभी को महान सम्मान प्रदान किया। इसी समय, संत थियोफान को भी कैद से रिहा कर दिया गया और प्रतिमा-भंजनवाद के पाखंड को परास्त करने वाले पैट्रिआर्क मेथोडियस[7003] द्वारा अभिषिक्त होने के बाद, उन्हें निकिया की कलीसिया के मेट्रोपॉलिटिन पद पर नियुक्त किया गया[7004] ।

अंकित करने की पीड़ादायक प्रक्रिया, जिसमें लाल-गरम सुइयों का उपयोग किया गया, ने इन कन्फेशर्स के चेहरों को उनकी भौंहों तक पूरी तरह से जला दिया।

[6996] 'दार्शनिक' शब्द ग्रीक भाषा से आया है और इसका अर्थ है 'ज्ञान का प्रेमी', यानी एक विद्वान जिसने अस्तित्व के सर्वोच्च प्रश्नों के अध्ययन के लिए खुद को समर्पित किया है: जैसे कि ईश्वर, संसार और मानवता की उत्पत्ति और नियम, मानवता का उद्देश्य, और संसार के अस्तित्व के अंतिम लक्ष्य, आदि।

[6997] प्रतिमा-विरोधी विधिर्म और प्रतिमा-पूजकों पर अत्याचार 8वीं शताब्दी के पहले भाग में बीजान्टियम में उत्पन्न हुआ और लगभग 9वीं शताब्दी के मध्य तक जारी रहा, लियो द इसाउरियन (714–741) के शासनकाल से लेकर माइकल III और उनकी माता, सम्राज्ञी थियोडोरा के शासनकाल तक।

[6998] उस समय के पैट्रिआर्क संत निकिफोरस थे, जिन्हें ऑर्थोडॉक्स प्रतिमा पूजन की रक्षा करने के लिए बाद में निर्वासित कर दिया गया था। उनका पर्व दिवस 13 मार्च को मनाया जाता है।

[6999] लियो पंचम अर्मेनियाई – बीजान्टिन सम्राट और प्रतिमा-भंजक – ने 813 से 820 तक शासन किया।

[7000] माइकल द्वितीय हकला 820 से 829 तक शासन किया। थियोफिलस ने 829 से 842 तक शासन किया।

[7001] लगभग 840

[7002] प्रारंभ में, माइकल तृतीय के सिंहासनारोहण (842 में) के बाद, राज्य का शासन उनकी माँ, संत थियोडोरा द्वारा किया जाता था। 842 में कॉन्स्टेंटिनोपल की परिषद में प्रतिमा पूजा को बहाल किया गया, और इसकी स्मृति में, उस समय चर्च में एक विशेष 'ऑर्थोडॉक्सी सेवा' स्थापित की गई थी, जिसे आज भी ग्रेट लेंट के पहले रविवार को मनाया जाता है।

[7003] संत मेथोडियस प्रथम – 842 से 846 तक कॉन्स्टेंटिनोपल के पैट्रिआर्क।

[7004] निकिया (अब इज़्निक) – एशिया माइनर में, एक शहर जो प्राचीन काल और मध्य युग में समृद्ध और फलता-फूलता था, लेकिन अब गरीब और कम आबादी वाला है। निकिया को रोमन और बाद में बाइज़ेन्टाइन सम्राटों का विशेष अनुग्रह प्राप्त था, और निकिया का मेट्रोपॉलिटिन सिंहासन सबसे प्रतिष्ठित में से एक माना जाता था। पहला और सातवां सार्वभौमिक धर्मसभा इसी शहर में आयोजित किए गए थे।

संत थियोफेंस ने पवित्र प्रतिमाओं की आराधना पर एक गंभीर कैनन रचा और मसीह की कलीसिया के लिए कई अन्य उपयोगी लेखन छोड़कर गए[7005] । उन्होंने प्रभु के साथ रहने के लिए इस सांसारिक जीवन से प्रस्थान किया[7006] और, अपनी अनेक परीक्षाओं और कष्टों के बाद, अब स्वर्गीय निवासों में आनंदित हैं।

कॉन्टाकियन, स्वर 2:

हे अद्भुत थियोफानेस, तूने मसीह के दिव्य अवतार की घोषणा करके अदेह शत्रुओं को पूरी तरह से लज्जित कर दिया। इसी कारण, हम सभी विश्वास और भक्ति के साथ तुझसे पुकारते हैं: हम सभी के लिए अनवरत प्रार्थना कर।

पवित्र शहीदों ज़ीनाइडा और फिलोनिला की स्मृति

11 अक्टूबर को स्मरणोत्सव

पवित्र बहनें ज़ीनाइडा और फिलोनिला सिलिसिया के तारसस की रहने वाली थीं और प्रेरित पौलुस की रिश्तेदार थीं।

अपनी माँ को छोड़कर और अपने सामान का त्याग करके, उन्होंने चिकित्सा की कला सीखी और एक सच्चा प्रेरितिक कार्य किया। वे डेमेट्रियस के शहर[7007] में आईं, जिसके पास ही उन्होंने एक गुफा में निवास किया। यहाँ, ज़ीनाइडा ने हर तरह की बीमारियों का इलाज किया, जबकि फिलोनिला ने उपवास और प्रार्थना में स्वयं को समर्पित कर, महान चमत्कार किए।

पगनों ने रात में आकर उन दोनों को पत्थर मारकर हत्या कर दी। इस प्रकार वे प्रभु में शांतिपूर्वक विश्राम करने लगे और एक धन्य निद्रा में स्वर्गीय निवासों में प्रवेश कर गए।

प्रभु यीशु मसीह की प्रतिमा द्वारा किए गए चमत्कार का स्मरणोत्सव

11 अक्टूबर को स्मरणोत्सव

बेरटिस नगर में[7008] , यहूदी सनिगॉग के पास, एक ईसाई रहता था जिसके पास हमारे प्रभु यीशु मसीह की एक प्रतिमा थी। कुछ समय बाद, इस ईसाई ने अपने लिए एक और घर खरीद लिया, जिसमें वह रहने चला गया, और अपने पहले घर से सब कुछ ले गया, सिवाय हमारे प्रभु की प्रतिमा के, जिसे उसने ईश्वर की विशेष कृपा से पीछे छोड़ दिया था। ईसाई के चले जाने के बाद, एक यहूदी उस घर में रहने लगा जहाँ प्रभु की प्रतिमा थी, और वहाँ रहने लगा, तथा उस पवित्र प्रतिमा पर कोई ध्यान नहीं दिया।

एक दिन, उसने एक दोस्त, जो कि एक यहूदी भी था, को रात के खाने पर आमंत्रित किया। भोजन के दौरान, मेहमान ने घर की दीवार पर नज़र डाली, वहाँ लटकी प्रतिमा को देखा, और मेज़बान से कहा:

'यह कैसे है कि तुम, एक यहूदी होते हुए, इस प्रतिमा को अपने घर में रखे हो?'

मेज़बान ने गाली-गलौज करते हुए कहा कि उसे उस पल तक इस पर ध्यान ही नहीं गया था। हालाँकि, मेहमान के जाने के बाद, उसने सनिगॉग में अपने दोस्त की बदनामी की।

उसने कहा, 'यह आदमी, यहूदी होने के बावजूद, अपने घर में नासरत के यीशु की एक प्रतिमा रखता है।'

[7005] थियोफेंस ने ऑर्थोडॉक्सी के बचाव में कई कृतियाँ छोड़ीं और वे 148 तक की संख्या वाले कैनन के लेखक के रूप में विशेष रूप से प्रसिद्ध हैं। उनके उत्कृष्ट कैननों में ऑर्थोडॉक्सी सप्ताह के लिए कैनन, प्रेरितों के लिए सभी कैनन, और विभिन्न संतों के लिए कैनन शामिल हैं। इसके अलावा, संत थियोफेंस ने कुछ दिनों के लिए स्टिचेरा रचे।

[7006] लगभग 850 ईस्वी

[7007] डेमेट्रियाडा – तारसस के उत्तर में सिलिसिया में एक शहर, जिसका नाम ग्रीक मूर्तिपूजक देवी डेमेटेर के नाम पर रखा गया था, जिन्हें वनस्पति जगत, अनाज, कृषि और प्रजनन क्षमता की संरक्षक माना जाता था।

[7008] बेरटिस – अब बेरूत – फोनीशियन तट पर मगारा नदी के स्रोत पर स्थित एक बहुत ही प्राचीन तटीय शहर है। यह वर्तमान में सीरिया के एशियाई-तुर्की क्षेत्र की राजधानी और सीरियाई तट पर सबसे महत्वपूर्ण व्यापारिक केंद्र है।

तब सनिागॉग में मौजूद सभी लोग इस बात से बहुत क्रोधति हुए, लेकनि उस दनि वे कुछ नहीं कर सके, क्योंकि शाम हो चुकी थी। हालाँकि, अगली सुबह यहूदी लोग, पुरोहति और बुजुर्ग एक साथ इकट्ठा हुए और उस घर की ओर चल पड़े जहाँ पवत्रि प्रतमिा रखी गई थी। शोर मचाते हुए घर में घुसकर, उन्होंने उस प्रतमिा को जब्त कयिा और उसे बाहर ले आए। वहाँ उन्होंने प्रतमिा के चारों ओर इकट्ठा होकर उसे अपवत्रि करने का संकल्प लयिा, ठीक वैसे ही जैसे उनके पूर्वजों ने उस पर चत्रिति व्यक्ति को अपवत्रि कयिा था। उन्होंने प्रतमिा पर थूकना शुरू कर दयिा और यीशु मसीह के चेहरे की छवि पर प्रहार कयिा, और फरि कहा:

'हमने सुना है कि हमारे पूर्वजों ने उसे एक पेड़ पर ठोक दयिा था: हम भी इस प्रतमिा के साथ ऐसा ही करेंगे।'

कुछ कीलें लेकर, उन्होंने हाथों और पैरों के चत्रिति हस्सिों पर आइकन को एक पेड़ से ठोक दयिा। फरि, सरिके में भीगे हुए एक स्पंज को एक सरकंडे पर रखकर[7009] , उन्होंने उसे प्रभु के होठों से लगा दयिा; और अंत में, उन्होंने एक भाला लाया और उनमें से एक को प्रभु की पसलयिों में भेदने का आदेश दयिा। और जैसे ही उसने भाले से प्रतमिा को भेदा, उससे तुरंत रक्त और जल [7010] बहने लगा। इतने बड़े चमत्कार को देखकर, वहाँ मौजूद सभी लोग बड़े भय से ग्रस्त हो गए। रक्त और जल को पात्रों में इकट्ठा करने के बाद, उन्होंने अंधों, लंगड़ों और पतृिग्रस्त लोगों को लाने और उन्हें इस रक्त से अभषिेक करने का नर्णिय लयिा।

'यदि जिन्हें हम लाते हैं वे चंगे हो गए,' उन्होंने कहा, 'तो हम सब सूली पर चढ़ाए गए मसीह पर वशि्वास कर लेंगे।'

तब जन्म से लंगड़ा एक आदमी को लाया गया – और पवत्रि प्रतमिा से बहे हुए रक्त का अभषिेक होने के बाद, वह तुरंत चंगा हो गया। इसके बाद, अंधों और दुष्टात्माओं से ग्रस्त लोगों की भीड़ को लाया गया, और इस रक्त का अभषिेक होने के बाद वे अपनी पीड़ाओं से मुक्त हो गए।

यह सुनकर, नगर के लोग इस अद्भुत चमत्कार को देखने के लिए दौड़ पड़े। वे अपने साथ सभी बीमारों, लकवाग्रस्तों और कोढ़यिों को लाए, जो सभी चंगे हो गए। तब उस नगर में रहने वाले सभी यहूदी समुदाय ने हमारे प्रभु यीशु मसीह पर वशि्वास कयिा। यहूदयिों ने प्रभु की प्रतमिा के सामने साष्टांग दंडवत प्रणाम करके पश्चाताप के साथ कहा:

'महमिा तेरी हो, हे मसीह, परमेश्वर के पुत्र, जो ऐसे चमत्कार करते हो! महमिा तेरी हो, हे मसीह, जसिे हमारे पूर्वजों ने सूली पर चढ़ाया, परन्तु जसि पर हम अब वशि्वास करते हैं; हे प्रभु, हम जो तेरे सामने गरिते हैं, हमें स्वीकार कर!'

इसके बाद, उस नगर के सभी यहूदी—पुरुष, महलिाएँ और बच्चे—बशिप के पास आए और उनसे पवत्रि बपतस्मिा के माध्यम से उन्हें ज्ञान प्रदान करने का आग्रह कयिा। उन्होंने उन्हें वह प्रतमिा दखिाई जसिसे रक्त और जल बहा था, और उन्हें उन सभी अपमानजनक कृत्यों के बारे में बताया जो उन्होंने उस पवत्रि प्रतमिा के वरिुद्ध कए थे। बशिप ने, उनकी सच्ची पश्चाताप देखकर, उन्हें खुशी से स्वीकार कयिा और, उन्हें पवत्रि वशि्वास में शक्षिति करने के बाद, उन्हें उनकी पत्नयिों और बच्चों के साथ बपतस्मिा दयिा, और उनकी सनिेगॉग को हमारे प्रभु यीशु मसीह के चर्च में बदल दयिा। और नगर के सभी नविासयिों में बड़ी खुशी हुई, न केवल इसलिए कि कई बीमार लोग चंगे हो गए थे, बल्कि इसलिए भी कि अवशि्वासी यहूदयिों का बपतस्मिा हुआ था और उन्होंने प्रभु की प्रतमिा के माध्यम से हुए चमत्कार के परणिामस्वरूप पवत्रि वशि्वास को अपना लयिा था।

इसलिए, सभी को पवत्रि प्रतमिाओं की आस्था और प्रेम के साथ पूजा करनी चाहिए, और वशिेष रूप से उस प्रतमिा की जो दैवीय सार, हमारे प्रभु यीशु मसीह की, जो परमेश्वर-मनुष्य बने, पूजा और महमिा करती है, जन्हिें परमेश्वर पता और पवत्रि आत्मा के साथ, युगानुयुग पूजा अर्पति की जाती है। आमीन।

सातवें सार्वभौमकि परषिद का स्मरणोत्सव

11 अक्टूबर को स्मरणोत्सव

[7009] पत्रि मलिा हुआ सरिका। यह मादक पेय, जो इंद्रयिों को सुस्त कर देता है, मृत्युदंड पाए लोगों को पीने के लिए दयिा जाता था, ताकि उनकी पीड़ा कुछ हद तक कम हो सके।

[7010] यह चमत्कार लगभग 765 ईस्वी के आसपास हुआ था।

11 अक्टूबर को, पवित्र ऑर्थोडॉक्स चर्च सप्तम सार्वभौमिक परिषद के पवित्र पिताओं का स्मरणोत्सव मनाता है। इसके आयोजन का कारण तथाकथित प्रतिमा-भंजकों का विधर्म था।

इस विधर्म की उत्पत्ति सम्राट लियो द इसाउरियन के समय से होती है, जिन्होंने एक फरमान जारी किया था कि पवित्र प्रतिमाओं को चर्चों और घरों से हटाकर सार्वजनिक चौराहों पर जला दिया जाए, और उद्धारकर्ता की छवियों को, ईश्वर की माता और पवित्र संतों की, चाहे वे शहरों के खुले स्थानों में रखी गई हों या चर्चों की दीवारों पर। जब लोगों ने इस आदेश के कार्यान्वयन का विरोध करना शुरू कर दिया, तो लियो ने तब उनके उत्साही उपासकों को उन पवित्र वस्तुओं की सूची में जोड़ दिया जिनका वह उत्पीड़न कर रहा था। तुरंत भीड़ में इकट्ठा हुए सभी लोगों को मारने का आदेश जारी किया गया। और कई लोग—विशेषकर महिलाएं—उस दिन पवित्र प्रतिमाओं के प्रति अपने प्रेम और भक्ति के कारण प्रतिमा-भंजकों की तलवारों से मारे गए। तब सम्राट ने कॉन्स्टेंटिनोपल के सर्वोच्च धर्मशास्त्र विद्यालय को बंद करने का आदेश दिया, जिससे ऑर्थोडॉक्स को उस विजय के हथियार से वंचित कर दिया गया जो उन्हें एक गहन धर्मशास्त्रीय शिक्षा से प्राप्त होता था। कुछ बीजान्टिन इतिहासकार तो यह भी दावा करते हैं कि उसने उन्हीं उद्देश्यों के लिए स्कूल के विशाल पुस्तकालय को भी जला दिया था। लेकिन उत्पीड़क को अपने फरमानों के खिलाफ हर तरफ से कड़ी प्रतिक्रिया का सामना करना पड़ा। सीरिया से, दमिश्क से, सेंट जॉन ऑफ़ दमिश्क ने उनके खिलाफ लिखा। रोम से, ग्रेगरी द्वितीय की मृत्यु के बाद[7011] , उनके उत्तराधिकारी, पोप ग्रेगरी तृतीय ने उनके खिलाफ लिखना जारी रखा। और अन्य स्थानों पर, लोगों ने खुले विद्रोहों के साथ भी प्रतिक्रिया दी।

लियो के पुत्र और उत्तराधिकारी, कॉन्स्टेंटिनोपोल के सम्राट कॉन्स्टेंटाइन कोप्रोन्यमस[7012] , अपने पिता द्वारा पवित्र प्रतिमाओं की पूजा के संबंध में निर्धारित मार्ग पर अडिग रहते हुए, ने अपने प्रयासों को मुख्य रूप से पादरियों पर केंद्रित करने का निश्चय किया, क्योंकि बिशप और भिक्षु ही सर्वत्र प्रतिमा-भंजकों के सक्रिय विरोधी थे।

इस उद्देश्य के लिए, उन्होंने एक परिषद बुलाने का प्रयास किया[7013] जिसमें प्रतिमाओं की पूजा की निंदा की गई। इस तथाकथित 'एकुमेनिकल काउंसिल' का तत्काल परिणाम यह हुआ कि चर्चों से प्रतिमाओं को बाहर फेंक दिया गया और, अधिकांशत; जला दिया गया, जबकि चर्चों की दीवारों पर बनी चित्रित और मोज़ेक पवित्र छवियों पर चूना पोत दिया गया। ब्लाचेर्ना में स्थित ईश्वर की माता का भव्य चर्च भी इस नियति से नहीं बच सका; इसकी दीवारों पर, श्रेष्ठ कलाकारों ने ईश्वर-मानव के संपूर्ण सांसारिक जीवन, उनके सभी चमत्कारों और सुसमाचार के वृत्तांत की सभी घटनाओं को चित्रित किया था, जिसका समापन प्रेरितों पर पवित्र आत्मा के अवतरण के साथ हुआ। आइकन (चित्रों) के उत्पीड़न के बाद, कोप्रोन्यमस ने पवित्र अवशेषों पर अत्याचार करना शुरू कर दिया; उन्हें बाहर फेंकने के आदेश दिए गए। इस प्रकार, उदाहरण के लिए, 16 सितंबर को, महान शहीद यूफेमिया के पवित्र अवशेषों को चर्च से हटाकर समुद्र में फेंक दिया गया, जबकि उनके नाम पर समर्पित कालसेडोन का भव्य चर्च छावनी में बदल दिया गया। मोनकों को प्रतिमा पूजन का मुख्य समर्थक मानते हुए, कोप्रोनिमस ने सभी मठों को बंद करने का निश्चय किया। कॉन्स्टेंटिनोपल में कई मठों को, प्रसिद्ध डल्मेशियन मठ से शुरू करते हुए, छावनी में बदल दिया गया या ध्वस्त कर दिया गया। कई भिक्षुओं को

[7011] पोप ग्रेगरी द्वितीय ने सम्राट को दो पत्र लिखे। अपने पहले पत्र में, ग्रेगरी ने पवित्र शास्त्र के उन सभी अंशों की व्याख्या की, जो एक ओर, पवित्र छवियों के निर्माण का आदेश देते हैं, और दूसरी ओर, ऐसा प्रतीत होता है कि वे मना करते हैं, और फिर प्राचीन काल से प्रमाण उद्धृत किए। वे लिखते हैं, 'यरूशलेम में मसीह के समय के दौरान, एडसा के तत्कालीन राजकुमार और शासक अवगार ने मसीह के चमत्कारों के बारे में सुनकर, उन्हें एक पत्र लिखा, और मसीह ने उन्हें अपने ही हाथ से एक उत्तर और अपने चेहरे की एक पवित्र और गौरवशाली छवि भिजी। जाओ और इस मानव-निर्मित नहीं, इस प्रतिमा को देखो। पूर्व के लोग बड़ी संख्या में वहाँ आते हैं और अपनी प्रार्थनाएँ अर्पित करते हैं।" सम्राट को इस तरह के प्रमाण प्रस्तुत करने के बाद, पोप पश्चिमी ऑर्थोडॉक्स आबादी के बीच शाही फरमानों से उत्पन्न घृणा का जीवंत वर्णन करते हैं: वे लिखते हैं, 'हर जगह, लोगों ने आपके चित्रों को जमीन पर फेंकना शुरू कर दिया है, उन्हें पैरों तले कुचलने और आपके चेहरे को अपमानित करने के लिए', और इसी तरह। वे अपने पत्र का समापन एक भावुक प्रार्थना के साथ करते हैं कि 'ईश्वर, जो स्वर्ग से अवतरित हुए, सभी ईसाई चर्चों को हमेशा के लिए शांति प्रदान करें'। सम्राट ने एक धमकी भरा जवाब भेजा, जिसके जवाब में पोप ग्रेगरी द्वितीय ने अपना दूसरा पत्र लिखा, जिसमें उन्होंने उसी दृढ़ता के साथ सम्राट से अपने नियोजित कार्यों को छोड़ने का आग्रह किया।

[7012] कांस्टेंटिन कॉप्रोन्यमस 741 से 775 तक शासक रहा।

[7013] यह परिषद 754 में हुई थी। इसके सत्रों का स्थान कई बार बदला: कभी-कभी इन्हें बोस्फोरस के एशियाई तट पर स्थित हिएरिया नामक शाही महल में आयोजित किया जाता था; तो कभी-कभी स्वयं कॉन्स्टेंटिनोपल में ब्लाचेर्ना में वर्जिन मैरी के चर्च में। उस समय ऑर्थोडॉक्स के सभी कट्टरपंथियों को इस परिषद से कई शाप सहने पड़े। उन पर कई झूठे आरोप लगाए गए। परिषद ने अपनी झूठी मूर्तिभंजन संबंधी कल्पनाओं को चर्च के पिताओं की गढ़ी गई कहानियों और जाली कथनों पर आधारित किया।

यातना देकर मार डाला गया। ऐसा करते समय, भिक्षुओं के सिर आमतौर पर उन्हीं प्रतिमाओं से टकराकर चकनाचूर कर दिए जाते थे जिनकी उन्होंने रक्षा की थी।

कोप्रोनियमस के उत्तराधिकारी, लियो चौथे[7014] के शासनकाल में, प्रतिमा पूजकों को थोड़ी अधिक स्वतंत्रता मिली। लेकिन प्रतिमा पूजा की पूर्ण विजय केवल महारानी आइरीन[7015] के अधीन ही प्राप्त हुई, जिन्होंने अपने पुत्र कॉन्स्टेंटिन की अल्पवयस्कता के कारण, अपने पति लियो चौथे की मृत्यु के बाद सिंहासन संभाला। सिंहासन पर बैठने पर, उन्होंने सबसे पहले उन सभी भिक्षुओं को निर्वासन से वापस बुलाया जिन्हें प्रतिमाओं की पूजा के कारण निर्वासित किया गया था, और अधिकांश बिशपपदों पर प्रतिमा-पूजक उत्साही लोगों की नियुक्ति की। फिर उन्होंने पवित्र अवशेषों को वे सभी सम्मान वापस दिलाए जो प्रतिमा-भंजकों द्वारा उनसे छीन लिए गए थे। लेकिन सम्राज्ञी को एहसास हुआ कि प्रतिमा पूजा की पूर्ण बहाली के लिए यह सब अभी भी अपर्याप्त था। एक सार्वभौमिक परिषद बुलाना आवश्यक था, जो कोप्रोन्यमस द्वारा बुलाई गई हालिया परिषद की निंदा करे और प्रतिमा पूजा के सत्य को बहाल करे। टारासियस[7016] ने पादरी के सिंहासन पर चुने जाने पर विशेष रूप से इस बात पर जोर दिया।

'यदि यह वास्तव में महारानी की इच्छा है,' उन्होंने घोषणा की, 'कि तारासियस पादरीशाही के शासन का भार उठाए, तो वह सहमत हैं, लेकिन केवल इस शर्त पर कि एक सार्वभौमिक परिषद बुलाई जाए।'

टारासियस की व्याख्या सुनने के बाद, महारानी उसे पैट्रिआर्क के चुनाव के लिए माटावरा महल में इकट्ठा हुए सेनटर्स और पादरियों के पास ले गईं। इस सभा के समक्ष एक प्रभावशाली और वाक्पटु भाषण में, तारासियस ने घोषणा की कि यदि वे चाहते हैं कि वह पैट्रिआर्केट स्वीकार करे, तो उन्हें प्रतिमाओं की पूजा की पुष्टि के लिए एक सार्वभौमिक परिषद बुलाना चाहिए। उपस्थित अधिकांश लोगों ने तारासियस की मांग को न्यायसंगत माना, और वर्ष 784 में मसीह के जन्म के पर्व पर तारासियस को पैट्रिआर्क के रूप में अभिषिक्त किया गया। थोड़ी ही देर बाद, महारानी आइरीन और उनके पुत्र कॉन्स्टेंटिन की ओर से—जिन्हें उनकी अल्पवयस्कता के कारण महारानी शासन कर रही थीं—रोम के पोप एड्रियन को परिषद में आमंत्रित करते हुए एक संदेश भेजा गया। पैट्रिआर्क तारासियस ने इस संदेश में अपना व्यक्तिगत निमंत्रण भी जोड़ा। पोप ने व्यक्तिगत रूप से परिषद में शामिल होने के सम्मान को अस्वीकार कर दिया । उन्होंने अपनी ओर से दो प्रतिनिधि भेजे: पीटर, रोम में सेंट पीटर द एपोस्टल चर्च के प्रोटोप्रेस्बिटिर, और पीटर, रोम में ही सेंट सावस के मठ के मठाधीश। अलेक्जेंड्रिया और एंटिओक के पैट्रिआर्क के प्रतिनिधि भी कॉन्स्टेंटिनोपल पहुँचे। ये अपने-अपने पैट्रिआर्केट के वरिष्ठ सिकेलो[7017] थे: पादरी जॉन और थॉमस। अपने पैट्रिआर्कों से प्राप्त अधिकार-पत्रों के अलावा, वे यरूशलेम के पैट्रिआर्क का एक पत्र भी लाए, जिसमें उन्होंने प्रतिमा पूजा की पुष्टि के लिए अपनी सहमति व्यक्त की थी। कॉन्स्टेंटिनोपल के पैट्रिआर्केट के बिशपों को भी राजधानी में बुलाया गया था। शुरू में, परिषद को 786 की गर्मियों में कॉन्स्टेंटिनोपल में चर्च ऑफ द होली अपोस्टल्स में खोलने की योजना थी। परिषद सत्रों के उद्घाटन के लिए सब कुछ पहले ही तैयार हो चुका था, जब उद्घाटन की पूर्व संध्या पर, कॉन्स्टेंटिनोपल में सैनिकों के बीच एक बगावत फूट पड़ी, जिसने परिषद के आयोजन को रोक दिया। परिषद अगले वर्ष (24 सितंबर) की शरद ऋतु तक नहीं खुली, और वह भी कॉन्स्टेंटिनोपल में नहीं बल्कि पास के निकिया में—जो पहले सार्वभौमिक परिषद का स्थल था—सेंट सोफिया चर्च में हुई। परिषद के सदस्यों की सटीक संख्या स्थापित नहीं हो सकी है। किसी भी मामले में, उनकी संख्या तीन सौ से अधिक थी, क्योंकि परिषद के कार्यवृत्तों पर 307 बिशपों के हस्ताक्षर हैं। परिषद की शुरुआत पैट्रिआर्क तारासियस के भाषण से हुई, जिसके बाद परिषद को सम्राट का पत्र पढ़कर सुनाया गया। इसे पढ़े जाने के बाद, मूर्तिभंजन में शामिल बिशपों के दोष का निर्धारण करने की कार्यवाही शुरू हुई।

इसके बाद, शाही सचिव लियोन्टियस ने परिषद को पवित्र प्रतिमाओं के संबंध में सम्राट और पैट्रिआर्क को लिखे पोप एड्रियन के पत्र को सुनने की आवश्यकता की याद दिलाई। ये पत्र सबसे गहरी प्रेरितीय प्राचीनता पर से

[7014] लियो चौथे ने 775 से 780 तक शासन किया।

[7015] सम्राज्ञी आइरीन प्रतिमा-पूजकों के एक धार्मिक परिवार में पली-बढ़ी थीं, और उन्होंने अपने पति लियो चौथे के शासनकाल के दौरान ही पवित्र प्रतिमाओं के प्रति अपनी भक्ति दिखा दी थी, जिसके कारण वह अप्रिय हो गईं और उन्हें महल से निर्वासित भी कर दिया गया था।

[7016] संत तारासियस ने 784 से 806 तक कॉन्स्टेंटिनोपल के पैट्रिआर्क के रूप में कार्य किया। उनका पर्व दिवस 25 फरवरी को मनाया जाता है।

[7017] 'सिकेलोस' उस उपाधि को कहा जाता है जो उन पुरोहितों को दी जाती थी जो बिशप के साथ एक ही कोठरी में रहते थे। बिशप आमतौर पर सिकेलोस के रूप में उन लोगों को चुनते थे जो अधिक शिक्षित होते थे और अत्यंत महत्वपूर्ण मामलों को सुलझाने में उनकी सहायता कर सकते थे।

पर्दा उठाते हैं और यह स्पष्ट करते हैं कि उस समय पवित्र चर्च आइकनों को कैसे देखती थी[7018] । दोनों पत्रों के पढ़े जाने के बाद, पोप के प्रतिनिधियों ने यह जानना चाहा कि क्या पैट्रआर्क और परिषद के सभी सदस्य उनसे सहमत थे।

तारस ने उत्तर दिया कि वह पोप द्वारा लिखा गया सब कुछ स्वीकार करता है।

उन्होंने कहा, 'इसका पालन करना चाहिए, क्योंकि इसका विरोध करना मूर्खतापूर्ण कार्य है। और हमने स्वयं, धर्मग्रंथों, तर्क और साक्ष्यों के आधार पर सत्य की जांच करने के बाद, और धर्मपिता की शिक्षाओं के माध्यम से इसे जानने के बाद, पवित्र धर्मपिता की प्राचीन परंपरा के अनुसार दृढ़ता से और अपरिवर्तनीय रूप से स्वीकार किया है, और स्वीकार करते रहेंगे, जीवंत रूप से चित्रित प्रतिमाओं की हम भक्तिपूर्ण प्रेम से पूजा करते हैं, क्योंकि वे प्रभु परमेश्वर और हमारी निर्मल माता, परमेश्वर की पवित्र माता, पवित्र प्रेरितों और सभी संतों के नाम पर हैं; फिर भी हम अपनी उपासना और विश्वास एकमात्र सच्चे परमेश्वर की ओर निर्देशित करेंगे।

'सम्पूर्ण पवित्र परिषद यह भी सिखाती है,' परिषद के सभी सदस्यों से उनके शब्दों का उत्तर मिला।

तब पैट्रआर्क तारासियस का चक्रीय पत्र, जो उन्होंने पैट्रआर्कल सिंहासन पर आरूढ़ होने पर अंतीयक, अलेक्जेंड्रिया और यरूशलेम के बिशपों और पुरोहितों को लिखा था, और पूर्वी पैट्रआर्कों का उस पर दिया गया उत्तर, पढ़ा गया। इन पत्रों को पढ़ने पर, परिषद के धर्मगुरुओं ने सर्वसम्मति से घोषणा की: 'हम उनसे पूरी तरह सहमत हैं; हम प्रेमपूर्वक पवित्र और पूजनीय प्रतिमाओं को स्वीकार करते हैं और उनका सम्मान करते हैं, और हम उनकी पूजा करते हैं।'

अगले सत्र की शुरुआत में, पैट्रआर्क तारासियस की सलाह पर, पवित्र धर्मग्रंथ, पवित्र पिताओं के लेखन और संतों की जीवनी के उन सभी अंशों की समीक्षा करने का निर्णय लिया गया, जो प्रतिमा पूजा के सिद्धांत को स्थापित करने के लिए आधार के रूप में काम कर सकते थे। इनमें पवित्र प्रतिमाओं और अवशेषों द्वारा किए गए चमत्कारों के बहुत से वृत्तांत शामिल थे। उनमें से कुछ इस प्रकार हैं:

संत अनास्तासियस फारसी († 628) की शहादत के वृत्तांत में, जिनका पर्व 22 जनवरी को मनाया जाता है, यह वर्णित है कि जब उनकी अवशेषों को फलिस्तीन के सेज़रिया में ले जाया जा रहा था, और लोग उन्हें मिलने के लिए चारों ओर से उमड़ रहे थे, तो अरेटा नाम की एक महिला संदेह में पड़ गई और कहने लगी:

'मैं फारस से लाए गए अवशेषों की पूजा नहीं करूँगी।' कुछ दिनों बाद, पवित्र शहीद अरेता को सपने में प्रकट हुए और पूछा:

'क्या तुम्हारे कूल्हों में कोई बीमारी है?'

अरेता के यह जवाब देने से पहले कि वह ठीक है, उसे अचानक महसूस हुआ कि वह वास्तव में उस बीमारी से ग्रस्त हो गई है। वह लंबे समय तक अपनी बीमारी से पीड़ित रही; फिर, इससे अस्थायी राहत महसूस करने के बाद, उसने इस बात पर विचार करना शुरू कर दिया कि उस पर ऐसी बीमारी क्यों आई थी। उसने ऐसे चिंतन में चार दिन बिताए। पाँचवें दिन भोर में, पवित्र शहीद फिर से उसके सपने में प्रकट हुए और कहा:

'टेट्रापलि[7019] जाओ। सेंट अनास्तासिया से प्रार्थना करो और तुम ठीक हो जाओगी।'

जब उसे बताए गए स्थान पर ले जाया गया, तो पवित्र शहीद की प्रतिमा देखकर, वह ज़ोर से चिल्लाई:

[7018] पवित्र प्रतिमाओं की पूजा के संबंध में प्राचीन काल के साक्ष्यों के अलावा, इन पत्रों में चर्च फादर्स के लेखों से उद्धरण शामिल हैं। उदाहरण के लिए, निम्नलिखित उद्धरण उद्धृत किए गए हैं: 1) जूलियन द एपोस्टेट को बेसिल द ग्रेट के शब्द: 'मैं पवित्र प्रेरितों, भविष्यवक्ताओं और शहीदों को स्वीकार करता हूँ, जो ईश्वर से प्रार्थना करते हैं। अत; मैं प्रतिमाओं पर उनकी छवियों का सम्मान करता हूँ और खुले तौर पर उनकी पूजा करता हूँ। यह पवित्र प्रेरितों द्वारा विरासत में मिला है और इसे मना नहीं किया जाना चाहिए; अत; हम अपनी सभी चर्चों में उनके इतिहास को चित्रित करते हैं।' 2) बोस्ट्रा के बिशप सेंट स्टीफन के शब्द: 'आइकन के संबंध में, हम यह स्वीकार करते हैं कि वे, ईश्वर के नाम पर की गई किसी भी अन्य कृत्य की तरह, एक अच्छा और पवित्र कार्य हैं, क्योंकि एक आइकन एक चीज़ है और एक मूर्ति या प्रतिमा दूसरी। प्रभु, स्वर्गदूतों, भविष्यवक्ताओं, प्रेरितों, शहीदों या धर्मी पुरुषों के नाम पर बनाई गई कोई भी प्रतिमा पवित्र है, क्योंकि पूजा लकड़ी की नहीं की जाती है, बल्कि लकड़ी में उस वस्तु की की जाती है जिसका ध्यान किया जाता है और जिसे देखा जाता है। हम सभी अपने विशिष्ठों का सम्मान करते हैं और उन्हें प्रेम से स्वागत करते हैं, भले ही वे पापी हों; तो फिर, हम ईश्वर के सेवकों का सम्मान क्यों न करें? हम उनकी स्मृति में प्रतिमाएँ क्यों न बनाएं, ताकि उन्हें विस्मृति में न भुला दिया जाए?.. संतों की स्मृति में, हम उनकी प्रतिमाएँ बनाते हैं, ताकि हर कोई, उन्हें प्रतिमा में देखकर, उन्हें याद कर सके और उस प्रभु की महिमा कर सके जिसने उनकी महिमा की है।'

[7019] टेट्रापलि कॉन्स्टेंटिनोपल का एक जिला था जहाँ संत के अवशेष और प्रतिमा रखी गई थीं, और जहाँ उस समय उनके नाम एक चर्च का निर्माण हो रहा था।

'यह सचमुच वही है जिसे मैंने अपने सपने में देखा था।' मंच पर घुटनों के बल गिरकर, वह पश्चाताप के आँसुओं से काफी देर तक रोई और पूरी तरह से ठीक होकर उठ खड़ी हुई।

परिषद में इस चमत्कार के वृत्तांत को पढ़े जाने के बाद, पोप के प्रतिनिधियों ने कहा कि संत अनास्तासिया का यह आइकन, जिसमें उनका पूजनीय सिर अंकित है, वर्तमान में रोम के एक मठ में रखा है, जबकि टौरोमेनियम के बिशप जॉन ने उनके बयान में यह जोड़कर कहा कि वह सिसिली की एक महिला को जानते थे, जो रोम में पवित्र शहीद की प्रतिमा द्वारा चंगा की गई थी।

तब निकोमेडिया के बिशप पीटर ने बेरूत में प्रभु की प्रतिमा के सामने घटित एक चमत्कार की सूचना दी, और एडेसा में मानव हाथों से न बनी उद्धारकर्ता की छवि से संबंधित चमत्कार के बारे में इवाग्रियस[7020] के एक वृत्तांत का हवाला दिया गया। चमत्कार इस प्रकार था:

एक बार, फारस के राजा खुसरौ ने एडेसा को घेराबंदी कर ली थी। उसके आदेश पर बनाए गए विशाल मिट्टी के ढेरों से, सैनिकों ने शहर की दीवारों के ऊपर से निवासियों पर आग लगाई। घेराबंदी झेल रहे निवासियों ने किलेबंदी की दीवारों के नीचे सुरंगें खोदने और फिर उन्हें आग लगा देने का निश्चय किया। लेकिन सुरंगों में उन्होंने जो आग लगाई थी, वह ताजी हवा न पहुँचने के कारण बार-बार बुझ जाती थी। तब एदेसा के लोगों ने चमत्कारी प्रतिमा को लिया और उसे अपनी खोदी हुई खाइयों में ले गए।

प्रतिमा पर पानी छिड़कने के बाद, उन्होंने उससे टपक रहे बूंदों का उपयोग ढेर की गई लकड़ी में जल रही मुरझाई हुई आग को बुझाने के लिए किया, और तुरंत ही सारी लकड़ी एक असाधारण आग की लपटों में घिर गई। जब वह कोयला बन गई, तो लपटें ऊपर के पेड़ों तक फैल गईं और तेजी से खुसरौ के सभी किलेबंदी को नष्ट कर दिया।[7021]

इस वृत्तांत को पढ़कर, कॉन्स्टेंटिनोपल के महान चर्च के पाठक ने कहा:

'मैं स्वयं—एक अयोग्य सेवक—जब मैं शाही दूतों के साथ सीरिया गया था[7022] , तो मैं एदेसा में था और मैंने इस प्रतिमा को देखा जो मानव हाथों से नहीं बनी; श्रद्धालु इसकी पूजा करते हैं।'

पहले परिषद के बाद हुई बैठकों में, पवित्र पिताओं की रचनाओं से उद्धृत अन्य कई अंश, जो पहले उद्धृत अंशों के समान थे, पढ़े गए। जब परिषद के धर्मगुरु, जैसा कि पैट्रिआर्क तारासियस ने कहा, 'पवित्र धर्मगुरुओं की गवाहियों से तृप्त हो चुके थे', तो एक पूजनीय प्रतिमा सत्र के केंद्र में लाई गई, और परिषद में उपस्थित सभी धर्मगुरुओं ने उसे चूमकर, उसके सामने बयानीस (22) संक्षिप्त कथनों का पाठ किया, और प्रत्येक को तीन बार दोहराया। इन बयानों में सभी मुख्य प्रतिमा-विरोधी सिद्धांतों की निंदा की गई और उन पर शाप लगाया गया।

बाद के सत्र तथाकथित 'एकुमेनिकल' कौंप्रोनमिस परिषद के फरमानों के विश्लेषण के लिए समर्पित थे। यह विश्लेषण अत्यंत गहनता से किया गया था। इसे पूरे समय दो व्यक्तियों द्वारा संचालित किया गया, जो एक तरह से दो पक्षों का प्रतिनिधित्व कर रहे थे: एक ने झूठी परिषद के फरमान पढ़े, जबकि दूसरे ने उनमें निहित झूठों का खंडन पढ़ा। पवित्र शास्त्र के वे अंश, जिन्हें कोंप्रोनमिस की परिषद द्वारा गलत तरीके से व्याख्यायित किया गया था, अब एक नई व्याख्या के अधीन किए गए। उदाहरण के लिए: पुराने नियम से, अपने ईसाई-विरोधी ( ) विचारों की रक्षा में, मूर्ति-भंजकों ने दस आज्ञाओं में दिए गए आदेश की ओर इशारा किया: *'अपने लिए कोई मूर्ति मत बनाना'* (निर्गमन 20:4)। परिषद के धर्मपिता ने इसका उत्तर दिया:

– इज़राइल के लोगों से कहे गए ये शब्द, जो सोने के बछड़े की पूजा करते थे और मिस्र के भ्रम से अछूते नहीं थे, ईसाइयों की दिव्य सभा पर लागू नहीं किए जा सकते। परमेश्वर, जो यहूदियों को प्रतिज्ञात भूमि में ले जाना चाहता था, इसलिए उसने उन्हें यह आज्ञा दी: 'तुम अपने लिए कोई मूर्ति नहीं बनाओगे', क्योंकि वह भूमि मूर्तिपूजकों से बसी हुई थी जो राक्षसों, सूर्य, चंद्रमा, तारों और अन्य प्राणियों—यहाँ तक कि पक्षियों, चार पैरों वाले जानवरों और सरीसृपों—की पूजा करते थे, और केवल जीवित और सच्चे परमेश्वर की पूजा नहीं करते थे। जब प्रभु की आज्ञा से मूसा ने साक्ष्य का तम्बू बनाया, तो उन्होंने यह दर्शाते हुए कि हर चीज़ परमेश्वर की सेवा करती है, सोने से मानव सदृश करूब बनाए, जो तर्कशील करूबों की प्रतिमा का प्रतिनिधित्व करते थे।

[7020] एवाग्रियस छठी शताब्दी के एक चर्च-इतिहासकार थे।

[7021] फ़ारसी राजा खुसरू प्रथम द्वारा एडेसा पर हमला 545 में हुआ था।

[7022] 'अपोक्रीसियरी' शासक के दरबार में सबसे महत्वपूर्ण चर्चों के बिशपों के अस्थायी या स्थायी प्रतिनिधि थे, जो अपने चर्च और उसके प्रमुखों तथा सर्वोच्च प्राधिकरण के बीच सभी संबंधों की देखरेख करते थे।

छद्म-एकीकृत परिषद द्वारा पवित्र पिताओं की रचनाओं के कुछ अंशों की भी गलत व्याख्या की गई। अपनी रक्षा में, मूर्ति-विरोधियों ने उदाहरण के लिए, अलेक्जेंड्रिया के संत अथेनासियस की रचनाओं से निम्नलिखित अंश का हवाला दिया:

'क्या उन पर दया न की जाए जो सृजित वस्तुओं की पूजा करते हैं, इस आधार पर कि देखने वाले अंधों के सामने और सुनने वाले बहरों के सामने झुकते हैं? एक प्राणी दूसरे प्राणी को कभी नहीं बचा सकता।'

लेकिन परिषद ने स्पष्ट किया कि इस अंश में संत अथेनासियस पैगनों का उल्लेख कर रहे थे और अपने शब्दों को उनके विरुद्ध निर्देशित कर रहे थे; ईसाइयों ने कभी भी सभी के एकमात्र ईश्वर के स्थान पर किसी सृजित वस्तु की पूजा नहीं की थी, जैसा कि प्रतिमा-भंजकों ने उन पर आरोप लगाया था। यह भी सामने आया कि मूर्तिभंजकों ने अक्सर पवित्र पिताओं के शब्दों को संदर्भ से हटाकर उद्धृत किया - उन्हें उनसे पहले या बाद की बात से जोड़ने के बिना - जिससे उन शब्दों को एक ऐसा अर्थ मिल गया जो उनके उद्देश्यों के अनुकूल था।

अंत में, प्रतिमा-विरोधी परिषद द्वारा उद्धृत कुछ कथन पूरी तरह से मनगढ़ंत पाए गए।

जैसे ही यह स्पष्ट हो गया कि तथाकथित सार्वभौमिक परिषद द्वारा अपनी सिद्धांतगत परिभाषाओं को सही ठहराने के लिए उद्धृत किए गए आधार झूठे और अपर्याप्त थे, तो सभी के लिए यह स्वतःस्पष्ट हो गया कि ऐसे आधारों पर स्थापित परिभाषाएँ भी झूठी थीं; और इसलिए परिषद के पितरों ने जल्द ही अपनी स्वयं की परिषदगत सिद्धांतगत परिभाषा के अंतिम रूप-निर्धारण की ओर बढ़ गए। इस अंतिम धर्मसूत्र में, परिषद के पितरों ने पहले यह आवश्यक समझा कि परिषद के आयोजन के कारण और उसके द्वारा किए गए कार्य का उल्लेख किया जाए; फिर पूरे धर्मसूत्र और उन सभी विधर्मों का शब्दशःखंडन उद्धृत किया जाए जिन्हें छह पूर्ववर्ती सार्वत्रिक परिषदों द्वारा पहले ही खंडित किया जा चुका था; और, अंत में, आइकन की पूजा के धर्मशास्त्र को सर्वकालिक रूप से पुष्टि करना:

– हम यह आदेश देते हैं कि पवित्र और पूजनीय प्रतिमाओं को ठीक उसी तरह श्रद्धांजलि के लिए प्रस्तुत किया जाना चाहिए जैसे कि पवित्र और जीवन-दायक क्रूस की छवि को, चाहे वे पेंट, मोज़ेक टाइलों, या किसी अन्य सामग्री से बनी हों, बशर्ते कि वे उपयुक्त तरीके से बनाई गई हों, और चाहे वे ईश्वर के पवित्र चर्चों में पाई जाएँ, पवित्र पात्रों और वस्त्रों पर, दीवारों और पैनलों पर, या घरों और सड़क के किनारे; और चाहे ये प्रभु और परमेश्वर, हमारे उद्धारकर्ता यीशु मसीह की प्रतिमाएँ हों, या हमारी निर्दोष माता, परमेश्वर की पवित्र माता की, या सम्माननीय स्वर्गदूतों और सभी संतों और धर्मी पुरुषों की। जितनी अधिक बार, प्रतिमाओं की सहायता से, वे हमारे चिंतन का विषय बन जाते हैं, और जो लोग इन प्रतिमाओं को देखते हैं, वे स्वयं आदर्शों को याद करने के लिए अधिक प्रेरित होते हैं[7023] , उनके प्रति प्रेम में वृद्धि करते हैं, और उन्हें चूमने, सम्मान और पूजा अर्पित करने के लिए प्रेरित होते हैं; फिर भी, वह सच्ची पूजा कतई नहीं जो, हमारे विश्वास के अनुसार, केवल दिव्य स्वभाव के लिए ही है। जो लोग इन प्रतिमाओं को निहारते हैं, वे इन प्रतिमाओं को धूप अर्पित करने और उनके सम्मान में मोमबत्तियाँ जलाने के लिए प्रेरित होते हैं, जैसा कि प्राचीन काल में किया जाता था, क्योंकि किसी प्रतिमा को दिया गया सम्मान उसके मूल प्रतिरूप से संबंधित होता है, और जो कोई भी प्रतिमा की पूजा करता है, वह उस पर चित्रित व्यक्ति के हाइपोस्टेसिस ([7024]) की भी पूजा करता है। जो लोग इसके विपरीत सोचने या सिखाने की हिम्मत करते हैं, चाहे वे बिशप हों या पुरोहित, उन्हें पदच्युत कर दिया जाना चाहिए; यदि वे भिक्षु या सामान्य लोग हों, तो उन्हें चर्च से बहिष्कृत कर दिया जाना चाहिए।

परिषद का समापन सभी बिशपों, मजिस्ट्रेटों, सैन्य अधिकारियों और कॉन्स्टेंटिनोपल के अन्य नागरिकों द्वारा प्रभु की महिमा के साथ हुआ, जिन्होंने अनगिनत संख्या में महल के हॉल को भर दिया था। परिषद के फरमानों की प्रतियाँ पोप, पूर्वी पैट्रिआर्क, महारानी और सम्राट, तथा कॉन्स्टेंटिनोपल के पैट्रिआर्केट के सभी चर्चों को भेजी गईं।

इस प्रकार[7025] का सप्तम सार्वभौमिक परिषद भव्यता से समाप्त हुआ, जिसने प्रतिमा पूजा के सत्य को बहाल किया और आज भी पूरे ऑर्थोडॉक्स पूर्वी चर्च द्वारा 11 अक्टूबर को प्रतिवर्ष इसकी स्मृति मनाई जाती है।

[7023] 'प्रोटोटाइप', अर्थात्, वे जिन्हें आइकन पर दर्शाया गया है।

[7024] ग्रीक से अनुवादित 'हाइपोस्टेसिस' शब्द का अर्थ 'सार' या 'अस्तित्व' है; किसी आइकन के संबंध में, यह उस व्यक्ति को संदर्भित करता है जिसे आइकन समर्पित है।

[7025] यदि 11 अक्टूबर सप्ताह के किसी कार्यदिवस पर आता है, तो सप्तम सार्वभौमिक परिषद के पितृपुरुषों के लिए सेवा निकटतम रविवार को आयोजित की जाती है।

कॉन्टाकयिन, स्वर 2:

जो पतिा से अकथनीय रूप से प्रकाशति हुए, और कुँवारी से अद्वतिीय स्वभाव में उत्पन्न हुए—उन्हें देखकर, हम प्रतमिा को अस्वीकार नहीं करते: बल्कि, उसे भक्तपिूर्वक चत्रिति करके, हम उसे वशि्वासपूर्वक सम्मानति करते हैं; और इसी कारण, चर्च के सच्चे धर्म को बनाए रखते हुए, हम मसीह के अवतार की प्रतमिा को चूमते हैं।

25 अक्टूबर

12 अक्टूबर (पुराना कैलेंडर)

पवत्रि शहीदों ताराख, प्रोबस और एंड्रोनकिस का कष्टकथा

12 अक्टूबर को स्मरणोत्सव

डायोक्लेटयिन और मैक्समियिन के शासनकाल के दौरान, जब प्रोकोन्सुल नुमेरस मैक्समिस सलिसियिा के तारसस का प्रभारी था, तीन ईसाइयों—तराख, प्रोव और एंड्रोनकिस—को पोम्पेओपोलसि शहर[7026] में गरिफ्तार कयिा गया और प्रोकोन्सुल मैक्समिस[7027] के समक्ष मुकदमे के लिए तारसस लाया गया। उन्हें देखकर, प्रोकॉन्सल ने, यह देखकर कि ताराह एक सम्माननीय और वृद्ध व्यक्ति थे, उनसे कहा:

'तुम्हारा नाम क्या है? क्योंकि सबसे बड़े होने के नाते, तुम्हें दूसरों से पहले पूछताछ की जानी चाहिए।'

'मैं एक ईसाई हूँ,' ताराह ने उत्तर दयिा।

प्रोकन्सल ने कहा:

'मुझसे अपने अधर्मी वशि्वास की बात मत करो, बल्कि मुझे अपना नाम बताओ।'

'मैं एक ईसाई हूँ,' ताराह ने फरि कहा।

तब मैक्समिस ने अपने नौकरों को आदेश दयिा:

'उसके मुँह पर मारो और उससे कहो: "न्यायाधीश को इस तरह उत्तर मत दो।"'

लेकनि जब वे उसे मार रहे थे, तब ताराह ने कहा:

'मेरा नाम क्या है? मैं कहूँगा: मैं एक ईसाई हूँ; यह नाम मुझे मेरे माता-पति द्वारा दए गए नाम से भी अधकि प्रयि है; लेकनि अगर आप वह नाम भी जानना चाहते हैं, तो मेरे माता-पति ने मेरा नाम ताराह रखा था, और जब मैं एक सैनकि था, तो मुझे वकि्टर[7028] कहा जाता था।'

प्रोकॉन्सल ने उससे पूछा:

'तुम्हारा वंश क्या है, ताराच?'

– मैं,' ताराख ने उत्तर दयिा, 'सीरयिाई शहर क्लॉडयिोपोलसि के एक रोमन सैन्य परविार से आता हूँ[7029] और ईसाई बनने के बाद, मैंने अपना सैन्य पद छोड़ दयिा।

प्रोकॉन्सल ने कहा:

'तुम सैनकि के रूप में सेवा करने के अयोग्य थे; फरि भी, मुझे बताओ कि तुमने सेना कैसे छोड़ी।'

'मैंने अपने कमांडर, पब्लयिस से कहा,' ताराह ने कहा, 'और उन्होंने मुझे रहिा कर दयिा।'

[7026] पोम्पेओपोलसि – जसि सॉली के नाम से भी जाना जाता है – सलिसियिा में एक महत्वपूर्ण प्राचीन शहर था; आज इसके केवल खंडहर ही बचे हैं।

[7027] नीचे दए गए पवत्रि शहीदों के दुखों के वृत्तांत प्रामाणकि शहीद-वृत्त हैं, जन्हिें, जैसा कि किलिजियिा के अनाज़ार्बस शहर के ईसाइयों द्वारा इकोनयिम शहर के ईसाइयों को लखि एक पत्र से स्पष्ट है—जहाँ पवत्रि शहीदों ने अपनी मृत्यु पाई—अनाज़ार्बस के ईसाइयों ने एक मध्यस्थ के माध्यम से 200 डेनारी में प्राप्त कयिा था।

[7028] वकि्टर, ग्रीक शब्द से, का अर्थ है 'वजिेता'।

[7029] क्लोदओिपोलसि – इसौरयिा में एक शहर, जो सलिसियिा का हस्सिा था।

प्रोकंसल ने कहा:

'तो अपनी वृद्धावस्था की परवाह करो, और हमारे राजाओं की आज्ञा का पालन करो, ताकि मैं तुम्हारा सम्मान कर सकूँ; आगे आओ और हमारे देवताओं को बलिदान चढ़ाओ, क्योंकि स्वयं ब्रह्मांड पर शासन करने वाले राजा भी उनकी पूजा करते हैं।'

टाराच ने उत्तर दिया:

'उन्हें शैतान ने गुमराह कर दिया है, फुसला लिया है।'

ताराह के उत्तर के बाद, उप-राज्यपाल ने अपने सेवकों को आदेश दिया:

'उसकी जबड़े तोड़ दो, क्योंकि वह राजाओं के खिलाफ बोलता है, यह कहते हुए कि वे धोखा खा गए हैं और भटक गए हैं।'

जब उसे पीटा जा रहा था, तो ताराह ने कहा:

'मैंने हमेशा यही कहा है, और मैं अब भी यही कहता हूँ, कि उन्हें एक इंसान की तरह ही भटका दिया गया है।'

प्रोकॉन्सल ने कहा:

'अपनी मूर्खता छोड़ो और हमारे देवताओं को बलिदान चढ़ाओ।'

'मैं अपने एकमात्र ईश्वर की सेवा करता हूँ,' ताराह ने उत्तर दिया, 'और मैं उन्हें खून नहीं, बल्कि एक शुद्ध हृदय अर्पित करता हूँ।'

प्रोकॉन्सल ने कहा:

'आपकी वृद्धावस्था के सम्मान में और उदारता की भावना से, मैं आपको सलाह देता हूँ कि आप अपने मूर्खतापूर्ण ईसाई धर्म को त्याग दें और देवताओं को बलिदान अर्पित करें।'

'मैं ऐसा कानूनहीन कृत्य नहीं करूँगा,' ताराह ने उत्तर दिया, 'क्योंकि मैं अपने ईश्वर के कानून से प्रेम करता हूँ, और मैं उससे मुंह नहीं मोड़ूंगा।'

प्रोकोन्सल ने कहा:

'एक और कानून है जिसका पालन करना अनिवार्य है, हे दुष्ट पुरुष।'

ताराह ने उत्तर दिया:

'तुम्हारा कानून हानिकारक है, जो तुम अधर्मी, पत्थरों और पेड़ों, मानव हाथों की कृतियों का सम्मान करने और उनकी पूजा करने का आदेश देते हो।'

प्रोकंसल ने पास खड़े लोगों को ताराच की गर्दन पर वार करने का आदेश दिया। शहीद ने धैर्यपूर्वक प्रहारों को सहते हुए कहा:

'मैं इस स्वीकारोक्ति को नहीं त्यागूँगा, जो मुझे बचाती है।'

'मैं तुम्हें इस पागलपन से मुँह मोड़ने और तुम्हें समझाने पर मजबूर कर दूँगा,' प्रोकॉन्सल ने कहा।

'जो चाहो करो,' शहीद ने उत्तर दिया, 'तुम्हारे पास मेरे शरीर पर अधिकार है।'

प्रोकॉन्सल मैक्सिमिस ने कहा:

'उसके कपड़े उतारो और उसे लाठियों से पीटो।'

टाराच, जब उसे पीटा जा रहा था, ने कहा:

'अब तुमने सचमुच मुझे बुद्धिमान और समझदार बना दिया है, क्योंकि इन यातनाओं में मैं ईश्वर और उनके मसीह पर और भी अधिक भरोसा करता हूँ।'

प्रोकॉन्सल ने कहा, "हे सबसे दुष्ट और अपराधी मनुष्य, पहले तूने कहा था कि तू एक ही ईश्वर की सेवा करता है, लेकिन अब तू दो की बात करता है—ईश्वर और उसके मसीह; तो फिर यह कैसे है कि तू अब हमारे अनेक देवताओं को अस्वीकार करते हुए, दो की सेवा करता है?"

'मैं,' ताराह ने उत्तर दिया, 'एक सच्चे परमेश्वर की गवाही देता हूँ।'

प्रोकन्सल ने कहा:

'क्या तुमने ईश्वर और उनके मसीह का नाम नहीं लिया?'

तरास ने उत्तर दिया:

'मसीह परमेश्वर के पुत्र हैं (पिता और पवित्र आत्मा के साथ दिव्यता में एक), सभी मसीहियों की आशा, और हम उनके लिए दुख सहकर बचाए जाएँगे।'

प्रोकॉन्सल मैक्सिमिस ने कहा:

'अपनी व्यर्थ बातें बंद करो और हमारे देवताओं को बलिदान चढ़ाओ।'

– मैं व्यर्थ नहीं बोल रहा हूँ,' तारह ने कहा, 'बल्कि मैं सत्य कह रहा हूँ; मैंने पैंसठ वर्ष इस विश्वास के साथ जिया है, और अब मैं सत्य से मुंह नहीं मोड़ूंगा।

वहाँ खड़े एक शताब्दी, जिसका नाम दमित्रियस था, ने कहा:

'अपना ही भला सोचो, बूढ़े, और देवताओं की पूजा करो; मेरी बात मानो।'

'मेरे पास से दूर हो जाओ,' तारह ने जवाब दिया, 'अपनी सलाह लेकर, शैतान के सेवक।'

इसके बाद, उप-प्रांतपति मैक्सिमिस ने, मसीह के लिए पीड़ित को लोहे की जंजीरों में बाँधकर जेल में डालने का आदेश देकर, अपने सेवकों से कहा:

'मेरे पास कोई और लाओ।'

यह सुनकर, शताध्यक्ष डेमेट्रियस ने कहा:

'यहाँ है, महोदय; वह आपके सामने खड़ा है।'

प्रोकॉन्सल नुमेरस मैक्सिमिस ने, दूसरे ईसाई को अपने सामने खड़ा हुआ देखकर, उससे कहा:

'सबसे पहले, मुझे अपना नाम बताओ।' उस व्यक्ति ने उत्तर दिया:

'मेरा सबसे पहला और सबसे सम्माननीय नाम ईसाई है, और लोगों द्वारा मुझे दिया गया दूसरा नाम प्रोव. है।'

प्रोकॉन्सल ने पूछा:

– प्रोव, तुम किस वंश से हो?

प्रोव ने उत्तर दिया, 'मेरे पिता थ्रेस के थे, लेकिन मेरा जन्म पम्फिलिया के पेरगा में हुआ था[7030] , और मैं एक ईसाई हूँ।'

प्रोकॉन्सल मैक्सिमिस ने कहा:

'वह नाम तुम्हारे किसी काम का नहीं है; मेरी बात सुनो, देवताओं को बलिदान चढ़ाओ, और तुम्हें राजाओं से सम्मान मिलेगा और तुम हमारे मित्र बन जाओगे।'

प्रोव ने उत्तर दिया:

'मैं न तो राजाओं का सम्मान चाहता हूँ और न ही तुम्हारी दोस्ती, क्योंकि मेरे पास काफी संपत्ति थी, जिसे मैंने जीवित ईश्वर की सेवा करने के लिए त्याग दिया है।'

प्रोकॉन्सल ने कहा:

'उसके कपड़े उतारो और उसे लटिकर कठोर चाबुक से पीटो।' जब संत को पीटा जा रहा था, तो शतदलपति डेमेट्रियस ने उससे कहा:

'अपने पर दया करो; क्या तुम नहीं देखते कि तुम्हारा खून जमीन पर बह रहा है?'

प्रोव ने उत्तर दिया, 'मेरा शरीर तुम्हारे हाथों में है; इसे तुम जो चाहो यातना दो, क्योंकि मेरे लिए ये यातनाएँ मरहम के समान हैं।'

उप-प्रांतपाल मैक्सिमिस ने कहा:

'क्या तुम अपनी मूर्खता छोड़ोगे, या अंत तक हठी बने रहोगे?'

प्रोव ने कहा, 'मैं घमंडी नहीं हूँ, परन्तु तुमसे कहीं अधिक धैर्यवान हूँ, क्योंकि मेरा धैर्य प्रभु में दृढ़ है।'

तब प्रांतपाल ने अपने सेवकों से कहा:

'उसे पलट दो और उसके पेट पर मारो।'

जब वह इस क्रूर यातना को सहन कर रहा था, प्रोव ने पुकारा:

'हे प्रभु, अपने दास की सहायता करो!' प्रांतपाल ने अपने सेवकों से कहा:

[7030] पर्जिया एशिया माइनर में एक शहर है।

'जब तुम उस पर वार करो, तो उससे पूछो: "तुम्हारा सहायक कहाँ है?"' और जब नौकरों ने उससे पूछा, तो प्रोव ने उत्तर दिया:

'प्रभु मेरी सहायता करते हैं और करेंगे, और मैं तुम्हारे यातनाओं को इतना तुच्छ समझता हूँ कि मैं तुम्हारी इच्छा के आगे नहीं झुकूँगा।'

प्रोकॉन्सल मैक्समिस ने कहा:

'अपना शरीर देख, दुर्भाग्यशाली, क्योंकि पृथ्वी तेरे रक्त से ढकी हुई है।'

प्रोव ने उत्तर दिया, 'यह जान लो, कि जब मेरा शरीर मसीह के लिए पीड़ा सहता है, तो मेरी आत्मा चंगा हो जाती है और जीवित हो उठती है।'

संत को अब और न पीटने का आदेश देने के बाद, न्यायाधीश ने कहा: 'उसके हाथ और पैरों में बेड़ियाँ डालो और उसे कालकोठरी में डाल दो, और उसे किसी से न मिलने दो, ताकि कोई उसकी देखभाल न कर सके।'

इसके बाद, प्रोकॉन्सल के आदेश पर, एक तीसरे ईसाई को अदालत में लाया गया। जब उससे उसका नाम पूछा गया, तो उसने उत्तर दिया:

'मैं एक ईसाई हूँ।'

प्रोकन्सल ने कहा:

'जो तुम्हारे पहले आए, उन्हें इस नाम से कुछ भी नहीं मिला, और तुम्हें अलग जवाब देना चाहिए।'

उसने कहा:

'मेरा सामान्य नाम एंड्रोनिकिस है।' प्रोकॉन्सल मैक्समिस ने कहा:

'एंड्रोनिकिस, तुम किस कुल से हो?'

"मैं एक प्रतिष्ठित परिवार से आता हूँ," एंड्रोनिकिस ने उत्तर दिया, "एफ़िसुस के प्रमुख नागरिकों में से एक का पुत्र।"

प्रोकॉन्सल मैक्समिस ने कहा:

'खुद को बचाओ और मुझे एक पिता की तरह मानो; क्योंकि तुमसे पहले जो आए और मूर्खता से बोले, उन्हें अपने लिए कुछ भी नहीं मिला, लेकिन तुम्हें देवताओं को बलिदान चढ़ाना चाहिए, जो हमारे स्वामी और पिता हैं।'

एंड्रोनिकिस ने कहा, 'तुमने उन्हें सही कहा है पिता', 'क्योंकि तुम्हारा पिता शैतान है, और तुम शैतान की संतान हो, जो उसके काम करते हो।'

प्रोकॉन्सल मैक्समिस ने कहा:

'तुम एक जवान हो, और फिर भी तुम मेरा अपमान करते हो! क्या तुम्हें नहीं पता कि तुम्हारे लिए पहले से ही बड़ी यातनाएँ तैयार की जा चुकी हैं?'

'तुम, अत्याचारी,' एंड्रोनिकिस ने उत्तर दिया, 'मुझे इतना पागल मत समझो कि मैं अपने से पहले आए शहीदों के योग्य न रहूँ: मैं किसी भी यातना के लिए तैयार हूँ।'

यातना देने वाले ने कहा:

'उसे नग्न कर दो, बाँध दो, और लटका दो।'

सेंचुरियन डेमेट्रियस ने एंड्रोनिकिस से वही कहा जो उसने पहले दो से कहा था:

'हे दुर्भाग्यशाली मनुष्य, आज्ञा का पालन कर, इससे पहले कि तेरा मांस तेरी हड्डियों से अलग हो जाए।'

एंड्रोनिकोस ने उत्तर दिया, 'मेरा शरीर नष्ट हो जाए, बशर्ते तुम मेरी आत्मा के साथ वह न करो जो तुम चाहते हो।'

प्रोकॉन्सल मैक्समिस ने कहा:

'हमारे सामने झुक जाओ और देवताओं को बलिदान अर्पित करो, इससे पहले कि तुम नष्ट हो जाओ।'

'जवानी से ही,' एंड्रोनिकिस ने उत्तर दिया, 'मैंने कभी मूर्तियों की पूजा नहीं की, और अब मैं उनके लिए बलिदान नहीं चढ़ाऊँगा।'

प्रोकॉन्सल मैक्समिस ने कहा:

'उसके शरीर को यातना दो।'

वहाँ खड़े एक अन्य दस्ते के शताध्यक्ष एंक्सियस ने एंड्रोनिकिस से कहा:

'प्रोकॉन्सल की आज्ञा मानो; मैं तुमसे बड़ा हूँ और तुम्हें सही सलाह दे रहा हूँ।'

'तुम बूढ़े हो,' एंड्रोनकिस ने उत्तर दिया, 'लेकिन तुम्हारे पास बुद्धि नहीं है – तुम मुझे पत्थर के सामने झुकने और राक्षसों को बलिदान चढ़ाने जैसी सलाह दे रहे हो।'

जब पवित्र शहीद को यातनाएँ दी जा रही थीं, तो प्रोकॉन्सल ने कहा:

'हे दुर्भाग्यपूर्ण मनुष्य, क्या तू इन यातनाओं की पीड़ा नहीं महसूस करता? तो फिर तू स्वयं को क्यों नहीं बचाता और उस व्यर्थ आस्था का त्याग क्यों नहीं कर देता जो तुझे बचा नहीं सकती?'

एंड्रोनकिस ने उत्तर दिया, 'जिसको आप पागलपन भरा विश्वास कहते हैं, वह प्रभु में अपनी आशा रखने वालों के लिए सबसे कीमती स्वीकारोक्ति है; जबकि आपकी क्षणिक बुद्धिमानी शाश्वत मृत्यु की तैयारी करती है।'

प्रोकन्सल ने पूछा:

'तुम्हें यह पागलपन किसने सिखाया?'

एंड्रोनकिस ने कहा, 'ईश्वर का वचन, जो जीवन देता है और जिसके द्वारा हम जीवित किए जाते हैं, जिसकी आशा में हम स्वर्ग में प्रभु को अपने पुनरुत्थान की आशा मानते हैं।'

उप-प्रांतपाल मैक्सिमिस ने कहा:

'उन क्रूर यातनाओं का शिकार होने से पहले अपनी मूर्खता त्याग दो जो तुम्हारे लिए तैयार की गई हैं।'

'मेरा शरीर,' एंड्रोनकिस ने उत्तर दिया, 'आपके सामने पड़ा है; शक्ति आपकी है: जो चाहें करें।'

उपनरपाल ने कहा:

'उसके मुँह पर जितनी ज़ोर से हो सके, मारो।'

'प्रभु देखें,' एंड्रोनकिस ने उत्तर दिया, 'और वे तुम्हारा न्याय करें कि तुम मुझे ऐसे यातनाएँ दे रहे हो जैसे मैं कोई हत्यारा हूँ।'

प्रोकॉन्सल ने कहा:

'तुम राजा की आज्ञाओं की परवाह नहीं करते और मेरे निर्णय को कोई महत्व नहीं देते।'

'मैं इन कष्टों को सहन कर रहा हूँ,' एंड्रोनकिस ने उत्तर दिया, 'क्योंकि मैं ईश्वर में विश्वास रखता हूँ और उनकी दया और न्याय की आशा करता हूँ।'

न्यायाधीश ने आपत्ति जताई:

'तो क्या राजाओं ने भी पाप किया है? तुम मृत्यु के पात्र हो।'

'उन्होंने वास्तव में पाप किया है,' एंड्रोनकिस ने उत्तर दिया, 'क्योंकि यदि आप स्वस्थ मन से निर्णय लेते हैं, तो आप यह महसूस करेंगे कि देवताओं को बलिदान देना एक बड़ा पाप और एक अत्याचार का कार्य है।'

तब यातना देने वाले ने उसे पीटने वालों से कहा:

'अपने हथियार घुमाओ और उसकी पसलियों पर वार करो।'

एंड्रोनकिस ने, तथापि, दोहराया:

'मैं तुम्हारे सामने हूँ: मेरे शरीर को वह सब यातनाएँ दो जो तुम्हें उचित लगे।'

इस यातना के दौरान, एंड्रोनकिस ने कहा:

'मेरे मांस को इन घावों ने कठोर कर दिया है।'

– 'धीमी पीड़ा से,' यातना देने वाले ने कहा, 'मैं तुम्हें नष्ट कर दूँगा।'

'मुझे तुम्हारी धमकी से डर नहीं लगता,' एंड्रोनकिस ने उत्तर दिया, 'क्योंकि मेरा मन तुम्हारी दुर्भावना की साज़िशों से ऊपर है; इसीलिए मैं इन यातनाओं को नज़रअंदाज़ करता हूँ।'

तब यातना देने वाले ने अपने नौकरों से कहा:

'उस पर बेड़ियाँ डाल दो और उसके पैरों में हथकड़ी बाँधकर उसे पहरे में रखो।'

कुछ समय बीत जाने के बाद, उप-प्रांतपति नुमेरस मैक्सिमिस ने फिर से न्यायालय में अपनी सीट संभाली, और ईसाइयों को पूछताछ के लिए पेश किया गया[7031] । और सबसे पहले, न्यायाधीश ने ताराख को, उम्र में सबसे बड़े होने के नाते, सम्मान का वादा करके एक मूर्तिपूजक बलिदान करने के लिए मजबूर किया। लेकिन जब ताराह ने न केवल आज्ञा

[7031] पवित्र शहीदों की दूसरी पूछताछ माइपोसस्टिया में हुई थी – जो एशिया माइनर के सिलिसिया प्रांत का एक शहर था।

मानने से इनकार कर दिया बल्कि न्यायाधीश से कठोरता से उत्तर भी दिया, तो न्यायाधीश ने आदेश दिया कि उसके होंठ पत्थरों से कुचल दिए जाएँ और उसके दाँत तोड़ दिए जाएँ; फिर उसने अपने सेवकों से कहा:

'आग लाओ और ताराह के हाथ फैलाकर उस पर रख दो।'

लेकिन ताराह ने कहा:

'मैं तुम्हारी क्षणिक अग्नि से नहीं डरता, परन्तु मुझे डर है कि तुम्हारे आगे झुककर, मैं एक अधर्मी मनुष्य, अनन्त अग्नि में पड़ जाऊँ।'

और जब आग उसके हाथों पर रखी गई, तो उप-राज्यपाल ने कहा:

'देखो, आग से तुम्हारे हाथ जल रहे हैं; तो फिर तुम अपनी मूर्खता क्यों नहीं त्याग देते और देवताओं को बलिदान क्यों नहीं चढ़ाते?'

'तुम चाहते हो,' ताराह ने उत्तर दिया, 'कि अपनी क्रूरता से मुझे ऐसी मूर्खता की ओर धकेल दो कि मैं तुम्हारी इच्छा के आगे झुक जाऊँ; लेकिन यह जान लो: अपने ईश्वर की मदद से, मैं दृढ़ संकल्पित हूँ कि मैं उन सभी यातनाओं को सहन करूँगा जो तुमने मेरे लिए रखी हैं।'

इसके बाद, उप-प्रांतपति ने उसे उल्टा लटकाने और उसके नीचे आग जलाने का आदेश दिया, और फिर नमक और सरसों के साथ मिला हुआ गाढ़ा सिरका उसकी नाक में डालने का। उसने प्रोबस और एंड्रोनिकस को भी विभिन्न तरीकों से यातना दी – उन्हें पीटने, जलाने, तेज लोहे के औजारों से खुरचने और उनके घावों पर नमक छिड़कने से; लेकिन, कोई सफलता न मिलने पर, उसने उन्हें सुबह तक ज़ंजीरों में जकड़े रहने का आदेश दिया।

सुबह, उप-राज्यपाल ने शताब्दी डेमेट्रियस से कहा:

'उन धर्मद्रोही ईसाइयों को मेरे पास लाओ।'

सेंचुरियन ने उत्तर दिया:

'वे यहाँ आपके सामने खड़े हैं, सर।'

प्रोकन्सल ने ताराह से कहा, 'क्या यातनाओं, घावों और बेड़ियों ने तुम्हें अभी तक चीर नहीं डाला है? ताराह, मेरी बात सुनो, और अपने धर्म को त्याग दो, जो तुम्हारे किसी काम का नहीं है; उन देवताओं को बलिदान चढ़ाओ जिनकी वजह से यह सब हुआ है।'

'वे जिनके लिए आग और अनंत यातनाएँ तैयार की गई हैं, वे शांति कैसे ला सकते हैं—और केवल वे ही नहीं, बल्कि वे सभी जो उनकी इच्छा का पालन करते हैं?'

प्रोकॉन्सल ने जारी रखा:

'क्या तुम अपनी ईश्वर-निंदा बंद करोगे, हे अधर्मी? क्या तुम नहीं जानते कि ऐसे निर्लज्ज शब्दों के लिए मैं तुरंत तुम्हारा सिर कलम करवा दूँगा, और इस प्रकार तुम्हें और यातनाओं से मुक्ति मिल जाएगी?'

टाराच ने उत्तर दिया:

'शुरू में तो मैं सचमुच चाहता था कि मेरी पीड़ा एक त्वरित मृत्यु से समाप्त हो जाए; लेकिन अब मेरी यातनाएँ लंबी होनी चाहिए, ताकि प्रभु में मेरी आस्था का पराक्रम बढ़ सके।'

'तुम्हारे साथ,' प्रोकॉन्सल ने कहा, 'तुम्हारे मित्रों को भी कानून के अनुसार पीड़ा सहनी होगी और मरना होगा।'

टाराच ने उत्तर दिया:

'तुम बेवकूफी की बात कर रहे हो, हमें मौत का वादा कर रहे हो, क्योंकि केवल बुरे लोग ही मरते हैं; लेकिन हम, जो बुराई को नहीं जानते फिर भी अपने प्रभु के लिए पीड़ा सह रहे हैं, उनसे अपना इनाम पाने की प्रतीक्षा कर रहे हैं।'

प्रोकन्सल ने कहा, "तुम दुष्ट और अयोग्य हो, तुम दुष्टता और अधर्म में जीते हुए किस पुरस्कार की आशा करते हो?"

टाराख ने उत्तर दिया, "हे विधर्मी, यह तुम्हें जानने का अधिकार नहीं है कि प्रभु ने हमारे लिए स्वर्ग में कैसा पुरस्कार तैयार किया है, जिसके लिए हम तुम्हारे प्रचंड क्रोध को सहते हैं।"

मैक्सिमिस ने कहा, "तुम्हें यह अधिकार किसने दिया कि तुम मुझसे इतनी बेधड़क बात करो, मानो तुम मेरे मित्र हो?"

तराख ने उत्तर दिया:

'मैं तुम्हारा कोई दोस्त नहीं हूँ, लेकिन मुझे बोलने का अधिकार है, और जब तक ईश्वर मुझे शक्ति देता है, तब तक कोई भी मुझे ऐसा करने से नहीं रोक सकता।'

मैक्सिमि ने कहा, 'तुम्हारा जो अधिकार है, जो तुम्हारे पास है, मैं उसे नष्ट कर दूँगा, हे दुष्ट मनुष्य!'

टाराच ने उत्तर दिया:

'कोई भी मुझसे यह अधिकार नहीं छीन सकता—न तुम, न तुम्हारे राजा, न तुम्हारा पिता, शैतान।'

प्रोकॉन्सल मैक्सिमि ने कहा:

'उसे बाँध दो, क्योंकि वह पागल है।'

'अगर मैं पागल होता,' ताराह ने उत्तर दिया, 'तो मैं तुम्हारी दुष्टता के आगे झुक जाता।'

जब संत को बाँध दिया गया, तो उप-राज्यपाल ने कहा:

'मैं तुम्हें अपने कर्मों के लिए यातना देने से पहले देवताओं को बलिदान चढ़ाओ।'

'जैसा चाहो वैसा करो,' ताराह ने उत्तर दिया, 'हालाँकि तुम्हें मुझे सामान्य यातनाओं का शिकार नहीं बनाना चाहिए, क्योंकि मैं एक योद्धा था; फिर भी, कहीं तुम यह न सोचो कि मैं यातना से डरता हूँ और तुम्हारी इच्छा के आगे झुकना चाहता हूँ, तो अपनी दुष्टता की सभी चालाकियाँ मुझ पर आजमा दो।'

प्रोकॉन्सल ने कहा:

'सैनिक हमेशा अपने राजाओं की सेहत के लिए देवताओं को बलिदान चढ़ाते हैं और उन्हें वह सम्मान मिलता है जिसके वे हकदार होते हैं, लेकिन तुम उन सब में सबसे बुरे हो, क्योंकि तुमने अपनी सैन्य चौकी छोड़ दी है और बलिदान चढ़ाने से इनकार कर दिया है; इसके लिए, तुम्हारे लिए सबसे क्रूर यातनाएं तैयार की जा रही हैं।'

टाराच ने कहा:

'तुम क्यों क्रोधित हो? मैं तुम्हें बताता हूँ—जो तुम्हें ठीक लगे करो, हे दुष्ट मनुष्य!'

मैक्सिमिस ने कहा, 'यह मत सोचो कि मैं तुम्हें एक ही वार में खत्म कर दूँगा; मैं तुम्हें यातनाएँ देते और थकाते रहूँगा, और मैं तुम्हारे शरीर के अवशेषों को जानवरों के सामने फेंक दूँगा ताकि वे उन्हें नोच-नोच कर खा जाएँ।'

टाराच ने कहा, 'सिर्फ़ शब्दों से वादा मत करो, बल्कि जो करने का इरादा है, उसे जल्द से जल्द पूरा करो।'

मैक्सिमि ने कहा:

'तुम सोचते हो कि तुम्हारी मौत के बाद कुछ औरतें तुम्हारे शव को धूप-दीप के साथ दफना देंगी; लेकिन मैं यह सुनिश्चित करूँगा कि तुम्हारे अवशेष पूरी तरह से नष्ट हो जाएँ।'

'और अब,' ताराह ने जवाब दिया, 'और मेरी मृत्यु के बाद, मेरे शरीर के साथ जो चाहो करो।'

'पहले, एक बलिदान करो,' मैक्सिमि ने कहा।

'तुम पागल,' ताराह ने कहा, 'मैंने कई बार कहा है कि मैं बलिदान नहीं दूँगा।'

तब यातना देने वाले मैक्सिमि ने अपने नौकरों से कहा:

'उसके चेहरे और उसके होंठों पर मारो।'

जब नौकर ताराह को पीट रहे थे, तो उसने कहा:

'तुमने मेरा चेहरा विकृत कर दिया है, लेकिन बदले में तुमने मेरी आत्मा को पुनर्जीवित कर दिया है।'

'दुर्भाग्यशाली मनुष्य,' यातना देने वाले ने कहा, 'अपने पागल विचारों को त्याग दो और देवताओं को बलिदान अर्पित करो, ताकि तुम इन यातनाओं से मुक्त हो सको।'

ताराह ने उत्तर दिया:

– तुम मुझे पागल समझते हो क्योंकि, प्रभु पर भरोसा करके, मुझे यकीन है कि मैं स्वर्ग में रहूँगा; लेकिन तुम, शरीर की इच्छाओं को पूरा करते हुए, केवल कुछ समय के लिए जीते हो, और अपनी आत्मा को हमेशा के लिए नष्ट कर दोगे।

तब उप-राज्यपाल ने अपने सेवकों से कहा:

'लोहे को गर्म करो और उसे उसके जबड़ों पर दबा दो।' ऐसी यातना सहते हुए, ताराह ने कहा:

'भले ही तुम इससे भी बुरा करो, तुम ईश्वर के सेवक को देवताओं को बलिदान चढ़ाने के लिए मजबूर नहीं कर सकते।'

तब न्यायाधीश ने एक ब्लेड लाने का आदेश दिया, ताकि शहीद के कान काट दिए जाएँ और उसके सिर की खाल उधेड़ दी जाए, और उसके सिर पर जलते हुए कोयले रख दिए जाएँ। लेकिन ताराह ने कहा:

'भले ही तुम मेरे पूरे शरीर की खाल उधेड़ने का आदेश दे दो, मैं अपने ईश्वर से मुँह नहीं मोड़ूँगा, जो मुझे तुम्हारी दुष्टता के उपकरणों को सहने की शक्ति देता है।'

जब यह सब हो रहा था, तो उप-राज्यपाल ने कहा:

'लोहे के औजार इकट्ठा करो और उन्हें और भी अधिक गर्म करके, उसकी बगल के नीचे रख दो!'

लेकिन ताराह, इसे सहते हुए, ने कहा:

'प्रभु स्वर्ग से यह देखें, और आप पर न्याय करें!'

प्रोकन्सल ने पूछा:

'तुम किस प्रभु को पुकार रहे हो, अपराधी?'

– उस ईश्वर को, जिसे तुम नहीं जानते, – ताराह ने उत्तर दिया, – वही जो प्रत्येक व्यक्ति को उनके कर्मों के अनुसार पुरस्कृत करेगा।

तब उप-प्रांतपाल ने आदेश दिया कि ताराह को हिरासत में ले लिया जाए और पूछताछ के लिए किसी और को लाया जाए। जब प्रोबस को उप-प्रांतपाल के सामने लाया गया, तो शताध्यक्ष डेमेट्रियस ने कहा:

'देखिए, महोदय, प्रोव आपके सामने खड़ा है।'

प्रोकॉन्सल ने कहा, "प्रोव, मैं तुम्हें सलाह देता हूँ कि तुम खुद को उन यातनाओं के अधीन न करो जो तुमने पहले झेली हैं, क्योंकि जो लोग तुम्हारे पहले हठी थे, उन्होंने पश्चाताप किया है; लेकिन अब एक बलिदान चढ़ाओ, और तुम्हारा हम और देवताओं दोनों द्वारा सम्मान किया जाएगा।"

प्रोव ने उत्तर दिया:

'हम एक ही मन के हैं, और हम एक ही हृदय से ईश्वर की सेवा करते हैं; हमसे कुछ और सुनने की उम्मीद न करें, क्योंकि आपने पहले ही सुन और देख लिया है कि आप हमें ईश्वर से विमुख नहीं कर सकते। देखिए, मैं अब आपके सामने खड़ा हूँ और आपकी धमकियों से नहीं डरता; अब और क्या उम्मीद करते हैं?'

'तुम मान गए हो,' प्रोकॉन्सल ने कहा, 'अपनी दुष्टता में देवताओं को अस्वीकार करने के लिए।'

तब, उसे बाँधकर उल्टा लटकाने का आदेश देकर, उसने कहना जारी रखा:

'जब तक यह अक्षुण्ण है, तब तक अपने शरीर को बचाओ; क्योंकि तुम देख सकते हो कि तुम्हारे लिए किस प्रकार की यातनाएँ तैयार की गई हैं।'

प्रोव ने उत्तर दिया, 'करो, जो कुछ भी तुम चाहते हो; तुमने मेरे लिए जो भी बुराई तैयार की है, वह मेरी आत्मा के लिए सांत्वना होगी।'

प्रोकॉन्सल ने अपने नौकरों से कहा:

'लोहे की छड़ियाँ गर्म करो और उसकी पसलियों को झुलसा दो, ताकि वह पागल न हो जाए।'

लेकिन प्रोव ने कहा:

'जिस हद तक तुम मुझे पागल समझते हो, मैं उतना ही प्रभु की व्यवस्था में बुद्धिमान हूँ।'

एक बार फिर प्रोकॉन्सल ने अपने नौकरों से कहा:

'लाल-गरम छड़ों को उसकी पीठ में ठोक दो।'

प्रोव, इसे सहते हुए, ने कहा:

'स्वर्ग में प्रभु मेरी विनम्रता और धैर्य को देखें!' इसके बाद, यातना देने वाले ने बलि का मांस और शराब मंगवाने का आदेश देकर कहा:

'शराब डालो और मांस उसके मुँह में रख दो।'

जैसे ही नौकर यह कर रहे थे, प्रोव ने कहा:

– हे प्रभु, अपने सिंहासन की ऊँचाई से, इस यातना को देखो और तुम्हारी अदालत पर न्याय करो!

न्यायाधीश ने कहा, "हे दुष्ट मनुष्य, तूने बहुत कष्ट सहे हैं, और फिर भी तूने मूर्तियों को बलिदान किया हुआ भोजन स्वीकार किया है।"

प्रोव ने उत्तर दिया, "यह कोई बड़ी बात नहीं है कि तुमने मुझ पर अत्याचार किया है; प्रभु मेरी इच्छा जानते हैं।"

'तुमने,' न्यायाधीश मैक्सिमि ने कहा, 'बलि का भोजन खाया भी है और पिया भी है।'

'प्रभु जानते हैं,' प्रोव ने उत्तर दिया, 'और वह उस अत्याचार को देखता है जो मैं सह रहा हूँ।'

प्रोकॉन्सल मैक्समिस ने कहा:

'उसकी पिंडलियों पर लाल-गरम सलाखें मारो।'

लेकिन प्रोव ने दोहराया:

'न आग, न यातना, न तुम्हारा पिता—शैतान—ईश्वर के सेवक को उसकी गवाही देने से नहीं हटा सकता।'

'गरम करो,' प्रोकॉन्सल ने कहा, 'कुछ नुकीले कील और उन्हें उसके हाथों में ठोक दो।'

प्रोव ने कहा, 'मैं तुझे धन्यवाद देता हूँ, हे प्रभु, कि तूने मेरे हाथों को भी अपने नाम के लिए पीड़ा सहने दिया।'

उप-राज्यपाल ने कहा:

'इतनी यातनाओं से तुम्हारा दिमाग़ खराब हो गया है।'

'प्रभु की महान शक्ति,' प्रोव ने उत्तर दिया, 'ने केवल तुम्हें पागल ही नहीं कर दिया है, बल्कि तुम्हारी आँखें भी फोड़ दी हैं, क्योंकि तुम स्वयं नहीं जानते कि तुम क्या कर रहे हो।'

प्रोकॉन्सल ने कहा:

'अंगूठा चूसने वाले, क्या तू मेरी उपस्थिति में ऐसे शब्द कहने की हिम्मत करता है? चूंकि मैंने उसकी आँखें सलामत रखी हैं, उन्हें निकाल लो।'

जब यह हो चुका था, प्रोव ने कहा:

'भले ही तुमने मेरी शारीरिक आँखें छीन ली हों, पर तुम विश्वास की जीवित आँखों को कभी नहीं छीन पाओगे।'

प्रोकॉन्सल ने कहा:

'इतनी यातनाओं के बाद, क्या तुम्हें ज़िंदा रहने की उम्मीद है? या क्या तुम सोचते हो कि हम तुम्हें शांति से मरने देंगे?'

प्रोव ने जवाब दिया, 'यही तो है जिसके लिए मैं प्रयासरत हूँ, कि सत्य की गवाही दूँ और तुम्हारे द्वारा बिना किसी दया के मृत्युदंड पाऊँ।'

तब उप-प्रांतपति ने अपने सेवकों से कहा:

'इसे यहाँ से ले जाओ और बाँधकर पहरे में रखो, कहीं ऐसा न हो कि इसके कोई परिचित आकर इसके धर्म-विरोधी अवज्ञा के लिए इसे सम्मानित करें।'

उसके बाद, उसने कहा:

'एंड्रोनिकस को मेरे पास लाओ।'

'यहाँ वह है,' शतमुखिया ने उत्तर दिया, 'वह आपके सामने खड़ा है, महोदय।'

और प्रोकॉन्सल ने एंड्रोनिकस से कहा:

'देवताओं को बलिदान चढ़ाओ, और तुम्हें अपनी बेड़ियों से मुक्ति मिल जाएगी।'

'ऐसा कभी नहीं होगा, यातनाकर्ता,' एंड्रोनिकस ने उत्तर दिया, 'कि मैं अपने ईश्वर के कानून के विरुद्ध कुछ भी करूँ।'

प्रोकॉन्सल ने कहा:

'तुम बकवास कर रहे हो, एंड्रोनिकस।'

'अगर मैं भूतग्रस्त होता,' एंड्रोनिकस ने उत्तर दिया, 'तो मैं तुम्हारी आज्ञा मानता; लेकिन, जैसा कि मैं अपने प्रभु की गवाही देता हूँ, मैं भूतग्रस्त नहीं हूँ – और तुम स्वयं भूतग्रस्त और अंधे हो, क्योंकि तुम राक्षसों के काम कर रहे हो।'

तब उप-प्रांतपाल ने अपने नौकरों से कहा:

'कटारों को गट्ठों में बाँधो, उन्हें तेल में भिगोओ और उनकी आग उसकी पेट पर लगा दो।'

और तुरंत ही नौकरों ने एंड्रोनिकस के कपड़े उतार दिए, उसे ज़मीन पर लिटा दिया, और उसके पेट पर तेल में भीगे हुए कई चटाईयों में आग लगा दी। लेकिन उसने कहा:

'भले ही तुम मुझे चारों ओर से जला दो, तुम मुझे हरा नहीं सकते, हे दुष्ट मनुष्य, क्योंकि प्रभु मेरे सामने खड़े हैं, जो मुझे बल देते हैं, और मैं उन्हीं की सेवा करता हूँ।'

प्रोकन्सल ने कहा:

'लोहे की छड़ियाँ गरम करो और उन्हें उसकी उंगलियों के बीच रख दो।'

लेकनि एंड्रोनकिस ने कहा:

'हे ईश्वर के पागल शत्रु, तू शैतानी योजनाओं से भरा है; तू मेरा शरीर देखता है, जो तेरे यातनाओं से थका हुआ है, और सोचता है कि मैं तुझसे डरता हूँ; मेरे साथ मसीह, परमेश्वर का पुत्र, है, और मैं तुझसे घृणा करता हूँ।'

'दुष्ट मनुष्य,' उप-राज्यपाल ने कहा, 'तुम नहीं जानते कि तुम किसको पुकार रहे हो—उस मनुष्य को जिसे पोंतियस पिलातुस ने मृत्युदंड दिया था, और जिसके यातनाओं का वर्णन लिखित दस्तावेजों में दर्ज है।'

एंड्रोनकिस ने उत्तर दिया, 'चुप हो जा, हे अधर्मी, क्योंकि तुझे उस पर बुरा-भला कहने का अधिकार नहीं है।'

उप-राज्यपाल ने कहा:

'उस मनुष्य में अपनी आशा रखना तुम्हारे क्या काम का है, जिसे तुम मसीह कहते हो?'

'सचमुच, बहुत लाभ,' एंड्रोनकिस ने उत्तर दिया, 'और एक बड़ा इनाम; इसीलिए मैं यह सब धैर्य से सहन करता हूँ।'

तब उप-प्रांतपाल ने अपने सेवकों से कहा:

'उसका मुँह खोलो और उसमें कुछ बलि का मांस डालो, और कुछ दाखरस डाल दो।'

जब उन्होंने ऐसा कर लिया, तो एंड्रोनकिस ने कहा:

'हे प्रभु, हे प्रभु! उस अत्याचार को देखो जो मैं सह रहा हूँ।'

प्रोकॉन्सल ने कहा:

'तुम इन यातनाओं को और कितनी देर तक सहोगे? निस्संदेह तुमने पहले ही हमारे देवताओं को अर्पित किए गए बलिदान का स्वाद चख लिया है।'

एंड्रोनकिस ने कहा:

'मूर्तियों की पूजा करने वाले नाश हों, तुम और तुम्हारे राजा!'

प्रोकन्सल ने कहा, "हे दुष्ट मनुष्य, तू उन राजाओं की निंदा करता है, जिन्होंने संसार में स्थायी शांति लाई है।"

'मैंने विनाशकों और रक्तपिपासुओं को शाप दिया है,' एंड्रोनकिस ने उत्तर दिया, 'जो शांति भंग करते हैं, जिन्हें प्रभु अपने शक्तिशाली हाथ से उखाड़ फेंकेंगे और नष्ट कर देंगे।'

तब उप-प्रांतपति ने अपने सेवकों से कहा:

'उसके मुँह में लोहा ठूँस दो, और उसके दाँत तोड़ दो; उसकी ईश्वरनिंदा करने वाली जीभ काट दो, ताकि वह राजाओं की निंदा न करे, और उसकी जीभ जला दो।' और नौकरों ने यातना देने वाले द्वारा दिए गए सभी आदेशों का पालन किया। इसके बाद, एंड्रोनकिस को हिरासत में ले लिया गया।

इस प्रकार पवित्र शहीदों के दुखों का वृत्तांत समाप्त होता है, जो उस समय लिपिकारों द्वारा तैयार किए गए अदालती अभिलेखों से लिया गया है जब संतों पर मुकदमा चलाया जा रहा था और उन्हें यातना दी जा रही थी; जहाँ तक संतों के अन्य दुखों और मौतों का सवाल है, उन तीनों धर्मनिष्ठ पुरुषों के बारे में: मैकरियस, फेलिक्स और बेरियस, जिन्होंने पवित्र शहीदों की मृत्यु का साक्षात्कार किया, ने विश्वासियों के लिए अपनी पत्रिका में निम्नलिखित लिखा[7032] :

'सिलिसिया के प्रोकंसुल, नुमेरियस मैक्सिमिस ने, सिलिसिया के एक पुरोहित, टेरेन्टियानस को बुलाकर आदेश दिया कि अगले सुबह शहर से एक हजार कदम दूर[7033] में एक अखाड़ा तैयार किया जाए, जिसमें शहीदों को जानवरों के सामने फेंकने का इरादा था। जब यातनाओं को देखने आए लोगों से अखाड़ा भर गया, तो मैक्सिमिस भी तमाशा देखने आया, जबकि हम[7034] एक छिपे हुए स्थान पर खड़े होकर बहुत डर के साथ देख रहे थे। और इस प्रकार, पहले अन्य दंडित पुरुष—जिनकी संख्या बहुत थी—जानवरों के सामने फेंके गए; फिर मैक्सिमिस ने सैनिकों को ईसाई शहीदों—टाराच, प्रोबस और एंड्रोनकिस—को लाने का आदेश दिया।

सैनिकों ने उन पुरुषों को शहीदों को अपने कंधों पर उठाने के लिए मजबूर किया, क्योंकि वे अपने कई घावों के कारण चल भी नहीं पा रहे थे। जहाँ तक हमारी बात है, जब हमने उन्हें अखाड़े में ले जाते देखा, तो हम मुँह फेरकर रो पड़े। और

[7032] पवित्र शहीदों की मृत्यु का एक संदर्भ अनाज़ार्वस के ईसाइयों के पत्र में भी मिलता है।

[7033] एक अखाड़ा एक अंडाकार, खुली हवा वाली संरचना है जिसे जानवरों और मनुष्यों के बीच लड़ाई के लिए बनाया गया है। इसके ठीक केंद्र में अखाड़ा (वह जगह जहाँ लड़ाई होती थी) होता था, जो रेत से ढका होता था। अखाड़े के चारों ओर एक बाड़ लगी होती थी। इस बाड़ के पीछे जनता के लिए बेंचों की सीढ़ियाँ होती थीं, जिन पर सीढ़ियों से चढ़कर पहुँचा जाता था।

[7034] यह पाठ ईसाइयों के दृष्टिकोण से लिखा गया है।

संतों को अखाड़े के केंद्र में फेंक दिया गया। तब सभी पर भय छा गया, और वे मक्सिमिस के ऐसे निर्णय के विरुद्ध बड़बड़ाने लगे; और कई लोग मक्सिमिस और उसकी क्रूर निर्दयता का अपमान करते हुए तमाशा छोड़कर चले गए। यह देखकर, मक्सिमिस ने पास खड़े सैनिकों को आदेश दिया कि वे उन लोगों के नाम लिख लें जो चले गए थे, ताकि वह बाद में उनके अपराध की जांच कर सके।

और इस प्रकार उसने शहीदों पर जानवरों को छोड़ने का आदेश दिया; और जब उन्होंने उन पर हाथ नहीं उठाया, तो उसने तमाशे के आयोजकों को कोड़ों से पिटाई करने का आदेश दिया, यह मांग करते हुए कि वे सबसे क्रूर जानवरों को छोड़ें। एक भालू छोड़ा गया, जिसने उस दिन तीन लोगों को मार डाला; और जब वह एंड्रोनिकिस के पास पहुंचा, तो वह बैठ गया और उसके घावों को चाटने लगा। एंड्रोनिकिस ने हालांकि उसे उकसाना शुरू कर दिया, इस उम्मीद में कि वह उसे खा जाएगा, लेकिन भालू शांत रहा। क्रोधित प्रोकोन्सुल ने भालेबाजों को भालू को मारने का आदेश दिया। तब टेरेंटियन, प्रोकोन्सुल से डरकर, जल्दी से शहीदों पर एक मादा शेर छोड़ने की जल्दी में था, जिसे एंटिओक से भेजा गया था। अखाड़े में छोड़ी गई, वह सिहिनी चक्कर लगाते हुए जमा हुए दर्शकों को डराने लगी; लेकिन जब वह शहीदों के पास पहुँची, तो उसने अपना सिर झुकाया और ताराक के सामने लेट गई। उसने उसे अपने हाथ से पकड़ लिया और घसीटते हुए आगे बढ़ा, इस उम्मीद में कि इस तरह उकसाए जाने पर वह उसे खा जाएगी; फिर भी वह सिहिनी ताराक के बगल में एक मेमने की तरह शांत बनी रही।

यह चमत्कार देखकर भीड़ ने एक बड़ा शोर मचाया। इस चमत्कार से लज्जित और क्रोधित होकर, उप-राज्यपाल ने अपने नौकरों को शेरनी को भड़काने का आदेश दिया, लेकिन वह, ज़ोर से दहाड़ती हुई, दरवाज़ों तक गई और उन्हें अपने दाँतों से कुतरने लगी। सारा हुजूम, डर के मारे, चिल्ला उठा:

'शेरनी को बाहर आने दो, क्योंकि दरवाज़े भी तोड़ दिए गए हैं।'

तब क्रोधित मैक्सिमिस ने टेरेन्टियानस को बुलाया और पवित्र शहीदों को मार डालने का आदेश दिया। ताराच, प्रोव और एंड्रोनिकिस को तलवारों से मार डाला गया और टुकड़े-टुकड़े कर दिया गया, और इस प्रकार वे शहीद हो गए[7035] । जब वह तमाशा छोड़कर चला गया, तो मैक्सिमिस ने शहीदों के शवों की रखवाली के लिए दस सैनिक छोड़ दिए, और आदेश दिया कि उन्हें दुष्टों के शवों के बीच रख दिया जाए, ताकि ईसाई उन्हें पहचान न सकें और उठा न सकें। हालाँकि, यह देखकर हमने प्रभु से प्रार्थना की कि वह हमें एक अनुकूल अवसर प्रदान करें जब हम उन्हें गुप्त रूप से ले सकें। उसके बाद, पास जाकर हमने देखा कि पहरेदार रात की पहरेदारी के लिए रात्रिभोज कर रहे थे और आग जला रखी थी; तब हम घुटनों के बल गिर पड़े और प्रभु तथा उनके मसीह से प्रार्थना की कि वह हमारी इच्छा पूरी करें – कि वह स्वर्ग से सहायता भेजें और हमें संतों के शरीर प्रदान करें। अचानक वज्रपात, बिजली और मूसलाधार बारिश के साथ एक भूकंप आ गया। हमने एक बार फिर प्रार्थना की और, शवों के पास पहुँचने पर, हमने पाया कि आग बुझ चुकी थी, और एक भी सैनिक नहीं बचा था, क्योंकि वे बारिश और तूफान से भाग गए थे। तब हमने स्वर्ग की ओर अपने हाथ उठाए, प्रार्थना करते हुए कि प्रभु हमें एक विशेष चिह्न द्वारा पवित्र शहीदों के अवशेष प्रकट करें, ताकि हम उन्हें अन्य शवों की भीड़ के बीच पहचान सकें। हालाँकि, रात बहुत अँधेरी थी। अचानक, संतों के अवशेषों के ऊपर, तारों की तरह तीन मोमबत्तियाँ प्रकट हुईं। पवित्र शहीदों के अवशेषों को गुप्त रूप से लेकर, हम उन दिव्य मोमबत्तियों के मार्गदर्शन में चल पड़े। उनका अनुसरण करते हुए, हम पहाड़ के दूसरी तरफ पहुँचे - और वे दिव्य मोमबत्तियाँ दृष्टि से ओझल हो गईं। वहाँ चट्टान में से निकली एक गुफा पाकर, हमने संतों के शवों को उसमें रख दिया और प्रवेश द्वार को अच्छी तरह से सील कर दिया, ताकि वे किसी भी अविश्वासी को न मिलें[7036] । इसके बाद, हम यह पता लगाने के लिए शहर में गए कि क्या हो रहा है, और सुना कि गार्डों को मैक्सिमिस ने मार डाला था। हमने, अपनी ओर से, हमारे प्रभु यीशु मसीह का धन्यवाद किया, जो युगानुयुग जीवते हैं।

मैं—मकारा, फेलक्सि और बेरियस—यहाँ अपना शेष जीवन बिताना चाहते हैं, ताकि हमारे शरीर पवित्र शहीदों के साथ यहाँ दफनाए जाएँ। हमारी आत्माएँ स्वर्ग में पवित्र शहीदों के साथ अनंत जीवन से परिपूर्ण होने के लिए योग्य ठहरें। जहाँ तक उन लोगों का सवाल है जिन्हें हम यह संदेश लेकर आपके पास भेज रहे हैं, उनका सम्मानपूर्वक स्वागत करें,

---

[7035] माना जाता है कि पवित्र शहीदों की मृत्यु वर्ष 304 में हुई थी।

[7036] प्राचीन काल में शहीदों को महान ख्याति प्राप्त थी। मध्य पाँचवीं शताब्दी में मोप्सुएस्टिया के बिशप ऑक्सेन्टियस द्वितीय ने उस नगर में इन पवित्र शहीदों को समर्पित एक चर्च का निर्माण किया और अनाज़ार्बस से उनके कुछ अवशेष प्राप्त कर उन्हें उसी चर्च में स्थापित किया।

क्योंकि वे हमारे प्रभु यीशु मसीह के सेवक हैं। हम आपसे विनती करते हैं कि आप हमें अपनी प्रार्थनाओं में याद करें। परमेश्वर की कृपा आप पर बनी रहे। आमीन।"

ट्रोपारियन, स्वर 5:

पवित्र शहीदों ने अपने कर्मों द्वारा स्वर्गीय शक्तियों को चकित कर दिया है, क्योंकि यद्यपि वे नश्वर शरीरों में थे, उन्होंने क्रूस की शक्ति से अदेह शत्रु से लड़ाई की; अच्छी लड़ाई लड़कर, उन्होंने अदृश्य पर विजय प्राप्त की: और वे प्रभु से प्रार्थना करते हैं कि वे हमारी आत्माओं पर दया करें।

कॉन्टाकियन, स्वर 2:

हे मसीह के पराक्रमी योद्धाओं और शहीदों, ताराख, प्रोव और एंड्रोनिकस के साथ, आपने हमें पवित्र त्रिमूर्ति की महिमा प्रकट की है: क्योंकि आपने अपने विश्वास के लिए पराक्रमी ढंग से पीड़ा सहते हुए, अपने सभी यातना देने वालों के अधर्मीपन को उजागर किया है।

कैनन के रचयिता, मायूम के कोस्मास

12 अक्टूबर को स्मरण किया जाता है

[7037]दामास्कस के संत जॉन के माता-पिता[7038] , जो दामास्कस शहर में रहते थे, ने कोस्मास नामक एक ईसाई अनाथ को अपने घर में आश्रय दिया, जो मूल रूप से यरूशलेम का रहने वाला था और बहुत कम उम्र में ही अनाथ हो गया था; गहरी धार्मिकता और परोपकार की भावना से, सेंट जॉन ऑफ़ डैमास्कस के माता-पिता ने उसे अपना पुत्र मानकर अपने पुत्र जॉन के साथ पाला और उसके साथ समान व्यवहार किया। एगारियनों से एक भिक्षु, जिसका नाम भी कोस्मास था, को दास के रूप में खरीदने के बाद, उन्होंने दोनों युवकों, जॉन और कोस्मास, को उसकी देखरेख में सौंप दिया। कोस्मास ने इस विद्वान भिक्षु से ईसाई धर्म की सारी बुद्धिमत्ता सीखने और पूर्ण विवेक तथा परिपक्वता प्राप्त करने के बाद, व्यर्थ की दुनिया को छोड़ दिया और एक मठ में[7039] , , जाकर भिक्षु-दीक्षा का भार अपने ऊपर ले लिया और वहाँ अच्छी तरह परिश्रम किया; जिस प्रकार आकाश में एक तारा चमकता है, उसी प्रकार वह अपने जीवन और दिव्य प्रबोधन के द्वारा मसीह की कलीसिया में चमका। जब चर्च में प्रतिमा-भंग का उदय हुआ, तो पूजनीय कोस्मास ने संत जॉन ऑफ़ डमास्कस से पवित्र प्रतिमाओं के बचाव में बोलने और ऑर्थोडॉक्स के लिए प्रतिमाओं की पूजा पर एक ग्रंथ लिखने का आग्रह किया, और प्रतिमा-भंगवादियों के खिलाफ रचनाएँ करने का कार्य जॉन ऑफ़ डमास्कस के साथ साझा किया। उन्होंने सुंदर, प्रेरित ट्रॉपारिया और कैनन के साथ चर्च की दैवीय सेवाओं को भी समृद्ध किया। उन्होंने लाजरस के पुनरुत्थान, मसीह के स्वैच्छिक दुःखों, और प्रभु के कुछ पर्वों को भजनों से सम्मानित किया[7040] । बाद में, संत कोस्मास को यरूशलेम

[7037] यानी अरबों के बीच, जो परंपरा के अनुसार, हैगर से अब्राहम के पुत्र इसमाइल के वंशज थे।

[7038] सेंट जॉन ऑफ़ डेमास्कस – एक अत्यंत उल्लेखनीय ईसाई भजनकार और धर्मशास्त्री – का निधन 776 में हुआ। चर्च उनके पर्व दिवस का 4 दिसंबर को पालन करती है।

[7039] यह निवास संत सव्वास द सैंक्टिफाइड का प्रसिद्ध मठ था। मरुभूमि में, संत कोस्मास ने दमास्कस के विद्वान् ग्रंथों का अध्ययन किया और, जैसा कि यरूशलेम के जॉन कहते हैं, उन्होंने आध्यात्मिक भजनों के प्रति अपने प्रेम में दमास्कस की उत्साहपूर्वक नकल की, चर्च के लिए मधुर, सुरम्य भजन रचे, और अपने अथक परिश्रम के माध्यम से स्वयं को प्रभु के लिए सबसे सुरम्य भजन-संग्रह के रूप में प्रस्तुत किया। यह ध्यान देने योग्य है कि संतों के भजनों के सबसे पुराने संस्करण में कोस्मास और जॉन—साथ ही प्राचीन पांडुलिपियों में—संत कोस्मास के भजनों को लगातार 'कोस्मास ऑफ जेरूसलम' के भजन के रूप में संदर्भित किया गया है, जो स्वयं जॉन ऑफ जेरूसलम के इस दृष्टिकोण की पुष्टि करता है कि संत कोस्मास ने अपने भजन संत सावस के मठ में रचे थे।

[7040] पाम संडे, लाजरस के पुनरुत्थान और मसीह के दुख-क्लेश के लिए भजनों के अलावा—जिन्हें ऑर्थोडॉक्स ईसाई चर्च के इस सबसे उल्लेखनीय भजनकार के उत्कृष्ट और सबसे गंभीर कार्यों के रूप में सही माने जाते हैं—संत कोस्मास द्वारा प्रेरित कैनन ईश्वर की माता के स्वर्गारोहण, मसीह के जन्म, पवित्र क्रूस की उन्नति, प्रभु की प्रस्तुति (स्टिचेरा के साथ), उद्धारकर्ता का बपतिस्मा, प्रभु का रूपांतरण (स्टिचेरा के साथ), पेंटेकोस्ट, और पवित्र सप्ताह के सोमवार, मंगलवार, बुधवार और शुक्रवार के लिए ट्रिपिस्निट्सी। इस संबंध में, प्रसिद्ध

के पैट्रआर्क[7041] द्वारा मायूम का बशिप नयिुक्त कयिा गया; इस पद पर उन्होंने बहुत परशि्रम कयिा और ईश्वर को प्रसन्न करने वाले तरीके से, अपनी भेड़ों को मसीह के उद्धारक चरागाह की ओर ले जाते हुए, और फरि वे एक परपिक्व बुढ़ापे तक पहुँचकर प्रभु में शांतपिूर्वक वशि्राम करने गए[7042] ।

कॉन्टाकयिन, स्वर 8:

हे ईश्वर-प्रेरति कोस्मास, सद्गुणों से सुसज्जति, आप मसीह की कलीसयिा की शोभा थे: क्योंकि भजनों से आपने इस धन्य स्थान को सुशोभति कयिा। परन्तु प्रभु से प्रार्थना करें कि वह हमें शत्रु की सभी युक्तयिों से छुड़ाए, जब हम आपको पुकारते हैं: आनन्दति हो, हे दरदि्रों के पति।

टूर के बशिप, दयालु संत मार्टनि का जीवन

12 अक्टूबर को स्मरणोत्सव

[7043]संत मार्टनि पन्नोनयिा के सैबेरयिा नगर के नविासी थे[7044] ; उनके माता-पति मूर्तपिूजक थे। उनके पति पहले एक साधारण सैनकि के रूप में सेवा कर चुके थे, लेकनि अपनी लगनपूर्ण सेवा के माध्यम से वे सैन्य ट्राइब्यून के पद तक पहुँचे और एक उच्च पद प्राप्त कयिा। मार्टनि ने अपना बचपन टसिनिो[7045] में बतिाया, जहाँ, जब वह अभी भी एक बच्चा था, उसके पति को अपनी सेवा की मांगों के कारण स्थानांतरति होना पड़ा। बहुत कम उम्र में ही, संत ने अपनी नम्रता, दया और हृदय की पवत्रिता के माध्यम से ईश्वर को प्रसन्न कयिा, और उच्चतर बुलावे के संकेत दखिाए। उस समय, ईसाई धर्म रोमन साम्राज्य में तेजी से और खुले तौर पर फैल रहा था, और मार्टनि, वशि्वासयिों के संपर्क में आने पर, उनसे ईसाई धर्म की सच्चाइयाँ सुनीं और अपने शुद्ध, नर्मिल हृदय से सत्य को समझते हुए, उसने अपनी पूरी आत्मा से इसके लिए प्रयास करना शुरू कर दयिा। ईसाइयों के सद्गुणों और पवत्रि जीवन के प्रति जुनून से भरकर, उस लड़के ने दस वर्ष की आयु में, अपने माता-पति की इच्छा के वरिुद्ध, एक कैटेकुमन (शकि्षार्थी) बन गया। उसने सांसारकि पढ़ाई

14वीं सदी के चर्च इतहिासकार नकिफिोरस कैलस्टिोस लखिते हैं कि संत कोस्मास 'पवत्रि त्रमिूर्ति की प्रतमिा में' त्रपिेन्ट्स रचने वाले पहले व्यक्ति थे। मायूम के संत कोस्मास को ईश्वर की माता के सम्मान में प्रेरति भजन रचने का श्रेय भी दयिा जाता है: 'सबसे सम्मानति करूबमि', महा गुरुवार के लिए कैनन, महा गुरुवार के लिए चार-छंदों वाले भजन, परमेश्वर की माता के नदि्रोपवेश के लिए इकोस और 14 कोंडाक, मंगेतर यूसुफ, राजा दाऊद, महान शहीद जॉन, ग्रेगरी द थयिोलोजयिन, और कुछ अन्य चर्च संबंधी भजन। ईश्वर की माता को समर्पति सबसे प्रसद्धि भजन, 'सबसे सम्मानति करूिबीम' के बारे में, एक चर्च परंपरा संरक्षति है जसिके अनुसार यह भजन परम पवत्रि को सबसे अधकि प्रयि था, और उन्होंने, परम पूजनीय के सामने एक आनंदति मुखमंडल के साथ प्रकट होकर, कहा: 'आपके भजन मुझे प्रयि हैं, लेकनि यह सभी से अधकि प्रयि है; मैं आध्यात्मकि भजन गाने वालों से प्रसन्न होती हूँ, लेकनि मैं उनसे तब कभी भी इतनी करीब नहीं होती जब वे आपका यह नया भजन गाते हैं।' नकिफिोरस कैलस्टिोस आगे यह भी लखिते हैं कि आध्यात्मकि वषियों पर मनन करने में सक्षम लोगों ने बाद में कई अवसरों पर परम पवत्रि माता को इस भजन को गाने वालों पर आशीर्वाद देते हुए देखा। यह परंपरा इस भजन के दैनकि उपयोग से भी पुष्ट होती है, जैसा कि पूजा संबंधी ग्रंथों में नर्धिारति है। सेंट कोस्मास ऑफ मायूम के सभी भजनों में, भाषा हमेशा अर्थ से भरपूर फरि भी संक्षपि्त, सुरमय, गंभीर भव्यता, श्रद्धा और अत्यधकि कलात्मक ईसाई प्रेरणा से ओत-प्रोत होती है। संत कोस्मास की ग्रीक सेवा में, हम पढ़ते हैं: 'देखो, आध्यात्मकि सारंगी, पवत्रि वीणा, जो सभी को रहस्यमय भोज के लिए बुलाती है: पवत्रि और महमिामय कोस्मास मधु-मधुर, पवत्रि-ध्वनि वाले भजन अर्पति करते हैं... स्वर-गायन करने वालों के नेता, शकि्षकों के समान, सामंजस्यपूर्ण आध्यात्मकि गीतों के सच्चे आदर्श, मधुर तुरही, मधुर गीतों का सुंदर स्रोत, दैवीय स्वर-गायन के उत्साही रक्षक—मैं कोस्मास को गीतों से सजाना चाहता हूँ।" मायूमा के संत कोस्मास के भजन, अनादि काल से, चर्च द्वारा हमेशा सर्वोच्च और गहरी श्रद्धा से सम्मानति कए गए हैं।

[7041] मायूम फ़लिस्तीन में एक बंदरगाह शहर है, जो यरूशलेम से ज़्यादा दूर नहीं, उस देश के एक महत्वपूर्ण, प्राचीन शहर गाज़ा के लिए बंदरगाह के रूप में काम करता था। – सेंट कोसमस को लगभग 735 ईस्वी में एक धर्मसभा द्वारा उनकी इच्छा के वरिुद्ध मायूमा का बशिप चुना गया और यरूशलेम के पैट्रआर्क जॉन पंचम द्वारा अभषिक्ति कयिा गया। बशिप के रूप में अपने अभषिेक के बाद भी, उन्होंने सेंट जॉन ऑफ़ डमास्कस के साथ भाईचारे के संबंध बनाए रखे।

[7042] सेंट कोस्मास ऑफ मायूम † लगभग 787।

[7043] अर्थात्, सेना में एक प्रसद्धि स्वतंत्र रेजमिेंट के कमांडर के पद पर।

[7044] पैनोनयिा डेन्यूब नदी के कनिारे रोमन साम्राज्य के महत्वपूर्ण क्षेत्रों में से एक था; यह अब हंगरी का हस्सिा है। सबारयिा को अब स्टीन अन डेर एंगर के नाम से जाना जाता है। संत मार्टनि का जन्म चौथी शताब्दी के पहले भाग में हुआ था।

[7045] टसिनि – अब पावयिा, उत्तरी इटली में टसिनिो नदी पर एक प्रमुख शहर, जहाँ से यह पो नदी में मलिती है, उससे अधकि दूर नहीं।

नहीं की, और केवल मसीह की शिक्षाओं पर ही संतुष्ट रहा। बारह वर्ष की आयु में, उन्होंने संत एंथनी के एकांतवादी तपस्वी जीवन का अनुकरण करते हुए, एक संन्यासी बनने की धार्मिक इच्छा विकसित की। लेकिन ईश्वर की अन्य योजनाएँ थीं, ताकि बपतिस्मा के जल में प्रबुद्ध होने से पहले ही उनकी धार्मिकता और भी स्पष्ट रूप से प्रकट हो सके। मार्टिन के पिता अपने बेटे के ईसाइयों के साथ मैत्रीपूर्ण संबंधों और उसके धार्मिक झुकावों से अत्यंत अप्रसन्न थे, और यह भावना और भी प्रबल हो गई क्योंकि महत्वाकांक्षी आकांक्षाओं से प्रेरित होकर, वह इस मजबूत और ऊर्जावान लड़के को एक ऐसे प्रतिष्ठित योद्धा के रूप में ढालना चाहते थे जो युद्ध के मैदान में उनके नाम को गौरवान्वित करे। और इसलिए, जब मार्टिन पंद्रह वर्ष का हुआ, तो एक शाही फरमान के अनुसार, जिसमें यह प्रावधान था कि अनुभवी सैनिकों के पुत्र[7046] को सेना में भर्ती होना था, उसके पिता ने उसे पकड़ लिया, उसे बेड़ियों में जकड़ दिया और जबरदस्ती उससे सैन्य शपथ दिलाई। एक ट्रिब्यून के बेटे और एक प्रतिष्ठित तथा सुदृढ़ युवक के रूप में, मार्टिन एक घुड़सवार सेना अधिकारी बन गया और उसने अपने वरिष्ठों का बड़ा विश्वास अर्जित किया।

मार्टिन की नई प्रमुख स्थिति ने उसके विनम्र और धार्मिक जीवन-यापन के तरीके को नहीं बदला। उसके पास इतना साधन था कि वह सैनिकों में से दो या दो से अधिक नौकर रख सकता था; फिर भी वह सिर्फ एक से ही संतुष्ट था, जिसके साथ वह एक दास के रूप में नहीं बल्कि एक दोस्त और भाई के रूप में व्यवहार करता था, और उसे जितनी सेवा उससे मिलती थी, उससे कहीं अधिक सेवा वह उसे देता था। उन्होंने अपने साथी सैनिकों के प्रति बहुत स्नेह दिखाया और उनमें न केवल सच्चा स्नेह बल्कि निरंतर प्रलोभनों के बीच अपने कठोर और सदाचारी जीवन के लिए सम्मानपूर्ण प्रशंसा भी जगाई। एक सैनिक के रूप में भी, मार्टिन ने खुद को पूरी तरह से ईसाई परोपकार के कार्यों के लिए समर्पित कर दिया। वे अपनी तनख्वाह में से केवल अपनी ज़रूरत के लिए आवश्यक राशि ही रखते थे और बाकी सब कुछ खुद से वंचित कर देते थे, और बची हुई राशि का उपयोग दुर्भाग्यपूर्ण लोगों की मदद करने, नंगों को कपड़े पहनाने, गरीबों को भोजन कराने और अन्य धर्मार्थ कार्यों को करने के लिए करते थे।

मार्टिन ने गॉल में सेवा की[7047] । अपनी सेना के साथ, वह एमिन्स में शीतकालीन ठिकाने पर तैनात थे[7048] । सर्दी असाधारण रूप से कठोर थी, और मार्टिन, जो हमेशा अपनी परोपकारिता के लिए प्रसिद्ध थे, इस समय गरीबों के पालन-पोषण और रखरखाव के लिए अपने स्वयं के संसाधनों से और भी उदारतापूर्वक प्रदान कर रहे थे। एक दिन, जब वह शहर के दरवाजों से गुजर रहा था, तो उसे एक अर्धनग्न भिखारी मिला, जो कड़ाके की ठंड से लगभग पूरी तरह से सुन्न हो गया था। रास्ते से गुजरने वाले लोगों ने उस पर कोई ध्यान नहीं दिया और उसे बिना किसी मदद के छोड़ दिया, शायद इसलिए क्योंकि वे खुद ज़रूरतमंद थे और उनके पास देने के लिए कुछ भी नहीं था। मार्टिन के पास भी कुछ नहीं था; वह भिखारी को कोई दान नहीं दे सकता था, क्योंकि उसने पहले ही अपना सारा पैसा दान कर दिया था। लेकिन इस बेचारी आदमी को देखकर उसका दिल दुख और करुणा से भर गया। तो मार्टिन ने बिना किसी हिचकिचाहट के, और उस बदकिस्मत आदमी को तत्काल मदद देने की इच्छा से, जल्दी से अपनी सैन्य पट्टा उतार ली, अपना चोगा उतार लिया, और उसे दो हिस्सों में बाँटकर, एक हिस्सा ठंड से पीड़ित उस गरीब आदमी को दे दिया, जबकि दूसरे हिस्से से उसने खुद को लपेट लिया। कुछ राहगीरों ने इस कृत्य को देखा और उसके अजीब पहनावे को देखकर उस पर हँसने लगे। लेकिन उस दयालु योद्धा का हृदय आनंद से भर गया; वह उपहास से विचलित नहीं हुआ, *क्योंकि* उसे दिव्य उद्धारकर्ता के वचन याद थे: *'मैं नंगा था, और तुमने मुझे कपड़े पहनाए... क्योंकि तुमने मेरे इन सबसे छोटे भाइयों में से किसी एक के लिए जो कुछ भी किया, वह तुमने मेरे लिए किया'* (मत्ती 25:36)।

और प्रभु ने मार्टिन के विश्वास को दृढ़ किया और उसकी महान दया के लिए उसे एक स्वर्गीय दर्शन से सांत्वना दी। उस रात, जब वह सो रहा था, मार्टिन ने प्रभु यीशु मसीह को देखा, जो आधे ओढ़ने में लिपटे हुए के वेश में उन्हें दिखाई दिए, और उन्होंने मार्टिन से देखा और परखा कि क्या वह वही आधा ओढ़ना नहीं था जो उसने द्वार पर भिखारी को दिया था; मार्टिन भक्तिपूर्वक मौन में खड़ा रहा; जबकि मसीह उससे मुड़कर अपने सामने खड़े स्वर्गदूतों के समूह की ओर गए और ऊँचे स्वर में कहा:

[7046] यह शब्द साम्राज्य के दौरान रोमनों द्वारा उन अनुभवी सैनिकों के लिए इस्तेमाल किया जाता था जिन्हें अभी तक सेवामुक्त नहीं किया गया था; वे सभी श्रम से मुक्त थे और उन्हें केवल बाहरी दुश्मनों के खिलाफ मातृभूमि की रक्षा के लिए सक्रिय सेवा में बुलाया जाता था।

[7047] गॉल – आज का फ्रांस।

[7048] एमीयंस – अब फ्रांस के सोम विभाग की राजधानी, उसी नाम की नदी के किनारे, पेरिस से 124 वर्स्ट उत्तर में।

'मार्टनि ने मुझे यह चोगा पहनाया, यद्यपि वह अभी केवल एक कैटकचिुमन (बपतस्मिा की तैयारी कर रहा व्यक्ति) है।'

इतनी अद्भुत और सांत्वना देने वाली दृष्टि से प्रसन्न होकर, वह युवक जाग उठा। यह घटना उसके सैन्य सेवा में प्रवेश करने के तीन साल बाद हुई। इसके बाद, मार्टनि ने और विलंब नहीं किया और अठारह वर्ष की आयु में तुरंत पवित्र बपतस्मिा ग्रहण कर लिया। बपतस्मिा के बाद, वह सैन्य सेवा छोड़ने के लिए और भी अधिक उत्सुक हो गया, जो उसकी धार्मिक प्रवृत्तियों के पूरी तरह से विपरीत थी और एक एकांत, तपस्वी जीवन की उसकी प्रिय इच्छा के अनुकूल नहीं थी। हालाँकि, उसे अपनी इच्छा को तुरंत पूरा करने के लिए मजबूर होना पड़ा। उनके ट्राइब्यून, जो एक पूर्व ईसाई थे, उन्हें छोड़ने के लिए बिल्कुल भी तैयार नहीं थे। जब मार्टनि ने उन्हें सैन्य सेवा छोड़कर भिक्षु बनने के अपने इरादे के बारे में बताया, तो ट्राइब्यून ने वादा किया कि यदि वह अपनी सेवा अवधि के अंत तक प्रतीक्षा करेगा, तो वह भी उसके साथ सेवा छोड़ देंगे और संसार का त्याग कर देंगे। मार्टनि को ट्रिब्यून की इच्छाओं के आगे झुकने के लिए मजबूर होना पड़ा और वह और दो साल तक सेना में रहा, तथा उसने क्रूर एलेमनी लोगों के खिलाफ राजा कॉन्स्टेंटियस के कठिन अभियानों में भाग लिया[7049] ।

रोमन साम्राज्य के सीमा क्षेत्रों पर कई बर्बर लोगों द्वारा किए जा रहे निरंतर हमलों को रोकने के लिए की गई इन अभियानों के दौरान, मार्टनि जिस टुकड़ी में सेवा कर रहा था, उसकी कमान सम्राट ने अपने चचेरे भाई जूलियन को सौंपी थी, जिसे सीज़र नियुक्त किया गया था[7050] । यह टुकड़ी पर्याप्त बड़ी नहीं थी, और जूलियन ने अपने सैनिकों को प्रोत्साहित करने के लिए, एलेमानियों से जीते गए माल में से उपहार बांटने का फैसला किया। आने वाली लड़ाई के लिए सैनिकों को और अधिक प्रेरित करने हेतु, जूलियन ने आदेश दिया कि प्रत्येक सैनिक को नाम से बुलाया जाए और उन्हें व्यक्तिगत रूप से उपहार दिए जाएं। जब मार्टनि को बुलाया गया, तो वह आगे बढ़ा और उसने अपने कमांडर से साहसपूर्वक कहा:

'सीज़र! अब तक मैंने आपकी घुड़सवार सेना में सेवा की है, लेकिन अब मुझे ईश्वर की सेवा में जाने की अनुमति दें। आपका उपहार कोई और ले ले, जो आपकी सेवा जारी रखेगा! जहाँ तक मेरी बात है, मैं मसीह का सिपाही हूँ और इसलिए मुझे अब आपके लिए लड़ना नहीं चाहिए।'

क्रोधित जूलियन ने फटकारते हुए जवाब दिया, 'मार्टनि, तुम एक कायर हो। युद्ध कल होगा। और फिर भी, यह युद्ध का भय है, ईश्वर का नहीं, जो तुम्हें अपना कर्तव्य निभाने से रोक रहा है।'

लेकिन मार्टनि ने साहसपूर्वक जारी रखा:

'यदि आप मेरी इस त्याग को कायरता मानते हैं, वफादारी नहीं, तो कल मुझे अकेले, बिना किसी हथियार के, युद्धक्षेत्र के सबसे खतरनाक हिस्से में खड़ा कर दें। तब आप देखेंगे कि, बिना किसी हथियार के, केवल मसीह के नाम और उनके पवित्र क्रूस के चिह्न के साथ, मैं निडर होकर दुश्मन की कतारों की ओर बढ़ूँगा।'

'ठीक है,' जूलियन ने कहा, और मार्टनि को अगले दिन तक पहरे में रखने का आदेश दिया।

लेकिन अगले ही दिन, जूलियन की शानदार रूप से संगठित सेना को देखकर, एलेमानियों ने उसके पास शांति वार्ता के लिए दूत भेजे और अपनी पूर्ण समर्पण की पेशकश की। शांति स्थापित हो गई। इसके बाद, मार्टनि को उसके सैन्य शपथ से मुक्त कर दिया गया और वह तुरंत सेना छोड़ने के लिए निकल पड़ा। वह पोइटियर्स के लिए रवाना हुआ, उस नगर के बिशप हिलारी ([7051]) को खोजने के लिए, जो अपने पवित्र जीवन और रूढ़िवादी ईसाई शिक्षा के लिए प्रसिद्ध थे, ताकि वह स्वयं को इस पवित्र पुरुष के आध्यात्मिक मार्गदर्शन में समर्पित कर सके। हिलरी ने उस युवक का हार्दिक स्नेह से स्वागत किया और उसके चरित्र की थोड़ी अवधि तक परीक्षा के बाद, उसे डीकन के रूप में नियुक्त करना चाहा; लेकिन

[7049] एलमनी एक उग्र जर्मनिक जनजाति थी जो डैन्यूब, मेन और ऊपरी राइन के बीच, रोमन साम्राज्य के सीमा प्रांतों के पास रहती थी, जिन पर वे अक्सर विनाशकारी छापे मारते थे। सम्राट कॉन्स्टैंटियस के एलमनी के खिलाफ अभियान 354-355 में हुए थे।

[7050] अर्थात्, सम्राट का सहायक और सह-शासक, जिसके बारे में यह उम्मीद की जा सकती थी कि वह उचित समय पर उसका उत्तराधिकारी बनेगा। 'जूलियन' से अभिप्रेत कॉन्स्टैंटियस का चचेरा भाई और उत्तराधिकारी है, जो इतिहास में 'जूलियन द एपोकेटेट' (धर्मत्यागी जूलियन) के नाम से कुख्यात हुआ।

[7051] संत हिलारियन, पोइटियर्स के बिशप, चर्च के प्रसिद्ध पिता और ऑर्थोडॉक्सी के रक्षक, † 368. रोमन चर्च में उनका पर्व दिवस 14 जनवरी को मनाया जाता है। उनका नाम ग्रीक चर्च की वर्तमान mensiones (उल्लेखों) में नहीं आता है, हालांकि उनके जीवन की पवित्रता पर कोई संदेह नहीं है और यह चमत्कारों से प्रमाणित है। पोइटियर्स फ्रांस के वियेन विभाग का प्रमुख शहर है, जो पेरिस से 340 वर्स्ट दक्षिण-पश्चिम में स्थित है।

मार्टनि ने, गहरी वनिम्रता के कारण, इस पद को अस्वीकार कर दयिा, और केवल तब जाकर राज़ी हुए जब उन्हें भूत-प्रेत भगाने वाले[7052] की अधकि साधारण, लेकनि अधकि कठनि भूमकिा स्वीकार करने के लिए मनाया गया। अपने नए पद पर थोड़ा समय बतिाने के बाद, मार्टनि इस वचिार से चतिति हो गया कि उसके माता-पतिा अभी भी मूर्तपिूजक हैं, और एक सपने में मलिी दव्यि दृष्टि के बाद, वह कुछ ही समय बाद उन्हें ईसाई धर्म में परविर्तति करने के लिए अपने देश के लिए रवाना हो गया। उसे आल्प्स[7053] पार करना पड़ा, अक्सर बनिा रास्ते वाली पहाड़ी जंगली इलाकों में रास्ता खो जाता था और डाकुओं से खतरा भी रहता था। एक बार, वह उनके हाथों में पड़ गया। एक डाकू ने मार्टनि का सरि कलम करने के लिए अपनी तलवार उठाई, लेकनि उसके साथी ने उस युवक पर तरस खाकर हमलावर को रोक दयिा। मार्टनि को बाँध दयिा गया और उस डाकू की नगिरानी में रख दयिा गया जसिने उसकी जान बचाई थी:

'तुम कौन हो?' डाकू ने पूछा।

'मैं एक ईसाई हूँ,' उस युवक ने नम्रता से उत्तर दयिा।

तब उनके बीच एक लंबी बातचीत हुई, जसिमें मार्टनि ने उस डाकू पर इतना गहरा प्रभाव डाला कि वह अपने दुष्ट, अपमानजनक जीवन पर शर्मसार हो गया। उसने तुरंत मार्टनि को आजाद कर दयिा और आँसू भरी आँखों से उससे अपने लिए प्रार्थना करने की वनिती करने लगा। उसके बाद, वह पूर्व डाकू एक धार्मकि जीवन जीने लगा और बाद में सेंट मार्टनि के गैलकि मठ में एक भकि्षु के रूप में रहा।

अंततःइटली में प्रवेश करने और अपनी यात्रा जारी रखने के बाद, कई परीक्षणों और कठनिाइयों के बीच, मार्टनि की मुलाकात एक अत्यंत घृणति और भयानक रूप वाले व्यक्ति से हुई, जसिने उस पर जज्ञिासु प्रश्नों की बौछार कर दी, और यह जानने के लिए वशिेष प्रयास कयिा कि वह कहाँ जा रहा था।

मार्टनि ने जवाब दयिा, 'मेरा इरादा वहाँ जाने का है, जहाँ भी प्रभु मुझे बुलाएँ।'

'बहुत अच्छा,' उसके वार्तालापकर्ता ने गुस्से में कहा, 'लेकनि याद रखना कि तुम जहाँ भी जाओ और जो कुछ भी करो, मैं हमेशा तुम्हारा वरिोधी रहूँगा।'

इस मुलाकात और बातचीत ने मार्टनि पर गहरा प्रभाव डाला; हालाँकि, वह हतोत्साहति नहीं हुआ, बल्कि बस वनिम्रता से और ईश्वर की सर्व-सत्त्वपूर्ण व्यवस्था में दृढ़ वशि्वास के साथ कहा:

'प्रभु मेरे साथ हैं; मुझे इस बात का डर नहीं है कि कोई मनुष्य मेरे साथ क्या कर सकता है।'

ये शब्द सुनते ही, उसका वरिोधी तुरंत गायब हो गया। तब मार्टनि को यह स्पष्ट हो गया कि यह मानव जाति का पुराना दुश्मन – शैतान था, जसिने मानव का रूप धारण कयिा था।

अपने पारविारकि घर पहुँचने पर, मार्टनि ने पाया कि उसके माता-पतिा अभी भी जीवति थे। उनके पतिा ने उनके साथ बहुत बुरा व्यवहार कयिा और उनके उपदेश के प्रति अडगि रहे। लेकनि उनकी माँ उनके तर्कों से प्रभावति हो गईं और सुसमाचार के प्रकाश से प्रबुद्ध हो गईं, जैसे कि उनके गृहनगर के कई अन्य नविासी हुए। फरि भी, सबारयिा में संत के सुसमाचार प्रचार की सफलता अल्पकालकि थी। उस समय, अधर्मी राजा कॉन्स्टेंटयिस द्वारा एरयिनों को दिए गए संरक्षण के कारण, उनका वधिर्म पूरे पन्नोनयिा में फैल गया था; मार्टनि ने इस दुष्ट सद्धिांत के खलिाफ़ रुख़ अपनाया और, इसके लिए, उन्हें सताया गया और यातनाएँ दिए जाने के बाद, शहर से नर्विासति कर दयिा गया। वे इटली के लिए रवाना हुए और मेडयिोलानम[7054] में बसने के बाद, उन्होंने वहाँ अपने लिए एक संन्यासी की कुटयिा बनवाई; लेकनि वहाँ से भी, हर तरह के उत्पीड़न और अपमान सहने के बाद, उन्हें एरयिन बशिप ऑक्सेनटयिस द्वारा शहर से नकिाल दयिा गया। तब संत ने गैलनिारयिा के एकांत चट्टानी द्वीप पर एक तपस्वी बनने का संकल्प लयिा, जहाँ से वे बाद में कैप्रारयिा[7055] चले गए, जो पूरी तरह से नर्जिन था, क्योंकि वह वषिैले साँपों से भरा था। वहाँ उन्होंने केवल एक साथी के साथ ध्यान और

[7052] यह प्रारंभकि ईसाई चर्च के पुरोहति वर्ग के भीतर एक वशिेष पद था, जसिमें दुष्ट आत्माओं से ग्रस्त लोगों, मर्गिी के रोगयिों और इसी तरह की अन्य बीमारयिों से पीड़ति लोगों के लिए वशिेष प्रार्थनाओं का पाठ करना शामलि था। वर्तमान में, चर्च के भीतर ऐसा कोई वशिेष पद मौजूद नहीं है।

[7053] आल्प्स यूरोप की सबसे ऊँची पर्वतमाला है, जो पूरे उत्तरी इटली के चारों ओर एक चाप की तरह फैली हुई है, और एपेनाइन प्रायद्वीप को हर तरफ से मुख्यभूमि से अलग करती है।

[7054] मेडयिोलन - अब मलिान - उत्तरी इटली का सबसे महत्वपूर्ण शहर है, जो लोम्बार्डी क्षेत्र में स्थति है; इसकी स्थापना प्राचीन काल में हुई थी और यह हमेशा से बहुत महत्व रखता आया है।

[7055] गैलनिारयिा उत्तरी इटली के लगिुरयिा में, टायर्रेनीयन सागर में एक द्वीप है। कैप्रारयिा उसी सागर में एक छोटा द्वीप है।

प्रार्थना का जीवन जयिा, और केवल जंगली पौधों पर ही जीवन यापन कयिा। ईश्वर की कृपा से, उस पवत्रि तपस्वी की चमत्कारकि रूप से रक्षा हुई, और उसे साँपों से कोई हानि नहीं हुई।

यह सुनकर कि उनके गुरु, हलिारी, जनि्हें एरयिनों द्वारा पोइटयिर्स से नकिाल दयिा गया था, को लौटने की अनुमति मलि गई है, मार्टनि उनसे मलिने के लिए पोइटयिर्स के लिए रवाना हो गए, और पांच साल की जुदाई के बाद, उन्होंने एक-दूसरे को खुशी से गले लगाया । हलिारी ने एक बार फरि उन्हें प्रेस्बटिर या कम से कम डीकन का पद स्वीकार करने के लिए आग्रह कयिा, लेकनि मार्टनि ने जदि करके इनकार कर दयिा, क्योंकि वह अपने शेष जीवन के लिए एक साधारण भक्षिु ही बने रहना चाहता था। हलिारी ने उन्हें एक मठवासी समुदाय की स्थापना करने की अनुमति दी और इस उद्देश्य के लिए पोइटयिर्स से बहुत दूर नहीं, लोकोसयिाग या लगिूज़ गाँव में एक जगह आरक्षति की[7056] । मत्रि और शष्यि उस धर्मनष्ठि युवा के चारों ओर शीघ्रता से इकट्ठा हो गए ताकि उससे एक आदर्श मठवासी जीवन सीख सकें। मार्टनि ने सभी का प्रेम से स्वागत कयिा और सभी के लिए एक तपस्वी, ईश्वर-प्रसन्न जीवन का उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत कयिा। लगभग कोई औपचारकि शक्षिा प्राप्त न होने के बावजूद, वह अपने भीतर वद्यिमान मसीह की कृपा की शक्ति से, ईश्वर के चतिन और एक सदाचारी मठवासी जीवन के कार्यों द्वारा नर्दिेशति होकर, सभी का मार्गदर्शन करता था, उन्होंने अत्यधकि वद्विान और गहराई से प्रबुद्ध व्यक्तयिों को भी सच्चे ईसाई जीवन के मार्ग पर ज्ञान प्रदान कयिा और उनका मार्गदर्शन कयिा; जनिमें से कुछ ने, उनके प्रभाव में, व्यर्थ की दुनयिा को त्याग दयिा, और स्वयं को पूरी तरह से ईश्वर की सेवा और मरुभूमि के तपस्वी जीवन के लिए समर्पति कर दयिा। संत मार्टनि का मठ थोड़े ही समय में फल-फूल उठा और प्रसद्धि हो गया, जो गॉल में पहला मठ बनकर उभरा और उस भूमि में मठवाद का एक प्रसद्धि केंद्र बन गया।

उस समय, धर्मोपदेश प्राप्त करने वाले एक शष्यि, जो पवत्रि वश्विास और धार्मकि जीवन में शक्षिा प्राप्त करने के लिए संत मार्टनि के मठ में आया था, लेकनि अभी तक बपतस्मिा नहीं लयिा था, अचानक बुखार से बीमार पड़ गया और उसकी मृत्यु हो गई। उस समय आदरणीय पति मठ में नहीं थे। उनके लौटने पर, उन्होंने रो रहे भाइयों के बीच उस कैटेकुमेन का मृत शरीर पाया। रेवरेंड फादर ने सभी को सेल से बाहर भेज दयिा और, प्रार्थना में स्वयं को नमन करते हुए, दो घंटे बाद, मसीह की कृपा से, मृतक को पुनर्जीवति कर दयिा। जीवन में लौटा हुआ वह व्यक्ति तुरंत पवत्रि बपतस्मिा ग्रहण कर लयिा और उसके बाद आने वाले लंबे समय तक ईश्वर-प्रसन्न जीवन जयिा। बाद में उन्होंने बताया कि जब उनकी आत्मा उनके शरीर से अलग हुई, तो उन्हें एक भयानक न्यायाधीश के सामने लाया गया, जनि्होंने उन पर दोषी होने का फैसला सुनाया; लेकनि दो स्वर्गदूतों ने न्यायाधीश से कहा कि यही वह व्यक्ति है जसिके लिए मार्टनि प्रार्थना कर रहे थे, जसि पर न्यायाधीश ने आदेश दयिा कि उसे मार्टनि के पास वापस भेज दयिा जाए।

उस समय से, मार्टनि की कीर्ति एक पवत्रि और अद्भुत प्रेरति पुरुष के रूप में फैल गई, जसिे स्वर्गीय शक्ति प्राप्त थी।

सभी वर्गों और सामाजकि दर्जे के असंख्य शष्यि[7057] को आकर्षति करते हुए, और अपने सदाचारी और कठोर तपस्वी जीवन के उदाहरण से उन्हें प्रभावति करते हुए, संत मार्टनि ने अपनी शक्षिाओं के माध्यम से भी उन पर गहरा प्रभाव डाला। उन्होंने स्वयं मसीह की सच्चाई को स्पष्ट रूप से देखा और उसमें दृढ़ वश्विास कयिा, और उसी स्पष्टता, जोश, सादगी और प्रभावशीलता के साथ वे इसे वश्विासयिों और अवश्विासयिों दोनों को समझाने और बताने में सक्षम थे। उन्हें दृष्टान्तों के माध्यम से सखिाना पसंद था, जो उनके श्रोताओं पर गहरा प्रभाव छोड़ते थे।

संत मार्टनि के महान कार्यों को देखकर और उनके पवत्रि, ईश्वर-प्रसन्न जीवन को सहन न कर पाकर, मानव जाति के प्राचीन शत्रु – शैतान ने – उनके खलिाफ एक दुर्भावनापूर्ण युद्ध छेड़ा, वह उनके सामने प्रकट होता और हर संभव तरीके से उन्हें लुभाता था। लेकनि यद्यपि संत लगातार अपने चारों ओर राक्षसों और स्वयं राक्षसों के राजकुमार को देखते थे, फरि भी उन्होंने उनसे जरा भी डर नहीं दखिाया। उन्होंने तो खुले तौर पर शैतान को लड़ाई के लिए चुनौती भी दी।

[7056] सेंट मार्टनि का मठ पोइटयिर्स से लगभग 8 वर्स्ट की दूरी पर स्थति था। यह पश्चमि में पहला ठीक से संगठति मठ था, और मार्टनि को पश्चमि में मठों के प्रमुख संस्थापकों में से एक माना जाता है।

[7057] उनमें सुल्पसियिस सेवेरस नामक एक धनी व्यक्ति भी था, जो पश्चमिी चर्च के सबसे वद्विान प्राचीन लेखकों में से एक था, जो बाद में मार्टनि का जीवनीकार बना, और संत का एक सबसे करीबी और बेहतरीन शष्यि – गैलस, जसिके ववरिण से सुल्पसियिस ने मार्टनि के जीवन का बहुत कुछ हस्सिा दर्ज कयिा।

वह कहता था, 'अगर तुम पर मेरा कोई अधकिार है, तो अपने कर्मों से इसे साबति करो।'

तब शैतान ने प्रकाश के स्वर्गदूत का रूप धारण करके संत को धोखा देने और बहकाने की कोशशि की, क्योंकि, जैसा कि प्रेरति कहते हैं, कभी-कभी *'शैतान स्वयं प्रकाश के स्वर्गदूत का भेष धारण करता है'* (2 कुरन्थियों 11:14)। और इस प्रकार, एक दनि, जब मार्टनि प्रार्थना कर रहे थे, तो वह उनके सामने प्रकट हुआ, उसके आगे और चारों ओर एक गहरी लाल रोशनी थी, वह शाही वस्त्र पहने हुए था, मोतयिों और सोने के मुकुट से सुसज्जति था, सोने से जड़े चप्पल पहने हुए था, और उसका चेहरा प्रसन्न और आनंदति था। इस असाधारण, अद्भुत साक्षात्कार को देखकर, मार्टनि पहले तो बहुत हैरान हो गए, और दोनों लंबे समय तक चुप रहे। अंत में, शैतान ने कहा:

'क्या तुम जानते हो, मार्टनि, जसिे तुम अभी देख रहे हो? मैं मसीह हूँ। अपनी दूसरी आगमनी से पहले, मैं तुम्हें अपना स्वरूप दखिाना चाहता था।'

संत हचिकचिाए और कोई उत्तर नहीं दयिा।

'तो फरि तुम इस दर्शन पर वशि्वास करने में क्यों हचिकचिा रहे हो?' शैतान ने कहा। 'मैं मसीह हूँ।'

तब मार्टनि, पवत्रि आत्मा से प्रेरति होकर, समझ गए कि यह शैतान था, और कहा:

'मेरे प्रभु यीशु मसीह ने यह वादा नहीं कयिा था कि वह बैंगनी वस्त्रों और एक शानदार मुकुट में प्रकट होंगे। मैं तब तक यह मानना नहीं चाहता कि मैं मसीह के आगमन का साक्षी बन रहा हूँ, जब तक कि वह उसी रूप में नहीं आते जसिमें उन्होंने दुख उठाया था, और सबसे बढ़कर, जब तक कि वह क्रूस पर उठाए गए अपने घावों को स्पष्ट रूप से नहीं दखिाते।'

तब शैतान धुएँ की तरह गायब हो गया और कोठरी में इतनी भयानक बदबू भर दी कि इसमें कोई संदेह नहीं था कि वह शैतान ही था।

फरि भी, इन भ्रामक दृश्यों के साथ-साथ, संत ने परलोक से स्वर्गदूतों और ईश्वर के संतों के सांत्वनादायक और अनुग्रह-पूर्ण साक्षात्कार का भी अनुभव कयिा; इस प्रकार, पवत्रि प्रेरति पतरस और पॉल कई अवसरों पर उन्हें प्रकट हुए और दवि्य प्रेरति वार्तालाप से उन्हें सांत्वना दी। ईश्वर की कृपा स्पष्ट रूप से संत मार्टनि पर वरिाजमान थी, जो उनके सभी शष्यिों की आँखों के सामने, वशिेष रूप से दवि्य लटिर्जी के उनके मार्मकि अनुष्ठान के दौरान और उन क्षणों में जब वे लोगों को आशीर्वाद देते थे, अपनी उपस्थति को स्पष्ट रूप से प्रकट कर रही थी। इस प्रकार, एक अवसर पर उन्होंने देखा कि जब उन्होंने आशीर्वाद देने के लिए अपना दाहनिा हाथ उठाया, तो उसमें से एक अत्यंत असाधारण तेज नकिला। एक अन्य अवसर पर, उन्होंने उनके ललाट के चारों ओर एक तेज प्रकट होते देखा।

'पहाड़ी पर बसा नगर छपि नहीं सकता। और लोग दीया जलाकर उसे घड़े के नीचे नहीं रखते, बल्कि दीवान पर रखते हैं, और वह घर में सबको रोशनी देता है' (मत्ती 5:15)। इस प्रकार, संत मार्टनि के संबंध में, यह सभी के लिए स्पष्ट हो गया कि ईश्वर ने उन्हें केवल एक मठ के एकांत और शांति में मौन परशि्रम के लिए ही नहीं चुना था, बल्कि उन्हें कलीसयिा के दीपकदान पर ऊँचा स्थापति करने के लिए चुना था, ताकि, उनकी अनुग्रह-पूर्ण वरदानों के द्वारा, सत्कर्मों और पवत्रि जीवन द्वारा, वह मसीह के वशिाल झुंड के एक चरवाहे के रूप में वशि्वासयिों को प्रबुद्ध कर सके। उनकी महान और लगातार बढ़ती हुई ख्याति ने यह नशि्चति कर दयिा था कि कोई गरिजाघर की मंडली देर-सवेर बशिप पद के लिए उन्हें बुलाने हेतु उनके पास आएगी। और इसलिए, जब टूर के शहर में बशिप की सीट खाली हुई[7058] , तो लोग संत मार्टनि को अपना बशिप बनाना चाहते थे। लेकनि साथ ही, हर कोई मार्टनि की गहरी वनिम्रता से अवगत था, जसिके कारण उन्होंने पहले एक पुजारी या यहां तक कि एक डीकन के रूप में दीक्षा लेने से लगातार इनकार कयिा था। इसलिए उन्होंने चालाकी और बल का सहारा लेने का फैसला कयिा। रुरसियिस नामक एक नागरकि संत के मठ में आया और उनके पैरों पर गरिकर अपनी बीमार पत्नी के लिए प्रार्थना करने हेतु वनिती करने लगा। संत चले गए; लेकनि वहाँ एक बड़ी भीड़ ने उन्हें घेर लयिा, जसिने उन्हें जबरदस्ती शहर में ले जाकर एक स्वर में बशिप घोषति कर दयिा।

एक बार बशिप के पद पर आसीन होने के बाद, संत मार्टनि बलि्कुल भी नहीं बदले; वे पहले की तरह ही सभी के लिए गहरी वनिम्रता का आदर्श बने रहे, साधारण कपड़ों और अत्यंत मामूली भोजन से संतुष्ट रहे, और अपना अधकिांश समय संन्यासी तपस्या में, दुनयिा से अलग रहकर और मौन की तलाश में बतिाते थे। शहर से बहुत दूर नहीं, उन्होंने अपने संन्यासी तपस्या के लिए एक जंगली, एकांत स्थान चुना; यह जगह चट्टानों से घरिी हुई थी और एक तरफ से लोयर नदी से, और केवल एक ही पैदल रास्ते से पहुँची जा सकती थी। यहाँ, संत मार्टनि ने लकड़ी की एक कोठरी बनाई। एकांत जीवन

[7058] टूर गॉल में, लोयर नदी के बाएं कनिारे पर, पेरसि से 238 वर्स्ट दक्षणि-पश्चमि में एक शहर है।

की तलाश में अन्य तपस्वी भी उनके पास बसने लगे। कुछ ने अपने लिए झोपड़ियाँ बनाईं, जबकि अन्य ने पहाड़ी चट्टानों में गुफाएँ बनाईं। इस प्रकार, संत मार्टिन के चारों ओर 80 तक भाइयों का एक समुदाय इकट्ठा हो गया, और एक नया मठ बसा हुआ। इसे मार्टिन का मठ कहा जाता था, जिसे महान मठ के नाम से भी जाना जाता था, और बाद में मार्मोटियर (7059) के नाम से जाना गया। इस मठ के भिक्षुओं ने मार्टिन के नियम को अपनाया और उनके अनुभवी मार्गदर्शन में उपवास और प्रार्थना के अभ्यास में खुद को समर्पित कर दिया, जो उनकी शिक्षाओं, जो प्रेरणादायक लेकिन सुलभ और सरल थीं, और साथ ही उनके अपने अत्यधिक तपस्वी जीवन के उदाहरण से प्रेरित थे। भाइयों के पास अपना कुछ भी नहीं था; सब कुछ साझा था। उन्हें कुछ भी खरीदने या बेचने की अनुमति नहीं थी, और सभी शारीरिक कार्यों में से, केवल युवा भिक्षुओं को ही पवित्र और शिक्षाप्रद पुस्तकों की पांडुलिपियों की नकल करने की अनुमति थी; दूसरी ओर, वरिष्ठ पूरी तरह से प्रार्थना में लगे रहते थे। वे सामूहिक पूजा को छोड़कर शायद ही कभी अपनी कोठरियों से बाहर निकलते थे; शायद बीमारों को छोड़कर कोई शराब नहीं पीता था; उनका भोजन, जो वे दिन में केवल एक बार खाते थे, केवल रोटी, सब्जियां और जैतून से मिलकर होता था; उनके कपड़े ऊँट के मोटे बालों से बने होते थे, हालांकि उनमें से कई भिक्षु कुलीन जन्म के थे। भाई बिना शर्त आज्ञाकारिता में और, अधिकांशत; मौन में रहते थे। इस मठ से काफी संख्या में बिशप हुए जिन्होंने मूर्तिपूजकों के बीच ईसाई ज्ञान का प्रसार करने के लिए बहुत प्रयास किया।

संत मार्टिन ने स्वयं मूर्तिपूजकों को धर्मांतरित करने के लिए उत्साहपूर्वक काम किया और गाउल के अधिकांश भाग में मूर्तिपूजा को समाप्त कर दिया। इस प्रेरितिक सेवा में, उन्होंने स्वयं को मसीह की सच्चाई का एक साहसी, निडर और आत्म-बलिदानी प्रचारक साबित किया। इस उद्देश्य के लिए, मार्टिन अक्सर अपने प्रिय मठ को छोड़कर पड़ोसी क्षेत्रों की यात्रा करते थे, मूर्तिपूजकों के पवित्र स्थलों को नष्ट करते और पवित्र पेड़ों को काट देते थे; उन्होंने चर्च बनाए और मूर्तिपूजकों को ईसाई धर्म में शिक्षित किया। संत मार्टिन का सुसमाचार का प्रचार और भी अधिक सफल था क्योंकि इसके साथ अक्सर चिह्नों और आश्चर्यों का साथ रहता था, जिन्हें संत सभी अविश्वासियों के सामने मसीह की शक्ति से करते थे। जिस पहले स्थान पर मूर्तिपूजकों ने धर्म परिवर्तन किया, वह अंबोइस था[7060] । वहाँ अपने उपदेश द्वारा एक चर्च स्थापित करने के बाद, उन्होंने इसका प्रशासन और देखभाल अपने कुछ शिष्यों को सौंप दी। लेकिन वहाँ मूर्तिपूजा अभी भी मजबूत थी, और ईसाइयों को अविश्वासियों से बहुत खतरा था; क्योंकि वहाँ अभी भी एक बड़ा मूर्तिपूजक मंदिर खड़ा था, जिसकी लोग पूजा करते थे। संत मार्टिन के शिष्यों ने संत के आदेश के बावजूद मूर्तिपूजा के इस स्थल को नष्ट करने की हिम्मत नहीं की। मार्टिन स्वयं अंबोइस लौट आए, लेकिन उन्हें एहसास हुआ कि मंदिर को गिराना वास्तव में मुश्किल होगा। तब उन्होंने एक सुनसान जगह चुनी और पूरी रात ईश्वर से भक्तिपूर्वक प्रार्थना करते हुए बिताई। और प्रभु ने अपने इस विश्वासयोग्य सेवक की प्रार्थना सुनी: सुबह एक भयंकर तूफ़ान उठा, जिसने उस मूर्तिपूजक मंदिर को धूल चटा दी और उसमें रखी मूर्ति को चकनाचूर कर दिया।

सुसमाचार का प्रसार करने के लिए एडुआन[7061] भूमि में यात्रा करते हुए, संत मार्टिन अगस्तोडोना[7062] शहर पहुँचे और वहाँ उन्होंने पवित्र शहीद सिम्फोरियन की कब्र पर प्रार्थना करने और बिशप सिम्पलिसियस की मूर्तिपूजा को खत्म करने में सहायता करने के लिए रुकें। जिस चैपल में संत सिम्फोरियन[7063] के अवशेष रखे गए थे, उसके पास सारोन[7064] को समर्पित एक मूर्तिपूजक मंदिर था, जहाँ मूर्तिपूजकों के बीच सबसे सम्मानित पुरोहित - सारोन के तथाकथित ड्रुइड्स[7065] - रहते थे। संत मार्टिन ने निडर होकर इस मूर्तिपूजक मंदिर में प्रवेश किया और सारोन की मूर्ति और वेदी को गिरा दिया। उस क्षण, इस कृत्य से क्रुद्ध हो कर सशस्त्र मूर्तिपूजकों की भीड़ ने उन पर हमला कर दिया। उनमें से एक, जो सबसे धूर्त था, ने पहले ही अपनी तलवार उनके ऊपर तान रखी थी, लेकिन एक अदृश्य शक्ति ने उसे संत के

[7059] मार्मूटीयर का मठ बाद में बहुत प्रसिद्ध हो गया और इसने न केवल गॉल में बल्कि पूरे पश्चिम में मठवाद के इतिहास में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

[7060] अम्बोइस टूर से 22 वर्स्ट दूर एक शहर है।

[7061] एडुआ का क्षेत्र पेरिस के दक्षिण-पूर्व में, लोइर और सॉन नदियों के बीच स्थित था।

[7062] ऑगस्टोडोन एदुआइ लोगों का प्रमुख नगर था, जो एदुआ क्षेत्र में रहते थे; आज यह लोइर-एट-सोन विभाग में ऑटन के नाम से जाना जाता है, जहाँ कई खंडहर हैं।

[7063] संत सिम्फोरियन, रोमन चर्च द्वारा पूजे जाने वाले एक शहीद, † 178 में सम्राट मार्कस ऑरेलियस के अधीन।

[7064] सैरोन – गॉल का एक पौराणिक राजा, जिसे एदुई लोग एक देवता और अपने देश के संरक्षक के रूप में पूजते थे।

[7065] ड्रूइड्स – उच्चतम पुरोहित वर्ग, जो प्राचीन काल से गॉल पर सर्वोच्च शासन करता था और गॉलवासियों के बीच अपार सम्मान और प्रभाव का आनंद लेता था।

चरणों में गरि दयि; और, भय से ग्रस्त होकर, उस अभद्र मूर्तपिूजक ने नम आँखों से वनिम्रतापूर्वक संत से क्षमा और दया की भीख माँगनी शुरू कर दी। इस चमत्कार को देखकर, वहाँ मौजूद सभी अन्य मूर्तपिूजक मसीह में वशि्वास करने लगे, और मूर्तपिूजक मंदरि सच्चे ईश्वर के एक पवत्रि स्थल में बदल गया।

लेप्रोज़े गाँव में[7066] संत की प्रार्थना से एक और कम आश्चर्यजनक चमत्कार नहीं हुआ। प्रेरतिीय उत्साह से प्रेरति होकर, वह वहाँ के मंदरि को भी नष्ट करना चाहता था, जसिे मूर्तपिूजकों द्वारा बहुत पूजति माना जाता था; लेकनि वहाँ के नविासयिों ने उसे भगा दयि। फरि वे गाँव के पास सबसे नजदीकी सुरक्षति स्थान पर चले गए, जहाँ वे तीन दनिों तक उपवास और प्रार्थना में रहे, और ईश्वर से उस मूर्तपिूजक मंदरि को नष्ट करने की वनिती करते रहे। उनकी प्रार्थना के प्रतउित्तर में, दो तेजस्वी स्वर्गदूत उनके सामने प्रकट हुए, जो कवच पहने हुए थे, और उन्होंने घोषणा की कि उन्हें ईश्वर द्वारा मूर्तपिूजकों के वरिुद्ध उनकी सहायता के लिए भेजा गया था।

यह सुनकर, मार्टनि तुरंत गाँव में लौट आए और मसीह की कृपा की शक्ति से, लोगों की आँखों के सामने वेदयिों और मूर्तयिों को चमत्कारकि रूप से धूल में बदल दयि, जो एक अदृश्य दैवीय शक्ति से बँधे हुए थे। ऐसे चमत्कार और मंदरि के अद्भुत वनिाश को देखकर, उस गाँव के नविासयिों ने मूर्तयिों की व्यर्थता को पहचाना और मसीह की ओर मुड़ गए।

एक अवसर पर, संत मार्टनि अपने कुछ शष्यिों के साथ, कार्नोट शहर[7067] की ओर जाते समय एक घनी आबादी वाले गाँव के पास से गुजर रहे थे। एक वशिाल भीड़ उनका स्वागत करने के लिए बाहर आई, जसिमें पूरी तरह से मूर्तपिूजक थे, क्योंकि उस क्षेत्र में कोई भी मसीह को नहीं जानता था या ईसाई धर्म की सच्चाइयों के बारे में नहीं सुना था। इस संत की कीर्ति इतनी महान थी कि यह pagans (मूर्तपिूजकों) की भीड़ को भी अपनी ओर खींच लाई, जो दूर-दूर तक खेतों में फैल गई। मार्टनि ने देखा कि उन्हें कार्य करना चाहिए और इस अवसर का लाभ उठाकर अवशि्वासयिों को मसीह की ओर ले जाना चाहिए। और इस प्रकार, पवत्रि आत्मा से प्रेरति होकर, उन्होंने ऊँचे स्वर में अपना जोशीला उपदेश देना शुरू कयि, और मूर्तपिूजकों को परमेश्वर का वचन सुनाते हुए अक्सर अपनी आत्मा की गहराई से आहें भरते थे कि इतने बड़े जनसमूह को प्रभु उद्धारकर्ता के बारे में पता नहीं था।

उसी क्षण, एक महलिा जसिका बेटा हाल ही में मर गया था, अपने मृत बेटे का शरीर लेकर आई और उसे संत के पैरों में रखकर, उसकी ओर अपने हाथ फैलाकर, बोली:

'हम जानते हैं कि आप परमेश्वर के मत्रि हैं। मेरे पुत्र को मुझे लौटा दें, क्योंकि वह मेरा एकलौता पुत्र है।'

भीड़ उस शोकाकुल माँ के साथ शामलि हो गई और उसकी वनितयिों को दोहराने लगी।

संत मार्टनि ने मृतक के शव को अपने हाथों में लयि, सभी लोगों के साथ घुटने टेककर एक प्रार्थना की, और उठकर लड़के को उसकी माँ के पास जीवति लौटा दयि। यह देखकर, वहाँ मौजूद सभी लोगों ने सर्वसम्मति से मसीह को परमेश्वर के रूप में स्वीकार कयि और संत के पैरों पर लोटकर उनसे वनिती की कि वे उन्हें ईसाई बना दें। संत ने बनिा कसिी देरी के, वहीं खेत में, उन पर अपना हाथ रखा और उनके लिए सत्य का वचन प्रचारति कयि। इस चमत्कार की खबर[7068] में पूरे देश में तेजी से फैल गई। उसी सफलता के साथ, संत मार्टनि ने गॉल के अन्य क्षेत्रों में भी सुसमाचार का प्रकाश फैलाया।

एक अवसर पर, इवान्फयिस नामक एक सामान्य व्यक्ति, जो एक गंभीर बीमारी से पीड़ति था और मृत्यु के कगार पर था, ने मार्टनि को अपने बस्तिर पर बुलाया। संत तुरंत उसके लिए रवाना हो गए; लेकनि आधे रास्ते में ही पहुँचने से पहले, उस बीमार व्यक्ति ने, पास आते संत की शक्ति का अनुभव कर और अचानक स्वस्थ हो जाने पर, स्वयं संत मार्टनि और उनके साथ आए शष्यिों से मलिने के लिए बाहर आ गया। अगले दनि, मार्टनि अपनी वापसी की यात्रा पर नकिलने वाले थे, लेकनि उन्होंने उस व्यक्ति की बार-बार की वनिती पर रुकने का नर्णिय लयि जसिे उन्होंने ठीक कयि था। इस बीच, एवानफयिा के परविार के एक छोटे लड़के को एक साँप ने जानलेवा डँस लयि था। एवानफयिा उस मरणासन्न लड़के को अपने कंधों पर उठाकर संत के चरणों में ले गया, अपनी महान चमत्कारी शक्ति पर भरोसा करते हुए और इस बात से आश्वस्त था कि उसके लिए कुछ भी असंभव नहीं था। साँप का वषि पहले ही लड़के के पूरे अंगों में फैल चुका था; उसकी नसें सूज गई थीं, और उसके अंदरूनी अंग एक फुस्सी की तरह फूल गए थे। मार्टनि ने अपना हाथ बढ़ाया, उसे लड़के के पूरे

[7066] लेप्रोज़ – अब लेव्रू, पेरसि के दक्षणि में लगभग 250 वर्स्ट की दूरी पर एक छोटा शहर।

[7067] कार्नोट – अब चार्त्रेस, पेरसि से 84 वर्स्ट दक्षणि-पश्चमि में एक शहर।

[7068] इस चमत्कार की स्मृति में, बाद में चार्त्रेस में 'संत मार्टनि दयालु, जीवन दाता' को समर्पति एक चर्च का नर्मिाण कयि गया।

शरीर पर फेरा, और साँप के घातक डंक से हुए घाव के ठीक पास अपनी उंगली रखी। और फरि वहाँ मौजूद सभी लोग यह देखकर चकति रह गए कि विषि लड़के के पूरे शरीर से सेंट मार्टनि की उंगली की ओर बहने लगा और घाव से खून के साथ बाहर नकिलने लगा। इसके बाद, लड़का पूरी तरह से स्वस्थ होकर अपने पैरों पर खड़ा हो गया, और इस चमत्कार के सभी साक्षी उस ईश्वर की स्तुति करने लगे, जो अपने संतों में अद्भुत हैं।

संत मार्टनि ने कार्नोटा शहर में एक गूंगी लड़की के संबंध में एक कम आश्चर्यजनक चमत्कार नहीं कयिा। जन्म से गूंगी एक बारह वर्षीय लड़की को मार्टनि के पास लाया गया। उसके पति ने संत से वनिती की कि वे अपनी प्रार्थना के द्वारा उसकी जीभ को खोल दें। संत ने यह कार्य अपने साथ मौजूद बशिप वेलेंटाइन और वकि्टोरयिस को सौंप दयिा, यह कहते हुए कि यह उनके बस की बात नहीं थी, और यह कि उनके लिए, जो सद्गुण में अधकि पूर्ण थे, सब कुछ संभव था। लेकनि उन्होंने, उस दुर्भाग्यपूर्ण पति की वनितयिों में अपनी प्रार्थनाएँ जोड़कर, मार्टनि को वह चमत्कार करने के लिए मना लयिा जसिकी उनसे उम्मीद की जा रही थी। तब मार्टनि ने इकट्ठी भीड़ को पीछे हटने का आदेश दयिा और केवल बशिपों तथा युवती के पति की उपस्थति में, उन्होंने भक्तपिूर्वक प्रार्थना करते हुए स्वयं को भूमि पर लोट दयिा; फरि उन्होंने थोड़ा सा तेल आशीर्वाद दयिा और उसे अपनी उंगलयिों के बीच उसकी जीभ को पकड़कर युवती के मुँह में डाल दयिा। और एक अद्भुत चमत्कार ने संत के वशि्वास को सही साबति कयिा। जब संत ने लड़की से उसके पति का नाम पूछा, तो उसने तुरंत स्पष्ट रूप से उत्तर दयिा - और उसके पति, संत के घुटनों को पकड़कर, खुशी और आँसुओं के साथ चलि्लाए और वहाँ मौजूद सभी लोगों के सामने गवाही दी कि यह उनकी बेटी का पहला शब्द था।

एक बार, जब मार्टनि एक बड़ी भीड़ के साथ पेरसि में प्रवेश कर रहे थे, तो उनकी नज़र एक बहुत ही दयनीय हालत में पड़े कुष्ठरोगी पर पड़ी, जसिे हर कोई दूर भागता था। लेकनि संत ने उस पर दया करके उसे चूमा और आशीर्वाद दयिा – और देखो, वह पीड़ति अचानक अपनी कुष्ठ रोग से मुक्त हो गया और ठीक अगले ही दनि चर्च आकर अपने ठीक होने के लिए धन्यवाद अर्पति करने लगा।

पॉलनि, एक धार्मकि राजनेता जो बाद में अपने पवत्रि जीवन के लिए प्रसद्धि हुए, आँखों की बीमारी से बुरी तरह पीड़ति होने लगे, और उनकी दृष्टि पिहले ही धुंधली हो चुकी थी; लेकनि संत मार्टनि ने कपड़े के एक टुकड़े से उनकी आँख को छुआ, और दर्द तुरंत ही गायब हो गया।

संत मार्टनि के दुर्भाग्यशाली और गरीबों के प्रति दान-पुण्य और ईसाई प्रेम के कार्य अनगनित थे, जसिके लिए उन्हें 'दयालु' की उपाधि मिली। एक दनि सर्दयिों के महीनों में, चर्च जाते समय, वे एक अर्धनग्न भखिारी से मलि, जसिने उनसे कपड़े मांगे। संत ने आर्चडीकन को बुलाया और उसे काँपते हुए आदमी को कपड़े पहनाने का आदेश दयिा; फरि, सैक्रेस्टी[7069] में प्रवेश करके, वह अपनी आदत के अनुसार अकेले बैठ गए ; लेकनि चूंकि डीकन ने भखिारी को कोई कपड़े नहीं दिए, वह उस धन्य व्यक्ति के पास आ धमका और पुरोहति तथा ठंड के बारे में शकिायत करने लगा। तब संत ने चुपके से अपनी बाहरी पोशाक के नीचे से अपनी ट्यूनकि[7070] उतार ली, गरीब आदमी को उसे पहनकर जाने का आदेश दयिा। कुछ ही देर बाद, डीकन ने प्रवेश कयिा और पवत्रि बशिप को सूचति कयिा कि गंभीर अनुष्ठान का समय आ गया है, क्योंकि लोग चर्च में प्रतीक्षा कर रहे थे। इस पर संत ने स्वयं से कहते हुए उत्तर दयिा:

'पहले गरीब को कपड़े पहनाए जाएँ: जब तक गरीब को कपड़े नहीं मलि जाते, मैं चर्च नहीं जा सकता।'

दीकन कुछ समझ नहीं पाया, क्योंकि उसने यह नहीं देखा था कि संत के कपड़े नीचे नहीं थे, और वह बहाने बनाने लगा कि उसे वह गरीब आदमी नहीं मलि रहा है।

लेकनि मार्टनि ने ज़ोर देकर कहा:

'वे मुझे तैयार कए गए कपड़े लाएँ: गरीब आदमी को नग्न नहीं छोड़ा जाएगा।'

ज़रूरत के मारे, गुस्से में आकर, उस पादरी ने पड़ोस की दुकानों से पाँच सक्किों में एक छोटा, मोटा कपड़ा छीन लयिा और गुस्से में मार्टनि के पैरों तले फेंकते हुए कहा:

'कपड़े तो ये हैं, लेकनि कोई गरीब आदमी नहीं है।'

हालांकि, संत ने शांति से उन्हें दरवाजों के बाहर थोड़ी देर इंतजार करने का नरि्देश दयिा और, चुपके से वे कपड़े पहनकर, लटिर्जी का अनुष्ठान करने के लिए चर्च के अंदर चले गए। और प्रभु ने इस गुप्त ईसाई परोपकार के कार्य के

[7069] सचविालय चर्च से संलग्न एक वशिेष वभिाग था।

[7070] ट्यूनकि – रोमन नागरकिों का साधारण अंतर्वस्त्र – एक प्रकार की कमीज़ थी और यह अधकितर ऊन से बनी होती थी।

लिए मार्टिन को तुरंत पुरस्कृत किया। उस दिन, जब वह दिव्य सेवा के दौरान वेदी का आशीर्वाद दे रहे थे, तो उनके सिर से एक अग्निमय गोला चमक उठा, जिसकी लपट ऊपर उठकर एक लंबी किरण बन गई। उस दिन, लोगों की एक बड़ी भीड़ की उपस्थिति में, इस शानदार घटना को केवल कुछ चुनिंदा लोगों ने ही देखा, अर्थात्: संत मार्टिन के एक धार्मिक शिष्य गैल नामक, एक कुंवारी, एक पुरोहित, और तीन भिक्षु।

मार्टिन को उनकी कोमलता के कारण मूर्तिपूजकों ने भी प्रेम किया। उनके लगभग कोई दुश्मन नहीं थे, लेकिन अगर कोई थे, तो वे उन गुणों के कारण उनसे घृणा करते थे जो उनमें स्वयं नहीं थे और न ही वे उनका अनुकरण कर सकते थे। इस बीच, मार्टिन ने कभी किसी की निंदा नहीं की, और न ही उन्होंने बुराई का बदला बुराई से लिया। सभी अपमानों के सामने, वह इतने धैर्यवान थे कि कभी-कभी उनके पादरी वर्ग के निचले रैंक के लोगों द्वारा बिना किसी दंड के उनका अपमान किया जाता था: उन्होंने उन्हें उनके द्वारा पहुँचाए गए दुख के लिए कभी पदच्युत नहीं किया और, जहाँ तक उनका सवाल था, उन्होंने उनसे अपना प्यार कभी नहीं छीना। कोई भी उसे कभी गुस्से में, परेशान, या हँसते हुए नहीं देख पाया। वह हमेशा एक जैसा ही रहता था, उसके चेहरे पर स्वर्गीय आनंद जैसा कुछ होता था। उसके होठों पर हमेशा मसीह का नाम ही होता था। उसके हृदय में कभी भी भक्ति, शांति और करुणा के सिवा कुछ नहीं था। वह अक्सर अपने निंदकों में से उन लोगों के पापों पर भी रो पड़ता था, जो उसकी उपस्थिति में या उसकी अनुपस्थिति में, साँप जैसे होठों और विषैली जीभों से उस पर हमला करते थे।

निम्नलिखित उदाहरण उनके अपमान करने वालों के प्रति संत मार्टिन के धैर्य और नम्रता को स्पष्ट रूप से दर्शाता है। मठ में पादरियों के बीच ब्रिक्टियस नाम का एक युवक था, जो सबसे निम्न सामाजिक वर्ग से आया था, लेकिन मार्टिन ने उसे आश्रय दिया, पाला-पोसा और बाद में उसे एक डिकन के रूप में नियुक्त किया। दुष्ट आत्माओं के उकसावे पर, ब्रिक्टियस ने अपने सौम्य स्वभाव वाले गुरु की उनके सामने और उनकी पीठ पीछे, दोनों ही जगह बहुत बुरी तरह निंदा करना शुरू कर दिया। उस संत ने उसे कोमल उपदेशों से होश में लाने की कोशिश की; लेकिन इस पागल पर इसका कोई असर नहीं हुआ, और वह अंत में भाग जाने से पहले और भी बड़ी-बड़ी कुतर्कें बकता रहा। रास्ते में एक बीमार व्यक्ति से मिलने पर, जिसने उनसे संत मार्टिन को कहाँ मिल सकता है, यह पूछा, ब्रिक्टियस ने संत को एक बूढ़ा धोखेबाज़ और अन्य अपमानजनक नामों से पुकारा। जब, कुछ ही समय बाद, इस बीमार व्यक्ति के ठीक हो जाने के बाद, मार्टिन ब्रिक्टियस से मिले, तो उन्होंने उससे बस सौम्य स्वर में पूछा:

'तुमने मुझे धोखेबाज़ क्यों कहा?'

'मैंने तुम्हें कभी ऐसा नहीं कहा,' डीकन ने उत्तर दिया।

संत ने टिप्पणी की, 'क्या मेरा कान तुम्हारे होठों पर नहीं था, जबकि तुम मेरी पीठ पीछे बात कर रहे थे?' 'तुम भी, जब मैं मर जाऊँगा, एक बिशप बन जाओगे, और तुम्हें बहुत कष्ट सहना पड़ेगा।'

इसके बाद, ब्रिक्टियस को पागलपन के दौरे पड़ने लगे, और एक बार, जब मार्टिन अपनी कोठरी के सामने एक बेंच पर बैठे थे, ब्रिक्टियस गुस्से भरी गालियों के साथ उन पर टूट पड़ा; पास की चट्टानों पर, वह दो राक्षसों को देख सकते थे जो उसे पागलपन के लिए उकसा रहे थे।

'मैं तुमसे अधिक पवित्र हूँ,' डीकन ने कहा, 'मेरा पालन-पोषण एक मठ में हुआ, जबकि तुम कभी एक सैनिक थे।'

भाइयों ने मांग की कि ब्रिक्शियस को सबक सिखाया जाए और उसे पदच्युत किया जाए; लेकिन मार्टिन ने शांति से उसके अपमान को सह लिया। जब, कुछ ही समय बाद, ब्रिक्शियस—संत की नम्रता से प्रभावित होकर—होश में आया और पश्चाताप से ग्रस्त होकर उसके पैरों में गिर पड़ा, तो मार्टिन ने बस इतना कहा:

'ब्रिक्टियस ने केवल स्वयं को ही हानि पहुँचाई है, मुझे नहीं। प्रभु यीशु मसीह ने तो यहूदा को भी अपनी उपस्थिति में बर्दाश्त किया था: तो क्या मुझे इस युवक को अपनी उपस्थिति में बर्दाश्त नहीं करना चाहिए?'

मार्टिन की भविष्यवाणी सच हुई। बाद में ब्रिकिशियस इतना बदल गया कि संत की मृत्यु पर, उसे उनका उत्तराधिकारी नियुक्त किया गया, जिसके बाद उसे बहुत दुःख और निंदा सहनी पड़ी, और फिर वह शांति से मर गया[7071] ।

[7071] ब्रसियिस को मार्टिन के बाद टूर के बिशप के रूप में चुना गया था, लेकिन 33 साल बाद एकमात्र झूठे आरोप के आधार पर लोगों ने उसे अपमानित करके भगा दिया; केवल सात साल के कड़वे निर्वासन के बाद ही उसे अपने बिशप पद पर बहाल किया गया, जहाँ अंततःवह शांतिपूर्वक निधन कर गया। ब्रिक्टियस ने अपने चरित्र में इतना परिवर्तन कर लिया था और अपने पुण्य जीवन के लिए इतने प्रसिद्ध हो गए थे कि बाद में उन्हें रोमन चर्च द्वारा संत घोषित कर दिया गया (उनका पर्व दिवस वहाँ 13 नवंबर को मनाया जाता है)।

निम्नलिखित उदाहरण यह दर्शाते हैं कि संत मार्टिन का प्रभाव इस दुनिया के शक्तिशाली लोगों सहित, सबसे अहंकारी और कठोर-हृदय लोगों पर भी कितना अप्रतिरोध्य और शक्तिशाली था। अपनी संतता की शुरुआत में ही, क्रूर प्रांतीय गवर्नर एविशियस के दौरे से टूरस में दहशत फैल गई, जिसकी क्रूरता जंगली जानवरों से कम नहीं थी। उनके दल के पीछे कैदियों की लंबी कतारें थीं, जिनकी फांसी देने का क्रूर राज्यपाल का इरादा शहर में दहशत फैलाने के लिए था। दयालु मार्टिन, राज्यपाल के क्रोध से अविचलित, ने अपने कैदियों और अपने बिशप के शहर, दोनों की ओर से मध्यस्थता करने का संकल्प लिया, और आधी रात को अविशियिन के महल के द्वारों की ओर निकिल पड़े। उस रात, राज्यपाल की बेचैन नींद अचानक एक जोरदार झटके से टूट गई, और एक अज्ञात आवाज़ ने उससे कहा:

'तुम यहाँ सो रहे हो, जबकि ईश्वर का सेवक तुम्हारे दरवाज़े के बाहर, तुम्हारे दहलीज पर पड़ा है।'

अविटियिन ने अपने नौकरों को दरवाज़ों के बाहर देखने का आदेश दिया, लेकिन एक सरसरी जांच के बाद, उन्होंने उसे आश्वासन दिया कि यह महज़ उसकी कल्पना है; इसलिए, आश्वस्त होकर, वह फिर से सो गया, लेकिन कुछ ही देर बाद एक ज़ोरदार आवाज़ से उसकी नींद फिर टूट गई: 'मार्टिन दरवाज़े पर खड़े हैं।' तब नौकरों ने पाया कि वास्तव में ऐसा ही था। प्रांतीय गवर्नर ने संत को अपने सामने लाने का आदेश दिया और उससे पूछा:

'तुमने ऐसा क्यों किया?'

संत मार्टिन ने साहसपूर्वक उत्तर दिया, 'मैं आपके इरादे को जानता था, इससे पहले कि आप उसे बोलते भी। जाइए, और स्वर्ग के क्रोध को आपको नष्ट न करने दें।'

संत की प्रेरित, भविष्यसूचक आवाज़ से भयभीत और अपने ही अंतरात्मा द्वारा फटकारे जाने पर, अविटियिन ने तुरंत उनका आदेश पालन किया: उसने कैदियों को आज़ाद कर दिया और शहर छोड़ दिया। संत मार्टिन की फटकारों का इस क्रूर प्रांतीय गवर्नर के चरित्र पर लाभकारी प्रभाव पड़ता रहा। एक अवसर पर, जब अविटियिन एक बार फिर टूर शहर आए, तो संत उनके कमरे में आए और चुपचाप, ध्यान से उन्हें घूरने लगे।

अवितियिन ने पूछा, 'हे पवित्र पुरुष, आप मुझे इतनी तीव्रता से क्यों घूर रहे हैं?'

मार्टिन ने उत्तर दिया, 'मैं तुम्हें नहीं देख रहा हूँ, बल्कि तुम्हारी गर्दन पर बैठे घृणित राक्षस को देख रहा हूँ।'

और एक बार फिर, संत के शब्दों का सकारात्मक प्रभाव पड़ा और इस क्रूर प्रांतीय गवर्नर को अपने बुरे इरादों को अंजाम देने से रोक दिया।

सम्राट वैलेंटाइनियिन प्रथम[7072] , ने संत मार्टिन की प्रसिद्धि के बारे में हर तरफ से सुनकर, उनके साथ मैत्रीपूर्ण संबंध बनाने की इच्छा व्यक्त की; लेकिन उनकी पत्नी जस्टिना, जो एक कट्टर एरियिन थी, ने उन्हें ऐसा करने की अनुमति नहीं दी। इसलिए, जब मार्टिन एक बार महत्वपूर्ण कार्य से ट्रायर[7073] पहुँचे, जहाँ उस समय सम्राट का दरबार था, तो सम्राट—जो अपनी पत्नी के प्रभाव में उनके प्रति पक्षपाती थे—ने उन्हें मिलने से इनकार कर दिया। सम्राट के सामने उपस्थिति होने के व्यर्थ प्रयासों के बाद, संत ने प्रार्थना और उपवास में स्वयं को समर्पित कर दिया। सातवें दिन, एक देवदूत उसे दिखाई दिया और उसने उसे महल जाकर सम्राट से मिलने का आदेश दिया। यह दैवीय प्रेरणा प्राप्त करने के बाद, मार्टिन महल की ओर तेजी से बढ़ा और दरवाजे खुले देखकर बिना किसी पूर्व सूचना के सम्राट के सामने उपस्थित हो गया। वैलेंटाइनियिन बहुत क्रोधित हो गया, लेकिन अचानक उसे ऐसा लगा मानो उसके नीचे का सिंहासन पूरी तरह से नीचे से आग में घिर गया हो। उठने के लिए विवश होकर, उसने अचानक अपना व्यवहार बदल लिया और संत का गर्मजोशी से स्वागत किया; उसने उनसे देर तक बातचीत की, उन्हें कई और दिनों तक अपने पास एक प्रिय अतिथि के रूप में रखा, उन्हें वादा किया कि वे जो भी माँगेंगे, वह सब कुछ दे देंगे, और, विदा लेते समय, उन्हें शानदार उपहार दिए, जिन्हें संत ने, हालाँकि, उन्होंने इनकार कर दिया, जिससे उन्हें और भी अधिक सम्मान मिला।

वर्ष 383 में, रोमन सैनिकों ने मैक्सिमिस को सम्राट घोषित कर दिया, जबकि वैलेंटाइनियिन प्रथम के पुत्र और उत्तराधिकारी - ग्रेटियिन[7074] - को सैनिकों के एक विद्रोह के परिणामस्वरूप हराकर मार दिया गया; उनके भाई, वैलेंटाइनियिन द्वितीय, को भागने के लिए मजबूर होना पड़ा और उन्हें सिंहासन से वंचित कर दिया गया, और वे केवल अपने साम्राज्य का एक हिस्सा ही रख सके। तब संत मार्टिन सम्राट मैक्सिमिस से मिलने और उन लोगों के लिए मध्यस्थता करने के लिए ट्रायर के लिए रवाना हुए, जो ग्रेटियिन के पक्ष में थे और अब मृत्यु के खतरे का सामना कर रहे थे। मैक्सिमिस

[7072] वैलेन्टिनियिन प्रथम – पश्चिमी रोमन साम्राज्य का सम्राट – ने 364 से 375 तक शासन किया।

[7073] ट्रायर या ट्रेवी प्राचीन गॉल के उत्तरी क्षेत्र (जिसे बेलजिक कहा जाता था) की एक घनी आबादी वाली, समृद्ध राजधानी थी।

[7074] ग्रेटियिन – पश्चिमी रोमन साम्राज्य का सम्राट 375 से 383 तक।

के लिए पादरियों की वफादारी सुनिश्चित करना, और सबसे बढ़कर, यदि संभव हो तो, सेंट मार्टिन जैसे प्रिय और प्रसिद्ध बिशप की वफादारी हासिल करना अत्यंत महत्वपूर्ण था। इसलिए उन्होंने उनके आगमन का बहुत अनुकूलता से स्वागत किया और संत को शाही दावत के लिए महल में आमंत्रित किया। लेकिन मार्टिन ने मना कर दिया और असाधारण साहस के साथ जवाब दिया:

'मैं उस व्यक्ति की मेज़ पर नहीं बैठ सकता जिसने एक सम्राट की जान और दूसरे का सिंहासन छीन लिया है।'

साथ ही, मार्टिन ने सम्राट को चेतावनी दी कि यद्यपि वह अपनी पहलों में प्रारंभ में सफल रहा था, उसका शासन अल्पकालिक होगा और एक त्वरित पतन उसकी प्रतीक्षा कर रहा था[7075] . मैक्सिमिस ने अपने क्रोध पर काबू पाया और संत को विश्वासपूर्वक समझाया कि उसने स्वयं अपनी इच्छा से ताज नहीं पहना था, बल्कि उसके सैनिकों ने राज्य को उसके शत्रुओं से बचाने के लिए यह ताज उसके सिर पर रखा था। अंततः सम्राट के आग्रह के आगे झुकते हुए, संत मार्टिन शाही भोज में शामिल होने के लिए सहमत हो गए, जिसमें उच्चतम रैंक के अधिकारी और सबसे प्रतिष्ठित हस्तियाँ एकत्रित थीं; मार्टिन को सबसे बड़े सम्मान की जगह पर बिठाया गया, जबकि उनके साथ आए पादरी को सम्राट के भाई और चाचा के बीच एक सीट दी गई। भोज के दौरान, सम्राट को शराब का एक प्याला परोसा गया, और उन्होंने आदेश दिया कि उसे पहले मार्टिन को पेश किया जाए, ताकि वह उसे संत के हाथों से वापस प्राप्त कर सके। लेकिन मार्टिन ने उसमें से एक घूंट लेकर, उसे सम्राट को वापस नहीं किया, बल्कि वहाँ मौजूद लोगों में से एक को दे दिया, मानो वह सम्राट से उच्च पद का व्यक्ति हो। इससे सम्राट और वहाँ मौजूद सभी लोग चकित रह गए। हालाँकि, मैक्सिमिस न केवल नाराज़ नहीं हुए, बल्कि उस समय से उन्होंने संत मार्टिन का और भी अधिक सम्मान करना शुरू कर दिया। सम्राट अक्सर मार्टिन को बुलाते थे और अपने महल में उनका सम्मानपूर्वक स्वागत करते थे, उनसे समकालीन मामलों के साथ-साथ आने वाले जीवन, संतों की शाश्वत महिमा और आत्मा के लिए लाभकारी अन्य विषयों पर बातचीत करते थे। इस बीच, धर्मपरायण महारानी ने गहरी भावना और आँसुओं के साथ संत मार्टिन की पवित्र बातचीत और शिक्षाओं को सुना; और अंत में, अपने पति की सहमति से, उन्होंने केवल संत मार्टिन के लिए अपने घर पर एक भोजन का आयोजन किया, जिसे उन्होंने अपने हाथों से तैयार किया, उनके पैरों में बैठकर स्वयं परोसा, और उन्हें भोजन और पेय की पेशकश की; फिर, भोजन के अंत में, उसने सभी बचे हुए टुकड़ों और बचे हुए भोजन को इकट्ठा किया और उनसे अपने लिए भोजन बना लिया। लेकिन संत मार्टिन ने यह सब अत्यंत विनिम्रता से लिया, और अपने दिल और दिमाग में वह अपने मठ की कोठरी में, उन साधारण भिक्षुओं के बीच रहे, जिन्हें उन्होंने अपने चारों ओर इकट्ठा किया था।

अपने जीवन के अंत के करीब, मार्टिन ने यह सुनकर कि कांडा जिले के पादरियों के बीच एक तीव्र विवाद उत्पन्न हो गया था[7076] , झगड़ालू पादरियों के बीच सामंजस्य बहाल करने के लिए वहाँ जल्दी से पहुँचे। अपने भिक्षुओं को बुलाने के बाद, उन्होंने उन्हें अपनी मृत्यु के निकट आने की भविष्यवाणी की, और उनके आँसुओं और विलापों के बीच अपनी यात्रा पर निकल पड़े। कांडा में शांति बहाल करने के बाद, संत वहाँ एक तेज बुखार के शिकार हो गए और, यह महसूस करते हुए कि उनका अंत निकट है, उन्होंने अपने शिष्यों को आदेश दिया कि उन्हें एक कफ़न और राख में लपेटकर फर्श पर लिटा दें, क्योंकि, उनके अपने शब्दों में, ईसाइयों को इसी तरह मरना चाहिए। जब वह वहाँ लेटे थे, तो उन्हें ऐसा लगा कि उन्होंने शैतान को अपने पास खड़ा देखा।

संत ने कहा, 'हे भयानक दानव, तुम यहाँ क्यों खड़े हो?' 'तुम्हारा मुझ पर कोई अधिकार नहीं है: अब्राहम की कोख मुझे स्वीकार करेगी।'

ये उनके अंतिम शब्द थे, और उनके चारों ओर खड़े भ्राताओं ने उनके मृत शरीर की[7077] अवस्था में भी उनके चेहरे की दिव्य किरणों और सुंदरता से प्रभावित होकर उन्हें देखा। दो हजार भिक्षुओं और कुंवारी कन्याओं के एक समूह ने उनके शरीर को टूर तक साथ ले जाया, जहाँ लोगों की एक बड़ी भीड़ के बीच, उन्हें एक भव्य अंतिम संस्कार दिया गया। उनके महान संत और चमत्कार करने वाले की धन्य निधिति के बाद , ईश्वर ने उनके शरीर को क्षय से संरक्षित रखा,

---

[7075] संत मार्टिन की भविष्यवाणी एक-एक करके सच हुई: पहले, मैक्सिमिस ने वास्तव में 387 में वैलेंटाइनियन द्वितीय को इटली से बाहर निकाल दिया। लेकिन पूर्वी रोमन साम्राज्य के सम्राट, थियोडोसियस द्वितीय द यंगर, जिन्होंने पहले वैलेंटाइनियन द्वितीय को जब वह नाबालिग था, अपने संरक्षण में ले लिया था, ने अगले ही साल विजयी होकर उसे उसके अधिकारों में बहाल कर दिया। मैक्सिमिस को हरा दिया गया, थियोडोसियस के सामने लाया गया और उसे मृत्युदंड दे दिया गया।

[7076] लोयर और विएने के संगम पर एक नगर।

[7077] संत मार्टिन का लगभग 400 ईस्वी में, लगभग 80 वर्ष की आयु में, 11 नवंबर को निधन हो गया।

और उनके मकबरे पर ईश्वर की महिमा के लिए, जो अपने संतों में सदा-सदा अद्भुत हैं, महान और अनगिनत चमत्कार हुए[7078] । आमीन।

शहीद संत डोमनीका की स्मृति

12 अक्टूबर को स्मरणोत्सव

संत डोमनीका सम्राट डायोक्लेटियन के शासनकाल में रहती थीं। मसीह की स्वीकारोक्ति के लिए उन्हें सिलिसिया में अनाज़ार्बस के राज्यपाल लाइसियस के सामने लाया गया, जहाँ पहले उन्हें बैल की खाल से पीटा गया, जबकि उनके पैरों को लाल-गरम लोहे से जलाया गया; फिर उसे डंडों से इतनी बेरहमी से पीटा गया कि उसके जोड़ टूट गए। अंत में एक कालकोठरी में डाल दी गई, और उसने अपने शहीद होने के घावों के लिए धन्यवाद करते हुए प्रभु में अपनी आत्मा अर्पित कर दी (286 ईस्वी)।

माल्टीज़ अवशेषों के स्थानांतरण का पर्व

12 अक्टूबर को स्मरणोत्सव

रूसी चर्च में, 12 अक्टूबर को माल्टा द्वीप से गाचीना तक तीन महान अवशेषों के स्थानांतरण का उत्सव मनाया जाता है: प्रभु के जीवन-दायक क्रूस का एक टुकड़ा, संत ल्यूक सुसमाचार-लेखक द्वारा चित्रित हमारी लेडी ऑफ़ फ़िलिर्मोस की चमत्कारी प्रतिमा, और संत जॉन द बैपटिस्ट का दाहिना हाथ। आइए हम संक्षेप में इन प्रत्येक पवित्र अवशेषों की उत्पत्ति के इतिहास और उनके सम्मान में पर्व दिवस की स्थापना का वर्णन करें।

I.

वर्ष 326 में, सम्राज्ञी सेंट हेलेना द्वारा गोलगोथा पर पवित्र क्रॉस का चमत्कारिक रूप से पता चला। इसके तुरंत बाद, शाही फरमान द्वारा, यहाँ मसीह के पुनरुत्थान को समर्पित एक नया चर्च स्थापित किया गया, जिसका भाग्य आने वाले कई वर्षों तक पूरे ईसाई जगत के इस महान अवशेष का संरक्षक बनने का था। यह चर्च आज भी इस अवशेष की रक्षा करता आ रहा है। हालाँकि, इसे अपनी पूरी अवस्था में प्रस्तुत नहीं किया जा सकता, जैसा कि यह संत हेलेना द्वारा खोजे जाने के समय था। परंपरा हमें प्रभु के क्रूस के कई टुकड़ों के बारे में बताती है, जो प्राचीन काल में इससे अलग किए गए थे और इसकी पवित्रता के लिए दुनिया के चारों कोनों में बिखेर दिए गए थे[7079] । इन टुकड़ों को पूर्व और ईसाई पश्चिम दोनों द्वारा संरक्षित किया गया था।

इसी तरह, अपने ईसाई इतिहास की सहस्राब्दी अवधि के दौरान, होली रस ने एक से अधिक अवसरों पर पूर्व से प्रभु के जीवन-दायक क्रूस के टुकड़े प्राप्त किए हैं, जिन्हें आज भी कैथेड्रल, प्राचीन मठों, पैरिश चर्चों, शाही महलों और यहां तक कि निजी घरों में संरक्षित किया गया है। हालांकि, इनमें से एक टुकड़ा इसे पश्चिम से, ऑर्डर ऑफ़ माल्टा के शूरवीरों से मिला था। इस ऑर्डर की किस्मत हमेशा से ऑर्थोडॉक्स पूर्व की किस्मत से, और यहाँ तक कि उस

[7078] बिशप पेरपेटुअस ने सेंट मार्टिन के मकबरे पर एक भव्य चर्च का निर्माण किया। बाद में उनकी अवशेषों के हिस्सों को विभिन्न चर्चों में वितरित कर दिया गया। 1562 में, प्रोटेस्टेंटों ने टूर में उनके मकबरे को लूट लिया और उनके अवशेषों को जला दिया। उनके अवशेषों के शेष भाग को दफ़नाया गया था और वे आज भी टूर कैथेड्रल में रखे गए हैं। सेंट मार्टिन के कई मरणोत्तर चमत्कारों का वर्णन सबसे पहले 6वीं शताब्दी में ग्रेगरी ऑफ़ टूर ने किया था, जिन्हें पश्चिम में संत घोषित किया गया था और जिन्होंने स्वयं इस ईश्वर के पुरुष की अद्भुत चमत्कारी शक्ति का अनुभव किया था।

[7079] इस बात की पुष्टि यरूशलेम के संत सिरिल द्वारा भी की जाती है, जो चौथी शताब्दी में रहते थे (उसी शताब्दी में जब प्रभु का क्रूस खोजा गया था)। अपने 'कैटेकेटिकल प्रवचनों' में से एक में, वे कहते हैं कि उनके अपने समय में भी, संपूर्ण ब्रह्मांड में पहले से ही क्रूस के टुकड़े मौजूद थे। वास्तव में, पवित्र क्रूस की खोज के विवरण में भी उल्लेख है कि महारानी सेंट हेलेना ने खोजे गए क्रूस का एक टुकड़ा अलग रखा और उसे अपने पुत्र कॉन्स्टेंटिन को उसके राज्य पर आशीर्वाद देने के लिए भेज दिया। पाँचवीं शताब्दी तक, पवित्र क्रूस के टुकड़े न केवल पूर्व के कई चर्चों के पास थे, बल्कि, जैसा कि संत जॉन क्राइसोस्टोम गवाही देते हैं, निजी व्यक्ति भी 'अक्सर क्रूस के एक टुकड़े को सोने में जड़वाते थे और उसे अपनी गर्दन में पहनते थे'।

सम्मानित वृक्ष की किस्मत से भी गहराई से जुड़ी रही है, जो हमेशा से विदेशी मुस्लिम और मूर्तिपूजक दुनिया की सभी आपदाओं और साज़िशों के खिलाफ इसका अटूट किला और विजयी हथियार रहा है।

जबकि कुछ पश्चिमी ईसाई, तीर्थयात्री के बेंत से लैस, इसके पवित्र स्थलों की पूजा करने के लिए पूर्व की ओर भक्तिपूर्ण यात्राएँ करते थे—जिनमें निस्संदेह हमेशा जीवन-दायक क्रॉस का वृक्ष सर्वोपरि स्थान रखता था— अन्य लोग, कवच पहनकर, अपने रक्त का बलिदान करने के लिए वहाँ दौड़ पड़े, तीर्थयात्रियों और पवित्र स्थलों दोनों की रक्षा करते हुए, जो उन्हें अपनी ओर आकर्षित करते थे[7080] – जबकि एक तीसरे समूह ने, समाज बनाकर, पहले वालों को एक विदेशी भूमि में आश्रय प्रदान करना और बाद वालों के घावों पर मरहम लगाना अपना कर्तव्य बना लिया। ऐसी सबसे पुरानी संस्थाओं में से एक ऑर्डर ऑफ़ सेंट जॉन[7081] है, जिसका नाम इसलिए रखा गया क्योंकि इसके संबंधित अस्पताल का चर्च सेंट जॉन द बैपटिस्ट को समर्पित था। शुरुआत में केवल धर्मार्थ उद्देश्यों के लिए समर्पित एक संस्थान, इस ऑर्डर ने बाद में—जब इसके नेतृत्व की बागडोर ऊर्जावान फ्रांसीसी रेमंड डी पुई[7082] के हाथों में आई—एक नया चार्टर अपनाया, जिसके तहत इसकी गतिविधियों में अब यरूशलेम की यात्रा पर तीर्थयात्रियों की सशस्त्र सुरक्षा भी शामिल हो गई। यूरोप में इसकी गतिविधियों के इस विस्तार का बहुत उत्साह के साथ स्वागत किया गया: विभिन्न राज्यों के धर्मनिष्ठ शूरवीर नए ऑर्डर में शामिल होने के लिए तत्पर हुए। ईसाई धर्म की रक्षा में अविश्वासियों के खिलाफ सात सौ वर्षों के संघर्ष ने नाइट्स हॉस्पिटैलर को शाश्वत महिमा प्रदान की। बाद में, सेंट जॉन के शूरवीरों को फिलिस्तीन छोड़ने के लिए मजबूर होना पड़ा, लेकिन उन्होंने यरूशलेम (1118–1187) में अपने समय के दौरान मिस्र और बगदाद के खलीफ़ाओं की सेनाओं के खिलाफ़ लड़ाइयों में पहले ही असाधारण साहस और आत्म-बलिदान का प्रदर्शन कर दिया था[7083] । उनके पराक्रम के पुरस्कार स्वरूप, उन्हें तब प्रभु के जीवन-दायक क्रूस का एक खंड प्रदान किया गया, जिसे उन्होंने टोलेमाइस और साइप्रस, रोड्स और अंत में माल्टा के द्वीपों पर श्रद्धापूर्वक रखा[7084] , जहाँ से उन्होंने इसे सम्राट पॉल के शासनकाल के दौरान रूस लाया।

II.

प्रभु के क्रूस के जीवन-दायक वृक्ष के खंड के साथ ही, एक और पवित्र अवशेष, जिसे नाइट्स ऑफ़ सेंट जॉन द्वारा समान रूप से पूजित और लंबे समय तक संरक्षित किया गया था, माल्टा द्वीप से रूस लाया गया था: ईश्वर की माता का फ़िलिर्मैना आइकन – ओडिगिट्रिया[7085] ।

एक अनादि काल से चली आ रही परंपरा है कि इसे संत ल्यूक सुसमाचारकार द्वारा चित्रित किया गया था और स्वयं सर्वदा-कुंवारी की आशीर्वाद से इसे पवित्र किया गया था, जिनकी आशीर्वाद के लिए सुसमाचारकार-चित्रकार अपनी कलाकृतियों को समर्पित किया करता था। लगभग 46 ईस्वी में, इसे संत ल्यूक के गृह नगर, एंटिओक लाया गया था, जहाँ यह कॉन्स्टेंटिन द ग्रेट के शासनकाल तक रहा, जब इसे यीशु मसीह और प्रेरितों के सांसारिक जीवन की अन्य भौतिक अवशेषों के साथ मिलकर कॉन्स्टेंटिन द्वारा पुनर्स्थापित यरूशलेम में स्थानांतरित कर दिया गया था। लगभग 480 ईस्वी में, सम्राज्ञी यूडोक्सिया ने इसे एक आशीर्वाद के रूप में कॉन्स्टेंटिनोपल में सम्राट थियोडोसियस द यंगर की बहन, संत पलकेरिया को भेजा। वहाँ, संत पल्केरिया ने ब्लाचेर्ना का नया चर्च बनवाया, जहाँ ईश्वर की माता की इस पवित्र प्रतिमा को स्थापित किया गया था; कई शताब्दियों तक, यह कॉन्स्टेंटिनोपल की रक्षक के रूप में कार्य करती रही।

[7080] इस संबंध में विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं 11वीं शताब्दी के अंत में पश्चिमी यूरोप से शुरू हुए सैन्य अभियान, जिन्हें धर्मयुद्ध के नाम से जाना जाता है। उन्हें दिया गया नाम स्पष्ट रूप से इस बात की गवाही देता है कि अनगिनत रेजिमेंटों में पश्चिमी ईसाइयों को अज्ञात भूमि, समुद्र और रेगिस्तानों को पार करने के लिए क्या प्रेरित कर रहा था: वे पवित्र क्रूस के वृक्ष को अपवित्र होते हुए देखने की इच्छा से प्रेरित थे। आठ प्रमुख अभियान थे: पहला 1096 में, दूसरा 1147 में, तीसरी 1190 में, चौथी 1202 में, पांचवीं 1217 में, छठी 1228 में, सातवीं 1248 में, और आठवीं 1270 में हुई।

[7081] संत जॉन के आदेश की स्थापना 1047 में हुई थी। इसके संस्थापक को अमाल्फी के मौरस नामक एक अमीर व्यापारी माना जाता है, जिसने कई अन्य लोगों के साथ मिलकर मिस्र के खलीफा से यरूशलेम में तीर्थयात्रियों के लिए एक आश्रय और एक चर्च बनाने की अनुमति प्राप्त की।

[7082] रेमंड डी पुई को 1118 में सेंट जॉन ऑर्डर का ग्रैंड मास्टर चुना गया था।

[7083] खलीफ़ा – मुहम्मद के उत्तराधिकारियों का खिताब, जो मुसलमानों के बीच सर्वोच्च आध्यात्मिक और सांसारिक अधिकार रखते थे।

[7084] टॉलेमाइस – टायर के दक्षिण में फिनिसिया का एक शहर; साइप्रस – एशिया माइनर के तट के पास, भूमध्य सागर के उत्तर-पूर्व में एक द्वीप; रोड्स – एजियन सागर में सबसे पूर्वी द्वीप; माल्टा – सिसिली और उत्तरी अफ्रीकी तट के बीच भूमध्य सागर में एक द्वीप।

[7085] ईश्वर की माता को 'ओडिगिट्रिया' - मार्गदर्शक - कहा जाता है, क्योंकि वह लोगों को मोक्ष के मार्ग पर ले जाती हैं।

संत पुलकेरिया के समय से ही, संस्थापक की इच्छानुसार, ब्लाचेर्ना चर्च में मंगलवार को परमेश्वर की माता की प्रतिमा के सामने एक प्रार्थना सभा आयोजित करना प्रथा थी; और वर्ष 626 से, उनके चमत्कारी गौरव के बाद, इस सेवा में अकाथिस्ट[7086] का पाठ जोड़ दिया गया। और इस चर्च में ईश्वर की माता के सम्मान में अखंड स्तुतियाँ गूँजती रहीं, जब तक कि प्रतिमा-भंजन के उथल-पुथल भरे समय का आगमन नहीं हुआ, जब एक समकालीन के शब्दों में, उन्हें 'जिस प्रकार एक रानी से उसका बैंगनी मुकुट छीन लिया जाता है', उसी प्रकार वंचित कर दिया गया।

प्रतिमा पूजा की बहाली के बाद, ईश्वर की माता की प्रतिमा ने एक बार फिर उनके सम्मान में बने चर्च में अपना उचित स्थान प्राप्त किया, जिसे एक बार फिर ईश्वर की परम पवित्र माता के संरक्षण के चमत्कारी प्रकट होने और कॉन्स्टेंटिनोपल के पुराने दुश्मनों - सारासेनों के खिलाफ उनकी नवीनीकृत मध्यस्थता द्वारा गौरवान्वित किया गया[7087] । लेकिन कॉन्स्टेंटिनोपल के निवासियों का विश्वास कमजोर पड़ गया था, और वे अपनी मध्यस्थ से वंचित हो गए। मुस्लिम शत्रुओं के साथ नए दुश्मन जुड़ गए: पश्चिमी ईसाई – धर्मयुद्धकारी। चौथी धर्मयुद्ध के दौरान, ओडिगिट्रिया की प्रतिमा को कॉन्स्टेंटिनोपल की कई अन्य पवित्र वस्तुओं के साथ ब्लाचेर्ना के चर्च से धर्मयुद्धियों द्वारा ले जाया गया और पश्चिम भेजा गया। एक बार फिर फिलिस्तीन में स्थानांतरित होने के बाद, यह नाइट्स हॉस्पिटैलर के कब्जे में आ गई। जब, धर्मयुद्धों के अंत में, नाइट्स को टोलेमाइस छोड़ना पड़ा, जहाँ वे तब तक रह रहे थे, और रोड्स द्वीप में बसना पड़ा, तो वे पवित्र प्रतिमा को अपने साथ ले गए। यह उनके बाद के सभी स्थानांतरणों के दौरान उनके स्वामित्व का एक अभिन्न अंग बना रहा, जब तक कि उन्होंने इसे सम्राट पॉल को उपहार के रूप में नहीं दे दिया।

III.

संत जॉन बपतिस्मादाता का दाहिना हाथ तीसरी पवित्र अवशेष है, जिसके सम्मान में रूस में 12 अक्टूबर को एक पर्व मनाया जाता है। सुसमाचार लेखक मत्ती, संत जॉन बपतिस्मादाता की शहादत की परिस्थितियों का वर्णन करते हुए, उल्लेख करते हैं कि उनके शिष्यों ने आकर शरीर (सिर को छोड़कर) को उठाया और उसे दफनाया[7088] । समरीटियाई शहर सेबास्टे में अग्रदूत के दफन स्थल[7089] पर, तीसरी शताब्दी में ही उनके नाम से एक चर्च का निर्माण किया गया था। उनकी स्मृति का स्मरणोत्सव और उनके पवित्र अवशेषों की पूजा प्रेरितीय काल में ही प्रचलित थी।

प्राचीन काल से चली आ रही एक परंपरा के अनुसार, सेबास्टे में मसीह के बारे में उपदेश देते समय, संत ल्यूक सुसमाचारकार ने उनके अग्रदूत के अवशेषों की पूजा की और सेबास्टे के निवासियों से उन्हें अंत्योकिया ले जाने की अनुमति देने का अनुरोध किया, ताकि वे अविश्वासियों द्वारा अपमान और विनाश से बच सकें। हालाँकि, सेबास्टे के लोगों ने उन्हें बपतिस्मा देने वाले का केवल दाहिना हाथ ही ले जाने की अनुमति दी, जिसे उन्होंने श्रद्धापूर्वक एंटिओक ले जाया। जब से यह अवशेष एंटिओक में रखा गया, तब से इसके माध्यम से घटित एक उल्लेखनीय चमत्कार के संबंध में एक परंपरा संरक्षित है।

एंटीओक की सीमाओं के भीतर एक राक्षसी प्राणी था, जिसे स्थानीय मूर्तिपूजकों की अंधविश्वासी मान्यता के अनुसार, हर साल लॉटरी द्वारा शहर की एक कुंवारी बलिदान कर दी जाती थी। एक अवसर पर, यह दुर्भाग्यपूर्ण लॉटरी एंटीओक की एक युवती पर पड़ी, जो एक ईसाई की बेटी थी। उसके शोकाकुल पिता, जो अंधविश्वासी मूर्तिपूजा की अपवित्रता के लिए ईसाई रक्त को समर्पित करने को तैयार नहीं थे, ने मदद के लिए स्वर्ग की ओर रुख किया। चर्च में संत जॉन द फॉररनर से एक भावुक प्रार्थना के बाद, उन्होंने वहां रखे उनके अपरिवर्तनीय अवशेषों को चूमा, और अपने दांतों से संत की एक उंगली का एक टुकड़ा तोड़ लिया, जिसे उन्होंने अपने पास छिपा लिया। जब भयानक बलिदान का समय आया और पास आ रहा राक्षस उस मासूम युवती को पकड़ने के लिए अपना जबड़ा खोल ही रहा था, तो उसके पिता, जो

[7086] 626 में, बीजान्टिन सम्राट हेराक्लियस के शासनकाल के दौरान, फारस के राजा कुसरो के एक सेनापति, सिविर ने पूरी तरह से असहाय कॉन्स्टेंटिनोपल पर समुद्र और जमीन दोनों तरफ से घेराबंदी कर दी (सम्राट और उसकी सेना एक दूर की मुहिम पर थे)। और जब पैट्रिआर्क सेरजियस ने परमेश्वर की माता के वस्त्र को खाड़ी के पानी में डुबोया, तो एक तूफान उठ खड़ा हुआ, जिसने खाड़ी के पानी में उथल-पुथल मचा दी और वहां लंगर डाले दुश्मन के जहाजों को डुबो दिया। इस घटना की स्मृति में, परमेश्वर की माता को एक कृतज्ञता भजन रचा गया, जिसे भक्तों को खड़े होकर सुनना अनिवार्य था; इसीलिए इसे 'खड़े होकर गाया जाने वाला भजन' या अकैथिस्ट के नाम से जाना जाने लगा।

[7087] सारासेन, या अरब।

[7088] मत्ती 14:12। कुछ लेखकों के अनुसार, जूलियन द एपोस्टेट के शासनकाल के दौरान, सबास्ते में संजोए गए सेंट जॉन द बैपटिस्ट के अवशेषों को राख में जलाकर हवा में बिखेर दिया गया था।

[7089] सेबास्टे – सामरिया का प्रमुख शहर। इस शहर को यह नाम तब मिला जब इसे अगस्टस ने हेरोद महान को भेंट किया, जिन्होंने इसे पूरी तरह से पुनर्स्थापित और सुशोभित किया; अगस्टस के प्रति कृतज्ञता में, उन्होंने इसका नाम सेबास्टे रखा, जिसका अर्थ है 'अगस्टस का शहर'।

तब तक वहाँ पहुँच चुके थे, ने उसके जबड़े में बपतस्मिादाता की दाहनिी उंगली का वह टुकड़ा फेंक दयिा जसिे वह अपने पास रखे हुए थे, और राक्षस तुरंत ही नरि्जीव होकर गरि पड़ा। इस दृश्य को देखने वाले मूर्तपिूजकों को बहुत आश्चर्य हुआ। जब उन्हें उस राक्षस की अचानक मृत्यु का असली कारण पता चला, तो उनमें से कई ने अपने पुराने अंधवशि्वासों को त्याग दयिा और मसीह की ओर मुड़ गए। उस अंधवशि्वासी फांसी के स्थल पर, उन्होंने जॉन द बैपटस्टि के सम्मान में एक चर्च बनाया। इस चमत्कारी घटना के आसपास की परंपरा, जॉन द बैपटस्टि के दाहनिे हाथ की वर्तमान उपस्थतिि की व्याख्या करती है, जसिकी छोटी उंगली का एक हस्सिा गायब है। और अपने शहर में संरक्षति इस कीमती अवशेष में अँटओक के लोगों का बहुत बड़ा वशि्वास था। जूलयिन द एपोस्टेट को इस अवशेष के बारे में पता था, और वह अँटओक के लोगों की इसके प्रतभिक्तसि भी परचिति था, क्योंकवि ह स्वयं अपनी युवावस्था में अँटओक में रह चुका था। चूंकि उन्होंने ईसाई धर्म की याद दलिाने वाली हर चीज़ को जलाने की सज़ा दी थी, इसलिए जब वे (362 में) फ़ारसियिों के खलिाफ़ युद्ध के लिए मार्च करते हुए अंफ़योकयिा पहुँचे, तो वे इस पवत्रि अवशेष को अनदेखा नहीं कर सके। इसके अलावा, ऐसा भी हुआ कि ठीक इसी समय डाफ्ने में स्थति अपोलो का उसका प्रयि मंदरि[7090] जल गया था। ईसाइयों पर आगजनी का संदेह करते हुए, क्रोधति सम्राट ने बदले के तौर पर, अंत्योखयिा के प्रमुख तीर्थस्थल - संत जॉन द बैपटस्टि के दाहनिे हाथ - को सार्वजनकि रूप से जलाने का आदेश दयिा। हालांकि, यह पता चला कि जूलयिन के आने से पहले ही, एंटओक के श्रद्धालु लोगों ने अपने इस अवशेष को शहर के एक मीनार के तहखाने ( ) में छपिा दयिा था, और राजा के आदेशों को पूरा करने वालों द्वारा इसे खोजने के सभी प्रयास व्यर्थ साबति हुए। जूलयिन की मृत्यु के बाद, उन्होंने इस पवत्रि अवशेष को शहर के मुख्य कैथेड्रल में वापस कर दयिा, जहाँ यह लगभग छह सौ वर्षों तक रहा, जब तक कि सीरयिा पर मुस्लमि वजिय नहीं हो गई। वर्ष 639 में, अंतीयोक पर कब्ज़ा हो गया, और इसके साथ ही बपतस्मिादाता का दाहनिा हाथ मुस्लमि कैद में ले जाया गया। कई मौकों पर, बाइजेंटाइन सम्राटों ने इसे अंतीयक से वापस लेने का प्रयास कयिा, लेकनि उनके सभी प्रयास वांछति परणिाम प्राप्त करने में वफिल रहे। अंत में, प्रभु ने यह आदेश दयिा कि इस ईसाई पवत्रि अवशेष को उस शहर से, जसिे एक अधर्मी लोगों ने वश में कर लयिा था, ईसाई साम्राज्य की राजधानी में स्थानांतरति कर दयिा जाए। वर्ष 959 में, एंटीयोकयिा के चर्च के धार्मकि डकिन, योब ने—जो बार-बार, व्यर्थ ही, सेंट पीटर चर्च के संरक्षक को यह धार्मकि अवशेष सौंपने के लिए मनाने की कोशशि कर चुका था, जहाँ बपतस्मिा दाता योहन का दाहनिा हाथ पवत्रि पात्रों और अन्य कीमती वस्तुओं के साथ एक वशिेष कक्ष में रखा था— – ने अंततःसंरक्षक की कमजोरी का फायदा उठाने का नश्चिय कयिा: जब वह शराब के अत्यधकि सेवन से गहरी नींद में था, तो जोब ने चर्च की चाबयिाँ ले लीं और रात में उस पवत्रि अवशेष को चुरा लयिा। अपने कीमती सामान के साथ, वह सीधे कॉन्स्टेंटनिोपल के लिए रवाना हो गया। चल्सेडॉन[7091] पहुँचने पर, उसने कॉन्स्टेंटनिोपल में उस खजाने के बारे में खबर भेजी जो वह अंतीयक से लेकर आया था। कुछ ही समय बाद, एक शाही जहाज चल्सेडॉन पहुँचा, जसिमें पैट्रआर्क और राजा के गणमान्य व्यक्तसिवार थे। कुछ ही समय बाद, सम्राट और पूरी आबादी ने बोस्फोरस पर इस पवत्रि अवशेष का—जसिे इतनी कठनिाई से प्राप्त कयिा गया था—बड़ी गंभीरता, गहरे भाव और आनंद के साथ स्वागत कयिा, 'मानो स्वयं बपतस्मिा देने वाले स्वर्ग से उतर आए हों'। इसे महल के चर्च में ले जाया गया। यह उल्लेखनीय है कि बपतस्मिादाता का दाहनिा हाथ, जसिने एक बार प्रभु के सरि को छुआ था, एपफिेनी के पर्व की ठीक पूर्व संध्या पर, और इसके अलावा पानी के अभषिेक से ठीक पहले इस चर्च में लाया गया था। घटनाओं का यह संयोग स्थानांतरण की गंभीरता और राजा तथा लोगों के श्रद्धालु आनंद को और बढ़ा गया। पूर्ववर्ती के दाहनिे हाथ के स्थानांतरण के पर्व को एपफिेनी के पर्व से जोड़ने के बनिा, ग्रीक चर्च ने यह आदेश दयिा कि इस घटना की स्मृति 7 जनवरी, संत जॉन द बैपटस्टि के पर्व के दनि मनाई जाए। अंतयोकयिा की तरह, प्रभु के अग्रदूत का दाहनिा हाथ लोगों के सामने उठाने की प्रथा कॉन्स्टेंटनिोपल में भी स्थापति की गई थी, लेकनि यह अनुष्ठान पवत्रि क्रूस की उन्नति (जैसा कि अंतयोकयिा में) पर नहीं, बल्कि अग्रदूत के जन्म के पर्व - 24 जून को कयिा जाता था। जब कन्स्टेंटनिोपल तुर्कों के आक्रमण के कारण[7092] गरि गया, तो सुल्तान मेहमद द्वतिीय ने शहर में प्रवेश करने पर, अग्रदूत के दाहनिे हाथ को अन्य ईसाई अवशेषों के साथ अपनी शाही कोषागार में रखने और अपनी मुहर से सील करने का आदेश दयिा। हालाँकि, ऊपर उल्लेखति सेंट जॉन का ऑर्डर, जो उस समय रोड्स द्वीप पर स्थति था, अपवत्रि कएि गए शहर और उसकी अपवत्रि अवशेषों की रक्षा के लिए उठ खड़ा हुआ। सेंट जॉन के शूरवीरों ने न केवल रोड्स द्वीप पर

[7090] डैफ्ने एंटओक का एक उपनगर है।

[7091] काल्सेडोन – कॉन्स्टेंटनिोपल के पास एक शहर।

[7092] कॉन्स्टेंटनिोपल का पतन 1453 में हुआ था।

सभी तुर्की हमलों को बहादुरी से वफिल कर दयिा, बल्कि उन्होंने तुर्कों के अपने क्षेत्रों के लिए भी खतरा बनना शुरू कर दयिा। तब मेहमद द्वतिीय के उत्तराधकिारी, बायाज़दि द्वतिीय, ने उनकी कृपा प्राप्त करने की इच्छा से, उनके ऑर्डर के ग्रैंड मास्टर, पीटर ओबूसन को उपहार के रूप में जॉन द बैपटस्टि के दाहनि हाथ ([7093]) भेजा। जो मुस्लमि खजाने के लिए एक बेकार खजाना था, वह ईसाई योद्धाओं के लिए एक अनमोल खजाना था, जनिके ऑर्डर को, उसकी स्थापना के समय से ही, संत जॉन द बैपटस्टि की स्वर्गीय संरक्षकता में रखा गया था। जहाँ भी सेंट जॉन के शूरवीर बसे, वहाँ सेंट जॉन द बैपटस्टि के सम्मान में चर्च बनाए गए, और उस समय से, हर स्थानांतरण के साथ, उनका दाहनिा हाथ नए चर्चों में ले जाया जाता था। ऐसी ही एक चर्च ऑबूसन ने रोड्स द्वीप पर बनवाई थी, और बाद में ऑर्डर के ग्रैंड मास्टर, ला वैलेट ने माल्टा द्वीप पर एक समान चर्च बनवाई।

IV.

जब माल्टा द्वीप पर नेपोलयिन का कब्ज़ा हो गया, और आदेश के ग्रैंड मास्टर का ताज[7094] से रूसी सम्राट पॉल पेट्रोवचि को मलि गया, जो बचपन से ही नाइट्स ऑफ माल्टा के गौरवशाली इतहिास से चमत्कृत थे, नाइट्स ऑफ सेंट जॉन, उनके संरक्षण के लिए आभारी होकर, तीनों महान खजाने को उनके स्वामत्वि में हस्तांतरति करने का संकल्प लयिा, जनिमें से कसिी को भी उन्होंने प्राप्त करने के समय से कभी नहीं छोड़ा था।

उन्होंने जो सबसे पहले अवशेष रूस भेजा, वह जॉन द बैपटस्टि का दाहनिा हाथ था। 1798 में, इसे अस्थायी रूप से सेंट पीटर्सबर्ग में ऑर्डर के चैपल में रखा गया था। अगले ही वर्ष, 12 अक्टूबर 1799 को, इन अवशेषों को अन्य दो पवत्रि अवशेषों: सच्चे क्रूस के टुकड़े और फ़लिर्म के हमारी लेडी की प्रतमिा के साथ गाट्चनि[7095] में ले जाया गया।

शाही दरबार ने उपहार के रूप में प्रस्तुत इन पवत्रि अवशेषों का बड़ी धूमधाम से स्वागत कयिा। उस सुबह 10 बजे, सम्राट के नेतृत्व में और शाही परविार के सदस्यों तथा एक बड़े काफलि के साथ, गाचनिा महल से इंगबर्ग की ओर एक पूरी शोभायात्रा रवाना हुई, जहाँ इन अवशेषों का स्वागत होना था। यह बैठक तथाकथति स्पस्की गेट्स पर हुई, जहाँ से इस भव्य जुलूस ने महल की ओर वापसी की शुरुआत की। पादरयिों ने एक धार्मकि जुलूस में अगुवाई की। उनके पीछे, एक शाही सुनहरी बग्घी में, संत जॉन द बैपटस्टि का दाहनिा हाथ एक सुनहरी रलिक्विरी में, एक गाढ़े लाल मखमली तकयि पर रखा गया था। इसके बाद, उसी प्रकार, ईश्वर की माता की प्रतमिा और प्रभु के जीवन-दायक क्रूस का एक टुकड़ा लाया गया। सम्राट स्वयं, ऑर्डर ऑफ़ माल्टा के ग्रैंड मास्टर के पूर्ण राजसी परधिान में, पहली बग्घी के पीछे चले। जब जुलूस महल के पास पहुँचा, तो सम्राट ने स्वयं बपतस्मिादाता का दाहनिा हाथ लयिा और, जब इसके लिए नरि्धारति ट्रॉपारयिन गाया जा रहा था, तो उसे नव-सजाए गए दरबारी चर्च में ले गए, जहाँ उन्होंने इसे तैयार की गई जगह पर रख दयिा। ईश्वर की माता का आइकन और जीवन-दायक वृक्ष का टुकड़ा भी वहीं रखे गए। इस गंभीर घटना के सभी ववरिणों को बाद में 12 अक्टूबर के लिए पवत्रि सनिड के नरि्देशों पर रचति सेवा में शामलि कर दयिा गया। इसमें, 'ईश्वर-चुने हुए राजा की तुलना दाऊद, नम्र और धर्मपरायण व्यक्तसि की गई है, जो आनंदपूर्वक अपने घर में, जैसे प्राचीन समय में सयिोन में, सबसे पूजनीय प्राचीन व्यक्तकि नए संदूक को ले जा रहा है। क्योंकि वहाँ मानना वहने वाली संदूक थी; यहाँ गर्भ में मसीह को वहने वाली प्रतमिा है। वहाँ पुराने नयिम की पट्टयिाँ थीं; यहाँ वह हाथ है जसिने नए नयिम का पूर्वाभास दयिा, जो संसार को उद्धार और महान दया की घोषणा करता है। वहाँ लाठी थी; यहाँ मसीह का क्रूस है, जो 'ब्रह्मांड का रक्षक'[7096] है।

पौलुस की सच्ची प्रसन्नता ने उन्हें पवत्रि स्थानों को हीरों और अन्य कीमती पत्थरों से सुसज्जति समृद्ध, सुनहरी संदूकचों, और ईश्वर की माता की प्रतमिा के लिए एक नई, समान रूप से कीमती पोशाक भेंट करने के लिए प्रेरति कयिा।

पवत्रि सनिड ने रूसी कैलेंडर के पर्व-दविसों में 12 अक्टूबर को शामलि कयिा।

[7097]हालांकि, गाचीना लंबे समय तक माल्टीज़ अवशेषों का वशि्राम स्थल नहीं रहा। पतझड़ में सेंट पीटर्सबर्ग के लिए प्रस्थान करते समय शाही परविार उन्हें अपने साथ ले गया, ताकि अगले वर्ष, 1800 में, उनके स्थानांतरण का उत्सव वटिर पैलेस के चर्च में मनाया जा सके। पचास से अधकि वर्षों तक, रूस में उनके स्थानांतरण के सम्मान में स्थापति यह

[7093] यह 1484 में हुआ था।

[7094] 29 नवंबर 1798 को।

[7095] गाचनिा – सेंट पीटर्सबर्ग गवर्नोरेट के त्सार्स्कोये सेलो जलि का एक कस्बा।

[7096] स्टचिैरा सेवा में एक स्टचिैरा।

[7097] चर्च का अभषिेक 1852 में कयिा गया था।

उत्सव 12 अक्टूबर के बजाय 7 जनवरी को यहाँ मनाया जाता रहा। सम्राट निकोलस पावलोविच ने एक बार फिर से भुला दिए गए शहर गाचीना की ओर अपना ध्यान आकर्षित किया। अपने पिता, गाट्चिना के संस्थापक की स्मृति में, उन्होंने वहाँ प्रेरित पॉल को समर्पित एक कैथेड्रल का निर्माण कराया। इस कैथेड्रल के अभिषेक के लिए, माल्टीज़ अवशेषों को एक बार फिर विंटर पैलेस से गाट्चिना लाया गया। उसी वर्ष की शरद ऋतु में, ज़ार ने चर्च का दौरा किया। चर्च का निर्माण कराने वाले ज़ार के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हुए, इकट्ठा हुए पारिशियन ने अपनी प्रार्थनाओं के साथ यह अनुरोध भी किया कि नव-निर्मित चर्च माल्टीज़ अवशेषों का स्थायी घर बने, जिन्हें पहली बार गाट्चिना लाया गया था।

इस अनुरोध के जवाब में, ज़ार ने उनसे कहा कि वह शाही परिवार की संपत्ति को किसी निजी चर्च के स्वामित्व में स्थानांतरित नहीं कर सकते, लेकिन वह सेंट पीटर्सबर्ग से वहां उनके अस्थायी वार्षिक स्थानांतरण के लिए ही सहमत होंगे। इस प्रकार, 12 अक्टूबर को पर्व दिवस का उत्सव बहाल किया गया, और अब इसे दरबारी चैपल और पावलोव्स्क कैथेड्रल दोनों में मनाया जाता है। उत्सव की पूर्व संध्या पर इन पवित्र अवशेषों को सेंट पीटर्सबर्ग से लाया जाता है। इस दिन दरबारी चैपल में 'ऑल-नाइट विजिल' (सारी रात की प्रार्थना सभा) के दौरान उनका सम्मान किया जाता है। अगले दिन, दरबारी चैपल में सुबह की मास के बाद, उन्हें कैथेड्रल में स्थानांतरित कर दिया जाता है, जहाँ वे दस दिनों तक 'मां ऑफ गॉड' के काज़ान आइकन के पर्व दिवस तक रहते हैं, जब शहर में एक जुलूस के बाद, उन्हें वापस सेंट पीटर्सबर्ग ले जाया जाता है।

12 अक्टूबर न केवल गाचीना के लोगों के लिए मुख्य और सार्वभौमिक पर्व का दिन है, बल्कि यह कई तीर्थयात्रियों द्वारा माल्टीज़ अवशेषों के श्रद्धांजलि का भी दिन है, जो राजधानी, आसपास के गांवों और कस्बों, और यहां तक कि रूस के अन्य प्रांतों से गाचीना आते हैं। इस दिन, पूरा रूस ईश्वर की महिमा करता है, 'क्योंकि जिसने अब तक इसे पवित्र अवशेषों की बहुतायत से गौरवान्वित किया है, वह अब भी इसकी महिमा करना बंद नहीं करता है: क्योंकि उसने इसे यह अनमोल खजाना प्रदान करने की कृपा की है, जो अब तक विभिन्न भूमि में छिपा हुआ था'[7098] ।

26 अक्टूबर

13 अक्टूबर (पुराना कैलेंडर)

पवित्र शहीदों कार्पस, पापिलस, अगाथोडोरस और अगाथोनिका की स्मृति

13 अक्टूबर को स्मरणोत्सव

मसीह के लिए पीड़ा सहने वालों को याद करना अत्यंत लाभकारी है, क्योंकि उनके दुःखों की स्मृति ही हमारी आत्मा में परमेश्वर के प्रति प्रेम जगा सकती है और, मानो, सद्गुण के लिए हमारे प्रयासों को पंख दे सकती है, – ताकि, भविष्य के पुरस्कार के लिए, हम उन्हीं कष्टों को मानसिक रूप से सहन कर सकें जिन्हें शहीदों ने शरीर में सहा। इस जीवन में शहीद कर्म करने वाले शहीदों के समूह में कार्पस और पापिलस भी हैं – कलीसिया के महान स्तंभ और नींव[7099] ।

[7098] उत्सव स्तिखिरि।

[7099] 'पवित्र शहीदों, चर्च के स्तंभों और नींव' की उपाधि इस विचार को व्यक्त करती है कि उन्होंने मसीह की कलीसिया की स्थापना में बहुत बड़ा योगदान दिया – न केवल अपने वीर जीवन के उदाहरण द्वारा, बल्कि परमेश्वर की उस कृपा द्वारा भी, जो उनके माध्यम से विश्वासियों पर प्रदान की जाती है। पवित्र धर्मग्रंथ में, कलीसिया का कोने का पत्थर और नींव हमारे उद्धार के कर्ता, प्रभु यीशु मसीह के रूप में नामित है (भजन संहिता 117:22; यशायाह 28:16; मत्ती 21:42; 1 पतरस 2:4; 1 कुरिन्थियों 3:11, आदि)। मसीह के शहीदों को, ठीक वैसे ही जैसे भविष्यवक्ताओं और प्रेरितों को, चर्च की नींव केवल रूपक अर्थ में कहा जा सकता है - उन लोगों के रूप में जो स्वयं मसीह में स्थापित हैं। वे, एक तरह से, मसीह की कलीसिया की इमारत में पत्थरों की पहली पंक्ति हैं, जो उसकी महान और शाश्वत नींव - मसीह - पर रखी गई है। इस भवन में पत्थरों की बाद की पंक्तियाँ हम, मसीह में विश्वास करने वाले हैं, जिनके विषय में प्रेरित लिखते हैं: *'प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं की नींव पर निर्मित, और स्वयं मसीह यीशु को कोने का मुख्य पत्थर मानकर'* (इफिसियों 2:20)।

दोनों का जन्म पवित्र माता-पिता के यहाँ, गौरवशाली शहर पेरगेमम[7100] में हुआ था, और अपने सदाचारी जीवन के माध्यम से उन्होंने अपने माता-पिता के सद्गुणों को प्रकट किया: क्योंकि एक पवित्र शाखा एक पवित्र जड़ से ही निकलती है, अच्छा फल एक अच्छे पेड़ का संकेत देता है, और एक शुद्ध धारा अपने स्रोत को गौरवान्वित करती है। वे दोनों भोजन और पेय में केवल बुनियादी आवश्यकताओं से ही संतुष्ट थे, और विविधता तथा अधिकता की ओर ले जाने वाली सभी चीज़ों को अस्वीकार करते थे; वास्तव में, उन्होंने आवश्यक चीज़ों का इतना कम सेवन किया कि वे अपने शरीर को छोड़कर स्वर्गदूतों से केवल इसी बात में भिन्न थे, इसलिए, अपनी महान संयम के कारण, वे लगभग अदेह प्रतीत होते थे। जब, इस प्रकार के जीवन के द्वारा, उन्होंने सद्गुण में पूर्णता प्राप्त कर ली, तो उन्हें चर्च के प्रशासन का भार सौंपने के योग्य पाया गया: कार्पस को एक बिशप नियुक्त किया गया और उन्होंने थियतिरा के निवासियों को परमेश्वर का वचन प्रचार किया[7101] , जबकि पापलिस, जिसे कार्पस ने डीकन के पद से सम्मानित किया था, ने अपनी पदवी के अनुरूप, समान कार्यों में उत्साह दिखाया।

संत कार्पस और पापलिस की कीर्ति सभी पड़ोसी देशों में फैल गई – ठीक वैसे ही जैसे सद्गुण, सामान्य रूप से, छिपा नहीं रह सकता बल्कि हमेशा प्रकाश में आता है। इसलिए, लोगों की भारी भीड़ इन पवित्र पुरुषों के पास आने लगी; उनकी शिक्षा को उत्सुकता से सुनकर, वे ईसाई धर्म में परिवर्तित हो गए। सभी भलों का शत्रु, शैतान (देखें यूहन्ना 8:44), यह देखकर शांत नहीं रह सका; अपनी दुष्टता के उत्साही सेवकों को पाकर, उसने उन्हें दुष्ट राजा डेसियस[7102] के समक्ष संतों पर झूठा आरोप लगाने के लिए उकसाया। और इस प्रकार कार्पस और पापलिस के विरुद्ध यह आरोप लगाया गया कि वे न केवल देवताओं की पूजा नहीं करते थे, बल्कि इसके विपरीत, उन्होंने उन पर शाप दिया और ईसाई शिक्षा का अनुसरण किया। जब डिकियस को इस बात की खबर मिली, तो वह बहुत क्रोधित हुआ और उसने अपने सलाहकार वैलेरियस को एशिया में भेजा – जो एक उत्साही मूर्तिपूजक और एक क्रूर व्यक्ति था; साथ ही, राजा ने उसे संतों के बारे में जो कुछ भी वह जानता था, सब कुछ बता दिया और उन्हें सताने का पूरा अधिकार दे दिया। आदेश मिलने पर, वैलेरियस ने तुरंत प्रस्थान किया और जब वह उस स्थान पर पहुँचा जहाँ संत रहते थे, तो उसने अपने देवताओं को बलिदान चढ़ाने की इच्छा व्यक्त की। उसने तुरंत थ्यैतीरा की पूरी भूमि में एक फरमान जारी किया, जिसमें सभी निवासियों को देवताओं की पूजा करने के लिए बिना किसी देरी के बलिदान स्थल पर इकट्ठा होने का आदेश दिया गया। इस प्रकार, वह दुष्ट व्यक्ति न केवल स्वयं मूर्तिपूजक देवताओं का एक उत्साही उपासक था, बल्कि दूसरों को भी ऐसा करने के लिए मनाना चाहता था। जब सभी बलिदान स्थल पर इकट्ठा हो गए, तो दो ईसाई, कार्पस और पापलिस, उनके बीच नहीं मिले, क्योंकि वे एक दूसरे स्थान पर सच्चे परमेश्वर को एक सच्ची बलिदान अर्पित कर रहे थे—अर्थात्, प्रार्थना। सभा में उन्हें न पाकर, यातना देने वाले ने उनकी खोज का आदेश दिया; जब उन्हें बाद में ढूंढकर उसके सामने लाया गया, तो उसने घमंड से पूछा:

'तुम दूसरों के साथ देवताओं को बलिदान चढ़ाने के लिए क्यों नहीं आए?' – और फिर जोड़ा: 'मेरी आँखों के सामने अपने अपराध का प्रायश्चित करने में जल्दी करो, ताकि तुम्हारी बदनामी करने वालों की घृणा उन्हीं पर टूट पड़े, और तुम्हारी महिमा पहले से भी अधिक बढ़ जाए।'

हालाँकि संतों ने, कुछ भी न डरते हुए और न ही किसी मानवीय महिमा की चाह रखते हुए, साहसपूर्वक उत्तर दिया:

'हे न्यायाधीश, यह हमारे लिए नहीं है कि हम अपने ईश्वर को क्रोधित करें और उन आशीर्वादों के लिए कृतघ्न बनें जो उन्होंने हमें दिए हैं! क्योंकि यहाँ तक कि जानवर भी हमारी कृतघ्नता के विरुद्ध गवाह होंगे—क्योंकि वे भी अपने स्वामी को पहचानते हैं; लेकिन हम अपने सृष्टिकर्ता को अज्ञानी साबित करेंगे यदि हम अपने सच्चे स्वामी को त्यागकर झूठे देवताओं का सम्मान करें।'

[7100] पर्गामम – माइशिया के महान क्षेत्र (एशिया माइनर के उत्तर-पश्चिमी भाग में) का एक शहर – पर्गामम के राज्य की राजधानी थी। प्राचीन काल में, यह अपनी संपत्ति, विलासिता और विशाल पुस्तकालय के लिए, साथ ही पार्चमेंट (जो आधुनिक लेखन कागज का विकल्प था) के आविष्कार, या यूँ कहें कि उसके परिष्करण, के लिए प्रसिद्ध था। बाद में, इस शहर को रोमन साम्राज्य में शामिल कर लिया गया। इसका उल्लेख प्रकाशितवाक्य की पुस्तक (प्रकाशितवाक्य 2:12) में किया गया है। अपोस्टोलिक संविधान (7:46) में पेरगेमोन के पहले बिशप गैसियस का उल्लेख है, जिन्हें प्रेरित यूहन्ना द्वारा अभिषिक्त किया गया था। यही वह गैसियस हैं जिन्हें प्रेरित यूहन्ना ने अपना तीसरा पत्र (3 यूहन्ना 1:1) लिखा था।

[7101] थियतीरा लिडिया में एक शहर है, जो पेरगेमम के दक्षिण-पूर्व में, मिसिया की सीमा पर स्थित है; यह मूल रूप से सीरियाई राजशाही का हिस्सा था, फिर रोमन शासन के अधीन आ गया। प्रेरितों के समय में ही वहां ईसाई धर्म का प्रसार शुरू हो गया था। प्रेरितों के काम 16:14 में थियतीरा का उल्लेख है; प्रकाशितवाक्य 1:11, 2:18, 24।

[7102] डेसियस ने 249 से 251 ईस्वी तक शासन किया।

जैसे ही उन्होंने ऐसा कहा, ईश्वर ने उनके शब्दों की पुष्टि निम्नलिखित संकेत से की: अचानक एक भयंकर भूकंप आया, और सभी मूर्तियाँ गिरकर धूल-मिट्टी में मिल गईं। लेकिन वैलेरियस की दुष्टता प्रबल और अडिग थी: ईश्वर की अकथनीय शक्ति पर आश्चर्य करने और झूठे देवताओं की पूर्ण तुच्छता का मज़ाक उड़ाने के बजाय, उसने खुद को और भी अधिक पागल और निरर्थक साबित किया। उन पुरुषों की कुलीनता और नम्रता से लज्जित होकर, उसने उसी क्षण उन पर सबसे कठोर यातनाएँ देने से परहेज किया, और आदेश दिया कि उनके गलों में लोहे की बेड़ियाँ डाल दी जाएँ और उन्हें नग्न करके शहर में घुमाया जाए। इस प्रकार, ये पराक्रमी तपस्वी, जो सर्वोच्च सम्मान के योग्य थे, उन्हें अपमानित होकर सड़कों पर घुमाया गया; जिन्हें अनगिनत प्रशंसाओं का पात्र होना चाहिए था, उनका उपहास उड़ाया गया और उन पर अपमान किया गया। हालाँकि, न्यायाधीश ने यह सोचकर कि इतनी अपमानजनक सज़ा मिलने के बाद, वे अब अपने बयान की दृढ़ता में डगमगा जाएँगे, चापलूसी भरे शब्दों से उन्हें अपने पक्ष में करने का निश्चय किया और कहने लगा:

'यदि मैं तुम्हें विवेकी पुरुष न समझता, तो मैं तुम्हें कभी भी सटीक सलाह न देता, बल्कि तुम्हारी इच्छा के विरुद्ध, यातनाओं के द्वारा तुम्हें हमारे धर्म को अपनाने के लिए मजबूर करता। लेकिन चूँकि तुम्हारा विवेक और सदाचार यह दर्शाता है कि तुम—महान पुरुषों की विशेषता—मामलों का सही निर्णय लेने में सक्षम हो, इसलिए मैंने तुम्हारे लिए एक अच्छा सलाहकार बनने का निश्चय किया है। मेरे ख्याल से, यह आपके लिए कोई रहस्य नहीं है कि प्राचीन काल से ही अमर देवताओं को महिमा और सम्मान प्रदान किया गया है, और आज भी ऐसा ही है, न केवल हम ग्रीक और रोमन भाषा जानने वालों के बीच[7103] , बल्कि बर्बर लोगों के बीच भी; क्योंकि देवताओं के प्रति ऐसी भक्ति के कारण, शहरों पर अच्छे कानूनों द्वारा शासन किया जाता है, दुश्मनों पर विजय प्राप्त की जाती है, और शांति सुनिश्चित होती है। तो फिर, रोमन सम्राटों और राजकुमारों को ऐसी महिमा क्यों प्राप्त हुई कि उन्होंने शहरों और राष्ट्रों को उखाड़ फेंका और अपने सभी दुश्मनों को अपने शासन के अधीन कर लिया? क्या यह इसलिए नहीं था क्योंकि उन्होंने देवताओं का सम्मान किया और उनकी पूजा की? तो फिर, आप भी उनका सम्मान करें। और यदि, अज्ञानी लोगों के शब्दों के द्वारा, आप मूर्खों और हाल ही में उभरे ईसाई धर्म से भटक गए हैं, तो अब होश में आओ और बेहतर की ओर लौट आओ। तब देवता आप पर दया करेंगे, और आप उन कई आशीर्वादों का आनंद लेंगे जो हमारे पास हैं; और राजा की ओर से आपके लिए महान अनुग्रह प्रतीक्षा कर रहे हैं। लेकिन यदि आप अपनी पूर्व की हठधर्मिता पर बने रहते हैं, तो आप इन आशीर्वादों से वंचित हो जाएँगे और हमें आपके साथ अत्यंत कठोरता से पेश आने के लिए मजबूर करेंगे।

जब संतों ने यह सुना, तो उन्होंने स्वर्ग की ओर अपनी आँखें उठाईं, क्रॉस का चिह्न बनाया, और वैलेरियस को उत्तर दिया:

तुम उम्मीद करते हो कि हम तुरंत तुम्हारी दुष्टता की ओर मुड़ जाएँ, जैसे कि हम केवल अज्ञानी हों; लेकिन जान लो कि तुम कमजोर दिल या कमजोर दिमाग वालों से नहीं बल्कि हमसे निपट रहे हो। हम आपके धर्म को केवल इसलिए सम्माननीय नहीं मानते कि यह एक प्राचीन धर्म है, क्योंकि जो कुछ भी प्राचीन है वह आवश्यक रूप से सम्माननीय नहीं होता: आखिरकार, द्वेष भी प्राचीन है, फिर भी वह केवल अपनी प्राचीनता के कारण सम्मान का पात्र नहीं है। सवाल यह नहीं है कि आपका धर्म प्राचीन है या नहीं, बल्कि यह है कि क्या इसे स्वीकार किया जाना चाहिए। हमने इससे मुंह मोड़ने और जहाँ तक संभव हो, इसे हम में से जड़ से उखाड़ फेंकने का संकल्प लिया है, क्योंकि यह उन लोगों के लिए एक भयानक गेहेना तैयार करता है जो इसे प्रेम करते हैं। यदि आप सत्य जानना चाहते हैं, तो चिंतन करें, और आप पाएँगे कि आपके देवता मानव हाथों की रचना के सिवा और कुछ नहीं हैं: वे मूक और बधिर हैं और न तो दूसरों के लिए और न ही स्वयं के लिए किसी भी प्रकार का लाभ पहुँचा सकते हैं। सच्चा ईश्वर अपने सार में वर्णनातीत, हमारे मन के लिए अकल्पनीय, और समय में असीम है, क्योंकि उसकी कोई शुरुआत नहीं है; उसने सभी दृश्यमान और हमारे मन के लिए बोधगम्य चीजों को अस्तित्व में लाया; उसने मनुष्य की रचना की, उसे जन्नत में बसाया, और उसे एक आज्ञा दी—अपने स्रष्टा की आज्ञा मानने का आदी हो जाए। शैतान की ईर्ष्या के कारण, मनुष्य अवज्ञा में गिर गया और मृत्यु का अधीन हो गया। लेकिन शैतान मनुष्य के इस पतन से संतुष्ट नहीं हुआ और उसने उसके वंशजों को परमेश्वर से दूर करने की जल्दी की, ताकि लोग न केवल शारीरिक रूप से बल्कि आध्यात्मिक रूप से भी मरें: इस प्रकार, परमेश्वर को त्यागकर और सत्य के प्रकाश

[7103] अर्थात्, शिक्षित लोग। यूनानियों और रोमनों ने अपनी जाति से न होने वाले और अपनी भाषाएँ न जानने वाले सभी अन्य लोगों को असभ्य और अनपढ़ माना, और उन्हें 'बारबेरियन' (असभ्य) कहा।

से अपनी आँखें हटाकर, लोग मूर्तपिूजा के अंधकार में पड़ गए। इसलिए, दयालु और परम कृपालु सृष्टकिर्ता, मानव जाति को शैतान की शक्ति से मुक्त करने के लिए, पृथ्वी पर उतरे, जबकि वे पिता की गोद में निवास करते रहे, और पाप को छोड़कर हमारे समान बन गए; उन्हें क्रूस पर ठोक दिया गया, और उन्होंने हमें हमारे पापी पतन से मुक्त करने के लिए अपना प्राण दे दिया। अपने मृत्युपर हमारे शत्रु, शैतान को जीतकर, वे स्वर्ग में आरोहण कर गए और हमें भी वहाँ बुलाते हैं, क्योंकि उन्होंने उनके पास आरोहण का मार्ग हमारे लिए सुलभ कर दिया है।

– हे न्यायाधीश, क्या आप अपने देवताओं के बारे में ऐसा कुछ कह सकते हैं? और क्या आपको उन्हें देवता कहने में शर्म नहीं आती?

– जहाँ तक तुम्हारे धन-संपत्ति और राजा द्वारा प्रदान किए गए सम्मानों की बात है—जिन्हें तुम इतनी प्रिय मानते हो—हम उन्हें तुच्छ समझते हैं, क्योंकि हम अपने इनाम की प्रतीक्षा ईश्वर से कर रहे हैं, जिसके लिए हमने दृढ़ संकल्प लिया है कि हम कष्ट सहेंगे और मरेंगे।

ये शब्द सुनकर, वैलेरियस को बहुत क्रोध आया। उसने अपनी पाखंडी नम्रता को त्याग दिया और अपनी क्रूरता को छिपाए बिना, सबसे पहले संतों की संपत्ति को बदनाम करने वालों को लूटने के लिए सौंप दिया; जहाँ तक स्वयं संतों का सवाल है, उसने उन्हें घोड़ों से बाँधवा दिया और उन्हें सार्डिस ले जाने का आदेश दिया[7104] । और उन घोड़ों को, जिनसे संत बंधे हुए थे, बहुत तेजी से और बिना आराम के दौड़ाया गया, ताकि वे फिलाटिरा से सार्डिस एक ही दिन में पहुँच सकें[7105] । उन वीर पीड़ितों के लिए यह यात्रा कठिन थी, क्योंकि वे घोड़ों की गति से चलने में असमर्थ थे, उन्हें जबरदस्ती घसीटा गया और जमीन पर गिरने पर उन्होंने बहुत कष्ट सहन किया। उनके पीछे-पीछे पवित्र शहीदों का सेवक, धन्य अगाथोडोरस, अपने स्वामियों के प्रति सहानुभूति और शोक व्यक्त करते हुए चल रहा था। सार्डिस पहुँचने पर, उन्होंने अपनी कठिन यात्रा के बाद आराम नहीं किया, बल्कि उस रात का अधिकांश समय प्रार्थना और परमेश्वर के भजन-गीतों में बिताया। जब वे थोड़ी देर के लिए सो गए, तो परमेश्वर के स्वर्गदूतों ने उन्हें एक दर्शन में सांत्वना दी और उनके कष्टों को सहने के लिए उन्हें बल दिया। जागने पर, उन्होंने एक-दूसरे को अपने दर्शन बताए और बहुत प्रसन्न हुए, अपने दुख में मिली सांत्वना और अपने कष्टों में मदद के वादे के लिए परमेश्वर का धन्यवाद किया, और वे मसीह के लिए कष्ट सहने की तीव्र इच्छा रखने लगे।

वैलेरियस सार्डिस इस आशा में पहुँचा कि अपनी यात्रा में सहन की गई यातनाओं के बाद, शहीदों को उनके धर्म से वंचित करना आसान होगा: उस दुष्ट व्यक्ति को यह एहसास नहीं था कि संतों को एक दर्शन में प्रकट हुई ईश्वर की कृपा से अपने संकल्प में और अधिक दृढ़ता मिली थी। जब वैलेरियस ने देखा कि उनके चेहरे पहले से अधिक प्रकाशमान थे, कि वे आत्मा में दृढ़ और हृदय में निडर थे, तो उसने यातनाओं द्वारा उन्हें परास्त करने की आशा खो दी और एक बार फिर छल का सहारा लिया, मृदु वचनों और हर प्रकार की चापलूसी से संतों के मसीह में दृढ़ विश्वास को बहकाने और कमजोर करने का प्रयास करने लगा। और ऐसा प्रतीत हुआ मानो कोई लोमड़ी सिंहों से लड़ रही हो, क्योंकि उसके छल-कपट का कोई परिणाम नहीं निकला और वह उन पर विजय प्राप्त नहीं कर सका जिन्हें सर्वोच्च की सहायता ने मजबूत किया था। जब वैलेरियस ने देखा कि वह कुछ भी हासिल नहीं कर पाएगा, तो उसने उनके साथ अलग तरह से निपटने का संकल्प लिया: उसने कार्पस और पापिलस, जो दृढ़ और चुने हुए पुरुष थे, को पहरे में रख दिया; जबकि प्रतिष्ठित अगाथोडोरस, जो दासों का साथी था—जो स्वयं एक पूर्ण शहीद था और, उनके प्रति प्रेम से, उनका मित्र बन गया था और उनके दुखों में भागीदार बना था—इस अगाथोडोरस को, जमीन पर पेट के बल लिटाकर, बेरहमी से बैल की खाल से कोड़े मारने का आदेश दिया गया। और न्यायाधीश और शहीद एक-दूसरे से होड़ कर रहे थे: न्यायाधीश ने शहीद को दिए गए घावों की बहुतायत से परास्त करने की कोशिश की, जबकि शहीद ने उन घावों को इतनी खुशी से स्वीकार किया कि ऐसा लगा कि उसे डर था कि मारने वाले थक कर उसके दुख को बहुत जल्दी समाप्त न कर दें। इन क्रूर और लंबे समय तक चली पिटाई के दौरान, शहीद के शरीर से जैसे किसी झरने से खून बह रहा हो, खून की धाराएँ बहने लगीं; मांस उखड़ गया, उसकी अंतड़ियाँ बेनकाब हो गईं, और उसके अंग जोड़ों से अलग हो गए; सचमुच, इस वीर पुरुष को महान पीड़ा सहनी पड़ी। फिर भी उन्होंने यातनाओं को इतनी दृढ़ता से सहन किया कि ऐसा लगा मानो उन्हें कोई दर्द ही नहीं हो रहा हो;

[7104] सार्डिस या सार्डिस – एशिया माइनर के पश्चिमी भाग में लिडिया का एक शहर, पर्गामम और थियतीरा के दक्षिण में – लिडियाई राज्य की राजधानी था और अपनी संपत्ति के लिए प्रसिद्ध था। प्रेरितों के समय में, वहाँ कई ईसाई थे। सार्डिस में कलीसिया का उल्लेख प्रकाशितवाक्य 1:11, 3:1–4 में मिलता है।

[7105] दोनों शहरों के बीच की दूरी लगभग 33 मील थी।

उन्होंने मौन रूप से अपने गंभीर घावों को सहन किया, और यह विचार कि वह मसीह के लिए पीड़ा सह रहे थे, उनकी क्रूर पीड़ाओं के बीच उनके लिए पर्याप्त सांत्वना थी। जब वैलेरियस थक गया, तो उसके यातना देने वाले भी थक गए; फिर भी अगाथोडोरस के लिए, यातनाओं ने केवल उसके आनंद को बढ़ाया। मसीह, स्वर्ग से उसकी वीरता को देखकर और उसके पुरस्कार की तैयारी करते हुए, अपने सेवक के बहादुर धैर्य को देखकर, उसे अपने पास बुला लिया, ताकि वह इतनी मेहनत के बाद आराम पा सके। उसने तुरंत अपनी आत्मा अपने प्रभु के हाथों में सौंप दी, और अपना निर्जीव शरीर अपने अत्याचारियों के लिए छोड़ दिया। वैलेरियस के आदेश पर, इसे बिना दफनाए छोड़ दिया गया—जानवरों और पक्षियों के भोजन के लिए; लेकिन, जैसे ही रात हुई, कुछ विश्वासियों ने पवित्र शहीद के शरीर को उठाया और गुप्त रूप से उसे दफना दिया।

इसके बाद, वैलेरियस ने पवित्र शहीदों, कार्पस और पापलिस को बुलाया, और उनसे कहा:

'तुम्हारे मूर्ख सेवक को उसके कर्मों के अनुरूप मृत्यु मिली है, क्योंकि उसने अमर देवताओं को बलिदान चढ़ाने से इनकार कर दिया था। तो फिर, बुद्धिमान होकर, तुम अपने लिए अच्छा क्यों नहीं चुनते, बल्कि उस वास्तव में दुखी व्यक्ति जैसा बनना चाहते हो जिसने मूर्खता से जीवन और आनंद के बजाय यातनादायक मृत्यु को प्राथमिकता दी?'

यह सुनकर, संतों ने वैलेरियस को फटकारा और उसे पागल कहा; संत अगाथोडोरस की उस साहस के लिए प्रशंसा करने के बाद, जिसके साथ उन्होंने मृत्यु का सामना किया था, उन्होंने कहा कि वे भी मसीह के लिए ऐसी ही मृत्यु की कामना करते हैं।

तब यातना देने वाले ने, क्रोध से आग-बबूला होकर, फिर से आदेश दिया कि कार्पस और पापलिस को घोड़ों से बाँधा जाए और उन्हें सार्डिस से पेरगेमम तक उसके सामने तेज़ी से दौड़ाया जाए। और एक बार फिर संतों को सड़क पर घसीटा और खींचा गया, उन्होंने महान यातनाएं और कष्ट सहते हुए, और उनमें से प्रत्येक ने दाऊद से कहा: 'तेरे वचन के अनुसार मैं अत्याचारी के मार्ग से दूर रहा' (भजन संहिता 16:4)। रात में, उनके घावों के दर्द को कसकर बाँधी गई बेड़ियाँ और कालकोठरी में कठोर कैद और बढ़ा देती थीं। हालाँकि, संत अपनी कठिन यात्रा के बाद भी जागते रहे, और पूरी रात परमेश्वर से प्रार्थना करते रहे। और प्रभु फिर से उन पर प्रसन्न हुए: प्रभु का स्वर्गदूत उनके पास प्रकट हुआ, उसने उनके घावों को चंगा किया और उनके हृदयों को दिव्य आनंद से भर दिया, और उन्हें एक और बड़ी उपलब्धि के लिए बल दिया। जब सुबह हुई, तो यातना देने वाले ने सोचा कि पिछले दिन की यात्रा के बाद संत चलने में पूरी तरह से असमर्थ होंगे, और उसने उन्हें अपने सामने लाने का आदेश दिया ताकि वह उनके कष्टों को देख सके। और यह देखकर कि वे स्वस्थ और मजबूत थे, उनके पैर सुरक्षित थे और उनके चेहरे दमकते और प्रसन्न थे, उसने इसे उनकी जादू-टोने की शक्ति का प्रभाव माना, और इसलिए उनके कष्टों को और भी बढ़ा दिया। संतों के शरीरों को भारी लोहे की बेड़ियों में जकड़ने के बाद, उसने उन्हें और भी लंबी यात्रा पर भेजा। यात्रा के दौरान, एक स्थान पर उसने मूर्तियों को बलिदान चढ़ाया और न्यायपीठ पर आसीन हो गया। कार्प को बुलाकर, वह उससे इस तरह दोस्ताना अंदाज में बात करने लगा, मानो सचमुच उस पर तरस खा रहा हो:

'देखो, देवताओं ने, तुम्हारी वृद्धावस्था के प्रति दया से, तुम्हें बिना किसी कठिनाई के यह यात्रा करने में मदद की है। तो फिर, तुम अपने उपकारियों के प्रति कृतघ्नता क्यों दिखा रहे हो, और उनकी प्रतिष्ठा को कलंकित कर रहे हो? मेरी अच्छी सलाह मानो, और मेरे साथ देवताओं के पास चलो, क्योंकि मैं तुम्हारे वृद्धावस्था का सम्मान करता हूँ, तुम पर तरस खाता हूँ, और तुम्हारी दुर्भाग्य पर रोता हूँ—ऐसे नहीं जैसे यह किसी और की हो, बल्कि सचमुच ऐसे जैसे यह मेरी अपनी हो। लेकिन क्या किया जाए? तुम जानते हो कि तुमने मुझे बहुत दुख पहुँचाया है, और मैं अब और सहन नहीं कर सकता: और अगर तुम अब मेरी अच्छी सलाह पर ध्यान नहीं दोगे, तो मैं तुम्हारी अवज्ञा बर्दाश्त नहीं करूँगा, अगर अपने सम्मान की खातिर नहीं, तो देवताओं की खातिर तो जरूर।

संत कार्प ने इसका उत्तर दिया:

'कोई भी तुम्हारी उस सलाह को अच्छी नहीं कह सकता—जो प्रकाश से अँधेरे में और जीवन से मृत्यु की ओर ले जाती है—बल्कि, वे इसे एक धोखा और एक जाल कहेंगे। यदि तुम मेरे वृद्धावस्था का सम्मान करते हो, तो फिर तुम मुझ पर विश्वास क्यों नहीं करते जब मैं तुम्हें पितृवत् सलाह देता हूँ? क्योंकि मैं तुम्हारी बर्बादी पर तुम्हारे मेरे दुख पर दुखी होने से भी अधिक दुखी हूँ, और मैं तुम्हारी दुर्भाग्य पर गहराई से शोकाकुल हूँ—कि तुमने व्यर्थता में अपनी आशा लगाई

है[7106] और ऐसे देवताओं की पूजा करते हो जो तुम्हें अनंत यातना से नहीं बचाएंगे: क्योंकि वे निर्जीव हैं, मानव हाथों द्वारा बनाए गए हैं, और उन्हें व्यर्थ और बेकार मूर्तियाँ होने के कारण सचमुच देवता नहीं कहा जा सकता।

वैलेरियस अपने देवताओं पर हुई इस अपमान को और सहन नहीं कर सका और जल्लादों को आदेश दिया कि वे संत कार्प को पकड़ें और उसे बाँधकर, काँटों से ढकी लाठियों से बेरहमी से पीटें। जब संत को पीटा जा रहा था, तो उनका पूरा शरीर छिल गया, और प्रहारों से मांस के टुकड़े छिटककर जमीन पर गिर रहे थे। लेकिन यातना देने वाले के लिए यह अभी भी काफी नहीं था - उसने अन्य जल्लादों को बुलाया। उनमें से कुछ ने मोमबत्तियों से कार्प की पसलियों को झुलसाया, जबकि अन्य ने उसके घावों में नमक छिड़क दिया, जिससे जमीन संत के खून से लथपथ हो गई; उसकी नसें फट गईं, जिससे उसे असहनीय दर्द हुआ; फिर भी शहीद, जितना बढ़ता गया उसका कष्ट, उतना ही मजबूत होता गया ईश्वर के प्रति उसके प्रेम और उसके धैर्य में। वहाँ बँधे-बँधे खड़े, वे अपने यातनाओं के बीच मुस्कुराए, और राजकुमार ने उनसे पूछा:

'तुम क्यों हँसे, कार्प?'

उसने उत्तर दिया:

'मैंने अपने मसीह की वह कृपा देखी है जो मेरे लिए निहित है, और इसलिए मैं आनंदित हुआ।' क्योंकि उसी क्षण संत ने स्वर्ग को खुलते देखा, प्रभु को उनके सिंहासन पर विराजमान देखा, और करूब और सेराफिम को उनके चारों ओर देखा।

इस प्रकार प्रभु ने अपने सेवक को उसके कष्टों के बीच सांत्वना दी, और परमेश्वर की कृपा उसकी सभी पीड़ाओं पर विजय प्राप्त कर गई, जिससे संत अपने दर्दनाक घावों और उन कठोर यातनाओं को भूल गया जिन्हें वह बहादुरी से सहन कर रहा था। उसे तब तक यातनाएँ दी गईं जब तक कि उसके यातना देने वाले थक नहीं गए; और अपनी परीक्षा के बाद कैद किए जाने पर, उसने परमेश्वर का धन्यवाद किया, जिसने उसे अपने लिए पीड़ा सहने के योग्य समझा था।

तब, संत पापलिस को अदालत के सामने पेश होने के लिए बुलाकर, वैलेरियस ने उससे ऐसे प्रश्न करना शुरू किया, मानो वह उसे पहली बार देख रहा हो:

'आपकी वंशावली और मूल स्थान क्या है, और आपका पेशा क्या है?'

'तुम मुझे पहले से जानते हो,' संत ने उत्तर दिया, 'कि मैं पेरगामोन शहर में कुलीन माता-पिता के यहाँ पैदा हुआ था, और मैं उपचार की कला का अभ्यास करता हूँ—वह नहीं जो पृथ्वी पर उगने वाली जड़ी-बूटियों पर निर्भर करती है, बल्कि वह जो ऊपर से ईश्वर द्वारा प्रदान की जाती है; यह उपचार न केवल शरीर को लाभ पहुँचाता है, बल्कि आत्मा के रोगों को भी ठीक करता है।'

तब न्यायाधीश ने कहा:

'गैलेन[7107] और हिप्पोक्रेट्स[7108] द्वारा लिखित का अध्ययन किए बिना कोई कुशल उपचार नहीं हो सकता, जिन्हें उपचार की कला देवताओं द्वारा दी गई थी।'

पापलिस ने उत्तर दिया:

'गैलेन, हिप्पोक्रेट्स और उनके शिष्य किसी बीमार व्यक्ति का इलाज तभी कर सकते हैं, जब मेरा मसीह, अपनी अकथनीय दया से, उन पर अपना उपचार प्रदान करने की कृपा करें। अन्यथा, उनकी कला व्यर्थ सिद्ध होती है और चिकित्सा पेशे में उनका अनुभव बेकार हो जाता है; और जिन्हें आप देवता कहते हैं, वे किसी की सेहत का ख्याल कैसे रख सकते हैं, जबकि वे किसी भी तरह से अपनी ही मदद नहीं कर सकते! और यदि आप सत्य जानना चाहते हैं, तो इसे परखिए: यहाँ आप देखते हैं कि आपके बगल में बैठा आदमी एक आँख से नेत्रहीन है; आपके देवता उसे दृष्टि प्रदान करें, और उसके बाद मैं कुछ नहीं कहूँगा।

'क्या कोई उसे ठीक करने में सक्षम है?' वैलेरियस ने जवाब में पूछा।

[7106] अर्थात्, – व्यर्थ और झूठे देवताओं को, जो वास्तव में देवता नहीं हैं।

[7107] गैलिन, जिन्हें गैलेन के नाम से भी जाना जाता था, एक प्रसिद्ध चिकित्सक और विद्वान थे। उनका जन्म 131 ईस्वी में पेरगामोन में हुआ था; उन्होंने व्यापक रूप से अध्ययन किया और बहुत यात्राएँ कीं; उन्होंने अपने समय के रोमन सम्राटों के दरबारी चिकित्सक के रूप में सेवा की, और तीसरी शताब्दी की शुरुआत में ही उनका निधन हो गया। उन्होंने दुनिया भर के चिकित्सकों पर अपार प्रभाव डाला, और 16वीं शताब्दी तक चिकित्सकों की दृष्टि में उनका अधिकार अटूट बना रहा।

[7108] हिप्पोक्रेट्स – कोस द्वीप के एक अन्य प्रसिद्ध यूनानी चिकित्सक, जो गैलेन से बहुत पहले (ईसा पूर्व 460 से 356 तक) रहते थे। उनकी कई कृतियाँ आज भी मौजूद हैं, और गैलेन ने इन्हीं पर शिक्षा प्राप्त की।

'सर्फि इतना ही नहीं,' संत ने उत्तर दयिा, 'बल्कि हर तरह की अन्य असाध्य बीमारयिाँ भी ठीक हो जाएँगी, जो कोई भी मसीह को पुकारेगा, जो सभी बीमारयिों का चकित्सिक है।'

वेलेरयिस ने कहा, 'तो चलए अब देखते हैं कि आप क्या कहते हैं, और यदि आप सक्षम हैं, तो उसे हमारी आँखों के सामने चंगा करें, ताकि वह देख सके।'

पापलि ने उत्तर दयिा, 'मैं अभी यह नहीं करना चाहता, कहीं आप यह चमत्कार अपने राक्षसों का करश्मिा न मान लें; लेकनि पहले अपने चकित्सिकों को उनके कसिी एक देवता को बुलाने दें, और फरि मैं अपने मसीह की शक्ति दखिाऊंगा।'

तब वैलेरयिस ने अपने पुरोहतिों को बुलाया और उन्हें अपने अंधे सलाहकार को ठीक करने के लए देवताओं से प्रार्थना करने का आदेश दयिा। उन्होंने अपने व्यर्थ देवताओं से पुकारा, प्रत्येक ने अपने-अपने देवता का आह्वान कयिा: एक ने अपोलो को, दूसरे ने एस्क्लेपयिस को, एक ने ज्यूस को, दूसरे ने हर्मेस को पुकारा। और यह एक हास्यास्पद तमाशा था: वे पूरे दनि उन लोगों से प्रार्थना करते रहे जो कोई मदद नहीं कर सकते थे, बधरिों को पुकारते रहे, नर्जिीवों को बलदिान चढ़ाते रहे, और, स्वयं आत्मा से अंधा होकर, एक भी शारीरकि आँख की रोशनी वापस नहीं ला सके।

तो, मसीह का एक सेवक क्या करता है? – उसने अपनी शारीरकि और आध्यात्मकि आँखें स्वर्ग की ओर उठाईं और दयालु प्रभु से प्रार्थना की; फरि उसने अपने हाथ से अंधी आँख को छुआ, उस पर क्रॉस का चह्नि बनाया, और बीमार व्यक्ति ने तुरंत अपनी दृष्टि वापस पा ली। ऐसा करने से, उसने न केवल अपनी शारीरकि आँख की रोशनी वापस पाई, बल्कि अपनी आत्मा की आँखों से भी प्रबुद्ध हुआ: क्योंकि दविि्य प्रकाश ने उसके हृदय को छुआ, और वह, जैसे नींद से जाग उठा हो, व्यर्थ देवताओं की कमजोरी को पहचान गया और एकमात्र परमेश्वर, यीशु मसीह, की शक्ति को समझ गया, सच्चे प्रकाश ने जो संसार में आने वाले हर मनुष्य को प्रबुद्ध करता है (यूहन्ना 1:9), और उसने उस पर वश्विास कयिा। केवल वही व्यक्ति ही नहीं, बल्कि इस चमत्कार के द्वारा अन्य अनेक लोग भी सत्य के ज्ञान तक पहुँचे; क्योंकि वहाँ ऐसा कौन था जसिे यह अति गौरवशाली चमत्कार आश्चर्य और वश्विास की ओर न ले गया हो? – और सभी ने, यह देखकर और सुनकर, कहा: 'सचमुच, मसीह की शक्ति महान है, और वह ही सच्चे ईश्वर हैं!' लेकनि यद्यपि सभी ने सच्चे ईश्वर की महमिा की, अधर्मी वैलेरयिस ने उन्हें स्वीकार करने से इनकार कर दयिा और संत पापलिस के प्रति उसका क्रोध और भी बढ़ गया; इतनी बड़ी कृपा के लए धन्यवाद देने के बजाय, उसने उसे एक पेड़ से बांधकर नर्दियता से पीटने का आदेश दयिा।

इन प्रहारों के दौरान, संत पापलिस इस बात से दुखी नहीं थे कि उन्हें मारा जा रहा था, बल्कि इस बात से दुखी थे कि वे और भी अधकि कठोर यातनाएँ सहन नहीं कर रहे थे। इसके वपिरीत, वैलेरयिस ने जब देखा कि शहीद का साहस उसके यातनाओं पर भारी पड़ रहा था, तो वह और भी अधकि चढ़ि गया और उसके कष्टों में और वृद्धि की: उसने पापलि के पार्श्वों को आग से झुलसाया और उस पर पत्थर फेंकने का आदेश दयिा। लेकनि शहीद ने आग को भी धैर्य से सहन कयिा, जबकि पत्थर कहीं और गरि गए, मानो मसीह के लए पीड़ा सह रहे शहीद के शरीर का सम्मान कर रहे हों; संत को कोई भी हानि पहुँचाए बनि, पत्थर उन्हें फेंकने वालों पर ही गरि। जब वैलेरयिस थक गया और उसे संतों पर और कोई यातना सूझ नहीं रही थी, तो उसने कुछ समय के लए देरी करने का फैसला कयिा, यह सोचकर कि अगर वह संतों को कुछ समय के लए छोड़ देगा, तो उनके घाव दर्दनाक हो जाएँगे और उनके दुख को बढ़ाकर, उन्हें आगे आने वाले परीक्षण के लए कमजोर बना देगा। लेकनि शहीदों, जनिके चकित्सिक मसीह थे—जनिके लए उन्होंने स्वेच्छा से अपने घाव स्वीकार कए—वे न केवल अपने कष्टों से बल्कि अपने घावों और फोड़ों से भी चंगा हो गए, ताकि उनके घावों का कोई नशिान भी दखिाई न दे, जसिसे उस पागल यातनाकर्ता को बहुत क्रोध आया: जतिना अधकि उनका दुख कम होता गया, उतना ही वैलेरयिस का हृदय कष्ट से भरता गया और क्रोध से आग की तरह भड़क उठा।

थोड़ी ही देर बाद, यातनाकर्ता फरि से न्यायपीठ पर बैठ गया, क्रूरता बखिेरते हुए और क्रोधति दृष्टि से घूरते हुए। पवत्रि शहीदों ने, तथापि, उज्जवल आँखों और प्रसन्न मुखों के साथ उसके सामने खड़े रहे, मानो कसिी भोज के लए बुलाए गए हों। अधर्मी ने अपनी क्रोध की तीव्रता से उन्हें भयभीत करने का प्रयास कयिा; पर उनके नडिर हृदयों और साहसी ओठों से उसने ये शब्द सुने:

'हे यातना देने वाले, हमें बार-बार यहाँ लाकर और ले जाकर, और हमारे ऊपर अंतमि नर्णिय सुनाए बनि हमें यातना देकर, तुम अपने और अपने सेवकों को क्यों थकाते हो? क्या तुम यह आशा करते हो कि हम मसीह और सत्य से मुँह मोड़ लेंगे? – परन्तु तुम हमें अपनी अधर्मी आज्ञा के अधीन होने से पहले मरते हुए देखोगे।'

इसके बाद, यातना देने वाले के आदेश पर, मिट्टी के बर्तनों के टुकड़े और लोहे के कील जमीन पर बिखेर दिए गए; नग्न शहीदों को उन पर पेट के बल लिटा दिया गया, और वे उन्हें घसीटना शुरू कर दिए, और ऐसा करते हुए उन पर क्रूर प्रहार करने लगे। फिर भी इन यातनाओं के बीच भी, प्रभु ने अपने सेवकों को नहीं छोड़ा। वह उनकी सहायता के लिए दौड़े, *'उनके मुँह में साँस फूँककर और उन्हें उनकी पीड़ा से छुड़ाकर'* (नाहूम 2:1): अचानक, ये टुकड़े और लोहे के कील बिना कोई निशान छोड़े गायब हो गए, जबकि संत लोग सुरक्षित रहे। इससे न्यायाधीश का क्रोध और भी बढ़ गया, और उसने आदेश दिया कि उनकी पीठ पर ब्लेड से चीरा लगाया जाए; लेकिन संतों ने परमेश्वर की महिमा करते हुए, यह सब बहादुरी से सहन किया।

इसके बाद, उसने क्रूर जानवरों को इकट्ठा किया और एक तमाशा आयोजित किया: शहीदों को बाहर लाया गया, और उन पर एक मादा भालू छोड़ दी गई। सभी ने सोचा कि वह तुरंत उन्हें मार डालेगी और उनके शरीरों को चीर-फाड़ डालेगी, लेकिन उसने बिल्कुल भी खून की प्यास नहीं दिखाई और, मानो संतों का सम्मान करते हुए, उनके पैरों तले लेट गई और उन्हें गले लगा लिया। इसके बाद, एक सिंह को छोड़ा गया, जो न केवल मादा भालू जितना ही सौम्य साबित हुआ, बल्कि जिसमें ईश्वर की शक्ति और भी अधिक चमत्कारिक तरीके से प्रकट हुई – क्योंकि, जब वह गरजा, तो उसने मानव आवाज़ में बोलकर उत्पीड़क और उनकी क्रूरता में हठीलापन की निंदा की। हालाँकि, उन्होंने यह सब जादू-टोना समझकर अपने कानों पर हाथ रख लिए, और न्यायाधीश ने पवित्र शहीदों को चूने से भरी एक खाई में फेंकने का आदेश दिया। लेकिन वह पागल व्यर्थ में ही प्रयास करता रहा, वह ईश्वर का विरोध कर रहा था, जिन्होंने अपने सेवकों को जहाँ भी वे थे, सुरक्षित रखा; क्योंकि इस चूने में तीन दिन बिताने के बाद, वे स्वस्थ और सुरक्षित बाहर निकले।

जैसे-जैसे वैलेरियस को यह यकीन होने लगा कि वह संतों को हरा नहीं सकता, वैसे-वैसे उसका गुस्सा उन पर और भड़क उठा; उसने उन्हें नुकीले कीलों से जड़े हुए लोहे के जूते पहनाए और उन पर उनमें दौड़ने के लिए मजबूर किया; लेकिन इससे भी मसीह के अजेय योद्धाओं को हराने में वह नाकाम रहा। तब उसने भट्टी को प्रचंड ताप से भड़काया और संतों को उसमें डाल दिया – और उनके साथ, धन्य अगथोनिका, संत पापलिस की बहन, भी आग में कूद पड़ीं, क्योंकि वह भी उन्हीं पराक्रमी कार्यों में भाग लेना चाहती थीं और मसीह के लिए मरना चाहती थीं। लेकिन आग की भट्टी न केवल उन्हें झुलसाने में असफल रही; मसीह की शक्ति से, यह एक ठंडी जगह में बदल गई, क्योंकि एक बड़ी बौछार पड़ी, जिसने आग को बुझा दिया और भट्टी को ठंडा कर दिया। जब संत भट्टी से बिना किसी नुकसान के बाहर निकले, तो उन्हें फिर से कैद कर लिया गया, जहाँ उन्होंने चर्च की तरह ईश्वर के लिए भजन गाए। यातना देने वाले ने, यह न जानते हुए कि और क्या करे और इस बात से शर्मिंदा होकर कि वह हार गया था, शहीदों पर अंतिम सजा सुनाई - यह आदेश देते हुए कि उनकी तलवार से गर्दन काट दी जाए। जब संतों को अगाथोनिका के साथ मृत्युदंड के स्थान पर ले जाया गया, तो वे प्रसन्न हुए; और, स्वर्ग की ओर अपनी आँखें और हाथ उठाकर, उन्होंने न केवल अपने लिए बल्कि उन्हें मारने वालों के लिए भी प्रार्थना की, और इस प्रकार उन्होंने तलवार से सिर कलम कराकर अपना पराक्रम पूरा किया। उनके पवित्र शरीरों को अपमानपूर्वक एक ओर फेंक दिया गया और बिना पहरे के छोड़ दिया गया; विश्वासियों ने उन्हें गुप्त रूप से उठाकर उचित तरीके से दफनाया, और हमारे प्रभु यीशु मसीह की महिमा की, जिनके लिए, पिता और पवित्र आत्मा के साथ, युगानुयुग सम्मान और आराधना हो। आमीन[7109] .

कॉन्टाकियन, स्वर 2:

क्योंकि हे प्रभु, आप एक अनमोल खजाना हैं, और एक ऐसा स्रोत हैं जो चंगाई की धाराएँ बहाता है; आपने पृथ्वी पर अपने अवशेष प्रदान किए हैं, जो विभिन्न दुर्बलताओं और वासनाओं को दूर करते हैं, और आत्माओं पर अनवरत रूप से अनुग्रह प्रदान करते हैं। अतः हे दिव्य शहीद, आपके प्रेम के अनुरूप, हम यह पर्व मनाते हैं।

[7109] संत हेलेना, रानी और प्रेरितों के समान, ने कॉन्स्टेंटिनोपल में पवित्र सेपल्चर के मॉडल पर कारपस और पापलिस को समर्पित एक मठ बनवाया। 1200 में लिखने वाले तीर्थयात्री एंथनी का कथन है: 'संत कार्पस और पापलिस एक मठ में एक ही कब्र में पड़े हैं; और वहाँ (यानी कॉन्स्टेंटिनोपल में) सम्राट कॉन्स्टेंटिन ने एक चर्च बनाया था'।

शहीद संत फ्लोरेंटियस की स्मृति

13 अक्टूबर को स्मरणोत्सव

पवित्र शहीद फ्लोरेन्टियस थेस्सालोनिका नगर के मूल निवासी थे। एक ईसाई और सच्ची धार्मिकता के उत्साही रक्षक के रूप में[7110] , उन्होंने झूठे मूर्तिपूजक देवताओं में विश्वास की निंदा की और उनकी पूजा को अस्वीकार किया। साथ ही, सभी को मसीह के सच्चे धर्म में शिक्षित करते हुए, उन्होंने ईसाइयों को उस विश्वास में मजबूत किया और उन्हें परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करने के लिए प्रेरित किया। इसके लिए, फ्लोरेंटियस को मुकदमे के लिए उस देश के शासक के सामने लाया गया; लेकिन अपनी पूछताछ के दौरान, उसने हमारे प्रभु परमेश्वर, यीशु मसीह में अपने विश्वास का खुले तौर पर इकरार किया, और साथ ही मूर्तिपूजक देवताओं को लकड़ी, पत्थर, सोने, चांदी, तांबे और लोहे की—आत्मा रहित और निर्जी मूर्तियाँ बताया। इससे उस देश के शासक को बहुत क्रोध आया, और उसने उसे यातना देने की सज़ा सुनाई। उसे बेरहमी से पीटा गया; उसके शरीर को तेज औज़ारों से नोचा गया, जिसके बाद उसे उसके नीचे जलाई गई एक बड़ी आग में फेंक दिया गया, जिसमें वह प्रार्थना करते और परमेश्वर को धन्यवाद देते हुए आनंदपूर्वक स्वर्ग सिधार गया[7111] ।

पूजनीय निकिता कन्फेशर का पर्व दिवस[7112]

13 अक्टूबर को स्मरणोत्सव

संत निकिता का जन्म पफ्लागोनिया[7113] में धर्मपरायण माता-पिता के यहाँ हुआ था। वह सम्राट थियोफिलिस द आइकनोक्लास्ट की पत्नी, सम्राज्ञी थियोडोरा के एक दूर के रिश्तेदार थे। अपनी शिक्षा पूरी करने के बाद, 17 वर्ष की आयु में, निकिता कॉन्स्टेंटिनोपल आए। उस समय, शाही सिंहासन पर दिवंगत सम्राट लियो चौथे की विधवा आइरीन का कब्ज़ा था, जबकि उनका बेटा कॉन्स्टेंटिन[7114] अभी नाबालिग था। शाही सेवा में स्वीकार किए जाने के बाद, निकिता ने जल्द ही पदोन्नति की सीढ़ियाँ चढ़ीं; उन्हें पैट्रिसियिन (patrician) के पद पर पदोन्नत किया गया और पूरे शाही महल का पर्यवेक्षक नियुक्त किया गया, और बाद में उन्हें सिसिली में सैनिकों का कमांडर नियुक्त किया गया[7115] । एक उच्च पद प्राप्त करने के बाद, निकिता को सांसारिक उपाधियों और धन-संपत्ति की व्यर्थता और नश्वरता का एहसास हुआ, और वह संन्यास ग्रहण करने की धार्मिक इच्छा से प्रेरित हो गया। हालाँकि, सम्राट निकिफोरस और उनके पुत्र स्टव्राकियोस[7116] , राज्य के प्रति निकिता की सेवाओं को पहचानते हुए, उन्हें उनके पद से मुक्त करने या मठ में प्रवेश करने की अनुमति देने के लिए तैयार नहीं थे। जब माइकल रंगव[7117] ने उन्हें सिंहासन पर succeed किया, तो निकिता ने उनसे अपना पद छोड़ने और संन्यास के संकल्प लेने की अनुमति के लिए विनती की[7118] । हालाँकि, उन्हें राजधानी छोड़ने की अनुमति नहीं दी गई; इसके बजाय, सम्राट ने आदेश दिया कि उन्हें स्वर्ण द्वारों पर, तथाकथित क्रिसोनिसिया[7119] में

[7110] संत फ्लोरेन्टियस एक प्रेरित शिष्य थे

[7111] तीसरी शताब्दी की शुरुआत में।

[7112] प्रारंभिक ईसाई चर्च में, 'कन्फेशर्स' शब्द उन लोगों पर लागू किया जाता था जो ईसाई धर्म के उत्पीड़न के दौरान, खुले तौर पर खुद को ईसाई घोषित करते थे और यातना सहने के बाद, अपने उत्पीड़क द्वारा बख्श दिए जाते थे और जीवित रहते थे। ऐसे व्यक्तियों को ईसाई समाज में विशेष सम्मान प्राप्त था: इस प्रकार उन्हें गिरि चुके लोगों को चर्च के साथ फिरि से मिलाने का अधिकार दिया गया था।

[7113] संत निकिता का जन्म लगभग 763 में हुआ था। – पाफलैगोनिया – एशिया माइनर के उत्तरी भाग में एक दुर्गम पहाड़ी क्षेत्र, जो पोंटस और बिथिनिया से सटा हुआ था।

[7114] खज़ार लियो चतुर्थ ने 775 से 780 तक शासन किया। उनकी पत्नी, आइरीन ने, उनके छोटे बेटे, कॉन्स्टेंटिन VI पोर्फ्योजेनिटस के शासनकाल के दौरान राज्य का प्रशासन संभाला, और बाद में 797 से 802 तक स्वयं शासन किया।

[7115] उस समय सिसिली द्वीप बाइज़ेंटाइन शासन के अधीन था, जो 6ठी सदी के मध्य से 827 तक रहा, जब अरबों ने इस द्वीप पर विजय प्राप्त की।

[7116] बाइज़ेंटाइन सम्राट निकिफ़ोरस प्रथम ने 802 से 811 तक शासन किया। उनके पुत्र, स्टाव्राकियोस ने उनके बाद केवल दो महीने और छह दिनों तक शासन किया।

[7117] सम्राट माइकल प्रथम रंगाब ने 811 से 813 तक शासन किया।

[7118] माना जाता है कि संत निकिता ने लगभग 813 में संन्यास की शपथ ली। उस समय, उनकी आयु 50 वर्ष थी।

[7119] कॉन्स्टेंटिनोपल के एशियाई भाग में, बिथिनिया में प्राचीन शहर क्रिसोपोलिस के स्थल पर, जो एक तरह से कॉन्स्टेंटिनोपल का उपनगर था।

आवास दिया जाए, जहाँ उन्हें हर समय रहना था। संत निकिता प्रतिमा-विरोधी सम्राट लियो द आर्मेनियन[7120] के शासनकाल तक इसी मठ में बंद रहे। जब संत निकिता ने इस कानूनविहीन सम्राट द्वारा पवित्र प्रतिमाओं के साथ की गई अपवित्रता देखी, तो वे कॉन्स्टेंटिनोपल छोड़कर शहर के बाहरी इलाके में एक मठ में निचले दर्जे के भिक्षुओं की कतार में शामिल हो गए, जहाँ उन्होंने उपवास और श्रम में अपना समय बिताया। इस बीच, प्रतिमा-भंजकों को जब पता चला कि उसके पास उद्धारकर्ता की एक प्रतिमा है जिसे उसने रोम से प्राप्त किया था, तो उन्होंने इसकी सूचना सम्राट को दी। निकिता के पास अधिकारी भेजे गए, जिन्होंने धमकियों का उपयोग करके उससे यह प्रतिमा सौंपने के लिए मजबूर कर दिया। लेकिन जब संत निकिता ने इसे सौंपने से दृढ़तापूर्वक इनकार कर दिया, तो दूतों ने एक ऐसे भिक्षु का पता लगाया जिसने पवित्र प्रतिमा का ठिकाना बता दिया। फिर वे चर्च में घुसे, पवित्र प्रतिमा को ले गए, और हर संभव तरीके से उसका अपमान किया। इस अपमान से संत निकिता को बहुत दुख हुआ। इससे संतुष्ट न होकर, मठ से जाते समय ज़ार के दूतों ने उसे किसी भी बहाने से मठ छोड़ने पर रोक लगा दी। बाद में, जब एक और मूर्तिभंजक शासक – थियोफिलुस[7121] – सिंहासन पर बैठा, तो थियोडोसियस नामक एक दरबारी को आदरणीय संत के पास भेजा गया; वहाँ मौजूद सभी लोगों के सामने, और निर्वासन की धमकी के तहत, उसने उनसे मूर्तिभंजक पैट्रिआर्क एंथनी[7122] को स्वीकार करने और मूर्तियों की पूजा त्यागने की मांग की। लेकिन संत ने उत्तर दिया:

'मैं मसीह और अपने ईश्वर की प्रतिमा की पूजा करना कभी बंद नहीं करूँगा, और मैं एंथनी को पादरी नहीं, बल्कि एक व्यभिचारी और अपराधी कहूँगा… आप, हालाँकि, अपनी इच्छा से करें।'

धर्म के प्रति इस साहसी कार्य के लिए, संत निकिता को तुरंत मठ से निकाल दिया गया। ईश्वर का धन्यवाद करने और अपने साथ तीन अन्य भिक्षुओं को लेकर, वह एक अन्य मठ के लिए रवाना हो गए, जहाँ उन्होंने पवित्र उपवास और पेंटेकोस्ट से पहले की अवधि बिताई, फिर उस मठ को भी छोड़ दिया। कई भटकन और कठिनाइयों के बाद, वह अंततः समुद्र के किनारे एक मठ में बस गए, जहाँ उन्होंने अपने जीवन के 76वें वर्ष में अपना जीवन समाप्त किया[7123] । अपने जीवनकाल के दौरान और अपनी मृत्यु के बाद भी, उन्होंने कई चमत्कार किए।

शहीद डिकिन सेंट बेंजामिन की स्मृति

13 अक्टूबर को स्मरण किया जाता है

संत बेंजामिन डीकन फारसी राजा इज़्डिगर्ड के शासनकाल में रहते थे[7124] । कई फारसी मूर्तिपूजकों को ईसाई धर्म में परिवर्तित करने के बाद, उन पर झूठी अफवाहें फैलाई गईं, उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया, बुरी तरह पीटा गया और जेल में डाल दिया गया, जहाँ उन्होंने दो साल बिताए। पारस के दरबार में भेजे गए एक यूनानी दूत ने बेंजामिन की दुर्दशा के बारे में जानकर, राजा से उसे रिहा करने का आग्रह किया। राजा ने इस शर्त पर यह अनुरोध स्वीकार कर लिया कि बेंजामिन यह वादा करे कि वह पारसियों को ईसाई धर्म नहीं बदलवाएगा। राजदूत ने बेंजामिन की ओर से यह वादा किया। लेकिन जब बेंजामिन को इस बात का पता चला, तो उन्होंने कहा:

'बपतिस्मा के कुंड में मुझे जो प्रकाश मिला, उसे त्यागना मेरे लिए असंभव है। उस व्यक्ति का कितना बड़ा कष्ट इंतजार कर रहा है जिसने उसे दिया गया प्रतिभा छिपाया है, या जिसने जानबूझकर सुसमाचार की शिक्षाओं को छिपाया है!'

ये शब्द सहन न कर पाने पर, राजा ने पच्चीस काँटों को तेज करवाकर संत बेंजामिन के नाखूनों के नीचे ठोकने का आदेश दिया। इसके बाद, यह देखकर कि संत इन कष्टों को एक प्रकार की खुशी मानते थे, राजा ने उन्हें और भी बड़े और

[7120] अर्थात् 820 तक।

[7121] 829 में।

[7122] एंथनी प्रथम, एक प्रतिमा-भंजक, 821 से 832 तक पैट्रिआर्क थे।

[7123] लगभग 838.

[7124] फ़ारसी राजा इज़्गिरद प्रथम ने 399 से 420 तक शासन किया। उनके शासनकाल के दौरान, डिकिन बेंजामिन के शिक्षक और बिशप, संत अवदा को शहादत प्राप्त हुई (418 में)। उनका पर्व दिवस 3 (16) मार्च है।

अधकि असहनीय यातनाओं से पीड़ति कयिा, और अंत में उन्हें एक मोटे, गाँठदार खंभे से भेदने का आदेश दयिा, जसिके बाद इस वीर तपस्वी ने अपनी आत्मा ईश्वर को सौंप दी[7125] ।

27 अक्टूबर

14 अक्टूबर (पुराने कैलेंडर के अनुसार)

पवत्रि शहीदों नज़ारयिस, जर्वाशयिस, प्रोटेशयिस और सेल्सस का दुख

14 अक्टूबर को स्मरणोत्सव

[7126]संत नज़ारयिस का जन्म रोम में हुआ था; उनके पति एक यहूदी थे, जबकि उनकी माँ, जनिका नाम पेरपेटुआ था, एक ईसाई थीं: उन्होंने स्वयं प्रेरति पतरस से पवत्रि बपतस्मिा प्राप्त कयिा था। कशिोरावस्था में पहुँचने पर, नज़ारयिस ने इस पर लंबा वचिार कयिा कि उसे कसि धर्म का पालन करना चाहए – अपने पति का या अपनी माँ का। अंतत; उन्होंने अपनी पवत्रि माता के पदचन्हिों पर चलने का संकल्प लयिा, जनिकी प्रार्थनाओं ने उनकी आध्यात्मकि प्रबुद्धता में बहुत योगदान दयिा था, और बशिप लनिस द्वारा बपतस्मिा ग्रहण कयिा।

जब संत नज़ारयिस परपिक्व हुए, तो उन्होंने सद्गुणों में भी खुद को पूर्ण साबति कयिा: प्रभु की उत्साहपूर्वक सेवा करते हुए, उन्होंने न केवल अपनी मुक्ति की परवाह की बल्कि दूसरों की भी, क्योंकि उन्होंने कई अवश्वािसयिों को मसीह के धर्म में परविर्तति कयिा। लेकनि जल्द ही नज़ारयिस रोम से चले गए; उन्होंने अपने माता-पति से अपनी संपत्ति का हस्सिा लयिा और वहाँ गरीबों के लिए अच्छे काम करने लगे; और मलिान पहुँचने पर, उन्होंने वहाँ अपनी सारी संपत्ति बाँट दी, बेसहारों को दान दयिा और मसीह के लिए पीड़ति कैदयिों के समर्थन के लिए अपनी संपत्ति का उपयोग कयिा।

उस समय, दुष्ट नीरो[7127] के शासनकाल में, ईसाइयों पर एक बड़ा उत्पीड़न हो रहा था, और मसीह के कई स्वीकारकर्त्ता (confessors) को बेड़यिों में जकड़कर यातनाएँ दी गईं; संत नज़ारयिस, उनकी सेवा करते हुए, उन्हें वश्वािस में मज़बूत करते थे और उनके शहीद होने के लिए उन्हें प्रोत्साहति करते थे। उस समय, कुछ पवत्रि शहीदों, गेर्वैसयिस और प्रोटैसयिस को, राज्यपाल अनुलनिस द्वारा गरिफ्तार कर कैद कर दयिा गया था। संत नज़ारयिस अक्सर उनसे मलिने आते थे और अपने धर्मपरायण शब्दों से उन्हें सांत्वना देते थे: वह उनसे बहुत स्नेह करने लगे, क्योंकि उन्होंने देखा कि वे दव्यि प्रेम से परपिूर्ण थे और प्रभु के लिए अपना जीवन बलदिान करने के लिए उत्सुक थे, जन्हिोंने हमारे लिए क्रूस पर अपना जीवन बलदिान कर दयिा था। नज़ारयिस को उनके प्रति इतना प्रेम था कि वह उनसे अलग नहीं होना चाहता था, और उसने उनके साथ ही पीड़ा सहने और मरने का वकिल्प चुना। जल्द ही उस प्रांत के राज्यपाल के ध्यान में यह बात आई कि नज़ारयिस, तहखाने में कैदयिों से मलिने के दौरान, उन्हें उनकी ज़रूरत की हर चीज़ ला रहा था और उन्हें ईसाई धर्म में मजबूत कर रहा था। इसलिए उसने नज़ारयिस को गरिफ्तार करने और अपने सामने लाने का आदेश दयिा; मुकदमे में, उसने सबसे पहले उससे पूछा कि वह कौन है और कहाँ से आया है। यह जानने पर कि नज़ारयिस जन्म से रोमन और वश्वािस से ईसाई था, अनुलनि ने उस पर अपने पूर्वजों के देवताओं का त्याग न करने का आग्रह कयिा, जन्हिें रोमनों ने प्राचीन काल से बलदिान और पूजा के माध्यम से सम्मानति कयिा था। हालाँकि, संत न केवल उसकी सलाह मानने से इनकार कर दयिा, बल्कि उससे सीधे तौर पर वरिोध करते हुए उसके झूठे देवताओं की नदिा की और एक सच्चे ईश्वर, यीशु मसीह की गवाही दी। तब राज्यपाल ने आदेश दयिा कि उसे मुँह पर मारा जाए। लेकनि संत ने साहसपूर्वक बोलना और राज्यपाल की दुष्टता की नदिा करना बंद नहीं कयिा। इसके बाद, राज्यपाल और भी अधकि क्रोधति हो गया और शहीद

[7125] संत अवदा की शहादत के तीन साल बाद, 421 ईस्वी में, उनके उत्तराधकिारी, उनके पुत्र वहरमन पंचम के शासनकाल में, संत बेंजामनि डकिन को यातनाएँ दी गईं।

[7126] संत लनि, बशिप, संत प्रेरति पतरस के ठीक बाद रोम के चर्च के पहले बशिप थे; उन्हें 70 प्रेरतिों में गनिा जाता था। उनका पर्व दविस अन्य प्रेरतिों के साथ 5 नवंबर और 1 जनवरी को मनाया जाता है।

[7127] नीरो (54–68 ईस्वी) सबसे क्रूर, घमंडी और भ्रष्ट रोमन सम्राटों में से एक था। उसने रोम में ईसाइयों पर पहला उत्पीड़न भड़काया, जसिमें प्रेरति पतरस और पौलुस ने कष्ट सहे।

को लाठियों से पीटने का आदेश दिया, फिर उसे अपमानपूर्वक शहर से निर्वासित कर दिया। धन्य नज़ारियस, निर्वासन के बाद, इस बात से प्रसन्न हुए कि उन्हें मसीह के लिए घाव पाने योग्य समझा गया था और, धर्म के लिए निर्वासित व्यक्ति के रूप में, उन्होंने मसीह के वचनों को याद किया: *'धन्य हो तुम जब लोग तुम्हारा अपमान करते हैं और तुम्हारा सताव करते हैं और मेरे कारण झूठ-मूठ सब प्रकार की बुराई कहते हैं* (मत्ती 5:11)। उसका एकमात्र दुख यह था कि वह अपने प्रिय मित्रों, जर्वाशियस और प्रोटेशियस से अलग हो गया था, जिनके साथ वह मरना चाहता था। बाद में प्रभु ने उसकी इस इच्छा को पूरा किया, लेकिन फिलहाल उसे एक अन्य भूमि पर लोगों के उद्धार के लिए सेवा करनी थी और कई लोगों को भ्रम से दूर करना था। अगली ही रात, उनकी धन्य माता एक दर्शन में उनके सामने प्रकट हुईं, और उन्हें गाउल जाने तथा वहाँ मसीह के सुसमाचार का प्रचार करने के लिए आज्ञा दी। उठकर, वह अपनी माता के निर्देशानुसार उस भूमि के लिए रवाना हो गए और मसीह का प्रचार करते हुए, उन लोगों को विश्वास के प्रकाश से प्रबुद्ध किया जो अंधकार और मृत्यु की छाया में बैठे थे[7128] । जब संत नज़ारियस मेलिया नामक शहर में थे[7129] , तो उन्होंने एक कुलीन और धर्मनिष्ठ महिला से सेल्सस नाम का एक तीन वर्षीय लड़का लिया, उसका बपतिस्मा कराया, और उसे धार्मिकता में पाला। वह लड़का वर्षों और समझदारी में बढ़ता गया, जो ईश्वर की कृपा से परिपूर्ण था; और जब वह वयस्क हुआ, तो वह अपने शिक्षक, संत नज़ारियस का अनुसरण करने लगा, उनसे परम ज्ञान सीखते हुए और उनके ईश्वर-प्रेरित वचनों और पितृवत् शिक्षा को अपने हृदय में संजोए हुए। वह युवक मसीह से संबंधित मामलों में इतना बुद्धिमान था कि वह अपने शिक्षक के बराबर था, और उसके साथ मिलकर मानव जाति के उद्धार के लिए कार्य करता था; मसीह का उपदेश देते हुए, उसने नज़ारियस के साथ मिलकर उत्पीड़न और यातनाएं सहन कीं, और बाद में उसे भी अपने शिक्षक के समान शहीद के मुकुट का योग्य माना गया।

उस प्रदेश के शासक डिनोवियस को जब पता चला कि नज़ारियस कई शहरों में ईसाई धर्म का प्रचार कर रहे थे, तो उसने तुरंत उन्हें सेल्सियस के साथ गिरफ्तार कर लिया और उन्हें कोड़े लगवाने के बाद, दोनों को जेल में डाल दिया, ताकि अगली सुबह उन्हें हर तरह की यातनाएँ दी जा सकें। जब सुबह हुई, तो राज्यपाल की पत्नी ने जब देखा कि सेलसियस, एक सुंदर युवक, को मृत्युदंड के लिए ले जाया जा रहा है, तो उस पर दया आ गई और वह अपने पति के पैरों में गिर पड़ी, और उनसे उस युवक को क्षमा करने और उसे उसके शिक्षक नज़ारियस के साथ रिहा करने की विनती करने लगी; अपनी अनवरत विनतियों से, वह राज्यपाल के पास तब तक रुकी रही जब तक कि उसने उन्हें दोनों को रिहा करने के लिए राज़ी नहीं कर लिया। जब उसने उन्हें रिहा किया, तो राज्यपाल ने कहा:

'मेरी पत्नी की मध्यस्थता तुम्हें सभी कष्टों से मुक्त करती है।'

लेकिन पवित्र शहीदों को इस बात का दुख था कि वे न तो वांछित शहीद का मुकुट प्राप्त कर पाए थे और न ही उन्होंने अपना सांसारिक जीवन पूरा किया था, ताकि वे शरीर से मुक्त होकर मसीह के साथ रह सकें[7130] । वहाँ से जाते समय, वे तिमिरि शहर[7131] पहुँचे और, अपनी प्रथा के अनुसार, वहाँ सुसमाचार का प्रचार किया, और मसीह के लिए कई आत्माओं को जीता।

लेकिन शैतान, इसे सहन न कर सका, ने मूर्तिपूजकों के क्रोध को भड़काया; संतों नज़ारियस और सेल्सस के विरुद्ध उठते हुए, दुष्टों ने उन्हें पकड़ लिया और अपने क्रूर राजा नीरो के पास भेज दिया। जब संत राजा के सामने उपस्थित हुए, तो उन्होंने मसीह को सृष्टिकर्ता और ईश्वर के रूप में स्वीकार किया; इसके लिए, नज़ारियस को ज़मीन पर फेंक दिया गया और पैरों तले कुचल दिया गया, जबकि सेल्सस को लाठी से पीटा गया। देवताओं को बलिदान देने के लिए मजबूर किए जाने पर, उन्होंने अपने शब्दों से उनकी मूर्तियों को ज़मीन पर पटक दिया, और इसके लिए उन्हें चीजों द्वारा खाए जाने के लिए फेंक दिया गया; फिर भी, जानवरों ने उन्हें कोई नुकसान नहीं पहुँचाया। तब उन्हें समुद्र में फेंक दिया गया, लेकिन वे पानी पर इस तरह चले जैसे वह समतल जमीन हो। यह देखकर, राजा के नौकर मसीह में विश्वास करने लगे; संत नज़ारियस द्वारा बपतिस्मा ग्रहण करने के बाद, उन्होंने शाही दरबार छोड़ दिया और दुनिया के कोलाहल से दूर होकर, खुद को मसीह की सेवा के लिए समर्पित कर दिया।

[7128] अर्थात्, वे लोग जो सच्चे परमेश्वर को नहीं जानते थे और आध्यात्मिक रूप से नाश हो रहे थे। यह मुहावरा निर्गमन 9:2 से लिया गया है; तुलना करें मत्ती 4:16 से।

[7129] मेलिया या कमिला – फ्रांस के दक्षिण में, आज के नीस के पास, गैलिक शहरों में से एक।

[7130] यह अभिव्यक्ति फिलिप्पियों 1:23 से ली गई है।

[7131] टमिरि – जिसे अन्यथा ट्रायर के नाम से जाना जाता है, उत्तरी गॉल का एक घनी आबादी वाला, समृद्ध शहर।

इस बीच, संत नाज़ारियस अपने शिष्य, संत सेल्सस के साथ, मेडिओलानम वापस गए और उन्होंने पाया कि पवित्र शहीद गेरवासियस और प्रोटसियस अभी भी जीवित थे, हालांकि वे जेल में कष्ट भोग रहे थे।

जब उन्होंने मेडियोलानम में सुसमाचार का प्रचार करना शुरू किया, तो उन्हें एक बार फिर राज्यपाल अनुलिन ने गिरफ्तार कर लिया। अनुलिन ने उससे पूछा कि वह तब तक कहाँ था। यह जानकर कि वह स्वयं नीरो के हाथों में था, राज्यपाल यह देखकर चकित रह गया कि वह कैसे उसके हाथ से जीवित और कुशल बचकर निकलने में कामयाब रहा, क्योंकि वह जानता था कि नीरो एक क्रूर और अमानवीय शासक था, जो न केवल दोषियों बल्कि निर्दोषों को भी निर्दयता से मार डालता था। राज्यपाल ने नज़ारियस को आगे आकर उनके देवताओं की पूजा करने के लिए मजबूर किया; लेकिन उसने न केवल ऐसा करने से इनकार कर दिया, बल्कि उनके खिलाफ अपमानजनक बातें भी कहने लगा। तब अनुलिन ने आदेश दिया कि उसके मुँह पर वार किया जाए, और संत, अपने शिष्य सेलियस के साथ कई प्रहार सहने के बाद, सेंट्स गर्वाशियस और प्रोटेशियस के साथ जेल में डाल दिए गए। नज़ारियस इस बात से बहुत प्रसन्न हुआ कि उसे अपने प्रियमित्रों को देखने और उनके साथ एक ही कोठरी में मसीह के लिए कारावास सहने का योग्य समझा गया था।

उस समय, राज्यपाल अनुलिन ने सम्राट नीरो को नाज़ारियस के बारे में सूचित करते हुए एक पत्र भेजा। सम्राट ने, यह सुनकर कि नाज़ारियस जीवित था, उन सेवकों पर बहुत क्रोध किया जिन्हें उसे समुद्र की गहराई में डुबाने का आदेश दिया गया था। उन्होंने उन्हें खोजने के लिए बहुत प्रयास किया, उनका इरादा उन्हें मौत की सजा देने का था – यह सोचकर कि उन्होंने नाज़ारियस को भागने दिया था – लेकिन वे उन्हें ढूंढ नहीं सके; क्योंकि वे पहले ही संसार से भाग चुके थे और स्वेच्छा से मसीह की पवित्र सेवा के लिए खुद को समर्पित कर चुके थे। सम्राट ने गवर्नर अनुलिन को लिखा, और उसे तुरंत नाज़ारियस को मार डालने का आदेश दिया। अनुलिन ने सम्राट का पत्र प्राप्त करने के बाद, संत नाज़ारियस और उनके शिष्य, संत सेल्सस को कालकोठरी से बाहर निकाला और तलवार से उनका सिर कलम कर दिया।

विश्वासियों में से एक, जो शहर के बाहरी इलाके में रहता था, ने चुपके से उनके पवित्र अवशेष ले लिए और उन्हें अपने घर ले आया। उस समय, उसकी लकवाग्रस्त बेटी अपने बिस्तर पर लेटी थी; जब पवित्र शहीदों के अवशेष घर में लाए गए, तो वह तुरंत अपने बिस्तर से उठ खड़ी हुई, और वह इतनी स्वस्थ थी मानो वह कभी बीमार ही न हुई हो। घर का स्वामी, अपने परिवार के साथ, इस पर बहुत प्रसन्न हुआ, और उसने शहीदों के शरीरों को अपने बगीचे में सम्मानपूर्वक दफनाया।

पवित्र शहीदों नज़ारियस और सेल्सस के सिर कलम किए जाने के कुछ ही समय बाद, सैन्य कमांडर अस्तासियस शहर में पहुँचा, जो मोरावियाई लोगों के खिलाफ युद्ध छेड़ने के लिए निकला था[7132] । मूर्तिपूजक पुरोहितों ने उस पर जेल में पड़े पवित्र शहीदों जर्वाशियस और प्रोटेशियस को मार डालने का दबाव डाला; और जर्वाशियस को टिन की छड़ों से पीटा गया और वह जल्द ही मर गया; जबकि प्रोटेशियस ने तलवार से अपना सिर कटवाकर अपनी शहादत पूरी की। फिलिप नामक एक ईसाई ने अपने पुत्र के साथ मिलकर उनके शरीरों को अपने ही घर में दफना दिया।

चारों शहीदों—नाज़ारियस और सेल्सस, गेर्वाशियस और प्रोटेशियस—के अवशेष ज़मीन में, बहुत गहराई में दबे हुए रहे[7133] , और सेंट एम्ब्रोज, मिलान के बिशप के समय तक इस बात की जानकारी किसी को नहीं थी। उन्होंने दैवीय प्रकटोक्ति द्वारा थियोडोसियस महान के शासनकाल में गेरवाशियस और प्रोटेशियस के अवशेषों की खोज की, जबकि नज़ारियस और सेल्सस के अवशेष आर्काडियस और होनोरियस के शासनकाल में मिले थे[7134] ।

पुरोहित पॉलिनस संत एम्ब्रोस के जीवन में नाज़ारियस और सेल्सस के अवशेषों की खोज का वर्णन इस प्रकार करते हैं:

– पवित्र शहीद नाज़ारियस की अवशेष, जो शहर के बाहर एक बगीचे में मिलीं, उन्हें एम्ब्रोज़ ने तुरंत ही पवित्र प्रेरितों के चर्च में लाया। हमने उस ताबूत में, जिसमें शहीद की अवशेष रखी थीं, ऐसा खून देखा मानो अभी-अभी बहा हो; सिर, अपने बालों और दाढ़ी के साथ, इतना अच्छी तरह से संरक्षित था कि ऐसा लग रहा था मानो इसे अभी-अभी ताबूत में रखा गया हो, और चेहरा इतना दमक रहा था कि ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो उसे कुछ ही क्षण पहले धोया गया हो। और यह कितना चमत्कार है – जब प्रभु ने स्वयं सुसमाचार में पहले वादा किया था कि *'तुम्हारे सिर का एक भी बाल नाश नहीं*

[7132] मोरावियाई – एक स्लावकि जनजाति जो अब ऑस्ट्रिया-हंगरी की सीमाओं के भीतर रहती है।

[7133] अर्थात् – गुप्त रूप से, एक छिपे हुए स्थान पर।

[7134] आर्काडियस – थियोडोसियस महान का पुत्र और उत्तराधिकारी, जिसने साम्राज्य के पूर्वी भाग (395–408) पर शासन किया। होनोरियस भी थियोडोसियस महान का पुत्र और उत्तराधिकारी था, जिसने साम्राज्य के पश्चिमी भाग (395–422) पर शासन किया।

होगा" (लूका 21:18)[7135] ? उस क्षण, हमने अन्य सभी सुगंधों से परे एक सुगंध की अनुभूति की। शहीद के अवशेष उठाकर एक रथ पर रखकर, हम संत एम्ब्रोज़ के साथ मिलकर तुरंत शहीद सेल्सस के अवशेषों की खोज में जुट गए। उस बगीचे के मालिकों से हमें पता चला कि उनके पूर्वजों ने उन्हें यह निर्देश विरासत में दिया था कि वे उस स्थान को कभी न छोड़ें, क्योंकि वहाँ महान खजाने छिपे हुए थे। और वास्तव में, वहाँ ऐसे खजाने थे, जिन्हें *'न तो कीड़ा खाता है, न ही जंग लगती है, और न ही चोर घुसकर चुराते हैं'*[7136] (मत्ती 6:19)।

यह वही है जो प्रेस्बिटर पावलिनि नाज़ारियस और सेल्सस की अवशेषों के बारे में कहते हैं। जहाँ तक जर्वाशियस और प्रोटेशियस की अवशेषों का प्रश्न है, संत अम्ब्रोस का निम्नलिखित विवरण है।

मसीह के सेवक अम्ब्रोस की ओर से इटली भर के भाइयों को – मैं प्रभु में आपकी अनन्त मुक्ति की कामना करता हूँ।

दिव्य शास्त्र किसी भी ऐसे व्यक्ति को ऋणी कहता है, जिसने प्रभु से कुछ भी निःशुल्क[7137] प्राप्त किया हो और उसे दूसरों के साथ साझा न करता हो; क्योंकि जब वह वह चीज़ रोक लेता है जो दूसरों के लिए लाभदायक हो सकती है, तो वह, मानो, चर्च से कुछ चुरा रहा है। इसलिए दाऊद ने कहा: 'मैंने तेरी धार्मिकता को अपने हृदय में नहीं छिपाया; मैंने तेरी विश्वासयोग्यता और तेरे उद्धार का प्रचार किया है; मैंने बड़ी सभा से तेरी दया और तेरे सत्य को नहीं छुपाया।' और जैसे कि इस कर्म के लिए कोई पुरस्कार चाहने के लिए, उसने जोड़ा: *'हे प्रभु, मुझसे अपनी कृपाएँ न छीन'* (भजन संहिता 39:11-12)। वह, मानो, यह कह रहा था: जैसे मैंने दूसरों को दया पाने में सक्षम बनाया है, वैसे ही मुझसे अपनी दया न छीनना।

लेकिन हमें यह प्रस्तावना क्यों लिखनी चाहिए? मैं तुम लोगों को प्रचार करूँगा, जो प्रभु में धर्मी और बुद्धिमान हो और जो विश्वास करते हो, और मैं तुम लोगों को पवित्र अवशेषों की खोज पर आनन्दित होने के लिए बुलाऊँगा।

पिछले पवित्र लेंट के दौरान, जब, ईश्वर की कृपा से, मैं उपवास करने वालों और प्रार्थना करने वालों में से एक था, मैं एक रात प्रार्थना कर रहा था।

और इस प्रकार मैं ऐसी अवस्था में पहुँच गया कि, यद्यपि मैं सोया नहीं था, मुझे कुछ भी महसूस नहीं हो रहा था। और मैंने सफेद वस्त्रों में दो युवकों को अपने हाथ उठाकर प्रार्थना करते देखा; झिपकी के मारे मैं उनसे बात नहीं कर सका। जब मुझे होश आया, तो वे गायब हो चुके थे।

और मैंने दयालु प्रभु से प्रार्थना की कि, यदि यह एक शैतानी भ्रम था, तो वह इसे मुझसे दूर कर दें; लेकिन यदि इसमें कोई सच्चाई छिपी थी, तो वह इसे मेरे लिए और अधिक स्पष्ट रूप से प्रकट करें।

प्रभु से जो मैंने माँगा था, उसे पाने के लिए, मैंने अपना उपवास और कड़ा कर दिया, और दूसरे रात, जब मुर्गी बाँग दे रही थी, मैंने पहली बार जैसी ही बात देखी: वही युवक मेरे साथ प्रार्थना कर रहे थे।

तीसरी रात, जब उपवास से कमज़ोर हुआ मेरा शरीर अब और सो नहीं सकता था, तो वे युवक मुझे एक बार फिर दिखाई दिए; उस समय मैं जाग रहा था और मैं बस इन सब पर हैरान रह गया। उनके साथ एक तीसरा भव्य पुरुष था, जो पवित्र प्रेरित पौलुस जैसा दिखता था – जैसा कि उन्हें आइकन में दर्शाया गया है; केवल वही मुझसे बोला, जबकि अन्य चुप रहे।

और उसने इस प्रकार कहा:

'ये वे हैं जिन्होंने, मेरे वचनों पर ध्यान देते हुए, संसार और धन-संपत्ति को ठुकरा दिया और हमारे प्रभु यीशु मसीह का अनुसरण किया, सांसारिक या भौतिक की कोई भी चाह न रखते हुए; यहाँ मिलान में ईश्वर की सेवा में दस वर्ष बिताने के बाद, उन्हें मसीह के शहीद बनने के योग्य समझा गया; तुम्हें उनके शरीर ठीक उसी जगह पर जमीन में एक कब्र में मिलेंगे जहाँ तुम खड़े होकर प्रार्थना करते हो; उन्हें जमीन से खोदकर निकालो और उनके सम्मान में एक चर्च बनाओ।

मैंने उनके नाम पूछे, और उसने उत्तर दिया:

'आपको उनके सिर के पास एक किताब मिलेगी, जिसमें उनका जन्म और मृत्यु दर्ज है।'

[7135] लूका 21:18. इन शब्दों में, यीशु मसीह ने प्रेरितों को—और वास्तव में ईसाई विश्वास के सभी स्वीकार करने वालों को—उनके लिए ईश्वर की विशेष व्यवस्था का वादा दिया।

[7136] यीशु मसीह ने ये वचन शाश्वत और अविनाशी स्वर्गीय आशीषों (मत्ती 6:19) के विषय में कहे थे, जिनके लिए एक मसीही को धार्मिक जीवन के द्वारा स्वयं को तैयार करना चाहिए।

[7137] उपहार – निशुल्क, बिना किसी विशेष योग्यता के (देखें मत्ती 10:8)।

भाइयों और बशिपों को बुलाकर और जो मैंने देखा था, वह उन्हें बताकर, मैंने खुद सबसे पहले खुदाई शुरू की, जबकि बशिप मेरी मदद कर रहे थे। और हमें, जैसा कि संत पौलुस ने कहा था, एक कब्र मिली जिसमें हमने संतों के शरीर देखे, मानो उन्हें अभी-अभी दफनाया गया हो और वे एक अद्भुत सुगंध बिखेर रहे हों।

उनके सिरों के पास हमें एक किताब मिली जिसमें सब कुछ इस प्रकार क्रमबद्ध लिखा था: 'मैं, फिलिप, मसीह का सेवक, ने इन संतों के शरीरों को अपने घर में लाया और उन्हें आराम दिया।' उनकी माँ वैलेरिया थीं, उनके पिता विटालियस थे; उन्होंने इन बेटों को जुड़वाँ के रूप में जन्म दिया और एक का नाम प्रोटोसियस और दूसरे का नाम गर्वासियस रखा। विटालियस एक सैनिक था और मेडियोलानम में रहता था, जो अपनी पत्नी के साथ गुप्त रूप से ईश्वर की सेवा करता था। जब वह न्यायाधीश पॉलिनस के साथ रावेना शहर में था[7138] , तो वहाँ यह पता चला कि वह एक ईसाई था। यातनाएँ दिए जाने पर भी, उसने मसीह का त्याग नहीं किया; उसे एक गहरी खाई में फेंक दिया गया, ऊपर से पत्थरों की बौछार की गई, और ज़िंदा दफ़नाए जाने पर उसकी मृत्यु हो गई।

अपने पति की मृत्यु की खबर मिलते ही, उसकी पत्नी उसका शव ले जाने गई ताकि वह उसे अपनी विधवा अवस्था में सांत्वना के लिए अपने घर में दफना सके।

लेकिन रावेना के नागरिकों, जो ईसाई थे, ने उसे अपने पति का शव ले जाने से रोक दिया: वे ऐसे खजाने पर प्रसन्न हुए और संत के शरीर को वहीं छोड़ दिया ताकि वह उनका मध्यस्थ बन सके।

अपना उद्देश्य पूरा करने में विफल रहने पर, वैलेरिया मेडियोलानम लौट रही थी और रास्ते में, एक गाँव में, वह दुष्ट लोगों के एक अधर्मी त्योहार पर पहुँची, जो अपने घृणित देवता सिल्वानस[7139] को बलिदान दे रहे थे। मूर्तिपूजकों ने, अपनी प्रथा के अनुसार यात्रियों को मूर्तिपूजा के बलिदान का मांस खिलाकर, रास्ते से गुज़र रही वैलेरिया को भी इस मांस का स्वाद चखने के लिए आमंत्रित किया। लेकिन वह ऐसी गंदगी से घृणा करने लगी, और उस शैतानी बलिदान में भाग लेने से इनकार करते हुए, ने खुद को एक ईसाई घोषित कर दिया। दुष्ट पुरुष क्रोध से आग-बबूला होकर, उसे बेरहमी से लाठियों से पीटने लगे, जिससे उसे उसके साथी बड़ी मुश्किल से जीवित हालत में मिलान ले गए।

अपने घर पहुँचने पर और अपने बेटों, जर्वाशियस और प्रोटेशियस को सच्चे धर्म की शिक्षा देने के बाद, उन्होंने तीसरे दिन अपना प्राण ईश्वर के हाथों में सौंप दिया। जब उनके माता-पिता, जिन्हें शहीद का ताज प्रदान किया गया था, के निधन के बाद गेरवाशियस और प्रोटेशियस अनाथ हो गए, तो उन्होंने अपना घर और संपत्ति बेच दी, सब कुछ गरीबों में बाँट दिया और अपने दासों को मुक्त कर दिया; जहाँ तक उनकी बात है, उन्होंने खुद को एक झोपड़ी में बंद कर लिया, और दस साल तक पूरी लगन से प्रार्थना, उपवास और पवित्र धर्मग्रंथों के पाठ में लगे रहे। ग्यारहवें वर्ष में, राज्यपाल अनुलिन द्वारा कैद किए जाने के बाद, उन्होंने मसीह के लिए यातनाएँ झेलीं। जब सैन्य कमांडर अस्तासियस मोरावियाई लोगों के खिलाफ युद्ध छेड़ने के लिए मेडिओलानम से मार्च कर रहा था, तो मूर्तिपूजक पुरोहित उससे मिलने के लिए सड़क पर आगे गए और कहा:

'यदि तुम विजय प्राप्त कर राजा के पास लौटना चाहते हो, तो जर्वासियस और प्रोटसियस को देवताओं को बलिदान चढ़ाने के लिए मजबूर करो; क्योंकि देवता इस बात से क्रोधित हैं कि ये दोनों पुरुष उनका तिरस्कार करते हैं, और अब हमारे प्रश्नों का उत्तर देना नहीं चाहते।'

यह सुनकर, अस्तासियस ने संतों को उनके कालकोठरी से बाहर निकाला, उन्हें अपने सामने बिठाया, और कहा:

'मैं तुम्हें आज्ञा देता हूँ कि हमारे देवताओं का अपमान मत करो, बल्कि उन्हें सम्मानपूर्वक बलिदान अर्पित करो, ताकि हमारी यात्रा सुरक्षित हो सके।'

गर्वाशियस ने कहा:

'तुम्हें अपने दुश्मनों पर विजय के लिए सर्वशक्तिमान परमेश्वर से स्वयं प्रार्थना करनी चाहिए, न कि उन मूर्तियों से जो न देखती हैं, न सुनती हैं, न बोलती हैं और न ही साँस लेती हैं।'

[7138] एड्रियाटिक सागर पर एक बंदरगाह वाला शहर, जो एपेनाइन प्रायद्वीप के उत्तर-पूर्वी तट पर स्थित है। सम्राट ऑगस्टस ने इसे भारी रूप से किलेबंदी की, और इसे इटली का एक गढ़ माना जाता था। होनोरियस से शुरू होकर, सम्राटों का निवास यहाँ था। रावेना आज भी मौजूद है और इसी नाम के इतालवी क्षेत्र का प्रमुख समृद्ध शहर है।

[7139] सिल्वानस को रोमनों द्वारा जंगलों - इसलिए उसका यही नाम था - खेतों और झुंडों के देवता के रूप में पूजा जाता था। इस देवता को तीन मूर्तियाँ समर्पित की गई थीं: एक घर पर, दूसरी खेत में और तीसरी संपत्ति पर; यही कारण है, जैसा कि कोई अनुमान लगा सकता है, वैलेरिया इस देवता के सम्मान में आयोजित उत्सव समारोह में शामिल हुए बिना नहीं रह सकती थी।

तब अस्तासयिस ने आदेश दयिा कि गेर्वाशयिस को टनि की छड़ों से तब तक पीटा जाए जब तक वह मर न जाए, और संत गेर्वाशयिस इन प्रहारों के आगे झुक गए।

उसके शरीर को ले जाने का आदेश देकर, अस्तासयिस ने प्रोटसयिस से कहा:

'अभागे! अपनी जान बचा; अपने भाई जतिना पागल मत बन।'

प्रोटेशयिस ने उत्तर दयिा:

'मुझे नहीं पता कि हम में से कौन दयनीय है: मैं, जो तुमसे नहीं डरता, या तुम, जो मुझसे डरते हो।'

अस्तासयिस ने कहा:

'क्या! क्या मैं तुमसे डरता हूँ, नीच?'

संत ने कहा:

'तुम्हें डर है कि मैं मूर्तयिों को बलदिान चढ़ाने से इनकार करके तुम्हारा अपमान कर सकता हूँ; अगर तुम्हें डर नहीं होता, तो तुम मुझे बलदिान चढ़ाने के लिए मजबूर नहीं करते। जहाँ तक मेरी बात है, मैं तुमसे नहीं डरता और मैं तुम्हारी धमकयिों का तरिस्कार करता हूँ; मैं तुम्हारी मूर्तयिों को कुछ नहीं समझता, और मैं केवल उसी एक ईश्वर की पूजा करता हूँ जो स्वर्ग में राज करता है।'

तब अस्तासयिस ने उसे लाठयिों से पटिवाने का आदेश दयिा, और पवत्रि शहीद को वहाँ बहुत देर तक पीटा गया; जब उसे जमीन से उठाया गया, तो अस्तासयिस ने कहा: – हे नीच मनुष्य! तू इतना घमंडी और हठी क्यों है? क्या तू सचमुच अपने भाई की तरह ही नष्ट होना चाहता है?

प्रोटोसयिस ने उत्तर दयिा:

'मैं तुमसे कोई रंजशि नहीं रखता, अस्तासयिस, क्योंकि मैं तुम्हारी आँखों की अंधापन देखता हूँ: तुम्हारा अवश्विास तुम्हें उस चीज़ को देखने से रोकता है जो ईश्वर की है। मेरे प्रभु ने अपने सूली पर चढ़ाने वालों को गाली नहीं दी, बल्कि उनके लिए प्रार्थना की, यह कहते हुए कि वे स्वयं नहीं जानते थे कि वे क्या कर रहे हैं। और तुम नहीं जानते कि तुम क्या कर रहे हो; इसीलिए मुझे तुम पर तरस आता है। हालाँकि, जो तुमने शुरू कयिा है उसे जारी रखो, ताकि मैं अब अपने प्रयि भाई के साथ, अपने उद्धारकर्ता को देख सकूँ।

तब अस्तासयिस ने उसे तलवार से सरि कलम करने का आदेश दयिा। जब यह हो गया, तो मैं, फलिपि, मसीह का सेवक, अपने पुत्र के साथ, रात के समय चुपके से उनके शवों को अपने घर ले गया—यह बात केवल ईश्वर ही जानता है—और उन्हें इस संगमरमर के मकबरे में सुला दयिा। मुझे वश्विास है कि, उनकी प्रार्थनाओं के द्वारा, मुझे भी हमारे प्रभु यीशु मसीह से दया मलिेगी, जो पति और पवत्रि आत्मा के साथ सदा जीवते और राज्य करते हैं।

जब इन पवत्रि अवशेषों को खोदा गया, तो बीमारों को स्वास्थ्य लाभ मलिने लगा, लोगों से दुष्टात्मा नकिलने लगीं, और अंधों को दृष्टि प्राप्त हुई। संत एम्ब्रोज स्वयं उल्लेख करते हैं कि उनके शहर में सेवरस नाम का एक अंधा व्यक्ति था जसिे सभी जानते थे; जैसे ही उसने संतों के अवशेषों पर पड़े वस्त्रों के कनिारे को छुआ, उसे तुरंत दृष्टि प्राप्त हो गई[7140] ।

हे प्रभु, अपने संतों की प्रार्थनाओं से, हमारी आत्माओं की आँखें प्रबुद्ध करें, ताकि हम आपके मुखमंडल के प्रकाश में चल सकें और सदा के लिए आपके नाम में आनंदति हों[7141] । आमीन।

कॉन्टाकयिन, स्वर 2:

हे दव्यि शहीदों, आप दीप्तमिान दीपों के समान प्रकट होकर चमत्कारों के प्रकाश से सृष्टि को प्रकाशति करते हैं, दुर्बलताओं और रात्रि के घोर अन्धकार को दूर करते हैं, और हम सभी के लिए एकमात्र परमेश्वर मसीह से अनवरत प्रार्थना करते हैं।

[7140] पवत्रि शहीदों के अवशेषों की खोज जून 395 या 396 में हुई थी।

[7141] तुलना करें भजन संहति 88:16।

पूज्य पारास्केवा का जीवन।

14 अक्टूबर को स्मरणोत्सव

संत परास्केवा[7142] का जन्म सर्बिया में, कैलियोक्रैटिया शहर के पास, एपिवाट गाँव[7143] में हुआ था। उनके माता-पिता धर्मनिष्ठ लोग थे: उन्होंने ईश्वर की सभी आज्ञाओं का दृढ़ता से पालन किया और अपने दानशील कार्यों और दयालुता के कार्यों के लिए दूर-दूर तक प्रसिद्ध थे। उनकी एक पुत्री परास्केवा के अलावा एक पुत्र भी था। उन्होंने उसे स्कूल भेजा, जबकि उनकी पुत्री को उनके धर्मनिष्ठ दादा-दादी के घर में पाला गया। परास्केवा के भाई ने, जब उन्हें पवित्र धर्मग्रंथों में पर्याप्त शिक्षा मिल गई, तो अपने माता-पिता की सहमति से संन्यास की शपथ ली और यूथिमियस नाम अपना लिया। यूथिमियस बाद में मदीटा के बिशप बने[7144] , जहाँ वे अपने सदाचारी जीवन के लिए प्रसिद्ध हुए और अपने जीवनकाल में तथा मृत्यु के बाद भी कई शानदार चमत्कार किए।

अपने माता-पिता की मृत्यु के बाद, परास्केवा ने दुख और अभाव से भरा जीवन जीना शुरू कर दिया। संतों के जीवन का उत्साहपूर्वक अनुकरण करते हुए, उसने उपवास और जागरण के माध्यम से अपने शरीर को कष्ट दिया और उसे अपनी आत्मा के अधीन कर लिया। प्रभु के लिए जीने की दिव्य इच्छा से भरकर, परास्केवा इस दुखी दुनिया में लंबा जीवन जीना नहीं चाहती थी; लेकिन, सभी सांसारिक चीजों को त्यागकर, वह दुनिया से अलग हो गई और, जॉर्डन के रेगिस्तान[7145] में पहुँचकर, उसने स्वर्गदूतों के समान जीवन जीना शुरू कर दिया। ईश्वर-तुल्य नबी एलियाह और यूहन्ना बपतिस्मादाता के उदाहरण का अनुसरण करते हुए, वह केवल रेगिस्तानी अनाज पर ही जीवित रही, उन्हें केवल थोड़ी मात्रा में, और वह भी केवल सूर्यास्त के बाद ही ग्रहण करती थी। धीरे-धीरे, कभी गर्मी से, कभी ठंड से क्षीण होती हुई, उसने अपनी दृष्टि केवल एकमात्र ईश्वर पर टिकाई, जो हृदय से विनम्र लोगों को *'आँधी से, तूफान से'* बचाने में सक्षम है (भजन संहिता 54:9)। कौन गिन सकता है कि उस पूज्य ने कितने आँसू बहाए? कौन उसके बार-बार और अनवरत विलापों का वर्णन करेगा? कौन उसके अखंड प्रणामों और शरीर संबंधी तपस्या के विभिन्न कृत्यों का विस्तार से वर्णन करेगा? केवल सर्व-द्रष्टा ईश्वर ही उस आदरणीय महिला के कर्मों को देख रहे थे। उसे सांसारिक व्यर्थताओं की कोई परवाह नहीं थी: वह केवल अपनी आत्मा की शुद्धि, भविष्य के न्याय में अपने हिसाब-किताब, और स्वर्गीय वधू-वर से अपनी मुलाकात की परवाह करती थी। "मैं तुम्हें ही ढूँढ़ती हूँ, हे मेरे वधूवर," पूज्य परास्केवा ने कहा, हमेशा गीतों के गीत के शब्दों को ध्यान में रखते हुए: *"मुझ से कह, हे तू जिसे मेरी आत्मा प्रेम करती है"* (गीतों का गीत 1:6)।उनकी सबसे बड़ी चिंता यह थी कि अपने दीपक को कैसे सजाएँ और बुद्धिमान कुँवारियों के साथ, दिव्य वधूवर से मिलने के लिए बाहर जाएँ, ताकि उनकी मधुर वाणी सुनें और उनकी सुंदरता को निहारकर आनंदित हों। संत निरंतर यही कहती रहती थीं, *"मैं कब आकर परमेश्वर के साम्हने उपस्थित होऊँगी!"* (भजन संहिता 41:3)।

जब पूजनीय परास्केवा इस प्रकार मरुभूमि में निवास कर रही थीं, तो धूर्त शत्रु उनकी सद्गुणों से ईर्ष्या करने लगा और उसने उन्हें भूत-प्रेत और माया-चित्रों से डराने का प्रयास किया। बार-बार, वह स्वयं को विभिन्न जानवरों में बदलकर संत पर झपटता था, और उनकी तपस्या के मार्ग में बाधा डालने का प्रयास करता था। लेकिन परमेश्वर की प्रिय वधू, पवित्र परमसेवा बार-बार दोहराती थीं: *'तूने परमप्रभु को अपना शरणस्थान चुना है'* (भजन संहिता 90:9) और, उनकी सहायता से – उनके पवित्र क्रूस के चिह्न द्वारा – उन्होंने अपने शत्रुओं को भगा दिया और शैतान की चालाकियों के

[7142] परास्केवा का सांसारिक नाम पेट्का था। पेट्का-परास्केवा में, प्रभु के लिए जीने की तीव्र इच्छा कम उम्र में ही प्रकट हुई। सुसमाचार के शब्द: *'जो कोई मुझसे पीछे चलना चाहता है, उसे अपना इनकार करना चाहिए* (मरकुस 8:34), जो परास्केवा ने चर्च में सुने, ने उसके हृदय को तीर की तरह भेद दिया, और जैसे ही वह चर्च से निकली, उसने एक गरीब आदमी को, जिससे वह मिली, अपनी सुंदर पोशाक दे दी और उसके फटे कपड़े ले लिए। कुछ समय बाद, परास्केवा ने फिर से एक भिखारी महिला को अपने कपड़े दे दिए, और उसने यह काम एक से अधिक बार दोहराया। इसकी आलोचना की गई, लेकिन उसने जवाब दिया कि वह किसी और तरीके से नहीं जी सकती।

[7143] एपिवाट (पिवाट, तुर्की बायडोस) – सेलिम्व्री और कॉन्स्टेंटिनोपल के बीच तट पर एक छोटा सा शहर।

[7144] मैदसि – थ्रेस के चेरसोनेसोस में एक बंदरगाह।

[7145] पवित्र पर्वत के संन्यासी निकोडेमस द्वारा एकत्र की गई जानकारी के अनुसार, फिलिस्तीन में जॉर्डन के रेगिस्तान में जाने से पहले, परास्केवा ने कॉन्स्टेंटिनोपल का दौरा किया और इसके पवित्र स्थलों का भ्रमण किया; वहाँ उन्होंने उत्साही तपस्वियों की शिक्षाएँ सुनीं। उनकी सलाह पर, वह हरेक्लियस के उपनगर में 'चर्च ऑफ द प्रोटेक्शन ऑफ द मदर ऑफ गॉड' के एकांत में बस गईं, जहाँ उन्होंने प्रार्थना, उपवास और आँसुओं में पाँच साल बिताए। फिर, एक लंबे समय से चली आ रही इच्छा को पूरा करते हुए, वह फिलिस्तीन के लिए रवाना हुईं और उद्धारकर्ता के जीवन से पवित्र हुए पवित्र स्थानों की पूजा करने के बाद, जॉर्डन के रेगिस्तान में रहने के लिए ठहर गईं।

जाल को, मानो, फाड़ दिया, और उसे पूरी तरह से परास्त कर दिया। संत, अपनी नारी प्रकृति को बनाए रखते हुए, एक सच्चे पुरुषोचित मन की स्वामिनी थीं और उन्होंने शैतान को उसी प्रकार पराजित किया, जैसे दाऊद ने गोलियाथ को पराजित किया था। ऐसे पराक्रमो और सद्गुणों से अपनी आत्मा को सजाकर, परास्केवा मसीह की प्रिय वधू बनीं, ताकि उनके द्वारा भविष्यवाणी का वचन पूरा हुआ: *'राजा तेरी सुन्दरता की इच्छा करेगा'* (भजन संहिता 44:12)। इस प्रकार, यह राजा पिता और पवित्र आत्मा के साथ, उनके भीतर वास करने लगा, और उनमें बसा रहा, जैसे वह अपनी पवित्र कलीसिया में वास करता है; क्योंकि संत परास्केवा ने अपने प्राण को पाप और कलंक से बचाकर, जीवते परमेश्वर का मंदिर बन गईं।

एक रात, मरुभूमि में काफी समय बिताने के बाद, परास्केवा अपनी प्रथा के अनुसार प्रार्थना में खड़ी हुईं, और स्नेहपूर्वक स्वर्ग की ओर अपने हाथ उठाए। अचानक, उन्होंने एक अत्यंत तेजस्वी युवक के रूप में ईश्वर के एक स्वर्गदूत को देखा, जो उनके पास आकर बोला:

'मरुभूमि छोड़कर अपने स्वदेश लौट जाओ, क्योंकि वहाँ यह उचित है कि तुम अपना शरीर धरती पर रखो और अपनी आत्मा को प्रभु के पास पहुँचा दो।'

सम्माननीय भिक्षुणी ने, उस दर्शन के अर्थ को समझते हुए, यह महसूस किया कि यह ईश्वर की आज्ञा थी; वह इस बात से प्रसन्न हुई कि शरीर से मुक्ति का समय निकट था, लेकिन वह रेगिस्तान के एकांत से बिछड़ने पर दुखी थी – क्योंकि रेगिस्तान और मौन की तरह कोई भी चीज़ आत्मा को शुद्ध नहीं करती और उसे मूल प्रतिमा के करीब नहीं लाती। हालाँकि, स्वर्ग की इच्छा का पालन करते हुए, आदरणीया ने मरुभूमि छोड़ दी और अपने स्वदेश के लिए प्रस्थान किया।

सम्राज्ञी शहर कॉन्स्टेंटिनोपल पहुँचने पर, वह वहाँ परमेश्वर की बुद्धि के भव्य चर्च में प्रवेश कीं, और ब्लाचेर्ना के चर्च में भी गईं; परमेश्वर की माता की चमत्कारी प्रतिमा की पूजा करने के बाद, वह अपने पैतृक नगर एपिवात गईं, जहाँ उन्होंने कुछ समय तक अपने प्रथागत मरुस्थलीय तपस्या—उपवास और प्रार्थना—के प्रति विफादार रहते हुए जीवन यापन किया। जब ईश्वर के पास प्रस्थान करने का समय आया, तो पारास्केवा ने अपने और संपूर्ण विश्व के लिए भक्तिपूर्वक प्रार्थना की, और प्रार्थना करते हुए, उन्होंने अपनी धन्य आत्मा को ईश्वर के सुपुर्द कर दिया। उनके शरीर को ईसाइयों ने, ईसाई रीति-रिवाज के अनुसार, दफनाया, लेकिन सार्वजनिक कब्रिस्तान में नहीं – जैसा कि एक यात्री के शरीर के लिए उपयुक्त है जिसने किसी को नहीं बताया था कि वह कौन थी या कहाँ से आई थी[7146] ।

ईश्वर, अपनी संत को महिमामय बनाना चाहकर, कई वर्षों बाद निम्नलिखित परिस्थितियों में उनके अवशेष प्रकट हुए।

जहाँ उस पूजनीय महिला को दफनाया गया था, उसके पास एक स्तंभवासी तपस्वी एक स्तंभ पर मौन का तप कर रहा था। ऐसा हुआ कि एक नाविक का शव, जो समुद्र में एक गंभीर बीमारी से पीड़ित होकर मर गया था, वहाँ लहरों द्वारा बहकर आ गया। उस लाश से एक घुटन भरी बदबू निकलने लगी, इतनी कि उस सड़क से गुजरना भी असंभव हो गया; यहां तक कि उस स्थान के पास तपस्या कर रहे स्टाइलाइट भी उस बदबू को सहन नहीं कर सके, और उन्हें अपने स्तंभ से नीचे उतरने के लिए मजबूर होना पड़ा। इसलिए उन्होंने एक गहरी खाई खोदने और उस बदबूदार लाश को उसमें दफनाने का आदेश दिया। जब मजदूर गड्ढा खोद रहे थे, तो दैवीय कृपा से उन्हें जमीन में एक अक्षत शरीर पड़ा हुआ मिला और वे इस पर बहुत हैरान हुए। लेकिन चूँकि मिजदूर अनुभवहीन और अनपढ़ लोग थे, इसलिए उन्होंने जो हुआ था उस पर कोई ध्यान नहीं दिया, और इसे एक तुच्छ और महत्वहीन बात समझा। उन्होंने आपस में इस प्रकार तर्क किया:

'अगर यह शरीर पवित्र होता, तो ईश्वर किसी चमत्कार के द्वारा इसे प्रकट कर देता।'

ये विचार मन में लेकर, उन्होंने एक बार फिर उस अक्षत शरीर को मिट्टी से ढक दिया, और उस बदबूदार लाश को भी वहीं फेंक दिया, और फिर घर चले गए। जैसे ही रात हुई, उनमें से एक, जॉर्ज नाम का एक धर्मपरायण व्यक्ति, ने अपने घर में ईश्वर से प्रार्थना की। सुबह की ओर सो जाने के बाद, उसने सपने में एक रानी को एक अत्यंत तेजस्वी सिंहासन पर विराजमान देखा, जिसके चारों ओर तेजस्वी योद्धाओं की एक बड़ी भीड़ खड़ी थी। भय से ग्रस्त और ऐसी शाही भव्यता और महिमा का दृश्य सहन न कर पाकर, जॉर्ज जमीन पर गिर पड़ा। फिर उन तेजस्वी योद्धाओं में से एक ने जॉर्ज का हाथ पकड़कर उसे उठाया और कहा:

[7146] यह 11वीं शताब्दी के पहले भाग में था।

'जॉर्ज! तुमने पूजनीय परास्केवा के शरीर के साथ इतनी घृणा क्यों की और उसे एक बदबूदार लाश के बगल में क्यों दफनाया? पूजनीय के शरीर को तुरंत ले लो और उसे एक उपयुक्त स्थान पर रख दो, क्योंकि ईश्वर ने अपने सेवक को पृथ्वी पर महिमामंडित करने का निर्णय लिया है।'

इसी प्रकार, उस तेजस्वी रानी ने उससे कहा:

'मेरी अवशेषों को हटाने में जल्दी करो और उन्हें एक उपयुक्त स्थान पर रख दो, क्योंकि मैं अब उस लाश की बदबू सहन नहीं कर सकती। क्योंकि मैं एक इंसान हूँ, और मेरा वतन एपिवाट है, जहाँ तुम स्वयं अब रहते हो।'

उसी रात, यूफेमिया नाम की एक धार्मिक महिला ने भी वही दर्शन देखा। सुबह, दोनों ने सभी को वह बताया जो उन्होंने देखा था। यह सुनकर, धर्मपरायण लोग जली हुई मोमबत्तियाँ लेकर पूजनीय परास्केवा के अवशेषों की ओर चल पड़े और, उन्हें जमीन से श्रद्धापूर्वक निकालकर, इस तरह प्रसन्न हुए मानो उन्हें कोई अनमोल खजाना मिल गया हो। पवित्र अवशेषों को एपिवात गाँव में संतों पीटर और पॉल द एपोस्टल्स के चर्च में विधिवत स्थापित किया गया, जहाँ, संत परास्केवा की प्रार्थनाओं के माध्यम से, उनके अवशेषों से बीमारों को कई चंगाई का वरदान मिला: अंधों को दृष्टि वापस मिली, लंगड़ों ने चलना शुरू कर दिया, और सभी दुर्बल तथा दानवों द्वारा ग्रस्त लोग स्वस्थ हो गए।

1238 में, कॉन्स्टेंटिनोपल में क्रूसेडर्स (कैथोलिकों) के शासन के दौरान, बुल्गारिया और सर्बिया के सबसे धर्मपरायण राजा जॉन एसेन[7147] को उस स्थान की खबर मिली जहाँ पूजनीय परास्केवा की पवित्र अवशेष विश्राम कर रहे थे। तब उन्होंने धन्य मार्क – जो उस समय बुल्गारिया में पेरियास्लाव के मेट्रोपॉलिटिन थे – को कई बिशपों और पुरोहितों के साथ, उन पवित्र अवशेषों को बुल्गारियाई भूमि की राजधानी – टर्नोवो[7148] – में स्थानांतरित करने का कार्य सौंपा। वहाँ, पवित्र अवशेषों को राजमहल की चर्च में सम्मानपूर्वक स्थापित किया गया, जहाँ वे बिना क्षय के सुरक्षित रहे और जो भी श्रद्धापूर्वक उनके पास आए, उन्हें उन्होंने विभिन्न प्रकार के रोगों से मुक्ति प्रदान की।

काफी समय बाद, ईश्वर की अनुमति से, मुसलमानों ने धीरे-धीरे पूरे ग्रीक साम्राज्य पर विजय प्राप्त कर ली, और साथ ही बुल्गारिया और सर्बिया के राज्यों को भी अपने अधीन कर लिया। यह विजय 14वीं शताब्दी में, तुर्की सुल्तान बायाज़िद के शासनकाल में हुई थी[7149] । जब सुल्तान बायाज़िद ने बुल्गारियाई शहर तर्नोवो पर कब्जा किया, तो चर्च के सभी खजाने और शाही सामान लूट लिए गए। उस समय, परास्केवा के पवित्र अवशेष, एक ही फटे-पुराने कपड़े में लिपटे हुए, को वलाचिया[7150] भेज दिया गया था। 1396 में वलाचिया पर तुर्की के विजय के बाद, सर्बियाई रानी मिलिका के सुल्तान से अनुरोध पर, पवित्र अवशेषों को सर्बिया के बेलग्रेड[7151] भेज दिया गया।

1521 में, सुल्तान सुलेमान द्वितीय[7152] ने बेलग्रेड पर कब्ज़ा करने के बाद, वहाँ से संत परास्केवा की पवित्र अवशेषों को भी जब्त कर लिया; फिर उन्हें कॉन्स्टेंटिनोपल लाकर अपने निजी कक्षों में रख दिया। लेकिन यह अनमोल खजाना वहाँ भी खोया नहीं, क्योंकि पूजनीय परास्केवा की अवशेषों के माध्यम से किए गए अनगिनत चमत्कारों ने न केवल ईसाइयों के बीच, बल्कि मुसलमानों के बीच भी उनकी महिमा में योगदान दिया। बाद वाले, इस घटनाक्रम से परेशान और इस बात से डरते हुए कि संत परास्केवी के अवशेषों की चमत्कारी शक्ति में विश्वास मुख्य रूप से ईसाइयों के उत्साह और देखभाल के कारण और भी अधिक फैल सकता है - उन्होंने इन पवित्र अवशेषों को कॉन्स्टेंटिनोपल के ईसाइयों को सौंप दिया, जिन्होंने इन्हें सम्मानपूर्वक पैट्रिआर्कल चर्च में स्थापित किया।

[7147] जॉन असान या असन द्वितीय, असन प्रथम (जो 1221 से 1241 तक शासन करते थे) के पुत्र – बुल्गारियाई साम्राज्य के शासकों में सबसे प्रतिष्ठित; उन्होंने अपने से पहले के किसी भी राजा की तुलना में बुल्गारियाई साम्राज्य को अधिक गौरवान्वित और प्रबुद्ध किया; उन्होंने कई मठ बनवाए और उन्हें सोने और कीमती पत्थरों से सजाया; उन्होंने सभी चर्चों को कई उपहार दिए, और उनके पुरोहितों को बड़े सम्मान से सम्मानित किया; जॉन असन न केवल अपने बुल्गारियाई लोगों, बल्कि ग्रीकों के भी प्रिय थे।

[7148] टर्नोवो – बुल्गारिया की राजधानी, एट्रे या यंत्रा नदी पर, जो डेन्यूब में मिलती है – अब वेलीको तर्नोवो के नाम से जाना जाता है।

[7149] तुर्की सुल्तान बायेज़िद प्रथम ने 1389 में सिंहासन संभाला। बीजान्टिन सम्राट जॉन और उनके पुत्र एंड्रोनिकोस के बीच की कलह का लाभ उठाते हुए, बायेज़िद ने बीजान्टिन साम्राज्य को अपने पूर्ण नियंत्रण में ले लिया; उन्होंने बुल्गारिया, मैसेडोनिया, थेस्साली और कई अन्य क्षेत्रों पर विजय प्राप्त की। 1402 में, बेयेज़िद को मंगोल विजेता तैमूर ने बंदी बना लिया, जिनकी कैद में उनकी मृत्यु 1403 में हुई।

[7150] वालाचिया – आज के रोमानियाई साम्राज्य का दक्षिण-पश्चिमी भाग।

[7151] सर्बियाई साम्राज्य की राजधानी बेलग्रेड, डेन्यूब और सावा नदियों के संगम पर स्थित है।

[7152] सुलेमान द्वितीय का शासन तुर्की शक्ति के चरम पर पहुंचने का प्रतीक है। तुर्क उन्हें अपने शासकों में सबसे महान मानते हैं।

1641 में, धार्मकि वासलि लुपुल[7153] , मोल्दावयिा के वोइवोड और राजकुमार, जब यह जान गए कि संत परास्केवी के अवशेष कॉन्स्टेंटनिोपल के पैट्रआिर्शल चर्च में रखे गए थे, तो उन्होंने बड़ी आकांक्षा के साथ कामना की कि उन्हें सम्मानपूर्वक उनके गौरवशाली राजतंत्र में स्थानांतरति कयिा जाए। उनकी यह इच्छा प्रभु ने पूरी की, जो अपने संतों में महमिामय हैं, और जनि्होंने सम्माननीय परास्केवा को मोल्दावयिा में भी महमिामय करना चाहा। तब कॉन्स्टेंटनिोपल के पैट्रआिर्क, पार्टेनयिस[7154] ने अपने पूरे पवत्रि सनिड की सहमति और अन्य सबसे सम्मानति पैट्रआिर्क की मंजूरी से, संत परास्केवी के पूजनीय अवशेष धर्मपरायण शासक, वोइवोड बेसलि को उनके राजधानी शहर, याशी[7155] में भेजे। यहाँ, तीन पवत्रि धर्मगुरुओं के चर्च में, बड़ी सम्मान के साथ और समूची मोल्दावयिा के नविासयिों की महान आनंद और हर्ष के बीच, पवत्रि अवशेषों को 1641 ईस्वी में, मसीह के जन्म के बाद, 14 अक्टूबर को स्थापति कयिा गया था[7156] .

ट्रोपारयिन, स्वर 4:

एकांत और मौन के जीवन से प्रेम करके, और अपने वधू-वर मसीह के पदचनि्हों पर उत्साहपूर्वक चलकर, तथा अपनी युवावस्था में उनका मधुर जुआ उठाकर, आपने स्वयं को क्रूस के चनि्ह से दृढ़तापूर्वक अदृश्य शत्रुओं के वरिुद्ध सशस्त्र कयिा, तपस्या के श्रम, उपवास, प्रार्थनाओं और आँसुओं द्वारा, हे महमिामयी परास्केवी, तुमने कामनाओं की अंगारों को बुझा दयिा: और अब, बुद्धमिान कुँवारयिों के साथ स्वर्गीय मठ में मसीह के समक्ष खड़ी होकर, हम पर प्रार्थना करो जो आपकी पवत्रि स्मृति का सम्मान करते हैं।

कॉन्टाकयिन, स्वर 6:

आओ हम भक्तपिूर्वक सर्व-सम्मानति परास्केवी का गीत गाएँ, जो संकट में सभी की पवत्रि मध्यस्थ हैं: क्योंकि उन्होंने अपना नश्वर जीवन पीछे छोड़कर, शाश्वत के लिए अमर जीवन प्राप्त कयिा है। इसी कारण उन्होंने ईश्वर की आज्ञा से महमिा और चमत्कारों की कृपा प्राप्त की है।

परम पूज्य नकिोलस स्वयितोशा का जीवन

14 अक्टूबर को स्मरण कयिा जाता है

'इस संसार का वर्तमान स्वरूप मटिता जा रहा है... प्रभुत्व एक लोगों से दूसरे लोगों के पास जाता है... प्रभु शासकों के सहिासन को उलट देता है और नम्र लोगों को उनकी जगह बठिा देता है' (1 कुरनि्थयिों 7:31; सीर. 10:8, 17)। धर्मनष्ठि राजकुमार नकिोलस[7157] ने अपने प्रारंभकि यौवन से ही पृथ्वी पर इस क्षणभंगुर प्रभुत्व की क्षणकिता को समझ लयिा था। उन्होंने स्पष्ट रूप से देखा कि स्वर्ग में ही एक अक्षय राज्य है, जो हमेशा के लिए बना रहता है, और जो उन अनुपम अनंत आशीर्वादों से भरा है जनि्हें प्रभु ने अपने प्रेम करने वालों के लिए तैयार कयिा है। इसलिए, ठीक वैसे ही जैसे भारतीय राजकुमार जोआसाफ ने एक बार कयिा था, उन्होंने शाश्वत, स्वर्गीय राज्य के लिए अपनी अस्थायी, सांसारकि रयिासत की महमिा और धन-संपत्ति, सम्मान और शक्ति का त्याग कर दयिा; और, कीव केव्स मठ में आकर, उन्होंने पवत्रि मठवासी संकल्प लिए[7158] । संन्यासी जीवन में, धन्य नकिोलस अपने जीवन की पवत्रिता से इतनी चमक से दमक उठे कि

[7153] वासलि लुपु – 1634 से 1654 तक मोल्दावयिा का राजकुमार (अर्थात् शासक)।

[7154] पार्फेनयिस प्रथम – कॉन्स्टेंटनिोपल के पैट्रआिर्क, 1639 से 1644 तक।

[7155] याशी – मोल्दावयिा की राजधानी, डैन्यूबयिाई रयिासतों में से एक, जो वलाचयिा के साथ मलिकर अब रोमानयिाई साम्राज्य का नरि्माण करती है।

[7156] पवत्रि अवशेष आज भी वहीं मौजूद हैं।

[7157] स्वेतोस्लाव स्वेतोशा (उनकी धार्मकिता के कारण यह नाम मलिा) का बपतस्मिा पैंक्रैटयिस के नाम से हुआ और भकि्षु बनने की शपथ लेने पर उनका नाम नकिोलस रखा गया। वह चेरनहिभि के राजकुमार डेवडि स्वेतोस्लावचि के पुत्र और कीव और चेरनहिभि के राजकुमार स्वेतोस्लाव यारोस्लावचि के पोते थे, जनि्होंने गुफाओं के पवत्रि, ईश्वर-नरि्मति चर्च की स्थापना की थी।

[7158] यह वर्ष 1107 का था।

हर कोई, उनके अच्छे कर्मों को देखकर, उनकी ओर से प्रभु की भक्तिपूर्वक महिमा करने लगा। सबसे बढ़कर, वे आज्ञाकारिता में निपुण थे। शुरुआत में, संत निकोलस ने भाईचारे के लिए रसोई में काम किया; वहाँ उन्होंने अपने हाथों से लकड़ी काटी और विनम्रतापूर्वक उसे नदी के किनारे से अपने कंधों पर उठाकर लाया, भोजन तैयार करने के लिए आवश्यक सभी अन्य कार्यों को लगन से किया। उन्होंने पहले ही बहुत मेहनत कर ली थी जब उनके भाइयों, इज़्यास्लाव और व्लादिमीर को उनके कार्यों के बारे में पता चला; उन्होंने उन्हें इस तरह के काम से रोकने की कोशिश की। लेकिन इस वास्तव में आज्ञाकारी भिक्षु ने उनसे आँसू भरी विनती की कि उसे एक और साल तक भ्रातृत्व के लिए रसोई में काम करने दें। और इस प्रकार, पूर्ण समर्पण और उत्साह के साथ, उन्होंने यहाँ बंधुत्व की सेवा पूरे तीन साल तक की। इसके बाद, एक आजमाए हुए और हर काम करने में सक्षम व्यक्ति के रूप में, उन्हें मठ के द्वार की रखवाली का काम सौंपा गया, और इस कर्तव्य में, चर्च को छोड़कर कहीं और न जाते हुए, वे भी तीन साल तक रहे। वहाँ से उन्हें भाइयों के भोजन पर सेवा करने का कार्य सौंपा गया; और उन्होंने यह कर्तव्य इतनी लगन और परिश्रम से निभाया कि वे पूरे समुदाय की कृपा में आ गए।

इस प्रकार इन सभी आज्ञाकारिता के चरणों को सद्गुण से पार करने के बाद, उन्होंने मठाध्यक्ष और पूरे समुदाय की अनुमति से मौन का तपस्यात्मक अभ्यास शुरू किया, ताकि वे एकांत में अपने मोक्ष पर ध्यान दे सकें। इस कर्तव्य को निभाते हुए, उन्होंने अपनी कोठरी के पास अपने हाथों से एक बगीचा लगाया, और अपने संपूर्ण मठवासी जीवन के वर्षों के दौरान वे कभी भी काम के बिना नहीं देखे गए; उनके हाथों में हमेशा कोई न कोई काम रहता था, और उनके होठों पर प्रभु की प्रार्थना लगातार रहती थी: 'हे प्रभु यीशु मसीह, परमेश्वर के पुत्र, मुझ पर दया करो!' वे भोजनशाला में सामुदायिक मठवासी भोजन के अलावा कुछ भी नहीं खाते थे, और तब भी केवल थोड़ी मात्रा में। यदि राजकुमार के रूप में उनकी इच्छा के विरुद्ध, उन्हें अपने करीबी लोगों से कुछ भी प्राप्त होता, तो वह उसे तुरंत यात्रियों और भिखारियों की जरूरतों को पूरा करने और चर्च के निर्माण के लिए बाँट देते थे, ताकि उनके धन से चर्च के लिए कई किताबें खरीदी गईं।

इस धन्य राजकुमार ने, अपने राज्य पर शासन करते हुए, अपनी सेवा में सीरियाई मूल के पीटर नामक एक अत्यधिक कुशल चिकित्सक को रखा था, जो मठ तक उसके साथ गया। इस चिकित्सक ने, अपने स्वामी की स्वैच्छिक गरीबी को देखकर, उसे छोड़ दिया और कीव में बस गया, जहाँ उसने कई लोगों का इलाज किया। हालाँकि, वह कई बार उस धन्य व्यक्ति से मिलने गया और उसे बड़े कष्ट और असीमित उपवास सहते हुए, रसोई में सेवा करते और मठ के द्वार पर पहरेदारी करते हुए देखकर, उसने उसे इस जीवन शैली को छोड़ने के लिए कहा:

'राजकुमार, आपको अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखना चाहिए, कहीं आप अत्यधिक श्रम और संयम से अपना शरीर पूरी तरह से कमजोर न कर दें; क्योंकि यदि आप थक गए, तो वह जुआ जिसे आपने मसीह के लिए उठाने का विकल्प चुना है, वह आपके लिए असहनीय हो जाएगा। क्योंकि ईश्वर किसी की शक्ति से परे उपवास या तपस्या नहीं चाहता, बल्कि केवल एक शुद्ध और विनम्र हृदय चाहता है। आप भिक्षुओं के लिए एक खरीदे हुए दास की तरह परिश्रम करते हैं; क्योंकि आप ऐसी कठिनाइयों के आदी नहीं हैं, और वास्तव में यह आपके योग्य नहीं है, क्योंकि आप एक राजकुमार हैं। आपके कुलीन भाइयों व्लादिमीर और इज़्यास्लाव के लिए, आपकी गरीबी दुख और बड़ी अपमान का स्रोत है, क्योंकि इतनी बड़ी महिमा और सम्मान से आप ऐसी कठिनाइयों में आ गए हैं कि आप अपने शरीर को कष्ट दे रहे हैं और, अपर्याप्त भोजन के कारण, बीमार पड़ रहे हैं। आप स्वादिष्ट फलों का भोग करते थे, लेकिन अब आपने स्वयं को कठोर तंगी में डाल दिया है, और कच्ची सब्जियों तथा सूखी रोटी पर गुज़ारा कर रहे हैं। लेकिन सावधान रहें कि आप पूरी तरह से बीमार न पड़ जाएँ; क्योंकि तब, जब आपकी ताकत खत्म हो जाएगी, तो आप अपनी जान गंवा देंगे, और मैं आपकी मदद नहीं कर पाऊँगा; इस प्रकार, आप अपने भाइयों पर अपार दुख ला रहे हैं। देखो, वे बोयार जो कभी तुम्हारी सेवा करते थे और, तुम्हारी बदौलत, कभी कुलीन थे – वे भी, सारी आशा खोकर, तुम्हारे लिए शोक करते हैं और गहरे निराशामय दुख से ग्रस्त हैं। फिर भी उन्होंने अपने लिए भव्य घर बनवाए हैं और अब उनमें रहते हैं, जबकि तुम्हारे पास सिर रखने के लिए कोई जगह नहीं है, और तुम कभी कूड़े के ढेरों पर, कभी रसोई में, तो कभी द्वारों पर बैठे रहते हो। रूसी राजकुमारों में से किसने कभी इस तरह का व्यवहार किया है? क्या यह आपके पुण्यशील पिता डेविड नहीं थे, या आपके सदा-स्मरणीय दादा स्वियातोस्लाव? और वास्तव में, बोयारों में से कोई भी ऐसी कलंकित ज़िंदगी नहीं चाहेगा, सिवाय एक वार्लाम के, जो कभी यहाँ के मठाधीश थे।

इसलिए, यदि तुम मेरी बात नहीं मानोगे, तो तुम समय से पहले मर जाओगे।

संत निकोलस के भाइयों द्वारा प्रशिक्षित चिकित्सक पीटर, जब वह उनके साथ बैठते थे, तो अक्सर उनसे ऐसे शब्द कहते थे, कभी रसोई में, तो कभी द्वार के पास।

धन्य व्यक्ति हमेशा उनसे कहते थे:

'भाई पीटर! अपनी आत्मा के उद्धार के बारे में अक्सर सोचते हुए, मैंने यह संकल्प लिया है कि मुझे शरीर पर रहम नहीं करना चाहिए, कहीं ऐसा न हो कि वह आत्मा के साथ संघर्ष करे और मेरी आत्मा में कलह मचा दे। जब वह आत्म-त्याग के श्रम से थक जाता है, तो वह नम्र हो जाता है, परन्तु हताश नहीं होता; और भले ही वह हताश हो जाए, क्या प्रेरित ने यह नहीं कहा: *'मेरी शक्ति दुर्बलता में सिद्ध होती है'* (2 कुरिन्थियों 12:9)। और फिर: 'क्योंकि *हमारी वर्तमान क्लेश तो हमारे भीतर प्रकट होने वाली महिमा के सामने एक क्षण की कष्ट मात्र है'* (रोमियों 8:12)। ईश्वर एक विनम्र और शुद्ध हृदय चाहता है, लेकिन यह उपवास और तपस्या के बिना प्राप्त नहीं किया जा सकता, क्योंकि उपवास पवित्रता और शुद्धता की जननी है। और यह भी कहा गया है: *'उसने परिश्रम से उनके हृदय को नम्र किया'* (भजन संहिता 106:12)। मैं परमेश्वर का धन्यवाद करता हूँ कि उन्होंने मुझे सांसारिक चिंताओं से मुक्त कर दिया है और मुझे उनके सेवकों—इन धन्य संतों—का सेवक बना दिया है; क्योंकि मैं, एक राजकुमार होते हुए भी, उनके लिए काम करते हुए दिखाई देता हूँ, पर वास्तव में मैं राजाओं के राजा के लिए काम कर रहा हूँ। जहाँ तक मेरे भाइयों का सवाल है, वे अपना ख्याल खुद रखें: *'प्रत्येक व्यक्ति अपना जुआ स्वयं उठाए'* (गलातियों 6:5)। मेरी विरासत उनके लिए काफी है—जिसे मैंने अपनी सांसारिक रियासत सहित छोड़ दिया, ताकि स्वर्ग के राज्य में एक विरासत प्राप्त कर सकूँ: *'उसके लिए मैंने सब कुछ त्याग दिया है, और उन्हें सब कुछ कूड़े के समान समझा है, ताकि मैं मसीह को प्राप्त कर सकूँ'* (फिलिप्पियों 3:8)। तो फिर, तुम मुझे मृत्यु की धमकी क्यों देते हो, मेरी गरीबी और भव्य भोजन से मेरी संयम बरतने के लिए मुझे डाँटते हो? क्योंकि जब तुम किसी शारीरिक बीमारी का इलाज करते हो, तो क्या तुम मरीज को संयम बरतने और कुछ खाद्य पदार्थों से पूरी तरह परहेज़ करने की हिदायत नहीं देते? और मुझे आत्मा के रोगों को भी इसी तरह ही ठीक करना है। भले ही मैं शारीरिक रूप से मर जाऊँ, निश्चय ही मसीह के लिए *'मृत्यु'* मेरे लिए *एक 'लाभ' है* (फिलि. 1:21)। लेकिन, यदि मैं कूड़े के ढेरों में बैठता हूँ, तो आप मुझे बोयारों से भी बदतर क्यों मानते हैं? क्योंकि यह मेरा भाग्य है कि मैं अय्यूब के साथ राज करूँ, जिसके बारे में कहा जाता है कि वह पूर्व के सभी पुत्रों में सबसे प्रतिष्ठित था (अय्यूब 1:3)।

यदि मेरे पहले किसी रूसी राजकुमार ने ऐसा नहीं किया है, तो मैं, स्वर्गीय राजा का अनुसरण करते हुए, एक मिसाल कायम करूँगा; शायद अब से कोई मेरी मिसाल का अनुसरण करेगा। अंत में, जो लोग आपको सिखाते हैं, उनके साथ मैं आपको अपनी बेहतर देखभाल करने की सलाह देता हूँ!

निम्नलिखित घटना भी कई मौकों पर हुई। जब यह धन्य राजकुमार, आज्ञाकारिता के श्रम से थककर, बीमार पड़ जाता, तो डॉक्टर पीटर, यह जानकर, तुरंत उसके लिए किसी न किसी बीमारी की दवा तैयार कर लेता। लेकिन राजकुमार, ईश्वर की कृपा से, हमेशा डॉक्टर के दवा लेकर आने से पहले ही ठीक हो जाता और कभी भी खुद को इलाज नहीं करने देता था।

एक अवसर पर, चिकित्सक स्वयं बीमार पड़ गए। धन्य राजकुमार ने उन्हें संदेश भेजा, जिसमें कहा गया:

'यदि तुम दवा नहीं लेते हो, तो तुम जल्द ही ठीक हो जाओगे; लेकिन यदि तुम मेरी आज्ञा नहीं मानते हो, तो तुम लंबे समय तक पीड़ित रहोगे।'

लेकिन डॉक्टर ने अवज्ञा की और अपनी दवा ले ली; अपनी बीमारी से ठीक होने की इच्छा में, वह लगभग अपनी जान गंवा बैठा, हालांकि बाद में संत की प्रार्थनाओं से वह ठीक हो गया। जब वही डॉक्टर जल्द ही फिर से बीमार पड़ गया, तो धन्य ने वही संदेश उसे पहुँचाने का आदेश दिया:

'यदि तुम इलाज नहीं करोगे, तो तुम तीसरे दिन ठीक हो जाओगे।'

पहली अवज्ञा के लिए दंडित हो चुकने के बाद, इस बार डॉक्टर ने धन्य व्यक्ति की आज्ञा मानी और, जैसा उन्होंने कहा था, तीसरे दिन ठीक हो गया। इसी समय, धन्य निकोलस मठ के द्वारपाल के रूप में अपनी सेवा की अवधि पूरी कर रहे थे; उन्होंने ठीक हो चुके डॉक्टर को बुलाया और उससे कहा:

'पीटर! यह उचित है कि तुम संन्यास की शपथ लो और मेरी जगह इस मठ में प्रभु और उनकी अति पवित्र माता के लिए सेवा करो, क्योंकि तीन महीनों में मैं इस संसार से विदा हो जाऊँगा।'

यह सुनकर चिकित्सक पीटर उनके चरणों में गिर पड़ा और कड़वी रुदन करते हुए पुकार उठा:

– हाय रे मेरी कस्मित, मेरे स्वामी, मेरे उपकारी, मेरे अनमोल जीवन! जब मैं यहाँ आऊँगा तो मुझे कौन अपनाएगा? अनाथों और गरीबों का पालन-पोषण कौन करेगा, उत्पीड़तिों के लिए कौन खड़ा होगा, मदद मांगने वालों पर कौन दया दखिाएगा? क्या मैंने तुम्हें नहीं बताया था, राजकुमार, कि तुम जल्द ही अपने भाइयों पर अपार शोक लाओगे? क्या मैंने तुम्हें नहीं कहा था: 'राजकुमार, अपना जीवन बचाओ, क्योंकि तुम कई लोगों के काम आ सकते हो, और तुम्हारे जीवन में कई लोगों का जीवन बसा है।' क्या यह आप ही नहीं थे जिन्होंने मुझे ईश्वर की शक्ति और अपनी प्रार्थना से चंगा किया था? तो फिर, हे अच्छे चरवाहे, आप कहाँ जा रहे हैं? यदि आप स्वयं, मेरे चिकित्सक, बीमार पड़ गए हैं, तो मुझे, अपने सेवक को, अपनी बीमारी के बारे में बताएं; और यदि मैं आपको ठीक नहीं कर सकता, तो मेरी जान और मेरी आत्मा को आपकी जान के बदले दे दिया जाए। मेरे स्वामी, मुझसे चुपचाप न जाइए, बल्कि मुझे बताइए, आपको यह खबर कहाँ से मिली? यदि मनुष्यों से मिली है, तो मैं आपके लिए अपना जीवन दे दूँगा; परन्तु यदि यह बात प्रभु ने आपको प्रकट की है, तो उनसे प्रार्थना कीजिए कि मैं आपके बदले मर जाऊँ। यदि आप मुझे छोड़ जाएँगे, तो मैं अपनी हानि के लिए कहाँ बैठकर रोऊँगा—इस कूड़े के ढेर के पास जहाँ आप अक्सर बैठते थे? फिर भी यहाँ भी वे मुझे अंदर नहीं आने देंगे। और जब आप स्वयं ही दरिद्र हैं, तो क्या मुझे आपकी संपत्ति में से कुछ विरासत में पाने का कोई मौका मिलेगा? क्या ये पैबंद लगे चिथड़े ही आपके पास सब कुछ हैं जो आप पहनते हैं? फिर भी, इन सबके बीच, जब आप इस दुनिया से विदा होंगे, तो आपको विश्राम दिया जाएगा। मुझे कम से कम यह तो दें—जैसे एक बार एलियाह ने एलीशा पर दया दिखाई थी—अपनी प्रार्थना, ताकि उसके द्वारा मैं आपके हृदय की गहराइयों और अपने जीवन के जल में सहभागी हो सकूँ[7159] और उस दूरस्थ शरणस्थली, परमेश्वर के घर तक की यात्रा कर सकूँ, जहाँ आप अब जाना चाहते हैं। क्योंकि एक पशु भी, जब सूरज ढलता है, तो जान जाता है कि उसे अपने बिल में जाकर लेटना है, परन्तु मुझे नहीं पता कि आपके जाने के बाद मैं कहाँ जाऊँगा। और एक पक्षी: *'एक छोटी सी चिड़िया भी अपने लिए घर पा लेती है, और एक गौरैया अपने लिए घोंसला पा लेती है, जहाँ वह अपने बच्चों को पाल सकती है'* (भजन संहिता 83:4), फिर भी तुम छह साल से मठ में रहे हो और अपने लिए कोई जगह नहीं पाई है: तो फिर, तुम मुझे कहाँ छोड़ोगे? रोते हुए चिकित्सक को उठाते हुए, धन्य ने उससे कहा: 'पतरस! शोक मत करो: *"प्रभु पर भरोसा रखना राजकुमारों में आशा रखने से बेहतर है"* (भजन संहिता 117:9)। प्रभु जानते हैं कि अपनी सृष्टि की रक्षा कैसे करें, जिन्हें उन्होंने स्वयं बनाया है। वह यह सुनिश्चित करेंगे कि भूखे पेट न रहें, वह गरीबों के लिए खड़े होंगे और संकट में पड़े लोगों को बचाएंगे, और वह आपके लिए एक शरणस्थान होंगे। जहाँ तक मेरे देह के भाइयों का प्रश्न है, वे मेरे लिए नहीं, बल्कि इस संसार की इस दुखपूर्ण घाटी में अपने लिए और अपने मामलों के लिए रोएँ, ताकि वे आने वाले जीवन में सांत्वना और आनंद प्राप्त कर सकें। मुझे इस क्षणिक जीवन के लिए चिकित्सा की कोई आवश्यकता नहीं है, क्योंकि मैं बहुत पहले ही सभी क्षणिक चीजों से मर चुका हूँ: *'मरे हुए फिर जीवित न होंगे'* (यशायाह 26:14) (प्राकृतिक अर्थ में बोलते हुए), जैसा कि यशायाह कहते हैं।

यह कहकर, धन्य निकोला स्वियातोशा चिकित्सक के साथ गुफा की ओर रवाना हुए और वहाँ अपनी कब्र के लिए एक स्थान तैयार किया। ऐसा करते हुए, उन्होंने चिकित्सक से कहा:

'हम में से कौन इस स्थान से अधिक प्रेम करता है?'

पतरस ने रोते हुए उत्तर दिया:

'मैं जानता हूँ कि यदि तुम चाहो, तो तुम प्रभु से अधिक समय जीने के लिए विनती करोगे, जबकि मैं यहाँ विश्राम करूँगा।'

धन्य ने उससे कहा:

'जैसा आप चाहें, वैसा ही हो, यदि प्रभु को प्रसन्न हो। तो चलिए हम दोनों उनसे प्रार्थना करें, लेकिन केवल भिक्षुओं के रूप में।'

तब, धन्य व्यक्ति की सलाह पर, डॉक्टर ने मठवासी संन्यास की शपथ ली और दिन-रात, बिना रुके, आँसू बहाते हुए तीन महीने प्रार्थना में बिताए।

एक दिन, धन्य निकोलस ने उससे कहा:

'भाई पीटर, क्या तुम मेरे साथ जाना चाहोगे?' उन्होंने पहले की तरह रोते हुए उत्तर दिया:

[7159] अर्थात्, हृदय के क्लेश और जीवन के दुख को दूर करने के लिए। इस अभिव्यक्ति को भविष्यवक्ता एलिशा के जीवन की एक प्रसिद्ध कहानी से संबंधित माना जाता है।

'मैं चाहता हूँ कि आप मुझे आपके लिए मरने दें, जबकि आप यहाँ रहकर मेरे लिए प्रार्थना करें।'

धन्य ने उससे कहा:

'भाई, हौसला रखो और तैयार रहो, क्योंकि, जैसा तुमने चाहा है, तीसरे दिन तुम इस जीवन से विदा हो जाओगे।'

जब निर्धारित समय आया, तो पतरस ने मसीह के पवित्र और जीवन-दायक रहस्यों को ग्रहण करने के बाद, अपने बिस्तर पर लेट गए और अपना प्राण प्रभु के हाथों में सौंप दिया। डॉक्टर की मृत्यु के बाद, धन्य राजकुमार निकोलस स्वआितोशा ने अपना तपस्वी जीवन और तीस वर्षों तक जारी रखा, और कभी भी मठ नहीं छोड़ा; और, जैसा कि उनके उपनाम से पता चलता है, पवित्र जीवन में पूर्णता प्राप्त करके, वे सभी संतों में परम पवित्र, विनम्रता के राजा – यीशु के साथ[7160] शाश्वत जीवन में चले गए। इस पवित्र राजकुमार के निधन के दिन, लगभग पूरा कीव शहर उन्हें अंतिम श्रद्धांजलि देने और भरपूर आँसुओं के साथ, उनकी प्रार्थनाओं का निवेदन करने के लिए इकट्ठा हुआ।

उस धन्य पुरुष के भाइयों, इज्यास्लाव और व्लादिमीर, ने विशेष रूप से बहुत विलाप किया। इज्यास्लाव ने मठ के मठाधीश से निवेदन किया कि वह उसे आशीर्वाद और सांत्वना के लिए, मृतक का क्रॉस, उसका तकिया और वह बेंच जिस पर वह प्रार्थना में घुटने टेकता था, दे दें। मठाधीश ने उन्हें सौंपते हुए कहा:

'तुम्हारे विश्वास के अनुसार, इन चीज़ों से तुम्हें वह सब कुछ प्राप्त हो जिसकी तुम इच्छा करते हो।'

इज्यास्लाव ने इन वस्तुओं को बड़ी श्रद्धा से प्राप्त कर, मठ में बहुत सारा सोना भेजा, ताकि ऐसा न लगे कि उसने अपने भाई का सामान व्यर्थ में ही प्राप्त किया है।

यही इज्यास्लाव एक बार गंभीर रूप से बीमार पड़ गया और उसे अपनी बिस्तर से उठने की कोई उम्मीद भी नहीं थी। उस समय, उसकी पत्नी, बच्चे और सभी बोयार उसके साथ थे। कुछ समय इसी तरह बीता; फिर बीमार व्यक्ति, कुछ ठीक हो जाने पर, उठा और पेचेरस्क कुएँ का पानी पीने के लिए मांगा। लेकिन जल्द ही वह फिर से बोलने की शक्ति खो बैठा और, उसके बाद, वह एक शब्द भी नहीं बोल सका। एक संदेशवाहक को पेचेरस्क मठ भेजा गया, और वहाँ से उन्होंने पानी का एक पात्र लाया जिसमें पहले पूजनीय थियोडोसियस की ताबूत धोई गई थी। मठाध्यक्ष ने पूजनीय निकोलस द होली वन के बाल-कपड़े भी भेजे, ताकि उनके शरीर को उसमें लपेटा जा सके। और संदेशवाहक के पानी और बाल-कपड़े के साथ लौटने से पहले ही, राजकुमार इज्यास्लाव बोल उठे:

'जल्दी करो और शहर के बाहर पूजनीय पिता थियोडोसियस और निकोलस से मिलने जाओ।'

जब संदेशवाहक बाल-कमीज़ और पानी के साथ अंदर आया, तो राजकुमार ने एक बार फिर उद्घोष किया:

'निकोला, निकोला स्वयितोशा!'

उन्होंने उसे उस पानी में से कुछ पिलाया, उसे रोंगटेदार कमीज़ पहनाई, और वह जल्द ही ठीक हो गया; और सभी ने ईश्वर और उनके संतों की स्तुति की।

उस समय से, इज्यास्लाव जब भी बीमार पड़ता, तो वह हमेशा यह रोंगटेदार कमीज़ पहनता था, और तुरंत ठीक हो जाता था। इसके अलावा, वह युद्ध में जाते समय हमेशा यह रोंगटेदार कमीज़ पहनता था, और इस तरह वह सुरक्षित रहता था। एक अवसर पर, पाप करने के बाद, उसने इसे पहनने की हिम्मत नहीं की, और उस अवसर पर वह युद्ध में मारा गया; हालाँकि, उसने पहले ही आदेश दे रखा था कि उसे इसी में दफनाया जाए।

इसी प्रकार, इस सम्माननीय राजकुमार की प्रार्थनाओं पर भरोसा करते हुए, जिनके उद्धार का हमें स्पष्ट प्रमाण है, ताकि हम, उनकी प्रार्थनाओं की शक्ति से, सभी बीमारियों और कष्टों से, सांसारिक और शाश्वत दोनों से, चंगाई प्राप्त कर सकें – विनम्रता के राजा, और साथ ही महिमा के राजा, प्रभु परमेश्वर और हमारे उद्धारकर्ता यीशु मसीह की कृपा से, जिन्हें परमपिता परमेश्वर और पवित्र आत्मा के साथ, अब और हमेशा, और युगानुयुग महिमा मिले। आमेन।

पवित्र शहीद संत सिल्वानस की स्मृति

14 अक्टूबर को स्मरणोत्सव

[7160] यह 14 अक्टूबर 1143 को हुआ था। सेंट निकोलस स्वयितोशा के अवशेष सेंट एंथनी की गुफा में अपरिवर्तित अवस्था में विराजमान हैं।

पवत्रि ह्येरोमार्टायर सल्विानुस गाज़ा के मूल नविासी थे, जहाँ उन्होंने एक पुरोहति के रूप में सेवा की। ईसाई धर्म को फैलाने के प्रतिउनके उत्साह के कारण, उन्हें फेन की खदानों में श्रम करने के लिए नर्विासति कर दयिा गया[7161] ; बाद में, उन्हें 40 ईसाई योद्धाओं के साथ सरि कलम कर दयिा गया[7162] ।

28 अक्टूबर

15 अक्टूबर (पुराने कैलेंडर के अनुसार)

हमारे पूजनीय पति यूथमिीयस नए का जीवन

15 अक्टूबर को स्मरण कयिा जाता है

आदरणीय यूथमिीयस, जनिका जन्म नकिति के नाम से हुआ था, का जन्म 824 में गालाटयिा के एन्क्रा शहर के पास ओप्सोस गाँव में हुआ था[7163] । नकिति के माता-पति, एपफिानयिस और अन्ना, धनी होने के बावजूद बहुत धार्मकि लोग थे, जो न केवल अपने साथी नागरकिों के लिए बल्कि आसपास के क्षेत्रों के सभी नविासयिों के लिए भी एक जीवति उदाहरण थे। वे गरीबों के प्रतिदयालु, वनिम्र, अतथिि सत्कार करने वाले और दयालु थे, और सभी ईसाई सद्गुणों से वभिूषति थे। इतने धर्मनष्ठि माता-पति से होने के कारण, नकिति जन्म के क्षण से ही पवत्रि आत्मा की कृपा से परपिूर्ण था; परणिामस्वरूप, अपने शुरुआती वर्षों में भी, वह वनिम्र, ईमानदार, आज्ञाकारी और अपने माता-पति के प्रतिसमर्पति था; वह सामान्य खेलों से भी दूर रहता था और अक्सर चर्च की सेवाओं में शामलि होना पसंद करता था। जब नकिति केवल सात वर्ष का था, तब उसके पति का नधिन हो गया। नकिति के अलावा, उनकी माँ को दो बेटयिों - मारयिा और एपफिानयिा - की देखभाल करनी थी। जल्द ही, नकिति, जसिने बचपन से ही अपने उम्र से बढ़कर परपिक्वता दखिाई थी, अपनी माँ के सभी घरेलू और पारविारकि कर्तव्यों में उनकी उत्साही सहायक बन गया। सैन्य सेवा के नयिमों के अनुसार, नकिति की माँ को उसे सैन्य रजस्टिरों में दाखलि करना पड़ा। हालाँकि, एक सैनकि के रूप में सेवा करते हुए भी, नकिति हर तरह से अपनी माँ के लिए सहारा बना रहा: एक बेटे, एक सहायक और उसके सभी पारविारकि और घरेलू मामलों में एक रक्षक के रूप में। नकिति की वृद्ध माँ, अपने घरेलू कर्तव्यों का बोझ हल्का करने की इच्छा से, उसके लिए एक उपयुक्त वधू खोजने के लिए तत्पर हो गईं। ईश्वर की कृपा से, उन्हें जल्द ही यूफ्रोसीन नाम की एक समझदार और वनिम्र युवती मलि गई, जो अमीर और प्रतष्ठिति माता-पति की बेटी थी; नकिति का ववािह उसी से हुआ। कुछ समय बाद, ईश्वर ने उनके ववािह को एक बेटी के जन्म से धन्य कयिा, जसिका पवत्रि बपतस्मिा में अनास्तासयिा नाम रखा गया। इसके बाद, नकिति ने नवजात शशिु को अपनी माँ और अपनी पत्नी दोनों के लिए पर्याप्त सांत्वना मानकर, अपना परविार छोड़ने और एक भक्षिु के रूप में पूरी तरह से ईश्वर की सेवा में खुद को समर्पति करने का संकल्प लयिा। अपने परविार को छोड़ने के लिए उसे एक और कारण उचति लगा, कि उसकी ववािहति बहन मारयिा, उनके पारविारकि घर में रह रही थी और इसलिए उसे उनकी माँ की सहायक बनी रहने के लिए बाध्य होना पड़ा।

14 सतिंबर – क्रूस की उन्नतिका पर्व – नकिति ने अपने परविार के साथ बतिाया आखरिी दनि था। अगले दनि – अपने नाम के संत, पवत्रि शहीद नकिति के पर्व के दनि – उन्होंने अपने परविार को हमेशा के लिए छोड़ दयिा, यह कहकर कि वे घाटी में चर रहे अपने घोड़े को देखने जा रहे हैं। लंबे समय तक, उनके शोकाकुल परविार को यह नहीं पता था कि नकिति ने अपना घर क्यों छोड़ दयिा था।

[7161] फ़लिस्तिीन का एक शहर, जसिके पास एक खदान थी।

[7162] उनकी मृत्यु 311 में हुई। उनका पर्व दविस 4 मई को भी मनाया जाता है; उन्हें केसरयिा के बशिप के रूप में भी जाना जाता है।

[7163] गलातयिा – एशयिा माइनर का एक छोटा, पहाड़ी लेकनि उपजाऊ प्रांत, जो फ्राइजयिा, बथिनियिा, पोंटस और कैपैडोसयिा के बीच स्थति था। इसका नाम गालाटयिनों से पड़ा था – जो गैलकि या सेल्टकि मूल के युद्धप्रयि जनजातयिाँ थीं। – एन्सकिरा गलातयिा के सबसे उल्लेखनीय शहरों में से एक था।

इस बीच, नकिति कई स्थानों की यात्रा करके और कई तपस्वियों से मलिकर, अंततः ओलंपस पर्वत की दुर्गम ऊँचाइयों पर पहुँचे[7164] , जहाँ उस समय परम पूजनीय इओनकियिोस महान अपने पराक्रम के लिए प्रसद्धि थे।

एक दनि, इस महान तपस्वी के चारों ओर एक बड़ी भीड़ इकट्ठा हो गई, जो उनसे धर्मोपदेश का एक वचन सुनने के लिए उत्सुक थी। इस भीड़ के बीच, भीड़ में खोया हुआ, युवा नकिति खड़ा था। ईश्वर-धारी पति इओनकियिस ने नकिति की मठ-जीवन के प्रति तीव्र इच्छा, उसके भवष्यि की महमिा और सद्गुणों में सफलता को परखा, और वे उस सद्गुण को सभी के सामने प्रकट करना चाहते थे जो अब तक उसके भीतर छपिा हुआ था।

'यह कौन सा व्यक्ति है जो, एक सामान्य गृहस्थ की तरह दखिते हुए, दूसरों के प्रति इतनी नर्भिीकता से व्यवहार करता है?' इओनकियिोस ने अपने चारों ओर इकट्ठा भक्षिुओं से अनजान होने का नाटक करते हुए पूछा।

'हम नहीं जानते,' उन्होंने उत्तर दयिा।

'यह युवक एक दुष्ट व्यक्ति है: यह एक हत्यारा है,' इओनकियि ने दखिावे के गुस्से में कहा, 'इसे पकड़ो और बाँध दो।'

भक्षिुओं ने उस युवक को आश्चर्य से देखा और एक-एक करके पूछा: क्या वह सचमुच एक हत्यारा था? लेकनि उस युवक ने, जसिने संन्यास के व्रत लेने से पहले ही आज्ञाकारति और वनिम्रता का अभ्यास कर लयिा था, स्वयं को खुले तौर पर एक सच्चा हत्यारा घोषति कर दयिा, जो कठोर दंड का पात्र है, और वह स्वेच्छा से उस पर लगाए गए बंधनों को स्वीकार करने के लिए तैयार था।

'बस करो,' वरष्ठि ने भक्षिुओं को रोका, 'मैंने तुम्हारे सामने उसे सर्फि एक परीक्षा के लिए हत्यारे का दोषी ठहराया था। अगर उसने अपनी युवावस्था में और संसार में रहते हुए, जब उसने अभी तक हमारे जीवन के तरीके का अनुभव नहीं कयिा था, तब भी आज्ञाकारति के कारण ऐसे अपराध का अपना दोष स्वीकार कर लयिा, तो भला एक भक्षिु बनकर वह कतिने ही पुण्य-कर्म नहीं करेगा!'

यह सुनकर, वनिम्र नकिति ने संत इओआनकियिोस से वदिा ली। उसे एहसास हुआ कि अगर वह इओआनकियिोस के पास, उनके भक्षिुओं के बीच रहा, तो वह उस प्रसद्धि से नहीं बच पाएगा, जसिसे वह अपने बचपन में भी इतना नफरत करता था और जसिसे बचने के लिए वह शरण खोजते हुए अपने पैतृक गाँव से भाग गया था। एक अन्य वरष्ठि, जॉन, जो इओआनकियिस से दूर रहते थे, ने जब नकिति उनके पास आए तो खुशी-खुशी उनका स्वागत कयिा और उन्हें तपस्वी जीवन के पाठ सखिाने के बाद, जल्द ही उन्हें दव्यि स्वरूप में परणित कर दयिा, और उनके मुंडन के समय उनका नाम यूथमिीयस रखा।

कुछ समय तक जॉन के साथ रहने और उनसे तपस्वी जीवन की मौनता और तपस्या सीखने के बाद, यूथमिीयस अपने गुरु के नर्दिेश पर पस्सिाडयिन के मठ समुदाय ([7165]) में गया, ताकि वहाँ वरष्ठिों से मठ जीवन के तपस्वी आचरण सीख सके। उस मठ के मठाध्यक्ष नकिोलस, जो अपने समुदाय का संचालन बड़ी सूझबूझ से करते थे, ने नए नवोदति को स्वीकार कर लयिा और शुरू में उसे सबसे छोटे-मोटे काम सौंपे। यूथमिीयस ने इस पर कोई शकिायत नहीं की, भले ही इन कामों में बहुत मेहनत लगती थी: वह इन्हें अपने युवा शरीर के लिए एक सच्ची औषधि मानता था। जनि लोगों को वह पीछे छोड़ आया था—अपनी पत्नी, रश्तिेदारों और धन-संपत्ति—उनके वचिारों ने कई बार उसकी आत्मा को बेचैन कयिा था, लेकनि इन कर्तव्यों को नभिाते हुए, यूथमिीयस उद्धारकर्ता के शब्दों से अपना सांत्वना दे पाता था: *'जो कोई भी मेरे नमिति घर, भाइयों, बहनों, पति, माता, पत्नी, बच्चों या खेतों को छोड़ता है, वह सौ गुना पाएगा और अनंत जीवन का वारसि होगा। जो कोई भी पति या माता से मुझसे अधकि प्रेम करता है, वह मुझ योग्य नहीं है'* (मत्ती 19:29, 10:37)। जब भी यूथमिीयस को अपमान और गाली सहनी पड़ती थी - जो छोटे-मोटे काम करने का एक अवभिाज्य हस्सिा था - वह उन्हें बनि कसिी शकिायत और खुशी के सहन करता था। इस तरह की आज्ञाकारति, वनिम्रता और परश्रिम के माध्यम से, यूथमिीयस अंततः उस बदिु पर पहुँच गया जहाँ उसके भीतर सभी बुरे भाव शांत हो गए थे।

[7164] माउंट ओलंपस – एशयिा माइनर में, फ्राइजयिा और बथिनियिा की सीमा पर स्थति एक पर्वत।

[7165] कनिोवयिा – (ग्रीक शब्द 'कनिोस', जसिका अर्थ है 'साझा', और 'वयिोस', जसिका अर्थ है 'जीवन') – एक ऐसे सामुदायकि मठ को कहा जाता है जसिमें समुदाय के सदस्य न केवल अपना भोजन बल्कि मठ से अपने कपड़े आदि भी प्राप्त करते हैं, जैसा कि मठाधीश द्वारा नर्दिेशति कयिा जाता है, जबकि, अपनी ओर से, वे अपने सभी श्रम और उसके फलों को मठ की सामान्य आवश्यकताओं के लिए समर्पति करने के लिए बाध्य होते हैं।

मोनोस्टकि जीवन के गुणों में दृढ़ होकर, यूथमिीयस ने रेगस्तिान के लिए नकिलने का संकल्प लयिा, ताकि वहाँ, मौन में, वह ईश्वर के और भी करीब पहुँच सके। कठोर मौन का मार्ग अभी भी उनके सामने था। इस समय तक, माउंट अथोस के तपस्वयिों की ख्याति दूर-दूर तक फैल चुकी थी, और यूथमियिस ने अब उनके पास जाने का नश्चिय कयिा। उन्होंने अपनी मंशा माउंट ओलंपस के महान तपस्वयिों में से एक, एल्डर थयिोडोरस को बताई। पवत्रि वृद्ध ने उत्साही भक्षिु को उसकी नई यात्रा के लिए आशीर्वाद दयिा और यह जानते हुए कि एल्डर जॉन, जनिसे यूथमियिस ने अपना पहला मुंडन प्राप्त कयिा था, अब जीवति नहीं थे, उसे महान दैवीय प्रतमिा 'एल्डर जॉन का आशीर्वाद' ([7166]) पहनाया। आठ दनि बाद, यूथमीयस पंद्रह साल के प्रवास के बाद माउंट ओलंपस छोड़कर नकिलने के लिए तैयार था। उसे एक यात्रा साथी भी मलिा – भक्षिु थयिोस्टरिक्टि, जो उसके जैसे ही मठवाद के उच्चतम कारनामों के लिए लालायति था।

ओलंपस से एथोस तक का मार्ग नकिोमेडयिा से होकर गुज़रता था। नकिोमेडयिा पहुँचने पर, यूथमीयस को यह सुखद समाचार पाकर सांत्वना मलिी कि उसके सभी रश्तिेदार, जन्हिें उसने कभी अपने पति के घर में पीछे छोड़ दयिा था, अभी भी जीवति थे। उनसे बछिड़ने के दुःख को कम करने के लिए, उन्होंने उनके पास एक पवत्रि क्रॉस भेजा और संदेशवाहक को यह बताने का नर्दिेश दयिा कि अब उनका कोई नकिति नाम का रश्तिेदार नहीं है, बल्कि अब उनका एक भक्षिु यूथमीयस नाम का है, जो उन्हें अपने उदाहरण का पालन करने की सलाह देते हैं। पहले तो, उसकी महलिा रश्तिेदारों ने यह खबर पाकर रोना शुरू कर दयिा, लेकनि चूँकि उसके प्रति उनका प्यार बहुत गहरा था, इसलिए बाद में, ऊपर से मलिी मदद से, उन्होंने खुद भी यूथमीयस के उदाहरण का पालन करने का संकल्प लयिा। उस सम्मानति व्यक्ति की बेटी को छोड़कर, जसिकी इस समय तक शादी हो चुकी थी, वे सभी भक्षिुणयिाँ बन गईं।

माउंट अथोस पहुँचने पर, यूथमीयस ने वहाँ उत्साहपूर्वक मठवासी जीवन के नयिम का पालन करना शुरू कर दयिा। चूंकि थयिोस्टरिक्टिोस, कठोर, मौन जीवन की कठनिाइयों और कष्टों को सहन न कर सका, और ओलंपस लौट गया, संत यूथमियिस ने अपने तपस्या के प्रयास में एक नश्चिति भक्षिु, जोसेफ के साथ हाथ मलिाया, जो उससे पहले ही माउंट अथोस पर तपस्या कर रहा था। लेकनि जल्द ही छोटा, बड़े का शक्षिक साबति हुआ।

'भाई! चूँकि हम, दाऊद के शब्दों में, "[7167] " (सम्मान के पद पर रहते हुए), आज्ञाओं का उल्लंघन करके, मूर्ख पशुओं जैसे हो गए हैं और अपनी कुलीनता खो चुके हैं, तो आइए हम खुद को पशु ही मानें और चालीस दनिों तक केवल घास पर ही जीवति रहें, पशुओं की तरह अपना सरि जमीन पर झुकाकर। शायद, इसके द्वारा शुद्ध होकर, हम फरि से परमेश्वर के स्वरूप और समानता में अपनी सुंदरता प्राप्त कर लेंगे।"

जोसेफ ने यूथमीयस से यही सुना।

जोसेफ इस प्रस्ताव से सहमत हो गए, और दोनों ने चालीस दनि तक प्यास, ठंड, भूख और गर्मी को सहते हुए बतिाए। जैसे ही उन्होंने ईसाई सद्गुणों की सीढ़ी का यह नया पायदान चढ़ा, संत यूथमीयस ने फरि से अपने साथी को नम्निलखिति प्रस्ताव दयिा:

'अब, प्रयि जोसेफ, आओ हम आश्रय-वहिीन जीवन की कठनिाइयों को पीछे छोड़ दें – आओ हम खुद को कसिी गुफा में बंद कर लें और यहाँ के बाकी सभी भक्षिुओं से अज्ञात रहकर वहीं रहें; आइए हम अपने लिए एक नयिम बनाएं – मानो यह हमें ईश्वर से मलिा हो – कि हम में से कोई भी तीन साल पूरे होने से पहले गुफा नहीं छोड़ेगा। हालांकि, यदि हम में से कोई इन तीन वर्षों के दौरान मर जाता है, तो वह वास्तव में धन्य होगा, क्योंकि उसने अपने जीवन के अंत तक मृत्यु के वचिार को मन में बनाए रखा, और यही गुफा उसकी कब्र होगी। और जब, ईश्वर की इच्छा से, हम दोनों जीवति रहेंगे, तो हमारी वासनाएँ और कामुक इच्छाएँ मर जाएँगी—कम से कम जहाँ तक संभव हो—और हम बेहतर के लिए बदल जाएँगे।

जोसेफ ने भी इस प्रस्ताव को स्वीकार कर लयिा। तपस्वयिों ने अपने लिए एक गुफा ढूंढ ली, खुद को उसमें बंद कर लयिा, और गुफा के पास उगने वाले ओक के फल और शाहबलूत पर आधारति अत्यंत कम पौधे-आधारति भोजन पर कसिी तरह अपनी ज़िंदगी चलाते रहे। उनका पूरा जीवन तपस्या के महानतम कार्यों से भरा था, जैसे: पूरी रात जागना, अखंड उपवास, लगातार घुटने टेकना, खुले में सोना, और आग जलाए बनिा गुफा में अपना समय बतिाना। वे आपस में सख्त मौन का पालन करते थे, और इसे केवल कभी-कभार ही तोड़ते थे, और तब भी केवल प्रार्थना और आत्मा के लिए फायदेमंद अन्य मामलों पर चर्चा करने के लिए। एक साल बाद, तपस्वयिों के पास एक भी फटा-पुराना कपड़ा नहीं था जो उन्हें

[7166] अर्थात्, महा स्कीमा।

[7167] *'पर मनुष्य महमिा में स्थरि न रहेगा; वह नाश होने वाले पशुओं के समान होगा'* (भजन संहति 48:13)।

विभिन्न प्रकार के कीड़ों की भीड़ से बचा सके, जो उनके शरीरों को असहनीय असुविधा पहुँचा रहे थे। वे, शब्द के पूर्ण अर्थ में, बिना किसी उत्पीड़न के शहीद थे। हालाँकि, एक साल बाद, यूथिमियस के साथी ने खुद को उस पीड़ा के भार को और सहन करने में असमर्थ पाया जो उसने स्वेच्छा से अपने ऊपर लिया था। थकान से कमज़ोर पड़कर, वह यूथिमियस को छोड़ गया। यह पहले से ही दूसरा भिक्षु था जो यूथिमियस के कारनामों की बराबरी करने में असमर्थ साबित हुआ था। लेकिन इसके बाद यूथिमियस ने स्वयं अपने प्रयासों को और भी तेज कर दिया। यहाँ उसे दुष्ट आत्मा से कई प्रलोभनों का सामना करना पड़ा। दुष्ट आत्मा के प्रभाव में, यूथिमियस पहले अपने भाई के जाने से उदासी और दुख से अभिभूत हो गया, फिर एकांत के डर से; अंत में, उसने जिस संन्यासी मार्ग की ऊँचाई तय की थी, उसके बारे में गर्वपूर्ण विचारों से वह अक्सर परेशान रहता था। लेकिन इन सभी पर, साथ ही कई अन्य प्रलोभनों पर, यूथिमियस ने विजय प्राप्त की।

जैसा कि उन्होंने व्रत लिया था, गुफा में अपने तीन साल के प्रवास को पूरा करने के बाद, यूथिमियस ने उसे छोड़ दिया। और गुफा के बाहर, जोसेफ से उनके बारे में सुनकर और उनके अनुकरण की इच्छा से, कई तपस्वी लंबे समय से उनका इंतजार कर रहे थे। उन्हें उपदेश देने के बाद, यूथिमियस एक बार फिर ओलंपस पर्वत के लिए रवाना हो गए, जहाँ वरिष्ठ थियोडोर—जिन्होंने उन्हें महान स्कीमा पहनाया था—ने उन्हें बुलाया था, ताकि वे साथ में अथोस पर्वत की यात्रा कर सकें। वरिष्ठ की प्रार्थना स्वीकार कर ली गई, और माउंट अथोस पर, थियोडोर के बिस्तर के पास – क्योंकि वह अपने लंबे तपस्वी जीवन से कमजोर और दुर्बल हो गया था – यूथिमियस का भाग्य था कि वह एक नया कारनामा करे: उद्धारकर्ता की आज्ञा के अनुसार, बीमार और दुर्बल लोगों की सेवा करने का कारनामा। उन्होंने स्वयं थियोडोर के लिए एक नई कोठरी बनाई और वहाँ बड़ी भक्ति से उनकी सेवा की। यह तब तक चलता रहा जब तक कि बीमार साधु, जो गंभीर बीमारियों से असहनीय रूप से पीड़ित थे, चिकित्सा सहायता के लिए थ्रेसलॉनीकी नहीं चले गए। वहीं उन्हें अपना शाश्वत विश्राम मिला।

स्वर्गीय के प्रति उनके प्रेम ने यूफेमिया को उनके ताबूत पर श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए थ्रेसलॉनीकी जाने के लिए प्रेरित किया। थ्रेसलॉनीकी की लगभग पूरी आबादी, जिन्होंने लंबे समय से यूफेमिया के सद्गुणों के बारे में सुना था और अब उनके आगमन के बारे में जानकर, उनका स्वागत करने और उनका आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए बाहर आई। लेकिन यूफेमिया थ्रेसलॉनीकी में अधिक समय तक नहीं रुकीं। शहर में जीवन ने उसे उसकी मौन साधना से भटका दिया। वह थ्रेसैलॉनीकी छोड़कर, सिमियन द स्टाइलाइट की तरह, शहर से कुछ दूर स्थित एक स्तंभ पर चढ़ गया। इस स्तंभ से, यूथिमियस ने उसके पास आने वाले सभी लोगों को उपदेश दिया। वह काफी समय तक उस स्तंभ पर रहे, लोगों को सदाचारी जीवन का उपदेश देते हुए और उन्हें असाध्य रोगों से मुक्त करते हुए। लेकिन फिर उन्होंने एक बार फिर से माउंट अथोस पर मौन जीवन में लौटने की इच्छा की, क्योंकि भक्तों की भीड़ का आगमन उस विनम्र स्तंभवासी पर भारी पड़ रहा था। थेस्सालोनिकी छोड़ने पर, थेस्सालोनिकी के आर्चबिशप थियोडोर की सलाह पर, यूथिमियस को एक डीकन के रूप में अभिषिक्त किया गया, ताकि वह स्वयं - 'आरक्षित उपहारों' के माध्यम से - रेगिस्तान में मसीह के परम पवित्र रहस्यों में भाग ले सके[7168] ।

हालाँकि, यूथिमियस माउंट अथोस पर अधिक समय तक नहीं रहे, क्योंकि उन्हें वहाँ वह शांति नहीं मिली जिसकी वे तलाश कर रहे थे। वह पूर्व मरुभूमि निए तपस्वियों से घनी आबादी वाली हो गई थी। उनके बीच एक 'समर्पित' तपस्वी के आगमन के बारे में जानने पर, और उसे अपने बीच का सर्वोच्च मानकर, वे उससे अक्सर मिलने आने लगे। तब यूथिमियस ने अपने लिए एक नया आश्रय चुना – 'नोवykh' नामक एक निर्जन द्वीप – जहाँ वे अपने विचारों से सहमत दो अन्य भिक्षुओं, सिमियन और जॉन कोलोव के साथ चले गए। ईश्वर की अनुमति से, सारासेनों ने इस द्वीप पर हमला किया। दो जहाजों में वहाँ पहुँचकर, उन्होंने भिक्षुओं को बंदी बना लिया और उन्हें अपने साथ ले जाने का इरादा किया। अनुकूल हवा का लाभ उठाते हुए, बर्बरों ने खुशी-खुशी अपने जहाजों के पाल फहराए और अपनी यात्रा पर निकल पड़े। लेकिन उनकी खुशी अल्पकालिक थी। बंधियों को ले जा रही नाव अचानक समुद्र के बीच में रुक गई और एक इंच भी नहीं हिल सकी, जबकि दूसरी नाव बिना किसी रोक-टोक के चलती रही। बर्बरों में से एक को नाव के रुकने का असली कारण समझ आ गया और उसने अपने साथियों से कहा:

[7168] अर्थात्, चूँकि अनभिषिक्त लोगों को अपने हाथों से मसीह के रहस्यों को संभालने की अनुमति नहीं है, इसलिए संत यूथिमियस को एक डिकन के रूप में अभिषिक्त किया गया ताकि वे स्वयं रेगिस्तान में पवित्र उपहारों में भाग ले सकें।

'क्या हम इतने मूर्ख हैं कि यह नहीं समझ सकते कि यह सब हमारे साथ इसलिए हुआ है क्योंकि हमने ईश्वर के सेवकों पर अत्याचार किया था? अगर हम समुद्र में डूबना नहीं चाहते, तो उन्हें तुरंत आज़ाद कर दो!'

उसके साथी तुरंत सहमत हो गए: वे सभी पवित्र बंदियों के पैरों में गिर पड़े और उनसे क्षमा याचना करने लगे, जो उन्हें तुरंत मिल गई। इसके बाद, वह जहाज, जो तब तक स्थिर पड़ा था, अपने आप चल पड़ा, और जल्द ही उस द्वीप पर पहुँच गया जिसे अभी-अभी लूटा गया था। द्वीप के तीन निवासी अपनी स्वतंत्रता पुनःप्राप्त कर गए। उन्होंने बर्बर लोगों से अपनी मामूली संपत्ति लौटाने का अनुरोध किया, जो यद्यपि तुच्छ थी, रेगिस्तानवासियों के लिए अत्यंत आवश्यक थी। क्रूर बर्बर, जिन्हें अभी-अभी ईश्वर की उंगली ने दंडित किया था, ने उनकी विनती पर कोई ध्यान नहीं दिया। और एक बार फिर, इसके लिए उन्हें ईश्वर के दंडात्मक दहिने हाथ की पूरी ताकत का अनुभव करना था। जब वे पहले से ही समुद्र में थे, तो अचानक एक विपरीत हवा चली और उनके जहाजों को उस द्वीप पर वापस धकेल दिया जिसे वे अभी-अभी छोड़कर आए थे। अब वे भिक्षुओं के अनुरोध को और टाल नहीं सकते थे। उनमें से केवल एक बर्बर, जो ली गई चीज़ों को वापस करने से परेशान था, ने जॉन कोलोव को पकड़ लिया और तब तक बेरहमी से पीटा जब तक कि उसके साथियों ने उसे नहीं रोका। संत यूथिमियस, जो इस घटना के समय मौजूद थे, ने बस विनम्रता से टिप्पणी की:

'अरबों! अगर तुमने बिना कोई अपमान किए हमें आज़ाद कर दिया होता, तो हम शांति से अपने वतन पहुँच गए होते; लेकिन अब, एक भाई पर अत्याचार करके, तुमने ईश्वर का अपमान किया है, और तुम जल्द ही जान जाओगे कि यह बुराई कितनी बड़ी है।'

इन बर्बर लोगों को इस भविष्यवाणी के पूरा होने का इंतज़ार ज़्यादा देर तक नहीं करना पड़ा। समुद्र में उनकी प्रतीक्षा एक नई विपत्ति कर रही थी: उन पर रोमन युद्धपोतों ने हमला कर दिया, जिन्होंने उन पूजनीय पुरुषों के साथ अपराध करने वालों के सवार जहाज को ही पकड़ लिया, जबकि दूसरा जहाज, सभी की उम्मीदों के विपरीत, बच निकला। इस प्रकार ये तीन महान पुरुष, जिन्होंने अपने पूरे जीवन में ईश्वर की महिमा की थी, ईश्वर-निंदक बर्बरों के बीच भी महिमामय हुए।

इन लोगों को प्रभु की आज्ञा याद आई, जिसमें परमेश्वर को आज़माने से मना किया गया है और खतरनाक स्थानों से दूर रहने का आदेश दिया गया है (मत्ती 10:23), और इसलिए, अपने नए निवास स्थान पर एक बार खतरे का सामना करने के बाद, उन्होंने उसे छोड़ने का संकल्प लिया। लेकिन माउंट अथोस भी, जहाँ वे एक बार फिर चले गए थे, अब एक सुरक्षित स्थान नहीं रहा। जंगली लोग इसके वर्तमान निवासियों के बारे में जानते थे और इसलिए उन्होंने उस पर बार-बार हमले किए। अथोस के कई भिक्षु पहले ही उनके द्वारा बंदी बना लिए गए थे। इसी कारण, अथोस पर आए तीन नए बसाहटियों ने अन्य, सुरक्षित स्थानों पर बिखर जाने का निश्चय किया। आदरणीय जॉन तथाकथित सिडिरोकावसिया में बस गए, आदरणीय सिमियिन हेलास चले गए ([7169]), और आदरणीय यूथमियस व्रास्टमा चले गए। यहाँ उसका पूर्व साथी - परम पूज्य जोसेफ से एक बार फिर मिलना तय था। इसके अलावा, प्रभु में कई अन्य भाइयों ने भी वहाँ इकट्ठा होकर यूथमियस के पास बसने की इच्छा व्यक्त की। यूथमियस ने उनके लिए कोठरियाँ बनाईं, जबकि वह स्वयं एक खाई में अकेले बस गया। आदरणीय यूथिमियस कभी-कभी अपने खंदक को छोड़कर भाइयों से मिलने जाते थे, जबकि अन्य समय में, मौन के प्रति उत्सुक होकर, वे एथोस की ऊँचाइयों पर चढ़ जाते थे और वहाँ प्रार्थना में ईश्वर से संवाद करके अपने मन और हृदय को इतनी हद तक शुद्ध कर लेते थे कि उन्हें दैवीय दर्शन और प्रकटवाणियाँ प्राप्त होती थीं। और एक बार, वहाँ रहते हुए, उन्होंने एक आवाज़ सुनी जो उनसे कह रही थी:

'यूथमियस!' थेस्सालोनिकी जाओ: वहाँ, शहर के पूर्व में पहाड़ों में, तुम्हें पेरीस्टेरा नामक एक चोटी मिलेगी, जहाँ पानी का एक स्रोत है, और वहाँ तुम पहले बुलाए गए प्रेरित सेंट एंड्रयू का चर्च देखोगे – पूर्व का , जिसकी भव्यता अब एक भेड़शाला में बदल गई है – इस स्थान को शुद्ध करो और वहाँ एक मठ स्थापित करो: यहाँ कई लोग अपना उद्धार पाएँगे। मैं हर चीज़ में आपकी मदद करूँगा। आपको अब और अधिक समय तक रेगिस्तान में राक्षसों से लड़ते हुए नहीं रहना चाहिए, क्योंकि वे आपसे बहुत पहले ही आपके सद्गुणों से पराजित होकर पीछे हट चुके हैं।

दिव्य आज्ञा का पालन करते हुए, पूजनीय पिता ने एथोस की चोटियों को छोड़ दिया और अपने साथ दो भिक्षुओं – इग्नाटियस और एफ्रेम – को लेकर एथोस से थ्रेसलॉनिकी के लिए रवाना हो गए। इस अवसर पर, थ्रेसलॉनिकी ने उनका 'स्वर्ग से उतरे एक देवदूत' के रूप में स्वागत किया। पेरीस्टेरा नामक एक स्थान के बारे में जानने पर, यूथमियस कुछ

[7169] अर्थात्, ग्रीस।

मार्गदर्शकों को लेकर उनके साथ अपने लिए बताए गए पहाड़ की ओर रवाना हुए, जहाँ उन्हें वास्तव में एक भेड़शाला मिली। ऊपर से प्रकट हुए संकेतों ने बताया कि पूर्व चर्च के खंडहर ठीक यहीं पर खोजे जाने थे, लेकिन स्थानीय निवासियों में से किसी को भी इस चर्च के बारे में कुछ भी पता नहीं था। स्थानीय ईसाइयों ने लंबे समय से वहां एक भेड़शाला बनाए रखी थी, इस बात का उन्हें तनिक भी अहसास नहीं था कि वे स्थानीय तीर्थस्थल का अपमान कर रहे थे। उस पवित्र स्थल के इस तरह के अपमान को देखकर पूजनीय भिक्षु फूट-फूट कर रो पड़े। उन्होंने जो खुदाई शुरू की, उससे जल्द ही चर्च की पूरी नींव उजागर हो गई। तब स्थानीय लोगों ने, उनके पास आए इस बुजुर्ग में अंतर्दृष्टि के ऐसे असाधारण उपहार से प्रभावित होकर, स्वेच्छा से इस भूली-बिसरी चर्च के जीर्णोद्धार की लागत अपने ऊपर ले ली। इस तरह, वे मानो इसके प्रति अपनी पूर्व की उदासीनता के पाप का प्रायश्चित करना चाहते थे। इस प्रकार संत एंड्रयू द अपोस्टल का चर्च बनाया गया, जिसमें पार्श्व चैपल थे: दाईं ओर, संत जॉन द फॉररनर के सम्मान में, और बाईं ओर, संत यूथमियिस द ग्रेट के नाम पर। हालाँकि, चर्च का निर्माण पूरा होने से पहले, रेवरेंड फादर को स्वयं बहुत कठिनाइयों और दुखों का सामना करना पड़ा। दैत्यों की दुर्भावनापूर्ण साज़िशों के कारण, कभी-कभी इमारत के चारों ओर की मचान ढह जाती थी, और कभी-कभी बाईं ओर का हिस्सा, जो अभी-अभी पूरा हुआ था, ढह जाता था। ऐसी विपत्तियों का सामना करते हुए, रेवरेंड फादर के लिए बिल्डरों को उनका शुरू किया हुआ काम जारी रखने के लिए मनाना कोई आसान काम नहीं था। वे अपनी रातें प्रार्थना में बिताते थे, और दिन के समय वे कभी भी कामगारों के साथ से नहीं हटते थे, और अपनी मेहनत से उनके लिए एक उदाहरण स्थापित करते थे। अंततः 863 में, चर्च का निर्माण पूरा हुआ। उनके मार्गदर्शन में, स्थानीय लोगों के अनुरोध पर, जल्द ही वहाँ एक मठ स्थापित किया गया, जो बाद में वहाँ रहने वाले कई भिक्षुओं के लिए प्रसिद्ध हो गया। आदरणीय को पता था कि यहाँ हुई चमत्कार की दूर-दूर तक फैली अफवाह से कई लोग यहाँ आकर्षित हुए थे, और इसलिए वह इस बात को लेकर बहुत चिंतित थे कि नए मुंडित भिक्षु, जो केवल इसी अफवाह से आकर्षित होकर यहाँ आए थे और जिन्होंने अभी तक अपनी ताकत को परखा नहीं था, वे कठिन संन्यासी जीवन को सहन करने में असमर्थ साबित हो सकते हैं। नतीजतन, उन्होंने इन नवोदित भिक्षुओं को कई उपदेश दिए, उनसे शैतान द्वारा पैदा किए गए खतरों के बारे में बात की, इन खतरों से बचने के तरीके बताए, श्रम की पवित्रता की प्रशंसा की, दुराचारों की निंदा की और सदाचार का आह्वान किया।

'भाइयो!' संत यूथमियस ने भिक्षुओं को उपदेश दिया, 'हमारे शत्रु, शैतान, धर्मग्रंथ के अनुसार, एक गरजते हुए सिंह की तरह घूमता रहता है, जो भी अपने उद्धार के प्रति सचेत नहीं है, उसे निगलने की तलाश में रहता है: अतः हम संयमी और चौकस रहें (देखें 1 पतरस 5:8)। यदि हमने संसार का त्याग कर दिया है, तो आत्मा की कामनाओं को त्याग दें; यदि हमने अपने शरीर को सूली पर चढ़ा दिया है और प्रभु की मृत्यु में स्वयं को परिभाषित किया है, तो सांसारिक सुखों में बह न जाएँ, बल्कि आत्मा के अनुसार चलें; यदि, स्वर्ग के राज्य के लिए, हमने स्वर्गदूतों के स्वरूप में स्वयं को परिभाषित किया है, तो हमें स्वर्गदूतों की तरह भी जीना चाहिए; यदि हम वास्तव में प्रभु से प्रेम करते हैं, तो हमें उसकी आज्ञाओं का पालन करना चाहिए। आइए हम अपने हाथों से काम करें, क्योंकि आलस्य और सुस्ती के कारण हम अच्छे कामों के लिए थक और कमजोर हो जाते हैं – और फिर बाँझपन और गरीबी हमारी अनिवार्य नियति बन जाते हैं: *'जो अपना घर बिगाड़ता है, उसे अपनी भाग्य में हवा मिलेगी'* (नीतिवचन 11:29), बुद्धिमान कहते हैं; और प्रेरित पौलुस कहते हैं: *'यदि कोई काम करने को तैयार नहीं है, तो उसे खाने भी न दिया जाए'* (2 थिस्सलुनीकियों 3:10)। अपने आध्यात्मिक पिता के प्रति विनम्रता, प्रेम और आज्ञाकारिता बनाए रखें; उन पर विश्वास करें और उनसे कुछ भी न छिपाएँ: अपने विचारों का उनसे इक़रार करें, और इस तरह अपने हृदय और मन को शुद्ध करें, क्योंकि यही मोक्ष का मार्ग है।

यूथमियस की बात सुनकर, उनके मठ के संतों ने कहा कि पवित्र आत्मा ने स्वयं उनमें दिव्य अनुग्रह फूँका था, ठीक वैसे ही जैसे उन्होंने पवित्र प्रेरितों में फूँका था। इन नए संतों में बेसिल भी थे, जो बाद में थिस्सलुनीके के आर्चबिशप बने; उनकी ही मेहनत के कारण पूजनीय यूथमियस के कारनामों की स्मृति आज तक सुरक्षित है। वे उस दैवीय उत्साह का वर्णन करते हैं जिससे उनके पवित्र चरवाहे के प्रोत्साहन से नए मठ के भिक्षु भर गए थे। इस प्रकार, उदाहरण के लिए, जब उनके मठ में एक विधर्मी पुस्तक आ पहुँची, तो उन्होंने उसे तुरंत जला दिया।

अपने धार्मिक जीवन के कारण, यूथमियस को दूरदर्शिता का वरदान और चमत्कार करने का वरदान प्राप्त हुआ था। इस प्रकार, उपर्युक्त बेसिल बताते हैं कि आदरणीय यूथमियस ने स्वयं अपने बिशप के पद की भविष्यवाणी की थी। उनके मुंडन के तीसरे दिन, आदरणीय संत चर्च में उनके पास आए, जहाँ उन्हें एक नए मुंडित भिक्षु के रूप में सात दिनों तक रहना था, और कहा:

'बेसलि! यद्यपि मैं प्रकाश की करिणों या पूर्वज्ञान के वरदान का अयोग्य हूँ, चूँकि तुम और अन्य लोग अपनी आत्माओं के लाभ के लिए मेरी अयोग्य मार्गदर्शन में आए हो, सर्व-सत्कार्य ईश्वर ने मुझे अनुग्रह का एक निश्चित हिस्सा प्रदान करने की कृपा की है, ताकि तुम्हारे साथ जो होने वाला है उसे पूर्वदर्शी होकर, मैं तुम्हें तुम्हारे उद्धार के लिए उपयोगी वचन कह सकूँ। 'तब जान लो, कि ज्ञान के प्रति अपने प्रेम के कारण, तुम जल्द ही मठ छोड़ दोगे और एक बिशप बन जाओगे; लेकिन तब भी, मुझे अपने पिता के रूप में, और हमारे मठ, और भाइयों को याद रखना।'

आर्चबिशप बेसिल द्वारा संकलित, परम पूज्य के जीवन से यह स्पष्ट रूप से स्पष्ट है कि वह उस व्यक्ति की स्मृति से कितना प्रेम और सम्मान करता था, जिसके कारनामों और चमत्कारों को उसने देखा था और जिनका उसने वर्णन किया। यहाँ परम पूज्य यूथिमियस द्वारा किए गए कुछ चमत्कार दिए गए हैं, जिन्हें उन्होंने देखा और सुनाया। एक बार, जब बेसिल, एक अन्य भाई, मौन-निवासी जॉन के साथ, एक सुनसान जगह पर थे और वे भूख और थकान से मरने की कगार पर थे, तो पूज्यनीय व्यक्ति अचानक उनके सामने प्रकट हुए और अपने साथ लाए भोजन से उन्होंने उनकी ताकत इतनी बहाल कर दी कि वे अपनी यात्रा जारी रख सके। एक अन्य अवसर पर, वही बेसिल, रेवरेंड के साथ, मठ से दूर थे, और रेवरेंड ने अचानक उनसे कहा कि दो भाई, जॉन और एंथनी, उसी क्षण मठ छोड़ रहे थे क्योंकि उनके और अन्य भाइयों के बीच एक विवाद हो गया था। थेस्सालोनिकी में, यूथिमियस ने एक स्तंभ पर तपस्या करते हुए एक आदमी से एक दुष्ट आत्मा को भगा दिया। संत यूथिमियस ने कई अन्य चमत्कार भी किए; इनमें से कुछ के साक्षी उनके जीवन के वृत्तांतकार, बेसिल, स्वयं बने, जबकि अन्य के बारे में उन्होंने दूसरों से सुना।

कई भिक्षुओं ने परम पूज्य से ही मुंडन कराया। उन्होंने अपने तपस्वी कारनामों और चमत्कारों के माध्यम से कई गृहस्थों को भी संन्यास के मार्ग पर लाया। उनके प्रयासों और देखभाल से ओलंपस पर्वत, माउंट एथोस और थ्रेसलुनीकी में कई नए मठ स्थापित हुए।

अंततः अपने पिता के घर से निकलने के बयालीस साल बाद, यूथिमियस अपने बहुत बड़े सांत्वना के लिए, अपने ही रिश्तेदारों का भी शिरच्छेदन कर सके, जिसके लिए वह निकोमेडिया में रहते हुए, जब वह पहली बार ओलंपस से अथोस जा रहे थे, तब से उन्हें बुला रहे थे। वह, मानो, एक दूसरे जोसेफ थे - अपने जीवन-यापन के तरीके में उतने ही शुद्ध, उतने ही महिमामय उन परीक्षणों और कष्टों के बाद जिन्हें उन्होंने सहन किया था, और केवल अपने रिश्तेदारों द्वारा बयालीस साल बाद ही पहचाने गए, जब उन्हें आखिरकार इस दुनिया की क्षणभंगुरता का एहसास हुआ और उन्होंने संन्यासी जीवन अपनाने का संकल्प लिया। उन्होंने अपने पुरुष रिश्तेदारों को अपने मठ में ले लिया, जबकि अपनी महिला रिश्तेदारों के लिए उन्होंने उस उद्देश्य के लिए खरीदी गई एक जगह पर एक नया मठ बनाया। आदरणीय के भिक्षुणी नाम यूफेमिया को इस मठ की अधिष्ठात्री नियुक्त किया गया। इन दोनों मठों को थिस्सलोनिकी के मेथोडियस, मेट्रोपॉलिटन की देखभाल में सौंपकर और उन्हें अपनी आज्ञाएँ देकर, आदरणीय ने एक बार फिर से मौन में रहने के लिए थिस्सलोनिकी के पास अपने पूर्व स्तंभ पर चढ़ गए। और अपने सांसारिक जीवन से शाश्वत विश्राम पाने के लिए, प्रभु ने आदरणीय को माउंट अथोस की चोटियों पर ले गए, जहाँ उन्होंने अपने लगभग सभी तपस्या के कार्य किए थे।

अपने निधन के दिन का पूर्वानुमान लगाते हुए, संत यूथिमियस ने 7 मई को—जो कि संत यूथिमियस महान के अवशेषों के स्थानांतरण का स्मरणोत्सव है—अपने निकटवर्ती अथोस मठों के भाइयों को भोजन के लिए आमंत्रित किया, और उनके साथ इस दिन का उत्सव मनाने के बाद, उनसे विदा ली; अगले दिन, किसी को बताए बिना, वह अपनी ज़रूरतों का ध्यान रखने के लिए केवल एक भिक्षु, जॉर्ज, को अपने साथ ले गया, और उसके साथ माउंट अथोस से एक एकांत स्थान, तथाकथित 'पवित्र द्वीप' पर चला गया। इस द्वीप पर उन्होंने लगभग चार महीने तक एक गुफा में तपस्वी के रूप में जीवन व्यतीत किया, और अंततः15 अक्टूबर 889 को लगभग वेदना रहित रूप से निधन हो गया। प्रभु ने उन्हें इस नश्वर संसार से एक पीड़ा रहित विदाई प्रदान की, यह उनके उस सभी कष्टों का मुआवजा था, जिन्हें उनके युवा हृदय को तब झेलना पड़ा था जब उन्होंने अपने पिता का घर छोड़ दिया था, जहाँ वे सभी से प्रेम करते थे और सभी उनसे प्रेम करते थे।

दो साल बाद, पेरिस्टेरा के भिक्षुओं ने दिवंगत संत के शरीर को अपने मठ में स्थानांतरित करने की इच्छा व्यक्त की, ताकि मृत्यु के बाद भी वह अपने समुदाय के लिए मध्यस्थता कर सकें। इस उद्देश्य के लिए, उन्होंने हयरोमोंक व्लासियोस और भिक्षु पॉल को पवित्र द्वीप पर भेजा। वहाँ पहुँचने पर, दूतों को संत यूथिमियस का शरीर उसी गुफा में पड़ा हुआ मिला जहाँ उन्होंने अपना देह त्यागा था। बहुत लंबे समय तक वहाँ पड़े रहने के बावजूद, सड़न ने उनके शरीर को

बल्कुल भी छुआ नहीं था। अगले वर्ष 13 जनवरी को, परम पूजनीय संत के पवत्रि अवशेष सोलुन, या थ्रेसलॉनीकी शहर में स्थानांतरति कर दिए गए, जहाँ वे आज भी वरिाजमान हैं[7170] ।

हमारे पूजनीय और ईश्वर-वाहक पति यूथमियस की प्रार्थनाओं के द्वारा, हम सभी आध्यात्मकि और शारीरकि दुर्बलताओं से मुक्त हों, और हमारे प्रभु मसीह यीशु के द्वारा हम स्वर्ग के राज्य के योग्य ठहरें, जन्हिें सभी महमिा, सम्मान और आराधना उनके आरंभ-रहति पति और पवत्रि आत्मा के साथ, युगानुयुग अर्पति होती है। आमीन।

कॉन्टाकयिन, स्वर 2:

हे ईश्वर-ज्ञानी और पूज्य यूथमियस, भीड़ के कोलाहल से अक्षुण्ण होकर पार कर, आपने अपने अश्रु-धाराओं से अदेह शत्रुओं को दृढ़ता से वश में कयिा; चमत्कारों का वरदान प्राप्त कर, आप सभी वासनाओं का उपचार करते हैं: हम सभी के लिए अनवरत प्रार्थना करें।

प्रतष्ठिति शहीद लूसयिन, अंकोच के पुरोहति का जीवन और शहादत

१५ अक्टूबर को स्मरणोत्सव

संत लूसयिन का जन्म सीरयिा के सामोसटा शहर में[7171] धर्मनष्ठि माता-पति के घर हुआ था। बारह वर्ष की आयु में लूसयिन अनाथ हो गए और उन्होंने अपने माता-पति द्वारा छोड़ी गई सारी संपत्ति गरीबों में बाँट दी; वे स्वयं एडसा शहर के लिए कन्फेशर मकरयिस के पास चले गए और उनके मार्गदर्शन में, उन्होंने उत्साहपूर्वक पवत्रि धर्मग्रंथों का अध्ययन शुरू कर दयिा। साथ ही, लूसयिन ने एक अत्यंत तपस्वी जीवन जयिा। उन्होंने कभी शराब नहीं पी, बल्कि केवल पानी पयिा; उनका भोजन पानी के साथ सूखी रोटी था, लेकनि वह भी वे दनि में केवल एक बार ही खाते थे, और कभी-कभी तो वे पूरे सप्ताह कुछ भी खाए बनिा रह जाते थे[7172] । अपने अत्यंत धार्मकि जीवन के साथ-साथ यहूदयिों और अन्यजातयिों के बीच परमेश्वर के वचन के उत्साही प्रचार के लिए, लूसयिन को अंटीओक का एक पादरी नयिुक्त कयिा गया। यहाँ लुसयिन ने एक स्कूल स्थापति कयिा, कई शष्यिों को इकट्ठा कयिा और वद्वितापूर्ण तथा आध्यात्मकि दोनों तरह की बुद्धमित्ता के शक्षिक बन गए: उन्होंने दैवीय धर्मग्रंथों की व्याख्या सखिाई और, साथ ही, अपने शष्यिों को सदाचारी जीवन का नर्दिेश दयिा[7173] । इस दौरान, लुसयिन ने अपनी गतविधियिों में पवत्रि धर्मग्रंथों के पाठ को सुधारने का कार्य भी जोड़ लयिा, जसिे दुर्भावनापूर्ण इरादे वाले वधिर्मीयों द्वारा बुरी तरह से वकिृत कर दयिा गया था। इस उपयोगी कार्य के लिए, लूसयिन ने सबसे पहले हब्रिू भाषा का अध्ययन कयिा[7174] ।

[7170] इसीलिए संत यूथमियस नए को थ्रेसलॉनीकी का कहा जाता है – यद्यपि उनका जन्मस्थान ओप्सोस गाँव था, जो थ्रेसलॉनीकी से बहुत दूर स्थति था; थेस्सालोनकिी शहर को संत यूथमियिस के जीवनकाल में और उनकी मृत्यु के बाद, दोनों ही समय उनकी सुरक्षा और मध्यस्थता का लाभ मलिा, और संत की अवशेषों के माध्यम से वहाँ कई चमत्कार हुए।

[7171] सामोसता – यूफ्रेटसि नदी के पश्चमिी तट पर, सीरयिाई प्रांत कोमागेन की राजधानी; अब इसे साम्सट कहा जाता है।

[7172] अपने धार्मकि जीवन के कारण, लूसयिन को, जैसा कि उनकी जीवनी बताती है, दैवीय अनुग्रह का एक वशिेष वरदान मलिा, ताकि जब वह शहर में चलता था, तो कुछ लोग उसे देख सकते थे जबकि वह दूसरों के लिए अदृश्य रहता था (15 अक्टूबर के लिए प्रस्तावना)।

[7173] यहाँ उन्होंने पवत्रि धर्मग्रंथों की प्रतलिपि बनाने में भी भाग लयिा, जसिमें उन्होंने बड़ी नपिुणता हासलि की; इस परश्रिम के माध्यम से, लूसयिन ने स्वयं और गरीबों दोनों का भरण-पोषण कयिा।

[7174] लुसयिन का सबसे प्रसद्धि वद्वितापूर्ण कार्य बाइबलि के ग्रीक पाठ का संशोधन और सुधार था। धन्य जेरोम, जो अंकोना की कलीसयिा के पुरोहति थे, ने पवत्रि धर्मग्रंथों पर इतनी लगन से काम कयिा कि आज भी कुछ प्रतयिां 'लुसयिन की' के नाम से जानी जाती हैं। संत लूसयिन ने पवत्रि ग्रंथ में त्रुटयिाँ पाईं, जो न केवल समय के साथ बल्कि दुर्भावनापूर्ण व्यक्तयिों द्वारा भी डाली गई थीं, और इसलिए उन्होंने चर्च को यथासंभव सबसे सटीक ग्रंथ प्रदान करने के लिए अपने श्रम और ज्ञान का उपयोग करने का संकल्प लयिा। संत अथेनासयिस संत लुकयिन के कार्यों के बारे में इस प्रकार कहते हैं: 'लुकयिन ने पहले के अनुवादों और हब्रिू पुस्तकों की जांच की, इस बात पर बारीकी से ध्यान दयिा कि क्या गायब था या अनावश्यक था, और सब कुछ उसकी सही जगह पर सुधार दयिा।' अपने शहीद होने के समय धर्म के शत्रुओं से अपने कार्य की रक्षा के लिए, संत लूसयिन का कार्य एक दीवार के भीतर छपिा दयिा गया था, जहाँ पांडुलपि वाले डब्बिे को चूने से सील कर दयिा गया था; यह सम्राट कॉन्स्टेंटनि द ग्रेट के शासनकाल के दौरान वहाँ मलिा, संत लूसयिन द्वारा इसकी समीक्षा की गई, और यह सामान्य उपयोग में आने लगा।

जब लूसियन के सद्गुणों की ख़बर दूर-दूर तक फैल गई, तो दुष्ट सम्राट मैक्समियिन गैलेरियस को उसके बारे में पता चला। पूर्वी देशों में पवित्र वशि्वास को उखाड़ फेंकने और नष्ट करने की इच्छा से, मैक्समियिन ने कई ईसाइयों को, वशिेष रूप से सबसे वदि्वान और प्रसदि्ध ईसाई शकि्षकों को, यातनाएँ दीं और मार डाला। उस अधर्मी शासक ने सोचा कि यदि वह चर्च के इन स्तंभों को गरिा देगा, तो मसीह की कलीसयिा स्वयं जल्द ही ढह जाएगी। तब तक, वह पहले ही नकिोमेडयिा के संत एम्फमिस और अलेक्जेंड्रयिा के संत पीटर[7175] को मार चुका था। संत लूसियन के बारे में सुनते ही, उसने आदेश दयिा कि उसे ढूंढकर यातना देने के लिए लाया जाए। तब अंतीयक में रहने वाले पैंक्रैटियस नामक एक पुरोहति – जो सबेलयिन संप्रदाय का अनुयायी था – ने राजा के दूतों को बताया कि लुसियन कहाँ ठहरे हुए थे। पैंक्रैटियस लंबे समय से लूसियन की अच्छी प्रतषि्ठा से ईर्ष्या करता था और, यहूदा की तरह, ने उस नर्दिोष व्यक्ति को मौत के घाट उतारने के लिए धोखा दयिा। इसके बाद, सेंट लूसियन को दुष्टों ने पकड़ लयिा और यातनाओं का सामना करने के लिए नकिोमेडयिा[7176] ले जाया गया।

उस समय, क्रूर यातना देने वाला ईसाइयों के प्रति इतना क्रोधति था कि, दूसरे हेरोद की तरह, उसने छोटे ईसाई बच्चों को भी मार डाला। मूर्तयिों पर बलदिान कयि गए भोजन से बच्चों को अपवत्रि करने की इच्छा से, उसने आदेश दयिा कि ये व्यंजन उनके मुंह में जबरदस्ती डाले जाएँ; लेकनि उन्होंने, पवत्रि आत्मा के मार्गदर्शन में, उन्हें लेने से इनकार कर दयिा, और इसी कारण उन्हें मृत्युदंड दयिा गया।

संयोग से वहाँ दो कुलीन युवक—जो जन्म से भाई थे—उपस्थति थे; अपने माता-पति से, और उससे भी अधकि ईश्वर से शकि्षति, वे मूर्तपिूजा से घृणा करते थे। यातना देने वाले ने युवकों को अपने पास बुलाया और दयालु शब्दों से उन्हें लुभाने तथा मूर्तपिूजा की मीठी बलदिानों से प्रलोभति करने लगा, ताकि वह उन्हें शैतानी अपवत्रिता का भागीदार बना सके। लेकनि युवकों ने भोजन को दूर धकेलते हुए कहा:

'हमारे माता-पति ने हमें इन खाद्य पदार्थों को न खाने की आज्ञा दी है, क्योंकि जो कोई भी इन्हें चखता है, वह मसीह को क्रोधति करता है।'

इसके लिए, यातना देने वाले ने उन्हें बेरहमी से कोड़े लगाने का आदेश दयिा; लेकनि युवकों ने, परपिक्व पुरुषों की तरह, बड़ी धैर्यता से यातनाओं को सहन कयिा। फरि राजा के एक दरबारी ने कहा:

'यह बहुत बड़ी लज्जा की बात है कि छोटे बच्चे, जो अभी-अभी डायपर से नकिले हैं, अपने धैर्य से रोमन राजा पर वजिय प्राप्त करें। हे महान राजा, मुझे ये बच्चे दे दो, और मैं उन्हें देवताओं का सम्मान करना सखिाऊँगा।'

राजा ने बच्चों को उसके हवाले कर दयिा। उसने तुरंत उनके सरि मुंडवा दिए और उन पर तीखा सरसों का तेल मलकर उन्हें गर्म स्नानघर में बंद कर दयिा; परणिामस्वरूप, बच्चों के सरि आग की लपटों की तरह जल उठे, मानो उन पर बजिली गरि गई हो; इस यातना में दोनों भाई मर गए। पहले छोटे भाई की मौत हो गई, और बड़े ने अपने मृत भाई को देखकर पुकारा:

'तुम वजियी हुए, मेरे भाई, तुम वजियी हुए; ईश्वर तुम्हारा सहायक हो!' इसके बाद, अपने मृत भाई के शरीर को चूमकर, उसने भी अपनी आत्मा ईश्वर को सौंप दी। – यह नकिोमेडयिा में हुआ, जहाँ संत लूसियन को शहादत के लिए ले जाया जा रहा था।

कपाडोसयिा में, जो नकिोमेडयिा के रास्ते में था, लुसियन ने उन सैनकिों को देखा जन्हिोंने यातनाओं के डर से मसीह का त्याग कर दयिा था। लुसियन ने उन्हें धैर्यपूर्वक अपनी यातनाओं को सहने के लिए प्रोत्साहति करना शुरू कयिा और कहा:

'यह तुम्हारे लिए कतिना अपमान और शर्म की बात है! सैनकिों के रूप में, तुम हमेशा एक सांसारकि और अस्थायी राजा के लिए लड़ाई में अपनी सेहत को जोखमि में डालते हो, और उसके लिए अपनी जान भी दे देते हो; फरि भी तुम स्वर्गीय और शाश्वत राजा, मसीह के लिए साहसपूर्वक खड़े होने को तैयार नहीं हो, और न केवल खुद को बचाते हो, बल्कि उससे मुंह भी मोड़ लेते हो! वचिार करो: एक सांसारकि राजा की आज्ञा मानने में तुम्हारा क्या लाभ है? और साथ ही, इस पर भी

[7175] संत एम्फमिस का पर्व 3 सतिंबर को, और अलेक्जेंड्रयिा के संत पीटर का पर्व 26 नवंबर को मनाया जाता है।

[7176] वर्ष 308 में, सम्राट डायोक्लेटयिन के शासनकाल के दौरान, लूसियन नकिोमेडयिा में धर्म की गवाही देने वालों में से एक थे, जहाँ उस समय ईसाइयों पर कठोर उत्पीड़न हो रहा था; वहाँ से उन्होंने नकिोमेडयिा के संत अम्फमिस की शहादत के बारे में अंtओक की कलीसयिा को सूचति कयि; लेकनि इस अवसर पर, सभी अपेक्षाओं के वपिरीत, उन्हें रहिा कर दयिा गया और वे अंtओक लौट आए, जहाँ उन्होंने अपनी पछिली ईसाई सेवा जारी रखी।

मनन करो कि तुम स्वर्गीय राजा की आज्ञा की अवज्ञा करके क्या त्याग रहे हो? व्यर्थ के सम्मान और महिमा के लिए, आप स्वयं को ऐसे विनाश में डाल रहे हैं; फिर भी अपने प्रभु के लिए, जिन्होंने हमारे लिए अपना लहू बहाया और अपने सेवकों के लिए अगणित आशीषें तैयार की हैं, आप क्षणिक कष्ट सहने को तैयार नहीं हैं, ताकि आप हमेशा के लिए उनके साथ राज्य कर सकें। उन छोटे बच्चों और कमजोर महिलाओं से लज्जित हो जाओ जो तुमसे अधिक साहसी साबित हुई हैं: क्योंकि, अपने प्रभु के लिए बहादुरी से खड़े होकर, उन्होंने स्वयं को, मानो, बहादुर पुरुष साबित किया है, जबकि तुम, यातनाओं से डरकर, महिलाओं और छोटे बच्चों जैसे बन गए हो। तुम्हारा क्या होगा जब मसीह तुम्हें अपने न्याय के लिए बुलाएंगे?

यह सुनकर, सैनिक पश्चाताप में एक बार फिर मसीह की ओर लौट आए और प्रभु यीशु मसीह के पवित्र नाम का अपने हृदय और होठों से अंगीकार करते हुए अपने शहीद होने के लिए आगे बढ़ गए। और उस समय, लगभग चालीस सैनिक मसीह के लिए शहीद हुए। इस प्रकार, संत लूसियन ने अपनी दिव्य अनुग्रह से परिपूर्ण मधुर वाणी से, एक बार फिर उन लोगों को जो मसीह से भटक गए थे, वापस उनकी ओर खींचा और उन्हें शहीद होने के कृत्य के लिए दृढ़ किया।

जब लूसियन को निकोमेडिया लाया गया, तो वहाँ उन्हें अपने परिचित कई ईसाई और अपने ही शिष्य मिले, जो उत्पीड़न के डर से बहुत भयभीत थे। उनमें से कुछ छिप रहे थे, जबकि अन्य भयंकर यातनाओं और मृत्यु के भय से ईसाई धर्म त्यागना चाहते थे। संत लूसियन ने अपने शब्दों की शक्ति से, उनका साहस बढ़ाया और उन्हें विश्वास में मजबूत किया, ताकि वे उन लोगों से न डरें जो शरीर को तो मार सकते हैं पर आत्मा को नहीं (मत्ती 10:28)।

कहा जाता है कि लूसियन की एक शिष्या, पेलगिया नाम की एक युवती को मसीह में उसके विश्वास के लिए यातना देने हेतु ढूंढा गया; इस डर से कि उसकी कुँवारी अवस्था भंग हो सकती है, वह एक ऊँची खिड़की से कूद गई और गिरने से कुचलकर उसकी मृत्यु हो गई; विश्वासियों ने उसे एक शहीद के रूप में सम्मानित किया[7177] ।

चूंकि मैक्सिमियिन ने सुना था कि लूसियन का मुखमंडल इतना मनोहर और उसकी वाक्पटुता इतनी आकर्षक थी कि जो कोई भी उसे देखता और उसकी बात सुनता, वह अनिवार्य रूप से ईसाई बन जाता, इसलिए सम्राट को डर था कि यदि वह स्वयं लूसियन से बात करेगा तो वह भी ईसाई बन जाएगा। इसलिए, जब लूसियन को सम्राट के सामने लाया गया, तो उसने एक पर्दे के पीछे से, दूर से ही उससे बात की[7178] । पहले तो उसने लूसियन को कई उपहार और सम्मान देने का वादा किया; लेकिन जब संत ने उसकी चापलूसी भरी और धोखेबाज़ी भरी बातों पर हँस दिया, तो मैक्सिमियिन ने उसे और अधिक यातनाओं की धमकी देनी शुरू कर दी। लुसियन उसकी धमकियों से बिल्कुल भी नहीं डरा; उसे एक कालकोठरी में डाल दिया गया, जहाँ उसने कई और तरह-तरह के कष्ट सहे। वहाँ उसे रस्सियों से बाँधा गया, तेज पत्थरों से पीटा गया, और लंबी भूख और प्यास सहनी पड़ी। उनके कई यातनाओं में से एक यह थी: उनके शरीर के सभी जोड़ उखड़ दिए गए, और उन्हें मिट्टी के बर्तनों के तेज टुकड़ों पर पीठ के बल लिटा दिया गया, जिस पर वे 14 दिनों तक पड़े रहे। जब प्रभु के प्रकट होने के पर्व का दिन आया, तो संत ने यह इच्छा व्यक्त की कि उन्हें और उनके साथ मौजूद सभी ईसाइयों को मसीह के पवित्र रहस्यों को ग्रहण करने की अनुमति दी जाए। उन्होंने अपनी इच्छा पूरी करने के लिए ईश्वर से प्रार्थना की, और ईश्वर ने ऐसा प्रबंध किया कि जब रक्षक ध्यान नहीं दे रहे थे, तो कुछ विश्वासी लूसियन की जेल की कोठरी में इकट्ठा हुए और उसके लिए रोटी और दाखमधु ले आए। तब संत लूसियन ने अपने शिष्यों और जेल में मौजूद सभी ईसाइयों से कहा:

'मेरे चारों ओर खड़े हो जाओ और चर्च बन जाओ, क्योंकि मेरा मानना है कि लिकड़ी या पत्थर से बनी चर्च की तुलना में एक जीवित चर्च ईश्वर को अधिक प्रिय और बेहतर है।'

जब सभी लुसियन के चारों ओर इकट्ठा हो गए, तो उन्होंने कहा:

[7177] उनका पर्व दिवस 8 अक्टूबर है।

[7178] चर्च के इतिहासकार यूसेबियस ने लिखा है कि संत लूसियन, जिन्हें उनके विश्वास के लिए सम्राट मैक्सिमियिन के सामने लाया गया था, ने पहले अपनी अपोलॉजी के माध्यम से वचन में और फिर कर्म में स्वर्ग में मसीह के राज्य की घोषणा की। अपनी अपोलॉजी में मसीह के पुनरुत्थान के बारे में बात करते हुए, लूसियन लिखते हैं: 'मैं उसी स्थान की गवाही लूंगा जहाँ यह हुआ: स्वयं वह स्थान मेरी बात से सहमत है। गोलगोथा पर्वत, जो क्रूस की महिमा से प्रकाशमान है, वह गुफा जिसने, पाताल के द्वार खुलने पर, जीवित शरीर को वापस लौटाया, ताकि वह और भी अधिक वैभव के साथ स्वर्ग में आरोहण कर सके... मैं स्वयं स्वर्ग को गवाह के रूप में पुकारता हूँ, जिसने पृथ्वी पर दुष्टों के कर्मों को देखकर, दोपहर के समय अपनी रोशनी छिपा ली। अपनी इतिहास-पुस्तकों में देखो और तुम पाओगे कि पिलातुस के समय, जब मसीह कष्ट सह रहे थे, दिन एक सूर्यग्रहण से अवरुद्ध हो गया था।" – इन कृतियों के अलावा, संत लूसियन ने पवित्र त्रिमूर्ति पर एक धर्म-सूत्र भी छोड़ा।

'आओ हम धर्मवधि मिनाएँ और दव्यि रहस्यों में भाग लें।' तब शष्यिों ने उससे पूछा:

'पतिाजी, हम पवत्रि रहस्यों के समारोह के लिए रोटी कहाँ रखेंगे?' 'हमारे पास यहाँ कोई मेज़ नहीं है।'

वे, अपने मुँह के बल बँधे हुए लेटे, बोले:

'इसे मेरी छाती पर रख दो, और यह जीवति ईश्वर के लिए एक जीवति वेदी होगी।'

इस प्रकार, कालकोठरी में, संत की छाती पर, दव्यि लीटर्जी का अनुष्ठान कयिा गया, सभी उचति प्रार्थनाओं के साथ – उचति क्रम में, जैसा कि उपयुक्त है – और सभी को पवत्रि रहस्यों में भाग लेने के योग्य माना गया।

सुबह, राजा ने नौकरों को यह पता लगाने के लिए भेजा कि क्या लूसयिन अभी भी जीवति है। जब नौकर तहखाने में दाखलि हुए, तो संत लूसयिन ने उन्हें देखकर तीन बार पुकारा:

'मैं एक ईसाई हूँ!'

और इन शब्दों के साथ उन्होंने अपनी आत्मा अपने ईश्वर, मसीह के हाथों में सौंप दी[7179] ।

दासों ने मैक्समियिन के पास लौटकर बताया कि लूसयिन पहले ही मर चुका था। तब राजा ने शहीद के शरीर को समुद्र में फेंकने का आदेश दयिा; दासों ने जैसा कहा गया था वैसा ही कयिा: उन्होंने संत लूसयिन के दीर्घ-पीड़ति शरीर पर एक पत्थर बाँधकर उसे समुद्र की गहराई में फेंक दयिा, जहाँ वह तीस दनिों तक रहा।

इसके बाद, शहीद अपने एक शष्यि, जसिका नाम ग्लाइसेरयिस था, के सपने में प्रकट हुए और उसे समुद्र तट पर जाकर उनका शरीर लाने तथा उसे उचति अंतमि संस्कार देने का आदेश दयिा। ग्लाइकेरयिस अन्य ईसाइयों के साथ संत के शरीर की खोज में तट पर गए; और वहाँ उन्होंने समुद्र में डॉल्फ़नि को शहीद का अक्षुण्ण शरीर ले जाते हुए देखा; तट के पास तैरने के बाद, उन्होंने इसे सूखी जमीन पर रख दयिा। फरि वश्विासयिों ने खुशी-खुशी पवत्रि शहीद का शरीर उठाया और सम्मान के साथ दफनाया।

कई वर्षों बाद, संत हेलेना, रानी और प्रेरतिों के समान, महान कॉन्स्टेंटनि की माता ने, त्रमिूर्तमिें एक परमेश्वर की महमिा के लिए, पवत्रि शहीद लूसयिन की कब्र के ऊपर एक चर्च[7180] का नरि्माण कयिा; उसी को, अब से हमें सदा-सदा के लिए महमिा, सम्मान और आराधना मलि। आमीन।

कॉन्टाकयिन, स्वर 2:

प्रथम तपस्या में और द्वतिीय कष्टों में प्रकाशमान होकर, हम सभी सबसे तेजस्वी प्रकाश के समान लूसयिन की स्तुति भजन-गीतों से करें, जो नरिन्तर हम सभी के लिए प्रार्थना करते हैं।

पवत्रि शहीदों सरवलि और वेवे की स्मृति

15 अक्टूबर को स्मरणोत्सव

संत सरवलि, जो सम्राट ट्राजन के शासनकाल में रहते थे[7181] , पहले एडेसा में एक मूर्तपिूजक पुरोहति थे[7182] , और फरि, एक धर्मपरायण ईसाई बशिप द्वारा उपदेश पाकर, अपनी बहन वेवेआ के साथ बपतस्मिा ग्रहण कयिा। एडेसा के राजकुमार के समक्ष ईसाई धर्म अपनाने के आरोप में, उन्हें मुकदमे के लिए लाया गया और लाठयिों से पीटा गया। चूंकि संत ने बड़े जोश के साथ राजकुमार की नदिा की और मूर्तपिूजक देवताओं की व्यर्थता को साबति कयिा, क्रोधति राजकुमार ने उसे सात बार यातना यंत्र पर चढ़ाने का आदेश दयिा, और हर बार उसे बैल की टेंडन से पीटा गया, लोहे की कंघयिों से

[7179] संत लूसयिन की मृत्यु 312 ईस्वी में, 7 जनवरी को हुई, जैसा कि उनकी स्मृति के दनि संत जॉन क्रसिोस्टोम के शब्दों से स्पष्ट है: 'इस प्रकार, कल हमारे प्रभु का जल से बपतस्मिा हुआ था, और अब उनके सेवक का रक्त से बपतस्मिा हो रहा है।' ग्रीक चर्च में, सेंट लूसयिन का पर्व दनि बाद में 15 अक्टूबर को स्थानांतरति कर दयिा गया, और 7 जनवरी को सेंट जॉन द फॉररनर के सनिाक्ससि के उत्सव के लिए अलग रखा गया।

[7180] यह भव्य चर्च संतों के समकक्ष रानी, सेंट हेलेना द्वारा वर्ष 326 में (बत्थिनियिा में, ड्रेपनम शहर में, जसिका नाम सेंट हेलेना के नाम पर रखा गया था - हेलेनोपोलसि) बनाया गया था। रोमन सम्राट चार्लेमेन के शासनकाल के दौरान, सेंट लूसयिन के अवशेष हेलेनोपोलसि से फ्रांस के आर्ल्स शहर में स्थानांतरति कर दिए गए थे।

[7181] रोमन सम्राट ट्राजन ने 98 से 117 तक शासन कयिा।

[7182] एड्स, एशयिा माइनर के एक दक्षणि-पूर्वी क्षेत्र - सलिसियिा में एक शहर है।

खुरच दिया गया और मोमबत्तियों से जलाया गया। लेकिन संत ने ईश्वर की ओर रुख किया और प्रार्थना की, और सर्वशक्तिमान प्रभु ने उनके कष्टों को कम कर दिया। यातना देने वाले ने, संत के बहादुरी भरे धैर्य को देखकर, उनके सिर में कीलें ठोकने का आदेश दिया, जिससे सभी भयभीत हो गए। तब संत की बहन वेवाया ने स्वीकार किया कि वह भी एक ईसाई है, और उसे भी यातना दी गई और कैद कर दिया गया। संत सर्वलि की खाल उधेड़ दी गई, फिर भी वह जीवित था। फिर दोनों का सिर कलम कर दिया गया[7183] । विश्वासियों ने उनके शरीरों को ले जाकर दफना दिया।

कैटानिया के बिशप संत सावनि का पर्व दिवस

15 अक्टूबर को स्मरण किया जाता है

धन्य सावनि, अपने महान सद्गुणों और विवेक के कारण, कैटानिया में पादरिया पद के लिए चुने गए[7184] ; लेकिन उन्होंने बाद में मौन के सद्गुण के लिए सांसारिक व्यर्थताओं को त्याग दिया और पूर्णता के मार्ग पर इतनी लगन से प्रयास किया, खुद को जाग-प्रहर और उपवास के लिए समर्पित कर दिया, कि जीवित रहते हुए ही उन्हें चमत्कार करने और भविष्यवाणी करने का वरदान मिला। उन्होंने कई लोगों को संसार त्यागने और केवल मसीह की सेवा करने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने अपना आत्मा प्रभु को और अपना सम्मानित शरीर अपनी मातृभूमि को सौंपकर, शांतिपूर्वक निधन किया[7185] ।

सुज़दाल के बिशप संत जॉन का जीवन[7186]

१५ अक्टूबर को स्मरणोत्सव

हमारे इन पूजनीय पिता, गौरवशाली और दृढ़ मार्गदर्शक, बिशप जॉन के लिए, स्वर्गीय यरूशलेम, मानो, उनकी जन्मभूमि और मातृभूमि थी; क्योंकि, अपने जीवन के कारण, इस संत को एक सांसारिक देवदूत और एक स्वर्गीय मानव कहा जा सकता है।

संत के जन्मस्थान – चाहे वह कोई शहर था या गाँव – उनके माता-पिता, उनकी शिक्षा, या जिस समय उन्होंने संन्यास की शपथ ली, उसके बारे में कोई जानकारी उपलब्ध नहीं है। केवल इतना ज्ञात है कि संत जॉन एक निश्चित मठ में रहते थे, जहाँ, अपने सौंपे गए कर्तव्यों को निभाते हुए, उन्होंने मठाध्यक्ष और भाइयों के प्रति अपनी आज्ञाकारिता से खुद को विशिष्ट बनाया, महान संयम के माध्यम से अपने शरीर को वश में किया, और वासनाओं तथा राक्षसों की चालाकियों पर विजय प्राप्त की। और मठ के भिक्षुओं तथा अधिष्ठाता द्वारा उन से प्रेम किया जाता था और सम्मानित किया जाता था, क्योंकि वे सभी सद्गुणों के मूर्त स्वरूप थे, जैसा कि प्रेरित पौलुस के शब्दों में कहा गया है: *'आत्मा का फल प्रेम, आनन्द, शान्ति, धीरज, सौम्यता, भलाई, विश्वास, नम्रता और आत्मसंयम है; इनके विरुद्ध कोई विधान नहीं है।'* (गलातियों 5:22–23), और जैसा कि भजनकार कहता है: *'धन्य हैं वे जिनका चाल-चलन निष्कलंक है, जो यहोवा की व्यवस्था पर चलते हैं। धन्य हैं वे जो उसकी आज्ञाओं का पालन करते हैं, जो उसे पूरे मन से खोजते हैं। धन्य है वह मनुष्य जो यहोवा का भय मानता है और उसकी आज्ञाओं में बहुत आनन्दित होता है। उसकी संतान पृथ्वी पर सामर्थी होंगी'* (भजन संहिता 118:1–2, 111:1–2)।

उस मठ के मठाधीश, जो मठीय जीवन में अनुभवी व्यक्ति थे, ने धन्य योहन का मार्गदर्शन किया और उन्हें मठीय नियम सिखाया, यह निर्देश देते हुए कि वे ईश्वर के भय को अपनी आँखों के सामने रखें, गरीबों की उपेक्षा न करें, दृष्टियों से बहकें नहीं, बल्कि हमेशा विनम्र रहें, और क्लेशों में हतोत्साहित न हों; बल्कि उन्हें साहसपूर्वक सहन करना और उस

[7183] उनकी मृत्यु दूसरी शताब्दी की शुरुआत में हुई।

[7184] कैटानिया सिसिली के पूर्वी तट पर एक प्राचीन शहर है; आज यह शिक्षा और वाणिज्य का एक संपन्न केंद्र है, जिसकी जनसंख्या 100,000 से अधिक है।

[7185] उनकी मृत्यु लगभग 760 ईस्वी में हुई।

[7186] यह 17वीं सदी के दूसरे क्वार्टर में स्पस्की यूथिमियस मठ के एक भिक्षु ग्रेगरी द्वारा संकलित एक संत-चरित्र पर आधारित है, जिसने स्थानीय परंपराओं और लिखित स्रोतों का सहारा लिया।

पर आए परीक्षणों के बारे में शिकायत न करना। क्योंकि, पवित्र आत्मा की प्रेरणा से, मठाधीश ने पूर्वानुमान लगाया था कि धन्य जॉन का भाग्य बिशप का पद संभालना और मसीह के झुंड की निष्ठापूर्वक देखभाल करना था।

मठाधीश की आध्यात्मिक शिक्षाएँ प्राप्त करके, धन्य व्यक्ति ने उन्हें और भी अधिक लगन से पालन किया, जैसे उपजाऊ मिट्टी बोए गए बीजों से सौ गुना उपज देती है। वे इतनी अधिक तपस्या करते थे कि वे केवल हर तीसरे दिन ही भोजन करते थे, और कभी-कभी पूरे सप्ताह बिना भोजन के रहते थे, और केवल पानी ही पीते थे। उन्होंने पवित्र शास्त्रों का ध्यानपूर्वक अध्ययन किया, उन्हें बिना किसी संदेह के पढ़ा और गहरी भावना के साथ उनका अर्थ स्वयं समझा, उनका जूट का स्टिचैरियन आँसुओं से भीग जाता था। और प्रभु ने उन पर इतने आँसू बहाए कि, उनके बिना, वह न तो रोटी का स्वाद चख सकते थे और न ही एक शब्द बोल सकते थे, उनके विचार हमेशा नम्रता पर केंद्रित रहते थे, प्रेरित के वचनों के अनुसार: *'ईश्वर घमण्डी लोगों का विरोध करता है, परन्तु नम्र लोगों पर अनुग्रह करता है'* (याकूब 4:6; तुलना करें 1 पतरस 5:5)।

उस समय, बोरिस कॉन्स्टेंटिनोविच[7187] सुज़दाल के ग्रैंड प्रिंस थे। ईश्वर की कृपा से, धन्य जॉन को उनके महान सद्गुण, विनम्रता और सफल संन्यासी जीवन के लिए, कॉन्स्टेंटिनोपल के पैट्रिआर्क द्वारा सुज़दाल, निज़नी नोवगोरोड और गोरोडेट्स शहरों के बिशप के रूप में नियुक्त किया गया था। धन्य जॉन को अपनी भेड़-बकरियों का प्रभार सौंपने के बाद, पैट्रिआर्क ने उन्हें शांति से सुज़दल शहर के लिए विदा किया।

जैसे ही बिशप शहर के पास पहुँचे, धर्मपरायण ग्रैंड प्रिंस बोरिस कॉन्स्टेंटिनोविच गणमान्य व्यक्तियों के साथ उनका स्वागत करने के लिए बाहर आए। पवित्र धर्मसभा, भिक्षु, सभी क्रॉस धारण किए हुए पुरोहित, और लोगों की एक बड़ी भीड़—पुरुष और महिलाएँ, बुजुर्ग, युवा और बच्चे—भी बिशप का अभिवादन करने के लिए बाहर आए। जब बिशप शहर के द्वार के पास पहुँचे, तो पूरी भीड़ ने उन्हें घेर लिया; उनके सामने झुककर, श्रद्धालुओं ने संत का आशीर्वाद लिया और उनके पैरों को चूमा, और आनंद के आँसुओं के साथ विनती के भजन गाए। अपनी ओर से संत जॉन ने लोगों को बार-बार 'हे प्रभु, दया करें' कहने का निर्देश दिया, और स्वर्ग की ओर अपने हाथ उठाकर प्रार्थना करने लगे:

– हे प्रभु, यीशु मसीह, हमारे परमेश्वर, राजाओं के राजा और प्रभुओं के प्रभु, सभी दृश्य और अदृश्य सृष्टि के सृष्टिकर्ता, पिता के साथ एकसार और अनंतकाल से सह-अनंत! एक भिखारी और एक दीन-हीन प्राणी, मैं तेरे अद्भुत, भव्य और पवित्र नाम का आह्वान करने का साहस करता हूँ। मैं आपको पुकारता हूँ, हे अकथनीय प्रकाश, जिन्होंने हमारे उद्धार के लिए स्वयं दुर्बल देह धारण किया। मेरी इस विनम्र प्रार्थना को अस्वीकार न करें; इस नगर को बचाएँ, जिसमें आपकी कृपा ने यह निश्चित किया है कि मेरी विनम्रता निवास करे। हर नगर और हर देश को विनाशकारी अकाल, भूकंप, बाढ़, आग और तलवार से, विदेशी जनजातियों के आक्रमण और गृह युद्ध से बचाइए, क्योंकि आप दयालु हैं, और हम आपको सदा-सदा के लिए महिमा देते हैं।

प्रार्थना समाप्त करने के बाद, संत ने कहा:

'आप सभी पर शांति बनी रहे।'

लोगों ने उत्तर दिया: 'आमेन'।

[7188]तब सभी परमेश्वर की स्तुति करते हुए नगर की ओर चल पड़े। विनती के भजन समाप्त करने के बाद, बिशप जॉन ने उनकी सम्मानित और गौरवमय जन्मतिथि के अवसर पर, परमेश्वर की हमारी माता और सदा-कुँवारी मरियम, सबसे पवित्र और सबसे धन्य महिला के चर्च में प्रवेश किया। कुछ लोग बिशप के साथ दिव्य लिटिर्जी में शामिल होने के लिए चर्च में गए, जबकि अन्य, जो चर्च के अंदर समा नहीं सके, उसके चारों ओर खड़े रहे, और ईश्वर का धन्यवाद करते रहे कि उन्होंने उन्हें इतना अद्भुत और पवित्र बिशप प्रदान किया। जब दैवीय लिटिर्जी संपन्न हो गई, तो धर्मनिष्ठ राजकुमार बोरिस कॉन्स्टेंटिनोविच और उनके साथियों को एक अद्भुत दर्शन प्राप्त हुआ। उन्होंने देखा कि दैवीय अनुग्रह एक महान प्रकाश के रूप में संत पर अवतरित हुआ और उन्हें आच्छादित कर लिया। महाधर्माध्यक्ष के हाथों

[7187] बोरीस, सेंट अलेक्जेंडर नेवस्की के पुत्र एंड्रेई के परपोते थे।

[7188] यह चर्च सुज़दल में ईसाई धर्म के आरंभिक दिनों में बनाया गया था और कई बार पुनर्निर्मित किया गया है। पत्थर की यह चर्च 1221 में ग्रैंड प्रिंस जॉर्जी व्सेवोलोडोविच द्वारा स्थापित की गई थी और 1528 में पुनर्स्थापित की गई थी। चर्च में सूज़दल के बिशप संत जॉन और थियोडोर की अक्षय अवशेषों वाली अवशेष-पात्रियाँ रखी गई हैं। चर्च के गर्भगृह में, वेदी के पीछे, एक क्रॉस खड़ा है, जिसके पैर के पास चांदी की एक अवशेष-पात्री में प्रभु के जीवनदायी क्रॉस की एक टुकड़ी रखी है। चर्च में परमेश्वर की अति पवित्र माता ओडिगिट्रिया की चमत्कारी प्रतिमा भी है, जिसे स्मोलेंस्क प्रतिमा के नाम से जाना जाता है। यह प्रतिमा सेंट जॉन ऑफ़ गोरोडेट्स के धर्मप्राचीन काल के दौरान यहाँ लाई गई थी।

से प्रस्फोरा प्राप्त करने के बाद, धर्मनिष्ठ राजकुमार बोरिस कॉन्स्टेंटिनोविच और नागरिकों ने मसीह ईश्वर की महिमा की, धन्य जॉन को चूमा, और प्रत्येक अपने-अपने घर लौट गया।

अगले दिन सुबह, रविवार को, दैवीय अनुष्ठान का अनुष्ठान करने के बाद, धन्य जॉन को बिशप की सीट पर स्थापित किया गया। उन्होंने अपने विश्वासयोग्य झुंड पर शांति प्रदान की और सभी के हृदयों को आध्यात्मिक आनंद से भर दिया। महाधर्माध्यक्ष ने उपस्थित सभी लोगों को सांत्वना के शब्दों से संभाला; और उनके शब्द, जैसा कि प्रेरित *कहते हैं, 'नमक से स्वादित'* थे (कुलुस्सियों 4:6), और वे हृदयों को मधु से बहती नदी की तरह तरोताजा कर गए। एक रविवार को सभी नागरिकों को एक साथ इकट्ठा करके, महाधर्माध्यक्ष ने उनसे निम्नलिखित आध्यात्मिक आग्रह में बात की:

'भाइयों, मुझे डर लगता है, क्योंकि एक बिशप का पद मेरे सामर्थ्य से परे है; मैं अपने निधन के बारे में सोचकर और मुझे सौंपी गई इस महान कार्य की महानता पर विचार करके भयभीत हो जाता हूँ, क्योंकि मैं स्वयं को एक बिशप के पद के लिए अयोग्य समझता हूँ। परन्तु प्रभु ने मुझे वचन के द्वारा अपनी भेड़-बकरियों का रखवाला नियुक्त किया है, और मुझे उन मार्गों से इस सेवकाई तक पहुँचाया है जो केवल उसी को ज्ञात हैं, जो *'एक बड़ा गहरिई'* (भजन संहिता 35:7) हैं। इसलिए, मेरे लिए चुप रहना एक पाप होगा, और मुझे स्वयं को एक मजदूर नहीं, बल्कि एक रखवाला समझना चाहिए। भाइयो, मैं तुम से विनती करता हूँ कि दृढ़ रहो और सच्चे विश्वास को थामे रहो, और सब अशुद्धता, व्यभिचार, मिथ्या, चोरी, ईर्ष्या, बदनामी और मूर्तिपूजा से दूर रहो, और सब विधर्म और सब बुराई से बचो, और परमेश्वर के पवित्र मंडपों में जाया करो, और धर्म का आचरण करो। क्योंकि प्रेरित ने कहा: *'कोई भी उस नींव के सिवा दूसरी नींव नहीं रख सकता* जो पहले से ही *रखी जा चुकी है, जो यीशु मसीह है'* (1 कुरिन्थियों 3:11)। यह नींव पवित्र प्रेरितों और पवित्र ईश्वर-वाहक पिताओं के द्वारा रखी गई थी; यह ऑर्थोडॉक्स विश्वास है, जिसे पवित्र सार्वभौमिक परिषदों द्वारा प्रचारित, पुष्टि और व्याख्या किया गया है। प्रेरित के अनुसार, हमें इस विश्वास की नींव पर सोना, चाँदी और कीमती पत्थर रखना चाहिए[7189] – सरल शब्दों में कहें तो: इस नींव पर अच्छे कार्य करना। क्योंकि ईश्वर में सच्चे विश्वास के बिना जीवन एक अज्ञानी जीवन है, और अच्छे कार्यों के बिना विश्वास हमें ईश्वर तक नहीं ले जा सकता। हमें दोनों का पालन करना चाहिए, ताकि हम पूरी तरह से परमेश्वर की प्रजा बन सकें और हमारा जीवन किसी भी कमी से ग्रस्त न हो; क्योंकि प्रेरित ने कहा है कि केवल *'प्रेम से कार्य करने वाली आस्था' ही* बचाती है (गलातियों 5:6)।

अपने पदभार संभालने के तुरंत बाद, धर्मपरायण महाप्रिंसि बोरिस के आदेश पर, जॉन ने शहर का सर्वेक्षण करने के लिए निकल पड़े, और पवित्र धर्मसभा तथा पुरोहितों के साथ, क्रॉस और आइकन (चित्र) लेकर, प्रभु से प्रार्थना के भजन गाते हुए, शहर और उसके आसपास के इलाकों में पैदल घूमे। और धर्मपरायण महा राजकुमार बोरिस कॉन्स्टेंटिनोविच अन्य कुलीनों, राजकुमारों और बोयारों के साथ उनके पास आए और आशीर्वाद माँगा। बिशप ने उन्हें आशीर्वाद दिया। फिर महा राजकुमार ने उन्हें पाँच सौ ज़्लाट्निकि दिए और कहा:

'महाधर्माध्यक्ष महोदय, एक नव-नियुक्त और नव-आगंतुक के रूप में, अब आपके पास चर्च के निर्धन बच्चों में बांटने के लिए बहुत कुछ है। हमारी यह भेंट स्वीकार करें।'

लेकिन जॉन ने इसे स्वीकार करने से इनकार कर दिया। तब महाप्रिंसि ने उससे एक बार फिर कहा:

'स्वीकारें, हे अति सम्माननीय पिता, अपने पुत्र की यह छोटी सी भेंट।'

उसका उत्साह देखकर, माननीय पादरी ने उपहार स्वीकार कर लिया और सोना बांटने के लिए नौकरों को दे दिया; लेकिन विश्वासी राजकुमार से, उसने भजन संहिताकार के शब्दों में कहा:

– *'प्रभु तुम्हारी इच्छा के अनुसार तुम्हें दे और तुम्हारी सारी योजनाएँ पूरी करे। प्रभु तुम्हारे सभी बलिदानों को स्मरण रखे और तुम्हारी होमबलि को समृद्ध बनाए'* (भजन संहिता 19:5, 4)।

शहर का चक्कर लगाकर, बिशप, पवित्र धर्मसभा, पुरोहित वर्ग, राजकुमारों, कुलीनों और लोगों के साथ, परमेश्वर की अति पवित्र माता के पवित्र चर्च में प्रवेश किए और वहाँ दैवीय धर्मविधि और एक प्रार्थना सभा का आयोजन किया। सेवा के समापन पर, राजकुमार ने बिशप के भोजनशाला में भोजन किया और आदेश दिया कि सभी लोगों को रोटी दी जाए। तृप्त होकर खाने के बाद, सभी अपने-अपने घरों को चले गए।

बिशप जॉन ने आध्यात्मिक मामलों में उत्साहपूर्वक स्वयं को समर्पित किया, उन्होंने सिखाया और अनुशासित किया, मजबूत किया और सांत्वना दी; उन्होंने उदारतापूर्वक गरीबों की सहायता की, और अपने कार्यों से सभी के लिए

[7189] 1 कुरिन्थियों 3:12.

एक धार्मिक जीवन का उदाहरण और आदर्श स्थापित किया। जब बिशप जॉन ने देखा कि धर्मप्रांत की आय बहुत अधिक थी, तो उन्होंने इसका एक हिस्सा उस अस्पताल को आवंटित करने का आदेश दिया, जिसे उन्होंने सुधार दिया था, और इसके पर्यवेक्षण का जिम्मा दो धर्मनिष्ठ पुरोहितों को सौंप दिया ताकि वे यह सुनिश्चित कर सकें कि उसे सभी आवश्यक चीजों से युक्त रखा जाए। बिशप अक्सर बीमारों से मिलने जाते थे और उन्हें उनकी जरूरत की हर चीज उपलब्ध कराते थे, तथा उनके ठीक होने की देखभाल करते थे। आध्यात्मिक सांत्वना के शब्दों से उनक , उन्होंने उन्हें मजबूत किया; क्योंकि जब उन्होंने उनके आत्मा-रक्षक शब्दों को सुना, तो वे अपने दुखों को भूल गए। बिशप के रूप में सेवा करते हुए, उन्होंने सुसमाचार (यूहन्ना 10:11) के अनुसार अपनी भेड़ों के लिए अपना जीवन दे दिया, और प्रेमपूर्वक सभी के उद्धार की खोज की। ईश्वर के इस वफादार सेवक द्वारा किए गए कार्यों का पूरा न्याय करना असंभव है। उन्होंने ईश्वर से प्रार्थनाएँ कीं; और जब वे प्रार्थना में खड़े होते, तो वे काँसे में ढली मूर्ति की तरह अडिग रहते थे। वे मौन और नम्र थे, उनका स्वाभाव कभी खराब नहीं होता था, और वे असीम प्रेम रखते थे - कुलीनों और आम लोगों, दोनों के लिए समान रूप से; उन्होंने घमंड और कपट से परहेज किया। इन गुणों के अलावा, उनमें शिक्षण और वाक्पटुता का वरदान भी था, इसलिए न केवल सुज़दाल से बल्कि अन्य पड़ोसी towns[7190] से भी कई लोग मार्गदर्शन के लिए उनके पास आते थे। संत फुसलाने वाले शब्दों में नहीं, बल्कि शिक्षाप्रद ढंग से बात करते थे, और सभी को पश्चाताप करने का आह्वान करते थे। उन्होंने अमीरों को अपनी संपत्ति का घमंड न करने और क्षणभंगुर धन-संपत्ति में अपनी आशा न रखने की शिक्षा दी; और विधवाओं को उपवास और संयम में स्वयं को समर्पित करने तथा अपने वस्त्रों में आभूषणों से बचने के लिए कहा।

संन्यासी से आध्यात्मिक वरदान और अपनी आत्माओं के लिए लाभ प्राप्त कर, जिन लोगों को उन्होंने उपदेश दिया था, वे ऐसे चरवाहे के लिए ईश्वर की स्तुति करते हुए अपने-अपने घर लौट गए। हालाँकि, उनमें से कई ने संसार का त्याग कर दिया और संन्यास की शपथ ली।

एक दिन, धन्य योहन, अपनी प्रथा के अनुसार, प्रभु यीशु मसीह की माता की प्रतिमा के सामने प्रार्थना में खड़े हुए और प्रतिमा को बार-बार निहारते हुए, इस प्रकार प्रार्थना की:

'हे परम पवित्र माता, ईश्वर की माता, मानव जाति की दृढ़ मध्यस्थ और सहायक, अपने पुत्र के समक्ष हमारी भी मध्यस्थता करना, ताकि वह इस नगर और इस मठ पर स्वर्ग से दृष्टि डालें।'

परमेश्वर की अति पवित्र माता का धन्यवाद-गीत गाकर और अपनी दैनिक प्रार्थनाएँ पूरी करने के बाद, धन्य जॉन विश्राम करने के लिए बैठ गए। लेकिन उसी क्षण, धर्मनिष्ठ राजकुमार बोरिस कॉन्स्टेंटिनोविच उनके पास आए। संत का आशीर्वाद प्राप्त करने और एक प्रार्थना करने के बाद, उन्होंने आध्यात्मिक लाभ के मामलों पर उनसे निजी तौर पर बातचीत करना शुरू कर दिया। धार्मिक विचारों से परिपूर्ण, राजकुमार ने अपने कुलीन इरादे का उससे विश्वासपूर्वक खुलासा किया:

'मुझे आशीर्वाद दीजिए, हे पवित्र पिता, और प्रभु परमेश्वर से विनम्रतापूर्वक प्रार्थना कीजिए कि, आपकी पवित्र प्रार्थनाओं के माध्यम से, वह मुझे मेरे हृदय की इच्छा पूरी कर दें। हमारे राज्य में, सुज़दाल शहर में, कोई सामुदायिक मठ नहीं है। यदि प्रभु आपकी मध्यस्थता से, प्रभु ईश्वर और हमारे उद्धारकर्ता यीशु मसीह के नाम पर, और उनके महिमामय रूपांतरण के लिए एक पत्थर का चर्च बनाने में मेरी मदद करें, और इसके बगल में एक मठ का निर्माण करें—तो यही मेरी हार्दिक इच्छा है। मुझे आशीर्वाद दें, पिताजी, और इसके लिए ईश्वर से प्रार्थना करें। जहाँ तक मेरी बात है, मैं आपकी प्रार्थनाओं के माध्यम से, निज़नी नोवगोरोद के लिए, महान पूजनीय पिता डायोनिसियिस के पेचेर्स्क मठ[7191] के लिए रवाना होऊँगा। वहाँ मैं उनसे प्रार्थना करूँगा कि वे मुझे अपने शिष्यों में से एक प्रदान करें, जो ईश्वर के घर के निर्माण और एक मठ के संगठन में निपुण हो। संत जॉन ने कहा:

'हे महान राजकुमार, आप एक पुण्य कार्य करना चाहते हैं – प्रभु परमेश्वर आपकी आत्मा के उद्धार के इस कार्य में आपकी सहायक और मार्गदर्शक हों, और आपका मार्ग सुरक्षित रखें।'

[7190] कहा जाता है कि संत जॉन ने उत्साहपूर्वक मॉर्डविन्स के बीच ईश्वर के वचन का बीज बोया, जिनमें से कुछ को ग्रैंड प्रिंस बोरिस के पिता, कॉन्स्टेंटिन ने वश में किया था।

[7191] सुज़दाल के संत डायोनिसियिस – निज़नी नोवगोरोड से पाँच वर्स्ट दूर पेचेर्स्की मठ के संस्थापक। मेट्रोपॉलिटन संत अलेक्सियिस ने उन्हें सुज़दाल का बिशप नियुक्त किया (संत जॉन के बाद पहले या दूसरे बिशप)। संत डायोनिसियिस को कॉन्स्टेंटिनोपल के पैट्रिआर्क द्वारा आर्चबिशप और, दो साल बाद, कीव के मेट्रोपॉलिटन के रूप में अभिषिक्त किया गया था। उनकी मृत्यु 1384 में हुई; उनका पर्व दिवस 26 जून को मनाया जाता है।

राजकुमार के लिए प्रार्थना करने के बाद, बिशप ने उसे आशीर्वाद दिया, मसीह के नाम पर उसे एक आध्यात्मिक चुंबन दिया, और उसे शांति से विदा किया। धार्मिक राजकुमार बोरिस आनंदित हो गए और हमारे प्रभु यीशु मसीह के आरोहण के पवित्र मठ में, सम्माननीय फादर डायोनिसियस से मिलने के लिए निज़्नी नोवगोरोद के लिए रवाना हो गए, जिनसे वे पहले भी अपनी प्रार्थना और आशीर्वाद लेने के लिए मिल चुके थे। पेचेर्स्क मठ से प्रेम करते हुए, राजकुमार ने इसकी सभी आवश्यकताओं को पूरा किया। उस समय, वहाँ 780 भिक्षु थे।

मठ में पहुँचने पर, राजकुमार बोरिस पूजनीय डायोनिसियस के साथ एक कोठरी में चले गए, उन्होंने उनके साथ आध्यात्मिक लाभ के मामलों पर लंबी बातचीत की, और उन्हें पवित्र बिशप जॉन और उनके जीवन के बारे में बताया—कि कैसे वह गरीबों की देखभाल करते थे, बीमारों से मिलते थे और विधवाओं की मदद करते थे, और कैसे उन्होंने उन्हें मठवासी जीवन के केंद्र के रूप में एक सामुदायिक मठ बनाने का आशीर्वाद दिया था। आदरणीय डायोनिसियस के सामने जमीन पर झुकते हुए, राजकुमार ने कहा:

'पिताजी, मुझे आशीर्वाद दीजिए, और अपने मठ से मुझे अपने शिष्यों में से एक ऐसा दीजिए जो मठ बनाने में निपुण हो, ताकि मैं अपनी इच्छा पूरी किए बिना सुज़्दाल वापस न लौटूँ।'

आदरणीय डायोनिसियस ने हर चीज़ के लिए ईश्वर का धन्यवाद किया, उनकी अकथनीय दया के लिए उनकी स्तुति की, और कहा:

'हे राजकुमार, आप एक पुण्य कार्य कर रहे हैं। हमारे प्रभु, यीशु मसीह, आपके आत्मा-मोक्ष के इस प्रयास में आपकी सहायता करें और धार्मिकता की आपकी खोज में आपका मार्गदर्शन करें, क्योंकि *"हर अच्छी देन और हर सिद्ध काम ऊपर से, ज्योतियों के पिता के पास से आता है"* (याकूब 1:17)।'

एक प्रार्थना करने के बाद, परम आदरणीय डायोनिसियस ने राजकुमार को आशीर्वाद दिया और, उसकी माँगी हुई सभी चीजों का वादा करके, उसे शांति से विदा किया। धार्मिक राजकुमार बोरिस कॉन्स्टेंटिनोविच आनंद और हर्ष से भर गए, क्योंकि प्रभु ने उनकी हृदय की इच्छा पूरी कर दी थी, और वे सुज़्दाल शहर के लिए अपनी वापसी यात्रा पर निकल पड़े। इसी समय, उन्होंने मठ के निर्माण के लिए पत्थर और चूना लाने का आदेश दिया।

आदरणीय डायोनिसियस ने राजकुमार के अनुरोध पर, अपने मठ के भाइयों में से यूथमियस नामक एक आज्ञाकारी शिष्य को चुना।

'मेरे बच्चे,' पूज्य ने यूथमियस से कहा, 'अपने दुखों में हतोत्साहित न हो; प्रभु हर अच्छे काम में तुम्हारा सहायक और मार्गदर्शक है; परमेश्वर द्वारा रक्षित शहर सुज़्दल जाओ। वहाँ, परमेश्वर की अति पवित्र माता के गौरवशाली चर्च में, तुम पवित्र बिशप जॉन को देखोगे।'

उस समय, धन्य यूथमियस उम्र में अभी भी युवा थे, फिर भी आध्यात्मिक ज्ञान में वे उन बुजुर्गों से भी आगे थे, जिनके बाल कई वर्षों से सफेद थे। उनकी उम्र केवल 36 वर्ष थी। आदरणीय डायोनिसियस से एक प्रार्थना—जो दृश्य और अदृश्य शत्रुओं के विरुद्ध एक तीखे भाले के समान थी—प्राप्त करने के बाद, यूथमियस मठ से पश्चिम की ओर प्रस्थान कर गए।

और प्रभु ने उसे अपना यात्रा आसानी से और बिना किसी देरी के पूरा करने की शक्ति प्रदान की, और वह जल्द ही सुज़्दाल शहर पहुँच गया। ईश्वर की माता को समर्पित अद्भुत और सुंदर चर्च को देखकर, यूथमियस उसमें प्रवेश किया और हमारे प्रभु यीशु मसीह, उनकी परम पवित्र माता, और सभी संतों की पवित्र प्रतिमाओं के सामने नमन किया। बिशप जॉन के सामने प्रणाम करने के बाद, उसने उनसे आशीर्वाद और प्रार्थनाएँ माँगीं। जॉन ने यूथमियस को आशीर्वाद दिया, मसीह के नाम पर उसे चूमकर बिशप के कक्षों में ले गए।

वहाँ उन्होंने आत्मा की भलाई के बारे में यूथमियस से विस्तार से बात की; और उनकी बातचीत के बाद, उन्होंने प्रभु से पूरी रात प्रार्थना की, उनसे सहायता के लिए एक देवदूत, एक विश्वसनीय मार्गदर्शक भेजने का अनुरोध किया। जब भोर हुई, तो संत जॉन ने प्रथागत सुबह के भजन गाने और शांति का चिह्न देने के बाद, यूथमियस के गाल पर चूमकर उसे विदा कर दिया।

अगले दिन, रविवार को, मैटिन्स और दैवीय धर्मविधि के समापन के बाद, बिशप जॉन ने फिर से यूथमियस को एक आध्यात्मिक वार्ता के लिए बुलाया।

सुज़दाल में ग्रैंड प्रसि बोरसि कॉन्स्टेंटनिोवचि के आगमन के बारे में जानने के बाद, यूथमिीउस उन्हें देखने गए। राजकुमार उनकी मुलाकात से बहुत प्रसन्न हुए, उन्होंने उनका बड़े सम्मान से स्वागत कयिा, और उनसे कहा कि वह उनके आने के लिए तरस रहे थे, *'जैसे हरिण नदयिों के लिए तरसता है'* (भजन संहति 41:2)।

एक लंबी बातचीत के बाद, वे महाधर्माध्यक्ष जॉन के पास गए और उनकी मेज़ पर भोजन ग्रहण कयिा। राजकुमार बोरसि कॉन्स्टेंटनिोवचि ने धन्य जॉन को गुफाओं के पूजनीय डायोनसियिस के बारे में, उनके जीवन, उनके महान कार्यों और उनके कारनामों के बारे में सब कुछ वस्तिार से बताया।

जॉन ने उत्तर दयिा:

'हे राजकुमार, प्रेरति के वचन के अनुसार जो कुछ आपने आरंभ कयिा है, उसे बनिा कसिी संकोच या संदेह के पूरा करें: *"यदि कोई अपने घर का संचालन करना नहीं जानता, तो वह परमेश्वर की कलीसयिा की देखभाल कैसे कर सकता है?"* (1 तीमुथयिुस 3:5)। एक अच्छी शुरुआत, परमेश्वर की कृपा से, एक सफल समापन की ओर ले जानी चाहिए। क्योंकि आप पहले ही सम्माननीय और पवत्रि वृद्ध, पूजनीय डायोनसियिस का आशीर्वाद और प्रार्थनाएँ प्राप्त कर चुके हैं, और अब उन्होंने आपके पास अपने आज्ञाकारी शष्यि, एक मेहनती और धर्मनष्ठि व्यक्ति को भेजा है, यह यूथमिीयस, जो ईश्वर की कृपा से, आपके इस कार्य को आरंभ करने और पूरा करने में सक्षम है और मसीह के लिए इन परश्रिमों में, दूसरों के लिए एक उदाहरण बन सकता है।

तब राजकुमार अपनी सीट से उठा और बशिप के सामने ज़मीन पर झुक गया, उनसे अनुरोध करते हुए कि वे उसके और यूथमिीयस के साथ भवष्यि के मठ के स्थान पर चलें, जहाँ भी प्रभु उन्हें नर्देश दें: और वे इस स्थान को खोजने के लिए नकिल पड़े, पूरे पवत्रि धर्मसभा और पुरोहतिों के साथ, क्रॉस और प्रतमिाएँ लेकर, और प्रार्थना के भजन गाते हुए। उनके साथ गणमान्य व्यक्ति, राजकुमार और बोयार, और लोगों की एक बड़ी भीड़—पुरुष, महलिाएं और बच्चे—थे। रास्ते में, लोगों ने लकवाग्रस्त व्यक्तयिों को जॉन के सामने लाकर उनसे उपचार की प्रार्थना की। संत ने उनके उपचार के लिए ईश्वर से एक गुप्त प्रार्थना की, उन पर अपने हाथ और क्रॉस रखा, और उन पर पवत्रि जल छड़िका - और उसी क्षण उनकी बीमारी दूर हो गई, और उन्होंने संत के पैरों को चूमा, और ईश्वर का धन्यवाद कयिा। पूरा भीड़ महान आनंद से भर गया; सभी चकति रह गए और कहने लगे कि संत अक्रैगस के चर्च के बशिप सेंट ग्रेगरी के समान थे[7192] ।

इस प्रकार, लोगों से घरि हुए, महा राजकुमार, संत जॉन और धन्य यूथमियिस नविेदन के भजन गाते हुए आगे बढ़े। ईश्वर के मार्गदर्शन में, वे शहर से बाहर नकिले, चारों दशिाओं में आसपास का जायजा लयिा, और उत्तरी दशिा की ओर, कामेनका नामक नदी के ऊपर आगे बढ़े, जसिके कनिारे पर उनका शहर बनाया जाना था। यहाँ, नगर के पास, नदी के कनिारे एक ऊँची पहाड़ी पर, उन्हें एक ऐसी जगह मलिी जो नज़ारे में खूबसूरत और एक मठ के नर्माण के लिए उपयुक्त थी, और उन्होंने इस उद्देश्य के लिए इसे चुना। संत जॉन ने, पूरी सभा के साथ मलिकर, इस स्थान को आशीर्वाद दयिा और पवत्रि कयिा और प्रभु से प्रार्थना की:

'हे प्रभु हमारे परमेश्वर, आपने अपनी पवत्रि कलीसयिा के नवीनीकरण के लिए अपना लहू बहाया; हम अब वनिम्रतापूर्वक आपसे प्रार्थना करते हैं: इस स्थान पर आपके लिए बनाई जाने वाली कलीसयिा की नींव पर पवत्रि आत्मा का अनुग्रह प्रदान करें। यह तेरी महमिा का नविास स्थान बने; भजनों और स्तोत्रों के द्वारा इसमें तेरी महमिा हो; और जो इसमें प्रार्थना करें, उन्हें वही आशीषें प्रदान कर जनिसे स्वर्ग और पृथ्वी परपिूर्ण हैं। उन्हें बचा, उन्हें आने वाली वपित्तयिों से बचा, और उन्हें अपनी महमिा प्रदान कर।

प्रार्थना के माध्यम से, संत जॉन ने उस स्थान पर पवत्रि क्रॉस स्थापति कयिा जहाँ वेदी रखी जानी थी। फरि धर्मपरायण ग्रैंड प्रंसि ने स्वयं अपने हाथों में एक फावड़ा लयिा और चर्च की नींव के लिए खाई खोदना शुरू कर दयिा। यह वर्ष 1352 में हुआ।

ईश्वर की कृपा से, प्रभु परमेश्वर और हमारे उद्धारकर्ता यीशु मसीह के नाम पर, और उनके सम्मानति और दव्यि रूपांतरण के नाम पर एक भव्य पत्थर का चर्च बनाया गया। और धर्मनष्ठि महा राजकुमार ने इसे हर तरह से सुसज्जति कयिा; संत जॉन ने धन्य यूथमियिस को आर्चमैंड्राइट नयिुक्त कयिा और उन्हें माइट्रे, क्रोसीयर और रपिीडा के साथ सेवा करने का आदेश दयिा। राजकुमार बोरसि कॉन्स्टेंटनिोवचि ने धन्य यूथमिीयस को मठ के नर्माण के लिए

[7192] ससिलिी में एग्रजिंटो के बशिप, संत ग्रेगरी, आध्यात्मकि वरदानों की इतनी प्रचुरता के लिए प्रसद्धि थे कि वे अपने हाथ के एक स्पर्श से ही बीमारयिों को ठीक कर सकते थे। उनका पर्व दविस 23 नवंबर को मनाया जाता है।

आवश्यक सभी चीजें प्रदान कीं। इस प्रकार एक सामुदायकि मठ की स्थापना हुई। जल्द ही, वहाँ भकि्षुओं की संख्या 300 तक पहुँच गई।

हमारे प्रभु यीशु मसीह के रूपांतरण के पर्व के दनि, धन्य आर्चमिंड्राइट यूथमियिस, अन्य तपस्वयिों और कुशल भकि्षुओं के साथ, संत जॉन से मलिने के लिए मठ से बशिप के आवास पर आए। और उन्होंने संत से अपने मठ में उनके लिए दव्यि लटिर्जी का अनुष्ठान करने का अनुरोध कयिा। उनकी सहमतमिलिने पर, आर्चमिांड्राइट यूथमियिस तुरंत मठ लौट आए और सभी भाइयों के साथ बशिप से मलिने के लिए बाहर गए। धन्य यूथमियिस के गाल पर चुंबन करने के बाद, महान जॉन उनके और अन्य भकि्षुओं के साथ—जो मसीह की बेल की डालयिाँ और आध्यात्मकि भेड़ें थीं—याचना के भजन गाते हुए चर्च में प्रवेश कर गए। लटिरजी के दौरान, धर्मनष्ठि महा राजकुमार बोरसि कॉन्स्टेंटनिोवचि हमारे प्रभु यीशु मसीह के रूपांतरण के चर्च में प्रवेश कयिा और वहाँ एक अद्भुत दर्शन देखा। उन्हें ऐसा प्रतीत हुआ कि चमकदार वस्त्रों में लपिटा एक व्यक्तबिशिप के बगल में सेवा कर रहा था, जसिका तेजस्वी मुखमंडल वस्मियकारी और अकथनीय था। लि॥७जी के अंत में, अवसर का लाभ उठाते हुए, राजकुमार संत जॉन के पास गए और जमीन पर झुककर बशिप से जो उन्होंने देखा था, उसे समझाने के लिए कहा। बशिप, इस रहस्य को प्रकट नहीं करना चाहते हुए, ने राजकुमार से कहा:

'हे राजकुमार, इस आध्यात्मकि झुंड के अच्छे चरवाहे के साथ मेरी दव्यि प्रार्थना का अनुष्ठान करने में क्या अद्भुत बात है? हमारे साथ यहाँ केवल वे मठवासी पुरोहति थे जन्हिें आपकी महामहमि जानते हैं; हमारे साथ कोई अन्य पुरोहति नहीं था।'

लेकनि राजकुमार संत जॉन से उस दर्शन की व्याख्या करने का आग्रह करता रहा। तब संत ने उससे कहा:

'यदि ईश्वर ने यह दर्शन आपको प्रकट कयिा है, तो मैं इसे कैसे छपिा सकता हूँ? यह प्रभु का स्वर्गदूत था, जसिने न केवल अब, बल्कि हमेशा, ईश्वर की कृपा से, मेरे साथ सह-आराधना की, यद्यपि मैं इसके अयोग्य हूँ। लेकनि जब तक मैं जीवति हूँ, आपने जो देखा है, उसे कसिी को न बताना।'

संत ने ऐसा कहा, क्योंकि वह, वनिम्र होने के कारण, नहीं चाहते थे कि उनके अच्छे कर्म और ईश्वर से प्राप्त पुरस्कार के बारे में दूसरों को पता चले। और जब उनसे पूछा गया कि कौन सा गुण सबसे श्रेष्ठ है, तो उन्होंने उत्तर दयिा: 'वह जो गुप्त रूप से कयिा जाता है।'

धन्य यूथमियिस ने अपने भाइयों के साथ मलिकर धर्मनष्ठि राजकुमार और पवत्रि बशिप जॉन से भोजन को अपनी उपस्थति से सम्मानति करने का आग्रह कयिा। जब भोजन तैयार हो गया, तो उन्होंने सभी ने प्रभु का धन्यवाद कयिा और तृप्त होकर भोजन करने के बाद, आध्यात्मकि संवाद में संलग्न हो गए। तब, महा राजकुमार के अनुरोध पर और आर्चमिंड्राइट यूथमियिस तथा उनके साथ मौजूद भकि्षुओं की वनिती पर, धन्य जॉन ने एक उपदेश दयिा: 'पतिा और भाइयों, मेरे जैसे अयोग्य और दुर्बल व्यक्ति के लिए, आध्यात्मकि लाभ के मामलों पर आपको उपदेश देना उचति नहीं होगा। यह सभी को अच्छी तरह से पता है कि जो कोई भी उद्धार पाना चाहता है, उसे सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण रूप से, वश्विास को बनाए रखना चाहिए और उसके अनुसार जीवन जीना चाहिए। क्योंकि सच्चे वश्विास के बनिा संयम का जीवन कोई लाभ नहीं लाएगा; इसी तरह, अच्छे कर्मों के बनिा वश्विास हमें प्रभु के करीब नहीं ला सकता। लेकनि पूर्णता के लिए, दोनों का होना आवश्यक है। वश्विास, इसके अलावा, *'प्रेम द्वारा कार्य करने वाला वश्विास'* (गलातयिों 5:6) होना चाहिए। प्रेम सभी सद्गुणों का स्रोत है; वे सभी इससे ही उत्पन्न होते हैं। हमें बुरे कर्मों से दूर हो कर अच्छे कर्मों से जुड़ना चाहिए, और केवल उसी के बारे में सोचना चाहिए जो स्वर्ग के योग्य हो। हमें मसीह के सुसमाचार के अनुसार, नम्रता, आज्ञाकारति, पवत्रिता, देहकि सुखों से परहेज़, प्रेम, दया, परोपकार और परमेश्वर के भय में जीना चाहिए, इस वचन के अनुसार: *'तेरा भय मेरा भय है, और मैं तेरे न्याय से डरता हूँ'* (भजन संहति 118:120)। हमें स्वयं को सुधारने का प्रयास कए बनिा समय को व्यर्थ नहीं जाने देना चाहिए; हमें नहीं पता कि कल क्या लेकर आएगा, क्योंकि भले ही हम कई योजनाएँ बनाएँ, अक्सर अगले दनि तक हम उनमें से कुछ भी हासलि नहीं कर पाते। इसलिए, यदि हम बुराई से मुंह मोड़ लें और उपर्युक्त सद्गुणों के लिए प्रयास करें, तो हम उद्धार पाएंगे और संकीर्ण तथा कठनि मार्ग पर चलकर, हम स्वर्ग के राज्य को प्राप्त करेंगे।

इस प्रवचन के अंत में, संत जॉन अपने बशिप के नविास में चले गए। उनके शुद्ध जीवन को देखकर, शैतान, जो युगों-युगों से मानव जाति को नुकसान पहुँचाता आ रहा है, ने उस धर्मी व्यक्ति के वरिुद्ध युद्ध छेड़ दयिा। संत के डकिन, जसिका नाम एलेउथेरीउस था, ने कुछ चर्च अधकिारयिों के साथ मलिकर एक वेश्या को बहुत सारा चाँदी देने का वादा करके राज़ी कयिा, और वे राजकुमार के सामने बशिप पर बदनामी करने का कोई अनुकूल अवसर ढूँढने लगे। उन्होंने लोगों

को भड़काया और बशिप के आवास पर आकर, संत जॉन को अपमान और तरिस्कार के साथ शहर से बाहर नकिाल दयिा। हालाँकि, अपने प्रभु यीशु मसीह की सहनशीलता को ध्यान में रखते हुए, उन्होंने उनके इस उग्र हमले के वरिुद्ध कुछ नहीं कहा; लेकनि, जब वे शहर से बाहर जा रहे थे, तो उन्होंने अपना चेहरा पूर्व की ओर कयिा और स्वर्ग की ओर अपने हाथ उठाकर, उन लोगों के लिए परमेश्वर से प्रार्थना की जनि्होंने उनसे घृणा की थी, यह कहते हुए:

'हे प्रभु! इसको उनके पाप के रूप में न गनिना।'

और तुरंत, जब प्रार्थना अभी भी उनके होठों पर थी, प्रभु का क्रोध पुरोहतिों पर टूटा; उन पर भय और कांपना छा गया, और अंधकार उन्हें घेरे हुए था; वे पूरी तरह से अंधे हो गए थे और मार्गदर्शन के लिए तरस रहे थे। यह देखकर, लोग संत के पैरों पर गरि पड़े और, पुकारों और आँसुओं के साथ, क्षमा याचना करने लगे। संत ने उन्हें क्षमा कर दयिा और उन पर आशीर्वाद दयिा। अपने पाप से पछताते हुए, एलेउथेरीउस रोते हुए जॉन के पैरों पर गरि पड़ा, और कहा:

'हे ईश्वर के सेवक, मुझ पर दया करो और एक दीन मनुष्य होने के नाते, मुझसे आपके वरिुद्ध की गई मेरी अवैध और दुष्ट साजशि के लिए क्षमा करें। मेरे प्रभु ईश्वर की कसम, जब तक आप मेरी इस अवैध साजशि के लिए क्षमा का वचन नहीं देते, तब तक मैं आपके पवत्रि चरणों से नहीं जाऊँगा। हे पूजनीय पति, मैंने जो बुरा कयिा है, उसे याद न करें।'

और बहुत समय तक एलेउथेरीउस ने यह बात पूजनीय से दोहराई। लेकनि धन्य जॉन ने उत्तर दयिा:

'हे मनुष्य, माफ़ी का वादा करना हमारे बस की बात नहीं है, जैसा तुम सोचते हो, बल्कि केवल एक दयालु ईश्वर ही क्षमा कर सकता है। वही जसिने हमारे लिए दुख सहन कयिा, वह हमारी आत्मा के घावों को भरता है। वह हमें हमारे अपराधों के लिए क्षमा प्रदान करता है और हमें शुद्ध कर देगा, क्योंकि उसने स्वयं संसार के पापों को उठा लयिा है।'

इलेउथेरीउस को जमीन से उठाते हुए, जॉन ने उससे कहा:

'प्रभु, मेरे बच्चे, तुम्हें क्षमा कर देंगे।'

संत ने सभी लोगों के सामने पापी एलेउथेरीउस और उन पादरयिों के लिए प्रार्थना की, जनि्हें उसने भटकाया था, और उन पर क्रॉस का चहि्न बनाया। वे तुरंत अपनी दृष्टि वापस पा गए। सभी लोग वस्मिति हो गए और ईश्वर की स्तुति करने लगे, जो अपने संतों के माध्यम से अद्भुत चमत्कार करते हैं।

संत जॉन द्वारा कए गए चमत्कार के स्थल पर, सुज़दल के नागरकिों ने खोनैक में, ईश्वर के महादूत, संत माइकल के चमत्कार को समर्पति एक चर्च बनाने का संकल्प लयिा, क्योंकि यह चमत्कार बशिप द्वारा महादूत माइकल के पर्व के दनि कयिा गया था। संत जॉन के आशीर्वाद से, यह चर्च जल्द ही बन गया, और नागरकिों ने चर्च के लिए अपनी भूमि का एक हस्सिा अलग कर दयिा, और संत के नाम पर इसका नाम इवानोव्स्कोये गाँव रखा[7193] ।

एक दनि, धर्मपरायण राजकुमार एंड्रे, जो महा राजकुमार बोरसि कॉन्स्टेंटनिोविच के भाई थे, संत जॉन के पास आए। प्रथागत आशीर्वाद और प्रार्थना के बाद, राजकुमार ने बशिप से कहा:

'हे ईश्वर के पवत्रि पुरुष, मैं आपसे एक कृपा का नविेदन करना चाहता हूँ।'

दयालु चरवाहे ने उत्तर दयिा:

'तुम्हारे लिए कुछ भी वर्जति नहीं है।'

'मैं चाहता हूँ कि आप मुझे ननयिों के लिए एक मठ स्थापति करने का आशीर्वाद दें – क्योंकि मेरे साथ एक चमत्कार हुआ है।' एक दनि हम नज़िनी नोवगोरोड से वोल्गा नदी पर नाव से यात्रा कर रहे थे, जब नदी पर एक तेज हवा उठ खड़ी हुई; नावें वशिाल लहरों की भीड़ से टूटने लगीं, और मौत ने हम सभी को अपनी चपेट में ले लयिा। तब नावकिों ने ईश्वर से प्रार्थना करना शुरू कर दयिा; मैंने भी उनके साथ प्रार्थना की, कि प्रभु हमें इस आने वाली आपदा से बचा लें। और मैंने ईश्वर से एक संकल्प लयिा कि मैं परमेश्वर की परम पवत्रि माता के नाम पर एक चर्च का नर्मिाण करूँगा, उनकी मध्यस्थता के सम्मान और महमिा में, और ननों के रहने और वश्रिाम के स्थान के रूप में एक मठ स्थापति करूँगा। तुरंत ही नदी का उथल-पुथल थम गया और शांति लौट आई। अब मेरा संकल्प पूरा करने का समय है।

बशिप ने उत्तर दयिा:

'मैं तुम्हारी इच्छा के मार्ग में नहीं आऊँगा।'

धार्मकि राजकुमार ने कहा:

[7193] 1578 में अपानगेज राजकुमार व्लादमिीर आंद्रेवचि की पत्नी, राजकुमारी यूप्रैक्सिया द्वारा सेंट जॉन के ताबूत पर बछिाए गए कवरलेट पर एक ट्रोपारयिन कढ़ाया गया है, जसिमें लखिा है: 'उस दुर्भावनापूर्ण पुरोहति को आज्ञा दो और सखिाओ कि वह प्रार्थना के माध्यम से प्रकाश देखे, जैसे कि पहले संत लयिोन्टयिस ने कयिा था – उसे बाँधो और एक बार फरि उसे आशीर्वाद दो।'

'आइए हम रेवरेंड फादर, आर्चमिांड्राइट यूथमियिस को बुलाएं, और उनसे नदी के कनिारे एक ऐसी जगह मांगें जहाँ एक कन्वेंट बनाने के लिए उपयुक्त हो।'

एक-दूसरे से सलाह-मशवरिा करने के बाद, उन्होंने आर्चमिैंड्राइट को बुलवा भेजा। वह आए, उन्हें प्रणाम कयिा और पूछा:

'आपने मुझे क्यों बुलाया, मेरे स्वामनिो? मुझे आपके पास आने की क्या आवश्यकता थी?'

उन्होंने कहा:

'हमें सात साज़ेन लंबी और चौड़ी एक ज़मीन का टुकड़ा प्रदान करें; क्योंकि, ईश्वर की सहायता से, हम उस नदी पर एक मठ बनाना चाहते हैं जहाँ आप रहते हैं, हे अच्छे चरवाहे और मसीह के दाख की बारी में मजदूर।'

राजकुमार ने उसे वोल्गा पर अपने साथ हुई घटना और अपने व्रत के बारे में बताया – कि कैसे उसने भिक्षुणियों के रहने के लिए एक मठ स्थापति करने का व्रत लयिा था। लेकनि धन्य यूथमियिस ने कहा:

'हे राजकुमार! पृथ्वी प्रभु की है, और जो कुछ भी उसमें है वह सब प्रभु का है। यदि ईश्वर को प्रसन्न हो, तो जसि स्थान को आपने मठ की स्थापना के लिए चुना है, वह धन्य हो।'

राजकुमार ने धन्य यूथमियिस को प्रणाम कयिा और मठ को उदार दान दयिा। फरि उसने कामेन्का नदी के कनिारे, आदरणीय यूथमियिस के मठ के सामने एक स्थान चुना। यहाँ, ईश्वर की कृपा से, परम पवत्रि ईश्वर माता के नाम पर एक लकड़ी का चर्च उनकी महमिामय मध्यस्थता की स्मृति में बनाया गया, और एक मठ स्थापति कयिा गया[7194] । यह 1364 में हुआ। बशिप जॉन ने मठ का नेतृत्व धन्य यूथमियिस की भतीजी को सौंपा, जनि्हें उन्होंने उसी सुज़दल शहर में, पहाड़ी पर स्थति सेंट अलेक्जेंडर द ग्रेट मार्टायर की लव्रा से स्थानांतरति कयिा था[7195] । कुछ समय बाद, बशिप जॉन मठ आए, उन्होंने उसकी प्रशंसा की और उसे आशीर्वाद दयिा, और बहनों को आध्यात्मकि जीवन के लाभों के बारे में समझाने के बाद, वे अपने घर लौट गए।

इस प्रकार संत जॉन ने अपनी आध्यात्मकि भेड़-बकरयिों की देखभाल की, और उन्हें आध्यात्मकि चरागाहों की ओर ले गए। और यह संत न केवल सुज़दाल में, बल्कि दूर-दराज़ के देशों में भी एक तारे की तरह चमके। ईश्वर को प्रसन्न करने वाले और मसीह पर केंद्रति तरीके से अपनी भेड़-बकरयिों का शासन करते हुए, वे एक पवत्रि वृद्धावस्था तक पहुँचे।

[7196] का बशिप पद त्यागने के बाद, वे परम पवत्रि ईश्वर की माता के बोगोलीुबस्क मठ[7197] में सेवानविृत्त हो गए, जहाँ उन्होंने स्कीमा ग्रहण कयिा और अनवरत मौन में रहे।

जैसे ही उनके परमधर्म नधिन का समय नकिट आया, संत जॉन बीमार पड़ गए, हालांकि यह बीमारी अधकि समय तक नहीं चली। इस जीवन से वदिाई के समय, उन्होंने हमारे प्रभु, यीशु मसीह के शरीर और रक्त के परम पवत्रि और शुद्ध रहस्यों का पवत्रि भोज ग्रहण कयिा, और 1373 के वर्ष में 15 अक्टूबर को प्रभु में नदि्रावस्था प्राप्त की। उनके पवत्रि अवशेषों को भजनों के बीच सुज़दाल शहर में स्थानांतरति कयिा गया।

जब संत जॉन के नधिन की खबर सुज़दल पहुँची, तो बशिप डायोनसियिस और अन्य पुरोहति और आम लोग मोमबत्तयिाँ और धूपदान लेकर शहर से बाहर संत की अवशेषों का स्वागत करने गए। उन्हें श्रद्धापूर्वक प्राप्त करने के बाद, उन्हें परम पवत्रि ईश्वर माता के जन्म के कैथेड्रल चर्च में, दाईं ओर, सम्मानपूर्वक सुलाया गया, जहाँ वे आज तक अपरविर्तति अवस्था में वशि्राम कर रहे हैं, और वशि्वास के साथ आने वालों की सहायता और उपचार कर रहे हैं, हमारे ईश्वर मसीह की महमिा के लिए, जसिकी महमिा युगानुयुग होती रहे।

27 अक्टूबर 1743 को, पवत्रि शहीद नेस्टर के पर्व के दनि, संत जॉन की कब्र पर एक चमत्कार हुआ।

[7194] परम पूज्य यूथमियिस ने इस मठ की महमिा की भवष्यियवाणी की थी। यहीं पर पूरे रूस के महा राजकुमार वासलिी इओआनोवचि की पत्नी, सोलोमोनयिा – जनि्होंने संन्यास का नाम सोफयिा अपनाया था – ने बाद में अपने संन्यास के व्रत ग्रहण कए थे। कन्वेंट में 17 वर्ष बताने के बाद, उनका 16 दसिंबर 1542 को नधिन हो गया। उनके अवशेष इंटरसेशन चर्च के बरामदे के नीचे एक अवशेष-पात्र में रखे गए हैं।

[7195] संत अलेक्जेंडर द मार्टयिर का मठ, जसि परंपरागत रूप से उनके नामधारी संत अलेक्जेंडर नेवस्की द्वारा अपने नाम पर स्थापति कयिा गया था।

[7196] 1365 में राजकुमार एंड्रे कॉन्स्टेंटनिोवचि की मृत्यु के बाद, उनके भाइयों, राजकुमार बोरसि और दमित्रिी के बीच भयंकर ववािद छड़ि गए। उस समय, सुज़डल, नज़िनी नोवगोरोड और गोरॉडेट्स मेट्रोपॉलटिन सनिी के अधकिार क्षेत्र में थे।

[7197] व्लादमिीर शहर के पास।

मध्यरात्रि की प्रार्थना समाप्त होने को थी, जब चर्च के परिचारक ने घंटियाँ बजाने का संकेत देने के लिए माँ ईश्वर की जन्म की कैथेड्रल से बाहर कदम रखा, तभी एक आदमी नंगे पैर और केवल एक खुला काफ़्तान पहने हुए चर्च में प्रवेश कर गया। वह तुरंत दाहिने स्तंभ की ओर भागा, सुज़दाल के बिशप, पवित्र चमत्कारी संत जॉन और थियोडोर के अवशेषों की ओर, और चिल्लाया:

'हे पवित्रजन, फादर जॉन, मसीह के सेवक, मुझ पर दया करें।' फिर, रोते हुए, वह साष्टांग प्रणाम कर गिरा।

अजनबी की असामान्य पुकार सुनकर, चर्च में मौजूद पुरोहित उसके पास आए, उसे जमीन से उठाया और पूछने लगे कि वह कौन है और उसकी पुकार का कारण क्या है। उसने, आँखों में आँसू लिए, निम्नलिखित बातें बताईं:

– मेरा नाम इवान वासिलीविच झिनिकिनि है; मैं इसी शहर के बस्ती का रहने वाला हूँ; मार्च से मैं एक गंभीर बीमारी से पीड़ित हूँ – मेरी दाहिनी बांह और बायां पैर बेकार हो गए हैं, और मेरी जीभ हिलना बंद कर चुकी है; उस समय मैं स्पष्ट रूप से बोल नहीं पाता था; दबी-दबी और अस्पष्ट आवाजें निकालते हुए, मैं अपने बाएं हाथ से इशारों के माध्यम से संवाद करता था। उस शाम, अपने बिस्तर पर लेटे हुए, मैं अपने पापों को याद करके रोने लगा, जिनके द्वारा मैंने प्रभु परमेश्वर को क्रोधित किया था। और मैं मन ही मन परमेश्वर की माता से मदद के लिए पुकारने लगा—जिनकी पवित्र प्रतिमा मेरे बिस्तर के पास रखी थी—और उनके साथ ही परमेश्वर के संतों, पवित्र धर्मगुरुओं और चमत्कार करने वालों सुज़दाल के बिशप जॉन और थियोडोर, और राडोनेज़ के सम्माननीय चमत्कार-कर्ता सर्गियस, जो एक मठाधीश थे, से भी प्रार्थना करने लगा। उस समय मेरे पूरे घर वाले सो रहे थे, क्योंकि रात काफी हो चुकी थी। जब मैं रो रही थी, तो मैंने उस कमरे में एक रोशनी चमकते हुए देखी जहाँ मैं लेटी थी। और देखो, एक सफेद वस्त्रधारी पुरुष प्रकट हुआ। मेरे बिस्तर के पास खड़े होकर, उसने अपने हाथ आकाश की ओर उठाए और प्रार्थना की:

'दयालु प्रभु, अपनी रचना पर दया करें।'

यह सुनकर, मुझे अपने भीतर का दर्द महसूस नहीं हुआ, और मैंने प्रकट हुए व्यक्ति से पूछने की हिम्मत की:

'हे परमेश्वर के पवित्र जन, आप कौन हैं?'

उसने उत्तर दिया:

'मैं सुज़दाल का बिशप जॉन हूँ; कैथेड्रल चर्च जाओ, जहाँ मेरे अवशेष रखे हैं, और वहाँ तुम्हें अपनी बीमारी से पूर्ण रूप से स्वास्थ्य लाभ मिलेगा।'

मैं उनके सम्मानित और पवित्र चरणों में गिरना चाहता था, लेकिन वह तुरंत अदृश्य हो गए, गायब हो गए, और कमरे में जो प्रकाश चमक रहा था वह भी गायब हो गया। जिस बिस्तर पर मैं आठ महीने से लेटा था, उससे उठकर, मैंने खुद को स्वस्थ महसूस किया और सीधे गिरिजाघर गया, और ईश्वर के संत का धन्यवाद किया।

ठीक हुए व्यक्ति के शब्द सुनकर, चकित पुरोहितों ने चर्च के चौकीदार को उसके घर भेज दिया, जो सेंट बेसिल मठ के पास था, ताकि वह उसके परिवार को हुई घटना की सूचना दे सके। उस आदमी के परिवार वाले उसे घर पर न पाकर बहुत हैरान हुए। कुछ ही देर बाद, उसकी माँ और पत्नी उसके सामान्य कपड़े लेकर गिरिजाघर पहुँचीं और वहाँ मौजूद लोगों को बताया कि यह इवान वास्तव में एक गंभीर बीमारी से पीड़ित था, और उन्हें नहीं पता था कि वह कैसे ठीक हो गया। ईश्वर के सेवक की पवित्र अवशेषों के सामने नतमस्तक होकर, उन्होंने पवित्र चमत्कार करने वाले जॉन को गर्म आँसुओं के साथ हार्दिक धन्यवाद अर्पित किया और एक प्रार्थना सभा मनाने के बाद अपने घर लौट आए।

हालाँकि, ठीक हो चुका व्यक्ति उनके साथ नहीं गया, बल्कि तीन दिनों तक गिरिजाघर में रहा, और आँसुओं के साथ गिरिजाघर के भजन सुनता रहा। तीन दिन बाद, उसने अपने आध्यात्मिक पिता, वासिलीव्स्की मठ के पुरोहित के समक्ष, पाप-स्वीकृति के संस्कार द्वारा स्वयं को शुद्ध किया, और मठ में मसीह के शरीर और रक्त की पवित्र कम्□□नियन प्राप्त करने के बाद, आनंदित होकर, परमेश्वर की महिमा करते हुए और धन्यवाद देते हुए, तथा महान संत और चमत्कार-कर्ता जॉन की मध्यस्थता और मदद की प्रशंसा करते हुए अपने घर लौट आया। सुज़दाल के बिशप। इवान ने अपने ठीक हुए दाहिने हाथ से हस्ताक्षर करके इस चमत्कार की गवाही दी; उस समय चर्च में मौजूद पादरियों ने भी इस चमत्कार की गवाही दी।

सुज़्डल के बशिप जॉन के लिए ट्रॉपारयिन:

ईश्वर की कैथोलकि और प्रेरतिकि कलीसयिा का मार्गदर्शन करते हुए, और ईश्वर की आज्ञाओं का पालन करते हुए, आपने वचन के झुंड का बहुत अच्छी तरह से पालन कयिा; उनकी प्रार्थना के द्वारा, उन्होंने दुष्ट पुरोहति को प्रकाश देखने का आदेश दयिा, और उसे सखिाया, ठीक वैसे ही जैसे रूसी भूमि के उद्धार के अग्रदूत और रोस्तोव के शक्षिक, संत लयिोन्टयिस ने, पहले उसे बाँधा था और फरि आशीर्वाद दयिा था; इसी प्रकार सुज़्दल के पवत्रि बशिप, मुक्तदिाता और चमत्कार करने वाले जॉन के मध्यस्थता से, जनिकी शरण में हम अपनी पीड़ाओं से भागते हैं, हमारे ईश्वर मसीह से प्रार्थना करें कि हमारी आत्माएँ उद्धार पाएँ।

सुज़्दाल के बशिप जॉन और थयिोडोर के लिए ट्रॉपारयिन:

सुज़्दाल क्षेत्र के शक्षिकों, प्रेरतिों के समान आत्मा वाले, और आत्माओं तथा शरीरों के बुद्धमिान चकित्सिकों, और परमेश्वर को प्रयि लगने वाले सेवकों, हम आपकी सम्मानति अवशेषों के संदूक की ओर दौड़ते हुए आते हैं और आपको धन्य कहते हैं, हे परमेश्वर-धन्य महाधर्माध्यक्षों, थेओडोर और जॉन; और गीतों और भजनों के साथ, आनंदति होकर, हम मसीह की महमिा करते हैं, जन्हिोंने आपको चंगा करने की कृपा प्रदान की और हमारे सुज़्दल नगर को आपके द्वारा एक महान पुष्टि प्रदान की।

29 अक्टूबर

16 अक्टूबर (पुराना कैलेंडर)

संत लोंगनिस शताध्यक्ष, पवत्रि शहीद का जीवन और कष्ट-संहार

16 अक्टूबर को स्मरणोत्सव

जब हमारे प्रभु यीशु मसीह ने, अपनी अगणति दया से, अपनी स्वेच्छा से उठाई गई पीड़ा, यानी क्रूस के द्वारा, हमें वनिाश से बचाने की कृपा की, मृत्यु और पुनरुत्थान, काप्पाडोसयिा के एक शताध्यक्ष, लोंगनिस नामक व्यक्ति, जो पलिातुस के अधकिार में था, को अपने सैनकिों के साथ यीशु मसीह के कष्ट और क्रूस पर चढ़ाए जाने के समय सेवा करने के लिए नयिुक्त कयिा गया था। मसीह के क्रूस पर हुए चमत्कारों—भूकंप, सूर्यग्रहण, कब्रों का खुलना और उनमें से मृतकों का उठना, और चट्टानों का फटना—को देखकर, शतमुख लोंगनिस ने स्वीकार कयिा कि मसीह परमेश्वर का पुत्र हैं। दव्यि सुसमाचारकर्ता मत्ती इस घटना के बारे में इस प्रकार कहते हैं: *'सैन्य-नायक और उसके साथ यीशु की रखवाड़ी कर रहे लोग, भूकम्प और जो कुछ हुआ था, उसे देखकर अत्यन्त डर गए और कहने लगे, "सचमुच यह परमेश्वर का पुत्र था!"* (मत्ती 27:54; तुलना करें मरकुस 15 और लूका 23:47)। इस प्रकार दव्यि सुसमाचार शतपति लोंगनिस के लिए गवाही देता है, जो मसीह में वश्विास करने लगा। हालाँकि, चर्च की परंपरा सुसमाचार में दिए गए ववरिण में यह जोड़ती है कि लोंगनिस वही सैनकि था जसिने क्रूस पर चढ़ाए गए प्रभु यीशु मसीह की पसली में भेद कयिा था और, बहकर नकिले हुए रक्त और जल के द्वारा, अपनी बीमार आँखों का चंगापन प्राप्त कयिा। यही लोंगनिस उन पहरेदारों में से एक था जन्हिें पलिातुस ने कब्र में पड़े यीशु मसीह के जीवन-दायक शरीर की रखवाली के लिए नयिुक्त कयिा था। जब प्रभु महमिा से कब्र से उठे और अपने अद्भुत पुनरुत्थान से पहरेदारों के हृदय में आतंक भर दयिा[7198] , तो लोंगनिस और दो अन्य सैनकिों ने हमेशा के लिए मसीह में वश्विास कयिा, और मसीह के पुनरुत्थान के प्रचारक बन गए - क्योंकि उन्होंने पलिातुस और मुख्य याजकों को वह सब कुछ बताया जो हुआ था। मुख्य याजकों और बुज़ुर्गों ने एक सभा की और सैनकिों को इतना पैसा दयिा कि वे मसीह के पुनरुत्थान को गुप्त रखें और कहें कि मसीह के चेलों ने रात में आकर उन्हें तब चुरा लयिा जब वे सो

[7198] सुसमाचार प्रचारक इस घटना का वर्णन इस प्रकार करते हैं: *'प्रभु का एक स्वर्गदूत स्वर्ग से उतर आया, और कब्र के द्वार से पत्थर हटाकर उस पर बैठ गया... और पहरेदार उसके भय से कांप उठे और ऐसे मरे-मरे हो गए'* (मत्ती 28:2, 4)।

रहे थे (मत्ती 28:11–13)। हालाँकि, लोंगनिस ने पैसा नहीं लिया और चमत्कार को छिपाने से इनकार कर दिया; इसके बजाय, वह और भी अधिक उत्साह के साथ इसकी गवाही देने लगा, और उसकी गवाही सच थी। इसलिए, पिलातुस और सारी यहूदी मंडली लोंगनिस से नफरत करने लगी और उन्होंने वह सारा क्रोध जो पहले मसीह के प्रति था, लोंगनिस पर उतार दिया। लॉन्गिनस ने खुले तौर पर मसीह के बारे में प्रचार किया, यह घोषणा करते हुए कि वह सच्चे परमेश्वर हैं, और यह कि उसने, लॉन्गिनस ने, अपनी आँखों से उनके जीवन-दायक मृत्यु और पुनरुत्थान को देखा था। इस गवाही के लिए, लोंगनिस को यीशु मसीह के दुश्मनों द्वारा घृणा और उत्पीड़न का सामना करना पड़ा, जिन्होंने उसे नष्ट करने का बहाना ढूँढना शुरू कर दिया; लेकिन, उसमें कोई दोष न पाकर, उन्होंने कार्रवाई करने की हिम्मत नहीं की, क्योंकि लोंगनिस सैनिकों में सबसे बड़ा, एक सम्मानित व्यक्ति और स्वयं सीज़र द्वारा जाना-माना व्यक्ति था। जब लोंगनिस को उनके बुरे इरादों का पता चला, तो उसने संकल्प लिया कि वह यहूदी बस्तियों में रहने के बजाय उनसे निकाला जाना और मसीह के साथ रहना पसंद करेगा। उसने अपना सैन्य पद, अपना वर्दी और अपनी कमरबंद त्याग दिया, और मसीह के प्रति अपने उत्साह को साझा करने वाले अपने दो दोस्तों को साथ लेकर, लोगों की संगति से अलग हो गया और स्वयं को एक ईश्वर की सेवा में समर्पित कर दिया। पवित्र प्रेरितों द्वारा बपतिस्मा ग्रहण करने के बाद, लोंगनिस जल्द ही यरूशलेम छोड़कर अपने दोस्तों के साथ कापाडोसिया चला गया; वहाँ वह मसीह का उपदेशक और प्रेरित बन गया, और कई लोगों को भ्रांति से ईश्वर की ओर ले आया। इसके बाद, शहर छोड़कर, लोंगनिस अपने पिता के गाँव में रहने चले गए, और मौन का जीवन जिया—जो उपवास और प्रार्थना के प्रति समर्पित था।

[7199]यह बात जल्द ही यरूशलेम के पूरे यहूदी समुदाय में फैल गई कि लोंगनिस कैपाडोसिया में अपनी शिक्षाएँ फैला रहा था और मसीह के पुनरुत्थान का उपदेश दे रहा था। तब ईर्ष्या और क्रोध से भरे यहूदी महापुजारियों और बुजुर्गों ने, कई उपहार लेकर पिलातुस के पास गए और उससे विनती करने लगे कि वह रोम के सीज़र को एक संदेश भेजे, जिसमें यह कहा जाए कि लोंगनिस ने अपना सैन्य पद त्याग दिया था, रोमन अधिकार के आगे समर्पण करने से इनकार कर दिया था, और कैपाडोसिया के लोगों को किसी दूसरे राजा के बारे में उपदेश देकर उकसा रहा था। पिलातुस ने उपहार स्वीकार कर, यहूदियों की मांग मान ली और सीज़र टिबेरियस को एक संदेश भेजा जिसमें लोंगनिस के खिलाफ गंभीर बदनामी की गई थी। पिलातुस के इस पत्र के साथ, यहूदियों ने अपनी ओर से सीज़र को बहुत सारा सोना भेजा, और इस प्रकार संत लोंगनिस की मृत्यु को पक्का कर दिया: क्योंकि कुछ ही समय बाद, सीज़र टिबेरियस की ओर से लोंगनिस को सीज़र का दुश्मन बताकर मृत्युदंड देने का आदेश आया। पिलातुस ने तुरंत कैपाडोसिया में सैनिक भेजे ताकि वे लोंगनिस का सिर कलम कर दें और उसका सिर यरूशलेम ले आएं, ताकि यहूदी सभा के सामने लोंगनिस की मृत्यु की पुष्टि हो सके। यहूदियों के अनुरोध पर, पिलातुस ने उन दो सैनिकों को भी मृत्युदंड देने का आदेश दिया, जिन्होंने लोंगनिस के साथ मिलकर अपना सैन्य पद त्याग दिया था और कैपाडोसिया में उसके साथ मसीह का उपदेश दे रहे थे।

जब दूत कैपाडोसिया की भूमि में पहुँचे, तो उन्होंने लोंगनिस के बारे में गंभीरता से पूछताछ करनी शुरू कर दी, यह पूछते हुए कि वह कहाँ रहता है; यह जानने पर कि वह अपने पिता के गाँव में ठहरा हुआ है, वे वहाँ जल्दी से पहुँचे, यह दिखावा करने की कोशिश करते हुए कि वे लोंगनिस को मारने के लिए नहीं, बल्कि उसे कुछ सम्मान देने के लिए ढूंढ रहे थे। उन्हें डर था कि लोंगनिस उनके हाथ से निकल जाएगा और उन्हें उन लोगों के पास खाली हाथ लौटना पड़ेगा जिन्होंने उन्हें भेजा था; इसीलिए वे उसे गुप्त रूप से पकड़ना चाहते थे।

इस बीच, संत लोंगनिस को दैवीय प्रकटिकरण द्वारा उस शहीद के मुकुट के बारे में पता चला जिसका उसे इंतजार था। वह स्वयं पिलातुस द्वारा भेजे गए लोगों से मिलने बाहर गए और उन्होंने उनका हार्दिक स्वागत किया। हालाँकि, उन्हें पहचान नहीं पाकर, उन्होंने पूछा:

'लॉन्जिनस कहाँ है, जो कभी एक शताब्दीपति था?'

लॉन्जिनस ने उनसे पूछा, "तुम्हें उसकी क्या ज़रूरत है?"

सैनिकों ने उत्तर दिया, 'हमने सुना है कि वह एक अच्छा आदमी है, और हम उससे मिलना चाहते हैं; हम सैनिक हैं, और वह सैनिकों का एक शताध्यक्ष था—इसीलिए हम उसे देखना चाहते हैं।'

तब लोंगनिस ने कहा:

[7199] तिबेरियस ने ईस्वी 14 से 37 तक शासन किया। उनके शासनकाल के दौरान ही प्रभु यीशु मसीह को सूली पर चढ़ाया गया था।

'कृपया, सज्जनो, मेरे घर में आइए और अपनी यात्रा से थोड़ा आराम कीजिए, और मैं लोंगनिस को बता दूँगा कि आप यहाँ हैं, क्योंकि मैं जानता हूँ कि वह कहाँ रहता है, और फिर वह स्वयं आपसे मिलने आएगा, क्योंकि वह यहाँ से बहुत दूर नहीं रहता है।'

सैनिक लोंगनिस के घर गए, और उसने उनके लिए एक शानदार दावत दी। जब शाम हुई और सैनिक शराब से काफी खुश हो गए, तो उन्होंने लोंगनिस को बताया कि उन्हें क्यों भेजा गया था। लेकिन पहले उन्होंने उससे पूछा और उससे यह शपथ करवाई कि वह यह रहस्य किसी को नहीं बताएगा; सैनिकों को डर था कि कोई लोंगनिस को बता देगा और वह उनसे भाग जाएगा; उसी समय, उन्होंने उससे कहा:

'हमें लोंगनिस और उसके दो दोस्तों का सिर कलम करने के लिए भेजा गया है, क्योंकि सीज़र से पिलातुस को ऐसा ही आदेश मिला है।'

लॉन्गिनस ने, यह सुनकर कि वे उसके दोस्तों को भी मारना चाहते थे, तुरंत उन्हें बुलाया और अपने पास आने के लिए आमंत्रित किया; फिर भी, वह खुद सैनिकों को यह नहीं बताना चाहता था—जब तक उसके दोस्त नहीं आ गए—कि वह स्वयं लॉन्गिनस था। जब सैनिक सो गए, तो लोंगिनस ने प्रार्थना करना शुरू कर दिया, और उस पूरी रात वह मृत्यु के लिए खुद को तैयार करते हुए ईश्वर से भक्तिपूर्वक प्रार्थना करता रहा। जैसे ही सुबह हुई, प्रस्थान करने के लिए उत्सुक सैनिकों ने लोंगिनस से उस व्यक्ति को दिखाने के लिए कहा जिसे वे ढूंढ रहे थे। तब लोंगिनस ने उनसे कहा:

उसने कहा, 'मेरे स्वामियों, थोड़ी देर रुकिए, मैंने उसे बुलाया है, और वह तुरंत आपके पास आएगा: मेरा विश्वास कीजिए, जिसे आप ढूंढ रहे हैं, वह स्वयं आपके हाथों में आ जाएगा - बस थोड़ी देर रुकिए।'

तब लोंगिनस को पता चला कि उसके मित्र रास्ते में हैं: वह तुरंत उन्हें मिलने के लिए बाहर गया और उन्हें चूमने तथा गले लगाने के बाद कहा:

'हे मसीह के सेवको, मेरे साथियो, आनंद मनाओ; मेरे साथ आनंद मनाओ, क्योंकि हमारा आनंद समीप है – अब हमारे शरीर के बंधनों से मुक्ति का समय आ गया है; अब हम अपने प्रभु यीशु मसीह के सामने एक साथ खड़े होंगे। हमने उन्हें पीड़ित, क्रूस पर चढ़ाए गए, दफनाए गए और महिमा में पुनर्जीवित होते देखा है; अब हम उन्हें परमेश्वर के दाहिने हाथ पर विराजमान देखेंगे, और हम उनकी महिमा के दर्शन से परिपूर्ण हो जाएंगे।

अपने मित्रों से यह कहने के बाद, लोंगिनस ने उनसे कहा कि पिलातुस और यहूदी महासभा के सैनिक मसीह के पुनरुत्थान की गवाही देने के कारण उन्हें मार डालने के लिए आए हैं। यह सुनकर वे आनंदित हुए, कि उन्हें शहीद के मुकुट में भागीदार होने के योग्य माना जाएगा और वे जल्द ही अपने प्रभु के सामने खड़े होंगे, जिन्हें उन्होंने अपने पूरे हृदय से प्रेम किया था। फिर, अपने मित्रों को सैनिकों के पास ले जाकर, लोंगिनस ने कहा:

'ये हैं लोंगिनस और उसके दो मित्र! मैं ही लोंगिनस हूँ, जिसे तुम खोज रहे हो; और ये मेरे दो मित्र हैं, जिन्होंने मेरे साथ मिलकर मसीह के पुनरुत्थान का साक्ष्य दिया और विश्वास किया; हमारे साथ वैसा ही करो जैसा तुम्हें भेजने वालों ने आज्ञा दी है।'

यह सुनकर सैनिक चकित रह गए और उन्हें पहले विश्वास नहीं हुआ कि उनके सामने स्वयं लोंगिनस खड़ा था; लेकिन जब उन्होंने मामले की सच्चाई का पता लगा लिया, तो वे शर्म से भर गए और अपने उपकारी को मृत्युदंड देना नहीं चाहते थे। फिर भी लोंगिनस ने उन्हें अपने आदेशों का पालन करने के लिए कहा, यह कहते हुए:

'मेरे प्रति अपने प्रेम के लिए मुझे धन्यवाद देने का इससे बेहतर कोई तरीका नहीं है कि आप मुझे मेरे प्रभु के पास भेज दें, जिन्हें मैं लंबे समय से देखने के लिए तरस रहा हूँ।'

तब सफेद अंत्येष्टि वस्त्र धारण कर, पास की एक पहाड़ी की ओर हाथ से इशारा करते हुए, लोंगिनस ने अपने परिवार को आदेश दिया कि वे वहाँ उसका और उसके दो मित्रों का शरीर दफना दें। इसके बाद, प्रार्थना करने और सभी को अंतिम चुंबन देने के बाद, लोंगिनस और उनके दो friends[7200] ने तलवार के सामने अपना सिर झुका दिया। सैनिकों ने उनका सिर कलम करने के बाद, संत लोंगिनस का सिर अपने साथ ले गए और चले गए; हालाँकि, संतों के शरीर उसी स्थान पर सम्मान के साथ दफनाए गए थे जिसे संत लोंगिनस ने स्वयं इंगित किया था।

[7200] प्राचीन वृत्तांतों के अनुसार, ये इसौर और एफ्रोडिसियस थे; इनका पर्व दिवस 19 अप्रैल है।

यरूशलेम पहुँचने पर, सैनिकों ने संत लोंगनिस का पवित्र सिर वहाँ लाया और लोंगनिस की हत्या के सबूत के तौर पर उसे पिलातुस और पूरी यहूदी सभा को सौंप दिया। पिलातुस और यहूदियों ने संत का सिर देखकर उसे शहर के बाहर फेंकने का आदेश दिया, और वह कचरे के ढेर में धूल से ढक जाने तक लंबे समय तक पड़ा रहा।

लेकिन प्रभु, जो अपने संतों की *'सभी हड्डियों की रक्षा करते हैं'* (भजन संहिता 33:21), ने संत लोंगनिस के सिर को, जो कचरे में पड़ा था, अक्षुण्ण रखा।

और जब प्रभु ने अपने सेवक को मनुष्यों के सामने पृथ्वी पर महिमामय करना चाहा, जिसे उन्होंने स्वर्ग में स्वर्गदूतों के सामने पहले ही महिमामय कर दिया था, तो उन्होंने संत का सिर इस प्रकार प्रकट किया। कैपाडोसिया की एक विधवा, एक ईसाई महिला, अपनी दोनों आँखों की रोशनी खो चुकी थी और उसने लंबे समय तक डॉक्टरों से मदद माँगी, लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ। तब उसने यरूशलेम जाने का निश्चय किया – पवित्र स्थानों की पूजा करने और वहाँ अपनी अंधी आँखों के लिए ईश्वर की मदद माँगने के लिए। अपने एकमात्र पुत्र को साथ लेकर, वह अपनी यात्रा पर निकल पड़ी। लेकिन पवित्र स्थानों पर पहुँचने पर, उसका बेटा बीमार पड़ गया और कुछ ही दिनों बाद उसकी मृत्यु हो गई; विधवा अपने बेटे की मृत्यु से बहुत दुखी हुई: वह दोहरा नुकसान होने पर रोई, क्योंकि उसने अपनी दृष्टि और अपना बेटा दोनों खो दिया था, जो उसकी आँखों के लिए प्रकाश और उसका मार्गदर्शक था। और इस प्रकार, जब विधवा कड़वाहट से और बिना सांत्वना के रो रही थी, तो संत लोंगनिस एक दर्शन में उसके सामने प्रकट हुए और उन्होंने उसे सांत्वना दी, यह वादा करते हुए कि वह अपने बेटे को स्वर्गीय महिमा में देखेगी और उसकी आँखों में रोशनी वापस आ जाएगी। उन्होंने उसे अपने बारे में सब कुछ बताया: कि वह मसीह के कष्ट, सूली पर चढ़ाए जाने, दफनाए जाने और पुनरुत्थान के समय उपस्थित था; कि बाद में, उसने कापाडोसिया में मसीह का उपदेश दिया और अपने दोस्तों के साथ मिलकर उनके लिए कष्ट सहे। फिर उन्होंने उसे शहर के बाहर जाकर अपना सिर खोजने का निर्देश दिया, जो कूड़े के ढेर में पड़ा था और धूल से ढका हुआ था।

संत लोंगनिस ने कहा, 'यह तुम्हारी नियति है कि तुम इसे अपने उपचार के लिए पाओ।'

अपने शोक से मुक्त होकर, विधवा उठी और शहर के बाहर ले जाए जाने का आग्रह किया; और जब वे उसे वहाँ ले जा रहे थे, तो उसने अपने साथ चल रहे लोगों से कहा:

'जहाँ भी तुम झाड़ू से साफ किया हुआ कूड़े का एक बड़ा ढेर देखो, मुझे वहीं उतार देना।'

और उन्होंने वैसा ही किया। झाड़-फूस के एक बड़े ढेर को ढूंढकर, वे उसे वहां ले गए, और उसने अपने हाथों से कचरे में छानबीन करनी और धूल में खोदना शुरू कर दिया: हालांकि वह अपनी आँखों से कुछ भी नहीं देख सकती थी, लेकिन उसे संत लोंगनिस द्वारा एक दर्शन में कहे गए शब्दों पर अटूट विश्वास था। और तुरंत, ईश्वर की कृपा से, उसे वह मिल गया जिसकी वह तलाश कर रही थी और उसने अचानक सूरज की रोशनी देखी; क्योंकि उसकी आँखें खुल गईं और उसने धूल में पड़े संत के सिर को देखा। विधवा सूर्य के प्रकाश को देखकर उतनी प्रसन्न नहीं हुई, जितनी कि संत का सिर पाकर हुई, जिसके द्वारा उसे अपनी दृष्टि वापस मिली थी। और उसने ईश्वर की स्तुति की और उनके सेवक, संत लोंगनिस की प्रशंसा की।

उस महिला ने संत का सिर लेकर उसे चूमते हुए, खुशी-खुशी उसे अपने घर ले गई; उसने उसे धोया, सुगंधित इत्रों से उसका अभिषेक किया, और इस आध्यात्मिक खजाने की खोज पर इतनी प्रसन्न हुई कि वह अपने मृत पुत्र का दुख भूल गई। अगली रात, संत लोंगनिस एक महान प्रकाश में फिर से उसके सामने प्रकट हुए; उन्होंने उसके बेटे को, जो शानदार विवाह के वस्त्रों में सजे हुए थे, उसके पास लाया, और उसे स्नेहपूर्वक और पितृवत् आलिंगन करते हुए, विधवा से कहा:

'देखो, मेरी पत्नी, अपने बेटे को, जिसके लिए तुम शोक मना रही हो और विलाप कर रही हो: देखो उस पर प्रदान की गई सम्मान और महिमा – उस पर नज़र डालो और सांत्वना पाओ। ईश्वर ने उसे स्वर्गदूतों के बीच गिन लिया है जो उनके राज्य में निवास करते हैं। मैंने, अपनी ओर से, अब उसे उद्धारकर्ता से ले लिया है, और वह मुझसे कभी अलग नहीं होगा। देखो, अपने पुत्र का सिर और शरीर ले लो, और उन्हें एक ही ताबूत में दफ़ना दो; और अपने एकलौते पुत्र के लिए मत रोओ, और न ही अपने मन को व्यथित होने दो, क्योंकि परमेश्वर ने उसे महान महिमा, आनंद और अनंत प्रसन्नता प्रदान की है[7201] ।

[7201] संत थियोफेंस शहीद के लिए आयोजित सेवा में संत लोंगनिस की अवशेषों के माध्यम से किए गए चमत्कारों का उल्लेख करते हैं (देखें मेनयिन, 16 अक्टूबर)। – शताध्यक्ष संत लोंगनिस का पूजनीय हाथ रोम में, वेटिकन के संत पीटर के बेसिलिका में रखा गया है।

जब उस स्त्री ने यह सुना, तो वह जल्दी से उठी और शहीद का सिर अपने मृत पुत्र के शरीर के साथ एक ही ताबूत में रख दिया, और फिर परमेश्वर की महिमा और स्तुति करती हुई अपने घर लौट आई। अपने देश पहुँचने पर, उसने अपने पुत्र के शरीर और शहीद के सिर को सम्मान के स्थान पर दफनाया, और मन ही मन सोचने लगी:

'अब मैं जानती हूँ कि "*जो लोग परमेश्वर से प्रेम करते हैं, जो [उनके] उद्देश्य के अनुसार बुलाए गए हैं, उन सब के लिए सब कुछ मिलकर भलाई के लिए काम करता है*" (रोमियों 8:28): मैंने अपनी शारीरिक आँखों के लिए चंगाई मांगी, लेकिन उसी समय मुझे अपनी आत्मा की आँखों के लिए भी चंगाई मिली। मैं अपने बेटे की मौत के गम में डूब गई थी, लेकिन अब वह स्वर्ग में है, भविष्यवक्ताओं और शहीदों के साथ महिमा में परमेश्वर के सामने खड़ा है; वह उनके साथ सदा आनंदित रहता है और, लोंगिनस के साथ, मसीह के राज्य में स्वर्गदूतों के बीच विजय का प्रतीक—क्रूस—को उठाए हुए है, और जैसा कि लोंगिनस का शिष्य आनंदपूर्वक गाता है: 'निश्चय ही यह परमेश्वर का पुत्र था'—और है, और सदा रहेगा। उसकी राज्याधिकार सभी युगों का है, और उसकी प्रभुता हर पीढ़ी और युग तक फैली हुई है। उसकी महिमा युगानुयुग होती रहे। आमीन[7202] .

कॉन्टाकियन, स्वर 4:

चर्च आज के सर्वदा स्मरणीय शहीद लोंगिनस का उत्सव मनाते हुए, आनंद से हर्षित है, और पुकारती है: 'हे मसीह, तू मेरी शक्ति और मेरा सहारा है।'

30 अक्टूबर

17 अक्टूबर (पुराना कैलेंडर)

क्रीट के संत एंड्रयू, पवित्र शहीद का कष्टकथा

17 अक्टूबर को स्मरणोत्सव

दुष्ट राजाओं और राजकुमारों द्वारा भड़काई गई मसीह की कलीसिया के अनेक और क्रूर उत्पीड़नों के समाप्त हुए बहुत समय बीत चुका है। तब से, परमेश्वर की कलीसिया, मानो उपजाऊ भूमि में रोपी गई और परमेश्वर के सेवकों के बहुमूल्य लहू से सींची गई हो, पृथ्वी के चारों कोनों तक फैल गई है। प्रभु के घर में शांति और विश्वास की एकता का राज था; धार्मिकता फल-फूल रही थी; लोगों में अच्छे आचार-विचार जड़ें जमा रहे थे; प्रभु की आज्ञाओं का पालन किया जाता था; और विश्वासी सभी सद्गुणों में फल-फूल रहे थे। तब शैतान, ईर्ष्या करके, विश्वासियों को मसीह से भटकाने लगा। हालाँकि, उसने पहले की तरह खुले तौर पर नहीं, बल्कि अपनी विशेष चालाकी से गुप्त रूप से ऐसा किया। इस उद्देश्य के लिए, उसने स्वयं ईसाइयों के बीच मूर्तिभंजन को भड़काया। शैतान के उकसावे पर, ईसाइयों के बीच ऐसे लोग उठ खड़े हुए जिन्होंने ईश्वर के प्रति उत्साह के बहाने पवित्र प्रतिमाओं की पूजा को अस्वीकार करना शुरू कर दिया। शैतान ने लोगों में यह भावना डाली ताकि, मसीह की प्रतिमा को अस्वीकार करके, वे स्वयं मसीह को भी अस्वीकार कर दें – क्योंकि एक प्रतिमा पर चित्रित हर चीज़ उस व्यक्ति से संबंधित होती है जिसकी समानता उस पर दर्शाई गई है। और इस प्रकार मानव उद्धार के शत्रु, शैतान ने, सम्राट कॉन्स्टेंटिन को इस उद्देश्य के लिए उकसाया, – वे प्रेरितों के समान नहीं जिन्होंने मसीह के विश्वास से संसार को प्रकाशित किया, बल्कि एक और, उसी नाम का, जिसे कोप्रोनिमस, अर्थात् 'पीप से नामित' के रूप में जाना जाता है[7203] , क्योंकि उसने पहले अपनी बपतिस्मा की कटोरी को पीप से अशुद्ध किया, और फिर अपनी अधर्मी विधि से मसीह की कलीसिया को। पागल ज़ार ने यह दावा करना शुरू कर दिया कि ईसाइयों के लिए आइकनों

[7202] संत लोंगिनस के जीवन के लेखक संत इसिचियस थे, जो यरूशलेम के एक पुरोहित († 434) थे, जिन्हें शहीद के कृत्य पवित्र सेपल्चर चर्च की पुस्तकालय में मिले और उन्हीं के आधार पर उन्होंने अपना वृत्तांत संकलित किया, जिससे यह स्पष्ट होता है कि शहीद का 16 अक्टूबर को सिर कलम कर दिया गया था।

[7203] 'कांस्टेंटिन कॉप्रोन्यमस' नाम यूनानी शब्द 'कोप्रोस' से लिया गया है, जिसका अर्थ है - खाद, गंदगी।

की पूजा और सम्मान करना उचित नहीं है, क्योंकि यह पगानों की मूर्तिपूजा थी। वह यह समझने में विफल रहा कि यदि कोई वस्तु अपने आप में आत्मा के लिए हानिकारक है, तो उसकी छवि भी आत्मा के लिए हानिकारक है और इसकी अनुमति नहीं दी जानी चाहिए। यदि कोई वस्तु स्वभावतः आत्मा के लिए अच्छी और लाभदायक है, तो उसकी प्रतिमा भी अच्छी और आत्मा-हितकर होती है। मूर्तिपूजक देवता आत्मा के लिए दुष्ट और हानिकारक हैं, इसलिए उनकी पूजा निषिद्ध है। इसी प्रकार उनकी प्रतिमाएँ भी आत्मा के लिए दुष्ट और हानिकारक हैं, और ईश्वर का विधान उनकी पूजा को मना करता है। पवित्र हैं हमारे प्रभु परमेश्वर यीशु मसीह; पवित्र हैं उनके सेवक, और वे हमारी आत्माओं के लाभ के लिए हमारे लिए बहुत सेवा करते हैं, जैसा कि दाऊद ने कहा: *'हे परमेश्वर, तेरे मित्र मेरे बहुत प्रिय थे'* (भजन संहिता 138:17)। इसलिए, प्रभु और उनके सम्माननीय मित्रों—जिनसे प्रभु ने कहा, *'तुम मेरे मित्र हो'* (यूहन्ना 15:14)—की प्रतिमाएँ पवित्र और आत्मा के लिए लाभदायक हैं, और हमें उनका सम्मान करना चाहिए, यह जानते हुए कि प्रतिमाओं पर दिया गया सम्मान उनमें चित्रित व्यक्ति पर स्थानांतरित हो जाता है। अधर्मी सम्राट कोप्रोन्यमस, यह समझने में असफल होकर, ने अपने राज्य के सभी क्षेत्रों में एक फरमान जारी किया कि सभी प्रतिमाओं को प्रभु के गिरिजाघरों से बाहर फेंक दिया जाए और कोई भी उन्हें अपने घरों में रखने की हिम्मत न करे। ऐसा करते हुए, उसने अपने आदेश की अवज्ञा करने वालों सभी के लिए भयानक यातनाओं और मृत्यु की धमकी दी; और तब परमेश्वर की कलीसिया में महान शोक, दुख और विलाप हुआ[7204] । कई विश्वासी, राजा की भयानक धमकी से डरकर, भाग गए और छिप गए: शहर सुनसान हो गए, लोग रेगिस्तान में बिखर गए, और जो बचे रहे, उनमें से कुछ ने राजा की आज्ञा मानी और प्रतिमाओं की पूजा करना बंद कर दिया, जबकि अन्य, पवित्र पिताओं की परंपरा पर अडिग रहते हुए, निडर होकर प्रतिमा-भंजकों का विरोध करते रहे और ऐसा करने के लिए उन्हें विभिन्न यातनाओं का सामना करना पड़ा। तब सभी कारागार, कालकोठरियाँ और गहरी खाइयाँ डाकुओं, चोरों या किसी अन्य दुष्ट व्यक्ति से नहीं, बल्कि बिशपों, पुरोहितों, भिक्षुओं और अन्य धर्मनिष्ठ लोगों से भर गईं।

उस समय, क्रीट द्वीप पर, एंड्रयू नाम का एक धार्मिक और ईश्वर-भयभीत व्यक्ति था; उसने संसार और उसकी महिमा का त्याग कर दिया था और सभी सांसारिक सुखों को तुच्छ समझा था: अपना क्रूस उठाकर, वह स्वर्ग की ओर ले जाने वाले संकीर्ण मार्ग पर चला, और अपने साथ कई लोगों को उसी ईश्वर-प्रसन्न जीवन की ओर ले गया। यह सुनकर कि कॉन्स्टेंटिनोपल में, एक नए विधर्मी, ईश्वर-निन्दा करने वाले, मूर्ति-विरोधी सिद्धांत के लिए, कानून-विहीन कोप्रोनिमस कई संतों को बेड़ियों में जकड़े हुए था, एंड्रयू विश्वास के प्रति उत्साह और मसीह के प्रति प्रेम से भर गया और कॉन्स्टेंटिनोपल के लिए रवाना हो गया। वहाँ, बिना किसी भय के, अपार साहस के साथ, उन्होंने लोगों को खुलेआम सिखाया कि वे सम्राट के शब्दों या विधर्मी शिक्षाओं से धोखा न खाएं; और उन्होंने उन लोगों को मजबूत किया जो विश्वास में दृढ़ थे, उन्हें सच्चे विश्वास की स्वीकारोक्ति और कष्टों में धैर्य रखने के लिए प्रोत्साहित किया।

जब एंड्रयू ने देखा कि मूर्तिभंजकों ने सम्राट के आदेश पर पवित्र प्रतिमाओं की पूजा करने वालों को दंडित करना शुरू कर दिया था—कुछ को क्रूरता से कोड़ों से पीटकर, दूसरों को आग से जलाकर, कुछ की आँखें निकालकर या जीभ काटकर, और कुछ के हाथ-पैर काटकर—तो वह और अधिक सहन नहीं कर सका। एंड्रयू तुरंत पवित्र शहीद मामंत के चर्च में गया, जहाँ उस समय ज़ार अपने कई सम्मानित लोगों के साथ मौजूद था। वहाँ इकट्ठी भीड़ में से रास्ता बनाते हुए, वह ज़ार के सामने साहसपूर्वक खड़ा हो गया और ऊँचे स्वर में चिल्लाया:

'हे राजा, आप खुद को एक ईसाई और मसीह का सेवक क्यों कहते हैं, जबकि आप मसीह की प्रतिमाओं को रौंदते हैं और उनके सेवकों पर इतना अत्याचार करते हैं?'

[7204] सम्राट कॉन्स्टेंटिन कॉप्रोन्यमस (741–775) का लंबा शासनकाल एक ऐसा समय था जब यूनानी चर्च के भीतर मूर्तिभंजनवाद अपने विकास और प्रभाव के चरम पर पहुँच गया था। सम्राट कॉन्स्टेंटिन कॉप्रोन्यमस स्वयं एक कट्टर मूर्तिभंजक थे। उनके पिता, लियो द इसाउरियन (716–741) द्वारा स्थापित उदाहरण और सख्त मूर्तिभंजन सिद्धांतों के अनुसार उनका पालन-पोषण उन्हें मूर्ति पूजा का एक निर्दयी शत्रु बना गया। उत्साही मूर्ति-पूजकों को विदेश भागने – विशेष रूप से रोम – या एकांत स्थानों में छिपने के लिए मजबूर होना पड़ा। सम्राट के उपायों और फरमानों के सबसे साहसी, दृढ़ और बहादुर विरोधी भिक्षु थे, जिन्होंने खुद को ऑर्थोडॉक्सी (सही आस्था) के निडर रक्षक के रूप में साबित किया। उस समय भिक्षुओं के उत्साह ने ईसाई समाज के मन पर एक शक्तिशाली प्रभाव डाला। भिक्षुओं के उत्पीड़न में क्रूरता की सीमा, उन्हें दी गई मृत्युदंडों से स्पष्ट होती है। उस समय के एक चर्च इतिहासकार, निकिफोरोस के अनुसार, ऐसा हुआ कि भिक्षुओं के सिर उन्हीं प्रतिमाओं से टकराकर कुचल दिए गए, जिनकी रक्षा के लिए वे आगे आए थे। और आम लोगों में, जो ऑर्थोडॉक्सी की घोषणा करने में अधिक साहसी थे, उन्हें भी कोप्रोनिमस के शासनकाल में काफी उत्पीड़न का सामना करना पड़ा। वास्तव में, कोप्रोनिमस के अधीन ऑर्थोडॉक्स का उत्पीड़न इतना कठोर था कि यह मूर्तिपूजक सम्राटों द्वारा ईसाइयों के सबसे क्रूर उत्पीड़न - डायोक्लेटियन के उत्पीड़न - जैसा था।

एंड्रयू अपनी बात जारी रखने ही वाला था, लेकिन राजा ने उसे पकड़ने का आदेश दिया। तुरंत, नौकर एंड्रयू पर टूट पड़े; कुछ ने उसके सिर को, कुछ ने उसकी बाहों को, और कुछ ने उसके कंधों और कपड़ों को पकड़ लिया; एंड्रयू को जमीन पर पटकने के बाद, उन्होंने उसे पीटना, जमीन पर घसीटना और पैरों तले रौंदना शुरू कर दिया। अपनी दया दिखाने के लिए, ज़ार ने उन्हें आंद्रेई को पीटना बंद करने का आदेश दिया और चर्च से बाहर निकलकर, उसे अपने पास बुलाया और खुद उससे बात करने लगा:

उसने कहा, 'तुम्हें यहाँ आकर मेरे सामने मेरी बुराई करने की हिम्मत कहाँ से आई? क्या यह पागलपन के कारण है, या किसी छिपे हुए मकसद से? या यह सिर्फ़ मुझसे अपना परिचय कराने के लिए है?'

एंड्रयू ने उत्तर दिया:

'मैं यह पागलपन में नहीं कर रहा हूँ, न ही किसी छिपे हुए इरादे से, और न ही इसलिए कि मैं आपसे व्यर्थ की महिमा चाहता हूँ; क्योंकि मैं इस संसार में आपके पास जो कुछ भी है, उसे एक सपने के समान तुच्छ समझता हूँ और उसे धुआँ मानता हूँ। लेकिन मैंने आपके दुष्ट उपदेश के बारे में सुना है, जिसके द्वारा आप पवित्र प्रतिमाओं का अपमान करते हैं और परमेश्वर की पवित्र कलीसिया को सताते हैं। इसलिए, *'तेरे भवन का उत्साह मुझे भस्म कर देता है'* (भजन संहिता 68:10), और मैं यहाँ दूर से आया हूँ, या तो तुम्हें मनाने के लिए या स्वयं अपने मसीह के लिए मरने के लिए। यदि वह—मेरा प्रभु—मेरे लिए मरा, तो क्या मुझे, उसकी प्रतिमा होने के नाते, उसकी प्रतिमा के लिए नहीं मरना चाहिए?

राजा ने उत्तर में एंड्रयू से कहा:

'यह कितनी पागलपन और मूर्खता है कि अमर ईश्वर को लकड़ी, रंग और पत्थर के माध्यम से महिमा दी जाए, और उस आज्ञा की अवहेलना की जाए जो ईश्वर ने मूसा को दी थी—कि किसी भी समानता को न बनाया जाए! तुम्हारे भीतर यह पागलपन कहाँ से आता है, कि तुम इतने स्पष्ट सत्य का विरोध करते हो और खुद को विनाश के हवाले कर देते हो? मेरा विश्वास करो, मैं तुम्हें सत्य के लिए या मसीह के लिए नहीं, बल्कि तुम्हारी निर्लज्ज धृष्टता और अवज्ञा के कारण यातना दूँगा।

एंड्रयू ऐसी धर्मनिंदा सहन नहीं कर सके और कहा:

'हे दुष्ट मनुष्य! क्या जो मसीह की प्रतिमाओं के लिए दुख सहता है, वह मसीह स्वयं के लिए दुख नहीं सहता? क्या जो अपमान तुम एक प्रतिमा पर करते हो, वह उस पर नहीं पड़ता जिसने उस प्रतिमा का रूप धारण किया है? तो फिर, तुम उन लोगों को क्रूरता से क्यों मार डालते हो जो तुम्हारी प्रतिमाओं और मूर्तियों का अपमान करते हैं और उन्हें उलट देते हैं? तुम आज मिट्टी मात्र हो, और कल तुम मिट जाओगे; फिर भी तुम अपनी मूर्तियों के माध्यम से सम्मानित होना चाहते हो। तो फिर, मसीह की प्रतिमा का अपमान करने का पाप कितना बड़ा है, क्योंकि मसीह की किसी प्रतिमा का अपमान स्वयं मसीह का अपमान है, जिनका स्वरूप उस प्रतिमा पर अंकित है।

तब संत एंड्रयू यह समझाने ही वाले थे कि किसि मूर्ति की स्थापना के लिए परमेश्वर ने मूसा के द्वारा देवताओं के स्थान पर आज्ञा दी थी, लेकिन राजा ने उन्हें आगे बोलने नहीं दिया, और कहा:

'यदि राजा केवल अपनी ही मूर्तियों से क्रोधित हो जाते हैं, तो वे तब और भी अधिक क्रोधित हो जाते हैं जब उनके सामने ही उनका अपमान किया जाता है।'

और तुरंत उसने संत को निर्वस्त्र करके बेरहमी से पीटने का आदेश दिया। लेकिन संत ने बहादुरी से सभी यातनाओं को सहन किया; फिर राजा ने चापलूसी से एंड्रयू को अपनी दुष्ट आज्ञा का पालन करने के लिए मनाना शुरू किया। हालांकि, संत एंड्रयू ने स्वर्ग की ओर अपनी आँखें उठाकर कहा:

'ईश्वर न करे कि मैं अपने मसीह का उनके पवित्र प्रतिमाचित्र में त्याग करूँ; हे राजा, मसीह और उनके सेवकों को सताने के बजाय तुम्हारे लिए बेहतर होगा कि तुम सैन्य मामलों पर ध्यान दो और लोगों का शासन करो।'

तब राजा ने एंड्रयू को एक बार फिर बुरी तरह पीटने का आदेश दिया, यहाँ तक कि जमीन भी उसके खून से लथपथ हो गई। वहाँ मौजूद कुछ लोगों ने, राजा को खुश करने के लिए, एंड्रयू पर पत्थर फेंकना शुरू कर दिया, जिससे उसके होंठ फट गए और पसलियाँ दब गईं। अंत में, बहुत यातनाओं के बाद, संत को जेल में डाल दिया गया, जहाँ कुछ समय तक रहने के बाद, उन्होंने उनके पास आने वाले विश्वासियों के विश्वास को मजबूत किया। इसके बाद, राजा ने एंड्रयू को फिर से जेल से बाहर लाने और उनके पुराने घावों को फिर से खोलते हुए उन्हें फिर से यातना देने का आदेश दिया; इस यातना के दौरान, संत का शरीर टूटने और बिखरने लगा। अंत में, संत के पैरों में रस्सी बाँधकर, वे उन्हें शहर के बीचों-बीच जमीन पर घसीटते हुए उस स्थान पर ले गए जहाँ दुष्टों को मृत्युदंड दिया जाता है, और वहाँ यातना देने वाले ने संत एंड्रयू को मृत्युदंड

देने का आदेश दिया। जब उन्हें बाज़ार की चौक से होते हुए वहाँ घसीटा जा रहा था, तो विधर्मियों में से एक - एक मछुआरे ने - संत की पीड़ा का कारण जानकर, और एक राक्षस के वश में होकर, एक चाकू उठा लिया और शहीद की टांग पर वार कर दिया: इस प्रकार उसने एंड्रयू की दीर्घकालीन पीड़ा भरी यात्रा को समाप्त कर दिया, क्योंकि शहीद उस घाव से तुरंत ही मर गए जो उन पर लगाया गया था[7205] ।

संत एंड्रयू के शरीर को दुष्टों के शवों के साथ खाई में फेंक दिया गया और वह वहाँ 12 सप्ताह से अधिक समय तक पड़ा रहा। ईश्वर की आज्ञा से, अशुद्ध आत्माओं से ग्रस्त लोग विभिन्न देशों से वहाँ आने लगे: उन्होंने खड्डे से, लाशों के बीच से, संत एंड्रयू का शरीर निकाला और उसे एक पवित्र स्थान पर रख दिया; और तुरंत ही, इसके उचित पुरस्कार के रूप में, वे चंगे हो गए। संत की प्रार्थनाओं के द्वारा, उनके मकबरे पर, कई पीड़ितों को चंगा किया गया, क्योंकि संत एंड्रयू में परमेश्वर के सामने साहस है और वे हम सभी के लिए प्रार्थना करते हैं, हमेशा के लिए प्रभु के सिंहासन के सामने संतों के साथ खड़े होकर। आमीन।

ट्रोपारियन, स्वर 4:

हे सर्वधन्य, पर्वत पर तपस्या करके,[7206] ने, आप ने क्रूस के पूर्ण कवच से शत्रु की सेनाओं का नाश किया। फिर, आपने साहसपूर्वक दुख सहने का भार उठाया, और विश्वास की तलवार से कोप्रोन्यमस को मार गिराया; और इन दोनों कर्मों के लिए परमेश्वर द्वारा आपको मुकुट प्रदान किया गया, हे सदा-स्मरणीय पवित्र शहीद एंड्रयू।

कॉन्टाकियन, स्वर 8:

[7207]हम वीरता के नामधारी, संत एंड्रयू, को धन्यवाद देते हैं, और आपके प्रति प्रेम से, हे ईश्वर-धन्य, हम धार्मिकता के रहस्य-वक्ता के लिए स्तुति-गीत गाते हैं; परन्तु प्रभु के सामने साहस प्राप्त करके, हमें हर बुराई से बचाइए, ताकि हम गा सकें: आनन्दित हो, हे सदा-स्मरणीय पिता।

पवित्र भविष्यवक्ता होशेया की स्मृति

17 अक्टूबर की स्मृति

पवित्र पैगंबर होशे, बेरी के पुत्र, इस्साखार कुल के थे[7208] । उस समय, इज़राइल के कई लोग सच्चे ईश्वर से मुंह मोड़ चुके थे और उनकी कृपा और चमत्कारों को भूलकर मूर्तियों की पूजा कर रहे थे। लेकिन होशे, एक ईश्वर-भयभीत व्यक्ति होने के नाते, एकमात्र सच्चे ईश्वर की सेवा करते थे, जिन्होंने स्वर्ग और पृथ्वी की रचना की और यहूदियों को मिस्र से एक शक्तिशाली हाथ से बाहर निकाला। होशे ने उन लोगों को जो सत्य से भटक गए थे, उपदेश दिया और अपनी बुद्धिमानी भरी शिक्षाओं के माध्यम से उन्हें उनके पूर्वजों की धार्मिकता की ओर वापस लाया।

पवित्र आत्मा से प्रेरित होकर, होशे ने इस्राएल के लोगों के विषय में बहुत भविष्यवाणी की। इज़राइल के राज्य के अधर्मी निवासियों की निंदा करते हुए, उन्होंने उनके शत्रुओं द्वारा उन पर आने वाली बड़ी विपत्तियों, अस्सyrian कैद

[7205] संत एंड्रयू का 767 में निधन हो गया; सौ साल बाद, संत जोसेफ द हाइमनोग्राफर ने उनके सम्मान में एक कैनन रचा (17 अक्टूबर के मेनयिन देखें)।

[7206] यह, बेशक, क्रीट द्वीप को संदर्भित करता है, जो पहाड़ों से भरपूर है और जिसकी विशेषता ऊँची, और कुछ जगहों पर अभेद्य, तटरेखाएँ हैं।

[7207] अर्थात्, 'साहस' का पर्यायवाची या समतुल्य। यूनानी से अनुवादित एंड्रयू नाम का अर्थ है 'साहसी'।

[7208] नबी होशेया इस्राएल के राज्य में रहते थे और उन्होंने यहूदा के राजा होशेया, योथाम, आहाज और हिजकियाह के दिनों में तथा इस्राएल के राजा यरोबाम द्वितीय के दिनों में भविष्यवाणी की (होशे. 1:1)। तथाकथित लघु भविष्यवक्ताओं में, उनके समकालीन मीका और आमोस थे; महा भविष्यवक्ताओं में, यशायाह। संत एफ्रेम सीरियाई, डोरोथियस और एपिफानियस की शिक्षाओं के अनुसार, भविष्यवक्ता होशेया इसाखार के कुल के एक शहर बील-मोफ के मूल निवासी थे।

में उनके नर्विासन, और बाद में परमेश्वर के पास उनके लौटने की भवष्यिवाणी की ([7209])। उन्होंने पृथ्वी पर परमेश्वर के सच्चे ज्ञान के प्रसार की भवष्यिवाणी की (होशे 2:20। तुलना करें यर्मि. 31:34), हारून के याजकत्व और पुराने नयिम की बलदिानों का अंत (होशे 3:5), साथ ही शशिु यीशु की मस्रि से वापसी[7210] , तीसरे दनि उनका पुनरुत्थान[7211] , और मृत्यु पर उनकी वजिय[7212] । इन सभी भवष्यिवाणयिों को होशे ने अपनी पुस्तक में दर्ज कयिा था, जो 14 अध्यायों से मलिकर बनी है। चूंकि ये पवत्रि आत्मा के द्वारा बोली गई थीं, इसलिए ये सभी भवष्यिवाणयिाँ पवत्रि शास्त्र की अन्य दव्यि प्रेरति पुस्तकों में गनिे जाते हैं।

नबी होशेया कई वर्षों तक जीवति रहे[7213] और मसीह के जन्म से 820 वर्ष पूर्व, बहुत वृद्धावस्था में नधिन कर गए, और अपने ही देश में शांतपिूर्वक दफनाए गए।

संत कोस्मास और डेमयिन, अनापायकों की शहादत

17 अक्टूबर को स्मरण कयिा जाता है

कोस्मास और डेमयिन नामक तीन जोड़े पवत्रि नश्शिुल्क चकित्सिक थे। एक जोड़ा एक मूर्तपिूजक पति और थयिोडोटा नाम की एक धर्मनष्ठि ईसाई माँ के घर हुआ था; वे शांतपिूर्वक[7214] नधिन कर गए और फेरमान नामक स्थान पर दफनाए गए[7215] । अन्य रोम में रहते थे और उनके ईर्ष्यालु शकि्षक द्वारा मारे गए, जसिने उन्हें औषधीय जड़ी-बूटयिाँ इकट्ठा करने के बहाने एक पहाड़ पर चढ़ने के लिए धोखा दयिा, और वहाँ उन्हें पत्थर मारकर हत्या कर दी[7216] । तीसरा समूह, जसिकी स्मृति का अब स्मरण कयिा जा रहा है, अरब का मूल नविासी था। मसीह में वश्विास करने के बाद, उन्होंने अनगनित बीमार लोगों को नःशुल्क चंगा करना शुरू कर दयिा, न तो कसिी जड़ी-बूटी या अन्य औषधीय उपचारों के माध्यम से, जैसा कि कुशल चकित्सिक करते हैं, बल्कि मसीह की शक्ति से; क्योंकि जब वे शहरों और गांवों में यात्रा करते थे, तो वे मसीह का प्रचार करते थे और, उनके नाम पर, सभी पीड़तिों को चंगा करते थे।

जब वे अपनी शकि्षा और चमत्कारों के लिए हर जगह प्रसद्धि हो गए, तो उन्हें राज्यपाल द्वारा गरिफ्तार कर लयिा गया; यह दुष्ट राजाओं डायोक्लेटयिन और मैक्समियिन के शासनकाल के दौरान हुआ, जो ईसाइयों के उत्पीड़क

[7209] होशे की भवष्यिवाणयिों में शामलि हैं: 1) समकालीन दुष्टता, मूर्तपिूजा और नैतकि पतन की नदिा, साथ ही यहूदयिों द्वारा उनकी ताकत की उम्मीद में मूर्तपिूजक राष्ट्रों के साथ कए गए गठबंधनों की नदिा, और पश्चाताप तथा सुधार का आह्वान; 2) अस्सyrian कैद की धमकयिाँ; 3) बंदी से मुक्ति और मसीह के राज्य के आगमन की भवष्यिवाणी के माध्यम से सांत्वना, जसिे लोगों की शशिु जैसी अवस्था के अनुरूप, सांसारकि वैभव के रूप में चत्रिति कयिा गया है।

[7210] मसीहा के मस्रि से लौटने की भवष्यिवाणी होशे की पुस्तक के अध्याय 11 में पाई जाती है। यहूदयिों के प्रति अपनी दया का उल्लेख करते हुए, प्रभु कहते हैं: *'मैंने मस्रि से अपने पुत्र को बुलाया'* (होशे 11:1)। यह ठीक यही अंश है जसिका संदर्भ सुसमाचार लेखक मत्ती देते हैं जब वे कहते हैं: *'ताकि भवष्यिवक्ता के द्वारा प्रभु का यह वचन पूरा हो, जो कहता है, "मैंने मस्रि से अपने पुत्र को बुलाया"* (मत्ती 2:16)। जसि प्रकार संपूर्ण यहूदी लोग मसीहा की पूर्वसूचना थे, उसी प्रकार लोगों के जीवन की वशिष्टि घटनाओं का भी एक पूर्वसूचक 'मसीही' महत्व था। याकूब के समय में अकाल से बचने के लिए यहूदी मस्रि में बस गए। जब यह खतरा टल गया, तो परमेश्वर ने उन्हें मस्रि से बाहर नकिालकर फलिस्तीन में उनके भाग्य को पूरा कयिा। इसी तरह, मसीहा, यानी मसीह, ईश्वर के आदेश से हेरोद की दुर्भावना से बचने के लिए मस्रि चले गए। जब खतरा टल गया, यानी हेरोद की मृत्यु के बाद, तो ईश्वर ने मसीहा को मस्रि से पलेस्टाइन बुलाया ताकि वे वहाँ अपना भाग्य पूरा कर सकें।

[7211] तीसरे दनि मसीह के पुनरुत्थान के बारे में भवष्यिवाणी होशे 6:2 में पाई जाती है। अपने प्रथम पत्र में, प्रेरति पौलुस इस भवष्यिवाणी को जी उठे मसीह पर लागू करते हैं, जब वे कहते हैं कि मसीह *'पवत्रिशास्त्र के अनुसार तीसरे दनि मरे हुओं में से जी उठे'* (1 कुरन्थियों 15:4)।

[7212] अध्याय 13 की आयत 14 में, भवष्यिवक्ता होशे (प्रश्न के रूप में) यह वचिार व्यक्त करते हैं कि परमेश्वर के सामने नरक शक्तहिीन है: *'मैं उन्हें नरक की शक्ति से छुड़ा लूंगा; मैं उन्हें मृत्यु से छुटकारा दलिाऊंगा। हे मृत्यु! हे पाताल, तुम्हारा डंक कहाँ है? हे पाताल, तुम्हारी वजिय कहाँ है?"* प्रेरति पौलुस कहते हैं: *"जब यह नाशवान शरीर अवनिाशी से और यह मर्त्य शरीर अमरत्व से आच्छादति हो जाएगा, तब जो वचन लखिा है वह पूरा होगा: 'मृत्यु वजिय में नगिल ली गई है।' हे मृत्यु! तुम्हारा डंक कहाँ है? अधोलोक! तुम्हारी वजिय कहाँ है?'* (1 कुरन्थियों 15:54-55)। इस प्रकार, प्रेरति इस भवष्यिवाणी की पूर्ति का श्रेय मृतकों के सामान्य पुनरुत्थान के दनि मृत्यु पर अंतमि वजिय को देते हैं।

[7213] होशे की भवष्यिद्वाणी की सेवकाई 60 से अधकि वर्षों तक चली।

[7214] उनका स्मरणोत्सव 1 नवंबर को मनाया जाता है

[7215] फेरेमन एशयिा में स्थति था, जो अमदिा (तुर्की में, दयिारबाकरि) से दो दनि की यात्रा पर था, और तुर्कों ने अपनी शुरुआती वजियों के दौरान इसे नष्ट कर दयिा था।

[7216] उन्होंने 284 ईस्वी में सम्राट कैरनिस के अधीन शहादत प्राप्त की; उनकी स्मृति 1 जुलाई को मनाई जाती है

और यातना देने वाले थे। सलिसिया शहर में लाए जाने के बाद, ये पवित्र चिकित्सक, कोस्मास और डैमियन, राज्यपाल लाइसियस के सामने उपस्थित हुए। उसने उनके नाम, उनके वतन और उनके धर्म के बारे में उनसे पूछना शुरू किया; इसके बाद, उसने उन्हें मूर्तियों को बलिदान चढ़ाने के लिए मजबूर किया। लेकिन चूंकि संतों ने ऐसा करने से इनकार कर दिया और निडर होकर मसीह का प्रचार किया, तो राज्यपाल ने पहले तो उन्हें निर्दयता और अमानवीय रूप से कोड़ों से पिटवाया, और फिर, उन्हें बांधकर समुद्र की गहराई में फेंक दिया; लेकिन संत, ईश्वर की शक्ति से, डूबने से बच गए, क्योंकि प्रभु के स्वर्गदूत ने उनके बंधन खोल दिए और उन्हें सुरक्षित रूप से किनारे पर ले आए। यह देखकर राज्यपाल ने उन्हें अपने सामने लाने का आदेश दिया और पूछा:

'मुझे बताओ, तुम किस जादू से समुद्र से बच निकले? क्योंकि मैं भी तुम्हारी शिक्षा का अनुयायी बनना चाहता हूँ।'

उन्होंने उत्तर दिया:

'हम ईसाई किसी जादू-टोने को नहीं जानते और न ही हमें इसकी कोई आवश्यकता है: हमारे पास मसीह की शक्ति है, जो हमें हर विपत्ति से बचाती है और हर उस व्यक्ति को बचाती है जो मसीह के परम पवित्र नाम का आह्वान करता है।'

इसके बाद, संतों को जेल ले जाया गया। अगले दिन उन्हें वहाँ से बाहर लाया गया, और यातना देने वाले ने उन्हें आग में फेंकने का आदेश दिया; लेकिन आग में भी वे सुरक्षित रहे, क्योंकि आग ने अपनी प्राकृतिक शक्ति खो दी, उन्हें छुआ नहीं, और न ही उन्हें कोई नुकसान पहुँचाया। इस पर अत्यधिक आश्चर्यचकित होकर, राज्यपाल ने पवित्र चिकित्सकों को फाँसी देने और निर्दयता से यातना देने का आदेश दिया। तब, यातना देने वाले के आदेश पर, नौकरों ने संतों को मारने के लिए उन पर पत्थर फेंकना शुरू कर दिया, लेकिन पत्थर उनके शरीरों से दीवार की तरह टकराकर उछल गए और उन्हें फेंकने वालों को ही लगे, जिससे वे मर गए।

इसके बाद, उन्होंने संतों पर तीर चलाना शुरू कर दिया, लेकिन तीर भी, पत्थरों की तरह ही, उनके शरीर को कोई नुकसान नहीं पहुँचा पाए और तीरंदाजों को ही घायल कर दिया। अंत में, राज्यपाल ने जब देखा कि शहीद अजेय थे, तो उसने उन्हें तलवार से सिर कलम करने की सज़ा सुनाई। और इस प्रकार पवित्र निस्वार्थ चिकित्सक कोस्मास और डैमियन को उनके तीन भाइयों—लियोन्टियस, एम्फिमिस और यूट्रोपियस[7217] —के साथ मसीह के लिए सिर कलम किया गया; सभी को एक साथ दफनाया गया। न केवल अपने जीवनकाल में, बल्कि उनकी मृत्यु के बाद भी, उन्हें कई चमत्कार करने का वरदान मिला, वे बीमारों के सामने प्रकट होते और उन्हें स्वास्थ्य प्रदान करते थे। उनकी प्रार्थनाओं के माध्यम से, हम भी मसीह से अपनी आध्यात्मिक और शारीरिक बीमारियों के लिए स्वास्थ्य प्राप्त करें। आमीन।

धर्मनिष्ठ संत लाजरस, चार दिन पुराने की स्मृति

17 अक्टूबर को स्मरणोत्सव

संत लाजरस धर्मात्मा, मार्था और मरियम के भाई, अपनी बहनों के साथ यरूशलेम से बहुत दूर नहीं, बेथनी गाँव में रहते थे। लाजरस और उसकी बहनें प्रभु यीशु मसीह की विशेष कृपा के पात्र थे (यूहन्ना 11:3)। अपने पृथ्वी पर जीवन के दौरान, प्रभु अक्सर बेथनी में उनके घर आते थे; उन्होंने लाजरुस को अपना मित्र कहा (यूहन्ना 11:11), और अपने दुख-संकट से ठीक पहले, उन्होंने लाजरुस को मृतकों में से जिलाया, जबकि वह पहले ही चार दिन से कब्र में था ([7218])। इस घटना के बाद, पवित्र शास्त्र में लाजरुस का उल्लेख केवल एक और बार मिलता है, वह भी तब जब फसह से छह दिन पहले, प्रभु फिर से बेथनी आए, जहाँ पुनर्जीवित लाजरुस भी उपस्थित थे (यूहन्ना 12:1-2)। जब प्रभु बैतनिया में थे, तो कई यहूदियों को पता चला कि वह वहाँ हैं, और वे न केवल यीशु मसीह के लिए, बल्कि लाजरुस को देखने भी आए, जिसे उन्होंने मृतकों में से जिलाया था। उनमें से कई प्रभु द्वारा किए गए चमत्कार की सच्चाई से आश्वस्त हो गए, उन पर

[7217] उनकी स्मृति भी उसी दिन, 17 अक्टूबर को मनाई जाती है।

[7218] यूहन्ना 11:17–44। चर्च महा-उपवास के छठे सप्ताह के शनिवार (लज़ारस शनिवार) को लज़ारस के पुनरुत्थान का स्मरणोत्सव मनाती है। यह चमत्कार प्रभु यीशु मसीह के महानतम चमत्कारों में से एक था: इसने उनकी दिव्य सर्वशक्तिमत्ता और मृत्यु पर उनके प्रभुत्व की सबसे स्पष्ट गवाही दी, साथ ही यह हमारे सामान्य पुनरुत्थान का एक जीवित संकेत और प्रभु के अपने पुनरुत्थान की पूर्वसूचना भी था।

वशि्वास करने लगे और उनके अनुयायी बन गए। यह देखकर, मुख्य याजकों ने तुरंत लाजरुस को भी मार डालने का नशि्चय कयिा (यूहन्ना 12:9-11)। सुसमाचार से हमें लाजरुस के बारे में और कुछ नहीं पता चलता।

परंपरा के अनुसार, लाजरुस अपने पुनरुत्थान के बाद और 30 साल तक जीवति रहे, उन्होंने साइप्रस द्वीप पर एक बशिप के रूप में सेवा की[7219] , जहाँ उन्होंने प्रेरतिों की तरह, ईसाई धर्म का प्रचार करने के लिए बहुत प्रयास कयिा, और वहीं शांतपिूर्वक नधिन हो गया। ईस्वी 9वीं शताब्दी में, धर्मी लाजरस के पवत्रि अवशेष कटिी शहर[7220] में पाए गए, जहाँ वे जमीन में एक संगमरमर के ताबूत में दबे हुए थे, जसि पर शब्द अंकति थे: 'चार दनिों का लाजरस, मसीह का मत्रि'। इस अनमोल खजाने को खोदकर नकिाला गया और एक चांदी के अवशेष-पात्र में रखा गया; बीजान्टनि सम्राट लयिो द वाइज़ के अधीन, इसे कॉन्स्टेंटनिोपल ले जाया गया और धर्मी लाजरस को समर्पति चर्च में स्थापति कयिा गया, जसिे सम्राट बेसलि द मेसेडोनयिन ने बनवाया था।

कटियिन के बशिप, चार दनि के लाजरस को ट्रॉपारयिन:

क्योंकि एक महान खजाना और धन-संपत्ति साइप्रस से हम तक बनिा चोरी हुए पहुँची है, लाजरस, ईश्वर की व्यवस्था द्वारा, धर्मनष्ठि राजा की आज्ञा से, जो आपको सम्मानति करते हैं उन्हें चंगा करने का वरदान प्रदान करते हुए, जो वशि्वास के साथ आपसे प्रार्थना करते हैं उन्हें दुर्भाग्य और हर हानि से बचाते हुए: हमें सभी को अपनी प्रार्थनाओं के द्वारा बचाइए, लाजरस, हमारे पति।

31 अक्टूबर

18 अक्टूबर (पुराने कैलेंडर के अनुसार)

आज के दनि, वृद्ध मारनिस की शहादत, जन्हिोंने तारसस नगर में डयिोक्लेशयिन के अधीन यातनाएँ सहन कीं।

संत लूकस प्रेरति और सुसमाचार प्रचारक का जीवन

18 अक्टूबर को स्मरण कयिा जाता है

संत लूक सुसमाचारकार का जन्म सीरयिाई शहर अंत्योखयिा में हुआ था। उनके माता-पति यहूदी नहीं थे: यह बात आंशकि रूप से स्वयं लूका नाम से ही स्पष्ट होती है, जो लैटनि शब्द ' ' ('लुकन')[7221] का संक्षप्ति रूप है, और वशिेष रूप से प्रेरति पौलुस के कुलुस्सयिों के नाम पत्र के एक अंश से, जहाँ संत पौलुस स्पष्ट रूप से लूका को *'खतना कराए हुए लोगों'* से, यानी यहूदयिों से, अलग करते हैं (कुलुस्सयिों 4:10–15)। हालांकि, अपने लेखन में लूका मूसा की व्यवस्था और यहूदी रीतिरिवाजों से पूरी तरह से परचिति हैं; इसलिए यह मानना तर्कसंगत है कि लूका ने मसीह में परविर्तति होने से पहले ही यहूदी धर्म को अपना लयिा था[7222] । इसके अलावा, अपने देश में, जो वज्ञिान और कला की फलती-फूलती स्थति के लिए प्रसद्धि था, लूका ने अपने मन को वभिन्नि वद्विवतापूर्ण ज्ञान से समृद्ध कयिा। पौलुस प्रेरति के कुलुस्सयिों के नाम

[7219] परंपरा के अनुसार, लाजरुस को बशिप के रूप में सेवा करते समय, परमेश्वर की माता द्वारा सम्मानति कयिा गया और उन्होंने उन्हें अपने अत्यंत पवत्रि हाथों से बना एक ओमोफोरीयॉन प्राप्त हुआ।

[7220] कटिी साइप्रस द्वीप के दक्षणिी तट पर, आज के लारनाका शहर के पास एक शहर है। यह नौ प्राचीन फनिशियिन शहरों में से एक है। इसी शहर के नाम पर यहूदयिों ने पूरे द्वीप का नाम 'खेतमि' रखा था। बाद में, साइप्रस के अन्य शहरों की तरह, इस पर भी यूनानयिों ने कब्जा कर लयिा।

[7221] यह नाम – 'लुकान' – लूका के सुसमाचार के लैटनि अनुवाद की कुछ प्राचीन पांडुलपियिों में मलिता है। नाम को इसी तरह छोटा करने का एक उदाहरण 'सीला' नाम में देखा जा सकता है, जो 'सलिुआन' से छोटा कयिा गया है (प्रेरतिों के काम 15:22; 2 कुरन्थियिों 1, आदि)।

[7222] यहूदी धर्म को अपनाने वाले मूर्तपिूजकों को 'द्वारपाल' कहा जाता था, जबकि उनमें से जो यहूदी धर्म के साथ-साथ खतना भी कराते थे, उन्हें 'धर्मी द्वारपाल' कहा जाता था। ऐसे प्रारंभकि चर्च में पाए गए: इथयिोपयिाई रानी कैंडस का पुंसluan, जसिे प्रेरति फलिपि ने बपतस्मिा दयिा था (प्रेरतिों के काम 8:27–40); ऐसे ही थे रोमन सेंटुरयिन कोर्नेलयिस (प्रेरतिों के काम 10:1-3); ऐसे ही थे सात डकिनों में से एक—नकिोलास, जो लूका की तरह ही अंफयिापोलीस के मूल नविासी थे (प्रेरतिों के काम 6:6)—और कई अन्य (मत्ती 23:15; प्रेरतिों के काम 2:10)।

पत्र से हम देखते हैं कि लूका ने चिकित्सा की कला का अध्ययन किया[7223] ; परंपरा, इसके अलावा, हमें यह भी आश्वासन देती है कि वह एक चित्रकार भी थे। इसके अलावा, इसमें कोई संदेह नहीं है कि उन्होंने सामान्य रूप से अच्छी शिक्षा प्राप्त की थी, क्योंकि उनके लेखन की ग्रीक भाषा अन्य नए नियम के लेखकों की भाषा की तुलना में कहीं अधिक शुद्ध और सही है।

जब प्रभु यीशु मसीह के चमत्कारों और शिक्षाओं की खबर गलील से पूरे सीरिया और आसपास के सभी क्षेत्रों में फैल गई, तो लूका अंतीयक से गलील आया, जहाँ प्रभु यीशु मसीह ने अपनी उद्धारकारी शिक्षा के बीज बोना शुरू किया था (मत्ती 4:24–26; लूका 4:37)। इन बीजों ने लूका के हृदय में उपजाऊ भूमि पाई और वहाँ सौ गुना की फसल दी। शीघ्र ही संत लूकस को मसीह के सत्तर प्रेरितों की पंक्ति में प्रवेश का सम्मान मिला और, प्रभु से शिक्षा के वचन और चमत्कार करने की शक्ति प्राप्त करने के बाद, उन्होंने प्रभु यीशु मसीह के 'सामने' चलना शुरू कर दिया, परमेश्वर के राज्य के आगमन का प्रचार करते हुए और उद्धारकर्ता मसीह के लिए मार्ग तैयार करते हुए[7224] ।

मुक्तिदाता के पृथ्वी पर जीवन के अंतिम दिनों में, जब चरवाहे की पराजय के बाद उनकी भेड़ें बिखर गई थीं, संत लूकस यरूशलेम में थे, और अपने प्रभु के लिए विलाप कर रहे थे और रो रहे थे, जिन्होंने स्वेच्छा से दुख सहन किया था। संभावना है कि उनके सूली पर चढ़ाए जाने के समय, लूकस, यीशु को जानने वाले अन्य लोगों के साथ, *'दूर खड़ा था'* और सूली पर चढ़ाए गए मसीह को दुख के साथ निहार रहा था (लूका 23:49)। लेकिन जल्द ही उनका दुख आनंद में बदल गया, क्योंकि जी उठे प्रभु ने, अपने पुनरुत्थान के ही दिन, लूकस को एक दर्शन और एक वार्तालाप देकर सांत्वना दी, जिसका वर्णन लूकस स्वयं अपनी सुसमाचार में बड़े विस्तार और जीवंतता के साथ करते हैं[7225] । अपने गुरु की मृत्यु पर शोक मनाते हुए और उनके पुनरुत्थान से हैरान—जिसके बारे में मुर्रा-वाहक महिलाओं ने उसे बताया था—लूका प्रभु के एक अन्य शिष्य, क्लेओपास, के साथ यरूशलेम से एम्माउस तक जा रहा था[7226] , और उस गाँव के रास्ते में उसे *'मार्ग, सत्य और जीवन'* का साथी बनने का सम्मान मिला[7227] । दोनों शिष्य एक-दूसरे से बात करते हुए चल रहे थे, जब स्वयं यीशु उनके पास आए और उनके साथ चलने लगे। सुसमाचार लेखक मरकुस के अनुसार, प्रभु उन्हें *'एक भिन्न रूप में'* (मरकुस 16:12) प्रकट हुए, न कि उस रूप में जिसमें उन्होंने उन्हें पहले जाना था। इसके अलावा, ईश्वर की विशेष व्यवस्था से, *'उनकी आँखों पर ऐसा पर्दा पड़ा* कि वे उन्हें पहचान न सके*'* (लूका 24:16), ताकि वे उस प्रभु को पहचान न सकें जो उनके सामने प्रकट हुए थे। उन्होंने सोचा कि यह उन तीर्थयात्रियों में से एक है जो पास के पर्व के लिए यरूशलेम गए थे, जो उनके साथ चल रहा था।

प्रभु ने उनसे पूछा, 'तुम चलते-चलते एक-दूसरे से किस विषय पर चर्चा कर रहे हो, और इतने उदास क्यों हो?'

इस पर क्लेओपास ने उत्तर दिया:

'क्या तुम ही यरूशलेम में आए हुए लोगों में से अकेले हो, जो नहीं जानते कि इन दिनों वहाँ क्या हुआ है?'

यीशु ने फिर पूछा, 'क्या हुआ?'

उन्होंने उत्तर दिया, 'नासरेथ का यीशु, जो एक भविष्यवक्ता था, परमेश्वर और सभी लोगों के सामने कर्म और वचन में सामर्थी था; कैसे हमारे मुख्य याजकों और शासकों ने उसे मृत्युदंड के लिए सौंप दिया और उसे सूली पर चढ़ा दिया।' शिष्यों ने कहना जारी रखा, "और हमें तो यह आशा थी कि वही इस्राएल का छुटकारा देने वाला है; परन्तु फिर भी, आज इस घटना को तीसरा दिन हो गया है। इसके अलावा, हमारी कुछ स्त्रियों ने हमें चकित कर दिया है: वे आज भोर-भोर

[7223] प्रेरित पौलुस स्पष्ट रूप से लूका को अपना 'प्रिय चिकित्सक' कहते हैं: *'प्रिय चिकित्सक लूका तुम्हें नमस्कार भेजता है,'* वे कहते हैं (कुलु. 4:14)।

[7224] लूका 10:1-24। – इस परंपरा का खंडन स्वयं लूका के शब्दों से नहीं होता, जिनमें वह स्वयं को प्रेरितों की संख्या से बाहर करता प्रतीत होता है – जो वचन के प्रत्यक्षदर्शी थे (लूका 1:2)। इन शब्दों के द्वारा, संत लूकस केवल यह कहना चाहते हैं कि वह बारह प्रेरितों के समूह से नहीं थे, जिन्होंने निश्चित रूप से मसीह की सेवकाई के दौरान उनके आगे चलने वाले प्रभु के सत्तर शिष्यों की तुलना में सुसमाचार की बहुत अधिक घटनाओं का साक्ष्य दिया।

[7225] लूका 24:13-32। यद्यपि लूका स्वयं अपनी सुसमाचार में अपना नाम नहीं लेते हैं, परन्तु उनके वृत्तांत का यही विवरण दिखाता है कि वे स्वयं ही वह अन्य शिष्य थे जिनका नाम उन्होंने नहीं लिया। चर्च की परंपरा भी इस बारे में बताती है। और चर्च की यात्रा पर निकलने वालों के लिए प्रार्थना में, हम पढ़ते हैं: 'हे उद्धारकर्ता, जो लूका और क्लेओपास के साथ एम्माऊस तक यात्रा पर गए, अब अपने उन सेवकों के पास उतर आओ जो यात्रा करना चाहते हैं।'

[7226] एम्माउस यरूशलेम से 60 स्टेडियम (लगभग 12 वर्स्ट) पश्चिम में स्थित एक गाँव है।

[7227] स्वयं मसीहा के वचन, यूहन्ना 14

ही कब्र पर गईं और उनका शरीर नहीं पाया; और, लौटकर उन्होंने बताया कि उन्होंने स्वर्गदूतों का दर्शन किया जिन्होंने कहा कि वह जीवित हैं। हमारी कुछ संख्या कब्र पर गई और उन्होंने पाया कि जैसा स्त्रियों ने कहा था, ठीक वैसा ही था, परन्तु उन्होंने उन्हें नहीं देखा। तब प्रभु ने उनसे कहा:

'हे मूर्खों, और भविष्यद्वक्ताओं की सब बातों को मानने में धीमी हृदयवालों! क्या मसीह को इन सब दुखों को सहना और अपनी महिमा में प्रवेश करना आवश्यक न था?'

और मूसा से आरंभ करके, प्रभु मसीह ने उन्हें सभी भविष्यद्वक्ताओं द्वारा सभी धर्मग्रंथों में उनके विषय में जो कहा गया था, वह समझाया।

इस प्रकार प्रभु से बातें करते हुए, शिष्य अनजाने में ही एमाउस के पास आ पहुँचे; और चूँकि वे उस बातचीत का आनंद ले रहे थे, और उनका साथी आगे बढ़ने के लिए उत्सुक प्रतीत हो रहा था, उन्होंने उनसे उनके साथ ठहरने का अनुरोध करना शुरू कर दिया।

उन्होंने उससे कहा, 'हमारे साथ ठहरो, क्योंकि दिन तो अब ढलने को है।'

और वह गाँव में प्रवेश करके उनके साथ एक घर में ठहरा। जब वह उनके साथ रात्रिभोज के लिए मेज़ पर बैठा,[7228] , तो उसने मेज़ से रोटी ली, धन्यवाद किया, उसे तोड़ा और उन्हें दिया। जैसे ही प्रभु ने यह किया, शिष्यों ने तुरंत उसे पहचान लिया। बहुत संभव है कि प्रभु ने यह काम पहले भी अपने शिष्यों की उपस्थिति में किया हो; इसके अलावा, हो सकता है कि उन्होंने उनके हाथों पर नाखूनों के घावों से उन्हें पहचान लिया हो। लेकिन उसी क्षण प्रभु उनके लिए अदृश्य हो गए, और उन्होंने एक-दूसरे से कहा:

'क्या हमारे हृदय मार्ग में हम से बात करते और हमें धर्मग्रंथों की व्याख्या करते समय आग नहीं भड़के?' (लूका 24:17–32)

प्रभु के अन्य शिष्यों के साथ अपनी खुशी साझा करने के लिए उत्सुक होकर, लूका और क्लेओपास तुरंत अपने भोजन से उठे और यरूशलेम के लिए रवाना हो गए। वहाँ उन्होंने प्रेरितों और अन्य शिष्यों को एक ही घर में इकट्ठा पाया, और, बेशक, उन्होंने तुरंत उन्हें यह घोषणा की कि मसीह जी उठे हैं, और उन्होंने उन्हें देखा था और उनसे बात की थी। अपनी ओर से, प्रेरितों ने उन्हें सांत्वना दी, यह कहते हुए कि प्रभु सचमुच जी उठे थे और सिमोन को दिखाई दिए थे। फिर लूका और क्लेओपास ने प्रेरितों को विस्तार से वह सब कुछ बताया जो उनके साथ रास्ते में हुआ था और कैसे उन्होंने भोजन टूटने पर प्रभु मसीह को पहचान लिया था। इस बातचीत के दौरान, जी उठे प्रभु स्वयं अचानक प्रेरितों के बीच प्रकट हुए, उन्होंने उन्हें अपना शान्ति-सलाम दिया, और उनके बेचैन दिलों को शांत किया। उन लोगों को आश्वस्त करने के लिए जो सोच रहे थे कि वे केवल अपने मृत शिक्षक की आत्मा देख रहे हैं, प्रभु ने उन्हें अपने हाथों और पैरों में कीलों के घाव दिखाए और कुछ भोजन खाया। यहाँ, सुसमाचार लेखक लूका को एक बार फिर से यह सौभाग्य प्राप्त हुआ कि उन्हें प्रभु से पुराने नियम के पवित्र धर्मग्रंथों में उनके बारे में कही गई हर बात की व्याख्या सुनने का अवसर मिला, और उन्हें धर्मग्रंथों को समझने का वरदान प्राप्त हुआ (लूका 24:18-49)।

प्रभु के स्वर्गारोहण के बाद, संत लूक अन्य प्रेरितों के साथ कुछ समय के लिए यरूशलेम में रहे, लेकिन फिर, परंपरा के अनुसार, वे अपने मूल देश, अंतीयक के लिए रवाना हो गए, जहाँ पहले से ही कई ईसाई थे। वहाँ जाते समय, वह उपदेश देते हुए सेबास्टे शहर से होकर गुज़रा[7229] , जहाँ संत यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले की अक्षय अवशेष रखी गई थीं। जब वह सेबास्टे से जा रहा था, तो संत लूकस उन्हें अपने साथ अपने देश ले जाना चाहता था, लेकिन स्थानीय ईसाइयों ने, जो प्रभु के अग्रदूत की भक्तिपूर्वक पूजा करते थे, लूकस को उनके पवित्र अवशेष ले जाने की अनुमति नहीं दी। तब संत लूक ने उनसे वह दाहिना हाथ लिया जिस पर मसीह ने एक बार जॉन से बपतिस्मा लेते समय अपना सिर झुकाया था। इस अनमोल खजाने के साथ, संत लूक अपने देश पहुँचे, जिससे अंकोई के ईसाइयों को बहुत खुशी हुई। वह वहाँ से तब ही निकले जब वे संत पौलुस प्रेरित के साथी और सहकर्मी बने, जो कुछ प्राचीन लेखकों के अनुसार, उनके रिश्तेदार भी थे। हालाँकि, यह संत पौलुस की दूसरी प्रेरितिक यात्रा के दौरान हुआ[7230] । उस समय, संत लूकस, प्रेरित पौलुस के साथ मिलकर, यूनान में प्रचार करने के लिए निकले और उन्हें मैसेडोनिया के शहर फिलिप्पी में चर्च की स्थापना और संगठन करने के लिए

[7228] प्राचीन यहूदी मेज पर नहीं बैठते थे, बल्कि लेटते थे

[7229] सेबास्टे – सामरिया की राजधानी।

[7230] यह प्रेरितिक यात्रा 52 से 55 ईस्वी तक चली।

पीछे छोड़ दिया गया; उस समय से, कई वर्षों तक, संत लूकस ने मैसेडोनिया में ईसाई धर्म का प्रसार करने के लिए परिश्रम किया[7231] ।

जब प्रेरित पौलुस, अपनी तीसरी प्रेरितिक यात्रा के अंत में, एक बार फिर फिलिप्पी गए, तो लूका, उनके अनुरोध पर और सभी विश्वासियों की पसंद से, फिलिस्तीन में गरीब ईसाइयों के लाभ के लिए दान इकट्ठा करने के लिए कोरिथ गए[7232] । दान एकत्र करने के बाद, संत लूक प्रेरित पौलुस के साथ फिलिस्तीन के लिए रवाना हुए, और रास्ते में उन्होंने द्वीपसमूह के द्वीपों, एशिया माइनर के तटों, फिनिसिया और यहूदिया में स्थित चर्चों का दौरा किया। जब प्रेरित पौलुस को फिलिस्तीन के शहर केसरिया में कैद किया गया था, तो संत लूकस उनके साथ रहे। उन्होंने प्रेरित पौलुस का साथ तब भी नहीं छोड़ा जब उन्हें सीज़र के सामने मुकदमे के लिए रोम भेजा गया था। प्रेरित पौलुस के साथ, उन्होंने समुद्री यात्रा की सभी कठिनाइयों को सहन किया, यहाँ तक कि अपने जीवन को खोने के खतरे का भी सामना किया[7233] ।

रोम पहुँचने पर, संत लूकस प्रेरित पौलुस के साथ ही रहे और मार्क, अरिस्तार्खुस और प्रेरित के कुछ अन्य साथियों के साथ मिलकर इस प्राचीन दुनिया की राजधानी में मसीह का प्रचार किया[7234] । रोम में ही संत लूकस ने अपना सुसमाचार और प्रेरितों के कामों की पुस्तक लिखी[7235] । सुसमाचार में, उन्होंने हमारे प्रभु यीशु मसीह के सांसारिक जीवन को न केवल उन बातों के आधार पर चित्रित किया जो उन्होंने स्वयं देखी और सुनी *थीं*, बल्कि *'जो आरंभ से ही साक्षी और वचन के सेवक थे'* उनसे प्राप्त सभी बातों को भी ध्यान में रखते हुए लिखा[7236] । पवित्र प्रेरित पौलुस ने इस कार्य में उनका मार्गदर्शन किया और बाद में संत लूकस द्वारा लिखी गई सुसमाचार को अनुमोदित किया। इसी प्रकार, कलीसियाई परंपरा के अनुसार, प्रेरित पौलुस के आदेश पर प्रेरितों के काम की पुस्तक लिखी गई थी[7237] ।

रोमन बेड़ियों में दो साल की कैद के बाद, प्रेरित पौलुस को रिहा कर दिया गया और रोम छोड़कर, उन्होंने उन कुछ चर्चों का दौरा किया जिन्हें उन्होंने पहले स्थापित किया था। संत लूकस भी इस यात्रा में उनके साथ थे। कुछ ही समय बाद, सम्राट नीरो ने रोम में ईसाइयों के खिलाफ एक भयंकर उत्पीड़न शुरू कर दिया। इस समय, प्रेरित पौलुस एक बार फिर

[7231] प्रेरितों के काम 20:6। – मैसेडोनिया ग्रीस के उत्तर में, इलिरिया, थ्रेस, एजियन सागर और हेमस पर्वत या बाल्कन के बीच स्थित था। कुछ समय के लिए यह एक स्वतंत्र राज्य था, जो महान राजा सिकंदर के अधीन विशेष महत्व और प्रसिद्धि प्राप्त कर गया; हालाँकि, यह उतनी ही तेजी से गिर गया जितनी तेजी से यह उभरा था। प्रेरितों के समय में, मैसेडोनिया रोमन साम्राज्य का हिस्सा था। अब यह तुर्की के शासन में है। – फिलिप्पी – एक मैसेडोनियाई सीमावर्ती शहर, जिसका नाम मैसेडोनियाई राजा फिलिप के सम्मान में रखा गया था, जिन्होंने इसे फिर से बनाया और किलाबंद किया था।

[7232] 'हमने उसके साथ अपने भाई (प्रेरित तीतुस) को भेजा है, जिसकी सुसमाचार के काम के लिए सभी मंडलीयों ने प्रशंसा की है, और जिसे मंडलीयों ने इस दान के काम में हमारे साथ भेजने के लिए चुना था, जो हम प्रभु की महिमा के लिए और आपकी लगन के अनुसार कर रहे हैं' (2 कुरिन्थियों 8:18-19)। प्राचीन टीकाकार 'भाई' शब्द को प्रेरित लूका के संदर्भ में समझते हैं। सेंट जॉन क्राइसोस्टोम यहाँ सेंट लूका के एक बिशप के रूप में अभिषेक (शब्द में अभिषिक्त) का एक संकेत देखते हैं - ग्रीक में 'करिोतोनिफिसि'।

[7233] इस लंबी यात्रा की कठिनाइयों का वर्णन पवित्र प्रेरित लूकस ने प्रेरितों के काम की पुस्तक के अध्याय 27 और 28 में किया है।

[7234] यह उस समय लिखे गए प्रेरित पौलुस के कुलुस्सियों और फिलेमोनों को लिखे पत्रों से स्पष्ट रूप से स्पष्ट है।

[7235] इस सुसमाचार और प्रेरितों के काम की पुस्तक (लूका 1:1–4; प्रेरितों के काम 1:1), जो सुसमाचार के बाद लिखा गया था और लगभग 63 ईस्वी में रोम में प्रकाशित हुआ था, यह स्वीकार किया जाना चाहिए कि दोनों पुस्तकों के लिखने में बहुत कम समय लगा, और यह कि सुसमाचार भी लगभग 61 या 62 ईस्वी में रोम में प्रकाशित हुआ था। इसकी पुष्टि कुछ पांडुलिपियों में पाए गए कोलोफॉन (लेखन समापन सूचना) से भी होती है। – संत लूका ने अपनी सुसमाचार और प्रेरितों के काम दोनों एक 'प्रतिष्ठित' थियोफिलस के लिए लिखीं (लूका 1:3; प्रेरितों के काम 1:1)। प्राचीन परंपरा एक विशिष्ट ईसाई – एंटिओक के थियोफिलस – के बारे में बताती है, जिन्हें ही वह व्यक्ति माना जाता है जिसके लिए संत लूक ने सुसमाचार और प्रेरितों के काम लिखे थे।

[7236] लूका 1:2. – 'अन्य सुसमाचार लेखकों की तुलना में, संत लूका विशिष्ट हैं, जैसा कि संत जॉन क्राइसोस्टोम कहते हैं, उस अधिक व्यापकता के कारण जिससे वे नए नियम की घटनाओं को कवर करते हैं, जिसकी शुरुआत अग्रदूत संत योहन के जन्म से होती है, जिनके बारे में केवल वे ही बात करते हैं। इसी तरह, सुसमाचार की अंतिम घटना - यीशु मसीह का स्वर्ग आरोहण - जिसका उल्लेख मत्ती और यूहन्ना द्वारा बिल्कुल नहीं किया गया है, और मरकुस द्वारा केवल संक्षेप में किया गया है, का वर्णन केवल संत लूकस द्वारा विस्तार से किया गया है।" – पवित्र सुसमाचार लूका के अनुसार, ऑर्थोडॉक्स चर्च के नियमों के अनुसार – अपवादों को छोड़कर – पेंटेकोस्ट के बाद 17वें सप्ताह से 29वें सप्ताह तक सभी दिनों में लिटिर्जी में पढ़ा जाता है; 29वें सप्ताह से मीटफेयर संडे तक, इसे केवल शनिवार और रविवार को, और मीटफेयर सप्ताह के सोमवार, मंगलवार और गुरुवार को पढ़ा जाता है।

[7237] प्रेरितों के कामों की पुस्तक में, लूका ने विस्तार से वर्णन किया है कि प्रभु के स्वर्गारोहण के बाद प्रेरितों पर पवित्र आत्मा का अवतरण कैसे हुआ और उन्होंने यहूदिया और दुनिया के अन्य हिस्सों में ईसाई धर्म को फैलाने और स्थापित करने के लिए कौन से कार्य किए। संत जॉन क्राइसोस्टोम के अनुसार, 'सभी से बढ़कर, संत लूक ने यहाँ संत पौलुस प्रेरित के कर्मों का वर्णन किया, जिनके वे प्रिय शिष्य और सबसे करीबी सहयोगी थे।'

रोम पहुँचे, ताकि अपने शब्दों और उदाहरण के द्वारा वे सताई गई कलीसिया को प्रोत्साहित और बनाए रख सकें और, यदि परमेश्वर को प्रसन्न हो, तो विश्वासियों के साथ शहीद का मुकुट साझा कर सकें। उन्हें मूर्तिपूजकों ने पकड़ लिया और बेड़ियों में जकड़ दिया। संत लूकस इस समय भी अपने गुरु के प्रति विफादार रहे, और उस समय प्रेरित के साथियों में वे एकमात्र व्यक्ति थे, एक ऐसा समय जो इतना कठिन था कि प्रेरित ने खुद की तुलना बलिदान के लिए तैयार एक बलि से की।

'मैं पहले ही बलिदान के रूप में ढाला जा रहा हूँ,' प्रेरित पौलुस ने अपने शिष्य तिमोथी को लिखा, 'और मेरा प्रस्थान का समय आ गया है: यथाशक्ति शीघ्र मेरे पास आओ। क्योंकि डेमास ने इस संसार से प्रेम करके मुझे छोड़ दिया है और थिस्सलुनीके चला गया है; क्रेस्केन्स गलातिया में; तीतुस दल्मातिया में।' केवल लूका ही मेरे साथ है[7238] ।

यह अत्यधिक संभावना है कि लूका ने रोम में प्रेरित पॉल की शहादत का साक्षात्कार किया। प्रेरित पौलुस की मृत्यु के बाद, चर्च परंपरा के अनुसार, संत लूका ने इटली, डल्माटिया, गॉल और विशेष रूप से मैसेडोनिया – जहाँ उन्होंने पहले कई वर्षों तक सेवा की थी – तथा मैसेडोनिया के समीपवर्ती अकेया में मसीह का सुसमाचार प्रचार किया[7239] ।

अपने वृद्ध वयस्क जीवन में भी, प्रेरित लूक ने दूरस्थ मिस्र की यात्रा की और वहाँ यीशु के पवित्र नाम की महिमा के लिए कई कठिनाइयों और दुःखों को सहन किया। वह पूरे लीबिया की यात्रा करने के बाद मिस्र आए[7240] , और मिस्र में – थेबाइड में – उन्होंने कई लोगों को मसीह के धर्म में परिवर्तित किया। अलेक्जेंड्रिया शहर में, उन्होंने एवलियिस नामक एक व्यक्ति को बिशप नियुक्त किया, जो एन्नियनुस का उत्तराधिकारी था, जिसे सुसमाचार प्रचारक मार्क ने नियुक्त किया था और जिसने 22 वर्षों तक सेवा की थी। ग्रीस लौटने पर, उन्होंने वहाँ फिर से चर्चों की स्थापना की - मुख्य रूप से बोएशिया के क्षेत्र में[7241] - पुरोहितों और डिकन को नियुक्त किया, और शारीरिक तथा आध्यात्मिक बीमारियों से पीड़ित लोगों को ठीक किया। अपने मित्र और गुरु, प्रेरित पौलुस की तरह, संत लूकस *ने 'अच्छी लड़ाई लड़ी, दौड़ पूरी की, और विश्वास बनाए* रखा'। उनकी मृत्यु 84 वर्ष की आयु में अकेया में एक शहीद की मृत्यु थी; विशेष रूप से, उन्हें—सलीब की कमी के कारण—एक जैतून के पेड़ से लटका दिया गया था[7242] । उनके पवित्र शरीर को थियोब्स - बोएशिया की राजधानी - में दफनाया गया था, जहाँ उनके पवित्र अवशेष, जिन्होंने कई चमत्कारिक उपचार किए, चौथी शताब्दी के उत्तरार्ध तक रहे, जिसके बाद उन्हें पूर्वी साम्राज्य की राजधानी - कॉन्स्टेंटिनोपल में स्थानांतरित कर दिया गया।

चौथी शताब्दी में, वहाँ हुई चंगाइयों के माध्यम से संत लूक द एपोस्टल के अवशेषों का स्थान ज्ञात हुआ। वहाँ आँखों की बीमारियों से पीड़ित लोगों में विशेष रूप से बड़ी संख्या में चंगाइयाँ हुईं[7243] । सम्राट कॉन्स्टेंटियस, जो कॉन्स्टेंटाइन द ग्रेट, एपोस्टल्स के बराबर के पुत्र थे, ने अकेया के एक बिशप से यह जानने के बाद कि संत ल्यूक का शरीर थीब्स में था, मिस्र के गवर्नर आर्टेमियस को संत ल्यूक के अवशेषों को राजधानी में स्थानांतरित करने के लिए भेजा; और आर्टेमियस ने इस स्थानांतरण को बड़ी धूमधाम से पूरा किया[7244] ।

लूके के पवित्र अवशेषों को समुद्र तट से चर्च तक ले जाने के दौरान एक चमत्कार हुआ। एक अनातोलियस नामक एक ख़ास (शाही शयनकक्ष के परिचारकों में से एक) एक असाध्य रोग से पीड़ित था। उसने डॉक्टरों पर बहुत सारा पैसा खर्च कर दिया था, लेकिन उसका इलाज नहीं हो सका; और अब, प्रेरित ल्यूक की पवित्र अवशेषों की चमत्कारी शक्ति पर भरोसा करते हुए, उसने चंगा होने के लिए संत से प्रार्थना करना शुरू कर दिया। ऐसा करते ही, वह पवित्र अवशेष-पात्र के पास गया और अपनी पूरी ताकत से उसे उठाने में मदद की। और क्या हुआ? जैसे ही उसने कुछ कदम

[7238] 2 तीमु. 4:6, 10. – शायद संत लूकस ने, अतीत में और इस समय भी, अपने चिकित्सा कौशल का उपयोग प्रेरित की बीमारियों को कम करने के लिए किया—जो एक कैदी थे और जो, चर्च की परंपरा के अनुसार, सरिदर्द और अन्य शारीरिक कमजोरियों से पीड़ित थे—और इसके लिए उन्हें प्रेरित से *'प्रथम चिकित्सक' की* उपाधि मिली।

[7239] डल्माटिया – इलिरिया प्रांत का दक्षिणी भाग, जिसकी उत्तरी सीमा पैनोनिया और पश्चिमी सीमा इटली तथा एड्रियाटिक सागर से मिलती थी। – गॉल में महासागर, पिरेनीज़, भूमध्य सागर, आल्प्स और राइन नदी के बीच की भूमि शामिल थी। अकाया – दक्षिणी ग्रीस का एक क्षेत्र, जो मोरिया प्रायद्वीप के उत्तरी भाग में स्थित था।

[7240] लिबिया – उत्तरी अफ्रीका में एक प्रांत। वहाँ कई ग्रीक उपनिवेश थे (हालाँकि ग्रीक कभी-कभी पूरे अफ्रीका को लिबिया कहते थे)।

[7241] बोएशिया – मध्य ग्रीस का एक क्षेत्र।

[7242] जैसा कि संत ग्रेगरी द थियोलोजियन ने सम्राट जूलियन पर अपनी पहली प्रवचन में प्रमाणित किया है।

[7243] जैसे कि प्रेरित ल्यूक के चिकित्सा कौशल का स्मरण कराने के लिए, प्रभु ने पवित्र प्रेरित के दफन स्थल पर 'कल्लूरियन'—अर्थात् आँखों की बीमारियों के लिए एक औषधीय मरहम—की वर्षा की।

[7244] चर्च 22 अप्रैल को संत ल्यूक के अवशेषों के स्थानांतरण का स्मरण करता है।

चले, उसकी बीमारी छूट गई। इसके बाद, उसने खुशी-खुशी पवित्र अवशेष-पात्र को पवित्र प्रेरितों के चर्च में ले जाया, जहाँ संत ल्यूक के अवशेषों को संत एंड्रयू और प्रेरित टिमोथी के अवशेषों के साथ वेदी के नीचे रखा गया। यहाँ, पवित्र अवशेष चमत्कारों का स्रोत थे और ऑर्थोडॉक्स ईसाइयों द्वारा विशेष भक्ति के साथ पूजे जाते थे।

प्राचीन धार्मिक लेखक बताते हैं कि प्रारंभिक ईसाइयों की धर्मपरायण इच्छा को पूरा करते हुए, संत ल्यूक ने सबसे पहले परम पवित्र परमेश्वर की माता की एक प्रतिमा बनाई, जिसमें उन्होंने अपनी बाहों में शाश्वत शिशु को पकड़ रखा था, हमारे प्रभु यीशु मसीह, अपनी बाहों में; और बाद में उन्होंने परम पवित्र मसीह की माता की दो अन्य प्रतिमाएँ चित्रित कीं और उन्हें उनकी स्वीकृति के लिए मसीह की माता को भेंट कीं। उन्होंने, इन प्रतिमाओं की जाँच करने के बाद, कहा:

'इन आइकनों पर उस की कृपा हो जो मुझ से जन्मा और मेरी दया हो[7245] ।'

संत ल्यूक ने पैनलों पर पवित्र प्रमुख प्रेरितों पतरस और पौलुस की छवियाँ भी चित्रित कीं, और इस प्रकार एक अच्छे और सम्मानजनक प्रयास की नींव रखी – ईश्वर, ईश्वर की माता और सभी संतों की महिमा के लिए, पवित्र चर्चों की शोभा के लिए और उन विश्वासियों के उद्धार के लिए जो इन पवित्र प्रतिमाओं की भक्तिपूर्वक पूजा करते हैं, पवित्र प्रतिमाओं का चित्रण। आमेन।

ट्रोपारियन, स्वर 5:

लूका सुसमाचार-लेखक, प्रेरितों के कामों के वर्णनकर्ता और मसीह के सुसमाचार के दीप्तिमान इतिहासकार, जिन्हें मसीह की कलीसिया महिमामय मानती है, आइए हम पवित्र प्रेरित की पवित्र भजनों से स्तुति करें, क्योंकि वह एक चिकित्सक हैं जो मानव दुर्बलताओं, शरीर के रोगों, और आत्मा के घावों को चंगा करते हैं, और जो हमारे प्राणों के लिए अनवरत प्रार्थना करते हैं।

कॉन्टाकियन, स्वर 2:

आओ हम दिव्य लूकस की स्तुति करें, जो सच्ची भक्ति के प्रचारक, अगम्य रहस्यों के वक्ता, और कलीसिया के तारे हैं: क्योंकि विचन ने उन्हें, पतरस के साथ, चुना, जो हृदय को जानने वाले, भाषाओं के बुद्धिमान शिक्षक हैं।

परम पूजनीय जूलियन का जीवन।

१८ अक्टूबर को स्मरण किया जाता है

आदरणीय जूलियन का जन्म विनिम्र और गरीब माता-पिता के घर हुआ था। अपनी युवावस्था में, उन्होंने कोई औपचारिक शिक्षा प्राप्त नहीं की, लेकिन उन्होंने ईसाई धर्म का सच्चा ज्ञान केवल शब्दों में ही नहीं, बल्कि कर्मों में भी प्राप्त किया।

वयस्क होने पर, जूलियन ने संसार से त्याग कर लिया और पर्थियन मरुभूमि[7246] में स्थित एक गुफा में बस गए। वहाँ उन्होंने, यथासंभव, अपनी सभी सांसारिक इच्छाओं को नियंत्रित करने और सभी क्षणभंगुर चीजों से ऊपर उठने का प्रयास किया; इस उद्देश्य के लिए, वे सप्ताह में केवल एक बार रोटी, नमक और पानी का सेवन करते थे। उसे सांत्वना और आध्यात्मिक पोषण पवित्र नबी और राजा दाऊद के भजनों से, और ईश्वर के साथ निरंतर ध्यान और प्रार्थनापूर्ण संवाद से मिलता था।

[7245] ऑर्थोडॉक्स चर्च, ईश्वर की माता की पवित्र प्रतिमाओं का सम्मान करते हुए, अपने भजनों में उनसे इस प्रकार प्रार्थना करता है: 'आपकी प्रथम-चित्रित प्रतिमा को, सुसमाचार के रहस्यों की अग्रदूत, और आपको; रानी के समक्ष लाए गए, हो सकता है कि वह आपको स्वीकार करें, और जो आपको सम्मान देते हैं उन्हें मजबूत बनाएँ और उनका उद्धार करें, और आप आनंदित हों, हमेशा दयालु, हमारे उद्धार में सहकर्मी।" (कज़ान आइकन ऑफ द मदर ऑफ गॉड की सेवा से स्टिचेरा, 22 अक्टूबर)। – मास्को में, डॉर्मिशन कैथेड्रल में, ईश्वर की माता का (व्लादिमीर) आइकन संरक्षित है, जिसे चर्च की परंपरा के अनुसार, संत ल्यूक ने भी चित्रित किया था।

[7246] यह मरुभूमि पार्थिया के देश से लेकर यूफ्रेटिस नदी के तटों तक फैली हुई थी।

जसि प्रकार पहाड़ की चोटी पर रखा दीपक छपि नहीं सकता, उसी प्रकार संत का धार्मकि जीवन लोगों से छपिा नहीं रह सकता था। पवत्रि तपस्वी की ख़बरें जल्द ही लोगों तक पहुँच गईं, और कुछ ही समय में बहुत से लोग जूलयिन के चारों ओर इकट्ठा हो गए, जो उनके मार्गदर्शन में अपना जीवन जीना चाहते थे और उनका अनुकरण करना चाहते थे। पवत्रि पति की अनुमत लिकर, वे स्वयं द्वारा बनाए गए तंबुओं में उनकी गुफा के पास बस गए, और अपने बुद्धमिान गुरु के मार्गदर्शन में तपस्या करने लगे।

संत जूलयिन उनके पास आए लोगों के साथ अधकि समय तक नहीं रहे। पूर्ण एकांत और प्रार्थना का जीवन जीने की इच्छा से, उन्होंने समुदाय को छोड़ दयिा और रेगस्तिान में 50 वर्स्ट अंदर चले गए, जहाँ उन्होंने पूर्ण एकांत का जीवन जीना शुरू कर दयिा, और अपनी शक्षिाएँ देने के लिए कभी-कभी ही अपने पीछे छोड़े गए समुदाय में लौटते थे।

एक अवसर पर, जब संत ने भाईचारे को उपदेश दे दयिा था और मरुभूम के लिए नकिलने वाले थे, तो एस्टेरयिस नामक एक युवक—जो वलिासति में पला-बढ़ा था लेकनि उसके भीतर धर्मपरायणता का ऐसा जोश था कि वह उसकी अपनी शक्ति से भी बढ़ गया था—ने उनसे वनिती की कि उसे भी साथ ले जाएँ। पहले तो जूलयिन ने उस युवक को रेगस्तिान की कठनि यात्रा पर जाने से रोकने की कोशशि की, जहाँ पानी भी नहीं था; लेकनि उसकी इच्छा से प्रभावति होकर, वह उसकी बात मान गया और उसे अपने साथ ले लयिा। एस्टरयिस खुशी-खुशी उस संत के पीछे चल पड़ा; लेकनि तीन दनिों के बाद वह कमजोर पड़ गया और लड़खड़ाने लगा। अंत में, पूरी तरह से थक जाने पर, उसने पवत्रि साधु से दया करने और उसकी दुर्दशा को कम करने की वनिती करनी शुरू कर दी। संत ने उसे वापस लौटने की अनुमत दे दी, लेकनि अस्टरयिस इत था कि वह अब और चल नहीं सकता था; इसके अलावा, वह यह भी नहीं जानता था कि गुफा तक वापस कैसे लौटें। तब ईश्वर के उस पुरुष ने, अपने साथी के दुख से वचिलति होकर और उसकी दुर्बलता पर दया दखिाते हुए, घुटने टेक दए और उस युवक की मुक्ति के लिए ईश्वर से इतनी आत्मीयता से प्रार्थना की कि उसके आँसुओं ने जमीन तक को भीग दयिा। संत की प्रार्थना स्वीकार हुई; उसके आँसुओं की बूँदें जो जमीन पर गरीं, उनसे धरती से एक जल का झरना फूट पड़ा।

जूलयिन की प्रार्थना के महान सद्गुण के बारे में बात करते समय, उसकी नम्रता का उल्लेख कए बनिा नहीं रह सकते, जैसा कि नम्निलखिति घटना से स्पष्ट होता है। एक अवसर पर, संत जूलयिन के उपर्युक्त शष्यि एस्टरयिस—जो स्वयं एक तपस्वी और दूसरों के लिए मार्गदर्शक बन गए थे, और जो अक्सर अपने प्रयि गुरु से मलिने आते थे—ने अपनी भक्ति के प्रतीक के रूप में उपहार स्वरूप अपने कंधों पर खजूर की एक बड़ी बोरी उठाई; उन्होंने इस भारी बोझ को सात दनिों की यात्रा तक ढोया। यह देखकर कि किसी दूसरे व्यक्ति ने उसकी खातरि इतनी मेहनत की है, जूलयिन शर्मदिा और दुखी हो गया और उसने उसकी मेहनत का फायदा उठाने से इनकार कर दयिा तथा भेंट स्वीकार करने से मना कर दयिा। जब एस्टरयिस ने बड़े संत को आश्वस्त करना शुरू कयिा कि वह तब तक यह बोझ नहीं उतारेगा जब तक कि वे यह भेंट स्वीकार नहीं कर लेते, तो आदरणीय संत ने—हालांकि वे दूसरे की मेहनत से प्राप्त भोजन स्वीकार करने के लिए अनचि्छुक थे—उनकी सेवा करने की सच्ची इच्छा देखकर यह सेवा स्वीकार कर ली।

'मैं तुम्हारी प्रार्थना मानूँगा,' संत ने कहा, 'लेकनि पहले इस बोझ को यथाशीघ्र नीचे रख दो।'

सम्राट जूलयिन द एपोस्टेट के फ़ारसियिों के साथ युद्ध के दौरान, कई वश्विासयिों ने, जो उस आदरणीय को ईश्वर के एक वफादार सेवक के रूप में जानते थे, उनसे ईसाइयों के इस दुश्मन के पतन के लिए प्रार्थना करने का अनुरोध कयिा। आदरणीय ने उस दुष्ट यातनाकर्ता से मुक्ति के लिए दस दनिों तक प्रार्थना की और, अंत में, एक आवाज़ सुनी:

'वह अशुद्ध और घृणति दानव नष्ट हो गया है।'

अपनी प्रार्थना समाप्त करके, रेवरेंड भाइयों के पास प्रसन्न होकर लौटे। जब उन्होंने उनसे उनके आनंद का कारण पूछा, तो जूलयिन ने उत्तर दयिा:

'हे भाइयों, यह शांति और आनंद का समय है: दुष्ट व्यक्ति अब नहीं रहा; जो प्रभु के वरिुद्ध खड़ा हुआ था, उसे उसी के हाथ से उचति पराजय मलिी है जसिने उसका पीछा कयिा था। इसीलिए मैं आनंदति हूँ, यह देखकर कि जनि चर्चों का उसने उत्पीड़न कयिा था, वे वजियी हो रहे हैं, और धर्मत्यागी को उन राक्षसों से कोई भी सहायता नहीं मलिी जनिकी वह पूजा करता था[7247] ।'

संत जूलयिन ने उस समय फैली हुई एरयिन वधिर्म से लड़ने के लिए काफी प्रयास कयिा। इस उद्देश्य के लिए, उन्होंने—जो सुनसान रेगस्तिान के प्रेमी थे—सत्य के बारे में चुप न रहने के लिए उसे पीछे छोड़ दयिा।

[7247] 363 में जूलयिन की मृत्यु हो गई।

एरियिनों ने, अपने झूठे सद्धिांत को फैलाने के लिए, अंतीयोकिया में यह अफवाह फैलाई कि आदरणीय जूलियन उनके द्वारा प्रचारित धर्मसद्धिातों का पालन करते थे। तब संत के शष्यि अकाकियोस और एस्टरियोस, धार्मकि पुरुष फ्लेवियन और डायोडोरस के आग्रह पर, जूलियन के पास गए ताकि वह उन ऑर्थोडॉक्स लोगों की सहायता कर सकें जो धोखे से बर्बाद हो रहे थे। संत के पास पहुँचने पर, उन्होंने उन्हें बताया कि एरियिन के हाथों ईसाई किस तरह कष्ट झेल रहे थे[7248] । यह सुनकर, संत तुरंत अंतीयक के लिए रवाना हो गए। अँधेरा होने तक एक गाँव पहुँचने पर, वे एक धर्मपरायण महिला के घर आराम करने के लिए रुके, जिसके सात वर्षीय पुत्र था। जब संत रात्रिभोज कर रहे थे, तो उसका बेटा बिना देखे मेज से चुपके से निकल गया और एक कुएँ में गिर गया। यह जानने पर उस धर्मनिष्ठ महिला ने कोई दुख नहीं दिखाया और कुएँ को ढँकने का आदेश देकर संत की सेवा करती रही। उसका विश्वास इतना गहरा था कि चमत्कार करने की क्षमता के लिए पहले से ही प्रसद्धि उस संन्यासी की उपस्थिति में उसके घर पर कोई भी विपत्ति नहीं आ सकती थी। और प्रभु ने उसकी प्रार्थना को उसके विश्वास के अनुसार स्वीकार कर लिया।

जब खाने से पहले, संत ने लड़के के बारे में पूछा, तो घर की महिला ने उत्तर दिया:

– किसी प्रकार की बीमारी ने उसे घेर लिया था और वह वहीं पड़ा था। संत ने जोर देकर कहा कि लिड़का उनके पास आए और उनका आशीर्वाद ग्रहण करे। तब मालकिन को उन्हें उस दुर्भाग्य के बारे में बताना पड़ा जो उन पर आया था। संत तुरंत बाहर गए और कुएँ का ढक्कन हटाकर उन्होंने उस लड़के को, जिसे पानी इधर-उधर फेंक रहा था, बिल्कुल स्वस्थ देखा; और उसे अपना हाथ बढ़ाकर उन्होंने कुएँ से बाहर निकाल लिया। जब उन्होंने लड़के से पूछना शुरू किया कि उसके साथ क्या हुआ था, तो उसने कहा:

'मुझे कोई नुकसान नहीं हुआ, क्योंकि पवित्र साधु ने मुझे पानी के पार ले जाया, जिससे मैं डूबने से बच गया।'

वहाँ से, पूज्य संत अंताकिया के लिए रवाना हुए और उसी गुफा में बस गए जहाँ संत पौलुस प्रेरित ने एक बार शरण ली थी। संत से सांत्वना और आशीर्वाद पाने के लिए बड़ी संख्या में लोग गुफा के चारों ओर इकट्ठा हुए, लेकिन वे एक भयंकर 'आग की बुखार' (उच्च बुखार) से ग्रस्त होकर बेहोश पड़े थे। अंत में, ऊँचे पहाड़ से गिरने के बाद, वे होश में आए, उन्होंने अपने लिए प्रार्थना की - और तुरंत बीमारी उनसे दूर हो गई। फिर, बाहर उन लोगों के पास गए जो इंतजार कर रहे थे, और विनम्रता से कहा:

'यदि मेरी आशीर्वाद तुम्हारे किसी काम आए, तो ईश्वर तुम्हें वह दे।'

यहाँ इस पवित्र तपस्वी ने अपने शब्दों के द्वारा न केवल शारीरिक बल्कि आध्यात्मिक उपचार भी किए, और जल्द ही बदनाम करने वाले बेनकाब होकर लज्जित हो गए, जबकि सत्य के अनुयायी आश्वस्त होकर आनंदित हो गए।

एक बार, उन्हें सड़क के किनारे एक बीमार आदमी पड़ा हुआ मिला; उस आदमी ने उनके वस्त्र के किनारे को छूते ही तुरंत उठ खड़ा हुआ और उनका अनुसरण करने लगा, ठीक वैसे ही जैसे लंगड़े आदमी ने पतरस और यूहन्ना का अनुसरण किया था (प्रेरितों के काम 3:1–11)। रेवरेंड फादर ने न केवल उस बीमार आदमी के शारीरिक स्वास्थ्य को बहाल किया, बल्कि उसे ऑर्थोडॉक्स विश्वास में भी मजबूत किया।

फिर वे अपने रेगिस्तान लौट आए और वहाँ वृद्धावस्था तक रहने के बाद, प्रभु के पास शांतिपूर्वक प्रस्थान कर गए[7249] ।

नवंबर

1 नवंबर

19 अक्टूबर (पुराना संस्करण)

[7248] ऑर्थोडॉक्स की स्थिति गंभीर थी, मुख्यतः इसलिए क्योंकि उस समय शाही सिंहासन पर एरियिन वेलेंस (364–378) का कब्ज़ा था, जिसने विभिन्न दमनकारी उपायों के माध्यम से एरियिनवाद को फैलाने का प्रयास किया।

[7249] सम्माननीय जूलियन चौथी शताब्दी के अंत में निधन हो गए।

पवित्र भविष्यवक्ता योएल की स्मृति

19 अक्टूबर को स्मरणोत्सव

नबी योएल – बारह छोटे नबियों में से एक – बथुएल के पुत्र थे[7250] । सेंट एफ्रेम द सीरियन, साथ ही एपिफानियस और डोरोथियस द्वारा दर्ज एक प्राचीन परंपरा के अनुसार, नबी योएल यॉर्डन के पूर्व के क्षेत्र से थे[7251] , और बेथ-होरोन या बेथ-फार शहर में रहते थे[7252] ।

यहूदा के राज्य पर आई महान विपत्ति[7253] ने योएल को अपने भविष्यवाणी के वचन सुनाने का अवसर प्रदान किया। एक लंबे सूखे और विशाल संख्या में टिड्डियों के झुंड ने यहूदा के देश को पूरी तरह तबाह कर दिया। ऐसी विपत्ति के सामने, दृढ़ विश्वास वाले भी हतोत्साहित हो गए, कमजोर दिल वालों की तो बात ही क्या। और इसलिए, भविष्यवक्ता योएल लोगों से यहोवा की ओर मुड़ने का आह्वान करते हैं[7254] और मदद के लिए प्रार्थना करने का, क्योंकि *'यहोवा का दिन निकट है'* (योएल 2:1)। यह दिन भयानक विपत्तियों का दिन होगा। यहूदा पर आई विपत्तियाँ (टिड्डियाँ और सूखा) इसके प्रतीक और अग्रदूत के रूप में कार्य करती हैं। उस दिन के आने से पहले, आकाश और पृथ्वी हिल जाएँगे, सभी स्वर्गीय पिंड अँधेरे में डूब जाएँगे, और फिर यहोवा अपनी महान सेना के साथ प्रकट होंगे। लेकिन यशायाह की चेतावनी के अनुसार, अभी भी ऐसी बड़ी विपत्तियों से बचने का एक रास्ता है: न केवल वे जो वर्तमान में हमें पीड़ित कर रही हैं (टिड्डियाँ और सूखा) बल्कि वे भी जो भविष्य में आने वाली हैं (प्रभु का दिन)। हमें पूरे हृदय से यहोवा की ओर मुड़ना चाहिए, और तब प्रभु अपने लोगों को इन महान विपत्तियों से उबारेंगे। भविष्यवक्ता कहते हैं, एक सामान्य उपवास की घोषणा की जाए, और बिना किसी अपवाद के सभी लोग मंदिर में इकट्ठा हों। तब याजक सारी प्रजा की ओर से यहोवा को पुकारें: *'हे यहोवा, अपनी प्रजा को क्षमा कर; अपनी विरासत को लज्जित न होने दे, जिससे अन्य जातियाँ उन पर हँसें; अन्यथा वे अन्य जातियों में क्या कहेंगे, "उनका परमेश्वर कहाँ है?"'* (योएल 2:17)

यहूदी लोगों ने नबी की बात मानी और सहायता के लिए यहोवा की ओर प्रार्थना करते हुए मुड़े, और प्रभु ने अपने लोगों पर दया की। अपने भविष्यवक्ता योएल के मुख से, प्रभु लोगों को उनकी पश्चाताप के उत्तर में, समृद्धि और सांसारिक आशीर्वादों की प्रचुरता का वादा करते हैं। प्रभु समय पर वर्षा भेजेंगे, और चरागाहों में घास उगेगी; पेड़ भरपूर फल देंगे; अनाज के खलिहान रोटी से भर जाएँगे, और दाख की कूल्हियाँ अंगूर के रस से। तब इस्राएल के पुत्र यह जान लेंगे कि यहोवा अपने लोगों को न तो त्यागेंगे और न ही अपने लोगों को लज्जित होने देंगे (योएल 2:19–27)।

योएल की भविष्यवाणी के अनुसार, प्रभु की दया उन यहूदी लोगों के प्रति, जो उसकी ओर मुड़े हैं, केवल सांसारिक आशीर्वादों तक ही सीमित नहीं रहेगी: परमेश्वर के लोगों को एक आध्यात्मिक वादा भी दिया गया है। भविष्यवक्ता मसीहा के दूर के, धन्य समय की पूर्वदृष्टि प्राप्त करता है। एक समय आएगा जब पवित्र आत्मा सभी प्राणियों पर, लिंग, आयु या सामाजिक स्थिति के भेदभाव के बिना, उंडेला जाएगा। *'मैं उंडेलूंगा,'* प्रभु भविष्यवक्ता के माध्यम से कहते हैं, *'अपने आत्मा को सभी प्राणियों पर; और तुम्हारे पुत्र और तुम्हारी पुत्रियाँ भविष्यवाणी करेंगे; तुम्हारे वृद्ध पुरुष स्वप्न देखेंगे, और तुम्हारे जवान पुरुष दर्शन देखेंगे। और उन दिनों में मैं अपने आत्मा को दासों और दासियों पर भी उंडेलूँगा'*[7255] (योएल 2:28–29)।

[7250] इसी प्रकार भविष्यवक्ता योएल स्वयं का उल्लेख करते हैं (योएल 1:1)।

[7251] गाद या रूबेन के कुल से।

[7252] बेफ़ोरोन (बेफ़-ओरोन) – एफ्राइम और बेंजामिन के गोत्रों की सीमा पर एक नगर

[7253] योएल ने यहूदा के राज्य में अपनी भविष्यद्वाणी की सेवा की, और उसकी सभी गतिविधियाँ योआश के शासन के पहले 25 वर्षों से संबंधित हैं, अर्थात् ईसा पूर्व 868–843 के वर्षों से।

[7254] यहोवा (सुलावोनिक में: 'अस्तित्वमान') – ईश्वर के नामों में से एक। यह दिव्य सत्ता की अनन्यता, शाश्वतता और अपरिवर्तनीयता को दर्शाता है, और पवित्र धर्मग्रंथ में एकमात्र सच्चे ईश्वर को संदर्भित करने के लिए इसका लगातार उपयोग किया जाता है।

[7255] इस भविष्यवाणी की पूर्ति के आवश्यक और केंद्रीय क्षण के रूप में, प्रेरित पतरस पेंटेकोस्ट के दिन प्रेरितों पर पवित्र आत्मा के अवतरण की ओर इशारा करते हैं (प्रेरितों के काम 2:14)। जब पवित्र आत्मा के अवतरण के दिन लोगों ने प्रेरितों को अन्य भाषाओं में बोलते सुना, तो उन्होंने हैरानी से पूछा: 'इसका क्या मतलब है?' – पवित्र प्रेरित पतरस ने इकट्ठी भीड़ को एक भाषण देते हुए संबोधित किया जिसमें उन्होंने समझाया कि इस अद्भुत घटना की भविष्यवाणी योएल ने की थी, और उन्होंने योएल की पूरी भविष्यवाणी को शब्दशः उद्धृत किया। तब योएल की भविष्यवाणी की पूर्ति को इंगित करने के बाद, प्रेरित पतरस ने कहा: (उसके बाद जब उसे सुनने वाली भीड़ प्रश्न के साथ प्रेरितों की ओर मुड़ी: 'भाइयो, हम क्या करें?') – *'पश्चाताप करो, और तुम में से हर एक यीशु मसीह के नाम पर पापों की क्षमा के लिए बपतिस्मा ले, और तुम पवित्र आत्मा का*

यशायाह भविष्यवक्ता ने सार्वभौमिक न्याय (*'प्रभु का दिन'*) के आगमन की भी भविष्यवाणी की, जिसके पहले स्वर्ग और पृथ्वी पर भयानक घटनाएँ होंगी, और उस दिन केवल वही लोग बचेंगे जो प्रभु के नाम का आह्वान करेंगे[7256]। जब यहोवा का दिन आएगा, तो यहोवा यहोशापात की घाटी में अन्यजातियों पर न्याय लाएगा, और उन पर एक भयानक दंड आएगा (योएल 3:19)। हालाँकि, जहाँ यहोवा का दिन अन्यजातियों के लिए आतंक का दिन होगा, वहीं यह इस्राएल के लिए ऐसा नहीं होगा। इज़राइल के लिए, यह उद्धार का दिन होगा, क्योंकि यहोवा उनकी ढाल और रक्षा होंगे। तब इज़राइल पर आनंद आएगा, और इज़राइल के सभी शत्रु नष्ट हो जाएंगे: *'यहूदा सदा जीवित रहेगा, और यरूशलेम पीढ़ी-दर-पीढ़ी। मैं उनका लहू धो डालूँगा, जिसे मैंने अभी तक नहीं धोया है, और प्रभु सियोन में वास करेगा'* (योएल 3:20-21)। इस प्रकार योएल भविष्यवक्ता का संदेश एक सांत्वनादायक स्वर में समाप्त होता है। इस्राएल, अपनी मातृभूमि पर आई सभी विपत्तियों के बावजूद, इस वादे में सांत्वना और आराम पा सकता था। वह आशा कर सकता था कि यहोवा, जो अत्यंत दयालु और धीरजवान है, अपने लोगों को नहीं भूलेगा और उन्हें किसी भी विपत्ति से बचाएगा जिसका वे सामना कर सकते थे।

योएल के लिए ट्रॉपारियन:

हे भविष्यवक्ता योएल, जिन्होंने देह में परमेश्वर के आगमन और पवित्र आत्मा के प्रवाह की भविष्यवाणी की, और आने वाले न्याय की भविष्यवाणी की: अपनी प्रार्थनाओं के द्वारा उन लोगों को सभी दुखों से बचाएँ जो आपका सम्मान करते हैं।

पवित्र शहीद उआर और उनके साथ सात ईसाई शिक्षकों की शहादत, और धन्य क्लियोपात्रा और उनके पुत्र जॉन की स्मृति

19 अक्टूबर को स्मरणोत्सव

ईश्वर-विहीन रोमन सम्राट मैक्सिमियिन के शासनकाल में, मिस्र की राजधानी में, अलेक्जेंड्रिया में, उआर नाम का एक सैनिक रहता था, जो गुप्त रूप से स्वर्गीय राजा की सेवा करता था: अधर्मी सम्राट मॅक्सिमियिन के कानून से डरकर, उसने कुछ समय के लिए सच्चे ईश्वर में अपने विश्वास को छिपा रखा था, लेकिन बाद में इसे पूरी दुनिया के सामने तब प्रकट किया जब, मसीह के लिए, वह *'स्वर्गदूतों और मनुष्यों के लिए एक तमाशा बन गया'* (1 कुरिन्थियों 4:9)[7257]।

उस समय, मैक्सिमियिन ने ईसाइयों के खिलाफ एक उत्पीड़न शुरू किया और अपने शासन के सभी क्षेत्रों में एक आदेश जारी किया कि जो भी ईसाई देवताओं को बलिदान चढ़ाने से इनकार करते हैं, उन्हें मृत्युदंड दिया जाए। यह आदेश मिस्र के प्रदेशों तक भी पहुँचा, और वहाँ ईसाई रक्त निर्दयता से बहाया जाने लगा, क्योंकि सृष्टि की वस्तुओं के बजाय सृष्टिकर्ता की उपासना करने वालों को विभिन्न प्रकार की यातनाएँ दी गईं।

उस समय, उआर रात में उन काल-कोठरियों में जाता था जहाँ मसीह की गवाही देने के कारण विश्वासियों को बंद करके रखा जाता था; और सोने से पहरेदारों को रिश्वत देकर अंदर जाने का रास्ता खरीदकर, वह पवित्र शहीदों के बंधनों को चूमता, उनके रक्त को धोता, उनके घावों पर पट्टी बांधता, उन्हें भोजन लाता, और उनसे प्रभु के समक्ष उसके लिए मध्यस्थता करने का आग्रह करता।

वरदान पाओगे; क्योंकि यह प्रतिज्ञा तुम्हारे और तुम्हारे बच्चों और जितनों को दूर है, उन सब के लिए है, जितनों को हमारा परमेश्वर प्रभु बुलाएगा (अर्थात् अन्यजातियों सहित) (प्रेरितों के काम 2:37–39)। इस प्रकार, पवित्र आत्मा के वर्षा—अर्थात् उसकी देनों की प्रचुर प्रदान—संबंधी भविष्यवाणी की पूर्ति पहले ईसाई पेंटेकोस्ट के दिन शुरू हुई और यह सभी समय के लिए जारी रहेगी, जब तक कि सभी जातियों का पूरा संख्या मसीह के राज्य में प्रवेश नहीं कर लेती (*'जातियों की पूर्णता'* – रोमियों 11:25)। – पेंटेकोस्ट के दिन चर्च में यशायाह की पुस्तक के अध्याय 2 को पैरेमिया के रूप में पढ़ा जाता है।

[7256] *'जो कोई भी प्रभु के नाम का आह्वान करेगा, वह उद्धार पाएगा'* (योएल 2:32)। प्रेरित पौलुस योएल भविष्यवक्ता के इन शब्दों को अन्यजातियों पर लागू करते हैं। वे कहते हैं, 'यहाँ (अर्थात् मसीही धर्म में), यहूदी और अन्यजाति के बीच कोई भेदभाव नहीं है, क्योंकि सभी के ऊपर एक ही प्रभु है, जो उन सभी के प्रति धनी है जो उससे प्रार्थना करते हैं; क्योंकि जो कोई भी प्रभु के नाम का आह्वान करेगा, वह उद्धार पाएगा' (रोमियों 10:12-13)।

[7257] यह शर्म की बात थी – जब वह ध्यान का केंद्र बन गया।

एक अवसर पर, रेगस्तिान में छपिे हुए सात ईसाई teachers[7258] को पकड़ लयिा गया और मस्रि के राज्यपाल के सामने पेश कयिा गया। राज्यपाल ने, उनसे पूछताछ करने और यह जानने के बाद कि वे अपने वशि्वास में दृढ़ थे, उन्हें बुरी तरह यातना दी और फरि, उन्हें बाँधकर, एक कालकोठरी में डाल दयिा। यह जानने पर, उआर, अपनी प्रथा के अनुसार, रात में उस कालकोठरी की ओर दौड़ा जसिमें संतों को डाल दयिा गया था, और, रक्षकों को सोना देकर, संतों से मलिने के लिए अंदर गया। उनके हाथों की बेड़यिाँ खोलकर और पैरों की जंजीरों से मुक्त करके[7259] , उन्होंने उन्हें भोजन दयिा और खाने का आग्रह कयिा, क्योंकि उन्होंने पूरे आठ दनिों से कुछ भी नहीं खाया था। उसी समय, उनके पैरों पर गरिकर, उन्होंने उन्हें चूमा और उनके दुखों की प्रशंसा करते हुए कहा:

– धन्य हो तुम, प्रभु के भले और वशि्वासयोग्य सेवको, जो अपने प्रभु के आनन्द में प्रवेश करने वाले हो, क्योंकि तुम उसके लिए रक्त बहाने तक दृढ़ बने रहे (इब्रानयिों 12:4)[7260] । धन्य हो तुम, हे भले तपस्वयिों, जनिके लिए परमप्रभु के हाथ से स्वर्ग में मुकुट बुने जा रहे हैं, क्योंकि *'धैर्य से हम उस दौड़ को दौड़ें जो हमारे सामने रखी गई है'* (इब्रानयिों 12:1), और कल, जैसा कि मुझे नश्चिति रूप से पता है, आप अपने दुखों को समाप्त कर देंगे। धन्य हैं आप, मसीह के कष्ट-सहने वालों, जनिके लिए स्वर्ग का राज्य खुला है, क्योंकि आप मसीह के साथ पीड़ा सहते हैं, जन्हिोंने हमारे लिए पीड़ा सहीं; *'हम उनके साथ पीड़ा सहते हैं ताकि हम उनके साथ महमिामय भी हों'* (रोमयिों 8:17)। मैं आपसे वनिती करता हूँ, हे परमेश्वर के पवत्रि सेवकों, प्रभु मसीह से मेरी भी प्रार्थना करें, कि वह मुझ पर दया करें; क्योंकि मैं भी उनके लिए दुख उठाना चाहूँगा, परन्तु मुझ में ऐसा करने का धैर्य नहीं है: मैं उन यातनाओं से डरता हूँ, जन्हिें मैं आप सब सहते हुए देख रहा हूँ।

संतों ने उत्तर दयिा:

'प्रयि, कोई भी अपने हृदय में भय पालते हुए पूर्णता प्राप्त नहीं कर सकता; कोई भी तब तक नहीं काटता जब तक वह बोता नहीं है; कोई भी तब तक मुकुट नहीं पाता जब तक वह कष्ट नहीं सहता। सुसमाचार के वचनों को याद करो: *"जो कोई मनुष्यों के साम्हने मुझ से इनकार करेगा, मैं भी स्वर्गीय अपने पति के साम्हने उससे इनकार करूँगा"* (मत्ती 10:33); यदि तुम क्षणकि पीड़ा से डरते हो, तो तुम अनंत पीड़ा से नहीं बचोगे; यदि तुम पृथ्वी पर मसीह की गवाही देने से डरते हो, तो स्वर्ग में तुम उनके मुख के दर्शन से नहीं भरोगे। तब जाओ, हे भाई, और हमारे साथ प्रभु के मार्ग पर शहादत की राह पर चलो, जो हमारे कर्मों को देखता है; हमारे साथ दुख सहो, क्योंकि तुम्हें शीघ्र ही इस जैसी दूसरी संगति नहीं मलिेगी।

ये शब्द सुनकर, उआर ईश्वर के प्रति प्रेम से भर गया और उसे मसीह के नाम के लिए हर प्रकार के दुख को सहने की शक्ति अपने भीतर महसूस हुई। उसने वह पूरी रात पवत्रि शहीदों के साथ कुंड में बतिाई, और आनंदपूर्वक उनकी शक्षिाओं को सुना।

जब सुबह हुई, तो राज्यपाल के सेवक पवत्रि शहीदों को मुकदमे के लिए ले जाने के लिए कालकोठरी में आए; वहाँ उन्हें उआर मलिा, जो कैदयिों के बीच बैठा था और गहरी भावना के साथ उनके शब्द सुन रहा था। हैरान होकर, उन्होंने उससे कहा:

'उआर, तुम यहाँ क्या कर रहे हो? क्या तुम्हारा दमिाग़ ठीक है, कि तुम इन धोखेबाज़ लोगों की झूठी कहानयिों से बहक रहे हो? क्या तुम्हें डर नहीं लगता कि अगर कसिी ने राज्यपाल और कुलीनों को इस बारे में बता दयिा, तो तुम न केवल अपना सैन्य पद बल्कि अपनी जान भी खो दोगे?'

उआर ने उत्तर दयिा:

'तुम में से कौन मेरी रपिोर्ट राज्यपाल को देगा? आखरिकार, तुम मेरे दोस्त हो। और अगर तुम मेरी रपिोर्ट दे भी दो, तो मैं ईसाइयों के साथ मसीह के लिए मरने को तैयार हूँ।'

तब नौकर चुप हो गए और छह शहीदों को ले गए; हालाँकि, सातवाँ, जो अपने घावों से थका हुआ था, अँधेरी कोठरी में ही रह गया और, मरकर मसीह के पास चला गया, और अपनी जगह उआर को दे दी ताकि वह उसकी जगह लेकर अपने कष्टों को समाप्त कर सके।

[7258] अर्थात्, वे संन्यासी जनिसे सामान्य ईसाई मार्गदर्शन के लिए मलिते थे।

[7259] एक लकड़ी का तख्ता जसिमें हाथों, पैरों और यहां तक कि सिर के लिए छेद कटे होते थे, जसिे तहखाने में कैदयिों पर इस तरह फटि कयिा जाता था कि वे भाग न सकें।

[7260] अर्थात्, उन्होंने मसीह के लिए अपना रक्त बहाया।

जब बंधे हुए संतों को राज्यपाल के सामने लाया गया, जो न्यायाधीश की कुर्सी पर विजयी होकर बैठा था, तो उन्हें मूर्तियों को बलिदान चढ़ाने के लिए मजबूर किया गया; और चूँकि उन्होंने आज्ञा मानने से इनकार कर दिया, इसलिए उन्हें नग्न कर दिया गया और उनके शरीर के उन्हीं हिस्सों पर निर्दयता से पीटा गया जो पहले से ही घायल थे। पुराने घावों पर नए घाव लगाने से उनका कष्ट और बढ़ गया, परन्तु उन्होंने यह सहते हुए केवल इतना कहा:

'हम ईसाई हैं।'

इसके बाद, राज्यपाल ने उन्हें देखते हुए कहा:

'क्या वे सात नहीं थे? और अब केवल छह हैं; सातवाँ कहाँ है?'

गवर्नर के बोलते ही, वहाँ पहुँचे संत वार दिव्य उत्साह से भर गए; वे उनके बीच में खड़े हुए और कहा:

'मैं ही सातवाँ हूँ; क्योंकि एक ने तो अपना मार्ग पहले ही पूरा कर लिया है – वह मसीह के सामने उपस्थिति हो चुका है, और मुझे अपनी पीड़ाओं का वारिस छोड़ गया है। इसलिए, जो कुछ भी वह तुम पर बिताया था, मैं उसकी ओर से चुकाने को तैयार हूँ; मैं मसीह की खातिर इन महान शहीदों के साथ उसकी जगह पीड़ा सहना चाहता हूँ, क्योंकि मैं एक ईसाई हूँ।'

इन शब्दों को सुनकर, राज्यपाल ने अपने सामने खड़े लोगों से पूछा:

– यह आदमी कौन है? उन्होंने उत्तर दिया:

'योद्धा उआर, चियानी भाला कंपनी का कमांडर[7261] ।'

अधिकारी चकित हो गया और उसने उआर से कहा:

'किस दानव ने तुम्हें निश्चित विनाश की ओर चलने के लिए प्रेरित किया है? क्योंकि तुम अपनी सैन्य सम्मान खो दोगे, अपने अधिकारों से वंचित हो जाओगे, और अपने जीवन को बड़ी विपत्तियों में डाल दोगे।'

धन्य उआर ने उत्तर दिया:

मैं तुम्हारे सम्मान और आय की अपेक्षा स्वर्ग से उतरी रोटी और मेरे प्रभु के अति-मूल्यवान रक्त के दिव्य प्याले को अधिक पसंद करता हूँ; मेरे लिए मेरे मसीह से प्रिय कुछ भी नहीं है। उसके बिना, मैं न तो तुम्हारे सम्मान को, न ही अपने पद को, न ही बड़ी संपत्ति को, और न ही स्वयं जीवन को ही महत्व देता हूँ। क्योंकि मैं मसीह के लिए दुख सहने में अपना सम्मान देखता हूँ; मसीह की खातिर सब कुछ खोने में अपना लाभ; और मसीह के लिए मरने में जीवन पाता हूँ।

राज्यपाल ने छह शहीदों पर क्रोधित दृष्टि डालते हुए कहा:

'यह तुम्हारा किया हुआ है, हे अधर्मी धोखेबाजों। तुम ही हो जिन्होंने इस राजसी योद्धा को बहकाया है; तुमने अपनी जादू-टोने से उसे पागल कर दिया है। इसलिए—मैं अपने महान देवताओं की शपथ खाता हूँ!—मैं तुम्हें उसके सामने नष्ट कर दूँगा, और मैं हमारे देवताओं पर लाई गई इस अपमान का बदला तुमसे चुका लूँगा; तुम जीवन के अयोग्य हो, क्योंकि तुम अमर देवताओं की निंदा करते हो और, किसी प्रकार के भ्रम के कारण, दूसरों को यह दुष्ट कृत्य करने के लिए मजबूर करते हो।

संतों ने उत्तर दिया:

'हमने उआर को बहकाया नहीं, बल्कि उसे बहकावे से मुक्त किया; हमने उसे पागल नहीं किया, बल्कि, इसके विपरीत, उसे होश में लाया। ईश्वर ने स्वयं उसे यह कारनामा करने के लिए शक्ति और साहस प्रदान किया, ताकि वह हमारे साथ मिलकर आपकी और आपके देवताओं की शक्ति को परास्त कर सके, जो कि कुछ भी नहीं है; थोड़ी देर प्रतीक्षा करो और तुम मसीह की सेवा में उसका साहस देखोगे, क्योंकि हमने उसे स्वर्गदूतों की सेना में शामिल कर लिया है। क्या तुम घमंड करते हो कि तुम हमें नष्ट कर सकते हो? परन्तु हम ठीक यही चाहते हैं: कि हम सभी मनुष्यों के प्रभु के लिए अपना जीवन दे दें।

तब राज्यपाल ने कहा:

'यदि तुम मिस्र के देवताओं की पूजा नहीं करोगे तो मैं तुरंत तुम्हारे शरीर के टुकड़े-टुकड़े कर दूँगा!'

संतों ने उत्तर दिया:

'हम उन देवताओं का त्याग करते हैं जिन्होंने स्वर्ग और पृथ्वी की रचना नहीं की (यिर्म. 10:11)।'

धन्य उआर, राज्यपाल को और भी अधिक उकसाने के लिए, उससे कहने लगे:

[7261] अधिक सटीक रूप से (ग्रीक से): टायनयिाई कोहोर्ट (एक रेजिमेंट का हिस्सा) से। टायनीस मिस्र में एक शहर है। रोमन कोहोर्ट का नाम उन शहरों के नाम पर रखा जाता था, जिनके निवासियों से वे भर्ती किए जाते थे।

'"*अज्ञानी मूर्खता बोलते हैं*," कहते हैं भविष्यवक्ता यशायाह (यशायाह 32:6)[7262] । देखो, उनके शरीर तुम्हारे सामने फैले पड़े हैं – इनके साथ जो चाहो करो!'

अधीक्षक, क्रोधित होकर, ने उआर को नग्न करके एक पेड़ से लटकाने का आदेश दिया ताकि उसका यातना-सत्र शुरू हो सके, जबकि संतों से उसने कहा:

'आओ देखें कि कौन विजयी होगा - तुम, हमारे यातनाओं को सहकर, या हम, उन्हें तुम पर थोपकर। मैं कसम खाता हूँ कि यदि तुम अपने धैर्य से हम पर विजय प्राप्त करोगे, तो मैं अपने देवताओं का त्याग कर दूँगा और तुम्हारे मसीह में विश्वास करने लगूँगा।'

संतों ने उत्तर दिया:

'हम में से किसी एक पर अपनी ताकत आजमाओ: अगर तुम एक को हरा दोगे, तो बाकी के बारे में भी वही उम्मीद रख सकते हो।'

हालाँकि उआर, जिस पर पहले ही यातनाएँ शुरू हो चुकी थीं, ने पवित्र शहीदों से कहा:

'हे पवित्र शहीदों! अपने दास, मुझे आशीर्वाद दो, ताकि मैं तुम्हारे भाग्य का पात्र समझा जाऊँ। प्रभु मसीह से मेरी खातिर प्रार्थना करो, कि वह मुझे धैर्य प्रदान करे, क्योंकि वह हमारी प्रकृति को जानता है: कि हमारी आत्मा तो इच्छुक है, पर हमारा शरीर कमजोर है (मत्ती 26:41)।'

संतों ने स्वर्ग की ओर अपनी दृष्टि उठाकर उनके लिए उत्कट प्रार्थना की, जबकि उसी क्षण राज्यपाल के सेवकों ने उआर के पूरे शरीर पर डंडों से प्रहार करना शुरू कर दिया। जब उआर इस पिटाई को सहन कर रहा था, तो राज्यपाल ने कहा:

'अब मुझे बताओ, उआर, तुम्हारा मसीह तुम्हारे क्या काम आता है?'

उअर ने साहसपूर्वक उत्तर दिया:

'जो तुम अपने राक्षसों से प्राप्त करते हो, उससे कहीं अधिक।' इस बीच, संतों ने उआर को प्रोत्साहित करते हुए पुकारा: 'हौसला रखो, उआर, और दृढ़ खड़े रहो, क्योंकि मसीह तुम्हारे सामने खड़े हैं, जो तुम्हें अदृश्य रूप से बल दे रहे हैं।' उआर ने उत्तर दिया:

'सचमुच, मैंने अपने प्रभु की सहायता महसूस की है, क्योंकि मैं इन यातनाओं को कुछ भी नहीं समझता।'

तब यातना देने वालों ने लोहे की छुरी और खुरचनी से उसके शरीर को काटना शुरू कर दिया; और बाद में, उसे एक पेड़ पर उल्टा कीलें ठोककर, उन्होंने उसकी पीठ की खाल उधेड़ दी, और एक गांठदार लाठी से उसके पेट पर तब तक वार करते रहे जब तक कि वह फट नहीं गया और उसके सभी आँत-पाँत जमीन पर नहीं गिर पड़े। पवित्र शहीदों ने, उसके आँतें बाहर गिरते देख, रो पड़े, और यातना देने वाले ने, रोते हुए शहीदों को देखकर, ज़ोर से चिल्लाया:

'अब तुम पराजित हो, अब तुम थक चुके हो; तुम यातनाओं से डरकर रो रहे हो। तुम्हें और क्या साबित करने की ज़रूरत है कि मसीह तुम्हें हमारे हाथों से नहीं बचा सकते? अब तुम्हारे लिए बस इतना ही बचा है कि हमारे देवताओं की पूजा करो।'

लेकिन संतों ने उत्तर दिया:

'तुम एक जानवर हो, इंसान नहीं! हम पराजित नहीं हैं; इसके विपरीत, हम स्वयं यीशु के द्वारा विजयी हैं, जो हमें बल देते हैं; और यदि हम रोते हैं, तो यह यातनाओं के भय से नहीं, बल्कि अपने भाई के प्रति स्वाभाविक प्रेम से है, जिसे आप अमानवीय रूप से यातनाएँ दे रहे हैं; फिर भी हम अपने हृदय में आनंदित हैं, यह देखकर कि धर्मात्मा के लिए पहले से ही एक मुकुट तैयार किया जा चुका है।"

तब राज्यपाल ने उन्हें जेल भेजने का आदेश दिया, और जब उआर, जो एक पेड़ से लटका हुआ यातनाएँ झेल रहा था, ने संतों को बेड़ियों में जकड़कर जेल ले जाते देखा, तो वह चिल्ला उठा:

'मेरे गुरुजनो! एक अंतिम बार मेरे लिए मसीह से प्रार्थना करें, क्योंकि मैं इस देह से विदा हो रहा हूँ; और मैं आपको धन्यवाद देता हूँ कि आपने मुझे अनंत जीवन की ओर मार्गदर्शन किया।'

[7262] अर्थात्, एक मूर्ख से ही मूर्खतापूर्ण बातें सुनी जा सकती हैं।

लगभग पाँच घंटे तक यातनाएँ सहने के बाद, संत उआर ने अपना सम्मानति और पवत्रि आत्मा प्रभु के हाथों में सौंप दयिा[7263] . हालाँकि, उसके यातना देने वालों ने यह सोचकर कि वह अभी भी जीवति है, उसके ठंडे शरीर को पीटा और यातना दी; फरि, यह महसूस होने पर कि वह पहले ही मर चुका था, उन्होंने उसे पेड़ से उतार लयिा और, यातना देने वाले के आदेश पर, उसे शहर से बाहर घसीटकर उस जगह फेंक दयिा जहाँ जानवरों के शव फेंके जाते थे।

पैलेस्टाइन की एक धर्मपरायण वधिवा, जसिका नाम क्लीओपेट्रा था – जसिका पति मिस्रि में एक सैन्य कमांडर था, और जसिका एक बेटा, जॉन, जो अभी भी एक छोटा लड़का था – दूर से ही उआर के दुखों को देखकर दुखी हुई। जब संत का शरीर शहर से बाहर फेंक दयिा गया था, तो वह उस रात अपने साथ कई दासों को ले गई और चुपके से संत वार के अत्यधकि पीड़ति शरीर को ले आई; उसे अपने घर लाने के बाद, उसने अपने शयनकक्ष में, अपने बस्तिर के सामने, उसके लिए एक कब्र खोदी और उसे वहीं रख दयिा।

अगली सुबह, राज्यपाल ने अन्य शहीदों को कालकोठरी से बाहर नकिाला और उन्हें लंबे समय तक यातना देने के बाद, तलवार से उनका सरि कलम कर दयिा और उनके शवों को बनिा दफनाए शहर के बाहर फेंक दयिा; उसी रात कुछ गुप्त ईसाई धर्म के अनुयायियों द्वारा उनके शवों को दफनाया भी गया। क्लीओपात्रा, अपनी ओर से, संत वार की कफ़न पर मोमबत्तयिाँ जलाती और धूप जलाती रहीं, और उन्हें ईश्वर के समक्ष अपने महान मध्यस्थ और वकील के रूप में सम्मानति करती रहीं।

जब कई साल बीत गए और उत्पीड़न थम गया, तो क्लीओपात्रा अपने स्वदेश लौटना चाहती थी और इस बात पर लंबा वचिार करती रही कि वह संत वार के अवशेष अपने साथ कैसे ले जा सकती है। अंत में, एक कीमती उपहार तैयार करके, वह एक मध्यस्थ के माध्यम से राज्यपाल के पास नम्निलखिति अनुरोध के साथ पहुँची:

'मेरे पति एक सैन्य कमांडर थे और राजा की सेवा में रहते हुए यहाँ उनकी मृत्यु हुई; उन्हें अभी तक अंतमि संस्कार नहीं मलिा है, क्योंकि एक वदिेशी भूमि में उन्हें एक महत्वपूर्ण सैन्य कमांडर के अनुरूप दफनाना संभव नहीं है; और मैं, जो एक वदिेशी भूमि में वधिवा हो गई हूँ, अपने परविार के पास अपने देश लौटना चाहती हूँ। इसलिए, हे स्वामी, मुझे अपने प्रयि पति के अवशेषों को अपने साथ ले जाने और उन्हें मेरे वतन में, मेरे पूर्वजों की कब्र में, सम्मानपूर्वक दफनाने की अनुमति दें, क्योंकि मैं मृत्यु के बाद भी उनसे अलग नहीं होना चाहती।

उसने वैसा ही कयिा, क्योंकि उसे डर था कि ईसाई, यह जानकर कि वह पवत्रि शहीद के अवशेष उनके शहर से बाहर ले जा रही है, उसे ऐसा करने से रोक देंगे और उससे यह अनमोल खजाना छीन लेंगे। गवर्नर ने उपहार स्वीकार कर लयिा और उसे अपने पति का शरीर ले जाने की अनुमति दे दी, और उसने, संत वार के अवशेषों को उसकी जगह लेकर, उन्हें मस्रि से फ़लिस्तिीन तक—जैसे कोई कीमती खजाना हो—लाया और अपने गाँव एड्रा में, जो माउंट टाबोर के पास स्थति था, उन्हें अपने पूर्वजों के साथ दफनाया। वह हर दनि संत के मकबरे पर जाती, वहाँ धूप जलाती और मोमबत्तयिाँ जलाती; और, उसके उदाहरण का अनुसरण करते हुए, उस क्षेत्र में रहने वाले अन्य ईसाइयों ने भी संत के मकबरे पर जाने और अपने बीमारों को वहाँ लाने के लिए उसके साथ शामलि होना शुरू कर दयिा, जो संत उआर की प्रार्थनाओं के माध्यम से उनके मकबरे पर ठीक हो गए। और संत उआर की ख्याति आसपास के सभी क्षेत्रों में फैल गई, और सभी श्रद्धापूर्वक उनके मकबरे पर आने लगे।

क्लयिोपात्रा ने जब देखा कि ईसाई संत की कब्र पर प्रार्थना करने के लिए इकट्ठा हो रहे थे, तो उसने उनके नाम पर एक चर्च बनाने का फैसला कयिा और अपने इस नर्णिय को अमल में लाना शुरू कर दयिा। इस समय तक, उसका बेटा जॉन 17 वर्ष का हो गया था, और क्लयिोपात्रा ने उसके लिए शाही सेना में एक स्थान सुनश्चिति करने का प्रयास कयिा[7264] ; कुछ मध्यस्थों की मदद से, उसने अपने बेटे के लिए सेना में एक सम्मानजनक पद के लिए राजा से नविेदन कयिा; उसे सैन्य सेवा में भर्ती कर लयिा गया और ठीक उसी समय उसे अपने पद का प्रतीक चह्नि मलिा जब संत उआर को समर्पति चर्च का नर्मिाण शुरू हुआ था। फरि क्लीओपात्रा ने कहा:

'मेरा पुत्र तब तक शाही सेना में सेवा नहीं देगा जब तक ईश्वर के घर का नर्मिाण पूरा नहीं हो जाता; क्योंकि मैं चाहती हूँ कि वह मेरे साथ पवत्रि शहीद की शवपेटकिा उठाए, और केवल तभी राजा की आज्ञा का पालन करे।'

[7263] संत उआर की मृत्यु वर्ष 307 में हुई।

[7264] इस उम्र में, युवकों को आमतौर पर सैन्य सेवा में भर्ती कर लयिा जाता था।

जब चर्च का निर्माण पूरा हो गया, क्लियोपात्रा ने बिशपों, पुरोहितों और भिक्षुओं को बुलाया और शहीद की पवित्र अवशेषों को ताबूत से निकालकर उन्हें एक कीमती पालकी पर रख दिया; अवशेषों के ऊपर उसने वह कमरबंद और सैन्य पोशाक रखी जो उसके बेटे को पहननी थी, ताकि वे संत के अवशेषों के संपर्क में आकर पवित्र हो जाएँ; साथ ही, उसने संत से विनम्रतापूर्वक प्रार्थना की कि वे उसके पुत्र के सहायक बनें, जिसे इकट्ठा हुए सभी बिशपों और पुरोहितों ने आशीर्वाद दिया था। वहाँ अनगिनत ईसाई एकत्र हुए थे, और अवशेषों को धारण किए हुए ताबूत को चर्च के अंदर ले जाया गया – क्लियोपेट्रा और उसके पुत्र ने स्वयं अवशेषों को उठाया। चर्च के अभिषेक के बाद, संत के अवशेष वेदी के नीचे रख दिए गए, जिस पर दिव्य लिटिर्जी का अनुष्ठान किया जाना था[7265] । इस बीच, क्लियोपेट्रा ने संत वार के अवशेषों के सामने स्वयं को प्रणाम करते हुए, इन शब्दों के साथ प्रार्थना की:

'मैं आपसे प्रार्थना करती हूँ, हे मसीह के शहीद, ईश्वर से मेरे लिए वह माँगिए जो उन्हें प्रसन्न करे और मेरे तथा मेरे एकमात्र पुत्र के लिए लाभदायक हो; मैं प्रभु की अपनी इच्छा से अधिक कुछ माँगने के लिए कुछ नहीं रखती; वही जानते हैं कि हमारे लिए क्या अच्छा है, और उनकी शुभ और पूर्ण इच्छा हम पर पूरी हो!'

दिव्य लिटिर्जी के अंत में, क्लीओपात्रा ने उपस्थिति सभी लोगों के लिए एक भव्य दावत का आयोजन किया, और वह स्वयं अपने बेटे के साथ मिलकर अपने मेहमानों की सेवा कर रही थी। उसी क्षण, मेहमानों की सेवा करते समय, उसका बेटा अचानक बीमार पड़ गया और जाकर अपने बिस्तर पर लेट गया। जब सभी मेहमान मेज से उठ गए, तो क्लीओपात्रा ने अपने बेटे को बुलाना शुरू किया ताकि वह भोजन के बचे हुए हिस्से का स्वाद चख सके, लेकिन जॉन बुखार की तपिश से ग्रस्त होकर एक भी शब्द नहीं बोल सका। अपने बेटे को बीमार पड़ा हुआ देखकर, उसकी माँ ने कहा:

'मैं ईश्वर की कसम खाती हूँ कि जब तक मैं यह नहीं देख लेती कि मेरे बेटे की बीमारी का क्या होता है, मैं मुँह में एक निवाला भी नहीं डालूँगी!'

वह उसके पास बैठ गई, और उसे खाँसी-बुखार से ठंडा करने के लिए हर संभव प्रयास करने लगी, और अपने इकलौते बेटे के लिए शोक मनाने लगी। आधी रात को लड़का मर गया, जिससे उसकी माँ अपार दुख में डूब गई। रोते हुए, वह फिर सेंट वॉर के मंदिर में भागी और, खुद को उसकी कब्र पर फेंकते हुए, चिल्लाई:

'हे ईश्वर के संत, क्या इसी तरह आपने मेरी उस सारी मेहनत का बदला चुकाया है जो मैंने आपके लिए की है? क्या यह वही मदद है जो आपने मुझे दिखाई है, जब मैंने आपके लिए अपने पति को ठुकरा दिया और अपनी सारी आशा आप पर लगा दी? आपने मेरे इकलौते बेटे को मरने दिया, मेरी आशा को नष्ट कर दिया, और मेरी आँखों की रोशनी छीन ली है। अब मेरी वृद्धावस्था में मेरा पालन-पोषण कौन करेगा? मेरी मृत्यु पर मेरी आँखें कौन बंद करेगा? मेरा शव कौन दफनाएगा? मैं अपने बेटे को समय से पहले मुरझाए हुए फूल की तरह मृत देखने से तो खुद मर जाना बेहतर समझूँगी। मुझे मेरा बेटा वापस कर दो, जैसा कि एलीशा ने एक बार शुनेमी महिला के लिए किया था (2 राजा 4), या फिर मुझे तुरंत यहाँ से ले जाओ, क्योंकि मेरी कड़वी दुख के कारण जीवन मेरे लिए बोझ बन गया है।

जब वह संत की कफ़न के पास रो रही थी, तो वह पूरी तरह से थकान और गहरे दुख के मारे कुछ देर के लिए सो गई। अपने सपने में, संत उआर अपने बेटे का हाथ पकड़े हुए उसके सामने प्रकट हुए; दोनों सूर्य की तरह चमक रहे थे और उनके वस्त्र बर्फ से भी अधिक सफेद थे; उन्होंने अपने सिर पर सोने की पट्टियाँ और अतुलनीय सुंदरता के मुकुट पहन रखे थे। उन्हें देखकर, धन्य क्लीओपात्रा उनके पैरों में गिर पड़ी, लेकिन संत उआर ने उसे उठाते हुए कहा:

'हे नारी, तुम मुझसे क्यों शिकायत करती हो? क्या मैंने सचमुच वे उपकार भूल गए जो तुमने मिस्र में और यात्रा के दौरान मुझ पर किए थे? या क्या तुम सोचती हो कि मुझे कुछ भी महसूस नहीं हुआ जब तुमने मेरे मृत शरीर को मरे हुए मवेशियों के ढेर से उठाया और मुझे अपने कक्ष में लिटाया? क्या मैं हमेशा आपकी प्रार्थनाओं पर ध्यान नहीं देता और आपके लिए ईश्वर से प्रार्थना नहीं करता? और सबसे बढ़कर, मैंने आपके उन संबंधियों की ओर से ईश्वर से विनती की, जिनके साथ आपने मुझे कब्र में रखा था, कि उनके पापों को क्षमा किया जाए। फिर मैंने आपके पुत्र को स्वर्गीय राजा की सेवा में ले लिया। क्या यह आप स्वयं नहीं थे जिन्होंने मुझसे यहाँ अपने और अपने पुत्र के लिए वह प्रार्थना करने को कहा जो ईश्वर को प्रसन्न करे और आपके तथा आपके पुत्र के लिए लाभदायक हो? तो मैंने सर्व-सत्पुरुष ईश्वर से प्रार्थना की, और उन्होंने, अपनी अकथनीय कृपा से, यह अनुग्रह करने की कृपा की कि आपका पुत्र उनके स्वर्गीय

[7265] और आज भी, जब ऑर्थोडॉक्स चर्च बनाए जाते हैं, तो यह प्राचीन प्रथा निभाई जाती है – कि शहीदों की हड्डियों पर वेदी स्थापित की जाती है।

दल में स्वीकार किया जाए; और अब, जैसा कि आप देख सकते हैं, आपका पुत्र उन लोगों में से एक बन गया है जो ईश्वर के सिंहासन के सामने खड़े हैं। यदि, तथापि, आप चाहें, तो उसे वापस ले जाएँ और उसे सांसारिक और क्षणिक राजा की सेवा में भेज दें; मैं देखता हूँ कि आप नहीं चाहते कि वह स्वर्गीय और शाश्वत राजा की सेवा करे।

वह लड़का, जो उआर की बाहों में बैठा था, उसे गले लगाकर बोला:

'नहीं, मेरे स्वामी! मेरी माँ की न सुनें—मुझे उस दुनिया में वापस न भेजें जो अन्याय और हर तरह की अव्यवस्था से भरी है, जहाँ से मैं आपकी मध्यस्थता की बदौलत बचा हूँ; मुझे आप और संतों के साथ की संगति से वंचित न करें, पिताजी।'

फिर, अपनी माँ की ओर मुड़कर, उसने कहा:

'माँ, तुम इतनी क्यों रो रही हो? मुझे राजा—मसीह—की सेना में शामिल कर लिया गया है और मुझे स्वर्ग में स्वर्गदूतों के साथ उनके सामने खड़े होने का अधिकार मिला है, फिर भी तुम अब मुझसे कहती हो कि मुझे राज्य से अपमान के लिए ले जाया जाए।'

धन्य क्लीओपात्रा ने, यह देखकर कि उसके पुत्र को एक स्वर्गदूत का पद प्राप्त हुआ है, कहा:

'तो मुझे भी अपने साथ ले चलो, ताकि मैं भी तुम्हारे साथ रहूँ।'

लेकिन संत उआर ने उत्तर दिया:

'यहाँ पृथ्वी पर रहते हुए भी, तुम हमारे साथ ही हो; शांति से जाओ, और बाद में, जब प्रभु आज्ञा देंगे, तो हम तुम्हें लेने आएँगे।'

इन शब्दों के बाद, दोनों अदृश्य हो गए। जब वह होश में आई, तो उसने अपने हृदय में अकथनीय आनंद और प्रसन्नता महसूस की और पुरोहितों को अपने दर्शन के बारे में बताया; उनके साथ मिलकर, उसने संत वार और अपने पुत्र को सम्मानपूर्वक दफनाया, अब रोती नहीं बल्कि प्रभु में आनंदित हो रही थी। इसके बाद, उन्होंने अपनी संपत्ति जरूरतमंदों में बाँट दी, जबकि उन्होंने स्वयं संसार का त्याग कर सेंट वार के चर्च में रहकर उपवास और प्रार्थना के माध्यम से दिन-रात ईश्वर की सेवा की। हर सप्ताह रविवार को, जब वह प्रार्थना कर रही होती थीं, तो सेंट वार अपने पुत्र के साथ एक तेजस्वी प्रकाश में उनके सामने प्रकट होती थीं। ऐसे तपस्वी प्रयासों में सात वर्ष व्यतीत करने के बाद, धन्य क्लीओपात्रा का परमेश्वर को प्रसन्न करके निधन हो गया। उनके शरीर को संत उआर के चर्च में, उनके पुत्र जॉन के शरीर के बगल में, विश्राम के लिए रखा गया, जबकि उनकी पवित्र आत्मा, संत उआर और जॉन के साथ, स्वर्ग में परमेश्वर के सामने आनंद में खड़ी है; उनकी महिमा हमेशा और हमेशा हो, आमीन।

वारा और उनके साथ के सात ईसाई शिक्षकों के लिए ट्रॉपारियन:

हे शहीद, संतों के समूह में, तुमने पीड़ितों के लिए न्यायपूर्वक दुख सहकर, यद्यपि वे अन्याय से सताए गए, पुरुषोचित साहस के साथ अपनी शक्ति का प्रदर्शन किया। तुमने अपनी स्वेच्छा से दुख में पूरी तरह कूद पड़े, और मसीह के लिए मरने की लालसा की; हे वारा, तुमने जो अपने दुख के द्वारा विजय का सम्मान प्राप्त किया, प्रार्थना करो कि हमारी आत्माएँ उद्धार पाएँ।

कॉन्टाकियन, स्वर 4:

हे शहीद उआर, मसीह का अनुसरण करते हुए, आपने उनका प्याला पीकर शहादत का मुकुट प्राप्त किया, और अब स्वर्गदूतों के साथ आनंदित हैं: हमारे प्राणों के लिए अनवरत प्रार्थना करें।

हमारे पूजनीय पिता जॉन ऑफ़ रिल्स्क की स्मृति

19 अक्टूबर को स्मरणोत्सव

हमारे पूज्य पिता जॉन ऑफ़ राइल, एक महान तपस्वी, बुल्गारियाई गाँव स्क्रिना के मूल निवासी थे, जो महिमामय शहर स्रेडेट्स के पास स्थित था[7266] । वे बुल्गारिया के ईश्वर-प्रेमी सम्राट पीटर के शासनकाल में और ग्रीक सम्राट कॉन्स्टेंटिन पोर्फ्योजेनिटिस के अधीन रहते थे[7267] । अपने धर्मपरायण माता-पिता की मृत्यु के बाद, जॉन ने अपनी विरासत में मिली सारी संपत्ति गरीबों में बाँट दी – क्योंकि अपने युवा काल से ही वह ईश्वर से सर्वोपरि प्रेम करता था – जबकि उसने स्वयं मठवासी संन्यास की शपथ ली और अपने मूल गाँव को छोड़ दिया, अपने साथ केवल एक चमड़े का वस्त्र ही लिया। एक ऊँचे और सुनसान पहाड़ पर चढ़कर, उन्होंने वहाँ तपस्वी जीवन जीना शुरू कर दिया, और केवल जंगली पौधों पर ही जीवन यापन किया। कुछ समय बाद, शैतान के उकसावे पर, एक रात डाकुओं ने जॉन पर हमला किया, उसे पीटा और वहाँ से भगा दिया। तब जॉन उस पहाड़ से रिल्स्क रेगिस्तान[7268] के लिए निकल पड़े, जहाँ उन्होंने अपना कठोर तपस्वी जीवन जारी रखा; वहाँ उन्होंने एक पेड़ की बड़ी खोखली जगह में निवास किया, अपना समय उपवास और आँसुओं में बिताया, और ईश्वर से अखंड प्रार्थनाएँ कीं। वह साठ साल तक रेगिस्तान में रहा; वहाँ उसने केवल पौधों पर ही जीवन यापन किया, किसी दूसरे इंसान का चेहरा नहीं देखा, और उसके चारों ओर केवल जंगली जानवर ही थे। जॉन के धैर्य को मान्यता देते हुए, ईश्वर ने उस जगह पर मटर उगा दिए, और उस धन्य व्यक्ति ने कई वर्षों तक इन्हीं मटरों का सेवन किया।

एक दिन, कुछ चरवाहों ने जॉन के छिपे रहने की जगह का पता लगा लिया और इस खबर को दूर-दूर तक फैला दिया[7269] । कई लोग जॉन के पास आने लगे और बीमारों को उसके पास लाने लगे, जो उसकी प्रार्थनाओं से ठीक हो गए। उस पूजनीय संत की ख्याति पूरे देश में फैल गई, और कई लोग, संत जॉन के तपस्वी जीवन से प्रेरित होकर, उनके पास रहने की इच्छा रखने लगे। एक पड़ोसी गुफा में, उन्होंने एक चर्च बनाया और एक मठ की स्थापना की, जिसका आदरणीय जॉन मठाध्यक्ष और आध्यात्मिक पिता थे। अपने झुंड के एक अच्छे चरवाहे के रूप में, जॉन ने कई अविश्वासियों को प्रभु के पास लाया और उनके नाम पर महान और शानदार चमत्कार किए[7270] ।

दीर्घायु प्राप्त कर, जॉन का स्वर्ग में शाश्वत आनंद प्राप्त करते हुए शांतिपूर्वक निधन हो गया[7271] , और उनके शिष्यों द्वारा उनका दफन किया गया।

कुछ समय बाद, जॉन अपने शिष्यों के सामने प्रकट हुए और उन्हें अपने अवशेषों को श्रेडेट्स शहर में स्थानांतरित करने का आदेश दिया। ताबूत खोलने पर, उन्होंने जॉन का शरीर अक्षुण्ण और अपरिवर्तित देखा, जिससे एक मीठी सुगंध आ रही थी, और उन्होंने इसके लिए ईश्वर की स्तुति की। वे उन्हें सम्मानपूर्वक श्रेडेट्स शहर ले गए और उन्हें संत ल्यूक द एवेंजेलिस्ट के चर्च में सुला दिया। बाद में, उस स्थान पर परम पूजनीय जॉन को समर्पित एक सुंदर चर्च बनाया गया, और उनके पवित्र अवशेष वहां रखे गए, जिससे अद्भुत और शानदार चमत्कारी उपचार हुए।

कई वर्षों बाद, हंगरी के राजा ने एक बड़ी सेना के साथ ग्रीक क्षेत्र में प्रवेश किया और उसे अपने शासन में ले लिया। स्रेडेट्स शहर पहुँचने पर, उसने संत की अवशेषों वाली संदूकची ले ली। – क्योंकि उसने संत के चमत्कारों के बारे में बहुत कुछ सुना था – और आदेश दिया कि इसे सम्मान के साथ उसके अपने देश ले जाया जाए और एस्ज़्टरगोम शहर में

[7266] स्रेडेट्स – प्राचीन काल में, सार्डिका। आज, इस शहर को सोफिया कहा जाता है और यह बुल्गारिया की रियासत की राजधानी है।

[7267] पीटर ने 927 से 968 तक बुल्गारिया पर शासन किया – कॉन्स्टेंटिन VII पोर्फ्योजेनिटिस ने 912 से 959 तक बाइजेंशियम पर शासन किया।

[7268] इसका नाम रासलोग जिले में स्थित रिलो नदी के नाम पर पड़ा।

[7269] ऐसा हुआ कि भेड़ें, अचानक किसी डर के मारे, तेज बहाव में बहती हुई उस जगह तक चली गईं जहाँ एक तपस्वी रहता था। चरवाहे, जो उनके पीछे भागे थे, तपस्वी को देखकर चकित रह गए। 'तुम भूखे यहाँ आए हो: मेरी कुछ मटर चुन लो और खा लो,' तपस्वी ने कहा। उन्होंने खाया और तृप्त हो गए; उनमें से केवल एक ने ही संन्यासी की अनुमति के बिना, भविष्य के लिए कुछ फलियाँ इकट्ठी कर ली थीं, और जब उसने उन्हें रास्ते में अपने साथियों को दिया, तो चोरी की उन फलियों में एक भी मटर नहीं मिला। वे पछतावे से भरकर उस दयालु बूढ़े आदमी के पास लौट आए। वरिष्ठ ने उन्हें क्षमा कर दिया और मुस्कुराते हुए कहा: 'देखो, मेरे बच्चों, ये फल रेगिस्तानवासियों के भरण-पोषण के लिए ईश्वर द्वारा निर्धारित हैं।'

[7270] कई लोग आदरणीय जॉन के पास आए और अपने बीमारों को लाए, जो संत की प्रार्थनाओं से चंगे हो गए। एक आदमी, जिस पर कई वर्षों से एक अशुद्ध आत्मा का साया था, जॉन के रेगिस्तान की ओर जाते लोगों को देखकर उनके पीछे-पीछे चल पड़ा। वह रिल्स्क रेगिस्तान से अभी एक वर्स्ट (लगभग एक मील) भी नहीं पहुँचा था कि वह ज़मीन पर गिर पड़ा और चिल्लाने लगा: 'मैं और आगे नहीं जा सकता: मुझमें आग लग रही है।' उसके साथियों ने, उस भूतग्रस्त आदमी को बाँधने के बाद, उसे पूजनीय पिता के पास ले गए और उससे उसे ठीक करने की विनती की। उन्होंने कहा, 'मेरे बच्चों, यह मेरे बस की बात नहीं है; मैं भी तुम ही जैसा एक कमज़ोर इंसान हूँ; केवल ईश्वर ही उसे ठीक कर सकते हैं।' उन्होंने ज़िद करके उनसे विनती की, और तपस्वी ने उसके लिए प्रार्थना की: अचानक वह बीमार व्यक्ति स्वस्थ हो गया, और सभी ने ईश्वर की स्तुति की।

[7271] संत जॉन का 18 अगस्त 946 को, 70 वर्ष की आयु में निधन हो गया।

रखा जाए[7272] । हालाँकि, एस्ज़्टरगोम के आर्चबशिप ने, यह सुनकर कि रिलो के पूजनीय जॉन परमेश्वर के सामने महान थे और सभी देशों में अपने चमत्कारों के लिए प्रसिद्ध थे, इसे मानने से इनकार कर दिया।

'प्राचीन ग्रंथों में ऐसे चमत्कार करने वाले का कोई उल्लेख नहीं है,' उन्होंने कहा, और उन्होंने संत को श्रद्धांजलि देने से इनकार कर दिया। फिर, अचानक, उनकी जीभ लकवाग्रस्त हो गई। यह महसूस करते हुए कि उसकी गूंगी होने का कारण पूजनीय संत का अपमान करना था, आर्चबशिप संत के अवशेषों के पास दौड़े और, उनके सामने प्रणाम करके, उनके पवित्र अवशेषों को चूमा, और अपने अपराध के लिए क्षमा याचना की। ईश्वर-प्रसन्न संत जॉन ने जल्द ही आर्चबशिप की प्रार्थना सुन ली: उन्होंने तुरंत उसकी जीभ खोल दी और उसकी स्पष्ट रूप से बोलने की क्षमता को बहाल कर दिया। चंगा हो जाने पर, आर्चबशिप ने रोते हुए, सभी उपस्थित लोगों के सामने संत के सामने अपने अपराध का इकरार किया, और ईश्वर की स्तुति की तथा उनके ईश्वर-प्रसन्न सेवक, संत जॉन की प्रशंसा की।

संत ने हंगरी की भूमि में कई अन्य शानदार चमत्कार भी किए। सेंट जॉन के इन चमत्कारों से चकित होकर, हंगरी के राजा ने संत की अवशेष-पेटी को चांदी और सोने से सजाया और उनके अवशेषों को चूमकर, उन्हें बड़े सम्मान के साथ स्रेडेट्स शहर वापस भेज दिया। इस प्रकार, कुछ समय बाद, ईश्वर को बुल्गारियाई राज्य की स्वतंत्रता बहाल करना उचित लगा, जो यूनानियों की हिंसा से थक चुका था, और बुल्गारियाई साम्राज्य का यह पुनरुत्थान मसीह-प्रेमी ज़ार जॉन एसेन के अधीन हुआ। इस ज़ार ने अपने शासन के आरंभ में ही, बर्बाद हो चुके बुल्गारियाई शहरों का पुनर्निर्माण और उन्हें मज़बूत किया और पड़ोसी भूमि के खिलाफ़ युद्ध छेड़कर अपने राज्य में नए शहरों को शामिल किया। स्रेडेत्स शहर पहुँचकर और उस पर विजय प्राप्त करके, उन्होंने वहाँ रिलो के पूजनीय जॉन के अवशेष देखे और उनके माध्यम से हुए चमत्कारों के बारे में सुनने के बाद, उनके पवित्र अवशेष-पात्र को श्रद्धांजलि अर्पित की। उनके सबसे सम्मानित अवशेषों को चूमने के बाद, उन्होंने पैट्रआर्क बेसिल और उनके पुरोहितों को संत के गौरवशाली अवशेष-पात्र को लेने और उसे बड़ी सम्मान के साथ बुल्गारियाई राजधानी, तर्नोवो ले जाने का आदेश दिया; और, ज़ार के आदेश पर, 300 चुनिंदा योद्धाओं ने इस जुलूस में भाग लिया।

पैट्रआर्क बेसिल ने सबसे सम्मानित अवशेष-संयोजक को एक रथ पर रखा, और सभी ईश्वर की स्तुति करते हुए और संत की प्रार्थनाओं द्वारा संरक्षित होकर आनंदपूर्वक प्रस्थान कर गए; उनमें आदरणीय संत द्वारा स्थापित मठ के भिक्षु भी थे, जिनके साथ उनके मठाधीश, इओआनिकियोस थे। धार्मिक ज़ार जॉन-आसेन स्वयं जुलूस के आगे बढ़े और राजधानी पहुँचकर, वहाँ एक चर्च और संत की अवशेष-पेटी के लिए एक स्थान तैयार करने का आदेश दिया।

जब ज़ार को पता चला कि आदरणीय संत की अवशेषों को ले जाने वाली शोभायात्रा आ रही है, तो वह स्वयं अपने कुलीनों, अधिकारियों और लोगों की भारी भीड़ के साथ 'खंदक'[7273] पर उनका स्वागत करने गए, और सभी ने आनंद मनाया और प्रसन्न हुए[7274] । पवित्र अवशेषों को देखकर, सभी ने उनके सामने नमन किया। आदरणीय के अवशेष 'खाई' में सात दिनों तक रहे, जब तक कि चर्च का पुनर्निर्माण नहीं हो गया। और जब इसका पुनर्निर्माण हो गया, तो पवित्र अवशेष वहाँ स्थानांतरित किए गए और बड़े सम्मान के साथ विराजमान किए गए, जबकि चर्च स्वयं अभिषिक्त किया गया। वहाँ, आज भी, पूज्यनीय संत की चमत्कारी अवशेषें विश्राम करती हैं, जो उपचार का एक निरंतर स्रोत हैं: जो लोग श्रद्धा के साथ आते हैं - अंधों को दृष्टि मिलती है, मूक बोलने लगते हैं, बीमार स्वस्थ हो जाते हैं, और दानवों के वश में पड़े लोग ठीक हो जाते हैं।

[7272] एज़्टरगोम हंगरी में, गारा नदी के मुहाने के सामने, डैन्यूब नदी के दाहिने किनारे पर स्थित एक शहर है। यह एक बहुत ही प्राचीन शहर है और हंगरी में ईसाई धर्म का पालना था। इसके निवासी रोमन कैथोलिक हैं। एज़्टरगोम के आर्चबशिप पूरे हंगरी के प्रिमेट-प्राइमेट भी हैं। (प्राइमेट एक कैथोलिक आर्चबशिप का खिताब है, जो पश्चिम में पूर्व के पैट्रआर्क के खिताब के बराबर है।) परम पूजनीय को वर्ष 1097 ईस्वी में उनके पवित्र चर्च में पुनःदफनाया गया था।

[7273] रैम्पार्ट एक शहर की दीवार है।

[7274] माननीय जॉन के अवशेषों का स्थानांतरण 1238 में हुआ था। चर्च इस स्थानांतरण का स्मरण 19 अक्टूबर को करता है।

रलि्स्क के जॉन के लिए ट्रॉपारयिन, स्वर 1:

पश्चाताप की नींव, पश्चात्ताप का आदर्श, सांत्वना की प्रतमिूर्ति, आपका जीवन आध्यात्मकि पूर्णता का था, जो स्वर्गदूतों के समान था, हे पूजनीय। प्रार्थना, उपवास और आँसुओं में नविास करते हुए, हे पति जॉन, हमारे प्रभु ईसा मसीह से हमारी आत्माओं के लिए प्रार्थना करें।

टर्नोवो से रलि्स्क मठ में अवशेषों की वापसी के लिए ट्रॉपारयिन:

आपकी अवशेषों की वापसी से आपका मठ समृद्ध हुआ है; और आपकी कलीसयिा, उन्हें प्राप्त करके, प्रकाशति और सुसज्जति होकर, वशि्वासयिों को आनंद के साथ आपके तेजस्वी पर्व दविस का उत्सव मनाने के लिए बुलाती है, यह कहते हुए, 'आओ, और अनुग्रह के उपहार प्राप्त करो।'

कॉन्टाकयिन, स्वर 8:

हे पूजनीय, स्वर्गदूतों के जीवन का अनुकरण करने के उत्सुक, आपने सभी सांसारकि चीजों को पीछे छोड़ दयिा और मसीह की ओर शीघ्रता से बढ़े; और, उनके आज्ञाओं से सुरक्षति, आपने शत्रु के हमलों के वरिुद्ध स्वयं को एक अटूट स्तंभ साबति कयिा।

- उसी दनि, फारस के बशिप, पवत्रि पुरोहति-शहीद ज़ादोक और उनके साथ 128 शहीदों की शहादत हुई। उनकी स्मृति 20 फरवरी को भी मनाई जाती है।

2 नवंबर

20 अक्टूबर (पुराने कैलेंडर के अनुसार)

संत आर्टेमयिस शहीद

20 अक्टूबर को स्मरण कयिा जाता है

प्राचीन वृत्तांत बताते हैं कि पवत्रि शहीद आर्टेमयिस का जन्म एक प्रतष्ठिति रोमन परविार में हुआ था, वे सेनेटर के पद पर थे, और सम्राट कॉन्स्टैंटयिस के अधीन सभी शाही संपत्तयिों के प्रभारी थे।

आर्टेमयिस ने इस धर्मपरायण सम्राट की सेना में, महान कॉन्स्टेंटाइन के अधीन अपनी सेवा शुरू की। जब उन्होंने कॉन्स्टेंटाइन के साथ मलिकर स्वर्ग में पवत्रि क्रूस के चमत्कारी चहि्न को देखा, तो उनका ईसाई वशि्वास दृढ़ हुआ और वे सम्राट कॉन्स्टेंटाइन और उनके परविार के एक वफादार सेवक बन गए[7275] । कॉन्स्टेंटाइन की मृत्यु के बाद, वे अपने बेटे, कॉन्स्टैंटयिस[7276] के सबसे करीबी दोस्त के रूप में हमेशा उनके साथ रहे, और सम्राट ने उन्हें सबसे सम्मानजनक कर्तव्य सौंपे। इस प्रकार, जब कॉन्स्टैंटयिस को एक नशि्चति बशिप से पता चला कि मसीह के प्रेरतिों एंड्रयू और ल्यूक के शरीर अकेया[7277] में दफन थे, तो उन्होंने आर्टेमयिस को इन कीमती अवशेषों को कॉन्स्टेंटनिोपल ले

[7275] कॉन्स्टेंटनि ने अपने शक्तशिाली प्रतदि्वंद्वी, मैक्सेंटीयस के खलिाफ हथयिार उठा लिए। वह नहीं जानता था कि मदद के लिए कसिसे प्रार्थना करे, और फरि, जब पश्चमि में सूरज ढल रहा था, कॉन्स्टेंटनि ने आकाश में एक चमकता हुआ क्रॉस देखा जसिके नीचे लखिा था: 'इस नशिान से, तुम वजिय प्राप्त करोगे'; उसकी सेना ने भी यह नशिान देखा। उस रात, एक सपने में, मसीह स्वयं कॉन्स्टेंटाइन के सामने प्रकट हुए और उन्हें एक क्रॉस के आकार का ध्वज बनवाने और अपने सैनकिों के ढालों और हेलमेट पर क्रॉस अंकति करने का आदेश दयिा। कॉन्स्टेंटाइन ने जैसा कहा गया वैसा ही कयिा – और जल्द ही मैक्सेंटयिस की सेनाओं को पूरी तरह से परास्त कर दयिा। इसके बाद, उन्होंने खुले तौर पर ईसाई धर्म के प्रति अपनी सहानुभूति की घोषणा की।

[7276] उन्होंने 337 से 361 तक शासन कयिा।

[7277] ग्रीस का एक प्रांत।

जाने का काम सौंपा। आर्टेमियस ने राजा की आज्ञा का पालन करते हुए, पवित्र प्रेरितों के अवशेषों को बहुत सम्मान के साथ शाही शहर में पहुँचाया, और इसके लिए उसे राजा से पदोन्नति मिली, जिसके वह पूरी तरह से हकदार थे: अर्थात्, राजा ने उसे मिस्र का ड्यूक और ऑगस्टलियन[7278] बनाया, और आर्टेमियस वहाँ परमेश्वर को प्रसन्न करते हुए रहे। यीशु मसीह के नाम के सम्मान और महिमा को फैलाते हुए, उन्होंने मिस्र में कई मूर्तियों को उखाड़ फेंका और नष्ट कर दिया।

जब महान कॉन्स्टेंटाइन के पुत्र राजा कॉन्स्टेंटियस की मृत्यु हो गई, तो समूचे रोमन साम्राज्य पर अधर्मी धर्मत्यागी जूलियन[7279] का अधिकार हो गया, जो पहले गुप्त रूप से और अब खुले तौर पर हमारे प्रभु यीशु मसीह से मुंह मोड़ चुका था और उसने खुलेआम मूर्तियों की पूजा करना शुरू कर दिया था। उसने अपने राज्य के सभी पूर्वी और पश्चिमी प्रदेशों में एक फरमान जारी किया, जिसमें आदेश दिया गया कि जो मंदिर, कॉन्स्टेंटाइन महान के शासनकाल के दौरान ईसाइयों द्वारा मूर्तिपूजकों से लिए गए थे, उन्हें अब मूर्तिपूजकों को वापस कर दिया जाए; साथ ही, उसने आज्ञा दी कि इन मंदिरों में फिर से मूर्तियाँ स्थापित की जाएँ और देवताओं को बलिदान चढ़ाया जाए।

इस प्रकार, इस अधर्मी राजा ने सर्वत्र बहुदेववाद को बहाल कर दिया, जिसे पवित्र सम्राट कॉन्स्टेंटिन के अधीन समाप्त कर दिया गया था, और साथ ही उसने ईसाइयों पर कठोर अत्याचार किया, उन्हें यातनाएँ दीं और मार डाला, उनकी संपत्ति लूट ली और यीशु मसीह के पवित्र नाम का अपमान किया।

ईसाई धर्म को अपमानित करने के लिए, निष्ठाहीन जूलियन ने अवशेष-पेटिका से पवित्र भविष्यवक्ता एलिशा की हड्डियाँ और संत जॉन द बैपटिस्ट के अवशेष निकाल लिए – सिवाय उनके पूजनीय सिर और दाहिने हाथ के, जो सेबास्टे में रखे थे – और, उन्हें जानवरों और निष्ठाहीन लोगों की हड्डियों के साथ मिलाकर, उन्हें जला दिया, और उनकी राख को हवा में बिखेर दिया; ईसाइयों ने राख और जलने के बाद बची हुई हड्डियों को इकट्ठा किया और उन्हें सम्मान के स्थान पर संरक्षित किया।

तब उसे पता चला कि पानेआडा नगर में ([7280]) मसीहा उद्धारकर्ता की एक मूर्ति खड़ी थी, जिसे रक्तस्राव से पीड़ित उस महिला ने स्थापित किया था, जिसे मसीह के वस्त्र के किनारे को छूकर चंगा किया गया था (मत्ती 9:20)। राजा ने इस मूर्ति को गिरा दिया और आदेश दिया कि इसे चौक के पार घसीटकर ले जाया जाए जब तक कि यह पूरी तरह से चकनाचूर न हो जाए; केवल मूर्ति का सिर एक ईसाई द्वारा चुरा लिया गया और संरक्षित किया गया। जिस स्थान पर मूर्ति खड़ी थी, वहाँ राजा ने अपनी ही मूर्ति खड़ी करने का आदेश दिया, जिसे हालांकि एक बिजली की चमक ने गिरा दिया।

एक बड़ी सेना इकट्ठा करने के बाद, अधर्मी जूलियन ने फारसियों के खिलाफ मार्च करने का निश्चय किया, और इस अभियान के दौरान, अंतीयक पहुँचने पर, उसने अपनी आदत के अनुसार मसीह की कलीसिया पर अत्याचार शुरू किया, और विश्वासियों को मौत की सज़ा दी।

उस समय, अंतीयक के दो प्रेस्बिटर, यूजिन और मकरियस—जो विद्वान पुरुष थे—को उनके सामने लाया गया। जूलियन ने उनके साथ देवताओं के बारे में लंबी बहस की, और अपने अधर्मी विचारों का समर्थन करने के लिए मूर्तिपूजक यूनानी लेखकों के विभिन्न अंशों का हवाला दिया, लेकिन वह बुद्धिमान बुजुर्गों के ईश्वर-वचन बोलने वाले होठों को चुप नहीं करा सका; इसके विपरीत, वह स्वयं उनके द्वारा परास्त हो गया, लज्जित हुआ और एक अधर्मी व्यक्ति के रूप में उजागर हो गया। अपनी इस अपमान को सहन न कर पाकर, जूलियन ने संतों को निर्वस्त्र करने के बाद निर्दयता से कोड़े लगाने का आदेश दिया; यूजीन को पाँच सौ कोड़े लगे, जबकि मिकरियस को अनगिनत कोड़े लगे।

जब इन संतों को कठोर यातनाएँ दी जा रही थीं, तब महान आर्टेमियस संयोग से निष्पादन के स्थान पर मौजूद थे। यह सुनकर कि जूलियन सिंहासन पर चढ़ गया है और वह फारसियों के खिलाफ मार्च कर रहा है—जिसके मद्देनजर उन्हें भी अपने सभी सैनिकों के साथ एंटिओक पहुँचने का आदेश दिया गया था— – आर्टेमियस अपनी सेना के साथ यहाँ आए, उन्होंने जूलियन को एक राजा के योग्य सम्मान दिया, उसे उपहार भेंट किए, और राजा के पास तब खड़े रहे जब पवित्र स्वीकारकर्त्ता, यूजीन और मकरियस को यातनाएँ दी जा रही थीं। जब धर्मद्रोही जूलियन को अपने घृणित मुख से प्रभु यीशु मसीह का अपमान करते सुना, तो आर्टेमियस उत्साह से भर गया और राजा के पास जाकर कहा:

[7278] डक्स – एक सैन्य कमांडर। ऑगस्टस – एक उपाधि जो आधुनिक उपाधि 'हिज़ हाइनेस' के समकक्ष है।

[7279] जूलियन, कॉन्स्टेंटाइन महान का भतीजा, कॉन्स्टैंटियस के साथ सह-शासक था जब तक कि बाद वाला जीवित था, और वह रोमन साम्राज्य के पश्चिमी प्रांतों पर शासन करता था।

[7280] उत्तरी फिलिस्तीन का एक शहर (जिसे सेज़ारिया फिलिपी भी कहा जाता है)।

'हे महाराज, आप इन निर्दोष पुरुषों, जो ईश्वर को समर्पित हैं, को इतनी अमानवीय रूप से क्यों पीड़ा देते हैं, और उन्हें ऑर्थोडॉक्स धर्म को त्यागने के लिए क्यों मजबूर करते हैं? जान लें कि आप भी एक नश्वर मानव हैं; भले ही ईश्वर ने आपको राजा नियुक्त किया है, फिर भी आप शैतान के प्रलोभन के अधीन हो सकते हैं; मेरा मानना है कि बुराई का मुख्य उकसाने वाला धूर्त शैतान है। जैसे उसने एक बार यीशु के धैर्य की परीक्षा करने के लिए ईश्वर से अनुमति मांगी थी और उसे प्राप्त की थी, वैसे ही उसने आपको हमारे विरुद्ध कर दिया है और आपको अपने ही हाथों से मसीह के गेहूँ को नष्ट करने और अपनी ही खरपतवार बोने के लिए उकसाया है। लेकिन उसके प्रयास व्यर्थ हैं और उसकी शक्ति नगण्य है; क्योंकि जब से प्रभु आए और वह क्रूस खड़ा किया गया, जिस पर मसीह को ऊँचा उठाया गया, तब से दानवों का घमंड टूट गया है और उनकी शक्ति कुचल दी गई है। इसलिए, हे राजा, धोखा न खाओ, और राक्षसों को प्रसन्न करने के लिए उन ईसाई लोगों को सताओ नहीं, जिनकी रक्षा ईश्वर करता है। जान लो कि मसीह की शक्ति और सामर्थ्य अजेय और अतुलनीय है।

यह सुनकर, जूलियन क्रोध से आग-बबूला हो गया और ऊँचे स्वर में चिल्लाया:

'यह अधर्मी व्यक्ति कौन है, और यह कहाँ से आया है, जो हमसे इतनी बेधड़क बात करता है और हमारे सामने हम पर अपमान करने की हिम्मत करता है?'

राजा के सामने खड़े लोगों ने उत्तर दिया:

'हे राजा! वह अलेक्जेंड्रिया का डक्स और ऑगस्टालिस है।'

राजा ने कहा, "क्या?" "क्या यह वही नीच आर्टेमियस है जिसने मेरे भाई गैलस की हत्या में भाग लिया था[7281] ?"

'हाँ, हे महान राजा, वही है,' उसके सामने खड़े लोगों ने उत्तर दिया।

तब राजा ने कहा:

'मुझे अमर देवताओं, और सबसे बढ़कर डाफ्ने के अपोलो[7282] का धन्यवाद करना चाहिए, जिन्होंने इस दुश्मन को मेरे हाथों में सौंपा है, जो अपनी मर्जी से यहाँ आया है। इसलिए, इस नीच को उसके पद से हटा दिया जाए; उसकी कमरबंद हटा दी जाए[7283] और उसे तुरंत दंड दिया जाए; और कल, यदि देवताओं को प्रसन्नता हो, तो मैं अपने भाई की हत्या के लिए उस पर न्याय करूंगा। मैं उस पर निर्दोष रक्त का बदला लूंगा और उसे एक ही दंड से नहीं, बल्कि कई दंडों से नष्ट कर दूंगा, क्योंकि उसने किसी आम आदमी का नहीं, बल्कि एक राजा का रक्त बहाया है।

जब राजा ने ये शब्द कहे, तो उसके हथियारबंदों ने तुरंत आर्टेमियस को पकड़ लिया और उसे उसके कमांडर की पट्टियाँ और पद की अन्य निशानियाँ उतारकर नग्न छोड़ दिया। और संत को जल्लादों के हवाले कर दिया गया, जिन्होंने उसके हाथ-पैर बांधकर उसे चारों दिशाओं में खींचा[7284] , और बैल की नसों से उसकी पीठ और पेट पर तब तक मारा कि थकान के कारण चार जोड़ों जल्लादों को बदलना पड़ा। लेकिन संत ने वास्तव में अलौकिक धैर्य का प्रदर्शन किया, और सभी को ऐसा प्रतीत हुआ मानो वह पूरी तरह से संवेदनहीन हों: उन्होंने एक भी आवाज़ नहीं निकाली, कराह नहीं भरी, एक भी हरकत नहीं की, और पीड़ा का कोई संकेत नहीं दिखाया, जैसा कि यातना सहने वाले लोग आमतौर पर करते हैं। ज़मीन उसके खून से लथपथ हो गई थी, फिर भी वह अडिग रहा, जिससे सभी चकित रह गए, यहाँ तक कि स्वयं अधर्मी जूलियन भी। तब सम्राट ने पिटाई बंद करने का आदेश दिया, और संत को पवित्र शहीदों यूजीन और मकरियस के साथ जेल ले जाया गया। उसी क्षण, शहीदों ने गाया: *'हे परमेश्वर, तूने हमें परखा है; तूने हमें उस प्रकार शुद्ध किया है जैसे चाँदी को शुद्ध किया जाता है। तूने हमें जाल में डाल दिया है; तूने हमारी कमर पर बेड़ियाँ डाल दी हैं; तूने हमारे सिर पर एक मनुष्य को नियुक्त किया है। हम आग और पानी से गुज़रे हैं, और तूने हमें स्वतंत्रता में निकाल लिया है'* (भजन संहिता 65:10–12)[7285] .

[7281] गैलस, जूलियन का भाई, को कॉन्स्टैंटियस ने सहिासन का उत्तराधिकारी बनाया था – जिनके कोई संतान नहीं थी – लेकिन बाद में कॉन्स्टैंटियस के क्रोध का शिकार हुआ क्योंकि उसने खुलेआम उन्हें सहिासन से हटाने की कोशिश की। कॉन्स्टैंटियस ने पूर्वी प्रांतों पर गैलस के अधिकार को छीनने के लिए अपने विश्वसनीय लोगों को भेजा, और इन दूतों ने, अपने शासक को खुश करने की इच्छा से, गैलस को मार डाला।

[7282] डैफ्नी एंटिओक का एक उपनगर था। यह एक असाधारण रूप से सुंदर क्षेत्र था, जहाँ सभी प्रकार के पेड़ों की भरमार थी, जहाँ हर ओर निर्मल धाराएँ बहती थीं, और जहाँ सूर्य देवता, अपोलो की एक मूर्ति खड़ी थी, जिसकी जूलियन सभी अन्य देवताओं से बढ़कर पूजा करता था।

[7283] पट्टा एक सैन्य कमांडर का विशिष्ट चिह्न था।

[7284] यातना दिए जा रहे लोगों के हाथ और पैर जमीन में गाड़े गए चार खंभों से बांध दिए जाते थे, ताकि पीड़ित अपनी सज़ा का विरोध न कर सकें।

[7285] यहाँ पाठ यहूदियों का उल्लेख करता है, जिनके लिए बेबीलोन की कैद एक लाल-गरम भट्टी में चांदी की तरह या जाल में फँसे पक्षी की तरह थी। 'पीठ पर शोक' – पीठ पर पिटाई। 'सिर पर पुरुष' – यातना देने वाले जो हमारे जीवन को अपनी शक्ति में रखते हैं।

गाना समाप्त करने के बाद, आर्टेमियिस ने अपने आप से कहा:

'आर्टेमियिस, देखो, मसीह के घाव तुम्हारे शरीर पर अंकति हैं; अब बस इतना ही बाकी है कि तुम अपने भीतर बचे हुए रक्त के साथ मसीह के लिए अपनी आत्मा भी अर्पित कर दो'; और उसने यह भविष्यवाणी का वचन याद किया: *'मैंने अपनी पीठ उन पर मोड़ी जिन्होंने मुझे मारा, और अपनी ठुड्डी उन पर जिन्होंने मेरी दाढ़ी उखाड़ी'* (यशायाह 50:6)[7286] । 'लेकिन क्या मैंने, जो कि अयोग्य हूँ,' उसने कहा, 'अपने प्रभु से अधिक कष्ट सहा है?' उसका सारा शरीर घावों से ढका हुआ था: उसके पैरों से लेकर उसके सिर तक उसमें एक भी स्वस्थ अंग नहीं था; उसके सिर में काँटे घुसे हुए थे; मेरे पापों के लिए उसके हाथ और पैर क्रूस पर ठोक दिए गए थे, जबकि वह स्वयं पाप से परिचित नहीं था और उसने एक भी अनुचित शब्द नहीं कहा। हे प्रभु, मेरी अपनी पीड़ाओं की तुलना में आपकी पीड़ाएँ कितनी महान हैं, और मैं, एक दीन प्राणी, आपकी सहनशीलता और कोमलता से कितना दूर हूँ! मैं आनंदित और प्रसन्न हूँ, क्योंकि मैं अपने प्रभु की पीड़ाओं से सुसज्जित हूँ; इससे मेरी यातनाएँ कम हो जाती हैं। हे प्रभु, मैं आपको धन्यवाद देता हूँ कि आपने मुझे अपने दुखों का मुकुट पहनाया! मैं आपसे विनती करता हूँ, मुझे शहादत के मार्ग पर अंत तक ले चलें; मुझे इस पराक्रम के लिए अयोग्य साबित न होने दें जो मेरे लिए नियत है; क्योंकि मैंने अपनी आशा आपकी कृपाओं में रखी है, हे अत्यंत दयालु प्रभु, मानवता के प्रेमी!

अपने मन में इस प्रकार प्रार्थना करने के बाद, संत तहखाने में पहुँचे और संतों यूजीन और मकारियस के साथ रात भर वहाँ रहे, ईश्वर की महिमा करते हुए।

जब सुबह हुई, तो जूलियन द एपोस्टेट ने फिर से शहीदों को अदालत के सामने पेश होने का आदेश दिया, और वहाँ, उन्हें पूछताछ के अधीन किए बिना, उसने उन्हें अलग कर दिया: उसने आर्टेमियिस को अपने पास रख लिया, जबकि यूजीन और मैकारियस को अरब के ओएसिस में निर्वासन के लिए भेज दिया[7287] । वह भूमि अत्यंत निर्जन है: वहाँ घातक हवाएँ चलती हैं, और वहाँ पहुँचने वाला कोई भी व्यक्ति एक साल से अधिक जीवित नहीं रह सकता, क्योंकि वे अनिवार्य रूप से एक भयंकर बीमारी का शिकार हो जाते हैं जिसका अंत मृत्यु में होता है। इस प्रकार, संत यूजीन और मकरियस, वहाँ भेजे जाने के बाद, कुछ समय बाद परम विश्राम को प्राप्त हुए[7288] , जबकि संत आर्टेमियिस ने बहुत कष्ट सहे। लेकिन पहले, जूलियन, भेड़ की खाल में भेड़िये की तरह, नरमी से बोला, मानो वह आर्टेमियिस के प्रति सहानुभूति रखता हो और उस पर तरस खाता हो, यह कहते हुए:

[7289]'आर्टेमियिस, अपनी लापरवाह धृष्टता से तुमने मुझे तुम्हारी वृद्धावस्था का अपमान करने और तुम्हारे स्वास्थ्य को हानि पहुँचाने के लिए विवश कर दिया है, जिसके लिए मुझे गहरा खेद है। अब मैं तुमसे आग्रह करता हूँ कि आगे आओ और देवताओं को बलिदान अर्पित करो, सबसे पहले और सबसे प्रमुख रूप से डाफ्नी के देवता अपोलो को, जिन्हें मैं विशेष सम्मान देता हूँ। यदि आप इसे पूरा करते हैं, तो मैं आपके भाई के खिलाफ आपके अपराध को क्षमा कर दूँगा और आपको एक और भी अधिक गौरवशाली और सम्मानित पद से पुरस्कृत करूँगा: मैं आपको महान देवताओं के महापुजारी और पूरे ब्रह्मांड के पुजारियों के प्रमुख के रूप में नियुक्त करूँगा; मैं आपको अपना पिता कहूँगा, और आप मेरे राज्य में मुझसे दूसरे स्थान पर होंगे। तुम, आर्टेमियिस, यह अच्छी तरह जानते हो कि मेरे भाई, गैलस को, कॉन्स्टैंटियिस ने सिर्फ़ ईर्ष्या के कारण अन्यायपूर्ण ढंग से मार डाला था। हमारे परिवार का सिंहासन पर कॉन्स्टेंटाइन से भी अधिक अधिकार था, क्योंकि मेरे पिता, कॉन्स्टैंटियिस, मेरे दादा कॉन्स्टैंटियिस और मैक्सिमियिन की बेटी से हुआ था, जबकि कॉन्स्टेंटाइन का जन्म हेलेना से हुआ था, जो एक सामान्य जन्म की महिला थीं[7290] । इसके अलावा, मेरे दादा तब तक सीज़र नहीं बने थे जब तक कि हेलेना से उनका बेटा नहीं हुआ था, जबकि मेरे पिता का जन्म उनके सिंहासनारोहण के बाद हुआ था। लेकिन कॉन्स्टेंटाइन ने निर्लज्जतापूर्वक शाही सत्ता पर कब्ज़ा कर लिया। उसके बेटे, कॉन्स्टैंटियिस ने मेरे

[7286] नबी वास्तव में उद्धारकर्ता के भविष्य के कष्टों के बारे में बात कर रहे हैं, लेकिन उनके शब्द उन विश्वासियों पर भी लागू हो सकते हैं जो मसीह के कष्टों का जुआ अपने ऊपर लेते हैं।

[7287] ओएसिस अरब में स्थित नखलियों में से एक है। अरब के रेगिस्तान में, नखलियाँ वे स्थान हैं जहाँ वनस्पति और पानी होता है।

[7288] उनका पर्व दिवस 19 फरवरी है।

[7289] उच्च पुरोहित के पद का महत्व इस तथ्य से स्पष्ट है कि 'उच्च पुरोहित' उपाधि रोमन सम्राट की उपाधियों में से एक थी। इस पुरोहित को अपने आदेशों की अवहेलना करने वाले निम्न-पदस्थ पुरोहितों को मृत्युदंड देने का अधिकार था। वह नूमा के प्राचीन शाही महल में रहता था।

[7290] पश्चिमी साम्राज्य के सम्राट मैक्सिमियिन हरक्यूलिस ने 284 से 305 ईस्वी तक शासन किया। – उनके उत्तराधिकारी, क्लोरस के नाम से जाने जाने वाले कॉन्स्टैंटियिस ने पहले हेलेना (संत हेलेना, प्रेरितों के बराबर) से विवाह किया था; फिर, सम्राट डायोक्लेटियिन के कहने पर, उन्होंने उनसे तलाक लेकर मैक्सिमियिन हरक्यूलस की बेटी थियोडोरा से विवाह कर लिया। हालाँकि, कॉन्स्टेंटाइन महान को, अपने सबसे बड़े बेटे के रूप में, सिंहासन का उत्तराधिकारी बनाया गया था।

पिता और उनके भाइयों को मार डाला, और हाल ही में मेरे भाई, गैलस को भी मार डाला। उसका इरादा मुझे भी मारने का था, लेकिन देवताओं ने मुझे उसकी चंगुल से बचा लिया। उन पर अपना भरोसा रखकर, मैंने ईसाई धर्म का त्याग कर दिया और हेलेनिक धर्म अपना लिया; मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि हेलेनिक और रोमन धर्म सबसे प्राचीन हैं, जबकि ईसाई धर्म की उत्पत्ति हाल ही में हुई है; और कॉन्स्टेंटाइन ने इसे केवल अपनी अज्ञानता और मूर्खता के कारण अपनाया, प्राचीन और सदाचारी रोमन जीवन के नियमों को त्याग दिया। और देवता उससे एक दुष्ट व्यक्ति के रूप में नफरत करने लगे, जो उनके भरोसे के लायक नहीं था। देवताओं ने उससे घृणा की और उसे अपनी उपस्थिति से बाहर निकाल दिया, जबकि उसके अधर्मी वंशज जीवितों के बीच से मिटा दिए गए[7291] । क्या मैं सच नहीं कह रहा हूँ, आर्टेमियस? आप एक बूढ़े और बुद्धिमान व्यक्ति हैं - स्वयं निर्णय करें, क्या मैं सच कह रहा हूँ? इसलिए, सत्य को स्वीकार करें और हम में से एक बन जाएँ, क्योंकि मैं चाहता हूँ कि आप राज्य के शासन में मेरे मित्र और सहायक बनें।

यह सुनकर और एक पल के लिए रुकने के बाद, संत आर्टेमियस ने इस प्रकार कहना शुरू किया:

सबसे पहले, हे राजा, आपके भाई के संबंध में, मुझे आपको यह बताना होगा कि उसकी मृत्यु के लिए मैं दोषी नहीं हूँ – वास्तव में, मैंने उसे किसी भी तरह से, न तो कर्म से और न ही वचन से, कभी हानि पहुँचाई है; आप चाहे जितनी भी गहन जाँच करें, आपको ऐसा कोई भी सबूत नहीं मिलेगा जो यह साबित करे कि उसकी मृत्यु के लिए मैं जिम्मेदार था। मैं जानता था कि वह एक सच्चा ईसाई था, धर्मपरायण और मसीह के विधान का आज्ञाकारी था। स्वर्ग और पृथ्वी, पवित्र स्वर्गदूतों की सारी सेना, और मेरे प्रभु यीशु मसीह, जिनकी मैं सेवा करता हूँ, गवाह हों कि मैं आपके भाई की हत्या का दोषी नहीं हूँ और मैंने उसके हत्यारों की किसी भी प्रकार से सहायता नहीं की। जब आपके भाई के बारे में मामला चर्चा में था, तब मैं राजा कॉन्स्टेंटियस के साथ भी नहीं था: मैं इस साल तक पूरा समय मिस्र में ही रहा था। जहाँ तक आपकी इस माँग का सवाल है कि मैं मसीह, मेरे उद्धारकर्ता, का त्याग करूँ, मैं आपको नबूकदनेस्सर के सामने खड़े तीन जवानों (दानिय्येल 3:18) के शब्दों में उत्तर दूँगा: 'हे राजा, यह तुम्हें ज्ञात हो कि मैं तुम्हारे देवताओं की सेवा नहीं करता, और न ही मैं अपोलो की सुनहरी मूर्ति की कभी पूजा करूँगा, जिसे तुम प्रिय मानते हो।' आपने धन्य कॉन्स्टेंटिन और उनके वंश का अपमान किया है, उन्हें देवताओं का शत्रु और एक पागल कहकर। फिर भी, वे स्वर्ग से एक विशेष बुलावे के द्वारा आपके देवताओं से मुड़कर मसीह की ओर हो गए। इस मामले में मेरी बात सुनें, क्योंकि मैं इस घटना का साक्षी हूँ। जब हम क्रूर और रक्तपिपासु मैक्सेंटियस[7292] के खिलाफ युद्ध के लिए मार्च कर रहे थे, तो दोपहर के आसपास आकाश में एक क्रॉस दिखाई दिया, जो सूरज से भी ज़्यादा चमक रहा था, और उस क्रॉस पर, जो सितारों से बना था, लैटिन शब्द लिखे थे जो कॉन्स्टेंटाइन को विजय का वादा कर रहे थे। हम सभी ने उस क्रॉस को आकाश में प्रकट होते देखा और उस पर लिखा हुआ पढ़ा। और आज भी सेना में कई अनुभवी सैनिक हैं जिन्हें अच्छी तरह याद है कि उन्होंने अपनी आँखों से क्या देखा था। यदि आप चाहें तो पूछताछ करें, और आप देखेंगे कि मैं सत्य कह रहा हूँ। लेकिन मैं इस बारे में क्यों बात कर रहा हूँ? आप स्वयं अच्छी तरह से जानते हैं कि भविष्यवक्ताओं ने मसीह के आगमन की भविष्यवाणी उनके आने से बहुत पहले कर दी थी। इस बात के बहुत सारे प्रमाण हैं कि वह वास्तव में पृथ्वी पर आए थे, और यहाँ तक कि आपके अपने देवताओं ने भी अक्सर मसीह के आगमन की भविष्यवाणी की थी—सिबिलिन पुस्तकों और वर्जिल ने भी इसी बात की बात की थी[7293] ।

संत ने आगे बताया कि कैसे मूर्तियों में रहने वाले राक्षस अक्सर, ईश्वर की शक्ति से विवश होकर, अपनी इच्छा के विरुद्ध मसीह को सच्चे ईश्वर के रूप में स्वीकार करते थे। हालाँकि जूलियन, आर्टेमियस के सत्य वचनों को सहन न कर सका, उसने शहीद को नग्न करने और उसकी पसलियों में लाल-गरम सुइयाँ घोंपने का आदेश दिया, जबकि तीखे त्रिशूल उसकी पीठ में ठूँस दिए गए। हालाँकि, आर्टेमियस ने पहले की तरह, मानो उसे बिल्कुल भी दर्द महसूस न हो रहा

[7291] कांस्टेनटाइन महान के तीन बेटे थे: कांस्टेनटाइन, कॉन्स्टेंटीयस और कॉन्स्टेंस। सबसे बड़े ने ऊपरी गॉल, ब्रिटेन, जर्मनिया और हिस्पानिया को; सबसे छोटे ने निचला गॉल, इटली, इलिरिया और अफ्रीका को; और बीच वाले बेटे ने पूर्वी प्रांतों और मिस्र को लिया। कॉन्स्टेंटाइन जल्द ही युद्ध में मारा गया, जबकि कॉन्स्टेंस का शिकार के दौरान उसके विश्वस्त मैग्नेंटियस ने हत्या कर दी।

[7292] रोमन सम्राट मैक्सेंटियस के खिलाफ यह सैन्य अभियान कॉन्स्टेंटाइन द्वारा 312 में शुरू किया गया था।

[7293] प्राचीन रोम में, महिला भविष्यवक्ताओं को सिबिल कहा जाता था। उनकी भविष्यवाणियों को तीन पुस्तकों में संकलित किया गया था, जिन्हें जुपिटर कैपिटोलिनिस के मंदिर और बाद में पलाटिन हिल पर अपोलो के मंदिर में रखा गया था। ईसाई लेखकों ने भी इन भविष्यवाणियों पर ध्यान दिया, और उनमें मसीह के राज्य के आगमन के कुछ संकेत पाए। – वर्जिल मारो – प्रसिद्ध रोमन कवि (जन्म 70 ईसा पूर्व)। – आर्टेमियस स्पष्ट रूप से यहाँ अपनी कविता *द बकोलिक्स* का संदर्भ दे रहे हैं।

हो, न तो चल्लिाया और न ही एक भी कराह नकिाली, और अपने दुख में अद्भुत धैर्य का प्रदर्शन कयिा। इन यातनाओं के बाद, जूलयिन ने उसे वापस जेल भेज दयिा, यह आदेश देते हुए कि संत को भूखा और प्यासा रखा जाए, जबकि वह स्वयं अपने देवता अपोलो को बलदिान चढ़ाने और पारसयिों के खलिाफ अपने युद्ध के परणिाम के बारे में उससे पूछने के लिए डाफ्ने नामक स्थान पर चला गया[7294] । वह काफी समय तक वहाँ रहा, प्रतदिनि दुष्ट अपोलो को बलि के रूप में बड़ी संख्या में जानवरों की बलि चढ़ाता रहा, फरि भी उसे वह उत्तर नहीं मलिा जसिकी वह कामना करता था। क्योंकि अपोलो की मूर्ति के भीतर रहने वाला राक्षस, जो लोगों को उत्तर दयिा करता था, संत बेबलिस (एंटीओक के बशिप और शहीद) के अवशेषों को उस स्थान पर स्थानांतरति कएि जाने के समय से चुप हो गया था, साथ ही उन तीन शशिुओं के अवशेष भी थे जो बेबलिस के साथ पीड़ति हुए थे[7295] । इस प्रकार, अपोलो ने जूलयिन को कोई उत्तर नहीं दयिा। जब सम्राट को एक लंबी जांच के बाद पता चला कि अपोलो इसलिए चुप हो गया था क्योंकि वावलि के अवशेष उसके पास ही रखे गए थे, तो उसने तुरंत ईसाइयों को वहां से अवशेष हटाने का आदेश दयिा; लेकनि जैसे ही पवत्रि अवशेषों को उनकी जगह से हटाया गया, स्वर्ग से अपोलो के मंदरि पर आग बरसी और उसे, उसके भीतर की मूर्ति के साथ, जला कर राख कर दयिा।

जहाँ तक आर्टेमयिस की बात है, जेल में रहते हुए, स्वयं प्रभु और उनके पवत्रि स्वर्गदूत उनसे मलिने आए। जब आर्टेमयिस प्रार्थना कर रहे थे, तो मसीह उन्हें दखिाई दएि और कहा:

'हौसला रख, आर्टेमयिस! मैं तेरे संग हूँ और तेरे उत्पीड़क जो तुझ पर जो कुछ भी पीड़ा डालेंगे, उससे मैं तुझे छुड़ाऊँगा, और मैं तेरे लिए महमिा का मुकुट पहले से ही तैयार कर रहा हूँ। क्योंकि जैसे तूने पृथ्वी पर मनुष्यों के सामने मेरा स्वीकार कयिा है, वैसे ही मैं भी स्वर्गीय पति के सामने तेरा स्वीकार करूँगा। इसलिए साहसी बनो और आनंदति होओ: तुम मेरे राज्य में मेरे साथ रहोगे।

प्रभु से यह सुनकर, शहीद ने तुरंत उनकी महमिा करना शुरू कर दयिा; उसके पवत्रि शरीर पर एक भी घाव या फोड़ा नहीं बचा था, उसकी आत्मा दव्यि सांत्वना से भर गई, और उसने गाकर परमेश्वर का धन्यवाद कयिा। इस बीच, जसि क्षण से उन्हें जेल में डाला गया था, उन्होंने कुछ भी नहीं खाया या पयिा था, और यह उनकी मृत्यु तक जारी रहा। आर्टेमयिस को स्वर्ग से—पवत्रि आत्मा की कृपा से—जीवति रखा गया था।

अपने बलदिानों से शर्मदिा होकर लौटे जूलयिन ने अपोलो के मंदरि को जलाने का दोष ईसाइयों पर मढ़ा – यह दावा करते हुए कि उन्होंने ही रात में आग लगाई थी – और, ईसाइयों से पवत्रि चर्चों पर कब्जा करने के बाद, उसने उन्हें मूर्तपिूजक मंदरिों में बदल दयिा और ईसाइयों पर बुरी तरह अत्याचार करना शुरू कर दयिा। फरि उसने आर्टेमयिस को जेल से अपने सामने लाने का आदेश दयिा और उससे कहा:

'तुमने नश्चिति रूप से सुना होगा कि डाफ्ने में क्या हुआ—कि कैसे अधर्मी ईसाइयों ने महान देवता अपोलो के मंदरि में आग लगा दी और उसकी सुंदर मूर्ति को नष्ट कर दयिा। लेकनि इस पर अधर्मी लोग न आनंद मनाएँ, न ही हमारा मज़ाक उड़ाएँ, क्योंकि मैं उनसे सत्तर बार सात गुना बदला लूँगा, जैसा कि तुम कहते हो: "[7296] "।'

संत आर्टेमयिस ने उत्तर दयिा:

'मैंने सुना है कि क्रोधति ईश्वर की अनुमति से, स्वर्ग से आग आई और आपके देवता को नष्ट कर दयिा और उसके मंदरि को जला दयिा। लेकनि अगर आपका अपोलो एक देवता था, तो वह आग से खुद को कैसे नहीं बचा सका?'

तब राजा ने कहा:

'और तुम, नीच, अपोलो के जलने पर हँस और आनंदति हो रहे हो?'

'मैं तुम्हारी मूर्खता पर हँसता हूँ,' आर्टेमयिस ने उत्तर दयिा, 'कि तुम ऐसे देवता की सेवा करते हो जो खुद को आग से नहीं बचा सका। तो फरि, वह तुम्हें अनंतकाल की आग से कैसे बचा सकता है? मैं उसकी तबाही में सांत्वना पाता हूँ और

[7294] पगानों का मानना था कि देवता, मानवता के प्रति अपनी चति के कारण, अपनी इच्छा उन्हें प्रकट करना चाहते थे। इसलिए उन्होंने सपनों पर भरोसा कयिा, जनि्हें कथति तौर पर देवताओं द्वारा उन्हें भेजा जाता था। इसके अलावा, मूर्तविादयिों के पास वशिष ओरेकल (भवषि्यवाणी केंद्र) थे - ऐसे स्थान और मंदरि जहाँ पुजारी या कोई व्यक्ति जो वशिष प्रकार की समाधि की अवस्था में प्रवेश करने में सक्षम होता था, देवताओं की ओर से बोलता था, और ऐसे वभिन्नि शब्द बोलता था जनिसे पुजारी फरि अधकि या कम सुसंगत कथन तैयार करते थे। देवता अपोलो को मुख्य रूप से इन ओरेकलों के अध्यक्ष देवता के रूप में माना जाता था।

[7295] पवत्रि शहीद बेबलिास का पर्व 4 सतिंबर को मनाया जाता है।

[7296] जूलयिन मत्ती 18:22 के पाठ के अर्थ को तोड़-मरोड़ देता है। यह अंश प्रतशिोध या दंड के बारे में नहीं है, बल्कि एक पापी भाई को सत्तर बार सात तक क्षमा करने के बारे में है।

उन सभी बातों में आनंदति हूँ जो मेरे मसीह चमत्कारकि रूप से करते हैं।' और यदि तुम उन नरि्दोष ईसाइयों से सत्तर बार सात गुना बदला लेने का घमंड करते हो, जनि्होंने तुम्हारा कोई अहति नहीं कयि, तो तुमको इसका फल तब मलिेगा जब तुम्हें उस न बुझने वाली आग और शाश्वत यातनाओं में डाल दयि जाएगा जो जल्द ही तुम पर आने वाली हैं। क्योंकि तुम्हारा वनिाश पहले ही नकिट आ गया है, और जल्द ही तुम्हारी स्मृति एक crash[7297] के साथ नष्ट हो जाएगी।

यातना देने वाले ने, क्रोधति होकर, पत्थर काटने वालों को एक बड़े पत्थर को दो भागों में तोड़ने और फरि उसे ऊपर से आर्टेमयिस पर गरिाने का आदेश दयि, जसिे बाँधकर उस पत्थर के नीचे एक पत्थर की स्लैब पर लटिाया गया था। जब यह कयि गया, तो उस पर गरि पत्थर ने शहीद के पूरे शरीर को ढक लयि और उसे इतनी बुरी तरह कुचल दयि कि उसकी सभी हड्डयिाँ टूट गईं; उसके आंतरकि अंग बाहर नकिल आए, उसके अंग-प्रत्यंग चकनाचूर हो गए, और उसकी आँखें अपनी कोटरों से बाहर नकिल आईं। और क्या बड़ा चमत्कार था! पत्थरों के बीच कुचले जाने के बावजूद, संत जीवति रहे और उन्होंने अपने सहायक, परमेश्वर को पुकारा, और दाऊद के वचन बोले:

– *'तू ने मुझे चट्टान पर चढ़ाया है, मेरी पहुँच से परे, क्योंकि तू मेरा शरणस्थान है, शत्रु के वरिुद्ध मेरा दृढ़ रक्षा-कवच है*' (भजन संहति 60:3–4)[7298] । *'तू ने मेरे पाँव चट्टान पर रखे हैं और मेरे कदमों को स्थरि कयि है*' (भजन संहति 39:3)[7299] । हे एकमात्र पुत्र, मेरी आत्मा ग्रहण करो, क्योंकि आप मेरी दुखद परस्थितियिों को जानते हैं, और मुझे शत्रु के हाथ में न छोड़िए।

इस प्रकार, पत्थर के नीचे दबकर, संत ने पूरा दनि बतिाया। फरि जूलयिन ने संत को पहले से ही मृत समझकर पत्थर को हटाने का आदेश दयि, लेकनि सभी को आश्चर्यचकति करते हुए, संत जीवति नकिले और खड़े होकर इधर-उधर चलने लगे। और यह सभी के देखने के लिए एक भयानक दृश्य था: उनके सामने एक नग्न व्यक्ति खड़ा था, जो एक तख्ते की तरह चपटा हो गया था, उसकी हड्डयिाँ टूट गई थीं और उसके आँतें बाहर नकिल आई थीं; उसका चेहरा कुचल गया था, उसकी आँखें अपनी जगह से बाहर नकिल आई थीं, फरि भी उसमें जीवन अभी भी बाकी था; उसके पैर हलि सकते थे और उसकी जीभ अभी भी स्पष्ट रूप से बोलने में सक्षम थी। यातना देने वाले ने स्वयं, ऐसा चमत्कार देखकर, भयभीत होकर अपने सहायकों से कहा:

'क्या यह आदमी है या भूत? क्या इस जादूगर ने हम पर कोई जादू नहीं कर दयि है? क्योंकि हमारे सामने एक ऐसा दृश्य है जो भयानक है और प्रकृति की सीमाओं से परे है।' कसिने सोचा होगा कि वह अभी भी जीवति होगा? और अब, जब उसकी आंतें बाहर नकिल आई हैं और उसके सभी जोड़ टूटे हुए और बेजान हैं, तब भी वह हलिता-डुलता, चलता और बोलता है। लेकनि ऐसा लगता है कि हमारे देवताओं ने उसे दूसरों के लिए एक सबक के तौर पर जीवति रखा है, ताकि जो उनके अधकिार को स्वीकार करने से इनकार करता है, वह उसे देखने वालों सभी के लिए एक भयानक भूत बना रहे।

और जूलयिन ने शहीद से कहा:

'देखो, नीच, तुम्हारी आँखें तो पहले ही नकिाल दी गई हैं, और तुम्हारे शरीर का हर अंग पूरी तरह से बर्बाद हो चुका है—फरि भी तुम उस में आशा कैसे रख सकते हो, जसिमें तुमने अब तक अपनी आशा व्यर्थ ही रखी है? बल्कि दयालु देवताओं से दया की भीख माँगो, कि वे तुम्हें क्षमा कर दें और तुम्हें नरक की यातनाओं में न डालें।'

लेकनि मसीह के शहीद ने, इन यातनाओं के बारे में सुनकर, मुस्कुराया और राजा से कहा:

'क्या तुम्हारे देवता मुझे यातनाओं में डालेंगे? वे स्वयं उनके लिए तैयार की गई यातनाओं से बच नहीं सकते, और उनके साथ तुम भी, शाश्वत अग्नि में फेंके जाकर, हमेशा के लिए पीड़ति होओगे, क्योंकि तुमने परमेश्वर के पुत्र का अस्वीकार कयि है और हमारे लिए बहाए गए उसके पवत्रि रक्त को पैरों तले रौंदा है, और वनिाशकारी दुष्टात्माओं की आज्ञा मानकर पवत्रि आत्मा की कृपा का अपमान कयि है। जहाँ तक मेरी बात है, तुम्हारे द्वारा मुझे दी गई इस मामूली पीड़ा के लिए, मुझे आशा है कि मेरे प्रभु, जनिके लिए मैं यह पीड़ा सह रहा हूँ, के द्वारा मुझे उनके स्वर्गीय महल में अनंत वशि्राम मलिेगा।

यह सुनकर, जूलयिन ने शहीद पर नम्निलखिति नरि्णय सुनाया:

[7297] अर्थात्, आपका पतन असाधारण होगा और लोगों में एक बड़ी हलचल मचा देगा।

[7298] अर्थात्, 'हे प्रभु, आपने मुझे चट्टान पर, एक सुरक्षति स्थान पर स्थापति कयि है; आप मेरे लिए एक मजबूत स्तंभ या एक मीनार बन गए हैं, जहाँ मुझे उद्धार मलि सकता है।'

[7299] अपने पैरों को सीधा करना – उन्हें सही, सीधे रास्ते पर रखना।

'आर्टेमयिस, जसिने देवताओं का अपमान कयिा है, रोमन और हमारे अपने कानूनों का उल्लंघन कयिा है, ने खुद को रोमन नहीं बल्कि एक ईसाई घोषति कयिा है, और खुद को डक्स या अगस्टस के बजाय एक गलीलयिाई कहा है—हम उसे मृत्युदंड देते हैं और आदेश देते हैं कि उसकी नीच कटाई तलवार से की जाए।'

इस सजा के बाद, संत को फांसी के स्थान पर ले जाया गया और वे अकथनीय आनंद के साथ वहाँ चले, यह इच्छा करते हुए कि *'मुक्ति पाकर मसीह के साथ हो जाऊँ'*[7300] । जब वे उस स्थान पर पहुँचे जहाँ उनकी फांसी होनी थी, तो उन्होंने प्रार्थना करने के लिए समय माँगा और, पूर्व की ओर मुड़कर, तीन बार घुटने टेके और लंबे समय तक प्रार्थना की। इसके बाद, उन्होंने स्वर्ग से एक आवाज़ सुनी जो कह रही थी:

'संतों के साथ प्रवेश करो और अपने लिए तैयार किए गए पुरस्कार को प्राप्त करो।'

और तुरंत धन्य ने अपना सिर झुकाया और अक्टूबर महीने के बीसवें दिन एक सैनिक द्वारा उसका सिर कलम कर दिया गया; जिस दिन उसने अपना बलिदान दिया वह शुक्रवार था। अरीस्टा नाम की एक महिला, जो अंकोना की कलीसिया की एक डिकिनेस (स्त्री-सेविका) थी, ने यातना देने वाले से उसके सम्मानजनक और पवित्र शरीर के लिए विनती की; उसे कीमती इत्रों से अभ्यंग करके, उसने उसे एक अवशेष-पात्र में रखा और कॉन्स्टेंटिनोपल भेज दिया, जहाँ उसे सम्मान के साथ दफनाया गया। उनकी अवशेषों के माध्यम से कई अद्भुत चमत्कार हुए, और बीमारों को विभिन्न प्रकार के रोगों से मुक्ति मिली; आज भी, संत आर्टेमयिस उन सभी को ये वरदान देते हैं जो विश्वास के साथ उनकी शरण में आते हैं।

आर्टेमयिस की मृत्यु के तुरंत बाद, उसने जूलियन से सीधे अपनी मृत्यु के बारे में जो भविष्यवाणी की थी, वह सच साबित हुई: 'तुम्हारा विनाश निकट है, और तुम्हारी स्मृति एक बड़े कोलाहल के साथ शीघ्र ही मिटि जाएगी।' संत आर्टेमयिस को मृत्युदंड देने के बाद जूलियन अपनी सेनाओं के साथ अंत्योकिया से रवाना हुआ और फारसियों के खिलाफ़ चढ़ाई की। जब वह क्तेसफिोन (7301) शहर पहुँचा, तो उसकी मुलाकात एक फारसी व्यक्ति से हुई—एक वृद्ध, सम्मानित और अत्यंत विवेकी व्यक्ति। उसने जूलियन से वादा किया कि वह फारसी साम्राज्य के साथ विश्वासघात करेगा और उस दुष्ट राजा और उसकी पूरी सेना के लिए फारस में मार्गदर्शक के रूप में काम करने के लिए स्वयंसेवा की। लेकिन यह दुष्ट रक्तपिपासु व्यक्ति के पक्ष में नहीं हुआ, क्योंकि उस फारसी ने उसे धोखा दिया और एक सीधे और सही रास्ते पर ले जाने का नाटक करते हुए, उस खलनायक को कार्मानाइट रेगिस्तान[7302] में ले गया, एक दुर्गम इलाके में, जहाँ खाइयाँ एक आम दृश्य थीं, जहाँ बिल्कुल भी पानी नहीं था और न ही कोई भोजन, जिससे सभी सैनिक भूख और प्यास से थक गए, जबकि घोड़े और ऊँट सभी मर गए। इसके बाद, गाइड ने स्वीकार किया कि उसने जानबूझकर रोमनों को ऐसी सुनसान और भयानक जगहों पर ले जाया था ताकि उनकी ताकत को कमजोर किया जा सके। उसने कहा, 'मैंने यह इसलिए किया है, ताकि मैं अपने देश को दुश्मनों के कब्जे में न देखूँ; और मेरे पूरे देश के बर्बाद होने की तुलना में मेरे लिए अकेले आपके हाथों यहाँ मर जाना बेहतर है।' और इस कबूलनामे के तुरंत बाद, सैनिकों ने उस फारसी को टुकड़े-टुकड़े कर दिया। मरुभूमि में भटकते हुए, यूनानी और रोमी अपनी मर्जी के खिलाफ फारसी सेना से भिड़ गए, और वहाँ हुई लड़ाई में जूलियन के कई सैनिक मारे गए। यहाँ जूलियन पर स्वयं दैवी प्रकोप पड़ा, क्योंकि उसे ऊपर से एक अदृश्य हाथ और एक अदृश्य हथियार से बगल में भेद दिया गया, जो उसके पेट से होकर गुजर गया। वह जोर से कराह उठा और, अपने हाथ में खून का मुट्ठी भर लेकर, उसे हवा में फेंका और चिल्लाया:

'तुम जीत गए, हे मसीह! संतुष्ट हो जा, हे गलीलयिाई!'

और वहाँ, पीड़ा में मरते हुए, उसने अपनी दुष्ट और घृणित आत्मा को बाहर फेंका और संत आर्टेमयिस की भविष्यवाणी के अनुसार[7303] एक बड़े शोर के साथ प्राण त्याग दिए। जहाँ तक रोमन सेना का सवाल है, जूलियन की मृत्यु के बाद, उन्होंने जोवियन को सम्राट बनाया, जो एक ईसाई था और जिसने फारसियों के साथ शांति स्थापित करके घर लौट

7300 फिलि. 1:23. रिहा होना – इस सांसारिक जीवन से प्रस्थान करना।

7301 टिग्रिस नदी के बाएँ किनारे पर एक फ़ारसी शहर; रोमन काल के दौरान यह एक मजबूत किला था, जो हालाँकि कई मौकों पर रोमन नियंत्रण में आ गया था।

7302 कार्मनिया – आज का फ़ारसी प्रांत करमान। इसका उत्तरी भाग (स्टेप कार्मनिया) लगभग पूरी तरह से बंजर रेगिस्तान था, जबकि दक्षिणी भाग बहुत रेतीला था, यद्यपि कई नदियाँ इस हिस्से से होकर बहती थीं।

7303 जूलियन की मृत्यु 363 ईस्वी में हुई।

आया। इस प्रकार, जूलियन यहूदा के साथ नरक में पीड़ा भोगता है[7304] , जबकि आर्टेमियस स्वर्ग में संतों के साथ आनंदित है[7305] , त्रिमूर्ति में एकमात्र ईश्वर, पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के सामने खड़ा है, जिसकी महिमा युगानुयुग होती रहे। आमीन।

कॉन्टाकियन, स्वर 2:

आओ हम भजन-गीतों के साथ धर्मनिष्ठ और मुकुटधारी शहीद आर्टेमियस की योग्य रूप से स्तुति करें, जिन्होंने अपने शत्रुओं पर विजय प्राप्त की, जो शहीदों में सबसे महान और चमत्कारों के सबसे उदार दाता हैं: क्योंकि वे हमारे सभी के लिए प्रभु से प्रार्थना करते हैं।

व्हरकोल के चमत्कार-कर्ता, धर्मी आर्टेमियस की स्मृति[7306]

20 अक्टूबर को स्मरण किया जाता है

पवित्र और धर्मी आर्टेमियस, वेरकोल के चमत्कार करने वाले, का जन्म 1532 में वेरकोल गाँव में, ड्विना क्षेत्र में, पाइनेगा नदी पर, केवरोला से दो वर्स्ट ऊपर हुआ था[7307] । उनके माता-पिता – उनके पिता कोस्मा, जिन्हें 'छोटे' उपनाम से जाना जाता था, और उनकी माता अपोलोनारिया – उस गाँव के किसान थे। उन्होंने अपने पुत्र का पालन-पोषण ईश्वर के भय और ईसाई भक्ति में किया। पाँच वर्ष की आयु से ही, उसने बच्चों की सामान्य आदतों से दूर रहना शुरू कर दिया था; उसे बच्चों के खेल पसंद नहीं थे, वह शांत, सौम्य, ईश्वर-भयभीत, माता-पिता का आज्ञाकारी था, और अपनी उम्र के लड़के के हिसाब से जहाँ तक हो सके, अपने पिता के खेत के काम में लगन से मदद करता था।

एक दिन, जब वह 12 साल का था, वह अपने पिता के साथ खेत में मिट्टी पलटने का काम कर रहा था। अचानक, एक भयानक बादल छा गया; वह रात की तरह अँधेरा हो गया; मूसलाधार बारिश के साथ एक तूफान आ गया; डर गए हुए आर्टेमियस के सिर के ऊपर गरज की एक भयानक गड़गड़ाहट गूँजी - और वह धन्य युवक मृत पड़ा रह गया[7308] ।

इस प्रकार दयालु और सर्व-ज्ञानी प्रभु ईश्वर ने अपने धर्मी सेवक की आत्मा को अपने स्वर्गीय धाम में ग्रहण करने की कृपा की।

आर्टमियिस के साथी ग्रामीण, अपनी अज्ञानता के कारण, ईश्वर की इस परीक्षा को समझ नहीं सके और अंधविश्वास के कारण, उन्होंने उस धन्य युवक की अप्रत्याशित मृत्यु को ईश्वर का एक न्यायपूर्ण निर्णय माना, जो आर्टमियिस को उसके किसी गुप्त पाप के लिए दंड दे रहा था। धन्य आर्टेमियस का शरीर, एक आकस्मिक मृत्यु के कारण, बिना दफनाए और बिना किसी अंतिम संस्कार के पड़ा रहा; इसे एक चीड़ के जंगल में एक खाली जगह पर, जमीन पर, झाड़ियों और बर्च की छाल से ढककर, और एक लकड़ी की बाड़ से घेरकर रखा गया था। इस प्रकार यह 32 वर्षों तक पड़ा रहा, सभी द्वारा भुला दिया गया।

एक गर्मियों के दिन, वर्कोला गाँव में स्थित संत निकोलस चमत्कारकर्ता के चर्च के सेxton, अगाफोनिक, उस जंगल में मशरूम इकट्ठा करते हुए जा रहे थे, जब उन्होंने उस जगह के ऊपर एक रोशनी देखी जहाँ धन्य युवक लेटा था; वह पास गए और उन्होंने उसका अक्षत शरीर पाया। उन्होंने तुरंत वर्कोला के ग्रामीणों को इसके बारे में बताया। लेकिन

[7304] उनकी मृत्यु के बाद, जूलियन को एक मूर्तिपूजक मंदिर में दफनाया गया; बाद में, उनके शरीर को कॉन्स्टेंटिनोपल ले जाया गया और उनकी पत्नी के शरीर के बगल में चर्च ऑफ द होली अपोस्टल्स में दफनाया गया, लेकिन एक अंतिम संस्कार सेवा के बिना, जैसा कि एक धर्मत्यागी के शरीर के लिए उचित था।

[7305] संत आर्टेमियस का 20 अक्टूबर 363 को निधन हो गया। बाद में उनके अवशेष सम्राट अनास्तासियस द्वारा निर्मित संत जॉन द बैपटिस्ट के चर्च में रखे गए, जिसे संत आर्टेमियस का चर्च कहा जाने लगा।

[7306] प्राचीन संतों की जीवनी के विभिन्न पांडुलिपियों से संकलित।

[7307] पाइनेगा वोलोग्दा और अर्खांगेल्स्क प्रांतों में, सोल्व्येगोगोड्स्क और पिनेज्की जिलों में एक नदी है; यह नॉर्दर्न ड्विना की दाहिनी किनारे की (नाव चलाने योग्य) सहायक नदी है। केवरोला या केवरोल – वोल्स्ट की मुख्य बस्ती, जिसके नाम पर इसका नाम पड़ा, अब वोस्करेन्स्कोए गाँव है, जहाँ से जिला प्रशासन बाद में वोलोक-पिनेज्की पैरिश में स्थानांतरित कर दिया गया, जिसका नाम बाद में पिनेगा शहर रखा गया।

[7308] धर्मनिष्ठ आर्टेमियस की मृत्यु 23 जून 1545 को हुई।

उन्होंने, अपनी मूर्खता में, बस आर्टेमियस के शरीर को ले लिया, उसे बिना किसी सम्मान के अपने पैरिश चर्च में ले आए, और उसे बरामदे में रख दिया, ताबूत को उसी बर्च की छाल से ढक दिया जिसने जंगल में उस धर्मात्मा युवक को आश्रय दिया था[7309] ।

लेकिन प्रभु केवरोल की भूमि में अपने संत को महिमामंडित करने के लिए प्रसन्न थे: उनके अवशेषों से, पीड़ितों के लिए अक्षय उपचार बहने लगे। उस वर्ष, ईश्वर की अनुमति से, ड्विना क्षेत्र में एक घातक बुखार फैल गया। इस गंभीर बीमारी से कई लोगों की मृत्यु हो गई, विशेष रूप से महिलाओं और बच्चों की। वर्कॉल्स के एक किसान, कैलनिकि के पुत्र को भी इस बीमारी ने घेर लिया। गहरे दुख में, कैलनिकि ने अपने पुत्र के ठीक होने के लिए प्रार्थना की, फिर चर्च गए, धर्मात्मा आर्टेमियस की ताबूत की पूजा की और उनके अक्षय अवशेषों को ढकने वाली बरच की छाल को लेकर, आस्थापूर्वक उसे अपने मरणासन्न पुत्र की छाती पर लगे क्रॉस से बाँध दिया। वह बीमार लड़का ठीक हो गया। अत्यंत प्रसन्न, कल्लनिकि ने अपने सभी साथी ग्रामीणों को इस बारे में बताया; वे सेंट निकोलस के चर्च में खुशी-खुशी इकट्ठा हुए और प्रार्थनाएँ गाने तथा धर्मात्मा युवक आर्टेमियस का स्मरण करने लगे। और प्रभु ने अपने सेवकों पर दया की: उस भूमि में बुखार जल्द ही समाप्त हो गया।

उस समय से, संत आर्टेमियस के चमत्कार बढ़ने लगे। पॉल नाम का एक व्यक्ति एक गंभीर बीमारी से पीड़ित था, जिसने उसकी गर्दन इतनी बुरी तरह से मोड़ दी थी कि उसका सिर पीछे की ओर मुड़ गया था और उसकी आँखें बंद हो गई थीं। अपनी पीड़ा में, पॉल ने परमेश्वर और धर्मी आर्टेमियस से भक्तिपूर्वक प्रार्थना की - और उस बीमार व्यक्ति का सिर सीधा हो गया, और उसकी आँखें खुल गईं। ठीक हुआ व्यक्ति यह बताने के लिए अपने गाँव में दौड़ गया कि उसके साथ क्या हुआ था। उस चमत्कार के बाद, वेरकोल के लोगों ने सेंट निकोलस के चर्च के बगल में एक विशेष उप-गिरिजाघर बनाया, जिसमें उन्होंने बरामदे से आर्टमियिस के अवशेषों को एक नए ताबूत में रखकर स्थानांतरित कर दिया। यह 1584 में हुआ था।

जब धन्य युवक के अवशेषों को पार्श्व चैपल में लाया गया, तो एक महिला लकवाग्रस्त शिशु के साथ वहाँ आई; उसने एक प्रार्थना सभा आयोजित करने का अनुरोध किया, अपने बच्चे को आर्टेमी के ताबूत से लगा दिया - और बच्चे की प्रभावित बांह ठीक हो गई। लगभग उसी समय, आंद्रेई नामक एक किसान और इरिना नामक एक किसान महिला, जो आँखों की बीमारियों से पीड़ित थे, नव-मान्यता प्राप्त चमत्कार-कर्ता के पवित्र अवशेषों को छूने पर स्वस्थ हो गए और उनकी दृष्टि स्पष्ट हो गई। मारिया नाम की एक महिला, जो चालीस वर्षों से पेट की इतनी गंभीर बीमारी से पीड़ित थी कि वह अक्सर अपनी तीव्र पीड़ा के कारण दो या तीन घंटे के लिए बेहोश हो जाती थी, ने आर्टेमियस की अवशेषों से होने वाले चमत्कारों के बारे में सुनकर, प्रार्थना में उसकी शरण ली और उसे तुरंत स्वास्थ्य लाभ मिला।

अवशेषों के माध्यम से उपचारों की संख्या बढ़ती देख, दो पुरोहितों, जॉन और थॉमस ने, एक पुराने मकबरे की तख्तियों पर धर्मी आर्टेमियस के कई चित्र बनाने का आदेश दिया। उन तख्तों से कुछ छीलन बचे हुए थे। पादरी जॉन ने इन छीलनों को सावधानी से इकट्ठा किया और उन्हें चर्च में सुरक्षित रख दिया। धर्मात्मा आर्टेमियस के भक्तिपूर्ण भक्तों को, जिन्होंने इन छीलनों को श्रद्धापूर्वक लिया, अपनी बीमारियों से राहत मिली।

1601 में वर्कोला से गुजर रहे पाइनेगा के पैंक्रैटियस नामक एक व्यक्ति ने आर्टमियिस की इन प्रतिमाओं में से एक को वेलीकी उस्त्युग लाया, और उस समय उस प्रतिमा द्वारा कई लोग चंगा हो गए।

1619 में, नोवगोरोड के मेट्रोपॉलिटिन मकारियस ने उस धर्मात्मा की अवशेषों की पुष्टि की और 6 दिसंबर[7310] को, संत निकोलस चमत्कारकर्ता के पर्व के दिन, उन्हें स्वयं चर्च में स्थानांतरित करने का आशीर्वाद दिया। कुछ समय बाद, ख्लोमोगोरी शहर के निवासी हिलारियन आर्टेम्येव, वर्कोला आए और उन्होंने बताया कि वह लंबे समय से आँखों की बीमारी से पीड़ित थे, उन्हें कुछ भी दिखाई नहीं देता था और वे इतनी पीड़ा में थे कि, अपनी निराशा में, उन्होंने खुद को फांसी देने का प्रयास किया था; केवल उनके पड़ोसी, जो ठीक समय पर पहुँच गए, ने उन्हें ऐसा करने से रोका। धर्मी आर्टेमियस की अवशेषों से चमत्कारों के बारे में सुनकर, वह अपनी चिकित्सा के लिए भक्तिपूर्वक प्रार्थना करते हुए उसकी ओर मुड़ा।

[7309] धर्मनिष्ठ आर्टेमियस के अवशेष 1577 में खोजे गए थे।

[7310] मकारियस 1619 से 1626 तक नोवगोरोड के मेट्रोपॉलिटिन थे। उनके आशीर्वाद और निर्देश पर ही आर्टेमियस का जीवन संकलित किया गया था, जिसमें उनके मृत्युपरान्त चमत्कारों के वृत्तांत शामिल थे, जिन्हें 1605 से उन लोगों के शब्दों से दर्ज किया गया था जिन्हें चंगा किया गया था।

'ठीक उसी क्षण,' ठीक हुए व्यक्ति ने सुनाया, 'मुझे मेरी दृष्टि वापस मिल गई और मैंने एक दर्शन में, सेंट आर्टेमियस को सफेद वस्त्रों में देखा, जिन्होंने अपने बाएं हाथ में एक छोटी लाठी और दाहिने हाथ में एक क्रॉस पकड़ रखा था। उन्होंने मुझ पर क्रॉस का चिह्न बनाया और कहा:

'हे मनुष्य! तुम क्यों पीड़ित हो? उठो: मसीह, मेरे, उनके सेवक के द्वारा, तुम्हारा चंगा कर रहे हैं। वर्कोला जाओ, मेरी कब्र का सम्मान करो, और पुरोहित और सभी किसानों को इस बारे में बताओ।'

ये शब्द कहते ही, उस धर्मात्मा युवक ने मुझे हाथ से पकड़ लिया, मानो मुझे ऐसा करने के लिए प्रेरित करते हुए, और फिर वह गायब हो गया। जहाँ तक मेरी बात है, जागने पर मैं पूरी तरह से स्वस्थ महसूस कर रहा था, मानो मैं कभी बीमार ही न हुआ हो। और इस प्रकार मैं यहाँ उनके पवित्र अवशेषों की पूजा करने आया हूँ।'

विशेष रूप से उल्लेखनीय था उस्त्युग जिले के कविोकुर्या गाँव के पैट्रकियि इग्नाट्येव नामक एक किसान से जुड़ा चमत्कार। बचपन से ही, वह हर्नियां से बहुत अधिक पीड़ित था। धर्मी आर्टेमियस के चमत्कारों के बारे में सुनकर, उसने भक्तिपूर्वक उनसे प्रार्थना की, उनकी कफ़न को चूमने का व्रत लिया, और ठीक हो गया; लेकिन बाद में वह अपना किया हुआ व्रत भूल गया। कई वर्षों बाद, उसे फिर से अपनी हर्नियां के दर्द का अनुभव हुआ, जो पहले से भी अधिक उसे सताने लगा। पैट्रसियिस ने एक बार फिर से धर्मी आर्टेमियस से प्रार्थना की और अपने अधूरे व्रत को याद किया। उस पीड़ित की प्रार्थना सुनी गई, लेकिन पैट्रसियिस ने एक बार फिर अपना किया हुआ व्रत भूल गया। फिर उस पर एक गहरी उदासी छा गई, और उसकी आँखों पर एक घना अंधकार छा गया। उस दुर्भाग्यशाली व्यक्ति को फिर से अपने अधूरे व्रत का स्मरण हुआ, उसने कड़वे मन से पश्चाताप किया, और बिना किसी देरी के अपना कर्तव्य पूरा करने का वादा किया। धर्मनिष्ठ आर्टेमियस ने एक बार फिर पैट्रकी को उसकी बीमारी से मुक्ति दिलाई, और ठीक हुआ हुआ व्यक्ति खुशी-खुशी वर्कोला में आर्टेमियस की कफ़न तक दौड़ा, उसके सम्मान में एक प्रार्थना सभा आयोजित करने का आदेश दिया, अपने चमत्कारी कफ़न को आँसुओं से चूमा, और सभी के सामने घटित चमत्कार और अपनी पापी भूल को स्वीकार किया।

मार्च 1636 में, केवरोला और मेज़ेन के वोइवोड के रूप में नियुक्त अफ़ानसी पाश्कोव, वहाँ यात्रा कर रहे थे। रास्ते में, वे वर्कोला में रुके, लेकिन उन्होंने धर्मनिष्ठ आर्टेमियस के अवशेष-पात्र का दर्शन नहीं किया और न ही उनके लिए कृतज्ञता-प्रार्थना सभा करवाई। केवरोल में, उसका बेटा, युवा जेरमियाह, बुखार से गंभीर रूप से बीमार पड़ गया और मरने की तैयारी कर रहा था। तब उसके पिता को याद आया कि उसने धर्मी आर्टेमियस के लिए प्रार्थना सभा नहीं की थी, और उसने वर्कोला की तीर्थयात्रा पर जाने की कसम खाई। और अचानक, पाशकोव का बेटा, जो गहरी बेहोशी में पड़ा था, अपने आप अपने बिस्तर से उठ खड़ा हुआ और, खिड़की के फ्रेम को पकड़कर, अपने पिता से पूछने लगा कि उन्हें संत आर्टेमियस तक जाने के लिए कौन सा रास्ता लेना चाहिए। यह देखकर चकित, पिता अपने बेटे को वर्कोला ले गए। वहाँ, व्रत के पूर्ति के लिए, एक प्रार्थना सभा आयोजित की गई; उन्होंने चमत्कार करने वाले की ताबूत से बर्च की छाल ली, जिसे बीमार लड़के ने एक क्रॉस के साथ अपनी छाती पर पहना, और लड़का ठीक हो गया। कृतज्ञ पिता ने वर्कोला में, उस स्थान पर जहाँ आर्टेमियस के अवशेष मिले थे, उस धर्मात्मा युवक, शहीद आर्टेमियस के सम्मान में, जिनका नाम भी वही था, एक चर्च का निर्माण किया।

कुछ समय बाद, वर्कोला में चर्च जल गया – और धर्मनिष्ठ आर्टेमियस के अवशेष भी आग में नष्ट हो गए। स्थानीय पुरोहित, लव्रेन्ती, और वर्कोला गाँव के पारिशदीजनों ने, आर्टेमियस के अवशेषों को ऐसी आपदाओं से बचाने के लिए, उनके ऊपर एक विशेष चैपल बनाया, उन्हें एक नए अवशेष-पात्र में रखा और उन्हें एक नए आवरण से ढक दिया।

तब से, संत के अवशेष-पात्र से नए चमत्कार होने लगे। उदाहरण के लिए, धर्मी आर्टेमियस ने समियिन काज़ारिनोव नामक एक व्यक्ति को डूबने से बचाया। संत जॉन के दिन के बाद, वह मंगाज़ेया[7311] से अर्कांगेलेस्क तक अपने साथियों के साथ एक जहाज पर आर्कटिक महासागर पार कर रहा था। अचानक, एक भयंकर तूफान आ गया, और जहाज के डूबने का खतरा मंडराने लगा। जहाज पर सवार लोग आतंक और निराशा से भर गए। जब उन्हें किसी भी तरफ से बचने की कोई उम्मीद नजर नहीं आई, तो वे मौत के लिए तैयारी करने लगे और उसका इंतजार करते हुए एक-दूसरे से विदा लेने लगे। तब वे होश में आए और आँसू भरी आँखों से अपने उद्धार के लिए प्रभु परमेश्वर और धर्मी आर्टेमियस से प्रार्थना

[7311] मंगाज़ेया येनिसेई गवर्नोरेट में, तुरूखान्स्क क्षेत्र में, ताज़ा नदी के दाहिने किनारे पर एक भूखंड है, जहाँ अब मंगाज़ेया के संत बेसिल द मार्टायर का चैपल स्थित है। मंगाज़ेया पूर्वी साइबेरिया का पहला रूसी शहर था, जिसकी स्थापना 1601 में हुई थी, लेकिन 60 साल बाद यह पूरी तरह से खंडहर में बदल गया; अब इसके केवल अवशेष ही बचे हैं।

करने लगे, और परमेश्वर के संत के लिए एक धन्यवाद सेवा आयोजित करने का व्रत लिया। और, उनकी प्रार्थनाओं के द्वारा, समुद्र शांत हो गया, और जो डूब रहे थे वे निश्चित विनाश से बच गए।

धर्मी आर्टेमियस की अवशेषों से जुड़े चंगाई के चमत्कारों की ख्याति दूर-दूर तक फैल गई। नोवगोरोड के मेट्रोपॉलिटन, साइप्रियन ने, उनके अपरिवर्तनीय अवशेषों की एक बार फिर से जांच करने के लिए लोगों को भेजा; उन्होंने अपने हस्ताक्षर से उन चंगाई की सूचियों की पुष्टि की जो उन्हें भेजी गई थीं, और चमत्कार करने वाले को समर्पित एक नई रचित प्रार्थना-विधि वेरकोली गाँव की चर्च में भेज दी।

1648 में, ज़ार अलेक्सी मिखाइलोविच का एक शाही फरमान केवरोल भेजा गया, जो स्थानीय वोइवोड, अनिकिचकोव को संबोधित था: यह आदेश दिया गया कि धर्मी आर्टेमियस के अवशेषों को एक नए अवशेष-पात्र में रखा जाए, और उस स्थान पर एक मठ बनाने की अनुमति दी गई जहाँ उनके अवशेष मिले थे; इन्हें, ज़ार के पत्र के अनुसार, अगले वर्ष वहाँ स्थानांतरित कर दिया गया और संत आर्टेमियस द मार्टिर के चर्च में रखा गया, जिसे पहले वोयवोड पाशकोव द्वारा बनाया गया था। उस समय, जो भी श्रद्धापूर्वक पवित्र अवशेषों के पास आए, उन सभी को अनेक प्रकार के चंगाई के वरदान प्राप्त हुए। एकत्रित हुई विशाल भीड़ ने मसीह ईश्वर और उनके पवित्र सेवक, धर्मी आर्टेमियस, वेरकोल्स्क के चमत्कार करने वाले संत से हार्दिक प्रार्थनाएँ कीं, और सभी ऑर्थोडॉक्स ईसाइयों के सांत्वना के लिए उनमें प्रकट हुई ईश्वर की कृपा की महिमा की। बाद में, आग लगने के कारण, धर्मी आर्टेमियस के पवित्र अवशेषों को मठ के चर्च से तीन बार हटाया गया, जब तक कि अंततः 1793 में, मठ के भीतर एक पत्थर का चर्च नहीं बना, जिसे धर्मी आर्टेमियस के सम्मान में समर्पित किया गया, जिसमें उनके पवित्र अवशेषों को स्थापित किया गया[7312] ।

ट्रोपारियन, स्वर 2:

सर्वोच्च के आज्ञानुसार, आकाश को अँधेरा करने वाले बादल, बिजली की चमक, और गरज के साथ कड़कने की गड़गड़ाहट के बीच, हे परम बुद्धिमान आर्टेमियस, तुमने अपनी आत्मा प्रभु के हाथों में सौंप दी, और अब सर्व के प्रभु के सिंहासन के सामने खड़े हो; हे तुम, जो विश्वास और प्रेम के द्वारा, बिना किसी विलंब के तुम तक आने वाले सभी को आरोग्य प्रदान करते हो, सभी को बिना देरी के चंगा करते हुए, और हमारे प्रभु मसीह से हमारी आत्माओं के उद्धार के लिए प्रार्थना करते हुए।

स्तुति-गीत:

हम तुम्हारा, हे मसीह के शहीद आर्टेमियस, महिमामंडन करते हैं, और तुम्हारी पवित्र स्मृति का सम्मान करते हैं, क्योंकि तुम हमारे परमेश्वर मसीह के समक्ष हमारे लिए मध्यस्थता करते हो।

कॉन्टाकियन, स्वर 8:

आज परम बुद्धिमान आर्टेमियस की परम तेजस्वी स्मृति प्रकाशित होती है: ईश्वर-प्रदत्त अनुग्रह उनके पवित्र और जीवन-दायक अवशेषों के पवित्र पात्र से नदियों की तरह बहता है, जो उपचार का एक अद्भुत स्रोत है, जिससे हम अनेक दुर्बलताओं से मुक्त होते हैं, उन्हें विश्वास के साथ ग्रहण करते हुए और पुकारते हुए: आनंदित हो, आर्टेमियस, ईश्वर-ज्ञानी।

[7312] धर्मनिष्ठ आर्टेमियस, वेरकोल के चमत्कार करने वाले संत, का पर्व 23 जून और 20 अक्टूबर को मनाया जाता है। मूल प्रतिमा-लेखन पांडुलिपि में, 20 अक्टूबर के अंतर्गत, यह दर्ज है: 'जो अपने पिता कोज़्मा, जो एक किसान थे, के साथ खेत में जाकर, 12 साल के एक युवा लड़के के रूप में, कमीज़ पहने, हाथ में अंगूर की बेल की टहनी लिए और घुटनों तक नग्न, एक ज़बरदस्त गरज के कारण मर गया।' – वर्तमान में, संत आर्टेमियस के अवशेष अप्रयुक्त वर्कोल्स मठ में दफ़न हैं।

3 नवंबर

21 अक्टूबर (पुराना कैलेंडर)

हमारे पूजनीय पिता हिलारियन महान का जीवन

21 अक्टूबर को स्मरणोत्सव

आदरणीय हिलारियन का जन्म वर्ष 291 में फिलिस्तीन के गाज़ा शहर के पास फावाफा नामक गाँव में हुआ था। उनके माता-पिता यूनानी थे[7313] । जैसे काँटों के बीच गुलाब खिलता है, वैसे ही उनसे उनके जन्म के द्वारा मसीह की सुगंध संसार में प्रकट हुई। विज्ञानों का अध्ययन करने के लिए अलेक्जेंड्रिया भेजे जाने पर, उन्होंने न केवल जल्द ही उन सभी विद्याओं में महारत हासिल कर ली जिनकी ग्रीक आकांक्षा करते थे, बल्कि वे आध्यात्मिक ज्ञान से भी अच्छी तरह परिचित हो गए। हमारे प्रभु यीशु मसीह में विश्वास करने के बाद, उन्होंने पवित्र बपतिस्मा ग्रहण किया[7314] और, चर्च में अपनी बार-बार की जाने वाली यात्राओं के दौरान, दिव्य लिटिर्जी के शब्दों को ध्यान से सुना। सद्गुणों को विकसित करने और ईश्वर के प्रति प्रेम से जलते हृदय के साथ, उन्होंने इस पर मनन करना शुरू कर दिया कि वह उनकी प्रसन्नता कैसे प्राप्त कर सकते हैं। संत एंथनी द ग्रेट के बारे में सुनकर, जिनकी सदाचारी जीवन की ख्याति उस समय दूर-दूर तक फैल रही थी, हिलारियन उन्हें देखने की तीव्र इच्छा से भरकर संत के पास जाने के लिए निकल पड़े। जिस स्थान पर वह रेगिस्तान में रहता था, वहाँ पहुँचने पर हिलारियन ने उसके पवित्र मुखमंडल को देखा और उसके मधुर वचन सुने, जिन्होंने उसे पूर्णता का मार्ग दिखाया। वह कुछ समय के लिए संत एंथनी के साथ रहे, और उन्होंने उनके दैवीय जीवन-यापन, उनकी उत्कट और बारंबार प्रार्थनाओं, उनके हाथ के काम और अथक परिश्रम, उनके उपवास और संयम, अपने पड़ोसी के प्रति उनके प्रेम, सांसारिक संपत्ति से उनकी निर्लिप्तता, और मठ-जीवन की अन्य उपलब्धियों का अवलोकन किया[7315] ।

बहुत से लोग पूजनीय एंथनी के पास उमड़ पड़े: कुछ अपने रोगों से ठीक होने के लिए, कुछ उनका आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए, और कुछ उनके दैवीय प्रेरित और आत्मा को पोषण देने वाले प्रवचनों को सुनने के लिए। वहाँ पूर्ण एकांत और शांति का आनंद नहीं ले पाने के कारण, हिलारियन वहाँ रहना नहीं चाहते थे, बल्कि उन्होंने एक ऐसी जगह खोजने का संकल्प लिया जहाँ वे सभी शोर और हलचल से दूर, ईश्वर के साथ अकेले रह सकें। आदरणीय एंथनी से आशीर्वाद प्राप्त करने के बाद, वह अपने देश लौट आया, और जब उसे पता चला कि उसके माता-पिता अब जीवित नहीं हैं, तो उसने अपनी संपत्ति को दो भागों में बाँट दिया: एक भाग अपने रिश्तेदारों को दे दिया, दूसरा भाग गरीबों को, और अपने लिए कुछ भी नहीं रखा, *'सभी चीजों को हानि मानते हुए'* (फिलि. 3:8), संपूर्ण संसार और यहाँ तक कि स्वयं को भी त्यागकर, ताकि वह मसीह का शिष्य बन सके और उनकी गरीबी का अनुकरण कर सके।

इस प्रकार सांसारिक चिंताओं से मुक्त होकर, हिलारियन गाजा में मायूमा से सात वर्स्ट दूर स्थित रेगिस्तान में चले गए और वहाँ समुद्र और झील के बीच बस गए। उस रेगिस्तान में डाकू रहते थे, और कुछ परिचितों ने उसे उस जगह को छोड़ देने की सलाह दी, कहीं वह डाकुओं के हाथों न पड़ जाए और मारा न जाए। लेकिन आदरणीय पिता को शारीरिक मृत्यु का भय नहीं था, वह केवल आध्यात्मिक मृत्यु से मुक्ति चाहते थे।

उन्होंने कहा, 'उस लुटेरों से बचना चाहिए जो आत्मा को मारते हैं; जहाँ तक शरीर को मारने वालों का सवाल है, मैं उनसे नहीं डरता।' *'प्रभु मेरा प्रकाश और मेरा उद्धार है; मैं किससे डरूँ? प्रभु मेरे जीवन का दृढ़ किला है; मैं किससे भयभीत होऊँ?'* (भजन संहिता 26:1)।

[7313] यहाँ संत हिलारियन महान के माता-पिता का वर्णन करने के लिए प्रयुक्त 'ग्रीक' शब्द का अर्थ मुख्य रूप से ग्रीको-रोमन धर्म के प्रति समर्पित शिक्षित मूर्तिपूजक माना जाना चाहिए। यह ही उनके काँटों से तुलना करने का आधार है।

[7314] संत हिलारियन का बपतिस्मा अलेक्जेंड्रिया के बिशप, संत पीटर (जिनकी मृत्यु 311 में हुई) ने दिया था।

[7315] संत हिलारियन 306 में, 15 वर्ष की आयु में, संत एंथनी द ग्रेट के पास आए और समय तथा भावना दोनों के लिहाज से उनके शुरुआती शिष्यों में से एक बन गए, हालांकि वे उनके साथ केवल लगभग दो महीने ही रहे।

और पूज्यनीय वहाँ अनवरत प्रार्थना और उपवास में रहने लगे। वे दिन में पंद्रह अंजीरों से अधिक नहीं खाते थे[7316] - और वह भी केवल सूर्यास्त के बाद - जबकि उनके वस्त्रों में एक रोंगटेदार चोगा[7317] और पूज्यनीय एंथनी द्वारा दिया गया एक छोटा चमड़े का लबादा शामिल था।

शैतान, जो हर अच्छी चीज़ का दुश्मन है, यह देखकर कि यह युवा भिक्षु उस पर कैसे विजय प्राप्त कर रहा था, उसने उस पर युद्ध छेड़ा[7318] । कामुक वासना के माध्यम से आध्यात्मिक योद्धा को हराने की कोशिश में, उसने उसके युवा शरीर को उत्तेजित करना और उसके मन को अशुद्ध विचारों से भ्रमित करना शुरू कर दिया। पाप के डंक से उसे घायल करने की कोशिश करने वाले अशुद्ध साँप को भांपते हुए, हिलारियन ने अपने शरीर को और भी अधिक कष्ट देकर उसे लज्जित किया और ईश्वर से लगन से प्रार्थना करके शत्रु को परास्त कर दिया। उन्होंने एक उपवास के बाद दूसरा उपवास और एक परिश्रम के बाद दूसरा परिश्रम किया, तीन, और कभी-कभी चार दिनों तक बिना भोजन के रहे, अपने शरीर को काम से थकाया—कभी मिट्टी खोदते, तो कभी टोकरियाँ बुनते—और अपने आप से प्रेरित के वचन दोहराते रहे: *'यदि कोई काम करने को तैयार नहीं है, तो उसे खाने भी न दिया जाए'* (2 थिस्सलुनीकियों 3:10)। अशुद्ध विचारों के लिए, उसने महसूल लेने वाले के समान अपने वक्षस्थल पर हाथ मारकर और हृदय की गहराई से आहें भरकर उन्हें अपने हृदय से भगा दिया। हिलारियन ने अपने शरीर को एक गधा कहा और उससे इस प्रकार कहा:

'हे गधे, मैं तुझे वश में कर लूँगा: मैं तुझे जौ नहीं बल्कि भूसी खिलाऊँगा; मैं तुझे भूखा और प्यासा रखूँगा; मैं तुझ पर भारी बोझ लादूँगा, ताकि तू अशुद्धि की तुलना में भोजन के बारे में अधिक सोचें।'

उन्होंने अपने शरीर को संबोधित करते हुए कही गई इन बातों को अमल में लाया और अपने शरीर को इस हद तक थका दिया कि उसमें केवल खाल से ढकी हड्डियाँ ही बचीं।

हालाँकि, शैतान ने यह देखकर कि उसे उस दुर्व्यवहार से कुछ भी हासिल नहीं हुआ था और वह न केवल संत को हराने में असफल रहा बल्कि खुद भी पराजित हो गया था, उसने भूतों और प्रेतों से उसे डराने का निश्चय किया। एक रात, प्रार्थना में खड़े होने के दौरान, संत हिलारियन ने बच्चों के रोने, महिलाओं के विलाप, शेरों के दहाड़ने और अन्य जंगली जानवरों की आवाज़ें सुनीं, साथ ही एक महान युद्ध जैसी गड़बड़ी और शोर भी सुना। दैत्य ने जानबूझकर अपने अनुयायियों के एक समूह को बुलाया, जो विभिन्न आवाज़ों में गरज रहे थे, ताकि हिलारियन केवल उनकी गर्जना से ही डरकर भाग जाए और रेगिस्तान को छोड़ दे। लेकिन, यह महसूस करते हुए कि यह सब केवल राक्षसों द्वारा रची गई भयावहता थी, संत ने क्रॉस का चिह्न बनाया, विश्वास के ढाल से खुद को लैस किया और, घुटनों के बल गिरकर, ईश्वर से एक भावुक प्रार्थना की, उनसे स्वर्ग से सहायता प्रदान करने का अनुरोध किया। इस प्रकार, प्रार्थना में भूमि पर मस्तक झुकाकर[7319] , हिलारियन ने उस पर हमला करने वाले शत्रु को शक्तिहीन कर दिया। लेकिन जैसे ही वह थोड़ा उठकर अपनी आँखों से वह देखना चाहता था जो उसने अपने कानों से सुना था (क्योंकि वह एक बहुत उज्ज्वल, चाँदनी वाली रात थी), तभी भयानक और उग्र घोड़ों द्वारा खींचा गया एक विशाल रथ एक बड़ी गड़गड़ाहट के साथ उसकी ओर दौड़ पड़ा।

'हे प्रभु यीशु मसीह, मेरी मदद करो!' संत ने पुकारा, और तुरंत ही पृथ्वी फट गई और सारी दैवीय शक्ति को निगल गई। तब हिलारियन ने गाया, मानो फिरौन पर अपनी विजय का जश्न मनाते हुए[7320] :

– *'तूने घोड़े और उसके सवार को समुद्र में फेंक दिया। तूने अपना दाहिना हाथ फैलाया: पृथ्वी ने उन्हें निगल लिया... कुछ रथों पर, कुछ घोड़ों पर, परन्तु हम अपने प्रभु परमेश्वर के नाम पर घमण्ड करते हैं: वे लड़खड़ाए और गिर पड़े, परन्तु हम उठे और सीधे खड़े हैं'* (भजन संहिता 19:8–9)।

[7316] अंजीर को हम 'वाइन बेरी' के नाम से जानते हैं; यह अंजीर के पेड़ों पर उगता है, जो शहतूत परिवार से संबंधित हैं और उष्णकटिबंधीय जलवायु के मूल निवासी हैं। अंजीर पूर्व में, विशेष रूप से ईसाई तपस्वियों के बीच, एक मुख्य भोजन है।

[7317] घोड़े की लगाम से बनी कमीज़ एक मोटा वस्त्र है, जिसे तपस्वी सीधे त्वचा पर पहनते थे।

[7318] 'संघर्ष' एक मठवासी तपस्वी शब्द है जो उस लगातार और लंबे समय तक चलने वाले प्रलोभन को दर्शाता है, जिसके लिए शैतान उसका विरोध करने वाले भिक्षुओं को आज़माता है। शैतान के खिलाफ इस संघर्ष के कारण, तपस्या की भाषा में भिक्षुओं को अक्सर 'आध्यात्मिक योद्धा' कहा जाता है।

[7319] प्रारंभिक ईसाई प्रार्थना में अपने हाथ फैलाकर और अपने शरीर से क्रूस का आकार बनाकर जमीन पर गिर पड़ते थे।

[7320] निर्गमन 16:1–2। यह गीत लाल सागर पार करने के बाद मूसा और इस्राएलियों द्वारा गाया गया था, जब प्रभु ने उन्हें फिरौन के पीछा करने से बचाया: 'आपने घोड़े और सवार को समुद्र में फेंक दिया। आपने अपना दाहिना हाथ बढ़ाया: पृथ्वी ने उन्हें निगल लिया।' प्राचीन चर्च के पिता और ईसाई लेखकों में, 'फराओ' शैतान के लिए एक रूपक नाम था, जो सांसारिक जीवन में विश्वासियों को सताता है, जिसे उन्हीं लेखकों की भाषा में अक्सर एक मरुभूमि कहा जाता है।

फरि भी, पराजति शत्रु ने संत के वरिुद्ध वदि्रोह करना और उठना बंद नहीं कयि, और उसे कई अन्य तरीकों से प्रलोभति करता रहा: जब हलिारयिन आराम कर रहे होते, तो नग्न महलिाएँ जो उनका नरि्लज्जता से मज़ाक उड़ाती थीं, उनके बगल में लेटी हुई दखिाई देतीं; जब उन्हें भूख या प्यास लगती, तो राक्षस उन्हें वभिन्नि मीठे व्यंजन और पेय दखिाते; जब वह प्रार्थना करता, तो कभी-कभी एक भेड़यि उसके सामने आकर भौंका करता; अन्य समयों में एक लोमड़ी उछलती-कूदती, या योद्धा लड़ते हुए दखिाई देते, और उनमें से एक, घातक रूप से घायल, संत के पैरों तले गरि पड़ता और उसे दफनाने की वनिती करता।

एक बार, प्रार्थना करते समय, हलिारयिन का ध्यान भटक गया, और स्वाभावकि कमजोरी से ग्रस्त उसका मन बाहरी वचिारों में भटक गया। राक्षस तुरंत एक योद्धा की तरह उसके कंधों पर कूद पड़ा, और उसकी पसलयिों में लात मारते हुए तथा चाबुक से उसके कंधों और गर्दन पर कोड़े बरसाते हुए, कहा:

'भागो, भागो, तुम सो क्यों रहे हो!' और हँसते हुए पूछा: 'क्या तुम्हें कुछ जौ चाहिए?'[7321]

लेकनि संत ने इन सभी शैतानी चालाकयिों पर कोई ध्यान नहीं दयि और उन्हें खुद से दूर भगा दयि, तथा खुद को क्रूस के चहि्न से लैस कर लयि।

उन्होंने अपने लिए ताबूत जैसी एक छोटी सी कोठरी बना रखी थी, इतनी छोटी कि उसमें मुश्कलि से ही वे समा पाते थे, और वे वहीं रहते थे, अदृश्य आत्माओं के खलिाफ अपनी लड़ाई में संघर्ष करते हुए। एक रात, कुछ डाकुओं ने उस पर हमला करने की साजशि रची, इस उम्मीद में कि उसे कुछ मलि जाएगा, और पूरी रात उसे ढूंढते रहे लेकनि उन्हें कुछ नहीं मलि। अगले सुबह जब उन्होंने उसे पाया और देखा कि उसके पास कुछ भी नहीं है, तो उन्होंने संत से पूछा:

'अगर डाकू तुम पर हमला करें तो तुम क्या करोगे?'

'नग्न व्यक्ति को डकैती का कोई डर नहीं होता,' उन्होंने उत्तर दयि।

'लेकनि वे तुम्हें मार सकते थे,' उन्होंने फरि कहा।

हलिारयिन ने उत्तर दयि, 'मैं डाकुओं से नहीं डरता, क्योंकि मैं हमेशा मरने के लिए तैयार रहता हूँ।'

ऐसे साहस और वशि्वास से चकति होकर, डाकुओं ने उससे स्वीकार कयि कि वे सारी रात उसे ढूंढते रहे लेकनि उसे ढूंढ नहीं सके। फरि वे चले गए, और अपने जीवन को सुधारने का संकल्प लयि।

पूज्य हलिारयिन के उस रेगस्तिान में कई वर्षों तक रहने के बाद, उनके जीवन की पवत्रिता की ख्याति पूरे फलिस्तिीन में फैल गई, और लोग उनकी पवत्रि प्रार्थनाओं के माध्यम से मदद की तलाश में उनके पास आने लगे[7322] । सबसे पहले एलोथेरयिोपोलसि[7323] की एक महलिा आई, जसिकी शादी पंद्रह साल हो चुके थे और वह नश्निंतान थी। अपनी बांझपन के कारण अपने पति से लगातार ताने और अपमान सहते हुए, उसने संत की ओर मुड़ने और उनके चरणों में गरिने की हम्मित की। हलिारयिन ने उसे देखकर मुंह फेर लयि। तब वह आँसुओं से भरी आँखों से उनसे वनिती करने लगी:

'हे ईश्वर के सेवक, जब मैं दुख में हूँ तो आप मुझसे मुँह क्यों मोड़ रहे हैं? जब मैं ससिकयिों से आपसे वनिती कर रही हूँ तो आप मुझसे क्यों भाग रहे हैं? इस स्त्री को न देखें, बल्कि उसके हृदय के दर्द और उसके आँसुओं को देखें! हे मसीह के सेवक, मुझ पर दया करें! याद रखें कि उद्धारकर्ता ने हमारे लगि का सम्मान कयि, जब उन्होंने मानव देह धारण कयि, और आप स्वयं भी एक महलिा से ही पैदा हुए हैं। इसलिए, मुझे बनिा मदद के न ठुकराएँ, क्योंकि मैं इस उम्मीद में आपके पास आई हूँ कि आपकी प्रार्थनाएँ मेरी बाँझपन का इलाज करेंगी, जसिके लिए मेरा पति लगातार मुझे ताने मारता और अपमानति करता है।

ये शब्द संत हलिारयिन के हृदय में दया जगा गए: उन्होंने स्वर्ग की ओर अपनी दृष्टि उठाई और उसके लिए प्रार्थना की। फरि उन्होंने उसे घर लौटने के लिए कहा, और कहा:

'नश्निंकोच आशा के साथ जाओ, और प्रभु तुम्हारी वनिती स्वीकार करेंगे।'

वह स्त्री आनंदति होकर और संत के वचनों पर वशि्वास करते हुए घर लौट आई। ईश्वर ने भी अपने सेवक की प्रार्थना सुनी, और कुछ ही समय बाद, हलिारयिन की भवष्यिवाणी के अनुसार, उस स्त्री के गर्भ से पुत्र हुआ। अगले वर्ष, वह अपने गोद में शशिु को लेकर उनके पास आई और कहा:

[7321] यह राक्षस स्पष्ट रूप से उस उपनाम का उल्लेख कर रहा था जो संत हलिारयिन ने अपने ही शरीर को दयि था। ऊपर देखें।

[7322] यह घटना वर्ष 328 में उनके द्वारा रेगस्तिान में तपस्या का काम शुरू करने के 22 साल बाद हुई।

[7323] एलेउथेरोपोलसि - दक्षणिी फलिस्तिीन में, यरूशलेम और गाज़ा के बीच सड़क पर एक शहर। आज, इस स्थल पर एक गाँव है, जसिके पास प्राचीन शहर के खंडहर पड़े हैं।

– हे ईश्वर के पुरुष, देखो, यह तुम्हारी पवित्र प्रार्थनाओं का फल है; उस पुत्र को आशीर्वाद दो जिसके लिए तुमने ईश्वर के समक्ष मेरी सिफारिश की थी।

संत ने शिशु और उसकी माँ को आशीर्वाद दिया और उन्हें शांतिपूर्वक विदा किया। वह महिला प्रभु की स्तुति करते हुए और पूरे देश में उनके सेवक की महिमा करते हुए चली गई।

इसके बाद, अरिस्टेना नाम की एक और महिला उसके पास आई, जो एक ईसाई और एल्पिडियस नामक एक कुलीन व्यक्ति की पत्नी थी। उसके तीन बेटों को एक संक्रामक रोग हो गया था, और वे उसी दिन गंभीर रूप से बीमार पड़ गए; कोई भी डॉक्टर उन्हें ठीक नहीं कर सका, और वे मौत के कगार पर थे। संत हिलारियन तपस्वी के बारे में सुनकर, यह महिला अपनी दासियों और खसासों के साथ उनके पास आई और रोते हुए उनके पैरों पर गिर पड़ी।

उसने कहा, 'मैं आपसे हमारे प्रभु यीशु मसीह और उनके पवित्र क्रूस की शपथ देती हूँ, गाज़ा आएँ और मेरे तीन मरणासन्न बेटों को उनकी बीमारी से चंगा करें, ताकि प्रभु का नाम इस मूर्तिपूजक शहर में भी महिमामय हो, और गाज़ा के झूठे देवता, मार्नास[7324] , जिसकी अविश्वासियों द्वारा पूजा की जाती है, उसे लज्जित किया जा सके।'

संत ने मना कर दिया, उन्होंने कहा कि वह कभी रेगिस्तान नहीं छोड़ते और न तो शहर के पास जाते थे और न ही गाँवों के पास। लेकिन उस महिला ने आँसुओं भरी विनतियों से उन्हें तब तक परेशान किया जब तक कि उन्होंने सूर्यास्त के बाद उसके पास आने का वादा नहीं कर दिया। शाम के देर से, संत गाजा पहुँचे। जैसे ही उन्होंने उन बीमार युवकों को छुआ और उन पर यीशु मसीह का नाम लिया, उनके शरीर से जैसे किसी फव्वारे की तरह पसीना बहने लगा। वे तुरंत उठ खड़े हुए, स्वस्थ हो गए, और कुछ भोजन करने के बाद, उन्होंने ईश्वर का धन्यवाद करना शुरू कर दिया और अपने उपचारक के पवित्र हाथों को चूमने लगे। यह खबर गाज़ा में फैल गई, और उस समय से, विभिन्न बीमारियों से पीड़ित लोग सम्माननीय हिलारियन से मिलने के लिए रेगिस्तान में आने लगे और उनकी प्रार्थनाओं से चंगा हो गए - जिसके परिणामस्वरूप कई मूर्तिपूजक हमारे प्रभु यीशु मसीह के प्रति आस्था में परिवर्तित हो गए। कई लोग उनके सदाचारी जीवन का अनुकरण करना चाहते थे और, संसार का त्याग कर, रेगिस्तान में उनके पास बस गए। जल्द ही, पूजनीय हिलारियन के शिष्यों की संख्या बढ़ गई, और संत गाजा और फिलिस्तीन में भिक्षुओं के प्रमुख गुरु बन गए, ठीक वैसे ही जैसे पूजनीय एंथनी मिस्र में थे।

एक अवसर पर, एक महिला को पूजनीय पिताजी के पास लाया गया; वह दस वर्ष की आयु से अंधी थी और उसने अपनी पूरी संपत्ति डॉक्टरों पर बर्बाद कर दी थी, लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ। संत ने उस पर थूककर उसका इलाज किया, इस मामले में प्रभु की नकल करते हुए (यूहन्ना 9:6): उन्होंने उसके चेहरे पर थूका, और उसने तुरंत अपनी दृष्टि वापस पा ली, और सभी ने परमेश्वर की स्तुति की।

गाज़ा के एक कुलीन व्यक्ति का एक नौकर और सारथी, जो अपनी रथ चलाते समय एक राक्षस द्वारा ग्रस्त हो गया था, पूरी तरह से लकवाग्रस्त हो गया, इतना कि वह अपने एक भी जोड़ को हिला नहीं सकता था; केवल उसकी जीभ ही मुक्त रह गई थी। इस नौकर को सम्माननीय हिलारियन के पास रेगिस्तान में लाया गया। उसे देखते ही, संत ने कहा:

'जब तक तुम प्रभु मसीह पर विश्वास नहीं करते, जो तुम्हें चंगा करने की शक्ति रखते हैं, तब तक तुम अपनी इस पीड़ा से चंगा नहीं हो सकते।'

'मैं उस पर विश्वास करता हूँ; केवल वह मुझे चंगा कर दे,' बीमार व्यक्ति ने गंभीरता से उत्तर दिया।

एक प्रार्थना करने के बाद, संत ने उन्हें मसीह की शक्ति से चंगा कर दिया और, उन्हें पवित्र विश्वास में शिक्षित करने के बाद, उन्हें बपतिस्मा लेने का आदेश दिया। इस प्रकार, यह दास राक्षस के बंधन से मुक्त होकर और शरीर तथा आत्मा से स्वस्थ होकर घर लौट आया।

यरूशलेम के आसपास का एक और युवक, जिसका नाम मार्सिट था, उसमें बहुत ताकत थी, इतनी कि वह पंद्रह माप गेहूँ उठाकर ले जा सकता था, और भारी बोझ ढोने के लिए उसे गधे की ज़रूरत नहीं पड़ती थी। ऐसी ताकत के कारण, एक दानव उसमें प्रवेश कर गया और उसे सताने लगा, उसे रेगिस्तानों और खेतों में घुमाता रहा। जब स्थानीय लोगों ने उसे पकड़ लिया, तो उन्होंने उसके हाथ-पैरों में लोहे की बेड़ियाँ और जंजीरें डाल दीं और उसे कड़ी निगरानी में रख दिया, उस पर बारीकी से नजर रखी। लेकिन वह अपनी दोगुनी ताकत—राक्षस और अपनी—की बदौलत, बेड़ी और दरवाजों के ताले

[7324] मर्नास को मूर्तिवादियों द्वारा गाज़ा शहर के देवता और वर्षा के स्वामी के रूप में पूजा जाता था; सूखे के समय, उसे प्रसन्न करने के लिए भव्य धार्मिक जुलूस निकाले जाते थे। गाज़ा में मर्नास का मंदिर 401 ईस्वी तक नष्ट नहीं किया गया था।

आसानी से तोड़कर भाग जाता था, और रास्ते में मलिने वाले हर कसिी पर हमला करता था: कुछ के नाक, कान और होंठ काट देता; कुछ की बाहें और टाँगें तोड़ देता; कुछ की आँखें नकिाल देता; और अन्य, अंत में, उसने उनकी गला रेटकर हत्या कर दी। उसने उन इलाकों में कई अन्य अत्याचार भी कए, और कोई भी उसे वश में नहीं कर सका। बड़ी संख्या में इकट्ठा होकर, लोगों ने अंततःउसे पकड़ लयि, उसके पूरे शरीर को लोहे की जंजीरों से बांध दयि, और एक जंगली बैल की तरह उसे रेवरेंड फादर के सामने घसीट कर ले गए। भूतग्रस्त व्यक्ति को देखकर, हलिारयिन ने उसे खोलने का आदेश दयि, और वह एक मेमने की तरह शांत हो गया। उसके लए भक्तपिूर्वक प्रार्थना करने के बाद, संत ने उसके भीतर के दानव से कहा:

'हमारे प्रभु यीशु मसीह के नाम पर, मैं तुझे आज्ञा देता हूँ, हे अशुद्ध आत्मा, कि इस मनुष्य में से नकिल आ और जलहीन स्थानों में भाग जा।'

दैत्य उस बीमार आदमी को हलिाते हुए और ज़मीन पर पटकते हुए बाहर आ गया, और वह प्रभु की कृपा और संत की प्रार्थनाओं से तुरंत चंगा हो गया, और उसने श्रद्धेय हलिारयिन की भक्तपिूर्वक महमिा करना शुरू कर दयि। हालाँकि, श्रद्धेय ने उसे और वहाँ मौजूद सभी को यह कहते हुए मना कयि:

'यह हमारी अपनी शक्ति से नहीं, बल्कि मानवता के प्रति प्रेम और उद्धारकर्ता की कृपा से हुआ, जिन्होंने हम, उनके सेवकों के प्रति अपनी अगणति दया के कारण हमारे दुखों को उठाया। हमें नरिंतर उनकी महमिा करनी चाहए, उनका धन्यवाद करना चाहए और उनकी स्तुति करनी चाहए।'

जब वह बोल ही रहा था, तब ओरयिन नाम का एक और व्यक्ति उसके सामने लाया गया, जो आयला[7325] शहर के धनी और प्रतष्ठिति नागरकिों में से एक था। वह राक्षसों की एक सेना द्वारा ग्रस्त था और उसे लोहे की जंजीरों से बंधा हुआ लाया गया था। जैसे ही वह संत के पास पहुँचा, वह अपने साथ लाने वालों के हाथों से छूट गया और पीछे से आकर, पूजनीय पति को पकड़ लयि और उन्हें अपनी ऊँचाई से भी ऊपर हवा में उठा लयि। सभी लोग डर से चल्लिा उठे, कि कहीं वह उन्हें जमीन पर न फेंक दे और उनके हड्डयिों को तोड़ दे, जो लंबे समय के उपवास से नाजुक हो गई थीं। लेकनि संत मुस्कुराए और कहा:

'मेरा वरिोधी मेरे साथ कुश्ती करे।' अपने हाथ को पीछे की ओर बढ़ाकर, उन्होंने उस भूतग्रस्त व्यक्ति के बाल पकड़े, उसे अपने पैरों के सामने खड़ा कयि, उसके हाथ बाँध दए, और उसके पैरों पर पैर रखकर कहा:

'पीड़ति हो, राक्षसों की सेना, पीड़ति हो!'

उस आदमी के भीतर के राक्षस कई आवाज़ों में चल्लिाए, एक वशिाल भीड़ जैसी आवाज़ करते हुए। फरि संत ने प्रार्थना करना शुरू कर दयि:

'हे प्रभु यीशु मसीह! इस दीन मनुष्य को राक्षसों की सेना से बचाओ, क्योंकि जैसे आप उनमें से एक को हरा सकते हैं, वैसे ही आप कई को भी आसानी से हरा सकते हैं।'

एक ज़ोर की चीख के साथ, दुष्टात्माएँ तुरंत उस आदमी से बाहर नकिल गईं, और वह ठीक हो गया, अपनी यातनाओं से मुक्त हो गया, और उसने अपनी चकित्सिा के लए ईश्वर और उनके सेवक, संत हलिारयिन, का धन्यवाद कयि। कुछ समय बाद, वह अपनी पत्नी और दोस्तों के साथ एक बार फरि संत हलिारयिन के पास लौटा, और अपने ठीक होने की कृतज्ञता स्वरूप उन्हें कीमती उपहार लेकर आया। लेकनि संत ने उन्हें स्वीकार नहीं कयि और कहा:

'क्या तुमने यह नहीं सुना कि कैसे गेहाज़ी[7326] को कुष्ठ रोग से ठीक हुए एक व्यक्ति से भुगतान स्वीकार करने के लए दंड मलि था? प्रभु की कृपा बक्रिी के लए नहीं है। जाओ, इसे अपने शहर के गरीबों में बाँट दो; क्योंकि हम जो रेगस्तिान में रहते हैं, हमारे लए संपत्ति का कोई उपयोग नहीं है।'

और इस प्रकार उन्होंने उसे उपहारों के साथ वापस भेज दयि।

इसके बाद, माईउमा नगर का ज़नाना नामक एक लकवाग्रस्त पत्थर का कारीगर संत के पास लाया गया, और संत की प्रार्थनाओं से वह तुरंत ठीक हो गया।

इसके बाद गाज़ा क्षेत्र से एक भूतग्रस्त युवती लाई गई। राक्षस उसके अंदर नम्निलखिति कारण से प्रवेश कर गया था। एक युवक उससे प्रेम करने लगा था और उसके साथ शारीरकि संबंध बनाना चाहता था; लेकनि उसने उसका वरिोध

[7325] ऐला – फ़लिस्तिीन का सबसे दक्षणिी शहर, जो लाल सागर की खाड़ी के अंदर गहराई में स्थति है।

[7326] 2 राजा 5:20–27। गेहाजी, जो भवष्यिवक्ता एलशिा का चेला था, ने सीरयिाई नाआमान से एक भुगतान स्वीकार कयि, जसिे भवष्यिवक्ता ने कोढ़ से चंगा कयि था; इसके लए, भवष्यिवक्ता ने उस पर और उसकी संतानों पर नाआमान का कोढ़ लगा दयि।

कयिा और उसकी अशुद्ध इच्छाओं के आगे झुकने से इनकार कर दयिा। जब उसे यह देखकर कोई सफलता न मलिी कि वह चापलूसी भरे शब्दों या महंगे उपहारों से कुछ हासलि कर सके, तो वह युवक मस्रि के मेम्फसि शहर[7327] गया और एस्क्लेपयिस के पुरोहतिों[7328] से मलिा तथा उन्हें उस पीड़ा के बारे में बताया जसिने इस युवती के प्रतप्रिेम से उसके हृदय को घायल कर दयिा था। उनसे तांबे की एक पट्टी पर लखि कुछ जादुई शब्द प्राप्त करने के बाद, वह घर लौट आया और उस पट्टी को उस घर की दहलीज़ के नीचे गाड़ दयिा जहाँ वह युवती रहती थी: जादूगरों ने उसे ऐसा करने का नरि्देश दयिा था। और तुरंत ही वह दानव उस युवती के अंदर प्रवेश कर गया और उसे इतनी कामुक इच्छा से भर दयिा कि वह अपने जुनून को शांत करने के लिए बेधड़क उस युवक का नाम पुकारते हुए चल्लिाने लगी, अपने कपड़े उतारकर, नग्न होकर, हर तरह से उछल-कूद करने लगी, और व्यभचिार की आग में जलने लगी। यह देखकर, उसके माता-पतिा को एहसास हुआ कि उसकी पीड़ा शैतान के कारण हुई थी, और वे उसे रेवरेंड फादर से मलिने के लिए मठ ले गए (उस समय तक, रेवरेंड फादर पहले ही भक्षिुओं का एक बड़ा समुदाय इकट्ठा कर चुके थे और एक बड़ा मठ स्थापति कर चुके थे)। जब वे उसे उनके पास ले जा रहे थे, तो उसके भीतर का राक्षस वलिाप करने लगा और रोने लगा।

उसने कहा, 'जब मैं मेम्फसि में लोगों को स्वप्नलि दृश्यों से बहकाता था, तब मैं बेहतर था, बजाय इसके कि मुझे यहाँ भेजा गया है।'

जब उसे संत के सामने लाया गया, तो दानव ने पुकारा:

'मैं इस कन्या में अपनी मर्ज़ी के खलिाफ प्रवेश कयिा था, और मेरे स्वामी ने मुझे जबरदस्ती उसमें भेजा था। लेकनि अब, मैं बहुत कष्ट सह रहा हूँ और जा नहीं सकता, क्योंकि मुझे एक तांबे की प्लेट से जंजीरों में बाँधकर दहलीज़ के नीचे दफना दयिा गया है। मैं तब तक नहीं जाऊँगा जब तक मुझे जंजीरों में बाँधने वाला युवक अपनी अनुमतनि दे!'

संत ने हल्की मुस्कान के साथ कहा:

'तो यह है तुम्हारी शक्ति की हद, ऐ शैतान—कि तुम्हें एक धागे से बाँधा गया है और एक तांबे की प्लेट से कसकर पकड़े हुए हो? तो फरि, तुम उस युवक में क्यों नहीं घुसे जसिने तुम्हें बाँधा था?'

'मेरा मत्रि, कामवासना वाला राक्षस, पहले से ही उसके अंदर है,' उसने जवाब दयिा।

प्रार्थना करने के बाद, संत ने उसे कन्या के शरीर से बाहर नकिाल दयिा और उसे शत्रु के जालों से सावधान रहने तथा लापरवाह युवकों से बातचीत न करने की हदिायत दी।

एक राजकुमार, जो एक अशुद्ध आत्मा से ग्रस्त था, संत के पास आया और ठीक हो गया। कृतज्ञता में, वह अपने चकित्सिक, संत हलिारयिन, के पास दस पाउंड सोना लाया, जन्हिोंने उसका बनिा कसिी शुल्क के इलाज कयिा था, और उनसे उपहार स्वीकार करने का आग्रह कयिा। तब संत ने उसे अपनी जौ की रोटी दखिाई।

उन्होंने कहा, 'जो लोग ऐसी रोटी खाते हैं, वे सोने को दलदल की कीचड़ समझते हैं,' और सोना ठुकराकर, उन्होंने राजकुमार को स्वस्थ होकर वदिा कयिा।

सन्तोंश्रय एंथनी ने, हलिारयिन और उनके चमत्कारों के बारे में सुनकर, आत्मा में आनंदति होकर अक्सर उन्हें पत्र लखिा करते थे। जो लोग सीरयिा से उपचार की तलाश में उनके पास आते थे, उनसे वे कहते थे:

'तुम मेरे पास आने के लिए लंबा सफर तय करके खुद को इतना क्यों कष्ट देते हो, जबकि तुम्हारे पास मेरा बेटा, हलिारयिन है—जसिे मसीह के द्वारा, ईश्वर से हर तरह की बीमारयिों को ठीक करने का वरदान मलिा है?'

संत हलिारयिन के आशीर्वाद से पूरे फलिस्तिीन में मठों की स्थापना होने लगी, और सभी भक्षिु उनके उपदेशात्मक वचन सुनने के लिए उनके पास आते थे। और उन्होंने सभी का मोक्ष के मार्ग पर मार्गदर्शन कयिा।

एक दनि, भाइयों ने उनसे वनिती की कि वे अपनी प्रार्थनाओं और आशीर्वाद से बढ़े हुए मठों का दौरा करें, उन्हें पुष्ट दिें और उन्हें मठवासी जीवन का एक नयिम प्रदान करें। जब वे अपनी यात्रा पर नकिले, तो भाइयों की एक बड़ी भीड़, जसिमें लगभग तीन हजार लोग थे, उनके पास इकट्ठी हो गई और उनकी सबसे मीठी शक्षिाओं में आनंद लेते हुए, उनके पीछे-पीछे चलने लगी। जैसे-जैसे वह एक मठ से दूसरे मठ तक यात्रा करते और भाइयों से मलिते, संत ने कई चमत्कार

[7327] मेम्फसि – मस्रि की प्राचीन और शक्तशिाली राजधानी – मस्रि के मध्य भाग में नील नदी पर स्थति थी, मुख्य नदी और उसकी सहायक नदी के बीच, जो शहर के पश्चमिी कनिारे से बहती थी। आज प्राचीन मस्रि की इस शानदार राजधानी में जो कुछ भी बचा है, वह मेट्रासानी और मोगन्नान गांवों के पास सबसे तुच्छ खंडहर हैं।

[7328] एस्कलेपयिस, या एस्कुलेपयिस, चकित्सिा और सभी प्रकार के रोगों से उपचार के ग्रीक-रोमन देवता थे। बाद में उनकी पूजा मस्रि में भी फैल गई। ईसाइयों ने इस नाम को एक राक्षस के रूप में समझा।

कए। एक भाई, जो अपनी आतथ्यि के लए प्रसद्धि था, का अपना एक अंगूर का बगीचा था, जसिसे वह हर साल लगभग एक सौ मीटर अंगूर का तुड़ाई करता था। उसने संत हलिारयिन का प्रेमपूर्वक स्वागत कयिा और भाइयों से वनिती की कि वे उसके अंगूर के बगीचे में आएं और अपनी इच्छानुसार जतिने गुच्छे चाहें, काट लें, क्योंकि अंगूर पहले ही पके हुए थे। प्रत्येक ने जतिना चाहा उतना तोड़ा; और जैसा कि ऊपर बताया गया है, वहाँ लगभग तीन हज़ार भाई थे। उस भाई का इतना प्रेम देखकर, पूज्य पता ने उसकी दाख की बारी पर आशीर्वाद दयिा, और उस वर्ष उस भाई ने अपनी दाख की बारी से तीन सौ माप से अधकि अंगूर काटे। इस प्रकार, पूज्य पता के आशीर्वाद ने उस भाई की आतथ्यि के कारण दाख की बारी की उर्वरता को बढ़ा दयिा। हालाँकि, एक और भाई था, जो कंजूस और क्रूर था, उसने संत को उनके आध्यात्मकि झुंड के साथ गुज़रते हुए देखकर अपने अंगूर के बाग पर एक पहरेदार लगा दयिा ताकि कोई भी एक भी गुच्छा न तोड़ पाए; पहरेदार ने भाइयों पर पत्थर फेंके, और उनसे अंगूर के बाग के पास न आने के लए कहा, क्योंकि वह कसिी और का था। यह भाई संत के आशीर्वाद से वंचति रहा और उसने बहुत कम अंगूर काटे, और वे भी खट्टे थे।

एक दनि, पूज्यनीय हलिारयिन एक शष्यि से मलिने के लए कादज़ि के रेगस्तिान[7329] की ओर रवाना हुए। रास्ते में, हलिारयिन एलस[7330] नामक मूर्तपिूजक शहर से गुज़रते हुए नकिले। वहाँ उन्होंने एक राक्षसी उत्सव देखा, जसिमें आसपास के कई गाँवों के मूर्तपिूजक इकट्ठा हुए थे, जो मंदरि में अपनी देवी एफ्रोडाइट[7331] के लए आनंद मनाते हुए और अधार्मकि बलदिान चढ़ाते हुए इकट्ठा हुए थे। संत हलिारयिन के आगमन की खबर सुनकर, वे अपनी पत्नयिों और बच्चों के साथ उनसे मलिने बाहर नकिले, क्योंकि उन्हें बहुत पहले ही यह अफवाहें मलि चुकी थीं कि वह एक महान चमत्कार करने वाले थे। उन्हें देखकर, उन्होंने सरि झुकाया और सीरयिाई भाषा में चल्लिाए: 'वराच! वराच!' – जसिका अर्थ है: 'हमें आशीर्वाद दें! हमें आशीर्वाद दें!' तब वे उसके पास अनेक बीमारों और दुष्टात्माओं से ग्रस्त लोगों को लाए, और रेवरेंड ने मसीह की शक्ति से उन्हें चंगा कयिा। एक सच्चे ईश्वर के बारे में मूर्तपिूजकों को सखिाने के बाद, उन्होंने उन सभी को ईसाई धर्म की ओर ले जाया और तब तक शहर नहीं छोड़ा जब तक कि उन्होंने मूर्तपिूजक मंदरि को धूल चटा नहीं दी, मूर्तयिों को तोड़ नहीं दयिा, एक पवत्रि चर्च का नर्मिाण नहीं कर दयिा और प्रभु के नाम पर बपतस्मिा नहीं ले लयिा। वश्विास में उन्हें मजबूत करने और उन पर अपना आशीर्वाद देने के बाद, संत अपनी यात्रा पर नकिल पड़े।

आदरणीय हलिारयिन को ईश्वर से ऐसा वरदान मलिा था कि वे अपनी घ्राण और स्पर्श इंद्रयिों के माध्यम से यह जान सकते थे कि कसिी व्यक्ति पर कौन सा जुनून हावी है। एक अवसर पर, एक कंजूस और धन-प्रेमी भाई ने संत को अपने बगीचे से कुछ फल भेजे। जब शाम हुई और संत रात के खाने के लए बैठे, तो उनके शष्यिों ने उन्हें उस कंजूस भाई द्वारा भेजे गए फल परोसे। उसे देखकर, हलिारयिन ने मुंह फेर लयिा।

उन्होंने कहा, 'इन्हें यहाँ से हटा दो, मैं इन फलों से आने वाली बदबू सहन नहीं कर सकता।'

उनके शष्यि, धन्य इसकियिस ने उन्हें अपने भाई का उपहार चखने और उस पर आशीर्वाद देने के लए आग्रह करना शुरू कर दयिा।

उसने कहा, 'पताजी, अपने भाई की भेंट से मुंह न मोड़ें, क्योंकि उसने वश्विास के साथ अपनी दाख की बारी का पहला फल लाया है।'

'क्या तुम यह महसूस नहीं कर सकते,' संत ने उत्तर दयिा, 'कि इन फलों से लालच की बदबू आ रही है?'

हेसचियिस ने पूछा, 'कोई फल, अपनी प्राकृतकि सुगंध के अलावा, कसिी भी जुनून की बदबू कैसे दे सकता है?'

'यदि आप मेरी बात पर वश्विास नहीं करते, तो ये फल बैलों को दे दें, और देखें कि क्या वे उन्हें खाएँगे।'

इसचियिस ने अंगूर उठाकर बैलों के सामने खलहिान में रख दए, लेकनि बैलों ने उन्हें सूंघकर पागलों की तरह गर्जना करनी शुरू कर दी और अंगूरों से आ रही बदबू को सहन न कर पाकर, खलहिान से टूटकर भाग गए।

उस समय, संत की आयु पहले ही 63 वर्ष की थी। उनके चारों ओर बहुत से भाई इकट्ठा हो गए थे, इतने कि मठ का वस्तिार करना पड़ा। कई चंताओं ने पूजनीय की मौनता को भंग कयिा। इसके अलावा, बहुत से लोग उनके पास आते थे, कुछ उपचार की तलाश में, तो कुछ आशीर्वाद पाने के लए। महाधर्माध्यक्ष और पुरोहति, चर्च के अन्य सेवकों के साथ,

---

[7329] कादेस - जसिे कादेश के नाम से भी जाना जाता है - फलिस्तिीन के ठीक दक्षणि में एक मरुभूमि है।

[7330] एलूसा – अब एल-कुलासा – दक्षणिी फलिस्तिीन में, कैडसि रेगस्तिान के उत्तर में, अरब की सीमा के पास, मृत सागर के दक्षणि-पश्चमि में एक शहर है।

[7331] एफ्रोडाइट – प्रेम और सुंदरता की ग्रीक देवी। उनके सम्मान में मनाए जाने वाले त्योहारों में अत्यधकि कामुकता और व्यभचिार का प्रदर्शन कयिा जाता था।

कई नगरों और क्षेत्रों के राजकुमारों और कुलीनों के साथ, हलिारयिन से ईश्वर का वचन सुनने और उनका आशीर्वाद प्राप्त करने आए। संत इस बात से बहुत दुखी थे कि आने वाले लोग उन्हें मौन रहने नहीं देते थे, और वे उन शुरुआती दनिों के मौन को याद करके रो पड़े जब वे रेगस्तिान में अकेले थे। उन्हें लगातार दुखी और रोते हुए देखकर, भाइयों ने उनसे पूछा:

'पतिाजी, आप इतने दुखी और रोए हुए क्यों हैं?'

जसि पर उन्होंने उत्तर दयिा:

'मैं इसलिए दुखी हूँ और रोता हूँ क्योंकि मैं संसार में लौट आया हूँ और पृथ्वी पर अपना प्रतफिल प्राप्त कर चुका हूँ; क्योंकि फिलिस्तीन के सभी नगर और आसपास के प्रदेश मुझे महमिामय बनाते हैं, और तुम भी मुझे एक स्वामी के रूप में सम्मान देते हो और मठ में रहने वालों सभी का "स्वामी" कहकर बुलाते हो।'

पादरी से ये शब्द सुनकर, भाइयों को एहसास हुआ कि वह उनसे चोरी-छपि नकिल जाना चाहते थे, और उन्होंने उन पर कड़ी नजर रखनी शुरू कर दी ताकि वह उन्हें छोड़कर न जा सकें। बड़े भाई इस तरह दो साल तक दुखी रहे।

एक दनि, एपार्क[7332] की पत्नी एल्पडियिा, उनकी पत्नी अरस्टिेना उनके पास आईं; वह वही महलिा थीं जनिके तीन मरणासन्न बेटों को संत ने एक बार ठीक कयिा था। उन्होंने अपनी यात्रा के लिए उनसे आशीर्वाद और प्रार्थनाएँ माँगीं, क्योंकि उनका इरादा सम्माननीय एंथनी को श्रद्धांजलि देने के लिए मस्रि जाने का था। एंथनी का नाम सुनकर, संत ने आह भरकर कहा:

'ओह, काश मैं भी वहाँ जा पाता और अपने पवत्रि और प्रयि पतिा एंथनी को साक्षात देख पाता। लेकनि भाई मुझे जबरदस्ती यहाँ रोक रहे हैं, और मैं उनके पास नहीं जा सकता।'

थोड़ी देर की खामोशी के बाद, वह फूट-फूट कर रो पड़ा।

उन्होंने कहा, 'आज दो महीने हो गए हैं, जब से सारी दुनयिा एक महान दीपक के चले जाने का शोक मना रही है, क्योंकि आदरणीय एंथनी पहले ही अपना शरीर त्याग चुके हैं।'

यह सुनकर, उस महलिा और वहाँ मौजूद सभी लोगों को एहसास हुआ कि उन्हें परमेश्वर से आदरणीय एंथनी के नधिन के बारे में एक प्रकटवाणी प्राप्त हुई थी। एरस्थिनीज़ घर लौट गया, और कुछ ही दनिों बाद एंथनी की मृत्यु की खबर आई।

अफवाहों और सार्वजनकि प्रशंसा को सहन न कर पाकर, और ईश्वर से प्राप्त एक प्रकाशन के माध्यम से यह जानकर कि ईश्वर ने वहाँ से उनके प्रस्थान की इच्छा की है, संत हलिारयिन ने अपने कुछ शष्यिों को बुलाया और उन्हें अपने साथ चलने का नर्दिेश दयिा। वे एक गधा ले आए और पूजनीय पतिा को उस पर बठिा दयिा, क्योंकि वे अपनी वृद्धावस्था के कारण अब चल नहीं सकते थे, और सहारा देकर वे उनके साथ चल पड़े। जब बाकी भाइयों तथा पड़ोसी गांवों और कस्बों के नविासयिों को पता चला कि पूजनीय पतिा उन्हें छोड़कर चले गए हैं, तो वे दस हजार लोगों की भीड़ में इकट्ठा हुए और पीछा करते हुए उनसे जा मलिे। वे रोते हुए संत के चरणों में गरि पड़े और उनसे वनिती करने लगे कि वे उन्हें छोड़कर न जाएँ।

'ईश्वर के बाद, हमने आपको फ़लिस्तीन में अपना पतिा माना, जो हमें बल देते और हमारी मदद करते थे। हमें अकेला न छोड़ें, जैसे चरवाहे के बनिा भेड़ें।'

'मेरे बच्चों, तुम मेरा दलि क्यों तोड़ रहे हो?' संत ने उन्हें फटकार लगाते हुए कहा। 'जान लो: मैं प्रभु की इच्छा के बनिा नहीं गया। मैंने प्रभु से प्रार्थना की, और उन्होंने मुझे इस स्थान को छोड़ने का आदेश दयिा, ताकि मैं उस दुख का साक्षी न बनूँ जो परमेश्वर की कलीसयिा पर आने वाला है, न पवत्रि मंदरिों के उजाड़ होने का, न वेदयिों के अपवत्रि होने का, और न अपने बच्चों के रक्तपात का। मेरे बच्चों, मुझे मत रोको।

यह सुनकर कि उन्हें आने वाली वपित्ति का पता चल गया था, वे उनसे और भी अधकि वनिती करने लगे - वशिेष रूप से इस बात के लिए कि वे उन्हें न छोड़ें, बल्कि अपनी प्रार्थनाओं के माध्यम से उनके दुख में उनकी मदद करें। दुखी होकर, संत ने अपनी लाठी से जमीन पर प्रहार क कयिा और कहा: 'जब तक तुम मुझे जाने नहीं दोगे, मैं न तो कुछ खाऊँगा और न ही पयिूँगा; लेकनि अगर तुम मुझे मृत देखना चाहते हो, तो मुझे रोक लो।'

सात दनिों तक उन्होंने अपने वनिम्र नविेदनों से पूज्य पतिा को रोके रखा और, अंतत; उनके दृढ़ संकल्प से आश्वस्त होकर, उन्होंने उन्हें शांतपिूर्वक जाने दयिा। लोगों की भीड़ उन्हें रोते हुए काफी दूर तक साथ ले गई। बेतुलयिा

[7332] एपार्क – कसिी शहर या क्षेत्र का शासक।

नगर[7333] पहुँचने पर, संत घुटने के बल झुक गए, सभी के साथ प्रार्थना की और उन्हें प्रभु के सुपुर्द कर, उन्हें घर भेज दिया। उन्होंने भाईचारे के उन चालीस सदस्यों को चुना, जिन्हें वे यात्रा की कठिनाइयों—दिन में उपवास और सूर्यास्त के बाद केवल थोड़ा सा भोजन—को सहन करने में सक्षम जानते थे, और उन्हें अपने साथ ले लिया। पाँच दिन की यात्रा के बाद, संत पलिूसिया[7334] पहुँचे। लिचिनोस के नामक क्षेत्र में एक पास के रेगिस्तान में रहने वाले भाइयों से मिलने के बाद, वह वहाँ से प्रस्थान कर गए और तीन दिन बाद फावस्ट शहर पहुँचे। यहाँ उन्होंने बंदी बिशप ड्रैकोन्टियस द कन्फैसर से मुलाकात की, और दोनों को एक दैवीय प्रेरित बातचीत से सांत्वना मिली[7335] । कई दिनों तक चलने वाली एक और यात्रा के बाद, वह वृद्ध बड़े कठिनाई से बेबीलोन पहुँचा ताकि वह स्वीकारकर्ता बिशप फिलो[7336] से मिल सके। इन दोनों पुरुषों को उन हिस्सों में राजा कॉन्स्टेंटियस द्वारा निर्वासित किया गया था, जो दुष्ट एरियनों की सहायता कर रहा था। धन्य फिलोन से मिलने और उनसे वार्तालाप करने के बाद, पूज्यनीय ने अपनी यात्रा जारी रखी और एफ्रोडिटोपोलिस शहर पहुँचे; फिर, एक भयानक और कठोर रेगिस्तान के माध्यम से तीन दिनों की यात्रा के बाद, वे उस ऊँचे पहाड़ पर पहुँचे जहाँ पूज्यनीय एंथनी निवास करते थे।

यहाँ, पूजनीय हिलारियन को अपने दो शिष्य, इसाक और पेलुसियन मिले, जो संत को देखकर अत्यंत प्रसन्न हुए। वह क्षेत्र बहुत सुंदर था, और संत ने उसे बड़ी लगन से देखा। इसाक और पेलुसियन ने हिलारियन को पूजनीय एंथनी के परिश्रम से पवित्र हुए सभी स्थान दिखाए।

उन्होंने कहा, 'यहीं पर हमारे पवित्र पिता एंथनी ने भजन गाया, और वहाँ उन्होंने मौन का अभ्यास किया; यहाँ उन्होंने प्रार्थना की, और वहाँ बैठकर टोकरी बुनी; यहाँ वे अपने श्रम से विश्राम करते थे, और वहीं सोते थे; उन्होंने ये अंगूर की बेलें और ये पेड़ स्वयं लगाए थे, और यह खलिहान अपने हाथों से बनाया था; उन्होंने स्वयं बगीचे में पानी देने के लिए यह तालाब खोदा था, बड़ी मेहनत से और पसीना बहाकर; यह वह फावड़ा है जिसका उपयोग संत ने लंबे समय तक मिट्टी खोदने के लिए किया था।

उन्होंने संत हिलारियन को ये चीजें और भी बहुत कुछ दिखाई। वह उस स्थान पर पहुँचे जहाँ एंथनी विश्राम किया करते थे, उन्होंने भक्ति और आनंद के मिश्रित भाव से उनके बिस्तर को चूमा और उस पर लेट गए। पहाड़ की चोटी पर दो पत्थर की कोठरियाँ थीं, जहाँ संत एंथनी एकांत के लिए जाया करते थे, और उनसे मिलने आने वाले आगंतुकों की उपद्रव से बचते थे। शिष्यों ने हिलारियन को सीढ़ियों से चढ़ाकर इन कोठरियों तक ले जाकर उन्हें अंगूर की बेलें और विभिन्न प्रकार के फलदार पेड़ दिखाए, जो फलों से लदे हुए थे, और उन्हें बताया कि संत एंथनी ने उन्हें केवल तीन साल पहले ही लगाया था।

अपने भाइयों के साथ वहाँ विश्राम करने के बाद, पूजनीय हिलारियन एक बार फिर एफ्रोडिटोपोलिस लौट आए और भाइयों को भेज दिया, उन्हें पलेस्टाइन में अपने मठ लौटने का निर्देश देते हुए, जबकि अपने साथ केवल दो को ही रखा। वे उनके साथ उस शहर के पास के रेगिस्तान के लिए रवाना हुए, जहाँ वे बस गए और उन्होंने मौन, उपवास, प्रार्थना और ऐसे महान तपस्या कार्यों में खुद को समर्पित कर दिया कि ऐसा लगा मानो उन्होंने मसीह में अपना संन्यासी जीवन अभी-अभी शुरू किया हो।

आदरणीय एंथनी की मृत्यु के बाद, उस क्षेत्र में तीन साल तक सूखा पड़ा, और पूरे देश में अकाल मंडराया, क्योंकि गर्मी से मिट्टी आग की तरह झुलस गई थी। लोगों ने कहा कि न केवल लोग आदरणीय की मृत्यु पर शोक मना रहे थे, बल्कि स्वयं पृथ्वी भी शोक में थी, जबकि आकाश ने वर्षा रोक रखी थी। लोग और पालतू जानवर भूख और प्यास से मर रहे थे। यह सुनकर कि सेंट हिलारियन, जो एंथनी के शिष्य थे, उन इलाकों में रहते थे, लोगों का एक बड़ा समूह, अपनी पत्नियों और बच्चों के साथ, इकट्ठा हुआ और रेगिस्तान में उनके पास चल पड़ा। वहाँ पहुँचने पर, उन्होंने उनसे विनम्रतापूर्वक निवेदन करना शुरू कर दिया:

'ईश्वर ने हमें एंथनी के स्थान पर आपको भेजा है: हम पर दया करें और प्रभु से प्रार्थना करें कि, अपनी महान दया में, वे हमारी भूमि पर वर्षा भेजें, जो वर्षा की कमी से मुरझा गई है।'

[7333] बेथुलिया – जिसे बेटुलिया भी कहा जाता है – गाजा के दक्षिण में स्थित फ़िलिस्तीन का एक शहर।

[7334] पलिुसिया, या पेलुसा, साथ ही आगे बताए गए: लिक्नोस, फावस, बेबीलोन (मिस्र में; अब काहिरा का हिस्सा), एफ्रोडाइटोपोलिस और बुरुचिया – निचले (उत्तरी) मिस्र के शहर और कस्बे।

[7335] ड्रेकोन्टियस – हर्मोपोलिस (मिस्र में) के बिशप, सेंट पामवास के शिष्य।

[7336] फिलो – साइरेन का बिशप (साइरेन – अफ्रीका के उत्तरी तट पर, मिस्र के पश्चिम में ऊपरी लीबिया का एक क्षेत्र)

भूख और प्यास से मुरझा रहे इन लोगों की दुर्दशा देखकर, संत हलिारयिन ने अपनी आँखें और हाथ स्वर्ग की ओर उठाए और आँसुओं से प्रार्थना करने लगे। तुरंत, एक भारी बारशि हुई और पूरी भूमि को अच्छी तरह से सींच दिया[7337] । उस समय से, लोग अपने बीमारों को लाकर आदरणीय पति के पास आने लगे। जब उन्होंने देखा कि यहाँ भी उन्हें परेशान किया जा रहा है और उनकी मौनता का सम्मान नहीं किया जा रहा है, तो संत ओएससि रेगस्तिान[7338] में पीछे हटना चाहते थे, और तैयारी करने के बाद, वे अपने दो शष्यिों के साथ निकिल पड़े। अलेक्जेंड्रिया से गुजरने के बाद, वे ब्रुचेइया पहुँचे, जहाँ उन्हें कुछ परचिति भाई मिले, जिन्होंने उन्हें खुशी से स्वागत किया। थोड़ी देर उनके साथ रहने के बाद, उन्होंने जाने का नश्चिय किया, लेकिन भाइयों ने उन्हें जाने नहीं दिया और उनसे रुकने का आग्रह किया। तब उन्होंने रात में चुपके से निकिल जाने का फैसला किया, लेकिन जब उनके शष्यि उनके लिए एक गधा तैयार कर रहे थे, तो भाइयों को इसकी जानकारी हो गई और वे आकर दरवाज़े के पास लेट गए।

उन्होंने कहा, 'हमारे लिए आपके चरणों में लेटे-लेटे मर जाना बेहतर है, बजाय इसके कि हम इतनी जल्दी आपसे अलग हो जाएँ!'

तब रेवरेंड ने उनसे विनती की, "तो उठो, मेरे बच्चों, तुम्हारे और मेरे दोनों के लिए यह बेहतर है कि तुम मुझे जल्दी जाने दो, क्योंकि मुझे ईश्वर से एक प्रकटवाणी मिली है जो मुझे इस जगह को छोड़ने का आदेश देती है। इसीलिए मैं तुमसे जल्द से जल्द जाने का प्रयास कर रहा हूँ, ताकि मेरी वजह से तुम दुख में न डूब जाओ।" सचमुच, आप बाद में समझ जाएँगे कि मैं इतनी जल्दी में क्यों हूँ और आपके साथ न रुकने का निर्णय क्यों ले रहा हूँ।

ये शब्द सुनते ही, भाई लोग खड़े हो गए, और संत ने प्रार्थना की, उन्हें गले लगाया, और चल दिए। ईश्वर की कृपा ने अजेय रेगस्तिान के माध्यम से उनकी यात्रा में उनकी रक्षा की।

अगले ही दिन, जब वह ब्रुखिया से चल पड़ा, तो गाज़ा के मूर्तपिूजक अपने जल्लादों के साथ यहाँ आए और पूछने लगे कि हिलारयिन कहाँ है। यह जानकर कि वह चला गया है, वे एक-दूसरे से कहने लगे:

'देखो इस जादूगर को: उसे पता चल गया था कि हमने उसके लिए क्या योजना बनाई है और वह भाग गया।'

शुरुआत से ही, गाज़ा के अधर्मी निवासियों को संत से ईर्ष्या थी, क्योंकि लोग उनके पास उमड़ रहे थे और अपने देवता मार्नस की पूजा करना बंद कर रहे थे। मार्नस के पुरोहति इस कारण से विशेष रूप से संत के प्रति कटु थे; उन्होंने उन्हें हर तरह से नष्ट करने की कोशशि की, लेकिन वे ऐसा नहीं कर सके, क्योंकि सभी पड़ोसी शहरों और गांवों में संत को बहुत सम्मान दिया जाता था। जब राजा कॉन्स्टेंटियस की मृत्यु हो गई और राक्षसों का दुष्ट सेवक, जूलियन द एपोकेटेट, सिंहासन पर बैठ गया, तो अधर्मी लोगों ने अपनी लंबे समय से योजनाबद्ध बुरी साजशि को अंजाम देने के लिए इसे एक अनुकूल समय समझा। गाज़ा नगर के मूर्तपिूजकों ने उस अधर्मी राजा के पास जाकर, सम्माननीय हलिारयिन और उनके शष्यिों की उनके सामने बदनामी की, और एक लिखिति आदेश प्राप्त किया जिसमें गाज़ा के पास उनके मठों को नष्ट करने, उनके शष्यिों को पहले पीटने के बाद क्षेत्र से निष्कासति करने, और स्वयं हलिारयिन तथा उनके सहायक हेसकियिस की हत्या करने का आदेश दिया गया था। दुष्टों ने अपनी योजना को अंजाम दिया: उन्होंने मठों को लूट लिया और मसीह के अनुयायियों को बखिेर दिया। हालाँकि, इसचियिस—जिसे हलिारयिन अपनी उत्साही आज्ञाकारिता के लिए सबसे अधिक प्रिय मानते थे, जिसमें वह अन्य शष्यिों से आगे था—अविश्वासियों के हाथों से भागते हुए रेगस्तिान में छिप गया।

इस बीच, परम पूजनीय हलिारयिन, ईश्वर की सुरक्षा में, ओएससि रेगस्तिान में रहे। जब वह वहाँ लगभग एक साल रहे, तो उनका शष्यि एड्रियिन उनके पास इस खबर के साथ आया कि सम्राट जूलियिन मारा गया था - और उन्हें अपने पूर्व स्थान पर वापस पलेस्टाइन बुलाया, क्योंकि चर्च में एक बार फिर से शांति बिहाल हो गई थी। मौन से प्रेम करने वाले संत पलेस्टाइन वापस नहीं जाना चाहते थे; लेकिन, यह देखकर कि ओएससि रेगस्तिान में भी वह लोगों से बच नहीं सकते, वह अपने एक शष्यि, ज़ेनो के साथ रेगस्तिान पार करके लीबिया के क्षेत्रों की ओर चल पड़े; जबकि एड्रियिन, एक अन्य शष्यि के साथ, पलेस्टाइन लौट आए।

[7337] यह वर्ष 359 में हुआ था।

[7338] ओएससि – या ग्रेट लीबियिाई ओएससि – थेबाइड रेगस्तिान के पश्चिम में स्थति है; यह एक प्राचीन यूनानी बस्ती थी जो निर्वासन का स्थान भी था: इस प्रकार, विधर्मी नेस्टोरियिस को यहाँ निर्वासति किया गया था।

पैरेटोन नामक तटीय शहर में पहुँचने पर[7339] , हलिारयिन ने सांसारकि प्रसद्धि से बचने के लिए एक जहाज पकड़ा और ससिलिी की ओर चल पड़ा। जहाज के कप्तान का एक बेटा था जो एक अशुद्ध आत्मा से पीड़ति था, जो उसके भीतर चलि्लाती थी:

'हे परमेश्वर के सेवक, हलिारयिन! तू हमें समुद्र में भी चैन क्यों नहीं देता? जब तक हम कनिारे नहीं पहुँच जाते, तब तक हमारा साथ दे, नहीं तो मैं यहाँ से गहरे गर्त में फेंक दयिा जाऊँगा।'

संत ने उत्तर दयिा:

'यदि ईश्वर तुम्हें अपनी सृष्टि में बने रहने का आदेश देते हैं, तो वहीं रहो; लेकनि यदि वह तुम्हें बाहर नकिाल फेंकते हैं, तो उससे हमारा क्या लेना-देना? मैं एक पापी मनुष्य हूँ।'

यह सुनकर, उस बीमार लड़के का पति, जहाज पर मौजूद सभी लोगों के साथ, संत के पैरों पर गरि पड़ा और उनसे अपने बेटे पर दया करने तथा उससे राक्षस को भगाने के लिए वनिती करने लगा। लेकनि संत ने खुद को एक पापी कहकर मना कर दयिा।

'अगर तुम मुझसे वादा करो,' अंत में उन्होंने कहा, 'कि जिसि देश में हम जा रहे हैं, वहाँ कसिी से भी मेरे बारे में नहीं बोलोगे, तो मैं अपने प्रभु से प्रार्थना करूँगा कि वे उस दुष्ट आत्मा को बाहर नकिाल दें।'

उन्होंने गंभीरता से वादा कयिा। फरि, एक प्रार्थना करने के बाद, पूजनीय पति ने लड़के से राक्षस को बाहर नकिाल दयिा, और सभी ने परमेश्वर की स्तुति की।

जब जहाज़ ससिलिी के माउंट पकिॉन[7340] पर लंगर डालने आया, तो संत ने नावकि को यात्रा के बदले में एक सुसमाचार दयिा जसिे उन्होंने अपनी जवानी में अपने हाथ से लखिा था: उनके पास देने के लिए और कुछ भी नहीं था, क्योंकि वे सांसारकि संपत्ति से उतने ही वंचति थे जतिने कि वे आत्मा से थे। लेकनि जहाज का मालकि उससे भुगतान स्वीकार नहीं कर रहा था, भले ही संत ने बहुत जोर देकर कहा कि उसे इसे ले लेना चाहिए।

'मैं आपसे कुछ भी नहीं लूंगा, क्योंकि आप स्वयं ही दरदि्र हैं और आपके पास कुछ भी नहीं है,' जहाज के मालकि ने उत्तर दयिा।

हालाँकि, संत अपने आप को पूरी तरह से दरदि्र और इस दुनयिा में कुछ भी न रखने वाला मानकर आत्मा में आनंदति हुए। तट से लगभग बीस पोप्रीश्च दूर जाने के बाद, वह अपने शष्यि के साथ वहीं बस गए। हर दनि, शष्यि लकड़ी का एक गट्ठा इकट्ठा करता, उसे पास के गाँव में ले जाता और उससे मलिने वाले पैसों से अपने लिए एक रोटी खरीदता, जसि पर वे दोनों गुज़ारा करते और ईश्वर का धन्यवाद करते थे।

लेकनि *'पहाड़ पर स्थति नगर छपि नहीं सकता'* (मत्ती 5:14)। रोम के सेंट पीटर बेसलिकिा में एक दानव-ग्रस्त व्यक्ति चलि्लाया:

'हलिारयिन, मसीह का एक सेवक, हाल ही में ससिलिी पहुँचा है; कोई उसे नहीं जानता, और वह सोचता है कि वह छपि सकता है: लेकनि मैं वहाँ जाऊँगा और उसे पहचानकर दखिाऊँगा।'

और ऐसा ही हुआ। इस व्यक्ति को ससिलिी लाया गया; पहिोन में उसने संत हलिारयिन को पाया, उनकी कुटयिा के सामने साष्टांग दंडवत कयिा और संत की प्रार्थनाओं से वह चंगा हो गया। तब से उस प्रदेश के नविासी उसके बारे में जानने लगे। अनगनित लोग अपनी बीमारयिों से मुक्ति पाने के लिए उसके पास आने लगे, और जो कुछ वे चाहते थे, वह प्राप्त कएि बनिा कभी घर नहीं लौटे। उपरोक्त व्यक्ति, जो रोम से आया था और जो दानवों के कब्जे से मुक्त होकर चंगा हुआ था, ने अपनी चंगाई के लिए कृतज्ञता स्वरूप संत को समृद्ध उपहार अर्पति कएि; लेकनि संत ने उन्हें स्वीकार नहीं कयिा, कहते हुए:

'लखिा है: *"तुमने मुफ्त में पाया है, मुफ्त में दो"*[7341] (मत्ती 10:8).

जब रेवरेंड फादर ससिलिी में ठहरे हुए थे, उनके प्रयि शष्यि, धन्य इसकियिस ने, अपने प्रयि आध्यात्मकि पति, रेवरेंड हलिारयिन को खोजने के लिए पूरे तीन साल दुनयिा भर में बतिाए: उन्होंने कई देशों, पहाड़ों और रेगस्तिानों में बहुत

[7339] पैरेटन – नचिले मस्रि में एक तटीय शहर।

[7340] पचिॉन – ससिलिी द्वीप के दक्षणि में एक प्रायद्वीप।

[7341] मत्ती 10:8. 'तुमने मुफ्त पाया है, मुफ्त दो।' इन शब्दों के साथ, उद्धारकर्ता ने पवत्रि आत्मा से प्राप्त अनुग्रह को बेचने से मना कयिा।

यात्रा की, लेकिन उन्हें कहीं नहीं मिला। जब वे पेलोपोनज़ि[7342] के तटीय शहर मेथोने में थे, तो उन्होंने एक यहूदी व्यापारी से सुना कि सिसिली में एक ईसाई नबी प्रकट हुआ था, जो कई चमत्कार कर रहा था।

इसीकियस ने पूछा, 'और उसका नाम क्या है, और वह कैसा दिखता है?'

'मैंने उसे देखा नहीं है और न ही उसका नाम जानता हूँ,' यहूदी ने जवाब दिया, 'मैंने केवल उसके बारे में सुना है।'

यह महसूस करते हुए कि यह पैगंबर वही था जिसकी वह तलाश कर रहा था, इसकियस एक जहाज पर चढ़ा और सिसिली के लिए रवाना हो गया। कुछ कठिनाई से, वह अपने साथियों से संत के बारे में थोड़ी जानकारी जुटाने में कामयाब रहा, जिन्होंने सर्वसम्मति से पुष्टि की कि उन्होंने कई चमत्कार किए थे और बदले में उनमें से किसी से एक रोटी का टुकड़ा भी नहीं लिया था। पिचॉन में संत को पाकर, इसकियस उनके पैरों पर गिर पड़ा, उन्हें चूमने और अपने आँसुओं से धोने लगा। वरिष्ठ अपने शिष्य, जो आनंद के आँसुओं से रो रहा था, को मुश्किल से जमीन से उठा सके, और उन्होंने उसे आत्मा-मोक्षकारी वार्तालाप से सांत्वना दी।

कुछ समय बाद, जब उन्होंने लोगों की भीड़ को अपनी ओर आते और उनकी प्रशंसा करते देखा, तो वृद्ध ने अपने शिष्यों, ज़िनोन और इसचियस से कहा:

'हम यहाँ नहीं रह सकते, मेरे बच्चों; चलो हम किसी दूसरे देश में चलें जहाँ कोई हमें न जाने।'

सभी के इकट्ठा हो जाने पर, वह उनके साथ गुप्त रूप से डल्मेशियन शहर एपिडौरस[7343] के लिए रवाना हो गया, जहाँ ईश्वर ने उसे निर्देशित किया था ताकि वह वहाँ कई लोगों को लाभ पहुँचा सके। एपिडौरस के पास एक एकांत स्थान पर कुछ ही दिन बिताने के बाद, उस क्षेत्र के निवासियों को पहले ही उनके बीच ईश्वर के संत के आगमन के बारे में पता चल गया था, जो पहले सिसिली में थे। ईश्वर ने अपने सेवक को लोगों के सामने प्रकट किया और उसका गौरव बढ़ाया। एक-दूसरे से उसके बारे में सुनकर, निवासी इकट्ठा हुए और उसके पास आए; झुकने के बाद, उन्होंने अपनी महान संकट में उनकी मदद करने की विनती की: उन इलाकों में एक भयानक साँप रहता था, जो इतना विशाल था कि वह बड़े बैलों को खा जाता था और लोगों को पूरा निगल जाता था। इस प्रकार, उसने अनगिनत लोगों और मवेशियों को मार डाला था। इसके बारे में सुनकर, संत ने बड़ी मात्रा में जलाऊ लकड़ी इकट्ठा करने और एक विशाल आग जलाने का आदेश दिया; जबकि उन्होंने स्वयं घुटने टेककर ईश्वर से प्रार्थना की कि वे अपने लोगों पर दया करें और, अपने पवित्र नाम की महिमा के लिए, उन्हें विनाशकारी सांप से बचाएं। तब उन्होंने साँप को पुकारना शुरू किया: ' '। और देखो, साँप प्रकट हुआ, मानो किसी शक्ति द्वारा अपने विनाश की ओर खिंचा चला आ रहा हो। सभी भयभीत होकर देखते रहे। संत ने उसे आग में जाने का आदेश दिया, और तुरंत, उनके शब्दों का पालन करते हुए, साँप आग में घुस गया और राख हो गया। तब लोगों ने ईश्वर की स्तुति की और संत हिलारियन का धन्यवाद किया।

उस दिन से, कई लोग मदद के लिए उनकी ओर मुड़ने लगे। हालाँकि, वरिष्ठ चिंतित थे और सोच रहे थे कि उन्हें लोगों से दूर छिपे रहने और मौन में रहने के लिए ऐसी कौन सी जगह मिल सकती है। उसी समय, एक बड़ा भूकंप आया, जिससे समुद्र में जोरदार उथल-पुथल मच गई और वह अपने किनारों से ऊपर उठ गया। लहरें इतनी ऊंची उठ आईं कि उन्होंने बड़े पहाड़ों को ढक लिया, और पानी में बही जहाज़ ऊँची ज़मीन पर फँस गए। समुद्र के किनारे बसी एपिडौरस के निवासियों ने ये विपत्तियाँ देखकर सोचा कि दूसरा प्रलय शुरू हो रहा है; और वे पूरे संसार के विनाश तथा अपनी अनिवार्य मृत्यु की आशंका से भयभीत होकर, ऊँची आवाज़ में रोने लगे। संत हिलारियन को याद करते हुए, सभी—युवा और वृद्ध, पत्नियाँ और बच्चे—उनकी ओर दौड़े और रोते हुए उनसे विनती करने लगे कि वे उनके लिए ईश्वर से प्रार्थना करें, ताकि वह अपना धार्मिक क्रोध उनसे दूर कर दें। संत उठे और उनके साथ नगर की ओर चल दिए। वहाँ पहुँचने पर, वह शहर और समुद्र के बीच खड़ा हो गया; इस बीच, समुद्र एपिडॉरस के ऊपर हवा में बहुत ऊँचा उठ गया था, इतना कि ऐसा लगता था कि वह बादलों को छू रहा है, और वह पहले ही शहर को डुबाने के लिए तैयार था। संत ने रेत पर तीन क्रॉस बनाए और, स्वर्ग की ओर अपने हाथ उठाकर, मानवता से प्रेम करने वाले ईश्वर से अपनी सृष्टि पर दया करने का विनम्र निवेदन करने लगे। जब वे इस प्रकार प्रार्थना कर रहे थे, तो ईश्वर ने मानवता के प्रति अपना प्रेम प्रकट किया: प्रभु की आज्ञा से, समुद्र धीरे-धीरे शांत हो गया और अपने किनारों पर लौट आया, भूकंप रुक गया, और हवाएं थम गईं। एपिडौरस

[7342] पेलापोनेज़ – बाल्कन प्रायद्वीप पर ग्रीस का दक्षिणी भाग।

[7343] एपिडौरस – एड्रियाटिक सागर के तट पर एक शहर, जो 6वीं शताब्दी में नष्ट हो गया था। अब इसे रागुसा के नाम से जाना जाता है।

नगर में प्रभु की इस महान शक्ति और पूजनीय हलिारयिन की प्रार्थनापूर्ण मध्यस्थता की इस कथा को, संतों ने पीढ़ी-दर-पीढ़ी अपने बच्चों तक पहुँचाया।

इस बीच, संत हलिारयिन ने मानवीय महमिा को त्यागकर, रात में उस स्थान को छोड़ दयिा और साइप्रस जाने वाली एक नाव पाकर, अपने शष्यिों के साथ उसमें सवार हो गए। यात्रा के दौरान, उन पर डाकुओं ने हमला कर दयिा, और नाव पर सवार सभी बहुत डर गए; लेकनि हलिारयिन ने उन्हें सांत्वना दी।

उन्होंने कहा, 'क्या फरिौन की सेना में इनसे अधकि समुद्री डाकू थे? फरि भी ईश्वर ने उन्हें समुद्र में डुबो दयिा।'

जब समुद्री डाकू पत्थर फेंकने की दूरी तक जहाज के पास आ गए, तो संत ने जहाज से ही उन्हें देखकर अपना हाथ लहराया और कहा:

'तुम इतना सफर तय कर चुके हो, बस इतना ही काफी है।'

डकैतों के जहाज तुरंत ही रुक गए, वे न तो आगे बढ़ सके और न ही उस जहाज के पास आ सके जसि पर संत यात्रा कर रहे थे। डकैतों ने बेकार में नौका चलाने में बहुत प्रयास कयिा था, और वे शर्मदिा होकर वापस लौट गए, क्योंकि उन्हें ईश्वर की शक्ति द्वारा जहाज से पीछे धकेल दयिा गया था।

साइप्रस द्वीप[7344] तक नौकायन करने के बाद, संत हलिारयिन पाफोस शहर[7345] से दो वर्स्ट (लगभग 3.2 कलिोमीटर) दूर एक सुनसान जगह पर बस गए। लेकनि यहाँ भी उन्हें शरण नहीं मलि सकी: लोगों के भीतर रहने वाले राक्षसों ने स्वयं ही लोगों को उनके आगमन की सूचना दे दी। ईश्वर की आज्ञा से, देश भर से पशिाचग्रस्त लोग—जनिकी संख्या 200 तक थी, जसिमें पुरुष और महलिाएं दोनों शामलि थे—इकट्ठा हुए और संत के पास आए; उनकी प्रार्थनाओं के माध्यम से, वे सभी पशिाचों से मुक्त हो गए। वहाँ दो साल तक रहने के बाद, पूज्यनीय ने एक सुनसान जगह की तलाश में वहाँ से जाने का फैसला कयिा, जहाँ वे अपने जीवन का अंत मौन में कर सकें। समुद्र से बारह वर्स्ट की यात्रा करने के बाद, उन्हें ऊँचे पहाड़ों के बीच एक एकांत, जंगली जगह मलिी। उसके चारों ओर कई फलदार पेड़ उगे थे (जनिके फल का स्वाद उन्होंने एक बार भी नहीं चखा); पहाड़ से पीने योग्य पानी बहता था; वहाँ एक खलिता हुआ बगीचा और एक परत्यिक्त मूर्तपिूजक मंदरि भी था, जसिमें राक्षसों की भीड़ रहती थी। संत को इस जगह का अत्यधकि सुनसानपन पसंद आ गया, और वह वहाँ पाँच साल तक रहा। दनि-रात राक्षस ज़ोर-ज़ोर से चलि्लाते थे, ताकि संत को डराकर वहाँ से भगा सकें; लेकनि वह अथक प्रार्थना के ज़रिए उनसे लड़ता और मौन में वशि्राम करता था, क्योंकि उसके नविास तक पहुँचने की कठनिाई और वहाँ रहने वाले राक्षसों की भीड़ के कारण, कोई भी उसके पास आने की हम्मित नहीं करता था।

एक अवसर पर, अपनी झोपड़ी से बाहर नकिलते समय, एल्डर ने उसके सामने एक लकवाग्रस्त आदमी को लेटा हुआ देखा और इसकियिस से पूछा:

'यह आदमी कौन है, और इसे यहाँ कसिने लाया?'

'वह उस जगह के मालकि हैं जहाँ हम रहते हैं,' इसकियिस ने उत्तर दयिा।

संत की आँखों में आँसू आ गए, उन्होंने उस पर अपना हाथ फैलाया और कहा:

'हमारे प्रभु यीशु मसीह के नाम पर, उठो और चलो!'

और लकवाग्रस्त व्यक्ति तुरंत उठ खड़ा हुआ, पूरी तरह से ठीक हो गया, और ईश्वर की स्तुति करते हुए चलने लगा। इस चमत्कार के बाद, सभी स्थानीय नविासी संत के पास आने लगे, और वे अब न तो शत्रु आत्माओं से डरते थे और न ही कठनि और खतरनाक यात्रा से।

पैलेस्टाइन में अपने भाइयों को याद करते हुए, रेवरेंड ने पूजनीय इसचियिस को उनकी ओर से उन्हें मलिने और नमस्कार करने के लिए भेजा। उन्होंने स्वयं अपने प्रस्थान पर वचिार करना शुरू कर दयिा, यह देखते हुए कि यहाँ भी उन्हें आने वाले लोगों द्वारा सम्मानति कयिा जाता था और वे उनसे मलिने आने वालों के बोझ से दबे हुए थे, लेकनि उन्होंने इसचियिस के लौटने का इंतजार कयिा। इस समय, उनके शष्यि, धन्य ज़निोन की मृत्यु हो गई, और अब उनके लिए भी अपने कठनि सांसारकि जीवन को समाप्त करने का समय आ गया था (वे पहले ही 80 वर्ष के थे)।

[7344] लगभग सतिंबर 365.

[7345] पाफोस – साइप्रस में एक तटीय शहर, जो प्रेरति पौलुस के उपदेश के लिए उल्लेखनीय है। यहाँ, उन्होंने एलमिास नामक एक जादूगर, जसिने उनका वरिोध कयिा था, को अंधा कर दयिा। प्रेरतिों के काम, अध्याय 13।

ईश्वर के पास उनके प्रस्थान की पूर्वदृष्टि रखते हुए, पूजनीय पिता ने अपने भाइयों के लिए अपनी वसीयत अपने हाथ से लिखी, जिसमें उन्होंने इसचियस को अपना हस्तलिखित पवित्र सुसमाचार, एक रोंगटेदार चोगा और एक प्रार्थना की माला[7346] विरासत में दी। इसके बाद, उनका शरीर कमजोर पड़ने लगा।

जब संत हिलारियन की बीमारी की खबर पाफोस के निवासियों तक पहुँची, तो सभी धर्मपरायण पुरुष तुरंत उन्हें देखने आए, और उनके साथ कोन्स्टेंस नाम की एक धर्मनिष्ठ महिला भी थी, जिसकी बीमार बेटी को रेवरेंड फादर ने पवित्र तेल लगाकर ठीक किया था।

यह महसूस करते हुए कि प्रभु उन्हें अपने पास बुला रहे थे, संत ने अपने आगंतुकों से अनुरोध करना शुरू कर दिया कि उनकी मृत्यु के बाद, वे बिना किसी देरी के, उनके शरीर को उसी बगीचे में दफना दें जहाँ वे रहते थे। मरते समय, हिलारियन ने एक शुद्ध मन से आत्मा के शरीर से अलगाव पर मनन करते हुए कहा:

'आओ, हे मेरी आत्मा, तुम क्यों डरती हो? आओ, तुम क्यों व्याकुल हो? तुमने अस्सी वर्षों तक मसीह की सेवा की है – और फिर भी तुम मृत्यु से डरती हो?'

इन शब्दों के साथ, उन्होंने अपनी आत्मा ईश्वर को सौंप दी[7347] । उपस्थित लोगों ने, एक पिता और शिक्षक की भाँति उनके लिए विलाप करते हुए, उन्हें उसी स्थान पर दफनाया जहाँ उन्होंने आज्ञा दी थी।

फिलिस्तीन से लौटने पर और अपने गुरु को अनुपस्थिति पाकर, धन्य इसकियस उनकी कब्र के पास कई दिनों तक रोए। उनका इरादा शरीर को फिलिस्तीन में अपने भाइयों के पास ले जाने का था, लेकिन वे ऐसा नहीं कर सके, क्योंकि सभी स्थानीय निवासी शरीर की रखवाली कर रहे थे, ताकि कोई भी उस खजाने को उनकी भूमि से दूर न ले जाए।

इसलिए इसकियस ने ऐसा दिखावा किया कि वह उस स्थान पर बसना चाहता है और कहा:

'मुझे मरने दो और मुझे मेरे पिता के बगल में यहीं दफना दो।'

उनकी बात पर विश्वास करके, लोगों ने उन्हें उस स्थान पर रहने की अनुमति दे दी जहाँ संत हिलारियन को दफनाया गया था। दस महीने बाद, इसचियस ने संत की कब्र खोली और उनका पवित्र शरीर देखा, मानो वे अभी-अभी मरे हों, उनका चेहरा दमक रहा था और एक मीठी सुगंध आ रही थी। उन्होंने उस शरीर को उठाया और गुप्त रूप से फिलिस्तीन के लिए रवाना हो गए। फ़िलिस्तीनी संतों और सामान्य लोगों को जब पता चला कि इसचियस संत हिलारियन के अवशेष ले आए हैं, तो वे सभी मठों और कस्बों से मोमबत्तियाँ और धूपदान लेकर इकट्ठा हो गए; उन्होंने उन्हें सम्मानपूर्वक विदा किया, और उन्हें मायूमा में, उनके पहले मठ में, रख दिया।

हमें यह भी उल्लेख करना चाहिए कि उपर्युक्त कॉन्स्टेंस ने क्या किया। सदाचारी होने और परम पूज्य हिलारियन के प्रति गहरी भक्ति रखने के कारण, उनके निधन के बाद उन्होंने अक्सर उनकी कब्र पर जाना शुरू कर दिया, रात भर प्रार्थना करतीं और उनसे इस तरह बात करतीं मानो वे जीवित हों, और अपने लिए उनकी प्रार्थनाओं का आग्रह करतीं। जब उन्हें पता चला कि संत का शरीर चुरा लिया गया है, तो वे शोक से अचेत होकर गिर पड़ीं और उनकी मृत्यु हो गई, और अपनी मृत्यु से उन्होंने संत के प्रति अपने विश्वास और प्रेम की गहराई को प्रदर्शित किया।

साइप्रस और फिलिस्तीन के लोग आपस में बहस कर रहे थे, प्रत्येक संत हिलारियन की प्रशंसा कर रहा था। फिलिस्तीन के लोगों ने कहा:

'हमारे पास संत हिलारियन का शरीर है।'

'लेकिन हमारे पास उनकी आत्मा है,' साइप्रसवासियों ने उत्तर दिया।

दोनों स्थानों पर—साइप्रस में, जहाँ उन्हें दफनाया गया था, और फिलिस्तीन में, जहाँ उनके अवशेष स्थानांतरित किए गए थे—उनकी पवित्र प्रार्थनाओं के माध्यम से कई चमत्कार हुए, और परमपिता परमेश्वर की महिमा के लिए अनगिनत चंगाईएँ प्रदान की गईं, जिन्हें हम त्रिमूर्ति में एक के रूप में मानते हैं, और जिनके प्रति हम सदा-सदा सम्मान, धन्यवाद और आराधना अर्पित करते हैं। आमीन।

[7346] कुकोल एक मठवासी टोपी है जो पवित्रता और परोपकार का प्रतीक थी। कभी-कभी कुकोल पर एक क्रॉस सिल दिया जाता था।

[7347] उनकी मृत्यु 21 अक्टूबर, वर्ष 371 या 372 को हुई।

ट्रोपारयिन, स्वर 8:

अपने अश्रुओं के प्रवाह से आपने उजाड़ रेगस्तिान को उपजाऊ बनाया, और गहराइयों से उठती आहों द्वारा आपने सौ परश्रिमों से फल उत्पन्न कयि; आप संसार के लिए एक दीपक थे, जो चमत्कारों से प्रकाशति होता था, हलिारयिन, हमारे पतिा: मसीह परमेश्वर से प्रार्थना करें कि हमारी आत्माएँ उद्धार पाएँ।

कॉन्टाकयिन, स्वर 3:

एक ऐसे दीपक की तरह जो कभी अस्त नहीं होता, एक बुद्धमिान सूर्य, हम आज गीतों द्वारा आपकी स्तुति करने के लिए एकत्रति हुए हैं: क्योंकि आप अज्ञानता के अंधकार में डूबे लोगों पर चमके, और सभी को दविय ऊँचाइयों पर ले गए, हलिारयिन। इसलिए हम पुकारते हैं: हर्षति हो, हे पतिा, सभी उपवासयिों की नींव।

मेग्लनि के संत हलिारयिन का स्मरणोत्सव

21 अक्टूबर को स्मरणोत्सव

बुल्गारयिाई ज़ार कालोयान[7348] , ज़ार असन के भाई, ने ग्रीक प्रदेशों – थ्रेस, मैसडिोनयिा, नेआडा और हेलास – पर वजिय प्राप्त की और मेग्लनि शहर[7349] पर कब्ज़ा कयिा। वहाँ उन्होंने मेग्लनि के बशिप, पूज्य हलिारयिन[7350] की अवशेष-पात्रकिा पाई, और धार्मकि उत्साह से प्रेरति होकर, संत के अवशेषों को अपनी राजधानी तार्नोवो[7351] ले जाने की इच्छा की, और उन्हें अपने साथ ले गए। जब बुल्गारयिा के पैट्रआर्क को संत के आगमन की सूचना मलिी, तो वे बशिपों और अपने सभी पुरोहतिों, कुलीनों और सभी लोगों के साथ मोमबत्तयिाँ और सुगंधति धूप लेकर पवत्रि अवशेषों का स्वागत करने के लिए बाहर गए। संत के अवशेषों को 21 अक्टूबर को ईश्वर-संरक्षति शहर टर्नोवो में लाया गया और वरिाम दयिा गया।

[7348] कलोयान जॉन एसेन (1186–1196) के दूसरे उत्तराधकिारी थे। 1207 में उनके भतीजे बोरलि ने उनकी हत्या कर दी, जसिके बाद एसेन के पुत्र जॉन द्वतिीय (1218–1241) — जो बोरलि की इस क्रूरता के समय रूस में थे — सहिासन पर चढ़े।

[7349] कुछ लोगों के अनुसार, यह प्राचीन एडेसा भी है; हालांकि, अन्य लोग स्लावकि शहर वोडेना को एडेसा मानते हैं, जसिके उत्तर-पूर्व में मेगलनिा 30 वर्स्ट की दूरी पर स्थति है। यह शहर अब मौजूद नहीं है।

[7350] आदरणीय हलिारयिन का जन्म अमीर और कुलीन माता-पतिा के घर हुआ था। ईसाई पालन-पोषण प्राप्त करने के बाद, 18 वर्ष की आयु में उन्होंने संसार का त्याग कर दयिा और एक मठ में चले गए, जहाँ उन्हें उनके कठोर जीवन शैली के कारण जल्द ही मठाधीश नयिुक्त कयिा गया। अपने सुपुर्द की गई आत्माओं के मोक्ष के लिए चतिति होकर, उन्होंने उन्हें मोक्ष के लिए नर्धिारति कीमती समय बर्बाद न करने का आग्रह कयिा। वशिेष रूप से, वह शराब पीने को बर्दाश्त नहीं कर सकते थे। 1134 में, उन्हें बुल्गारयिा के आर्चबशिप यूस्टैथयिस द्वारा मेग्लनि के बशिप के रूप में अभषिक्ति कयिा गया। उस समय, बुल्गारयिा में बोगोमलि संप्रदाय व्यापक रूप से फैला हुआ था; यह एक द्वैतवादी सद्धिांत का समर्थन करता था जसिके अनुसार अच्छा और बुरा दो स्वतंत्र सद्धिांत हैं जो एक संघर्ष में लगे हुए हैं। संत हलिारयिन ने प्रेरतिकि उत्साह और भक्तपिूर्ण प्रार्थनाओं से खुद को लैस करके, लोगों को इस झूठी शक्षिा से दूर करने का प्रयास कयिा। उन्होंने बनिा थके बोगोमलि्स की अधर्मीता की नदिा की, और उस पाखंडी भक्ति के मुखौटे को उजागर कयिा जसिसे वे दूसरों को धोखा देते थे। इस वधिर्म के नेताओं ने संत हलिारयिन के साथ खुली बहस करने की हम्मित की। बोगोमलि्स के आपत्तयिों का खंडन करने के बाद, संत ने अपने भाषण का समापन इन शब्दों के साथ कयिा: 'तुम बोगोमलि्स, खुद को और दूसरों को क्यों धोखा देते हो, खुद को ईसाई कहते हो जबकि तुम बलि्कुल भी ईसाई नहीं हो – तुम मसीहा यीशु के क्रूस के शत्रु हो, तुम एक ईश्वर को स्वीकार नहीं करते जैसा कि ईसाई मानते हैं, और तुम उस प्राचीन प्रकाशन का अपमान करते हो, जसिे प्रभु के वचन के अनुसार ईसाइयों द्वारा सम्मानति कयिा जाता है?' तुम अपनी पाखंडी नम्रता से भोले-भाले लोगों को धोखा देते हो, जबकि तुम घमंड से भरे हुए हो। उन लोगों में कोई सच्ची भक्ति नहीं हो सकती जो अपने हृदय की भ्रष्टता को स्वीकार नहीं करते और प्रार्थना तथा वनिम्रता के माध्यम से ईश्वर की कृपा की खोज नहीं करते! आपके उपवास का क्या लाभ? ईमानदारी से अपनी जाँच करें - और आप देखेंगे कि बुरे वचिार, ईर्ष्या, अहंकार, तुच्छता, चालाकी, झूठ और धोखा हमारे भीतर के कसिी बुरे पदार्थ का काम नहीं है और उपवास से उन पर काबू नहीं पाया जा सकता; बल्कि, वे भ्रष्ट आत्म-स्नेह का फल हैं और इसलिए उन पर काबू पाने के लिए आध्यात्मकि संघर्षों की आवश्यकता होती है।" पादरी की आज्ञा का पालन करते हुए, कई बोगोमलि्स अपने हृदय में प्रभावति हुए और, अपनी पूर्व दुष्टता की नदिा करके, मसीह की कलीसयिा के साथ एक हो गए। इसी भावना में, संत हलिारयिन ने मोनोफज़िटिवाद का पालन करने वाले अर्मेनयिाई लोगों से भी बहस की, जो मसीह में एक ही स्वभाव - दैवीय - को मानते हैं। धन्य हलिारयिन का 1164 में शांतपिूर्वक नधिन हो गया।

[7351] टर्नोव बुल्गारयिा के प्रमुख शहरों में से एक है, जो प्राचीन काल में इसकी राजधानी भी रह चुका है।

जब जॉन एसेन द्वतिीय सहिासन पर आरे, तो उन्होंने अपने राज्य की सीमाओं का बहुत वसि्तार कयिा और ज़ार के आदेश पर टर्नोवो में चालीस शहीदों को समर्पति एक चर्च का नरि्माण कयिा गया, जसिमें सेंट हलिारयिन के अवशेष स्थापति कएि गए थे।

ट्रोपारयिन, स्वर 3:

एक चमत्कार प्रकट हुआ है; तुम ईश्वर के गुणों से प्रकाशति हुए हो; तुमने मठवासी समुदाय का मार्गदर्शन कयिा है; तुमने बशिप की गद्दी को शुद्ध कयिा है; और, वधिर्मी हमलों से अवचिलति होकर, हे पूज्य हलिारयिन, आपने मसीह की कलीसयिा को दृढ़ता से थामा। आप सोए हुए के समान नधिन पाए, और आपका शरीर पूर्णतःऔर अक्षुण्ण रूप से संरक्षति रहा; यह वभिन्नि रोगों से पीड़तिों को चंगा करता है और दुष्ट आत्माओं को भगाता है। इसी कारण हम आपसे प्रार्थना करते हैं: हमारे आत्माओं के उद्धार के लएि प्रार्थना करें।

कॉन्टाकयिन, स्वर 3:

हे बशिप, आपकी स्मृतिएक तेजस्वी प्रकाश के रूप में प्रकट हुई है; नराशिा के अंधकार को दूर करो, और स्वर्गीय वरदानों के प्रकाश को चमकाओ, जो सभी को आनंद की ओर बुलाता है: क्योंकहि हे हलिारयिन, आपने ईश्वर से अनुग्रह प्राप्त कयिा, और आप भक्षिु के पद पर पहुँचे।

पवत्रि शहीदों डैसयिस, गैसयिस और ज़ोटीकस का स्मरणोत्सव

21 अक्टूबर को स्मरण कयिा जाता है

पवत्रि शहीदों डासयिस, गयिस और ज़ोטיקस, जब नकिोमेडयिा में थे, एक बार एक मूर्तपिूजक मंदरि में गए और वेदयिों को नष्ट कर दयिा। इसके लएि, उन्हें हर तरह की यातनाओं और कष्टों से गुज़रना पड़ा। उन्हें एक पेड़ से लटका दयिा गया, जबकि उन्हें घोड़े की कंघी से खुरचा गया और उनके शरीर पर बालों वाले कपड़ों से रगड़ा गया। जब उनके यातनादाताओं ने देखा कि वे मूर्तयिों की व्यर्थता की नदिा करते हुए और पति तथा पवत्रि आत्मा के समान स्वभाव वाले ईश्वर मसीह की घोषणा करते हुए, सभी प्रकार की यातनाओं का तरिस्कार कर रहे थे, तो उन्होंने उनके गलों में पत्थर बाँधकर उन्हें समुद्र में फेंक दयिा, जहाँ संतों को वशि्राम मलिा[7352] ।

4 नवंबर

22 अक्टूबर (पुराना तरीका)

इसी दनि, एफ़सिुस के सात पवत्रि युवकों: मैक्समिनियिन, याम्ब्लकिस, मार्टनियिन, डायोनसियिस, एंटोननिस, कॉन्स्टेंटनि (एक्साकस्टोडयिन) और जॉन की स्मृतिमनाई जाती है। उनका स्मरणोत्सव 4 अगस्त को भी मनाया जाता है। 1870 के मेनोलॉजयिन में कहा गया है कि पवत्रि युवक 4 अगस्त को मर गए थे और 22 अक्टूबर को थयिोडोसयिस द यंगर के शासनकाल में मृतकों में से जी उठाए गए थे।

पवत्रि अवर्सयिस, प्रेरतिों के समान, हएिरापोलसि के बशिप का स्मरणोत्सव

22 अक्टूबर को स्मरण कयिा जाता है

[7352] संतों ने 303 ईस्वी में डायोक्लेटयिन के शासनकाल के दौरान शहादत प्राप्त की।

[7353][7354]मार्कस ऑरेलियस के शासनकाल में, हाइरापोलसि शहर में, जो मुख्य रूप से मूर्तपिूजकों द्वारा बसा था, संत एवरकयिस ने बशिप के रूप में सेवा की। एक दनि, वहाँ मूर्तयिों के सम्मान में एक भव्य उत्सव आयोजति कयिा जा रहा था, और सभी अवशि्वासयिों ने अपने मंदरि में इकट्ठा होकर, अपने नरि्जीव देवताओं - मूर्तयिों - का आनंद मनाया और उनकी बलदिान चढ़ाकर पूजा की। यह दृश्य देखकर संत एवरकी रो पड़े, इस बात पर दुखी होकर कि लोग मूर्खता से अंधा होकर, ईश्वर को त्यागकर राक्षसों की पूजा कर रहे थे, और सृष्टकिर्ता को भूलकर, मानव हाथों के काम का सम्मान कर रहे थे। अपने घर में खुद को बंद कर लयिा, और बशिप ने प्रार्थना करते हुए कहा:

'युगों के ईश्वर और दया के प्रभु, आपने संपूर्ण ब्रह्मांड की रचना की और उस पर शासन करते हैं; आपने अपने एकमात्र पुत्र को पृथ्वी पर भेजा ताकि वह मानव जाति के लिए अवतार ले सकें – अब स्वर्ग से दयालु दृष्टि से संपूर्ण वशि्व को देखें; इस नगर को न छोड़ें, जहाँ आपने मुझे अपने वचन के झुंड का चरवाहा नयिुक्त कयिा है; इन भ्रामति लोगों पर दृष्टि डालें: वे सम्मान जो आपको मलिना चाहिए, वह वे आपको नहीं देते, बल्कि घृणति राक्षसों और मूर्तयिों को देते हैं जन्हिें उन्होंने स्वयं गढ़ा है; हे प्रभु, इन भटकते लोगों को वनिाश से बचाओ; उन्हें अंधकार से नकिालकर अपनी सच्ची रोशनी में लाओ, और उन्हें अपने चुने हुए झुंड में शामलि करो!

इस प्रार्थना के बाद, संत सो गए, क्योंकि रात हो चुकी थी; और देखो, एक सपने में उन्होंने एक असाधारण सुंदरता वाले युवक को देखा; उसने अवरकी के हाथों में एक लाठी देते हुए कहा:

'जाओ, अवेर्की, मेरे नाम पर, और इस लाठी से भ्रांति के राजकुमारों को कुचल दो!'

जागने पर, अवरकी को एहसास हुआ कि स्वयं प्रभु ही दर्शन में उनके सामने प्रकट हुए थे, और उनके हृदय में अनुपम आनंद छा गया। उत्साह से भरकर, वह तुरंत उठ गया और हाथ में आ गया एक खंभा लेकर, उसी रात नौवें घंटे[7355] पर अपोलो के मंदरि के लिए चल पड़ा, जहाँ एक दनि पहले एक मूर्तपिूजक त्योहार हुआ था और कई बलदिान चढ़ाए गए थे। इस मंदरि में कई कीमती, खूबसूरती से सजी मूर्तयिाँ थीं। मंदरि के पास पहुँचने पर, एवरकी ने इसके दरवाज़े बंद पाए; उसने उन पर प्रहार कयिा, और वे तुरंत उसके सामने खुल गए। मंदरि में प्रवेश करने पर, पवत्रि बशिप ने पहले अपोलो की मुख्य मूर्ति पर प्रहार करना शुरू कयिा, और फरि बाकी मूर्तयिों पर। उसने उन्हें तोड़कर चूर-चूर कर दयिा। बहरी और गूंगी मूर्तयिाँ, जो नरि्जीव और शक्तहिीन थीं, संत द्वारा तोड़े जाने पर अपनी रक्षा नहीं कर सकीं। केवल उनके गरिने की आवाज़ सुनाई दे रही थी।

मंदरि के पास रहने वाले मूर्तपिूजक पुरोहति, जो मंदरि से कुछ दूरी पर रहते थे, अपनी नींद से जाग गए और मंदरि से आ रही बड़ी खड़खड़ाहट की आवाज़ सुनकर यह समझ नहीं पाए कि इसका क्या मतलब हो सकता है। मंदरि में दौड़कर, उन्होंने देखा कि उनके देवताओं की मूर्तयिाँ धूल-मट्टिी में लथपथ जमीन पर पड़ी थीं, जबकि संत एवरकी मूर्तयिों के टुकड़ों को पैरों तले कुचल रहे थे और अपनी लाठी से उन्हें तोड़ रहे थे। यह देखकर पुजारयिों के मन में भय समा गया; लेकनि संत ने उनकी ओर मुड़कर गुस्से में कहा:

'शहर के नेताओं और सभी लोगों के पास जाओ, और उन्हें बता दो कि तुम्हारे देवता, कल के उस उत्सव में नशे में धुत हो गए थे जो तुमने उनके लिए आयोजति कयिा था, उन्होंने आपस में झगड़ा कयिा और जमीन पर गरिकर चूर-चूर हो गए।'

यह कहकर, संत अपने शत्रुओं पर वजिय प्राप्त करने वाले शक्तशिाली व्यक्ति की भाँति घर चले गए; और वास्तव में मूर्तयिाँ ऐसी ही थीं, जन्होंने कई मानव आत्माओं को वनिाश की ओर ले जाया था।

मूर्तपिूजक पुरोहति नगर के अधकिारयिों के पास गए और उन्हें वह सब कुछ बताया जो एवरकी ने कयिा था। जैसे ही दनि चढ़ा, जो कुछ हुआ था उसकी खबर पूरे शहर में तेजी से फैल गई, और इसलिए सभी, जवान और बूढ़े, आम लोग और अधकिारी, मंदरि में इकट्ठा हो गए। अपनी मूर्तयिों को टुकड़े-टुकड़े होकर जमीन पर बखिरा हुआ देखकर, हर कोई पहले तो हैरान रह गया। फरि, गुस्से से भरकर, वे सभी चल्लिाने लगे:

'एवर्की को मौत!'

अन्य लोगों ने जोड़ा:

'उसे राजा के पास भेजो; वहाँ वह अपने अपराध के बराबर यातनाएँ भोगेगा!'

[7353] वह 161 से 180 तक शासन कयिा।

[7354] हएिरापोलसि एशयिा माइनर के फ्राइजयिा क्षेत्र का एक समृद्ध शहर था।

[7355] घंटों की गनिती सूर्योदय से की जाती थी, इसलिए हमारा नौवां घंटा हमारी गणना के अनुसार सुबह 3 बजे के अनुरूप था।

'नहीं, आइए हम तुरंत जाएँ और उसे और उसके पूरे घर को जला दें,' एक तीसरे समूह ने सुझाव दिया।

नेताओं ने भीड़ को रोका:

– एवरकी के घर में आग लगाने की हिम्मत मत करना; हमें डर है कि अगर तुमने एवरकी के घर में आग लगा दी तो पूरा शहर आग की चपेट में आ सकता है; बेहतर होगा कि हम उसे पकड़कर खुद मुकदमा चलाएं, या फैसले के लिए उसे सर्वोच्च शासक के पास भेज दें।

जब भीड़ इस तरह हंगामा कर रही थी और पहले ही अवेर्की के घर पर हमला करने ही वाली थी, तो बिशप के पड़ोसियों ने यह सुनकर उसके घर का रुख किया; उन्होंने उसे वहाँ इकट्ठा हुए विश्वासियों को सिखाते हुए पाया और भीड़ से जो कुछ भी उन्होंने सुना था, वह सब उसे बता दिया, जो लोग उसके घर जाकर उसे एक दुष्ट के रूप में पकड़ना चाहते थे।

यह सुनकर, विश्वासियों में भय छा गया और उन्होंने अपने चरवाहे से विनती की कि वे घर छोड़ दें और कुछ समय के लिए कहीं और शरण ले लें, जब तक कि सार्वजनिक अशांति शांत नहीं हो जाती। लेकिन संत ने बिना डरे उनसे कहा:

'प्रभु ने अपने प्रेरितों को आज्ञा दी कि वे सभी राष्ट्रों में उद्धार का वचन निडरता और बिना भय के प्रचार करें: तो क्या मुझे उन मनुष्यों से डरना चाहिए जो मुझ पर उठे हैं और मेरे परमेश्वर के प्रति मेरे उत्साह के कारण मेरी जान के पीछे पड़े हैं? यदि मैं मानवीय हाथों से छिप भी सकूँ, तो मैं परमेश्वर के हाथ से कैसे बचूँगा? कौन सी जगह मुझे उससे छिपा सकती है? भाइयों, मैं तुमसे सच कहता हूँ, जब प्रभु स्वयं, जो हमारे जीवन के रक्षक हैं, हमारी मदद करते हैं, तो हमारे लिए डरना या छिपना उचित नहीं है; उनके लिए दुख सहना एक आशीर्वाद है, और उनके लिए मृत्यु समृद्धि के किसी भी जीवन से अधिक मीठी है।

यह कहने के बाद, संत अपने घर से निकलकर शहर के बिलकुल केंद्र में चले गए, और विश्वासियों ने उनका अनुसरण किया। जहाँ लोग आमतौर पर इकट्ठा होते थे, उस जगह पहुँचकर, और एक ऊँचे मंच पर अपनी जगह लेकर, अवरकी ने उपस्थित लोगों को शिक्षा देना शुरू किया, ताकि वे सच्चे परमेश्वर को जान सकें, दुष्टात्माओं की धोखाधड़ी और उनके देवताओं की मिथ्या को समझ सकें, और मूर्तिपूजा का त्याग कर सकें; उन्होंने उनसे उस एक ईश्वर की निष्ठापूर्वक सेवा करने का आग्रह किया, जो सर्वोच्च पर वास करता है, और जो संपूर्ण जगत का स्रष्टा है। तब कुछ विधर्मी नगर के मजिस्ट्रेटों के पास और अपोलो के मंदिर में इकट्ठे लोगों के पास गए—जो मूर्तियों के उखाड़े जाने से क्रोधित थे—और उन्होंने घोषणा की कि अवेर्की नगर के केंद्र में लोगों को ईसाई धर्म का उपदेश दे रहा था। यह सुनकर, वे अवरकी पर और भी अधिक क्रोधित हो गए, जिसने न केवल उनकी मूर्तियों को तोड़ा था, बल्कि सभी के सामने खुलेआम अपने ईसाई धर्म का प्रचार करने की हिम्मत भी की थी। मंदिर छोड़कर, वे भयानक क्रोध के साथ उस स्थान पर गए जहाँ संत थे, और उनका इरादा उसे तुरंत मार डालने का था। भीड़ में तीन युवक थे जिन्हें लंबे समय से राक्षसों ने वश में कर रखा था। जैसे ही भीड़ संत के पास पहुँची, राक्षसों के वश में आए युवक अचानक उन्मत्त हो गए और एक भयानक चीख मारकर सभी के दिलों में दहशत भर दी।

वे अपने कपड़े फाड़ने लगे, अपना ही मांस चबाने और अपने हाथों को काटने लगे। जमीन पर गिरकर, वे लोट-पोट करने लगे, उनके मुंह से झाग निकल रहा था और वे भयानक आवाज़ में लगातार चीख रहे थे:

'एवरकी, हम तुझसे उस एक सच्चे ईश्वर की कसम देते हैं, जिसका तू उपदेश देता है: समय से पहले हमें यातना मत दे।'

ऐसे भयानक दृश्य को देखकर, लोग उन युवकों की भीषण यातना को देखकर और उनकी भयानक चीखें सुनकर भय से भर गए। वे भूल गए थे कि वे यहाँ क्यों आए थे, और वे हैरानी से यह देखने का इंतज़ार करने लगे कि आगे क्या होगा और एवरकी—जिससे राक्षस उन्हें चैन से छोड़ देने की विनती कर रहे थे—उन युवकों के साथ क्या करेगा। हालाँकि, संत ने प्रार्थना करना शुरू कर दिया:

'हे अपने प्रिय पुत्र यीशु के पिता, आप हमारे पापों को क्षमा करते हैं, भले ही उनकी संख्या अनगिनत हो, आप हमें वह सब कुछ प्रदान करते हैं जो हम अपने भले के लिए आपसे माँगते हैं – मैं अब आपसे विनती और प्रार्थना करता हूँ: इन युवकों को राक्षसों के आक्रमण से बचाएँ, ताकि वे इसके बाद आपके आज्ञाओं के मार्ग पर चलें, आपकी पवित्र इच्छा का अनुसरण करते हुए। आपके द्वारा उन पर किया जाने वाला यह चमत्कारिक संकेत देखकर, कई लोग आप पर, एकमात्र सर्वशक्तिमान ईश्वर पर, विश्वास करेंगे – और यह पहचान लेंगे कि आपके सिवा कोई और नहीं है।

इस प्रकार प्रार्थना करने के बाद, संत उन युवकों की ओर मुड़े जिन्हें राक्षसों द्वारा पीड़ा दी जा रही थी और, अपने हाथों में पकड़े हुए लाठी से उनके सिर पर हल्की थपकी देते हुए, कहा:

'मेरे मसीह के नाम पर, मैं तुम पिशाचों को आज्ञा देता हूँ, कि इन युवकों को बिना किसी भी प्रकार की हानि पहुँचाए, उनसे बाहर निकल जाओ।'

भयानक आवाज़ में चिल्लाते हुए, दुष्टात्माएँ उन युवकों से बाहर निकल आईं, जो मृतकों की तरह जमीन पर पड़े थे।

संत एवरकी ने उनमें से प्रत्येक का हाथ पकड़कर उन्हें जमीन से उठाया। वे तुरंत पूरी तरह से स्वस्थ हो गए और संत के पैरों पर गिरकर उनके पवित्र चरणों को चूमने लगे।

जब लोगों ने यह देखा, तो वे अपना क्रोध भूल गए और चिल्ला उठे:

'केवल एक ही सच्चा ईश्वर है, जिसका प्रचार अवरकी करते हैं!' फिर उन्होंने स्वयं संत से पूछना शुरू कर दिया:

'हे ईश्वर के पुरुष, हमें बताइए, यदि हम प्रभु की ओर मुड़ें तो क्या आपका ईश्वर हमें स्वीकार कर लेगा? क्या वह हमारे अनगिनत पापों को क्षमा कर देगा? हमें सिखाइए कि हम उस पर कैसे विश्वास करें!'

संत एवरकी ने अपना मुँह खोलकर लोगों को ईश्वर के ज्ञान का उपदेश देना शुरू किया और दिन के नौवें घंटे तक अपना उपदेश जारी रखा; उन्होंने यह भी आदेश दिया कि सभी बीमारों को उनके पास लाया जाए और उन्होंने यीशु मसीह का नाम लेकर और उन पर अपना हाथ रखकर उन्हें चंगा किया। उनकी शिक्षा सुनने और चमत्कारों के साक्षी बनने के बाद, सभी लोग प्रभु यीशु मसीह में विश्वास करने लगे और उन्होंने अवर्की से पवित्र बपतिस्मा देने का अनुरोध किया। चूँकि शाम हो चुकी थी, संत ने उनका बपतिस्मा सुबह तक के लिए टाल दिया और सभी को पवित्र संस्कार प्राप्त करने के लिए तैयार रहने का आदेश दिया। अगली सुबह जब लोग इकट्ठा हुए, तो वह उन्हें सभी को चर्च ले गए और उन्हें एक बार फिर से सिखाया; फिर, प्रथागत प्रार्थनाएँ करने के बाद, उन्होंने उस दिन 500 पुरुषों का बपतिस्मा दिया। और कुछ ही दिनों के भीतर, उन्होंने न केवल हिएरापोलिस बल्कि अन्य पड़ोसी कस्बों और गांवों को भी मसीह में विश्वास की ओर ले आए और बपतिस्मा के माध्यम से उन्हें परमेश्वर के साथ एक कर दिया। और उनकी ख्याति दूर-दूर तक फैल गई। विभिन्न और दूर-दराज के देशों से कई बीमार लोग उनके पास आए, और उन्हें शरीर और आत्मा दोनों का पूर्ण स्वास्थ्य लाभ मिला।

पूर्वी प्रांत की प्रोकॉन्सल, यूक्सिनियिन पॉप्लियिन की माँ, फ्रीला नाम की एक कुलीन महिला, अंधी थी और उसने सुना था कि अवरकी कई तरह की बीमारियों को ठीक करते थे, इसलिए उसने आदेश दिया कि उसे उस संत के पास ले जाया जाए। उसने अवर्की को लोगों को उपदेश देते हुए पाया और उसके पैरों पर गिरकर संत से अपनी आँखें खोलने का आग्रह किया, जिनकी दृष्टि चली गई थी। सबसे पहले और सबसे ज्यादा फ्रीएला की आत्मा की आँखें खोलने की चिंता करते हुए, संत ने उससे पूछा कि क्या वह उस मसीह में विश्वास करती है, जिसने जन्म से अंधे व्यक्ति की आँखें खोली थीं। जब फ्रीएला ने विश्वास करन का संकल्प लिया और अवरकी के पैरों पर भरपूर आँसू बहाए, तो संत ने ईश्वर से प्रार्थना करने के बाद, उसकी आँखों को छुआ और कहा:

'हे सच्चे प्रकाश, हे यीशु मसीह, आओ और अपनी दासी की आँखें खोल दो!'

तत्काल ही फ्रिएला की दृष्टि लौट आई, और संत ने उनका बपतिस्मा संस्कार किया।

बपतिस्मा ग्रहण करने के बाद, उसने अपनी संपत्ति का आधा हिस्सा गरीबों में बांटने के लिए संत को दे दिया और, उनके उपदेश प्राप्त करने के बाद, घर लौट आई। उसके बेटे, प्रोकोन्सुल यूक्सिनियिन पॉप्लियिन ने, यह देखकर कि उसकी माँ की दृष्टि वापस आ गई है और यह जानकर कि संत एवरकी ने अपनी प्रार्थनाओं के माध्यम से उसकी आँखें खोली थीं, उन्हें देखना चाहा और अपनी माँ के ठीक होने के लिए उनका धन्यवाद करना चाहा। इसके बदले में, संत ने यूक्सिनियिन को आस्था में निर्देश दिया और उसे मसीह धर्म में परिवर्तित कर दिया।

इसके बाद, तीन अन्य महिलाएँ, जो अंधापन से पीड़ित थीं, संत के पास आईं और उनके सामने झुककर कहा:

'हम भी यीशु मसीह में विश्वास करती हैं, जिनका आप प्रचार करते हैं; इसलिए हम आपसे विनती करती हैं कि आप हमारी आँखें भी खोल दें, जैसे आपने फ्रीएला की खोली।'

इस पर संत ने उत्तर दिया:

'यदि तुम वास्तव में एक सच्चे ईश्वर में विश्वास करते हो, जैसा कि तुम दावा करते हो, तो तुम उसकी रोशनी देखोगे।'

यह कहकर, संत ने अपनी आँखें आकाश की ओर उठाईं और प्रार्थना करने लगे। जब संत प्रार्थना कर रहे थे, तो सूर्य की किरण से भी अधिक तेज, एक अकथनीय प्रकाश की किरण स्वर्ग से उतरी और उस स्थान को प्रकाशित कर दिया जहाँ संत एवरकी प्रार्थना में खड़े थे। वहाँ मौजूद सभी लोग इस अकथनीय प्रकाश को सहन नहीं कर सके; वे ज़मीन पर गिर पड़े, और केवल तीन अंधी महिलाएँ अचल खड़ी रहीं। जब किरण अंधी महिलाओं की आँखों को छू गई, तो उन्हें अपनी दृष्टि वापस मिल गई, और दिव्य प्रकाश का तेज समाप्त हो गया।

संत ने अपनी दृष्टि वापस पाने वाली महिलाओं से पूछा:

'जब तुम्हारी दृष्टि लौटी तो सबसे पहले तुमने क्या देखा?'

तब पहली ने कहा:

'मैंने प्राचीन काल के[7356] को देखा, जिन्होंने मेरी आँखों को छुआ।'

एक और ने कहा:

'मैंने एक अत्यंत सुंदर युवक को देखा, जिसने मेरी आँखों को छुआ।'

– 'और मैंने देखा,' तीसरे ने कहा, 'कि एक अत्यंत तेजस्वी युवक ने मेरी आँखों को छुआ।'

यह सुनकर, संत और उनके साथ मौजूद सभी लोगों ने त्रिमूर्ति में एक परमेश्वर की महिमा की, जो अद्भुत और शानदार चमत्कार करते हैं।

तब अवरकी ने, यह जानकर कि पड़ोसी कस्बों और गांवों में बहुत से लोग विभिन्न बीमारियों से पीड़ित थे, अपने शिष्यों के साथ वहाँ के लिए रवाना हो गए और अपने प्रभु के उदाहरण का अनुसरण करते हुए, कस्बों और गांवों में घूमते हुए लोगों को परमेश्वर के राज्य के बारे में सिखाया और बीमारों को चंगा किया। नदी के किनारे स्थित सेलशिचे नामक स्थान पर पहुँचकर, वे घुटने के बल झुक गए और इस प्रकार प्रार्थना करने लगे:

'हे उदार प्रभु, मेरी, अपने सेवक की, सुनो; इस स्थान पर अपनी कृपा करो, कि यहाँ गर्म पानी का एक झरना बहे, ताकि जो कोई इसमें स्नान करे वह हर एक रोग और पीड़ा से चंगा हो जाए।'

जब उन्होंने अपनी प्रार्थना समाप्त की, तो अचानक, एक साफ़ आसमान के नीचे, गरज हुई; वहाँ मौजूद सभी लोग तब डर गए जब गरज के बाद, ठीक उसी जगह से जहाँ एवरकी घुटने टेककर प्रार्थना कर रहे थे, गर्म पानी का एक झरना फूट पड़ा। तब संत ने अपने साथ मौजूद लोगों को गहरे गड्ढे खोदने का आदेश दिया जहाँ गर्म पानी एकत्र हो सके; उन्होंने सभी बीमारों को उनमें स्नान करने का आदेश दिया – और जो भी उन जल में डूबा, वह संत की प्रार्थनाओं के द्वारा चंगा हो गया।

एक बार, शैतान, एवरकी को लुभाने की इच्छा से, एक महिला का रूप धारण कर संत के पास आया और उनसे आशीर्वाद माँगा। दानव के चेहरे पर नज़र डालते ही, संत उससे मुँह मोड़ना चाहते थे, लेकिन उसी क्षण उनका दाहिना पैर एक पत्थर से टकरा गया और वह इतनी बुरी तरह घायल हो गया कि उनकी पिंडली पर एक फोड़ा हो गया। तीव्र दर्द के बावजूद, संत एक भी कराह निकाले बिना खड़े रहे, बस अपने हाथ को उस जगह पर रखे रहे जहाँ घाव था। शैतान हँसा और, अपना असली रूप धारण करते हुए, संत से कहा:

'मुझे उन तुच्छ और महत्वहीन राक्षसों में मत गिनो जिन्हें तुमने भगाया है; मैं उनका बड़ा हूँ; और अब तुमने मुझसे एक फोड़ा प्राप्त किया है: जब तुम दूसरों के रोगों को ठीक करते हो, तो अब तुम स्वयं पीड़ित हो।'

यह कहकर, शैतान एक युवक के शरीर में प्रवेश कर गया जो संत के पास खड़ा था और उसे सताना शुरू कर दिया। लेकिन संत एवरकी ने ईश्वर से प्रार्थना करने के बाद, राक्षस को फटकारा और उसे उस युवक के शरीर से बाहर निकाल दिया। युवक के शरीर से बाहर निकलते ही, राक्षस चिल्लाया:

'एवरकी, तुम मेरा बहुत नुकसान करते हो, और मुझे यहाँ चैन से नहीं रहने देते; मैं तुमसे बदला लेने की कोशिश करूँगा और तुम्हें तुम्हारी बुढ़ापे में रोम जाने पर मजबूर कर दूँगा।'

अपने घर लौटने पर, संत ने सात दिनों तक न तो कुछ खाया और न ही पिया, बल्कि उपवास और पूरी रात की प्रार्थना में लगे रहे; अवरकी ने ईश्वर से प्रार्थना की कि वह दुश्मन को उस पर इस बात के लिए मजबूर करने न दें कि वह उस राक्षस की इच्छानुसार कहीं जाए। सातवीं रात को, प्रभु संत के सपने में प्रकट हुए और कहा:

[7356] दिनों का प्राचीन – यह पवित्र त्रिमूर्ति के प्रथम व्यक्ति को दिया गया नाम है। यह उपाधि पैगंबर दानियेल द्वारा बेबीलोन में अपने एक रहस्यमय दर्शन का वर्णन करते समय उपयोग की गई थी: 'अंत में,' पवित्र पैगंबर कहते हैं, 'मैंने देखा कि सिंहासन स्थापित किए गए थे और दिनों के प्राचीन ने अपना आसन ग्रहण किया।'

'मेरी कृपा से, एवरकी, तुम रोम में रहोगे, ताकि मेरा नाम वहाँ भी जाना जाए। इसलिए, डरो मत, क्योंकि मेरी कृपा तुम्हारे साथ रहेगी।'

इस दर्शन ने अवरकी को मजबूत किया, और उन्होंने अपने भाइयों को वह सब बताया जो उन्होंने प्रभु से सुना था, जो उनके सामने प्रकट हुए थे। कुछ ही समय बाद, उस राक्षस ने, जिसने अवरकी को रोम आने के लिए मजबूर करने का घमंड किया था, चालाकी से अपनी योजना को अंजाम देना शुरू कर दिया।

उस समय, रोम के सम्राट मार्कस ऑरेलियस ने लूसियस वेरस को अपना सह-शासक नियुक्त किया और अपनी बेटी लुसिला का विवाह उससे तय कर दिया। लेकिन शादी के जश्न शुरू होने से पहले, वह राक्षस उस युवती के शरीर में प्रवेश कर गया और उसे प्रताड़ित करने लगा। युवती की बीमारी से दुखी होकर, उसके पिता और मंगेतर ने अपने राज्य भर से अनुभवी चिकित्सकों, जादूगरों और पुरोहितों को इकट्ठा किया, और लूसिला को हर संभव तरीके से ठीक करने की कोशिश की। न केवल उनके प्रयास असफल रहे, बल्कि हर गुजरते दिन के साथ युवती की हालत और भी खराब होती गई। और दानव ने उसके भीतर से चिल्लाना शुरू कर दिया:

'यहाँ से मुझे केवल हिएरापोलिस के बिशप एवरकियस ही भगा सकते हैं।'

जैसे ही युवती के पिता, सम्राट मार्कस ऑरेलियस को इसकी सूचना मिली, उन्होंने तुरंत अपने पूर्व के प्रोकॉन्सल यूक्सेनियानस पॉप्लियिन[7357] को निम्नलिखित सामग्री के साथ एक संदेश भेजा:

'हमारी जानकारी में आया है कि आपके अधिकार क्षेत्र वाले प्रांत में हिएरापोलिस के एक बिशप, अवर्कीउस नामक एक व्यक्ति है; एक ऐसा व्यक्ति जो ईसाई धर्म में इतना दृढ़ है कि वह दुष्ट आत्माओं को भगा सकता है और विभिन्न प्रकार के रोगों को ठीक कर सकता है। चूंकि हमें उसकी सेवाओं की आवश्यकता है, हम अपने दो गणमान्य व्यक्तियों, वैलेरियस और वासियानुस को, उसे उचित सम्मान के साथ हमारे पास लाने के लिए भेज रहे हैं; इस बीच, हम आपको आदेश देते हैं कि आप उसे हमारे पास आने के लिए मनाएं, जिसके लिए आपको हमसे एक पर्याप्त पुरस्कार मिलेगा।

सम्राट का यह संदेश पाकर, प्रोकंसल एवरकियस के पास गया और उसे शाही दूतों के साथ रोम जाने के लिए मनाने लगा। एवरकियस, यह याद करते हुए कि दानव ने घमंड किया था कि वह उसे, उसकी वृद्धावस्था में, रोम की कठिन यात्रा पर जाने के लिए मजबूर कर देगा, मन ही मन सोचने लगा:

'यद्यपि तुम, मानवता के शत्रु, अपने अहंकार में जो तुमने मुझसे वादा किया था उसे पूरा करने का प्रयास कर चुके हो, तुम प्रसन्न नहीं हो पाओगे; मैं ईश्वर में दृढ़ विश्वास रखता हूँ और आशा करता हूँ कि मेरे वृद्धावस्था के श्रम व्यर्थ नहीं जाएँगे, बल्कि वहाँ मैं अपने मसीह की शक्ति से आपके घमंड को नष्ट करूँगा, जिन्होंने मुझे एक दर्शन में अपनी कृपा का वादा किया था।"

यात्रा के लिए आवश्यक सभी चीजें तैयार करने के बाद, संत ने सर्वशक्तिमान ईश्वर से सहायता की प्रार्थना करते हुए प्रस्थान किया। उनकी यात्रा की तैयारी इस प्रकार थी: उन्होंने थोड़ी सी रोटी ली और एक ही चमड़े की मशक में शराब, तेल, सिरका और पानी डाला, इस बात का ध्यान रखते हुए कि ये तरल पदार्थ एक-दूसरे में न मिलें। जब भी उसे रास्ते में शराब की ज़रूरत होती, तो मशक से केवल शराब ही निकलती; जब उसे सिरके की ज़रूरत होती, तो केवल सिरका ही निकलता; और जब उसे पानी की ज़रूरत होती, तो केवल पानी ही निकलता; इस प्रकार हर तरल अलग-अलग बहता था, भले ही वे सभी एक ही मशक में एक साथ थे। एक बार, संत के एक शिष्य ने, उनकी आज्ञा के बिना, अपने लिए शराब का एक प्याला भरने की कोशिश की, और तुरंत ही सभी तरल एक साथ बहने लगे: शराब, तेल, सिरका और पानी, इसलिए उसके लिए इस मिश्रण का स्वाद लेना असंभव था; भयभीत होकर, उसने संत के सामने अपना पाप कबूल किया, क्षमा मांगी, और फिर, उस धन्य संत के आशीर्वाद से, प्रत्येक तरल फिर से अलग-अलग बहने लगा।

जब संत एवरकी रोम पहुँचे, तो सम्राट ने अपनी पत्नी फाउस्टिना के साथ मिलकर उनका सम्मानपूर्वक स्वागत किया और उन्हें अपनी बेटी के पास ले गए, जिसे एक राक्षस द्वारा पीड़ा दी जा रही थी। राक्षस ने, यह देखकर कि संत एवरकी आ गए हैं, हँसकर कहा:

'क्या मैंने तुम्हें नहीं बताया, एवरकी, कि मैं तुम्हारी उपहास का बदला लूंगा और, तुम्हारी वृद्धावस्था में, तुम्हें रोम आने के लिए मजबूर कर दूंगा?'

[7357] प्रोकॉन्सल – रोमन साम्राज्य के प्रांतों पर शासन करने वाले अधिकारी।

'हाँ, यह सच है,' संत ने कहा, 'लेकिन इससे तुम्हें कोई खुशी नहीं होगी, शापित शैतान।'

और संत ने उस कन्या को कक्ष से बाहर ले जाने का आदेश दिया। जब उसे ले जाया जा रहा था, तो राक्षस ने जाने से इनकार कर दिया, लेकिन फिर भी उस कन्या को जबरदस्ती ले जाया गया; तब राक्षस ने उसे ज़मीन पर फेंकना और पीटना शुरू कर दिया, जबकि संत एवरकी ने अपनी आँखें आकाश की ओर उठाकर, पीड़ित कन्या के ठीक होने के लिए प्रभु से भक्तिपूर्वक प्रार्थना की। तब राक्षस चिल्लाने लगा:

'मैं तुम्हारे मसीह की कसम, मुझे गर्त में या किसी अन्य स्थान पर न भेजो, बल्कि मुझे वहीं लौटने दो जहाँ मैं अब तक रहा हूँ।'

संत ने उत्तर दिया:

'हे दुष्टात्मा, तू अपने पिता शैतान के पास जाएगा; लेकिन चूंकि तूने मुझे, एक बूढ़े आदमी को, परेशान किया है और मुझे यहाँ आने के लिए मजबूर किया है, इसलिए तू भी परिश्रम से नहीं बचेगा और न ही यहाँ से खाली हाथ लौटेगा; यहाँ एक पत्थर पड़ा है – (महल के सामने एक ऐसा विशाल पत्थर पड़ा था कि उसे थोड़ी सी दूरी तक सरकाने के लिए भी बहुत बड़ी भीड़ को बहुत मशक्कत करनी पड़ती; यही वह पत्थर था जिसकी ओर संत ने इशारा किया), मैं तुम्हें मेरे प्रभु यीशु मसीह के नाम की आज्ञा देता हूँ कि इस पत्थर को मेरे देश, हिएरापोलिस ले जाओ और इसे दक्षिणी द्वार के पास रख दो।

और इस प्रकार शैतान, एक दास और एक बंदी की तरह, एक शपथ से बँधा, राजा की बेटी से बाहर निकला, उस पत्थर को उठाया और एक भारी कराह के साथ, हवा में उड़ते हुए हिप्पोड्रोम[7358] के ऊपर से ले गया। वहाँ मौजूद सभी लोग यह देखकर चकित रह गए कि पत्थर हवा में चल रहा था और उन्होंने शैतान की भारी कराह सुनी, लेकिन वे उसे खुद नहीं देख सके। पत्थर को हिएरापोलिस तक ले जाने के बाद, शैतान ने उसे उस स्थान पर रख दिया जहाँ सेंट अवरकी ने उसे आदेश दिया था; हिएरापोलिस के निवासी, आकाश से अचानक गिरे उस विशाल पत्थर को देखकर बहुत हैरान थे, और इस रहस्य को तब ही समझ पाए जब सेंट अवरकी उनके पास लौट आए।

अपने दुष्ट उत्पीड़क से मुक्त होने के बाद भी, राजा की बेटी जमीन से उठ नहीं सकी और बिना एक भी आवाज़ निकाले, अवर्की के पैरों तले लेटी रही। यह देखकर, उसकी माँ, रानी फाउस्टिना, ने सोचा कि उनकी बेटी की मृत्यु हो गई है और वे रोने लगीं; लेकिन संत ने अपना हाथ बढ़ाया और युवती को जीवित, स्वस्थ और पूरी तरह से होश में उठा दिया। तब युवती के माता-पिता बड़ी प्रसन्नता से भर गए, और राजसी परिवार राजकुमारी के ठीक होने पर आनंदित हुआ। उसके माता-पिता ने यह खुशखबरी अपने दामाद, लुसियस वेरस को भेजी, जो उस समय पार्थियनों के खिलाफ अभियान पर थे[7359] , और उन्हें अपनी दुल्हन के ठीक होने की सूचना दी। उन्होंने संत को भव्य उपहार दिए और वादा किया कि वह जो कुछ भी मांगेगा, उसे दे देंगे। लेकिन एवरकी ने न तो सोना, न चांदी और न ही कोई संपत्ति स्वीकार की, यह कहते हुए:

'उस व्यक्ति के लिए धन की कोई आवश्यकता नहीं है जिसके लिए रोटी और पानी शाही दावत और भव्य भोज के समान हैं।'

उसने केवल दो चीज़ों की मांग की: पहला, कि हेरापोलिस में राजा पर लगाए गए करों से तीन हजार माप गेहूं हर साल गरीबों में बांटा जाए; और दूसरा, कि राजा अपने कोष के खर्च पर गर्म पानी के झरने पर स्नानागार का निर्माण करने का आदेश दे, जिसे संत ने बीमारों के इलाज के लिए प्रार्थना करके पृथ्वी की गहराई से निकाला था। राजा ने खुशी-खुशी संत की मांगों को पूरा करने का वादा किया और उसे इस संबंध में एक लिखित प्रमाणपत्र दिया।

हालाँकि संत इसके बाद कुछ समय तक रोम में रहे और मसीह की कलीसिया को विश्वास में मज़बूत करते रहे, मसीह उन्हें एक दर्शन में प्रकट हुए और कहा:

'एवरकी, तुम्हारे लिए सीरिया में रहना और वहाँ मेरा नाम प्रचार करना, मेरी कलीसियाओं को मजबूत करना और पीड़ितों को चंगा करना उचित है।'

इस दर्शन के बाद, अवर्की ने राजा से जाने की अनुमति मांगी; लेकिन राजा उसकी बात मानने को तैयार नहीं था, उसे डर था कि संत की अनुपस्थिति में, राक्षस एक बार फिर उसकी बेटी में प्रवेश कर सकता है। संत ने उसे अपना डर

[7358] हिप्पोड्रोम – घोड़ों की दौड़ और रथ दौड़ के लिए एक स्थल।

[7359] पार्थियों ने यूफ्रेटिस और सिंधु के साथ लगे पहाड़ी क्षेत्रों के बीच एशिया के क्षेत्रों पर कब्जा कर लिया था। पारथियों खानाबदोश थे और बाद के समय में भी इस स्वभाव को नहीं छोड़ा, उन्होंने सभी युद्धों में उत्कृष्ट और बहादुर घुड़सवारों के रूप में खुद को अलग किया, जो धनुष और भाले के उपयोग में पूरी तरह से निपुण थे। पार्थियों के खिलाफ युद्ध 165 में लुसियस वेरस द्वारा सफलतापूर्वक समाप्त किया गया।

त्यागने के लिए कहा, और आश्वासन दिया कि राक्षस वापस नहीं आ सकता; तब जाकर, और वह भी अनिच्छा से, राजा ने संत को जाने दिया।

एक जहाज़ पर सवार होकर, एवरकी सीरिया के क्षेत्र में गए; पहले उन्होंने एंटिओक का दौरा किया, फिर अपामिया[7360] और अन्य पड़ोसी शहरों की यात्रा की, और मार्सियोनाइट्स[7361] के विधर्म से हिल गई चर्चों में शांति बहाल की। फरात नदी पार करने के बाद, संत ने निसिबिस[7362] और पूरे मेसोपोटामिया में चर्चों का दौरा किया; वहां से वे सिलिसिया[7363] और पिसीडिया[7364] गए, और फ्रीजिया के मेट्रोपॉलिटिन मुख्यालय, सिनाडा[7365] का भी दौरा किया। उन सभी क्षेत्रों और शहरों में उन्होंने चर्च को बहुत लाभ पहुँचाया; उन्होंने कई अविश्वासियों को मसीह के धर्म में परिवर्तित किया, विधर्मियों को शर्मिंदा किया और उन्हें पीछे हटने पर मजबूर किया, विश्वासियों के विश्वास को मजबूत किया, जो भटक गए थे उन्हें सत्य के मार्ग पर मार्गदर्शन दिया, कई लोगों से अशुद्ध आत्माओं को भगाया, और विभिन्न बीमारियों से पीड़ित बहुत से लोगों को चंगा किया। हर कोई उन्हें 'चेलों के समान' कहने लगा, क्योंकि चेलों के अलावा किसी ने भी इतने सारे देशों और शहरों की यात्रा नहीं की थी। इस प्रकार पवित्र बिशप ने मसीह ईश्वर की महिमा का प्रसार किया और लोगों के मोक्ष और ज्ञान के लिए उनकी बहुत सेवा की। इसके बाद, वे हिएरापोलिस लौट आए।

हिएरापोलिस के निवासी, यह सुनकर कि उनका संत उनके पास लौट रहे थे और शहर से बहुत दूर नहीं थे, सभी—सबसे छोटे से लेकर सबसे बूढ़े तक, अपनी पत्नियों और बच्चों के साथ—उनसे मिलने के लिए दौड़ पड़े; और अत्यंत आनंद के साथ, बच्चों की तरह पिता से चिपककर, उन्होंने उनका आशीर्वाद प्राप्त किया, जिसके लिए वे इतने लंबे समय से तरस रहे थे।

शहर में प्रवेश करने पर, अवर्की चर्च गए और अपने सिंहासन पर बैठकर, सभी को शांति का अभिवादन किया और लोगों को उपदेश देना शुरू किया।

और सभी लोग उस पवित्र पुरुष की वापसी पर प्रसन्न हुए; दरिद्र और गरीब विशेष रूप से सांत्वना महसूस कर रहे थे, क्योंकि अवरकी अपने साथ एक शाही फरमान लाए थे जिसमें आदेश दिया गया था कि शाही करों से हर साल उन्हें तीन हजार माप गेहूं वितरित किया जाए। और यह गेहूं जूलियन द एपोस्टेट के समय तक वितरित किया जाता रहा, जिसने इस फरमान को रद्द कर दिया और चार्टर वापस ले लिया। संत के प्रयासों से, और शाही फरमान द्वारा, गर्म पानी के झरने के पास स्नानागार भी बनाए गए।

संत एवरकी ने अपने जीवन के शेष समय को भक्ति और धार्मिकता में बिताया, और अपने अनुयायियों का बुद्धिमानी से मार्गदर्शन किया। उन्हें अपनी मृत्यु की पूर्व सूचना मिली: प्रभु एक दर्शन में उनके सामने प्रकट हुए और कहा:

'एवरकी, अब तुम्हारे लिए अपने परिश्रम से विश्राम करने का समय आ गया है।'

इसके बाद, एवरकी ने अपने सभी अनुयायियों को इकट्ठा किया और यह घोषणा की कि उनका जीवन जल्द ही समाप्त हो जाएगा, और उन्होंने अपने रिवाज़ के अनुसार, सभी को उपदेश देना शुरू कर दिया, अपने श्रोताओं से विनती करते हुए कि वे अपने विश्वास में दृढ़ रहें, आशा न खोएं, और एक-दूसरे से सच्चे मन से प्रेम करें। फिर, अपनी कफ़न तैयार करके और अंतिम बार सभी को अपना पादरिया आशीर्वाद देकर, उन्होंने अपनी पवित्र आत्मा को प्रभु के सुपुर्द कर दिया। इस प्रकार, प्रेरितों के समकक्ष संत एवरकी ने अपने जीवन के 73वें वर्ष में अपना सांसारिक सफर समाप्त किया[7366] । उनके शोक मनाने के बाद, हिएरापोलिस के निवासियों ने उनके पवित्र शरीर को सम्मानपूर्वक दफनाया और बहुत प्रयास से, संत की कब्र पर वह पत्थर रखा जिसे कभी संत की आज्ञा से रोम से लाया गया था। और संत की

[7360] अपामेआ सीरिया के शहरों में से एक है।

[7361] मार्सियोनाइट्स दूसरी सदी के विधर्मी थे जो दो सिद्धांतों को मानते थे: अच्छा ईश्वर और पदार्थ, जो शैतान, या दुष्ट, एक शाश्वत और दुर्भावनापूर्ण सत्ता के प्रभुत्व में था।

[7362] निसीबिस, या निसीबिडा, मेसोपोटामिया के मिग्डोनिया प्रांत में एक बड़ा और घनी आबादी वाला शहर है।

[7363] सिलिसिया – एशिया माइनर का एक दक्षिण-पूर्वी तटीय क्षेत्र।

[7364] पिसीडिया – एशिया माइनर का एक क्षेत्र।

[7365] सिनाड या सिन्नाडी, उत्तरी फ्रीजिया में एक शहर था, जो एक पर्वत श्रृंखला के पास स्थित था जहाँ प्रसिद्ध सिनाड संगमरमर की खदानें थीं। अब एस्कीकारी – गिसाफ के पास खंडहरों में स्थित है।

[7366] उनकी मृत्यु लगभग 167 ईस्वी में हुई।

प्रार्थनाओं के द्वारा, उनके मकबरे से और उनकी प्रार्थनाओं से निकली गर्म जल की झरनी से, अनेक चमत्कार हुए, जिसके द्वारा प्रभु हमें सदा के लिए अपनी दया प्रदान करें। आमीन।

कॉन्टाकियन, स्वर 8:

हे एवरकियस, प्रेरितों के एक अति पवित्र पुरोहित और साथी के रूप में, कलीसिया आपको सभी विश्वासियों के सामने सम्मानित करती है: क्योंकि हे धन्य, अपनी प्रार्थनाओं द्वारा हमें हर विधर्म के विरुद्ध अजेय और अडिग, तथा एक सदा-स्मरणीय के रूप में निर्दोष बनाए रखें।

पवित्र शहीदों बिशप अलेक्जेंडर, सैनिक हेराक्लियस, और चार महिलाओं: अन्ना, एलिजाबेथ, थियोडोटा और ग्लिसेरिया की स्मृति

22 अक्टूबर को स्मरणोत्सव

संत अलेक्जेंडर ने कई लोगों को धर्मांतरित किया और उन्हें मसीह के धर्म में बपतिस्मा दिया। उन्हें राज्यपाल ने पकड़ लिया और मूर्तियों को बलिदान करने के लिए मजबूर किया, उन्होंने कई यातनाएँ सहन कीं, फिर भी वह नहीं झुके। उनकी दृढ़ता को देखकर, सैनिक हेराक्लियस मसीह में विश्वास करने लगा और क्रूर यातनाओं के बाद, उसकी तलवार से गर्दन काट दी गई। हालाँकि, संत अलेक्जेंडर को ईश्वर की कृपा से अचानक अपने घावों से चंगा कर दिया गया। इसके बाद, उन्होंने चार महिलाओं को ईसाई धर्म में परिवर्तित किया: अन्ना, एलिजाबेथ, थियोडोटा और ग्लेसिया, जो राज्यपाल के सामने भी आईं और मूर्तियों की व्यर्थता की निंदा करने के लिए उन्हें तलवार से सिर कलम कर दिया गया। इन सब के बाद, संत अलेक्जेंडर ने भी तलवार से प्राण त्याग दिए और अपनी पवित्र और धन्य आत्मा को प्रभु के हवाले कर दिया[7367] ।

बोरिस और ग्लेब मठ के संस्थापकों, परम पूज्य थियोडोरेट और रोस्तोव के पॉल की स्मृति[7368]

22 अक्टूबर को स्मरण किया जाता है

महान राजकुमार दिमित्री डोंस्कोय के शासनकाल में, रोस्तोव के राजकुमार कॉन्स्टेंटिन वासिलीविch के अधीन[7369] , नोवगोरोड क्षेत्र से थियोडोर नामक एक भिक्षु महान रोस्तोव के प्राचीन शहर में आया; यह ज्ञात नहीं है कि उनका जन्म कहाँ हुआ था या उन्होंने कहाँ अपना भिक्षु जीवन शुरू किया था।

कार्गोपोल और बेला झील से रोस्तोव और मास्को जाने वाली सड़क पर, वह रोस्तोव से लगभग अठारह वर्स्ट दूर नदी उस्ट्ये के किनारे एक घने जंगल में रुका। जंगल में पेड़ों की टहनियों से एक झोपड़ी बनाकर, वह स्थायी रूप से वहीं बस गया। सड़क के किनारे, उसने एक पेड़ की छाल से बना एक पात्र लटका दिया, और राहगीरों और यात्रियों ने, यह जानकर कि वहाँ एक तपस्वी रहता है, उसमें रोटी, सब्जियाँ और अन्य दान रखना शुरू कर दिया। तपस्वी, जिसे कोई देख नहीं पाता

[7367] इन संतों ने तीसरी शताब्दी में एड्रियनोपल में शहादत प्राप्त की।

[7368] यहाँ प्रस्तुत विवरण 'बोरीसोглебस्की मठ की कथा: यह कितने साल पहले स्थापित हुआ था और यह कैसे अस्तित्व में आया, जैसा कि हमने पहली बार प्राचीन बुजुर्गों से सुना और इसका कोई लिखित रिकॉर्ड हमें बहुत कम मिला', यह 16वीं सदी में स्वयं बोरिसोग्लेब्स्की मठ में लिखा गया था और इसे ट्रिनिटी-सर्गीय लावरा की पुस्तकालय में, संख्या 782 के संग्रह में, एक 16वीं सदी की पांडुलिपि में संरक्षित किया गया है। – बोरिसोग्लेब्स्की द्वितीय-श्रेणी का मठ आज भी मौजूद है और यह यारोस्लावल गवर्नरेट के रोस्तोव जिले में, रोस्तोव से उग्लिच जाने वाली सड़क (अब एक राजमार्ग) पर रोस्तोव से 18 वर्स्ट की दूरी पर स्थित है, उस्ट नदी पर, जो रोस्तोव से नौ वर्स्ट दूर रोस्तोव झील से निकलने वाली वर्सा नदी में मिलकर कोत्रोस्ट नदी बन जाती है, और यारोस्लावल शहर के पास वोल्गा नदी में मिल जाती है।

[7369] दिमित्री इओआनोविच डॉन्स्कोय ने 1363 से 1389 तक शासन किया – उनके भाई, फ्योडोर वासिलीविच की मृत्यु के बाद रस्तोव के राजकुमार कॉन्स्टेंटिन III वासिलीविच ने 1331 से 1365 तक रस्तोव में शासन किया।

था, चुपके से दान में मिली चीज़ें निकालकर अपने ज़रूरतमंद भाइयों में बाँट देता था; यह बात पता चलने पर, कई गाँवों के लोग दान के लिए तपस्वी के पास आने लगे, और वह लटकाए हुए टोकरे में जो कुछ भी मिलता, उसे बाँट देता था।

कुछ समय बाद, पॉल नाम का एक साथी भिक्षु उसके पास आया; थियोडोर ने उसका खुशी-खुशी स्वागत किया और वह उसके साथ रेगिस्तान में रहने लगा।

ग्रैंड प्रिंस दिमित्री इओनोविच के शासन के शुरुआती वर्षों के दौरान, ऑल रशिया के मेट्रोपॉलिटन अलेक्सियस, रोस्तोव के उन्हीं प्रिंस कॉन्स्टेंटिन और रोस्तोव के बिशप इग्नाटियस[7370] के अधीन, रेडोनज़ के परम पूजनीय सेरजियस कैथेड्रल चर्च में परमेश्वर की परम पवित्र माता और रोस्तोव के चमत्कारी कार्यकर्ताओं[7371] की पूजा करने के लिए रोस्तोव आते थे। यह जानकर, संन्यासी थियोडोर और पॉल रोस्तोव के लिए रवाना हो गए; उन्होंने राजकुमार और बिशप से अपने रेगिस्तान में एक चर्च बनाने और एक मठ स्थापित करने की अनुमति मांगी, और उन्होंने परम पूज्य सर्गियस से उस स्थान का निरीक्षण करने और उसे आशीर्वाद देने का आग्रह किया जहाँ वे चर्च बनाना चाहते थे।

आदरणीय सर्गियस ने उनकी प्रार्थना स्वीकार कर ली और उनके साथ उनके रेगिस्तान की ओर चल पड़े। वे लंबे समय तक रेगिस्तान में चलते रहे। थियोडोर और पॉल ने पहले एक जगह, फिर दूसरी जगह की ओर इशारा किया; आदरणीय सेरजियस ने सब कुछ ध्यान से परखा और अंत में उस जगह को चुना जहाँ अब मठ खड़ा है। उन्होंने महान शहीदों बोरिस और ग्लेब के नाम पर वहाँ एक चर्च बनाने का आशीर्वाद दिया, और संन्यासियों से कहा:

'ईश्वर प्रभु और परमेश्वर की परम पवित्र माता इस स्थान पर अपनी कृपा दृष्टि रखें, और मसीह के महान यातना-सहने वाले आपके सहायक हों। और यह स्थान बहुत विकसित होगा और आने वाले समय में, महान मठ समुदाय के साथ सम्मानित होगा।'

संन्यासियों को अपना आशीर्वाद और शांति प्रदान करने के बाद, पूजनीय सर्गियस अपनी वापसी की यात्रा पर निकल पड़े।

सम्मानित संन्यासियों ने जंगल को साफ करने और उस स्थल को तैयार करने का काम शुरू किया जिसे संत सेरजियस ने एक चर्च के निर्माण के लिए आशीर्वाद दिया था। एक दिन, अपने श्रम से विश्राम करते समय, दो तेजस्वी योद्धा, जो हथियारबंद थे और शाही बैंगनी वस्त्रों में सजे हुए थे, थियोडोर और पॉल के सपने में प्रकट हुए और कहा:

'इस स्थान पर परिश्रम करो: ईश्वर और परमेश्वर की अति पवित्र माता इस स्थान को नहीं छोड़ेंगे, और हम यहाँ लगातार तुम्हारी और तुम्हारे बाद इस स्थल को तैयार करने वालों की सहायता के लिए रहेंगे।'

सम्माननीय पादरियों ने उनके चरणों में गिर पड़े और कहा:

'आप कौन हैं, हमारे स्वामिन?'

लेकिन सैनिक अचानक अदृश्य हो गए; केवल एक आवाज़ सुनाई दी, जो एक को 'रोमन' और दूसरे को 'डेविड' कह रही थी[7372] ।

अपने महान भय और आतंक से उबरने के बाद, दोनों संन्यासियों ने एक-दूसरे को प्रोत्साहित करना शुरू किया और बिल्कुल उन्हीं शब्दों में, अपने सपने में जो उन्होंने देखा और सुना था, उसका वर्णन किया।

इसके बाद, उन्होंने नए जोश के साथ काम शुरू किया, और स्थल को तैयार करने के लिए परिश्रम करने लगे।

और भाई तथा गृहस्थ—बढ़ई—काम में मदद करने के लिए उनके चारों ओर इकट्ठा होने लगे।

कुछ ही समय में, भाइयों की संख्या बढ़ गई, और वे सभी थियोडोर से अपने मठाध्यक्ष बनने का आग्रह करने लगे। और ऐसा ही हुआ।

ईश्वर की सहायता से, मठ का निर्माण जारी रहा, और मसीह के कई भक्त, सभी सांसारिक संपत्ति को पीछे छोड़कर, यहाँ मठवासी जीवन की खोज करने लगे। पूजनीय थियोडोर ने उन्हें खुशी से स्वागत किया और उन्हें भ्रातृत्व में स्वीकार कर लिया।

रोस्तोव क्षेत्र के कई कुलीनों ने अपनी वसीयतों में यह शर्त रखना शुरू कर दिया कि उन्हें बोरिस और ग्लेब मठ में दफनाया जाए, और अपनी आत्मा की शांति के लिए अपनी जागीरों, गांवों और फसलों को इस मठ को विरासत में छोड़ दें।

[7370] बिशप इग्नाटियस द्वितीय ने 1356 से 1364 तक रोस्तोव का बिशप पद संभाला।

[7371] यह 1363 में था – आदरणीय सर्गियस के माता-पिता रोस्तोव शहर के थे।

[7372] बोरिस और ग्लेब को उनके पवित्र बपतिस्मा पर रोमन और डेविड नाम दिए गए थे।

इसके कारण मठ के संसाधन बढ़ गए, और आदरणीय थियोडोर ने इसके संगठन और मठवासी समुदाय को एकत्रित करने के लिए खुद को और अधिक समर्पित कर दिया। उन्होंने सामूहिक प्रार्थना के लिए परम पवित्र मसीह की माता के सूचने के लिए समर्पित एक गर्म चर्च का निर्माण किया।

कई वर्षों तक, ईश्वर की कृपा से, परम पवित्र माता ईश्वर की मध्यस्थता से और मसीह के कष्ट-सहकर्मियों बोरिस और ग्लेब की मदद से, आदरणीय थियोडोर ने मठ की स्थापना के लिए परिश्रम किया: उन्होंने चर्च बनाए, कोठरियाँ निर्मित कीं, उन्होंने मठ के नियमों के अनुसार सब कुछ व्यवस्थित किया, मठ के लिए खेत और उपजाऊ भूमि प्राप्त की, मठ की सेवा के लिए कई लोगों को काम पर रखा, और पर्याप्त संख्या में पशुधन प्राप्त किया।

अपनी उन्नत आयु के बावजूद, उन्होंने मठ के कल्याण के लिए परिश्रम करना और उसकी देखभाल करना जारी रखा: उन्होंने स्वयं को विश्राम न देते हुए, मठ की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए मछली पकड़ने के लिए एक उपयुक्त स्थान की तलाश में निकलने का संकल्प लिया।

मठ को प्रभु परमेश्वर और परमेश्वर की अति पवित्र माता को सौंपकर, मसीह के महान यातना-सहने वालों, बोरिस और ग्लेब को अपने मध्यस्थों के रूप में रखकर, और मठ तथा भ्रातृत्व के प्रबंधन को अपने साथी तपस्वी और मसीह में अपने भाई, पॉल को सौंपकर, थियोडोर अपने शिष्यों में से दो भिक्षुओं को साथ लेकर वोल्गोडा क्षेत्र के लिए रवाना हो गए।

वहाँ उन्हें होली ल्यूक नामक एक स्थान मिला। स्थल का सर्वेक्षण करने और यह सुनिश्चित करने के बाद कि यह एक मठ के निर्माण के लिए उपयुक्त था, उन्होंने वहाँ बसने और एक छोटा सा चर्च बनाने की इच्छा व्यक्त की।

स्थानीय निवासियों—चुड लोगों, जो उस समय तक ईसाई नहीं बने थे—को इस बात की जानकारी मिली और उन्होंने उस सम्मानित तपस्वी को वहां से भगा दिया।

निर्वासित तपस्वी आगे बढ़ गए, जो लोग उन्हें नुकसान पहुँचा रहे थे उनके लिए प्रार्थना करते हुए और अपने शिष्यों को सांत्वना देते हुए: "भाइयो, दुखित न हो: *"परमेश्वर हमारा शरणस्थान और बल है, संकट में अतिसमीप सहायक"* (भजन संहिता 45:2): प्रभु ने अपने शिष्यों से कहा: *'जब वे तुम्हें एक नगर में सताएँ, तो दूसरे नगर में भाग जाओ* (मत्ती 10:23)।

कई सुनसान स्थानों से गुजरने के बाद, जैसे कोई कुशल शिकारी अपनी ज़रूरत की चीज़ की तलाश में निकलता है, पूजनीय थियोडोर बेलोजेर्स्क क्षेत्र के लिए रवाना हुए और बेलोये झील के पूरे आसपास के जंगल का सर्वेक्षण करने के बाद, उन्हें बेलोये झील के दूसरी ओर एक शानदार जगह मिली, जो एक मठ के निर्माण के लिए उपयुक्त थी: नदी कोवज़्हा के मुहाने पर नए जोते हुए खेत और बंजर भूमि[7373] ।

उस समय सफेद झील (Lake Beloye) अपानराजकुमार आंद्रेई दमित्रीविच, दमित्री इवानोविच डॉन्स्कोय के पुत्र, के अधीन थी। इतनी उपयुक्त जगह पाकर, आदरणीय थियोडोर ने सर्वशक्तिमान ईश्वर में अपनी आशा रखते हुए और ईश्वर की परम पवित्र माता को अपनी सहायक मानकर, शाही शहर मास्को की ओर प्रस्थान किया, उन्होंने झुककर मोजाइस्क और बेलोजेरो के राजकुमार आंद्रेई दमित्रीविच से विनती की कि वे उन्हें, , संत निकोलस चमत्कारकर्ता को समर्पित एक चर्च और एक मठ के निर्माण के लिए चुनी हुई जगह प्रदान करें। और, ईश्वर की कृपा से, उनकी प्रार्थना स्वीकार कर ली गई: राजकुमार एंड्रे दमित्रीविच ने परम पूज्य को भूमि, फसल और मछली पकड़ने के क्षेत्रों के उपयोग के लिए एक चार्टर प्रदान किया।

दान पत्र प्राप्त करने के बाद, पूजनीय थियोडोर अपने बोरिसोग्लेब्स्की मठ लौट आए।

वहाँ उन्होंने मठाध्यक्ष के कर्तव्य अपने साथी भिक्षु, पॉल को सौंप दिए। मठ, मठाध्यक्ष और भाइयों को परमेश्वर की अति पवित्र माता और पीड़ा-भोगी बोरिस और ग्लेब के मध्यस्थता के संरक्षण में रखकर, पूजनीय थियोडोर वहाँ एक नया मठ बनाने के लिए एक बार फिर बेलोओज़ेरो के लिए रवाना हो गए।

पहले से चुने हुए स्थल पर पहुँचने पर, आदरणीय व्यक्ति ने अथक परिश्रम किया, पहले संत निकोलस चमत्कारकर्ता को समर्पित एक चर्च के निर्माण पर, और फिर मठ की इमारतों पर।

[7373] कोवज़्हा नदी का मुहाना बेलोओज़ेरो से 40 वर्स्ट की दूरी पर है।

जब स्थानीय ऑर्थोडॉक्स निवासियों को आदरणीय के परिश्रम के बारे में पता चला, तो वे आशीर्वाद लेने के लिए बड़े भाई के पास आने लगे, जबकि अन्य भिक्षु संन्यास ग्रहण करने आए। बड़े भाई थियोडोर ने सभी का खुशी से स्वागत किया।

आदरणीय पिताजी यहाँ कई वर्षों तक रहे; उन्होंने चर्च का निर्माण किया, मठ की स्थापना की, संतों का एक समुदाय इकट्ठा किया, उनके लिए एक मठाधीश नियुक्त किया और, अब अपने संध्याकाल में यह महसूस करते हुए कि उनका अंत निकट है, अपने पहले मठ - बोरिसोग्लेब्स्की के लिए रवाना हो गए।

वहाँ, आबात पॉल और मठवासी समुदाय ने बड़े आनंद के साथ एल्डर थियोडोर का स्वागत किया; सभी ने आत्मा और शरीर से प्रसन्न होकर, एल्डर के कार्यों की सफलता के लिए ईश्वर और परमेश्वर की परम पवित्र माता का धन्यवाद किया।

आदरणीय थियोडोर ने आदेश दिया कि निकोल्स्की मठ को बोरिसोग्लेब्सकी मठ में मिला दिया जाए, और उनके प्रिय भाई, बोरिसोग्लेब्सकी के मठाध्यक्ष पॉल, नए स्थापित मठ के मठाध्यक्ष, भाइयों और निर्माण की देखरेख करें[7374] ।

इन सभी उपलब्धियों और व्यवस्थाओं के बाद, कुछ ही समय बाद, बोरिसोग्लेब्स्की मठ के पूजनीय संस्थापक का 22 अक्टूबर 1409 को शांतिपूर्वक निधन हो गया। पूजनीय मठाधीश पॉल और भाइयों ने दिवंगत की मृत्यु पर शोक व्यक्त किया और उनके शरीर को सम्मान के साथ दफनाया।

थियोडोर की मृत्यु के बाद, उनके जीवित सहकर्मी पॉल ने और भी कड़ी मेहनत की और दोनों मठों का और भी अधिक ध्यान रखा; उन्होंने भी लंबी आयु जीने के बाद, अच्छे विश्वास के साथ प्रभु के पास प्रस्थान किया।

बोरिसोग्लेब्स्की मठ की नींव को आशीर्वाद देने वाले और इसके विस्तार की भविष्यवाणी करने वाले परम पूज्य सर्जियस के दिव्य वचन, एक-एक करके सच साबित हुए। संस्थापकों, परम पूज्य थियोडोरेट और पॉल की मृत्यु के बाद, उनके उत्तराधिकारी, बोरिसोग्लेब्स्की के मठाध्यक्षों ने मठ की भलाई के लिए लगन से काम करना जारी रखा, और मठ धीरे-धीरे व्यापक प्रसिद्धि प्राप्त करने लगा। आदरणीय पॉल के तीसरे उत्तराधिकारी, मठाध्यक्ष आयोन, और चौथे, पितिरिम के कार्यकाल के दौरान, धर्मपरायण और मसीह-प्रेमी महा राजकुमार वासिली वासिलीविच टेम्नी[7375] और उनकी धर्मनिष्ठ माँ, राजकुमारी सोफिया ने मठ के प्रति विशेष उत्साह दिखाया; उन्होंने मठ के पक्ष में कई शाही फरमान जारी किए[7376] , और ग्रैंड ड्यूक वासिली वासिलीविच इस मठ को अपना कहने लगे। यही हेगुमेन पितिरिम थे जिन्होंने ग्रैंड ड्यूक वासिली वासिलीविच के पुत्र इवान को बपतिस्मा दिया[7377] ।

पॉल के दसवें उत्तराधिकारी, मठाध्यक्ष थियोफिलिस, मठ के हित में अपने कर्मों और परिश्रमों के लिए विशेष रूप से प्रसिद्ध हुए; उन्होंने तीस वर्षों तक मठाध्यक्ष और निर्माता दोनों के रूप में मठ का संचालन किया।

ग्रैंड प्रिंस वासिली इवानोविच के आदेश पर[7378] और रोस्तोव के आर्चबिशप जॉन के आशीर्वाद से[7379] , उन्होंने लकड़ी के चर्चों और अन्य मठीय संरचनाओं की जगह पत्थर की इमारतें खड़ी करनी शुरू कीं। 1522 के 18 जून को, संतों बोरिस और ग्लेब के पत्थर के चर्च के लिए नींव का पत्थर रखा गया, और इसे उसी आर्चबिशप जॉन द्वारा 22 सितंबर 1524 को समर्पित किया गया, जिन्होंने उसी वर्ष 8 जून को, परम पवित्र ईश्वर की माता के घोषणा को समर्पित एक गर्म चर्च के लिए नींव का पत्थर रखने का आशीर्वाद दिया था। इस चर्च को 7 अक्टूबर 1527 को रोस्तोव और यारोस्लाव के आर्चबिशप, सिरील[7380] द्वारा पवित्र किया गया था।

इन महँगे और कठिन निर्माण कार्यों के दौरान, उत्साही निर्माता थियोफिलिस को कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ा; फिर भी, ईश्वर की मदद और परमेश्वर की परम पवित्र माता तथा मठ के संरक्षक संतों, पवित्र शहीद

[7374] कोवज्हा सेंट निकोलस मठ, जो बोरिस और ग्लेब मठ से संबद्ध था, लकड़ी की इमारतों से बना था; अपनी जर्जर स्थिति और गरीबी के कारण, 1764 में मठ के विधानों के लागू होने से पहले इसे समाप्त कर दिया गया था।

[7375] वासिली वासिलीयेविच टेम्नी 1425 से 1462 तक, बीच-बीच में, ग्रैंड प्रिंस थे।

[7376] मठ के दान और रखरखाव के रिकॉर्ड के अनुसार, यह स्पष्ट है कि वासिली वासिलीविच ने अपने माता-पिता और पूर्वजों, महान राजकुमारों की स्मृति में, मठ को शूलेट्स गाँव (मठ से छह वर्स्ट दूर), साथ ही इसके उप-गाँवों सहित, प्रदान किया था।

[7377] बाद में प्रसिद्ध ग्रैंड प्रिंस इवान वासिलीविच तृतीय।

[7378] उन्होंने 1505 से 1533 तक शासन किया।

[7379] उन्होंने 1520 से 1526 तक यह पद संभाला।

[7380] किरिल तृतीय ने 1526 से 1529 तक पद संभाला।

बोरसि और ग्लेब के मध्यस्थता से, उन्होंने इन सभी बाधाओं को सफलतापूर्वक पार कर लिया। बोरीस और ग्लेब मठ की स्थापना और बाद के इतिहास के एक प्राचीन वृत्तांतकार ने निम्नलिखित चमत्कार का वर्णन किया है।

पत्थर की इमारतें बनाते समय, मठाध्यक्ष थियोफिलिस को चूने की भारी कमी महसूस होने लगी: इसे दूर से और एक कठिन मार्ग से लाना पड़ता था, विशेष रूप से, चूने के लिए उस्त', कोतोरोस्ट और वोल्गा नदियों के किनारे प्लेसो (कोस्त्रोमा शहर के पास) तक नावें भेजनी पड़ती थीं, जहाँ से इन नदियों में ऊपर की ओर यात्रा बहुत कठिन और किसी भी तरह से छोटी नहीं थी। इस गंभीर आवश्यकता का सामना करते हुए, थियोफिलिस ने ग्रैंड प्रिंस वासिली इवानोविच से विनम्रतापूर्वक निकटतम भूमि—चाहे वह मठ की हो, राजसी हो या बोयार (कुलीन) की—पर बिना किसी शुल्क के चूने के भंडारों की खोज करने की अनुमति मांगी। महान राजकुमार ने रोस्तोव और पेरियास्लाव जिलों में चूने के मुक्त निष्कर्षण की अनुमति देने वाला एक चार्टर जारी किया। महाधर्माध्यक्ष थियोफिलिस ने दूर-दूर तक जासूस भेजे, लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ। गहरे दुख से व्यथित, उन्होंने प्रभु परमेश्वर, मध्यस्थ, परमेश्वर की परम पवित्र माता, और पवित्र सहायकों बोरिस और ग्लेब से भक्तिपूर्वक प्रार्थना की।

और ऐसा हुआ कि एक दिन, जब थियोफिलिस अपनी कोठरी में अपनी नियमित संध्या प्रार्थना कर रहे थे और विचारों में खोकर झपकी ले गए, तो मसीह के दो तेजस्वी योद्धा, कष्ट-भोगी बोरिस और ग्लेब, उनके सामने प्रकट हुए और कहा:

'चूने के लिए दुखी मत हो: सर्व-शुद्ध एक (Most Pure One) मठ के पास हमारी पारिवारिक संपत्ति से तुम्हें चूना उपलब्ध कराएगी, और सर्व-शुद्ध माता के मठ और हमारे मठ में पत्थर की इमारतों का निर्माण न तो तुम्हारे समय में और न ही तुम्हारे बाद रुकेगा, और हम मठ के निर्माण में सहायता करेंगे।'

और ये शब्द कहकर, वे दृष्टि से ओझल हो गए।

तीन दिन बाद, कोचारकी नामक मठ के गाँव के एक किसान ने मठाधीश के पास पत्थरों की एक बोरी लाई[7381] और बताया कि उन्हें खेत में जमीन की सतह पर पड़े हुए मिले थे। मठाधीश ने उन पत्थरों को बेकरी में भट्टी में भेज दिया। जब पत्थरों को जला दिया गया और मठाधीश को दिखाने के लिए वापस लाया गया, तो वे बर्फ की तरह सफेद चूना निकले।

मठाधीश ने जासूस भेजे, और बताई गई जगह पर पर्याप्त मात्रा में चूना मिला, जो उस समय की और बाद की इमारतों, दोनों के लिए पर्याप्त था,[7382] की भविष्यवाणी के अनुसार।

इन चर्चों के अलावा, थियोफिलिस और उनके तत्काल उत्तराधिकारियों के समय में, मठ के चारों ओर कई मीनारों वाली मजबूत, ऊंची पत्थर की दीवारें बनाई गईं, जिनके रोस्तोव और उग्लिच की ओर वाले किनारों पर दो द्वार थे, जिनके ऊपर सेंट सर्जियस और प्रभु की प्रस्तुति के सम्मान में पत्थर के चर्च बनाए गए थे। ये सभी भव्य और सुंदर संरचनाएँ आज भी खड़ी हैं।

धर्मनिष्ठ राजकुमार बोरिस और ग्लेब को समर्पित कैथेड्रल चर्च में, उत्तर-पश्चिमी कोने में, मठ के संस्थापकों, पूजनीय थियोडोरेट और पॉल की अवशेष वेदी के नीचे रखे गए हैं।

[7383]अपने पिता, ग्रैंड प्रिंस वासिली इओआनोविच के उदाहरण का अनुसरण करते हुए, उनके पुत्र, ज़ार इवान वासिलीविच ने भी इस मठ के प्रति गहरी भक्ति दिखाई; उन्होंने स्वयं इसका दौरा किया और ईमानदार राजकुमारों बोरिस और ग्लेब की स्मृति में गाँवों, बस्तियों, धन और कीमती वस्तुओं की उदार दान-राशि प्रदान की।

सोलहवीं शताब्दी के अंत और सत्रहवीं शताब्दी की शुरुआत में, परम पूज्य इरिनार्ख ने अपने कारनामों के माध्यम से, विशेष रूप से 'समय की परेशानियों' के दौरान, इस मठ को ख्याति दिलाई, जब इस मठ को, आसपास के अन्य मठों की

[7381] जहाँ कभी यह गाँव था, उस जगह को आज भी मठ से सात वर्स्ट की दूरी पर कोचारका कहा जाता है; और आज भी वहाँ उन गड्ढों को देखा जा सकता है जहाँ से चूना निकाला जाता था। – ज़ोबेन्का – आयतन सामग्री का एक प्राचीन माप। किंवदंती है कि यदि कोई गुप्त रूप से अपने उपयोग के लिए कुछ चूना ले जाता था, तो चूने का प्रभाव समाप्त हो जाता था। जब थियोफिलिस के उत्तराधिकारियों के अधीन पत्थर की मठ की इमारतें पूरी हो गईं, तो चूने की आपूर्ति समाप्त हो गई।

[7382] चूने की खोज के चमत्कार के बारे में बोरिस और ग्लेब चर्चों के वास्तुकार ने बोरिस और ग्लेब मठ के प्राचीन वृत्तांत के लेखक को सुनाया था, 'ग्रिगोरी बोरिसोव, रोस्तोव के मूल निवासी, एक माहिर चर्च निर्माता और राजमिस्त्री', जिन्हें स्वयं मठाधीश थियोफिलिस ने संतों बोरिस और ग्लेब का एक दर्शन सुनाया था, और उन्हें निर्देश दिया था कि वे अपनी मृत्यु तक इसे किसी को न बताएं। – इस प्रसिद्ध रोस्तोव वास्तुकार, ग्रिगोरी बोरिसोव ने 1543 में स्पासोकामनेयो मोनास्ट्री (कुबेन्स्कोये झील पर, वोल्गोडा गवर्नरेट) में डोर्मिशन चर्च का निर्माण पूरा किया; इस मठ की स्थापना एक अन्य रोस्तोव मूल के वास्तुकार, पाखोमियस गोर्यानोव ने की थी।

[7383] ज़ार इवान वासिलीविच के दान का वर्णन बोरिसोग्लेब्स्की मठ के प्राचीन दान और दान-पत्र रजिस्टरों में विस्तार से किया गया है।

तरह, शकिारी पोलशि-लथिुआनयिाई छापामार दलों के हाथों वनिाश के खतरे का सामना करना पड़ा। इस संत की अवशेषें कैथेड्रल चर्च[7384] के दक्षणिी-पश्चमिी साइड चैपल में फर्श के नीचे रखी हैं।

5 नवंबर

23 अक्टूबर (पुराने कैलेंडर के अनुसार)

संत जेम्स प्रेरति का जीवन और कष्ट, जो प्रभु के देह के भाई थे

23 अक्टूबर को स्मरणोत्सव

संत जेम्स धर्मी जोसफ के पुत्र थे, जनिके साथ परम पवत्रि कुँवारी का सगाई का वचन दयिा गया था[7385] । अपनी युवावस्था से ही उन्होंने एक कठोर जीवन शैली अपनाई: उन्होंने कभी वभिन्नि प्रकार के मांस का स्वाद नहीं चखा, न ही तेल का उपयोग कयिा, बल्कि अकेले रोटी ही उनका भोजन थी; न ही उन्होंने कभी शराब या कोई अन्य मादक पेय पयिा, बल्कि अपनी प्यास पानी से बुझाते थे; वे स्नानागार भी नहीं जाते थे – संक्षेप में, उन्होंने शरीर को सुख देने वाली हर चीज़ को अस्वीकार कर दयिा; वे लगातार अपने शरीर पर एक मोटे बालों वाली कमीज़ पहनते थे; वह हर रात प्रार्थना में लगा रहता था, और केवल थोड़ी देर के लिए ही नींद में खोता था; बार-बार सजदा करने से उसके घुटनों की त्वचा ऊँट की तरह खुरदरी हो गई थी। जेम्स ने अपने जीवन के अंत तक अपनी कुँवारीपन की पवत्रिता बनाए रखी[7386] ।

जहाँ तक इस बात का सवाल है कि उन्हें परमेश्वर का भाई क्यों कहा जाता है, हमें नम्निलखिति परंपरा प्राप्त हुई है। जब उनके पति यूसुफ अपनी पहली पत्नी के बच्चों के बीच भूमि का बंटवारा कर रहे थे, तो उन्होंने परम पवत्रि कुँवारी से जन्मे प्रभु यीशु मसीह को भी एक हस्सिा देना चाहा, जो यूसुफ से सगाईशुदा थीं; जोसेफ के सभी पुत्रों ने अपने पति की इच्छा का वरिोध कयिा; केवल याकूब ने ही प्रभु यीशु मसीह (जो तब भी एक छोटे लड़के थे) को अपने हस्सिे के सह-स्वामी के रूप में स्वीकार कयिा, और इसीलिए उन्हें प्रभु का भाई कहा जाने लगा। यह उपाधि याकूब को नम्निलखिति अवसर पर भी दी गई थी। जब हमारे प्रभु यीशु मसीह का अवतार हुआ, और परम पवत्रि कुँवारी मरयिम उनके साथ मस्रि भाग गईं, तो याकूब भी उनके साथ, परम पवत्रि कुँवारी मरयिम और अपने पति संत यूसुफ के साथ, भाग गया।

जब यीशु मसीह वयस्क हुए और लोगों को परमेश्वर के राज्य के बारे में सखिाने लगे, और स्वयं को सच्चा मसीहा प्रकट करने लगे, तब संत जेम्स ने उन पर वश्विास कयिा और उनकी दव्यि शकि्षा को सुनकर, परमेश्वर के प्रति प्रेम से और भी अधकि प्रज्वलति हो गए और एक और भी अधकि कठोर और धार्मकि जीवन जीने लगे। और प्रभु का संत जेम्स के प्रति एक वशिेष प्रेम था। इस प्रकार, अपनी स्वेच्छा से पीड़ा सहने और मृतकों में से जी उठने के बाद, मसीह अन्य प्रेरतिों से पहले, अपने भाई जेम्स के सामने प्रकट हुए, जैसा कि प्रेरति पौलुस उल्लेख करते हैं, कहते हुए:

'फरि वह याकूब को दखिाई दिए, और फरि सभी प्रेरतिों को' (1 कुरन्थियिों 15:7)[7387] ।

[7384] संत इरनिारह का पर्व 13 जनवरी को मनाया जाता है।

[7385] संत जोसफ धर्मनष्ठि, जो परम पवत्रि कुँवारी मरयिम के वधूवर थे, का पर्व 26 दसिंबर को मनाया जाता है (मत्ती 13:55; मरकुस 6:3; गलातयिों 1:17)। कुछ टीकाकारों की राय के वपिरीत, चर्च स्पष्ट रूप से पवत्रि प्रेरति याकूब, जो देह से प्रभु का भाई है, को ज़ेबेदी के पुत्र याकूब, जो बारह प्रेरतिों में से एक है और जसिका पर्व 30 अप्रैल को मनाया जाता है, और अल्फाउस के पुत्र याकूब, जसिका पर्व 9 अक्टूबर को मनाया जाता है, से अलग करती है। यीशु का देह में भाई याकूब, अपनी पहली पत्नी से यूसुफ के पुत्र के रूप में ऐसा नामति कयिा गया है। वे प्रेरति यहूदा के सगे भाई थे, जन्हिें 'याकूब का पुत्र' के नाम से जाना जाता था, और सत्तर प्रेरतिों में से एक योशयिाह के भी, और उन्हें याकूब 'छोटा' या 'जूनयिर' (मरकुस 15:40) के नाम से भी जाना जाता है।

[7386] अपने जन्म के क्षण से ही, संत जेम्स प्रेरति एक नज़ीर थे, अर्थात् एक ऐसा व्यक्ति जो ईश्वर को समर्पति था, जसिने स्वेच्छा से सभी प्रकार की शराब और वास्तव में, सभी मादक पेय पदार्थों से पूर्ण परहेज़, अपने बाल न कटवाने, आदि की कसमें खाई थीं। नज़ीरीत्व के व्रत उस पवत्रिता और शुद्धता के जीवन की अभव्यिक्ति के रूप में काम करते थे, जो ईश्वर द्वारा चुने गए और इसलिए पवत्रि माने जाने वाले पूरे इस्राएल के लोगों की वशिेषता होनी चाहिए थी।

[7387] परंपरा यह भी जोड़ती है कि, मसीह के दुख-संकट के दौरान, संत याकूब प्रेरति एक गुफा में छपि हुए थे जोसाफात की घाटी में, उन्होंने यह शपथ ली थी कि वे तब तक कोई भोजन नहीं खाएंगे जब तक प्रभु मृतकों में से नहीं उठ जाते, और प्रभु ने, अपने पुनरुत्थान के बाद, इसी गुफा में

याकूब के धर्मी और ईश्वर-प्रसन्न जीवन को देखकर, सभी उसे धर्मी कहते थे – और उसे सत्तर प्रेरितों में गिना गया। उन्हें यरूशलेम की नव-प्रबुद्ध कलीसिया का प्रभार सौंपा गया था[7388] । पवित्र आत्मा द्वारा निर्देशित होकर, याकूब ने दिव्य अनुष्ठान (Divine Liturgy) की व्यवस्था रचने और लिखने वाले पहले व्यक्ति थे – जिसे बाद में, मानवीय दुर्बलता को ध्यान में रखते हुए, पहले बेसिल द ग्रेट और फिर जॉन क्रिसोस्टोम द्वारा संक्षिप्त किया गया था[7389] । यरूशलेम में मसीह के झुंड की देखभाल करते हुए, इस संत ने अपनी शिक्षा के माध्यम से कई यहूदियों और यूनानियों को ईश्वर की ओर मोड़ा और उन्हें सही मार्ग पर स्थापित किया। उन्होंने इस्राएल के बारह गोत्रों के लिए एक सार्वभौमिक पत्र भी छोड़ा है – जो वास्तव में दैवीय रूप से प्रेरित और आत्मा को पोषण देने वाली शिक्षा का एक स्रोत है, जिससे मसीह की संपूर्ण कलीसिया सुसज्जित होती है, और वह विश्वास और अच्छे कर्मों के बारे में सीखती है[7390] । केवल विश्वासियों[7391] ने ही नहीं, बल्कि अविश्वासियों ने भी उनके सदाचारी जीवन के लिए संत जेम्स का बहुत सम्मान और श्रद्धा से व्यवहार किया: मुख्य पुरोहित, जो स्वयं सेवा करने के लिए वर्ष में केवल एक बार परम पवित्र स्थान[7392] में प्रवेश करते थे, ने उस धर्मी व्यक्ति को वहाँ प्रवेश करने और प्रार्थना करने से नहीं रोका। उसके निष्कलंक जीवन की पवित्रता को देखकर, उन्होंने उसका नाम भी बदल दिया, अर्थात्: उन्होंने उसे ओब्लिया ओफ्ल[7393] कहना शुरू कर दिया, जिसका अर्थ है 'एक किला, लोगों का सहारा', या उन्होंने उसे सभी में सबसे धर्मी कहा। अक्सर, न केवल दिन में

उन्हें एक विशेष साक्षात्कार देकर सम्मानित किया। परिणामस्वरूप, ईसाई धर्म की शुरुआती शताब्दियों में, इस गुफा को एक चर्च में बदल दिया गया, और आज भी इसे भक्तपूर्ण उपासकों को दिखाया जाता है।

7388 पौराणिक युग के सबसे निकट के प्राचीन लेखकों (अलेक्जेंड्रिया के क्लेमेंट, सेसरिया के यूसेबियस और अन्य) के अनुसार, उद्धारकर्ता के स्वर्गारोहण के बाद, प्रेरित पतरस, ज़ेबेदी के पुत्र याकूब और यूहन्ना—हालांकि प्रभु के प्रिय थे—उन्होंने इस सम्मान पर विवाद नहीं किया, बल्कि जब उनकी आयु 34 वर्ष थी, तो उन्होंने संत याकूब को यरूशलेम की कलीसिया—जो ईसाई कलीसियाओं की जननी है—का बिशप और प्रधान चुना, जैसा कि स्वयं मसीह द्वारा उनकी पूर्व-निर्धारण और इस सेवकाई के लिए नियुक्ति के अनुसार था।

7389 पवित्र लिटर्जी, जिसे प्रभु के भाई, प्रेरित संत जेम्स ने रचित किया था, आज भी यरूशलेम में इस प्रेरित के पर्व के दिन मनाई जाती है।

7390 यह पत्र संत जेम्स द्वारा लगभग 59 ईस्वी में डायस्पोरा में रहने वाले यहूदी मूल के ईसाइयों को लिखा गया था, यह ईसाइयों के उत्पीड़न के दौरान था जिसने उन्हें यरूशलेम छोड़ने के लिए मजबूर किया था। यह पत्र गहरी शिक्षा और सुसमाचार की भावना से ओत-प्रोत है। इसमें विभिन्न प्रकार के नैतिक उपदेश शामिल हैं और, अपने समग्र विषय-वस्तु में, इसे धैर्यपूर्वक पीड़ा सहने के लिए एक उपदेश के रूप में वर्णित किया जा सकता है। ऑर्थोडॉक्स चर्च की दैवीय सेवाओं में, संत जेम्स का पत्र न केवल लिटर्जी के दौरान एक नियमित प्रेरितिक पठन के रूप में, बल्कि अन्य सेवाओं (उदाहरण के लिए, बीमारों के अभिषेक के दौरान, सूखे के समय एक प्रार्थना सेवा में, और यहां तक कि पूरी रात की प्रार्थना सभा के दौरान, एक पैरेमिया के रूप में) में भी पूरा पढ़ा जाता है।

7391 स्वयं प्रेरितों के नेतृत्व में विश्वासियों द्वारा प्रेरित याकूब के प्रति सार्वभौमिक श्रद्धा, लगभग 60 ईस्वी में यरूशलेम में आयोजित प्रेरितों की परिषद में विशेष रूप से प्रबल रूप से व्यक्त हुई थी, जिसका प्रश्न था: क्या चर्च में अन्यजातियों से परिवर्तित होने वालों को खतना करवाने और पुराने नियम के संस्कारिक कानून का पालन करने के लिए बाध्य किया जाना चाहिए। प्रेरित याकूब ने इस परिषद की अध्यक्षता की और प्रेरित पतरस के भाषण तथा प्रेरित पौलुस और बरनाबास द्वारा अन्यजातियों के बीच अपने उपदेश की सफलता के विवरण के बाद, लंबी बहसों और विचार-विमर्श के बाद, एक भाषण के साथ परिषद की कार्यवाही का समापन किया, जिसमें उन्होंने उठाए गए प्रश्न पर, संक्षेप में, अपना निर्णय प्रस्तुत किया, यह तर्क देते हुए कि "हम उन अन्यजातियों के सामने ठोकर का पत्थर नहीं रखना चाहिए जो परमेश्वर की ओर मुड़ रहे हैं", बल्कि उन्हें मूर्तियों से अशुद्ध किए गए भोजन, व्यभिचार, गला घोंटकर मारे गए पशु और रक्त से दूर रहने के लिए लिखना चाहिए, और 'जो वे स्वयं अपने लिए नहीं चाहते, वह दूसरों को न करें' (प्रेरितों के काम 15:13–20)। धर्मी याकूब, जिन्हें सभी बहुत आदर की दृष्टि से देखते थे, के इस निर्णय को पूरी परिषद ने स्वीकार किया और पवित्र आत्मा की इच्छा से इसकी पुष्टि की, जो सभी के लिए स्पष्ट थी (पद 28)। लगभग उसी समय, प्रेरित पौलुस, अपनी शिक्षा की शुद्धता को सत्यापित करने के लिए, प्रेरितों के पास गए: पतरस, यूहन्ना और याकूब, जिन्हें वह मसीह की कलीसिया के स्तंभ मानता था, और याकूब को उनमें पहला स्थान देता था (गलातियों 2:10) – और उन्होंने उसमें अन्यजातियों के शिक्षक की महान गरिमा को पहचाना। इसके बाद प्रेरित पौलुस ने संत याकूब का उतना ही गहरा सम्मान करना जारी रखा। जब वह अपनी पहली कैद के कुछ ही समय बाद यरूशलेम पहुँचे, तो उन्होंने अपना पहला कर्तव्य यह माना कि वे संत याकूब के पास जाएँ और उन्हें, मसीह की कलीसिया के एक स्तंभ और यरूशलेम की प्राचीन कलीसिया के प्रमुख के रूप में, यह बताएँ कि परमेश्वर ने उनकी सेवकाई के द्वारा अन्यजातियों के बीच क्या-क्या किया था (प्रेरितों के काम 21:18-19)।

7392 'पवित्र-स्थल' यरूशलेम के मंदिर का सबसे भीतरी, सबसे पवित्र भाग था, जिसमें केवल महापुजारी को प्रवेश की अनुमति थी, और वह भी केवल वर्ष में एक बार, प्रायश्चित के दिन, जब वह धूप से भरा अपना धूपदान रखता और लोगों के पापों के प्रायश्चित के लिए अनुग्रह-आसन पर बलि के रक्त का छिड़काव करता था। हालाँकि, वाचा का सन्दूक अपनी पवित्र वस्तुओं के साथ (हारून का वह दण्ड जिसमें कलियाँ फूट आई थीं, मन्ना का सोने का घड़ा, और मूसा के द्वारा परमेश्वर द्वारा दिए गए व्यवस्था के पत्थर) उस समय मंदिर में नहीं था। सुलेमान के पहले मंदिर से केवल एक ही पत्थर बचा था, और पवित्रतम स्थान को मंदिर के अगले हिस्से - पवित्र स्थान - से अलग करने वाला परदा, यीशु मसीह के सूली पर चढ़ाए जाने के समय ऊपर से नीचे तक दो टुकड़ों में फाड़ दिया गया था।

7393 ग्रीक में: 'ओव्लियास' – लोगों और सत्य की सुरक्षा या दुर्ग।

बल्कि रात में भी, याकूब परम पवित्र स्थान में प्रवेश करते थे और वहाँ, साष्टांग दण्डवत होकर, संपूर्ण संसार के लिए प्रभु से आँसुओं के साथ प्रार्थना करते थे। सभी लोग जेम्स को उनकी पवित्रता के कारण प्यार करते थे; कई यहूदी बुजुर्गों ने उनके उपदेश पर विश्वास करना शुरू कर दिया, और हर कोई उन्हें सुनकर प्रसन्न होता था; बड़ी भीड़ उनके चारों ओर इकट्ठा हो जाती थी: कुछ उनके उपदेश को सुनना चाहते थे, तो कुछ उनके वस्त्र के किनारे को छूना चाहते थे। उस समय, अननियस[7394] यहूदियों का महायाजक बना। यह देखकर कि सारी जनता जेम्स की शिक्षा को ध्यान से सुन रही थी, और कई लोग मसीह की ओर मुड़ रहे थे, अननियस, लिखारियों और फरीसियों के साथ, संत के प्रति ईर्ष्या से, उससे क्रोधित हो गए और, अपने दिलों में द्वेष पालते हुए, उसे मारने की साजिश रचने लगे। और उन्होंने साजिश रची कि संत से अनुरोध करें कि वह अपनी शिक्षा का उपयोग करके लोगों को मसीह से दूर कर दे; साथ ही, उन्होंने यह भी ठान लिया कि यदि वह ऐसा करने से इनकार कर देगा, तो वे उसे मार डालेंगे।

इस बीच, पास के पर्व का समय नज़दीक आ रहा था, और लोग दूर-दूर से उस पर्व को मनाने के लिए यरूशलेम में उमड़ रहे थे।

फेस्टस, वह प्रोकॉन्सल जिसने प्रेरित पौलुस को यहूदियों के हाथों से बचाया था[7395] और उसे रोम भेज दिया था, तब तक मर चुका था, और रोम से अभी तक कोई उत्तराधिकारी नहीं भेजा गया था। इसका लाभ उठाते हुए, शास्त्री और फरीसी मंदिर में याकूब के पास निम्नलिखित अनुरोध के साथ आए:

'हे धर्मी पुरुष, हम तुझ से विनती करते हैं कि तू यहूदी-पर्व के दिन, जब चारों ओर से बहुत बड़ी भीड़ इकट्ठी हो चुकी है, एक उपदेश दे; उन्हें यह विश्वास दिला कि वे यीशु को परमेश्वर का पुत्र मानकर भूल कर रहे हैं, और उन्हें अपने इस झूठे विश्वास को त्यागने के लिए मना ले।' हम सभी आपको बहुत मान-सम्मान देते हैं और आपकी सुनते हैं – जैसे कि सारी जनता सुनती है; हम सभी को दृढ़ विश्वास है कि आप केवल सत्य बोलते हैं और किसी का पक्षपात नहीं करते; इसलिए लोगों को समझाएँ कि वे सूली पर चढ़ाए गए यीशु से भटकने न पाएँ; हम आपसे विनती करते हैं – मंदिर की ऊँची छत पर खड़े हो जाइए, ताकि हर कोई आपको देख और सुन सके, क्योंकि, जैसा कि आप स्वयं देख सकते हैं, त्योहार के लिए बहुत सारे लोग इकट्ठा हुए हैं, यहूदी और अन्य राष्ट्रों के लोग भी।

इन बातों के बाद, उन्होंने उसे मंदिर की छत पर ले जाकर ज़ोर से चिल्लाया:

'हे धर्मी! हमें तो सभी को आप पर विश्वास करना ही होगा। यह लोग सूली पर चढ़ाए गए यीशु का अनुसरण करके भटक गए हैं; इसलिए, हमें सच-सच बताइए, आप स्वयं मसीह के बारे में क्या सोचते हैं?'

इस पर संत ने ऊँचे स्वर में उत्तर दिया:

'तुम मुझसे मनुष्य के पुत्र के बारे में क्यों पूछते हो, जिसने स्वेच्छा से दुख सहन किया, उसे सूली पर चढ़ाया गया, उसे दफनाया गया, और तीसरे दिन मरे हुओं में से जी उठा? वह अब स्वर्ग में परमप्रभु के दाहिने हाथ पर विराजमान है और जीवितों और मरे हुओं का न्याय करने के लिए फिर से स्वर्ग के बादलों पर आएगा।'

यीशु मसीह के विषय में याकूब की यह गवाही सुनकर, लोगों ने बहुत आनंद मनाया, और एक स्वर में वे पुकार उठे:

'परमेश्वर की महिमा हो! दाऊद के पुत्र के लिए होसन्ना!'

पर फरीसियों और लिखनेवालों ने कहा:

'हमने जेम्स को यीशु के बारे में बोलने देने में मूर्खता की है, क्योंकि लोग और भी अधिक भ्रमित हो गए हैं।'

और इस प्रकार, अपने क्रोध और उग्रता में, उन्होंने सभी को डराने के लिए, ताकि लोग संत के शब्दों पर विश्वास न करें, जेम्स को मंदिर की छत से फेंक दिया।

'और धर्मी व्यक्ति भटक गया है,' वे चिल्लाए।

[7394] अनानियस – नेबेदेउस का पुत्र, एक यहूदी महापुजारी, जिसे हेरोद एग्रिप्पा द्वितीय से महापुजारी का पद मिला था; वह मसीहियों का कट्टर शत्रु था और, सामान्यत; एक अवज्ञाकारी, क्रूर और अन्यायपूर्ण व्यक्ति था, और वह सदूकी संप्रदाय से था, जो परंपरा को अस्वीकार करता था, दिव्य प्रबंध, आध्यात्मिकता और आत्मा की अमरता, स्वर्गदूतों का अस्तित्व – और जो इंद्रिय सुखों, दुर्गुणों और सांसारिक हितों में डूबे हुए थे। प्रेरित याकूब की मृत्यु के लिए जिम्मेदार होने के बाद, अनानियास ने बाद में प्रेरित पौलुस को भी अन्यायपूर्वक परखा और उसे नष्ट करने का प्रयास किया (प्रेरितों के काम 23:2, 14–15, 24:1–9), लेकिन अपनी ही अन्यायपूर्ण कार्रवाइयों के लिए उसे स्वयं सबसे कड़वी निंदा झेलनी पड़ी: उसे स्वयं राजा अग्रिप्पा ने महायाजक पद से हटा दिया और अंततःरोमनों के खिलाफ यहूदी विद्रोह के दौरान उसे मार डाला गया।

[7395] फेस्टस, जिन्हें पोर्सियस उपनाम से जाना जाता था, यहूदिया के रोमन गवर्नर थे, जिन्होंने तीन साल से अधिक शासन नहीं किया और लगभग 62 ईस्वी में उनकी मृत्यु हो गई; उन्होंने इस उद्देश्य के लिए कठोरता और न्याय दोनों का उपयोग करते हुए फिलिस्तीन में व्यवस्था बहाल करने का प्रयास किया।

मंदरि की छत से गरिने के बाद, याकूब बुरी तरह घायल हो गया; मुश्कलि से जीवति, वह धर्मी व्यक्ति घुटनों के बल गरि पड़ा और, स्वर्ग की ओर अपने हाथ उठाकर, इस प्रकार प्रार्थना की:

'हे प्रभु! इनका यह पाप क्षमा कर, क्योंकि ये नहीं जानते कि ये क्या कर रहे हैं।'

हालाँकि, फरीसियों ने संत पर पत्थर फेंकना शुरू कर दिया, जिससे वह घायल हो गया। रचिावोव कुल का एक आदमी चिल्लाया:

'रुक जाओ! तुम क्या कर रहे हो? धर्मी व्यक्ति तुम्हारे लिए प्रार्थना कर रहा है, और तुम उस पर पत्थर चला रहे हो।'

उसी क्षण, चूना-रोलर पकड़े एक आदमी ने संत पर झपटकर इतनी ज़ोर से उसके सिर पर वार किया कि उसका दिमाग़ ज़मीन पर बिखिर गया, और इस यातना में जेम्स ने अपनी आत्मा प्रभु को सौंप दी।

उनके पवित्र शरीर को वहाँ चर्च के पास दफनाया गया, जबकि विश्वासियों ने उस धर्मी व्यक्ति के लिए गहरा शोक मनाया। 30 वर्षों तक, संत यरूशलेम के चर्च के बिशप रहे थे, और अपने जीवन के 66वें वर्ष में उन्होंने मसीह के लिए पीड़ा सहन की, जिनके लिए, पिता और पवित्र आत्मा के साथ, युगों-युगों तक सम्मान और महिमा हो[7396] । आमीन।

ट्रोपारियन, स्वर 2:

हे धर्मी, प्रभु के शिष्य के रूप में, आपने सुसमाचार ग्रहण किया; एक शहीद के रूप में, आप में अकथनीय साहस था; परमेश्वर के भाई के रूप में, आपने एक धर्मगुरु के रूप में प्रार्थना की: मसीह परमेश्वर से प्रार्थना करें कि हमारी आत्माएँ बच सकें।

कॉन्टाकियन, स्वर 4:

हे दिव्य वचन, पिता के एकमात्र पुत्र, जो इन अंतिम दिनों में हम तक आए, हे दिव्य जेम्स: यरूशलेम के लोगों ने सबसे पहले आपको अपना चरवाहा और शिक्षक, तथा आध्यात्मिक रहस्यों के एक वफादार निर्माता के रूप में पहचाना। इसलिए हम सभी आपको सम्मान देते हैं, हे प्रेरित।

बोरोवट्स्की के संत जेम्स का स्मरणोत्सव

23 अक्टूबर को स्मरणोत्सव

हमें इस धन्य और धर्मी याकूब के जन्मस्थान के बारे में बिल्कुल कुछ भी नहीं पता, न ही उनके parents[7397] के नाम, – यह सब ईश्वर की इच्छा से हमसे छिपा हुआ है, ताकि हम जान सकें कि ईश्वर के संत सांसारिक नहीं बल्कि स्वर्गीय स्वदेश की खोज करते हैं; वे अपनी सांसारिक वंशावली पर घमंड नहीं करते, बल्कि स्वर्गीय सेनाओं के साथ अपने मिलन से गौरवान्वित होते हैं; वे अपने शारीरिक पिता पर नहीं बल्कि अपने आध्यात्मिक पिता, सर्वव्यापी ईश्वर पर गर्व करते हैं। हम जानते हैं कि इस सम्माननीय चमत्कार-कर्ता ने, यद्यपि वह देह से जन्मा था, एक आध्यात्मिक

[7396] प्रेरित याकूब की शहादत लगभग 63 ईस्वी में हुई। वे वृद्धावस्था में निधन कर गए। उन्हें ठीक उसी स्थान पर दफनाया गया जहाँ उनकी मृत्यु हुई थी; आज भी मंदिर के पास उनकी कब्र के ऊपर एक स्मारक खड़ा है। तीसरी सदी के एक चर्च के लेखक ओरिजन के अनुसार, धर्मनिष्ठ याकूब की मृत्यु, जो यहूदी युद्ध से ठीक पहले हुई थी, ने यहूदियों पर इतना गहरा प्रभाव डाला कि युद्ध की विपत्तियों और उसके बाद हुए यरूशलेम के विनाश को उन्होंने इस धर्मी व्यक्ति की हत्या के लिए ईश्वर की सजा माना। – 11वीं शताब्दी में, निकिया के आर्चबिशप सेंट थियोफेंस द हाइमनोग्राफर, निकोमेडिया के धन्य जॉर्ज, और बाद में बाइजेंशियम ने सेंट जेम्स द अपोस्टल के सम्मान में कई भजन रचे, जिन्हें अब उनकी स्मृति के दिन गाया जाता है। संत जेम्स प्रेरित की अवशेष 1200 ईस्वी में रूसी तीर्थयात्री एंथनी के दौरे के दौरान कॉन्स्टेंटिनोपल में थे, जो चल्कोप्रैटिया चर्च के एक पार्श्व-गलियारे में रखे गए थे, जबकि उनका सिर होली अपोस्टल्स चर्च में था। वर्तमान में, कुछ विवरणों के अनुसार, उनकी अवशेष रोम में, ट्वेल्व अपोस्टल्स चर्च में हैं। मास्को में, ओल्ड जेरूसलम मेटोचियन में, उनके अवशेषों का एक हिस्सा संरक्षित है, जिसे 1853 में अलेक्जेंड्रिया के पैट्रिआर्क हिएरोथेओस ने भेजा था।

[7397] इतना ही ज्ञात है कि धन्य जेम्स एक साधारण लेकिन उत्साही न्यायाधीश थे जिन्होंने स्वयं एक पवित्र मूर्ख के कठोर जीवन को अपनाया था; लगभग 1540 में बिजली गिरने से उनकी मृत्यु हो गई।

जीवन जयिा, उसका हृदय ईश्वर के प्रतप्रिेम से जलता था और वह प्रभु के लिए लगन से परश्रिम करता था; यद्यपवि एक भौतकि शरीर में नविास करता था, तथापि, अपने अमूर्त मन से वह पवत्रि स्वर्गदूतों के साथ संवाद करता था और उनके संगतमिें रहता था; शरीर से वह पृथ्वी पर वास करता था, परन्तु अपने मन में, जो परमेश्वर के ज्ञान से प्रकाशति था, वह स्वर्ग में रहने वाले परमेश्वर के सामने खड़ा था; हर बात में उसने स्वयं को परमेश्वर का एक वफादार सेवक साबति कयिा, धैर्य का उदाहरण प्रस्तुत कयिा, वनिम्रता से कठनिाइयों और परश्रिमों को सहन कयिा, और जाग-प्रहर और उपवास में नरिंतर प्रयासरत रहा। जब इस क्षणकि, दुख-भरे जीवन में धन्य एक के प्रवास का अंत हुआ, तो उनकी धर्मी आत्मा, जो सद्गुणों से एक वधू की तरह सजी हुई थी, को परमेश्वर के स्वर्गदूतों द्वारा उद्धारकर्ता के महल में ले जाया गया, जबकि उनके सम्मानति शरीर को ईसाई रीतकि अनुसार एक अवशेष-पात्र में वरिाम दयिा गया।

वेलकिी नोवगोरोद के क्षेत्र में म्स्टा नदी बहती है[7398] , जसिके कनिारे उस समय बोरोवचिी गाँव[7399] स्थति था। जब संत को महमिामय बनाने का समय आया, तो इस संत की अवशेष-पेटकिा, जो ईश्वर की आज्ञा से उपरोक्त नदी की धारा के वपिरीत एक बर्फ के टुकड़े पर तैर रही थी – यह ब्राइट वीक के दौरान एक मंगलवार को हुआ था – बोरोवचिी गांव से कुछ दूर तट पर, उग्र और शोरगुल वाले बोरोवचिी रैपड्सि[7400] के पास आकर ठहर गई। इस गाँव के नविासयिों ने, संदेह करते हुए, इस महान ईश्वर-पुरुष की पवत्रि अवशेषों को स्वीकार करने से इनकार कर दयिा, और रस्सयिों से लगे हुकों का उपयोग करके, उन्हें नदी के बीच में खींच लयिा। लेकनि चमत्कारी अवशेषों ने उन लोगों को नहीं छोड़ा जन्होंने उन्हें कनिारे फेंका था: वे एक बार फरि उनके पास लौट आए और एक बार फरि उसी स्थान पर आकर रुके जहाँ से उन्हें धकेला गया था; फरि भी तब भी वहाँ रहने वाले लोगों ने उस अद्भुत चमत्कार पर ध्यान नहीं दयिा कि अवशेषों को ले जाने वाली नाव धारा के वपिरीत तैर रही थी: उन्होंने इसे दूसरी बार दूर भगा दयिा, और एक बार फरि अवशेषों को वापस ले जाकर खुद को ईश्वर-प्रदत्त खजाने से वंचति कर लयिा; उन्होंने यह द्वेष से नहीं, बल्कि अज्ञानता से कयिा, क्योंकि वे आस्था में अपरष्कृित और अनसखिे थे, और इसलिए यह कृत्य उन्हें क्षमा कर दयिा गया। पवत्रि अवशेष तीसरी बार उसी स्थान पर कनिारे आ गए। तब धन्य चमत्कार-कर्ता स्वयं सम्मानति और धर्मनष्ठि पुरुषों को एक सपने में प्रकट हुए और कहा:

'हे मसीह के वश्विासयोग्य सेवको, तुम मुझे क्यों नहीं स्वीकार करते? क्योंकि मैं भी उतना ही ईसाई हूँ जतिने तुम हो; तुम्हारी तरह, मैंने भी अपने सांसारकि जीवन में मसीह में भक्तपिूर्वक वश्विास कयिा था। यदि तुम यह केवल इसलिए कर रहे हो क्योंकि तुम मेरा नाम नहीं जानते, तो मैं तुम्हें यह बता दूँगा: मैं जेम्स हूँ, और मुझे यह नाम प्रभु के भाई जेम्स के सम्मान में मलिा है।'

ये लोग, अपनी नींद से जागने के बाद, संत के शब्दों से अपने हृदयों में एक असाधारण आनंद महसूस कयिा और सभी को उस दर्शन के बारे में बताया। और इस प्रकार उस गाँव के सभी नविासी उस स्थान पर दौड़े जहाँ से उन्होंने धर्मी जेम्स के पवत्रि अवशेषों को साहसपूर्वक हटा दयिा था, और उन्हें देखने का प्रयास कयिा; उन्हें पाकर, वे आनंदति हुए, श्रद्धापूर्वक उन्हें पानी से बाहर नकिाला, उन्हें उसी ताबूत में सम्मानपूर्वक कनिारे पर रख दयिा, और उनके चारों ओर एक लकड़ी का घेरा बना दयिा।

परम कृपालु ईश्वर ने, अपने सेवक की महमिा करते हुए, पवत्रि अवशेषों को अद्भुत चमत्कार करने और वभिन्नि बीमारयिों को ठीक करने की शक्तप्रिदान की; यह देखकर, लोगों ने सर्व-दयालु ईश्वर का बहुत-बहुत धन्यवाद कयिा, जन्होंने उन्हें इतना नस्विार्थ उपचारक भेजा था; और उन्होंने उस पूजनीय चमत्कार करने वाले की भी स्तुतकि की, जो हर बीमारी को ठीक करता था। उनके अवशेषों को अधकि उपयुक्त स्थान पर रखने की इच्छा से, वे वेलकिी नोवगोरोड के आर्चबशिप, उनकी उत्कृष्टता थयिोडोसयिस के पास गए, और गहरी भावना के साथ उन्हें उस पूजनीय की अवशेष-पेटी के माध्यम से हुए सभी चमत्कारों के बारे में बताया; सभी रूस के प्रधान, मेट्रोपॉलटिन मकारयिस को लखिे एक पत्र में, थयिोडोसयिस ने उन सभी चमत्कारों का वर्णन कयिा जनिके बारे में उन्होंने सुना था; थोड़ी ही देर बाद उनसे ठोस मार्गदर्शन प्राप्त करने के बाद, थयिोडोसयिस ने उन लोगों से संत के चमत्कारों के बारे में लगन से पूछताछ करना शुरू कर दयिा, जो अपनी बीमारयिों से ठीक हुए थे। यह सुनश्चिति करने के बाद कि उन्हें जो कुछ भी बताया गया था वह वास्तव

[7398] मस्ता एक नदी है जो ट्वेर प्रांत में मस्टनिा झील से नकिलती है और नोवगोरोड प्रांत में इल्मेन झील में मलि जाती है; यह 412 वर्स्ट लंबी है।

[7399] 1770 में, बोरोवचिी गाँव को शहर का दर्जा दयिा गया था।

[7400] 'रैपड्सि' से तात्पर्य चट्टानों के एक समूह से है जो नदी के प्रवाह में बाधा डालता है और छोटे-छोटे झरनों या भँवरों की एक शृंखला बनाता है।

में सच और सच्चा था, आर्चबशिप थियोडोसियस ने सबसे पवित्र परमेश्वर की माता के जन्म को समर्पित मठ के मठाधीश कॉन्स्टेंटिन को पुरोहितों और डकिन के साथ बोरोवट्सी गाँव में भेजा। वहाँ से, पवित्र और धर्मी जेम्स के सम्माननीय और चमत्कारी अवशेषों को पवित्र और जीवन-दायक आत्मा के अवतरण के नए चर्च में भक्तिपूर्वक स्थानांतरित किया गया; वहाँ उन्हें 23 अक्टूबर 1545 को चर्च के दक्षिणी द्वार पर रखा गया। यह आदेश दिया गया कि इस दिन इस धन्य चमत्कार-कर्ता की स्मृति का वार्षिक उत्सव मनाया जाए, मसीह परमेश्वर की महिमा के लिए, जो संतों में सदा-सदा के लिए महिमामय हैं। आमीन।

ट्रोपारियन, स्वर 1:

हे परम बुद्धिमान याकूब, दिव्य अनुग्रह से प्रकाशित होकर, और मृत्यु के बाद भी आपके पास आने वालों पर चंगाई प्रदान करते हुए: इसलिए हम अब आपके पवित्र अवशेषों के स्थानांतरण का सम्मान करते हैं, आत्मा और शरीर से एक साथ आनंदित होकर। इसलिए हम सभी पुकारते हैं: महिमा उसको हो जिसने आपको शक्ति दी है! महिमा उसको हो जिसने आपको मुकुट पहनाया! महिमा उसको हो जो आपके द्वारा सभी चंगाइयाँ करता है!

कॉन्टाकियन, स्वर 8:

हे धन्य, विश्वास और प्रेम से, जो आपके पवित्र अवशेषों के सम्मानित स्थानांतरण का उत्सव मनाते हैं, उन्हें हर बुराई और साँप के जाल से बचाएँ और उनकी रक्षा करें: क्योंकि आप सर्व के प्रभु, मसीह परमेश्वर के समक्ष निडर हैं। उनसे प्रार्थना करें कि वे ऑर्थोडॉक्स सम्राट और आपसे प्रार्थना करने वाले लोगों को बचाएँ, ताकि हम सब आपसे पुकार सकें: 'हे फादर जेम्स, पूरे रूस देश का आशीर्वाद, आनन्दित हो।'

कॉन्स्टेंटिनोपल के पैट्रिआर्क संत इग्नेशियस का स्मरणोत्सव

23 अक्टूबर को स्मरणोत्सव

[7401][7402]संत इग्नाशियस सम्राट माइकल रंगवा ([7403]) और सम्राज्ञी प्रोकॉपिया के पुत्र, थियोफिलस ([7404]) के भाई और सम्राट निकिफोरोस के पोते थे। पंद्रह वर्ष की आयु में, उन्हें एक मठ[7405] में भेजा गया और बाद में वे आर्कएन्जेल मठ के मठाध्यक्ष बने, जिसे पहले पूर्वी मठ और बाद में सटरि मठ के नाम से जाना गया। तब उन्हें कॉन्स्टेंटिनोपल का पैट्रिआर्क नियुक्त किया गया[7406] और वे 11 साल और 5 महीने तक पैट्रिआर्कल सिंहासन पर रहे, जब तक कि उन्हें सम्राट माइकल[7407] द्वारा पदच्युत नहीं कर दिया गया। उनकी जगह, फोटियस[7408] , कॉन्स्टेंटिनोपल के चर्च के प्रोटोस्पैथारियोस और प्रोटोसक्रिटिस[7409] —जो पहले एक साधारण भिक्षु थे—को नियुक्त किया गया। फोटियस को सम्राट बेसिल द्वारा पदच्युत किए जाने के बाद, इग्नाटियस ने पादरीपद फिर से संभाला – इस बार 10 वर्षों के लिए – और उन्हें एक बार फिर सम्राट निकिफ़ोरस द्वारा पदच्युत कर दिया गया, जिसे बाद में बुल्गारियाई लोगों ने मार डाला।

[7401] फोटियस का निर्वासन 867 में हुआ।

[7402] इग्नाशियस का दूसरा पदच्युत 877 में हुआ; उसी वर्ष इग्नाशियस की मृत्यु हो गई।

[7403] Mikhail रंगव ने 811 से 813 तक शासन किया।

[7404] थेओफिलस ने 829 से 842 तक शासन किया।

[7405] यह सम्राट लियो द आर्मेनियन (813–820) के आदेश पर किया गया था, जिन्होंने इग्नाटियस के पिता, माइकल को सिंहासन से हटा दिया था।

[7406] यह 846 में हुआ था।

[7407] 867 में, इग्नाटियस को वर्दा की इच्छाओं का पालन करने से इनकार करने के लिए पदच्युत कर दिया गया – जो माइकल के नाबालिग रहते हुए साम्राज्य पर शासन कर रहा था – कि थियोडोरा, माइकल की माँ, जिसने कई मायनों में वर्दा की कार्रवाइयों में बाधा डाली थी, का संन्यासिनी के रूप में मुंडन किया जाए। इग्नाशियस ने न केवल ऐसा करने से इनकार कर दिया, बल्कि वर्दा को स्वयं पवित्र संस्कार से बहिष्कृत कर दिया।

[7408] उनका पर्व दिवस 6 फरवरी है।

[7409] प्रोटोस्पैथारियोस – यूनानी सम्राट के दरबार में एक कुलीन और उच्च-पदस्थ पद। प्रोटोसनिक्रटिस – दरबारी अधिकारियों का प्रमुख, जिसे सम्राट के शयनकक्ष में प्रवेश करने का अधिकार था।

उनके उत्तराधिकारी सम्राट बेसलि के पुत्र संत स्टीफन[7410] हुए, जबकि संत इग्नाटियस सतरि के मठ में सेवानिवृत्त हो गए, जहाँ वे नब्बे वर्ष की आयु में शांतिपूर्वक निधन कर गए।

6 नवंबर

24 अक्टूबर (पुराना तरीका)

पवित्र शहीद अरेफा का कष्टकथा

24 अक्टूबर को स्मरणोत्सव

जब ग्रीक प्रदेशों में जस्टनि[7411] का और इथियोपिया में एलेज्वॉय[7412] का—जो दोनों ही ऑर्थोडॉक्स और धर्मपरायण राजा थे—शासन चल रहा था, तब ओमरिीट[7413] देश में दूनान नामक एक अधर्मी राजा, जो जन्म और आस्था से यहूदी, मसीह के नाम का अपमान करने वाला और मसीहियों का एक बड़ा उत्पीड़क था, सिंहासन पर चढ़ा। उसके सभी सलाहकार, नौकर और सैनिक या तो यहूदी थे या मूर्तिपूजक, जो सूर्य, चंद्रमा और मूर्तियों की पूजा करते थे। उसने अपने राज्य से सभी ईसाइयों को निकालने और ओमिराइट की भूमि से मसीह के महान नाम की स्मृति को भी मिटा देने का प्रयास किया। परमेश्वर की मंडली का उत्साहपूर्वक उत्पीड़न करते हुए, उसने उन विश्वासियों को यातना दी और मार डाला जो उसकी आज्ञाओं का पालन नहीं करते थे और यहूदी कानून के अनुसार जीने से इनकार करते थे।

यह सुनकर कि डुनान ने अपनी भूमि में ईसाइयों पर अत्याचार शुरू कर दिया है, इथियोपिया का राजा, एलेज्वॉय, गहराई से दुखी हुआ और, अपनी सेना इकट्ठा करके, उसके खिलाफ युद्ध में चला गया[7414] ; कई लड़ाइयों के बाद, एलेज्वॉय ने उसे हरा दिया और, उसे अपना जागीरदार बनाकर, अपनी भूमि में लौट आया। कुछ ही समय बाद, डुनान ने एक बार फिर एलेज्वॉय के खिलाफ विद्रोह कर दिया, उससे अपनी संधि तोड़ दी और अपनी सेना इकट्ठा करके, शहरों की रक्षा के लिए पीछे छोड़ी गई एलेज्वॉय की सभी चौकियों का सफाया कर दिया, जिसके बाद उसने ईसाइयों के खिलाफ और भी भारी हथियारबंद हो गया। उसने अपने पूरे राज्य में यह आदेश दिया कि ईसाइयों को या तो यहूदी धर्म अपनाना होगा या निर्दयता से मौत की सज़ा दी जाएगी। उसके राज्य में अब कोई भी ऐसा नहीं बचा था जो मसीह की शिक्षाओं का प्रचार करने की हिम्मत करता हो, और केवल एक विशाल तथा घनी आबादी वाले शहर Nagran[7415] that में ही मसीह के नाम की महिमा होती थी। पवित्र धर्म तब से वहाँ प्रकाशित हो रहा था जब से कॉन्स्टेंटाइन महान के पुत्र कॉन्स्टैंटियस ने अपने दूतों को

[7410] उनका पर्व दिवस 17 मई है।

[7411] जस्टनि – जस्टिनियन के चाचा, 518 से 537 तक शासन किया।

[7412] इथियोपिया – अफ्रीका में, जो आज के अबिसिनिया के अनुरूप था। यह नील नदी के ऊपरी इलाकों में स्थित था और इसकी सीमाएँ उत्तर में मिस्र के थेबाइड क्षेत्र, पश्चिम में लीबिया, दक्षिण में दक्षिणी इथियोपिया, और पूर्व में अरब की खाड़ी और लाल सागर से मिलती थीं। इसकी राजधानी अक्सुम थी। ईसाई धर्म के शुरुआती सदियों में, इथियोपिया एक शक्तिशाली साम्राज्य था; यह अरब के कुछ हिस्से पर भी शासन करता था। इसे 6ठी शताब्दी में एडीसियस और फ्रुमेंटियस द्वारा ईसाई धर्म में परिवर्तित किया गया था। 7वीं शताब्दी में, इथियोपिया पर अरबों ने विजय प्राप्त की। 727 के बाद से, वहां कॉप्टिक पदानुक्रम स्थापित किया गया।

[7413] ओमिरी दक्षिणी अरब के निवासी थे जो अरब की खाड़ी के पास रहते थे। ईसाई धर्म के शुरुआती सदियों में, अरब में 11 जनजातियों का निवास था। इनमें से, केवल ओमिरी और सबाई ही ईसाई थे; अन्य जनजातियों ने, यहूदियों के साथ बार-बार संपर्क में रहने के कारण, अधिकांशतः यहूदी धर्म को अपना रखा था। ओमिराइट्स का धर्मांतरण इथियोपियाई राजधानी अक्सुम के दूसरे बिशप, भारत के थियोफिलस द्वारा ईसाई धर्म में किया गया था। 6वीं शताब्दी में, उनके तीन प्रसिद्ध बिशप थे: पॉल, जिन्हें राजा दुनान ने मार डाला था; जॉन, जिन्हें जस्टिनियन के शासनकाल के दौरान नियुक्त किया गया था; और संत ग्रेगरी, जो ऑर्थोडॉक्सी के एक उत्साही रक्षक थे।

[7414] इसलिए इथियोपिया का राजा ईसाइयों – ओमिराइट्स – की रक्षा के लिए आया, क्योंकि उन्होंने ईसाई धर्म इथियोपिया से ग्रहण किया था और, पूरी संभावना है, कि वे अक्सुम के मेट्रोपोलिस के धार्मिक अधिकार क्षेत्र के अधीन थे।

[7415] नाग्राण, या अनाग्राण, अरब की खाड़ी पर स्थित एक शहर है, जो दुनान के क्षेत्रों से सटा हुआ है। यह शहर, जिसे सम्राट अगस्टस के अधीन एक सेनापति एलियस गैलस ने 25 ईस्वी में जीता था, रोमन सम्राटों की सुरक्षा में था। शायद इसी कारण से, यह धार्मिक मामलों में ओमिरीटनों के शहरों की तुलना में अधिक स्वतंत्र था।

साबेयनों के पास भेजा था, जिन्हें अब ओमरिाइट्स के नाम से जाना जाता है[7416] , जो अपनी वंशावली अब्राहम की उपपत्नी केतुरा तक मानते हैं। वहाँ पहुँचने पर, ईश्वर-ज्ञानी और धर्मात्मा दूतों ने उस देश के राजा को कॉन्स्टैंटियस के पक्ष में कर लिया, वहाँ के निवासियों को यीशु मसीह में विश्वास सिखाया, और चर्च बनाए। उस समय से नागराण में धार्मिकता का प्रसार हुआ, ईसाई शिक्षाएँ फैलीं, संन्यासियों की संख्या बढ़ी, मठों की स्थापना हुई, सभी क्षेत्रों में पवित्रता का पालन किया गया, और विश्वासियों ने समृद्धि प्राप्त की और सद्गुणों में वृद्धि की। वे अपने बीच किसी दूसरे धर्म के एक भी व्यक्ति को रहने की अनुमति नहीं देते थे: न तो किसी यूनानी[7417] को, न किसी यहूदी को, और न ही किसी विधर्मी[7418] को; और वे स्वयं, एक ही माँ, कैथोलिक और प्रेरितिक चर्च की संतानों के रूप में, पूर्ण भक्ति और पवित्रता में रहते थे।

इस नगर की इतनी महान भक्ति से ईर्ष्या करके, शैतान ने यहूदीकरण करने वाले दुनान को इसके विरुद्ध खड़ा कर दिया। यह सुनकर कि नगर के निवासियों ने उसके आदेश का पालन नहीं किया और यहूदी कानून के अनुसार जीना नहीं चाहते थे, डुनान ने अपनी सभी सेनाओं के साथ उन पर चढ़ाई कर दी, उसका इरादा अपने क्षेत्र के ईसाइयों का संहार करने और इस संहार के माध्यम से इथियोपिया के राजा एलेज्वु को परेशान करने का था। शहर के पास पहुँचकर, उसने एक विशाल सेना के साथ इसकी घेराबंदी की, इसे खाइयों से घेर लिया, और घमंड किया कि वह जल्द ही इसे जीत लेगा और इसके निवासियों का निर्दयता से संहार कर देगा। उसने नागरिकों से कहा:

'यदि तुम मेरी दया पाना चाहते हो और जीवित रहना चाहते हो, तो उन शापित प्रतीकों को उतार दो (क्योंकि वह नीच, पवित्र क्रॉस को ऐसा ही कहता था) जिन्हें तुमने अपनी ऊँची चर्चों की छतों पर लगाया है, और इसी तरह उन प्रतीकों पर चित्रित सूली पर चढ़ाए गए मसीह[7419] का भी परित्याग करो।'

इसी समय, राजा के सैनिक शहर में घूम-घूम कर चिल्ला रहे थे:

'राजा की आज्ञा मानो: तब तुम जीवित रहोगे और उससे उपहार प्राप्त करोगे; परन्तु यदि नहीं, तो तुम आग और तलवार से नष्ट हो जाओगे।'

डुनान स्वयं ईश्वर और ईसाइयों की निन्दा करने वाले अपमानजनक शब्दों से गाली देने लगा:

'मैंने कितने ईसाइयों का नाश किया है! मैंने उनकी कितने पुरोहितों और भिक्षुओं को तलवार से मार डाला है! कितनों को मैंने फांसी पर जला दिया है! और उनमें से एक भी मसीह द्वारा मेरे हाथों से नहीं बचाया गया। वास्तव में, वह स्वयं भी उन लोगों के हाथों से स्वयं को नहीं बचा सके जिन्होंने उन्हें सूली पर चढ़ाया था[7420] । और अब, मैं तुमसे, नागराण के निवासियों, यह कहने आया हूँ, कि या तो मैं तुम्हें मसीह से बहिष्कृत कर दूँगा, या फिर एक बार में ही तुम्हारा सर्वनाश कर दूँगा।

नागरिकों ने उनसे उत्तर दिया:

[7421]'हे राजा! आप सर्वशक्तिमान ईश्वर के बारे में बहुत बेधड़क बोल रहे हैं। आप सेनानायक सनहेरीब के रवैये जैसे हो गए हैं, जिसने गर्व से हिजकियाह से कहा था: "जिस यहोवा पर आप भरोसा करते हैं, वह आपका प्रभु आपको गौरवान्वित न करे!"' लेकिन ऐसी ईश्वरनिंदा दंडित हुए बिना नहीं रह सकी। क्या आप जानते हैं कि ऐसी ईश्वरनिंदा के लिए एक ही घंटा में कितने हजार सैनिक नष्ट हो गए थे ? तो सावधान रहो, कि कहीं ऐसा ही तुम्हारे साथ न हो, हे हमारे प्रभु यीशु मसीह, परमेश्वर के पुत्र, सर्वशक्तिमान और सर्वसमर्थ, भयानक, जो राजकुमारों के हृदयों में भय उत्पन्न करते

[7416] साबियन और ओमरिाइट, जो अरब की तटरेखा पर एक-दूसरे के निकट रहते थे और उत्पत्ति, भाषा और धर्म के मामले में एक-दूसरे से संबंधित थे, 6ठी शताब्दी में एक ही जनजाति में विलीन हो गए और अक्सर दोनों नामों से एक-दूसरे के स्थान पर बुलाए जाते थे।

[7417] मसीह से पहले, 'हेलेन्स' शब्द का अर्थ यूनानी था, लेकिन पवित्र शास्त्र में यह नाम सामान्य रूप से मूर्तिपूजकों, यूनानियों और अन्य लोगों, दोनों के लिए प्रयुक्त होता है, क्योंकि उनमें से कई यूनानी बोलते थे (तुलना करें प्रेरितों के काम 11:20, 16:1–3)।

[7418] एक विधर्मी वह है जो कलीसिया के धर्मसिद्धान्तों के संबंध में भ्रमित है और जो मनमाने ढंग से ईसाई सत्य को विकृत करता है (2 पतरस 2:1; तीतुस 3:10)।

[7419] ईसाइयों के उत्पीड़क प्रभु यीशु मसीह को इसी तरह संबोधित करते थे – उनका अपमान करने के उद्देश्य से – और यह और भी अधिक इसलिए था क्योंकि रोमियों द्वारा सूली पर चढ़ाकर मृत्यु को निष्पादन का सबसे शर्मनाक रूप माना जाता था।

[7420] दूनान यहूदी महापुजारियों, लिखारियों, फरीसियों और बुजुर्गों द्वारा प्रभु के विरुद्ध की गई निन्दा को दोहराता है, साथ ही उनके साथ सूली पर चढ़ाए गए अपराधियों में से एक द्वारा भी (मत्ती 27:41-43; लूका 23:39)।

[7421] अश्शूर के राजा सनहेरीब के अधीन एक सैन्य कमांडर राप्साक को राजा हिजकियाह के अधीन यहूदा को वश में करने के लिए एक बड़ी सेना के साथ भेजा गया था। लेकिन अश्शूर की सेना (1,85,000 सैनिकों की) को एक ही रात में एक स्वर्गदूत ने मार गिराया, और बचे हुए शर्मिंदगी के साथ अपनी भूमि को लौटने पर मजबूर हो गए (2 राजा 18:13–37; यशायाह 36:37)।

हैं, के ईश्वरनिन्दक! प्रभु तुम्हें भी कुचल सकते हैं और तुम्हारे घमंडी और ईश्वरनिन्दापूर्ण अहंकार को शून्य में बदल सकते हैं। तुम घमंड करते हो कि तुम या तो हमें मसीह से दूर कर दोगे या हमें पूरी तरह नष्ट कर दोगे। यह सच है कि तुम हमें मसीह, हमारे उद्धारकर्ता, से दूर करने की तुलना में हमें नष्ट करने में अधिक सक्षम हो, जिसके लिए हम सभी मरने को तैयार हैं।

ऐसे शब्दों को सहन न कर सका, राजा और भी अधिक क्रोधित हो गया और उसने अपनी पूरी ताकत से शहर की घेराबंदी कर दी, इस इरादे से कि यदि वह शहर को तूफान से नहीं जीत पाता, तो उसे लंबी घेराबंदी के द्वारा भूख से कमजोर कर देगा। शहर के आसपास के ग्रामीण इलाकों, गांवों और जंगली क्षेत्रों में, उसे कई ईसाई मिले; उसने उन्हें पकड़ लिया और विभिन्न तरीकों से मार डाला, जबकि अन्य को उसने गुलामी में बेच दिया। शहर पर कब्जा करने के उसके प्रयास असफल रहे: नागरिकों ने दीवारों से बहादुरी से अपनी रक्षा की और दुष्टों को हरा दिया। राजा और उसकी सेनाओं ने कड़ी मेहनत की, लेकिन वे न तो शहर पर कब्जा कर सके और न ही उसे भूखा मोड़ सके, क्योंकि नागरिकों ने कई वर्षों तक चलने वाले राशन का भंडारण कर रखा था। अपनी आशाओं के टूटने पर, उस अधर्मी राजा ने एक बारीक चाल सोची, और शपथ द्वारा पुष्ट निम्नलिखित शब्दों के साथ राजदूतों को शहर में भेजा:

'मैं न तो तुम्हें कोई हानि पहुँचाना चाहता हूँ और न ही तुम्हें अपने धर्म से भटकाना चाहता हूँ; मैं केवल वह पारंपरिक कर चाहता हूँ जो राजा के रूप में तुम मुझे देने के लिए बाध्य हो। अतः मेरे लिए नगर के द्वार खोल दो, ताकि मैं प्रवेश कर उसका निरीक्षण कर सकूँ। मैं आपसे प्रथागत कर वसूल करूँगा, और मैं ईश्वर व कानून की कसम खाता हूँ कि मैं आपको बड़ा या छोटा कोई भी नुकसान नहीं पहुँचाऊँगा, बल्कि आपको आपके धर्म के अनुसार शांति से जीने दूँगा।

नागरिकों ने उन्हें उत्तर दिया:

'हम ईसाइयों ने पवित्र शास्त्र से यह सीखा है कि राजा की आज्ञा मानी जाए और अधिकारियों के अधीन रहा जाए (रोमियों 13:1–2)। यदि आप अपनी कसम के अनुसार हमारे प्रभु यीशु मसीह से हमें दूर नहीं करेंगे, तो हम आपके लिए शहर के द्वार खोल देंगे। एक राजा की तरह प्रवेश करो और हमसे प्रथागत कर वसूल करो। लेकिन अगर तुमने हमें कोई हानि पहुँचाई, तो ईश्वर, जो तुम्हारी कसमें सुनता है, तुम्हें जल्द ही दंड देगा। और हम अपने उद्धारकर्ता मसीह से कभी मुँह नहीं मोड़ेंगे, भले ही हमें न केवल अपनी संपत्ति बल्कि अपनी जान भी गँवानी पड़े।"

राजा ने फिर गंभीरतापूर्वक शपथ ली कि वह उन्हें थोड़ी भी हानि नहीं पहुँचाएगा। उस पर विश्वास करके उन्होंने नगर के द्वार खोल दिए और दुष्ट व्यक्ति के सामने झुककर उसे उपहार भेंट किए। राजा अपनी पूरी सेना के साथ शहर में प्रवेश किया, जैसे भेड़ के भेस में भेड़िये का झुंड में घुसना; उसने शहर की दीवारों और द्वारों पर कब्ज़ा कर लिया और उन्हें अपनी सेना से घेर लिया। शहर की सुंदरता और उसमें रहने वाले लोगों की भीड़ देखकर, उसने उनके साथ दयालुता से पेश आया, क्योंकि अभी तक उसने अपने हृदय में छिपी विष को छुपा रखा था। शहर में थोड़ी देर आराम करने के बाद, उसने एक बार फिर अपने सैनिकों की कमान संभाली और अपनी बनाई गई अधर्मी योजना को अमल में लाने की इच्छा से, सम्मानित लोगों और शहर के कमांडरों को अपने सामने आने का आदेश दिया। उसके आदेश पर, शहर में रहने वाले सभी लोग—सम्मानित बुजुर्ग और नेता, सम्मानित और अमीर लोग—उससे मिलने के लिए बाहर आए। उनमें धन्य अरेफस थे, जो आयु और ज्ञान में सबसे बड़े, और पद व सम्मान में सबसे विशिष्ट थे। पचानबे वर्ष के, वह एक राजकुमार और सैन्य कमांडर थे जिन्हें शहर के पूरे प्रशासन का प्रभार सौंपा गया था। उनके बुद्धिमानी भरे परामर्श और विवेकपूर्ण शासन के कारण, नागरिक लंबे समय से बहादुरी से अपने दुश्मनों का विरोध कर रहे थे। अरेफा के नेतृत्व में, कानूनहीन राजा के सामने उपस्थित होकर, नागरिकों ने उसे उचित सम्मान दिया और उसके इरादों के लिए धन्यवाद दिया, क्योंकि उसने शपथ ली थी कि वह उन्हें कोई नुकसान नहीं पहुँचाएगा। वे अभी तक उसकी चालाकी से अनजान थे। हालाँकि, वह अपने विष को लंबे समय तक छिपा नहीं सका और उसने तुरंत उस द्वेष को प्रकट कर दिया जिसे उसने चालाकी से अपने भीतर पाला था: उसने नागरिकों से की गई अपनी कसम को बच्चों का खेल बताकर खारिज कर दिया और आदेश दिया कि सभी नागरिकों को संत एरेफस के साथ जंजीरों में बाँधकर हिरासत में ले लिया जाए। इसके बाद, उसने उनके घरों में लोग भेजकर उनकी संपत्ति लूट ली। उसने यह भी पूछा कि उनका बिशप पॉल कहाँ है:[7422] । जब उसे पता चला कि बिशप का दो साल पहले निधन हो गया था, तो उसने उसकी कब्र खोदने का आदेश दिया; मृतक के शव को निकालकर, उसने उसे जला दिया

[7422] कुछ के अनुसार, बिशप पॉल को डुनान के आदेश पर मार डाला गया था। जब राजा ने उनके बारे में पूछा, तो उसने अपनी अनिश्चितता व्यक्त की: क्या उसका आदेश वास्तव में पूरा हुआ है?

और उसकी राख हवा में बखिेर दी। फरि, एक वशिाल अलाव जलाकर, उसने चार सौ सत्ताइस की संख्या में बहुत सारे पुरोहतिों, धर्मकर्मयिों[7423] , भक्षिुओं, भक्षिुणयिों और ईश्वर को समर्पति कुंवारी कन्याओं को इकट्ठा कयिा, और उन्हें आग में फेंककर जला दयिा, यह कहते हुए:

'दूसरों के वनिाश के लिए वे ही दोषी हैं, क्योंकि उन्होंने लोगों को सूली पर चढ़ाए गए को ईश्वर के रूप में पूजा करने की सलाह दी।'

इसके अलावा, उसने उद्घोषकों को पूरे शहर में यह घोषणा करने का आदेश दयिा कि सभी को मसीह का त्याग करना चाहिए और यहूदी कानून के अनुसार जीना चाहिए, ठीक वैसे ही जैसे राजा ने कयिा।

तब उसने शहर के प्रमुख नागरकिों को, जन्हिें जेल में रखा गया था, बुलाया और उनसे, और वशिेष रूप से अरेफेस से, बात करना शुरू कयिा:

'यह तुम्हारा कैसा पागलपन है—कि तुम सूली पर चढ़ाए गए को ईश्वर मानते हो! क्या एक ईश्वर जो शरीरहीन है, पीड़ा सह सकता है? या क्या अमर मर सकता है? नश्चिय ही तुम में से कुछ ऐसे हैं जो नेस्टोरयिस[7424] के उदाहरण का अनुसरण करते हुए, मसीह की पूजा ईश्वर के रूप में नहीं बल्कि एक पैगंबर के रूप में करते हैं?' मैं आपको सूर्य, चंद्रमा या कसिी भी प्राणी की पूजा करने के लिए नहीं कह रहा हूँ; मैं आपको मूर्तपिूजक देवताओं को नहीं, बल्कि केवल सभी प्राणयिों के सृष्टकिर्ता, ईश्वर को बलदिान चढ़ाने के लिए बाध्य कर रहा हूँ।

इन शब्दों पर संत अरेफास ने सभी की ओर से उत्तर दयिा:

'हम जानते हैं कि दव्यिता पीड़ा सहन नहीं कर सकती, परन्तु मानवता, जो परम पवत्रि कुँवारी से यीशु मसीह के द्वारा गर्भ में धारण की गई थी, ने हमारे लिए पीड़ा सहन की, जैसा कि उन भवष्यिद्वक्ताओं ने गवाही दी है जनिसे आप भी परचिति हैं; जबकि प्रभु मसीह ने अपने दव्यि चमत्कारों के द्वारा अपनी दव्यिता प्रकट की। परन्तु लंबी बहसों की क्या आवश्यकता है? हम यह स्वीकार करते हैं कि वह ईश्वर और ईश्वर का पुत्र है, और शहर के सभी नागरकिों की ओर से हम यह घोषणा करते हैं कि हमारे ईश्वर, यीशु मसीह के लिए, कोई भी यातना ऐसी नहीं है जसिे हम सहने के लिए तैयार न हों। हमें नेस्टोरयिस की कोई परवाह नहीं है, जसिे पवत्रि पतिाओं ने नदिति कयिा था: हम मसीह में व्यक्तयिों के बीच अंतर नहीं करते[7425] , बल्कि विश्वास करते हैं कि उसकी मानवता एक ही दव्यि व्यक्तत्वि में दव्यिता के साथ संयुक्त है। और जहाँ तक तुम्हारा सवाल है, जो हमारे प्रभु के वरिुद्ध अपमानजनक शब्द बोलते हो, इस अपमान और अपनी कसम तोड़ने के लिए ईश्वर का दंड शीघ्र ही तुम पर पड़ेगा।

यातना देने वाले ने इन शब्दों को धैर्यपूर्वक सुना (क्योंकि वह अरेफा की बुद्धमित्ता और अन्य नागरकिों की कुलीनता से लज्जति था), और उपहारों और सम्मानों का वादा करते हुए, दयालु शब्दों से उनके दलिों को जीतना शुरू कर दयिा; इस तरह वह मसीह के प्रति उनकी भक्ति और उत्साह को अपनी दुष्टता की ओर मोड़ना चाहता था। लेकनि उन्होंने, स्वर्ग की ओर अपनी दृष्टि उठाकर, एक स्वर में पुकार लगाई:

'हे परमेश्वर के एकलौते पुत्र, यीशु मसीह, हम आपको नहीं त्यागते; हम पवत्रि कन्या के आपके पवत्रि जन्म से भटकति नहीं हैं, और न ही हम आपके सम्मानति क्रूस का उपहास करते हैं।'

इन पवत्रि पुरुषों के अपने वश्विास में दृढ़ता को देखकर, राजा ने कुछ समय के लिए उनके यातना देने को टाल दयिा और लोगों के खलिाफ हो गया, और कई लोगों को नर्दियता से पीटा। उसने उन पवत्रि शहीदों की पत्नयिों और बच्चों को, जन्हिें अरेफस के साथ बेड़यिों में बंद करके रखा गया था, अपने सामने लाने का आदेश दयिा। इन सदाचारी महलिाओं के साथ अन्य महलिाओं का भी एक बड़ा समूह आया, जसिमें वधिवाएँ, कुंवारी और नन शामलि थीं। पहले तो राजा ने उन्हें चापलूसी से लुभाने की कोशशि की, लेकनि फरि उन्हें यातनाओं की धमकी दी, और मसीह का त्याग करने के लिए कहा।

[7423] क्लर्क – चर्च के पादरी वर्ग के सदस्य।

[7424] नेस्टोरयिस – 429 से कॉन्स्टेंटनिोपल के बशिप। मोप्सुएस्टयिा के बशिप थयिोडोर की शक्षिाओं का अनुसरण करते हुए, उन्होंने यह दावा कयिा कि यीशु मसीह सच्चे ईश्वर नहीं, बल्कि जोसेफ और मरयिम के पुत्र एक मनुष्य हैं, जन्हिें उनके जीवन की पवत्रिता के कारण परमेश्वर से एक वशिेष अनुग्रह प्रदान कयिा गया था, और जो हमें उद्धारक मृत्यु के माध्यम से नहीं, बल्कि अपनी शक्षिाओं और अपने जीवन के उदाहरण के माध्यम से बचाते हैं। इस धर्मद्रोह के लिए, नेस्टोरयिस को तीसरे सार्वभौमकि परषिद में चर्च से बहष्कृत कर दयिा गया और 436 में थेबाइड में उनकी मृत्यु हो गई।

[7425] चौथे सार्वभौमकि परषिद (451) के नर्णिय के अनुसार, यीशु मसीह में दो स्वभाव 'बनिा मश्रिण, बनिा परविर्तन, बनिा वभिाजन, और बनिा अलगाव' के एकजुट हैं।

उन्होंने न केवल ऐसा करने से इनकार कर दिया, बल्कि उन्होंने ऐसे शब्दों में जवाब दिया जिससे राजा का गुस्सा सातवें आसमान पर पहुँच गया। विशेष रूप से समर्पित कुंवारी महिलाओं ने राजा की निंदा की, और उसे उसके अधर्मीपन के लिए फटकारा। उनकी दृढ़ता को सहन न कर पाकर, राजा ने अपने सैनिकों को आदेश दिया कि वे सभी को तलवार से मार डालें। वे एक उत्सव के लिए जाते हुए अपनी मृत्यु को प्राप्त करने गईं। उसी क्षण, उनके बीच एक विवाद खड़ा हो गया: समर्पित कुंवारी महिलाओं ने, पहले मरने की इच्छा से, अन्य महिलाओं से कहा:

'तुम जानती हो कि मसीह की कलीसिया में हमें दूसरों की तुलना में अधिक सम्मान दिया जाता है। याद करो कि हम हमेशा पहला स्थान लेती थीं: हम प्रभु के मंदिर में सबसे पहले प्रवेश करती थीं, सबसे पहले परम पवित्र रहस्यों में भाग लेती थीं, और हम मंदिर में सबसे प्रमुख स्थान पर खड़ी और बैठी रहती थीं। इसलिए, यह उचित है कि हम यहाँ शहादत का सम्मान प्राप्त करने वाली पहली हों; हम ही हैं जो मरना चाहती हैं और आप और आपके पतियों से पहले हमारे वधूवर, यीशु मसीह के पास जाना चाहती हैं।"

अन्य पत्नियाँ एक-दूसरे से होड़ कर रही थीं, तलवार के नीचे अपने सिर झुका रही थीं। इसी प्रकार, छोटे बच्चे मरने के लिए उत्सुक होकर अपनी माताओं के बीच धक्का-मुक्की कर रहे थे, और हर बच्चा ज़ोर से चिल्लाया:

'मेरा सिर काट दो, मुझे मार डालो!'

मसीह के लिए मरने की उनकी उत्सुकता इतनी अधिक थी कि वह दुष्ट यहूदी दुनान और उसके सभी कुलीनों को चकित कर गई। और अधर्मी राजा ने कहा:

'अहो, उस गलीलवासी,[7426] , ने लोगों को इतना कैसे बहका दिया कि वे मृत्यु को कुछ नहीं समझते, और उसकी खातिर अपनी आत्मा और शरीर दोनों को नष्ट कर देते हैं!'

उसी नगर नागरां में सनिक्लटिकिया नाम की एक विधवा रहती थी, जो कुलीन और सदाचारी थी, चेहरे से सुंदर पर आत्मा से और भी अधिक सुंदर – संपत्ति में धनी पर सद्गुणों में और भी अधिक धनी। कम उम्र में ही विधवा हो जाने के कारण, वह अपने दो बेटियों के साथ घर पर उपवास और प्रार्थना में अपना समय बिताती थी। वह दोबारा शादी नहीं करना चाहती थी, बल्कि मसीह से स्वयं का विवाह कर लिया था, और दिन-रात उनकी सेवा करती थी। यद्यपि वह उम्र में जवान थी, परन्तु प्रभु की आज्ञाओं का पालन करने में वह अपनी उम्र से कहीं अधिक बुद्धिमान थी – यहाँ तक कि बुजुर्गों से भी अधिक बुद्धिमान। उसके बारे में सुनकर, दुष्ट यहूदी दुनान ने सिक्लिटिकिया और उसकी बेटियों को सम्मान के साथ अपने सामने लाने का आदेश दिया। जब वह आई, तो राजा ने उसे स्नेहपूर्वक देखा और, एक मधुर स्वर में, उससे बात करना शुरू किया:

'हमने आपके बारे में सुना है, आदरणीय महिला, कि आप कुलीन, पवित्र और बुद्धिमान हैं। आपका चेहरा और आपका संपूर्ण आचरण इस बात की गवाही देते हैं कि आपके बारे में जो कुछ भी कहा गया है वह सब सच है। तो उन मूर्ख स्त्रियों की नकल करने का प्रयत्न न करो जिन्हें मैंने उनकी मूर्खता के कारण नष्ट कर दिया है; उसे ईश्वर न कहो जिसे क्रूस पर चढ़ाया गया था, क्योंकि वह एक पेटू, महसूल वसूलने वालों और पापियों का मित्र था (मत्ती 11:19), और हमारे पूर्वजों के नियमों का विरोधी था। तो, अपने कुलीन जन्म के अनुरूप आचरण करो; नासरी[7427] का परित्याग करो और हमसे सहमत रहो। और तुम रानी के साथ राजसी कक्षों में रहोगी, सभी द्वारा सम्मानित, और तुम विधुरता से जुड़ी सभी दुर्भाग्यों से मुक्त, आराम से जीवन यापन करोगी। हमने आपकी अच्छी ख्याति के बारे में सुना है, और तथ्य स्वयं इसकी पुष्टि करते हैं। वास्तव में, आपके पास बहुत धन-संपत्ति है, हर तरह की बहुत सारी संपत्तियाँ, पुरुष और महिला दास हैं; आप सभी द्वारा सम्मानित हैं, युवा और सुंदर हैं; फिर भी, इस सारी समृद्धि के बावजूद, आपने दूसरी बार शादी करने की इच्छा नहीं की है। यह भी कहा जाता है कि आप सदाचारी और विवेकी हैं। अब जैसा आपको करना चाहिए, वैसा करें: अंत तक विवेकी बने रहें, मेरी सुठली सलाह पर ध्यान दें, और अपनी सुंदरता और जवानी, तथा अपने बच्चों की मासूमियत को उन यातना देने वालों के हाथों में सौंपने का विचार भी न करें, जो आपको पीड़ा से अधिक शर्म और अपमान लाएंगे। क्रूस

[7426] प्रभु ने फिलिस्तीन के अन्य क्षेत्रों की तुलना में गलील में सुसमाचार का प्रचार अधिक बार किया। गलील से उन्होंने यरूशलेम की यात्राएँ कीं; गलीलियों में से उन्होंने अपने प्रेरितों को चुना; और मृतकों में से जी उठने के बाद उन्होंने गलील में ही प्रकट हुए। अन्य यहूदियों को गलीलियों से लगाव नहीं था, और 'गलीली' शब्द का प्रयोग तिरस्कारपूर्वक किया जाता था (मत्ती 13:64–67; यूहन्ना 7:41–62)। इस मामले में, दुनान यहूदियों और जूलियन द एपोस्टेट के उदाहरण का अनुसरण करते हैं, जिन्होंने प्रभु यीशु मसीह को एक गलीली कहा था

[7427] यहूदी प्रभु यीशु मसीह के लिए इसी तरह का उल्लेख करते थे, क्योंकि उन्होंने अपना अधिकांश सांसारिक जीवन इसी छोटे और गरीब कस्बे में बिताया (मत्ती 2:23)।

पर चढ़ाए गए की स्तुति करना बंद करो और हमारे कानूनों के आगे समर्पण करके, अपने और अपने बच्चों के लिए जो सबसे अच्छा है उसे चुनो।

धन्य और सम्माननित महिला ने राजा को इन शब्दों में उत्तर दिया:

हे राजा, तुम्हें उस का सम्मान करना चाहिए जिसने तुम्हें अधिकार, यह बैंगनी चोगा और यह राजमुकुट[7428] दिया—वास्तव में, उससे भी अधिक: उसने तुम्हें अस्तित्व और स्वयं जीवन दिया। वह ईश्वर का पुत्र और स्वयं ईश्वर हैं। फिर भी, तुमने उनसे मिली इतनी बड़ी कृपा के लिए कृतघ्नता दिखाई है, और अभद्र शब्दों से अपने उपकारी की निंदा की है। क्या तुम्हें डर नहीं लगता कि ऊपर से गरज की आवाज़ तुम्हें गिरा देगी? तुम मुझे बड़े सम्मान देना चाहते हो, लेकिन मैं तुम्हारे सम्मान को अपने लिए अपमान समझता हूँ, और मैं ऐसी जीभ से प्रशंसा नहीं चाहता जो मेरे ईश्वर का अपमान करती हो। और मैं इतना मूर्ख भी नहीं हूँ कि पापियों के घरों में ईश्वर के शत्रुओं के साथ रहूँ।

यह सुनकर राजा क्रोध से भर गया और अपने दरबारियों की ओर मुड़कर बोला:

'क्या तुम देखती नहीं कि यह घृणित स्त्री कितनी निर्लज्जता से हम पर कीचड़ उछाल रही है!'

तब उसने आज्ञा दी कि सिक्लिटिकी और उसकी बेटियों के सिर से घूंघट हटा दिया जाए, और उसे शहर में बिना घूंघट और बिखरे बालों के साथ उपहास और मज़ाक का विषय बनाकर घुमाया जाए। जब उसे अपमानित होकर शहर की सड़कों से ले जाया जा रहा था, तो उसने देखा कि कई महिलाएं उस पर हो रहे उपहास और शर्म से रो रही थीं। उनकी ओर मुड़कर, उसने कहा:

'मैं जानती हूँ, मेरे मित्रों, कि तुम मेरे लिए दुखी हो, कि मैं और मेरी बेटियाँ अपमानित की जा रही हैं! लेकिन जब मैं आनंदित हूँ तो तुम दुखी मत हो, और जब मैं प्रसन्न हूँ तो तुम रोओ नहीं। यह दिन मेरे विवाह के दिन से भी अधिक आनंद का है, क्योंकि मैं अपने वधू-वर[7429] के लिए दुख सह रही हूँ, जिनके लिए मैंने अपनी विधिवावस्था को पवित्रता में संरक्षित रखा है। उनकी खातिर मैंने अपनी प्रिय बेटियों की निर्मल कुँवारीपन की रक्षा भी की है। मैं अब आनंदित हूँ कि मेरा प्रभु मेरी पीड़ा देखता है, मेरा स्वीकार सुनता है और मेरे उत्साह को जानता है; मैंने न तो सम्मान चाहा है, न ही धन-संपत्ति, और न ही मैं इस क्षणिक जीवन की कामना करती हूँ। मेरी एकमात्र इच्छा मसीह को पाना है, पवित्र शहीदों की संगति में उनके सामने प्रकट होना है, और उन्हें मेरे गर्भ का फल—मेरी ये बेटियाँ—समर्पित करना है। अत; मैं आपसे विनती करती हूँ, हे मेरी बहनों, मेरे लिए रोएँ नहीं, बल्कि मेरे साथ इस बात पर आनन्द मनाएँ कि मैं अपने अमर स्वर्गीय वधू-वर के साथ एक होने जा रही हूँ।

इसके बाद, उसे एक बार फिर से राजा के सामने लाया गया। राजा ने उससे कहा:

'मसीह की अपनी स्वीकारोक्ति से मुंह मोड़ो, और तुम जीवित रहोगी।'

संत ने उत्तर दिया:

'यदि मैं इस क्षणिक जीवन के लिए मसीह का त्याग कर दूँ, तो कौन मुझे अनंत मृत्यु और न बुझने वाली आग से बचाएगा?'

तब, स्वर्ग की ओर अपनी आँखें उठाकर, उसने कहा:

हे अमर राजा, ऐसा कभी न हो कि मैं आपको, ईश्वर के एकमात्र पुत्र को, त्याग दूँ और उस अपमानजनक भाषा बोलने वाले तथा शपथ-भंग करने वाले की सुनूँ, जिसने चालाकी से नगर पर कब्जा कर लिया है और आपकी पवित्र चर्च को सता रहा है।

राजा क्रोध से भर गया और चिल्लाया:

'हे घृणित स्त्री! मैं इसी क्षण तेरा शरीर चूर-चूर कर दूँगा, तेरा गर्भ फाड़ डालूँगा, तुझे कुत्तों के आगे फेंक दूँगा कि वे तुझे नोच-नोच कर खा जाएँ, और देखूँगा कि क्या वह नासरी, जिसमें तू अपनी आशा रखती है, तुझे मेरे हाथों से बचा पाएगा!'

[7428] पोर्फ़ायरा एक महँगा बैंगनी वस्त्र है, जो एक लंबी चोगा के रूप में होता है, और जिसे शासक औपचारिक अवसरों पर पहनते हैं। डायडेम एक शाही मुकुट है।

[7429] यह शब्द, बेशक, प्रभु यीशु मसीह, जो अपनी कलीसिया और हर एक मसीही आत्मा के वधू-वर हैं, के लिए प्रयुक्त होता है (प्रेम गीत 4:9; यूहन्ना 3:29; मत्ती 25:13)।

अपनी यातना देने वाले के ये शब्द सहन न कर सकी, सक्लिटिकी की बारह वर्षीय बड़ी बेटी ने उसके मुँह पर थूक दिया। तुरंत ही, वहाँ खड़े नौकरों ने उसका सिर काट दिया, और उसके साथ ही उन्होंने उसकी छोटी बहन को भी तलवार से मार डाला।

इस प्रकार दोनों बेटियाँ अपनी प्रशंसनीय माँ की आँखों के सामने ही मर गईं। तब राजा ने आदेश दिया कि उनका खून इकट्ठा करके उनकी माँ के होठों पर लाया जाए, ताकि वह उसे पी सके। खून का स्वाद चखने के बाद, उसने कहा:

'हे प्रभु मेरे परमेश्वर, मैं आपकी स्तुति करती हूँ, क्योंकि आपने मुझे अपनी दीन बेटियों की पवित्र बलि का स्वाद चखने का सौभाग्य दिया। हे प्रभु मसीह, मैं यह बलिदान आपको अर्पित करती हूँ। इन शहीदों को, इन पवित्र कुंवारी कन्याओं को, जो मेरी कोख से निकलीं, मैं तुझे अर्पित करती हूँ। मुझे इनके साथ मिलाकर, मुझे अपने महल में ले आ, और, जैसा कि संत दाऊद कहते हैं, मुझे *'अपने बच्चों में आनंदित एक माँ के रूप में* प्रकट कर (भजन संहिता 112:9)।

तब यातना देने वाले ने आज्ञा दी कि उसकी तलवार से गर्दन काट दी जाए। इस प्रकार वह माता अपनी बेटियों के साथ अनंत आनंद के धाम में प्रवेश कर गई। लेकिन यातना देने वाले ने शपथ के साथ घोषणा की:

'मैंने अपने जीवन में कभी भी इतनी सुंदर महिला या इतनी प्यारी कन्याएं नहीं देखीं, जिन्होंने न तो अपनी सुंदरता की परवाह की और न ही अपनी जान की।'

अगले दिन, एक ऊँचे स्थान पर बैठकर, राजा ने अरेफ और उसके साथियों को, जिनकी संख्या तीन सौ चालीस पुरुष थी, बुलाया। जब वे उपस्थित हुए, तो राजा ने अरेफ को सबसे बड़ा मानकर संबोधित करते हुए कहा:

'हे नीच मनुष्य, तूने हमारे अधिकार के विरुद्ध विद्रोह किया है, पूरे नगर को हमारे विरुद्ध भड़काया है और उन्हें हमसे लड़ने की आज्ञा दी है। तूने नागरिकों को अपने शब्दों का पालन करने के लिए मजबूर किया है मानो वे कानून हों, जबकि तू हमारे कानूनों और आदेशों को अस्वीकार करता है।' तुमने लोगों को सिखाया है कि सूली पर चढ़ाए गए को ईश्वर के रूप में सम्मानित करें, और उस व्यक्ति को सहायक मानें जिसने स्वयं को सूली पर चढ़ाए जाने के समय स्वयं की सहायता नहीं की। तुम अपने पिता का अनुसरण क्यों नहीं करते, जिसने नागराज पर शासन करते हुए, हमसे पहले के राजाओं की आज्ञा मानी? सचमुच, तुम और तुम्हारे सभी अनुयायी यातनाओं के पात्र हो, ठीक वैसे ही जैसे वे पुरुष और महिलाएँ जिन्हें हमने पहले ही मार डाला है, जिनकी मरियम के पुत्र और बढ़ई[7430] ने कोई भी मदद नहीं कर सके।

उस क्षण, बुजुर्ग गहरे विचार में डूबा रहा, और उस अधर्मी राजा के घमंडी शब्दों से बहुत कष्ट सह रहा था। फिर उसने अपने हृदय की गहराई से एक आह भरते हुए कहा:

हे राजा, जो कुछ भी हुआ है, उसके लिए दोषी आप नहीं, बल्कि हमारे नागरिक हैं, जिन्होंने मेरी सलाह पर ध्यान नहीं दिया। मैंने उन्हें सलाह दी थी कि वे तुम्हारे लिए शहर के द्वार न खोलें – एक चालाक और धूर्त व्यक्ति – बल्कि तुम्हारे खिलाफ बहादुरी से लड़ें। फिर भी उन्होंने मेरी बात पर ध्यान नहीं दिया। मैं एक छोटी टुकड़ी के साथ तुम्हारी सभी सेनाओं के खिलाफ निकलना चाहता था, जैसा कि गिदोन ने एक बार मिद्यानियों के खिलाफ किया था[7431] , क्योंकि मैंने अपनी आशा अपने मसीह, में रखी थी, जिसकी तुम अब निंदा करते हो। वह मुझे तुम पर विजय प्राप्त करने, तुम्हें पराजित करने और अपमानित करने में मदद करता, हे अधर्मी शपथ-भंगकर्ता, जिसने उस संधि को भूल गया है जिसे हमने स्थापित किया था, जिसके तहत तुमने गंभीरतापूर्वक वादा किया था कि तुम शहर और उसके नागरिकों को क्षमा करोगे।

राजा के साथ बैठे उन लोगों में से एक ने संत से कहा:

'क्या मूसा का व्यवस्था यही सिखाती है? यह आज्ञा देती है: *"तुम अपने लोगों में किसी अधिकारी की निंदा न करना"* (निर्गमन 22:28)। इसके अलावा, तुम्हारी अपनी पवित्र पुस्तक तुम्हें राजा का सम्मान करना सिखाती है, न केवल दयालु और सौम्य का, बल्कि कठोर का भी' (1 पतरस 2:17–18)।

संत ने उत्तर दिया:

क्या तुमने यह नहीं सुना कि भविष्यवक्ता एलियाह ने आहाब से क्या कहा था? जब आहाब ने एलियाह से कहा, "क्या तुम वही हो जो इस्राएल को भटका रहा है?", तो एलियाह ने उत्तर दिया, "इस्राएल को भटकाने वाला मैं नहीं हूँ,

---

[7430] दुनन ने प्रभु यीशु मसीह को केवल एक मनुष्य, मरियम और यूसुफ का पुत्र माना।

[7431] गिदोन – इस्राएल का एक न्यायकर्ता (1245 ईसा पूर्व)। मध्यियों से इस्राएल को मुक्ति दिलाने के लिए परमेश्वर द्वारा बुलाए गए, उन्होंने 300 निहत्थे योद्धाओं के साथ रात में दुश्मन के शिविर को घेर लिया और उन्हें इतना भ्रमित कर दिया कि वे एक-दूसरे को मारते हुए भाग गए और बाद में नष्ट हो गए (न्यायियों 7:1–25)। मिदियानी अरब में रहते थे। केतुरा से अब्राहम के पुत्र मिदियन की संतान होने के कारण, वे ओमी लोगों के रिश्तेदार थे। यही कारण है कि संत अरेफ उनका उल्लेख करते हैं।

बल्कि तुम और तुम्हारे पिता का घर है" ([7432])। देखो: उसने न केवल अहब को ही डांटा और निन्दा की, बल्कि उसके पूरे घर को भी; फिर भी उसने कानून नहीं तोड़ा। वास्तव में, जो कोई भी भक्तिपूर्वक परमेश्वर का सम्मान करता है, वह एक दुष्ट राजा की उसके दुष्टता के लिए निन्दा करते समय कानून नहीं तोड़ता—एक ऐसा राजा जो परमेश्वर की निन्दा करने और सृष्टिकर्ता की बदनामी करने से नहीं डरता था। फिर भी मैं देखता हूँ कि तुम ईश्वर की दीर्घ सहनशीलता को तुच्छ समझते हो और चाहते हो कि हम भी वैसा ही करें जैसा तुम करते हो। हे अन्यायी, अधर्मी और अमानवीय राजा! क्या तुमने हमारे साथ वैसा व्यवहार किया जैसा तुमने वादा किया था? क्या ऐसा व्यवहार एक राजा के लिए उपयुक्त है? क्या तुम्हारे से पहले के राजा ऐसे थे? सचमुच, वे ऐसे नहीं थे, बल्कि अच्छे और दयालु, कृपालु और न्यायप्रिय थे; उन्होंने अपना वचन निभाया और अपने लोगों पर दया दिखाई। लेकिन तुम, एक शपथ-भंग करने वाले, मानव रक्त से तृप्त नहीं हो सकते! तो जान लो, कि सिर्वज्ञ ईश्वर जल्द ही तुम्हें शाही सिंहासन से उखाड़ फेंकेगा और उसे एक ऐसे पुरुष को देगा जो वफादार और नेक है; इसी प्रकार, वह ईसाई धर्म को स्थापित और उन्नत करेगा और उस चर्च का पुनर्निर्माण करेगा जिसे तुमने जलाकर खाक कर दिया है और धूल-धूसरित कर दिया है। जहाँ तक मेरी बात है, मैं खुद को धन्य मानता हूँ, क्योंकि अपनी इस बुढ़ापे में—पचानबे साल की उम्र में—अपने पोते-पोतियों और अपनी बेटियों को देखकर, मैं शहीद की मौत को स्वीकार करता हूँ और अपने पैतृक शहर को ईश्वर की बलिदान के रूप में अर्पित करता हूँ।

तब लोगों और अपने साथी शहीदों की ओर मुड़कर, उन्होंने इस प्रकार कहना शुरू किया:

नागरिकों, मित्रों और मेरे प्रियजनों! हमें इस अधर्मी राजा की शपथों और कपटपूर्ण शब्दों पर विश्वास करने के लिए धोखा दिया गया था; लेकिन अब, हम उसकी झूठबोल और उसके धर्मनिंदा करने वाले शब्दों को सुन रहे हैं। हमने उससे युद्ध में लड़कर और अंत तक दृढ़ रहकर विरोध करना चाहिए था! ईश्वर हमें उसे हराने में मदद करता। लेकिन चूँकि हालात अब अलग हो गए हैं, और अब हम एक विकल्प का सामना कर रहे हैं: या तो दुश्मन के आगे झुक जाएँ और इस क्षणभंगुर दुनिया में एक दुखद जीवन जिएँ, या फिर झुकने से इनकार करके एक धन्य अंत प्राप्त करें – आइए हम कष्ट सहकर अमर महिमा प्राप्त करने का प्रयास करें। शहादत से अधिक गौरवपूर्ण और क्या हो सकता है, और मसीह के लिए कष्ट सहने से अधिक सम्मानजनक और क्या! बहुत समय से मैं मसीह के लिए यातनाएँ सहने के विचार और इच्छा को अपने मन में पालता रहा हूँ। अब, जब मुझे वह मिल गया जिसकी मुझे इच्छा थी और वह मिल गया जिसकी मैं खोज में था, तो मैं आनंदित हूँ और तुरंत मरने के लिए तैयार हूँ। हे भाइयों, तुम डरना मत और हतोत्साहित मत होना; इस क्षणिक जीवन से कोई लगाव मत दिखाओ, कहीं ऐसा न हो कि तुम इसके लिए अपना अनंत जीवन खो दो। इसी तरह, हमारा यातनाकर्ता भी घमंड करेगा यदि वह धमकियों से हमें डराकर हम में से किसी को भी पवित्र विश्वास से भटका दे; वह अपने घमंड में इस प्रकार आनंदित होगा, मानो उसने हम सभी को जीत लिया हो, और वह परमेश्वर के पुत्र के विरुद्ध अपनी निन्दा को दोगुना कर देगा। परन्तु यदि हम में कोई ऐसा है जो मृत्यु से डरता है और मसीह—अनन्त जीवन—को त्यागने का विचार करता है, तो वह तुरन्त हमारे बीच से चला जाए, वह स्वयं को हमारी एकजुट और समान विचारधारा वाली सभा से अलग कर ले, और व्यर्थ में मसीही का नाम न ले। जो कोई भी इस क्षणिक जीवन के लिए तुझे, हे मसीह, परमेश्वर के वचन को नकारता है, वह उसे खो दे! लेकिन यदि मेरे किसी संबंधी या पड़ोसी ने, सांसारिक वस्तुओं की लालसा में आकर, आपको, हे सृष्टिकर्ता, त्याग दिया और दुष्ट राजा के पदचिन्हों पर चल पड़ा, तो हे राजा मसीह, उसे उस वस्तु का आनंद लेने न दें जो उसे अच्छी और सुखद प्रतीत होती है, बल्कि उस पर हर प्रकार की विपत्तियाँ और दुर्भाग्य आ पड़े!

जब संत ने यह कहा, तो सभी ईसाइयों ने, बिना किसी अपवाद के, गर्म आँसू बहाते हुए, कहा:

'प्रसन्न रहो, हमारे नेता और शिक्षक! कोई भी आपको नहीं छोड़ेगा; कोई भी हमारे समूह से अलग नहीं होगा। हम सभी आपके सामने मसीह के लिए मरने और एक धन्य अंत प्राप्त करने के लिए तैयार हैं।'

संत ने उत्तर दिया:

'मैं तुमसे पहले जाऊँगा; मैं पहले मरूँगा और तुम्हारा अगुआ बनूँगा। जैसे तुमने मुझे नगर में अगुवाई दी, वैसे ही मुझे यहाँ मसीह के सामने सबसे पहले प्रस्तुत होने दो।'

तब संत ने जोड़ा:

[7432] (3 राजा 18:17–18)। ओम्री का पुत्र अहब, इस्राएल का राजा (924–903 ईसा पूर्व)। उसने इस्राएल में बाअल और अस्तारोथ की उपासना शुरू की। तिश्बी के भविष्यवक्ता एलियाह ने दुष्ट राजा की कड़ी निंदा की (3 राजा 17–19)।

'यदि मेरे किसी पुत्र का पवित्र विश्वास में जीवित बचे रहना, तो वह मेरी संपत्ति का वारिस बने। इनमें से, मैं तीन गाँव पवित्र चर्च को विरासत में देता हूँ, जिसे जल्द ही बहाल किया जाएगा। क्योंकि यह अधर्मी यातना देने वाला शीघ्र ही नष्ट हो जाएगा, और इस नगर में मसीह की कलीसिया स्थापित होगी और एक रक्तिम फूल की तरह फल-फूलगी, जो मसीह के इतने सारे सेवकों के रक्त में नहाया हुआ है।

यह कहने के बाद, संत ने लोगों को आशीर्वाद दिया, और, अपने हाथ उठाकर तथा अपनी आँखें स्वर्ग की ओर उठाकर, उन्होंने पुकारा:

'हे प्रभु, जो कुछ भी हुआ है, उसकी महिमा तुम्हें हो!' राजा की ओर मुड़कर, उन्होंने कहा:

'हे राजा, मैं तुम्हारा धन्यवाद करता हूँ कि तुमने मेरे शब्दों को बीच में न टोकने का धैर्य दिखाया, बल्कि मुझे अपने मित्रों से बातचीत करने का समय दिया। अब और देरी मत करो, बल्कि जो तुम्हें ठीक लगे करो, क्योंकि तुम हमारा दृढ़ निश्चय देख रहे हो; तुमने हमारी सोच जान ली है और देख रहे हो कि हमारे लिए मसीह का त्याग करना और तुम्हारी अधर्मीता का अनुसरण करना असंभव है।

उनकी दृढ़ता देखकर, राजा ने उन सभी को मृत्युदंड की सजा सुनाई; संतों को ओडियास नामक एक धारा पर सिर कलम करके मारने के लिए ले जाया गया। जब वे निर्धारित स्थान पर पहुँचे, तो संतों ने परम भक्ति के साथ प्रार्थना की। उन्होंने प्रार्थना की: 'हे प्रभु, हे प्रभु! हमारे उद्धार की आशा! आपने हमारे संघर्ष के दिन हमारे सिरों को आश्रय दिया है। अब हमें अनंत जीवन में ले चलिए, क्योंकि हमने आपसे बढ़कर किसी को प्रेम नहीं किया है: न अपनी मातृभूमि को, न अपने परिजनों को, न धन-संपत्ति को, बल्कि हमने आपकी खातिर इन सभी को त्याग दिया है। हमने तो अपनी जान की भी परवाह नहीं की और वध के लिए ले जाई गई भेड़ों की तरह हो गए हैं। हम विनम्रतापूर्वक आपसे प्रार्थना करते हैं: अपने सेवकों के रक्त का प्रतिशोध लें; दुष्ट राजा के घमंड के विरुद्ध अपना हाथ बढ़ाएँ; उन लोगों के बच्चों को अपनी सुरक्षा में लें जो आपके लिए मारे गए हैं; और उस नगर को मजबूत करें जो आपके बहुमूल्य रक्त, आपके क्रूस और आपके दुःख-क्लेश पर गर्व करता है। आप देखें कि आपके शत्रुओं ने इसके साथ क्या किया है: उन्होंने इसके वैभव को उजाड़ दिया है, आपके पवित्र स्थल को अपवित्र किया है, और आपके पवित्र मंदिर को जला दिया है। तो फिर इसे फिर से खड़ा करें, और ईसाई राजाओं को राजदंड प्रदान करें[7433] !

जब संत यह प्रार्थना कर रहे थे, तो सैनिकों ने उन्हें मारना शुरू कर दिया। पहले, उन्होंने ईसाइयों के नेता होने के नाते, पवित्र और महान अरेफेस का सिर कलम कर दिया, और फिर सभी अन्य पवित्र शहीदों का। इस प्रकार, तीन सौ चालीस पुरुषों ने एक धन्य अंत प्राप्त किया।

वहाँ इस शहर की एक धर्मनिष्ठ महिला भी मौजूद थी। उसके साथ उसका बेटा था, जो पाँच साल से अधिक उम्र का नहीं, एक छोटा बच्चा था। जब उसने पवित्र शहीदों को तलवार से सिर कलम होते देखा, तो वह उनके पास दौड़ी और उनका थोड़ा सा खून लेकर उससे स्वयं और अपने बेटे पर लेप किया। फिर, उत्साह से भरकर, उसने राजा को शाप दिया और जोर से चिल्लाई:

'ई यहूदी का भी वही हश्र हो जो Pharaoh[7434] का हुआ।'

सैनिकों ने उसे पकड़ लिया और राजा के सामने लाकर उसके शब्द दोहराए। उसे बोलने या कुछ पूछने का मौका दिए बिना, राजा ने तुरंत उसे खंभे पर जलाने का आदेश दिया।

जब एक विशाल अग्नि प्रज्वलित हो चुकी थी और यातना देने वालों ने इस धन्य महिला को चिता पर फेंकने के लिए बाँधना शुरू किया, तब उसका छोटा बेटा रोने लगा। वहाँ बैठे राजा को देखकर वह लड़का दौड़कर उनके पास गया, उनके पैरों से लिपट गया और आँसुओं से भरी आँखों के साथ अपनी माँ की रक्षा के लिए यथासंभव विनती करने लगा।

राजा ने इस सुंदर और वाक्पटु लड़के को अपनी गोद में बिठाया और पूछा:

'तुम्हें किससे ज़्यादा प्यार है: मुझसे, या अपनी माँ से?'

लड़के ने उत्तर दिया:

[7433] राजदंड एक छड़ी है, जो सर्वोच्च अधिकार का प्रतीक है। राज्याभिषेक के समय, शासक इसे अपने दाहिने हाथ में पकड़ते थे।

[7434] फराओ – मिस्र के प्राचीन राजाओं के लिए एक सामान्य शब्द। पवित्र शास्त्र में, 'फराओ' नाम का उपयोग आमतौर पर किसी विशेष नाम के बिना, अपने आप किया जाता है। यहाँ, बेशक, यह थutmose या अहमोसेप नामक फिरौन से संबंधित है, जो मिस्र से इब्रानियों के प्रस्थान (Exodus) के समय में शासन कर रहा था (निर्ग. 5–14)। वह अपनी पूरी सेना के साथ लाल सागर में डूब गया (निर्ग. 14:1–21)।

'मैं अपनी माँ से प्यार करता हूँ; इसीलिए मैं आपके पास आया हूँ। मैं आपसे विनती करता हूँ, आदेश दें कि उसे खोल दिया जाए: उसे मुझे अपने साथ ले जाने दें ताकि मैं उस यातना का सामना कर सकूँ जिसके बारे में उसने मुझे इतनी बार चेतावनी दी है।'

राजा ने उससे पूछा:

'इस पीड़ा की बात क्या कर रहे हो?' वह लड़का, जो ईश्वर की कृपा से परिपूर्ण था, ने उत्तर दिया:

'इस पीड़ा में मसीह के लिए मरना शामिल है, ताकि मैं फिर से उनके साथ जी सकूँ।'

राजा ने पूछा:

'और यह मसीह कौन है?'

लड़के ने उत्तर दिया:

'मेरे साथ चर्च चलो, और मैं तुम्हें उसे दिखाऊँगा।' फिर, अपनी माँ की ओर एक बार फिर देखते हुए, बच्चे ने रोते हुए कहा:

– मुझे जाने दो; मैं अपनी माँ के पास जाऊँगा।

'तो फिर तुम अपनी माँ को छोड़कर मेरे पास क्यों आए?' राजा ने आपत्ति जताई। 'उसके पास मत जाओ, हमारे साथ रहो। मैं तुम्हें सेब, मेवे और हर तरह के सुंदर फल दूँगा।'

इस प्रकार राजा ने उससे ऐसे बात की मानो वह एक साधारण बच्चा हो, यह मानते हुए कि उसका दिमाग एक बच्चे जैसा है। लेकिन वह बच्चा अपनी उम्र से कहीं ज़्यादा समझदार था और उसने गंभीरता से जवाब दिया:

'मैं तुम्हारे साथ नहीं रहूँगा; मैं अपनी माँ के पास जाना चाहता हूँ। मुझे लगा कि तुम एक ईसाई हो और मैं अपनी माँ की ओर से तुमसे भीख माँगने आया हूँ। लेकिन तुम एक यहूदी हो; इसलिए, मैं तुम्हारे साथ नहीं रहना चाहता, और न ही मैं तुम्हारे हाथ से कुछ लूँगा। मैं बस इतना चाहता हूँ कि तुम मुझे अपनी माँ के पास जाने दो।'

इतने छोटे बच्चे में इतनी बुद्धिमानी देखकर राजा चकित रह गया। हालाँकि, बच्चा यह देखकर कि उसकी माँ को आग में फेंक दिया गया है, राजा को ज़ोर से काटने लगा। दर्द महसूस करते हुए, राजा ने उसे दूर धकेल दिया, और फिर वहाँ खड़े एक कुलीन को आदेश दिया कि वह उसे ले जाकर यहूदी कानून के अनुसार उसका पालन-पोषण करे, और उसमें ईसाई धर्म के प्रति घृणा पैदा करे। उस कुलीन व्यक्ति ने बच्चे को उठा लिया और उसकी बुद्धिमानी से चकित होकर, उसे अपने तंबू में ले गया। रास्ते में, उसकी मुलाकात एक दोस्त से हुई, वह रुका, और उसने उस बच्चे के बारे में उसे बताना शुरू कर दिया। वे उस चिता के पास ही खड़े थे जिस पर उस बच्चे की पवित्र माँ को फेंका गया था। जब वे बात कर रहे थे, तो लड़का उसे ले जा रहे आदमी की पकड़ से छूट गया, तेजी से भागा और आग में कूद पड़ा; वहाँ, अपनी माँ को गले लगाकर, वह उनके साथ जलकर मर गया। इस प्रकार, माँ और बेटा ईश्वर के समक्ष एक सुगंधित होमबलि बन गए।

महिमा परमेश्वर की हो, जिन्होंने उस छोटे से शिशु का इस प्रकार मार्गदर्शन किया कि उसके विषय में भविष्यवाणी के वचन पूरे हुए: *'तू ने शिशुओं और चूसने वालों के मुंह से स्तुति तैयार की है, अपने शत्रुओं के कारण, शत्रु और प्रतिशोधकर्ता को चुप कराने के लिए* ([7435])।

जब यह सब हो रहा था, तब अधर्मी राजा के राजकुमारों और सेनापतियों ने ईसाइयों के इतने बड़े पैमाने पर रक्तपात पर शोक व्यक्त किया। उन्होंने राजा से विनती की कि वह इस रक्तपात को समाप्त करे और उस शहर को नष्ट न करे, जिससे हर साल बहुत अधिक कर वसूला जाता था। उस अधर्मी शासक ने उनकी प्रार्थना के अनुसार कार्य किया और निर्दोषों का रक्त बहाना बंद कर दिया। हालाँकि, उसने इस शहर और पूरे नागरिक क्षेत्र से कई हज़ार शिशुओं और कुंवारी लड़कियों को चुना; कुछ को उसने अपने लिए गुलाम बना लिया, जबकि अन्य को उसने अपनी मर्जी से अपने कुलीनों और सैनिकों में बाँट दिया। उसने पूरे शहर को, जो पहले स्वतंत्र रूप से परम पवित्र त्रिमूर्ति की पूजा करता था, कठोर दासता में डाल दिया, जिसके बाद वह अपनी राजधानी के लिए रवाना हो गया।

जब यह ईश्वर-द्वेषी यहूदी घर लौट रहा था, तो आकाश में एक आग प्रकट हुई और पूरी रात आकाश को रोशन करती रही। इस आग के कारण, डुनान और उसकी सारी सेना में बहुत बड़ा भय छा गया। और आग बारिश की तरह धरती पर गिरने लगी, जिससे बहुत नुकसान हुआ। यह ईश्वर के क्रोध का संकेत था और बहाए गए रक्त के प्रतिशोध की शुरुआत थी। हालाँकि, नए फरीसी ने पश्चाताप करने से इनकार कर दिया और ईश्वर के प्रबल हाथ के आगे नहीं झुका। वह ईसाइयों

[7435] (भजन संहिता 8:3)। यह भजन यरूशलेम में प्रभु के प्रवेश के समय शिशुओं के मुँह से निकलने वाली स्तुति का पूर्वाभास देता है (मत्ती 21:16)।

के प्रति इतनी उन्मत्त क्रूरता से भर गया कि उसने न केवल अपने देश में, बल्कि अन्य क्षेत्रों और राज्यों में भी उन्हें नष्ट करने का संकल्प लिया। वास्तव में, उसने फारस के राजा[7436] के पास दूत भेजे, और उससे भी ऐसा ही करने तथा अपने राज्य के सभी ईसाइयों का वध करने का आग्रह किया, यदि वह चाहता था 'कि सूर्य और सूर्य के पिता, यहूदियों के ईश्वर, उस पर दया करें'। फ़ारसी सूर्य की पूजा एक देवता के रूप में करते थे। इसीलिए डुनान, ईसाइयों के विरुद्ध फ़ारसी राजा को उकसाने की इच्छा से, यहूदी ईश्वर को 'सूर्य का पिता' कहा। उन्होंने सारासेन[7437] के राजा अलामुन्दार को भी लिखा, और उससे वादा किया कि यदि वह अपने शासन के तहत ईसाइयों का संहार कर दे तो उसे बहुत सारा सोना मिलेगा।

यह सब सुनकर, धर्मनिष्ठ ग्रीक राजा जस्टिन बहुत दुखी हुआ और ईसाइयों पर हो रहे अत्याचार से मन में दुखी होकर, उसने अलेक्जेंड्रिया के आर्चबिशप एस्टरियस को एक पत्र लिखा, जिसमें उसने से इथियोपियाई राजा एलेज्वॉय से ईसाइयों के खून का बदला लेने के लिए उस अधर्मी यहूदी के खिलाफ युद्ध छेड़ने का आग्रह करने के लिए कहा। इसके अलावा, उन्होंने स्वयं राजा एलेज़वो को ओमिरीत की भूमि में, विशेष रूप से नगरन शहर में, ईसाइयों के साथ डुनान द्वारा किए गए सभी अत्याचारों के बारे में लिखा, साथ ही इस तथ्य के बारे में भी लिखा कि उसने फारस के राजा और सारासेन के राजकुमार के पास दूत भेजे थे, और उन्हें विनतियों और रिश्वत के माध्यम से ईसाइयों के खिलाफ हथियारबंद कर दिया था। साथ ही, जस्टिन ने डुनान के पड़ोसी के रूप में एलेज्वो से इस ईश्वर-निन्दक के खिलाफ युद्ध छेड़ने का आग्रह किया, जो ईसाइयों के खून का प्यासा था। आर्चबिशप एस्टरियस ने एलेज्वॉय को युद्ध के लिए प्रेरित किया, जबकि उन्होंने स्वयं ईसाइयों की मदद और उनके दुश्मनों की हार के लिए ईश्वर से भक्तिपूर्वक प्रार्थना की। उन्होंने नट्रिया और आश्रमों[7438] में रहने वाले सभी भिक्षुओं को भी संदेश भेजे, जिसमें उनसे प्रार्थना करने का आग्रह किया गया। इथियोपियाई राजा एलेज्वॉय को ओमिरिटे की भूमि में हुई हर बात की जानकारी न केवल राजा जस्टिन और आर्चबिशप एस्टरियस से मिली - बल्कि उसे पहले से ही इसका पता चल गया था, क्योंकि पड़ोसी शहरों की रखवाली के लिए छोड़े गए उसके सैनिकों का कत्लेआम कर दिया गया था। ईश्वर के प्रति उत्साह से जलते और ईसाइयों के लिए मन में दुखित होकर, वह तुरंत डुनान पर चढ़ाई करना चाहता था, लेकिन सर्दियों के कारण ऐसा नहीं कर सका; और इसलिए उसने गर्मियों का इंतजार किया, और युद्ध के लिए आवश्यक सभी चीजों की तैयारी की। जब सर्दी बीत गई, तो उसने अपनी सेना और सहायता के लिए आए अन्य राष्ट्रों के योद्धाओं से एक लाख बीस हजार लोगों की सेना इकट्ठी की। सर्दियों के दौरान, उसने सत्तर भारतीय जहाजों को सुसज्जित किया था, और व्यापार करने आए फारसी और इथियोपियाई व्यापारियों से साठ जहाज भी प्राप्त किए थे, साथ ही कई जर्जर जहाजों की मरम्मत भी करवाई थी। वसंत के आगमन के साथ, एलेजुआ अपनी सेनाओं के साथ युद्ध पर निकल पड़ा। लोअर इथियोपिया[7439] से उसने अपनी सेना का एक हिस्सा ओमिरिटे के क्षेत्रों में ज़मीनी मार्ग से भेजा, जबकि वह स्वयं, शेष सैनिकों के साथ, जहाजों पर चढ़ा और समुद्र यात्रा पर निकल पड़ा। उसका इरादा ओमिरिटे की भूमि पर ज़मीन और समुद्र दोनों मार्गों से आक्रमण करना था, ताकि यहूदी राजा को हर तरफ से घेर लिया जाए। लेकिन परमेश्वर, जो सभी चीजों को बुद्धिमानी से व्यवस्थित करता है और मानव इच्छा के अनुसार नहीं बल्कि अपनी अथाह आज्ञाओं के अनुसार कार्य करता है—यह जानते हुए कि क्या लाभदायक हो सकता है—ने धन्य राजा एलेज़वो की योजनाओं को विफल कर दिया। ओमिराइटों के पास भूमि मार्ग से भेजी गई उसकी सेना रेगिस्तानों और पहाड़ों में, अविश्वसनीय और जलहीन क्षेत्रों में अपना रास्ता भटक गई, और न तो ओमिरि की भूमि तक पहुँच सकी और न ही वापस लौट सकी। कई दिनों तक भटकने के बाद, वे प्यास से तड़प कर मर पड़े। केवल कुछ ही बच पाए और वे अपने देश लौटकर निराशाजनक समाचार ले आए। इसी प्रकार, राजा, जो जहाजों में समुद्र पार कर रहा था, को भी इससे

[7436] पर्सिया के उत्तर-पूर्व में अरबिया से सीमा लगती है। यहाँ उल्लेखित राजा, बेशक, जस्टिन द ग्रीक के समकालीन खुसरू नुशिरवान हैं।

[7437] सारासेन एक अरब कबीला था जो कैस्पियन सागर और कॉकेसस के दक्षिण में रहता था, और सीरिया तथा फिलिस्तीन तक फैला हुआ था। उनका नाम या तो अब्राहम की पत्नी सारा से लिया गया है, या तुर्की शब्द 'शाराकुन' से, जिसका अर्थ है 'पूर्वी'।

[7438] अलेक्जेंड्रिया के दक्षिण में नाइट्रियन मरुभूमि थी, जहाँ मिस्र के तपस्वी – फेरेनियन – तपस्या का जीवन जीते थे। यहाँ मठवाद की स्थापना संत एंथनी (3rd सदी) के समकालीन, संत अम्मोन ने की थी। नट्रिया में स्वयं संत अम्मोन ने एक मठ की स्थापना की, जबकि संत एंथनी ने स्केट्स (sketes) की स्थापना की शुरुआत की। चौथी शताब्दी के अंत तक, यहाँ संत पाचोमियस के नियम के अनुसार संगठित 60 मठ थे। नट्रिया के दक्षिण में स्कैटिक रेगिस्तान था, जो कई भिक्षुओं का घर था।

[7439] 'निचला' इथियोपिया, बेशक, उत्तरी मैदानों को संदर्भित करता है। एलेज्वो ने अपनी भूमि सेना को थेबाइड और मिस्र के रास्ते सिनाई और अरब प्रायद्वीप के उत्तरी भागों की ओर भेजा। एक या दूसरे के उत्तरी भाग में (यह ठीक से ज्ञात नहीं है कि कौन सा), सैनिक रेगिस्तान और पहाड़ों में खो गए और उनमें से अधिकांश की मृत्यु हो गई।

बेहतर भाग्य नहीं मिला। डैकेलू नामक एक शहर में पहुँचने पर[7440] , राजा जहाज से उतर गए और समुद्र तट पर बने एक चर्च की ओर बढ़े। वहाँ उन्होंने अपना ताज और बैंगनी चोगा, अपने शाही वस्त्र और अपनी गरिमा के प्रतीक उतार लिए, और उन्हें चर्च के दरवाजे पर छोड़कर, एक भिखारी का वेश धारण कर वेदी के सामने गहरी भक्ति के साथ बहुत देर तक प्रार्थना की।

प्रार्थना में उन चमत्कारों को याद करते हुए जो ईश्वर ने कृतघ्न यहूदियों के लिए मिस्र और मरुभूमि में किए थे, राजा ने कहा:

'यहूदी आप पर, उनके उपकारी पर, कृतघ्न रहे हैं – न केवल वे जिन्हें आपने मिस्र से निकाला था, बल्कि उनके बच्चे और पूरा राष्ट्र, यहाँ तक कि आज भी। 'हे प्रभु, आप जानते हैं कि उन्होंने आपके नगर नाग्राण के विरुद्ध क्या बुराई की है, जहाँ उन्होंने चालाकी से आपके लोगों को बंदी बना लिया। उन्होंने आपके संतों के विरुद्ध एक दुष्ट योजना बनाई है और पृथ्वी के चेहरे से शेष ईसाइयों को मिटा देना चाहते हैं। यदि यह सब हमारे पापों के कारण हो रहा है, तो हम आपकी दया की याचना करते हैं; हमें उनके हाथों में न सौंपें, बल्कि हमें स्वयं वैसे ही दंड दें जैसा आपको उचित लगे, क्योंकि भव्यता और दया दोनों आपके गुण हैं! हमें हमारे शत्रुओं के हवाले न करें, कहीं वे न कहने लगें:

'उनका मसीह कहाँ है, जिसमें वे अपनी आशा रखते हैं, और उनका क्रूस कहाँ है, जिसका वे घमंड करते हैं?'

इस प्रकार आँसुओं के साथ प्रार्थना करने के बाद, राजा चर्च से निकलकर शहर से चला गया। वहाँ उसे पता चला कि ज़िनोन नाम का एक पवित्र संन्यासी पैंतालीस वर्षों से शहर के पास एक एकांत कोठरी में अकेले रह रहा था, और अपने पुण्य जीवन के कारण उसे ईश्वर से भविष्यवाणी और भविष्य की जानकारी का वरदान मिला था। राजा एक साधारण सैनिक के भेष में इस भिक्षु के पास गया; वह अपने साथ धूप का एक पात्र[7441] ले गया, और उसके नीचे सोना छिपा दिया, इस उम्मीद में कि भिक्षु, अज्ञानता के कारण, धूप के साथ सोना भी स्वीकार कर लेंगे। वृद्ध के आवास में प्रवेश करने पर, राजा ने उनके सामने झुककर, लाया हुआ उपहार प्रस्तुत किया और उनसे अपने लिए प्रार्थना करने का अनुरोध किया, साथ ही यह पूछा: क्या ईश्वर यहूदी डुनान के खिलाफ युद्ध में उनकी मदद करेंगे, जिसके खिलाफ वे ईसाइयों के रक्त का बदला लेने के लिए मार्च कर रहे थे?

दूरदर्शी होने के कारण, साधु ने उसे राजा के रूप में पहचान लिया, और इसी तरह यह भी समझ गया कि धूप के बीच सोना छिपाया गया था। उन्होंने उपहार स्वीकार नहीं किया और कहा:

'क्या तुमने यह नहीं सुना कि प्रभु कहते हैं: *"प्रतिशोध मेरा है; मैं प्रतिफल दूँगा"* (*[7442]*)? तुमने अपना ही विनाश करने के लिए युद्ध किया है। तुम्हारा राज्य तुमसे छीन लिया जाएगा, और तुम्हारे साथ कई लोग अपनी जान गंवा देंगे।'

यह सुनकर राजा बहुत डर गया और रोते-रोते तथा विलाप करते हुए संत के पास से चला गया। बड़े दुख और शोक में, वह सारी रात सोचता रहा कि क्या करे। अंत में, उसने भाग जाने का निश्चय किया। हालाँकि, जब सुबह हुई, तो वह भिक्षु के पास लौट आया। भिक्षु ने उससे कहा:

'पृथ्वी पर ऐसा कोई शहर नहीं है जहाँ तुम मौत से बच सको। लेकिन अगर तुम जीवित रहना चाहते हो और दुष्ट राजा को हराना चाहते हो, तो बाद में संन्यास ग्रहण करने का वचन दो।'

एल्ज़ेवोय ने गंभीरता से वादा करते हुए कहा:

'यदि ईश्वर मुझे दुनान पर विजय प्रदान करते हैं, तो मैं तुरंत राज्य छोड़कर भिक्षु बन जाऊँगा।'

राजा के वचन सुनकर और उसके आँसू देखकर, वृद्ध ने उसके लिए परमेश्वर से प्रार्थना की और उसे आशीर्वाद दिया, ठीक वैसे ही जैसे शाऊल ने एक बार गोलियाथ के विरुद्ध दाऊद को आशीर्वाद दिया था (1 शमूएल 17:37), और कहा:

'ईश्वर तुम्हारे साथ रहे! जाओ, शहीदों की बलिदानों, आर्चबिशप एस्टेरियस और उन पवित्र मरुभूमि के संतों की प्रार्थनाओं से, जो तुम्हारे लिए प्रार्थना करते हैं, और इसी प्रकार धन्य राजा जस्टिन के आँसुओं से सहायता प्राप्त करके। तुम डुनान को पराजित करोगे और निर्दोषों के रक्त का बदला लोगे।'

[7440] यह संभवतःअरब की खाड़ी के प्रवेश द्वार पर स्थित स्काइलिस शहर को संदर्भित करता है, जो भारत के साथ व्यापार के लिए एक बंदरगाह के रूप में काम करता था।

[7441] फ्रैंकिंसेंस (लौहगंधक) तटीय इथियोपिया का एक प्राकृतिक उत्पाद था, जिसमें देश के निवासी मूरा और दालचीनी के साथ बड़े पैमाने पर व्यापार करते थे।

[7442] (रोमियों 12:19)। इस पाठ का अर्थ है कि केवल प्रभु के पास ही लोगों को उनके कर्मों के लिए दंडित करने का अधिकार है।

राजा को अपने दुख में सांत्वना मिली, उसने आशीर्वाद स्वीकार किया, और आनंदित होकर परमेश्वर की महिमा करता हुआ अपने सैनिकों के पास गया।

उस समय, ओम्यर के राजा डुनान ने, यह सुनकर कि इथियोपिया के राजा एलेज्वॉय समुद्र और भूमि दोनों मार्गों से उस पर चढ़ाई कर रहे थे, एक बड़ी सेना इकट्ठी की और भारी हथियारों से लैस होकर, एलेज्वॉय के आक्रमण की प्रतीक्षा में अपनी भूमि की सीमाओं पर मोर्चा संभाल लिया। जब, हालाँकि, उसने सुना कि एलेज्वॉय की सेनाएँ, जो ज़मीन के रास्ते आ रही थीं, रेगिस्तान में नष्ट हो गई थीं, तो वह प्रसन्न हुआ और अब उसे ज़मीन से हमले का डर नहीं रहा, बल्कि वह केवल समुद्र से होने वाले हमले से सतर्क था। फिर भी वहाँ भी कोई खतरा नहीं था। इथियोपिया और ओमिरिटि की भूमि के बीच एक उथला क्षेत्र और एक संकीर्ण जलडमरूमध्य है, जिसकी चौड़ाई दो स्टेडियम से भी कम है[7443] । इसके पार कई बड़ी, नुकीली चट्टानें बिखिरी हुई थीं, जो मुश्किल से पानी में ढकी थीं। परिणामस्वरूप, जहाजों के लिए इस मार्ग से गुज़रना अत्यंत कठिन था। इस पर, डुनान ने एक और बड़ी बाधा डाल दी। उसने एक मोटी और विशाल लोहे की ज़ंजीर बिछा दी और उससे उस उथले हिस्से को बंद कर दिया, ताकि न केवल कई चट्टानें बल्कि लोहे की ज़ंजीर भी एलेज्वु के रास्ते में बाधा बने और उसके जहाज़ों को दूसरी तरफ़ पहुँचने से रोकें।

लेकिन ईश्वर, *'जिसकी बुद्धि अथाह है'* (भजन संहिता 146:5), ने उस चालाक यहूदी की चालाकी को विफल कर दिया। अपनी चमत्कारिक शक्ति से, उन्होंने इस पार न हो सकने वाले हिस्से से होकर ईसाइयों के लिए एक सुरक्षित मार्ग प्रदान किया।

जब एलेज्वॉय ने डाकेला शहर से बड़ी उम्मीदों के साथ प्रस्थान किया, तो एक अनुकूल हवा चलने लगी। नौकाएँ चलने के बाद, वे बहुत तेजी से चले और कुछ ही दिनों में ओमिरीत देश की सीमाओं पर पहुँच गए। जब वे संकीर्ण उथले हिस्से के पास पहुँचे और उन्हें अभी भी खतरे का पता नहीं था, तो राजा ने पहले दस जहाजों को पार करने का आदेश दिया, और उनके बाद उन्होंने और बीस जहाजों को पार करने के लिए भेजा, जिन पर वह स्वयं मौजूद थे, और ऊँचाई से पार होने की क्रिया का निरीक्षण कर रहे थे। बाकी बेड़ा बहुत पीछे रह गया, अग्रिम दल के पार होने का इंतजार कर रहा था। लेकिन जैसे ही पहले दस जहाज आगे बढ़े, प्रभु ईश्वर, जिनके अधिकार में समुद्र के मार्ग हैं, अपने विश्वासियों की सहायता के लिए शीघ्रता से आए; और जहाँ जहाजों के विनाश का निश्चित था, वहाँ, सभी अपेक्षाओं के विपरीत, प्रभु ने उनका उद्धार किया। अचानक समुद्र में एक बड़ा तूफ़ान उठा, और लहरें पहाड़ों की तरह ऊँची उठ आईं। उन्होंने जहाजों को अपनी चपेट में ले लिया और उन्हें उस खतरनाक हिस्से से पार ले गईं। केवल एक जहाज एक लोहे की बाधा से जा टकराया और एक चट्टान पर अटका हुआ प्रतीत हुआ - लेकिन परमेश्वर की शक्ति से पानी ऊँचा उठ गया और उसे भी पार कर गया। इस प्रकार वह पूरा हुआ जो भविष्यवक्ता दाऊद ने कहा था: *' ' 'जो जहाजों में समुद्र में नौकायन करते हैं, जो महान जल पर अपना व्यवसाय करते हैं, वे गहराइयों में प्रभु के काम और उसकी अद्भुत कृत्यों को देखते हैं'* (भजन संहिता 106:23-24)[7444] ।

यह चमत्कार परमेश्वर के सामर्थी हाथ से हुआ। इसने न केवल प्रमुख जहाजों को चट्टानों और एक लोहे की जंजीर से अवरुद्ध खतरनाक मार्ग से लहरों पर ले जाया, बल्कि तूफान और उठती लहरों के साथ स्वयं लोहे की बाधा को भी तोड़ दिया, और शेष जहाजों के लिए एक सुरक्षित मार्ग साफ कर दिया।

पहले दस जहाजों को खतरनाक मार्ग से पार करने के बाद, लहरों ने उन्हें उस स्थान से दो सौ स्टेडियम दूर किनारे पर फेंक दिया, जहाँ राजा डुनान सभी ओमिरीटियाई सैनिकों के साथ खड़े थे। जहाँ तक बाकी बीस जहाजों का सवाल है, जिन पर राजा एलेज्वॉय भी सवार थे, भले ही वे जलडमरूमध्य पार कर गए थे, लेकिन हवा से वे अपनी दिशा से भटक गए और आगे चल रहे जहाजों तक नहीं पहुँच सके; इसके बजाय, वे लहरों द्वारा समुद्र में बिखिर गए। जब किनारे पहुँचने वाले जहाजों के बारे में पता चला, तो डुनान ने तुरंत तीस हजार घुड़सवार सशस्त्र योद्धाओं को ईसाइयों को उतरने से रोकने के लिए भेजा। जहाँ तक समुद्र में बिखिरे हुए जहाजों की बात है, वे तूफान थमने के बाद ही दस अग्रणी जहाजों तक पहुँच सके; लेकिन वे रुक गए, और लोग जमीन पर पैर नहीं रख सके क्योंकि डुनान के योद्धाओं द्वारा तट से उन पर भारी हमला किया जा रहा था। शेष कई जहाज तीसरे दिन ही उस खतरनाक हिस्से को पार कर सके और तट से कुछ दूर रुक गए। हालाँकि, वे

[7443] एक 'स्टेडियो' 87½ फाथम के बराबर होता है। इस प्रकार, जिस संकीर्ण मार्ग का उल्लेख किया गया है, वह आधे वर्स्ट से काफी कम है।

[7444] (भजन संहिता 106:23-24)। इन शब्दों का अर्थ है कि ईश्वर लोगों की नियति का मार्गदर्शन करते हैं और जीवन की सभी परिस्थितियों में उनके मार्गों का निर्देशन करते हैं, बाधाओं और खतरों को दूर करते हैं।

आगे चल रहे जहाजों के साथ नहीं मिल सके और एक-दूसरे से दूर होने के कारण, उन्हें एक-दूसरे के ठिकाने के बारे में कुछ भी पता नहीं था।

यह मानते हुए कि इथियोपियाई राजा वहीं था जहाँ बिखरा हुआ बेड़ा पड़ा था, दुनान अपने सैनिकों के साथ वहाँ मार्च कर गया और तट के पास मोर्चा संभाल लिया, जिससे दुश्मन को सूखी ज़मीन पर उतरने से रोक दिया जा सके। इस प्रकार वे लंबे समय तक वहीं रहे, और दोनों पक्षों को बहुत कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। जहाजों पर सवार इथियोपियाई रोटी और पानी से वंचित थे, जबकि तट पर तैनात ओमिराइट्स सूरज की तेज़ गर्मी से त्रस्त थे। तब दुनान ने अपने एक रिश्तेदार, एक राजकुमार को, बीस हजार घुड़सवारों के साथ भेजा, ताकि वे उन तीस हजार योद्धाओं की मदद कर सकें जो प्रमुख जहाजों की रखवाली कर रहे थे और ईसाइयों को तट पर आने से रोक रहे थे। इस राजकुमार के साथ एक शाही खसास था जो पाँच सुनहरे भाले ले जा रहा था[7445] । कई दिनों तक उन्होंने उन ईसाइयों से लड़ाई की, जो छोटे-छोटे समूहों में उतर रहे थे और तट पर अपना डेरा डाल रहे थे। एक दिन, दुनान द्वारा भेजा गया राजकुमार, अपने साथ सोने के भाले ले जाने वाले एक ख़ास और कई नौकरों को लेकर, शिकार के लिए अपने शिविर से निकल गया और वहीं रात बिताई। उसी रात, तट पर भूख से तड़प रहे एलेज्वॉय के कुछ योद्धा भागने पर राज़ी हो गए। कुछ घोड़े चुराकर, वे उन पर सवार होकर शिविर से भाग गए। संयोग से—या यूँ कहें कि ईश्वर की कृपा से—वे ओमिरीत के राजकुमार और राजा के एक खसास से टकरा गए, जो शिकार के लिए घात में पड़े थे, और उन्होंने उनसे लड़ाई कर दी। उन्हें पराजित करने के बाद, उन्होंने राजकुमार—जो ज़ार का रिश्तेदार था—और ख़ास को उनके भाले सहित बंदी बना लिया, जबकि बाक़ियों को तलवारों से काट दिया गया; फिर वे जीवित बंदियों को अपने ज़ार के पास ले जाकर और सोने के भाले लेकर अपने जहाज़ों पर लौट आए। राजा अति प्रसन्न हुआ और उसने परमेश्वर का धन्यवाद किया, जिसने पवित्र क्रूस के शत्रुओं को उसके हाथों में सौंपना शुरू कर दिया था, और उसने वेदी को सजाने के लिए चर्च को सुनहरे भाले देने का वादा किया। सुबह-सुबह, अपने योद्धाओं को युद्ध के लिए तैयार करके, राजा ने उन्हें छोटे जहाजों पर चढ़ा दिया। उतरने पर, उन्होंने मदद के लिए प्रभु से प्रार्थना की और ओमिराइट्स के साथ एक भयंकर लड़ाई में लगे। अपने नेता को खोने के बाद, ओमिराइट्स में भ्रम छा गया और अपनी पीठ दिखाकर वे भाग खड़े हुए। ईसाइयों ने उनका पीछा किया और उन्हें अनाज की बाली की तरह काट डाला। ईश्वर उनके साथ था, और एक भी दुश्मन बचकर नहीं गया; सभी ईसाई तलवार के घाट उतरे, इसलिए यहूदी राजा को अपनी सेना के विनाश की सूचना देने वाला कोई नहीं बचा। उन्हें मिली विजय के लिए कृतज्ञता स्वरूप, ईसाइयों ने ईश्वर को धन्यवाद की प्रार्थनाएँ अर्पित कीं।

लेकिन ईसाइयों की पूर्ण विजय का समय अभी नहीं आया था। एलेज्वॉय की सेना का अधिकांश भाग, जो पीछे के जहाजों पर था, दो कारणों से बड़ी परेशानी में था: उनके पास भोजन और पानी की आपूर्ति खत्म हो रही थी; इसके अलावा, वे यह नहीं जानते थे कि उनका राजा प्रमुख जहाजों के साथ कहाँ था। इस बीच एल्ज़ेवॉय, राजा के एक रिश्तेदार और एक ख़ास को बंदी बनाकर, ओमिरीत की भूमि की राजधानी 'फ़ार' की ओर रवाना हो गया, जहाँ राजा दुनान का महल था। शहर में कोई चौकी न पाकर, एल्ज़ेवॉय ने इसे बिना किसी कठिनाई के जीत लिया। फिर वह शाही कक्षों में प्रवेश किया और दुनान के सिंहासन पर बैठ गया; उसकी सारी संपत्ति पर कब्ज़ा कर लिया, और रानी तथा उसके दरबारियों को बंदी बना लिया। हालाँकि, कुछ लोग जो शहर से भाग गए थे, वे अपने राजा दुनान के पास आए, जो एलेज्वॉय के जहाजों के खिलाफ युद्ध जारी रखे हुए थे , और उन्हें सब कुछ बताया: कि कैसे एलेज्वॉय ने सेनाओं को हराया था और राजधानी तथा रानी को कैद कर लिया था।

यह सुनकर डुनान बहुत डरा। डर के मारे, उसका साहस जवाब दे गया, और वह नहीं जानता था कि क्या करे। प्रभु ने उसका होश छीन लिया और ईसाइयों के निर्दोष रक्त का बदला लेना शुरू कर दिया। कानूनविहीन डुनान को न केवल एलेज्वॉय से, बल्कि अपने ही कुलीनों और रिश्तेदारों से भी डर लगने लगा। उन पर भरोसा न करते हुए, और इस डर से कि वे उससे विश्वासघात कर सकते हैं और एलेज़्वो का साथ दे सकते हैं, उसने उन सभी को—और खुद को भी—सोने की ज़ंजीरों से बांध दिया और अपने अंतिम निष्पादन की प्रतीक्षा में अपने शिविर में खुद को बंद कर लिया। इस प्रकार उस शापित राजा ने अपना मन खो दिया, क्योंकि उस पर भय सवार हो गया था, ठीक वैसे ही जैसे एक बार एदोम, मोआब और

[7445] सोने के भाले राजा के मुख्य हथियार-वाहक के पद का प्रतीक थे।

कनान के शासकों पर सवार हो गया था, जिनके बारे में पवित्र शास्त्र में लिखा है: *'तब एदोम के राजकुमार घबरा गए, मोआब के सरदारों पर कांपना छा गया, और कनान के सभी निवासी निराश हो गए'* (7446)।

उस समय, पीछे लंगर डाले कई जहाजों पर बचे हुए ईसाइयों को इस बात की जानकारी नहीं थी कि क्या हो रहा था और, अपने राजा से दूर, महान भ्रम और दुख में, उन्होंने भक्तिपूर्वक प्रार्थना की। जहाजों पर दैवीय अनुष्ठान मनाने और पवित्र रहस्यों को ग्रहण करने के बाद, उन्होंने एक स्वर में ईश्वर से सहायता की याचना करते हुए पुकारा। और तुरंत स्वर्ग से एक आवाज सुनाई दी, जो पुकार रही थी:

'गैब्रियल, गैब्रियल, गैब्रियल!'

यह आवाज सुनकर, विश्वासियों का हौसला आत्मा में बढ़ गया, और, युद्ध के लिए खुद को तैयार करके, वे छोटे जहाजों में तट की ओर निकल पड़े। और देखो, उनके बीच एक योद्धा प्रकट हुआ, जिसके हाथों में एक लोहे का डंडा था, जिसके शीर्ष पर एक क्रॉस था; डंडे का दूसरा सिरा भाले की तरह नुकीला था। इस हथियार के साथ, वह योद्धा सभी से पहले तट पर कूद पड़ा; उसने तुरंत एक घोड़े पर सवार सशस्त्र योद्धा से मुकाबला किया और उसे उसके घोड़े सहित भेद दिया। जब घोड़ा और सवार गिर पड़े, तो सभी दुश्मन तुरंत आतंकित हो गए और तट से भाग गए। ईसाइयों ने तट पर कब्ज़ा करने के बाद, विधर्मियों के खिलाफ सुव्यवस्थित पंक्तियों में आगे बढ़े। एक बड़ा कत्लेआम हुआ। प्रभु ने यहूदियों और विधर्मियों को परास्त कर दिया, और वे ईसाइयों का विरोध नहीं कर सके। और इस प्रकार विधर्मी राजा दुनान की पूरी सेना, हँसली से कटी घास की तरह गिर पड़ी।

जब ईसाइयों ने बाद में राजा के तंबू तक पहुँचे, तो उन्होंने वहाँ राजा को सुनहरी जंजीरों में बँधा हुआ, अपने राजकुमारों और रिश्तेदारों के साथ पागलपन की हालत में बैठा हुआ पाया। और वे सभी इस अजीब दृश्य को देखकर चकित रह गए। उनके खिलाफ कोई कार्रवाई किए बिना, ईसाई योद्धाओं ने अपने बंदियों की रखवाली की जब तक कि उन्हें यह खबर नहीं मिली कि उनके राजा, धन्य एलेज्वॉय ने दुश्मन की राजधानी पर कब्जा कर लिया है। तब उन्होंने उन्हें उस नीच यहूदी पर ईश्वर-प्रदत्त विजय की खबर भेजी। शहर की रक्षा के लिए अपनी सेना का एक हिस्सा वहीं छोड़कर, राजा एलेज्वॉय स्वयं अपने ईसाई सैनिकों से मिलने के लिए तेजी से रवाना हो गए। दुनान और उसके अनुयायियों को सुनहरी ज़ंजीरों में जकड़े हुए देखकर, एलेज्वॉय ने उसे और उसके साथियों को अपने ही हाथों मौत की सज़ा दी। ईसाइयों की विजय महान थी, और इस वचन: *'धर्मी प्रतिशोध देखकर आनन्दित होंगे'* (भजन संहिता 57:11) *को सुनकर* उनकी खुशी का कोई ठिकाना नहीं रहा।

शहर लौटने पर, एलेज्वॉय ने रानी के साथ शाही कक्षों में रहे सभी अविश्वासियों को मौत की सज़ा दी, और मसीह के सभी शत्रुओं का पूर्ण विनाश कर दिया। फिर उसने राजा जस्टिन और अलेक्ज़ेंड्रिया के आर्चबिशप को यह खबर भेजी कि प्रभु ने उन पर अपनी महान दया दिखाई थी, उनके शत्रुओं को उनके पाँव तले ला दिया था, और मसीहियों के रक्त का प्रतिशोध ले लिया था। सभी ने परमेश्वर का धन्यवाद किया। आर्चबिशप ने तुरंत बिशपों और पुरोहितों को ओमिरिइट्स के पास भेजा ताकि वे बचे हुए लोगों को विश्वास में शिक्षित करें और उनका बपतिस्मा दें। एलेज़वोय ने, अपनी ओर से, शहरों में चर्चों का निर्माण करना शुरू किया और यीशु मसीह के नाम की महिमा का प्रसार किया। शहीद शहर नाग्रेन पहुँचने पर, उन्होंने उस चर्च को फिर से बनाया जिसे दुष्ट दुनान ने जला दिया था; उन्होंने पवित्र शहीदों के मकबरों को भव्य रूप से सजाया, और सभी ईसाइयों को प्रोत्साहित किया, उन्हें स्वतंत्र घोषित करते हुए। उन्होंने संत अरेफा के जीवित बचे पुत्र को शहर का कमांडर नियुक्त किया, और थोड़े ही समय में ओमिरीट की पूरी भूमि को अधर्मी दुष्टता से शुद्ध कर दिया और उसे पवित्र विश्वास से प्रकाशित किया। फिर उन्होंने अव्रामिया नामक एक धार्मिक और सदाचारी व्यक्ति को राजा नियुक्त किया, ईसाई धार्मिक और नागरिक कानून स्थापित किए, और सुधारों को सुदृढ़ करने के बाद, ईश्वर की महिमा करते हुए अपने सैनिकों के साथ अपने देश लौट आए। वह बहुत सारी संपत्ति के साथ लौटे, क्योंकि उनके सैनिकों ने बहुत सारा माल-संपत्ति लूट लिया था।

अपने देश पहुँचने पर, एलेज्वॉय ने हर चीज़ के लिए ईश्वर का धन्यवाद किया और अपना राजसी मुकुट यरूशलेम भेज दिया; कुछ दिनों बाद, इथियोपियाई राज्य और स्वयं को ईश्वर की इच्छा के हवाले कर, उसने सब कुछ पीछे छोड़ दिया। रात में वह राजसी कक्षों और शहर से चुपके से निकल जाता था, साधारण कपड़े पहनकर, राजा के रूप में नहीं बल्कि

7446 (निर्गमन 15:15) इस्राएलियों द्वारा लाल सागर को पार करना और फिरौन तथा उसकी सेनाओं का विनाश सभी कनानी लोगों के हृदय में भय पैदा कर गया, जिन्होंने इस घटना में अपने चुने हुए लोगों के लिए ईश्वर की सहायता और सुरक्षा देखी।

कसिी ' ' या अन्य भखिारी के रूप में, और वहाँ एक मठ के पास रहने लगा, एक ऐसी कोठरी में जहाँ से वह अपनी मृत्यु तक नहीं नकिला, दनि-रात ईश्वर के लिए परश्रिम करता रहा। उसके भोजन में हर तीन दनिों में एक रोटी शामलि होती थी; कभी-कभी वह अंजीर और खजूर खाता था। अपनी कोठरी में उसके पास एक फेल्ट का टुकड़ा, एक लकड़ी का बाल्टी और एक छोटी टोकरी के अलावा और कुछ भी नहीं था। उसने कभी शराब या तेल का स्वाद नहीं चखा। इस प्रकार उन्होंने संपूर्ण संसार और उसकी महमिा का त्याग कर दयिा, अपने सभी वचिार ईश्वर की ओर मोड़ दए, और केवल उनकी ही सेवा की, तथा एक भक्षिु के रूप में पंद्रह वर्ष जीवन व्यतीत कयिा। उन्हें एक धन्य वदिाई मलिी और वे शांतपूर्वक परलोक सधिार गए। इन सब के लिए, हमारे ईश्वर की महमिा सदा हो, अब और हमेशा, और युगों-युगों तक। आमीन।

कॉन्टाकयिन, स्वर 4:

प्रकाश-वाहक पीड़ा-वाहक का पर्व आज हमें आनंद देता है; जब हम इसका उत्सव मनाते हैं, तो हम स्वर्ग में स्थति प्रभु की महमिा करते हैं।

गुफाओं के पूजनीय अरेफा का जीवन

24 अक्टूबर को स्मरणोत्सव

ईश्वर का धन्यवाद करना सदा ही उचति और न्यायसंगत है, न केवल उसकी दी हुई कृपाओं के लिए, बल्कि वपित्तयिों के लिए भी; क्योंकि वपित्तयिाँ न केवल धर्मी लोगों के लिए अनुग्रह को बढ़ाती हैं, जैसा कि अय्यूब के साथ हुआ था, बल्कि एक बड़े पापी को भी एक सद्धि संत में बदल देती हैं। इसका एक उदाहरण पूजनीय अरेफा हैं, जनिके बारे में पूजनीय के प्रत्यक्षदर्शी, धन्य बशिप साइमन, नम्निलखिति गवाही देते हैं।

कीव केव्स मठ में अरेफा नाम का एक भक्षिु था, जो पोलोत्स्क शहर का मूल नविासी था[7447] । अपनी कोठरी में उसने गुप्त रूप से बहुत सारी संपत्ति जमा कर रखी थी, लेकनि वह लोभ में इतना डूबा हुआ था कि उसने कसिी भखिारी को दान में एक सक्किा भी नहीं दयिा, और न ही अपने नजिी खर्चों पर कुछ खर्च कयिा। एक रात, चोर आए और उसकी सारी संपत्ति चुरा ले गए। तब वह शोक और दुख से इतना अभभिूत हो गया कि वह लगभग अपनी जान ही खो बैठता। जो कुछ चोरी हुआ था, उसकी तलाश करते हुए, वह नरि्दोषों पर अत्याचार करने और कई लोगों पर अन्यायपूर्ण रूप से अत्याचार करने लगा। पूरी सामुदायकि ने उससे ऐसी तलाशी बंद करने का आग्रह कयिा और उसे इन शब्दों से सांत्वना दी:

'भाई, *"अपनी चतिाएँ प्रभु पर डाल दो, और वह तुम्हें सहारा देगा"* (भजन संहति 54:23)।'

लेकनि उसने उनकी कोई परवाह नहीं की और कठोर शब्दों से सभी को सताया।

कुछ दनिों बाद, वह गंभीर रूप से बीमार पड़ गया; फरि भी तब भी उसने अपनी बड़बड़ाहट और ईश्वरनदिा बंद नहीं की। दयालु प्रभु, *'जो चाहता है कि सभी लोग बचें और सत्य के ज्ञान तक पहुँचें'* (1 तीमुथयिुस 2:4), ने उस पर अपनी अद्भुत दया दखिाई। एक बार, मृतक की तरह बस्तिर पर लेटे हुए, अरेफा—कई दनिों की खामोशी के बाद—अचानक, सभी को आश्चर्यचकति करते हुए, ज़ोर से चल्लिाने लगे:

'प्रभु, दया करें! प्रभु, मुझे क्षमा करें! प्रभु, मैंने पाप कयिा है। सब कुछ आपका है – और मुझे उस चीज़ का पछतावा नहीं है जो मैंने खोई है।'

तब, तुरंत अपने बस्तिर से उठकर, उन्होंने भाइयों को अपने पुकारने का कारण समझाया और नम्निलखिति दर्शन सुनाया

उसने कहा, 'मैंने देखा कि मेरे पास स्वर्गदूत आए, और साथ ही राक्षसों का एक समूह भी, और उन्होंने मुझसे चोरी की गई संपत्ति पर ववािद करना शुरू कर दयिा। राक्षसों ने कहा: "उसने इसके लिए परमेश्वर की महमिा नहीं की, बल्कि उसकी नदिा की; इसलिए, वह हमारा है और हमें सौंप दयिा जाना चाहिए।"' परन्तु स्वर्गदूतों ने मुझसे कहा: 'हे दीन मनुष्य, यदि तू अपने से छीनी गई संपत्ति के लिए परमेश्वर का धन्यवाद करता, तो यह तेरे लिए दान के समान गनि लयिा जाता, जैसा कि अय्यूब के लिए हुआ था – क्योंकि जो कोई दान देता है, वह परमेश्वर के सामने बहुत पुण्य का भागी होता

[7447] पोलोत्स्क – जो अब वटिेब्स्क गवर्नरेट का एक जलिा शहर है – पोलोत्स्क के प्रसिपिल्टी की राजधानी था।

है, क्योंकि वह ऐसा अपनी इच्छा से करता है। लेकिन यदि कोई जबरन हुई वंचना को कृतज्ञता के साथ सहन करता है, जो स्वैच्छिक इच्छा का स्थान ले लेती है, तो वह व्यक्ति शैतान द्वारा परीक्षा में डाला जा रहा है। क्योंकि शैतान किसी व्यक्ति पर वंचना इस इच्छा से थोपता है कि वह उसके भीतर ईश्वर-निंदा को भड़काए। लेकिन एक कृतज्ञ व्यक्ति सब कुछ ईश्वर की इच्छा पर छोड़ देगा, और ऐसे मामले में हानि दान के बराबर है। जब स्वर्गदूतों ने मुझे यह बताया, तो मैं चिल्लाया: 'प्रभु, मुझे क्षमा करें! प्रभु, मैंने पाप किया है! सब कुछ आपका है – और मैं उस चीज़ के लिए दुखी नहीं हूँ जो चोरी हो गई है।' तब राक्षस अचानक गायब हो गए। स्वर्गदूतों ने, हालाँकि, प्रसन्न होकर, मेरी ओर से उस खोए हुए चाँदी को दान के रूप में गिनकर प्रस्थान किया।

यह सुनकर, भाइयों ने परमेश्वर की महिमा की, जो पापियों को पश्चाताप के मार्ग पर ले जाता है और उन्हें धन्यवाद की महान शक्ति का खुलासा कर चुका है। जहाँ तक धन्य अरेफास का प्रश्न है, ईश्वर द्वारा प्रबुद्ध होकर, उस समय से वह मन और चरित्र दोनों ही दृष्टि से पूरी तरह से बेहतर के लिए बदल गया, इतना कि हर कोई चकित हो गया और प्रेरित के शब्दों में उसके बारे में बोला: *'जहाँ पाप बहुत बढ़ा, वहाँ अनुग्रह और भी अधिक बढ़ा'* (रोमियों 5:20)।

जिसके धर्मनिंदा से पहले कोई भी उसे रोक नहीं सका था, वह बाद में ईश्वर की स्तुति करना कभी बंद नहीं हुआ, और वह यॉब के शब्दों के साथ दिन-प्रतिदिन उनकी महिमा करता और उन्हें धन्यवाद देता रहा: *'प्रभु ने दिया, और प्रभु ने छीन लिया; प्रभु का नाम धन्य हो!'* (अय्यूब 1:21)। इसी प्रकार, उन्होंने अपनी अन्य उल्लंघनों के लिए भी गंभीरता से पश्चाताप किया, सच्ची गरीबी में, आज्ञाकारिता में—केवल मनुष्यों की दृष्टि में नहीं—और बाहरी तथा आंतरिक दोनों तरह की पवित्रता में उत्साह दिखाया। उन्होंने स्वयं को निरंतर प्रार्थना, कठोर उपवास और कई अन्य शारीरिक तथा आध्यात्मिक सद्गुणों के लिए समर्पित कर दिया, जिनकी ओर उन्हें उनके कृतज्ञता के सद्गुण ने प्रेरित किया था। सोने और चांदी से कहीं अधिक सद्गुणों और ईश्वर के प्रति भक्ति में समृद्ध होकर, उन्होंने, कई कष्टों के बाद, अनंत rest[7448] में प्रवेश किया। उन्हें एक गुफा में सम्मान के साथ सुलाया गया, और उनके अवशेषों के चमत्कारिक रूप से अपरिवर्तनीय रहने के माध्यम से उनकी आनंद की गवाही मिलती है, जो दयालुओं के आनंद के समान है, जिन्हें प्रभु के वचन के अनुसार दया दिखाई जाती है (मत्ती 5:7)। उनकी पवित्र प्रार्थनाओं के द्वारा, हम भी, जो कृतज्ञता में जीते हैं, परमेश्वर की दया पाएँ, और हम भी उनके साथ स्वर्ग के राज्य में पवित्र त्रिमूर्ति में परमेश्वर का धन्यवाद करने के लिए योग्य ठहराए जाएँ, युगानुयुग। आमीन।

7 नवंबर

२५ अक्टूबर (पुराना तरीका)

पवित्र शहीदों मार्शियन और मार्टरियिस का कष्टकथा

25 अक्टूबर को स्मरणोत्सव

जब एरियस की दुष्ट विधर्म फैली, जिससे मसीह की कलीसिया में बड़े विभाजन हुए, तो एरियन और मूर्तिपूजकों दोनों की ओर से विश्वासयोग्य मसीहियों के विरुद्ध क्रूर उत्पीड़न शुरू हो गए। उस समय, सभी जिन्हें मसीह एक सृष्टिकर्ता के रूप में स्वीकार था, न कि एक प्राणी – ईश्वर ने मनुष्य बनाया, न कि केवल एक मानव – उन्हें सताया, यातना दी, निर्वासित किया और मार डाला गया। एरियन विशेष रूप से तब मजबूत हो गए जब सम्राट कॉन्स्टैंटियस स्वयं, जो कॉन्स्टेंटाइन महान के पुत्र थे, उसी विधर्म में पड़ गए और अपने दरबार में दो उच्च-पदस्थ अधिकारियों, यूसेबियस और फिलिप को लाए - जो एरियन थे और उन्होंने उत्साहपूर्वक ऑर्थोडॉक्स का उत्पीड़न किया और मसीह की कलीसिया को हानि पहुँचाई। इस प्रकार, वे हमारे पवित्र पिता पॉल द कन्फैसर के निर्वासन और मृत्यु के लिए जिम्मेदार थे; उन्होंने अपने समान विचारधारा वाले अनुयायियों को उनका गला घोंटने का निर्देश दिया, जिसे उन्होंने अंजाम दिया। उनकी जगह,

[7448] संत अरेफ की मृत्यु 1190 से पहले ही हो गई थी।

उन्होंने मैसेडोनिया को पैट्रआर्कल सिंहासन पर स्थापित किया[7449] । और उन्होंने विभिन्न तरीकों से कई अन्य कन्फैसरों और धर्म के शिक्षकों को भी नष्ट कर दिया। ईसाई धर्म के इन कट्टरपंथियों में दो पुरुष, मार्शियन और मार्टायर थे, जिन्होंने अपने उपदेश और लेखन के माध्यम से परमेश्वर की कलीसिया को सुशोभित किया और, 'कलीसिया के दो स्तनों की तरह, धर्म की शिक्षा का दूध बहाकर, आध्यात्मिक बच्चों को पोषित किया'[7450] । पहले, उन्होंने उपर्युक्त पवित्र कन्फैसर पॉल के अधीन सेवा की थी: मार्शियन एक रीडर के रूप में, और मार्टिरियस एक सबडीकन के रूप में। वे नोटरी भी थे[7451] , जिन्होंने पैट्रआर्क की शिक्षाओं को दर्ज किया और उन कार्यों को संकलित किया जिनसे धर्मपरायणता का समर्थन होता था। साथ ही, वे स्वयं परमेश्वर के वचन के महान प्रचारक और चर्च के रक्षक थे, जिन्हें उन्होंने दो ढालों की तरह विधर्मी तीरों से बचाया। प्रभु ने उन्हें, अपने वफादार शिष्यों के रूप में, ऐसी जीभ और बुद्धि प्रदान की कि जो कोई भी उनका विरोध करता था, वह न तो उनका खंडन कर सकता था और न ही उनका सामना कर सकता था (देखें लूका 21:15) – एरियिनों को। संत पॉल के निर्वासन और मृत्यु के बाद, विधर्म के नेताओं ने अपना विष उनके शिष्यों, मार्सियन और मार्टिरियस पर उगलना शुरू कर दिया। सबसे पहले, उन्होंने अपनी कपट की चादर के नीचे अपनी दुर्भावना को छिपाते हुए, जैसे राख में आग की चिंगारी, चालाक चापलूसी के माध्यम से उन्हें ऑर्थोडॉक्सी से हटाकर अपनी अधर्मीता की ओर मोड़ने का प्रयास किया। उन्होंने परमेश्वर के संतों को बड़ी मात्रा में सोना दिया, यह वादा करते हुए कि वे उनके लिए राजा से बड़ी कृपा के लिए मध्यस्थता करेंगे, उन्हें बिशप के पदों पर पदोन्नत करेंगे और उन्हें विशाल संपत्तियों का मालिक बनाएंगे, बशर्ते कि वे उनके द्वारा प्रचारित विधर्म को स्वीकार कर लें। लेकिन ईश्वर के संतों ने यह सब ठुकरा दिया: उन्होंने कोई सोना स्वीकार नहीं किया, उन्हें दिए गए सम्मान को अस्वीकार कर दिया, और दुष्टों की चालाकी पर हँसे, और उन्होंने भक्ति के लिए अपमान, अनादर, यातना और यहाँ तक कि मृत्यु को सहना पसंद किया, बजाय इसके कि वे विधर्म में रहते हुए धन, महिमा और सम्मान का आनंद लें। तब विधर्मी, यह देखकर कि वे पवित्र स्वीकारियों को किसी भी तरह से अपने झूठे विश्वास को अपनाने के लिए मना नहीं सकते, उन्हें मृत्युदंड की सजा सुनाई, जिसे संतों ने मसीह के लिए जीवन से भी अधिक चाहा। जब उन्हें पकड़कर फाँसी के स्थान पर ले जाया गया, तो उन्होंने प्रार्थना करने के लिए थोड़ा समय माँगा। स्वर्ग की ओर अपनी आँखें उठाकर और अपने हाथ उठाकर, उन्होंने प्रार्थना की:

– हे प्रभु परमेश्वर, जिसने अदृश्य रूप से हमारे हृदयों को बनाया और हमारे सभी कर्मों का विधान करता है, अपने सेवकों की आत्माओं को शांति में ग्रहण कर, क्योंकि हम तेरे ही कारण मार डाले गए हैं और वध के लिए भेड़ों की तरह गिने गए हैं (भजन संहिता 32:15; 43:23)। हम इस बात पर आनन्दित हैं कि हम आपके नाम के लिए ऐसी मृत्यु द्वारा इस जीवन से विदा हो रहे हैं। हमें जीवन के स्रोत, आप के साथ, अनन्त जीवन में सहभागी होने का वरदान दें।

इस प्रकार प्रार्थना करने के बाद, उन्होंने अपने पवित्र सिर तलवार के नीचे झुकाए और यीशु मसीह की दिव्यता की घोषणा करने के लिए दुष्ट एरियिनों द्वारा उन्हें मृत्युदंड दिया गया। कुछ विश्वासियों ने उनके पवित्र अवशेष उठाए और उन्हें उसी कॉन्स्टेंटिनोपल शहर में मेलैंडियन गेट्स पर दफना दिया। इसके बाद, हमारे पवित्र पिता जॉन क्रिसोस्टोम ने उनकी स्मृति में एक चर्च बनवाया, जिसमें पवित्र शहीदों की प्रार्थनाओं के द्वारा बीमारों पर विभिन्न चंगाइयाँ प्रदान की गईं, परमेश्वर की महिमा के लिए, जो त्रित्व में युगानुयुग महिमा प्राप्त करते हैं। आमीन।

[7449] मेसेडोनियस एक नए धर्मद्रोह के संस्थापक थे। उन्होंने पवित्र आत्मा को परमेश्वर के रूप में स्वीकार नहीं किया, बल्कि उन्हें एक सृजित प्राणी माना, जिसे पिता और पुत्र की दिव्यता और महिमा में कोई हिस्सा नहीं था। मेसेडोनियन धर्मद्रोह की निंदा 381 में थियोडोसियस महान के अधीन दूसरे सार्वभौमिक परिषद में की गई थी।

[7450] लिटर्जिकल मेनियन, अक्टूबर का 25वां दिन, ओड 4।

[7451] नोटरी – शाब्दिक रूप से इसका अर्थ है 'संक्षिप्त लेखक'। ईस्वी की शुरुआती शताब्दियों में, यह शब्द उन शाही सचिवों के लिए इस्तेमाल किया जाता था जो आधिकारिक दस्तावेजों को प्रामाणिक बनाते थे। कॉन्स्टेंटिन महान के अधीन, नोटरी की एक गुप्त चान्सरी स्थापित की गई थी, जिसका कार्य सबसे महत्वपूर्ण राज्य परिषदों के कार्यवृत्त रखना था। साथ ही, कॉन्स्टेंटिनोपल के पैट्रआर्क के सचिवों को भी नोटरी कहा जाता था।

कॉन्टाकयिन, स्वर 4:

शशि्ु अवस्था से ही एक सदाचारी जीवन जीते हुए, मार्शयिन और हे बुद्धमिान शहीद, आपने वधिर्मी एरयिस को परास्त कयिा, और बुद्धमिान शकि्षक पॉल का अनुसरण करते हुए, ऑर्थोडॉक्स वशि्वास को अक्षुण्ण रखा। इस प्रकार, उनके साथ ही, आप त्रमिूर्त कि सबसे योग्य योद्धाओं के रूप में, अनंत जीवन को प्राप्त हुए।

शहीद संत अनास्तासयिस की स्मृत

25 अक्टूबर को स्मरणोत्सव

[7452]संत अनास्तासयिुस[7453] ने स्वेच्छा से अपने यातनाकारों के सामने स्वयं को प्रस्तुत कयिा और साहसपूर्वक मसीह को सच्चे ईश्वर और सभी चीजों के स्रष्टा के रूप में स्वीकार कयिा। सच्चे वशि्वास में इस दृढ़ता के लिए, उन्हें तलवार से सरि कलम कर दयिा गया और उनका शरीर समुद्र में फेंक दयिा गया। एक धर्मपरायण महलिा ने बड़ी कठनिाई से संत की पवत्रि अवशेषों को समुद्र से नकिाल लयिा, उन्हें धूप से अभषिक्ति कर और दफन के वस्त्र पहनाकर अपने घर के चैपल में रख दयिा। संत की कब्र पर कई चमत्कारकि उपचार हुए।

8 नवंबर

26 अक्टूबर (पुराना तरीका)

पवत्रि और महमिामय महान शहीद डेमेट्रयिस के कष्ट और चमत्कार

26 अक्टूबर को स्मरणोत्सव

महान शहीद संत डेमेट्रयिस, जो कुलीन और धार्मकि माता-पतिा के पुत्र थे, थ्रेसलानकिा शहर के मूल नवािसी थे, जहाँ उनके पतिा एक सैन्य कमांडर के रूप में सेवा करते थे। उस समय, अधर्मी राजाओं ने ईसाइयों के खलिाफ एक क्रूर उत्पीड़न छेड़ रखा था; इसलिए, डेमेट्रयिस के पतिा, जो गुप्त रूप से हमारे प्रभु यीशु मसीह में वशि्वास रखते थे और उनके आज्ञाओं का पालन करते थे, ने मूर्तपिूजकों की भयानक धमकयिों के डर से, खुले तौर पर उनके परम पवत्रि नाम का प्रचार करने की हम्मित नहीं की। अपने कक्षों में, एक गुप्त कमरे में, वह सोने और कीमती पत्थरों से सुसज्जति दो पवत्रि प्रतमिाएँ रखता था; एक में हमारे प्रभु यीशु मसीह और दूसरी में परमेश्वर की परम पवत्रि माता का चत्रि था; इन प्रतमिाओं के सामने वह मोमबत्तयिाँ जलाता और धूप जलाता था। इस एकांत पूजा स्थल में, वह अपनी पत्नी के साथ अक्सर परम उच्च में वास करने वाले सच्चे ईश्वर, उनके एकमात्र पुत्र, और नरि्मल कन्या को प्रार्थना करते थे। यह धर्मपरायण दंपत उिदारतापूर्वक गरीबों को दान देते थे और ज़रूरतमंदों को कभी नराश नहीं करते थे। एक ही बात थी जसिसे उन्हें गहरा दुख था: उनके कोई संतान नहीं थी। उन्होंने प्रभु से वनिती की कि उन्हें एक उत्तराधकिारी दें, और कुछ समय बाद उनकी इच्छा पूरी हो गई।

सर्वशक्तमिान ने उनकी प्रार्थना सुनी और उन्हें एक पुत्र, संत डेमेट्रयिस, का वरदान दयिा। माता-पतिा की खुशी बहुत बड़ी थी, और उन्होंने परमेश्वर का बहुत ही भक्तपिूर्वक धन्यवाद कयिा। पूरे थस्सिलुनीके ने अपने राज्यपाल की खुशी में हस्सिा लयिा, जसिने पूरे शहर के लिए, वशिेष रूप से गरीबों के लिए, एक भोज का आयोजन कयिा।

[7452] इस धर्मपरायण महलिा – धनी वृद्ध महलिा अस्क्लेप्सआि – ने जो कोई भी पवत्रि अवशेषों को बरामद करेगा, उसे इनाम देने का वादा कयिा। जब पवत्रि अवशेष अफ्रीकयिों द्वारा पाए गए, तो उस महलिा के नौकरों ने उन्हें केवल उन्हीं लोगों को सौंपने के लिए मजबूर कयिा जन्हिें वे अपने अधीनस्थों को रपिोर्ट करना चाहते थे। हालांकि, अफ्रीकयिों ने अवशेषों का एक हस्सिा – जसिे सरि माना जाता था – ले लयिा और उसे अफ्रीका भेज दयिा।

[7453] संत अनास्तासयिस एक कपड़ा रौंदने वाले कामगार थे। अक्वलियिा (उत्तरी इटली का एक शहर) से डल्माटयिा के एक तटीय शहर सलोना तक यात्रा करने के बाद, उन्होंने मसीह में अपने वशि्वास की घोषणा की, जसिके लिए उन्होंने डयिोक्लेटयिन (284–305) के शासनकाल के दौरान शहादत प्राप्त की।

जब लड़का बड़ा हो गया और सत्य को समझने में सक्षम हो गया, तो उसके माता-पिता उसे चर्च में ले गए, जहाँ पवित्र प्रतिमाएँ थीं, और उन्हें दिखाते हुए कहा:

'यह एक सच्चे ईश्वर की प्रतिमा है, जिसने स्वर्ग और पृथ्वी की रचना की, और यह परमेश्वर की अति पवित्र माता की प्रतिमा है।'

उन्होंने उसे मसीह की पवित्र आज्ञाएँ सिखाईं, उसे वह सब कुछ समझाया जिसके द्वारा कोई व्यक्ति हमारे प्रभु यीशु मसीह को जान सकता है, और उसे दिखाया कि दुष्ट मूर्तिपूजक देवताओं में विश्वास कितना व्यर्थ और हानिकारक है।

उस समय से, डेमेट्रियस, अपने माता-पिता के शब्दों और विशेष रूप से पवित्र आत्मा द्वारा स्वर्ग से मिली शिक्षा से निर्देशित होकर, सत्य को जान गया: ईश्वर की कृपा पहले ही उस पर हो चुकी थी; वह अपनी पूरी आत्मा से प्रभु पर विश्वास करता था और पवित्र प्रतिमाओं की पूजा करते हुए, उन्हें श्रद्धापूर्वक चूमता था।

तब दिमित्री के माता-पिता ने एक पुरोहित और अपने परिचित कुछ ईसाइयों को बुलाकर, उस लड़के का उनके गुप्त चैपल में पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम पर बपतिस्मा दिया।

पवित्र बपतिस्मा ग्रहण करने के बाद, दिमित्री को सच्चे विश्वास में शिक्षित किया गया; वह उम्र और समझ दोनों में बढ़ा, सद्गुणों की सीढ़ी पर और ऊँचा चढ़ता गया – और ईश्वर की कृपा ने उसे और भी अधिक प्रबुद्ध और मार्गदर्शन दिया।

जब डेमेट्रियस वयस्क हो गया, तो उसके माता-पिता इस सांसारिक जीवन से चल बसे, उन्होंने अपने बेटे के लिए ईश्वर-प्रसन्न जीवन का उदाहरण स्थापित किया और उसे अपनी पूरी संपत्ति का उत्तराधिकारी बना दिया।

इस बीच, थिस्सलुनीके के राज्यपाल की मृत्यु की खबर पाकर राजा मैक्सिमियिन ने अपने पुत्र, संत डेमेट्रियस को अपने दरबार में बुलाया। यह देखकर कि वह युद्ध में बुद्धिमान और पराक्रमी था, राजा ने उसे थिस्सलुनीके के पूरे क्षेत्र का राज्यपाल नियुक्त किया; यह पद सौंपते हुए उन्होंने कहा:

'अपने मूल शहर की रक्षा करो और इसे अधर्मी ईसाइयों से मुक्त कराओ; जिसने भी सूली पर चढ़ाए गए के नाम का उच्चारण भी किया, उसे मौत की सजा़ दो।'

राजा की नियुक्ति स्वीकार करने के बाद, डेमिट्रियस घर लौट आए और शहर के निवासियों ने उनका सम्मानपूर्वक स्वागत किया। वह लंबे समय से अपने पैतृक शहर में सच्चे धर्म के प्रकाश को स्थापित करने की इच्छा रखते थे और जब उन्होंने देखा कि थिस्सालोनिका के लोग निर्जीव मूर्तियों की पूजा करते हैं तो वे दुखी हुए। अब, शहर में अपने आगमन पर, उन्होंने तुरंत, सभी के सामने, हमारे प्रभु यीशु मसीह की घोषणा और महिमा करना शुरू कर दिया; उन्होंने सभी को मसीह की आज्ञाओं में शिक्षित किया, मूर्तिपूजकों को पवित्र विश्वास में परिवर्तित किया और बहुदेववाद की घृणित प्रथा को समाप्त कर दिया; संक्षेप में, वह थिस्सलुनीके के लोगों के लिए दूसरे प्रेरित पौलुस थे। इसकी खबर जल्द ही मैक्सिमियिन को स्वयं मिल गई। सम्राट को यह जानकर बहुत क्रोध आया कि उसके द्वारा नियुक्त राज्यपाल दिमित्रियस एक ईसाई था और उसने पहले ही कई लोगों को अपने धर्म में परिवर्तित कर दिया था। उसी क्षण, सरमाटियन[7454] युद्ध से लौटते समय, सम्राट थ्रेसलानिकी में रुका। शहर में मैक्सिमियिन के आगमन से पहले ही, डेमेट्रियस ने अपने माता-पिता से विरासत में मिली अपनी सभी संपत्तियाँ—सोना, चांदी, कीमती पत्थर और वस्त्र—अपने वफादार सेवक लुपस को सौंप दीं और आदेश दिया कि यह सब गरीबों और ज़रूरतमंदों में बाँट दिया जाए।

'इस सांसारिक धन को उनके बीच बाँट दो,' संत ने आगे कहा, 'और आओ हम अपने लिए स्वर्गीय धन की खोज करें।'

उन्होंने स्वयं प्रार्थना और उपवास करना शुरू कर दिया, इस प्रकार उन्होंने स्वयं को शहीद के मुकुट के लिए तैयार किया। राजा ने तुरंत यह पता लगाने की कोशिश की कि डेमिट्रियस के बारे में जो कुछ उसने सुना था, वह सच था या नहीं। राजा के सामने निडर होकर खड़े होकर, डेमिट्रियस ने खुद को एक ईसाई स्वीकार किया और मूर्तिपूजक बहुदेववाद की निंदा करने लगे। दुष्ट यातनाकर्ता ने तुरंत आदेश दिया कि सच्चे धर्म के स्वीकारकर्ता को जेल में डाल दिया जाए। उसमें प्रवेश करते ही, संत ने भविष्यवक्ता दाऊद के शब्दों से प्रार्थना की: *'हे परमेश्वर, मेरी रक्षा के लिए जल्दी*

[7454] 'सरमाटियन' नाम आज के रूस के दक्षिण में, साथ ही जर्मनी और ऑस्ट्रिया के कुछ हिस्सों में बसने वाली विभिन्न जनजातियों को संदर्भित करता है।

करो; हे प्रभु, मेरी सहायता के लिए जल्दी करो' (भजन संहिता 69:2)। *'क्योंकि हे यहोवा परमेश्वर, तू मेरी आशा है, हे प्रभु, मेरा भरोसा मेरी जवानी से है। तूने मुझे गर्भ से ही सहारा दिया है; तूने मुझे मेरी माता के गर्भ से निकाला है; तेरी स्तुति कभी बंद नहीं होगी। जब मैं तेरा गीत गाता हूँ तो मेरा मुँह आनन्दित होता है, और मेरी आत्मा जो तूने बचाई है; और मेरी जीभ प्रतिदिन तेरी धार्मिकता का प्रचार करेगी*' (भजन संहिता 70:5, 6, 23, 24)।

जैसे किसी भव्य महल में हो, डेमेट्रियस अपनी जेल की कोठरी में बैठा था, परमेश्वर की स्तुति और महिमा कर रहा था। शैतान, उसे डराने की इच्छा से, खुद को एक बिच्छू में बदल गया और संत के पैर में डंक मारने की कोशिश करने लगा। क्रूस का चिह्न बनाने के बाद, संत ने निर्भय होकर बिच्छू पर पैर रखा, और दाऊद के वचन बोले: *'तू विषैले साँप और अजगर पर पैर रखेगा; तू सिंह और अजगर को कुचल डालेगा*' (भजन संहिता 90:13)।

इस प्रकार कालकोठरी में अपना समय बिताते हुए, संत को ईश्वर के एक स्वर्गदूत से मिलने का सम्मान प्राप्त हुआ; स्वर्गीय दूत एक तेजस्वी प्रकाश में, एक सुंदर स्वर्गीय मुकुट पहने हुए, उनके सामने प्रकट हुआ, और कहा:

'मसीह के लिए कष्ट सहने वाले, तुझ पर शान्ति हो; हिम्मत रख और मज़बूत बन!' जिसके उत्तर में संत ने कहा:

'मैं प्रभु में आनन्दित हूँ और अपने उद्धारकर्ता परमेश्वर में प्रसन्न हूँ!' स्वर्गदूत का यह दर्शन पवित्र पीड़ित को सांत्वना और प्रोत्साहन देने वाला था; उसने मसीह के सच्चे विश्वास की अपनी गवाही को अपने ही रक्त से सील करने की इच्छा और भी अधिक कर ली।

इस बीच, सम्राट ने खेलों का आयोजन किया और मनोरंजन के लिए दृश्यों को देखना शुरू कर दिया। उसके पास एक उत्कृष्ट योद्धा था, जो जन्म से एक वंडल था[7455] , जिसका नाम ली था। अपने लिए एक ऊँचा मंच बनवाने का आदेश देकर, मैक्सिमियिन बड़ी प्रसन्नता से देख रहा था कि ली अपने विरोधियों से लड़ रहा था और उन्हें ऊँचाई से भालों पर गिराकर दर्दनाक मृत्यु के घाट उतार रहा था। दर्शकों में नेस्टर नाम का एक युवा—एक ईसाई—भी था; वह संत डेमेट्रियस के साथ आध्यात्मिक दोस्ती के बंधन में बंधा था, जो धर्म में उसके गुरु रहे थे। यह देखकर कि ली कई लोगों को मार रहा था और ईसाइयों के प्रति विशेष रूप से निर्दयी था - जिन्हें जबरदस्ती ली से लड़ने के लिए मजबूर किया जा रहा था - इस युवक की आत्मा उत्तेजित हो गई और वह सम्राट के पहलवान से लड़ना चाहता था। लेकिन युद्ध में उतरने से पहले, वह सेंट डेमेट्रियस से मिलने के लिए कालकोठरी में गया। वहाँ, नेस्टर ने उसे लिय के सभी करतबों के बारे में बताया, उसे सूचित किया कि वह इस क्रूर ईसाइयों के संहारक से लड़ना चाहता है, और संत से अपनी कृपा और प्रार्थनाओं के लिए आशीर्वाद माँगा। उसे क्रॉस के चिह्न से चिह्नित करने के बाद, डेमेट्रियस ने उससे भविष्यवाणी की:

'तू ली पर विजय प्राप्त करेगा और मसीह के लिए कष्ट सहन करेगा!'

अखाड़े के पास पहुँचकर, नेस्टर ने सबके सुनने के लिए पुकारा:

'हे दमित्रियस के ईश्वर, मेरे विरोधी के खिलाफ मेरे संघर्ष में मेरी मदद करो!'

तब, लियस के साथ लड़ते हुए, उसने राजा के पहलवान को हरा दिया और उसे मंच से नीचे तेज भालों पर फेंक दिया। लियस की मृत्यु से राजा को गहरा दुख हुआ; उसने तुरंत धन्य नेस्टर को मार डाले का आदेश दिया। लेकिन इससे मैक्सिमियिन को कोई सांत्वना नहीं मिली; वह दिन-रात लियास की मृत्यु पर शोक मनाता रहा। यह जानकर कि नेस्टर ने डेमेट्रियस की सलाह और आशीर्वाद से लियास के साथ एक-एक करके लड़ाई की थी, राजा ने आदेश दिया कि पवित्र महान शहीद को भी भाले से भेदा जाए।

'लियस,' उस निर्दयी यातनाकर्ता ने सोचा, 'नेस्टर के हाथ से भालों के सिर पर फेंका गया था; वही मृत्यु जो उसने भोगी, वही संत डेमेट्रियस को भी भोगनी चाहिए—उसे उसी मृत्यु से मरने दो जिससे उसने हमारे प्रिय पहलवान, लियस को नष्ट किया था।'

लेकिन उस पागल यातनाकर्ता ने खुद को यह विश्वास दिलाकर धोखा दिया कि धर्मी और पापी की मृत्यु एक जैसी होती है; वह इस बात में गलत था, क्योंकि पापियों की मृत्यु क्रूर होती है, जबकि संतों का निधन प्रभु की दृष्टि में सम्मानजनक होता है।

[7455] वांडल जर्मनिक मूल के लोग थे जो मुख्य रूप से बाल्टिक सागर के तटों पर रहते थे।

26 अक्टूबर को भोर होते ही सैनकिों ने दमित्रिी के कालकोठरी में प्रवेश कयिा; उन्होंने उस पवत्रि पुरुष को प्रार्थना में खड़े हुए पाया, और तुरंत उन पर टूट पड़े और उन्हें अपनी भालों से भेद दयिा। इस प्रकार मसीह के इस स्वीकारकर्ता ने अपना सम्मानजनक और पवत्रि आत्मा सृष्टकिर्ता के हाथों में सौंप दयिा[7456] ।

रात के दौरान, ईसाइयों ने गुप्त रूप से संत के शरीर को, जसिे अपमानपूर्वक धूल में फेंक दयिा गया था, उठाया और श्रद्धापूर्वक दफना दयिा।

पवत्रि महा-शहीद के धन्य नधिन के समय उनके वफादार सेवक, उपर्युक्त लुप, वहां मौजूद थे; उन्होंने श्रद्धापूर्वक अपने स्वामी का वस्त्र, जो उनके पवत्रि रक्त से लथपथ था, उठाया और उसमें अपनी अंगूठी डुबो दी। इस वस्त्र और अंगूठी से, उन्होंने कई चमत्कार कएि, हर प्रकार की बीमारयिों को ठीक कयिा और दुष्ट आत्माओं को भगाया।

इन चमत्कारों की अफवाहें पूरे थ्रेसलॉनीकी में फैल गईं, जसिसे सभी बीमार लोग लुपस के पास आने लगे। यह जानकर, मैक्समियिन ने आदेश दयिा कि धन्य लुपस को पकड़कर उसका सरि कलम कर दयिा जाए। और इस प्रकार इस नेक सेवक ने अपने स्वामी, संत डेमेट्रयिस, का अनुसरण करते हुए स्वर्गीय नविासों में प्रवेश कयिा।

जब काफी समय बीत गया और ईसाइयों पर अत्याचार बंद हो गया, तो संत डेमेट्रयिस के मकबरे पर एक छोटा चर्च बनाया गया; वहाँ कई चमत्कार हुए, और कई बीमार लोग अपने रोगों से ठीक हो गए। इलरियिा का एक कुलीन व्यक्ति, लयिोन्टयिस नामक[7457] , एक गंभीर, लाइलाज बीमारी से ग्रस्त हो गया। पवत्रि शहीद के चमत्कारों के बारे में सुनकर, वह वश्विास के साथ पवत्रि महा शहीद डेमेट्रयिस की ओर मुड़ा। जब उसे चर्च में ले जाया गया और ठीक उसी स्थान पर लटिाया गया जहाँ पवत्रि महा शहीद के अवशेष दफनाए गए थे, तो वह तुरंत ठीक हो गया और पूरी तरह से स्वस्थ होकर उठ खड़ा हुआ, ईश्वर का धन्यवाद करते हुए और उनके पवत्रि सेवक डेमेट्रयिस की महमिा करते हुए।

संत के प्रति कृतज्ञता की भावना से, लयिोन्टयिस इस महमिामय महान शहीद के सम्मान में एक भव्य और सुंदर चर्च का नर्मिाण करना चाहता था। पहले की छोटी चर्च को तोड़ दयिा गया, और जब उन्होंने नींव के लिए खाई खोदनी शुरू की, तो पवत्रि महा शहीद डेमेट्रयिस के अवशेष पूरी तरह से अखंड और क्षय के कसिी भी लक्षण के बनिा पाए गए; उनसे एक सुगंधति मर्रिा (myrrh) बह रहा था, जसिसे पूरा शहर उसकी मीठी सुगंध से भर गया।

इस आध्यात्मकि उत्सव के लिए एक बड़ी भीड़ इकट्ठा हुई। बड़ी श्रद्धा के साथ, पवत्रि अवशेषों को जमीन से नकिाला गया, जबकि अनगनित बीमार लोग उस मूर्रा से अभषिेक करके चंगा हो गए जो बहकर नकिली थी[7458] । लयिोन्टयिस अपनी खुद की चंगाई से कम, पवत्रि अवशेषों की खोज पर अधकि प्रसन्न हुआ। उन्होंने जल्द ही अपना शुरू कयिा हुआ काम पूरा कर लयिा और उस स्थान पर संत डेमेट्रयिस के नाम पर एक भव्य चर्च का नर्मिाण कयिा। सोने और चांदी से जड़े और कीमती पत्थरों से सुसज्जति एक अवशेष-पात्र में, महान शहीद के पूजनीय अवशेष यहीं रखे गए थे। लेकनि लयिोन्टयिस की चतिाएँ और भी आगे तक फैली हुई थीं: उन्होंने गाँव और अंगूर के बाग खरीदे और इस चर्च में सेवा करने वाले पुरोहतिों के समर्थन के लिए उन्हें दान कर दयिा। जब उन्हें अपने देश लौटने का समय आया, तो उन्होंने संत की अवशेषों का एक हस्सिा अपने साथ ले जाने की योजना बनाई, ताकि वे अपने ही शहर में डेमेट्रयिस को समर्पति एक चर्च का नर्मिाण कर सकें। लेकनि संत उसके सामने प्रकट हुए और उन्होंने उसे अवशेषों का कोई भी हस्सिा ले जाने से मना

[7456] संत की मृत्यु लगभग 306 ईस्वी में हुई।

[7457] लयिोन्टयिस इल्लरियिा में एक प्रमुख पद पर थे, जसिमें उस समय थेस्सालोनकिी का क्षेत्र भी शामलि था।

[7458] जसिके पवत्रि अवशेषों से मुर्र का प्रवाह हुआ, वह ईश्वर द्वारा अपने महान संत को महमिामय बनाने के लिए कएि गए सबसे अद्भुत चमत्कारों में से एक था। यह प्रवाह ईश्वर की कृपा का एक अद्भुत संकेत है। मुर्र का प्रवाह 7वीं शताब्दी में शुरू हुआ। लेखकों और इतहिासकारों की एक पूरी फौज इस अकल्पनीय घटना की गवाही देती है। आइए हम ऐसे ही एक लेखक, अर्थात् डेमेट्रयिस क्रसिोलॉगस, जनिका जीवन 14वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में था, की गवाही का हवाला दें: 'यह (यानी, मूर्रा) अपने स्वभाव से ही पानी नहीं है, बल्कि पानी से अधकि गाढ़ा है, और पृथ्वी पर कसिी भी पदार्थ से नहीं मलिता-जुलता—न तरल, न ठोस—और न ही कृत्रमि रूप से तैयार कएि गए कसिी भी पदार्थ से... यह सभी सुगंधों से अधकि अद्भुत है, न केवल मानव कला द्वारा तैयार की गई, बल्कि प्रकृति में ईश्वर द्वारा बनाई गई सुगंधों से भी।" इस मूर्र से अभषिेक करने से कई चमत्कारकि उपचार हुए; यहाँ तक कि वे लोग भी जो मसीह में वश्विास नहीं रखते थे, इस अद्भुत पदार्थ का बहुत सम्मान करते थे। इस प्रकार, 1429 में तुर्कों द्वारा थेस्सालोनकिी की लूट के दौरान, दुश्मनों में से अधकि समझदार लोगों ने इस मूर्र की एक नश्चिति मात्रा अपने साथ ले जाने का इरादा कयिा, जसिके उपचारात्मक शक्ति के बारे में उन्होंने बहुत कुछ सुना था। पवत्रि चर्च, संत डेमेट्रयिस को 'मश्रि-प्रदाता' कहकर, मसीह के इस तपस्वी की इस प्रकार प्रशंसा करती है: 'हे डेमेट्रयिस, सुगंधति और सम्माननीय मश्रि, तुम एक उमड़ता हुआ स्रोत हो' (कैनन, ओड 1)। 'तुम्हारे मश्रि के सदा बहने वाले झरने बह नकिलते हैं।'

कर दिया। इसलिए लियोन्टियस ने केवल संत के रक्त से रंगे हुए कफ़न को लिया और, उसे एक सुनहरे अवशेष-पात्र में रखकर, इल्यरिया में अपने घर के लिए रवाना हो गया। यात्रा के दौरान, उस कफ़न के कारण संत के मध्यस्थता से कई चमत्कार हुए। एक अवसर पर, लौटते समय, लियोन्टियस को एक नदी पार करनी पड़ी जो अपने तट से बाहर आ गई थी और भयावह रूप से उफन रही थी[7459] ; उसे भय और आतंक सताने लगा, लेकिन अचानक संत डेमेट्रियस उसके सामने प्रकट हुए और कहा:

'कफ़न वाली अस्थि-पेटिका को अपने हाथों में उठा लो और डरना बंद करो।'

लियोन्टियस ने संत की सलाह मानी: वह और उसके साथ मौजूद सभी लोग सुरक्षित रूप से पार हो गए। जब वह अपने देश लौटा, तो उसने सबसे पहले पवित्र महान शहीद डेमेट्रियस को समर्पित एक सुंदर चर्च का निर्माण किया। लेओन्टियस ने इस महान ख्रीस्तीय तपस्वी के नाम का विश्वास के साथ स्मरण करते हुए, संत की मध्यस्थता से चमत्कार किए। इलरिया का शासक गंभीर रूप से बीमार था, इतना कि उसके पूरे शरीर पर सिर से पैर तक मवाद और पपड़ी जम गई थी। लेकिन लियोन्टियस ने संत डेमेट्रियस से प्रार्थना करके उस बीमार व्यक्ति को उसकी गंभीर पीड़ा से मुक्त कर दिया; उसने रक्तस्राव से पीड़ित एक व्यक्ति को चमत्कारिक रूप से ठीक किया और एक अन्य व्यक्ति को, जो एक राक्षस के वश में था, भी ठीक किया; संत की मध्यस्थता से वहाँ कई अन्य चमत्कार भी हुए। लेकिन थ्रेसोनीकी में विशेष रूप से कई चमत्कार हुए, जहाँ इस महान शहीद के अवशेष स्थापित थे।

एक दिन, पवित्र महा-शहीद को समर्पित चर्च में आग लग गई। ईश्वर के संत की अवशेषों के ऊपर चांदी की छतरी को विशेष रूप से बहुत नुकसान पहुँचा: यह आग में पिघल गई थी। उस समय के महाधर्माध्यक्ष यूसेबियस, उस छत्र को फिर से बनवाने के लिए बहुत उत्सुक थे। लेकिन उनके पास बहुत कम चाँदी थी। इस चर्च में एक चाँदी का सिंहासन था, जो आग के दौरान पूरी तरह से सुरक्षित रहा था। आर्चबिशप ने संत की कफ़न के लिए एक छत्र बनाने के लिए इस सिंहासन को पिघलाने की योजना बनाई, लेकिन उन्होंने अभी तक अपने इरादे के बारे में किसी को नहीं बताया था। उसी समय, इस चर्च में डेमेट्रियस नाम का एक धर्मपरायण पुरोहित था। पवित्र महान शहीद उसे दिखाई दिए और कहा:

'जाओ और शहर के बिशप से कहो: मेरी चर्च के सिंहासन को फिर से बनवाने की हिम्मत मत करना।'

दिमित्रियस तुरंत यूसेबियस के पास गया और उसे अपनी योजना छोड़ देने के लिए कहा। पहले तो महाधर्माध्यक्ष पुरोहित की बातों से बहुत हैरान हो गए, लेकिन फिर, यह सोचकर कि दिमित्रियस को किसी तरह उनकी मंशा का पता चल गया होगा, वे हैरान होना बंद कर दिए और यहाँ तक कि पुरोहित को डाँट भी दिया। कुछ ही दिनों बाद, आर्चबिशप ने पहले ही कारीगरों को अपने सामने पेश होने के लिए बुला लिया था। ठीक उसी क्षण, पादरी दिमित्री दूसरी बार यूसेबियस के पास आए और कहा:

'पवित्र महान शहीद फिर से मुझ पापी को सपने में दिखाई दिए हैं और उन्होंने मुझे आज्ञा दी है कि मैं आपसे कहूँ: मेरे लिए, सिंहासन को फिर से रंगवाएँ नहीं।'

आर्चबिशप ने पादरी को सख्त लहजे में जाने को कह दिया, लेकिन फिर भी, उन्होंने सिंहासन को फिर से रंगने का आदेश अभी तक नहीं दिया था। कुछ समय बाद, वह एक बार फिर सिंहासन को रंगवाने ही वाले थे, लेकिन संत डेमेट्रियस, उसी पादरी को प्रकट होकर, बोले:

– निराश न हो; मैं स्वयं अपने चर्च और अपने शहर की देखभाल करूँगा; उस चिंता को केवल मुझ पर ही छोड़ दो।

यह सुनकर महाधर्माध्यक्ष अपनी आँसुओं को रोक न सके और उपस्थित सभी से कहा:

'भाइयों, हम थोड़ी देर और प्रतीक्षा करें, क्योंकि स्वयं मसीह के संत ने हमें अपनी सहायता का वचन दिया है।'

आर्चबिशप के बोलते ही थिस्सलोनिकी का एक नागरिक मीना नामक व्यक्ति 75 पाउंड चांदी लेकर आ गया।

'संत डेमेट्रियस,' मीना ने कहा, 'ने मुझे कई बार खतरे से बचाया है और मृत्यु से भी बचाया है। मैं लंबे समय से अपने दयालु संरक्षक और अद्भुत मध्यस्थ की चर्च को दान देने की इच्छा रखता था। आज सुबह ही, एक आवाज़ ने मुझे प्रेरित किया:

'जाओ और वह करो जो तुम लंबे समय से करने का इरादा रखे हो।' चाँदी सौंपते हुए, मीना ने अनुरोध किया कि इसका उपयोग महान शहीद के मकबरे के ऊपर एक छतरी बनाने के लिए किया जाए। इसके बाद, थ्रेसैलॉनीकी के अन्य नागरिक भी आगे आए और चाँदी लाए। इन दानों से, महान शहीद सेंट डेमेट्रियस के मकबरे के ऊपर एक भव्य छतरी बनाई गई।

[7459] यह डैन्यूब नदी थी।

सम्राट मॉरसि के शासनकाल में[7460] , अवर्स[7461] ने बज़िान्टयिम के नविासयिों से भारी कर की मांग की, लेकनि मॉरसि ने उनकी मांग मानने से इनकार कर दयिा। तब उन्होंने मुख्य रूप से स्लावों से मलिकर एक वशिाल सेना इकट्ठी की और थ्रेसलॉनकिी को जीतने का संकल्प लयिा, जो अपने व्यापक व्यापार और महान धन के लिए प्रसद्धि थी। यद्यपि सम्राट मॉरसि ने शहर में एक सेना भेजी, लेकनि कुछ समय पहले वहाँ फैली प्लेग ने थ्रेसलॉनकिी की आबादी को बहुत कम कर दयिा था, और दुश्मन की सेना वशिाल थी: इसमें लगभग 100,000 सैनकि थे। शत्रु के आगमन से लगभग दस दनि पहले, संत डेमेट्रयिस आर्चबशिप यूसेबयिस के सपने में प्रकट हुए और उन्हें बताया कि शहर एक भयानक खतरे का सामना कर रहा है। लेकनि थ्रेसलॉनीकी के लोगों ने सोचा कि शत्रु सेना को शहर तक पहुँचने में अभी कुछ समय बाकी है। अचानक, उम्मीद के वपिरीत, शत्रु शहर की दीवारों के पास ही दखिाई दिए। वे रात के दौरान बनिा कसिी बाधा के शहर में प्रवेश भी कर सकते थे, लेकनि सर्वशक्तमिान का शक्तशिाली दयालु हाथ, संत डेमेट्रयिस की प्रार्थनाओं के माध्यम से, चमत्कारकि रूप से भयानक दुश्मनों को शहर से कुछ ही दूरी पर रोक दयिा। दुश्मनों ने शहर के बाहर स्थति एक कलिबंदी मठ को थ्रेसलॉनकिी ही समझ लयिा और पूरी रात उसके नीचे ही ठहरे रहे; अगली सुबह उन्हें अपनी गलती का एहसास हुआ और वे खुद शहर की ओर दौड़ पड़े। दुश्मन की सेना ने सीधा हमला कयिा, लेकनि फरि, सबके सामने, संत डेमेट्रयिस एक सशस्त्र योद्धा के भेष में शहर की दीवार पर प्रकट हुए, और उन्होंने दीवार पर चढ़े पहले दुश्मन को अपनी भाला से मार गरिाया और उसे नीचे फेंक दयिा। जैसे ही वह गरिा, वह अपने साथ अन्य हमलावरों को भी नीचे खींच ले गया - दुश्मनों पर अचानक आतंक छा गया - और वे तुरंत पीछे हट गए। लेकनि घेराबंदी खत्म नहीं हुई थी; यह तो अभी-अभी शुरू हुई थी। दुश्मनों की वशिाल संख्या को देखकर, सबसे बहादुर लोगों पर भी नराशिा छा गई। पहले तो, सभी ने सोचा कि शहर का वनिाश नश्चिति है। लेकनि फरि, दुश्मनों की भागती हुई सेना और अपने अद्भुत रक्षक की सुरक्षा को देखकर, नविासयिों का हौसला बढ़ा और उन्होंने आशा करना शुरू कर दयिा कि थ्रेसलॉनीकी के रक्षक, संत डेमेट्रयिस, अपने जन्मस्थान को नहीं छोड़ेंगे और इसे दुश्मनों के हाथों में गरिने नहीं देंगे। इस बीच, दुश्मनों ने शहर की घेराबंदी शुरू कर दी, अपनी तोपें लाए और शहर की दीवारों की नींव हलिाने लगे; कैटापल्ट से छोड़े गए तीरों और पत्थरों की बौछार ने दनि की रोशनी को धुंधला कर दयिा - सारी आशा ऊपर से मदद पर टकिी थी, और सेंट डेमेट्रयिस को समर्पति चर्च में लोगों की भीड़ उमड़ पड़ी। उस समय, शहर में इलस्ट्रयिस नाम का एक ईश्वर-भयभीत और अत्यंत सदाचारी व्यक्ति था। रात में महान शहीद सेंट डेमेट्रयिस के चर्च में आकर, उसने शहर को उसके दुश्मनों से मुक्ति दिलाने के लिए चर्च के बरामदे में ईश्वर और उनके महमिामय संत से भक्तपिूर्वक प्रार्थना की, और अचानक उसे एक अद्भुत दर्शन प्राप्त हुआ: उसके सामने दो तेजस्वी युवक प्रकट हुए, जो राजा के अंगरक्षकों जैसे दखिते थे – वे ईश्वर के स्वर्गदूत थे। उनके सामने चर्च के दरवाज़े अपने आप खुल गए, और वे चर्च के अंदर चले गए। इलस्ट्रयिस उनके पीछे-पीछे चले गए, यह देखने की इच्छा से कि आगे क्या होगा। अंदर प्रवेश करने पर, उन्होंने ऊँचे स्वर में कहा:

'यहाँ रहने वाला स्वामी कहाँ है?'

तब एक नौकर जैसा दखिने वाला एक और युवक प्रकट हुआ, और उसने उनसे पूछा:

'तुम्हें उससे क्या काम है?'

'प्रभु ने हमें उनके पास भेजा है,' उन्होंने जवाब दयिा, 'उन्हें कुछ बताने के लिए।'

संत की ताबूत की ओर इशारा करते हुए, उस नौजवान नौकर ने कहा:

'वह वहाँ हैं!'

उन्होंने कहा, 'उसे बता दो कि हम यहाँ आए हैं।'

तब उस युवक ने पर्दा उठाया, और भीतर से संत डेमेट्रयिस उनसे मलिने के लिए बाहर आए; वह बल्कुि वैसा ही दखि रहे थे जैसा उन्हें आइकन (चत्रिों) में दर्शाया गया है; उनसे सूर्य की तरह एक तेज प्रकाश नकिल रहा था। भय और उस चकाचौंध कर देने वाली रोशनी के कारण, इलस्ट्रेलयिस संत को देख नहीं सका। आए हुए युवकों ने डेमेट्रयिस को नमस्कार कयिा।

'तुम्हें अनुग्रह प्राप्त हो,' संत ने उत्तर दयिा, 'तुम्हें मुझसे मलिने कसि बात ने प्रेरति कयिा?'

उन्होंने उत्तर दयिा:

[7460] मौरसियिस ने 582 से 603 तक शासन कयिा।

[7461] अवार, जनिके अधीन स्लाव थे—जो अभी तक ईसाई धर्म के प्रकाश से प्रबुद्ध नहीं हुए थे—कaspian सागर के पास डॉन नदी पर रहते थे।

'प्रभु ने हमें भेजा है, और आपको आज्ञा दी है कि आप नगर छोड़कर उनके पास चले जाएँ, क्योंकि वह इसे शत्रुओं के हाथ सौंपना चाहते हैं।'

यह सुनकर, संत ने अपना सिर झुका लिया और मौन हो गए, तथा कड़वे आँसू बहाने लगे। और उस नौकर ने आए हुए लोगों से कहा:

'अगर मुझे पता होता कि आपके आने से मेरे स्वामी को कोई खुशी नहीं होगी, तो मैं उन्हें आपके बारे में नहीं बताता।'

तब संत बोलने लगे:

'क्या मेरे प्रभु की यही इच्छा है? क्या सर्व के प्रभु की यही इच्छा है कि उस नगर को, जिसे उनके बहुमूल्य रक्त से छुड़ाया गया है, उन शत्रुओं के हाथ सौंप दिया जाए जो उन्हें नहीं जानते, उन पर विश्वास नहीं करते, और उनके पवित्र नाम का सम्मान नहीं करते?'

इस पर, आए हुए लोगों ने उत्तर दिया:

'अगर हमारे प्रभु की इच्छा न होती, तो वह हमें आपके पास नहीं भेजता!'

तब दिमित्रि ने कहा:

– जाओ, भाइयों, और मेरे प्रभु से कहो कि उनका दास दिमित्री यह कहता है:

– हे दयालु प्रभु, मैं आपकी उदारता को जानता हूँ; संपूर्ण संसार के पाप भी आपकी दया को पार नहीं कर सकते; पापियों के लिए आपने अपना पवित्र रक्त बहाया, आपने हमारे लिए अपनी आत्मा अर्पित की; अतः अब, इस नगर पर अपनी दया दिखाएँ और मुझे इसे छोड़ने का आदेश न दें। आपने स्वयं मुझे इस नगर का रक्षक नियुक्त किया है; हे मेरे प्रभु, मुझे आपकी अनुकरणा करने दें: यह अनुग्रह करें कि मैं इस नगर के निवासियों के लिए अपना जीवन दे सकूँ, और यदि उनका विनाश निश्चित है, तो मैं भी उनके साथ ही नष्ट हो जाऊँगा; हे प्रभु, इस नगर को नष्ट न करें जहाँ सभी आपके पवित्र नाम को पुकारते हैं; यद्यपि इन लोगों ने पाप किया है, फिर भी वे आपसे विमुख नहीं हुए हैं: क्योंकि आप पश्चाताप करने वालों के परमेश्वर हैं।

जो जवान आए थे उन्होंने डेमट्रियस से पूछा:

'क्या हमें उसी प्रकार उत्तर देना चाहिए जिसने हमें भेजा है?'

'हाँ, उसे इसी प्रकार उत्तर दो,' उन्होंने कहा, 'क्योंकि मैं जानता हूँ कि प्रभु *"सदा के लिए क्रोधित नहीं रहता, और न ही वह सदा के लिए अपना क्रोध बनाए रखता है"* (भजन संहिता 102:9)।

यह कहकर, संत कब्र में प्रवेश कर गए, और पवित्र संदूक बंद हो गया; और जिन स्वर्गदूतों ने उनसे बात की थी, वे अदृश्य हो गए। यह वही था जिसे इलस्ट्रियस को एक अद्भुत और भयानक दृष्टि में देखने का सौभाग्य मिला। अंत में, होश में आते ही, वह ज़मीन पर गिर पड़ा, उसने शहर की देखभाल के लिए संत को धन्यवाद दिया, और यह देखकर उनकी प्रशंसा की कि उन्होंने प्रभु से थिस्सलुनीके के निवासियों को उनके दुश्मनों के हाथों में न सौंपने के लिए प्रार्थना की थी। सुबह, इलस्ट्रियस ने जो कुछ भी देखा था, वह सब नागरिकों को बताया और उन्हें अपने दुश्मनों के खिलाफ बहादुरी से लड़ने के लिए प्रोत्साहित किया। इलस्ट्रियस का वृत्तांत सुनकर, सभी ने आँखों में आँसू लिए, प्रभु से उन पर अपनी दया दिखाने की विनती की और मदद के लिए संत डेमेट्रियस को पुकारा। संत के मध्यस्थता से, शहर को कोई नुकसान नहीं हुआ: जल्द ही, दुश्मन शहर की दीवारों से बड़ी शर्म के साथ पीछे हट गए, क्योंकि उनमें उस शहर को लेने की ताकत नहीं थी, जो ईश्वर के महिमामय संत द्वारा संरक्षित था। घेराबंदी के सातवें दिन, दुश्मन बिना किसी स्पष्ट कारण के, अपने तंबुओं और घेराबंदी के यंत्रों को छोड़कर, अव्यवस्थित होकर भाग पड़े। अगले दिन, कुछ दुश्मन वापस लौटे और उन्होंने निम्नलिखित बात बताई:

'घेराबंदी के पहले दिन से ही, हमने आप लोगों के बीच इतने सारे रक्षक देखे कि वे हमारी सेना से कहीं ज़्यादा थे। हमें लगा कि आपकी सेनाएँ आपकी दीवारों के पीछे छिपी हुई थीं। कल, वे अचानक हम पर टूट पड़े, और हम भाग गए।'

तब चकित नागरिकों ने पूछा: 'सेना का नेतृत्व किसने किया?'

लौटकर आए दुश्मनों ने उत्तर दिया, 'हमने एक प्रकाशमान व्यक्ति को देखा, जो एक सफेद घोड़े पर सवार था और बर्फ़ जैसे सफ़ेद वस्त्र पहने हुए था।'

यह सुनकर, थ्रेसलॉनीकी के नागरिकों को एहसास हुआ कि दुश्मन को किसने भगा दिया था। इस प्रकार संत डेमेट्रियस ने अपने शहर की रक्षा की।

दुश्मनों के थ्रेसलॉनीकी से पीछे हटने के तुरंत बाद, शहर पर एक और वपित्ता आई। घेराबंदी के दौरान, दुश्मनों ने बड़ी संख्या में सभी अनाज के भंडार लूट लिए थे, जिसके कारण शहर में ही एक बड़ा अकाल पड़ गया: लोग भोजन की कमी से बड़ी संख्या में मरने लगे। अपने पैतृक शहर को भूख से मरते हुए देखकर, संत कई बार समुद्र में चल रहे जहाजों पर प्रकट हुए, बंदरगाहों और कई द्वीपों का दौरा किया, हर जगह गेहूं से लदे जहाजों को थ्रेसलॉनीकी की ओर जाने का आदेश दिया, और इस तरह उन्होंने अपने शहर को अकाल से बचाया[7462] ।

जब धर्मपरायण सम्राट जस्टिनियन[7463] ने कॉन्स्टेंटिनोपल में 'ईश्वर की बुद्धि' के नाम पर एक सुंदर और भव्य चर्च का निर्माण किया, तो उन्होंने सम्मानित पुरुषों को थ्रेसलॉनीकी भेजा ताकि वहाँ से संत की अवशेषों का एक हिस्सा लाकर नए बने चर्च को सजाने और पवित्र करने के लिए लाया जा सके। थेस्सालोनिकी पहुँचने पर, दूतों ने सम्राट की आज्ञा का पालन करने के लिए उस पवित्र अवशेष-पात्र के पास पहुँचा, जहाँ महा-शहीद के अवशेष रखे थे; अचानक, उस अवशेष-पात्र से आग का एक स्तंभ फूट पड़ा, जिसने सभी पर चिंगारियों की बौछार कर दी, और आग से एक आवाज़ सुनाई दी:

'ठहर जाओ और हिम्मत मत करना।'

डर के मारे, वहाँ मौजूद लोग जमीन पर गिर पड़े; फिर दूतों ने, उस जगह से केवल थोड़ी सी मिट्टी लेकर, राजा के पास लौट आए और उन्हें वह सब कुछ बताया जो उनके साथ हुआ था। जिन्होंने भी उनका वृत्तांत सुना, वे आश्चर्यचकित रह गए। दूतों ने ली हुई मिट्टी का आधा हिस्सा राजा को दे दिया, और आधा हिस्सा चर्च के अवशेष-पात्र में रख दिया।

सेंट डेमेट्रियस के चर्च में मोमबत्तियाँ जलाना और दीपक संभालना ओनेसिफोरस नामक एक युवक का कर्तव्य था। शैतान के उकसावे पर, इस युवक ने मोमबत्तियाँ चुराना और उन्हें गुप्त रूप से बेचना शुरू कर दिया, और इन बिक्रियों से मिलने वाला पैसा खुद रख लेता था। संत डेमेट्रियस अपने नाम से समर्पित चर्च में ऐसी दुष्ट हरकत बर्दाश्त नहीं कर सकते थे: वह ओनेसिफोरस को एक सपने में दिखाई दिए और अत्यधिक सहनशीलता के साथ, उसे डाँटना शुरू कर दिया:

'भाई ओनेसिफ़ोर, मुझे दुख है कि तुम मोमबत्तियाँ चुरा रहे हो; ऐसा करके, तुम उन लोगों को हानि पहुँचा रहे हो जो उन्हें लाते हैं; और कम नहीं, तुम स्वयं को भी नुकसान पहुँचा रहे हो; याद रखो कि तुम्हारे जैसे काम करने वालों का निंदा की प्रतीक्षा कर रही है; इस दुष्ट कर्म को त्याग दो और पश्चाताप करो।'

ओनेसिफ़ोर, जागने पर, शर्म और डर महसूस करने लगा; लेकिन कुछ समय बाद उसने संत की आज्ञा को भूलकर पहले की तरह फिर से मोमबत्तियाँ चुराने लगा – और जल्द ही उसे दंड मिला। एक दिन, एक धार्मिक व्यक्ति सुबह जल्दी उठकर संत डेमेट्रियस के चर्च में आया और कई बड़ी मोमबत्तियाँ लाया। उसने उन्हें जलाया, उन्हें महान शहीद की कफ़न के पास रख दिया और प्रार्थना करने के बाद चर्च से निकल गया। मोमबत्तियों के पास पहुँचकर, ओनेसिफोर उन्हें लेने के लिए अपना हाथ बढ़ाया, तभी अचानक संत की कफ़न से एक आवाज़ गूँजी:

'तुम फिर वही कर रहे हो!'

इस आवाज़ से वज्रपात की तरह चकरा कर, ओनेसिफ़ोर तुरंत ज़मीन पर गिर पड़ा और तब तक मृतप्राय पड़ा रहा जब तक कि एक पुरोहित अंदर नहीं आया। वहाँ आए हुए आदमी ने उस युवक को उठाया, जो भय से काँप रहा था। जैसे ही ओनेसिफ़ोर को होश आया, उसने सब कुछ बयां किया: अपने पापी जुनून को, सपने में संत के अपने पास पहली बार प्रकट होने को, और डेमेट्रियस की दूसरी फटकार को। फिर, यह सब सुनकर, सभी भय से भर गए।

पवित्र महान शहीद डेमेट्रियस ने कई कैदियों को अविश्वासियों के जुए से मुक्त कराया। – इस प्रकार, एक बिशप को बर्बर लोगों ने पकड़ लिया और बेड़ियाँ पहना दीं, लेकिन संत उसके सामने प्रकट हुए, उसे उसके बंधनों से मुक्त किया, और संत की सुरक्षा में, बिशप सुरक्षित रूप से थ्रेसलॉनीकी पहुँच गया। एक अन्य अवसर पर, बर्बर लोगों ने शहर पर आक्रमण किया और इसके कई निवासियों को ले गए। बंदीओं में दो सुन्दर कन्याएँ थीं; वे कढ़ाई में और कपड़े पर विभिन्न फूल, पेड़, पक्षी, जानवर और मानव चेहरों को चित्रित करने में निपुण थीं। बर्बरों ने उन्हें अपनी भूमि पर ले जाकर अपने राजकुमार को उपहार स्वरूप प्रस्तुत किया। उनकी कला के बारे में जानकर, राजकुमार ने उनसे कहा:

'मुझे पता है कि तुम्हारे देश में एक महान देवता, डेमेट्रियस हैं, जो अद्भुत चमत्कार करते हैं; कपड़े के एक टुकड़े पर उनकी छवि कढ़ाई करो, और मैं उनकी पूजा करूँगा।'

[7462] यह चमत्कार 547 में हुआ था।

[7463] जस्टिनियन ने 527 से 566 तक शासन किया

युवतियों ने उत्तर दिया:

'नहीं, राजकुमार, डेमेट्रियस ईश्वर नहीं, बल्कि ईश्वर के एक महान सेवक और ईसाइयों के सहायक हैं। हम आपकी मांग नहीं मानेंगे, क्योंकि हम जानते हैं कि आप उनकी पूजा नहीं करना चाहते, बल्कि उनकी प्रतिमा का अपमान करना चाहते हैं।'

राजकुमार ने उत्तर दिया, 'तुम्हारी जान और मौत मेरे हाथ में है। चुन लो जो तुम चाहती हो: या तो मेरी मांग मानो, और तुम जीवित रहोगी; या, अगर तुम मेरी आज्ञा की अवहेलना करती हो, तो तुम्हें तुरंत मौत की सजा दी जाएगी।'

अपनी जान की परवाह से, बंदियों ने संत डेमेट्रियस की एक छवि पर कढ़ाई करना शुरू कर दिया। संत के पर्व के जश्न के ठीक एक दिन पहले, युवतियों ने अपना काम पूरा कर लिया, और 26 अक्टूबर की रात, अपने कढ़ाई के फ्रेम पर बैठकर, उन्होंने अपनी कढ़ाई की हुई छवि पर सिर झुकाया और रोने लगीं:

उन्होंने कहा, 'हे मसीह के शहीद, हमसे क्रोधित न हों, हम जानते हैं कि अधर्मी राजकुमार आपकी प्रतिमा का मज़ाक उड़ाना चाहता है; हम आपसे विनती करते हैं कि आप गवाह बनें कि हमने आपकी प्रतिमा कढ़ाई करने की इच्छा नहीं की थी, बल्कि हमें क्रूर मृत्यु की धमकी के तहत ऐसा करने के लिए मजबूर किया गया था।'

इस प्रकार संत की प्रतिमा पर विलाप करते हुए, वे सो गईं।

जब वे सो रही थीं, तो संत डेमेट्रियस ने एक चमत्कारिक तरीके से, ठीक वैसे ही जैसे एक बार हबक्कूक के स्वर्गदूत ने किया था, उन कन्याओं को उनके काम के साथ उसी रात अपने पर्व के दिन के लिए थ्रेसलॉनीकी ले गए, और उन्हें पूरी रात की प्रार्थना सभा के दौरान चर्च में उनके अवशेषों के पास रख दिया। ऐसा चमत्कार देखकर सभी चकित रह गए, और कन्याएँ, जागने पर, चिल्ला उठीं:

'ईश्वर की महिमा। हम कहाँ हैं?'

वे इतने हैरान थे कि उन्हें होश ही नहीं आया और उन्होंने सोचा कि यह सब एक सपने में हो रहा है।

अंतत; वे इस बात से पूरी तरह आश्वस्त हो गए कि वे वास्तव में थ्रेसैलॉनीकी में ही हैं, कि वे संत की कब्र को अपने सामने देख सकते हैं, और वे उनकी चर्च में खड़े हैं, जहाँ बहुत से लोग प्रार्थना कर रहे थे। फिर, सभी के सामने, उन्होंने अपने मध्यस्थ, संत डेमेट्रियस, का धन्यवाद करना शुरू किया, और उनके साथ जो कुछ भी हुआ था, उसे बयां किया । थेस्सालोनिकी के लोग, इस अद्भुत चमत्कार से अत्यंत प्रसन्न होकर, संत डेमेट्रियस के पर्व का बड़े हर्षोल्लास के साथ उत्सव मनाया; उन्होंने कढ़ाई वाले प्रतिमाचित्र को वेदी के ऊपर स्थापित किया, और परमपिता परमेश्वर की महिमा के लिए इसके द्वारा कई चमत्कार हुए। सारी सृष्टि की महिमा, सम्मान और आराधना सदा और सदा के लिए उसी की हो, आमीन।

ट्रोपारियन, स्वर 3:

हे कष्ट-सहिष्णु, वाक्-विजेता, संपूर्ण संसार ने आप में संकट के समय एक महान रक्षक पाया है। क्योंकि जैसे आपने लियिव के घमंड को कुचला और नेस्टर को एक साहसिक कार्य के लिए प्रेरित किया, वैसे ही, हे संत डेमेट्रियस, हमारे ईश्वर मसीह से हमारी प्रार्थना करें कि वे हमें अपनी महान दया प्रदान करें।

कॉन्टाकियन, स्वर 3:

हे डेमेट्रियस, तेरे रक्त की धाराओं से ईश्वर चर्च को रंग दे, तुझे अजेय शक्ति प्रदान करे और तेरे नगर को अक्षुण्ण रखे: क्योंकि तू ही उसकी सुरक्षा का ढाल है।

- इसी दिन हम पूजनीय अथानासियस का स्मरण करते हैं, जिन्होंने बिथुनिया के मिदिकी मठ में सेवा की; वे लगभग 814 ईस्वी में परलोक सिधार गए। उनकी कथा पूजनीय निकिता ऑफ मिदिकी (3 अप्रैल) के जीवन-चरित्र में वर्णित है।

9 नवंबर

27 अक्टूबर (पुराने कैलेंडर के अनुसार)

इस दिन हम शहीद मार्क और एशिया में मसीह का प्रचार करने के लिए विभिन्न यातनाओं के बाद उनके साथ मारे गए लोगों का स्मरण करते हैं।

शहीद संत नेस्टर का कष्टकथा

27 अक्टूबर को स्मरणोत्सव

दुष्ट राजा मैक्सिमियन, जिसे हरक्यूलिस के नाम से जाना जाता था और जो डियोक्लेशियन का मित्र था, थिस्सलोनिका नगर में पहुँचकर, संत डेमेट्रियस को मसीह में अपने विश्वास की घोषणा करने के कारण जेल में डाल दिया, जबकि वह स्वयं मनोरंजन और खेल-कूद में मग्न रहा।

साथ ही, उसने अपने एक पहलवान, जिसका नाम ली था और जो वैंडल जनजाति से आया था, के बारे में डींगें हांकीं, यह कहते हुए कि कोई भी उसे हरा नहीं सकता।

यह लियिम एक दूसरा गोलियाथ था[7464] : वह कद-काठी में सभी मनुष्यों से ऊँचा था, रूप और स्वभाव में एक जानवर जैसा था, और उसकी आवाज़ सिंह की दहाड़ जैसी थी। उसे देखते ही और उसकी आवाज़ सुनते ही, जो भी उसे देखते थे वे कांप उठते थे; उसकी देहबल आश्चर्यजनक थी, और उसकी शक्ति अजेय थी, क्योंकि उसमें अशुद्ध आत्माएँ वास करती थीं, और परिणामस्वरूप कोई भी उसके सामने टिक नहीं सकता था। उसने पहले ही अनगिनत बहादुर और ताकतवर लोगों को मार डाला था और ऐसी ताकत के कारण वह राजा का बहुत प्रिय था। चूँकि राजा स्वयं मानव रक्त से कभी तृप्त नहीं हो सकता था, इसलिए वह उस व्यक्ति को पसंद करता था जिसने अपनी सारी शारीरिक ताकत मानव रक्त बहाने के लिए समर्पित कर दी थी।

इस दुष्ट ली के लिए, राजा ने शहर के बीच में स्तंभों पर एक ऊँचा और विशाल मंच बनवाया था, जहाँ ली सभी के सामने ताकत की प्रतियोगिता कर सकता था। उस मंच के नीचे अनगिनत भाले और अन्य हथियार, उनकी नोकें ऊपर की ओर करके, गड़े हुए थे – ताकि ली अपने हराए हुए लोगों को इन तेज हथियारों पर फेंक सके, जिनसे वे घोंप दिए जाते और गिरते-गिरते मर जाते थे। और वास्तव में, जब ली लोगों के साथ लड़ता था, तो वह उन्हें मंच के नीचे भालों पर फेंककर मार डालता था। राजा, अपने सभी योद्धाओं के साथ, इस दृश्य को आनंदपूर्वक देखता था और अपने पहलवान पर आश्चर्यचकित होता था। थेस्सालोनिका के लोग भी इस तमाशे को देखते थे, जहा क कई विश्वासी थे। इस अमानवीय जानवर द्वारा बहाए जा रहे मानव रक्त को देखकर, वे गहरी आह भरते थे: क्योंकि ली ने पहले ही कई ईसाइयों को मार डाला था, जिन्हें दुष्टों ने जबरदस्ती मंच पर खींचकर उससे लड़ने के लिए मजबूर किया था।

उस नगर में नेस्टर नाम का एक युवक रहता था, जो शरीर से बलवान, मुख से सुंदर और जिसकी दाढ़ी अभी-अभी उगनी शुरू हुई थी। वह महान शहीद डेमेट्रियस का निकटतम था, जिनसे उसने पवित्र विश्वास सीखा था। ईसाइयों को अन्यायपूर्वक मारा जाता देखकर, वह उत्साह से भर गया और उस शक्तिशाली ली के खिलाफ लड़ने का संकल्प लिया। वह जेल में बंद संत डेमेट्रियस के पास गया और उसे बताया कि उस दिन ली ने कितने ईसाइयों को मार डाला था।

उसने कहा, 'हे परमेश्वर के सेवक, मेरे लिए प्रार्थना करो, कि तुम्हारी पवित्र प्रार्थनाओं के द्वारा परमेश्वर मेरी सहायता करें। मैं जाऊँगा और उस विरोधी से लड़ूँगा, उस पर विजय प्राप्त करूँगा, और ईसाइयों का पक्ष रखूँगा।'

संत डेमेट्रियस ने उनके माथे और छाती पर क्रॉस का चिह्न बनाया, उन्हें आशीर्वाद दिया, और भविष्यवाणी की:

'तुम ली को हराओगे और मसीह के लिए शहीद होओगे।' आशीर्वाद प्राप्त करने के बाद, संत नेस्टर तुरंत प्रतियोगिता के स्थान पर गए, सभी के सामने अपने बाहरी वस्त्र उतारे और जोर से घोषणा की:

'मैं लियिस से कुश्ती करना चाहता हूँ!'

युवक में ऐसी बहादुरी देखकर राजा चकित रह गया और उसकी सुंदरता और जवानी पर आह भरते हुए उससे कहा:

[7464] गोलियाथ – असाधारण कद का एक फलिस्तीनी दैत्य – जिसे दाऊद ने एक गुलेल से मारा (1 शमूएल 17)।

'क्या तुमने नहीं देखा कि ली ने तुमसे कितने अधिक बहादुर और शक्तिशाली पुरुषों को हराया है? और फिर भी तुम, कद में छोटे और उम्र में जवान, उस व्यक्ति का सामना करने की हिम्मत करते हो जिसका सूर्य के नीचे कोई समकक्ष नहीं है।'

नेस्टर ने उत्तर दिया:

'यद्यपि मैं छोटा और कमजोर हूँ, मेरे मसीह की शक्ति महान और अजेय है; मैं उसी में अपनी आशा रखता हूँ, और उसी के नाम पर मैं इस दैत्य से लड़ना चाहता हूँ।'

मसीह का नाम सुनकर और यह जानकर कि नेस्टर एक ईसाई था, राजा क्रोधित हो गया और उसने उसे तुरंत कुश्ती के अखाड़े में जाने का आदेश दिया, यह सोचकर कि नेस्टर के साथ भी वही होगा जो दूसरों के साथ हुआ था। संत नेस्टर सावधानी से कुश्ती के मंच पर चढ़े; लियि, हालांकि, मज़ाक करते और हँसते हुए, संत की ओर बढ़ने लगा। लियि को अपनी ओर आते देख, नेस्टर ने अपनी रक्षा के लिए क्रॉस का चिह्न बनाया और ऊँचे स्वर में चिल्लाए:

'हे डेमेट्रियस के ईश्वर, मेरी मदद करो!'

तब वह अपने प्रतिद्वंद्वी से भिड़ गया और कुश्ती करने लगा। जिस परमेश्वर ने एक बार गोलियाथ के विरुद्ध अपने संघर्ष में दाऊद को बल दिया था, उसी ने अपने सेवक नेस्टर को भी दुष्ट ली के विरुद्ध बल दिया—दुष्ट राजा की लज्जा और अपने विश्वासियों के आनन्द के लिए। और वास्तव में, कद में छोटा होने पर भी, नेस्टर ने अपनी बहादुरी में, शक्तिशाली ली से भी अधिक बलशाली साबित किया। उसे जैसे कोई पक्षी हो, वैसे ही पकड़कर, उसने उस विशालकाय को ऊँचे मंच से तेज भालों पर फेंक दिया। एक मजबूत ओक के पेड़ की तरह उन पर गिरते हुए, लियास ने अपमान में अपनी दयनीय अंतिम साँस ली; और इस प्रकार उसकी स्मृति एक धमाके के साथ नष्ट हो गई, उसकी घमंडी शक्ति गायब हो गई, और अपने पहलवान के बारे में मैक्सिमियिन की व्यर्थ डींग खत्म हो गई। थेस्सालोनिकी के सभी लोग—विशेषकर ईसाई—इस अप्रत्याशित और शानदार विजय को देखकर, ऊँचे स्वर में चिल्ला उठे:

'महान है डेमेट्रियस का ईश्वर!'

शर्म से भरकर राजा अपने महल में चला गया, और अपने प्रिय लियास के लिए शोक मनाने लगा। वह संत नेस्टर पर बहुत क्रोधित हुआ और उसे गिरफ्तार करने का आदेश दिया। हालांकि, जब राजा को यह पता चला कि डेमेट्रियस भी लाइ की मौत के लिए दोषी था—क्योंकि उसने नेस्टर को उसकी जीत की भविष्यवाणी करके इस करतब को करने के लिए प्रोत्साहित किया था—तो उसने दोनों को मौत की सजा देने का आदेश दिया। संत डेमेट्रियस को भाले से भेदा गया, और संत नेस्टर का सिर कलम कर दिया गया। अब वे दोनों पराक्रम के दाता, मसीह से स्वर्ग के राज्य में विजय के मुकुट प्राप्त करते हैं; हे परमेश्वर, पवित्र कष्ट-सहने वालों की प्रार्थनाओं के द्वारा हम भी इसके योग्य ठहरें।

कॉन्टाकियन, स्वर 2:

सुखद रूप से कष्ट सहकर, तुमने अब अमर महिमा का वारिस पाया है, क्योंकि तुम प्रभु के एक पराक्रमी योद्धा थे; शहीद दमित्रियस की प्रार्थनाओं के द्वारा: क्योंकि उनके साथ, हे बुद्धिमान नेस्टर, हमारे सभी के लिए निरंतर प्रार्थना करो।

आदरणीय नेस्टर वंशावलीकार का जीवन

27 अक्टूबर को स्मरणोत्सव

कोई भी घटना, यदि लिखित रूप में दर्ज न की गई हो, तो वह भुला दी जाएगी और ज्ञान से खो जाएगी। इस प्रकार, यदि मूसा ने, ईश्वर द्वारा निर्देशित होकर, अपनी पुस्तकों में संसार की बिल्कुल शुरुआत और प्रथम सृष्टि, साथ ही हमारे पूर्वज आदम का वृत्तांत हमें न दिया होता, तो यह सब समय के साथ, अंधकार की भाँति, ढक गया होता और विस्मृति के गर्भ में चला गया होता। लेकिन परमेश्वर, जो लोगों में अपने चमत्कारों की स्मृति को संरक्षित रखता है, अपनी पसंद के समय पर इतिहासकारों को उत्पन्न करता है, ताकि आने वाली पीढ़ियाँ, उनके द्वारा लिखी गई बातें पढ़कर, उससे लाभान्वित हो सकें। इसी तरह, हमारे अपने रूसी देश में, पवित्र कीव-पेचेरस्क लावरा में, प्रभु ने अमर लेखक, हमारे पूजनीय पिता नेस्टर को प्रकट किया, जिन्होंने हमारे लिए उपयोगी बातें प्रस्तुत करके हमारी आँखें खोल दीं, और इस

प्रकार हम में ईश्वर के प्रति कृतज्ञता की भावना जगाई[7465] . उन्होंने हमें हमारे रूसी जगत की शुरुआत और प्रारंभिक संगठन के बारे में लिखा, न केवल इसके बाहरी पहलुओं में बल्कि विशेष रूप से इसके आंतरिक, आध्यात्मिक पहलुओं में – यानी, रूस में मठवासी जीवन की नींव और विकास के बारे में, जिसे स्वर्ग की तरह, पवित्र कीव-पेचेरस्क मठ में स्थापित किया गया था, साथ ही हमारे आध्यात्मिक पूर्वज, आदरणीय एंथनी, और गुफाओं के अन्य संतों के बारे में, जिन्होंने उनका अनुसरण किया और उनके आत्मा से प्रेरित हुए। उनमें से एक ये अत्यंत प्रशंसनीय लेखक थे, जिन्होंने न केवल पार्चमेंट पर एक खुरपे की कलम से, बल्कि अपनी निर्मल आत्मा में समान तपस्वी कर्मों के माध्यम से भी उनके सबसे पूर्ण जीवन को दर्ज किया। इस परिश्रम के द्वारा, उन्होंने स्वयं को अनंत जीवन की पुस्तकों में अंकित किया, ताकि वे भी यह सुनने के योग्य हों: *'खुश होओ कि तुम्हारे नाम स्वर्ग में लिखे हैं'* (लूका 10:20)।

उस समय जब आदरणीय एंथनी ने एक गुफा में मौन के लिए स्वयं को समर्पित कर दिया था, और धन्य थियोडोसियस एक मठ का निर्माण कर रहे थे, हमारे इन धन्य पिता, नेस्टर—जो तब केवल सत्रह वर्ष के थे—पवित्र मठवासी जीवन अपनाने की इच्छा से उनके पास आए। भिक्षु बनने से पहले ही, उन्होंने सभी मठवासी सद्गुणों के लिए एक स्वाभाविक योग्यता प्रदर्शित की, जैसे: शारीरिक और आध्यात्मिक पवित्रता की देखभाल, स्वैच्छिक गरीबी, गहरी विनम्रता, नश्विल आज्ञाकारिता, कठोर उपवास, अनवरत प्रार्थना, सतर्क पहरा, और अन्य दिव्य करतब, जिनमें वह गुफाओं के प्रथम संतों – एंथनी और थियोडोरस – के जीवन का उत्साही अनुकरणकर्ता था। इस पवित्र जोड़ी से, अपनी युवावस्था की खिलती सुंदरता में, उन्होंने हर आज्ञा को उसी प्रेम के साथ ग्रहण किया जैसे एक शिशु स्तन से दूध ग्रहण करता है, और जैसे एक प्यासा हिरण पहाड़ों और गुफाओं के बीच बहने वाले दो झरनों से पानी पीता है। वास्तव में, अपने लेखों में उन्होंने मठ के इन पूजनीय संस्थापकों के लिए अपने भीतर के महान प्रेम का खुलासा किया है - एक ऐसा प्रेम जो *'शब्द या वाणी में नहीं, बल्कि कर्म और सत्य में* प्रकट *हुआ'* (1 यूहन्ना 3:18)। रूसी आकाश के इन दो महान नक्षत्रों के तेजस्वी पुण्य कार्यों को देखकर, उन्होंने *'अपने शरीर और अपनी आत्मा में'* (देखें 1 कुरिन्थियों 6:20) परमेश्वर की आत्मीयता से महिमा की। सम्माननीय पिता, एंथनी और थियोडोसियस की प्रभु के समक्ष धर्मपरायण मृत्यु के बाद, हमारे धन्य पिता नेस्टर स्वयं संसार के लिए मरे, न केवल सांसारिक मामलों में – जो उन्होंने पहले ही प्रलोभन से बचकर कर लिया था – बल्कि सांसारिक रूप में भी, सम्माननीय स्टीफन, गुफाओं के मठाधीश, से एक भिक्षु का पवित्र, दैवीय रूप ग्रहण करके। तब उन्हें उसी मठाधीश द्वारा एक डिकिन के रूप में अभिषिक्त किया गया। इसके पश्चात्, भिक्षु और डिकिन—इस दोहरे दैवीय पद—से विभूषित होकर, उन्होंने दिन-प्रतिदिन अपने गुणों को बढ़ाया, सभी शारीरिक वासनाओं को वश में किया और प्रत्येक सत्य का पालन किया, ताकि वे शरीर के प्रभुत्व से पूरी तरह मुक्त हो सकें और पूर्णतः आध्यात्मिक बन सकें, साथ ही परमेश्वर के एक सच्चे सेवक और आराधक बन सकें। क्योंकि वह यह अच्छी तरह जानता था कि प्रभु स्वयं ने क्या कहा था: *'ईश्वर आत्मा है, और जो उसकी उपासना करते हैं उन्हें आत्मा और सत्य में उपासना करनी चाहिए'* (यूहन्ना 4:24)। और वास्तव में, नेस्टर अपने लेखों में यह स्पष्ट रूप से दर्शाते हैं कि उन्होंने दुष्ट की आत्मा पर कैसे विजय प्राप्त की, जो सभी सत्य से पराई है: वे पूरे समय में परम विनम्रता का प्रदर्शन करते हैं और लगातार स्वयं को नम्र करते हैं, स्वयं को 'अयोग्य, नीच, अज्ञानी और कई पापों से भरा' कहकर संबोधित करते हैं।

जब, दैवीय प्रेरणा से, भाइयों ने एक परिषद में आदरणीय थियोडोसियस की पवित्र अवशेषों को खोदकर गुफा से पवित्र, ईश्वर-निर्मित गुफाओं के चर्च में स्थानांतरित करने का निर्णय लिया, तो धन्य नेस्टर ही थे जिन्होंने यह कार्य सबसे पहले अपने ऊपर लिया। गहरे विश्वास और प्रार्थना के साथ धरती खोदते हुए, उन्होंने पूरी रात परिश्रम किया और पवित्र गुफाओं के मठ के लिए एक अनमोल खजाना - आदरणीय थियोडोसियस के अवशेष - खोज निकाले। उन्होंने उन्हें गुफा से बाहर निकाला और इस अवसर पर हुए महान चमत्कारों के साक्षी बने, जैसा कि उन्होंने स्वयं गवाही दी।

और वह कई वर्षों तक जीवित रहे, तथा वृत्तांत संकलन में परिश्रम करते रहे। अनंत काल के प्रति सचेत रहते हुए, उन्होंने युगों के सृष्टा को प्रसन्न किया, जिनके पास वह अपने सांसारिक जीवन के बाद अनंतकाल में चले गए। उन्हें गुफा में सुलाया गया, जहाँ उनका अक्षुण्ण और सम्मानित शरीर आज भी विश्राम करता है, चमत्कार करता है और इस प्रकार गवाह देता है कि संतों के जीवन और वृत्तांत के इस सम्मानित संकलक ने स्वर्ग में अपने लिए एक अक्षुण्ण

[7465] परम पूज्य नेस्टर ने 17 वर्ष की आयु में कीव-पेचेरस्क लावरा में संन्यास की शपथ ली; 1091 में, उन्होंने परम पूज्य थियोडोसियस ऑफ द केव्स के अवशेषों की खोज में भाग लिया; उन्होंने रूसी वृत्तांत और कीव तथा केव्स के संतों की जीवनी संकलित करने का कार्य किया। इतिहास-वृत्तांत के अलावा, उनके निम्नलिखित कार्य उपलब्ध हैं: 'गुफाओं के पूजनीय थियोडोसियस का जीवन' और 'संत बोरिस और ग्लेब का जीवन'। लगभग 1114 में, 27 अक्टूबर को उनका निधन हो गया।

नविास सुनश्चिति कयिा है और उसे परमेश्वर के राज्य में एक अक्षुण्ण मुकुट का योग्य समझा गया है। इस आदरणीय लेखक की प्रार्थनाओं के द्वारा, हम भी परमेश्वर के मेम्ने के जीवन की पुस्तकों में अंकति होने के योग्य ठहरें, जनिके वर्ष कभी समाप्त नहीं होंगे। हमें, परमेश्वर पति और जीवन-दायक आत्मा के साथ, उसी को अब और सदा, और युगानुयुग महमिा, सम्मान और आराधना अर्पति करनी चाहए। आमीन।

पवत्रि शहीदों कैपेटोलनिा और एरोटडिा का स्मरणोत्सव

27 अक्टूबर को स्मरण कयिा जाता है

ये संत सम्राट डायोक्लेटयिन के शासनकाल में और कैपाडोसयिा के राज्यपाल एof[7466] Zelikintia के अधीन रहते थे। संत कैपेटोलनिा, जो एक धनी और कुलीन परविार से थीं[7467] , ने अपनी सारी संपत्ति गरीबों में बाँट दी और अपने दासों को मुक्त कर दयिा। एक ईसाई होने के कारण, उन्हें गरिफ्तार कर कैद कर दयिा गया; बाद में, मूर्तयिों को बलदिान देने से इनकार करने पर, उन्हें तलवार से सरि कलम कर दयिा गया। उनकी दासी, एरोटयिादा, को अपनी मालकनि का बचाव करते हुए राज्यपाल पर पत्थर फेंकने के कारण डंडों से यातना दी गई। यातना से बनिा कसिी चोट के बचने के बाद, उसका भी सरि तलवार से कलम कर दयिा गया।

10 नवंबर

28 अक्टूबर (पुराने कैलेंडर के अनुसार)

महान शहीद संत परास्केवा की शहादत

28 अक्टूबर को स्मरणोत्सव

जब धर्महीन सम्राट डायोक्लेटयिन ने ईसाइयों पर अत्याचार शुरू कयिा, तब इकोनयिम शहर में परास्केवा नाम की एक कुलीन और सुंदर कन्या रहती थी। उनके माता-पति, जो ईसाई थे, ने अपनी बेटी को पवत्रि वश्विास और प्रभु की आज्ञाओं का पालन करना सखिाया और उसे पाले-पोसे, और फरि वे स्वर्ग सधिार गए। उन्होंने अपनी धन्य बेटी को एक बड़ी संपत्ति की वारसि के रूप में छोड़ दयिा।

वयस्क होने पर, कन्या पारास्केवा ने अपने माता-पति के वश्विास और कर्मों का अनुकरण करना शुरू कर दयिा। उसने अपनी संपत्ति का खर्च अपनी युवा सुंदरता और जवानी को सजाने पर, न ही वलिासतिापूर्ण जीवन पर, बल्कि नंगों को कपड़े पहनाने, भूखों को भोजन कराने और यात्रयिों को आतथि्य प्रदान करने पर करना शुरू कर दयिा। परास्केवा ने अपने चाहने वालों की ओर कोई ध्यान नहीं दयिा, जो उसके साथ रहना चाहते थे: वह जल्द ही एक अमर वर, ईश्वर के एकमात्र पुत्र की दुल्हन बन गई, जनिके लिए वह पवत्रिता और धार्मकिता में जीवन व्यतीत करती थी। वह लोगों के सामने दनि-प्रतदिनि, अनवरत रूप से उनके परम पवत्रि नाम का प्रचार करती रहीं, और इस प्रकार उन्हें सत्य के ज्ञान की ओर ले जाती रहीं।

कुछ लोग हमारे प्रभु यीशु मसीह में वश्विास करने लगे, जबकि अन्य अवश्विासयिों ने संत की नदिा की। हालाँकि, पारास्केवा ने नडिर होकर उनके सामने परमेश्वर का वचन प्रचार कयिा और नर्जिीव मूर्तयिों की व्यर्थता को उजागर कयिा। उसकी इन फटकारों को सुनने के लिए तैयार न होने के कारण, अवश्विासी नागरकिों ने उसे पकड़ लयिा और पीटा, और फरि उसे जेल में डाल दयिा।

[7466] कैपाडोसयिा एशयिा माइनर का पूर्वी भाग है।

[7467] जब उनसे उनकी वंशावली के बारे में पूछा गया, तो संत कैपेटोलनिा ने दावा कयिा कि वह कैपाडोसयिा के आर्चबशिप फर्मलियिन (जो तीसरी शताब्दी के मध्य में रहते थे) के ही परविार से थीं। अन्य ववरिणों के अनुसार, वह खुद को केवल उनकी आध्यात्मकि बेटी मानती थीं। उनका नधिन वर्ष 304 में हुआ था।

उस समय, एक सैन्य कमांडर आयकॉनियम में आया, जिसे सम्राट डायोक्लेटियन ने वहाँ के सभी ईसाइयों का संहार करने के उद्देश्य से उस क्षेत्र में भेजा था। नागरिक उसके पास गए और कहा:

'हे अति प्रतिष्ठित सेनापति, इस नगर में एक युवती है जो सूली पर चढ़ाए गए मसीह में विश्वास करती है और उसी के विषय में प्रचार करती है; वह जादू-टोना करती है और अपनी जादू-टोने से पहले ही कई लोगों को हमारे देवताओं को बलिदान चढ़ाने से रोक चुकी है। वह हमारे देवताओं की मूर्तियों और स्वयं शासक के विरुद्ध निरंतर अपमानजनक बातें करती रहती है।' राजा के इस आदेश को सुनकर कि जो कोई भी देवताओं की पूजा नहीं करता है, उसे मृत्युदंड दिया जाएगा, हमने इस कन्या को पकड़ लिया है और उसे जेल में बंद कर रखा है।

यह सुनकर, सेनापति ने आदेश दिया कि पवित्र कन्या को न्याय के लिए उसके सामने लाया जाए; जब पवित्र शहीद को न्याय के स्थान पर ले जाया जा रहा था, तो पवित्र आत्मा उस पर उतरा, और उसका चेहरा प्रकाशमान हो गया, ताकि जो भी उसे देखता था वह चकित हो जाता था और कहता था:

'देखो! वह शोक से बिलकुल भी दबी हुई नहीं है; उसका चेहरा तो दमकता हुआ प्रतीत हो रहा है।'

जब वह न्यायाधीशों के सामने खड़ी हुई, तो सेनापति ने उसे देखा और उसके चेहरे की सुंदरता और गरिमा से चकित होकर, उपस्थित लोगों से कहा:

'तुमने इस अतिसुन्दर कन्या पर व्यर्थ ही बदनामी की है: क्योंकि ऐसी सूर्य-सी सुंदरता को नष्ट करना असंभव है।'

और उसने उससे कहा:

'कन्या, हमें अपना नाम बताओ!'

संत परास्केवा ने उत्तर दिया:

'मैं एक ईसाई हूँ, मसीह की सेविका हूँ।'

कमांडर ने कहा:

'तुम्हारे सुंदर चेहरे को देखकर मुझे कोमलता का अनुभव होता है, लेकिन तुम्हारे होठों से निकले शब्द मेरी आत्मा की गहराइयों तक मुझे बेचैन कर देते हैं: मैं ऐसी बातें सुनना नहीं चाहता!'

संत ने उत्तर दिया:

'हर शासक जो न्याय करता है, सत्य सुनकर प्रसन्न होता है, परन्तु तुम, मेरे द्वारा बोले गए सत्य को सुनकर, क्रोधित हो गए हो।'

तब यातना देने वाले ने कहा:

'मुझे इसलिए गुस्सा आ रहा है क्योंकि मुझे आपसे कोई जवाब नहीं मिला; क्योंकि मैंने आपका नाम पूछा था, और आपने मुझे नहीं बताया।'

संत ने उत्तर दिया:

'सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण, मुझे अपना नाम अनंत जीवन में बताना चाहिए था, और केवल उसके बाद ही इस क्षणिक जीवन में अपना नाम प्रकट करना चाहिए था। इसलिए, मैंने अपना नाम अनंत जीवन में बताया है—कि मैं एक ईसाई, मसीह की दासी हूँ—जबकि इस क्षणिक जीवन में मेरे माता-पिता ने मेरा नाम परास्केवा रखा था, क्योंकि मैं परास्केवा के दिन पैदा हुई थी (ग्रीक में परास्केवा का अर्थ "शुक्रवार" है)।'

'मेरे माता-पिता,' संत ने जारी रखा, 'हमेशा छठे दिन—जो हमारे प्रभु यीशु मसीह के उद्धारकारी और जीवन-दायक दुखों का दिन है—को उपवास, प्रार्थना और दान-पुण्य के साथ सम्मानित करते थे। उन्होंने यह मसीह के सम्मान में किया, यह मानते हुए कि मानव जाति के प्रति प्रेम से, उसी दिन उन्होंने अपना लहू बहाया और हमारे लिए क्रूस पर अपनी जान दे दी। और परमेश्वर ने उन्हें उनके सदाचारी विवाह का फल—मुझे, उनकी अयोग्य दासी को—उसी दिन प्रदान किया जिसे उन्होंने अपने प्रभु के दुख-क्लेश का स्मरण करते हुए, सदाचार से मनाया था। उन्हें यह नाम देना पसंद आया, जिसके द्वारा यह दिन जाना जाता है, और इस प्रकार, परास्केवा के दिन से ही मुझे भी परास्केवा कहा जाने लगा - मैं जो मसीह के दुखों में सहभागी हूँ।

कमांडर ने कहा:

'इन मूर्खतापूर्ण बातों को बोलना बंद करो और हमारे देवताओं को बलिदान चढ़ाओ; तब मैं तुम्हें अपनी पत्नी बना लूँगा, और तुम महान धन की स्वामिनी बन जाओगी, और पृथ्वी पर कई लोग तुम्हारा सम्मान करेंगे।'

इस पर, संत परास्केवा ने उत्तर दिया:

'स्वर्ग में मेरा एक वधूवर है, यीशु मसीह, और मुझे किसी अन्य पति की कोई आवश्यकता नहीं है।'

तब सेनापति ने कहा:

'मैं तुम्हारी सुंदरता को बख्श दूँगा और तुम्हारी जवानी पर दया करूँगा।'

'क्षणिक सुंदरता को क्षमा मत करो,' संत ने कहा, 'क्योंकि आज वह खिलती है, लेकिन कल मुरझा जाएगी; इसके बजाय खुद को बचाओ, क्योंकि तुम्हारा शाश्वत यातनाओं का इंतजार है।'

इसके बाद, सेनापति क्रोध से आग-बबूला हो गया और आदेश दिया कि उसके कपड़े फाड़े जाएँ और उसे कठोर कोड़ों से पीटा जाए। जब संत को कोड़े मारे जा रहे थे, तो उन्होंने एक भी आवाज़ नहीं निकाली, बल्कि चुपचाप, अपने होठों और अपने दिल में , ने मसीह से पुकार लगाई, और अपने दुख में मदद के लिए उनसे प्रार्थना की। हालाँकि, सेनापति, जो अभी भी उसकी सुंदरता को बचा रहा था (क्योंकि वह उसकी सुंदरता से मोहित हो गया था), ने कोड़ा मारना बंद करने का आदेश दिया और उससे कोमलता से बात करने लगा:

'कुमारी! अपनी जवानी की रक्षा कर; अपनी अत्यंत सुन्दर जवानी को बर्बाद मत कर! देवताओं को बलिदान अर्पित कर, और तू जीवित रहेगी तथा हम तुझे इससे भी अधिक सम्मान देंगे।'

उसने उसे कोई जवाब नहीं दिया। तब कमांडर, गुस्से में आकर, बोला:

'हे दुष्ट ईसाई की संतान, क्या मुझसे जवाब देने से इनकार कर रही है?' जवाब में, संत ने उसके चेहरे पर थूक दिया। इस पर यातना देने वाले ने, भयंकर क्रोध में, आदेश दिया कि उसे एक पेड़ से लटका दिया जाए और उसके पसली को लोहे के पंजे से निर्दयता से नोचा जाए, जबकि उसके घावों पर बालों वाली कमीज़ रगड़ी जाए; इस प्रकार उसका मांस हड्डी तक नोच लिया गया। अधिकारी ने यह सोचकर कि शहीद मुश्किल से सांस ले रही है और जल्द ही मर जाएगी, उसे पेड़ से उतारकर एक कालकोठरी में डाल दिया। जब वह वहाँ मुश्किल से जीवित और अपने क्रूर घावों से पहले ही आवाज़ खो चुकी थी, तो मध्यरात्रि में एक देवदूत उसके सामने प्रकट हुआ; उसके कंधों और छाती पर एक सुनहरी पट्टा क्रॉस के आकार में बँधी हुई थी, और उसके हाथों में मसीह के कष्टों के उपकरण थे: क्रॉस, काँटों का मुकुट, भाला, छड़ी और थूकदान। देवदूत ने उससे कहा:

'हे कन्या, मसीह के कष्टों में सहभागी, उठो! मुझे तुम्हें मिलने के लिए भेजा गया है; और तुम्हारे दुखों में तुम्हें सांत्वना देने के लिए, मैं हमारे प्रभु के कष्टों के उपकरण लाया हूँ।' इन सम्मानित उपकरणों को देखो: अमर वर के क्रूस और काँटों का मुकुट; उस भाले को देखो जिसने जीवन-दायक पसलियों को भेदा, उस दण्ड को जिसने सारी दुनिया के पापों की क्षमा लिख दी, और उस स्पंज को जिसने आदम के पाप को पोंछ दिया। इसलिए, उठो! प्रभु मसीह तुम्हारा उपचार करते हैं!

और देखो, वह शहीद जैसे नींद से जागी हो, उठ खड़ी हुई, और जो स्वर्गदूत प्रकट हुआ था, वह पास आया और अपनी ओठ से पवित्र शहीद के सभी घावों को पोंछ दिया; और उसका सारा शरीर बलवान और स्वस्थ हो गया, जबकि उसके चेहरे की सुंदरता और भी अधिक आकर्षक हो गई। उसने भक्तिपूर्वक मसीह के कष्टों के उपकरणों को चूमा और परमेश्वर की महिमा की। इसके बाद, वह स्वर्गीय प्राणी अदृश्य हो गया।

प्रातःकाल, जेल के रक्षक आए और उन्होंने पारास्केवा को स्वस्थ और प्रार्थना में खड़ी पाया; उसके शरीर पर एक भी घाव नहीं था। डरे हुए, उन्होंने यह बात कमांडर को बताई। उसने उसे अपने सामने पेश करने का आदेश दिया और उसे अच्छे स्वास्थ्य में देखकर हैरान रह गया: उसने उम्मीद नहीं की थी कि वह इतने भयानक घावों से बच जाएगी। उसकी असाधारण सुंदरता से एक बार फिर चकित होकर, उसने उससे कहा:

'परास्केवा, देखो हमारे देवताओं ने तुम्हारी सुंदरता को क्षति नहीं पहुँचाई और तुम्हें जीवन प्रदान कर संरक्षित रखा है।'

इस पर संत ने उत्तर दिया:

'हे सेनापति, मुझे वे दिखाओ जिन्होंने मुझे जीवन दिया है!' सेनापति ने उसे अपने देवताओं के मंदिर में भेज दिया ताकि वह उनकी मूर्तियों को देख सके। मूर्तिपूजक पुरोहित और लोगों की एक बड़ी भीड़ उसके साथ चली गई; वे सभी सोचते थे कि पारस्केवा उनके देवताओं की पूजा करना चाहती है। जब वे मंदिर में प्रवेश किए, जो कई मूर्तियों से भरा था, तो पारस्केवा ने ऊँचे पर रहने वाले एकमात्र सच्चे ईश्वर से चुपचाप प्रार्थना की, और अपोलो की मूर्ति का पैर पकड़कर, उसने कहा:

मैं तुमसे कहता हूँ, हे आत्माहीन, और तुम्हारे साथ खड़ी सभी नश्वर मूर्तियों से: मेरे प्रभु यीशु मसीह की आज्ञा है – तुम सब जमीन पर गिर पड़ो और धूल में मिल जाओ।

और देखो, संत के वचन पर, सभी मूर्तियाँ गिर पड़ीं और धूल में बिखर गईं। फिर सभी मूर्तिपूजक मंदिर से भाग गए और चिल्लाने लगे:

– महान है ईसाई ईश्वर!

दुष्ट पुरोहितों ने, अपनी मूर्तियों के विनाश और बर्बादी को देखकर, सेनापति के पास गए और रोते हुए उससे कहा:

'कमांडर! हमने आपको बताया था: "इस जादूगरनी को मार डालिए, क्योंकि वह हमारे शहर को गुमराह कर रही है," लेकिन आपने हमारी नहीं सुनी, और अब, अपनी जादू-टोने से, उसने हमारे सभी देवताओं को नष्ट कर दिया है।'

क्रोध से भरकर, कमांडर ने गुस्से में संत पारस्केवा से इस प्रकार पूछना शुरू किया:

'तुमने यह किस जादू-टोने से किया है?'

संत ने उत्तर दिया:

'अपने प्रभु यीशु मसीह के नाम से, मैं आपके देवताओं के मंदिर में प्रवेश किया और अपने प्रभु से इस प्रकार प्रार्थना की: "मेरे उद्धारकर्ता, मेरे पास प्रकट हो—आपने मुझे जीवन दिया है।" और देखो, मेरे प्रभु और मेरे परमेश्वर स्वयं मेरे सामने प्रकट हुए, जबकि तुम्हारे देवता, उन्हें देखते ही, डर से कांप उठे और, जमीन पर गिरकर, चकनाचूर हो गए, जिससे यह साबित होता है कि अगर वे अपनी ही मदद नहीं कर सकते, तो वे दूसरों की मदद कैसे कर सकते हैं!

तब सेनापति ने आदेश दिया कि पारास्केवा को फिर से पेड़ से लटकाया जाए और उसकी पसलियों को मोमबत्तियों से झुलसाया जाए। वहाँ लटके और आग से झुलसते हुए, संत ने ईश्वर की ओर एक आह भरते हुए कहा:

'हे प्रभु और मेरे परमेश्वर, हे सर्व सृष्टि के स्रष्टा और पालनहार! आपने तीनों युवकों के लिए जलती भट्टी को ठंडा किया; आपने प्रथम शहीद थैक्ला को आग से बचाया; हे अयोग्य मुझें भी इन यातना देने वालों के हाथों से बचा लीजिए।'

और अचानक एक देवदूत प्रकट हुआ, उसने मोमबत्तियों को छुआ, और एक प्रचंड आग भड़क उठी, जिसने अनेक अधर्मी पुरुषों को नष्ट कर दिया। और लोग चिल्ला उठे:

'महान है ईसाई ईश्वर!'

और उस समय बहुत से लोग मसीह पर विश्वास करने लगे; परन्तु सेनापति ने लोगों में हलचल देखकर यह डर मानकर कि कहीं लोग उसके विरुद्ध न उठ जाएँ, तुरन्त संत को तलवार से सिर कलम करने का आदेश दे दिया। जैसे ही उसका सिर कलम किया जा रहा था, कुछ लोगों ने स्वर्ग से एक आवाज सुनी जो कह रही थी:

'हे धर्मी लोगो, आनन्द मनाओ, क्योंकि शहीद परस्केवा का राज्याभिषेक हो रहा है!'

ईसाइयों ने श्रद्धापूर्वक संत के शरीर को उनके घर में दफनाया। – इस प्रकार, अपनी शहादत पूरी करने के बाद, सबसे सुंदर कन्या तेल के बजाय खून लेकर अपने वधू-वर के पास चली गईं: उन्होंने अब मसीह के महल में बुद्धिमान कुंवारियों के साथ अपनी जगह ले ली है।

अगली सुबह, वह अन्यायपूर्ण सैन्य कमांडर शिकार के लिए निकला, लेकिन उसका घोड़ा अचानक बेकाबू हो गया और उसे एक खाई में फेंक दिया: गिरने पर, कमांडर कुचल गया और इस प्रकार उसने दुखद रूप से अपनी शापित आखिरी सांस ली।

लेकिन महा-शहीद पारास्केवा की पवित्र और शुद्ध आत्मा प्रभु के पास चली गई, और उनके पवित्र अवशेषों से पीड़ितों को अनेक चंगाईयाँ प्राप्त हुईं, हमारे प्रभु यीशु मसीह की महिमा के लिए, जिनके लिए, पिता और पवित्र आत्मा के साथ, युगों-युगों तक सम्मान और आराधना हो, आमीन।

ट्रोपारियन, स्वर 4:

हे मसीह की अति बुद्धिमान और सर्व-स्तुत्य शहीद, परमेषुवा, पुरुष की शक्ति ग्रहण करके और स्त्री की दुर्बलता को त्यागकर, आपने शैतान को पराजित किया और अपने यातनाकर्ता को लज्जित किया, यह पुकारते हुए और कहते हुए: 'आओ, मेरे शरीर को तलवार से काट डालो और आग में जला दो, क्योंकि मैं, आनंदित होकर, अपने वधूवर मसीह के पास जाती हूँ।' हे मसीह हमारे परमेश्वर, उनकी प्रार्थनाओं के द्वारा, हमारी आत्माओं को बचाइए।

कॉन्टाकयिन, स्वर 3:

मसीह, अमर वर, को एक अतपिवत्रि और नरि्दोष शहादत एक अतसिम्मानजनक दहेज के रूप में अर्पति करके, तुमने स्वर्गदूतों के दल को प्रसन्न कयिा और शैतान की युक्तयिों पर वजिय प्राप्त की: इस कारण हम तुम्हें वशि्वास के साथ सम्मानति करते हैं, हे धीरजधारी शहीद परस्केवी।

पवत्रि ह्येरोमार्टायर और यरूशलेम के पैट्रआिर्क, संत सरियिकस की स्मृत

28 अक्टूबर को स्मरणोत्सव

संत सरियिकस, जो मसीह में वशि्वास रखते थे और पवत्रि तथा जीवन-दायक क्रूस की खोज के बाद बपतस्मिा लयिा था, यरूशलेम के बशिप थे। वे जूलयिन द एपोस्टेट के शासनकाल तक जीवति रहे। बाद वाला, फारसियिों के खलिाफ एक अभयिान पर रहते हुए, यरूशलेम पहुँचा और वहाँ उसने संत सरिअिकस को मुकदमे के लिए तलब कयिा, और उसे मूर्तयिों को बलदिान चढ़ाने के लिए मजबूर कयिा; लेकनि संत ने दृढ़ता से ऐसा करने से इनकार कर दयिा। तब सम्राट ने आदेश दयिा कि उसका दाहनिा हाथ काट दयिा जाए:

उसने कहा, 'तुमने इसी हाथ से कई पत्र लखि हैं, और कई लोगों को देवताओं की पूजा से दूर कर दयिा है।'

फरि उसने आदेश दयिा कि संत के मुँह में पघिला हुआ टनि डाला जाए और उन्हें एक तपे-भुने तांबे के बस्तिर पर लटिाया जाए। संत की माँ, अन्ना, जो उनके यातना स्थल पर आई थीं, को पकड़ लयिा गया, उनके बालों से लटका दयिा गया और एक लोहे से खुरच दयिा गया। उनकी शहादत के बाद, संत सरिकियिस की भी मृत्यु हो गई, जन्हिें एक उबलते हुए कड़ाही में फेंका गया था और भाले से भेद दयिा गया था[7468] ।

पवत्रि शहीदों टेरेन्टयिस और नयिोनलिा की स्मृत

28 अक्टूबर को स्मरणोत्सव

धन्य टेरेन्टयिस, एक धर्मनष्ठि ईसाई, ने अपनी सह-वशि्वासी नीओनलिा से वैध रूप से ववािह कयिा था, और इस ववािह से उनके सात बच्चे हुए: सरवलि, फोथ, थयिोडुलस, हएिरैक्स, नाइट, वलि और यूनक्वियिा, जन्हिें उन्होंने धर्मपरायणता में पाला। जब बच्चों को उनके माता-पति के साथ अधर्मी लोगों ने पकड़ लयिा और एक अवैध न्यायाधकिरण के सामने पेश कयिा, तो उन्होंने खुले तौर पर मसीह की गवाही दी और मूर्तयिों का तरिस्कार कयिा। इसके लिए उन्हें लटकाया गया और खुरचकर यातना दी गई, जबकि उनके घावों पर तेज सरिका डाला गया और आग से दागा गया। हालाँकि, संतों ने पूरी लगन से प्रार्थना की और एक-दूसरे को सांत्वना दी। ईश्वर ने उनकी प्रार्थनाओं को अनसुना नहीं कयिा और अपने पवत्रि स्वर्गदूतों को भेजा, जन्होंने उन्हें उनकी बेड़यिों से मुक्त कयिा और उनके घावों को भर दयिा। संतों को अचानक अपनी बेड़यिों से मुक्त और अपने घावों से ठीक हुआ देखकर, दुष्ट लोग भय से भर गए। इसके बाद, संतों को चीजों द्वारा खाए जाने के लिए जानवरों के सामने फेंक दयिा गया, लेकनि उन्हें कोई नुकसान नहीं हुआ, क्योंकि जानवर, ईश्वर की आज्ञा से, भेड़ों की तरह शांत हो गए थे। तब उन्हें उबलते हुए गोंद के एक कड़ाही में फेंक दयिा गया, लेकनि तुरंत आग बुझ गई और कड़ाही ठंडी हो गई, और गोंद ठंडे पानी जैसा हो गया। यह देखकर कि यातनाओं ने संतों को बलि्कुल भी नुकसान नहीं पहुँचाया, दुष्ट यातना देने वालों ने तलवार से उनके सरि काट दए[7469] ।

[7468] संत सरियिकस, जन्हिें बपतस्मिा से पहले यहूदा के नाम से जाना जाता था, ने संत रानी हेलेना को पवत्रि और जीवन-दायक क्रूस का स्थान बताया। पवत्रि और जीवन-दायक क्रूस को खोजने की इच्छा से, संत रानी हेलेना ने यहूदयिों को बुलाया और उनसे उस स्थान को दखिाने का आग्रह कयिा जहाँ उन्होंने पवत्रि क्रूस को छपिाया था। धमकाए जाने के बाद ही उन्होंने जुदास नामक एक वृद्ध यहूदी की ओर इशारा कयिा, जो पवत्रि क्रूस का स्थान बता सकता था; लेकनि जुदास ने भी महारानी की इच्छा पूरी करने से इनकार कर दयिा, जसिके लिए उसे एक गड्ढे में डाल दयिा गया। कुछ समय वहाँ रहने के बाद, उसने बोलने का वादा कयिा। तब, यहूदा के नरि्देशों का पालन करते हुए, वे उस स्थान के लिए रवाना हुए जहाँ रोमन सम्राट हैड्रयिन ने देवी वीनस का मंदरि बनाने की योजना बनाई थी; यहीं पर पवत्रि क्रूस मलिा था (अधकि जानकारी के लिए, 14 सतिंबर देखें)।

[7469] संतों ने डेसयिस (249–251) के शासनकाल में शहादत प्राप्त की।

कॉन्टाकयिन, स्वर 4:

आज हम शहीद, सर्व-आनंददायक, अति-ज्ञानी टेरेन्टयिस और उनके साथयिों की सम्मानति स्मृतकिा उत्सव मनाते हैं। आइए हम उनसे स्नेहपूर्वक नकिट आएँ, ताकहिमें चंगाई प्राप्त हो: क्योंकपिवत्रि आत्मा से अनुग्रह प्राप्त करके, वे हमारी आत्माओं की दुर्बलताओं और बीमारयिों को चंगा करते हैं।

11 नवंबर

29 अक्टूबर (पुराना संस्करण)

रोम की महान शहीद संत अनास्तासयिा का स्मरणोत्सव

29 अक्टूबर को स्मरणोत्सव

सम्राट डेसयिस और उनके सह-शासक वैलेरयिन के दनिों में, जनरल प्रोबस के अधीन, रोम शहर के पास ही, एक सुनसान और कम-ज्ञात स्थान पर, एक छोटा सा मठ था। वहाँ कई सदाचारी तपस्वी रहते थे, जनिमें वृद्ध और सद्गुणों में परपिूर्ण मठाधीश सोफयिा भी थीं। रोम की मूल नविासी धन्य कुंवारी अनास्तासयिा, जो तीन वर्ष की आयु में अनाथ हो गई थीं, भी उसी मठ में रहती थीं। सोफयिा ने उसे अपने मठ में पाला-पोसा और सभी सद्गुण सखिाए, जसिसे वह उपवास, तपस्या और हर प्रकार के कार्यों में सभी से आगे नकिल गई। बीस वर्ष की आयु में, अनास्तासयिा अत्यंत सुंदर हो गई, इसलिए कुछ कुलीन रोमन नागरकिों ने उसकी सुंदरता के बारे में सुनकर, उसे अपनी पत्नी बनाने की तीव्र इच्छा जताई। लेकनि पवत्रि कुंवारी, सब कुछ तुच्छ समझते हुए, मसीह की दुल्हन बनीं और, अपनी कुंवारी अवस्था को उनके लिए बनाए रखते हुए, दनि-रात प्रार्थना में बतिाया। शैतान ने एक से अधकि अवसरों पर मसीह की वधू को उसके दैवीय जीवन से दूर ले जाने और उसे सांसारकि जीवन की ओर आकर्षति करने का प्रयास कयिा, उसने उसे अधर्मी वचिारों, कपटी होठों के प्रलोभन और अपनी अन्य वभिन्नि युक्तयिों से भ्रमति करने की कोशशि की। लेकनि उसे उसके वरिुद्ध अपनी लड़ाई में कोई सफलता नहीं मलिी, क्योंकमिसीह की शक्तने उसकी नाजुक प्रकृतमिें वास कर लयिा था, और उसने अपनी कन्या के पैरों तले सांप के शापति सरि को कुचल दयिा था। इस तरह मसीह की अजेय वधू पर वजिय प्राप्त करने में असमर्थ होकर, शैतान खुले तौर पर उसके वरिुद्ध उठ खड़ा हुआ, और उसने उसके ऊपर क्रूर यातना देने वालों को लगा दयिा। उस समय ईसाइयों पर कठोर उत्पीड़न हो रहा था, और शैतान ने कुछ अवश्विासयिों को, जो ईसाइयों के प्रतशित्रुतापूर्ण थे, सैन्य कमांडर प्रोवस के सामने अनास्तासयिा पर बदनामी करने के लिए उकसाया। उस दुष्ट व्यक्तके सामने आकर, मूर्तपिूजकों ने उससे कहना शुरू कयिा कगिरीबों और बनिा पतकि रहने वाली महलिाओं के बीच एक सुनसान जगह पर अनास्तासयिा नाम की एक युवती रहती थी, जसिकी सुंदरता का कोई सानी पूरे रोम में नहीं था।

उन्होंने कहा, 'यह कन्या न केवल ववािह करने से इनकार करती है, बल्कहिमारे जीवन-यापन के तरीके का भी तरिस्कार करती है, हमारे देवताओं का मज़ाक उड़ाती है और क्रूस पर चढ़ाए गए की आराधना करती है।'

अनास्तासयिा की सुंदरता के बारे में सुनकर, कमांडर ने तुरंत अपने नौकरों को उसे लाने के लिए भेजा। जब वे पहुँचे, तो नौकर लंबे समय तक मठ के द्वार नहीं खोल सके, इसलिए उन्हें कुल्हाड़ी लेकर दरवाजे तोड़ने पड़े। यह देखकर ननयिां बहुत डर गईं, और दूसरी तरफ़ का एक दरवाज़ा खोलकर मठ से भाग गईं। लेकनि एबेस सोफयिा ने अनास्तासयिा को जाने नहीं दयिा, और कहा:

'मेरी बेटी, अनास्तासयिा! डरो मत, क्योंकवि‍ह समय आ गया है जसिि महान कार्य के लिए तुम्हारे वधू-वर, यीशु मसीह, तुम्हें मुकुट पहनाना चाहते हैं। मैं नहीं चाहती कतिुम मठ से भागो; मैं तुम्हें, मेरे मोती—जसिे मैंने तीन साल की उम्र में गोद लयिा था, पाला-पोसा, और आज तक अपनी आँख के तारे की तरह संरक्षति रखा है—शहीद के मुकुट से वंचति करना नहीं चाहती।

जब सैनकि मठ में धावा बोलकर घुसे, तो सोफयिा उनके पास जाकर बोली:

'तुम कसिको ढूंढ रहे हो, और तुम्हें क्या चाहिए?'

उन्होंने उत्तर दिया:

'बुढ़िया! उस युवती अनास्तासिया को सौंप दो जिसे तुम अपने पास छिपाए हुए हो, क्योंकि कमांडर प्रोव उसे चाहता है।'

'हाँ, मैं खुशी-खुशी उसे तुम्हें दे दूँगी,' सोफिया ने उत्तर दिया, 'लेकिन मैं आपसे विनती करती हूँ, सज्जनो, कि कुछ घंटों प्रतीक्षा करें जब तक मैं उसे सजा न दूँ, ताकि वह आपके स्वामी की आँखों को भाए।'

नौकरों ने यह मान लिया कि सोफिया उसे साधारण सांसारिक कपड़ों और गहनों से सजाना चाहती है, इसलिए वे इंतजार करने के लिए राजी हो गए। लेकिन उसकी आध्यात्मिक माता, सोफिया, अपनी बेटी को आत्मा की सुंदरताओं से सजाना चाहती थीं, ताकि वह अपने स्वर्गीय वधू-वर के लिए मनभावन बन सके, उन्होंने उसे लिया और चर्च में ले गईं। उसे वेदी के सामने बिठाकर, सोफिया ने रोते हुए उससे बात करना शुरू किया:

'मेरी बेटी, अनास्तासिया, अब समय आ गया है कि मैं तुम्हें तुम्हारे अपने कर्मों के माध्यम से दिखाऊँ कि ईश्वर से पूरे हृदय से प्रेम करने का क्या अर्थ है। इस क्षण, तुम्हें अपने प्रिय वर—मसीह—के साथ खड़ा होना चाहिए—यहाँ तक कि रिक्त बहाने तक, और यह साबित करना चाहिए कि तुम उसकी सच्ची वधू हो। मेरी प्रिय बेटी! मैं तुझसे विनती करती हूँ: एक ब्लेड-सी तीखी जीभ से धोखा न खा; इस व्यर्थ संसार के वैभव और उपहारों से बहक मत; और उन क्षणिक कष्टों से मत डर, जो तुझे अनंत जीवन दिलाएंगे। देखो, वधू के लिए महल तुम्हारे सामने खुला है; देखो, तुम्हारे लिए शाश्वत विश्राम का शय्या तैयार है; देखो, तुम्हारे लिए मुकुट बुना गया है; देखो, वधू का वर तुम्हें पहले से ही विवाह के लिए बुला रहा है: तो आनंद से उसके पास जाओ, रक्त से रंगे हुए जाओ, मानो विवाह के वस्त्र पहने हुए हो। मैं तुझसे विनती करता हूँ, मेरे बच्चे, मेरी बात मान और मेरे द्वारा तेरे लिए किए गए परिश्रम और चिन्ताओं को याद कर, कि कैसे मैंने तुझे बचपन से पाला-पोसा, और महिमा के राजा के सामने तुझे एक पवित्र वधू के रूप में प्रस्तुत करने का हर संभव प्रयास किया। मैंने जिसकी परवाह की है, जिसके लिए प्रार्थना की है, और जिसे मैंने दिन-रात तुम्हें सिखाया है, वह यह है—कि तुम अपने पूरे हृदय और प्राण से सदा के लिए प्रभु से एक हो जाओ। इसलिए, हे मेरी बेटी, अब प्रभु के सामने मुझे—अपनी माता को—लज्जित मत करो, और अपने वृद्धावस्था में समय से पहले मुझे कब्र में मत भेज दो। यदि मुझे तुम्हारे बारे में कुछ ऐसा सुनने को मिला जो मसीह के प्रेम के विपरीत हो, तो मैं अचानक मर जाऊँगी। लेकिन यदि मुझे सुनने को मिला कि तुम मसीह के प्रति अपने प्रेम में दृढ़ खड़ी हो और उनके लिए अपना जीवन भी बलिदान करने से नहीं हिचकिचाती, तो मैं अपनी बेटी पर आनंद मनाने वाली माँ बनूँगी[7470] ; *'तुम मेरे सींग को एकसींग वाले बैल के सींग के समान ऊँचा करते हो, और मैं नए तेल से अभिषिक्त हूँ'* (भजन संहिता 91:11)। इसलिए, मेरी बेटी, अपनी शारीरिक सुंदरता को व्यर्थ न जाने दे, और न ही इस क्षणभंगुर जीवन पर अपना मन लगा। और जब वे तुझे छलपूर्ण वचनों से बहकाने का प्रयास करें, तो *'अपने हृदय को छलपूर्ण वचनों से बहकने न दे'* (भजन संहिता 140:4); और जब वे तुम्हें यातनाओं से डराने लगें, तो कहो: *'मैं तेरे भय से न डरूँगा, न विचलित होऊँगा, क्योंकि मेरा परमेश्वर मेरे साथ है'* (देखो यशायाह 8:12); और जब वे तुम्हें निर्दयता से पीटने लगें, तो *'उनसे मत डरो जो शरीर को मार सकते हैं, पर आत्मा को नहीं मार सकते'* (मत्ती 10:28)। यदि वे तुम्हारे शरीर को पीड़ित और कोड़े से पीटें, तो अपनी पीड़ाओं में आनंद मनाओ, क्योंकि अपने शरीर में तुम मसीह की पीड़ाओं में जो कमी रह गई है, उसे पूरा कर रहे हो (कुलु. 1:24)। यदि वे तुम्हें टुकड़े-टुकड़े कर दें, तो याद करो कि तुम्हारे सिर के एक-एक बाल भी प्रभु के द्वारा गिने हुए हैं (मत्ती 10:30), जो तुम्हारी सभी हड्डियों की रक्षा करेंगे, और उनमें से एक भी नष्ट नहीं होगी (भजन संहिता 33:21)। यदि वे आपका सिर कलम करने की कोशिश करें, तो संपूर्ण मंडली के मुखिया—मसीह की ओर देखें, जो आपकी महिमा हैं और जो आपका सिर ऊँचा उठाते हैं (भजन संहिता 3:4)। हे मेरे बच्चे, क्रूर पीड़ा से मत डरना। तुम्हारा वर तुम्हारे सामने अदृश्य रूप में प्रकट होगा, तुम्हारी पीड़ाओं को कम करेगा और तुम्हें भयानक यातनाओं से छुड़ाएगा। और जब तुम कराहोगे, तो वह तुम्हें सांत्वना देगा; जब तुम थक जाओगे, तो वह तुम्हें बल देगा; जब तुम अपने घावों से गिरोगे, तो वह तुम्हें उठाएगा; जब तुम अपने दुखद घावों के कारण दुख से भर जाओगे, तो वह तुम्हारे हृदय को प्रसन्न करेगा, तुम्हारी आत्मा को ताज़गी देगा, और तब तक तुम्हें न छोड़ेगा, जब तक, उसने तुम्हें तुम्हारे यातना देने वालों के हाथों से छीन लिया है, तुम्हें अपने स्वर्गीय महल में ले गया है और सभी स्वर्गदूतों की सेनाओं तथा सभी संतों के

[7470] यह अभिव्यक्ति भजन संहिता 112:9 से ली गई है।

गायकों को बुलाकर, तुम्हें परमानंद प्रदान कयिा है और अपनी वधू के रूप में तुम्हारे सरि पर एक अक्षय मुकुट धारण कयिा है, और तुम उसके साथ अनंत महमिा में राज्य करोगी।

अनास्तासयिा ने उत्तर दयिा:

'मेरा हृदय मसीह के लिए दुख सहने को तैयार है; मेरी आत्मा यीशु के लिए मरने को तैयार है, जो मेरे लिए सबसे प्रयि हैं, क्योंकि मेरी सभी इच्छाएँ और लालसाएँ इस ओर केंद्रति रही हैं कि मैं, मेरे प्रयि प्रभु के प्रति अपने प्रेम की गवाही के रूप में, अपनी आत्मा को उनके लिए अर्पति कर सकूँ। अब, चूँकि मेरी इच्छा पूरी होने का समय आ गया है, मैं आनंदपूर्वक अपने यातनाकर्ता के सामने खड़ी होऊँगी और अपने परमेश्वर के सर्व-पवत्रि नाम का अंगीकार करूँगी। आप, मेरी माँ और स्वामनिी, मेरे लिए डरयि नहीं; मेरी युवावस्था के कारण संदेह न करें: मैं अपने प्रभु यीशु मसीह में वश्विास करती हूँ, और वह अपनी दासी को बल देगा। मेरी प्रयि माता, आप भी उनसे प्रार्थना करें कि जब तक मैं उनके नाम के लिए अपना बलदिान पूरा नहीं कर लेता और हमारे वरिुद्ध उठने वाले शत्रु को लज्जति नहीं कर देता, तब तक वे मुझे न छोड़ें और मुझसे मुख न मोड़ें।

उनकी बातचीत दो घंटे से अधकि समय तक चली, इसलिए सेनापति द्वारा भेजे गए सेवक, उनका इंतजार करते-करते अधीर हो गए और वे स्वयं उन्हें खोजने के लिए चर्च की ओर चल पड़े। वहाँ उन्हें वे पवत्रि महलिाएँ मलिीं, जो शारीरकि सजावट में व्यस्त नहीं थीं, बल्कि गिहरी भावना के साथ बातचीत कर रही थीं, एक-दूसरे को सांत्वना दे रही थीं और प्रभु में एक-दूसरे को बल दे रही थीं। क्रोधति होकर, उन्होंने अनास्तासयिा को भेड़यिों की तरह एक भेड़ पर झपटने की तरह पकड़ लयिा, उसके गले में लोहे की जंजीरें डाल दीं और उसे घसीटकर शहर में ले गए, जहाँ उन्होंने उसे सेनापति के सामने पेश कयिा। उसके सामने खड़ी होकर, उसने अपनी आध्यात्मकि दृष्टि अपने वधू-वर, मसीह की ओर मोड़ दी। जो भी अनास्तासयिा को देखते थे, वे उसकी सुंदरता, उसकी वनिम्र दृष्टि और उसके सौम्य मुखमंडल को देखकर चकति हो उठे। सैन्य कमांडर ने उससे कहा:

'तुम्हारा वंश क्या है, तुम्हारा वश्विास क्या है, और तुम्हारा नाम क्या है?'

अपनी दृष्टि झुकाते हुए, संत ने शांत स्वर में उत्तर दयिा:

'मैं रोम के एक नागरकि की बेटी हूँ; मेरा पालन-पोषण ईसाई धर्म में हुआ है, और मेरा नाम अनास्तासयिा है।'

कमांडर ने कहा:

'रोमनों में यह एक असामान्य नाम है; मुझे नहीं पता कि अनास्तासयिा का क्या अर्थ है।'

– अनास्तासयिा,' संत ने उत्तर दयिा, 'का अर्थ है "पुनरुत्थान", क्योंकि ईश्वर ने मुझे आपके वरिुद्ध बोलने के लिए पुनर्जीवति कयिा है, जब तक कि मैं आपके पति – शैतान पर वजिय प्राप्त नहीं कर लेती।

कमांडर ने जारी रखा:

'कन्या, मुझसे वनिम्रता से उत्तर दो, कहीं मेरा क्रोध न भड़क जाए: क्योंकि मैं तुम्हारी जवानी का सम्मान कर रहा हूँ और तुम्हारी सुंदरता को नष्ट नहीं करना चाहता; अतः मेरी बात सुनो जैसे कोई पति तुम्हें अच्छी सलाह देना चाहता हो। तुम ईसाई धर्म की हानकिारक शकि्षाओं से क्यों भटक गई हो और अपने वर्षों को व्यर्थ में बर्बाद कर रही हो, खुद को उस अच्छे जीवन और उन सुखों से वंचति कर रही हो जो देवताओं ने मनुष्यों के आनंद के लिए प्रदान कयि हैं? लोगों की संगत से दूर रहने और अपना जीवन एकांत में बतिाने में क्या सांत्वना है? सलीब पर चढ़ाए गए की खातरि जान-बूझ के खुद को यातना और मौत के हवाले करने में क्या फायदा है? क्या यह बेहतर नहीं होगा कि हम अपने अमर देवताओं की पूजा करें, एक ईमानदार, कुलीन पति लें, सुख-भोग में मग्न रहें, बच्चों से आनंद लें, अच्छे लोगों के बीच महमिा और सम्मान से जएिँ, बड़ी संपत्ति के मालकि बनें, सोना और चाँदी प्राप्त करना, और समृद्ध जीवन के लिए देवताओं द्वारा प्रदान कयि गए जीवन को पूर्ण गरीबी और दरदि्रता में बर्बाद न करना? इसलिए, मैं तुम्हें सलाह देती हूँ: आगे आओ और देवताओं की पूजा करो, और तुम्हें तुरंत ही कुलीन जन्म का, सम्माननीय, गौरवशाली और धनी पति मलिेगा, जो राजसी सहिासन के नकिट होगा और जसिके पास महान शक्ति होगी। उसके साथ, तुम भी महान सम्मान का आनंद लोगी और, अपने पूरे जीवन में, तुम हर तरह के आशीर्वादों का आनंद लोगी।

संत अनास्तासयिा ने अपनी झुकी हुई आँखें उठाकर कमांडर की ओर देखा और इन शब्दों का उत्तर दयिा:

'मेरे पति, मेरी संपत्ति, मेरा जीवन और मेरी आनन्द – मेरे प्रभु यीशु मसीह हैं, जनिसे आप मुझे अपनी मोहक बातों से दूर नहीं कर सकते, न ही आप मुझे वैसे धोखा दे सकते हैं जैसे साँप ने हव्वा को धोखा दयिा था, न ही आप मेरे लिए अपने

विनाश की कड़वाहट को मीठा बना सकते हैं, न ही आप यातना के भय से मुझे अपने प्रभु से अलग कर सकते हैं, जिनके लिए, यदि संभव होता, मैं सौ गुना यातनाएँ सहने के लिए तैयार हूँ।

कमांडर ने पास खड़े लोगों को उसके चेहरे पर मारने का आदेश दिया, और कहा: 'क्या तुम्हें महामहिम को इसी तरह जवाब देना चाहिए?' फिर, उसे अपमानित करने के लिए, उसने उसके कपड़े फाड़ने और उसे सभी के सामने नग्न करने का आदेश दिया, और उससे पूछा:

'क्या तुम्हें अच्छा लगता है, कन्या, सभी की आँखों के सामने नग्न खड़ा होना?'

'तुम पागल, निर्लज्ज और हर तरह की अशुद्धि से भरी हो,' संत ने उत्तर दिया। 'यह मेरी लज्जा नहीं, बल्कि तुम्हारी है, क्योंकि मेरे प्रभु जानते हैं कि सूर्य ने कभी मेरी नग्नता नहीं देखी है, फिर भी तुमने मुझे इतने सारे लोगों की आँखों के सामने नग्न कर दिया है; जान लो कि तुमने मुझे लज्जित करने से कहीं ज़्यादा खुद को लज्जित किया है।' क्योंकि इस लज्जा के कारण, मेरे वधू-वर मुझे महिमा के वस्त्र से सजाएंगे, जबकि तुम हमेशा के लिए अपने ही चेहरे की लज्जा से ढके रहोगे; और अब हर समझदार व्यक्ति यही कहेगा: 'अगर सेनापति लिज्जाहीन और अशुद्ध वासना से भरा न होता, तो वह एक कुंवारी का शरीर सबके देखने के लिए न खोलता।'

और, उसे नग्न करने वालों की ओर मुड़कर, उसने कहा:

'यदि तुमने मेरे शरीर को नग्न कर दिया है, यदि तुमने मेरे लिए विभिन्न यातनाओं के उपकरण तैयार कर लिए हैं, तो फिर तुम देर क्यों कर रहे हो? मारो, काटो, मुझे नोचो; मेरे नग्न शरीर को घावों से ढक दो, मेरी उजागर हुई लाज को खून से ढक दो; देखो, तुम मुझे यातना के लिए तैयार देख रहे हो, और मुझसे और कुछ सुनने की उम्मीद मत करो, सिवाय इसके कि मैं अपने मसीह के लिए मरना चाहती हूँ।"

तब, सेनापति की आज्ञा से, उसे चार खंभों पर पेट के बल लिटाकर बाँध दिया गया; उसके नीचे गंधक और तारकोल की आग लगा दी गई, और उसे नीचे से आग और बदबूदार धुएँ से यातना दी गई, जबकि उसकी पीठ पर बेरहमी से डंडों की बरसात की गई। हालाँकि, संत अनास्तासिया ने प्रहारों को सहते हुए, धुएँ से घुटते हुए और आग से झुलसते हुए, यह सब कुछ सहन किया और कराहने के बजाय, दाऊद की भजन संहिता का अंत तक पाठ किया: 'हे परमेश्वर, मुझ पर दया कर...' उसे तब तक पीटा गया जब तक कि जल्लाद थक नहीं गए। इसके बाद, उसे खंभों से खोलकर और चिता से उतारकर, उन्होंने उसे पहियों से बांध दिया और पहिया घुमाकर उसकी सभी हड्डियाँ तोड़ दीं और उसकी अस्थियाँ उखाड़ दीं। हालाँकि, उसने प्रभु से प्रार्थना की:

'हे मेरे शरणदाता और मेरे रक्षक, मुझे न छोड़, क्योंकि मैं बीमारी से कमज़ोर हो गया हूँ और मेरी हड्डियाँ कुचल गई हैं।'

इस प्रार्थना के बाद, पहिया अचानक रुक गया, और पवित्र शहीद, एक अदृश्य शक्ति द्वारा मुक्त होकर, पूरी तरह से अछूती और अच्छे स्वास्थ्य में पाई गईं। इस चमत्कार को देखकर उपस्थित सभी लोग पूरी तरह से चकित रह गए। हालाँकि, कमांडर न तो होश में आया—क्योंकि द्वेष ने उसकी आँखें फोड़ दी थीं—बल्कि और भी अधिक क्रूरता से उसने संत को फिर से अन्य यातनाएँ देना शुरू कर दिया: उसने आदेश दिया कि, जब उसे लटकाया जाए, तो उसकी पसलियों को घिसि दिया जाए और उसके शरीर को फाड़ दिया जाए। उसने, हालाँकि, यह सब साहसपूर्वक सहन किया और अपनी आँखें केवल ईश्वर की ओर उठाईं, यह कहते हुए:

'हे मेरे वधूवर, मेरी इस पीड़ा पर दृष्टि डालिए, जिसे मैं आपके लिए सह रही हूँ, और मुझ पर, आपकी इस अयोग्य दासी पर, कृपा कीजिए, ताकि मेरा रक्त बहाना आपको प्रसन्न करे, और मैं पवित्र शहीदों की संगति से वंचित न रहूँ।'

इसके बाद, उसे पेड़ से उतारा गया, और कमांडर ने उससे पूछा:

'अनास्तासिया! क्या तुम अब ठीक हो?'

– बहुत अच्छा ही है, – संत ने उत्तर दिया, – क्योंकि उस एक के लिए जो मुझे अपनी जान से भी बढ़कर प्रिय है, कौन सी यातना अच्छी और प्रिय नहीं होगी?

कमांडर ने जारी रखा:

– 'यदि तुम सूली पर चढ़ाए गए मसीह के लिए दी जा रही यातनाओं में आनंद लेते हो, तो मैं उन्हें और बढ़ा दूँगी।' उसने आदेश दिया कि उसकी छाती की निप्पलें ब्लेड से काट दी जाएँ। जब वह खून बहाकर मर रही थी, तो संत बहुत कमजोर हो गई और पानी पीने के लिए माँग की। पास खड़े लोगों में से एक, जिसका नाम सिरिल था, उसके लिए पानी लाया और उसे दिया। थोड़ा सा पीने के बाद, उसने उस आदमी से कहा जिसने उसे पानी दिया था:

'प्रभु से अपना इनाम तुम खो न बैठो, क्योंकि उन्होंने कहा है: *"जो कोई तुम्हें मेरे नाम पर एक प्याला पानी पिलाए, क्योंकि तुम मसीह के हो, मैं तुम से सच कहता हूँ, वह अपना इनाम खोएगा नहीं"* (मरकुस 9:41)।'

कमांडर ने उससे कहा:

'क्या तुम्हें अब तक काफी कष्ट हो चुका है, या क्या तुम और अधिक यातनाएँ सहना चाहती हो?'

'तुम जो चाहो करो,' संत ने उत्तर दिया, 'मेरा ईश्वर शक्तिशाली है और वह मेरी क्षीण होती शक्ति को और अधिक यातनाओं के लिए मजबूत कर देगा, और तुम्हारे घमंड को चूर कर देगा।'

यातना देने वाले ने आदेश दिया कि उसकी उंगलियों से नाखून नोच दिए जाएँ, फिर उसके हाथ और पैर काट दिए जाएँ, और उसके सभी दाँत तोड़ दिए जाएँ।

संत फिर से कमजोर होने लगीं और पानी माँगा, जबकि उनके मुँह से खून की एक नदी बह रही थी। सिरिल ने उन्हें थोड़ा और पानी पिलाया। यातना देने वाले ने, सिरिल को शहीद को पानी पिलाते हुए देखा और यह सोचकर कि वह एक ईसाई है (जो वास्तव में सच था), आदेश दिया कि उसे तुरंत तलवार से मार दिया जाए। सिर कलम किए जाने के बाद, धन्य सिरिल प्रभु के पास चले गए ताकि उस ठंडे पानी के प्याले का पुरस्कार प्राप्त कर सकें, जिससे उन्होंने मसीह के नाम पर मसीह के शहीद की प्यास बुझाई थी। पानी से तरोताजा होकर, संत ने थोड़ी देर विश्राम किया और प्रार्थना करते हुए कहा:

'हे ईश्वर, मेरे उद्धारकर्ता, मुझे न छोड़ो!'

जब कमांडर ने उसकी जीभ काटने का आदेश दिया, तो संत ने कहा:

'हे दुष्ट रक्तपिपासु मनुष्य! भले ही तुम मेरी जीभ काट दो, मेरा हृदय प्रभु को पुकारना बंद नहीं करेगा। क्योंकि प्रभु उन लोगों की सुनते हैं जो मौन में भी उनसे प्रार्थना करते हैं।'

एक नौकर ने चिमटे की एक जोड़ी लेकर उसे संत के मुँह में डाल दिया, उससे जबरदस्ती जीभ खींची और उसे काट दिया। लोगों ने विरोध करना शुरू कर दिया, और वे कमांडर को इस तरह की क्रूर और अमानवीय यातना के लिए डांटने और कोसने लगे। हालाँकि, कमांडर लोगों पर क्रोधित हो गया, और उसने संत को शहर से बाहर ले जाकर तलवार से उसका सम्मानजनक सिर कलम करने का आदेश दिया। इस प्रकार, मसीह की पवित्र और प्रशंसनीय महान शहीद, अनास्तासिया ने अपना शहादत का कारनामा पूरा किया। उनके पवित्र शरीर को पक्षियों और जानवरों द्वारा खाए जाने के लिए बिना दफ़नाए छोड़ दिया गया था, लेकिन, दैवीय कृपा से, वह अक्षुण्ण रहा। जैसे ही रात हुई, धन्य एल्डर सोफिया के सामने एक देवदूत प्रकट हुआ और उसने उन्हें संत अनास्तासिया का शरीर लेने का आदेश दिया, जो शहर के बाहर एक खेत में पड़ा था। सोफिया, एक साफ़ कपड़ा लेकर, मठ से निकल पड़ी, यह न जानते हुए कि कहाँ जाएँ। ईश्वर से भक्तिपूर्वक प्रार्थना करने के बाद, वह चल पड़ी और स्वयं ईश्वर के मार्गदर्शन से, उस स्थान पर पहुँच गई जहाँ उसकी आध्यात्मिक बेटी का पवित्र शरीर पड़ा था; उसने उसे चूमना और धोना शुरू कर दिया, मानो पानी से, पर अपने भरपूर आँसुओं से, यह कहते हुए:

'मेरी प्रिय बेटी, जिसे मैंने परिश्रम और मौन में, उपवास और प्रार्थना में पाला; जिसे मैंने कुँवारीपन और पवित्रता में संरक्षित रखा; जिसे मैंने ईश्वर के भय और उनके पवित्र प्रेम की शिक्षा दी; मेरी सबसे प्यारी बेटी, जिसके लिए मैं हमेशा दुखी थी, जब तक तुम अंत तक मसीह के प्रति विफादार रहीं! मैं तुम्हें धन्यवाद देती हूँ कि तुमने अपनी विनम्र माँ की बात मानी और मेरी इच्छा पूरी की। तुम्हारे लिए मेरी मेहनत व्यर्थ नहीं गई, क्योंकि तुम अपने दूल्हे के सामने अपनी निर्दोष कुँवारीपन के वधू-वस्त्र में खड़ी हो, जो तुम्हारे ही रक्त से सुसज्जित है। इसलिए, मैं अब आपसे एक बेटी के रूप में नहीं, बल्कि अपनी माँ और स्वामिनी के रूप में विनती करती हूँ: ईश्वर से अपनी प्रार्थनाओं के द्वारा मेरे वृद्धावस्था में मेरा सहारा बनें, और, प्रभु के साथ आनंद मनाते हुए, मुझको याद करें। और जब वह मुझे इस नश्वर शरीर से विदा होने का आदेश दें, तो उनकी दया से प्रार्थना करें कि वह मेरे पापों पर दया करें।

इस प्रकार रोते हुए, वह सोचने लगी कि वह क्या करे: वह अकेली थी, और इसके अलावा बहुत कमजोर भी; वह बड़ी मुश्किल से एक लाठी के सहारे चल पाती थी और न तो उस पवित्र देह को उठाकर ले जा सकती थी और न ही वहीं पर दफ़ना सकती थी, और इसलिए वह दुखी हुई, यह सोचकर कि अब क्या करे। और फिर, ईश्वर की व्यवस्था से, दो अजनबी पुरुष—जो देखने में सम्मानित, बातों में दयालु और विश्वास से ईसाई थे—उस बूढ़ी महिला को शव के पास रोते हुए पाए; उन्होंने उसकी मदद की और, शरीर के अलग किए गए अंगों—बाहों और पैरों (क्योंकि उन्हें शहर से निकालकर उसी जगह पर फेंक दिया गया था) और पवित्र सिर—को इकट्ठा किया— उन्होंने इन सभी को शरीर से जोड़ दिया, प्रत्येक अंग को

उसकी उचित जगह पर, और, इसे एक कपड़े में लपेटकर, इसे सम्मान के स्थान पर ले गए जहाँ, अंतिम संस्कार के भजन गाते और पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा की महिमा करते हुए, उन्होंने इस अनमोल खजाने को दफनाया।

कॉन्टाकियन, स्वर 3:

हे पूजनीय आनास्तासिया, कुँवारीपन के जल से पवित्र और शहादत के रक्त से मुकुटित, आप उन जरूरतमंदों और बीमारों को, जो सच्चे हृदय से आपसे प्रार्थना करते हैं, चंगाई और उद्धार प्रदान करती हैं: क्योंकि मसीह आपको शक्ति प्रदान करते हैं, जब आप अनवरत अनुग्रह बहाती हैं।

अव्राम तपस्वी और धन्य मरियम का जीवन

29 अक्टूबर को स्मरणोत्सव

धन्य अव्रामियस धर्मपरायण माता-पिता के पुत्र थे; अपने प्रारंभिक यौवन से ही उन्हें पवित्र चर्चों में जाने, वहाँ भक्तिपूर्वक परमेश्वर के वचन को सुनने और उससे सीखने का शौक था।

अपने पुत्र से बहुत अधिक स्नेह करने के कारण, उसके माता-पिता ने उसे विवाह करने के लिए कहा। पहले तो उसने इनकार कर दिया, लेकिन फिर, कई बार और लगातार विनती करने पर, अपनी इच्छा के विरुद्ध, उसने अपने माता-पिता की आज्ञा मानी।

शादी के सातवें दिन, जब अव्रामियस अपनी पत्नी के साथ अपने शयनकक्ष में अकेले बैठे थे, तो ईश्वर की कृपा अचानक उनके हृदय में एक प्रकाश की तरह चमक उठी, और किसी को एक शब्द भी कहे बिना, वे चुपचाप घर से निकल गए। दैवीय प्रेरणा से, वह '[7471] ' शहर से निकल गया और उससे दो हजार कदम दूर एक निर्जन झोपड़ी मिली; वहाँ वह आनंदित हृदय से बस गया, और ईश्वर की स्तुति करने लगा। उसके माता-पिता और रिश्तेदार, उसके लापता होने पर शोक करते हुए, उस धन्य व्यक्ति की हर जगह तलाश करने लगे। सत्तर दिन बीत जाने के बाद, उन्हें वह अपनी कोठरी में ईश्वर से प्रार्थना करते हुए मिला, और वे बहुत आश्चर्यचकित हुए। तब उस धन्य व्यक्ति ने उनसे कहा:

'आश्चर्यचकित न हों, बल्कि मानव जाति के प्रेमी परमेश्वर की महिमा करें, जिन्होंने मुझे इस व्यर्थ संसार से मुक्त किया है; और मेरे लिए प्रभु से प्रार्थना करें, कि वह मुझे उस शुभ जुए को अंत तक सहने की शक्ति दे, जिससे उसने मुझे सम्मानित किया है; और मुझे परमेश्वर के प्रेम के लिए यहाँ मौन में रहने दें, ताकि मैं उनकी पवित्र इच्छा को पूरा कर सकूँ।'

धन्य व्यक्ति के माता-पिता ने, उनका अटूट संकल्प देखकर, कहा, 'आमीन।'

संत अव्राम ने उनसे विनती करना शुरू किया कि वे अपनी मुलाकातों से उसे परेशान न करें, और दरवाज़े बंद कर दिए, केवल एक छोटी सी खिड़की छोड़ दी जिसके माध्यम से उसे अपना भोजन मिलता था। इसके बाद, धन्यजन का मन अनुग्रह से और अधिक प्रबुद्ध हुआ, और वे सदाचार, महान संयम, विनम्रता, प्रेम और पवित्रता में उत्कृष्ट हुए। उनकी कीर्ति दूर-दूर तक फैल गई, और जो भी उनके बारे में सुनते थे, वे उन्हें देखने और सुनने के लिए आते थे, क्योंकि उन्हें ज्ञान, समझ और सांत्वना के शब्दों का वरदान प्राप्त था। – धन्य व्यक्ति के अपने माता-पिता के घर छोड़े हुए दस साल बाद, उनके माता-पिता का निधन हो गया और उन्होंने उसे एक बड़ी संपत्ति छोड़ दी। अव्राम, अपनी प्रार्थना और मौन को त्यागना नहीं चाहकर, एक करीबी दोस्त से विनती करने लगा कि वह उसे विरासत में मिली सारी संपत्ति गरीबों में बाँट दे; ऐसा करने के बाद, वह निश्चिंत रहा; क्योंकि धन्य व्यक्ति की मुख्य चिंता यह थी कि उसका मन सांसारिक चीजों से न जुड़ जाए, और इसलिए उसके पास पृथ्वी पर एकमात्र बाहरी वस्त्र, एक बाल-वस्त्र, एक मटका जिससे वह खाता-पीता था, और एक चटाई जिस पर वह सोता था, के अलावा कुछ भी नहीं था। अपने संन्यासी जीवन के सभी वर्षों के दौरान, वह अपने नियम से कभी नहीं भटका, और उसने ईश्वर के प्रति महान प्रेम और भक्ति के साथ पचास वर्ष संन्यास में बिताए।

[7471] टेनिया, लैम्प्सैक्स के पास, माइशिया (एशिया माइनर का एक उत्तर-पश्चिमी क्षेत्र) का एक प्रमुख शहर।

[7472]शहर के आसपास की बस्तियों में एक बहुत बड़ी मूर्तपिूजक बस्ती थी, जसिमें सबसे छोटे से लेकर सबसे बूढ़े तक सभी मूर्तपिूजक थे, और कोई भी ऐसा नहीं था जो उन्हें ईश्वर की ओर मोड़ सके। उस क्षेत्र के बशिप द्वारा भेजे गए कई पुरोहति और डकिन, उन्हें उनके मूर्तपिूजक भ्रम से दूर करने में असफल रहे, क्योंकि वे उन सभी कठनिाइयों और अपमानों को सहन नहीं कर सके जो उन्हें झेलनी पड़ीं। कई भक्षिुओं ने भी बार-बार मूर्तपिूजकों को धर्मांतरति करने का प्रयास कयिा था, लेकनि कुछ भी हासलि न कर पाने पर उन्हें छोड़ दयिा था। एक अवसर पर, अपने पुरोहतिों से बातचीत करते हुए, बशिप ने धन्य अव्रामयिस को याद कयिा और कहा:

'अपने पूरे जीवन में मैंने अव्रामयिस जैसे व्यक्ति को कभी नहीं देखा – यह व्यक्ति जिसिने हर अच्छे और ईश्वर-प्रसन्न करने वाले कार्य में पूर्णता प्राप्त की।'

पुरोहतिों ने उत्तर दयिा:

'हाँ, आपकी कृपा, वह ईश्वर का सेवक और एक अत्यंत परपिूर्ण भक्षिु है।'

तब बशिप ने उनसे कहा:

'मैं उसे इस गाँव का पुरोहति नयिुक्त करना चाहता हूँ: अपने धैर्य और प्रेम के द्वारा, वह उनके दलिों को जीतने और उन्हें ईश्वर की ओर मोड़ने में सक्षम होगा।'

और तुरंत, पुरोहति वर्ग के साथ, वह उस धन्य व्यक्ति से मलिने के लिए चल पड़ा। जब वे पहुँचे और उन्होंने अभविादन कयिा, तो बशिप ने अव्रामयिस से उस गाँव के बारे में बात करना शुरू कयिा और उससे वहाँ जाने का आग्रह कयिा। यह सुनकर, अव्रामयिस बहुत दुखी हो गया और बशिप से कहा:

'हे पवित्रि पति! मुझे क्षमा करें: मुझे केवल अपने पापों पर रोने दें; मैं इस कार्य के लिए कमजोर और अयोग्य हूँ।'

'ईश्वर की कृपा की शक्ति से,' बशिप ने उत्तर दयिा, 'आप इसे पूरा कर पाएँगे: आज्ञा मानने में संकोच न करें।'

तब धन्य ने कहा:

'मैं आपकी पवित्रिता से वनिती करता हूँ, मेरी इस दीनता पर दया करें, ताकि मैं अपने पापों पर शोक मना सकूँ।'

बशिप ने उनसे उत्तर दयिा:

'देखो, तुमने संसार को त्याग दयिा है और संसार में जो कुछ भी है उससे घृणा की है; तुम मसीह के साथ सूली पर चढ़ाए गए हो और उसकी सभी आज्ञाओं का पालन कयिा है, फरि भी तुम्हारे में आज्ञाकारति की कमी है।'

यह सुनकर, अव्रामी जोर-जोर से रोया और कहा:

'मैं क्या हूँ? एक बदबूदार कुत्ता—और मेरी ज़िंदगी क्या है, अगर आप मेरे बारे में ऐसा सोचते हैं?'

'यहाँ रुककर,' बशिप ने उत्तर दयिा, 'आप केवल अपनी ही रक्षा करेंगे; लेकनि वहाँ, ईश्वर की कृपा की सहायता से, आप कई लोगों को बचाएंगे और प्रभु के पास लाएंगे।'

तब धन्यजन ने रोते हुए कहा:

'ईश्वर की इच्छा पूरी हो! मैं आज्ञाकारति से जाऊँगा।'

बशिप उसे अपनी कोठरी से बाहर ले गए, शहर में ले गए, उसे पादरी का पद दयिा, और बड़ी खुशी के साथ, उसे पुरोहतिों के साथ उस गाँव को भेज दयिा।

अपने मार्ग पर, धन्य ने ईश्वर से इस प्रकार प्रार्थना की:

'हे मानवजाति के दयालु प्रेमी! आप मेरी दुर्बलता को देख रहे हैं। मेरी सहायता के लिए अपनी कृपा भेजिए, ताकि आपका परम पवित्रि नाम महमिामय हो।'

गाँव में पहुँचकर और लोगों को दैवीय भ्रमों के वश में, मूर्तयिों की पूजा करते हुए देखकर अब्राहम फूट-फूट कर रोया। उसने अपनी आँखें आकाश की ओर उठाकर कहा:

'हे ईश्वर, एकमात्र पापरहति! अपने हाथों के कार्यों को तुच्छ न समझो।'

इसके बाद, उन्होंने शहर में अपने एक करीबी दोस्त को संदेश भेजा, जसिे उन्होंने अपने माता-पति द्वारा छोड़ी गई संपत्ति को गरीबों में बांटने का काम सौंपा था, और उससे चर्च बनाने के लिए पैसे का एक हसि्सा भेजने को कहा। उसके मत्रि ने बनिा कोई समय गंवाए उसे उतनी ही राशि भेज दी जतिनी उसे चाहिए थी। फरि उस धन्य व्यक्ति ने परमेश्वर का मंदरि बनाना शुरू कयिा और थोड़े ही समय में एक भव्य चर्च का नरि्माण कयिा और उसे सबसे खूबसूरत दुल्हन की

[7472] यह बस्ती हेलेस्पोंट (मार्मारा सागर और द्वीपसमूह के बीच की डार्डानेल्स जलडमरूमध्य) के तट पर स्थति थी।

तरह सजाया। जब चर्च का निर्माण हो रहा था, तो वह धन्य व्यक्ति मूर्तियों के बीच आकर ईश्वर से प्रार्थना करता था, और किसी से एक शब्द भी नहीं बोलता था। जब चर्च बनकर तैयार हो गया, तो उसने वहाँ प्रभु से इस प्रार्थना को भक्तिपूर्ण आँसुओं के साथ किया:

'हे प्रभु! इन बिखरे हुए लोगों को एकत्रित करो और उन्हें इस चर्च में लाओ; उनके मन की आँखें खोल दो, ताकि वे आपको, एकमात्र भले और परोपकारी ईश्वर को जान सकें।'

अपनी प्रार्थना समाप्त करने के बाद, वह चर्च से निकल गया, और, मूर्तिपूजकों के वेदी को तोड़कर, उसने सभी मूर्तियों को गिरा दिया। यह देखकर कि क्या हुआ था, मूर्तिपूजक जंगली जानवरों की तरह संत पर टूट पड़े और, उसे पीटकर, उसे गाँव से बाहर निकाल दिया। उस रात वह लौट आया, चुपके से गाँव में घुस गया, और चर्च में प्रवेश कर, चीखों और रोने के साथ ईश्वर से प्रार्थना करने लगा कि वह इन नाश हो रहे लोगों को बचा ले। भोर होते ही, मूर्तिपूजकों ने उसे चर्च में प्रार्थना करते हुए पाया और वे भय से भर गए। (वे हर दिन चर्च में आया करते थे - प्रार्थना करने के लिए नहीं, बल्कि इमारत की भव्यता और सुंदरता की प्रशंसा करने के लिए।) धन्य संत ने उनसे ईश्वर को जानने का आग्रह करना शुरू किया, लेकिन उन्होंने उसे खंभों से तब तक पीटा जैसे वह एक निर्जीव पत्थर हो; उसे जमीन पर पटकने के बाद, उन्होंने उसके गले में एक फाँसी का फंदा डाल दिया और उसे गाँव से बाहर घसीट कर ले गए। यह सोचकर कि वह मर चुका है, उन्होंने उसके ऊपर एक पत्थर रख दिया और उसे वहीं छोड़कर चले गए। वह, हालांकि मुश्किल से जीवित था, आधी रात को होश में आ गया; उठकर, वह जोर-जोर से रोने लगा और प्रभु से इस प्रकार प्रार्थना करने लगा:

'हे प्रभु! आपने मेरी आँसुओं और मेरी नम्रता को क्यों ठुकरा दिया है? आपने मुझसे अपना मुख क्यों मोड़ लिया है और मेरे हाथों के काम को क्यों तुच्छ जाना है? हे प्रभु, अब अपने दास पर दृष्टि कर; मेरी प्रार्थना सुन; मुझे बल दे; और अपने दासों को शैतान के बंधन से छुड़ा, और उन्हें तुझे, एक सच्चे परमेश्वर को जानने का वरदान दे, क्योंकि तेरे सिवा कोई और प्रभु नहीं है।

तब अब्राहम गाँव में आए और चर्च में प्रवेश करके वहाँ भजन गाते और प्रार्थना करते हुए खड़े रहे। एक बार फिर, भोर के समय, मूर्तिपूजक आए और उन्हें जीवित देखकर पहले तो हैरान रह गए, लेकिन फिर उन्होंने उस धन्य व्यक्ति को एक बार फिर से सताना शुरू कर दिया: उन्हें ज़मीन पर पटकने के बाद, उन्होंने उनके गले में एक रस्सी डाल दी और उन्हें गाँव के बीच से घसीटते हुए ले गए। इस प्रकार धन्य व्यक्ति ने तीन वर्षों तक कष्ट सहे, विश्वास की चट्टान के समान हर प्रकार की यातनाएँ झेलते हुए, उसे पीटा भी गया और सताया भी गया। इन सभी यातनाओं के दौरान, उसने उनके प्रति कोई क्रोध नहीं पाला, न ही कोई शिकायत की, न ही वह हतोत्साहित हुआ, और कष्ट सहते हुए भी उसने हिम्मत नहीं हारी, बल्कि ईश्वर के प्रति प्रेम और भटक गए लोगों के प्रति करुणा से और भी अधिक प्रज्वलित हो गया; उन्होंने विनती की और उपदेश दिया – बुज़ुर्गों से पिता के रूप में, युवकों से भाई के रूप में, और बच्चों से अपने ही संतान के रूप में – जबकि स्वयं अपमान और दुर्व्यवहार सह रहे थे।

एक बार, उस गाँव के सभी निवासी, सबसे छोटे से लेकर सबसे बूढ़े तक, एक साथ इकट्ठा हुए और अव्राम के जीवन से चकित होकर, एक-दूसरे से कहने लगे:

'क्या तुम इस आदमी के महान धैर्य को देखते हो? क्या तुम हमारे लिए उसके अकथनीय प्रेम को देखते हो? यद्यपि हमने उसके साथ बहुत शत्रुतापूर्ण व्यवहार किया है, उसने इस जगह को नहीं छोड़ा है, न ही उसने किसी से एक भी कठोर शब्द कहा है, और न ही मुझसे मुंह मोड़ा है, बल्कि यह सब बड़े आनंद के साथ सहन करता है। निश्चय ही, उसे हमारे उद्धार के लिए उस ईश्वर ने हमसे भेजा है, जिसके बारे में वह हमेशा बात करता है; वह कहता है कि स्वर्ग का राज्य, स्वर्ग और अनंत जीवन आएगा, और उसके शब्द सत्य हैं; क्योंकि यदि वह जैसा कहता है वैसा न होता, तो वह हमारे हाथों इतना दुख न सहता। उसने हमारे देवताओं की शक्तिहीनता को भी उजागर किया है, क्योंकि जब वह उन्हें नष्ट कर रहा था तो वे उसे दंडित नहीं कर सके। सचमुच, वह जीवित परमेश्वर का सेवक है, और जो कुछ भी उसने हमें बताया है वह सत्य है। इसलिए, आगे आओ और उस परमेश्वर पर विश्वास करो जिसकी वह घोषणा करता है।

इस प्रकार, वे सभी, आगे बढ़ते हुए, एक स्वर में चिल्लाते हुए चर्च में प्रवेश कर गए:

'स्वर्ग में परमेश्वर की महिमा हो, जिसने हमें शैतान की धोखाधड़ी से बचाने के लिए अपना सेवक भेजा!'

आए हुए मूर्तिपूजकों को देखकर, धन्य व्यक्ति ने बड़ी प्रसन्नता से आनंदित होकर, उसका मुख प्रातःकाल की किरण की भाँति दमक उठा। अपना मुख खोलकर, उसने उनसे कहा:

'मेरे पिता, भाइयों और बच्चों! आओ, और हम परमेश्वर की महिमा करें, जिसने तुम्हारे हृदयों की आँखें खोल दी हैं, ताकि तुम उसे जानो और मूर्तिपूजा की अशुद्धता से शुद्ध हो जाओ। इसलिए, पूरे हृदय से जीवित परमेश्वर पर विश्वास करो, क्योंकि वही स्वर्ग और पृथ्वी तथा उनमें जो कुछ भी है, उसका सृष्टिकर्ता है—अनंत, अकथनीय, अगम्य, प्रकाश का दाता, मानव जाति का प्रेमी, भयानक और धर्मी प्रभु। उसके एकलौते पुत्र पर भी विश्वास करो, जो उसकी बुद्धि, शक्ति और इच्छा हैं, और उसके परम पवित्र आत्मा पर, जो सभी को जीवन देने वाले हैं – और, विश्वास करने पर, आप स्वर्गीय जीवन प्राप्त करेंगे।

उन्होंने सभी ने उत्तर दिया:

'हे हमारे पिता और जीवन के मार्गदर्शक! हम आपकी कही और सिखाई बातों पर विश्वास करते हैं, और हम जो कुछ भी आप हमें आज्ञा दें, करने के लिए तैयार हैं।'

इसके बाद, धन्य व्यक्ति ने उन सभी को एक साथ इकट्ठा किया, और उन्हें, जवान और बूढ़े सभी को—लगभग एक हज़ार आत्माओं को—पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम पर बपतिस्मा दिया; और वह हर दिन उन्हें पवित्र धर्मग्रंथ पढ़कर सुनाता था, और उन्हें स्वर्ग के राज्य, स्वर्ग, आग की गेहन्ना, धार्मिकता, विश्वास और प्रेम के बारे में समझाता और सिखाता था। वे, मानो, उपजाऊ भूमि बन गए, जिन्होंने अच्छे बीज को ग्रहण किया और फल दिए—कभी-कभी सौ गुना, कभी-कभी साठ गुना, कभी-कभी तीस गुना (मत्ती 13:23)। इस प्रकार, उन्होंने बड़ी लगन, परिश्रम और आनंद के साथ उनकी शिक्षा सुनी और उनके वचनों का पालन किया। अपने आँखों के सामने धन्य को मानो परमेश्वर का कोई स्वर्गदूत समझकर, और प्रेम के बंधन से उनके प्रति बँधकर, उन्होंने उनकी पवित्र शिक्षा पर ध्यान दिया।

जब वे विश्वास में आ गए, तो धन्य व्यक्ति एक वर्ष तक उनके बीच रहे, और दिन-रात उन्हें परमेश्वर का वचन सिखाते रहे। और फिर, ईश्वर के प्रति उनके प्रेम और उनके दृढ़ विश्वास को परखने के बाद, वे उन्हें छोड़ना चाहते थे, क्योंकि उन्होंने देखा कि वे उनसे गहराई से प्रेम करने लगे थे और उन्हें सर्वोच्च सम्मान देते थे, और उन्हें डर था कि उनका मन किसी सांसारिक आसक्ति में फँस सकता है और वे अपने संन्यासी प्रयासों में डगमगा सकते हैं। इसलिए, एक रात उठकर, उन्होंने ईश्वर से इस प्रकार प्रार्थना की:

'हे एकमात्र निर्दोष, हे एकमात्र पवित्र, जो संतों के बीच विश्राम करते हो, हे मानव जाति के एकमात्र प्रेमी और दयालु प्रभु, जिन्होंने इन लोगों की आँखें खोल दीं और उन्हें मूर्तिपूजा के भ्रम से मुक्त किया, जिन्होंने उन्हें आपको जानने की समझ प्रदान की, उनकी रक्षा और संरक्षण करें, हे प्रभु, अंत तक, और अपने इस अच्छे झुंड की रक्षा करें, जिसे आपने मानवता के प्रति अपने महान प्रेम से प्राप्त किया है; उन्हें अपनी कृपा की ढाल से बचाएँ; उनके हृदयों को लगातार प्रबुद्ध करें, ताकि, आपको प्रसन्न करके, वे आपके स्वर्गीय राज्य के योग्य माने जाएँ: मुझे भी, जो कमज़ोर और अयोग्य हूँ, रक्षा करें, और इसे मेरे लिए एक पाप न मानें, क्योंकि आप सर्वज्ञ जानते हैं कि मैं आपसे प्रेम करता हूँ और आपको तरसता हूँ।

प्रार्थना के अंत में, संत ने क्रॉस का चिह्न बनाया और उनसे स्वयं को छिपाते हुए, चुपचाप उस स्थान को छोड़कर कहीं और चले गए। जब सुबह हुई, तो नव-बपतिस्मा प्राप्त लोग, अपनी प्रथा के अनुसार, चर्च आए और संत को खोजते हुए उन्हें नहीं मिला; और, आश्चर्य से भरकर, वे खोए हुए भेड़ों की तरह इधर-उधर भटकते रहे, और उन्हें खोजते हुए आँसुओं के साथ अपने चरवाहे का नाम पुकारते रहे। हर जगह खोजने और उसे न पाकर, वे बहुत दुखी हुए और तुरंत बिशप के पास गए और उन्हें जो हुआ था, वह बताया। यह सुनकर बिशप दुखी हो गए और उन्होंने तुरंत कई सेवकों को उस धन्य व्यक्ति की तलाश में भेज दिया, विशेष रूप से अपनी भेड़ों के आँसुओं और विनतियों को देखते हुए – और भेजे गए लोग उसे इस तरह खोजने लगे जैसे वह कोई कीमती पत्थर हो, लेकिन वे उसे नहीं ढूंढ सके। बिशप, अपने पुरोहितों के साथ गाँव आकर , जब उन्होंने सभी को मसीह के प्रति विश्वास और प्रेम में दृढ़ पाया, तो उन्होंने उनमें से योग्य पुरुषों को चुना, उन्हें प्रेस्बिटर और डीकन के रूप में नियुक्त किया, और उन्हें आशीर्वाद देकर विदा हो गए।

यह सब सुनकर, धन्य व्यक्ति ने पूरे हृदय से आनंद मनाया, ईश्वर की स्तुति की और कहा:

'हे मेरे प्रभु, आपने मुझ पर जो कुछ भी कृपा की है, उसके बदले में मैं आपको क्या दूँ? मैं आपकी व्यवस्था की आराधना और महिमा करता हूँ!'

इस प्रकार प्रार्थना करने के बाद, वह अपनी पुरानी कोठरी में चला गया, जहाँ वह पहले रहता था। उसने पहले वाली से अलग, अपने लिए एक और छोटी कोठरी बनवाई और अपने उद्धारकर्ता परमेश्वर में आनंदित होकर, उसमें स्वयं को बंद कर लिया। हालाँकि, शैतान, अब्राहम के इन सभी कर्मों को देखकर, और भी अधिक घृणा से भर गया और इस

मसीह के अच्छे योद्धा को हर तरह से गिराने की कोशिश करने लगा। उसमें घमंड का विचार भरने की कोशिश में, वह एक दिन प्रशंसा के शब्दों के साथ उसके पास आया। एक बार, जब आशीषित मध्यरात्रि में प्रार्थना कर रहे थे, तो उनकी कोठरी में अचानक एक प्रकाश चमका और ये शब्द सुनाई दिए, मानो ईश्वर की ओर से:

'अव्रामी! धन्य है तू, धन्य है, क्योंकि मनुष्यों में से किसी ने मेरी इच्छा तेरे समान नहीं पूरी की है।'

लेकिन धन्य व्यक्ति ने तुरंत इसे एक दुर्भावनापूर्ण धोखा माना और, अपनी आवाज़ उठाकर, कहा:

'हे चापलूसी और विनाश से परिपूर्ण! तेरा दुष्टपणा तेरे साथ ही नष्ट हो जाए! मैं एक पापी मनुष्य हूँ, परन्तु मैं अपनी आशा अपने परमेश्वर की कृपा और सहायता में रखता हूँ, और मैं तुझसे नहीं डरता, ठीक वैसे ही जैसे तेरे रूप मुझे भयभीत नहीं करते। मेरे लिए, मेरे उद्धारकर्ता, यीशु मसीह का नाम, जिसे मैं प्रेम करने लगा हूँ, एक अभेद्य दीवार है; और उसी के नाम में मैं तुझे, अशुद्ध कुत्ते, ऐसा करने से रोकता हूँ।

और अचानक शैतान धुएँ की तरह गायब हो गया।

एक अन्य अवसर पर, कुछ दिनों बाद, जब धन्य व्यक्ति रात में प्रार्थना कर रहे थे, तो शैतान अपने हाथों में एक कुल्हाड़ी लेकर आया, और उससे सब कुछ काटते हुए, उनकी कोठरी को भी लूटने लगा। और जैसे ही कोठरी नष्ट होने वाली थी, दानव ने दूसरे दानवों से ऊँचे स्वर में चिल्लाकर कहा:

'मेरे दोस्तों, जल्दी करो, जल्दी करो, ताकि हम अंदर जाकर उसका गला घोंट सकें।'

लेकिन धन्य ने कहा:

'सभी राष्ट्रों ने मुझे घेरा है, परन्तु मैं प्रभु के नाम से उन्हें पीछे हटा देता हूँ' (भजन संहिता 117:10)।

और शैतान तुरंत ही गायब हो गया, और कोठरी को कोई नुकसान नहीं हुआ। और कुछ दिनों बाद, आधी रात को प्रार्थना करते समय, उसने देखा कि वह चटाई जिस पर वह खड़ा था, एक प्रचंड आग से जल रही थी। आग पर पैर रखते हुए, उसने कहा:

– *'मैं साँप और विषैले सर्प पर पैर रखूँगा; मैं सिंह और सर्प को कुचल डालूँगा'* (भजन संहिता 91:13) और शत्रु की सारी शक्ति को, मेरे प्रभु, यीशु मसीह के नाम के लिए, जो मेरी सहायता करते हैं।

शैतान भाग गया और ऊँचे स्वर में चिल्लाया:

– 'मैं तुझ पर विजय प्राप्त करूँगा, हे दुष्ट, क्योंकि मैंने तेरे विरुद्ध एक नई युक्ति सोची है।'

एक दिन, जब धन्य व्यक्ति भोजन कर रहे थे, तो शैतान फिर से एक युवक के भेष में उनकी कोठरी में आया और पास आकर, जिस कटोरे से वे खा रहे थे, उसे ज़मीन पर गिराने की कोशिश करने लगा। यह देखकर, धन्य व्यक्ति ने बिना ज़रा भी डरे, कटोरे को पकड़े रखा और खाते रहे, जबकि शैतान उनके सामने खड़ा रहा। तब शैतान ने एक दीया जिसमें मोमबत्ती जल रही थी, रखा और ऊँचे स्वर में गाने लगा:

– *'धन्य हैं वे जिनका मार्ग निर्दोष है, जो प्रभु के विधान पर चलते हैं'* (भजन संहिता 118:1), – और उसने उस भजन संहिता को अंत तक गाया।

संत ने तब तक उसको उत्तर नहीं दिया जब तक उसने अपना भोजन समाप्त नहीं कर लिया। उसके बाद, उन्होंने स्वयं पर चिह्न बनाया और शैतान को संबोधित करते हुए कहा:

– अरे अशुद्ध, तीन-आँखों वाले, शक्तिहीन और कायर कुत्ते! अगर तुझे पता है कि निर्दोष धन्य होते हैं, तो तू उन्हें सताता क्यों है? क्योंकि जो कोई भी ईश्वर में आशा रखता है और पूरे हृदय से उनसे प्रेम करता है, वह धन्य है और तीन बार धन्य है।

शैतान ने उत्तर दिया:

'मैं उन्हें सताता हूँ ताकि उन पर विजय प्राप्त कर सकूँ; मैं उन्हें परीक्षा में डालूँगा और हर अच्छे काम से हटा दूँगा।'

परन्तु धन्य ने उससे कहा:

'शापित! तुझे कभी सफलता न मिले, ताकि तू परमेश्वर का भय मानने वालों में से किसी पर भी विजय न पा सके या उन्हें परीक्षा में न डाल सके। तुम अपने जैसे उन लोगों पर विजय पाते हो, जो अपनी मर्ज़ी से ईश्वर से मुँह मोड़ चुके हैं; तुम उन्हें बहका कर वश में कर लेते हो, क्योंकि उनमें ईश्वर नहीं है; परन्तु जो ईश्वर से प्रेम करते हैं, वे तुम्हें इस प्रकार दूर भगा देते हैं जैसे हवा धूल को उड़ा ले जाती है: उनकी एक प्रार्थना तुम्हें दूर कर देती है, ठीक वैसे ही जैसे हवा धूल को उड़ा देती है। जिस प्रकार मेरा प्रभु जीवित है, , जो सदा के लिए धन्य हैं, मेरी महिमा और मेरी स्तुति, मैं तुमसे नहीं डरता,

भले ही तुम यहाँ एक पूरा साल या उससे भी अधिक समय तक खड़े रहो, और मैं तुम्हारी इच्छानुसार कुछ भी नहीं करूँगा, हे दुष्ट कुत्ते। मैं तुमसे वैसे ही घृणा करता हूँ, जैसे कोई किसी मृत कुत्ते से घृणा करता है।

जब धन्य व्यक्ति ने ये शब्द कहे, तो शैतान तुरंत ही गायब हो गया। पाँच दिन बाद, जब धन्य व्यक्ति मध्यरात्रि की प्रार्थना सभा में अपना गायन समाप्त कर रहे थे, तो दुश्मन एक बार फिर उनके पास आया, जिसके साथ एक बड़ी भीड़ प्रतीत होने वाली भीड़ थी; उन्होंने उनकी कोठरी के चारों ओर एक रस्सी फेंकी और उसे खींच लिया, और वे एक-दूसरे से चिल्लाए:

'आओ, उसे खाई में फेंक दें।'

धन्य व्यक्ति ने उन्हें देखकर कहा:

'*"उन्होंने मुझ पर मधुमक्खियों के छत्ते की तरह घेरा डाल लिया, पर वे काँटों में लगी आग की तरह बुझ गए: यहोवा के नाम से मैंने उन्हें नीचे गिरा दिया"* (भजन संहिता 117:12)।'

तथापि, शैतान ने उत्तर में पुकारा:

'अंततः मुझे नहीं पता कि क्या करूँ। तुमने मुझे पहले ही हर तरह से हरा दिया है और, मुझे तुच्छ समझकर, मेरी शक्ति को कम कर दिया है, लेकिन मैं तुम्हें तब तक नहीं छोड़ूँगा जब तक कि मैं तुम पर विजय प्राप्त करके तुम्हें वश में नहीं कर लेता।'

धन्य ने उसे उत्तर दिया:

'धिक्कार है तुझ पर, हे दुष्ट, और तेरे सब कामों पर! परन्तु हमारे प्रभु, एक पवित्र परमेश्वर पर, जो जिन चीज़ों को तू पैरों तले रौंदता है, उन्हें हम जो उनसे प्रेम करते हैं, उनके द्वारा सम्मानित और महिमामय बनाता है—महिमा और आराधना। हे नीच और लज्जाहीन! अब जान ले कि हम न तो तुझ से डरते हैं और न तेरी युक्तियों से।'

काफी समय तक शैतान ने संत के विरुद्ध इसी तरह से युद्ध किया, और उसे विभिन्न भूत-प्रेतों से डराने की कोशिश की, लेकिन वह ईश्वर के इस दृढ़ सेवक पर विजय प्राप्त नहीं कर सका; वास्तव में, संत ने ही उस पर विजय प्राप्त की। तथापि, वह धन्य व्यक्ति अपने तपस्या के प्रयासों और ईश्वर के प्रति प्रेम में फलता-फूलता रहा, क्योंकि वह ईश्वर से अपने पूरे हृदय से प्रेम करता था और उसने ऐसा जीवन जिया कि वह ईश्वर की कृपा का पात्र समझा गया; और इसलिए शैतान उसे हरा नहीं सका। अपने संन्यासी जीवन के सभी वर्षों के दौरान, एक भी दिन आँसुओं के बिना नहीं बीता; उन्होंने हँसने के लिए कभी अपना मुँह नहीं खोला, उनके होठों पर कभी तेल नहीं लगा, और उन्होंने एक बार भी अपना चेहरा नहीं धोया, बल्कि ऐसा जिए जैसे वे हर दिन मर रहे हों।

इस धन्य पुरुष का एक भाई था, जिसकी एकमात्र बेटी थी। जब उसके पिता की मृत्यु हो गई, तो वह लड़की अनाथ रह गई। उसके परिचितों ने इस अनाथ को अपने पास रखा और जब वह सात साल की थी तो उसे उसके चाचा के पास ले आए। उस धन्य पुरुष ने उसे बाहरी कोठरी में रहने का निर्देश दिया, जबकि वह स्वयं अंदर वाली कोठरी में अलग-थलग रहता था। दोनों कोठरियों के बीच छोटे दरवाज़े थे, जिनके माध्यम से वह अपनी भतीजी को भजन संहिता और अन्य पुस्तकें सिखाता था। वह युवती, उसकी तरह ही, उपवास और प्रार्थना तथा सभी मठवासी सद्गुणों में स्वयं को समर्पित कर देती थी। उस धन्य पुरुष ने उसकी खातिर कई बार आँसुओं के साथ ईश्वर से प्रार्थना की, कि वह प्रभु से प्रेम करे और इस संसार की व्यर्थताओं पर अपना मन न लगाए। उसके पिता ने उसे काफी संपत्ति छोड़ी थी, जिसे, ठीक उसी क्षण जब उसे उसके पास लाया गया, संत ने गरीबों में बाँटने का आदेश दिया। – हालाँकि, उस युवती ने अपने चाचा से इस प्रकार विनती की:

'पिताजी, मेरे लिए ईश्वर से प्रार्थना कीजिए, कि मैं शैतान के हर प्रकार के जाल से मुक्त हो जाऊँ।'

अपनी संन्यासी जीवन में, उसने हर तरह से अपने चाचा का अनुकरण किया, और बड़े भाई, उसके अच्छे कर्म, उसके आँसू और उसकी विनम्र बुद्धि, उसके मौन, उसकी नम्रता और ईश्वर के प्रति उसके प्रेम को देखकर इस पर प्रसन्न हुए। बीस वर्षों तक वह उनके साथ एक नन के रूप में, एक शुद्ध मेमने और एक निर्दोष कबूतर की तरह रही। लेकिन बीसवें वर्ष के अंत में, शैतान, जो उसे फँसाना चाहता था और इस प्रकार धन्य अव्राम का अपमान करना चाहता था और उसका मन ईश्वर से हटाना चाहता था, ने उसके मोक्ष के मार्ग में जाल बिछाए। उस समय एक संन्यासी रहता था जो केवल नाम का संन्यासी था, उसके कर्म नहीं। वह संत के पास उनसे उपदेश प्राप्त करने के बहाने आता था। दरवाज़े से धन्य मरियम को देखकर, वह उसके प्रति एक अशुद्ध जुनून से भर गया, और उसका हृदय उसके प्रति पागल जुनून की लौ की तरह जल उठा। इस प्रकार वह लगभग पूरे एक साल तक कामवासना में डूबा रहा, जब तक कि अंततः शैतान

की मदद से, एक दिन उसने उसकी कोठरी का दरवाज़ा खोल दिया और, अंदर जाकर, उसे बहकाया और अपवित्र कर दिया। पाप करने के बाद, वह कन्या भयभीत हो गई; उसने अपने कपड़े फाड़ लिए, अपना चेहरा नोचना शुरू कर दिया, और अपने दुःख में, उसने आत्महत्या करने का भी इरादा किया। उसने अपने मन में इस प्रकार तर्क किया:

'मैंने पाप किया है और मेरी आत्मा मर गई है; मैंने अपना जीवन बर्बाद कर दिया है। मेरी संन्यासी भक्ति, मेरा संयम और मेरे आँसू किसी काम के नहीं आए, क्योंकि मैंने ईश्वर को क्रोधित किया है, अपना नाश कर लिया है और अपने पूजनीय चाचा को गहरे दुःख में डुबो दिया है। मैं शैतान द्वारा अपवित्र हो गई हूँ; मैं, एक दुर्भाग्यपूर्ण आत्मा, जीवित क्यों रहूँ? हाय मुझ पर! मैंने क्या किया है? हाय मुझ पर! मैं कितनी नीचता में गिर गई हूँ? मुझे तो यह भी एहसास नहीं हुआ कि मेरा मन कैसे धूमिल हो गया, और मैं कैसे बर्बाद हो गई! एक घोर निराशा ने मेरे हृदय को घेर लिया है, और मुझे नहीं पता कि मैं क्या करूँगा या कहाँ छिपूँगा। मैं कहाँ जाऊँ , मैं खुद को किस गड्ढे में फेंक दूँ! मेरे पूजनीय चाचा की शिक्षाएँ कहाँ हैं और उनके मित्र एफ्रेम[7473] के निर्देश कहाँ हैं? उन्होंने मुझसे कहा:

'अपने लिए सावधान रहो और अपनी आत्मा को अमर वर के लिए निर्मल रखो, क्योंकि वह पवित्र है और न्याय से न्याय करता है।' अब मैं स्वर्ग की ओर देखने की हिम्मत भी नहीं करता, क्योंकि मैं परमेश्वर और मनुष्यों के लिए मरा हुआ हूँ। और मैं यहाँ भी नहीं रह सकता, क्योंकि मैं, एक अशुद्धि में डूबा पापी, उस पवित्र पिता से फिर से कैसे बात करूँ? अगर मैंने हिम्मत की, तो उन दरवाज़ों से निकली आग मुझे भस्म कर देगी। मेरे लिए किसी दूसरे देश में भाग जाना ही बेहतर है, जहाँ कोई मुझे न जाने, क्योंकि मैं मर चुकी हूँ, मेरे लिए उद्धार की कोई आशा नहीं बची है।

उसने तुरंत अपना सामान बाँधा, दूसरे नगर के लिए निकल पड़ी और अपना रूप बदलकर एक सराय में ठहर गई। – जब उसके साथ यह हो रहा था, तब धन्य अव्राम को एक दर्शन हुआ। उन्होंने एक भयानक और डरावना विशाल साँप देखा, जो देखने में घृणित और क्रोध से सांसें ले रहा था, जो रेंगता हुआ उनकी कोठरी तक आ गया; एक कबूतर को पाकर, उसने उसे निगल लिया और अपनी जगह लौट गया। अपनी नींद से जागने पर, धन्य व्यक्ति गहराई से दुखी हुए और कड़वाहट से रोए, खुद से कहते हुए:

'निश्चय ही शैतान पवित्र चर्च पर उत्पीड़न छोड़ेगा और कई लोगों को विश्वास से भटकाएगा; निश्चय ही चर्च के भीतर कलह उत्पन्न होगी?'

प्रभु से प्रार्थना करने के बाद, उन्होंने कहा:

'हे प्रभु, मानव जाति के प्रेमी और सर्वज्ञ, केवल आप ही इस दर्शन को समझते हैं।'

दो दिन बाद, वही साँप दूसरी बार एक दर्शन में उसके सामने प्रकट हुआ; आदरणीय व्यक्ति ने उसे उसके बिल से निकलते, अपनी कोठरी में रेंगते और अपना सिर उसके पैरों के नीचे रखकर फटते हुए देखा; जब कबूतर साँप के पेट के अंदर पाया गया, तो आदरणीय व्यक्ति ने अपना हाथ बढ़ाया और उसे जीवित और सुरक्षित निकाल लिया। एक बार फिर जागने पर, धन्य व्यक्ति ने अपनी कोठरी के छोटे दरवाज़े से कई बार उस कन्या को पुकारा जो उसके साथ कोठरी साझा कर रही थी, और कहा:

'तुम दूसरे दिन से आलस्य क्यों कर रही हो और प्रभु की स्तुति क्यों नहीं कर रही हो?'

लेकिन कोई जवाब नहीं आया। कोठरी का दरवाज़ा खोलकर, उसे अपनी भतीजी नहीं मिली और यह समझते हुए कि जो दर्शन उसे हुए थे वे उसी के बारे में थे, वह रो पड़ा और बोला:

'हाय मेरे भाग्य! भेड़िये ने मेरे मेमने को झपट लिया है, और मेरी संतान को बंदी बना लिया गया है।' और आँखों में आँसू लिए, वह चिल्लाया:

'हे संपूर्ण जगत के उद्धारकर्ता! अपनी भेड़ की मेमनी, मरियम को, अपनी झुंड के झुंड में वापस ले आओ, कहीं ऐसा न हो कि मेरा वृद्धापन्य दुःख के साथ नरक में उतर जाए। हे प्रभु! मेरी विनती को ठुकराओ नहीं, बल्कि अपनी कृपा भेजो, ताकि वह उसे साँप के जबड़ों से छीन सके।'

धन्य व्यक्ति के जाने को दो दिन बीत चुके थे, और इस दौरान अव्राम ने उपरोक्त दर्शन देखा था। इस बीच, मरियम अपने चाचा के बिना दो साल से रह रही थी, जबकि वे दिन-रात उसके लिए ईश्वर से प्रार्थना करते थे। दो साल बीत जाने के बाद[7474] , किसी ने उन्हें बताया कि वह कहाँ थी और उसकी क्या हालत थी। संत ने अपने एक परिचित से कहा कि

[7473] संभवतः आदरणीय के शिष्यों में से एक।

[7474] वह लैम्प्साकस के पास अस नामक नगर में चली गई।

वह उस स्थान पर जाकर उसके बारे में और पता लगाए। संदेशवाहक चल पड़ा और मारिया के बारे में पता लगाने के बाद लौट आया और धन्य व्यक्ति को सब कुछ बता दिया। यह सुनकर, उस धन्य व्यक्ति ने सैनिक का वेश धारण किया, अपने सिर पर एक बड़ी और बहुत ऊँची टोपी लगा ली ताकि उसका चेहरा ढक जाए, अपने साथ एक सोने का सिक्का लिया, अपने घोड़े पर सवार हुआ और चल पड़ा। वह उस सराय पर पहुँचा जहाँ मारिया ठहरी हुई थी और मुस्कुराते हुए सरायकुल से कहा:

'मेरे दोस्त, मैंने सुना है कि एक खूबसूरत युवती तुम्हारे यहाँ ठहरी है; मुझे उसे दिखाओ, ताकि मैं उसकी खूबसूरती का दीदार कर सकूँ।'

सरायकी, उसके सफ़ेद, उम्रदराज़ बालों को देखकर मन ही मन हँसा, क्योंकि उसे एहसास हो गया था कि वह आदमी उससे व्यभिचार करने के इरादे से पूछ रहा था, और जवाब दिया:

'हाँ, मेरे यहाँ ऐसी एक लड़की रहती है, और वह बहुत खूबसूरत है।'

वह धन्य कन्या वास्तव में बहुत सुन्दर थी। इसके बाद, वृद्ध ने अपनी आँखों में प्रसन्नता लिए हुए उससे कहा:

'मुझे उसके पास बुलाओ, ताकि आज मैं कुछ मज़ा कर सकूँ।'

और जब मरियम को बुलाया गया, तो वह बूढ़े आदमी के पास आई। जैसे ही संत ने उसे उसके कामुक परिधान में देखा, उन्हें रोना आ गया। लेकिन, यह सुनिश्चित करने के लिए कि वह उन्हें पहचान न सके, और ताकि, यदि वह उन्हें पहचान भी ले, तो उनसे भाग न जाए , उन्होंने बड़ी मुश्किल से अपने आँसू रोक लिए। जब वे पी रहे थे, तो इस अद्भुत व्यक्ति ने स्वयं उससे छेड़-छाड़ करनी शुरू कर दी, और उसने उठकर उसे गले लगा लिया और उसकी गर्दन चूमने लगी। जब वह उसे चूम रही थी, तो उसे उसके पवित्र शरीर से आती सुगंध का अनुभव हुआ, जो अनेक वीरतापूर्ण कारनामों से निखरा हुआ था। फिर, अपनी पवित्रता के शुरुआती दिनों को याद करते हुए, वह आह भर उठी, उसकी आँखें आँसुओं से भर आईं, और उसने कहा:

'हाय मेरे भाग्य!'

सरायकी उससे पूछा:

'मारिया, तुम अब दो साल से हमारे साथ यहाँ रह रही हो, और मैंने पहले कभी तुम्हारे मुँह से ऐसे शब्द या आहें नहीं सुनीं। अब तुम्हें क्या हो गया है?'

उसने जवाब दिया:

'काश मैं पहले मर गई होती, तो मैं खुश होती।'

धन्य अब्राहम ने, ताकि मारिया उसे पहचान न सके, कठोर आवाज़ में उससे कहा:

'अब जब तुम मेरे पास आई हो, तभी तुम्हें अपने पापों का स्मरण हुआ है।'

एक सिक्का निकालकर, उसने उसे सरायकुल के मालिक को दे दिया और कहा:

'मेरे दोस्त, हमारे लिए एक शानदार दावत का इंतज़ाम करो, ताकि हम इस युवती के साथ कुछ मौज-मस्ती कर सकें। मैं उसके लिए दूर से आया हूँ।'

ओह, उसमें कितनी बुद्धिमत्ता थी, कितनी आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि!

एक ऐसा व्यक्ति, जिसने अपने पचास वर्षों के संन्यासी जीवन में कभी तृप्त होकर रोटी नहीं खाई थी और न ही तृप्त होकर पानी पिया था, वह अब एक खोई हुई आत्मा को बचाने के लिए, मांस खा रहा था और शराब पी रहा था। स्वर्ग में, पवित्र स्वर्गदूतों की कतारें धन्य पिता के ऐसे पराक्रम, उनकी उदारता और उनकी बुद्धिमानी भरी योजना को देखकर चकित रह गईं। उन्होंने एक खोई हुई आत्मा को पाप की अशुद्धि से बचाने के लिए मांस खाया और शराब पी।

हे बुद्धिमानों की बुद्धि! हे बुद्धिमानों की समझ!

जब भोज समाप्त हो गया, तो युवती ने उससे कहा:

'महाराज, चलिए उठें और सोने चलें, ताकि हम वहाँ सो सकें।'

उसने उत्तर दिया:

'चलो चलते हैं।'

जब वे शयनकक्ष में पहुँचे, तो अव्राम ने एक बड़ा, ऊँचा और अच्छी तरह से बना हुआ बिस्तर देखा; वह उस पर बैठ गया और मरियम से कहा:

'दरवाज़े बंद करो, यहाँ आओ और मेरे जूते उतारो।'

उसने दरवाज़े बंद कर दिए, उसके पास आई, और उससे कहा:

'मेरी कन्या, मेरे पास आओ।'

जब वह पास आई, तो उसने उसे पकड़ लिया, इतनी कसकर पकड़ा कि वह भाग न सके, और उसे फिर से चूमा। फिर, अपने सिर से सैन्य टोपी उतारकर, वह फूट-फूट कर रो पड़ा और उससे कहा:

'मेरी बेटी, मेरीया, क्या तुम मुझे नहीं पहचानती? क्या तुम्हें मैंने ही नहीं पाला-पोसा? तुम्हें क्या हो गया है, मेरी बेटी? किसने तुम्हें बर्बाद कर दिया? वह दिव्य मुखमंडल कहाँ गया जो कभी तुम्हारे पास था, मेरी बेटी? तुम्हारी पवित्रता और तुम्हारा अश्रुपूर्ण विलाप कहाँ गया? तुम्हारी निरंतर जाग-प्रहर और जमीन पर तुम्हारा प्रार्थनामय प्रणाम कहाँ गया? ऐसा है जैसे तू स्वर्ग की ऊँचाइयों से उतरकर एक खाई में आ गिरी हो, मेरी बेटी! जब तूने पाप किया, तो मुझे क्यों नहीं बताया, ताकि मैं अपने प्रिय एफ्रेम के साथ पश्चाताप का श्रम कर सकूँ? तूने ऐसा क्यों किया, और मुझे क्यों दुखी किया और मुझे इतनी भयानक पीड़ा में क्यों डाल दिया? ईश्वर के सिवाय पाप रहित कौन है?

यह सुनकर मरियम भय और लज्जा से भरकर, उसकी बाहों में एक निर्जीव पत्थर की तरह लेटी रही। और धन्य ने कहना जारी रखा:

'क्या तुम जवाब नहीं दे रही हो, मेरी बेटी मारिया? क्या मुझे, मेरी जान, जवाब नहीं दे रही हो? क्या मैं तुम्हारे ही लिए यहाँ नहीं आई हूँ? मैं न्याय के दिन तुम्हारे लिए ईश्वर के सामने उत्तर दूँगी। मैं तुम्हारे पापों का प्रायश्चित स्वयं अपने ऊपर लूँगी।'

इस प्रकार, वह आधी रात तक रोते हुए, उसे विनती करता और समझाता रहा। वह, कुछ शांत होकर, आँसुओं के बीच उससे कहने लगी:

'मुझे शर्म आ रही है, और मैं तुम्हें देख भी नहीं सकती – और मैं ईश्वर से प्रार्थना कैसे करूँ जब मैं अशुद्ध कर्मों से कलंकित हूँ?'

इस पर उसने उत्तर दिया:

'मेरी संतान, तेरा पाप मुझ पर पड़ जाए; ईश्वर मेरा पाप मेरे हाथों से उठा ले, पर बस मेरी बात सुन: जा और एक बार फिर से अपनी कोठरी में खुद को बंद कर ले। एफ्राइम भी तेरे लिए ईश्वर से प्रार्थना कर रहा है। मेरी संतान, मेरी वृद्धावस्था पर दया कर; मैं तुझसे विनती करती हूँ, मेरी जान, मेरे साथ चलो।'

उसने उत्तर दिया, 'यदि आपको यकीन है कि मुझे पश्चाताप करने का अवसर मिलेगा, और ईश्वर मेरी प्रार्थना स्वीकार करेंगे, तो मैं जाकर आपके श्रीचरणों में प्रणाम करूँगी और आपके पवित्र चरणों के तलवों को चूमूँगी, क्योंकि आपने मुझ पर इतनी दया दिखाई और मुझे इस अशुद्ध जीवन से दूर ले जाने के उद्देश्य से यहाँ आए।'

और, अपना सिर उनके पैरों पर टिकाकर, वह सारी रात रोती रही और बोली:

'मैं इन सबका तुम्हारा कभी कैसे अहसान चुकाऊँगी?'

जब सुबह हुई, तो उन्होंने उससे कहा:

'मेरी बच्ची, उठो और विदा लो।'

मरियम ने कहा, 'मेरे पास थोड़ा सा सोना और कुछ कपड़े हैं, मैं इन सबका क्या करूँ?'

'इसे सब यहीं छोड़ दो,' धन्य व्यक्ति ने कहा, 'क्योंकि यह अवैध रूप से अर्जित संपत्ति है।'

और, तुरंत उठकर, वे चल पड़े। मारिया को घोड़े पर बिठाकर, अब्राहम ने उसे थाम लिया, जबकि वह स्वयं उसके आगे-आगे चल रहा था। वह आनंदित होकर चल रहा था; जैसे कोई चरवाहा, जब वह अपना खोया हुआ भेड़ का बच्चा पाता है, तो उसे खुशी से अपने कंधों पर उठा लेता है (लूका 15:4–5), वैसे ही वह धन्य व्यक्ति भी हृदय में आनंद के साथ चल रहा था। जब वह अपने निवास पर पहुँचा, तो उसने फिर से मरियम को भीतर के कोठरी में बंद कर दिया, जहाँ उसने स्वयं पहले तपस्या की थी, जबकि वह स्वयं बाहरी कोठरी में रहा। मरियम, जो रोंगटेदार वस्त्र पहने हुए थी, विनम्रता से ईश्वर से सहायता की प्रार्थना करते हुए, बड़ी लगन के साथ पश्चाताप किया। उसका पश्चाताप और प्रार्थना इतनी गहरी थी कि, उसकी तुलना में, हमारा अपना पश्चाताप और प्रार्थना, मानो, केवल एक छाया है और उसका कोई अर्थ नहीं है। और दयालु परमेश्वर, जो नहीं चाहता कि कोई नाश हो, बल्कि यह चाहता है कि सभी पश्चाताप करें, ने अपनी सच्ची पश्चातापी दासी पर दया की और उसके पापों को क्षमा कर दिया। उनके क्षमा का संकेत के रूप में, ईश्वर ने उन्हें उन लोगों के रोगों को ठीक करने की कृपा प्रदान की जो उनके पास आते थे। धन्य अव्रामियस और दस वर्ष तक जीवित रहे; मरियम के महान पश्चाताप, उनके आँसू, उनके उपवास, उनके श्रम और ईश्वर से उनकी लगन भरी प्रार्थनाओं को देखकर, उन्होंने

सांत्वना ली और ईश्वर की महमिा की। इसके बाद, वह प्रभु में नद्रिति हो गए। उनकी मृत्यु सत्तर वर्ष की आयु में हुई[7475] । उनके नधिन के समय लगभग पूरा शहर इकट्ठा हुआ, और सभी ने भक्तपिूर्वक उनके पवत्रि शरीर के पास जाकर प्रणाम कयिा, जबकि बीमारों को आरोग्य प्राप्त हुआ। जहाँ तक मरयिाम, मसीह के मेमने की बात है, अपने चाचा के नधिन के बाद, उसने बड़े संयम का जीवन जयिा, और अगले पाँच वर्षों तक दनि-रात ईश्वर से वनिती करती रही; उस क्षेत्र में रहने वाले लोग, रात में गुज़रते हुए, कई मौकों पर रोने और अनंत वलिाप की आवाज़ें सुनते थे, और रुककर आश्चर्यचकति होते और ईश्वर की महमिा करते थे। इस प्रकार, सच्चे मन से पश्चाताप करके और परमेश्वर की कृपा प्राप्त करके, धन्य मरयिम शांतपिूर्वक स्वर्ग सधिार गईं; और अब, पश्चाताप के आँसुओं से रोकर, वह प्रभु में संतों के साथ आनंदति हैं, जनिका महमिा-स्वरूप युगानुयुग अखंड रहे। आमीन।

कॉन्टाकयिन, स्वर 3:

तुम पृथ्वी पर देह में एक स्वर्गदूत के रूप में प्रकट हुए, और उपवास के द्वारा तुम एक रोपे हुए वृक्ष के समान थे, जो संयम के जल से अच्छी तरह पोषति हुए थे, और अपने आँसुओं की धाराओं से कलंक को धो डाला था। इसी कारण, हे अव्रामयिस, तुम दव्यि आत्मा का वासस्थान बन गए।

रॉस्टोव के हमारे पूजनीय पति अव्राम का जीवन

29 अक्टूबर को स्मरणोत्सव

आदरणीय पति अव्राम धर्मपरायण माता-पति के पुत्र थे[7476] । कम उम्र में ही, उन्होंने अपने माता-पति का घर और दुनयि की व्यर्थताएँ छोड़ दीं, संन्यासी व्रत ग्रहण कए और स्वयं को ईश्वर को समर्पति कर दयिा[7477] ।

शरीर को आत्मा के अधीन करके, उन्होंने तपस्या के कठोर कार्यों से स्वयं को थका दयिा, अपने आत्मा को आँसुओं से शुद्ध कयिा, और उन्हें चमत्कार करने की कृपा प्राप्त हुई।

उनके समय में, रोस्तोव के सभी लोगों को[7478] ने अभी तक पवत्रि बपतस्मिा ग्रहण नहीं कयिा था, और कई लोग मूर्तपिूजक बने हुए थे: शहर के चुद्स्की जलि में पत्थर की मूर्त वेलेस की पूजा की जाती थी[7479] । मूर्त के भीतर नवािस करने वाला अशुद्ध आत्मा सभी में भय पैदा करता था, और ईसाई उसके पास से गुजरने से डरते थे। आदरणीय अव्रामयिस रोस्तोव में मूर्तपिूजा के अवशेषों को मटिाने के लए उत्साह से भर गए थे। उन्होंने प्रभु ईश्वर से मूर्त को नष्ट करने के लए पवत्रि आत्मा की शक्त और अनुग्रह प्रदान करने की प्रार्थना की, लेकनि उनकी प्रार्थना का लंबे समय तक कोई उत्तर नहीं मलिा।

[7475] यह लगभग वर्ष 360 के आसपास था।

[7476] रॉस्तोव के आदरणीय अव्रामयिस का जीवन यहाँ सबसे प्राचीन 'जीवनी' के अनुसार प्रस्तुत कयिा गया है, जसिे प्रोलाग में संक्षपि्त रूप में और मेट्रोपॉलटिन मकायोस द्वारा ग्रेट मेनाइया-चेतयिा में कुछ बाद के परविर्धन के साथ पुनःबताया गया है। आदरणीय अव्रामयिस की प्राचीन जीवनी में बाद में दो बार पूरक जोड़ा गया, मुख्य रूप से प्रारंभकि खंड में, जो रोस्तोव में उनके आगमन से पहले अव्रामयिस के जीवन का वर्णन करता है।

[7477] पहले संवर्धन में कहा गया है कि अव्राम का जन्म गालचि क्षेत्र के चुखलोमा शहर में हुआ था (जो अब कोस्त्रोमा गवर्नरेट में है), उन्होंने स्थानीय मठों में मठवासी तपस्या से परचिति होने के लए नोवगोरोड क्षेत्र की यात्रा की, और लादोगा झील पर वालेम मठ में मठवासी संन्यास की शपथ ली। द्वतिीयक पूरक में कहा गया है कि चुखलोमा में अव्राम के माता-पति अभी भी मूर्तपिूजक थे। अव्राम का मूल नाम इबेरकि था और सत्रह वर्ष की आयु तक वह पक्षाघात के कारण बस्तिर पर पड़ा था और चल नहीं सकता था। नोवगोरोड के आने वाले व्यापारयिों ने उसे ईसाई शक्षिा के मूल सद्धिांतों से परचिति कराया। गहन चतिन के बाद, इबेरकि ने मसीह में वश्विास करना शुरू कर दयिा, वह अचानक अपनी बीमारी से ठीक हो गया, नोवगोरोड क्षेत्र के लए नकिल पड़ा, और बाद में अव्रामी के रूप में मठवासी संन्यास की शपथ लेने से पहले, वलाम में अवरकी नाम से बपतस्मिा लयिा।

[7478] यह, बेशक, प्राचीन रोस्तोव को संदर्भति करता है, जसिे पहले रोस्तोव महान के नाम से जाना जाता था; आज यह यारोस्लाव गवर्नरेट में एक जलिा शहर है, जो यारोस्लाव से मास्को तक की राजमार्ग और रेलवे लाइन पर स्थति है; रोस्तोव एक झील के कनिारे स्थति है जसिे झील रोस्तोव या झील नीरो के नाम से जाना जाता है।

[7479] 'चुड्स्कोय एंड' से तात्पर्य यारोस्लाव्ल से आने वाली सड़क के बाईं ओर स्थति शहर के हस्सि से है। – प्राचीन रूसी स्लावों के मूर्तपिूजक देवता, वेलेस, को वोल्लोस के नाम से भी जाना जाता है, जन्हिें वृत्तांतों के अनुसार, पशुधन का संरक्षक माना जाता था।

एक दनि, परम पूजनीय अव्रामयिस, दुख और हैरानी से भरकर, मूर्त के पास बैठे थे। और देखो, उन्होंने एक भव्य वृद्ध व्यक्त को अपनी ओर आते हुए देखा। अव्रामयिस उठे और उनका स्वागत करने के लिए दौड़ पड़े। अभविादन और आशीर्वाद के आदान-प्रदान के बाद, परम पूजनीय ने पूछा:

'आप कहाँ से आ रहे हैं, पतिाजी? आप कसि देश से हैं?'

'मैं मूल रूप से कॉन्स्टेंटनिोपल का रहने वाला हूँ, पतिाजी; आपकी भूम में मैं एक अजनबी और प्रवासी हूँ।' 'मुझे बताइए, पतिाजी, आप वेलेस की इस मूर्त के पास दुख में क्यों बैठे हैं?'

'मैं प्रभु ईश्वर से प्रार्थना कर रहा हूँ क मुझे इस मूर्त को तोड़ने की शक्त मिले,' अव्रामयिस ने उत्तर दयिा, 'लेकनि प्रभु ने मेरी प्रार्थनाओं को अनसुना कर दयिा है, और इसलिए मैं यहाँ दुख में बैठा हूँ।'

'यद आप चाहते हैं, पतिाजी, क आपको वह मलि जो आप चाहते हैं,' वृद्ध ने अव्रामयिस से कहा, 'तो कॉन्स्टेंटनिोपल जाएँ, जॉन द थयिोलॉजस्टि का घर खोजें, उसमें प्रवेश करें, और संत जॉन द थयिोलॉजस्टि की प्रतमिा के सामने प्रार्थना करें – और आप खाली हाथ वापस नहीं आएँगे, बल्क आपको वह मलिेगा जो आप चाहते हैं।'

आदरणीय अव्रामयिस लंबी यात्रा के वचिार से नराश हो गए, लेकनि वृद्ध ने कहा: 'प्रभु परमेश्वर आपकी यात्रा को छोटा कर देंगे!'

धन्य अव्रामयिस, पवत्रि आत्मा से परपिूर्ण होकर, वृद्ध की आशीर्वाद लेकर अपनी यात्रा पर नकिल पड़े, यह भूलकर क यिह कतिनी लंबी थी।

जब आदरणीय अव्रामयिस, शहर छोड़कर, इश्नु नदी[7480] पार कर रहे थे, तो उनकी मुलाकात एक अजनबी से हुई जसिकी उपस्थति से भय उत्पन्न होता था; वह लगभग पूरी तरह से गंजा था, उसकी एक बड़ी, गोल दाढ़ी थी, और उसके चेहरे पर श्रद्धा की अभव्यिक्त थी; वह सुंदर था। उसके हाथ में एक लाठी थी।

धन्य अव्रामयिस ने उन्हें प्रणाम कयिा।

एक अज्ञात व्यक्त ने कहा:

'तुम कहाँ जा रहे हो, बूढ़े आदमी?'

'मैं जॉन द थयिोलोजयिन का घर ढूंढने जा रहा हूँ,' अव्रामयिस ने उत्तर दयिा।

अजनबी ने कहा:

'यहाँ आओ, बूढ़े, मेरी यह लाठी लो और वापस जाओ; वेलेस की मूर्त के पास जाओ, जॉन द थयिोलोजयिन के नाम पर इस लाठी से उस पर वार करो – और वह शापति धूल में बदल जाएगा।'

और ये शब्द कहकर, वह अजनबी गायब हो गया।

धन्य अव्रामयिस को एहसास हुआ क यिह जॉन द थयिोलोजयिन ही थे।

भय और आनंद से अभभिूत, अव्रामयिस वापस मुड़ा, बनिा कसिी बाधा के मूर्त के पास गया, जॉन द थयिोलोजयिन के नाम पर उसे लाठी से मारा – और मूर्त तुरंत ही राख में बदल गई।

जसि स्थान पर अव्रामयिस की पवत्रि वृद्ध से मुलाकात हुई थी, वहाँ उन्होंने जॉन द थयिोलोजयिन को समर्पति एक चर्च का नर्मिाण कयिा; और जहाँ वेलेस की मूर्त खड़ी थी, वहाँ उस आदरणीय व्यक्त ने बशिप के आशीर्वाद से, प्रभु के प्रकट होने (एपफिेनी) को समर्पति एक छोटा चर्च बनाया, उसके बगल में कोठरयिाँ बनवाईं, भक्षिुओं को इकट्ठा कयिा, और एक मठ की स्थापना की[7481] ।

परमपूज्य अव्रामयिस को मसीह में वश्विास न करने वाले मूर्तपिूजकों के हाथों बहुत हान सिहनी पड़ी। एक अवसर पर, उन्होंने उनके द्वारा नर्मिति पवत्रि स्थल को नष्ट करने और जलाने का भी प्रयास कयिा, लेकनि परमपूज्य की प्रार्थनाओं और धैर्य के कारण ईश्वर ने ऐसा होने नहीं दयिा।

हालाँक, अपने उपदेश और धैर्य के माध्यम से, आदरणीय अव्रामयिस ने जल्द ही सभी अवश्विासयिों को मसीह के पास ला दयिा: सबसे छोटे से लेकर सबसे बूढ़े तक, सभी का बपतस्मिा हुआ और उन्होंने दव्यि लटिर्जी और सर्व-रात्र जागरण में भाग लेना शुरू कर दयिा, यहाँ तक क महलिाएँ और बच्चे भी। आदरणीय अव्रामयिस ने धर्मग्रंथों के अध्ययन

[7480] इश्ना नदी रोस्तोव से मास्को जाने वाली सड़क को रोस्तोव शहर के पास ही नीरो झील के संगम पर पार करती है, उस स्थान से चार वर्स्ट दूर जहाँ कभी वेलेस की मूर्त खड़ी थी।

[7481] माननीय अव्रामयिस द्वारा स्थापति एपफिेनी मठ आज भी उसी स्थान पर स्थति है, रोस्तोव क्रेमलनि से एक वर्स्ट की दूरी पर, यारोस्लाव्ल से रोस्तोव में प्रवेश करते ही सड़क के बाईं ओर।

और आध्यात्मिक शिक्षा के माध्यम से उनके हृदयों को विश्वास में मजबूत किया। कई बच्चों ने अपने माता-पिता के घर छोड़ दिए, गुप्त रूप से आदरणीय के पास आए और मठवासी संन्यास ग्रहण किया। इस प्रकार भाईचारा बढ़ा, और आदरणीय ने उन्हें परमेश्वर के वचन में शिक्षित किया।

तब पूज्य अवरमीउस ने एक बड़ा चर्च बनवाया, उसे—मसीह की वधू की तरह—अद्भुत प्रतिमाओं और पवित्र पुस्तकों से सजाया, और भव्य भजन-कीर्तन की स्थापना की।

रोस्तोव के राजकुमारों ने, फादर अव्राम को सर्वोच्च सम्मान देते हुए, उनके द्वारा स्थापित मठ को विशेष अधिकार प्रदान किए: उन्होंने मठ के निर्माण के लिए विशाल संपत्तियाँ और भिक्षुओं के भरण-पोषण के लिए गाँव दान किए।

मठ की वृद्धि और समृद्धि को देखकर, रोस्तोव के बिशप ने राजकुमारों से परामर्श करने के बाद, अव्राम के मठ को एक आर्चिमैंड्राइट के मठ के दर्जे पर पदोन्नत किया, और आदरणीय अव्राम को आर्चिमैंड्राइट नियुक्त किया।

उस समय से, अव्राम ने अपने आध्यात्मिक कार्यों के प्रति और भी अधिक उत्साह के साथ खुद को समर्पित कर दिया, एक के बाद एक कार्य करते हुए, उपवास और प्रार्थना में खुद को लगा दिया; वह अपनी विनम्रता से सभी के लिए एक आदर्श थे, और उनके पास आने वाले हर किसी के प्रति, चाहे वह बड़ा हो या छोटा, सच्चा प्रेम दिखाते थे।

बुराई का पुराना दुश्मन, शैतान, ने आदरणीय को चैन से नहीं रहने दिया; उसने उन पर हमला करना शुरू कर दिया और दिन-रात उन्हें परेशान किया। लेकिन, मसीह की कृपा और क्रॉस के चिह्न से संरक्षित, अव्राम निर्भय रहे।

एक अवसर पर, जब पूजनीय अव्रामियस लिटर्जी से पहले अपनी कोठरी में थे, उन्होंने पवित्र कम्युनियन के लिए प्रथागत प्रार्थनाएँ पढ़ने के बाद, चर्च जाने से पहले अपने हाथ धोने ही वाले थे, तभी शैतान उस हाथ धोने के पात्र में घुस गया, ताकि पूजनीय को परेशान कर सके। जब रेवरेंड को एहसास हुआ कि पात्र में एक अशुद्ध आत्मा मौजूद है, तो उन्होंने एक पवित्र क्रॉस लिया, उसे पात्र के ऊपर रख दिया, उस पर क्रॉस का चिह्न बनाया, और उसे लंबे समय तक बिना छुए ऐसे ही छोड़ दिया। क्रॉस की शक्ति से वशीभूत, दानव पीड़ित हो गया और पात्र से बाहर नहीं निकल सका।

उस समय रोस्तोव के राजकुमारों की प्रथा थी कि वे शिकार के लिए शहर से बाहर निकलते और अपनी वापसी की यात्रा में, चर्च में प्रार्थना करने और आदरणीय अव्राम से आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए मठ में रुकते थे। तो इस अवसर पर भी ऐसा ही हुआ। अपनी परंपरा के अनुसार, राजकुमार आदरणीय अवरमियस की कोठरी में गए, लेकिन वह वहाँ नहीं थे, क्योंकि यह उनकी आदत थी कि वे भाइयों के लिए प्रतिदिन परिश्रम करते थे: कभी वे मठ की बेकरी के लिए लकड़ी काटते, कभी भाइयों के लिए बाल-कमीज़ धोते, और कभी रसोई में पानी लाते थे। राजकुमारों के आगमन की खबर सुनकर, वह उन्हें आशीर्वाद देने के लिए अपनी कोठरी में दौड़ आए।

इस बीच, जब राजकुमार पवित्र पिता की प्रतीक्षा में कोठरी में थे, तो उन्होंने एक पात्र पर पवित्र क्रॉस को ढका हुआ देखा और सोचा कि इसका क्या अर्थ हो सकता है। राजकुमारों में से एक ने उस पात्र से आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए उस पर लगा क्रॉस हटाने की हिम्मत की – और तुरंत ही उस पात्र से एक राक्षस काला, बदबूदार धुआं बनकर निकला, जिससे वहां मौजूद सभी लोग दहशत में आ गए।

जैसे ही रेवरेंड सेल के पास पहुँचे, अशुद्ध आत्मा उनसे प्रवेश द्वार पर मिला और उसने अव्राम का अपमान करना और उसे धमकाना शुरू कर दिया:

'जैसे तुमने अदृश्य परमेश्वर की शक्ति से मुझे क्रूस की शक्ति को सहने और उससे भस्म होने के लिए बाध्य किया है, वैसे ही मैं तुम्हारे ऊपर विपत्ति लाऊँगा; मैं शीघ्र ही तुम पर विजय प्राप्त करूँगा: मैं तुम्हारे विरुद्ध बदनामी फैलाऊँगा, तुम्हें यातना और अपमान सहने के लिए बाध्य करूँगा: तुम्हें बिना काठी के एक धब्बेदार गधे पर बिठाया जाएगा और तुम महिलाओं के लाल जूतों में होंगे। और तुम और भी बहुत कुछ सहोगे, जैसे मैं तुम्हारे हाथों सताया गया हूँ।"

रेवरेंड ने क्रॉस का चिह्न बनाया, और राक्षस तुरंत ही गायब हो गया।

जब अव्रामी अपनी कोठरी में गए, तो राजकुमारों ने यह पूछना शुरू किया कि क्या हुआ था, उस बदबूदार धुएँ के बारे में जो क्रॉस से ढके पात्र से उठ रहा था, लेकिन पादरी ने इस बारे में कुछ नहीं कहा; उन्होंने बस राजकुमारों को उपदेशात्मक सलाह देकर आशीर्वाद दिया और उन्हें शांति से विदा कर दिया।

कुछ समय बाद, पादरी से बदला लेने की इच्छा से, राक्षस ने एक योद्धा का रूप धारण किया, वोलेदमिर में महा राजकुमार के सामने प्रकट हुआ, और अव्रामी पर गंभीर आरोप लगाने लगा।

राक्षस ने कहा, 'महाराज, मैं आपको एक बड़ा रहस्य बताना चाहता हूँ: आपके राज्य में, रोस्तोव शहर में, अव्रामी नाम का एक संन्यासी है, जो एक जादूगर है, लेकिन वह वनिम्र और पवत्रि दखिकर लोगों को धोखा देता है। उसने ज़मीन में एक बड़ा खज़ाना पाया है—सोने से भरा एक तांबे का पात्र—जो अधकिार के अनुसार आपके राज्य का होना चाहिए। इस खजाने में मलिी सोने की कलशें, सोने की कमरबंद और हारी, अतुलनीय हैं, और चांदी तथा अन्य कीमती खजाने की तो गनिती ही नहीं हो सकती। इन खजानों से उसने एक भव्य चर्च बनवाया है, फरि भी उसने आपको इसके बारे में नहीं बताया।

ग्रैंड प्रसि पादरी पर आग-बबूला हो गया और उसने उसके पीछे एक प्रचंड योद्धा भेजा, यह आदेश देते हुए कि वह अव्राम को बनिा एक शब्द बोले पकड़ ले और ठीक वैसा ही वापस ले आए जैसा वह उसे पाया था।

यह सब एक दुष्ट आत्मा के उकसावे पर हुआ।

जब राजकुमार द्वारा भेजा गया योद्धा पहुँचा, तो रेवरेंड फादर, अभी-अभी सामूहकि प्रार्थना समाप्त करके, अपनी कोठरी में प्रार्थना कर रहे थे, उन्होंने केवल एक बाल-कपड़ा पहना हुआ था और उनके पैरों में जूते नहीं थे। योद्धा ने, बलि्कुल भी दया न दखिाते हुए, रेवरेंड फादर को एक भी शब्द बोलने, कपड़े पहनने या जूते पहनने का मौका दएि बनिा, उन्हें पकड़ लयिा, अपने घोड़े पर बठिा दयिा, और व्लादमिीर शहर की ओर चल पड़ा।

रोस्तोव झील के दूसरी तरफ, उन्हें एक आदमी मलिा जो एक धब्बेदार गधे से हल जोत रहा था और उसके हाथ में महलिाओं के जूतों की एक जोड़ी थी। सपिाही ने पादरी को गधे पर बठिाया, उसके पैरों में महलिाओं के जूते पहनाए, और उसे ऐसी अपमानजनक स्थतिि में लेकर बड़े राजकुमार के पास पहुँच गया।

महान राजकुमार ने आदेश दयिा कि जिसि योद्धा ने उस पर आरोप लगाया था, उसे भी उसके सामने लाया जाए।

कथति योद्धा ने खजाने के संबंध में पादरी पर पहले की तरह ही वही आरोप दोहराए।

यह सुनकर, पूजनीय ने अपने हाथ स्वर्ग की ओर उठाए और दुष्ट आत्मा को फटकारते हुए कहा:

'मैं तुम्हें हमारे प्रभु यीशु मसीह के नाम पर मना करता हूँ, कि तुम मुझे यह बताओ कि तुम कौन हो, तुमने मुझे ऐसे शब्दों से बदनाम कयिा है?'

दैत्य काँप उठा और बोला:

'मैं एक राक्षस हूँ जसिने आदकिाल से मानव जाति में अच्छाई से, और वशिषकर ईश्वर-भयभीत संतों से, घृणा की है। देखो, बूढ़े, मैंने ठीक वैसा ही कयिा जैसा मैंने तुम्हें पहले बताया था – क्योंकि तुमने अपनी दयनीय देह में मुझे यातना दी।'

यह कहकर, राक्षस एक क्षण में गायब हो गया।

महान राजकुमार, शैतान की धोखाधड़ी और उसके सामने खड़े आदरणीय की उपहास को देखकर, बहुत डर गया, और राजकुमार के आसपास के सभी लोग भी डर गए। और राजकुमार ने आँसू बहाते हुए आदरणीय से क्षमा याचना करनी शुरू कर दी:

'फादर, आपके अनचि्छति आगमन के लिए मैं दोषी हूँ; मैंने आपको गहराई से आहत कयिा है। मुझे क्षमा करें, फादर, उन सभी तरीकों के लिए जनिसे मैंने आपको क्रोधति कयिा है। दुश्मन, फादर, ने मेरे दलि पर अँधेरा छा दयिा है और मुझमें आपके खलिाफ क्रोध भड़काया है, और मुझे पाप की ओर ले गया है।'

वरषि्ठ ने कहा:

'प्रभु आपको क्षमा कर देंगे, मेरे स्वामी, क्योंकि यह प्राचीन शत्रु, शैतान का काम है; और इसलिए, मेरे स्वामी, इस पर आश्चर्य न करें: शुरुआत से ही मानवता से शत्रुता रखने वाला, वह वशिष रूप से उन लोगों के लिए बाधाएँ खड़ी करने का आदी है जो ईश्वर का भय मानते हैं।'

राजकुमार ने, उस आदरणीय की वनिम्रता और उनके कोमल तथा नम्र शब्दों को देखकर, मानो उस वरषि्ठ को कोई हानि नहीं हुई हो, उनकी और भी अधकि चापलूसी करनी शुरू कर दी और उन्हें बहुत सम्मान दयिा।

मठ की स्थापना के लिए, राजकुमार ने कई घर, जमींदारियाँ और दास प्रदान कएि; उसने अव्रामएिव मठ को अपना मठ बना लयिा और इसे रोस्तोव के सभी अन्य मठों से ऊपर रख दयिा, और उसने इन सबको राजकीय पत्रों द्वारा पुष्ट कयिा।

इन सब के बाद, राजकुमार ने पूजनीय को बड़ी सम्मान के साथ वदिाई दी।

आदरणीय अव्रामयिस अपने मठ में महान वनिम्रता से रहते थे, अथक परश्रिम करते थे, और उस प्रभु के पास शांतपूर्वक परलोक सधिार गए, जन्हिें वे अपनी युवावस्था से प्रेम करते थे[7482] ।

ट्रोपारयिन, स्वर 1:

दव्यि अनुग्रह से प्रकाशति होकर, आपने अवश्विासयिों को ईश्वर के ज्ञान के प्रकाश की ओर मार्गदर्शन कयिा; और अपने नधिन के बाद, अपने जीवन की करिणों द्वारा, आप वश्विास के साथ आपके पास आने वालों को चंगा करते हैं। अब्राहम, हमारे पति, मसीह ईश्वर से प्रार्थना करें कि वे हमें अपनी महान दया प्रदान करें।

कॉन्टाकयिन, स्वर 2:

हे अब्राहम, आपने मसीह का जुआ उठाया, और, अपना क्रूस कंधों पर उठाकर, आप उनके पीछे चल दिए; प्रभु के घर में रोपति होकर, आप खजूर के पेड़ और लेबनान के देवदार की तरह फलते-फूलते रहे; आपने अपने बच्चों को बढ़ाया, आध्यात्मकि आकांक्षाओं वाले पुरुष: प्रयि प्रेरति यूहन्ना द थयिोलोजयिन से अनुग्रह प्राप्त करके, आपने अपनी लाठी से मूर्ति को चूर-चूर कर दयिा और उसे धूल के समान बखिेर दयिा; और हे पूजनीय, आपने स्वयं को एक महान चमत्कार-कर्ता साबति कयिा; अत; हम सभी के लिए मसीह हमारे परमेश्वर से अनवरत प्रार्थना करें।

12 नवंबर

30 अक्टूबर (पुराने कैलेंडर के अनुसार)

एजयिा के बशिप संत ज़नोवयिस और उनकी बहन ज़नोनयिा की शहादत

30 अक्टूबर को स्मरणोत्सव

ये पवत्रि शहीद – ज़नोवी और उनकी बहन ज़नोनयिा – धर्मपरायण माता-पति के यहाँ, सीलीसयिा के क्षेत्र[7483] के एगे शहर में पैदा हुए थे। वहाँ उनका पालन-पोषण ईश्वर के भय और धार्मकिता में हुआ। जब वे अभी बच्चे ही थे, तब उनके माता-पति प्रभु में नधिन हो गए, और उन्होंने अपने बच्चों के लिए एक बड़ी संपत्ति छोड़ दी। अपनी कम उम्र के बावजूद, ज़नोवी और ज़नोनयिा अपने समय से कहीं अधकि बुद्धमिान और सदाचार में दृढ़ थे; इस दुनयिा की व्यर्थता को समझकर, उन्होंने सब कुछ पीछे छोड़ने और मसीह का अनुसरण करने का संकल्प लयिा। ज़नोवयिा ने अपने भाई को अपने माता-पति से वरिासत में मलिी संपत्ति का अपना हस्सिा दे दयिा, ताकि वह उसे गरीबों में बाँट सके, जबकि वह स्वयं स्वेच्छा से गरीबी में रहने लगी, मौन बनी रही और अपने स्वर्गीय वधू-वर के लिए अपनी कुँवारीता को पवत्रिता से संरक्षति रखा। ज़नोवी ने, संपत्ति के दोनों हस्सिे—अपना और अपनी बहन का—लेकर, उन्हें गरीबों में बाँटना शुरू कर दयिा और जल्द ही वह सब खर्च कर दयिा, ताकि वह स्वयं गरीबों में से एक बन गया। लेकनि ईश्वर, जो अनाथों की परवाह करते हैं और उन पर भरोसा करने वालों को नहीं छोड़ते, उन्होंने उन धन-संपत्तयिों के बदले में जो उन्होंने गरीबों को दी थीं, पवत्रि

[7482] आदरणीय अव्रामयिस को उनके द्वारा स्थापति मठ में ही दफनाया गया था। उनकी पवत्रि अवशेष अब मठ के मुख्य पत्थर के चर्च, जो प्रभु के प्रकट होने (एपफिेनी) को समर्पति है, से जुड़े उनके नाम के पार्श्व चैपल में एक चांदी के अवशेष-पात्र में सार्वजनकि दर्शन के लिए रखे गए हैं। यह चैपल ज़ार इवान वासलीवचि द टेरबिल के आदेश पर और उनके खर्च पर बनाया गया था और 2 अक्टूबर 1553 को उनकी उपस्थति में इसे पवत्रि कयिा गया था। ज़ार इवान वासलीवचि एक से अधकि बार रोस्तोव आए और उन्होंने स्थानीय पवत्रि स्थलों पर श्रद्धांजलि अर्पति की। सेंट अव्राम के मठ के अपने एक दौरे पर, काज़ान पर कब्ज़ा होने से पहले ही, उन्होंने सेंट अव्राम की कब्र में रखे हुए दंड को ले लयिा था, जसिसे उस सम्मानति संन्यासी ने मूर्ति को तोड़ दयिा था। तांबे का क्रॉस जो दंड का हैंडल था, वह आज भी सेंट अव्राम को समर्पति चैपल के प्रवेश द्वार पर मेहराब में एक अलग तीर्थस्थल में रखा है।

[7483] एगी सलिसिियिा (एशयिा माइनर का एक दक्षणि-पूर्वी क्षेत्र) में एक शहर है, जो रोमन साम्राज्य के दौरान एक नौसैनकि अड्डे के रूप में काम करता था।

भाई और बहन को अपनी स्वर्गीय आशीर्वादों से धनवान कर दिया: उनके सामर्थी दहिने हाथ ने ज़िनोवी को उनके पूरे जीवन में सभी विपत्तियों से बचाया और शैतानी प्रलोभनों को दूर भगाया; ज़िनोवी को, अपनी ओर से, प्रभु से अपने हाथों के स्पर्श से दुर्बलताओं को ठीक करने का वरदान मिला। इस प्रकार, वे हाथ जिन्होंने इतनी उदारता से गरीबों को दान दिया था, उन्हें ईश्वर द्वारा चमत्कार करने की शक्ति प्रदान की गई। चाहे कोई व्यक्ति किसी भी कष्ट से पीड़ित हो, चाहे वह किसी भी बीमारी से ग्रस्त हो, संत ज़िनोवी के हाथ लगते ही वे ठीक हो जाते थे। ईश्वर के इस सेवक ने अपने पूरे जीवन में महान परोपकार का अभ्यास किया, कभी-कभी अपनी संपत्ति गरीबों में बाँटकर, तो कभी ईश्वर की कृपा से, बीमारों को स्वास्थ्य प्रदान करके; उन्होंने लोगों से कई अशुद्ध आत्माओं को भगाया, दुख में पड़े लोगों को सांत्वना दी, और संकट में मदद की। सद्गुणों से प्रकाशमान और अपने चमत्कारों के लिए प्रसिद्ध, उन्हें अपने मूल शहर का बिशप चुना गया। इस अच्छे चरवाहे ने ईश्वर की कलीसिया की लगन से सेवा की, लगातार लोगों की मदद की और अच्छे कार्य किए, तथा बीमारों को चंगा किया। एक बार, अंतीयक से एक महिला संत के पास आई, जो अपने स्तन पर एक लाइलाज अल्सर से पीड़ित थी। उस महिला ने अपने इलाज पर बहुत सारा पैसा खर्च कर दिया था, डॉक्टरों से अपनी बीमारी का इलाज खोजने की कोशिश की, लेकिन वे उसकी कोई मदद नहीं कर सके; इसके विपरीत, उसकी भयानक पीड़ा और भी बढ़ गई, जिससे वह अब मौत के मुंह में थी। उसे देखकर, संत ज़िनोवी को उस पर दया आई: उन्होंने अपने हाथ से उसके अल्सर को छुआ और प्रभावित क्षेत्र पर क्रॉस का चिह्न बनाया। तुरंत ही अल्सर गायब हो गया, और महिला, पूरी तरह से स्वस्थ होकर, बड़ी खुशी के साथ अंफ़ियालोपोलिस में अपने घर लौट आई।

एक और महिला, जो मसीह में विश्वास नहीं करती थी—इंडिस नामक एक अधिकारी की पत्नी—उसी बीमारी से पीड़ित थी; लेकिन संत ज़िनोवी के उपचार से, वह भी अपनी पीड़ा से मुक्त हो गई। घटित चमत्कार से प्रभावित होकर, वह स्वयं, अपने पति और बच्चों के साथ, मसीह की ओर मुड़ आई। वे सभी पवित्र बपतिस्मा के माध्यम से प्रबुद्ध हुए। इस प्रकार, इस महिला को शारीरिक उपचार और आध्यात्मिक लाभ दोनों प्राप्त हुए।

इस बीच, अधर्मी सम्राट डायोक्लेटियन ने ईसाइयों के खिलाफ एक भयानक उत्पीड़न शुरू किया। तभी राजकुमार लाइसियस सिलिसिया प्रांत में पहुँचा ताकि मसीह के नाम का बपतिस्मा लेने वालों को यातनाएँ दे सके। एगे में सबसे पहले तीन ईसाई युवकों—क्लाउडियस, एस्टरियस और नियोन—को यातनाएँ दी गईं। – उन्हें पकड़ने के बाद, लाइसियस ने उन्हें विभिन्न यातनाएँ दीं और अंत में, शहर के बाहर उन्हें सूली पर चढ़ा दिया। संत ज़िनोन के बारे में सुनकर, उसने उन्हें पकड़ने के लिए अपने सैनिक भेजे। जब उस तपस्वी को लाइसियस के सामने लाया गया, तो राजकुमार ने उनसे कहा:

'मैं तुम्हारे साथ लंबी बातचीत नहीं करना चाहता, क्योंकि मैं जानता हूँ कि तुम ईसाई लोग बहुत ज़्यादा बोलते हो: मैं तुमसे संक्षेप में बात करूँगा। मैं तुम्हें जीवन और मृत्यु का विकल्प देता हूँ: जीवन, यदि तुम हमारे देवताओं की पूजा करो; मृत्यु, यदि तुम नहीं करते।' खुद चुन लो कि तुम क्या चाहते हो: या तो बलिदान चढ़ाओ – तब तुम जीवित रहोगे, और वास्तव में हमसे सम्मान भी प्राप्त करोगे – या तुम अपने भ्रम पर अड़े रहो, लेकिन तब तुम भयानक यातनाएं सहोगे और एक भयानक मृत्यु का सामना करोगे।"

संत ज़िनोवी, राजकुमार के शब्दों से बिल्कुल भी डरने वाले नहीं, ने दृढ़ता से जवाब दिया:

'मसीह के बिना यह क्षणिक जीवन जीवन नहीं, बल्कि मृत्यु है; नहीं, मैं इस क्षणिक जीवन के लिए उसे त्यागने और फिर नरक में अनंत काल तक पीड़ित होने के बजाय अपने सृष्टिकर्ता के लिए क्षणिक यातनाएँ सहना और फिर उनके साथ हमेशा के लिए जीना पसंद करूँगा।'

ये शब्द सुनते ही दुष्ट राजकुमार ने संत को नग्न कर, सूली पर चढ़ाने और निर्दयता से कोड़े लगाने का आदेश दिया।

उसने कहा, 'देखते हैं कि क्या मसीह उसे बचाने आएगा!'

धन्य ज़िनोवियस, यह जानकर कि उनका भाई, संत ज़िनोवियस, मसीह के लिए कष्ट सह रहा था, उस स्थान पर दौड़ी जहाँ संत को यातनाएँ दी जा रही थीं। अपने भाई को, खून से लथपथ और घावों से ढके, सूली पर लटके हुए देखकर, वह उत्साह से भर गई और, यातना देने वाले के सामने खड़ी होकर, उससे कहा:

'मैं भी अपने भाई की तरह एक ईसाई हूँ: मैं भी उसी एक ईश्वर और हमारे प्रभु यीशु मसीह की आराधना करती हूँ। इसलिए, आज्ञा दो कि मुझे भी यातना दी जाए, ठीक वैसे ही जैसे तुम मेरे प्रिय भाई को दे रहे हो। मैं भी उसी कष्ट के प्याले से पीना चाहती हूँ और उसी मुकुट से विभूषित होना चाहती हूँ।'

यातना देने वाला संत ज़िनोनिया के साहस और दृढ़ संकल्प से चकित हो गया और कहा:

'महलिा, अपनी ही बर्बादी को न बुलाओ; ऐसी शर्मनाक यातना की मांग मत करो, जसिमें तुम्हें अपमान सहना पड़ेगा और पीड़ा झेलनी पड़ेगी। क्योंकि जब तुम्हें नग्न होने के लिए मजबूर किया जाएगा तो तुम्हें बहुत शर्मिंदगी का अनुभव होगा; जब तुम्हें यातनाएँ दी जाएँगी तो तुम्हें भयंकर पीड़ा सहनी पड़ेगी। इसलिए, मैं तुम्हें यह सलाह देती हूँ: देवताओं को बलदिान चढ़ाओ, और फिर तुम सभी बुराइयों से मुक्त हो जाओगी।

इस पर संत ने उत्तर दिया:

'आत्मा का नंगापन मुझे शरीर के नंगेपन से कहीं ज्यादा शर्मिंदा कर सकता है; शाश्वत यातनाएँ अस्थायी यातनाओं से अतुलनीय रूप से अधिक पीड़ादायक हैं; मुझे इस बात की परवाह नहीं कि मुझे नंगा किया जाएगा, क्योंकि मैं मसीह में परिधानित हूँ; मैं अपने यातना देने वालों के हाथों से नहीं डरता, क्योंकि मैं मसीह के साथ सूली पर चढ़ाया गया हूँ। तुम जो चाहो करो, यातनादाता; तुम किसी भी तरह से मुझे मेरे प्रभु मसीह का त्याग करने के लिए मजबूर नहीं कर सकते।

तब लाइसियस ने आदेश दिया कि उसे नग्न कर पीटा जाए, ठीक वैसे ही जैसे उसके भाई, संत ज़िनोवियस को पीटा गया था। इससे संतुष्ट न होकर, यातना देने वाले ने आदेश दिया कि एक लाल-गरम लोहे का बिस्तर तैयार किया जाए, दोनों संतों को उस पर लिटाया जाए, और उनके नीचे आग जलाई जाए:

'होने दो,' उसने कहा, 'मसीह यहाँ प्रकट हों और तुम्हारी मदद करें।'

लेकिन संतों ने उत्तर दिया:

'हमारा मसीह हमारे साथ है; तुम उसे नहीं देख सकते। वह स्वर्ग से अपनी कृपा की ओस से हमें सींचता है, ताकि हमें इन यातनाओं से कोई पीड़ा न हो।'

तब संतों को उबलते हुए एक कड़ाही में फेंक दिया गया, लेकिन वहाँ भी उन्हें कोई हानि नहीं हुई: वे जैसे ठंडे पानी में खड़े हों, दाऊद का भजन गा रहे थे: 'किन्तु आप हमें हमारे शत्रुओं से बचाएंगे और हमें घृणा करने वालों को लज्जित करेंगे।' यह देखकर, यातना देने वाले ने आदेश दिया कि उन्हें शहर से बाहर ले जाया जाए और वहाँ सिर कलम कर दिया जाए। अकथनीय आनंद के साथ, संत अपने मृत्युदंड की ओर बढ़े; जब वे मृत्युदंड के स्थान पर पहुँचे, तो उन्होंने इस प्रकार प्रार्थना करना शुरू किया:

– हे प्रभु हमारे परमेश्वर, हम आपकी स्तुति करते हैं, क्योंकि आपने हमें अच्छे कर्मों में लगे रहने, अपना मार्ग पूरा करने और अपने विश्वास को बनाए रखने में सक्षम बनाया। हमें अपनी महिमा में भागीदार बनाएं; हमें उन संतों के समूह में गिनें जिन्होंने आपको प्रसन्न किया है। धन्य हैं आप सदा के लिए।

जब संतों ने अपनी प्रार्थना समाप्त कर ली, तो स्वर्ग से एक आवाज़ गूँजी, जिसने उन्हें मुकुट देने और शाश्वत विश्राम के लिए बुलाने का वादा किया। इस बीच, सैनिक आ गए और उन्होंने उनका सिर कलम कर दिया। इतनी पीड़ा के बाद, उन्होंने इस धरती को छोड़ दिया और स्वर्ग में आरोहण किया[7484] । उनके पवित्र शरीर पूरे दिन बिना दफ़नाए ज़मीन पर पड़े रहे; लेकिन जब रात हुई, तो पुरोहित हर्मोजेनेस ने उन्हें चुपके से उठाया और एक ही ताबूत में रख दिया। इस प्रकार ये संत अब अनवरत रूप से पिता और पुत्र और पवित्र आत्मा, एक ही परमेश्वर की महिमा करते हैं, जिसकी सारी सृष्टि द्वारा महिमा की जाती है, अब और हमेशा और युगानुयुग। आमेन।

कॉन्टाकियन, स्वर 8:

सच्चे साक्षी और धर्म के प्रचारक, दोनों स्तुति के गीतों में यथोचित रूप से विश्राम कर रहे हैं, ज़िनोवी बुद्धिमान ज़िनोविया के साथ, जो एक साथ रहे और चले, और शहादत का अक्षय मुकुट प्राप्त किया।

पवित्र शहीद यूट्रोपिया की स्मृति

30 अक्टूबर को स्मरणोत्सव

संत यूट्रोपिया पर राज्यपाल एपेलियन के समक्ष यह आरोप लगाया गया कि वह तहखानों में बंद ईसाइयों से मिलती थीं और उन्हें विश्वास में मजबूत करती थीं। इसके लिए उन्हें फांसी दी गई और उनके शरीर पर मोमबत्तियाँ जलाई गईं,

[7484] उनका पवित्र निधन 30 अक्टूबर 285 को हुआ।

लेकनि उन्होंने इस यातना को आग के बजाय पानी की तरह सहन कयि। और उसके चारों ओर मौजूद सभी लोगों को, यहाँ तक कि उसे यातना देने वाले सैनकिों को भी, एक आकृति स्पष्ट रूप से दखिाई दी—एक ऐसी आकृति जसिने सभी को भयभीत कर दयि, जसिने आग को ठंडा कर दयि और पवत्रि शहीद पर ओस बरसाई। ऐसी यातनाओं के बीच, उन्होंने अपना प्राण प्रभु को सौंप दयि[7485] ।

पवत्रि प्रेरतिों टर्टयिस, मार्क, जस्टस और आर्टेमा की स्मृति

30 अक्टूबर को स्मरणोत्सव

संत टर्टयिस ने प्रेरति पौलुस का रोमयिों को लखिा हुआ पत्र लखिा था, जसिमें वे अपने बारे में कहते हैं: *'मैं, टर्टयिस, जसिने यह पत्र लखिा है, प्रभु में आपको नमस्कार करता हूँ'* (रोमयिों 16:22)। वे सोसपैटर[7486] के बाद इकोनयिम के दूसरे बशिप थे, जहाँ उन्होंने शहीद की मृत्यु पाई।

प्रेरति बरनबास के भतीजे संत मरकुस, अपोलोनयि[7487] के बशिप थे, जनिका उल्लेख पवत्रि प्रेरति पौलुस ने अपनी कुलुस्सयिों के नाम पत्र में कयि है: *'मेरे साथ कैदी अरस्तिार्खुस और बर्नबास के भतीजे मरकुस की ओर से नमस्कार, (जसिके वषिय में तुम्हें आज्ञा मलिी है: यदि वह तुम्हारे पास आए तो उसका स्वागत करना)'* (कुलु. 4:10)।

संत जस्टस एलेउथेरोपोलसि के बशिप थे; संत आर्टेमस लस्त्रि के बशिप थे[7488] । प्रेरति पौलुस ने अपनी तीतुस को लखिी पत्र में बाद वाले का उल्लेख कयि है: 'जब मैं आर्टेमस या तकिीकुस को तुम्हारे पास भेजूँ, तब मेरी ओर आने का पूरा प्रयत्न करना' (तीतुस 3:12)।

सरिैक्यूज़ के बशिप सेंट मार्शयिन की स्मृति

30 अक्टूबर को स्मरण कयि जाता है

सरिैक्यूज़ के बशिप संत मार्शयिन, जो संत पतरस प्रेरति के शष्यि थे, अंतीयक से ससिलिी द्वीप के एक शहर सरिैक्यूज़ आए थे[7489] । केवल अपनी प्रार्थनाओं के द्वारा, उन्होंने मूर्तपिूजक मंदरिों को नष्ट कयि और कई लोगों को मसीह के पास लाया, उन्हें प्रकाश की संतान बनाया, और इस दौरान कई चमत्कार कए। यहूदयिों द्वारा मसीह के लए उन्हें मृत्युदंड दयि गया[7490] ।

13 नवंबर

31 अक्टूबर (पुराने कैलेंडर के अनुसार)

नवंबर

[7485] उनकी मृत्यु लगभग 260 ईस्वी में अलेक्जेंड्रयिा में हुई।

[7486] उनका पर्व दविस 10 नवंबर और 4 जनवरी है।

[7487] प्राचीन काल में कई शहरों का यह नाम था: ससिलिी में एक शहर; इलरियिा में एक, जसिके नविासयिों को अपोलोनयिन कहा जाता था; थ्रेस में एक; काल्सेडोन में एक; और अन्य।

[7488] लस्त्रि का लकिाओनयिा के शहरों में से एक है; यहीं पर प्रेरति पौलुस ने एक लंगड़े आदमी को चंगा कयि, और इस चमत्कार को देखने के बाद, अवश्वािसयिों ने उन्हें और बरनबास को देवता मान लयि।

[7489] ससिलिी एपनीन प्रायद्वीप के पास भूमध्य सागर के सबसे बड़े द्वीपों में से एक है; सराक्यूज़ द्वीप के पूर्वी तट पर पहली ग्रीक बस्तयिों में से एक थी, जसि परंपरा के अनुसार, लगभग 746 ईसा पूर्व में कोरथियिों द्वारा स्थापति कयि गया था, और बाद में यह द्वीप का सबसे बड़ा और सबसे अमीर शहर बन गया।

[7490] सेंट मार्कयिन, ससिलिी द्वीप पर पहुँचने के बाद, सराक्यूज़ शहर के पास एक गुफा में बस गए और उन्होंने सफलतापूर्वक ईसाई धर्म का प्रचार कयि। अब उनके अवशेष गाएटा (इटली में एक बंदरगाह और कलिा) में वश्राम करते हैं।

पवित्र शहीद एपमिाकस का स्मरणोत्सव

31 अक्टूबर को स्मरणोत्सव

पवित्र शहीद एपमिाकस, धर्मनष्ठि ईसाइयों के पुत्र, मस्रि के मूल नविासी थे; अपने शुरुआती युवा से ही उन्होंने पूरे हृदय से ईश्वर से प्रेम कयिा और केवल उनकी सेवा करने का संकल्प लयिा। संत यूहन्ना बपतस्मिादाता के उदाहरण का अनुसरण करते हुए, वे रेगस्तिान में चले गए और माउंट पेलसयिम पर लंबे समय तक रहे[7491] ।

पवित्र पति-माताओं में उनका कोई आध्यात्मकि मार्गदर्शक नहीं था, लेकनि इस कठोर, मरुभूमजिीवन में उनके मार्गदर्शक स्वयं पवित्र आत्मा थे; ईश्वर के प्रतउिनके प्रेम ने इस कठनि प्रयास में उनका साथ दयिा और उन्हें मजबूत बनाया। क्योंकि केवल ईश्वर के प्रतप्रिेम ही कसिी व्यक्तकिो सभी से बढ़कर सद्गुण सखिा सकता है; यही प्रेम था जसिने पवित्र प्रेरतिों को सब कुछ छोड़कर प्रभु का अनुसरण करने के लएि प्रेरति कयिा, जनिके पास सांसारकि धन-संपत्तनिहीं थी; यही प्रेम था जसिने सम्मानति पतिरों को प्रेरति कयिा, जो *'मरूभूमयिों और पहाड़ों में, पृथ्वी की गुफाओं और घाटयिों में भटकते रहे'* (इब्रानयिों 11:38); और शहीदों, पुरुषों और महलिाओं ने, इस प्रेम से प्रेरति होकर, मसीह के लएि साहसपूर्वक पीड़ा सहन की, और पुकार उठे: 'मैं तुमसे प्रेम करती हूँ, हे मेरे वधूवर, और तुम्हें खोजते हुए मैं पीड़ा सहती हूँ'। इसी प्रेम ने संत एपमिाकस को रेगस्तिान के तपस्वी संघर्षों और परश्रिमों को सहन करना, अदृश्य शत्रुओं के हर तरह के हमलों का सामना करना, ईश्वर में एक पवित्र जीवन जीना, और उनके लएि मरने को तैयार रहना सखिाया। कई वर्षों तक अपने मरुस्थल के एकांत में रहने के बाद, संत एपमिाकस को पता चला कि अलेक्जेंड्रयिा में ईसाइयों को गंभीर उत्पीड़न का सामना करना पड़ रहा था; वास्तव में, मसीह के कुछ अनुयायी, क्रूर यातनाओं के डर से, पहाड़ों और मरुस्थलों में छपि रहे थे, जबकि अन्य लोग वश्विास से भटक रहे थे। ईश्वर के प्रतउित्साह से भरकर, उस पवित्र तपस्वी ने अपना मरुस्थल छोड़ दयिा और अलेक्जेंड्रयिा के लएि रवाना हो गया, उसकी इच्छा थी कि वह अपने रक्त से मसीह की अपनी गवाही को पुष्ट करे, प्रभु के लएि कष्ट सहन करे, और इस प्रकार कमजोरों को मजबूत बनाए। अलेक्जेंड्रयिा पहुँचने पर, उन्होंने देखा कि अधर्मी मूर्तपिूजक वश्विासयिों को कसि क्रूर यातनाओं से पीड़ा पहुँचा रहे थे; अपने हृदय में गहरी पीड़ा के साथ, उन्होंने देखा कि शैतान की दुष्टता बहुत बढ़ गई थी, और कई ईसाई डगमगा रहे थे; मूर्तपिूजकों ने यहाँ तक कि प्रभु के मंदरि का भी अपमान कयिा था। यह देखकर, संत ने नडिर होकर मूर्तपिूजकों के मंदरि में प्रवेश कयिा। वहाँ, चूँकि यह एक मूर्तपिूजक त्योहार था, एक बड़ी भीड़ इकट्ठी हो गई थी; धन्य एपमिाकस ने, सभी की उपस्थतिि में, नडिर होकर मूर्तयिों को ज़मीन पर फेंक दयिा और उन्हें टुकड़े-टुकड़े कर दयिा। मूर्तपिूजकों ने तुरंत उसे पकड़ लयिा और राज्यपाल एपेलयिन के सामने ले गए। यह देखकर कि राज्यपाल न्यायपीठ पर बैठा था और ईसाइयों को यातना देने की सजा सुना रहा था, संत ने साहसपूर्वक उस अधर्मी व्यक्तकिो मार गरिाने के लएि उसकी ओर बढ़े; और अगर आसपास खड़े लोगों ने संत को नहीं रोका होता तो अपेलयिन संत एपमिाकस के हाथ से नहीं बच पाता: इस तपस्वी द्वारा प्रभु परमेश्वर के प्रतऐिसा उत्साह प्रदर्शति कयिा गया था। एक फटे-पुराने कपड़ों में लपिटे इंसान से ऐसी नर्भिीकता देखकर राज्यपाल चकति रह गया। उसने उसे जेल में डालने और तब तक वहाँ रखने का आदेश दयिा जब तक कि वह यह तय न कर ले कि उसे कसि प्रकार की यातना दी जाए।

उस समय, तहखाने में मसीह के महान नाम की गवाही देने के लएि कई वश्विासी कैद थे; एपमिाकस ने सभी को शहादत के इस कार्य के लएि दृढ़ कयिा; उनके उपदेशों ने वश्विासयिों को प्रोत्साहति और प्रेरति कयिा, ताकि उनमें से कोई भी भयभीत न हुआ या वश्विास से न भटका, बल्कि सभी ने सच्चे ईश्वर के लएि आनन्दपूर्वक अपना रक्त बहाया, और उन सभी ने, वभिन्नि क्रूर यातनाओं को सहने के बाद, अपनी आत्माएँ प्रभु को सौंप दीं। अंत में, संत एपमिाकस को स्वयं भीषण यातनाएँ दी गईं, क्योंकि वह न केवल मसीह में वश्विास करता था और उनके त्योहार को भंग कर दयिा था, बल्कि उसने राज्यपाल के खलिाफ भी हाथ उठाया था, और उसे मारने का इरादा कयिा था। पहले, संत को लटकाया गया और लोहे के पंजों से खुरच दयिा गया; फरि उन्होंने उस पर पत्थर बरसाना शुरू कर दयिा, जसिसे उसकी हड्डयिाँ चूर-चूर हो गईं, जबकि वह दर्द से कराह रहा था:

'यदि मेरे प्रभु यीशु मसीह को मेरे लएि सूली पर चढ़ाया गया, भाले से भेदा गया और सरिका पलिाया गया, तो क्या मुझे भी उनके दुःखों में सहभागी नहीं होना चाहिए?' मैं चाहता हूँ कि तुम मुझे इनसे भी अधकि यातनाएँ दो: मुझे थप्पड़ मारो, मुझ पर थूक दो, मेरे सरि पर काँटों का मुकुट पहनाओ, मेरे हाथों में एक बेंत दो, मेरे पूरे शरीर को पत्ति से भर दो, मुझे फोड़ों

[7491] नील नदी से बहुत दूर नहीं, नचिले मस्रि में।

से ढक दो, मुझे सूली पर चढ़ाओ और मुझे भाले से भेद दो। मेरे प्रभु ने जो कुछ भी सहन किया, मैं भी वही सहन करना चाहता हूँ।

एक बड़ी भीड़ इकट्ठी हो गई थी और संत एपमिाकस के कष्टों को देख रही थी। भीड़ में एक महलिा भी थी जो केवल एक आँख से देख सकती थी, क्योंकि उसकी दूसरी आँख में मोतियाबंदि था। संत के कष्टों को देखकर, वह रो पड़ी। उसी क्षण, पवत्रि शहीद का एक बूँद खून छटिककर उसकी बीमार आँख पर गरि गया। तत्क्षण उसकी आँख ठीक हो गई, और वह उससे भी उतनी ही अच्छी तरह देख सकती थी जतिनी दूसरी आँख से। इस चमत्कारी उपचार पर, वह महलिा चल्लिाई:

'महान है वह ईश्वर, जसिकी यह पीड़ति घोषणा करता है।'

तब यातना देने वालों ने मसीह के शहीद का सरि कलम कर दिया। इस प्रकार संत एपमिाकस ने अपना प्राण प्रभु को सौंप दिया, जनिके लिए उन्होंने इतनी वीरता से पीड़ा सहन की थी[7492] ।

पवत्रि प्रेरतिों स्टैक्ससि, अमीलयिस, उर्वान, नार्ससिस, अपेलयिस और अरस्टिोबुलस की स्मृति

31 अक्टूबर को स्मरणोत्सव

पवत्रि प्रेरति एंड्रयू ने संत स्टैक्स को बज़िंटयिम में बशिप नयिुक्त किया; उनके साथ मलिकर, संत स्टैक्स ने आर्गोपोलसि में एक चर्च का नरि्माण किया[7493] ; वहाँ कई वशि्वासयिों को इकट्ठा करने के बाद, उन्होंने उन्हें मसीह की आज्ञाओं की शक्षिा दी। इस प्रकार उन्होंने पूरे सोलह वर्षों तक परशि्रम किया और, धर्मपरायणता के ऐसे कारनामों के बाद, उन्होंने अपना प्राण प्रभु को सौंप दिया। उसी प्रेरति एंड्रयू ने एम्प्लयिास और उर्वान को बशिप नयिुक्त किया – एम्प्लयिास को डायोस्पोलसि[7494] में और उर्वान को मैसडिोनयिा में।

उन्होंने उत्साहपूर्वक मसीह की शक्षिाओं का प्रचार किया और कई मूर्तपिूजक पूजास्थलों को नष्ट कर दिया; ऐसा करते हुए, उन्होंने स्वयं के वरिुद्ध यूनानयिों और यहूदयिों की शत्रुता को भड़काया।

ईसाई धर्म के इन शत्रुओं ने पवत्रि शहीदों को यातनाएँ दीं, और शहीदों को अक्षय मुकुट प्राप्त करने के योग्य समझा गया।

नार्ससिस, एपेलस और अरस्टिोबुलस ने भी मसीह के सुसमाचार का प्रचार किया: नार्ससिस ने एथेंस में, एपेलस ने हेराक्लिया में, और अरस्टिोबुलस ने ब्रटिेन में; ये पवत्रि पुरुष, कई परशि्रमों और वीरता के कारनामों के बाद, अपनी आत्माएँ प्रभु के हवाले कर दिए।

कॉन्टाकयिन, स्वर 8:

सर्व-पवत्रि आत्मा के पवत्रि खजानों, और महमिा के सूर्य के तेज के रूप में, आइए हम बुद्धमिान प्रेरतिों: अपेल्स, उर्वान, अरस्टिोबुलस, एम्प्लयिास, नार्ससिस और स्टाचीस के बारे में उचति रूप से गाएं: जो हमारे परमेश्वर की अनुग्रह-भरी देन हैं।

आदरणीय स्परिडिॉन और नकिोदेमस के जीवन

31 अक्टूबर को स्मरणोत्सव

[7492] संत की शहादत लगभग 250 ईस्वी में हुई।

[7493] अर्गोपोलसि, जसिे अब फंडुकली कहा जाता है, कॉन्स्टेंटनिोपल का एक उपनगर है, पेरा और गलाटा के पास।

[7494] डयिोस्पोलसि फलिस्तीन में, यरूशलेम के उत्तर-पश्चमि में स्थति था।

कृपा से स्वर्गीय रूप से प्रबुद्ध हर आत्मा सरल होती है (नीतिवचन 11:26); उसमें न तो कोई छल होता है और न ही चापलूसी; यह स्वयं परमेश्वर का पात्र और निवास स्थान है। इसीलिए प्रेरित कहते हैं: *'परमेश्वर ने जगत की निर्बल वस्तुओं को चुन लिया, ताकि वह बलवानों को लज्जित करे'* (1 कुरिन्थियों 1:27)

हमारे पूजनीय पिता स्पिरिडोन इन चुने हुए लोगों में से थे। यह धन्य व्यक्ति एक छोटे से गाँव से आए थे; उन्हें पढ़ना-लिखना नहीं सिखाया गया था, और न ही वे वाक्पटु थे, लेकिन वे अपनी आध्यात्मिक समझ और दैवीय कार्यों में महान थे। अपने हृदय में प्रभु का भय, जो सभी ज्ञान की शुरुआत है, रखकर, वे कीव केव्स मठ आए और वहाँ एक कठोर मठवासी जीवन जीने लगे। यद्यपि वे अब जवान नहीं रहे, फिर भी उन्होंने पढ़ना और लिखना सीखना शुरू कर दिया। उन्होंने दाऊद की सभी दिव्य प्रेरित भजन-संग्रहों का गहन अध्ययन किया और उन्हें कंठस्थ कर लिया था। पवित्र तपस्वी ने अटूट उत्साह के साथ परिश्रम किया और अपनी आत्मा के उद्धार का ध्यान रखा; उसकी एक धार्मिक प्रथा थी: वह हर दिन दाऊद का भजन-संग्रह जपता था और जब तक उसी दिन पूरा नहीं कर लेता, तब तक रुकता नहीं था। उस समय के मठाधीश, उपवासी पिमेन ने, यह देखकर कि संत स्पाइरिडोन विनम्रता और लगन से विशिष्ट थे, निरंतर उपवास और प्रार्थना में रहते थे और हर बात में निर्दोष थे, उन्हें ईश्वर को प्रसन्न करने वाला एक कार्य सौंपा: दिव्य अनुष्ठान के लिए मसीह के पवित्र शरीर हेतु लाई गई रोटी, यानी प्रॉस्फोरा, बनाना। धन्य स्पिरिडोन, बेकरी में निवास करने के बाद, अपने पूर्व आध्यात्मिक प्रयासों को नहीं छोड़ा, बल्कि उन्हें सौंके गए कार्य को पूरी श्रद्धा और ईश्वर के भय के साथ पूरा करने लगे। यह जानते हुए कि उसके हाथों की मेहनत पुजारी द्वारा चढ़ाए जाने वाले शुद्ध और निर्दोष बलिदान के लिए थी, वह इसे अपने होठों से ईश्वर की स्तुति करते हुए करता था: चाहे वह लकड़ी काट रहा हो या आटा गूंथ रहा हो, वह हमेशा अपने होठों से दाऊद के भजन गाता था, ताकि, जैसा कि उसका रिवाज था, वह हर दिन भजनों की पूरी पुस्तक पूरी कर सके।

एक दिन, अपने सामान्य कार्य करते हुए, इस धन्य तपस्वी ने प्रोस्फोरा पकाने के लिए भट्टी में आग लगाई। अचानक, भट्टी के मुँह से आग की लपटें फूट पड़ीं और उस इमारत की छत को अपनी चपेट में ले लिया जहाँ संत थे। धन्य स्पायरिडॉन ने अपना चोगा लिया, उससे भट्टी का मुँह ढक दिया, और अपनी रस्सीदार कमीज़ की बाँहें बाँधकर, उसे लेकर कुएँ की ओर दौड़े; उसे पानी से भरकर, वे जल्दी से वापस आए, भाइयों को बुलाया और भिक्षुओं से आग बुझाने में मदद करने के लिए कहा। जब वे इकट्ठा हो गए, तो भाइयों ने एक अद्भुत दृश्य देखा: जिस चोगा से धन्य व्यक्ति ने भट्टी का मुँह ढक दिया था, वह आग से अप्रभावित था, और बाल-कमीज़ से कोई पानी नहीं टपक रहा था। भिक्षुओं ने अपने लाए हुए पानी से जलती हुई इमारत को तुरंत बुझा दिया और आनंदपूर्वक परमेश्वर की महिमा की। इन धन्य स्पिरिडोन के श्रमों में एक साथी था, निकोडेमस नामक एक भाई; वह हर बात में संत स्पिरिडोन के समान मत का था। इन धन्य व्यक्ति की तरह, संत निकोडेमस ने भी भक्तिपूर्वक प्रार्थना की और उनके शारीरिक श्रमों में भाग लिया।

ये तपस्वी तीस वर्षों तक पवित्र और मनभावन ढंग से परिश्रम करते रहे, और उन्होंने अपने कर्तव्य—प्रोस्फोरा पकाना—को पवित्रता और ईमानदारी के साथ पूरा किया। अत; अपने विश्वास में दृढ़ रहते हुए इस जीवन से परलोक गमन क[7495] करने के कारण, वे परमेश्वर की महिमा से परिपूर्ण हैं, जिसे वे उस रोटी के रूप में नहीं देखते हैं जो उन्होंने अर्पित की थी, बल्कि साक्षात्; हम भी, उनकी पवित्र प्रार्थनाओं के द्वारा, जीवन की रोटी—यीशु मसीह की अनुग्रह और महिमा—से योग्य रूप से परिपूर्ण हों, जिन्हें परमपिता परमेश्वर और पवित्र आत्मा के साथ, अब और सदा के लिए और युगानुयुग तक सम्मान, महिमा और आराधना अर्पित की जाती है। आमीन।

14 नवंबर

1 नवंबर (पुराना तरीका)

[7495] उनका धन्य विश्राम 12वीं शताब्दी के मध्य के आसपास हुआ। उनके अवशेष सेंट एंथनी की गुफा में विश्राम करते हैं।

संत कोस्मास और डैमयिन, नःस्वार्थ चकित्सिक और चमत्कार-कर्ता का जीवन और चमत्कार

1 नवंबर को स्मरणोत्सव

संत कोस्मास और डैमयिन, जन्म से भाई, एशयिा के मूल नविासी थे[7496] उनके पतिा एक मूर्तपिूजक थे, जबकि उनकी माँ, थयिोडोटा नाम की, एक ईसाई थीं। अपने पति की मृत्यु के बाद वधिवा रहकर और अपना समय मसीह की सबसे उत्साही सेवा में समर्पति कर, उन्होंने अपना पूरा जीवन ईश्वर को प्रसन्न करने के लिए समर्पति कर दयिा। और वह उस वधिवा की तरह थी जसिकी प्रेरति ने प्रशंसा की है: *'एक सच्ची वधिवा, जो अकेली रह गई है, ने अपनी आशा परमेश्वर पर लगाई है और दनि-रात वनिती और प्रार्थना में लगी रहती है'* (1 तीमु. 5:5)। स्वयं ईश्वर को प्रसन्न करने वाला जीवन जीते हुए, उन्होंने अपने प्रयि बच्चों, कोस्मास और डैमयिन को भी यही सखिाया, क्योंकि उन्होंने उन्हें ईसाई धर्म की सुदृढ़ शक्षिा और पवत्रि धर्मग्रंथों के अध्ययन में पाला, और उन्हें हर सद्गुण में मार्गदर्शन दयिा। वयस्क होने और प्रभु के वधिान के अनुसार नर्दिोष जीवन जीने के बाद, कोस्मास और डामयिन, मानो, पृथ्वी पर दो दीपक थे, जो पुण्य कर्मों से प्रकाशमान थे। उन्हें ईश्वर से चंगा करने का वरदान मलिा था और उन्होंने आत्माओं और शरीरों को स्वास्थ्य प्रदान कयिा, हर प्रकार की बीमारयिों का इलाज कयिा, लोगों में हर दुर्बलता और हर घाव को ठीक कयिा, और दुष्ट आत्माओं को भगाया। उन्होंने न केवल लोगों बल्कि पशुओं को भी मदद की, और बदले में कसिी से कुछ भी नहीं लयिा: क्योंकि उन्होंने यह सब लाभ के लिए नहीं, न ही सोने और चांदी से खुद को समृद्ध करने के लिए कयिा, बल्कि ईश्वर के लिए कयिा, और अपने पड़ोसयिों के प्रति प्रेम के माध्यम से उनकी प्रति अपने प्रेम को व्यक्त करना चाहते थे। न ही उन्होंने लोगों के बीच इस उपचार के माध्यम से अपनी महमिा की खोज की, बल्कि परमेश्वर की महमिा की; और उन्होंने उन बीमारयिों को प्रभु के नाम की महमिा करने के लिए ठीक कयिा, जसिने उन्हें ऐसी उपचार शक्ति प्रदान की थी। वे बीमारयिों का इलाज जड़ी-बूटयिों से नहीं बल्कि प्रभु के नाम में, बनिा कसिी भुगतान या पुरस्कार के, नःशुल्क, मसीह की आज्ञा के पालन में करते थे: *'तुमने नःशुल्क प्राप्त कयिा है, नःशुल्क दो'* (मत्ती 10:8)[7497] । इसीलिए वश्विासयिों ने उन्हें 'बनिा वेतन के डॉक्टर' और 'जो लाभ नहीं चाहते' कहा। इतनी पुण्यपूर्ण जीवन यापन करने के बाद, वे शांति और धार्मकिता से परलोक सधिार गए। वे न केवल अपने जीवनकाल में, बल्कि मृत्यु के बाद भी कई चमत्कारों के लिए प्रसद्धि हुए, और वे हमारे आध्यात्मकि तथा शारीरकि दोनों तरह के रोगों के दयालु उपचारक और सहृदय मध्यस्थ हैं।

उनकी सांसारकिता से परे रहने और बनिा शुल्क चकित्सिा करने के संबंध में एक कथा है।

पैलाडयिा नाम की एक महलिा कई वर्षों से बस्तिर पर पड़ी थी और उसे वभिन्नि डॉक्टरों से कोई मदद नहीं मलिी थी। संत कोस्मास और डैमयिन के बारे में सुनकर, कि वे हर तरह की बीमारयिों को ठीक करते थे, उसने उन्हें एक अनुरोध भेजा, जसिमें उनसे अनुरोध कयिा गया कि वे उसकी मृत्यु से पहले उससे मलिें। संतों ने इस नविेदन को मानते हुए, उसके घर गए, और तुरंत ही यह महलिा, अपने वश्विास के बल पर, पवत्रि चकित्सिकों के आगमन से चंगी हो गई और अच्छे स्वास्थ्य के साथ उठ खड़ी हुई, और ईश्वर की महमिा करने लगी कि उसने अपने सेवकों पर चंगाई की ऐसी कृपा प्रदान की। इस दयालुता के कार्य के लिए अपने उपचारकों की कृतज्ञता के रूप में, वह उन्हें एक उपहार देना चाहती थी। लेकनि उन्होंने कभी भी कसिी से कुछ स्वीकार नहीं कयिा, क्योंकि उन्होंने ईश्वर से प्राप्त अनुग्रह को नहीं बेचा था। उस महलिा ने संकल्प लयिा कि वह उनमें से कम से कम एक से तो अपने छोटे से उपहार को स्वीकार करवा ही लेगी; तीन अंडे लेकर, वह चुपके से संत डेमयिन के पास गई और पवत्रि त्रमिूर्ति के नाम पर इन तीन अंडों को स्वीकार करने के लिए ईश्वर के नाम पर उनसे वनिती की। त्रमिूर्ति ईश्वर का नाम सुनते ही, डेमयिन ने उस महलिा से यह छोटा सा उपहार स्वीकार कर

[7496] एशयिा, या एशयिा माइनर – प्राचीन काल में इस नाम का उपयोग उसी अर्थ में नहीं कयिा जाता था। मूल रूप से, यह लडियिा में एक छोटे, जल-समृद्ध, दलदली मैदान को संदर्भति करता था, यानी एजयिन सागर के पूर्वी तट पर, आज के एशयिा माइनर प्रायद्वीप के पश्चमिी भाग के केंद्रीय हस्सिे को। रोमनों ने उपर्युक्त प्रायद्वीप को दो लगभग बराबर भागों में वभिाजति कयिा: उत्तरी-पूर्वी भाग, जो काला सागर से सटा हुआ था, उसे पोंटस कहा जाता था, जबकि दक्षणि-पश्चमिी भाग को एशयिा प्रॉपर कहा जाता था; प्रत्येक भाग को कई (जो हमेशा एक समान संख्या में नहीं थे) प्रांतों में वभिाजति कयिा गया था; ईसाई धर्म की स्थापना के बाद, इनमें से प्रत्येक प्रांत को, बारी-बारी से, धार्मकि रूप से कई बशिप क्षेत्रों में वभिाजति कयिा गया था (प्रकाशतिवाक्य की पुस्तक एशयिा में सात चर्चों का उल्लेख करती है – प्रकाशतिवाक्य 1:4–11)। समय के साथ, 'एशयिा' नाम का प्रयोग पूरे वर्तमान एशयिा माइनर प्रायद्वीप और अंततः यूरोप के पूर्व में स्थति, उसी महाद्वीप के संपूर्ण वश्विव क्षेत्र पर होने लगा।

[7497] शब्द 'tune' का अर्थ है 'मुफ्त', 'बनिा भुगतान के'।

लयिा, उस गंभीर शपथ के वास्ते जसिसे उसने उसे बाँध दयिा था। बाद में यह जानने पर संत कोस्मास को बहुत दुख हुआ और अपनी मृत्यु से पहले, उन्होंने एक वसीयत बनाई जसिमें यह शर्त थी कि डेमयिन को उनके बगल में दफनाया न जाए, क्योंकि उसने प्रभु की आज्ञा तोड़ी थी और एक महलिा से उपचार के लिए इनाम स्वीकार कयिा था।

संत कोस्मास प्रभु में नदि्रति हो गए, और समय आने पर डेमयिन का भी नधिन हो गया, और वह इस क्षणकि जीवन को त्यागकर शाश्वत जीवन में चले गए।

लोग इस दुवधिा में थे कि डेमयिन को कहाँ दफनाया जाए, क्योंकि वे संत कोसमस की वसीयत के बारे में जानते थे और उनके भाई को उनके बगल में रखने की हम्मित नहीं कर रहे थे।

जब वे इस पर वचिार कर रहे थे, तो अचानक एक ऊँट प्रकट हुआ, जसिे पहले एक राक्षस ने वश में कर लयिा था और जसिे संतों ने चंगा कयिा था। उसने मानव आवाज़ में उनसे कहा कि वे डेमयिन को कोसमस के पास लेटने में संकोच न करें, क्योंकि उसने उस महलिा से तीन अंडे इनाम के लिए नहीं, बल्कि ईश्वर के नाम के लिए लिए थे।

इस प्रकार, उनके पवत्रि अवशेष 'Fereman[7498] ' नामक स्थान पर एक साथ दफनाए गए।

एक दनि, फसल काटने के दौरान, एक स्थानीय व्यक्ति अपने खेत की फसल काटने गया। तपती धूप से थका हुआ और आराम करने की इच्छा से, वह एक ओक के पेड़ के नीचे गया, लेट गया और गहरी नींद में सो गया। जब वह सो रहा था, तो एक साँप उसके खुले मुँह में रेंग गया। जागने पर, कसिान को तुरंत कोई दर्द महसूस नहीं हुआ, इसलिए वह अपने खेत में फरि से काम करने लगा। हालांकि, जैसे ही शाम हुई, जब कसिान घर लौटा और रात के खाने के बाद बस्तिर पर लेट गया, तो उसे भयानक दर्द महसूस हुआ क्योंकि साँप उसके अंदर के अंगों को चबाने लगा। इस यातना को सहन न कर पाकर, पीड़ति चल्लिाने लगा, जसिसे पूरे घर वाले उनकी नींद से जाग गए। वे उसके पास आए और उसकी भयानक पीड़ा देखकर, वे कसिी भी तरह से उसकी मदद नहीं कर सके; वे यह भी नहीं समझ सके कि यह कसि तरह की बीमारी थी। तब उस बीमार व्यक्ति ने, अपने आस-पास के लोगों से कोई मदद न पाकर, अपने शीघ्र सहायकों, कोस्मास और डैमयिन की ओर रुख कयिा और पुकार लगाई: 'हे पवत्रि चकित्सिकों, कोस्मास और डैमयिन, मेरी मदद करो!' संत तुरंत उसकी सहायता के लिए दौड़े: बीमार व्यक्ति गिहरी नींद में चला गया, और जब वह सो रहा था, तो उसके मुंह से एक सांप रेंगकर बाहर नकिला। इस चमत्कार को देखने वाले वस्मिति हो गए और उन्होंने पवत्रि शहीदों की महमिा की। जब सांप बाहर नकिल गया, तो वह व्यक्ति तुरंत जाग गया और पवत्रि नःशुल्क चकित्सिकों की मदद से वह पूरी तरह से स्वस्थ हो गया।

उस स्थान पर मलख नाम का एक और व्यक्ति था। वह फेरमान में पवत्रि चकित्सिकों, कोस्मास और डेमयिन के चर्च के पास रहता था। एक लंबी यात्रा पर नकिलने का इरादा करके, वह अपनी पत्नी को चर्च ले गया और उससे कहा:

'मैं एक लंबी यात्रा पर जा रहा हूँ, और मैं तुम्हें कोस्मास और डेमयिन की सुरक्षा में सौंपता हूँ: तब तक घर पर रहो जब तक मैं तुम्हें अपनी कुशलता का तय कयिा हुआ संकेत न भेजूँ, जसिे तुम मेरे द्वारा भेजा हुआ पहचान लोगी। और अगर ईश्वर चाहेगा, तो मैं तुम्हें यह संकेत भेजूँगा और तुम्हें अपने साथ ले जाऊँगा।'

इस प्रकार अपनी पत्नी को संतों के हवाले कर, मलख अपनी यात्रा पर नकिल पड़ा। कुछ दनिों बाद, शैतान ने उसकी जान-पहचान के एक आदमी का रूप धारण कयिा और मलख की पत्नी के पास आकर, उसे वह नशिान दखिाया जसिका इंतज़ार करने के लिए उसके पति ने कहा था, और कहा: 'मैं तुम्हें एक नशिान भेजूँगा और तुम्हें अपने पास ले जाऊँगा।'

यह चह्नि दखिाकर, शैतान ने उसे अपने पति के पास उसके पीछे चलने का आदेश दयिा।

उसने कहा, 'मुझे तुम्हारे पति ने तुम्हें लेने और उनके पास लाने के लिए भेजा है।'

उस महलिा ने उत्तर दयिा:

'मैं इस नशिान को जानती हूँ, लेकनि मैं जाना नहीं चाहती, क्योंकि मुझे पवत्रि नःशुल्क चकित्सिक कोस्मास और डैमयिन के हवाले कयिा गया है; और अगर आप चाहते हैं कि मैं आपके साथ अपने पति के पास जाऊँ, तो मेरे साथ संतों के चर्च में चलिए, वेदी के कनिारे को पकड़कर मुझसे कसम खाइए कि आप रास्ते में मुझे कोई नुकसान नहीं पहुँचाएंगे।'

शैतान ने यह वादा कयिा और, उसके साथ चर्च के पास आकर, वेदी के कनिारे को पकड़कर शपथ ली, और कहा:

[7498] फेरेमन मेसोपोटामयिा में स्थति था, जो अमदि (जसिे तुर्की में दयारबाकरि के नाम से जाना जाता है, जो टाइग्रसि नदी के ऊपरी इलाकों में है) से दो दनि की यात्रा पर था, और तुर्कों ने अपनी शुरुआती वजियों के दौरान इसे नष्ट कर दयिा था; उस समय, संत कोस्मास और डेमयिन के अवशेष अमदि में स्थानांतरति कर दिए गए थे, जहाँ वे आज भी मौजूद हैं।

'मैं कोस्मास और डेमयिन की शक्तयिों की कसम खाता हूँ– मैं रास्ते में तुम्हें कोई नुकसान नहीं पहुँचाऊँगा, लेकनि मैं तुम्हें तुम्हारे पतकि पास ले जाऊँगा।'

उस महलिा ने शपथ सुनकर, उस छलकपटी राक्षस पर वशि्वास कर लयिा, जो एक परचिति आदमी के रूप में प्रकट हुआ था, और उसके साथ यात्रा पर नकिल पड़ी। हालाँकि, प्रलोभी ने उस पर कब्ज़ा कर लयिा और उसे एक सुनसान और दुर्गम स्थान पर ले गया, ताकि वहाँ उस पर हमला करके उसे मार सके। खुद को मुश्कलि हालात में देखकर, उसने अपनी आँखें आसमान की ओर उठाईं और अपने दलि की गहराई से ईश्वर से पुकार लगाई, यह कहते हुए:

'हे ईश्वर, अपने संतों कोस्मास और डैमयिन की प्रार्थनाओं के द्वारा, मेरी सहायता करो और मुझे इस हत्यारे के हाथों से छुड़ाने में शीघ्रता करो!'

और तुरंत ही, शीघ्र सहायता करने वाले प्रकट हुए: पवत्रि नःिशुल्क चकित्सिक, कोस्मास और डैमयिन। उन्हें देखकर शैतान उस महलिा को छोड़कर भाग गया; एक ऊँचे कनिारे पर चढ़कर, वह गहरी खाई में कूद गया और गायब हो गया, जबकि संत उस महलिा को लेकर उसे उसके घर वापस ले गए।

उस महलिा ने उनके सामने झुककर कहा:

'मैं आपको, हे स्वामनिो, कृतघ्नता से मुक्ति दलिाने के लिए धन्यवाद देती हूँ। मैं आपसे वनिती करती हूँ—मुझे बताइए कि आप कौन हैं, ताकि मैं जान सकूँ कि मुझे अपने शेष जीवन के लिए कसिका आभार मानना चाहिए।'

उन्होंने उत्तर दयिा:

'हम मसीह के सेवक, कोस्मास और डैमयिन हैं, जनिके हवाले आपके पतनि े आपको अपनी यात्रा पर नकिलने से पहले कयिा था; इसीलिए हम आपकी सहायता के लिए दौड़े और ईश्वर की कृपा से आपको शैतान से मुक्त कराया।'

यह सुनकर, वह महलिा भय और आनंद से जमीन पर गरि पड़ी, जबकि संत अदृश्य हो गए। और उस स्त्री ने परमेश्वर और उनके पवत्रि सेवकों, कोस्मास और डामयिन की स्तुति और धन्यवाद करते हुए पुकारा। चर्च पहुँचने पर, वह रोती हुई संतों की प्रतमिा के सामने गरि पड़ी और सबको बताया कि क्या हुआ था - कि कैसे प्रभु ने अपने संतों की प्रार्थनाओं के द्वारा उस पर दया दखिाई। और उसने इन शब्दों के साथ प्रार्थना की:

'हे हमारे पूर्वजों के परमेश्वर, अब्राहम, इसहाक, याकूब, और उनके धर्मी वंशज! तूने तीन जवानों के लिए आग की भट्टी को बुझा दयिा; तूने अपनी दासी थेक्ला की परीक्षा में उसकी मदद की; मैं तुझे धन्यवाद देती हूँ कि तूने मुझे, एक पापी को भी, कोस्मास और डैमयिन के द्वारा, जो तुझे प्रसन्न हुए, शैतान के जाल से बचाया है। मैं आपकी आराधना करती हूँ, जो अद्भुत और महमिामय चमत्कार करते हैं, और मैं आपको, पति, पुत्र और पवत्रि आत्मा को, युगों-युगों तक महमिा देती हूँ। आमीन।

पवत्रि शहीदों कैसरयिस और डैसयिस का स्मरणोत्सव

1 नवंबर को स्मरण कयिा जाता है

संत कैसरयिस और दासयिस को दमश्कि नगर में पकड़ा गया था[7499] , और वभिन्नि यातनाओं के बावजूद उन्होंने ईसाई धर्म का त्याग नहीं कयिा, जसिके लिए उन्हें तलवार से सरि कलम कर दयिा गया और शहादत के मुकुट प्राप्त हुए[7500] ।

पवत्रि शहीद एर्मनिगिेलड, गोथों के राजकुमार का दुख

1 नवंबर को स्मरणोत्सव

[7499] दमास्कस सीरयिा का प्रमुख और सबसे अमीर व्यापारकि शहर है; यह फलिस्तिीन के उत्तर-पूर्व में, बराद नदी के तट पर स्थति है, जो इसके बीच से होकर बहती है, और यह एंटी-लेबनान पहाड़ों के पूर्वी ढलान पर एक सुंदर और उपजाऊ मैदान में है। वर्तमान में, दमश्कि, जो उस्मानी साम्राज्य का हस्सिा है, एशयिा के सबसे अमीर शहरों में से एक है और इसकी आबादी 1,50,000 तक थी।

[7500] मुसलमानों द्वारा दमश्कि पर कब्जा करने के दौरान (7वीं शताब्दी) संतों ने शहादत दी। संत कैसरयिस और डैसयिस के साथ शहादत पाने वालों के नाम इस प्रकार हैं: सव्वा, सवनिीयन, एग्रप्पिा, एड्रयिन और थॉमस।

गोथकि राजा[7501] के पुत्र लयिोवगिलि्ड[7502] , एर्मनिगिेल्ट[7503] को स्पेनशि बशिप लयिंडर द्वारा एरयिन वधिर्म से ऑर्थोडॉक्स धर्म में परविर्तति कयिा गया था। लयिोवगिलि्ड, जो स्वयं एक एरयिन था, इस बात से परेशान था कि उसके बेटे ने एरयिन वधिर्म को छोड़ दयिा था, और उसने उसे ऑर्थोडॉक्सी से दूर करने और वापस अपने वधिर्म में लाने की कोशशि की। उसने एक पति की तरह उसे नरम शब्दों में मनाने की कोशशि की, उसे कैथोलकि धर्म छोड़ने और पहले की तरह ही सोचे के लिए वनिती और उपदेश दयिा। लेकनि जब उसने अपने बेटे की दृढ़ता देखी, तो वह उसे यातना और घावों की धमकयिों से डराने लगा। फरि भी, बेटा अपने धर्म में एक स्तंभ की तरह अडगि रहा, और न तो अपने पति की चापलूसी और न ही उसकी धमकयिों पर ध्यान दयिा। लयिोवगिलि्ड, उससे भयंकर क्रोध में जलते हुए, ने पहले अपने बेटे से शाही सहिासन और सह-राज्यपाल का पद, उसकी वरिासत और उसकी सारी संपत्ति छीन ली; फरि, जब उसने उसके मन में कोई बदलाव नहीं देखा, तो उसने उसकी गर्दन, हाथ और पैरों को लोहे की बेड़यिों में जकड़ दयिा और उसे एक तंग और अंधेरी कोठरी में डाल दयिा। लेकनि धन्य एर्मनिगिलि्ड, यद्यपि आयु में युवा था, पर मन से परपिक्व था: उसने सांसारकि राजपाट को दरकनिार कर, अपनी पूरी आत्मा से स्वर्गीय राज्य की खोज की, और, कालकोठरी में बंधा पड़ा, उसने सर्वशक्तमिान ईश्वर से प्रार्थना की कि वह इस पीड़ा में उसे मजबूत बनाए। जैसे ही पवत्रि ईस्टर का महान पर्व नकिट आया, राजा लयिोवगिलि्ड ने एक एरयिन बशिप को बुलाया और उसे रात में अपने बेटे के पास कालकोठरी में भेजा, ताकि एर्मनिगिेल्ड इस बशिप के हाथों से उनका एरयिन संस्कार ग्रहण कर ले : और यदि वह उसे ग्रहण कर लेता, तो उसने अपना पूर्व पतित्वपूर्ण स्नेह और सम्मान बहाल करने का वादा कयिा। लेकनि पवत्रि शहीद ने क्रोधपूर्वक एरयिन बशिप को अस्वीकार कर दयिा और बहादुरी से उसकी वधिर्म की नदिा की, तथा वधिर्मी संप्रदाय का भोग ग्रहण करने से इनकार करते हुए उसे भगा दयिा। उसे एक नश्चिति ऑर्थोडॉक्स पुरोहति द्वारा मसीह के शरीर और रक्त के परम शुद्ध और जीवन-दायक रहस्य प्रदान कएि गए, जसिे संत लडियिन बशिप ने गुप्त रूप से उसके पास भेजा था; जबकि एरयिन बशिप अपमानति होकर अपने पति के पास लौट आया और उसे वह सब कुछ सुनाया जो उसने अपने बेटे से सुना था। तब राजा, अकथनीय क्रोध से भरकर और दाँत पीसते हुए, तुरंत अपने बोयारों (अधकिारयिों) में से भरोसेमंद लोगों को भेजा, और उन्हें अपने बेटे एर्मनिगिेल्ट को उसके कालकोठरी में मार डालने का आदेश दयिा; वे गए और उन्होंने एक कुल्हाड़ी से उसका उत्तम सरि काट दयिा। और उसके पवत्रि शरीर पर स्वर्गदूतों की मधुरतम आवाज़ें गाते हुए सुनी जा सकती थीं, और सारी रात मोमबत्तयिाँ जलती हुई देखी गईं। यह देखकर वश्विासयिों ने आनंद मनाया और परमेश्वर का धन्यवाद कयिा, जसिने अपने शहीद की मृत्यु के बाद अपने ऑर्थोडॉक्स सेवक को ऐसे चमत्कारों से महमिामय कयिा; हालाँकि, अवश्विासयिों को शर्म आई और वे भय से भर गए। शशिु-हत्यारे—पति, एक नर्दिोष बच्चे की हत्या करने के लिए पश्चाताप करते हुए—शोक से बीमार पड़ गया; वह एरयिनवाद को त्यागकर ऑर्थोडॉक्स धर्म अपनाना चाहता था, लेकनि एरयिनों से डरता था और इस प्रकार उसे वश्विासयिों में गनिा जाने योग्य नहीं समझा गया। जब उसकी मृत्यु नकिट आई, तो उसने सम्मानपूर्वक लीयांडर को अपने पास बुलाया, जो उस समय एक बशिप थे, लयिांडर—जसिे वह पहले नापसंद करता था और सताता था—और उससे वनिती की कि वह अपने छोटे बेटे, रेचाडर, जसिे उसने अपने राज्य का उत्तराधकिारी

[7501] गोथ लोग डेन्यूब नदी के पूर्व में रहते थे और डनिीस्टर नदी द्वारा ओस्ट्रोगोथ और वसिगिोथ में वभिाजति थे। 3वीं शताब्दी ईस्वी के बाद से, उन्होंने रोमनों के साथ बातचीत शुरू कर दी, जनि पर उन्होंने लगातार हमला कयिा, और धीरे-धीरे उनसे ईसाई धर्म अपना लयिा। चौथी शताब्दी के दूसरे भाग में, एशयिा से आए हूणों के दबाव में, वसिगिोथों को रोमन साम्राज्य के भीतर थ्रेस में बसाने की अनुमति दी गई, इस शर्त पर कि वे सभी ईसाई धर्म अपना लें। उनके बीच ईसाई धर्म एरयिनवाद के रूप में फैला। रोमन साम्राज्य से नष्किासति होने के बाद, वसिगिोथ अपने साथ एरयिनवाद स्पेन ले आए, जहाँ उन्होंने 415 में अपना खुद का साम्राज्य स्थापति कयिा। यहीं पर इस संतों के जीवनचरति में वर्णति घटनाएँ बाद में घटीं।

[7502] उन्होंने छठी शताब्दी के उत्तरार्ध में शासन कयिा। उन्होंने अपने बेटे, सेंट एर्मनिीगेल्ड को सह-शासक बनाया, और सेवलि को अपनी सरकार का मुख्यालय नयिुक्त कयिा, जबकि वे स्वयं टोलेडो (स्पेनशि शहर) में रहते थे।

[7503] इस वधिर्म का नाम अलेक्जेंड्रयिा के एक पादरी, अरउिस के नाम पर पड़ा, जो चौथी शताब्दी में रहते थे। मानव मन के लिए जो कुछ भी अकल्पनीय था, उसे ईसाई त्रमिूर्ति के सद्धिांत से हटाने का प्रयास करते हुए, एरयिस ने यह सखिाया कि परमेश्वर का पुत्र परमपति परमेश्वर के सार से शाश्वत रूप से उत्पन्न नहीं हुआ था, बल्कि समय में शून्य से उसी द्वारा बनाया गया था, और वह न तो उसी सार का था और न ही समान सम्मान का था। इस वधिर्म में गुप्त रूप से यीशु मसीह की दव्यिता और उनके माध्यम से हमारे उद्धार के नर्णिायक इनकार का समावेश था; संक्षेप में, यह पूरे मसीही धर्म का उखाड़ फेंकना था। एरयिनवाद पूर्वी और पश्चमिी दोनों मसीही जगत में व्यापक रूप से फैला हुआ था। इसने लंबे समय तक लोगों के मन को परेशान कयिा और चर्च के भीतर उथल-पुथल मचाई – यहाँ तक कि 325 में नकियिा के प्रथम सार्वभौमकि परषिद में इसकी नदिा कएि जाने के बाद भी। इस वधिर्म को परषिद में और उसके बाद, दोनों ही जगह अपना सबसे मजबूत और सबसे उत्साही वरिोधी सेंट एलेक्जेंड्रयिा के अथेनासयिस के रूप में मलिा।

बनाया था, को अपनी दव्यि प्रेरति शक्षिा के माध्यम से ऑर्थोडॉक्स धर्म में शक्षिति करे, ठीक वैसे ही जैसे उसने एर्मगिेल्ट के साथ कयि था। लयिोवगिलि्ड की मृत्यु हो गई, और सहिासन पर बैठने पर रेकाडर ने, बशिप सेंट लयिांडर के नर्दिेशानुसार, तुरंत ऑर्थोडॉक्स धर्म को अपना लयि, और गोथों के पूरे देश[7504] को सच्चे धर्म की ओर ले गया, जो पहले एरयिन वधिर्म से प्रभावति था। उन्होंने अपने बड़े भाई सेंट एर्मनिगिेल्ट के शरीर को मसीह के एक शहीद के लिए नर्धिारति सम्मान से सम्माननति कयि, जनिमें सुसमाचार के वचन पूरे हुए: *'यदि गेहूँ का दाना पृथ्वी में गरिकर नष्ट न हो, तो वह अकेला ही रहता है; परन्तु यदि वह नष्ट हो जाए, तो बहुत फल उपजाता है'* (यूहन्ना 12:24)। क्योंकि मसीह के लिए इस पीड़ति ने, गेहूँ के दाने की तरह, गोथों में मसीह के लिए मरने वाले एकमात्र व्यक्ति के रूप में जीवन दयि; फरि भी उसकी मृत्यु का फल उस भूमि के संपूर्ण लोगों का ऑर्थोडॉक्स जीवन था: सभी ने ऑर्थोडॉक्स वश्विास में मसीह परमेश्वर में वश्विास करना शुरू कर दयि, जो पति और पवत्रि आत्मा के समान सार का और समान सम्मान का है; उसको युगानुयुग महमिा हो, आमीन।

पवत्रि शहीदों करिएिना और जुलयिाना का स्मरणोत्सव।

1 नवंबर को स्मरण कयि जाता है

पवत्रि महलिाएँ करिएिना और जुलयिाना ने सम्राट मैक्समियिन के शासनकाल में[7505] कष्ट सहे। करिएिना सलिसियि क्षेत्र के तारसस शहर की थीं, जबकि जुलयिाना रोसोन शहर की थीं[7506]। ईसाई धर्म की घोषणा करने के लिए, उन्हें राज्यपाल मार्शयिन द्वारा गरिफ्तार कयि गया, जसिने उन्हें मसीह का त्याग करने के लिए मजबूर कयि। सच्चे धर्म में उनकी दृढ़ता के कारण, मार्शयिन ने धर्मद्रोही सैनकिों को आदेश दयि कि वे करिएिना के बाल काट दें, उसकी पलकों को चीर दें और, उसे नग्न करके, तारसूस शहर में घुमाएँ[7507]। फरि उसे, सेंट जूलयिानयि के साथ, रॉसन शहर ले जाया गया, जहाँ उन्हें खंभे पर जला दयि गया।

पवत्रि शहीदों जॉन और जेम्स की स्मृति

1 नवंबर को स्मरणोत्सव

संत जॉन और जेम्स—पहले एक बशिप और दूसरे एक पुरोहति—शापूर द पर्शयिन के शासनकाल में थे[7508]। उन्होंने कई लोगों को धर्मपरायणता की ओर प्रेरति कयि, जसिके लिए उन्हें राजा द्वारा पकड़ लयि गया और वभिन्नि कष्टों और यातनाओं से गुज़रना पड़ा। अपनी यातनाओं के बाद, उन्हें तलवार से सरि कलम कर दयि गया।

15 नवंबर

2 नवंबर (पुराना संस्करण)

[7504] संत एर्मनिगिेल्ट की 586 में शहीद होकर मृत्यु हो गई, और 589 में, टोलेडो की परषिद में, गोथों ने एरयिनवाद का परत्यिाग कर दयि और ऑर्थोडॉक्सी को अपना लयि।

[7505] यह, बेशक, मैक्समियिन गैलेरयिस को संदर्भति करता है, जो पहले डायोक्लेटयिन के साथ सह-शासक थे और फरि 305 से 311 तक रोमन साम्राज्य के पूर्वी भाग के सम्राट थे।

[7506] टारसस, एशयि माइनर के एक दक्षणि-पूर्वी क्षेत्र, सलिसियि की प्राचीन राजधानी, अब टैसो या टारसस के नाम से जानी जाती है। यह शहर प्रेरति पौलुस का जन्मस्थान था। रोसन या रोस सीरयि में एंटओिक के थोड़ा उत्तर में स्थति है।

[7507] संत बेसलि के कैलेंडर के अनुसार, संत करिएिना को नग्न अवस्था में एक गधे पर बठिाकर ले जाया गया, और फरि आवारा बच्चों ने उसे लाठयिों से पीटा। लेकनि संत, अपनी प्रार्थनाओं के द्वारा, लोगों को नग्न नहीं दखिाई दीं।

[7508] साpor II, जन्हिें महान के नाम से जाना जाता है, एक फारसी राजा थे जन्हिोंने 310 से 381 ईस्वी तक शासन कयि; वे रोमनों के खलिाफ अपनी सफल युद्धों के लिए जाने जाते हैं; वे ईसाई धर्म के एक क्रूर उत्पीड़क थे।

पवत्रि शहीदों अकदिनि, पगिासयिस और अनेमपोडस्टिस का कष्टकथा

2 नवंबर को स्मरण कयिा जाता है

जब फ़ारसी राजा सapor[7509] , मूर्तपिूजा से अंधा[7510] और हर तरह के अत्याचार से भरा हुआ, ने अपनी भूमि में ईसाइयों के खलिाफ एक बड़ा उत्पीड़न शुरू कयिा, तो उस समय उसके दरबारयिों में तीन गुप्त ईसाई थे: अकदिनि, पगिासयिस और एनेम्पोडस्टिस। वे गुप्त रूप से मसीह की सेवा करते थे, और अपनी गुप्त शक्षिाओं के माध्यम से उन्होंने कई लोगों को उसी धर्मपरायणता की ओर ले गए। कुछ लोगों ने इन तीनों संतों पर राजा के सामने नदिा की, यह दावा करते हुए कि केवल वे स्वयं सूली पर चढ़ाए गए मसीह में वश्विास करते थे, बल्कि वे उसी वश्विास को वषि की तरह दूसरों में भी फैला रहे थे।

राजा ने नदिकों से क्रोधति होकर कहा:

'इतने लंबे समय से ऐसे लोगों को जानते हुए भी, तुमने मुझे उनकी सूचना क्यों नहीं दी या उन्हें मेरे सामने क्यों नहीं लाया?'

उन्होंने उत्तर दयिा:

'हे महान राजा! यदि आप आज्ञा दें, तो हम उन्हें तुरंत आपके सामने ले आएँगे।'

राजा ने तुरंत ऐसा आदेश दयिा, और वे उन्हें लाने चले गए। जब वे उस घर के पास पहुँचे जहाँ संत ठहरे हुए थे, तो उन्होंने दरवाजे़ बंद पाए; क्योंकि प्रभु के वफादार सेवक प्रार्थना में लगे हुए थे और परमेश्वर से बात करते समय उन लोगों के लिए दरवाजे़ खोलना नहीं चाहते थे। उन्होंने दरवाजे़ तोड़ दिए, संतों को पकड़ लयिा, उन्हें बाँध दयिा, और राजा के सामने ले आए।

संतों को देखकर राजा ने कोमलता से पूछना शुरू कयिा:

'तुम कहाँ से हो, मेरे बच्चों?'

संतों ने उत्तर दयिा:

'हे राजा, क्या आप हमसे हमारे स्वदेश के बारे में पूछ रहे हैं? हमारा स्वदेश और हमारा जीवन परम पवत्रि, एकसार और अवभिाज्य त्रमिूर्ति, पिता, पुत्र और पवत्रि आत्मा, एकमात्र ईश्वर हैं।'

राजा ने कहा:

'तुम मेरे सामने कसिी दूसरे ईश्वर की घोषणा करने की हम्मित करने के लिए अत्यंत अभद्र हो, क्योंकि तुमने अभी तक यह अनुभव नहीं कयिा है कि घाव और वभिन्नि प्रकार की यातनाएँ क्या होती हैं।'

संतों ने उत्तर दयिा:

'हम अपने ईश्वर में अपनी आशा के कारण नडिर हैं और उनके लिए कसिी भी घाव और यातना को सहने के लिए तैयार हैं; यदि आप हमारी बातों पर वश्विास नहीं करते हैं, तो हमें आज़माएँ: हमें घाव लगाएँ, जो भी यातना आप चाहें हमें दें – और आप देखेंगे कि क्या हम अपने ईश्वर का त्याग करेंगे।'

जैसे ही संतों ने एक ईश्वर की महमिा करते हुए और राजा की मूर्तपिूजा की नदिा करते हुए और भी बातें कहीं, राजा क्रोधति हो गया और आदेश दयिा कि उनमें से प्रत्येक को, मुँह के बल जमीन पर लटिाकर, चार आदमयिों द्वारा गाँठदार लाठयिों से पीटा जाए। हालाँकि, संतों ने पटिाई के बीच ईश्वर का आशीर्वाद लयिा, और एक स्वर में कहा:

'हे प्रभु, हम पर दृष्टि कर; मौन न रह, और हमें न छोड़, ताकि सब तेरे दाहनि हाथ की सामर्थ्य को जान लें; और हे प्रभु, तू स्वयं हमारी सहायता कर।'

जब संतों ने अपने यातनाओं के बीच ऐसा भजन गाया, तो जल्लाद थक गए, और राजा ने उन्हें पीटना जारी रखने के लिए दूसरों को नयिुक्त कयिा। और उन्होंने शहीदों को बहुत देर तक पीटा, कि यदि ईश्वर स्वयं उनके जीवन को सहारा न

[7509] पवत्रि धर्मग्रंथ में, फारसयिों को एलामाइट कहा जाता है, क्योंकि वे शेम के पुत्र एलाम की संतान थे। वे एशयिा में, फारस की खाड़ी के पास रहते थे (जो अरब प्रायद्वीप और मुख्य भूमि से घरिी हुई है)। यहाँ उल्लेखति राजा सावर - शायद सावर द्वतिीय - चौथी शताब्दी में रहते थे। वह अपने ईसाई प्रजा को अपने दुश्मनों - रोमनों - का गुप्त सहयोगी मानने का इच्छुक था। कुछ स्रोतों के अनुसार अकदिनि, पगिासयिस, अनेमपोडस्टिस और अन्य की शहादत 330 में हुई, और अन्य के अनुसार, 345 में हुई।

[7510] फ़ारसी लोग मथि्रा, या सूर्य, को अपना सर्वोच्च देवता मानते थे। वे अग्नि की भी पूजा करते थे और दो देवताओं को मानते थे: ओर्मुज्द, जो सभी अच्छाइयों का स्रष्टा है, और अहुरमज्द, जो सभी बुराइयों का कारण है। ज़रतुष्ट्र को इस धर्म का संस्थापक माना जाता है, और फ़ारसयिों का मुख्य पवत्रि ग्रंथ ज़ेन्द-अवेस्ता है।

देते, तो वे इतनी लंबी पिटाई से मर ही गए होते। राजा, उनके धैर्य में ऐसी दृढ़ता देखकर—कि वे न तो चिल्लाए और न ही उनकी ताकत खत्म हुई—हैरान रह गया; उस पर एक तरह का आतंक छा गया, और वह अपने शाही सिंहासन से गिर पड़ा। हालाँकि, संतों ने उससे चिल्लाकर कहा:

'हमारा प्रभु, जिसने तुम्हें जीवन दिया है, तुम्हें एक बार फिर से बल दे रहा है, ताकि हमारे द्वारा तुम उसकी शक्ति को देख सको।'

उसके आसपास के लोग सोचने लगे कि राजा ने खुद को मार डाला है, इसलिए वे दौड़कर आए और उसे उठा लिया। वह मुश्किल से जीवित था और मुश्किल से ही होश में आया। उसके बाद, साँपों और भी अधिक क्रोधित हो गया, यह सोचकर कि शहीदों ने किसी प्रकार की जादू-टोने से यह सब उसके साथ किया था; क्योंकि दुष्ट लोग, जो स्वयं पूरी तरह से राक्षसों के प्रभाव में थे, हमेशा संतों द्वारा किए गए ईश्वर के अद्भुत चमत्कारों को जादू-टोने और तंत्र-मंत्र का परिणाम मानते थे। उस अधर्मी राजा ने पवित्र शहीदों को फाँसी देने और उनके नीचे एक भड़कती हुई आग जलाने का आदेश दिया, ताकि वे अपनी ज़ंजीरों और आग के कष्टों के बीच अपनी आत्माएँ त्यागकर नष्ट हो जाएँ।

पवित्र संत, वहाँ लंबे समय तक लटके रहने के बाद, गाने लगे:

– हे हमारी आत्मा के प्रकाश और हमारे सृष्टिकर्ता, जिनके साथ हमारे लिए विश्वासघात किया गया, जिन पर थूक दिया गया, जिनका अपमान किया गया, जिन्हें एक अपराधी की तरह एक वृक्ष पर लटकाया गया, फिर भी हे प्रभु! आप सभी चीजों को अपने दहिने हाथ में धारण करते हैं। अब आओ और हमारे दुख को देखो, और हमें अपना उद्धार दिखाओ; हमारी पीड़ा पर दृष्टि करो और हम पर दया करो; सभी को यह स्पष्ट कर दो कि हम तुम्हारे—स्वर्ग में एकमात्र ईश्वर—के हैं।

और तुरंत प्रभु मानव रूप में उनके सामने प्रकट हुए, उनका मुख सूर्य के समान प्रकाशमान था: उनके प्रकट होते ही, बेड़ियाँ टूट गईं, आग बुझ गई, और संत स्वस्थ हो गए। प्रभु को देखकर, वे अनुत्तरनीय आनन्द से भर गए, जबकि प्रभु फिर से अदृश्य हो गए। और संत राजा के सामने ऐसे खड़े थे मानो उन्होंने कोई यातना ही न झेली हो। राजा, उन्हें अच्छे स्वास्थ्य में देखकर, चकित हो गया और उनसे कहा:

'तुम्हें क्या हुआ है?'

उन्होंने उत्तर दिया:

'आप स्वयं देख सकते हैं: मसीह हमारे ईश्वर ने हमें आपके यातनाओं से बचाया है; उसकी शक्ति को पहचानें और लज्जित हों।'

उस दुष्ट मनुष्य ने मसीह के विरुद्ध अपमान करना शुरू कर दिया। लेकिन संतों ने पुकारा:

'जो झूठे देवता के प्रति अपमानजनक शब्द बोलते हैं, वे चुप हो जाएँ!'

और तुरंत राजा गूंगा हो गया और उसकी आवाज़ चली गई।

संतों ने कहा:

– हे राजा, आपको क्या हो गया है, कि आप हमसे बात नहीं कर रहे हैं? क्या हमें सचमुच अंतिम निर्णय प्राप्त किए बिना आपके दरबार को छोड़ना होगा?

राजा अपनी आँखों और हाथों से अपने आसपास के लोगों को इशारे करने लगा, उन्हें संतों को पकड़कर जेल में डालने का आदेश देते हुए; लेकिन उपस्थित लोगों में से कोई भी यह नहीं समझ सका कि वह अपने इशारों से क्या आज्ञा दे रहा था। तब राजा ने अपना बैंगनी चोगा फाड़ दिया[7511] , और उसे ज़मीन पर फेंक दिया और, जैसे पागल हो गया हो, सभी के सामने उसे पैरों तले रौंदने लगा। लोगों ने यह देखकर आश्चर्य किया और अपने राजा पर तरस खाया, कि वह इतनी पागलपन में पड़ गया था।

लेकिन संतों ने लोगों से कहा:

'हे मन के अंधों! तुम देखते हो और फिर भी नहीं देखते, तुम सुनते हो और फिर भी नहीं सुनते, क्योंकि तुम्हारे हृदय कठोर हो गए हैं!...'

[7511] बैंगनी रंग का एक लबादा, जिसे पोर्फ़िरी के नाम से भी जाना जाता है। इस कपड़े का रंग भूमध्य सागर में पाए जाने वाले कुछ शंखों या घोंघों के रक्त से निकाला जाता था। यह राजाओं का परिधान था, जो उनके सामर्थ्य और वैभव का प्रतीक था। हालाँकि, कभी-कभी निजी व्यक्ति - अत्यधिक धनी लोग - भी ऐसा लबादा पहनते थे।

जब संत ये वचन बोल रहे थे, तो स्वर्ग से दिव्य प्रकाशमान स्वर्गदूतों का एक समूह प्रकट हुआ, जिन्हें लोगों में से कई ने देखा; उन्हें देखने में असमर्थ होकर, वे डर के मारे गिर पड़े और मसीह पर विश्वास कर लिया, जबकि संत गाने लगे: *'परमेश्वर हमारा शरणस्थान और बल हैं, संकट में अतिशीघ्र सहायता हैं; इसलिये हम न डरेंगे, चाहे पृथ्वी हिल जाए और पहाड़ समुद्र के बीच में पहुँच जाएँ। हमारे लिये उठो और अपनी दया के लिये हमें छुटकारा दो'* (भजन संहिता 45:2–3, 43:27)।

राजा, गूंगा हो जाने के कारण कुछ भी नहीं कर सका, और क्रोध से अपना मुँह पटिने लगा। अकदिनि, उसे ऐसी पीड़ा में देखकर, आँसू बहाने लगा और कहा:

'हमारे प्रभु यीशु मसीह के नाम पर बोल।'

और तुरंत उसकी जीभ खुल गई, और वह बोलने लगा; लेकिन उसने ईश्वर की स्तुति नहीं की; इसके विपरीत, कठोर हृदय से, उसने और भी अधिक अपमान किया: यद्यपि उसने अपने ऊपर ईश्वर का प्रबल हाथ देखा, फिर भी उसने सत्य को स्वीकार करने से इनकार कर दिया। इन सब को पवित्र शहीदों की जादू-टोना मानकर, वह उन पर और भी अधिक क्रोधित हो गया और, धन्यवाद देने के बजाय, जैसे ही उसकी गूंगी अवस्था दूर हुई, उसने ये शब्द कहे:

'मैं अकिनिडा, पिगासियस और एनेम्पोडिस्टस को क्रूर मृत्यु दूँगा, और मैं तुम पर अपना बदला लूँगा जो यहाँ मौजूद हो, जिन्होंने मेरी आज्ञा की अवज्ञा की जब मैंने तुम्हें संकेतों द्वारा इन अधर्मी ईसाइयों को पकड़ने और मेरी ओर से उन्हें यातना देने का आदेश दिया था; क्योंकि उन्होंने अपनी जादू-टोने से मेरी जीभ बाँध दी है।'

और राजा ने आदेश दिया कि एक लोहे का बिस्तर आग पर रख दिया जाए और शहीदों को उस पर लिटा दिया जाए। जब उन्हें कई घंटों तक इस बिस्तर पर जलाया जा रहा था, तो उन्होंने ईश्वर से भक्तिपूर्वक प्रार्थना की और उस अवसर के अनुरूप दाऊद का एक भजन गाया:

– *'हे परमेश्वर, तूने हमें परखा है; तूने हमें चाँदी की तरह शुद्ध किया है*[7512] *। तूने हमें जाल में फँसाया है; तूने हमारी कमर पर बेड़ियाँ डाल दी हैं*[7513] *; तूने हमारे सिर पर एक मनुष्य को नियुक्त किया है*[7514] *। हम आग और पानी से गुज़रे हैं, और तूने हमें स्वतंत्रता में निकाला है'* (भजन संहिता 65:12)। हमें दृढ़ आत्मा और साहसी हृदय के साथ हमें सताने वाले कष्टों को सहने की शक्ति प्रदान करें; यह अनुग्रह करें कि हमारे चारों ओर खड़े वे लोग, जिनके समक्ष आपने अपनी शक्ति और अपने चमत्कार प्रकट किए हैं, आपके पवित्र नाम को जान सकें।

जब संत ये वचन कह ही रहे थे, तो स्वर्ग से एक आवाज़ आई, जो कह रही थी:

'चूंकि तुमने अपने कर्मों के द्वारा अपने विश्वास की गवाही दी है, तुम्हारी प्रार्थनाएँ स्वीकार की जाएँगी।'

उनके आसपास खड़े कई लोगों को, इस दैवीय स्वर को सुनने का सौभाग्य प्राप्त होने पर, ने कहा:

'केवल एक ही सच्चा ईश्वर है, जिसका ये शहीद सम्मान करते हैं; केवल वही शक्तिशाली है, केवल वही अजेय है, और उसके सिवा कोई और ईश्वर नहीं है। धन्य हो तुम, शहीदों, जिन्होंने पृथ्वी पर उसके आगमन की गवाही दी है और, उसके प्रति प्रेम के कारण, अपनी आत्माओं को मृत्यु के हवाले कर दिया है, जिसके बाद तुम्हें अनंत जीवन प्रदान किया जाता है! हमारे लिए भी उनकी दया की प्रार्थना करें, कि वे स्वर्ग से अपना सहायक हाथ बढ़ाकर हमें विनाश की गहराइयों से बचाएँ।

पवित्र शहीदों ने स्वर्ग की ओर अपनी आँखें उठाकर उनके लिए प्रार्थना की, और कहा:

– हे परमेश्वर, जो सर्वोच्च में वास करते हो! अपने उन सेवकों पर दृष्टि डालो जो सच्चे मन से तेरे नाम का आह्वान करते हैं, और अपनी नई विरासत पर वर्षा भेज – उन लोगों पर जिन्होंने अब तुझ पर विश्वास किया है; जो ओस आपसे निकलती है और पापी दुर्बलताओं को धोती है, वह उनके लिए एक औषधि और उपचार बने[7515] , और सब यह जान जाएँ कि आप ही एकमात्र ईश्वर हैं, और सब आपके अधिकार के अधीन हो जाएँ।

[7512] चाँदी, जब आग में पिघलाया जाता है, तो वह अशुद्धियों से शुद्ध हो जाती है और अपने सबसे शुद्ध रूप को प्राप्त करती है। इसी तरह, शहीदों का पुण्य, आग की कसौटी से होकर, गौरवान्विति हुआ और अपने सबसे परिपूर्ण रूप को प्राप्त कर गया।

[7513] हिब्रू से: 'उसने हमारी कमर पर बेड़ियाँ डाल दी हैं' (या: 'हमारी जाँघों पर')। इस मामले में, यह जलने के कष्ट को संदर्भित करता है।

[7514] अर्थात्, 'उसने हम पर सवारी कर ली है' – यह सबसे नीच दासता की एक छवि है। यहाँ यह अभिव्यक्ति उस अत्यंत अपमान की सीमा को दर्शाती है, जिसके अधीन पवित्र शहीदों को किया गया था।

[7515] समय के साथ, पड़ोसी लोगों के प्रभाव में, फारसियों ने सूर्य और अग्नि की पूजा को विदेशी देवताओं की पूजा के साथ मिलाना शुरू कर दिया।

जब संतों ने ऐसा कहा और अपनी प्रार्थना समाप्त की, तो अचानक आकाश में बजिली की एक चमक चमकी, भयानक गरज की गड़गड़ाहट सुनी गई, और मूसलाधार बारशि होने लगी; अवशि्वासी, भय और आतंक से भरकर, भाग गए; केवल वे ही जो मसीह में वशि्वास रखते थे, शहीदों के साथ रहे।

संतों ने उनसे कहा:

'डरो नहीं, क्योंकि यह तुम्हारे ही लिए हुआ है, ताकि इस वर्षा के द्वारा तुम्हारे ऊपर बपतस्मिा का संस्कार संपन्न हो सके।'

जब सभी एकमत होकर परमेश्वर की महमिा कर रहे थे, तो स्वर्ग से उतरते हुए स्वर्गदूतों की एक भीड़ दखिाई दी, जनि्होंने नव-बपतस्मिा प्राप्त लोगों को सफेद वस्त्र पहनाए, जसिसे यह संकेत मलिा कि उनकी आत्मा पवत्रि वशि्वास और स्वर्ग से उन पर आए जल द्वारा शुद्ध हो गई थी। इस वर्षा ने आग बुझा दी, तपते हुए अंगारों को ठंडा कर दयिा, और संत जीवति और कुशल उठ खड़े हुए; केवल उनके शरीर आग में जलकर राख हुए पेड़ों की तरह काले पड़ गए थे।

राजा ने संतों को एक बार फरि बुलाकर उनसे कहा:

'यद्यपि तुमने अपनी जादू-टोने से आग बुझा दी है, तुम मेरी पकड़ से तब तक नहीं बच पाओगे जब तक कि मैं तुम्हें देवताओं की पूजा करने के लिए मजबूर नहीं कर देता, या फरि तुम्हें क्रूर मृत्यु नहीं दे देता।'

उन्होंने एक स्वर में उत्तर दयिा:

'हमें जो मृत्यु भी चाहए, हमें दे दो, पर हम उस एक ईश्वर से नहीं मुड़ेंगे जो स्वर्ग में वास करता है और हमारे लिए अनंत जीवन तैयार कर चुका है।'

राजा हँसा और बोला:

'मेरे बच्चों और मत्रिों! यदि आप एक ईश्वर का सम्मान करते हैं, तो मैं भी आपको कई देवताओं का नहीं, बल्कि केवल एक का सम्मान करने के लिए बाध्य कर रहा हूँ—अर्थात्, उसी का जसिे मैं सम्मानति करता हूँ और जसिकी मैं पूजा करता हूँ।' क्योंकि मेरा भी एक देवता है जसिे मैं सभी से बढ़कर प्रेम और सम्मान करता हूँ: महान ज्यूस, सभी देवताओं में सबसे बड़े[7516] ; केवल उसी को श्रद्धांजलि अर्पति करने में मेरा साथ दो; जहाँ तक अन्य देवताओं का सवाल है – तुम अपनी मर्जी से करो; केवल एक को सम्मान देना ही काफी है।

धन्य अनेमपोडस्टिस ने राजा से कहा:

'आप हमें एकमात्र ईश्वर का सम्मान करने का आदेश कसि प्रकार देते हैं?'

यह सुनकर राजा प्रसन्न हुआ, क्योंकि उसे लगा कि वे उसके दुष्ट ज्यूस की पूजा करना चाहते हैं, और उनसे कहा:

'आओ, मेरे बच्चों, मेरे साथ महान ज्यूस के मंदरि में चलो; जैसा मैं करता हूँ, वैसा ही करो, और आइए हम मलिकर मेरे देवता की पूजा करें।'

संतों ने उत्तर दयिा:

'आप, हे राजा, अपनी वधियिों के अनुसार प्रार्थना करें, परन्तु हम वैसे ही प्रार्थना करेंगे जैसे हमें प्राचीन काल से सखिाया गया है।'

राजा, यह समझने में असफल रहा कि उन्होंने क्या कहा, प्रसन्न हुआ, क्योंकि उसे लगा कि वे पहले ही उसकी मूर्तपिूजा के आगे झुक चुके हैं, और उसने उनसे कहा:

'तुम पहले हमारे साथ एकमत क्यों नहीं दखिाना चाहते थे? तब तुम्हें इतनी यातनाएँ नहीं सहनी पड़तीं। लेकनि अब, मुझे तुम्हें दुख पहुँचाने के लिए क्षमा करो; मैं वादा करता हूँ कि मैं अपने सच्चे प्रेम से तुम्हारी भरपाई करूँगा।'

उसने अपना शाही रथ तैयार करने का आदेश दयिा और उसमें चढ़कर, पवत्रि शहीदों को अपने साथ शामलि होने के लिए बुलाया।

संतों ने उत्तर दयिा:

'नहीं, हे राजा, हम रथ से यात्रा नहीं करेंगे, बल्कि पैदल ही चलेंगे।'

[7516] ग्रीक लोग ज्यूस को देवताओं में सबसे महान (रोमनों के लिए जुपटिर), बजिली के शासक और देवताओं तथा मनुष्यों के पति के रूप में पूजते थे।

और इस प्रकार वे उस घृणित मंदिर तक पहुँचे। उनका हाथ थामकर राजा उनके साथ मंदिर में प्रवेश किया और चिल्लाने लगा:

'महान है देव ज्यूस, और महान है उसकी शक्ति! आओ, मेरे प्रियजनो, और मेरे सामने महान देव ज्यूस से प्रार्थना करो।'

संतों ने उत्तर दिया:

'जैसा आप आज्ञा दें, वैसा ही हम करेंगे।'

अपने माथे पर क्रॉस का चिह्न बनाकर, वे घुटनों के बल गिर पड़े और, अपने हाथ स्वर्ग की ओर उठाकर, त्रिमूर्ति में एक, पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा, ईश्वर से प्रार्थना करने लगे; और तुरंत वह स्थान हिल गया, और मंदिर ढहने लगा। राजा, भयभीत होकर, अपने साथ मौजूद सभी लोगों के साथ भाग गया, और मूर्तिपूजकों के साथ मंदिर ढह गया, और मंदिर के भीतर की हर चीज़ धूल में मिल गई। हालाँकि, संत मंदिर के ढहने पर भी सुरक्षित रहे; वे मसीह की शक्ति को देखकर प्रसन्न हुए और मूर्तिपूजक देवताओं की असहायता पर हँसे।

राजा संतों के प्रति क्रूर क्रोध से भर गया और उनसे कहा:

'क्या इसी तरह तुम ज्यूस को संबोधित करते और उसकी पूजा करते हो? क्या यही तुम्हारी प्रार्थना है—कि अपनी जादू-टोने से तुमने मंदिर को नष्ट कर दिया और देवताओं को कुचल डाला?'

संतों ने उत्तर दिया:

'जैसा हमें प्राचीन काल से सिखाया गया है, वैसे ही हमने संपूर्ण संसार के सृष्टिकर्ता, एकमात्र ईश्वर से प्रार्थना की है; हम जादू-टोने के बारे में कुछ नहीं जानते; और यह किसी जादू-टोने से नहीं, बल्कि ईश्वर के सर्वशक्तिमान नाम से हुआ, जिसका हमने प्रार्थना में आह्वान किया था, जिससे तुम्हारे अशुद्ध देवताओं सहित वह शापित मंदिर नष्ट हो गया।'

[7517]राजा ने तीन बड़े-बड़े पात्र तैयार करने और उनमें टिन, गंधक और कोयला भरने का आदेश दिया; उसने पुराने नावों को जलाने के लिए काटकर पात्रों के नीचे बड़ी आग जलाने के लिए इस्तेमाल करने का हुक्म दिया। जब यह किया गया, और लाल-गरम बर्तन उबल रहे थे और उनमें बुलबुले उठ रहे थे, तो संतों को जंजीरों से बाँधकर ऊपर से उन बर्तनों में उतारा गया, पहले कमर तक, फिर छाती तक, और अंत में गर्दन तक। इन यातनाओं के बीच, उन्होंने स्वर्ग की ओर देखा, और उनमें से प्रत्येक ने दाऊद की भजन-पुस्तक से एक गीत गाया। धन्य पिगासियस ने पुकारा: *'क्योंकि जीवन का सोता तेरे ही संग है; तेरी ही □□□ नी में हम □□□ नी देखेंगे'* (भजन संहिता 35:10)।

धन्य अनेम्पोडिस्टुस ने कहा: *'मेरा पाँव सीधे मार्ग पर ठहरा है; मैं मंडली में प्रभु का धन्यवाद करूँगा'* (भजन संहिता 25:12)।

धन्य अकिंदिनुस ने उद्घोष करना शुरू किया:

– *'मृत्यु के कष्टों ने मुझे घेरा है, और अधर्म की बाढ़ ने मुझे डरा दिया है'* (भजन संहिता 17:5), परन्तु चूंकि *'हम आग और पानी से गुज़रे हैं, और आपने हमें स्वतंत्रता में निकाला है'* (भजन संहिता 65:12)। हे प्रभु, आप स्वयं हमें विश्राम में ले जाएँ।

कड़ाहियों में इस प्रकार प्रार्थना करते हुए संतों को उबलते टिन, गंधक और पिच से कोई हानि नहीं हुई, और बेड़ियाँ अपने आप ढीली होकर उनसे गिर पड़ीं। संत सभी के सामने सकुशल बाहर निकले; उपस्थित कई लोगों ने इस आश्चर्यजनक चमत्कार को देखकर सत्य को जान लिया और मसीह की महिमा करके उस पर विश्वास किया। इसी प्रकार, यातना देने वालों में से एक, अथोनियस नामक व्यक्ति, ने यह चमत्कार देखकर मसीह पर विश्वास किया और पुकार उठा:

'महान है ईसाई ईश्वर!'

हालाँकि, उसने राजा से कहा:

'हे अधर्मी और मानवद्वेषी राजा! तुम इन निर्दोष लोगों का उत्पीड़न और कितनी देर तक करते रहोगे? हम जो उन्हें यातना दे रहे हैं, हम उन लोगों से भी अधिक थके हुए हैं जो यातना सह रहे हैं, फिर भी तुम लोहे और पत्थर के बने हुए की तरह बने हुए हो, और तुम्हारा हृदय अडिग बना हुआ है।'

[7517] यह एक तेज़ आग जलाने के उद्देश्य से किया गया था, क्योंकि नावों के तले और किनारों पर आमतौर पर पानी को रिसने से रोकने के लिए गोंद की मोटी परत चढ़ाई जाती है—खासकर बाहर की तरफ।

राजा ने तुरंत उसका सरि कलम करने का आदेश दयिा।

अफोनजि ने राजा का उत्तर सुनकर, जसिमें उसे तलवार से सरि कलम करने की सज़ा दी गई थी, अपनी आँखें आकाश की ओर उठाईं और कहा:

'महमिा तेरी हो, हे प्रभु यीशु मसीह, हे परमेश्वर, जनि पर मसीही वशि्वास करते हैं! मैं भी तुझ पर वशि्वास करता हूँ, तेरी आराधना करता हूँ और तेरे लिए मरता हूँ: हे प्रभु, अपनी महान दया से मुझे बचा, यद्यपि मैं इसके योग्य नहीं हूँ।'

तब जल्लाद उसके पास आकर, उसे फाँसी देने के लिए शहर से बाहर ले जाने हेतु उसके गले में फंदा डालने लगा। लेकनि उसने पवत्रि शहीदों की ओर मुड़कर कहा:

'हे मेरे स्वामनिो और पतृिगणो, दुष्ट राजा की आज्ञा से आपको यातना देकर मैंने जो बुरा कयिा है, उसे भूल जाइए। मेरी खातरि परमेश्वर से प्रार्थना कीजिए, कि वह मेरे अनेक पापों को क्षमा करे, मुझे उन लोगों के समूह में गनि जो उस पर वशि्वास करते हैं, और मुझे अपने राज्य में फरि से आप लोगों से मलिने का सौभाग्य दे।'

पवत्रि शहीदों ने उससे कहा:

'भाई, आनंदति हो, क्योंकि तुम हमसे पहले मसीह के पास जा रहे हो, और नशि्चति रहो कि तुम उनके पास दया पाओगे, और वह तुम्हारे वशि्वास के अनुसार तुम्हें पुरस्कृत करेंगे।'

अफोनीया ने संतों को चूमने के बाद, उसे शहर से बाहर ले जाया गया; उसने यीशु मसीह के परम पवत्रि नाम का स्मरण करते हुए, अपनी गर्दन तलवार के हवाले कर दी और आनंदति होकर प्रभु के पास चला गया। ईसाइयों ने उसका शरीर लयिा, उसे एक साफ कपड़े में लपेटा, और उसे मसीह के एक शहीद के रूप में सम्मानपूर्वक दफनाया।

इसके बाद, राजा ने आदेश दयिा कि अकनिडिा, पगिासयिस और एनेम्पोडस्टिस को चमड़े की बोरी में सलिकर समुद्र में फेंक दयिा जाए। जब यह हो गया, तो संत अथेनासयिस प्रकट हुए, उनके साथ तीन स्वर्गदूत थे जो समुद्र पर चल रहे थे; उन्होंने पवत्रि शहीदों को समुद्र से बाहर नकिाला, उन्हें चमड़े की खाल से मुक्त कयिा और उन्हें जीवति और स्वस्थ अवस्था में सूखी भूमि पर उतार दयिा, मानो उन्होंने थोड़ा भी कष्ट न झेला हो। यह सुनकर कि पवत्रि शहीद जीवति थे, राजा उन सैनकिों पर आग-बबूला हो गया, जनि्हें उसने संतों को समुद्र की गहराई में फेंकने का आदेश दयिा था। यह मानते हुए कि उन्होंने उसकी अवज्ञा की और उन्हें मुक्त कर दयिा, उसने पहले इन सैनकिों, जनिकी संख्या चार थी, के हाथ काट दिए और फरि उन्हें समुद्र में डुबोने का आदेश दयिा। उनकी मृत्यु से पहले, उन्होंने हमारे प्रभु यीशु मसीह का आह्वान कयिा, उनके पवत्रि नाम का अंगीकार कयिा, उन पर वशि्वास कयिा और उनसे प्रार्थना की, और इस प्रकार वे समुद्र के पानी में डूब गए। पवत्रि शहीदों, अकदिनि, पगिासयिस और एनेमपोडस्टिस को फरि से पकड़ लयिा गया, उन्हें कैद कर दयिा गया और बेड़ी में डाल दयिा गया। अपनी परेशानी में, राजा अपने शयनकक्ष में गया, अपने बस्तिर पर लेट गया, अपने कुलीनों को बुलाया और उनसे गुस्से में बात करने लगा, यह कहते हुए कि उन्होंने उसे ईसाइयों के खलिाफ चल रहे मुकदमे में अकेले ही मेहनत करने के लिए छोड़ दयिा था, और वह न तो शब्द में और न ही कर्म में उसकी कसिी भी तरह से मदद कर रहे थे। उन्होंने उत्तर दयिा, कि इस तरह के मुकदमों में शामलि होना और नरि्दोष ईसाइयों को मृत्युदंड देना कोई अच्छी बात नहीं है। राजा ने, तथापि, उनसे इस प्रकार कहा:

'जब तुम कल और परसों वहाँ खड़े होकर अपने हाथों से अपने मुँह ढाँक रहे थे, तब तुम क्या सोच रहे थे?'

एक कुलीन, जसिका नाम एल्पडिफि़ोर था, हँसकर बोला:

'हम आपके मूर्खता पर मन ही मन हँस रहे थे, और अब तक आपके आज्ञाकारी बने रहना हमारी मूर्खता थी।'

राजा ने वहाँ मौजूद एक नौकर को एल्पडिफिोर के गाल पर थप्पड़ मारने का आदेश दयिा। यह देखकर सभी कुलीनों के मन में आक्रोश भर आया और उन्होंने राजा से कहा:

'हे राजा, यह जान लो: हम तुम्हारे पक्ष में नहीं हैं।'

राजा ने जब देखा कि सभी कुलीनों का झुकाव एल्पडिफिोरस के पक्ष में है, तो वह डर गया और उन्हें और अधकि भड़काना नहीं चाहकर बोला:

'मुझे क्षमा करो, क्योंकि अपने महान दुख में मैं क्रोध के वश में हो गया।'

अमीरों ने राजा से वदिा ली और चले गए, और वे इसलिए भी चले गए क्योंकि रात हो चुकी थी। लेकनि राजा अपने दलि में और भी अधकि क्रोध से पीड़ति था, यह सोचते हुए कि वह संतों को कैसे नष्ट कर सकता है और अमीरों से बदला कैसे ले सकता है। सुबह, उसने पवत्रि शहीदों को जहरीले सरपटों से भरी एक खाई में फेंकने का आदेश दयिा; लेकनि वहाँ भी वे सुरक्षति रहे, स्वर्गदूतों के दर्शन से उन्हें सांत्वना मलिी, और उन्हें वहाँ से बनिा कसिी चोट के बाहर नकिाल लयिा

गया। फरि उन्हें फांसी दी गई और उनके शरीरों को हड्डियों तक खुरच दयिा गया, लेकनि शहीद एक बार फरि से सुरक्षति पाए गए। अंत में, राजा ने यह नहीं जानते हुए कि और क्या करे, उन्हें तलवार से सरि कलम करने की सज़ा सुनाई। जब संतों को उनके नष्पिादन का सामना करने के लिए शहर से बाहर ले जाया जा रहा था, तो उनके पीछे वश्विासयिों की एक बड़ी भीड़ चल पड़ी, जो उन पर चल्लिा रही थी:

'हे सच्चे परमेश्वर के सेवको, आप हमें उपदेश दिए बनिा क्यों छोड़ रहे हैं?'

संतों ने उत्तर दयिा:

'दयालु ईश्वर तुम्हारे लिए आवश्यक चीज़ें प्रदान करेंगे, जैसा कि वे जानते हैं और इच्छा रखते हैं: केवल बनिा कसिी संदेह के उन पर वश्विास करो, और वे तुम्हें वह देंगे जो तुम्हारे लाभ के लिए होगा।'

राजा के कुछ सेवक राजा के पास गए और उन्होंने बताया कि सारी जनता इन तीन ईसाइयों के समर्थन में खड़ी हो गई है और वे उनके सरि कलम होने से रोक सकती है।

राजा ने कहा:

'इन धोखेबाजों का अनुसरण करने वाले लोगों को मारने के लिए शहर के बाहर तीन सौ सशस्त्र सैनकि भेजो।'

नौकरों ने उसे बताया कि इन लोगों में कुछ कुलीनों भी थे, और एल्पडिफ़िोर भी वहाँ था, और उन्होंने पूछा कि क्या उन्हें भी बाकयिों के साथ मौत की सज़ा दी जा सकती है। राजा ने एल्पडिफ़िोर को अपने पास बुलाने का आदेश दयिा। एल्पडिफ़िोर, अपने साथ तीन अन्य गणमान्य व्यक्तयिों को लेकर, राजा के सामने आया। राजा ने सरि झुकाकर काफी देर तक चुपचाप बैठे रहे; फरि, सरि उठाकर उन्होंने कहा:

'एल्पडिफिोर! अपने पूर्वजों के देवताओं को त्यागकर, तुमने झूठे ईसाई[7518] धर्म में धर्मांतरण क्यों कयिा? यह जान लो: मैं उस पर कसिी भी दया नहीं दखिाऊँगा जो सूली पर चढ़ाए गए मसीह में वश्विास करता है।'

एल्पडिफ़िोर ने उत्तर दयिा:

'तुम जो चाहो करो; हम क्रूस पर चढ़ाए गए मसीह के लिए तुरंत मरने को तैयार हैं, क्योंकि वही एकमात्र सच्चे और धर्मी ईश्वर हैं, और उनके सवि कोई और नहीं है। हाँ, तुम्हारे सभी देवता तो राक्षस हैं, जन्हिें हम त्यागते और अस्वीकार करते हैं; और जहाँ तक तुम्हारा—राक्षसों के सेवक—और तुम्हारी घृणति मूर्तपिूजक बलदिानों का सवाल है, हम उनसे घृणा करते हैं।'

तब राजा ने उन्हें मृत्युदंड की सजा सुनाई और उनके बारे में यह घोषणा की: 'एल्पडिफिोरस और उसके सभी साथी वश्विासी, जन्होंने सबसे तेजस्वी देवताओं को त्याग दयिा है और इस जीवन के बजाय मृत्यु को चुना है—मैं आदेश देता हूँ कि उन्हें तलवार से मार डाला जाए, ताकि उन्हें वही मलि जसिकी उन्होंने खुद इच्छा की है; और जो कोई भी उनके शवों को ले जाकर छपिाना चाहता है, वह बनिा कसिी डर के ऐसा कर सकता है।'

सैनकिों ने तुरंत उन्हें पकड़ लयिा और शहर के बाहर पवत्रि शहीदों और मसीह में वश्विास करने आए सभी लोगों के पास ले गए। जब राजा का फरमान वहाँ सभी के सामने पढ़ा गया, तो वे सभी चल्लिा उठे:

'महमिा तेरी हो, हे ईश्वर, क्योंकि तूने हमें अच्छा मार्ग दखिाया है, ताकि इस अंधकारमय और वश्विासघाती संसार से मुक्त होकर, हम तेरे पास आ सकें, हे हमारे ईश्वर, तेरे सहिासन की आराधना कर सकें, और तुझे, उस अगम्य प्रकाश को, नहिार सकें।'

वे एक-दूसरे को चूमने लगे। लेकनि सैनकिों ने उन्हें घेर लयिा, उन्हें पीटा, और उसी समय संत एल्पडिफिोरस के साथ, लगभग सात हज़ार मसीह में वश्विास करने वाले तलवार से मारे गए।

अकांडनि, पगिासयिस और एनेमपोडस्टिस का सरि नहीं काटा गया, बल्कि, राजा की आज्ञा से, उन्हें एक बार फरि कैद कर दयिा गया।

सुबह, राजा ने पवत्रि शहीदों को जलाने के लिए एक आग का भट्ठा तैयार करने का आदेश दयिा। जब संतों को कालकोठरी से बाहर लाया गया, तो राजा ने उनसे कहा:

'क्या तुम यह भट्टी देखते हो? इसे तुम्हारे लिए तैयार कयिा गया है।'

धन्य अकदिनि ने कहा:

[7518] संभावना है कि राजा ने ईश्वरत्व के तीन व्यक्तयिों के बारे में सुनकर यह मान लयिा कि ईसाई भी कई देवताओं की पूजा करते थे, जनिमें से एक प्रमुख था।

'तुम्हारे लिए आग की गेहन्ना में एक और भी बड़ी भट्टी तैयार की गई है, जहाँ तुम अपने नाम वाले राक्षसों के साथ हमेशा के लिए जलोगे।'

राजा ने क्रोधित होकर कहा:

'क्या मैं एक राक्षस हूँ?'

संत ने उत्तर दिया:

'तुम्हारे कर्म और तुम्हारा नाम, दोनों ही तुम्हारे भीतर के राक्षस को प्रकट करते हैं, क्योंकि तुम वही करते हो जो राक्षसों का स्वभाव है, और तुम्हारे नाम का अर्थ है "राक्षसों का राजा"; और तुम्हारी माँ ने तुम्हारा नाम सपोर् रखकर सही किया, क्योंकि तुम राक्षसों के समान विचार रखते हो।'

राजा ने अपने आसपास खड़े लोगों से कहा:

'मेरी माँ को यहाँ मेरे पास आने के लिए कहो।'

जब उसकी माँ आईं, तो वह अपने सिंहासन से उठ खड़ा हुआ; उन्हें सम्मान देने के बाद, उसने उन्हें अपने बगल में बिठाया और कहा:

'मुझे बताओ, माँ, मेरा नाम क्या है?'

उसकी माँ ने उत्तर दिया:

'तुम अपने दादा के नाम पर हो: तुम्हारे दादा का नाम सापोर था, और तुम्हारा नाम सापोर है।'

राजा ने संतों की ओर उंगली दिखाते हुए कहा:

'और ये कानून-विहीन लोग कहते हैं कि मेरा नाम शैतानी है।'

इस पर उसकी माँ हँस पड़ीं – क्योंकि वह पहले से ही मसीह में विश्वास रखती थीं, लेकिन अपने दुष्ट बेटे से अपने विश्वास को छिपा रही थीं। राजा ने, यह देखकर कि उसकी माँ हँस पड़ी थीं, क्रोध से आग-बबूला हो गया और उन पर झपटकर उनके चेहरे पर मारने लगा। वह, हालाँकि, पवित्र शहीदों के पैरों पर गिर पड़ीं और चिल्लाईं:

'हे मसीह के सेवको, मेरी वृद्धावस्था में मेरी रक्षा करो, क्योंकि मैं देखती हूँ कि मैंने केवल नाम मात्र से ही नहीं, बल्कि वास्तव में, एक राक्षस और शापित शैतान को जन्म दिया है।'

राजा ने जब देखा कि उसकी माँ भी मसीह में विश्वास करने लगी है, तो उसने आदेश दिया कि उसे भी पवित्र शहीदों के साथ अग्नि भट्टी में डाल दिया जाए। इसके अलावा, उपस्थित अठ्ठाइस सैनिकों ने भी विश्वास ग्रहण किया, और सभी को अकिंदिनि, पिगासियस और एनेम्पोडिस्टस तथा राजा की धन्य माता के साथ भट्टी में डाल दिया गया; उन्होंने लपटों के बीच प्रार्थना करते हुए अपनी पवित्र आत्माओं को ईश्वर के हवाले कर दिया। सज्जन स्वभाव वालों ने देखा कि भट्टी के चारों ओर पवित्र स्वर्गदूतों का एक समूह गा रहा था और संतों की आत्माओं को ग्रहण कर रहा था, जबकि शहीदों के शरीरों से एक अकथनीय सुगंध निकल रही थी। जब भट्टी बुझ गई, तो राजा अपने कक्ष में चला गया और सभी अपने-अपने रास्ते चले गए; फिर कुछ विश्वासी भट्टी के पास आए और उन्होंने संतों के शरीरों को आग से अछूता और सुरक्षित पाया; उन्होंने उन्हें उठाया और सम्मानपूर्वक दफनाया, और पिता और पुत्र और पवित्र आत्मा, एक परमेश्वर की महिमा की, जिसकी महिमा युगानुयुग होती रहे, आमीन।

ट्रोपारियन, स्वर 2:

हे प्रभु के कष्ट-सहिताओं, धन्य है वह भूमि जो आपके रक्त से सनी है, और पवित्र है वह मिट्टी जिसने आपके शरीरों को ग्रहण किया: क्योंकि शत्रु के कारागारों में आपने विजय प्राप्त की, और निडर होकर मसीह की घोषणा की। हम प्रार्थना करते हैं कि वह, जो भला है, हमारी आत्माओं को बचाए।

कॉन्टाकियन, स्वर 2:

धर्मनिष्ठ और ईश्वर-वाहक शहीदों, पृथ्वी पर की सभी चीज़ों को त्यागकर, आप अपने धन्य लोगों के आनंद में और विश्राम में ग्रहण किए गए हैं, अकिंदिनि, पिगासियस, अनेमपोडिस्टस, और उनके साथ अफोनियस और एल्पिडिफोरस, हे परम-सद्गुणी।

आदरणीय मार्शयिन की स्मृति

2 नवंबर को स्मरण कयिा जाता है

हमारे पूजनीय पिता मार्शयिन साइरस के मूल नविासी थे। अपनी मातृभूमि और संपत्ति को पीछे छोड़कर, वे एक दूरस्थ रेगस्तिान में चले गए। वहाँ उन्होंने अपने लिए एक ऐसा छोटा सा कोठरीनुमा कमरा बनाया जसिमें केवल एक व्यक्ति ही समा सके, और ऊँचे-ऊँचे बाल-कपड़े पहनकर उसमें खुद को बंद कर लयिा। उनका भोजन रोटी के तीन 'ओन्गर्इ'[7519] और थोड़ा सा पानी था, और वह भी केवल सूर्यास्त के बाद ही। कुछ समय बीत जाने के बाद, मार्शयिन के पास दो आगंतुक आए जन्हिोंने एक तंबू लगाया। वह, तथापि, पहले की तरह ही एकांत में रहे, उन्होंने कभी कोई मोमबत्ती नहीं जलाई, क्योंकि उनके पास दव्यि प्रकाश था जो रात में उन पर चमकता था और जसिकी सहायता से वे अपनी 'छोटी भजन-पुस्तकिा' पढ़ते थे। एक अवसर पर, बाहर से उनकी झोपड़ी पर मंडराते एक बड़े साँप ने तपस्वयिों को इतना भयभीत कर दयिा कि वे बहुत डरा गए। हालाँकि, संत ने अपनी उंगली से क्रॉस का चह्नि बनाया, उस पर फूँक मारी, और जैसे आग से सूखी खपच्चयिाँ भस्म हो जाती हैं, वैसे ही वह साँप तुरंत नष्ट हो गया।

एक अन्य अवसर पर, अंतीयक के पैट्रआर्क फ्लेवयिन[7520] , कर्किोस के बशिप, और कई अन्य प्रतष्ठिति और वाक्पटु बशिप उनके पास आए और पवत्रि धर्मग्रंथों के कुछ अंशों का हवाला देते हुए उन्हें मनाने की कोशशि की कि उन्हें कई लोगों के भले के लिए अपने एकांत को छोड़ देना चाहिए; लेकनि उन्होंने उनकी बात सुनना भी मुनासबि नहीं समझा। इस अद्भुत व्यक्ति ने कई लोगों को वभिन्नि वधिर्मों से वापस सच्चे ऑर्थोडॉक्स धर्म में लाया।

संत की बहन, अपने बेटे के साथ, एक बार वभिन्नि आवश्यक सामान लेकर उनसे मलिने के लिए नकिलीं। उन्होंने अपनी बहन से मलिना नहीं चाहा, उन्होंने उनकी लाई हुई कोई भी चीज़ स्वीकार नहीं की, और केवल अपने भतीजे को अपने पास आने दयिा। जब उनकी बहन ने उन पर लाया हुआ सामान लेने के लिए ज़ोर दयिा, तो संत मार्शयिन ने पूछा:

'क्या तुमने यह यहाँ आने के रास्ते में कसिी अन्य मठ में भी चढ़ाया था?'

'नहीं, हमने इसे उनमें से कसिी में भी नहीं चढ़ाया,' उसकी बहन ने उत्तर दयिा।

'जो तुम लाई हो, उसे लेकर चली जाओ,' संत ने उत्तर दयिा, 'क्योंकि तुमने यह केवल स्वाभावकि रश्तिेदारी के कारण कयिा है।'

यह महान और अद्भुत संत दूर-दूर और पास-पास सभी के प्रयि थे। यह जानकर कि उनके नधिन के बाद उनके शरीर पर अधकिार के लिए कई लोग आपस में झगड़ रहे थे – जसिके लिए उन्होंने अवशेष-पात्र तैयार कए थे और चर्च बनाए थे – संत ने अपने शष्यि यूसेबयिस से यह शपथ करवाई कि वह उनके शरीर को गुप्त रूप से, कोठरी से दूर दफनाएगा। यह अनुरोध करने के बाद, वे प्रभु के पास प्रस्थान कर गए[7521] ।

16 नवंबर

3 नवंबर (पुराने कैलेंडर के अनुसार)

पवत्रि शहीदों एकेप्समिुस बशिप, जोसेफ प्रेस्बटिर और आइफल डीकन का शहीद वर्णन

3 नवंबर को स्मरणोत्सव

[7519] ओन्गयिा एक पाउंड का बारहवाँ हस्सिा, या 8 ज़ोलोटनकि है।

[7520] संत फ्लावयिन ने 381 से 404 तक पैट्रआर्क के रूप में कार्य कयिा। उनका पर्व दविस 18 फरवरी को मनाया जाता है।

[7521] आदरणीय मार्शयिन की मृत्यु का वर्ष 388 माना जाता है। उनका पर्व दविस अभी भी 18 जनवरी को मनाया जाता है।

फ़ारस की भूमि में, नाएसन नामक एक नगर में[7522] , अकेप्सम नामक एक धर्मपरायण बिशप रहते थे। अपनी युवावस्था से ही सभी प्रकार के सद्गुणों का अभ्यास करते हुए, उन्होंने वृद्धावस्था तक अपने जीवन की पवित्रता बनाए रखी। अस्सी वर्ष की आयु में भी, अपने कार्यों में लगे रहने के दौरान, उनमें कठोर उपवास और प्रार्थना करने की शक्ति बनी रही, और वे अपने सुपुर्द किए गए झुंड की लगन से देखभाल करते थे। लेकिन उन्होंने अपनी मृत्यु के समय एक और भी बड़ा चमत्कार प्रदर्शित किया, जब वे अपने प्रभु के लिए दृढ़ रहे, यहाँ तक कि रक्त बहाने की हद तक, जिनके लिए उन्होंने लंबे और दुखद यातनाओं के बाद उत्साहपूर्वक अपनी आत्मा अर्पित कर दी। अपनी शहादत से कई साल पहले, उन्हें अपने कष्टों के बारे में यह भविष्यवाणी मिली थी:

एक बार, जब वह अपने घर में विश्राम कर रहे थे, तब उनकी भविष्यवाणी की आत्मा से परिपूर्ण युवा सेवक ने उनके सिर पर चूमकर कहा:

'धन्य है यह सिर, क्योंकि यह मसीह के लिए दुख सहन करेगा।'

वह इस भविष्यवाणी पर प्रसन्न हुआ और कहा:

'मेरे लिए भी ऐसा ही हो, मेरे बच्चे, तुम्हारे वचन के अनुसार।'

उस समय अकेप्समिस के साथ उनके सबसे प्रिय मित्रों में से एक, जो पड़ोसी शहर के बिशप थे, भी बैठे थे। उस युवक द्वारा कहे गए शब्द सुनकर, वे मुस्कुराए और उससे कहा:

'मुझे बताओ, मेरे बच्चे, क्या तुम हमारे बारे में भी कुछ जानते हो?'

ईश्वर-प्रेरित लड़के ने उत्तर दिया:

[7523]– तुम फिर कभी अपना शहर नहीं देखोगे, लेकिन तुम वहाँ जाते समय, उपरोक्त गाँव एट्राडान में ही चल बसोगे।

उस युवक की भविष्यवाणी दोनों बिशपों के लिए सच हुई। एक की मृत्यु रास्ते में, उपरोक्त गाँव में हुई, जबकि बिशप अकेप्समिस के सिर को वास्तव में शहीद का ताज प्रदान किया गया। यह इस प्रकार हुआ।

धर्मनिरपेक्ष फारसी राजा सावर ने अपने राज्य में ईसाइयों के खिलाफ एक बड़ा उत्पीड़न शुरू किया। मसीह के उद्धारकारी दुखों के ठीक उसी दिन, उसने अपने शासन के सभी प्रदेशों में एक फरमान भेजा, जिसमें आदेश दिया गया कि पूरे फारस में मसीह की गवाही देने वालों को मौत की सजा़ दी जाए। और उस समय, कस्बों और गांवों में दुष्टों द्वारा अनगिनत मसीहियों का निर्दयता से कत्लेआम किया गया।

पुरोहित और मगी[7524] ईसाइयों के प्रति सबसे अधिक क्रोधित थे; उन्होंने छिपे हुए लोगों को लगन से खोजा और उन्हें उनके घरों और गुप्त स्थानों से घसीटकर क्रूर मृत्यु के घाट उतार दिया। कुछ विश्वासियों ने स्वयं को उनके हाथों में सौंप दिया और बहादुरी से अपना रक्त बहाया। कई दरबारी मसीह के लिए मार डाले गए। ख़ास[7525] , अज़ादीस, जिसे राजा बहुत प्यार करता था, को भी उनके साथ मार डाला गया, क्योंकि वह यीशु मसीह का एक सच्चा सेवक और उनके परम पवित्र नाम का स्वीकारकर्ता था।

अपने प्रिय ख़ास ख़ादिम आज़ादीस की मृत्यु का समाचार पाकर राजा बहुत दुखी हुआ और उसने ईसाइयों के सामूहिक संहार को समाप्त कर दिया, तथा केवल ईसाई धर्म के नेताओं और शिक्षकों को ढूँढ़कर उन्हें मृत्युदंड देने का आदेश जारी किया।

[7522] कम-ज्ञात कस्बों में से एक; धार्मिक मामलों में, यह संभवतःमोसुल (मोसुल – टिग्रिस नदी पर) या निनिवे की मेट्रोपोलिस के अधीन था।

[7523] नाएसन से बहुत दूर नहीं एक गाँव।

[7524] प्राचीन काल में, 'मागी' शब्द का अर्थ गहरे और व्यापक ज्ञान वाले बुद्धिमान पुरुषों से था, विशेष रूप से प्रकृति की छिपी हुई शक्तियों, खगोलीय पिंडों, पवित्र ग्रंथों, चित्रलिपि और इसी तरह की अन्य चीजों का। वे प्राकृतिक घटनाओं का अवलोकन करते थे, सपनों की व्याख्या करते थे, और भविष्य की भविष्यवाणी करते थे; हालांकि, अधिकांशतःवे पुरोहित भी थे और शाही दरबारों में और लोगों के बीच भी उन्हें बहुत महत्व और सम्मान प्राप्त था। पर्शियन मगियों का उल्लेख दानियेल की पुस्तक (दानियेल 2:1–49 ff.) में मिलता है, और मगि शायद फारस से ही नवजात उद्धारकर्ता की पूजा करने आए थे (मत्ती 2:1–23)। अन्य देशों में भी मगि थे, उदाहरण के लिए बाबेल, अश्शूर और मीडिया में (देखें दानियेल की पुस्तक; तुलना करें गिनती 22:1–41, 23:1–30) और मिस्र में (उत्पत्ति 41:8; निर्गमन 7:11)। शब्द 'मगि', जो मूल रूप से 'ज्ञानी' शब्द का पर्याय था, बाद में जादूगरों, जादू-टोना करने वालों, भविष्य बताने वालों, भूत-प्रेत से बात करने वालों और इसी तरह के लोगों के लिए प्रयुक्त होने लगा।

[7525] 'यूनाक' शब्द का शाब्दिक अर्थ है एक निष्कंधित पुरुष। पूर्व में, ऐसे पुरुष शाही हरम के पर्यवेक्षक के रूप में काम करते थे; प्राचीन काल में, वे अक्सर इस पद से उठकर उच्च सरकारी पदों पर पहुँच जाते थे। बाद में, 'यूनाक' शब्द का उपयोग कभी-कभी अधिक सामान्य रूप से एक उच्च सरकारी पद धारण करने वाले व्यक्ति, एक दरबारी या एक कुलीन व्यक्ति को संदर्भित करने के लिए किया जाता था, भले ही वह व्यक्ति वास्तव में नपुंसक न हो।

जब राजा का फरमान दूर-दूर तक फैला दिया गया, तो मगियों और पुरोहितों के मुखिया पूरे फारस में ईसाई बिशपों और पादरियों की तलाश में निकले और उन्हें विभिन्न तरीकों से मौत के घाट उतार दिया।

उस समय, पवित्र बिशप अकेप्सम को भी गिरफ्तार कर लिया गया था। जब उसे गिरफ्तार करने वाले उसे उसके घर से बाहर ले जा रहे थे, तो उसके घर का एक व्यक्ति संत के पास आया और उनके कान में फुसफुसाया:

'अपने घर के संबंध में कोई वसीयत बना लीजिए।'

उन्होंने, हालांकि, अपने हाथ से घर की ओर इशारा करते हुए कहा:

'यह घर अब मेरा नहीं है, क्योंकि मैं बिना देरी के स्वर्गीय घर चला जाऊँगा[7526] ।'

अर्बेल नगर[7527] पहुँचने पर, जब उन्हें मागी के राजकुमार अद्राह के समक्ष लाया गया, तो राजकुमार ने संत अकेप्समिुस से पूछा:

'तुम कौन हो?'

अकेप्समि ने जोर से घोषणा की कि वह एक ईसाई है।

राजकुमार ने उससे कहा:

'क्या जो कुछ वे तुम्हारे बारे में कहते हैं, वह सच है – कि तुम राजा की आज्ञा की अवज्ञा करते हो और एक ईश्वर का उपदेश देते हो?'

संत ने निडर होकर उत्तर दिया:

– जो कुछ भी तुमने हमारे बारे में सुना है, वह सब सच है: मैं एक ईश्वर का उपदेश देता हूँ और जो मेरे पास आते हैं, उन्हें मेरे साथ मिलकर उसे जानने और उस पर विश्वास करने के लिए प्रेरित करता हूँ।

राजकुमार ने कहा:

'हमने सुना है कि तुम दूसरों से अधिक बुद्धिमान हो, लेकिन अब हम देखते हैं कि तुम बेवकूफ़ बच्चों से बेहतर नहीं हो – क्योंकि राजा की आज्ञा का उल्लंघन करने और उस उज्ज्वल सूर्य और अग्नि की पूजा करने से इनकार करने में क्या बुद्धिमानी है, जिसकी पूजा स्वयं राजा करता है?'

संत ने उत्तर दिया:

'तुम्हारा राजा और तुम स्वयं दोनों ही पूरी तरह से पागल हो गए हो, क्योंकि, सृष्टिकर्ता को त्यागकर, तुम सृष्टि की पूजा करते हो।'

राजकुमार ने गुस्से से कहा:

'तुम हमें पागल कहते हो, हम जो प्रकृति की ऐसी शक्ति का सम्मान करते हैं और उस सूर्य की पूजा करते हैं जो सभी चीजों को जीवन और प्रकाश देता है? – तुम धोखेबाज़ बूढ़े! सचमुच, तुम स्वयं पागल हो, और यदि तुम राजा की आज्ञा का पालन नहीं करोगे, तो तुम्हारी वृद्धावस्था तुम्हें भीषण यातनाओं से नहीं बचा पाएगी, और तुम्हारा सूली पर चढ़ाया गया ईश्वर[7528] तुम्हें हमारे हाथों से नहीं छुड़ाएगा।

संत ने कहा:

'हे दुष्ट मनुष्य, तेरा वह नीच मुँह, जो मेरे ईश्वर की निंदा करता है, चुप हो जाए! तू मुझे अपनी धमकियों से डराना चाहता है, ताकि मैं अपने पूर्वजों की परंपराओं को त्याग दूँ, जो मैंने अपनी जवानी में सीखीं और जिन पर चलकर मैं इस सफेद बालों वाले वृद्ध वयस्क तक पहुँचा हूँ। भले ही तुम अपने अहंकार में मेरे सामने डींगें हाँकते हो—कि न तो बुढ़ापा और न ही मेरा ईश्वर मुझे तुम्हारे हाथों से बचा पाएगा—तथापि, मैं बेहतर को बदतर के लिए नहीं बदलूँगा: क्योंकि इन कुछ दिनों के लिए तुम्हारे हाथों से मुक्त होने में मेरे लिए क्या लाभ है? क्योंकि जल्द ही, और आपसे बिल्कुल अलग, मुझे नश्वर

[7526] बेशक, यह उस स्वर्गीय निवास को संदर्भित करता है जिसमें मसीह के सच्चे अनुयायी प्रवेश करते हैं, उनकी अपनी आज्ञा के अनुसार (यूहन्ना 14:2–3)। 'स्वर्गीय' शब्द का अर्थ 'सबसे ऊँचा', 'ऊपरी' या 'आकाशीय' है (तुलना करें यहेजकेल 41:7, कुलुस्सियों 3:2)।

[7527] अर्बेल ज़ापाटा (जिसे ज़बाटा भी कहा जाता है) नदी की एक सहायक नदी पर स्थित एक कस्बा है, जो स्वयं टिग्रिस नदी की बाईं तट की सहायक नदी है। यह शहर निनिवे से बहुत दूर नहीं स्थित है और यह इस तथ्य के लिए उल्लेखनीय है कि, इसके पश्चिम में 12 मील दूर, गाउगामेला के पास, एक युद्ध हुआ जिसमें सिकंदर महान ने डेरियस कोडामन को दूसरी बार हराया, और इस प्रकार पूरे फारसी साम्राज्य का शासक बन गया।

[7528] इन शब्दों में एक अपमानजनक उपहास निहित है, क्योंकि **सूली पर** चढ़ाकर मृत्युदंड देना एक अपमान माना जाता था, और यह सबसे अपराधी और घृणित व्यक्तियों को दिया जाता था।

स्वभाव के सामान्य कर्तव्य के लिए जवाब देना होगा[7529] । मैं सूर्य की पूजा नहीं करूँगा, न ही अग्नि को प्रणाम करूँगा, कहीं ऐसा न हो कि कोई मेरे बुढ़ापे का मज़ाक उड़ाए, कहीं ऐसा न सोचे कि जीवन मेरे लिए मेरे ईश्वर से अधिक प्रिय है; मैं इतनी बड़ी दिव्य आशीर्वादों को एक क्षणिक जीवन के लिए नहीं बेचूँगा।

जादूगर ने तुरंत आदेश दिया कि संत को नग्न करके जमीन पर लिटा दिया जाए और गाँठदार डंडों से बुरी तरह पीटा जाए; और उन्होंने उसके पूरे शरीर पर इस तरह मारा कि धरती उसके खून से लथपथ हो गई।

यातना देने वाले ने, लंबी पिटाई के बाद उसे फिर से अपने सामने बिठाकर, कहा:

'एकेक्समि! तुम्हारा ईश्वर कहाँ है? उसे अब आकर तुम्हें मेरी पकड़ से छुड़ा लेने दो।'

संत ने उत्तर दिया:

'हे अधर्मी! मेरा ईश्वर सर्वव्यापी है। वह स्वर्ग और पृथ्वी को भरता है और उसके पास मुझे तुम्हारे हाथों से छुड़ाने की शक्ति है। परन्तु मैं उसकी दया की याचना करता हूँ, इसलिये नहीं कि वह मुझे तुम्हारे दिए गए कष्टों से छुड़ाए, बल्कि इसलिये कि वह मुझे इन कष्टों के बीच धैर्य प्रदान करे, ताकि, अंत तक सहन करके, मैं जीवन का मुकुट प्राप्त कर सकूँ। तुम जो जीवित परमेश्वर के विरुद्ध विद्रोह करते हो, तुम जो केवल धूल और राख हो, तुम्हें किस यातना और मृत्यु की सज़ा मिलनी चाहिए? – सचमुच, तुम उस आग में भस्म होने के योग्य हो जिसे तुम अब देवता के रूप में पूजते हो – काश तुम्हारा देवता तुम्हें हमेशा के लिए जला दे।

यह सुनकर, मगों का राजकुमार क्रोध से आग-बबूला हो गया और उसने आदेश दिया कि संत को भारी लोहे की बेड़ियों में जकड़कर एक कालकोठरी में डाल दिया जाए।

अगली सुबह, सत्तर वर्षीय पुरोहित जोसेफ[7530] और डिकिन आइफल[7531] को ले जाया गया; दोनों धर्मी और पवित्र पुरुष थे, जिनका ईश्वर के प्रति उत्साह एक द्विधारी तलवार की तरह अधर्मीपन को चीरने वाला था। उन्हें दुष्ट जादूगर के सामने लाया गया, और उसने उन्हें घमंड से देखते हुए कहा:

'हे खोए हुए आत्माओं! साधारण लोगों को छोड़कर, तुम उन्हें अपनी अधर्मी शिक्षाओं से क्यों धोखा देते हो?'

पुजारी ने उत्तर दिया:

'हम लोगों को धोखा नहीं देते, बल्कि उन्हें धोखे से हटाकर सच्चे परमेश्वर की ओर मोड़ते हैं, जो सूर्य और अग्नि और सभी दृश्य और अदृश्य प्राणियों के प्रभु और सृष्टिकर्ता हैं; और हमारा उपदेश धर्मी है क्योंकि यह एकमात्र धर्मी परमेश्वर के बारे में सिखाता है।'

जादूगर ने कहा:

'कौन सी शिक्षा अधिक न्यायसंगत है: वह, जिसका पालन राजा और उसके सभी सेनापति करते हैं, या वह, जिसका पालन दुष्ट, बहिष्कृत, दरिद्र और तुच्छ लोग करते हैं – जैसे कि तुम?'

पुजारी ने उत्तर दिया:

यह सच है कि हम इस दुनिया के दीन और त्यागे हुए लोग हैं, क्योंकि हमारे प्रभु उन पर कृपा नहीं करते जो धन-संपत्ति और सांसारिक घमंड में रहते हैं—जो आत्मा के लिए विनाशकारी हैं—बल्कि हमारी गरीबी और नम्रता में करते हैं; इसी कारण, हम में से कई लोग स्वेच्छा से स्वयं को गरीब और विनम्र बनाते हैं, अपनी संपत्ति जिरूरतमंदों में बाँट देते हैं, जिसके लिए हमें अपने प्रभु से सौ गुना पुरस्कार की आशा है। और यदि हम धन-संपत्ति इकट्ठा करने में लग जाते, तो हम अपने हाथों से परिश्रम करके आपसे भी अधिक धनी हो जाते, जो केवल दूसरों की मेहनत का फल खाते हैं और अत्याचार से दूसरे लोगों, यानी गरीबों, की संपत्ति छीन लेते हैं; परन्तु हमारे लिए, हमारी मेहनत हमारे लिए आवश्यक भोजन करने और अपने कमजोर भाइयों को भोजन देने, दोनों के लिए पर्याप्त है।

हम जानते हैं कि धनी लोगों के लिए स्वर्ग के राज्य का मार्ग कठिन है, और जो धनी बनने का प्रयास करते हैं, वे प्रलोभन में पड़ जाते हैं।

'अपनी लंबी, छलपूर्ण बातें बंद करो और आग और सूर्य के सामने झुक जाओ,' जादूगर ने अपनी बात काटते हुए कहा।

वरिष्ठ ने उत्तर दिया:

[7529] बेशक, मृत्यु—या यूँ कहें कि सभी लोग स्वभाव से नश्वर हैं।

[7530] जोसेफ आदिआबेन के बेथ-केटुबा का एक पादरी था।

[7531] ऐफल बेबीलोनिया में यूफ्रेटिस के किनारे के क्षेत्र का एक डिकिन था।

'यह आशा मत करो कि तुम मुझे कभी तुम्हारी अधर्मी इच्छा का पालन करते हुए देखोगे, क्योंकि मैं उस सृष्टिकर्ता को नहीं छोड़ूँगा जिसने आग और सूर्य को बनाया है, और न ही मैं किसी सृष्टि की पूजा करूँगा।'

यह सुनकर, जादूगर ने आदेश दिया कि पवित्र पुरोहित जोसेफ को नग्न कर दिया जाए, फैला दिया जाए और गुलरुख की लकड़ियों से पीटा जाए—जिसकी टहनियाँ कांटेदार झाड़ी की तरह काँटों से भरी होती हैं—जब तक कि उसकी सारी खाल उधड़ न जाए और उसका मांस हड्डियों से अलग होने न लगे।

जादूगर ने तुरंत आदेश दिया कि संत को नग्न जमीन पर लिटाकर, उसे टेढ़ी-मेढ़ी लकड़ियों से बुरी तरह पीटा जाए; और उन्होंने उसके पूरे शरीर पर इस तरह मारा कि जमीन उसके खून से लथपथ हो गई।

रक्त से लथपथ संत ने पुकारा:

'मैं तुझे धन्यवाद देता हूँ, हे प्रभु मेरे परमेश्वर, कि तूने मुझे मेरे ही रक्त से मेरे पापों से शुद्ध करने की कृपा की।'

लंबी पिटाई के बाद, संत को दो लोहे की बेड़ियों से बाँधकर संत अकेक्सिमि के पास कालकोठरी में भेज दिया गया, जहाँ उन्होंने अपने दुखों के बीच एक-दूसरे में सांत्वना पाई और ईश्वर की दया की आशा से एक-दूसरे को सांत्वना दी।

जब पादरी को जेल ले जाया गया, तो डिकिन आइफल जादूगरों के सरदार के सामने बंधा हुआ खड़ा रहा।

जादूगर ने उसे देखकर कहा:

'और तुम्हें क्या कहना है? क्या तुम राजा की आज्ञा मानोगे? क्या तुम महान सूर्य के सामने झुकोगे? क्या तुम बलि के रक्त का सेवन करोगे ताकि आने वाली विपत्तियों से खुद को बचा सको? या फिर तुम दूसरों की तरह ही जिद्दी और अवज्ञाकारी बने रहोगे?'

पवित्र डिकिन ने उत्तर दिया:

'खून पीना तुम्हारे पापी सफेद बालों का काम है; तुम उस प्राणी को ईश्वर मानते हो जिसे ईश्वर ने ही बनाया है। मैं अपनी आत्मा की आँखों से तुम्हारी तरह अंधा नहीं होऊँगा, और न ही मैं सृष्टिकर्ता से अधिक प्राणी को सम्मान दूँगा।'

तब यातना देने वाले ने आदेश दिया कि उसके हाथ उसके घुटनों के नीचे बाँध दिए जाएँ और उसके बँधे हुए हाथों से एक बड़ी सी खंभा घुसा दिया जाए, जबकि छह जल्लाद—हर तरफ तीन-तीन—खंभे के सिरों पर पैर रखें और इस तरह संत को कुचल दें, और इस सबके दौरान उन्हें काँटेदार डंडों से बेरहमी से पीटा जाए। सैनिकों ने खंभे पर कूदकर शहीद के जोड़ तोड़ दिए, उसे डंडों से पीटा, और उसके शरीर को टुकड़े-टुकड़े कर दिया।

संत ने धैर्यपूर्वक इसे सहते हुए जादूगर से कहा:

'हे यातनाकर्ता, तू एक विकृत मानव शरीर को देखकर प्रसन्न हो रहा है, ठीक वैसे ही जैसे एक कुत्ता या कौवा लाश को देखकर प्रसन्न होता है, और उस पर भोज करने के लिए लालायित रहता है। फिर भी यह जान ले, हे दुष्ट मनुष्य: मैं इन यातनाओं को कुछ भी नहीं मानता।'

जादूगर, और भी अधिक क्रोध से जलते हुए, ने संत को और भी बुरी तरह पीटने का आदेश दिया, जब तक कि उसकी हड्डियाँ टूट न जाएँ और उसका मांस हड्डियों से गिरने न लगे। फिर, पिटाई बंद करने के बाद, वे उसे कालकोठरी में ले गए, क्योंकि वह अपने गंभीर घावों के कारण मुश्किल से चल पा रहा था; और, उसे वहाँ लाने के बाद, उन्होंने उसे पहले दो शहीदों के बीच एक बोझ की तरह फेंक दिया।

पाँच दिनों के बाद, संतों को कालकोठरी से स्वर्ग नामक एक स्थान पर लाया गया, जहाँ अग्नि देवता का मंदिर था, जिसकी पूजा अधर्मी फ़ारसी करते थे।

मगों के राजकुमार ने, न्यायपीठ पर बैठे हुए, संतों से कहा:

'मुझे तुरंत बताओ: क्या तुम अपनी मूर्खता पर अड़े रहोगे, या, बेहतर होकर, हमारे साथ शामिल हो जाओगे?'

संतों ने उत्तर दिया:

हे न्यायाधीश, यह जान लो कि हम आज भी उसी आस्था पर कायम हैं जो हमने आरंभ से रखी है, और अंत तक उसी पर बने रहेंगे। न तो धमकियाँ, न यातनाएँ, न उपहार, और न ही कोई अन्य साधन हमारे धर्मपरायण बयानों को बदल पाएगा। हम एकमात्र ईश्वर, सभी के प्रभु को जानते और स्वीकारते हैं; हम केवल उसी पर विश्वास करते हैं, और केवल उसी की पूजा करते हैं।"

यह सुनकर, जादूगर ने तुरंत यातना का एक नया रूप सोचा। उसने आदेश दिया कि शहीदों की बाहों, जांघों और पिंडलियों को रस्सियों से बांधा जाए; फिर रस्सियों में डंडे डालकर उन्हें घुमाया गया, जिससे रस्सियाँ उनके चारों ओर और

कस गईं। जब यह सब हो रहा था, तो संतों ने क्रूर यातनाओं और पीड़ाओं को सहन किया, क्योंकि उनकी हड्डियाँ टूट रही थीं, यहाँ तक कि उनकी हड्डियों के टूटने की आवाज़ दूर खड़े लोगों को भी सुनाई दे रही थी।

उनके यातनादाताओं ने उनसे कहा:

'राजा की इच्छा का विरोध मत करो।'

उन्होंने उत्तर दिया:

'जो कोई भी आपके अधर्मी राजा की इच्छा का पालन करता है, वह ईश्वर का विरोध कर रहा है।'

इस प्रकार संतों को तीसरे घंटे से छठे घंटे तक यातनाएँ दी गईं[7532] । फिर यातना देने वाले ने उन्हें वापस कालकोठरी में ले जाने का आदेश दिया, लेकिन संत स्वयं नहीं चल सकते थे, इसलिए उन्हें बोझ की तरह उठाकर उसी जगह फेंक दिया गया जहाँ वे पहले थे। यातना देने वाले ने रक्षकों को आदेश दिया कि कोई भी उनसे मिलने न जाए, और जो कोई भी उन्हें भोजन, पेय या कपड़े देना चाहे, उसे पकड़कर तुरंत मार डाला जाए। और मसीह के शहीदों ने इस कालकोठरी में तीन साल तक बड़ी तकलीफ में बिताए, वे भूख और प्यास से तड़पते रहे और उनके सड़ते हुए घावों से अत्यधिक पीड़ा सहते रहे, यहाँ तक कि उनकी दयनीय हालत देखकर रक्षक स्वयं भी दयालु हो गए और कई बार रो पड़े। लेकिन, राजकुमार द्वारा सख्त मनाही के कारण, वे उन्हें कोई राहत देने से डरते थे; केवल गुप्त रूप से उनमें से कोई एक, या वहाँ बंदी अन्य कैदियों में से कोई एक, कभी-कभी उन्हें रोटी का एक टुकड़ा या थोड़ा सा पानी पहुँचा देता था – इस प्रकार उन्होंने मसीह के प्रेम के लिए यह सब सहन किया।

तीन साल बाद, जब फारस का राजा सापोर वहाँ पहुँचा, तो उसके साथ फारस के सभी मगियों के प्रमुख राजकुमार, जिसका नाम अर्दाशबोअर था, भी था। जेल में बंद पवित्र शहीदों एकेप्सिमिस, जोसेफ और आइफल के बारे में जानने के बाद, उसने उन्हें अपने सामने लाने का आदेश दिया।

जब संत कालकोठरी से बाहर निकले, तो वे हवा में लहराती reed (एक प्रकार की घास) की तरह थे—वे इतने कमजोर हो गए थे। भूख और प्यास से थके-हारे, वे भूसे की तरह मुरझा गए थे, हवा में इधर-उधर उड़ रहे थे, और बिना सहारे के चल भी नहीं सकते थे। जब उन्हें राजकुमार अर्दाशबोअर के सामने लाया गया, तो वे एक अद्भुत दृश्य प्रस्तुत कर रहे थे, क्योंकि वे ताबूत में पड़े शवों की तरह दिख रहे थे: उनकी आँखें गहरी धँसी हुई थीं, और उनकी हड्डियाँ केवल चमड़े से ढकी थीं।

उन्हें देखकर राजकुमार ने कहा:

'क्या आप ईसाई हैं?' उन्होंने उत्तर दिया:

'हाँ, हम ईसाई हैं; हम एक जीवित ईश्वर में विश्वास करते हैं और उनकी पूजा करते हैं।'

राजकुमार ने कहा:

'क्या तुम देखते नहीं कि तुम्हारे धर्म ने तुम पर क्या विपत्ति लाई है, क्या दुर्भाग्य और दुख? क्योंकि तुम्हारे अनेक यातनाओं और लंबे कारावास के कारण, तुम जीवित मनुष्यों की आकृति खो चुके हो और ताबूत में पड़े शवों जैसे हो गए हो। मैं तुम्हें सबसे तेजस्वी सूर्य की पूजा करने की सलाह देता हूँ। यदि तुम मेरी आज्ञा नहीं मानोगे, तो तुम एक भयानक मृत्यु मरेगा।'

संतों ने सर्वसम्मति से ऐसी अधर्मीता को अस्वीकार कर दिया और सच्चे ईश्वर की गवाही दी, जिसने न केवल सूर्य बल्कि हर प्राणी की रचना की थी, और उन्होंने सभी चीजों के स्रष्टा के लिए मरने के लिए खुद को पूरी तरह से तैयार दिखाया।

एक लंबी बहस के बाद, जब राजकुमार उन्हें अपनी इच्छा के अनुसार झुकाने में असमर्थ रहा, तो उसने आदेश दिया कि संत अकेक्सिमि को पहले एक मोटे पट्टे से पीठ और पेट पर पीटा जाए; और तीस सैनिकों ने उन्हें पीटा, जबकि उद्घोषक चिल्ला रहा था:

'ज़ार की आज्ञा मानो, और तुम जीवित रहोगे।'

संत ने, जब तक उसमें शक्ति थी, उत्तर दिया:

'मैं अपने प्रभु की इच्छा को, उनसे प्राप्त हुई सारी शक्ति से पूरा करने का प्रयास करता हूँ।'

[7532] पूर्व में, हमारे समय-निर्धारण प्रणाली के अनुसार, दिन की शुरुआत सुबह 6 बजे मानी जाती थी। इसलिए, दिन का तीसरा घंटा हमारी गणना के अनुसार सुबह 9 बजे के बराबर है, और छठा घंटा दोपहर 12 बजे के बराबर है।

तब, कमज़ोर पड़ जाने पर, वे चुप हो गए। इसके बाद, उनका पवित्र सिर कलम कर दिया गया; और उस ईश्वर-प्रेरित युवक की भविष्यवाणी पूरी हुई, जिसने पहले, उनका सिर चूमते हुए कहा था:

'धन्य है यह सिर, क्योंकि यह मसीह के लिए पीड़ा सहन करेगा।'

पवित्र शहीद के शरीर को सड़क पर घसीटकर कुत्तों को नोचने के लिए फेंक दिया गया, जबकि पहरेदार यह सुनिश्चित करने के लिए दूर खड़े थे कि ईसाई उसे चुरा न लें। तीन दिन बीत जाने के बाद, जब पहरेदार कहीं चले गए, तो ईसाइयों ने इस अनमोल खजाने को उठाया और उसे सम्मानपूर्वक दफनाया।

संत अकेक्सिमि की शहादत के बाद, यातना देने वाले के आदेश पर, उन्होंने संत जोसेफ द प्रेस्बिटिर को पीटना शुरू कर दिया, जबकि उद्घोषक चिल्ला रहा था:

'यदि तुम राजा की इच्छा के आगे झुक जाओ तो तुम जीवित रहोगे।'

लेकिन संत ने पुकारा:

'ईश्वर एक है, और उसके सिवा कोई और नहीं है, जिसके द्वारा हम जीते हैं, चलते हैं और हमारा अस्तित्व है[7533] ; हम उसी में विश्वास करते हैं, उसी का सम्मान करते हैं – लेकिन राजा की आज्ञा को हम नज़रअंदाज़ करते हैं।'

लंबे समय तक पिटाई के बाद, वह थक गया और लगभग मृतप्राय हो गया। उसके यातना देने वालों ने, यह सोचकर कि वह मर गया है, उसे बाहर घसीटकर बाजार चौक में फेंक दिया; फिर, यह महसूस होने पर कि वह अभी भी सांस ले रहा है, उन्होंने उसे उठाकर कैद कर लिया।

संत जोसेफ के चले जाने के बाद, राजकुमार ने संत आइफल से बात करना शुरू किया:

'यहाँ, तुम्हारी आँखों के सामने, जीवन और मृत्यु, सम्मान और अपमान पड़े हैं; बेहतर को त्यागकर अपने लिए बदतर का चुनाव मत करो – उन मूर्खों के रास्ते पर मत चलो जिन्हें उनके कर्मों के अनुसार दंड मिला। 'लेकिन मेरी सलाह मानो, ताकि तुम्हें बड़े सम्मान मिलें और राजा के अपने हाथों से उपहार प्राप्त हों; यदि, हालाँकि, तुम मेरी नहीं मानोगे, तो अपने ही विनाश के लिए केवल तुम ही दोषी ठहरेगे।'

पवित्र डिकिन ने उत्तर दिया:

'स्वर्ग और पृथ्वी के सामने मेरे लिए यह बहुत शर्म की बात होगी, यदि मैं अपने पूर्वजों के समान मार्ग का अनुसरण न करूँ, जो मुझसे पहले गए। यदि वे, वृद्धावस्था में और शरीर से दुर्बल होकर, इतनी वीरता से कष्ट सहन कर गए, तो क्या मैं, जो आयु में छोटा और शरीर से मजबूत हूँ, इन क्षणिक कष्टों से डरूँ?' 'मैं उस मसीह की मृत्यु से नहीं डरता, जो मेरे लिए मरा; मैं एक क्षणिक जीवन के लिए अनंत जीवन खोना नहीं चाहता; मैं तुम्हारे उपहारों और सम्मानों के लिए अपनी धार्मिकता नहीं बेचूँगा।'

तब राजकुमार ने अपने आसपास खड़े लोगों से क्रोधित होकर कहा:

'उसे ले जाओ और दूसरों से ज़्यादा बुरी तरह पिटो।'

संत ने कहा:

'अरे गंदे, घिनौने कुत्ते! ये यातनाएँ तो केवल कायरों को डराती हैं, न कि उन बहादुर लोगों को जिनकी आत्मा मसीह के साथ एक होने की इच्छा से जलती है।'

और उन्होंने संत आइफल को बुरी तरह पीटना शुरू कर दिया। राजकुमार ने अपने आदमियों से आश्चर्य से कहा:

'ये ईसाई इस जीवन को क्यों तुच्छ समझते हैं, फिर भी मृत्यु को इस तरह चाहते हैं जैसे वह सांसारिक समृद्धि हो?'

उसके आसपास मौजूद लोगों ने उत्तर दिया:

'उन्हें अपने पूर्वजों से मिली एक शिक्षा प्राप्त है, जो कहती है कि इस दुनिया से बेहतर एक और दुनिया है; इस शिक्षा पर विश्वास करके, वे एक बेहतर दुनिया की आशा में इस दुनिया को तुच्छ समझते हैं, और इसलिए स्वेच्छा से अपने लिए मृत्यु का चुनाव करते हैं।'

जब राजकुमार अपने दरबारियों के साथ ऐसे संवाद में कई घंटे बिता रहा था, तब संत ने उस दौरान अनगिनत घाव झेले।

तब राजकुमार ने दया का दिखावा करते हुए पिटाई रोकने का आदेश दिया और संत से कहा:

[7533] यह अभिव्यक्ति प्रेरितों के काम 17:28 से ली गई है।

'ज़ार की इच्छा के आगे समर्पण करो और तुम ठीक हो जाओगे, क्योंकि हमारे पास ऐसे चिकित्सक हैं जो तुम्हारे सभी घावों को भर सकते हैं।'

संत ने उत्तर दिया:

'भले ही तुम एक ही शब्द से मेरे घाव भर सकते हो, मैं फिर भी तुम्हारी अत्याचारपूर्ण व्यवस्था के आगे नहीं झुकूँगा।'

राजकुमार ने कहा:

'मैंने यह तुम्हारी परीक्षा लेने के लिए कहा; क्योंकि भले ही तुम आज्ञा मान जाते, तब भी इतने सारे घावों से तुम्हारा ठीक होना असंभव ही था, जिन्हें केवल मृत्यु ही भर सकती है। तो फिर, सभी ईसाइयों के लिए एक उदाहरण बनो[7534] —ताकि वे राजा का विरोध करने या उसके राजकुमारों का अपमान करने की हिम्मत न करें।'

संत ने उत्तर दिया:

'दुष्ट न्यायाधीश! यद्यपि तुम हमेशा झूठ बोलते हो, परन्तु अब, अनजाने में, तुमने सत्य कहा है—कि मैं सभी मसीहियों के लिए साहस और उदारता का एक उदाहरण बनूँगा; क्योंकि कई विश्वासी, मुझे एक जीवित उदाहरण के रूप में देखकर और मसीह के लिए मेरी दृढ़ पीड़ा को देखकर, अपने प्रभु परमेश्वर के लिए उत्साह से भर जाएंगे और उसी के लिए समान यातनाएं सहेंगे।

राजकुमार, उसके साहस और सहनशक्ति से चकित होकर, पास में खड़े अपने प्रिय मित्र अदेशा की ओर देख कर बोला, जो अर्बेल शहर का रहने वाला था, और उससे कहा:

'इन दो ईसाइयों, जोसेफ और आइफल को अपने शहर ले जाओ और यह सुनिश्चित करो कि उन्हें उनके ही साथी ईसाइयों द्वारा पत्थर मारकर मार डाला जाए।'

वह स्वयं तलवार से उनका सिर कलम नहीं करना चाहता था, ताकि ईसाई शिक्षक अपने ही ईसाई भाइयों के हाथों अपना अंत करें।

अदेशा ने उन्हें जानवरों पर[7535] इस तरह रख दिया जैसे अनाज की मड़ाई या निर्जीव लकड़ी की गट्ठी, क्योंकि वे न चल सकते थे और न बैठ सकते थे, क्योंकि अनगिनत यातनाओं से उनके सभी अंग लकवाग्रस्त हो गए थे – इसीलिए उसने उन्हें जानवरों से बाँध दिया और अपने शहर के लिए रवाना हो गया। रास्ते में, जब भी आराम करने या रात बिताने के लिए रुकना आवश्यक होता था, तो उन्हें जमीन पर लिटा दिया जाता था, जानवरों से ऐसे उतार दिया जाता था जैसे वे लाश हों, क्योंकि पिटाई से उनके हाथ-पैर बेसुध हो चुके थे; और यदि कोई, दया से, उन्हें भोजन या थोड़ा पानी देना चाहता, तो वे उसे अपने हाथों से उनके मुँह में डालते; और फिर, उन्हें जमीन से उठाकर, वे उन्हें जानवरों पर रख देते और, जैसे वे मृत हों, उन्हें बाँधकर आगे ले जाते। अर्बेल शहर में पहुँचने पर, उन्हें एक बदबूदार कालकोठरी में बंद कर दिया गया, और किसी भी ईसाई को उनसे मिलने या किसी भी तरह से उनकी ज़रूरतों का ध्यान रखने की अनुमति नहीं थी। उनके घावों में बुरी तरह संक्रमण हो गया; उनके फोड़ों से पीप और खून रिस रहा था, और उनके घावों पर पट्टी बांधने, उन्हें दूसरी ओर पलटने, या उन्हें पीने के लिए ठंडे पानी का एक प्याला देने वाला कोई नहीं था। इस प्रकार संतों ने ईश्वर के लिए कष्ट सहे।

उस नगर में स्नांदुलिया नाम की एक भक्तिमती और पवित्र महिला थी, जो मसीह की खातिर जेल में कष्ट झेल रहे लोगों की गुप्त रूप से देखभाल करती थी। जब उसे पता चला कि जोसेफ और आइफल जेल में हैं, तो वह रात में अपने नौकरों के साथ वहाँ गई; रक्षकों को बहुत सारा सोना देकर, वह जेल में दाखिल हुई और उन्हें मुश्किल से जीवित पाया: वे अब बोल नहीं सकते थे और मुश्किल से साँस ले रहे थे। सलंदुलिया ने रक्षकों से विनती की कि वे उसे संतों को थोड़ी देर के लिए अपने घर ले जाने दें, और वादा किया कि वह उन्हें भोर तक तहखाने में वापस ले आएगी - और रक्षकों ने उसे अनुमति दे दी। शहीदों को लेकर, वह उन्हें अपने घर ले गई, जो तहखाने से बहुत दूर नहीं था; उन्हें एक बिस्तर पर लिटाकर, उसने उनके घाव धोए, साफ तौलियों से उनका खून पोंछा, उसे अपने शरीर पर मल दिया, उन्हें कीमती मूर के तेल से अभिषिक्त किया, उनके पपड़ों पर पट्टी बांधी, उनके टूटे हुए हाथों और पैरों को चूमा, और उनके लिए कड़वा रोया। जब उनका दुख

[7534] अर्थात् - यह एक भयानक उदाहरण है कि राजा की इच्छा की अवज्ञा करने वालों को कैसे दंडित किया जाता है।

[7535] यह खच्चरों और गधों को संदर्भित करता है, जिन पर सवारी की जाती थी और भारी बोझ उठाने के लिए इस्तेमाल किया जाता था। ऊंटों का उपयोग भारी बोझ और लंबी दूरी तक परिवहन के लिए किया जाता था।

कुछ कम हो गया, तो जोसेफ को होश आया और ऊपर देखकर उसने इस धर्मपरायण महिला को अपने लिए सिसिक-सिसिक कर रोते हुए देखा; उसने धीरे-धीरे उससे बात करनी शुरू कर दी:

'हे पवित्र महिला, आपकी दया ऐसी है, जो परमेश्वर को और हम पर उनके लिए दुख सहने वालों को भी प्रसन्न करती है; पर हमारे लिए इतनी कड़वी रोना अनुचित है, और ऐसी रोना हमारी ईसाई आशा और विश्वास के अनुकूल नहीं है।'

उस महिला ने उत्तर दिया:

'मुझे हर्ष है कि मिसीह ने तुम्हें इतना साहस दिया है कि तुम इन भयंकर यातनाओं को दृढ़ता से सहन कर रही हो; मुझे और भी अधिक हर्ष होगा यदि मैं तुम्हें अंत तक यह यातना सहते देखूँ; फिर भी, रोना मानव स्वभाव में स्वाभाविक है।'

संत जोसेफ ने उससे कहा:

'हालाँकि, तुम्हें हमारे लिए रोना नहीं चाहिए, क्योंकि तुम जानती हो कि मिसीह के लिए सहे गए सभी दुख शाश्वत आनंद की ओर ले जाते हैं।'

जैसे ही भोर हुई, संतों को तुरंत कालकोठरी में ले जाया गया। छह महीने बीत जाने के बाद – इस बीच संत अपने घावों से कुछ हद तक उबर चुके थे, वे थोड़ा खड़े हो सकते थे और चल सकते थे, हालांकि केवल आइफल की बाहें ही बेजान लटक रही थीं – – अदेश, जिसे अर्दासाबोर ने उन्हें फांसी देने के लिए सौंपा था, उससे उसका अधिकार छीन लिया गया, और उसकी जगह जेरोव नाम का एक और न्यायाधीश आया, जो पहले वाले से भी अधिक क्रूर था। जब वह शहर में आया और अपने देवता—अग्नि—के मंदिर में बलिदान चढ़ाने लगा, तो पुरोहितों ने उसे पवित्र शहीदों, जोसेफ और आइफल के बारे में सूचित किया, और कहा:

'तहखाने में दो ईसाई शिक्षक हैं जिन्हें पहले अर्दासाबोर ने यातना दी थी और फिर यहाँ लाया गया ताकि ईसाई स्वयं उन पर पत्थर चलाएँ। चूँकि वे अपने घावों के कारण चल नहीं सकते थे, हम उन्हें फाँसी के लिए बाहर नहीं ले आए, बल्कि तब तक इंतजार किया जब तक वे ठीक नहीं हो गए ताकि हम उन्हें हमारे साथ सहमत होने के लिए मजबूर कर सकें।'

यह सुनकर, न्यायाधीश ने तुरंत उन्हें अपने सामने लाने का आदेश दिया और उन्हें आग की पूजा करने और उनके बलिदानों में भाग लेने के लिए मजबूर करने हेतु प्रलोभन और धमकियों, दोनों का उपयोग करते हुए उनसे लंबी बहस की। जब वह इसमें पूरी तरह से असफल हो गया, तो उसने पहले संत जोसेफ को नग्न, सिर नीचे करके फांसी देने और बैल की अस्थि-मज्जा से कोड़े मारने का आदेश दिया। और जब वे उसे बुरी तरह पीट रहे थे, तो जो घाव मुश्किल से भरे थे, वे फिर से खुल गए, और खून झरनों की तरह बहने लगा। वहाँ मौजूद कुछ ज्योतिषियों ने संत के पास आकर धीरे से कहा:

'हे मनुष्य! यदि तुझे लोगों के सामने हमारे देवता के मंदिर में प्रवेश करने और हमारे साथ बलिदान चढ़ाने में शर्म आती है, तो गुप्त रूप से ऐसा करने का वादा कर, और तुझे इस यातना से मुक्ति मिल जाएगी।'

लेकिन संत ने ऊँचे स्वर में पुकारा: *भजन संहिता 6:9* – 'हे *अन्याय करने वालों, सब मेरे पास से दूर हो जाओ, क्योंकि यहोवा ने मेरी विलाप की पुकार सुनी है*।'

उन्होंने उसे तीन घंटे तक पीटा; फिर यातना देने वाले ने आदेश दिया कि उसे नीचे उतारकर कालकोठरी में ले जाया जाए, क्योंकि वह अपने खुले घावों के कारण फिर से चलने में असमर्थ था।

जब संत जोसेफ को उतारकर कालकोठरी में ले जाया गया, तो संत आइफल को उनकी जगह पर लटका दिया गया और उन्हें भी निर्दयता से लंबे समय तक पीटा गया। उन्होंने, हालांकि, लगातार पुकारा:

'मैं एक ईसाई हूँ।'

जब सेंट आइफल को भी उतारा गया, तो उसकी जगह मनीकिय heresy[7536] was नामक एक व्यक्ति को फांसी दी गई; सभी के सामने अपने विधर्मी विश्वास का इकरार करने के बाद, उसने फारसियों को उनकी अधर्मीता के लिए भी

[7536] मनीकवाद एक विधर्म है जो फारस में ईसाई धर्म को ज़रातुष्ट्र के फारसी धर्म के सिद्धांतों के साथ मिलाने के प्रयास के प्रभाव में उत्पन्न हुआ, जो द्वैतवाद का प्रचार करता था, अर्थात् दो स्वतंत्र सिद्धांतों या क्षेत्रों - अच्छाई और बुराई - के शाश्वत अस्तित्व का। मनीखीय धर्म के संस्थापक, मनीस (जो तीसरी शताब्दी में रहते थे), शुरू में एक मगस (पुजारी) थे; बाद में उन्होंने ईसाई धर्म अपना लिया और एक पादरी (प्रेस्बिटर) भी बन गए, लेकिन अपने पगन (पारसियन) धर्म की ओर झुकाव के कारण उन्हें जल्द ही चर्च से बहिष्कृत कर दिया गया और बाद में पारस के राजा वरण प्रथम के आदेश पर उन्हें मार डाला गया। उनकी शिक्षा के अनुसार, मसीह केवल एक प्रकाशमान युग (आत्मा) है जो प्रसारण के माध्यम से प्रकाश के पिता से उत्पन्न हुआ है। उसका आधा भाग पदार्थ में समा गया और दृश्यमान दुनिया की आत्मा बना, जिसे कथित रूप से पीड़ित यीशु कहा जाता है; दूसरा आधा भाग, एक अन्य युग, जीवन-दायक आत्मा की सहायता से, पदार्थ से मुक्त हो गया और सूर्य में निवास करने लगा; इसे तथाकथित 'अतुलनीय यीशु' कहा जाता है। मसीह का अवतार, 'अतुलनीय यीशु' का सूर्य से अवतरण था, ताकि 'दुखित यीशु' को मुक्त किया जा सके, जिनके प्रकाशमान कणों को शैतान ने, मानो, एकत्र किया था और उन पर आसान नियंत्रण के लिए, उन्हें एक मानव के

नदिा की। उसे फांसी देने के बाद, उन्होंने उसे पीटना शुरू कर दयिा। पहले तो उसने अपने घावों को सहन कयिा; लेकनि जब उन्होंने उस पर और अधकि क्रूरता से प्रहार करना शुरू कयिा, तो वह अपनी पूरी आवाज़ में चलि्लाने लगा, अपने गुरु को कोसने लगा, अपने धर्म का त्याग करने लगा और फारसी देवताओं की पूजा करने का वादा करने लगा। वहाँ मौजूद संत आइफल ने यह सुनकर आनंदति होकर उस पर हँसते हुए कहा:

'तूने अभी-अभी यातनाओं का स्वाद चखा है, और पहले ही तूने अपने मनीकयि धर्म को त्याग दयिा है। धन्य है मसीह हमारा ईश्वर, जो हमें सभी सबसे कठोर यातनाओं में मजबूत करता है और हमें हमारे धर्मपरायण वशि्वास में अजेय और अडगि रहने की शक्तपि्रदान करता है!'

यह सुनकर न्यायाधीश संत पर क्रोधति हो गया और आदेश दयिा कि उसे काँटों वाली गुलाब की टहनयिों से फरि से पीटा जाए। और उन्होंने तब तक उसे पीटा जब तक उन्हें लगा कि वह मर चुका है; फरि, उसे घसीटकर बाहर नकिालकर, उन्होंने उसे ऐसे फेंक दयिा मानो वह मर चुका हो। मंत्रयिों में से एक ने, वहाँ पड़े नग्न शरीर को देखकर, स्वाभावकि प्रवृत्तकि वश में होकर उस पर दया की और उसे एक चादर से ढक दयिा। उसके कुछ साथयिों ने यह देखकर न्यायाधीश को बताया कि उसने क्या कयिा था, और उसे पकड़कर बेरहमी से पीटा। इस प्रकार उन नरि्दयी लोगों ने उनकी दया का बदला लयिा; लेकनि जब उन्हें एहसास हुआ कि संत आइफल अभी भी सांस ले रहे थे, तो उन्होंने उनके पैरों से पकड़कर उन्हें वापस कालकोठरी में घसीट लयिा।

कुछ समय बीत जाने के बाद, पवत्रि शहीदों को फरि से कालकोठरी से न्यायाधीश के सामने लाया गया, और उसने उनसे कहा:

'हे लोगों, अपनी ही भलाई के लिए दया करो; बलदिान का रक्त चखो और अपनी यातनाओं से मुक्त हो जाओ।'

लेकनि उन्होंने एक स्वर में उत्तर दयिा:

'मानवों के लिए खून पीना उचति नहीं है, बल्कि केवल मांसाहारी कुत्तों के लिए। लेकनि चूँकि तुम, स्वभाव से एक इंसान होते हुए भी, स्वभाव से एक कुत्ता हो, जो तुम्हें बनाने वाले ईश्वर पर भौंकता है, तो खुद खून पीओ और उससे तृप्त हो जाओ।'

न्यायाधीश, क्रोधति होकर, ने उन्हें फरि से कोड़े मारने का आदेश दयिा। उपस्थति लोग, उन पर दया करके, कहने लगे:

'खून के बजाय, कम से कम कुछ उबला हुआ बलि का मांस चखो, ताकि तुम अपने कष्टों से मुक्त हो जाओ।'

संतों ने उत्तर दयिा:

'हम कसिी भी चीज़ से अपने शुद्ध वशि्वास को कलंकति नहीं करेंगे।'

इसके बाद, न्यायाधीश ने अपने सलाहकारों के साथ मलिकर पवत्रि शहीदों पर यह सजा सुनाई: कि ईसाइयों को उन्हें पत्थर मार-मार कर हत्या कर देनी चाहिए।

हालाँकि, संत जोसेफ ने कहा:

– मैं न्यायाधीश को एक रहस्य बताना चाहता हूँ।

न्यायाधीश तुरंत उसके पास गया, यह सोचकर कि वह मूर्तयिों को बलदिान चढ़ाना चाहता है। लेकनि संत ने न्यायाधीश के चेहरे पर थूकते हुए कहा:

'हे अमानवीय न्यायाधीश, क्या तुझे शर्म नहीं आती कि तू मानव स्वभाव के वरिुद्ध इतनी क्रूरता से लड़ता है और अपनी क्रूरता उन पर दखिाता है जो मर रहे हैं?'

और न्यायाधीश लज्जा के मारे अपनी कुर्सी पर लौट गया। तत्काल कई नौकरों को ईसाइयों के घरों पर भेजा गया, और उन्होंने जबरदस्ती ईसाइयों को उनके घरों से न्यायस्थल तक खींच लयिा, ताकि वे संत जोसेफ पर पत्थर फेंक सकें। न्यायस्थल से थोड़ी दूर एक खुले मैदान में उन्हें खींचकर, उन्होंने उनकी जांघों तक गहरा गड्ढा खोदा और संत को उसमें बठिा दयिा, क्योंकि अन्यथा वे खड़े नहीं रह सकते थे। उसके हाथ पीठ पीछे बाँधकर और उसके चारों ओर ईसाइयों को खड़ा करके, नौकरों ने ईसाइयों के हाथों में पत्थर रख दिए और उन्हें संत पर पत्थर फेंकने के लिए मजबूर कयिा, जो उन्होंने अपनी इच्छा के वरिुद्ध कयिा। उन्होंने धन्य स्नांडुलयिा को भी लाया और उसे संत पर पत्थर फेंकने के लिए मजबूर कयिा।

रूप में बंद कर दयिा था। इस सद्धिांत के अनुसार, मसीह का अवतार केवल मायाजाल था (डॉसेटज़्म)। नैतकि रूप से, इसने स्वयं के भीतर शरीर को धीरे-धीरे वश में करके प्रकाश को उससे मुक्त करने के लिए, पदार्थ के खलिाफ संघर्ष का प्रचार कयिा। मनखिीय वधिर्म चौथी और पांचवीं शताब्दी में वशिेष रूप से व्यापक था।

लेकनि उसने पुकारा:

'अनादकिाल से यह कभी नहीं सुना गया कि कोई महलिा को पवत्रि पुरुषों के खलिाफ हाथ उठाने के लिए मजबूर करे, जैसा कि आप कर रहे हैं, दुश्मनों के खलिाफ नहीं बल्कि हम पर युद्ध छेड़ रहे हैं, और हमारे शांतपूर्ण देश को खून-खराबे और हत्या से भर रहे हैं।'

दुष्ट लोगों ने एक लंबे डंडे से लोहे का एक काँटा बाँधा और उसे स्नांदुलयिा के हाथों में थमा दयिा ताकि वह उससे दूर से संत को भेद सके। लेकनि उसने कहा:

'उनके लिए यह बेहतर होता कि वे इसे मेरे ही दलि में घोंप देते, बजाय इसके कि वे इस पवत्रि और नरि्दोष शरीर को छूते।'

संत के चारों ओर पत्थरों का ढेर लगा दयिा गया था, ताकि केवल उनका सरि ही दखिाई दे रहा था। दुष्टों में से एक ने एक बड़ा पत्थर उठाया, उसे संत के सरि के ऊपर घुमाया और उनके सरि पर वार कर उसे चकनाचूर कर दयिा। इस प्रकार उस पुण्य आत्मा ने अपना प्राण प्रभु के हाथों में सौंप दयिा। शहीद के शरीर की रखवाली के लिए एक पहरेदार तैनात कयिा गया, जैसे कि यह कोई खजाना हो, ताकि उसे वशि्वासी चुरा न लें। तीन दनि बीत जाने के बाद, एक बड़ा भूकंप आया। स्वर्ग से आग गरिने से पहरेदार जलकर मर गए और पत्थर धूल की तरह बखिर गए। जब भूकंप, गरज और बजिली रुक गई, तो लोग उस जगह पर आए जहाँ संत के शरीर पर पत्थर फेंके गए थे, और उन्होंने देखा कि पत्थर बखिरे पड़े थे, लेकनि उन्हें संत के शरीर का कोई नशिान नहीं मलिा, क्योंकि प्रभु ने, केवल अपने जाने-पहचाने रास्तों से, उसे अज्ञात स्थानों पर स्थानांतरति कर दयिा था।

संत डीकन आइफल को पेट्रयिास नामक एक गाँव[7537] ले जाया गया, जहाँ के ईसाइयों ने भी दबाव में आकर उन्हें पत्थर मारकर हत्या कर दी; लेकनि उनके पवत्रि शरीर को पास में रहने वाले भक्षिुओं ने रात में चुपके से ले जाकर सम्मानपूर्वक दफना दयिा। जसि स्थान पर संत आइफल को मारा गया था, वहाँ एक 'मेर्सनिा' का पेड़[7538] उग आया, जसिसे पवत्रि शहीद की प्रार्थनाओं के द्वारा हर प्रकार की बीमारयिाँ ठीक होती थीं। और वह पेड़ पाँच वर्षों तक खड़ा रहा, और जो भी उसके पास आता था, उसकी बीमारयिाँ ठीक करता रहा। यह देखकर, दुष्टों ने ईर्ष्या के कारण, उसे जड़ से काट दयिा। उस स्थान पर कई धर्मी लोगों ने स्वर्गीय प्रकाश की करिणें और स्वर्गदूतों को ईश्वर की महमिा करते और स्तुति करते देखा, जो अपने संतों का सम्मान करते हैं; जनिकी प्रार्थनाओं के द्वारा हम भी योग्य ठहरें कि स्वर्गदूतों के साथ मलिकर सर्वोच्च परमेश्वर की महमिा गा सकें, युगों-युगों तक। आमीन।

कॉन्टाकयिन, स्वर 2:

हे पवत्रि अकेप्समिोस, दव्यि ज्ञान से आप नरि्दोष रूप से गुप्त रूप में नरि्देशति हुए; आप एक सुखद और धन्य बलदिान थे: क्योंकि आपने अपने साथी शहीदों के साथ महमिामय रूप से मसीह का प्याला पयिा, हम सभी के लिए अथक प्रार्थना करते हुए।

लद्दिा में महान शहीद संत जॉर्ज के चर्च का अभषिेक

3 नवंबर को स्मरणोत्सव

3 नवंबर को, रूसी चर्च लड्डिा में महान शहीद सेंट जॉर्ज के चर्च के पुनर्स्थापन का स्मरण करता है।

[7537] यह बस्ती बेट-नुगार्ड क्षेत्र में स्थति थी। नुगार्ड मूसल के मेट्रोपोलसि के अधीन एक बशिपरीक शहर है।

[7538] मेर्सनिा का अर्थ है 'मर्टल' या 'मर्टल का पेड़'। यह एशयिा, अमेरकिा के उष्णकटबिंधीय क्षेत्रों, अफ्रीका - मस्रि - और भूमध्य सागर के तटों के साथ दक्षणिी यूरोप में उगता है। यह पेड़ तीन सैज़ेन (साज़ेन्ज़) की ऊँचाई तक पहुँचता है, इसकी छाल लालमिा लिए हुए होती है और इसकी लंबी, मजबूत शाखाओं पर छोटे, सदाबहार पत्ते और सफेद, सुगंधति फूल होते हैं जो मई में खलिते हैं। मर्टल का पेड़ प्राचीन लोगों का सबसे प्रयि था; इसे बगीचों में उगाया जाता था, त्योहारों के दौरान घरों को सजाने के लिए इस्तेमाल कयिा जाता था, और दावतों, वशिेषकर शादयिों के दौरान सरि पर मर्टल की मालाएं पहनी जाती थीं। प्राचीन लोगों के बीच, मर्टल को आम तौर पर प्रेम और शांत खुशी के प्रतीक के रूप में पूजा जाता था, जो वर्तमान में सुखद परस्थितियिों और भवषि्य के लिए उज्ज्वल आशाओं का प्रतनिधित्वि करता था।

महान शहीद संत जॉर्ज ने रोमन सम्राट डायोक्लेटियन द्वारा चर्च पर किए गए क्रूर अत्याचारों के दौरान यातनाएँ झेलीं। अपनी यातनाओं के दौरान, कैद में रहते हुए, संत जॉर्ज ने जेलर से अनुरोध किया कि वह अपने सेवक को उसकी कोठरी में मलिने आने दे, और जब सेवक को प्रवेश दिया गया, तो उसने उससे विनती की कि उसकी मृत्यु के बाद उसका शरीर पैलेस्टाइन ले जाए। नौकर ने अपने मालकि के अनुरोध को अक्षरशःपूरा किया। महान शहीद का सिर कलम किया हुआ शरीर कालकोठरी से निकालकर, उसने उसे रामले शहर में सम्मानपूर्वक दफना दिया[7539] ।

धार्मकि सम्राट कॉन्स्टेंटनि के शासनकाल के दौरान, पवित्र महान शहीद के भक्तों ने लिड्डा में उनके सम्मान में एक भव्य चर्च का निर्माण किया। इसके अभषिेक के समय तक, पवित्र महान शहीद के अक्षय अवशेषों को रामला से इस चर्च में स्थानांतरति कर दिया गया था । यह घटना 3 नवंबर को हुई थी। यह ज्ञात नहीं है कि उस समय इस दनि का वार्षकि उत्सव पहले से ही स्थापति था या नहीं; किसी भी स्थतिि में, वर्ष 1030 से सीरियाक चर्च के मासकि कैलेंडर में, 3 नवंबर को एक पर्व दविस के रूप में चह्निति किया गया है।

बाद में, महान शहीद का भव्य चर्च, जो लिड्डा शहर के मुख्य आकर्षणों में से एक था, बहुत उपेक्षा की स्थतिि में आ गया। केवल वेदी और स्वयं महान शहीद की कब्र ही बरकरार रही, जहाँ ईसाई अपनी प्रार्थना सभाएँ आयोजति करते रहे। 19वीं सदी के उत्तरार्ध में रूसी ऑर्थोडॉक्स द्वारा इस चर्च में रुचि फिरि से जागृत हुई। परोपकारियों के दानों और रूसी सरकार द्वारा आवंटति उदार निधियों ने लिड्डा को इस चर्च को एक बार फरि से बहाल करने और खूबसूरती से सजाने में सक्षम बनाया। पुनर्नरि्मति चर्च का अभषिेक नवंबर 1872 में, उसी दनि की वर्षगांठ पर हुआ जिस दनि इसका पहली बार अभषिेक किया गया था। रूसी चर्च आज भी इस दनि इस महत्वपूर्ण घटना का स्मरण करती है; इस उत्सव के सम्मान में, रूस में कई मठ और चर्च बनाए गए हैं।

कॉन्टाकयिन, स्वर 2:

हम, विश्वासयिों ने, आपकी चुनी हुई और शीघ्र मध्यस्थता में शरण लेकर, प्रार्थना करते हैं कि हम, मसीह के क्लेश-भोगी, शत्रु के प्रलोभनों और सभी विपत्तियों और बुराइयों से मुक्त हों, जब हम आपकी स्तुति गाते हैं; और आइए हम पुकारें: हे शहीद जॉर्ज, आनन्दति हो।

परम पूजनीय अकेक्सिमि की स्मृति

3 नवंबर को स्मरणोत्सव

संत अकेक्सिमि, थियोडोसियिस महान के शासनकाल में रहते थे[7540] । उन्होंने खुद को एक छोटी सी कोठरी में बंद कर लिया था, और वहाँ 60 वर्षों तक रहे, तीव्र गर्मी और ठंड को सहते हुए, किसी को देखते हुए बनिा, किसी से बात किए बनिा, और खुद को केवल ईश्वर की प्रार्थना के लिए समर्पति कर दिया। उनकी कोठरी जमीन में खोदी गई थी और उसमें रहना बहुत असुविधाजनक था; उसका भोजन पानी में मलिाई गई दाल था, और वह भी सप्ताह में केवल एक बार। वह अपनी ज़रूरत का पानी रात में पास के झरने से लाता था, ताकि कोई उसे देख न सके। बार-बार विनती करने पर, उसने बशिप का पद स्वीकार किया और कई चमत्कार करने के बाद, उसने शांतपिूर्वक अपना प्राण प्रभु को सौंप दिया।

पवित्र शहीदों एटकिस, अगपिया, यूडोक्सिया, कैटेरिया, इस्टुकैरिया, पक्टोविया और निकोपोलयिन की स्मृति

3 नवंबर को स्मरण किया जाता है

[7539] रम्ला फ़लिस्तीन में एक शहर है, जो जोपा से बहुत दूर नहीं है।

[7540] थेओडोसियिस महान – 379 से 395 तक रोमन सम्राट। उनके शासनकाल के दौरान, रोमन साम्राज्य में ईसाई धर्म को निर्णायक रूप से स्थापति किया गया था।

पवत्रि शहीदों एटकिस और यूडोक्सयिस ने डेसयिस के शासनकाल में[7541] , कैटरयिस और इस्तुकारयिस के साथ सेबास्टे शहर[7542] में सैनकिों के रूप में सेवा की। मसीह में वशि्वास फैलाने के लिए, संतों को कमांडर मार्सेलस द्वारा पकड़ लयिा गया, जसिने उन्हें कई यातनाएं दीं। फरि उन्हें एक कालकोठरी में डाल दयिा गया, जहाँ उन्हें बैल की नसों से कंधों और पेट पर पीटा गया, और बाद में उनके दाँत तोड़ दिए गए। यातना के दौरान, कमांडर ने संत कैटेरयिोस की ओर मुड़कर पूछा:

'क्या तुमने लोगों को राजा की आज्ञाओं की अवज्ञा करना सखिाया है?'

'मैंने लोगों को राजा का वरिोध करना नहीं सखिाया,' उन्होंने उत्तर दयिा, 'बल्कि मैंने उन्हें अमर राजा, मसीह में वशि्वास करना सखिाया।'

इसके बाद, संत इस्तुकारी, पाक्टोवयिस और नकिोपोलयिन को बाहर लाया गया; उन्होंने मसीह को परमेश्वर के रूप में स्वीकार कयिा, जसिके लिए उन्हें दोषी ठहराया गया और खंभों से पीटा गया, और उन्होंने कई अन्य यातनाएँ भी सहन कीं; अंत में, दूसरों के साथ, उन्हें खंभे पर जलाने की सज़ा दी गई और इस प्रकार वे प्रभु के पास चले गए।

17 नवंबर

4 नवंबर (पुराने कैलेंडर के अनुसार)

हमारे पूजनीय पति जॉन महान का जीवन

4 नवंबर को स्मरणोत्सव

आदरणीय इओनकियिोस का जन्म बथिनियिा क्षेत्र[7543] के मारकिाती नामक गाँव[7544] में हुआ था। उनके पति का नाम मरिट्रिकिोस और उनकी माता का नाम अनास्तासयिा था। जब इओनकियिोस बड़े हुए, तो उनके माता-पति ने उन्हें अपने पशुओं की देखभाल करने का काम सौंपा। हालाँकि उन्होंने कोई औपचारकि शक्षिा प्राप्त नहीं की थी, फरि भी वे ज्ञान में कई वद्विानों से आगे थे, क्योंकि उन्होंने प्रभु की आज्ञाओं का अध्ययन कयिा था। उसे ज्ञान देने वाले पवत्रि आत्मा के मार्गदर्शन में, वह अत्यंत सदाचारी, सौम्य, वनिम्र, धैर्यवान और आज्ञाकारी था; और वह प्रार्थना में इतना उत्साही था कि वह अक्सर अपने झुंड को छोड़कर कसिी एकांत स्थान पर खड़े होकर पूरे दनि ईश्वर से भक्तपिूर्वक प्रार्थना कयिा करता था। जब भी वह प्रार्थना करने के लिए अलग होते, तो वे अपने झुंड पर क्रॉस का चह्नि बनाते, और उनका झुंड भटकता नहीं था; न तो जंगली जानवर और न ही चोर उन्हें उठाकर ले जाते थे, और वह धन्य युवक, शाम को अपने एकांत से लौटकर, झुंड को घर ले आते थे।

इस प्रकार संत ने अपना जीवन व्यतीत कयिा जब तक कि वह वयस्क नहीं हो गया। उस समय, ग्रीस में नरिंकुश लयिो का शासन था, जो कॉन्स्टेंटाइन कोप्रोन्यमस का पुत्र था और आइकॉनोकलास्टकि वधिर्म[7545] से प्रभावति था। इस सम्राट ने अपनी सेना में साम्राज्य भर से युवकों की भर्ती शुरू की, और उन लोगों को चुना जो अपनी सुंदरता और बहादुरी के लिए प्रसद्धि थे। उनके द्वारा इस भर्ती के लिए भेजे गए लोग भी बथिनियिा क्षेत्र में आए। जब वे उस गाँव में पहुँचे जहाँ इओआनकियिोस रहता था, तो उन्होंने देखा कि यह युवक सुंदर, लंबा, मजबूत कद-काठी का और सैन्य सेवा के

[7541] डेसयिस – रोमन सम्राट और ईसाइयों का नर्दियी उत्पीड़क; उसने 249 से 251 तक शासन कयिा।

[7542] कई शहर इस नाम से जाने जाते हैं। यहाँ, यह संदर्भ आर्मेनयिा में सेबास्टे का है।

[7543] बथिनियिा एशयिा माइनर का एक उत्तर-पश्चमिी प्रांत था। आज यह अनातोलयिा के उत्तरी भाग में स्थति है। बथिनियिा में ईसाई धर्म प्रेरतिों के समय में ही दखिाई दयिा था। आज, बथिनियिा के धर्मप्रांत में 12 बशिपरी शामलि हैं, जो सभी नकिोमेडयिा के आर्चबशिप के अधकिार के अधीन हैं।

[7544] *मारकिाती* गाँव अपोलोनयिा के उत्तर में स्थति था, जो थ्रेस में पोंटस के तट पर एक प्रसद्धि बस्ती थी।

[7545] लयिो चतुर्थ इसाउरयिन, 775 से 780 ईस्वी तक। आइकनोक्लास्ट वे वधिर्मी थे जन्होंने पवत्रि प्रतमिाओं की पूजा के खलिाफ वद्रिोह कयिा था। प्रतमिाओं पर अत्याचार सम्राट लयिो द इसाउरयिन के अधीन 626 में शुरू हुआ था।

लिए उपयुक्त था; इसलिए, वे उसे अपने साथ ले गए और उसे एक्स्क्यूबटिर्स[7546] में भर्ती कर लिया। उस समय से, इओआनकियिोस ने अपनी सैन्य सेवा शुरू की और अपने दुश्मन उसकी बहादुरी से डरते थे, जबकि उसकी नम्रता और विनिम्रता ने उसे अपने साथियों के बीच प्रिय बना दिया; सबसे बढ़कर, वह परमेश्वर को सबसे अधिक प्रसन्न करता था, क्योंकि वह उनके पवित्र आज्ञाओं का सख्ती से पालन करता था। लेकिन शैतान, इओनकियिोस के पुण्य जीवन से ईर्ष्या करके, उसे मूर्तिभंजक विधिर्म की ओर भटका ले गया। उस समय, यह विधिर्म परमेश्वर की कलीसिया में बहुत बड़ा उथल-पुथल मचा रहा था: प्रभु की कलीसियाओं से पवित्र प्रतिमाओं को बाहर फेंका जा रहा था, और जो लोग उनकी पूजा करते थे, उन्हें सताया जाता था। और इस प्रकार इओनकियिस उस विधिर्म से इतना मोहित हो गया था कि वह पवित्र प्रतिमाओं के बारे में एक शब्द भी सुनना नहीं चाहता था। लेकिन ईश्वर, जो सभी का उद्धार चाहता है, ने उसे भी निम्नलिखित तरीके से ऐसे भ्रम से बचाया।

ईश्वर की व्यवस्था से, इओआनकियिोस को अपनी टुकड़ी के साथ पूर्व की ओर भेजा गया और वहाँ से लौटते समय, वह ओलंपस पर्वत[7547] से होकर गुज़रा, जिस पर उस समय अपने असाधारण विवेक के लिए प्रसिद्ध एक भिक्षु रहता था। यह भिक्षु, ईश्वर की आत्मा से यह जानकर कि इओआनकियिोस अपनी टुकड़ी के साथ गुज़र रहा था, अपनी मरुभूमि की कोठरी से बाहर आया और उससे कहा:

'मेरे पुत्र इओनकियिोस! यदि तुम स्वयं को ईसाई कहते हो, तो तुम मसीह की प्रतिमा का तिरिस्कार क्यों करते हो? यदि तुममें सच्चा विश्वास नहीं है तो तुम्हारा पुण्य जीवन का सारा प्रयास व्यर्थ है।'

यह सुनकर, इओनकियिस यह देखकर चकित रह गया कि उस व्यक्ति ने, जो उसे नहीं जानता था, उसका नाम लेकर बुलाया था, और यह कि एक ऐसा व्यक्ति जिसने उसे कभी नहीं देखा था, उसके कर्मों को जानता था। हालाँकि, यह महसूस करते हुए कि उससे बात करने वाला व्यक्ति परमेश्वर की आत्मा से भरपूर था और उसने अपनी दिव्यदृष्टि के कारण उसके सभी कर्मों के बारे में जान लिया था, इओआनकियिोस उसके सामने जमीन पर गिर पड़ा, झुक गया और उससे क्षमा मांगी। उसने कहा कि उसने अज्ञानता के कारण पाप किया था, और वादा किया कि वह मसीह की प्रतिमा और सभी संतों की प्रतिमाओं के प्रति उचित सम्मान और पूजा अर्पित करेगा। उस समय से, धन्य इओआनकियिोस ने बड़ी लगन से पवित्र प्रतिमाओं की पूजा करना शुरू कर दिया और अपने अज्ञान के कारण उन्हें तुच्छ समझने पर गहरा पश्चाताप किया। अपने पाप का प्रायश्चित करने की इच्छा से, उन्होंने उपवास के द्वारा खुद को थकाना और विभिन्न तरीकों से अपने शरीर को वश में करना शुरू कर दिया। जब वह शाही महल के गलियारों में होता, तो वह नंगे फर्श पर लेट जाता, पूरी रात प्रार्थना करता और बहुत कम खाता; हालाँकि, जब उसे सैनिकों के साथ भोजन करना होता, तो वह उनसे अपना उपवास छिपाने की कोशिश करता।

ऐसे तपस्वी प्रयासों में पूरे छह साल बिताने के बाद, बुल्गारियाई लोगों ने ग्रीकों के खिलाफ एक बड़ा आक्रमण शुरू किया और थ्रेस[7548] को लूटने लगे। ग्रीक राजा अपनी पूरी सेना के साथ उनके खिलाफ निकल पड़ा, जिसमें उस समय धन्य इओनकियिोस सेवा कर रहे थे। जब दोनों सेनाएँ मिलीं और युद्ध शुरू हुआ, और बुल्गारियाई ग्रीकों पर हावी होने लगे, तो इओआनकियिोस ने असाधारण वीरता का प्रदर्शन किया, और एक नए दाऊद की तरह विदेशियों को मार गिराया; स्वयं राजा की उपस्थिति में, उन्होंने अपनी टुकड़ी को दुश्मन की तलवारों से बचाया, दुश्मन के हमले को बहादुरी से विफल किया और उन्हें बेंत की तरह काट डाला। उन्होंने एक प्रतिष्ठित ग्रीक कुलीन को भी बचाया, जो बुल्गारियाई लोगों से लड़ने गया था और जिसे वे पहले ही बंदी बना चुके थे: उन पर झपटकर, इओआनकियिोस ने कुछ को अपनी तलवार से मार गिराया और दूसरों को भगा दिया, इस प्रकार उस बंदी कुलीन को मुक्त कर दिया। ज़ार ने उसकी बहादुरी पर ध्यान देते हुए, उसके स्वदेश, वंश और नाम के बारे में पूछा, और यह सब स्मृति की पुस्तक ([7549]) में दर्ज करने का आदेश दिया ताकि, युद्ध समाप्त होने के बाद, ऐसे बहादुर योद्धा को उच्च पद और अन्य उपहारों से सम्मानित किया जा सके। इस बीच, इओआनकियिोस ने एक बुल्गेरियाई को देखा जो गोलियाथ की तरह भयानक दिख रहा था – और जो यूनानियों का

[7546] रक्षक जो शाही महल की रक्षा करते थे।

[7547] ओलंपस – बिथिनिया में एक पर्वत, जिसने अपनी एकांतता और जंगलीपन से कई संन्यासियों को आकर्षित किया।

[7548] थ्रेस – (विस्तृत अर्थ में) प्राचीन काल में इसमें हंगरी के वर्तमान पूर्वी भाग, ट्रांसल्विेनिया, बेसरबिया, मोल्डोवा, वलाचिया, बुल्गारिया, सर्बिया और रुमेलीया का पूर्वी भाग शामिल था। हालाँकि, सख्ती से कहें तो, 'थ्रेस' शब्द केवल वर्तमान रुमेलीया के पूर्वी भाग को संदर्भित करता था। – बुल्गारियाई, जो ग्रीस के उत्तर में रहते थे, उन दिनों अक्सर ग्रीक साम्राज्य पर छापे मारते थे।

[7549] शाही अधिकारी विशेष डायरी रखते थे जिसमें साम्राज्य में घटित होने वाली सभी सबसे महत्वपूर्ण घटनाओं को दर्ज किया जाता था।

रास्ता रोक रहा था और उन्हें मार रहा था – वह उस पर झपट पड़ा और तुरंत उसका सरि काट दयिा। दृश्य शत्रुओं के वरिुद्ध संघर्ष में धन्य इओनकियिोस का पराक्रम ऐसा था; इसने अदृश्य शत्रुओं के वरिुद्ध उनके भवषि्य के संघर्ष और उन पर उनकी वजिय का पूर्वाभास दयिा।

युद्ध से लौटते समय और ओलंपस पर्वत के पास से गुज़रते हुए, इओनकियिस को उस संन्यासी का ख्याल आया, जो उससे मलिने के लिए रेगस्तिान से आया था और जसिने उस पर प्रतमिा-वरिोधी वधिर्म का आरोप लगाया था। इसे याद करते हुए, उन्होंने मन में संकल्प लयिा कि वे सब कुछ पीछे छोड़ देंगे और उस पहाड़ पर बसकर एक भकि्षु के रूप में मौन में रहेंगे, केवल ईश्वर के साथ एकांत में। उन्होंने जल्द ही अपने नरि्णय को अमल में लाया। क्योंकि जब वे शाही राजधानी पहुँचे और उन्हें युद्ध में दखिाई गई वीरता के लिए ज़ार से एक मानद उपाधि और उपहार प्राप्त करना था, तो उन्होंने यह सब ठुकरा दयिा, इसे महज़ तुच्छ चीज़ें मानते हुए[7550] । अपने साथी योद्धाओं से वदिा लेकर, वह अपनी सैन्य सेवा के पच्चीसवें वर्ष में, एक नया युद्ध शुरू करने के लिए संन्यासयिों के पास गया – 'स्वर्गीय स्थानों में दुष्टात्माओं' के खलिाफ[7551] । अवगार के मठ में पहुँचने और वहाँ रहने वाले भकि्षुओं द्वारा गर्मजोशी से स्वागत कए जाने पर, इओनकियिोस ने मठाध्यक्ष ग्रेगरी को अपना इरादा बताया कि वह रेगस्तिान में जाकर अकेलेपन और मौन में जीवन यापन करेगा। मठाध्यक्ष ने शुरू में उसके नरि्णय को मंजूरी दे दी, लेकनि फरि कहा:

'यद्यपि आपका इरादा अच्छा है, मेरे प्रयि, मैं आपको मठ के नयिमों और रीत-रिवािजों से परचिति हुए बनिा, लोगों से अलग होकर रेगस्तिान में रहने की सलाह नहीं देता। इसलिए, पहले सदाचारी और अनुभवी संतों के बीच रहो; उनसे सीखो कि प्रार्थना कब और कैसे करनी चाहिए; वनिम्रता, आज्ञाकारतिा और नम्रता सीखो; और तभी तुम रेगस्तिान में जा सकते हो। सावधान रहना, मेरे बच्चे, कहीं ऐसा न हो कि बनिा मार्गदर्शन के ऐसा जीवन शुरू करके, तुम स्वयं दुश्मन से घायल और पराजति हो जाओ, बजाय इसके कि तुम उसे घायल और पराजति करो।

इओनकियिोस ने इस सुबुद्धि भरे उपदेश पर ध्यान देते हुए, कुछ समय के लिए अपना इरादा अलग रख दयिा और धर्मनषि्ठ पुरुषों के साथ रहने चला गया, ताकि वह उनके पुण्य जीवन के तरीके का आदी हो सके। उन्होंने तीन मठों में मठ के नयिमों और जीवन शैली का पालन कयिा; पहले उन्होंने अवगार के मठ में अध्ययन कयिा, और फरि उत्तोतेलास नामक एक अन्य मठ में गए, जहाँ, नरिक्षर होने के कारण, उन्होंने पढ़ना और लखिना सीखना शुरू कयिा। हालाँकि, यह देखकर कि इस मठ में अक्सर गृहस्थ लोग आते थे और उनकी उपस्थति मिठ की मौनता को भंग करती थी, उन्होंने ई , इस स्थान को छोड़ दयिा और तीसरे मठ, एंटडिएि, में चले गए, जहाँ उन्होंने दो साल तक रहना शुरू कयिा। वहाँ उन्होंने दाऊद के तीस भजन सीखे और वहाँ के भकि्षुओं से अपने मठवासी जीवन के लिए बहुत लाभ प्राप्त कयिा।

दो साल बीत जाने के बाद, इओनकियिोस को एक बार फरि से मरुस्थल की खामोशी में रहने की इच्छा हुई और उसने पास की एक पहाड़ी पर चढ़ने और वहाँ एकांत में बसकर एकांतवास का जीवन शुरू करने का संकल्प लयिा। लेकनि ऐसा करने से पहले, उन्होंने सात दनिों तक उपवास कयिा और ईश्वर से भक्तपिूर्वक प्रार्थना की कि वह उनके चुने हुए मार्ग पर उनका मार्गदर्शन करें। सातवें दनि, इस नए मूसा ने ऊपर से एक आवाज़ सुनी जसिने उसे उस पहाड़ पर चढ़ने का आदेश दयिा। इओआनकियिोस ने एंटडियिोस के मठ को छोड़ दयिा और वहाँ से बहुत दूर नहीं, पहाड़ की ओर तेज़ी से बढ़े। उस पर चढ़ने के बाद, उन्होंने वहाँ रहने के लिए एक जगह खोजना शुरू कर दयिा। और वहाँ उन्होंने दो तपस्वी संन्यासयिों को देखा, जो रोंगटेदार कपड़े पहने हुए थे और रेगस्तिान में उगने वाली जड़ी-बूटयिों पर जीवन यापन करते थे। उनके पास जाकर, उस धन्य व्यक्ति ने उन्हें प्रणाम कयिा; उन्होंने भी उठकर प्रार्थना की, और फरि उनसे बातचीत करने लगे। इओआनकियिोस ने उन्हें अपने बारे में सब कुछ बताया और अपने इरादों का खुलासा कयिा, जबकि संतों ने भी उसे मार्गदर्शन के बनिा नहीं छोड़ा। उन्होंने उसे भवषि्यवाणी की कि पचास वर्षों के तपस्या के बाद, अपने जीवन के अंत में, उसे ईर्ष्यालु लोगों द्वारा प्रलोभन का सामना करना पड़ेगा, 'लेकनि,' संतों ने कहा, 'इस प्रलोभन के कड़वे परणिाम उन्हीं के सरि पर पड़ेंगे, जबकि तुम्हें स्वयं कोई हानि नहीं होगी', जो कि आगे के ववरिण से स्पष्ट हो जाएगा—इयोनकीयस को यह पूर्वानुमान देते हुए, उन धन्य संन्यासयिों ने उन्हें एक बाल-कपड़ा (hair shirt) दयिा, जसिे स्थानीय भाषा में 'लेवटिोनार' कहा जाता है। यह वस्त्र शत्रु के सभी बाणों के खलिाफ इओआनकियिोस के लिए एक अभेद्य ढाल के रूप में

[7550] अर्थात्, इसे घर से झाड़कर फेंक देने वाली mere कचरा समझना। फलिप्पियों 3 – *'और मैं मसीह यीशु को जानने की उत्कृष्ट कीमत के लिए सब बातों को हानि समझता हूँ; उसी के लिए मैं सब कुछ त्याग गया हूँ और उन सब को कचरा समझता हूँ ताकि मैं मसीह को प्राप्त करूँ;*

[7551] इफसियिों 6 – *'क्योंकि हमारा संग्राम लोहू और □□□ से नहीं, बल्कि हाकमिों और अधकिारों से, इस संसार के अंधकार के हाकमिों से और आकाशी क्षेत्र में दुष्टात्माओं की सेनाओं से है*'।

काम करता था, जैसा कि उन्होंने बाद में स्वयं बताया। इस शिक्षाप्रद बातचीत के अंत में, संन्यासी अलग हो गए और एक दूरस्थ रेगिस्तान में चले गए, जबकि इओनिकियॉस, ट्राइचैलिक्स नामक पहाड़ पर चढ़ गया और वहाँ एक कोठरी के बिना, खुले आसमान के ठीक नीचे रहा। उसके बारे में जानकर, अवगर मठ के उपर्युक्त मठाध्यक्ष ग्रेगरी ने उस पहाड़ पर उसके लिए एक छोटी सी झोपड़ी बनवाई, जिसमें वह धन्य व्यक्ति तूफान, बारिश और बर्फबारी से बच सकें, और इओनिकियोस, एकांत में चले गए, उस झोपड़ी में रहने लगे। बाद में, मठवासी भाइयों ने उनके शिक्षाप्रद संवाद में भाग लेने की इच्छा से उनसे मिलने आना शुरू कर दिया। इससे उन्हें कष्ट हुआ, क्योंकि इससे उनकी मौनता भंग हो रही थी; और इसलिए, उस पहाड़ को छोड़कर, वे मौन जीवन के लिए कोई और जगह खोजने निकल पड़े। हेलेस्पोंट[7552] में स्थित एक गाँव से गुज़रते हुए, उन्होंने पास में ही एक और ऊँचा पहाड़ देखा, जहाँ से गुज़रना मुश्किल था और वहाँ घनी झाड़ियाँ और चट्टानें थीं; वे वहीं बस गए और ज़मीन में खुद के लिए एक संकरी, गहरी गुफा खोदकर उसमें रहने लगे, और कभी बाहर नहीं निकले। उसे अपना भोजन एक गड़रिये से मिलता था जो उस पहाड़ पर बकरियाँ चराता था। महीने में एक बार, गड़रिया संत के लिए थोड़ी रोटी और पानी लाता था, और बदले में उसे सबसे बड़ा उपहार मिलता था – एक आशीर्वाद और एक प्रार्थना। संत वहाँ तीन साल तक रहे, दिन-रात प्रार्थना करते और ईश्वर की स्तुति करते रहे। जब वह दाऊद के भजन गाते थे, तो वह हर छंद में ये शब्द जोड़ते थे:

'मेरी आशा पिता में है, मेरा शरणस्थल मसीह में है, मेरा रक्षक पवित्र आत्मा है।'

इस प्रकार संत को इन शब्दों को दोहराने में सांत्वना मिली; उनके उदाहरण का अनुसरण करते हुए, कई लोगों में आज भी इन्हें अक्सर उच्चारित करने की प्रथा है: '[7553] '।

तीन साल तक एक तंग गुफा में रहने के बाद, संत एक बार अपने पास स्थित एक चर्च के लिए रवाना हुए। संयोग से, कुछ सैनिक जो कभी इओनिकियोस के साथ सेवा कर चुके थे और उनके दोस्त थे, वे भी उसी चर्च में आ गए। उनमें से एक ने, इओआनिकियोस को देखकर, उसे पहचान लिया और, उसे गले लगाकर, खुशी के मारे रो पड़ा और उसे उनका पूर्व जीवन और युद्ध में दिखाई गई बहादुरी, साथ ही राजा द्वारा इओआनिकियोस को प्रदान किए गए सम्मान याद दिलाए। उस सैनिक को आश्चर्य हुआ कि इओआनिकियोस ने यह सब कुछ छोड़कर गरीबी में जीवन क्यों चुना। जब वह सैनिक इओआनिकियोस के बारे में उन्हें बताने के लिए दूसरों की ओर मुड़ा, तो इओआनिकियोस उनके बीच से चुपके से निकल गया और सभी से और भी दूर छिपने की इच्छा से, कोंटुरियन पहाड़ों[7554] में चला गया, जहाँ कई जंगली जानवर और साँप थे। वहाँ संत ने मानव महिमा से दूर रहकर निवास किया; वे जंगली जानवरों और साँपों के बीच रहते थे और दाऊद से बोले: *'मैं दूर चला जाऊँगा और जंगल में वास करूँगा; मैं आँधी और तूफान से बचने के लिए शीघ्रता करूँगा'* (भजन संहिता 54:8-9)।

कुछ समय बीत जाने के बाद, इओनिकियोस ने प्रार्थना करने के लिए एफ़ेसस में संत जॉन द थियोलॉजियन के चर्च जाने का निर्णय लिया। एफ़ेसस के रास्ते में, जब वह एक प्रार्थना घर[7555] के पास से गुज़र रहा था, तो उसे सूर्यास्त के समय एक विवाहित जोड़ा मिला जो अपने स्वर्गीय माता-पिता के लिए प्रार्थना करने उस घर की ओर जा रहे थे। उन्हें देखकर वह दंपति डर गया, क्योंकि वह भयानक दिख रहा था: लंबा, फटे-पुराने कपड़े पहने, नंगे पैर और पूरी तरह से बालों से ढका हुआ। संत ने, यह देखकर कि वे डर से कांप रहे थे, उनसे कोमलता से कहा:

'डरो मत, मेरे बच्चों, पर मुझे बताओ, यह सड़क कहाँ जाती है?'

उन्होंने उसे बताया कि वह सड़क एक नदी तक जाती थी, जो उस समय पूरी तरह बाढ़ में थी, इसलिए नाव के बिना उसे पार करना असंभव था। हालाँकि, इओआनिकियोस नदी की ओर चल पड़ा और वहाँ पहुँचकर कुछ देर आराम किया; फिर, आधी रात को, वह उठा और पानी में इस तरह पार हो गया जैसे वह सूखी ज़मीन पर हो, अपने पैर भीगने दिए बिना। जब वह एफ़िसुस पहुँचा और संत जॉन द थियोलोजियन के चर्च के पास गया, तो चर्च के दरवाज़े अपने आप उसके सामने खुल गए। अंदर प्रवेश करने पर, उन्होंने उचित रीति से प्रार्थना की, मसीह के प्रिय शिष्य की पवित्र प्रतिमा को झुककर चूमा। जब वह चर्च से बाहर निकले, तो दरवाज़े अपने आप तुरंत बंद हो गए, और वह एक बार फिर कोंटूरी पहाड़ों में अपने

[7552] हेलेस्पोन्ट आज का डार्डानेल्स जलडमरूमध्य है। इस जलडमरूमध्य के पूर्वी तट पर स्थित क्षेत्र पर भी 'हेलेस्पोन्ट' नाम लागू किया जाता था।

[7553] संत जॉननकियिस की यह प्रार्थना आज भी चर्च की दैवीय सेवाओं में, विशेष रूप से वेस्पर्स के अंत में, उपयोग की जाती है।

[7554] एशिया माइनर के पश्चिम में।

[7555] यह शायद एक चैपल है। चैपल या प्रार्थना के घर संन्यासियों द्वारा बनाए जाते थे, जो चर्च तक पैदल चलने के लिए बहुत दूर रहते थे, या निजी व्यक्तियों द्वारा, विशेष रूप से उन स्थानों पर जहाँ उनके माता-पिता की मृत्यु हो गई थी और उन्हें दफनाया गया था।

नविास स्थान को लौटने के लिए निकिल पड़े। संयोग से उस समय वह एक मठ के पास से गुज़रा, जहाँ एक भिक्षुणी थी जिसके साथ उसकी एक छोटी बेटी थी; यह बेटी, कामुक वासना से अभिभूत, मठ का जीवन और अपनी माँ को त्यागकर संसार में लौटकर शादी करना चाहती थी। उसकी माँ ने आँसू भरी आँखों से उससे विनती की कि वह मसीह के प्रति अपने प्रेम के लिए देह की परीक्षाओं को सहन करे, संन्यासी जीवन को न छोड़े, और स्वयं को शैतान द्वारा किए गए तिरस्कार और विनाश के हवाले न करे। लेकिन वह उस लड़की को मना न सकी, जो वासना की आग में जल रही थी और जिसने पहले ही मठ से भाग जाने का मन बना लिया था। यह सब जानने पर, धन्य इओआनकियिोस को उस युवती के प्रति करुणा हुई और उसे अपने पास बुलाकर कहा:

'मेरी बच्ची, अपना हाथ मेरी गर्दन पर रखो।'

जब उस युवती ने ऐसा किया, तो संत ने आँखों में आँसू लिए, ईश्वर से प्रार्थना की कि वह युवती को उसके जुनून और शैतान के प्रलोभन से मुक्त कर दे, और उसके दुखों और सांसारिक जुनूनों का पूरा बोझ उस पर डाल दे। और ऐसा ही हुआ। वह युवती सभी अशुद्ध विचारों और कामुक इच्छाओं से मुक्त हो गई और अपने मठ में रहकर निर्लिप्तता और ईश्वर के प्रति भक्ति का जीवन जीने लगी; जबकि इओनकियिोस कोन्टुरिया की ओर बढ़ गए। रास्ते में, उसने अपने भीतर कामुक वासना की ज्वाला महसूस की, और दुष्ट विचार एक भयानक तूफान की तरह उस पर टूट पड़े; अशुद्ध वासनाएँ उसके भीतर उफन रही थीं, उसका खून एक कड़ाही में उबल रहा था, और वे सभी यातनाएँ जो उस युवती ने झेली थीं, धन्य इओनकियिोस के हिस्से में आ गईं। फिर भी उसने उन्हें साहसपूर्वक सहन किया, और आत्म-त्याग के महान कार्यों द्वारा अपने शरीर को दंडित किया। एक बार, पहाड़ की एक बड़ी दरार में घोंसला बनाए हुए एक विशाल सर्प से मिलने पर, इओनकियिोस ने खुद को उसके द्वारा निगल लिए जाने के लिए अर्पित करने का संकल्प लिया, यह निर्णय लेते हुए कि अशुद्ध विचारों को पूरी छूट देने और अपने शुद्ध शरीर को कलंकित करने की तुलना में मरना बेहतर है। वह सांप पर कूद पड़ा, यह सोचकर कि वह उसे खा जाएगा, लेकिन सांप ने उसे छुआ तक नहीं। जब इओनकियिस ने उसे खाने की इच्छा व्यक्त करते हुए चिढ़ाना शुरू किया, तो सांप अचानक मृत पाया गया। उस क्षण से, इओआनकियिस के मन में बुरे विचार आना बंद हो गए; उसका जुनून शांत हो गया, उसकी वासना कम हो गई, और उसके शरीर में शांति लौट आई। उसी समय, उसे दृश्य और अदृश्य साँपों पर पैर रखने और उनके सिर कुचलने की शक्ति प्रदान की गई। एक दिन, संत खड़े होकर दाऊद के भजन गा रहे थे, जब अचानक उनके पास पत्थरों का एक ढेर हिलने लगा। उस दिशा में झाँकते ही, संत ने पत्थरों के बीच से आग जैसी आँखों वाला एक भयानक साँप निकलते देखा। उन्होंने अपनी लाठी से साँप को छुआ, और वह तुरंत ही नष्ट हो गया। एक अन्य अवसर पर, सर्दियों के दौरान, संत एक गहरी गुफा में गए और वहाँ एक साँप को घोंसला बनाए हुए पाया, जिसकी आँखें लपटों की तरह जल रही थीं। यह न जानते हुए कि यह उसके सामने एक साँप था, और यह सोचकर कि यह वास्तव में आग है, संत ने कुछ लकड़ी इकट्ठी की और उसे साँप के ऊपर ढेर करना शुरू कर दिया, ताकि इस कड़ी ठंड में आग से खुद को गर्म कर सके। साँप ने अपना शरीर हिलाया, जिससे लकड़ियाँ गिर गईं, और तभी संत को एहसास हुआ कि यह एक साँप था। हालाँकि, वह डरा नहीं, बल्कि गुफा के दाईं ओर बैठ गया और सर्दी खत्म होने तक साँप के साथ वहीं रहा।

जैसे ही इओनकियिस के मरुभूमि में रहने का बारहवां वर्ष समाप्त होने को था, ऊपर से एक आवाज़ ने उन्हें एरिस्टे नामक एक मठ में जाने और वहाँ मठवासी संस्कार ग्रहण करने का आदेश दिया। वह तुरंत उक्त मठ के लिए रवाना हो गए और फसल कटने के समय वहाँ पहुँचकर, उन्होंने उस मठ के मठाधीश स्टीफन से अपना परिचय कराया। स्टीफन ने, सुबह की प्रथागत प्रार्थनाएँ करने के बाद, पूज्य इओआनकियिोस को संन्यासी वस्त्र पहनाया; हालाँकि, वह पहले से ही एक परिपूर्ण भिक्षु थे, जो अपने तपस्या के कार्यों में कई लोगों से आगे थे। इस प्रकार मठवासियों के परिधान से युक्त होकर, आदरणीय व्यक्ति ने तपस्या में और अधिक संलग्न होकर एक-एक कठोर तपस्या से दूसरी कठोर तपस्या की ओर प्रगति की। वह क्रिटिमा नामक स्थान पर बस गए और उन्होंने खुद को लोहे की जंजीरों से बाँध लिया[7556] , जो छह कोहनी लंबी थीं[7557] , और मसीह के एक स्वैच्छिक कैदी और शहीद के रूप में तीन साल तक एकांत में और जंजीरों में रहे।

तीन वर्ष बाद, इओनकियिोस हेलीडॉन जाकर वहाँ उपवासियों में महान जॉर्ज को देखना चाहता था। अपने बंधन खोलकर, वह अपनी यात्रा पर निकिल पड़ा, और जब वह गोरम नामक नदी पर पहुँचा, तो उसे एक साँप मिला जो नदी के

[7556] भारी बेड़ियाँ, जिन्हें तपस्वी शरीर को दंडित करने के लिए स्वयं पहनते थे।

[7557] एक कोहनी 10.5 वर्शोक्स की माप की है।

पानी को हलिा रहा था और उसके प्रवाह को रोक रहा था: प्रार्थना और क्रॉस के चहि्न द्वारा, उसने उस साँप को मार डाला। महान जॉर्ज तक पहुँचने के बाद, वह तीन साल तक उनके साथ रहे, उनसे संपूर्ण भजन संहतिा सीखी, और फरि अपने शषि्य पाचोमयिस के साथ अंϑooκयिा के मठ में लौट आए।

आदरणीय इओनकियिस के जीवन की कुछ घटनाएँ अत्यधकि शकि्षाप्रद हैं। अवगर मठ में रहते हुए, इओनकियिस एक बार अन्य भकि्षुओं के साथ वहाँ से बहुत दूर नहीं एक पहाड़ पर बन रहे एक नए मठ को देखने गए। जब वह इस पहाड़ के पास पहुँचे, तो रेगसि्तान से एक असामान्य रूप से बड़ी बकरी प्रकट हुई। इओनकियिोस के साथ चल रहे भकि्षुओं ने यह सोचना शुरू कर दयिा कि वे इस बकरी को कैसे पकड़ सकते हैं, जसिके चमड़े से उन्हें अच्छी ऊन मलि सकती थी। रेवरेंड फादर ने, उनके वचिारों को भांपते हुए, सव्वा नाम के एक भकि्षु को आदेश दयिा कि वह जाकर बकरी को उनके पास ले आए। सव्वा ने जवाब दयिा:

'लेकनि अगर बकरी भाग गई, तो मैं उसे कैसे पकड़ पाऊँगा?'

संत ने उससे कहा:

'बस जैसा कहा जा रहा है वैसा करो, और बकरी अपने आप तुम्हारे पास आएगी और तुम्हारा पीछा करेगी।'

फरि, दूसरे भकि्षुओं की ओर मुड़कर, उन्होंने उनसे पूछा:

'क्या बकरी का चमड़ा फर बनाने के लएि उपयुक्त है?'

उन्होंने उत्तर दयिा:

'बहुत उपयुक्त; आपने यह बताए से पहले ही हमने इसके बारे में सोच लयिा था।'

जब बकरी को उसके सामने लाया गया, तो पूज्य पतिा ने उसे अपने हाथ से सहलाना शुरू कर दयिा, और साथ ही भाइयों को जानवरों की जान बख्शने और अपनी इच्छाओं पर काबू रखने की शकि्षा दी; और उसके बाद उन्होंने बकरी को एक बार फरि से रेगसि्तान में चरने के लएि छोड़ दयिा।

आदरणीय के पास दूरदर्शतिा का वरदान भी था; उन्होंने ज़ार नकिफिोरोस की नकिट मृत्यु की भवषि्यवाणी की, और उनकी भवषि्यवाणी सच हुई, क्योंकि वह बुल्गारयिाई लोगों के खलिाफ़ युद्ध में घायल होने के बाद मर गए। उन्होंने नकिफिोरस के पुत्र, Stavrikios[7558] , की भी नकिट मृत्यु की भवषि्यवाणी की, जो बाद में राजा बने। जब वे ऊँचे ओलंपस पर्वत के पास स्थति प्रुसेन्टयिोस पर्वत पर रह रहे थे, तो वहाँ गुरी नाम का एक भकि्षु था, जो एक पाखंडी था और मनुष्यों से महमिा चाहता था, और जसिे वास्तव में सभी एक महान तपस्वी के रूप में प्रशंसा करते थे। यह भकि्षु, यह देखकर कि वह सेंट इओआनकियिोस जैसे सच्चे सदाचारी तपस्वी से कोसों दूर था, ईर्ष्या से भर गया। इओआनकियिोस को नष्ट करने की इच्छा से, वह यहूदा की तरह चापलूसी भरे शब्दों के साथ उसके पास गया, और उसके पेय में जहर मलिा दयिा; सम्माननीय संन्यासी, जो अच्छे स्वभाव के व्यक्ति थे, ने सोचा कि गुरयिस उनकी ओर सच्ची दोस्ती का भाव रखता है और कुछ भी संदेह कएि बनिा, उन्होंने वह घातक जहर पी लयिा; तुरंत बाद, उन्हें भयंकर पीड़ा हुई और वे अपनी जान के लएि भी डरने लगे। हालाँकि, ईश्वर ने अपने संत को इस तरह समय से पहले मरने नहीं दयिा, बल्कि अपने पवत्रि शहीद यूस्टैथयिस ([7559]) को उनकी सहायता के लएि भेजा; एक दर्शन में प्रकट होकर, शहीद ने उन्हें उनकी बीमारी से ठीक कर दयिा और उनका स्वास्थ्य बहाल कर दयिा। इसके आभार में, पूजनीय ने वहाँ पवत्रि महान शहीद यूस्टैथयिस के नाम पर एक चर्च का नरि्माण कयिा और उसके बगल में एक मठ की स्थापना की।

एक रात, प्रार्थना करते समय, इओनकियिोस को एक दर्शन हुआ: पहाड़ के पूर्वी हसि्से पर, प्रचुर मात्रा में पानी का एक झरना फूट पड़ा, और उस झरने के पास भेड़ों का एक झुंड खड़ा था जो उससे बहने वाला पानी पी रहा था। संत इस दृष्टि से चकति रह गए, क्योंकि वह जानते थे कि उस रेगसि्तान में कभी कोई झरना या भेड़ें नहीं थीं। अगले सुबह वह उस स्थान पर गए, लेकनि उन्हें कुछ भी नहीं मलिा – न तो भेड़ें और न ही कोई झरना; फरि भी वह जगह रहने के लएि बहुत अच्छी और उपयुक्त साबति हुई। आदरणीय संत को बुज़ुर्गों से पता चला कि उस स्थान पर एक बार परमेश्वर की परम

[7558] नकिफिोरस प्रथम ने 802 से 811 तक शासन कयिा। उनके पुत्र, स्टाव्रकियिोस ने केवल दो महीने शासन कयिा, और पदच्युति के तीन महीने बाद उनकी मृत्यु हो गई।

[7559] यूस्टैथयिस नाम कई शहीदों की स्मृति से जुड़ा हुआ है (अर्थात् 7 जुलाई, 20 अगस्त, 27 सतिंबर, 24 अक्टूबर, और अन्य)। यहाँ कसि शहीद का उल्लेख है, यह अज्ञात है। सबसे अधकि संभावना है कि यह की (Kii) या प्रुसयिाडा (Prussiada) के बशिप यूस्टैथयिस (Eustathius) को संदर्भति करता है, जनि्होंने पवत्रि प्रतमिाओं के लएि कष्ट सहे। उस समय इओआनकियिोस (Ioannikios) प्रुसयिाडा के पास पहाड़ों में रह रहे थे।

पवत्रि माता को समर्पति एक चर्च हुआ करता था, और इसलिए उन्होंने अपने दर्शन की इस प्रकार व्याख्या की: प्रचुर मात्रा में पानी फेंकता हुआ झरना परमेश्वर की परम पवत्रि माता की कृपा का प्रतीक है, जो उस स्थान पर बरसाई जानी है, जबकि भेड़ें उन लोगों का प्रतीक हैं जो परमेश्वर की परम पवत्रि माता से कृपा प्राप्त करते हैं। और रेवरेंड ने उस स्थल पर परमेश्वर की परम पवत्रि माता को समर्पति एक चर्च का पुनर्नरि्माण करने का हर संभव प्रयास शुरू कर दयिा, जसिमें वह जल्द ही सफल हो गए। उन्होंने एक सुंदर चर्च बनाया, वहाँ एक मठ स्थापति कयिा, और परमेश्वर की परम धन्य माता की मदद और सहायता से वहाँ भक्षिुओं का एक बड़ा समुदाय इकट्ठा कयिा।

चर्च के नरि्माण के दौरान, पूजनीय इओनकियिोस ने अपने हाथों से काम कयिा, पत्थर उठाए और नरि्माण करने वालों की सहायता की। एक बार, जब उन्होंने जमीन से एक पत्थर उठाने के लिए हाथ बढ़ाया, तो उसके नीचे से एक वषिैला साँप नकिल आया और उसे हाथ में डँसने के बाद चपिक गया। हालाँकि, वह एक नए पॉल की तरह, उसे झटककर गरिा दयिा, और उन्हें बलि्कुल भी कोई चोट नहीं लगी। *'परन्तु उसने साँप को आग में झाड़ दयिा और उसे कोई हानि नि हुई* (प्रेरतिों के काम 28:5)।

प्रार्थना करते समय, आदरणीय इओनकियिोस न केवल आत्मा में बल्कि शरीर में भी उठते थे, और स्वयं को जमीन से काफी ऊपर उठा लेते थे। एक बार, उनके पवत्रि जीवन में उनका शष्यि और अनुयायी, धन्य यूस्ट्रैटयिस, जब आदरणीय पति अकेले प्रार्थना करने के लिए चर्च जा रहे थे, तो वह चुपके से उनका पीछा कर गया और चर्च के एक कोने में छपिकर, उन्होंने उनकी प्रार्थना करते हुए ध्यान से देखा। उसने देखा कि आदरणीय पति ने अपने हाथ ऊपर उठा रखे थे और, जमीन से काफी ऊँचा उठकर, हवा में खड़े होकर प्रार्थना कर रहे थे, और यह देखकर यूस्ट्राटयिस भय से भर गया। अपनी प्रार्थना समाप्त करने के बाद, आदरणीय पति जमीन पर वापस आ गए और, यूस्ट्राटयिस को देखकर, नाराज़ हो गए और कहा: 'लखिा है: *"क्योंकि हे परमेश्वर, आप अधर्म से घृणा करते हैं; कोई दुष्ट व्यक्ति आपके साथ नहीं रहता"* (भजन संहति 5:5), अर्थात्, एक दुष्ट व्यक्ति उस चीज़ के पास नहीं आएगा जसिकी रक्षा परमेश्वर करते हैं – फरि भी तुमने मेरी पापी प्रार्थना की जासूसी करने की हम्मित की।'

सम्माननीय पति ने यूस्ट्राटयिस को इस बारे में कसिी को कुछ भी बताने से मना कयिा।

अद्भुत इओआनकियिोस ने कई चमत्कार कए। वह एक ही शब्द से लोगों से दुष्टात्माओं को नकिाल देते थे, क्रूस के चहि्न और प्रार्थना से हर तरह की बीमारयिों को ठीक करते थे, और कई लोगों को सांप के काटने से बचाते थे। इसलिए, लोगों की भीड़ उनके पास उमड़ पड़ती थी – कोई बीमारी से चंगाई चाहता था, कोई अशुद्ध आत्माओं से मुक्ति, और कोई केवल आशीर्वाद और प्रार्थना चाहता था। इसने उस मौन को भंग कर दयिा था, जसिे इओनकियिोस ने अपनाया था, और इससे ऊबकर, वह एक बार फरि से माउंट त्रखिालकिा पर चला गया और वहाँ बनिा कसिी आश्रय के रहा। अवगार मठ के एक भक्षिु यूस्ट्रैटयिस, जो धन्य पति के प्रति गहरा प्रेम रखता था और उन्हें देखना चाहता था, ने उत्साहपूर्वक उनकी तलाश की और उन्हें माउंट त्रचिैलाइका पर ढूंढ नकिाला। सामान्य प्रार्थना के बाद, यूस्ट्राटयिस ने धन्य इओआनकियिोस से उस समय ग्रीस पर शासन कर रहे लयिो द आर्मनियिन[7560] के बारे में पूछा – वह अपनी मूर्तभिंजनवादी वधिर्म से परमेश्वर की कलीसयिा को और कतिना परेशान करेगा? संत ने तुरंत उत्तर दयिा कि लयिो जल्द ही मर जाएगा। ठीक ऐसा ही हुआ, क्योंकि माइकल, जसिे वाल्बोस या ट्रैवलोस के नाम से जाना जाता था, ने लयिो द आर्मनियिन को मार डाला और सहिासन पर उसका उत्तराधकिारी बना[7561] ।

अपने वृद्धावस्था में, इओनकियिोस लाठी के सहारे चलने का आदी हो गया था। एक दनि, पहाड़ों में एक संकरी घाटी से गुजरते समय, लाठी गलती से उसके हाथों से फसिल गई और पहाड़ से एक खाई में गरिकर खो गई, जसिे ढूंढा नहीं जा सका। संत, अपने बेंत के खो जाने के दुख में, प्रभु से अपनी नयिमति प्रार्थना करने के लिए घुटने के बल बैठ गए; उसी क्षण, एक अदृश्य शक्ति द्वारा हवा में बहकर, बेंत संत के हाथ में आ गया।

एक अन्य अवसर पर, रेगस्तिान में चलते हुए, आशीर्वादति एक खाली गुफा में पहुँचे, जहाँ राक्षस रहते थे। आदरणीय को यह गुफा पसंद आई और वे वहीं बस गए। हालाँकि राक्षस उसकी उपस्थति सिहन नहीं कर सके, उन्होंने खुलेआम उसके खलिाफ वद्रिोह कर दयिा और उसे हर तरह की परेशानी दी, इस उम्मीद में कि वे उसे डराकर भगा सकें। उन्होंने उस पर चल्लिाया, दाँत पीसे, उसका मज़ाक उड़ाया, उसे डराया, इधर-उधर दौड़े, उस पर हमला कयिा और ऐसा

[7560] लेओ पंचम आर्मेनयिाई ने 813 से 820 तक शासन कयिा।

[7561] माइकल द्वतिीय हकला 820 से 829 तक राज कयिा।

प्रतीत हुआ कि उन्होंने पूरी गुफा को हिला दिया। लेकिन संत, पौलुस के शब्दों के अनुसार, युद्ध के दिन की भाँति खड़े रहे, धार्मिकता के कवच से सुसज्जित और विश्वास की ढाल थामे हुए, और शत्रु के हमलों से किसी भी तरह से विचलित नहीं हुए। *'इसलिए, परमेश्वर का पूरा कवच पहन लो, ताकि तुम बुराई के दिन सामना कर सको और सब कुछ पर विजय प्राप्त करके दृढ़ खड़े रह सको। इसलिए, सत्य से कमर कसकर, धार्मिकता के कवच से स्वयं को आच्छादित करके, और अपने पैरों में शांति के सुसमाचार की तैयारी के जूते पहनकर स्थिर खड़े रहो; और इन सब के ऊपर विश्वास की ढाल उठा लो, जिससे तुम उस दुष्ट के सभी अग्निबाणों को बुझा सको* (इफिसियों 6:13–16); जबकि दुष्टात्माएँ चिल्ला उठीं:

'और देखो, वे चिल्ला उठे: "हे ईश्वर के पुत्र यीशु, हमारा तुझसे क्या काम है? क्या तू हमें सताना समय से पहले यहाँ आ गया है?" (मत्ती 8:29)। और, अजेय को परास्त न कर पाने के कारण, वे उसी से भाग गए, क्योंकि वे स्वयं उसी से पराजित हो चुके थे।

उस समय, एक बोयार की बेटी, जो एक सच्ची विश्वासी थी, अपने बिस्तर पर थकी हुई पड़ी थी और बहुत कष्ट सह रही थी। जब उसे संत के पास लाया गया, तो वह तुरंत उससे मिलने के लिए बाहर गए और उसकी भक्ति के कारण उस पर दया की—क्योंकि वह पवित्र प्रतिमाओं की पूजा करती थी, भले ही वह प्रतिमा-भंजकों की भीड़ के बीच रहती थी—और उन्होंने प्रार्थना और क्रॉस के चिन्ह से उसे उसकी बीमारी से ठीक कर दिया। संन्यासी के बहनोई, जिसने उनकी बहन से विवाह किया था, संयोग से वहाँ मौजूद थे; वे मूर्तिभंजन की विधर्म से अंधा हो गया था, और संन्यासी ने उन्हें सच्चे धर्म के सही मार्ग को पहचानने और पवित्र प्रतिमाओं को उचित सम्मान देने के लिए मनाने में बहुत समय लगाया। लेकिन जब उन्हें पता चला कि उनके उपदेशों का उस पर कोई असर नहीं हो रहा था (क्योंकि वह व्यक्ति, फिरौन की तरह, हठी बना हुआ था), तो धन्य संत ने उससे अपने घनिष्ठ रक्त संबंधों को एक तरफ रख दिया और ईश्वर से प्रार्थना की कि यदि उस मूर्तिभंजन के पास आत्मा की आँखें नहीं हैं, तो उसकी शारीरिक आँखें भी अंधी हो जाएँ। और ऐसा ही हुआ: उसका दामाद अंधा हो गया और अपनी दुष्टता के अनुरूप दंड भुगतने लगा।

इन महान पिता की एक प्रथा थी कि वे पहाड़ से उतरकर किसी भी ऐसे व्यक्ति से मिलने आते थे, जिसके बारे में सूचना मिली थी कि वह उनसे मिलने आने वाला है। वे ऐसा इसलिए करते थे ताकि अपने आगंतुकों को असुविधा न हो, क्योंकि पहाड़ पर चढ़ना कठिन और थकाऊ था। एक अवसर पर, काल्सेडॉन और निकिया के दो बिशप[7562] , पीटर और थियोडोर द स्टुडाइट[7563] , साथ ही जोसेफ और क्लेमेंट के साथ, उनके पास जा रहे थे। धन्य व्यक्ति, पहाड़ से उतरकर, उनसे मिले और प्रेम से उनका अभिवादन किया। परंपरागत प्रार्थना के बाद, जब उन्होंने आध्यात्मिक रूप से ज्ञानवर्धक बातचीत की, तो धन्य ने उपस्थित लोगों में से एक, अर्थात् जोसेफ से कहा:

'भाई जोसेफ, निराश न हो, परन्तु तुम्हें अपने प्रस्थान के लिए स्वयं को तैयार करना चाहिए।'

उस समय, उन्होंने पूजनीय के शब्दों को नहीं समझा। लेकिन जब अठारह दिन बीत गए और जोसेफ का निधन हो गया, तो उन्होंने धन्य इओनकियोस के शब्दों को याद किया और महसूस किया कि, अपनी दूरदर्शी आँखों से, उन्होंने जोसेफ की मृत्यु का पूर्वानुमान लगाया था और उसे इसकी भविष्यवाणी की थी, और उसे अपने प्रस्थान के लिए तैयार रहने का आदेश दिया था।

माइकल के शासन के पाँचवें वर्ष में, त्सार निकिफिोर की मृत्यु के चौदहवें वर्ष के अंत में, जब कई प्रतिष्ठित बोयार और योद्धा बुल्गारियाई लोगों द्वारा बंदी बना लिए गए थे—जिन्होंने ग्रीकों को हराया था—और उन्हें बेड़ियों और कालकोठरियों में डाल दिया गया था, रेवरेंड को उन बंदियों की याद आई और उनके हृदय में उनके प्रति विशेष करुणा उत्पन्न हुई, क्योंकि उन्होंने सुना था कि वे एक अत्यंत दयनीय स्थिति में थे, एक गंदे और अंधकारमय कालकोठरी में बंद थे, बेड़ियों में जकड़े हुए थे, और वे ऐसी पीड़ा के बीच जीवित रहने के बजाय मृत्यु को ही स्वीकार करना पसंद करते थे। उनके प्रति करुणा से, इओनकियिस ने अपना एकांत और मौन जीवन त्याग दिया और बेड़ियों में जकड़े लोगों की बेड़ियाँ तोड़ने और बंदियों को मुक्त करने के लिए बुल्गारिया की भूमि की ओर निकल पड़े। जिस शहर में यूनानियों को बंदी बनाकर रखा गया था, वहाँ पहुँचने पर, वह बिना देखे ही कालकोठरी के पास पहुँचे, ताकि कालकोठरी के दरवाज़ों की रखवाली कर रहे सैनिक उन्हें देख न सकें। उन्होंने दरवाज़ों पर क्रॉस का चिह्न बनाया, और कालकोठरी तुरंत खुल गई। उसमें प्रवेश

[7562] काल्सेडोन – बिथिनिया में एक शहर। चौथा सार्वभौमिक परिषद वहीं आयोजित किया गया था। निकिया – उसी क्षेत्र में एक शहर। पहली सार्वभौमिक परिषद वहीं आयोजित की गई थी।

[7563] स्टुडाइट्स कॉन्स्टेंटिनोपल के स्टुडियन मठ के भिक्षु थे, जिसे पाँचवीं शताब्दी के मध्य में कांसुल स्टुडियस ने जॉन बपतिस्मादाता के सम्मान में स्थापित किया था; इन्हें 'निद्रारहित' कहा जाता था क्योंकि तीन भागों में विभाजित होकर ये चर्च में निरंतर उपासना करते थे।

करके, रेवरेंड फादर ने क्रॉस के चह्नि से, उन्हें सभी को उनके बंधनों से मुक्त कर दयिा और उन्हें अपने पीछे चलने का आदेश दयिा। सभी कैदी कालकोठरी से बाहर आ गए, जबकि वहाँ मौजूद रक्षकों को इसका पता भी नहीं चला। संत ने, ग्रीकों को उनके बंधनों और कालकोठरी से मुक्त कर—जसि प्रकार मसीह ने धर्मी लोगों की आत्माओं को नरक से मुक्त कयिा था—उन्हें रात भर एक नए मूसा की तरह, एक चमत्कारी प्रकाश की करिण में, ग्रीक साम्राज्य की सीमाओं तक ले गए। रास्ते में, उन्होंने उन्हें सखिाया कि वे अपने पूर्वजों की तरह एक हठीलु लोग न बनें, जन्हिोंने परमेश्वर को दुखी कयिा था[7564] , बल्कि उन पर अपना भरोसा रखें और उनके आशीर्वाद और चमत्कारों को न भूलें। जब वे उनसे वदिा लेने आए, तो वे सभी उनके पैरों पर गरि पड़े, उनसे अपना नाम बताने का आग्रह करते हुए, और कहा:

'बताइए, हे ईश्वर के पुरुष, आप कौन हैं?'

सम्माननीय ने अपना नाम नहीं छपिाया, लेकनि साथ ही उन्हें केवल ईश्वर का धन्यवाद करने की आज्ञा दी; फरि वह एक बार फरि अपने शांत एकांत में लौट गए।

एक दनि, पूजनीय पतिाजी एक जहाज पर सवार होकर सग्रियिन[7565] में स्थति संत थयिोफेनेस के मठ में प्रार्थना करने के लिए गए। जब, वहां से अपनी वापसी यात्रा पर, वह Fas[7566] द्वीप पर उतरा, तो उस द्वीप के नविासी—मठाधीश और सामान्य लोग दोनों—योआनकियिोस के आगमन की खबर सुनकर, उसके पास आए और उस धन्य व्यक्ति से अपने द्वीप से सांपों को भगाने की वनिती करने लगे, क्योंकि उस समय वे वहां असाधारण रूप से बढ़ गए थे। संत ने उनकी वनितयिों पर ध्यान देते हुए ईश्वर से अपनी प्रार्थनाएँ कीं, और तुरंत ही द्वीप पर सभी साँप एकत्रति होकर समुद्र की गहराई में कूद गए; और तब से उस द्वीप पर कोई साँप कभी नहीं दखिाई दयिा। तब पूज्यनीय वहां से एक अन्य एकांत स्थान पर चले गए। उस समय उनके साथ फासे द्वीप पर स्थति मठ के मठाधीश दानयिेल थे। भाई दानयिेल के साथी भक्षिु यूथमिीयस को संत ने नकिट मृत्यु की भवष्यिवाणी करते हुए कहा:

'भाई यूथमियिस, तैयार हो जाओ, क्योंकि तुम जल्द ही "स्वर्गीय"[7567] की यात्रा करोगे।'

इसके बाद, वह पूजनीय व्यक्ति वहाँ आराम करने के इरादे से एक छोटी गुफा में गए और वहाँ एक राक्षस को पाया, जो पहले वालों से भी अधकि उग्र था। इसके बावजूद, इओनकियिोस और डैनयिल इस गुफा में रहने के लिए वहीं रहे। हालाँकि, राक्षस उनकी उपस्थतिि से अप्रसन्न होकर, उनके सामने एक काले, भयानक रूप में प्रकट हुआ और उन पर क्रोध के साथ हमला कयिा, उन्हें गुफा से बाहर नकिालने की कोशशि करते हुए; लेकनि वे, प्रभु पर भरोसा रखते हुए, बनिा कसिी डर के वहीं रहे। अंत में, यह प्राचीन हत्यारा[7568] उन पर झपट पड़ा, उसने डैनयिल के पैरों को बाँध दयिा, और इओनकियिस के पसली में इतना दर्द पहुँचाया कि वह सात दनिों तक एक भी शब्द नहीं बोल सका; राक्षस स्वयं गुफा से भाग गया, क्योंकि वह परमेश्वर के संतों के साथ एक ही स्थान पर नहीं रह सकता था। इसके बाद, पूजनीय इओनकियिस एक बार फरि से माउंट त्रचिैलाका लौट आए और इसाकयिस नामक एक भक्षिु की नकिट मृत्यु की भवष्यिवाणी की, जो अपनी ही मुक्ति के प्रति लापरवाह रहा था; इसके अलावा, इओनकियिस ने प्रार्थना और पवत्रि क्रॉस के चह्नि के द्वारा अंगूर के बागों में भारी तबाही मचाने वाले कीड़ों को भगा दयिा।

एक अवसर पर, क्लुई मठ की मठाधीश[7569] , एक वृद्ध महलिा, अपनी बेटी के साथ प्रार्थना करने के लिए उनके पास आईं। तब उन्होंने माँ के हाथ में जो लाठी थी, उसे लेकर उसकी बेटी के हाथ में दे दयिा[7570] । माँ, हैरान रह गईं, उन्होंने कहा:

'फादर, मुझे अपनी वृद्धावस्था के कारण अपने कमजोर शरीर को सहारा देने के लिए इस लाठी की ज़रूरत है।'

[7564] यहे. 3:9; यरि्म. 7:18–19.

[7565] थेओफ़ेनेस द कन्फ़ेसर, जो सच्चे धर्म की घोषणा करने के लिए लयिो द आर्मेनयिन द्वारा कैद कए गए थे। वे एशयिा माइनर में, साइज़किस के पास सग्रियिन क्षेत्र के मठाध्यक्ष थे। उनका पर्व दविस 11 अक्टूबर को मनाया जाता है।

[7566] फास या फाज़ोस का द्वीप एजयिन सागर में एक द्वीप है। इस द्वीप की उर्वरता प्राचीनों के बीच एक कहावत का वषिय बन गई।

[7567] अर्थात्, वह स्वर्गीय नविासों में चला जाएगा,

[7568] यही कारण है कि प्रभु यीशु मसीह ने शैतान का उल्लेख इस प्रकार कयिा (यूहन्ना 8:44), क्योंकि वह लोगों की आध्यात्मकि और शारीरकि मृत्यु का पहला कारण था, जसिने उन्हें स्वर्ग में प्रलोभति कयिा था।

[7569] क्लुवयिस्की – ग्रीक शब्द क्लुवोस से, जसिका अर्थ है 'पजिरा'। कुछ सामुदायकि मठों में, एकांत जीवन जीने के इच्छुक लोगों के लिए अलग कमरे, या कोठरयिाँ भी होती थीं।

[7570] मठों के समुदाय के मठाध्यक्ष और मठाध्यक्षी अपने पद के प्रतीक के रूप में एक दंड धारण करते थे।

जवाब में एक शब्द भी बोले बिना, उन्होंने अपने कार्य से भविष्य का पूर्वानुमान लगाया; क्योंकि कुछ ही समय बाद, वह बूढ़ी महिला मर गई, और उसकी बेटी को उसकी उत्तराधिकारी के रूप में एबेस चुना गया। इसके बाद, वह धन्य व्यक्ति अपने शिष्य यूस्ट्राटियस के साथ वोरोनोवा नामक एक और पहाड़ के लिए रवाना हुए, जो बहुत जंगली और पार न करने योग्य था। वहाँ कुछ समय तक रहने के बाद, वह एंटडियस मठ के पहाड़ों में चला गया और वहाँ एक छोटी सी कोठरी बनाकर, ईश्वर के साथ एकांत में रहने लगा। उन्होंने वहाँ कई चमत्कार किए: उन्होंने बीमारों को ठीक किया, एक हकलाने वाले की वाणी सुधारी, क्रूर और उग्र लोगों को नम्र बनाया, विधर्मियों को भ्रांति से ऑर्थोडॉक्सी की ओर मोड़ा, और कई लोगों की मृत्यु की भविष्यवाणी की, क्योंकि वह अपने भीतर निवास करने वाले पवित्र आत्मा की कृपा से परिपूर्ण थे।

इस पूजनीय पिता ने आध्यात्मिक जीवन की ऐसी ऊँचाइयों को प्राप्त कर लिया था कि सभी को उन्हें देखने का सौभाग्य भी प्राप्त नहीं हुआ, और कई लोग जो उन्हें देखना चाहते थे, उनकी कुटिया पर आकर भी उन्हें नहीं देख पाए। जब वे चले जाते थे, तो विनम्र पिता अपने शिष्य से कहते थे:

'भाई यूस्ट्रैटियस! आपकी प्रार्थनाओं के कारण ही मैं उन लोगों के लिए अदृश्य रहा जो आए थे।'

एक बार, जब उस पहाड़ पर संत जॉन द बैपटिस्ट का चर्च बन रहा था—जिसकी योजना पूजनीय इओनिकियोस ने तैयार की थी—कुछ भाई, भिक्षु, दूर से आए, जो ईश्वर के प्रिय के दीप्तिमान चेहरे को देखना चाहते थे। निर्माणधीन चर्च में पहुँचकर, वे वहाँ बैठ गए और उस आदरणीय पिता के आगमन की प्रतीक्षा करने लगे, जिन्हें वे देखना चाहते थे। आदरणीय इओआनिकियोस भी यह जाँचने के लिए वहाँ आए कि क्या चर्च दिए गए नक्शे के अनुसार बन रहा है; वे अपनी खातिर आए भाइयों के सामने खड़े होकर भवन को निहार रहे थे, परन्तु वे उन्हें देख नहीं सके। उनके बीच कुछ समय तक रहने के बाद, वह उन लोगों को दिखाई दिए बिना अपनी कोठरी में लौट गए जो आए थे और उत्सुकता से उनके आगमन की प्रतीक्षा कर रहे थे। उनके पास रहने वाले एक भिक्षु, जिसका नाम जॉन था, ने जब यह सुना कि क्या हुआ था, तो उससे कहा:

'पिताजी! आपको उन भाइयों को, जिन्होंने आपके लिए इतना लंबा सफर तय किया था, दुखी होकर आपका चेहरा देखे बिना वापस नहीं भेजना चाहिए था; यह दुखद है और मेरे दिल को कष्ट पहुँचाता है।'

संत ने उन भाइयों के परिश्रम और उत्साह की प्रशंसा की और उनके लिए प्रार्थना करने लगे; और अपनी प्रार्थना के बाद, जॉन की ओर मुड़कर कहा:

'भाई! हमारी अपनी कोई इच्छा नहीं है, परन्तु परमेश्वर हमसे अपनी इच्छा के अनुसार ही करते हैं। यदि ईश्वर को यह उचित लगता कि आए हुए भाइयों ने मुझे देखना चाहिए, तो वे मुझे तब भी देख लेते, भले ही मैं उनसे छिप गया होता; फिर भी मैं लंबे समय तक बिना छिपे उनके सामने खड़ा रहा, और अगर उन्होंने मुझे नहीं देखा, तो यह ईश्वर की इच्छा ही रही होगी।

एक अन्य अवसर पर, जब कुछ भाई रेवरेंड फादर के पास आए और उनकी कोठरी के बाहर आपस में बातें कर रहे थे, तो पास के एक खेत से एक बड़ी और भयानक मादा भालू अचानक प्रकट हुई और उनकी ओर बढ़ने लगी। उसे देखकर वे भयभीत हो गए।

लेकिन संत ने उनसे कहा:

'प्रभु ने हमें, अपने सेवकों को, सिंह और सांप पर पैर रखने की शक्ति दी है, जो सभी अन्य जानवरों से अधिक भयानक हैं, फिर भी तुम एक मादा भालू से डरते हो?'

उन्होंने उन्हें आदेश दिया कि वे उसे रोटी का एक टुकड़ा फेंक दें, जिसे वह उठाकर रेगिस्तान में चली गई।

आदरणीय इओआनिकियोस इतने गहरे आध्यात्मिक थे और उनकी आध्यात्मिक दृष्टि इतनी स्पष्ट थी कि वे स्वर्गीय आत्माओं और धर्मात्माओं की आत्माओं दोनों को देख सकते थे। इस प्रकार, एक दिन प्रार्थना में खड़े होने पर, उन्होंने एक आर्कमिंड्राइट पीटर की आत्मा को देखा, जिसे स्वर्गदूत महिमा के साथ स्वर्ग में ले जा रहे थे, जो असाधारण प्रकाश की किरणों से घिरी हुई थी, और उन्होंने अपने शिष्यों की शिक्षा के लिए इसका वर्णन किया।

जब आइकॉनोकलास्ट थियोफिलिस ([7571]) ग्रीकों पर शासन कर रहा था, तब इस राजा ने दो कुलीनों को पूजनीय इओआनिकियोस के पास यह पूछने के लिए भेजा कि क्या मसीह की प्रतिमा की पूजा की जानी चाहिए। जब दूत संत के

[7571] ८२९ से ८४२ तक

सामने आए, तो उन्होंने अपने ईश्वर-प्रेरित होठ खोले और जैसे ही उन्होंने स्वर्गीय बुद्धि के सामर्थ्य से बोलना शुरू किया, वे पुरुष लज्जित हो गए, क्योंकि वे उन्हें कोई प्रत्युत्तर नहीं दे सके। यह स्वयं ईश्वर थे जो उनके माध्यम से बोले, वही जिन्होंने सुसमाचार में अपने शिष्यों से कहा:

'तुम पहले से इस बात की चिंता मत करो कि क्या कहना है, और न ही उसे सोचने का प्रयास करो; बल्कि उसी घड़ी जो कुछ तुम्हें दिया जाए, वही कहो; क्योंकि बोलने वाले तुम नहीं, बल्कि पवित्र आत्मा है[7572] (मरकुस 13:11). यह स्पष्ट रूप से दर्शाते हुए कि पवित्र प्रतिमाओं को उचित सम्मान दिया जाना चाहिए, उन्होंने उन्हें सही मार्ग पर स्थापित किया, और उन्होंने, प्रतिमा-भंजन की विधिर्म को त्यागकर, मसीह की प्रतिमा की पूजा की।

एक अवसर पर, अवगर मठ के मठाधीश यूस्ट्राटियस ने परम पूज्य इओनिकियस से पूछा:

'पिताजी, पवित्र प्रतिमाओं को कब तक पैरों तले रौंदा जाएगा, उन्हें चर्च में कब तक पुनर्स्थापित नहीं किया जाएगा, जबकि उनके उत्पीड़क मजबूत होते जा रहे हैं और मसीह का झुंड जंगली जानवरों द्वारा फाड़ दिया जा रहा है?'

आदरणीय इओनिकियस ने उत्तर दिया:

'थोड़ी देर और प्रतीक्षा करो, भाई, और तुम ईश्वर की शक्ति को कार्यरत देखोगे, क्योंकि एक निश्चित मेथोडियस चर्च का नेतृत्व अपने हाथों में ले लेगा। पवित्र आत्मा के मार्गदर्शन में, वह चर्च को व्यवस्थित करेगा, विधिर्मों को जड़ से उखाड़ फेंकेगा, चर्च को ऑर्थोडॉक्स सिद्धांतों पर स्थापित करेगा, मन की शांति और एकता को बहाल करेगा, और सर्वशक्तिमान का दाहिना हाथ अपने विरोधियों को वश में कर लेगा।

इओनिसियस की यह भविष्यवाणी जल्द ही पूरी हुई, क्योंकि कुछ समय बाद प्रतिमा-भंजक राजा थियोडोसियस की मृत्यु हो गई, और उनके पुत्र माइकल[7573] सिंहासन पर बैठे; चूँकि वे अभी भी नाबालिग थे, उनकी माँ थियोडोरा ने साम्राज्य का प्रभार संभाला; जबकि मेथोडियस को पैट्रिआर्क नियुक्त किया गया। बाद वाले ने चर्चों में पवित्र प्रतिमाओं को फिर से स्थापित किया, ऑर्थोडॉक्सी (सही आस्था) को बनाए रखा, सभी विवादों और अशांति को शांत किया, और इस उथल-पुथल को समाप्त कर दिया। कुछ समय बाद, जब शैतान ने एक बार फिर उन लोगों को भड़काया जो भ्रम फैला रहे थे और मसीह की कलीसिया को तोड़ रहे थे, तो पूजनीय इओआनिकियोस धन्य मेथोडियस की सहायता के लिए आए, जो परमेश्वर के वचन की शक्ति से विधिर्मियों को परास्त कर रहे थे। कभी व्यक्तिगत रूप से, तो कभी अपने पत्रों के माध्यम से, जॉन ने ऑर्थोडॉक्सी की रक्षा की और जो लोग उससे भटक गए थे, उन्हें वापस चर्च में लाया; जहाँ तक बिशप मेथोडियस का सवाल है, जो अक्सर विधिर्मीयों के खिलाफ अपने संघर्ष में पूरी तरह से थक जाते थे, आदरणीय ने अपने पत्रों के माध्यम से उन्हें मजबूत और प्रोत्साहित किया। एक अवसर पर, जब परिषद में इओआनिकियस का पत्र पढ़ा जा रहा था, तो विधिर्मियों ने उस धन्य व्यक्ति का हर संभव तरीके से उपहास करना और उसकी निंदा करना शुरू कर दिया; उस पूजनीय व्यक्ति ने, ईश्वर की आत्मा द्वारा यह जानकर, अचानक परिषद में प्रकट हुए और ईश्वर तथा दिव्य विषयों के बारे में इस तरह बोलने लगे कि सभी उनकी बुद्धि और समझ पर चकित हो गए। और उनके ईश्वर-प्रेरित होठों से निकले शब्द प्रभावहीन नहीं रहे; क्योंकि, जैसे एक बार यरूशलेम की परिषद में प्रेरित पतरस के भाषण के दौरान हुआ था, वैसे ही यहाँ भी, आदरणीय इओआन्नशियिस को सुनने वाले अपने हृदय में प्रभावित हुए, उन्होंने उनके शब्दों को प्रेम से ग्रहण किया, और सच्चे धर्म की ओर मुड़ गए। इस प्रकार आदरणीय पादरी ने चर्च की शांति और मानव आत्माओं के उद्धार का ध्यान रखा, और जल्द ही, उनकी देखभाल और प्रार्थनाओं के माध्यम से, विधिर्म को दबा दिया गया और चर्च में शांति बहाल हो गई; जबकि शैतान, जो चर्च को परेशान कर रहा था, शर्म के मारे भाग गया, क्योंकि वह जॉन से डरता था और उसकी प्रार्थनाओं के सामने आग के सामने मोम की तरह गायब हो गया।

एक अवसर पर, रेवरेंड के मठ में, एक चैपल का अभिषेक हो रहा था—जिसे उन्होंने स्वयं बनाया था। जब पूरा समुदाय इकट्ठा हो गया था, लेकिन संत अभी तक मौजूद नहीं थे, तो राक्षसों का एक पूरा झुंड अचानक पहाड़ से उतरता हुआ दिखाई दिया, मानो वे असली लोग हों। सब पूरी तरह से भयभीत थे, यह नहीं जानते थे कि क्या करें; लेकिन संत, भले ही वे शारीरिक रूप से उनके साथ मौजूद नहीं थे, ने आत्मा में देखा कि क्या हो रहा था। उन्होंने तुरंत प्रार्थना की, अपने हाथ ऊपर उठाए, और ईश्वर से अपनी विनती करने लगे, जो तीरों की तरह राक्षसों के उस दल पर लगीं और उन्हें भागने पर

[7572] अर्थात्, जब आपको शक्तिशाली और कुलीन लोगों के सामने बोलना हो तो विशेष रूप से न डरें, क्योंकि मैं आपको बुद्धिमानी से बोलने की क्षमता दूँगा। मरकुस 13 और लूका 21:15।

[7573] बाइज़ेंटाइन सम्राट माइकल तृतीय, 842 से 867 तक।

मजबूर कर दिया। भाइयों ने, जब देखा कि राक्षस कैसे भागे, मानो प्रहारों से पीछे हटते और घायल हो गए हों, तो वे डरना छोड़कर आनंदपूर्वक अपना पर्व मनाने लगे।

उस समय, इसमाइली लोग[7574] यूनानियों के साथ युद्ध में थे और यूनानी सेनाओं को हराने के बाद, उन्होंने कई लोगों को बंदी बना लिया था और उन्हें ज़ंजीरों में जकड़ रखा था। एक कुलीन यूनानी, जिसके एक रिश्तेदार, एक युवक, को भी बंदी बना लिया गया था, ने पूजनीय इओनकियोस से अपने रिश्तेदार को कैद से बचाने का आग्रह किया, ठीक वैसे ही जैसे उन्होंने एक बार बुल्गारियाई लोगों द्वारा बंदी बनाए गए यूनानियों को मुक्त किया था। दयालु पादरी इस्माइलियों की भूमि पर गए और तहखाने तक पहुँचकर, न केवल उस युवक को बल्कि उसके साथ बेड़ियों में जकड़े अन्य यूनानियों को भी मुक्त कर दिया, जबकि पहरेदारों ने कुछ भी नहीं देखा, क्योंकि दयालु पादरी के सामने दरवाज़े अपने आप खुल गए और बेड़ियाँ अपने आप गिर गईं। जब वे ग्रीक क्षेत्र की ओर जा रहे थे, तो उन पर कई जंगली कुत्तों ने हमला कर दिया[7575] , जिन्हें संत ने अंधा कर दिया, ताकि बंदी उनके बीच से बिना किसी नुकसान के निकल सकें।

उसी पहाड़ पर जहाँ आदरणीय उपवास कर रहे थे, कुछ ही दूरी पर एपफिानियस नाम का एक भिक्षु रहता था, जो अपने तपस्या के लिए प्रसिद्ध था। शैतान ने उसमें इओआनकियिस के प्रति ईर्ष्या की भावना जगाई, और उसने उस धन्य व्यक्ति के प्रति शत्रुता पालनी शुरू कर दी, ईश्वर द्वारा इओआनकियिस को दी गई महिमा से ईर्ष्या करते हुए, यह कहते हुए: *'क्योंकि यहोवा धर्मी के भाग पर दुष्टों की लाठी नहीं छोड़ता, ऐसा न हो कि धर्मी पाप में अपना हाथ डालें* (भजन संहिता 124:3)। अर्थात्, ईश्वर पापियों को धर्मी पर विजय प्राप्त करने नहीं देंगे।

ईर्ष्या के कारण, एपफिानियस ने निर्दोष और शुद्ध-हृदय वाले इओनकियिस को नष्ट करने की साजिश रची; इस उद्देश्य के लिए, उसने उस पहाड़ पर पड़े झाड़ियों में आग लगा दी, जहाँ उस आदरणीय संत ने शरण ली थी, ताकि इओनकियिस अपनी कुटिया के साथ उस आग में जल जाए। लेकिन परमेश्वर, जिन्होंने बेबीलोन में आग से जवानों को बचाया था (दानिय्येल 3:1–100), ने अपने सेवक, धन्य इओआनकियिोस को, बिना किसी हानि के सुरक्षित रखा। धन्य व्यक्ति, अपने शत्रु की दुर्भावना को देखकर, न तो उस पर क्रोधित हुए और न ही वे परेशान हुए; बल्कि, बुराई पर अच्छाई से विजय प्राप्त करने और कोमलता के द्वारा शत्रुता को नष्ट करने की इच्छा से, वे विनम्रतापूर्वक एपफिानियस के पास गए, उनसे उनके क्रोध का कारण पूछा, और क्षमा याचना की। लेकिन जब दूसरे ने, क्रोध में, संत के पेट में एक तीखे लोहे की नोक वाले डंडे से वार किया, उसे भेदने का इरादा कर, तो प्रभु *ने—'क्योंकि प्रभु धर्मी के भाग पर दुष्ट की लाठी नहीं छोड़ेंगे, ऐसा न हो कि धर्मी पाप में अपना हाथ बढ़ाएँ* (भजन संहिता 124:3), ने संत को उस प्रहार से बिना किसी चोट के सुरक्षित रखा। यह वही परीक्षा थी जिसकी भविष्यवाणी पहले उल्लेख किए गए दो संन्यासियों ने उस धन्य व्यक्ति को दी थी, जिन्होंने उसे लेवटिोनिक दिया था और उस समय उससे कहा था:

'अपने जीवन के अंत में, आपको ईर्ष्यालु लोगों से एक परीक्षा का सामना करना पड़ेगा, लेकिन इस परीक्षा के कड़वे परिणाम शत्रु के सिर पर पड़ेंगे, जबकि आपको स्वयं कोई हानि नहीं होगी।'

दीर्घायु प्राप्त कर, हमारे पूजनीय पिता इओनकियिोस, जिनका शरीर अनेक परिश्रमों और तपस्या के कृत्यों से पहले ही क्षीण हो चुका था, एंटडियिन के मठ में आए और वहाँ एक छोटी सी कुटिया बनाकर उसमें स्वयं को बंद कर लिया; और भले ही वह कभी-कभी अपनी कोठरी से बाहर निकलता था, सामान्य रास्ते पर चलते समय भी, वह उन लोगों के लिए अदृश्य रहता था, जिनसे वह मिलना नहीं चाहता था।

माइकल के शासन के पाँचवें वर्ष में, पैट्रिआर्क मेथोडियस—जिन्हें बाद में संतों में गिनती की गई—ने इओआनकियिस के प्रभु के पास प्रस्थान के निकट आने की पूर्वसूचना पाकर अपने पुरोहितों के साथ उनके पास आए और उनका अंतिम आशीर्वाद तथा प्रार्थनाएँ प्राप्त कीं। आदरणीय इओआनकियिस ने संत मेथोडियस के साथ लंबी बातचीत करने और उनके साथ आए लोगों को ऑर्थोडॉक्स धर्म में शिक्षित करने के बाद, मेथोडियस से भविष्यवाणी की कि वह भी, अपने निधन के बाद, जल्द ही इस क्षणिक जीवन से शाश्वत जीवन में प्रवेश कर जाएगा। तब, एक प्रार्थना करने और अंतिम चुंबन का आदान-प्रदान करने के बाद, वे अलग हो गए; पैट्रिआर्क घर लौट गए, जबकि पूजनीय पिता अपनी कोठरी में प्रार्थना के माध्यम से अपने निधन की तैयारी करते रहे। पैट्रिआर्क के प्रस्थान के तीसरे दिन, हमारे पूजनीय और ईश्वर-धारी पिता इओआनकियिोस, नवंबर के चौथे दिन, अपने जन्म से चौरासी वर्ष की आयु पूर्ण कर प्रभु

[7574] इश्माएलियों, जिन्हें अरब भी कहा जाता है, अब्राहम के पुत्र इश्माएल की संतान हैं। उस समय, अरब एक शक्तिशाली राज्य थे।
[7575] पूर्व में जंगली कुत्तों की असाधारण संख्या है, जो अत्यधिक क्रूरता से विशेषता रखते हैं।

के पास प्रस्थान कर गए। उनके निधन के आठवें महीने में, चौदह जून को, परम पावन पैट्रआर्क मेथोडियस भी प्रभु में विश्राम कर गए। और इस प्रकार सम्माननीय इओनकियोस की वह भविष्यवाणी पूरी हुई, जो उन्होंने पैट्रआर्क से कही थी, कि वे भी जल्द ही इस क्षणिक जीवन से अनंतकाल में उनके पीछे चलेंगे। जब हमारे पूजनीय पिता इओनकियिस की मृत्यु हो रही थी, तो ओलंपस पर्वत पर उस समय रहने वाले भिक्षुओं ने पृथ्वी से स्वर्ग तक उठता हुआ एक अग्नि का स्तंभ देखा, जिसके आगे स्वर्गदूत चल रहे थे, उसके लिए स्वर्ग के द्वार खोल रहे थे और उसे दिव्य आनंद की ओर ले जा रहे थे। इससे भिक्षुओं को एहसास हुआ कि आदरणीय इओनकियिस, अपने जीवन के कार्य को पूरा कर, दिव्य विश्राम में प्रवेश कर रहे थे। आदरणीय संत ने न केवल अपने जीवनकाल में, बल्कि अपने निधन के बाद भी, कई चमत्कार किए, क्योंकि कई बीमार लोग, उनके पवित्र अवशेषों को छूने पर, ठीक हो गए, अन्य लोग राक्षसों से मुक्त हुए, लकवाग्रस्त अपने बिस्तरों से उठ खड़े हुए, और जो कोई भी, चाहे किसी भी बीमारी से पीड़ित हो, वह केवल उसके अवशेष को छूने भर से तुरंत ठीक हो गया। इस प्रकार ईश्वर ने अपने संत को उनके जीवनकाल में और मृत्यु के बाद भी चमत्कारों के माध्यम से महिमामय किया। उनकी प्रार्थनाओं के द्वारा, प्रभु हम पर अपनी दया दिखाएँ और हमें हमारी आध्यात्मिक तथा शारीरिक दुर्बलताओं से चंगा करें, उनके पवित्र नाम की महिमा के लिए। आमीन।

कॉन्टाकियन, स्वर 8:

आप असीम प्रकाश के तारे के रूप में प्रकट हुए, जिन्होंने संसार को प्रकाशित किया और वासनाओं के अंधकार को दूर किया: आप सबसे शक्तिशाली चिकित्सक के रूप में प्रकट हुए। परन्तु चूँकि आपने चंगा करने का अनुग्रह प्राप्त किया है, उन लोगों को चंगा करें जो आपसे प्रार्थना करते हैं, ताकि हम पुकार सकें: हर्षित हो, पिता इओनकियोस।

पवित्र शहीद बिशप निकिंडर और प्रेस्बिटिर हर्मास का कष्टकथा

4 नवंबर को स्मरण किया जाता है

[7576]संत निकिंडर और हरमास मसीह की शिक्षा की ज्योति से प्रकाशित हुए और पवित्र प्रेरित टाइटस द्वारा पुरोहित पद पर अभिषिक्त किए गए। उन्होंने कई यूनानियों को मूर्तिपूजक भ्रांतियों से मुक्त कर मसीह की ओर ले गए। इसके लिए, उन्हें पकड़ लिया गया और पूछताछ के लिए काउंट[7577] लिबिनियस के सामने लाया गया। जब लिबिनियस, उन्हें मसीह से दूर करने के लिए लंबे प्रयासों के बाद भी, कुछ हासिल नहीं कर सका, तो उसने उन्हें उत्तेजित घोड़ों से बांधने और घोड़ों को दौड़ाकर मसीह के इन सेवकों को घसीटने का आदेश दिया। इस तरह लंबे समय तक घसीटे जाने पर, उन्होंने अपने रक्त से धरती को रंगा। उनके शरीर, पत्थरों और पेड़ों के ठूंठों से टकराते हुए, घावों से भर गए थे और, मानव स्वभाव के नियमों के अनुसार, वे मर जाते यदि प्रभु ने स्वयं उनके कष्टों के दौरान उन्हें बल न दिया होता। फिर, मुश्किल से जीवित, उन्हें एक कालकोठरी में डाल दिया गया और वे भूखे-प्यासे रह गए; लेकिन प्रभु ने उन्हें स्वर्ग के रोटी से पोषित किया[7578] और उनके घावों को चंगा किया। कुछ समय बाद, उन्हें एक बार फिर से जांचकर्ता के सामने लाया गया और जब उन्होंने अपने अत्याचारी की आज्ञा मानने से इनकार कर दिया, तो उन्हें एक पेड़ पर लटका दिया गया, लोहे से खुरच दिया गया और मोमबत्तियों के साथ जलाया गया । फिर उन्हें एक जलती भट्टी में फेंक दिया गया, लेकिन वे सुरक्षित रहे, क्योंकि प्रभु का स्वर्गदूत उन पर उतर आया, भट्टी को ठंडा कर दिया और उन्हें आग से बचा लिया। अंत में, यातना देने वाले ने आदेश दिया कि उनके सिरों, हृदयों और पेटों में लोहे के कील ठोक दिए जाएँ; इसके बाद, उनके लिए एक गड्ढा खोदा गया, और जब वे अभी भी साँस ले रहे थे, तो उन्हें उसमें फेंक दिया गया और जमीन के नीचे दफना दिया गया। इतनी क्रूर और दुखद मृत्यु भोगने के बाद, संत निकिंडर और हरमास प्रभु के साथ शाश्वत और आनंदमय जीवन प्राप्त कर गए, जिनका महिमा युगों-युगों तक हो। आमीन।

[7576] 'हेलेन्स' शब्द विशेष रूप से यूनानियों के लिए प्रयुक्त होता था; हालाँकि, संतों के जीवन में, यह नाम कभी-कभी सामान्य रूप से मूर्तिपूजकों को दर्शाने के लिए उपयोग किया जाता है।

[7577] कोमिति – नगरपालिका का शासक।

[7578] 'स्वर्गीय रोटी' से तात्पर्य या तो वास्तविक भोजन से हो सकता है, जो चमत्कारिक रूप से जेल में बंद पवित्र शहीदों के पास भेजा गया था, या, अधिक सामान्य रूप से, ऊपर से मिलने वाले उनके पोषण से, जिससे उन्हें भोजन की कोई आवश्यकता नहीं थी।

यूरीएvets के धन्य साइमन का नधिनोत्सव

4 नवंबर को स्मरणोत्सव

हमारे ये धन्य पति पवत्रि माता-पति हेरोडयिन और मैरी के घर, प्लेस्काया वोलोस्ट के ओडेलेवे गाँव में[7579] में पैदा हुए थे। छोटी उम्र से ही, उन्होंने एक पवत्रि मूर्ख के तपस्वी जीवन को अपना लयिा और चुपके से अपने माता-पति का घर छोड़कर घने और अछूते जंगलों में चले गए। एक दनि, वोल्गा क्षेत्र के युरीएvets जलि के याल्नात्सकाया गाँव के ग्रामीणों को पेड़ काटने और शहद इकट्ठा करने के दौरान, इस धन्य साइमन जंगल में मलि। उन्होंने उनसे पूछना शुरू कयिा कि वह कौन थे और कहाँ से आए थे। लेकनि संत ने उन्हें अपने नाम के अलावा कुछ नहीं बताया। संत समिोन को बहुत फटे-पुराने कपड़े पहने हुए देखकर, ग्रामीणों को उन पर दया आ गई और वे उन्हें अपने गाँव में जोसेफ नामक एक पादरी के पास ले गए। इस पादरी के घर में, संत साइमन ने काम करना शुरू कर दयिा; उन्हें वशिेष रूप से कठनि श्रम करना पसंद था, जसिसे वे शरीर को वश में करते थे: वे अक्सर हाथ से चलने वाली चक्की पर आटा पीसते थे, सभी ग्रामीणों के लिए लकड़ी काटते थे, और कसिी से भी कोई भुगतान स्वीकार नहीं करते थे। वह अक्सर और भक्तपिूर्वक ईश्वर के घर भी जाते थे, जहाँ वे प्रभु से प्रार्थना करते और उनके पवत्रि नाम का कीर्तन करते थे। एक से अधकि अवसरों पर, संत का मज़ाक उड़ाया गया और उनके साथ दुर्व्यवहार कयिा गया, लेकनि उन्होंने यह सब नम्रता से सहन कयिा, और अपने उत्पीड़क के प्रति कोई द्वेष नहीं रखा। जाड़े और गर्मी दोनों में, वह हमेशा एक ही कमीज़ पहनता था और कभी जूते नहीं पहनता था; ज़मीन उसका बस्तिर और आकाश उसकी छत था। यालनात्स्कोये गाँव में कई साल रहने के बाद, साइमन युर्येवेट्स शहर में चले गए और वहाँ भी, उन्होंने मसीह के लिए पवत्रि पागलपन के तप का अभ्यास जारी रखा। दयालु लोग अक्सर उन्हें कपड़े या जूते देते थे, लेकनि वह इन सब को पीछे छोड़ देते थे और खुद को मोटे बोरे के कपड़े से ढक लेते थे। संत की आदत थी कि वह अक्सर एक सराय में जाते थे। सर्दयिों में, वह अक्सर वहीं रात बताता था। वह प्रार्थना करता और जागता रहता था; अक्सर सराय के मालकि और वहाँ ठहरे हुए लोग उसे ठंड में बाहर नकिाल देते थे। वह अक्सर वोलगा नदी के कनिारे-कनिारे चलता था, और सर्दयिों में अक्सर उसके नंगे पैरों के नशिान दखिाई देते थे। अपने कठोर जीवन के कारण, उसकी त्वचा पूरी तरह से काली पड़ गई थी और हड्डयिों से चपिक गई थी। वह अक्सर दूसरों के सामने अपनी नदिा और अपमान कयिा करता था; इस तरह वह अपने शरीर और आत्मा को नम्र करता था। अपने धार्मकि जीवन के कारण, उसे जीवति रहते ही दव्यि दृष्टि का वरदान प्राप्त हो गया था, जसिसे वह वह देख सकता था जो दूसरों से छपिा होता था।

एक बार, एक पवत्रि मूर्ख के रूप में काम करते हुए, वह वॉयवोड त्रेट्याक ट्रेगुब के घर में घुस गया। वॉयवोड उस धन्य व्यक्ति से नाराज़ हो गया और उसे घर से जबरदस्ती बाहर नकिालने का आदेश दयिा। जब वह घर से जा रहे थे, तो संत ने कहा कि अगले दनि उन पर एक वपित्ति आएगी। और ऐसा ही हुआ। ठीक अगले ही दनि, राज्यपाल की पत्नी बरामदे से उतरते समय गरि गईं और उन्हें गंभीर चोटें आईं। उस समय से, राज्यपाल ने धन्य साइमन का सम्मान करना शुरू कर दयिा।

कुछ समय बाद, धन्य साइमन उसी वॉयवोड के पास लौटे और भवष्यिवाणी की कि शहर में एक बड़ी आग लग जाएगी। यह जल्द ही सच हो गया। सत्तर से अधकि घर पहले ही आग की लपटों में घरि चुके थे। तब वॉयवोड ने आदेश दयिा कि धन्य साइमन को उसके सामने लाया जाए। वह शहर के एक चर्च के सामने घुटने टेके हुए पाया गया। वह परमेश्वर की परम पवत्रि माता की एक प्रतमिा के सामने आँसू बहाते हुए प्रार्थना कर रहे थे। परम पुण्य आत्मा को राज्यपाल के सामने लाया गया। राज्यपाल ने, अन्य नागरकिों के साथ, संत से इस भयानक वपित्ति से उन्हें बचाने का आग्रह कयिा। साइमन ने अपना हाथ बढ़ाया, आग की लपटों की ओर इशारा कयिा और, पागलपन का नाटक करते हुए, राज्यपाल के गाल पर थप्पड़ मारा - और आग तुरंत बुझ गई।

अपने जीवनकाल में ही, संत को प्रभु से ऐसी कृपा प्राप्त हुई कि उनकी प्रार्थनाओं से, वभिन्नि चमत्कार हुए और बीमारों को स्वास्थ्य लाभ मलिा। युर्येवets के एक नविासी, जोसेफ जुबारेव, वोलगा नदी पार कर रहा था। अचानक एक तेज हवा चलने लगी, और लहरें छोटी नाव में पानी भरने लगीं। डरकर, जोसेफ ने अचानक कनिारे पर धन्य साइमन को

[7579] प्लेस अब कोस्त्रोमा गवर्नरेट के नेरेखोत्स्की जलि में एक कस्बा है, जो वोल्गा नदी के तट पर स्थति है।

देखा; उसने चुपचाप संत से प्रार्थना करना शुरू कर दिया कि वे अपनी प्रार्थनाओं से उसे निश्चित मृत्यु से बचा लें। उसी क्षण, जोसेफ ने संत को नए कपड़े और जूते देने का वादा किया। तूफ़ान तुरंत थम गया, और जोसेफ़ सुरक्षित रूप से नदी पार कर गया। लेकिन बाद में, जैसा कि अक्सर होता है, वह अपना वादा भूल गया। कई दिनों बाद, वह धन्य व्यक्ति से मिला।

संत ने उससे कहा, 'जोसेफ, तुमने अपना वादा पूरा नहीं किया। क्या तुम्हें याद है कि तुमने वोल्गा में डूबते समय क्या वादा किया था?'

तब जोसेफ को अपना वादा याद आया और उसे शर्मिंदगी महसूस हुई। संत के पैरों में गिरकर, उसने क्षमा याचना की।

'जाओ,' धन्य व्यक्ति ने कहा, 'और जो तुमने मुझसे वादा किया था, वह गरीबों को दो, और उन्हें कभी मत भूलना, क्योंकि दान हमें दुर्भाग्य और कठिनाइयों से बचाता है।'

यूरीएवets में स्थित पवित्र और महिमामय महा शहीद जॉर्ज को समर्पित कैथेड्रल चर्च के पुरोहित, अलेक्सी, ने एक बार मछली खाते समय एक हड्डी निगल ली। वह उनके गले में अटक गई। वे लंबे समय तक पीड़ित रहे; उनकी हालत बिगड़ती गई, और उन्होंने ठीक होने की हर उम्मीद छोड़ दी थी। एक दिन उनकी मुलाकात धन्य साइमन से हुई और उन्होंने उनसे मदद मांगी। संत ने अपनी कुछ उंगलियों से पुरोहित के गले को छुआ, और उसने तुरंत ही कुछ खून के साथ हड्डी को थूक दिया और वह पूरी तरह से स्वस्थ हो गया।

शरद ऋतु के एक दिन, वोल्गा नदी पर एक भीषण तूफान आया। युर्येवets का रहने वाला पीटर नाम का एक व्यक्ति, जो नदी के किनारे से बहुत दूर नहीं रहता था, ने अचानक लहरों पर किसी को चलते हुए देखा। वह भयभीत हो गया। लेकिन, यह सोचकर कि शायद वह गलत देख रहा है, वह सीधे किनारे के बिल्कुल किनार पर गया और ध्यान से देखने लगा। अचानक उसने साफ़ देखा कि वह धन्य साइमन थे जो हाथ में लाठी लिए पानी पर चल रहे थे। पीटर इतना हैरान हो गया कि वह अपनी जगह से हिल भी नहीं सका। उसके पास आते हुए, उस धन्य व्यक्ति ने उससे कहा:

'जब तक मैं जीवित हूँ, तुमने जो देखा है उसे किसी को मत बताना।'

संत के निधन के बाद, पतरस ने सभी को इस महान चमत्कार के बारे में बताया। सभी चकित हुए और प्रभु की महिमा करने लगे, जो अपनी महिमामय संतों को संसार में भेजते हैं।

यह महसूस करते हुए कि इस सांसारिक जीवन से उनका प्रस्थान निकट था, संत नए राज्यपाल, थियोडोर पेटेलिन के घर गए। राज्यपाल, जो गुस्से में था और उस धन्य व्यक्ति को पहचान नहीं पाया, ने उसे पीटने का आदेश दिया। साइमन गंभीर रूप से बीमार पड़ गए। राज्यपाल के आँगन में पड़े हुए, संत ने एक पुरोहित को अपने पास बुलाया। अपने पापों का प्रायश्चित करने के बाद, संत ने बड़ी श्रद्धा के साथ मसीह के पवित्र रहस्यों को ग्रहण किया और अपनी पवित्र आत्मा को प्रभु के हवाले कर दिया। धन्य संत की मृत्यु की खबर पाकर, थियोडोर फूट-फूट कर रोया और अपने पाप पर पश्चाताप किया। इस बीच, पूरे शहर के लोग संत के अंतिम संस्कार के लिए इकट्ठा हुए। भजन-गायन और आध्यात्मिक भजनों के साथ, पवित्र व्यक्ति के शरीर को युरीएवets में एपिफेनी मठ में सुलाया गया। यह 4 नवंबर 1584 को हुआ। संत के अंतिम संस्कार पर, वोइवोड थियोडोर पेटेलिन ने बहुत सारा दान दिया। जब वह घर लौटा, तो उसने पाया कि उसका पैसा बिल्कुल भी कम नहीं हुआ था। उसे एहसास हुआ कि यह ईश्वर की अद्भुत व्यवस्था के कारण हुआ था और उसने प्रभु और हमारे महिमामय पिता साइमन का धन्यवाद किया। 1619 में, परम पवित्र ईश्वर की माता ओडिगिट्रिया के सम्मान में धन्य व्यक्ति की कब्र के ऊपर एक चर्च बनाया गया, जिसमें भविष्यवक्ता एलियाह और ज़ेल्टोवोडस्क के संत मकरियस को समर्पित पार्श्व-मंदिर थे। धन्य साइमन की कब्र के ऊपर की जगह को एक लकड़ी के ताबूत से चिह्नित किया गया था ताकि कोई भी अनजाने में उस पर पैर न रखे। उस समय, सलोमी नाम की एक महिला कब्र पर आई और उसने पुरोहित से संत की ताबूत पर एक स्मरणोत्सव सेवा करने के लिए कहा।

'मैं अठारह महीने से अधिक समय तक गंभीर रूप से बीमार पड़ा था। एक दिन, मेरे सामने एक आदमी प्रकट हुआ, जो केवल एक कमीज़ पहने हुए था, जिसके पैर नंगे थे, लंबे काले बाल थे, और जिसका कद मध्यम था। मेरे सामने खड़े होकर, उसने कहा: "एपिफेनी मठ जाओ और मसीह के लिए साइमन द फूल की कब्र पर एक स्मरणोत्सव सेवा आयोजित करने के लिए कहो।"' मैं पूरी तरह से स्वस्थ महसूस करने लगी और इस धर्मात्मा के ताबूत पर प्रार्थना करने आई।

उपस्थित सभी लोग उसकी बात सुनकर बहुत हैरान रह गए, क्योंकि उन्होंने कभी भी धन्य साइमन को नहीं देखा था। कुछ बुजुर्गों ने कहा कि उसे साइमन स्वयं ही दिखाई दिए थे: उनका रूप बिल्कुल वैसा ही था जैसा उसने बताया था।

धन्य व्यक्ति की कब्र पर कई अन्य चमत्कार भी हुए। 1635 में, पैट्रिआर्क जोसेफ ने एक अवशेष-पेटिका बनाने और इस पवित्र ईश्वर-पुरुष की एक प्रतिमा चित्रित करने का आदेश दिया, जो आज भी हमारे आत्माओं के उद्धार के लिए प्रभु से प्रार्थना करते रहते हैं। आमीन।

18 नवंबर

5 नवंबर (पुराने कैलेंडर के अनुसार)

पवित्र पूजनीय शहीदों गालक्शियन और एपसिटिमा का जीवन और शहादत

5 नवंबर को स्मरणोत्सव

[7580]फ़िनिसिया के[7581] में, एमेसा शहर में, क्लिटोफोन नामक एक कुलीन, प्रसिद्ध और धनी व्यक्ति रहता था। उनकी पत्नी, जिसका नाम ल्यूकिप्पीया था, जो एपार्क मेमोन की पुत्री थी, बाँझ थी और इस बात से गहराई से दुखी थी, क्योंकि अपनी बाँझपन के कारण उसे अक्सर अपने पति की फटकार सहनी पड़ती थी, और कभी-कभी दुर्व्यवहार और यहाँ तक कि पिटाई भी झेलनी पड़ती थी। दोनों मूर्तिपूजक थे, जो हेलेनिक[7582] के झूठे विश्वासों का पालन करते थे और विशेष रूप से देवी आर्टेमिस[7583] की पूजा करते थे।

उस समय उस नगर पर एक सीरियाई सेकंडस नामक व्यक्ति का शासन था, जो मसीह में विश्वास करने वालों के साथ अत्यंत क्रूरता और निर्दयता से पेश आता था। उसने यातना के अनेक प्रकार के उपकरण बनाए और उन्हें नगर के केंद्र में प्रदर्शित किया, ताकि मसीहियों के हृदय में भय पैदा हो सके। परिणामस्वरूप, कई विश्वासी, कठोर यातनाओं के डर से, छिप गए, जबकि अन्य, मसीह की हिम्मत से घोषणा करते हुए, अपने यातनाकारों के हवाले हो गए और अपने प्रभु के नाम के लिए मर गए। उनमें ओनुफ्रियस नाम का एक भिक्षु था, जो यह सुनिश्चित करने के लिए कि कोई उसे ईसाई के रूप में न पहचान सके, अपनी भिक्षु की पोशाक को एक भिखारी के फटे-पुराने कपड़ों के नीचे छिपा लेता था; और, एक दरिद्र व्यक्ति की तरह एक-एक घर में भटक-भटक कर रोटी का एक टुकड़ा भीख में माँगता था, जबकि साथ ही, जहाँ भी संभव होता, वह सच्चे धर्म की शिक्षा देता था और लोगों की आत्माओं को ईश्वर की ओर मोड़ता था। इस प्रकार वह क्लिटोफोन के घर आया, और, द्वार पर खड़ा होकर, रोटी भीख माँगने लगा। ल्यूसिप्पीया ने, एक फटेहाल कपड़े पहने और रोटी भीख माँगते हुए आदमी को देखकर, अपनी एक दासी को उसके सामने दरवाज़े बंद करने का आदेश दिया: उस दिन वह गुस्से में थी, क्योंकि उसके पति ने उसे उसकी बाँझपन के कारण पीटा था। तथापि भिक्षु, भिखारियों की प्रथा के अनुसार, द्वार पर खड़ा रहकर भीख माँगता रहा। जल्द ही ल्यूकिप्पिया का मन पसीज गया, उसने उस बूढ़े आदमी को आँगन में आने का आदेश दिया और उसे उसकी ज़रूरत की हर चीज़ दी। जैसे ही बूढ़े आदमी ने भीख स्वीकार की, उसने ल्यूकिप्पिया की भारी, दिल से निकली आह सुनी और उससे पूछा:

'हे देवी, आपकी इस गहरी आह का कारण क्या है?'

उसने उत्तर दिया:

[7580] एपार्क – एक प्रांत का प्रमुख।

[7581] फीनिसिया – भूमध्य सागर के पूर्वी (एशियाई) तट पर, फिलिस्तीन के उत्तर में फैली एक संकीर्ण भूमि पट्टी। यह देश आदिकाल से जाना जाता है और मूल रूप से यहूदी लोगों से संबंधित लोगों द्वारा बसाया गया था; वे मिलकर प्राचीन दुनिया के पहले समुद्री यात्री और व्यापारी लोग थे, जिन्होंने दुनिया के विभिन्न हिस्सों में अपनी बस्तियाँ और व्यापारिक चौकियाँ स्थापित की थीं। प्राचीन काल में, फिनिसिया के मुख्य शहर एक अलग, स्वतंत्र समुदाय का गठन करते थे; उन्होंने बाद में टायर शहर के नेतृत्व में एक परिसंघ बनाया। ईसा पूर्व 8वीं शताब्दी में, फिनिसिया पर असीरियनों ने विजय प्राप्त की और बाद में यह क्रमशः विभिन्न लोगों के शासन में आई: बेबीलोनियन, फारसी, यूनानी, रोमन, अरब, सेलजुक तुर्क और ओटोमन तुर्क, जिनके पास यह आज भी है। फिनिसिया में ईसाई धर्म की शुरुआत प्रेरितों के समय से हुई थी।

[7582] अर्थात्, मूर्तिपूजक।

[7583] आर्टेमिस – चंद्रमा और शिकार की यूनानी मूर्तिपूजक देवी। एशिया माइनर के एफेसस में उनका भव्य मंदिर प्रेरितों के काम की पुस्तक (प्रेरितों के काम 19:24–29) में उल्लेखित है।

'बूढ़े, मेरे कोई संतान नहीं है, क्योंकि मैं बाँझ हूँ, और इसी कारण मेरा पति मुझ पर अत्याचार करता है और मुझे भगा देता है; मैंने डॉक्टरों और जादूगरों को बहुत सारा सोना दिया है ताकि वे मेरी मदद करें और मेरी बाँझपन को ठीक करें, फिर भी मुझे उनसे कोई मदद नहीं मिली है, और मैं केवल निराशा में और गहरी डूबती जा रही हूँ।'

बूढ़े ने पूछा:

'आप किस देवता की सेवा करती हैं?'

'मैं महान देवी आर्टेमिस की सेवा करती हूँ,' उसने उत्तर दिया।

'यही कारण है कि तुम बाँझ हो: क्योंकि तुम उस ईश्वर में कोई आशा नहीं रखती जो तुम्हें संतान दे सकता है,' बुज़ुर्ग ने उत्तर दिया।

ल्यूसिप्पा ने पूछा, 'लेकिन मुझे किस ईश्वर में अपनी आशा रखनी चाहिए, जो मुझे ऐसी कृपा दे कि मुझे माँ कहा जा सके?'

'अपनी आशा सच्चे परमेश्वर, यीशु मसीह में रखो,' वृद्ध ने उत्तर दिया, 'और उस पर, और उसके आदिहीन पिता पर, और पवित्र आत्मा पर, जो एकसार और जीवन-दायक है, विश्वास करो।'

ल्यूकिप्पिया ने पूछा:

'क्या आप उस ईश्वर के बारे में नहीं बता रहे हैं जिसकी गलीलवासी पूजा करते हैं?'[7584]

'वही है,' वृद्ध ने उत्तर दिया, 'क्योंकि उसने स्वर्गों को बनाया, पृथ्वी की नींव डाली, और मनुष्य तथा हर एक जीवित प्राणी को बनाया।'

ल्यूकिप्पिया ने कहा, "मुझे डर है कि प्रांतीय राज्यपाल, सेकंडस, को मेरे विश्वास के बारे में पता चल जाएगा और वह मुझे मार डालेगा, जैसा उसने कई अन्य लोगों के साथ किया है: वह उन सभी को बिना दया के मार डालता है जो उस ईश्वर में विश्वास करते हैं जिसके बारे में आप बात कर रहे हैं।"

'यदि आप प्रांतीय राज्यपाल से डरती हैं,' बुज़ुर्ग ने कहा, 'तो आप गुप्त रूप से पवित्र त्रिमूर्ति की उपासना कर सकती हैं: मैं यहाँ हूँ, यातना देने वाले की धमकियों से डरते हुए, गुप्त रूप से अपने ईश्वर की सेवा कर रहा हूँ और, उनकी कृपा से, मोक्ष प्राप्त करने की आशा रखता हूँ; क्योंकि, जैसा कि आप देख सकते हैं, मैं एक ईसाई, एक भिक्षु और एक पुरोहित हूँ, और मैंने खुद को छिपाया है ताकि मुझे पहचाना न जा सके; बाहरी रूप से, सभी के लिए, मैं केवल एक भिखारी हूँ, लेकिन वास्तव में मैं मसीह का सेवक हूँ। इसलिए तुम भी, गुप्त रूप से मसीह की सेवा करके, उस कारण से मोक्ष से वंचित नहीं होगे।

ल्यूकिप्पिया ने पूछा, 'यदि मैं इस विश्वास को स्वीकार करूँ, पिताजी, लेकिन मेरा पति एक मूर्तिपूजक बना रहता है, तो क्या मेरा विश्वास मेरे अविश्वासी पति के कारण व्यर्थ नहीं हो जाएगा?'

'केवल मसीह का चिह्न, अर्थात् पवित्र बपतिस्मा ग्रहण करो, और सच्चे परमेश्वर में निश्चिंदेह विश्वास करो; और यदि तुम सच्चे विश्वास में दृढ़ रहोगी, तो तुम स्वयं उद्धार पाओगी और अपने पति को भी उद्धार दोगी, क्योंकि हमारी पवित्र पुस्तकें कहती हैं: *'क्योंकि अविश्वासी पति विश्वास करने वाली पत्नी के द्वारा पवित्र होता है, और अविश्वासी पत्नी विश्वास करने वाले पति के द्वारा पवित्र होती है। अन्यथा, तुम्हारे बच्चे अशुद्ध होते, परन्तु अब वे पवित्र हैं'* (1 कुरिन्थियों 7:14)।

जब ओनुफ्रियस ने ल्यूसिप्पीया को इन शब्दों से प्रोत्साहित किया, तो उसने कहा:

'पिताजी! क्या आप मुझ पर पवित्र बपतिस्मा संस्कार कर सकते हैं?'

उसने उत्तर दिया:

'क्या कोई पानी है? क्योंकि इसके लिए समय आ गया है।'

दासीओं को यह न बताने का निर्देश देने के बाद कि क्या हुआ था, ल्यूकिप्पिया ने पानी का एक टब मंगवाया, और फिर धन्य ओनूप्रियस ने उसे पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम पर बपतिस्मा दिया, और उसे ईसाई विश्वास के रहस्यों और सभी आज्ञाओं के बारे में सिखाया। जब वह जा रहे थे, तो नव-बपतिस्मा प्राप्त महिला ने उनसे अनुरोध किया कि वे उसे न भूलें, जब भी संभव हो उससे मिलने आएँ, और उसे धार्मिकता तथा प्रार्थना सिखाएँ।

[7584] गलीलियाई मसीह के अनुयायी थे, जिन्हें वे 'गलील का यीशु' (मत्ती 26:69) कहते थे, क्योंकि उन्होंने अपना बचपन और यौवन गलील के एक छोटे से शहर नासरत में बिताया था।

जब भिक्षु चले गए, तो ल्यूसिपियिा ने बीमारी का नाटक किया ताकि उसका पति आठ दिनों तक उससे संपर्क न करे। इस प्रकार, उसने अपने बपतिस्मा में प्राप्त पवित्र आत्मा की कृपा को पवित्रता में संरक्षित रखा। आठ दिन बीत जाने के बाद, उसने एक दर्शन में हमारे प्रभु यीशु मसीह को क्रूस पर चढ़ाया हुआ देखा; और उसे ऐसा प्रतीत हुआ कि वह उनके चरणों में गिरि पड़ी है और उनके सबसे पवित्र होठों से अपनी बाँझपन को दूर करने और उसे एक पुत्र देने का एक सांत्वनादायक वादा सुना है, जो सूली पर मसीहा के दुखों का अनुकरण करेगा और उनके राज्य में सहभागी होगा। इस दर्शन के परिणामस्वरूप, ल्यूकिप्पियिा महान आध्यात्मिक आनंद से भर गईं और ईश्वर के प्रति उनका गहरा प्रेम विकसित हो गया। उस समय से, प्रभु के दुखों की स्मृति उन्हें कभी नहीं छोड़ती थी; वह हमेशा अपने मन में सूली पर चढ़ाए गए मसीह पर मनन करती थीं और, मानो, उन्हें अपने सामने खड़ा हुआ देखती थीं।

थोड़ी ही देर बाद, वह गर्भवती हो गई। इस पर उसका पति अत्यंत प्रसन्न हुआ और उससे कहा:

'अब मुझे पता है कि तुम देवताओं को प्रिय हो: उन्होंने तुम्हारी कोख में एक संतान का वरदान दिया है; तो चलो हम जाकर उनके लिए बलिदान चढ़ाते हैं।'

तब ल्यूसिप्पीया ने आह भरकर कहा:

'यह वह देवता नहीं थे जिनके पास आप मुझे बुला रहे हैं जिन्होंने मुझे यह वरदान दिया, बल्कि एक अन्य देवता ने, जो मेरी गर्भधारण से पहले मुझे एक सपने में दिखाई दिए थे और जिन्हें मैंने क्रूस पर चढ़ाए हुए देखा था। और यदि आप चाहें, मेरे स्वामी, तो हम उन्हें एक धन्यवाद-भेंट अर्पित करें।'

उसके पति ने कहा, "वह ईश्वर जिसे तुमने देखा था, वह गलीलियों का ईश्वर है, जिसके बारे में मैंने कई लोगों से सुना है कि उसे सचमुच सूली पर चढ़ाया गया था और वह अद्भुत चमत्कार करता है।"

उसने कहा, 'तो फिर हम उस पर विश्वास क्यों न करें, जबकि वह सर्वशक्तिमान है और आप और मुझ पर इतना दयालु है कि उसने हमारी हृदय की इच्छा पूरी की है—मेरी बाँझपन को दूर किया है?'

'क्या तुमने नहीं सुना है,' उसके पति ने उत्तर दिया, 'कि प्रांत का राज्यपाल क्रूस पर चढ़ाए गए में विश्वास करने वालों को निर्दयता से यातना देता है और मार डालता है?'

ल्यूकिप्पियिा ने कहा, 'लेकिन अगर हम खुले तौर पर उस पर विश्वास नहीं कर सकते, तो हम गुप्त रूप से विश्वास करेंगे और, इस आस्था के अनुसार, अपने जीवन को अच्छाई की ओर निर्देशित करेंगे।'

क्लिटोफोन ने कहा, "ऐसा कोई नहीं है, जो हमें यह नया विश्वास सिखा सके और हमें यह निर्देश दे सके कि हमें उस दयालु ईश्वर की सेवा कैसे करनी चाहिए, जिसे आपने अपने सपने में देखा था और जिसने आपको गर्भधारण करने की क्षमता प्रदान की।"

ल्यूकिप्पियिा ने, यह देखकर कि उसका पति उसकी बात से सहमत होने को तैयार है, उसे वह सब कुछ बताया जो उसके साथ हुआ था और खुलासा किया कि वह पहले से ही एक ईसाई है और उसे एक संन्यासी द्वारा ईसाई धर्म के रहस्यों की शिक्षा दी गई थी। क्लिटोफोन ने यह सब खुशी से सुना और बपतिस्मा लेना चाहा। जैसे ही धन्य ओनुफ्रियस नव-बपतिस्मा प्राप्त महिला से मिलने उनके घर आए, उसने उन्हें अपने पति से मिलवाया, और क्लिटोफोन को पवित्र वृद्ध ने बपतिस्मा दिया। और यह जोड़ा पूर्ण भक्ति और पवित्रता में रहा, और गुप्त रूप से सच्चे प्रभु की सेवा करता रहा।

जब उनके यहाँ एक पुत्र का जन्म हुआ, तो उन्होंने अपने आध्यात्मिक पिता और शिक्षक, ओनूप्रियस को बुलाया, जिन्होंने शिशु का बपतिस्मा दिया और उसका नाम गैलाक्शियन रखा। उसी क्षण, पवित्र वृद्ध ने उसके बारे में निम्नलिखित भविष्यवाणी कही: 'यह बच्चा सांसारिक जीवन की तुलना में स्वर्गीय जीवन से अधिक प्रेम करेगा।'

जब गैलाक्शियन बड़े हुए, उनके माता-पिता ने उनकी शिक्षा का ध्यान रखा और ईश्वर की सहायता से, उन्होंने जिन सभी विषयों का अध्ययन किया उनमें वे जल्द ही निपुण हो गए; और जब वे 24 वर्ष के हुए – तब तक उनकी माँ का निधन हो चुका था – उनके पिता चाहते थे कि वे विवाह करें और, एपिस्टिमिा नाम की एक सुन्दर मुख वाली युवती को खोजने के बाद, उन्होंने अपने बेटे का सगाई कर दिया। चूँकि शादी कुछ समय के लिए टल गई थी, गैलाक्शियन अक्सर अपनी मंगेतर से मिलने के लिए उसके पास जाता था; लेकिन उसने (रस्म के अनुसार) उसे कभी चुंबन से अभिवादन नहीं किया, क्योंकि उसका बपतिस्मा नहीं हुआ था। एपिस्टिमिा इस बात से बहुत दुखी हुई। उसके पिता, उसकी उदासी देखकर और इसका कारण जानकर, गैलाक्शियन से बोले:

'युवक, तुम मेरी बेटी—अपनी मंगेतर—को प्रथागत चुंबन से क्यों नहीं अभिनंदित करते? अगर तुम उससे प्यार नहीं करते, तो तुमने सबसे पहले उससे सगाई ही क्यों की?'

गैलाक्शियिन, बिना उत्तर दिए, उस युवती के पास गया और उसे अकेले में कहा:

'एपस्टिमिा! क्या तुम जानती हो कि मैं तुम्हें चुंबन से अभिवादन क्यों नहीं करता?'

उसने उत्तर दिया:

'मुझे नहीं पता, मेरे स्वामी, और मुझे इस बात का बहुत दुख है।'

गैलाक्शियिन ने कहा:

'चूँकि तुम ईसाई नहीं हो और एक अशुद्ध मूर्तिपूजक विश्वास से कलंकित हो, मैं तुम्हारी अशुद्धता को छूना नहीं चाहता, कहीं ऐसा न हो कि मैं परमेश्वर की आत्मा का अपमान करूँ; लेकिन अगर आप मेरा प्यार जीतना चाहते हैं, तो मूर्तियों का त्याग करें, उस ईश्वर में विश्वास करें, जिसमें मैं विश्वास करती हूँ, और पवित्र बपतिस्मा ग्रहण करें: तब मैं आपको एक चुंबन दूँगी, मैं आपसे वैसा ही प्रेम करूँगी जैसा मैं स्वयं से करती हूँ, मैं आपको अपनी पत्नी कहूँगी, और हम अंत तक प्रेम और अटूट रूप से एक साथ रहेंगे।"

एपस्टिमिा ने उत्तर दिया:

'मैं वह सब करूँगा जो आप आज्ञा दें, हे मेरे स्वामी: मैं आपके ईश्वर में विश्वास करता हूँ और बपतिस्मा लेना चाहता हूँ।'

उसने कहा:

'बहुत अच्छा, हे बुद्धिमान कन्या, अब मैं सचमुच तुमसे प्रेम करने लगा हूँ। लेकिन चूँकि तुम्हें बपतिस्मा देने वाला कोई नहीं है—क्योंकि ईसाई धर्म का भयंकर उत्पीड़न हुआ है, और पुरोहित और पादरी या तो मारे गए हैं या रेगिस्तान में भाग गए हैं—इसलिए मुझे स्वयं तुम्हें बपतिस्मा देना होगा। तो, अपने साथ कुछ सफेद वस्त्र ले जाओ और नदी कफ़िोस पर जाओ—जैसे स्नान करने के लिए—और इस बीच मैं अपना घर छोड़कर सैर करने के बहाने खेतों में जाऊँगा; और जब मैं तुम्हें नदी के किनारे पाऊँगा, तो मैं तुम्हें बपतिस्मा दूँगा।"

एपस्टिमिा नदी पर गई; गैलाक्शियिन भी वहाँ गया और कफ़िोस पर उसने अपनी मंगेतर को पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम पर बपतिस्मा दिया, और उसे प्रार्थना करना सिखाया। फिर वे अपने-अपने रास्ते चले गए, और किसी को भी उनके रहस्य का पता नहीं चला। लगभग उसी समय, गैलाक्शियिन ने अपने ससुर के एक दास को सच्चे धर्म में परिवर्तित किया और उसका बपतिस्मा दिया, ठीक वैसे ही जैसे उसने अपनी मंगेतर के साथ किया था। यह दास, जिसका नाम यूटोलमियिस था, बाद में एक भिक्षु बन गया और इस संत-चरित्र को लिखा।

अपने बपतिस्मा के बाद, एपस्टिमिा अपने माता-पिता के घर में ही रही, और उसने स्वयं को ईश्वर के चिंतन और प्रार्थना में समर्पित कर दिया, जिसे वह गुप्त रूप से करती थी, क्योंकि उसने अपने पिता से यह छिपा रखा था कि उसने ईसाई धर्म अपना लिया था।

जब उसके बपतिस्मा के आठवें दिन गैलाक्शियिन उसके पास आए, तो उसने उनसे कहा:

'मैं आपको एक अद्भुत बात बताना चाहती हूँ, मेरे स्वामी। जब से मुझे पवित्र बपतिस्मा मिला है, मैंने अक्सर शानदार हॉल देखे हैं, और उनके भीतर तीन समूह[7585] गाते हुए देखे हैं: एक समूह भिक्षुओं का है; दूसरा समूह सुंदर कन्याओं का, और तीसरा कुछ पंखों वाले, अग्निमय और कुलीन रूप वाले पुरुषों का था; और इस अद्भुत दर्शन और इन आकृतियों के मधुर गायन से, मेरा हृदय असाधारण आनंद महसूस करता है।

एपस्टिमिा ने जो देखा था, उस पर मनन करने के बाद गैलाक्शियिन ने उससे निम्नलिखित कहा:

'संन्यासी वे हैं जिन्होंने अपने धन-संपत्ति, पत्नियाँ और मित्रों को त्याग दिया है और मसीह का अनुसरण किया है, गरीबी, पवित्रता और धैर्य में जीवन के संकीर्ण और दुखद मार्ग पर चल रहे हैं। सुंदर कन्याएँ वे हैं जिन्होंने अपने मंगेतर और माता-पिता, और सभी सांसारिक मोह-माया—भव्य वस्त्र, संपत्ति और अन्य व्यर्थ चीज़ों—को त्याग दिया है और मसीह का अनुसरण किया है। और पंख वाले पुरुष परमेश्वर के स्वर्गदूत हैं, जिनके साथ वे कन्याएँ स्वर्ग में आनंद मनाती हैं और जयजयकार करती हैं, स्तुति के गीतों से परमेश्वर की महिमा करती हैं।

एपस्टिमिा ने कहा, 'हे भगवान, काश आप हमें भी उनके साथ आनंदित होने का अवसर दें।'

'यदि हम अपनी कुँवारी अवस्था बनाए रखें,' गालक्शियिन ने कहा, 'और, उनके समान, संसार का त्याग करें, तो सर्व-सत्-ईश्वर हमें भी वही पुरस्कार प्रदान करेंगे।'

[7585] 'लिक' का अर्थ है एक मेजबान या सभा।

'अगर तुम राज़ी हो,' एपस्टिमिा ने उत्तर दयिा, 'तो मैं अपनी कुँवारी अवस्था बनाए रखने को तैयार हूँ, लेकनि मैं तुमसे अलग नहीं होना चाहती, क्योंकि अगर हम अलग हो गए, तो हम एक-दूसरे के साथ अपनी खुशी कैसे बाँट पाएँगे?'

'मुझे अभी वचन दो,' गालक्शियिन ने कहा, 'कि तुम अपनी कुँवारी अवस्था बनाए रखोगी और मेरे साथ संन्यासी जीवन जयिोगी, और मैं इस जीवन में या अगले जीवन में भी तुमसे अलग नहीं होऊँगा।'

एपस्टिमिा ने उसे वह वादा कयिा जसिकी वह मांग कर रहा था, और कहा:

'जसि दृढ़ वशि्वास के साथ मैं हमारे प्रभु यीशु मसीह में वशि्वास करती हूँ, उसी दृढ़ता के साथ मैं तुमसे वादा करती हूँ कि मैं तुम्हारी इच्छा पूरी करूँगी, और मैं तुम्हारे पीछे-पीछे चलूँगी, तुम जहाँ भी जाओगे।'

गैलाक्शियिन ने कहा:

'आओ हम अपने परमेश्वर का धन्यवाद करें कि वह हम पर दयालु हुए हैं और हमारी प्रार्थनाएँ सुनी हैं! काश वह हमारे इस वाचा को अंत तक अटूट बनाए रखें और इसे अक्षुण्ण रखें!... अब मैं अपने घर जाऊँगा और यात्रा की तैयारी करूँगा; तुम्हें भी ऐसा ही करना है: जो कुछ भी तुम्हारे पास है, वह सब गरीबों को दे दो, जैसे मैं करूँगा, और तीसरे दनि हम एक साथ अपने घर से नकिलेंगे और जहाँ भी ईश्वर हमें ले जाएँगे, वहाँ चलेंगे। तुम्हें यूटोलमयिस नामक दास को भी अपने साथ ले जाना है – वह एक धार्मकि व्यक्ति है और हमारे साथ संन्यासी जीवन जएिगा।

इस परामर्श के बाद, संत गालक्शियिन और एपस्टिमिा अपने-अपने रास्ते चले गए; उन्होंने गुप्त रूप से अपनी सारी संपत्ति गिरीबों में बाँट दी और यात्रा की तैयारी कर ली, और जैसा तय था, वे रात में अपने घरों से नकिल पड़े और नौकर यूटोलमयिस के साथ मलिकर चल पड़े।

दस दनि बाद वे पब्लयिन नामक एक पहाड़ पर पहुँचे[7586] , जसि पर एक मठ था जहाँ दस भक्षिुओं ने शरण ली थी। थोड़ी ही दूरी पर एक छोटा सा मठ था, जसिमें चार वृद्ध महलिाएँ रहती थीं जो कड़ा उपवास करती थीं; उनका नेतृत्व एक शुद्ध और पवत्रि जीवन वाली डीकोनेस करती थी। गैलाक्शियिन और एपस्टिमिा, यूटोलमयिस के साथ, मठ में प्रवेश कएि, मठाध्यक्ष को प्रणाम कयिा, और उन्हें वहाँ मठ के संन्यास-व्रत लेने के अपने इरादे के बारे में बताया। मठाधीश ने उनमें ईश्वर की पुकार को पहचानकर, उन्हें स्वीकार कर लयिा और भक्षिु के रूप में उनका शरिच्छेदन कयिा: उन्होंने एपस्टिमिा को चार पवत्रि तपस्वयिों के साथ जुड़ने के लएि कन्वेंट भेज दयिा, जबकि उन्होंने गैलाक्शियिन और यूटोलमयिस को अपने ही मठ में रखा और उन्हें भक्षिु जीवन के सभी प्रथागत कर्तव्य नभिाने का नरि्देश दयिा। और आदरणीय गालक्शियिन मठाध्यक्ष और मठवासयिों के प्रति पूर्णतःआज्ञाकारी थे और उन्होंने उत्साहपूर्वक ईश्वर की सेवा की। और उनके पराक्रम और परशि्रम का वर्णन कौन कर सकता है? वह कभी भी नष्क्रयि नहीं देखा गया; बल्कि, वह हमेशा या तो मठ के लएि कुछ आवश्यक कार्य कर रहा होता या प्रार्थना कर रहा होता; उसका उपवास असाधारण था: कभी-कभी वह पूरे सप्ताह बनिा भोजन के रहता था; वह अपनी ब्रह्मचर्य और पवत्रिता की इतनी सावधानी से रक्षा करता था कि वह कसिी महलिा का चेहरा भी देखने से बचने के लएि हर संभव प्रयास करता था, और वास्तव में, उसने लंबे समय तक कसिी का चेहरा नहीं देखा; कई मौकों पर, कुछ भाइयों ने उन्हें अपने साथ उपर्युक्त पवत्रि डकिॉनेस को देखने के लएि आमंत्रति कयिा, जो नब्बे वर्षों तक एक नन के रूप में रही थीं और आत्मा के उद्धार पर उनकी शक्षिाओं को सुनने वालों सभी के लएि बहुत लाभदायक थीं, क्योंकि वह अपनी बुद्धि, शक्षिाप्रद शब्दों और सदाचारी जीवन के लएि प्रसद्धि थीं - और, संयोग से, सस्टिर एपस्टिमिा से भी मलिने के लएि। लेकनि गालक्शियिन सहमत नहीं हुए, उन्होंने कहा:

'हे पवत्रि पतिाओं, आपके उपदेशों से लाभ उठाना मेरे लएि पर्याप्त है; जहाँ तक मेरी बहन का प्रश्न है, मैं उसे तब तक नहीं देखना चाहता जब तक कि प्रभु स्वयं मुझे उसे देखने का आदेश न दें।' और मसीह में उसकी बहन संत एपस्टिमिा, एक पवत्रि डकिॉनेस की देखरेख में अपने मठ में परमेश्वर के स्वर्गदूत के समान रहती थी, और गैलाक्शियिन की तरह, तपस्या के प्रयासों और परशि्रम में अपना समय बतिाती थी, और अपने जीवन-यापन के तरीके में अपने भाई से कसिी भी तरह से कम नहीं थी। ईसाई धर्म के दोनों प्रचारक ( ) ईश्वर के प्रति प्रेम से जलते दो दीपक के समान थे, जबकि उनके साथ काम करने वाले संन्यासयिों को उनके सदाचारी जीवन के उदाहरण से नरि्देशति कयिा जाता था और वे स्वर्गीय पति की महमिा करते थे।

[7586] समियिोन मेटाफ्रास्टेस के अनुसार, माउंट पब्लयिन, या पब्लयिन, माउंट सनिाई के पास स्थति था।

इस बीच, ईसाइयों पर अत्याचार नरि्बाध रूप से जारी रहा: सभी को मूरतयिों को बलदिान चढ़ाने के लिए मजबूर कयिा जाता था, और जो मना कर देते थे उन्हें यातनाएँ दी जाती थीं। कुछ वधिरमी, जनि्हें पहाड़ों में आश्रय लेने वाले भकि्षुओं के बारे में पता चला, ने उनकी सूचना प्रांत के राज्यपाल, उर्सस को दे दी। उसने तुरंत अपने सैनकिों को सभी भकि्षुओं को पकड़कर अपने सामने न्याय के लिए लाने का आदेश देकर भेज दयिा। इन सैनकिों के आने से पहले ही, संत एपस्टिमिा ने एक रात नम्निलखिति सपना देखा: उन्होंने सपना देखा कि वह अपने मंगेतर और आध्यात्मकि भाई गैलाक्शयिन के साथ शाही महल में खड़ी थीं, और एक तेजस्वी राजा उन्हें सुंदर मुकुट पहना रहा था। जागने पर, वह जो देख चुकी थी, उसे देखकर हैरान रह गई और, जैसे ही दनि चढ़ा, उसने महाधर्माध्यक्ष को एक पत्र भेजकर उनसे कुछ महत्वपूर्ण सुनने के लिए अपने पास आने का आग्रह कयिा (क्योंकि, प्रथा के अनुसार, नन पुरुषों के मठ में नहीं जाती थीं; इसके बजाय, मठाधीश, जो दोनों मठों के आध्यात्मकि पति के रूप में कार्यरत थे, स्वयं उपवास करने वाली ननों के पास आते और उनकी आध्यात्मकि आवश्यकताओं का ध्यान रखते: वह उनका पाप-स्वीकार सुनते, उनके लिए दैवीय पूजा (Divine Liturgy) का आयोजन करते, उन्हें पवत्रि रहस्य (Holy Mysteries) प्रदान करते, और फरि अपने मठ लौट आते)। एपस्टिमिा का पत्र प्राप्त करने पर, मठाधीश उपवास कर रही पवत्रि महलिाओं के मठ के लिए रवाना हुए, जहाँ संत एपस्टिमिा ने उन्हें पछिली रात सपने में देखी गई अपनी दृष्टि के बारे में बताया। मठाधीश ने कहा:

'महल स्वर्ग का राज्य है, और राजा यीशु मसीह हैं। वह हमारे प्रभु और परमेश्वर हैं, और मुकुट उन पुरस्कारों का प्रतीक हैं जो तुम, मेरी संतान, और तुम्हारे आध्यात्मकि भाई, गैलाक्शयिन, को तुम्हारे दुखों और धार्मकिता के पराक्रमों के लिए उचति समय पर प्राप्त होने हैं; लेकनि पहले तुम्हें बहुत कष्ट सहने होंगे और एक शहीद की मृत्यु मरनी होगी। मैं तुझसे वनिती करती हूँ, मेरे बच्चे, क्रूर यातनाओं से मत डरना और अपने दुखों के बीच हतोत्साहति मत होना: जान ले कि तेरे दुखों के लिए, शाश्वत और अकथनीय आशीर्वाद तेरा इंतज़ार कर रहे हैं, जो तू अपने भाई के साथ पराक्रमों के दाता[7587] के हाथों से प्राप्त करेगा।

एपस्टिमिा ने आँखों में आँसू लिए हुए उत्तर दयिा:

'प्रभु की इच्छा पूरी हो: वह अपनी कृपा के अनुसार, हमारे संबंध में सभी चीजों को अपनी इच्छानुसार व्यवस्थति करे!'

जैसे ही मठाध्यक्ष अपनी कोठरी में लौटे, उर्स द्वारा भेजे गए सैनकिों ने पुरुषों के मठ पर हमला कर दयिा; सभी भकि्षु भाग गए और रेगस्तिानों तथा पहाड़ों में शरण ले ली, और केवल पूजनीय गैलाक्शयिन ही मठ में रह गए, जनि्हें सैनकिों ने उनकी कोठरी में ईश्वर का वचन पढ़ते हुए पाया और पकड़ लयिा। इसी तरह, उपवास करने वाली पवत्रि महलिाएँ भी अपनी कोठरयिों से भागकर एपस्टिमिा के साथ छपि गईं। केवल पवत्रि गालक्शयिन, जो वध के लिए ले जाई गई भेड़ के समान थे[7588] , को न्याय और यातना के लिए उर्सस के सामने घसीटा गया। लेकनि आदरणीय एपस्टिमिा, जो अन्य कुंवारी कन्याओं के साथ एक गुफा में छपिी हुई थीं, जब उन्हें यह पता चला कि उनके मंगेतर और भाई को मूरतपिूजकों ने पकड़ लयिा है और यातना देने के लिए ले गए हैं, तो वे रोते हुए पवत्रि डकिनेस के पैरों पर गरि पड़ीं, और कहने लगीं:

'हे माता, मैं आपसे वनिती करती हूँ, मुझे जाने दें, ताकि मैं अपने स्वामी गैलाक्शयिन का अनुसरण कर सकूँ; क्योंकि मैंने सुना है कि सैनकिों ने उन्हें पकड़ लयिा है और उन्हें यातना देने के लिए प्रांतीय राज्यपाल के सामने ले गए हैं, और मैं उनसे अलग नहीं रह सकती; मेरा हृदय उनके लिए व्याकुल है, और मैं हमारे प्रभु मसीह के लिए उनके साथ मरना चाहती हूँ।'

धर्मनरिपेक्ष महलिा ने उत्तर दयिा:

'नहीं, मेरी बेटी एपस्टिमिा, उसके पीछे मत जाओ, और खुद को काफरिों के हाथों में मत सौंपो, कहीं तुम दुश्मन के जाल में न फँस जाओ: तुम जवान हो, और मुझे तुम्हारी चंति है, कहीं यातनाओं के डर से तुम मसीह का त्याग न कर बैठो

[7587] *'प्रतयिोगतिाओं का आयोजक'* ग्रीक शब्द का अनुवाद है जो प्राचीन यूनानयिों के बीच *उन लोगों के* अत्यधकि सम्मानति पद को दर्शाता है *जो प्रतयिोगतिाओं* (दौड़, घुड़सवारी, कुश्ती, आदि) का *आयोजन करते थे*। यहाँ, यह, बेशक, प्रभु यीशु मसीह को संदर्भति करता है, जनि्होंने क्रूस पर अपनी मृत्यु के माध्यम से, देह के वध और आध्यात्मकि पूर्णता के प्रयासों की नींव रखी और उन्हें आरंभ कयिा, जसिमें मसीही मसीह के साथ *क्रूस पर चढ़ाए जाते* हैं—अर्थात्, वे, एक प्रकार से, उनके दुखों में भाग लेते हैं—और साथ ही इन प्रयासों के न्यायाधीश और उनके लिए पुरस्कार प्रदान करने वाले के रूप में।

[7588] *जैसे वध के लिए ले जाया जाने वाला मेमना।* ये शब्द यशायाह 53 से लिए गए हैं और इनमें उद्धारकर्ता के क्रूस पर दुखों (अर्थात्, इन दुखों को उनके नम्र सहन के साथ) के बारे में एक भवषि्यवाणी शामलि है।

और इस तरह अपनी कुँवारी अवस्था न खो बैठो; तब तुम्हारी सारी मठवासी कष्ट-भोग व्यर्थ हो जाएँगी, और तुम मोक्ष की सारी आशा खो दोगी।

एपस्टिमिा ने उत्तर दयिा, 'मैं गैलाक्शयिन के बनिा नहीं जी सकती, उसके द्वारा ही मैंने मसीह, मेरे सच्चे और दयालु ईश्वर को जाना; उसके हाथों से ही मैं बपतस्मिा के जल में वधिर्मी अशुद्धि से धुली गई; उसने मुझे मोक्ष के मार्ग पर स्थापति कयिा और मुझे इस मठवासी जीवन और आपके पवत्रि मठ तक पहुँचाया; उसकी प्रार्थनाओं ने मेरी सभी ज़रूरतों में मेरी मदद की है; वह मेरा मंगेतर, मेरा भाई, मेरा शक्षिक, ईश्वर में मेरा पति, और मेरी कुँवारीपन का रक्षक है; और मैं इस जीवन में या अगले जीवन में उससे अलग नहीं हो सकती, बल्कि मैं उसके साथ ही जाऊँगी और मरूँगी। यदि वह सच्चे परमेश्वर के लिए अपनी आत्मा का बलदिान करता है, तो मैं भी अपनी आत्मा का बलदिान करूँगी; सर्व के सृष्टकिर्ता के लिए उसका रक्त मेरे रक्त के साथ बहाया जाए – उसके साथ मैं महमिा के राजा के सहिासन के सामने जाऊँगी और खड़ी होऊँगी, जसिे मैंने एक सपने में देखा था और जसिने हमें एक साथ मुकुट पहनाया था... मुझे जाने दो, मेरी मालकिानो, मुझे जाने दो और मेरे लिए प्रार्थना करना!

दीकोनेस ने उसकी आँसू और ईश्वर तथा उसके मंगेतर के प्रति उसके प्रगाढ़ प्रेम को देखकर कहा:

'प्रभु तुम्हें आशीर्वाद दें, मेरी बेटी, और तुम्हारी संपूर्ण यात्रा धन्य हो! जैसे धन्य थेक्ला ने अपना शहीद होने का कार्य पूरा कयिा, वैसे ही तुम भी करो। तो इस धन्य यात्रा पर नकिल पड़ो, और प्रभु का बल देने वाला हाथ तुम्हारे साथ हो!'

इसके बाद, धन्य एपस्टिमिा ने अपनी आध्यात्मकि माता, पवत्रि डकिनेस और अपनी सभी बहनों को चूमकर, अपने प्रयि भाई का पीछा करने के लिए जल्दी की।

सैनकिों तक पहुँचकर और संत गालक्शयिन को ज़ंजीरों में जकड़े हुए देखकर, वह चल्लिाई:

'मेरे प्रयि प्रभु और भाई! मेरी शक्षिकिा, जन्हिोंने मुझे मोक्ष का मार्ग दखिाया, जनिके द्वारा मैं सच्चे ईश्वर, मसीह को जान पाई, मेरी प्रतीक्षा करो; अपनी दीन बहन और दासी को अकेला मत छोड़ो! मुझे अपने साथ अपने शहीद होने की ओर ले जाओ, मुझे जसिे तुमने मूर्तपिूजक भ्रम और सभी सांसारकि व्यर्थता से मुक्त कयिा है; मुझे, जसिे तुमने संन्यासी जीवन से परचिति कराया है, शहीद के मुकुट तक ले चलो! याद करो कि तुमने मुझसे वादा कयिा था कि तुम मुझे न तो इस जीवन में और न ही अगले जीवन में छोड़ोगे!"

गालाक्शयिन के साथ आए सैनकि एपस्टिमिा की ओर दौड़े और उसे पकड़ लयिा। जब गालाक्शयिन ने एपस्टिमिा को देखा, तो मसीह के लिए कष्ट सहने के उसके दृढ़ संकल्प को देखकर वह इतना आनंदति हुआ कि उसकी आँखों में आनंद के आँसू भर आए। उसने अपनी बहन को ऐसी दृढ़ता और ईश्वर के प्रति ऐसा उत्कट प्रेम प्रदान करने के लिए पूरे हृदय से परमेश्वर का धन्यवाद कयिा, और उसने चुपके से उसके लिए प्रार्थना की कि प्रभु उसे उसके कष्टों के इस पराक्रम में अंत तक बनाए रखें और वह क्रूर यातनाओं से न घबराए।

सैनकिों ने उसे गैलाक्शयिन के साथ बांध दयिा—जनिके साथ वह लंबे समय से आध्यात्मकि प्रेम के बंधन में बंधी हुई थी—और उन्हें प्रांतीय राज्यपाल के पास ले गए। रास्ते में, गैलाक्शयिन ने एपस्टिमिा को समझाते हुए कहा:

'देखो, बहन, इस दुष्ट संसार के कसिी भी प्रलोभन से बहक मत जाना, और न ही यातनाओं से डरना: हम यहाँ अधकि समय तक पीड़ति नहीं रहेंगे, परन्तु इसके लिए हम स्वर्गीय महल में हमारे प्रभु से अनंत मुकुट प्राप्त करेंगे।'

संत एपस्टिमिा ने उनसे उत्तर दयिा:

'मैं आपके पदचन्हिों पर चलूँगी, हे मेरे प्रभु, और जैसा आप करते हैं, वैसा ही मैं भी करूँगी; और मुझे वश्विास है कि हमारे प्रभु हमें न छोड़ेंगे, बल्कि आपको बल देंगे और मेरी सहायता करेंगे, यद्यपि मैं नर्बिल हूँ, ताकि मैं उनके नमित्ति वही दुख सह सकूँ जो आप सहते हैं, उसी प्रकार दुख भोगूँ और मरूँ, ताकि *"धर्म में मैं आपकी उपस्थति का दर्शन करूँ; जब मैं जागूँ तो मैं तेरे समानता से तृप्त होऊँगा"* (भजन संहति 16:15)।

इस प्रकार बात करते हुए, वे उर्सस के आँगन में पहुँचे। एक नौकर सैनकिों से मलिने बाहर आया और कहा कि कमांडर ने सुबह तक ईसाइयों की रखवाली करने का आदेश दयिा है। इसलिए, सैनकिों ने संतों को सारी रात बँधा हुआ रखा।

अगली सुबह, उर्स अदालत में उपस्थति हुआ, और जब गालक्शयिन और एपस्टिमिस को उसके सामने लाया गया, तो उसने उन्हें देखा और कहा:

'तुम कौन हो, काले मनुष्यों?'

संत गालक्शयिन ने उत्तर दयिा:

'हम ईसाई और भक्षिु हैं।'

उर्स ने पूछा:

'और मसीह कौन है?'

'मसीह सच्चे ईश्वर हैं, जन्हिोंने स्वर्ग और पृथ्वी और उनमें जो कुछ भी है, सब कुछ बनाया है,' संत ने उत्तर दयिा।

'अगर तुम्हारे मसीह ने सब कुछ बनाया है,' उर्स ने कहना जारी रखा, 'तो हमारे देवता क्या हैं, और उन्होंने क्या बनाया है?'

'तुम्हारे देवता,' गालक्शयिन ने उत्तर दयिा, 'पत्थर और लकड़ी के हैं; वे नश्वर चीजें हैं और उन्होंने कुछ भी नहीं बनाया है, बल्कि वे स्वयं मानव हाथों द्वारा बनाए गए हैं; फरि भी तुम मानव हाथों के काम की पूजा करते हो और उन लोगों को देवता के रूप में पूजते हो जन्हिें तुमने स्वयं वभिन्नि सामग्रयिों से गढ़ा है।'

क्रोधति होकर, उर्स ने पूछताछ में मौजूद लोगों को गालक्शयिन के कपड़े उतारने और देवताओं का अपमान करने के लिए उसे रस्सयिों से बेरहमी से पीटने का आदेश दयिा।

जब गैलाक्शयिन को पीटा जा रहा था, तो संत एपस्टिमिा रोईं और उन्होंने कमांडर को फटकारा।

उसने कहा, 'नर्दियी यातना देने वाले! क्या तुम्हें ईश्वर के एक नर्दिोष सेवक को यातना देने और उसके शरीर—जो पहले से ही उपवास से दुबला-पतला है—को घावों से ढकने में कोई शर्म नहीं आती?'

हालाँकि, उर्स ने कहा:

'उसे भी नग्न करो, और उस पर और भी ज़ोर से प्रहार करो।'

जब उन नर्लिज्ज सेवकों ने उसके मठ के वस्त्र फाड़े और उसे उसके बालों वाले चोगे तक नग्न कर दयिा, तो संत ने यातनाकर्ता से कहा:

'धकि है तुझ पर, नर्लिज्ज यातना देने वाले! मेरे बचपन से, कसिी ने भी मेरा नंगा शरीर नहीं देखा है, और तुम मुझे सभी के सामने नग्न होने का आदेश देते हो। तेरी पापी आँखें अंधी हो जाएँ, ताकि तू मेरी कन्यावस्था की नग्नता न देख सके!'

संत के ये शब्द कहते ही राजकुमार और उसके आसपास के सभी लोग अंधे हो गए, और प्रत्येक ने दीवारों और मार्गदर्शन के लिए अपने हाथों से टटोलना शुरू कर दयिा, और कोई भी प्रकाश नहीं देख सकता था। सभी भय से भर गए और चल्लिा उठे:

'हे मसीह के सेवक, हमें इस अंधकार से बचाओ, और हम आपके ईश्वर पर वश्विास करेंगे!'

तब संत ने ईश्वर से प्रार्थना की, और सभी फरि से देख सकते थे; इसके अलावा, उपस्थति लोगों में से तरिानबे (53) ने वास्तव में मसीह में वश्विास कयिा। लेकनि उर्स, भले ही उसने अपनी शारीरकि दृष्टि वापस पा ली थी, आत्मा में और भी अधकि अंधा हो गया था, क्योंकि शैतान के उकसावे पर, उसने इस चमत्कार को प्रभु यीशु मसीह को नहीं, बल्कि अपने झूठे देवताओं को श्रेय दयिा: उसने सोचा, 'हमने अपने मन में अपने महान देवताओं के खलिाफ अपमान कयिा है, और इस बात से क्रोधति होकर, उन्होंने हमें दंडति कयिा है ताकि हम अधकि सतर्क रहें और उनके बारे में कुछ भी बुरा सोचने की हम्मित न करें... इसलिए इन स्पष्ट रूप से धर्मनदिा करने वालों पर कोई दया न करें और उन लोगों से बदला लें जो हमारे देवताओं का अपमान करते हैं।'

और उर्स ने आदेश दयिा कि शहीदों के हाथों और पैरों के नाखूनों के नीचे तेज काँटे ठोंके जाएँ। संतों ने इस यातना को साहस के साथ सहन कयिा और पुकार उठे:

'हम मसीह, एकमात्र सच्चे ईश्वर की सेवा करते हैं, और झूठे देवताओं को अस्वीकार करते हैं!'

इसके बाद, उर्स ने उनके हाथ काट दिए जाने का आदेश दयिा। वे चल्लिाए:

– '*धन्य है* हमारा *प्रभु, जो* हमारे *हाथों को युद्ध के लिए और* हमारी *उँगलयिों को लड़ाई के लिए प्रशक्षिति करता है,* हमारी *दया और* हमारी *रक्षा,* हमारा *शरणस्थान और* हमारा उद्धारकर्ता' (भजन संहति 143:1–2), जो हमें हमारे शत्रुओं के हाथों से छुड़ाता है!

तब उर्स ने उनके पैरों को भी काट डालने का आदेश दयिा, जसि पर उन्होंने पुकारा:

– *'उठो, हमारी सहायता करो और अपनी दया के लिए हमें छुड़ाओ'* (भजन संहिता 43:27)। हे प्रभु, तू जानता है कि तेरे प्रति प्रेम से जलते हुए, हमने तेरा अनुसरण किया और दुख के मार्ग पर चले; परन्तु अब, हमें अनन्त विश्राम में ले चल, और हमारे पाँव तेरे स्वर्गीय निवासों में ठहरें, जहाँ वे सब जो तुझ को प्रसन्न हुए हैं, तेरे सामने खड़े हैं!

और उन्होंने फिर से अपनी आवाज़ें उठाईं, यह कहते हुए:

'असुर देवता और उनकी सेवा करने वाले सभी शापित हों!'

तब उरस ने कहा:

'ये दुष्ट पुरुष अभी भी हमारे देवताओं का अपमान करना बंद नहीं करते! उनकी जीभें काट दो, ताकि वे अब और अपमानजनक बातें न बोल सकें!'

इस प्रकार संतों की जीभें काट दी गईं। लेकिन यद्यपि मसीह के स्वीकारियों के मुँह बंद कर दिए गए थे, उनके हृदय ईश्वर से पुकारना बंद नहीं हुए। अंत में, यातना देने वाले ने उनके सिर कलम करने का आदेश दिया। उन्हें आँगन की दीवार के बाहर ले जाया गया, तलवार से सिर कलम कर दिए गए, और उनके शव बिना दफनाए छोड़ दिए गए। लेकिन यूटोलमियस, जो गालैक्शियन के ससुर का नौकर और दोनों संतों का साथी था, उन्हें दूर से तब तक追ता रहा जब तक उन्हें पकड़कर मुकदमे के लिए ले जाया गया। पहचान से बचने के लिए उसने अपनी संन्यासी की पोशाक बदलकर सामान्य कपड़े पहन लिए थे। उसने उनके कष्ट और मृत्यु को देखा; गुप्त रूप से उनके पवित्र अवशेष ले लेने के बाद, वह उन पर रोया और उन्हें सम्मानपूर्वक दफनाया। उसने उन लोगों के लाभ के लिए, जो पढ़ते और सुनते हैं, और परमेश्वर की महिमा के लिए, जो पवित्र त्रिमूर्ति, पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा में, युगानुयुग महिमा प्राप्त करते हैं, उनके जीवन और वीरतापूर्ण कष्टों को भी दर्ज किया। आमीन।

कॉन्टाकियन, स्वर 2:

मसीह के शहीदों की कतार में शामिल होकर, वीरता से लड़कर और महिमामय रूप से परिश्रम करके, हे महिमामय गालक्शियन, अपनी सम्मानित पत्नी एपस्टिमिा के साथ, जिन्होंने आपके दुखों में भाग लिया, हम सभी के लिए एकमात्र परमेश्वर से अनवरत प्रार्थना करें।

नोवगोरोड के आर्चबिशप संत योना का जीवन

5 नवंबर को स्मरण किया जाता है

संत योना, जिनका जन्म जॉन के नाम से हुआ था, 14वीं शताब्दी के अंत में पैदा हुए थे। जब वह तीन साल के थे, तब उनकी माँ ने ईश्वर की इच्छा से अपना प्राण ईश्वर को अर्पित कर दिया, और चार साल बाद सात वर्षीय लड़का पूरी तरह से अनाथ हो गया। लेकिन प्रभु ने उसे अपनी देखभाल के बिना नहीं छोड़ा। उन्होंने एक सदाचारी विधवा, नतालिया मेदोवारत्सेवा को प्रेरित किया कि वह उस गरीब अनाथ को अपने घर में पालने के लिए ले आएँ। मातृत्वपूर्ण देखभाल के साथ, उन्होंने जॉन नामक लड़के की देखभाल की, जिसका जन्म से ही स्वास्थ्य खराब था और जिसे अच्छी और सावधानीपूर्वक देखभाल की आवश्यकता थी। नतालिया मेदोवारत्सेवा ने उस लड़के को खिलाया और उसके कपड़े दिए। उन्होंने उसे आध्यात्मिक पोषण के बिना भी नहीं छोड़ा: उन्होंने उसे एक डीकन की देखभाल में सौंप दिया, जो कई अन्य बच्चों को पढ़ाते थे। जन्म से ही कमजोर और गरीबी के कारण शर्मीला, वह पवित्र लड़का स्कूल में प्रवेश करने के क्षण से ही अपने सहपाठियों से काफी अलग दिखता था। वह शोर-शराबे वाले बच्चों के खेलों में भाग नहीं लेता था; उसे मौन और एकांत पसंद था। उसने बड़ी लगन और परिश्रम से अपनी पढ़ाई शुरू की, और अपनी तीव्र प्रगति और सौम्य स्वभाव के कारण, वह अपनी पालक माँ का स्नेह दिन-ब-दिन अधिक पाता गया।

एक दिन, संध्या की प्रार्थना के बाद, संत जॉन के सहपाठी सड़क पर खेलने लगे। वह धर्मपरायण लड़का भी वहाँ था। वह अपने साथियों के खेल में शामिल नहीं हुआ, बल्कि केवल उन्हें देखता रहा। उसी क्षण, सड़क पर एक व्यक्ति प्रकट हुआ जो नोवगोरोड में अब तक अज्ञात था और जो एक पवित्र मूर्ख जैसा दिखता था। वह संत माइकल क्लोप्स्की थे। दूर के एक ऐसे क्षेत्र से आए होने के कारण, जिसे नोवगोरोड में कोई नहीं जानता था और वहाँ के किसी भी निवासी को न जानते हुए, वह क्लोप्स्की मठ में प्रवेश करने से पहले ही पहली बार नोवगोरोड में आया था। अजीब पोशाक में चलते

एक आदमी को देखकर, बच्चों का एक झुंड उसकी ओर दौड़ा और उसे घूरने लगा। सबसे शरारती संत पुरुष पर हँसने लगे, जबकि अन्य लोगों ने तो उसके पैरों पर पत्थर और कचरा भी फेंका। जैसे-जैसे दिन ढल रहा था, संत जॉन सड़क पर कुछ दूरी पर खड़े रहे। पृथ्वी पर संध्या छा चुकी थी, और उसके चारों ओर सब कुछ अँधेरे में घुल रहा था। लेकिन संत माइकल ने धन्य युवक के भविष्य को स्पष्ट और साफ़ देखा। बच्चों के शोर और शरारतों की परवाह किए बिना, वह जॉन की ओर बढ़े, उसके बाल पकड़े, उसे अपने ऊपर उठाया, और कहा:

इवान, अपनी किताबों का लगन से अध्ययन करो: तुम्हारा भाग्य है कि तुम वेलिकी नोवगोरोड के आर्चबिशप बनोगे!

इसके बाद, उन्होंने बच्चे को गले लगाया, उसे चूमा और विदा हो गए। इस प्रकार संत माइकल ने, बच्चे का नाम पहले से जाने बिना ही, उस बात की भविष्यवाणी की जो वास्तव में 50 साल बाद, संत माइकल के स्वर्गवास के चार साल बाद घटित हुई।

इस बीच, युवा जॉन ने वयस्क होने पर, स्वयं को प्रभु की सेवा के लिए समर्पित करने का संकल्प लिया। बचपन से ही, उन्होंने मसीह की सभी आज्ञाओं का कड़ाई से पालन किया था और एकांत को पसंद किया था। अब उन्होंने संन्यास की शपथ लेने का संकल्प लिया। नोवगोरोड से पचास वर्स्ट (लगभग 50 किलोमीटर) दूर, विशाल जंगलों के बीच और मानव बस्तियों से दूर, ओटन्या हर्मिटेज स्थित था। संत जॉन यहीं गए। इस मठ के आर्चिमैंड्राइट, चारिटोन ने, नए आए व्यक्ति का गर्मजोशी से स्वागत किया और उसे एक भिक्षु के रूप में दीक्षा देते हुए उसका नाम योना रखा। संत आयोना ने महान संन्यासी कारनामों से भरा एक कठोर और तपस्वी जीवन जीना शुरू कर दिया। उनके कारनामों ने संप्रदाय को चकित कर दिया, इतना कि चेरिटोन की मृत्यु के बाद, भिक्षुओं ने सर्वसम्मति से संत आयोना को अपने मठ का मठाधीश चुन लिया। अपने नए पद में, उस धन्य व्यक्ति ने खुद को एक बुद्धिमान शासक, एक सच्चा चरवाहा, एक कोमल नेता और एक अनुभवी मार्गदर्शक साबित किया। उनके परिश्रम और कार्यों की खबर तेजी से फैल गई; जल्द ही, वे वेलिकी नोवगोरोड में भी जाने जाने लगे। नोवगोरोड और अन्य स्थानों के कई निवासी संत के पास आने लगे, उनकी बुद्धिमानी भरी शिक्षाओं से प्रेरणा लेते और उनकी प्रार्थना तथा आशीर्वाद की कामना करने लगे। कई लोगों ने मठ में दान देना शुरू कर दिया, जिससे संत जोनाह के बुद्धिमानी भरे प्रबंधन में, ओट्न्या मठ—जो अब तक संसाधनों में मामूली और गरीब था—समृद्धि की ओर बढ़ने लगा; इसके भिक्षुओं की संख्या बढ़ गई, और वे सभी अपनी पूरी क्षमता से संत जोनाह का अनुकरण करने लगे।

1458 में, नोवगोरोड के संत यूथिमियस का निधन हो गया। पूरे लोगों द्वारा शोक व्यक्त किए जाने वाले इस चरवाहे, जिन्हें प्रेम और सम्मान दिया जाता था, को सम्मान के साथ दफनाया गया[7589] ।

नोवगोरोड के नागरिक संत जोनाह को आर्चपैस्टोरल सिंहासन पर देखना चाहते थे और इस बात पर सर्वसम्मति से सहमत थे। उन्हें शांत ओटनी हर्मिटेज छोड़ने में दुख हुआ, लेकिन उन्होंने लोगों की इच्छा के विरुद्ध जाने की हिम्मत नहीं की। 1458 में वे नोवगोरोड पहुँचे, और 1459 में उन्हें सर्व रूस के मेट्रोपॉलिटन सेंट जोनाह द्वारा नोवगोरोड के आर्चबिशप के रूप में अभिषिक्त किया गया । नए आर्चबिशप में हर सद्गुण विद्यमान था, इसलिए नोवगोरोड के लोगों ने उनमें दिवंगत सेंट यूथिमियस के एक पूरी तरह से योग्य उत्तराधिकारी को देखा। यह पवित्र पुरुष अपने झुंड के प्रति अपने प्रेम के लिए विशिष्ट थे; विशेष रूप से, उन्होंने अपनी ही अनाथता को ध्यान में रखते हुए, गरीबों और अनाथों की रक्षा की। उनके जीवन में आयोब के वचन पूरी तरह से पूरे हुए: 'मृत्यु के कगार पर खड़ी विधवा पर मेरी कृपा दृष्टि पड़ी, और मैंने उसके हृदय में आनंद भर दिया। मैंने धार्मिकता को वस्त्र के रूप में पहना, और मेरी धार्मिकता ने मुझे एक चोगा और एक ओढ़नी की तरह आच्छादित किया। मैं अंधों के लिए आँखें और लंगड़ों के लिए पैर था' (यॉब 29:13–15)।

कोई भी ऐसा नहीं था जो संत के बारे में बुरा कह सके; हर कोई उनसे प्यार करता था और उन्हें देखने के लिए तरसता था, और जो भी उन्हें सुनता था वह प्रसन्न होता था। इतनी ऊँची पदवी पर रहते हुए भी, वह सभी के प्रति विनिम्र और नम्र थे। उन्होंने सभी के लिए कुछ अच्छा करने और बुद्धिमानी से सलाह देने का प्रयास किया। केवल नोवगोरोड के लोग ही अपने बिशप का सम्मान नहीं करते थे; मॉस्को के राजकुमार भी संत योना से प्रेम करते थे, उन्हें बहुत मान-सम्मान देते थे, और अक्सर उन्हें संदेश भेजते थे तथा उनकी सलाह लेते थे। क्योंकि संत अक्सर भविष्य की भविष्यवाणी करते थे, और उनके शब्द हमेशा अक्षरशःसच होते थे। हालाँकि, उस समय मास्को के राजकुमार वासिली द ब्लाइंड और उनके

[7589] उनका पर्व दिवस 11 मार्च है।

पुत्र जॉन तृतीय[7590] नोवगोरोड के लोगों पर वशिष रूप से अवशि्वास करते थे, जो मास्को से अपनी पूर्व स्वतंत्रता को भूल नहीं सके थे और इसलिए उन्होंने कई मौकों पर ज़ार का क्रोध झेला था। संत योना, जिन्हें मॉस्को के ग्रैंड प्रिंसों द्वारा इतना सम्मान दिया जाता था, ने अपने साथी नागरिकों की रक्षा की और ज़ार के क्रोध को शांत किया। नोवगोरोड के लोगों ने स्वयं उनसे मॉस्को के ग्रैंड प्रिंसों के समक्ष मध्यस्थता करने का अनुरोध किया; उन्होंने अपने अधिकारपूर्ण वचन से उनके निरंतर संघर्ष और आपसी कलह को भी अक्सर समाप्त कर दिया।

संत से अक्सर नागरिक मामलों में हस्तक्षेप करने के लिए कहा जाता था। उनके पदभार संभालने के तुरंत बाद, चर्च के भीतर भी अशांति शुरू हो गई। झूठे मेट्रोपॉलिटन इसिडोर का एक शिष्य रोम से लिथुआनिया आया और पश्चिमी रूसी चर्च का नियंत्रण ले लिया। मॉस्को में एक परिषद बुलाई गई, जिसमें यह निर्णय लिया गया कि उसे मेट्रोपॉलिटन के रूप में मान्यता नहीं दी जाएगी। नोवगोरोड का बिशप स्वयं मॉस्को की इस परिषद में उपस्थित नहीं थे। हालाँकि, मॉस्को के मेट्रोपॉलिटन ने उन्हें परिषद का निर्णय भेजा और उनसे ऑर्थोडॉक्सी (सही आस्था) के लिए दृढ़ रहने, अपने अनुयायियों को सच्चे धर्म में मजबूत करने, और भटक गए लोगों को समझाकर सत्य की राह पर वापस लाने का आग्रह किया।

संत को अक्सर अपने साथी नागरिकों को समझाना पड़ता था। 1460 में, मॉस्को के ग्रैंड प्रिंस वासिली अपने दो बेटों, यूरी और एंड्रे के साथ नोवगोरोड पहुँचे। इस अवसर पर, वह शांति से नोवगोरोड आए थे, क्योंकि वह नोवगोरोड के चमत्कार करने वालों को श्रद्धांजलि अर्पित करना चाहते थे और निवासियों से कर एकत्र करना चाहते थे। कुछ साल पहले, उन्होंने एक शक्तिशाली सेना के साथ नोवगोरोड पर चढ़ाई की थी और अपने दुश्मनों के प्रति सहानुभूति के लिए नोवगोरोड के लोगों को दंडित किया था। कुछ निवासी, इसे याद करते हुए, राजकुमार को मारने की एक साहसी साजिश रचने लगे। जब संत को इस पागल योजना के बारे में पता चला, तो वह तुरंत साजिशकर्ताओं की बैठक में चले गए।

'मूर्खों,' संत ने उनसे कहा, 'तुम क्या साजिश रच रहे हो? भले ही तुम महा राजकुमार को मार भी दो, तो तुम्हें क्या हासिल होगा? तुम नोवगोरोड पर केवल दुर्भाग्य और तबाही लाओगे। उसकी सबसे बड़ी संतान, जॉन, तुम्हारी इस दुष्टता के बारे में जानकर, तुरंत एक विशाल सेना के साथ आएगा और इस भूमि को तबाह कर देगा।

इस चेतावनी का षड्यंत्रकारियों पर गहरा प्रभाव पड़ा; वे स्वयं अपनी दुर्दशा को स्पष्ट रूप से समझ गए।

नोवगोरोड के लोगों ने महाप्रिंसि का सम्मानपूर्वक स्वागत किया। संत ने भी उनका सम्मान किया। महाप्रिंसि अक्सर धन्य आर्चपास्टर से बातचीत करते थे और उनकी सभी सलाहों का पालन करते थे। वे उनसे अपने पिता की तरह प्रेम करने लगे और हर बात में उनकी सलाह मानते थे। वे उनके सदाचारी जीवन के कारण संत को विशेष सम्मान देते थे। नोवगोरोड में महाप्रिंसि के प्रवास के दौरान, खुटिन के संत बरलाम के अवशेष-कोष्ठक पर राजकुमार के चेंबरलेन का एक अद्भुत उपचार हुआ। रियाज़ान बोयार परिवार का यह युवक अचानक गंभीर रूप से बीमार पड़ गया। उसकी ताकत तेजी से कम होती जा रही थी। अंतत; ऐसा लगा कि वह पूरी तरह से मर गया है। जब उसे संत बरलाम के अवशेष-स्थल पर ले जाया गया, तो वह अचानक जीवित हो उठा और पूरी तरह से स्वस्थ हो गया। यह अद्भुत चमत्कार स्वयं महा राजकुमार, उनके बोयारों और अन्य उपस्थित लोगों की आँखों के सामने हुआ। जो लोग नोवगोरोड आए थे, उन्होंने स्वीकार किया कि इस शहर को विशेष दैवीय सुरक्षा प्राप्त है। संत योना ने तुरंत आदेश दिया कि इस चमत्कार को आने वाली पीढ़ियों के लिए दर्ज किया जाए और यह काम पखोमियस लोगोफेट को सौंप दिया, जो पवित्र पर्वत से आए थे। कुछ समय बाद, राजकुमार मॉस्को वापस चले गए। जब उन्होंने पवित्र पादरी से विदा ली, तो महाप्रिंसि ने उन्हें मॉस्को में एक परिषद के लिए आमंत्रित किया।

जल्द ही संत को मॉस्को के लिए रवाना होना पड़ा। राजकुमार नोवगोरोड के निवासियों से एक बार फिर नाराज़ हो गया था। कुछ कुलीनों ने नोवगोरोड के लोगों के प्रति राजकुमार की नाराज़गी को और बढ़ाने की कोशिश की। संत योना, उसकी नाराज़गी को शांत करने की इच्छा से, अपनी वृद्ध आयु के बावजूद और लंबी यात्रा की सभी कठिनाइयों की परवाह किए बिना मॉस्को के लिए रवाना हो गए । जैसे ही वह शहर के पास पहुँचे, उन्हें रूसी भूमि के महान रक्षक – रडोन्येज़ के पूजनीय सेरगियस – का स्मरण आया और उन्होंने संकल्प लिया कि, अपनी वापसी पर, वह इस गौरवशाली तपस्वी और ईश्वर के अद्भुत पुरुष के सम्मान में एक चर्च का निर्माण करेंगे। मास्को से पाँच वर्स्ट दूर, संत का स्वागत बोयारों और कई मठाधीशों ने किया। जब संत शहर में पहुँचे, तो मास्को के मेट्रोपॉलिटिन ने उन्हें प्रेम से स्वागत किया। राजसी दरबार

[7590] वासिली अंधा 1425 से 1462 तक महा राजकुमार था, और उसका बेटा जॉन तृतीय 1462 से 1505 तक था।

में पवित्र आर्चबशिप का लंबे समय से इंतजार किया जा रहा था। वहाँ बोयारों ने उनका स्वागत किया। ग्रैंड प्रिंस के कक्षों की ओर जाने वाली सीढ़ियों पर, वासिली वासिलीविच के बच्चों ने उन्हें दोनों बाजुओं से पकड़ लिया। राजकुमार स्वयं अपने सामने उस बुद्धिमान धर्मगुरु को देखकर अत्यंत प्रसन्न हुआ। उसने श्रद्धांजलि और उपहार स्वीकार किए जो संत अपने ही शहर से अपने साथ लाए थे। मॉस्को में संत के प्रवास के दौरान, महाप्रिंस ने उन्हें अत्यधिक सम्मान दिया। वह अक्सर उन्हें अपनी उपस्थिति में बुलाते थे और नागरिक तथा धार्मिक महत्व के विभिन्न मामलों पर उनसे बातचीत करते थे। एक अवसर पर, उन्होंने नोवगोरोड के संत और मॉस्को के मेट्रोपॉलिटन को अपनी उपस्थिति में बुलाया और नोवगोरोड के लोगों से अपनी असंतोष व्यक्त किया। उन्होंने संत योना से शिकायत की कि वे रूसी भूमि के दुश्मनों - लिथुआनियाई लोगों - का साथ देने के लिए तैयार थे, जिससे उन्होंने महान राजकुमार के रूप में उनके प्रति बहुत कम सम्मान दिखाया, और यह भी कहा कि उनका इरादा नोवगोरोड के विद्रोही लोगों के खिलाफ एक सेना के साथ मार्च करने का था ताकि उनके अशांत और अराजकता को हमेशा के लिए समाप्त किया जा सके। संत योना, एक सच्चे चरवाहे के रूप में, अपनी आध्यात्मिक भेड़-बकरियों की ओर से उत्साहपूर्वक मध्यस्थता करने लगे; उन्होंने राजकुमार से कहा कि उनके क्रोध को भड़काने के प्रयास में उन्हें बहुत कुछ गलत बताया जा रहा है। उन्होंने वासिली से अनुरोध किया कि वे ईर्ष्यालु बदनाम करने वालों के शब्दों पर ध्यान न दें, क्रोध के आगे न झुकें, बल्कि नोवगोरोड के लोगों पर दया दिखाएं।

'हे महान शासक, अपने हृदय पर क्रोध को हावी न होने दें; बदनाम करने वालों और ईर्ष्यालुओं की बातों पर ध्यान न दें; मुट्ठी भर दोषियों के कारण कई निर्दोष लोगों को दंडित न करें, बल्कि, एक पिता की तरह, हमारे शहर के निवासियों को सही मार्ग दिखाएँ और उन्हें अपना प्रेम और दया दिखाएँ। यदि, तथापि, आप हमारी विनतियों पर ध्यान नहीं देते हैं और नोवगोरोड के लोगों के साथ कठोरता से पेश आना शुरू कर देते हैं, तो सावधान रहें कि आपके अपने बच्चों में भी विभाजन न हो जाए। नहीं, राजकुमार, अपने पूर्वजों की भूमि के खिलाफ बदनामी से प्रभावित न हों, बल्कि अपने लोगों पर कृपा दृष्टि रखें। उन पर नए कर और शुल्क न लगाएँ। जान लें कि आपके दिन पहले ही समाप्त होने को हैं। आपके बाद आपका पुत्र जॉन महा राजकुमार के सिंहासन पर आरूढ़ होगा। मैं अपने अनुयायियों के साथ मिलकर उनके लिए प्रभु से प्रार्थना करूँगा, कि ईश्वर का सर्वशक्तिमान दयालु हाथ उन्हें अधर्मी तातारों के अत्याचार से बचाए, कि वह उन्हें उनके सभी शत्रुओं पर श्रेष्ठ बनाए और उनके राज्य को मजबूत करे, बशर्ते कि वह प्रभु की आज्ञाओं का पालन करें और विनम्रता से अपने देश का शासन करें।

इन शब्दों से महाप्रिंस को बहुत प्रसन्नता हुई, जिनका प्रिय सपना तातारों के जुए से मुक्ति था। यह जानते हुए कि पवित्र आर्चबशिप की भविष्यवाणियाँ एक-एक करके सच हो रही थीं, वासिली ने संत योना से वादा किया कि वह नोवगोरोड के लोगों के प्रति सारी नाराज़गी छोड़ देंगे और उन्हें शांति देंगे। उन्होंने यह वादा आर्चबशिप को मेट्रोपॉलिटन की उपस्थिति में किया। इस बातचीत के अंत में, नोवगोरोड के आर्चबशिप की आँखों में आँसू आ गए। इस पर हैरान होकर, ग्रैंड प्रिंस और मेट्रोपॉलिटन ने संत से उनके रोने का कारण पूछा।

संत ने उत्तर दिया, 'हमारे जैसे शक्तिशाली और घनी आबादी वाले शहर को कौन वश में कर सकता है और विनम्र बना सकता है? केवल उसके नागरिक ही, अपनी आंतरिक कलह के माध्यम से। मैं प्रभु से केवल यही प्रार्थना करता हूँ कि यह मेरे जीवनकाल में न हो।'

इस प्रकार संत योना ने नोवगोरोड के भविष्य के पतन की स्पष्ट रूप से भविष्यवाणी की। यह जानते हुए, उन्होंने वासिली और उनके पुत्र जॉन से ओट्नया में अपने प्रिय मठ पर अधिकार क्षेत्र का अधिकार मांगा। राजकुमारों ने खुशी-खुशी संत की मांग मान ली। उन्होंने उन्हें एक चार्टर दिया जिस पर उनके ग्रैंड-प्रिंसी मुहर लगी हुई थी।

महाप्रिंस नोवगोरोड के बिशप के शब्दों पर इतनी दृढ़ता से विश्वास करते थे कि उन्होंने उसी क्षण अपनी वसीयत तैयार कर ली। उसमें, अपने बेटों और अपनी पत्नी को भत्ते आवंटित करने के बाद, महाप्रिंस ने यह शर्त रखी कि तातारों को तब तक ही कर का भुगतान किया जाना चाहिए जब तक वे रूसी भूमि पर अपना अधिकार बनाए रखेंगे। यहाँ वासिली ने कहा, 'लेकिन वह समय आएगा, जब उनकी शक्ति ध्वस्त हो जाएगी, और प्रभु रूसी राजकुमारों को उनके जुए से मुक्त कर देंगे - तब राजकुमारों को हॉर्ड के खान के लाभ के लिए महाप्रभु को कर चुकाने के लिए बाध्य नहीं होना पड़ेगा।'

इसके बाद, नोवगोरोड के संत अपने झुंड में वापस मिलने के लिए निकल पड़े। राजकुमार और बोयारों ने सम्मानित आर्चपास्टर को सम्मानपूर्वक विदाई दी। नोवगोरोड के नागरिकों ने भी अपने बिशप का उतनी ही स्नेह से स्वागत किया, क्योंकि उन्होंने महा राजकुमार के समक्ष उनकी ओर से बहुत उत्साहपूर्वक मध्यस्थता की थी। अपने धर्मप्रांत में पहुँचने पर, संत ने तुरंत अपना दिया हुआ वादा पूरा किया – उन्होंने हमारे पूजनीय पिता सेरगियस ऑफ़ राडोनेज़ के सम्मान

में नोवगोरोड में पहला चर्च बनवाया। उन्होंने नए चर्च को हर तरह की भव्यता से सजाया, उसे पूजा-संबंधी पुस्तकों और प्रतिमाओं से सुसज्जित किया, और अक्सर वहाँ जाते थे। संत योना ने अपने अनुयायियों की आध्यात्मिक प्रबोधन सुनिश्चित करने के लिए बहुत सावधानी बरती; स्वयं धर्मग्रंथों के अपने व्यापक अध्ययन और गहरे ज्ञान के लिए विख्यात होने के कारण, वे चाहते थे कि उनके आध्यात्मिक बच्चे भी सीखें और उनके लिए शिक्षाप्रद पठन हेतु नोवगोरोड क्षेत्र के प्रसिद्ध तपस्वियों का एक वृत्तांत उपलब्ध हो। इस उद्देश्य के लिए, सर्व रूस के मेट्रोपॉलिटन, संत जोनाह की सहमति से, नोवगोरोड के आर्चबिशप ने पवित्र पर्वत से आए विद्वान भिक्षु पाचोमियस लोगोफेट को संतों के कुछ जीवन का संशोधन और रचना करने का काम सौंपा। इसके अलावा, आर्चबिशप जोनाह के आशीर्वाद से लिखी गई कई पूजा-संबंधी पुस्तकें हमें प्राप्त हुई हैं।

मास्को से लौटने के तुरंत बाद, सर्व रूस के मेट्रोपॉलिटन जोंह ने नोवगोरोड के धन्य संत को एक संदेश भेजा। यह महसूस करते हुए कि उनका अंत निकट था, मेट्रोपॉलिटन जोंह एक बार फिर नोवगोरोड के बिशप से मिलना और उनके आध्यात्मिक संवाद का आनंद लेना चाहते थे। साथ ही, मेट्रोपॉलिटन ने संत जोना से एक योग्य उत्तराधिकारी के चुनाव में व्यक्तिगत रूप से भाग लेने और अपने अंतिम संस्कार का संचालन करने के लिए कहा। यह संदेश पढ़कर, संत जोना की आँखों में आँसू आ गए और उन्होंने कहा:

– मास्को अब एक महान आशीर्वाद से वंचित हो रहा है, और उसके साथ ही संपूर्ण रूसी भूमि भी।

हालाँकि, उम्र और अपनी बीमार टाँगों के बोझ तले दबे, संत योना स्वयं मास्को की यात्रा नहीं कर सके। उन्होंने मास्को के मेट्रोपॉलिटन को एक पत्र भेजा, जिसमें उन्हें सांत्वना देते हुए लिखा:

– इस बात का दुख मत करो कि हम अब नहीं मिल सकते, क्योंकि हम इस नश्वर शरीर से विदा होने के बाद परलोक में फिर मिलेंगे। हमारी पुनर्मिलन तब एक आनंदमय मिलन होगा, क्योंकि तब हम स्वयं प्रधान चरवाहे से अपना प्रतिफल प्राप्त करेंगे।

संत योना ने अपने उत्तराधिकारी के चुनाव का दायित्व प्रभु और अभिषिक्त परिषद को सौंप दिया:

'जिसको पवित्र आत्मा चुनेगा और आशीर्वाद देगा, मैं उसे स्वीकार करने के लिए तैयार रहूँगा!'

मॉस्को के मेट्रोपॉलिटन, संत योना का 31 मार्च 1461 को निधन हो गया। उनके जीवन की पवित्रता से अवगत, नोवगोरोड के संत ने उपर्युक्त पाखोमियस लोगोफेट को एक कैनन (भजन) रचने का काम सौंपा। कुछ ही समय बाद, मॉस्को के संत को भी अन्य संतों में शामिल कर लिया गया।

1462 में, वासिली की मृत्यु के बाद, उनके पुत्र जॉन तृतीय ने ग्रैंड प्रिंस के सिंहासन पर आसीन हुए। संत योना नए राजकुमार से मिलने के लिए काम के सिलसिले में मास्को गए। उन्होंने उन्हें वह याद दिलाया जो उन्होंने उनके पिता से भविष्यवाणी की थी, और साथ ही यह भी कहा:

'प्रभु इतने सारे उत्पीड़ित लोगों की प्रार्थनाओं को ठुकराएंगे नहीं; वह होर्डे को बिखेर देंगे, लेकिन महामहिम धर्मपरायण बने रहें और ईश्वर की आज्ञाओं का दृढ़ता से पालन करें।'

साथ ही, संत ने महाप्रिंस से ओटेन्या मठ के लिए पिछले चार्टर की पुष्टि करने का अनुरोध किया, ताकि इस मठ को न्याय प्रशासन का अधिकार मिल सके। जॉन, जो संत का बहुत सम्मान करते थे, ने खुशी-खुशी उनका अनुरोध मान लिया। उन्होंने अपने पिता द्वारा जारी चार्टर की पुष्टि की और उस पर अपनी प्रतिमा वाली मुहर लगाई।

उस समय, रूसी चर्च के भीतर एक दुखद विभाजन हुआ। ग्रेगरी, जिन्हें रोम में एक बिशप के रूप में अभिषिक्त किया गया था, ने खुद को रूस का मेट्रोपॉलिटन घोषित कर दिया और, पोलैंड के राजा द्वारा अनुकूल रूप से स्वीकार किए जाने के बाद, उन्होंने दक्षिण-पश्चिमी रूस में धार्मिक मामलों का प्रबंधन करना शुरू कर दिया, जो उस समय पोलिश राजा के अधिकार के अधीन था। कई ऑर्थोडॉक्स ईसाइयों ने, और स्वयं महा राजकुमार ने, इस मामले के बारे में संत को लिखा, उनसे सहायता और समर्थन मांगा। संत योना, जो स्वयं ऑर्थोडॉक्स धर्म में दृढ़ थे, ने हर तरह से इस फूट का विरोध किया और अक्सर अपने अनुयायियों को निर्देश दिया, उनसे प्राचीन ऑर्थोडॉक्स धर्म को न छोड़ने और मास्को के मेट्रोपॉलिटन की गद्दी के प्रति विफादार रहने का आग्रह किया; एक सच्चे चरवाहे के रूप में, उन्होंने ऑर्थोडॉक्सी के दुश्मनों की सभी साजिशों को साहसपूर्वक और निडर होकर विफल कर दिया और अपने आध्यात्मिक झुंड की रक्षा की।

संत योना ने बहुत सारी कठिनाइयों को सहन किया। अपने बुद्धिमानी भरे शब्दों और अपने प्रेम से, उन्होंने कई मौकों पर नोवगोरोड और प्सकोव के लोगों के बीच की कलह को शांत किया। प्सकोव के निवासी, नोवगोरोड के बिशप पर

अपनी निर्भरता से तंग आकर, महान राजकुमार से प्सकोव में उनके लिए एक विशेष बिशप नियुक्त करने की याचना करने लगे। उन्होंने तो नोवगोरोड के आर्चबिशप की संपत्ति में आने वाली कुछ ज़मीनों और जमींदारियों पर भी कब्ज़ा कर लिया। लेकिन महाप्रसि ने उनकी मांग को स्वीकार नहीं किया, और उन्हें सभी मामलों में नोवगोरोड के धन्य संत का पालन करने और जो उन्होंने अन्यायपूर्वक जब्त किया था, उसे वापस करने का आदेश दिया। पस्कोव के लोगों ने वैसा ही किया। संत योना ने स्वयं अपने उदाहरण से इसमें बहुत योगदान दिया। उन्होंने बिशप के पद को हुए नुकसान के लिए प्सकोव के लोगों से कोई मुआवजा भी नहीं माँगा। उनके प्रेम और निस्वार्थभाव को देखकर, प्सकोव के अधिकांश लोग उन्हें और भी अधिक सम्मान देने लगे और उन्हें वह सम्मान देने लगे जिसके वे हकदार थे।

संत योना ने ईश्वर के चर्चों के निर्माण और सजावट में बहुत सावधानी बरती। राडोनेज़ के आदरणीय सेरगियस के सम्मान में एक चर्च बनाने के अलावा, संत ने अपने प्रिय ओट्न्या मठ का भी ध्यान रखा, जहाँ उनकी मठवासी मेहनत और कार्य शुरू हुए थे। वहाँ उन्होंने तीन पवित्र पितृपुरुषों को समर्पित एक पत्थर का चर्च बनाया और उसे भव्य रूप से सजाया। इस उद्देश्य के लिए, उन्होंने बेहतरीन आइकन चित्रकारों को बुलाया और अपनी संपत्ति, को नए चर्च को पवित्र वस्तुओं और पुस्तकों से भरपूर सजाने के लिए उदारतापूर्वक खर्च किया। इस चर्च के बगल में, उन्होंने प्रभु के अग्रदूत, जॉन द बैपटिस्ट के सम्मान में एक और चर्च का निर्माण किया, जिनका नाम उन्होंने अपने सांसारिक जीवन में रखा था। इस चर्च में, उन्होंने अपनी कब्र खुद अपने हाथों से खोदी और वसीयत की कि उनके शरीर को वहीं सुलाया जाए। ओट्न्या मठ में, पवित्र आर्चपास्टर ने संत निकोलस को समर्पित एक और चर्च का निर्माण किया। नोवगोरोड में ही, उन्होंने ट्रेडिंग साइड पर स्थित संत डेमेट्रियस के चर्च का जीर्णोद्धार और उसे सुशोभित किया, जिसे परंपरा के अनुसार, मूल रूप से ममाई पर दिमित्री डोंस्कोय की जीत का स्मरणोत्सव मनाने के लिए बनाया गया था।

इस बुद्धिमान संत के धार्मिक जीवन का सम्मान न केवल मास्को के ग्रैंड प्रिंसों ने, बल्कि ट्वर, स्मोलेंस्क, पोलोत्स्क और लिथुआनिया के ग्रैंड प्रिंसों ने भी किया। संत योना द्वारा शासित नोवगोरोड क्षेत्र ने इस धन्य व्यक्ति की सेवा के पूरे कार्यकाल के दौरान शांति और विशेष दैवीय सुरक्षा का आनंद लिया। नागरिकों ने उनकी शिक्षाओं का पालन करते हुए एक-दूसरे से प्रेम किया; उस समय स्वयं भूमि भी अपनी असाधारण उर्वरता के लिए विशिष्ट थी। यह सब संत की प्रार्थनाओं के कारण था। नोवगोरोड और प्सकोव की भूमि को केवल एक बार एक भयानक विपत्ति का सामना करना पड़ा। 1466 के अंत से, साइमनोव प्लेग नामक एक महामारी फैली। मरीजों की ग्रंथियाँ सूज जाती थीं, और तीसरे या चौथे दिन उनकी मृत्यु हो जाती थी। अगले वर्ष, 1467 में, यह बीमारी फिर से भड़क उठी। पूरे नोवगोरोड क्षेत्र में, 2,20,652 लोगों की मृत्यु हो गई। निवासियों पर महान शोक और हड़कंप मच गई। लेकिन महाधर्माध्यक्ष स्वयं अपने आध्यात्मिक बच्चों के लिए और भी गहराई से दुखी हुए। उन्होंने उन्हें सांत्वना दी और इस भयानक विपत्ति के अंत के लिए प्रभु से अधिक प्रार्थना की। और उनकी प्रार्थना सुनी गई। नेरेव्स्की एंड में, ज्वेरिन मठ में, मृतकों के लिए एक बड़ा कब्रिस्तान बनाया गया था। एक दिन, प्रार्थना करते समय, संत ने एक आवाज़ सुनी:

'सभी पवित्र संप्रदाय के साथ, क्रॉस लेकर, नेरेव्स्की एंड, ज्वेरिन मठ, परम पवित्र ईश्वर माता के मध्यस्थता चर्च, और कब्रिस्तान की ओर जाओ। उस स्थान पर जाओ जहाँ पवित्र और धर्मी सिमोन द गॉड-रिसीवर की प्रतिमा प्रकट हुई थी। वहाँ उनके सम्मान में एक चर्च बनाओ, और प्लेग समाप्त हो जाएगी।'

संत ने यह बात नागरिकों को बताई, और 1 अक्टूबर की सुबह, परम पवित्र माता परमेश्वर की मध्यस्थता के पर्व के दिन, नोवगोरोड के लोगों ने एक नया और अद्भुत चमत्कार देखा। उस दिन, संत अपने सभी पुरोहितों और नागरिकों के साथ निर्धारित स्थान पर गए और सिमीओन ईश्वर-स्वीकर्ता की प्रतिमा के सामने घुटने टेककर, स्वर्ग के क्रोध को शांत करने के लिए प्रभु से आँसुओं के साथ प्रार्थना की। उस समय, लोगों ने लकड़ी के लट्ठे लाना शुरू कर दिए, और चर्च एक ही दिन में बन गया। संत योना ने उसी दिन इसका अभिषेक किया और वहाँ दिव्य लिटिर्जी का अनुष्ठान किया। उस दिन से, प्लेग समाप्त हो गई। अगले वर्ष, 1468 में, संत योना ने धर्मी सिमीओन के सम्मान में इस लकड़ी के चर्च की जगह एक पत्थर का चर्च बनवाया, जो आज भी खड़ा है और ईश्वर की अनुपम दया का साक्षी है।

उसी समय सोलोवेत्स्की मठ की स्थापना शुरू हुई। संत योना ने नए मठ को बहुत सहायता और समर्थन प्रदान किया। नोवगोरोड के धर्मनिरपेक्ष अधिकारियों के साथ मिलकर, उन्होंने संत ज़ोसिमा को एक चार्टर प्रदान किया, जिसके द्वारा उन्होंने सोलोवेत्स्की का पूरा द्वीप, उसकी सभी भूमि के साथ, नए मठ को सौंप दिया।

नोवगोरोड के संत ने सभी के लिए बहुत भलाई की, फिर भी उन्हें काफी कठिनाइयों को सहना पड़ा। यह महसूस करते हुए कि उनका अंत निकट है, उन्होंने अपनी अंतिम वसीयत लिखी, जिसमें उन्होंने यह वसीयत की कि उनके शरीर

को ओट्नयिा मठ में दफनाया जाए। पवत्रि Communion प्राप्त करने के बाद, वे 5 नवंबर 1470 को शांतपिूर्वक प्रभु के पास चले गए। उचति सम्मान के साथ, नोवगोरोड के अनुयायियों ने अपने प्रयि चरवाहे, मार्गदर्शक और मध्यस्थ के शरीर को सुलाया। उनके पूजनीय शरीर को ओतेना मठ में एक कब्र में सुलाया गया था, जसिे उन्होंने स्वयं ही संत जॉन द फोररनर के चर्च के पास तैयार कयिा था। चालीस दनिों तक, भाइयों ने कब्र पर मट्टिी नहीं डाली। प्रभु को अपने महमिामय सेवक के अक्षय अवशेषों को महमिामय बनाना उचति लगा। ओटनी मठ के भाइयों और अन्य लोग यह देखकर बहुत हैरान थे कि संत के शरीर से सड़न की कोई भी गंध नहीं आ रही थी। धर्मी व्यक्ति की मृत्यु को चालीस दनि बीत चुके थे, फरि भी कोई भी सड़न की गंध का पता नहीं लगा सका। तब भाइयों ने, यह दृढ़ वशि्वास करते हुए कि यह प्रभु को प्रसन्न करेगा कि वे अपने सेवक के अवशेष प्रकट करें, कब्र को मट्टिी से नहीं ढका, बल्कि केवल कब्र के ऊपर एक लकड़ी का मंच बनाया। यह चमत्कार और भी आश्चर्यजनक था क्योंकि चर्च जहाँ स्थति था, वह जगह नीची थी और वहाँ की जमीन गीली और नम थी।

वास्तव में, वशि्वासयिों की आशाएँ व्यर्थ नहीं गईं। लगभग सौ साल बीत चुके थे जब प्रभु ने अपने वफादार सेवक और तपस्वी को एक चमत्कारी तरीके से महमिामय करने की कृपा की। यह नोवगोरोड के नविासयिों के लिए सबसे कठनि समय था। ज़ार इवान वासलीवचि द टेरबिल और नोवगोरोड के आर्चबशिप लयिोनदि के अधीन, 13 सतिंबर की सुबह, ओट्न्या मठ की बेकरी में अचानक आग लग गई। एक तेज़ हवा ने आग को और भड़का दयिा। लपटों ने मठ की सभी चर्चों को अपनी चपेट में ले लयिा और अटूट शक्ति के साथ और भी आगे तक फैलती गईं। यह आग सेंट जॉन द बैपटस्टि चर्च को भी अपनी चपेट में ले लयिा, जहाँ सेंट जोनाह के अवशेषों वाली कब्र स्थति थी। खतरा देख, दो साधारण लोग जो पवत्रि आर्चबशिप की स्मृति का सम्मान करते थे, सेंट जॉन द बैपटस्टि चर्च में दौड़े, कब्र पर लगी लकड़ी की आवरण को हटाया और उसे मठ के चौक में ले आए। उनके लिए भारी ओक का ताबूत असाधारण रूप से हल्का लग रहा था। इस बीच आग ने पूरी इमारत और मठ के चौक के पास की सभी इमारतों को अपनी चपेट में ले लयिा था, जसिसे स्वयं अवशेषों के लिए खतरा पैदा हो गया था। लेकनि तभी सभी के सामने एक अद्भुत दृश्य प्रस्तुत हुआ: आग ने ताबूत को लगभग पूरी तरह से घेर लयिा था, फरि भी उसने उसे बलि्कुल भी नुकसान नहीं पहुँचाया था। कुछ लोगों ने कब्र को ले जाने की कोशशि की, लेकनि वे इसे उठा नहीं सके। तब सभी को एहसास हुआ कि प्रभु स्वयं, अपनी अदृश्य शक्ति से, संत की अवशेषों को लपटों से बचा रहे थे।

दयालु प्रभु संत के नधिन के बाद भी उन्हें महमिामय करना चाहते थे: उनके ताबूत से चमत्कारों की एक धारा बहती है। जो कोई भी उनके अवशेषों वाली संदूक के सामने प्रणाम करता या वशि्वास के साथ प्रार्थना में उनका पवत्रि नाम जपता, उसे कसिी भी बीमारी से मुक्ति मिलिती थी। आइए यहाँ संत योना के सबसे महत्वपूर्ण चमत्कारों का उल्लेख करें।

ओटनी मठ के एक भक्षिु सल्विेस्टर को, अपने शष्यि क्लमि के साथ, एक बार मास्को भेजा गया था ताकि वह अपने साथ रखे गए पछिले शाही फरमानों की पुष्टि कर सके। वशि्नी वोल्चोक से, दूत नाव से आगे रवाना हुए। उनके साथ एक अमीर व्यापारी भी यात्रा कर रहा था। नावकि ने, शैतान के उकसावे पर, व्यापारी के पास रखे पैसे लेकर भागने का फैसला कयिा। नदी के एक उथल-पुथल वाले हसि्से पर, उसने नाव को एक चट्टान पर चढ़ा दयिा। नाव पलट गई और उसमें सवार सभी लोग पानी में गरि गए। नावकि को उसके दुष्ट इरादे के लिए ईश्वर के धर्मयुद्धपूर्ण न्याय द्वारा दंडति कयिा गया: वह डूब गया, जबकि बाकी सभी एक-एक करके कनिारे तैरकर पहुँच गए। नवसखियिा क्लमि भी बच गया। अंत में, सभी कनिारे पर इकट्ठा हुए; केवल भक्षिु सल्विेस्टर लापता थे। वह तैरना नहीं जानता था। सभी को पहले से ही यकीन था कि वह मर गया है, तभी अचानक उन्होंने अपनी नाव देखी, जो लहरों द्वारा कनिारे पर आ लगी थी, और उसमें वृद्ध सल्विेस्टर मौजूद थे। इस चमत्कार से वे सभी दंग रह गए। भक्षिुओं ने अपनी जान बचने पर खुशी मनाई; फरि भी एक बात ने उन्हें दुखी कयिा: जहाज के टूटने में ताज़ार के पत्र, साथ ही अन्य सामान भी खो गए थे। वे इस पर बहुत दुखी हुए और संत योना से मदद की वनिती करते हुए पुकारने लगे, और उनकी प्रार्थनाओं का उत्तर मलिा: जैसे ही शाम हुई, उन्होंने नदी की सतह पर कनिारे की ओर तैरती हुई एक वस्तु देखी। क्रॉस का चह्नि बनाकर, क्लमि लहरों में कूद पड़ा, और तैरकर बाहर नकिलते ही, उसकी बड़ी प्रसन्नता हुई जब उसने वह चमड़े का थैला देखा जसिमें उन्होंने शाही फरमान रखे थे। चमत्कारकि रूप से, पानी ने दस्तावेजों को कोई नुकसान नहीं पहुँचाया था; यहाँ तक कि ज़ार के हस्ताक्षर भी पूरी तरह से सुरक्षति थे। प्रभु और उनके संतों के सेवक, सेंट जोनाह, का धन्यवाद करने के बाद, वे अपनी यात्रा के बाकी हसि्से पर नकिल पड़े और मास्को पहुँचने पर, उन्होंने जल्द ही उन्हें सौंपा गया कार्य सफलतापूर्वक पूरा कर लयिा।

एक बार, 'समय की परेशानियों' के दौरान, कोसैक्स वोल्खोव नदी से नीचे की ओर नाव चला रहे थे, गाँवों को लूट-खसूट रहे थे और नविासयिों को लूट रहे थे, कसिी को नहीं बख्श रहे थे। वे एक मठवासी बस्ती के पास पहुँचे और पहले से ही उस पर हमला करने की तैयारी कर रहे थे। अतामान ने पूछा कि यह बस्ती कसिकी है। जॉर्जी नाम के एक कसिान ने जवाब दयिा:

'यह गाँव ओटनी मठ का है, पवत्रि पतिा और महान चमत्कार करने वाले जोनाह, नोवगोरोड के आर्चबशिप का।'

संन्यासी का नाम सुनते ही, सरदार ने अपने साथयिों को सख्त लहजे में आदेश दयिा कि इस गाँव में कसिी को या कसिी भी चीज़ को हाथ न लगाएँ। जब उनसे पूछा गया कि वह ऐसा करने से क्यों रोक रहे हैं, तो उन्होंने कहा:

एक बार, शासक मुझसे नाराज़ हो गए और मुझे फांसी देने का आदेश दे दयिा, लेकनि मैं, एक दीन-हीन व्यक्ति, महान और दयालु चमत्कारी जॉन को याद करते हुए, अपनी पूरी क्षमता से पूरे दलि से उनसे प्रार्थना की, कि वे ज़ार के क्रोध से मेरी रक्षा करें। उसी क्षण, ज़ार की ओर से मेरे मृत्युदंड को रद्द करने का एक फरमान मलिा। तब से, मैं लगातार अपने त्वरति मध्यस्थ, संत योना, का धन्यवाद करता रहा हूँ।

संत योना के अवशेषों के माध्यम से कई अन्य चमत्कार भी हुए हैं। आइए, हम भी इस महमिामय संत को हमेशा अपनी प्रार्थनाओं में पुकारें, त्रमिूर्ति परमेश्वर की महमिा करते हुए। आमीन।

ट्रोपारयिन, स्वर 4:

वशि्वास की शुद्धता और नम्रता के आदर्श द्वारा, तथा स्वर्ग के मध्य में स्थति एक बगीचे की भाँति, आप अपने पुण्य कर्मों से संसार को प्रकाशति करते हैं। और इसी कारण हम आपके पवत्रि अवशेषों को प्रेमपूर्वक स्पर्श करते हैं, और वशि्वासपूर्वक पुकारते हैं: हे पतिा इऑन, जो आपकी प्रकाशमान स्मृति का गायन करते हैं, उनके लिए मध्यस्थता करें और हमारी आत्माओं के उद्धार के लिए प्रार्थना करें।

कॉन्टाकयिन, स्वर 4:

हे धन्य योना, तुमने परमेश्वर और मनुष्यों के बीच मध्यस्थता करने के लिए स्वर्ग से दवि्य अनुग्रह प्राप्त कयिा है, एक महापुजारी के रूप में बलदिान चढ़ाकर, अपने लोगों के लिए शांति और फलों की प्रचुरता लाकर; क्योंकि तुम महान नोवगोरोड की प्रशंसा हो, और वहाँ रहने वालों की खुशी हो।

पवत्रि प्रेरतिों पेत्रोस, एर्मास, लनिस, गाइउस और फलिोलोगस का स्मरणोत्सव

5 नवंबर को स्मरण कयिा जाता है

पवत्रि प्रेरति पेत्रोस नेपल्स और पुटेओली के बशिप थे[7591] , जहाँ उन्होंने कई लोगों को बपतस्मिा दयिा और उन्हें मसीह के पास लाए। संत हर्म फलिप्पिोपोलसि में एक बशिप थे[7592] । प्रेरति पौलुस रोमयिों के नाम अपनी पत्री में (रोमयिों 16:14) संत पाट्रोस और हर्म का उल्लेख करते हैं।

प्रेरति लनिस, जनिका उल्लेख प्रेरति पौलुस ने तीमुथयिुस को अपनी दूसरी पत्री (2 तीमु. 4:21) में कयिा है, रोम के बशिप थे, जो प्रेरति पतरस के उत्तराधकिारी थे।

[7591] नेपल्स, इटली के साम्राज्य के उसी नाम के प्रांत की राजधानी; नेपल्स की खाड़ी के उत्तरी तट पर स्थति। पोज़ुओली – मध्य इटली में एक तटीय शहर।

[7592] फलिप्पिोपोलसि – थ्रेस में एक प्राचीन कलिबंद शहर, जो अब पूर्वी रुमेलयिा में मारत्सिा नदी पर है।

प्रेरति गयस, जनिका उल्लेख प्रेरति पौलुस ने अपनी रोमयिों के नाम पत्र (रोमयिों 16:23) में करते हुए कहा है, *'गयस, जो मेरा और सारी कलीसयिा का मेज़बान है, तुम्हें नमस्कार कहता है'*, एफ़सिुस के बशिप थे[7593] , और वे प्रेरति तमिोथी के उत्तराधकिारी थे।

प्रेरति फलिोलोगस, जनिका उल्लेख प्रेरति पौलुस ने उसी पत्र में (रोमयिों 16:15) करते हुए कहा है, *'फलिोलोगस को नमस्कार कहना'*, को संत एंड्रयू प्रथम-आहूत[7594] द्वारा सनिॉन का बशिप नयिुक्त कयिा गया था।

पवत्रि प्रेरतिों ने, उपर्युक्त शहरों में अपनी बशिप की सेवा का नर्विहन करते हुए, सुसमाचार के लिए कई परीक्षणों और कष्टों को सहन कयिा और, कई लोगों को सखिाकर उन्हें मसीह के पास लाने के बाद, प्रभु के पास शांतपिूर्वक प्रस्थान कयिा।

अलेक्जेंड्रयिा के बशिप संत ग्रेगरी का स्मरणोत्सव

5 नवंबर को स्मरणोत्सव

[7595]हमारे पवत्रि पति ग्रेगरी ने कम उम्र से ही मसीह से प्रेम कयिा और स्वयं को हर सद्गुण से सुसज्जति कयिा। अलेक्जेंड्रयिा के पोप की मृत्यु के बाद, उन्हें इस अवसर के लिए एकत्रति हुए बशिपों और लोगों द्वारा अलेक्जेंड्रयिा का आर्चबशिप नयिुक्त कयिा गया। वे ऑर्थोडॉक्सी के एक आदर्श शक्षिक थे: वनिम्र, नम्र, दयालु, अनाथों के पति, वधिवाओं के रक्षक, भटक गए लोगों के मार्गदर्शक, बीमारों के उपचारक, और दुखी लोगों के सांत्वनादाता। लेकनि प्रलोभक, शैतान ने उस समय के शासक, लयिो द आइकॉनोकलास्ट[7596] को मना लयिा कि वह ग्रेगरी को बँधकर कॉन्स्टेंटनिोपल भेज दे। जब संत ग्रेगरी को यह पता चला, तो वे सम्राट के सामने उपस्थति हुए और पूरे सक्लिाइट के सामने उनकी नदिा की, उन्हें एक वधिर्मी और अधर्मी व्यक्ति कहा। सम्राट, इस फटकार को सहन न कर सके, ने उन्हें बैल की खाल से कोड़े मारने और जेल में भूखा रखने का आदेश दयिा। संत ने यह सब कृतज्ञतापूर्वक सहन कयिा, और कहा: 'मसीह मेरे ईश्वर और पवत्रि प्रतमिा के लिए, मैं टुकड़े-टुकड़े होने को भी तैयार हूँ।' यह जानकर, यातना देने वाले और अधर्मी राजा ने उन्हें नर्विासन में भेजने का आदेश दयिा। धन्य संत, तीन साल नर्विासन में रहने के बाद, अपना प्राण प्रभु के हाथों में सौंप दिए।

19 नवंबर

6 नवंबर (पुराना तरीका)

कॉन्स्टेंटनिोपल के आर्चबशिप, संत पॉल द कन्फेशर का जीवन

6 नवंबर को स्मरणोत्सव

[7593] एजयिन सागर पर स्थति एफ़सिुस, एशयिा माइनर का एक महत्वपूर्ण व्यापारकि शहर था। जॉन द बैपटस्टि के शष्यिों द्वारा वहाँ ईसाई धर्म की पहली नींव रखी गई थी; प्रेरति पतरस को वहाँ पहले से ही ईसाई मलि गए थे, लेकनि सुसमाचार का प्रचार मुख्य रूप से प्रेरति पौलुस ने कयिा था; बाद में, उनके शष्यि तमिोथी ने वहाँ बशिप के रूप में सेवा की; अंत में, एफ़सिुस प्रेरति और सुसमाचार प्रचारक यूहन्ना का नविास स्थान था, जनिका नधिन भी वहीं हुआ। आज, एफ़सिुस के प्राचीन शहर के स्थल पर, आय्सा सोलुक नामक एक गरीब तुर्की गाँव है।

[7594] सनिान, काला सागर के दक्षणिी तट पर एक शहर।

[7595] सक्लिाइट सबसे महत्वपूर्ण शाही सलाहकारों और गणमान्य व्यक्तियिों से मलिकर बनी सैन्य और नागरकि सरकार थी।

[7596] लयिो द आर्मेनयिन – 813 से 820 तक। थयिोडोर द स्टुडाइट इस शासनकाल के दौरान चर्च द्वारा भुगती गई दुर्भाग्यों का वर्णन इस प्रकार करते हैं: 'ओह, सुनने में कतिना भयानक है! उद्धारकर्ता की पूजनीय प्रतमिा, जसिसे तो राक्षस भी डरते हैं, न केवल शाही राजधानी में बल्कि सभी स्थानों और शहरों में अपमान और अत्याचार का शकिार हो रही है; वेदयिों को नष्ट कर दयिा गया है, पवत्रि स्थानों का अपमान कयिा गया है। मृत्यु के भय से सभी धर्मपरायण होंठ चुप हो गए हैं, जबकि एक घृणति और ईश्वर-नन्दिा करने वाली जीभ को आज़ाद कर दयिा गया है।"

सम्राट कॉन्स्टेंटियस के शासनकाल में[7597] , जो कॉन्स्टेंटाइन महान के पुत्र थे, ईसाइयों को वधिर्मी—एरियिनों—द्वारा उत्पीड़न का सामना करना पड़ा, जनिका पक्ष स्वयं सम्राट ने लयिा था, जो एरियिन वधिर्म के प्रतआिकर्षति थे। उस समय, चर्च के भीतर बड़े उथल-पुथल और अव्यवस्था का राज था, क्योंकि इसे बनाए रखने के लिए इसके धर्मपरायणता के कुछ ही महान पैरोकार बचे थे: अलेक्जेंड्रयिा के आर्चबशिप, धर्मपरायणता के सबसे बड़े रक्षक, संत अथेनासयिस को उनके पद से हटा दयिा गया था, जबकि कॉन्स्टेंटनिोपल के पैट्रआिर्क, संत अलेक्जेंडर का तब तक नधिन हो चुका था।

जब संत अलेक्जेंडर की मृत्यु हो रही थी, तो उनके शय्यापट्ट के पास इकट्ठा हुए लोगों ने उनसे पूछा:

'पतिाजी, आप हमें, अपने आध्यात्मकि बच्चों को, कसिके हवाले कर रहे हैं? आप अपनी जगह हमारे चरवाहे के रूप में कसिे छोड़ रहे हैं? मसीह की कलीसयिा का समान वीरता से शासन कौन करेगा?'

उन्होंने उनके सामने दो योग्य पुरुषों का नाम लयिा, अर्थात् थस्सिलुनीके के मूल नविासी, पुरोहति पॉल ([7598]) और डकिन मेसीडोनयिा; लेकनि उन्होंने यह भी जोड़ा कि यदि वे एक ऐसे चरवाहे को चाहते हैं जो शकि्षक हो और सदाचारी जीवन जएि, तो उन्हें पॉल को चुनना चाहएि; लेकनि यदि वे एक ऐसे पादरी को चाहते थे जो प्रभावशाली और अपने बाहरी रूप से वशिष्टि हो, तो उन्हें मैसेडोनयिा को चुनना चाहएि। इसके बाद, सदा-स्मरणीय पैट्रआिर्क का नधिन हो गया। उनकी मृत्यु के बाद आयोजति परषिद में, इस पर वचिार करते समय कि दोनों में से कसिे पैट्रआिर्क के सहिासन पर बठिाया जाए—पॉल या मेसडिोनयिा—ऑर्थोडॉक्स और एरियिनों के बीच ववािद खड़ा हो गया, जनिकी परषिद में बहुत बड़ी संख्या थी। ऑर्थोडॉक्स पॉल के पक्ष में थे, जबकि एरियिनों का झुकाव मैसेडोनयिा की ओर अधकि था; हालाँकि, ऑर्थोडॉक्स की जीत हुई, और सेंट पॉल को सेंट आइरीन चर्च में पैट्रआिर्क चुना गया। पैट्रआिर्क के सहिासन पर आरोहण करने के बाद, उन्होंने सम्मान के साथ अपने सुपुर्द कएि गए झुंड का चरवाहा करना शुरू कर दयिा।

संत पॉल के चुनाव और अभषिेक के समय, सम्राट कॉन्स्टैंटयिस कॉन्स्टेंटनिोपल में नहीं थे: वह एंटओिक में थे[7599] । परणिामस्वरूप, वह नए पैट्रआिर्क के प्रति अनुकूल नहीं थे। अंतयिोकयिा से कॉन्स्टेंटनिोपल लौटने पर, सम्राट ने पैट्रआिर्क के प्रति अपनी नाराज़गी स्पष्ट रूप से व्यक्त की क्योंकि उन्होंने सम्राट की इच्छा के वरिुद्ध पैट्रआिर्क का सहिासन ग्रहण कर लयिा था। एरियिनवादयिों के प्रभाव में आकर, सम्राट ने एक परषिद बुलाई जसिने पूरी तरह से अनुचति रूप से संत पॉल को सहिासन से हटा दयिा—एक ऐसे व्यक्ति को जो नरि्दोष, शुद्ध हृदय का और मसीह की कलीसयिा के लिए बहुत लाभकारी था, क्योंकि अपनी बुद्धि और जीवन शैली से वह दुनयिा के लिए एक सच्चा प्रकाश था[7600] और कलीसयिा में बादलों के बीच भोर के तारे की तरह चमका। पदच्युत पॉल की जगह, सम्राट ने नकिोमेडयिा के बशिप यूसेबयिस को नयिुक्त कयिा, और एक बार फरि अंतीयक लौट गए। यूसेबयिस, एरियिनवाद के संप्रदाय से प्रभावति होकर, अपनी वधिर्मी शकि्षाओं से कलीसयिा में भ्रम पैदा करने लगा और पूरी ताकत से प्रयास करने लगा कि क्रीड से 'जन्मा हुआ, अकल्पति, एकसार' शब्द हटा दिए जाएँ, क्योंकि वह यह स्वीकार नहीं करता था कि परमेश्वर का पुत्र स्वयं परमेश्वर है और हर तरह से परमेश्वर पति के समान है। इस बीच, पदच्युत पॉल रोम के लिए रवाना हो गए, जहाँ उन्हें संत अथेनासयिस और यूसेबयिस द्वारा नरि्वासति कएि गए कई अन्य बशिप मलि, और वे उनके साथ रहे। लेकनि यूसेबयिस, जो नहीं चाहता था कि अथानासयिस और पॉल को रोम में उत्पीड़न से राहत मलि, ने रोम के पोप जूलयिस को उनके खलिाफ मानहानि से भरा एक पत्र भेजा[7601] । पोप ने पत्र पर कोई भरोसा नहीं कयिा और अथेनासयिस, पॉल और अन्य बशिपों को अपनी सेवा में लौटने की सलाह दी; उनकी सहायता करने की इच्छा से, उन्होंने पूर्वी बशिपों को लखिा, और उनसे आग्रह कयिा कि वे लौटने वालों का प्रेम से स्वागत करें और उन्हें अपने पूर्व पदों को फरि से संभालने से न रोकें।

[7597] सम्राट कॉन्स्टैंटयिस ने 337 से 361 तक शासन कयिा।

[7598] थेस्सालोनकिी – थेस्सालोनकिा शहर के लिए ग्रीक नाम का रूसी रूपांतरण, जसिे आधुनकि समय में *'सालोनकिी'* उच्चारति कयिा जाता है / यह शहर, जसिका मूल नाम फेरे था, यूरोपीय तुर्की में थेस्सालोनकिी की खाड़ी (भूमध्य सागर) के उत्तरी सरि पर स्थति है। यहाँ ईसाई धर्म का प्रचार सबसे पहले पवत्रि प्रेरति पौलुस X द्वारा कयिा गया था – (देखें 1 थस्सि. 1:1)। पवत्रि प्रेरति पौलुस ने सोलुन के नविासयिों को दो पत्र लखि, जन्हिें व्याख्याकार इस प्रेरति की रचनाओं में सबसे प्रारंभकि मानते हैं।

[7599] यह, बेशक, सीरयिा के अंतीयक (एंटीओक) को संदर्भति करता है, जो कभी सीरयिाई राज्य की शानदार राजधानी थी, लेकनि अब एशयिाई तुर्की में एक गरीब छोटा सा शहर है।

[7600] तुलना करें मत्ती 5:14 से।

[7601] संत पोप जूलयिस ने 337 से 352 तक रोम के चर्च का शासन कयिा।

इस प्रकार, अपने पदों से हटाए जाने के बाद, प्रत्येक बिशप अपनी-अपनी कलीसियाओं में लौट गया और जिन्होंने उन्हें हटाया था, उन्हें पोप जूलियस के पत्र भेजे जो वे रोम से अपने साथ लाए थे।

लेकिन ऑर्थोडॉक्स के दुश्मनों ने पत्र प्राप्त करने पर, एक बार फिर हर तरह से सच्चाई को झूठ से छिपाने की कोशिश की और एंटिओक में एक सिनेड बुलाने का संकल्प लिया, साथ ही पोप जूलियस को अपने ही एक विशेष पत्र से जवाब देने की कोशिश की। हालाँकि, सिनेड के होने से पहले ही यूसेबियस की मृत्यु हो गई। तब कॉन्स्टेंटिनोपल के ऑर्थोडॉक्स निवासियों ने खुशी-खुशी पॉल का स्वागत किया और उसे आर्चबिशप के सिंहासन पर स्थापित किया, जबकि एरियनों ने एक दूसरे चर्च में इकट्ठा होकर मैसेडोनियस को, जो उनके पक्ष में चला गया था, अपना बिशप चुना। इससे कॉन्स्टेंटिनोपल में भारी उथल-पुथल मच गई, और दोनों पक्षों के बीच हुई झड़पों में कई लोग घायल या मारे गए। इसकी खबर एंटिओक में मौजूद सम्राट कॉन्स्टैंटियस को मिली, और उन्होंने कमांडर हर्मोजेनेस को एक सेना के साथ कॉन्स्टेंटिनोपल भेजा, और उसे कॉन्स्टेंटिनोपल के चर्च से पॉल को निकालने का आदेश दिया। उनके आगमन पर, हर्मोजेनेस ने लोगों को संत पॉल को निकालने के लिए मजबूर करना शुरू कर दिया, जो किसी भी गलत काम के लिए निर्दोष थे, और इस प्रकार शहर में एक हिंसक विद्रोह भड़क उठा, क्योंकि लोगों ने दृढ़ता से सम्राट की इच्छा का पालन करने से इनकार कर दिया। हरमोजेनेस ने सैन्य बल का उपयोग करने का प्रयास किया, लेकिन भीड़ ने गुस्से में उसके घर पर धावा बोल दिया और उसे आग लगा दी, जबकि हिरमोजेनेस को खुद बाहर घसीटकर मार डाला गया।

सम्राट कॉन्स्टैंटियस, हर्मोजेनेस की हत्या की खबर मिलते ही, अंटाओक से कॉन्स्टेंटिनोपल के लिए रवाना हुए, पॉल को पदच्युत कर निर्वासित कर दिया, और पॉल को अपनी इच्छा के विरुद्ध स्वीकार करने तथा उनके विद्रोह और हर्मोजेनेस की हत्या के कारण निवासियों पर अत्यंत क्रोधित हुए। इन सबके लिए, सम्राट ने शहर को कॉन्स्टेंटाइन महान द्वारा प्रदान की गई आधी रियायतें छीन लीं, अर्थात्: उन्होंने शाही अनाज भंडारों से गरीबों को रोज़ाना वितरित किए जाने वाले रोटी की मात्रा को आधा कर दिया। बाद में मैसेडोनिया को कॉन्स्टेंटिनोपल का पैट्रिआर्क नियुक्त करने के बाद, कॉन्स्टैंटियस एंटिओक लौट आए। संत पॉल एक बार फिर पश्चिम चले गए और पोप जूलियस के समक्ष उपस्थित होकर, उन्होंने उन्हें—साथ ही रोमन सम्राट कॉन्स्टेंस को भी—[7602] —जो कुछ भी हुआ था, वह सब बता दिया। कॉन्स्टेंटियस के भाई कॉन्स्टेंट और पोप ने कॉन्स्टेंटियस को एक पत्र लिखा, जिसमें उन्होंने उसे पॉल को एक सच्चा विश्वासी मानने के लिए कहा, और यह पत्र पॉल को ही सौंप दिया, जो एक बार फिर रोम से कॉन्स्टेंटिनोपल के लिए रवाना हो गया, जहाँ ऑर्थोडॉक्स ईसाइयों ने एक बार फिर से मिलकर उसे बड़ी खुशी से स्वागत किया; उसने कॉन्स्टेंस और पोप जूलियस का पत्र एक प्रतिष्ठित कुलीन के माध्यम से एंटिओक में सम्राट कॉन्स्टेंटियस के पास भेजा। लेकिन कॉन्स्टैंटियस ने इन संदेशों को अपने लिए एक फटकार के रूप में लिया और पॉल को स्वीकार नहीं किया। इसके विपरीत, सम्राट इस बात से और भी अधिक क्रोधित हो गया कि वह बिना सम्राट की अनुमति के दूसरी बार बिशप के पद पर लौट आया था, और जल्द ही उसने कॉन्स्टेंटिनोपल में प्रांतीय गवर्नर फिलिप को एक आदेश भेजा कि वह पॉल को एक बार फिर पदच्युत कर दे और निर्वासित कर दे और मैसेडोनिया को स्थापित कर दे। फिलिप, एक लोकप्रिय विद्रोह के डर से और इस डर से कि उसे भी हर्मोजेनेस जैसा ही हश्र झेलना पड़ सकता है, ने पाउल को गुप्त रूप से बिशप की पदवी से हटाने का निश्चय किया। इस उद्देश्य के लिए, किसी को भी शाही आदेश के बारे में बताए बिना, वह एक बार समुद्र तट पर स्थित 'ज़ेक्सिप्पस' नामक एक निजी आवास पर गया, जहाँ कर वसूलने वाले इकट्ठा होते थे। वहाँ, फिलिप ने दावा किया कि वह कर वसूलने आया है, जबकि साथ ही उसने पॉल को सार्वजनिक रीति के एक मामले के बहाने एक गुप्त बैठक में भाग लेने के लिए औपचारिक निमंत्रण भेजा। पौलुस, अपनी भक्ति के कारण, बिना किसी हिचकिचाहट के निकल पड़े। फिलिप, संत के साथ इकट्ठी हुई बड़ी भीड़ से डरकर, सबके सामने उन्हें कुछ नहीं कर सका, लेकिन, उनका हाथ पकड़कर और उनसे बातें करते हुए, उन्हें भीतर के आंगन में ले गया। वहाँ उसने समुद्र की ओर मुख वाले पिछले द्वार खोलने का आदेश दिया; और संत को उनके माध्यम से बाहर ले जाकर, उसने उन्हें सम्राट का फरमान सुनाया, उन्हें पहले से तैयार एक जहाज पर बिठा दिया, और इस प्रकार संत को हर सावधानी बरतते हुए निर्वासन में भेज दिया गया। उन्हें अपने पैतृक देश, थ्रेसलॉनिका शहर में रहने का निर्देश दिया गया, साथ ही आसपास के सभी कस्बों में जाने की अनुमति भी दी गई, लेकिन उन्हें पूर्वी प्रांतों की यात्रा करने से मना किया गया।

[7602] कॉन्स्टेंट 337 से 350 तक राज करता था।

संत पॉल के नर्विासन के बाद, प्रांतीय राज्यपाल एक बड़े सैन्य दल के साथ, मैसेडोनिया को रथ में बठिाकर एक गंभीर जुलूस के साथ मंदरि के लिए रवाना हुआ। यह जानकर, कॉन्स्टेंटनिोपल के नविासी बहुत उथल-पुथल में पड़ गए, और ऑर्थोडॉक्स ईसाई और एरयिन दोनों एक-दूसरे से आगे नकिलने और वहाँ जल्द से जल्द जगह पाने की कोशशि में मंदरि की ओर दौड़ पड़े। चर्च पहुँचने पर, फलिपि लोगों की असाधारण भीड़ के कारण अंदर नहीं जा सके। फरि उन्होंने मैसेडोनिया को रथ से नीचे उतरने में मदद की, जबकि सैनकिों ने जबरदस्ती भीड़ को पीछे धकेल दिया; लेकनि भीड़ के दबाव के कारण, भीड़ की पहली कतारें पीछे नहीं हट सकीं; हालाँकि, सैनकि क्रोधति हो गए और उन्होंने अपने हथियारों का इस्तेमाल करना शुरू कर दिया, जिससे प्रांतीय गवर्नर और मेसडिोनिया के लिए चर्च तक एक रास्ता साफ हो गया, जिसमें 3,150 लोग मारे गए – कुछ सैनकिों के हथियारों से, और अन्य अत्यधकि भीड़ के कारण, और यह सब मैसेडोनिया के कारण हुआ, जो राजा की इच्छानुसार और सैन्य बल के दम पर तो पैट्रआर्कल सहिासन पर चढ़ा, लेकनि धार्मकि वधिानों के वपिरीत। धार्मकि शांति की कथति बहाली के उपलक्ष्य में, सम्राट कॉन्स्टैंटयिस ने सेंट सोफिया (ईश्वर की बुद्धि, पवित्र त्रमिूर्ति का दूसरा हाइपोस्टेसिस, ईश्वर का पुत्र) को समर्पति एक चर्च का नर्मिाण कयिा और इसे कॉन्स्टेनटाइन महान द्वारा नर्मिति आइरीन चर्च के साथ एक ही सामान्य दीवार के भीतर बंद कर दिया – (शहीद नहीं, बल्कि मसीह की शांति)[7603] ।

कुछ समय तक थसि्सलुनीके में रहने के बाद, संत पॉल वहाँ से कोरंथि[7604] के लिए रवाना हुए, और वहाँ से रोम गए। वहाँ उन्होंने संत अथेनासयिस से फरि मुलाकात की, उन्हें अपनी सभी वपित्तयिों के बारे में बताया, और दोनों ने मलिकर अपना हाल सम्राट कॉन्स्टेंस को बताया। सम्राट अपने भाई से बहुत क्रोधति हुआ और उसने उसे लखिा, आदेश देते हुए कि वह पूर्व के तीन बशिप भेजे, जो अथानासयिस और पॉल के पदच्युत होने का ववरिण दें और, साथ ही, धर्म-वशि्वास का एक लखिति ववरिण लाएँ। यह संदेश प्राप्त करने पर, कांस्टैंटयिस, जो तब भी एंटओिक में था, अपने भाई के क्रोध से डर गया और उसने उसके पास चार बशिप भेजे: सलिसिया का नार्ससिस, थ्रेस का थयिोडोर, काल्सेडन का मारसि और सीरिया का मार्क[7605] । ये बशिप, सम्राट से मलिने रोम पहुँचने के बाद, अथेनासयिस और पॉल के साथ चर्चा या बहस करने की हम्मित नहीं कर सके; उन्होंने अपने असली वधिर्मी वशि्वासों को छपिा लिया, जन्हिें उन्होंने एंटओिक में व्यक्त कयिा था, और एक अलग बयान तैयार कर सम्राट के सामने प्रस्तुत कयिा। यह बयान इस प्रकार था:

'हम सर्वशक्तमिान परमेश्वर पति में वशि्वास करते हैं, जो सभी चीजों के सृष्टकिर्ता और नर्मिाता हैं, जनिसे स्वर्ग और पृथ्वी में सभी चीजों का अस्तत्वि है; और उनके एकमात्र पुत्र, हमारे प्रभु यीशु मसीह में, जो सभी युगों से पहले पति से उत्पन्न हुए, परमेश्वर से परमेश्वर, प्रकाश से प्रकाश, जनिके द्वारा स्वर्ग और पृथ्वी पर की सभी वस्तुएँ, दृश्य और अदृश्य, अस्तत्वि में आईं; सच्चा वचन, और बुद्धि, और शक्ति, और जीवन, और सच्चा प्रकाश; जो इन अंतमि दनिों में हमारे लिए देहधारी हुए और पवित्र कुँवारी से उत्पन्न हुए, क्रूस पर चढ़ाया गया और मरा, और तीसरे दनि मरे हुओं में से जी उठा, और स्वर्ग में आरोहण कयिा, और पति के दाहनि उपवषि्ट है, और युग के अंत में जीवतिों और मरे हुओं का न्याय करने और हर एक को उसके कर्मों के अनुसार प्रतफिल देने के लिए आएगा, और उसका राज्य अनंतकाल तक रहेगा। हम पवित्र आत्मा में वशि्वास करते हैं, जो परम-प्रसन्नकर्ता हैं, जनिके वषिय में प्रभु ने प्रेरतिों से वादा कयिा था और स्वर्ग में आरोहण के बाद उन्हें भेजा था, जनिके द्वारा उन लोगों की आत्माएँ पवित्र की जाती हैं जो उन पर सच्चे और भक्तपिूर्वक वशि्वास करते हैं। परन्तु जो कहते हैं कि पुत्र का सार भन्नि है, और वह परमेश्वर पति से नहीं है, और कि एक समय था जब वह अस्तत्वि में नहीं था—ऐसे लोग पवित्र, कैथोलकि और प्रेरतिकि चर्च द्वारा स्वीकार नहीं कए जाते हैं।'

[7606]सम्राट और कई अन्य गणमान्य व्यक्तयिों के समक्ष इस वशि्वास-पत्र को प्रस्तुत करने के बाद, बशिप रोम से प्रस्थान कर गए। तीन साल बाद, पूर्वी बशिप फरि से एक परषिद में इकट्ठा हुए, एक अलग धर्म-वशि्वास का

[7603] शब्द 'irini' ग्रीक भाषा से आया है और इसका अर्थ 'शांति' या 'प्रशान्ति' है।

[7604] कोरंथि प्राचीन ग्रीस के सबसे प्रसद्धि शहरों में से एक है; यह पेलोपोनेशयिा प्रायद्वीप (बाल्कन प्रायद्वीप के दक्षणिी सरि) पर कोरंथि की खाड़ी के कनिारे स्थति है; प्राचीन काल में यह अपने प्रबोधन और व्यापक व्यापार के लिए प्रसद्धि था, लेकनि इसके नविासयिों के ढीले नैतकि आचरण के लिए भी जाना जाता था। यहाँ ईसाई धर्म का पहला परचिय संत पॉल द अपोस्टल और अपोलोस ने दिया था। संत पॉल ने कोरंथि के ईसाइयों को दो लंबी पत्रकिाएँ लखिीं। आज यह प्राचीन शहर ग्रीस के राज्य का हस्सिा है और इसे कोरन्थिोस कहा जाता है।

[7605] सलिसिया – एशयिा माइनर का एक दक्षणि-पूर्वी क्षेत्र। थ्रेस – बाल्कन प्रायद्वीप के दक्षणि-पूर्वी कोने में एक बाइज़ेंटाइन प्रांत; अब तुर्की का प्रांत *रुमेलिया;* काल्सेडॉन – कॉन्स्टेंटनिोपल के वपिरीत बोस्फोरस के एशयिा माइनर तट पर एक शहर, जो चर्च के इतहिास में चौथे सार्वभौमकि परषिद की मेजबानी करने के लिए जाना जाता है; सीरिया – फलिस्तिीन के उत्तर-पूर्व में एक प्रांत।

[7606] सार्डकिा – मसियिा प्रांत का एक शहर (बाल्कन प्रायद्वीप के केंद्र में)।

विवरण तैयार किया, और इसे इटली के बिशपों को भेज दिया। लेकिन बाद वालों ने, नए विवरण की लंबाई और अनावश्यक शब्दावली के कारण, इसे स्वीकार नहीं किया, क्योंकि वे निकिया परिषद के पवित्र पिताओं द्वारा निर्धारित धर्म-स्वीकृति से पूरी तरह से संतुष्ट थे। परिणामस्वरूप, पूर्वी और पश्चिमी चर्चों के बीच असहमति और महत्वपूर्ण गलतफहमियाँ उत्पन्न हुईं, जिसके परिणामस्वरूप दोनों सम्राटों ने बिशपों को सरडिका में एक परिषद के लिए बुलाया ताकि धर्मविश्वास की जाँच की जा सके और अथेनासियस और पॉल के मामलों पर अंतिम निर्णय लिया जा सके। तीन सौ से अधिक पश्चिमी बिशप सार्डिका परिषद में एकत्रित हुए, जबकि केवल सत्तर-छह पूर्वी बिशप उपस्थित थे। एरियनवाद से प्रभावित, फिर भी अथेनासियस और पॉल जैसे धर्मपरायणता के पुरोधाओं के साथ विवाद में पड़ने से डरते हुए, और इसलिए उन्हें परिषद से हटाना चाहते हुए, पूर्वी बिशपों ने पश्चिमी बिशपों के साथ परिषद की चर्चाओं में तब तक भाग लेने से इनकार कर दिया जब तक कि पश्चिमी बिशपों ने अथेनासियस और पॉल को अपनी पंक्तियों से बाहर नहीं कर दिया। तब स्रेडेट्स के बिशप प्रोटोजेनेस[7607] , आदरणीय कुद्रोवी और अन्य लोगों ने पूर्वी बिशपों से कहा:

'हम यहाँ विशेष रूप से इसी उद्देश्य से एकत्रित हुए हैं: न केवल पिता के साथ पुत्र की एकसारता पर, बल्कि अथेनासियस और पॉल के मामले पर भी चर्चा करने के लिए।'

यह सुनकर, पूर्वी बिशप पश्चिमी बिशपों से अलग हो गए, सारडिका छोड़ दिया, और अपनी वापसी की यात्रा में, फिलिपोपोलिस शहर पहुँचकर, मैसेडोनिया में[7608] , उन्होंने वहाँ अपना एक अलग, अधर्मी परिषद बुलाया, जिसमें उन्होंने यह आदेश दिया कि पुत्र को पिता के समतत्त्व में स्वीकार नहीं किया जाना चाहिए और उन्होंने समतत्त्व के सिद्धांत को खुले तौर पर अनाथेमा घोषित कर दिया। उन्होंने यह विधर्मी आदेश विशेष पत्रों के माध्यम से अपने सभी धर्मप्रांतों में प्रचारित किया।

जब सार्डिका परिषद के धर्मपिताओं को इसकी खबर मिली, तो उन्होंने पहले उन लोगों को निंदित किया जो परमेश्वर के पुत्र के बारे में उनकी झूठी शिक्षा के कारण विधर्म में पड़ गए थे, और फिर अभियोजकों, अथेनासियस और पॉल को उनके पदों से हटा दिया; फिर उन्होंने नीकिया में तैयार किए गए धर्म-सत्य की पूर्ण वैधता को मान्यता दी और उन सभी को चर्च से बहिष्कृत कर दिया जिन्होंने यह स्वीकार नहीं किया कि पुत्र पिता के समान सार का है। सम्राट कॉन्स्टेंस ने, अपनी ओर से, अपने भाई कॉन्स्टेंटियस को लिखा, और उनसे अथानासियस और पॉल को उनके बिशप के पदों पर बहाल करने का आग्रह किया, और तुरंत पॉल को कॉन्स्टेंटिनोपल भेज दिया, साथ में दो बिशपों को साथी के रूप में और कॉन्स्टेंटियस के लिए एक पत्र भेजा, जिसमें उन्होंने अन्य बातों के अलावा लिखा:

'अथानासियस अभी भी मेरे साथ है, और मैं पॉल को तुम्हारे पास भेज रहा हूँ ताकि तुम्हारा अधिकार उसे अपना पद फिर से संभालने का आदेश दे; मैं अथानासियस के लिए भी यही मांग करता हूँ, क्योंकि मुझे पता चला है कि दोनों को उनकी धार्मिकता के कारण निर्वासित किया गया था और उनकी बदनामी की गई...' कॉन्स्टेंट ने इसमें एक और भी अधिक प्रभावशाली बात जोड़ी, अर्थात् कि, यदि उसका भाई मना कर दे, तो वह, कॉन्स्टेंट, व्यक्तिगत रूप से सैन्य बल के साथ उसके खिलाफ मार्च करेगा और, कॉन्स्टेंट की इच्छा के विरुद्ध भी, उनके चर्चों को अथेनासियस और पॉल को बहाल कर देगा।

सम्राट कॉन्स्टैंटियस के दरबार में पहुँचने पर, संत पॉल ने उन्हें कॉन्स्टेंट का पत्र सौंपा। अपने भाई की धमकी से डरकर, कॉन्स्टैंटियस ने मैसेडोनिया को निर्वासित कर दिया और पॉल को पैट्रिआर्कल पद पर पदोन्नत कर दिया; इसी तरह, उसने अथेनासियस को पत्र द्वारा बुलाया और उसे पैट्रिआर्केट संभालने के लिए अलेक्जेंड्रिया भेज दिया। अपने चरवाहों के लिए ऑर्थोडॉक्स की खुशी बहुत बड़ी थी, और काफी समय तक वे महान, दैवीय रूप से प्रेरित सार्वभौमिक शिक्षकों की शिक्षाओं में सांत्वना पाते हुए गहरे शांति में रहे। अलेक्जेंड्रिया में अथेनासियस और कॉन्स्टेंटिनोपल में पॉल पूरी दुनिया के लिए भक्ति के प्रकाशस्तंभ थे, जो एरियनवाद के अंधकार को दूर-दूर तक पीछे धकेल रहे थे। लेकिन फिर कॉन्स्टैंटियस के सेनापति, मैग्नेंटियस, और उसके साथियों ने शिकार पर जाते समय सम्राट की हत्या कर दी। जैसे ही ऑर्थोडॉक्सी के रक्षक, धर्मपरायण रोमन सम्राट कॉन्स्टेंस, वहाँ नहीं रहे, एरियनों ने तुरंत अपना

[7607] स्रेडेट्स – वर्तमान सोफिया, बुल्गारिया की राजधानी।

[7608] मैसेडोनिया में फिलिपोपोलिस, या फिलिपी – एक शहर जिसका नाम मैसेडोनिया के राजा फिलिप, महान अलेक्जेंडर के पिता के नाम पर रखा गया था (ईसा पूर्व चौथी शताब्दी के मध्य में)। मैसेडोनिया – कभी एक शक्तिशाली राज्य, और बाद में बीजान्टिन साम्राज्य का एक प्रांत। संत पौलुस प्रेरित (लूका, तिमोथी और सिलास के साथ) ने यहाँ ईसाई धर्म का प्रचार किया, फिलिप्पी की चर्च की स्थापना की—जो प्राचीन काल में प्रसिद्ध थी—और कई मौकों पर इस शहर का दौरा किया (प्रेरितों के काम 16:12-40)।

सरि उठा लयिा और ऑर्थोडॉक्स के खलिाफ उत्पीड़न शुरू कर दयिा। सबसे पहले, उन्होंने ऑर्थोडॉक्सी के सार्वभौमकि चैंपयिनों के खलिाफ़ मोर्चा संभाला: अथेनासयिस स्वयं सहिासन से हट गए, और अपनी मृत्यु की चाह रखने वाले एरयिनों से भाग गए, जबकि धन्य पॉल को आर्मेनयिा के कुकुज़ी शहर में नर्विासन भेजा गया[7609] , जहाँ उन्हें एक अलग झोपड़ी में बंद कर दयिा गया था। यहीं, जब वह एक बार दैवीय लटिर्जी का अनुष्ठान कर रहे थे, तो एरयिनों ने उन पर हमला कयिा और उनके ही ओमोफोरीयॉन से उनका गला घोंट दयिा।

इस प्रकार, मैसेडोनयिस एक बार फरि कॉन्स्टेंटनिोपल का पैट्रआर्क बन गया और उसने ऑर्थोडॉक्स लोगों को सताकर और उनका संहार करके परमेश्वर की कलीसयिा को और भी बहुत नुकसान पहुँचाया। एपार्क फलिपि के रूप में एक मजबूत समर्थक होने के कारण, उसने कई ऑर्थोडॉक्स बशिपों को पदच्युत कर दयिा और उनकी जगह एरयिनों को नयिुक्त कर दयिा; और उन्हें वभिन्नि यातनाओं से गुज़ारते हुए, उसने उन बहुत से लोगों को नष्ट कर दयिा जो उसके साथ धार्मकि संप्रभुता स्थापति करने से इनकार करते थे, और न ही men r महलिाओं को बख्शा। उसके आदेश पर, कुछ के स्तनों से नप्पिल फाड़े गए; दूसरों के मुंह लोहे से खोलकर जबरदस्ती एरयिन संप्रदाय का पवत्रि भोज ग्रहण कराया गया; कुछ के नाक और कान काट दएि गए; और कुछ पर आग से दागा गया - संक्षेप में, ऑर्थोडॉक्स का खून बेरहमी से बहा। ठीक इसी समय, एरयिनों ने दो पुरोहतिों, मार्शयिन और मार्टायर, जनिके धन्य पॉल के नोटरी और ऑर्थोडॉक्सी के पैरोकार थे, के सरि कलम कर दएि। मेसेडोनयिस का उत्पीड़न यहाँ तक कि पाफ्लागोनयिा[7610] में भी फैल गया। यह जानकर कि वहाँ कई ऑर्थोडॉक्स ईसाई थे, उसने तीन सैनकि दस्तों को भेजा ताकि वे ऑर्थोडॉक्सों को तलवार के ज़ोर पर एरयिनों के साथ एक होने के लएि मजबूर कर सकें। मंतेनयिा नगर के नविासयिों ने[7611] , आ रही सेना के बारे में सुनकर हथयिार उठा लएि—कुछ ने कुल्हाड़ी, कुछ ने दरांती, और कुछ ने केवल खंभे—वे एकत्रति हुए और आगे बढ़ती सेना का सामना करने चले गए; एक गृहयुद्ध छड़ि गया, जसिमें दोनों पक्षों के कई लोग मारे गए। एक बार फरि, इस खून-खराबे के लएि कोई और नहीं बल्कि मैकेडोनयिस ही दोषी था।

अंतत; मैसेडोनयिा ने सम्राट के कसिी आदेश के बनिा, स्वयं संत कॉन्स्टेंटनि द ग्रेट के अवशेषों को खोदकर नकिालने और उन्हें कसिी अन्य स्थान पर स्थानांतरति करने का कार्य अपने हाथ में ले लयिा। उस समय, ऑर्थोडॉक्स और एरयिनों के बीच उत्पन्न आंतरकि संघर्ष के परणिामस्वरूप, पूरी चर्च, कहने का तात्पर्य है, खून में लथपथ थी। सम्राट इस बात से मैसेडोनयिस और एपार्क फलिपि से बहुत नाराज़ हुए, और कॉन्स्टैंटयिस के आग्रह पर, दोनों को उनके पदों से हटा दयिा गया – पहले को पैट्रआर्कल सहिासन से, और बाद वाले को उनकी एपार्की से। इसके बावजूद, एरयिस और मेसेडोनयिस के संप्रदाय बने रहे और उन्होंने चर्च को अगले चालीस वर्षों तक वभिाजति रखा – जब तक कि सम्राट थयिोडोसयिस प्रथम[7612] के शासनकाल में, जन्हिोंने अंततःकॉन्स्टेंटनिोपल में एक परषिद बुलाई और इन संप्रदायों को नर्णिायक रूप से नदिा कयिा[7613] । इसके बाद, धर्मनष्ठि सम्राट ने मसीह के स्वीकारकर्ता संत पॉल के अवशेषों को कुकुज़ से कॉन्स्टेंटनिोपल में बड़े सम्मान के साथ स्थानांतरति कयिा, जसिसे उन्होंने पति, पुत्र और पवत्रि आत्मा को महमिा प्रदान की।

[7609] आर्मेनयिा – रोम-बाइज़ेंटाइन साम्राज्य का एक प्रांत, जो एशयिा माइनर के उत्तर-पूर्वी भाग में स्थति था। 70 ईसा पूर्व तक, आर्मेनयिा पोंटस के साम्राज्य का हस्सिा था, और बाद में इस पर रोमनों ने वजिय प्राप्त की।

[7610] पाफ्लागोनयिा - एशयिा माइनर का एक प्राचीन क्षेत्र, जो ब्लैक सी के दक्षणिी तट के मध्य भाग पर स्थति था। 64 ईसा पूर्व तक, यह कैपाडोसयिा के राज्य का हस्सिा था, और उस समय से यह रोमन प्रांत बथिनियिा-पोंटस का हस्सिा बन गया, जसिके बाद यह बीजान्टनि साम्राज्य का हस्सिा बन गया।

[7611] मंटाइनयिा पाफलोगोनयिा में एक छोटा सा शहर है।

[7612] यह, बेशक, सम्राट थयिोडोसयिस महान को संदर्भति करता है, जन्हिोंने 379 से 395 ईस्वी तक शासन कयिा।

[7613] यह, बेशक, सम्राट थयिोडोसयिस महान के शासनकाल के दौरान कॉन्स्टेंटनिोपल में आयोजति दूसरे सार्वभौमकि परषिद (381 ईस्वी) को संदर्भति करता है, जसिने एरयिनवाद और उससे उत्पन्न होने वाली सभी कुरीतयिों की नदिा की - मुख्य रूप से मेसेडोनयिस की कुरीति, जसिने पवत्रि आत्मा के बारे में अपमानजनक रूप से सखिाया था।

ट्रोपारयिन, स्वर 3:

दव्यि वश्विास की उनकी स्वीकारोक्तिके माध्यम से, कलीसयिा ने दूसरे पौलुस को याजकों में एक उत्साही रक्षक के रूप में प्रदर्शति कयिा है; हाबलि तुम्हारे द्वारा प्रभु से पुकारता है, जैसे ज़कारयिाह का धर्मी लहू भी पुकारता है: हे पूजनीय पतिा, मसीह हमारे परमेश्वर से प्रार्थना करो कि वह हम पर अपनी महान दया प्रदान करें।

कॉन्टाकयिन, स्वर 2:

स्वर्ग को प्रकाशति करने वाले तारे के समान पृथ्वी पर प्रकाशति होकर, आप अब उस कैथोलकि चर्च को प्रबुद्ध करते हैं, जसिके लिए आपने अपनी आत्मा अर्पति करते हुए दुख सहन कयिा, हे पौलुस; और जैसे ज़कार्याह और हबलि का रक्त, वैसे ही आपका रक्त भी स्पष्ट रूप से प्रभु के पास पुकारता है।

हमारे पूजनीय पतिा बरलाम, नोवगोरोड के चमत्कार करने वाले की जीवन गाथा

6 नवंबर को स्मरणोत्सव

हमारे पूजनीय पतिा बार्लाम का जन्म नोवगोरोड में धर्मपरायण और भक्तमिय माता-पतिा के यहाँ हुआ था। उनका पालन-पोषण ईश्वर के भय में हुआ और उन्हें पढ़ना और लखिना सखिाया गया। वह पवत्रि युवक अक्सर और उत्सुकता से पवत्रि धर्मग्रंथों को पढ़ता था, और वशिष रूप से राजा और नबी दाऊद के दैवीय रूप से प्रेरति भजनों को। बचपन से ही, उन्होंने बच्चों के खेलों से परहेज़ कयिा, सभी सांसारकि सुखों का त्याग कर दयिा, और उन्हें पवत्रि आत्मा का पात्र चुना गया। वे अक्सर इस प्रकार चतिन करते थे: 'सचमुच, हमारा जीवन संक्षप्ति और क्षणकि है। इसमें, सब कुछ बदल जाता है; सब कुछ एक पहयि की तरह घूमता है। यह एक सपने की तरह है।'

संत ने संसार और उसमें मौजूद सभी चीजों का त्याग कर दयिा, और एक सुनसान जगह पर चले गए। उनके पीछे प्रोकोपयिस मालशिवचि आए, जन्हिोंने बाद में पोर्फीरयिस नाम से संन्यास की शपथ ली, उनके भाई थयिोडोर, और नोवगोरोड के अन्य नविासी जो मौन और शांतमिें तपस्या को समर्पति होना चाहते थे। संत बार्लाम ने एक संन्यासी-पुजारी से संन्यासी मुंडन ग्रहण कयिा। उन्होंने अपने लिए एक छोटी सी कुटयिा बनाई, जहाँ वे दनि-रात प्रभु से अखंड प्रार्थना करते थे। संत ने तपस्या और परश्रिम के लिए खुद को पूरी लगन से समर्पति कर दयिा; वह खुद लकड़ी काटता, लकड़ी आरी से काटा करता और खेत जोता करता था, और इस प्रकार पवत्रि धर्मग्रंथ के वचनों को पूरा करता था: *'क्योंकि जब हम तुम्हारे साथ थे, तब भी हमने तुम्हें यह आज्ञा दी थी: "यदि कोई काम करने को तैयार न हो, तो उसे खाने न दयिा जाए"* (2 थस्सिलुनीकयिों 3:10)।

हर रात वह जागते थे और प्रार्थना के द्वारा दुष्टात्माओं को भगा देते थे। अशुद्ध आत्माएँ या तो स्वयं उस संत को परेशान करने की कोशशि करतीं या दूसरों को उस धन्य व्यक्तिको सताने के लिए उकसातीं। संत ने ईश्वर के दहनि हाथ की सुरक्षा और सहारे से इन सभी परीक्षाओं को धैर्यपूर्वक सहन कयिा। उनके कारनामों की खबर दूर-दूर तक फैलने लगी। कई लोग उनके पास आने लगे: राजकुमार, बोयार, अमीर और गरीब। आदरणीय बरलाम ने उनके पास आने वाले सभी लोगों को अथक रूप से उपदेश दयिा:

'मेरे बच्चों, हर तरह की अधार्मकिता से अपना बचाव करो; ईर्ष्यालु न बनो, बदनामी न करो। क्रोध से बचो; ब्याज पर पैसा उधार न दो। ध्यान रखना कि अन्यायपूर्ण नर्णिय न लेना। झूठी **कसम** न खाओ; **कसम खाने पर**, उसे पूरा करो। शारीरकि वासनाओं के आगे न झुको।

हमेशा नम्र रहो और सभी के साथ प्रेम से पेश आओ। यह सद्गुण सभी अच्छाइयों की शुरुआत और जड़ है।

इस प्रकार, हर दनि आशीषति संत अपने पास आने वाले सभी लोगों को उपदेश देते थे, जबकि वे स्वयं अपनी प्रार्थनाओं को और अधकि तीव्र करते गए और अपने शरीर को और भी कठोरता से वश में करते गए। कुछ समय बाद, उन्होंने हमारे प्रभु यीशु मसीह के रूपांतरण को समर्पति एक छोटा सा चर्च बनाया। उसी समय से, मठ का अस्तत्वि में आना शुरू हुआ। भाइयों की संख्या बढ़ती रही। संत स्वयं, पहले की तरह, कठोर तपस्या का जीवन जीते थे। उनके भोजन में रोटी या पृथ्वी के फल होते थे, और वह भी बहुत ही कम मात्रा में। अन्य भक्षिु भी उतना ही कठोर जीवन जीते थे।

एक दिन, एक राजकुमार संत की कुटिया पर आया और आशीर्वाद माँगा। संत ने उसे नमस्ते करते हुए उसके पुत्र के जन्म पर बधाई दी। राजकुमार यह सुनकर चकित रह गया। और वास्तव में, जब राजकुमार वहाँ नहीं था, तब उसके एक पुत्र का जन्म हुआ था, और स्वयं संत बार्लाम ही उसके पवित्र बपतिस्मा में उसके धर्मपिता बने थे।

एक व्यक्ति, जिसे उस संत पर बहुत आस्था थी, अपने एकमात्र बीमार बेटे के साथ सम्मानित पिता से मिलने के लिए निकला। वह चाहता था कि संत उसके बेटे के ठीक होने के लिए प्रार्थना करें। लेकिन रास्ते में, बीमार लड़के की मृत्यु हो गई। संत बार्लाम ने प्रार्थना की, और लड़का पूरी तरह से स्वस्थ होकर उठ खड़ा हुआ।

एक बार, प्रभु यीशु मसीह के पुनरुत्थान का महान पर्व नज़दीक आ रहा था। संत ने पर्व के लिए मछलियाँ पकड़ने के लिए कुछ मछुआरों को भेजा। पकड़ असाधारण रूप से भरपूर थी। मछली पकड़ने वालों ने एक बड़ी स्टर्जन मछली पकड़ी, लेकिन, शैतान के प्रलोभन में आकर, उन्होंने उसे छिपा दिया और मठ में केवल बाकी मछलियाँ ले आए। संत बरलाम, हाथ में लाठी लिए, उन्होंने लाई गई मछलियों की जांच करना शुरू किया और कहा:

'मेरे बच्चों, तुमने केवल छोटी मछलियाँ लाई हैं। बड़ी वाली कहाँ है?'

मछली पकड़ने वाले, संत की सूझबूझ से चकित होकर, उनके सामने घुटनों के बल गिर पड़े, अपने अपराध पर पश्चाताप किया, और छिपाई हुई मछली को वापस कर दिया।

ईश्वर की इच्छा से, संत बरलाम के समकालीन, एंथनी, कॉन्स्टेंटिनोपल से आए। धन्य संत अपने मित्र की वापसी से अत्यंत प्रसन्न हुए। उन्होंने मठ का प्रबंधन एंथनी को सौंपते हुए कहा:

'मेरे प्रिय भ्राता! इस मठ पर ईश्वर की कृपा बनी हुई है। अब मैं यह मठ आपके हाथों में सौंपता हूँ। इसकी रक्षा करो और इसका ध्यान रखो। मैं अब स्वर्गीय राजा के पास जा रहा हूँ। लेकिन इससे हतोत्साहित न हो: यद्यपि मैं शरीर से आपको छोड़ रहा हूँ, आत्मा में मैं हमेशा आपके साथ रहूँगा।'

और अपने भाइयों को उपदेश देकर, उनसे ऑर्थोडॉक्स धर्म को बनाए रखने और निरंतर विनम्रता में रहने का आदेश देते हुए, संत बरलाम ने अपना प्राण प्रभु को सौंप दिया। नोवगोरोड के बिशप ने, उचित वैभव के साथ, मोमबत्तियों और पवित्र भजनों के साथ, उनके सम्मानित शरीर को अंतिम संस्कार के लिए ले जाया। परम पूज्य बार्लाम का धन्य निधन 6 नवंबर 1192 को हुआ। अब, धर्मी लोगों के बीच, वह पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा की महिमा करते हैं। आमीन।

ट्रोपारियन, स्वर 3:

हे पूजनीय, आपने पृथ्वी पर रहते हुए उपवास, संयम और जागरण द्वारा अपने शरीर को क्षीण किया, सभी सांसारिक इच्छाओं को समाप्त किया, और हमारे पिता वार्लाम, उन लोगों के लिए चंगाई का एक अनंत स्रोत बन गए जो श्रद्धा के साथ आपके पवित्र अवशेषों के संदूक की ओर आते हैं। हमारे ईश्वर मसीह से प्रार्थना करें कि हमारी आत्माओं का उद्धार हो।

कॉन्टाकियन, स्वर 8:

जिस प्रकार दूसरे एलियाह ने सूर्य को रोक दिया और राजा को चकित कर दिया, उसी प्रकार आपने अपने लोगों को प्रसन्न किया और उन्हें आनंदित होने का प्रबंध किया। क्योंकि नोवगोरोड का महान नगर आप पर बहुत गर्व करता है, क्योंकि उसके पास आपके अवशेष हैं: इसे इसके शत्रुओं से अडिग रखें, ताकि हम आपसे पुकार सकें: आनंदित हो, आदरणीय बरलाम, हमारे पिता।

काज़ान के आर्चबिशप संत हर्मन का जीवन

6 नवंबर को स्मरणोत्सव

15वीं और 16वीं शताब्दी में मस्कोवाइट राज्य के बोयार परिवारों में, स्मोलेंस्क के राजकुमारों के वंशज पोलेव परिवार ने अपनी असाधारण भक्ति और सेवा के उत्साह से खुद को विशिष्ट बनाया। इस परिवार के कई सदस्यों ने संन्यास की शपथ ली और अपने धार्मिक जीवन और ईसाई सद्गुणों के लिए प्रसिद्ध थे। 17वीं शताब्दी की शुरुआत में,

स्टारत्सि[7614] नामक शहर में थियोडोर अफ़ानसीयेवचि पोलवि के एक पुत्र हुआ, जसिका पवत्रि बपतस्मि में संत ग्रेगरी द डेकापोलटि के सम्मान में ग्रेगरी नाम रखा गया था। यही भवष्यि के प्रकाश के महान दीपक और मसीह के झुंड के उत्साही चरवाहे - संत हरमन थे। उनके माता-पता की धार्मकिता और मसीह की आज्ञाओं का सख्त पालन उस छोटे लड़के पर गहरा प्रभाव पड़ा। छोटी उम्र से ही, वह सख्त उपवास करने का आदी था और अक्सर प्रार्थना में खुद को समर्पति कर देता था। संत के माता-पता ने अपने बेटे के दलि में ईश्वर का भय जगाने का प्रयास कयि। अपने शुरुआती वर्षों से ही, उस लड़के पर ईश्वर की कृपा बनी रही। अपने साथयिों में, वह अपनी वनिम्रता, सौम्यता और प्रतभिा के लिए अलग खड़ा था। उसे बच्चों के खेल या शोर-शराबे वाले खेल पसंद नहीं थे, बल्कि वह अपनी आत्मा को सार्थक चंतिन और बातचीत से प्रसन्न करना पसंद करता था। ग्रेगरी के धर्मपरायण माता-पता ने अपने बेटे को पवत्रि शास्त्र पढ़ना सखिाया, जो उस समय शकि्षा का प्रमुख रूप था। उस पवत्रि युवक ने दव्यि प्रेरति पुस्तकों को पढ़ने के लिए बड़ी लगन से स्वयं को समर्पति कर दयि। वह वशिेष रूप से अक्सर दाऊद की भजन-संग्रह पढ़ता था, क्योंकि वे उस धर्मपरायण युवक को बल और प्रेरणा देते थे। छोटी उम्र से ही, वह धार्मकि अनुष्ठानों के दौरान चर्च में उपस्थति होने में कभी चूकता नहीं था। वह अक्सर एकांत में चले जाते थे, जहाँ, सन्नाटे के बीच, वह भक्तपिूर्वक प्रार्थना करते और मानव जीवन के उद्देश्य तथा ईश्वर की व्यवस्था पर मनन करते थे। उस पवत्रि युवक ने मानव जीवन की क्षणभंगुरता के बारे में बहुत सोचा। उन्होंने सोचा, यह एक सपने की तरह क्षणभंगुर है; एक व्यक्ति मर जाता है, और उसकी यादें धुंधली पड़ जाती हैं। इस जीवन की सभी आशीर्वादें भी उतनी ही क्षणभंगुर हैं: वे नाशवान हैं, जल्दी आती हैं और उतनी ही तेजी से गायब हो जाती हैं। केवल एक ही बात मायने रखती है: ईश्वर को प्रसन्न करना, अपनी पूरी आत्मा से उनकी सेवा करना, और पूरे दलि से उनसे प्रेम करना। उस धर्मनष्ठि युवक ने पहले से भी अधकि कठोर जीवन जीना शुरू कर दयि; वशिेष रूप से, उसने इतनी कठोरता से उपवास कयि कि अपने महान त्याग के कारण वह मुश्कलि से जीवति रहा। फरि भी, इस प्रकार अपने शरीर को कष्ट देकर, उसने अपनी आत्मा को प्रबुद्ध और सुशोभति कयि। अपने पुत्र की चरम तपस्या को देखकर, उसके माता-पता ने उसकी सेहत की चंता करते हुए, उससे अपने कठोर तप को कम करने का आग्रह कयि। लेकनि उसने अपने कठोर परश्रिम को और भी तेज कर दयि। उसकी आत्मा लंबे समय से एकांत की आकांक्षा कर रही थी। उसने स्वयं को पूरी तरह से ईश्वर की सेवा के लिए समर्पति करने और भकि्षुओं की कतार में शामलि होने का संकल्प लयि। अपने माता-पता का आशीर्वाद लेकर, वह वोल्कोलामस्क मठ में प्रवेश कर गया, जो अपने कठोर भकि्षु जीवन के लिए प्रसद्धि था। फादर ग्रगिोरएिव के चचेरे भाइयों ने पहले ही उसी मठ में अपने भकि्षु संस्कार ले लिए थे। उस समय, काज़ान के भावी मेट्रोपॉलटिन, गुरी, और धन्य मैक्समिस द ग्रीक[7615] — जो अपनी वद्विता के लिए प्रसद्धि थे और अपने दुश्मनों की साज़शिों के कारण इस मठ में अन्यायपूर्ण ढंग से कैद थे — वहाँ रहते थे। लगभग पच्चीस वर्ष की आयु में, ग्रेगरी इस मठ में आए, जहाँ उनके पता ने बाद में फलिोथयिस नाम से नविास कयि। इसके तुरंत बाद, ग्रेगरी का मुंडन कयि गया और उन्हें हर्मन नाम दयि गया। संन्यासी जीवन अपनाने के बाद, उन्होंने धार्मकि कार्यों में और भी अधकि उत्साह के साथ स्वयं को समर्पति कर दयि। उन्होंने पवत्रि धर्मग्रंथ के अध्ययन में वशिेष रूप से कड़ी मेहनत की, अक्सर वद्विान मैक्समिस से बातचीत की और इन वार्तालापों से उन्हें बहुत लाभ हुआ। पहले की तरह, उन्होंने अपने उपवासों का सख्ती से पालन कयि और बनिा चूके चर्च जाना जारी रखा। अपने तपस्वी जीवन से सभी के लिए एक उदाहरण स्थापति करते हुए, वे असाधारण वनिम्रता से वशिष्टि थे और स्वेच्छा से भाईचारे की सेवा करते थे, उन्हें सौंपी गई सभी जम्मिेदारयिों को पूरा करते थे। उन्हें वशिेष रूप से धार्मकि अनुष्ठानों की पुस्तकों की नकल करना पसंद था। 'ईश्वर की माता के भजन' और 'सुसमाचार' की नकल, जो आज भी मौजूद हैं, हर्मन के हाथों से ही की गई थी—जो खुद को 'संतों में अंतमि' कहता था।

जर्मन के तपस्वी जीवन ने उन्हें वोल्कोलामस्क मठ के संतों का सम्मान दलिाया। वे उनके परश्रिम को देखकर चकति हुए, उनकी वनिम्रता से प्रेरति हुए, और प्रभु का धन्यवाद कयि। शीघ्र ही, हर्मन के धार्मकि जीवन की खबर संत के गृह नगर – स्टारत्सि नगर – तक पहुँच गई। स्टारत्सि डॉर्मशिन मठ के भकि्षुओं ने हर्मन के पराक्रमों के बारे में सुनकर, वनिम्रतापूर्वक उनसे अपने मठ का अधष्ठिाता बनने का आग्रह कयि। नम्र हरमन ने लंबे समय तक मना कर दयि, लेकनि अंततः भाईचारे की सच्ची वनितयिों के आगे झुक गए और ट्वेर के आर्चबशिप अकाकयिोस से मलिने के

[7614] स्टारत्सि वोल्गा नदी पर स्थति ट्वर गवर्नरेट का एक जलिा शहर है।

[7615] धन्य मैक्समिस द ग्रीक, जनि्हें धार्मकि ग्रंथों को संशोधति करने के लिए पवत्रि पर्वत से बुलाया गया था, ने कई रचनाएँ पीछे छोड़ दीं। लंबे समय तक कैद में रहने के बाद, 1656 में उनकी मृत्यु होली ट्रनिटिी सेंट सर्जयिस लावरा में हुई।

लिए रवाना हो गए, जिन्होंने संत का प्रेमपूर्वक स्वागत किया, उन्हें आर्चमैंड्राइट के पद पर पदोन्नत किया और उनके नए मंत्रालय के लिए उन्हें आशीर्वाद दिया। स्टारित्सा मठ के भाइयों ने अपने नए मठाधीश का गर्मजोशी से स्वागत किया, जिन्हें वे लंबे समय से अपने मठ में देखना चाहते थे। मठ का प्रभार संभालने पर, संत हरमन ने पादरीय उत्साह के साथ इसके सुधार का काम शुरू किया: उन्होंने इमारतें बनवाईं और चर्चों को भव्य रूप से सजाया। लेकिन वह आंतरिक सुंदरता को लेकर और भी अधिक चिंतित थे: उन्होंने सभी के लिए एक धर्मपरायण जीवन का उदाहरण प्रस्तुत किया, भिक्षुओं के लिए विनम्रता और नम्रता का आदर्श बने, सभी को प्रोत्साहित किया, उन्हें अपने मठ के कर्तव्यों का सख्ती से पालन करने के लिए प्रेरित किया, और अपने निवास में वोल्कोलामस्क मठ के नियम को लागू किया - संक्षेप में, वह एक सच्चे चरवाहे, एक दयालु पिता और अनुकरण के योग्य एक आदर्श थे। भिक्षुओं ने अपने पवित्र आर्चमिांड्राइट के पदचिन्हों पर चलने का प्रयास किया और आध्यात्मिक जीवन में इतने अनुभवी चरवाहे के मार्गदर्शन में अपने आध्यात्मिक प्रयासों में सफल हुए। लेकिन जल्द ही उन्हें अपने आर्चमिांड्राइट से विदा होना पड़ा। एकांत जीवन बनाए रखने के इच्छुक, संत जर्मनस ने दो साल बाद स्टारित्सा मठ छोड़ दिया और वोल्कोलामस्क मठ में एक एकांत कोठरी में लौट आए, जहाँ उन्होंने एक बार फिर प्रार्थना और उपवास में खुद को समर्पित कर दिया। उन्होंने स्टारित्सा मठ का नेतृत्व भिक्षु जॉब को सौंप दिया, जिनका उन्होंने मुंडन किया था और जो बाद में रूसी भूमि के लिए एक प्रसिद्ध तपस्वी और शहीद - मॉस्को के पैट्रिआर्क बने। वोल्कोलामस्क मठ में पहुँचने पर, संत हरमन ने एक साधारण भिक्षु के रूप में तपस्या में खुद को समर्पित करना शुरू कर दिया। लेकिन उनका भाग्य एकांत और मौन में अधिक समय बिताने का नहीं था। उस समय, मसीह मैथ्यू बाशकिन नामक एक नया विधर्मी मॉस्को में प्रकट हुआ; उसने पवित्र त्रिमूर्ति में विश्वास से इनकार किया और पवित्र संस्कारों को स्वीकार नहीं किया। 1553 में, उससे निपटने के लिए मॉस्को में एक परिषद बुलाई गई। संत हरमन को उनके पिता के साथ परिषद के सत्रों में बुलाया गया। परिषद ने बाशकिन के धर्मद्रोह को निंदा किया और उसे संत हरमन से शिक्षा प्राप्त करने के लिए वोल्कोलामस्क मठ भेजने का निर्णय लिया। इस प्रकार, ईसाई धर्म के इस उत्साही रक्षक का तपस्वी और पवित्र जीवन सभी के लिए ज्ञात हो गया।

लेकिन संत के लिए एक अलग, अधिक कठिन कार्य प्रतीक्षा कर रहा था। उसी समय, ज़ार और ग्रैंड प्रिंस इवान वासिलीविच द टेरिबल ने कज़ान पर विजय प्राप्त की थी, जो तातार साम्राज्य कज़ान का मुख्य किला और गढ़ था। मॉस्को के ज़ार ने जीते हुए क्षेत्र में मुसलमानों और मूर्तिपूजकों - यानी गैर-ईसाइयों - के बीच सच्चे ईसाई धर्म के प्रकाश को फैलाने का मन बनाया। काज़ान में एक आर्चबिशप की सीट स्थापित की गई, जिसके पहले आर्चबिशप के रूप में वोलोकलामस्क मठ के पूर्व मठाधीश, संत गुरी को नियुक्त किया गया। संत गुरी को स्वियाज़्स्क शहर में एक मठ स्थापित करने का कार्य सौंपा गया था[7616] । संत हर्मन, जो 1555 में गुरी के साथ स्वियाज़्स्क आए थे, को गुरी के निर्देशों पर इस मठ का मठाधीश नियुक्त किया गया। ज़ार और संतों से उदार अनुदान प्राप्त करने के बाद, हर्मन ने उत्साहपूर्वक मठ का निर्माण शुरू कर दिया। उन्हें मठ के निर्माण में बहुत मेहनत और प्रयास करना पड़ा। आवश्यक सामग्रियों की कमी, मजदूरी की ऊंची लागत, और अविश्वासियों से शत्रुता – इन सभी कारकों ने मठ के निर्माण में बाधा डाली और उसमें देरी की। लेकिन ईश्वर की मदद से, डेढ़ साल बाद काम पूरा हो गया। संत हरमन ने सेंट निकोलस चर्च का निर्माण किया, जो आज भी खड़ा है, जिसके साथ एक ऊँचा घंटाघर जुड़ा हुआ है; फिर उन्होंने ईश्वर की माता के सम्मानित और गौरवशाली डोर्मिशन (निधन) के सम्मान में एक भव्य चर्च का निर्माण किया, जो आज तक सुरक्षित है। हरमन ने इन चर्चों को आइकन (चित्रों) और अन्य पवित्र वस्तुओं से शानदार ढंग से सजाया।

जर्मन मुसलमानों और मूर्तिपूजकों के बीच मसीह के सच्चे धर्म को फैलाने में विशेष रूप से उत्साही थे। पवित्र पादरी के तपस्वी और संयमी जीवन ने कई लोगों को उनकी ओर आकर्षित किया। कुछ सलाह के लिए आए, तो कुछ आशीर्वाद के लिए। परम धन्य व्यक्ति ने सभी का प्रेम से स्वागत किया, ऑर्थोडॉक्स ईसाइयों और अविश्वासियों के बीच क को कोई भेदभाव नहीं किया, सभी की समान रूप से मदद की और सभी के साथ एक ही देखभाल से व्यवहार किया। उस पवित्र व्यक्ति के आचरण का विधर्मी लोगों पर इतना शक्तिशाली प्रभाव पड़ा कि उन्होंने मसीह के सच्चे धर्म को अपनाना शुरू कर दिया। संत हरमन ने हर उस व्यक्ति की उदारतापूर्वक मदद की जो सहायता के लिए उनके पास आया। फिर भी, दूसरों के प्रति उदार और दयालु होने के साथ-साथ, संत अपने प्रति सिख्त और माँग करने वाले थे। संत की तंग और संकरी कोठरी, जो 1.5 साज़ेन लंबी और लगभग एक साज़ेन चौड़ी थी, आज भी संरक्षित है। सभी की मदद करते हुए,

[7616] स्वियाज़्स्क काज़ान प्रांत में स्वियागा नदी के किनारे एक जिला शहर है।

उन्होंने बाहरी सहायता के बिना काम चलाने का प्रयास किया, और अपने कपड़े खुद ही सिलते थे। आज भी, सेंट हरमन द्वारा उपयोग किया गया अँगूठाफास, सुइयाँ और धागा संरक्षित हैं। अपनी आत्मा के उद्धार के लिए चिंतित होने के साथ-साथ, यह अच्छे चरवाहे स्वियाज़्स्की मठ के भिक्षुओं के लिए भी उतने ही चिंतित थे। मठाध्यक्ष की तरह, सभी भिक्षुओं को भी सबसे सख्त अनुशासन का जीवन जीने के लिए बाध्य किया जाता था। उनमें से, संत हरमन ने उन लोगों को चुना जो अविश्वासियों को परमेश्वर का वचन प्रचार करने के योग्य थे, और स्वयं उनके लिए एक उदाहरण स्थापित किया। संत के परिश्रम से, बड़ी संख्या में हस्तलिखित पुस्तकें—धार्मिक अनुष्ठानों से संबंधित और प्रचार के महान कार्य के लिए आवश्यक अन्य कृतियाँ—एकत्र की गईं। ईश्वर की माता का स्वियाज़्स्क मठ एक ऐसा केंद्र बिंदु बन गया, जिससे ईसाई धर्म का प्रकाश फैलने लगा। संत की अथक देखभाल के कारण, इस मठ ने अपने महान उद्देश्य को पूरा किया और आने वाले कई वर्षों तक उत्तर-पूर्वी रूस में प्रबोधन का केंद्र बना रहा। भाईचारे के प्रेम के बंधन ने संत हरमन को धन्य गुरी के साथ जोड़ रखा था। इस महाधर्माध्यक्ष ने हरमन जैसे उत्साही साथी के गुणों और परिश्रमों को महत्व दिया। वे अक्सर धार्मिक शिक्षा से संबंधित विभिन्न मामलों पर पत्र व्यवहार करते थे। अपनी ओर से, संत गुरी ने इस उत्साही ईसाई धर्म के प्रचारक पर अपना पूरा भरोसा जताया। उन्होंने स्वियाज़्स्क मठ के प्रशासन और शासन के साथ-साथ स्वियाज़्स्क क्षेत्र के सभी चर्चों का कार्यभार भी स्वयं हरमन को सौंप दिया। उनके सभी कार्य ज़ार को भी ज्ञात थे। इस प्रकार, संत हरमन ने आठ वर्षों से अधिक समय तक परिश्रम किया।

6 दिसंबर 1563 को, कई परिश्रमों और कार्यों के बाद, काज़ान के प्रायमेट, गुरिय ने शांतिपूर्वक अपनी पवित्र आत्मा प्रभु को सौंप दी। ज़ार इवान वासिलीविच द टेरिबल और मॉस्को के मेट्रोपॉलिटन अथानासियस ने सेंट हरमन को मॉस्को बुलाया, ताकि उन्हें काज़ान में आर्चपास्टोरल पद पर नियुक्त किया जा सके। उन्होंने इस पवित्र व्यक्ति के उत्साह के बारे में पहले ही बहुत कुछ सुन रखा था और उनमें सेंट गुरी के एकमात्र योग्य उत्तराधिकारी को देखा। सिनोडल फरमान द्वारा मास्को बुलाए जाने पर संत हरमन ने शुरू में मना कर दिया, लेकिन अंततः उन्हें ज़ार और अभिषिक्त सिनोड की मांगों के आगे झुकना पड़ा। 12 मार्च 1564 को, उन्हें काज़ान और स्वियाज़्स्क के आर्चबिशप के रूप में अभिषिक्त किया गया। अपने अनुयायियों का शासन करते समय, उन्होंने अपने महान गुरु और मार्गदर्शक, संत गुरी के पदचिन्हों पर दृढ़ता से चलना जारी रखा। वह ईसाई धर्म को बढ़ावा देने में विशेष रूप से उत्साही थे। इस उद्देश्य के लिए, उन्होंने ज़िलिनटोव्स्की मठ ([7617]) में सामुदायिक जीवन की शुरुआत की ताकि इस मठ में भिक्षुओं की संख्या बढ़ाई जा सके और विदेशियों के बच्चों के लिए स्कूल का विस्तार किया जा सके। उनके समकालीन, प्रिंस कुर्बस्की—जो रूसी इतिहास में एक प्रसिद्ध हस्ती थे—ने सेंट जर्मन के बारे में यह कहा: 'जर्मन कुलीन जन्म के व्यक्ति थे, जो अपनी कद-काठी से कम और अपनी बुद्धि से अधिक विशिष्ट थे; एक ईमानदार और पवित्र जीवन जीने वाले व्यक्ति, पवित्र धर्मग्रंथों के विद्वान और आध्यात्मिक मामलों में ईश्वर के एक उत्साही सेवक थे; वे किसी भी प्रकार की कपट या पाखंड में शामिल नहीं थे, बल्कि सादगी, सत्यनिष्ठा और दृढ़ता के पुरुष थे, दुर्भाग्य और आपदाओं से पीड़ित लोगों के लिए एक महान सहायक, और गरीबों के प्रति अत्यंत दयालु थे।"

संत की सहायता से, उस समय कज़ान में इवानोव्स्की कज़ान मठ का निर्माण हुआ था, और यह आज भी खड़ा है। यह ईश्वर के चर्चों की भव्यता के लिए संत के उत्साही प्रयास का एक दृश्यमान संकेत है। ऐसे कार्यों में लगे हुए, संत ने लगभग दो वर्षों तक कज़ान के झुंड का नेतृत्व किया। 1566 में, मास्को के मेट्रोपॉलिटन अथानासियस ने स्वास्थ्य खराब होने के कारण चर्च का नेतृत्व छोड़ दिया। संत हरमन का कठोर तपस्वी जीवन इवान द टेरिबल को अच्छी तरह से पता था, और वह चाहता था कि हरमन आर्चपास्टोरल सिंहासन पर आसीन हों। ज़ार के आदेश पर, काज़ान के संत को मास्को बुलाया गया। उस समय, इवान के चरित्र में एक दुखद परिवर्तन आया: उसकी संदिग्ध प्रकृति, जो पहले से ही उसमें थी, और तीव्र होने लगी। उसने अपने चारों ओर अयोग्य ओप्रिचनिकी (Oprichniki) की भीड़ इकट्ठी कर ली, जिन्होंने ज़ार के विश्वास का दुरुपयोग किया और अन्याय तथा उत्पीड़न की हरकतें कीं। ज़ार के आदेश पर मास्को बुलाए जाने पर, हरमन ने शुरू में अपने ऊपर डाली गई जिम्मेदारी को स्वीकार करने से इनकार कर दिया। ज़ार ने किसी भी आपत्ति को बर्दाश्त नहीं किया, और हरमन को मेट्रोपॉलिटन के रूप में अभिषिक्त होने से पहले ही मेट्रोपॉलिटन के कक्षों में रहने के लिए मजबूर होना पड़ा। हालाँकि, उन्हें वहाँ ज़्यादा समय तक नहीं रहना पड़ा। उन्होंने ज़ार के दुष्ट गुर्गों द्वारा लोगों

[7617] काज़ान के पास ज़िलांटोव्स्की मठ की स्थापना इवान द टेरिबल के आदेश पर उस स्थान पर की गई थी जहाँ काज़ान पर कब्ज़ा करने के दौरान मारे गए सैनिकों को दफनाया गया था।

पर कए जा रहे अन्याय को देखा; दुख के साथ ने देखा कइवान द टेरबिल का चरत्रि कतिना बदल गया था - और वह इसे सहन नहीं कर सके: अपने पादरी के कर्तव्य के प्रतविफादार, उन्होंने ज़ार को होश में लाने की कोशशि की, उससे सच्ची पश्चाताप की आवश्यकता, भवष्यि की यातनाओं और शाश्वत आनंद के बारे में बात की। भयानक ज़ार पवत्रि संत की फटकार सहन नहीं कर सका। वह उदास भाव लए हर्मन की उपस्थतिसे चला गया। ओप्रचिनीकी को जब यह पता चला, तो उन्होंने ज़ार को मनाना शुरू कर दयिा। वे उस संत को अच्छी तरह जानते थे और समझते थे कयिह पादरी उनके लए एक खतरनाक अभयिोक्ता था, जो ज़ार से बनिा रुके और बहादुरी से सच बोलेगा।

'हे महान शासक,' वशि्वासघाती ओप्रचिनीकी ने कहा, 'आपके लए अपने सेवक के बेतुके शब्दों पर ध्यान देना उचति नहीं है। क्या आप सचमुच उस बंधन में पड़ना चाहते हैं जो सल्विेस्टर और अदाशेव द्वारा इतने वर्षों तक आपको दए गए बंधन से भी अधकि कष्टदायक होगा?'

ज़ार का प्रयि, अलेक्सी बास्मानोव, और उसके बेटे ने संत के खलिाफ सबसे ज़ोरदार तरीके से आवाज़ उठाई। सभी ओप्रचिनीकी ने ज़ार से लगातार वनिती की कवि हर्मन को मॉस्को के सहिासन पर न नयिुक्त करें। इवान द टेरबिल ने अपने प्रयिजनों की बात मानी। उन्होंने आदेश दयिा कहिर्मन को यह बताया जाए:

'तुम्हें अभी तक मॉस्को के सी (धर्मप्रांत) का पद नहीं मलिा है, और फरि भी तुम पहले ही मेरी स्वतंत्रता छीन रहे हो।'

संत लगभग दो साल तक अपमानति होकर मास्को में रहे। उन्हें कज़ान लौटने की अनुमतनिहीं दी गई, भले ही उन्हें कज़ान का आर्चबशिप माना जाता था। इस दौरान, उन्हें बाइलफि्स की नगिरानी में बंदी बनाकर रखा गया। फरि भी, बंदी जीवन में भी, अन्याय के इस बेबाक उजागर करने वाले संत ओप्रचिनकिी के लए एक बड़ी धमकी बने रहे। 6 नवंबर 1567 को, संत हरमन का नधिन हो गया। ऐसा माना जाता है कओिप्रचिनीकी इस पवत्रि व्यक्तकि हत्यारे थे। स्वयिाज्स्की मठ के आर्चमिंड्राइट हेरोडयिन, जो संत के साथ मास्को में थे, ने संत हरमन के शरीर को सेंट नकिोलस के चर्च में दफनाया, जसिे 'द वेट' के नाम से जाना जाता है[7618] ।

लेकनि प्रभु को अपने सेवक को चमत्कारों और वभिन्नि संकेतों के माध्यम से महमिामय करना उचति लगा। सेंट नकिोलस चर्च के पुनर्नरि्माण के दौरान, इस संत की अवशेषों की खोज हुई। 1592 में, सेंट हर्मन के अवशेषों द्वारा कए गए चमत्कारों के बारे में सुनने के बाद, स्वयिाज्स्क के नविासयिों ने ज़ार थयिोडोर इओआनोवचि और सर्व रूस के पैट्रआर्क, जॉब से, संत के अवशेषों को मास्को से स्वयिाज्स्क मठ में स्थानांतरति करने की अनुमतकिा अनुरोध कयिा, जसिकी स्थापना स्वयं संत ने की थी। यह अनुरोध स्वीकार कर लयिा गया: 25 सतिंबर 1592 को, संत के अवशेषों को स्व□ □ज्स्क के नविासयिों द्वारा भव्यता से ग्रहण कयिा गया। इस अवसर पर कई चमत्कारी उपचार और संकेत हुए। जैसे ही संत हर्मन के अवशेषों को स्वयिाज्स्क मठ के डॉर्मशिन चर्च में लाया गया, पूरे मठ में एक अद्भुत सुगंध फैल गई। उस क्षण, दो अंधे लोगों की दृष्टलिौट आई, और कई अन्य चमत्कार हुए। सौ से अधकि वर्षों बाद, 1696 में, संत की अवशेषों की एक बार फरि से पुष्टकिी गई, और उस समय से, पूरे रूस में संत की स्मृतका सार्वभौमकि उत्सव शुरू हो गया। 1704 में, संत की अवशेषों को डॉर्मशिन चर्च के वेदी से चर्च के मुख्य भाग में स्थानांतरति कर दयिा गया। यह स्थानांतरण 23 जुलाई 1704 को मेट्रोपॉलटिन टकिॉन के अधीन हुआ। इस घटना की स्मृतआज भी भक्तपिूर्वक मनाई जाती है।

संत हरमन का जीवन ऐसा था, उनके कार्य ऐसे थे, और मसीह के प्रतउिनके वशि्वास में उनकी दृढ़ता ऐसी थी। आइए, हम भी इस तपस्वी का अनुसरण करें, उनके सदाचारी जीवन का अनुकरण करें, और रूसी चर्च के इस महान संत को अपने आत्माओं की दृष्टकि सामने सदैव रखें, उनके पवत्रि नाम का स्मरण करते हुए, ताकवि आपके लए प्रभु से प्रार्थना करें; महमिा सदैव उसके ही लए हो। आमेन।

ट्रोपारयिन, स्वर 4:

एक महान चरवाहे, एकचत्ति, और सारी दुनयिा के एकदलि शकि्षक, ईश्वर की कलीसयिा की एक उत्साही सेवकिा और मसीह के रहस्यों की एक श्रद्धालु नरि्मात्री, आइए हम, स्वआिज्स्क में ईश्वर-ज्ञ संस्थापक के मठ में

[7618] सेंट नकिोलस द वेट का चर्च मॉस्को के कतिाय-गोरोड में, ज़ार्यादयि में स्थति है।

और कज़ान में संत हर्मन के नव-प्रबुद्ध झुंड में एकत्रित वशि्वासी, भजनों और गीतों के साथ उनकी स्तुति करें, यह कहते हुए: अपनी प्रार्थनाओं से इस मठ और अपनी सारी भेड़ों का दौरा करना न छोड़ें; मठ को पवत्रिता में सुरक्षित रखें, और भेड़ों को वशि्वास और धार्मकिता में अक्षुण्ण रखें।

कॉन्टाकयिन, स्वर 4:

प्रार्थना में जागते हुए, आज्ञाकारिता के एक वफादार प्रबंधक बनकर, आपने धैर्य के द्वारा अपना आत्मा जीता, और वनिम्रता तथा नम्रता के सद्गुणों का अभ्यास कयिा; हे पिता और बशिप जर्मनस, आपने धर्मपरायण वशि्वास और भक्ति से पुरोहितत्व के सिंहासन को सुशोभित कयिा: हमारे प्रभु मसीह से मठ और अपनी सारी भेड़-बकरयिों के लिए प्रार्थना करें, जो आपकी भेड़-बकरयिों की नींव हैं, और उन संतों के लिए एक तेजस्वी अलंकरण हैं जो आपके पदचन्हिों पर चलते हैं।

संत लूक की स्मृति

6 नवंबर को स्मरण कयिा जाता है

हमारे धन्य पिता ल्यूक ससिलिी के टाउरोमेनयिा नगर से आए थे[7619] । युवावस्था में ही वे उत्साहपूर्वक ईश्वर के गरिजाघरों में जाते थे और केवल श्रोता ही नहीं, बल्कि पवत्रि शास्त्रों के आचरणकर्ता भी थे। और जब उनके माता-पिता ने उनके लिए एक पत्नी खोजने का नर्णिय लयिा, तो वह रात में अपने माता-पिता का घर छोड़कर एक अतकिठनि रेगस्तिान में चले गए, जहाँ उन्होंने जंगली जानवरों के बीच जीवन व्यतीत कयिा। 14 दनिों का उपवास करने के बाद, उन्हें ईश्वर और स्वर्गदूतों का दर्शन हुआ। अंत में, वह एक मठ में पहुँचे, जहाँ उन्होंने मठवासी संन्यास के संकल्प लिए और उपवास के कठोर जीवन को अपनाया: तीन या चार दनिों तक वे केवल थोड़ी सी रोटी और पानी खाते थे, और लगभग बलि्कुल भी नहीं सोते थे। वह डेढ़ साल तक इसी तरह रहा। फरि, एक अन्य भक्षिु के साथ, वह वहां से माउंट एटना चला गया, जहां उसने तपस्या की, और केवल उस पहाड़ पर उगने वाली जड़ी-बूटयिों पर ही जीवन यापन कयिा; वह बहुत कम आराम करता था, बहुत कम सोता था, और हर समय एक ही कपड़े में और नंगे पैर रहता था। यह उनका नयिम और प्रथा थी कि जब तक वे भजन संहति का पूरा पाठ समाप्त नहीं कर लेते, तब तक वे अपनी कोठरी से बाहर नहीं नकिलते थे। वे आमतौर पर इसे तीसरे घंटे तक पूरा कर लेते थे। तीसरे घंटे से छठे घंटे तक, आदरणीय साधु परश्रिम करते थे। और छठे घंटे के बाद ही वे अपना काम जारी रखते हुए थोड़ा भोजन करते थे। ऐसा करने से, उन्हें महान अनुग्रह प्राप्त हुआ और वे सभी ज्ञान को समझने लगे, इसलिए कुछ लोग, अपनी हैरानी में, कहते थे: 'उन्हें ये कतिाबें कैसे पता हैं?' उन्हें प्राप्त हुए एक प्रकाशन के बाद, वे एक नश्चिति स्थान के लिए नकिल पड़े, जहाँ उन्होंने बारह भक्षिुओं को इकट्ठा कयिा और उनके जीवन को व्यवस्थति करने का पूरा ध्यान रखा। इस उद्देश्य के लिए, वह बज़िान्टयिम तक भी यात्रा कयिा, जहाँ उन्होंने मठवासी समुदायों के संगठन की जाँच की और इस पर स्थानीय पादरयिों के साथ चर्चा की। वहाँ से वह कोरथि गए, जहाँ एक ही मठ में सात महीने से अधकि नहीं रहने के बाद, वह शांतपिूर्वक प्रभु के पास चले गए।

20 नवंबर

7 नवंबर (पुराने कैलेंडर के अनुसार)

संत हेरॉन और उनके साथयिों की शहादत

7 नवंबर को स्मरणोत्सव

[7619] टैव्रोमेन ससिलिी के पूर्वी तट पर एक प्रमुख शहर है।

संत हेरॉन का पैतृक स्थान दूसरी (महान) कैपडोसिया[7620] था; उनका जन्म तियाना[7621] शहर में, सम्राट डायोक्लेटियन और मैक्सिमियन के शासनकाल के दौरान, स्ट्रैटोनिसे नाम की एक धार्मिक और ईश्वर-भयभीत माँ के घर हुआ था, जो दोनों मूर्तियों के उत्साही पूजक और ईसाइयों के उत्पीड़क थे।

जब सम्राटों के ध्यान में यह बात आई कि आर्मेनिया और कैपाडोसिया के प्रांतों के निवासी, शाही फरमानों की अवहेलना करते हुए, मूर्तियों की पूजा करने से इनकार कर रहे थे, तो उन्होंने, बहुत विचार-विमर्श के बाद, दो चालाक, दृढ़ता से मूर्तिपूजक और क्रूर पुरुषों को चुना, एग्रिकोला और लाइसियस, और पहले वाले को आर्मेनिया तथा बाद वाले को कैपडोसिया भेज दिया, उन्हें यह आदेश देते हुए कि, प्रथम, वे उन सभी स्थानीय ईसाइयों को मृत्युदंड दें जो मूर्तियों की पूजा करने से इनकार करते थे, और द्वितीय, वे उन सभी पुरुषों और युवकों को सेना में भर्ती करें जो शारीरिक रूप से मजबूत और सैन्य सेवा के लिए उपयुक्त थे।

कैपाडोसिया पहुँचने पर, लाइसियस ने भर्ती के लिए योग्य पुरुषों की चारों ओर खोज शुरू कर दी। अन्य बातों के अलावा, उसे हेरॉन के बारे में जानकारी मिली, जिसे एक स्वस्थ और मजबूत व्यक्ति बताया गया था जो अपनी असाधारण बहादुरी के लिए प्रसिद्ध था। लाइसियस ने तुरंत उसे पकड़ने और लाने के लिए सैनिक भेजे। भेजे गए लोगों को हेरॉन घर पर नहीं मिला: वह खेतों में काम कर रहा था। सैनिक वहाँ गए और उसे पकड़ने का प्रयास करने लगे; लेकिन हीरोन, यह समझकर कि उसे सैन्य सेवा के लिए ले जाया जा रहा है, उनके साथ जाने से इनकार कर दिया, क्योंकि वह मूर्तिपूजकों के साथ मिलकर रहने और उनकी सेवा करने को एक ईसाई के लिए हानिकारक मानता था। सैनिकों ने उसे जबरदस्ती ले जाने की कोशिश की, लेकिन एक क्रोधित हीरोन ने हाथ लगने पर लकड़ी का एक टुकड़ा उठा लिया और उन पर वार करने लगा; वह सैनिकों से इतना अधिक बलवान साबित हुआ कि वे जान बचाकर भाग गए, जबकि वह उन पर ऐसे टूट पड़ा जैसे एक शेर बकरियों के बच्चों पर टूटता है। हालाँकि, जिन सैनिकों को उसने तितर-बितर कर दिया था, वे फिर से एक ही जगह पर इकट्ठा हो गए। वे एक-दूसरे से शर्मिंदा थे, न केवल इसलिए कि वे एक अकेले आदमी पर काबू नहीं पा सके थे, बल्कि इसलिए भी कि वे उससे भाग गए थे। वे उस व्यक्ति के पास लौटने से डर रहे थे जिसने उन्हें खाली हाथ भेजा था और उन्होंने आपस में कहा कि अगर वे हीरॉन के बिना लौटे, तो न केवल हर कोई एक अकेले व्यक्ति से हारने के लिए उनका मज़ाक उड़ाएगा, बल्कि उन्हें अपनी कायरता के लिए कड़ी सज़ा भी दी जाएगी। इसलिए, उन्होंने मदद के लिए अपने साथियों को बुलाया और, और भी बड़ी संख्या में, दूसरी बार हीरॉन पर टूट पड़े। यह सुनकर, उसने अठारह ईसाई पुरुषों का एक दल इकट्ठा किया, उनके साथ पास की एक गुफा में शरण ली, और वहाँ से उन मूर्तिपूजकों के हमले को पीछे हटा दिया जिन्होंने उस पर घेरा डाल रखा था। इस बीच, उन्होंने अपने कमांडर को सूचित किया कि हेरॉन और अन्य ईसाइयों ने गुफा में खुद को घेर लिया था, और वे उसे पकड़ने में असमर्थ थे। कमांडर ने उनकी मदद के लिए और भी सैनिक भेजे, फिर भी वे कुछ भी करने में असमर्थ रहे, क्योंकि हेरॉन से डरकर कोई भी गुफा के प्रवेश द्वार के पास जाने की हिम्मत नहीं कर रहा था। तब कमांडर ने हीरॉन के एक दोस्त, जिसका नाम सिरियाकस था, को उनके पास भेजा। सिरियाकस, घटनास्थल पर पहुँचने पर, सैनिकों को गुफा से पीछे हटने की सलाह दी, क्योंकि, उन्होंने कहा, हीरॉन को केवल कोमलता और अच्छे उपदेश से ही मनाया जा सकता है, न कि बलपूर्वक। जब सैनिक पीछे हट गए, तो सिरियाकस हीरॉन से मिलने के लिए अंदर गया और उसे अधिकारियों का विरोध न करने और सेना में भर्ती होने के लिए मना लिया। अपने शांतिपूर्ण शब्दों से, उसने हीरॉन को शांत किया, उसे गुफा से बाहर निकाला और उसे अपनी माँ - एक वृद्ध, अंधी विधवा - के घर ले गया। वह अपने बेटे के लिए जोर-जोर से रोने लगी, उसे अपने बुढ़ापे का सहारा और अपनी अंधी आँखों की रोशनी कहती हुई, और इस बात पर विलाप करने लगी कि अपनी दुखद विधवा-जीवन में उसे अपने एकमात्र सांत्वना से वंचित किया जा रहा था। इस बीच, हीरॉन को घेरने वाले सैनिक उसे अपने साथ जाने के लिए मजबूर कर रहे थे। अपनी रोती हुई माँ, वहाँ इकट्ठा हुए पड़ोसियों और परिचितों को अलविदा कहने के बाद, हीरॉन अपने साथ विक्टर नामक एक रिश्तेदार को ले गया और सैनिकों के साथ मेलिटिनि शहर के लिए रवाना हो गया[7622] , साथ ही उसके दो करीबी रिश्तेदार, मैट्रोनियन और एंथनी, और कई अन्य साथी

[7620] द्वितीय या महान कापपाडोसिया एशिया माइनर के पूर्वी भाग के केंद्र में, यूफ्रेटिस नदी के ऊपरी प्रवाह के पश्चिम में एक बहुत बड़ा क्षेत्र है। कप्पाडोसिया कभी एशिया के प्रमुख राज्यों में से एक था, लेकिन बाद में उसने अपनी स्वतंत्रता खो दी और अंततः(ईस्वी संवत 17 या 18 में) रोमन साम्राज्य का एक प्रांत बन गया।

[7621] टियाना कैपाडोसिया के दक्षिण-पश्चिमी भाग में एक शहर है। इसे अब निग्री या निग्डेल के नाम से जाना जाता है।

[7622] मेलिटिनि अर्मेनिया में एक शहर है, जिसे अब मलाट्या के नाम से जाना जाता है।

वशि्वासी भी थे। यात्री सूर्यास्त से पहले मेलटिनि नहीं पहुँच पाए[7623] और जहाँ कहीं रात ने उन्हें घेर लयिा, वहीं रात बतिाई। रात में, सफेद वस्त्रों में एक आकृतधिन्य हेरॉन के सामने प्रकट हुई और एक कोमल और स्नेहपूर्ण स्वर में उसे घोषणा की:

'उद्धार, हेयरोन, मैं तुम्हारे लिए शुभ समाचार लाया हूँ! तुम सही मार्ग पर चल रहे हो, क्योंकि तुम स्वर्गीय राजा के लिए प्रयासरत हो और इस संसार के क्षणकि गौरव के लिए नहीं लड़ोगे... जल्द ही तुम स्वर्गीय राजा के पास जाओगे और अपने कर्मों के लिए उनसे सम्मान और महमिा प्राप्त करोगे।'

इन शब्दों के साथ, वह आकृतहिीरॉन के हृदय को अकथनीय आनंद से भर गई।

जब वह गायब हो गया, तो ह्येरॉन जाग उठा और उसने अपने साथ मौजूद दोस्तों और रशि्तेदारों को खुशी से घोषणा की:

'मैंने परमेश्वर की कृपा का रहस्य जान लयिा है, और अब मैं आनंद के साथ उस मार्ग पर चल पड़ा हूँ जो मेरे सामने है। एक ही सच्चा खजाना है, एक ही सच्ची वरिासत, एक ही सच्ची संपत्ति—वे चीजें जो स्वर्ग में छपिी हैं; फरि भी सांसारकि वस्तुएं उन्हें प्राप्त करने वालों को कोई लाभ नहीं पहुंचातीं: *'एक मनुष्य के लिए सारी दुनयिा पाना और अपनी आत्मा खोना, क्या लाभ? या एक मनुष्य अपनी आत्मा के बदले में क्या दे सकता है?'* (मत्ती 16:26)[7624] . मेरे लिए, मेरी आत्मा से अधकि कीमती या बेहतर कुछ भी नहीं है... मैंने अपने जीवन का पर्याप्त समय व्यर्थता की सेवा में बतिाया है; अब मैं ईश्वर के पास जा रहा हूँ। केवल एक बात मुझे परेशान करती है – मेरी माँ का दुख, जो एक वृद्ध और कमजोर वधिवा हैं, जनिकी दृष्टि चली गई है और जनिके पास कोई सहायक या रक्षक नहीं है। लेकनि मैं मसीह के लिए मरने जा रहा हूँ, और मैं अपनी माँ को उन पर सौंपता हूँ, जो अनाथों और वधिवाओं के पति हैं।'

यह कहकर, हीरॉन ने अपनी माँ के लिए कुछ आँसू बहाए और अपनी यात्रा पर नकिल पड़ा। मेलटिनि में, संत हीरॉन को तेईस अन्य ईसाइयों के साथ कैद कर दयिा गया। वहाँ उन्होंने अपने साथी कैदयिों से कहा:

'सुनो, दोस्तों और भाइयो, मेरी इस सलाह को मानो, जो इस जीवन में नहीं, बल्कि आने वाले जीवन में तुम्हारे लिए लाभदायक होगी। जो भी ईश्वर का भय मानते हैं, वे सांसारकि, अस्थायी आशीर्वाद नहीं, बल्कि भवषि्य के, शाश्वत आशीर्वादों की कामना करते हैं। आपने सुना है कि कल सुबह वे हमें झूठे मूर्तपिूजक देवताओं को बलदिान चढ़ाने के लिए मजबूर करने का इरादा रखते हैं: आइए हम आज्ञा न मानें, आइए हम मूर्तयिों की पूजा न करें, और आइए हम उन्हें बलदिान न चढ़ाएं; बल्कि हम अपने सच्चे ईश्वर को स्तुति का बलदिान चढ़ाएँ और अपनी प्रार्थनाएँ उसी को अर्पति करें; जब वह उन्हें सुनेगा, तो हमें दृढ़ता और साहस के साथ अपने दुख को सहने की शक्ति देगा, और हमें एक धन्य अंत प्रदान करेगा।

हायरोन के श्रोताओं ने एक स्वर में उत्तर दयिा:

'तेरे वचन हमारे लिए मधु के समान हैं! तू हमें वह बात बता रहा है जो हमारे लिए वास्तव में लाभदायक और उद्धारक है, और हम सब मूर्तयिों की पूजा करके व्यर्थ जीवन जीने के बजाय मसीह के लिए मरना पसंद करेंगे।'

कैदखाने के रक्षकों ने कैदयिों के इस नर्णिय की सूचना स्वयं लाइसयिस को दी। अगले ही दनि सुबह, उसने पवत्रि शहीदों को नर्णिय के लिए कालकोठरी से अपने पास लाने का आदेश दयिा; उसने उन्हें अपने सामने खड़ा कयिा और क्रोधति होकर पूछा:

'कसि राक्षस ने तुम्हें अधकिारयिों के वदि्रोह करने और महान देवताओं की पूजा करने की राजा की आज्ञा की अवहेलना करने के इस पागल नर्णिय के लिए प्रेरति कयिा है?'

'हम नश्चिति रूप से मूर्ख और राक्षसों के खलिौने होते,' संतों ने उत्तर दयिा, 'यदि हम ईश्वर को ही मलिने वाला सम्मान मानव हाथों की लकड़ी और पत्थर की रचनाओं पर अर्पति करते। लेकनि अब हम बुद्धमिानी से काम कर रहे हैं,

---

[7623] उस समय, शहर के द्वार—अर्थात् पूरे शहर को घेरने वाली दीवार में बने प्रवेश द्वार—सूर्यास्त के समय बंद कर दिए जाते थे, और उसके बाद शहर में प्रवेश करना संभव नहीं था।

[7624] उद्धारकर्ता के वचन। *आत्मा को हानि पहुँचाना* अर्थ है उसे सांसारकि व्यर्थता के प्रति पक्षपाती बनाना और शाश्वत आनंद के अयोग्य बनाना, और परणिामस्वरूप, उसे नरक में शाश्वत यातनाओं के अधीन करना।

क्योंकि हम सभी चीजों के स्रष्टा की पूजा करते हैं, जिन्होंने अपने वचन से स्वर्ग और पृथ्वी की रचना की और अपनी lips[7625] की श्वास से उन्हें शून्य से अस्तित्व में लाया।

उस क्षण, मुकदमे में उपस्थित लोगों में से एक ने लाइसियस को हेरॉन की ओर इशारा करते हुए कहा:

'यहाँ वह व्यक्ति है जिसने आपके दूतों का विरोध किया; वही है जिसने वह सब कुछ किया है जो आपने सुना है।'

लाइसियस ने हेरॉन को देखते हुए पूछा कि वह कहाँ का रहने वाला है, और जब हेरॉन ने अपनी मातृभूमि और जन्मस्थान का नाम बताया, तो उसने उससे फिर पूछा:

'क्या यह तुम ही थे जिन्होंने अपनी शारीरिक शक्ति पर भरोसा करके राजा की आज्ञा की अवहेलना की और तुम्हारे पीछे भेजे गए सैनिकों को पीटा?'

'हाँ, मैं ही था,' पराक्रमी हेरॉन ने निडरता से उत्तर दिया, '*"हे प्रभु, क्या मैं उनसे घृणा न करूँ जो तुझसे घृणा करते हैं, और उनसे नफरत न करूँ जो तेरे विरुद्ध उठते हैं?"* (भजन संहिता 138:21)। इसीलिए मैंने उन्हें पीटा और कायर खरगोशों की तरह भगा दिया।'

ये शब्द सुनकर, लाइसियस क्रोध से आग-बबूला हो गया और, हीरॉन की बहादुरी और ताकत को उचित सम्मान दिए बिना, उसे उसकी अवज्ञा के लिए फटकारते हुए कहा:

'तुम्हारी मूर्खता ने तुम्हें इतनी धृष्टता पर पहुँचा दिया है कि तुमने राजा की आज्ञा की अवज्ञा की है, मेरे आदेश को भी नहीं माना, और हमारे भेजे हुए लोगों को पीटा है। इसके लिए, मैं आज्ञा देता हूँ कि तुम्हारा यह अभद्र हाथ, जिसने तुम्हारे पागल मन की बात मानी, कोहनी से काट दिया जाए।'

और तुरंत संत हायरोन का हाथ काट दिया गया, जबकि अन्य संतों को उसी यातनाकर्ता के आदेश पर निर्दयतापूर्वक लंबे समय तक पीटा गया।

फिर उन्हें सभी को वापस जेल में डाल दिया गया, जहाँ उन्होंने ईश्वर का धन्यवाद किया कि उन्होंने उन्हें अपने पवित्र नाम के लिए ऐसी यातनाएँ सहने के योग्य समझा। लेकिन उनमें से एक, उपर्युक्त विक्टर, जो संत हेरॉन का रिश्तेदार था, मिली पिटाई से कमजोर पड़ गया था और भविष्य में और भी अधिक पिटाई से डरकर, उसने गुप्त रूप से उस अधिकारी को बुलाया जो पकड़े गए और यातनाएं दिए गए ईसाइयों का रिकॉर्ड रखता था, और विनम्रतापूर्वक उससे अपने नाम को काट देने का अनुरोध किया, मसीह के लिए पीड़ित कैदियों की सूची से विक्टर का नाम हटा दिया गया, और बदले में उसे एक संपत्ति दिने का वादा किया गया। वादे किए गए उपहार से रिश्वत लेकर, उस अधिकारी ने विक्टर की मांग मान ली – उसने रजिस्टर से उसका नाम मिटा दिया और उसी रात उसे जेल से रिहा कर दिया। लेकिन विक्टर, जेल से निकलने के बाद, जल्द ही मर गया और इस प्रकार वह अपनी संपत्ति और अपना जीवन, साथ ही शहीद का ताज भी खो बैठा।

जब सुबह हुई, तो संत हीरोनमिस को यह घटना पता चली और वे असीम दुख से भरकर अपने संबंधी के लिए ऊँची आवाज़ में रो पड़े, और पुकार उठे:

'हाय विक्टर! तुमने यह क्या किया? ओह, तुमने कितनी भारी कीमत चुकाई है! तुमने खुद को दुश्मन के हवाले क्यों किया? तुमने महिमा के मुकुट के बजाय भागने की लज्जा को क्यों चुना? तुमने शाश्वत जीवन को अस्थायी जीवन के लिए क्यों बदला? तुमने अनंत आनंद से ऊपर अस्थायी राहत को क्यों रखा? ओह, तुच्छ घावों से हुई तुम्हारी क्षणिक पीड़ा ने तुम्हें कितना भ्रमित कर दिया है—ऐसे घाव जो ईश्वर के न्याय में तुम्हारा इंतजार कर रहे शाश्वत यातनाओं के सामने कुछ भी नहीं हैं!

शहीदों की पंक्ति से गिरे गए व्यक्ति के लिए रोने के बाद, संत हेयरॉन ने अपने दो रिश्तेदारों, एंथनी और मैट्रोनियन, जो उनका अनुसरण कर रहे थे, को अपने पास बुलाया और उनसे कहा:

'मेरी अंतिम इच्छा सुनो और यहाँ से लौटने पर इसे पूरा करना। पिसीडिया में स्थित मेरी संपत्ति[7626] मैं अपनी बहन थियोटिमा को विरासत में देती हूँ, ताकि उसे इससे अपने भरण-पोषण के लिए आवश्यक चीज़ें मिल सकें, और वह मेरी मृत्यु के दिन मेरे लिए एक स्मृति सेवा आयोजित कर सके। मेरी शेष सारी संपत्ति मैं अपनी माँ को उनकी विधवा होने और बच्चों वाली विधवा होने के कारण विरासत में देता हूँ; उन्हें मेरा कटा हुआ हाथ भी दे दो और उन्हें कहो कि वे एन्क्रा शहर के

[7625] शहीद लाइसियस का उत्तर इन शब्दों पर आधारित है: *'प्रभु के वचन से आकाश बने, और उनकी सारी सेना उनके होठों के साँस से'* (भजन संहिता 32:6)।

[7626] पिसीडिया एशिया माइनर में रोम का एक भीतरी प्रांत था, जो कापाडोसिया के दक्षिण-पश्चिम में स्थित था। यहीं पर प्रेरित संत पौलुस ने ईसाई धर्म का प्रचार किया था।

राज्यपाल, कुलीन रस्टकिस[7627] को लिखें, उनसे वादसिाना[7628] में उन्हें एक घर देने के लिए कहें, जहाँ मेरा हाथ रखकर उसे वदिा कयिा जा सके।

अपने संबंधयिों के लिए यह वसीयत छोड़कर, धन्य ह्येरॉन ने शांतपिूर्वक अपने शहीद होने की प्रतीक्षा की। और इस प्रकार, पाँचवें दनि, लाइसयिस ने एक बार फरि न्यायाधीश की कुर्सी पर अपनी जगह ली और संतों को बुलाकर उन्हें मूर्तयिों की पूजा करने के लिए मजबूर करने लगा। उसने उन्हें मसीह से भटकाने के लिए चापलूसी और धमकयिों, दोनों का भरपूर इस्तेमाल कयिा, लेकनि उसे कोई सफलता नहीं मलिी; जसि पर उसने पहले उन्हें डंडों से बेरहमी से पटिवाने का आदेश दयिा, और फरि उन्हें तलवार से सरि कलम करने की सजा सुनाई। बहुत यातनाओं के बाद, पवत्रि शहीदों को मौत की सजा सुनाई गई। धन्य जेरोम के नेतृत्व में, उन्होंने मृत्युदंड के स्थान पर जाते समय आनंदपूर्वक भजन के शब्दों को गाया:

'धन्य हैं वे जनिका आचरण नरि्दोष है, जो यहोवा की व्यवस्था पर चलते हैं' (भजन संहति 118:1)। नष्पिादन स्थल पर पहुँचने पर, वे घुटने टेककर प्रभु से प्रार्थना करने लगे:

– हे प्रभु यीशु मसीह, हमारी आत्माओं को ग्रहण करो!

तब उनके पवत्रि सरि तलवार से काट दए गए। एंथनी और मैट्रोनयिन ने लाइसयिस से अपने संबंधी हेरॉन का शरीर ले जाने की अनुमतदिेने का अनुरोध कयिा, और जब लाइसयिस ने मना कर दयिा, तो उन्होंने उससे वनिती की कवि ह उन्हें कम से कम हेरॉन का कटा हुआ सरि तो दे दे। उसने उत्तर दयिा कवि ह सरि केवल उसके वज़न के बराबर सोने के बदले में ही सौंपेगा। एंथनी और मैट्रोनयिन इस बात पर बहुत दुखी हुए कउिनके पास उतना सोना नहीं था जतिना लाइसयिस ने सरि के लिए माँगा था, हालाँकि, नस्संदेह, शहीद का सम्मानति सरि अतुलनीय रूप से अधकि मूल्यवान था। तब ईश्वर ने क्रसिाफयिस नामक एक धनी और प्रतष्ठिति व्यक्तकिो पवत्रि शहीद हीरॉन के सरि के लिए फरौती का भुगतान करने की प्रेरणा दी: उसने लाइसयिस को उतना ही सोना दयिा जतिना कसिरि का वजन था, और उसे लेकर सम्मानपूर्वक अपने पास रख लयिा। तब लालची लाइसयिस ने संत के कटे हुए हाथ की भी तलाश शुरू कर दी, इस उम्मीद में कउिसे उसके लिए भी सोना मलिेगा; लेकनि जब एंथनी और मैट्रोनयिन को इस बात का पता चला, तो वे रात में उस पवत्रि हाथ को अपने साथ ले जाकर अपने देश भाग गए, जबकहिीरोन और अन्य पवत्रि शहीदों के शव, जन्हिें उनके साथ सरि कलम कयिा गया था, अन्य ईसाइयों द्वारा गुप्त रूप से ले जाया गया और कसिी छपिे हुए स्थान पर दफनाया गया। उपरोक्त भाइयों ने संत हेरॉन का हाथ उनकी माँ, स्ट्रैटोनकिा के पास लाया और उन्हें पवत्रि अवशेष भेंट कए। माँ ने अपने प्रयि पुत्र का हाथ—जो मसीह के लिए काटा गया था—उसे अपने आँसुओं से धोया, एक माँ के चुंबन से चूमा, और उसे अपनी आँखों से लगा लयिा। अपने बेटे के लिए प्रसन्न होते हुए और साथ ही अपने स्वाभावकि शोक को मानते हुए, उसने अपने आँसुओं के बीच कहा:

'मेरे प्रयि पुत्र, जसि मैंने जीवति और स्वस्थ जन्म दयिा था! अब मेरे पास तुम्हारे मृत शरीर का केवल एक छोटा सा हस्सिा है, फरि भी यह मेरे भीतर और भी गहरा दुख जगाता है। हाय, मेरे बेटे! मैंने तुम्हें दर्द में जन्म दयिा, तुम्हें कठनिाइयों से पाला, बुढ़ापे में तुम्हारे सहारे की, बीमारी में सहारा की, और अपने दुखों में सांत्वना की आशा की थी; और फरि भी, इसके बजाय, मैंने तुम्हें खो दयिा, जो मेरी अंधी आँखों की रोशनी थे। लेकनि मैं क्यों रो रही हूँ, जबकमिुझे तो इस बात पर आनंदति और प्रसन्न होना चाहिए कमिैं एक शहीद की माँ हूँ, कमिैंने अपने गर्भ का फल ईश्वर को अर्पति कयिा है, कतिुम, मेरे प्रयि पुत्र, वैसे नहीं मरे जैसे लोग आम तौर पर मरते हैं? क्योंकशिहीद की मृत्यु, जसिसे तुम परलोक सधिार गए, अनेक और महान आशीर्वादों की ओर ले जाती है! लेकनि, यद्यपतिुम मुझसे दूर हो गए हो, मुझे पूरी तरह से न छोड़ना, मेरे पुत्र, और अपने प्रार्थनाओं में मेरे लिए प्रभु के समक्ष मध्यस्थता करना, जसिके लिए तुमने अपना रक्त बहाया, ताकवि ह मुझे भी शीघ्र ही इस जीवन से मुक्त कर दे, जो परश्रिम से भरा और हर प्रकार की वपित्तसि घरिा हुआ है।

इस वलिाप के बाद, स्ट्रैटोनकिा ने संत का हाथ उस स्थान पर रखा जसि उन्होंने स्वयं इंगति कयिा था, और उन्होंने जो कुछ भी वरिासत में छोड़ा था, उसे पूरा कयिा। और क्रसिाफयिस, जसिने संत हेरॉन के सरि के लिए सोने की फरौती

[7627] एन्सीरा – एशयिा माइनर में गलातयिा के रोमन प्रांत की राजधानी, जसि अब अंगोरा के नाम से जाना जाता है। गलातयिा एशयिा माइनर प्रायद्वीप के ठीक केंद्र में स्थति था, जबकएिन्सीरा प्रांत के उत्तर-पश्चमिी छोर पर स्थति था।

[7628] यह ज्ञात नहीं है कि'वाडसिानमोंट' से क्या अभप्रिेत था। ऐसा माना जाता है कयिह वासडोन या वालवाडोन के समान ही है – कैपाडोसयिा का एक शहर।

चुकाई थी, कुछ समय बाद उस स्थान पर एक चर्च बनवाया जहाँ पवित्र शहीदों का सिर कलम किया गया था, और सम्मानपूर्वक शहीद का सिर उसमें रख दिया, और पवित्र त्रिमूर्ति की महिमा की।

कॉन्टाकियन, स्वर 8:

उनका शहीद चेहरा दीप्तिमान है, उनका समूह प्रकाशमान है; ज्ञान में हमारे पास आकर, उन्होंने आज चर्च को अद्भुत किरणों से प्रकाशित किया है। अत; जब हम उनकी सम्मानित स्मृति का उत्सव मनाते हैं, हम आपसे, हमारे उद्धारकर्ता, विनती करते हैं: उनकी प्रार्थनाओं द्वारा, हमें कष्टों से बचाएँ, ताकि हम आपको गा सकें: अल्लेलुया।

पवित्र शहीदों मेलासिप्पस, कैसिनिया और एंटोनिनस की स्मृति

7 नवंबर को स्मरणोत्सव

पवित्र शहीदों मेलासिप्पस, उनकी पत्नी कैसिनिया और उनके पुत्र एंटोनिनस ने जूलियन द एपोस्टेट[7629] के शासनकाल में एन्किया[7630] शहर में यातनाएँ सहन कीं। एंटोनिनस को जेल में डाल दिया गया, जबकि मेलासिप्पस और कैसिनिया को फांसी दे दी गई, जिसके बाद उनके यातनाकारों ने उनके शरीरों की खाल उधेड़ना और उन्हें जलाना शुरू कर दिया। इस प्रक्रिया में संत कसिनीया के स्तन काट दिए गए, जबकि संत मेलासिप्पस की टाँगें घुटनों से काट दी गईं। जब ये यातनाएँ हो रही थीं, तब उनके बेटे एंटोनिनस को कालकोठरी से बाहर लाया गया। अपने माता-पिता की पीड़ा देखकर, वह उन्हें सांत्वना देने लगा और उनके शरीर के कटे हुए अंगों को लेकर उन्हें चूमने लगा। ऐसी क्रूर यातनाओं के बीच, मेलासिपस और कैसिनिया ने अपनी धार्मिक आत्माओं को प्रभु के हवाले कर दिया। फिर एंटोनिनस ने जूलियन के चेहरे पर थूक दिया। क्रूर यातना देने वाले ने आदेश दिया कि अंटोनिनस को फांसी दी जाए और उसके शरीर की खाल उधेड़ी जाए; उसकी पिंडलियाँ तोड़ दी गईं और उसके पैरों में एक भारी पत्थर बाँध दिया गया; फिर, उसे पेड़ से उतारने के बाद, उन्होंने उसे एक लाल-गरम लोहे की जाली पर लिटा दिया। इन सभी यातनाओं के बाद, शहीद का सिर मुंडवा दिया गया, उसकी गर्दन में एक पत्थर बाँध दिया गया, और उसे शहर में घुमाया गया। इससे संतुष्ट न होकर, उसे सैन्य कमांडर एग्रिप्पीनस के पास भेजा गया, जिसने उसे एक लाल-गरम भट्टी में फेंकने और फिर जानवरों के सामने फेंककर खा जाने का आदेश दिया; लेकिन पहले और दूसरे दोनों ही यातनाओं में संत को कोई चोट नहीं लगी। इन यातनाओं को देखने वाले चालीस युवक मसीह में विश्वास करने लगे, जिसके लिए उनका सिर कलम कर दिया गया। संत एंटोनिनस को एक लाल-गरम लोहे के बिस्तर पर लिटाया गया और लोहे की छड़ों से पीटा गया। लेकिन जब संत तब भी सुरक्षित रहे, तो यातना देने वाले ने उनका सिर कलम करने का आदेश दिया।

पवित्र शहीदों अवक्त, टौरियिन और थिस्सलोनिका की स्मृति

7 नवंबर को स्मरण किया जाता है

पवित्र शहीद थिस्सलुनीका एक मूर्तिपूजक पुरोहित की बेटी थीं। ईसाई धर्म की शिक्षा प्राप्त करने के बाद, उनका बपतिस्मा हुआ और वह एक सच्ची ईसाई बन गईं, इसलिए, अपने पिता द्वारा मसीह का त्याग करने और मूर्तियों की पूजा करने के लिए दिए गए दबाव के बावजूद, उन्होंने उनकी आज्ञा नहीं मानी; इसके लिए, उनके दुष्ट पिता ने उन्हें नग्न कर दिया और खंभों से इतनी बुरी तरह पीटा कि उनकी पसलियाँ टूट गईं। फिर उसने उसे घर से निकाल दिया और उसकी जायदाद से बेदखल कर दिया, जिससे उसे अपनी माँ द्वारा दिए गए थोड़े से साधनों पर शहर के बाहर रहने के लिए मजबूर होना पड़ा। पुजारी के इस कृत्य के बारे में जानकर, अक्टा और टौरियिन नामक दो पुरुषों ने उसे डाँटना शुरू कर दिया। हालाँकि, वह उस प्रांत के राज्यपाल के पास गया और उसे सूचित किया कि वे संत थिस्सलुनीके का पक्ष ले रहे थे। राज्यपाल ने उन्हें मसीह में उनके विश्वास के लिए यातनाएँ दीं: उन पर पत्थर फेंके गए, उन्हें आग में फेंका गया और अंत

[7629] जूलियन ने 361 से 363 तक शासन किया।

[7630] एन्सीरा फ्राइजिया (एशिया माइनर का एक पश्चिमी क्षेत्र) की राजधानी थी।

में, एक साथ बाँधकर एक झील में फेंक दिया गया; फिर भी पवित्र पुरुष सुरक्षित रहे। फिर उनकी तलवार से गर्दन काट दी गई। थिस्सलुनीके को भी मसीह में अपने विश्वास की गवाही देने के लिए यातनाएं दी गईं, जिससे उसकी मृत्यु हो गई। उसका शरीर एम्फिपोलीस[7631] में पवित्र शहीदों अवक्त और टौरियन के साथ सम्मानपूर्वक दफनाया गया।

परम पूजनीय लाजरस की स्मृति

7 नवंबर को स्मरण किया जाता है

आदरणीय लाजरस का जन्म एशिया माइनर के मैग्नेशिया नगर में हुआ था[7632] । उनके जन्म से पहले, ईश्वर ने एक विशेष चमत्कार द्वारा इस प्रकाश के संसार में आगमन का पूर्वाभास दिया: उनके माता-पिता के घर पर इतना महान प्रकाश चमका कि वहाँ मौजूद महिलाएँ भाग गईं, और केवल उनकी माता ही बची रहीं, जो अपने गर्भ में उस धन्य बालक को धारण किए हुए थीं। उनके जन्म के समय, वे सीधे खड़े हो गए और प्रार्थना की मुद्रा में, अपने हाथ छाती पर बाँधे, पूर्व की ओर मुड़ गए। बचपन से ही वह अपनी द्वेष-रहितता, नम्रता, करुणा और गरीबों के प्रति प्रेम के लिए विशिष्ट थे। अपनी युवावस्था में, अच्छी शिक्षा प्राप्त होने के बावजूद, उन्होंने सभी सांसारिक सुखों से परहेज किया और अपनी आत्मा की धार्मिक प्रवृत्ति का अनुसरण करते हुए, यरूशलेम में पवित्र स्थान पर पूजा करने के लिए निकल पड़े, जहाँ उन्होंने सेंट सावस के मठ में प्रवेश किया। उन्होंने वहाँ दस साल बिताए, आज्ञाकारिता और हर सद्गुण में अपने सभी साथी भिक्षुओं से आगे निकल गए, और यरूशलेम के पैट्रिआर्क द्वारा पुरोहित के रूप में अभिषिक्त हुए। लेंट (Lent) के पवित्र मौसम के दौरान, वह मठ से निकल गए और बिना कुछ साथ लिए एक पहाड़ पर चले गए, और जंगली plants[7633] पर जीवित रहे। वहाँ उन्हें एक आवाज़ सुनाई दी जिसने उन्हें अपने देश लौटने का आदेश दिया; रास्ते में, उन्हें शत्रुतापूर्ण आकृतियों के रूप में बाधाओं का सामना करना पड़ा, लेकिन उन्होंने उन पर विजय प्राप्त की। अपने देश वापस आने पर, वे अपनी माँ से मिले, लेकिन उनके साथ नहीं रुके। एकांत जीवन की तलाश में, लाजरस एफिसुस के पास निर्जन माउंट गलेसियस पर बस गए। यहाँ, प्रार्थना करते समय, एक बार उन्हें निम्नलिखित दर्शन हुआ: उन्होंने स्वर्ग की ओर उठते हुए आग के एक स्तंभ को देखा, जिसे गाते हुए स्वर्गदूतों की भीड़ ने घेर रखा था: 'ईश्वर फिर से उठे, और उसके शत्रु बिखर जाएँ!' उन्होंने इसे ऊपर से एक संकेत माना और, बाइज़ेन्टाइन सम्राट कॉन्स्टेंटिन मोनोमाकस की सहायता से[7634] , उस स्थान पर मसीह के पुनरुत्थान को समर्पित एक चर्च का निर्माण किया। संत लाजरस ने चर्च के बगल में एक स्तंभ स्थापित किया, जिस पर उन्होंने उपवास और प्रार्थना के तपस्वी अभ्यासों में खुद को समर्पित कर दिया, और स्तंभ-तपस्वी के जीवन की गर्मी, ठंड और अन्य कठिनाइयों को सहन किया। ईश्वर ने उन्हें चमत्कार और भविष्यवाणी का वरदान दिया, ताकि धर्मपरायण लोग, जो उनके मार्गदर्शन के लिए उत्सुक थे, उनके चारों ओर इकट्ठा होने लगे। ईश्वर ने उनकी मृत्यु की भविष्यवाणी की थी, लेकिन भाइयों ने उनसे विनती की कि वे उनके लिए ईश्वर से अपना जीवन बढ़ाने के लिए कहें, और ईश्वर ने उनसे वादा किया कि वे अगले 15 वर्षों तक जीवित रहेंगे। 15 वर्ष बीत जाने के बाद, ठीक उनके जन्म से पहले की तरह, उनके स्तंभ पर एक स्वर्गीय प्रकाश चमका। जब उनकी मृत्यु हो गई और भाई उनके लिए रो रहे थे, इस बात पर शोक मनाते हुए कि उन्होंने उनके लिए कोई वसीयत नहीं छोड़ी थी, तो वह उठे और, जैसे जीवित हों, उन्होंने उन्हें अपनी वसीयत दी; फिर वह लेट गए और, भाइयों के अनुरोध पर, वसीयत पर हस्ताक्षर करने के लिए दूसरी बार उठे। वे 72 वर्ष की आयु में[7635] में निधन कर गए, उन्हें स्तंभ में दफनाया गया और उनकी मृत्यु के बाद उनके पवित्र अवशेषों से बहने वाले कई चमत्कारी चंगाइयों द्वारा उन्हें महिमामय किया गया।

[7631] पूर्वी मैसेडोनिया का एक शहर।

[7632] मैग्नेशिया – एशिया माइनर के उत्तर-पश्चिम में, हर्मेस नदी पर स्थित एक लिडियन शहर।

[7633] आमतौर पर, भिक्षु सिरिपुस्टनाया सप्ताह के दौरान ग्रेट लेंट के लिए मठ छोड़ देते थे, पहले एक विदाई अनुष्ठान करने के बाद, इसीलिए इस रविवार को 'विदाई रविवार' के रूप में जाना जाने लगा। भिक्षु लाजरस शनिवार को मठ में लौट आते थे।

[7634] कॉन्स्टेंटाइन मोनोमाखोस ने 1042 से 1054 तक शासन किया।

[7635] उनका निधन 1053 में हुआ।

21 नवंबर

8 नवंबर (पुराने कैलेंडर के अनुसार)

संत माइकल महादूत और अन्य अमूर्त स्वर्गीय सेनाओं का पर्व

8 नवंबर को स्मरणोत्सव

पवित्र चर्च ने विधर्मियों और मूर्तिपूजकों द्वारा स्थापित स्वर्गदूतों की प्राचीन अधर्मी पूजा को अस्वीकार करने के बाद, ईश्वर-प्रेरित पितृगणों की परंपरा के अनुसार पवित्र स्वर्गदूतों के सिनैक्सिस (एकत्रित आराधना) का धार्मिक उत्सव अपनाया। यहाँ तक कि पुराने नियम में भी, जब लोग परमेश्वर, अपने सृष्टिकर्ता से मुँह मोड़ लेते थे, तो उन्होंने परमेश्वर की सृष्टि और अपने हाथों के कामों की उपासना क करना शुरू कर दिया, दृश्य प्राणियों की समानता में मूर्तियाँ बनाकर, और सूर्य, चंद्रमा और सितारों को बलिदान चढ़ाकर, जिनमें, उनके विचार में, एक जीवित आत्मा निवास करती थी। यह अभिव्यक्ति निर्गमन 20 से ली गई है – *'तुम अपने लिए कोई मूर्ति या ऊपर स्वर्ग में, या नीचे पृथ्वी पर, या पृथ्वी के नीचे जल में जो कुछ भी है, उसकी कोई प्रतिमा नहीं बनाओगे* – उस समय लोग स्वर्गदूतों की भी पूजा करते थे और उन्हें बलिदान देते थे, जैसा कि राजाओं की पुस्तक में लिखा है: 2 राजा 23 *'और उसने यहूदा के राजाओं द्वारा यहूदा के नगरों और यरूशलेम के आसपास के ऊँचे स्थानों पर धूप जलाने के लिए नियुक्त याजकों को हटा दिया—जो बाल, सूर्य, चंद्रमा, नक्षत्रों और आकाश के सारे सैन्य दल को धूप जला रहे थे*\' लूका 2 – *'और अचानक स्वर्गदूत के साथ स्वर्गीयों की सेना की एक बड़ी भीड़ प्रकट हुई, जो परमेश्वर की स्तुति करते हुए कह रही थी'*, अर्थात्, स्वर्गदूतों को, क्योंकि वे स्वर्गीयों की सेना हैं, जैसा कि सुसमाचार में कहा गया है: स्वर्गदूतों की ऐसी अनुचित आराधना पवित्र प्रेरितों के दिनों में व्यापक थी। पवित्र प्रेरित पौलुस इस प्रकार की अनुचित श्रद्धा के बारे में निम्नलिखित कहते हैं:

कुलुस्सीयों 2:18–19 – *'कोई भी तुम्हें स्व-नियुक्त नम्रता और स्वर्गदूतों की उपासना के बहाने धोखा न दे, जो उन बातों में दखल देता है जिन्हें उसने नहीं देखा, अपने सांसारिक मन के गर्व से फूला हुआ और सिर से*, अर्थात् मसीह से, *नहीं जुड़ा रहता*। क्योंकि उस समय कुछ ऐसे विधर्मी थे जो, भले ही दिखावे में नम्र थे, परन्तु अपने हृदय में घमण्डी थे, यह सोचकर कि वे अपनी संयम-भरी और पवित्र जीवन-शैली से स्वर्गदूतों का अनुकरण कर रहे थे। उन्होंने यह सिखाया कि स्वर्गदूतों की उपासना उसी प्रकार की जानी चाहिए जैसे स्वयं परमेश्वर की। बाद में, अन्य विधर्मी प्रकट हुए, जो यह उपदेश देते थे कि देवदूत दृश्यमान सृष्टि के स्रष्टा थे और, अदेह होने के कारण, वे परमेश्वर के पुत्र मसीह से अधिक ऊँचे और श्रद्धा के अधिक योग्य थे; जबकि महादूत माइकल को यहूदियों का परमेश्वर कहा जाता था[7636] । अंत में, कुछ अन्य थे जो जादू-टोने में लिप्त थे और लोगों को धोखा देते थे; स्वर्गदूतों के भेष में, वे राक्षसों को बुलाते और उनकी सेवा करते थे, उन्हें स्वर्गदूत कहते हुए। विशेष रूप से, ऐसी विधर्मियाँ कोलोसा में फैल गईं[7637] , जो लाओदिकिया के मेट्रोपोलिस के अधीन थी, जहाँ कई लोग गुप्त रूप से देवदूत पूजा के इस अधर्मी रूप का अभ्यास करते थे, जो मूर्तिपूजा के समान था[7638] । हालाँकि, जब स्वर्गदूतों की इस गलत श्रद्धा की निंदा की गई और उसे अस्वीकार कर दिया गया, तो परमेश्वर के

[7636] उल्लेखित विधर्मियों के संबंध में, साइप्रस के संत एपिफानियस अपनी पुस्तक *ऑन हेरेसीज़* में निम्नलिखित कहते हैं: 'उन्हें सटनलियिन कहा जाता था—इस विधर्म के संस्थापक सटनिल के नाम पर।' सैटरनिल सीरिया में, डैनफसि के पास रहता था, जहाँ उसने सबसे पहले अपने उपदेश का प्रसार किया। उसका सक्रिय सहायक वासिलिडि था, जिसने मिस्र में इस उपदेश का प्रचार किया। स्वर्गदूतों के संबंध में उनका उपदेश इस प्रकार था: सात स्वर्गदूतों ने दुनिया और उसमें मौजूद हर चीज़ की रचना की। मनुष्य की सृष्टि इस प्रकार हुई: स्वर्गदूतों ने एकत्र होकर योजना बनाई और संयुक्त रूप से मनुष्य को एक दिव्य प्रतिमा के सदृश बनाया जो ऊपर से उतरी थी... लेकिन जब मनुष्य की सृष्टि हो गई, तो स्वर्गदूत अपनी शक्तिहीनता के कारण, उसकी सृष्टि को पूरा करने में असमर्थ थे। मनुष्य पृथ्वी पर रेंगते कीड़े की तरह निर्जर पड़ा था, जब तक कि सर्वोच्च शक्ति ने, झुककर और दया दिखाते हुए, अपनी ही प्रतिमा और समानता के लिए, दया से अपनी शक्ति की एक चिंगारी प्रकट नहीं की और इस प्रकार उसे उससे बहाल और जीवंत नहीं कर दिया। यह चिंगारी मानव आत्मा है, जिसे निश्चित रूप से बचाया जाना चाहिए।'

[7637] *कोलोसाई* प्राचीन फ्रीजिया (एशिया माइनर में) में लिकस नदी (मींडर की एक सहायक नदी) पर बसा एक घनी आबादी वाला शहर था। ईस्वी वर्ष 65 में, यह शहर, लाओदिकिया और हेरापोलिस के पड़ोसी शहरों के साथ, एक भयानक भूकंप से लगभग पूरी तरह से नष्ट हो गया था, लेकिन बाद में इसका पुनर्निर्माण किया गया और यह 12वीं शताब्दी तक फलता-फूलता रहा। बाद में इसे कोनी के नाम से जाना गया।

[7638] जैसा कि लाओदिकिया की परिषद के नियम 35 से स्पष्ट है, यह नियम उन विधर्मी लोगों की निंदा करता है जो ईश्वर से नहीं, बल्कि केवल स्वर्गदूतों से प्रार्थना करते हैं, मानो वे दुनिया के सृष्टिकर्ता और शासक हों।

सेवकों और मानव जाति के रक्षकों के रूप में उनकी एक धार्मिक और उचित श्रद्धा और उत्सव स्थापित किया गया[7639] । और कोलोसाए के उसी क्षेत्र में, जहाँ पहले स्वर्गदूतों की पूजा गुप्त रूप से और अधर्मी तरीके से की जाती थी, स्वर्गदूतों के सिनाक्सिस का ऑर्थोडॉक्स उत्सव खुले तौर पर मनाया जाने लगा, और स्वर्गदूतों के नेता - महाधर्माध्यक्ष सेंट माइकल के नाम पर भव्य चर्चों का निर्माण किया गया। इस प्रकार, खोनी में, चमत्कारी झरने के ऊपर, एक भव्य और अद्भुत चर्च बनाया गया, जिसमें सर्वपवित्र महादूत माइकल स्वयं संत आर्चिप्पस को प्रकट हुए। पवित्र स्वर्गदूतों के सिनैक्सिस का पर्व नवंबर में मनाया जाता है - जो मार्च से नौवां महीना और दुनिया की रचना से पहला महीना है - स्वर्गदूतों के विभिन्न आदेशों की संख्या को दर्शाने के लिए, जिनके बारे में संत डायोनिसियस द एरोपागिट ने बताया, संत पौलुस प्रेरित के एक शिष्य, जिन्हें तीसरे स्वर्ग में उठाया गया था, जहाँ उन्होंने पवित्र स्वर्गदूतों के पदों के बीच अंतर देखा और इसे अपने शिष्य डायोनिसियस को समझाया। 2 कुरिन्थियों 12 – 'मैं *मसीह में एक मनुष्य को जानता हूँ जो चौदह वर्ष पहले (चाहे शरीर में, मैं नहीं जानता; चाहे शरीर के बाहर, मैं नहीं जानता: परमेश्वर जानते हैं), तीसरे स्वर्ग तक उठाया गया* था'।

देवदूतों के नौ क्रमों को तीन पदानुक्रमों में विभाजित किया गया है, प्रत्येक में तीन क्रम शामिल हैं: उच्चतम, मध्य और निम्नतम।

पहली—सबसे ऊँची पदानुक्रम और परम पवित्र त्रिमूर्ति के सबसे *निकट—सराफिम, करूबिम* और *सिंहासन* से मिलकर बनी है /

सभी से निकटतम सृष्टिकर्ता के, ईश्वर-प्रेमी छह-पंखों वाले *सेराफिम* हैं, जैसा कि भविष्यवक्ता यशायाह ने देखा, जो कहते हैं: यशायाह 6 – *'सेराफिम उसके चारों ओर खड़े थे; उनमें से प्रत्येक के छह पंख थे: दो-दो पंखों से उन्होंने अपना चेहरा ढका, दो-दो पंखों से उन्होंने अपने पैर ढके, और दो पंखों से वे उड़ रहे थे*\' वे आग के समान हैं, क्योंकि वे उसी की प्रत्यक्ष उपस्थिति में खड़े हैं जिसके बारे में लिखा है: इब्रानियों 12 – *'क्योंकि हमारा परमेश्वर भस्म करने वाली आग है*'।

ऐसी महिमा की उपस्थिति में खड़े होकर, सेराफिम आग के समान हैं, जैसा कि कहा गया है:

दानिय्येल 7 – *'मैंने अंततःदेखा कि सिंहासन स्थापित किए गए, और प्राचीनकाल का एक पुरुष आसीन हुआ; उसका वस्त्र हिम के समान श्वेत था, और उसके सिर के बाल शुद्ध ऊन के समान थे; उसका सिंहासन अग्नि की लपट के समान था, और उसके पहिये जलती हुई आग के* थे'। निर्गमन 24 – *'पर्वत की चोटी पर यहोवा की महिमा का दर्शन इस्राएलियों की आँखों के सामने एक भस्म करने वाली आग के समान था*\'

भजन संहिता 103 – *'आप अपने स्वर्गदूतों को आत्माएं बनाते हैं, और अपने सेवकों को जलती हुई आग*\' वे परमेश्वर के प्रति प्रेम से प्रज्वलित होते हैं और दूसरों को भी उसी प्रेम के लिए प्रेरित करते हैं, जैसा कि उनके नाम से ही स्पष्ट है, क्योंकि हिब्रू में 'सराफिम' का अर्थ 'प्रज्वलित' होता है।

सराफिम के बाद, अथाह प्रकाश में निवास करने वाले सर्वज्ञ ईश्वर के सामने, बहुनेत्र *करूबी* अकथनीय तेजस्विता में खड़े हैं; वे निम्नतर आदेशों की तुलना में अधिक चमकते हैं, हमेशा ईश्वर के ज्ञान, उनके रहस्यों की समझ और उनकी बुद्धिमत्ता की गहराई के प्रकाश से दीप्तिमान रहते हैं, स्वयं प्रबुद्ध और दूसरों को प्रबुद्ध करने वाले हैं। उनका नाम – 'केरूबीम' – का हिब्रू से अनुवाद 'महान समझ' या 'ज्ञान का प्रवाह' है, क्योंकि केरूबीम के माध्यम से ही दूसरों पर ज्ञान प्रदान किया जाता है और ईश्वर के दर्शन और ज्ञान के लिए मन की आँखों को प्रबुद्धता प्रदान की जाती है।

इसके बाद, उस के सामने जो ऊँचे और उत्कृष्ट सिंहासन पर विराजमान है, 'ईश्वर-वाहक' *सिंहासन* खड़े हैं (जैसा कि संत डायोनिसियस द एरोपाजिट उन्हें कहते हैं), क्योंकि उन पर, तर्कसंगत सिंहासनों पर की तरह (जैसा कि संत मैक्सिमिस द कन्फेसर लिखते हैं), ईश्वर तर्कसंगत रूप से विश्राम करता है। उन्हें 'ईश्वर-वाहक' प्रकृति से नहीं, बल्कि अनुग्रह और उनकी सेवा के कारण कहा जाता है, जबकि यीशु मसीह का शरीर (जैसा कि संत बेसिल द ग्रेट लिखते हैं) को 'ईश्वर-वाहक' प्रकृति से कहा जाता है, क्योंकि यह स्वयं परमेश्वर वचन के साथ अविभाज्य रूप से एकीकृत है। सिंहासन

[7639] लाओडिकिया की स्थानीय परिषद, जिसमें नियम 35 ने स्वर्गदूतों की अधार्मिक पूजा को खारिज कर दिया और उनकी उचित पूजा तथा उनके पर्व के उत्सव को स्थापित किया, संत सिल्वेस्टर, रोम के पोप के समय में, निकिया की पहली सार्वभौमिक परिषद से कई साल पहले हुई थी। लाओडिसिया की यह परिषद 319 में हुई, हालांकि कुछ स्रोतों के अनुसार, 320 या 321 में; परिषद में 32 बिशप उपस्थित थे, जिसकी अध्यक्षता लाओडिसिया के मेट्रोपॉलिटन नुनेचियस ने की थी।

भी, अपनी स्वभावकि प्रकृतसि नहीं, बल्कअिपनी सेवा के लिए उन पर प्रदान की गई अनुग्रह से 'ईश्वर-वाहक' कहलाते हैं – क्योंकवि रहस्यमय और अकथनीय रूप से ईश्वर को अपने भीतर धारण करते हैं। उन पर एक अकल्पनीय तरीके से नर्भिर होकर, ईश्वर अपना धर्मी न्याय करते हैं, जैसा कदिाऊद ने कहा: भजन संहति 9:5 – 'क्योंकतिू ने मेरे मुकदमे और मेरी वाद-ववािद का नर्णिय कयिा है; हे धर्मी न्यायी, तू न्याय-सहिासन पर वरिाजमान है'।

इसलए, मुख्य रूप से उनके माध्यम से परमेश्वर का न्याय प्रकट होता है: वे उनके न्याय की सेवा करते हैं, उसकी महमिा करते हैं, और पृथ्वी के न्यायाधीशों के सहिासनों[7640] पर न्याय की शक्तउिंडेलते हैं, जसिसे राजाओं और शासकों को धर्मी न्याय करने में मदद मलिती है।

मध्य पदानुक्रम में पवत्रि स्वर्गदूतों के तीन आदेश भी शामलि हैं: *प्रभुत्व, शक्तयिाँ* और *अधकिार।*

डोमनियिन्स (Dominians) इसलए कहा जाता है क्योंकवि उन अन्य स्वर्गदूतों पर शासन करते हैं जो इन आदेशों का पालन करते हैं, और स्वयं स्वतंत्र हैं। जैसा कसिंत डायोनसियिस द एरोपागटि कहते हैं, उन्होंने दासता के भय को त्याग दयिा है, और वे ईश्वर की नश्विार्थ, स्वेच्छा और आनंदपूर्वक सेवा करते हैं। वे पृथ्वी पर ईश्वर द्वारा नयिुक्त प्राधकिरणों को ववेकिपूर्ण शासन और बुद्धमिानी से प्रशासन की शक्तभिी प्रदान करते हैं, ताकवि उन्हें सौंपे गए क्षेत्रों का अच्छी तरह से शासन कर सकें। इसके अलावा, वे हमें अपने इंद्रयिों पर काबू करना, अपने भीतर अनुचति इच्छाओं और जुनून को वश में करना, शरीर को आत्मा के अधीन करना, अपनी इच्छा पर शासन करना, और सभी प्रलोभनों से ऊपर उठना सखिाते हैं।

ये शक्तयिाँ, दव्यि शक्तसि परपिूर्ण, अपने प्रभु, परम और सर्वशक्तमिान की इच्छा को तुरंत पूरा करती हैं, जो शक्तशिाली और सामर्थी हैं। वे महान चमत्कार करते हैं और ईश्वर के संतों पर, जो ऐसे अनुग्रह के योग्य हैं, चमत्कार करने का वही अनुग्रह प्रदान करते हैं, ताकवि वे चमत्कार कर सकें – हर प्रकार की बीमारयिों को ठीक करना और भवष्यि की भवष्यिवाणी करना। पवत्रि शक्तयिाँ उन लोगों की भी मदद करती हैं जो उन पर लगाए गए कर्तव्यों के बोझ तले दबे और थके हुए हैं – इस प्रकार उनके नाम, 'शक्तयिाँ' की व्याख्या होती है – और दुर्बल लोगों की दुर्बलताओं को वहन करती हैं। वे प्रत्येक व्यक्तको धैर्य में भी मजबूत करते हैं—ताकवि वे शोक से अभभिूत न हों, बल्कएिक दृढ़ आत्मा और साहस के साथ, वनिम्रता से, सभी बातों के लिए परमेश्वर का धन्यवाद करते हुए, सभी कष्टों को सहन कर सकें, जो हमारे भले के लिए सभी बातों को नर्धिारति करते हैं।

शक्तयिों को ऐसा इसलए कहा जाता है क्योंकउिनके पास शैतान पर अधकिार है, राक्षसों की शक्तको वश में करने का, लोगों में उत्पन्न होने वाले प्रलोभनों को दूर करने का, और राक्षसों को कसिी को भी उतनी हद तक नुकसान पहुँचाने से रोकने का जतिना वे चाहें। शक्तयिाँ अच्छे तपस्वयिों को उनके आध्यात्मकि संघर्षों और परश्रिमों में मजबूत करती हैं, उनकी रक्षा करती हैं ताकवि वे आध्यात्मकि राज्य को न खो दें; *साथ ही* उन लोगों की मदद करती हैं जो जुनून और वासनाओं के खलिाफ संघर्ष करते हैं, ताकवि वे बुरे वचिारों और शत्रु की बदनामी को दूर कर सकें, और शैतान पर वजिय प्राप्त कर सकें।

नचिली पदानुक्रम में भी तीन आदेश हैं: *प्रधानताएँ, महादूत* और *स्वर्गदूत।*

उपाध्यक्षताओं को ऐसा इसलए कहा जाता है क्योंकवि वे नम्नि श्रेणी के स्वर्गदूतों पर अधकिार का प्रयोग करते हैं, और उन्हें ईश्वर की आज्ञाओं का पालन करने के लिए नर्देशति करते हैं। उन्हें ब्रह्मांड के शासन और सभी राज्यों और प्रधानताओं, भूमऔिर सभी लोगों, जनजातयिों और भाषाओं की रक्षा का भी प्रभार सौंपा गया है; क्योंकि प्रत्येक राज्य, जनजातऔिर लोगों के लिए, प्रधानताएँ के रूप में जाने जाने वाले स्वर्गीय क्रम से, उनकी पूरी भूमके लिए एक वशिष्टि संरक्षक और शासक है[7641] । इसके अलावा – इस दैवीय क्रम की सेवा (संत ग्रेगरी द डायलॉजस्टि की व्याख्या के अनुसार) लोगों को यह नर्देश देने में नहिति है कवि वे प्रत्येक प्राधकिारी को उनके पद के अनुरूप सम्मान दें। अंत में, इस आदेश के स्वर्गदूत योग्य लोगों को सम्मान के वभिन्नि पदों पर पदोन्नत करते हैं और उन्हें अधकिार को अपने लाभ या हति के लिए, आत्म-बड़प्पन या व्यर्थ महमिा के लिए नहीं, बल्कईश्वर के सम्मान के लिए, उनकी पवत्रि महमिा के प्रसार और वृद्धके लिए, और अपने पड़ोसयिों के लाभ के लिए स्वीकार करने का नर्देश देते हैं – अपने संरक्षण में आने वाले सभी लोगों की सामान्य जरूरतों की सेवा करने के लिए।

[7640] 'पृथ्वी के न्यायाधीशों के सहिासन' – एक रूपक अभव्यिक्तजिो पृथ्वी के न्यायाधीशों के अधकिार की सीमाओं को संदर्भति करती है।

[7641] यह शकि्षा कप्रित्येक राष्ट्र और प्रत्येक राज्य का अपना स्वर्गदूत होता है, पैगंबर दानयिेल (दानयिेल 10:13) के शब्दों पर आधारति है, जो फारस और यहूदा के राज्यों के स्वर्गदूतों का उल्लेख करते हैं।

महादूतों को महान उद्घोषक कहा जाता है, जो महान और गौरवशाली की घोषणा करते हैं। उनकी सेवा (जैसा कि महान डायोनीसियस द एरोपागिट कहते हैं) भविष्यवाणियों, ईश्वर की इच्छा के ज्ञान और समझ को प्रकट करने में निहित है, जिसे वे उच्चतर आदेशों से प्राप्त करते हैं और निम्नतर आदेशों - स्वर्गदूतों - को और उनके माध्यम से मानवता को घोषित करते हैं। हालांकि, संत ग्रेगरी द डायलॉजिस्ट कहते हैं कि महादूत लोगों में पवित्र विश्वास को मजबूत करते हैं, पवित्र सुसमाचार के ज्ञान के प्रकाश से उनके मन को प्रबुद्ध करते हैं और धर्मपरायण विश्वास के रहस्यों को प्रकट करते हैं।

स्वर्गीय पदानुक्रम में, *देवदूत* सभी रैंकों में सबसे निचले और मानवता के सबसे करीब हैं। वे ईश्वर के छोटे रहस्यों और उद्देश्यों को प्रकट करते हैं और लोगों को ईश्वर के लिए सद्गुणों और धार्मिकता से जीवन जीने की शिक्षा देते हैं। वे हम में से प्रत्येक विश्वासी पर नजर रखने के लिए नियुक्त किए गए हैं: वे सदाचारियों को सहारा देते हैं ताकि वे गिरें नहीं, गिरे हुए लोगों को उठाते हैं, और हमें कभी नहीं छोड़ते, भले ही हमने पाप किया हो, क्योंकि वे हमेशा हमारी मदद के लिए तैयार रहते हैं, बशर्ते हम स्वयं ऐसा चाहें।

लेकिन सभी उच्चतर स्वर्गीय आदेशों को 'देवदूत' नाम से जाना जाता है। यद्यपि उनके पद और परमेश्वर द्वारा उन्हें दिए गए अनुग्रह के अनुसार उनके अलग-अलग नाम हैं (जैसे सेराफिम, करूबिम, सिंहासन और अन्य आदेश), फिर भी उन्हें सभी को सामान्यतः स्वर्गदूत कहा जाता है, क्योंकि 'स्वर्गदूत' शब्द किसी प्राणी का नाम नहीं बल्कि एक सेवा का नाम है, जैसा कि लिखा है:

'क्या वे सब सेवा करने वाली आत्माएँ नहीं हैं, जिन्हें उन लोगों की सेवा के लिए भेजा गया है जो उद्धार के वारिस होने वाले हैं?' (इब्रानियों 1:14)

हालाँकि उनकी सेवा विविध है और एकसमान नहीं है, और प्रत्येक पद की अपनी विशिष्ट सेवा है; क्योंकि सर्व-ज्ञानी सृष्टिकर्ता अपने उद्देश्य के रहस्यों को सभी को समान रूप से प्रकट नहीं करते हैं, बल्कि उच्चतरों के माध्यम से वे निम्नतरों को प्रबुद्ध करते हैं, उन्हें अपनी इच्छा प्रकट करते हैं और उन्हें उसे पूरा करने का आदेश देते हैं, जैसा कि भविष्यवक्ता ज़कार्याह की पुस्तक में स्पष्ट रूप से देखा जाता है। वहाँ यह वर्णित है कि भविष्यवक्ता से बात करने के बाद, एक स्वर्गदूत दूसरे से मिला, जिसने उसे भविष्यवक्ता के पास लौटने और यरूशलेम के भविष्य के भाग्य का खुलासा करने की आज्ञा दी: *'और देखो, जो स्वर्गदूत मुझसे बात कर रहा था, वह निकल गया, और एक अन्य स्वर्गदूत उससे मिलने आया, और उसने उससे कहा: "जल्दी जा, इस युवक* (अर्थात् भविष्यवक्ता जकर्याह) *से कह दे: 'यरूशलेम अपने भीतर रहने वाले लोगों और पशुओं की बहुतायत के कारण अपने आसपास बसा रहेगा।'" 'और मैं उसके लिए,' प्रभु कहते हैं, 'उसके चारों ओर आग की एक दीवार बनूँगा, और मैं उसके बीच में महिमा पाऊँगा'* (ज़ेकार्याह 2:3–5)। इस पर चिंतन करते हुए, संत ग्रेगरी कहते हैं:

'जब एक स्वर्गदूत दूसरे से कहता है, *"जा, बता"*, तो इसमें कोई संदेह नहीं कि कुछ स्वर्गदूत दूसरों को भेजते हैं: निम्न पद वाले भेजे जाते हैं, जबकि उच्च पद वाले भेजते हैं'[7642] ।

इसी तरह, दानियेल की भविष्यवाणी में हमें मिलता है कि एक स्वर्गदूत दूसरे स्वर्गदूत को नबी को दर्शन की व्याख्या करने का आदेश देता है (दानियेल 8:16)। इससे यह स्पष्ट होता है कि उच्च क्रम के स्वर्गदूत अपने सृष्टिकर्ता की दिव्य इच्छा और उद्देश्य को निम्न क्रम के स्वर्गदूतों को प्रकट करते हैं, उन्हें प्रबुद्ध करते हैं, और उन्हें मानव जाति के पास भेजते हैं।

लड़ाकू ऑर्थोडॉक्स चर्च, जिसे स्वर्गदूतों की सहायता की आवश्यकता है, इस महीने नवंबर के आठवें दिन, यानी, सभी नौ आदेशों के स्वर्गदूतों का पर्व विशेष प्रार्थनाओं के साथ मनाती है, जैसा कि उचित है, नवें महीने में, क्योंकि स्वर्गदूतों के ये सभी नौ क्रम प्रभु के न्याय के दिन इकट्ठा होंगे, जिसे चर्च के दैवीय शिक्षकों द्वारा आठवां दिन कहा जाता है; क्योंकि, वे कहते हैं, सात हजार वर्षों के अंत में, आठवां दिन, मानो, आ जाएगा।

दानियेल 8 – *'और मैं उलाई के बीच से एक मानुष्य का स्वर सुन, जो पुकार कर कहने लगा: "गब्रियेल! इस दर्शन का अर्थ उसे समझा दे!"'*

मत्ती 25 – *'जब मनुष्य का पुत्र अपनी महिमा में आएगा, और सब पवित्र स्वर्गदूत उसके साथ होंगे, तब वह अपनी महिमा के सिंहासन पर बैठेगा।'* मत्ती 24 – *'और वह अपनी स्वर्गदूतों को जोर से तुरही बजाने के साथ भेजेगा, और*

[7642] संत ग्रेगरी द डायलॉजिस्ट। सुसमाचार पर टिप्पणी 4।

वे उसके चुने हुओं को आकाश के एक छोर से दूसरे छोर तक, अर्थात् पूर्व, पश्चिम, उत्तर और दक्षिण से *इकट्ठा करेंगे*।

काश कि वे हमें भी इकट्ठा कर लें, सम्मान के साथ जश्न मनाने वाली सभा को, ताकि हम परमेश्वर के चुने हुओं की कतार में शामिल हो सकें!

ऊपर उल्लेख किए गए स्वर्ग के नौं दैवीय आदेशों से ऊपर, परमेश्वर ने पवित्र महादूत माइकल को उनका कमांडर और नेता नियुक्त किया है, जो परमेश्वर के एक वफादार सेवक हैं[7643] । जब शैतान घमंड में विनाशकारी रूप से गिरा, ईश्वर से विधर्मी हो गया और गर्ता में उतर गया, तब उसने स्वर्गदूतों की सभी श्रेणियों और सेनाओं को इकट्ठा करके ऊँचे स्वर में पुकारा:

'आओ हम अपने सृष्टिकर्ता के सामने दृढ़ खड़े रहें और उस बात का विचार न करें जो परमेश्वर के विरुद्ध है! आओ विचार करें कि उन पर क्या बीता जो हमारे साथ बनाए गए थे और जो अब तक हमारे साथ दिव्य प्रकाश में सहभागी थे! आओ विचार करें कि कैसे, अहंकार के कारण, वे अचानक प्रकाश से अंधकार में गिर गए और ऊँचाई से गर्त में फेंक दिए गए! आओ विचार करें कि कैसे प्रभात का तारा[7644] , भोर में स्वर्ग से उदय होकर, पृथ्वी पर गिरकर चूर-चूर हो गया![7645]

देवदूतों की संपूर्ण सभा से इस प्रकार कहकर, वह सबसे आगे खड़ा हो गया और, सेराफिम और करूबिम और सभी स्वर्गीय आदेशों के साथ, परम पवित्र, एकसार और अविभाज्य त्रिमूर्ति, एकमात्र ईश्वर की महिमा करने लगा, एक स्वर में यह गंभीर भजन गाते हुए:

और वे एक-दूसरे को पुकारकर कहने लगे: "पवित्र, पवित्र, पवित्र है सेनाओं का यहोवा! सारी पृथ्वी उसकी महिमा से परिपूर्ण है!" (यशायाह 6:3). पवित्र स्वर्गदूतों की यह सभा स्वर्गदूतों की परिषद् कहलाती है, क्योंकि वे एक साथ और एक स्वर में पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा – पवित्र त्रिमूर्ति – की महिमा करते हैं; उसे, जो पृथ्वी पर निवास करते हैं, हमसे भी सदा महिमा प्राप्त हो। आमीन।

ट्रोपारियन, स्वर 4:

स्वर्गीय सेनाओं के महासेनापतियों, हम, जो सदैव अयोग्य हैं, आपसे विनती करते हैं: अपनी प्रार्थनाओं द्वारा, हमें अपनी अदेह महिमा के पंखों की छत्रछाया से ढकिए, और हमें बचाइए, क्योंकि हम नम्रतापूर्वक प्रणाम करके पुकारते हैं: हमें विपत्ति से उबारिए, क्योंकि आप स्वर्गीय सेनाओं के सेनापति हैं।

कॉन्टाकियन, स्वर 2:

हे परमेश्वर के महादूतों, दिव्य महिमा के सेवकों, स्वर्गदूतों के अगुवों और मानव जाति के मार्गदर्शकों, हमारे लिए मध्यस्थता करें और अदेह महादूतों के रूप में महान दया माँगें।

[7643] शब्द के अर्थ के अनुसार, माइकल एक ऐसे स्वर्गदूत हैं जिनके पास असाधारण, अद्वितीय आध्यात्मिक शक्ति है। दानियेल की पुस्तक में, उन्हें यहूदी लोगों के एक विशेष रक्षक और संरक्षक के रूप में प्रस्तुत किया गया है (दानियेल 10:13, 21, 12:1)। संत जॉन द थियोलोजियन के प्रकाशन (जिसे ग्रीक में एपोकेलिप्स के नाम से जाना जाता है) में, महादूत माइकल को ईसाइयों के रक्षक और उसी के रूप में चित्रित किया गया है जिसने अपने स्वर्गदूतों के साथ मिलकर ड्रैगन को नीचे फेंका: *'स्वर्ग में युद्ध हुआ; माइकल और उसके स्वर्गदूतों ने उस अजगर से लड़ें, और वह प्राचीन साँप, जिसे शैतान और इब्लीस कहते हैं, अपने स्वर्गदूतों सहित पृथ्वी पर गिरा दिया गया'*; फिर, अपने क्रोध में, उसने मसीह की कलीसिया को हानि पहुँचाना शुरू कर दिया और संतों के विरुद्ध युद्ध करता रहा (प्रकाशितवाक्य 12:1–17); फिर भी, विश्वासियों के लिए सांत्वना के रूप में, प्रकाशितवाक्य की पुस्तक यह प्रकट करती है कि हमारे उद्धार के शत्रु के विरुद्ध यह युगों-पुराना संघर्ष मेम्ने की पूर्ण विजय में समाप्त होगा (प्रकाशितवाक्य 19:1–21, 20:1–15), और यह कि साँप के खिलाफ संघर्ष में हमारे पास सर्वोच्च रक्षक और संरक्षक हैं, जिनका नेतृत्व महादूत सेंट माइकल करते हैं। ऑर्थोडॉक्स चर्च में महादूत सेंट माइकल की पूजा सबसे प्राचीन काल से चली आ रही है।

[7644] प्रभात का तारा – भोर की किरण। यहाँ, प्रभात का तारा गिरे हुए स्वर्गदूत, शैतान, को संदर्भित करता है, जिसे परमेश्वर ने दृश्यमान संसार से पहले एक प्रकाशमान आत्मा के रूप में, एक उगते हुए, सुपष्ट भोर की किरण की तरह बनाया था; लेकिन, अहंकारी हो जाने और परमेश्वर के विरुद्ध विद्रोह करने के बाद, वह गर्त में गिर गया और अनंतकालिक निंदा के अधीन हो गया।

[7645] संत ग्रेगरी द डायलॉजिस्ट। सुसमाचार पर टिप्पणी 4।

22 नवंबर

9 नवंबर (पुराना कैलेंडर)

हमारी पूजनीय माता मत्रोना का जीवन और कर्म

9 नवंबर को स्मरणोत्सव

संत मत्रोना का जन्म पम्फलिया के पेरगा में[7646] में धर्मपरायण माता-पिता के यहाँ हुआ था। जब वह वयस्क हुईं, तो उनकी शादी डोमशियिन नामक एक सम्माननि और कुलीन व्यक्तसि हुई, और वह एकमात्र बेटी की माँ बनीं, जसिका नाम उन्होंने थयिोडोटा रखा।

एक दनि, मत्रोना के पतउिनके साथ बज़िान्टयिम गए। वहाँ, ईश्वर के गरिजाघरों का भ्रमण करते और उनमें उसकी प्रार्थना में डूबी हुई मत्रोना की मुलाकात यूजेनयिा नाम की एक युवती से हुई, जसिने उपवास और तपस्या के द्वारा अपनी कुँवारी अवस्था को बनाए रखा था, और दनि-रात प्रार्थना में स्वयं को समर्पति कर दयिा था।

यूजेनयिा के उदाहरण का अनुसरण करते हुए, मैट्रोना ने चर्च कभी नहीं छोड़ा; वह सुबह से शाम तक वहाँ प्रार्थना में रहती थीं, और रात में ही घर लौटती थीं; और अगली सुबह वे प्रार्थना करने के लिए चर्च वापस चली जाती थीं, और संयम तथा उपवास के द्वारा अपने शरीर को, जो यौवन के चरम पर था, दंडति करती थीं। उस समय उसकी उम्र पच्चीस साल थी और उसने ईश्वर से वनिम्रतापूर्वक प्रार्थना की कि वह, जैसा कि वह स्वयं सबसे अच्छी तरह जानते हैं, उसे ववािह से मुक्त कर दें, ताकि वह बनिा कसिी बाधा के प्रभु की सेवा कर सके। उसके पतडिोमशियिन ने, यह देखकर कि उसकी पत्नी हर सुबह जल्दी घर से नकिल जाती थी और केवल शाम को लौटती थी, यह संदेह करना शुरू कर दयिा कि वह प्रार्थना करने नहीं जा रही थी, बल्कि किसी दुष्ट काम में लप्ति होने जा रही थी। इसलिए, वह उससे नाराज़ हो गया और उसे घर से बाहर नहीं जाने देता था। मैट्रोन ने आँसू भरी आँखों से उससे वनिती की कि वह उसे चर्च जाने से न रोके; हालाँकि, उसकी वनिती ठुकरा दी गई, और इसलिए वह बहुत दुखी हुई, क्योंकि वह *'दुष्टता के तंबुओं में रहने के बजाय परमेश्वर के भवन के द्वार पर खड़ी रहना' पसंद* करती थी (भजन संहति 83:11)। एक दनि मत्रोना ने अपने पतसि प्रार्थना करने के लिए गरिजाघर जाने की वनिती की। पवत्रि प्रेरतिों के गरिजाघर की ओर जल्दी से जाती हुई, उसने परमेश्वर के सामने अपना हृदय खोलकर रख दयिा, और गहरी भावना के साथ उनसे प्रार्थना की कि वे उसे उस भारी जुए से मुक्त करें जो परमेश्वर के ध्यान लगाने में एक बड़ी बाधा था, और उसे व्यर्थ और उथल-पुथल भरी दुनयिा से बचाकर, मौन के जीवन की ओर ले जाएँ, जहाँ वह बनिा कसिी बाधा के केवल उन्हें ही प्रसन्न कर सके। वह पूरे दनि इसी तरह की प्रार्थना में मग्न रहीं।

जब देर शाम हुई, तो चर्च के द्वारपाल ने सभी को जाने के लिए कहा ताकि वह चर्च के दरवाजे बंद कर सके। फरि धन्य मत्रोना भी चर्च से बाहर आईं; हालाँकि, वह घर लौटना नहीं चाहती थीं, बल्कि बरामदे में ही रुक गईं। वहाँ उनकी मुलाकात सुसन्ना नाम की एक युवती से हुई, जसिने कम उम्र से ही स्वयं को मसीह को समर्पति कर दयिा था और चर्च के पास उपवास और प्रार्थना में अपना जीवन बतिाया था। सुसन्ना से परचिति होने के बाद, मत्रोना ने उसकी कोठरी में जाकर सारी रात उससे बात की, और उसे अपने और अपने जीवन के बारे में सब कुछ बताया। सुसन्ना ने उसे सांत्वना दी और प्रभु में आशा रखने के लिए प्रोत्साहति कयिा, जो अपनी इच्छा के अनुसार मानव जातकि उद्धार करते हैं:

उसने कहा, *'प्रभु ऐसे मनुष्य के पाँवों को थामे रहता है, और वह उनकी चाल से प्रसन्न रहता है'* (भजन संहति 36:23)।

सुसान्ना के साथ इस बातचीत के बाद, मत्रोना ईश्वर के प्रतऔर भी अधकि प्रेम से भर गईं और उन्होंने अपने पतसि भाग जाने का नश्चिय कयिा, ताकि उनसे छपिकर, वह गुप्त रूप से ईश्वर की सेवा कर सकें।

[7646] पर्गा – एशयिा माइनर के दक्षणिी भाग में पम्फलियिा का एक शहर, जो सेस्ट्रा नदी के दाहनिे कनिारे पर स्थति था, जहाँ प्राचीन काल में प्रसद्धि एक मूर्तपिूजक ग्रीक-रोमन देवी आर्टेमसि का मंदरि था; रोमन साम्राज्य के पतन के समय, पर्गा प्रांत का प्रशासनकि केंद्र था। आज, इस स्थल पर तुर्की का शहर बर्गामा स्थति है।

जब सुबह हुई, तो मत्रोना उपर्युक्त यूजेनयिा के पास गईं और उसे अपना इरादा बताया।

यूजेनयिा ने उससे कहा:

'सबसे पहले, बहन, तुम्हें अपनी बेटी थयिोडोटा का प्रबंध करना होगा, जो अभी बहुत छोटी है; ज़रा सोचो, वह अपनी माँ के बनिा कैसे रह पाएगी?'

मैट्रोना ने उत्तर दयिा:

'मैं अपनी बेटी थयिोडोटा को ईश्वर और माता सुसानना के हवाले करती हूँ; जहाँ तक मेरी बात है, मैं रेगस्तिान में चली जाऊँगी, जहाँ ईश्वर मेरा मार्गदर्शन करेंगे।'

अपनी बेटी को घर से चुपके से नकिालकर, उसने उसे धन्य सुसानना को सौंप दयिा, और वनिती की कि वह थयिोडोटा को अपनी संतान के रूप में स्वीकार करे और उसे प्रभु के भय में पाल-पोसे। सुसान्ना ने, यह देखकर कि मत्रोना ईश्वर के प्रति उत्कट प्रेम से जल रही थी और मौन जीवन की अटूट इच्छा से परपिूर्ण थी, उस बालकिा को अपनी पुत्री के रूप में स्वीकार कर लयिा, जबकि मत्रोना ने ईश्वर से पुकारा कि वह उसे सही मार्ग पर मार्गदर्शन करें, और भजन के शब्दों में उनसे कहा:

'मुझे वह मार्ग दखिा, [हे प्रभु,] जसिमें मुझे चलना चाहिए' (भजन संहति 142:8)।

थकान के कारण थोड़ी देर के लिए सो जाने पर, मैट्रोना ने अपने सपने में एक दर्शन देखा: उसे ऐसा लगा कि वह एक ऐसे आदमी से भाग रही थी जो उसका पीछा कर रहा था; जब वह उसे पकड़ने लगा, तो वह कुछ भक्षिुओं के पास भागी, जन्हिोंने उसे उसके पीछा करने वाले से छपिा दयिा। मैट्रोना ने इस दृष्टि का यह अर्थ नकिाला कि उसे पुरुष का भेष धारण करके कुछ समय के लिए पुरुषों के मठ में जाना चाहिए, क्योंकि वहाँ वह अपने पति और सभी परचितिों से बच सकती थी। मैट्रोन ने अपने बाल छोटे कटवा लिए और, एक नपुंसक के वस्त्र पहनकर, धन्य यूजेनयिा के साथ पवत्रि प्रेरतिों के चर्च में गई, जहाँ, प्रार्थना करने के बाद, उसने यह जानने की इच्छा से कि क्या उसका इरादा ईश्वर को प्रसन्न कर रहा है, पवत्रि सुसमाचार खोला, और वहाँ उसने नम्निलखिति शब्द देखे: *'यदि कोई मेरे पीछे आना चाहता है, तो वह अपना इन्कार करे, और अपना सलीब उठाए, और मेरे पीछे हो ले'* (मत्ती 16:24)।

इन शब्दों में यह धन्य आशा पाकर कि ईश्वर उसकी सहायता करेंगे, मत्रोना ने यूजेनयिा को चूमा और उससे वदिा होकर सम्माननीय वासयिन के मठ में चली गईं, जहाँ उन्हें एक नपुंसक के रूप में स्वीकार कर लयिा गया। जब उनसे उनका नाम पूछा गया, तो उन्होंने अपना नाम बाबलि बताया। भ्रातृत्व में स्वीकार कएि जाने के बाद, उसने एक सदाचारी संन्यासी जीवन जयिा, वनिम्रता से अपने कर्तव्यों का पालन कयिा, उपवास और जागरण के माध्यम से अपने शरीर को वश में कयिा, और लगातार प्रार्थना में लगी रही। मत्रोना इस बात का बहुत ध्यान रखती थी कि कोई यह न जान पाए कि वह एक महलिा है, और इसलिए उसने गहरी मौनता बनाए रखी और खुद को सभी से अलग रखा। फरि भी, संपूर्ण मठवासी समुदाय उसके महान सदाचार के जीवन से चकति था, उसकी करतूतों की प्रशंसा करता था, और उसे एक आदर्श भक्षिु मानता था।

इस प्रकार संत मत्रोना काफी लंबे समय तक भक्षिुओं के बीच मठ में रहीं, और अपने गुणों से तारों के बीच चंद्रमा की तरह चमकती रहीं। एक दनि ऐसा हुआ कि वह अन्य भक्षिुओं के साथ बगीचे में काम कर रही थीं। बर्नबास नामक एक भक्षिु, उसके साथ खेत जोतते हुए, जज्ञिासावश उसके चेहरे पर नज़र पड़ी और, दोनों कानों में छेद देखकर, पूछा:

'तुम्हारे कान क्यों छदिवाए हुए हैं?'

परम पुण्यवती ने उससे कहा:

'भाई, तुम्हें मट्टिी जोतनी चाहिए, न कि दूसरों के चेहरे घूरने चाहिए, क्योंकि यह संन्यासी जीवन के वरिुद्ध है। लेकनि चूँकि तुमने मेरे छदिवाए हुए कान देख ही लिए हैं, तो मैं तुम्हें इसका कारण बताती हूँ: जब मैं एक छोटी लड़की थी, तो मेरे शक्षिक मुझसे बहुत प्यार करते थे और मुझे सोने के आभूषणों से सजाते थे; उन्होंने मेरे कान कीमती बालयिाँ पहनाने के लिए छदिवाए थे।'

इस प्रकार धन्य मत्रोना ने बरनबास को उत्तर दयिा, और उसका हृदय भय से भर गया; वह लंबे समय तक इस भय में वचिार करती रही कि उसका रहस्य प्रकट न हो जाए, और इसलिए उसने प्रभु से प्रार्थना की:

'हे प्रभु, तेरे ही आज्ञा से मैं इस संन्यासी नविास में आई हूँ; तूने मुझे बुलाया है, और मेरा मन लौटने का नहीं है। अत; अपनी कृपा से मेरी दुर्बलता को ढक और जसि जीवन को मैंने अपनाया है, उसे अच्छे अंत तक पहुँचा, ताकि मुझमें तेरी आशा में लज्जा न हो!'

लेकिन ईश्वर, जो मानवता से प्रेम करते हैं, ने अपनी अकथनीय और अगम्य रीति से, दो मठों के मठाधीशों को यह प्रकट करना उचित समझा कि वह एक महिला थी, ताकि वह मठ जीवन के प्रति और भी अधिक उत्साह दिखा सके।

एक दिन, जब आदरणीय वासियन सो रहे थे, तो एक सुंदर और तेजस्वी पुरुष उनके सामने प्रकट हुआ और उसने तीन बार दोहराया:

'नपुंसक बाबिला, जो आपके मठ में एक भिक्षु के रूप में रहता है, एक महिला है!'

अब्राहम के मठ के मठाधीश, धन्य अकाकियोस को भी यही दर्शन हुआ। सुबह होने पर, वासियन ने अपने वरिष्ठ, जॉन नामक एक भिक्षु को बुलाया, और उसे वह सब बताया जो उन्होंने देखा था। जब वे बात कर ही रहे थे, कि एबॉट अक्काकियोस द्वारा ' ' से भेजा गया एक संदेशवाहक पूजनीय वासियन के पास यह खबर लेकर आया कि, उसी रात, उन्हें एक दर्शन में यूनाक वावेला के बारे में यह प्रकट हुआ था कि वह वास्तव में एक महिला थी। रेवरेंड, हैरान होकर और इस रहस्य को और भी पूरी तरह से जानने की इच्छा से (क्योंकि उन्हें डर था कि यह किसी तरह का दुश्मन का धोखा हो सकता है, और उन्होंने अपने सपने में देखे गए दर्शन पर तुरंत विश्वास नहीं किया), ने सुसमाचार खोला और उनकी दृष्टि निम्नलिखित शब्दों पर पड़ी: *'मैं परमेश्वर के राज्य की उपमा किससे दूँ? यह उस खमीर के समान है जिसे एक स्त्री ने लेकर तीन सेर आटे में मिला दिया, और सारा आटा फूल गया'* (लूका 13:20–21)।

इसके बाद, उस दृष्टि पर विश्वास कर लेने पर, वासियन ने धन्य मत्रोना को बुलाया और, क्रोधित दृष्टि से उसे घूरते हुए, धमकी भरे लहजे में उससे कहा:

'हे स्त्री, तू हमारे पास क्यों आई है? तुझे इतनी हिम्मत कैसे हुई कि इतने लंबे समय तक संन्यासियों के बीच रही? क्या तू हमारे मठ का अपमान करना चाहती है, या हमें लुभाने आई है?'

धन्य मत्रोना, इस अप्रत्याशित फटकार और मठाधीश की भयानक दृष्टि तथा स्वर से अत्यंत भयभीत होकर, क्षमा याचना करते हुए उनके पवित्र चरणों में गिर पड़ीं, और विनम्रतापूर्वक उत्तर दिया:

किसी को प्रलोभित किए बिना, परन्तु स्वयं को शत्रु के प्रलोभन से बचाते हुए और दुष्ट के फंदों से बचते हुए, मैं आया हूँ, हे पवित्र पिता, आपकी भेड़-झुंड में।

मठाधीश ने उससे एक बार फिर कहा:

– एक महिला होकर, तुमने सिर खुला रखकर दिव्य रहस्यों के पास जाने और भाइयों को मुँह पर चूमने की हिम्मत कैसे की?

मैट्रोना ने उत्तर दिया:

'दिव्य रहस्यों (1 कुरिन्थियों 11:5) का सेवन करते समय, मैंने अपना सिर पूरी तरह से नहीं खोला, बल्कि केवल थोड़ा सा; और जब भाइयों को मुँह पर चूमती थी, तो मैंने कल्पना की कि मैं पुरुषों के होंठों को नहीं, बल्कि निर्विकार स्वर्गदूतों के होंठों को छू रही हूँ।'

ऐसी बुद्धिमानी भरी उत्तर से चकित होकर, रेवरेंड ने उससे फिर पूछा:

'तो फिर, आप महिलाओं के मठ के बजाय पुरुषों के मठ में क्यों आईं?'

धन्य ने, अपना भय त्यागकर, उसे अपने बारे में सब कुछ विस्तार से बताना शुरू कर दिया:

मैं विवाहित थी और एकमात्र पुत्री की माँ बनी; मुझे हमेशा ईश्वर के गिरिजाघरों में जाने और वहाँ दिन-रात प्रार्थना में रहने का शौक था। हालाँकि मेरे पति ने मुझे इस तरह की भक्ति से मना किया; उत्पीड़न और पिटाई के ज़रिए, उन्होंने मुझे चर्च और प्रार्थना की मेरी सच्ची चाहत से भटकाने की कोशिश की, और हर तरह से ईश्वर की खोज में मेरी बाधा डाली। इसलिए, मैंने उनसे भाग जाने का निश्चय किया ताकि मैं ईश्वर की अधिक स्वतंत्र रूप से सेवा कर सकूँ। एक दर्शन ने मुझे आपके पास लाया था। अपने सपने में, मैंने खुद को अपने पति से भागते हुए देखा, जो मेरा पीछा कर रहा था, और कुछ भिक्षुओं द्वारा छिपाया जा रहा था। उस दृष्टि पर विचार करने और यह महसूस करने के बाद कि अपने पति से बचने का एकमात्र तरीका भिक्षु का भेष धारण करना ही था, मैंने अपने स्त्री वस्त्र बदले और पुरुषों के कपड़े पहनकर, अपना नाम बदलकर वावेला रख लिया; एक नपुंसक का भेष धारण करके, मैं इस मठ में आ गई।

आदरणीय वासियन, धन्य मत्रोना के शब्दों को ध्यानपूर्वक सुनकर, उनकी बुद्धिमत्ता और ईश्वर के प्रति भक्ति से अत्यंत चकित हुए, और उनसे कहा:

'हौसला रखो, बेटी; तुम्हारा विश्वास तुम्हें बचाएगा।'

मैत्रोना को कुछ अत्यंत शिक्षाप्रद उपदेश देने के बाद, वासियन ने उसे गुप्त रूप से धन्य सुसानना के पास भेज दिया, जबकि उन्होंने स्वयं उसकी देखभाल करने का वादा किया, बशर्ते कि वह ईसा मसीह की निष्ठापूर्वक सेवा करती रहे।

उस समय, मत्रोना की बेटी थियोडोटा, जिसे उसने सुसन्ना के हवाले किया था, का निधन हो गया; क्योंकि परमप्रभु, अपनी दासी मत्रोना को उसकी चिंताओं से मुक्त करना चाहकर—ताकि, अपनी बेटी की देखभाल की जिम्मेदारी से मुक्त होकर, वह उनकी अधिक स्वतंत्र रूप से सेवा कर सके—ने थियोडोटा को अपने पास बुला लिया और उसे स्वर्गीय निवासों में बसा दिया। इसलिए, दुख के बजाय, मत्रोना आनंद से भर गईं, यह देखकर कि उनकी बेटी—जो अभी इस दुष्ट संसार के प्रलोभनों को नहीं जानती थी—प्रभु के पास चली गई और पवित्रता में उनके सामने प्रकट हुई। जहाँ तक उनकी खुद की बात है, उन्होंने सुसन्ना की शरण ली; या, यूँ कहें कि, ईश्वर ने सुसन्ना के माध्यम से उनकी रक्षा की।

इस बीच, डोमशियिन, मत्रोना का पति, उसे हर जगह खोजता रहा, कई शहरों, गांवों और विभिन्न मठों में घूमता रहा, उसे ढूंढता रहा और जहाँ भी जाता, हर किसी से उसके बारे में पूछता रहा, लेकिन उसे वह नहीं मिल सकी। तब उसे पता चला कि आदरणीय वासियन के मठ में एक स्त्री पुरुष का वेश धारण करके एक खसास के रूप में रह रही थी (क्योंकि इसकी अफवाहें पहले पूरे मठवासी समुदाय में और फिर संसार में रहने वालों के बीच फैल गई थीं)। यह समझते हुए कि यह उसकी पत्नी थी, डोमशियिन मठ में गया और दरवाज़े पर ज़ोर-ज़ोर से दस्तक देते हुए, गुस्से से चिल्लाने लगा:

'हे संन्यासियों, तुमने मुझ पर बहुत बड़ा अन्याय किया है: तुमने मेरी पत्नी को बहकाया है और उसे अपने पास रख रखा है; क्या संन्यासियों का आचरण ऐसा होता है? क्या यही तुम्हारा जीवन-पथ है? मेरी पत्नी मुझे वापस कर दो!' तुम अवैध रूप से उन लोगों को क्यों अलग कर रहे हो जिन्हें ईश्वर ने एक अच्छे जीवन के लिए जोड़ा है? मुझे वह लौटा दो जो मेरी जीवन साथी है।

तब भिक्षुओं ने डोमशियिन को उत्तर देते हुए कहा:

'हमारे यहाँ आपकी कोई पत्नी नहीं है, क्योंकि महिलाएँ कभी हमारे मठ में प्रवेश नहीं करतीं। हमारे यहाँ कभी एक ख़सरा था, भिक्षु बेबिलास, जो कुछ समय हमारे साथ रहा, लेकिन फिर, यरूशलेम में पवित्र स्थानों की यात्रा करने की इच्छा से, वह बहुत पहले हमें छोड़ गया, जैसा कि सभी को अच्छी तरह पता है। वह अब कहाँ है, यह हम नहीं जानते; यह केवल सर्वज्ञ ईश्वर स्वयं ही जानते हैं, जिनके सामने कुछ भी छिपा नहीं है।

यह सुनकर, ईर्ष्या से उत्तेजित और साथ ही अपनी पत्नी के प्रति प्रेम से दुखी, डोमशियिन दुखी होकर पीछे हट गया। और धन्य वासियन ने अपने मन में सोचा:

'ईश्वर ने स्वयं इस स्त्री को अपनी सेवा के लिए चुना और उसे उसके पथभ्रष्ट और भ्रष्ट पति से अपने कृपापूर्ण वश में लेकर, मेरी अयोग्यता को सौंप दिया, ताकि मैं उसकी आत्मा की देखभाल करूँ; फिर भी मैंने उसका रहस्य बहुतों के सामने प्रकट कर दिया और उसके बारे में सब कुछ बता दिया। यदि उसका पति अब उसे ढूंढ ले, उसे उस पुण्य मार्ग से भटका दे जिस पर वह चल पड़ी है, और उसकी मुक्ति को संकट में डाल दे, तो मैं उसकी बर्बादी का दोषी ठहराया जाऊँगा।

मठ की परिषद के कुछ बुजुर्गों को बुलाकर, वासियन ने उनसे कहा:

'हम, भाइयों, उस बहन की देखभाल करनी चाहिए जिसने हमारा मठ छोड़ दिया है, क्योंकि यद्यपि वह एक महिला है, फिर भी वह हमारी बंधुता की एक सदस्य है। तो, हम क्या करें ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि ईश्वर को प्रसन्न करने वाले तरीके से शुरू हुआ उसका जीवन एक अच्छे अंत तक पहुँचे, ताकि शैतान, जो हमेशा हमारे पतन की तलाश में रहता है, उसकी हिम्मत न तोड़ सके, उसे संन्यासी जीवन के प्रयासों से न हटा सके, या उसे सांसारिक प्रेम की ओर वापस न ले जा सके, और इसके लिए वह उसके पति को एक उपयुक्त साधन के रूप में उपयोग न कर सके?

इस प्रकार वासियन ने भाइयों से कहा। उनमें से एक, मार्सेलस नामक, जो पद पर एक डीकन था, ने पूजनीय पिता से कहा:

'एमेसा के शहर में, जहाँ मैं पैदा हुआ था, वहाँ एक मठ है जहाँ मेरी बहन ने अपनी प्रतिज्ञाएँ लीं: तो, पिताजी, यदि आप अनुमति दें, तो हमें उसे वहाँ भेज देना चाहिए, और इस तरह हमारी उसके लिए चिंता समाप्त हो जाएगी।'

यह सुनकर, वासियन और अन्य बुजुर्ग मार्सेलस की सलाह से सहमत हो गए और आदेश दिया कि उस देश की ओर जाने वाले एक जहाज की तलाश की जाए। शीघ्र ही, ईश्वर की कृपा से, एमेसा का एक जहाज मिला, जो बिज़ान्टियम से सामान खरीदकर अपने देश लौट रहा था। तब उन्होंने धन्य मत्रोना को उस जहाज पर बिठाया और उसे एमेसा में स्थित मठ में उन कुंवारी बहनों के पास भेज दिया जो वहां नन के रूप में रहती थीं, जिन्होंने उसका सम्मानपूर्वक स्वागत किया।

वहाँ सदाचार से रहते हुए और अपने सामान्य तपस्या के अभ्यास को जारी रखते हुए, वह वनिम्रता, मौन, उपवास और जागरण, और सभी मठवासी तपस्या में सभी से आगे नकिल गईं; उन्होंने अपने जीवन के तरीके से सभी को चकति कर दयिा, ताकि वह परमेश्वर के राज्य की ओर ले जाने वाले कठनि और मुश्कलि मार्ग का एक उदाहरण बन गईं। कुछ ही समय बाद, उस मठ की अधष्ठिात्री का नधिन हो गया, और सभी ने संत मत्रोना को दविंगत की एक योग्य उत्तराधकिारी के रूप में चुना। अधष्ठिात्री के रूप में, वह एक मोमबत्ती पर रखी गई मशाल की तरह चमकती थीं, जो सद्गुणों की तेज रोशनी बखिेर रही थी, और उन्होंने अपने सुपुर्द की गई बहनों की मुक्ति की लगन से देखभाल की।

उस समय, एक व्यक्ति अपने खेत में हल जोतते हुए देखी कि एक जगह से आग नकिल रही थी। उसने यह न केवल एक बार, बल्कि कई बार देखा, क्योंकि कई दनिों तक वह लौ जमीन से नकिलती रही। वह आदमी शहर गया और इस बात की सूचना एमेसा के बशिप को दी। बशिप ने इसे एक वशिष संकेत मानकर अपने पुरोहतिों के साथ उस स्थान पर गए और प्रार्थना करने के बाद, जमीन खोदने का आदेश दयिा। जब ऐसा कयिा गया, तो जमीन में एक पात्र मलिा, जसिमें न तो सोना था और न ही चांदी, बल्कि सभी सांसारकि खजानों से अधकि कीमती खजाना था – प्रभु के अग्रदूत और बपतस्मिाकर्ता संत जॉन का सरि[7647] । इसकी खबर दूर-दूर तक फैल गई, और सभी नविासी उस स्थान पर इकट्ठा हो गए—न केवल एमेसा शहर से, बल्कि सभी पड़ोसी कस्बों और गांवों से भी। पूजनीय मत्रोना भी अपनी मठ से सभी बहनों के साथ संत जॉन द बैपटस्टि के बरामद हुए सरि का सम्मान करने आईं। इस पवत्रि सरि से सुगंधति मूर्र नकिल रहा था, जसिसे पुरोहतिों ने इकट्ठा हुए लोगों के माथे पर क्रॉस का चन्हि बनाकर उन्हें अभषिेक कयिा। पूजनीय मत्रोना ने अपने मठ के लिए आशीर्वाद स्वरूप उस मूर्र में से कुछ एक छोटे पात्र में ले लयिा। लेकनि पवत्रि मूर्र के लिए उत्सुक लोगों की भीड़ ने उन पर इतना जोर से धक्का दयिा कि वे आगे नहीं बढ़ सकीं; जबकि अन्य लोग, उसके पास पवत्रि मूर्र को देखकर, उससे उस पर लगा देने की वनिती करने लगे, क्योंकि भीड़ के कारण वे पुरोहतिों के पास नहीं जा सकते थे; और, ऐसा करने के लिए मजबूर होकर, उन्होंने उनकी बात मान ली। वहाँ एक अंधा आदमी था जो जन्मजात अंधा था और जसिने कभी दनि का उजाला नहीं देखा था। उसने भी मट्रोना से उसे पवत्रि मूर्र लगाने के लिए कहा; उसने उसकी आँखों पर अभषिेक कयिा, और वह तुरंत अपनी दृष्टि वापस पा गया। सभी ने इस चमत्कार का श्रेय न केवल संत जॉन की चंगा करने वाली मृत्तकिा को दयिा, बल्कि पूजनीय मत्रोना को भी दयिा, क्योंकि वहाँ कई पुरोहति थे जो लोगों में वह पवत्रि मृत्तकिा बाँट रहे थे, फरि भी कसिी के भी हाथ जन्मजात अंधे की दृष्टि वापस नहीं ला सके। और लोगों के बीच पूजनीय मत्रोना के पुण्य जीवन का उत्सव मनाया गया। कुछ समय बाद, उनके पति, डोमशियिन, ने मत्रोना के बारे में सुना और एमेसा शहर की ओर तेज़ी से चल दिए। हालाँकि, यह जानकर कि उसे उस मठ में प्रवेश करने की अनुमति नहीं थी जहाँ पूजनीय मत्रोना रहती थीं, और न ही उस पत्नी को देखने की जसिे वह ढूंढ रहा था (क्योंकि उस मठ में एक नयिम था कि पुरुष कभी प्रवेश न करें), उसने एक युक्ति के द्वारा अपना उद्देश्य प्राप्त करने का नश्चिय कयिा। डोमशियिन ने कुछ गृहस्थ महलिाओं को मनाया कि वे मैत्रोना के पास जाएँ और उनसे कहें:

'एक व्यक्ति, आपकी पवत्रिता और आपके पूर्णतःसदाचारी जीवन के बारे में सुनकर, दूर से आपके प्रति सम्मान प्रकट करने और आपका आशीर्वाद तथा पवत्रि प्रार्थनाएँ प्राप्त करने के लिए आया है।' इसलिए, ईश्वर के लिए, उस पर दया करें और इस व्यक्ति को, जसिने आपके लिए इतनी कठनि यात्रा की है, ठुकराएँ नहीं, बल्कि उसके पास जाएँ, आत्मा को सुकून देने वाले शब्दों से उसका सांत्वना दें, और उसे अपनी कृपा-दृष्टि से वदिा करें।"

मैट्रोना के नविास पर पहुँचने पर, महलिाओं ने जैसा उन्हें नर्दिेश दयिा गया था, वैसा ही कहा। धन्य मैट्रोना ने, धोखे को भांपते हुए, महलिाओं से पूछा कि उन्हें उसके पास भेजने वाला आदमी कैसा दखिता था। उन्होंने उसके रूप का वर्णन कयिा। संत ने महसूस कयिा कि वह उनके पति थे, और महलिाओं से कहा:

'उस आदमी से कहो कि वह सात दनि इंतजार करे; सातवें दनि मैं उसे दर्शन दूँगी, और वह मुझे अपनी इच्छानुसार देख सकेगा।'

महलिाओं को भेजने के बाद, धन्य मत्रोना ने प्रार्थना करना शुरू कर दयिा कि प्रभु उन्हें उनके पति से छपिा दें। जब रात हुई, तो उन्होंने एक रस्सी का कुरता और रोटी का एक छोटा टुकड़ा लयिा, और चुपके से, कसिी के जाने बनिा, मठ छोड़ दयिा और यरूशलेम के लिए नकिल पड़े। इस बीच, डोमशियिन ने सात दनि इंतजार कयिा, इस उम्मीद में कि वह उस महलिा को देख सके जसिकी वह इच्छा करता था और उसे जबरदस्ती अपनी वैध पत्नी बना ले। सातवें दनि, उसने फरि से

[7647] स्पष्ट रूप से, यह अंश अग्रदूत के सम्माननीय सरि की दूसरी खोज का उल्लेख करता है, जो वर्ष 452 में हुई थी।

उन्हीं महलिाओं को उस सम्मानति नन के पास भेजा, और उससे कहा कि वह उसके सामने आएं, जैसा कि उन्होंने वादा कयिा था। जब महलिाएँ मठ पहुँचीं, तो उन्होंने सभी ननों को अपनी अधष्ठिात्री के लिए शोक मनाते और रोते हुए पाया, क्योंकि वे नहीं जानती थीं कि वह कहाँ गई थी। लौटने पर, उन्होंने यह बात डोमशियिन को बताई। और वह, ईर्ष्या और दुख से और भी अधकि प्रेरति होकर, उसे हर जगह खोजने लगा। वह यरूशलेम तक गया और एक सराय में रुककर, वहाँ रहने वाली महलिाओं से पूछा कि क्या उन्होंने कभी एक वशिष वर्णन वाली महलिा को देखा है (और उसने उसका रूप-रंग बताया)। उन्होंने जवाब दयिा:

'हमें याद है कि वहाँ की एक चर्च में एक भक्षिुणी इसी तरह देर से आया करती थी, लेकनि अब वह कहाँ है, यह हमें नहीं पता।'

डोमशियिन ने वहाँ बड़ी लगन से उसकी खोज की, सड़कों पर चलते हुए और सरायों में पूछताछ करते हुए। एक बार उनकी मुलाकात हुई, और मैट्रोन ने अपने पति को पहचान लयिा, लेकनि उसने उसे नहीं पहचाना; क्योंकि जब डोमशियिन उसके पास से गुज़रा, तो उसने अपना चेहरा ढक लयिा और जैसे कुछ उठा रही हो, झुक गई, और इस चाल की बदौलत, उसे उसके पति ने नहीं पहचाना। वह अपने पति द्वारा की जा रही खोज की दृढ़ता देखकर चकति थी, और इस डर से कि कहीं वह उसे फरि से कहीं देखकर पहचान न ले, वह माउंट सनिाई चली गई; लेकनि वहाँ भी उसके पति ने उसका पता लगाकर उसका पीछा कयिा। तब वह बेरति[7648] गईं और एक खाली मूर्तपिूजक मंदरि पाकर उसमें प्रवेश कयिा और वहीं रहने लगीं। दैत्य, वहाँ उसकी उपस्थति सिहन न कर सके, संत को भगाने के लिए उसे वभिन्नि तरीकों से डराते थे: कभी वे बनिा दखिाई दिए उस पर चलि्लाते थे, तो कभी खुलेआम उस पर हमला करते थे; और जब भी मत्रोना भजन गाती थीं, तो दैत्य गाली-गलौज कर के उन्हें रोक देते थे। लेकनि संत ने क्रूस के चहि्न और ईश्वर को समर्पति प्रार्थना से उन सभी राक्षसी भ्रमों और प्रकट होने वाली आकृतयिों को भगा दयिा। उस मूर्तपिूजक मंदरि में अपने प्रवास के दौरान, पूजनीय संत का भोजन आसपास के क्षेत्र में उगने वाले अनाज से होता था, और उनका पेय एक झरने का पानी था जो चमत्कारकि रूप से उनके लिए फूट नकिला था। एक बार, प्यास लगने पर, उन्होंने पानी के लिए चारों ओर खोज की लेकनि उन्हें कुछ नहीं मलिा, क्योंकि जमीन सूखी और सूरज की गर्मी से झुलसी हुई थी। एक छोटा, नुकीला कंकड़ पाकर, उन्होंने इसका इस्तेमाल जमीन में एक छोटा सा गड्ढा खोदने के लिए कयिा—लगभग एक मुट्ठी के आकार का—और उसे वहीं छोड़कर प्रार्थना करने चली गईं। अगली सुबह वह उस जगह पर आई और उसे एक तेज़ी से बहता हुआ झरना मलिा; झरने के चारों ओर स्वादषि्ट अनाज उग आए थे। यह मसीह की वधू के लिए भोजन के रूप में था – एक ऐसा भोजन जो कसिी भी राजा के भोज से भी अधकि मीठा था। उसने उन स्वादषि्ट अनाजों का स्वाद चखा और पानी पयिा, और परमेश्वर का धन्यवाद कयिा, जो , *'हर प्राणी को भोजन देते हैं, क्योंकि उनकी दयालुता सदा के लिए बनी रहती है... आप अपना हाथ खोलते हैं और अपनी इच्छा के अनुसार हर जीवति प्राणी को तृप्त करते हैं*' (भजन संहति 135:25, 144:16)।

एक दनि, एक दानव ने एक सुंदर महलिा का रूप धारण कयिा और सम्माननीय मत्रोना के पास आया, और चापलूसी से बोला:

'हे मेरी स्वामनिी, आपने अपने लिए जीवन का ऐसा अजीब तरीका क्यों चुना है?' यह जगह सुनसान है, और यहाँ शारीरकि आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए कुछ भी नहीं है। इसके अलावा, आप अभी भी जवान और सुंदर हैं; मुझे डर है कि कोई आपको देखकर आपकी सुंदरता से मोहति हो जाएगा और आपको नुकसान पहुँचाएगा, और फरि आपकी मदद करने या उसे उसकी चपेट से बचाने वाला कोई नहीं होगा। तो, मेरी मालकनि, इस जीवन-पद्धति को छोड़ दें और मेरे साथ शहर चलें, क्योंकि वहाँ भी आप एकांत में रह सकती हैं। मैं आपके रहने के लिए एक उपयुक्त घर ढूंढ लूंगा, और आपको अपनी ज़रूरत की हर चीज़ मलिेगी; कोई भी आपको परेशान करने की हम्मित नहीं करेगा, क्योंकि आपके पड़ोसी आपकी मदद करेंगे और आपको कसिी भी नुकसान से बचाएंगे।

ऐसे चापलूसी भरे शब्द सुनकर, संत मत्रोना को एहसास हुआ कि ये दुश्मन के तीर थे और *उन्होंने* तुरंत *'अजेय ढाल—पवत्रिता'* (ज्ञान 5:19) *को थाम लयिा*; और उन्होंने न केवल दुष्ट के तीरों से अपनी रक्षा की, बल्कि उन्होंने प्रार्थना से, जैसे तलवार से, स्वयं धनुर्धर को घायल कर दयिा और उसे भगा दयिा। तब, वह राक्षस एक वृद्ध महलिा में बदल गया, जसिकी आँखों से आग नकिल रही थी। क्रोध से उन्मत्त होकर मत्रोना की ओर बढ़ी, उस महलिा ने उसके पैरों

[7648] बेरटिस – एशयिा माइनर के फनिशियिाई तट पर सबसे पुराना तटीय शहर।

को पकड़ लिया, और शर्मनाक शब्द और धमकियाँ देने लगी। हालाँकि, संत ने उसकी कोई परवाह नहीं की, बल्कि ईश्वर से प्रार्थना करती रहीं; और तुरंत ही वह राक्षस गायब हो गया।

इन दैवीय हमलों के बाद, प्रभु ने एक दिव्य प्रकटिकरण के माध्यम से धन्य मत्रोना को सांत्वना दी और उनके हृदय को अकथनीय आध्यात्मिक आनंद और स्वर्गीय सांत्वना से भर दिया; क्योंकि वह जानता है कि अपने दुखों में उसकी सेवा करने वालों को कैसे सांत्वना देनी है, उनकी परीक्षाओं में उनकी मदद कैसे करनी है, और उनके दुख को आनंद में कैसे बदलना है, जैसा कि दाऊद कहते हैं: भजन संहिता 93 – *'जब मेरे हृदय में मेरे दुख बढ़ जाते हैं, तब आपकी सांत्वना मेरी आत्मा को मीठी कर देती है*'।

और प्रभु ने, अपनी इस सेविका के द्वारा, बहुतों को लाभ पहुँचाने और बहुतों को उद्धार के मार्ग पर चलाने की इच्छा की; इस कारण से उन्होंने उसे बेरूत के निवासियों के सामने प्रकट किया। उसे तीन ईसाइयों ने खोज निकाला, जो एक शाम उस मंदिर के पास से गुजर रहे थे, और उन्होंने उसे प्रार्थना करते हुए देखा। उन्होंने इस बारे में दूसरों को बताया, और बहुत से लोग उसे देखने की इच्छा से उसके पास आने लगे। ईश्वर से शिक्षा का अनुग्रह-पूर्ण वरदान प्राप्त करके, उन्होंने उन लोगों को ईश्वर का वचन सुनाया और अपने दैवीय प्रेरित प्रवचनों के माध्यम से, उन्हें महान लाभ पहुँचाया और उन्हें मोक्ष के मार्ग पर मार्गदर्शन किया। कुछ महिलाएँ और युवतियाँ भी उनके पास आईं और उनके स्वर्गदूत जैसे जीवन-यापन को देखकर, उनके अनुकरण करने और उनके साथ एक मठवासी जीवन जीने की इच्छा रखने लगीं। सबसे पहले पूजनीय के पास सोफ्रोनीया नाम की एक महिला आई, जो यद्यपि एक मूर्तिपूजक थी, फिर भी संयम और पवित्रता का पालन करती थी और एक भिक्षुणी - एक कुंवारी - के रूप में रहती थी, और उसके साथ अन्य महिलाएं भी थीं जिन्होंने उसके जीवन-मार्ग और शिक्षाओं का अनुसरण किया था। धन्य मत्रोना और उनके कठोर जीवन-यापन के बारे में सुनकर, वह उन्हें देखना चाहती थी और अपनी सहेलियों के साथ उनके पास आई। संत मत्रोना ने अपने ईश्वर-प्रेरित होठ खोले और उससे एक सच्चे ईश्वर और उनके एकमात्र पुत्र के बारे में बात करनी शुरू की – कि कैसे वह कुंवारी से अवतार में आए, जिसने किसी पुरुष को नहीं जाना और जो पाप से रहित थी, उन्होंने हमारे उद्धार के लिए दुख उठाया, फिर से जी उठे, देह सहित स्वर्ग में आरोहण किया, और जीवितों व मृतकों का न्याय करने आएँगे। सोफ्रोनीया को ईसाई धर्म के कई रहस्य बताएँ के बाद, मत्रोना ने उसे और उसके साथियों को मसीह के धर्म में परिवर्तित कर दिया। बेरिट के बिशप द्वारा जल्द ही बपतिस्मा ग्रहण करने के बाद, उन्होंने उसी मूर्तिपूजक मंदिर में आदरणीय मत्रोना के साथ मिलकर एक संन्यासी जीवन जीना शुरू कर दिया, और यह लुटेरों का अड्डा मसीह की वधुओं का निवास स्थान बन गया।

इसके बाद, यूकेया नाम की एक युवती, जो एक मूर्तिपूजक पुजारीनी थी और उसने ब्रह्मचर्य का व्रत लिया था, सम्माननीय मत्रोना के पास आई और उनके पैरों पर गिरकर, उनसे यीशु मसीह के विश्वास में शिक्षा देने और उनके साथ रहने की अनुमति देने की विनती की। संत ने उस युवती को ईश्वर के वचनों से पर्याप्त रूप से उपदेश देकर, उसके हृदय में मसीह के प्रति प्रेम और संसार को त्यागने की इच्छा जगाई। उस समय, वहाँ एक विशेष नास्तिक मूर्तिपूजक त्योहार चल रहा था, और बेरूत में रहने वाले मूर्तिपूजक त्योहार मनाने के लिए अपनी मूर्तियों के सामने इकट्ठा हुए थे। पैगन रीति के अनुसार बलिदान चढ़ाने के लिए मूर्तियों की कोई पुजारीनी न पाकर, वे यह देखकर चकित हो गए कि वह कहाँ गई थी। जब यह पता चला कि वह मैट्रोना के पास गई है, तो उनमें से कुछ—विशेषकर लड़की के रिश्तेदार—वहाँ गए और यूकेया को मैट्रोना के साथ बैठे हुए तथा दिव्य वचनों को बड़ी एकाग्रता से सुनते हुए देखकर, उन्होंने उससे कहा:

'अरी युवती, तुमने महान देवताओं को क्यों ठुकरा दिया और उनके लिए बलिदान क्यों त्याग दिया? देखो, तुम्हारे कारण ही लोग हमारे विरुद्ध उठ खड़े हुए हैं, क्योंकि वे अपने देवताओं पर हुई अपमान सहन नहीं करना चाहते। तो फिर चलो, आज हमारे साथ त्योहार मनाने चलो!'

लेकिन वह कन्या न तो उनकी बात सुनने को तैयार हुई और न ही उनकी ओर देखती थी; फिर भी, जैसे मरियम यीशु के चरणों में बैठी थी, वैसे ही वह अपनी शिक्षिका – आदरणीय मत्रोना – के सामने बैठी थी, जिन्होंने आए हुए लोगों से कोमलता और स्नेह से कहा:

'सच्चे ईश्वर की यह दासी हमारे साथ रहे; जो कभी तुम्हारे व्यर्थ देवताओं की दासी थी, क्योंकि वह अब तुमसे संगति नहीं कर सकती, क्योंकि वह मसीह से सगाई करना चाहती है।'

आए हुए रिश्तेदारों ने मिन्नतों और धमकियों, दोनों से उस युवती को मैट्रोना से दूर करने की भरसक कोशिश की; उन्होंने उसे जबरदस्ती ले जाने की भी कोशिश की, लेकिन ईश्वर की अदृश्य शक्ति ने उन्हें रोक दिया। असफल होने पर, उन्होंने कहा:

'यदि तुम हमारी आज्ञा नहीं मानतीं और अब हमारे साथ देवताओं का त्योहार मनाने नहीं आतीं, तो कल सुबह हम आएँगे, इस मंदिर को आग लगा देंगे, और इसमें मौजूद हर किसी को—तुम्हें भी—जला देंगे।'

यह धमकी देकर वे चले गए। संत मत्रोना, अपने साथ मौजूद बहनों के साथ, बहुत सारी लकड़ी और झाड़-झंखाड़ इकट्ठा किया; मंदिर के चारों ओर उसे ढेर लगाने के बाद, उन्होंने जाते हुए मूर्तिपूजकों के पीछे संदेश भेजा, जिसमें कहा गया:

'देखो, आग और लकड़ी तो पहले से ही तैयार हैं। तो फिर अपना वादा पूरा करो—हमें जला दो, ताकि हम हमारे प्रभु मसीह के लिए एक सुगंधित भेंट बन सकें।'

मूर्तिपूजक, उनके ईश्वर के लिए मरने को तैयार रहने के साहस से चकित, यह नहीं जान पाए कि क्या उत्तर दें, और वे फिर कभी उनके पास नहीं आए।

इस बीच, पूजनीय मत्रोना ने बिशप से एक पादरी को उनके पास भेजने का अनुरोध किया। जब पादरी आए, तो उन्होंने उस युवती को उनकी देखभाल में सौंप दिया, ताकि वह उसे पवित्र बपतिस्मा दे सकें और फिर उसे वापस उसके पास ले आएं - और पादरी ने उनकी इच्छाओं को तुरंत पूरा किया। बपतिस्मा ग्रहण करने के बाद, वह कन्या अन्य बहनों के साथ, जो संत मत्रोना के साथ आठ थीं, सदाचारपूर्वक उपवास और प्रार्थना में स्वयं को समर्पित कर दी। वे सभी बुद्धिमान कुंवारियों की तरह थीं, जो अपने दीपक सजा रही थीं और अपने वधू-वर से मिलने की तैयारी कर रही थीं[7649] ।

जब पूजनीय मत्रोना ऐसा जीवन जी रही थीं, ईश्वर के लिए अपनी बहनों के साथ दिन-रात काम कर रही थीं और कई लोगों को उनके पास ला रही थीं, तब उन्हें अपने आध्यात्मिक पिता - पूजनीय वासियन - से एक बार फिर मिलने की इच्छा हुई। वह कॉन्स्टेंटिनोपल जाना चाहती थीं, लेकिन यह विचार कि उनके पति डोमिशियन वहाँ रहते थे, मत्रोना को इस योजना से रोकता था, और उन्हें डर था कि कहीं वह उन्हें पहचान न ले। साथ ही, उन्होंने अपने मन में सोचा:

'मैं अब यहाँ नहीं रह सकती, क्योंकि बहुत से लोग मेरे पास आते हैं और मुझे एक सदाचारी महिला के रूप में प्रशंसा करते हैं, और मुझे अहंकार का डर है। इसके अलावा, मुझे डर है कि मेरे पति को मेरे बारे में पता चल जाएगा, क्योंकि पूरे देश में मेरे बारे में पता चल चुका है और कोई उसे बता सकता है; और जब वह यहाँ आएगा और मुझे ढूंढ निकालेगा, तो वह मेरे सभी मठवासी प्रयासों को नष्ट कर देगा।' 'तो, मैं इस जगह को छोड़कर या तो अलेक्जेंड्रिया या एंटिओक चली जाऊँगी।'

यह निर्णय लेने के बाद, संत ने ईश्वर से मन लगाकर प्रार्थना करना शुरू कर दिया कि वह उन्हें बता दें कि उन्हें कहाँ जाना चाहिए, कहाँ रहने से उन्हें सबसे अधिक लाभ होगा। इस बारे में प्रार्थना करते समय, उन्होंने एक बार सपने में देखा कि तीन पुरुष उनके लिए आपस में बहस कर रहे थे, क्योंकि प्रत्येक उसे अपनी पत्नी बनाना चाहता था। उन्होंने, हालांकि, यह कहते हुए मना कर दिया:

'मैं तो विवाह से बहुत पहले ही भाग चुकी हूँ, और अगर मैं अब भी इसे चाहूँ, तब भी यह संभव नहीं होगा। लेकिन तुम कौन हो?'

पहले ने उत्तर दिया:

'मैं अलेक्जेंडर हूँ।'

एक और ने कहा:

'मैं एंटिओकस हूँ।'

तीसरे ने कहा:

'मैं कॉन्स्टेंटाइन हूँ।'

यह कहकर, उन्होंने यह देखने के लिए कि उसे कौन ले जाएगा, अपने बीच पासा फेंका, और पासा सबसे छोटे पर पड़ा, जिसने खुद को कॉन्स्टेंटाइन बताया था। वह ही था जो उसे ले जाना चाहता था। मैट्रॉना डरकर जाग उठी और उसने जो देखा था, उस पर विचार किया। उसने अपने सपने की इस प्रकार व्याख्या की: 'तीन आदमी - अलेक्जेंडर, एंटीओकस और कॉन्स्टेंटिन – वे तीन शहर हैं जिनके बारे में मैं सोच रही थी, अर्थात्: अलेक्जेंड्रिया, एंटिओक और कॉन्स्टेंटिनोपल; और जो भाग कॉन्स्टेंटिन को मिला है, वह ईश्वर की उस शुभ इच्छा का संकेत है कि मुझे कॉन्स्टेंटिनोपल जाकर अपने पिता – धन्य वासियन – से मिलना चाहिए। प्रभु, जो मेरा मार्गदर्शन करते हैं, मुझे वहाँ छिपाने के लिए पर्याप्त शक्तिशाली

[7649] मसीह की दस कुँवारियों की दृष्टान्त में। मत्ती 25:1.

हैं, ताकि मैं अपने पति द्वारा पहचानी न जाऊँ: *'यद्यि मैं मृत्यु की छाया की घाटी में भी चलूँ, तौभी मैं किसी विपत्ति से न डरूँगा, क्योंकि तू मेरे संग रहेगा; तेरी लाठी और तेरा डंडा—वे मुझे शान्ति देते हैं'* (भजन संहिता 22:4)।

और अपना सामान बटोरकर, वह जाने को तैयार थी। लेकिन अपनी बहनों को जब यह पता चला कि वह उन्हें छोड़कर जा रही है, तो उन्होंने उसे जाने नहीं दिया और वे रोते हुए कहने लगीं:

हे हमारी माता, आप हमें—अपने उन बच्चों को, जो प्रभु के विधान में अभी दृढ़ता से स्थापित नहीं हुए हैं—क्यों छोड़ जा रही हैं? आप विश्वास की इन नवोदित कोंपलों को, जिन्हें धर्म-सिद्धान्त के जल से अभी पर्याप्त रूप से पोषण नहीं मिला है, क्यों छोड़ जा रही हैं? हे हमारी माता, आप कहाँ जा रही हैं? आप हमें किसके हवाले कर जा रही हैं? या आप हमें अपने साथ क्यों नहीं ले जा रही हैं?

उस पूज्यनीया ने उन्हें शांत करके, उन्हें परमेश्वर की इच्छा के बारे में बताया, जो एक दर्शन में उन्हें प्रकट हुई थी - अर्थात्, कि उन्हें कॉन्स्टेंटिनोपल जाना चाहिए। और तुरंत ही उन्होंने बिशप को संदेश भेजा, उनसे दो डीकोनेस (दीक्षान्तिकाएँ) भेजने का अनुरोध करते हुए, जो सद्गुणों में अनुभवी और अपने आचरण में निर्दोष हों, ताकि वह मसीह के इस नव-एकत्रित छोटे से झुंड को उन पर सौंप सकें। बिशप ने उनकी इच्छा पूरी की - उन्होंने उन्हें वे डीकोनेस भेज दीं जिनका उन्होंने अनुरोध किया था। अपनी आध्यात्मिक बेटियों को जैसे कोई अनमोल खजाना हो, उन्हें सौंपकर और उन्हें विदा कहकर, पूजनीय मत्रोना ने उनसे विदा ली, और अपने साथ केवल एक बहन - धन्य सोफ्रोनिया को लिया। समुद्र पर पहुँचने पर, उन्हें कॉन्स्टेंटिनोपल जा रही एक जहाज़ मिली और वे उसमें सवार हो गईं। एक अनुकूल हवा के साथ, वे कॉन्स्टेंटिनोपल पहुँचे, और मत्रोना और सोफ्रोनीया समुद्र के पास स्थित संत आइरीन के चर्च की ओर दौड़ीं। चर्च में प्रवेश करते ही, उनकी मुलाकात उपरोक्त डिकिन मार्सेलस से हुई, जिन्होंने धन्य वासियन को उन्हें एमेसा शहर के एक मठ में भेजने की सलाह दी। संत मत्रोना ने उस डिकिन को अपनी पहचान बताई और अपने बारे में सब कुछ विस्तार से बताया - कि कैसे एमेसा में उनके पति द्वारा उनका उत्पीड़न किया गया था, यरूशलेम और सिनाई पर्वत पर, कैसे वह बेरूत में एक मूर्तिपूजक मंदिर में रहती थी, और अपनी चारों ओर बहनों को इकट्ठा किया था, कैसे उसके द्वारा प्रभु ने कई लोगों को अपने पास कर लिया था, और क्यों उसने अपने आध्यात्मिक पिता – परम पूज्य वासियन से मिलने के लिए बेरूत से कॉन्स्टेंटिनोपल तक इतना लंबा सफर तय किया था। मार्केल ने, अपनी ओर से, रेवरेंड को मत्रोना के आगमन की सूचना दी और उन्हें वह सब कुछ बताया जो उसने उनसे सुना था। रेवरेंड ने तुरंत मार्केल को आदेश दिया कि वह अपने मठ के पास एक शांत घर ढूंढे और मत्रोना को वहाँ ले आए। एक बार यह हो जाने के बाद, आदरणीय वासियन उनसे मिले, उनका आशीर्वाद किया और उनके कार्यों तथा ईश्वर के प्रति उनके गहन प्रेम के बारे में जानकर उन्होंने उनकी उपलब्धियों पर प्रसन्नता व्यक्त की। उस समय से, आदरणीय मत्रोना बेफ़िक्र होकर कॉन्स्टेंटिनोपल में रहने लगीं, क्योंकि उनके पति की मृत्यु पहले ही हो चुकी थी। अपनी ओर से, पूजनीय वासियन ने उन्हें वह सब कुछ प्रदान किया जिसकी उन्हें आवश्यकता थी और बेरूत में रह गई बहनों को उनके पास लाए: उनके अनुरोध पर, उन्होंने बेरूत के बिशप को एक पत्र भेजा, जिसमें उनसे अनुरोध किया कि वे मत्रोना द्वारा एकत्रित ननों को उनकी आध्यात्मिक माता के रूप में उनके साथ रहने के लिए कॉन्स्टेंटिनोपल जाने की अनुमति दें। शीघ्र ही वे सभी वहाँ पहुँच गए और पूजनीय मत्रोना के साथ मिलकर धर्म और भक्ति में ईश्वर की सेवा करते हुए परिश्रम करने लगे। मत्रोना सभी के लिए एक दैवीय जीवन का उदाहरण थीं: उन्हें देखकर न केवल जिन्होंने संन्यास का व्रत लिया था, बल्कि कई गृहस्थ भी प्रेरित हुए। उनके सद्गुणों की ख्याति दूर-दूर तक फैल गई, और उनके माध्यम से स्वर्गीय पिता की महिमा हुई।

मैत्रोना की ख़बर राजा लियो द ग्रेट की पत्नी रानी वेरिना तक पहुँची, जो उस समय शासन कर रहे थे[7650] । पूजनीय मैत्रोना के द्वारा अपनाए गए पूर्ण रूप से सदाचारी जीवन के बारे में सुनकर, वह उन्हें देखना चाहती थीं और स्वयं उनके पास आईं। मेट्रोना ने रानी का सम्मानपूर्वक स्वागत किया और उनके लिए ऐसा भोज तैयार किया जो केवल कोई महान और संसार से विरक्त तपस्वी ही दे सकता था। रानी उसकी जीवन शैली से चकित थी, और विशेष रूप से इस बात से कि उस पूजनीय महिला ने उससे कुछ भी नहीं माँगा, जबकि रानी ने उसे कई उपहार देने का इरादा किया था। धन्य मत्रोना के साथ बिताए समय और उनकी बातचीत से स्वयं को आध्यात्मिक लाभ पहुँचाने के बाद, रानी अपने कक्षों में लौट आई।

कई बीमार लोग भी पूजनीय माता के पास आए और स्वस्थ हो गए: क्योंकि उनकी प्रार्थना इतनी शक्तिशाली थी कि वह न केवल शारीरिक, बल्कि आध्यात्मिक बीमारियों को भी ठीक कर सकती थी।

[7650] संत लियो प्रथम (महान) – बीजान्टिन सम्राट, 457 से 474 तक शासन किया।

एपार्क एम्फमिस की पत्नी, यूफेमिया नाम की एक कुलीन महिला, एक गंभीर और लाइलाज बीमारी से पीड़ित हो गई थी – जब उसे डॉक्टरों से कोई मदद नहीं मिल सकी – तो वह पूजनीय मत्रोना के पास आई। उसने उसका हाथ पकड़कर अपने शरीर के पीड़ित अंगों पर रखा, और उसके हाथ के स्पर्श से वह पूर्ण रूप से स्वस्थ हो गई। यह देखकर कि जिस घर में आदरणीय साध्वी अपनी बहनों के साथ रहती थीं, वह तंग था और, इसके अलावा, उनका अपना नहीं था, यूफेमिया ने अपनी उपचारक – आदरणीय माट्रोना – के लिए एक ऐसा मठ स्थापित करने की इच्छा व्यक्त की जो रहने के लिए विशाल और आरामदायक हो, जिसे उन्होंने जल्द ही पूरा कर लिया।

तंग घर से निकलकर नव-स्थापित मठ में आ जाने के बाद, आदरणीया ने आध्यात्मिक भेड़ों का एक और भी बड़ा झुंड इकट्ठा किया—युवा और विवाहित महिलाएं—उन्हें मसीह के लिए सर्मार्ग पर लगाया, और उनकी मुक्ति के लिए लगन से देखभाल की।

थोड़ी ही देर बाद, पूज्य मत्रोना को ईश्वर के पास अपने निकट प्रस्थान का पूर्वाभास हुआ, क्योंकि यह उन्हें एक दर्शन में प्रकट किया गया था। उन्हें ऐसा प्रतीत हुआ मानो वे एक अत्यंत सुंदर स्थान से होकर जा रही हों, जहाँ फलदार पेड़ लगाए गए थे और बीच में शुद्ध जल के झरने बह रहे थे; आगे एक खेत पूरी तरह से खिल रहा था; वहाँ सुंदर पक्षियों की एक भीड़ विभिन्न मनभावन स्वरों में गा रही थी; पेड़ हल्की हवा में धीरे-धीरे झूम रहे थे; और झरने पास में सरसरा रहे थे – वास्तव में, उस स्थान की सुंदरता का वर्णन करना असंभव था, क्योंकि वह ईश्वर का स्वर्ग था। वहाँ धर्मपरायण और राजसी महिलाएँ खड़ी थीं, जिन्होंने धन्य मत्रोना को एक दिव्य कक्ष दिखाया, जो ईश्वर के हाथ से बनाया गया था, न कि मानव हाथों से, और उससे कहा:

'देखो, यह तुम्हारा घर है, मत्रोना, जो ईश्वर ने तुम्हारे लिए तैयार किया है। आओ और यहाँ वास करो!'

इस दर्शन से, पूज्यनीया को एहसास हुआ कि उनका अंत निकट आ गया है, और उन्होंने अपने प्रस्थान की तैयारी शुरू कर दी, और प्रभु से और भी अधिक भक्तिपूर्वक प्रार्थना करने लगीं, जिनके लिए उन्होंने सभी चीजों को शून्य समझा था। फिर उन्होंने अपनी सभी बहनों को अपने पास बुलाया और उन्हें मोक्ष के लिए आवश्यक बातों के बारे में विस्तार से निर्देश दिया। उन्हें विदा कहने के बाद, वह प्रभु में सो गईं और अपने सांसारिक निवास से उस स्वर्गीय निवास में चली गईं जो उनके लिए तैयार किया गया था, जिसे उन्होंने पहले एक दर्शन में देखा था। इस प्रकार पूजनीय मत्रोना ने अत्यधिक और धन्य वृद्धावस्था में देह त्यागा[7651] । उन्होंने संसार में पच्चीस वर्ष और एक नन के रूप में पचहत्तर वर्ष जिए; उनके कुल वर्षों की संख्या एक सौ थी। और अब वह शाश्वत जीवन में वास करती हैं, जीवन-दायक और अविभाज्य त्रिमूर्ति—पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा—के सिंहासन के सामने खड़ी हैं, जो एक ही ईश्वर हैं, जिन्हें युगानुयुग महिमा हो। आमीन।

कॉन्टाकियन, स्वर 2:

हे पूज्य माता, प्रभु के प्रेम के लिए, आपने उपवास द्वारा अपनी आत्मा को प्रबुद्ध कर विश्राम की इच्छा से घृणा की: क्योंकि आपने दृढ़ता से पशुओं को पराजित किया, और अपनी प्रार्थनाओं द्वारा अपने शत्रुओं के हिलने-डुलने को नष्ट कर दिया।

परमपूज्य थियोक्तिस्ता का जीवन।

९ नवंबर को स्मरण किया जाता है

एजियन सागर में पारोस द्वीप स्थित है[7652] । इस द्वीप पर हमारी परम पवित्र माता, परमेश्वर की माता, को समर्पित एक भव्य चर्च थी। अज्ञात कारणों से, चर्च सहित पूरा द्वीप खंडहर में बदल गया और यह लोगों के लिए नहीं, बल्कि जंगली जानवरों का आवास बन गया।

[7651] संत मत्रोना, जिनकी मृत्यु 492 में हुई।

[7652] एजियन सागर – जिसे अब *एजियन द्वीपसमूह के नाम से जाना जाता है।* पेरॉस – एजियन द्वीपसमूह के प्रमुख साइक्लाडिक द्वीपों में से एक।

एक दनि, यूबोए नामक एक तटीय पहाड़ पर रहने वाले कुछ शकिारी उस सुनसान द्वीप पर जंगली जानवरों का शकिार करने के लएि नाव से जाने पर सहमत हुए, क्योंकि द्वीप पर बहुत सारे हरिण और बकरयिाँ थीं। द्वीप पर पहुँचने पर, शकिारी अपने हथयिारों के साथ जहाज से उतर गए और शकिार की तलाश में द्वीप पर नकिल पड़े। उनमें एक शकिारी था जो ईश्वर-भयभीत और अपनी मोक्ष की चति करने वाला था। अपने साथयिों से अलग होकर, वह अकेले ही उस सुनसान द्वीप पर जानवरों का पीछा करते हुए घूमने लगा; और, उपर्युक्त सुनसान मंदरि को खोज लेने पर, वह उसमें प्रवेश कर गया और अपनी क्षमतानुसार प्रार्थना करने लगा, क्योंकि वह एक साधारण और अनपढ़ आदमी था। जब वह झुका और प्रार्थना कर रहा था, तो उसने ज़मीन में पानी से भरा एक छोटा सा गड्ढा देखा, और पानी में 'ओलयिोट्रॉपयिन'[7653] नामक पौधे के भीगे हुए बीज थे (यह पौधा उस द्वीप पर प्रचुर मात्रा में उगता था), और उसने मन ही मन सोचा: 'यहाँ ईश्वर का कोई सेवक होगा जो इन बीजों को खाता होगा।' हालाँकि, वह शकिारी तुरंत मंदरि से नकिल गया और अपने साथयिों को पकड़ने के लएि दौड़ पड़ा। उसके साथी कई दनिों से द्वीप पर रुके हुए थे, वे जतिने चाहें उतने हरिण और बकरयिाँ पकड़ रहे थे, और वे पहले ही रेगस्तिान से जहाज पर एक बड़ी उपज के साथ लौट रहे थे। तब उपरोक्त शकिारी एक बार फरि से अपने साथयिों से अलग हो गया और परमेश्वर की परम पवत्रि माता से प्रार्थना करने के लएि मंदरि में प्रवेश कयिा; इसके अलावा, वह उस व्यक्ति को देखने की आशा करता था जसिने सूरजमुखी के बीजों को पानी में भगिोया था। जब वह चर्च के बीच में प्रार्थना कर रहा था, तो उसने पवत्रि वेदी के दाईं ओर मोटे जाले देखे, और उनके पीछे कसिी तरह का प्राणी हवा में झूम रहा था। यह जानने की इच्छा से कि जालों के पीछे क्या झूम रहा था, वह पास गया और जाला हटाने ही वाला था, तभी उसे तुरंत एक आवाज़ सुनाई दी:

'रुक जा, आदमी, और पास मत आना; मुझे शर्म आ रही है, क्योंकि मैं एक नग्न महलिा हूँ।'

यह सुनकर, शकिारी भयभीत हो गया और भागना चाहता था, लेकनि अपने भयंकर डर के कारण वह भाग नहीं सका: उसके पैर कांप रहे थे, उसके सरि के बाल खड़े हो गए और काँटों की तरह तीखे हो गए – और वह भय से वहीं खड़ा रहा। कुछ संभलने के बाद, उसने पूछने की हमि्मत की:

'तुम कौन हो, और इस सुनसान जंगल में कैसे रहते हो?'

और एक बार फरि उसने जाल के पीछे से एक आवाज़ सुनी:

'मैं तुमसे वनिती करती हूँ,' उसने कहा, 'मुझे अपने कपड़े फेंक दो, और जब मैं अपनी नग्नता ढक लूँ, तब, जतिना प्रभु मुझे आज्ञा देंगे, मैं तुम्हें अपने बारे में बताऊँगी।'

अपना बाहरी वस्त्र उतारकर, शकिारी ने उसे ज़मीन पर रख दयिा और मंदरि से बाहर नकिल गया। अपनी पत्नी द्वारा उसके कपड़े पहनने की थोड़ी देर प्रतीक्षा करने के बाद, वह वापस अंदर गया और उसे ठीक उसी जगह पर खड़ी हुई देखी जहाँ वह पहले थी। उसका रूप अत्यंत भयानक था, क्योंकि उसमें केवल एक मनुष्य का आभास ही था - उसमें कसिी जीवति व्यक्ति का कोई लक्षण नहीं था, बल्कि वह, मानो, एक लाश थी: उसकी हड्डयिाँ केवल चमड़े से ढकी थीं, उसके बाल सफेद थे, उसका चेहरा काला था, उसकी आँखें गहरी धँसी हुई थीं - और सामान्य रूप से उसका पूरा रूप ताबूत में पड़ी लाश जैसा था; वह मुश्कलि से साँस ले रही थी और केवल फुसफुसा कर ही बोल सकती थी। उसे देखते ही शकिारी और भी अधकि भयभीत हो गया और जमीन पर गरि पड़ा, और उस महलिा से अपनी प्रार्थना और आशीर्वाद देने के लएि कहने लगा। तब, पूर्व की ओर मुड़कर, उसने अपने हाथ उठाए और प्रार्थना करना शुरू कर दयिा; शकिारी उसकी प्रार्थना के शब्द नहीं सुन सका, लेकनि उसे केवल एक मधुर स्वर सुनाई दयिा जो ईश्वर की ओर उठ रहा था। फरि, उसकी ओर मुड़कर, संन्यासनिी ने कहा:

'भगवान तुम्हारे ऊपर दया करें, आदमी – मुझे बताओ, तुम इस रेगस्तिान में क्यों आए हो? इस सुनसान द्वीप पर तुम्हारा क्या काम है, जहाँ कोई नहीं रहता? लेकनि चूँकि, मुझे लगता है, प्रभु तुम्हें मेरी वनिम्रता के लएि यहाँ लाए हैं और तुम मेरे बारे में जानना चाहते हो, तो मैं तुम्हें सब कुछ बताऊँगी।'

और उसने अपनी कहानी इस प्रकार सुनानी शुरू की:

[7653] इलयिोट्रॉपयिन – सूरयमुखी।

– मेरा वतन लेज़वी है; मेरा जन्म मेफमिने नगर में हुआ था[7654] ; मेरा नाम थयोक्टस्टिा है; पेशे से मैं एक नन हूँ, क्योंकि जब मैं अभी भी एक बच्ची थी, तब मैंने अपने माता-पिता को खो दिया था, और मेरे रिश्तेदारों ने मुझे एक कन्वेंट (ननघर) में सौंप दिया और मैंने मठवासी संकल्प ले लिए। एक बार, मसीह के पुनरुत्थान के पर्व पर, जब मैं अठारह साल की थी, मैं आशीर्वाद लेकर अपनी बहन से मिलने पास के एक गाँव में गई, जो वहाँ अपने पति के साथ रहती थी, और मैंने उसके घर पर रात बिताई। आधी रात को, क्रूर नज़िार के नेतृत्व में अरबों ने उस गाँव पर हमला किया। उन्होंने पूरे गाँव को बंधक बना लिया; मुझे भी अन्य लोगों के साथ कैद कर लिया गया, और जब सुबह हुई, तो उन्होंने हमें अपने जहाजों पर चढ़ा दिया और रवाना हो गए। पूरा एक दिन नाव चलाने के बाद, वे रात के लिए इसी द्वीप पर ठहरे, और जब वे बंदियों को उतार रहे थे, तो उन्होंने यह पता लगाने के लिए उनकी जांच-पड़ताल की कि प्रत्येक कितना फिरौती देने को तैयार है। मुझे भी दूसरों के साथ बाहर ले जाया गया, और पास में एक घास का मैदान देख कर, मैं उसकी ओर मुड़ा और भाग गया। मेरे अपहरणकर्ता मेरे पीछे भागे और शिकारियों की तरह मेरा पीछा किया, लेकिन रेगिस्तान ने मुझे उनसे छिपा दिया—या यूँ कहें कि, रेगिस्तान में ईश्वर ने अपनी कृपा से मुझे ढक लिया और मुझे मेरे पीछा करने वालों के हाथों से बचाया, ताकि वे न तो मुझे ढूंढ सकें और न ही पकड़ सकें। मैं इस द्वीप के भीतरी रेगिस्तान में भाग गया और तब तक डरते-डरते भागता रहा जब तक कि कांटेदार पेड़ों और झाड़ियों, साथ ही तेज पत्थरों ने मेरे पैरों को बुरी तरह से जख्मी नहीं कर दिया। और दौड़ने में असमर्थ होकर, मैं जैसे मृत हो कर जमीन पर गिर पड़ा, और धरती मेरे घायल पैरों से बहते खून से लथपथ हो गई। मैंने वह पूरी रात भयानक पीड़ा में बिताई, लेकिन मैंने परमेश्वर का धन्यवाद किया कि उन्होंने मुझे मेरे दुश्मनों के हाथों से बचाया और मुझे निष्कलंक रखा। और मुझे यह विचार आया कि दुष्ट लोगों के बीच रहते हुए और मसीह को अर्पित की गई अपनी कुँवारी अवस्था खोने की तुलना में, इस जंगल में एक कुंवारी होते हुए ही जल्दी मर जाना बेहतर होगा। सुबह मैंने देखा कि दुष्ट डाकू द्वीप से नाव पर चले गए थे, और मैं उनके बंधन से मुक्त होकर आनंदित हो गई; और अपने महान आनंद में मैं अपनी बीमारी को भूल गई। और इस प्रकार, उस समय से अब तक, मैं इस द्वीप पर छत्तीस साल से रह रही हूँ। मैं ओलोट्रोपियन के बीजों पर अपना जीवन यापन करती हूँ, जो यहाँ प्रचुर मात्रा में उगता है, लेकिन मैं परमेश्वर के वचन से और भी अधिक पोषण पाती हूँ: क्योंकि मुझे अभी भी वे सभी भजन, स्तोत्र और पाठ याद हैं जो मैंने अपनी कन्वेंट में सीखे थे, और उनसे मैं सांत्वना पाती हूँ और अपनी आत्मा को पोषण देती हूँ। मेरे कपड़े जल्द ही फट गए और मैं नग्न रह गई, मेरे पास केवल ईश्वर की कृपा ही आवरण थी, जो मुझे हर बुराई से बचाती है।

यह कहने के बाद, उस पूजनीय कन्या ने स्वर्ग की ओर अपने हाथ उठाए और ईश्वर को उनकी अनुपम दया के लिए धन्यवाद दिया, जो उन पर प्रकट हुई थी। फिर, शिकारी की ओर एक बार फिर मुड़कर, उसने कहा:

'मैंने अब अपने बारे में सब कुछ बता दिया है; मैं आपसे केवल एक बात का आग्रह करती हूँ, जो मैं प्रार्थना करती हूँ कि आप मेरे लिए पूरी करेंगे, प्रभु के लिए: जब आप अगली गर्मियों में इस द्वीप पर शिकार करने आएँगे (मुझे पता है कि आप निश्चित रूप से आएँगे, क्योंकि ईश्वर की यही इच्छा है), तो मसीह के परम शुद्ध और जीवन-दायक रहस्यों का एक अंश एक स्वच्छ पात्र में लेकर मुझे यहाँ लाएँ; क्योंकि जब से मैं इस निर्जन स्थान में रहने आई हूँ, मुझे ऐसा वरदान ग्रहण करने के योग्य नहीं समझा गया। अब अपने साथियों के पास शांति से जाओ और मेरे बारे में कुछ भी मत कहना।

शिकारी ने आज्ञा का पालन करने का वादा किया और मसीह की अद्भुत दासी को प्रणाम करके, आनंदित होकर और ईश्वर का धन्यवाद करते हुए चल पड़ा कि उन्होंने उसे अपना ऐसा खजाना दिखाया था, उसे उसे देखने और उससे बात करने का सौभाग्य दिया था, और उसे उन प्रार्थनाओं और आशीर्वादों का पात्र समझा था जिनका संपूर्ण विश्व भी पात्र नहीं था। किनारे पर पहुँचने पर, शिकारी ने अपने साथियों को अपनी प्रतीक्षा करते और उसकी देरी से बेचैन पाता है, क्योंकि वे सोच बैठे थे कि वह रेगिस्तान में भटक गया है। हालाँकि, उसने उनसे वह रहस्य नहीं बताया जिसे बनाए रखने का उसे आदेश मिला था - और इस प्रकार वे घर वापस चल पड़े। इस बीच, शिकारी गर्मियों के आने का इंतजार कर रहा था जैसे कि यह कोई बड़ी खुशी हो, और वह मरुस्थल में महल की तरह निवास करने वाली मसीह की पवित्र वधू को एक बार फिर देखने के लिए तरस रहा था। जब वह लंबे समय से प्रतीक्षित समय आया, तो उसने अपने साथियों के साथ फिर से पेरॉस द्वीप पर शिकार करने के लिए जहाज से जाने की व्यवस्था की। जहाज़ पर चढ़ने से पहले, उसने पुजारी से, एक छोटे, साफ़ ताबूत में, मसीह के परम शुद्ध और जीवन-दायक रहस्यों का एक अंश लिया, जैसा कि धन्य थियोक्तिस्ता ने

[7654] लेस्बिया – लेसबोस – ईजियन सागर में एक द्वीप, जिसे बाद में इसके मुख्य शहर, मिटिलिनि के नाम पर रखा गया। द्वीप के उत्तरी भाग में मेफमिना का शहर स्थित है, जिसे अब मोलिवोस कहा जाता है, और इसकी विस्तृत बंदरगाहें थीं, जो पेलोपोनशियिन युद्ध (406 ईसा पूर्व) के समय तक ही खंडहर में बदल चुकी थीं।

उसे नरि्देश दयिा था, और, उस अंश को सम्मानपूर्वक अपने साथ रखकर, समुद्र यात्रा शुरू कर दी। द्वीप पर पहुँचकर, वह दविय रहस्यों के साथ परम पवत्रि ईश्वर माता के उस सुनसान चर्च में गया, जहाँ उसने पछिले वर्ष धन्य व्यक्तसि वार्तालाप कयिा था; लेकनि, चर्च में प्रवेश करने पर, उसे संत थयिोक्तस्टिा नहीं मलिीं। और उसने सोचा कपिूजनीय या तो कसिी दूर के रेगस्तिान में चली गई थीं या उन्होंने स्वयं को अदृश्य कर लयिा था, क्योंकउिसके कुछ अन्य साथी उस शकिारी के साथ आए थे। दुखी होकर, शकिारी चर्च से नकिल गया और अपने साथयिों के पीछे चल दयिा। कुछ ही देर बाद, वह चुपके से उनसे अलग हो गया और अकेले ही वापस चर्च गया – और तुरंत ही पूजनीय थयिोक्टस्टिा उसी जगह पर प्रकट हुईं जहाँ वह पहले खड़ी थीं, और उन्होंने वही कपड़े पहने हुए थे जो शकिारी ने उन्हें पछिले साल दएि थे। उस धन्य को देखकर, शकिारी ज़मीन पर गरि पड़ा और उसके सामने झुक गया। वह, बदले में, जल्दी से उसके पास आई और आँसुओं के साथ कहा:

'ऐ मनुष्य, ऐसा मत करो, क्योंकतिुम्हारे हाथ में दविय उपहार हैं; मसीह के रहस्यों का अपमान मत करो, और मेरी दुर्बलता से दुखी मत हो, क्योंकमिैं एक अयोग्य स्त्री हूँ।'

और शकिारी का वस्त्र पकड़कर, उसे ज़मीन से उठा लयिा। उसने, बदले में, दविय रहस्यों से भरा ताबूत नकिाला और उसे उसकी ओर बढ़ा दयिा[7655] । उस पूजनीय महलिा ने पहले दविय रहस्यों के सामने ज़मीन पर सरि झुकाया और अपने आँसुओं से धरती को भीगा दयिा। फरि, उठकर, उसने पवत्रि उपहार अपने हाथों में ग्रहण कएि, उनका सेवन कयिा, और गहरी भावना के साथ कहा:

'अब, हे प्रभु, अपने दास को शान्तमिें जाने दे, क्योंकमिेरी आँखों ने मेरा उद्धार देख लयिा है, और मैंने पापों की क्षमा अपने हाथों में ग्रहण कर ली है। अब मैं वहाँ जाऊँगी जहाँ आपकी कृपा मुझे ले जाएगी।'

यह कहकर, उसने दुख के साथ अपने हाथ उठाए और लंबे समय तक प्रार्थना करते हुए और परमेश्वर की महमिा करते हुए खड़ी रही। फरि, आशीर्वाद देकर, उसने शकिारी को उसके साथयिों के पास वापस भेज दयिा।

मरुभूमम में कई दनि बतिाने के बाद, शकिारयिों ने कई बकरयिाँ और हरिण पकड़े और जहाज पर लौट आए। लेकनि वह शकिारी एक बार फरि उन्हें छोड़कर अकेले मंदरि में चला गया, ताकवि‍ह अपनी यात्रा के लएि उस पूजनीय महलिा की प्रार्थना और आशीर्वाद प्राप्त कर सके। वह उस स्थान पर पहुँचा जहाँ उसने पहले उसके साथ बात की थी और उसने उस पूजनीय महलिा को जमीन पर मृत पड़ा हुआ देखा; उसके हाथ उसकी छाती पर जुड़े हुए थे, जबकउिसकी पवत्रि आत्मा ईश्वर के हाथों में चली गई थी[7656] । उसके पवत्रि अवशेषों के सामने साष्टांग दंडवत करते हुए, शकिारी ने उसके पवत्रि पैरों को चूमा और उन्हें अपने आँसुओं से धोया। और वह इस बात को लेकर असमंजस में था कक्यिा करे, क्योंकवि‍ह एक बहुत ही साधारण आदमी था और अपना जीवन लोगों के बीच शहरों में रहने की तुलना में जंगली जानवरों के बीच, जंगल में अधकि बतिाता था। उसके मन में यह वचिार भी नहीं आया कवि‍ह दूसरे शकिारयिों के पास जाए और उन्हें बताएं कक्यिा हुआ था, ताकवि‍ वे सब मलिकर इस पवत्रि शरीर को उचति अंतमि संस्कार दे सकें। जल्दी से जतिनी मट्टिी खोद सकता था, उतनी खोदकर, उसने अकेले ही उस आदरणीय महलिा के शरीर को उसमें सुला दयिा। ऐसा करते हुए, उसने अपने लएि एक आशीर्वाद के रूप में उस पवत्रि शरीर से एक हाथ काट लयिा, यह इच्छा रखते हुए कवि‍ह उस हाथ को

[7655] इस बारे में अपने वृत्तांत में, रोस्तोव के संत डेमेट्रयिस लखिते हैं: 'वर्तमान समय में, कुछ ईसाई इस बात पर आश्चर्यचकति हैं कदिविय रहस्यों को उस शकिारी को रेगस्तिान में ले जाने के लएि सौंपा गया था, और उसने, जो एक सामान्य व्यक्तथिा और जसिे पुरोहति नहीं बनाया गया था, उन रहस्यों को ले जाने की हम्मित कैसे की, जन्हिें केवल पुरोहतिों द्वारा ही ले जाया जाना चाहए। लेकनि उन्हें इससे आश्चर्य नहीं होना चाहए – प्रारंभकि कलीसयिा की यही प्रथा थी: उन दनिों, अनयिुक्त लोगों को भी दविय सहभाग को अपने हाथों में लेने और इसे कलीसयिा से दूर घरों में और लंबी यात्राओं पर अपने साथ ले जाने की अनुमतथिी... लेकनि बाद में पवत्रि पतिाओं ने गैर-पुजारी लोगों को मसीह के शरीर को अपने हाथों में लेने और उसे चर्च से बाहर ले जाने से मना कर दयिा; वशिेष रूप से संत जॉन क्राइसोस्टोम ने ऐसा कयिा, और उन्होंने ऐसा नम्निलखिति कारण से कयिा। कॉन्स्टेंटनिोपल में अपने पैट्रआर्कात् के दौरान, एक कुलीन महलिा ने चर्च में मसीह के परम शुद्ध शरीर का एक अंश प्राप्त करने के बाद, उसे घर ले जाकर जादू-टोने के कसिी औषधमिें मलिा दयिा। यह जानने पर, संत जॉन क्राइसोस्टोम ने उस समय से यह आदेश दयिा कसिभी चर्चों में, मसीह के शरीर को लोगों के हाथों में नहीं रखा जाना चाहए, बल्कदिविय रक्त—जो शराब के रूप में छपिाया जाता था—के साथ मलिकर, इसे चम्मच के माध्यम से मुँह में ग्रहण कराया जाना चाहए। उस समय तक, चर्च में चम्मचों का उपयोग नहीं कयिा जाता था; इसके बजाय, मसीह के शरीर के टुकड़े सीधे वशि्वासयिों के हाथों में रखे जाते थे, जबकपिवत्रि रक्त एक प्याले से परोसा जाता था। उस समय से, सेंट क्रसिोस्टोम की आज्ञा से, दविय संस्कार चम्मच के माध्यम से दयिा जाने लगा, और इसे केवल दीक्षा प्राप्त लोगों को ही ग्रहण करने की अनुमतथिी, जबकदिीक्षा न प्राप्त लोगों को इसे कसिी भी तरह से छूने की अनुमतनिहीं थी, ताकपिवत्रि रहस्यों का अपमान न हो।

[7656] संत थयिोकटस्टिस की मृत्यु 881 में, पारोस द्वीप पर 36 वर्षों के तपस्वी जीवन के बाद हुई।

अपने घर में सम्मान के साथ रखे। लेकिन यद्यपि उसने यह सब श्रद्धा से, उस पूज्य के प्रति प्रेम और भक्ति के कारण किया था, यह कर्म ईश्वर को प्रसन्न नहीं हुआ, जैसा कि निम्नलिखित वृत्तांत से स्पष्ट है। हाथ काटकर, उसने उसे एक साफ रूमाल में लपेटा और उसे अपनी छाती में रखकर अपने साथियों के पास गया, जो पहले से ही जहाज पर थे, लेकिन उसने उनसे कुछ नहीं कहा। जब वे तट से रवाना हुए तो काफी देर हो चुकी थी, और पाल फहराकर वे अनुकूल हवा के साथ चल पड़े। सभी शिकारियों को लगा कि उनका जहाज तेज़ी से उड़ते पक्षी की तरह चल रहा है, इसलिए उन्होंने सुबह-सुबह माउंट यूबिया पहुँचने की उम्मीद की। लेकिन जब भोर हुई, तो वे खुद को उसी जगह पर पाया - पारोस द्वीप के तट पर - और उनका जहाज स्थिर खड़ा था, मानो किसी लंगर से जकड़ा हो या किसी रेमोरा मछली[7657] द्वारा पीछे खींचा जा रहा हो / सभी पर भय छा गया, और उन्होंने एक-दूसरे से पूछा कि क्या किसी ने पाप किया है और किसके पाप के कारण उनका जहाज़ अपनी जगह से हिल भी नहीं पा रहा था। तब उस शिकारी ने, जिसने संत का हाथ पकड़ा था, अपने पाप का एहसास करते हुए जहाज़ छोड़ दिया और अपने साथियों को बताए बिना चर्च चला गया। उस पवित्र व्यक्ति के अवशेषों के पास जाकर, उसने उनकी पवित्र हथेली को उस समस्याग्रस्त जोड़ पर, उसकी सही जगह पर रखा, और संक्षेप में प्रार्थना करने के बाद, अपने साथियों के पास लौट आया। जब वह जहाज पर चढ़ा, तो वह तुरंत ही चल पड़ा और बिना किसी बाधा के आगे बढ़ता गया, और सभी ने आनंद मनाया। जैसे ही जहाज़ तेज़ी से चल रहा था और यूबोइया के पास पहुँच रहा था, शिकारी ने अपने साथियों को वह सब कुछ बताना शुरू किया जो उसके साथ हुआ था: कि पिछली गर्मियों में उसने पूजनीय थियोक्टिस्टा को कैसे पाया था; इस गर्मी में वह उसके लिए दिव्य उपहार कैसे लाया था; और कैसे, संत की मृत्यु के बाद, उसने उनका हाथ ले लिया था, और इसी कारण से वे पूरी रात रुके रहे। यह सब सुनकर वे गहरे तौर पर प्रभावित हुए, लेकिन वे शिकारी से इस बात पर बड़बड़ाने और गुस्सा होने लगे कि उसने उन्हें उस द्वीप पर रहते हुए यह बात नहीं बताई थी, 'ताकि,' उन्होंने कहा, 'हमें भी ईश्वर के प्रियजन का आशीर्वाद मिल जाता'। जहाज़ को घुमाकर, वे बहुत जल्दबाजी में पैरॉस वापस चले गए और, द्वीप पर पहुँचने पर, एक साथ चर्च गए। डरते-डरते वे उस स्थान पर पहुँचे जहाँ पूजनीय महिला का पवित्र शरीर पड़ा होने का अनुमान था; उन्होंने वह जगह देखी, लेकिन वहाँ कोई शरीर नहीं मिला—उन्होंने केवल जमीन पर पड़े शरीर का निशान देखा, क्योंकि जहाँ उनका सिर और पैर रखे थे, वहाँ के निशान स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहे थे। वे सभी बहुत हैरान और इस बात से परेशान थे कि पूजनीय महिला कहाँ गायब हो गई थी। उनमें से कुछ ने कहा कि वह मृतकों में से जी उठी थीं; दूसरों ने कहा कि वह सामान्य पुनरुत्थान से पहले नहीं जी उठी थीं, बल्कि स्वर्गदूतों के हाथों किसी अन्य स्थान पर ले जाई गई थीं और दफनाई गई थीं, ठीक वैसे ही जैसे कभी पवित्र शहीद कैथरीन को दफनाया गया था। फिर भी, वे उसे खोजने के लिए पूरे द्वीप में बिखर गए, इस उम्मीद में कि उन्हें वह मिल जाएगी—चाहे वह जीवित हो, पुनर्जीवित हो, या मृत होकर किसी अन्य स्थान पर ले जाई गई हो। साधारण और अनपढ़ होने के कारण, उन्होंने ईश्वर के रहस्यों को समझने की कोशिश की, जिन्हें कोई नहीं जानता। उसकी हर जगह अच्छी तरह से खोज करने पर जब उन्हें कुछ नहीं मिला, तो वे चर्च लौट आए और गहरी भावना के साथ उस स्थान को चूमा जहाँ पूजनीय संत का शरीर पड़ा था। प्रार्थना करने के बाद, वे घर लौट गए और लोगों को पूजनीय थियोक्तिस्टा के बारे में सब कुछ बताया, और सभी चकित हुए और परमेश्वर की महिमा की, जो अपने संतों में अद्भुत हैं; उसकी महिमा युगानुयुग होती रहे। आमेन।

परम पूज्य जॉन कोलोव का जीवन

9 नवंबर को स्मरण किया जाता है

9 नवंबर को, ऑर्थोडॉक्स चर्च पूजनीय जॉन कोलोव[7658] का सम्मान करती है। पूजनीय जॉन को यह नाम उनके छोटे कद के कारण मिला[7659] । अपनी युवावस्था में ही, उन्होंने संसार का त्याग कर दिया और अपने भाई डैनियल के साथ मिस्र के स्केट रेगिस्तान[7660] चले गए। शुरुआत में, वह और उसका भाई डेनियल पूर्ण एकांत में तपस्या का जीवन जीते थे,

---

[7657] इस मछली को रेमोरा कहा जाता है क्योंकि जब यह किसी जहाज के चारों ओर बड़े झुंड में इकट्ठा होती है, तो यह जहाज की गति में बाधा डालती है।

[7658] संत जॉन कोलोव ने पाँचवीं शताब्दी के पहले भाग में जीवन यापन किया और सेवा की।

[7659] 'कोलोव' का ग्रीक से अनुवाद 'कद में छोटा' होता है।

[7660] मिस्र का स्केटे रेगिस्तान, जिसे सरलता से 'स्केटे' भी कहा जाता था, मिस्र के उत्तर-पश्चिमी भाग में माउंट नाइट्रियन से एक दिन की यात्रा (25–30 वर्स्ट) की दूरी पर स्थित था। यह एक शुष्क, चट्टानी रेगिस्तान था, जो मिस्र के संन्यासियों का पसंदीदा ठिकाना था, और यह उन

लेकिन बाद में उसे एहसास हुआ कि, अपनी जोशीली और आवेगपूर्ण प्रकृति को देखते हुए, कठोर तपस्या केवल अन्य, अधिक अनुभवी तपस्वियों - बुज़ुर्गों - के सख्त मार्गदर्शन में ही की जा सकती है। उसे एक सख्त और अनुभवी मार्गदर्शक की आवश्यकता का यह एहसास निम्नलिखित घटना से हुआ, जो उसके और उसके भाई के रेगिस्तान में आने के कुछ ही समय बाद घटी। एक दिन, बिल्कुल अप्रत्याशित रूप से, उसने अपने भाई और साथी तपस्वी से कहा:

'मैं अब किसी भी चीज़ की परवाह नहीं करना चाहता; मैं एक देवदूत की तरह, बिना दुख के, रेगिस्तान में रहना चाहता हूँ।'

यह कहकर, उसने अपने कपड़े उतार दिए और अपनी कुटिया से निकल गया। उस रात कड़ाके की ठंड पड़ रही थी: नग्न अवस्था में, जॉन ने बहुत देर तक ठंड से संघर्ष किया; अंततः जब वह और सहन नहीं कर सका, तो उसने अपनी कुटिया में लौटने का निश्चय किया।

जब ठंड से काँपता हुआ जॉन ने दरवाज़ा खटखटाया, तो अंदर से डैनियल की आवाज़ आई, "वहाँ कौन है?"

जॉन ने जवाब दिया, 'मैं हूँ, तुम्हारा भाई; मैं अब और ठंड सहन नहीं कर सकता और तुम्हारी सेवा करने के लिए वापस आया हूँ।'

'दूर हट जा, राक्षस,' डैनियल ने पलटकर कहा, 'और मुझे प्रलोभित मत कर; एक देवदूत अपने शरीर की परवाह नहीं करता और न ही उसे भोजन की आवश्यकता होती है।'

यह देखकर, पूजनीय जॉन को एहसास हुआ कि उन्होंने अपनी ही ताकत पर बहुत अधिक भरोसा कर लिया था, जो पीड़ा और प्रलोभन के संघर्ष में अभी भी अपरिपक्व थी; उन्होंने अपनी गलती को समझा और उस पर कड़वाहट से रो पड़े। फिर दानियल ने उनके लिए अपनी कोठरी का दरवाज़ा खोल दिया और कहा:

'मेरे भाई, चूंकि तुम देहधारी हो, तुम्हें अपने शरीर और देह के लिए कष्ट सहना होगा।'

इस उपदेश का पालन करते हुए, वह जल्द ही डैनियल को छोड़कर पिमेन नामक एक वृद्ध से मिलने चल पड़ा। वह अपने भीतर एक दृढ़ इच्छाशक्ति विकसित करना चाहता था, जो किसी भी पराक्रम के लिए तैयार हो और एक बार चुने हुए मार्ग से कभी न भटके; इस बीच, आदरणीय पिमेन अपनी दृढ़ और अडिग इच्छाशक्ति के लिए प्रसिद्ध थे। आदरणीय पिमेन का संसार त्याग इतना पूर्ण था कि उन्होंने अपनी ही माँ को देखने से भी इनकार कर दिया, जो उनसे मिलने के लिए तपस्या स्थल पर आई थीं। इसी तरह के एक वृद्ध, इतने दृढ़ चरित्र वाले के पास, अधीर, भावुक और उत्साही जॉन—जो अभी तक अपने चुने हुए तपस्वी प्रयासों की अटूट खोज में पूरी तरह से स्थापित नहीं हुआ था—पहुँचा। वहाँ पहुँचने पर, जॉन ने हर बात में उसकी आज्ञा मानने का वादा किया, जो कुछ भी वह उससे माँग सकता था। आदरणीय पिमेन ने, उनके धैर्य की परीक्षा लेने के लिए, उन्हें एक पूरी तरह से सूखे पेड़ में पानी देने को कहा, और तीन साल तक उन्होंने इस पेड़ को पानी देने में परिश्रम किया, भले ही वह पहले से ही इतना सूखा था कि सभी को उनका परिश्रम पूरी तरह से व्यर्थ ही लगा होगा। लेकिन सच्चाई यह है कि पूजनीय जॉन की मेहनत और धैर्य व्यर्थ नहीं गए: तीन साल बाद, सूखा हुआ पेड़ हरी-भरी हरियाली से ढक गया और उस पर भरपूर फल लगे। इस चमत्कार के सभी साक्षी लोगों ने उस पेड़ का नाम 'आज्ञापालन का वृक्ष' रखा।[7661] । श्रद्धेय पिमिन के पास एक उत्कट आत्मा के साथ आए, श्रद्धेय जॉन ने उनसे एक मेमने की नम्रता और विनिम्रता प्राप्त की। एक बार, एक भाई ने उनसे कहा:

'तुम्हारा हृदय दुष्ट है।'

'यह सच है,' जॉन ने नम्रता से उत्तर दिया, 'और आप जितना सोचते हैं उससे भी अधिक दुष्ट।'

अपमानों को नम्रता से सहने की उनकी क्षमता ऐसी थी।

प्रारंभ में दूसरों के मार्गदर्शन में रहने के बाद, परम पूज्य जॉन ने बाद में स्वयं दूसरों का बुद्धिमानी से मार्गदर्शन करने की क्षमता प्राप्त की। प्रभु ने उन्हें परम पूज्य आर्सेनियस महान के मार्गदर्शक और गुरु नियुक्त किया, जो बाद में, उनके ही समान, अपने महान कार्यों के लिए प्रसिद्ध हुए[7662] । यह आर्सेनियस, जो जन्म से कुलीन थे, सीधे शाही दरबार से रेगिस्तान में आए थे, जहाँ वे सम्राट थियोडोसियस महान के बच्चों: हॉनोरीयस और आर्काडियस के शिक्षक

भिक्षुओं के तपस्यापूर्ण करतबों के लिए प्रसिद्ध हो गया, जिन्होंने वहाँ शरण ली थी। अन्य मठवासी मरुभूमि बस्तियाँ, जहाँ सबसे भक्तिमय भिक्षु एक ईश्वर में सबसे कठोर एकांत और अखंड मौन के लिए बस गए थे, ने बाद में इसी स्थान से 'स्केट' नाम लिया।

[7661] जॉन के एक समकालीन ने वर्ष 402 में इस वृक्ष को देखा था। आज भी यह आज्ञाकारिता का वृक्ष अपरिवर्तित है, फल-फूलों से लदा और हरे-भरे पत्तों से सुसज्जित।

[7662] 8 मई को परम पूजनीय आर्सेनियस महान की स्मृति

थे। दरबार छोड़कर, जहाँ वह महान सम्मानों से घरिा हुआ था, उसने—हालाँकि वह अभी भी अपेक्षाकृत युवा था (तब उसकी उम्र लगभग चालीस वर्ष थी) लेकिन पहले से ही आध्यात्मिक रूप से अनुभवी तपस्वी था—अपने आध्यात्मिक विकास और आत्म-सुधार को जारी रखने के लिए, अपनी इच्छा को पूजनीय जॉन की निश्रित सेवा में लगाने का संकल्प लिया। शुरू में, कुछ भाइयों को यह अजीब लगा कि इतनी उच्च शिक्षा और इतने कुलीन वंश का व्यक्ति अपनी और अधिक प्रबुद्धता के लिए साधारण और अनपढ़ बड़ों के पास आए। भाइयों में से एक अपनी जिज्ञासा छिपा नहीं सका और एक दिन उससे पूछा:

'यह कैसे है कि आपने ग्रीक और रोमन ज्ञान का अध्ययन करने के बाद, एक साधारण और अनपढ़ बूढ़े से मार्गदर्शन मांगा है?'

'यह सच है कि मुझे विद्वितापूर्ण शिक्षा प्राप्त है,' आर्सेनियस ने उत्तर दिया, 'लेकिन मुझे तो इस साधारण और अनपढ़ व्यक्ति के ज्ञान की एबीसी भी नहीं आती, क्योंकि,' उन्होंने समझाया, 'नम्रता सभी सद्गुणों का आधार है, जैसे कि एबीसी साहित्यिक जीवन का आधार है।'

एक समय के उत्साही और गर्वित जॉन के मठ में विनिम्रता के प्रति उनका ऐसा सम्मान था। कई वर्षों तक एक साथ तपस्वी जीवन जीने के बाद ही, जब आर्सेनियस ने एक रहस्यमयी आवाज़ सुनी जो उसे लोगों से दूर भागने और मौन में रहने के लिए बुला रही थी, क्योंकि 'मौन पापहीनता की जड़ है', तब पूजनीय जॉन ने उसे समुदाय छोड़ने और रेगिस्तान में पूर्ण एकांत और मौन में खुद को समर्पित करने का आशीर्वाद दिया। फिर भी, अपने विनिम्र गुरु और अपने सभी शिष्यों के प्रति उनके गहरे प्रेम ने उन्हें कई मौकों पर अपनी मरुस्थलीय एकांत को छोड़कर कुछ समय के लिए मठ लौटने के लिए प्रेरित किया।

अपने स्वयं के मोक्ष के लिए उत्सुक, आदरणीय जॉन ने दूसरों के मोक्ष के लिए भी समान उत्साह से परवाह की। अपने समय में, अलेक्जेंड्रिया शहर में थाइस नाम की एक युवती रहती थी। धार्मिक माता-पिता द्वारा पाली गई, उनके निधन के बाद उसने विरासत में मिली अपनी पूरी संपत्ति धर्मार्थ कार्यों के लिए उपयोग की। जिस स्केटे में आदरणीय जॉन रहते थे, उसके बुजुर्ग अक्सर शहर में आने पर उसके घर में आश्रय लेते थे। अचानक, बुजुर्गों तक यह खबर पहुँची कि थाइस ने अपनी संपत्ति बहुत पहले ही खर्च कर दी थी और अब, गरीबी का सामना न कर पाने के कारण, उसने अपनी सुंदरता और जवानी को अपना भरण-पोषण करने के लिए आय का स्रोत बना लिया था। सदाचारी ताइसाइया के इतने पतन के बारे में जानकर बुजुर्गों को गहरा दुख हुआ और अंततः उन्होंने उस अनाथ को उसके विनाशकारी भूल से दूर करने का प्रयास करने का संकल्प लिया। उन्होंने यह कठिन कार्य रेवरेंड जॉन को सौंपने का फैसला किया।

उन्होंने उससे कहा, 'ईश्वर ने तुम्हें बुद्धि दी है, फिर भी हमें खबर मिली है कि सिस्टर तैसिया, जो हमारी प्रति इतनी परोपकारी रही हैं, एक बहुत ही दुराचारपूर्ण जीवन जी रही हैं। कृपया, बाबा, उनसे मिलने जाइए और उनसे बात कीजिए; शायद आपके शब्द उन्हें होश में ला दें।'

रेवरेंड जॉन ने प्रार्थना की और तुरंत निकल पड़े। वह जानते थे कि ऐसे मामले में देरी करने का समय नहीं था। हर बीतते घंटे के साथ, तैसिया अपनी पतन की ओर और भी गहराई में डूब सकती थी। वह तैसिया के घर के सामने खड़े थे, लेकिन अब बुजुर्गों के लिए प्रवेश बंद कर दिया गया था। जैसे पहले घर से अपनी ज़रूरतों के लिए कुछ भी लेना चाहने वाले किसी भी व्यक्ति को अंदर आने की अनुमति थी, वैसे ही अब, इसके विपरीत, केवल पैसे और खजाना लेकर आने वालों को ही प्रवेश की अनुमति थी। बुजुर्ग विनीतता से नौकरानी की ओर मुड़ा और उससे अपनी मालकिन को अपने आगमन की सूचना देने के लिए कहा। लेकिन जैसे मालकिन का स्वभाव बदल गया था, वैसे ही उसकी नौकरानियों का भी बदल गया था। उस असभ्य नौकरानी ने, यह जानते हुए कि वह विनिम्र बुजुर्ग उसकी मालकिन के साथ कुछ भी साझा नहीं कर सकता, उसके अनुरोध का जवाब अपशब्दों की झड़ी लगाकर दिया। सम्माननीय बुजुर्ग ने विनिम्रता से उसके अपशब्दों को स्वीकार किया और एक बार फिर अपना अनुरोध दोहराया, केवल यह जोड़ते हुए:

'अपनी मालकिन से यह भी कह दो कि मैं उसके लिए कीमती चीज़ें जुटा सकता हूँ।'

तब नौकरानी ने उसे अपनी मालकिन के पास रिपोर्ट करने का निश्चय किया।

'उसे अंदर आने दो,' ताइसा ने कहा, 'भिक्षु समुद्र तट पर चलते हैं, और वे वास्तव में कभी-कभी कीमती सीप और पत्थर पाते हैं।'

रेवरेंड जॉन ताइसिया के कक्ष में आए, उसके बगल में बैठ गए, एक गहरी आह भरकर रोने लगे।

'तुम रो क्यों रही हो?' ताइसाया ने आश्चर्य से पूछा।

'तुम्हें ईसा मसीह, अमर वर, से किस बात ने दूर कर दिया? तुमने उनका स्वर्गीय महल क्यों भुला दिया और अपने आपको अशुद्ध कर्मों से क्यों कलंकित कर लिया?' रेवरेंड फादर ने पूछा।

और अचानक उस दुर्भाग्यपूर्ण महिला को मसीह याद आए, जिन्हें वह लंबे समय से भूल चुकी थी, और जिन्हें उसके स्वर्गीय माता-पिता ने उसके बचपन में प्रेम करना सिखाया था। परमेश्वर के वृद्ध के शब्द, आग की तरह, उन सभी खरपतवारों को जलाकर भस्म कर गए जिन्होंने उसके हृदय में बहुत समय पहले बोए गए अच्छे बीजों को दबा रखा था। सच्ची पश्चाताप ने तुरंत ही उस पर हावी होकर उसके पूरे अस्तित्व को हिला दिया।

'पादरीजी! पादरीजी! मुझसे कहिए: क्या मेरे जैसे लोगों के लिए क्षमा है?' वह भयानक बेचैनी में चिल्लाई।

'है,' वृद्ध ने उत्तर दिया, 'उद्धारकर्ता हमेशा उन लोगों का इंतजार करते हैं जो सच्चे मन से पश्चाताप करते हैं और उन्हें क्षमा कर देते हैं। पश्चाताप करो, और स्वर्ग के सभी स्वर्गदूत तुम्हारे लिए आनंदित होंगे!'

तब ताइसा ने बूढ़े से विनती की, "तो मुझे ले चलो, मुझे इस जगह से दूर ले चलो; मुझे जहाँ चाहो वहाँ ले चलो, बस मुझे पश्चाताप के लिए एक उपयुक्त जगह दिखा दो।"

वह अपने साथ उसके घर से चली गई, जो कई दिनों के पापों से कलंकित था, और उसने अपनी अवैध रूप से अर्जित संपत्ति के संबंध में कोई भी व्यवस्था नहीं की। वह इस तीव्र इच्छा से भर गई थी कि उसने जिस जीवन के फिसलन भरे और लापरवाह रास्ते को चुना था, उस पर फिर कभी पैर न रखे। आदरणीय जॉन ईश्वर की कृपा के अद्भुत कार्यों पर चकित थे, और सर्वशक्तिमान और दयालु प्रभु की स्तुति करते हुए, उन्होंने अपनी तीर्थयात्री को उस पापी शहर से दूर, और भी अधिक निर्जन स्थान में ले जाया, जहाँ उसने लगभग अपना विनाश कर लिया था। रात हो गई। थके हुए यात्री के लिए, रेवरेंड ने रेत से एक तकिया बनाया और कहा, 'अब आराम करो।' उस पर क्रॉस का चिह्न बनाने के बाद, वह उससे कुछ दूर हट गए और अपनी रोज़ की शाम की प्रार्थनाओं के बाद, खुद भी रात के लिए आराम करने चले गए। और अपने सपने में, बुजुर्ग ने उस जगह को देखा जहाँ उसने ताइसिया को छोड़ा था: वह एक असाधारण तेज से घिरी हुई थी, जो स्वर्ग तक उठ रहा था; और वहाँ, इस तेज के बीच, एक स्वर्गीय देवदूत उसकी पीड़ित आत्मा को स्वयं प्रभु के पास उठा ले जा रहा था। जैसे ही वृद्ध अपनी नींद से जागे, वे तुरंत उस स्थान पर दौड़ पड़े जहाँ उन्होंने ताइसिया को छोड़ा था, और वहाँ पहुँचने पर, उन्होंने वास्तव में उसे पहले ही मृत पाया।

'इस पापी के एक घंटे की सच्ची पश्चाताप ने दयालु न्यायाधीश को संतुष्ट कर दिया और भटकी हुई बेटी को उसके प्रेममय पिता के पास लौटा दिया,' यह कहते हुए सम्माननीय पिता ने, भोर तक प्रार्थना में रात बिताने के बाद, उस सुबह धन्य ताइसिया के शरीर को दफनाया। मठ में लौटने पर, उन्होंने ताइसा के अद्भुत पश्चाताप और महिमा के अपने वृत्तांत से सभी संतों को बहुत प्रसन्न किया, जिसे वे सभी जानते थे।

आदरणीय जॉन कोलोव एक लेखक के रूप में भी जाने जाते हैं। अन्य भिक्षुओं द्वारा दर्ज की गई उनकी कई कहावतों के अलावा, उन्होंने आदरणीय पैसियस के जीवन का एक विस्तृत और सुंदर वृत्तांत भी छोड़ा है, जिसे उन्होंने स्वयं के शब्दों में, 'सामान्य भलाई के लिए' संकलित किया था। माननीय जॉन इस पैइसियस को, जो सही रास्ते से भटक गया था, इस हद तक मनाने में सफल रहे कि उसने अचानक और अपरिवर्तनीय रूप से अपने सभी सांसारिक सामान का त्याग कर दिया और अपने शेष जीवन काटी-पहाड़ियों में पश्चाताप में बिताया। पुण्यचरित में आदरणीय पैइसियस द्वारा किए गए कई चमत्कारों का वर्णन करने के बाद, आदरणीय जॉन ने यह आवश्यक समझा कि वे अपना निम्नलिखित विचार जोड़ें:

'उनके महिमामय और अलौकिक कार्यों को सुनकर कोई संदेह न करे, न ही यह सोचे कि मैंने अपने प्रिय इस पिता को अधिक सम्मान देने के लिए इसमें अपनी ओर से कुछ जोड़ा है। वह सभी मानवीय सम्मान से परे हैं और उन्हें निम्न पद वालों से प्रशंसा की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि उन्हें पवित्र स्वर्गदूतों में सबसे ऊँचे द्वारा प्रशंसित किया जाता है। मैं यह उन लोगों के लाभ के लिए बता रहा हूँ जो सुनते हैं और उनके गुणों का अनुकरण करना चाहते हैं; मैं केवल वही बताता हूँ जो मैंने अपनी आँखों से देखा है और अपने कानों से सुना है।

यह संक्षिप्त टिप्पणी एक लेखक के रूप में पूजनीय जॉन के चरित्र को स्पष्ट रूप से दर्शाती है।

माननीय जॉन के परमधाम जाने की सटीक तिथि स्थापित नहीं हो सकी है। इसे आम तौर पर या तो वर्ष 422 या 430 में माना जाता है। जहाँ तक उस स्थान का सवाल है जहाँ यह हुआ, यह कोल्ट्सुम, या आज के सूएज़ के पास का रेगिस्तान था। उनके पवित्र अवशेष मिस्र में सेंट मीना द मार्टियर के चर्च में रखे गए हैं। एक प्राचीन धार्मिक योद्धा के रूप में उनका नाम ऑर्थोडॉक्स चर्च की सीमाओं से भी परे जाना जाता है।

पवत्रि शहीदों ओनसिीफोरस और पोर्फीरयिस का स्मरणोत्सव

9 नवंबर को स्मरण कयिा जाता है

पवत्रि शहीदों ओनसिीफोरस और पोर्फीरयिस रोमन सम्राट डायोक्लेटयिन के शासनकाल में रहे। इस दुष्ट सम्राट द्वारा ईसाइयों पर कएि गए क्रूर अत्याचारों के दौरान, उन्हें मसीह के लएि भयंकर यातनाएँ सहने योग्य माना गया। उन्हें पूरे शरीर पर अमानवीय पटिाई और वभिन्नि प्रकार की भयानक यातनाओं का सामना करना पड़ा। बाद में, यातना देने वालों ने मसीह के इन शहीदों को लंबी सलाखों पर रखा और आग जलाकर उन्हें जला दयिा। अंत में, उन्हें क्रूर, जंगली घोड़ों से बांध दयिा गया। पथरीली और ऊबड़-खाबड़ जमीन पर घसीटे जाने से, पवत्रि शहीद पूरी तरह से टुकड़े-टुकड़े हो गए और, ऐसी यातनाओं के बीच, उन्होंने अपनी आत्माएँ ईश्वर को सौंप दीं। वश्विासयिों ने रात के समय चुपके से उनके अवशेषों को इकट्ठा कयिा और उन्हें ' ' के गाँव में सम्मान के साथ दफनाया, जहाँ से ईश्वर की महमिा के लएि, जो अपने संतों में अद्भुत और त्रमिूर्त मिें महमिामय है, अनेक चमत्कार और चंगाईयाँ प्रवाहति होने लगीं।[7663]

कॉन्टाकयिन, स्वर 2:

दोनों शहीदों ने, बहुत कष्ट सहने के बाद और शत्रु के घमंड को धूल चटाने के पश्चात्, अकल्पति त्रमिूर्त की कृपा से प्रकाशति हुए; महमिामय ओनसिीफोरस और पोर्फीरयिस, हम सभी के लएि अनवरत प्रार्थना करो।

पूजनीय यूस्टोलयिा और सोसपित्रा की स्मृत।

9 नवंबर को स्मरणोत्सव

संत यूस्टोलयिा, धर्मपरायण माता-पति की पुत्री, सम्राट मॉरसियिस के शासनकाल में रोम में रहती थीं[7664] । बहुत कम उम्र से ही उन्होंने ब्रह्मचर्य का पालन कयिा, उपवास कयिा और जागते रहे। जब वह वयस्क हुई, तो वह धर्मपरायणता से इतनी अधकि प्रेम करती थी कि वह रोम छोड़कर कॉन्स्टेंटनिोपल चली गई, जहाँ उसने एक मठ में तपस्वी जीवन को समर्पति कर दयिा।

एक दनि, सम्राट मॉरसि की बेटी सोसपित्रा, ब्लाचर्ने में स्थति 'भगवान की परम पवत्रि माता और सदा-कुंवारी मरयिम' के चर्च में गई[7665] । वहाँ उसकी मुलाकात यूस्टोलयिा से हुई, जनिकी सदाचारी जीवन की ख्याति पहले ही पूरे शहर में फैल चुकी थी। तब सोसपित्रा ने धन्य यूस्टोलयिा से अपनी आध्यात्मकि माता और शरीर की संरक्षक बनने का अनुरोध कयिा। यूस्टोलयिा मान गईं, और सोसपित्रा ने मठवासी संन्यास की शपथ ली, तथा स्वयं को कठोर श्रम और तपस्या में समर्पति कर दयिा। उसने अपने पति से एक उपयुक्त स्थान माँगा और वहाँ एक मठ बनाकर, संत यूस्टोलयिा के साथ वहीं बस गई। जैसे-जैसे समय बीतता गया, कुछ धर्मनष्ठि युवतयिों ने उनसे कठनि संन्यासी जीवन में शामलि होने और उन्हें

[7663] पवत्रि शहीदों ओनेसफिोरस और पोर्फरियिस ने चौथी शताब्दी की शुरुआत में शहादत दी। पंगयिन नामक गाँव, जसिे पैंकयिन के नाम से भी जाना जाता है, मैसेडोनयिा में माउंट पंगाउस के पास स्थति था, जसिसे इसका नाम पड़ा। इस गाँव में संतों के अवशेषों की उपस्थति और उनसे प्रवाहति चमत्कारों का उल्लेख जोसेफ द हाइमोग्राफर द्वारा रचति कैनन की 9वीं ओड (ट्रोपारयिन 3) में कयिा गया है।

[7664] मौरसियिस ने 582 से 602 तक शासन कयिा।

[7665] धन्य सोसपित्रा ने उस समय से पहले ही सुसमाचार के जीवन की आदत डालनी शुरू कर दी थी। उनकी चाची डामयिाना यरूशलेम के एक मठ की अधष्ठिात्री थीं और बाद में एक तपस्वनिी के रूप में रहीं। सोसपित्रा यरूशलेम के पवत्रि स्थानों का सम्मान करने के लएि यात्रा की और अपनी चाची के साथ एक साल बतिाया, आध्यात्मकि जीवन पर उनके उपदेशों को सुना। धन्य दामयिाना कहती हैं (देखें जॉन मॉसस की *द स्परिचिुअल मेडो*) कि, 'एक समय मेरी भतीजी, सम्राट मॉरसि की बेटी, पवत्रि नगर आई और यहाँ पूरे एक वर्ष तक रही।' एक दनि, उसे अपने साथ लेकर हम संत कोस्मास और संत डेमयिन के यहाँ गए। चर्च में खड़ी होकर, मैंने अपनी भतीजी से कहा: 'देखो, मेरी बेटी, जब कोई बूढ़ी महलिा आकर तुम्हें दो नमुला (आधे पेनी) दे, तो उन्हें ले लेना; घमंड मत करना।' उसने एक आह भरते हुए कहा: 'मैं उन्हें कैसे स्वीकार कर सकती हूँ?' मैंने उससे कहा, 'इन्हें ले लो; यह महलिा ईश्वर की दृष्ट मिें महान है। हर हफ्ते वह चर्च में आने वालों को अपने नमुली बाँटती है। छोटे सक्कि ले लो; एक बार जब तुम इन्हें ले लो, तो कसिी और को दे देना; बस उस बूढ़ी महलिा की सद्भावना को अस्वीकार मत करना।'

अपने घर में लेने की अनुमति देने का अनुरोध करना शुरू कर दिया। पवित्र महिलाओं ने उनकी विनती को अस्वीकार नहीं किया। कई वर्षों के तपस्वी प्रयासों के बाद, धन्य यूस्टोलिया ने कई लोगों को मोक्ष के मार्ग पर मार्गदर्शन करने के बाद, प्रभु के पास प्रस्थान किया, और धन्य राजकुमारी सोसपित्रा को अपना उत्तराधिकारी छोड़ गईं। धन्य सोसपित्रा ने अपनी आध्यात्मिक माता के उदाहरण का अनुसरण करते हुए मठ का शासन किया और सदाचारी जीवन में पूर्णता प्राप्त करने के बाद, प्रभु के पास शांतिपूर्वक प्रस्थान किया, जिन्हें वह प्रेम करने लगी थी और जिनके लिए उसने इतनी कठिनाइयों भरा जीवन अपनाया था[7666] ।

शहीद संत एंथनी की स्मृति

9 नवंबर को स्मरण किया जाता है

संत एंथोनी सीरिया के मूल निवासी थे और एक राजमिस्त्री के रूप में काम करते थे। मंदिरों में बलिदान चढ़ाने वाले मूर्तिपूजकों पर दया करके, संत ने उनसे ऐसी अधर्मी प्रवृत्ति से दूर हो जाने का आग्रह किया। जब उन्होंने उनकी बात पर ध्यान नहीं दिया, तो वह एक सुनसान जगह पर चले गए। वहाँ उनकी मुलाकात थिमोथी नामक एक तपस्वी से हुई, और वे दो साल तक उनके साथ रहे। उनकी प्रार्थनाओं से बल प्राप्त कर, वे एक बार फिर अपने शहर के भटकते लोगों को सही मार्ग दिखाने के लिए निकल पड़े, ताकि उन्हें सत्य के मार्ग पर ले जा सकें। वह अपने शहर में ठीक उसी समय पहुँचा जब शहर के निवासी अपने दानवों के सम्मान में एक त्योहार मना रहे थे। वह उनके मंदिर में गया और मूर्तियों को तोड़ दिया, जिसके लिए उसे विभिन्न यातनाओं का सामना करना पड़ा और शहर छोड़ने के लिए मजबूर किया गया। फिर वह सीरिया के अपामिया ([7667]) के लिए रवाना हो गया और वहाँ उसने बिशप से पवित्र त्रिमूर्ति के नाम पर एक चर्च बनाने की अनुमति देने का आग्रह किया। जब उन्होंने चर्च का निर्माण शुरू किया, तो उनके शहर के निवासियों को इसकी जानकारी मिल गई और वे रात में आकर उन्हें अपनी तलवारों से काट-काट कर टुकड़े-टुकड़े कर दिए। इस प्रकार उन्होंने अपनी आत्मा ईश्वर को सौंप दी।

थेस्सालोनिकी के शहीद संत अलेक्जेंडर की स्मृति।

9 नवंबर को स्मरण किया जाता है

संत अलेक्जेंडर ने सम्राट मैक्सिमियन[7668] के अधीन कठोर यातनाएं सहन कीं। एक ईसाई होने की स्वीकारोक्ति करने पर, उन्हें पकड़ लिया गया और मूर्तियों को बलिदान चढ़ाने के लिए मजबूर किया गया। उन्होंने न केवल ऐसा करने से इनकार कर दिया, बल्कि ईश्वर के प्रति और भी अधिक उत्साह से भरकर, उन्होंने बलिदान सहित वेदी को पलट दिया। क्रोधित होकर, मैक्सिमियन ने उसका सिर कलम करने का आदेश दिया। जल्लाद, अपनी तलवार उठाने के बाद, अचानक रुक गया।

सम्राट ने कहा, "तुम वहाँ क्यों खड़े हो, और अपने आदेशों का पालन क्यों नहीं कर रहे हो?"

उसने उत्तर दिया, 'मैं एक दर्शन देख रहा हूँ और यह समझ नहीं पा रहा हूँ कि इसका क्या अर्थ हो सकता है।'

तब संत ने प्रार्थना करने के लिए एक घंटा मांगा। एक भक्तिपूर्ण प्रार्थना करने के बाद, उनका सिर कलम कर दिया गया। यह देखकर कि एक देवदूत उनकी आत्मा के आगे-आगे चल रहा था, सम्राट ने ईसाइयों को संत के शरीर को थ्रेसलॉनीकी शहर में दफनाने की अनुमति दे दी।

[7666] संत यूस्टोलिया की मृत्यु का समय 610 और संत सोसपित्रा का 625 माना जाता है।

[7667] सीरिया में अपमेआ दक्षिण-पश्चिमी सीरिया में, सीरिया की सबसे बड़ी नदी ओरोंटेस के किनारे स्थित थी। प्राचीन काल में, अपमेआ सीरियाई प्रांत अपमेआ की राजधानी थी और इसका नाम सीरिया के शासक सेल्यूकस प्रथम की पत्नी अपमेआ के नाम पर पड़ा था।

[7668] चौथी शताब्दी की शुरुआत में,

23 नवंबर

10 नवंबर (पुराना तरीका)

संत ओरेस्ट्स की शहादत।

10 नवंबर को स्मरणोत्सव

जब रोम में अधर्मी सम्राट डायोक्लेटियन का शासन था, तो एक दिन उसके एक सम्मानित व्यक्ति, जिसका नाम मैक्सिमिनिस था, उसके पास आया और कहा:

'हे महान शासक, देवताओं द्वारा चुने गए और सर्वोच्च नेता, मैं आपसे विनती करता हूँ कि मुझे सिलिसिया और कैपाडोसिया की भूमि में यात्रा करने और घृणित ईसाइयों—जो हमारे देवताओं और आपके अधिकार के शत्रु हैं—को विभिन्न यातनाएँ देने का आदेश दें। मैं उन्हें आग में जला दूँगा, पानी में डुबो दूँगा, पहियों पर उनके शरीर कुचल दूँगा और उनकी हड्डियाँ तोड़ दूँगा, उन्हें तलवार से मार डालूँगा, उन्हें चीजों को खाने के लिए जानवरों के सामने फेंक दूँगा, और हर संभव तरीके से उनका नाश करके, मैं पृथ्वी के चेहरे से उन लोगों की याद को भी मिटा दूँगा जो महान देवताओं की पूजा नहीं करते और आपके शासन के अधीन नहीं होते।"

राजा मैक्सिमिनिस के भाषण से बहुत प्रसन्न हुआ, और उसने उत्तर दिया:

'मैं तुम्हें सभी अधर्मी ईसाई धर्म को नष्ट करने का अधिकार देता हूँ, न केवल सिलिसिया और कैपाडोसिया में, बल्कि मेरे पूरे राज्य में, ताकि हमारे देश के देवताओं, जो संपूर्ण पृथ्वी के हमारे स्वामी और रक्षक हैं, की महिमा बढ़े और ऊँची की जाए।'

राजा से ऐसा अधिकार पाकर, मैक्सिमिनिस ने बड़े घमंड और द्वेष के साथ—भेड़ों पर टूटे एक क्रूर भेड़िये या जानवरों में सबसे कमजोर पर गरजते हुए शेर की तरह—निर्दोष ईसाइयों को नष्ट करने के लिए निकल पड़ा। कैपाडोसिया के क्षेत्र में पहुँचने पर, वह टियाना नामक एक शहर में गया[7669] , और जब उसने वहाँ ईसाइयों के बारे में पूछताछ शुरू की, तो उसे नागरिकों से पता चला कि उस शहर में एक डॉक्टर था, ओरेस्ट्स नाम का एक ईसाई रहता था, जो हर दिन बड़े उत्साह के साथ लोगों को परमेश्वर के पुत्र, यीशु मसीह की आराधना करना सिखाता था, और यह घोषणा करता था कि स्वर्ग में वास करने वाले एक सच्चे परमेश्वर के सिवा कोई दूसरा देवता नहीं है। यह सुनकर, राजकुमार मैक्सिमिनिस ने आदेश दिया कि ओरेस्ट्स को तुरंत पकड़कर मुकदमे के लिए उसके सामने लाया जाए।

जब ओरस्टिसि को अधर्मी अदालत के सामने लाया गया, तो राजकुमार ने घमंड से उसकी ओर देखा और धमकी भरे लहजे में पूछा:

'तुम कौन हो? हमें अपना नाम बताओ!'

संत ने उत्तर दिया:

'मैं अपने प्रभु यीशु मसीह, जो सभी का एकमात्र ईश्वर है, का सेवक हूँ; मेरा नाम ईसाई है, क्योंकि मुझे उस नाम पर गर्व है, जिसकी मैं सेवा करता हूँ।'

राजकुमार ने उससे कहा:

'चूँकि तुमने मसीह को देवता कहने की हिम्मत की है और स्वयं को ईसाई घोषित किया है, तुम मृत्युदंड के योग्य हो; लेकिन अपनी मूर्खता त्यागो और देवताओं को बलिदान चढ़ाओ, ताकि तुम्हें यातना न सहनी पड़े।'

संत ओरेस्ट्स ने उत्तर दिया:

– *'उन्हें यह कह दो: "जो देवता आकाश और पृथ्वी को नहीं बनाते, वे पृथ्वी से और आकाश के नीचे से लुप्त हो जाएँगे"* (यिर्म. 10:11), और मैंने अपनी जवानी से ही जीवित परमेश्वर को स्तुति का बलिदान चढ़ाना सीखा है, जिसे मैं शुद्ध हृदय से सम्मानित करता हूँ; परन्तु मैं तुम्हारे निर्लज्ज और व्यर्थ दैत्यों की पूजा नहीं करूँगा, जिन्हें तुम देवता कहते हो।

राजकुमार ने ओरस्टिसि से फिर पूछा:

'तुम हमें अपना नाम क्यों नहीं बताओगे, जो जन्म के समय तुम्हें दिया गया था?'

[7669] टियाना, कैपाडोसिया में एक प्राचीन शहर, माउंट टॉरस की तलहटी में, सिलिसियन गॉर्ज के पास।

'मैंने तुम्हें बताया है,' संत ने उत्तर दिया, 'कि मैं एक ईसाई हूँ, और यह नाम मेरे लिए मेरे माता-पिता द्वारा दिए गए नाम से कहीं अधिक गौरवशाली है, और यह दुनिया के सभी प्रसिद्ध नामों से भी ऊँचा है। यदि, तथापि, आप वह नाम जानना चाहते हैं जो मुझे जन्म से मिला है, तो मैं आपको बताऊंगा: मेरे शारीरिक जन्म से मुझे ओरस्टेस नाम मिला, जबकि मेरे आध्यात्मिक जन्म से मुझे ईसाई कहा जाता है; और चूँकि आध्यात्मिक जन्म शारीरिक जन्म से श्रेष्ठ है, मैं ओरस्टेस कहलाने की तुलना में ईसाई कहलाना एक बड़ा सम्मान मानता हूँ।

तब राजकुमार ने चालाकी से मसीह के सेवक को लुभाने की आशा में उससे इस प्रकार कहना शुरू किया:

ओरेस्टेस, मुझे तुम्हारी जवानी पर दया आती है, और मैं तुम्हें बचाना चाहता हूँ; मैंने सुना है कि तुम चिकित्सा कला में भी निपुण हो, इसलिए मैं तुम्हारा जीवन समाप्त नहीं करूँगा, बल्कि मैं तुम्हें राजा की आज्ञा का पालन करने की सलाह देता हूँ। यदि तुम ऐसा करोगे, तो तुम मेरे लिए पुत्र समान हो जाओगे; सभी तुम्हारा सम्मान करेंगे और तुम्हारी प्रशंसा करेंगे; राजा तुम्हारे बारे में सुनेगा, और उससे तुम महान कृपा प्राप्त करोगे।

लेकिन संत ने उत्तर दिया:

'राजकुमार, तुम अपनी चालाकी भरी बातों से मुझे धोखा नहीं दे सकते, क्योंकि मैं अपने प्रभु के लिए न तो क्षणिक सम्मान चाहता हूँ और न ही निंदा से डरता हूँ, बल्कि मैं उनके लिए हर तरह की यातनाएँ सहने को तैयार हूँ, क्योंकि मैं उनके अनुग्रह को प्राप्त करना चाहता हूँ और स्वर्ग के राज्य में उनका पुत्र कहा जाना चाहता हूँ, क्योंकि *'उन सभी को जिन्होंने उसे ग्रहण किया, जिन्होंने उसके नाम पर विश्वास किया, उसने परमेश्वर की संतान बनने का अधिकार दिया'* (यूहन्ना 1:12)।

यह सुनकर, राजकुमार ने ओरेस्ट्स से कहा:

'हे मूर्ख और अभद्र मनुष्य, तू इस भ्रम में है कि मसीह एकमात्र सच्चे परमेश्वर हैं, जिसे यहूदियों ने एक अपराधी की तरह सूली पर चढ़ाया।'

ओरेस्टेस ने उत्तर दिया:

'यदि तुम सूली पर चढ़ाए गए की महान शक्ति को जानते, तो तुम मूर्तियों की व्यर्थ पूजा को त्याग देते और उस की उपासना करते जो वास्तव में परमेश्वर है, जो सच्चे, अदृश्य परमेश्वर से उत्पन्न हुआ है, जिसने अपनी ही इच्छा से दिव्य स्वभाव को मानवीय स्वभाव के साथ मिलाया और हमें शैतान के विनाशकारी धोखे से मुक्त किया।'

ओरेस्ट्स की प्रतिक्रिया सुनकर, राजकुमार ने उससे कहा:

'तुम्हारे चालाकी भरे शब्द मेरे कानों को खटकते हैं; क्या तुम सच में मुझे भी अपने अधर्मी धर्म में परिवर्तित करना चाहते हो? यह जान लो: मैं अपने देवताओं को नहीं त्यागूँगा, और न ही मैं तुम्हारे मसीह की पूजा करूँगा; परन्तु मैं तुमसे कहता हूँ: अपने मसीह को त्याग दो, हमारे देवताओं की पूजा करो और उन्हें बलिदान चढ़ाओ, और यदि तुम ऐसा करोगे, तो तुम्हें मुझ समान शक्ति प्राप्त होगी।

लेकिन इससे संत को लुभाया नहीं जा सका, और उसने राजकुमार से उत्तर दिया:

'मैं उस शाश्वत ईश्वर की आराधना करता हूँ, जो मुझ पर सदैव अपनी कृपा बनाए रखते हैं—प्रभु यीशु मसीह—और मैं उनकी सेवा करता हूँ; परन्तु मैं तुम्हारे राक्षसों को बलिदान नहीं चढ़ाऊँगा, और न ही मैं कभी तुम्हारी विनाशकारी दुष्टता में भाग लूँगा।'

इसके बाद, राजकुमार संत ओरेस्ट्स को सोने-चांदी से सुसज्जित और कीमती मूर्तियों से भरे एक मूर्तिपूजक मंदिर में ले गया, और वहाँ उसने उससे कहा:

'पूजा करो, ओरेस्टेस, इन सम्माननीय देवताओं की।'

लेकिन संत ने उत्तर दिया:

'राजकुमार, आप बहुत बड़ी भूल कर रहे हैं, क्योंकि आप सत्य को नहीं जानते: आपके देवता सोने, चांदी, तांबे और लोहे से बने हैं लोगों को धोखा देने के लिए; वे न देखते हैं और न सुनते हैं, क्योंकि वे मानव हाथों की रचना हैं, और वे न तो अपनी मदद कर सकते हैं और न ही किसी और का भला कर सकते हैं - तो मैं उनकी पूजा क्यों करूँ?'

तब राजकुमार ने संत से एक बार फिर कहा:

'ओरेस्टेस, मुझे आखिरी बार जवाब दो: क्या तुम देवताओं की पूजा करोगे, या नहीं? वरना, तुम्हें यातनाओं का सामना करना पड़ेगा।'

संत ने उत्तर दिया:

'क्या तुम्हें लगता है, राजकुमार, कि मैं तुम्हारी धमकियों से डरता हूँ? नहीं, यातनाओं से मुझे डराने की उम्मीद मत करो, पर जो चाहो कर लो; क्योंकि तुम नहीं जानते कि प्रभु यीशु मसीह, मेरे सहायक, मेरे साथ हैं।'

इसके बाद, राजकुमार ने आदेश दिया कि संत ओरेस्ट्स को नग्न कर दिया जाए और उसी मूर्तिपूजक मंदिर में ही बुरी तरह कोड़ा मारा जाए। और जब उन्होंने उसे यातना देना शुरू किया, तो संत ने अपने हाथ स्वर्ग की ओर उठाए और कहा:

'हे मेरे ईश्वर, स्वर्ग से नीचे देखो और अपने सेवक की सहायता करो।'

संत को विभिन्न उपकरणों से निर्दयता से पीटा गया: डंडों, रस्सियों और बैल की टेंडन से – और उन्होंने उसे इतनी देर तक पीटा कि चालीस सैनिक बारी-बारी से आते रहे, उपकरण टूटते और टूटकर गिरते रहे, और संत के शरीर पर एक भी स्थान घावों से खाली नहीं बचा, उसकी अंतड़ियाँ बाहर निकल आईं। लेकिन संत ओरेस्ट्स ने यह सब बड़ी दृढ़ता से सहन किया, जिससे हर कोई उनके धैर्य को देखकर चकित रह गया।

जब संत को पीटा जा रहा था, तो राजकुमार ने उनसे कहा:

'देवताओं को बलिदान चढ़ाओ, और मैं तुम्हें आज़ाद कर दूँगा।'

लेकिन पीड़ित ने कोई उत्तर नहीं दिया। तब राजकुमार ने आदेश दिया कि संत की पसलियों को लाल-गरम लोहे से झुलसाया जाए, उसके घावों पर पित्त मिला हुआ सिरका डाला जाए, और उन पर नमक छिड़का जाए। और पवित्र शहीद ने स्वर्ग की ओर अपनी आँखें उठाकर प्रार्थना की: *'मुझ पर अपनी कृपा का कोई चिह्न दिखाओ, ताकि जो मुझसे द्वेष रखते हैं, वे देखकर लज्जित हों, क्योंकि हे प्रभु, आपने मेरी सहायता की है और मुझे सांत्वना दी है'* (भजन संहिता 85:17)। और इस प्रकार प्रार्थना करने के बाद, उसने मंदिर में खड़ी मूर्तियों पर फूँक मारी, और वे सब तुरंत गिर पड़ीं और धूल में मिल गईं। तब संत ने राजकुमार से ऊँचे स्वर में कहा:

'तो फिर, तुम्हारे देवताओं की शक्ति कहाँ है? उन्होंने अपनी ही मदद क्यों नहीं की?'

सब लोग बहुत भयभीत होकर मंदिर से भाग गए; पवित्र शहीद भी बाहर निकले, और जैसे ही वे निकले, पूरा मंदिर काँप उठा और ढह गया।

राजकुमार ने संत ओरेस्ट्स को भीतरी कालकोठरी में ले जाने का आदेश दिया और जेलर को आज्ञा दी कि वह संत को न तो रोटी दे और न ही पानी, बल्कि उसे भूख और प्यास से पीड़ित करे। और संत ओरेस्ट्स, कालकोठरी में प्रवेश करने पर, अपने हाथ स्वर्ग की ओर उठाए और प्रार्थना करने लगे:

हे प्रभु यीशु मसीह, जिन्होंने मुझे मेरे यौवन से ही धर्मपरायणता सिखाई, और मुझसे हर अधार्मिक इच्छा, भ्रम और प्रलोभन को दूर किया; जिन्होंने मानव जाति के लिए स्वर्ग, पृथ्वी और समुद्र की रचना की; जिन्होंने अपने संतों अब्राहम, इसहाक और याकूब को अपनी विश्राम-स्थली में प्रवेश कराया! मैं आपसे विनती करता हूँ, मुझ पर भी कृपा बनाए रखें, क्योंकि मैंने स्वयं को पूरी तरह से आपको समर्पित कर दिया है; मुझे भी उन लोगों में गिन लीजिए जिन्होंने आपके नाम के लिए दुख उठाया और आपके राज्य का वारिस बना।

इस प्रकार संत ने प्रार्थना की, और वे सात दिनों तक बिना भोजन या पानी के कालकोठरी में रहे। आठवें दिन, राजकुमार ने संत को कालकोठरी से बाहर निकालकर न्याय के लिए अपने सामने लाने का आदेश दिया, जहाँ उसने उनसे कहा:

'हे अभद्र और अधर्मी मनुष्य, हमारे देवताओं के शत्रु, तू अभी भी अवज्ञा कर रहा है और समर्पण करने से इनकार कर रहा है! यह जान ले: यदि तू देवताओं की पूजा नहीं करेगा, तो मैं तुझे भयानक यातनाओं से गुज़ारूँगा और, बिना किसी दया के, तेरी जान ले लूँगा, और मैं तेरे अधर्मी शरीर को पानी में डुबाने का आदेश दूँगा।'

संत ओरेस्ट्स ने उत्तर दिया:

'मैं किसी भी यातना को सहने के लिए तैयार हूँ, क्योंकि मेरे हृदय में मैं हमेशा अपने प्रभु यीशु मसीह की प्रतिमा धारण करता हूँ।'

तब यातना देने वाले ने, क्रोध से भरकर, बारह लोहे के कील, प्रत्येक एक पाद (लगभग 30 सेमी) लंबा[7670] लाने और संत ओरेस्ट्स के एड़ियों में ठोकने का आदेश दिया। जब यह किया गया, तो राजकुमार ने संत ओरेस्ट्स को एक जंगली घोड़े से बांधने और तब तक खींचने का आदेश दिया जब तक कि संत की मृत्यु न हो जाए। घोड़ा, पूरी रफ्तार से दौड़ते हुए,

[7670] प्येडेन लंबाई की एक प्राचीन इकाई है। यह अंगूठे की नोक से छोटी उंगली की नोक तक की दूरी के बराबर थी।

संत को सड़कों और खेतों से, काँटों और तेज पत्थरों पर घसीटता हुआ ले गया, और इन यातनाओं के बीच, पवित्र कष्ट-सहने वाले ओरसि्टसि ने अपना प्राण प्रभु परमेश्वर[7671] को सौंप दयिा, जब उन्हें शहर से चौबीस स्टेडयिम[7672] तक घोड़े द्वारा घसीटा गया था। उसके यातनाकर्ता ने उसके शरीर को फेयास नामक नदी में फेंकने का आदेश दयिा। लेकनि अचानक एक व्यक्ति प्रकट हुआ, जो सूर्य के समान तेजस्वी था, जसिने संत के अवशेषों को इकट्ठा कयिा और उन्हें टयिाना शहर के पास एक पहाड़ पर स्थापति कयिा। हमारे परमेश्वर की महमिा हो, सदा, अब और हमेशा और युगों-युगों तक। आमीन।

इस hagiography[7673] के लेखक, जन्हिोंने इसे पहले ही पवित्र महान कीव-पेचेरस्क लाव्रा में मुद्रण के लिए तैयार कर लयिा था, ईसा मसीह के जन्म के वर्ष 1685 में, और ईसा मसीह के जन्म से पहले पवित्र उपवास की एक ही रात में इस पवित्र शहीद ओरेस्ट्स के दुखों का वृत्तांत पूरा करने के बाद, मातन्सि से ठीक पहले, उन्हें पवित्र शहीद के और भी बड़े दुखों के बारे में एक स्वप्न में एक प्रकटवाणी प्राप्त हुई। अपने सपने में, पवित्र शहीद ओरेस्ट्स स्वयं उसके सामने प्रकट हुए और, एक प्रसन्न दृष्टि से उसे देखते हुए, कहा:

'मैंने मसीह के लिए तुम्हारे लखि से कहीं अधकि कष्ट सहे हैं।' यह कहकर, शहीद ने अपनी छाती खोली और अपनी बाईं ओर एक बड़ा घाव दखिाया, जो आंतों तक जाता था, और कहा:

'यह लोहे से मेरे ऊपर जलाया गया था।'

तब, अपनी दाहनिी बांह को कोहनी तक उघाड़कर, उन्होंने कोहनी के पास ही एक घाव दखिाया, और कहा:

'इसे काटा गया था।'

इस घाव में कटे हुए टेंडन दखिाई दे रहे थे। इसी प्रकार, अपनी बाईं बांह को उघाड़कर, संत ने उस पर अपनी दाहनिी बांह वाले घाव के समान ही एक घाव दखिाया, और कहा:

'और यहाँ भी, मुझे काटा गया है।'

इसके बाद, झुककर, शहीद ने अपने घुटने तक अपनी टांग को नंगा कयिा और घुटने के मोड़ पर एक घाव की ओर इशारा कयिा; उन्होंने अपनी दूसरी टांग को भी घुटने तक नंगा कयिा और उसी जगह पर उसी तरह का घाव दखिाते हुए कहा:

'और इसे दरांती से चीर दयिा गया था।'

तब, सीधे खड़े होकर और इस जीवनी लेखक के चेहरे की ओर देखते हुए, शहीद ने कहा:

'आप देख रहे हैं कि मैंने मसीह के लिए जतिना लखिा है उससे कहीं अधकि कष्ट उठाया है।'

जब लेखक यह सोच रहा था कि यह ओरेस्ट्स कौन हो सकता है—क्या वह वही था जसिने पाँच शहीदों के बीच कष्ट सहे थे[7674] —तब पवित्र शहीद ने उसके वचिारों का उत्तर दयिा:

'मैं वह ओरसि्टसि नहीं हूँ जो पाँच शहीदों के बीच कष्ट सह चुका है, बल्कि वह हूँ जसिका जीवन आपने आज लखिा है।'

जैसे ही संत ओरेस्ट्स ने ये शब्द बोले, मैटन्सि के लिए घंटयिाँ बजीं, और यह दर्शन समाप्त हो गया।

पवित्र शहीद मलिजि की शहादत

10 नवंबर को स्मरणोत्सव

संत मलियिस, बशिप, फारस के प्रांत ई[7675] के मूल नविासी थे।

पवित्र बपतस्मिा ग्रहण करने के बाद, उन्होंने कम उम्र से ही पवित्र शास्त्र के अध्ययन को समर्पति कर दयिा। वयस्क होने पर, उन्होंने तत्कालीन फारसी राजा के अधीन सैन्य सेवा करने का संकल्प लयिा। हालाँकि, उन्हें ईश्वर से एक दर्शन हुआ जसिमें उन्हें सैन्य सेवा में प्रवेश करने से कड़ाई से मना कयिा गया था। इसके बाद, ईसाई शक्षिा

[7671] शहीद ओरेस्ट्स की मृत्यु लगभग 304 ईस्वी में हुई। उनका पर्व दविस 9 जुलाई को भी मनाया जाता है।

[7672] 'पोप्राइश्चे' दूरी की एक इकाई है जो 690 सैज़ेन्ज़ के बराबर होती है। परणिामस्वरूप, चौबीस पोप्राइश्चे लगभग तेईस वर्स्ट से थोड़ा अधकि होते हैं।

[7673] अर्थात्, रोस्तोव के संत डेमेट्रयिस

[7674] जनिकी स्मृति चर्च द्वारा 13 दसिंबर को मनाई जाती है

[7675] रखजिन्स्की क्षेत्र से।

प्राप्त करने के बाद[7676] , उन्होंने अपने और अपने लोगों के लिए अखंड प्रार्थना में स्वयं को समर्पित कर दिया; और, कुछ समय बाद, वे अपने शहर से चले गए और एलाम की भूमि में, सुसा में, संन्यासी जीवन अपना लिया[7677] । बाद में, उन्हें शहीद और स्वीकारकर्ता जेनाडियस द्वारा बिशप के रूप में अभिषिक्त किया गया। संत मिलियस ने वहाँ रहने वाले हठी मूर्तिपूजकों की शब्द और कर्म दोनों से निंदा करते हुए कड़ी मेहनत की, जिसके लिए उन्हें उनके द्वारा कठोर अपमान सहना पड़ा ; अंततः एक क्रोधित भीड़ ने उन्हें पीटा और शहर के बाहर आधा मृत छोड़ दिया। इसने उन्हें सुसा छोड़ने के लिए मजबूर कर दिया। जैसे ही वह प्रस्थान कर गए, संत ने सुसा के निकटवर्ती विनाश की भविष्यवाणी की।

तीन महीने भी नहीं बीते थे कि यह भविष्यवाणी पूरी हो गई। राजा[7678] को शहर के राज्यपाल और अन्य कुलीन एलामाइटों के दुर्व्यवहार और साजिश के कारण इस शहर पर बहुत गुस्सा आया, और उसने एक सेना भेजी जिसने शहर को पूरी तरह से नष्ट कर दिया और उसके निवासियों का नरसंहार कर दिया। हालाँकि, संत यरूशलेम के लिए रवाना हो गए, और वहाँ से महान एंथनी के शिष्य अम्मोन के पास, जो नाइट्रियन रेगिस्तान में थे। वहाँ दो साल रहने के बाद, वे फारस लौट आए। रास्ते में, वे एक ऐसे भिक्षु से मिले जो एक गुफा में रहता था। गुफा में प्रवेश करने पर, उन्होंने एक विशाल साँप देखा और कहा:

'हे साँप, प्रभु का हथियार तुझे नष्ट कर दे!'

और, क्रॉस का चिह्न बनाकर, संत ने सांप पर फूंक मारी, और वह तुरंत मर गया। वहाँ से वह अपने शहर के लिए रवाना हो गए, जहाँ उन्होंने उन लोगों के लिए क्षमा याचना करने हेतु एक चर्च बनवाया, जो अवज्ञाकारी थे और जिन्हें पहले ही कठोर दंड मिल चुका था।

कई साल बाद, वह क्तेसिफोन[7679] की यात्रा पर गए, जहाँ उस समय पापा[7680] नामक एक बिशप के खिलाफ एक परिषद चल रही थी। इस परिषद में, मिलियस ने इस बिशप की अन्यायपूर्ण मांगों के लिए उसकी निंदा की। और जब बिशप पापा ने अपने स्वयं के प्रयासों का घमंड करते हुए संत को फटकारना और अपमानित करना शुरू कर दिया, तो संत ने भविष्यवाणी की कि ईश्वर का न्याय जल्द ही उन पर होगा। और वास्तव में, ठीक अगले ही वर्ष, दंडित पापा की मृत्यु हो गई।

कतेसीफोन से, मिलिओस एक अन्य शहर के लिए रवाना हुए। उस शहर का राजकुमार दो साल से गंभीर रूप से बीमार था। संत के आगमन की खबर मिलते ही, उसने एक दूत को यह कहने के लिए भेजा कि वे पीड़ित से मिलें और उसके लिए प्रार्थना करें। जब दूत ने यह बात संत को बताई, तो संत ने उससे कहा:

'जाओ और उस बीमार व्यक्ति से कहो जिसने तुम्हें भेजा है: बिशप की आज्ञा यह है: यीशु मसीह के नाम पर, जिनका मैं, यद्यपि अयोग्य हूँ, प्रचार करता हूँ, अपनी कमर कस लो, अपनी बीमारी की परवाह किए बिना, और मेरे पास आओ, ताकि मैं तुम्हें देख सकूँ।'

जैसे ही दूत लौटा और राजकुमार को संत का आदेश सुनाया, राजकुमार का रोग दूर हो गया, और वह ऐसे ठीक हो गया मानो वह कभी बीमार ही न हुआ हो। संत के पास आकर, वह उनके पवित्र चरणों में गिर पड़ा और उन्हें गले लगाकर चूमने लगा। साथ ही, उसने उस ईश्वर का धन्यवाद किया, जिसने इस पवित्र पुरुष को इतना गौरवान्वित किया था। इस अद्भुत चमत्कार से कई लोग ईसाई धर्म की ओर आकर्षित हुए। संत मिलियस ने उस भूमि के लोगों से दुष्ट आत्माओं को भगाया; उन्होंने एक लकवाग्रस्त महिला को, जो दस वर्षों से अपने बिस्तर से नहीं उठी थी, उसका हाथ पकड़कर चंगा किया; और एक आदमी जिसने अन्यायपूर्ण न्याय किया था, झूठी कसम भी खाई थी, और संत के शब्दों पर कोई ध्यान नहीं दिया था—उसने उसे कोढ़ की बीमारी से दंडित किया, जैसा कि एलीशा ने गेहाजी को किया था (2 राजा 5:1–27), ताकि

[7676] संत मिलिय ने अपनी शैक्षणिक शिक्षा बेत-लापेट में प्राप्त की, जो ईस्फहान से 80 वर्स्ट दूर है, जो फारस के सबसे महत्वपूर्ण शहरों में से एक है।

[7677] एलम का देश या क्षेत्र टिग्रिस नदी के दूसरी ओर, दक्षिणी मेसोपोटामिया, मीडिया, बेबीलोनिया और ईरान के बीच स्थित था। सुसा सबसे पुराना फारसी शहर है, जो पहले सुसियाना की समृद्ध राजधानी और राजाओं का आसन था—पहले एलम के, फिर फारस के।

[7678] यह, बेशक, फारसी राजा शापूर द्वितीय को संदर्भित करता है।

[7679] सेलेउकिया-कटसेफोन – नदी टाइग्रिस पर एक जुड़वां शहर, पूर्व के सबसे महत्वपूर्ण प्राचीन व्यापारिक केंद्रों में से एक।

[7680] यह वर्ष 334 में हुआ था। चर्च के भीतर एक फूट उत्पन्न हुई क्योंकि एक बिशप पापा, जिन्होंने दस साल पहले अपना पद त्याग दिया था, ने चर्च के भीतर अधिकार पर अवैध दावा किया।

कई लोगों का नरि्माण हो सके। इसे देखते हुए, कई लोग उसके पास आए और उन्होंने ईसाई धरम् को अपनाया। संत मलियिस ने अन्य स्थानों पर भी कई चमत्कारकि संकेत कएि।

अंत में, वह अपने देश लौट आया और वहाँ उसने कई लोगों को ईसाई धरम् में परविर्तति कयिा। यह सुनकर, होर्मज्डि प्रांत के गवर्नर, गुफ्रजि ने आदेश दयिा कि मलिअिोस और उसके दो शष्यिों को कैद कर दयिा जाए। जब पवत्रि स्वीकार करने वालों को बाद में उसके सामने मुकदमे के लिए लाया गया, जैसा कि उसने आदेश दयिा था, तो क्रूर राज्यपाल ने उनके वशि्वास के बारे में उनसे पूछताछ करना शुरू कर दयिा, और उन्हें मृत्यु की धमकी दी यदि वे अपने वशि्वास की सच्चाई साबति नहीं करते। लेकनि मलिअिोस ने नडिर होकर जवाब दयिा:

'मेरा वशि्वास सत्य है, और मैं तुम्हारे झूठे शब्दों के कारण इसकी रक्षा नहीं करूँगा। मेरा उपदेश शुद्ध है, और मैं इसे तुम्हारे अशुद्ध कानों में नहीं सुनाऊँगा, परन्तु मैं तुम्हें सत्य बताऊँगा। हाय तुम्हें, हे अधर्मी दुष्ट, और तुम्हारे जैसे सभी लोगों को जो परमेश्वर का अपमान करते हैं!' अपने सत्य के अनुसार, वह आने वाले युग में आपको गेहेना और उसके भयानक अंधकार में डालेंगे, और आप हमेशा के लिए रोते और दांत पीसते हुए पीड़ति होंगे, क्योंकि आप उस वरदानदाता को पहचानने से इनकार करते हैं जनिका आप गुणगान करते हैं और जनिमें आप सांत्वना पाते हैं।

मसीह के स्वीकारयिों के दृढ़ वशि्वास को देखकर और संत मलियिो की फटकार से क्रोधति होकर, होर्मज़िद क्रोध में उछल पड़ा और अपनी तलवार से संत की छाती को भेद दयिा। इसी प्रकार, शासक के भाई, नर्सस, उसी '' क्रोध से ग्रस्त होकर, संत को चाकू से दलि में घोंप दयिा। लेकनि मसीह के कष्ट-भोगी ने, तब भी साँस लेते हुए, राजा और उसके भाई से कहा:

'चूँकि तुमने मुझे मारने की साजशि रची है, हालाँकि मैं पूरी तरह से नरि्दोष हूँ, कल, ठीक उसी घड़ी जब तुमने मुझे भेदा था, तुम एक-दूसरे का खून बहाओगे, और तुम्हारी माँ बाँझ रह जाएगी।'

यह कहकर उन्होंने प्राण त्याग दएि। दुष्ट शासकों ने संत के दो शष्यिों को पत्थर मारकर हत्या करने का आदेश दयिा[7681] । पवत्रि शहीदों के शरीरों को चर्च के भजनों के साथ वशि्वासयिों द्वारा सम्मानपूर्वक दफनाया गया।

अगले दनि, दुष्ट शासक अपने भाई के साथ शकिार के लिए नकिल पड़ा, और उसने संत की बातों पर कोई ध्यान नहीं दयिा। एक हरिण को देखते ही, वे दोनों उसके पीछे दौड़े और उसका पीछा करने लगे। जब वे हरिण को थका देने के बाद उस पर तीर चलाने लगे, तो वे गलती से एक-दूसरे को गोली मार बैठे और इस प्रकार उनकी मृत्यु हो गई।

पवत्रि प्रेरति ओलंपस, रोडयिन, सोसपिटर, एरास्टस और क्वार्टस की स्मृति

10 नवंबर को स्मरण कयिा जाता है

ये संत मसीह के सत्तर प्रेरतिों में से थे। इनमें से, ओलंपिस या ओलंपियिन, जनिका उल्लेख प्रेरति पौलुस ने रोमयिों को लखिी अपनी पत्री में (रोमयिों 16:15) कयिा है, प्रेरति पतरस के पीछे रोम गए, और वहाँ, रोमन सम्राट नीरो के आदेश पर, ठीक उसी दनि तलवार से उनका सरि कलम कर दयिा गया जसि दनि पवत्रि प्रेरति पतरस को सूली पर चढ़ाया गया था।

इसी तरह, प्रेरति रोडयिन या हेरोडयिन, जो पवत्रि प्रधान प्रेरति पौलुस के चचेरे भाई थे (रोमयिों 16:11) और जन्हिोंने पात्रास[7682] में परमेश्वर का वचन प्रचार कयिा, जहाँ उन्होंने बशिप के रूप में भी सेवा की, प्रेरति पतरस के साथ रोम गए और उनके सूली पर चढ़ाए जाने के दनि उनका सरि कलम कर दयिा गया[7683] ।

पवत्रि प्रेरति सोसपितर अखाया के मूल नविासी थे[7684] और वे प्रेरति पौलुस के भी संबंधी थे, जैसा कि प्रेरति पौलुस स्वयं रोमयिों के नाम अपनी पत्री में उल्लेख करते हैं (रोमयिों 16:21)। पवत्रि प्रेरति जेसन के साथ, वे प्रेरति पौलुस के

[7681] यह 12 नवंबर 341 को हुआ था, लेकनि सेंट जॉन क्रसिोस्टोम के सम्मान में, स्मरणोत्सव को 10 नवंबर तक स्थानांतरति कर दयिा गया।

[7682] पैट्रास – अब पैट्रास – ग्रीस के साम्राज्य में, पैट्रास की खाड़ी के तट पर स्थति एक समृद्ध व्यापारकि शहर है।

[7683] प्रेरति ओलंपस और रोडयिन का धन्य नधिन वर्ष 67 में हुआ।

[7684] ग्रीस में एक प्रांत।

शष्यि थे और उन्होंने प्रेरतिकि यात्राएँ कीं। बाद में उन्होंने इकोनयिम की कलीसयिा के बशिप के रूप में सेवा की[7685] और अपने सम्मानति वृद्धावस्था में शांतपिूर्वक नधिन कयिा[7686] ।

इसी तरह, पवत्रि प्रेरति एरास्तस, जनिका उल्लेख पवत्रि प्रेरति पौलुस ने रोमयिों को लखिी अपनी पत्री (रोमयिों 16:23) में भी कयिा है, प्रभु के साथ रहने के लएि शांतपिूर्वक इस जीवन से चल बसे। पवत्रि प्रेरति एरास्तस पहले यरूशलेम की कलीसयिा के डकिन और कोषाध्यक्ष थे, और बाद में पनेआस में एक बशिप थे[7687] ।

संत क्वार्टस, जनिका उल्लेख संत पौलुस प्रेरति (रोमयिों 16:23) ने कयिा है, ने अपनी धार्मकिता के लएि बहुत कष्ट सहे, कई ग्रीकों को मसीह के धर्म में परविर्तति कयिा, और वेरटिा शहर के बशिप के रूप में सेवा करते हुए शांतपिूर्वक नधिन कर गए[7688] ।

अब ये सभी पवत्रि प्रेरति परमात्मा के सहिासन के सामने अनंत आनंद में खड़े हैं, और अपने अनेक कर्मों तथा परशि्रमों का प्रतफिल परमेश्वर से प्राप्त कर रहे हैं[7689] ।

कॉन्टाकयिन, स्वर 2:

दविय प्रकाश से मन को प्रकाशति करके, आपने महान बुद्धमित्ता से वाक्पटु प्रवचन रचे; और सभी भाषाओं में पारंगत होकर, हे महमिामय प्रेरतिो, आपने लोगों को प्रभु की ओर ले जाया, उन्हें दविय त्रमिूर्त की महमिा करना सखिाया।

24 नवंबर

11 नवंबर (पुराना संस्करण)

महान शहीद संत मीना का कष्टकथा

11 नवंबर को स्मरणोत्सव

पवत्रि शहीद मीना मस्रि मूल के थे; उन्होंने ईसाई धर्म का पालन कयिा और कोतुआन क्षेत्र में तैनात सेना में सेवा की[7690] , जो हज़ार सैनकिों के कमांडर फर्मलियिन के अधीन थी। उस समय, दो अधर्मी सम्राट, डायोक्लेटयिन और मैक्समियिन, रोम में संयुक्त रूप से शासन कर रहे थे[7691] । इन सम्राटों ने सभी प्रदेशों में एक आदेश जारी कयिा, जसिमें आदेश दयिा गया कि जो भी ईसाई मूर्तयिों की पूजा नहीं करते, उन्हें यातना दी जाए और मृत्युदंड दयिा जाए। इस आदेश के अनुसार, मसीह में वशि्वास करने वालों को हर जगह मूर्तयिों को बलदिान चढ़ाने के लएि मजबूर कयिा गया। उस समय, धन्य मीना, ऐसी वपित्ति और नरि्जीव मूर्तयिों की पूजा का साक्षी बनने के इच्छुक न होकर, ने अपनी सैन्य पदवी त्याग दी और पहाड़ों में, सुनसान स्थानों पर चले गए, और ईश्वर को न जानने वाले लोगों के बीच रहने के बजाय जानवरों के बीच

[7685] इकोनयिम – एशयिा माइनर के केंद्र में, माउंट टॉरस की तलहटी में, एक ऊँचे, उपजाऊ मैदान पर बसा एक शहर; यह कभी लाइकोनयिा क्षेत्र की राजधानी था; अब कोन्या के नाम से जाना जाता है, जो एशयिा माइनर में तुर्की के करमन प्रांत की राजधानी है।

[7686] पहली शताब्दी में, कोर्फू द्वीप पर, जहाँ उन्होंने प्रेरति जेसन के साथ मलिकर ईसाई धर्म का प्रचार कयिा

[7687] उत्तरी फलिस्तिीन का एक शहर।

[7688] बेरटिस – अब बेरूत – फोनीशयिा का एक प्राचीन शहर, जो भूमध्य सागर के तट पर स्थति है। यह वर्तमान में लेबनान की राजधानी है।

[7689] इन पवत्रि प्रेरतिों के साथ, कलीसयिा इस दनि प्रेरति टर्टयिस का स्मरण करती है; उनके स्मरण और प्रतमिा के लएि, 30 अक्टूबर, पवत्रि प्रेरतिों देखें।

[7690] कोतुआन – फ्रीजयिा में एक प्राचीन शहर। फ्रीजयिा – एशयिा माइनर का एक बड़ा क्षेत्र, जसिमें मूल रूप से प्रायद्वीप के पश्चमिी हस्सि का पूरा मध्य भाग, साथ ही प्रोपोंटसि (मार्मारा सागर) का दक्षणिी तट हेलेस्पोंट (डार्डानेल्स) तक शामलि था, जसिे बाद में मसियिा का हस्सिा माना जाने लगा। इसके सीमाएँ थीं: पश्चमि में – मसियिा, लडियिा और कैरयिा; दक्षणि में – लसियिा, पसिीडयिा और लकिाओनयिा; पूर्व में – कैपैडोसयिा; और उत्तर में – गैलाटयिा और बथिनियिा।

[7691] दोनों सम्राटों ने 284 से 305 तक संयुक्त रूप से शासन कयिा – पूर्व में डायोक्लेटयिन और पश्चमि में मैक्समियिन।

रहने को प्राथमकिता दी। संत मीना लंबे समय तक पहाड़ों और रेगस्तिानों में घूमते रहे, ईश्वर के वधिान का अध्ययन करते हुए, उपवास और प्रार्थना के माध्यम से अपनी आत्मा को शुद्ध करते हुए, और दनि-रात एक सच्चे ईश्वर की सेवा करते हुए। इस प्रकार, काफी लंबा समय बीत गया।

एक दनि, कोतुआन क्षेत्र की राजधानी में, एक अधर्मी उत्सव आयोजति कयिा गया, जसिमें बहुत सारे मूर्तपिूजक इकट्ठा हुए थे। उन्होंने अपने अधर्मी देवताओं के सम्मान में वभिन्नि खेल, तमाशे, घुड़दौड़ और कुश्ती प्रतयिोगतिाएं आयोजति कीं, और पूरे शहर के नविासयिों ने इन तमाशों को वशिष रूप से बनाए गए ऊँचे मंचों से देखा। धन्य मीना, जन्हिें पवत्रि आत्मा द्वारा इस उत्सव की पूर्व चेतावनी मलिी थी, ईश्वर के प्रतउित्साह से भर गए और पहाड़ों तथा रेगस्तिानों को पीछे छोड़कर शहर में आ गए। जहाँ तमाशा हो रहा था, उस अखाड़े के केंद्र में प्रवेश करके, वह शहीद एक ऊँचे मंच पर खड़ा हो गया ताकि हर कोई उसे देख सके, और ऊँचे स्वर में चल्लिाया: *'जन्हिोंने मुझे नहीं खोजा, उन्होंने मुझे पा लयिा है; मैंने स्वयं को उन लोगों के सामने प्रकट कयिा है जन्हिोंने मुझसे नहीं पूछा'* (रोमयिों 10:20)।

जब संत मीना ने ऐसा पुकारा, तो तमाशे में उपस्थति सभी लोगों ने अपनी दृष्टउिन पर टकिा दी और उनके साहस से चकति होकर चुप हो गए। उस नगर का राजकुमार, जसिका नाम पायरस था, जो स्वयं भी तमाशे में उपस्थति था, ने संत को अपने सामने लाने का आदेश दयिा और उनसे पूछा:

'तुम कौन हो?'

संत मीना ने पूरी भीड़ के सामने जोर से पुकारा:

'मैं स्वर्ग और पृथ्वी के प्रभु, यीशु मसीह का सेवक हूँ।'

राजकुमार ने संत से फरि पूछा:

'क्या तुम अजनबी हो या यहीं के रहने वाले? तुम्हें इस तमाशे के बीच में ऐसे चल्लिाने की हम्मित कहाँ से आई?'

जब राजकुमार बोल ही रहा था, और संत को जवाब देने का मौका मलिने से पहले ही, राजकुमार के पास खड़े कुछ सैनकिों ने मीना को पहचान लयिा और चल्लिा उठे:

'यह योद्धा मीना है, जसिने ट्राइब्यून फर्मलियिन के अधीन सेवा की थी।'

तब राजकुमार ने संत मीना से कहा:

'क्या यह सच है कि आप एक योद्धा थे, जैसा कि लोग आपके बारे में कहते हैं?'

संत ने उत्तर दयिा:

'हाँ, यह सच है, मैं एक सैनकि था और इस शहर में था, लेकनि लोगों की दुष्टता को देखकर, जो राक्षसों द्वारा बहकाए गए थे और सच्चे ईश्वर के बजाय मूर्तयिों की पूजा करते थे, मैंने अपना सैन्य पद त्याग दयिा और इस शहर को छोड़ दयिा ताकि मैं इन लोगों के अन्याय और वनिाश में भागीदार न बनूँ। आज के दनि तक मैं रेगस्तिानों में भटकता रहा हूँ, दुष्टों, मेरे ईश्वर के शत्रुओं से संपर्क से बचते हुए; लेकनि अब, यह सुनकर कि तुमने एक अधर्मी उत्सव का आयोजन कयिा है, मैं अपने ईश्वर के प्रतउित्साह से प्रेरति होकर यहाँ आया हूँ, ताकि तुम्हारी अंधाधुंधता का पर्दाफाश करूँ और तुम्हें एकमात्र सच्चे ईश्वर का उपदेश दूँ, जसिने अपने वचन द्वारा स्वर्ग और पृथ्वी की रचना की और जो पूरे ब्रह्मांड को धारण करता है।

ये शब्द सुनते ही राजकुमार ने संत को सुबह तक जेल में रखकर पहरा देने का आदेश दयिा, जबकि वह स्वयं पूरे दनि उत्सव और मनोरंजन में व्यस्त रहा।

अगली सुबह, राजकुमार ने न्यायपीठ पर अपनी सीट ली और, संत मीना को कालकोठरी से लाने का आदेश देकर, उन्हें मूर्तयिों की पूजा करने के लएि मनाने की हर संभव कोशशि की: उपहारों का वादा करके और उन्हें यातना देने की धमकी देकर। जब वह अपने शब्दों से संत को पाप करने के लएि मना नहीं सका, तो उसने जबरदस्ती करने लगा, और चार सैनकिों को आदेश दयिा कि वे संत के कपड़े उतार दें, उसे लटका दें, और बैल की खाल से नर्दियता से पीटें, जसिसे शहीद के घावों से खून की धारा बहने लगी। घटनास्थल पर मौजूद पगिासयिस नामक एक व्यक्तने संत मीना से कहा:

'मानव, अपनी ही भलाई के लएि दया करो, और राजकुमार की आज्ञा का पालन करो, इससे पहले कि तुम्हारा शरीर पूरी तरह से नष्ट हो जाए। 'मैं तुम्हें सलाह देता हूँ: केवल कुछ समय के लएि देवताओं के सामने झुक जाओ, ताकि तुम इन यातनाओं से मुक्त हो जाओ, और फरि एक बार फरि अपने ईश्वर की सेवा करो, जो इस चूक के लएि तुम पर क्रोधति नहीं होंगे, यदि तुम केवल एक बार मूर्तयिों को बलदिान चढ़ाओ और इन भयानक यातनाओं से मुक्त होने के लएि, मजबूरी में, थोड़ी देर के लएि उनकी ओर मुड़ जाओ।'

लेकिन संत ने गुस्से में उत्तर दिया:

'मेरे पास से दूर हो जा, हे अन्याय करने वाले; मैंने पहले ही स्तुति का बलिदान अर्पित कर दिया है, और मैं इसे फिर से केवल अपने ईश्वर को ही अर्पित करूँगा, जो मुझे अपनी सहायता प्रदान करते हैं और इस प्रकार धैर्य में मुझे मजबूत करते हैं, ताकि ये यातनाएँ मुझे दुखद होने के बजाय बहुत हल्की और आरामदायक लगें।'

यातना देने वाले, शहीद की सहनशीलता से चकित होकर, ने आदेश दिया कि संत मीना को और भी अधिक यातनाएँ दी जाएँ। संत को एक पेड़ से लटका दिया गया और उनके शरीर को लोहे के पंजे से खुरचा गया, जबकि यातना देने वाले ने संत का मज़ाक उड़ाते हुए उनसे कहा:

'मिना, क्या तुम्हें बिल्कुल भी दर्द महसूस हो रहा है, या ये यातनाएँ तुम्हारे लिए बहुत सुखद हैं, और क्या तुम चाहते हो कि हम इन्हें और भी बढ़ा दें?'

लेकिन पवित्र शहीद, यद्यपि उन्होंने बहुत कष्ट सहे, फिर भी उन्होंने राजकुमार को दृढ़ता से उत्तर दिया:

'तुम मुझे इन क्षणिक यातनाओं से हरा नहीं सकते, यातना देने वाले, क्योंकि मुझे स्वर्ग के राजा के योद्धाओं का साथ प्राप्त है, जिन्हें तुम देख नहीं सकते।'

राजकुमार ने अपने सेवकों को संत को और भी अधिक यातना देने और उससे कहने का आदेश दिया:

'यहाँ रोमन सम्राटों के अलावा किसी अन्य राजा की घोषणा मत करो।'

इस पर शहीद ने उत्तर दिया:

'यदि तुम सच्चे राजा को जानते, तो तुम उस पर अपमान नहीं करते जिसकी मैं शिक्षा देता हूँ, क्योंकि वह स्वर्ग और पृथ्वी का सच्चा राजा है, और उसके सिवा कोई और नहीं है। फिर भी तुम उसे जाने बिना उसकी निंदा करते हो, और उसकी तुलना अपनी नश्वर रानियों से करते हो, जो धूल से बनी हैं, जिन्हें उसने राजसी गरिमा और अधिकार प्रदान किया है, क्योंकि वह सभी सृष्टि का प्रभु है।

तब राजकुमार ने संत से कहा:

'यह कौन है जो राजाओं को अधिकार देता है और सभी पर शासन करता है?'

शहीद ने राजकुमार से उत्तर दिया:

'यीशु मसीह, परमेश्वर का पुत्र, जो अनंतकाल तक जीवित है, जिसके अधीन स्वर्ग और पृथ्वी की सभी चीजें हैं; वही है जो राजाओं को उनके सिंहासन पर बिठाता है और राज्य करता है, जो अधिकार प्रदान करता है और प्रभुत्व का प्रयोग करता है।'

तब यातना देने वाले ने संत मीना से कहा:

'क्या तुम नहीं जानते कि रोमन सम्राट मसीह के नाम का प्रचार करने वालों से बहुत क्रोधित होते हैं और आज्ञा देते हैं कि ऐसे लोगों को मार डाला जाए?'

शहीद ने उत्तर दिया:

'यहोवा राज्य करता है: राष्ट्र काँप उठें! वह करूबों पर विराजमान है: पृथ्वी थर्रा उठे' (भजन संहिता 98:1)। यदि आपके राजा मसीह और उनके नाम का प्रचार करने वाले मसीहियों से क्रोधित हैं, तो इससे मुझे क्या लेना-देना ? मैं उनके क्रोध की कोई परवाह नहीं करता, क्योंकि मैं अपने मसीह का सेवक हूँ, और मेरी केवल एक ही इच्छा है: अपनी मृत्यु तक उनके सर्व-पवित्र नाम की गवाही देना, और उनके मीठे प्रेम का आनंद लेना, जिससे कोई भी मुझे अलग नहीं कर सकता: *'कौन हमें परमेश्वर के प्रेम से अलग कर सकता है? क्या संकट, या क्लेश, या उत्पीड़न, या अकाल, या नग्नता, या संकट, या तलवार?'* (रोमियों 8:35)।

इसके बाद, यातना देने वाले ने आदेश दिया कि संत के घावों को बालों से बने कपड़े से जोर-जोर से रगड़ा जाए। और जब यह किया जा रहा था, तो पवित्र शहीद ने कहा:

'अब मैं इस चमड़े के वस्त्र को उतारता हूँ और उद्धार का चोगा पहनता हूँ।'

इसके अतिरिक्त, यातना देने वाले ने आदेश दिया कि संत को जलती हुई मोमबत्तियों से झुलसाया जाए, लेकिन जब उसका पूरा शरीर जल रहा था, तब भी वह चुप रहा।

तब राजकुमार ने उससे पूछा:

'क्या तुम इस आग को महसूस करते हो, मीना?'

संत ने उत्तर दिया: *'हमारा ईश्वर भस्म करने वाली आग है'* (इब्रानियों 12:29)।

जसिके लिए मैं दुख सहता हूँ, वह मेरी सहायता करता है, और इसलिए मुझे वह आग महसूस नहीं होती जसिसे तुम मुझे जला रहे हो, और न ही मैं तुम्हारे अनेक यातनाओं से डरता हूँ, क्योंकि मुझे सुसमाचार में अपने प्रभु के वचन याद हैं: *'उनसे मत डरो जो शरीर को मारते हैं पर आत्मा को नहीं मार सकते; बल्कि उससे डरो जो आत्मा और शरीर दोनों को गेहन्ना में नाश कर सकता है'* (मत्ती 10:28)।

तब राजकुमार ने शहीद से कहा:

'इतनी वाक्पटुता कहाँ से आती है? तुम हमेशा एक सैनिक रहे हो; फिर भी तुम ऐसे कैसे बोलते हो जैसे कोई बहुत सारी किताबें पढ़ चुका हो?'

संत ने राजकुमार से उत्तर दिया:

'हमारे प्रभु यीशु मसीह ने हमसे कहा: *"और वे तुम्हें मेरी खातिर राज्यपालों और राजाओं के सामने सौंपेंगे, ताकि तुम उनके और अन्यजातियों के सामने गवाही दो। परन्तु जब वे तुम्हें सौंपें, तो इस बात की चिन्ता न करो कि कैसे या क्या कहोगे; क्योंकि उसी घड़ी तुम्हें यह दिया जाएगा कि क्या कहना है"* (मत्ती 10:18-19)।

राजकुमार ने संत से पूछा:

क्या आपके मसीह को पता था कि आप उनके लिए इतनी यातनाएँ सहेंगे?

शहीद ने उत्तर दिया:

– चूंकि वह सच्चे हैं, उनके पास भविष्य का ज्ञान है। वह जानते थे और जानते हैं कि जो कुछ भी अस्तित्व में है; जो कुछ भी आने वाला है वह उन्हें ज्ञात है, और वह हमारे सभी विचारों को पहले से जानते हैं।

राजकुमार, संत को उत्तर न दे पाकर, उनसे बोला:

– 'बस करो यह बेकार की बात, मीना, और दो में से एक चुन लो: या तो हमारे में से एक बन जाओ, और हम तुम्हें सताना बंद कर देंगे, या मसीह का हो जाओ, और हम तुम्हें मौत के घाट उतार देंगे।'

इस पर संत ने ऊँचे स्वर में उत्तर दिया:

'मैं मसीह का था, मैं मसीह का हूँ, और मैं मसीह का ही रहूँगा।'

राजकुमार ने कहा:

'यदि आप चाहें, तो मैं आपको दो-तीन दिनों के लिए रिहा कर दूँगा, ताकि आप इस पर ध्यान से विचार कर सकें और हमें अपना अंतिम उत्तर दे सकें।'

लेकिन संत ने उत्तर दिया:

यह दो-तीन दिन नहीं, बल्कि कई साल हो गए हैं जब से मैंने मसीह के धर्म को स्वीकार किया है; फिर भी मेरे मन में कभी भी अपने ईश्वर का त्याग करने का विचार तक नहीं आया, और इसलिए अब मेरे लिए इस पर विचार करना उचित नहीं है। राजकुमार, मुझसे और कुछ सुनने की उम्मीद मत करो; लेकिन यही मेरा अंतिम शब्द है: मैं अपने ईश्वर का त्याग नहीं करूँगा, मैं तुम्हारे राक्षसों को बलिदान नहीं चढ़ाऊँगा, और मैं निर्जीव मूर्तियों के सामने अपने घुटने नहीं टेकूँगा।

शहीद के दृढ़ उत्तर से राजकुमार बहुत क्रोधित हो गया, और उसने हुक्म दिया कि जमीन पर कांटे, त्रिशूल और विभिन्न लोहे के कील बिछा दिए जाएँ, और बँधे हुए पवित्र शहीद को उन पर घसीटा जाए। लेकिन वह, जैसे कि निरम फूलों पर घसीटा जा रहा हो, ने बहुदेववादियों के बहुदेववाद की और भी कड़ी निंदा की और राक्षसों द्वारा मोहित पुरुषों की मूर्खता का मज़ाक उड़ाया। और राजकुमार ने आदेश दिया कि संत को, जैसे ही उसे घसीटा जा रहा था, टिन की छड़ों से भी पीटा जाए। और इस प्रकार संत मिनस को लंबे समय तक यातना दी गई।

उस क्षण, उपस्थित सैनिकों में से एक, जिसका नाम इलिओडोर था, ने यातना देने वाले से कहा:

'राजकुमार, क्या आपके राजसी भानु नहीं जानते कि ईसाई पागल होते हैं और किसी भी यातना से नहीं डरते, वे इसे ऐसे सहन करते हैं जैसे वे निर्जीव पत्थर या पेड़ हों, और मृत्यु को एक मीठा पेय मानते हैं? अब और परेशान न करें, बल्कि आदेश दें कि इस हठी ईसाई को तुरंत मार डाला जाए।'

और राजकुमार ने तुरंत संत पर यह सजा सुनाई: 'हम आदेश देते हैं कि दुष्ट योद्धा मीना, जो ईसाई अधर्म में पड़ गया है और राजा की आज्ञा मानने तथा देवताओं को बलिदान चढ़ाने से इनकार कर दिया है, उसका सिर तलवार से काट दिया जाए, और उसके शरीर को सभी लोगों के सामने जला दिया जाए।'

सैनिकों ने पवित्र शहीद मीना को पकड़ लिया और उन्हें शहर के बाहर ले गए, जहाँ उन्होंने उनका सिर कलम कर दिया; फिर, एक बड़ी चिता जलाकर, उन्होंने पवित्र शहीद के बहुतेक कष्ट सहने वाले शरीर को उसमें डाल दिया।

जब आग बुझ गई, तो कुछ वशि्वासी उस स्थान पर आए और जलने से बचे संत के अवशेषों को इकट्ठा कयिा; उन्हें एक साफ कफ़न में लपेटकर, उन्होंने उन पर सुगंधति तेलों से अभषिेक कयिा[7692] । कुछ ही समय बाद, वे इन पवत्रि अवशेषों को अपने गृह नगर अलेक्जेंड्रयिा ले आए[7693] , जहाँ उन्होंने उन्हें सम्मान के स्थान पर दफनाया। बाद में, इस स्थल पर पवत्रि शहीद को समर्पति एक चर्च का नरि्माण कयिा गया, और संत से प्रार्थना करने पर वहाँ कई चमत्कार हुए।

महान शहीद संत मीना के चमत्कारों पर अलेक्जेंड्रयिा के आर्चबशिप, थमिोथी का वृत्तांत

दुष्ट और ईश्वर-वरिोधी रोमन सम्राटों डायोक्लेटयिन और मैक्समियिन की मृत्यु के बाद, धर्मपरायण कॉन्स्टेंटाइन महान ने शाही सहिासन संभाला; उनके शासनकाल के दौरान, हमारे प्रभु यीशु मसीह में वशि्वास बहुत बढ़ गया। उस समय, अलेक्जेंड्रयिा शहर के कुछ मसीह-प्रेमी लोगों ने, उस स्थान को खोज नकिाला जहाँ मसीह के पवत्रि और महमिामय शहीद, मीना, के सम्मानति अवशेष रखे गए थे, और उन्होंने उसी स्थान पर उनके नाम एक चर्च का नरि्माण कयिा।

संयोग से इसौरयिा की भूमकिा एक धर्मपरायण व्यापारी[7694] , माल खरीदने के लिए अलेक्जेंड्रयिा आया। संत मीना के चर्च में हो रहे अनेक चमत्कारों और चंगाइयों के बारे में सुनकर, उसने अपने मन में कहा:

'मैं भी जाऊँगा और शहीद के पवत्रि अवशेषों की पूजा करूँगा और उसकी चर्च में चढ़ावे चढ़ाऊँगा, ताकि ईश्वर अपने इस पीड़ति की प्रार्थनाओं के माध्यम से मुझ पर दया करें।'

यह सोचकर, वह सोने से भरा एक बोरा अपने साथ लेकर चर्च के लिए रवाना हो गया। पोमेरेनयिन झील पर पहुँचकर और एक नाव पाकर, वह लोज़ोनेटा नामक स्थान के लिए चल पड़ा। वहाँ कनिारे पर उतरकर, व्यापारी ने रात बतिाने के लिए कोई जगह देखी, क्योंकि शाम हो चुकी थी। इसलिए, एक घर में प्रवेश करके, उसने मालकि से कहा:

'मेरे दोस्त, मुझ पर एक एहसान करो और मुझे अपनी ज़िंदगी में रात बतिाने दो, क्योंकि सूरज डूब चुका है और मुझे अकेले आगे बढ़ने से डर लग रहा है, क्योंकि मेरे साथ चलने वाला कोई नहीं है।'

'आइए, भाई,' घर के मालकि ने जवाब दयिा, 'और भोर होने तक यहीं रात बतिाइए।'

मेहमान ने नमिंत्रण स्वीकार कर लयिा और घर में प्रवेश करते ही सोने के लिए लेट गया। लेकनि मेजबान, यात्री का सोने का थैला देखकर लालच में आ गया और एक दुष्ट आत्मा के उकसावे पर, उसने अपने मेहमान को मारने की साजशि रची ताकि वह उसका सोना खुद ले सके। आधी रात को उठकर, उसने व्यापारी का गला घोंट दयिा, उसके शरीर को टुकड़ों में काटकर, उन्हें एक टोकरी में रख दयिा और एक अंदर के कमरे में छपिा दयिा। हत्या के बाद, वह बहुत घबरा गया और, चारों ओर देखकर, पीड़ति को दफनाने के लिए एक छपिा हुआ स्थान खोजने लगा।

जब वह इस पर वचिार कर रहा था, तो पवत्रि शहीद मीना घोड़े पर सवार होकर उसके सामने प्रकट हुए, मानो वे राजा द्वारा भेजा गया कोई योद्धा हों। हत्यारे के घर के द्वार से घुसते हुए, शहीद ने उससे मारे गए मेहमान के बारे में पूछा। हत्यारे ने, अनजान होने का नाटक करते हुए, संत से कहा:

'सर, मुझे नहीं पता आप कसि बारे में बात कर रहे हैं; यहाँ मेरा कोई मेहमान नहीं था।'

लेकनि संत ने घोड़े से उतरकर, भीतर के कमरे में जाकर, एक टोकरी ली, उसे बाहर ले आए और हत्यारे से कहा:

'यह क्या है?'

हत्यारा बहुत डर गया और संत के चरणों में बेहोश हो गया। हालांकि, संत ने कटकर अलग हुए अंगों को फरि से जोड़ दयिा, प्रार्थना की, और मृतक को जीवति कर दयिा, और उससे कहा:

'ईश्वर की स्तुति करो।'

[7692] संत मीना की शहादत वर्ष 304 में हुई थी। इस दनि चर्च की सेवा में, शहीद मीना के साथ-साथ संत वकि्टर, वसिंट और स्टेफनडिा को भी सम्मानति कयिा जाता है, हालांकि चर्च के अधकिांश भजन शहीद मीना को समर्पति हैं।

[7693] अलेक्जेंड्रयिा – एक प्रसद्धि शहर जसिे लगभग 333 ईसा पूर्व में महान अलेक्जेंडर ने भूमध्य सागर के दक्षणिी तट पर एक प्रायद्वीप पर (वर्तमान समान नाम वाले शहर से कुछ दक्षणि में) स्थापति कयिा था; यह कभी शकि्षा का केंद्र और दुनयिा का अग्रणी व्यापारकि शहर था; चौथी शताब्दी की शुरुआत में, यह ईसाई धर्म का केंद्र और पादरी का आसन बन गया।

[7694] इसौरयिा – प्राचीन एशयिा माइनर का एक छोटा, कम-अध्ययन कयिा गया क्षेत्र, जो पहाड़ों में छपिा हुआ था, पूर्व में लाइकोनयिा से, उत्तर में फ्रीजयिा के एक हसि्से से, और पश्चमि में पसिीडयिा से सटा हुआ था। इसौरयिा का मुख्य शहर इसौरयिा (अब उलुबुयार) था, जो बहुत अमीर और घनी आबादी वाला था।

वह आदमी जैसे नींद से जागा हो, उठ खड़ा हुआ, और यह समझते हुए कि घर के मालिक ने उसके साथ धोखा किया है, उसने ईश्वर की स्तुति की और प्रकट हुए योद्धा के प्रति कृतज्ञता से सिर झुकाया। और संत ने हत्यारे से सोना लेकर, उसे उस आदमी को दे दिया जिसे उन्होंने मृतकों में से जीवित किया था, यह कहते हुए:

'शांति से अपने रास्ते जाओ।'

तब हत्यारे की ओर मुड़कर, संत ने उसे पकड़ लिया और बुरी तरह पीटा। हत्यारे ने पश्चाताप किया और क्षमा याचना की। फिर शहीद ने उसे हत्या के लिए क्षमा दे दी और, उसके लिए प्रार्थना करने के बाद, अपने घोड़े पर सवार हो गए और आंखों से ओझल हो गए।

अलेक्जेंड्रिया में यूट्रोपियस नाम का एक व्यक्ति रहता था। इस यूट्रोपियस ने संत मीना के चर्च को एक चाँदी की थाली दान करने का व्रत लिया था। इसलिए, एक सुनार को बुलाकर, उसने उसे दो थालियाँ बनाने का निर्देश दिया, और एक पर लिखने को कहा: 'पवित्र महान शहीद मीना की थाली', और दूसरी पर: 'यूट्रोपियस की थाली, अलेक्जेंड्रिया का एक नागरिक था। चांदीकार ने यूट्रोपियस के निर्देशानुसार काम शुरू कर दिया, और जब दोनों थालियाँ तैयार हो गईं, तो संत मीना के लिए बनाई गई थाली दूसरी से कहीं अधिक सुंदर और शानदार निकली। थालियों पर संत मीना और यूट्रोपियस के नाम अंकित करने के बाद, चांदीकार ने उन्हें यूट्रोपियस को सौंप दिया।

एक दिन, जहाज पर समुद्र पार करते समय, यूट्रोपियस ने रात के खाने में दोनों नई थाली का उपयोग किया; और यह देखकर कि संत मीना के लिए उपहार के रूप में रखी गई थाली उसकी अपनी थाली से कहीं अधिक सुंदर थी, वह उसे संत को देना नहीं चाहता था, बल्कि उसने अपने नौकर को आदेश दिया कि वह उसी पर उसका भोजन परोसे, जबकि वह अपना नाम वाली थाली संत मिनस के चर्च को उपहार के रूप में भेजना चाहता था। जब भोजन समाप्त हो गया, तो नौकर ने शहीद के नाम वाली थाली ली और जहाज के किनारे जाकर उसे समुद्र में धोने लगा। अचानक, वह भय से कांप उठा और उसने एक आदमी को समुद्र से निकलते देखा, जिसने उसके हाथों से वह बर्तन ले लिया और गायब हो गया। डर के मारे कांपता हुआ नौकर बर्तन के पीछे समुद्र में कूद गया। यह देखकर, उसका मालिक भी डर गया और, जोर-जोर से रोते हुए, कहने लगा:

'हाय रे मुझ पर, एक दीन-हीन मनुष्य, कि मैंने संत मीना की थाली अपने लिए लेना चाही: इस प्रकार मैंने थाली और अपना दास दोनों खो दिया। परन्तु हे प्रभु मेरे परमेश्वर, मुझ पर अन्त तक क्रोध न करें, और अपने दास पर अपनी दया दिखाएँ। देखो, मैं यह व्रत लेता हूँ: यदि मुझे अपने सेवक का शव मिल गया, तो मैं वैसा ही एक बर्तन बनवाऊँगा, और उसे आपके पवित्र सेवक मीना को भेंट स्वरूप चढ़ाऊँगा, या फिर मैं संत मीना के चर्च को उस बर्तन की कीमत के बराबर धनराशि दान करूँगा।

जब जहाज़ किनारे पर आया, तो यूट्रोपियस उतर गया और अपने नौकर का शव समुद्र में बहकर किनारे पर आ गया हो, इस उम्मीद में समुद्र तट पर नज़र दौड़ाने लगा ताकि वह उसे सही ढंग से दफ़ना सके। जैसे ही उसने ध्यान से देखा, तो उसने अपने नौकर को हाथों में थाल लेकर समुद्र से बाहर आते हुए देखा। डरा हुआ फिर भी अत्यंत प्रसन्न, वह ऊँचे स्वर में चिल्लाया:

'ईश्वर की स्तुति हो! सचमुच महान हो, हे पवित्र शहीद मीना!'

उसकी पुकार सुनकर जहाज़ पर सवार सभी लोग किनारे पर उतर आए, और थालियाँ थामे सेवक को देखकर वे आश्चर्य से भर गए और ईश्वर की स्तुति करने लगे। जब उन्होंने सेवक से पूछना शुरू किया कि समुद्र में गिरने के बाद वह कैसे बच गया और पानी से बिना किसी चोट के कैसे बाहर निकला, तो उसने उत्तर दिया:

'जैसे ही मैं समुद्र में कूदा, एक कुलीन व्यक्ति और दो अन्य लोगों ने मुझे पकड़ लिया और कल और आज मेरे साथ चलकर मुझे यहाँ लाए हैं।'

यूट्रोपियस, नौकर और थाल को लेकर, सेंट मीना के चर्च गए; और श्रद्धापूर्वक सिर झुकाने और संत को दिए गए वचन के अनुसार थाल को भेंट स्वरूप चढ़ाने के बाद, उन्होंने ईश्वर का धन्यवाद करते हुए और उनके पवित्र सेवक, सेंट मीना की महिमा करते हुए विदा ली।

सोफिया नाम की एक महिला संत मीना के चर्च में पूजा करने जा रही थी। रास्ते में उसकी मुलाकात एक सैनिक से हुई, जिसने यह देखकर कि वह अकेली यात्रा कर रही है, उस पर हमला करने का निश्चय किया। उसने जोरदार प्रतिरोध किया और मदद के लिए पवित्र शहीद मीना को पुकारा। और संत ने उसकी सहायता से इनकार नहीं किया, बल्कि उस व्यक्ति को दंडित किया जिसने उस पर अत्याचार करना चाहा, और उसे बिना किसी चोट के सुरक्षित रखा। जब सैनिक

ने अपने घोड़े को अपनी दाहिनी टांग से बाँधकर उस महिला पर हमला करने वाला था, तो घोड़ा क्रोधित हो गया और न केवल अपने मालिक के इरादे को विफल कर दिया, बल्कि उसे जमीन पर घसीटते हुए ले गया, और तब तक रुकने या शांत होने से इनकार कर दिया जब तक कि वह उसे संत मीना के चर्च तक नहीं ले गया। ज़ोर-ज़ोर से हिनहिनाते और और अधिक उग्र होते हुए, उसने घटनास्थल पर एक बड़ी भीड़ को इकट्ठा कर लिया, क्योंकि यह एक पर्व का दिन था और चर्च लोगों से भरा हुआ था। योद्धा, इतनी बड़ी भीड़ को देखकर और यह महसूस करते हुए कि घोड़ा अभी भी गुस्से में था और उसकी मदद के लिए कोई नहीं था, इस बात से भयभीत हो गया कि उसे अपने घोड़े के हाथों इससे भी कुछ अधिक भयानक का सामना करना पड़ सकता है। इसलिए, अपनी लज्जा त्यागकर, उसने पूरी भीड़ के सामने अपने दुष्ट इरादे का इकरार किया, और घोड़ा तुरंत शांत हो गया और वश में आ गया; जबकि योद्धा, चर्च में प्रवेश करके और संत की अवशेषों के सामने सिर झुकाकर, अपने पाप के लिए क्षमा याचना करते हुए प्रार्थना करने लगा।

पवित्र शहीद के चर्च के पास, कई अन्य लोगों के साथ, एक लंगड़ा आदमी और एक गूंगी महिला भी थीं, जो चंगे होने की प्रतीक्षा कर रहे थे। आधी रात को, जब सभी सो रहे थे, संत मीना लंगड़े आदमी के सपने में प्रकट हुए और उससे कहा:

'चुपचाप बहरी महिला के पास जाओ और उसका पैर पकड़ लो।'

लंगड़े आदमी ने शहीद से उत्तर दिया:

'हे परमेश्वर के सेवक, क्या मैं व्यभिचारी हूँ कि आप मुझे यह करने का आदेश दे रहे हैं?'

लेकिन संत ने उनके शब्द तीन बार दोहराए और कहा:

'यदि तुम ऐसा नहीं करोगे, तो तुम ठीक नहीं हो पाओगे।'

लंगड़े आदमी ने संत की आज्ञा का पालन करते हुए, रेंगकर मूक महिला की टांग पकड़ ली। वह जाग गई और लंगड़े आदमी पर क्रोधित होकर चिल्लाने लगी। डरा हुआ, लंगड़ा आदमी दोनों पैरों पर खड़ा हो गया और जल्दी से भाग गया। इस प्रकार, दोनों ने अपना चंगा होना महसूस किया – गूंगी महिला बोलने लगी, और लंगड़ा आदमी हिरण की तरह तेज़ी से दौड़ा; और दोनों, चंगे हो जाने पर, ईश्वर और पवित्र शहीद मीना का धन्यवाद करने लगे।

एक यहूदी का एक ईसाई दोस्त था। एक दिन, किसी दूर के देश की यात्रा करते समय, उसने अपने दोस्त को रखवाली के लिए एक छोटा सा डिब्बा सौंपा, जिसमें एक हजार सोने के सिक्के थे। जब वह उस देश में देर हो गया, तो ईसाई ने ठान ली कि वह सोना यहूदी को वापस नहीं करेगा, बल्कि उसे अपने पास रख लेगा, और उसने वैसा ही किया। जब यहूदी लौटा, तो वह ईसाई के पास गया और उससे उस सोने को वापस मांगा जो उसने उसकी हिफाजत के लिए सौंपा था। लेकिन ईसाई ने इनकार कर दिया, और कहा:

'मुझे नहीं पता कि तुम मुझसे क्या मांग रहे हो। तुमने मुझे कुछ नहीं दिया, और मैंने तुमसे कुछ नहीं लिया।'

अपने मित्र का यह उत्तर सुनकर यहूदी दुखी हो गया और अपना सोना खोया हुआ मानकर, उसने ईसाई से कहा:

'भाई, यह बात भगवान के सिवा कोई नहीं जानता, और अगर तुम यह दावा करते हुए कि तुमने मुझसे सोना नहीं लिया है, मुझसे रखवाए गए सोने को वापस करने से इनकार करते हो, तो कसम खाकर इसकी पुष्टि करो। चलो सेंट मीना के चर्च चलते हैं, और वहाँ तुम मुझसे कसम खाओगे कि तुमने मुझसे एक हजार सोने के सिक्कों वाला डिब्बा नहीं लिया है।'

ईसाई मान गया, और वे दोनों साथ में संत के चर्च गए, जहाँ ईसाई ने यहूदी के सामने ईश्वर की कसम खाई कि उसने उसकी हिफाजत के लिए सोना नहीं लिया था। कसम खाने के बाद, वे दोनों एक साथ चर्च से बाहर निकले, और जैसे ही उन्होंने अपने घोड़ों पर सवार होना शुरू किया, ईसाई के घोड़े ने उन्मत्त होकर उछलना-कूदना शुरू कर दिया, जिसे काबू करना लगभग असंभव हो गया; उसने अपनी लगाम तोड़ दी, अपने पिछले पैरों पर खड़ा हो गया और अपने मालिक को ज़मीन पर फेंक दिया। जैसे ही ईसाई अपने घोड़े से गिरा, उसकी उंगली से एक अंगूठी फिसल गई और उसकी जेब से एक चाबी गिर पड़ी। ईसाई खड़ा हुआ, घोड़े को पकड़ा, उसे शांत किया, फिर से उस पर सवार हुआ और यहूदी के साथ चल पड़ा। थोड़ी देर सवारी करने के बाद, ईसाई ने यहूदी से कहा:

'मेरे दोस्त, यह एक उपयुक्त जगह है; चलो उतरकर कुछ रोटी खाते हैं।'

घोड़े से उतरने के बाद, वे घोड़ों को चराने देने लगे और खुद खाने लगे। थोड़ी देर बाद, ईसाई ने इधर-उधर देखा और अपने नौकर को उनके सामने खड़ा हुआ पाया, जो एक हाथ में यहूदी का डिब्बा और दूसरे हाथ में वह अंगूठी पकड़े हुए था जो उसकी उंगली से गिरी थी। यह देखकर ईसाई दंग रह गया और नौकर से पूछा:

'इसका क्या मतलब है?'

नौकर ने उत्तर दिया:

'घोड़े पर सवार एक भयानक योद्धा मेरी मालकिन के पास आया और, अंगूठी वाली चाबी उसे देते हुए, कहा: "यहूदी का संदूक जितनी जल्दी हो सके भेज दो, नहीं तो तुम्हारे पति पर बड़ी विपत्ति आ पड़ेगी।" और मुझे यह तुम्हारे पास लाने का आदेश दिया गया था, ठीक वैसे ही जैसे तुमने आज्ञा दी थी।'

यह देखकर यहूदी इस चमत्कार से चकित हो गया और, आनंदित होकर, अपने मित्र के साथ संत मीना शहीद के चर्च में लौट आया। चर्च में ज़मीन पर सिर झुकाकर, यहूदी ने पवित्र बपतिस्मा का अनुरोध किया, क्योंकि वह इस चमत्कार का गवाह रहा था, जिसके कारण वह आस्था में आ गया था, जबकि ईसाई संत मीना से क्षमा देने के लिए प्रार्थना कर रहा था, क्योंकि उसने एक दैवी आज्ञा का उल्लंघन किया था। दोनों को उनकी मांग के अनुसार मिला – एक को पवित्र बपतिस्मा; दूसरे को उसके पाप की क्षमा – और दोनों अपनी-अपनी राह चले गए, आनंदित होकर ईश्वर की महिमा करते हुए और उनके पवित्र सेवक मीना की स्तुति करते हुए।

कॉन्टाकियन, स्वर 4:

स्वर्गीय सेना को क्षणभंगुरता से बचाओ, और उन्हें अमर स्वर्गीय साथी, कष्ट-सहिष्णु मीना, हमारे ईश्वर मसीह को प्रकट करो, जो शहीदों का अमर मुकुट हैं।

पवित्र शहीदों विक्टर और स्टेफनिडा का कष्टकथा

11 नवंबर को स्मरणोत्सव

रोमन सम्राट एंटोनिनिस[7695] के शासनकाल में, गवर्नर सेबस्टियन के अधीन, विक्टर नाम का एक सैनिक सेवा करता था, जो इटली का मूल निवासी था। यह विक्टर हमारे प्रभु यीशु मसीह में विश्वास रखता था और उसने सभी के सामने उनके परम पवित्र नाम का खुले तौर पर इकरार किया। जब उस समय मसीहियों पर अत्याचार शुरू हुआ, तो राज्यपाल ने धन्य विक्टर को बुलाया और उससे कहा:

'हमें एक शाही फरमान मिला है जो हमें आदेश देता है कि हम तुम्हें, ईसाइयों को, हमारे देवताओं को बलिदान चढ़ाने के लिए मजबूर करें, और जो मना करें उन्हें कठोर यातनाओं में डाल दें। इसलिए, विक्टर, देवताओं को बलिदान चढ़ाओ, कहीं ऐसा न हो कि तुम्हें यातनाओं में डाला जाए और तुम अपनी आत्मा खो दो।'

लेकिन संत विक्टर ने राज्यपाल से उत्तर दिया:

'मैं एक नश्वर राजा की अधर्मी आज्ञा का पालन नहीं करूँगा, और न ही मैं उसकी इच्छा पूरी करूँगा, क्योंकि मैं अमर राजा का सेवक हूँ, मेरे ईश्वर और उद्धारकर्ता यीशु मसीह, जिनका राज्य शाश्वत है, और जो उनकी इच्छा के अनुसार चलते हैं वे अनंतकाल तक जीवित रहेंगे; जबकि आपका नश्वर राजा और उसका राज्य अस्थायी है, और जो उसकी दुष्ट इच्छा को पूरा करते हैं वे अनंतकाल तक नाश हो जाएँगे।

इस पर राज्यपाल ने विक्टर से कहा:

'तुम हमारे राजा के सिपाही हो; उसकी आज्ञा का पालन करो और बलिदान चढ़ाओ।'

'नहीं,' विक्टर ने उत्तर दिया, 'मैं अब आपके सांसारिक राजा का सैनिक नहीं हूँ, बल्कि स्वर्गीय राजा का हूँ; और भले ही मैं अस्थायी रूप से आपके राजा के अधिकार के अधीन एक सैनिक होता, मैं कभी भी अपने राजा की सेवा करना बंद नहीं किया, और अब मैं उसे नहीं छोड़ूँगा, और न ही मैं आपकी मूर्तियों को बलिदान चढ़ाऊँगा।' मेरे साथ जो चाहो करो: मेरा शरीर तुम्हारे हाथ में है, और तुम पर उसका अधिकार रखते हो; परन्तु मेरी आत्मा पर केवल मेरे एकमात्र परमेश्वर का अधिकार है।

तब राज्यपाल ने विक्टर को समझाने की कोशिश की:

उसने कहा, 'तुम स्वयं राजा की आज्ञा की अवज्ञा करके अपने ऊपर आपदा ला रहे हो; मैं तुम्हें सलाह देता हूँ कि देवताओं को बलिदान चढ़ाओ, ताकि तुम्हें वे यातनाएँ न झेलनी पड़ें जो तुम्हारा इंतज़ार कर रही हैं।'

[7695] एंटोनिनिस – एक रोमन सम्राट, जो मार्कस ऑरेलियस द फिलॉसफर के नाम से बेहतर जाने जाते हैं, ने 161 से 180 तक शासन किया।

संत विक्टर ने दृढ़ता से उत्तर दिया, 'मैं ठीक यही चाहता हूँ, अपने प्रभु के लिए यातना सहना, और मैं बहुत प्रसन्न हूँ कि मुझे उनके नाम के लिए पीड़ित होने का सम्मान मिलेगा।'

तब राज्यपाल ने तुरंत आदेश दिया कि उसकी उंगलियों को तोड़ा जाए और जोड़ों से उखाड़ दिया जाए। इसके बाद, यातना देने वाले ने आदेश दिया कि भट्टी को प्रचंड आग से भड़काया जाए और संत विक्टर को उसमें फेंक दिया जाए; उस भट्टी में शहीद तीन दिनों तक रहे और जीवित तथा सुरक्षित बाहर निकले, ठीक वैसे ही जैसे बेबीलोन की भट्टी में तीन युवक निकले थे (दानियेल 3:50)। यातना देने वाले ने, यह उम्मीद न करते हुए कि संत विक्टर जीवित रहेंगे, आदेश दिया कि तीसरे दिन भट्टी खोली जाए, शहीद की राख उसमें से निकाली जाए और नदी में बखेर दी जाए। लेकिन जब भट्टी खोली गई, तो संत उसमें से सुरक्षित बाहर निकले, और ईश्वर की स्तुति करने लगे कि आग ने उन्हें न तो छुआ था और न ही उन्हें कोई हानि पहुँचाई थी।

यह देखकर कि वह असफल हो गया है, राज्यपाल ने एक जादूगर को बुलाया और उसे सेंट विक्टर को ज़हर देकर मारने का आदेश दिया। जादूगर ने घातक ज़हर के साथ मांस पकाया और उसे खाने के लिए संत को दे दिया।

संत ने कहा:

'यद्यपि मेरे लिए आपसे यह अशुद्ध मांस स्वीकार करना और खाना उचित नहीं है, फिर भी मैं इसे खाऊंगा, ताकि आप यह जान सकें कि आपके घातक जहर का मेरे प्रभु, जीवन दाता, की शक्ति के विरुद्ध कुछ भी नहीं कर सकता।'

तब, प्रार्थना करने के बाद, शहीद ने जहरीला मांस खा लिया और उसे कोई भी हानि नहीं हुई। जादूगर ने, यह देखकर कि संत उसके द्वारा खाए गए जहर से अप्रभावित रहे, सबसे जहरीले ज़हर से लदी मांस की एक और डिश तैयार की और संत से कहा:

'यदि तुम यह मांस खाकर जीवित रहे, तो मैं अपना सारा जादू-टोना त्याग दूँगा और तुम्हारे ईश्वर पर विश्वास कर लूँगा।'

संत विक्टर ने इस सबसे जहरीले ज़हर से लदी मांस को खा लिया, फिर भी वह सुरक्षित रहा। तब जादूगर ने ऊँचे स्वर में पुकारा:

'विक्टर, तुमने मेरी जादू-टोने की शक्ति को हरा दिया है, और मेरी आत्मा को—जो बहुत पहले ही खो चुकी थी—नरक से बचा लिया है, क्योंकि मैं अब प्रभु यीशु मसीह में विश्वास करने लगा हूँ, जिनका तुम प्रचार करते हो।'

इसके बाद, जादूगर अपने घर गया, अपनी जादू-टोने की सभी किताबें और अपने सभी जादुई तावीज़ इकट्ठा किए, उन्हें जला दिया, और एक सच्चा ईसाई बन गया।

पालक ने देखा कि संत को कुछ भी नुकसान नहीं पहुँचा सकता, तो वह बहुत क्रोधित हो गया और आज्ञा दी कि शहीद की टेंडन उसके शरीर से फाड़ दी जाएँ; जिसके बाद उसने आज्ञा दी कि शहीद को उबलते तेल में फेंक दिया जाए।

और संत ने उसी क्षण कहा:

'यह उबलता तेल मेरे लिए उतना ही सुखद है जितना कि एक प्यासे के लिए ठंडा पानी।'

संत विक्टर की दृढ़ता ने उनके यातनाकर्ता को और भी अधिक क्रोधित कर दिया, और उसने आदेश दिया कि संत को एक पेड़ से लटकाया जाए और उनके शरीर को मोमबत्तियों से झुलसाया जाए; और उनकी यातनाओं की तीव्रता को और बढ़ाने के लिए, उन्होंने राख को सिरके में मिलाया और इस मिश्रण को शहीद के मुँह में डाल दिया।

लेकिन उसने कहा:

'यह सिरका और तुम्हारा घातक विष मेरे लिए वैसे ही हैं जैसे शहद और शहद के छत्ते।'

तब यातना देने वाला, और भी अधिक क्रोधित होकर, ने आदेश दिया कि मसीही के आँखें निकाल दी जाएँ। इसके बाद, संत को उल्टा लटका कर, सैनिक चले गए और उसे तीन दिन तक उसी अवस्था में लटका छोड़ दिया। चौथे दिन, यह सोचकर कि शहीद की मृत्यु हो चुकी है, सैनिक उसे देखने आए, और उसे जीवित देखकर हैरान रह गए। इस पर वे भय से ग्रस्त हो गए, और अंधे हो गए, और उनमें से प्रत्येक ने एक मार्गदर्शक की तलाश करनी शुरू कर दी।

संत ने उन पर दया करके, परमेश्वर से भक्तिपूर्वक प्रार्थना की और उनसे कहा:

'मेरे प्रभु यीशु मसीह के नाम पर, अपनी दृष्टि प्राप्त करो!'

और वे तुरंत अपनी दृष्टि वापस पा गए और, कमांडर के पास जाकर, उन्होंने उसे बताया कि क्या हुआ था। लेकिन कमांडर और भी अधिक क्रोधित हो गया और सैनिकों को सेंट विक्टर की खाल उतारने का आदेश दिया। जब यह दुष्ट आदेश पूरा किया जा रहा था, तब स्टेफनडिा नाम की एक महिला—जो आस्था से ईसाई और एक सैनिक की पत्नी थी—

जो संत के कष्टों को देखने आई थी, ने स्वर्ग से उतरते हुए दो सुंदर मुकुट देखे। उनमें से एक मुकुट पवित्र शहीद विक्टर के सिर पर और दूसरा उसके अपने सिर पर उतर आया।

यह देखकर, स्टेफनिडा ने ऊँचे स्वर में शहीद की महिमा करना शुरू कर दिया:

'धन्य है तू, विक्टर, और मसीह के लिए तेरे कष्ट भी धन्य हैं; तेरा बलिदान हाबेल (उत्पत्ति 4:4) के बलिदान के समान परमेश्वर को प्रसन्न करता है, क्योंकि तूने एक धर्मी हृदय से अपना बलिदान अर्पित किया है!' ईश्वर ने आपको वैसे ही स्वीकार किया है जैसे उन्होंने एक बार धर्मी हनोक को स्वीकार किया था, जिसे उन्होंने पृथ्वी से स्वर्ग में उठा लिया था, ताकि वह सांसारिक मृत्यु का स्वाद भी न चखे (उत्पत्ति 5:24); आप नूह की तरह धर्मी हैं, शुभ कर्मों से परिपूर्ण और अपने लोगों में सबसे पवित्र हैं (उत्पत्ति 6:9)। आपने अब्राहम की तरह विश्वास किया है; आपने इसहाक की तरह स्वयं को परमेश्वर के लिए बलिदान के रूप में अर्पित किया है; आपने याकूब की तरह कठिनाइयों को सहा है। आप यूसुफ की तरह बुद्धिमान हैं, जिन्हें भविष्य देखने का वरदान मिला था; आपने अय्यूब की तरह परीक्षाओं को सहन किया, जिन्होंने बहुत सी पीड़ाओं के बाद, शैतान पर विजय प्राप्त की और धैर्य का एक उदाहरण प्रस्तुत किया (अय्यूब की पुस्तक, याकूब 5:10-11)! आप यशायाह के समान हैं, जिसे राजा मनश्शेह के आदेश से आरी से चीर दिया गया था; आग ने आपको नहीं छुआ, ठीक वैसे ही जैसे नबूकदनेसर की भट्टी में तीन जवानों को नहीं छुआ था (दानिय्येल 3:1–100); आपने येशे के पुत्र दाऊद की तरह परमेश्वर में अपनी आशा रखी है। देखो, मैं स्वर्ग से उतरते हुए दो मुकुट देखता हूँ, एक बड़ा और अति सुन्दर, और दूसरा छोटा; बड़ा मुकुट बारह स्वर्गदूतों द्वारा तुम्हारे लिए लाया जा रहा है, और छोटा मेरे लिए; क्योंकि मैं भी, यद्यपि एक नाजुक पात्र हूँ, शहादत का गौरव प्राप्त करने और हमारे प्रभु के नाम के लिए साहसपूर्वक दुख सहने और उसके लिए अपनी आत्मा अर्पण करने को तैयार हूँ।

स्टेफनिदा से ये शब्द सुनकर, राज्यपाल ने सैनिकों को आदेश दिया कि वे उसे पकड़कर उसके सामने लाएँ। उसे घमंड से देखते हुए, उसने पूछा:

'तुम कौन हो?'

'मैं एक ईसाई हूँ,' संत ने उत्तर दिया।

तब राज्यपाल ने उससे उसका नाम और उम्र पूछी, और यह जानकर कि उसका नाम स्टेफनिडा था, वह पंद्रह साल और आठ महीने की थी, और उसकी शादी को एक साल और चार महीने हुए थे, तो वह उससे नरमी से बात करने लगा:

'तुम इस सुंदर संसार, अपने अच्छे जीवन और अपने विवाह को इतनी जल्दी क्यों छोड़ना चाहती हो, और स्वयं को स्वेच्छा से सूली पर चढ़ाए गए के लिए मृत्यु के हवाले करके अपने युवा जीवन को नष्ट क्यों करना चाहती हो?'

इस पर, संत ने अपने यातनाकर्ता से उत्तर दिया:

'मैं इस क्षणिक और व्यर्थ की दुनिया, सभी सांसारिक कामुक इच्छाओं, और अपने नश्वर पति को छोड़ रही हूँ, ताकि मैं विवेकी कुंवारी कन्याओं के साथ अविनाशी और अमर वर, मेरे उद्धारकर्ता मसीह से मिलने जा सकूँ।'

राज्यपाल ने उससे कहा:

'अपने ईश्वर के बारे में ऐसे निरर्थक और व्यर्थ शब्द न बोलो; हमारे देवताओं की ओर मुड़ो और उन्हें बलिदान चढ़ाओ।'

लेकिन संत स्टीफनिडा ने दृढ़ता से उत्तर दिया:

'तुम और तुम्हारे देवता झूठ से भरे हो, पर मैं सत्य बोलती हूँ, क्योंकि मेरा प्रभु सत्य है और उसमें कोई असत्य नहीं है। मैं झूठे देवताओं को बलिदान नहीं चढ़ाऊँगी, बल्कि मैं स्वर्ग में रहने वाले सच्चे परमेश्वर के लिए एक प्रसन्नतादायक बलिदान बनना चाहती हूँ, कहीं ऐसा न हो कि मैं उनके राज्य में मेरे लिए तैयार किया गया मुकुट खो दूँ।'

तब यातना देने वाले ने आदेश दिया कि वहाँ खड़ी दो खजूर की लताओं की चोटी को जमीन तक झुका दिया जाए और संत को उन पर बाँध दिया जाए, ताकि उसे चीर-फाड़ दिया जाए। उसकी एक टांग को झुकी हुई एक खजूर की चोटी से और दूसरी को दूसरी से बाँध दिया गया, और उन्हें छोड़ दिया गया; खजूर की लताएँ ऊपर उठकर शहीद को दो भागों में फाड़ गईं। शहीद की पवित्र आत्मा, एक फटे जाल से मुक्त होकर उड़ रहे पक्षी की तरह, स्वर्ग में उसके लिए तैयार किए गए मुकुट में अपने लिए एक आवास पा गई।

इसके बाद, राज्यपाल ने संत विक्टर का सिर तलवार से कलम करने का आदेश दिया। यह आज्ञा सुनकर, संत विक्टर ने ईश्वर का धन्यवाद किया। उनके सिर को कलम करने से पहले, उन्होंने अपने अत्याचारियों की मृत्यु की भविष्यवाणी करते हुए कहा:

'बारह दिन बाद तुम मरोगे, और चौबीस दिन बाद तुम्हारा राज्यपाल दुश्मन द्वारा बंदी बना लिया जाएगा।'

यह भविष्यवाणी करने के बाद, संत ने प्रार्थना की और सिर कलम करवाने के लिए अपना सिर झुका दिया। और पवित्र शहीद का सम्माननीय सिर तलवार से अलग कर दिया गया।

संत विक्टर का सिर कट जाने के बाद, उनके शरीर से खून मिला हुआ दूध बहा, और यह चमत्कार देखकर कई अविश्वासियों ने मसीह में विश्वास करना शुरू कर दिया। सबसे बढ़कर, जब उन्होंने शहीद की भविष्यवाणी को पूरा होते देखा तो कई लोग विश्वास करने लगे, क्योंकि जैसा उन्होंने पूर्वानुमान लगाया था, वैसा ही हुआ: उसके अत्याचारियों का अचानक नाश हो गया, और राज्यपाल को दुश्मन ने बंदी बना लिया।

संत विक्टर और पवित्र शहीद स्टेफनडिा ने 11 नवंबर को दमिश्क शहर में यातनाएँ भोगीं। और अब वे उस नगर में वास करते हैं जिसे न तो सूर्य की और न ही चंद्रमा की रोशनी की आवश्यकता है, क्योंकि परमेश्वर की महिमा उसे प्रकाशित करती है, और परमेश्वर का मेमना ही उसका प्रकाश है।

संत विंसेंट का बलिदान।

11 नवंबर को स्मरणोत्सव

संत विंसेंट का मूल स्थान स्पेन था। अपनी युवावस्था से ही, इस संत ने स्वयं को ईश्वर की सेवा के लिए समर्पित कर दिया और, पवित्र धर्मग्रंथों का लगन से अध्ययन करते हुए, दिन-रात ईश्वर के विधान में स्वयं को शिक्षित किया। उनके एक अति बुद्धिमान और सदाचारी शिक्षक थे, धन्य वैलेरियस, अगस्तोपोलिस शहर के बिशप[7696] । इस बिशप ने, यह देखकर कि उनका शिष्य विंसेंट समझदार और अच्छे चरित्र का था, उसे एक डिकन नियुक्त किया और उसे परमेश्वर के वचन का प्रचारक बना दिया। क्योंकि यद्यपि वह स्वयं पवित्र शास्त्रों को बहुत अच्छी तरह से जानता था, वह वाक्पटु नहीं था और स्पष्ट रूप से बोल नहीं सकता था; इसलिए, उसने अपने डिकन, धन्य विंसेंट—जो एक योग्य, बुद्धिमान और वाक्पटु व्यक्ति था—को चर्च में लोगों को शिक्षित करने और परमेश्वर के वचन का प्रचार करने का कार्य सौंपा। अपने बिशप से यह आज्ञा और आशीर्वाद प्राप्त करने के बाद, संत विंसेंट ने लोगों को न केवल चर्च में, बल्कि जहाँ भी सुविधाजनक था, लगन से सिखाया और निर्देशित किया, और उन्हें आत्मा के उद्धार का मार्ग दिखाया।

उस समय, दुष्ट सम्राट डायोक्लेटियिन ने स्पेन में दातियिन नामक एक न्यायाधीश भेजा; वह ग्रीक मूल का, स्वभाव से क्रूर, और ईसाइयों का एक उग्र उत्पीड़क और यातनाकर्ता था। डेटियिन को उन सभी को निर्दयता से मृत्युदंड देने के लिए भेजा गया था जो मसीह के नाम का प्रचार करते थे। इस न्यायाधीश ने, स्पेन के शहर वालेंसिया[7697] में पहुँचकर, वहाँ बहुत सारा ईसाई रक्त बहाया, और एक भेड़िये की तरह मसीह की भेड़ों को नोच लिया। वहाँ अगस्तोपोलिस में रहने वाले बिशप वैलेरियस और उनके डिकन विंसेंट के बारे में सुनकर, दतियिन ने अपने सैनिकों को उनके पीछे भेजा और उन्हें जंजीरों में जकड़कर न्याय के लिए अपने सामने लाने का आदेश दिया। सैनिकों ने, डैटियिन के आदेश का पालन करते हुए, दोनों संतों को पकड़ लिया, उन्हें भारी लोहे की बेड़ियों में जकड़ दिया, और उन्हें वेलेंसिया ले गए, रास्ते में उन्हें बहुत कष्ट पहुँचाते हुए, भूख, प्यास और तेज रफ्तार से उन्हें थका रहे थे; क्योंकि सैनिक स्वयं घोड़े पर तेजी से सवार जा रहे थे, जबकि संत, घोड़सवारों के साथ कदम नहीं मिला पाकर, गिर पड़े और घोड़ों से बँधे हुए, लकड़ी की लट्ठों की तरह, लंबी दूरी तक घसीटे गए।

जब उन्हें वेलेंसिया शहर लाया गया, तो यातना देने वाले ने उन्हें तुरंत एक अंधेरी और बदबूदार कालकोठरी में डालने का आदेश दिया, जहाँ उन्हें बिना भोजन या पानी के लंबे समय तक रखा गया। लेकिन ईश्वर ने अपनी कृपा से उन्हें शक्ति प्रदान की, ताकि वे थक न जाएँ या शहादत देने की शक्ति न खो दें। इस बीच, यातना देने वाले को यह डर सताने लगा कि

[7696] ऑगस्टोपोलिस (यानी ऑगस्टस का शहर) का नाम रोमन सम्राट ऑक्टेवियिन - ऑगस्टस - के नाम पर पड़ा, जिन्होंने 27 ईसा पूर्व में अपने पूर्व सैनिकों के साथ यहाँ एक रोमन सैन्य कॉलोनी की स्थापना की थी। ऑगस्टोपोलिस को सारागोसा के नाम से भी जाना जाता है। आज, ज़ारागोसा – स्पेन के इसी नाम के क्षेत्र का प्रमुख शहर और पूर्व अरागॉन साम्राज्य की राजधानी, जो एब्रो नदी के दाहिने किनारे पर स्थित है – की आबादी लगभग 100,000 है।

[7697] वैलेन्सिया उसी नाम के स्पेनिश प्रांत की राजधानी है। इसकी स्थापना ब्रूटस ने की थी, जिन्होंने 138 ईसा पूर्व में लुसिटेनियिनों पर अपनी विजय के बाद वहाँ एक रोमन उपनिवेश स्थापित किया था। एक असाधारण रूप से उपजाऊ घाटी के केंद्र में स्थित, वालेंसिया आइबेरियाई प्रायद्वीप के सबसे खूबसूरत और उल्लेखनीय शहरों में से एक है।

कैदी मर सकते हैं और उसे अपना क्रोध उतारने के लिए कोई नहीं मिलेगा, इसलिए उसने उन्हें अपने सामने लाने का आदेश दिया। जब उसने देखा कि वे भूख, प्यास या अपनी भारी बेड़ियों से बिल्कुल भी परेशान नहीं थे, बल्कि इसके विपरीत, उनका शरीर और मजबूत हो गया था और उनके चेहरे पर चमक आ गई थी, तो यातना देने वाले ने जेलर से कहा:

'तुमने उन्हें खाना-पीना क्यों दिया? उनका वजन बहुत बढ़ गया है।'

रक्षक ने कसम खाई, और उसे आश्वासन दिया कि उसने कैदियों को कुछ भी नहीं दिया था।

तब यातना देने वाले ने बिशप से कठोरता से बात करनी शुरू कर दी, यह सोचकर कि अगर वह अपनी कठोरता से बिशप को डरा सकेगा, तो वह डीकन को और भी नम्र और भयभीत कर देगा। लेकिन ऐसा नहीं हुआ, क्योंकि प्रभु, जो शक्तिशाली को उनके सिंहासन से गिराता है और नम्रों को ऊँचा उठाता है, इस बात से प्रसन्न था कि इस अहंकारी यातनाकर्ता के घमंड को पद में सबसे छोटे और सबसे नीचले व्यक्ति द्वारा लज्जित किया जाए। दातियन ने सबसे पहले बिशप से पूछा:

'तुम राजा की आज्ञा का उल्लंघन क्यों करते हो और हमारे देवताओं की पूजा करने से इनकार क्यों करते हो, बल्कि किसी मसीह की महिमा क्यों करते हो?'

बिशप ने डातियन से शांत स्वर में और नम्रता से उत्तर दिया, मानो वह कुछ भयभीत हो। तब पवित्र आत्मा से परिपूर्ण डिकिन विंसेंट ईश्वर के प्रति उत्साह से भरकर अपने बिशप से कहा:

'पिताजी, आप इतनी धीमी आवाज़ में, जैसे डर रहे हों, क्यों बोल रहे हैं, और इस कुत्ते की भौंक का साहसपूर्वक जवाब क्यों नहीं देते?' मसीह की शक्ति का उद्घोष ऊँचे स्वर में करो, और इस दुष्ट मनुष्य की मूर्खता को निश्चिंत उजागर करो और उस पर विजय प्राप्त करो, जो परमेश्वर, अपने सृष्टिकर्ता, के विरुद्ध जाना चाहता है, जिसने उसे इतना अधिकार प्रदान किया है, और जो परमेश्वर को मिलने वाला सम्मान राक्षसों को देना चाहता है। अब समय है उस शैतान को पूरी तरह से परास्त करने का, जिसे कई लोगों ने, उसे कमजोर और कायर समझकर, मसीह के नाम पर निकाल दिया है, और इस साँप के सिर को कुचलने का।

डेटियन ने ये शब्द सुनकर और यह देखकर कि पवित्र डिकिन विंसेंट ने उसकी सारी ताकत, शक्ति और धमकियों को कुछ भी नहीं समझा, उपस्थित लोगों से कहा:

'इस बिशप को यहाँ से ले जाओ; मैं इस युवा डिकिन से कुछ बात करूँगा।'

तब यातनाकर्ता ने जल्लादों की ओर मुड़कर उनसे कहा:

'यातना के सभी उपकरण तैयार करो, ताकि हम उसी के शब्दों से हमें अपमानित करने वाले को उसी की मुद्रा में जवाब दे सकें।'

फिर उसने आदेश दिया कि संत को एक पेड़ से बाँधा जाए और उसके शरीर को लोहे की पंजाओं से खुरचकर फाड़ दिया जाए। जैसे ही सैनिकों ने दातियन के आदेशों का पालन किया, उसके फटे हुए शरीर से रक्त की धारा बह निकली और जमीन खून से लथपथ हो गई, और शहीद की गहरी चोटों से उसकी हड्डियाँ दिखाई देने लगीं। यातना देने वाले ने संत का मज़ाक उड़ाते हुए उससे कहा:

'अब तुम क्या कहोगे, विंसेंट? क्या तुम देख रहे हो कि तुम्हारे शरीर को कैसे घायल कर के टुकड़े-टुकड़े कर दिया गया है?'

लेकिन संत ने उत्तर दिया:

'मुझे वह मिला है जिसकी मुझे इच्छा थी, क्योंकि मैं आत्मा से इसी की लालसा करता था; न्यायाधीश, मेरा विश्वास करो कि मेरे लिए अपने प्रभु के लिए पीड़ा सहने से बड़ी कोई इच्छा नहीं थी; और यह कृपा मुझे आपके सिवा किसी ने नहीं दी है।' यद्यपि आप यह द्वेष से कर रहे हैं, फिर भी मुझे यातना देकर आप मेरे लिए एक उपकार कर रहे हैं; क्योंकि जितना आप मेरे दुखों को बढ़ाते हैं, उतना ही मेरा प्रभु मेरे लिए स्वर्ग में पुरस्कार तैयार करते हैं। इन भयानक यातनाओं के माध्यम से, जैसे सीढ़ियाँ चढ़ते हुए, मैं अपने परमेश्वर तक पहुँचता हूँ जो उच्च स्थान पर वास करते हैं: उनमें मेरी आशा के द्वारा, मैं, मानो, पहले ही स्वर्ग को छू रहा हूँ, जबकि मैं शाही फरमान को अस्वीकार करता हूँ और आपकी मूर्खता पर हँसता हूँ। मेरे कष्टों को समाप्त मत करो, बल्कि मुझे और भी अधिक पीड़ा में डालो: मैं आपसे विनती करता हूँ, मुझ पर और भी अधिक क्रूर बनें और अपने सेवकों को आज्ञा दें कि वे मुझे तब तक यातनाएँ देते रहें जब तक मेरा शरीर मर न जाए; क्योंकि मैं, अपने प्रभु मसीह के सेवक के रूप में, उनके नाम के लिए सब कुछ सहन करने को तैयार हूँ।

यातना देने वाले ने संत के ये शब्द सुनकर क्रोध से आग-बबूला हो गया और अपने नौकरों से चिल्लाया कि वे यातना देने में कोई कसर न छोड़ें और मसीह के शहीद को और भी अधिक यातना दें। जब उसने देखा कि नौकर थक रहे थे, तो वह उठा और उन्हें पीटने लगा।

लेकिन संत ने उसके क्रोध पर हँसकर उससे कहा:

'न्यायाधीश, आप क्या कर रहे हैं? आप अपने ही नौकरों को क्यों पीट रहे हैं? वे मुझे यातना दे रहे हैं, और आप उसी का बदला उनसे ले रहे हैं।'

शहीद के शब्दों और उनके अजेय धैर्य से आहत हो कर दातयिन और भी ज्यादा क्रोधित हो गया: वह दाँत पीसने लगा, उसका चेहरा मौत की तरह पीला पड़ गया और वह क्रोध से काँपने लगा। फिर, थोड़ा शांत होकर, उसने अपने नौकरों से नरमी से कहा:

'यह क्या है, मेरे वफादार सेवको? यह दुष्ट तुम्हारे हाथों में कोई बोझ क्यों नहीं महसूस करता और किसी यातना से क्यों नहीं डरता, बल्कि तुम पर इस तरह हँसता है जैसे पहले कभी किसी ने नहीं हँसा?' तुम्हारे हाथों में कई लुटेरे, दुष्ट, पिता-हत्यारे और जादूगरों को यातनाएँ दी गई हैं, फिर भी ऐसा कोई नहीं हुआ जो तुम्हारे हाथों में हो और मुझ पर और तुम पर हँस रहा हो। क्या तुम सच में ऐसी अपमान सहोगे? अपनी सारी ताकत जुटाओ और उसे और भी बुरी तरह यातना दो।

लेकिन संत विंसेंट ने उनकी कमजोरी पर और भी हँसते हुए कहा:

'मैं तुमसे, यातना देने वाले, यह नहीं कहता कि तुम मुझे यातना देना बंद करो, बल्कि और भी अधिक यातनाएँ रचो; क्योंकि मिसीह की शक्ति, जो मुझे संभाले हुए है, तुम्हारी शक्ति से कहीं अधिक है, जो मुझे यातना देती है, और मैं एकमात्र सच्चे परमेश्वर, यीशु मसीह की गवाही देने और उसकी महिमा करने से नहीं चूकूँगा। हे, काश तुम भी इस ईश्वर को जान पाते, मेरी देह में प्रकट हुई उसकी महान शक्ति को देखकर, यद्यपि मैं कमज़ोर हूँ—एक ऐसी शक्ति जिसे तुम, अपने सभी सेवकों सहित, परास्त नहीं कर सकते; फिर भी तुम, देख कर भी नहीं समझते, और सुन कर भी नहीं समझते, और तुम अपनी आत्मा के विनाश के लिए शैतान की इच्छा पूरी करना बंद नहीं करते!

न्यायाधीश, यातनाओं से कुछ भी हासिल न कर सका (क्योंकि तीखी लोह की सलाख शहीद की जोड़ों और हड्डियों को भेदकर उसकी आंतों तक पहुँच गई, फिर भी वह सुरक्षित रहा), ने संत को चापलूसी के द्वारा अपनी दुष्टता में फँसाने का निश्चय किया, और उससे कोमल स्वर में बात करना शुरू किया:

'विन्सेंट, अपनी जवानी की परवाह करो, और अपने जीवन के फूल को समय से पहले मुरझाने की इच्छा मत करो; अपने जीवन के लंबे वर्षों को मत काटो, बल्कि खुद को बचाओ और हमें पश्चाताप दिखाओ, कहीं तुम पूरी तरह से नष्ट न हो जाओ। क्योंकि मुझे तुम पर तरस आता है और मैं तुम्हें अपमान और यातना में नहीं, बल्कि सम्मान और महिमा में देखना चाहूँगा, क्योंकि यदि तुम मेरी बात मानो तो मैं तुम्हारे लिए बड़ा सम्मान सुनिश्चित करूँगा।"

संत विंसेंट ने डाटयिन के इन चापलूसी भरे शब्दों का उत्तर दिया:

'तुम्हारी कपटी दया मेरे लिए तुम्हारे क्रोध से कहीं अधिक भयानक है, क्योंकि मैं तुम्हारे चापलूसी भरे शब्दों से अधिक भयभीत हूँ, जितना मैं यातनाओं से हूँ। इस धोखे को बंद करो, जो मेरी आत्मा के लिए विनाशकारी है, और अपने यातना के पूरे बल को मुझ पर लगा दो; मुझे बिना किसी दया के यातना दो, और मसीह की शक्ति को जानो, जो उनमें वास करती है जो उससे प्रेम करते हैं।

शहीद के इन शब्दों ने यातना देने वाले के क्रूर क्रोध को एक बार फिर भड़का दिया, और उसने शहीद को सूली पर चढ़ाने और उसके पूरे शरीर को विभिन्न तरीकों से यातना देने का आदेश दिया। जब नौकरों ने यातना देने वाले के आदेश का पालन करते हुए सूली पर चढ़े संत को पीटा और गर्म लोहे से उनके घावों को दागा, तो मसीह के शहीद अचानक सूली से गिरकर जमीन पर आ गए। दासों ने, यह सोचकर कि संत पहले ही मर चुके हैं, उन्हें ले जाने के इरादे से पकड़ लिया। लेकिन संत, मसीह की कृपा से मजबूत होकर, उनकी पकड़ से छूट गए और एक बार फिर से क्रूस पर लटक गए। ऐसा करते हुए, उन्होंने दासों को उनकी लापरवाही के लिए डांटा, यह कहते हुए कि वे अपने मालिक की आज्ञा का पालन उत्साह के बिना कर रहे थे। तब नौकर बहुत क्रोधित हो गए और उन्होंने अपनी पूरी ताकत से हर संभव तरीके से संत को यातनाएँ देना शुरू कर दिया, जब तक कि वे खुद पूरी तरह से थक नहीं गए। इन यातनाओं के बाद, यातना देने वाले के आदेश पर, संत विंसेंट को एक कालकोठरी में कैद कर दिया गया, जहाँ, घावों से ढके, उनके अंग टूटे-फूटे और नसें फटी हुई थीं, उन्हें मिट्टी के बर्तनों के तेज टुकड़ों पर लिटा दिया गया। जब रात हुई और पहरेदार गहरी नींद में थे, तो अचानक कालकोठरी में एक प्रकाश चमका और स्वर्गदूतों के चेहरे स्वर्ग से संत के पास उतरे, जिन्होंने उनके दुखों में उन्हें सांत्वना दी। पवित्र

शहीद वर्सिंट, इस दैवीय मुलाकात से अपने घावों के ठीक हो जाने और अकथनीय आनंद से भर जाने के बाद, ईश्वर की स्तुति करने लगे। उन्हें खुशी से गाते सुनकर उनकी रखवाली कर रहे सैनिक जाग गए और कोठरी में एक अकथनीय प्रकाश देखकर वे बहुत डर गए और यह बात बताने के लिए दौड़कर डाटियन के पास गए। हालाँकि, वह इस बात पर विचार करते हुए कि इस अजेय शहीद के साथ और क्या किया जाए, पूरी रात जागने के कारण बहुत परेशान था, और अंत में उसने निम्नलिखित चाल सोची। उसने एक शानदार बिस्तर तैयार करने का आदेश दिया; जब उस पर एक नरम गद्दा बिछा दिया गया, तो संत को उस पर लिटा दिया गया। इसी समय, यातना देने वाले ने प्रलोभकों को संत के पास बिठाने का आदेश दिया, और उन्हें निर्देश दिया कि वे उनके रक्त को पोंछें, उनके घावों पर पट्टी बांधें और हर ज़रूरत का ख्याल रखें, मानो उन पर तरस खा रहे हों और उनके लिए दुखी हों, और, उनके पैरों को चूमते हुए, वे उनसे रहम की भीख माँगते, और उन्हें और भी बड़े कष्टों में न डालने के लिए कहते, बल्कि राजा की आज्ञा का पालन करने के लिए कहते। जब दातियन का यह आदेश लागू किया जा रहा था, तो संत ने कहा:

'मेरे लिए मिट्टी के बर्तनों के टुकड़ों पर यातना का बिस्तर इससे बेहतर होता; और इससे, हे चालाक प्रलोभकों, मुझे धोखा न दो।'

यातना देने वाले ने, यह देखकर कि वह अपनी चालाकी से कुछ भी हासिल नहीं कर सका, एक बार फिर यातना का सहारा लिया। उसने लोहे की पट्टियों को गर्म करके संत के पार्श्वों पर दबाने का आदेश दिया। फिर, उसके आदेश पर, शहीद को एक लोहे की जाली पर लिटाया गया, और उसके नीचे एक बड़ी आग जला दी गई, ताकि शहीद को ऐसे भुना गया जैसे वह मेज के लिए मांस हो।

हालाँकि, शहीद ने ये सभी यातनाएँ दृढ़ता से सहन कीं, यीशु मसीह के नाम का अंगीकार करते हुए, और अपने प्रभु[7698] के हाथों में अपनी आत्मा सौंपकर, अपने शहीद होने का पराक्रम पूरा किया।

यातना देने वाले ने, जब देखा कि संत की मृत्यु हो गई है, तो उसने उनके शरीर को खेत में ले जाकर बिना दफनाए छोड़ देने का आदेश दिया, ताकि पक्षी और जानवर उसे खा जाएँ; और उसने कुछ दूरी पर पहरा लगाने का आदेश दिया, ताकि ईसाई शहीद का शरीर न उठा सकें। लेकिन ईश्वर, *जो 'सभी हड्डियों की रक्षा करते हैं'* (भजन संहिता 33:21) धर्मी के, और शहीद के शरीर पर एक असाधारण रक्षक नियुक्त किया, और एक काग को उसकी रखवाली करने की आज्ञा दी। दातियन द्वारा दूर पर तैनात पहरेदार ने देखा कि जब भी शिकारी पक्षियों का झुंड संत के शरीर पर हमला करता था, तो काग उन्हें सब भगा देता था और एक भी पक्षी को शहीद के शरीर पर बैठने नहीं देता था। और यद्यपि कौवा स्वभाव से ही लाशों को चोंच मारना पसंद करता है, वह ईश्वर की शक्ति से नियंत्रित था; उसने स्वयं संत के शरीर को नहीं छुआ, और न ही अन्य पक्षियों को उसे छूने दिया। और इससे भी अधिक चमत्कारिक यह था: जब एक भेड़िया आया और संत के शरीर को ले जाने का प्रयास करने लगा, तो काग ने बड़ी ताकत से उस पर हमला किया, अपने पंखों से उसे मारा, और उसे भी भगा दिया। जब पहरेदारों ने यह बात दातियन को बताई, तो वह बहुत हैरान हुआ; फिर भी उसने इसमें ईश्वर की शक्ति को स्वीकार करने से इनकार कर दिया और शहीद के शरीर को समुद्र में फेंकने का आदेश दिया। सैनिकों ने वर्सिंट के सम्मानित शरीर को लेकर एक जहाज पर सवार हुए और समुद्र में काफी दूर तक नौकायन करने के बाद, उसे समुद्र की गहराई में फेंक दिया, जबकि वे स्वयं वापस तट पर लौट आए। जब वे तट पर पहुँचे, तो उन्होंने शहीद का शरीर समुद्र तट पर पड़ा हुआ देखा। भयभीत होकर वे भाग गए। लेकिन ईसाइयों ने शहीद के पवित्र अवशेषों को लेकर उन्हें सम्मानपूर्वक दफनाया और पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा की महिमा की।

हमारे पूजनीय पिता थियोडोर द स्टुडाइट का जीवन

11 नवंबर को स्मरणोत्सव

[7699]कॉन्स्टेंटिनोपल में एक बार फोटोइनस नामक एक अमीर और कुलीन व्यक्ति रहते थे, जिनकी शादी थियोक्टिस्टा नामक एक कुलीन महिला से हुई थी। दोनों धर्मपरायण और ईश्वर-भयभीत थे। उन्हीं से धन्य थियोडोर का

[7698] शहीद वर्सिंट का परम विश्राम वर्ष 304 में हुआ था। संत की अवशेषें रोम में, उनके नाम पर स्थित चर्च में, शहर के बाहरी इलाके में एक मठ में रखी गई हैं।

[7699] स्टूडियो के संत थियोडोरेट के पिता, फोटियस, शाही करों के संग्रहकर्ता थे।

जन्म हुआ था। उनके माता-पिता ने, उन्हें पवित्र बपतिस्मा के माध्यम से प्रबुद्ध करने के बाद, उन्हें अच्छे सिद्धांतों के अनुसार पाला और उन्हें शास्त्रीय शिक्षा के लिए भेजा। अधर्मी सम्राट कॉन्स्टेंटिन कॉप्रोन्यमस[7700] के सत्ता संभालने पर, प्रतिमा-भंग की विधर्म फैलने लगी और ऑर्थोडॉक्स का एक कठोर उत्पीड़न शुरू हो गया। परिणामस्वरूप, फोटोइनस ने अपने पास मौजूद महत्वपूर्ण सरकारी पद से इस्तीफा दे दिया और अपनी पत्नी से परामर्श करने के बाद, अपनी सारी संपत्ति बाँट दी और, संसार का त्याग कर, उन्होंने थियोक्टिस्टा के साथ मिलकर संन्यासी जीवन को समर्पित कर दिया, जिसमें उन्होंने अपनी मृत्यु तक उत्साहपूर्वक परिश्रम किया। जहाँ तक धन्य थियोडोर का प्रश्न है, उन्होंने हेलेनिक शिक्षा प्राप्त की और वे एक उत्कृष्ट वक्ता तथा एक उत्कृष्ट दार्शनिक बन गए, और उन्होंने दुष्ट विधर्मीयों के साथ ऑर्थोडॉक्स विश्वास के विषय में बहस की। वे दिव्य धर्मग्रंथ और धर्मशास्त्र में इतने पारंगत थे कि विधर्मी कभी भी उनका सामना नहीं कर सके।

दुष्ट सम्राट कॉन्स्टेंटिन कॉप्रोन्यमस की मृत्यु के बाद, उनके पुत्र लियो[7701] सिंहासन पर बैठे; वह भी एक मूर्तिभंजक थे, लेकिन उनका शासन अल्पकालिक था और वह जल्द ही मर गए। उनके बाद, उनकी पत्नी आइरीन ने अपने बेटे कॉन्स्टेंटिन[7702] के साथ सिंहासन संभाला। 'शांति'[7703] का अर्थ रखने वाले नाम के साथ, उन्होंने वास्तव में चर्च में शांति बहाल की और प्रतिमा-भंग के उथल-पुथल को समाप्त कर दिया। उन्होंने कई सम्मानित पादरियों को एकत्र किया और, परम पावन पैट्रिआर्क तारासियस के साथ मिलकर, निकिया में सप्तम सार्वभौमिक परिषद का आयोजन किया, जिसमें, विधर्मीयों की अधर्मी शिक्षाओं को खारिज करने के बाद, उन्होंने पहले की तरह ही दिव्य प्रतिमाओं की पूजा और उनकी आराधना को फिर से स्थापित किया[7704] । परिषद में तीन सौ से अधिक पादरी एकत्रित हुए; उनमें परम पूज्य प्लेटो भी थे, जो मूल रूप से ओलंपस पर्वत पर एक तपस्वी के रूप में रहते थे[7705] । वे धन्य थियोडोर के मौसी के भाई थे; उनमें ईश्वर की आत्मा वास करती थी और पवित्र धर्मग्रंथों में पारंगत तथा एक कुशल वक्ता होने के नाते, वे सभी के लिए बहुत लाभदायक थे।

परिषद के समापन पर, प्लेटो ने धन्य थियोडोर को अपने साथ लिया और उनके साथ उनके दो भाई, जोसेफ और यूथिमियस, जिन्होंने मठवासी संन्यास ग्रहण करने की इच्छा व्यक्त की थी[7706] । उनके साथ चलकर, वह सकोडियन नामक एक एकांत स्थान पर पहुँचे[7707] ।

यह क्षेत्र अत्यंत सुंदर और मौन की तलाश करने वालों के लिए आदर्श था। एक गोल और समतल पहाड़ पर स्थित, यह विभिन्न ऊँचे पेड़ों से घिरा हुआ था, यहाँ स्वादिष्ट बहता पानी था, और केवल एक संकीर्ण पैदल मार्ग से ही पहुँचा जा सकता था। प्लेटो और उसके साथियों को यह जगह बहुत पसंद आई, और वे वहीं बस गए और जल्द ही उन्होंने सेंट जॉन द थियोलोजियन को समर्पित एक चर्च का निर्माण किया। जब भाइयों की संख्या बढ़ने लगी, तो प्लेटो ने एक मठ[7708] की स्थापना की; जहाँ तक धन्य थियोडोर का सवाल है, प्लेटो द्वारा स्वयं भिक्षु बनाए जाने के बाद, उसने तपस्या और उपवास के माध्यम से दूसरों की तुलना में अपने शरीर को अधिक कष्ट दिया। विनिम्रता की अपनी खोज में, उन्होंने अपने लिए सबसे कठिन और तुच्छ कार्य और कर्तव्य चुने। और कई लोगों को यह आश्चर्यजनक लगता था कि एक अमीर और कुलीन माता-पिता का बेटा, जो ऐश्वर्य और आराम में पला-बढ़ा हो, खुद को ऐसी कठोर तपस्या के अधीन करे:

[7700] बाइज़ेंटाइन मूर्तिभंजन सम्राट कांस्टेंटिन पंचम कोप्रोन्यमस ने 741 से 775 तक शासन किया।

[7701] लेओ चौथे खज़ार ने 775 से 780 तक शासन किया।

[7702] सेंट इरिना, लियो द खज़ार की पत्नी, ने उनके निधन के बाद राज्य पर शासन किया, जब उनका बेटा, कॉन्स्टेंटिन पोर्फ्योजेनिटिस, नाबालिग था, 780 से 797 तक, और फिर 802 तक स्वतंत्र रूप से।

[7703] 'आइरिन' - ग्रीक शब्द से, जिसका अर्थ 'शांति' है।

[7704] निकाया (अब इज़्निक) – एशिया माइनर के उत्तर-पश्चिमी तट पर, आस्कानियस झील के किनारे, प्राचीन काल में बिथिनिया का एक समृद्ध और फलता-फूलता शहर, अब बहुत गरीब और कम आबादी वाला। सप्तम सार्वभौमिक परिषद की अध्यक्षता स्वयं तारासियस ने की थी। सातवीं सार्वभौमिक परिषद का स्मरणोत्सव 11 अक्टूबर को होता है

[7705] ओलंपस – एशिया माइनर में फ्राइजियन-बिथिनियन सीमा पर मिसिया में एक पहाड़। यहाँ 'सिबिल्स' नामक एक मठ था, जो अपने निवासियों के तपस्या के लिए प्रसिद्ध था, जहाँ सेंट प्लेटो द कन्फेसर एक भिक्षु के रूप में रहते थे। उनकी स्मृति 5 अप्रैल को मनाई जाती है

[7706] जैसा कि संत थियोडोर स्वयं अपने एक लेख में उल्लेख करते हैं, वह पहले विवाहित थे, लेकिन 22 वर्ष की आयु में उन्होंने अपना जीवन संन्यास को समर्पित कर दिया, और उनकी पत्नी अन्ना ने भी ऐसा ही किया।

[7707] साकुडियन – जो बाद में एक प्रसिद्ध मठ बना – बिथिनिया में माउंट ओलंपस के पास स्थित था।

[7708] इस मठ समुदाय की स्थापना सेंट प्लेटो ने 782 में की थी।

लकड़ी काटना, पानी लाना, दाख की बारी में मट्टिी खोदना, पत्थर ढोना, और ऐसे ही अन्य कार्यों को लगन से करना; उदाहरण के लिए, वह अक्सर मट्टिी में खाद डालने के लिए दाख की बारी में गोबर ले जाता था। साथ ही, संत अपने सबसे कमजोर भाइयों, जो शारीरकि रूप से बीमार थे, की सहायता करते थे और सभी की सेवा एक सेवक की तरह करते थे। वह अपने सभी वचिारों और कर्मों का अपने आध्यात्मकि पति – संत प्लेटो – के सामने पाप-स्वीकार करना भी सुनश्चिति करते थे। प्रेमपूर्वक उनके पास आकर, थयिोडोर पाप-स्वीकार करते और लगन से उनका मार्गदर्शन ग्रहण करते थे। वह हर दनि ईश्वर के चतिन के लिए समय का एक हस्सिा लगातार अलग रखते थे, ताकि एकमात्र ईश्वर के सामने, सांसारकि और व्यर्थ की सभी चीजों से दूर खड़े होकर, वह उनकी एक नश्चिति रहस्यमय सेवा कर सकें। लेकनि उनकी सदाचारति छपिी नहीं रह सकती थी; क्योंकि उनकी आँखों से प्रचुर मात्रा में बहने वाले आँसू ही उनके अनेक सद्गुणों का नर्विवाद प्रमाण थे। संत का आत्म-संयम अद्भुत और ववेिकपूर्ण था। वह भोजन से परहेज़ नहीं करते थे, फरि भी एक ही समय में अपने पेट पर अधकि बोझ नहीं डालते थे; बल्कि, उन्होंने व्यर्थ सांप के सरि को कुशलता से कुचल दयिा: क्योंकि वह सभी भाइयों के लिए नर्धिारति समय से अधकि उपवास नहीं करते थे; लेकनि जब सभी मेज पर होते, तो वह भी दूसरों के साथ बैठकर खाते थे। फरि भी, वह बहुत कम खाता था: केवल उतना ही जतिना शरीर की सबसे बुनयिादी जरूरतों को पूरा करने के लिए आवश्यक था; और साथ ही वह अपनी संयम-शक्ति को दूसरों से छपिाने का प्रयास करता था, ताकि उन्हें यह एहसास न हो कि वह लगभग कुछ भी नहीं खाता है, और वह खुद को उपवास करने वाला नहीं दखिाता था। कई लोगों ने उनके इस आचरण का अनुकरण करने का प्रयास कयिा और, जहाँ तक संभव था, उनके उदाहरण का पालन करने का प्रयत्न कयिा। उनमें नम्निलखिति थे: जोसेफ, जो रक्त से उसका भाई था, जसिे बाद में उसके सदाचारी जीवन के लिए थस्सिलोनकिा के चर्च का पादरी नयिुक्त कयिा गया[7709] ; यूथमिीयस, उसका एक और भाई; फरि अथानासयिस, नावक्रेटयिस, टमिोथी और अन्य कई तपस्वी, जन्होंने थयिोडोर के वचिारों और आचरण के उदाहरण का अनुसरण करते हुए, सदाचार में उत्कृष्टता हासलि की। अखंड प्रार्थना और चतिन के अनवरत कार्यों में उत्कृष्ट, धन्य थयिोडोर को आत्मा को बचाने वाली पुस्तकें पढ़ने का महान उत्साह था; उन्होंने पुराना और नया नयिम तथा पवत्रि पतिाओं की रचनाएँ लगन से पढ़ीं। वशिष रूप से, उन्हें संत बेसलि द ग्रेट की रचनाएँ पढ़ना पसंद था, जो उनके लिए आत्मा का भोजन थीं, और जनिसे उन्हें महान आध्यात्मकि आनंद मलिता था। उन्होंने संत बेसलि द्वारा नर्धिारति मठवासी जीवन के नयिमों और वधिानों[7710] का कड़ाई से पालन कयिा, और उनमें से एक भी प्रावधान का उल्लंघन नहीं कयिा; वे उन लोगों को, जो इन नयिमों का एक भी छोटे से ववरिण का पालन नहीं करते थे, भक्षिु नहीं बल्कि सामान्य लोगों के रूप में मानते थे।

धन्य थयिोडोर को इतने पुण्य जीवन से प्रकाशमान देखकर, आदरणीय प्लेटो उनके लिए अत्यधकि प्रसन्न हुए। संत थयिोडोर को पवत्रि पद से सम्मानति करने का नर्णिय लेने के बाद, वे उनके साथ बज़िान्टयिम के लिए परम पावन पैट्रआर्क तारासयिस के पास रवाना हुए, जन्होंने थयिोडोर को एक प्रेस्बटिर के रूप में दीक्षा दी, यह उनके स्वेच्छा से कम और ववशिता में अधकि था; क्योंकि धन्य व्यक्ति, स्वयं को अयोग्य समझते हुए, ऐसा पद स्वीकार नहीं करना चाहते थे और उन्होंने कहा कि यह उनकी शक्ति से परे है। लेकनि, अपने आध्यात्मकि पति प्लेटो और पैट्रआर्क की इच्छा, और सबसे बढ़कर दैवी इच्छा का वरिोध करने में असमर्थ, उन्होंने आज्ञा मानी और पुरोहति पद स्वीकार कर लयिा। तब मठ लौटकर, आदरणीय संत ने और भी महान कार्यों और कठोर परश्रिमों में स्वयं को समर्पति कर दयिा, जनिका वर्णन करना असंभव है।

कई वर्षों बाद, परम पूज्य प्लेटो, कई वर्षों की कड़ी मेहनत और वृद्धावस्था के कारण दुर्बल हो जाने के कारण, मठ का नेतृत्व त्यागने का संकल्प लेने लगे और उन्होंने चाहा कि धन्य थयिोडोर उनके उत्तराधकिारी बनें। वे अक्सर उनसे इस बारे में बात करते थे, उनसे वनिती और उपदेश देते हुए कि वे अपने पति का बोझ हल्का करें और मठ के मठाधीश बनने के लिए सहमत हो जाएँ। थयिोडोर ने हर संभव तरीके से इस पद को ठुकरा दयिा, क्योंकि वह दूसरों पर शासन करने के बजाय उनके अधकिार में रहना पसंद करता था, और उसका मानना था कि दूसरों से मार्गदर्शन प्राप्त करना कसिी को स्वयं सखिाने की तुलना में अपने मोक्ष के लिए अधकि आसान और फायदेमंद था। परम पूज्य प्लेटो ने, यह देखकर

[7709] बाद में उन्हें संत घोषति कयिा गया; उनका पर्व 26 जनवरी को मनाया जाता है।

[7710] संत बेसलि द ग्रेट स्वयं एक कठोर तपस्वी और मठवासी तपस्या के एक उत्साही समर्थक थे। उन्होंने मस्रि और अन्य देशों में, जहाँ मठवाद फल-फूल रहा था, ईसाई तपस्वयिों के दैवीय जीवन का अध्ययन कयिा, और बाद में पोंटकि रेगस्तिान में एक मठ की स्थापना की, जो अन्य मठों के लिए एक आदर्श बन गया। बाद में, उन्होंने मठवासी जीवन के लिए एक मार्गदर्शकिा के रूप में एक मठवासी नयिम, तथाकथति 'महान और लघु मठवासी नयिम' तैयार कयिा; इन्हें मठवासी समुदायों के लिए वैधानकि प्रावधानों के रूप में पूरे पूर्व में अपनाया और फैलाया गया।

कि थियोडोर इस मामले में उनकी इच्छा का पालन नहीं कर रहे थे, निम्नलिखित छल रचा: वे बीमार होने का नाटक करने लगे – हालाँकि सच में वे अस्वस्थ नहीं थे – और, पूरे समुदाय को बुलाकर, उन्होंने घोषणा की कि उन्हें अपने अंत के करीब होने का एहसास हो रहा है, और फिर पूछा: वे उनके बाद अपना मठाधीश किसे बनाना चाहते हैं, वे इस पद के लिए किसे सबसे सक्षम मानते हैं? रेवरेंड को पता था कि वे थिओडोर के अलावा किसी और को अपना मठाधीश नहीं चाहेंगे, क्योंकि सभी उसे प्यार करते थे और उसके महान गुणों के लिए उसकी बहुत इज्जत करते थे। और ऐसा ही हुआ: उन्होंने सभी ने एक स्वर में उत्तर दिया:

'पिताजी! थिओडोर हमारे बाद हमारे मठाध्यक्ष हों!'

प्लेटो ने तुरंत सारा अधिकार थियोडोर को सौंप दिया, और धन्य थियोडोर पूरे समुदाय की इच्छा के विरुद्ध नहीं जा सके और अपनी इच्छा के विरुद्ध, उन्होंने '[7711] ' का पद स्वीकार कर लिया। साथ ही, उन्होंने अपने ऊपर और भी अधिक परिश्रम ले लिया, सभी के लिए एक आदर्श बनकर, वचन और कर्म से सिखाते हुए और भिक्षुओं द्वारा मठ के नियमों के उल्लंघन को सुधारते हुए; क्योंकि उस समय कुछ लोगों ने मठवासी नियमों का पालन करना बंद कर दिया था, विशेष रूप से अनाधिकार और गरीबी के व्रतों का। ऐसे मामलों पर दुखी होकर, धन्य थियोडोर ने जल्द से जल्द उन्हें सुधारने की जल्दी की और आसपास के अन्य भिक्षुओं को भी लाभ पहुँचाया। यदि, तथापि, कोई उनके विरुद्ध बड़बड़ाता था, तो वह उस पर कोई ध्यान नहीं देते थे, क्योंकि वह इस बात की परवाह नहीं करते थे कि बड़बड़ाने वाले उनके बारे में क्या कहते हैं, बल्कि इस बात की परवाह करते थे कि उनके कार्य ईश्वर को प्रसन्न करें। बाद में, बड़बड़ाने वाले भी, ईश्वर का भय मानकर, आदरणीय की इच्छा का पालन करने लगे और अपने विचार उन्हें बताने लगे। उनकी सावधानीपूर्वक जाँच करने के बाद, उन्होंने प्रत्येक के लिए उपयुक्त उपचार निर्धारित किया, आलसी लोगों को भक्ति के महान कार्यों के लिए प्रेरित किया, जबकि सबसे उत्साही लोगों पर बोझ को कुछ हद तक कम कर दिया, ताकि वे अपने द्वारा किए गए श्रम से थक न जाएँ। लेकिन अब संत के दुखों का वर्णन करने का समय है, जिन्हें उन्होंने ईश्वर और ईश्वर के विधान के प्रति उत्साह के कारण सहन किया, ताकि हम उनके कष्टों में थियोडोर के साहसी धैर्य को देख सकें।

उस समय, धर्मपरायण रानी आइरीन के पुत्र राजा कॉन्स्टेंटिन, वयस्क होने पर, अपनी माँ को शाही सिंहासन से हटा दिया और स्वयं राज्य पर शासन करने लगा[7712] । युवा और भ्रष्ट होने के कारण, वह अपनी वासनाओं और व्यभिचार में अत्यधिक लिप्त हो गया। परिणामस्वरूप, उसने अपनी पत्नी मारिया को भगा देने का निश्चय किया और उसे जबरदस्ती मठ के संन्यास की शपथ लेने पर मजबूर किया; उसकी जगह, उसने दूसरी पत्नी, थियोडोटा नाम की, को ले लिया, जो उसके पिता की रिश्तेदार थी[7713] । तथापि, परम पावन पैट्रिआर्क तारासियस ने राजा के व्यभिचार को मंजूरी नहीं दी और उनके विवाह पर आशीर्वाद देने से इनकार कर दिया। लेकिन जोसेफ नामक एक निश्चित पुरोहित, जो महान चर्च[7714] का कोषाध्यक्ष था, ने दैवीय कानूनों का उल्लंघन करते हुए और पैट्रिआर्क की अवज्ञा करते हुए, उनके लिए विवाह संस्कार करने के लिए सहमति दे दी। इस आपराधिक दुस्साहस के लिए – जैसा कि निम्नलिखित विवरण से पता चलेगा – उसे जल्द ही उसके किए की सज़ा मिल गई। पैट्रिआर्क ने इस व्यभिचारी शाही विवाह को रद्द करने के लिए हर संभव प्रयास किया, लेकिन वह ऐसा करने में असमर्थ रहे, क्योंकि ज़ार ने धमकी दी कि यदि इस विवाह को मना किया गया तो वह मूर्तिभंजक विधर्म को फिर से जीवित कर देगा। इसलिए, पैट्रिआर्क ने ज़ार को अपनी वैवाहिक संघ में बने रहने की अनुमति दे दी, ताकि मसीह की कलीसिया एक अत्यंत गंभीर बुराई से पीड़ित न हो। यह अराजकता, जो ज़ार के महल में शुरू हुई, दूर-दूर तक फैल गई, न केवल निकटतम शहरों में बल्कि दूर के क्षेत्रों में भी। बोस्फोरस और गोथों के बीच रहने वाले राजकुमारों और कुलीनों[7715] , साथ ही अन्य क्षेत्रों के शासकों ने भी उसी तरह का व्यवहार करना शुरू कर दिया, वे अपनी पत्नियों को भगा देते और जबरदस्ती उन्हें संन्यास का व्रत लेने के लिए मजबूर करते, जबकि उनकी जगह दूसरों को चुनते और उनके साथ व्यभिचार करते थे। यह सुनकर, धन्य थियोडोर अपने आत्मा में दुखी हुए और उन्होंने इस तरह खुले तौर पर

[7711] यह वर्ष 794 का था।

[7712] अक्टूबर 790 में, जब कॉन्स्टेंटिन की उम्र बीस साल थी।

[7713] कांस्टेंटिन की पहली पत्नी मारिया थीं, जो धर्मनिष्ठ दयालु फिलारेट (उत्तर-पूर्वी एशिया माइनर में) की पोती थीं, और आर्मेनियाई वंश की थीं; कांस्टेंटिन ने अपनी माँ के कहने पर उससे विवाह किया। सम्राट का दूसरा विवाह थियोडोटा से, जो पहले एक दासी थी, 795 में हुआ।

[7714] 'महान चर्च के ओइकोनोमोस' का पद, यानी कॉन्स्टेंटिनोपल का चर्च, कॉन्स्टेंटिनोपल के पैट्रिआर्क के अधीन सबसे महत्वपूर्ण पदों में से एक था; 'महान चर्च के ओइकोनोमोस' पूरे पैट्रिआर्कल खजाने का प्रभारी होता था और धार्मिक मामलों पर काफी प्रभाव रखता था।

[7715] बोस्फोरस काली सागर और मरमरा सागर के बीच स्थित जलडमरूमध्य है। उस समय, गोथ निचले डेन्यूब के किनारे रहते थे।

कए गए पापों पर गहरी आह भरी, उन्हें डर था क यह व्यभचिार एक प्रथा बन जाएगा, क बाद में अव्यवस्था कानून की जगह ले लेगी, और क ईश्वर का कानून नष्ट हो जाएगा। ईश्वरीय वधिान के प्रत उत्साह से भरकर, थयिोडोर ने सभी भक्षिुओं को एक संदेश भेजा, जसिमें उन्होंने राजा के अत्याचार के बारे में सूचति कयिा और उन्हें राजा को मसीह की कलीसयिा से बहष्कृत, ईश्वर के वधिान के वनिाशक और कई लोगों के बहकाने वाले के रूप में मानने के लए प्रोत्साहति कयिा। थयिोडोर के उत्साह और साहस की खबर दूर-दूर तक फैल गई, जसिसे राजा को खुद इसकी जानकारी मली और वह उस सम्माननीय भक्षिु पर आग-बबूला हो गया। हालाँक, थयिोडोर को एक धर्मी व्यक्त मानते हुए, जो सभी के बीच बहुत प्रसद्धि और सम्मानति था, उसने खुले तौर पर अपना गुस्सा नहीं दखिाया और शुरू में दयालुता से उसे अपने पक्ष में करने की कोशशि की। और इसलए उसने अपनी व्यभचिारणिी पत्नी को संत के पास अपने और अपने परविार के लए प्रार्थना करने का अनुरोध करते हुए, अपने नाम पर बड़ी मात्रा में सोना भेजने का आदेश दयिा। लेकनि संत ने सोना स्वीकार नहीं कयिा और संदेशवाहकों को वापस भेज दयिा, क्योंक वे ज़ार के अन्याय में सहायक थे। तब राजा ने एक और योजना बनाई: उसने एक आवश्यकता के बहाने उस क्षेत्र की यात्रा की जहाँ वह पूजनीय व्यक्त रहता था, लेकनि वास्तव में थयिोडोर से बातचीत करने और उसे अपने पक्ष में करने के लए; राजा ने यह मान लयिा था क थयिोडोर और उसके भाई उससे मलिेंगे और उसे उचति सम्मान देंगे। जब राजा मठ के पास से गुज़रा, तो न तो पूजनीय भक्षिु और न ही उनके कसिी मठवासी भाई ने उनका स्वागत करने के लए बाहर आकर उनका अभविादन कयिा; इसके बजाय, वे अंदर ही रहकर चुप रहे; और जब राजा के नौकरों ने दरवाज़ा खटखटाना शुरू कयिा, तो कसिी ने कोई जवाब नहीं दयिा। तब ज़ार और भी अधकि क्रोधति हो गया और अपने कक्षों में लौटकर, उसने तुरंत एक सम्मानति व्यक्त को सैनकिों के साथ उस आदरणीय संत के मठ में भेज दयिा, यह आदेश देते हुए क संत और उनके वचिारों से सहमत अन्य भक्षिुओं को वभिन्नि प्रकार की यातनाएँ दी जाएँ, उन्हें प्रहारों की बौछार के बीच मठ से बाहर नकिाल दयिा जाए, और नर्वासति कर दयिा जाए। दूत ने नकिलते ही अचानक मठ पर हमला कर दयिा और वहाँ मौजूद सभी को, रेवरेंड थयिोडोर से शुरू करते हुए, पकड़ लयिा और नर्दयता से यातनाएँ दीं, यहाँ तक क उनके घावों से मांस के टुकड़े गरिने लगे और जमीन खून से लथपथ हो गई। इन यातनाओं के बाद, उन्होंने माननीय को तेस्सालोनकी[7716] में नर्वासन के लए भेज दयिा, साथ ही मठ के ग्यारह वरष्ठि संतों को भी, जन्होंने माननीय के प्रत दिया के कारण, उनके साथ बंधन और दुखों को बहादुरी से सहन कयिा, और इस बात पर प्रसन्न थे क उन्हें धार्मकिता के लए यातना दी गई और नर्वासति कयिा गया।

खेरसोनस[7717] और बोस्फोरस के पुरोहतिों और भक्षिुओं ने, थयिोडोर और उनके साथ के भक्षिुओं की दृढ़ता और उनके दुखों के बारे में सुनकर, इस पर गहराई से शोक व्यक्त कयिा और, उनके उदाहरण का अनुसरण करते हुए, उन्होंने भी राजा के अत्याचार और चर्च के प्रत उसके वरिोध के खलिाफ बोलना शुरू कर दयिा, जसिके कारण उनमें से कई को नर्वासन का सामना करना पड़ा।

स्वयं नर्वासन में रहते हुए, धन्य थयिोडोर ने उन लोगों को पत्र लखिा जो उसी कारण से नर्वासति और कैद में थे, उन्हें प्रोत्साहति करते हुए और आग्रह करते हुए क वे अपने संघर्षों में ढीले न पड़ें, अपनी कष्टों में हतोत्साहति न हों, बल्क और भी दृढ़ रहें और सत्य के लए कष्ट सहन करें। उन्होंने रोम के पोप[7718] को भी लखिा, उन्हें उस कानूनवहिीन राजा के हाथों अपनी पीड़ाओं की सीमा और उनके पीछे के कारणों से अवगत कराया। पोप ने, अपनी ओर से, उत्तर दयिा, उनके धैर्य की प्रशंसा की और ईश्वर के प्रत उनके उत्साह और अटूट साहस की सराहना की। हालाँक, ईश्वर ने अपने सेवकों पर हुए अन्यायपूर्ण अपमान का बदला लेने में देरी नहीं की: उन्होंने उससे उसका जीवन और उसका राज्य दोनों छीन लए, और दुष्ट राजा का दुखद अंत हुआ। उसकी माँ और बोयारों ने, उससे वद्रिोह करने के बाद, उसकी आँखें नकिाल दीं[7719] , और वह जल्द ही अपनी बीमारी से मर गया। उनकी मृत्यु के बाद, जब आइरीन एक बार फरि बज़िंटाइन सहिासन पर बैठीं, तो सभी को कैद से रहिा कर दयिा गया, और धन्य थयिोडोर को थ्रेसलॉनीकी से कॉन्स्टेंटनिोपल बुलाया गया और

[7716] यह वर्ष 796 का था। – सोलुन या थ्रेसलॉनकिा – मैसेडोनयिा का एक बहुत ही महत्वपूर्ण प्राचीन शहर – एजयिन सागर (द्वीपसमूह) पर सोलुन या फर्मेआ की बड़ी खाड़ी के अंदर गहराई में स्थति था। वर्तमान में, यह शहर, जसि थ्रेसलॉनकिी के नाम से जाना जाता है, की जनसंख्या बहुत बड़ी है।

[7717] यानी, वे लोग जो क्रीमयिा या टॉरयिन प्रायद्वीप (इसके पश्चमिी और पूर्वी भागों में) पर रहते थे, जहाँ उस समय प्राचीन काल में स्थापति कई ग्रीक उपनविेश थे।

[7718] उस समय, संत लयिो तृतीय (796–816) पोप थे।

[7719] यह 19 अगस्त 797 था।

मसीह के एक कन्फेशर के रूप में, उन्हें पैट्रआर्क और महारानी द्वारा बहुत सम्मान दिया गया। उस समय, उपरोक्त पुरोहित जोसेफ, जिसने राजा के अवैध विवाह को आशीर्वाद देने की हिम्मत की थी, को पवित्र पिताओं के नियमों के अनुसार दोषी ठहराया गया, उसके पुरोहित पद से हटा दिया गया और चर्च से बहिष्कृत कर दिया गया। हालाँकि, संत थियोडोर अपने मठ लौट आए, और उनके लौटने पर सभी ने आनंद मनाया और उन्हें एक झलक पाने के लिए दौड़ पड़े, इस तथ्य से सांत्वना लेते हुए कि ईश्वर के कानून के ऐसे उत्साही रक्षक, जिन्होंने सत्य के लिए यातना और निर्वासन सहन किया था, को एक बार फिर से उनकी भेड़ों के झुंड में बहाल कर दिया गया था। रेवरेंड फादर ने अपने सभी बिखरे हुए आध्यात्मिक झुंड को इकट्ठा करने के बाद, उनका मार्गदर्शन करते रहे, और ईश्वर को भाता हुआ जीवन जिया तथा अपने महान सद्गुणों से, एक दीवट पर रखी मोमबत्ती की तरह, सभी पर प्रकाश डालते रहे।

कई वर्ष बीत जाने के बाद, अगेरियन लोगों ने यूनानियों पर आक्रमण किया और यूनान के क्षेत्रों को लूटने तथा जब्त करने लगे[7720] । उनसे डरकर, कई लोग तब कलिबंद शहरों में भाग गए। उस समय, पूजनीय थियोडोर ने स्वयं को और अपने भिक्षुओं को स्वैच्छिक कष्टों के अधीन नहीं किया, बल्कि इन शब्दों पर ध्यान दिया: *'हे मेरी प्रजा, जाओ, अपने कक्षों में प्रवेश करो और अपने द्वार बंद कर लो; थोड़ी देर के लिए अपने आपको छिपा लो, जब तक कि क्रोध समाप्त न हो जाए'* (यशायाह 26:20); उन्होंने सकोडियन छोड़कर अपने भाइयों के साथ कॉन्स्टेंटिनोपल आकर बसे। उनकी उपस्थिति का स्वागत सम्राज्ञी और पैट्रआर्क ने किया: वे उनकी उपस्थिति पर प्रसन्न हुए और उनसे स्टूडियो मठ का प्रभार संभालने तथा वहाँ सर्वोत्तम संभव जीवन-शैली स्थापित करने का आग्रह किया।

[7721]यहाँ इस मठ की उत्पत्ति को याद करना उचित होगा। कुछ समय पहले, रोम से एक कुलीन और प्रभावशाली व्यक्ति कॉन्स्टेंटिनोपल आया था, जो पैट्रसियिन और प्रोकंसुल के पद को धारण करता था। उसने सेंट जॉन द बैपटिस्ट को समर्पित एक बड़ा और सुंदर चर्च बनवाया और उसके साथ एक मठ स्थापित किया।

उन्होंने 'ऑल-नाइट विजिल'[7722] के मठ के भिक्षुओं को बुलाया और उनसे अपने मठ में रहने तथा अपने पूरे नियम का पालन करने का आग्रह किया। उस व्यक्ति का नाम स्टूडियोस था; उसी के नाम पर मठ का नाम पड़ा और वह स्टुडाइट मठ के नाम से जाना जाने लगा। भिक्षु सम्राट कोप्रोनियम के शासनकाल तक वहाँ रहे, और 'सर्व-रात्रि जागरण' भिक्षुओं के नियम का पालन करते रहे। लेकिन दुष्ट कोप्रोनमिस ने, प्रतिमा-भंजन के साथ ईश्वर की कलीसिया को उकसाने के बाद, सभी भिक्षुओं को बिथिनियम से निकाल दिया, और स्टुडाइट मठ सुनसान हो गया। इस दुष्ट सम्राट के पतन और उत्पीड़न के अंत के बाद, भिक्षुओं ने फिर से थोड़ी संख्या में स्टुडाइट चर्च में रहना शुरू कर दिया। जब आदरणीय संत अपने भाइयों के साथ कॉन्स्टेंटिनोपल पहुँचे, तब मठ में केवल बारह भिक्षु ही बचे थे। सम्राज्ञी आइरीन और परम पावन पैट्रआर्क तारासियस के अनुरोध पर, आदरणीय थियोडोर ने स्टुडियो मठ का प्रभार संभाला और वहाँ रहने लगे[7723] । यह सुनिश्चित करने के बाद कि यह स्थान भिक्षुओं के रहने के लिए उपयुक्त था, उन्होंने मठ को बहाल किया और उसका विस्तार किया और भाइयों का एक बड़ा समुदाय इकट्ठा किया। अन्य मठों के भिक्षु भी उनके पास आए, जो उनके मार्गदर्शन में रहना चाहते थे और उन्हें अपना गुरु और शिक्षक बनाना चाहते थे। पूजनीय ने सभी का पितृसुलभ दयालुता से स्वागत किया और सभी से सच्चे दिल से प्रेम किया। उनकी दृष्टि में सभी समान थे; वह सभी से समान रूप से प्रेम करते थे और सभी की एक ही तरह से देखभाल करते थे। वह जानते थे कि मठवासी जीवन का मार्ग एक ही है, चाहे कोई भी इसे अपनाए, ठीक वैसे ही जैसे बपतिस्मा की कृपा एक ही है, चाहे कोई भी इसे प्राप्त करे। फिर भी, भिक्षुओं के गुणों के अनुसार, उनका पुरस्कार भिन्न-भिन्न होता है। इस आदरणीय पिता के शिष्य सद्गुणों में अत्यधिक

[7720] एगारीयन्स, अर्थात् अरब मुसलमान, का नाम हागर, इस्माइल की माता, के नाम पर रखा गया था, जिनकी संतान से अरब जनजाति उत्पन्न हुई थी। उस समय, बाइज़ेंटाइन दरबार में बार-बार होने वाले उथल-पुथल का लाभ उठाते हुए, अरबों ने बाइज़ेंटाइन साम्राज्य की सीमाओं पर विनाशकारी छापे मारे।

[7721] रोमन और पूर्वी (बाइज़ेंटाइन) साम्राज्यों में, 'पैट्रशियिंस' शब्द का अर्थ उच्चतम सामाजिक वर्ग के सदस्यों से था, जो हमारी वंशानुगत कुलीनता के अनुरूप था। 'प्रोकॉन्सल' प्रांतों और क्षेत्रों में सम्राट के राज्यपाल होते थे।

[7722] 'अनिद्रों' का मठ 5वीं शताब्दी में कॉन्स्टेंटिनोपल में सेंट अलेक्ज़ेंडर (मृत्यु 430) द्वारा स्थापित किया गया था; उनकी मृत्यु के बाद, इस मठ के भिक्षु एशिया माइनर के एक उत्तर-पश्चिमी क्षेत्र, बिथिनिया में चले गए, जहाँ उन्होंने अपना खुद का मठ स्थापित किया और जहाँ से वे बाद में एक बार फिर कॉन्स्टेंटिनोपल लौट आए। इन मठों के भिक्षुओं को 'निद्रारहित' कहा जाता था क्योंकि वहाँ दिन-रात, लगातार ईश्वरीय सेवाएँ आयोजित की जाती थीं।

[7723] संत थियोडोर द स्टुडाइट को 798 में स्टुडाइट मठ का मठाध्यक्ष नियुक्त किया गया था; वह इस मठ के नाम के बाद 'द स्टुडाइट' के नाम से प्रसिद्ध हुए।

नपिुण थे; और जैसे ही उनके पवत्रि जीवन की ख्याति दूर-दूर तक फैली, कई लोग उनके मठ में आए, उनके तपस्या के कार्यों का अनुकरण करने की इच्छा से, और भक्षिुओं की संख्या तेजी से बढ़ी, जब तक कि यह एक हजार भाइयों तक नहीं पहुँच गई। इतने बड़े शष्यि समुदाय और एक व्यक्ति के लिए उन सभी पर नगिरानी रखने तथा प्रत्येक के कर्मों, शब्दों और वचिारों को परखने की असंभवता को देखते हुए, आदरणीय पति ने, एक दूसरे मूसा की तरह, उन भक्षिुओं में से नेताओं को नयिुक्त कयि जनि्हें वह सबसे बुद्धमिान, सबसे अनुभवी और सद्गुणों के प्रति सबसे समर्पति मानते थे; उन्हें में से प्रत्येक को उसने एक उपयुक्त पदवी दी: एक को – ओइकोनोमोस, दूसरे को – ईecclesiarch[7724] , तीसरे को – चर्च व्यवस्था का पर्यवेक्षक, और इसी तरह। संत ने यह नयिम भी बनाए कि उनमें से प्रत्येक ने, पहले से लेकर आखरिी तक, अपने सौंपे गए कर्तव्य को कैसे पूरा करना है।

अपराधों के लिए, उन्होंने प्रायश्चति नरि्धारति कि: कुछ के लिए, एक नरि्दषि्ट संख्या में प्रणाम; दूसरों के लिए, कठोर उपवास; और प्रत्येक अपराध के लिए, एक अनुरूप दंड। यदि कोई दैवीय अनुष्ठान में उपस्थति होने में वफिल रहता, या कोई पात्र तोड़ देता, या लापरवाही से कुछ गरिा देता, या लापरवाही से काम करता, या कसिी भाई का कसिी भी तरह से अपमान करता, या, असंयमति भाषण के माध्यम से, कोई अनावश्यक शब्द बोलता, या ज़ोर से हँसता, या नम्रता और वनिम्रता से चलने में वफिल रहता, या भोजन के दौरान शक्षिाप्रद पाठ को न सुनकर बातचीत की, या भोजन के बारे में बड़बड़ाया, या शर्मदिगी और अभद्रता से अपनी नगिाहें इधर-उधर घुमाईं, या इसी तरह की कोई और हरकत की – ऐसे सभी भाइयों पर, पूजनीय थयिोडोर ने उनके अपराधों के अनुरूप प्रायश्चति लगाए। इसके अलावा, आदरणीय भक्षिु ने अपने मठ में सामूहकि जीवन की व्यवस्था की, ताकि कोई भी कसिी चीज़ को अपना न कहे, बल्कि सब कुछ साझा हो: भोजन साझा, वस्त्र साझा, और हर संपत्ति साझा। आदरणीय ने यह भी ध्यान रखा कि उनके भक्षिु मठ की ज़रूरतों को पूरा करने के लिए अक्सर शहर न जाएँ, क्योंकि वह जानते थे कि सिंन्यासयिों के साथ घुलने-मलिने और सांसारकि बातचीत में लगने के कारण शहर में एक भक्षिु को कनि खतरों का सामना करना पड़ता है। इसी कारण, वह मठ के भीतर ही वभिन्नि शलि्पों के अभ्यास को व्यवस्थति करना चाहते थे। स्टूडयिोन मठ के भाइयों ने वभिन्नि व्यवसाय सीखना शुरू कर दयि: कुछ ने बढ़ईगीरी और नरि्माण का काम, कुछ ने लोहार का काम, कुछ ने दर्जी का काम, और कुछ ने राजमस्त्रिी का काम सीखा – संक्षेप में, मठ के लिए आवश्यक हर प्रकार का काम। फरि भी, जब वे काम में लगे होते, तो उनके होठों पर हमेशा यीशु की प्रार्थना और दाऊद के भजन होते थे। स्टुडाइट मठ के जीवन-यापन के तरीके, उसके नयिमों और वनियिमों की प्रसदि्धि दूर-दूर तक फैल गई, और कई अन्य मठों ने—न केवल पड़ोसी शहरों में बल्कि दूर-दराज के देशों में भी—स्टुडाइट नयिम[7725] को अपनाया और उसका पालन कयि; वास्तव में, कुछ आज भी ऐसा करते हैं। रेवरेंड फादर ने महान आध्यात्मकि लाभ वाली बड़ी संख्या में पुस्तकें भी लखिीं और प्रभु तथा परमेश्वर की माता के पर्वों के सम्मान में भजन रचे, उन्होंने सबसे सुंदर भजनों से सम्माननति संत जॉन द बैपटस्टि को सम्माननति कयि, कई कैनन और त्रपिल रचति कि, और ज्ञान के जल से लदी नदी की तरह, ईश्वर की कलीसयिा की प्यास बुझाई और अपनी शक्षिाओं और भजनों की

[7724] इक्लेसयिार्क – ग्रीक शब्द 'चर्च के प्रमुख' से लयि गया – चर्च के वधिान के अनुसार, चर्च भवन और उसकी स्वच्छता की देखरेख के साथ-साथ मठ में दैवीय सेवाओं के क्रम के लिए जम्मिेदार था।

[7725] वर्तमान में, मौजूदा पांडुलपियिों से सेंट थयिोडोर के मठ के नयिम और धार्मकि अनुष्ठानों से संबंधति नम्निलखिति कार्य ज्ञात हैं: 'स्टुडाइट मठ के नयिमों का ववरिण', संपूर्ण मठ समुदाय के लिए प्रायश्चति, और लेंट सप्ताह से संबंधति एक फरमान। स्टुडाइट नयिम, यरूशलेम नयिम सहति अन्य मठवासी नयिमों से इस बात में भन्नि है कि यह पूजा-संबंधी प्रथाओं की तुलना में मठवासी जीवन के नयिमों पर अधकि ध्यान केंद्रति करता है। हालाँकि, पूजा-संबंधी नयिम भी चर्च सेवाओं की संरचना और पूर्णता से संबंधति अपने परविर्धन के लिए सेंट थयिोडोर का एक महत्वपूर्ण ऋणी है। स्टुडाइट नयिम के अनुसार दवि्य सेवाएँ यरूशलेम नयिम के अनुसार होने वाली सेवाओं की तुलना में कुछ हद तक छोटी और कम गंभीर थीं। बाद में, 11वीं शताब्दी के अंत में, इसे रूसी चर्च द्वारा अपना लयि गया और यह 14वीं शताब्दी के मध्य तक वहाँ उपयोग में रहा, जब यह यरूशलेम वधिान के लिए रास्ता देने लगा; फरि भी कुछ स्थानों पर यह बहुत लंबे समय तक लागू रहा, और कुछ रूसी मठों में इसका पालन हाल के समय तक भी कयि जाता रहा।

धाराओं से उसे आनंदति कयि।[7726] । इस बीच, शहीद नकिफ़ोरस ने धर्मपरायण सम्राज्ञी आइरीन[7727] को जबरदस्ती पदच्युत करके अवैध रूप से बाइज़ेंटाइन सहिासन पर कब्ज़ा कर लयि। इसी समय, परम पावन पैट्रआर्क तारासयिस का नधिन हो गया; और उनकी जगह पर एक सदाचारी पुरुष, जो ऐसे पद के योग्य था, को पैट्रआर्की के पद पर पदोन्नत कयि गया; उसका नाम नए सम्राट के नाम के समान था[7728] । फरि चर्च के भीतर एक बार फरि से कलह छड़ि गया, क्योंकि सम्राट ने अपने अधकिार से, उपर्युक्त बहष्कृित जोसेफ को चर्च में पुनःप्रवेश दयि और आदेश दयि कि दिव्य लटिर्जी का अनुष्ठान करने का उसका अधकिार बहाल कयि जाए। जहाँ तक संभव था, पैट्रआर्क ने राजा का वरिोध कयि; लेकनि जब उसने देखा कि राजा बहुत क्रोधति है, तो उसे डर था कि पूरी चर्च को उसके हाथों क्रूर उत्पीड़न सहना पड़ सकता है, जैसे कि उसे पछिले राजाओं के हाथों कई बुराइयाँ सहनी पड़ी थीं, और इसलए उसने जोसेफ को, अपनी इच्छा के वरिुद्ध, फरि से संप्रदाय में शामलि कर लयि। तथापि ज़ार ने यह सब पूजनीय थयिोडोर को चढ़िाने के लए कयि, ताकि वह भड़कें; क्योंकि वह जानता था कि पूजनीय व्यक्ति यह बर्दाश्त नहीं करेंगे, और ठीक यही हुआ। थेओडोर ने राजा को चर्च पर हसिा करने के लए फटकारा, क्योंकि उसने अपने धर्मनरिपेक्ष अधकिार का उपयोग करके चर्च में एक ऐसे व्यक्ति को शामलि कर लयि था जसि उनकी पवत्रिता पैट्रआर्क तारासयिस ने अपने पूरे पुरोहति वर्ग के साथ मलिकर चर्च से बहष्कृित कर दयि था। राजा को वेनेरेबल थयिोडोर पर बहुत क्रोध आया और उसने उन्हें शहर के तट से दूर एक द्वीप पर नर्विासन में भेज दयि।[7729] । उसने अपने भाई जोसेफ, सबसे धन्य एल्डर प्लेटो, और स्टुडयिो के कई अन्य भक्षिुओं के साथ भी ऐसा ही कयि।

इस बीच, राजा को खबर मलिी कि बर्बर लोगों ने थ्रेस[7730] पर हमला कर दयि था और वे उस क्षेत्र में तबाही मचा रहे थे।[7731] । राजा ने तुरंत युद्ध की तैयारी की। लेकनि वह अपने दुश्मनों से कम और आदरणीय थयिोडोर पर काबू पाना चाहता था, और स्कत्सियिों के खलिाफ अपनी सेना के साथ मार्च करते हुए, उसने थयिोडोर के पास दूत भेजे, और बारी-बारी से चापलूसी और धमकयिों के माध्यम से, उसे अपने वचिारों से सहमत कराने का प्रयास कयि। थयिोडोर ने जवाब दयि:

'हे राजा, तुम्हें भी अपने कए पाप का पश्चाताप करना चाहए और अपने कए वनिाश की भरपाई करनी चाहए, और केवल तभी युद्ध पर जाना चाहए। लेकनि चूँकि तुमने ऐसा नहीं कयि है, सर्व-द्रष्टा आँख अब यह सब तुम्हें मुझ जैसे अयोग्य व्यक्ति के माध्यम से बता रही है: जान लो कि जसि मार्ग पर तुम चल रहे हो, उस पर से तुम वापस नहीं लौटोगे।'

[7726] नयिम के अलावा, स्टूडयिन के संत थयिोडोरेट ने कई अन्य कृतयिाँ लखिीं, जनिका मुख्य उद्देश्य मोक्ष के लए आत्मा का नर्मिाण था। चर्च फादर्स में से एक, थयिोडोरेट के समकालीन, संत थयिोस्ट्रक्टि ने उन्हें 'चर्च का एक जोशीला शक्षिक' कहा। परम पूज्य ने उपदेश, घोषणाएँ, वभिन्नि व्यक्तयिों को पत्र, सूक्तयिाँ और जीवनयिाँ लखिीं। उनके धर्मशास्त्रीय कार्यों में शामलि हैं: प्रतमिा-भंजकों के वरिुद्ध प्रतमिाओं पर एक धर्मशास्त्रीय ग्रंथ, उनके वरिुद्ध सात अध्याय, और उनके कई पत्र जनिमें प्रतमिा-भंजकवाद के इतहिास का ववरिण है। इसके अलावा, रेवरेंड की रचनाओं में ईसाई जीवन जीने के लए प्रेरणाएँ शामलि हैं; इनमें से, दो धर्मशक्षिाएँ प्रसद्धि हैं: 'महान धर्मशक्षिा', जसिमें 264 नर्देश हैं, और 'लघु धर्मशक्षिा', जसिमें 134 नर्देश हैं। रेवरेंड ने स्वयं इन नर्देशों और प्रेरणाओं को भाइयों को दयि, और प्रत्येक को उस दनि के अनुसार अनुकूलति कयि। इसके अतरिक्ति, सेंट थयिोडोर की नम्निलखिति कृतयिाँ उपलब्ध हैं: प्रभु के पर्वों, ईश्वर की माता और सेंट जॉन द बैपटस्टि के पर्वों के सम्मान में भजनों की एक पुस्तक; तपस्या पर कई अध्याय; सूक्तयिाँ; और याम्बकि छंद, जनिमें शामलि हैं: आदम की सृष्टि और पतन, काइन द्वारा भाइवध, एनोख, नूह और उनके पुत्र, और संत यूहन्ना अग्रदूत के लए एक भजन। इसके बाद कैनन और स्टचिैरा के साथ ट्रप्सि आते हैं, जो लेंटन ट्रायोडयिन में शामलि हैं (मसीह के अंतमि न्याय पर मीटफेयर *शनविार* के लए, सभी पतिाओं के सम्मान में चीज़फेयर शनविार के लए, महान लेंट के तीसरे सप्ताह में पवत्रि क्रॉस के सम्मान में, होली वीक को छोड़कर हर दनि के लए स्टचिैरा के साथ ट्रप्सि, महान लेंट के दूसरे, तीसरे, चौथे और पांचवें सप्ताह के लए चार-स्टचिैरा, आदि), और प्रभु यीशु के लए एक मार्मकि कैनन 'रात में गाया जाने वाला'।

[7727] नकिफिोरस प्रथम ने 802 से 811 तक शासन कयि। आइरीन के शासनकाल में, उन्होंने राज्य कोषागार के संरक्षक के रूप में कार्य कयि।

[7728] संत तारास के उत्तराधकिारी, संत नकिफिोरस प्रथम (स्वीकारकर्ता) ने 806 से 815 तक पद संभाला। उनकी मृत्यु 826 में हुई। उनका पर्व दविस 2 जून को है।

[7729] यह वर्ष 809 का था।

[7730] थ्रेस – बाल्कन प्रायद्वीप के उत्तर-पूर्वी भाग में स्थति, बीजान्टनि साम्राज्य का एक क्षेत्र।

[7731] 'बारबेरयिन', जन्हिें आगे स्कैथयिन कहा जाएगा, को बुल्गारयिाई माना जाता है, जन्हिोंने 809 में, क्रूम के नेतृत्व में, साम्राज्य की उत्तरी सीमाओं पर हमला कयि था।

राजा ने संत की बातों पर कोई ध्यान नहीं दिया; बल्कि, वह उनसे और भी अधिक क्रोधित हो गया और धमकी दी कि, अभियान से लौटने पर, वह संत को और भी अधिक नुकसान पहुँचाएगा। लेकिन निकिफोरस लौटकर वापस नहीं आया, क्योंकि, संत की भविष्यवाणी के अनुसार, उसे बर्बर लोगों ने मार डाला। उनके बाद, उनके पुत्र स्टैव्रकियोस सिंहासन पर बैठे, लेकिन वे भी उस युद्ध में लगे घाव से जल्द ही मर गए जिसमें उन्होंने अपने पिता के साथ लड़ाई लड़ी थी। उनकी मृत्यु के बाद, माइकल[7732] को सिंहासन पर चुना गया; उस समय वे करोपालेट्स[7733] के पद पर थे, एक व्यक्ति जो वास्तव में शाही अधिकार के योग्य थे - दयालु और रूढ़िवादी। सत्ता संभालते ही उन्होंने आदरणीय थियोडोर और उनके समान विचारधारा वाले साथियों को बंदी से मुक्त किया, उन्हें उचित सम्मान दिया, और धार्मिक विभाजन को समाप्त कर दिया। हालाँकि, जोसेफ को एक अयोग्य सदस्य के रूप में फिर से चर्च से निष्कासित कर दिया गया।

थोड़ी ही देर बाद, पवित्र और आदरणीय प्लेटो प्रभु के पास चले गए[7734] । उनके निधन की खबर सुनकर, पैट्रिआर्क अपने समस्त पुरोहितों के साथ स्टुडियन मठ आए और उनकी पवित्र अवशेषों को चूमकर उन्हें सम्मानपूर्वक दफनाया। जहाँ तक पूज्य थियोडोर का प्रश्न है, अपने आध्यात्मिक पिता प्लेटो के निधन के बाद, उन्होंने अपने भाइयों के साथ केवल दो वर्षों तक ही शांति से जीवन यापन किया। इस अवधि के अंत में, दुष्ट आर्मेनियाई लियो, जिसने मूल रूप से धर्मपरायण राजा माइकल के अधीन एक सेनापति के रूप में सेवा की थी, ने एक बार फिर उन पर और मसीह की संपूर्ण कलीसिया पर एक प्रचंड तूफान ला दिया। बारबेरियन से लड़ने के लिए पूर्व में भेजे जाने के बाद, उन्होंने वहाँ एक बड़ी सेना इकट्ठी की और अपने अहंकार में, अपने संरक्षक, राजा माइकल के खिलाफ विद्रोह कर दिया। लेओ द आर्मेनियन ने अपने अधीनस्थ सभी गणमान्य व्यक्तियों और सैनिकों को अपने पक्ष में कर लिया—कुछ को वादों से, कुछ को उपहारों से, और कुछ को तरह-तरह की चापलूसी से—और उनकी मदद से, उसने खुद को राजा घोषित कर दिया। यह जानकर, धर्मपरायण ज़ार माइकल ने गृहयुद्ध से बचने के लिए तुरंत अपने शाही बैंगनी चोगे को एक संन्यासी की खुरदरी चोगा से बदल लिया, और अपना राज्य अपने दुश्मन को सौंपकर स्वयं संन्यास जीवन अपना लिया।

शाही सत्ता संभालने के बाद, लियो द आर्मेनियन शुरू में धार्मिक और विनम्र दिखाई दिया, जब तक कि उसने शाही सिंहासन पर अपनी स्थिति को मजबूत नहीं कर लिया और अपने पापों में अपने साथियों को अपने चारों ओर इकट्ठा नहीं कर लिया।

तब उसने पवित्र प्रतिमाओं के विरुद्ध अपमानजनक बातें कहना शुरू कर दिया और जो लोग उनकी पूजा करते थे, उन्हें मूर्ख कहकर डाँटने लगा। पादरी ने उसकी दुष्टता की निंदा की और पवित्र शास्त्रों का सहारा लेकर पवित्र प्रतिमाओं के बारे में उसके साथ बहस की; लेकिन उसे कोई सफलता नहीं मिली, और उसने केवल उस पागल राजा को और भी अधिक क्रोधित कर दिया। लेओ द आर्मेनियन ने सभी प्रमुख पुरोहितों, भिक्षुओं, पैट्रिआर्क और उनके साथ धन्य थियोडोर को बुलाया और उनके सामने खुले तौर पर अपनी दुर्भावना दिखाई, उसने पवित्र प्रतिमाओं की पूजा करने वालों का अपमान किया और उनकी निंदा की, जबकि प्रतिमा-भंजकों की प्रशंसा की।

'क्या यह परमेश्वर की उंगली से लिखा गया प्राचीन विधान नहीं है,' उन्होंने कहा, 'जो हमें मानव हाथों के काम की पूजा करने से मना करता है: "तुम अपने लिए कोई मूर्ति या कोई प्रतिमा नहीं बनाओगे," ऐसा कहा गया है। इसलिए, मानव हाथों से बनी प्रतिमाओं की पूजा करना उचित नहीं है। कोई अकथनीय को एक प्रतिमा में कैसे चित्रित कर सकता है, अचित्य को छोटी-छोटी तख्तियों पर कैसे रख सकता है, और रंगों से चित्रित वस्तु को ईश्वर के नाम से कैसे पुकार सकता है?'

पवित्र पितरों ने मूर्तिभंजक सम्राट के खोखले शब्दों का हर तरह से खंडन किया, उसकी धर्मनिंदापूर्ण बातों को खारिज करते हुए और कहा:

'यदि हम मूसा के द्वारा दिए गए विधान का पूरी तरह से पालन करते, तो हमारा ईसाई विश्वास व्यर्थ हो जाता, प्रेरितों का उपदेश व्यर्थ हो जाता, पवित्र पिताओं की सभी दैवी परंपराएँ व्यर्थ रह जातीं, और—इसे कहना भी भयानक है—प्रभु का अवतार ही अस्वीकार कर दिया जाता, जिसके द्वारा हम उनके मानवीय स्वरूप को जान पाए हैं और प्रतिमाओं की पूजा को अपनाया है, प्रतिमाओं में उस एक की ही पूजा करते हुए जिसकी छवि उन पर अंकित है।

[7732] माइकल प्रथम रंगवे, स्टाव्रकियोस के साले, ने 811 से 813 तक शासन किया।

[7733] बाइज़ेंटाइन दरबार में, महल के रक्षकों के कमांडरों को 'करोपालेट्स' के नाम से जाना जाता था।

[7734] संत प्लेटो (मृत्यु 814)

जब संतों ने ऐसा कहा, तो आदरणीय थियोडोर, जो पुराने और नए नियम के पूरे धर्मग्रंथ को पूरी तरह से जानते थे, ने साहसपूर्वक राजा से पूछा:

हे राजा, आपने मसीह की प्रतिमा का अपमान करने, पवित्र चर्च में ऐसी विधर्मी कल्पनाएँ लाने, और उसकी ओढ़नी को फाड़ने का निश्चय क्यों किया है, जो परम अनुग्रह और प्रेरितों तथा पितरों की शिक्षा से बुनी गई है? आप पुराने नियम के आधार पर तर्क करते हैं – फिर भी यह उस नए अनुग्रह से समाप्त हो गया जो यीशु मसीह के द्वारा आया। यदि कोई पुराने नियम का पालन करना है, जिसके प्रति आप आसक्त हैं, तो उसे खतना भी कराना होगा, सब्बाथ का पालन करना होगा, और उसमें लिखी हुई अन्य सभी बातों का भी पालन करना होगा। हे राजा, क्या आप यह नहीं समझ पाए कि व्यवस्था केवल एक समय के लिए और केवल एक ही लोगों के लिए दी गई थी, जो मिस्र से निकले थे? लेकिन अनुग्रह के आगमन के साथ, वह छाया समाप्त हो गई है। इसके अलावा, उस व्यवस्था का भी हर जगह पालन नहीं किया जाता, जिसकी वह आज्ञा देती है। उदाहरण के लिए, उसने आज्ञा दी कि कोई मूर्ति न बनाई जाए और मानव हाथों के बनाए हुए की पूजा न की जाए, फिर भी उसने कूचबाड़े के ऊपर करूबों की प्रतिमाएँ स्थापित कीं। क्या वे करूब मानव हाथों का काम नहीं थे? फिर भी, सभी द्वारा उनका सम्मान किया जाता था। लेकिन जब नई अनुग्रह प्रकट हुई, प्रभु ने स्वयं एक वस्त्र पर अपना चेहरा अंकित किया और उसे अब्गार को दे दिया, जिसने उसे छूने पर अपनी पुरानी बीमारी से चंगाई पाई[7735] । इसके बाद, प्रभु के प्रेरित और सुसमाचार लेखक, संत लूक ने अपनी ही हाथों से परमेश्वर की माता का चेहरा चित्रित किया और यह छवि भावी पीढ़ियों के लिए छोड़ दी। बाद में, उद्धारकर्ता की वह प्रतिमा, जो मानव हाथों से नहीं बनी थी और जो फिनिसिया में प्रकट हुई थी , ने कई अद्भुत चमत्कार किए। क्या अन्य पवित्र प्रतिमाओं द्वारा प्रकट किए गए चमत्कार, जो सूर्य से भी अधिक तेजस्वी हैं, यह नहीं दर्शाते कि उन्हें उचित श्रद्धा अर्पित करना उचित है?

लेकिन राजा ने, पुरोहित के शब्दों की परवाह किए बिना, कहा:

'मैं रंगों से अदृश्य और अगम्य दिव्यता का चित्रण नहीं करना चाहता।'

थियोडोर ने उत्तर दिया:

'हे राजा, हम दिव्यता का वर्णन नहीं करते, बल्कि हम स्वीकार करते हैं और विश्वास करते हैं कि वह अकथनीय है। हालाँकि, प्रतिमा-चित्रण के माध्यम से हम परमेश्वर के पुत्र के शरीर को दर्शाते हैं, जिसे उन्होंने हमसे ग्रहण किया; यही है जिसकी हम पूजा और आराधना करते हैं।'

जैसे ही पादरी पिता ने पवित्र धर्मग्रंथों और संतों की शिक्षाओं का सहारा लेते हुए ये और कई अन्य शब्द कहे, और राजा की भूल का खंडन किया, राजा क्रोध से भरकर, पादरी पिता से गुस्से में बोला:

'मैं जानता हूँ कि तुम हमेशा जल्दबाज़ी में बोलते हो, और तुम एक झगड़ालू, घमंडी और सभी के विरोधी आदमी हो। अब भी, तुम मुझे बदनाम करने और गाली-गलौज करने आए हो, मुझसे एक राजा की तरह नहीं, बल्कि आम लोगों में से एक की तरह बात कर रहे हो; इसके लिए तुम कई यातनाओं के पात्र हो। लेकिन फिलहाल मैं तुम्हें बख्श दूँगा, जब तक कि यह और अधिक स्पष्ट नहीं हो जाता कि हमारा निर्णय न्यायसंगत है। और अगर उसके बाद भी तुम समर्पण नहीं करते, तो तुम्हें अपनी मूर्खता और अवज्ञा के लिए उचित दंड मिलेगा।

उस क्षण से, पादरियों के पास राजा से कहने के लिए और कुछ नहीं था, वे आपस में यह तर्क कर रहे थे:

'ऐसी भ्रष्ट और ठीक होने को तैयार न होने वाली आत्मा से हम क्या कहें?'

लेकिन धन्य थियोडोर ने आध्यात्मिक तलवार उठाकर राजा को इस प्रकार उत्तर दिया:

'हे राजा, समझो और जान लो कि धार्मिक आदेशों की जांच-पड़ताल करना तुम्हारा काम नहीं है: तुम्हारे अधिकार की प्रकृति सांसारिक मामलों पर चर्चा करने और उनका शासन करने की है, जबकि धार्मिक मामले चर्च के पवित्र बिशपों और शिक्षकों के अधिकार क्षेत्र में आते हैं; तुम्हें, अपनी ओर से, केवल उनका अनुसरण करने और उनका पालन करने की आज्ञा दी गई है। इसी प्रकार प्रेरित ने भी कहा: *'और परमेश्वर ने मंडली में, पहिले प्रेरित; दूसरे भविष्यद्वक्ता; तीसरे शिक्षक; फिर, कुछ को चमत्कार करने का वरदान; कुछ को चंगा करने का वरदान; कुछ को दूसरों की सेवा करने का वरदान; कुछ को व्यवस्था करने का वरदान; कुछ को विभिन्न प्रकार की भाषाओं का वरदान दिया है*

[7735] एवगार – ऊपरी यूफ्रेट्स की बाईं सहायक नदी पर स्थित एक शहर एडेसा का राजकुमार – के बारे में कहा जाता है कि जब उद्धारकर्ता जीवित थे, तब उसने उनके चमत्कारों के बारे में सुना और उन्हें एक संदेश भेजा जिसमें उनसे आकर उसे उसकी बीमारी से ठीक करने का अनुरोध किया। उद्धारकर्ता ने उन्हें अपने मुख के चित्र वाला एक रूमाल भेजा; रूमाल को छूते ही अवगार को स्वास्थ्य लाभ हो गया। इस प्रकार बिना हाथों से बनी उद्धारकर्ता की प्रतिमा प्रकट हुई, जिसे बाद में - 16 अगस्त 944 को - एडेसा से कॉन्स्टेंटिनोपल ले जाया गया।

(1 कुरन्थियों 12:28), न कि राजाओं को। और अन्य अंशों में, पवत्रि शास्त्र आज्ञा देता है कि चर्च के मामलों का संचालन चर्च के शक्षिकों द्वारा कयिा जाए, न कि राजाओं द्वारा।

राजा ने पादरी से पूछा:

'तो, क्या आप मुझे चर्च से बाहर नहीं नकिाल रहे हैं?'

रेवरेंड फादर ने उत्तर दयिा:

'यह मैं नहीं, बल्कि दविय प्रेरतिों और पवत्रि पतिाओं की परंपराएँ हैं जो आपको बाहर नकिाल रही हैं। *"परन्तु यदि हम या स्वर्ग का कोई दूत तुमको उस सुसमाचार के सविाय कोई और सुसमाचार सखिाए, तो वह श्रापति हो"* (गलातयिों 1:8)।

यदि आप मसीह की कलीसयिा में बने रहना चाहते हैं, तो हमारे साथ, जो मसीह के प्रतमिा की पूजा करते हैं, पैट्रआर्क और उस सम्मानति परषिद का अनुसरण करें जो उनके साथ खड़ी है!

यह शब्द सुनते ही राजा का क्रोध और भी भड़क उठा और उसने उन सभी को अपमानति करके अपने पास से भगा दयिा। राजा की उपस्थति से नकिलने के बाद, नर्विासति पूजनीय पादरयिों ने, महाधर्माध्यक्ष के साथ, धन्य थयिोडोर के चारों ओर इकट्ठा होकर, उनकी बड़ी समझदारी और साहस से उत्पीड़क का वरिोध करने और उसकी अधर्मीता को साहसपूर्वक उजागर करके उसे पूरी तरह से शर्मदिा करने के लिए, अपने होठों और अपने दलिों से उनकी प्रशंसा की।

जैसे ही वे अपने-अपने घरों को लौट रहे थे, राज्यपाल का एक आदेश आया: 'धर्म के मामलों पर कोई चर्चा या बहस न करे, बल्कि सभी राजा की आज्ञा का पालन करें।' यह आदेश लेकर आए दूत धन्य थयिोडोर तक भी पहुँचे। यह आदेश सुनकर, उन्होंने उनसे उत्तर दयिा:

'आप स्वयं नर्णिय करें: क्या ईश्वर की अपेक्षा आपको सुनना उचति है? इससे तो अच्छा है कि मेरी जीभ काट दी जाए, बजाय इसके कि मैं चुप रहूँ और सच्चे धर्म की रक्षा करने में असफल रहूँ।'

और उस पूजनीय ने सभी को पवत्रि वश्विास पर अटूट रूप से दृढ़ रहने के लिए प्रोत्साहति कयिा, कुछ लोगों को अपने पास बुलाकर, कुछ से व्यक्तगित रूप से मलिकर, और दूसरों को पत्र भेजकर, इस प्रकार उन लोगों को मजबूत कयिा जनिका हौसला पस्त हो रहा था। वे अक्सर पैट्रआर्क से मलिने जाते थे, उनके लिए एक बुद्धमिान सलाहकार के रूप में कार्य करते थे, और उन्हें सांत्वना देते थे, क्योंकि उन्होंने देखा कि वह अपने आत्मा में दुखी और पीड़ति थे।

वे उनसे कहते थे, 'पतिाजी, दुखी न हों! वश्विास रखें कि प्रभु हमें कभी न छोड़ेंगे; वे हमारी शक्ति से बढ़कर परीक्षा नहीं आने देंगे, और न ही वे बुराई को हम पर हावी होने देंगे। भले ही शत्रु ने कलीसयिा पर उत्पीड़न मढ़ दयिा हो, उचति समय पर यह दुख उसी के सरि पर आएगा।' तुम प्रभु का वचन जानते हो: *'वपित्ति के कारण संसार पर हाय! क्योंकि ठोकरें आना अनविार्य है; पर उस मनुष्य पर हाय, जसिके द्वारा ठोकर आती है'* (मत्ती 18:7)।

पवत्रि प्रेरतिों के समय से लेकर आज तक भ्रष्ट मन वाले लोगों ने चर्च के वरिुद्ध कतिनी ही वधिर्मयिाँ क्यों नहीं खड़ी कीं! हमारे से पहले गए पवत्रि पतिाओं ने उनके हाथों कतिनी पीड़ा सहन की! फरि भी चर्च अजेय बनी रही; जो पीड़ति हुए वे महमिामय हुए और मुकुटति हुए, जबकि वधिर्मी अपने कर्मों के अनुसार उचति दंड के भागी बने।'

यह सुनकर, पैट्रआर्क और परषिद के सभी फादरों ने हौसला बढ़ाया, और ऑर्थोडॉक्सी (सही आस्था) के लिए सभी कष्टों को सहने और वधिर्म के आगे नहीं झुकने के लिए तैयार हो गए।

कुछ ही समय बाद, पावन परमपावन पैट्रआर्क नकिफिोरस को दुष्ट राजा द्वारा पैट्रआर्क के सहिासन से हटा दयिा गया और कॉन्स्टेंटनिोपल से नर्विासति कर दयिा गया[7736] ; सभी ऑर्थोडॉक्स बशिपों को भी कैद की सज़ा दी गई। फरि ईश्वर-वरिोधी मूर्त-भिंजकों द्वारा की गई भयानक धर्मनदिा का एक भयावह तमाशा सामने आया। उन्होंने कुछ पवत्रि प्रतमिाओं को जमीन पर फेंका, कुछ को जला दयिा, और कुछ पर मल पोत दयिा, तथा अन्य कई अन्यायपूर्ण कृत्य कए। ऐसी दुष्टता को देखकर, पूजनीय थयिोडोर को गहरा दुख हुआ और ईश्वर की दीर्घ सहनशीलता पर आश्चर्य करते हुए, उन्होंने आँसुओं के साथ कहा:

'यह धरती ऐसी अराजकता कैसे सहन कर सकती है?!'

[7736] संत नकिफिोरस द कन्फेसर, पैट्रआर्क को 1 मार्च को प्रोकॉननिसि द्वीप (अब मरमरा सागर पर मरमरा) में नर्विासति कर दयिा गया; उनकी जगह, दरबार के अधकिारयिों में से एक, थयिोडोटस, जो एक आइकनोकलास्ट था, को पैट्रआर्क के रूप में सहिासन पर बठिाया गया।

लेकिन, गुप्त रूप से ईश्वर की आराधना करना और ऐसी विपत्ति पर मौन रहकर शोक मनाना नहीं चाहकर, उन्होंने (पाम संडे के आगमन पर) अपने भाइयों को आदेश दिया कि वे पवित्र प्रतिमाओं को अपने हाथों में उठाएँ और मठ के चारों ओर घूमें, प्रतिमाओं को अपने सिर के ऊपर ऊँचा उठाए हुए और जोर से गाते हुए:

'हे शुभ, हम आपकी परम पवित्र प्रतिमा की पूजा करते हैं'[7737] , और मसीह के सम्मान में अन्य विजयगीत। यह जानकर, राजा ने संत को एक बार फिर संदेशवाहक भेजे, उन्हें ऐसे कृत्यों से मना किया और धमकी दी कि यदि उन्होंने अवज्ञा की तो उन्हें कैद, यातना और मृत्यु का सामना करना पड़ेगा। हालाँकि संत ने न केवल प्रतिमाओं की पूजा में विश्वासियों को प्रोत्साहित करना बंद नहीं किया, बल्कि उनका साहस और भी दृढ़ हो गया, और उन्होंने खुले तौर पर सभी को ऑर्थोडॉक्स धर्म पर दृढ़ रहने और पवित्र प्रतिमाओं को उचित सम्मान देने के लिए प्रोत्साहित किया। तब ज़ार ने यह महसूस करते हुए कि चापलूसी और धमकियों से पूजनीय थियोडोर के साहस और उत्साह को दबाया नहीं जा सकता, उसे कैद की सज़ा सुना दी। हालाँकि, पूजनीय संत ने अपने सभी शिष्यों को बुलाकर उन्हें धर्मोपदेश सुनाया और कहा:

'हे भाइयो! अब तुम में से प्रत्येक अपनी-अपनी समझ से अपनी आत्मा का उद्धार करो, क्योंकि ये कठिन समय हैं।'

तब, दुखी और रोते हुए, वह अपने भाइयों से चला गया, जो उसके लिए रो रहे थे, और जहाज पर चढ़कर, उसे अपोलोनिया ले जाया गया और मेटोपा नामक किले के एक कालकोठरी में कैद कर दिया गया[7738] । लेकिन वहाँ भी उसने सभी को सच्चे धर्म की शिक्षा देना जारी रखा: कुछ से व्यक्तिगत रूप से बातचीत करके, और दूसरों को पत्र भेजकर। उनके पत्र स्वयं राजा तक पहुँचे। राजा ने एक बार फिर अलेक्ज़ीव के पुत्र एक निकिता नामक व्यक्ति को आदेश देकर भेजा कि संत को वोनिता नामक एक अधिक दूरस्थ स्थान पर ले जाए[7739] और वहाँ उसे कैद करके, इस बात पर कड़ी नजर रखे कि वह वहाँ किसी से बात न करे और न ही आइकॉनों की पूजा के संबंध में कुछ लिखे। निकिता, धर्मगुरु के पास आकर, उन्हें ज़ार के आदेश के बारे में सूचित किया। धर्मगुरु ने उत्तर दिया:

'मैं एक स्थान से दूसरे स्थान पर इस स्थानांतरण को खुशी-खुशी स्वीकार करता हूँ, क्योंकि इस जीवन में मेरा कोई सच्चा घर नहीं है; मुझे जहाँ भी ले जाया जाए, वहीं मेरा स्थान है, क्योंकि हर जगह ईश्वर की धरती है। लेकिन मैं मौन नहीं रह सकता या ऑर्थोडॉक्स धर्म सिखाने से नहीं रुक सकता, और मैं इस मामले में आपका पालन नहीं करूँगा, न ही मैं आपकी धमकियों से डरूँगा।'

और इस प्रकार संत को, उपर्युक्त स्थान पर ले जाकर कैद कर दिए जाने के बाद भी, वहाँ भी उन्होंने उत्साहपूर्वक ऑर्थोडॉक्स धर्म का प्रचार करना जारी रखा। ज़ार को जब पता चला कि थियोडोर किसी भी तरह से उसकी इच्छा के आगे नहीं झुकेगा, तो वह बहुत क्रोधित हो गया और उसी निकिता को पादरी को क्रूर यातनाएँ देने के आदेश के साथ भेजा। निकिता के आते ही, उसने पादरी को ज़ार की आज्ञा के बारे में बताया; यह सुनकर पादरी ने अपने कपड़े उतारने शुरू कर दिए और कहा: 'मैं लंबे समय से पवित्र प्रतिमाओं के लिए पीड़ा सहने की इच्छा रखता हूँ', और उन्होंने अपने शरीर को यातनाओं के हवाले कर दिया। निकिता, एक दयालु व्यक्ति होने के नाते, उपवास और अथक तपस्या से दुबले-पतले उसके नग्न शरीर को देखकर दया से भर गया और उसे छूने की हिम्मत नहीं की, क्योंकि वह ईश्वर से डरता था, और संत को कोई हानि पहुँचाए बिना चला गया। हालाँकि, उन्होंने अपनी ऑर्थोडॉक्स शिक्षा को दूर-दूर तक फैलाना जारी रखा, क्योंकि यहाँ तक कि रिक्षक भी उनसे डरते थे और उन्हें ऐसा करने से रोक नहीं सके, जबकि उन्हें धमकी देकर आदेश दिया गया था कि वे थियोडोरा को किसी को भी ऑर्थोडॉक्स धर्म सिखाने से रोकें। – उन्होंने विभिन्न देशों में फैले अपने शिष्यों को भी लिखा; उन्होंने उनकी विशेष देखभाल की, और उन्हें बिना किसी डर के विश्वास की सच्ची स्वीकारोक्ति बिनाए रखने का निर्देश दिया, भले ही उन्हें अनगिनत बार क्रूरता से पीड़ा सहनी पड़े। उन्होंने उन्हें याद दिलाया कि वर्तमान अस्थायी कष्ट उस महिमा के सामने कुछ भी नहीं हैं जो आने वाले जीवन में हम में प्रकट होगी, जो मसीह के सभी सच्चे शहीदों को प्राप्त होगी।[7740] उन्होंने सबसे पवित्र पैट्रिआर्कों को भी लिखा: प्राचीन रोम के

[7737] उद्धारकर्ता की अकल्पित प्रतिमा के लिए ट्रॉपारियन।

[7738] अपोल्लोनिया – प्राचीन शहरों के लिए एक सामान्य नाम। यहाँ, निश्चित रूप से, यह इलिरिया में प्राचीन शहर को संदर्भित करता है, जिसे रोमन शिक्षा के प्रमुख केंद्रों में से एक के रूप में जाना जाता है। *मेटोपा* – अपोल्लोनिया का किला।

[7739] वोनिता, या बोनिता – एनाटोलिया में, जिसे अन्यथा एशिया माइनर के नाम से जाना जाता है।

[7740] अर्थात्, हमारी वर्तमान अस्थायी पीड़ाएँ उस महिमा के सामने कुछ भी नहीं हैं जो आने वाले जीवन में हम में प्रकट होगी।

पैट्रआर्क[7741] , यरूशलेम के पैट्रआर्क[7742] और अलेक्जेंड्रिया के पैट्रआर्क[7743] को, और उन्हें विस्तार से बताया कि कैसे बज़ेन्टियम में पवित्र प्रतिमाओं का अपमान किया गया था, कैसे ऑर्थोडॉक्स को कैद और कालकोठरियों में रखा जा रहा था, और कैसे सत्य को झूठ के लिए बलिदान कर दिया गया था। और उन्होंने उनसे ऑर्थोडॉक्स धर्म की रक्षा के लिए सहायता मांगी। कई लोग उस सम्माननीय संत के पास आए, जो जेल में था, उसकी मधुर शिक्षाएँ सुनने के लिए और अपने लिए बहुत लाभ प्राप्त कर लौटे।

एक अवसर पर, एशिया की कलीसिया का एक पुरोहित[7744] , जो वहाँ से गुजर रहा था, संत से मिलने आया। ऑर्थोडॉक्स विश्वास पर उनकी शिक्षा सुनकर, उस पुरोहित ने तुरंत प्रतिमा-विरोधी विधर्म को अस्वीकार कर दिया और पवित्र प्रतिमाओं की पूजा की। घर लौटने पर, उसने अपने बिशप के साथ कोई संप्रभुता (communion) नहीं करने से इनकार कर दिया, जिसे वह एक विधर्मी मानता था। उसने अपने एक अन्य पुरोहित मित्र को भी समझाया, उसे ऑर्थोडॉक्सी में परिवर्तित किया और विधर्मियों के साथ संप्रभुता से दूर कर दिया। जब बिशप को यह पता चला कि उनके पुरोहितों में इस बदलाव के लिए थियोडोर जिम्मेदार था, तो उन्होंने ज़ार को लिखे एक पत्र में थियोडोर की शिकायत करते हुए इस मामले की सूचना दी। ज़ार ने, बदले में, एशिया के कमांडर को फिर से थियोडोर को सबसे कठोर कोड़े मारने का आदेश दिया। गवर्नर ने अपने एक अधीनस्थ को थियोडोर को पचास कोड़े मारने के आदेश के साथ भेजा। जब वह थियोडोर के पास आया और उस धन्य व्यक्ति को अपने आने का कारण बताया, तो थियोडोर ने अपनी कमरबंद और कपड़े उतार लिए, स्वेच्छा से अपने कंधों को कोड़ों के लिए पेश करते हुए और कहते हुए:

'मैं इन घावों सहित इस शरीर से वंचित हो जाना बहुत पसंद करूँगा, ताकि मैं नग्न आत्मा के साथ प्रभु के पास शीघ्र जा सकूँ।'

उस व्यक्ति ने संत के सामने शर्मिंदगी महसूस करते हुए, क्षमा याचना करते हुए उनके सामने झुक गया, और चला गया।

तब राजा का एक और दूत, अनास्तासियस नामक, जो अत्यधिक क्रूर और निर्दयी व्यक्ति था, आया। उसने अपने हाथों से संत को पीटा और उन पर सौ तक के प्रहार किए, और उन्हें कैद कर दिया। उसने अपने शिष्य निकोलस के साथ भी यही किया, जो हमेशा अपने गुरु का अनुसरण करता था और उनके दुखों में भागीदार था; निकोलस को पीटने के बाद, अनास्तासियस ने उसे थियोडोर के साथ बंद कर दिया, और रक्षकों को उन्हें अत्यधिक अभाव में रखने का आदेश दिया - और फिर चला गया। उस अंधेरी कोठरी में पूजनीय व्यक्ति ने जो कष्ट सहे, उसे शब्दों में बयां करना असंभव है। उपवास और संन्यासी तपस्या से दुबला-पतला उसका शरीर सड़ने लगा और उससे एक भयानक बदबू आने लगी। इसके अलावा, कोठरी खुद गंदगी और धूल से भरी हुई थी।

सारी सर्दियों में, पादरी उसमें ठंड से जम गया, क्योंकि उसके पास आवश्यक कपड़े भी नहीं थे, बल्कि केवल एक फटी-पुरानी चादर थी। हालांकि, गर्मियों में, वह गर्मी से सूख गया, क्योंकि तहखाने में ठंडक देने के लिए कहीं से भी कोई हवा नहीं आती थी। इसके अलावा, वह तहखाना गंदे कीड़ों और रेंगने वाले जानवरों की अनगिनत संख्या से भरा हुआ था। इसके अलावा, रक्षकों ने धमकी के तहत आदेश पाकर, उसके साथ क्रूरता और निर्दयता से पेश आना शुरू कर दिया। उन्होंने उसका अपमान किया और उसे डांटा, उसे पागल और ज़ार का दुश्मन कहा। छोटी सी खिड़की से, वे थियोडोरेट और उनके शिष्य को केवल रोटी का एक छोटा सा टुकड़ा फेंकते और उन्हें थोड़ा सा पानी देते थे, और वह भी हमेशा नहीं, बल्कि हर एक या दो दिन में, या कभी-कभी कई दिन बीत जाने के बाद ही – और इस प्रकार वे उन्हें भूखा और प्यासा रखते थे। और पूजनीय थियोडोरेट ने अपने शिष्य से कहा:

'मेरे पुत्र! मैं देखता हूँ कि ये लोग हमें न केवल बार-बार की पिटाई और इस कठोर कालकोठरी से, बल्कि भूख और प्यास से भी मारना चाहते हैं। लेकिन हमें परमेश्वर में अपनी आशा रखना चाहिए, जो न केवल रोटी से, बल्कि एक बेहतर प्रकार के भोजन से भी हमारा पालन-पोषण करना जानते हैं, और जिनके आज्ञा से सभी जीवित प्राणी जीवित रहते हैं। जहाँ तक मेरी बात है, आज से, प्रभु के शरीर का पवित्र भोज मेरे शरीर और आत्मा दोनों के लिए भोजन का काम करे।

[7741] संत पास्कालियस, जिन्होंने 817 से 824 तक पोप के रूप में कार्य किया।

[7742] थॉमस प्रथम, यरूशलेम के पैट्रआर्क (८२० के बाद निधन)।

[7743] क्रिस्टोफ़, अलेक्जेंड्रिया के पैट्रआर्क (805–836)।

[7744] 'एशिया' से अभिप्रेत एशिया माइनर है, या अधिक सटीक रूप से, उसका पश्चिमी भाग।

(रेवरेंड हमेशा अपने साथ जीवन-दायक देह का एक कण रखते थे, जो प्रभु मसीह के रक्त से परपूिर्ण होता था, जसिे उन्होंने दव्यि रहस्य का अनुष्ठान करते समय अलग रखा होता था - जब भी उनके लिए ऐसा करना संभव होता)। 'मुझे केवल इसी को ग्रहण करने दो,' उन्होंने कहा, 'बनिा कसिी और चीज़ का स्वाद लिए। और हम दोनों के लिए अर्पति कयिा गया रोटी केवल तुम्हारे लिए हो, और इसी प्रकार पानी भी। आप स्वयं देख सकते हैं कि हमें बहुत कम रोटी दी जाती है, जो मुश्कलि से आपके शरीर को बनाए रखने के लिए ही पर्याप्त है; यह बेहतर है कि आप जीवति रहें और भाइयों को मेरे नधिन की सूचना दें, यदि ईश्वर की यही इच्छा है कि मैं इस तंग और वंचति कैद में मरूँ।"

कुछ समय बीत जाने के बाद, जसिने *'अपना हाथ खोलकर अपनी इच्छा के अनुसार हर जीवति प्राणी को तृप्त कयिा'* (भजन संहति 144:16), उसने अपने सेवक को, जो भयानक भूख से मर रहा था, सहायता के बनिा नहीं छोड़ा, बल्कि इस प्रकार उसकी व्यवस्था की। एक शाही कुलीन व्यक्ति, उस कोठरी के पास से गुजरते हुए, संत के बारे में सब कुछ जान गया—कि वह कैसे उत्पीड़न और भूख से पीड़ति था। ईश्वर ने उस कुलीन व्यक्ति के हृदय में दया जगाई, और उसने रक्षकों को आदेश दयिा कि वे थयिोडोर और उसके शष्यि को पर्याप्त भोजन दें और भवष्यि में उन्हें कोई हानि या उत्पीड़न न पहुँचाएँ, बल्कि उन्हें कुछ अधकि आरामदायक जीवन जीने दें। इस प्रकार, ईश्वर की कृपा से, ऊपर वर्णति कई कष्टों से कुछ राहत मलिने पर, उन्होंने अपनी शारीरकि शक्ति वापस पा ली। फरि भी, उसके बाद भी, पवत्रि पति कई परीक्षाओं से जूझते रहे, क्योंकि उन्हें पेट की बीमारी थी और वे गंभीर बीमारयिों से ग्रस्त रहते थे। इस प्रकार मसीह के पवत्रि सेवक तीन साल से अधकि समय तक जेल में रहे, उन्हें रक्षकों से घटयिा रोटी मलिती थी, और वह भी ताने और अपमान के साथ। फरि भी उन्होंने ऑर्थोडॉक्स धर्म के लिए यह सब आनंदपूर्वक सहन कयिा।

वे अपनी दुखों और बीमारयिों से उबरना ही शुरू ही कर रहे थे कि उन्हें नई, और भी अधकि गंभीर कष्टों का सामना करना पड़ा। कसिी अज्ञात स्रोत से, धन्य थयिोडोर द्वारा लखिा गया एक पत्र ज़ार के हाथ लग गया; इसमें, उन्होंने ज़ार के अधर्मीपन की नदिा की और वश्विासयिों को धार्मकिता और ऑर्थोडॉक्सी के लिए प्रोत्साहति कयिा। यह पत्र पढ़कर, ज़ार को प्रचंड क्रोध आ गया और उसने थयिोडोर के पास एक नर्दियी राज्यपाल भेजा – ताकि वह उसे पत्र दखिाकर पूछे कि क्या यह उसका लखिा है, और उसे मौत के घाट उतारने तक पीटे। जब राज्यपाल पहुँचा, तो उसने वह पत्र धन्य व्यक्ति को दखिाया, और उन्होंने वास्तव में पुष्टि की कि यह पत्र उनका था, और कसिी और का नहीं। तब राज्यपाल ने तुरंत आदेश दयिा कि पहले उनके शष्यि नकिोलस को पीटा जाए, और उसे नग्न करके जमीन पर लटिा दयिा जाए, क्योंकि यह वही था जसिने थयिोडोर की ओर से यह पत्र लखिा था। फरि, पूजनीय थयिोडोर के कपड़े भी उतारकर, उसने नर्दियता से उनकी पटिाई की, उनके पूरे शरीर को लहूलुहान कर दयिा और उनकी हड्डयिाँ तक तोड़ने पर आमादा हो गया। उन्हें मुश्कलि से जीवति छोड़कर, राज्यपाल अपने शष्यि नकिोलस के पास लौट आया, और बारी-बारी से उसे चापलूसी से फुसलाने और धमकयिाँ देने लगा, ताकि वह पवत्रि प्रतमिाओं की पूजा करने से इनकार कर दे। और चूँकि वह ऑर्थोडॉक्सी के प्रति वफादार रहा, तो उसने उसे पहले से भी ज़्यादा बुरी तरह पीटना शुरू कर दयिा और उसे रात भर ठंड में नग्न छोड़ दयिा, ताकि वह दोहरा कष्ट झेले, क्योंकि वह फरवरी का महीना था। तथापि, परम पूज्य थयिोडोर क्रूर पटिाई के परणिामस्वरूप बीमार पड़ गए—एक ऐसी बीमारी जो मुश्कलि से सहनीय थी—और मृतक समान पड़े रहे, मुश्कलि से सांस ले पा रहे थे, न तो भोजन ले रहे थे और न ही पानी। नकिोलस, अपने गुरु को इतना कमजोर देखकर, अपने बारे में भूल गया—हालाँकि वह खुद अपने घावों से भयानक पीड़ा सह रहा था—और उसने खुद को थयिोडोर के ठीक होने को सुनश्चिति करने में लगा दयिा। जौ के पेय की भीख माँगकर, उसने उससे पादरी की सूखी जीभ को गीला कयिा और उन्हें थोड़ा-सा पलिाकर उन्हें होश में ला दयिा। जब उसने देखा कि पादरी धीरे-धीरे अपनी ताकत वापस पा रहे हैं, तो उसने उनके सड़ते हुए शरीर के बाकी हस्सिों का इलाज शुरू कर दयिा। उसके शरीर के कई हस्सिे, जो नीले पड़ गए थे, सड़ गए थे और बेजान व पूरी तरह से बेकार लटक रहे थे, उन्हें उसने एक छोटी छुरी से काटकर फेंक दयिा, ताकि बचे हुए मांस पर अधकि प्रभावी ढंग से उपचार हो सके। जब पादरी धीरे-धीरे ठीक होने लगे, तो उसने अपने शष्यि की भी देखभाल की।

जबकि संत इस प्रकार नब्बे दनिों तक पीड़ति रहे और अभी तक अपने घावों से पूरी तरह उबर नहीं पाए थे, तसर की ओर से एक और कठोर और अमानवीय दूत आया, जसिे थयिोडोर और उसके शष्यि नकिोलस को स्मर्ना ले जाने का आदेश दयिा गया था[7745] । यह दूत धन का लालची था और यह संदेह करते हुए कि थयिोडोर उन लोगों से सोना ले रहा था जो

[7745] यह वर्ष 819 का था। स्मyrna एशयिा माइनर के पश्चमिी तट पर एक प्राचीन और प्रसदि्ध व्यापारकि शहर है; यह वर्तमान में एशयिा माइनर के सबसे समृद्ध शहरों में से एक है, जसिकी जनसंख्या 120,000 से अधकि है।

शिक्षा के लिए उसके पास आते थे, उसने परिणामस्वरूप आदेश दिया कि कोठरी की हर दरार की तलाशी ली जाए, दीवारें तोड़ दी जाएँ और मिट्टी हटा दी जाए, सोने की खोज की आशा में। लेकिन, कुछ भी न पाकर, उसने विशेष क्रूरता के साथ राजा के आदेश को पूरा करना शुरू कर दिया। पादरियों और उनके शिष्यों को अपमान और धक्कों के बीच कालकोठरी से बाहर घसीटकर, उसने उन्हें सैनिकों के हवाले कर दिया, और इस प्रकार उन्हें स्मyrna ले जाया गया। जहाँ तक उस धन्य व्यक्ति का सवाल है, यद्यपि उसकी शारीरिक शक्ति क्षीण हो रही थी, वह ईश्वर द्वारा समर्थित था और निर्दयी सैनिकों के साथ चलता रहा; उन्होंने उसे बिना आराम के पूरे एक दिन तक ले जाया, और रात में उन्होंने उसके पैरों को एक पेड़ से बाँध दिया। इस प्रकार, बड़ी कठिनाई से पहुँचा, जहाँ उसे एक दुष्ट व्यक्ति और अधर्म के पैरोकार के हवाले कर दिया गया। उसने थियोडोर को एक नीची, अँधेरी झोपड़ी में बंद कर दिया। उसके शिष्य निकोलस को भी उसके साथ बंद कर दिया गया, और इस प्रकार मसीह के ये धन्य सेवक एक साथ कष्ट सहते रहे। कुछ ही समय बाद, उपर्युक्त निर्दयी अनास्तासियस राजा के आदेश पर फिर से आया, और उसने सम्माननीय पिता पर एक बार फिर सौ प्रहार किए; फिर वह विदा हो गया; सम्माननीय पिता ने, तथापि, इन सभी कष्टों को कृतज्ञतापूर्वक सहन किया।

उस समय, स्मर्ना क्षेत्र का राज्यपाल सम्राट का भतीजा और एक सह-विश्वासी था, जो एक क्रूर, लाइलाज बीमारी से पीड़ित था और मृत्युशय्या पर था। उसके एक सेवक, जो ऑर्थोडॉक्स धर्म का अनुयायी था, उस बीमार व्यक्ति के पास आया और उसे बताया कि पूजनीय थियोडोर के पास हर प्रकार की बीमारियों को ठीक करने के लिए ईश्वर की कृपा है। वह व्यक्ति तुरंत अपने सेवकों को पूजनीय थियोडोर के पास यह अनुरोध लेकर भेज दिया कि वे उसके लिए ईश्वर से प्रार्थना करें और उसे उस मृत्यु से बचाएँ जो पहले ही उसके निकट आ रही थी। पूजनीय थियोडोर ने दूतों को उत्तर दिया:

'तुम्हें भेजने वाले से कह दो,' थियोडोर ने कहा, 'कि तुम्हें यह याद रखना चाहिए कि अपनी मृत्यु के दिन तुम अपने अधर्मी जीवन और विश्वासियों पर किए गए अपने बुरे कर्मों के लिए ईश्वर के समक्ष उत्तरदायी होगे। आपने अपनी अनेक अन्य अवज्ञाओं के साथ यह भी जोड़ा है कि आपने मेरे भिक्षुओं को अनगिनत विपत्तियों में डाला और यातनाओं द्वारा थैडियस को मार डाला, जो सद्गुणों में महान था। और अब वह संतों के साथ आनंदित है; परन्तु आपको अनंतकाल की यातना से कौन बचाएगा? कम से कम, जब आप अपने अंत के करीब पहुँचें, तो अपने दुष्ट कर्मों पर पश्चाताप करें।

संदेशवाहियों ने लौटने पर थियोडोर के सभी शब्द बीमार राज्यपाल तक पहुँचाए। राज्यपाल अपने किए गए अत्याचारों पर विचार कर बहुत डरा हुआ था, और उसने एक बार फिर रेवरेंड के पास दूत भेजे, क्षमा याचना की और यह वादा किया कि यदि वह उनकी प्रार्थनाओं से अपनी बीमारी से ठीक हो गया, तो वह ऑर्थोडॉक्स धर्म अपना लेगा। सम्मानित पादरी ने राज्यपाल को परमेश्वर की परम पवित्र माता का एक आइकन भेजा, और उसे आज्ञा दी कि वह उसे अपने जीवन भर श्रद्धापूर्वक अपने पास रखे। उस पवित्र आइकन को प्राप्त करने के बाद, राज्यपाल को अपनी बीमारियों से राहत मिली और वह ठीक होने लगा। लेकिन जल्द ही, स्मर्ना के बिशप, जो एक विधर्मी था, के प्रभाव में आकर वह अपने पुराने विधर्म पर लौट आया। उस बिशप से पवित्र तेल प्राप्त करके, मानो यह स्वयं के लिए कोई आशीर्वाद हो, उसने पूर्ण स्वास्थ्य की आशा में उस तेल से स्वयं का अभिषेक किया। लेकिन उसके बाद, उसकी पुरानी बीमारी लौट आई। यह जानने पर, परम पूजनीय ने पापी के लिए एक भयानक मृत्यु की भविष्यवाणी की, जो सच हुई - क्योंकि वह जल्द ही एक दर्दनाक अंत से मिला। इस बीच, परम पूजनीय थियोडोर, एकांत में कष्ट सहते हुए, डेढ़ साल तक स्मर्ना में कैद में रहे। इसके बाद, दुष्ट सम्राट लियो द आर्मेनियन को उसके ही सैनिकों द्वारा मार डाला गया और जबरदस्ती उसकी जान ले ली गई, और उसके बाद साम्राज्ञीय सिंहासन पर माइकल ने कब्जा किया, जिन्हें ट्राउलियन और वाल्बोस के नाम से भी जाना जाता था[7746] । यद्यपि यह सम्राट अधर्मी था, फिर भी उसने ऑर्थोडॉक्स लोगों को सताया नहीं, बल्कि सभी को अपनी इच्छा अनुसार विश्वास करने की अनुमति दी। इसलिए, उनके शासनकाल के दौरान, ऑर्थोडॉक्स धर्म के सभी धर्मगुरु और धर्म-स्वीकारक जेल से रिहा कर दिए गए, अपने काल-कोठरियों से मुक्त हुए और निर्वासन से लौट आए। तभी पूजनीय थियोडोर को अपने दुखों से राहत मिली। और उसके कुछ पूर्व शिष्य उसके पास आए, जिनमें डोरोथियस था, जो अपनी जवानी से ही सदाचार में निपुण था, उसके पीछे विसिलियन, जेम्स, डोमेटियन, टिमोथी और कई अन्य थे, जिन्होंने अपने धार्मिक जीवन और अपने आध्यात्मिक पिता, थियोडोर के प्रति अपने तीव्र, अटूट प्रेम

[7746] माइकल द्वितीय द ट्राउलियन, या वाल्बोस (जिसका अर्थ है 'ग्रीक-भाषी'), ने 820 से 829 तक शासन किया।

से खुद को वशिष्टि बनाया था। राजा की ओर से स्मyrna को आदेश मलिा कि थियोडोर को भी अन्य लोगों की तरह रहिा कर दयिा जाए ताकि वह अपने मठ लौट सके।

जैसे ही धन्य व्यक्ति निर्वासन से लौटे, सर्वत्र ऑर्थोडॉक्स लोगों ने खुशी से उनका स्वागत कयिा, एक-दूसरे को सूचति करते हुए और उन्हें अपने घरों में आमंत्रति करने का प्रयास करते हुए, ताकि वे उनकी प्रार्थनाओं और आशीर्वादों के योग्य माने जाएँ और उनके मीठे उपदेशों का आनंद ले सकें। थेओडोर की वापसी पर पूरी कलीसयिा ने आनंद मनाया, और सभी ने उन्हें एक ऐसे व्यक्ति के रूप में सम्मानति कयिा जसिने पवत्रि प्रतमिाओं के लिए बहुत कष्ट सहे थे और जसिने अपने उपदेश के माध्यम से ऑर्थोडॉक्स वश्विास में सभी को मजबूत कयिा था। वापस आते समय, परम पूजनीय चल्सेडॉन[7747] पहुँचे, धन्य भक्षिु थयिोक्टस्टि से मलिने के लिए, जन्हिोंने कभी मैगस्टिर[7748] का पद संभाला था, और, उनके साथ आध्यात्मकि संवाद में सांत्वना पाकर, अपने साथी पीड़ति, परम पावन पैट्रआर्क नकिफिोरस से मलिने के लिए रवाना हो गए, जन्हिें दुष्ट राजा लयिो द आर्मेनयिन ने नर्वासति कयिा था। उसके साथ एक आध्यात्मकि संवाद का आनंद लेने के बाद, रेवरेंड क्रस्किेन्टयिस के क्षेत्रों[7749] में चले गए और अपनी उपस्थति से कई लोगों को आनंदति कयिा, उन्हें आत्मा-रक्षक शक्षिा प्रदान करते हुए। वहाँ से दूसरी बार पादरी के पास लौटकर, वह उनके और अन्य बशिपों के साथ राजा से मलिने गए और उन्होंने उसे ऑर्थोडॉक्सी अपनाने के लिए प्रोत्साहति कयिा। लेकनि राजा, जो मूर्ख और परमेश्वर के वचन में अनभज्ञि था, ने पवत्रि पतिाओं के शब्दों पर कोई ध्यान नहीं दयिा और उनसे केवल नम्निलखिति कहा:

'मैं तुम्हें अपनी इच्छा करने से नहीं रोकता; लेकनि मैं शाही शहर में प्रतमिाएँ रखने की अनुमति नहीं दूँगा; उन्हें अपनी मर्जी से कहीं और रख दो, जहाँ कोई चाहे; जहाँ तक मेरी बात है, मैं प्रतमिाओं की पूजा नहीं करना चाहता।'

जब उसने अपने वक्षिप्तिपन में ये शब्द कहे, तो पूज्यनीय पतिा वज़िंटीयम से चले गए। पूज्यनीय थयिोडोर, अपने शष्यिों के साथ, क्रसिेन्शयिस के क्षेत्र में बस गए। थोड़ी ही देर बाद, एक थॉमस नामक व्यक्ति द्वारा भड़काए गए युद्ध के दौरान, जो साम्राज्यीय सहिासन पर अवैध कब्जा करना चाहता था, संत को अपने भाइयों के साथ कॉन्स्टेंटनिोपल लौटना आवश्यक लगा[7750] । युद्ध की समाप्ति पर, संत, प्रतमिा-भंजक वधिर्म से ग्रस्त लोगों के बीच रहना नहीं चाहकर, एक बार फरि वहाँ से चले गए। कॉन्स्टेंटनिोपल छोड़ने के बाद, वह क्रसिेन्शयिस के क्षेत्रों में नहीं गए, बल्कि अक्रट्टिस की चेरसोनेसस[7751] में बस गए, जहाँ संत त्रफिोन को समर्पति एक चर्च था, और वहाँ, अपने शष्यिों के साथ, उन्होंने धर्मपरायण तपस्या को समर्पति ईश्वर-प्रसन्न साधु जीवन जयिा। अपने प्रयि मत्रिों के साथ इस प्रकार कुछ समय तक जीवन व्यतीत करने के बाद, रेवरेंड फादर सत्तर वर्ष की आयु में अपने धन्य नधिन के करीब आ गए। अपनी मृत्यु से पहले, नवंबर के महीने में, वह एक गंभीर बीमारी से पीड़ति हुए और पेट दर्द से बहुत अधकि पीड़ति रहे। यह खबर कि धन्य थयिोडोर बीमार थे और मृत्यु के करीब थे, दूर-दूर तक फैल गई। तब धर्मपरायण ईसाइयों की भीड़ साम्राज्यकि शहर और वभिन्नि पड़ोसी गांवों से उसके पास आने लगी, या तो रेवरेंड फादर का प्रवचन सुनने और उनके अंतमि शब्द सुनने के लिए, या कम से कम उन्हें एक झलक देखने के लिए जब वे ईश्वर के पास जा रहे थे। वे केवल उनकी उपस्थति में रहना ही एक बड़ी कृपा मानते थे: क्योंकि यह अद्भुत व्यक्ति वाणी में मधुर, बुद्धि में ववेिकी और हर सद्गुण से सुशोभति थे। जब आदरणीय व्यक्ति अपनी अंतमि बीमारी से अत्यधकि कमजोर होकर बस्तिर पर पड़े थे, तब भी उन्होंने, जहाँ तक संभव था, अपने शष्यिों के साथ धर्मोपदेशात्मक बातचीत की। लेकनि उनके कहे शब्दों में से बहुत कम ही समझा जा सका, क्योंकि बुखार की तपशि से उनकी जीभ सूख गई थी। इसलिए, पास में बैठे और सुन रहे एक लपिकि ने उनके शब्दों को

[7747] चाल्केडोन एशयिा माइनर के उत्तर-पश्चमिी तट पर, बोस्फोरस के दक्षणिी सरि पर, कॉन्स्टेंटनिोपल के सामने स्थति बथिनियिा का प्रमुख शहर है। चर्च के इतहिास में चाल्केडोन चौथे सार्वभौमकि परषिद (451) के स्थल के रूप में प्रसद्धि है।

[7748] 'मैगस्टिर' उपाधि बाइज़ेंटाइन शाही दरबार में उच्चतम न्यायालयीन पदों में से एक को दर्शाती थी, जो एक पैट्रसियिन से भी उच्च पदवी से संबंधति थी।

[7749] यह क्षेत्र कॉन्स्टेंटनिोपल से बहुत दूर नहीं स्थति था।

[7750] दसिंबर 821 में, धोखेबाज़ थॉमस, जो सम्राट कॉन्स्टेंटनि VI का पुत्र होने का दावा करता था और लयिो द आर्मेनयिन के शासन के अंत के करीब एशयिा माइनर में खुद को सम्राट घोषति कर चुका था, कॉन्स्टेंटनिोपल पर चढ़ आया। इस डर से कि ऑर्थोडॉक्स उसके पक्ष में हो सकते हैं, हकला माइकल ने एक परषिद बुलाने का वादा कयिा ताकि वे पवत्रि प्रतमिाओं के उत्पीड़कों के साथ सुलह कर सकें। इस अवसर पर, थयिोडोर द स्टुडाइट भी कॉन्स्टेंटनिोपल पहुँचे। हालाँकि, परषिद नहीं हुई, क्योंकि उस नकली सम्राट को उसके ही सहयोगयिों ने मार डाला, और सम्राट के लिए खतरा टल गया था।

[7751] अक्रटि बथिनियिा में नकिोमेडयिा के पास, कॉन्स्टेंटनिोपल के सामने एक प्रायद्वीप है।

लखि लयिा ताकि जो भी उन्हें जानना चाहते थे, वे अपने आत्मा के लाभ के लिए उस धन्य व्यक्ति की शिक्षाओं को पढ़ सकें। बातचीत के दौरान, पूजनीय पिता को बेहतर महसूस होने लगा, इतना कि वे उठे और चलने भी लगे। रविवार को, चर्च आकर, उन्होंने दिव्य लिटर्जी का अनुष्ठान किया, भाइयों को उपदेश दिया और उनके साथ भोजन किया। इसी तरह, 6 नवंबर की सुबह - हमारे पवित्र पिता पॉल द कन्फेशर के पर्व के दिन - उन्होंने चर्च में दैवीय अनुष्ठान का अनुष्ठान किया, भाइयों को उपदेश दिया और उसी दिन संध्या की प्रार्थना में शामिल हुए; फिर, अपनी कोठरी में लौटने पर, वे अपने बिस्तर पर लेट गए और एक बार फिर गंभीर रूप से बीमार पड़ गए। वे चार दिन तक बीमार रहे, और पांचवें दिन उनकी बीमारी समाप्त हो गई - और उनका वेदना-रहित जीवन शुरू हुआ। जैसे ही पूजनीय पिता अपने निधन के करीब पहुँचे, बहुत से भाई उनके चारों ओर इकट्ठा हो गए, और वे उनके लिए अपने पिता और शिक्षक की तरह रोए। उन पर एक नज़र डालते हुए, उन्होंने कुछ आँसू बहाए और कहा:

'हे पितृबंधुगण! अब मेरे जीवन का अंत आ गया है। हम सभी को इस सामान्य प्याले से पीना ही होगा: कुछ को जल्दी, कुछ को देर से, फिर भी हम में से कोई भी उस घड़ी से बच नहीं सकता। और इस प्रकार मैं उस मार्ग पर चल पड़ा हूँ, जिस पर हमारे पूर्वज चले थे, उस स्थान की ओर जहाँ अनंत जीवन है, और सबसे बढ़कर, जहाँ प्रभु और परमेश्वर है, जिसे मेरी आत्मा ने प्रेम किया है। मैंने उसे पूरे हृदय से चाहा है; मैंने स्वयं को उसका सेवक कहा है, यद्यपि मैंने उसकी सेवा पूरी नहीं की है। और आप, मेरे भाइयो और प्रिय बच्चों, उन वचनों के प्रति विफादार रहें जो मैंने आपको सौंपे हैं, सच्चे विश्वास और ईश्वरीय जीवन को बनाए रखते हुए। तुम जानते हो कि मैंने तुमसे कभी निजि में और कभी सभी की सभा में परमेश्वर का वचन प्रचार करना नहीं छोड़ा। अब, अत; मैं तुमसे विनिम्रतापूर्वक निवेदन करता हूँ: इसे अपने मन में रखो और इस पर दृढ़ रहो, क्योंकि मैं तुम्हारी देखभाल ऐसे करता हूँ जैसे मुझे तुम्हारे विषय में उत्तर देना हो। इसलिए, अपनी ही देखभाल करो, ताकि तुम निर्दोष होकर यहाँ से चले जाओ। जहाँ तक मेरी बात है, यदि मुझे प्रभु के सामने हिम्मत मिली, तो मैं आप लोगों के लिए प्रार्थना करने का वचन देता हूँ, कि आपका मठ हमेशा सर्वोत्तम स्थिति में रहे और आप में से प्रत्येक व्यक्ति ईश्वर की सहायता से सद्गुणों में और अधिक प्रगति करे।

यह कहकर और सभी से विदा लेकर, उन्होंने शिष्यों को अपने हाथों में मोमबत्तियाँ लेने और विदाई की प्रार्थना शुरू करने का निर्देश दिया। शिष्य, बिस्तर के चारों ओर एक घेरा बनाकर खड़े होकर, गाने लगे: *'धन्य हैं वे जिनका मार्ग निर्दोष है, जो प्रभु की व्यवस्था में चलते हैं'* (भजन संहिता 118:1)। और जब, गाते समय, उन्होंने ये शब्द बोले: *'मैं तेरी आज्ञाओं को कभी नहीं भूलूंगा, क्योंकि उनके द्वारा तू मुझे जीवन देता है'* (भजन संहिता 118:93), पूजनीय थियोडोर ने इन्हीं शब्दों के साथ अपनी पवित्र आत्मा को ईश्वर के हवाले किया। इसे प्राप्त कर, ईश्वर के स्वर्गदूतों ने इसे प्रभु के सिंहासन तक पहुँचाया, जैसा कि डिल्माटिया के पूजनीय हिलारियन (†845) की अचूक गवाही से स्पष्ट रूप से प्रमाणित हुआ।

जिस दिन थियोडोर का निधन हुआ—अर्थात् ग्यारह नवंबर, पवित्र शहीद मीना के पर्व के दिन—उस दिन आदरणीय हिलारियन एक दाख की बारी में चल रहे थे, और दाऊद के भजन गाते हुए काम कर रहे थे। अचानक, उन्होंने कुछ अद्भुत आवाजें सुनीं और एक अकथनीय सुगंध को महसूस किया। वह चकित हो गया और रुक गया, यह खोजते हुए कि आवाज़ कहाँ से आ रही है। आकाश की ओर देखते ही, उसने सफेद वस्त्रों में लिपटे, दीप्तिमान चेहरों वाले देवदूतों की अनगिनत सेना को स्वर्ग से किसी पूजनीय व्यक्ति से मिलने के लिए भजनों के साथ उतरते हुए देखा। यह देखकर, धन्य हिलारियन, अत्यधिक भय से ग्रस्त होकर, जमीन पर गिर पड़े और उन्होंने एक आवाज़ सुनी जो उनसे कह रही थी:

'देखो, स्टुडियो मठ के मठाध्यक्ष थियोडोर की आत्मा, जिसने पवित्र प्रतिमाओं के लिए बहुत कष्ट सहे और अंत तक अपनी परीक्षाओं में दृढ़ रहा; अब दिवंगत की आत्मा, आनंदित होकर, स्वर्ग की ओर बढ़ रही है, जहाँ स्वर्गदूतों ने उसका स्वागत किया है।'

धन्य हिलारियन ने यह दर्शन अन्य पुण्यशील पिताओं को सुनाया। उन्होंने उस दर्शन के दिन और समय को दर्ज किया और कुछ समय बाद उन्हें पता चला कि ठीक उसी क्षण स्टुडियोन के प्रशंसनीय थियोडोर का निधन हो गया था और वे पृथ्वी से स्वर्ग में आरोहण कर गए थे।

हमारे पूजनीय पिता थियोडोर ने अपने जीवनकाल में और मृत्यु के बाद भी कई चमत्कार किए; हम यहाँ आत्मा के निर्माण के लिए उनमें से कुछ का वर्णन करेंगे।

लियो नामक एक मेज़बान ने परम पूज्य थियोडोर को उनके निर्वासन से लौटने के दौरान विश्राम करने के लिए अपने घर में आश्रय दिया था। बाद में, इसी लियो ने अपने बेटे के लिए एक दुल्हन ढूंढ निकाली। और इस प्रकार, जैसे ही

शादी की तैयारी चल रही थी, दुल्हन अचानक गंभीर रूप से बीमार पड़ गई और उसे तेज बुखार हो गया, जिससे हर कोई उसके जीवन की आशा छोड़ चुका था।

लियोन ने, अपनी ओर से, रेवरेंड को एक संदेश भेजा, जिसमें उसने उन्हें जो कुछ हुआ था, बताया और उनसे प्रार्थनाओं के माध्यम से उनकी मदद करने का आग्रह किया। तेल पर आशीर्वाद देने के बाद, रेवरेंड ने उसे लियोन को भेज दिया, और उसे उस बीमार महिला पर लगाकर मालिश करने का निर्देश दिया। जब यह किया गया, तो दुल्हन तुरंत उठ खड़ी हुई, इतनी स्वस्थ जैसे वह कभी बीमार ही न हुई हो। उसी लियोन को एक बार व्यापार के सिलसिले में अकेले एक दूर-दराज के गाँव जाते समय रास्ते में एक तेंदुआ मिला; उस जानवर ने लियोन को देखते ही उस पर झपट पड़ा, उसे चीर-फाड़ कर खाने का इरादा रखता था। लियोन ने ऊँचे स्वर में पूजनीय फादर थियोडोर का नाम पुकारा, और देखो तो – उस पवित्र संत का नाम सुनते ही वह जानवर रुक गया और जमीन पर झुक गया, सड़क से हटकर भाग गया। लियोन, उस जानवर से बाल-बाल बचा, अपने रास्ते पर आगे बढ़ गया।

एक अशुद्ध आत्मा से ग्रस्त एक महिला को रेवरेंड फादर के सामने लाया गया। उसे सताने वाला आत्मा इतना उग्र था कि वह खुद, बिना कोई दर्द महसूस किए, अपना ही मांस चबाती और खा जाती थी। उसका दुख देखकर, रेवरेंड ने उस पर दया की, अपने हाथ से उसके सिर पर क्रॉस का चिह्न बनाया और उसके लिए दुष्ट आत्मा भगाने की प्रार्थना की; और तुरंत ही अशुद्ध आत्मा उससे निकल गई और, रेवरेंड की प्रार्थना से भगाए जाने पर, तेजी से गायब हो गई।

एक कुलीन कुल की दूसरी महिला ने रेवरेंड थियोडोर के निधन के बाद धन्य एबॉट सोफ्रोनीस[7752] को निम्नलिखित बात बताई। 'एक बार,' उसने कहा, 'मेरे घर में आग लग गई थी। आग ने, उसे चारों ओर से घेरकर, अंदर की हर चीज़ को गर्जना के साथ जला रही थी, और हम जलती लपटों की ताकत को न तो पानी से और न ही किसी अन्य साधन से बुझा सके, और हम यह सोचकर हैरान थे कि क्या करें। तब मुझे आदरणीय थियोडोर का एक पत्र याद आया, जो उन्होंने मुझे इससे कुछ समय पहले लिखा था। मेरे मन में यह विचार आया कि इसे आग में फेंक दूँ, यह सोचते हुए कि क्या लपटें थियोडोर के पवित्र हाथ से लिखे ग्रंथ का कुछ सम्मान करेंगी, और क्या यह, भले ही थोड़ा ही सही, लपटों को शांत कर देगा। इस विचार पर अमल करते हुए, मैंने पत्र को लपटों में फेंका और कहा: 'संत थियोडोर, मेरी मदद करो, अपने सेवक की, जो संकट में है!' और ठीक उसी क्षण हमने देखा कि आग की प्रचंड शक्ति कमजोर पड़ गई, बुझ गई और धुएँ में समा गई।' ईश्वर के इस संत का नाम लेने में इतनी महान शक्ति निहित थी!

उपरोक्त सोफ्रोनीयस एक और इसी तरह की घटना का वर्णन करते हैं। उन्होंने कहा, 'हम धन्य निकोलस, जो महान थियोडोर के शिष्य और साथी-पीड़ित थे, के साथ पफ्लागोनिया[7753] की यात्रा कर रहे थे / अपनी यात्रा के दौरान, जब शाम हुई, तो हम एक खेत में रुके जहाँ बहुत सारी कटी हुई घास थी। वहाँ कुछ सैनिक भी थे जो दिन में देर से उसी सड़क से यात्रा कर रहे थे, उसी खेत में रुके थे और आग जलाकर अपना रात्रि का भोजन बना रहे थे। बाद में, रात के दौरान, वह आग किसी तरह अनजाने में भड़क उठी और चुपचाप फैलकर एक भयंकर आग का रूप ले लिया जिसने सारी सूखी घास को नष्ट कर दिया। सैनिक चौंककर जाग गए और यह सोचकर कि हमने आग लगाई है, सब हम पर टूट पड़े और हमें पकड़कर प्रताड़ित करने ही वाले थे; लेकिन हम, यह समझ नहीं पा रहे थे कि क्या करें, हमने महान थियोडोर से मदद की प्रार्थना की, कहते हुए: 'आदरणीय पिता! हमारी सहायता करो, और अपनी प्रार्थनाओं से हमें इस अन्यायपूर्ण विपत्ति से बचाओ।' जैसे ही हमने ये शब्द बोले, अचानक एक जोरदार बारिश शुरू हो गई और उसने आग को पूरी तरह से बुझा दिया। इस चमत्कार को देखकर सैनिक विनम्र हो गए और हमारे पैरों पर गिरकर क्षमा याचना करने लगे।

सार्डिनिया द्वीप पर[7754] एक धार्मिक व्यक्ति था, जिसके पास पूज्य थियोडोर की लिखित कृतियाँ थीं, जिन्हें वह लगन से पढ़ता था; वह उस पवित्र पिता द्वारा रचित भजनों को भी पसंद करता था, जिन्हें महा-लेंट के दौरान गाया जाता है, जिन्हें ट्रायोडियन या त्रि-गीत पुस्तक कहा जाता है। कुछ अधर्मी भिक्षु, जो सड़क से गुजर रहे थे, इस व्यक्ति के घर आए और लेंट के दौरान उसके यहाँ ठहरे। पूज्य थियोडोर द्वारा रचित भजन और शिक्षाओं को देखकर, उन्होंने उनका अपमान करना शुरू कर दिया, यह कहते हुए कि वे तर्क के विपरीत रचे गए थे और पागलपन से भरे थे। हालाँकि, उन धर्मनिष्ठ लोगों को, जिन्होंने उन्हें आश्रय दिया था, उनकी बातों से भटका दिया गया और वह अब पहले की तरह सुबह की प्रार्थना के बाद रेवरेंड द्वारा रचित त्रिसिनिट्सा नहीं गाते थे, और न ही रेवरेंड की शिक्षाओं को पढ़ते थे। जब वह इस

[7752] सोफ्रोनीयस 861 से 864 तक स्टुडाइट मठ के मठाध्यक्ष थे।

[7753] पाफ्लोगोनिया – एशिया माइनर के उत्तर में एक क्षेत्र।

[7754] सार्डिनिया – भूमध्य सागर में एक बड़ा द्वीप, इटली के पश्चिम में।

प्रकार भटक गया था, तो एक रात पूज्य थियोडोर उसे दिखाई दिए – छोटे कद के, जैसे वे जीवन में थे, एक भव्य मुखमंडल और गंजा सिर वाले। उनके पीछे अन्य भिक्षु थे, जिनके हाथों में लाठियाँ थीं, और उन्होंने उन भिक्षुओं को इस आदमी पर प्रहार करने का आदेश दिया, जो अधर्मी भिक्षुओं द्वारा भटका दिया गया था। जब उसे पीटा जा रहा था, तो रेवरेंड ने कहा:

'अविश्वास के कारण तुमने मेरे कार्यों को क्यों अस्वीकार कर दिया, जिन्हें तुम कभी प्यार करते थे और सम्मान देते थे? तुमने यह क्यों नहीं सोचा कि अगर ईश्वर की कलीसिया को उनमें कोई लाभ नहीं दिखता, तो वह उन्हें स्वीकार नहीं करती? क्योंकि वे चालाक झूठों से नहीं, न ही अलंकारिक फूल-फूलों से बने हैं, बल्कि हर बात में उनमें सच्चे और विनिम्र शब्द हैं, जो हृदय को पश्चाताप की भावना से भरने और आत्मा को कोमल करने में सक्षम हैं। वे उन लोगों के लिए मीठे और लाभदायक हैं जो वास्तव में मोक्ष की कामना करते हैं।

इस प्रकार पापी को दंड देने के बाद, आदरणीय थियोडोर चले गए। जब सुबह हुई, तो वह आदमी बिस्तर पर पड़ा था, उसे मिले प्रहारों से वह बीमार था, उसके शरीर पर कई चोटों के निशान थे, जिन्हें वह अपनी पीड़ा के बारे में बताते हुए सभी को दिखा रहा था। फिर उसने उन भिक्षुओं को, जिन्होंने उसे भटकाया था, जल्दबाजी में अपने घर से निकाल दिया, और उन्हें अपने पापों तथा उस दंड का कारण माना। उस समय से, उसकी श्रद्धेय थियोडोर में आस्था पहले से कहीं अधिक दृढ़ हो गई, और उसने उनके द्वारा रचित ग्रंथों और भजनों को प्रेम से पढ़ा, तथा उनसे अपने पूर्व पापों को क्षमा करने की विनती की।

आदरणीय संत की कब्र से भी कई लोग चंगा हुए। एक बार, एक दानव-ग्रस्त व्यक्ति उनकी कब्र पर आया। रात के दौरान, आदरणीय संत एक दर्शन में उसके सामने प्रकट हुए और उसे चंगा करके स्वस्थ कर दिया। जागने पर, उस व्यक्ति ने स्वयं को शत्रु के कष्ट से मुक्त महसूस किया और उसने परमेश्वर और उनके संत, आदरणीय थियोडोर की स्तुति की।

एक अन्य व्यक्ति ने जहरीला भोजन खा लिया था, जिससे उसके सभी आंतरिक अंगों में विष फैल गया था, और वह पहले ही मौत के करीब पहुँच चुका था। लेकिन जब उसने पूजनीय संत की कब्र के पास रखे दीपक का कुछ तेल अपने मुँह में डाला, तो उसने तुरंत वह घातक विष उल्टी कर दिया, अपनी सेहत वापस पा ली और वह पूरी तरह से सुरक्षित रहा।

एक तीसरे व्यक्ति को पेट की बीमारियों से बहुत कष्ट हो रहा था; लेकिन जैसे ही उसने पूजनीय थियोडोर की प्रतिमा पर अपनी दृष्टि डाली और उनके नाम का स्मरण किया, वह तुरंत ठीक हो गया। एक और व्यक्ति, जो किसी प्रकार के भय से ग्रस्त था, पागलपन की स्थिति में था, और हर किसी से डरता और भयभीत रहता था। उसे पूजनीय संत की कफ़न तक लाया गया और तेल से अभिषेक किया गया, और वह अचानक इस कष्ट से मुक्त हो गया और, अपनी मानसिक संतुलन वापस पाकर, उसने ईश्वर और उनके संत का धन्यवाद किया।

परम पूजनीय थियोडोर की कब्र पर उनकी प्रार्थनाओं के द्वारा कई अन्य चमत्कार हुए, त्रिमूर्ति में एक परमेश्वर की महिमा के लिए; हमें उनसे सम्मान और पूजा मिले, अब और हमेशा, और युगों-युगों तक। आमीन।

ट्रोपारियन, स्वर 8:

ऑर्थोडॉक्सी के मार्गदर्शक, धार्मिकता और पवित्रता के शिक्षक, ब्रह्मांड के प्रकाश, मठाधीशों के ईश्वर-प्रेरित सांत्वनादाता, अति प्राज्ञ थियोडोर, आपने अपने शिष्यों के माध्यम से सभी को प्रकाशित किया है: हे आध्यात्मिक झरने, हमारे ईश्वर मसीह से प्रार्थना करें कि हमारी आत्माओं का उद्धार हो।

कॉन्टाकियन, स्वर 2:

अपने तपस्वी और देवदूत-सदृश जीवन के द्वारा, आपने अपने कष्टों के माध्यम से अपने श्रम को स्पष्ट किया है, और आप स्वर्गदूतों के साथ एक सहवासी के रूप में प्रकट हुई हैं, हे धन्य थियोडोरा: उनके साथ मिलकर, हम सभी के लिए मसीह हमारे परमेश्वर से प्रार्थना करना न छोड़ें।

डेचानी के संत स्टीफन, सर्बिया के राजा का जीवन[7755]

11 नवंबर को स्मरण किया जाता है

डेचानी के स्टीफन उरोश तृतीय एक सर्बियाई राजा थे, जो प्राचीन ऑर्थोडॉक्स सर्बियाई राज्य के धर्मपरायण राजाओं और शासकों में से एक थे। वह संत राजा स्टीफन उरोश द्वितीय मिलुटिन[7756] के पुत्र, स्टीफन उरोश प्रथम[7757] के पोते और सर्बिया के प्रथम-मुकुटधारी राजा संत स्टीफन[7758] के परपोते थे, जो सर्बिया के प्रथम आर्चबिशप संत सावा के भाई और महान सर्बियाई जुपान संत स्टीफन के पुत्र थे। (संन्यास जीवन में सिमिओन के नाम से जाने जाते थे) नेमांजा[7759], प्राचीन सर्बियाई राज्य के संस्थापक। उनकी माता मिलुटिन की पहली पत्नी एलिजाबेथ थीं, जो हंगरी के राजा स्टीफन पंचम की पुत्री थीं। धार्मिक सर्बियाई शाही परिवार से संबंध रखने के कारण, स्टीफन का पालन-पोषण बचपन से ही ईसाई धार्मिकता में हुआ।

छोटी उम्र से ही, स्टीफन को कई गंभीर विपत्तियों को देखना और सहना पड़ा। उस समय सर्बिया में, शाही परिवार के बीच अक्सर उथल-पुथल और आपसी गृहयुद्ध, कुलीनों के बीच विद्रोह और राजद्रोह, और पड़ोसी लोगों - बुल्गारियाई, ग्रीक और टाटर्स - के साथ लगातार युद्ध होते रहते थे।

पूर्वी ऑर्थोडॉक्स ईसाई धर्म के शत्रु, तातारों ने ऑर्थोडॉक्स रस को कुचलकर और अधीन करके, अन्य स्लाव ऑर्थोडॉक्स राज्यों को लूटा और बुल्गारिया तथा सर्बिया को धमकी दी।

क्रीमिया के खान नोगाई से बाल्कन प्रायद्वीप के स्लाव राज्यों को एक विशेष रूप से गंभीर खतरा था। नोगाई द्वारा भेजी गई तातार सेनाओं ने बुल्गारिया और मैसेडोनिया को तबाह कर दिया, और सर्बिया पर भी आक्रमण किया। बुल्गारियाई कुछ समय के लिए तातार प्रभुत्व के अधीन आ गए, और सर्बिया को भी यही भाग्य भुगतने का खतरा था। लेकिन सर्बिया के राजा मिलुटिन ने निर्णायक कार्रवाई की। शक्तिशाली तातार ख़ान का ज़ोर से विरोध करने में असमर्थ, उन्होंने उसके साथ बातचीत की, जिससे तातारों का आक्रमण टल गया, लेकिन उन्हें अपने छोटे बेटे को कई प्रतिष्ठित सर्बियाई बोयारों के साथ तातारों के शिविर में एक बंधक के रूप में भेजने के लिए मजबूर होना पड़ा।

फिर भी ईश्वर ने धर्मपरायण स्टीफन की दुर्भाग्यपूर्ण परिस्थितियों में उसकी सहायता की। टटारों के बीच जल्द ही उत्पन्न हुई आंतरिक कलह नोगाई की हत्या के साथ समाप्त हो गई। टटारों के बीच इस उथल-पुथल का लाभ उठाते हुए, स्टीफन अपने देश लौट आया।

टटारों से मिलकर लड़ने के लिए, बुल्गारिया के ज़ार स्मिलेट्स ने सर्बिया के राजा मिलुटिन के साथ गठबंधन किया; इस गठबंधन को बुल्गारिया के ज़ार स्मिलेट्स की बेटी के साथ मिलुटिन के बेटे, स्टीफन उरोश के विवाह से पक्का किया गया।

अपनी शादी के बाद, स्टीफन उरोश को सबसे महत्वपूर्ण प्रांतों में से एक—यानी ज़ेटा, या डायोक्लेया, जो अब दक्षिणी मोंटेनेग्रो है—को स्वतंत्र रूप से शासन करने के लिए दिया गया। यहीं स्टीफन ने कुछ समय तक शासन किया।

लेकिन, जैसा कि पहले भी अक्सर होता रहा था, सर्बिया में एक बार फिर से अशांति फैल गई, जिसके साथ ही सामान्य विपत्तियाँ और दुर्भाग्य भी आए।

स्टेफान की सौतेली माँ, मिलुटिन की दूसरी पत्नी, सिमोनिडा—बाइज़ेंटाइन सम्राट एंड्रोनिकोस द एल्डर[7760] और उनकी पत्नी इरिना की बेटी—चाहती थी कि सर्बियाई सिंहासन का उत्तराधिकारी उसका सौतेला बेटा स्टेफान उरोश नहीं, बल्कि उसका अपना बेटा, कॉन्स्टेंटिन हो। अपनी माँ इरिना के उकसावे पर, उसने राजा मिलुटिन के मन में अपने पुत्र

[7755] डेचानी के संत स्टीफन की दो जीवनी-कथाएँ ज्ञात हैं और वे आज तक सुरक्षित हैं: उनमें से एक समकालीन द्वारा लिखी गई थी, जो सर्बियाई आर्चबिशप डैनियल के कार्य के उत्तराधिकारी थे, जिन्होंने *रोदोस्लोव*, या *त्सारेस्ताव्निक* की रचना की थी—अर्थात् सर्बिया के राजाओं और आर्चबिशपों की जीवनी-कथाएँ; दूसरी लगभग साठ साल बाद ग्रेगरी त्साम्ब्लक द्वारा लिखी गई थी, जो सेंट स्टीफन द्वारा स्थापित डेचानी मठ के मठाधीश थे और बाद में कीव के मेट्रोपॉलिटिन बने। ये hagiographies वर्तमान विवरण का आधार बनाती हैं।

[7756] मिलुटिन ने 1282 से 1320 तक सर्बिया पर शासन किया।

[7757] उन्होंने 1243 से 1276 तक शासन किया।

[7758] प्रथम-मुकुटधारी संत स्टीफन का 1224 में निधन हो गया; उन्होंने 1195 से शासन किया।

[7759] संत स्टीफन (सिमिओन) नेमान्या ने 1159 से 1196 तक शासन किया।

[7760] एंड्रोनिकोस द एल्डर पलाइओलोगोस 1281 से 1332 तक कॉन्स्टेंटिनोपल के सम्राट थे।

स्टीफन के प्रति संदेह पैदा करना और यह अफवाह फैलाना शुरू कर दिया कि स्टीफन अपने पिता का सिंहासन छीनने का इरादा रखता है।

इसी समय, सर्बियाई कुलीनों में से कुछ ने स्टीफन को उस खतरे के बारे में आगाह किया जो उस पर मंडरा रहा था, लेकिन उन्होंने उसे अपने पिता के खिलाफ विद्रोह करके और उनका राजसी अधिकार छीनकर उससे छुटकारा पाने की सलाह दी।

इस बीच, कुछ दुर्भावनापूर्ण लोगों ने उसके पिता मिलुटिन को यह विश्वास दिला दिया कि उसका बेटा उनके खिलाफ विद्रोह की साजिश रच रहा है और उन्हें सिंहासन से हटाना चाहता है। मिलुटिन तब अपने बेटे के क्षेत्र की ओर रवाना हुए और उसे पकड़ने के लिए लोग भेजे। दूतों ने स्टीफन को बेड़ियों में जकड़ लिया, उसे स्कोप्जे के एक कालकोठरी में कैद कर दिया[7761] और उसकी आँखें फोड़ दीं।

यह सर्बियाई क्षेत्र ओव्चे पोले के रूप में जाना जाता है। वहाँ चमत्कार करने वाले संत निकोलस को समर्पित एक चर्च था। अंधा कर दिए गए स्टीफन ने भयानक यातनाएं सहन कीं और केवल प्रार्थना के सहारे अपना जीवन चलाया। ऐसी गंभीर पीड़ा के बीच, अर्ध-मृत शहीद ने एक धुंधले सपने में अपने सामने एक बिशप के वस्त्रों में एक भव्य पवित्र पुरुष को देखा, जिसका चेहरा तेजस्वी था; इस व्यक्ति ने स्टीफन की निकाल दी गई आँखों को अपनी दाहिनी हथेली में पकड़ रखा था और कहा:

'दुखी मत हो, स्टीफन! मेरे हाथ में तेरी आँखें हैं,' और ये कहकर उसने उन्हें उसे दिखा दिया।

यह सोचकर कि यह एक भूत है, स्टीफ़न ने उससे कहा:

'आप कौन हैं, मेरे प्रभु, जो मुझ पर इतनी कृपा कर रहे हैं?'

आकृति ने उत्तर दिया:

'मैं निकोलस हूँ, मायरा का बिशप।'

नींद से जागते ही, पीड़ित ने अपनी बीमारी में कुछ राहत महसूस की और ईश्वर का धन्यवाद किया।

स्टीफन पर अत्याचार यहीं समाप्त नहीं हुए।

अपने बेटे की काल्पनिक साज़िशों से पूरी तरह से खुद को बचाने की इच्छा से, राजा मिलुटिन ने स्टीफन को उसके वतन से निर्वासित कर दिया, और उसे कॉन्स्टेंटिनोपल में उसके ससुर, तसर एंड्रोनिकोस द एल्डर के पास भेज दिया, ताकि उसे और उसके दो छोटे पोते-पोतियों, स्टीफन के बेटों - दुसान और दुशिका को उनकी देखरेख में रखा जा सके।

लेकिन निर्वासन में भी, ईश्वर ने धैर्यवान स्टीफन को नहीं छोड़ा। हालांकि, यह सच है कि वहां स्टीफन को अपनी स्वतंत्रता से वंचित कर दिया गया था। शुरुआत में, उन्हें ज़ार द्वारा एक निजी आवास और पूरा भरण-पोषण दिया गया, लेकिन उन्हें स्वतंत्र रूप से बाहर निकलने की मनाही थी। बाद में, स्टीफन और उनके बच्चों को कॉन्स्टेंटिनोपल में पंतोक्रेटर (सर्वशक्तिमान प्रभु) मठ में मठाधीश की देखरेख में रहने के लिए स्थानांतरित कर दिया गया, जिसकी अनुमति के बिना उन्हें किसी से मिलने या बात करने की इजाज़त नहीं थी। फिर भी, पराक्रमी स्टीफन ने विनम्रता से अपने निर्वासन की सभी कठिनाइयों को सहन किया; वह अक्सर दोहराते थे: 'सहन करो, स्टीफन, *"अपने धीरज से अपनी आत्माओं को बचाओ"* (लूका 21:19), प्रभु ने कहा है'।

वह अक्सर घुटनों के बल प्रार्थना में लगा रहता था और उसमें उसे सांत्वना मिलती थी। जब मठ का समुदाय दैनिक प्रार्थना सभा के लिए इकट्ठा होता था, तो वह प्रार्थना के लिए सबसे पहले पहुँचता था और सेवा समाप्त होने तक बिना हिले-डुले खड़ा रहता था, जिससे मठाध्यक्ष और अन्य भ्राता उसके उत्साह और लगन को देखकर चकित रह जाते थे। इसके लिए, सभी स्टीफन से प्यार करते थे और उसका सम्मान करते थे। लोग अक्सर आध्यात्मिक बातचीत के लिए उनके पास जाते थे। यह सब ज़ार की नज़रों से छिपा न रहा। निर्वासन के इस व्यक्ति के प्रशंसनीय जीवन के बारे में सुनकर, उन्होंने उसे अक्सर अपनी उपस्थिति में बुलाया, आध्यात्मिक लाभ के मामलों पर उससे बातचीत की, और उसके साथ भोजन किया।

मोक्ष और राज्य के मामलों पर इसी तरह की एक बातचीत के दौरान, चर्चा बार्लाम पर आ गई, जो पश्चिम से आया एक विधर्मी था और तब ग्रीक साम्राज्य में कई ऑर्थोडॉक्स ईसाइयों के बीच बड़ी परेशानी पैदा कर रहा था, क्योंकि उसने माउंट टाबर पर प्रभु यीशु मसीह के गौरवमय रूपांतरण के दौरान चमकने वाली ज्योति के बारे में झूठी शिक्षा

[7761] मैसेडोनिया में वारदार नदी पर एक नगर; अब तुर्की में इसे उस्कुब के नाम से जाना जाता है।

दी थी। स्टीफन ने यह विचार व्यक्त किया: 'राजा के लिए, जो मसीह के इतने बड़े झुंड का चरवाहा है, अपने झुंड के भीतर ही उसके शत्रुओं को आश्रय देना अन्यायपूर्ण और अनुचित है; उन्हें आत्माओं को भ्रष्ट करने वाले भेड़ियों की तरह बाहर निकाल दिया जाना चाहिए।'

राजा और पैट्रिआर्क अथेनासियस द्वारा बुलाई गई परिषद ने बार्लाम के धर्मद्रोह की निंदा की, और उस विधर्मी को ग्रीक साम्राज्य की सीमाओं से निर्वासित कर दिया गया।

अपने सदाचारी जीवन, अपनी बुद्धि और अपनी सलाह के द्वारा, स्टीफन ने न केवल मठवासी समुदाय और राजा का, बल्कि कॉन्स्टेंटिनोपल के सभी कुलीनों, पैट्रिआर्क और गणमान्य व्यक्तियों का भी सार्वभौमिक स्नेह अर्जित किया।

सम्राट से प्राप्त भत्ते में से, स्टीफन ने अपनी व्यक्तिगत देखभाल पर केवल एक छोटा सा हिस्सा खर्च किया, और बाकी का हिस्सा गरीबों में बांटने के लिए मठाधीश को दे दिया।

स्टीफ़न के एक देशवासी, जो उनके एक पुराने परिचित और प्रशंसक थे, ने उस निर्दोष कैदी की दुर्दशा को कम करने की इच्छा से, एक विश्वसनीय सेवक के माध्यम से, विभिन्न आवश्यकताओं के लिए सोने की एक बड़ी राशि भेजी। दूत ने स्टीफन को पैसे सौंपे और अपने मित्र के सहानुभूति भरे शब्द पहुँचाए। स्टीफन ने दाता का धन्यवाद किया, प्रभु परमेश्वर से उनके लिए प्रार्थना की, लेकिन, मठाधीश को बुलाकर, जरूरतमंदों में बांटने के लिए भेजा गया सारा सोना उन्हें सौंप दिया। मठाधीश ने स्टीफन से अपनी बुनियादी ज़रूरतों के लिए कम से कम एक छोटा सा हिस्सा रखने का आग्रह किया, लेकिन उन्होंने जवाब दिया कि ईश्वर ने स्वयं यह विधान किया है कि उन्हें एक पराई भूमि में रहना है और दूसरों द्वारा उनका भरण-पोषण होना है, और ऐसा ही होना चाहिए; भेजा गया धन उन लोगों को दिया जाना चाहिए जिन्हें वास्तव में इसकी ज़रूरत है - यानी गरीबों को।

संदेशवाहक के प्रति दिया दिखाते हुए और उसे कुछ समय के लिए अपने पास रोकने के बाद, उसने उसे उसके मूल देश में अपने दोस्त के पास वापस भेज दिया, और उसके लिए धन्यवाद करते हुए प्रभु परमेश्वर से प्रार्थना की।

ऐसी सदाचार के लिए, ईश्वर की कृपा स्टीफन को कभी नहीं छोड़ती। अपनी कैद के पाँचवें वर्ष में, प्रभु ईश्वर ने उन पर एक बड़ा चमत्कार किया।

एक दिन, महान संत और चमत्कार करने वाले निकोलस की स्मृति में आयोजित पर्व के दिन, स्टीफन, अपनी आदत के अनुसार, पवित्र रात्रि जागरण में शामिल हो रहे थे। जब संत के जीवन और चमत्कारों को पढ़ा जा रहा था, वह अपनी आदत के अनुसार अपनी जगह बेंच पर बैठ गया और लंबे समय की मेहनत और जागरण से थककर झपकी लेने लगा। और देखो, उसने अपने सामने उस दिव्य पुरुष को देखा जो पहले उसके सामने प्रकट हुआ था।

'क्या तुम्हें याद है,' स्टीफन के सामने प्रकट हुए व्यक्ति ने कहा, 'मैंने तुम्हें पहले जब प्रकट हुआ था तब जो कहा था?'

स्टीफन जमीन पर गिर पड़ा और बोला:

'मैं पहचानता हूँ कि आप महान संत निकोलस हैं, लेकिन मुझे याद नहीं कि आपने क्या कहा था।'

संत निकोलस ने कहा:

'मैंने तुम्हें कहा था कि दुखी मत हो, क्योंकि तुम्हारे शिष्य मेरे हाथ में हैं, और मैंने उन्हें तुम्हें दिखाया था।'

स्टीफन ने संत के पिछले प्रकट होने की याद करना शुरू किया और उनके पैरों पर गिरकर दया की भीख मांगने लगा। संत ने कहा:

'जो मैंने तुम्हें तब बताया था, उसे अब पूरा करने आया हूँ।'

और, जैसे उसकी दृष्टि लौटाते हुए, उन्होंने स्टीफन को उठाया, उसके चेहरे पर क्रॉस का चिह्न बनाया, उसकी आँखों को छुआ और कहा:

'जिस प्रभु यीशु मसीह ने जन्म से अंधे आदमी को दृष्टि प्रदान की, वे आपकी आँखों को भी उनकी मूल दृष्टि प्रदान करें!'

और इन शब्दों के साथ, संत दृष्टि से ओझल हो गए।

भक्ति से अभिभूत, होश में आए स्टीफन ने, ईश्वर की अकथनीय दया से, पहले की तरह देखना शुरू कर दिया।

अपना दंड उठाकर, वह हमेशा की तरह चर्च से निकल गया, और अपनी कोठरी में पहुँचकर, वह निजी तौर पर अपनी चिकित्सा के लिए उत्कट प्रार्थना और धन्यवाद में लग गया। एक लंबी प्रार्थना के बाद, पहले की तरह ही अपनी

आँखों पर तौलिया ढके हुए, वह एक बार फिर चर्च लौट आए और अपनी आदत के अनुसार खड़े हो गए, अपने ऊपर हुए चमत्कार को सभी से छिपाते हुए; और किसी को यह एहसास नहीं हुआ कि उनकी दृष्टि वापस आ गई थी, जब तक कि उस दिन तक जब ईश्वर को यह उचित नहीं लगा कि उन्हें उनके स्वदेश लौटने पर सर्बिया का असली राजा नियुक्त किया जाए।

स्टीफन की दृष्टि के चमत्कारी रूप से ठीक होने के कुछ ही दिनों बाद, उनका सबसे छोटा बेटा, युवा डुशिका, गंभीर रूप से बीमार पड़ गया और उसकी मृत्यु हो गई। स्टीफन ने इस क्षति को बिना किसी शिकायत के सहन किया, और यह कहते रहे: 'प्रभु ने दिया, और प्रभु ने ले लिया', जिससे उनके आस-पास के सभी लोग स्टीफन की दृढ़ता को देखकर चकित रह गए।

एक विदेशी भूमि में निर्वासन में स्टीफन का दुखद जीवन अगले दो वर्षों तक जारी रहा। स्टीफन ने अपने निर्वासन को ईश्वर की इच्छा द्वारा उन पर रखा गया एक क्रूस मानकर जितनी भी धैर्यपूर्वक सहन किया—वह फिर भी अपने देश लौटने के लिए तरसता रहा।

और इसलिए उन्होंने माउंट अथोस को, सर्बियाई हिलैंडर मठ को एक आँसुओं भरा पत्र लिखा, जहाँ उस समय सर्बियाई बिशप—जो बाद में आर्चबिशप डैनियल बने—निवासी थे, जिनके प्रति स्टीफन के मन में हमेशा प्रेम और दोस्ती थी। अपने पत्र में, वह अपनी दुर्दशा का जीवंत वर्णन करता है और माउंट अथोस के महान बुजुर्गों के साथ मिलकर डैनियल से अपने पिता, राजा मिलुटिन, के पास मध्यस्थता करने और दया की भीख मांगने तथा उसे अपने देश वापस लाने की विनती करने के लिए कहता है।

इस मामले पर चर्चा करने के लिए माउंट अथोस में बुजुर्गों की एक आम परिषद बुलाई गई। यह निर्णय लिया गया कि सर्बियाई आर्चबिशप निकोडेमस को एक पत्र लिखा जाए और उसे चुने हुए सम्मानित बुजुर्गों के साथ, उनके बेटे और पोते की वापसी के लिए मध्यस्थता करने हेतु सर्बिया भेजा जाए।

आर्चीबिशप निकोडेमस और दूतों के प्रभावशाली पत्र और भाषणों ने पिता का हृदय पिघला दिया।

उसी समय, पंतोक्रेटर मठ का मठाधीश, जहाँ स्टीफन और उसके बेटे को रखा गया था, कॉन्स्टेंटिनोपल से सर्बिया पहुँचा। यह मठाधीश, जो एक वाक्पटु और कुशल व्यक्ति था, को बाइजेंटाइन सम्राट एंड्रोनिकोस पलाइओलोगोस ने अपने दामाद, सर्बियाई राजा मिलुटिन के पास, ग्रीक साम्राज्य के दुश्मनों के खिलाफ सैन्य सहायता का अनुरोध करने के लिए भेजा था।

राज्य के मामलों पर चर्चा करने के बाद, राजा मिलुटिन ने शाही दूत, पंतोक्राटर मठ के मठाधीश को एक निजी बातचीत के लिए आमंत्रित किया और अपने बेटे स्टीफन के बारे में पूछना शुरू किया।

मठाधीश ने पिता को अपने पुत्र के गुण, पराक्रमी कारनामों और धैर्य के बारे में विस्तार से बताया, और कहा कि सभी शाही खजाने भी उनसे तुलना नहीं कर सकते। इन विवरणों ने मिलुटिन को गहराई से प्रभावित किया। इसके अलावा, उसकी सास, साइमोनिडा की माँ, सम्राज्ञी आइरीन—जो उसके पिता के अपने बेटे के प्रति संदेह और शत्रुता का मुख्य कारण थीं—हाल ही में निधन हो गया था। इन सबके परिणामस्वरूप, मिलुटिन ने अपने बेटे को घर वापस लाने का संकल्प लिया।

उसने सम्राट एंड्रोनिकोस को एक राजदूत भेजा, यह अनुरोध करते हुए कि उसके बेटे स्टीफन और उसके पोते डुसान को उनके देश, सर्बिया वापस भेज दिया जाए। सम्राट एंड्रोनिकोस, जो स्टीफन से स्नेह करने लगे थे और उसे गहरे सम्मान की दृष्टि से देखते थे, ने सर्बियाई निर्वासित को विदाई दी और उसे उसकी राह पर भेज दिया, उसे उसकी ज़रूरत की हर चीज़ प्रदान की और उदारतापूर्वक उपहार दिए। एंड्रोनिकोस को उस पीड़ित के दृष्टि वापस पाने की जानकारी थी, लेकिन उन्होंने यह किसी को नहीं बताया, ताकि स्टीफन पर और अधिक संदेह और उत्पीड़न न आए।

इस प्रकार, एक विदेशी भूमि में आठ वर्षों के निर्वासन के बाद, स्टीफन अपने बढ़ते हुए बेटे, डुसान के साथ अपने देश लौट आया। यह पुनर्मिलन एक भावुक क्षण था। पिता ने अपने बेटे से मेल-मिलाप कर लिया। उन्होंने अपनी आजीविका के लिए उसे डायोक्लिया (ज़ेटा) के छोटे से बुडमिल क्षेत्र का प्रशासन सौंप दिया, जबकि अपने पोते दुशान को अपने पास पाला—या शायद अपने बेटे की वफादारी की गारंटी के रूप में अपने पास रखा।

तीन साल बाद, सर्बियाई राजा मिलुटिन का निधन हो गया (29 अक्टूबर 1320)। स्टेफान की सौतेली माँ, साइमोनिडा के समर्थकों ने थोड़े समय के लिए अपने बेटे कॉन्स्टेंटिन के पक्ष में अशांति भड़काई, लेकिन अधिकांश सर्बियाई कुलीनों ने सिंहासन के वैध उत्तराधिकारी, मिलुटिन के सबसे बड़े बेटे स्टेफान का साथ दिया, जो डायोक्लेया से उस समय की

सर्बियाई राजधानी, प्रज़्रिेन शहर[7762] , में, और जनवरी 1321 में उन्हें सर्बियाई धर्मगुरु निकिोडेमस द्वारा, सर्बियाई पादरी वर्ग की पूरी सभा की सहायता से, शाही मुकुट पहनाया गया। बाइज़ेंटाइन रीति-रिवाज के अनुसार, उनके बेटे, 'स्टीफन, युवा राजा', जिन्हें डुसान के नाम से जाना जाता था, को भी उनके पिता के साथ 'राजा' के रूप में ताज पहनाया गया। स्टीफन ने उरोश तृतीय के नाम से शासन करना शुरू किया। अब आँखों की पट्टी हटा दी गई, और सभी के लिए यह स्पष्ट हो गया कि महान चमत्कार करने वाले निकोलस के हस्तक्षेप से स्टेफन की दृष्टि का चमत्कारी पुनर्स्थापन हुआ था।

स्टेफान उरोश तृतीय का शासन न तो शांतिपूर्ण था और न ही सुकून भरा। आंतरिक अशांति शांत नहीं हुई थी।

स्टीफन का भाई, ग्रीक महिला साइमोनिडा का पुत्र कॉन्स्टेंटिन, ने एक सेना तैयार की और स्टीफन के खिलाफ चढ़ाई कर दी, और उससे राजसी सिंहासन उसे सौंपने की मांग की। स्टीफन ने भी, अपनी ओर से, एक सेना तैयार की और कॉन्स्टेंटिन के खिलाफ चढ़ाई कर दी। लड़ाई शुरू होने से पहले, स्टीफन ने अपने भाई को एक पत्र भेजा, जिसमें उन्होंने उसे विदेशी सैनिकों की मदद से अपने ही देश के खिलाफ युद्ध न करने का आग्रह किया, बल्कि उस क्षेत्र पर शांतिपूर्वक शासन करने का कहा जब अपने भाई को प्रदान करेंगे: 'हम दोनों इतनी विशाल भूमि में संतोषपूर्वक रह सकते हैं।' लेकिन कॉन्स्टेंटिन ने इन शांतिपूर्ण प्रस्तावों पर कोई ध्यान नहीं दिया; वह लड़ाई में गया और मारा गया, जबकि उसके लोग स्टेफन के पक्ष में चले गए।

स्टेफन तृतीय के खिलाफ एक और विद्रोह उनके चचेरे भाई, स्रेम के राजा और मिलुटिन के भाई ड्रैगुटिन के बेटे व्लादिस्लाव ने किया; लेकिन यह विद्रोह भी स्टेफन के पक्ष में समाप्त हो गया। व्लादिस्लाव को उसके सामने आत्मसमर्पण करने के लिए मजबूर होना पड़ा।

अपनी पहली पत्नी, एक बुल्गारियाई राजकुमारी, की मृत्यु के बाद, स्टीफन उरोश ने दो बार और विवाह किया: एक बार अचेया के ड्यूक फिलिप के बेटे[7763] की बेटी ब्लांका से, और अपनी इस दूसरी पत्नी की मृत्यु पर, थेस्सालोनिकी के गवर्नर जॉन पलाइओलोगोस की बेटी मारिया से।

शांति के समय, स्टीफन अपने प्रजा की भलाई और चर्च के मामलों का ध्यान रखते थे। उन्होंने पिछले चार्टरों की पुष्टि की और चर्चों के लिए भूमि-धार और अन्य राजस्व सुनिश्चित किए। उन्होंने अपने राज्य में आस्था की शुद्धता और विधिर्म के उन्मूलन को भी सुनिश्चित किया। एक समकालीन ने स्टीफन उरोश तृतीय के संबंध में अपनी सुसमाचार पुस्तक में निम्नलिखित प्रविष्टि की:

'प्रभु ने उसे अपने देश के लिए एक उज्ज्वल और तेजस्वी तारे के रूप में चुना और महिमामंडित किया; उसने अपने देश को मजबूत किया, कई शहरों और क्षेत्रों पर अधिकार किया, और अपने दुश्मनों को बिखेर दिया। उसने अपने बेटे को अधर्मी और दुष्ट बाबूनियों के खिलाफ भेजा। ईश्वर की मदद से, पुत्र ने उन पर विजय प्राप्त की, बहुत खून बहाया, बहुत से कैदी बनाए, और अपने पिता के पास लौट आया।" – 'बाबूनी' बोगोमिल थे, जो खतरनाक विधिर्मी थे और मैसेडोनिया के प्रिलिप शहर के पास बाबुना के पहाड़ी क्षेत्र में बस गए थे, और वहां से उन्होंने ऑर्थोडॉक्स पर हमले किए।

स्टेफान उरोश तृतीय के अधीन, सर्बिया में कई वर्षों तक पूर्ण शांति रही; न तो कोई आंतरिक अशांति थी, और न ही पड़ोसियों के साथ कोई युद्ध हुआ। धर्मपरायण राजा स्टेफान ने स्वयं को परोपकारी कार्यों और ईश्वर के चर्चों के निर्माण और सजावट के लिए समर्पित कर दिया, अपने देश में और उसकी सीमाओं से परे भी।

लेकिन अपने शासन के अंत में, पड़ोसी बुल्गारिया के साम्राज्य के साथ एक भयंकर युद्ध छिड़ गया, जो एक ही धर्म और जातीय मूल का साझा करता था। सर्बियाई राजा मिलुटिन के अधीन, बुल्गारिया—जो आंतरिक संघर्षों से तबाह और तातारों के हमलों से बर्बाद हो गया था—काफी कमजोर पड़ गया था और वह शक्ति में सर्बिया का मुकाबला नहीं कर सकता था। जब बदिन का डेस्पोट, माइकल, बुल्गारिया का तसर बना[7764] , तो उसने सभी खंडित बुल्गारियाई क्षेत्रों पर अपनी शक्ति को सुदृढ़ किया, और सर्बिया द्वारा कब्जा किए गए कुछ शहरों को वापस लेने की कोशिश की; वास्तव में, काफी शक्ति प्राप्त करने के बाद, उसने सर्बिया को अपमानित करने की साजिश भी रची।

बुल्गारिया के तसर माइकल ने स्टीफन उरोश तृतीय को एक कड़वी अपमानित किया। स्टीफन की अपनी बहन, मिलुटिन की बेटी अन्ना (जिन्हें नेडे के नाम से भी जाना जाता है), से विवाहित, उसने बिना किसी कारण के अपनी पत्नी को

[7762] प्रज़्रिेन नगर पुरानी सर्बिया में, जो अब तुर्की का हिस्सा है, बेलागा ड्रिना नदी के पास, इसकी छोटी बाईं सहायक नदी, मारित्सा पर स्थित है।

[7763] वर्तमान ग्रीस के दक्षिण में एक क्षेत्र।

[7764] बदिन या विदिन के माइकल (डैन्यूब नदी पर स्थित विदिन नगर से) 1323 से 1330 तक बुल्गारिया के तसर थे।

अपने पास से निकाल दिया, और उसे उनके छोटे बेटे स्टीफन के साथ एक मठ में बंद कर दिया, जबकि उसने खुद थियोडोरा से शादी कर ली, जो अंड्रोनिकोस द यंगर—जो बर्ज़िंटाइन सिंहासन का दावेदार था—की बहन और बुल्गारियाई ज़ार स्वियातोस्लाव की विधवा थी। दोनों पड़ोसी और संबंधित जनजातियों के शासकों के बीच शत्रुता इस तथ्य से और भी बढ़ गई कि सर्बियाई राजा ने वैध बाइजेंटाइन सम्राट एंड्रोनिकिस द एल्डर का पक्ष लिया, जो कॉन्स्टेंटिनोपल में कैद होने के दौरान भी सर्बियाई राजा स्टीफन को पसंद करते थे और उन्हें बहुत सम्मान देते थे; जबकि बुल्गारियाई ज़ार माइकल ने एंड्रोनिकिस द एल्डर के प्रतिद्वंद्वी, उनके पोते एंड्रोनिकिस द यंगर के साथ गठबंधन किया था, जो अपने दादा से सिंहासन छीनने में सफल रहा था। एंड्रोनिकिस द यंगर और बुल्गारिया के माइकल ने सर्बिया के खिलाफ एक रक्षात्मक और आक्रामक गठबंधन बनाया। इन दोनों सहयोगियों ने 1330 में एक साथ सर्बिया पर हमला करने का संकल्प लिया।

स्टेफान उरोश को इन शत्रुतापूर्ण तैयारियों का पता था और वह धीरे-धीरे अपने देश की रक्षा के लिए हथियारों का भंडार जमा करके और सेना इकट्ठा करके तैयारी कर रहे थे। उस समय तक, उनका बेटा स्टेफान डुसान वयस्क हो चुका था और अपने पिता को सैन्य तैयारियों में सहायता कर रहा था।

बुल्गारिया के तसर माइकल ने 1330 की गर्मियों में एक अभियान शुरू किया। उसके पास अपने पंद्रह हजार तक बुल्गारियाई सैनिक थे, लेकिन लगभग उतनी ही संख्या में सहायक और भाड़े के सैनिक भी थे – वलाकियाई[7765] (वॉयवोड इवांका बेसाराब के अधीन), काले तातार, और यासियाई (जो अब मोल्दोवा में रहते थे)[7766] । सर्बों ने इस आक्रमण को अधर्मी और मूर्तिपूजक लोगों के आक्रमण के रूप में देखा।

साथ ही, समझौते की शर्तों के अनुसार, बीजान्टिन सम्राट एंड्रोनिकिस द यंगर ने भी सर्बों के खिलाफ कार्रवाई की। उसके पास बहुत कम सैनिक थे। उसने शत्रुता शुरू करने की हिम्मत नहीं की और मैसेडोनिया में सर्बियाई सीमा पर इस बात का इंतजार करने के लिए मोर्चा संभाल लिया कि सिर्बों के साथ बुल्गारियाई संघर्ष का अंत कैसे होगा।

सर्बिया के खिलाफ दो शक्तिशाली राजाओं की तीव्र प्रगति ने निश्चित रूप से सर्बियाई राजा को सतर्क कर दिया। यद्यपि वह पहले से ही तैयार था, वह खून-खराबे से बचना चाहता था। उसने बुल्गारियाई राजा को एक संदेश भेजने का फैसला किया, जिसमें उसे खून-खराबे को रोकने के लिए कहा गया। इस संदेश में उसने लिखा: 'आप बुल्गारियाई और सर्बियाई लोगों को नष्ट करने के लिए क्यों निकल पड़े हैं? जो कुछ ईश्वर ने आपको दिया है वह आपके हाथ में है; उससे संतुष्ट रहें, और जो दूसरों का है उसकी लालसा न करें; जो कुछ ईश्वर ने दूसरों को दिया है उसकी लालसा न करें। यदि आप इतने युद्धप्रिय हैं, तो अन्य धर्मों के लोगों के विरुद्ध हथियार उठाएँ, न कि मिसीह के लोगों के विरुद्ध, जिनके लिए मैं उनकी कृपा से एक चरवाहा हूँ, और जिन्होंने आपको कोई हानि नहीं पहुँचाई है। सोचिए कि कितना खून बहेगा, कितनी माताएँ विधवा होंगी, दोनों पक्षों के कितने शव पक्षियों और जानवरों द्वारा खाए जाने के लिए छोड़ दिए जाएँगे, और ईश्वर उन्हें नष्ट करने वाले को कितनी कठोर सजा़ देगा? हमें शांति से रहने दें। जो आपका हक है, उसे अपने कब्जे में लें और अपने लोगों के पास लौट जाएँ। क्योंकि जो दूसरे की चीज़ पर कब्ज़ा करना चाहते हैं, वे उससे भी वंचित हो जाते हैं जो, ऐसा लगता है, उनके पास पूरी तरह से सुरक्षित था। इस प्रकार सर्व-द्रष्टा की दृष्टि न्याय करती है।'

लेकिन स्टीफन का शांति का प्रभावशाली संदेश माइकल पर कोई असर नहीं हुआ; बल्कि, उसने कहा: 'अगर सर्बियाई राजा कल मेरे सामने आज्ञाकारिता में सिर झुकाए हुए नहीं आया, तो मैं उसे अपमानजनक रूप से बंधकर मेरे सामने लाने और दर्दनाक मौत देने का आदेश दूँगा।'

स्टीफन के पास ईश्वर की मदद पर भरोसा करने और दुश्मन से युद्ध करने के अलावा कोई चारा नहीं था।

[7767]सर्बियाई सेनाएँ डोब्रिच घाटी में सर्बियाई-बुल्गारियाई सीमा के पास, टोप्लिका और मोरावा नदियों के संगम पर इकट्ठा हो रही थीं, जहाँ पहले कई बार भयंकर अंतर्राष्ट्रीय लड़ाइयाँ हुई थीं। बुल्गारियाई ज़ार के ब्दिन से वहाँ पहुँचने की उम्मीद थी। इस बीच, खबर आई कि माइकल अपनी सेना के साथ सोफिया होते हुए मैसेडोनिया में प्रवेश कर गया था, शायद अपने सहयोगी, बीजान्टिन सम्राट एंड्रोनिकोस के साथ मिलकर लड़ने की उम्मीद में। तब स्टीफन ने अपनी सेना को दक्षिण की ओर ले जाने में तेजी की। उनके मार्ग में उनके पिता द्वारा निर्मित, कुमानोवो के पास नागोरीचिन में सेंट जॉर्ज और सारंडापोर में सेंट जोआचिम के मठ थे। यहाँ, राजा स्टीफन ने विशेष रूप से विजयी सेंट जॉर्ज से, जो उनके पूर्वजों, धर्मपरायण सर्बियाई शासकों की सहायता के लिए आए थे, पूरी श्रद्धा से प्रार्थना की।

[7765] वालाचिया – वर्तमान रोमानियाई राज्य का दक्षिण-पश्चिमी भाग।

[7766] मॉल्डोवा – वलाचिया के उत्तर में। बाद वाले के साथ मिलकर, यह रोमानिया का साम्राज्य बनाता है।

[7767] सोफिया बुल्गारिया का एक शहर है, जो बुल्गारियाई रियासत की वर्तमान राजधानी है।

सर्ब ज़ेमलना गाँव के पास, सर्बियाई सीमा पर, स्ट्रूमा नदी पर बुलगारियाई शविरि तक पहुँचे; वे वेल्बुज्दा (अब क्युस्टेंडलि कहा जाता है) शहर के ठीक पास, कामेंचे धारा पर रुके।

लगभग तीन दनिों तक, दोनों शविरिों ने बनिा लड़ाई के संदेशों का आदान-प्रदान कयिा। सर्बयिा के राजा स्टीफन कुछ देर से आने वाले कुलीनों के आगमन का इंतजार कर रहे थे, जबकि बुल्गारियाई राजा की सेना के कई लोग राशन इकट्ठा करने के लिए आसपास के ग्रामीण इलाकों में बखिर गए थे।

आखरिकार, शनविार 28 जुलाई का दनि आ गया। सर्बियाई शविरि में हलचल मच गई; हर कोई युद्ध की तैयारी कर रहा था। सर्बों की सुस्ती को देखते हुए, बुल्गारियाई ज़ार ने उस दनि हमले की उम्मीद नहीं की थी और अपने सैनकिों को इकट्ठा नहीं कयिा था, जो एक बड़े क्षेत्र में बखिरे हुए थे।

युवा स्टेफन डुसान, जो राजा का वीर पुत्र था, ने सर्बियाई सैनकिों को युद्ध के लिए तैयार कयिा था। शानदार कवच पहने और स्टेफन डुसान के नेतृत्व में भाड़े के सवारों के एक अलग दल के साथ, सर्बियाई वशिष्टि सेना बुल्गारियाई लोगों पर बढ़ी। एक भयंकर युद्ध छड़ि गया, जसिमें दुशांन ने व्यक्तगित बहादुरी का उदाहरण पेश कयिा। जल्द ही बुल्गारियाई सेना, जसिने ऐसी संगठति आक्रमण की कल्पना भी नहीं की थी, पराजति हो गई और भाग खड़ी हुई।

बुल्गारयिा के ज़ार माइकल स्वयं भी भाग गए। उनका घोड़ा उनके नीचे लड़खड़ा गया, और ज़ार उससे गरि पड़े, जसिसे उन्हें गंभीर चोटें आईं। फरि सर्बों ने उन्हें घेर लयिा, और स्टेफान डुसान ने स्वयं उनका सरि कलम कर दयिा।

उस दुर्भाग्यपूर्ण बुल्गेरयिाई ज़ार के शव को सर्बयिाई राजा के पास ले जाया गया, जसिने दुख व्यक्त करते हुए कहा कि उसके प्रतदि्वंद्वी ने उसकी शांति की पेशकशों और चेतावनयिों पर ध्यान नहीं दयिा था।

इस क्रूर रक्तपात के बाद, पूरी बुल्गारियाई सेना सर्बयिाई राजा के सामने आत्मसमर्पण कर गई।

युद्ध के अगले दनि, रवविार की सुबह-सुबह, बुल्गारियाई लोगों से लूटा गया माल गंभीरता से सर्बयिाई राजा को प्रस्तुत कयिा गया: हथयिार, कीमती शाही वस्त्र और राजसी सामान, शानदार घोड़े; बुल्गारियाई बोयार (कुलीनों) को बेड़यिों में जकड़कर लाया गया था। वे वशि्वास नहीं कर सके कि उनका ज़ार मारा गया था; वे सोचते थे कि वह मौत से बच नकिला है। लेकनि ज़ार की लाश का दृश्य उन्हें अपने ज़ार की अपरविर्तनीय मृत्यु के बारे में आश्वस्त करने के लिए काफी था, और उनके लिए जो कुछ बचा था वह था रोना। बोयारों की वनितयिों को मानते हुए, राजा ने आदेश दयिा कि मारे गए बुल्गारियाई ज़ार को नागोरीचानी में सेंट जॉर्ज के सर्बयिाई मठ में सम्मान के साथ दफनाया जाए।

अपने पर प्रदान की गई वजिय के लिए प्रभु ईश्वर का धन्यवाद करते हुए, राजा स्टीफन ने तुरंत अपनी पत्नी मारयिा और सर्बयिाई आर्चबशिप डैनयिल को, साथ ही पूरे सर्बयिाई सनिड को, नम्निलखिति संदेश के साथ वजिय की सूचना दी: 'यह ज्ञात हो कि ईश्वर की मदद और हमारे पवत्रि प्रभु, आदरणीय पति समियिन और संत सावा के मध्यस्थता से, और आपकी प्रार्थनाओं के माध्यम से, पवत्रि आत्मा की मध्यस्थता, शक्ति और सामर्थ्य से सशस्त्र और संरक्षति होकर, मैं, सर्बयिा का राजा, हमारे प्रयि पुत्र स्टीफन और हमारे योद्धाओं, मेरे देशभक्तों के साथ मलिकर, हमारे वशि्वासघाती दुश्मन, बुल्गारियाई ज़ार—जो कई वदिेशी जनजातयिों के साथ आया था और हमारे देश के खलिाफ घमंड करता था—को ज़ेम्लेन नामक स्थान पर हुई लड़ाई में हरा दयिा है, हमारे राज्य में, ज़ेम्लेन नामक स्थान पर हुई एक लड़ाई में, हमने उनके बड़े धन-संपत्ति और गौरव को ईश्वर की कृपा से छीन लयिा और स्वयं बुल्गारियाई ज़ार को मार गरिाया। इस पर आनंदति होकर, ईश्वर की उचति स्तुति करो। हम, अपनी ओर से, बुल्गारियाई भूमि में अपनी आगे की यात्रा पर नकिल रहे हैं।'

यह आनंददायक समाचार पूरे सर्बयिा में बड़े उत्साह के साथ प्राप्त कयिा गया, और ईश्वर की इस महान दया को चहि्नति करने के लिए सभी चर्चों में गंभीर प्रार्थनाएँ आयोजति की गईं।

राजा स्टीफन अपने पुत्र के साथ बुल्गारयिा में व्यवस्था बहाल करने के लिए एक गंभीर जुलूस में नकिल पड़े। उनके साथ बंदी बुल्गारियाई बोयार भी थे। जल्द ही, बुल्गारयिा में ही रहकर नगरों और प्रांतों का शासन करने वाले बोयार उनसे मलिने के लिए बाहर आए; उनके नेतृत्व में मारे गए त्ज़ार माइकल के भाई बेलाउर थे। पूरे बुल्गारयिा की ओर से, उन्होंने सर्बयिाई शासक के अधकिार को स्वीकार कर लयिा और बुल्गारयिा और सर्बयिा के एकल राज्य में वलिय के लिए तैयार हो गए।

लेकनि स्टीफन ऐसा नहीं चाहते थे। वह अपनी अन्यायपूर्ण और अपमानति बहन अन्ना को, उनके बेटे स्टीफन के साथ, बुल्गारयिा के सहिासन पर बहाल करना चाहते थे। माइकल पर अपनी जीत के तुरंत बाद, उन्होंने मठवास में बंदी उसकी बहन को संदेश भेजा, जसिमें उन्होंने उसे हौसला न खोने और एक बेहतर भवषि्य की आशा करने के लिए कहा।

अब, एक वशिष दूतत्व के माध्यम से, उन्होंने उसे और उसके बेटे को बुल्गारयिा की राजधानी टर्नोवो आने का नमिंत्रण दयिा, और आवश्यक सैन्य सहायता भेजी।

राजा स्टीफन ने बुल्गारयिाई बोयारों को घोषणा की कि वह स्वयं व्यक्तगित रूप से बुल्गारयिाई सहिासन का त्याग कर रहे हैं और अपनी बहन के बेटे, स्टीफन (शशि्मान द्वतिीय) को बुल्गारयिा का राजा नयिुक्त कर रहे हैं, जसिके प्रति उन्हें अपनी नष्ठिा देनी है; वे स्वयं पूर्ण सुरक्षा में रह सकते थे और अपने पूर्व पदों पर बने रह सकते थे।

पराजतिों के प्रति इतनी उदारता दखिाने के बाद, सर्बयिाई राजा अपनी सेना के साथ अपने देश लौट आया।

[7768]बुल्गारयिा से लौटने के तुरंत बाद, डेचानी के स्टीफन ने अपने बेटे दुशान के साथ मलिकर मैसेडोनयिा में एक अभयिान शुरू कयिा। राजा बुल्गारयिा के माइकल के साथ गठबंधन के लिए एक और दुश्मन, बीजान्टनि सम्राट को दंडति करना चाहता था। यह अभयिान एक सप्ताह तक चला। सम्राट के साथ कोई मुठभेड़ या लड़ाई नहीं हुई; सर्बों ने उन शहरों और कलिों को फरि से हासलि कर लयिा जो अस्थायी रूप से एंड्रोनकिोस द्वारा कब्जा कए गए थे, जो अब भाग गया था, और उन्होंने वार्डर नदी के कनिारे कई शहरों — अर्थात् वेलेस, प्रोसेक और श्टपि — को भी अपने में मलिा लयिा, जो स्वेच्छा से उनके सामने आत्मसमर्पण कर चुके थे। इन शहरों में सर्बयिाई गवर्नर छोड़ने के बाद, दोनों कमांडर घर लौट आए: पति नेरोदमि्ल्या[7769] में अपनी संपत्ति पर, और बेटा स्कादर[7770] लौट गया।

इस प्रकार, सर्बों के लिए कठनि वर्ष 1330 का सुखद अंत हुआ।

बाहरी शत्रुओं पर वजियों के बाद, जन्हिोंने सर्बयिाई हथयिारों को गौरव दलिाया था, राजा स्टीफन ने स्वयं को पूरी तरह से धर्मार्थ कार्यों, ईश्वर के चर्चों के नर्मिाण और सजावट, और अन्य धार्मकि प्रयासों के लिए समर्पति कर दयिा, जो हमेशा से उनके जीवन की खुशी रहे थे।

अपने पूरे जीवन में, संत स्टीफन न केवल अपने देश में बल्कि उसकी सीमाओं से परे भी ऑर्थोडॉक्स पवत्रि स्थलों के भक्त थे। पहले की तरह, और वशिष रूप से अब, उन्होंने यरूशलेम और पूरे पवत्रि भूमि, माउंट सनिाई, मस्रि और अलेक्जेंड्रयिा, साथ ही कॉन्स्टेंटनिोपल, वशिष रूप से वहां के पैंटोक्रैटर मठ को उदार और शानदार उपहार भेजे, जहाँ उन्होंने बंदी जीवन में रहते हुए समय बतिाया था; उन्होंने थेस्साली में ' ' और '[7771] ' के मठों को, और वशिष रूप से एथोस के पवत्रि पर्वत को भी, दान दयिा, जहाँ शानदार हलिेंडर लाव्रा स्थति था, जसिे सर्बयिाई क्रालों और बाद में ज़ारों द्वारा स्थापति और बनाया गया था। उदार उपहार भेजने के अलावा, राजा स्टीफन ने इनमें से कई मठों को आय-उत्पादक संपत्तयिाँ प्रदान कीं और अपने चार्टरों से इन अनुदानों की पुष्टि की।

स्टीफन के पूर्वजों, सभी पछिले सर्बयिाई शासकों ने, अपने लिए 'ज़ादुश्बनिास'—अर्थात् मठों के साथ चर्च—बनवाए थे, जनिमें उन्होंने यह वसीयत की थी कि उन्हें दफनाया जाए और उनकी आत्मा की शांति के लिए उनकी स्मृति मनाई जाए। इसी तरह, बुल्गारयिाई लोगों पर वजिय के बाद, जसिसे उसे खजाना मलिा था, संत स्टीफन उरोश III ने प्रभु ईश्वर के प्रति कृतज्ञता और अपनी आत्मा की शांति के लिए, प्रभु यीशु मसीह के सम्मान में एक चर्च बनाने का संकल्प लयिा।

सलाह और सहायता के लिए, उन्होंने अपने सर्बयिाई आर्चबशिप डैनयिल की ओर रुख कयिा, जन्हिें वह सम्मान और प्यार करते थे। उनके और उनके वश्विसनीय बोयारों के साथ, उन्होंने अपने क्षेत्रों में एक ऐसी जगह की तलाश शुरू की जो एक भव्य चर्च के लिए योग्य और उपयुक्त हो। वे कई स्थानों पर गए; अंतत; स्टेफन ने प्रज़िरेन के उत्तर-पश्चमि में, पेक शहर से तीन घंटे की दूरी पर, एक स्थान जसिे डेचानी कहा जाता है, में स्थति सफेद ड्रनि नदी में मलिने वाली बस्ट्रिकिा नदी के कनिारे एक पहाड़ी क्षेत्र को चुना—जो बाद में सर्बयिाई पैट्रआर्कों का आसन बना। यह स्थान असाधारण रूप से सुंदर है। यह वभिन्नि प्रकार के पेड़ों से ढकी एक छोटी घाटी है, जो झरनों से समृद्ध है और बस्ट्रिकिा नदी के सुंदर, शुद्ध पानी से सचिति है। यह सभी ओर से, वशिष रूप से पश्चमि की ओर, ऊँचे पहाड़ों से घरिी हुई है। यहीं पर

[7768] वर्डार नदी मैसेडोनयिा के तुर्की क्षेत्र से होकर, काल्कानडेलेन शहर के पास बहती है।

[7769] नेरोदमि्ल्या नदी नेरोदमि्का पर स्थति है, जो ऊपरी वर्दार की एक सहायक नदी है, यह एजयिन सागर (जसिमें वर्दार नदी बहती है) और डेन्यूब (जसिमें सट्निकिा नदी—जसिका स्रोत यहीं है—प्रसद्धि कोसोवो मैदान से होकर इबार नदी में मलिती है, जो सर्बयिाई मोराव नदी में खाली होती है, जो आगे चलकर डेन्यूब में मलिती है) के बीच के जलवभिाजक के पास स्थति है।

[7770] स्कदर, स्कदर झील के दक्षणि में, बोयाना नदी के स्रोत के पास, जो एड्रयिाटकि सागर में बहती है।

[7771] थेस्साली अब तुर्की में स्थति है, जो अपने उत्तर-पूर्व में ग्रीस के राज्य से सटी हुई है।

स्टीफन ने एक भव्य चर्च का निर्माण करने का निर्णय लिया। आर्चबिशप डैनियल ने इस स्थल को आशीर्वाद देकर पवित्र किया, और निर्माण कार्य तुरंत शुरू हो गया।

स्टेफन उरोश ने एड्रियाटिक सागर के किनारे अपने क्षेत्रों से कलाकारों और कारीगरों को बुलाया। बड़ी संख्या में मजदूर सामग्री लाना शुरू कर दिए – विभिन्न प्रकार के पत्थर, बहुरंगी कीमती संगमरमर और इसी तरह की अन्य चीजें। सबसे पहले, मठ के लिए क्षेत्र को चिह्नित किया गया और ऊँची किलेबंदी वाली दीवारों और मीनारों से घेर लिया गया; दक्षिणी ओर एक द्वार था, जिसके ऊपर सबसे ऊँची मीनार खड़ी थी। अंदर, भित्तियों के सहारे संतों के लिए कोठरियाँ बनाई गईं, जो पक्षियों के घोंसलों जैसी थीं। एक सामूहिक भोजन कक्ष बनाया गया, जो अपने आकार और विशेष रूप से अपनी सजावट की कलात्मक गुणवत्ता के लिए विशिष्ट था। रसोई और बेकरी के लिए अलग-अलग सुविधाएं प्रदान की गईं। महाधर्माध्यक्ष के लिए एक भव्य अलग इमारत बनाई गई। लेकिन मुख्य ध्यान और प्राथमिक चिंता दीवारों के भीतर मठ के मैदान के केंद्र में, प्रभु के स्वर्गारोहण के भव्य चर्च के निर्माण पर केंद्रित थी। पूरा विशाल चर्च बहुरंगी तराशे हुए संगमरमर से बना था, जो असाधारण कलात्मकता और सुंदरता वाली नक्काशी, स्तंभों और मेहराबों से सुसज्जित था। यह उल्लेखनीय इमारत आज तक सुरक्षित है। यहाँ एक रूसी यात्री, ई[7772] , जिन्होंने लगभग पचास साल पहले इस सर्बियाई तीर्थस्थल का दौरा किया था, का वर्णन है:

'यह चर्च बड़ा और ऊँचा है, एक क्रॉस के आकार में बना है, जिसमें एक ही ऊँचा, गोल गुंबद है। बाहरी दीवारें भी अपनी भव्यता में प्रभावशाली हैं: नीचे से ऊपर तक, वे साफ-सुथरे क्षैतिज पट्टियों में व्यवस्थित संगमरमर की पट्टियों से बनी हैं: सबसे निचली पंक्ति सफेद संगमरमर की है, दूसरी गुलाबी, तीसरी फिर से सफेद, चौथी धूसर; फिर वही पैटर्न फिर से शुरू होता है। यह भी ध्यान देने योग्य है कि निचली पंक्ति हमेशा चौड़ी होती है, दूसरी संकरी, और तीसरी और चौथी और भी संकरी। चर्च की छत सीसे से ढकी हुई है; गुंबद भी सीसे से ढका हुआ है, इतना मजबूत कि कहा जाता है कि 1335 में चर्च के बनने के बाद से गुंबद की छत को कभी मरम्मत की आवश्यकता नहीं पड़ी है। समय के साथ गुंबद पर लगी सीसे ने एक अजीब चमक धारण कर ली है, जो तांबे के रंग जैसी दिखती है। गुंबद पर एक बड़ा क्रॉस अखंड रूप से खड़ा है, जिसे कहा जाता है कि वह शुद्ध चांदी का बना है। चर्च के पूर्वी हिस्से में, उच्च वेदी की प्रमुख वृत्ताकार योजना देखी जा सकती है, जिसके दोनों ओर संत निकोलस और संत डेमेट्रियस को समर्पित दो पार्श्व चैपल, उच्च वेदी की प्रोकोमिडिया और सैक्रेस्टी की दो छोटी वृत्ताकार योजनाएँ हैं। ये पाँच आपस में जुड़ी हुई वृत्ताकार योजनाएँ रेखाओं का एक असाधारण रूप से सुंदर मेल बनाती हैं।

बाहरी भव्यता और सुंदरता की बराबरी मुख्य चर्च और पार्श्व चैपल की आंतरिक सजावट से होती थी, जो नक्काशीदार पत्थर, सोने और अन्य कीमती सामग्रियों से तैयार की गई थी। चर्च को धार्मिक अनुष्ठानों के वस्त्रों, सोने और चांदी के बर्तनों, और मोतियों तथा रत्नों से सुसज्जित कीमती कपड़ों से बने धार्मिक परिधानों से भरपूर सजाया गया था।

इस भव्य और शानदार चर्च का निर्माण पूरा करने के बाद, स्टीफन ने अपने धर्मनिष्ठ जीवन के लिए प्रसिद्ध, एबॉट आर्सेनियस को इसका एबॉट नियुक्त किया और आर्चबिशप डैनियल के नेतृत्व में सर्बियाई पुरोहितों की उपस्थिति में एक समारोह में नव-निर्मित चर्च को विधिवत समर्पित किया। मठ के भविष्य को सुरक्षित करने के लिए, ईStefan Uroš ने अपने चार्टर के माध्यम से मठ को अपने विशाल क्षेत्रों के विभिन्न हिस्सों में कई गाँव, जमींदारियाँ और अन्य आय उत्पन्न करने वाली संपत्तियाँ प्रदान कीं।

मुख्य चर्च के दक्षिणी हिस्से में अपने संरक्षक और मध्यस्थ, संत निकोलस को समर्पित पार्श्व चैपल के अलावा, स्टीफन ने इस संत की अनंतकालीन पूजा के लिए मठ के बाहर, पास में ही उनके सम्मान में एक अलग चर्च बनवाया।

संत स्टीफन उरोश हमेशा गरीबों के प्रति अपने प्रेम और दुर्भाग्यपूर्ण लोगों के प्रति अपनी करुणा के लिए प्रसिद्ध रहे थे, और अब उन्होंने विशेष रूप से इस तरह की देखभाल के लिए खुद को समर्पित कर दिया। डेचानी मठ से तीन वर्स्ट की दूरी पर, उन्होंने अपने पूरे राज्य के बीमारों, विकलांगों और बुजुर्गों की देखभाल के लिए एक और विशेष मठ स्थापित किया। इस धर्मार्थ संस्थान के विशाल वार्डों में बिस्तरों और बीमारों तथा विकलांगों के लिए आवश्यक हर चीज़ से सुसज्जित थे। दुर्भाग्यपूर्ण पीड़ितों की देखभाल के लिए संतों का एक बड़ा समुदाय इकट्ठा किया गया था। स्टीफन

[7772] ए. एफ. हिल्फर्डिंग; देखें संकलित कृतियाँ, खंड तीन: बोस्निया, हर्जेगोविना और ओल्ड सर्बिया। सेंट पीटर्सबर्ग, 1873, पृ. 129.

स्वयं अक्सर इस मठ का दौरा करते थे। दुर्भाग्यपूर्ण लोगों की मदद करने में उन्हें बहुत आनंद आता था। कभी-कभी वह राजा के रूप में सीधे अस्पताल आते थे और अपने शब्दों और बातचीत से दुखी लोगों को सांत्वना देते थे; तो कभी वह एक सैनिक के भेष में आकर उदार दान बाँटते थे। इस संस्था को शाही अनुदान और दान से भी उदारतापूर्वक सहायता मिलती थी। बीमार और विकलांग लोग सर्बिया के कोने-कोने से यहाँ आते थे; कुछ, ठीक होने पर, अन्य मरीजों के लिए जगह बनाते थे, जबकि अन्य अपनी पीड़ा के अंत तक यहाँ ही रहते थे।

अपनी मृत्यु से ठीक पहले, स्टीफन के सदा-वफादार मध्यस्थ और सहायक, चमत्कार करने वाले संत निकोलस, उनके सामने प्रकट हुए और कहा:

'स्टेफन, अपने अंत के लिए तैयार हो जाओ: तुम्हें जल्द ही प्रभु के सामने उपस्थिति होना है!'

स्टेफान उरोश तृतीय के जीवन के अंतिम दिनों एक बड़ी विपत्ति से प्रभावित थे - उनके पुत्र, 'युवा राजा' स्टेफान डुसान, का अपने पिता के प्रति शत्रुतापूर्ण रवैया, जिसका अंत लंबे समय से पीड़ित स्टेफान उरोश की शहादत में हुआ।

स्टेफान डुसान, जिसने बुल्गारियाई लोगों के खिलाफ युद्ध में बहादुरी के कार्यों के माध्यम से खुद को प्रतिष्ठित किया था, ज़ेटा क्षेत्र पर शासन करता था। उसकी सेवा में मौजूद स्वार्थी बोयार (जागीरदारों) ने उसे अपने पिता को सिंहासन से वंचित करने और पूरी सर्बिया का राजा बनने के लिए उकसाना शुरू कर दिया। उन्होंने स्तेफान को यह कहकर डराया कि उसका भी वही हश्र होगा जो उसके पिता का हुआ था, जिन्हें उनके दादा मिलुटिन ने बचपन में अंधा कर दिया था। महत्वाकांक्षी स्तेफान उनकी बदनामी पर यकीन कर गया, और उसके प्रांत में अपने पिता के खिलाफ विद्रोह भड़क उठा।

उरोश संघर्ष नहीं चाहता था; उसने विद्रोह को दबाने के लिए कदम उठाए और, लंबी बातचीत के बाद, अपने बेटे से मिला, जिसने अपने पिता के खिलाफ कोई कार्रवाई न करने का वादा किया। स्टीफन उरोश ने एक बार फिर अपने बेटे को शांति से रहने दिया, और ईश्वर में अपनी आशा रखी। लेकिन बोयारों को यह मंजूर नहीं था। उन्होंने दुशां को यह बताना शुरू कर दिया कि उसके पिता उसके खिलाफ एक गुप्त रंजिश रखते हैं और उसे नष्ट कर देंगे। यह मानकर, स्टीफन अपनी मातृभूमि छोड़कर विदेशी भूमि में भागने वाला था, लेकिन बोयारों ने उसे ऐसा करने की अनुमति नहीं दी और एक बार फिर स्टीफन से अपने पिता का अंत करने का आग्रह किया। दुशां उनकी बात मान गया - और सर्बिया में एक बड़ा अत्याचार किया गया।

अपने बेटे के साथ एक सुलह बैठक के बाद, स्टीफन उरोश अपने राज्यों में शांति से रहते थे, एक महल से दूसरे महल जाते थे, स्वयं को धर्मार्थ कार्यों के लिए समर्पित कर दिया और अपनी सुरक्षा के लिए कोई विशेष उपाय नहीं किया। जब स्टीफन उरोश नेरोदिमिले के पास पेट्रिच के एकांत पहाड़ी किले में ठहरे हुए थे, तब स्टीफन डुसान के नेतृत्व में ज़ेटियाई बोयार अचानक वहाँ पहुँच गए, उन्होंने किले को घेर लिया और स्टीफन उरोश को उनके पूरे परिवार के साथ कैद कर लिया। दुशांन ने आदेश दिया कि स्टीफन उरोश को ज्वेचन के दूरस्थ, एकांत और दुर्गम किले में ले जाया जाए[7773], जबकि उसकी पत्नी और बच्चों को कहीं और ले जाया गया।

लेकिन मामला यहीं खत्म नहीं हुआ। यह निर्णय लिया गया कि बूढ़े सर्बियाई राजा का एक बार और हमेशा के लिए अंत कर दिया जाए। स्तेफान डुसान के आदेश पर, उनके कुछ करीबी सहयोगी ज्वेचन के लिए रवाना हुए, और स्तेफान उरोश का महल[7774] में गला घोंटकर शहीद कर दिया गया।

शहीद का शरीर नवनिर्मित डेचानी मठ में लाया गया और स्टीफन द्वारा स्वयं निर्मित आरोहण चर्च के भीतर एक भव्य मकबरे में भव्यतापूर्वक दफनाया गया।

कहा गया कि स्तेफान उरोश की मृत्यु प्राकृतिक कारणों से हुई थी, लेकिन, बेशक, जल्द ही सभी ने सच्चाई जान ली और दिवंगत राजा को शहीद मान लिया।

सात साल बाद, डेचानी मठ के चर्चिल को एक चमत्कारी साक्षात्कार हुआ: एक सपने में, एक अज्ञात व्यक्ति ने उन्हें दिवंगत राजा स्टीफन की कब्र खोदने का आदेश दिया। चर्चिल ने यह दृष्टि मिठाधीश को बताई। सतर्क मठाधीश ने चर्चिल को आश्वस्त किया कि यह केवल एक सपना था। लेकिन वह आकृति फिर से प्रकट हुई। अंततः तीसरी बार, वह भयानक व्यक्ति न केवल चर्च-प्रमुख के सामने बल्कि मिठाधीश के सामने भी प्रकट हुआ, और उसने वही मांग की।

[7773] ज्वेचन किला, जिसके खंडहर आज भी मौजूद हैं, कोसोवो मैदान के उत्तर-पश्चिम में, मित्रोविचा शहर के पार, इबार नदी के बाएं किनारे पर स्थित था।

[7774] डेचानी के सेंट स्टीफन की शहादत 11 नवंबर 1331 को हुई थी।

तब मठाधीश ने यह सब आर्चबशिप को बताया। डेचानी में पुरोहतिों का एक धर्मसभा बुलाया गया। एक प्रार्थना सभा के बाद, स्टीफन की कफ़नबंद ताबूत खोली गई, और चर्च तथा उसके बाहर तक एक सुगंधति खुशबू फैल गई; सभी ने पवत्रि शहीद के अक्षय अवशेष देखे। ठीक उसी क्षण, कई चमत्कार हुए: एक अंधा आदमी जो शहीद के अवशेषों पर गरि पड़ा था, उसे अपनी दृष्टि वापस मलि गई; अन्य बीमार लोग भी ठीक हो गए।

और बाद में, कई चमत्कार और अन्य उपचार हुए। संत स्टीफन हमेशा उन लोगों की सहायता के लिए आते थे जो उनकी मध्यस्थता की मांग में वशि्वास के साथ उनके पास आते थे, और हमेशा अपने मठ को उन दुश्मनों से बचाते थे जो इसकी संपत्ति पर कब्जा करना चाहते थे। जब से पवत्रि शहीद के अवशेष मलि हैं, तब से डेचानी मठ ऑर्थोडॉक्स सर्बयिाई लोगों के लिए एक कीमती तीर्थस्थल बन गया है।

मॉस्को के धन्य मैक्समिस, मसीह के लिए पवत्रि मूर्ख की स्मृति

11 नवंबर को स्मरणोत्सव

दयालु प्रभु ने मोक्ष और शाश्वत आनंद की प्राप्ति के लिए कई मार्ग खोले हैं। लेकनि इनमें से सबसे कठनि और श्रमसाध्य मार्ग है मसीह के लिए स्वेच्छा से मूर्खता का पराक्रम। धन्य मैक्समिस ने अपने लिए इस मार्ग को चुना और मृत्यु तक दृढ़ता से इस पर चले। समय ने हमें इस मॉस्को के चमत्कार-कर्ता के जीवन का वस्तिृत ववरिण संरक्षति नहीं कयिा है। जीवन के सभी सुख-सुवधिाओं को त्यागकर, वह लगभग नग्न मॉस्को की सड़कों पर चलता था, और ठंड और गर्मी दोनों को सहन करता था। अपनी बातों के माध्यम से, उसने कई लोगों को बुराई से बचाया या उनके कार्यों में उन्हें प्रोत्साहति कयिा। वे अक्सर कहते थे, 'भले ही सर्दयिाँ कठोर हों, स्वर्ग मधुर है। धैर्य के लिए, ईश्वर मोक्ष प्रदान करेगा।' 'ईश्वर महान है; वह झूठ को उजागर करेगा। न तो वह आपको धोखा दे सकता है, न ही आप उसे।' 'हर कोई बपतस्मिा लेता है, लेकनि हर कोई प्रार्थना नहीं करता।'

धन्य मक्समि पंद्रहवीं शताब्दी के पहले भाग में रहते थे। यह रूसी भूमि के लिए एक कठनि समय था: टाटारों का जुआ, अकाल, सूखा और प्लेग लोगों पर अत्याचार कर रहे थे। अपने धैर्य के माध्यम से, संत ने लोगों को धैर्यवान होना सखिाया। स्वयं सादगी का जीवन जीते हुए, वह चाहता था कि अन्य लोग अस्थायी धन के लिए अपनी आत्मा को न भूलें; उसने मॉस्को के व्यापारियों को अनुचति सौदों से रोका: 'घर ईश्वर का है, लेकनि ववेक बक्री के लिए है। अपनी दाढ़ी से वह अब्राहम है; अपने कर्मों से, वह हाम है।'

ऐसे कार्यों के बाद, धन्य मक्समि का 11 नवंबर 1433 को नधिन हो गया और उन्हें वर्वारस्काया स्ट्रीट पर सेंट्स बोरसि और ग्लेब के चर्च में दफनाया गया। प्रभु को अपने सेवक को चमत्कारों के माध्यम से महमिामय करना उचति लगा। इस प्रकार, 1506 में, एक व्यक्ति जिसिका पैर लकवाग्रस्त था, संत की कफन के पास ठीक हो गया। 13 अगस्त 1547 को, धन्य मक्समि के अक्षय अवशेष पाए गए, और उसी समय उनके सम्मान में एक पर्व दविस स्थापति कयिा गया। अवशेष स्वयं दबे हुए रहे। संत की स्मृति के धर्मपरायण उपासकों ने आदरणीय मक्समि द कन्फेशर के सम्मान में मॉस्को के संत मक्समि के अवशेषों के ऊपर एक पार्श्व चैपल का नरि्माण कयिा। 1698 में, मस्कोवाइट्स मैक्समि वर्खोवटिनि और मैक्समि शारोव्नकिोव के उत्साह के कारण, पुरानी चर्चों को ध्वस्त कर दयिा गया। इस काम के दौरान, दीवार से गरि एक पत्थर ने एक बड़ा खजाना प्रकट कयिा - धन्य मैक्समि के चंगा करने वाले अवशेष। इन्हें सम्मानपूर्वक मॉस्को के एक कैथेड्रल में स्थानांतरति कर दयिा गया, जहाँ वे नए चर्च के नरि्माण के दौरान रहे। इस चर्च, जो आज भी मौजूद है, को संत धन्य मैक्समिस के नाम पर समर्पति कयिा गया था, जसिमें मैक्समिस द कन्फेशर को समर्पति एक पार्श्व चैपल था।

धन्य संत की अवशेषों को लगभग चालीस वर्षों तक इसी चर्च में रखा गया। 1737 में, 'ट्रॉयत्स्की आग' के नाम से प्रसदि्ध एक बड़ी आग लग गई। लपटों ने मास्को के धन्य मैक्समिस को समर्पति चर्च को अपनी चपेट में ले लयिा। पूरा चर्च राख हो गया, और संत मैक्समिस की अवशेषों वाली संदूक भी नष्ट हो गई। पवत्रि अवशेषों के बचे हुए टुकड़ों को श्रद्धापूर्वक एकत्र कयिा गया और 1768 में इस चर्च में स्थानांतरति कर दयिा गया। यहाँ, आज भी, संत मैक्समिस के अवशेष वरिाजमान हैं, जो ईश्वर की महमिा के लिए चंगाई का वरदान देते हैं। आमीन।

25 नवंबर

12 नवंबर (पुराना तरीका)

अलेक्जेंड्रिया के पैट्रिआर्क, जॉन द मर्सीफुल का जीवन

12 नवंबर को स्मरणोत्सव

जॉन का जन्म साइप्रस द्वीप पर हुआ था और वे राजकुमार एपिफानियस के पुत्र थे[7775] । अपने युवा काल से ही, उनका पालन-पोषण धर्मपरायणता और ईश्वर के भय में हुआ, जो उनके लिए ज्ञान की शुरुआत थी। जब वह वयस्क हुआ, तो अपने माता-पिता की इच्छानुसार उसने विवाह किया और उसके बच्चे हुए। लेकिन जल्द ही जॉन ने अपने बच्चों को खो दिया, और फिर अपनी पत्नी को भी, क्योंकि ईश्वर की यही इच्छा थी कि जॉन, देह के बंधनों से मुक्त होकर, स्वयं को आध्यात्मिक जीवन के लिए समर्पित करे। वैवाहिक जीवन के बंधनों से मुक्त होकर, उन्होंने ईश्वर का धन्यवाद किया और उस समय से, अब बिना किसी बाधा के, उत्साहपूर्वक प्रभु की सेवा करना शुरू कर दिया, और उन्होंने बार-बार प्रार्थना करने तथा ईश्वर को प्रसन्न करने वाले सभी कार्यों में स्वयं को समर्पित कर दिया। विशेष रूप से, वह गरीबी की कठिनाइयों को झेल रहे सभी लोगों के प्रति दयालु और करुणामय थे। इन गुणों के लिए, ईश्वर ने उन्हें मनुष्यों के बीच महिमामय बनाया; और उन्हें न केवल उनके समकक्षों द्वारा, बल्कि स्वयं सम्राट द्वारा भी सम्मानित और महिमामय बनाया गया। कुछ समय बाद, अलेक्जेंड्रिया के चर्च का पैट्रिआर्कल सिंहासन[7776] बिना चरवाहे के रह गया; जिस पर सम्राट हेराक्लियस[7777] ने, दैवीय कृपा से, जॉन को पैट्रिआर्क के पद से सम्मानित किया। यद्यपि संत ने इसकी इच्छा नहीं की थी, उन्हें अभिषेक स्वीकार करने के लिए मजबूर होना पड़ा और वे अलेक्जेंड्रिया के चर्च के महा-चरवाहे बन गए।

पात्रिकीय सिंहासन पर आरोहण करने पर, जॉन ने, सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण रूप से वचन के झुंड के एक चरवाहे के रूप में, अपने झुंड को उस विधर्म से शुद्ध करने का ध्यान रखा जो मसीह के झुंड को परेशान कर रहा था। यह विधर्म एक निश्चित पीटर से उत्पन्न हुआ, जिसे फुलोन या कनाफेया के नाम से जाना जाता था, जो अंतीयक का झूठा पैट्रिआर्क था; उसने त्रिसिगियोन में ऐसे ईश्वरनिंदापूर्ण शब्द जोड़ने की हिम्मत की: 'हे पवित्र ईश्वर, हे पवित्र सर्वशक्तिमान, हे पवित्र अमर, हमारे लिए क्रूस पर चढ़ाए गए, हम पर दया करें' – मानो दिव्यता ने हमारे प्रभु में कष्ट उठाया हो[7778] ।

इस विधर्मी शिक्षा का उन्मूलन करने के बाद, संत जॉन ने स्वयं को पूरी तरह से ईश्वर की आज्ञाओं के उत्साही पालन और परोपकार के कार्यों को समर्पित कर दिया। कोई भी ज़रूरतमंद कभी दुखी या खाली हाथ नहीं गया; जो भी भीख

[7775] साइप्रस – भूमध्य सागर के उत्तर-पूर्वी भाग में एक द्वीप। – एपिफेनियस द्वीप पर मुख्य सैन्य कमांडर थे। सेंट जॉन का जन्म साइप्रस द्वीप के दक्षिणी भाग में, अमा फौन्टा शहर में हुआ था।

[7776] अलेक्जेंड्रिया – मिस्र में, नील नदी की पश्चिमी शाखा पर स्थित एक शहर; इसकी स्थापना 331 ईसा पूर्व में महान अलेक्जेंडर ने की थी।

[7777] सम्राट हेराक्लियस ने 610 से 641 तक शासन किया।

[7778] कॉन्स्टेंटिनोपल में, सेंट जॉहन क्राइसोस्टोम के शिष्य, सेंट प्रोकॉस (434–447) के धर्मप्राचीन काल में, एक भीषण भूकंप आया, और पूरी आबादी दहशत में आ गई। ईसाइयों ने शहर में एक धार्मिक जुलूस निकाला, और आपदा को समाप्त करने के लिए ईश्वर से प्रार्थना करते हुए आँसुओं के साथ पुकार रहे थे: 'हे प्रभु, दया करो!' अचानक, जब वे प्रार्थना कर रहे थे, तो एक अदृश्य शक्ति द्वारा एक छोटे लड़के को हवा में उठा लिया गया, और जब वह बाद में जमीन पर उतरा, तो उसने बताया कि उसने स्वर्गदूतों को यह गाते हुए देखा था: 'हे पवित्र परमेश्वर, हे पवित्र सर्वशक्तिमान, हे पवित्र अमर, हम पर दया करो!' जैसे ही इस मंत्र का जाप दोहराया गया, भूकंप रुक गया। इसके बाद यह आदेश दिया गया कि इस पवित्र दैवीय भजन का उपयोग धार्मिक अनुष्ठानों के दौरान किया जाए। लेकिन मोनोफिसाइट विधर्म के प्रसार के दौरान—जो यह दावा करता था कि यीशु मसीह में, गुप्त रूप से, एक ही दैवीय स्वभाव निवास करता था जिसने मानवीय स्वभाव को आत्मसात कर लिया था—एक निश्चित पीटर फुलोन, जिन्हें कनाफेई के नाम से भी जाना जाता है, जिसका अर्थ है 'कपड़ा रौंदने वाला', क्योंकि उन्होंने अपनी युवावस्था में इस व्यवसाय को किया था (फुलोन कपड़ा रौंदने वाले के लिए लैटिन शब्द है, जबकि कनाफेई ग्रीक है), ने अभी भी एक पादरी रहते हुए, त्रिसिगियन में 'हमारे लिए सूली पर चढ़ाया गया' शब्द जोड़ा। बाद में, यह पीटर (5वीं सदी के नब्बे के दशक में) अंतीयक का पैट्रिआर्क बन गया। चूँकि वह एक मोनोफिज़ाइट था, इसने इस जोड़ के द्वारा यह व्यक्त करने का इरादा किया कि उद्धारकर्ता के दुखों में केवल उनकी दिव्यता ही नहीं बल्कि संपूर्ण पवित्र त्रिमूर्ति भी पीड़ित हुई। पतरस के अनुयायियों ने थियोपास्काइट्स नामक एक अलग संप्रदाय बनाया, जिसे ऑर्थोडॉक्स जगत में बहुत चिंता पैदा हो गई; जॉन द मर्सीफुल (609–620) के पैट्रिआर्केट के दौरान अलेक्जेंड्रिया में इन अनुयायियों की संख्या बहुत थी।

माँगता, जॉन उसे दान देता; उसने सभी को उनके दुखों में न केवल शब्दों से बल्कि कर्मों से भी सांत्वना दी; उसने भूखे को भोजन दिया, नंगों को कपड़े दिए, बंदियों को छुड़ाया, और यात्रियों तथा बीमारों की देखभाल की। उनकी उदारता एक नदी की तरह थी, जो अखंड और प्रचुर मात्रा में बहती थी, और सभी प्यासे लोगों की प्यास बुझाती थी।

अपने मंत्रालय की शुरुआत में, जॉन ने चर्च के कोषाध्यक्षों[7779] को बुलाया और उन्हें निम्नलिखित निर्देश दिया:

'पूरे नगर में जाओ और मेरे सभी प्रभुओं का एक रजिस्टर बनाओ।'

प्रबंधकों ने उनसे पूछा:

'तो ये आपके "मेरे स्वामियों" कौन हैं?'

पितृप्रधान ने उत्तर दिया:

वे वही हैं जिन्हें आप भिखारी और बेसहारा कहते हैं; वे मेरे स्वामी हैं, क्योंकि वे ही वास्तव में मुझे मोक्ष प्राप्त करने में मदद कर सकते हैं और मुझे शाश्वत निवासों में ले जा सकते हैं।'

परिचारकों ने जाकर सड़कों, अस्पतालों और कूड़े के ढेरों में मिले सभी बेसहारा लोगों का पंजीकरण किया। कुल मिलाकर सात हजार पाँच सौ लोग मिले, और संत जॉन ने आदेश दिया कि उन सभी को उनके दैनिक जीवन के लिए आवश्यक सभी चीजें प्रदान की जाएँ।

उस समय, फ़ारसियों ने सीरिया और फ़िलिस्तीन पर हमला किया, पवित्र शहर यरूशलेम को जला दिया, पवित्र क्रूस की कीमती लकड़ी पर कब्ज़ा कर लिया, और कई ईसाइयों को बंदी बना लिया[7780] । धन्य जॉन ने बंदियों को छुड़ाने और संकट में पड़े लोगों की सहायता के लिए सोने और गेहूं से लदे जहाज़ भेजे; इस प्रकार, अपनी दया के माध्यम से, उन्होंने कई लोगों को कैद से मुक्त कराया और उन्हें कैद की विपत्तियों से बचाया। और चूँकि हिर कोई बिना किसी बाधा के उनके पास नहीं आ सकता था—क्योंकि उनके सेवकों ने हर आगंतुक के बारे में पैट्रिआर्क को सूचित नहीं किया था—इसलिए उन्होंने सप्ताह में दो दिन चुने: बुधवार और शुक्रवार, और इन दिनों वह कुछ धर्मनिष्ठ पुरुषों के साथ चर्च के द्वार पर बैठते थे, आने की इच्छा रखने वाले किसी भी व्यक्ति का स्वागत करते थे, उनकी प्रार्थनाओं को सुनते थे, उत्पन्न हुए किसी भी विवाद को सुलझाते थे, अन्यायग्रस्त लोगों का बचाव करते थे, और विश्वासियों के बीच शांति बहाल करते थे। ऐसे समय में, पवित्र पैट्रिआर्क अपने चारों ओर इकट्ठा लोगों से कहते थे:

'यदि मेरे प्रभु परमेश्वर तक मेरी पहुँच को कभी नकारा नहीं जाता, और मैं प्रार्थना में उनसे बात करता हूँ और उनसे अपनी इच्छाएँ माँगता हूँ, तो फिर मैं अपने पड़ोसी को मुझ तक निर्बाध पहुँच क्यों न दूँ, ताकि वह मुझे अपनी शिकायतें और ज़रूरतें बता सके और मुझसे अपनी इच्छाएँ माँग सके?' हमें उस से डरना चाहिए जिसने कहा है: *'जिस नाप से तुम नापोगे, उसी से तुम्हारे लिए भी नापा जाएगा'* (मत्ती 7:2)।

कभी-कभी ऐसा होता था कि जब धन्य योहन चर्च के दरवाजे पर बैठकर उन लोगों का इंतज़ार कर रहे होते थे जो उनकी मदद चाहते थे, तो कोई भी उनसे किसी अनुरोध के साथ नहीं आता था; तब वे दुखी होकर उठते और आँसुओं के साथ घर लौट जाते थे। ऐसे अवसरों पर, कुछ लोग कभी-कभी उनसे पूछते थे:

'तुम क्यों दुखी और विलाप कर रहे हो?'

संत उत्तर देते:

'आज, विनिम्र जॉन को कुछ भी नहीं मिला और अपने पापों के लिए परमेश्वर के पास कुछ भी नहीं लाया।'

उनके मित्र, धन्य सोफ्रोनीयस ने उनसे कहा:

'अब आपको सचमुच आनंदित होना चाहिए, पिताजी, क्योंकि आपका झुंड ईश्वर के स्वर्गदूतों की तरह, बिना किसी कलह या झगड़े के, शांति से रहता है।'

[7779] ओइकोनोमोई चर्च के वित्त के प्रभारी थे। पैट्रिआर्क से संबद्ध ओइकोनोमोस पैट्रिआर्केट के राजस्व के लिए जिम्मेदार था।

[7780] हेराक्लियस ने फारस के राजा खुसरू द्वितीय के खिलाफ एक भयंकर युद्ध छेड़ा। खुसरू ने सीरिया और फिलिस्तीन पर कब्जा कर लिया; उसकी एक टुकड़ी ने मिस्र पर विजय प्राप्त की, जबकि दूसरी टुकड़ी कॉन्स्टेंटिनोपल के विपरीत किनारे स्थित कालसीडोन तक आगे बढ़ गई। यह युद्ध इतना क्रूर था कि, उदाहरण के लिए, जब यरूशलेम पर कब्जा किया गया, तो खुसरू ने चर्चों को नष्ट कर दिया और पवित्र स्थलों का अपमान किया। इसके अलावा, परंपरा के अनुसार, 90,000 ईसाइयों को मार डाला गया, और उनमें से कई को यहूदियों ने विशेष रूप से उन्हें मारने के उद्देश्य से खरीदा था। यह 614 में हुआ था। इन भयानक कष्टों के दौरान, पैट्रिआर्क जॉन द मर्सीफुल ईसाइयों के दुखों के एक सच्चे उपचारक साबित हुए। हराक्लियस की खुसरो पर विजय के बाद युद्ध शांति में समाप्त हुआ। शांति संधि 628 में खुसरू के बेटे, राजा सिरोसेस द्वारा की गई थी, जिसने कैदियों और प्रभु के जीवन-दायक पवित्र क्रॉस को पकड़ा था।

एक दिन, चर्च के कोषाध्यक्षों ने संत जॉन को सूचित किया कि गरीबों की भीड़ में अच्छी तरह से सजी-धजी युवतियाँ भीख माँग रही थीं, और उन्होंने उनसे पूछा कि क्या इन युवतियों को भी अन्य भिखारियों की तरह दान दिया जाना चाहिए। पैट्रिआर्क ने उत्तर दिया:

– यदि आप सचमुच मसीह के सेवक और विनम्र योहन के वफादार मंत्री हैं, तो मसीह की आज्ञा के अनुसार ही दें, किसी के प्रति पक्षपात किए बिना, और जिन लोगों को आप देते हैं, उनके जीवन में दखल दिए बिना। जान लें कि हम अपना नहीं, बल्कि मसीह का देते हैं; अतः हमें वैसे ही देना चाहिए जैसे उन्होंने आज्ञा दी है। यदि, हालाँकि, आप सोचते हैं कि चर्च की संपत्ति इतने बड़े दान के कार्य के लिए पर्याप्त नहीं होगी, तो मैं आपके अविश्वास का हिस्सा नहीं बनना चाहता। मैं ईश्वर में विश्वास करता हूँ कि यदि पूरे ब्रह्मांड के गरीब भीख माँगने के लिए अलेक्जेंड्रिया में इकट्ठा हो जाएँ, तब भी हमारी चर्च की संपत्ति समाप्त नहीं होगी।

और ताकि वे अल्पविश्वासी न रहें, संत ने निम्नलिखित का वर्णन किया:

'जब मैं सोलह वर्ष का था और साइप्रस द्वीप पर ही था, तो एक रात सोते समय मैंने एक अतिसुन्दर कन्या को देखा; वह अत्यंत शोभित वस्त्रों में सजी हुई थी और उसके सिर पर जैतून की टहनियों का मुकुट था। मेरे बिस्तर के पास खड़ी वह कन्या मुझे छूकर जगा गई। जागने पर मैंने देखा कि वह मेरे सामने खड़ी थी, अब वह सपना नहीं बल्कि हकीकत थी, और मैंने उससे पूछा:

'तुम कौन हो, और तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई मेरे कमरे में आने की?'

उसने चमकती आँखों से मेरी ओर देखते और कोमल होठों से मुस्कुराते हुए कहा:

'मैं महान ज़ार की सबसे बड़ी बेटी और उनकी बेटियों में प्रथम हूँ।'

यह सुनकर, मैं उसके सामने झुक गया। वह बोली:

'यदि आप मुझे अपना साथी बनाएँ, तो मैं आपके लिए राजा से एक महान कृपा के लिए मध्यस्थता करूँगी और आपको उनकी उपस्थिति में ले आऊँगी, क्योंकि मेरे जैसा साहस और शक्ति उनके सामने किसी के पास नहीं है। मैंने उन्हें स्वर्ग से पृथ्वी पर उतारा और उन्हें मानव जाति के उद्धार के लिए मानव देह धारण करने के लिए मनाया।'

यह कहकर वह अदृश्य हो गई। इस अद्भुत दृश्य को देखकर मैं मन ही मन सोचने लगा:

'निश्चय ही, दया एक कन्या के रूप में मेरे सामने प्रकट हुई है। इसका प्रमाण उसके सिर पर चढ़ा जैतून का मुकुट है, जो दया का प्रतीक है; यही बात उस कन्या द्वारा कहे गए शब्दों से भी स्पष्ट होती है: उसने कहा, "मैंने ही परमेश्वर को स्वर्ग से पृथ्वी पर उतारा, और वह मानव रूप में अवतार लिया।" सृष्टिकर्ता ने मानव जाति को विनाश की ओर जाता हुआ देखकर, केवल दया से प्रेरित होकर उन्हें बचाना चाहा, क्योंकि वह अपनी सृष्टि पर दया करना चाहते थे। अतः जो कोई भी ईश्वर की कृपा प्राप्त करना चाहता है, उसे अपने पड़ोसियों पर दया करनी चाहिए और दान देना चाहिए।

तो, अपने मन में इस पर विचार करके, मैं जल्दी से उठा और भोर होते ही चर्च गया। रास्ते में, मुझे एक नंगा भिखारी मिला, जो ठंड से काँप रहा था। मैंने अपना बाहरी वस्त्र उतारकर उस भिखारी को दे दिया, और मन ही मन कहा: 'अब मुझे पता चलेगा कि जो मैंने देखा वह सच था या वह एक भ्रम था' – और मैं अपने रास्ते चल पड़ा। चर्च पहुँचने से पहले, मैं एक सफेद कपड़े पहने आदमी से मिला जिसने मेरे हाथों में एक बंडल रखा, जिसमें सौ चाँदी के सिक्के थे। ऐसा करते हुए, उसने कहा: 'मेरे दोस्त! इसे ले लो और अपनी इच्छा से इसका उपयोग करो।'

मैंने खुशी-खुशी उसे स्वीकार कर लिया, लेकिन तुरंत ही मुझे ऐसा करने का पछतावा हुआ, यह सोचकर कि उस बंडल में जो कुछ भी था, उसका मुझे कोई उपयोग नहीं था; इसलिए मैं वापस मुड़ा, यह सोचकर कि जो कुछ मुझे मिला है, उसे वापस कर दूँ; लेकिन, अच्छी तरह से खोजने पर भी, मुझे वह आदमी नहीं मिला जिसने मुझे वह बंडल दिया था। तब मुझे एहसास हुआ कि जो मैंने देखा था वह सत्य था, न कि कोई भ्रम। और उस समय से, जब भी मैं किसी गरीब को कुछ देता, तो मैं यह परखना चाहता था कि क्या ईश्वर मुझे इसके लिए, जैसा उन्होंने कहा था, सौ गुना पुरस्कृत करेंगे। और कई बार इस परख के बाद, मैं इस बात से आश्वस्त हो गया कि वास्तव में ऐसा ही होता था। अंत में, मैंने अपने आप से कहा: 'हे मेरी आत्मा, अपने प्रभु परमेश्वर को आजमाना बंद कर!'

एक दिन, जब संत जॉन बीमारों से मिलने अस्पताल जा रहे थे (जो वे सप्ताह में दो या तीन बार करते थे), तो उनकी मुलाकात एक ऐसे यात्री से हुई जो भीख मांग रहा था। जॉन ने अपने नौकर को यात्री को छह चाँदी के सिक्के देने का आदेश दिया। सिक्के लेकर, यात्री अपने रास्ते चला गया। लेकिन बाद में, संत की उदारता की परीक्षा लेने की इच्छा से, उसने अपने कपड़े बदल लिए और एक अलग रास्ते से होकर फिर से धन्य जॉन से मिला और उनसे विनती की:

'मेरी मदद कीजिए, महोदय, एक गरीब बंदी की।'

जॉन ने एक बार फिर आदेश दिया कि उसे छह चाँदी के सिक्के दे दिए जाएँ। हालाँकि, नौकर ने चुपचाप पैट्रिआर्क से कहा:

'महाधर्माध्यक्ष महोदय, निश्चय ही यह वही भिखारी है जिसे पहले छह चाँदी के सिक्के मिले थे।'

लेकिन धर्मगुरु ने, इस टिप्पणी को अनसुनी करते हुए, भिखारी को छह सिक्के देने का अपना आदेश दोहराया। यात्री ने, दूसरी बार भीख पाकर, एक बार फिर से अपने कपड़े बदल लिए और, एक अलग रास्ते से होते हुए, धर्मगुरु से मिला और तीसरी बार भीख माँगी। नौकर ने फिर से धर्मगुरु से कहा:

'महाशय! वही आदमी जिसने पहली और दूसरी बार आपसे छह चाँदी के सिक्के लिए थे, अब तीसरी बार भीख माँग रहा है।'

तब धन्य पुरुष ने सेवक से उत्तर दिया:

'उसे बारह सिक्के दे दो; क्या यह मसीह नहीं हैं जो मेरी परीक्षा ले रहे हैं?'

[7781]एक व्यापारी, जो समुद्र में अपना सारा धन खोकर पूरी तरह कंगाल हो गया था, ने संत से मदद करने के लिए कहा। संत ने उसे पाँच लीटर सोना दिया। सोना प्राप्त करने के बाद, व्यापारी ने उससे बहुत सारा माल खरीदा और एक जहाज पर चढ़कर अन्य शहरों के लिए रवाना हो गया। लेकिन, जहाज के दुर्घटनाग्रस्त होने के कारण, उसने एक बार फिर सब कुछ खो दिया और खुद मुश्किल से डूबने से बच पाया। तब वह फिर से संत जॉन के पास आया और उन्हें जो हुआ था, वह सब बताया। जॉन ने उससे कहा:

'तुम्हारे पास अन्य सोना भी था, जो अन्याय से प्राप्त किया गया था, और तुमने उसे चर्च के सोने में मिला दिया जो मैंने तुम्हें दिया था। इसीलिए दोनों ही खो गए।'

यह कहकर, उन्होंने उसे पहले से दोगुना, लगभग दस लीटर सोना दिया। लेकिन तीसरी बार, व्यापारी को वही दुर्भाग्य झेलना पड़ा। उसका सारा माल समुद्र में डूब गया, और वह अब पैट्रिआर्क के सामने जाने की हिम्मत नहीं कर सका, बल्कि अपने सिर पर राख डालकर अपने घर में रोता रहा और आत्महत्या करने का इरादा रखता था। यह जानकर, संत ने उस व्यापारी को बुलाया और उससे कहा:

'तुम अपने दुख के कारण निराशा में क्यों पड़ रहे हो? ईश्वर पर अपना विश्वास रखो, और वह तुम्हें कभी अकेला नहीं छोड़ेगा! लेकिन मुझे लगता है कि यह दुर्भाग्य तुम्हें इसलिए हुआ क्योंकि तुम्हारे पास एक ऐसी नाव थी जिसे अन्याय से प्राप्त किया गया था।'

यह कहने के बाद, जॉन ने आदेश दिया कि व्यापारी को गेहूं से लदा एक चर्च का जहाज दिया जाए, और फिर उसे विदा कर दिया। गेहूं से लदा जहाज प्राप्त करने के बाद, व्यापारी समुद्र यात्रा पर निकल पड़ा। और अचानक एक तेज हवा चली और जहाज को एक अज्ञात भूमि पर ले गई। व्यापारी ने, एक दर्शन में अपने कल्याणकर्ता, अलेक्जेंड्रिया के पैट्रिआर्क, दयालु संत जॉन को जहाज के पिछले हिस्से में खड़े होकर उसे चलाते हुए देखा, और उसे उम्मीद बनी रही कि संत की प्रार्थनाओं से, यात्रा एक सुखद अंत तक पहुँच जाएगी।

दूसरे शब्दों में: यदि आप चाहते हैं कि लोग आपके साथ उचित व्यवहार करें, तो आपको भी वैसा ही करना चाहिए।

बीस दिन और उतनी ही रातों के बाद, वे ब्रिटेन के तट पर उतरे। उस समय उस देश में भीषण अकाल पड़ा था। जब लोगों को पता चला कि गेहूं से लदा एक जहाज उनके शहर की ओर आया है, तो वे अत्यंत प्रसन्न हुए और गेहूं खरीदने के लिए दौड़ पड़े। और इस प्रकार इस व्यापारी ने वहाँ गेहूँ को मुनाफे पर बेचा, उसे अपनी बेची हुई वस्तु का आधा भुगतान सोने में और आधा टिन में मिला[7782] । अपनी वापसी यात्रा पर, वह डेकापोलिस पहुँचा[7783] । वहाँ टिन बेचने की इच्छा से, उसने देखा कि वह सब सोने में बदल गया था। इस प्रकार धनी होकर, व्यापारी खुशी-खुशी अलेक्जेंड्रिया लौट आया और उसने सभी को इस अद्भुत चमत्कार के बारे में बताया, जो संत जॉन की प्रार्थनाओं और दान के कारण हुआ था।

एक अवसर पर, जब संत चर्च जा रहे थे, तो उनके पास एक प्रतिष्ठित और कुलीन व्यक्ति आया, जिसके सारे सामान चोरों ने चुरा लिए थे, जिससे वह बेसहारा हो गया था। इतने प्रतिष्ठित और प्रसिद्ध व्यक्ति के अचानक अत्यधिक

[7781] एक 'लित्रा' एक पाउंड है, जो वजन की एक बाइजेंटाइन इकाई है और 72 'ज़ोलोटनिक्स' के बराबर होती है; चांदी में इसका मूल्य 42 रूबल तक और सोने में 606 रूबल तक था। इस इकाई को थोक और तरल पदार्थों को मापने के लिए उपयोग की जाने वाली 'लित्रा' से अलग किया जाना चाहिए।

[7782] ब्रिटेन, या आज का इंग्लैंड, प्राचीन काल में टिन की प्रचुरता के लिए प्रसिद्ध था।

[7783] डेकापोलिस, या दस शहर, जो फिलिस्तीन के उत्तरी भाग में थे, ग्रीकों द्वारा बसाए गए शहर थे।

गरीबी में गिर जाने पर दया दिखाते हुए, पैट्रिआर्क ने सूक्ष्म रूप से एक सेवक से कहा और उसे चर्च के कोषाध्यक्षों से कहने का आदेश दिया कि वे उस व्यक्ति को पंद्रह लीटर सोना दें। हालाँकि, खज़ांचीओं ने जब देखा कि चर्च के खज़ाने में सोना कम था, तो उन्होंने पैट्रिआर्क के आदेश की अवज्ञा की और केवल पाँच लीटर ही दे दिए, जबकि दस लीटर अपने लिए रख लिए। जब पवित्र धर्मगुरु चर्च से घर लौट रहे थे, तो एक बहुत अमीर और प्रतिष्ठित महिला उनके पास आई और उनके हाथों में एक दस्तावेज़ रखा, जिसमें उसने लिखा था कि वह चर्च को पाँच सौ लीटर सोना दान कर रही है। दस्तावेज़ स्वीकार करके और उसे पढ़कर, पवित्र आत्मा की कृपा से, पैट्रिआर्क को एहसास हुआ कि उस महिला ने वह पूरी राशि नहीं दी थी जो वह देने का इरादा रखती थी। प्रभु परमेश्वर ने यह इसलिए व्यवस्थित किया ताकि उन व्यवस्थापकों का पर्दाफाश हो सके, जिन्होंने उस गरीब आदमी को पूरी राशि नहीं दी थी जिसे पादरी ने पंद्रह लीटर देने का आदेश दिया था। घर लौटने पर, जॉन ने व्यवस्थापकों को बुलाया और उनसे पूछा कि उन्होंने उस आदमी को कितनी राशि दी थी जिसे चोरों ने लूट लिया था। उन्होंने झूठ बोलते हुए कहा:

'जैसा आपने आज्ञा दी थी, महामहिम: पंद्रह लीटर।'

उनके झूठ, उनके कंजूसपन और उनकी अवज्ञा को उजागर करते हुए, संत ने उनसे कहा:

'भगवान तुमसे एक हज़ार लीटर सोना वसूल करें, क्योंकि उस धर्मनिष्ठ महिला ने हमें डेढ़ हज़ार देने का इरादा किया था। लेकिन चूँकि तुमने मेरी अवज्ञा की और दस लीटर रोक लिए, इसलिए ईश्वर ने ऐसा प्रबंध किया कि महिला ने भी एक हज़ार लीटर रोक लिए। अगर तुम मेरा विश्वास नहीं करते, तो तुम जल्द ही खुद ही जान जाओगे।'

उस महिला को अपने पास बुलाकर, उसने परिचारकों की उपस्थिति में उससे पूछा:

'बहुत हुई बात, माताजी, हमें बताइए कि आपने पहले ईश्वर के प्रति अपने प्रेम से चर्च को कितना सोना दान करने का इरादा किया था?'

उसने, यह समझते हुए कि उसकी मंशा संत से छिपी नहीं रह सकी थी, कहा:

'वास्तव में, महाशय, कुछ दिन पहले मैंने आपके पवित्र हाथों में डेढ़ हजार लीटर सोना सौंपने का संकल्प लिया था, जिसके लिए मैंने एक लिखित प्रमाण पत्र भी बनाया था। लेकिन आज, जब मैंने उसे खोला, तो मैंने पाया—मुझे नहीं पता कैसे—कि 'एक हज़ार' शब्द पर रेखा खींच दी गई थी; केवल 'पाँच सौ' बचा था, और मैंने अपने मन में सोचा कि ईश्वर अब मेरे लिए पाँच सौ लीटर से अधिक देने को उचित नहीं समझते थे। और इसलिए मैंने वैसा ही किया।

यह सुनकर व्यवस्थापक बहुत डरे और लज्जित हुए, और संत के पैरों पर गिर पड़े, क्षमा याचना करने लगे।

एक बार, अलेक्जेंड्रिया में, विदेशियों के आक्रमण के कारण[7784] , लोगों की एक बड़ी भीड़ इकट्ठा हो गई, जिसके परिणामस्वरूप एक भीषण अकाल पड़ा। संत जॉन ने भूखे लोगों पर दया करके चर्च की सारी संपत्ति खर्च कर दी और यहाँ तक कि वह एक हजार लीटर सोने के कर्ज में डूब गया। फिर एक पुरोहित जिसने दोबारा शादी कर ली थी—और जो अपनी दूसरी शादी के कारण पुरोहित के पद पर नियुक्त नहीं हो सकता था—ने पैट्रिआर्क को निम्नलिखित लिखा:

'मेरे पास बहुत सारा गेहूँ है, जो मैं सब आपके हाथों से मसीह को देना चाहता हूँ; मैं सोने के एक सौ पचास लीटर का वादा भी करता हूँ – बस मुझे एक डिकिन बना दीजिए।'

संत ने उसे बुलाकर धन से पवित्र पद खरीदने की उसकी इच्छा के लिए फटकारना शुरू किया।

'अपने पाप से पश्चाताप करो और गिज़ी की सजा से डरो[7785] ; ईश्वर इतना शक्तिशाली है कि वह तुम्हारे गेहूं के बिना भी अकाल में हमें खिला सकता है।'

जैसे ही वह बोल ही रहे थे, एक दूत यह खबर लेकर आया कि सिसिली से दो जहाज़[7786] गेहूँ की एक बड़ी मात्रा लेकर आ गए हैं; यह सुनते ही, पैट्रिआर्क घुटनों के बल गिर पड़े और परमेश्वर का धन्यवाद किया, जो उन लोगों को नहीं छोड़ता जो अपनी आशा उसी में रखते हैं।

[7784] यह, बेशक, 618 में खुसरौ के नेतृत्व में मिस्र पर फ़ारसी आक्रमण को संदर्भित करता है।

[7785] राज□□□ की चौथी पुस्तक में यह वर्णित है कि कैसे भविष्यवक्ता एलिशा ने सीरियाई सेनापति नामान को कोढ़ से बिना कोई भुगतान स्वीकार किए ठीक किया। हालाँकि, एलिशा के सेवक गेहाजी ने, इस बात पर पछतावा करते हुए कि उसके स्वामी ने नामान से कुछ भी नहीं लिया था, उसे धोखा दिया और उससे बहुत सारा चाँदी और दो जोड़े कपड़े ले लिए। यह जानने पर, एलिशा ने गेहाजी से कहा: 'नामान की कुष्ठरोग तुझ पर और तेरे वंश पर सदा के लिए पड़ जाए।' और गेहाजी कुष्ठरोग से सफेद पड़कर, बर्फ की तरह सफेद होकर, नबी के पास से निकल गया (2 राजा 5:1–27)।

[7786] भूमध्य सागर में इटली के दक्षिण में एक द्वीप, जो अपनी उपजाऊ मिट्टी के लिए प्रसिद्ध था, और इसलिए प्राचीन काल में इसे इटली का अन्न भंडार माना जाता था।

यहाँ संत जॉन की नम्रता, वनिम्रता और द्वेष की कमी को एक बार फरि याद करना उचति होगा। दो पादरयिों को एक ही अपराध के लएि चर्च से अस्थायी रूप से बहष्किृत करके दंडति कयिा गया। उनमें से एक ने पश्चाताप कयिा, लेकनि दूसरा, इसके वपिरीत, अपनी द्वेषपूर्ण भावना में और भी अधकि गहराई से डूब गया और महाधर्माध्यक्ष के प्रतअिपने क्रोध में, उसने बहुत सारे बुरे कर्म कएि। यह सुनकर, पैट्रआिर्क उसे बुलाना और उसे अपनी द्वेषपूर्ण भावना त्यागने के लएि सौम्य ढंग से मनाना चाहते थे; लेकनि दव्यि प्रबंध से वे ऐसा करना भूल गए, ताकि सामान्य भलाई के लएि, जॉन की नम्रता और सौम्यता प्रकट हो सके। एक रवविार, जब चर्च में दैवीय पूजा का अनुष्ठान कर रहे थे, तो जॉन को उस पुरोहति का ध्यान आया जो उनसे नाराज़ था, और साथ ही उन्हें मसीह के वचन याद आए: *'इसलएि, यदि तुम वेदी पर अपनी भेंट चढ़ाने आओ और वहाँ तुम्हें याद आए कि तुम्हारे भाई को तुमसे कोई शकिायत है, तो अपनी भेंट वेदी के सामने ही छोड़ दो, और पहले अपने भाई से मेल मलिाप करो; और फरि आकर अपनी भेंट चढ़ाओ'* (मत्ती 5:23–24)। पवत्रि स्थल से बाहर नकिलते हुए, उन्होंने उस पुरोहति को बुलाया और क्षमा याचना करते हुए उसके पैरों पर गरि पड़े। अपने धर्मगुरु में इतनी वनिम्रता देखकर, वह पुरोहति भय से भर गया और स्वयं क्षमा याचना करते हुए उनके पैरों पर गरि पड़ा। इस प्रकार, जॉन अपने पुरोहति से मेल-मलिाप कर लयिा, वेदी पर लौट आए और, नडिर होकर बलदिान चढ़ाने के बाद, वे एक नरि्मल अंतकरण के साथ प्रभु की प्रार्थना के शब्द बोल सके: *'और हमारे कर्ज़ों को माफ कर, जैसे हम भी अपने कर्ज़दारों को माफ करते हैं'* (मत्ती 6:12)।

जहाँ तक उस पुरोहति का सवाल है, उसने सुधार करके एक ईश्वर-भक्त जीवन व्यतीत कयिा और बाद में उसे पुरोहति पद के लएि योग्य माना गया।

संत जॉन द्वारा प्रदर्शति नम्रता का एक और उदाहरण भी कम प्रभावशाली नहीं है। अलेक्जेंड्रयिा में एक सरायकeeper ने धन्य पुरुष के भतीजे, जसिका नाम जॉर्ज था, का अपमानजनक और फटकार भरे शब्दों से अपमान कयिा था। अपने चाचा के पास लौटने पर, जॉर्ज ने उस व्यक्तकि बारे में कड़वाहट से शकिायत की जसिने उसका अपमान कयिा था।

अपने भतीजे को अत्यंत व्यथति देखकर और उसे शांत करने के लएि, जॉन ने कहा:

'उस नीच ने मेरे भतीजे का अपमान करने की हम्मित कैसे की! मैं ईश्वर की कसम खाता हूँ कि मैं इस अपराधी से बदला लूँगा और उसके साथ ऐसा सलूक करूँगा कि पूरा अलेक्जेंड्रयिा चकति रह जाएगा!'

पतिृपक्षीय के शब्दों से कुछ शांत होकर, जॉर्ज ने रोना बंद कर दयिा। फरि जॉन, जो हृदय से कोमल और वनिम्र थे, उनसे बात करने लगे:

'प्रयि पुत्र! यदि तुम मेरे सम्बन्धी बनना चाहते हो, तो न केवल अपमान सहने के लएि, बल्कि घाव सहने के लएि भी तैयार रहो, और ईश्वर के लएि अपने पड़ोसी को सब कुछ क्षमा कर दो। 'क्या तुम कुलीन बनना चाहते हो?' 'तो कुलीनता रक्त से नहीं, बल्कि सद्गुण से प्राप्त करो। सच्ची कुलीनता अपने पूर्वजों की महमिा से नहीं, बल्कि अच्छे कर्मों और ईश्वर को प्रसन्न करने वाले जीवन से सुशोभति होती है!'

इस प्रकार, अपने भतीजे को शांत करने के बाद, संत ने सराय के अधीक्षक को बुलाया और उसे चर्च कर—जो जॉर्ज का अपमान करने वाले व्यक्तकि को सालाना देना पड़ता था—वसूल न करने, बल्कि उसे स्वतंत्र रूप से जीने देने का आदेश दयिा।

और वास्तव में, जॉन ने, अपने वचन के प्रतसिच्चे रहते हुए, अपराधी के साथ ऐसा व्यवहार कयिा कि पूरा अलेक्जेंड्रयिा चकति रह गया: दंड और प्रतशिोध के बजाय, उन्होंने उस पर दया दखिाई।

अपने मन में अपनी नश्वरता की याद को लगातार बनाए रखने की इच्छा से, धन्य जॉन ने अपने लएि एक ताबूत बनाने का आदेश दयिा, लेकनि यह नरि्देश दयिा कि उसे पूरा न कयिा जाए। उन्होंने व्यवस्थापकों को यह भी आदेश दयिा कि वे सभी गंभीर पर्व के दनिों में उनके पास आएं और सभी के सामने, ज़ोर से कहें:

'महाधर्माध्यक्ष महोदय! आपकी कफ़न अभी पूरी नहीं हुई है; आज्ञा दीजएि कि इसे पूरा कयिा जाए, क्योंकि मृत्यु एक चोर की तरह आती है, और आप नहीं जानते कि वह कसि घड़ी प्रकट होगी।'

इस प्रकार संत जॉन मृत्यु को नरिंतर अपने मन में रखते थे और उसके लएि हमेशा तैयार रहते थे।

एक दनि, एक धनी कुलीन व्यक्तसिंत के पास आया, और उसने संत का बस्तिर देखा, जो एक पतली कंबल से ढका हुआ था। घर लौटने पर, उस कुलीन व्यक्तने पैट्रआिर्क को छत्तीस सोने के सक्किों की कीमत का एक कंबल

भेजा और उनसे कहा कि वे उसे ओढ़ लें। पैट्रआर्क, उस कुलीन व्यक्ति को नाराज़ नहीं करना चाहते थे, उन्होंने उसकी ज़िद पर कंबल स्वीकार कर लिया और केवल एक रात के लिए उसे ओढ़ लिया। ऐसा करते हुए, उन्होंने अपने आप से कहा:

'धिक्कार है तुझ पर, हे नीच जॉन, क्योंकि जब तू एक कीमती कंबल में लिपट रहा है, तब मसीह के भाई—गरीब—ठंड में कांप रहे हैं। कितने लोग हवा और ठंड में बिना किसी ओढ़नी के रात बिताते हैं, जिसके पास केवल एक छोटी सी चटाई या एक फटी हुई चादर होती है! कितने नग्न लोग गोबर के ढेर पर लेटे हैं, ठंड से कांप रहे हैं, भूख और ठंड—दोनों से पीड़ित हैं—पूरी रात जागते रहते हैं, भोजन के लिए तरसते हैं और फिर भी ठंड से मर जाते हैं!

हाय रे मेरी दुर्दशा! कितने ही दीन प्राणी, लाजरूस की तरह, मेरी मेज़ से गिरने वाली बूंदों से अपनी भूख मिटाने के लिए तरसते हैं! हाय रे मेरी दुर्दशा! इस नगर में कितने ही यात्री और अजनबी हैं, जिनके पास सिर रखने को कोई जगह नहीं है, जो सड़कों पर अपनी रातें बिताते हैं और हर तरह की कठिनाइयों को सहते हुए, हर चीज़ के लिए प्रभु मसीह का धन्यवाद करते हैं! फिर भी तुम, जॉन, शाश्वत विश्राम प्राप्त करने की इच्छा रखते हुए, यहाँ ऐश्वर्य और शांति में रहते हो और तुम्हारे पास वह सब कुछ है जिसकी तुम कामना कर सकते हो: तुम शानदार कक्षों में रहते हो, मुलायम वस्त्र पहनते हो, शराब पीते हो, और सबसे अच्छी मछली खाते हो। और इन सबके ऊपर, तुमने खुद को एक कीमती कंबल में भी लपेट रखा है। तो फिर, आने वाले युग में आप क्या उम्मीद कर सकते हैं? नहीं, हे दुष्ट योहन, इस तरह का जीवन जीकर आप शाश्वत राज्य का वारिस नहीं बनेंगे, बल्कि आपको सुसमाचार के उस धनी मनुष्य की तरह ही सुना जाएगा: *'हे मूरख! इसी रात तेरी आत्मा तुझसे ले ली जाएगी; तब जो तूने तैयार किया है, वह किसका होगा?'* (लूका 12:20)। ईश्वर मेरी गवाही है कि विनिम्र जॉन फिर कभी किसी और रात इस कंबल में नहीं लिपटेगा, बल्कि इसकी बिक्री से प्राप्त धन का उपयोग गरीबों और ज़रूरतमंदों को कपड़े दिलाने के लिए किया जाएगा!

जैसे ही दिन चढ़ा, संत ने कंबल को बेचने के लिए बाजार ले जाने में जल्दबाजी की, ताकि उसकी कीमत से वह बेसहारा लोगों के लिए कपड़े खरीद सकें। लेकिन जब कंबल बिक रहा था, तो संतों को वह कंबल देने वाले कुलीन व्यक्ति वहाँ से गुज़र रहे थे। यह देखकर कि यह बिक्री के लिए है, उस कुलीन व्यक्ति ने इसे खरीद लिया और इसे जॉन के पास वापस भेज दिया, उनसे विनती करते हुए कि वे इसे खुद ओढ़ें। कंबल लेकर, संत ने इसे एक बार फिर बेचने के लिए भेज दिया। जब उस कुलीन व्यक्ति ने देखा कि कंबल फिर से बेचा जा रहा है, तो उसने उसे दूसरी बार खरीदा और जॉन को वापस भेज दिया, उनसे विनती करते हुए कि वे स्वयं इसे पहनें। हालाँकि, जॉन ने कंबल को तीसरी बार बेचने के लिए भेज दिया, लेकिन उस कुलीन व्यक्ति ने इसे तीसरी बार भी खरीदा और जॉन को वापस भेज दिया। इसके बाद, जॉन ने कुलीन को संदेश भेजा:

'हम देखेंगे कि हिम में से कौन पहले थकता है: मैं इसे बेचते-बेचते, या आप इसे खरीदकर मुझे वापस देते-देते।'

इस तरह, संत जॉन ने उस कुलीन व्यक्ति से बहुत सारा सोना प्राप्त किया, जिसे उन्होंने गरीबों में बाँट दिया।

धन्य व्यक्ति जानते थे कि कंजूस और धन-प्रेमी लोगों को भी दान करने के लिए कैसे प्रेरित किया जाए। ट्रॉयलस नाम के एक बिशप के बारे में जानते हुए, जो बहुत कंजूस और धन-प्रेमी थे, जॉन ने उन्हें बीमारों और गरीबों से मिलने के लिए अस्पताल चलने का निमंत्रण दिया। यह देखकर कि ट्रॉयलस के पास सोना है, उन्होंने उनसे कहा:

'फादर ट्रॉयलस! इन गरीब भाइयों को दान देकर उन्हें सांत्वना देने का यह आपका मौका है।'

ट्रोइलस, कंजूस दिखने से शर्मिंदा होकर, अपनी इच्छा के विरुद्ध, पहले से लेकर आखिरी तक सभी को दान देने लगा, और उसने तीस लिट्रा सोना खर्च कर दिया। लेकिन बाद में उन्हें गरीबों को इतना सोना दान करने पर पछतावा होने लगा। घर लौटने पर, ट्रॉइलस ने दान किए गए सोने के लिए इतना गहरा शोक मनाया कि वह बिस्तर पर लेट गया। इस बीच, सेंट जॉन ने उसे रात के खाने के लिए बुलाया। ट्रोइलस ने यह कहकर दावत में जाने से इनकार कर दिया कि वह बीमार है। उसकी बीमारी का कारण भांपते हुए—कि वह अपने खर्च किए गए पैसों के दुख में बीमार पड़ गया था—जॉन अपने साथ तीस लीटर सोना लेकर उस बीमार व्यक्ति से मिलने के लिए निकल पड़े। वहाँ पहुँचकर, उन्होंने कहा:

'लो, मैं तुम्हारे लिए वह सोना लेकर आया हूँ जो मैंने अस्पताल में तुमसे उधार लिया था – इसे ले लो, और मुझे एक नोट दे दो जिसमें लिखा हो कि तुम मुझे उस इनाम को सौंप रहे हो जो भगवान ने तुम्हें दिए गए सोने के लिए तुम्हें देना था।'

सोना देखकर ट्रॉइलस बहुत खुश हुआ; और उसे पाकर, वह तुरंत स्वस्थ हो गया और तुरंत निम्नलिखित लिख दिया:

'हे दयालु ईश्वर! मेरे स्वामी अलेक्जेंड्रिया के पैट्रआर्क जॉन को उन तीस लीटर सोने के लिए पुरस्कार प्रदान करें जो मैंने गरीबों में बाँटे थे, क्योंकि उन्होंने मेरा सोना मुझे वापस कर दिया है।'

ट्रोइलस से यह पत्र पाकर, जॉन ने उसे रात के खाने के लिए अपने घर आमंत्रित किया। उनका सत्कार करते हुए, संत ने मन ही मन ईश्वर से प्रार्थना की कि वह ट्रॉइलस को ऐसी लालच से मुक्त कर दें। और उसी रात, ट्रॉइलस ने एक दर्शन में अतुलनीय सुंदरता वाला एक अत्यंत शानदार घर देखा, जिसके दरवाजों के ऊपर एक सुनहरा शिलालेख था: 'बिशप ट्रॉइलस का निवास स्थान और शाश्वत विश्राम स्थल'।

ट्रॉइलस ऐसे शानदार घर को देखकर अत्यंत प्रसन्न हुआ, जो उसके लिए तैयार किया गया था। लेकिन अचानक एक राजसी दास[7787] जैसा दिखने वाला एक भव्य और भयानक व्यक्ति प्रकट हुआ, और उसने नौकरों से कहा:

'संपूर्ण संसार के स्वामी ने आज्ञा दी है कि इस लेख को मिटा दिया जाए।'

और तुरंत ही नौकरों ने इसे मिटा दिया। दूसरी बार प्रकट होकर, उसी व्यक्ति ने नौकरों से कहा:

'यह लिखो: यह अलेक्जेंड्रिया के पैट्रिआर्क जॉन का निवास स्थान और शाश्वत विश्राम स्थल है, जिन्होंने इन्हें अपने लिए तीस लिट्रा सोने में खरीदा था।'

जागने पर, ट्रॉइलस भय से भर गया; वह इस बात पर गहराई से शोक मनाने लगा कि उसने स्वर्ग में अपने लिए तैयार किया गया घर खो दिया था और उसने सोने के प्रति अपने प्रेम के लिए खुद को कोसा। उठकर, वह धन्य जॉन के पास दौड़ा और उन्हें वह सब बताया जो उसने देखा था। धन्य जॉन ने अपनी आमतौर पर की जाने वाली नम्रता से, उसे कुछ सलाह दी और उसे शांति से विदा कर दिया। उस समय से, ट्रॉइलस ने सुधार किया और सभी के प्रति बहुत परोपकारी और दयालु हो गया।

प्रभु, जिन्होंने एक बार धर्मी अय्यूब की परीक्षा ली थी, उन्होंने धन्य यूहन्ना को भी एक कठिन परीक्षा में डाला। एक दिन, अलेक्जेंड्रिया की कलीसिया के माल से लदे जहाज एड्रियाटिक सागर में चल रहे थे[7788] । अचानक एक तूफान उठा, जिसके साथ इतनी प्रचंड लहरें थीं कि जिहाज लगभग डूब गए। खतरा इतना बड़ा था कि उन्हें पूरा माल समुद्र में फेंकने के लिए मजबूर होना पड़ा। यह दैवीय व्यवस्था से हुआ, *'ताकि तुम्हारे विश्वास की खराई—जो नाश होने वाले सोने से भी अधिक कीमती है, यद्यपि आग में परखा जाता है—यीशु मसीह के प्रगट होने पर प्रशंसा, महिमा और सम्मान का कारण बने'* (1 पतरस 1:7)[7789] । वहाँ तेरह जहाज़ थे, और उन पर सवार सभी माल का मूल्य तीन हज़ार तीन सौ सोने के लिट्रा था। ऐसी संपत्ति से वंचित होकर, जिससे वह लंबे समय तक गरीबों को भोजन और वस्त्र दे सकता था, संत जॉन ने इसे कृतज्ञतापूर्वक सहन किया, अक्सर अय्यूब के शब्दों को दोहराते हुए: *'और उसने कहा: "मैं नंगा अपनी माता के गर्भ से निकला, और नंगा ही मुझे लौटना है। यहोवा ने दिया, और यहोवा ने ले लिया; [जैसा यहोवा को भान हुआ, वैसा ही हुआ;] यहोवा का नाम धन्य हो!"'* (अय्यूब 1:21)।

हालाँकि, जब शहर के कई प्रमुख नागरिक उनके दुख में सांत्वना देने के लिए उनके पास आए, तो उन्होंने उनसे उत्तर दिया:

'चर्च की संपत्ति के नुकसान का दोषी मैं ही हूँ, क्योंकि अगर मैंने इतनी उदार दान-दक्षिणा देने पर गर्व न किया होता, तो इतनी कीमती संपत्ति समुद्र में न डूबी होती। मैं घमंडी हो गया, मैंने वह नहीं दिया जो मेरा था, बल्कि वह दिया जो ईश्वर का था। और इसलिए ईश्वर ने, मुझे नम्र बनाना चाहकर, मुझे इस कंगाली में डाल दिया, क्योंकि गरीबी आदमी को नम्र बना देती है। अब, हालाँकि, मैं स्वयं महसूस करता हूँ कि, अपने अहंकार के कारण, मैंने परमेश्वर से अपना इनाम खो दिया है और गरीबों को बहुत बड़ा नुकसान पहुँचाया है; क्योंकि जिनके भोजन का नुकसान हुआ है, वे भूखे रहेंगे। लेकिन मेरे लिए नहीं, बल्कि उनके अपने हित के लिए, प्रभु गरीबों को नहीं छोड़ेंगे और उन्हें उनकी सभी ज़रूरतें प्रदान करेंगे।

इस प्रकार, जो लोग जॉन को सांत्वना देने आए थे, उन्हें स्वयं जॉन से सांत्वना और शिक्षा मिली। और प्रभु ने जल्द ही जॉन को पहले से दोगुना भेज दिया।

यूहन्ना ने गरीबों को उदारतापूर्वक दान दिया और विशेष रूप से उन लोगों की मदद की जो किसी प्रकार के अन्याय का शिकार हुए थे। एक बार, जब वह पवित्र शहीदों साइरस और जॉन के चर्च जा रहे थे, तो एक गरीब विधवा उनके पास

[7787] कुवकिुलारिसि – शाही दरबार में बिस्तर बनाने वाला।

[7788] एपेनाइन और बाल्कन प्रायद्वीपों के बीच स्थित एड्रियाटिक सागर।

[7789] एशिया माइनर के मसीहियों को प्रेरित पतरस ने इस प्रकार लिखा, उन्हें अपनी कष्टों को आनन्द से सहने के लिए प्रोत्साहित करते हुए (1 पतरस 1:6), ताकि उनका विश्वास, परखा जाने के बाद, नाशवान सोने से भी अधिक कीमती सिद्ध हो, भले ही वह आग में परखा जाए (1 पतरस 1:7)।

आई और, अपने दामाद द्वारा कि गए बड़े अन्याय के बारे में बताकर, पवित्र धर्मगुरु से सुरक्षा की मांग की। जॉन के साथ आए लोगों ने उनसे कहा:

'महाधर्माध्यक्ष महोदय, कृपया घर लौटने पर इस विधवा की विनती सुनें!'

संत ने उत्तर दिया:

'तो फिर ईश्वर अब मेरी प्रार्थना कैसे सुनेगा, अगर मैं उसकी प्रार्थना तुरंत न सुनूँ?'

और जब तक उन्होंने उस विधवा की बात नहीं सुन ली और उसके साथ हुए अन्याय के खिलाफ उसकी रक्षा नहीं कर ली, तब तक वे उस जगह से नहीं हटे।

अपने माता-पिता की मृत्यु के बाद एक युवक सहारे के बिना रह गया था। यह जानकर जॉन ने अपने साथियों से पूछा कि यह युवक गरीबी में कैसे आ गया (क्योंकि उसने सुना था कि उसके माता-पिता बहुत अमीर थे)। ईश्वर-भयभीत लोगों ने उसे बताया कि उस लड़के के माता-पिता बहुत परोपकारी थे और उन्होंने अपनी सारी संपत्ति गरीबों में बाँट दी थी, जिससे उनके बेटे के पास केवल दस लीटर सोना बचा था। लेकिन अपनी मृत्यु से पहले, उस लड़के के पिता (उसकी माँ पहले ही मर चुकी थीं), ने उसे बुलाकर सोने और परम पवित्र ईश्वर माता की एक प्रतिमा के बीच चयन करने का विकल्प दिया, और कहा:

'मेरे प्रिय पुत्र! हमारी सारी संपत्ति में से केवल दस लीटर सोना बचा है; हमने बाकी सब कुछ मसीह के हाथों में सौंप दिया है। तो मुझे बताओ: तुम्हें क्या चाहिए—सोना, या परमेश्वर की माता, हमारी लेडी की प्रतिमा, जो तुम्हारी सहायक और सहारा है?'

उस लड़के ने सोने को ठुकराते हुए परमेश्वर की अति पवित्र माता का प्रतिमाचित्र ले लिया, और कहा कि सोना गरीबों में बाँट दिया जाए। और इस प्रकार, उनका अंतिम सामान भी बेसहारा लोगों को दे दिया गया। जब उसके पिता की मृत्यु हो गई, तो वह लड़का बेसहारा हो गया, और अब हर तरह की कठिनाइयों को सहन कर रहा है। इसके बावजूद, वह परमेश्वर की अति पवित्र माता के चर्च में दिन-रात प्रार्थना करता है।

यह कहानी सुनकर, पूजनीय जॉन इस लड़के के सद्गुण और बुद्धिमत्ता से चकित रह गए; उन्होंने उसके प्रति गहरा स्नेह विकसित कर लिया और, उस समय से, अनाथों के एक सच्चे पिता की तरह, उसकी देखभाल करने लगे और इस बात पर विचार करने लगे कि वे उसके लिए क्या दया दिखा सकते हैं। एक दिन उन्होंने गुप्त रूप से अपने प्रबंधक को बुलाया और उससे कहा:

'मैं तुम्हें एक रहस्य बताना चाहता हूँ, लेकिन ध्यान रखना कि इसे किसी को मत बताना।'

प्रबंधक ने संत द्वारा बताई गई बात को गुप्त रखने का वादा किया। फिर महाधर्माध्यक्ष ने कहा:

'जाओ, एक पुरानी चर्मपत्र लो और उस पर किसी थिओनेम्पट्स के नाम पर एक अंतिम वसीयत लिखो, ताकि यह वसीयत यह आभास दे कि मैं और यह गरीब लड़का करीबी रिश्तेदार हैं।' फिर उस युवक के पास जाओ और उससे कहना: 'भाई, क्या तुम जानते हो कि तुम पादरी के करीबी रिश्तेदार हो? इसलिए तुम्हारे लिए गरीबी में रहना अपमानजनक है।' यह कहते हुए, उसे वह लिखित वसीयत दिखाना और कहना: 'मेरे बच्चे, अगर तुम्हें पादरी को यह बताने में शर्म आती है कि तुम उनके रिश्तेदार हो, तो मैं ही उन्हें तुम्हारे बारे में बता दूँगा।'

योहन की आज्ञा सुनकर, व्यवस्थापक ने जैसा पितृपुरुष ने आज्ञा दी थी, वैसा ही किया। उसने एक फटे हुए पार्चमेंट के टुकड़े पर एक वसीयत लिखी, जिससे उस गरीब युवक का पितृपुरुष के साथ संबंध स्पष्ट हो गया। फिर, उस युवक को अपने पास बुलाकर, उसने उसे वसीयत दिखाई और कहा कि उसे यह उसके पिता के पुराने कागजात में मिला है। वसीयत पढ़ने के बाद, लड़का पहले तो बहुत खुश हुआ, लेकिन फिर उसे शर्म आई कि वह बहुत गरीब था और फटेहाल कपड़े पहने हुए था, और उसने व्यवस्थापक से अपने लिए पैट्रिआर्क से बात करने को कहा। व्यवस्थापक संत के पास गया और लड़के का अनुरोध दोहराया, और संत ने कहा:

'उस लड़के से कहो कि पैट्रिआर्क यह कहते हैं: मुझे याद है कि मेरे चाचा का एक बेटा था, लेकिन मैंने उसे कभी व्यक्तिगत रूप से नहीं देखा है। तुम्हें उसे मेरे पास लाना चाहिए। वसीयत को भी अपने साथ लाना।'

प्रबंधक उस लड़के को लेकर आया और पांडुलिपि को पूजनीय के सामने प्रस्तुत किया। पैट्रिआर्क ने उस युवक को स्नेहपूर्वक गले लगा लिया और कहा:

'तुम्हारा आना अच्छा हुआ, क्योंकि तुम मेरे चाचा के पुत्र हो।'

संत ने उस युवक को एक बड़ी जागीर दी, उसके लिए एक घर और जीवन की सभी आवश्यक चीजें खरीदीं, उसे एक कुलीन कन्या से विवाह कराया, और उसे अमीर, सम्मानित और ईमानदार बनाने का प्रयास किया, ताकि भजन के वचन पूरे हो सकें: *'मैं जवान था और अब मैं बूढ़ा हो गया हूँ फिर भी मैंने कभी धर्मी को परित्यक्त नहीं देखा, न ही उनके वंशजों को रोटी के लिए भीख मांगते देखा है'* (भजन संहिता 36:25)। संत जॉन अक्सर बीमारों से मिलने जाते थे, जिनकी वे स्वयं देखभाल करते थे, और अपनी प्रार्थनाओं से मरणासन्न लोगों को सांत्वना देते थे, और उनके प्राण निकलते समय उनकी सहायता करते थे। इसके अलावा, वह विंगतों के लिए अक्सर दैवीय अनुष्ठान का आयोजन करते थे और कहते थे कि विंगतों के लिए किया गया दैवीय अनुष्ठान विंगतों को बहुत लाभ पहुँचाता है। इसके समर्थन में, संत ने साइप्रस द्वीप पर कुछ समय पहले हुई एक घटना का उल्लेख किया।

उन्होंने कहा, 'साइप्रस का एक बंदी फारस में कठोर कारावास में रखा गया था। उसके माता-पिता, जो साइप्रस में रहते थे, उन्हें बताया गया था कि वह पहले ही मर चुका है, इसलिए उन्होंने उसके लिए शोक मनाया मानो वह मर गया हो।' वे साल में तीन बार उसकी स्मृति मनाने लगे, उसकी आत्मा के लिए चर्च में बलिदान चढ़ाते थे, ताकि दैवीय अनुष्ठान (Divine Liturgy) का आयोजन हो सके। चार साल बीत जाने के बाद, उनका बेटा कैद से भागकर घर लौट आया। उसे देखकर उसके माता-पिता हैरान रह गए, उन्हें लगा कि वह मृतकों में से जी उठा है। उसकी रिहाई पर प्रसन्न होकर, उन्होंने उसे बताया कि वे साल में तीन बार उसकी स्मृति में चर्च में प्रार्थनाएँ अर्पित करते थे। बेटे ने पूछा कि वे कौन-कौन से दिनों में यह स्मृति मनाते थे। उन्होंने उत्तर दिया कि यह एपिफेनी के पर्व, ईस्टर और पेंटेकोस्ट पर होता था। यह सुनकर, उसने याद किया और कहा:

'उन दिनों, एक भव्य व्यक्ति मेरे कालकोठरी में एक दीपक लेकर मेरे पास आता था; मेरे पैरों से बेड़ियाँ गिर जाती थीं, और मैं मुक्त हो जाता था। हालाँकि, अन्य दिनों में, मैं फिर से एक कैदी की तरह बेड़ियों में जकड़ा रहता था।'

धन्य जॉन लोगों को उनके पापों के लिए, विशेष रूप से भिक्षुओं को, दोषी ठहराने में बहुत हिचकिचाते थे। एक अवसर पर, उन्होंने अन्याय से एक भिक्षु को दोषी ठहरा दिया, और उसके बाद उन्होंने उनके खिलाफ कोई भी आरोप स्वीकार नहीं किया और न ही उन्हें दोषी ठहराया। घटना इस प्रकार थी। एक युवा भिक्षु कई दिनों से अलेक्जेंड्रिया में एक बहुत ही कम उम्र की और सुंदर युवती के साथ घूम रहा था। यह देखकर, कुछ लोग यह सोचकर भटक गए कि वह उसके साथ एक अनैतिक जीवन जी रहा था, और उन्होंने इस मामले की सूचना पवित्र पैट्रिआर्क को दे दी। पैट्रिआर्क ने आदेश दिया कि दोनों को तुरंत गिरफ्तार कर लिया जाए, शारीरिक दंड दिया जाए, और एक-दूसरे से अलग एक तहखाने में बंद कर दिया जाए। जब रात हुई, तो भिक्षु पैट्रिआर्क के सपने में आया, उसे अपने कंधे दिखाए, जो पिटाई से बुरी तरह चोटिल थे, और उससे पूछा:

'क्या यही आप चाहते थे, महाशय? क्या यही तरीका है जिससे आपने प्रेरित से यह सीखा है कि मसीह के झुंड की रखवाली जबरदस्ती नहीं बल्कि स्वेच्छा से करनी है (1 पतरस 5:2)? मुझ पर विश्वास करें: आप एक मनुष्य की तरह धोखा खा गए हैं!'

इतना कहकर, वह उससे हट गया। हालाँकि, पैट्रिआर्क, अपनी नींद से जागने पर, जो उन्होंने देखा था उसके अर्थ पर विचार करने लगे; और, अपने अपराध का एहसास करते हुए, वे अपने बिस्तर पर बैठ गए, विलाप और शोक करते हुए। जब सुबह हुई, तो उसने भिक्षु को अपने सामने लाने का आदेश दिया, यह देखने की इच्छा में कि क्या वह उस आकृति जैसा दिखता है जो उसे उसके सपने में दिखाई दी थी। भिक्षु बड़ी मुश्किल से पहुँचा, क्योंकि वह अपने कई घावों के कारण मुश्किल से हिल-डुल पा रहा था। पैट्रिआर्क, उसे देखकर, स्तब्ध रह गए, एक शब्द भी नहीं बोल सके, और केवल हाथ से इशारा किया कि भिक्षु उनके बगल में बैठ जाए। फिर, होश संभालने के बाद, उन्होंने भिक्षु से उसके कपड़े उतारने और अपने कंधे दिखाने के लिए कहा, ताकि वे यह पता लगा सकें कि क्या वह उतना ही बुरी तरह घायल था जितना उन्होंने अपने सपने में देखा था। जब, बार-बार अनुरोध करने पर, भिक्षु ने अपनी पोशाक उतारनी शुरू की, तो सभी ने देखा कि वह एक नपुंसक था। पैट्रिआर्क ने, उसका घायल शरीर देखकर, हुई घटना पर गहरा खेद व्यक्त किया और, भिक्षु पर बदनामी करने वालों को बुलाकर, उन्हें तीन साल के लिए चर्च से बहिष्कृत कर दिया; जहाँ तक भिक्षु का सवाल है, उसने उनसे क्षमा मांगी:

'मुझे माफ कर दो, भाई,' उसने उससे कहा, 'क्योंकि मैंने यह अज्ञानतावश किया है। मैंने ईश्वर के सामने और आपके सामने पाप किया है। हालाँकि, आपको एक युवती के साथ इतनी लापरवाही से समय नहीं बिताना चाहिए था, जिससे सांसारिक लोगों को ठेस पहुँचती हो, क्योंकि आपने संन्यासी का वेश धारण किया है।'

भिक्षु ने विनम्रता से उत्तर दिया:

'महाशय, मुझ पर विश्वास करें, मैं आपसे झूठ नहीं बोलूँगा, बल्कि सत्य कहूँगा। पहले, जब मैं गाज़ा में था[7790] और पवित्र शहीदों साइरस और जॉन के मकबरे पर श्रद्धांजलि देने जा रहा था, तो यह युवती शाम को मुझसे मिली और मेरे पैरों पर गिरकर, आँसू भरी आँखों से मुझे साथ चलने से मना न करने की विनती करने लगी। लेकिन मैंने उसे धक्का देकर भगा दिया और भाग गया। वह, हालांकि, मेरे ठीक पीछे-पीछे आकर चिल्लाई:

'मैं आपसे अब्राहम के ईश्वर की कसम देती हूँ, जो पापियों को बचाने आए थे और जो जीवितों और मृतकों का न्याय करेंगे – मुझे अकेला न छोड़िए!'

यह सुनकर, मैंने उससे कहा:

'युवती, तुम मुझसे इस तरह क्यों विनती कर रही हो?'

'मैं एक यहूदी हूँ,' उसने रोते हुए जवाब दिया, 'और मैं अपने पिता के दुष्ट धर्म को त्यागकर ईसाई बनना चाहती हूँ। मैं आपसे विनती करती हूँ, फादर! मुझे अस्वीकार न करें, बल्कि इस आत्मा को बचाएँ जो मसीह में विश्वास करना चाहती है।'

यह सुनकर मैं ईश्वर के न्याय से भयभीत हो गया और उस कन्या को अपने साथ लेकर उसे पवित्र धर्म की शिक्षा दी। फिर पवित्र शहीदों की कब्र पर पहुँचकर मैंने उसे चर्च में बपतिस्मा दिया और अपने हृदय की सादगी में उसे एक मठ में रखने के इरादे से उसके साथ यात्रा की।

भिक्षु की कथा सुनकर, पैट्रिआर्क ने आह भरकर कहा:

'हम दुखी आत्माओं को यह अंदाज़ा भी नहीं है कि ईश्वर की सेवा में कितने छिपे हुए सेवक हैं।'

फिर उन्होंने उपस्थित सभी लोगों को अपना सपना सुनाया और सौ सोने के सिक्के लेकर उन्हें भिक्षु को देने लगे; लेकिन भिक्षु ने एक भी सिक्का स्वीकार नहीं किया, यह कहते हुए:

'यदि कोई भिक्षु यह विश्वास करता है कि ईश्वर उसकी व्यवस्था करता है, तो उसे सोने की आवश्यकता नहीं है; लेकिन यदि वह सोने से प्रेम करता है, तो वह यह विश्वास नहीं करता कि ईश्वर का अस्तित्व है।'

यह कहकर, वह पैट्रिआर्क को प्रणाम करके चल दिया। उस समय से, धन्य जॉन भिक्षुओं का और भी अधिक सम्मान करने लगे; उन्होंने भटकते भिक्षुओं को विश्राम के लिए एक मठ स्थापित किया और किसी पर भी निर्णय सुनाने से परहेज किया।

सद्-चरवाहे ने अपनी आध्यात्मिक भेड़-बकरियों को आज्ञा दी कि वे किसी को भी दोष न दें, भले ही वे किसी के पाप को जानते हों, बल्कि दूसरों के पापों के बजाय अपने पापों को देखें। ऐसा हुआ कि अलेक्जेंड्रिया का एक युवक एक नन के साथ कॉन्स्टेंटिनोपल भाग गया। सभी ने उसे दोष देना शुरू कर दिया, यह कहते हुए:

'उसने दो आत्माओं को बर्बाद कर दिया है: अपनी और उस नन की; और इसके अलावा, वह सभी के लिए एक ठोकर का कारण बना है।' फिर भी सुसमाचार में लिखा है: *'ठोकरों के कारण संसार पर हाय! क्योंकि ठोकरें आना तो अनिवार्य है; पर उस मनुष्य पर हाय, जिसके द्वारा ठोकर आती है'* (मत्ती 18:7)।

तब संत जॉन ने उनसे कहा:

– मेरे बच्चों, अपनी निंदा बंद करो, क्योंकि तुम भी दो पापों के दोषी हो: पहली बात, पापी की निंदा करके, तुम परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन कर रहे हो: *'इसलिए समय से पहले किसी भी प्रकार का न्याय मत करो, जब तक कि प्रभु न आ जाएँ, जो अँधेरे में छिपी हुई बातों को प्रकाश में लाएँगे और हृदय के इरादों को प्रकट करेंगे, और तब प्रत्येक व्यक्ति को परमेश्वर से प्रशंसा मिलेगी'* (1 कुरिन्थियों 4:5)। और दूसरी ओर, तुम अपने भाई पर बदनामी का आरोप लगा रहे हो, यह न जानते हुए कि वह अभी भी पाप कर रहा है या उसने पहले ही पश्चाताप कर लिया है।

उन्हें उपदेश देने के लिए, उन्होंने उन्हें निम्नलिखित कहानी सुनाई।

'टायर के एक भिक्षु[7791] शहर की सड़कों पर चल रहे थे। उन्हें पोर्फिरीया नाम की एक वेश्या ने देखा, जो पूरे शहर में प्रसिद्ध थी, और वह भिक्षु के पीछे चिल्लाने लगी:

'फादर! मुझे बचाएँ, जैसे मसीह ने वेश्या को बचाया था!'

[7790] गाज़ा – फ़िलिस्तीन में एक शहर, भूमध्य सागर के पूर्वी तट पर, यरूशलेम के दक्षिण-पश्चिम में।

[7791] फ़िनिसिया की प्राचीन राजधानी टायर, फ़िलिस्तीन के उत्तर में, भूमध्य सागर के पूर्वी तट पर स्थित थी।

लेकनि उस भक्षिु ने, मानव नरि्णय की परवाह कएि बनिा, उससे कहा:

– 'मेरे पीछे चलो!'

और उसका हाथ पकड़कर, वह उसे सभी के सामने शहर से बाहर ले गया। इसके बाद, पूरे शहर में यह अफवाह फैल गई कि उस भक्षिु ने वेश्या, पोर्फरिी, को अपनी पत्नी बना लयिा था। जब भक्षिु उसे एक मठ ले जा रहा था, तो पोर्फरिी को सड़क के कनिारे एक परत्यिक्त बच्चा मलिा और वह उसे अपने बेटे के रूप में पालने के इरादे से अपने साथ ले आई। कुछ समय बाद, टायर के कुछ नागरकि उस देश में पहुँचे जहाँ एल्डर और पोर्फरियिा रहते थे। जब उन्होंने देखा कि उसके पास एक बच्चा है, तो उन्होंने उपहास उड़ाते हुए उससे कहा:

'शाबाश, पोर्फरियिा, तुमने एक बच्चे को जन्म दयिा है।'

वापस आने पर, उन्होंने सभी को बताया कि पोर्फ़रिा ने भक्षिु से एक बच्चा जन्म दयिा है: 'हमने उसे अपनी आँखों से देखा है,' उन्होंने कहा, 'और वह भक्षिु से बहुत मलिता-जुलता है।' जब बड़े भक्षिु ने अपनी मृत्यु और प्रभु के पास जाने की पूर्व सूचना पाई, तो उन्होंने पेलagia से कहा (जसि नाम से उन्होंने पोर्फ़रिा का नाम बपतस्मिा के समय रखा था):

'आओ हम टायर चलते हैं, जहाँ मुझे अब जाना है। मेरी इच्छा है कि तुम मेरा साथ दो।'

वरषि्ठ की इच्छा के प्रतसिमर्पति, पेलagia उनके साथ चल पड़ीं। वे शहर में गए, अपने साथ उस बच्चे को ले गए, जो तब तक सात साल का हो चुका था। जब वे शहर में दाखलि हुए, तो वरषि्ठ बीमार पड़ गए, और कई नगरवासी उन्हें देखने आए। फरि वरषि्ठ ने उन लोगों से कहा जो उन्हें देखने आए थे:

'मुझे एक धूपदान ला दो।'

उन्होंने उसे उसके पास ला दयिा। धूपदान लेकर, उसने उसमें से जलते हुए अंगारे अपनी छाती पर डाल लएि और उन्हें तब तक वहीं रखा जब तक वे ठंडे नहीं हो गए। अंगारों ने न तो उसके शरीर को जलाया और न ही उसके कपड़ों को। यह देखकर, वृद्ध ने लोगों से कहा:

'धन्य है वह ईश्वर, जसिने एक बार झाड़ी को आग में जलने से बचाया था! वही गवाह है कि, जैसे इन गर्म अंगारों ने मेरे शरीर को नहीं जलाया और आग ने मेरे कपड़ों को नहीं छुआ, वैसे ही, मेरे जन्म के दनि से ही, मैंने कसिी भी शारीरकि पाप को नहीं जाना है।'

यह कहकर, उस वृद्ध ने अपनी आत्मा प्रभु को सौंप दी। यह सब देखने वालों ने आश्चर्य कयिा और परमेश्वर की महमिा की, जो अपने उन सेवकों को अपने समीप रखता है जो गुप्त रूप से परश्रिम करते हैं। लोगों को यह कहानी सुनाने के बाद, संत जॉन ने उन्हें इन शब्दों में उपदेश दयिा:

'इसलएि, मेरे भाइयो और बच्चों, जल्दी से न्याय न करो। हम अक्सर पापी के पाप को देखते हैं, लेकनि हम उसका पश्चाताप नहीं देखते, जो वह गुप्त रूप से करता है।

इस प्रकार इस अच्छे चरवाहे ने अपने झुंड को उपदेश दयिा और नम्रता से मसीह की कलीसयिा का शासन कयिा।

ऐसा हुआ कि फारसयिों ने उनके देश पर आक्रमण कर दयिा। योहन ने उद्धारकर्ता के वचन को याद कयिा: *'जब वे तुम्हें एक नगर में सताएँ, तो दूसरे नगर में भाग जाओ। क्योंकि मैं तुम से सच कहता हूँ, तुम इस्राएल के सब नगरों में प्रचार कर चुकने से पहलि मनुष्य का पुत्र आ जाएगा'* (मत्ती 10:23), उन्होंने अस्थायी रूप से कॉन्स्टेंटनिोपल जाने का नश्चिय कयिा। जब वह अलेक्जेंड्रयिा से रवाना हुए, तो वे बीमार पड़ गए और बस्तिर पर ही सीमति हो गए। और देखो, एक दर्शन में उन्होंने एक तेजस्वी पुरुष को देखा, जसिके हाथ में एक सुनहरी राजदंड था और जो कह रहा था:

'राजाओं का राजा तुम्हें अपने पास बुलाता है।'

इस दर्शन से, संत को एहसास हुआ कि उनके जीवन का अंत नकिट आ गया है। साइप्रस के अपने स्वदेश पहुँचने के बाद, वह अपनी यात्रा और आगे जारी नहीं रख सके और, अपने पैतृक नगर अमाफंट पहुँचने पर, प्रभु में शांतपिूर्वक नधिन कर गए। मरते समय, संत जॉन ने कहा:

'मैं तुझसे धन्यवाद करता हूँ, हे प्रभु मेरे परमेश्वर, कि तूने मुझे यह योग्य समझा कि मैं तुझसे तेरी ही चीज़ अर्पति करूँ, और इस संसार की संपत्तमिें से मेरे लएि चाँदी के सक्कि का एक तहिाई हस्सिा ही बचा है; परन्तु इस हस्सिे के संबंध में भी, मैं वसीयत करता हूँ कि यह गरीबों को दे दयिा जाए।' 'जब मुझे अलेक्जेंड्रयिा का पैट्रआर्क नयिुक्त कयिा गया, तो

मुझे अपने धर्मप्रांत में लगभग आठ हज़ार लीटर सोना मिला; और ईश्वर-प्रेमी श्रद्धालुओं की भेंटों से मैंने दस हज़ार लीटर से अधिक एकत्र किया, जो सब मैंने मसीह को दे दिया। अब मैं अपनी आत्मा भी उसी के हवाले करता हूँ[7792] ।'

परम धन्य को उनके पैतृक नगर अमाफंट में, संत टिकॉन चमत्कारकर्ता के चर्च में, दो बिशपों के साथ दफनाया गया, जिन्हें वहाँ विश्राम दिया गया था। उस समय, निम्नलिखित घटना घटी। जब उन्होंने संत जॉन को उनके बगल में रखना चाहा, तो वे शव, जैसे जीवित हों, एक-दूसरे से अलग हो गए और बीच में जॉन के शव के लिए जगह बना दी। वहाँ मौजूद सभी लोगों ने इस चमत्कार को अपनी आँखों से देखा और आश्चर्यचकित होकर, ईश्वर की महिमा की।

हम संत जॉन के दफन के बाद हुई निम्नलिखित चमत्कार का उल्लेख करने से भी नहीं चूक सकते। एक महिला, जो एक गंभीर पाप में पड़ गई थी और अपने आध्यात्मिक पिता से उसका इक़रार करने में शर्मिंदा थी, धन्य जॉन के पास विश्वास के साथ आई, जब वह जीवित थे, हालांकि तब भी बीमार और मृत्यु के करीब थे। उसने उनके चरणों में झुककर, फूट-फूट कर रोते हुए पुकारा:

'हे अति धन्य! मैं एक भयंकर पापी हूँ, और मेरा पाप इतना भयानक है कि मैं उसे किसी को बताने की हिम्मत नहीं करती। लेकिन मैं जानता हूँ कि यदि आप चाहें, तो आप मुझे क्षमा कर सकते हैं। क्योंकि प्रभु ने आपसे कहा है: *'जो कुछ भी आप पृथ्वी पर बँधवाओगे, वह स्वर्ग में बँधा रहेगा, और जो कुछ भी आप पृथ्वी पर खोलोगे, वह स्वर्ग में खुला रहेगा'* (मत्ती 16:19; यूहन्ना 20:23)।

परम धन्य ने उत्तर दिया:

'यदि तुम विश्वास से आई हो, तो मेरे सामने अपना पाप स्वीकार करो।'

इस पर उस स्त्री ने कहा:

'हे प्रभु, मैं अपना पाप स्वीकार नहीं कर सकती, क्योंकि मुझे बहुत लज्जा हो रही है।'

रेवरेंड ने उससे कहा:

'यदि तुम अपने ही होठों से इसे स्वीकार करने में बहुत शर्मिंदा हो, तो जाओ और इसे कागज़ के एक टुकड़े पर लिखकर मेरे पास लाओ।'

लेकिन उसने कहा:

'मैं इतना भी नहीं कर सकती।'

तब संत ने कहा:

'इसे लिखो, सील करो और मुझे दे दो।'

अपना पाप लिखने के बाद, उस महिला ने संत से विनती की कि वे मुहर न तोड़ें और न ही उसका पत्र पढ़ें। उसे प्राप्त करने के बाद, जॉन की पाँच दिन बाद मृत्यु हो गई। उन्होंने उस पत्र के बारे में किसी को कुछ नहीं बताया। उस समय वह महिला शहर में नहीं थी। सुबह, उनके अंतिम संस्कार के बाद, यह महिला शहर में आई और जब उसे पता चला कि पैट्रिआर्क का निधन हो गया है और उन्हें दफना दिया गया है, तो वह बहुत दुखी हुई, क्योंकि वह सोचती थी कि उनकी मृत्यु के बाद दूसरों ने उसका पत्र लेकर उसके पाप के बारे में पढ़ लिया होगा। संत की ताबूत के पास आकर, वह उनसे ऐसे पुकार उठी मानो वह जीवित हों:

'हे ईश्वर के पुरुष,' उसने पुकारा, 'मैंने स्वयं अपने पाप का इकरार करने की हिम्मत नहीं की, और अब यह सभी को पता चल गया है। ओह, काश मैंने आपको वह दस्तावेज़ न दिया होता जिसमें मेरे पाप थे। हाय, मैं दुर्भाग्यपूर्ण स्त्री! मैं आपके सामने लज्जित थी, पर अब मैं और भी अधिक लज्जित हूँ, और मैं सभी का उपहास बन गई हूँ। फिर भी, जब तक आप मुझे यह नहीं बताते कि आपने मेरा लिखा कहाँ रखा है, तब तक मैं आपकी कब्र के पास से नहीं जाऊँगी। क्योंकि आप मरे नहीं हैं, बल्कि आज भी जीवित हैं।"

वह तीन दिन तक संत जॉन की कब्र के पास इसी अवस्था में रही। तीसरी रात को, संत जॉन स्वयं अपनी कफ़न से निकले, उनके साथ उनके बगल में लेटे दो बिशप भी थे, और उन्होंने रोती हुई महिला से कहा:

'हे स्त्री, तुम हमें कब तक चैन से नहीं रहने दोगी और अपनी आँसुओं से हमारे कपड़े भीगने बंद नहीं करोगी?'

यह कहकर, उन्होंने उसे एक सील किया हुआ पत्र थमाते हुए कहा:

[7792] धन्य जॉन का 11 नवंबर 619 को निधन हो गया। उनका पर्व 12 नवंबर को मनाया जाता है क्योंकि 11 तारीख को, मिस्र में शहीद मीना का पर्व भव्य रूप से मनाया जाता था, जबकि कॉन्स्टेंटिनोपल में थियोडोर द स्टुडाइट का पर्व मनाया जाता था। संत जॉन द मर्सीफुल के अवशेष मूल रूप से कॉन्स्टेंटिनोपल (23 जनवरी) में स्थानांतरित किए गए थे, और बाद में हंगरी के प्रेसबर्ग शहर में, जहाँ वे आज भी मौजूद हैं।

'अपना पत्र लो और उसे फाड़कर अंदर देखो।'

इसके बाद, मृतक फिर से अपनी-अपनी कफ़न में लेट गए। उस महिला ने पत्र लेकर देखा कि उसकी मुहर अछूती थी; और जब उसने उसे फाड़ा, तो पाया कि जो उसने लिखा था वह मिट गया था, और उसकी जगह लिखा था:

'मेरे सेवक जॉन की खातिर, तुम्हारा पाप क्षमा किया गया है।'

उस महिला ने अपने पापों की चमत्कारिक क्षमा पाकर, बहुत प्रसन्न होकर अपने घर लौट आई, और ईश्वर की महिमा और स्तुति करते हुए उनके संत, संत जॉन द मर्सीफुल की प्रशंसा की, जिनकी प्रार्थनाओं द्वारा प्रभु हम पर भी अपनी दया दिखाएँ, हमारे सभी पापों को मिटा दें, और हमें अनंत काल के लिए जीवन की पुस्तक में अंकित करें। आमीन।

ट्रोपारियन, स्वर 8:

हे पूजनीय पिता, आपने अपने धैर्य से अपना प्रतिफल अर्जित किया है, जिन्होंने प्रार्थना में अथक बने रहे, गरीबों से प्रेम किया और उनकी आवश्यकताओं को पूरा किया: परन्तु हे धन्य दयालु यूहन्ना, मसीह हमारे परमेश्वर से प्रार्थना करें, कि हमारी आत्माओं का उद्धार हो।

कॉन्टाकियन, स्वर 2:

हे सर्वज्ञ योहन, आपने अपने धन को गरीबों पर लुटा दिया, और अब स्वर्गीय धन-संपत्ति प्राप्त की है: इसी कारण हम सभी आपका सम्मान करते हैं, जब हम आपकी स्मृति मिनाते हैं, और आपके नाम-दिन पर दान-पुण्य करते हैं!

परम पूज्य नीलस तपस्वी की स्मृति।

12 नवंबर को स्मरणोत्सव

परम आदरणीय नीलस कॉन्स्टेंटिनोपल के मूल निवासी थे, जहाँ उन्होंने उत्कृष्ट शिक्षा प्राप्त की, सभी विद्वितापूर्ण ज्ञान में महारत हासिल की और एक अत्यंत वाक्पटु वक्ता थे[7793] । वयस्कता प्राप्त करने पर, उन्होंने एक सदाचारी महिला से विवाह किया, जिससे उनके दो बच्चे हुए – एक बेटा और एक बेटी। अपने कुलीन जन्म और व्यक्तिगत गुणों के कारण, नीलस को राजधानी का प्रीफेक्ट नियुक्त किया गया[7794] । उन्होंने एक ईश्वरभक्त और सदाचारी जीवन जिया; लेकिन शाही दरबार में प्रचलित दुराचारों ने उन्हें अपने उद्धार के लिए भयभीत कर दिया और उन्होंने उच्च समाज से अलग होने का निर्णय लिया। इस संसार की व्यर्थता को समझकर, जो पूरी तरह से बुराई में पड़ा है (1 यूहन्ना 5:19), और इस बात से आश्वस्त होकर कि इसमें कुछ भी स्थायी, कुछ भी शाश्वत या न्यायसंगत नहीं है, बल्कि सब कुछ विकृत और अन्याय से भरा है, नाइल ने सच्ची और अपरिवर्तनीय खुशी और अंतहीन आनंद से भरे अनंत जीवन की ओर ले जाने वाले संकीर्ण लेकिन उद्धारकारी मार्ग की तलाश शुरू कर दी। उन्होंने अपनी पत्नी को दुनिया से अलग होने के लिए राजी किया। अपने सारे संपत्ति को गरीबों में बाँटने के बाद, उन्होंने अपने पुरुष और महिला दासों को मुक्त कर दिया; फिर उन्होंने अपने बच्चों की देखभाल का जिम्मा आपस में बाँट लिया। नील की पत्नी ने अपनी बेटी को अपने पास रख लिया, जबकि उन्होंने अपने बेटे थियोडुलस को अपने साथ ले लिया, जिसके साथ वे कॉन्स्टेंटिनोपल से प्रस्थान कर गए, और पीछे छोड़ आए संसार और सभी सांसारिक लगाव[7795] । निलस की पत्नी अपनी बेटी के साथ मिस्र चली गईं और वहाँ, महिलाओं के एक मठ में, उन्होंने मठवासी संन्यास की शपथ ली और धार्मिक कृत्यों के माध्यम से उत्साहपूर्वक प्रभु की सेवा करने लगीं। जहाँ तक धन्य नीलस की बात है, वह अपने पुत्र थियोडुलस के साथ सिनाई पर्वत[7796] पर चले गए; रेगिस्तान में बसने के बाद, उन्होंने सम्मानित रेगिस्तान के संतों के जीवन की नकल की, अपना

[7793] संत नील का जन्म चौथी शताब्दी के उत्तरार्ध में हुआ था और वे संत जॉन क्राइसोस्टोम के शिष्य थे।

[7794] शहर के वरिष्ठ पुलिस प्रशासन के प्रभारी, उच्चतम रैंक के अधिकारियों में से एक।

[7795] यह लगभग 390 का समय था।

[7796] माउंट सिनाई अरब के उत्तर-पश्चिमी भाग में, लाल सागर के पूर्वी तट पर स्थित है। ईसाई संन्यासवाद की लगभग शुरुआत से ही, सिनाई पूर्वी तपस्या के लिए एक पसंदीदा स्थान था और अपने संतों के पराक्रमी कारनामों के लिए प्रसिद्ध था।

समय उपवास, तपस्या के कार्यों, लगन से प्रार्थना और जागरण में बिताया, और विभिन्न प्रकार के मठवासी कार्यों के माध्यम से शरीर को वश में किया।

वहाँ, आदरणीय ने अपनी खोदी हुई गुफा में निवास किया, जहाँ वे चालीस वर्षों तक एक भिक्षु के रूप में रहे। उनकी ख्याति शीघ्र ही दूर-दूर तक फैल गई, और हर वर्ग और पद के कई लोग मार्गदर्शन और प्रार्थना के लिए उनकी ओर मुड़ने लगे।

जब आदरणीय महंत को सेंट जॉन क्राइसोस्टोम के निर्वासन और कारावास के बारे में पता चला[7797] , तो उन्होंने अपनी गहरी मौनता से साहसपूर्वक और निडर होकर अपनी आवाज़ उठाई और तुरंत सम्राट आर्कैडियस की निंदा की, और उस महान संत के खिलाफ उनकी अन्यायपूर्ण कार्रवाइयों की कड़ी फटकार करते हुए उन्हें एक पत्र लिखा।

जब वह इस प्रकार मठवाद के तपस्वी अभ्यासों में एक संन्यासी का जीवन जी रहे थे, तो प्रभु के प्रति उनके प्रेम की परीक्षा के लिए एक और विशेष परीक्षा भेजी गई। Barbarians[7798] ने उस रेगिस्तान पर छापा मारा; जंगली जानवरों की तरह, उन्होंने अचानक हमला किया, कई पवित्र पिताओं को मार डाला और दूसरों को बंदी बना लिया। दूसरों के साथ-साथ, उन्होंने नील के बेटे थियोडुलस को भी बंदी बना लिया। नीलस अपने बेटे के लिए बहुत रोया, खासकर जब उसे पता चला कि बर्बरों ने उसे मूर्तिपूजक देवताओं को बलिदान के लिए सजा दी है। लेकिन ईश्वर ने थियोडुलस को सुरक्षित रखा, क्योंकि एमेसा के बिशप[7799] ने उसे बर्बरों से छुड़ा लिया और बाद में उसे चर्च का एक क्लेरिक नियुक्त किया। यह जानकर, नीलस स्वयं एमेसा शहर के लिए रवाना हो गए और वहां बिशप ने उनका सम्मानपूर्वक स्वागत किया, जिन्होंने उनकी इच्छा के विरुद्ध उन्हें एक पादरी नियुक्त किया और उन्हें अपने साथ रहने के लिए कहा। हालाँकि, जब धन्य नीलस वहाँ रहने से इनकार कर दिया और सिनाई लौटने का निश्चय किया, तो बिशप ने उनके बेटे को उन्हें सौंप दिया और उन्हें शांतिपूर्वक विदा कर दिया। धन्य नीलस, अपने पुत्र के साथ सिनाई में अपने मूल निवास स्थान पर एक बार फिर लौटकर, कई वर्षों तक वहाँ रहे और फिर प्रभु के पास शांतिपूर्वक परलोक सिधार गए[7800] । पूजनीय नीलस ने अपने पीछे कई ज्ञान से परिपूर्ण तपस्या संबंधी लेख, और ईसाई आस्था तथा भक्ति के विभिन्न विषयों पर विभिन्न व्यक्तियों को लिखे पत्र छोड़े[7801] ।

पवित्र भविष्यवक्ता अहिया की स्मृति

12 नवंबर को स्मरण किया जाता है

[7797] यह वर्ष 405 का था।

[7798] यह, बेशक, व्लेमिड्स के कबीले को संदर्भित करता है, जो एक अरब कबीले से थे और अरब में रहते थे।

[7799] एमेस सीरिया में एक शहर है, जो ओरोन्टेस नदी के पूर्व में स्थित है, यह नदी उत्तर-पश्चिमी सीरिया में भूमध्य सागर में मिलती है।

[7800] संत नीलस तपस्वी की मृत्यु लगभग 450 ईस्वी में हुई। उन्होंने कुल 60 वर्ष रेगिस्तान में बिताए।

[7801] संत नीलस ने, अपने महान गुरु संत जॉन क्राइसोस्टोम की तरह, अपना अधिकांश समय पवित्र धर्मग्रंथ की व्याख्या और विश्वास के सिद्धांतों की व्याख्या में समर्पित किया; वह विशेष रूप से अपने तपस्या संबंधी लेखनों के लिए प्रसिद्ध हैं। उनका सबसे उत्कृष्ट तपस्या-सम्बंधी कार्य प्रार्थना पर एक पुस्तक है। इसके बाद आते हैं: *तपस्या* पर एक ग्रंथ, स्वैच्छिक *गरीबी* पर, *एकांत जीवन के लाभों पर,* यूलोजियस के लिए निर्देश जिसमें संसार से मुंह मोड़ने, संघर्ष में दृढ़ता, कष्टों में धैर्य और वासनाओं के खिलाफ संघर्ष पर सुंदर चिंतन शामिल हैं, और इसी तरह।, 'एपिक्टेटस की हैंडबुक', जो इस विधर्मी लेखक की कृतियों से ली गई व्यावहारिक बुद्धि के नियमों को प्रस्तुत करती है, जिसे कुछ स्थानों पर ईसाई विचारों से संशोधित किया गया है; और संत नीलस के पत्र, जो विभिन्न व्यक्तियों को और विभिन्न अवसरों पर भेजे गए थे, जो नैतिक प्रकृति के हैं। संत नीलस की सभी रचनाएँ, यद्यपि अपने विषय-वस्तु की उच्च गुणवत्ता के लिए विशिष्ट हैं, अपनी भाषा की शुद्धता और सुंदरता से भी विशेष रूप से पहचानी जाती हैं; उनमें भावनाओं की ईमानदारी झलकती है और वे विचार की शक्ति से ओत-प्रोत हैं, जो हमेशा परमेश्वर के प्रकाश की तरह स्पष्ट होती है।

पवत्रि भवष्यिवक्ता अहयिा शलिोह नगर के नविासी थे[7802] और उन्होंने सुलैमान और येरोबोआम के शासनकाल में जीवन यापन कयिा[7803] । सुलैमान के शासनकाल के दौरान, उन्होंने येरोबोआम को भवष्यिवाणी की कि सुलैमान का राज्य वभिाजति हो जाएगा और दस कबीले इससे अलग होकर इस्राएल का राज्य बनाएंगे। खेत में अकेले येरोबोआम से मलिकर, अहयिा ने अपने वस्त्र को बारह टुकड़ों में फाड़ा और आज्ञा दी कि उनमें से दस टुकड़े यरोबाम को दे दिए जाएँ, यह इस बात का संकेत था कि इस्राएल का यहोवा परमेश्वर दस गोत्रों को सोलोमन के हाथ से छीनकर उसके हाथ में सौंप देगा, और यदि वह परमेश्वर के मार्गों पर चलेगा तो उसे इस्राएल देगा। बाद में, जब येरोबोआम का पुत्र अबीया बीमार पड़ा, तो अहयिा ने येरोबोआम की पत्नी से भवष्यिवाणी की कि उसकी दुष्टता के कारण येरोबोआम का पूरा घराना नष्ट हो जाएगा, और इस्राएली यूफ्रेटसि के पार बखिर जाएंगे। अहयिा की भवष्यिवाणी पूरी हुई, जसिकी शुरुआत अबीया की तत्काल मृत्यु से हुई।

धन्य जॉन द हेयरी, रोस्तोव के चमत्कार-कर्ता का जीवन

12 नवंबर को स्मरणोत्सव

धन्य जॉन, ज़ार इवान वसीलीवचि द टेरबिल के शासनकाल के दौरान रोस्तोव शहर में रहते थे। उनकी उत्पत्ति का स्थान अज्ञात है। रोस्तोव में, वह मसीह के लिए एक पवत्रि मूर्ख के रूप में रहते थे; उनका कोई स्थायी आवास नहीं था और वे केवल कभी-कभार एक धर्मपरायण वधिवा और अपने आध्यात्मकि पति, ऑल सेंट्स चर्च के पुरोहति फादर पीटर से मलिने आराम करने के लिए जाते थे। रोस्तोव में अपने समय के दौरान, धन्य पवत्रि मूर्ख जॉन—जन्हिें 'बगि कैप' उपनाम से जाना जाता था—जो बाद में मास्को गए और वहाँ खाई पर स्थति मध्यस्थता के चर्च में दफनाए गए—उनके साथ बातचीत करते थे, ठीक वैसे ही जैसे वे बोरसिोग्लेब्स्क के प्रसद्धि तपस्वी, संत इरनिार्ख के साथ करते थे।

रॉस्तोव के धन्य जॉन हमेशा अपने साथ एक पार्चमेंट की कतिाब रखते थे और उसे पढ़ते थे – लैटनि में एक भजन-संग्रह। यह ज्ञात नहीं है कि उन्होंने यह भाषा कब या कहाँ सीखी।

धन्य जॉन का 3 सतिंबर 1580 को नधिन हो गया। उनके शरीर को, उपरोक्त धर्मनष्ठि वधिवा और उनके आध्यात्मकि पति, पुरोहति पीटर की देखभाल में, सेंट ब्लेज़ चर्च के बगल में, वेदी के पीछे दफनाया गया। दफन के समय कुछ संकेत भी हुए: एक तेज तूफान आया, बजिली चमकी और गरज हुई।

धन्य व्यक्ति के नधिन के बाद, कई लोग उनके ताबूत के पास आने लगे; उन्होंने चर्च में प्रभु परमेश्वर के लिए प्रार्थनाएँ गाईं, परमेश्वर की अति पवत्रि माता और यूहन्ना अग्रदूत की, उन्होंने पवत्रि जल मंगवाया और उसे ब्लेस्ड जॉन की कब्र की मट्टिी के साथ मलिाकर पयिा; अन्य लोगों ने उससे अपने बीमार शरीर पर अभषिेक कयिा और, अपनी आस्था के अनुसार, वभिन्नि रोगों से चंगाई प्राप्त की।

धन्य योहन की कब्र पर हो रहे चमत्कारों के बारे में सुनकर, रोस्तोव के मेट्रोपॉलटिन सरिलि ([7804]) — जो वृद्धावस्था के बोझ तले दबे हुए थे और एक गंभीर बीमारी से पीड़ति थे, जसिके कारण उनके हाथ-पैरों का उपयोग बंद हो गया था — ने आदेश दयिा कि उन्हें सेंट जॉन द हेयरी के चर्च में, सेंट योहन की प्रतमिा और धन्य योहन द हेयरी की कब्र तक ले जाया जाए। प्रार्थना सेवा के दौरान, जब पवत्रि सुसमाचार पढ़ा जा रहा था, तो पीड़ति संत ने तुरंत अपने को अपनी

[7802] शलिो एफ्राइम गोत्र का एक नगर है, जो प्रतज्ञिात देश के लगभग ठीक केंद्र में स्थति है। यहीं पर, यरदन पार करने और प्रतज्ञिात देश पर वजिय प्राप्त करने के बाद, वाचा के संदूक सहति मूसा का नविास-स्थान स्थापति कयिा गया था; इसी से इस नगर को अपना नाम मलिा ('शलिो' का अर्थ है 'शांति' या 'प्रशान्ति')। यह शहर इस्राएल के लिए बहुत महत्व रखता था, लेकनि बाद में इस्राएल के बेटों के पापों के कारण प्रभु ने शलिोह में अपने नविास स्थान को अस्वीकार कर दयिा।

[7803] दाऊद के पुत्र सोलोमन, जो इस्राएल के तीसरे राजा थे—और इस्राएल के राजाओं में सबसे बुद्धमिान और प्रतष्ठिति—ने बाद में नैतकि पतन और मूर्तपिूजा के कारण अपने शासन को कलंकति कर दयिा, जसि कारण परमेश्वर ने इस्राएल का राज्य उसकी वंश-रेखा से छीन लयिा, और दस गोत्र यहोयाबबि को दे दिए, जो पहले सुलैमान का दास था, लेकनि सुलैमान के राज्य के वभिाजन के बाद, वह इस्राएल के राज्य का पहला राजा बना। इस प्रकार, भवष्यिवक्ता अहयिा की सेवा 1010 से 963 ईसा पूर्व तक थी।

[7804] उन्होंने 1605 से रोस्तोव के मेट्रोपोलसि का शासन कयिा, लेकनि 'समय की परेशानयिों' के दौरान उन्हें उनके पद से हटा दयिा गया और 1612 में, जब पोझार्स्की और मनिनि मास्को को मुक्त करने के लिए मार्च कर रहे थे, तब उन्होंने अपना पद फरि से संभाला। मेट्रोपॉलटिन सरिील, ज़ार बोरसि फेडोरोवचि गोडुनोव की मृत्यु के समय उपस्थति थे और, मॉस्को के पास, उन्होंने ज़ार मखिाइल फेडोरोवचि रोमानोव का स्वागत कयिा और उन्हें ताज पहनाया, जन्हिें 'समय की मुसीबतों' के बाद नए सरि से चुना गया था।

बीमारी से ठीक महसूस कयि; उन्होंने अपने हाथ का उपयोग फरि से प्राप्त कर लयि, ताकि वे एक बार फरि अपने पवत्रि कर्तव्यों का पालन करने और रोस्तोव के मेट्रोपोलसि का शासन करने में सक्षम हो सकें, और वे एक और साल और पाँच महीने तक जीवति रहे[7805] ।

वशि्वास के साथ वहाँ उमड़ आए रोगयिों के बीच धन्य जॉन की कफ़न पर कई चमत्कारी उपचार हुए। इन चमत्कारों को दर्ज कयि गया और ज़ार मखिाइल फेदोरोवचि को सूचति कयि गया।

एक धर्मनष्ठि व्यापारी, जसिने स्वयं और अपने परविार पर ईश्वर की दया और कई चमत्कारकि उपचार देखे, ने धन्य संत की कब्र के ऊपर एक चर्च बनवाया।

वर्तमान में, धन्य जॉन के अवशेष 'मादर ऑफ गॉड' की टोल्गस्काया प्रतमिा के पत्थर के चर्च में, बाईं कोरस के पीछे फर्श के नीचे स्थति हैं, जसिमें 18वीं सदी में नरि्मति एक पार्श्व चैपल है जो संत जॉन द फॉररनर और पवत्रि शहीद ब्लासयिस को समर्पति है।

धन्य व्यक्ति का एक बड़ा देवदार का क्रॉस और सुंदर गोथकि लपिि में लखिा एक पार्चमेंट स्तोत्रग्रंथ लंबे समय से कब्र के पास रखा गया है। पांडुलपिि में दर्ज एक प्रवष्टिि में कहा गया है कि सेंट दमित्रिी ऑफ रोस्तोव ने 1702 में रोस्तोव के मेट्रोपोलटिन पद पर आसीन होते ही रोस्तोव के चर्चों का नरीक्षण करते समय इस स्तोत्र पर ध्यान दयि, इसकी जीर्ण-शीर्ण स्थति को नोट कयि, इसे फरि से बाँधने और पहले की तरह धन्य व्यक्ति की कब्र पर रखने का आदेश दयि। एक अन्य प्रवष्टिि, जो लैटनि में लखिी गई है, इस प्रकार है: 'अत्यंत श्रद्धा के साथ, मैंने इस पुस्तक को अपने हाथ में पकड़ा और इसे चूमा। नील, यारोस्लाव के आर्चबशिप। 14 मई 1856'[7806] .

26 नवंबर

13 नवंबर (पुराना तरीका)

हमारे पवत्रि पति जॉन क्रसिोस्टोम, कांस्टेंटनिोपल के पैट्रआर्क का जीवन

13 नवंबर को स्मरण कयि जाता है

संत जॉन क्रसिोस्टोम, संसार की रोशनी, ब्रह्मांड के शक्षिक, चर्च के स्तंभ और आधार, पश्चाताप के उपदेशक, सीरयि के एंटओिक के मूल नवािसी थे और लगभग 347 ईस्वी में उनका जन्म हुआ था। उनके माता-पति, सेकंडस और अंफुसा, एंटओिकयिाई समाज के प्रमुख वर्गों से थे और ईसाई धर्म को मानते थे। सेकंडस एक सैन्य कमांडर थे और एक सम्मानति पद पर थे; हालाँकि, वह अपने बेटे के पालन-पोषण को प्रभावति नहीं कर सके, क्योंकि जॉन के अभी एक छोटे बच्चे ही होने पर उनकी मृत्यु हो गई। परणिामस्वरूप, जॉन के पालन-पोषण की पूरी जम्मिेदारी उनकी धर्मपरायण माँ, अंफुसा पर आ गई। बहुत कम उम्र में अपने पति को खोने के बाद (उस समय उनकी उम्र लगभग बीस वर्ष थी), उन्होंने दोबारा शादी न करने का फैसला कयि, बल्कि अपना पूरा जीवन अपने बेटे के पालन-पोषण को समर्पति कर दयि। युवा जॉन ने ईसाई सच्चाइयों और धार्मकिता का पहला पाठ उन्हीं से सीखा।

अपने बेटे के ईसाई वशि्वास को मजबूत करने के बाद, अंफुसा ने उसे अलंकारशास्त्र और दर्शनशास्त्र का अध्ययन करने के लिए सोफस्टि लबिानयिस और दार्शनकि एंड्रैगाफयिस के हवाले कर दयि[7807] । बाद में, जब जॉन अठारह वर्ष के हो गए, तो उन्हें—अभी तक पवत्रि बपतस्मिा प्राप्त कए बनिा, जो उस समय की प्रथाओं के अनुसार

[7805] मेट्रोपॉलटिन करिलि के चंगा होने की तारीख 1618 मानी जाती है।

[7806] 'रॉस्तोव के चमत्कारी, दाढ़ी वाले धन्य जॉन द मेरसीफुल के चमत्कारों पर', जो 17वीं शताब्दी से रॉस्तोव में संकलति और वस्तिारति की गई थी, उसे यारोस्लावल डायोसीशयिन बुलेटनि में दो संस्करणों में कई मौकों पर प्रकाशति कयि गया था। (1860 और 1877 में) और अलग-अलग पैम्फलेट्स के रूप में (1877 और 1884 में)।

[7807] सोफ़स्टि वाक्पटुता के शक्षिक और वकील थे। लबिानयिस वाक्पटुता के शक्षिक के रूप में बहुत प्रसद्धि थे; जूलयिन द एपोस्टेट ने उनसे अध्ययन कयि था, और चर्च फादर्स में, बेसलि द ग्रेट को अपने समय के सबसे गहरे और गंभीर दार्शनकिों में से एक के रूप में जाना जाता है।

वयस्कता में दयिा जाता था—एथेंस[7808] भेजा गया ताकि वे वाक्पटुता और दर्शनशास्त्र में अपनी पढ़ाई आगे बढ़ा सकें। वहाँ अध्ययन करते समय, जॉन जल्द ही ज्ञान में अपने समकालीनों और कई दार्शनिकों से आगे निकल गया, क्योंकि उसने सभी ग्रीक पुस्तकें और विज्ञानों का अध्ययन किया था, और वह एक बुद्धिमान दार्शनिक और एक वाक्पटु वक्ता बन गया।

एथेंस में, दार्शनिक एंटिमियस के रूप में उसे एक बहुत ही दुर्भावनापूर्ण विरोधी मिला। बाद वाला, जॉन की अच्छी प्रतिष्ठा से ईर्ष्या करते हुए, उसने उसकी बदनामी की, और दूसरों में उसके खिलाफ नफरत भड़काई। लेकिन संत ने, ईश्वर की मदद से, अपने विरोधी को शर्मिंदा किया और, साथ ही, कई लोगों को मसीह के धर्म में परिवर्तित किया। यह घटना इस प्रकार हुई। जब अम्फिमियस, जॉन के साथ एक विवाद में, हमारे प्रभु यीशु मसीह के विरुद्ध अपमानजनक शब्द बोलने लगा, तो अचानक एक अशुद्ध आत्मा उस पर सवार हो गई और उसे सताना शुरू कर दिया। अनफिमियोस ज़मीन पर गिर पड़ा, उसका पूरा शरीर मरोड़ खा रहा था और वह तड़प रहा था, उसका मुँह खुला का खुला रह गया था, जिसमें से झाग निकल रहा था। यह देखकर वहाँ मौजूद सभी लोग दंग रह गए, और कई लोग डरकर भाग गए। जो लोग रुके रहे उन्होंने यूहन्ना से उस पीड़ित आत्मा वाले व्यक्ति को क्षमा करने और चंगा करने की विनती करने लगे। यूहन्ना ने उत्तर दिया:

'जब तक वह पश्चाताप नहीं करता और प्रभु मसीह पर विश्वास नहीं करता, जिनका उसने अपमान किया है, तब तक वह चंगा नहीं होगा।'

अम्फिमियस तुरंत बोला:

'मैं स्वीकार करता हूँ कि स्वर्ग में या पृथ्वी पर उस एक के सिवाय कोई अन्य ईश्वर नहीं है, जिसकी यूहन्ना गवाही देता है।'

जैसे ही उसने ये शब्द कहे, अशुद्ध आत्मा उससे बाहर निकल गई, और अंफिमियोस उठ खड़ा हुआ, वह पूरी तरह से स्वस्थ हो गया। इस चमत्कार को देखने वाले सभी लोगों ने पुकार लगाई:

'महान है ईसाई ईश्वर! केवल वही चमत्कार करता है!'

संत जॉन ने अम्फिमियस को परमेश्वर के पुत्र की निंदा करने से मना किया और उसे सच्चे धर्म की शिक्षा दी, और उसे एथेंस के बिशप के पास भेज दिया, और अम्फिमियस ने अपने पूरे परिवार के साथ उनसे पवित्र बपतिस्मा ग्रहण किया। अम्फिमियस के साथ, शहर के कई प्रतिष्ठित नागरिक भी विश्वास में आए और बपतिस्मा ग्रहण किया। यह जानकर कि यूनानियों का मसीह के प्रति यह परिवर्तन जॉन के मध्यस्थता से हुआ था, बिशप ने जॉन को पुरोहित नियुक्त करने और उन्हें एथेंस में रखने का फैसला किया, ताकि बिशप की मृत्यु के बाद (क्योंकि वे पहले से ही बहुत वृद्ध थे) जॉन उनके उत्तराधिकारी बिशप बन सकें। धन्य योहन, यह समझते हुए, गुप्त रूप से एथेंस छोड़कर अपने स्वदेश, एंटिओक लौट आए।

इस व्यर्थ संसार की खोखली महिमा और सभी सांसारिक सम्मानों को तुच्छ समझते हुए, उन्होंने एक विनम्र मठवासी जीवन अपनाने और देवदूत के समान होकर ईश्वर के लिए परिश्रम करने का संकल्प लिया। संत जॉन को इसमें उनके मित्र बेसिल (7809) द्वारा भी प्रोत्साहित किया गया, जो उसी अंतीयक के मूल निवासी थे। एक साथ अपना बचपन बिताने के कारण, उन्हें एक ही गुरुओं से शिक्षा मिली और वे एक-दूसरे के प्रति गहरा स्नेह रखते थे, क्योंकि वे समान विचारधारा के थे और उनका चरित्र एक जैसा था। इस बेसिल ने, जिसने स्वयं शुरू में ही संन्यास का संकल्प ले लिया था, अपने समकक्ष - संत जॉन - को भी संन्यास का जीवन अपनाने की सलाह दी।

उनकी अच्छी सलाह मानते हुए, जॉन तुरंत एक मठ में जाकर भिक्षु बनना चाहता था, लेकिन उसकी माँ ने उसे रोक लिया। जॉन के इरादे के बारे में जानकर, उन्होंने आँखों में आँसू लिए हुए उससे कहा:

'मेरे बच्चे! मुझे तुम्हारे पिता के साथ अधिक समय तक नहीं रहना नसीब हुआ; उनकी मृत्यु के साथ, ईश्वर की इच्छा से, तुम अनाथ हो गए और मैं विधवा हो गई। फिर भी कोई भी विपत्ति मुझे दोबारा शादी करने या तुम्हारे पिता के घर

[7808] एथेंस ग्रीस की राजधानी है, जो बाल्कन प्रायद्वीप के दक्षिण-पूर्वी भाग में स्थित है। क्रिसोस्टोम के समय में, यह अपने दर्शन और वाक्पटुता के स्कूलों के लिए प्रसिद्ध था। अमीर और शिक्षित युवा लोग वहाँ अध्ययन करते थे। संयोग से, कुछ चर्च फादर्स ने भी वहाँ अध्ययन किया: बेसिल द ग्रेट, ग्रेगरी द थियोलॉजिस्ट और अन्य।

[7809] इस बेसिल को प्रसिद्ध चर्च फादर बेसिल द ग्रेट के साथ भ्रमित नहीं किया जाना चाहिए, जो कैपैडोसिया के मूल निवासी थे और जॉन के लड़के रहते ही एक उच्च पद पर थे; 370 तक वे पहले ही एक बिशप बन चुके थे, और उनकी मृत्यु 379 में हुई।

में कोई दूसरा पति लाने के लिए मजबूर नहीं कर सकती थी। ईश्वर की कृपा से, मैंने धैर्यपूर्वक विधवा होने की विपत्ति को सहा है, और मुझे आपके चेहरे का निरंतर दर्शन, जो आपके पिता के समान है, से महान आनंद और सांत्वना मिलती है। इसके अलावा, मैंने आपके पिता की संपत्ति को बर्बाद नहीं किया है, बल्कि इसे आपके जीवन की आवश्यकताओं के लिए सुरक्षित रखा है। इसलिए, मैं तुझसे विनती करती हूँ, मेरे बच्चे, मुझे दूसरी बार विधवा मत बना, और अपने चले जाने से मेरे भीतर अपने पिता के लिए वह शोक मत जगा, जो अब शांत हो गया है; बल्कि मेरी मृत्यु का इंतज़ार कर, जिसका मैं दिन-प्रतिदिन इंतज़ार कर रही हूँ। जब तू मुझे तेरे पिता की हड्डियों के पास दफ़ना देगा, तब जो चाहे सो करना। लेकिन अभी के लिए, मेरे साथ रहो और थोड़ी देर प्रतीक्षा करो, जब तक मैं जीवित हूँ।'

अपनी माँ की विनतियों से प्रभावित होकर, जॉन ने फिलहाल घर न छोड़ने का संकल्प लिया; लेकिन, घर पर रहते हुए, उसने अपने अच्छे कपड़ों को साधारण कपड़ों से बदल लिया और एक तपस्वी का जीवन जीना शुरू कर दिया, अपना समय प्रार्थना और परमेश्वर के वचन के अध्ययन में बिताया। इस दौरान, जॉन एंटिओक के बिशप मेलेटियस के करीब आ गया, जो एक कुलीन चरित्र वाले व्यक्ति थे, जिन्होंने जॉन को जल्द से जल्द बपतिस्मा लेने के लिए मनाया; बपतिस्मा देने के बाद, उन्होंने उसे चर्च रीडर नियुक्त किया। जॉन ने यह पद तीन साल तक संभाला। इसी समय जॉन की माँ का निधन हो गया। उन्हें दफनाने के बाद, जॉन ने तुरंत अपना सारा सामान ज़रूरतमंदों में बाँट दिया, अपने पुरुष और महिला दासों को आज़ादी दे दी, और '[7810] ' के मठ में बस गए, जहाँ वे एक भिक्षु बन गए, और बड़ी लगन और भक्ति के साथ प्रभु के लिए दिन-रात परिश्रम करने लगे। यहीं उन्होंने *On the Priesthood* और *On Contrition* नामक पुस्तकें लिखीं, जिनमें बहुत कुछ उपयोगी है, और *Epistle to the Fallen Monk Theodore*[7811] ।

संत जॉन के पास ईश्वर से शिक्षण का वरदान और पवित्र आत्मा की कृपा थी, जो उस मठ में रहने वाले इसिचियस नामक एक भिक्षु को प्रकट हुई। उम्र में बड़े और सद्गुणों में परिपूर्ण होने के कारण, इसिचियस के पास दूरदर्शिता का वरदान था। एक रात, जब वह जागते हुए प्रार्थना कर रहे थे, तो उनका मन ऊँचा उठा और उन्होंने निम्नलिखित दर्शन देखा। दो भव्य पुरुष, जो सफेद वस्त्र पहने हुए थे और सूर्य की तरह चमक रहे थे, स्वर्ग से उतरे और प्रार्थना में खड़े धन्य जॉन के पास आए। उनमें से एक के हाथ में लिखा हुआ एक लट्ठा था, जबकि दूसरे के हाथ में चाबियाँ थीं। उन्हें देखकर, जॉन विस्मय से भर गया और तुरंत उनके सामने ज़मीन पर सिर झुकाने के लिए दौड़ा। इस बीच, उन पुरुषों ने जॉन का हाथ पकड़कर उसे उठाया और कहा:

'हौसला रखो और मत डरना!'

यूहन्ना ने उनसे पूछा:

'आप कौन हैं, हे स्वामिन?'

उन्होंने तुरंत उत्तर दिया:

'डरो मत, हे इच्छाओं वाले मनुष्य, हे नए दानियेल, जिसमें, तुम्हारे हृदय की पवित्रता के कारण, पवित्र आत्मा ने वास करने की कृपा की है! हमें महान शिक्षक, हमारे उद्धारकर्ता यीशु मसीह ने तुम्हारे पास भेजा है।'

इन शब्दों के बाद, प्रकट हुए पुरुषों में से एक ने अपना हाथ बढ़ाया और यूहन्ना को एक पांडुलिपि देते हुए कहा:

[7810] यह मठ अंफ़ियालोपोलिस से बहुत दूर नहीं, उससे लगे पहाड़ों में स्थित था।

[7811] क्रिसोस्टोम ने अपने 'पुरोहितत्व पर प्रवचन' निम्नलिखित अवसर पर लिखे। जब संत जॉन अपने मित्र बेसिल के साथ सांसारिक मामलों से दूर रह रहे थे, तब अंtओक में एकत्रित बिशपों ने दोनों को बिशप नियुक्त करने का निर्णय लिया; यह खबर जॉन और बेसिल तक पहुँची। जॉन, मसीह की कलीसिया के एक चरवाहे के कर्तव्यों को ठीक से पूरा करने के लिए खुद को अपरिपक्व समझते हुए, गुप्त रूप से सभी से, यहाँ तक कि अपने मित्र बेसिल से भी, दूर हो गए और रेगिस्तान में चले गए। हालाँकि, बेसिल को एंटिओक के पास राफाना के बिशप के रूप में अभिषिक्त किया गया था। बाद में जॉन से मिलने पर, उन्होंने पवित्र पद को त्यागने के लिए मित्रतापूर्वक उन्हें फटकारना शुरू कर दिया। इन फटकारों के जवाब में, संत जॉन ने 'पुजारी पद पर छह शब्द' लिखे, जिसमें उन्होंने चरवाहे के मंत्रालय की उच्च गरिमा के बारे में वाक्पटुता से बात की है। थियोडोर को लिखा गया पत्र निम्नलिखित अवसर पर लिखा गया था: थियोडोर, जॉन का मित्र होने के नाते, संन्यासी जीवन जीने का संकल्प ले चुका था, लेकिन बाद में उसने अपना मन बदल लिया, संन्यासी जीवन त्याग दिया और विवाह कर लिया। इस बात से व्यथित होकर, जॉन ने थियोडोर को दो अत्यंत प्रभावशाली पत्र लिखे, जिनमें दुनिया की व्यर्थता का जीवंत वर्णन करने के बाद, उन्होंने अपने मित्र से संन्यासी जीवन में लौटने का आग्रह किया। उस पत्र का थियोडोर पर प्रभाव पड़ा: वह मठवासी जीवन में लौट आया, और बाद में मॉपसुएस्टिया (एशिया माइनर के दक्षिण-पूर्वी भाग में) का बिशप बना।

'मेरे हाथ से यह पट्टी ले लो! मैं यूहन्ना हूँ, जो अंतमि भोज में प्रभु की छाती पर सरि रखकर लेटा था और उनसे दविय प्रकाशन प्राप्त कएि थे।[7812] प्रभु आपको भी ज्ञान की पूर्ण गहराई का ज्ञान दें, ताकि आप लोगों को मसीह की शक्षिा की अमर रोटी से पोषति कर सकें और अपने ही होठों से उन वधिर्मी और यहूदयिों को मौन कर सकें जो ईश्वर का अपमान करते हैं।

दूसरे ने अपना हाथ जॉन की ओर बढ़ाकर उसे चाबयिाँ सौंपीं और कहा:

'ये चाबयिाँ लो, क्योंकि मैं पतरस हूँ, जसिे राज्य की चाबयिाँ सौंपी गई हैं। प्रभु तुम्हें पवत्रि चर्चों की चाबयिाँ भी सौंपता है, ताकि जसिे तुम बाँधोगे वह बँधा रहे, और जसिे तुम खोलोगे वह खुल जाए।'

धन्य योहन एक बार फरि घुटने के बल झुक गए और प्रकट हुए प्रेरतिों के सामने नतमस्तक हुए, यह कहते हुए:

'मैं कौन हूँ, एक पापी और सभी मनुष्यों में सबसे छोटा, कि मैं ऐसी महान और भयानक सेवा को अपने ऊपर लेने और वहन करने की हम्मित करूँ?'

परन्तु प्रकट हुए पवत्रि प्रेरतिों ने एक बार फरि से उसका दाहनिा हाथ पकड़कर उसे खड़ा कर दयिा, और कहा:

– 'अपने पैरों पर खड़े हो जाओ, हम्मित रखो, मजबूत बनो, और वही करो जसिके लिए हमारे प्रभु यीशु मसीह तुम्हें बुला रहे हैं, उनके लोगों के पवत्रिकिरण और उन्हें मजबूत करने के लिए, जनिके उद्धार के लिए उन्होंने अपना लहू बहाया। परमेश्वर का वचन प्रचार करो; नडिर होकर प्रभु का स्मरण करो, जन्होंने कहा: *"डरो मत, हे छोटी भेड़! क्योंकि तुम्हारे पति को तुम्हें राज्य देना भाया है* (लूका 12:32)[7813] । इसलिए डरो नहीं, क्योंकि मसीह हमारे परमेश्वर को तुम्हारे द्वारा अनेक आत्माओं को पवत्रि करने और उन्हें अपने ज्ञान की ओर ले जाने में प्रसन्नता है। सत्य के लिए, आप कई परीक्षणों और दुःखों को सहन करेंगे, लेकनि उन्हें एक कठोर हीरे की शक्ति से सहन करें[7814] , क्योंकि इस प्रकार आप परमेश्वर के राज्य के वारसि बनेंगे।

यह कहने के बाद, जो पुरुष प्रकट हुए थे उन्होंने यूहन्ना पर क्रूस का चन्हि बनाया और प्रभु के नाम पर उसे चूमकर चले गए। पूजनीय इसखियुिस ने तपस्या में अनुभवी अन्य भाइयों को जो कुछ उन्होंने देखा था, वह बताया, और वे चकति हो गए और परमेश्वर की महमिा करने लगे, जो गुप्त रूप से परश्रिम करने वाले अपने सेवकों की देखभाल करते हैं। इसी समय, हेसकियिस ने उन्हें इस दर्शन के बारे में कसिी को भी न बताने का आदेश दयिा, कहीं ऐसा न हो कि योहन को पता चल जाए और वह उन्हें छोड़ दे, और इस प्रकार वे ऐसे महान ईश्वर-पुरुष की संगति से वंचति हो जाएँ।

धन्य योहन ने, अपनी ओर से, शब्द और कर्म में परश्रिम करते हुए, लगन से अपनी मुक्ति की खोज की; स्वयं सफलतापूर्वक प्रयास करते हुए, उन्होंने दूसरों को अपने उदाहरण का पालन करने के लिए प्रेरति कयिा और सुस्त लोगों को स्वर्गीय चीजों के लिए प्रयास करने, अपने शरीर को वश में करने और उसे आत्मा के अधीन करने के लिए प्रोत्साहति कयिा। जबकि वे मठ में ईश्वर भक्ति के साथ परश्रिम कर रहे थे, इस धन्य व्यक्ति ने इस समय के दौरान कई चमत्कार कएि।

अंतयिोकयिा का एक नविासी, जो धन-संपत्ति और कुलीन वंश का व्यक्ति था, उसे भयंकर सरिदर्द से पीड़ा हो रही थी, इतना कि उसकी दाहनिी आँख बाहर नकिल आई थी और उसके गाल से लटक रही थी। कुशल चकित्सिकों पर अपनी बहुत सी संपत्ति खर्च करने के बाद भी उसे उनसे कोई राहत नहीं मलिी। फरि, संत जॉन के बारे में सुनकर, वह मठ में उनके पास आया; संत के पास पहुँचकर, उसने उनके पैरों को गले लगा लयिा, उन्हें चूमा और संत से उपचार की भीख माँगी।

संत जॉन ने उससे कहा:

'ऐसी बीमारयिाँ लोगों पर उनके पापों और अवश्विास के कारण आती हैं। इसलिए, यदि तुम पूरे दलि से वश्विास करते हो कि मसीह में तुम्हें चंगा करने की शक्ति है, और यदि तुम अपने पापों से मुँह मोड़ लेते हो, तो तुम परमेश्वर की महमिा देखोगे।'

उस बीमार ने उत्तर दयिा:

[7812] अर्थात्, संत यूहन्ना प्रेरति और सुसमाचार लेखक, दैवीय-वज्ञिानी।

[7813] उक्त अंश में, प्रभु अपने शष्यिों से कहते हैं, कि वे सांसारकि चीजों से न जुड़ें, बल्कि पहले परमेश्वर के राज्य की खोज करें। 'छोटी भेड़-बकरयिों का झुंड' सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण रूप से शष्यिों को संदर्भति करता है, और फरि मसीह के सभी अनुयायियिों को, जन्हिें परमेश्वर ने स्वर्ग के राज्य के लिए पहले से ही चुना है।

[7814] एडामेंट – एक हीरा, सबसे कठोर पत्थर, जो अन्य पत्थरों को काटता है।

'मैं वशि्वास करता हूँ, पतिाजी, और मैं वही करूँगा जो आप मुझसे कहेंगे।'

यह कहकर, उसने धन्य योहन के वस्त्र को पकड़ा और उसे अपने सरि पर और अपनी रोगग्रस्त आँख पर रख लयिा। बीमारी तुरंत ही दूर हो गई, आँख अपनी सही जगह पर लौट आई, और वह आदमी इतना स्वस्थ हो गया मानो वह कभी बीमार ही न हुआ हो; ईश्वर की महमिा करते हुए, वह घर लौट गया।

इसी तरह, अर्केलाउस नाम का एक और व्यक्ति, जो अंफ़ियिा शहर का एक बुज़ुर्ग था और जसिके चेहरे पर कोढ़ था, चंगा होने के लिए संत जॉन के पास आया। उसको वशि्वास के सत्यों में शकि्षति करने के बाद, जॉन ने उसे मठ में भाइयों द्वारा पीए जाने वाले पानी से अपना माथा धोने का आदेश दयिा। ऐसा करने पर, वह बीमार व्यक्ति अपनी कुष्ठ रोग से मुक्त हो गया और, दुनयिा को पीछे छोड़कर, एक भकि्षु बन गया।

एक अन्य व्यक्ति, यूक्लयिोस नामक, जो बचपन से अपनी दाहनिी आँख से अंधा था, उस मठ में आया जहाँ धन्य जॉन ठहरे हुए थे और उसने मठवासी संन्यास की शपथ ली। जॉन ने उससे कहा:

'भगवान आपको ठीक करें, भाई, और आपकी आत्मा और शरीर की आँखों को ज्ञान प्रदान करें।'

संत के ये शब्द कहते ही यूक्लयिोस की अंधी आँख अचानक ठीक हो गई, और उस बीमार व्यक्ति को स्पष्ट रूप से देखने की क्षमता प्राप्त हो गई। इस चमत्कार को देखकर, भाइयों ने आश्चर्य व्यक्त कयिा और कहा:

'सचमुच, जॉन परमेश्वर के सेवक हैं, और पवत्रि आत्मा उनमें वास करते हैं।'

क्रस्टिीना नाम की एक महलिा, जसिे रक्तस्राव की समस्या थी, ने अपने पतसिे उसे संत जॉन के पास ले जाने का आग्रह कयिा। अपनी पत्नी को एक गधे पर बठिाकर, पतमिठ के लिए रवाना हुआ और उसे मठ के द्वार पर छोड़ गया, जबकि वह स्वयं संत से मलिने अंदर गया और अपनी पत्नी को उसकी बीमारी से ठीक करने के लिए उनसे वनिती करने लगा। संत जॉन ने उस व्यक्ति से कहा:

'अपनी पत्नी से कहो कि वह अपना दुष्ट स्वभाव बदल ले और अपने नौकरों के साथ क्रूर व्यवहार करना बंद कर दे, यह ध्यान में रखते हुए कि वह भी उन्हीं की तरह उसी मट्टिी से बनी है[7815] ।' और उसे गरीबों को दान देकर और प्रार्थना करना कभी बंद न करके अपनी आत्मा का ध्यान रखना चाहिए। साथ ही, संयम का अभ्यास करें और उपवास और पवत्रि दनिों पर खुद को शुद्ध रखें, और ईश्वर आपकी पत्नी को स्वास्थ्य प्रदान करेंगे।

वदिा लेकर, पतनि अपनी पत्नी को वह सब कुछ बताया जो उसने संत से सुना था। उसने अपने अंतमि सांस तक दए गए सभी आदेशों का पालन करने का पूरा मन बना लयिा। पतसिंत के पास लौटा और उसे अपनी पत्नी के संकल्प के बारे में बताया। संत ने उत्तर दयिा:

'शांतसि जाओ! प्रभु ने उसे पहले ही चंगा कर दयिा है।' अपनी पत्नी के पास लौटकर, पतनि े पाया कि वह चंगी हो चुकी थी, और वे परमेश्वर की महमिा करते हुए आनंद से घर लौट आए।

ऐसा हुआ कि उस समय, जॉन के आश्रम के पास ही, एक भयंकर सहि प्रकट हुआ, जो सड़कों पर घूम-घूम कर लोगों और मवेशयिों को खा जाता था। कई बार पड़ोसी गाँव के नविासी हथयिारों और तीरों के साथ उस जानवर का इंतजार करने के लिए इकट्ठा होते, इस उम्मीद में कि वे उसे मार डालेंगे, लेकनि हर बार उनकी कोशशि व्यर्थ जाती थी। ओक के झुरमुट से नकिलकर, वह जानवर क्रूरता से लोगों पर हमला करता था, उनमें से कई को मौके पर ही मार डालता था, दूसरों को इतनी बुरी तरह घायल कर देता था कि वे मुश्कलि से बच पाते थे, और कुछ को जीवति अपने बलि में ले जाकर खा जाता था। जब वे जॉन के पास आए, तो स्थानीय ग्रामीणों ने उन्हें यह सब बताया और उनसे अपनी प्रार्थनाओं से मदद करने की वनिती की। जॉन ने नविेदन करने वालों को एक लकड़ी का क्रॉस दयिा, और उन्हें उस जगह पर स्थापति करने का नर्दिेश दयिा जहाँ से वह जानवर नकिलता था। उन्होंने वैसा ही कयिा जैसा उनसे कहा गया था, और कुछ ही दनिों में उन्होंने देखा कि वह दानव अब दखिाई नहीं दे रहा था। तब गाँव वाले क्रूस के पास गए और वहाँ उन्हें शेर की लाश मलिी। संत जॉन की प्रार्थनाओं के माध्यम से, क्रूस की शक्ति द्वारा इस वपित्तसि े मुक्त होकर, वे आनंदति हुए और परमेश्वर के उस पुरुष की महमिा करने लगे।

जॉन उस मठ में चार साल तक रहे। फरि, अधकि एकांत की इच्छा से, वे चुपके से वहां से रेगस्तिान में चले गए, वहां एक गुफा खोजी और दो साल तक उसमें अकेले रहे।

[7815] कीचड़ – मट्टिी, धूल, पृथ्वी की धूल।

दो साल बाद, अपनी कठनि मेहनत से थके और ठंड से पीड़ति होकर, जॉन बीमार पड़ गए, इसलिए वे अब अपनी देखभाल नहीं कर पा रहे थे। इसलिए उन्हें रेगस्तिान छोड़कर एंटओिक लौटने के लिए मजबूर होना पड़ा। यह सब ईश्वर की व्यवस्था और कलीसिया की देखभाल के कारण हुआ, ताकि ऐसा दीपक रेगस्तिान में, जैसे किसी पात्र के नीचे छपिा हो, छपिा न रहे, बल्कि सभी के लिए चमके। प्रभु ने यूहन्ना को बीमार पड़ने दिया, और इस प्रकार उसे जानवरों के बीच रहने से लोगों के बीच रहने के लिए ले आए, ताकि वह न केवल स्वयं के लिए बल्कि दूसरों के लिए भी लाभदायक हो सके।

जब धन्य योहन अंताकिया पहुँचे, तो परम पावन पैट्रिआर्क मेलेटियस ने उन्हें खुशी से स्वागत किया, उनके रहने की व्यवस्था की, उन्हें अपने साथ रहने का निर्देश दिया, और कुछ ही समय बाद उन्हें एक डकिन के रूप में नियुक्त कर दिया। उन्होंने छह वर्षों तक इस पद पर सेवा की, और अपने सदाचारी जीवन तथा प्रेरणादायक लेखन से परमेश्वर की कलीसिया को सुशोभति किया। एक डकिन के रूप में अपने कार्यकाल के दौरान, संत जॉन ने निम्नलिखित कृतियाँ लिखीं: 'कुँवारीपन पर पुस्तक', 'एक युवा विधवा को', और, विश्वास के बचाव में: 'धन्य शिशु पर एक प्रवचन, साथ ही जूलियन के विरुद्ध, और मूर्तिपूजकों को'[7816] ।

उस समय, संत मेलेटियस को नाज़ियान्ज़ुस के संत ग्रेगरी के पैट्रिआर्क के रूप में अभिषेक के लिए कॉन्स्टेंटिनोपल की यात्रा करनी पड़ी। वहां पहुंचने के कुछ ही समय बाद, संत मेलेटियस प्रभु में निवृत्त हो गए। अपने पैट्रिआर्क की मृत्यु की खबर सुनकर, जॉन एक बार फिर से एंटओिक छोड़कर उस मठ में चले गए जहाँ वे मूल रूप से रहते थे। भिक्षुओं ने उनकी वापसी पर प्रसन्नता व्यक्त की, एक आध्यात्मिक उत्सव का आयोजन किया, और उनकी पारंपरिक शिक्षाओं को ग्रहण किया। मौन में स्वयं को ईश्वर को समर्पित करते हुए, जॉन वहाँ तीन साल तक रहे।

फ्लावियिन[7817] ने अंतीयक के चर्च का पदभार संभाला। एक रात, जब वह प्रार्थना में खड़े थे, तो प्रभु का एक स्वर्गदूत उनके पास प्रकट हुआ और कहा:

'कल, उस मठ में जाओ जहाँ ईश्वर के सेवक जॉन रहते हैं; उन्हें वहाँ से शहर में लाओ और उन्हें एक पुरोहित के रूप में नियुक्त करो, क्योंकि वह ईश्वर का चुना हुआ पात्र है, और ईश्वर चाहते हैं कि उसके माध्यम से कई लोगों को सच्चे धर्म की ओर ले जाएँ।'

उसी समय, संत जॉन के पास भी एक स्वर्गदूत प्रकट हुआ, जब वे अपनी प्रथा के अनुसार अपनी कोठरी में अपनी रात की प्रार्थना कर रहे थे, और उसने उन्हें फ्लैवियिन के साथ शहर जाने और उनसे अभिषेक प्राप्त करने का आदेश दिया। दिन चढ़ने पर, पैट्रिआर्क मठ पहुँचे; सभी भिक्षु, धन्य जॉन के साथ, उनका स्वागत करने के लिए बाहर गए; नमन करने के बाद, उन्होंने पैट्रिआर्क का आशीर्वाद प्राप्त किया, और फिर, उचित सम्मान के साथ, उन्हें चर्च के अंदर ले गए। ईश्वरीय अनुष्ठान संपन्न करने और उपस्थित सभी लोगों को सभी पवित्र रहस्य प्रदान करने के बाद, पैट्रिआर्क ने भाइयों को अपना शांति-संदेश दिया और, जॉन को अपने साथ लेकर, शहर के लिए प्रस्थान किया। जब वे इस पवित्र ईश्वर-पुरुष से विदा हो रहे थे, तो भिक्षु बेकाबू होकर रो पड़े।

अगले दिन सुबह, जॉन का एक पुरोहित के रूप में अभिषेक हुआ; जब पैट्रिआर्क ने उनके सिर पर अपना हाथ रखा, तो एक सफेद, तेजस्वी कबूतर अचानक संत जॉन के सिर के ऊपर उड़ता हुआ दिखाई दिया। पैट्रिआर्क फ्लेवियिन और चर्च में मौजूद सभी लोग इस पर चकित और विस्मित हो गए और वे लंबे समय तक इस पर अचंभित रहे। इस चमत्कार की खबर अंतीयक, सीरिया[7818] और आसपास के कस्बों में फैल गई, और जो भी इसे सुनते थे, वे कहते थे:

'जॉन कैसा व्यक्ति होगा? क्योंकि देखो, आरंभ से ही प्रभु की महिमा उस पर प्रकट हुई है!'

एक पुरोहित के रूप में, जॉन ने मानव आत्माओं के उद्धार के लिए और भी अधिक उत्साह के साथ खुद को समर्पित कर दिया। सप्ताह में एक या दो बार, और कभी-कभी तो हर दिन भी, वे गिरिजाघर में लोगों को उपदेश देते थे। ऐसा हुआ कि एक गिरिजाघर में उपदेश देने के बाद, वे थके-मांदे उस कैथेड्रल तक पैदल गए जहाँ बिशप सेवा देते थे; और बिशप ने, मंडली

[7816] 'कन्या-भाव पर' और 'विधवा के नाम' नामक प्रबंध सबसे उत्कृष्ट विचारों से परिपूर्ण हैं। उनमें, संत जॉन स्वयं को देहिक पवित्रता के एक उत्साही समर्थक के रूप में प्रस्तुत करते हैं और मांस के प्रलोभनों के खिलाफ संघर्ष में आत्मा को मजबूत करने के साधनों की ओर इशारा करते हैं। जूलियन के विरुद्ध अपने प्रबंध में, वह मुख्य रूप से ईश्वर की दिव्य व्यवस्था पर चर्चा करते हैं और सम्राट जूलियन की धर्मत्यागी की निंदा करते हैं, जिसने पवित्र बपतिस्मा से प्रबुद्ध होने के बाद, ईसाई धर्म को त्याग दिया, एक मूर्तिपूजक और ईसाइयों का शत्रु बन गया। इतिहास में, जूलियन धर्मत्यागी को मूर्तिपूजा का एक उत्साही संरक्षक के रूप में जाना जाता है, जिसने इसे ईसाई धर्म पर हावी करने का प्रयास किया।

[7817] संत फ्लावियिन ने मेलेटियस की मृत्यु के बाद 381 से 404 तक अंकोई की धर्मपीठ संभाली।

[7818] सीरिया से तात्पर्य भूमध्य सागर के पूर्व के तटीय क्षेत्र से है, जो टॉरस पर्वत, ऊपरी यूफ्रेटिस और अरब मरुभूमि से घिरा हुआ है।

की आम इच्छा के अनुसार, उनसे फरि से उपदेश देने के लिए कहा। एक पुरोहति के रूप में अपनी सेवकाई के दौरान, संत जॉन ने कई उपदेश दिए, जनिमें से कुछ हमें आज भी प्राप्त हैं। ऐसा करते हुए, चर्च के उपदेश-मंच की ऊँचाई से, उन्होंने पवत्रि धर्मग्रंथों की व्याख्या करने के लिए उत्साहपूर्वक स्वयं को समर्पति कयिा। उन्होंने पुराने नयिम की कई पुस्तकों, मत्ती और यूहन्ना के अनुसार सुसमाचारों, और प्रेरतिों के काम पर अत्यधकि शक्षिाप्रद टीकाएँ रचीं; वह वशिेष रूप से अन्यजातयिों के प्रेरति, पौलुस के पत्रों के शौकीन थे, और अपने उपदेशों में लोगों को उनमें से कई की व्याख्या करते थे।

संत जॉन क्रसिोस्टोम अक्सर बनिा तैयारी के अपने प्रवचन देते थे, यह एक ऐसा तथ्य था जसिने अंतीयक के सभी नविासयिों को बहुत आश्चर्यचकति कयिा, जन्हिोंने उस धन्य व्यक्तकिी प्रशंसा की, क्योंकउिस समय तक कसिी ने भी कताब या नोटबुक के बनिा परमेश्वर के वचन का प्रचार नहीं कयिा था: जॉन उनके बीच ऐसे पहले प्रचारक थे। उनकी शक्षिाएँ इतनी शक्तशिाली थीं कजिो भी उन्हें सुनते थे, वे उन्हें और सुनना चाहते थे। इसीलिए कई लेखक योहन के प्रवचनों को पार्चमेंट पर लखिते थे[7819] और उन्हें नकल करके दूसरों तक पहुँचाते थे। उनकी शक्षिाएँ भोजन के समय और सार्वजनकि चौराहों पर पढ़ी जाती थीं, और श्रोता उनके शब्दों को हृदय से याद कर लेते थे, ठीक वैसे ही जैसे वे भजन संहति को याद करते थे। यूहन्ना इतने वाक्पटु वक्ता और सभी के लिए इतने दयालु शक्षिक थे कशिहर में ऐसा कोई व्यक्तनिहीं था जो उनके प्रवचनों को सुनना न चाहता हो; और जब भी यह पता चलता कयिूहन्ना बोलना चाहते हैं, तो हर कोई खुशी-खुशी चर्च में उमड़ पड़ता था। शहर के मजस्ट्रिेट और न्यायाधीश अपने कर्तव्यों को, व्यापारी अपने व्यापार को, और कारीगर अपने काम को छोड़कर, जॉन की शक्षिा सुनने के लिए दौड़ पड़ते थे, और यह ध्यान रखते थे कउिनके होठों से नकिला एक भी शब्द न छूट जाए। जब लोग योहन के मधुर वचन नहीं सुन पाते थे तो वे इसे एक बड़ा नुकसान मानते थे। इसीलिए उन्हें वभिन्नि सम्मानजनक उपाधयिाँ दी गईं। कुछ लोग उन्हें 'ईश्वर और मसीह का मुख' कहते थे, कुछ 'मधुर-भाषी' और कुछ अन्य 'मधु-वाणी'।

कभी-कभी ऐसा होता था कविह धन्य व्यक्त,ि वशिेष रूप से अपने पुरोहतित्व की शुरुआत में, ऐसे उपदेश देते थे जनिकी सामग्री कम पढ़े-लखिे श्रोताओं के लिए हमेशा समझ में नहीं आती थी। एक बार, एक महलिा, सुन तो रही थी लेकनि जो कहा जा रहा था उसे समझ नहीं पा रही थी, उसने भीड़ में अपनी आवाज़ उठाई और जॉन से कहा:

– आध्यात्मकि गुरु, या यूँ कहें कजिॉन क्रसिैस्टम, आपके पवत्रि उपदेश का स्रोत गहरा है, लेकनि हमारे मन की डोरी छोटी है और उसकी गहराई तक नहीं पहुँच सकती।

तब बहुत से लोगों ने कहा:

'ईश्वर स्वयं ने, एक महलिा के मुख से, योहन को यह नाम प्रदान कयिा; अतःअब से उसे *क्रसिोस्टोम* कहा जाए।'

वास्तव में, उस समय से अब तक चर्च ने जॉन के लिए इस उपाधकिो बनाए रखा है।

यह महसूस करते हुए कलिोगों को जटलि उपदेश देना अनुचति था, संत जॉन ने तब से अपने प्रवचनों को परष्कृित वाक्पटुता से नहीं, बल्कसिरल और शक्षिाप्रद शब्दों से सजाना शुरू कर दयिा, ताकसिबसे साधारण श्रोता भी समझ सके और लाभान्वति हो सके। एंटीओक के नविासयिों को ईसाई धर्म और जीवन के तरीके में शक्षिति करते हुए, संत जॉन क्रसिैस्टम ने सार्वजनकि वपित्तकि समय अपने साथी नागरकिों के लिए एक सांत्वनाकर्ता के रूप में भी काम कयिा।

अंफ़योकी में, शहर के गरीब नविासयिों पर भारी बोझ डालने वाले एक कर लगाए जाने के बाद एक लोकप्रयि वद्रिोह भड़क उठा। गुस्साई भीड़ ने शहर में खड़े सम्राट और उसके परविार की मूर्तयिों को गरिा दयिा और उन्हें टुकड़े-टुकड़े कर दयिा। लेकनि जल्द ही, उन्मत्त क्रोध की जगह आतंक और नराशिा ने ले ली। अंतयोकयिा के लोग वद्रिोहयिों पर सम्राट के क्रोध के प्रकट होने का इंतजार करने लगे। लोगों की वनितयिों को मानते हुए, धर्मनष्ठि सेंट फ्लावयिन ऑफ़ एंटीओकयिा ने अपराधी शहर की ओर से मध्यस्थता करने के लिए सम्राट के पास जाने का नश्चिय कयिा; हालाँकि, सेंट जॉन को वह पीड़ति आत्माओं को सांत्वना देने और उनका उपचार करने के लिए शहर में ही छोड़ गए। लेंट शुरू हुआ, जो वास्तव में अंकोई के लोगों के लिए पश्चाताप और दुख का समय था। हर दनि, ईश्वर का दीपक, जॉन, चर्च के उपदेश-मंच पर चढ़ते और लोगों को सांत्वना और उत्थान के शक्तशिाली शब्दों से संबोधति करते थे। कभी-कभी उन्होंने लोगों के संकल्प और साहस को मजबूत कयिा; तो कभी, उन्होंने सम्राट की दया के लिए उनकी आशाओं को पुनर्जीवति कयिा; और कभी-कभी, उन्होंने उनमें आने वाले जीवन के लिए एक आशा जगाई। साथ ही, उन्होंने अपने सह-नागरकिों के दुर्गुणों

[7819] पार्चमेंट, चमड़े की चादरें, पापरिस और उस समय लेखन के लिए उपयोग की जाने वाली अन्य सामग्रयिों पर।

की नदिा की: अमीरों की कंजूसी, लालच, व्यभचिार, पाखंड, क्रूरता और अंधवशि्वास; उन्होंने कहा कि इन दुर्गुणों के कारण अंतीयक के लोगों ने शहर पर ऐसी वपित्ति ला दी है, और उन्हें सुधार करने का आग्रह कयिा। शायद पहले कभी लेंट का पालन इतनी कठोरता से नहीं कयिा गया था, और न ही ऐसा पश्चाताप का भाव लेकर कयिा गया था जसिने पूरी आबादी को झकझोर दयिा हो। लोग झुंड के झुंड चर्च में उमड़ पड़े और क्रसिोस्टोम के उपदेशों को उत्सुकता से सुना, जसिमें उन्हें अपने दुख का सांत्वना-सूत्र मलिा। इस बीच, संत फ्लावयिन दया की याचना के साथ सम्राट के समक्ष उपस्थति हुए, और ईसाई सम्राट ने उन लोगों को क्षमा कर दयिा जन्हिोंने सर्वोच्च प्राधकिरण का अपमान कयिा था। क्षमा की यह खबर फ्लावयिन द्वारा स्वयं ईस्टर के दनि ए को दी गई। उत्सव के पहले ही दनि, संत जॉन ने लोगों को यह शुभ समाचार सुनाया और कहा:

'आत्मकि आनंद से आनन्दति हो; न केवल वपित्तयिों के अंत के लिए, बल्कि इस तथ्य के लिए भी परमेश्वर का धन्यवाद करो कि उसने उन्हें भेजा।'

ऐसा कहते हुए, संत जॉन उन वपित्तयिों के महत्व का उल्लेख कर रहे थे, जो अंतीयक के लोगों में पश्चाताप की भावना जगाने और उनके आध्यात्मकि जीवन को जागृत करने के लिए समाप्त हुई थीं।

ईश्वर के ये पुरुष न केवल वचन में बल्कि कर्म में भी शक्तशिाली थे। मसीह की शक्ति से, उन्होंने चमत्कार कए, और बीमारों को चंगा कयिा। यहाँ संत के कुछ चमत्कार दए गए हैं।

यूक्लयिा नाम की एक महलिा का एकमात्र पुत्र था जो बुखार से बीमार पड़ गया था और मौत के कगार पर था। संत के पास आकर, यूक्लयिा ने उनसे उस बीमार लड़के को ठीक करने की वनिती की। जॉन ने कुछ पानी लेकर, पवत्रि त्रमिूर्ति के नाम पर, उस पर तीन बार पवत्रि क्रॉस का चह्नि बनाया, और उसे बीमार लड़के पर छड़िक दयिा। बुखार तुरंत उतर गया और ठीक हो जाने पर, वह बीमार व्यक्ति संत के सामने झुक गया।

अंतयिोकयिा में कलि का कमांडर मार्सयिोनाइट संप्रदाय के अनुयायी heresy[7820] का अनुयायी था, जसिने धर्मपरायण लोगों को बहुत नुकसान पहुँचाया था। उसकी पत्नी एक गंभीर बीमारी से पीड़ति थी जसि कोई भी चकित्सिा उपचार ठीक नहीं कर सका। जैसे-जैसे सबसे गंभीर बीमारी दनि-ब-दनि बगिड़ती गई, कलि के कमांडर ने वधिर्मयिों को अपने घर बुलाया और उनसे अपनी पत्नी की मदद करने की वनिती की। वधिर्मयिों ने उस बीमार महलिा के लिए तीन दनिों या उससे अधकि समय तक बड़े उत्साह से अथक प्रार्थना की, लेकनि कोई फायदा नहीं हुआ। फरि पत्नी ने अपने पति से कहा:

मैंने जॉन नामक एक वशिेष पादरी के बारे में सुना है, जो बशिप फ्लावयिन के साथ रहता है; वह मसीह का शष्यि है, और यदि वह परमेश्वर से कुछ मांगे, तो परमेश्वर उसे देगा। मैं आपसे वनिती करती हूँ, मुझे उसके पास ले चलिए ताकि वह मेरे ठीक होने के लिए प्रार्थना करे, क्योंकि मैंने सुना है कि वह कई चमत्कार करता है। मार्सयिोनाइट्स, हालांकि, मेरी कसिी भी तरह से मदद नहीं कर रहे हैं, और इससे उनकी दुष्टता स्पष्ट रूप से स्पष्ट है। क्योंकि अगर उनमें सच्चा वशि्वास होता, तो ईश्वर उनकी प्रार्थना सुनता।"

पति ने अपनी पत्नी की बात मानी और उसके साथ ऑर्थोडॉक्स चर्च के लिए नकिल पड़ा। लेकनि, एक वधिर्मी होने के कारण, उसने उसे अंदर ले जाने की हम्मित नहीं की; इसके बजाय, उसने उसे चर्च के दरवाजों के सामने लटिा दयिा और बशिप फ्लावयिन और पुरोहति जॉन को बुलाया, उनसे अपनी पत्नी के स्वास्थ्य के लिए प्रभु यीशु मसीह से प्रार्थना करने का आग्रह कयिा, जो बहुत अधकि पीड़ति थी। बशिप, जॉन के साथ उनके पास आकर, बोले:

'यदि तुम अपनी वधिर्म को त्याग दो और पवत्रि, कैथोलकि और प्रेरतिकि चर्च में शामलि हो जाओ, तो हमारे ईश्वर मसीह से तुम्हें चंगाई मलिेगी।'

[7820] मार्सयिोनाइट वधिर्म का नाम मार्सयिोन के नाम पर पड़ा, जो दूसरी शताब्दी ईस्वी में रहते थे। मार्सयिोन ने यह सखिाया कि न केवल ईश्वर शाश्वत है, बल्कि वह पदार्थ भी शाश्वत है जसिसे संसार की रचना हुई है (पदार्थ), साथ ही उसका शासक, शैतान भी। मार्सयिन ने दुनयिा की रचना का श्रेय ईश्वर को नहीं, बल्कि एक नम्निनतर सत्ता - डेमयिॉर्ज को दयिा, जो ईश्वर और पदार्थ के बीच एक मध्यवर्ती चीज का प्रतनिधित्वि करता है। मानव आत्मा भी डेमयिॉर्ज की एक रचना है और उसमें उसकी सभी वशिेषताएँ हैं; यानी, यह दृश्यमान दुनयिा से कुछ अधकि आध्यात्मकि है। लेकनि पदार्थ ने धीरे-धीरे आत्मा को घेरना शुरू कर दयिा। मानवता को इस अवशोषण से बचाने के लिए डेमयिॉर्ग के सभी प्रयास व्यर्थ गए। फरि दयालु ईश्वर पृथ्वी पर अवतरति हुए, एक भूतयिा शरीर धारण कयिा, और लोगों के सामने स्वयं को दया और प्रेम के ईश्वर के रूप में प्रकट कयिा। लेकनि डेमयिॉर्ज, उसकी महमिा से ईर्ष्या करके, ने यहूदयिों को उसके वरिुद्ध भड़काया, और उन्होंने उद्धारकर्ता को सूली पर चढ़ा दयिा; फरि भी उसके कष्ट मायावी थे, क्योंकि उसका शरीर आध्यात्मकि था। इस प्रकार, मार्सयिन ने उद्धारकर्ता के उद्धारकारी कष्टों को नहीं पहचाना और उसके पूरे कार्य को केवल लोगों को दव्यि सत्य सखिाने के रूप में माना।

जब उन्होंने ऐसा कर लिया, तो जॉन ने पानी लाने का आदेश दिया और फ्लैवियन से पानी पर क्रॉस का चिह्न बनाने के लिए कहा। फ्लावियन ने संत के अनुरोध का पालन किया। जॉन ने आदेश दिया कि इस पानी को बीमार महिला पर डाला जाए, और वह तुरंत स्वस्थ होकर उठ खड़ी हुई, और ईश्वर की स्तुति करने लगी। इस अद्भुत चमत्कार के बाद, कलि के कमांडर ने अपनी पत्नी के साथ मिलकर पवित्र चर्च में प्रवेश कर लिया। इस धर्मांतरण पर ऑर्थोडॉक्स के बीच बहुत आनंद हुआ; हालाँकि, विधर्मी जॉन से बहुत निराश और क्रोधित थे, और उन्होंने उसके खिलाफ सर्वत्र ईश्वरनिंदा और बदनामी फैलाई और दावा किया कि वह एक जादूगर और जादू-टोना करने वाला था। लेकिन ईश्वर ने जल्द ही उन पर एक कठोर सज़ा लाकर उन्हें चुप करा दिया। यह इस प्रकार हुआ।

अंतियोक में आए बड़े भूकंप के दौरान, वह मंदिर जहाँ विधर्मी अपनी सभाएँ करते थे, ढह गया; उनमें से बहुत से मलबे के नीचे दबकर मर गए। हालाँकि, उस भूकंप में एक भी ऑर्थोडॉक्स ईसाई नहीं मरा। यह देखकर, न केवल जीवित बचे धर्मद्रोही बल्कि अन्य धर्मों के लोग भी मसीह की शक्ति को पहचान गए और संत जॉन के निर्देशन में, सच्चे ईश्वर की ओर मुड़ गए।

नाज़ियान्ज़स के ग्रेगरी के उत्तराधिकारी, कॉन्स्टेंटिनोपल के पैट्रिआर्क नेक्टैरियस ([7821]) की मृत्यु के बाद, वे लंबे समय तक पैट्रिआर्कल पद के लिए एक योग्य व्यक्ति नहीं ढूंढ सके। फिर उन्होंने सम्राट आर्कैडियस को जॉन के बारे में सूचित किया (क्योंकि उनकी ख्याति दूर-दूर तक फैल चुकी थी)। सम्राट ने तुरंत फ्लेवियन को एक पत्र भेजा, जिसमें उसे संत को रिहा करने और उन्हें कॉन्स्टेंटिनोपल भेजने का आदेश दिया गया। यह जानकर और जॉन के प्रति प्रेम से भरकर, अंताओक के लोग चर्च में इकट्ठा हो गए। अपने गुरु से वंचित नहीं होना चाहकर, लोगों ने सम्राट के दूतों का विरोध किया, अपने धर्मगुरु की नसीहतों पर कोई ध्यान नहीं दिया, और जॉन को ले जाने की अनुमति नहीं दी; वास्तव में, संत स्वयं भी कॉन्स्टेंटिनोपल नहीं जाना चाहते थे, क्योंकि उन्होंने अपनी विनम्रता में यह निर्णय लिया था कि वे धर्मगुरु के पद के अयोग्य थे। यह जानकर, सम्राट चकित हो गया और जॉन को पैट्रिआर्क के सिंहासन पर देखने के लिए और भी दृढ़ हो गया। उसने पूर्व के राज्यपाल एस्टरियस को जॉन को चोरी-छिपे एंटीओक से ले जाने का आदेश दिया, जिसे पूरा किया गया।

जैसे ही जॉन कॉन्स्टेंटिनोपल पहुँचे, सम्राट द्वारा भेजे गए कुलीनों के एक समूह के साथ पूरा शहर उनका स्वागत करने के लिए बाहर आया। सम्राट ने, पवित्र धर्मसभा और लोगों के साथ मिलकर, संत जॉन का सम्मानपूर्वक स्वागत किया, और सभी ने चर्च के इस महान व्यक्ति के पैट्रिआर्की के सिंहासन पर बैठने पर प्रसन्नता व्यक्त की।

एकमात्र जो प्रसन्न नहीं हुए, वे थे अलेक्ज़ेंड्रिया के पैट्रिआर्क थियोफिलिस[7822] और उनके समान विचारधारा वाले अनुयायी। उन्हें जॉन की महिमा से ईर्ष्या थी और, उनसे घृणा करते हुए, उन्होंने अपने अधीनस्थ, प्रेस्बिटिर इसिडोर को पैट्रिआर्क के सिंहासन पर बिठाने की साजिश रची। लेकिन इससे परिषद के आयोजन में कोई बाधा नहीं आई, जिसके आदेश से संत जॉन को पैट्रिआर्केट के लिए चुना गया।

धन्य व्यक्ति 26 फरवरी 398 को पैट्रिआर्क के रूप में सिंहासनारूढ़ हुए। राजा, सभी राजकुमारों और कुलीनों के साथ, नव-नियुक्त पैट्रिआर्क का आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए जॉन के पास आए। राजा और लोगों के लिए प्रार्थना करने और उन सभी को आशीर्वाद देने के बाद, जॉन ने अपने ईश्वर-प्रेरित होठ खोले और एक आत्मा-रक्षक उपदेश दिया, जिसमें उन्होंने राजा को दृढ़ता से ऑर्थोडॉक्स धर्म में बने रहने, विधर्मियों से दूर रहने, अक्सर चर्च आने, और न्यायप्रिय तथा दयालु बनने के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने कहा:

'आपकी भक्ति को यह ज्ञात हो कि जब आवश्यकता होगी, तो मैं आपकी आत्मा के हित के लिए उपदेश और फटकार करने से नहीं डरूँगा, ठीक वैसे ही जैसे नबी नाथन राजा दाऊद के पापों की निंदा करने से नहीं डरे थे[7823] ।'

जॉन ने सभी आध्यात्मिक और धर्मनिरपेक्ष शासकों और उनके अधीनस्थों को भी अपने कर्तव्यों को ईमानदारी से निभाने के लिए प्रोत्साहित किया। उनके उपदेश के शब्दों को सुनकर सभी बहुत प्रसन्न हुए। जब जॉन अपनी भेड़-

---

[7821] संत नेक्टारीयस ने 381 से 397 तक कॉन्स्टेंटिनोपल के चर्च का नेतृत्व किया। बिशप के पद पर चुने जाने से पहले, वह एक सेनेटर थे और केवल बपतिस्मा के लिए तैयारी कर रहे थे। चुने जाने के बाद, उन्हें तुरंत बपतिस्मा दिया गया। उनका पर्व दिवस चीज़ सैटरडे को मनाया जाता है।
[7822] थेओफिलिस ने 385 से 412 तक अलेक्ज़ेंड्रिया के धर्मप्रांत का पद संभाला।
[7823] दाऊद ने उस योद्धा उरीया की पत्नी बतशेबा को उससे छीन लिया, जो अम्मोनियों के विरुद्ध अभियान पर था। दाऊद के इस पाप का खुलासा भविष्यवक्ता नाथन ने किया था, जिसका यहूदी राजा पर इतना प्रभाव पड़ा कि उसने अपने पाप से पश्चाताप किया और यह प्रसिद्ध भजन रचा जो इन शब्दों से शुरू होता है: 'हे परमेश्वर, अपनी महान दया के अनुसार मुझ पर दया करें'।

बकरियों से बात कर रहे थे, तो एक दानव-ग्रस्त व्यक्ति लोगों के बीच प्रकट हुआ; दौरे में, वह ज़मीन पर गिर पड़ा और एक भयानक आवाज़ में चिल्लाया, जिससे चर्च में मौजूद हर कोई भय से भर गया। धन्य योहन ने आदेश दिया कि उसे उनके सामने लाया जाए, उन्होंने उस पर क्रॉस का चिह्न बनाया और अशुद्ध आत्मा को भगाकर, उस ग्रसित व्यक्ति को स्वस्थ कर दिया। यह देखकर राजा और सभी लोग आनंदित हुए और उन्होंने परमेश्वर की महिमा की, जिन्होंने उन्हें ऐसी महान ज्योति प्रदान की थी - जो आत्मा और शरीर दोनों का चिकित्सक था।

चर्च का नेतृत्व संभालने के बाद, परम पावन पैट्रिआर्क जॉन ने उत्साहपूर्वक मसीह के झुंड का चरवाहा करना शुरू किया, हर पद के लोगों (और विशेष रूप से पादरियों के बीच) में बुरी प्रथाओं को जड़ से उखाड़ फेंका, और अशुद्धता, ईर्ष्या, झूठ और ईश्वर को अप्रिय लगने वाले हर कर्म का नाश किया। साथ ही, उन्होंने नैतिक पवित्रता, प्रेम, न्याय और दया को बढ़ावा दिया; उन्होंने लोगों के दिलों में सद्गुणों का संचार किया और अपने प्रभावशाली शब्दों से सभी को धर्मपरायणता का उपदेश दिया। नैतिक दुर्गुणों से संत जॉन को गहरा आघात पहुँचता था, लेकिन सच्ची पश्चाताप उन्हें सब कुछ क्षमा करने के लिए प्रेरित करती थी।

एक बार, ईस्टर से ठीक पहले, जॉन उन लोगों के अनुचित व्यवहार से दुखी थे जिन्हें वह बहुत प्यार करते थे और जिनकी आध्यात्मिक भलाई की वह बहुत गहराई से परवाह करते थे। पवित्र सप्ताह के बुधवार को, एक भयंकर तूफान आ गया। डरे हुए लोग चर्चों में भाग गए, ईश्वर की दया की भीख मांगने लगे; सामूहिक प्रार्थनाएं और जुलूस शुरू हो गए। यह विपत्ति बीत गई, और गुड फ्राइडे और होली सैटरडे तक लोगों ने ईश्वर के हस्तक्षेप को भूलकर सर्कस और रंगमंच पर मनोरंजक तमाशों में खुद को डुबो दिया था। गहराई से आहत होकर, पवित्र चरवाहे ने ईस्टर के पहले दिन अपने कृतघ्न झुंड को अपने प्रसिद्ध प्रवचन 'मनोरंजन के विरुद्ध' से संबोधित किया। 'क्या इसे बर्दाश्त किया जा सकता है? क्या इसे सहन किया जा सकता है? मैं आप लोगों से आप लोगों के बारे में शिकायत करता हूँ'—इस प्रकार धन्य संत का प्रवचन शुरू हुआ। उन्होंने स्पष्ट और प्रभावशाली ढंग से नैतिकता पर रंगमंच के विनाशकारी प्रभावों का वर्णन किया और दोषियों को चर्च से बहिष्कार की धमकी दी। पवित्र उपदेशक के भावुक प्रवचन ने लोगों पर, जो उनसे प्रेम करते थे, गहरा प्रभाव डाला और सच्ची पश्चाताप की प्रेरणा दी।

न केवल कॉन्स्टेंटिनोपल में, बल्कि आसपास के सभी कस्बों और गांवों में भी, इस ईश्वर के पवित्र पुरुष ने मानव आत्माओं के उद्धार के लिए बहुत ध्यान रखा। उन्होंने अपने पुरोहितों में से अनुभवी, ईश्वर-भयभीत पुरुषों को ईश्वर के वचन के प्रचार के माध्यम से ऑर्थोडॉक्सी को बनाए रखने, दुष्टता और विधर्म को जड़ से उखाड़ने, और जो लोग मोक्ष के मार्ग से भटक गए थे, उन्हें मार्गदर्शन करने के लिए भेजा। उन्होंने फिनिसिया[7824] में सदियों से खड़े मूर्तिपूजक मंदिरों को धूल-चटा दिया। उन्होंने बुद्धिमानी से सेल्टिक लोगों[7825] को, जो एरियनवाद से प्रभावित थे, ऑर्थोडॉक्स धर्म में परिवर्तित किया, इस उद्देश्य के लिए चुने गए प्रेस्बिटिरों और डिकिन्स को सेल्टिक भाषा सीखने का आदेश दिया और उन्हें सेल्ट्स के पास उनकी मातृभाषा में धर्मोपदेश करने के लिए भेजा। इसी तरह, जॉन ने डैन्यूब नदी के किनारे रहने वाले स्कैथियनों[7826] को ज्ञान प्रदान किया। उन्होंने पूर्वी क्षेत्रों से मार्सियोनाइट विधर्म को निष्कासित किया और सच्चे धर्मशास्त्र के प्रकाश से संपूर्ण विश्व को प्रकाशित किया।

विशेष रूप से, जॉन ने बीमारों और गरीबों की देखभाल की, भूखे को भोजन दिया, नग्न को वस्त्र पहनाए, और अनाथों तथा विधवाओं का भरण-पोषण किया। बिना सिर रखने की जगह वाले बीमारों और यात्रियों को आराम देने के लिए, उन्होंने अनेक अस्पताल स्थापित किए, बीमारों को उनकी सभी आवश्यक वस्तुएँ उपलब्ध कराईं, उनके लिए सेवक और चिकित्सक नियुक्त किए, और उनकी देखभाल का दायित्व दो ईश्वर-भयभीत पुरोहितों को सौंपा। साथ ही, उन्होंने स्वयं

[7824] फ़िनिसिया भूमध्य सागर के पूर्वी तट के साथ-साथ, फ़िलिस्तीन के उत्तर में फैली एक संकीर्ण, लंबी भूमि पट्टी है। यहाँ, सरकारी प्रतिबंधों के बावजूद, मूर्तिपूजा को काफी स्वतंत्रता प्राप्त थी।

[7825] 'केल्ट' शब्द से तात्पर्य एक विशाल जनजाति से था जो प्राचीन काल में पश्चिमी यूरोप में रहती थी, जो अब इंग्लैंड, स्पेन, इटली, स्विट्जरलैंड और विशेष रूप से फ्रांस में है। वे एशिया माइनर (गलातिया के क्षेत्र में, जहाँ वे गलातियनों के रूप में जाने जाते थे) में भी रहते थे। समय के साथ, केल्ट आंशिक रूप से जर्मनिक लोगों और प्राचीन रोमनों (फ्रांसीसी, स्पेनिश, इटालियंस और अंग्रेजों) के साथ घुल-मिल गए, जबकि अन्य आज भी अपनी राष्ट्रीय पहचान बनाए हुए हैं (आयरिश और स्कॉट्स)।

[7826] स्कुथाई – एशिया और यूरोप में, ब्लैक सी के तटों पर, और विशेष रूप से आज के दक्षिणी रूस में रहने वाले एक विशाल जनसमूह के लिए ग्रीक नाम।

चर्च के प्रशासन का लगन से ध्यान रखा, सज्जन लोगों का प्रेमपूर्वक समर्थन किया और दुष्टों को दंडित तथा फटकार लगाई।

कॉन्स्टेंटिनोपल में संत जॉन क्रिसोस्टोम के पैट्रिआर्केट के दौरान, एरियन विधर्म के अभी भी कई अनुयायी थे जो बिना किसी बाधा के अपने धर्म का प्रचार करते थे और अपनी धार्मिक सेवाओं का आयोजन करते थे। परम धन्य ने इस विधर्म से शहर को मुक्त करने का सबसे अच्छा तरीका सोचा, और एक अनुकूल अवसर का लाभ उठाते हुए, सम्राट से कहा:

'हे धर्मनिष्ठ सम्राट! यदि कोई आपके मुकुट में, उसमें पहले से जड़े कीमती रत्नों के साथ, एक साधारण सा पत्थर—काला और अशुद्ध—रख दे, तो क्या वे पूरे मुकुट का अपमान नहीं करेंगे?'

राजा ने उत्तर दिया:

'हाँ, निस्संदेह।'

जॉन ने जारी रखा:

'इसी प्रकार यह नगर भी अपवित्र हो गया है, जो ईसाई होने के बावजूद, अपने निवासियों में अविश्वासी एरियनों को भी गिनता है। और जैसे आप, हे राजा, अपने मुकुट की अपवित्रता से क्रोधित होंगे, वैसे ही सर्वशक्तिमान ईश्वर इस नगर से क्रोधित हैं, जो एरियन विधर्म से अपवित्र हो गया है।' इसलिए, या तो आप इन विधर्मियों को धर्म की एकता में लाएँ, या उन्हें शहर से निकाल दें।

जॉन के शब्द सुनकर, राजा ने आदेश दिया कि सभी एरियन नेताओं को तुरंत उसके सामने लाया जाए और उन्हें पैट्रिआर्क की उपस्थिति में अपने धर्म का प्रचार करने का आदेश दिया। लेकिन उन्होंने हमारे प्रभु यीशु मसीह के विरुद्ध अधर्म और ईश्वर-निंदा से भरे शब्द बोलने शुरू कर दिए। तब राजा ने आदेश दिया कि उन्हें शहर से निर्वासित कर दिया जाए।

कुछ समय बीत जाने के बाद, अरिअनों ने, जो शाही दरबार के अधिकारियों—उच्च पदस्थ लोगों—में अपने समर्थक और मध्यस्थ थे, रविवार को एक बार फिर शहर में प्रवेश करना शुरू कर दिया, और वे विधर्मी भजनों के साथ अपनी कैथेड्रल में पहुँचने लगे, जिससे वे परम पवित्र त्रिमूर्ति का अपमान करते थे। यह जानकर, परम पावन पैट्रिआर्क जॉन, इस डर से कि कोई आम आदमी उन सार्वजनिक एरियन सेवाओं में भाग न ले ले, अपने पुरोहितों को आदेश दिया कि वे अपने पवित्र वस्त्रों में शहर में घूमें, और सबसे पवित्र त्रिमूर्ति की स्तुति में भजन गाएँ, जो एरियन गीतों के अपमानजनक स्वरों के विरोध में रचे गए थे। इन जुलूसों के लिए, खंभों पर लगे चाँदी के क्रॉस तैयार किए गए, जिन्हें जलाए गए मोमबत्तों के साथ, ईसा मसीह के पवित्र प्रतिमाओं के साथ शहर में गंभीरता से ले जाया जाता था। इस प्रकार पहली क्रॉस जुलूसों की शुरुआत हुई। ऑर्थोडॉक्स के गंभीर क्रॉस जुलूसों ने लोगों का ध्यान चौकों में उनके द्वारा आयोजित एरियन सार्वजनिक प्रार्थनाओं से हटा दिया। इससे क्रोधित होकर, एरियनों ने एक ऐसे ही जुलूस के दौरान ऑर्थोडॉक्स ईसाइयों पर हमला किया और एक नरसंहार कर दिया। इस नरसंहार में दोनों पक्षों के कई लोग मारे गए, और शाही नपुंसक विरिसिन, जो ऑर्थोडॉक्स ईसाइयों में से एक था, का सिर एक पत्थर से कुचल दिया गया। यह जानकर, सम्राट एरियनों पर बहुत क्रोधित हुए और उन्होंने उन्हें अपने सार्वजनिक प्रार्थना सभाएं आयोजित करने या शहर में प्रवेश करने से रोक दिया। इस प्रकार, सम्राटीय शहर से विधर्मी ईश्वरनिंदा को अंततः निष्कासित कर दिया गया।

कॉन्स्टेंटिनोपल में गेना नाम का एक बर्बर मूल का सैन्य कमांडर रहता था, जो युद्ध में पराक्रमी था और राजा की कृपा प्राप्त था, लेकिन साथ ही वह एरियस के विधर्मी विचारों को मानता था। उसने राजा से विनती की कि वह शहर में एरियनों को किसी न किसी प्रकार का एक चर्च प्रदान करे। सम्राट यह नहीं समझ पा रहे थे कि क्या करें, क्योंकि वे उसे मना करके नाराज़ नहीं करना चाहते थे, क्योंकि उन्हें डर था कि गाइना, जो एक चिड़चिड़े और उग्र स्वभाव का व्यक्ति था, ग्रीक साम्राज्य में किसी प्रकार का अशांत फैला सकता है। इसलिए, सम्राट ने पैट्रिआर्क सेंट जॉन को गाइना के अनुरोध के बारे में सूचित किया।

जॉन ने राजा से कहा:

'जब गेना चर्च के लिए माँग करने आए, तो मुझे अपने समक्ष बुलाना, और मैं आपकी ओर से उत्तर दूँगा।'

और इसलिए, ठीक अगले दिन, जब पैट्रिआर्क को शाही कक्षों में बुलाया गया और वे राजा के साथ बैठे थे, तो गेना ने एरियन समुदाय के लिए कॉन्स्टेंटिनोपल में एक चर्च के लिए राजा से अनुरोध करना शुरू कर दिया। उसने यह युद्धों के दौरान सहन की गई कठिनाइयों और दिखाई गई बहादुरी के लिए एक उपयुक्त पुरस्कार के रूप में मांगा।

जॉन महान ने उनसे कहा:

'अगर तुम, गेना, कसिी चर्च में प्रार्थना करना चाहते हो, तो अपनी पसंद का कोई भी चर्च में जाओ और प्रार्थना करो, क्योंकि शहर के सभी चर्च तुम्हारे लिए खुले हैं।'

गेना ने उत्तर दिया:

'लेकिन मैं एक अलग धर्म का अनुयायी हूँ; इसीलिए मैं चाहता हूँ कि मेरे साथी विश्वासियों के साथ, शहर में एक अलग पूजा स्थल हो, और मैं राजा से विनती करता हूँ कि वह मेरी यह प्रार्थना स्वीकार करें। मैंने यूनानी राज्य के लिए लड़ते हुए बहुत कठिनाइयाँ झेली हैं, अपना खून बहाया है और राजा के लिए अपनी जान जोखिम में डाली है।'

जॉन ने उत्तर दिया:

'अपने परिश्रम का फल आपको मिल चुका है: राजा से महान सम्मान, कीर्ति, पद और उपहार। आपको इस पर विचार करना चाहिए कि आप पहले क्या थे और अब क्या हैं। कैसे, अतीत में, आप एक दरिद्र और सम्मानहीन व्यक्ति थे, और कैसे अब आप धनी और प्रसिद्ध हो गए हैं; डैन्यूब नदी के दूसरी ओर रहते हुए आपका पद क्या था, और अब आपका पद क्या है।' उस समय, आप साधारण, गरीब ग्रामीणों में से एक थे, फटे-पुराने कपड़े पहनते थे और केवल रोटी और पानी पर ही गुज़ारा करते थे; लेकिन अब आप एक सम्मानित और प्रसिद्ध गवर्नर हैं, महँगे कपड़े पहनते हैं, आपके पास बहुत सारा सोना और चाँदी है, और अनगिनत संपत्तियाँ हैं – और यह सब आप राजा की बदौलत हैं। यह है आपके परिश्रम का प्रतिफल!

कृतज्ञ रहो और ग्रीक साम्राज्य की निष्ठापूर्वक सेवा करते रहो, लेकिन अपनी सांसारिक सेवा के लिए दिव्य पुरस्कारों की मांग मत करो।

इन शब्दों से लज्जित होकर, गेना चुप हो गई और चर्च के संबंध में कोई और अनुरोध नहीं किया। राजा जॉन की बुद्धिमत्ता से चकित रह गया, क्योंकि उसने कुछ ही शब्दों में एक अभद्र और असीमित क्रूरता से भरे बर्बर व्यक्ति का मुँह बंद कर दिया था।

एक साल बाद, गेना राजा से अलग हो गया और एक बड़ी सेना इकट्ठा करके, कॉन्स्टेंटिनोपल पर युद्ध छेड़ने के लिए चल पड़ा। राजा, खून-खराबा नहीं करना चाहकर, संत जॉन से विनती करने लगा कि वह उसके पास जाएँ और उसे कोमल शब्दों से शांत करें। जॉन, यद्यपि उसे याद था कि उसने शहर में एक एरियन सभा आयोजित करने से मना करके गाइना को नाराज़ कर दिया था, फिर भी, अपने झुंड के लिए अपना जीवन बलिदान करने को तैयार होकर, वह उस अहंकारी बर्बर के पास गया। ईश्वर ने अपने सेवक की मदद की, और जॉन ने अपने शब्दों से उस दानव-सदृश व्यक्ति को शांत कर दिया, उसे भेड़िये से भेड़ बना दिया; राजा से उसका मेल-मिलाप कराकर, वह लौट आया।

इसके बाद, उसी सर्दी में, संत जॉन अपनी खराब सेहत के बावजूद, चर्च के मामलों को व्यवस्थित करने के लिए एशिया माइनर के लिए रवाना हुए। वहाँ, कई बिशप पादरीपन बेच रहे थे, दीक्षा के लिए पैसे ले रहे थे[7827] ; उदाहरण के लिए, ऐसा एक एफ़िसस के मेट्रोपॉलिटन एंथनी[7828] थे। एशिया माइनर में, संत जॉन ने सिमोनी के दोषी कई बिशपों को पदच्युत कर दिया[7829] और उन सभी को उनके पदों से हटा दिया जिन्होंने पैसे के लिए दूसरों को नियुक्त किया था और जो नियुक्त किए गए थे। उनकी जगह, उन्होंने अधिक योग्य पुरुषों को नियुक्त किया। एशिया माइनर में व्यवस्था बहाल करने के बाद, संत जॉन कॉन्स्टेंटिनोपल लौट आए।

इतनी ऊँची पदवी पर रहते हुए भी, उस धन्य व्यक्ति ने अपनी प्रारंभिक मठवासी प्रथाओं को कभी नहीं छोड़ा, बल्कि उन्होंने अपने समय को चर्च संबंधी कर्तव्यों से मुक्त रखकर या तो प्रार्थना में या पवित्र धर्मग्रंथों को पढ़ने में, अपने एकांत कक्ष में बंद होकर बिताया। हमेशा हर चीज़ में कठोर उपवास और संयम का पालन करते हुए, वह केवल जौ

[7827] करिोटोनीया (ग्रीक से) – हाथ रखना या किसी विशेष पद के लिए अभिषेक।

[7828] एफ़िसुस – एशिया माइनर के पश्चिमी तट पर प्रमुख व्यापारिक शहरों में से एक; प्राचीन काल में यह प्रसिद्ध डायना के मंदिर (चंद्रमा और प्रजनन की पगन देवी) के लिए प्रसिद्ध था। यहीं पर संत पौलुस प्रेरित ने ईसाई धर्म का प्रचार किया और रहे; पवित्र प्रेरित और सुसमाचार प्रचारक योहन द थियोलोजियन भी यहाँ लंबे समय तक रहे; 431 में यहाँ तीसरी सार्वभौमिक परिषद हुई। एफ़िसुस के मेट्रोपॉलिटन की धर्मपीठ, प्रेरितिक धर्मपीठ की तरह, पूर्व में विशेष महत्व रखती थी।

[7829] सिमनी पवित्र पदों की खरीद और बिक्री की प्रथा है, जिसमें कुछ लोग योग्यता के आधार पर नहीं बल्कि पैसे के लिए कोई पवित्र पद प्रदान करते हैं, जबकि अन्य उसे प्राप्त करते हैं। 'सिमनी' शब्द जादूगर शिमोन से लिया गया है, जिसने चमत्कार करने के लिए प्रेरित पतरस से पवित्र आत्मा का वरदान खरीदने का प्रयास किया था।

की रोटी खाता था और केवल पानी पीता था; वह बहुत कम सोता था, और तब भी बिस्तर पर नहीं, बल्कि खड़ा हुआ। वह कभी भी दावतों या भोजों में शामिल नहीं हुआ। उन्होंने अपना पूरा मन पवित्र धर्मग्रंथों को समझने में लगाया, और संत पौलुस प्रेरित के पत्रों पर भाष्यों पर काम करना जारी रखा, जिनकी प्रतिमा को उन्होंने अपनी कोठरी में रखा था: उस समय वे लोगों को 'अन्यजातियों के प्रेरित' के कोलोस्सियों के प्रति पत्र की व्याख्या कर रहे थे, और कुछ समय बाद - फिलिप्पियों को, थेस्सालोनिकियों और इब्रानियों।

इन पत्रों पर अपनी टीकाएँ लिखते समय, संत जॉन को एक संदेह हुआ:

'कौन जाने कि यह परमेश्वर को भाता है या नहीं? क्या मैंने इस पवित्र शास्त्र का अर्थ समझा है, या नहीं?'

और उन्होंने ईश्वर से प्रार्थना करनी शुरू कर दी कि वह उन्हें यह प्रकट कर दें। ईश्वर ने अपने सेवक की प्रार्थना सुनी और उन्हें निम्नलिखित संकेत दिया। एक रात, अपने कोठरी में अकेले बैठकर, संत जॉन मोमबत्ती की रोशनी में अपनी टीका लिख रहे थे; उसी क्षण, प्रोकलस, जो उनकी सेवा कर रहे थे, एक मदद के लिए विनती कर रहे किसी व्यक्ति के अनुरोध पर महाधर्माध्यक्ष के कक्ष में प्रवेश करना चाहते थे; लेकिन पहले प्रोकलस ने यह देखने के लिए कि महाधर्माध्यक्ष क्या कर रहे हैं, कुंडी के छेद से झाँका। उसने देखा कि वह बैठे-बैठे लिख रहे थे, जबकि एक वृद्ध, सम्माननीय व्यक्ति, उनके पीछे खड़े होकर, महाधर्माध्यक्ष के कान की ओर झुके और उनसे धीरे से कुछ कहा। यह व्यक्ति जॉन की कोठरी की दीवार पर लटकी प्रतिमा में सेंट पॉल से बहुत मिलता-जुलता था। प्रोक्लस ने तब तक इंतजार किया जब तक वह आदमी चला नहीं गया। लेकिन जब मैटिन्स (प्रार्थना सभा) के लिए घंटी बजने का समय आया, तो वह आदमी गायब हो गया था। प्रोक्लस ने अगले दो रातों तक भी यही देखा। अंत में, उसने खुद पैट्रिआर्क से पूछने की हिम्मत जुटाई:

'महाधर्माध्यक्ष महोदय, रात में आपसे कौन बात करता है?'

जॉन ने जवाब दिया:

'वहाँ कोई नहीं था।'

तब प्रोकलस ने उसे विस्तार से बताया कि कैसे उसने छेद के माध्यम से एक वृद्ध, सम्माननीय व्यक्ति को देखा था जो पैट्रिआर्क के कान में फुसफुसा रहा था जबकि वे लिख रहे थे; प्रोकलस ने प्रकट हुए व्यक्ति के रूप-रंग और चेहरे का भी वर्णन किया। प्रोकलस का बयान सुनकर जॉन हैरान रह गए। इस बीच, प्रोकलस ने आइकन पर प्रेरित पॉल की छवि पर नज़र डालते हुए कहा:

'जिसको मैंने देखा वह इस प्रतिमा पर चित्रित आकृति जैसा ही था।'

उस क्षण, जॉन को एहसास हुआ कि प्रोकलस ने स्वयं पवित्र प्रेरित पॉल को देखा था, और वह इस बात से आश्वस्त हो गए कि उनका कार्य प्रभु को भाता है। वह जमीन पर गिर पड़े और लंबे समय तक प्रार्थना की, ईश्वर का धन्यवाद करते हुए। उस समय से, उन्होंने और भी अधिक उत्साह और लगन के साथ दिव्य पुस्तकों को लिखने के लिए खुद को समर्पित कर दिया, जिन्हें उन्होंने चर्च के लिए एक अनमोल खजाने के रूप में पीछे छोड़ दिया[7830] ।

[7830] जॉन क्रिसिस्टम के कार्यों को पूरे ईसाई जगत में संजोया जाता था, उन्हें शाही महलों में रखा जाता था और सोने के अक्षरों में लिखा जाता था। उनके कई कार्य आज तक संरक्षित नहीं हैं; फिर भी, चर्च के किसी भी अन्य पिता या शिक्षक की तुलना में उनके अधिक कार्य संरक्षित हुए हैं। ग्रीक होरोलॉजियन के अनुसार, आज तक जॉन क्रिसोस्टोम की रचनाओं की कुल संख्या 1,447 है, जिसमें 244 तक पत्र शामिल हैं। जॉन क्रिसोस्टोम की आज तक बची हुई कृतियों में सबसे बड़ी संख्या उनकी प्रवचन-मालाओं (होमिलियों) की है। संत जॉन के प्रवचन अपनी संरचना, विचारों की गहराई और विषय-वस्तु की विविधता के लिए उल्लेखनीय हैं। संत इसिडोर ने क्रिसोस्टोम के बारे में लिखा, 'मैं दूसरों की बात नहीं कर रहा हूँ, बल्कि स्वयं लिबानियस, जो अपनी वाक्पटुता के लिए प्रसिद्ध थे, भी प्रतिष्ठित जॉन की भाषा, उनके विचारों की सुंदरता और उनके तर्कों की ताकत को देखकर चकित थे।' क्रिसोस्टोम के सबसे अच्छे प्रवचनों में सही मायने में एंटिओक के लोगों को मूर्तियों पर दिए गए उनके भाषण, यूट्रोपियस पर उनका प्रवचन, गरीबों के बचाव में उनका प्रवचन, राजधानी से उनके निष्कासन और राजधानी में उनकी वापसी पर उनके प्रवचन, और प्रेरित पौलुस के प्रति उनकी प्रशंसा शामिल हैं। अपने प्रवचनों में, जॉन क्रिसोस्टोम ईसाई जीवन के हर विशिष्ट पहलू को संबोधित करते हैं। इसके अलावा, अपनी सार्वजनिक सेवा के दौरान, संत जॉन ने अपने प्रवचनों में पवित्र शास्त्रों की व्याख्या की। उनके प्रत्येक व्याख्यात्मक प्रवचन में दो भाग होते हैं: एक में वह परमेश्वर के वचन के ग्रंथों की व्याख्या करते हैं, और दूसरे में वह अपने श्रोताओं की नैतिक स्थिति को संबोधित करते हुए नैतिक शिक्षा प्रदान करते हैं। पवित्र शास्त्रों की व्याख्या के अपने कार्य में, संत जॉन ने, तथापि, नए नियम की तुलना में पुराने नियम पर अपेक्षाकृत कम टीकाएँ छोड़ीं। उत्पत्ति की पुस्तक, यशायाह के आठ अध्यायों और 36 भजनों पर उनके प्रवचनों और टीकाओं के अलावा, साथ ही शमूएल और शाऊल के इतिहास पर कुछ प्रवचनों के अलावा, दानिय्येल की पुस्तक और अय्यूब की पुस्तक पर की गई टिप्पणियाँ अब क्रिसोस्टोम के नाम से जानी जाती हैं। नए नियम पर अपनी टीकाओं में, मत्ती के सुसमाचार पर अंतीयोक की व्याख्यानमालाओं का सर्वोच्च स्थान है। इनके साथ-साथ, आम सहमति से, रोमियों के नाम पत्र पर व्याख्यानमालाएँ भी शामिल हैं। प्रेरित के शब्दों की व्याख्या की सटीकता

जॉन – संपूर्ण विश्व के महान शिक्षक – ने बिना किसी हिचकिचाहट के अन्याय की निंदा की, उत्पीड़ितों की रक्षा की, और राजा व रानी से किसी के साथ अन्याय न करने, बल्कि न्याय करने का आग्रह किया। उन्होंने कुलीनों और उच्च पदस्थ लोगों को, जो दूसरों की संपत्ति लूटते थे और गरीबों को सताते थे, ईश्वर के न्याय की चेतावनी दी। इसके लिए, कई धर्मनिरपेक्ष शासकों ने उनके प्रति शत्रुता पालनी शुरू कर दी। अपने ही विवेक से दोषी ठहराए जाने के बावजूद, लेकिन अपनी बुराइयों को त्यागने के लिए अनिच्छुक, वे जॉन से नाराज़ थे। उनके दिल कठोर हो गए थे; उनके लिए संत के शब्दों को सुनना मुश्किल हो गया था - और इसलिए उन्होंने उनके प्रति द्वेष पाल लिया। उनके निंदकों ने हर तरह से संत पर कीचड़ उछालने की कोशिश की, यह दावा करते हुए कि चर्च में अपने उपदेशों में पैट्रिआर्क ने शिक्षा नहीं दी, बल्कि ज़ार, ज़ारिना और सभी अधिकारियों का अपमान किया और उन पर आरोप लगाया। इसके अलावा, उन्हें निम्नलिखित कारण से निंदनीय भी कहा जाता था।

शाही महल में यूट्रोपियस नामक एक ख़ास था, जो राजा के शयनकक्ष के प्रमुख परिचारक था। उसने राजा का भरोसा जीता और उसका प्रिय बन गया। अपने शत्रुओं का पीछा करते हुए, उसने राजा को एक ऐसा कानून जारी करने के लिए राज़ी किया जो एक प्राचीन प्रथा को समाप्त कर देगा, जो इस प्रकार थी। जो लोग किसी न किसी तरह से नागरिक कानून तोड़ चुके होते और जिन्हें मृत्युदंड सुनाया गया होता, वे एक चर्च में शरण लेते थे, ठीक वैसे ही जैसे इस्राएलियों ने कभी शरण नगरों में किया था[7831] , और इस तरह वे मृत्युदंड से बच जाते थे। इस रिवाज़ को समाप्त करना संत जॉन क्राइसोस्टोम के लिए बहुत दुख का कारण था, और इस कार्य को चर्च पर हमला मानते हुए, उन्होंने यूट्रोपियस की निंदा की, और उस पर क्रूरता और धार्मिक संस्थानों को कुचलने का आरोप लगाया। थोड़ी ही देर बाद, यूट्रोपियस स्वयं उसी गड्ढे में गिर पड़ा था जो उसने दूसरों के लिए खोदा था और उसी तलवार से मारा गया जिसे उसने उनके लिए तेज किया था। किसी गंभीर अपराध के अवसर पर, सम्राट उससे बहुत क्रोधित हो गए, और यूट्रोपियस को मृत्युदंड सुनाया गया। तब यूट्रोपियस चर्च में भाग गया और वेदी के नीचे पवित्र स्थल में छिप गया। तथापि, धन्य जॉन उपदेश-मंच पर बैठे थे, जहाँ से वे आमतौर पर लोगों को उपदेश देते थे; और, धर्म के एक सबसे कट्टर रक्षक के रूप में, उन्होंने यूट्रोपियस पर

के मामले में, गलातियों के नाम पत्र पर की गई टीका एक प्रमुख स्थान रखती है। क्रिसोस्टोम की उत्कृष्ट टीकाओं में अगली हैं प्रथम कोरिन्थियों की पत्रिका और एफिसियों की पत्रिका पर व्याख्यान। क्रिसोस्टोम के कट्टरतावादी (डॉगमैटिक) कार्य संख्या में बहुत कम हैं, और उन सभी में विश्वासियों की नैतिक स्थिति के प्रति उनकी चिंता झलकती है। इनमें, हम स्टैगिरियस को संबोधित प्रबंध का उल्लेख करेंगे, जिसमें जॉन इस प्रश्न को संबोधित करते हैं: यदि दैवीय व्यवस्था है, तो धर्मी क्यों दुख सहते हैं? ध्यान देने योग्य हैं 'अनपेक्षित पर छह प्रवचन', जो एनोमियन का खंडन करने के लिए दिए गए थे, जिन्होंने अपनी ही कल्पनाओं के आधार पर, परमेश्वर पिता और परमेश्वर पुत्र के बीच संबंध को स्पष्ट करने का प्रयास किया, और यह सिखाया कि परमेश्वर का पुत्र एक सृजित प्राणी है, जिसे पिता ने शून्य से अस्तित्व में लाया है। अपने 'अनपेक्षित पर वचन' में, यूहन्ना एनोमियन लोगों के त्रिमूर्ति ईश्वरत्व के रहस्य को स्पष्ट करने के प्रयास का खंडन करते हैं और पवित्र धर्मग्रंथों से उद्धरणों का उपयोग करके ईश्वर की अगम्यता को प्रदर्शित करते हैं; अन्य सात 'वचनों' में, वह ईश्वर-पुत्र की परमपिता ईश्वर के साथ एकसारता को प्रदर्शित करते हैं। इसके अलावा, पवित्र आत्मा पर जॉन क्रिसिस्टम का प्रबंध भी उल्लेखनीय है, विशेष रूप से इसमें पवित्र आत्मा के पिता से निकलने के सिद्धांत की व्याख्या की गई है। यहूदियों और मूर्तिपूजकों के विरुद्ध अपने प्रबंध में, वह भविष्यवाणियों की पूर्ति और लोगों के हृदयों पर ईसाई सुसमाचार के प्रभाव के माध्यम से ईसाई शिक्षा की दिव्यता को प्रदर्शित करते हैं, जबकि यहूदियों के विरुद्ध अपनी आठ प्रवचनों में, वह दिखाते हैं कि यहूदी अनुष्ठानों को समाप्त कर दिया गया है, और इसलिए अब उनका पालन करना परमेश्वर की इच्छा के विरुद्ध कार्य करना है। अपने लेखनों के लिए प्रसिद्ध, जॉन क्रिसिस्टोम को लिटिर्जी (पूजा-विधि) का एक विशेष क्रम स्थापित करने के लिए भी मनाया जाता है, जिसका नाम आज भी उनके नाम पर है। क्रिसोस्टोम के शिष्य और बाद में कॉन्स्टेंटिनोपल के सिनी की उनकी उत्तराधिकारी में से एक, संत प्रोक्लस, इस संत की इस संस्था के बारे में इस प्रकार लिखते हैं: 'संत बेसिल (द ग्रेट) ने, लोगों को जैसे वे बीमार हों, इस तरह मानकर, संक्षिप्त रूप में लिटिर्जी प्रस्तुत की। थोड़ी ही देर बाद, हमारे पिता, स्वर्ण-जिह्वा जॉन ने, एक ओर एक अच्छे चरवाहे के रूप में अपने झुंड की मुक्ति के लिए उत्साहपूर्वक देखभाल करते हुए, और दूसरी ओर, मानव स्वभाव की कमजोरी को ध्यान में रखते हुए, हर शैतानी बहाने को जड़ से उखाड़ फेंकने का संकल्प लिया। इसलिए, बहुत कुछ छोड़ते हुए, उन्होंने अनुष्ठान का सबसे संक्षिप्त रूप स्थापित किया, ताकि लोग धीरे-धीरे प्रेरितों और दैवी परंपरा से पूरी तरह से विमुख न हो जाएँ।' जॉन द्वारा संक्षिप्त की गई अनुष्ठान में मूल रूप से वे सभी भजन नहीं थे जो आज इसमें हैं। इनमें से कुछ संत जॉन के बाद जोड़े गए थे, लेकिन उन्होंने संत जॉन क्रिसोस्टोम की धर्मविधि की मूल संरचना को नहीं बदला, क्योंकि वे या तो धर्मविधि के पहले भाग (जिसे कैटेकुमेन की धर्मविधि के रूप में जाना जाता है) से संबंधित हैं या उस भाग से जो यूखरिस्त के उत्सव के बाद आता है। वर्तमान में, ऑर्थोडॉक्स पूर्व के ईसाई चर्चों में सेंट जॉन क्रिसोस्टोम की धर्मविधि किसी भी अन्य की तुलना में अधिक बार मनाई जाती है।

[7831] यहूदियों के पास शरण के छह नगर थे: तीन यॉर्डन के पूर्वी हिस्से में, तीन पश्चिमी हिस्से में। अनजाने में हत्या करने वाले इन नगरों में भाग जाते थे, और साथ ही वे भी जो किसी मारे गए रिश्तेदार के खून का बदला लेते थे। प्रारंभिक चर्च के ईसाइयों में, पवित्र स्थल का अधिकार शुरू में कुछ चर्चों को था, और बाद में उन सभी को मिल गया। इसका मतलब यह था कि यदि कोई दोषी व्यक्ति किसी चर्च में शरण लेता था, तो जब तक उसके मामले की पुनःजांच नहीं हो जाती, वह अछूत रहता था।

फटकार लगाई; उन्होंने कहा कि यह उचित होगा यदि हाल ही में बनाए गए अन्यायपूर्ण कानून का अनुभव उसी व्यक्ति को हो जिसने इसे रचा और स्थापित कर था। जॉन के शत्रुओं ने इन शब्दों का सहारा लेकर संत की आलोचना करनी शुरू कर दी, और उन पर दया की कमी का आरोप लगाया। इस प्रकार, धीरे-धीरे, उन्होंने कई लोगों के दिलों में उकसाया और जॉन के खिलाफ उनका क्रोध भड़काया[7832] ।

ईश्वर के उस पवित्र पुरुष से असंतुष्ट लोगों में कई पादरी भी थे जो दुष्टता से जीवन यापन करते थे, क्योंकि उन्होंने उनकी कपटपूर्ण करतूतों का भंडाफोड़ किया और कुछ को चर्च से बहिष्कृत कर दिया; वे विशेष रूप से सेरापियन नामक एक डीकन के आचरण से क्रोधित थे। उक्त व्यक्ति, जो पैट्रिआर्क के अधीन निष्ठापूर्वक सेवा कर चुका था और एक धार्मिक जीवन जी चुका था, ने एक बार सभी पुरोहितों की उपस्थिति में संत से कहा:

'महाधर्माध्यक्ष महोदय, आप इन लोगों का सुधार नहीं कर पाएंगे जब तक कि आप इन्हें एक ही लाठी से भगा नहीं देते।'

ये शब्द सुनकर कई लोग क्रोधित हो गए और लोगों के बीच पवित्र पैट्रिआर्क के बारे में बुरा-भला कहने लगे, उस पर निंदा करने लगे जो हर प्रशंसा के योग्य थे। उच्च पादरियों के बीच भी संत जॉन के प्रति असंतोष और शत्रुता स्पष्ट थी। संत जॉन से असंतुष्ट बिशपों में से एक थे सेवेरियन, जो 'Geva[7833] ' के मेट्रोपॉलिटन थे। शुरुआत में जॉन की उन पर कृपा थी; जब जॉन एशिया माइनर में चर्चों के मामलों को व्यवस्थित करने के लिए रवाना हुए, तो उन्होंने अपनी मंडली की देखभाल की जिम्मेदारी सेवेरियन को सौंपी। इस ईश्वर-पुरुष की अनुपस्थिति में कॉन्स्टेंटिनोपल के चर्च का प्रशासन करते हुए, सेवेरियन ने उनके खिलाफ असंतोष भड़काने की कोशिश की और अपनी साज़िशों के माध्यम से शाही दरबार में कृपा प्राप्त की, इस उम्मीद में कि इस तरह वह क्रिसोस्टोम की जगह ले लेगा। साथ ही, उसने अपने अधिकारों का उल्लंघन किया और प्रशासन में कुछ अनियमितताओं को होने दिया। उनके लौटने पर, संत जॉन ने तुरंत सेवेरियन की सभी नीचता और विश्वासघात को पहचान लिया और उसके कारण हुई अव्यवस्था के कारण, उसे राजधानी से हटाना चाहा। लेकिन महारानी यूडोक्सिया ने सेवेरियन की ओर से मध्यस्थता की, और, उनकी विनती पर, जॉन ने पूरे दिल से उसके साथ सुलह कर ली और उसे क्षमा कर दिया। हालाँकि, सेवेरियन दिल से वैसा ही रहा जैसा वह पहले था और उसने गुप्त रूप से क्रिसोस्टोम के प्रति द्वेष रखना जारी रखा। संत अपने चारों ओर की द्वेष-भावना से अवगत थे, लेकिन उन्होंने उस पर कोई ध्यान नहीं दिया, क्योंकि जितना अधिक उनकी बदनामी होती गई, उतनी ही उनकी ख्याति बढ़ती गई; वे दूर-दराज के देशों में भी प्रसिद्ध हो गए, और कई लोग संत को देखने तथा उनके उपदेश सुनने के लिए दूर-दराज़ से आए।

क्रिसोस्टोम की प्रसिद्धि को देखते हुए, उनके सभी दुश्मनों की दुर्भावना से उन्हें कोई खतरा नहीं होता, अगर रानी यूडोक्सिया स्वयं संत के प्रति शत्रुता रखने वालों में शामिल न होतीं। वह इस ईश्वर के पवित्र पुरुष की सबसे खतरनाक और सबसे लगातार दुश्मन थीं, और वह उनसे अपनी पूरी आत्मा से नफरत करती थीं। सम्राज्ञी ने जॉन के उन सभी उपदेशों को, जो उसने आम तौर पर सभी के लिए दिए थे, लालची लोगों और दूसरों की संपत्ति लूटने वालों के बारे में, अपने खिलाफ लिया, और विश्वास किया कि जॉन उसे निंदा और अपमान के लिए विशेष रूप से चुन रहा था; क्योंकि वह अत्यधिक लालची थी और सोने की एक अतृप्त लालसा से ग्रस्त थी, जिसे वह कई लोगों से जबरदस्ती छीनती थी। परमेश्वर के धन्य पुरुष पर क्रोधित होकर, रानी ने उन्हें पैट्रिआर्काइट से हटाने की एक योजना बनाना शुरू कर दिया।

उस समय, कॉन्स्टेंटिनोपल में थियोडोरिक नाम का एक कुलीन व्यक्ति था, जिसके पास बहुत धन था। उससे ईर्ष्या करते हुए और उसकी संपत्ति पर कब्ज़ा करने की इच्छा से, महारानी ने उसके खिलाफ आरोप तलाशे, लेकिन उसे कोई नहीं मिला, क्योंकि थियोडोरिक ईमानदारी और सम्मान वाला व्यक्ति था। उस पर कोई आंच न ला पाने पर, महारानी ने एक चाल चली। उसने थियोडोरिक को अपनी उपस्थिति में बुलाया और उससे कहा:

'तुम जानते हो कि शाही खज़ाना लगातार कितना बड़ा नुकसान सहता है, राज्य की रक्षा करने वाली सेना को कितना सोना वितरित किया जाता है, और शाही खज़ाने से रोज़ाना कितने अनगिनत लोगों को भोजन मिलता है। इसीलिए हमारा खज़ाना अब कुछ कम हो गया है। इसलिए, अपनी संपत्ति का एक हिस्सा शाही खजाने को उधार दे दें; ऐसा करने से, आप हमारी कृपा प्राप्त करेंगे; और समय आने पर, जो आप अब देंगे वह आपको वापस मिल जाएगा।"

[7832] फिर भी, सम्राज्ञी यूडोक्सिया के विरोध के बावजूद, सम्राट के समक्ष अपनी मध्यस्थता के माध्यम से, जॉन क्रिसिस्टम ने इस अवसर पर यूट्रोपियस को उसकी योग्य सज़ा से बचा लिया। हालाँकि, बाद में यूट्रोपियस को निर्वासित कर मौत की सज़ा दे दी गई।

[7833] गेवल – भूमध्य सागर पर, फिनिसिया का एक शहर। यह वर्तमान सीरिया में बेरूत और त्रिपोली के बीच स्थित था।

थेओडोरकि को एहसास हुआ कि रानी उसकी संपत्ति का उपयोग शाही खजाने को भरने के लिए नहीं, बल्कि धन के लिए अपनी अतृप्त लालच को पूरा करने के लिए करना चाहती थी। इसलिए वह धन्य जॉन के पास गया, उसे रानी के इरादे के बारे में बताया, और आँसू भरी आँखों से संत से अपनी मदद और समर्थन देने की विनती की। जॉन ने तुरंत रानी को एक पत्र भेजा, जिसमें उन्होंने दयालु और सौम्य शब्दों में उसे फटकार लगाते हुए कहा कि थियोडोरकि को कोई नुकसान न पहुँचाए। यद्यपि रानी पैट्रिआर्क से नाराज़ थी, उस अवसर पर उसने उनकी इच्छानुसार काम किया; वह उनके बुद्धिमानी भरे शब्दों से लज्जित हो गई और थियोडोरकि को कोई नुकसान न पहुँचाने का वादा किया। इसके बाद, थियोडोरकि ने संत के स्वर्ण-मुखी शब्दों पर ध्यान दिया, जिन्होंने उसे दान-पुण्य के बारे में सिखाया था और सलाह दी थी कि अपना खजाना पृथ्वी पर न छिपाए, जहाँ ईर्ष्यालु हाथ उसे छीन सकता है, बल्कि स्वर्ग में रखे, जहाँ न कोई उससे ईर्ष्या करेगा और न ही उसे छीन लेगा। उसने अपना धन स्वर्ग के राजा को देने का संकल्प लिया। अपने परिवार का भरण-पोषण करने के लिए अपनी संपत्ति का केवल एक छोटा सा हिस्सा रखकर, उसने अपनी विशाल संपत्ति का बाकी हिस्सा यात्रियों, गरीबों और बीमारों को खिलाने के लिए एक चर्च के अन्नदान गृह को दान कर दिया। यह सुनकर रानी बहुत क्रोधित हो गईं और उन्होंने धन्य जॉन को संदेश भेजा:

'हे पवित्र पैट्रिआर्क! आपकी सलाह पर, मैंने हमारे राज्य की जरूरतों के लिए कुलीन थियोडोरकि से कुछ भी नहीं लिया, फिर भी आपने अपने निजी लाभ के लिए उसकी संपत्ति पर कब्जा कर लिया है! क्या यह अधिक उपयुक्त नहीं होता कि यह संपत्ति आप लेतीं, न कि आप, क्योंकि थियोडोरकि रानी की सेवा में रहते हुए अमीर हो गया था? आपने हमारे उदाहरण का पालन क्यों नहीं किया? जैसे हमने थियोडोरकि से कुछ नहीं लिया, वैसे ही आपको भी उसकी संपत्तियाँ नहीं लेनी चाहिए थीं।

इन शब्दों के जवाब में, जॉन ने रानी को निम्नलिखित लिखा:

'मैं समझता हूँ कि यह आपके लिए कोई रहस्य नहीं है कि, अगर मैं धन चाहता, तो कुछ भी मुझे इसे प्राप्त करने से नहीं रोक सकता था। क्योंकि मेरे माता-पिता कुलीन, प्रतिष्ठित और अमीर थे। लेकिन मैंने स्वेच्छा से धन का त्याग कर दिया। आप दावा करते हैं कि मैंने थियोडोरकि की संपत्ति अपने लाभ के लिए ली। लेकिन यह जान लो: थियोडोरकि ने मुझे कुछ भी नहीं दिया; और अगर उसने दिया भी होता, तो मैं उससे वह नहीं लेता। उसने अपनी संपत्ति मसीह को दे दी, और गरीबों तथा ज़रूरतमंदों को दान दिया। और उसने अच्छा किया, क्योंकि मसीह से उसे आने वाले युग में सौ गुना प्राप्त होगा। मैं चाहूँगा कि आप भी, थियोडोरकि के उदाहरण का अनुसरण करते हुए, अपना खज़ाना स्वर्ग में संचित करें, ताकि जब आप निर्धन हो जाएँ, तो आपको शाश्वत निवासों में स्वागत मिल सके। लेकिन यदि आप उस चीज़ को मसीह से छीनने का इरादा रखते हैं जो थियोडोरकि ने उन्हें दी थी, तो उसका हमसे क्या लेना-देना? क्योंकि, जैसा कि आप स्वयं देखेंगे, आप हमें नहीं बल्कि स्वयं मसीह को ठेस पहुँचाएँगे।

योहन का यह पत्र पढ़कर, सम्राज्ञी और भी अधिक क्रोधित हो गईं और संत से बदला लेने का अवसर ढूँढने लगीं।

उस समय, कैलट्रिोपा नाम की एक विधवा अलेक्ज़ेंड्रिया से कॉन्स्टेंटिनोपल में निम्नलिखित मामले पर आई थी। जब पावलकियिस, जो अगस्टस के पद पर था[7834] , अलेक्ज़ेंड्रिया का राज्यपाल था, तो कुछ ईर्ष्यालु लोगों ने उसे सूचित किया कि कैलट्रिोपा के पास बहुत सारा सोना है। हालाँकि, पावलकियिस सोने के लिए अत्यंत लालची था। कैलट्रिोपा पर झूठा आरोप लगाकर, उसने उसे गिरफ्तार करने का आदेश दिया और उससे पाँच सौ सोने के सिक्के देने के लिए मजबूर किया। इतनी बड़ी रकम न होने के कारण, विधवा ने अपने पास जो कुछ भी था, उसे पड़ोसियों के पास गिरवी रख दिया और बड़ी मुश्किल से पाँच सौ सोने के सिक्के इकट्ठा करके प्रांतीय गवर्नर को दे दिए। जल्द ही, पावलकियिस को उसके अन्यायपूर्ण कृत्यों के लिए उसके पद से हटा दिया गया और पूछताछ के लिए कॉन्स्टेंटिनोपल भेज दिया गया; वह गरीब विधवा भी उसके पीछे वहीं चल दी। सम्राट के सामने पहुँचकर, वह उसके पैरों पर गिर पड़ी, रोते हुए चिल्लाने लगी और शिकायत करने लगी कि पावलकियिस ने जबरदस्ती उससे पाँच सौ सोने के सिक्के ले लिए थे। सम्राट ने कॉन्स्टेंटिनोपल के राज्यपाल को मामले की जाँच करने का आदेश दिया। लेकिन राज्यपाल, पावलकियिस के पक्ष में हो कर, उसे बरी कर दिया और विधवा को खाली हाथ लौटा दिया। इससे और भी अधिक अपमानित होकर, वह विधवा रानी के पास भागी और अपनी बदकिस्मती के बारे में बताकर, उनसे दया और मदद की भीख माँगी। सोने की शौकीन रानी इस घटनाक्रम से बहुत

[7834] यह उपाधि उच्चतम-श्रेणी के प्रांतीय गवर्नरों को प्रदान की जाती थी, जो निम्न पद के गवर्नरों से अलग थे।

खुश हुई, क्योंकि उसे उम्मीद थी कि इस मामले से वह अपने लिए बहुत सारा सोना हासिल कर लेगी। और इसलिए, उसने तुरंत पावलिकियस को तलब किया, गुस्से में उस पर किसी और की संपत्ति लूटने और गरीब विधवा का अपमान करने का आरोप लगाया, और आदेश दिया कि जब तक वह सौ लीटर सोना नहीं चुका देता, तब तक उसे हिरासत में रखा जाए। यह समझते हुए कि वह रानी की पकड़ से नहीं बच सकता, पावलिकी ने रानी द्वारा मांगे गए जितने सोने की मांग की गई थी, उतना सोना अपने घर से मंगवाया, और उसे सौ लीटर सोना सौंप दिया। इस सारे पैसे में से, रानी ने विधवा को केवल छत्तीस सोने के सिक्के दिए और उसे भगा दिया, बाकी अपने पास रख लिया। विधवा उस अन्यायपूर्ण निर्णय से अपमानित होकर आँसुओं में रानी को छोड़कर चली गई। तभी उसने उत्पीड़ितों के रक्षक – संत जॉन के बारे में सुना। उसके पास जाकर, उसने विस्तार से बताया कि पावलिकी और रानी ने उसके साथ क्या किया था।

रोती हुई विधवा को सांत्वना देने के बाद, संत जॉन ने पावलिकी को बुलवाया और उसे चर्च में आमंत्रित करते हुए कहा:

'हम उन अन्यायों से अवगत हैं जो तुमने ईश्वर के भय के बिना, गरीबों पर अत्याचार करके और जबरदस्ती दूसरों की संपत्ति छीनकर किए हैं, ठीक वैसे ही जैसे तुमने इस गरीब विधवा के साथ किया है। हमने तुम्हें इसलिए बुलाया है ताकि तुम उस महिला को पाँच सौ सोने के सिक्के वापस करो जिससे तुमने अन्याय किया है।' इसलिए, उसे यह दे दो, ताकि वह सूदखोरों से लिया हुआ कर्ज़ चुका सके और अपने बच्चों के साथ पूर्ण कंगाली में नष्ट न हो जाए। तब तुम भी अपने पाप से मुक्त हो जाओगे और उस ईश्वर को प्रसन्न करोगे, जिसे तुमने क्रोधित किया है और जो अनाथों के साथ तुम्हारे दुर्व्यवहार का बदला लेगा, जब तक कि तुम पश्चाताप नहीं करते।"

पव्लिकि ने उत्तर दिया:

'हे मेरे प्रभु, इस विधवा ने मुझसे कहीं ज़्यादा बुरा किया है, क्योंकि रानी से मेरी शिकायत करके उसने मुझसे सौ लीटर सोना छीन लिया है। अब वह मुझसे और क्या चाहती है? वह रानी के पास जाए और उससे अपना हक़ ले ले।'

संत ने उसे उत्तर में कहा:

'भले ही रानी ने आपसे इतना सोना लिया हो, विधवा को अभी तक अपना हक़ नहीं मिला है, और इसलिए रानी द्वारा आपके साथ किए गए अन्याय के लिए उसकी कोई गलती नहीं है। रानी ने आपसे सौ लीटर सोना विधवा की शिकायत के कारण नहीं बल्कि आपके सत्ता में रहते हुए किए गए अन्य लूटपाट के कार्यों के कारण लिया था। रानी की बदनामी न करें। मैं आपको आश्वस्त करता हूँ कि जब तक आप विधवा से ली गई हर चीज़, आखिरी सोने के सिक्के तक, वापस नहीं कर देते, तब तक आप इस जगह से नहीं जा पाएँगे। जहाँ तक रानी द्वारा दिए गए छत्तीस सोने के सिक्कों की बात है, उन्हें वह अपने यात्रा खर्च के लिए रख सकती है।

जब रानी को पता चला कि जॉन ने पावलिकिया को चर्च में बंद कर रखा है, तो उन्होंने जॉन को पावलिकिया को रिहा करने का आदेश दिया, क्योंकि वह उससे पर्याप्त सोना ले चुकी थीं।

लेकिन जॉन ने दूतों को उत्तर दिया:

'पावलिकिया को तब तक यहाँ से रिहा नहीं किया जाएगा जब तक वह उस गरीब महिला से जो कुछ भी उसने लिया है, उसे वापस नहीं कर देती।'

रानी ने संत के पास दूसरी बार संदेशवाहक भेजे, यह मांग करते हुए कि वह पावलिकिया को रिहा कर दें, लेकिन संत ने जवाब दिया:

'यदि रानी चाहती हैं कि मैं उसे रिहा करूँ, तो वे इस विधवा को पाँच सौ सोने के सिक्के भेजें। यह उनके लिए कोई बड़ी कठिनाई नहीं होगी, क्योंकि उसने पावलिकी से तो बहुत अधिक लिया था—एक सौ लीटर सोना।'

यह सुनकर रानी क्रोध से भर गई और तुरंत दो शताधिक्यपतियों को दो सौ सैनिकों के साथ भेज दिया कि वे जबरदस्ती पावलिकिया को चर्च से बाहर खींच लाएँ। लेकिन जब सैनिक चर्च के दरवाजों के पास पहुँचे, तो प्रभु का स्वर्गदूत अचानक दरवाजे में खड़ा दिखाई दिया, उसके हाथ में एक खींची हुई तलवार थी और उसने उससे प्रवेश मार्ग बंद कर दिया। उस भयानक स्वर्गदूत को देखकर सैनिक भयभीत हो गए और भाग गए। काँपते हुए, वे रानी के पास लौटे और उन्होंने उसे स्वर्गदूत के प्रकट होने की बात बताई। यह सुनकर वह भयभीत हो गई और अब उसे पव्लिकी को जॉन की उपस्थिति से बुलाने की हिम्मत नहीं हुई। यह महसूस करते हुए कि रानी उसकी मदद के लिए नहीं आई थी, पव्लिकी ने अपने घर से सोना मंगवाया, विधवा को पाँच सौ सोने के सिक्के दिए, और उसे चर्च से रिहा कर दिया गया। अपना भुगतान प्राप्त करने के बाद, विधवा खुशी-खुशी अपने शहर लौट आई।

इस बीच, रानी का धन्य योहन पर क्रोध कम नहीं हुआ; इस ईश्वर के पुरुष के प्रति उसकी द्वेष भावना उसके हृदय में दिनि-प्रतदिनि बढ़ती गई। एक दिनि उसने अपने नौकरों को संत योहन के पास भेजा, और उन्हें यह आज्ञा दी कि वे निम्नलिखिति शब्द उनके पास पहुँचाएँ:

हमारा विरोध करना बंद करो और हमारे शाही मामलों में दखल न दो, क्योंकि हिम भी चर्च के मामलों में दखल नहीं देते, बल्कि उन्हें तुम्हारी इच्छा से प्रबंधति करने के लिए तुम्हारे ऊपर छोड़ देते हैं। 'मुझे सबके सामने उपहास का विषय बनाना बंद करो, मेरे बारे में बात करना और मेरी निंदा करना बंद करो। अब तक मैंने तुम्हें एक पिता के रूप में माना है और तुम्हें वह सम्मान दिया है जो तुम्हारा हक है, लेकिन अगर अब से तुम अपनी आदतें नहीं सुधारोगे और मेरे साथ बेहतर व्यवहार नहीं करोगे, तो मैं तुम्हें और बर्दाश्त नहीं करूँगा।'

रानी के ये शब्द सुनकर, धन्य जॉन बहुत दुखी हुए और गहरी आह भरते हुए, दूतों से कहा:

रानी चाहती हैं कि मैं मृतक के समान हो जाऊँ: हो रहे अन्याय पर ध्यान न दूँ, अन्याय झेल रहे लोगों की रोती-बिलखती आवाज़ों को न सुनूँ, और न ही पाप करने वालों के विरुद्ध बोलूँ; लेकिन चूँकि मैं एक बिशप हूँ और मुझे आत्माओं की देखभाल का काम सौंपा गया है, मुझे सब कुछ चौकस नज़र से देखना चाहिए, सभी की विनतियों को सुनना चाहिए, और सभी को सिखाना, निर्देश देना और फटकारना चाहिए। क्योंकि मैं जानता हूँ कि यदि मैं अधर्म की निंदा नहीं करता और अधर्मी को दंड नहीं देता, तो मैं स्वयं दंड का पात्र बनूँगा; और इसलिए मुझे डर है कि भविष्यवक्ता होशे के वचन मुझ पर लागू न हो जाएँ: *'जैसे लुटेरे किसी मनुष्य की घात लगाते हैं, वैसे ही याजकों का एक गिरोह शेकेम के मार्ग पर हत्या करता है और घृणित कर्म करता है'*[7835] (होशे 6:9)। क्योंकि दिव्य प्रेरित आज्ञा देते हैं कि पापी को सभी के सामने फटकार लगाई जाए, ताकि अन्य भी भयभीत हो जाएँ। और वही प्रेरित सिखाते हैं, कहते हुए: *'जो पाप करते हैं उन्हें सबके सामने डाँटो, ताकि बाकी भी डर जाएँ'* (1 तीमु. 5:20); *'वचन का प्रचार करो; समय और असमय तैयार रहो; सब धैर्य और शिक्षा के साथ फटकारो, डाँटो और समझाओ'* (2 तीमु. 4:2)। मैं अधर्म की निंदा करता हूँ, न कि उसे करने वालों की; मैंने कभी किसी से उनके सामने उनके अधर्म के बारे में नहीं कहा, न ही मैंने किसी की अपमानजनक रूप से बदनामी की है, और न ही मैंने कभी रानी का नाम उनकी निंदा करने के लिए अपने उपदेशों में लिया है। लेकिन मैंने आम तौर पर सभी को बुराई से दूर रहने और अपने पड़ोसियों पर अत्याचार न करने के लिए प्रोत्साहित किया है। यदि, हालाँकि, मेरी शिक्षाओं को सुनने वालों में से कोई भी अपने किए हुए बुरे कामों के लिए अपने विवेक से डाँटा जाता है, तो उन्हें मुझ पर नहीं, बल्कि अपने आप पर क्रोधित होना चाहिए, और उन्हें बुराई से दूर हो कर भलाई करनी चाहिए। यदि रानी अपने किसी भी गलत काम से अनजान हैं, और यह भी कि उन्होंने किसी के साथ अन्याय नहीं किया है, तो वह मुझ पर क्यों क्रोधित हैं, जो लोगों को सभी अन्याय से दूर होने की शिक्षा देता हूँ? उन्हें तो इस बात की खुशी मनानी चाहिए कि उन्होंने कोई अन्याय नहीं किया है और मैं उन लोगों को, जिन पर उनका शासन है, मुक्ति का उपदेश लगन से देता हूँ। हालाँकि, यदि वह उन पापों की दोषी है जिन्हें मैं अपनी शिक्षा के वचनों के द्वारा लोगों के हृदयों से जड़ से उखाड़ फेंकने का प्रयत्न करता हूँ, तो उसे यह जान लेना चाहिए कि उसे मैं दोषी नहीं ठहराता और न ही उस पर अपमान लाता हूँ, बल्कि उसके अपने कर्म ही उसे उजागर करते हैं, ऐसे कर्म जो उसकी आत्मा पर बड़ा अपमान और लज्जा लाते हैं। इसलिए, रानी अपनी इच्छा के अनुसार क्रोध करे, परन्तु मैं सत्य बोलना नहीं छोड़ूँगा। क्योंकि मेरे लिए लोगों को क्रोधित करना परमेश्वर को क्रोधित करने से बेहतर है: *'यदि मैं अब भी लोगों को प्रसन्न करने का यत्न करता, तो मैं मसीह का सेवक न होता'* (गलातियों 1:10)।

दूतों से यह कहने के बाद, संत ने उन्हें विदा कर दिया। वे, बदले में, रानी के पास लौटे और उन्होंने जो कुछ भी सुना था, उसकी सारी रिपोर्ट उन्हें दे दी। तब धन्य योहन पर रानी और भी अधिक क्रोधित हो गई।

केवल रानी ही संत के प्रति शत्रुतापूर्ण नहीं थी, बल्कि कई अन्य लोग भी थे जो दुष्टता से रहते थे। उनके दुश्मन न केवल कॉन्स्टेंटिनोपल में थे, बल्कि दूर-दराज के देशों में भी थे। उनमें से निम्नलिखित थे: अलेक्जेंड्रिया के पैट्रिआर्क थियोफिलिस, जो शुरू से ही जॉन को नापसंद करते थे और नहीं चाहते थे कि उन्हें पैट्रिआर्क के रूप में अभिषिक्त किया जाए; बेरिया के बिशप अकाकियस[7836] , गेवल के सेवेरियन और टोलेमाइस के एंटिओकस[7837] , और कॉन्स्टेंटिनोपल में, दो प्रेस्बिटिर और पाँच डीकन, कई शाही अधिकारी, और तीन प्रसिद्ध और धनी विधवाएँ जो दुष्टता से जीवन यापन करती

[7835] होशे 6:9। ये शब्द यहूदी लोगों के पुरोहितों की निंदा करते हैं, जिन्होंने लोगों को जीवन के सही मार्ग दिखाने के बजाय, उन्हें लोगों से छिपा दिया।

[7836] बेरिया – सीरिया में एक शहर, जो अब अलेप्पो है।

[7837] टॉलेमाइस – सीरिया में एक शहर, भूमध्य सागर के पूर्वी तट पर।

थीं: मार्सा, कैस्ट्रसियिा और इवग्राफयिा। ये सभी यूहन्ना के शत्रु, आपस में सलाह-मशवरिा करके, लोगों के सामने उसकी बदनामी करने के लिए उसके वरिुद्ध दोष खोजने लगे। सबसे पहले, उन्होंने यह पता लगाने के लिए अंफ़ियाकयिा के पास दूत भेजे कि क्या यूहन्ना ने अपने बचपन में भी कोई बुराई की थी। लेकनि *'जो लोग उसे परखना चाहते थे, वे स्वयं परखे गए'* (भजन संहति 63:7), और उन्हें इस परमेश्वर के पवत्रि पुरुष पर आरोप लगाने के लिए कुछ भी नहीं मलिा। इसके बाद, उन्होंने अलेक्जेंड्रयिा में थयिोफलिस को भेजा, जो एक चालाक झूठा और बदनाम करने वाला था, लेकनि उसे भी संत जॉन पर दोष लगाने के लिए कुछ नहीं मलिा, जो सूर्य की तरह गुणों से प्रकाशमान थे। हालाँकि, शैतान द्वारा उकसाया गया थयिोफलिस, जोन को उनके पद से हटाने के लिए उत्सुकता से प्रयास कर रहा था, जो उसे रानी और अन्य दुष्ट लोगों की मदद से हासलि हो गया। जोन का नर्विासन नम्निलखिति परस्थितियिों में हुआ।

अलेक्जेंड्रयिा में इसडिोर नाम का एक पुरोहति था, जो पहले एक ज़ेनोडोरस (यानी, यात्रयिों के लिए सुवधिा प्रदान करने वाला) था, और वह पवत्रि जीवन तथा महान बुद्धि का धनी व्यक्ति था। वह पहले ही काफी वृद्ध हो चुका था, उसकी आयु अस्सी वर्ष थी; उसे अलेक्जेंड्रयिा के पैट्रआर्क, महान संत अथेनासयिस द्वारा पुरोहति के पद पर नयिुक्त कयिा गया था। इसी इसडिोर के वरिुद्ध थयिोफलिस ने अलेक्जेंड्रयिा के एक पादरी पीटर के कारण वैमनस्यता पाल रखी थी; क्योंकि थयिोफलिस का इरादा पीटर को बनिा कसिी कारण के उसके पद से हटाने और उसे चर्च से बहष्कृत करने का था, जबकि इसडिोर ने पीटर का बचाव कयिा और तर्क दयिा कि उस पर लगाए गए आरोप अनुचति थे। परणिामस्वरूप, थयिोफलिस भी इसडिोर से नाराज़ हो गया; पीटर को चर्च से बहष्कृत करने के बाद, उसने इसडिोर के खलिाफ सबूत ढूंढना शुरू कर दयिा ताकि उसे भी चर्च से बहष्कृत कयिा जा सके।

उस समय, थयिोडोटा नाम की एक वधिवा ने इसडिोर को एक हजार सोने के सक्के दान कएि, ताकि वह उस पैसे का उपयोग अलेक्जेंड्रयिा में भखिारयिों, अनाथों और बेसहारा वधिवाओं को कपड़े पहनाने के लिए कर सके। वधिवा ने इसडिोर से यह बात पैट्रआर्क थयिोफलिस को न बताने के लिए कहा, कहीं कि वह सोना जब्त न कर लें और उसे उन पत्थर की इमारतों पर खर्च न कर दें जो वह बनवा रहे थे। सोना प्राप्त करने के बाद, इसडिोर ने थयिोडोतयिा के कहे अनुसार ही कयिा और थयिोफलिस से कुछ भी नहीं कहा। फरि भी, थयिोफलिस को कसिी से पता चला कि इसडिोर ने थयिोडोटा से एक हजार सोने के सक्के प्राप्त कएि थे और उन्हें उसकी, थयिोफलिस की, जानकारी के बनिा गरीबों की जरूरतों पर खर्च कर दयिा था। सोने से प्रेम करने वाला थयिोफलिस इस बात पर इसडिोर पर बहुत क्रोधति हो गया और उस पर एक अस्वाभावकि पाप का एक अनुचति आरोप लगाया। अपने आरोप को मजबूत करने के लिए, थयिोफलिस ने झूठे गवाहों को ढूंढा। लेकनि नर्दिोष इसडिोर बरी हो गया। फरि भी, अपनी असीमति द्वेषपूर्ण भावना से प्रेरति होकर, थयिोफलिस ने उसे उसके पुरोहति का पद से हटा दयिा और पटिाई व अपमानति करने के बाद, उसे पुरोहति वर्ग से नष्कासति कर दयिा। अन्याय सहने के बाद, इसडिोर ने अलेक्जेंड्रयिा के ' ' को छोड़ दयिा और नत्रियिा पर्वत[7838] पर एक तपस्वी के रूप में रहने के लिए चले गए, जहाँ वे अपनी जवानी में पहले भी रह चुके थे। वहाँ एक झोपड़ी में खुद को बंद करके, उन्होंने अपने ऊपर कएि गए अपमान को धैर्यपूर्वक सहते हुए ईश्वर से प्रार्थना की।

[7839]उस समय, मस्रि के मठों में चार भाई रहते थे—सदाचारी और ईश्वर-भयभीत पुरुष, जन्होंने अपना पूरा जीवन उपवास और मठवासी तपस्या में बतिाया। उनके नाम इस प्रकार थे: डायोस्कोरस, अम्मोनयिस, यूसेबयिस और यूथमिीयस, और वे 'लंबे लोगों' के नाम से जाने जाते थे, क्योंकि वे सभी लंबे कद के थे। इन भाइयों का न केवल अलेक्जेंड्रयिा के नविासयिों द्वारा बल्कि स्वयं थयिोफलिस द्वारा भी उनके सदाचारी जीवन के लिए सम्मान कयिा जाता था। उनमें से एक, अर्थात् डायोस्कोरस, को उसने अपनी इच्छा के वरिुद्ध हर्मोपोलसि[7840] का बशिप नयिुक्त कयिा, जबकि उसने अपने दो भाइयों, अम्मोनयिस और यूथमिीयस को पैट्रआर्केट में अपने साथ बसने के लिए मना लयिा और उन्हें पुरोहति पद स्वीकार करने

[7838] नत्रियिा अलेक्जेंड्रयिा के दक्षणि में, नील नदी के पश्चमि में, लीबयिा के रेगस्तिान के पास स्थति है। पहाड़ का नाम उससे लगे झीलों में नाइट्रे की प्रचुरता के कारण पड़ा है।

[7839] माउंट नाइट्रयिन के पश्चमि में वशिाल लीबयिाई मरुभूमि (अब सहारा) थी, जसिमें भक्षिुओं की कोठरयिाँ स्थति थीं। इसलिए, इस मरुभूमि को केलयिन मरुभूमि के नाम से जाना जाता था।

[7840] इस डयिोस्कोरस, हर्मोपोलीस के बशिप और एक धार्मकि व्यक्ति, को उस वधिर्मी डयिोस्कोरस से अलग समझना चाहिए, जो कुछ समय बाद रहा और 444 से 451 तक अलेक्जेंड्रयिा का बशिप रहा। वे एक मोनोफसिाइट थे, अर्थात्, उन्होंने यह सखिाया कि यीशु मसीह में एक ही स्वभाव है, और उनमें दव्यि स्वभाव मानव स्वभाव में समाहति है। हर्मोपोलीस का धर्मप्रांत मस्रि के उत्तर-पश्चमिी भाग में, अलेक्जेंड्रयिा के दक्षणि में स्थति था; माउंट नाइट्रयिन भी इस धर्मप्रांत का एक हस्सिा था।

के लिए मजबूर किया। थेओफिलस के अधीन पैट्रिआर्केट में रहते हुए, उन्होंने देखा कि वह ईश्वर की आज्ञाओं के अनुसार नहीं रहता था, ईश्वर से अधिक सोने से प्रेम करता था, और बड़े अन्याय करता था। इसलिए, वे पैट्रिआर्क के साथ नहीं रहना चाहते थे, बल्कि, उसे छोड़कर, एक बार फिर से तपस्वी के जीवन में लौट आए। उनके जाने का कारण समझते हुए, थियोफिलिस को उन पर बहुत गुस्सा आया, उसने उनके प्रति अपनी भावना को द्वेष में बदल दिया, और उनसे बदला लेने के तरीके सोचना शुरू कर दिया। सबसे पहले, उसने यह अफवाह फैलाई कि लंबे चोगा पहनने वाले भिक्षु, पदच्युत इसिडोर के साथ, ओरिजिन के धर्मद्रोह का पालन करते थे और इस धर्मद्रोह से कई काले चोगा पहनने वाले भिक्षुओं को गुमराह कर चुके थे[7841] । फिर उसने निकितम बिशपों को एक फरमान भेजा, जिसमें उन्हें बिना कोई कारण बताए, तुरंत नाइट्रियन रेगिस्तान से वरिष्ठ भिक्षुओं को हटाने का आदेश दिया। जब बिशपों ने पैट्रिआर्क के आदेश का पालन करते हुए सभी धर्मनिष्ठ और ईश्वर-भयभीत संन्यासियों को पहाड़ों और रेगिस्तानों से निकाल दिया, तो निर्वासित एकत्रित हुए और अलेक्जेंड्रिया में पैट्रिआर्क के पास गए, उनसे विनती करने लगे कि उन्हें बताएं कि उन्हें क्यों दोषी ठहराया गया और उनके घरों से क्यों निकाल दिया गया। पितृप्रधान, पागलपन भरे क्रोध में, उन पर झपट पड़े जैसे कोई भूत सवार हो गया हो, और अपना ओमोफोरीयॉन[7842] अम्मोनियस की गर्दन के चारों ओर डालकर, उसे मारते हुए चिल्लाने लगे:

'हेरेтик, ओरिजिन को शाप दे!'

अम्मोनियस और अन्य लोगों को पीटने के बाद, थियोफिलिस ने न केवल उन्हें अपनी उपस्थिति में बोलने की अनुमति देने से इनकार कर दिया, बल्कि उन्हें अपमानित कर भगा भी दिया। हालाँकि, थियोफिलिस से अपने प्रश्न का कोई उत्तर न मिलने पर, वे अपने मकानों में लौट गए, और अपने पैट्रिआर्क के क्रोध और उन्मत्तता की उन्होंने कोई परवाह नहीं की।

निकितम बिशपों को बुलाकर, थियोफिलिस ने चार निर्दोष भिक्षुओं: अम्मोनियस, यूसेबियस और यूथमियस, भाइयों डायोस्कोरस, साथ ही उपर्युक्त धन्य इसिडोर को, उनके धर्म-विश्वास की जांच किए बिना ही बहिष्कृत कर दिया। लेकिन इससे उसकी दुष्टता शांत नहीं हुई। उसने स्वयं उनके खिलाफ कई झूठे आरोप लिखे: धर्मद्रोह, जादू-टोने और कई अन्य गंभीर पापों के। फिर, बदनाम करने वालों और झूठे गवाहों को रिश्वत देकर, उसने ये झूठे आरोप उन्हें सौंप दिए, यह आदेश देते हुए कि त्योहार के दिन जब वह चर्च में लोगों को उपदेश दे रहा हो, तो बदनाम करने वाले उसके पास आएं, उपर्युक्त भिक्षुओं के खिलाफ लिखे गए आरोप उसे प्रस्तुत करें, और झूठे गवाहों को पेश करें। जब यह सब हो गया, तो पैट्रिआर्क ने कैथेड्रल में झूठे आरोपों को पढ़ने का आदेश दिया। फिर उसने ये आरोप राज्यपाल को दिखाए, उससे लगभग पाँच सौ सैनिक लिए और उनके साथ मउंट नाइट्रिया के लिए रवाना हो गया, इस इरादे से कि इसिडोर, डियोस्कोरस भाइयों और उनके सभी शिष्यों को मिस्र के प्रांत से विधर्मी और जादूगरों के रूप में निष्कासित किया जाए। अपने सैनिकों की मदद से, थियोफिलिस ने पहले डियोस्कोरस को बिशप के पद से हटा दिया; फिर, सैनिकों को शराब पिलाकर, उसने रात में माउंट नाइट्रियन पर हमला किया, और सबसे ज्यादा इसिडोर और डियोस्कोरस के भाइयों: अम्मोनियस, यूसेबियस और यूथमियस को ढूंढ रहा था। उन्हें न पाकर (क्योंकि वे एक गहरे खंदक में शरण ले चुके थे), उसने सैनिकों को सभी संतों पर हमला करने, उनके आवास जलाने और उनकी सारी मामूली संपत्ति, कपड़े और भोजन लूटने का आदेश दिया। नशे में धुत सैनिकों ने हर कोने, दरार और गुफा में धावा बोलते हुए, दस हज़ार तक पवित्र तपस्वियों को धुएँ और आग में दम घुटने से मार डाला (जुलाई के दसवें दिन, जब पवित्र चर्च उनकी स्मृति में श्रद्धांजलि अर्पित

[7841] ओरिजिन (जन्म लगभग 180 ईस्वी, मृत्यु 254 ईस्वी) – अलेक्जेंड्रियाई स्कूल के प्रमुख, अपने समय के सबसे महान विद्वानों में से एक। यहाँ तक कि स्वयं मूर्तिपूजक दार्शनिकों ने भी टिप्पणी की कि ओरिजिन ने ज्ञान में उनसे श्रेष्ठता हासिल की। ओरिजिन ने कई कृतियाँ छोड़ीं, जिनमें से कुछ हमें खंडों के रूप में प्राप्त हुई हैं। वे मुख्य रूप से पवित्र धर्मग्रंथों पर अपनी टीकाओं के लिए जाने जाते हैं। सेल्सस के विरुद्ध उनका प्रबंध भी बहुत प्रसिद्ध है, जिसमें वे ईसाई धर्म के सत्यों का बचाव करते हैं। दुर्भाग्य से, अपनी रचनाओं में ओरिजिन ने कभी-कभी ऐसे मनमाने विचार व्यक्त किए जिनका चर्च ने समर्थन नहीं किया, हालांकि उन्होंने उन्हें आधिकारिक चर्च सिद्धांत के रूप में नहीं बल्कि अपने निजी अनुमानों के रूप में प्रस्तुत किया। उदाहरण के लिए, उन्होंने पवित्र त्रिमूर्ति के व्यक्तियों के बीच संबंध के बारे में पूरी तरह से सही शिक्षा नहीं दी; उन्होंने दावा किया कि शैतान, यदि वह चाहे, तो बचाया जा सकता है, कि मानव आत्माओं को दृश्यमान दुनिया की रचना से पहले बनाया गया था, और इसी तरह। ओरिजिन के उत्साही अनुयायी, जिनमें से अलेक्जेंड्रिया और फिलिस्तीन दोनों में उनके कई अनुयायी थे, अक्सर इन विचारों को चरम तक ले जाते थे। इन अनुयायियों को ओरिजिनिस्ट कहा जाता था, और उनके विचारों को ओरिजिनिस्ट विधर्म के नाम से जाना जाता था।

[7842] ओमोफोरीयॉन (एक ग्रीक शब्द) – शाब्दिक रूप से एक कंधे का चोगा या कंधे का आवरण – बिशप के परिधानों में से एक है, जिसे कंधों पर डाला जाता है और सामने तथा पीछे की ओर लटकाया जाता है।

करती है)। बाकी बचे भिक्षु भाग गए और जहाँ भी उन्हें जगह मिली, छिप गए। इसके बाद, थियोफिलस अलेक्जेंड्रिया लौट गए।

इस नरसंहार में बचे भिक्षुओं ने एकत्रित होकर, अपने मारे गए पिता और भाइयों के लिए देर तक रोने के बाद, अपनी-अपनी इच्छानुसार अलग-अलग दिशाओं में चल दिए। हालाँकि डियोस्कोरस अपने भाइयों, धन्य इसिडोर और कई अन्य संतों के साथ—जिन्होंने उपवास और सदाचार से स्वयं को विशिष्ट बनाया था और जिन्हें ईश्वर ने चमत्कार करने का वरदान देकर सम्मानित किया था—गहरे दुख के साथ फिलिस्तीन लौट आए। हालाँकि, उनके लिए सबसे कड़वी बात यह नहीं थी कि उनके साथ अन्याय हुआ और उन्हें निर्वासित किया गया, बल्कि यह थी कि थियोफिलस ने बिना किसी कारण के उन्हें चर्च से बहिष्कृत कर दिया और विधर्मी माना। फिर भी, फ़िलिस्तीन में भी थियोफिलस ने उन्हें चैन से नहीं रहने दिया। उन्होंने तुरंत फ़िलिस्तीन के बिशपों को एक संदेश भेजा, जिसमें कहा गया:

'तुमने मेरी अनुमति के बिना उन लोगों को स्वीकार नहीं करना चाहिए जिन्हें चर्च से निकाला गया है और जो मुझसे भाग गए हैं।'

तब निर्वासित, यह न जानते हुए कि कहाँ जाएँ, एक सुरक्षित आश्रय के रूप में कॉन्स्टेंटिनोपल के लिए सेंट जॉन क्राइसोस्टोम के पास रवाना हो गए, और उनके पैरों पर गिरकर, आँसुओं के साथ उनसे दया दिखाने और मदद करने का आग्रह करने लगे। पचास सम्मानित पुरुषों को ऐसी दुर्दशा में देखकर, जॉन को उन पर दया आ गई और उनकी आँखों में आँसू आ गए। फिर, यह जानने के बाद कि थियोफिलस के हाथों उन्हें ऐसी विपत्ति क्यों झेलनी पड़ी, उन्होंने उन्हें दयालु शब्दों से सांत्वना दी और आश्वासन दिया, तथा सेंट अनास्तासिया के चर्च में उनके रहने की व्यवस्था की। उनकी देखभाल न केवल सेंट जॉन ने, बल्कि एक डीकोनेस, सेंट ओलंपियास ने भी की, जो अपने संसाधनों से उन्हें उनकी ज़रूरत की हर चीज़ उपलब्ध कराती थीं। इस डीकोनेस ने अपनी पूरी संपत्ति यह सुनिश्चित करने के लिए समर्पित कर दी कि गरीबों और राहगीरों को शांति और जीवन के लिए आवश्यक सभी चीजें मिलें। वह वास्तव में एक संत थी; वे भिक्षु भी संत थे; बाद में चर्च ने उनमें से कुछ की स्मृति में एक पर्व दिवस के साथ सम्मानित किया। उनमें से, एक व्यक्ति विशेष रूप से सबसे अलग था, जिसका नाम हायरेक्स था, जो कई वर्षों तक अकेले रेगिस्तान में रहा था और जिसे राक्षसों ने इस प्रकार प्रलोभित किया:

'वरिष्ठ! आप और पचास साल जिएंगे! आप इतने लंबे समय तक रेगिस्तान में कैसे रहेंगे?'

लेकिन उन्होंने, उनके छल को भांपते हुए, कहा:

'तुम मेरे लिए इतनी छोटी उम्र की भविष्यवाणी करके मुझे दुख पहुँचा रहे हो; फिर भी मैंने इस रेगिस्तान में दो सौ साल तक कठिनाइयों को सहने के लिए खुद को तैयार किया है।'

यह सुनकर, राक्षस लज्जित होकर भाग गए। ठीक ऐसे ही एक पिता थे, जिन्हें राक्षस हिला नहीं सके, जिन्हें अलेक्जेंड्रिया के थियोफिलस ने भगाया था! पवित्र तपस्वियों में इज़ैक द प्रेज़बिटर भी थे, जो पवित्र धर्मग्रंथों के पारंगत और संत मकारियस के शिष्य थे, जो अपनी माँ के गर्भ से ही पाप रहित थे, क्योंकि उन्हें पाँच वर्ष की आयु में मरुभूमि में लाया गया था और वहीं वे बड़े हुए थे। वास्तव में, थियोफिलस द्वारा निष्कासित किए गए सभी तपस्वी पवित्र और सम्माननीय थे। धन्य योहन ने उनका बहुत सम्मान किया और उन्हें चर्च में आने से नहीं रोका, हालाँकि उन्होंने तब तक उन्हें पवित्र भोज में शामिल होने की अनुमति नहीं दी जब तक कि उन्होंने स्वयं चर्च से उनके बहिष्कार के कारणों का पूरी तरह से पता नहीं लगा लिया और उन्हें थियोफिलस से सुलह नहीं करा दी। उन्होंने उनसे राजा को अपनी शिकायत न बताने और थियोफिलस के बारे में शिकायत न करने का आग्रह किया, और उनसे मेल-मिलाप कराने का वादा किया। जॉन ने वास्तव में थियोफिलस को पत्र लिखा, जिसमें उनसे उन भिक्षुओं को मिस्र में उनके सेलों में शांति से रहने देने और उन्हें मसीह की कलीसिया की गोद में वापस स्वागत करने का आग्रह किया।

इस बीच, यह अफवाह थियोफिलस तक पहुँची कि जॉन ने निर्वासित भिक्षुओं को अपने समुदाय में स्वीकार कर लिया था। उसी समय, कुछ बदनाम करने वालों ने उसे बताया कि कॉन्स्टेंटिनोपल के बिशप ने उन्हें पवित्र भोज में शामिल कर लिया था (जो कि सच नहीं था)। इस पर थियोफिलस जॉन पर बहुत क्रोधित हो गए और उन्होंने जॉन को एक चुनौतीपूर्ण पत्र भेजा, जिसमें उन्होंने जॉन पर चर्च के आदेशों का उल्लंघन करने का आरोप लगाया[7843] । हालाँकि, बाद में जॉन ने

[7843] 32वां प्रेरितों का विधान कहता है कि किसी भी बिशप द्वारा बहिष्कृत किए गए व्यक्ति को 'किसी अन्य द्वारा संप्रदाय में स्वीकार नहीं किया जाना चाहिए'। यही आवश्यकता प्रथम सार्वभौमिक परिषद के 6वें विधान में भी निर्धारित की गई है।

थियोफलिस को एक दूसरा, सुलह का पत्र भेजा, जिसमें उन्होंने उनसे अपने क्रोध को समाप्त करने और भिक्षुओं को उनके निर्वासन की जगह पर रहने से न रोकने की विनती की। लेकिन थियोफलिस ने जॉन को पहले से भी अधिक असभ्य तरीके से जवाब दिया और इन भिक्षुओं की तुलना में उस पर और भी अधिक क्रोधित हो गया। तभी भिक्षुओं ने राजा को एक शिकायत पत्र लिखा, जिसमें उन्होंने थियोफलिस के हाथों निर्दोष रूप से झेली गई सभी कठिनाइयों का वर्णन किया। उन्होंने अपनी शिकायत राजा को तब सौंपी जब वह चर्च में था।

इतने ईमानदार और सदाचारी संतों की दुर्दशा से गहराई से दुखी होकर, ज़ार ने तुरंत अलेक्जेंड्रिया के गवर्नर को एक आदेश भेजा कि थियोफलिस को, यदि आवश्यक हो तो जबरदस्ती करके, कॉन्स्टेंटिनोपल में मुकदमे के लिए भेजा जाए, ताकि पैट्रिआर्क जॉन और बिशपों की परिषद के सामने वह अपनी द्वेषपूर्णता के कारणों का हिसाब दे सके और अपने कर्मों के लिए दोषी ठहराया जा सके। सम्राट ने पोप इनोसेंट तृतीय (I[7844]) को भी लिखा, उनसे अनुरोध करते हुए कि वे उनके लिए थियोफलिस का न्याय करने हेतु परिषद के लिए कॉन्स्टेंटिनोपल में बिशप भेजें। पोप ने तुरंत अपने बिशपों को यात्रा की तैयारी करने का आदेश दिया और सम्राट आर्कैडियस से इस बारे में सूचना का इंतजार करने लगे कि क्या पूर्वी बिशप इकट्ठा हो गए थे। लेकिन सम्राट ने दूसरी बार पत्र नहीं लिखा, और इस प्रकार पश्चिमी बिशप कॉन्स्टेंटिनोपल में उपस्थित नहीं हुए। इस बीच, थियोफलिस ने अलेक्जेंड्रिया के राज्यपाल को रिश्वत दी, और उसने उसे तब तक अलेक्जेंड्रिया में रहने की अनुमति दे दी जब तक कि वह भारत से सभी प्रकार के सुगंधित पदार्थ और मीठी विलासिताएं इकट्ठा नहीं कर लेता, जिन्हें वह फिर जहाज द्वारा कॉन्स्टेंटिनोपल भेज सकता था। इसी समय, थियोफलिस ने साइप्रस के बिशप, संत एपिफानियस ([7845]) को अपने पक्ष में कर लिया, और उनके सामने संत जॉन पर यह आरोप लगाया कि वह एक विधर्मी था, क्योंकि उसने ओरिजिन के अनुयायियों को आश्रय दिया था और उनके साथ पवित्र भोज ग्रहण कर रहा था। एक सौम्य स्वभाव के व्यक्ति होने के कारण, एपिफानियस थियोफलिस की धूर्तता को पहचान नहीं पाए, झूठ पर विश्वास कर बैठे और धर्मपरायणता के जोश में, साइप्रस के स्थानीय परिषद में ओरिजिन की पुस्तकों की निंदा कर दी; फिर उन्होंने जॉन को एक पत्र लिखा, जिसमें उनसे भी ऐसा ही करने का आग्रह किया। लेकिन जॉन ने इस मामले में जल्दबाजी न करते हुए, पवित्र धर्मग्रंथों का अध्ययन जारी रखा और अपनी सारी ऊर्जा चर्च में लोगों को उपदेश देने और पापियों को पश्चाताप की ओर ले जाने में लगा दी।

इस बीच, थियोफलिस, कॉन्स्टेंटिनोपल की अपनी यात्रा की तैयारी करते हुए, संत एपिफानियस को अपने साथ चलने के लिए आग्रह कर रहे थे:

उन्होंने कहा, 'हम ओरिजेनिस्टों के खिलाफ एक परिषद बुलाएंगे।'

उसकी बातों से प्रभावित होकर, एपिफानियस ने तुरंत कॉन्स्टेंटिनोपल की ओर प्रस्थान किया, जहाँ थियोफिलस पहले ही पहुँच चुके थे। लेकिन कॉन्स्टेंटिनोपल में उनके आगमन से पहले, निम्नलिखित घटना घटी।

वहाँ थियोग्नोस्टस नाम का एक कुलीन व्यक्ति रहता था, जो एक दयालु और ईश्वर-भयभीत व्यक्ति था। सम्राट के समक्ष उस पर इस आधार पर बदनामी की गई थी कि उसने कथित तौर पर सम्राट का अपमान किया और उनके बारे में बुरा-भला कहा था, और उसने सम्राज्ञी को 'अतृप्त लालची' कहा था और दावा किया था कि वह अन्यायपूर्वक दूसरे लोगों की संपत्तियाँ जब्त कर रही थी। राजा थियोग्नोस्टस पर बहुत क्रोधित हुआ और उसे थ्रेसलॉनीकी में निर्वासित करने का आदेश दिया, और उसकी सारी संपत्ति ज़ब्त करने का हुक्म दिया, सिवाय शहर के बाहर स्थित एक अंगूर के बाग के, जिसे राजा ने थियोग्नोस्टस की पत्नी और बच्चों को उनके गुज़ारे के लिए रखने की अनुमति दी। थेस्सालोनिकी के रास्ते में, थियोग्नोस्टस बीमार पड़ गया और दुख से उसकी मृत्यु हो गई। अपनी पति के गहरे शोक में, उसकी पत्नी संत जॉन के पास गई और आँसू भरी आँखों से उन्हें अपने दुख के बारे में बताया। संत ने उन्हें ज्ञान के शब्दों से सांत्वना दी और उन्हें अपना दुख ईश्वर पर छोड़ देने की सलाह दी। साथ ही, उन्होंने उन्हें चर्च के अनाथालय से अपने और अपने बच्चों के लिए रोज़ाना भोजन लेने की अनुमति दी, जबकि उन्होंने स्वयं एक उपयुक्त अवसर की तलाश की ताकि राजा से

[7844] पोप इनोसेंट ने 402 से 417 तक रोम के चर्च का शासन किया।

[7845] साइप्रस द्वीप एशिया माइनर के दक्षिण में, भूमध्य सागर के पूर्वी भाग में स्थित है। एपिफेनियस ने 365 से 402 तक साइप्रस के बिशप के रूप में कार्य किया। वह विशाल विद्वता वाले व्यक्ति थे, जो ग्रीक, हिब्रू, सिरियाक, मिस्र और लैटिन भाषाओं में धाराप्रवाह थे। उन्हें उनकी पवित्रता के लिए बहुत सम्मान दिया जाता था, और उनके निधन के बाद उन्हें संतों में शामिल कर लिया गया। उनका पर्व दिवस 12 मई को मनाया जाता है।

उन संपत्तियों को वधिवा और उसके बच्चों को वापस करने के लिए कहा जा सके जो उनसे अन्यायपूर्वक छीन ली गई थीं। लेकिन रानी ने दुर्भावना से, न केवल इसे रोका, बल्कि धन्य जॉन पर सबसे बड़ी विपत्तियाँ भी ला दीं।

एक दिन, जब अंगूर की तुड़ाई हो रही थी, यूडोक्सिया थिओग्नोस्टस के अंगूर के बाग के पास से गुजर रही थी, जो शाही बागों से बहुत दूर नहीं था। उसकी सुंदर दिखावट से आकर्षित होकर, वह उसमें घुस गई, अपने हाथों से एक गुच्छा काटकर खा लिया। इस बीच, एक शाही फरमान था कि यदि राजा या रानी किसी और के अंगूर के बाग में प्रवेश करके अंगूर का एक गुच्छा खाएं, तो उस बाग का मालिक उसके सभी अधिकार खो देगा, और बाग शाही संपत्ति में शामिल कर लिया जाएगा; मालिक को या तो पैसे में मुआवजा दिया जाएगा या राजा से दूसरा बाग प्राप्त होगा। इस आदेश के अनुसार, यूडोक्सिया ने थियोग्नोस्टस के अंगूर के बाग को शाही बागों में जोड़ने का आदेश दिया। उसने ऐसा निम्नलिखित विचारों से प्रेरित होकर किया: एक ओर, वह वधिवा और उसके बच्चों को अपमानित करना चाहती थी, क्योंकि वह इस बात से नाराज़ थी कि वह जॉन के पास जाकर अपनी पीड़ा बता आई थी; दूसरी ओर, रानी जॉन पर आरोप लगाने का बहाना ढूंढ रही थी ताकि उसे चर्च से निकाल दिया जा सके। वह बखूबी जानती थी कि अगर जॉन को यह पता चला, तो वह चुप नहीं रहेंगे, बल्कि अन्याय की शिकार वधिवा के बचाव के लिए आएँगे; और इस मतभेद से उनका मकसद पूरा हो जाएगा। और ऐसा ही हुआ।

वास्तव में, अन्याय की शिकार वधिवा धन्य जॉन के पास भागी और रोते हुए उन्हें बताया कि रानी ने उससे उसकी दाख की बारी छीन ली थी – जो उसके बच्चों का पालन-पोषण करने की उसकी अंतिम आशा थी। जॉन ने तुरंत आर्चडीकन यूटिकियस के माध्यम से रानी को एक पत्र भेजा, जिसमें उन्होंने दया दिखाने का आग्रह किया, उन्हें उनके माता-पिता के पुण्य जीवन की याद दिलाई, पूर्व के राजाओं के सद्गुणों की याद दिलाई, ईश्वर का भय उसके मन में बैठाया, ईश्वर के अंतिम न्याय की याद दिलाकर उसके हृदय में आतंक भर दिया, और उससे उस गरीब वधिवा को उसकी दाख की बारी वापस करने का आग्रह किया। रानी ने जॉन की सलाह की अवहेलना करते हुए और उसकी विनतियों पर ध्यान दिए बिना, उसे एक कठोर जवाब लिखा, जिसमें उसने प्राचीन शाही कानूनों का हवाला दिया और, मानो उससे नाराज़ हो, गर्व से घोषणा की कि वह अब ऐसी कोई अपमान सहन नहीं करेगी।

रानी ने जॉन को लिखा, 'तुम, शाही फरमानों से अनभिज्ञ होकर, अपने शब्दों में मुझे एक गैर-कानूनी काम करने वाली के रूप में दोषी ठहरा रहे हो, और मुझे ठेस पहुँचा रहे हो; लेकिन अब मैं तुम्हारे अपमानजनक शब्दों को बर्दाश्त नहीं करूँगी, और न ही तुम्हें बर्दाश्त करूँगी, जो मुझे अपमानित करना कभी बंद नहीं करते।'

यह पत्र पढ़ने के बाद, सेंट जॉन रानी से मिलने के लिए स्वयं महल गए, जहाँ उन्होंने एक बार फिर से सौम्य शब्दों में उन्हें समझाना शुरू किया, और पहले से भी अधिक जोर देकर विनती करने लगे कि उन्हें वधिवा को अंगूर का बगीचा दे देना चाहिए।

रानी ने उत्तर दिया:

'मैंने पहले ही तुम्हें उन अंगूरों के बागों के बारे में लिखा है जो पिछले राजाओं द्वारा निर्धारित किए गए थे। वधिवा अपने बाग के बदले में कोई दूसरा बाग चुन ले, या इसके बदले में पैसे ले ले।'

इस पर संत ने कहा:

'वह दूसरा दाख का बगीचा नहीं माँगती, और न ही उससे छीने गए बगीचे का मुआवज़ा चाहती है, बल्कि वह वही लौटाने के लिए कहती है जो उससे छीना गया था। इसलिए, उसे उसका दाख का बगीचा वापस कर दो!'

रानी ने उत्तर दिया:

'प्राचीन शाही कानूनों को चुनौती न दो, क्योंकि ऐसा अवज्ञा तुम्हारे काम नहीं आएगा।'

'अपने कार्यों को मूर्तिपूजक राजाओं द्वारा बनाए गए प्राचीन विधानों और कानूनों से सही मत ठहराओ!' ईश्वर के सेवक, उस संत ने कहा। 'हे धर्मनिरपेक्ष रानी, एक अन्यायपूर्ण कानून को समाप्त करने और एक न्यायपूर्ण कानून स्थापित करने से आपको कुछ भी नहीं रोकता है। उस अन्याय की शिकार महिला को उसकी दाख की बारी वापस कर दो, नहीं तो मैं तुम्हें दूसरी यजेबेल कहूँगा[7846] और तुम्हें इसराइल की उस दुष्ट रानी की तरह एक शाप का सामना करना पड़ेगा।'

[7846] यज़ेबेल – इज़राइल के राजा अहब की पत्नी और फिनिशिया में सिदोन के राजा की बेटी; वह एक दुष्ट और दबंग स्वभाव की थी, साथ ही वह मूर्तिपूजा के प्रति समर्पित थी। अन्य बातों के अलावा, उसने नाबोथ नामक एक इस्राएली की दाख की बारी को अन्यायपूर्वक जब्त कर लिया और उसे मौत की सज़ा दिलवा दी।

जब उसने ये शब्द कहे, तो रानी क्रोध से भर गई और अपने चीखों से राजसी कक्षों को गूँज उठा दिया, जिससे उसके हृदय का छिपा हुआ विष प्रकट हो गया:

'मैं स्वयं तुमसे बदला लूँगी, और इसलिए मैं न केवल उस महिला को दाख की बारी वापस नहीं करूँगी, बल्कि मैं उसे दूसरी भी नहीं दूँगी, और न ही मैंने जो ज़ब्त की है उसके लिए उसे कोई पैसा दूँगी; और मैं इस अपराध के लिए तुम्हें उचित दंड दूँगी।'

और उसने सेंट जॉन को जबरदस्ती शाही कक्षों से बाहर निकालने का आदेश दिया। रानी द्वारा इतनी अपमानजनक रूप से निकाल दिए जाने के बाद, सेंट जॉन ने अपने आर्चडीकन, यूटिकियस को, दंड की धमकी देकर, निम्नलिखित करने का आदेश दिया:

'चर्च के द्वारपालों से कहो कि जब रानी चर्च आएँ, तो वे उसके सामने दरवाज़े बंद कर दें और न तो उसे और न ही उसके साथ आने वाले किसी को भी चर्च में प्रवेश करने दें; द्वारपाल उसे कहें कि यह वही है जो जॉन ने आज्ञा दी है।'

जब पवित्र क्रूस की उन्नति का पर्व आया और सभी लोग चर्च में इकट्ठा हो गए, तो ज़ार अपने कुलीनों के साथ वहाँ पहुँचे, और ज़ारिना अपने पूरे दल के साथ आईं। जब द्वारपालों ने रानी को देखा, तो उन्होंने पादरी के आदेश के अनुसार उसे प्रवेश करने से रोकते हुए चर्च के दरवाज़े उसके सामने बंद कर दिए। फिर राजा के सेवकों ने पुकारा:

'महामहिम रानी के लिए दरवाज़े खोलो!'

लेकिन द्वारपालों ने उत्तर दिया:

'पैट्रिआर्क ने आदेश दिया है कि उसे अंदर न आने दिया जाए!'

शर्म और गुस्से से भरी, रानी ने कहा:

'देखो, तुम सब, यह जिद्दी आदमी मुझे कितना अपमानित कर रहा है! हर कोई बिना किसी रोक-टोक के चर्च में प्रवेश करता है, और फिर भी वह मुझे ही रोक रहा है! क्या मैं उससे अपना बदला नहीं ले सकती और उसे उसके सिंहासन से नहीं उतार सकती?'

जब उसने ऐसा पुकारा, तो उसके साथ आए लोगों में से एक ने अपनी तलवार खींची और उसे दरवाज़े पर वार करने के इरादे से उठा लिया; और अचानक उसका हाथ सूख गया और बेजान हो गया, मानो वह मर गया हो। यह देखकर, रानी और उसके पूरे अनुचर भयभीत हो गए और पीछे मुड़ गए; लेकिन वह आदमी जिसका हाथ सूख गया था, चर्च में प्रवेश कर गया और भीड़ के बीच खड़ा हो गया, और ऊँचे स्वर में चिल्लाकर बोला:

'हे पवित्र प्रभु! मुझ पर दया करो और मेरे मुरझाए हुए हाथ को चंगा करो, जो इस पवित्र मंदिर के विरुद्ध उठाया गया है; मैंने पाप किया है – मुझे क्षमा करो!'

अपने हाथ के सूखने का कारण समझते हुए, संत ने उसे वेदी के पात्र में इसे धोने का आदेश दिया, और हाथ तुरंत ठीक हो गया। ऐसा चमत्कार देखकर, सभी लोगों ने ईश्वर की स्तुति की। यह सब राजा की नज़र से नहीं बच पाया, लेकिन रानी के दुष्ट स्वभाव को जानते हुए, उसने जो हुआ था उसे कोई महत्व नहीं दिया और संत जॉन के सम्मान के कारण, प्रेमपूर्वक उनकी शिक्षाओं को सुना। लेकिन रानी ने जॉन को निर्वासित कराने के लिए अपनी पूरी ताकत लगा दी, जिसमें वह जल्द ही सफल हो गई।

उस समय, साइप्रस के बिशप, संत एपिफेनियस, ओरिजन के खिलाफ लेखन के साथ कॉन्स्टेंटिनोपल पहुँचे। नाव से उतरने के बाद, वह शहर से सात स्टेडियम दूर स्थित संत जॉन द फोररनर के चर्च में गए[7847] , जहाँ उन्होंने लिटिर्जी का अनुष्ठान किया और एक डीकन को नियुक्त किया, जो कैनन के विरुद्ध था[7848] , जो एक बिशप को डायोसीज़न बिशप की अनुमति के बिना किसी दूसरे के झुंड में किसी को नियुक्त करने से मना करते हैं[7849] । इसके बाद, वह शहर में आया और एक निजी घर में रहने लगा। यह सब सेंट जॉन के ध्यान में आया; हालाँकि, उन्होंने एपिफेनियस द्वारा अपने धर्मप्रांत में एक डिकन की नियुक्ति करने पर कोई आपत्ति नहीं जताई, क्योंकि वह उन्हें एक पवित्र और सौम्य स्वभाव के व्यक्ति

[7847] स्टेड दूरी की एक प्राचीन इकाई है; ग्रीक स्टेड कम से कम 100 फथॉम का होता था।

[7848] कैनन – चर्च द्वारा विश्वास, नैतिकता और चर्च संबंधी अनुशासन के संबंध में स्थापित नियम।

[7849] 35वां प्रेरितों का विधान कहता है: 'एक बिशप को अपने धर्मप्रांत की सीमाओं के बाहर, उन कस्बों और गांवों में, जो उसके अधीन नहीं हैं, अभिषेक करने का दुस्साहस नहीं करना चाहिए। हालाँकि, यदि वह ऐसा करने वाला पाया जाता है, तो उसे और उसके द्वारा अभिषिक्त लोगों, दोनों को पदच्युत कर दिया जाए।' पहले सार्वभौमिक धर्मसभा के नियम 16, तीसरे सार्वभौमिक धर्मसभा के पत्र, एन्क्रा की धर्मसभा के नियम 33, और सार्डिका की धर्मसभा के नियम 15 की तुलना करें।

मानते थे। इतना ही नहीं, बल्कि उसने एपफिानयिस के पास दूत भेजे और उससे अनुरोध कयिा कि वह आकर पैट्रआर्क के आवास में उसके साथ रहे, जैसा कि सभी बशिप करते थे। लेकनि एपफिानयिस इस बात पर सहमत नहीं हुआ और वह जॉन से मलिना भी नहीं चाहता था; इसके बजाय, उसने अपने दूतों को जवाब दयिा:

'जब तक जॉन, डयिोस्कोरस और उसके मठाधीशों को शहर से बाहर नहीं नकिाल देता, और जब तक वह ओरजिन की रचनाओं का परत्यिाग करने वाला एक घोषणापत्र पर हस्ताक्षर नहीं कर देता, तब तक मेरा उससे कोई संबंध नहीं होगा।'

जॉन ने अपने दूतों के माध्यम से एपफिानयिस को जवाब दयिा:

'परषिद के वचिार-वमिर्श से पहले मनमाने तरीके से कुछ भी नहीं कयिा जाना चाहए।'

हालांकि, जॉन के दुश्मन एपफिानयिस के पास गए और उन्होंने उस पर जोर दयिा कि वह पवत्रि प्रेरतिों के चर्च में और सभी लोगों की उपस्थतिि में, ओरजिन की रचनाओं की नदिा करने, ओरजिन के अनुयायी होने के कारण डयिोस्कोरस के साथ मस्रि से नष्किासति कए गए सभी भकि्षुओं को चर्च से बहष्किृत करने, और ओरजिनिस्टिों को स्वीकार करने तथा उनके वचिारों को साझा करने के लए जॉन की नदिा करने के लए। धर्मपरायणता के प्रति उत्साही, एपफिानयिस अगले ही सुबह ओरजिन की रचनाओं की नदिा करने के लए पवत्रि प्रेरतिों के चर्च के लए रवाना हो गए। एपफिानयिस के इरादे के बारे में जानने पर, संत जॉन ने उनके पास नम्निलखिति शब्दों के साथ दूत भेजे:

'एपफिेनयिस! आप कई मायनों में कैनन (चर्च के नयिमों) के वपिरीत कार्य कर रहे हैं। सबसे पहले, आपने मेरी अनुमति के बनिा मेरे झुंड में लटिर्जी (प्रार्थना सभा) का आयोजन कयिा और दीक्षा दी; फरि आप हमारे बीच बसने से इनकार कर दयिा, और अब आप मेरे धर्मप्रांत के एक चर्च में प्रवेश करके एक सनिोडल (धर्मसभा) नर्णिय के बनिा बहष्किार की घोषणा करना चाहते हैं। सावधान रहो कि तुम लोगों में अशांति नि फैला दो और अपने ऊपर मुसीबत न ला दो।

यह सुनकर एपफिानयिस हचिकचिाने लगा और चर्च से हटकर, थयिोफलिस के आने का इंतजार करने का नश्चिय कयिा। परन्तु प्रभु, जो अपने सेवकों के बीच कसिी भी प्रकार का वैमनस्य नहीं रहने देते, ने एपफिानयिस को यह प्रकट कयिा कि यूहन्ना सूर्य के समान शुद्ध था और उस पर मनुष्यों की ईर्ष्या के कारण आरोप लगाया जा रहा था। एपफिानयिस ने वास्तव में कई लोगों से यूहन्ना के महान सद्गुणों, उनके नर्मिल वश्विास और उनके अनुकरणीय जीवन के बारे में सुना था, और वह इस बात पर हैरान था कि इतने सारे लोग यूहन्ना के खलिाफ उठ खड़े हो रहे थे और उनके खलिाफ वभिन्नि आरोप गढ़ रहे थे। इसलए, साइप्रस के संत इस बात को देखने के लए धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा कर रहे थे कि जो मामला उत्पन्न हुआ था, उसका अंत कैसे होगा।

यह सुनकर कि एपफिानयिस यूहन्ना से दूरी बनाए हुए थे और उनका उनसे कोई मेलजोल नहीं था, रानी यूडोक्सयिा ने अनुमान लगाया कि उनके बीच वैमनस्य था। एपफिानयिस को अपनी उपस्थतिि में बुलाकर, उन्होंने उनसे कहा:

'फादर एपफिानयिस! आप जानते हैं कि संपूर्ण ग्रीक-रोमन साम्राज्य हमारे प्रभुत्व में है। देखो, मैं आपको सभी धार्मकि अधकिार सौंप दूँगी, यदि आप मेरी बात मानोगे, मेरे दुख को दूर करोगे और जो मैंने योजना बनाई है, उसे पूरा करोगे।'

एपफिानयिस ने उत्तर दयिा:

'बोलो, मेरे बच्चे, और हम वह करने की पूरी कोशशि करेंगे जो तुम्हारी आत्मा के उद्धार के लए हो।'

तब रानी ने, यह सोचकर कि वह चापलूसी से एपफिानयिस को अपनी योजना में शामलि होने के लए मना सकती है, उससे यूहन्ना के बारे में इस प्रकार बात करना शुरू कयिा:

'यह योहन स्वयं को चर्च के प्रशासन के प्रमुख के पद के लए अयोग्य बना चुका है, क्योंकि वह मुझसे और राजा से वद्रिोह करता है और हमें वह सम्मान नहीं देता जो हमें मलिना चाहए। इसके अलावा, कई लोग दावा करते हैं कि वह एक वधिर्मी है। इस कारण से, एक परषिद बुलाना और योहन को उसके पद से हटाना, तथा उसकी जगह कसिी ऐसे व्यक्ति को नयिुक्त करना जो चर्च का अच्छी तरह से शासन कर सके, उचति होगा।'

यह कहते ही रानी इस ईश्वर के पुरुष पर तीव्र क्रोध से काँप उठी। फरि वह फरि से बोलने लगी:

'हालाँकि, इतने सारे पादरयिों को यहाँ एक परषिद के लए बुलाकर परेशान करने की कोई आवश्यकता नहीं है। पवत्रि पति, यह बेहतर होगा यदि आप स्वयं उसे चर्च से हटा दें और उसकी जगह कसिी और को नयिुक्त करें, जसिे ईश्वर आपको दखिाएगा; और मेरी ओर से, मैं यह सुनश्चिति करूँगा कि हर कोई आपका आज्ञापालन करे।'

'मेरी संतान,' एपफिानयिस ने उत्तर दयिा, 'बनिा क्रोध के अपने पति की बात सुनो। यदि जॉन एक वधिर्मी है, जैसा कि तुम दावा करती हो, और यदि वह अपने वधिर्म पर पश्चाताप नहीं करता है, तो वह पैट्रआर्कात्मक पद के अयोग्य है, और हम उसके साथ वैसा ही व्यवहार करेंगे जैसा तुम आज्ञा दोगी। लेकनि यदि आप उन्हें इस आधार पर नष्किासति करना चाहते हैं कि उन्होंने कथति तौर पर आपका अपमान कयिा है, तो एपफिानयिस इसकी सहमति नहीं देगा, क्योंकि राजाओं को प्रतशिोधी नहीं, बल्कि दयिालु, वनिम्र और अपने खलिाफ की गई अपमानों को क्षमा करने वाला होना चाहिए। आखरिकार, आपका भी स्वर्ग में एक राजा है और आप अपने पापों के लिए उनसे क्षमा मांगते हैं। दूसरों के साथ भी इसी प्रकार का व्यवहार करो: *'दयालु बनो, जैसे तुम्हारा पति दयालु है'* (लूका 6:36), उद्धारकर्ता ने कहा।

रानी ने एपफिानयिस को उत्तर दयिा, 'पादरी, यदि आप जॉन को नर्विासति नहीं करते हैं, तो मैं मूर्तपिूजक मंदरिों को फरि से खोलूँगी और यह सुनश्चिति करूँगी कि किई लोग ईश्वर से मुँह मोड़कर मूर्तयिों की पूजा करें, और यह बाद वाला पहले वाले से भी बदतर होगा।'

उसने ये शब्द कटुता से कहे और आँसू बहाए। रानी के पागल क्रोध से चकति होकर, एपफिानयिस ने कहा:

'मैं एक धर्मी मनुष्य द्वारा लगाए गए ऐसे आरोप से नर्दिोष हूँ।'

यह कहकर वह महल से चला गया।

पूरे शहर में यह अफवाह फैल गई कि रानी ने महान एपफिेनयिस को जॉन के खलिाफ भड़काया था, और यह कि एपफिेनयिस, शाही कक्षों में जाते समय, पादरी को पदच्युत करने के संबंध में रानी से परामर्श कर रहे थे। यह अफवाह जॉन तक भी पहुँची, और वह, जो एक भावुक व्यक्ति था, ने पूरी मंडली के सामने चर्च में एक उपदेश दयिा, जसिमें उसने वभिन्नि महलिाओं की क्रूरता के उदाहरण पवत्रि शास्त्र से दयिे। मंडली में कई लोगों ने, महलिाओं के बारे में जॉन के शब्द सुनकर, सोचा कि वह अप्रत्यक्ष रूप से रानी के बारे में बात कर रहा था। जॉन के दुश्मनों ने उसकी इन बातों को एक चर्मपत्र पर लखिकर रानी को दे दयिा। उन्हें पढ़ने के बाद, रानी ने यह नष्किर्ष नकिाला कि वह केवल उसके बारे में ही बात कर रहा था, और रोते हुए उसने राजा से शकिायत की कि जॉन चर्च में उस पर बदनामी कर रहा था। रोते हुए, उसने राजा से कहा:

'जान लो कि मेरा अपमान ही तुम्हारा अपमान है, और जब जॉन मेरी बदनामी करता है, तो वह उसी समय तुम्हारा भी अपमान कर रहा है।'

और, ऐसा कहते हुए, रानी ने राजा से एक परषिद बुलाने और जॉन को नर्विासन की सजा देने का आग्रह कयिा। साथ ही, उन्होंने अलेक्जेंड्रयिा के थयिोफलिस को पत्र लखिकर उनसे कॉन्स्टेंटनिोपल आने का आग्रह कयिा।

उसने लखिा, 'मैं राजा से आपके लिए मध्यस्थता करूँगी और आपके सभी वरिोधयिों को चुप करा दूँगी; बस तुरंत हमारे पास आओ और मेरे दुश्मन जॉन को नर्विासति करने के लिए कई बशिपों को इकट्ठा करो।'

रानी के पत्र से उत्साहति होकर, थयिोफलिस ने इसे प्राप्त करते ही भारतीय इत्र, सब्जयिां, और कीमती मस्रि की रेशम और सुनहरी कढ़ाई वाले कपड़ों से लदे जहाजों के साथ कॉन्स्टेंटनिोपल के लिए प्रस्थान कयिा। उसे उम्मीद थी कि ऐसे खजाने के माध्यम से, वह जॉन के खलिाफ अपनी दुर्भावनापूर्ण साजशि में सहायता के लिए कई लोगों को मना लेगा।

उस समय, धन्य योहन ने संत एपफिानयिस को नम्निलखिति लखिा:

'भाई एपफिानयिस! मैंने सुना है कि आपने मेरे नष्किासन की सलाह दी; तो जान लो कि तुम फरि कभी अपना धर्मप्रांत नहीं देखोगे।'

एपफिानयिस ने उन्हें लखिति में उत्तर दयिा:

'यातनाएँ सहने वाले योहन! अपनी पीड़ाओं में धैर्य धारण करो और जान लो कि तुम उस स्थान तक नहीं पहुँचोगे जहाँ तुम्हें नर्विासति कयिा जाना है।'

दोनों पुरुषों की भवष्यिवाणी पूरी हुई। एपफिानयिस, थोड़ी देर और कॉन्स्टेंटनिोपल में रहने के बाद, ने देखा कि संत जॉन के साथ अन्यायपूर्ण रूप से उत्पीड़न कयिा जा रहा था। धर्मी व्यक्ति के खलिाफ अत्याचारी न्याय में भागीदार नहीं बनना चाहकर, वह अपने अनुचरों के साथ गुप्त रूप से एक जहाज पर चढ़ गया और घर के लिए रवाना हो गया। रास्ते में, जॉन की भवष्यिवाणी के अनुसार, एपफिानयिस अपने गृहनगर पहुँचने से पहले प्रभु के पास चले गए। इसी तरह, अपने दूसरे नर्विासन के दौरान, जॉन, एपफिेनयिस की भवष्यिवाणी के अनुसार, उस स्थान तक नहीं पहुँच पाए जहाँ उन्हें नर्विासति

कयिा गया था, और प्रभु में सो गए। लेकनि हम इसके बारे में बाद में बात करेंगे; अभी के लिए, आइए हम घटनाओं के बीच में रुके हुए ववरिण पर वापस चलते हैं।

सम्राज्ञी की सहायता की आशा करते हुए और कसिी से न डरते हुए, अलेक्जेंड्रयिा के पैट्रआर्क थयिोफलिस ने तुरंत कॉन्स्टेंटनिोपल के लिए प्रस्थान कयिा, साथ में कई बशिपों के एक दल के साथ जनि्हें उन्होंने कुशलतापूर्वक अपने वचिारों से सहमत कर लयिा था। सम्राट तब तक थयिोफलिस को स्वीकार करने के लिए अनचि्छुक थे जब तक कि पोप इनोसेंट द्वारा भेजे गए रोमन बशिप नहीं आ गए थे। उन्हें इस बात की जानकारी नहीं थी कि रोमन उनके दूसरे पत्र का इंतजार कर रहे थे, जसिमें उन्हें परषिद में शामलि होने के लिए आमंत्रति कयिा गया हो। इस बीच, महारानी ने गुप्त रूप से सम्राट से बुलाए गए थयिोफलिस और उनके साथ आए सभी बशिपों को अपने इरादों के बारे में सूचति कयिा और उनसे संत को उनके पद से हटाने का प्रयास करने के लिए कहा। उन्होंने सहयोग का वादा कयिा, जसिके लिए रानी ने उन्हें उपहार दिए। इसके बाद, उन्होंने मस्रि से आए सभी भक्षिुओं, पुरोहतिों और बशिपों को अपने दरबार में बुलाया जो थयिोफलिस के खलिाफ शकिायत कर रहे थे। वहाँ छह बशिप और बीस पुरोहति और डीकन थे जो थयिोफलिस से अलग हो गए थे और उसके खलिाफ मुकदमा चाहते थे। सभी को एक साथ इकट्ठा करने के बाद, रानी ने उनसे वनिती करना शुरू कयिा कि वे अदालत में थयिोफलिस पर आरोप न लगाएँ और उन्हें उनके द्वारा पहुँचाई गई चोट के लिए माफ कर दें। कुछ ने रानी की बात मानी और अपना दुख प्रभु को सौंपकर चुप हो गए; अन्य, जनिमें इसडिोर और इराक्स शामलि थे (डायोस्कोरस इससे कुछ समय पहले ही नधिन हो चुके थे), अपने रेगस्तिानों में चले गए; जबकि कुछ ने रानी के प्रस्ताव को सीधे तौर पर अस्वीकार कर दयिा। रानी ने चुप रहने के लिए सहमत होने वालों को उपहार देकर पुरस्कृत कयिा, जबकि जनि्होंने वरिोध कयिा उन्हें थस्सिलुनीके में नर्विासति कर दयिा गया। इस प्रकार, अपने सभी वरिोधयिों से छुटकारा पाने के बाद, थयिोफलिस जॉन के खलिाफ अपना मामला सफलतापूर्वक शुरू करने में सक्षम हो गया।

उस समय, संत जॉन, जैसा कि उनका रविाज था, चर्च में परमेश्वर का वचन प्रचार कर रहे थे, और उन्होंने राज□□□ की तीसरी पुस्तक के एक अंश पर इस प्रकार प्रकाश डाला:

'मेरे पास इकट्ठा करो... बाळ के नबयिों को, और जेजेबेल की मेज़ पर खाने वाले चार सौ लज्जाजनक नबयिों को, ताकि मैं उनसे कहूँ, जैसा कि एलयिाह ने कहा था: "तुम दोनों घुटनों पर कब तक लंगड़ाओगे? यदि यहोवा परमेश्वर है, तो उसी का अनुसरण करो; परन्तु यदि बाळ परमेश्वर है, तो उसी का अनुसरण करो"[7850] .

यह सुनकर, योहन के शत्रुओं ने इस बात की सूचना थयिोफलिस और उसके साथ रहे बशिपों को दी। उन्होंने उन शब्दों को लखिकर उनका गलत अर्थ नकिाला और अपनी टप्पिणी जोड़ते हुए दावा कयिा कि योहन सबके सामने रानी को यजेबेल और उन्हें झूठे नबी कह रहा था। उन्होंने यह लखिति ववरिण राजा और रानी को सौंप दयिा। फरि रानी, रोते हुए, एक बार फरि राजा से यूहन्ना को मुकदमे के लिए लाने की वनिती करने लगी। रानी पर तरस खाकर, राजा ने जो क्रोध वह थयिोफलिस के प्रति पाल रहा था, उसे जॉन पर उगल दयिा और थयिोफलिस को उसके खलिाफ एक धर्मसभा बुलाने का आदेश दयिा। थयिोफलिस, अपने सभी समान वचिारधारा वाले अनुयाययिों के साथ, जॉन के प्रति राजा के क्रोध से प्रसन्न था। थेओफलिस ने चर्च से नष्किासति कए गए दो डीकनों को ढूंढ नकिाला – उनमें से एक ने हत्या और दूसरे ने व्यभचिार कयिा था – और उसने उनसे यह वादा कयिा कि यदि वे जॉन के खलिाफ झूठी गवाही देंगे तो वह उन्हें बशिप के रूप में अभषिेक कर देगा। हालाँकि, संत के प्रति शत्रुता और बशिप पद के लालच में, उन्होंने तुरंत थयिोफलिस की इच्छा को पूरा करने का वादा कयिा। थयिोफलिस ने जॉन के खलिाफ कई झूठे आरोप लखिे और उन्हें उन डकिन के हवाले कर दयिा, ताकि वे उन्हें अपने नाम से परषिद में प्रस्तुत कर सकें।

परषिद का स्थान कालसेडोन के उपनगरों में नर्धिारति कयिा गया था, जहाँ शाही महल और संतों पतरस और पवत्रि प्रेरति पौलुस का महान चर्च स्थति था[7851] । बशिपों ने वहाँ इकट्ठा होकर थयिोफलिस के साथ मलिकर सत्र में बैठे। तथापि धन्य योहन ने अपने साथ रहे चालीस बशिपों के साथ मलिकर अपने पैट्रआर्कल आवास में एक सत्र आयोजति

[7850] ये शब्द 3 राजा 18:19–21 का एक अनुकूलति संस्करण हैं और इन्हें नबी एलयिाह ने माउंट कार्मेल पर इस्राएलयिों और बाअल के पुरोहतिों के एकत्रति होने के अवसर पर प्रभु और बाअल को बलदिान चढ़ाने के लिए कहा था। इस सभा का उद्देश्य इस्राएल के परमेश्वर की सच्चाई और बाअल की मथि्या को प्रमाणति करना था। जब लोग इकट्ठा हो गए, तो एलयिाह ने कहा: 'तुम कतिनी देर तक दो मतों के बीच हचिकचिाओगे?', अर्थात्, तुम कतिनी देर तक परमेश्वर और बाअल दोनों की सेवा करोगे? यदि यहोवा परमेश्वर है, तो उसकी आराधना करो, बाअल की नहीं; परन्तु यदि बाअल है, तो उसकी आराधना करो। तब एलयिाह ने बलदिानों के द्वारा एक परीक्षा प्रस्तावति की, जसिमें बाअल के याजक लज्जति हुए।

[7851] काल्सेडोन बोस्फोरस के एशयिाई तट पर, कॉन्स्टेंटनिोपल के सामने स्थति था।

कयिा। संत ने दुख के साथ देखा कि उसके शत्रुओं की दुष्टता सफल हो गई थी, और वह पूर्णतःसरलता से इस बात पर चकति था कि यह कैसे हो गया और कैसे थयिोफलिस, जसिे स्वयं मुकदमे के लिए बुलाया गया था, ने इतनी शीघ्रता से राजा और सभी पदाधकिारयिों को अपने पक्ष में कर लयिा, और प्रतविादी से न्यायाधीश बन गया। और संत जॉन ने बशिपों से कहा:

'भाइयो! मेरे लिए परमेश्वर से प्रार्थना करो, और, यदि तुम मसीह से प्रेम करते हो, तो अपनी-अपनी कलीसयिाओं को न छोड़ो। अब मेरे कष्टों का समय आ गया है, और, कई दुखों के बाद, मैं जल्द ही प्रभु के पास चला जाऊँगा। मैं देखता हूँ कि शैतान, मेरी शकि्षा को सहन न कर सका, ने मेरे वरिुद्ध एक दुष्ट परषिद बुलाई है। लेकनि मेरे लिए दुख मत करो, और अपनी प्रार्थनाओं में मेरा स्मरण करना।"

यह सुनकर, सभी भयभीत हो गए और रो पड़े। संत ने उन्हें चुप रहने का आदेश दयिा और उन्हें सांत्वना दी। जब वह अपनी परषिद से बात कर रहे थे, तब थयिोफलिस की परषिद के दूत आए और उन्होंने यूहन्ना को मुकदमे के लिए बुलाया ताकि वह अपने खलिाफ लगाए गए आरोपों का जवाब दे सकें। यूहन्ना के साथ मौजूद बशिपों ने उन दूतों के माध्यम से थयिोफलिस को संदेश भेजा:

'पवत्रि बशिप को मत बुलाओ, जैसे काइन ने हबलि को खेत में बुलाया था, बल्कि अपने बचाव के लिए हमारे सामने आओ। हमारे पास तुम्हारे द्वारा कए गए अन्यायपूर्ण कर्मों के लखिति प्रमाण हैं। इसलिए, यहाँ आओ, क्योंकि हम, जो चर्च को नष्ट करने के लिए नहीं बल्कि शांति के लिए ईश्वर की कृपा से एकत्र हुए हैं, तुम्हारी परषिद में उपस्थति लोगों से कहीं अधकि संख्या में हैं।'

संत जॉन ने, अपनी ओर से, दूतों से कहा:

'मैं अपने खुले दुश्मनों के पास नहीं जा सकता।'

और वह नहीं गया।

दूसरी और तीसरी बार एक गैर-कानूनी मुकदमे के लिए बुलाए जाने पर, उस पवत्रि व्यक्ति ने दूतों से कहा:

'मैं कसिके पास जाऊँ? अपने दुश्मनों के पास या न्यायाधीशों के पास? मैं पूरी दुनयिा के न्याय के सामने खड़े होने के लिए तैयार हूँ, लेकनि इस शर्त पर कि मेरे वरिोधी भी मेरे साथ ही परखे जाएँ, और न्यायाधीश कोई और हों। लेकनि अब मेरे न्यायाधीश मेरे दुश्मन हैं, जो मेरे साथ परखे जाना नहीं चाहते, बल्कि मुझे परखना चाहते हैं। मैं ऐसे मुकदमे में नहीं जाऊँगा। लेकनि सभी चर्चों के बशिप एकत्र हो जाएँ, और तब मैं भी अदालत के सामने उपस्थति होऊँगा।

यह कहने के बाद, उसने अपनी ओर से बोलने के लिए अपनी जगह तीन बशिप और दो प्रेस्बटिर भेजे। थयिोफलिस की परषिद ने, जॉन के दूतों को देखकर और उन्हें एक शब्द भी बोलने का मौका दिए बनिा, उनके साथ दुर्व्यवहार कयिा, और उनमें से एक पर वही लोहे की जंजीरें डाल दीं जो जॉन के लिए तैयार की गई थीं। तब इस परषिद के प्रतभिागयिों ने नरि्दोष और नष्किलंक जॉन पर दोष मढ़ने के लिए तैयार कए गए झूठे आरोप पढ़ना शुरू कर दयिा, और झूठे गवाह पेश करके उस पर फैसला सुना दयिा।

उस समय, संत जॉन अपने बशिपों के साथ पैट्रआर्खल चर्च में थे और उन्होंने उनसे इन शब्दों में संबोधति कयिा:

'लहरें बड़ी हैं, उथल-पुथल प्रचंड है, परन्तु हमें बहा ले जाने का भय नहीं है, क्योंकि हम चट्टान पर खड़े हैं। समुद्र फेन उछालें और गरजे, परन्तु वह चट्टानों को कुचल नहीं सकता। लहरें उठें, परन्तु वे यीशु के जहाज को डुबा नहीं पाएँगी।' मुझे बताइए: हमें कसि चीज़ से डरना चाहिए? मृत्यु? लेकनि *'मेरे लिए जीना मसीह है, और मरना लाभ है'* (फलि. 1:21)।

क्या हमें नरि्वासन से डरना चाहिए, बताइए? लेकनि *'पृथ्वी यहोवा की है, और जो कुछ उस में है'* (भजन संहति 23:1)। क्या हमें अपनी संपत्ति के नुकसान से कांपना चाहिए? लेकनि हम इस दुनयिा में कुछ भी नहीं लाए; स्पष्ट रूप से, हम इसमें से कुछ भी नहीं ले जा सकते। संक्षेप में, इस दुनयिा में जो कुछ भी भयानक है, मैं उससे नहीं डरता, और मैं अपनी सारी संपत्ति को तुच्छ समझता हूँ। मैं गरीबी से नहीं डरता, मैं धन की इच्छा नहीं करता, मैं मृत्यु से नहीं कांपता, बल्कि मैं प्रार्थना करता हूँ कि आप भलाई में फलें-फूलें।

इस बीच, थयिोफलिस ने अपने बशिपों की परषिद के साथ मलिकर, संत जॉन को पदच्युत कए जाने के योग्य ठहराया और उनका पद छीन लयिा, बनिा उनका चेहरा देखे या उनकी आवाज़ सुने। इस प्रकार, एक ही दनि में, उन्होंने उस दुष्ट योजना को अंजाम तक पहुँचाया जसिकी वे लंबे समय से तैयारी कर रहे थे, जसिके बाद उन्होंने राजा को नम्निलखिति पत्र भेजा:

'चूँकि जॉन पर कई अपराधों का आरोप है, जिनका उसने स्वयं दोष स्वीकार किया है—क्योंकि उसने अदालत में पेश होने से इनकार कर दिया था—उसे इसी कारण पदच्युत कर दिया गया है; और इसके अलावा और कुछ करने की आवश्यकता नहीं है, सिवाय इसके कि आप उसे उसके पद से हटाने का आदेश दें।'

राजा आर्केडियस ने जॉन पर लगाए गए आरोपों को पढ़ने से इनकार कर दिया और उस संत की दलील नहीं सुनी। बिना किसी हिचकिचाहट के, उन्होंने अन्यायपूर्ण परिषद के शब्दों पर विश्वास किया और जॉन को तुरंत चर्च से निकालने का आदेश दिया; इस उद्देश्य के लिए, जैसे युद्ध पर जा रहे हों, उन्होंने उसे लाने के लिए एक कुलीन व्यक्ति को सैन्य बल के साथ भेजा।

यह सुनकर, लोग क्रोध से भर गए, और एक विशाल भीड़ इकट्ठा हो गई और तीन दिनों तक चर्च छोड़ने से इनकार कर दिया, जिससे जॉन के निष्कासन को रोका जा सका। साथ ही, उन्होंने सभी ने राजा और रानी, और थियोफिलिस के खिलाफ जोरदार विरोध किया, क्योंकि उन्होंने ईश्वर के संत को अन्यायपूर्वक दोषी ठहराया था। तब यूहन्ना, इस डर से कि उसके खिलाफ कोई और आरोप लगाया जा सकता है—अर्थात्, कि वह राजा की अवज्ञा कर रहा था—लोगों से छिप गया; और जब शाम हुई, तो चर्च छोड़कर, वह चुपके से निकल गया और उसे गिरफ्तार करने के लिए भेजे गए सैनिकों के सामने आत्मसमर्पण कर दिया। सैनिक उसे खाड़ी तक ले गए और उसके साथ नाव से निकोमेडिया के सामने स्थित प्रेनेटस गए।

जब लोगों को यह पता चला, तो एक बड़ा हंगामा मच गया, जिसमें कई निवासी मारे गए और उससे भी अधिक घायल हुए। असंतुष्टों में कुछ ऐसे थे जो थियोफिलिस पर पत्थर फेंकने का इरादा रखते थे। यह जानकर, थियोफिलिस गुप्त रूप से शहर से भाग गया और तुरंत अलेक्जेंड्रिया के लिए रवाना हो गया। उसके अन्य समान विचारधारा वाले अनुयायी भी बिखर गए। हर तरफ लोगों की चीखें सुनाई दे रही थीं; चर्चों और चौराहों दोनों में, वे दुनिया के ऐसे महान प्रकाश को पदच्युत करने वाले अन्यायपूर्ण फैसले के खिलाफ जोरदार विरोध कर रहे थे। महल के चारों ओर, लोगों ने भयानक विलाप और रोने के साथ, जॉन को पैट्रिआर्कल सिंहासन पर बहाल करने की विनती की। उस समय, एक रात, एक भयंकर भूकंप आया, और सभी पर बहुत बड़ा भय छा गया; रानी, विशेष रूप से, आतंकित हो गईं, क्योंकि उनका महल अन्य इमारतों की तुलना में अधिक जोर से कांप गया, और इसका एक हिस्सा ढह भी गया। यह देखकर, भीड़ में से सभी लोग ऊँचे स्वर में चिल्लाने लगे:

'यदि जॉन को वापस नहीं लाया गया, तो पूरा शहर ढह जाएगा!'

राजा, ईश्वर के दंड और एक जन-आक्रोश से डरकर, जल्दी से रानी के खसास, व्रिसो को जॉन को वापस लाने के लिए भेजा। अब रानी भी राजा से जॉन की वापसी का आदेश देने की विनती कर रही थी, क्योंकि वह भूकंप और जन-आक्रोश से बहुत डरी हुई थी। और इस प्रकार, एक के बाद एक, दूत संत से शहर में लौटने की विनती करने के लिए निकल पड़े, ताकि थ्रेसियन सागर[7852] दूतों को ले जाने वाली नावों से भर गया। उनकी सख्त गुहारों को मानते हुए, संत जॉन कॉन्स्टेंटिनोपल लौटने के लिए राजी हो गए। यह जानकर, सभी नागरिक जले हुए मोमबत्तियों के साथ उनसे मिलने के लिए निकल पड़े, और संत का स्वागत करने के लिए आने वाले जहाजों से समुद्र भर गया था। जब जॉन शहर पहुँचे, तो उन्होंने तब तक शहर में प्रवेश करने से इनकार कर दिया जब तक कि एक भव्य परिषद में यह निर्धारित करने के लिए एक जाँच नहीं हो जाती कि उन्हें क्यों निर्वासित किया गया था। लेकिन लोगों ने ज़ोर देकर कहा कि उनका चरवाहा अपने धर्मपीठ से दूर नहीं रहेगा, और उन्होंने सम्राट के खिलाफ गुस्से में बड़बड़ाया। लोगों के आग्रह के आगे झुकते हुए, जॉन को शहर में प्रवेश करने के लिए मजबूर होना पड़ा; उन्हें सम्मान के साथ चर्च में ले जाया गया, जबकि भजन और पवित्र गीत गाए जा रहे थे। ईश्वर से प्रार्थना करने के बाद, ईश्वर के उस पवित्र पुरुष ने अपने सिंहासन पर आसीन होकर, लोगों को शांति प्रदान की और एक उपदेश दिया। उनके प्रभावशाली और शिक्षाप्रद शब्दों को सुनकर, हर कोई उनके लौटने पर प्रसन्न हुआ, और जॉन के दुश्मनों का झुंड तितर-बितर हो गया; उनके सभी विरोधी भाग गए और चुप हो गए।

अपने सिंहासन पर पुनर्स्थापित होकर, संत जॉन ने गहरी शांति के साथ मसीह की कलीसिया का शासन किया, और अपनी आध्यात्मिक भेड़-बकरियों को मधुर शिक्षा से पोषित किया; ऐसे चरवाहे और शिक्षक के साथ, पूरी कलीसिया फल-फूल उठी और कुछ समय के लिए उसे सांत्वना मिली। लेकिन दो महीने भी नहीं बीते थे कि जो तूफ़ान शांत हो गया प्रतीत हो रहा था, वह फिर से उस धन्य व्यक्ति के विरुद्ध उठ खड़ा हुआ। यह इस प्रकार हुआ।

[7852] थ्रेसियन सागर – अब मार्मारा सागर।

सेंट सोफिया चर्च[7853] से कुछ ही दूरी पर, यूडोक्सिया के आदेश पर, एक ऊँचा स्तंभ स्थापित किया गया, जिसके शीर्ष पर सम्राज्ञी की मूर्ति रखी गई। स्तंभ के अनावरण समारोह के उपलक्ष्य में, उसके चारों ओर तरह-तरह के खेल और उत्सव आयोजित किए गए, जो कई दिनों तक चले। उत्सव मना रहे भीड़ के जयकारे और नारे सेंट सोफिया चर्च तक गूँज रहे थे, जो दिव्य भजनों के गायन में घुल-मिल रहे थे। संत जॉन ने इसे ईश्वर निंदा का एक स्पष्ट कृत्य और पवित्र स्थल का अपमान माना, और इसलिए उन्होंने शहर के राज्यपाल के माध्यम से स्तंभ के चारों ओर हो रहे अनियंत्रित उत्सवों को रोकने का प्रयास किया। लेकिन शहर के राज्यपाल ने उन्हें किसी भी प्रकार की सहायता नहीं दी। तब, इस अपमान से पवित्र स्थल की रक्षा करने के लिए उत्सुक, जॉन ने चर्च में एक तीखा, आरोप लगाते हुए उपदेश दिया, जिसकी शुरुआत इन शब्दों से हुई:

'एक बार फिर हेरोदियास[7854] उन्मत्त है, एक बार फिर वह उथल-पुथल में है, एक बार फिर वह कूद-कूद कर नाच रही है, एक बार फिर वह योहान का सिर चाहती है!'

योहन के मुखबरो और दुश्मन दुर्भावनापूर्ण प्रसन्नता के साथ यह बात रानी को बताने के लिए जल्दी से भागे, उन्होंने उसके शब्दों का यह अर्थ निकाला कि उसकी तुलना हेरोदियास से की जा रही थी। यूडोक्सिया को भयंकर क्रोध आ गया: रोते हुए, उसने राजा से योहन के खिलाफ एक और परिषद बुलाने का आदेश देने का आग्रह किया। और इस प्रकार, एक बार फिर, सभी बिशपों को शाही पत्र भेजे गए, जिसमें उन्हें कॉन्स्टेंटिनोपल में एकत्रित होकर जॉन के खिलाफ मुकदमा चलाने के लिए आमंत्रित किया गया। वे सभी जो पहले ईश्वर के पवित्र पुरुष के खिलाफ गैरकानूनी मुकदमे में भाग ले चुके थे, एक बार फिर इकट्ठा हुए। केवल थियोफिलस अनुपस्थित थे, क्योंकि पिछले अवसर पर लोगों के क्रोध से बाल-बाल बचे होने का स्मरण रखते हुए, वह स्वयं कॉन्स्टेंटिनोपल की यात्रा करने से डर रहे थे, लेकिन उन्होंने अपनी जगह तीन बिशपों को भेज दिया। उनके साथ ही, उन्होंने वे आदेश भी भेजे जो एरियनों ने महान अथेनासियस के खिलाफ तैयार किए थे[7855] , ताकि, इन आदेशों के आधार पर, जॉन को पदच्युक्त होने के बाद मनमाने ढंग से बिशप की सीट फिर से संभालने के लिए दोषी ठहराया जा सके। उन्हीं अन्यायपूर्ण और विधिर्मी कैननों के आधार पर उस धन्य को दोषी ठहराया गया था[7856] , क्योंकि उनके खिलाफ कोई अन्य आरोप नहीं मिल सके। उन्होंने केवल यह इंगित किया कि क्रिसोस्टोम को पदच्युक्त किए जाने के बाद, उन्होंने एक नए परिषद के बुलाए जाने से पहले बिशप की कुर्सी पर कब्जा करने की हिम्मत की थी। संत जॉन ने उत्तर दिया:

'मैं मुकदमे में मौजूद नहीं था, मैंने अपने विरोधियों से बहस नहीं की, और न ही मैंने अपने खिलाफ लिखे गए आरोप देखे; मैंने अदालत के फैसलों को भी स्वीकार नहीं किया, फिर भी राजाओं ने मुझे निर्वासित कर दिया, और उन्होंने ही मुझे एक बार फिर बहाल किया।' यह वही फरमान है, जिसके आधार पर आप मुझ पर मुकदमा चला रहे हैं, जिसे ऑर्थोडॉक्स ने नहीं, बल्कि एरियनों ने, अथेनासियस महान को पदच्युत करने के उद्देश्य से तैयार किया था।

लेकिन अधर्मी सभा ने संत के उत्तर पर कोई ध्यान नहीं दिया और ईश्वर के सेवक को पदच्युत कर दिया। संत जॉन की पदच्युति निम्नलिखित परिस्थितियों में हुई।

जब पवित्र ईस्टर का महान पर्व आया, तो सम्राट ने बिशपों के उकसावे पर, जॉन को संदेश भेजा:

'चर्च से हट जाओ, क्योंकि तुम्हें दो परिषदों द्वारा दोषी ठहराया गया है, और जब तक तुम उसमें रहते हो, मैं उसमें प्रवेश नहीं कर सकता।'

इसके जवाब में, संत जॉन ने अपने दूतों के माध्यम से राजा को उत्तर दिया:

'मुझे चर्च मेरे उद्धारकर्ता मसीह से मिला है, और मैं इसे अपनी मर्जी से नहीं छोड़ सकता, जब तक कि मुझे जबरदस्ती बाहर नहीं निकाल दिया जाता। यह शहर आपका है, और सभी आपकी आज्ञा का पालन करेंगे। अत; यदि आप मुझे मसीह की कलीसिया से अलग करना चाहते हैं, तो अपनी नौकरों को मुझे कलीसिया से हटाने के लिए भेजें। तब मेरे पास

[7853] कॉन्स्टेंटिनोपल का मुख्य कैथेड्रल।

[7854] हेरोदियास – हेरोद अल्पवयी के पत्नी। उसने यूहन्ना बपतिस्मादाता की मृत्यु का कारण बनी।

[7855] यह, बेशक, 341 की अंकोना की परिषद के 22वें कैनन (नियम) को संदर्भित करता है, जिसे एरियनों ने महान अथेनासियस के खिलाफ तैयार किया था। कैनन में कहा गया है कि यदि कोई बिशप, जिसे एक परिषद द्वारा दोषी ठहराया और पदच्युत किया गया हो, वह धर्मनिरपेक्ष अधिकारियों के आदेश पर फिर से अपना पद संभालता है, तो उसे अपने पद पर बहाल होने के अधिकार से स्थायी रूप से वंचित कर दिया जाएगा।

[7856] यह निंदा गैरकानूनी थी, न केवल इसलिए कि विधिर्मी लोगों द्वारा तैयार की गई यह कैनन क्रिसोस्टोम पर लागू नहीं होती थी, बल्कि इसलिए भी कि जॉन की निर्वासन से वापसी पर, सेल्सीडोन परिषद द्वारा की गई निंदा को 65 बिशपों की एक बड़ी परिषद द्वारा उनसे हटा दिया गया था।

परमेश्वर के सामने कोई उत्तर नहीं होगा, क्योंकि मैं अपनी स्वेच्छा से कलीसिया नहीं छोड़ूँगा, बल्कि राजसी अधिकार द्वारा निष्कासित किया जाऊँगा।

यह सुनकर, राजा ने पहले तो यह सोचकर हिचकिचाया कि क्या कदम उठाया जाए, लेकिन फिर, जॉन के विरोधियों की सलाह पर, उसने रानी की जागीरों की प्रभारी, मारिना नामक एक प्रतिष्ठित व्यक्ति को उसके पास भेजा, ताकि वह चर्च के गौरवशाली शिक्षक, संत जॉन को मंदिर से जबरदस्ती हटा सके। हालाँकि, संत को तत्काल के लिए पैट्रिआर्कात्मक आवास में रहने की अनुमति दी गई, और अपनी कोठरी छोड़े बिना, वे वहाँ दो महीने तक रहे जब तक कि उन्हें निर्वासित करने का शाही फरमान जारी नहीं हो गया।

इस समय के दौरान, ईश्वर के पवित्र पुरुष को कई दुख और कष्ट सहने थे। उसके दुश्मनों की दुर्भावना इतनी बढ़ गई कि उन्होंने बार-बार उसकी जान लेने की कोशिश की: उन्होंने सेंट जॉन को मारने के लिए एक आदमी को रिश्वत दी। अपने बुरे इरादे को छिपाने के लिए, रिश्वत लेने वाले आदमी ने खुद को भूत-प्रेत का शिकार होने का नाटक किया और एक छिपी हुई तलवार के साथ, संत की हत्या करने के लिए एक अनुकूल क्षण की प्रतीक्षा में पैट्रिआर्कात्मक आवास के आसपास मंडराने लगा। लेकिन जॉन के प्रति विफादार लोगों ने, उस कथित पिस्सू-ग्रस्त व्यक्ति के दुष्ट इरादे पर संदेह करते हुए, उसे पकड़ लिया और उसके पास से तलवार बरामद कर ली। हमलावर को पूछताछ के लिए राज्यपाल के पास ले जाया गया, लेकिन जॉन को जब यह पता चला कि क्या हुआ था, तो उन्होंने अपने साथ मौजूद बिशपों को भेजकर अधिकारियों से उसकी रिहाई सुनिश्चित करने का प्रयास किया। एक अन्य अवसर पर, पादरी एल्पिडियस के एक दास को भीड़ ने तब देखा जब वह बेचैन होकर और तेज़ कदमों से पैट्रिआर्क के आवास की ओर जा रहा था। जॉन के एक रक्षक ने उसे पकड़ लिया और पूछा कि वह कहाँ भाग रहा है, लेकिन दास ने बिना जवाब दिए, पूछने वाले पर अपनी तलवार से वार कर दिया। यह देखकर, एक दूसरे आदमी ने चिल्लाया। एल्पिडियस ने उसे भी अपनी तलवार से मार गिराया, और फिर एक तीसरा आदमी जो उसकी राह में आ गया था। चीख-पुकार मच गई, जबकि गुलाम अपनी खून से सनी तलवार लहराते हुए और पीछे-पीछे आते भीड़ को भगाते हुए भाग गया। रास्ते में, उसकी मुलाकात एक आदमी से हुई जो अभी-अभी सार्वजनिक स्नानागार से निकला था। उस आदमी ने उसे पकड़ने की कोशिश की, लेकिन इससे पहले कि वह ऐसा कर पाता, वह तलवार के वार से मरकर गिर पड़ा। जब इस गुस्सैल डाकू को आखिरकार पकड़ लिया गया, तो उसने कबूल किया कि उसे जॉन को मारने के लिए पचास ज़्लॉटी की रिश्वत दी गई थी। उस समय से, लोगों ने अपने प्रिय आर्चपास्टर के घर की और भी सावधानी से रखवाली करनी शुरू कर दी, वे पालियाँ तय करते और एक पल के लिए भी उसे बिना पहरे के नहीं छोड़ते, क्योंकि वे देख सकते थे कि जॉन के दुश्मन उस संत को मारने का अवसर ढूंढ रहे थे।

पेंटेकोस्ट के आगमन पर, एक शाही फरमान जारी किया गया जिसमें जॉन को निर्वासन में जाने का आदेश दिया गया। एक गणमान्य व्यक्ति ने जॉन को लोगों से गुप्त रूप से प्रस्थान करने की सलाह दी, कहीं ऐसा न हो कि लोग भड़क जाएँ और उन सैनिकों के खिलाफ उठ खड़े हों जो उन्हें निर्वासन में ले जाने वाले थे।

उन्होंने कहा, 'अन्यथा, आप खून-खराबे का कारण बनेंगे, क्योंकि आदेश है कि आपको जबरदस्ती ले जाया जाए; हालाँकि, लोग विरोध करेंगे और अशांति फैलाएंगे।'

यह सुनकर, जॉन ने अपने कुछ पसंदीदा बिशपों और पुरोहितों, साथ ही धन्य डिकिनेस ओलंपियास को बुलाया, और उनसे विदा ली। जब वे अलग हुए, तो सभी जोर-जोर से रो पड़े। स्वयं संत जॉन भी रो पड़े। अपने करीबी सहयोगियों से अलग होने के बाद, जॉन एक साइड दरवाजे से चुपके से समुद्र की ओर निकल गए, ताकि लोगों को उनके जाने की कोई खबर न हो। संत का इंतजार समुद्र के किनारे सैनिक कर रहे थे; उन्होंने उन्हें पकड़ लिया और तुरंत एक छोटी नाव में बिठा दिया, जिसमें उन्हें बिथिनिया ले जाया गया और वहां से उनकी यात्रा जारी रही।

संत जॉन के निर्वासन के बाद, कॉन्स्टेंटिनोपल के कैथेड्रल में आग लग गई, जो ईश्वर के क्रोध का एक स्पष्ट प्रकटीकरण था। एक तेज हवा के कारण, आग की लपटें चर्च से फूट पड़ीं और, एक पुल की तरह हवा में ऊँची उठकर, उस कक्ष के ऊपर झुक गईं जहाँ जॉन के खिलाफ बैठकें हो रही थीं और उसे पूरी तरह से जलाकर खाक कर दिया। और एक अद्भुत दृश्य देखा गया: आग, मानो जीवित हो, एक सांप की तरह लोटती हुई, दूर के घरों को निगल रही थी, जबकि चर्च के पास स्थित घर सुरक्षित रहे। इससे, सभी को एहसास हुआ कि ऐसी आग संयोग से नहीं लगी थी, बल्कि दैवीय क्रोध के परिणामस्वरूप लगी थी, और इस क्रोध का कारण संत जॉन क्रिसिस्टम को निष्कासित किया जाना था।

तीन घंटों के दौरान, दिन के छठे घंटे से लेकर नौवें घंटे तक, कई सुंदर प्राचीन इमारतें, शहर में पाए जाने वाले हर तरह के आभूषण, और अनगिनत धन-संपत्ति राख में बदल गईं। फिर भी, आग में लोगों में से एक भी व्यक्ति नहीं मरा। यह

देखकर, सभी ने कहा कि ईश्वर अपने संत को अन्यायपूर्ण रूप से निष्कासित करने के लिए शहर को आग से दंडित कर रहे थे। हालाँकि, जॉन के दुश्मनों ने इसके विपरीत दावा किया, यह कहते हुए:

'जॉन के अनुयायियों ने चर्च में आग लगा दी।'

परिणामस्वरूप, कई लोगों को गिरफ्तार कर लिया गया और शहर के गवर्नर—[7857] , जो धर्म से एक ग्रीक था—ने उन्हें हर तरह के यातना और कष्टों से गुज़ारा, और कुछ की इस वजह से मौत भी हो गई। फिर भी, इसके बावजूद, वे आग के पीछे के अपराधी को नहीं ढूंढ सके और इस बात पर और भी अधिक आश्वस्त हो गए कि यह आग ईश्वर के क्रोध के कारण लगी थी।

जैसे ही संत को कैद में ले जाया जा रहा था, रास्ते में सैनिकों के हाथों उन्होंने अनगिनत यातनाएँ सहन कीं। रानी ने सैनिकों को आदेश दिया था कि वे यात्रा के दौरान संत का हर संभव तरीके से अपमान और उत्पीड़न करें, ताकि उसे जल्द से जल्द थका दिया जाए और उसकी मृत्यु हो जाए। इसलिए, उन्होंने उसे काठी के बिना गधे पर बिठाया और जानवर को बहुत तेज़ी से दौड़ाया, जिससे वे एक ही दिन में वह दूरी तय कर गए जो सामान्य रूप से दो या तीन दिन में तय होती। यात्रा के दौरान, जॉन को कोई शांति या आराम नहीं दिया गया; वे रातें घटिया और गंदे सरायों में, कभी-कभी यहूदियों के घरों में बिताते थे, और उसकी उपस्थिति में कई अशुद्ध कार्य करते थे। उसे कहीं भी चर्च में प्रवेश करने की अनुमति नहीं दी गई; और जब संत ने ऐसा करने के लिए कहा, तो उसे हर तरह के अपमान और गाली-गलौज का सामना करना पड़ा; इसके अलावा, संत को भूखा रखा गया और अपनी यात्रा के लिए आवंटित धन से वंचित कर दिया गया।

इतनी द्वेषपूर्णता के साथ ही संत जॉन क्रिसिस्टम को बंदी बनाया गया था! जब भी संत उन शहरों से गुजरते जहाँ उनके दुश्मन और थियोफिलिस के दोस्त बिशप के रूप में कार्यरत थे, तो वे उनके साथ हर तरह का अन्याय करते थे; कुछ उन्हें शहर में प्रवेश करने की अनुमति नहीं देते थे, जबकि अन्य तो सैनिकों को उन्हें यथासंभव कठोरता से पेश आने के लिए भी प्रोत्साहित करते थे। कभी-कभी, पवित्र मरुभूमि के पिता, यह सुनकर कि संत जॉन को निर्वासन में भेजा जा रहा है, उनसे मिलने और उन्हें आँसुओं के साथ विदा करने के लिए बाहर निकलते थे। जॉन क्राइसोस्टोम स्वयं कुकुज़ से बिशप साइरियाकस को लिखे अपने पत्र में[7858] इन शब्दों में इसका उल्लेख करते हैं: 'हमने यात्रा में बहुत दुख सहन किया, लेकिन हम किसी भी बात से निराश नहीं हुए। जब हम कैपाडोसिया और टॉरकिलिसिया[7859] से गुज़रे, तो संतों, पवित्र पुरुषों, और भिक्षुओं तथा कुंवारी महिलाओं की भारी भीड़ हमें मिलने के लिए बाहर आई और वे भर-भरकर आँसू बहाने लगे। निर्वासन में हमारी शोभायात्रा को देखकर, वे रो पड़े और एक-दूसरे से कहने लगे: 'जॉन के होंठों का चुप हो जाना, सूर्य के अपनी किरणों को छिपा लेने से बेहतर होगा।' यह देखकर मुझे बहुत भ्रम और दुख हुआ, क्योंकि मैंने देखा कि हर कोई मेरे लिए रो रहा था। जहाँ तक मेरे साथ हुई बाकी सभी बातों का सवाल है, मैंने उन पर कोई ध्यान नहीं दिया।"

इस प्रकार संत जॉन ने स्वयं अपने बारे में लिखा।

जब उन्हें लघु आर्मेनिया के कुकुज़ नगर में लाया गया, तो स्थानीय बिशप एडेलफियस ने उन्हें अपने घर में बड़े सम्मान के साथ स्वागत किया। एडेलफियस ने, जॉन के आगमन से पहले, ईश्वर से एक दर्शन प्राप्त किया था, जिसमें उन्हें संत को आश्रय देने का आदेश दिया गया था। कुकुज़ में रहते हुए, संत जॉन ने अपनी शिक्षाओं के माध्यम से कई अविश्वासियों को ईसा मसीह के धर्म में परिवर्तित किया। संत जॉन क्रिसोस्टोम की ख्याति आसपास के पूरे क्षेत्र में दूर-दूर तक फैल गई, और बड़ी संख्या में लोग सभी दिशाओं से उनके पास आने लगे, उन्हें देखने और उनके उपदेशात्मक वचन सुनने की इच्छा से। अंतियोकिया से उनके कई प्रशंसक और परिचित भी संत को देखने आए। यह सब खबर कॉन्स्टेंटिनोपल तक पहुँच गई, और जॉन के दुश्मन चिंतित हो गए। वे उन्हें बंदी अवस्था में भी खतरनाक समझते थे, और इसलिए उन्होंने उन्हें और भी दूर भेजने का निश्चय किया। और इसलिए महारानी की ओर से कुकुज़ को एक फरमान मिला, जिसमें जॉन को पोंटिक सागर के तट पर, जंगली बर्बर लोगों के आसपास, पिथियोन्ट[7860] नामक एक सुनसान जगह पर भेजने का आदेश दिया गया था। रानी के नए आदेश के बाद, सैनिकों ने जॉन को निर्वासन के एक और स्थान पर ले गए

[7857] अर्थात्, एक मूर्तिपूजक।

[7858] कुकुज़ गाँव लघु आर्मेनिया (एशिया माइनर के पूर्व में) में, जंगली टॉरस पहाड़ों की एक दूरस्थ घाटी में स्थित था, जहाँ इसौरियनों का एक डाकू जनजाति बसा था, जो आसपास की बस्तियों पर हमला करती थी।

[7859] एशिया माइनर के दक्षिण-पूर्वी भाग में।

[7860] पिथियोन्ट शहर काला सागर, या पोंटिक सागर, के दक्षिणी तट पर, एशिया माइनर के उत्तर-पूर्वी भाग में, आज के अब्खाज़िया में स्थित था।

और, यात्रा के दौरान, उन्होंने उसे पहले की तरह ही यातनाएं दीं, ताकि उसकी मृत्यु जल्द से जल्द हो सके: उन्होंने उसे बिना कपड़ों के बारिश और झुलसाती गर्मी में ले जाया, उसे शहरों और गांवों में प्रवेश करने से रोका, और, पहले की तरह, जिस गधे पर संत को बिठाया गया था, उसे तेज़ी से दौड़ाया। अपने निर्वासन के दौरान संत जॉन ने ऐसी क्रूर यात्रा सहन की! इसी यात्रा के दौरान उनका निधन हो गया।

धन्य व्यक्ति के निधन से ठीक पहले, जब वह अपनी प्रथा के अनुसार रात में प्रार्थना कर रहे थे, तब पवित्र प्रेरित पतरस और यूहन्ना उनके पास आए; वे उनसे पहले भी प्रकट हो चुके थे, जब वह अंतीयक के मठ में एक भिक्षु के रूप में रहते थे। पवित्र प्रेरितों ने उनसे कहा:

'हे वचन के मसीह के झुंड के भले चरवाहे, अटल शहीद, आनन्दित हो। हम तुम्हारे पास अपने सामान्य प्रभु यीशु मसीह द्वारा भेजे गए हैं, ताकि तुम्हारी आत्मा की पवित्रता के लिए तुमने जो दुख और परिश्रम सहन किए हैं, उनमें तुम्हारी सहायता और सांत्वना कर सकें।' क्योंकि आपने, यूहन्ना बपतिस्मादाता के उदाहरण का अनुसरण करते हुए, अधर्मी राजाओं की निंदा की है। हियाव रखें और मज़बूत बने रहें; स्वर्ग के राज्य में आपके लिए एक महान पुरस्कार प्रतीक्षा कर रहा है। हम आपके लिए महान आनंद का शुभ समाचार लाए हैं: कुछ ही दिनों में आप अपने प्रभु परमेश्वर के पास प्रस्थान करेंगे और स्वर्ग के राज्य में हमारे साथ हमेशा के लिए धन्य होंगे। इसलिए, हौसला रखें, क्योंकि आपने अपने शत्रुओं को परास्त किया है, आपको घृणा करने वालों को लज्जित किया है, और विरोधी, शैतान पर विजय प्राप्त की है। यूडोक्सिया कीड़े-मकोड़े खा जाएँगे; वह मदद के लिए तुम्हें पुकारेगी, लेकिन उसे कोई मदद नहीं मिलेगी और वह भयानक पीड़ा में मर जाएगी। वह क्रूरता से पीड़ित होगी और उसे एक पल का भी आराम नहीं मिलेगा, क्योंकि उसे यह दंड ईश्वर से मिलेगा।

इसके बाद, उन्होंने उसके खाने के लिए कुछ लाया और कहा:

'यह लो और खाओ, ताकि इसके बाद तुम्हें इस जीवन में किसी अन्य भोजन की आवश्यकता न पड़े। यह तुम्हारे लिए तब तक पर्याप्त होगा जब तक तुम अपनी आत्मा को ईश्वर के हाथों में न सौंप दो।'

संत जॉन ने जो कुछ उन्हें दिया गया था, उसे लेकर उनकी उपस्थिति में खाया और प्रसन्न हुए। इसके बाद, जो प्रेरित प्रकट हुए थे, वे उनसे पीछे हट गए।

यूहन्ना के साथ दो पुरोहित और एक डिकन थे, जो कॉन्स्टेंटिनोपल से निर्वासन में उनके साथ आए थे और प्रेम के बंधनों से बँधे होने के कारण उन्हें नहीं छोड़ गए थे। उन्होंने अपनी आँखों से देखा कि कैसे प्रेरित यूहन्ना के पास आए, उनके सभी वचन सुने, और उस परमेश्वर का धन्यवाद किया, जिसने उन्हें परमेश्वर के प्रिय सेवक के साथ दुख सहने की कृपा प्रदान की थी।

[7861]कुछ दिनों की यात्रा के बाद, निर्वासित लोग कोमाना पहुँचे[7862] ; इस शहर के पास कोमाना के महा-शहीद बिशप बेसिलिस्क का चर्च था, जिन्होंने अधर्मी सम्राट मैक्सिमियन के अधीन निकोमेडिया में अंताकिया के पुरोहित लूसियन के साथ मसीह के लिए दुख सहे[7863] । उन्होंने इस चर्च में रात बिताई। अगले दिन पवित्र क्रूस की उन्नति का पर्व था, और पर्व से पूर्व की रात में, पवित्र शहीद बेसिलिस्क धन्य जॉन के समक्ष प्रकट हुए।

'भाई जॉन, हौसला रखो! क्योंकि कल हम एक साथ होंगे।'

उसी पवित्र शहीद ने अपनी कलीसिया के पुरोहित के सामने भी प्रकट होकर कहा:

'भाई जॉन के लिए एक स्थान तैयार करो, क्योंकि वह हमारे पास आ रहे हैं।'

दिन निकलने पर, जॉन ने सैनिकों से विनती की कि वे पाँचवाँ घंटा तक कोमाना में सेंट बेसिलिस्क के चर्च के पास ही रहें, लेकिन उन्होंने उसकी बात पर ध्यान नहीं दिया और यथासंभव जल्दी यात्रा करने का प्रयास करते हुए अपने रास्ते पर आगे बढ़ गए। वे पानी पार करके एक पक्षी की तरह बहुत तेजी से नौकायन करके चले गए। इस प्रकार, कुछ ही घंटों में, वे शहर से तीस स्टेडियम दूर नौकायन कर चुके थे।

हालाँकि, दैवीय कृपा से, वे फिर से सेंट बेसिलिस्क के चर्च के पास तट पर आकर रुक गए, जिससे वे बहुत हैरान रह गए। जॉन ने फिर से उनसे उस स्थान पर थोड़ी देर रुकने का आग्रह करना शुरू किया, जब तक कि वह चर्च में प्रार्थना

[7861] पवित्र शहीद लूसियन का पर्व 15 सितंबर को मनाया जाता है; और बेसिलिस्क का 22 मई को।

[7862] कोमाना – एशिया माइनर के उत्तर-पूर्व में, पोंटस प्रांत का एक शहर, जो अब गुमेने है।

[7863] यह, बेशक, मैक्सिमियन गैलेरियस को संदर्भित करता है, जो डायोक्लेटियन का दामाद और पूर्व में उसका सह-शासक था; बाद में, डायोक्लेटियन की मृत्यु पर, वह पूर्वी सम्राट (305–311) बन गया। लूसियन और बेसिलिस्क की मृत्यु उसके जीवन के अंतिम वर्षों के दौरान हुई।

न कर लें। यह मानते हुए कि ईश्वर की शक्ति का यही काम था कि वे अपनी मर्जी के खिलाफ उसी जगह पर वापस आ गए थे जहाँ से उन्होंने प्रस्थान किया था, सैनिकों ने जॉन की विनती मानने का निश्चय किया। तब संत चर्च में गए, सफेद धार्मिक वस्त्र मांगे और अपने सभी कपड़े उतार दिए, जिसकी शुरुआत उन्होंने अपने जूतों से की; फिर उसने जहाज पर अपने साथ मौजूद लोगों में अपने कपड़े बाँट दिए, और, धार्मिक वस्त्र धारण कर, उन्होंने धर्मविधि का अनुष्ठान किया और मसीह के शरीर और रक्त के परम शुद्ध और जीवन-दायक रहस्यों को ग्रहण किया; फिर, सभी उपस्थित लोगों को आशीर्वाद देने और उन्हें अंतिम चुंबन देने के बाद, वह लेट गए, यह कहते हुए:

'सभी बातों के लिए परमेश्वर की महिमा।'

और ठीक उसके बाद उन्होंने अपना प्राण ईश्वर के हाथों में सौंप दिया। यह घटना प्रभु के पवित्र क्रूस की उन्नयन के दिन ही हुई। इस प्रकार, ईश्वर के इस पवित्र सेवक का निधन पवित्र क्रूस की स्मृति के दिन हुआ, जिन्होंने अपने पूरे जीवन में अपना क्रूस उठाया था, संसार के लिए स्वयं को सूली पर चढ़ाया और मसीह की सूली पर चढ़ाए जाने में सहभागी बने।[7864] उन्हें उसी चर्च में दफनाया गया जहाँ उनकी मृत्यु हुई थी, पवित्र शहीद वासिलिस्क के मकबरे के पास। इस प्रकार साइप्रस के संत एपिफानियस की भविष्यवाणी पूरी हुई, जिन्होंने संत जॉन से कहा था:

'और तुम उस स्थान तक नहीं पहुँचोगे जहाँ तुम्हें निर्वासित किया जाएगा।'

वास्तव में, संत जॉन को पितियम की ओर ले जाया गया, लेकिन पितियम पहुँचने से पहले ही कोमाना में उनका निधन हो गया। इस प्रकार चर्च का दीपक बुझ गया, इस प्रकार स्वर्णिम होंठ मौन हो गए, इस प्रकार उस अच्छे तपस्वी और पीड़ित ने, जिसने छह वर्ष पैट्रिआर्कात्मक सिंहासन पर और तीन वर्ष निर्वासन में, एक स्थान से दूसरे स्थान ले जाए जाने के बाद, अपना कार्य पूरा किया और परलोक सिधार गया[7865] ।

जब संत जॉन की मृत्यु हुई, तो उनके साथ मृत्यु तक साथ रहने वाले दो पुरोहित और एक डिकन ने, अपने पिता के निधन पर शोक मनाने के बाद, पोप इनोसेंट से मिलने के लिए रोम के लिए रवाना हुए और उन्हें विस्तार से बताया कि संत जॉन ने अपने दुश्मनों के हाथों क्या-क्या सहे थे। उन्होंने उनके निधन और इस बात का वर्णन किया कि कैसे, अपनी मृत्यु से ठीक पहले, पवित्र प्रेरित पतरस और दार्शनिक यूहन्ना उन्हें दिखाई दिए थे, उन्होंने उनसे क्या कहा था, और कैसे पवित्र शहीद बैसिलिस्क उन्हें दिखाई दिए थे। यह सब सुनकर, इनोसेंट बहुत आश्चर्यचकित हुए और उस महान संत के लिए शोक मनाने लगे जिन्होंने सत्य के लिए दुख उठाया था। पोप ने पश्चिमी सम्राट होनोरियस[7866] , जो आर्कैडियस के भाई थे, को संत क्रिसोस्टोम के निर्वासन और मृत्यु के आसपास की परिस्थितियों के बारे में सूचित किया, और उन दोनों ने इस पर गहरा शोक व्यक्त किया और तुरंत सम्राट आर्कैडियस को पत्र लिखे। पोप ने अपनी ओर से लिखा:

– हे राजा, मेरे भाई जॉन का खून तुम्हारे विरुद्ध ईश्वर से पुकार रहा है, ठीक वैसे ही जैसे प्राचीन काल में धर्मी हेबल का खून उसके हत्यारे भाई काईन के विरुद्ध पुकारता था; और इस खून का बदला लिया जाएगा, क्योंकि तुमने शांति के समय में ईश्वर की कलीसिया पर उत्पीड़न छोड़ दिया है। क्योंकि तुमने मसीह के सच्चे चरवाहे को निकाल दिया है, और उसके साथ तुमने मसीह परमेश्वर को भी निकाल दिया है, और तुमने उसकी भेड़-बकरियों को मसीह के सच्चे चरवाहों के बजाय भाड़े के चरवाहों के हाथों में सौंप दिया है।

इन्नोसेंट ने आर्कैडियस को यह और भी बहुत कुछ लिखा, जिसमें उन्होंने उसे और यूडोक्सिया को दैवीय रहस्यों से बहिष्कृत कर दिया, और उनके साथ उन सभी सहयोगियों को भी जिन्होंने संत जॉन को पदच्युत करने में भाग लिया था। जहाँ तक थियोफिलिस का प्रश्न है, उन्होंने उसे न केवल उसके पद से बल्कि चर्च से भी बहिष्कृत कर दिया, और उसे एक सिनोडल मुकदमे के लिए बुलाया ताकि वह अपनी योग्य सज़ा प्राप्त कर सके।

अपनी ओर से, होनोरियस ने अपने भाई आर्कैडियस को लिखा:

'भाई, मुझे नहीं पता कि किसि प्रलोभन में आकर तुम अपनी पत्नी पर भरोसा करने और उसकी जिद पर ऐसा करने के लिए बहक गए, जो कोई भी धर्मपरायण ईसाई राजा कभी नहीं करता। यहाँ उपस्थित बिशप और पूजनीय पिता आप

[7864] प्रभु के जीवन-दायक क्रूस के उत्थान का पर्व 14 सितंबर को, जब संत का निधन हुआ था, नहीं बल्कि 13 नवंबर को मनाया जाता है। इसके अलावा, उनकी स्मृति 27 जनवरी को, संत की अवशेषों के स्थानांतरण के दिन, और 30 जनवरी को संत बेसिल द ग्रेट और ग्रेगरी द थियोलोजियन के साथ मनाई जाती है।

[7865] क्रिसोस्टोम का 407 ईस्वी में 60 वर्ष की आयु में निधन हो गया। उन्होंने साढ़े छह साल तक आर्चबिशप के रूप में सेवा की और तीन साल और तीन महीने कैद में बिताए।

[7866] ऑनोरियस, आर्कैडियस का भाई और थियोडोसियस महान का पुत्र, ने 395 से 423 तक रोम पर शासन किया।

और रानी के वरिुद्ध पुकार लगाते हैं कि आपने परमेश्वर के महान महापुजारी, जॉन को बिना मुकदमे और कैनन के वरिुद्ध उनके पद से हटा दिया, और उन्हें क्रूर यातनाओं से पीड़ा पहुँचाकर हसिक मृत्यु दी।

इस पत्र के अंत में, होनोरियस ने आर्काडियस से ईश्वर के सामने पश्चाताप करने और जॉन के निर्वासन के लिए जिम्मेदार लोगों से बदला लेने का आग्रह किया। अपने भाई और पोप से पत्र प्राप्त करने पर, सम्राट आर्काडियस गहरे दुख और भयानक भय से अभिभूत हो गए। शहर में जो लोग जॉन के खलिाफ वदि्रोह कर चुके थे, उन्हें ढूंढ निकालने के बाद, उन्होंने उन्हें मृत्युदंड के वभिन्नि रूपों से दंडति किया: कुछ के सरि तलवार से कलम कर दिए, जबकि अन्य को अपमानपूर्वक उनके पद से हटा दिया। सम्राट ने आदेश दिया कि कुछ बशिप जनि्हें संत जॉन पर मुकदमा चलाया गया था और जो तब कॉन्स्टेंटनिोपल में थे, उन्हें गरिफ्तार कर सार्वजनकि कालकोठरी में अपमानपूर्वक कैद कर दिया जाए। उनमें थियोफलिस के भाई का बेटा जेचरीऑन भी था। खुद थियोफलिस को, उन्होंने एक बहुत ही कठोर पत्र लिखा, जसिमें उसे थ्रेसलॉनीकी में मुकदमे के लिए तैयार रहने का आदेश दिया गया, ताकि उसे उसकी दुर्भावना के लिए उचति सज़ा मलि सके। यहाँ तक कि उनकी अपनी पत्नी, सम्राज्ञी यूडोक्सिया भी आर्कैडियस के क्रोध से नहीं बच सकीं: अर्काडियस ने उसे अपनी उपस्थतिि से नष्किासति कर दिया, उसे एक अलग महल में कैद कर दिया, और उसकी नौकरानी के अलावा कसिी को भी उससे मलिने की मनाही कर दी। उसी समय, उसने उन सम्राज्ञी के रश्तिेदारों को भी निर्वासति कर दिया जनि्होंने संत के खलिाफ उसके साथ साजशि रची थी; उसने उनमें से कुछ की संपत्तयिाँ जब्त कर लीं, जबकि अन्य को कैद करके यातनाएँ दी गईं। फरि उसने पोप इनोसेंट को अपने द्वारा कए गए सभी कार्यों के बारे में लिखा, और वनिम्रतापूर्वक तथा पश्चाताप के साथ उनसे क्षमा याचना की। उसने अपने भाई होनोरियस को भी लिखा, और उनसे पोप से अपनी नष्किासन-सज़ा रद्द करने का अनुरोध करने के लिए कहा। जल्द ही आर्कैडियस को वह मलि गया जसिकी उसने मांग की थी। उसकी वनिम्र प्रार्थना पढ़ने के बाद, पोप ने उसके पश्चाताप को स्वीकार कर लिया और धन्य प्रोकलस को पत्र लिखा, जो उस समय साइज़किस के बशिप थे[7867] , और उन्हें राजा पर से बहष्किार हटाने, उसे पवत्रि संस्कारों में शामलि करने, और धन्य जॉन को संतों में शामलि करने का नर्दिेश दिया।

जब यह सब हो रहा था, सर्व-दर्ष्टा प्रभु स्वयं अपने सेवक जॉन के दुश्मनों से बदला लेने लगे; उन्होंने उन्हें पृथ्वी पर रहते हुए ही क्रूर दंड दिए, जसिसे वे सभी एक भयानक मृत्यु से मरे। इसके अलावा, सभी बशिप, पुरोहति, धर्मनरिपेक्ष गणमान्य व्यक्ति और वास्तव में, वे सभी जनि्होंने संत जॉन के खलिाफ अन्यायपूर्ण वदि्रोह किया था, वे दर्दनाक फोड़ों से ढक गए, जनि्होंने उनके पूरे शरीर के मांस को खा डाला और उन्हें मृत्यु के घाट उतार दिया; कसिी के हाथ-पैर सूख गए; दूसरों के पूरे शरीर सड़ गए, और उन पर कीड़े भारी संख्या में मंडराने लगे, जसिसे लंबे समय तक उनसे एक असहनीय बदबू आती रही। उन अधर्मी न्यायाधीशों में से एक, जसिने धन्य व्यक्ति को निर्वासन की सजा दी थी, वह अपने घोड़े से गरिकर अचानक मर गया, और उसका दाहनिा हाथ टूट गया—वही हाथ जसिसे उसने नर्दिोष जॉन के खलिाफ अनुचति आरोपों पर हस्ताक्षर कए थे। एक और गूंगा हो गया और उसके हाथों का इस्तेमाल बंद हो गया, और इस प्रकार उसकी मृत्यु हो गई। तीसरे व्यक्ति की जीभ, जसिने संत जॉन के खलिाफ अपमानजनक शब्द बोले थे, इतनी सूज गई कि वह बोल ही नहीं सकता था; तब उसने एक पार्चमेंट के टुकड़े पर लिखकर अपना पाप कबूल किया। और ईश्वर के भयानक क्रोध के प्रकट होने को देखा जा सकता था, जो जॉन के निर्वासन के लिए जिम्मेदार लोगों पर वभिन्नि प्रकार की सज़ाओं के रूप में نازلि हुआ था।

अलेक्जेंड्रिया के पैट्रिआर्क थियोफलिस ने रोम के पोप इनोसेंट की मृत्यु के बाद मानवीय न्याय और दंड से तो बच गए, लेकनि ईश्वर के न्याय से नहीं बच पाए। इस कष्ट के कारण वे पागल हो गए और उनकी मृत्यु हो गई। काल्सेडोन के बशिप सरिलि के पैर सड़ गए; डॉक्टरों ने पूरे शरीर को सड़ने से बचाने के लिए उन्हें बार-बार काट दिया, लेकनि उनका मांस फरि भी सड़ता रहा, और घुटनों से पैरों को आरी से काटने के बाद उनकी मृत्यु हो गई। ईश्वर का भयानक न्याय दुर्भाग्यपूर्ण सम्राज्ञी यूडोक्सिया पर भी पड़ा। दुख और शर्म से आहत, वह गंभीर रक्तस्राव से बीमार पड़ गई, और उसका मांस कीड़ों से भर गया, ठीक वैसे ही जैसे प्रेरतिों ने धन्य योहन को पूर्व में बताया था। उससे इतनी भयानक बदबू नकिलती थी कि राहगीर उसके मांस की बदबू को सहन नहीं कर पाते थे। कई अत्यधकि अनुभवी चकित्सिकों ने उनका इलाज किया और सुगंधति तेलों से धूम्रपान किया, लेकनि कोई फायदा नहीं हुआ। फरि उन्होंने चकित्सिकों से पूछा:

[7867] यही वही प्रोक्लस हैं जो पहले संत जॉन के सेल सहायक थे; बाद में वे कॉन्स्टेंटनिोपल के पैट्रिआर्क बने। साइज़किस एशिया माइनर के उत्तर-पश्चिमी भाग में, मार्मारा सागर के दक्षणिी तट पर स्थति एक शहर है।

'तुम मुझे मेरी इस पीड़ा से क्यों नहीं ठीक कर सकते?'

लेकिन उन्होंने उसे यह समझाने की हिम्मत नहीं की।

रानी ने उनसे कहा, 'यदि आप यह नहीं जानते कि मैं क्यों ठीक नहीं हो सकती, तो मैं आपको बताऊँगी: मुझे यह पीड़ा ईश्वर के क्रोध के कारण हुई है, जो मुझ पर पैट्रआर्क जॉन के साथ किए गए मेरे अन्याय के कारण आया है।'

उसने थियोग्नोस्टस के बच्चों को वह दाख की बारी लौटा दी जो उनसे छीन ली गई थी, और कई अन्य लोगों को भी वह सब कुछ लौटा दिया जो उसने अन्याय से लिया था। हालाँकि, वह ठीक नहीं हुई, और उसी बीमारी से उसकी मृत्यु हो गई। उनकी मृत्यु के बाद, उनकी दुष्टता को उजागर करने के लिए, जिस ताबूत में उन्हें रखा गया था, वह बत्तीस साल तक लगातार हिलता रहा, और यह तब तक जारी रहा जब तक कि संत जॉन क्रिसोस्टोम के पवित्र अवशेष कोमाना से कॉन्स्टेंटिनोपल में स्थानांतरित नहीं हो गए।

इस प्रकार प्रभु ने संत जॉन के शत्रुओं को दंड दिया; और स्वयं धर्मी पुरुष को, उन्होंने निम्नलिखित प्रकार से महिमामय बनाया। कुकुज़ में अपने घर में जॉन का आतिथ्य ग्रहण करने वाले बिशप एडेलफियस, संत के निधन की खबर सुनकर बहुत दुखी हो गए और उन्होंने आँसुओं के साथ ईश्वर से विनती करना शुरू कर दिया कि वह उन्हें दिखाएँ कि जॉन अब संतों की किस संगति में हैं। एक दिन, इसी के लिए प्रार्थना करते हुए, वह समाधि में चला गया और उसने एक तेजस्वी और प्रसन्न युवक को देखा। उस युवक ने एडेलफियस का हाथ पकड़कर उसे एक प्रकाशमान स्थान पर ले गया और उसे चर्च के पवित्र धर्मगुरुओं के चेहरे दिखाए। चारों ओर देखते हुए, एडेलफियस जॉन को देखने के लिए तरस गया लेकिन उसे वह कहीं नहीं मिला। एडेलफियस को चर्च के प्रत्येक डॉक्टर और कॉन्स्टेंटिनोपल के पैट्रआर्क दिखाने के बाद, वह युवक उसे जल्दी से उस जगह से बाहर ले गया। उसके पीछे-पीछे चलते हुए, एडेलफियस उदास हो गया, क्योंकि उसने पवित्र पिताओं की सभा में धन्य योहन को नहीं देखा था। लेकिन जैसे ही वह उस प्रकाशमय स्थान से जा रहा था, दरवाज़े पर खड़े किसी व्यक्ति ने उसका हाथ पकड़कर कहा:

'तुम इतनी उदासी के साथ यहाँ से क्यों जा रहे हो? जो कोई यहाँ दुख में प्रवेश करता है, वह यहाँ से आनंदित होकर लौटता है, फिर भी तुम उल्टा कर रहे हो: तुम यहाँ आनंदित होकर आए, फिर भी तुम दुख में जा रहे हो।'

एडेलफी ने उत्तर दिया:

'मैं इसलिए दुखी हूँ क्योंकि मैंने चर्च के शिक्षकों में जॉन, जिन्हें मैं प्रेम करता हूँ, को नहीं देखा है।'

'क्या आप का मतलब,' उसने पूछा, 'पश्चाताप के उपदेशक जॉन से है?'

'हाँ,' एडेलफी ने उत्तर दिया।

तब स्वर्ग के द्वार पर खड़े हुए ने उससे कहा:

'मांस में कोई मनुष्य उसे नहीं देख सकता, क्योंकि वह परमेश्वर के सिंहासन के सामने खड़ा है, जिसे करूब और सेराफिम ने घेर रखा है।'

संत जॉन के बारे में यह समाचार पाकर, एडेलफी ने आनंद मनाया और परमेश्वर की महिमा की, जिसने उसे यह रहस्य प्रकट किया था। इस प्रकार संत जॉन, सत्य के लिए सहन की गई अनेक परीक्षाओं, तूफानों, दुर्भाग्यों और दुखों के बाद, शांतिपूर्ण स्वर्गीय आश्रय में पहुँचे, जहाँ वे स्वर्गदूतों के साथ आनंदित होकर, पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा की महिमा करते हैं, त्रिमूर्ति में एक ईश्वर, जिसे महिमा, सम्मान और आराधना हम भी अर्पित करते हैं, अब और सदा के लिए और युगों-युगों तक। आमीन।

ट्रोपारियन, स्वर 8:

आपके होठों से जो अनुग्रह प्रकट हुआ, वह अग्नि के प्रकाश के समान संपूर्ण संसार को प्रकाशित करे: आपने धन के प्रेम से संसार के खजाने नहीं खोजे, बल्कि हमें नम्रता की ऊँचाइयाँ दिखाईं। परन्तु आपके वचनों द्वारा, पिता जॉन क्राइसोस्टोम, मसीह परमेश्वर के वचन से प्रार्थना करें कि हमारी आत्माएँ उद्धार पाएँ।

कॉन्टाकयिन, स्वर 6:

हे सर्व-धन्य और पूजनीय योहन क्रसिोस्टोम, आपने स्वर्ग से दविय अनुग्रह प्राप्त कयिा, और अपने वचनों द्वारा आप सभी को त्रमिूर्त मिें एक ईश्वर की आराधना करना सखिाते हैं; हम आपका यथोचति रूप से गुणगान करते हैं: क्योंकि आप एक शकि्षक हैं, जो दविता का प्रकटीकरण करते हैं।

पवत्रि शहीदों एंटोननिस, नकिोफोरस, जर्मनस और मेनेस की स्मृत

13 नवंबर को स्मरण कयिा जाता है

[7868]संत अंटोननिस, नाइसफिोरस और जर्मनस ने सम्राट मैक्समियिनस गैलेरयिस के अधीन शहादत प्राप्त की। अंटोननिस एक वृद्ध व्यक्ति थे, नाइसफिोरस एक युवक, और जर्मनस मध्य आयु के थे। उन्हें फलिस्तिीन प्रांत के राज्यपाल फर्मलियिनस ने पकड़ लयिा, जसिने उन्हें मूर्तयिों को बलदिान चढ़ाने के लिए मजबूर कयिा। संतों ने ऐसा करने से इनकार कर दयिा और मसीह की गवाही दी; जसिके लिए उन्हें फलिस्तिीन की राजधानी केसरयिा ले जाया गया और वहाँ सरि कलम कर दयिा गया।

स्कैथयिनों के देश की मनेफा नाम की एक युवती को भी पवत्रि शहीदों के साथ पकड़ लयिा गया था। उसे उपहास करने के लिए शहर में नग्न घुमाया गया और फरि वभिन्नि यातनाओं का शकिार बनाया गया, जनिसे वह ईश्वर की कृपा से बनिा कसिी चोट के बच नकिली। मानेफा ने अनगनित चमत्कार कए, कई लोगों को मूर्तपिूजा की दुष्टता से दूर कयिा, उन्हें सच्चे धर्म की शकि्षा दी, और उन्हें मसीह के पास ले आईं। इसके लिए, उन्हें खंभे पर जलाकर मारने की सज़ा दी गई। जब भट्टी प्रज्वलति की गई, तो वह स्वेच्छा से उसमें प्रवेश कर गईं, जहाँ उन्होंने अपनी आत्मा प्रभु के हाथों में सौंप दी; महमिा और स्तुति सदा के लिए उसी की हो। आमीन।

27 नवंबर

14 नवंबर (पुराना संस्करण)

संत फलिपि प्रेरति का जीवन

14 नवंबर को स्मरणोत्सव

गलील की झील के कनिारे, खोरज़ीन और कफ़र्नम के पास, बेत्सैदा नामक एक नगर था[7869] । मसीह के बारह प्रेरतिों में से तीन इसी नगर में पैदा हुए थे: पतरस, अन्द्रयिास और फलिपिुस। पतरस और अन्द्रयिास मछुआरे थे और मसीह द्वारा बुलाए जाने तक इसी व्यवसाय में लगे रहे; हालाँकि फलिपि को उसके माता-पति ने उसके बचपन से ही वदि्वान शकि्षा प्राप्त करने के लिए भेजा था। पवत्रि शास्त्रों को लगन से पढ़कर और लंबे समय से प्रतीक्षति मसीहा के बारे में भवष्यिवाणयिों का अध्ययन करके, वह परमेश्वर के प्रति गहरे प्रेम और उन्हें आमने-सामने देखने की प्रबल इच्छा से भर गया था, भले ही वह यह नहीं जानता था कि वह जसि मसीहा के आने की इतने लोग प्रतीक्षा कर रहे थे, वह पहले ही पृथ्वी पर आ चुका था।

लेकनि फरि मसीह गलील के प्रदेश में आए और उन्होंने फलिपि को वहाँ मसीहा के लिए ऐसे प्रेम से जलते हुए पाया। यीशु ने फलिपि से कहा, *'मेरे पीछे चलो'* (यूहन्ना 1:43)।

फलिपि ने प्रभु का बुलावा सुनकर पूरे हृदय से वश्विास कयिा कि वही भवष्यिद्वक्ताओं के द्वारा परमेश्वर द्वारा प्रतज्ञि कयिा हुआ सच्चा मसीहा थे, और उनका अनुसरण कयिा। प्रभु के परम पवत्रि जीवन का अनुसरण करते हुए,

---

[7868] चौथी शताब्दी की शुरुआत में,

[7869] गलील का बेत्सैदा, कैफ़रनम और खोराज़नि शहरों के पास, गलील की झील के उत्तर-पश्चमिी तट पर (फ़लिस्तिीन के उत्तरी भाग में) स्थति था।

फलिपि ने उनका अनुकरण करने का प्रयास कयिा और उनसे दविय ज्ञान प्राप्त कयिा, जसिकी शक्ति से उन्होंने बाद में मूर्तपिूजक मूर्खता पर वजिय प्राप्त की। ऐसे खजाने को पाने की खुशी में, जसिके द्वारा सारी दुनयिा को छुटकारा मलिने वाला था, फलिपि यह नहीं चाहते थे कि केवल उन्हीं को उससे लाभ हो, बल्कि वे चाहते थे कि दूसरे भी उसी वरदान में भागीदार बनें। अपने मित्र नाथनेल से मलिने पर, उसने खुशी से उसकी घोषणा की: *'हमने उसी को पा लयिा है, जसिके बारे में मूसा ने व्यवस्था और भवषि्यद्वक्ताओं में लखिा था– यीशु, जोसेफ का पुत्र, नासरत से।'*

यह सुनकर नाथनाएल, यह वशि्वास न करते हुए कि मसीहा, इस्राएल का राजा, इतने छोटे से कस्बे और एक नम्र परविार से आ सकता है, ने कहा: *'क्या नासरत से कुछ भी अच्छा नकिल सकता है?'*

तब फलिपि ने बनिा एक शब्द कहे, बस उसे खुद जाकर देखने की सलाह दी।

उसने कहा, 'जाकर स्वयं देख लो।'

उन्हें एहसास हुआ कि जैसे ही नथनाएल यीशु को देखेगा और उनके उद्धार के वचन सुनेगा, वह तुरंत वशि्वास कर लेगा कि वही मसीहा हैं। और वास्तव में ऐसा ही हुआ। जब फलिपि उसके साथ यीशु के पास जा रहा था, तो प्रभु—जो हृदयों और मन को परखता है और मनुष्यों के गुप्त वचिारों और हृदयों को पढ़ता है—ने नाथनएल को अपनी ओर आते हुए देखा, उसे पहचान लयिा, और उसके बारे में कहा: *'यह एक सच्चा इस्राएली है, जसिमें कोई कपट नहीं है।'*

ये वचन सुनकर नाथनेल बहुत चकति हो गया और उस से कहा, *'तू मुझे कैसे जानता है?'*

प्रभु ने उससे कहा, *'फलिपि के तुम्हें बुलाने से पहले, जब तुम अंजीर के पेड़ के नीचे थे, तब मैंने तुम्हें देखा था।'*

अब, जब नथनाएल अंजीर के पेड़ के नीचे थे, तो वे दविय मसीहा पर ध्यान कर रहे थे, जनिके आगमन में परमेश्वर के वशि्वासयोग्य सेवकों का सारा आनंद और हर्ष नहिति था; और परमेश्वर ने उस समय उसे एक पश्चात्तापी हृदय और गरम आँसू प्रदान कयि, जन्हिें उसने अपनी प्रार्थना में जोड़ दयिा कि प्रभु उस वाचा को पूरा करें जो प्राचीन काल से पतिरों से की गई थी और संसार के उद्धारकर्ता को पृथ्वी पर भेजें। उस समय परमेश्वर की सर्वद्रष्टा आँख ने नाथनाएल को देखा, जो पश्चात्ताप की भावना में था; इसलयि प्रभु ने उससे कहा कि जब नाथनाएल अंजीर के पेड़ के नीचे था, तब उसने उसे देखा था।

ये शब्द नथनाएल को और भी अधकि वस्मिति कर गए। उसने याद कयिा कि अंजीर के पेड़ के नीचे बैठकर वह कसि बात पर वचिार कर रहा था, और कसि उत्साह से उसने परमेश्वर से मसीहा को भेजने की प्रार्थना की थी; वह जानता था कि वहाँ उसके साथ कोई भी ऐसा नहीं था जसिने उसे देखा हो, और परमेश्वर के सवि कोई भी उसके वचिारों को जान नहीं सकता था। इसलए, नथनाएल ने तुरंत वशि्वास कर लयिा कि यीशु वही मसीहा थे जन्हिें परमेश्वर ने मानव जाति के उद्धार के लए भेजने का वादा कयिा था, और यीशु मसीह में—जन्होंने उनके हृदय के रहस्यों को जान लयिा था—दविय स्वभाव को पहचाना; और इसलए उन्होंने कहा: *'रब्बी! तू परमेश्वर का पुत्र है, तू इस्राएल का राजा है'* (यूहन्ना 1:45-49)!

बाद में नथनाएल को फलिपि का कतिना आभारी होना चाहए, जसिने उसे पृथ्वी पर आए उद्धारकर्ता के बारे में बताया और उसे प्रतज्ञिात मसीहा की ओर आकर्षति कयिा! और संत फलिपि अपने हृदय में इस बात पर आनंदति हुए कि लोगों ने मानव स्वभाव की गहराइयों में छपिे दविय खजाने को खोज लयिा था, और वे अपने प्रभु के प्रति और भी अधकि प्रेम से भर गए। फरि भी, संत फलिपि ने अपने दविय शकि्षक में केवल उच्चतम मानवीय गुण देखे, लेकनि उन्होंने अभी तक उनकी दविय्ता को नहीं पहचाना था। और इसलए मसीह उसे सुधारना चाहते थे। एक दनि, जब प्रभु पाँच हज़ार लोगों के साथ तबिेरयिास की समुद्र के दूसरी ओर[7870] चल रहे थे, और अपने श्रोताओं की इतनी बड़ी भीड़ को चमत्कारकि तरीके से खलिाना चाहते थे, तो उन्होंने फलिपि से कहा: *'हम उन्हें खलिाने के लए रोटी कहाँ से खरीदें?'* (यूहन्ना 6:5-6)।

उन्होंने यह उसे परखने के लए कहा, क्योंकि वह जानते थे कि रोटी कहीं मलिने वाली नहीं थी; वह यह भी पहले से जानते थे कि फलिपि क्या उत्तर देगा। इसीलए उन्होंने फलिपि से यह प्रश्न पूछा, ताकि वह स्वयं को बेहतर ढंग से जान सके और अपने अवशि्वास पर लज्जति होकर, सही हो सके। और वास्तव में, फलिपि को परमेश्वर की सर्वशक्तमिानता याद नहीं आई और उसने यह नहीं कहा: *'हे प्रभु, आप सब कुछ कर सकते हैं; यह आपके लए उचति नहीं है कि आप इस*

[7870] तबिेरयिास की झील गलीलयिा की उसी झील का एक और नाम है, जसिका व्युत्पत्ति तबिेरयिास नाम से हुई है – जो गलीलयिा का एक शहर है और गलीलयिा की झील के दक्षणि-पूर्वी तट पर स्थति है।

बारे में कसिी से पूछें: बस चाहें, और सब तुरंत तृप्त हो जाएँगे: "आप उन्हें देते हैं, और वे ग्रहण करते हैं; आप अपना हाथ खोलते हैं, और वे अच्छी-अच्छी वस्तुओं से तृप्त हो जाते हैं" (भजन संहति 103:28)।

फलिपि ने यह नहीं कहा, बल्कि, अपने प्रभु को परमेश्वर के बजाय एक मनुष्य के रूप में सोचकर, उसने कहा: *'दो सौ डेनारी[871] की रोटी भी उनके लिए पर्याप्त नहीं होगी, ताकि उनमें से प्रत्येक को थोड़ी-सी भी मिल सके'* (यूहन्ना 6:7)।

तब, अन्य चेलों के साथ मिलकर, उसने कहा: *'भीड़ को भेज दो ताकि वे आसपास के गांवों में जाकर अपने लिए कुछ भोजन खरीद लें'* (मरकुस 6:36)।

जब प्रभु ने पाँच हज़ार लोगों के लिए पाँच रोटियाँ और दो मछलियाँ तोड़ीं (लूका 9:16), तो फलिपि ने देखा कि प्रभु के हाथ से, एक अक्षय कोठरी की तरह, सभी को पर्याप्त भोजन मिला, जब तक कि सारी भीड़ तृप्त नहीं हो गई। तब प्रेरित अपने अविश्वास पर बहुत लज्जित हुआ और, अपने विश्वास में बल पाकर, अन्य लोगों के साथ मिलकर यीशु मसीह में परमेश्वर की महिमा की।

बाद में, फलिपि को प्रभु ने बारह चुने हुए प्रेरितों में गिनती में शामिल किया, उनसे अनुग्रह प्राप्त किया, और उन्हें अपने साथ घनिष्ठ संगति का वरदान मिला। एक बार, एक पर्व के दौरान, कुछ हेलेनिस्ट यरूशलेम में इकट्ठा हुए लेकिन, अविश्वासी अफ्रीकी-मिस्रियों (पैगन) होने के कारण, वे यीशु के पास नहीं जा सके; इसलिए, वे फलिपि के पास आकर, उससे विनती करने लगे, और कहने लगे: *'प्रभु, हम यीशु को देखना चाहते हैं!'*

उसने, अपनी ओर से, पहले इस बारे में अन्द्रियास को बताया और, उसके साथ मिलकर, हेलेनिस्टों की इच्छा के बारे में यीशु को बताने का साहस किया, इस बात पर आनन्दित होते हुए कि अन्यजाति भी अपने प्रभु और शिक्षक को देखने और सुनने की खोज में थे। तब उन्होंने यीशु से गैर-यहूदियों के विषय में एक अद्भुत शिक्षा और भविष्यवाणी सुनी, जो उस समय नहीं, बल्कि उनकी मृत्यु के बाद उन पर विश्वास करने वाले थे / *'यदि,'* उन्होंने कहा, *'गेहूँ का एक दाना पृथ्वी में गिरकर मर नहीं जाता, तो वह अकेला ही रहता है; परन्तु यदि वह मर जाता है, तो बहुत फल देता है'* (यूहन्ना 12:24)।

इससे, मसीह कुछ इस प्रकार कह रहे थे: 'जब मैं पृथ्वी पर जीवित हूँ, तो केवल इस्राएल के घर में से कुछ ही लोग मुझ पर विश्वास करते हैं; परन्तु यदि मैं मर जाऊँ, तो न केवल इस्राएल का घर, बल्कि बहुत से अन्यजाति भी मुझ पर विश्वास करेंगे।'

एक अन्य अवसर पर, अंतिम भोज के बाद, फलिपि ने प्रभु से दिव्यता के महान रहस्य के बारे में पूछने का साहस किया, जब उसने उनसे पिता को उन्हें प्रकट करने के लिए प्रार्थना की, यह कहते हुए: *'प्रभु, हमें पिता को दिखा दो, और हमारे लिए इतना ही काफी होगा!'* (यूहन्ना 14:8)।

यह प्रश्न पूछकर, उसने मसीह की कलीसिया को बहुत लाभ पहुँचाया, क्योंकि इसी से हमने पुत्र को पिता के समतत्त्व के रूप में पहचानना सीखा है और इस दैवीय सत्य को अस्वीकार करने वाले विधर्मियों को मौन कर दिया है। प्रभु ने इसके उत्तर में एक कोमल फटकार लगाई: *'मैं इतने समय से तुम्हारे साथ हूँ, और फिर भी तुम मुझे नहीं जानते, फलिपि! जिसने मुझे देखा है, उसने पिता को देखा है; तो फिर तुम कैसे कह सकते हो, "हमें पिता को दिखाओ"? क्या तुम विश्वास नहीं करते कि मैं पिता में हूँ, और पिता मुझ में हैं? जो वचन मैं तुम से कहता हूँ, वे मैं अपने आप से नहीं कहता; परन्तु पिता, जो मुझ में रहता है, वही अपने काम करता है। मुझ पर विश्वास करो कि मैं पिता में हूँ, और पिता मुझ में है'* (यूहन्ना 14:9-11)।

प्रभु के इस उत्तर ने संत फलिपि को, और उनके साथ संपूर्ण कैथोलिक और प्रेरितिक चर्च को, पुत्र की दिव्यता की पिता के साथ समानता में सही विश्वास करना सिखाया, और यह एरियस की ईश्वरनिंदा का खंडन करता है, जिसने दावा किया था कि परमेश्वर का पुत्र एक सृष्टि है, न कि सृष्टिकर्ता।

ईश्वर के पुत्र के स्वैच्छिक दुःख-क्लेश और पुनरुत्थान के बाद, संत फलिपि ने अन्य प्रेरितों के साथ मिलकर अपने प्रभु को उनके अमर और महिमामय शरीर में पहले से ही देखा, उनसे शांति और आशीर्वाद प्राप्त किया, और उनके स्वर्गारोहण के भी साक्षी बने।

इसके बाद, उन्हें पवित्र आत्मा की कृपा प्राप्त हुई और वे मूर्तिपूजकों के बीच मसीह के प्रचारक बने, क्योंकि उन्हें एशिया माइनर और सीरिया में जाकर प्रचार करने का कार्य मिला था। शुरुआत में, उन्होंने गलील में प्रचार किया। वहाँ, एक दिन, एक महिला उससे मिली, जो अपनी बाहों में अपने मृत शिशु को लिए हुए थी और अविराम रो रही थी। उसे

---

[871] डेनारियस एक प्राचीन यहूदी सिक्का था जिसका मूल्य लगभग 21.5 कोपेक था। इसलिए 200 डेनारियस लगभग 43 रूबल के बराबर थे।

देखकर, मसीह के प्रेरति को उस पर दया आई और, मृत शिशु पर अपना हाथ फैलाते हुए, कहा: 'उठो! मसीह, जिसका मैं प्रचार करता हूँ, ऐसा ही आज्ञा देते हैं।'

और तुरंत ही शिशु जीवित हो उठा। अपनी पुनर्जीवित संतान को जीवित और कुशल देखकर, माँ आनंद से प्रेरित के पैरों पर गिर पड़ी, उसने अपने बेटे के पुनरुत्थान के लिए धन्यवाद दिया और बपतिस्मा के लिए कहा, क्योंकि वह उस प्रभु मसीह में विश्वास करने लगी थी, जिसका वह प्रचार करते थे। प्रेरित ने माँ और उसके बेटे को बपतिस्मा देने के बाद, मूर्तिपूजक देशों की ओर प्रस्थान किया। ग्रीस में सुसमाचार का प्रचार करते हुए, उन्होंने मसीह की शक्ति से कई चमत्कार किए, बीमारों को चंगा किया और एक मृतक को जीवित कर दिया। इस चमत्कार ने वहाँ रहने वाले यहूदियों को चकित कर दिया, और उन्होंने यरूशलेम में महायाजकों और यहूदी अगुवों को यह खबर भेजी कि फिलिप नाम का एक अज्ञात व्यक्ति उनके पास आया है, जो यीशु के नाम का प्रचार कर रहा है, जिसके द्वारा वह दुष्ट आत्माओं को निकालता है और हर प्रकार की बीमारियों को चंगा करता है, और उसने उसी यीशु के नाम से एक मरे हुए को भी जिला उठाया है, और यह कि बहुत से लोग पहले ही मसीह पर विश्वास कर चुके हैं। कुछ ही समय बाद, यरूशलेम से एक महायाजक ग्रीस पहुँचा, जिसके साथ लिपियों का एक दल था, जो फिलिप के प्रति क्रोध और कटुता से भरा हुआ था। अपने याजकीय वस्त्रों को धारण करके, वह यहूदियों और अन्यजातियों, दोनों की एक बड़ी भीड़ की उपस्थिति में, गर्व और अहंकार से न्यायाधीश की कुर्सी पर बैठ गया। प्रेरित फिलिप को भी वहाँ लाया गया और सभा के बीच में खड़ा किया गया। उस पर एक धमकी भरी नज़र डालते हुए, महायाजक ने क्रोध से कहना शुरू किया: 'क्या यह तुम्हारे लिए पर्याप्त नहीं था कि तुम यहूदियों, गलीलियों और सामरी लोगों के पास जाकर साधारण और अनपढ़ लोगों को धोखा देते? लेकिन तुम यहाँ तक बुद्धिमान यूनानियों के पास भी उसी विधर्म को फैलाने आए हो जो तुमने मूसा के कानून के विरोधी, यीशु से सीखा है, जिसके कारण उसे दोषी ठहराया गया, सूली पर चढ़ाया गया और एक शर्मनाक मौत मारी, और उसे केवल उस समय चल रहे पासोवर पर्व के कारण ही दफनाया गया, जब बिशप ने ये शब्द कहे, तो भीड़ ने फिलिप से चिल्लाकर कहा, 'फिलिप, इस पर तुम्हारा क्या कहना है?'

जब महायाजक ने ये बातें कहीं, तो भीड़ ने फिलिप से पुकारा: 'फिलिप, इस पर तेरा क्या उत्तर है?'

और लोगों में बड़ा हंगामा मच गया: कुछ लोग ज़ोर देकर कहने लगे कि फिलिप को तुरंत मार डाला जाए, जबकि अन्य मांग कर रहे थे कि उसे फांसी के लिए यरूशलेम ले जाया जाए। तब पवित्र प्रेरित ने अपना मुँह खोला और महायाजक से कहा: 'तुम व्यर्थ ही व्यर्थता से प्रेम करते हो और झूठ बोलते हो! तुम्हारा हृदय कठोर क्यों बना रहता है, और तुम सत्य का अंगीकार क्यों नहीं करते? क्या तुम ही नहीं थे जिन्होंने कब्र को सील किया और उस पर पहरा लगाया, और जब हमारे प्रभु कब्र की सील तोड़े बिना मरे हुओं में से जी उठे, तो क्या तुम ही नहीं थे जिन्होंने सैनिकों को सोना दिया ताकि वे झूठ बोलें, यह दावा करते हुए कि जब वे सो रहे थे, तो उनके शिष्यों ने उनके मृत शरीर को चुरा लिया था? तो फिर, तुम्हें सच को तोड़ने-मरोड़ने में शर्म क्यों नहीं आती? कब्र की मुहरें स्वयं न्याय के दिन तुम्हारे झूठ के स्पष्ट सबूत के रूप में, मसीह के सच्चे पुनरुत्थान की गवाह के रूप में काम करेंगी।'

प्रेरित के ये वचन सुनकर, महायाजक और भी अधिक क्रोधित हो गया और, पागलपन भरे क्रोध में, उस पर झपट पड़ा, प्रेरित को खुद पकड़कर मारने का इरादा रखता था; लेकिन उसी क्षण वह अंधा हो गया और उसका चेहरा पूरी तरह से काला पड़ गया। वहाँ उपस्थित लोगों ने, जो कुछ हुआ था उसे देखकर, इसे जादू-टोने का परिणाम माना और फिलिप पर टूट पड़े, उसे एक जादूगर के रूप में नष्ट करने की कोशिश की; लेकिन जो भी उसे पकड़ने की कोशिश की, उन्हें महापुजारी के समान ही दंड मिला। उसी क्षण, पृथ्वी जोर से काँप उठी, और सभी भय से काँप उठे और मसीह की महान शक्ति को पहचान लिया। प्रेरित फिलिप, उनकी आध्यात्मिक और शारीरिक अंधता को देखकर, उनके लिए रोए और परमेश्वर से प्रार्थना करके उनसे उन्हें ज्ञान देने के लिए विनती की। और देखो, संत की प्रार्थना के द्वारा, उन सभी के लिए जो पीड़ित हुए थे, स्वर्ग से चंगाई भेजी गई। इस चमत्कार से कई लोग मसीह की ओर मुड़े और उन पर विश्वास किया। लेकिन बिशप, जो अभी भी द्वेष से अंधा था, उस पर आई सजा के बाद न तो सुधरने को तैयार हुआ और न ही सत्य को स्वीकार किया, बल्कि एक बार फिर हमारे प्रभु यीशु मसीह के विरुद्ध कई अपमानजनक बातें कहने लगा। तब उस पर एक और

भी बड़ी सजा आई। अचानक, पृथ्वी ने अपना मुँह खोल दिया और उसे निगल लिया, ठीक वैसे ही जैसे उसने एक बार दाफान और अविरोन को निगला था[7872] ।

बिशप की मृत्यु के बाद, संत फिलिप ने वहाँ कई लोगों का बपतिस्मा दिया और नार्कसिस्स नामक एक सम्माननीय और योग्य पुरुष को उनका बिशप नियुक्त किया, जबकि वे स्वयं पर्शिया के लिए प्रस्थान कर गए। अपने यात्रा के दौरान, उन्होंने अपने कार्यों में सहायता के लिए ईश्वर से प्रार्थना की। और जैसे ही वे प्रार्थना करने के लिए घुटने टेकने लगे, स्वर्ग से सुनहरे पंखों वाला एक गरुड़ का चित्र प्रकट हुआ, जिसके पंख सूली पर चढ़ाए गए मसीह की तरह फैले हुए थे। इस दृष्टि से प्रोत्साहित होकर, संत फिलिप एक बार फिर उपदेश देने के लिए निकल पड़े और अरब और कैंडेस के शहरों में यात्रा करने के बाद, एक जहाज पर सवार होकर समुद्र पार करके सीरियाई शहर अशदोद गए[7873] । रात के दौरान, समुद्र में एक भयंकर तूफान आ गया, और सभी ने अपने जीवन की आशा छोड़ दी थी। तब पवित्र प्रेरित प्रार्थना करने के लिए उठे, और तुरंत आकाश में प्रकाशमान क्रूस का एक चिह्न दिखाई दिया, जिसने रात के अंधकार को रोशन कर दिया, और समुद्र अचानक शांत हो गया, और उसकी लहरें थम गईं। अज़ोटस के तट पर पहुँचने पर, फिलिप जहाज से उतर गए और उनका स्वागत निकोक्लाइड्स नामक व्यक्ति के घर में हुआ, जिसकी एक बेटी चैरिटीना थी, जिसे एक आँख की बीमारी थी। निकोक्लाइड्स के घर में प्रवेश करने पर, प्रेरित ने वहाँ मौजूद लोगों को परमेश्वर का वचन प्रचार करना शुरू किया, और सभी ने खुशी से उनकी बात सुनी। खारितिनि भी सुनने वालों में से एक थी; वह प्रेरित की शिक्षा से इतनी आध्यात्मिक आनंद से भर गई कि वह अपनी बीमारी को भी भूल गई। ईश्वर के वचन के प्रति उसकी ऐसी लगन देखकर, उन्होंने उसे यीशु मसीह के नाम का आह्वान करने और अपनी बीमार आँख पर हाथ रखने का निर्देश दिया। जैसे ही चैरिटीना ने ऐसा किया, उसी क्षण उसकी आँख ठीक हो गई, और निकोक्लाइड्स का पूरा घर मसीह पर विश्वास करने लगा और पवित्र बपतिस्मा ग्रहण किया।

अज़ोटस से, प्रेरित फिलिप सीरिया के हिएरापोलिस के लिए रवाना हुए[7874] , जहाँ मसीह का प्रचार करते समय उन्होंने लोगों में बहुत गुस्सा भड़काया, जिन्होंने यहाँ तक कि उन्हें पत्थर मारने की धमकी दी। लेकिन इर नाम के एक प्रभावशाली नागरिक के हस्तक्षेप ने उन्हें भीड़ के गुस्से से बचा लिया।

'नागरिकों!' उसने भीड़ से कहा। 'मेरी सलाह मानो: इस अजनबी को तब तक कोई नुकसान न पहुँचाओ जब तक हम यह पता नहीं लगा लेते कि उसका उपदेश सत्य है या नहीं; और यदि ऐसा नहीं साबित हुआ, तो हम उसे मार डालेंगे।'

लोग इर का विरोध करने की हिम्मत नहीं कर सके, जो तब फिलिप को अपने घर ले गए। वहाँ, प्रेरित ने अपना नियमित उपदेश जारी रखा और इर, उनके पूरे परिवार और उनके पड़ोसियों को पवित्र धर्म में परिवर्तित कर दिया, उन्हें पवित्र बपतिस्मा के संस्कार के माध्यम से ज्ञान प्रदान किया। नागरिकों ने, यह जानकर कि इरा का बपतिस्मा हो गया था, रात में इकट्ठा हुए और उसके घर को घेर लिया, इस इरादे से कि वे सोते समय इरा को प्रेरित और उसके पूरे घर-परिवार सहित जिंदा जला दें। उनकी साजिश का पता चलने पर, प्रेरित ने निडर होकर उनके सामने खुद को प्रस्तुत किया; जबकि वे, जंगली जानवरों की तरह, दाँत पीसते हुए, उस पर झपट पड़े और उसे अपनी परिषद के सामने ले गए। परिषद के प्रमुख, जिसका नाम अरिस्तार्कोस था, ने प्रेरित को देखकर अपना हाथ बढ़ाया और उसके बाल पकड़ लिए; लेकिन उसी क्षण उसका हाथ सूख गया, और वह अपनी दृष्टि और सुनने की शक्ति खो बैठा। तब लोगों के हृदय में एक परिवर्तन आया: इस चमत्कार को देखकर उनका क्रोध विस्मय में बदल गया, और लोगों ने प्रेरित से अपने नगर के राज्यपाल, अरिस्तार्खुस को चंगा करने की विनती करनी शुरू कर दी। फिलिप ने, तथापि, कहा, 'जब तक वह उस परमेश्वर पर विश्वास नहीं करता, जिसकी मैं प्रचार करता हूँ, तब तक वह चंगा नहीं होगा।'

उसी समय एक शव-यात्रा गुज़र रही थी, और लोगों ने प्रेरित का मज़ाक उड़ाने की इच्छा से कहा, 'यदि तुम इस मरे हुए को जिला उठाओ, तो हम अरिस्तार्खुस और हम तुम्हारे परमेश्वर पर विश्वास करेंगे।'

[7872] दाफ़ान और अबीराम, रूबेनी और एलियाब के पुत्र, गद्दार थे जिन्होंने मूसा के खिलाफ साज़िश रची; इसके लिए, ईश्वर ने उन्हें एक भयानक सज़ा दी: ज़मीन फट पड़ी और उन्हें निगल गई। (गिनती 16:1–50)।

[7873] अज़ोट – हिब्रू भाषा में: *एक किलेबंदी स्थान, एक दुर्ग* – प्राचीन काल में भूमध्य सागर के पूर्वी तट पर स्थित एक समृद्ध और किलेबंदी वाला फ़िलिस्तीनी शहर था। मक्काबीय काल के दौरान इसे जलाकर नष्ट कर दिया गया, फिर से बनाया गया, लेकिन यह कभी भी अपनी पूर्व की शक्ति को पुनःप्राप्त नहीं कर सका। आज, इस स्थल पर एज़ुड नामक एक छोटा सा गाँव बसा है।

[7874] हिएरापोलिस – कई प्राचीन शहरों का नाम। – सीरिया में हिएरापोलिस, जिसे बाद में यूनानियों द्वारा बाम्बिका के नाम से जाना गया; कॉन्स्टेंटाइन द ग्रेट के समय से, यह यूफ्रेटिस प्रांत की राजधानी थी; आज, वर्तमान मम्बिज के पास इसके केवल खंडहर ही बचे हैं।

प्रेरति ने अपनी आँखें आकाश की ओर उठाईं, लंबी प्रार्थना की, और फरि मृतक की ओर मुड़कर कोमल स्वर में कहा, 'थेओफलिस!' और उसी घड़ी वह मरा हुआ आदमी अपनी खाट से उठ खड़ा हुआ, बैठ गया और अपनी आँखें खोल दीं। तब फलिपि ने उससे दूसरी बार कहा, 'मसीह तुझे आज्ञा देता है: उठ और हमसे बात कर!'

मृतक, अपने बस्तिर से उठकर, प्रेरति के पैरों पर गरि पड़ा, और कहने लगा: 'मैं आपको धन्यवाद देता हूँ, हे परमेश्वर के पवत्रि सेवक, कि आपने मुझे इस घड़ी एक बड़े बुराई से बचाया: दो काले और बदबूदार इथियोपियाई मुझे खींचकर ले जा रहे थे, और यदि आपने उन्हें रोककर मुझे उनसे न छुड़ाया होता, तो मैं अंधेरी खाई में गरि गया होता।'

तब इस शानदार चमत्कार को देखने वाले सभी लोगों ने सर्वसम्मति से फलिपि द्वारा प्रचारति एकमात्र सच्चे परमेश्वर की महमिा की। प्रेरति ने भीड़ को कुछ देर के लिए चुप रहने का इशारा किया, और इरा को अरस्तिार्कस के पीड़ति अंगों पर अपने हाथ से क्रूस का चह्नि बनाने का नरि्देश दिया। जैसे ही इरा ने यह किया, अरस्तिार्खुस का मुरझाया हुआ हाथ तुरंत ठीक हो गया; वह देखने और सुनने लगा, और पूरी तरह से स्वस्थ हो गया। संत फलिपि द्वारा मसीह की शक्ति से कए गए इन चमत्कारों ने हएिरापोलसि के नविासयिों को मसीह की ओर मोड़ दिया, और वे सभी अपनी मूर्तयिों को तोड़ने के लिए दौड़ पड़े। सबसे पहले थियोफलिस के पिता ने विश्वास किया, जिन्होंने बारह सोने की मूर्तयिों को तोड़ दिया और सोना गरीबों में बाँट दिया। प्रेरति ने उन सभी का बपतस्मिा दिया और इरा को उनका बशिप नयिुक्त किया। इस प्रकार हएिरापोलसि में चर्च की स्थापना करने और पवत्रि विश्वास में नव-प्रबुद्ध लोगों को मजबूत करने के बाद, संत फलिपि अन्य देशों में प्रचार करने के लिए नकिल पड़े। सीरिया और एशिया के उच्च प्रदेशों से होते हुए, वे लडिया और मसिया[7875] पहुँचे, और जब वे इन क्षेत्रों में यात्रा कर रहे थे, तो उन्होंने अविश्वासी मूर्तपिूजकों को सच्चे ईश्वर के प्रति परविर्तति किया। वहाँ प्रेरति सेंट बार्थोलोम्यू भी उनसे जुड़ गए, जो उस समय पड़ोसी शहरों में प्रचार कर रहे थे और फलिपि की सहायता के लिए ईश्वर द्वारा भेजे गए थे। फलिपि की बहन, कन्या मरयिमने भी उनका अनुसरण किया, और वे सभी मलिकर मानव जाति के उद्धार के कार्य में लग गए। जब वे लडिया और मसिया से होकर परमेश्वर का वचन प्रचार करते हुए यात्रा कर रहे थे, तो उन्होंने अविश्वासयिों के हाथों कई परीक्षाएँ, पटिाई और कष्ट सहे; उन्हें कैद किया गया और पत्थर मारे गए, लेकनि, सभी उत्पीड़नों के बावजूद, परमेश्वर की कृपा से वे मसीह के विश्वास को फैलाने के लिए आगे आने वाले कार्यों हेतु जीवति रहे। लडिया के एक गाँव में, वे मसीह के प्रयि शष्यि संत जॉन द थियोलोजयिन से मलि, और उनके साथ मलिकर फ्रीजया की भूमि के लिए रवाना हो गए। हायरापोलसि[7876] शहर में प्रवेश करने पर, उन्होंने वहाँ मसीह का उपदेश दिया। यह शहर मूर्तयिों से भरा हुआ था, जनिकी इसके सभी नविासी पूजा करते थे; झूठे देवताओं में एक वषिैला साँप भी था, जसिके लिए एक विशेष मंदरि बनाया गया था, जहाँ उसे भोजन लाया जाता था और अनेक प्रकार के बलदिान चढ़ाए जाते थे; ये पागल लोग अन्य सरीसृपों और वषिैले साँपों की भी पूजा करते थे। संत फलिपि ने, सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण, अपनी बहन के साथ मलिकर, उस वषिैले साँप के खलिाफ प्रार्थना से खुद को लैस किया, जसिमें उन्हें उस समय उनके साथ मौजूद संत जॉन द थियोलोजयिन की सहायता मली। प्रार्थना के माध्यम से, एक साथ—जैसे भाले से—उन्होंने उस इचडिना को परास्त किया और मसीह की शक्ति से उसे मार डाला। इसके बाद, जॉन द थियोलोजयिन उनसे अलग हो गए, और उन्हें हएिरापोलसि में परमेश्वर का वचन प्रचार करने के लिए छोड़ गए, जबकि वे स्वयं अन्य शहरों में गए, और पवत्रि सुसमाचार को दूर-दूर तक फैलाया। संत फलिपि, बार्थोलोम्यू और मरयिमना के साथ, हेरापोलसि में रहे, और मूर्तपिूजा के अंधकार को दूर करने के लिए पूरी लगन से प्रयास करते रहे, ताकि सत्य के ज्ञान का प्रकाश उन पर चमक सके जो मार्ग से भटक गए थे, जसि उद्देश्य के लिए उन्होंने दनि-रात परश्रिम किया, अविश्वासयिों को परमेश्वर का वचन सखिाया, अज्ञानी लोगों को उपदेश दिया और खोए हुए लोगों को सच्चे मार्ग पर ले गए। उस नगर में स्टैक्स नाम का एक व्यक्ति रहता था, जो चालीस वर्षों से अंधा था। पवत्रि प्रेरतिों ने प्रार्थना की शक्ति से उसकी शारीरकि आँखें खोल दीं, और मसीह के उपदेश द्वारा उन्होंने उसकी आत्मा की अंधापन दूर कर दी। स्टैक्स को बपतस्मिा देने के बाद, संत उसके घर पर ठहरे। और पूरे शहर में यह खबर फैल गई कि अंधा स्टैक्स अपनी

[7875] लडिया और मसिया – एशिया माइनर के उत्तर-पश्चमिी क्षेत्र।

[7876] फ्रायजया में स्थति हएिरापोलसि, फ्रायजया के दक्षणि भाग (एशिया माइनर के मध्य भाग में), लाइकस और मेन्डर नदयिों के बीच स्थति था; प्राचीन काल में यह एक काफी महत्वपूर्ण शहर था, जो विशेष रूप से अपनी संगमरमर की खदानों और गर्म झरनों के लिए प्रसद्धि था। अब इसे तुर्की नाम पाम्बुक-कालेसी ('कपास का शहर') से जाना जाता है, क्योंकि पहाड़ों से बहकर आने वाली धाराओं के अवसादन से बने सफेद दखिने वाले पत्थर, टीले, चट्टानें, मैदान, नदी के कनिारे और नहरें कपास के गट्ठों से मलिते-जुलते हैं। आजकल, यहाँ केवल खंडहर ही बचे हैं, और यह जगह कोढ़ियों के लिए एक आश्रय के रूप में काम करती है।

दृष्टि वापस पा चुका था। लोगों की भीड़ उसके घर पर इकट्ठा होने लगी। पवित्र प्रेरितों ने उन सभी को, जो उनके पास आए, यीशु मसीह में विश्वास का उपदेश दिया। कई बीमार लोगों को भी वहाँ लाया गया, और पवित्र प्रेरितों ने प्रार्थना द्वारा उन सभी को चंगा किया और दुष्टात्माओं को निकाल दिया, जिससे बहुत से लोग मसीह पर विश्वास करने लगे और बपतिस्मा लिया।

शहर के मजिस्ट्रेट, निकानोर नामक व्यक्ति की पत्नी को साँप ने काट लिया था और वह मरणासन्न होकर बीमार पड़ी थी। जब उसने सुना कि पवित्र प्रेरित स्टैचियस के घर में ठहरे हुए हैं, और वे एक ही शब्द से हर तरह की बीमारियों को ठीक कर देते हैं, तो उसने अपने पति की अनुपस्थिति में अपने नौकरों को आदेश दिया कि वे उसे उनके पास ले जाएँ और उसे दोहरा चंगापन मिला: सांप के डंक से शारीरिक चंगाई और शैतानी भ्रम से आध्यात्मिक चंगाई; और, पवित्र प्रेरितों द्वारा उपदेश पाकर, वह मसीह में विश्वास करने लगी। जब शहर का राज्यपाल घर लौटा, तो उसके नौकरों ने उसे बताया कि स्टैचियस के घर में रहने वाले कुछ विदेशियों ने उसकी पत्नी को मसीह में विश्वास करना सिखाया था। भयंकर क्रोध से भरकर, निकानोर ने प्रेरितों को तुरंत गिरफ्तार करने और स्टैचियस के घर को जला देने का आदेश दिया, जिसे पूरा किया गया। एक बड़ी भीड़ इकट्ठा हो गई, और पवित्र प्रेरित फिलिप और बरथोलोमियुस, पवित्र कन्या मारियमने के साथ, शहर में घसीटे गए, जबकि उन्हें पीटा और अपमानित किया जा रहा था; अंत में, उन्हें जेल में डाल दिया गया। इसके बाद, नगरपालक ने मसीह के प्रचारकों का न्याय करने के लिए न्यायाधीश की कुर्सी पर बैठ गया, और मूर्तियों के सभी पुरोहित और नाश हुए सांप के पुरोहित उसके चारों ओर इकट्ठा हो गए, उन्होंने पवित्र प्रेरितों के खिलाफ शिकायतें करते हुए कहा: 'पालक! हमारे देवताओं पर हुए अपमान का बदला लो, क्योंकि जब से ये परदेशी आए हैं, हमारे शहर में हमारे महान देवताओं की वेदियाँ वीरान हो गई हैं, और लोग उन्हें अपनी पारंपरिक बलिदानें चढ़ाना भूल गए हैं; हमारी प्रसिद्ध देवी, एकडिना, मर गई है, और पूरा शहर अराजकता से भर गया है। इन जादूगरों को मार डालो।"

तब नगरपाल ने यह सोचकर कि उनमें कोई जादू-टोना है, संत फिलिप के कपड़े उतारने का आदेश दिया; लेकिन जब उन्होंने उन्हें नंगा कर दिया, तो उन्हें कुछ भी नहीं मिला। उन्होंने संत बरथोलोम्यू के साथ भी ऐसा ही किया, और उनके कपड़ों में भी उन्हें कुछ नहीं मिला। लेकिन जब वे उसी इरादे से मरियम के पास पहुँचे, कि उसे नग्न कर उसके कुँवारी शरीर को उजागर करें, तो वह अचानक उनकी आँखों के सामने एक अग्नि के लौ में बदल गई, और दुष्ट पुरुष भय से उससे भाग गए। पवित्र प्रेरितों को राज्यपाल द्वारा सूली पर चढ़ाने की सजा़ दी गई। सबसे पहले संत फिलिप को यह सजा़ दी गई। उन्होंने उसके पैरों में छेद करके उनमें रस्सियाँ डाल दीं, और उसे एचडिना के मंदिर के द्वार के सामने उल्टा सूली पर चढ़ा दिया, और साथ ही उस पर पत्थर भी बरसाए। फिर उन्होंने संत बार्थोलोम्यू को मंदिर की दीवार पर सूली पर चढ़ा दिया। और अचानक एक बड़ा भूकंप आ गया; पृथ्वी फट पड़ी और नगरपालक को सभी पुरोहितों और अविश्वासियों की भीड़ के साथ निगल गई। जो भी जीवित बचे थे—विश्वासी और विधर्मी दोनों—वे बड़े भय से ग्रस्त हो गए और रोते हुए पवित्र प्रेरितों से दया करने तथा अपने एकमात्र सच्चे ईश्वर से प्रार्थना करने का आग्रह करने लगे कि पृथ्वी उन्हें भी उसी प्रकार न निगल ले जैसे उसने दूसरों को निगल लिया था। वे जल्दी से सूली पर चढ़ाए गए प्रेरितों को क्रूस से उतारने लगे। संत बार्थोलोम्यू को बहुत ऊँचा नहीं लटकाया गया था, और उन्हें जल्द ही उतार लिया गया। लेकिन फिलिप को क्रूस से इतनी जल्दी नहीं उतारा जा सका, क्योंकि उन्हें बहुत ऊँचा लटकाया गया था और, सबसे बढ़कर, क्योंकि यह ईश्वर की विशेष इच्छा थी, ताकि उनका प्रेरित, इन कष्टों और क्रूस पर अपनी मृत्यु के माध्यम से, पृथ्वी से स्वर्ग में चला जाए, जिसकी ओर उनके पैर उनके पूरे जीवन में मुड़े हुए थे। इस प्रकार लटके हुए, संत फिलिप ने अपने शत्रुओं के लिए ईश्वर से प्रार्थना की, कि प्रभु उनके पापों को क्षमा करें और सत्य के ज्ञान के लिए उनके मन को प्रबुद्ध करें। प्रभु ने उनकी प्रार्थना सुनी और तुरंत पृथ्वी को आज्ञा दी कि वह उन पीड़ितों को बाहर निकाल दे जिन्हें उसने जीवित निगल लिया था, सिवाय शहर के राज्यपाल और साँप के पुजारियों के। तब, एक स्वर में, उन्होंने सभी ने मसीह की शक्ति की स्वीकारोक्ति की और उसकी महिमा की, तथा बपतिस्मा लेने की अपनी इच्छा व्यक्त की। जब उन्होंने संत फिलिप को सूली से उतारने का प्रयास किया, तो उन्होंने देखा कि वह पहले ही अपना पवित्र आत्मा ईश्वर को अर्पित कर चुके थे, और उन्होंने उन्हें मृत पाया। उनकी अपनी बहन, संत मरियमना, जो पूरे समय अपने भाई फिलिप के दुखों और मृत्यु को देख रही थी, ने जब उसके शरीर को पेड़ से उतारा गया तो उसे प्यार से गले लगाया और चूमा, और इस बात पर प्रसन्न हुई कि फिलिप मसीह के लिए पीड़ा सहने के योग्य समझा गया था। संत बार्थोलोम्यू ने प्रभु में विश्वास करने आए सभी लोगों का बपतिस्मा दिया और स्टैचियस को उनका बिशप नियुक्त किया। नव-धर्मपरिवर्तितों ने पवित्र प्रेरित फिलिप के शरीर को सम्मान के साथ दफनाया। जिस स्थान पर पवित्र प्रेरित का रक्त बहाया गया था, वहाँ तीन दिनों के भीतर एक अंगूर

की बेल उग आई, यह इस बात का संकेत था कि संत फलिपि, मसीह के नाम पर बहाए गए अपने रक्त के लिए, अपने प्रभु के साथ उनके राज्य में शाश्वत आनंद का अनुभव करते हैं[7877] ।

जहाँ तक संत बार्थोलोम्यू का सवाल है, धन्य कुँवारी मारिअम्ना के साथ, संत फलिपि के दफन के बाद, वह कई दिनों तक हिएरापोलिस में रहे और मसीह के विश्वास में नव-स्थापित चर्च को मजबूत करने के बाद, वे वहाँ से महान आर्मेनिया के अल्बान शहर के लिए रवाना हुए[7878] , जहाँ उन्हें सूली पर चढ़ाया गया था। संत मारिअम्ना लिकाओनिया[7879] के लिए रवाना हुईं और वहाँ, कई लोगों को पवित्र आस्था में परिवर्तित करने के बाद, उनका शांतिपूर्वक निधन हो गया। इन सब के लिए, महिमा हो हमारे परमेश्वर की, अब और हमेशा, और युगों-युगों तक। आमीन।

ट्रोपारियन, स्वर 3:

ब्रह्मांड सुशोभित है, इथियोपिया हर्षित है, क्योंकि आपकी महिमा से मुकुटित, यह उज्ज्वल रूप से प्रकाशित है और आपकी स्मृति का उत्सव मनाता है, हे ईश्वर-वाहक फलिपि: क्योंकि आपने सभी को मसीह में विश्वास करना सिखाया, और सुसमाचार के अनुसार अपना मार्ग यथोचित रूप से पूरा किया। इसलिए इथियोपियाई हाथ निडर होकर परमेश्वर तक पहुँचता है; प्रार्थना करें कि वह हमें अपनी महान दया प्रदान करे।

कॉन्टाकियन, स्वर 8:

आपकी शिष्य और मित्र, तथा आपके प्रति समर्पित फलिपि, जो ईश्वर-वक्ता थे, ने आपको ब्रह्मांड के ईश्वर के रूप में प्रचारित किया: उनकी प्रार्थनाओं के माध्यम से, हे परम दयालु ईश्वर माता, अपनी चर्च और सभी नगरों को अधर्मी शत्रुओं से रक्षा करें।

थेस्सालोनिकी के आर्चबिशप संत ग्रेगरी पलामास का जीवन

14 नवंबर को स्मरणोत्सव

संत ग्रेगरी पलामास[7880] , थेस्सालोनिकी के आर्चबिशप[7881] , कॉन्स्टेंटिनोपल के मूल निवासी थे और कुलीन तथा धर्मपरायण माता-पिता से थे, जिन्होंने उनके शुरुआती वर्षों से ही उन्हें मानवीय और विशेष रूप से दैवीय ज्ञान और हर सद्गुण में शिक्षित करने का प्रयास किया। अपनी युवावस्था में ही उन्होंने अपने पिता को खो दिया; हालाँकि, ग्रेगरी की माँ ने यह सुनिश्चित किया कि उन्हें और उनके सभी भाइयों और बहनों को प्रभु के विधान और पवित्र धर्मग्रंथों की भावना के अनुरूप एक समझदार और सकारात्मक परवरिश मिले। उन्होंने उनके लिए बुद्धिमान शिक्षकों से शिक्षा दिलवाने की व्यवस्था की, ताकि उनका बेटा उनसे बुद्धि सीख सके; और वह, अपनी स्वाभाविक बौद्धिक प्रतिभा और लगन से विशिष्ट, जल्द ही उस समय ज्ञात दर्शन और अन्य विज्ञानों के अध्ययन में निपुण हो गया। हालाँकि, अपनी स्मृति पर भरोसा न करते हुए, उसने यह नियम बनाया कि प्रत्येक पाठ से पहले परमेश्वर की परम पवित्र माता की

[7877] पवित्र प्रेरित फलिपि की शहादत के इस वृत्तांत के अलावा, प्राचीन कथाओं में यह भी बताया गया है कि अपनी मृत्यु से सात दिन पहले, उन्होंने स्वयं अपनी मृत्यु की भविष्यवाणी की थी। प्रेरित फलिपि का 90 ईस्वी में, रोमन सम्राट डोमिशियन के शासनकाल के दौरान, 87 वर्ष की आयु में शहीद होकर निधन हो गया। लगभग 560 ईस्वी के आसपास, उनके अवशेष रोम ले जाए गए, जहाँ वे आज भी बारह प्रेरितों के चर्च में विराजमान हैं। पवित्र प्रेरित का एक हाथ कॉन्स्टेंटिनोपल में इमैक्युलेट कॉन्सेप्शन के चर्च में रखा गया था। बाइजेंटाइन सम्राट मैनुएल कोम्नेनोस ने इसे एक पवित्र और कीमती प्रतिज्ञा के रूप में अपनी भतीजी मैरी को तब भेंट किया, जब उन्होंने 1167 में उसका विवाह यरूशलेम के राजा अमोरियस से कर दिया था। 1204 में, इस अवशेष को फ्लोरेंस ले जाया गया।

[7878] एशिया में, कॉकेसस के साथ सीमा पर।

[7879] लिकाओनिया एशिया माइनर के केंद्रीय क्षेत्रों में से एक है, जो फ्राइजिया से सटा हुआ है।

[7880] संत ग्रेगरी पलामास 14वीं शताब्दी में रहते थे।

[7881] थेस्सालोनिकी, जिसे सोलून के नाम से भी जाना जाता है, मैसेडोनिया का एक बहुत ही महत्वपूर्ण प्राचीन शहर है, जो एजियन सागर (द्वीपसमूह) पर थेस्सालोनिकी की बड़ी खाड़ी या थ्रेसियन खाड़ी के अंदर गहराई में स्थित है। आज, यह शहर, जिसे थेस्सालोनिकी के नाम से जाना जाता है, कॉन्स्टेंटिनोपल के बाद यूरोपीय तुर्की में सबसे प्रमुख वाणिज्यिक और विनिर्माण केंद्र है, जिसकी जनसंख्या बहुत बड़ी है।

प्रतमिा के सामने तीन बार प्रणाम करेगा। और सर्व-शुद्ध ने उस धर्मनष्ठि युवक की सहायता की, जसिकी तीव्र प्रगतिने सभी का ध्यान आकर्षति कयिा। ज़ार ने स्वयं संत ग्रेगरी में गहरी रुचि ली और एक पति की तरह उसकी परवरशि का ध्यान रखा।

इस बीच, अपने शुरुआती वर्षों से ही, ग्रेगरी सभी सांसारकि चीजों को एक धोखे का सपना मानकर उनसे घृणा करने लगे थे; और, ईश्वर के प्रतगिहरे प्रेम से भरकर, उन्होंने सभी क्षणकि आशीर्वादों को ठुकरा दयिा, और अपनी पूरी आत्मा से एकमात्र ईश्वर, जो सभी ज्ञान का स्रोत और सभी अनुग्रह के दाता हैं, से जुड़ने और दुनयिा तथा उसकी व्यर्थ महमिा को पीछे छोड़ने का प्रयास कयिा। इन भावनाओं से प्रेरति होकर, उन्होंने एथोस के पवत्रि पर्वत के भक्षिुओं को खोजा, उनसे सलाह और मार्गदर्शन मांगा, और उनसे मठवासी और तपस्वी जीवन का तरीका और नयिम सीखे, यह देखने के लिए अपनी ताकत का परीक्षण कयिा कि क्या वह वास्तव में एक भक्षिु बन सकते हैं। ग्रेगरी ने अपने अच्छे कपड़ों को एक पतले से कपड़े से बदल दयिा और धीरे-धीरे अपनी पुरानी आदतों और बाहरी व्यवहार को बदलना शुरू कर दयिा, उसने सांसारकि शष्टिाचार की सभी परंपराओं को त्याग दयिा, जसिने दरबारी लोगों का ध्यान आम तौर पर आकर्षति कयिा, और कई लोगों ने तो उसे पागल भी समझ लयिा। इस तरह कई साल बीत गए, और न तो ज़ार की मना करने से, न ही अपने दोस्तों की वनिती से, और न ही आसपास के लोगों के उपहास से ग्रेगरी को चुने हुए रास्ते से हटाया जा सका।

इस परीक्षा को सफलतापूर्वक पूरा करने के बाद, ग्रेगरी ने बीस वर्ष की आयु में, अंततःसंन्यास के व्रत लेने और मरुभूमि में चले जाने का संकल्प लयिा, यह नर्णिय उन्होंने अपनी ईश्वर-प्रेमी माँ को बताया। पहले तो वह इससे कुछ दुखी हुईं, लेकनि फरि उन्होंने प्रभु में आनंदति होकर उनकी मंशा से सहमतिदे दी, और यहाँ तक कि ईश्वर की मदद से अपने अन्य बच्चों को भी संन्यास ग्रहण करने के लिए मना लयिा, ताकि वह भवष्यिवक्ता के साथ कह सकें: *'मैं यहाँ हूँ और वे बच्चे जनि्हें प्रभु ने मुझे दयिा है'* (यशायाह 8:18)। सुसमाचार की आज्ञा का पालन करते हुए, संत ग्रेगरी ने अपना सारा धन-संपत्तिगरीबों में बाँट दयिा और इस संसार की सुंदरता, मठिास और महमिा को पूरे हृदय से त्यागकर, मसीह के पदचनि्हों पर चल पड़े, तथा अपनी माता, भाइयों और बहनों को भी उसी मार्ग पर साथ ले गए। उन्होंने अपनी माँ और बहनों को एक मठ में छोड़ दयिा; जहाँ तक उनके भाइयों का सवाल है, वह उन्हें अपने साथ पवत्रि माउंट अथोस ले गए और उनके साथ वाटोपेदी आश्रम में बस गए[7882] , और उन्होंने स्वयं को पवत्रि और धन्य एल्डर नकिोडीमस के प्रतिपूर्ण आज्ञाकारति में समर्पति कर दयिा, जनिसे उन्होंने बाद में अपना संन्यासी मुंडन प्राप्त कयिा।

नकिोदेमस के साथ अपने प्रवास के दूसरे वर्ष में, ग्रेगरी को एक दैवीय दर्शन का सम्मान प्राप्त हुआ। एक दनि, भक्तपिूर्ण प्रार्थना में लीन होने के दौरान, एक तेजस्वी और भव्य पुरुष उनके सामने प्रकट हुए, जनि्हें उन्होंने संत जॉन, प्रेरति और सुसमाचार प्रचारक, दैवीय शास्त्रज्ञ के रूप में पहचाना। ग्रेगरी पर कृपापूर्वक दृष्टिडालते हुए, प्रेरति ने उससे पूछा: 'जब तुम ईश्वर से प्रार्थना करते हो, तो तुम हमेशा दोहराते हो: "मेरी अँधेरी को प्रकाशति करो, मेरी अँधेरी को प्रकाशति करो"?'

ग्रेगरी ने उत्तर दयिा: 'मुझे और क्या माँगना चाहिए, सवािय इसके - कि मुझे ज्ञान प्राप्त हो और मैं उसकी पवत्रि इच्छा को पूरा करना जानूँ?'

तब पवत्रि सुसमाचार प्रचारक ने कहा: 'सभी की माता, परमेश्वर की माता की इच्छा से, इस क्षण से मैं हर समय आपके साथ रहूँगा।'

अपने गुरु, पवत्रि एल्डर नकिोदेमस की मृत्यु के बाद, संत ग्रेगरी संत अथेनासयिस के महान मठ में चले गए, जहाँ उन्होंने सामुदायकि भोजन पर भाइयों की सेवा की और चर्च के गायक के रूप में भी कार्य कयिा। वहाँ कई वर्षों तक ईश्वर के भय और सभी के प्रतिआज्ञाकारति में जीवन जीने के बाद, ग्रेगरी ने अपने सांसारकि भावों को हमेशा के लिए वश में कर लयिा, और सुसमाचार की उदासीनता तथा दविय पवत्रिता का एक सांत्वनादायक उदाहरण प्रस्तुत कयिा। अपनी नम्रता, वनिम्रता और तपस्या के कारनामों के लिए, उन्होंने भाइयों का सार्वभौमकि प्रेम और सम्मान अर्जति कयिा;

[7882] माउंट अथोस दक्षणिी मैसेडोनयिा में एक संकीर्ण, पहाड़ी प्रायद्वीप है, जो एजयिन सागर में नकिला हुआ है और स्ट्रमिोन और सगिटि की खाड़ियों से घरिा है; यह ऑर्थोडॉक्स मठवाद का एक प्रसद्धि पालना है, जहाँ केवल भक्षिु रहते हैं, यह पूर्व का एक पवत्रि स्थल और पूर्वी मठवाद का प्रमुख केंद्र है। – वाटोपेडी मठ अथोस पर्वत की उत्तरी-पूर्वी ढलान पर, समुद्र के पास स्थति है। परंपरा के अनुसार, इसकी स्थापना पूर्व में मठवाद के शुरुआती दनिों (4वीं शताब्दी के अंत के आसपास) में हुई थी और इसका संबंध सम्राट थयिोडोसयिस महान के नाम से है। 10वीं शताब्दी से, वातोपेदी ने माउंट अथोस पर एक प्रमुख दर्जा प्राप्त कर लयिा, जसिे यह आज भी बनाए हुए है।

लेकिन, प्रसिद्धि से दूर रहते हुए और एक और भी कठोर जीवन के लिए प्रयास करते हुए, वह मठ से दूर गहरे रेगिस्तान में, ग्लोसिया के स्केटा में चले गए, और वहाँ उन्होंने स्वयं को धार्मिक एल्डर ग्रेगरी के मार्गदर्शन में रख लिया, और एक कठोर चिंतनशील जीवन जिया, जो ईश्वर के प्रति असीम प्रेम से जल रहा था, जिनके प्रति उन्होंने अपनी आत्मा और शरीर दोनों को समर्पित कर दिया था। अखंड प्रार्थना के माध्यम से शैतान के सभी अपमानों पर विजय प्राप्त करने के बाद, उन्हें अनुग्रह के वरदानों के योग्य माना गया। जैसे ही वह प्रार्थना की भावना की गहराई में डूबे और उससे प्रकाशित हुए, वे कोमलता और हार्दिक विलाप के उस स्तर पर पहुँच गए कि उनकी आँखों से आँसू एक निरंतर और अक्षय झरने की तरह बहने लगे।

लेकिन ग्रेगरी और उनके साथियों की खामोशी जल्द ही मठों के बाहर खामोशी से रहने वाले संतों पर एगारीन[7883] द्वारा किए गए हमलों से टूट गई। परिणामस्वरूप, ग्रेगरी को अन्य संतों के साथ अपनी मरुभूमि छोड़ने और थ्रेसलॉनीकी में शरण लेने के लिए मजबूर होना पड़ा। वहाँ से, संत ने पवित्र स्थानों की पूजा करने और, यदि ईश्वर प्रसन्न हों, तो अपने शेष जीवन को वहाँ एकांत में बिताने के लिए यरूशलेम जाने का संकल्प लिया। यह जानने की इच्छा से कि क्या उनका इरादा ईश्वर को प्रसन्न कर रहा था, उन्होंने इस बारे में उनसे प्रार्थना की। और इस प्रकार, एक सपने में, पवित्र महान शहीद डेमेट्रियस उसे दिखाई दिए, जिनके अवशेष थ्रेसैलॉनीकी में थे[7884] । महान शहीद ने उसे थ्रेसैलॉनीकी नहीं छोड़ने के लिए मनाया। तब संत ग्रेगरी ने कठोर उपवास और प्रार्थना के बाद, थ्रेसैलॉनीकी में पुरोहित का पद ग्रहण किया और भाइयों के एक छोटे समूह के साथ, पास के एक संन्यास-आश्रम में चले गए, जहाँ उन्होंने अपना तपस्वी जीवन फिर से शुरू किया। उनका जीवन इस प्रकार था: सप्ताह में पाँच दिन वे स्वयं बिल्कुल बाहर नहीं जाते थे और न ही किसी से मिलते थे; केवल शनिवार और रविवार को, दैवीय अनुष्ठान करने और पवित्र रहस्यों को ग्रहण करने के बाद, वे अपने भाइयों के साथ आध्यात्मिक संगति में प्रवेश करते थे, और अपने मार्मिक और शिक्षाप्रद प्रवचनों से उन्हें प्रेरित और सांत्वना देते थे। इन घंटों के दौरान, रेवरेंड फादर के एकांतवास के बाद, और विशेष रूप से लिटिर्जी के बाद, उनके चेहरे पर एक अद्भुत दैवीय प्रकाश देखा जा सकता था। दिव्य लिटिर्जी के दौरान, वह सभी को आँसुओं और गहरे भावुकता से भर देते थे। कई महान पवित्र पुरुष उनके सदाचारी जीवन से चकित थे, जिसके लिए उन्हें ईश्वर द्वारा चमत्कार करने और भविष्यवाणी का वरदान मिला था, और उन्होंने उन्हें ईश्वर का वाहक और एक भविष्यवक्ता कहा[7885] ।

उस समय, संत ग्रेगरी की सदाचारी माँ प्रभु के पास चली गईं। उनकी बेटियों और साथियों—ग्रेगरी की बहनों—ने उनसे अपने पास आने, अपने शोक में उन्हें सांत्वना देने और आध्यात्मिक मार्गदर्शन प्रदान करने के लिए कहा। पारिवारिक प्रेम की पुकार पर, ग्रेगरी अपनी बहनों के पास रहने के लिए कॉन्स्टेंटिनोपल गए और फिर अपने प्रिय रेगिस्तान में लौटने के लिए जल्दी से रवाना हो गए; लेकिन कुछ ही समय बाद, वेरा स्केट में पाँच साल मौन में बिताने के बाद, अल्बानियाई लोगों के बार-बार हमलों के कारण, उन्हें एक बार फिर से पवित्र पर्वत पर पीछे हटने के लिए मजबूर होना पड़ा, सम्माननीय अथानासियस की लावरा में, जहाँ वहाँ के श्रमशील संतों ने उन्हें बड़े प्रेम से स्वीकार किया। और यहाँ भी, शनिवार और रविवार को छोड़कर, मठ के बाहर संत सावा की शांत कोठरी में अकेले रहते हुए, वह कहीं नहीं गए, किसी से नहीं मिले, और दिव्य सेवा की आवश्यकताओं को छोड़कर, उन्हें किसी ने नहीं देखा। उनके बाकी सभी दिन और रातें ईश्वर की प्रार्थना और चिंतन में बीतती थीं।

एक बार, परमेश्वर की अति पवित्र माता के समक्ष अपनी कोठरी में प्रार्थना करते हुए, पूजनीय पिताजी ने उनसे विनती की कि वे स्वयं उन सभी सांसारिक आवश्यकताओं की देखभाल और प्रावधान का भार उठा लें, ताकि उनसे और उनके साथी भिक्षुओं से पूर्ण मौन के सभी बाधाएँ दूर हो जाएँ। उनकी प्रार्थना के उत्तर में, परम दयालु देवी ने उन्हें अपने दर्शन से सम्मानित किया, साथ में दिव्य पुरुषों की एक भीड़ थी। उनके सामने प्रकट होकर, उन्होंने अपने साथ आए दिव्य पुरुषों से कहा: 'अब से और हमेशा, ग्रेगरी और उसके भाइयों की आवश्यकताओं के रक्षक बनो।'

उस समय से, जैसा कि संत ग्रेगरी ने बाद में स्वयं बताया, उन्हें सचमुच ऐसा महसूस हुआ, कि वे जहाँ भी हों, दैवीय कृपा उन पर हमेशा एक विशेष तरीके से निगाह रखती थी। एक अन्य अवसर पर, प्रार्थनापूर्ण ध्यान में गहरे डूबे होने के दौरान, ग्रेगरी हल्की नींद में खो गए। और देखो, उसे ऐसा प्रतीत हुआ कि उसके हाथों में शुद्ध दूध का एक पात्र था, इतना भरा हुआ कि वह किनारों से छलक रहा था; फिर यह दूध अंगूर की शराब का रूप ले लिया, जो पात्र के किनारों से छलककर

[7883] अगारी अरब, मुसलमान हैं।

[7884] उनका पर्व दिवस 26 अक्टूबर को मनाया जाता है।

[7885] उस समय, उसकी उम्र 30 वर्ष से कुछ अधिक थी।

उसके हाथों और कपड़ों को गीला कर रहा था, और चारों ओर एक अद्भुत सुगंध फैला रहा था। यह महसूस करते ही, ग्रेगरी पवित्र आनंद से भर गया। और एक तेजस्वी युवक उसके सामने प्रकट हुआ और बोला:

'तुम इस अद्भुत पेय को, जिसकी तुम उपेक्षा कर रहे हो, आगे क्यों नहीं बढ़ाते? क्योंकि यह ईश्वर का एक ऐसा उपहार है जो कभी सूखता नहीं है।'

संत ग्रेगरी ने पूछा, 'लेकिन मैं यह पेय किसे दूँ, जब कोई भी इसकी ज़रूरत में नहीं है?'

युवक ने उत्तर दिया, 'यद्यपि वर्तमान में वास्तव में इस पेय के लिए कोई प्यासा नहीं है, फिर भी आपको अपने कर्तव्य को पूरा करते हुए, ईश्वर के उपहार की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, क्योंकि प्रभु इसके उचित उपयोग के लिए आपसे हिसाब लेंगे।'

इन शब्दों के साथ, वह अद्भुत दृष्टि समाप्त हो गई। संत ग्रेगरी ने इसका यह अर्थ निकाला कि दूध सामान्य रूप से समझ में आने वाले वचन के उपहार का प्रतीक था, जो आध्यात्मिक मार्गदर्शन की तलाश करने वाले साधारण हृदयों के लिए सुलभ था, जबकि दूध का शराब में बदल जाना इस बात का संकेत था कि, समय आने पर, दैवी इच्छा उससे ईसाई धर्म के उच्च सच्चाइयों में गहरी शिक्षा की मांग करेगी। इसके तुरंत बाद, ग्रेगरी को एस्फिग्मेन मठ का मठाधीश चुना गया[7886] , लेकिन, थोड़े ही समय बाद, मरुस्थल की खामोशी के लिए उनकी लालसा उन्हें सेंट अथानासियस की लावरा में वापस खींच लाई। यहाँ उन्होंने इतनी आध्यात्मिक पूर्णता प्राप्त की कि कई पवित्र पुरुष उनके सदाचारी जीवन को देखकर चकित रह गए और उनके आश्चर्यजनक चमत्कारों को देखने पर उन्हें 'ईश्वर-वाहक' कहा, जो एक वरदान था जिससे ईश्वर ने उन्हें सम्मानित किया था। उन्होंने दुष्टात्माओं को भगाया; अपनी प्रार्थनाओं के द्वारा, उन्होंने बांझ पेड़ों में फिर से जीवन भर दिया; और उन्होंने वर्तमान की तरह ही स्पष्ट रूप से भविष्य की भी भविष्यवाणी की। फिर भी, रेवरेंड फादर भी विभिन्न और बार-बार होने वाले प्रलोभनों से नहीं बच सके, परमेश्वर के वचन के अनुसार: *'जो कोई भी मसीह यीशु में भक्ति से जीवन व्यतीत करना चाहता है, वह सताया जाएगा'* (2 तीमुथियुस 3:12)। उन्होंने यह सब आनंद के साथ सहन किया, *'ताकि तुम्हारे विश्वास की खराई—जो नाश होने वाले सोने से भी अधिक कीमती है, यद्यपि आग में परखा जाता है—यीशु मसीह के प्रकट होने पर प्रशंसा और महिमा और सम्मान का कारण बने'* (1 पतरस 1:7), जैसा कि पवित्र प्रेरित पतरस कहते हैं।

संत ग्रेगरी पालमास ने उस समय ईश्वर की कलीसिया को परेशान करने लगी विधर्मों के खिलाफ अपने संघर्ष में कई कष्ट सहे। उन्होंने चर्च को एक विशेष रूप से महान सेवा प्रदान की, जब उन्होंने उन झूठे शिक्षकों का भंडाफोड़ किया जिन्होंने उस आध्यात्मिक, अनुग्रह-पूर्ण प्रकाश के ऑर्थोडॉक्स सिद्धांत को अस्वीकार कर दिया था जो आंतरिक मनुष्य को प्रकाशित करता है और कभी-कभी दृश्य रूप में प्रकट होता है, जैसा कि माउंट टाबोर[7887] पर और माउंट सिनाई पर ईश्वर से वार्तालाप के बाद मूसा के चेहरे पर हुआ था (निर्ग. 34:29–30)। उस समय, बार्लाम नामक एक विद्वान भिक्षु कालाब्रिया[7888] से पवित्र माउंट अथोस पर आया; अपने अनुयायियों के साथ, उसने अपनी धर्मनिंदा करने वाली शिक्षाओं से मसीह की कलीसिया की शांति और अथोनाइट भिक्षुओं की प्रसन्नता को भंग किया। पूरे तेईस वर्षों तक, उस पराक्रमी चरवाहे ने बार्लाम के विरुद्ध बहादुरी से संघर्ष किया, और यह वर्णन करना भी मुश्किल है कि संत ग्रेगरी पलामास ने उस समय कितनी सारी कष्टप्रद यातनाएँ सहन कीं। बर्लाआम ने यह सिखाया कि ताबोर का प्रकाश कोई भौतिक, सृजित वस्तु थी, जो स्थान में प्रकट होती थी और हवा को रंगीन करती थी, क्योंकि यह उन लोगों की शारीरिक आँखों से दिखाई देती थी जो अभी तक अनुग्रह से प्रबुद्ध नहीं हुए थे। उन्होंने ईश्वरत्व के सभी कार्यों, और यहाँ तक कि पवित्र आत्मा के वरदानों—ज्ञान और समझ का आत्मा, आदि—को भी उसी प्रकार सृजित माना, और ईश्वर को सृजित प्राणियों के दर्जे तक सीमित करने का कोई भय नहीं था, जिससे उन्होंने स्वर्गीय पिता के राज्य में धर्मी लोगों के प्रकाश और आनंद, साथ ही त्रिमूर्ति ईश्वरत्व की शक्ति और क्रिया को भी उलट दिया। इस प्रकार, बार्लाम और उसके अनुयायियों ने दुष्टतापूर्वक एक और वही दिव्यता को सृष्ट और असृजित में विभाजित कर दिया, जबकि जिन्हें इस दिव्य प्रकाश और हर शक्ति और हर क्रिया को असृजित और सदा-से-मौजूद के रूप में श्रद्धापूर्वक

[7886] एस्फिग्मेनू मठ माउंट अथोस पर सबसे पुराने मठों में से एक है; यह माउंट अथोस की उत्तर-पूर्वी ढलान पर स्थित है।

[7887] प्रभु के रूपांतरण के पर्व पर।

[7888] कैलाब्रिया दक्षिणी इटली में एक निम्न-ऊँचाई वाला प्रायद्वीप है।

स्वीकार किया गया[7889] , उन्हें द्वैतवादी और बहुदेववादी का लेबल लगा दिया गया। इसके विपरीत, बारलाम ने एथोनी संन्यासियों के इस विश्वास को कि वे अपनी शारीरिक आँखों से परमेश्वर के प्रकाश का चिंतन कर सकते हैं और इंद्रियों के माध्यम से इसके लिए तैयारी कर सकते हैं[7890] एक भ्रम मानकर, स्पष्ट रूप से उनके, प्रार्थना के और उनके रहस्यमय चिंतन के विरुद्ध विद्रोह कर दिया। लेकिन इससे पहले कि अथोस के संतों के खिलाफ बार्लाम के अपमानजनक आरोप सार्वजनिक हो पाते, इस विधर्मी को उसके निंदनीय और निन्दनीय आचरण के लिए पैट्रिआर्क द्वारा अपमानपूर्वक निष्कासित कर दिया गया। क्रोध और दुख के साथ, बार्लाम थ्रेसैलॉनीकी चला गया, जहाँ उसने अथोस के संतों के खिलाफ अपने अपमानजनक आरोपों का प्रचार जारी रखा। बर्लाम, जो वाक्पटु और विज्ञानों में पारंगत था, का सामना करने की ताकत न होने के कारण, थ्रेसलॉनीक के भिक्षु माउंट अथोस से दिव्य ग्रेगरी को बुलाने के लिए विवश हो गए। थ्रेसलॉनीक में उनके आगमन पर, संत ग्रेगरी ने शुरू में नम्रता की भावना से काम किया, लेकिन, यह देखकर कि इन उपायों का उस हठी झूठे शिक्षक पर कोई असर नहीं पड़ा, जो चर्च और उसके नियमों में इतना बड़ा उथल-पुथल मचा रहा था, उन्होंने न केवल मौखिक रूप से, बल्कि उच्च सच्चाइयों और दैवीय तर्कों से भरे शक्तिशाली लेखन के माध्यम से भी बरलाम के आपत्तियों और निंदाओं का खंडन करना शुरू कर दिया। बर्लाम स्वयं, उन्हें पढ़ने और उनकी शक्ति को पहचानने के बाद, माउंट अथोस के भिक्षुओं को चैन से रहने देने के लिए मजबूर हो गया, लेकिन बदले में वह ईश्वर के उस पवित्र पुरुष के विरुद्ध अपनी पूरी ताकत से खड़ा हो गया। जब इससे भी कोई फायदा नहीं हुआ, तो अपमानित बरलाम कोंस्टेंटिनोपल के में चला गया, और उसने कोंस्टेंटिनोपल के पैट्रिआर्क, जॉन XIV[7891] के पास सेंट ग्रेगरी और माउंट अथोस के भिक्षुओं के खिलाफ मौखिक और लिखित दोनों रूपों में शिकायतें दर्ज कीं।

इस बीच, संत ग्रेगरी, तीन साल तक थेस्सालोनिकी में रहने के बाद, ऑर्थोडॉक्सी के सिद्धांतों की व्याख्या करने और उसकी पवित्रता की दृढ़ता से रक्षा करने में गंभीरता से लगे हुए थे। यहाँ, पहले की तरह ही, हार्दिक विलाप, पूर्ण एकांत और मौन उनके पसंदीदा शगल थे। मरुभूमि की शांति के अभाव में, फिर भी एक ही समय में दुनिया के साथ संबंधों और व्यवहार से यथासंभव बचते हुए, वह घर के एक दूरस्थ हिस्से में रहता था, जहाँ उसने अपने लिए एक छोटी सी कोठरी बना ली थी, और वह यथासंभव मौन रहता था। और ऐसा हुआ कि एक दिन, मठवासी जीवन के पूर्वज, महान संत एंथनी के पर्व पर, जब अन्य भिक्षु, धन्य इसिडोर के शिष्य, पूरी रात की जागरण सभा मना रहे थे, और ग्रेगरी अपनी कोठरी में रहे, तो संत एंथनी अचानक एक दर्शन में उनके सामने प्रकट हुए और कहा: 'मौन अच्छा और पूर्ण है, लेकिन भ्रातृत्व के साथ संगति कभी-कभी आवश्यक है - विशेष रूप से प्रार्थना और भजन-गायन के दिनों में। अत; तुम्हें भी अब जागरण में भाइयों के साथ रहना चाहिए।'

इस आज्ञा का पालन करते हुए, दिव्य ग्रेगरी तुरंत भाइयों के पास पहुँचे, जिन्होंने उन्हें खुशी से स्वागत किया – और उनके लिए संपूर्ण-रात्रि जागरण विशेष गंभीरता के साथ संपन्न हुआ।

माउंट अथोस के संतों की रक्षा में और विधर्मी कल्पनाओं का खंडन करते हुए अपने धर्मशास्त्रीय लेखन को पूरा करने के बाद, संत ग्रेगरी पवित्र पर्वत लौटे और संतों को वह दिखाया जो उन्होंने भक्ति पर लिखा था।

थोड़ी ही देर बाद, संत ग्रेगरी को संपूर्ण जगत के समक्ष विधर्मी अनुमानों से वाद-विवाद करने के लिए बुलाया गया, और इस पराक्रम के लिए उन्हें पृथ्वी पर चर्च में अमर महिमा तथा स्वर्ग में चर्च में धार्मिकता का मुकुट प्राप्त

[7889] चर्च के सार्वभौमिक विश्वास के अनुसार, जो प्रभु के रूपांतरण के लिए ट्रॉपारियन में स्पष्ट रूप से व्यक्त किया गया है: 'हे प्रभु, आपकी सर्वदा उपस्थिति ज्योति हिम पापियों पर भी चमके'।

[7890] माउंट अथोस पर संत ग्रेगरी और उनके साथियों ने अपने जीवन के द्वारा ही यह सिखाया और प्रदर्शित किया कि आत्मा के निरंतर शुद्धिकरण, इंद्रियों और विचारों की पूर्ण स्थिरता, और ईश्वर के चिंतन तथा प्रार्थना में अखंड अभ्यास के माध्यम से, एक व्यक्ति ऊपर से प्रबुद्धता प्राप्त कर सकता है; फिर भी वे ईश्वरत्व के वास्तविक सार को नहीं देख सकते, जो, अप्रोच्य प्रकाश में वास करता है, मानव की सीमित, पापी प्रकृति के लिए दुर्गम है, लेकिन केवल दिव्य सार का प्रकटीकरण है, जो उन लोगों को प्रकाश के रूप में प्रकट होता है जो मौन रहते हैं, जिसे कभी-कभी शारीरिक आँखों से भी देखा जा सकता है, जैसा कि प्रभु के रूपांतरण के समय माउंट टाबोर पर हुआ था और प्रकाश और आग के रूप में दिव्यता के सभी प्रकटीकरणों और रहस्योद्घाटनों में हुआ, उदाहरण के लिए, मोशे और एलियाह को, या एंथनी द ग्रेट जैसे प्राचीन ईसाई तपस्वियों को; सभी जिन्होंने ईश्वर को देखा है, उन्होंने अपनी शारीरिक और आध्यात्मिक दोनों आँखों से दिव्य प्रकाश, दिव्यता की किरण को देखा है। इस टैबर के प्रकाश और दिव्यता की सभी अभिव्यक्तियों का वर्णन उन्होंने अकल्पित और दिव्य के रूप में किया है, ठीक उसी तरह जैसे ईश्वर का सार ही अकल्पित है। यह शिक्षा, जो अपने स्वभाव से ही रहस्यमय और प्राकृतिक मन के लिए अकल्पनीय है, उसी समय विश्वास करने वाले हृदय के लिए विश्वासयोग्य और अविवादनीय है।

[7891] जॉन चौदहवें अप्रैल ने 1332 से 1347 तक पैट्रिआर्क के रूप में कार्य किया।

हुआ। उस समय, बार्लाम ने कॉन्स्टेंटनिोपल के पैट्रआिर्क, जॉन चौदवें को अपने पक्ष में कर लयिा था और मामलों को इस हद तक पहुँचा दयिा था कि पैट्रआिर्क ने एक फरमान जारी कयिा जसिमें ग्रेगरी और उनके साथी योद्धाओं को चर्च के सामने मुकदमे का सामना करने के लिए बुलाया गया। ईसाई सद्धिांत और नैतकिता की नींव तक को हलिा देने की धमकी देने वाले एरयिन वधिर्म को सहन करने के इच्छुक न होते हुए, पवत्रि आत्मा से परपिूर्ण संत ग्रेगरी, उत्साहपूर्वक ऑर्थोडॉक्सी और माउंट अथोस के बुजुर्गों का बचाव करने के लिए आगे आए। उभरे ववािद को सुलझाने और ऑर्थोडॉक्सी को बनाए रखने के लिए, धर्मनष्ठि सम्राट एंड्रोनकिोस पलाइओलोगोस[7892] ने कॉन्स्टेंटनिोपल में एक परषिद[7893] बुलाई, जसिमें बार्लाम भी अपने शष्यिों और अनुयाययिों के साथ पहुँचे। इस परषिद में, जो कांस्टेंटनिोपल के सेंट सोफयिा चर्च में पैट्रआिर्क की अध्यक्षता में हुई, बरलाम, उसके अनुयायी अकनिीडनि, और उनके जैसे अन्य झूठे शक्षिकों की वधिर्मी त्रुटयिों का पर्दाफाश कयिा गया। तब महान ग्रेगरी ने, अपने ईश्वर-ज्ञानी ओठ खोलकर, प्रेरणा की अग्नि से ओत-प्रोत अपने शब्दों और दव्यि शास्त्र से इस वधिर्म को दूर कर दयिा, इसे पृथ्वी के मुख से धूल की तरह झाड़ दयिा, काँटों की तरह जला दयिा, और अंत में वधिर्मयिों को लज्जति कर दयिा[7894] ।

ईश्वर के पवत्रि पुरुष, बार्लाम की ईश्वर-प्रेरति फटकार से लज्जति होकर, बार्लाम अपमान सहन न कर सका और एक बार फरि इटली चला गया, जहाँ उसने कैथोलकि धर्म अपना लयिा। लेकनि बज़िान्टयिम में उसके खुले और गुप्त दोस्त और अनुयायी दोनों थे, जन्हिें उसने अपने पत्रों से भड़काया, जबकि साथ ही साथ पश्चमिी चर्च की उन शक्षिाओं का प्रचार कयिा जो ऑर्थोडॉक्सी के वपिरीत थीं। बाद में उसके झूठे सद्धिांतों की खरपतवार को भक्षिु अकनिडिोस ने बोया और पोषति कयिा। उनके खलिाफ कॉन्स्टेंटनिोपल में एक नया परषिद बुलाया गया, जसिमें संत ग्रेगरी ने दव्यि प्रकाश के संबंध में बार्लाम और अकद्यिन की त्रुटयिों के और भी अधकि को उजागर कयिा। हालाँकि, पैट्रआिर्क ने अकीनदिनि का समर्थन कयिा और संत ग्रेगरी को उस समय चर्च के भीतर सभी अशांति और उथल-पुथल का कारण घोषति कर दयिा। इतना ही नहीं, बल्कि अकीनदिनि को डीकन के पद पर पदोन्नत कयिा गया, जबकि ग्रेगरी को एक अंधेरी कोठरी में कैद कर दयिा गया, जहाँ वे चार साल तक कष्ट भोगते रहे।

लेकनि पैट्रआिर्क का अन्याय दंडति हुए बनिा नहीं रहा। धार्मकि महारानी अन्ना[7895] ने, पैट्रआिर्क के कार्यों और अकीनदिनि के प्रति उनकी पक्षपातपूर्णता के बारे में जानने के बाद—जसिे पहले ही दो परषिदों में वधिर्मी और चर्च का शत्रु घोषति कयिा जा चुका था—उसे धार्मकि संप्रदाय और पवत्रि पद के अयोग्य समझा; और पैट्रआिर्क स्वयं, वधिर्मी कल्पनाओं में पड़ने के कारण, अपने पद से हटा दए गए और चर्च से बहष्कृत कर दए गए। इस प्रकार चर्च में शांति बहाल हुई, और संत ग्रेगरी को उनकी अवैध कैद से रहिा कर दयिा गया। ऑर्थोडॉक्सी को बनाए रखने और वधिर्मी झूठी शक्षिाओं तथा चर्च की गड़बड़यिों को जड़ से उखाड़ने में उनके पवत्रि उत्साह के लिए, उन्हें पैट्रआिर्क

[7892] एंड्रोनकिोस तृतीय पलाइओलोगोस, बज़िान्टयिम के सम्राट, ने 1328 से 1341 तक शासन कयिा।

[7893] यह परषिद 1341 में हुई। इसके बाद, बार्लामाइट्स के धर्म-वरिोध को कई अन्य परषिदों में 1347, 1351, 1352 और 1368 में नदिा कयिा गया और इसके अनुयाययिों को बहष्कृत कर दयिा गया (जनिमें से आखरिी सेंट ग्रेगरी पलामास की मृत्यु के बाद हुई)।

[7894] ईश्वर के पवत्रि पति ने कहा, 'दुनयिावी और व्यर्थ ज्ञान से फूलकर, और आध्यात्मकि शक्षिा में अनुभवी पुरुषों की ओर कोई ध्यान न देते हुए, जब वे उस प्रकाश के बारे में सुनते हैं जो रूपांतरण पर्वत पर प्रभु पर चमका और जसिे प्रेरतिों ने देखा था, तो वे कल्पना करते हैं कि वे उसमें कुछ इंद्रयि और सृजति देख रहे हैं, – और यही कारण है कि वे इस पदार्थ, अक्षय और शाश्वत प्रकाश को, जो न केवल इंद्रयिों बल्कि स्वयं मन से भी परे है, एक इंद्रयि और सृजति प्रकाश तक सीमति कर देते हैं, भले ही उन्होंने स्वयं, तabor पर्वत पर प्रकाश के साथ चमककर, स्पष्ट रूप से दखिाया कि प्रकाश असृजति है, और इसे परमेश्वर का राज्य कहा (मत्ती 16:20)। तो क्या परमेश्वर का राज्य कोई सृजति और अधीन वस्तु है? क्या प्रभु ने पहाड़ पर कोई ऐसी दूसरी रोशनी प्राप्त की जो उनके पास तब तक नहीं थी? – ईश्वर न करे, यह हमारे लिए नन्दिा का वषिय हो, क्योंकि जो कोई ऐसा सोचता है, उसे मसीह में तीन स्वभावों को स्वीकार करना होगा, अर्थात्, दव्यि, मानवीय, और प्रकाश का स्वभाव। इसलिए हम मानते हैं कि रूपांतरण के समय उन्होंने कोई और प्रकाश प्रकट नहीं कयिा, बल्कि केवल वह प्रकाश प्रकट कयिा जो उनके भीतर देह के आवरण के नीचे छपिा हुआ था; और यह प्रकाश दव्यि स्वभाव का प्रकाश था, और इसलिए अकल्पति और दव्यि था। इस प्रकार, धर्मशास्त्रीय पतिाओं की शक्षिा के अनुसार, यीशु मसीह पर्वत पर रूपांतरति हुए, न तो उन्हें कुछ प्राप्त हुआ और न ही वे कसिी ऐसी नई चीज़ में बदल गए जो उनके पास पहले से नहीं थी, बल्कि उन्होंने अपने शष्यिों को केवल वही प्रकट कयिा जो उनके पास पहले से ही था... ताबोर का प्रकाश परमेश्वरत्व का प्रकाश था'।

[7895] सम्राट एंड्रोनकिोस तृतीय पलाइओलोगोस की वधिवा, जनिका तब तक नधिन हो चुका था।

इसडिोर[7896] और सम्राट जॉन कांटाकूज़ेनोस[7897] के आग्रह पर, थ्रेसैलॉनीकी के चर्च के आर्चबशिप के रूप में अपने अभषिेक के लिए सहमति देने के लिए बाध्य किया गया। हालाँकि, उस समय थ्रेसलॉनीकी में उत्पन्न हुई अशांति के कारण, नए आर्चबशिप को उनकी मंडली द्वारा स्वीकार नहीं किया गया, जिसके बाद वे अपने प्रिय पवित्र माउंट अथोस पर वापस चले गए। इस बीच, परमेश्वर की अति पवित्र माता के जन्म का पर्व आ गया। उस समय, थेस्सालोनिकी का एक धर्मपरायण पुरोहित, दैवीय लिटिर्जी का अनुष्ठान करने की तैयारी करते हुए, विनम्रतापूर्वक प्रभु से प्रार्थना कर रहा था कि वह कृपा करके यह प्रकट करें कि क्या ग्रेगरी, जैसा कि लोग मानते थे, वास्तव में मठवासी जीवन और आध्यात्मिक चिंतन के संबंध में अपने विश्वासों में गलत था, और क्या उसे प्रभु की कृपा प्राप्त थी। पुरोहित ने प्रार्थना की कि यह रहस्योद्घाटन उसकी पक्षाघातग्रस्त बेटी के माध्यम से प्रकट हो, जो तीन साल से बिल्कुल भी हिल-डुल नहीं पाती थी और बिस्तर पर पड़ी थी। उन्होंने कहा, 'हे प्रभु, यदि ग्रेगरी वास्तव में आपका सेवक है, तो उसकी प्रार्थनाओं के द्वारा मेरी दुर्भाग्यपूर्ण बेटी को चंगा कर दें।' और प्रभु ने पुरोहित की विनती सुनी: उसकी बेटी अचानक अपनी मर्जी से अपने बिस्तर से उठ खड़ी हुई और उस क्षण से उसकी तबीयत पूरी तरह से ठीक हो गई, मानो वह कभी बीमार ही न हुई हो।

इस चमत्कार से संत ग्रेगरी को प्रसिद्धि मिली, लेकिन थ्रेसैलॉनीकी में धार्मिक उथल-पुथल जारी रही। तब बुल्गारिया के त्ज़ार स्टीफन[7898] , जो उनके गुणों और परमेश्वर की कलीसिया के प्रति उनकी सेवाओं से अवगत थे, ने उनसे बुल्गारिया के मेट्रोपॉलिटन का पद संभालने का आग्रहपूर्वक अनुरोध किया, लेकिन वे दैवी ग्रेगरी को ऐसा करने के लिए मना नहीं सके।

हालाँकि, माउंट अथोस पर संत को कोई शांति नहीं मिली। जल्द ही चर्च की ज़रूरतों ने उन्हें कॉन्स्टेंटिनोपल वापस बुला लिया। वहाँ से वे लेमनोस द्वीप पर चले गए[7899] । वहाँ उन्होंने कई चमत्कार और अद्भुत कार्य किए और परमेश्वर के वचन का अथक प्रचार किया, और तब तक वहीं रहे जब तक कि थ्रेसलॉनीकी के लोगों ने, अपने अनाथ झुंड में उनकी उपस्थिति की आवश्यकता को महसूस करते हुए, स्वयं उन्हें वापस बुलाया, और लेम्नोस में उनके पास पादरियों के प्रतिनिधियों और शहर के प्रमुख गणमान्य व्यक्तियों को भेजा। लोगों ने अपने आर्चपास्टर का अकथनीय आनंद के साथ स्वागत किया। थेस्सालोनिकी की कलीसिया, मानो स्वर्ग से प्रेरित होकर, एक अत्यंत गंभीर और विजयी दृश्य प्रस्तुत कर रही थी: सामान्य स्तुति भजनों के बजाय, पुरोहित वर्ग और लोगों ने पास्का के भजन और कैनन गाए, क्योंकि वे स्वयं या दूसरों को अपनी भावनाओं की गहराई और उस अवसर की असाधारण गंभीरता को समझाने में असमर्थ थे। तीन दिन बाद, लोगों की एक विशाल भीड़ की उपस्थिति में, पवित्र बिशप ने एक भव्य जुलूस और दैवीय अनुष्ठान का संचालन किया। इस अवसर पर, ईश्वर ने अपने सेवक को एक नए चमत्कार से गौरवान्वित किया। उपर्युक्त धर्मनिष्ठ पुजारी के बेटे को मिर्गी की बीमारी थी। जब संचार का समय आया, तो पुरोहित, महाधर्माध्यक्ष के पैरों पर गिरकर, विनम्रतापूर्वक उनसे निवेदन करने लगा कि वे स्वयं अपने पवित्र हाथों से उसके बीमार बच्चे को संचार दें। पुरोहित की विनम्रता और उसके बेटे के दुख से प्रभावित होकर, ग्रेगरी ने उसकी प्रार्थना मान ली - और बच्चा चंगा हो गया। एक अवसर पर, परमेश्वर की परम पवित्र माता के जन्म के पर्व पर, संत ग्रेगरी एक मठ में धर्मविधि का अनुष्ठान कर रहे थे। प्रार्थना सभा के दौरान, इलिओडोरा नाम की एक नन, जो एक आँख से अंधी थी, ने जब यह जाना कि संत लिटिर्जी का अनुष्ठान कर रहे हैं, तो वह चुपके से उनके पास आई और गुप्त रूप से उनके पवित्र वस्त्रों को अपनी अंधी आँख से लगा लिया - और उसकी आँख में तुरंत ही दृष्टि लौट आई।

दिव्य ग्रेगरी ने कई अन्य चमत्कार भी किए। उनके बुद्धिमानीपूर्ण नेतृत्व में, थ्रेसलॉनीकी का चर्च शांति और सुकून का आनंद ले रहा था। लेकिन ग्रेगरी का इंतजार नए कारनामे और गहरे दुख कर रहे थे। इस ई क समय में, बरलाम और अकिंदिनि के अनुयायी अपनी विधिर्मी कल्पनाओं से कॉन्स्टेंटिनोपल में ऑर्थोडॉक्स चर्च को परेशान करते रहे। तब ग्रेगरी ने एक बार फिर से ऑर्थोडॉक्सी की रक्षा के लिए दुष्ट विधिर्मियों के खिलाफ साहसपूर्वक लड़ाई छेड़ दी। उन्होंने लेखन के माध्यम से, अपने दैवीय प्रेरित कार्यों द्वारा, और व्यक्तिगत रूप से भी उनका मुकाबला करना जारी रखा। मसीह की कलीसिया के भीतर विधिर्मियों द्वारा मचाई गई बड़ी हलचल के परिणामस्वरूप, सम्राट और पैट्रिआर्क

[7896] इसडिोर प्रथम – 1347 से 1349 तक कॉन्स्टेंटिनोपल के पैट्रिआर्क।

[7897] जॉन VI कांतकौज़ेनोस – 1341 से 1356 तक बाइज़ेंटाइन सम्राट। शाही सिंहासन से उत्पन्न उथल-पुथल के परिणामस्वरूप, उन्हें साम्राज्य जॉन V पलेओलोगोस के साथ साझा करने के लिए मजबूर होना पड़ा।

[7898] सर्बियाई राजा स्तेफान डुसान (1336–1355), जिसके अधीन बुल्गारिया भी था।

[7899] लेम्नोस – एजियन सागर (द्वीपसमूह) में माउंट अथोस के पूर्व में स्थित एक द्वीप, जिसका क्षेत्रफल 6 वर्ग मील है।

ने कलीसिया में शांति बहाल करने के लिए कॉन्स्टेंटिनोपल में एक नया परिषद बुलाना आवश्यक समझा; संत ग्रेगरी को इस परिषद में प्राथमिकता के आधार पर बुलाया गया। सत्य के शत्रु, पहले की तरह, लज्जित और नम्र हुए: परिषद में पढ़े गए संत की व्यक्तिगत बातचीत और उनके धर्मशास्त्रीय ग्रंथों दोनों ने ही विधर्मियों को चुप करा दिया। ज़ार के सम्मान और पादरी तथा चर्च के आशीर्वाद के साथ, संत ग्रेगरी सम्मानपूर्वक अपने झुंड में वापस मिलने के लिए रवाना हुए; हालाँकि, उस समय थ्रेसोनीकी में मौजूद जॉन पलाइओलोगोस[7900] ने उन्हें ऐसा करने से रोक दिया, और ग्रेगरी को पवित्र पर्वत की ओर बढ़ने के लिए मजबूर होना पड़ा। हालाँकि, तीन महीने बाद, उसी पलाइओलोगोस द्वारा उन्हें सम्मानपूर्वक थेस्सालोनिकी बुलाया गया।

वहाँ, संत ग्रेगरी जल्द ही गंभीर और पुरानी बीमारी से ग्रस्त हो गए, इतनी हद तक कि हर कोई उनके जीवन को लेकर चिंतित था। लेकिन ईश्वर ने उनके जीवन को और अधिक वीरतापूर्ण कार्यों के लिए लंबा कर दिया। संत के अपनी बीमारी से पूरी तरह उबरने से पहले ही, उन्हें जॉन पलेओलोगस का एक पत्र मिला, जिसमें सम्राट ने उनसे अपने और अपने ससुर, जॉन कांटाकूज़ेनोस के बीच शाही परिवार के भीतर चल रहे झगड़ों और मतभेदों को समाप्त करने के लिए कॉन्स्टेंटिनोपल आने का अनुरोध किया। ग्रेगरी रवाना हुए, लेकिन कॉन्स्टेंटिनोपल के रास्ते में उन्हें अगारियनों ने पकड़ लिया और दास तथा कैदी बनाकर एशिया ले गए। संत पूरे एक साल तक कैद में रहे। उन्हें एक मालिक से दूसरे मालिक को, एक शहर से दूसरे शहर बेचा जाता रहा। उस समय ईश्वर की यही इच्छा थी कि वह, एक प्रेरित की तरह, शहर-शहर घूमकर मसीह का सुसमाचार प्रचार करे, ऑर्थोडॉक्सों को विश्वास में दृढ़ करे, उन्हें उस पर अडिग रहने की शिक्षा दे, संदेह करने वालों को मजबूत करे, और उद्धार के संबंध में ईश्वर की बुद्धि के रहस्यों को प्रकट करे, जिन्हें समझना कठिन है। और वह वास्तव में मसीह का एक सच्चा प्रेरित था। पवित्र साहस के साथ, संत ग्रेगरी ने अगारियों[7901] और उन विधर्मीयों के साथ विश्वास पर बहस की, जो मसीह की कलीसिया से अलग हो गए थे, और जो हमारे ईश्वर मसीह की सांसारिक सेवा, प्रभु के सम्माननीय और जीवन-दायक क्रूस, पवित्र प्रतिमाओं, और उनकी पूजा के विषय में झूठी शिक्षा देते थे। उन्होंने अविश्वासियों को सुसमाचार के प्रकाश से प्रबुद्ध किया, जबकि दासों, बंदियों और ईसाइयों को सांत्वना और बल प्रदान किया, उन्हें स्वर्गीय पुरस्कारों और मुकुटों की आशा में बिना किसी शिकायत के अपने दुखों का क्रूस उठाने के लिए मनाया। संत ग्रेगरी के विरोधी उनकी बुद्धिमत्ता और उनके वचनों से प्रवाहित होने वाले अनुग्रह को देखकर चकित थे। हालाँकि, उनमें से कुछ ने, अपनी असहाय क्रोध में, उन्हें बेरहमी से पीटा, और यदि अगारियों ने स्वयं उन्हें बड़ी फिरौती पाने की उम्मीद में संरक्षित नहीं किया होता, तो वे शहीद का मुकुट प्राप्त करने तक की पीड़ा सहते। और वास्तव में, एक साल बीत जाने के बाद, बुल्गारियाई लोगों ने उसे अगारियों से छुड़ाकर थ्रेसलॉनीकी के चर्च में लौटा दिया।

संन्यासी की कैद से वापसी, पहले कॉन्स्टेंटिनोपल में, दिव्य ग्रेगरी के ऊपर मंडराते अदृश्य दूतों के असाधारण उत्सव और उनकी प्रशंसा में गाए गए मधुर भजनों से चिह्नित थी, जिसने उस बंदरगाह को झकझोर दिया जहाँ उन्हें किनारे आना था। और संत ग्रेगरी ईश्वर के चुने हुए पात्र थे।

विनम्रता, दया और नम्रता से विशिष्ट, फिर भी उन्होंने ईश्वर और ऑर्थोडॉक्स धर्म के दुश्मनों के खिलाफ साहसपूर्वक खड़े रहना जारी रखा, और ईश्वर के वचन की तलवार से विधर्मियों का जोरदार ढंग से भंडाफोड़ कर उन्हें परास्त किया। बुराई पर अच्छाई की जीत करते हुए, उन्होंने कभी भी उन लोगों की परवाह नहीं की जो उन्हें उनके दुश्मनों द्वारा उन पर लगाए गए अपमानों के बारे में बताते थे: वह सभी कष्टों और दुर्भाग्यों में उदार और धैर्यवान थे; उन्होंने हमेशा उत्पीड़न और हर तरह के अपमान को सम्मान और महिमा माना; और, मसीह के एक सच्चे शिष्य के रूप में, उन्होंने मसीह के जुए को एक आशीर्वाद और उनके बोझ को हल्का पाया।

केवल विश्वासियों ही नहीं बल्कि अविश्वासियों ने भी संत ग्रेगरी को देखकर आश्चर्य व्यक्त किया। प्रार्थना में बहाए गए अविराम आँसुओं के कारण उनकी आँखें हमेशा सूजी रहती थीं। सभी वासनाओं को समाप्त करके और शरीर को आत्मा के अधीन करके, संत ग्रेगरी ने पुण्य कार्यों में परिश्रम किया और विधर्म के उथल-पुथल और हलचल से परमेश्वर की कलीसिया और ऑर्थोडॉक्स विश्वास में शांति लाकर, अपने तपस्वी, पीड़ित और परमेश्वर-प्रसन्न जीवन का समापन किया।

[7900] जॉन पंचम पलेओलोगोस – बीजान्टिन सम्राट, 1341 से 1376 तक शासन किया। पृष्ठ 395 पर टिप्पणी 3 देखें।

[7901] अर्थात् मुसलमान।

अपने जीवन के अंतमि तीन वर्षों के दौरान, संत ग्रेगरी ने ईश्वर की कृपा की शक्ति से, बीमारों के लिए कई चमत्कार किए। उदाहरण के लिए, उन्होंने प्रार्थना के माध्यम से अपने मित्र, हायरोमोंक पोर्फरियिस को दो बार उनके बिस्तर से उठाया। अपने परमधाम गमन से ठीक पहले, उन्होंने पवित्र क्रॉस के चिह्न से और 'हे पवित्र जॉन, मेरी रक्षा करो' (' ') की प्रार्थना के माध्यम से एक सुनार की पत्नी के पाँच वर्षीय बच्चे को, जो गंभीर रक्तस्राव से पीड़ित था और जिसे पहले ही मृत्युदंड दे दिया गया था, पूरी तरह से स्वस्थ कर दिया।

[7902]इसके तुरंत बाद, संत ग्रेगरी बीमार पड़ गए और बिस्तर पर लेट गए। यह महसूस करते हुए कि उनका अंत निकट है, उन्होंने अपने आसपास के लोगों को शाश्वत जीवन में अपने प्रस्थान के दिन की भविष्यवाणी की: 'मेरे दोस्तों!' उन्होंने संत जॉन क्राइसोस्टोम के पर्व के बाद उनसे कहा, 'अब मैं आपसे प्रभु के पास जा रहा हूँ। मुझे यह इसलिए पता है क्योंकि दिव्य क्रिसोस्टोम एक दर्शन में मुझ पर प्रकट हुए और एक मित्र के रूप में, मुझे स्नेहपूर्वक अपने पास बुलाया।"

वास्तव में, उसी दिन, 14 नवंबर को, संत ग्रेगरी प्रभु के पास उनके शाश्वत स्वर्गीय धामों में प्रस्थान कर गए। जब वे मर रहे थे, तो उनके आसपास मौजूद लोगों ने देखा कि उनके होंठ कुछ बुदबुदा रहे थे, लेकिन उन्होंने उनके शब्द सुनने की कितनी भी कोशिश की, वे केवल यह ही सुन सके: 'स्वर्ग की ओर, स्वर्ग की ओर!' इन शब्दों के साथ, उनकी पवित्र आत्मा चुपचाप और शांतिपूर्वक उनके शरीर से स्वर्ग के लिए प्रस्थान कर गई[7903] । जब उनकी धन्य आत्मा उनके शरीर से अलग हुई, तो उनका चेहरा प्रकाशमान हो गया, और जिस कमरे में वे लेटे थे वह पूरा कमरा प्रकाश से नहा उठा, यह दृश्य पूरे शहर ने देखा, जो अंतिम बार चूमने के लिए संत की अवशेषों के पास उमड़ पड़ा था। इस प्रकार ईश्वर ने, इस चमत्कार के माध्यम से, अपने वफादार सेवक को महिमामय बनाया, जो अपने जीवनकाल में ही अनुग्रह का एक तेजस्वी धाम और दिव्य प्रकाश का पुत्र रहे थे[7904] ।

अपने शरीर को, जो स्वदूतों जैसी पवित्रता से महिमामय रूप से प्रकाशमान था, अपनी मृत्यु के बाद अपने झुंड के लिए एक समृद्ध विरासत और खजाने के रूप में छोड़कर, संत ग्रेगरी आज भी उन सभी बीमारों और दुर्बल लोगों पर उदारतापूर्वक चंगाई का वरदान देते हैं जो चारों ओर से विश्वास के साथ उनके पवित्र अवशेषों[7905] के पास आते हैं, हमारे ईश्वर मसीह की महिमा के लिए, उन्हें, उनके आदि-रहित पिता और परम पवित्र, भले और जीवन-दायक आत्मा के साथ, सारी महिमा, सम्मान और आराधना हो, अब और सदा और युगों-युगों तक। आमीन।

[7902] संत जॉन क्रिसिस्टम का पर्व 13 नवंबर को मनाया जाता है।

[7903] संत ग्रेगरी पलामास का निधन 14 नवंबर, लगभग 1360 को, 63 वर्ष की आयु में हुआ। – उन्होंने 70 से अधिक कृतियाँ पीछे छोड़ीं।

[7904] महान लेंट के दूसरे सप्ताह के लिए सिनाक्सारियन में, संत ग्रेगरी पलामास के समकालीन, कॉन्स्टेंटिनोपल के पैट्रिआर्क फिलोथियोस (1376) का एक कथन। – संत ग्रेगरी के लिए यह सेवा उनकी मृत्यु के तुरंत बाद पैट्रिआर्क फिलोथियोस द्वारा रचित की गई थी। इसमें, पालामास को 'धर्मशास्त्र का तुरही', 'कृपा के अग्नि-प्रेरित होंठ', 'आत्मा का सम्मानित निवास', 'चर्च का अटूट स्तंभ', 'ज्ञान की नदी', आदि के रूप में महिमामंडित किया गया है। – 1368 के परिषद में, जिसमें बार्लाम और उनके समर्थकों को निर्णायक रूप से श्रापित किया गया था, अन्य फरमानों के अलावा, 'उनकी पवित्रता ग्रेगरी पलामास, थ्रेसैलॉनीकी के मेट्रोपॉलिटन' के लिए 'शाश्वत स्मृति' की घोषणा की गई, जिन्होंने इन विधर्मीयों को 'उखाड़ फेंका' था। – ऑर्थोडॉक्स धर्म के प्रति उनकी असाधारण महान सेवाओं के सम्मान में, पवित्र चर्च ने 14 नवंबर को सेंट ग्रेगरी पालमास के पर्व दिवस के अलावा, महा-व्रत के दूसरे सप्ताह में उनके लिए एक और स्मरणोत्सव स्थापित किया है, जिसे 'प्रकाश-प्रदान करने वाले उपवासों का सप्ताह' के रूप में जाना जाता है। पिछले सप्ताह (ऑर्थोडॉक्सी सप्ताह) में सभी संप्रदायों पर ऑर्थोडॉक्सी की विजय का जश्न मनाने के बाद, चर्च इस सप्ताह अपनी विरोधी सभी झूठी शिक्षाओं पर ऑर्थोडॉक्स तपस्यावादी शिक्षा की विजय का जश्न मनाती है; पहली बाराहमासी सभी ऑर्थोडॉक्स ईसाइयों के लिए है, दूसरी मुख्य रूप से तपस्वियों और भिक्षुओं के लिए है,

[7905] संत ग्रेगरी पलामास के निधनोपरांत चमत्कारों में, निम्नलिखित चमत्कार विशेष रूप से उल्लेखनीय है, जिसने ऑर्थोडॉक्सी और परमेश्वर के पवित्र संत की अनुग्रह-पूर्ण शिक्षा की शक्ति को प्रमाणित और साक्ष्य प्रदान किया। सैटर्निना द्वीप पर, महा-तपस्या के दूसरे सप्ताह के दौरान, संत ग्रेगरी के पर्व के दिन, फ्रैंक्स आनंद-मनोरंजन कर रहे थे – उन्होंने कुछ लड़कों को इकट्ठा किया और शांत मौसम और स्पष्ट आसमान के बीच नावों से समुद्र की सैर करने निकले। जब वे इस तरह मस्ती कर रहे थे, तो एक राक्षस ने उनके मन में एक दुष्ट विचार डाला, जिससे उनका अपना ही विनाश हो गया: वे पागलों की तरह अपनी बाहें फड़फड़ाते हुए, अपने बच्चों सहित चिल्लाए: 'पालमास पर शाप! पालमास पर शाप!' अगर पलामास पवित्र हैं, तो हमें डुबो दें!' और दिव्य ग्रेगरी पलामास ने, उनके अपने निर्णय के अनुसार, ईश्वर से प्रार्थना की कि वह उन्हें वह प्रतिशोध दे जिसकी वे कामना कर रहे थे। गहराई खुल गई, और वे दुष्ट आत्माएँ, अपनी नावों सहित, समुद्र द्वारा निगल ली गईं और डूब गईं।

ट्रोपारयिन, स्वर 8:

ऑर्थोडॉक्सी का दीपक, चर्च का स्तंभ और शिक्षक, संतों के लिए भलाई का स्रोत, धर्मशास्त्रियों के अजेय योद्धा, ग्रेगरी द वंडरवर्कर, थ्रेसैलॉनीकी का गौरव, अनुग्रह का प्रचारक, प्रार्थना करें कि हमारी आत्माओं का उद्धार हो।

कॉन्टाकयिन, स्वर 2:

हे ज्ञान के पवित्र और दैवीय साधन, धर्मशास्त्र की उज्ज्वल तुरही, हम तेरा, ग्रेगरी, हे परमेश्वर के वचन के वक्ता, गुणगान करते हैं: परन्तु जैसे मन प्रथम मन के सामने खड़ा है, हे पिता, हमारे मन को उसी की ओर निर्देशित कर, ताकि हम पुकार सकें: आनन्दित हो, अनुग्रह का प्रचारक।

इराप के पूजनीय फलिपि का जीवन

14 नवंबर को स्मरण किया जाता है

मॉस्को और सम्पूर्ण रूस के ग्रैंड प्रिंस वासिली इओआनोविच के शासनकाल में[7906] , वोल्गोडा की सीमाओं के भीतर, परम पूज्य कॉर्नेलियस के मठ के पास[7907] , थियोफिलिस नाम का एक युवक प्रकट हुआ। वह वासिली नामक एक व्यक्ति के यहाँ रहने लगा। वह मसीह के नाम पर अपनी आजीविका कमाता था। उस युवक की यह धार्मिक आदत थी कि वह हर दिन दैवीय प्रार्थना सभा में जाता था और हर रात प्रार्थना में जागकर बिताता था। थियोफिलिस की विनम्रता, नम्रता और प्रार्थना के प्रति प्रेम को देखकर, हर कोई इस युवक को देखकर चकित होने लगा। किसी ने भी उसे कभी बच्चों के खेल खेलते या हँसते हुए नहीं देखा था। उन्होंने पूजनीय कॉर्नेलियस को उसके बारे में बताया। पूजनीय ने आदेश दिया कि उस लड़के को उनके पास लाया जाए। कॉर्नेलियस ने धीरे और सौम्य स्वर में लड़के से पूछा कि वह कौन है, कहाँ से आया है, उसका नाम क्या है, और उसके माता-पिता कहाँ रहते हैं। रोते हुए, लड़के ने संत के पैरों पर सिर झुकाया और कहा: 'मुझे क्षमा करें, सम्माननीय पिताजी, मुझे अपने माता-पिता की याद नहीं; वे गुजर जाने के बाद मुझे बहुत कम उम्र में छोड़ गए थे। मुझे बताया गया कि वे किसान थे, और मेरा नाम थियोफिलिस है। मैं ईश्वर के नाम पर भटकता रहा; मुझे नहीं पता कि मैं यहाँ कैसे आया, और अब मैं अपने स्वामी के साथ यहाँ रहता हूँ। मैं आपसे विनती करता हूँ, आदरणीय पिताजी, मुझे अपनी सर्वश्रेष्ठ क्षमता से आपके मठ में सेवा करने की अनुमति दें।' संत कोर्नेलियस ने अपनी सूक्ष्मदर्शी आँखों से पूर्वानुमान लगाया कि वह ईश्वर का एक चुना हुआ पात्र बनेगा। उन्होंने आदेश दिया कि थियोफिलिस को मठ में प्रवेश दिया जाए और उसे संस्कारपालक के सुपुर्द कर दिया।

उस समय वह लड़का केवल 12 वर्ष का था। मठ में प्रवेश करने के दिन से ही, उसने अपनी महान आज्ञाकारिता और विनम्रता से खुद को विशिष्ट बनाते हुए, भाईचारे की लगन से सेवा करना शुरू कर दिया। उन्होंने लगभग तीन वर्षों तक इस तरह से भ्रातृत्व की सेवा की। उनके उत्साह और नम्रता को देखकर, सैक्रिस्टन ने यह बात पूजनीय कोर्नेलियस को बताई। सभी संन्यासियों को उस मेहनती लड़के से प्रेम था। जब वह 16 वर्ष का हो गया, तो पूजनीय कोर्नेलियस ने उसे बुलाया और कहा: 'मेरे प्रिय बच्चे, तुम मठ की मुंडन संस्कार प्राप्त करने के लिए पूरी तरह से योग्य हो।'

थेओफिलिस ने खुशी से जवाब दिया: 'मेरी आत्मा सबसे बढ़कर यही चाहती है; मैं आपसे विनती करता हूँ, हे पवित्र पिता, इस अच्छे और ईश्वर-प्रसन्न करने वाले कार्य को करने में देरी न करें।'

आदरणीय कॉर्नेलियस ने स्वयं उस धन्य युवक को उपदेश देकर उसे एक भिक्षु के रूप में दीक्षा दी और उसका नाम फिलिप रखा। उसकी आध्यात्मिक मार्गदर्शन के लिए, उस युवा भिक्षु को बहुत कुशल और धार्मिक भिक्षु फ्लेवियन के हवाले कर दिया गया। सबसे पहले, उन्होंने संत फिलिप को पढ़ना और लिखना सिखाया। प्रभु ने अपने वफादार सेवक की मदद की। थोड़े ही समय में, फिलिप ने पढ़ना और लिखना सीख लिया और वह पवित्र धर्मग्रंथों को धाराप्रवाह पढ़ने में सक्षम हो गया। कई वर्षों तक, पूजनीय फिलिप ने मठ में परिश्रम किया, अपने सभी कर्तव्यों का पालन किया।

[7906] वासिली इवानोविच ने 1505 से 1533 तक ग्रैंड ड्यूकल सिंहासन पर शासन किया।

[7907] कोमेल के पूजनीय कॉर्नेलियस का पर्व दिवस 19 मई है।

वह एक क्षण चर्च में सेवा करता, अगले ही क्षण बेकरी में काम करता, पानी और लकड़ी लाता; दिन में वह भाइयों के लिए विभिन्न कार्य करता, और रात में प्रार्थना करता था। उन्होंने विशेष कठोरता के साथ अपने उपवासों का पालन किया और सच्ची संयम का उदाहरण प्रस्तुत किया। भाइयों ने आदरणीय के तपस्या के कारनामों पर आश्चर्य व्यक्त किया और संत कोर्नेलियस से फिलिप को उनके बीच एक पुरोहित के रूप में नियुक्त करने का अनुरोध करने लगे। परम धन्य ने स्वेच्छा से उनका अनुरोध स्वीकार कर लिया। तब फिलिप ने अपने प्रयासों को और भी तेज कर दिया, जिससे भिक्षु उसके सदाचारी जीवन को देखकर और भी अधिक चकित हुए। यह देखकर फिलिप आत्मा में व्याकुल हो गया और उसे दुख होने लगा।

'हाय मेरे भाग्य,' उसने मन ही मन सोचा, 'मैंने तो लोगों से अपना इनाम पहले ही पा लिया है। न्याय के दिन मैं प्रभु से और क्या इनाम की उम्मीद कर सकता हूँ? नहीं, मानवीय प्रशंसा मुझे दुख देती है।'

प्रसिद्धि से बचने की इच्छा से, उन्होंने मठ छोड़ने और जहाँ भी प्रभु उन्हें ले जाएँ, वहाँ जाने का संकल्प लिया। उन्होंने यह बात धन्य कोर्नेलियस को बताई। पवित्र वृद्ध ने उन्हें आत्मा-रक्षक परामर्श देकर आशीर्वाद दिया और उन्हें अपने मठ से शांतिपूर्वक विदा कर दिया। आदरणीय फिलिप ने परमेश्वर की अति पवित्र माता से प्रार्थना करना शुरू किया: 'हे शीघ्र सहायिका, मेरी सुनो, मुझे उस दुख से मुक्ति दो जो मेरे हृदय को क्लेशित कर रहा है।'

एक रात, जब वह अपनी प्रथा के अनुसार मठ में प्रार्थना कर रहे थे और ओडिगिट्रिया[7908] के सम्मान में कैनन गा रहे थे, तो उन्हें अचानक एक आवाज़ सुनाई दी: 'मेरे प्रिय सेवक, यहाँ से बाहर आओ और वहाँ जाओ जहाँ मैं तुम्हें निर्देश दूँगा।'

संत ने अपनी कोठरी की छोटी सी खिड़की से बाहर देखा और दक्षिणी ओर एक बड़ी रोशनी चमकती हुई देखी। वह इस दृश्य से भयभीत हो गया और डर के मारे अपनी कोठरी से बाहर भाग गया।

उन्होंने सोचा, 'यह वही स्थान है जो मुझे स्वर्ग से दिखाया गया है। प्रभु की इच्छा पूरी हो।'

अपनी कोठरी में लौटकर, उन्होंने अपनी प्रार्थना पूरी की और जो दर्शन उन्होंने देखा था, उस पर उन्होंने देर तक मनन किया। जब वे अगले सुबह चर्च के लिए रवाना हुए, तो उन्हें फिर से यह अनुग्रह मिला कि वे एक आवाज़ सुन सकें: 'इस मठ को छोड़ दो और वहाँ जाओ जहाँ मैं तुम्हें निर्देश दूँगा।'

इसके बाद, अगली रात, संत फिलिप मठ से निकल पड़े, अपने साथ केवल पहने हुए कपड़े ही थे, और वे अपनी यात्रा पर चल पड़े। वे कुबेन्स्कोये झील[7909] पर सर्व-दयालु उद्धारकर्ता के मठ आए और वहाँ से वे मौन और मठवासी तपस्या के लिए उपयुक्त स्थान की तलाश में आगे बढ़े। ऐसा करते हुए, उन्होंने अपने आत्मा को इस प्रकार के चिंतन से पोषित किया: 'आओ, हम सांसारिक जीवन से भागें, ठीक वैसे ही जैसे यहूदी लोग एक बार मिस्र की दासता से भागे थे। आओ, हम धन के प्रेम से मुंह मोड़ें, क्योंकि यह सभी बुराइयों की जड़ और शुरुआत है। प्रभु ही मेरा मार्गदर्शक और गुरु हों!'

आदरणीय फिलिप अंडोगा जिले के बेलूज़ेरो पहुँचे; उन्होंने उस क्षेत्र की खोज शुरू की और अंडोगा नदी के किनारे जंगल में[7910] , एक सुंदर, शांत और एकांत स्थान पाया। उन्होंने कहा, 'यह मेरा विश्राम स्थल है; मैं यहीं बसूँगा,' और प्रभु को धन्यवाद की प्रार्थना अर्पित की।

अपनी लंबी यात्रा से थके हुए, रेवरेंड फादर एक फैले हुए चीड़ के पेड़ के नीचे लेट गए और सो गए। नींद में, प्रभु का एक स्वर्गदूत उन्हें दिखाई दिया और कहा: 'फिलिप, यहाँ प्रभु ने तुम्हारे लिए एक स्थान तैयार किया है।'

धन्य व्यक्ति तुरंत जाग गए और सर्वपवित्र त्रिमूर्ति से प्रार्थना करने लगे। अगले ही सुबह, वे उस जिले के शासक, राजकुमार आंद्रेई वासिलीविच शेलेशपान से मिलने के लिए रवाना हुए। राजकुमार के आवास पर पहुँचने पर, धन्य व्यक्ति ने उनसे उस स्थान के बारे में पूछा जहाँ उन्हें अपना दर्शन हुआ था। राजकुमार उस संत के साथ उस स्थान पर

[7908] 'ओडिगिट्रिया' उपाधि, जिसका अर्थ 'मार्गदर्शक' है, हमारे परम पवित्र प्रभु की माता, ईश्वर की माता की स्मोलेंस्क प्रतिमा को प्रदान की गई थी। कुछ लोग इस नाम की व्याख्या इस तथ्य से करते हैं कि यह पवित्र प्रतिमा यूनानी सम्राटों के साथ उनके अभियानों पर जाती थी; अन्य लोग इसकी व्याख्या इस तथ्य से करते हैं कि ओडिगिट्रिया की पवित्र प्रतिमा मूल रूप से मारमारा सागर के तट पर 'गाइड' के मठ में रखी गई थी: समुद्र में निकलने वाले नाविक इस पवित्र प्रतिमा के सामने प्रार्थना करते थे। एक तीसरा स्पष्टीकरण भी है: दो अंधे आदमी, जिन्हें स्वयं परमेश्वर की माता ने मार्गदर्शन किया, इस प्रतिमा के पास लाए गए और चंगा हो गए। परमेश्वर की माता की 'ओडिगिट्रिया' नामक पवित्र प्रतिमा का पर्व दिवस 28 जुलाई है।

[7909] कुबेन्स्कोये झील वोलोगोडा गवर्नरेट के दक्षिण-पश्चिमी भाग में स्थित है।

[7910] अंडोगा नोवगोरोड गवर्नरेट की एक नदी है।

गया और अपनी छड़ी से एंडोगा नदी से माली इराप तक के क्षेत्र को चिह्नित किया, और उस संत को वहाँ रहने की अनुमति दे दी। उस पूजनीय व्यक्ति ने उस स्थान को एक खाई से घेर लिया, नदी के किनारे अपने लिए एक छोटा सा कोठरीनुमा घर बनाया, और अपनी आत्मा के उद्धार के लिए प्रभु से प्रार्थना करने लगा।

राजकुमार एंड्रयू का एक भाई था, राजकुमार जॉन। जब राजकुमार एंड्रयू ने अपने भाई को बताया कि धन्य फिलिप उनके क्षेत्र में बस गए हैं, तो राजकुमार जॉन, शैतान के प्रभाव में, अपने भाई और धन्य फिलिप दोनों पर बहुत क्रोधित हो गया। लोगों और पुरोहितों की उपस्थिति में, उसने अपने भाई को डांटना शुरू कर दिया। 'तुमने मेरी अनुमति के बिना इस आदमी को यहाँ आने दिया है; मैं उसके पास जाऊँगा, उसे वहाँ से भगा दूँगा, और उसे वहाँ रहने नहीं दूँगा।'

प्रिंस एंड्रयू ने पुरोहितों और लोगों के साथ मिलकर अपने भाई को उस पवित्र व्यक्ति को नुकसान न पहुँचाने के लिए मनाने की बहुत कोशिश की। प्रिंस जॉन और भी ज़्यादा क्रोधित हो गया, अपने घोड़े पर कूदकर रेगिस्तान की ओर निकल पड़ा, उसका इरादा उस संत को वहाँ से भगाने का था। जब राजकुमार माली इराप पहुँचा, तो उसका घोड़ा रुक गया और धारा को पार करने से इनकार कर दिया। राजकुमार ने अपनी चाबुक से घोड़े को मारा। लेकिन घोड़े ने लगाम को कसकर काट लिया और दौड़ पड़ा, राजकुमार को उसी गाँव में ले गया जहाँ वह रहता था, और वहाँ, संत निकोलस चमत्कारकर्ता के चर्च के पास, राजकुमार को नीचे फेंक दिया, जबकि वह दौड़ता रहा और लगभग दो वर्स्ट आगे जाकर मर गया। जैसे ही वह गिरा, राजकुमार एक पत्थर से टकराकर मर गया। राजकुमार एंड्रे ने अपने भाई को दफनाया और पूजनीय फिलिप से मिलने के लिए निकल पड़ा। उसने अपने भाई की याद में तपस्वी को चाँदी देना शुरू कर दिया। हालाँकि, पूज्य ने चाँदी स्वीकार नहीं की, बल्कि बोल्शोय और माली इराप नदियों के बीच एक भूखंड माँगा। राजकुमार एंड्रे ने खुशी-खुशी उनकी यह प्रार्थना मान ली: उन्होंने उन्हें पूरा भूखंड दे दिया और अपने किसानों को आदेश दिया कि वे पूज्य की आज्ञा का पालन करें और हर संभव तरीके से उनकी सहायता करें। उस समय से, राजकुमार एंड्रयू और कई अन्य लोगों ने परम पावन पिता में गहरी आस्था विकसित कर ली और उनकी प्रार्थना तथा मार्गदर्शन की कामना करने लगे। परम पावन ने अपने लिए एक चैपल और एक कोठरी बनवाई, और फिर सर्वपवित्र त्रिमूर्ति को समर्पित एक चर्च बनाने का संकल्प लिया। कई लोग फिलिप के चैपल में प्रार्थना करने आए। आदरणीय महंत ने उन्हें आत्मा के लाभों के बारे में सिखाया और उनसे कहा: 'सुनो, पिताओं और बच्चों: आइए हम अपनी आत्माओं के लिए एक अच्छा और लाभकारी कार्य करें; आइए हम पवित्र और जीवन-दायक त्रिमूर्ति के नाम पर एक चर्च बनाएं।'

यह सुनकर, लोगों ने स्वेच्छा से संत की सहायता करना शुरू कर दिया। कुछ ही समय में, ईश्वर की सहायता से और संत फिलिप की प्रार्थनाओं के माध्यम से, उन्होंने चर्च का निर्माण किया और उसे अपनी क्षमता के अनुसार सुसज्जित किया। राजकुमार एंड्रे वासिलीविच ने स्वयं चर्च को पुस्तकें और पूजा के बर्तन दान किए। अंततः इस चर्च को पवित्र किया गया, और वहाँ प्रभु की प्रार्थनाएँ और स्तुति भजन अर्पित किए जाने लगे। नव-स्थापित मठ का नाम 'इराप के फिलिप का क्रास्नोबॉर्स्क हर्मिटेज' ([7911]) रखा गया। पवित्र तपस्वी की ख्याति फैलने लगी, और कई लोग उनकी प्रार्थना और आध्यात्मिक मार्गदर्शन की तलाश में उनके पास आने लगे। धन्य फिलिप ने सभी को सिखाया, सभी को उपयोगी सलाह दी, सभी के लिए प्रार्थना की, और सभी को प्रोत्साहित और सांत्वना दी।

'आओ हम शांति और कोमलता में जिएँ,' संत उन सभी को उपदेश देते थे जो उनके पास आते थे, 'अपने माता-पिता से प्रेम करो और उनका सम्मान करो। शांति के ईश्वर आपको सर्वदा शांति और सुकून में रखें; अपने सभी संबंधियों, सभी गरीबों और ज़रूरतमंदों से प्रेम करो, क्योंकि वे हमारे पड़ोसी हैं; आइए याद रखें कि प्रभु स्वयं गरीबों से प्रेम करते थे। भाइयों, हम घमंडी न बनें, बल्कि कोमल और नम्र बनें, क्योंकि *'ईश्वर घमण्डी लोगों का विरोध करता है, पर नम्र लोगों पर अनुग्रह करता है'* (1 पतरस 5:5)।

इस प्रकार दूसरों को सिखाते हुए, संत फिलिप ने अपने तपस्या के प्रयासों को और भी बढ़ा दिया, वे लगातार दैवीय रूप से प्रेरित दाऊद के भजन गाते थे, और साथ ही मठवासी जीवन के सभी नियमों का सख्ती से पालन करते थे। विशेष रूप से, उन्होंने सभी को भजन पढ़ने की सलाह दी: 'ध्यान दो, मेरे बच्चों,' वे कहते थे, 'क्योंकि दाऊद के गीत गाने से अधिक प्रभावी ढंग से कोई भी राक्षसों को हमसे दूर नहीं भगाता।'

[7911] क्रस्नोबोर्स्क-ट्रोइत्सा-फिलिप्पो-इरापस्क हर्मिटेज, जो अब बंद हो चुका है, नोवगोरोड डायोसीस के भीतर, चेरेपोवेट्स शहर से 52 वर्स्ट की दूरी पर स्थित है।

एक दिन, जब धन्य व्यक्ति अपनी कोठरी में प्रार्थना कर रहे थे, तो उन्हें अचानक एक तुरही और शोर-शराबे की आवाज़ सुनाई दी, मानो किसी सैन्य दल की हो। धन्य व्यक्ति ने सोचा: 'यह तुरही की आवाज़ कहाँ से आ रही है? निश्चित रूप से यहाँ कोई लड़ाई नहीं है।'

इस बीच, उस अशुद्ध आत्मा ने जो इस हलचल का कारण था, संत के पास आकर कहा: 'नहीं, एक युद्ध हो रहा है; यह तुम्हारे विरुद्ध लड़ा जा रहा है। यदि तुम यह युद्ध नहीं लड़ना चाहते, तो जाओ और सो जाओ, और हम तुमसे नहीं लड़ेंगे।'

संत ने प्रार्थना करने *के बाद*, क्रॉस का चिह्न बनाया और पुकार कर *कहा: 'ईश्वर उठे और उसके शत्रु बिखर जाएँ; जो उससे घृणा करते हैं वे उसकी उपस्थिति से भाग जाएँ; वे धुएँ की तरह लुप्त हो जाएँ, वे लुप्त हो जाएँ* (भजन संहिता 67:2–3)।

तुरंत, राक्षसों की सारी शक्ति गायब हो गई। यह देखकर, धन्य फिलिप ने पुकारा: 'महान और शक्तिशाली है प्रभु!'

उस समय से, धन्य व्यक्ति ने उपवास और प्रार्थना में और भी अधिक मन लगा दिया। दुष्ट स्वयं अब उसे परेशान नहीं कर सकता था, लेकिन उसने दुष्ट लोगों को उसके विरुद्ध भड़काना शुरू कर दिया। वे पवित्र व्यक्ति के विरुद्ध हो गए और उसे परमेश्वर द्वारा उसके लिए निर्धारित स्थान से भगाने की कोशिश करने लगे। जब संत ने देखा कि शैतान के उकसावे पर लोग उसे नुकसान पहुँचा रहे थे, तो उन्होंने अपने उत्पीड़क के लिए प्रार्थना करते हुए कहा: 'हे प्रभु, इसे उनके पाप के रूप में न गिनो, और उनके सभी अपराधों को क्षमा कर दो।'

तब अन्य लोगों ने, उनकी द्वेष-रहितता और धैर्य को देखकर, एक-दूसरे से कहा: 'देखो, एक संत पुरुष: वह न तो द्वेष रखता है और न ही कोई कटुता, बल्कि केवल उन लोगों के लिए प्रार्थना करता है जो उसका उत्पीड़न करते हैं।'

एक दिन, शैतान एक भिक्षु के भेष में संत के कुटिया के पास आया और खटखटाने लगा। धन्य संत ने कहा, 'एक प्रार्थना कहो।'

लेकिन शैतान ने उत्तर दिया, 'अब और हमेशा और युगों-युगों तक।'

तब संत ने फिर से उस भिक्षु से प्रार्थना कहने के लिए कहा, लेकिन शैतान ने एक बार फिर वही जवाब दोहराया। संत ने भिक्षु को तीसरी बार प्रार्थना कहने का आदेश दिया, लेकिन वही जवाब मिला। संत ने कहा: 'यह कहो: पिता और पुत्र और पवित्र आत्मा की महिमा हो, अब और हमेशा और युगों-युगों तक। आमीन।'

यह सुनते ही, राक्षस आग से झुलस जाने के मारे तेजी से गायब हो गया। फिर संत फिलिप संदेह में पड़ गए; उन्होंने उस स्थान को छोड़ने का भी सोचा, लेकिन उन्होंने एक आवाज़ सुनी: 'परमेश्वर के सेवक, परेशान न हो। यहाँ रहो, जैसा कि मैंने तुम्हें आज्ञा दी है। तब तुम्हें परमेश्वर की महिमा देखने और अपनी आत्मा के लिए शांति पाने का सौभाग्य मिलेगा।'

धन्य फिलिप क्रास्नोबोर्स्क रेगिस्तान में एकान्तवासी संन्यासी के रूप में रहते थे। उनके तपस्वी जीवन के बारे में सुनकर, कई धर्मपरायण लोग—भिक्षु और गृहस्थ दोनों—आत्मा को बचाने वाली बातचीत के लिए दूर-दूर से उनके पास आते थे, और संत से यह पूछते थे कि वे अपने पापों से अपनी आत्मा को कैसे बचाएं। उनके नियमित आगंतुक और संवाददाता एंड्रोज़ पैरिश के निवासी थे। धन्य व्यक्ति ने सभी को सरल और संक्षिप्त, फिर भी शक्तिशाली और हार्दिक शब्दों में प्रेमपूर्वक उपदेश दिया; उन्होंने भिक्षुओं से उन तीन गुणों के बारे में बात की जो उन्हें बुरी शक्तियों पर काबू देने की शक्ति देते थे: वैराग्य, बार-बार की जाने वाली जागृति और उत्कट प्रार्थना; उन्होंने उन्हें याद दिलाया कि भिक्षु जीवन का जुआ कितना कठोर और दुखद होता है, और कैसे पुराने समय के भिक्षु तपस्या और मौन के जीवन के माध्यम से ईश्वर की सेवा करने के आदी थे; सामान्य लोगों से उन्होंने अपने पड़ोसी से प्रेम करने, विशेष रूप से गरीबों और ज़रूरतमंदों की मदद करने, और सभी के साथ न्यायपूर्ण व्यवहार करने का आग्रह किया; उन्होंने पुरखों की आध्यात्मिक शक्ति और आज के लोगों की आध्यात्मिक कमजोरी की ओर इशारा किया; कष्टों में धैर्य के उदाहरण के रूप में, उन्होंने पवित्र शहीदों और धन्य तपस्वियों को प्रस्तुत किया, जिन्होंने अपने दुखों और कष्टों के माध्यम से, मानवीय स्वभाव की सीमाओं को पार कर दिया था और लोगों की स्मृति में हमेशा के लिए जीवित हैं; उन्होंने हमें अपने विचारों पर नज़र रखने, क्षणिक वर्तमान के बजाय शाश्वत भविष्य पर चिंतन करने की शिक्षा दी। जब एक वार्तालापकर्ता ने उनसे पूछा कि हम दूसरों का न्याय क्यों करते हैं, तो आदरणीय ने उत्तर दिया: 'जो कोई दूसरों का न्याय करता है, उसने अभी तक खुद को नहीं समझा है, उसने अपने आप के खिलाफ संघर्ष नहीं किया है।' जिज्ञासु लोगों को वह अपने जीवन के बारे में बताते

थे: कि कैसे एक कसिान के बेटे के रूप में, वह बचपन में एक पूर्ण और परत्यिक्त अनाथ रह गया था, मसीह के नाम पर भटकते हुए और जीवति रहते हुए; कैसे वह पूजनीय कॉर्नेलयिस के मठ में आया और मठवासी जीवन का आदी हो गया; दनि में मठ की सेवा और शारीरकि श्रम में बतिाते थे, जबकि रात में वे मैटन्सि तक प्रार्थना करते थे, चर्च की 18 सीढ़यिों में से प्रत्येक पर सौ प्रणाम करते थे, और कैसे वे माउंट इराप पर बस गए।

एक दनि, मेलेटयिस नामक एक गाँववाला धन्य फलिपि के पास उनकी मार्गदर्शन की तलाश में आया। संत में गहरी आस्था रखने वाला मेलेटयिस अक्सर धन्य व्यक्ति के मठ में आता था। इस अवसर पर, वह संत फलिपि के साथ रात रुक गया। देर रात तक, संत ने उस गाँववाले से बातचीत की। अंत में, पूज्यनीय ने अपनी संध्या की प्रार्थनाएँ कहना शुरू कयिा, जबकि मेलेटयिस, नींद के मारे, जल्द ही सो गया। आधी रात के आसपास वह जागा और आदरणीय संत को पुकारा; लेकनि वह अपनी कोठरी में नहीं थे। मेलेटयिस ने छोटी खड़िकी खोली, चर्च की ओर देखा और संत को चर्च के पास प्रार्थना में अपने हाथ उठाए हुए घुटने टेके देखा; उनके हाथ आग जैसी मशालों की तरह चमक रहे थे। मेलटियिस ने खड़िकी बंद करके परम पवत्रि त्रमिूर्त से प्रार्थना करना शुरू कर दयिा, और इस दृश्य को देखकर चकति हो गया। फरि उसने इस बारे में कई लोगों को बताया, और जनि्होंने यह सुना, वे उस धन्य व्यक्ति में बहुत आस्था रखने लगे।

इस प्रकार पूजनीय फलिपि अपने रेगस्तिान में 15 वर्षों तक रहे, धन्य वशि्राम और प्रभु के पास अपनी आत्मा के प्रस्थान की प्रतीक्षा करते हुए, और स्वयं को इन शब्दों से प्रोत्साहति करते रहे: 'धीरज धर, फलिपि, हौसला रख और हमि्मत कर'।

वे अथक रूप से प्रार्थना करते थे और अपनी पवत्रि आत्मा की गहराई से पुकारते थे: 'हे सर्वशक्तमिान ईश्वर, संसार में शांति लाओ; सभी ऑर्थोडॉक्स ईसाइयों पर दया करो और उन्हें बचाओ; उन्हें शांति और समृद्धि प्रदान करो, और उन्हें सभी पापों से शुद्ध करो। हे प्रभु, आप दयालु और धीरजवान हैं; आप हमारे पश्चाताप की प्रतीक्षा करते हैं और पापयिों की मृत्यु की कामना नहीं करते। तेरी दया महान है, और तेरा करुणा असीम है। और हे दयालु माता, परमेश्वर की परम पवत्रि माता, हमारी शीघ्र सहायकि और मध्यस्थ, अपने पुत्र से हमारे लिए अनवरत प्रार्थना करो।"

उसी क्षण, कुबेन्स्कोये झील पर स्थति स्पासो-कामेन्नी मठ का एक भकि्षु आदरणीय फादर के पास आया। इस भकि्षु का नाम हरमन था। वहाँ पहुँचने पर, उसने आदरणीय फादर फलिपि से उसे रेगस्तिान में उनके साथ रहने की अनुमति देने का अनुरोध कयिा।

'भाई, यहाँ का जीवन कठनि और दुखद है,' संत ने हरमन के अनुरोध का उत्तर देते हुए कहा।

'धैर्य, फादर, मोक्ष की शुरुआत है; मैं मसीह के लिए तब तक सहन करूँगा जब तक मैं कर सकूँ,' उसने जवाब दयिा।

उस समय से, उन्होंने प्रार्थना और तपस्या में एक साथ परश्रिम करना शुरू कर दयिा। हमेशा सक्रयि रहने वाले तपस्वी को जीते देख, हरमन को धन्य फलिपि में गहरी आस्था हो गई; उसने उनसे लंबी बातचीत की, उनके पूर्व जीवन के बारे में उनसे पूछा, और भवषि्य की पीढ़यिों की स्मृति के लिए रेवरेंड द्वारा अपने बारे में बताई गई हर बात को दर्ज कयिा।

धन्य फलिपि ने फरि भी हरमन के साथ काफी समय तक परश्रिम करना जारी रखा। अपने नकिट मृत्यु का पूर्वाभास करते हुए, पूज्यनीय ने एक बार हरमन से कहा: 'मैं तुमसे वनिती करता हूँ, मेरे प्रयि भाई, मेरी मृत्यु तक मुझे मत छोड़ना, क्योंकि मेरे पास तुम्हारे साथ रहने के लिए बस थोड़ा ही समय बचा है।'

उस समय से, पूजनीय ने अपनी प्रार्थनाएँ और तेज कर दीं। उनका परमधाम 14 नवंबर 1537 की रात को हुआ।

आधी रात को, हरमन जागा और एक असाधारण सुगंध से अभभिूत हो गया जो पूरी कोठरी में फैली हुई थी।

उस सम्माननीय के बस्तिर पर नज़र डालते ही, उसने देखा कि फिलिपि ने पहले ही अपना प्राण प्रभु को सौंप दयिा था। उस धर्मात्मा का चेहरा एक असाधारण प्रकाश से दमक रहा था। हर्मन, एक पादरी न होने के कारण, स्वयं संत फलिपि के शरीर को दफना नहीं सकते थे। ईश्वर की इच्छा से, उसी सुबह जॉब नामक नन उस मरुभूमि पर पहुँची। हरमन के साथ मलिकर, उसने पवत्रि फलिपि को श्रद्धापूर्वक दफनाया। इस आदरणीय संत का जीवन वनिम्रता से परपिूर्ण और परम पवत्रि त्रमिूर्त की महमिा के लिए कए गए महान कार्यों से समृद्ध था। आमीन।

धार्मकि सम्राट जस्टनियिन और सम्राज्ञी थयिोडोरा की स्मृति

14 नवंबर को स्मरण कयिा जाता है

बाइज़ेन्टियम के सम्राट सेंट जस्टनियिन एक स्लाव थे: उनका जन्म आज के बुल्गारिया में, स्रेडेट्स शहर के पास वर्डियाना गाँव में हुआ था[7912] । उनके चाचा जस्टनि, जो वर्डियाना के ही निवासी थे, केवल एक भेड़ की खाल का कोट पहनकर पैदल ही कॉन्स्टेंटिनोपल तक चले गए थे। वहाँ, अपनी प्राकृतिक प्रतिभा के कारण, वह जल्द ही प्रमुखता में आ गया और अंततः सम्राट भी बन गया। वह अपनी पत्नी लुपकिना और उसकी बहन बेग्लानिया—जो उप्रवदा की माँ थीं—को वर्दियाने से अपने साथ कॉन्स्टेंटिनोपल ले आया। यही उप्रवदा थी, जिसने जस्टनि की मृत्यु के बाद, जस्टनियिन नाम से बीजान्टिन साम्राज्य का सिंहासन संभाला।

सम्राट जस्टनियिन को इतिहास में बाइज़ेंटाइन साम्राज्य के दुश्मनों के खिलाफ अपनी सफल युद्धों के साथ-साथ रोमन कानूनों का एक संपूर्ण संग्रह प्रकाशित करने के लिए भी जाना जाता है। लेकिन, इसके अलावा, वह ईसाई चर्च और ऑर्थोडॉक्सी के प्रति अपनी सेवाओं के लिए प्रसिद्ध हुए। इस प्रकार, उन्होंने ईसाई धर्म को फैलाने और मूर्तिपूजा को खत्म करने के लिए काफी प्रयास किए। एथेंस में मूर्तिपूजक स्कूलों को बंद करने के बाद, उन्होंने आदेश दिया कि विज्ञान की शिक्षा भिक्षुओं द्वारा कराई जाए। मूर्तिपूजक धर्म को उनके उत्पीड़न का सबसे बुरा सामना उनकी राजधानी - बिज़ेंटियम - में, साथ ही एशिया माइनर में करना पड़ा। मूर्तिपूजकों को ईसाई धर्म में परिवर्तित करने के उद्देश्य से, जस्टनियिन ने एफेसस के बिशप जॉन को एशिया माइनर भेजा, जहाँ उन्होंने 70,000 तक मूर्तिपूजकों का बपतिस्मा दिया, जबकि सम्राट ने नव-धर्मियों के लिए 90 तक चर्च बनवाए।

ईसाई धर्म के प्रसार के साथ-साथ, जस्टनियिन ऑर्थोडॉक्स धर्म की शुद्धता को बनाए रखने के लिए चिंतित थे। उनके शासनकाल के दौरान, ऑर्थोडॉक्स चर्च नेस्टोरियन लोगों से परेशान होती रही, जो यह सिखाते थे कि मसीह ईश्वर और मनुष्य दोनों नहीं थे, और कि ईश्वरत्व केवल एक साधारण मनुष्य के भीतर निवास करता था[7913] । चर्च के लिए नेस्टोरियनों से भी अधिक परेशान करने वाले मोनोफिसाइट्स थे, जिन्होंने यह सिखाया कि यीशु मसीह में दिव्य स्वभाव ने मानवीय स्वभाव को आत्मसात कर लिया था। मानव मन की इन मनगढ़ंत बातों के खिलाफ, जस्टनियिन ने 'एकमात्र पुत्र और परमेश्वर का वचन' (Only-begotten Son and Word of God) नामक भजन रचा, जिसे उन्होंने दिव्य अनुष्ठान (Divine Liturgy) के दौरान गाने का आदेश दिया[7914] । उनके प्रयासों से, थियोडोर ऑफ मोप्सुएस्टिया, थियोडोरेट ऑफ साइरस और इवास ऑफ एडसा की रचनाओं में पाए जाने वाले नेस्टोरियन विचारों की निंदा करने और चर्च के भीतर फूट को समाप्त करने के लिए 553 में पाँचवाँ सार्वभौमिक परिषद बुलाया गया[7915] और[7916] ।

ऑर्थोडॉक्स धर्म और धार्मिकता के एक दृढ़ रक्षक, जस्टनियिन ने ऑर्थोडॉक्स चर्च के भीतर पूजा के उचित संचालन और पूजा स्थलों के रूप में चर्चों की भव्यता सुनिश्चित करने के लिए बहुत सावधानी बरती। अपने कानून संहिता में, उन्होंने अन्य बातों के अलावा, मसीह के जन्म, प्रभु के बपतिस्मा, पुनरुत्थान, परमेश्वर की परम पवित्र माता की घोषणा और अन्य पर्वों के सार्वभौमिक उत्सव को अनिवार्य करने वाला एक कानून शामिल किया। इसके अलावा, जस्टनियिन ने परमेश्वर की परम पवित्र माता, प्रेरितों और अन्य संतों के सम्मान में कई भव्य चर्च बनवाए। जस्टनियिन की सबसे प्रसिद्ध रचना कॉन्स्टेंटिनोपल में स्थित सेंट सोफिया चर्च, यानी 'ईश्वर की बुद्धि', मानी जाती है।

[7912] स्रेडेट्स – अब सोफिया, बुल्गारिया की राजधानी।

[7913] इस विधर्म के संस्थापक नेस्टोरियस थे, जो चौथी शताब्दी में 428 से 431 तक कॉन्स्टेंटिनोपल के पैट्रिआर्क थे।

[7914] वर्तमान में, यह भजन लिटर्जी के दौरान छोटे प्रवेश से पहले गाया जाता है।

[7915] मोप्सुएस्टिया के थियोडोर – एशिया माइनर के सिलिसिया क्षेत्र के एक शहर मोप्सुएस्टिया के बिशप; थियोडोरेट, मध्य ग्रीस के सिरिस के बिशप; दोनों चौथी शताब्दी में रहते थे; बाद वाले ने अलेक्ज़ेंड्रिया के बिशप सिरिल का खंडन करते हुए कई ग्रंथ लिखे, जो नेस्टोरियस के विरोधी थे। बाद में थियोडोरेट ने अपने नेस्टोरियन विचारों का परित्याग कर दिया और चर्च के साथ शांति में मृत्यु को प्राप्त हुए। इबा, एडेसा शहर के एक पुरोहित, मोप्सुएस्टिया के थियोडोर और सिरिस के थियोडोरेट के समकालीन थे।

[7916] यह परिषद निम्नलिखित कारण से बुलाई गई थी। चौथे सार्वत्रिक परिषद में निंदा किए जाने के बाद, मोनोफिज़िट्स चर्च के भीतर अशांति फैला रहे थे, और ऑर्थोडॉक्स के प्रतिनिधियों पर नेस्टोरियनवाद का आरोप लगा रहे थे। इस आरोप का आधार यह था कि चौथे सार्वभौमिक परिषद ने मोप्सुएस्टिया के थियोडोरेट, साइरस के थियोडोरेट और एडसा के इवास की नेस्टोरियन शिक्षाओं की निंदा नहीं की थी, जिनके अस्वीकार से ही मोनोफिज़िटि स्वयं उत्पन्न हुए थे। मोनोफिसाइट्स को ऑर्थोडॉक्स पर नेस्टोरियनों के साथ सहानुभूति रखने का आरोप लगाने का कोई आधार न देने के लिए, उपर्युक्त पादरियों की धर्मपरायणता के प्रश्न को हल करने हेतु एक परिषद बुलाई गई। उस परिषद में, मोप्सुएस्टिया के थियोडोर की शिक्षाओं और व्यक्ति के खिलाफ बिना शर्त एक शाप (अनाथेमा) घोषित किया गया; लेकिन थियोडोरेट और इवास के संबंध में, निंदा केवल उनके कुछ लेखों तक ही सीमित थी; उन्होंने बाद में अपने विधर्मी विचारों का परित्याग कर दिया था, इसलिए उन पर शाप नहीं लगाया गया।

मूल रूप से धर्मनरिपेक्ष कोंस्टेंटनि द्वारा नरि्मति, जो प्रेरतिों के बराबर थे, यह चर्च जस्टनियिन के शासनकाल में एक दंगे के दौरान जलकर राख हो गया था। धर्मपरायण सम्राट ने सर्वश्रेष्ठ नरि्माताओं को इकट्ठा कयिा, सोने या पैसे पर कोई खर्च नहीं कयिा, और एक ऐसा चर्च बनाया जसिकी भव्यता और सुंदरता आने वाली पीढ़यिों को चकति कर देगी।

अपने नजिी जीवन में, जस्टनियिन ने महान भक्ति का प्रदर्शन कयिा। हमेशा धर्मपरायण, उन्होंने कठोर उपवास और प्रार्थना के साथ महा-उपवास का पालन कयिा; उन्होंने रोटी नहीं खाई, बल्कि केवल सब्जयिों और पानी से काम चलाया, और वह भी केवल हर एक या दो दनि में एक बार।

इस प्रकार, पवत्रिता और धर्मपरायणता में जीवन यापन करते हुए, उन्होंने 39 वर्षों तक शासन कयिा और प्रभु में शांतपिूर्वक नधिन कर गए[7917] । चर्च के प्रति उनकी सेवाओं और उनकी धर्मपरायणता के लिए, उन्हें मृत्यु के बाद संत घोषति कयिा गया। उनकी पत्नी, रानी थयिोडोरा को भी उनके साथ संत घोषति कयिा गया था; वह शुरू में एक पापी थीं, लेकनि बाद में उन्होंने पश्चाताप कयिा और अपना बाकी जीवन पवत्रिता और धार्मकिता में बतिाया।

28 नवंबर

15 नवंबर (पुराने कैलेंडर के अनुसार)

पवत्रि शहीदों गुरयिस, सामन और अववि की कष्टकथा

15 नवंबर को स्मरणोत्सव

जब परमेश्वर की कलीसयिा अधर्मी सम्राटों डायोक्लेटयिन और मैक्समियिन द्वारा क्रूर उत्पीड़न का शकिार हुई, और वपित्तयिों से एक तूफानी समुद्र में जहाज की तरह उछल रही थी, उस समय एदेसा नगर के पास[7918] , दो धार्मकि और सदाचारी पुरुष एकांत में, मानो एक शांत आश्रय में, रहते थे: गुरयिस और सामन। एडेसा शहर में ही पले-बढ़े होने के कारण, वे शहर में प्रचलति व्यर्थता और अराजकता के कारण वहाँ रहना नहीं चाहते थे; लेकनि, संसार और सांसारकि चंतिाओं से दूर होकर, वे शहर छोड़ गए और, अधर्मी लोगों से खुद को दूर करते हुए, एकमात्र ईश्वर की खोज में लगे, उन पर वश्विास करते हुए और दनि-रात लगन से उनकी सेवा करते हुए। वे न केवल स्वयं प्रभु के लिए अथक परश्रिम करते थे, बल्कि दूसरों को भी अपनी क्षमतानुसार ऐसा करने की शक्षिा देते थे, और उन्होंने कई मूर्तपिूजकों को अधर्मी मूर्तपिूजा से हटाकर उन्हें सच्चे ईश्वर की ओर मोड़ा। यह जानने पर, उस समय एदेसा में मौजूद रोमन गवर्नर एंटोननिस ने आदेश दयिा कि उन्हें और उनके उपदेश का पालन करने वाले सभी लोगों को तुरंत गरिफ्तार कर लयिा जाए। पगनों द्वारा पकड़े जाने पर, मसीह के स्वीकारकर्त्ता, गुरयिास और सामोन, कई अन्य मसीहयिों के साथ, कुछ समय के लिए पहरे में रखे गए। फरि अंटोननिस ने, पकड़े गए मसीहयिों को बुलाकर, उन सभी को शाही फरमान का पालन करने और मूर्तयिों को बलदिान चढ़ाने का आदेश दयिा; लेकनि उनमें से कोई भी अपने प्रभु का परत्यिाग करने को तैयार नहीं था। फरि उसने उन्हें कोड़े मारने का आदेश दयिा; लेकनि बाद में उसे एहसास हुआ कि अगर नेताओं को ही मूर्तयिों की पूजा करने के लिए मना लयिा जाए, तो दूसरे, उनका उदाहरण देखकर, आसानी से ऐसा करने के लिए राज़ी हो सकते हैं; और, यह सोचकर, उसने मसीह के झुंड के केवल नेताओं, गुरयिास और सामोनास को ही यातना देने के लिए छोड़ दयिा; जबकि बाकी लोगों को कोड़े लगवाने के बाद, उसने दया दखिाने का नाटक करते हुए घर भेज दयिा। जहाँ तक उन दो पवत्रि कन्फेशर्स का सवाल है, उसने उन्हें न्याय के लिए अपने सामने बुलाया और उनसे कहा:

'हमारे महान सम्राट आपको महान देवता डीईआई[7919] की पूजा करने और उनके मंदरि में उन्हें धूप अर्पति करने का आदेश देते हैं।'

[7917] यह 14 नवंबर 565 को हुआ।

[7918] एडेसा मैसेडोनयिा का एक शहर है।

[7919] रोमन मूर्तपिूजकों की मान्यताओं के अनुसार, डयिस या जुपटिर सर्वोच्च देवता और देवताओं के पति थे।

सामोन ने उत्तर दिया:

'हम सच्चे धर्म को कभी नहीं त्यागेंगे, जिसके द्वारा हमें अनंत जीवन की आशा है – हम मानव हाथों के बनाए की पूजा नहीं करेंगे।'

तब एंटोनिस ने कहा:

'किसी भी हाल में, तुम्हें राजाओं की आज्ञा का पालन करना होगा।'

'हम कभी भी अपने पवित्र और निर्दोष विश्वास का त्याग नहीं करेंगे,' गुरियास ने उत्तर दिया, 'और न ही हम मनुष्यों की दुष्ट और हानिकारक इच्छा के आगे झुकेंगे; बल्कि हम अपने प्रभु की इच्छा को पूरा करते हैं, जिन्होंने कहा: *'जो कोई मुझ पर मनुष्यों के सामने अपनाएगा, मैं भी अपने स्वर्गीय पिता के सामने उस पर अपनाऊँगा; परन्तु जो कोई मनुष्यों के सामने मुझ से इन्कार करेगा, मैं भी अपने स्वर्गीय पिता के सामने उससे इन्कार करूँगा'* (मत्ती 10:32–33)।

तब न्यायाधीश ने उन्हें राजा की आज्ञा न मानने पर मृत्यु की धमकी देना शुरू कर दिया। लेकिन संत सामन ने साहसपूर्वक उससे कहा:

'हे यातना देने वाले! अपने सृष्टिकर्ता की इच्छा को पूरा करके हम मरेंगे नहीं, बल्कि हमेशा जीवित रहेंगे; परन्तु यदि हम राजा की आज्ञा का पालन करें, तो भले ही तुम हमें न मारो, हम अपने आप ही नष्ट हो जाएँगे।'

यह सुनकर, एंटोनिस ने संतों को एक अँधेरी कोठरी में फेंकने का आदेश दिया।

उस समय, प्रांत का राज्यपाल मुसोनियस, जो विशेष रूप से राजाओं द्वारा ईसाइयों को मारने के लिए एडेसा भेजा गया था, वहाँ पहुँचा। पवित्र शहीदों गुरियास और सामोन को कालकोठरी से बाहर निकालकर, उसने उन्हें अपने सामने बिठाया और उनसे कहा:

'पूरी पृथ्वी के राजाओं का यही आदेश है: कि तुम डियाना के वेदी पर शराब और धूप चढ़ाओ; लेकिन अगर तुम ऐसा नहीं करते, तो मैं तुम्हें विभिन्न यातनाएँ सहने के लिए मजबूर करूँगा: मैं तुम्हारे शरीरों को प्रहारों से चूर-चूर कर दूँगा, तुम्हें पैरों और हाथों से लटका दूँगा, और तुम्हारे शरीर के हर जोड़ को फाड़ दूँगा; मैं तुम्हारे लिए नई और अज्ञात यातनाएँ रचूँगा जिन्हें तुम सहन नहीं कर पाओगे।'

इन सब पर संत सामन ने उत्तर दिया:

'हम उस कीड़े से डरते हैं जो कभी नहीं मरता और उस आग से जो कभी बुझती नहीं, जो प्रभु से मुंह मोड़ने वालों के लिए तैयार की गई है, उन यातनाओं से कहीं अधिक, जिनकी आपने सूची दी है, क्योंकि जिस प्रभु को हम आध्यात्मिक बलिदान अर्पित करते हैं, वह पहले हमें इन यातनाओं को सहने के लिए बल देगा और हमें अजेय बना देगा; और फिर, हमें आपके हाथों से छुड़ाने के बाद, वह हमें उन उज्ज्वल निवासों में ले जाएगा जहाँ सभी आनंदित लोग वास करते हैं। इसलिए, हम आपकी धमकी से नहीं डरते, क्योंकि आप केवल शरीर के विरुद्ध ही हथियार उठाते हैं, परन्तु आप आत्मा को कोई हानि नहीं पहुँचा सकते, जो शरीर में रहते हुए, शरीर पर डाले गए दुखों से दिन-प्रतिदिन अधिक शुद्ध और प्रबुद्ध होती जाती है। *'यद्यपि हमारा बाहरी मनुष्यत्व क्षीण हो जाता है, तौभी हमारा भीतरी मनुष्यत्व दिन-दिन नया होता जाता है'* (2 कुरिन्थियों 4:16)। *'इसलिये... जो दौड़ हमारे सामने रखी गई है, उसमें धीरज से दौड़ें'* (इब्रानियों 12:1)।

शासक ने फिर कहा:

'अपनी मूर्खता को त्याग दो, मेरी बात मानो, और अपनी भूल से मुँह फेरकर राजा की आज्ञा का पालन करो, क्योंकि तुम उस यातना को सहन नहीं कर सकते जो मैंने तुम्हारे लिए तैयार की है।'

संत गुरी ने उत्तर दिया:

'हम उस भूल में नहीं हैं, जैसा तुम समझते हो, और हम तुम्हारी मूर्खतापूर्ण सलाह पर ध्यान नहीं देंगे, न ही राजा की इच्छा के आगे झुकेंगे। हम इतने कायर और मूर्ख नहीं होंगे कि तुम्हारे यातनाओं से डरें और हमारे प्रभु के क्रोध को भड़काएँ। हम उसी के सेवक हैं जिसने अपनी भलाई का धन हमें प्रकट किया, और हमारे लिए अपनी आत्मा का बलिदान दिया; तो फिर हम उसके लिए, यहाँ तक कि रिक्त बहाए बिना, कैसे लड़ने में चूक सकते हैं? हम मसीह यीशु द्वारा बल पाए हुए, साहसपूर्वक खड़े रहेंगे; हम शत्रु की सभी युक्तियों के सामने अडिग रहेंगे; हम तब तक दृढ़ खड़े रहेंगे जब तक हम अपने विरुद्ध उठने वाले शत्रु को परास्त नहीं कर देते।

उनके विश्वास में दृढ़ता को देखकर, यातना देने वाले ने यातनाएँ जारी रखीं। उसने संतों को लटकाने का आदेश दिया, एक के हाथ दूसरे के हाथ से बाँधकर, और उनके पैरों में एक भारी पत्थर बाँध दिया। इस स्थिति में वे तीसरे घंटे से आठवें घंटे तक धैर्यपूर्वक लटके रहे; इस दौरान राज्यपाल बाकी लोगों पर मुकदमा चला रहा था।

इसके बाद, उसने संतों से पूछा कि क्या वे यातना से बचने के लिए राजा की आज्ञा मानने के लिए सहमत होंगे; लेकिन उन्होंने अटूट रूप से सच्चे धर्म की घोषणा करना जारी रखा। तब यातना देने वाले ने उन्हें खोलकर एक बहुत तंग कुएँ में फेंकने का आदेश दिया, जहाँ न तो कभी दिन की रोशनी पहुँचती थी और न ही कोई हवा पहुँच सकती थी। वे अगस्त के पहले दिन से लेकर नौ नवंबर तक इसी कालकोठरी में रहे; उनके पैरों को एक लकड़ी के फ्रेम से बाँधकर, उन्होंने क्रूर पीड़ा, भूख और प्यास को सहा, और फिर भी, इसके बावजूद, उन्होंने ईश्वर का धन्यवाद करना कभी बंद नहीं किया।

कारावास में इतने कठिन और लंबे समय तक रहने के बाद, उन्हें एक बार फिर से निर्णय के लिए राज्यपाल के सामने लाया गया। संत गुरियास कैद की कई कठिनाइयों, अत्यधिक भूख और प्यास से कमजोर पड़कर मुश्किल से जीवित थे; जबकि संत सामन अच्छे स्वास्थ्य में दिखाई दे रहे थे। राज्यपाल ने उनसे पूछा:

'क्या तुम जेल में इतना समय बिताकर थक नहीं गए हो, और क्या तुमने अपने कठोर हृदयों को नरम नहीं किया है ताकि समझदार सलाह मानो और हमारे देवताओं का सम्मान करके खुद को इस वर्तमान संकट से मुक्त करो?'

संतों ने उत्तर दिया:

'जो हमने पहले आपको बताया था, वही हम अब फिर से कहते हैं: हम अपने प्रभु यीशु मसीह का परित्याग नहीं करेंगे; हमें जो चाहें यातना दें।'

और इस प्रकार यातना देने वाले ने सेंट गुरियस को, जैसे कि वह बीमार हो, वापस कालकोठरी में ले जाने का आदेश दिया; क्योंकि वह उस समय उसे यातना नहीं देना चाहता था, कहीं ऐसा न हो कि वह उसकी मृत्यु को जल्द कर दे और इस प्रकार उसे कभी भी अपनी दुष्टता अपनाने के लिए मनाने की कोई आशा खो दे; जहाँ तक सेंट सामन का सवाल है, उसने उसे एक पैर से लटकाने का आदेश दिया, सिर नीचे की ओर, और उसके दूसरे पैर से एक लोहे का बोझ बाँध दिया। वे दिन के दूसरे घंटे से लेकर नौवें घंटे तक इसी अवस्था में लटके रहे। उनके चारों ओर खड़े सैनिकों ने, उनके प्रति सहानुभूति दिखाते हुए, उन्हें राजा की आज्ञा मानने और स्वयं को इस भयंकर यातना से बचाने के लिए कहा। लेकिन उन्होंने उन्हें कोई जवाब नहीं दिया; इसके बजाय, उन्होंने अपने हृदय की गहराई से ईश्वर से प्रार्थना की और उनके पुराने चमत्कारों को याद किया:

– हे मेरे प्रभु परमेश्वर, जिसकी इच्छा के बिना एक भी पक्षी जाल में नहीं पड़ता (देखो मत्ती 10:29), तूने अपने कष्ट में दाऊद के हृदय को विशाल बनाया (भजन संहिता 4:2), और भविष्यवक्ता दानियेल को सिंहों से भी अधिक शक्तिशाली दिखाया (दानियेल 6:6–18, 14:32)। हे प्रभु, जो हमारी प्रकृति की दुर्बलता को जानते हो, देखो हमारे विरुद्ध युद्ध भड़क रहा है; क्योंकि शत्रु आपकी विरासत को आपसे छीनने का प्रयास करता है; परन्तु हे प्रभु, आप अपनी दयालु दृष्टि से हम पर दृष्टि रखें, हमारे भीतर अपने आज्ञाओं का अविनाशी दीपक प्रज्वलित रखें, अपनी ज्योति से हमारे पगों को मार्ग दिखाएँ, और हमें स्वर्ग का आनंद प्रदान करें, क्योंकि आप युगानुयुग धन्य हैं।

जब शहीद इस प्रकार प्रार्थना कर रहे थे, तो एक लिपिक उनके शब्दों को लिख रहा था। तब राज्यपाल ने सामोन को खोलने का आदेश दिया। लेकिन वह अपने पैरों पर खड़ा नहीं हो सका, क्योंकि उसके घुटनों और कूल्हों के जोड़ उखड़ गए थे। फिर, यातना देने वाले के आदेश पर, संत को कालकोठरी में ले जाया गया और संत गुरीउस के बगल में लिटा दिया गया।

नवंबर के पंद्रहवें दिन, राज्यपाल मुसोनियस, मुर्गे की बाँग[7920] सुनते ही उठे, मोमबत्ती की रोशनी में और अपने हथियारवाहकों के साथ अदालत गए जहाँ वे न्याय करते थे; और न्यायाधीश की कुर्सी पर गर्व से बैठकर, उन्होंने गुरियास और सामन को अपने सामने लाने का आदेश दिया। संत सामन दो सैनिकों के बीच चल रहे थे, दोनों हाथों से उन पर सहारा लेकर और लंगड़ाते हुए, क्योंकि लटकाए जाने के दौरान उनकी टाँगों के जोड़ फैला दिए गए थे; संत गुरीउस को, हालांकि, उठाकर लाया गया था, क्योंकि वे पूरी तरह से चलने में असमर्थ थे; उनकी टाँगें, लकड़ी से कुचल जाने के कारण घावों से ढकी और मुड़ी हुई थीं। संतों पर एक नज़र डालते हुए, शासक बोलने लगा:

'तुम्हारे पास यह विचार करने के लिए पर्याप्त समय रहा है कि बेहतर विकल्प कौन सा है - जीवन या मृत्यु? तो मुझे बताओ, तुमने क्या निर्णय लिया है? क्या तुम अपनी पिछली यातनाओं से थक गए हो, और क्या तुमने राजाओं की आज्ञा मानने का संकल्प लिया है ताकि तुम जीवित रह सको और इस दुनिया के सुखों का आनंद ले सको?'

[7920] समय बताने के लिए 'मुर्गी के बाँग देने' (the crowing of the cock) अभिव्यक्ति का उपयोग किया जाता है। यह रात में विभाजित चार पहरों में से एक, विशेष रूप से तीसरे पहर, यानी आधी रात से भोर तक के बराबर के समय को संदर्भित करता था।

इस पर संतों ने उत्तर दिया:

शासक ने कहा:

राज्यपाल ने कहा:

'तुम्हारे इन अवज्ञाकारी शब्दों को सुनकर मेरे कान दुखित हो रहे हैं; संक्षेप में, मैं तुम्हें यह अच्छी सलाह देता हूँ: दिया के वेदी पर धूप चढ़ाओ, और घर जाओ; लेकिन अगर तुम ऐसा नहीं करते हो, तो मैं तुरंत तुम्हारे सिर कटवाने का आदेश दे दूँगा।'

'हमें अधिक कहने की आवश्यकता नहीं है,' संतों ने उत्तर दिया, 'हम यहाँ आपके सामने हैं; जो आप चाहें बिना देरी के करें, क्योंकि हम यह घोषणा करना बंद नहीं करेंगे कि हम अपने प्रभु यीशु मसीह के सेवक हैं, कि हम केवल उसी की उपासना करते हैं, और हम मूर्तिपूजा को अस्वीकार करते हैं।'

तब राज्यपाल ने आदेश दिया कि उन्हें तलवार से सिर कलम कर दिया जाए। यह सुनकर संत बहुत प्रसन्न हुए, यह जानते हुए कि वे जल्द ही अपने शरीरों से मुक्त होकर अपने प्रभु के पास जाएँगे। राज्यपाल ने जल्लाद को आज्ञा दी कि वह शहीदों को एक रथ पर बिठाए, उन्हें शहर से बहुत दूर ले जाए, और वहाँ उनका सिर कलम कर दे। संतों को शहर से उत्तरी द्वार के रास्ते बाहर ले जाया गया; नागरिकों में से किसी को भी इसका पता नहीं चला, क्योंकि वे सभी गहरी नींद में थे। संतों को एडेसा के बाहरी इलाके में एक पहाड़ पर ले जाकर, सैनिक रुक गए और जल्लाद को शहीदों का सिर कलम करने का आदेश दिया। रथ से उतरकर, संतों ने प्रार्थना करने के लिए थोड़ा समय मांगा और, भक्तिपूर्वक प्रार्थना करने के बाद, अंत में कहा:

'हे हमारे प्रभु यीशु मसीह के परमेश्वर और पिता, हमारी आत्माओं को शांतिपूर्वक ग्रहण करो।'

फांसी देने वाले की ओर मुड़कर, संत सामन ने कहा:

'जो आज्ञा तुम्हें दी गई है, उसे पूरा करो।'

तब, भोर के समय, धर्मपरायणों ने अपनी पवित्र कलगी तलवार के नीचे झुकाई और उनका सिर कलम कर दिया गया, और इस प्रकार वे परलोक सिधार गए। विश्वासियों ने, पवित्र शहीदों की मृत्यु के बारे में जानकर, उनके पवित्र अवशेष उठाए और उन्हें सम्मान के साथ दफनाया[7921] ।

काफी वर्षों बीत जाने के बाद, दुष्ट सम्राट लिकिनियस[7922] ने, कॉन्स्टेंटाइन महान से अलग होकर, उस संधि का उल्लंघन किया जो कॉन्स्टेंटाइन ने उसके साथ की थी। अपनी बहन का विवाह लिकिनियस से करके और उसे रोमन साम्राज्य का सह-शासक नियुक्त करके, कॉन्स्टेंटाइन ने यह शर्त रखी कि लिकिनियस, यद्यपि आस्था से एक मूर्तिपूजक था, उसे किसी भी तरह से ईसाइयों पर अत्याचार नहीं करना चाहिए, बल्कि सभी को अपनी-अपनी आस्था के अनुसार जीने देना चाहिए, ताकि जो कोई भी किसी विशेष आस्था का अनुयायी हो, वह उसे बिना किसी बाधा के आचरण कर सके। हालाँकि, लिकिनियस, इस समझौते का सम्मान करने में विफल रहा, उसने पूर्वी प्रांतों में ईसाइयों पर अत्याचार शुरू कर दिया और कई विश्वासियों को विभिन्न तरीकों से मौत के घाट उतार दिया। उस समय, उपर्युक्त एडेसा शहर में—जहाँ पहले पवित्र शहीदों गुरियास और सामोन ने कष्ट सहे थे—आविव नाम का एक डिकन रहता था, जो पूरे शहर में घर-घर जाकर लोगों को पवित्र विश्वास सिखाता था और उन्हें मसीह की गवाही देने में साहसी होने के लिए प्रोत्साहित करता था। अपने उपदेश के माध्यम से, संत आविव ने अविश्वासियों को मसीह के प्रति परिवर्तित किया और विश्वासियों को ईश्वर को प्रसन्न करने वाले तरीके से जीवन जीने के लिए प्रोत्साहित किया। उनके बारे में पता चलने पर, शहर के राज्यपाल लिसानियास ने राजा लिसिनियस को लिखा, और उन्हें सूचित किया कि आविव ने पूरे एडेसा शहर को मसीही विधिर्म से भर दिया है; साथ ही, उन्होंने पूछा कि उनके बारे में क्या आदेश दिया जाए। लिसानियास ने राजा को विशेष रूप से ईसाइयों पर अत्याचार करने का अधिकार प्राप्त करने के लिए लिखा, क्योंकि उसे अभी तक उन पर कोई हिंसा करने का अधिकार नहीं दिया गया था। राजा ने तुरंत जवाब दिया, और उसे अविव को मौत की सज़ा देने का आदेश दिया। राजा से ऐसा आदेश प्राप्त करने पर, लिसि□□उस ने संत आविव को यातना देने के लिए खोजने का आदेश दिया। उस समय आविव शहर के एक हिस्से में, एक अज्ञात घर में अपनी माँ और अपने रिश्तेदारों के साथ रह रहे थे, और पवित्र विश्वास को फैलाने का प्रयास कर रहे थे, जिसे वे गुप्त रूप से उन जगहों पर स्थापित करते थे जहाँ वे खुले तौर पर ऐसा नहीं कर सकते

[7921] संत गुरियस और सामोन की शहादत 293 और 306 के बीच हुई थी। पवित्र शहीदों गुरियस, सामोन और आविव को समर्पित अवशेष और चर्च रूसी तीर्थयात्री एंथनी द्वारा 1200 में कॉन्स्टेंटिनोपल में देखे गए थे।

[7922] 307 से 324 तक लिसिनियस साम्राज्य के पूर्वी हिस्से का शासक था, जब उसे कॉन्स्टेंटाइन के आदेश पर मार दिया गया था।

थे। जब सैनकि पूरे शहर में धन्य अवधि की तलाश कर रहे थे, तो इस बात की जानकारी पाकर, वह छपिने के बजाय अपने घर से नकिल गया और उसे ढूंढ रहे सैनकिों को खोज नकिाला, ताकि वह खुद को उनके हवाले कर सके। एक जगह पर थयिोटेक्ना नामक एक सैन्य कमांडर से मलिकर, उसने उससे कहा:

'यहाँ वही है जसिे तुम ढूँढ़ रहे हो: क्योंकि मैं ही आवधि हूँ, जसिे तुम्हें खोजने का आदेश मलिा है; तो मुझे ले चलो, और मुझे उस तक ले जाओ जसिने तुम्हें भेजा है।'

थेओटेक्ना ने उसे कोमलता से देखते हुए कहा:

'हे मनुष्य, जब तक कसिी ने यह नहीं देखा है कि तुम मेरे पास आए हो, एक तरफ हट जाओ और छपि जाओ, कहीं कोई और सैनकि तुम्हें देख ले और पकड़ ले।'

अवधि ने उत्तर दयिा:

'यदि आप मुझे नहीं ले जाते, तो मैं स्वयं जाकर राज्यपाल के सामने पेश हो जाऊँगा, और मैं राजाओं और शासकों के सामने अपने मसीह की गवाही दूँगा।'

यह सुनकर, थयिोक्टनिोस उसे लसिा□□अस के पास ले गया। लसिानअिस ने उससे उसकी वंशावली और नाम के बारे में पूछा। संत ने सबसे पहले यह घोषणा की कि वह एक ईसाई है; फरि, अपना नाम बताने के बाद, उसने कहा कि वह *फेलसयि* नामक एक गाँव का रहने वाला था / लसिानयिस ने उसे मूर्तयिों को बलदिान चढ़ाने के लिए मजबूर कयिा और बारी-बारी से धमकयिों और चापलूसी से उसे मसीह से दूर करने और मूर्तयिों की पूजा करने के लिए प्रेरति करने की कोशशि की; लेकनि वह, एक अटूट स्तंभ और एक अभेद्य दीवार की तरह, मसीह के अपने स्वीकारोक्ति पर दृढ़ रहा। यातना देने वाले ने, यह देखकर कि वह शब्दों से उसे अपने पाप में नहीं ला पा रहा है, कर्मों से उसे मजबूर करने लगा; उसने उसे लटकाने और उसके शरीर को लोहे के पंजों से खुरचने का आदेश दयिा। इसके बाद, उसने फरि से उसे मूर्तयिों की पूजा करने और मूर्तपिूजक देवताओं की वेदी पर धूप जलाने के लिए मनाने की कोशशि की। लेकनि संत ने दृढ़ता से उत्तर दयिा:

'कुछ भी मुझे मेरे ईश्वर से अलग नहीं कर सकता, भले ही तुम मुझ पर दस हजार गुना अधकि कठोर यातनाएँ क्यों न डालो।'

यातना देने वाले ने उससे पूछा:

'तुम ईसाई अपने ईश्वर के लिए जो यातनाएँ सहते हो, उससे तुम्हें क्या लाभ होता है, और अपने शरीर को टुकड़े-टुकड़े करवाने और स्वेच्छा से एक कड़वी मृत्यु को चुनने में तुम्हारा क्या फायदा है?'

शहीद ने उत्तर दयिा:

'यदि तुम, यातना देने वाले, वास्तव में हमारे परमेश्वर द्वारा हमें वादा कयि गए पुरस्कारों की आशा की ओर मुड़ने के लिए इच्छुक होते, तो तुम नस्सिंदेह वही कहते जो प्रभु के प्रेरति ने एक बार कहा था: *"क्योंकि हमारी वर्तमान कष्टप्रद अवस्था उस महमिा के बराबर भी नहीं है जो हम पर प्रकट होने वाली है"* (रोमयिों 8:18)।'

यातना देने वाले ने शहीद के शब्दों पर हँसते हुए उन्हें पागलपन समझा, क्योंकि वह स्वयं पागल था; फरि, यह देखकर कि वह उस पराक्रमी पीड़ति को एकमात्र सच्चे ईश्वर से दूर नहीं कर सकता, उसने उसे जलाने की सज़ा सुना दी।

शहर के बाहर एक बड़ी आग जलाई गई थी, और शहीद को फांसी के स्थान पर ले जाया गया। वह इस आनंद के साथ आगे बढ़ा कि वह परमेश्वर के लिए एक बलदिान और होमबलि होगा। उसकी माँ और रश्तिेदार उसके पीछे-पीछे चले; उसने उन्हें सांत्वना दी और प्रोत्साहति कयिा कि वे उसके लिए शोक न करें, बल्कि इस बात पर आनंद मनाएँ कि वह मसीह के पास जा रहा था और उनके लिए उनसे प्रार्थना करेगा। आग पर पहुँचने पर, उन्होंने प्रार्थना की, अपनी माँ और उन सभी को अंतमि चूमन दयिा जन्हिें वे जानते थे, लपटों में प्रवेश कयिा और तुरंत अपना प्राण प्रभु को सौंप दयिा। जब आग बुझ गई, उसकी माँ ने, अन्य वशि्वासयिों के साथ, अपने पवत्रि पुत्र का शरीर आग से अछूता पाया; उसे उठाकर, उन्होंने उसे मूरा से अभषिेक कयिा और उसे पवत्रि शहीदों गुरयिास और सामोनास की कब्र के पास दफनाया, जन्होंने उससे पहले पीड़ा झेली थी, क्योंकि संत आवधि ने भी उसी दनि पीड़ा झेली थी (उन संतों द्वारा पहले पीड़ा झेलने के कई साल बाद[7923]). जब उत्पीड़न समाप्त हो गया और ऑर्थोडॉक्स धर्म की वजिय हुई, तो ईसाइयों ने इन तीन पवत्रि शहीदों के सम्मान में एक चर्च बनाया और उनके पवत्रि अवशेष, जो बीमारों को स्वास्थ्य प्रदान करते हैं और कई चमत्कार

[7923] संत आवधि की शहादत 322 में हुई।

करते हैं, को इसके भीतर एक ही कब्र में रख दिया। इनमें से, हम यहाँ एक विशेष रूप से गौरवशाली चमत्कार का वर्णन करेंगे।

[7924]एक बार, फारस के पास रहने वाला एक अधर्मी बर्बर लोगों का समूह, जिसे *एफालटि्स के नाम से* जाना जाता था[7925] , पूर्व से यूनानी साम्राज्य की ओर बढ़ा; कई शहरों को जीतने के बाद, वे एडसा तक पहुँचे, और उनका इरादा इसे भी कैद करके नष्ट करने का था, ठीक वैसे ही जैसे उन्होंने अन्य शहरों को नष्ट किया था। और इस प्रकार यूनानी राजा, शहर को उसके दुश्मनों से बचाने और उसे घेराबंदी से मुक्त कराने की इच्छा से, अपने बहुत सारे सैनिकों को इकट्ठा किया और उन्हें एडेसा की सहायता के लिए भेज दिया। एडेसा में प्रवेश करने के बाद, यूनानी सैनिक वहाँ काफी समय तक रहे, और बर्बर लोगों से शहर की रक्षा करते रहे। ग्रीक सेना में गोथिक मूल का एक सैनिक था, जिसका नाम एलेफज़ेन था। ऐसा हुआ कि एडसा में वह सोफिया नामक एक कुंवारी विधवा के घर में रहता था, जिसकी एकमात्र बेटी यूफेमिया थी, जिसे वह अपनी आँख के तारे की तरह पालती थी, उसकी कुँवारी अवस्था की रक्षा करती थी और उसे अच्छे नैतिकता और ईश्वर के भय के बारे में सिखाती थी। सोफिया उसे दूसरों की नज़रों से छिपाने की कोशिश करती थी, क्योंकि वह बहुत सुंदर थी; वह उसे एक अलग कमरे में रखती थी ताकि कोई भी पुरुष उसे न देख सके। विधवा के घर में गोथ के लंबे प्रवास के दौरान, ऐसा हुआ कि एक दिन उसकी नज़र इस युवती पर पड़ी। उसकी सुंदरता से प्रभावित होकर, वह उसके लिए जुनून में डूब गया, और उसके मन में यह सोचने के अलावा कुछ नहीं था कि उसे कैसे अपना बना लिया जाए। उसके पास जाकर, उसने उसकी माँ से अपनी बेटी का विवाह उसके साथ करने के लिए विनती करना शुरू कर दिया; और यद्यपि अपने देश में उसकी एक पत्नी और बच्चे थे, उसने यह बात छिपा ली, और अपनी इच्छा को पूरा करने के लिए अविवाहित होने का नाटक किया। हालाँकि, उसकी माँ ने उसे मना कर दिया:

'मैं अपनी इकलौती बेटी किसी परदेस को नहीं दूँगी; तुम एक अजनबी हो – तुम मेरी बेटी को अपने देश ले जाओगे, और मैं उसे खोकर बड़े दुख में रह जाऊँगी, क्योंकि मेरी कोई और संतान नहीं है जिससे मैं अपनी विधवा अवस्था में सांत्वना पा सकूँ, सिवाय उसकी; मैं उसे तुम्हें नहीं दूँगी, क्योंकि मैं उसके चेहरे के बिना नहीं रह सकती।'

तब वह गोथ क्रोधित होकर उसे धमकाने लगा:

उसने कहा, 'अगर तुम मुझे अपनी बेटी नहीं दोगी, तो मैं इस जगह से तब तक नहीं जाऊँगा जब तक कि मैं तुम पर कई विपत्तियाँ न ला दूँ और तुम्हें अत्यधिक दुख में न डाल दूँ; क्योंकि मैं एक योद्धा हूँ, और मैं तुम पर आसानी से वह सब कुछ कर सकता हूँ जो मैं चाहता हूँ।'

हालाँकि विधवा अकेली थी और उसकी मदद के लिए कोई नहीं था, फिर भी उसने साहसपूर्वक उसका सामना किया। इसके बाद, वह योद्धा बारी-बारी से कभी उससे विनम्रता से निवेदन करता और कभी क्रोधित हो जाता, और विनती तथा धमकियों दोनों के सहारे विधवा को अपनी बेटी का विवाह उसके साथ करने के लिए मनाने की कोशिश करता। इस तरह, जब तक वह वहाँ रहा, वह उसे लगातार सताता रहा। उसने उसे कई उपहार भी दिए, क्योंकि वह गरीब नहीं था – उसने अपनी इच्छा पूरी करने के लिए उसके और उसकी बेटी के लिए सोने के आभूषण और महँगे कपड़े खरीदे; लेकिन विधवा ने उपहार स्वीकार नहीं किए, और उसने उससे पूरी तरह से परहेज किया, साथ ही लड़की को और भी अधिक सावधानी से छिपा कर रखा ताकि यह दुष्ट व्यक्ति उसे न देख सके। एक बार उसने उससे कहा:

'मैंने सुना है कि तुम्हारे वतन में तुम्हारी एक पत्नी और बच्चे हैं।'

लेकिन वह, उस युवती को पाने की अपनी इच्छा के वश में होकर और ईश्वर का कोई भय न रखते हुए, गालियाँ बकने और गंभीर शपथें लेने लगा, यह कहते हुए कि वह कभी विवाहित नहीं हुआ था और वह उसकी बेटी को अपनी पत्नी बनाना चाहता था और उसे अपनी सारी संपत्ति की मालकिन बनाना चाहता था। तब विधवा सोफिया, अंततः उस पर विश्वास करके, उसकी विनती मान गई और अपनी बेटी यूफेमिया का विवाह उसके साथ करने के लिए राज़ी हो गई। उसने ईश्वर की ओर हाथ उठाकर कहा:

'हे प्रभु, अनाथों के पिता और विधवाओं के न्यायी, अपनी सृष्टि पर कृपा दृष्टि रखें, और इस युवा कन्या को, जिसका विवाह एक अजनबी से होने वाला है, न छोड़ें। मेरी विधवा-अवस्था का तिरस्कार न करें, और मुझे असहाय न छोड़ें;

[7924] गोथ – जर्मनिक जनजातियों में सबसे पूर्वी और सबसे बड़ी संख्या में रहने वाली जनजाति, जो डैन्यूब के मैदानों में रहती थी।

[7925] एफालटि्स हूणों की एक जनजाति थी जो वर्तमान में मर्व और अफगानिस्तान में रहती थी।

क्योंकि आपकी दिव्य व्यवस्था पर भरोसा करके, मैं अपनी गरीब बेटी का विवाह एक अजनबी से कर रही हूँ, और मैं आपको उसके व्रतों और वादों का साक्षी और गारंटर बनाती हूँ।"

उस कन्या का विवाह इस गोथ से कर दिया गया, और विवाह के बाद, वे एक साथ शांतिपूर्वक रहने लगे। यूफेमिया गर्भवती हो गई, और उसके बच्चे को जन्म देने से पहले, दुश्मन शहर से खाली हाथ पीछे हट गए, क्योंकि वे इसे नहीं ले सके, इस तथ्य के कारण कि शहर के भीतर के सैनिकों ने बहादुरी से शहर की दीवारों की रक्षा की और दुश्मनों से दृढ़ता से लड़े, और विशेष रूप से क्योंकि शहर पवित्र शहीदों गुरियस की प्रार्थनाओं द्वारा संरक्षित था, सामोन और आविव। जब दुश्मन पीछे हट गए, तो ग्रीक सैनिकों को घर लौटना पड़ा, और यह गोथ भी अपने देश लौटने के लिए जल्दी चला गया। उसकी माँ, अपनी बेटी से अलग होने के विचार से विलाप करते हुए, उसे गोथ से दूर ले जाने की कोशिश करने लगी, और उसे किसी परदेस में ले जाने से रोकने लगी, लेकिन वह कानून द्वारा स्थापित वैवाहिक बंधन को तोड़ नहीं सकी। जैसे ही वह दुष्ट दामाद अपनी पत्नी के साथ रवाना होने वाला था, सोफिया उसे और अपनी बेटी को पवित्र शहीदों गुरियस, समोना और अविव के चर्च में ले गई; और, उन्हें शहीदों की कब्र के सामने खड़ा करके, उसने अपने दामाद से कहा:

'मैं अपनी बेटी तुम्हारे हवाले नहीं करूँगी जब तक कि तुम मुझे ये संत, जिन्होंने मसीह के लिए यातनाएँ झेलीं, अपने जमानतदार के रूप में नहीं देते; इसलिए उनके पवित्र अवशेषों को थामो और मुझसे कसम खाओ कि तुम मेरी बेटी को कोई नुकसान नहीं पहुँचाओगे, बल्कि उसे उचित प्रेम और सम्मान के साथ उसकी रक्षा करोगे।'

गॉटफ, इसे एक तुच्छ मामला मानते हुए, तुरंत और बिना किसी हिचकिचाहट के पवित्र शहीदों के पवित्र अवशेषों को थाम लिया और कहा:

'हे संतों, मैं आपके हाथों से इस कन्या को स्वीकार करता हूँ, और मैं आपको उसकी माँ के सामने मेरे गारंटर और गवाह के रूप में रखता हूँ कि मैं अपनी इस पत्नी को कोई हानि नहीं पहुँचाऊँगा, कि मैं उसका कभी अपमान नहीं करूँगा, बल्कि मैं उसे प्यार से संजोकर रखूँगा और अंत तक उसका सम्मान करूँगा।'

इस प्रकार गोत्फ़ ने कहा; इसके अलावा, उस अधर्मी व्यक्ति ने ईश्वर की कसम भी खाई, यह सोचे या डरे बिना कि प्रतिशोध के स्वामी ईश्वर उसके कर्मों के अनुसार उसे चुकाएगा और उसके धोखे के लिए उसे नष्ट कर देगा। अपनी बहू के ससुर की कसम सुनकर, माँ ने पवित्र शहीदों से पुकारा:

'हे पवित्र शहीदों, ईश्वर के बाद, मैं अपनी बेटी को आपके हवाले करती हूँ, और आपके माध्यम से उसे इस अजनबी के सुपुर्द करती हूँ।'

इस प्रकार, प्रार्थना करने के बाद, उन्होंने एक कोमल चुंबन का आदान-प्रदान किया और अपने-अपने रास्ते चले गए: विधवा सोफिया अपने घर लौट आई, जबकि गोथ, यूफेमिया के साथ, अपनी यात्रा पर निकल पड़ा, उसने अपने साथ मौजूद दास को यह कहकर भेज दिया था कि यह रहस्य उसके घर में न फैल जाए।

जब वे पूरा सफर तय करके गोथ के वतन पहुँच गए, और उसके घर के पास ही थे, तो वह अपनी पत्नी पर एक दुश्मन की तरह बड़ी निर्दयता से टूट पड़ा; उसके लिए अपने प्यार को भूलकर और अपने व्रत को ठुकराकर, उसने उसके सुंदर कपड़े और सोने के आभूषण छीन लिए और उसे एक कैदी और दासी की तरह फटे-पुराने कपड़े पहना दिए; और, अपनी तलवार खींचकर, उसने उसे यह आज्ञा दी:

'यदि तुम जीवित रहना चाहती हो, तो, मेरे घर में प्रवेश करते समय, जो कुछ हमारे बीच हुआ है, उसके बारे में किसी को कुछ भी मत बताना, बल्कि कहना कि तुम एक कैदी हो, क्योंकि मेरे घर में एक पत्नी और बच्चे हैं; तुम, अपनी ओर से, मेरी पत्नी की दासी बनना और हर बात में उसकी आज्ञा का पालन करना, जैसे तुम अपनी स्वामिनी की करती; लेकिन अगर तुमने उसे, या मेरे किसी रिश्तेदार को यह बताया कि मैंने तुमसे विवाह किया है, तो तुम मेरी तलवार अपनी गर्दन पर देखोगी और मर जाओगी।"

यह महसूस करते हुए कि इस दुष्ट बर्बर व्यक्ति ने उसके साथ धोखा किया और उसका अपमान किया है, और उसकी धमकी सुनकर, यूफेमिया ने उससे कहा:

'क्या यही तुम्हारा प्यार है? क्या इसी तरह तुम अपने वादे पूरे करते हो? क्या यही तुम्हारी कसमें थीं, और क्या तुम्हारा इरादा मुझे, अपनी पत्नी को, एक कैदी और दास बनाने का था, जबकि मैं स्वतंत्र हूँ?' तुम्हारे लिए मैंने अपनी माँ, अपने रिश्तेदारों और अपने वतन को छोड़ दिया, और सच्चे प्यार से तुमसे लिपट गई, तुम्हारे शब्दों पर भरोसा करके, जिन्हें तुमने कसमों से पक्का किया था; फिर भी तुमने मेरे प्यार का बदला नफ़रत से चुकाया और एक पति और दोस्त होने

के बजाय, मेरे लिए एक बर्बर, एक दुश्मन और एक अत्याचारी बन गए, जिसने मुझे नष्ट करने के लिए एक परदेस में लाया है।

यह कहकर, उसने अपनी आँखें आकाश की ओर उठाईं और अपने हाथ उठाकर, हृदय की गहराई से आह भरते और जोर-जोर से रोते हुए, ईश्वर से पुकार लगाई:

'हे मेरे माता-पिता के ईश्वर, मेरी दुर्दशा पर दृष्टि डालो, मेरी आहें सुनो और मेरी प्रार्थना की आवाज़ पर ध्यान दो! देखो यह शपथ-भंग करने वाला मेरे साथ क्या कर रहा है, और मुझे इन दुष्ट कष्टों से उबारो, अपने उन पवित्र सेवकों की प्रार्थनाओं के द्वारा जिन्होंने आपके लिए दुख उठाया।' हे पवित्र शहीदों गुरियास, सामन और आवि! मैं अब आपको पुकारती हूँ: मेरी मदद करो, जो अप्रत्याशित दुर्भाग्य में पड़ गई हूँ, क्योंकि आप पर भरोसा करके, मैं इस गोथ के साथ गई थी; मेरी ओर से उसके प्रतिशोधक बनो और मुझे इस मुसीबत से बचाओ।

जब वह इतनी कड़वी रो रही थी और मन ही मन चुपके से प्रार्थना कर रही थी, तब वे गोथ के घर में घुसे। उसकी पत्नी, यूफेमिया को देखकर और उसके चेहरे की सुंदरता को देखकर, ईर्ष्या से भर गई, क्योंकि उसे संदेह था कि उसका पति उसके साथ एक अवैध संबंध में रह रहा था, और उसने अपने पति से पूछताछ की।

'यह युवती कौन है, और तुम उसे कहाँ से लाए हो?'

उसने उत्तर दिया:

'वह एक कैदी है; मैं उसे एडेसा से तुम्हारी नौकरानी बनाने के लिए लाया हूँ।'

उसकी पत्नी ने कहा:

'उसके चेहरे की सुंदरता बताती है कि वह दासी नहीं, बल्कि एक स्वतंत्र महिला है।'

उसके पति ने उत्तर दिया:

'हालाँकि वह अपनी भूमि में स्वतंत्र थी, जैसा कि उसका रूप दिखाता है, वह अब आपकी दासी है।'

यूफेमिया, डर के मारे बोल न सकी, चुप रही और गोथ की पत्नी की आज्ञा का पालन करती रही, जैसे एक दासी अपनी मालकिन की करती है; वह नहीं जानती थी कि वह क्या करे जो उसे उन दुर्भाग्यों से मुक्त कर सके जो उस पर आए थे। और इस प्रकार वह एक दासी के कर्तव्य निभाते हुए जीती रही, हमेशा अपने विचारों में पवित्र शहीदों को रखती और आँसुओं के साथ उनसे पुकारती रही:

'हे संतों, अपनी दासी की सहायता के लिए शीघ्रता करो; मुझ पर दया दिखाने में शीघ्रता करो, और मुझ पर किए गए घोर अत्याचार और धोखे को अनदेखा न करो।'

उसकी मालकिन, अपने दिल में ईर्ष्या पालकर, उसके प्रति बहुत क्रूर और निर्दयी थी; उसने उसे हर तरह के भारी काम करने का आदेश दिया और उसे विभिन्न तरीकों से प्रताड़ित किया। हालाँकि, सबसे बुरी बात यह थी कि वह उससे कभी बात नहीं करती थी; इसके अलावा, यूफेमिया को गोथिक भाषा नहीं आती थी और वह अपनी मालकिन को अपने बारे में कुछ भी नहीं बता सकती थी, और वह उस गोथ से डरती थी, कि कहीं वह उसे मार न दे अगर उसने अपनी मालकिन को अपने बारे में कुछ भी बताया।

कुछ समय बीत जाने के बाद, गोथ की पत्नी को पता चला कि यूफेमिया गर्भवती है, और उसकी ईर्ष्या और भी बढ़ गई; वह उस पर और भी अधिक क्रोध के साथ टूट पड़ी, और उसे थका देने के लिए सबसे कठिन काम सौंपने लगी। जब समय आया, तो यूफेमिया ने एक लड़के को जन्म दिया जिसका चेहरा गोथ से बहुत मिलता-जुलता था, जो वास्तव में उसका पिता था। गोथ की पत्नी, अपने पति से बिल्कुल मिलता-जुलता बच्चा देखकर, भयानक क्रोध से भर गई और बच्चे को मारने की साजिश रचने लगी। उसने अपने पति से कहा:

'तुम इस बात से इनकार क्यों करते हो कि तुम इस युवती को जानते थे? क्योंकि उसने जो बच्चा जना है, वह स्पष्ट रूप से तुम्हारे किए का सबूत है, क्योंकि वह बिल्कुल तुम्हारी ही प्रतिमूर्ति है।'

गोथ ने फिर से इनकार करते हुए कहा:

'यह सच नहीं है; मेरा उसके साथ कभी कोई संबंध नहीं रहा। तुम्हारा उस पर अधिकार है, इसलिए तुम उसकी जो चाहो, वैसा करो, क्योंकि वह तुम्हारी कैदी और तुम्हारी दासी है।'

तब उस दुष्ट स्त्री ने शिशु को जहर देने की योजना बनाई। कुछ ही देर बाद, उसने एक घातक जहर तैयार किया, माँ को किसी बहाने से शिशु से दूर भेज दिया, और जब शिशु अकेला रह गया, तो उसने जहर उसके मुँह में डाल दिया - और शिशु की जल्द ही मृत्यु हो गई। जब माँ अपने काम से लौटी, तो उसने शिशु को मृत पड़ा देखा, और वह अवर्णनीय दुख से

भर गई; उसका हृदय उसके लिए तीव्र शोक से फटा जा रहा था। वह नहीं जानती थी कि उसकी अचानक मृत्यु का क्या कारण था, क्योंकि जब उसकी मालकिन ने शिशु के मुँह में ज़हर डाला था, तब कमरे में कोई नहीं था। लेकिन जब वह उसे दफ़नाने की तैयारी कर रही थी, तो यूफेमिया ने बच्चे के मुँह से ज़हर टपकता हुआ देखा, और फिर उसे याद आया कि उसकी मालकिन ने एक बार अपने बेटे के साथ उसे भी खत्म करने की धमकी दी थी, और उसने अंदाज़ा लगा लिया कि बच्चे की मौत के लिए कौन ज़िम्मेदार था। फिर भी वह चुप रही, और एक शब्द कहने की हिम्मत नहीं कर सकी। थोड़ी सी ऊन लेकर, उसने शिशु के मुँह से निकल रहे ज़हर को पोंछ दिया और उसे छिपा लिया, और यह रहस्य किसी को नहीं बताया। शिशु को दफ़ना दिया गया।

कुछ दिनों बाद, गोथ ने अपने दोस्तों को रात के खाने के लिए बुलाया, और यूफेमिया ने मेज पर परोसने का काम किया। जब उसकी बारी आई कि वह अपनी मालकिन को कप परोसे, तो यह जानने की इच्छा से कि क्या वास्तव में उसके बच्चे को उसकी मालकिन ने जहर दिया था, उसने वह ऊन ली जिससे उसने अपने बेटे का मुँह पोंछा था, उसे चुपके से पेय में डुबोया, और फिर, उसे निकालकर, ने उसे कप में निचोड़ दिया और यह पेय अपनी मालकिन को परोस दिया। उस महिला ने, इस सब से अनजान, वह प्याला पी लिया, और इस प्रकार उस पर विपत्ति आई; क्योंकि उसी रात गोत्फ़ की पत्नी की अचानक मृत्यु हो गई और वह उसी गड्ढे में गिर पड़ी जिसे उसने खुद खोदा था। अगली सुबह, जब गोतफ जागा, तो उसने अपनी पत्नी को मृत पाया और उसकी अप्रत्याशित मृत्यु से वह स्तब्ध रह गया; पूरा घर विलाप से भर गया; उसके सभी रिश्तेदार, दोस्त और पड़ोसी इकट्ठा हुए और उसका शोक मनाया; फिर, उसके लिए एक शानदार ताबूत बनाकर, उन्होंने मृतक को विधिवत उसमें सुला दिया।

मृतक के दफ़न के सात दिन बाद, उसके रिश्तेदारों को एडसा से लाई गई वह कन्या याद आई, और वे कहने लगे:

'हमारे रिश्तेदार की अचानक मृत्यु के लिए इस बंदी के सिवा और कोई दोषी नहीं है, जो हमेशा उसके प्रति शत्रुतापूर्ण थी।'

और इस प्रकार सभी यूफेमिया के खिलाफ हो गए और उसे प्रांतीय राज्यपाल के सामने लाना चाहते थे ताकि वह यातनाओं के माध्यम से उससे यह कबूल करवा सके कि उसने अपनी मालकिन की हत्या कैसे की; लेकिन चूंकि उस समय राज्यपाल घर पर नहीं थे, उन्होंने अपना मन बदल लिया और यूफेमिया को उसकी मृत मालकिन के साथ जीवित दफ़नाने का निर्णय लिया। मृतक की ताबूत खोलकर उन्होंने यूफेमिया को उस शव के बगल में लिटा दिया, जो बदबूदार, कीड़ों से भरा और सड़ रहा था – ताकि वह वहीं एक क्रूर मृत्यु का शिकार हो जाए। यूफेमिया का दुख, उसकी पीड़ा, भय और कांपना, आतंक और दहशत, उसकी सिसकियाँ और रोना – कौन व्यक्त कर सकता है? कोई भी यह कल्पना कर ले कि एक जीवित व्यक्ति एक बदबूदार लाश के साथ ताबूत में कैद हो; मृतक का भय, लाश की बदबू, ताबूत का अंधेरा और संकीर्णता, चारों ओर कीड़े, मौत की सांस और अकथनीय पीड़ा! अपने आप को इतनी भयंकर कैद में पाकर, यूफेमिया ने दुख से भरे दिल के साथ, ताबूत के अंदर से ईश्वर से विनम्रतापूर्वक पुकारा, ठीक वैसे ही जैसे नबी योना ने एक बार व्हेल की पेट में किया था:

हे स्वर्गदूतों के सेनापति प्रभु परमेश्वर, जो करूबों पर विराजमान है और गर्तों को देखता है, आप मेरे हृदय की पीड़ा और इस अँधेरी तथा बदबूदार ताबूत में मेरी बंदी को देखते हैं; आप जानते हैं कि आपके नाम की खातिर मुझे उस अधर्मी गोथ के हवाले कर दिया गया था, क्योंकि जब उसने मुझे लिया तो उसने आपके नाम की कसम खाई थी; तो फिर, अपने पवित्र नाम की खातिर, मुझ पर दया करें। तू मारता भी है और जिलाता भी है, तू नरक में डालता भी है और निकालता भी है (1 शमूएल 2:6): मुझे इस कड़वी मृत्यु से बचा और मुझे इस ताबूत से, जैसे नरक से, निकाल ले, क्योंकि तू मृतकों को जिलाने के लिए पर्याप्त शक्तिमान है – तो फिर, तू मुझे, जो जीवित तो है पर मृत्यु के समीप है, मृत्यु के द्वार से बाहर निकाल सकता है, यह तो और भी अधिक आसान है। हे प्रभु, पवित्र शहीदों गुरियास, सामोनास और अविव के واسط मुझ पर दया करें, जिनके रक्त का बहाव और मृत्यु को आपने अपने واسط एक शुद्ध बलिदान के रूप में स्वीकार किया है। हे पवित्र शहीदो! मेरे शत्रु ने आपको मेरी माँ के सामने मध्यस्थों के रूप में प्रस्तुत किया है – अत; मुझे बचाइए।

जब वह अपनी आत्मा के कष्ट में इस प्रकार प्रार्थना कर रही थी, तो तीन तेजस्वी पुरुष प्रकट हुए, जो सूर्य की तरह चमक रहे थे—पवित्र शहीद गुरियास, सामोनास और अविव—और तुरंत ताबूत में बदबू गायब हो गई; यूफेमिया ने उन प्रकट हुए पवित्र शहीदों से एक अत्यंत सुन्दर सुगंध आती हुई महसूस की। उन्होंने उससे कहा:

'हौसला रखो, मेरी बेटी, और मत डरना: तू जल्द ही बच जाएगी।'

जब संतों ने ये शब्द कहे, तो यूफेमिया का हृदय संतों के दिव्य दर्शन और उनके सांत्वना के शब्दों से दोनों ही प्रकार से प्रसन्न हुआ; आनंद से भरकर, वह मग्न हो गई और एक सुखद निद्रा में लीन हो गई। इस नींद के दौरान, उसे

ईश्वर की अदृश्य, सर्वशक्तिमान शक्ति द्वारा उसके ताबूत से उठा लिया गया, और एक घंटे के भीतर एडसा (Edessa) में, पवित्र शहीदों गुरियास, सामोनास और अवविस के चर्च में ले जाया गया, और उनके पूजनीय अवशेष-पात्र के बगल में सुला दिया गया। जब उसे वहाँ लाया गया, तो रात थी, और चर्च में सुबह की नियमित प्रार्थना सभा चल रही थी। जागने पर, उसने एक बार फिर पवित्र शहीदों को देखा, जिन्होंने उससे कहा:

'खुशी मनाओ, बेटी, और जानो कि तुम अब कहाँ हो; देखो, हमने वह पूरा कर दिया जो हमने वादा किया था; अपनी माँ के पास शांति से जाओ।'

यह कहकर वे अदृश्य हो गए। यूफेमिया उठी और उसने यह देखने के लिए चारों ओर देखा कि वह कहाँ थी। चर्च की दीवारों, प्रतिमाओं, मोमबत्तियों और पवित्र शहीदों के पवित्र अवशेषों को देखकर, और साथ ही पुरोहितों के गायन को सुनकर, उसे एहसास हुआ कि वह एडेसा में, अपने साथियों, मसीह के पवित्र शहीदों, गुरियस, सामन और अवि के चर्च में थी। तब वह अकथनीय आनंद और हर्ष से भर गई, और, पवित्र शहीदों की कब्र को प्रेम से गले लगाते हुए, उसने अपने प्रति दिखाई गई ऐसी दया के लिए आँसुओं के साथ परमेश्वर और उनके संतों का धन्यवाद किया। कृतज्ञता की भावना में, उसने कहा: *'हमारा परमेश्वर स्वर्ग में [और पृथ्वी पर] है; वह वही करता है जो उसे भाता है'* (भजन संहिता 113:11), ने मुझे स्वर्ग से सहायता भेजी है और मुझे बचाया है; धन्य है प्रभु जो अपने भरोसे वालों को बचाता है: *'रोना रात भर रह सकता है, पर सुबह में आनंद आता है'* (भजन संहिता 29:6)। जब उसने ये और भी कई शब्द आनंद के आँसुओं के साथ कहे, तो पुरोहित ने उसके शब्द और उसके रोने की आवाज़ सुनी; उसके पास आकर, उसने पूछा:

'तुम कौन हो, और तुम इस तरह क्यों रो रही हो?'

उसने उसे सब कुछ विस्तार से बताना शुरू किया: कि कैसे उसकी माँ ने उसे संतों के अवशेषों पर गोथों को दे दिया था; उस शपथ-भंग करने वाले के हाथों उसने क्या-क्या सहे; कैसे उसे पिछले दिन ताबूत में रखा गया था; और कैसे, जब वह प्रार्थना कर रही थी, तो पवित्र शहीद उसके सामने प्रकट हुए और एक घंटे के भीतर ही उसे गोथों की भूमि से अपने चर्च में ले आए।

यह सुनकर पादरी स्तब्ध रह गया और ईश्वर की महान शक्ति पर आश्चर्यचकित हुआ। हालाँकि, वह अभी भी उसकी बात पर विश्वास करने के लिए पूरी तरह तैयार नहीं था, और उससे पूछा:

'और तुम्हारी माँ कौन हैं?'

यह जानकर कि उसकी माँ विधवा सोफिया थीं, पादरी ने तुरंत उन्हें चर्च आने के लिए बुलाया। माँ, इस मामले के बारे में कुछ भी न जानते हुए, तुरंत आ गईं और अपनी बेटी को पवित्र शहीदों की कब्र के पास, साधारण वस्त्रों में खड़ी देख, इस अप्रत्याशित दृश्य से स्तब्ध रह गईं; उसके पास आकर, उसने उसे गले लगा लिया, और उसकी गर्दन पर बाँहें डालकर रो पड़ी; यूफेमिया भी रो पड़ी, और वे दोनों रोते-रोते एक शब्द भी नहीं बोल सकीं। फिर, थोड़ा संभलने के बाद, माँ ने उससे पूछा:

'बेटी, तुम यहाँ कैसे आईं, और इतने फटे-पुराने कपड़े क्यों पहने हो?'

तब यूफेमिया ने उसे विस्तार से वह सब कुछ बताया जो उसे एक अजनबी देश में अपने दुष्ट पति के हाथों सहना पड़ा था, कि कैसे उसे पिछले दिन एक ताबूत में बंद कर दिया गया था और कैसे पवित्र शहीदों गुरियास, समोनास और अवि, जो उसके सामने प्रकट हुए थे, ने चमत्कारिक रूप से बचाकर यहाँ ले आए थे। यह सब सुनकर, माँ का दिल दया से भर गया, और चर्च में मौजूद सभी लोग, यह वृत्तांत सुनकर, बहुत आश्चर्यचकित हुए और परमेश्वर की सर्वशक्तिमान शक्ति और दया की महिमा करने लगे। पवित्र शहीदों के मकबरे के सामने साष्टांग दंडवत प्रणाम करके, माँ ने ऊँचे स्वर में ईश्वर और उनके संतों का धन्यवाद किया; और वे उस पूरे दिन चर्च में प्रार्थना करते और ईश्वर का धन्यवाद करते हुए रहे, और प्रेम और भक्ति के साथ पवित्र शहीदों के अवशेष-पात्र को गले लगाते और चूमते रहे। शाम के देर से, माँ और उसकी बेटी आनंदपूर्वक ईश्वर की स्तुति करते हुए घर के लिए रवाना हुईं।

अगली सुबह, इस चमत्कार की खबर पूरे शहर में फैल गई; रिश्तेदार और पड़ोसी दूर-दूर से विधवा के घर जमा हुए और, विस्मय से भरकर, यूफेमिया द्वारा बताई गई बातों पर हैरान रह गए। सभी ने प्रभु के नाम की स्तुति की और पवित्र शहीदों के मध्यस्थता की प्रशंसा और महिमा की।

सोफिया और उसकी बेटी ने अपने बाकी दिन ईश्वर को प्रसन्न करने वाले तरीके से बिताए। उन्होंने सभी को ईश्वर की शक्ति के बारे में बताया, जो उन्हें अनुग्रहपूर्वक प्रकट हुई थी। यूफेमिया ने कहा: *'प्रभु का दाहिना हाथ ऊँचा*

उठा है; प्रभु का दाहिना हाथ महान कार्य करता है!' प्रभु के दाहिने हाथ ने मुझे गोथों से एडेसा तक पहुँचाया: *'मैं मरूँगा नहीं, बल्कि जियूँगा, और प्रभु के कामों की घोषणा करूँगा'* (भजन संहिता 117:16-17)।

जहाँ तक शपथ-भंग करने वाले गोथ की बात है, ईश्वर ने उससे निम्नलिखित तरीके से बदला लिया।

कुछ समय बीत जाने के बाद, वही दुष्ट लोग, जिन्होंने पहले यूनानियों के खिलाफ युद्ध छेड़ा था, ने फारसियों के साथ मिलकर एक बार फिर यूनानी क्षेत्र पर चढ़ाई कर दी और एडेसा शहर पर कब्जा करने का प्रयास किया। इसे देखते हुए, यूनानी सम्राटों ने फिर से एडेसा की रक्षा के लिए एक सेना भेजी। इस सेना के साथ वही गोथ भी था, जिसने चालाकी और चापलूसी से सोफिया की बेटी यूफेमिया को उससे छीन लिया था। उसे उस चमत्कार के बारे में कुछ भी पता नहीं था जो हुआ था और वह सोचता था कि यूफेमिया उसकी अपनी मृत पत्नी के साथ ताबूत में बंद होकर मर गई है; बिना किसी हिचकिचाहट के, वह सोफिया के घर गया, मानो अपनी सास से मिलने जा रहा हो। जब उसने देखा कि वह आ गया है, तो उसने यूफेमिया को भीतर के कमरों में छिपा दिया, लेकिन दामाद के आगमन पर खुशी का दिखावा करते हुए उसका स्वागत किया। फिर, अपने रिश्तेदारों और पड़ोसियों को इकट्ठा करके, उसने उनके सामने उस गोथ से पूछताछ करना शुरू कर दिया, यह कहते हुए:

'ईश्वर ने तुम्हें यहाँ से यात्रा करने में कैसे मदद की? क्या मेरी बेटी, जो गर्भवती थी, रास्ते में बीमार पड़ गई, और उसने कैसे बच्चे को जन्म दिया? मैं उसके लिए बहुत दुखी हुआ, क्योंकि वह गर्भवती थी, और मुझे डर था कि यात्रा के दौरान उस पर कोई विपत्ति न आ जाए।'

उसने उत्तर दिया:

'ईश्वर ने, आपकी प्रार्थनाओं से, हमें सुरक्षित रूप से यात्रा करने में मदद की; आपकी बेटी कुशल है: उसने एक लड़के को जन्म दिया है। वह आपको अपनी शुभकामनाएँ भेजती है, और यदि यह यात्रा इतनी अप्रत्याशित न होती—एक ऐसी यात्रा जिसे हमें जल्दबाजी में करने का आदेश दिया गया था—तो आपकी बेटी मेरे और बच्चे के साथ आपको सांत्वना देने आती; हालाँकि, वह किसी अधिक सुविधाजनक समय पर आएगी।

ये शब्द सुनते ही सोफिया इस दुष्ट आदमी के झूठ पर धर्मयुद्ध क्रोध से भर आई और अपने कपड़े फाड़ते हुए, जोर से चीखी:

'झूठे, धोखेबाज़ और कातिल, तुम मेरी बेटी को कहाँ ले गए?'

यह कहकर, उसने यूफेमिया को भीतरी कक्षों से बाहर निकाला, उसे गोथ के सामने बिठाया और कहा:

'क्या तुम इस कन्या को जानते हो? वह कौन है? क्या तुम जानते हो कि तुमने उसे कहाँ कैद किया है, हे शपथ-भंग करने वाले? तुमने उसे मौत की सज़ा दी है, हे कानून-विहीन नीच!'

हालाँकि, ये शब्द सुनकर और यूफेमिया को देखकर, वह काँप उठा, चुप हो गया और एक भी शब्द नहीं बोल सका, मानो वह मृत हो गया हो। फिर विधवा के रिश्तेदारों और पड़ोसियों ने उसे पकड़ लिया, उसे एक कमरे में अच्छी तरह बंद कर दिया और दरवाज़े पर पहरा देने लगे। माँ और बेटी ने एक लिपिक को बुलाया, और जो कुछ भी उनके साथ हुआ था, वह सब कुछ बयां किया, इस अद्भुत चमत्कार का कोई भी विवरण नहीं छोड़ते हुए, और उस शहर के बिशप, धन्य यूलोजियस के पास जाकर, उन्होंने यह विवरण प्रस्तुत किया; उन्होंने उनके बीच दुष्ट और कपटी गोथ के आगमन की भी सूचना दी। विवरण पढ़ने के बाद, बिशप तुरंत अपने पुरोहितों को लेकर उस राज्यपाल के पास गए, जिसने आई हुई यूनानी सेना को आदेश दिया था, और आज्ञा दी कि विधवा और उसकी बेटी द्वारा दिया गया विवरण—जो पवित्र शहीदों के इस अद्भुत चमत्कार का विस्तार से वर्णन करता था—राज्यपाल के सामने पढ़ा जाए। पढ़ी गई बात को ध्यान से सुनने के बाद, राज्यपाल भय से भर गया, वह उस गौरवशाली चमत्कार पर आश्चर्यचकित था, और उसके साथ उपस्थित सभी लोग भयभीत हो गए। राज्यपाल ने तुरंत गोथ को अपने सामने लाने का आदेश दिया। विधवा सोफिया और उसकी बेटी यूफेमिया को भी उसके सामने लाया गया। एक बार फिर उसने उनके बारे में लिखा गया वृत्तांत सबके सुनने के लिए ज़ोर से पढ़ने का आदेश दिया, क्योंकि राज्यपाल के आंगन में पुरुषों और महिलाओं की एक बड़ी भीड़ इकट्ठा हो गई थी। और उसने गोथ से पूछा कि जो लिखा गया है वह सच है या नहीं। गोथ ने जवाब दिया कि यह सच है और इसमें कुछ भी झूठ नहीं है। तब राज्यपाल ने उससे कहा:

'हे नीच हत्यारे! तुझे ईश्वर और उनके अंतिम न्याय का कोई भय कैसे नहीं था, और न ही उन पवित्र शहीदों की कब्र पर खाई गई अपनी कसम से तू डर गया, जिन्हें तूने अपने वादों का जमानतदार और गवाह बनाया था? उस युवती को

तूने क्यों नहीं बख्शा, जिसे तूने अपनी चालाकी से बहकाया था? तो फिर, अपने कर्मों का वह दंड स्वीकार कर जिसके तू हकदार है।'

गवर्नर ने आदेश दिया कि उसकी तलवार से सिर कलम कर दिया जाए। ईश्वर-प्रेमी बिशप ने गवर्नर से विनती की कि वह उस गोथ को मौत की सज़ा न दे, बल्कि उस पर दया दिखाए और उसकी जान बख्श दे, ताकि वह ईश्वर की महानता का गुणगान कर सके। लेकिन गवर्नर ने बिशप से जवाब दिया:

'मुझे इतने बड़े दुष्कृत्य को करने वाले को क्षमा करने से डर लगता है, कहीं मैं पवित्र शहीदों के क्रोध को न भड़का दूँ, जिनका इस शपथ-भंग करने वाले ने अपमान किया है।'

और, राज्यपाल की आज्ञा से, गोथ का सिर कलम कर दिया गया। इस प्रकार इस दुष्ट व्यक्ति को उसकी सजा मिली; परन्तु परमेश्वर अपने संतों में महिमामय हुआ; और हम पापियों से, उसकी महिमा, सम्मान और आराधना हो, अब और हमेशा और युगानुयुग। आमीन।

ट्रोपारियन, स्वर 5:

हे मसीह हमारे परमेश्वर, जिन्होंने अपने पवित्र शहीदों के चमत्कारों के द्वारा हमें एक अभेद्य दीवार प्रदान की है, उनकी प्रार्थनाओं द्वारा राष्ट्रों की सभाओं को नष्ट करें और राज्यों के राजदंडों को मजबूत करें, क्योंकि केवल आप ही भले हैं और मानवजाति के प्रेमी हैं।

कॉन्टाकियन, स्वर 2:

ज्ञान की ऊँचाइयों से अनुग्रह प्राप्त कर, तुम परीक्षाओं के समक्ष सभी के लिए प्रशंसा का आदर्श बनकर खड़े हो। इस प्रकार तुमने पवित्र कन्या को कड़वी मृत्यु से बचाया: क्योंकि तुम वास्तव में एदेसा की महिमा और संसार की आनंद हो।

पवित्र शहीदों एल्पडियिास, मार्सेलस और यूस्टोकीउस की स्मृति

15 नवंबर को स्मरणोत्सव

जुलीयन द एपोस्टेट के शासनकाल के दौरान, धन्य एल्पडियिस राज्य परिषद के सदस्य थे। एक ईसाई होने के कारण, उन्हें मुकदमे के लिए जुलीयन के सामने लाया गया, जिसने आदेश दिया कि उन्हें कीलों से जड़ी हुई रोंगटेदार कमीज़ पहनाई जाए और गर्म गोंद से लथपथ किया जाए। फिर उसे पीटा गया, जिससे कीलें उस धन्य व्यक्ति के शरीर में घुस गईं। शहीद ने साहस के साथ अपने कष्टों को सहन किया और मसीह का त्याग करने के लिए दिए गए दबाव को मानने से इनकार कर दिया। फिर उसे एक खाई में फेंक दिया गया और ऊपर से गर्म पानी डालकर उसके शरीर पर छाले कर दिए गए। उसकी यातना बढ़ाने के लिए, निर्दयी शासक ने आदेश दिया कि रेज़िन, क्षार और अन्य ऐसे पदार्थों को एक साथ मिलाकर आग लगा दी जाए और शहीद के सड़ते हुए घावों पर डाला जाए, जबकि गर्म रेज़िन उसके मुँह में डाला गया। अंत में, संत एल्पडियिस को यूस्टोचियस और मार्सेलस के साथ, जंगली घोड़ों से बांध दिया गया ताकि वे उन्हें चीर-फाड़ कर डालें। हालाँकि, घोड़ों ने उन्हें कोई नुकसान नहीं पहुँचाया। फिर संतों को लाठियों से पीटा गया और आग में फेंक दिया गया, जहाँ उन्होंने अपनी आत्माएँ जीवित परमेश्वर के हाथों में सौंप दीं।

उनके पवित्र शरीर माउंट कार्मेल पर दफनाए गए थे[7926] और कुछ समय तक वहीं रहे। लेकिन एक दिन, मसीह, स्वर्गदूतों के साथ, बिजली की चमक और गरज के बीच वहां प्रकट हुए, और पवित्र शहीदों का अभिवादन किया। उसी क्षण, प्रभु ने संत एल्पडियिस के शरीर को जीवित कर दिया और उन्हें वीरता के नए कारनामे करने के लिए भेज दिया। इन कारनामों की खबर जूलियन तक पहुँची। जैसे ही जूलियन को पता चला कि एल्पडियिस को कोई नुकसान नहीं हुआ है,

[7926] माउंट कार्मेल फिलिस्तीन के मध्य भाग में स्थित है; इसका उत्तरी सिरा भूमध्य सागर में निकला हुआ है, जबकि इसका दक्षिणी सिरा सामरियाई पहाड़ों से मिलता है।

उसने पवत्रि शहीद के शरीर को खींचकर चार खंभों से बाँधने, नरि्दयता से पीटने, तेज आरी से घायल करने और घावों पर सरिका और नमक मलने का आदेश दयिा। फरि उसने आदेश दयिा कि उसके शरीर को गर्म कोयलों पर रखा जाए और गर्म राख से ढक दयिा जाए। जब संत ने बहादुरी से इन यातनाओं को भी सहन कर लयिा, तो उसे एक पेड़ से लटका दयिा गया, और उन्होंने उसके शरीर पर गर्म तपायी ढाल को दबाना शुरू कर दयिा, और उस पर राख छड़िकने लगे। इन यातनाओं के दौरान, एक अद्भुत चमत्कार हुआ: संत की प्रार्थनाओं के माध्यम से, पास में खड़ी मूर्तयिाँ धूल में मलि गईं। यह देखकर, छह हजार की संख्या वाले मूर्तपिूजक ईसाई धर्म में परविर्तति हो गए। इस सब के बाद, संत एल्पडियिस को एक जलती हुई भट्टी में फेंक दयिा गया, जहाँ उन्होंने अपने प्राण ईश्वर को सौंप दिए, जनिसे वे अपनी जवानी से प्रेम करते थे[7927] । परमेश्वर को, जो अपने संतों में अद्भुत हैं, अब और हमेशा और युगों-युगों तक सम्मान और महमिा मलि। आमीन।

शहीद संत डेमेट्रयिस की स्मृति

15 नवंबर को स्मरणोत्सव

पवत्रि शहीद डेमेट्रयिस थ्रेस के डाबूडा गाँव के मूल नविासी थे, और उन्होंने सम्राट मैक्समियिन गैलेरयिस और उनके सह-शासक मैक्समिनिस के अधीन शहादत प्राप्त की। थ्रेस के प्रीफेक्ट पब्लयिस को सूचति कयिा गया कि संत एक ईसाई थे, और प्रीफेक्ट के आदेश पर, संत को गरिफ्तार कर लयिा गया। अपने पूछताछ के दौरान, डेमेट्रयिस ने नडिरता से मसीह को परमेश्वर के रूप में स्वीकार कयिा, पवत्रि आत्मा के बारे में बात की, और यीशु मसीह के अवतार, उनकी दया और मानवता के प्रति प्रेम के बारे में सखिाया। फरि उन्होंने मूर्तपिूजा के आत्मा-वनिाशकारी भ्रम की नंदिा की, और दखिाया कि इसे करने वाले कतिने अंधे और बहरे हैं। उनके शब्दों से शासक को बहुत क्रोध आया, जसिने उनका सरि कलम करने का आदेश दयिा[7928] । इस प्रकार पवत्रि शहीद का नधिन हो गया, जन्हिोंने प्रभु से अपना स्वर्गीय मुकुट प्राप्त कयिा था। संत डेमेट्रयिस के पवत्रि अवशेषों को वशि्वासयोग्य और ईश्वर-भयभीत लोगों द्वारा दफनाया गया था, और वे सभी पर चंगाई प्रदान करते हैं जो उनके पास आते हैं।

29 नवंबर

16 नवंबर (पुराना तरीका)

संत मत्ती प्रेरति और सुसमाचार प्रचारक का जीवन और यातनाएँ

16 नवंबर को स्मरणोत्सव

अपोस्तल और सुसमाचारकार सन्त मत्ती, अल्फाउस के पुत्र, जन्हिें लेवी के नाम से भी जाना जाता है (मरकुस 2:14; मत्ती 9:9; लूका 5:27), गलील के कफ़र्नम नगर में रहते थे[7929] । वह एक संपन्न व्यक्ति थे और कर वसूलने वाले के पद पर थे[7930] । उसके हमवतन उससे घृणा करते थे और उसे दूर भगाते थे, जैसे वे उसके जैसे सभी लोगों से करते थे। लेकनि

[7927] पवत्रि शहीदों एल्पडियिस, मार्सेलस और यूस्टोचयिस ने चौथी शताब्दी के मध्य के आसपास शहादत प्राप्त की।

[7928] यह वर्ष 307 ईस्वी में हुआ था।

[7929] कफ़र्नम गलील में जेनेसारत झील, या टबिेरयिास की समुद्र के उत्तर-पश्चमिी तट पर एक छोटा सा शहर है। आज, इस शहर के खंडहर टेल् गुम के नाम से जाने जाते हैं।

[7930] 'कर वसूलने वालों' नाम रोमनों द्वारा यहूदयिों से कर वसूलने के लिए नयिुक्त कए गए लोगों को दयिा गया था। वे आमतौर पर इन शुल्कों को वसूलने के लिए पट्टा लेते थे और अपने लिए अधकितम लाभ नकिालने के लिए हर संभव साधन अपनाते थे। एक वधिर्मी शक्ति के लालची और अभद्र एजेंटों के रूप में, कर संग्रहकर्ताओं को यहूदयिों द्वारा अपने देश और प्रभु परमेश्वर के गद्दार और वशि्वासघाती माना जाता था। एक पापी, एक वधिर्मी और एक कर संग्रहकर्ता - उनके लिए, इनका मतलब एक ही था; उनसे बात करना एक पाप माना जाता था, और उनसे मेलजोल करना एक अपवत्रिता, भले ही उनमें अच्छे और ईश्वर-भयभीत लोग थे।

मत्ती, यद्यपि एक पापी था, न केवल फरीसियों से बदतर नहीं था, बल्कि वास्तव में उनसे कहीं बेहतर था[7931] , जो अपने कथित बाहरी धार्मिकता पर घमंड करते थे। और इस प्रकार प्रभु ने अपनी दैवी दृष्टि इस कर वसूलने वाले पर डाली, जिससे सभी घृणा करते थे। एक दिन, जब वह कफ़र्नाम में ठहरे हुए थे, प्रभु नगर से बाहर निकलकर लोगों के साथ समुद्र की ओर गए। तट पर उन्होंने मत्ती को कर कार्यालय में बैठे देखा[7932] । और उन्होंने उससे कहा:

'मेरे पीछे आओ!'

प्रभु के इन वचनों को न केवल अपने शारीरिक कानों से बल्कि अपने हृदय की आँखों से भी सुनकर, वह महसूल लेने वाला तुरंत अपनी कुर्सी से उठ खड़ा हुआ और सब कुछ पीछे छोड़कर मसीह के पीछे हो लिया। मत्ती ने संकोच नहीं किया, और न ही वह इस बात पर हैरान हुआ कि महागुरु और चमत्कार करने वाले उसे, एक तुच्छ कर-संग्रहकर्ता को, बुला रहे थे; उसने पूरे दिल से उनके शब्दों पर ध्यान दिया और बिना किसी सवाल के मसीह का अनुसरण किया। अपनी खुशी में, मत्ती ने अपने घर पर एक बड़ी दावत का आयोजन किया। प्रभु ने निमंत्रण अस्वीकार नहीं किया और मत्ती के घर में प्रवेश किया। उसके पड़ोसियों, दोस्तों और परिचितों की एक बड़ी भीड़—जो सभी महसूल लेने वाले और पापी थे—मत्ती के घर में इकट्ठा हो गई, और वे यीशु और उनके चेलों के साथ मेज पर बैठे। कुछ धर्मशास्त्री[7933] और फरीसी भी वहाँ आ पहुँचे। जब उन्होंने देखा कि प्रभु पापियों और महसूलकर्ताओं को टोक नहीं रहे थे, बल्कि उनके साथ भोजन कर रहे थे, तो वे बड़बड़ाए और उसके चेलों से कहने लगे:

'वह महसूल वसूलने वालों और पापियों के साथ क्यों खाता-पीता है?'

लेकिन जब प्रभु ने उनके वचन सुने, तो उनसे कहा:

'चिकित्सक-चुस्त लोगों को नहीं, बल्कि बीमारों को वैद्य की आवश्यकता होती है। मैं धार्मिकों को नहीं, बल्कि पापियों को पश्चाताप के लिए बुलाने आया हूँ[7934] ।'

उस समय से, मत्ती ने अपनी सारी संपत्ति छोड़कर मसीह का अनुसरण किया (लूका 5:28) और, उनके एक वफादार शिष्य के रूप में, इसके बाद कभी भी उनका साथ नहीं छोड़ा। जल्द ही, उन्हें बारह चुने हुए प्रेरितों में गिने जाने का सम्मान मिला (मत्ती 10:1–42; मरकुस 3:13–19; लूका 6:13–16)। प्रभु के अन्य शिष्यों के साथ, मत्ती ने गलील और यहूदिया में उनकी यात्राओं में उनका साथ दिया, उनकी दिव्य शिक्षाओं को सुना, उनके अनगिनत चमत्कारों के साक्षी बने, इस्राएल के घराने की खोई हुई भेड़ों को उपदेश देने के लिए आगे बढ़े, और उद्धारकर्ता के क्रूस पर दुखों, उनके प्रायश्चित मृत्यु, और स्वर्ग में उनके गौरवशाली आरोहण के साक्षी बने।

प्रभु के स्वर्गारोहण और प्रेरितों पर पवित्र आत्मा के अवतरण के बाद, संत मत्ती शुरू में अन्य प्रेरितों के साथ यरूशलेम और उसके आसपास सुसमाचार का प्रचार करते हुए फिलिस्तीन में ही रहे। लेकिन समय आ गया कि प्रेरित यरूशलेम से प्रस्थान करें और विभिन्न राष्ट्रों में जाकर उन्हें मसीह के धर्म में परिवर्तित करें। प्रेरित के यरूशलेम से प्रस्थान से पहले, यहूदी मूल के यरूशलेम के ईसाइयों ने उनसे यीशु मसीह के कर्मों और शिक्षाओं को उनके लिए लिखित

[7931] फरीसी उन यहूदी संप्रदायों में से एक थे जो ईसा पूर्व दूसरी और तीसरी शताब्दी में उभरे थे। उन्होंने अपना नाम, 'फरीसी' ('अलग किए हुए'), कानून के प्रति अपने विशेष उत्साह से खुद को अलग करने के अपने प्रयास से लिया था।

[7932] एक सीमा शुल्क चौकी एक ऐसी जगह थी जहाँ तटीय मार्ग पर यात्रा करने वाले कारवाँ से और समुद्र द्वारा माल ढोने वाले जहाजों से शुल्क और कर वसूले जाते थे।

[7933] यहूदियों में, 'लिखारियों' शब्द से तात्पर्य आम तौर पर धर्मग्रंथों के मामलों में अच्छी तरह से निपुण लोगों से था, जैसे: यहूदियों में सबसे विद्वान, जो कानून की व्याख्या करते थे और सार्वजनिक रूप से लोगों को कानून सिखाते और निर्देश देते थे—तथाकथित रब्बी और कानून के शिक्षक; कानूनी विशेषज्ञ जो विवादास्पद मुद्दों, संदिग्ध मामलों और कानून के ज्ञान तथा व्यावहारिक अनुभव की आवश्यकता वाले मामलों के समाधान से संबंधित थे; और लिपिक तथा नोटरी जो सिनेगॉग और सनेड्रिन में सेवा करते थे। इन विद्वान यहूदियों को नए नियम में फरीसियों से अलग एक विशिष्ट वर्ग के रूप में प्रस्तुत किया गया है; फिर भी, एक ही समय में वे अक्सर फरीसियों के साथ जुड़े होते हैं और मुख्य याजकों से जुड़े होते हैं। उनमें से अधिकांश कुछ परंपराओं से बँधे हुए थे और, कानून की भावना को समझने में विफल रहते हुए, उन्होंने इसकी गलत व्याख्या की और लोगों के अंधा नेता थे, पाखंडपूर्वक केवल दिखावे के लिए, मानवीय महिमा के लिए आज्ञाओं का पालन करते थे, और दूसरों पर ऐसे भारी बोझ डालते थे जिन्हें वे स्वयं नहीं उठाते थे।

[7934] लूका 5:27–32. मत्ती 9:9–13. मरकुस 2:14–17. इस प्रकार, प्रभु यहाँ लिखारियों और फरीसियों के अहंकार और आत्म-धार्मिकता की निंदा करते हैं, जो केवल कानून के बाहरी अनुष्ठानों से चिपके हुए थे और दिखावे के लिए उनका सख्ती से पालन करते थे, खुद को धर्मी मानते थे और उन्हें पश्चाताप या सुधार की कोई आवश्यकता महसूस नहीं होती थी। प्रभु उन्हें यह दिखाते हैं कि बाहरी अनुष्ठान और बलिदान तभी सार्थक होते हैं जब वे आंतरिक भावना, दया और पड़ोसी के प्रति प्रेम की अभिव्यक्ति के रूप में काम करते हैं; इसके बिना, वे अपना अर्थ खो देते हैं और केवल परमेश्वर के क्रोध को भड़का सकते हैं (यशायाह 1:11-18)।

रूप में दर्ज करने का अनुरोध कयिा। उस समय यरूशलेम में मौजूद अन्य प्रेरतिों ने भी इस अनुरोध से सहमतव्यिक्त की। और संत मत्ती ने उनकी इस साझा इच्छा को पूरा करते हुए, मसीह के स्वर्गारोहण के आठ वर्ष बाद सुसमाचार लखिा[7935] ।

यरूशलेम छोड़ने के बाद, प्रेरति संत मत्ती ने कई देशों में सुसमाचार का प्रचार कयिा। मसीह का प्रचार करते हुए, वह मैसेडोनयिा, सीरयिा, फारस, पार्टयिा और मीडयिा से होकर गया, और पूरे इथयिोपयिा[7936] — जसिे उसे पासे से सौंपा गया था — में गया और उसे सुसमाचार के प्रकाश से प्रबुद्ध कयिा। अंत में, पवत्रि आत्मा के मार्गदर्शन में, वह नरभक्षयिों की भूमपिर, एक गहरे रंग के, पशु-सदृश लोगों के पास आए; वह मर्मिनिा नामक एक शहर में प्रवेश कएि, और वहाँ, कई आत्माओं को प्रभु के प्रतपिरविर्तति करने के बाद, उन्होंने अपने साथी प्लेटो को उनका बशिप नयिुक्त कयिा और एक छोटी सी चर्च स्थापति की; जबकवि ह स्वयं पास की एक पहाड़ी पर चढ़ गया और वहाँ उपवास करते हुए, उस अवशि्वासी लोगों के धर्म परविर्तन के लएि परमेश्वर से प्रार्थना में लगा रहा। और प्रभु एक सुंदर युवक के रूप में उसके सामने प्रकट हुए, जसिके दाहनिे हाथ में एक लाठी थी, और उन्होंने उसे नमस्कार कयिा। अपना दाहनिा हाथ बढ़ाकर और लाठी संत को थमाकर, उन्होंने उसे पहाड़ से उतरने और अपनी बनाई हुई चर्च के द्वार पर लाठी रखने की आज्ञा दी।

प्रभु ने कहा, 'यह लाठी, मेरी शक्तसि,े एक ऊँचे पेड़ में बदल जाएगी, और उस पेड़ पर भरपूर फल लगेंगे, जो आकार और मठिास में अन्य सभी बगीचे के फलों से श्रेष्ठ होंगे; और उसकी जड़ से शुद्ध जल का एक झरना बहेगा। झरने के पानी में स्नान करने के बाद, नरभक्षी अपनी मुखमंडल की सुंदरता वापस पा लेंगे, और जो कोई भी उस फल का स्वाद चखेगा, वह अपने जंगली स्वभाव को भूल जाएगा और एक दयालु और सौम्य व्यक्तबिन जाएगा।

मत्ती, प्रभु के हाथ से लाठी प्राप्त करके, पहाड़ से उतर आया और जो आज्ञा उसे दी गई थी, उसे पूरा करने के लएि नगर में चला गया। उस नगर का राजकुमार, जसिका नाम फुल्वयिन था, उसकी एक पत्नी और एक पुत्र था जो दुष्टात्माओं से ग्रस्त थे। रास्ते में प्रेरति से मलिते ही, वे जंगली, धमकी भरी आवाज़ों में उस पर चल्लिाए:

'तुम्हें इस लाठी के साथ हम पर वनिाश लाने के लएि कसिने भेजा है?'

प्रेरति ने अशुद्ध आत्माओं को डांटा और उन्हें बाहर नकिाल दयिा; जो चंगे हुए थे, वे प्रेरति के सामने झुक गए और नम्रतापूर्वक उसका अनुसरण करने लगे। उसके आगमन की खबर पाकर, बशिप प्लेटो पुरोहतिों के साथ उससे मलिने बाहर गए, और संत मत्ती, शहर में प्रवेश करके चर्च के पास पहुँचने पर, उन्होंने जैसा उनसे कहा गया था वैसा ही कयिा: उन्होंने प्रभु द्वारा दयिा गया लाठी गाड़ दी, – और तुरंत, सभी के सामने, वह लाठी एक वशिाल वृक्ष बन गई, अपनी पत्तों वाली डालयिाँ फैलाते हुए, और उस पर सुंदर, बड़े और मीठे फल प्रकट हुए, और उसकी जड़ से पानी का एक झरना फूट नकिला। यह सब देखने वाले वस्मिति हो गए; पूरा शहर यह चमत्कार देखने के लएि इकट्ठा हो गया, और उन्होंने उस वृक्ष का फल चखा और शुद्ध जल पयिा। और प्रेरति संत मत्ती, एक ऊँची जगह पर खड़े होकर, इकट्ठी हुई भीड़ को

[7935] यह सुसमाचार प्रेरति मत्ती द्वारा लगभग 41 ईस्वी में लखिा गया था। यह नए नयिम की सभी पुस्तकों में सबसे पुरानी है और इसलएि इनके बीच प्रथम स्थान रखती है। यह सुसमाचार उस समय प्रचलति हब्रिू या सीरो-कल्डीय बोली—जसिे अरामीक भी कहा जाता है—में लखिा गया था, और मूल रूप से यहूदी मूल के फलिस्तिीनी ईसाइयों के लएि था। तदनुसार, मत्ती के सुसमाचार में वर्णति कथाएँ मुख्य रूप से यह प्रदर्शति करने के लएि हैं कयीशु ही यहूदी लोगों के पूर्वजों से प्रतज्ञिा कयिा गया सच्चा मसीहा हैं—यह एक ऐसा बदिु था जसिे उन यहूदयिों के लएि वशिेष रूप से स्पष्ट करने की आवश्यकता थी जो मसीह में वशि्वास करने लगे थे, जो अपने ही देशवासयिों द्वारा अस्वीकार कएि गए और क्रूस पर चढ़ाए गए एक व्यक्तथि। इसलएि, मत्ती के सुसमाचार में, अन्य सुसमाचारों की तुलना में अधकि बार, मसीह के जीवन की घटनाओं को पुराने नयिम की भवष्यिवाणयिों और प्रकारों से जोड़ा और उनकी तुलना की गई है, और उद्धारकर्ता मसीह के संपूर्ण इतहिास से, वे वृत्तांत चुने गए हैं जो वशिेष रूप से यहूदयिों के लएि महत्वपूर्ण और प्रासंगकि हैं। इसी कारण से, मत्ती अपनी सुसमाचार की शुरुआत मसीहा की वंशावली से करता है, जो दाऊद और इब्राहीम के पुत्र हैं, और, सामान्य रूप से, उसकी सुसमाचार मुख्य रूप से दाऊद के पुत्र, इब्राहीम के पुत्र, यीशु मसीह के अवतार और मानवता के बारे में बात करती है। संत मत्ती के सुसमाचार की यह वशिष्टि वशिेषता उनके आइकन (चत्रिों) में भी परलिक्षति होती है, जनिमें उन्हें एक स्वदूत के साथ चत्रिति कयिा गया है, जो प्रतीकात्मक रूप से उनके सुसमाचार की वशिष्टि वशिेषताओं का प्रतनिधित्वि करता है।

[7936] मेसेडोनयिा ग्रीस के उत्तर में, थेस्साली क्षेत्र के उत्तर-पूर्व में स्थति था। सीरयिा एशयिा का एक पश्चमिी क्षेत्र था, जो भूमध्य सागर से लेकर फरात नदी तक फैला हुआ था। पर्सयिा ईरानी पठार के दक्षणिी भाग में, टग्रिसि नदी, फारस की खाड़ी और कैस्पयिन सागर के बीच स्थति था। मीडयिा ईरान का पश्चमिी भाग था, जो कैस्पयिन सागर के दक्षणि में, पश्चमि में अस्सरियिा और ग्रेटर आर्मेनयिा, दक्षणि में पर्सयिा, और पूर्व में पार्टयिा से सटा हुआ था। पार्थयिा एशयिा में एक बड़ा देश था, जो कैस्पयिन सागर के दक्षणि-पूर्व में स्थति था और पूर्व की ओर भारतीय महासागर तक फैला हुआ था। इथयिोपयिा अफ्रीका में, मस्रि के दक्षणि में स्थति था, जो अब नूबयिा और अबसिनियिा के रूप में जाना जाता है।

उनकी अपनी भाषा में परमेश्वर का वचन सुनाया; और तुरंत ही वे सब प्रभु पर विश्वास कर गए, और प्रेरित ने उन्हें उस चमत्कारी झरने में बपतिस्मा दिया। और जो सभी नरभक्षी बपतिस्मा ग्रहण कर चुके थे, वे प्रभु के वचन के अनुसार, जल से दीप्तिमान चेहरों और गोरी त्वचा के साथ निकले; उन्होंने न केवल शारीरिक बल्कि आध्यात्मिक पवित्रता और सुंदरता भी प्राप्त की, पुराने स्वभाव को त्यागकर नए स्वभाव – मसीह – को धारण किया। यह जानकर कि क्या हुआ था, राजकुमार पहले तो अपनी पत्नी और बेटे के ठीक होने से प्रसन्न हुआ, लेकिन फिर, शैतान के बहकावे में आकर, वह प्रेरित पर क्रोधित हो गया क्योंकि सभी लोग अपने देवताओं को त्यागकर उसके पास आ रहे थे, और उसने उसे नष्ट करने का संकल्प लिया। लेकिन उसी रात उद्धारकर्ता प्रेरित के पास प्रकट हुए, उन्होंने उसे धैर्यवान होने की आज्ञा दी और आने वाले क्लेश में उसके साथ रहने का वादा किया। जब सुबह हुई, और प्रेरित विश्वासियों के साथ चर्च में परमेश्वर की स्तुति कर रहे थे, तो राजकुमार ने उन्हें गिरफ्तार करने के लिए चार सैनिक भेजे; लेकिन जब वे प्रभु के मंदिर में पहुँचे, तो तुरंत अंधकार उन्हें घेर लिया, और वे मुश्किल से अपना रास्ता वापस ढूंढ पाए। जब उनसे पूछा गया कि उन्होंने मत्ती को क्यों नहीं लाया, तो उन्होंने उत्तर दिया:

'हमने उसे बोलते हुए सुना, परन्तु हम न तो उसे देख सके और न ही पकड़ सके।'

फुल्वियन का क्रोध और भी भड़क उठा। उसने और भी सैनिक भेजे, जो हथियारबंद थे, और उन्हें आदेश दिया कि वे मत्ती को जबरदस्ती लाएं, और जो कोई भी उसका विरोध करे या उसकी रक्षा करे, उसे मार डालें। लेकिन ये सैनिक भी खाली हाथ लौट आए, क्योंकि जब वे मंदिर के पास पहुँचे, तो प्रेरित पर स्वर्गीय प्रकाश चमका, और सैनिक, उसे देखने में असमर्थ होकर, बड़े भय से ग्रस्त हो गए; अपने हथियार फेंककर, वे आतंक से आधे-मरे भाग गए, और उन्होंने जो कुछ हुआ था, उसका वर्णन राजकुमार से किया। फुल्वियन को भयंकर क्रोध आ गया और वह अपने सेवकों की एक बड़ी भीड़ के साथ प्रेरित को खुद पकड़ने के लिए निकल पड़ा। लेकिन जैसे ही वह प्रेरित के पास पहुँचा, वह अचानक अंधा हो गया और मार्गदर्शन के लिए भीख माँगने लगा। तब वह प्रेरित से अपने पाप को क्षमा करने और अपनी अंधी आँखों में रोशनी वापस लाने के लिए विनती करने लगा। प्रेरित ने राजकुमार की आँखों के सामने क्रॉस का चिह्न बनाकर उसकी दृष्टि वापस कर दी। राजकुमार की दृष्टि तो लौट आई, लेकिन केवल उसकी शारीरिक आँखों की, उसकी आत्मा की आँखों की नहीं; क्योंकि द्वेष ने उसे अंधा कर दिया था, और उसने इस महान चमत्कार को ईश्वर की शक्ति का नहीं, बल्कि जादू-टोने का परिणाम माना। उसने प्रेरित का हाथ पकड़कर उन्हें अपने महल में ले गया, मानो उनका सम्मान करना चाहता हो, जबकि अपने दिल में वह चालाकी से प्रभु के प्रेरित को जादूगर के रूप में जलाने की साजिश रच रहा था। लेकिन प्रेरित ने, उसके दिल की छिपी हुई हलचल और उसकी चालाक योजनाओं को भांपते हुए, राजकुमार को डांटा, और कहा:

'हे चापलूस यातनाकर्ता! तू मुझे जो करने की योजना बना रहा है, उसे तू कितनी जल्दी पूरा करेगा? जो शैतान ने तेरे मन में डाला है, वही कर; जैसा कि तू देख सकता है, मैं अपने ईश्वर के लिए कुछ भी सहने को तैयार हूँ।'

तब राजकुमार ने सैनिकों को संत मत्ती को पकड़कर जमीन पर पेट के बल लिटाने और उसके हाथ-पैरों को मजबूती से ठोक देने का आदेश दिया। जब यह किया गया, तो यातना देने वाले के आदेश पर सेवकों ने बहुत सारी टहनियाँ और झाड़-झंखाड़ इकट्ठी कीं, गोंद और गंधक लाए, और यह सब संत मत्ती पर रखकर आग लगा दी। लेकिन जब आग की लपटें भड़क उठीं और सभी ने सोचा कि मसीह के प्रेरित पहले ही जलकर मर चुके हैं, तो अचानक आग ठंडी पड़ गई और लपटें बुझ गईं, और संत मत्ती जीवित, सुरक्षित और ईश्वर की स्तुति करते हुए पाए गए। यह देखकर, भीड़ के सभी लोग इस महान चमत्कार से विस्मित हो गए और प्रेरित के माध्यम से परमेश्वर की स्तुति करने लगे। लेकिन फुल्वियन और भी अधिक क्रोधित हो गया। जो हुआ उसमें ईश्वर की शक्ति को स्वीकार करने के लिए अनिच्छुक, जिसने मसीह के प्रचारक को आग से जीवित और अक्षुण्ण रखा था, उसने उस धर्मी व्यक्ति पर एक निराधार आरोप लगाया, और उसे एक जादूगर कहा।

उसने कहा, 'जादू-टोने से, मत्ती ने आग बुझा दी और उसमें जीवित रहा।'

फिर उसने और लकड़ी, टहनियाँ और झाड़-झंखाड़ लाने का आदेश दिया, और उन्हें मत्ती पर ढेर करके, आग लगाने और ऊपर से राल डालने का आदेश दिया; इसके अलावा, उसने अपनी बारह सुनहरी मूर्तियों को लाने का आदेश दिया और उन्हें आग के चारों ओर रखकर उनसे मदद की पुकार की, ताकि उनकी शक्ति से मत्ती आग से बच न सके और राख हो जाए। तथापि प्रेरित ने ज्वालाओं के बीच सेनाओं के प्रभु से प्रार्थना की, कि वह अपनी अजेय शक्ति का प्रदर्शन करें, मूर्तिपूजक देवताओं की दुर्बलता को प्रकट करें, और उन लोगों को लज्जित करें जिन्होंने उनमें अपनी आशा रखी थी।

और अचानक एक भयंकर गरज के साथ एक आग का ज्वालामुखी सुनहरी मूर्तियों की ओर बढ़ आया, और वे आग में मोम की तरह पघिल गईं; इसके अलावा, आसपास खड़े कई अवशि्वासयिों को भी झुलस गया; और पघिले हुए मूर्तियों से एक ज्वाला, साँप के रूप में नकिलकर, फुल्वयिन की ओर बढ़ी और उसे धमकाने लगी, जसिसे वह तब तक भाग नहीं सका या खतरे से बच नहीं पाया जब तक कि उसने वनिाश से बचाने के लिए प्रेरति से एक वनिम्र प्रार्थना के साथ पुकार नहीं लगाई। प्रेरति ने आग को बुझने का आदेश दयिा, और तुरंत ही लौ शांत हो गई और आग के साँप का स्वरूप गायब हो गया। फुल्वयिन संत को सम्मानपूर्वक आग से बचाना चाहता था, लेकनि उन्होंने एक प्रार्थना करने के बाद अपनी पवत्रि आत्मा ईश्वर के हाथों में सौंप दी[7937] । तब राजकुमार ने एक स्वर्ण सहिासन मंगवाया, जसि पर उसने आग से अछूते प्रेरति का सम्मानति शरीर रखा; और, उसे कीमती वस्त्र पहनाने के बाद, उसे अपने कुलीनों के साथ उठाया और अपने महल में ले गया। लेकनि उसके पास अभी पूर्ण वशि्वास नहीं था, और इसलिए उसने एक लोहे का ताबूत गढ़ने का आदेश दयिा, जसि टनि से चारों ओर से अच्छी तरह सील करके समुद्र में फेंक दयिा गया; और उसने अपने कुलीनों से कहा:

'यदि वही मत्ती को आग से अछूता रखता है, तो वह उसे पानी में डूबने से भी बचाएगा, तो वह वास्तव में एकमात्र ईश्वर है, और हम उसकी पूजा करेंगे, अपने सभी देवताओं को त्यागकर, जो आग से अपनी ही तबाही से खुद को बचाने में असमर्थ थे।'

पवत्रि अवशेषों से युक्त इस लोहे के सन्दूक को समुद्र में फेंके जाने के बाद, उस संत ने उसी रात बशिप प्लेटो को दर्शन दिए, और कहा:

'कल, राजकुमार के महल के पूर्व में समुद्र तट पर जाओ और वहाँ मेरे अवशेषों को नकिाल लो, जो कनिारे पर आ गए हैं।'

अगली सुबह, बशिप, कई वशि्वासयिों के साथ, बताए गए स्थान के लिए रवाना हुए और उन्हें संत मत्ती प्रेरति की अवशेषों वाली लोहे की तजिोरी मलिी, ठीक वैसे ही जैसे उन्हें अपने दर्शन में बताया गया था।

यह सुनकर, राजकुमार अपने कुलीनों के साथ आया और, अब हमारे प्रभु यीशु मसीह में पूरी तरह से वशि्वास कर चुका, उसने ज़ोर से घोषणा की कि वही एकमात्र सच्चा परमेश्वर है, जसिने अपने सेवक मत्ती को अक्षुण्ण रखा था - जीवन में, आग के बीच, और मृत्यु के बाद, पानी में। और, प्रेरति की अवशेषों वाली संदूक के सामने साष्टांग प्रणाम करके, उसने संत से अपनी उपस्थति में कए गए अपने पापों के लिए क्षमा मांगी और बपतस्मिा लेने की हार्दकि इच्छा व्यक्त की। बशिप प्लेटो ने फुल्वयिन के वशि्वास और उत्साह को देखकर उसे उपदेश दयिा और पवत्रि वशि्वास के सच्चे सद्धिांत सखिाकर उसका बपतस्मिा संस्कार कयिा। और जब उन्होंने उसके सरि पर अपना हाथ रखा और उसे एक नाम देने ही वाले थे, तो ऊपर से एक आवाज सुनाई दी, जो कह रही थी:

'उसे फुल्वयिन मत कहना, बल्कि मत्ती कहना।'

इस प्रकार बपतस्मिा के समय प्रेरति का नाम प्राप्त करने के बाद, राजकुमार ने प्रेरति के जीवन का अनुकरण करने का प्रयास कयिा: उसने जल्द ही अपना राजसी अधकिार कसिी और को सौंप दयिा, सांसारकि व्यर्थताओं को पूरी तरह से त्याग दयिा, स्वयं को परमेश्वर की कलीसयिा में प्रार्थना के लिए समर्पति कर दयिा, और बशिप प्लेटो द्वारा एक पुरोहति नयिुक्त कयिा गया। और जब, तीन साल बाद, बशिप का नधिन हो गया, तो संत मत्ती प्रेरति, जो राजसी अधकिार सौंपे गए थे, उस पादरी मत्ती को एक दर्शन में प्रकट हुए, और उन्होंने उसे धन्य प्लेटो के बाद बशिप का पद ग्रहण करने के लिए प्रेरति कयिा। एपस्कोपेट स्वीकार करने के बाद, मत्ती ने मसीह के सुसमाचार के प्रचार में परश्रिम कयिा और कई लोगों को मूर्तपिूजा से हटाकर उन्हें ईश्वर की ओर ले गए; और फरि वे स्वयं ईश्वर के पास चले गए, ईश्वर को समर्पति एक लंबी जीवन के बाद, और, सुसमाचार प्रचारक संत मत्ती के साथ ईश्वर के सहिासन के सामने खड़े होकर, वह हमारे लिए प्रभु से प्रार्थना करते हैं, कि हम भी परमेश्वर के अनंत राज्य के वारसि बनें। आमीन।

ट्रोपारयिन, स्वर 3:

प्रभु मसीह का अनुसरण करने के लिए कर कार्यालय को उत्सुकता से छोड़कर, जो हमारे लिए मनुष्य के रूप में पृथ्वी पर प्रकट हुए, आप संपूर्ण संसार के लिए एक चुने हुए प्रेरति और सुसमाचार के एक शक्तशिाली प्रचारक बने:

[7937] परंपरा के अनुसार, संत मत्ती प्रेरति और सुसमाचार लेखक की मृत्यु लगभग 60 ईस्वी के आसपास हुई।

इसी कारण हम आपकी पवत्रि स्मृतकिा सम्मान करते हैं, मत्ती, ईश्वर-वक्ता। दयालु ईश्वर से प्रार्थना करें कवि हमारी आत्माओं को पापों की क्षमा प्रदान करें।

कॉन्टाकयिन, स्वर 4:

आपने अत्याचार का जुआ उतार फेंका, धार्मकिता का जुआ उठाया, और सबसे उत्तम व्यापारी के रूप में प्रकट हुए, जो धन-संपत्त—िअर्थात् परम-पवत्रि ज्ञान—लाए: इसीलिए आपने सत्य का वचन प्रचार कयिा, और नराश लोगों के हौसले बढ़ाए, तथा न्याय के समय को लखि डाला।

30 नवंबर

17 नवंबर (पुराना कैलेंडर)

हमारे पवत्रि पतिा ग्रेगरी चमत्कारकि, नेओकेसरयिा के बशिप का जीवन

१७ नवंबर को स्मरणोत्सव

संत ग्रेगरी का जन्म पगन माता-पतिा के यहाँ, नेओकैसरेया के गौरवशाली और महान शहर[7938] में हुआ था। अपनी युवावस्था में उन्होंने उन्हें खो दयिा। हेलेनकि ज्ञान[7939] के अध्ययन के लिए स्वयं को समर्पति करने के बाद, उन्होंने उस परम पूर्ण ज्ञान को समझना शुरू कर दयिा, जो एकमात्र सच्चे ईश्वर के ज्ञान में नहिति है: उनकी रचनाओं से उन्होंने सृष्टकिर्ता को पहचाना और दुर्भावना से रहति तथा पवत्रिता से युक्त जीवन के माध्यम से उन्हें प्रसन्न करने का प्रयास कयिा। पवत्रि सुसमाचार की शकि्षा से परचिति होकर, वह तुरंत इसका अनुयायी बन गया और बपतस्मिा ग्रहण करने के बाद, ने मसीह की आज्ञाओं के अनुसार, पवत्रिता और लालच रहति जीवन जीने का प्रयास कयिा, तथा सभी सांसारकि व्यर्थता, धन-संपत्त,ि घमंड, महमिा और क्षणकि सुखों का त्याग कर दयिा। शरीर की तुष्टि का त्याग करने के बाद, ग्रेगरी ने अपनी इच्छा को वश में रखते हुए, महान संयम का जीवन जयिा, और अपनी कुँवारीपन की पवत्रिता की इतनी कड़ाई से रक्षा की कि अपने पूरे जीवन में, अपनी माँ के गर्भ से लेकर अपने धन्य नधिन तक, उन्होंने कसिी भी शारीरकि पाप को नहीं जाना और स्वयं को कलंक से बचाया, ताकि वे उस परमेश्वर को प्रसन्न कर सकें जो स्वयं शुद्ध और नर्दिोष हैं, और जो नर्दिोष कुँवारी से उत्पन्न हुए हैं, मसीह परमेश्वर। अपनी जवानी से ही स्वयं को उनके हवाले कर देने के कारण, उनकी मदद से वह शक्ति से शक्ति और सद्गुण से सद्गुण की ओर बढ़ता गया, और जीवन के मार्ग पर नर्दिोषता से चला: इस कारण, ईश्वर और सज्जन लोग उससे प्रेम करते थे, जबकि दुष्ट उससे घृणा करते थे।

जब वे अभी भी एक युवा पुरुष थे और अलेक्जेंड्रयिा में दर्शनशास्त्र तथा चकित्सिा का अध्ययन कर रहे थे, जहाँ दुनयिा भर के कोने-कोने से आए कई अन्य युवक भी इकट्ठा थे[7940] , उनकी पवत्रि और नर्दिोष जीवनशैली ने उनके

[7938] नयिोकेसरयिा – अब नकि्सार – अपनी सुंदरता के लिए प्रसदि्ध, उत्तरी एशयिा माइनर में लकिस नदी पर स्थति, पोंटस पोलमिोनयिाकस की अपेक्षाकृत बाद में बनी राजधानी थी; यह वशिेष रूप से वहां आयोजति (315 ईस्वी में) सार्वभौमकि परषिद के लिए प्रसदि्ध है, जो सेंट ग्रेगरी की मृत्यु के बाद हुई थी।

[7939] यहाँ 'हेलेनकि ज्ञान' से अभप्रिेत मूर्तपिूजक वदि्वता और मूर्तपिूजक शकि्षा है। नेओकेसरेया के संत ग्रेगरी के पतिा एक मूर्तपिूजक थे और उन्होंने अपने बेटे का पालन-पोषण मूर्तपिूजक धर्म में कयिा। उनके पतिा चाहते थे कि वह वकील बनें; परणिामस्वरूप, संत ग्रेगरी (जनिका धर्मनरिपेक्ष नाम थयिोडोर था) ने उस समय के कानूनों की भाषा—लैटनि—के साथ-साथ कानून का गहन अध्ययन कयिा, और अंततःरोमन कानून से और अधकि परचिति होने के लिए रोम की यात्रा करने का संकल्प लयिा। लेकनि दैवीय व्यवस्था की उसकी ज़दिगी के लिए कुछ और ही योजनाएँ थीं: उसे अपने भाई के साथ अपनी बहन को सेज़रयिा ले जाना था; वहाँ से वह बाद में कानून की पढ़ाई के लिए बेरूत गया, और वहाँ से वह अलेक्जेंड्रयिा की यात्रा पर गया, जो उस समय अपनी वदि्वता के लिए प्रसदि्ध था।

[7940] अलेक्जेंड्रयिा - मस्रि की प्रसदि्ध राजधानी - उस समय अपनी व्यापक और फलते-फूलते शकि्षा के लिए प्रसदि्ध थी। उस समय दर्शन और चकित्सिा वशिेष रूप से फल-फूल रहे थे। पगन शकि्षा के साथ-साथ ईसाई धर्मशास्त्र की शकि्षा भी फल-फूल रही थी। अलेक्जेंड्रयिा का

साथियों में घृणा उत्पन्न कर दी। असंयमी और अपनी वासनाओं के दास होकर, वे अशुद्धि में जीवन यापन करते थे, वेश्याओं के घरों में जाते थे, जैसा कि मूर्तिपूजक युवकों में प्रचलन था; लेकिन संत ग्रेगरी, एक ईसाई युवक के रूप में, इस विनाशकारी मार्ग से दूर रहे, अशुद्धि से बचे और अन्याय से घृणा करते थे; काँटों में कमल के फूल की तरह[7941] , इस प्रकार वे अपवित्रता के बीच अपनी पवित्रता से दमकते थे। कई लोग उनके शुद्ध और निर्दोष जीवन से अवगत थे, और इस कारण से कई प्रतिष्ठित दार्शनिकों और नागरिकों ने उन्हें बहुत सम्मान दिया और उनकी प्रशंसा की; हालाँकि, उसके समवयस्क, एक ऐसे युवक को देखना सहन नहीं कर सके जो अपने संयम और पवित्रता में न केवल अन्य युवकों बल्कि बुजुर्गों से भी आगे था, उन्होंने लोगों के बीच एक बदनाम करने वाली अफवाह फैलाने की साजिश रची, कि मानो वह भी बाकी लोगों की तरह ही अशुद्ध जीवन जीता था, और इस प्रकार उस अच्छी प्रतिष्ठा को कलंकित करना चाहते थे जो वह लोगों के बीच सही मायने में रखता था। उन्होंने एक वेश्या को उस निर्दोष और पवित्र-हृदय युवक के बारे में बदनामी और दुर्भावनापूर्ण अफवाहें फैलाने का निर्देश दिया। एक दिन, जब संत सभी के सामने प्रतिष्ठित दार्शनिकों और प्रमुख शिक्षकों के साथ बातचीत कर रहे थे, तो संत के साथियों द्वारा उकसाई गई वेश्या उनके पास आई और शर्मिंदगी मिटाते हुए उनसे उस शारीरिक पाप के लिए उचित भुगतान की मांग करने लगी, जिसे उसने अपने साथ किए होने का दावा किया। यह सुनकर सभी चकित रह गए; कुछ लोग इसे सच मानकर भटक गए, जबकि अन्य, ग्रेगरी की पवित्रता और निर्दोषता को जानते हुए, उस निर्लज्ज वेश्या के शब्दों पर कोई भरोसा नहीं किया और उसे भगा दिया। हालाँकि, वह ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाने लगी, और संत को उस व्यभिचार के लिए भुगतान करने के लिए तंग करने लगी, जिसे उसने कथित तौर पर उसके साथ किया था। हे, संत ग्रेगरी को कितनी शर्म आई जब उन्होंने इतने सम्मानित लोगों की उपस्थिति में, एक स्पष्ट रूप से पापी महिला से ऐसे निर्लज्ज और अन्यायपूर्ण आरोप सुने! एक पवित्र कन्या की तरह, उसका चेहरा लज्जा से लाल हो गया; फिर भी, विनम्र और शांत स्वभाव होने के कारण, उन्होंने उस वेश्या से कुछ भी कठोर नहीं कहा, क्रोध का कोई भी लक्षण नहीं दिखाया, न ही अपना पक्ष साबित करने के लिए स्वयं को सही ठहराने या गवाहों को बुलाने का प्रयास किया, बल्कि विनम्रता से अपने एक मित्र से कहा:

'उसे तुरंत वह भुगतान दे दो जो वह माँग रही है, ताकि वह हमें छोड़कर जाए और हमें और परेशान न करे।'

दोस्त ने तुरंत उसे उतना ही दे दिया जितना वह चाहती थी, और इस प्रकार निर्दोष ग्रेगरी को शर्मिंदगी से बचा लिया। हालाँकि, स्वर्ग में रहने वाले विश्वासयोग्य साक्षी, परमेश्वर ने इस झूठ को निम्नलिखित तरीके से उजागर किया। उन्होंने उस निर्लज्ज और चापलूसी करने वाली वेश्या में एक अशुद्ध आत्मा को प्रवेश करने दिया, और जब उसने अपने हाथों में वह अन्यायपूर्ण रिश्वत ली, तो उसे तुरंत एक भयानक दंड मिला: क्योंकि दानव ने उस पर हमला किया और सभी के सामने उसे सताना शुरू कर दिया। वह वेश्या ज़मीन पर गिर पड़ी, भयानक आवाज़ में चीखी, पूरा शरीर काँपने लगा, दाँत पीसने लगी और मुँह से झाग निकलते हुए बेहोश हो गई, जिससे वहाँ मौजूद सभी लोग उस निर्दोष युवक के लिए इतनी त्वरित और भयंकर सज़ा देखकर बड़े भय और आतंक से भर गए। और दानव तब तक उसे सताता रहा जब तक कि संत ने उसके लिए ईश्वर से एक प्रबल प्रार्थना नहीं की और इस प्रकार दानव को उससे भगा नहीं दिया। इसी से युवा ग्रेगरी के चमत्कारों की शुरुआत हुई, जिनके गुणों पर स्वयं वरिष्ठ भी चकित थे।

ग्रेगरी का फर्मियन नामक एक समझदार और सदाचारी मित्र था, जो कैपाडोसिया का मूल निवासी था। अपने प्रिय इरादे—सब कुछ पीछे छोड़कर एकमात्र ईश्वर की सेवा करने—के बारे में उसे विश्वास में लेने पर, ग्रेगरी ने पाया कि फिर्मियन भी यही इरादा रखता था और उसी मार्ग पर चलना चाहता था। आपसी सहमति से, उन्होंने दोनों ने सांसारिक दर्शन को त्याग दिया, मूर्तिपूजक स्कूल छोड़ दिए, और ईसाई ज्ञान और पवित्र धर्मग्रंथों के रहस्यों का अध्ययन करना शुरू कर दिया। उस समय, प्रसिद्ध ओरिजेन[7942] मसीह के चर्च के शिक्षकों में प्रसिद्ध थे। अपने मित्र फर्मियन

प्रसिद्ध विद्यालय, जिसमें उस शताब्दी के कई सबसे प्रतिष्ठित विद्वान शामिल थे, ने न केवल ईसाइयों बल्कि मूर्तिपूजकों के बीच से भी बहुत सारे छात्रों को अपनी कक्षाओं में आकर्षित किया।

[7941] करिन - सफेद लिली - लिली परिवार का एक सुंदर फूल है। प्रभु स्वयं लिली की सुंदरता की प्रशंसा करते हैं और इसे सुलैमान के सभी भव्य वस्त्रों से भी ऊपर रखते हैं (मत्ती 6:28-29; लूका 12:27)। इसलिए, पवित्र शास्त्र में, लिली अक्सर उच्च नैतिक गुणों के प्रतीक के रूप में काम करती है; तदनुसार, यहाँ भी, युवा ग्रेगरी के सदाचारी जीवन की तुलना काँटों के बीच उगने वाली एक सुंदर लिली से की गई है, जो शास्त्र में दुष्टता और पाप के प्रतीक के रूप में काम करते हैं।

[7942] ओरिजेन – अलेक्जेंड्रिया के चर्च के सबसे प्रसिद्ध ईसाई शिक्षक (मृत्यु 254) – अपनी बुद्धि की विशालता और अपने ज्ञान की गहराई के लिए अपने युग का एक आश्चर्य थे – उस समय अलेक्जेंड्रिया के कैटेकेटिकल स्कूल में एक उत्कृष्ट धर्मोपदेशक थे। उन्होंने चर्च के कई उल्लेखनीय पादरियों और शिक्षकों को शिक्षित किया, जिनमें से कुछ ने मूर्तिपूजक धर्म से ईसाई धर्म में अपने धर्मांतरण का श्रेय उन्हें दिया;

के साथ उनके पास जाकर, संत ग्रेगरी ने उनके अधीन अध्ययन करना शुरू किया और उनके साथ काफी समय बिताने के बाद, वे अपने पैतृक नगर, नियोकेसरिया लौट आए। नियोकेसरेया के नागरिकों और जो भी उसे जानते थे, उन्होंने उसकी महान बुद्धिमत्ता को देखकर चाहा कि उसे अपने साथियों के बीच उच्च सम्मान प्राप्त हो और वह एक न्यायाधीश और शहर के राज्यपाल का पद संभाले। लेकिन ग्रेगरी ने घमंड, व्यर्थ मानवीय महिमा और उन अनगिनत जालों से बचते हुए, जिनसे शत्रु दुनिया को उलझाता है, अपने जन्मस्थान को छोड़ दिया और, मरुभूमि में बसकर, वे गहन एकांत में रहे, केवल ईश्वर को समर्पित – जहाँ तक उनके द्वारा किए गए महान कार्यों और परिश्रमों की बात है, केवल वही जानता है जिसने 'हमारे *हृदयों को बनाया*' और 'हमारे *सभी मार्गों की खोज करता है*' (भजन संहिता 32:15)।

जब संत ग्रेगरी मरुभूमि में रहकर ईश्वर के ध्यान में लगे हुए थे, तब कैपैडोसिया के अमासिया के बिशप, धन्य थियोडिमस ने उनके बारे में सुना और उन्हें मरुभूमि से निकालकर मसीह की कलीसिया की सेवा के लिए एक पवित्र व्यक्ति और शिक्षक के रूप में नियुक्त करना चाहा: क्योंकि उन्होंने उसमें ईश्वर की कृपा देखी और यह भाना कि वह कलीसिया का एक महान स्तंभ और विश्वास का एक दुर्ग बनेगा। संत ग्रेगरी के पास दूरदर्शिता का वरदान भी था, और जब उन्हें पता चला कि बिशप उन्हें चर्च की सेवा के लिए रेगिस्तान से बाहर लाना चाहते थे, तो वे खुद को उस पद के अयोग्य समझकर उनसे छिप गए, और न मिल सकने के लिए रेगिस्तान में एक स्थान से दूसरे स्थान तक भटकते रहे। धन्य थियोडोमोस ने उनकी लगन से खोज की और उनसे रेगिस्तान से अपने पास आने का आग्रह किया; लेकिन, जब वे तपस्वी को उनके रेगिस्तान से अलग करके अभिषेक के लिए अमासिया नहीं ला सके, तो उन्होंने कुछ ऐसा किया जो अजीब और असामान्य लगा। ईश्वर की आत्मा से प्रेरित और पवित्र चर्च के प्रति उत्साह से भरकर, वह इस तथ्य से विचलित नहीं हुआ कि ग्रेगरी उसके पास नहीं आया था, न ही उनके बीच की काफी दूरी से – अमासिया शहर से उस रेगिस्तान तक तीन दिन का सफर था जहाँ ग्रेगरी रहता था; बिशप फेडिमि उनके बीच की इस दूरी से विचलित नहीं हुए और उन्होंने दूर रहने वाले ग्रेगरी को नेओकेसरेया की कलीसिया का बिशप नियुक्त कर दिया। ईश्वर की ओर दृष्टि उठाकर, उन्होंने कहा:

'हे सर्वशक्तिमान और सर्वज्ञ ईश्वर, इस घड़ी मुझ पर और ग्रेगरी पर दृष्टि डालें, और अपनी कृपा से इस अभिषेक को प्रभावी बनाएं।'

इस बात की गवाही संत निकिसिया के ग्रेगरी ने इस संत के जीवन के अपने वृत्तांत[7943] में दी है; इसकी पुष्टि मेनायोन कैनन में भी मिलती है, जो इसे इस प्रकार वर्णित करता है: 'हे ग्रेगरी, ईश्वर के मध्यस्थ, जो उत्साह से जल रहे थे, ने आपके पिता से परामर्श किए बिना आपको अभिषेक किया, सभी बातों को जानने वाले ईश्वर में अपना धार्मिक विश्वास रखते हुए, और हे ईश्वर-वक्ता ग्रेगरी, आपके सम्मानजनक जीवन की आशा करते हुए'[7944] ।

एक ऐसा विश्वास जिसके साथ उन्होंने ज्ञान और दर्शन को समन्वित करने का प्रयास किया। विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं पवित्र धर्मग्रंथ के अध्ययन, उसकी व्याख्या और, सबसे बढ़कर, उसके प्रामाणिक पाठ की बहाली और शुद्धिकरण पर उनके कार्य, साथ ही धर्मद्रोही और विश्वास के शत्रुओं के खिलाफ ईसाई धर्म का बचाव करने के उद्देश्य से लिखी गई उनकी रचनाएँ। सामान्य रूप से, उन्होंने न केवल अपने समय के लिए बल्कि बाद की पीढ़ियों के लिए भी बहुत कुछ हासिल किया, और चौथी शताब्दी के चर्च के सभी महान शिक्षकों ने ओरिजिन का बहुत सम्मान किया और उनके लेखनों का व्यापक रूप से उपयोग किया। ओरिजिन ने अपने धर्मशिक्षण विद्यालय में बड़ी संख्या में लोगों को आकर्षित किया, जिनमें कई गैर-ईसाई युवक थे जो उत्साहपूर्वक उच्चतम शिक्षा की तलाश में थे। यहीं, अलेक्जेंड्रिया में, संत ग्रेगरी पहली बार उनसे मिले और उनके समर्पित शिष्य बन गए। ग्रेगरी के अपने शब्दों में, ओरिजिन ने सबसे पहले उन्हें दार्शनिकों की प्रणालियों के भीतर सच्चाई के बिखरे हुए बीजों को खोजने के लिए प्रेरित किया और उनमें सत्य के प्रति प्रेम जगाया; फिर उन्होंने ईसाई धर्म के सिद्धांतों की व्याख्या करना और पवित्र धर्मग्रंथों को समझाना शुरू किया। ओरिजिन के साथ आठ वर्ष बिताने के बाद, ग्रेगरी ने उनसे पवित्र बपतिस्मा ग्रहण किया और अपने गुरु को सार्वजनिक रूप से धन्यवाद देकर, विरह-शोक से व्याकुल होकर अपने देश लौट आए। 'मुझे लगता है,' ग्रेगरी ने अपने शिक्षक के बारे में लिखा, 'उन्होंने केवल परमेश्वर की आत्मा की प्रेरणा से ही ऐसा कहा: एक नबी होने और एक नबी की व्याख्या करने के लिए, उसकी शक्ति की आवश्यकता होती है। और कोई भी नबी को तब तक नहीं समझ सकता जब तक कि स्वयं परमेश्वर की आत्मा उनके वचनों की समझ न प्रदान करे। इस व्यक्ति को परमेश्वर से सबसे बड़ा वरदान मिला – लोगों के लिए परमेश्वर के वचन का व्याख्याकार बनना, परमेश्वर के वचन को वैसे ही समझना जैसे परमेश्वर स्वयं इसका उपयोग करते हैं, और इसे लोगों को इस तरह समझाना कि वे समझ सकें।"

[7943] सेंट ग्रेगरी ऑफ निस्सा के कार्य, रूसी अनुवाद, खंड VIII, पृ. 143। – हालांकि, संत ग्रेगरी चमत्कारकर्ता ने, स्वयं संत ग्रेगरी ऑफ़ नाइसा की गवाही के अनुसार, सर्वोच्च धार्मिक अधिकार केवल तब ग्रहण किया, जब उन पर सभी निर्धारित पवित्र अनुष्ठान पूरे हो चुके थे और उन्होंने संत थियोडिमस से, जिन्होंने उन्हें बिशप के पद पर चुना था, विश्वास के रहस्य की सटीक समझ प्राप्त करने के लिए थोड़े समय का अनुरोध किया था।

[7944] संत ग्रेगरी की सेवा, कैनन, ओड 5, ट्रॉपारियन 2।

इस प्रकार धन्य फेडमि ने ग्रेगरी पर एक असामान्य अभषिेक कयिा, और संत ग्रेगरी ने, यद्यपि अपनी इच्छा के वरिुद्ध, आज्ञा मानी और चर्च का नेतृत्व स्वीकार कर लयिा: क्योंकि वह प्रभु की इच्छा का वरिोध कैसे कर सकता था? हालाँकि, सबसे पहले, उन्होंने प्रार्थना की, और ऐसे कार्य के लिए स्वर्ग से मदद माँगी।

उस समय, सेबेलीउस और सामोसैटा के पॉल का वधिर्म फैलना शुरू हो रहा था[7945] । संत ग्रेगरी इससे वचिलति थे और उन्होंने परमेश्वर और परमेश्वर की माता से वनिम्रतापूर्वक प्रार्थना की कि वह उन्हें सच्चा वशि्वास प्रकट करें। एक रात, जब वह इस मामले पर वशिेष उत्साह के साथ प्रार्थना कर रहे थे, तब परम पवत्रि कुँवारी मरयिम, धर्मप्राचार्य जॉन के साथ, धूप की तरह चमकते हुए उन्हें दखिाई दीं, जो धर्माध्यक्षीय वस्त्रों में लपिटे हुए थे। अपना हाथ ग्रेगरी की ओर करते हुए, परम पवत्रि ने जॉन द थयिोलोजयिन को आज्ञा दी कि वह उन्हें सखिाएँ कि पवत्रि त्रमिूर्ति के रहस्य में कैसे वशि्वास करना चाहए। और ईश्वर की माता की आज्ञा से, संतों के संत जॉन ने संतों के संत ग्रेगरी को अल्प समय में ईश्वर के महान रहस्य सखिाए, और उन्होंने दव्यि ज्ञान की अक्षय गहराइयों से ज्ञान प्राप्त कयिा। संतों के संत जॉन द्वारा बोले गए प्रकाशन के शब्द इस प्रकार थे:

– एक ईश्वर, जीवति वचन के पति, सारभूत बुद्धि के, शक्ति के और शाश्वत की प्रतमिा के, सद्धिों के सद्धि पति, एकमात्र पुत्र के पति। एक प्रभु, एक से एक, परमेश्वर से परमेश्वर, परमेश्वरत्व की प्रतमिा और प्रतनिधित्वि, सक्रयि वचन, सभी अस्तत्वि की रचना को समेटे हुए ज्ञान, और सभी सृष्टि की सृजनात्मक शक्ति, सच्चे पति का सच्चा पुत्र, अदृश्य, अक्षय, अमर और सदा-वद्यिमान पति का अदृश्य, अक्षय, अमर और सदा-वद्यिमान पुत्र। और एक पवत्रि आत्मा, जनिका अस्तत्वि पति से है और जो पुत्र के द्वारा मानव जाति के लिए प्रकट होते हैं, जो पूर्ण पुत्र की पूर्ण प्रतमिा हैं, जीवन, सभी जीवतिों का कारण, पवत्रि स्रोत, पवत्रि जो पवत्रिता प्रदान करते हैं, जनिमें परमेश्वर पति स्वयं को प्रकट करते हैं, जो सभी से ऊपर और सभी में हैं, और परमेश्वर पुत्र, जो सभी चीजों के माध्यम से है, पूर्ण त्रमिूर्ति, महमिा, अनंतता और राज्य में, अवभिाज्य और अवच्छिेद्य। इस प्रकार, त्रमिूर्ति में कुछ भी सृजति, या अधीन, या ऐसा परचिय दयिा गया नहीं है, जैसे कि वह पहले मौजूद नहीं था और बाद में अस्तत्वि में आया हो। इस प्रकार, पुत्र में पति से पहले कुछ भी कमी नहीं थी, और न ही पवत्रि आत्मा में पुत्र से पहले कुछ भी कमी थी; परन्तु वही त्रमिूर्ति हमेशा अपरविर्तनीय और अचल है।

इस दर्शन के बाद, संत ग्रेगरी ने संत जॉन द थयिोलोजयिन द्वारा उनसे कहे गए शब्दों को अपने हाथ से लखिा, और उनकी यह रचना कई वर्षों तक नेओकेसरयिा के चर्च में रखी गई[7946] ।

इसके बाद, संत ग्रेगरी ने नयिोकेसरयिा के लिए प्रस्थान कयिा। उस समय, संपूर्ण नयिोकेसरयिा मूर्तपिूजा के अंधकार में डूबा हुआ था; उस शहर में मूर्तयिों और वधिर्मी मंदरिों की भारी संख्या थी। हर दनि मूर्तयिों को कई बलदिान चढ़ाए जाते थे, जसिसे हवा बलदिान के रूप में काटे और जलाए गए जानवरों से नकिलने वाली बदबू से भर जाती थी, और इतने बड़े शहर में केवल 17 वशि्वासी थे।

[7945] सेबेलीयस और सामोसाटा के पॉल ने परम पवत्रि त्रमिूर्ति के रहस्य के बारे में गलत शकि्षा दी। पहले ने यह दावा कयिा कि ईश्वर एक ही व्यक्ति हैं: पति के रूप में, वे स्वर्ग में हैं; पुत्र के रूप में, वे पृथ्वी पर हैं; और पवत्रि आत्मा के रूप में, वे सृष्टि में हैं। सेबेलीउस की शकि्षा के अनुसार, ये केवल वे परचिति रूप हैं जनिमें ईश्वर लोगों के सामने प्रकट होते हैं: पुराने नयिम में, वधिानदाता के रूप में, वे पति के रूप में प्रकट होते हैं; नए नयिम में, उद्धारकर्ता के रूप में, वे पुत्र के रूप में प्रकट हुए और पवत्रि आत्मा के रूप में प्रकट होते रहते हैं जो उन्हें पवत्रि करता है। सामोसता के पॉल (जन्मस्थान के अनुसार), अंफ़योकी के बशिप, ने गलत शकि्षा दी कि पुत्र और पवत्रि आत्मा परमेश्वर पति के भीतर हैं, ठीक वैसे ही जैसे मन और शक्ति (बुद्धि और आत्मा) एक मनुष्य के भीतर होते हैं। मसीह को केवल एक मनुष्य, जो पवत्रि आत्मा और दव्यि ज्ञान से परपिूर्ण था, मानते हुए, पॉल ने अंतीयक की कलीसयिा को यीशु मसीह के ईश्वर के रूप में सम्मान में भजन गाने और उनके नाम पर बपतस्मिा देने से मना कयिा। इस वधिर्म के अनुयायियों को पैट्रपिासयिन कहा जाता था, क्योंकि वे परमेश्वरत्व के व्यक्तियों के बीच अंतर कएि बनिा, अवतार और पीड़ा को परमपति परमेश्वर से जोड़ते थे।

[7946] नसि़ा के संत ग्रेगरी, इस धर्मवशि्वास की चमत्कारी उत्पत्ति का वर्णन करने के बाद, आगे कहते हैं: 'यदि कोई इस बात से आश्वस्त होना चाहता है, तो वे उस चर्च को सुनें जसिमें उन्होंने उपदेश दयिा था और जसिमें उनके धन्य हाथ से लखिा गया मूल धर्मवशि्वास आज भी संरक्षति है।' धन्य मक्रनिा, जो बेसलि द ग्रेट और ग्रेगरी ऑफ नसि़्सा की दादी थीं, ने स्वयं चमत्कार करने वाले से यह सुनकर, उनके धर्म-वशि्वास को कापाडोसयिा ले आईं और अपने पोते-पोतयिों को, जसिमें बेसलि द ग्रेट भी शामलि थे, यह सखिाया। ग्रेगरी द थयिोलॉजसि्ट ने भी इसी धर्म-वशि्वास का पालन कयिा। रूफनिस ने इसे सेसरेआ के यूसेबयिस के चर्च इतहिास के अपने अनुवाद में शामलि कयिा। और पाँचवें सार्वभौमकि परषिद (623) ने इसे मंजूरी दे दी। – ग्रेगरी द वंडरवर्कर का धर्मसूत्र प्राचीनता के सबसे कीमती स्मारकों में से एक है। यह लंबा नहीं है; फरि भी इसमें ईश्वरत्व के तीन व्यक्तियों, उनकी एकसारता, उनके व्यक्तगित गुणों और मानवता के संबंध में उनके कार्यों के बारे में एक सटीक सद्धिांत नहिति है – और इसलिए यह सावधानीपूर्वक अध्ययन के पूरी तरह से योग्य है।

जब संत ग्रेगरी नेओकेसरिया जा रहे थे, तो उन्हें रास्ते में एक मूर्तिपूजक मंदिर से होकर गुजरना पड़ा। शाम हो रही थी और एक तेज बारिश आने वाली थी; ज़रूरत के कारण, संत और उनके साथियों को इस मूर्तिपूजक मंदिर में प्रवेश करना पड़ा और वहाँ रात बितानी पड़ी। उस मंदिर में कई मूर्तियाँ थीं; उनमें राक्षस वास करते थे, जो अपने पुरोहितों के सामने प्रकट होते और उनसे बात करते थे। वहाँ रात बिताने के बाद, संत ग्रेगरी ने अपनी प्रथागत मध्यरात्रि और सुबह की स्तुतियाँ और प्रार्थनाएँ कीं, और हवा पर, जो राक्षसों की बलिदानों से अपवित्र हो गई थी, उस पर क्रॉस का चिह्न बनाया। क्रॉस के चिह्न और ग्रेगरी की पवित्र प्रार्थनाओं से भयभीत होकर, राक्षसों ने अपना मंदिर और मूर्तियाँ छोड़ दीं और गायब हो गए। सुबह, संत ग्रेगरी और उनके साथी अपनी यात्रा पर निकल पड़े, जबकि विधिर्मी पुरोहित अपनी प्रथा के अनुसार राक्षसों को बलिदान चढ़ाने के इरादे से मंदिर में गया, लेकिन उसे वहाँ कोई राक्षस नहीं मिला, क्योंकि वे भाग चुके थे। दैत्यों ने उसके सामने तब भी प्रकट नहीं हुए जब उसने उनके लिए बलिदान देना शुरू कर दिया – जैसा कि वे पहले अक्सर करते थे – और पुजारी इस बात से हैरान था कि उसके देवताओं ने अपना मंदिर क्यों छोड़ दिया था। उसने उनसे अपने स्थान पर लौटने के लिए विनती की, लेकिन उन्होंने दूर से पुकारा:

'हम उस स्थान में प्रवेश नहीं कर सकते जहाँ, कल रात, मरुभूमि से नेओकेसरिया आ रहा एक यात्री था।'

यह सुनकर, पुरोहित ग्रेगरी के पीछे भागा, उससे मिल गया, उसे रोक लिया, और गुस्से में उस पर चिल्लाने लगा, उसे एक ईसाई होते हुए भी उनके देवताओं के मंदिर में घुसने की हिम्मत करने के लिए, और उनके कारण देवताओं को उस स्थान से घृणा करके पीछे हटने के लिए फटकारने लगा; उसने उसे राजा की अदालत का भय दिखाया, और उसे तुरंत जबरदस्ती अपने यातना देने वालों के पास ले जाने का इरादा किया। संत ग्रेगरी ने, कोमल और बुद्धिमानी भरे शब्दों से पुरोहित के क्रोध को शांत करते हुए, अंत में कहा:

'मेरा ईश्वर इतना सर्वशक्तिमान है कि वह तो राक्षसों को भी आज्ञा देता है, और उसने मुझे उन पर इतनी शक्ति दी है कि वे अपनी इच्छा के विरुद्ध भी मेरी आज्ञा मानेंगे।'

यह सुनकर, पुरोहित ने अपना क्रोध शांत किया और संत से विनती की कि वे मूर्तिपूजक देवताओं को उनके मंदिर में लौटने का आदेश दें। संत ने अपनी किताब से कागज़ का एक छोटा सा टुकड़ा फाड़ा, उस पर निम्नलिखित शब्द लिखे: 'ग्रेगरी, शैतान को: प्रवेश कर' – और यह पर्ची पुरोहित को दे दी, उसे आदेश देते हुए कि वह इसे अपने दुष्ट देवताओं की वेदी पर रख दे। और तुरंत ही राक्षस मंदिर में लौट आए और पहले की तरह ही पुरोहित से बात करने लगे। पुजारी भयभीत हो गया, और संत ग्रेगरी की दिव्य शक्ति पर चकित हुआ, जिसके द्वारा उन्होंने एक शब्द से राक्षसों को आज्ञा दी और उन्होंने उनकी आज्ञा मानी; वह फिर से उनके पीछे भागा और उनसे पहले ही मिल गया, इससे पहले कि वे शहर पहुँचते, और पूछा कि उन्हें ऐसी शक्ति कहाँ से मिली कि विधिर्मी देवता उनसे डरते थे और उनकी आज्ञाओं का पालन करते थे। संत ग्रेगरी ने, यह देखकर कि पुजारी का हृदय विश्वास के लिए ग्रहणशील था, उसे एक सच्चे ईश्वर के बारे में सिखाना शुरू किया, जिसने अपने वचन द्वारा सभी चीजों की रचना की, और उसे पवित्र विश्वास का रहस्य प्रदान किया। जब वे चल रहे थे और बातचीत कर रहे थे, तो पुजारी ने संत ग्रेगरी से अपने विश्वास के दृश्यमान प्रमाण के रूप में कोई चमत्कार करने का आग्रह किया। और देखो, उन्होंने एक विशाल पत्थर देखा जिसे, ऐसा प्रतीत होता था, कोई भी शक्ति अपनी जगह से नहीं हिला सकती थी; लेकिन ग्रेगरी ने मसीह के नाम पर उसे अपनी जगह से हटने का आदेश दिया, और वह पत्थर हिलकर उस स्थान पर चला गया जहाँ पुरोहित चाहता था। इस शानदार चमत्कार को देखकर पुरोहित भयभीत हो गया, और उसने स्वीकार किया:

'केवल एक ही सच्चा और सर्वशक्तिमान ईश्वर है, जिसका प्रचार ग्रेगरी ने किया, और उसके सिवा कोई और नहीं है' – और तुरंत ही उसने उस पर विश्वास कर लिया, और इस घटना की खबर इतनी तेजी से फैला दी कि नेओकेसरिया में लोगों को ग्रेगरी के चमत्कारों और राक्षसों पर उसकी शक्ति के बारे में तब तक पता चल गया, जब तक कि स्वयं ग्रेगरी वहां पहुंचे भी नहीं थे[7947] । पूरे शहर को उसके आगमन की खबर मिल गई, और एक बड़ी भीड़ उससे मिलने के लिए

[7947] 'इस चमत्कार के बाद, – निस्सा के संत ग्रेगरी कहते हैं, – इस व्यक्ति ने, (ग्रेगरी के) वचन पर तुरंत विश्वास करके और अपने परिवार, घर, पत्नी, बच्चों, दोस्तों, पुरोहित पद और संपत्ति को त्यागकर, अपने लिए मिलने वाले सभी आशीर्वादों के स्थान पर, उस महान व्यक्ति के साथ सहभागिता और उनके श्रम, उनकी दिव्य बुद्धि और शिक्षा में हिस्सा चुना। जीवनीकारों की सारी बनावटी चतुराई, जो अपनी वाक्पटुता से अद्भुत कार्यों के पैमाने को बढ़ा-चढ़ाकर पेश करते हैं, इसे देखकर चुप हो जाए; क्योंकि ऊपर वर्णित चमत्कार ऐसा नहीं है जिसे वर्णनकर्ता की वाक्पटुता की शक्ति वास्तविकता से बड़ा या छोटा कर सकती है। कौन, कही गई बातों से अधिक कुछ जोड़कर, इस चमत्कार को बड़ा कर सकता है? … पत्थरों के बीच से एक पत्थर फेंका जाता है… एक पत्थर दिव्य आस्था का उपदेशक और अविश्वासियों के लिए मोक्ष का मार्गदर्शक

बाहर आई, क्योंकि वे उसे देखना चाहते थे, क्योंकि उन्होंने सुना था कि उसने अपने वचन की शक्ति से एक बड़े पत्थर को दूसरी जगह ले जाकर रख दिया था, और उसने उनके देवताओं को आज्ञा दी, और वे उसकी आज्ञा मान गए।

पहली बार एक ऐसे बड़े शहर में प्रवेश करते हुए जो उसके लिए काफी असामान्य परिस्थितियों में था, संत ग्रेगरी अपने लिए इकट्ठी हुई विशाल भीड़ से चकित नहीं हुए, बल्कि, जैसे किसी रेगिस्तान से गुजर रहे हों, उन्होंने केवल खुद और सड़क पर ही ध्यान दिया, और अपने चारों ओर इकट्ठा हुए किसी भी व्यक्ति पर ध्यान नहीं दिया। और यह तथ्य ही लोगों को संत द्वारा पत्थर पर किए गए चमत्कार से भी अधिक दिव्य और अद्भुत लगा। ग्रेगरी शहर में प्रवेश किए, अपने परिचारकों से चारों ओर घिरे हुए, मानो पूरा शहर ही पहले से ही उनकी पवित्रता का सम्मान कर चुका हो। लेकिन, हर सांसारिक बोझ से खुद को मुक्त कर चुके संत ने इस पर कोई ध्यान नहीं दिया। जब वह शहर में प्रवेश किया, तो उसे आराम करने के लिए कहीं जगह नहीं मिली—न तो कोई चर्च और न ही उसका अपना घर—और उसके साथी 'कहाँ आश्रय लेंगे और किसके पास ठहरेंगे' इस उलझन और चिंता से ग्रस्त हो गए। लेकिन उनके गुरु, ईश्वर-ज्ञानी ग्रेगरी ने, उन्हें शांत करते हुए और साथ ही, मानो, उनकी कायरता के लिए उन्हें फटकारते हुए, कहा:

'ऐसा क्यों है कि तुम, मानो ईश्वर की सुरक्षा से बाहर हो, इस बात को लेकर चिंतित हो कि तुम अपने शरीरों को कहाँ विश्राम दोगे? क्या ईश्वर तुम्हें एक बहुत छोटा घर लगता है, जबकि यह वही है जिसमें हम जीते हैं, घूमते हैं और हमारी सत्ता है? या क्या स्वर्गीय आश्रय तुम्हारे लिए बहुत तंग है, कि तुम इसके अलावा कोई और निवास ढूंढ रहे हो?' आपकी चिंता केवल उसी एक घर के लिए हो, जो सभी का है, जो सद्गुणों से निर्मित और उच्चतम शिखर तक पहुँचाया गया है; केवल उसी का आपको ध्यान रखना चाहिए, कहीं ऐसा न हो कि ऐसा निवास आपके भीतर अव्यवस्थित रह जाए...

जब संत ग्रेगरी अपने साथियों को इस प्रकार उपदेश दे रहे थे, तो उपस्थित मुसोनियस नामक एक प्रतिष्ठित और धनी नागरिक ने, यह देखकर कि कई लोग इस महान व्यक्ति का अपने घरों में स्वागत करने की समान इच्छा और चिंता रखते थे, दूसरों से पहले ही बोल पड़े और ग्रेगरी से अनुरोध किया कि वे उनके यहाँ ठहरें और अपनी उपस्थिति से उनके घर को सम्मानित करें। अन्य लोगों ने भी संत से यही अनुरोध किया, लेकिन उन्होंने पहले व्यक्ति का अनुरोध स्वीकार करते हुए मुसोनियस के घर पर ही ठहरने का निर्णय लिया। जब ग्रेगरी नेओकेसरिया में प्रवेश किए, तो उन्हें वहाँ केवल 17 विश्वासी मिले, जबकि पूरा शहर निर्जीव मूर्तियों की पूजा करता था और राक्षसों की सेवा करता था। तब ग्रेगरी ने अपने हृदय की गहराई में ईश्वर से प्रार्थना करना शुरू कर दिया: कि वह अपनी सृष्टि पर दृष्टि डालें और इतने भटके और नाश हो रहे लोगों की भीड़ को ज्ञान प्रदान कर उन्हें मोक्ष के मार्ग पर ला दें। मुसोनियस के घर में रहते हुए, संत ग्रेगरी ने अविश्वासियों को सच्चे ईश्वर के बारे में सिखाना शुरू कर दिया। शुरुआत में, केवल कुछ ही लोग उनके शब्दों को सुनते थे, लेकिन दिन खत्म होने और सूर्य अस्त होने से पहले ही, इतने सारे लोग पहले जमावड़े में शामिल हो गए थे कि वे पहले ही एक बड़ी भीड़ बना चुके थे।

ईश्वर की सहायता उनके लिए इतनी अनुकूल थी कि एक भी दिन ऐसा नहीं बीता जब मसीह की कलीसिया को नए आत्मा नहीं मिले। सेंट ग्रेगरी की शिक्षाएँ सुनने और उनके द्वारा किए गए चमत्कारिक उपचारों के साक्षी बनने के लिए, अपने पत्नियों और बच्चों के साथ बड़ी संख्या में लोग मुसोनियस के घर पर इकट्ठा हुए[7948] : क्योंकि उन्होंने लोगों से दुष्ट आत्माओं को निकाला, हर तरह की बीमारियों को ठीक किया, और दिन-प्रतिदिन विश्वासियों ने चर्च में प्रवेश किया और उनकी संख्या बढ़ती गई। जल्द ही, प्रभु पर विश्वास करने वालों द्वारा प्रदान किए गए धन से, ग्रेगरी ने एक भव्य चर्च का निर्माण किया; विश्वासियों ने चर्च के निर्माण के लिए संत को अपनी सारी संपत्ति दे दी और अपने खजाने खोल दिए, ताकि वह प्रभु के भवन की भव्यता, अनाथों के पालन-पोषण और बीमारों की देखभाल के लिए जो कुछ भी आवश्यक था, वह ले सकें। इस प्रकार नेओकेसरिया में परमेश्वर का वचन बढ़ने लगा, पवित्र विश्वास फैल गया, मूर्तिपूजक बहुदेववाद का नाश हो गया, उनके घृणित मंदिर खंडहर में बदल गए, और मूर्तियाँ चकनाचूर हो गईं – जबकि एक सर्वशक्तिमान ईश्वर और हमारे प्रभु यीशु मसीह के नाम को नेओकेसरिया में सर्वत्र ऊंचा उठाया और महिमामंडित किया गया, और संत ग्रेगरी के माध्यम से ईश्वर की शक्ति द्वारा अद्भुत और विस्मयकारी चमत्कार हुए। निस्सा के

बन जाता है, किसी आवाज़ से नहीं, दिव्य शक्ति की घोषणा करने वाले किसी शब्द से नहीं, बल्कि अपने कृत्य से, यह दिखाते हुए कि ग्रेगरी द्वारा जिसकी घोषणा की गई है वह ईश्वर है, जिसके प्रति सारी सृष्टि समान रूप से अधीन और आज्ञाकारी है, – न केवल वह जो संवेदनशील, जीवित और सजीव है, बल्कि इसके अलावा, हर दूसरा प्राणी भी उसकी इतनी आज्ञाकारी सेवा करता है जैसे कि वह संवेदना से रहित न हो'...

[7948] नेओकेसरेया के संत ग्रेगरी द्वारा किए गए चमत्कारों की बहुतायत ने जल्द ही उन्हें 'चमत्कार-कर्ता' और 'एक और मूसा' की उपाधियाँ दिला दीं, जैसा कि निसिा के संत ग्रेगरी ने चमत्कार-कर्ता संत ग्रेगरी के जीवन पर अपने प्रवचन में गवाही दी है।

संत ग्रेगरी की गवाही के अनुसार, नम्निलखिति चमत्कारी दर्शन नेओकैसरिया में मसीह की कलीसिया की स्थापना करने और वहाँ विश्वासियों की संख्या बढ़ाने में विशेष रूप से सहायक सिद्ध हुआ।

शहर में, एक प्राचीन रिवाज़ के अनुसार, एक स्थानीय देवता के सम्मान में एक सार्वजनिक मूर्तिपूजक त्योहार आयोजित किया जाता था; लगभग पूरा क्षेत्र इस त्योहार में उमड़ पड़ता था, क्योंकि ग्रामीण निवासी शहरवासियों के साथ मिलकर जश्न मनाते थे। उत्सव के दौरान, रंगमंच लोगों से खचाखच भरा था; हर कोई मंच के करीब आने के लिए धक्का-मुक्की कर रहा था, ताकि वे बेहतर ढंग से देख और सुन सकें, जिससे बहुत शोर और अफरा-तफरी मच गई, और भीड़ ने एक साथ एक आवाज़ लगाई - सभी उस देवता से, जिसका सम्मान किया जा रहा था, उनके लिए जगह बनाने के लिए कह रहे थे। 'ज़ीउस,' अविश्वासियों ने पुकारा, 'हमारे लिए जगह बनाओ।' यह लापरवाह प्रार्थना सुनकर, संत ग्रेगरी ने अपने एक परिचारक को यह बताने के लिए भेजा कि उन्हें जल्द ही उससे भी अधिक जगह दी जाएगी जिसकी वे प्रार्थना कर रहे थे। उनके शब्द एक भयावह भविष्यवाणी साबित हुए: इस सार्वजनिक उत्सव के बाद, शहर में एक विनाशकारी प्लेग फैल गई; रोना आनंद के गीतों में घुल गया, जिससे उनकी खुशी दुख और दुर्भाग्य में बदल गई, और तुरही और तालियाँ बजाने की आवाज़ों के बजाय, शहर शोक गीतों की अनवरत ध्वनि से गूंज उठा। यह बीमारी, एक बार शहर में प्रकट होने के बाद, उम्मीद से कहीं ज़्यादा तेज़ी से फैली, और आग की तरह घरों को तबाह कर गई, जिससे मंदिर प्लेग से पीड़ित लोगों से भर गए, जो इलाज की उम्मीद में वहाँ भाग आए थे; अपनी बेबस बीमारी में प्यास से तड़पते लोग झरनों, नदियों और कुओं के आसपास उमड़ पड़े; फिर भी जल भी उस बुखार की तपन को बुझाने में असमर्थ था। कई लोग अपनी मर्ज़ी से कब्रिस्तानों में चले गए, क्योंकि मृतकों को दफनाने के लिए जीवित बचे हुए लोग पर्याप्त नहीं रहे। और यह विपत्ति लोगों पर अप्रत्याशित रूप से आई, फिर भी ऐसा लगा मानो कोई प्रेत पहले उस घर के पास आया हो जहाँ यह संक्रामक रोग प्रकट होने वाला था , और उसके बाद ही विनाश हुआ। एक बार जब सभी के लिए रोग का कारण स्पष्ट हो गया—कि जिस राक्षस को उन्होंने बुलाया था, उसने दुर्भावनापूर्वक उनकी प्रार्थना स्वीकार कर ली थी, और इस बीमारी के माध्यम से इस दुर्भाग्यपूर्ण प्लेग को शहर पर ला दिया था— – वे सभी संत ग्रेगरी की ओर मुड़े, उनसे विनती करने लगे कि वे अपने प्रचारित ईश्वर की शक्ति से इस बीमारी के प्रसार को रोक दें, जिसे अब वे एकमात्र सच्चा ईश्वर मानते थे, जो सर्वत्र शासन करता है। और जैसे ही वह प्रेतात्मा प्रकट हुई, जो किसी घर में प्लेग के आगमन का संकेत थी, ऐसी विपत्ति से ग्रस्त लोगों के पास उद्धार का केवल एक ही साधन था: कि संत उस घर में प्रवेश करें और प्रार्थना के माध्यम से, उसमें प्रवेश कर चुकी बीमारी को दूर भगा दें।

जब इस बात की खबर, उन लोगों से जो इस तरह प्लेग से बचने वालों में पहले थे, बहुत जल्दी सभी में फैल गई, तो वे सभी प्रथाएँ जिन्हें उन्होंने पहले अपनी मूर्खता में अपनाया था, त्याग दी गईं: भविष्यवाणियाँ, शुद्धिकरण, और मूर्तिपूजक तीर्थों की यात्रा; क्योंकि सभी ने अपनी दृष्टि महान संत पर टिका दी, और प्रत्येक ने अपने परिवार के उद्धार के लिए उन्हें अपनी ओर आकर्षित करने का प्रयास किया। जिनकी उसने रक्षा की थी, उनसे उसे जो पुरस्कार मिला, वह उनकी आत्माओं का उद्धार था; क्योंकि जब उसकी धार्मिकता का ऐसे अनुभव से प्रमाण मिल गया, तो उन लोगों के पास मसीह का संस्कार प्राप्त करने में देरी करने का कोई कारण नहीं था, जिन्होंने विश्वास की शक्ति को सचमुच जान लिया था। और जिस हद तक, अच्छे स्वास्थ्य में, वे संस्कार ग्रहण करने के संबंध में अपने विचारों में चंचल रहे थे, उसी हद तक वे अपनी शारीरिक बीमारी से विश्वास में दृढ़ हुए। जब मूर्तिपूजा की इस प्रकार त्रुटि उजागर हो गई, तो सभी मसीह के नाम की ओर मुड़ गए: कुछ, उन पर आई बीमारी द्वारा सत्य की ओर ले जाए गए; अन्य, प्लेग के खिलाफ एक निवारक उपाय के रूप में मसीह में विश्वास में शरण लेकर[7949] ।

इसके बाद, नेओकेसरिया में संत ग्रेगरी के प्रति सार्वभौमिक श्रद्धा और भी मजबूत हो गई। शहर और उसके आसपास के निवासी, संत के प्रेरितिक चमत्कारों से प्रभावित होकर, यह मानने लगे कि उन्होंने जो कुछ भी कहा या किया, वह दिव्य शक्ति से किया और कहा। परिणामस्वरूप, वे दैनिक जीवन के विवादास्पद मामलों में भी, उससे बड़ा कोई उच्चतर प्राधिकरण नहीं मानते थे; हर विवाद और सभी जटिल और पेचीदा मामले उनके परामर्श से सुलझाए जाते थे। इस प्रकार, संत ग्रेगरी के धन्य प्रभाव से, शहर में न्याय और शांति का राज था, और कोई भी बुराई उनकी पारस्परिक सद्भाव को भंग नहीं कर सकी।

[7949] इस चमत्कार का एक संक्षिप्त विवरण यहाँ प्रस्तुत किया गया है, जो संत ग्रेगरी द वंडरवर्कर के जीवन पर संत ग्रेगरी ऑफ़ निस्सा के प्रवचन के वृत्तांत पर आधारित है।

दो भाइयों ने अपने पिता की मृत्यु पर एक बड़ी संपत्ति विरासत में पाई और उसे आपस में शांतिपूर्वक बाँट लिया। लेकिन उनके पास एक बड़ी झील थी, जिस पर वे बुरी तरह झगड़ पड़े, क्योंकि प्रत्येक उसे पूरी तरह से अपना बनाना चाहता था। उन्होंने चमत्कार करने वाले ग्रेगरी को अपना न्यायाधीश चुना। जब वह झील पर उनके पास आए, तो उन्होंने उन्हें सुलह कराने का हर संभव प्रयास किया, लेकिन सब व्यर्थ गया: दोनों भाई जिद्दी थे और कोई भी झील में अपना हिस्सा दूसरे को देना नहीं चाहता था। बहुत संघर्ष और कलह के बाद, वे युद्ध पर उतरने ही वाले थे, क्योंकि प्रत्येक के कई समर्थक थे, और संत उन्हें उसी दिन लड़ने से बड़ी मुश्किल से रोक पाए। शाम हो गई, और सभी लोग घर चले गए, और लड़ाई को सुबह तक के लिए टाल दिया; लेकिन संत झील के किनारे अकेले रह गए और पूरी रात प्रार्थना में बिताने के बाद, उन्होंने प्रभु के नाम पर झील को पूरी तरह से सूख जाने का आदेश दिया, ताकि पानी की एक बूंद भी, या नमी का कोई निशान भी न बचे, और वह जमीन जोतने और बोने के लिए उपयुक्त हो जाए। और संत के वचन के अनुसार ही हुआ: अचानक, पानी हवा में ही गायब हो गया, और जमीन सूख गई। सुबह, दो भाई, सशस्त्र लोगों के एक समूह के साथ, तालाब पर कब्ज़ा करने के इरादे से आए, लेकिन जहाँ तालाब हुआ करता था, वहाँ उन्हें पानी की एक बूँद भी नहीं मिली: जमीन इतनी सूखी और वनस्पतियों से ढकी हुई थी कि ऐसा लग रहा था मानो वहाँ कभी कोई पानी ही न था। ऐसा चमत्कार देखकर, भाइयों ने अनजाने में ही एक-दूसरे से मेल-मिलाप कर लिया, जबकि लोगों ने ईश्वर की महिमा की। चमत्कार करने वाले ने यह धर्मी न्याय किया: जहाँ भाइयों के बीच कोई शांति नहीं हो सकती थी, और संघर्ष आसन्न था, वहाँ उसने झील को सूखाकर संघर्ष के मूल कारण को ही नष्ट कर दिया, ताकि भाईचारे का प्यार सूखा न पड़े।

उस क्षेत्र में लाइकोस नामक एक नदी बहती थी[7950] । वसंत में यह अपने तटों से बाहर निकल जाती और, दूर-दूर तक फैलकर, पास के गांवों, खेतों, सब्जी के बागों और बगीचों में बाढ़ ला देती, फसलों को नष्ट कर देती और लोगों को भारी नुकसान पहुँचाती। उस नदी के किनारे रहने वाले लोगों ने, संत ग्रेगरी के बारे में सुनकर, निओकेसरेरिया के चमत्कार करने वाले संत, कि उन पर जल का अधिकार था (क्योंकि उन्होंने एक बड़े झील को आज्ञा दी थी - और वह सूख गया), एकत्रित हुए, जवान और बूढ़े सभी, और संत के पास आकर, उनके पैरों पर गिर पड़े, उनसे दया करने और नदी के बाढ़ को शांत करने का आग्रह करते हुए : क्योंकि उस समय नदी असामान्य रूप से उफन आई थी और कई गाँव बाढ़ की चपेट में आ गए थे। संत ने उनसे कहा:

'ईश्वर ने स्वयं नदियों पर सीमाएँ निर्धारित की हैं, और वे अन्यथा नहीं बह सकतीं, बल्कि केवल वैसे ही जैसे ईश्वर ने उन्हें आज्ञा दी है।'

तथापि, उन्होंने संत से और भी अधिक भक्ति के साथ विनती की। उनकी पीड़ा देखकर, संत उठे और उनके साथ उस नदी तक गए; और, उस किनारे पर पहुँचकर जहाँ नदी का मुख्य प्रवाह तब होता है जब बाढ़ नहीं आई होती, उन्होंने अपना दंड वहाँ गाड़ दिया, यह कहते हुए:

'मेरे मसीह तुम्हें आज्ञा देते हैं, हे नदी, कि तुम अपनी सीमाओं को न लांघो और न ही अपने पानी को और बहने दो, बल्कि इन अपने किनारों के भीतर व्यवस्थित रूप से बहो।'

तत्क्षण, संत द्वारा गाड़ा गया डंडा एक विशाल ओक का पेड़ बन गया, और पानी अपने तटों के बीच अपने मार्ग में इकट्ठा हो गया; और उस समय से, वह नदी कभी अपने तटों से नहीं उफनी, बल्कि जब भी पानी बढ़ता और ओक के पेड़ के पास आता, तो वह तुरंत वापस मुड़ जाता, और मानव के श्रम को बाढ़ से नहीं बहाता[7951] ।

पवित्र चमत्कारकर्ता एक पहाड़ के पास एक खूबसूरत जगह पर एक चर्च बनाना चाहते थे। जब उन्होंने नींव रखना शुरू किया, तो वह जगह बहुत संकरी निकली, और इसे और चौड़ा करना असंभव था, क्योंकि पहाड़ रास्ते में खड़ा

[7950] *लिकोस* – ग्रीक शब्द 'भेड़िया' से लिया गया – एशिया माइनर के उत्तर में पोंटस में एक नदी है, जो आर्मेनिया के पहाड़ों से निकलती है; इसे अपनी तीव्रता, बेकाबू स्वभाव और स्थानीय निवासियों को पहुँचाए गए नुकसान के कारण यह नाम मिला।

[7951] संत ग्रेगरी ऑफ निसा कहते हैं, 'नदी के लिए, यह पेड़ उसके प्रवाह में एक बाधा के रूप में काम करता था, जबकि उस स्थान के निवासियों के लिए यह एक तमाशा और एक ऐतिहासिक कथा का विषय है; क्योंकि जब वह नदी, बारिश और धाराओं से उफान पर, तीव्र बहाव और भयानक गर्जना के साथ आगे बढ़ती है, तो उसकी लहरों की सतह इस पेड़ के तने से टकराती है, जिससे पानी फिर से ऊपर उठता है और अपने बहाव को केंद्र (नदी के तल) की ओर मोड़ देता है, और, जैसे इस वृक्ष को छूने से डरते हुए, यह इस स्थान के चारों ओर एक चक्कर लगाकर बह जाता है। महान ग्रेगरी की यही शक्ति है—या यूँ कहें कि ईश्वर की, जो उनके माध्यम से चमत्कार करते हैं! क्योंकि तत्वों का स्वभाव, किसी दास की तरह, आज्ञाओं के अनुसार इच्छानुसार परिवर्तनशील साबित होता है—ताकि झील सूखी ज़मीन में बदल जाए, और जो स्थान कभी पानी से भर गया था वह आबाद हो जाए, क्योंकि दंड ने इसे इसके निवासियों के लिए सुरक्षित बना दिया है। आज भी, इस पेड़ को 'द स्टैफ' (*दंड*) कहा जाता है, और स्थानीय निवासी इसे ग्रेगरी की कृपा और शक्ति की स्मृति के रूप में संरक्षित करते हैं...

था। तब संत ने प्रार्थना की, और प्रार्थना करने के बाद, उन्होंने यीशु मसीह के नाम पर पहाड़ को आज्ञा दी कि वह हटे और अपनी जगह से पीछे हट जाए, ताकि चर्च के लिए जगह बन सके – और तुरंत ही पहाड़ काँप उठा, हिल गया और और पीछे हट गया, जिससे चर्च की विस्तृत नींव के लिए पर्याप्त जगह बन गई। इस ईश्वर के पुरुष का विश्वास इतना गहरा था कि वह पहाड़ों को भी हिला सकता था! इस चमत्कार को देखकर कई अविश्वासी प्रभु की ओर मुड़ गए और संत ने उन्हें बपतिस्मा दिया। ईश्वर की शक्ति से, जिससे वह परिपूर्ण था, किए गए महान चमत्कारों के कारण उसकी ख्याति दूर-दूर तक फैल गई।

इन चमत्कारों की खबर पूरे देश में फैल गई, और सभी यह मानने लगे कि ये मसीह में विश्वास की शक्ति से हुए थे; वे इस विश्वास में भागीदार बनने के लिए लालायित थे, जिसकी गवाही इन चमत्कारों ने दी थी। परिणामस्वरूप, कोमाना नामक एक पड़ोसी शहर से एक दूत-मंडल आया[7952] , संत से उनके बीच एक चर्च स्थापित करने और उनके लिए एक योग्य बिशप नियुक्त करने के लिए कहा। संत ग्रेगरी ने उनकी प्रार्थना मान ली और कई दिनों तक उनके साथ रुके, तथा उनके विश्वास और धार्मिकता को मजबूत किया। जब बिशप चुनने का समय आया, तो संत ने सभी को आश्चर्यचकित करते हुए, अलेक्जेंडर नामक एक धार्मिक और ईश्वर-भयभीत व्यक्ति को इस उच्च सम्मान के योग्य घोषित किया, जो पहले एक साधारण कोयला जलाने वाला था। इस प्रकार, संत ग्रेगरी चमत्कारिक ने स्वयं को शहर का एक कल्याणकर्ता साबित किया, और कोमाना के निवासियों के बीच एक छिपे हुए खजाने को उजागर किया, जो बाद में चर्च का एक शानदार आभूषण बन गया[7953] ।

जब संत ग्रेगरी वहाँ से लौट रहे थे, तो कुछ अविश्वासी यहूदियों ने उनका मज़ाक उड़ाने और यह साबित करने की इच्छा की कि उनमें परमेश्वर का आत्मा नहीं है। उन्होंने यह किया: जिस रास्ते से संत को गुजरना था, उस पर यहूदियों ने अपने ही एक व्यक्ति को, जैसे मृत और नग्न, लेटा दिया, जबकि वे स्वयं उस पर रोते हुए खड़े रहे। जब चमत्कार करने वाले संत वहाँ से गुज़रे, तो उन्होंने उनसे 'मृतक' पर दया करने और उसके शरीर को एक वस्त्र से ढकने का आग्रह किया। उन्होंने अपना बाहरी वस्त्र उतारकर उन्हें दे दिया और अपने रास्ते चले गए। यहूदियों ने खुशी-खुशी संत का मज़ाक उड़ाना और उसे कोसना शुरू कर दिया, यह कहते हुए, 'अगर उसमें परमेश्वर की आत्मा होती, तो वह जान जाता कि वहाँ लेटा हुआ आदमी मृत नहीं बल्कि जीवित है,' और वे अपने साथी से उठने के लिए पुकारने लगे। लेकिन परमेश्वर ने ऐसी धर्मनिंदा के लिए उन्हें दंड दिया और उनके साथी को सचमुच मृत कर दिया। यह सोचकर कि वह सो गया है, उन्होंने उसे जगाने के लिए उसकी पसलियों में धक्का दिया और उसे ज़ोर से पुकारा, लेकिन कोई जवाब नहीं आया, क्योंकि वह अनंत निद्रा में चला गया था। उसे मरा हुआ देखके , वे सच्चे मन से रोने लगे; इस प्रकार उनका हँसी-ठिठोली रोने में बदल गई, और मृतकों ने अपने मृत साथी को दफनाया।

रास्ते में आगे, उस देश के एक निश्चित हिस्से में, खुले में विश्वासियों का एक भक्तिपूर्ण जमावड़ा हुआ, और सभी संत ग्रेगरी की शिक्षाओं पर आश्चर्यचकित थे; लेकिन एक लड़के ने अचानक ज़ोर से चिल्लाना शुरू कर दिया कि संत अपनी मर्ज़ी से नहीं बोल रहे थे, बल्कि कोई और, उनके पास खड़ा होकर, वे शब्द बोल रहा था। जब सभा छंटने के बाद, उस लड़के को उसके सामने लाया गया, तो चमत्कार करने वाले ने उपस्थित लोगों से कहा कि लड़के पर एक दुष्ट आत्मा का साया है; और तुरंत, अपना ओमोफोरीयोन उतारकर और उसे अपने होठों से लगाकर, उसने उसे लड़के पर रख दिया। तब वह लड़का उछलने-कूदने, चीखने, ज़मीन पर गिरने और इधर-उधर लुढ़कने लगा: ठीक वैसे ही जैसे भूत-प्रेत ग्रस्त लोगों के साथ होता है। संत ने उस पर अपना हाथ रखा, और लड़के के दौरे रुक गए: दानव उससे निकल गया, और वह अपने पूर्व अवस्था में लौट आया, अब वह यह दावा नहीं करता था कि वह संत ग्रेगरी के पास किसी को बोलते हुए देख रहा है, और वह पूरी तरह से ठीक हो गया।

[7952] एशिया माइनर के उत्तर में, इर्नोए नदी पर स्थित पोंटस में कोमाना (या कोनाना), प्राचीन काल में एक प्रसिद्ध और समृद्ध शहर था; आज यह गुमेनेक के नाम से खंडहरों में पड़ा है।

[7953] बाद में, कोमाना के बिशप, संत अलेक्जेंडर, अपने जीवन की पवित्रता के लिए प्रसिद्ध हो गए, और उन्होंने उन पर जमी सभी आशाओं को पूरी तरह से सार्थक कर दिखाया; और, मसीह के झुंड का अच्छी तरह से चरवाहा करने के बाद, उन्होंने चौथी शताब्दी की शुरुआत में, रोमन सम्राट डायोक्लेटियन के उत्पीड़न के दौरान, एक शहीद की मृत्यु के साथ अपनी योग्य सेवा को मुहरबंद किया। – उनकी पर्व तिथि चर्च द्वारा 12 अगस्त को मनाई जाती है।

जब, अधर्मी डेसियस[7954] के शासनकाल में, ईसाइयों पर अत्याचार शुरू हुआ और एक शाही फरमान जारी किया गया कि हर जगह ईसाइयों को मूर्तियों की पूजा करने के लिए मजबूर किया जाए, और जो अवज्ञा करें उन्हें यातना देकर मार डाला जाए, तब संत ग्रेगरी ने अपनी मंडली को सलाह दी कि जो कोई भी भीषण यातनाओं को सहने के लिए ईश्वर की शक्ति और वरदान से वंचित हो, वह छिप जाए; ताकि कोई भी, अपने यातना देने वालों के सामने साहसपूर्वक आत्मसमर्पण करने के बाद, बाद में भयानक यातनाओं को देखकर डरा हुआ न हो जाए और उन्हें सहने में असमर्थ महसूस करके, ईश्वर से भटक न जाए। ग्रेगरी ने कहा, 'यह बेहतर है कि थोड़े समय के लिए छिप जाएँ और शहादत के कार्य को करने के लिए ईश्वर के आह्वान और सहायता की प्रतीक्षा करें।' विश्वासियों को ऐसी सलाह देने के बाद, वह स्वयं अपने एक डिकन को साथ लेकर रेगिस्तान में चले गए और वहाँ अविश्वासियों से छिप गए। राजा द्वारा भेजे गए यातना देने वालों, नेओकेसरिया शहर में पहुँचने पर, सबसे पहले और सबसे प्रमुख रूप से ग्रेगरी को खोजा, जो उस भूमि में सभी ईसाइयों के प्रतिनिधि और मंडली के चरवाहे थे। अविश्वासियों में से एक को जब यह पता चला कि वह एक पहाड़ पर छिपे हुए हैं, तो उसने सिपाहियों को यह सूचना दी और उन्हें उस पहाड़ तक ले गया; वे बदले में शिकार पर निकले शिकारी कुत्तों की तरह और भेड़ को झपटने के इरादे वाले भेड़ियों की तरह पहाड़ पर चढ़ गए। संत ग्रेगरी ने, यह देखकर कि सैनिक पास आ रहे थे और उनसे भागना या छिपना असंभव था, स्वर्ग की ओर अपने हाथ उठाए, खुद को ईश्वर की रक्षा के हवाले कर दिया, और अपने डिकन को भी ऐसा ही करने का आदेश दिया। वे दोनों खुली हथेलियों के साथ खड़े होकर प्रार्थना करने लगे; जबकि सैनिक संन्यासी की तलाश में पूरे पहाड़ की बारीकी से तलाशी ले रहे थे, लेकिन उन्हें नहीं मिला, क्योंकि वे कई बार पास से गुजरने पर भी उन्हें देख नहीं सके। बहुत खोजबीन करने के बाद, वे खाली हाथ लौट आए और पहाड़ से उतरते समय, उन्होंने उस व्यक्ति से कहा जिसने उन्हें वहाँ लाया था:

'हमें इस पहाड़ पर कोई नहीं मिला; हमने केवल दो पेड़ एक-दूसरे के पास खड़े देखे।'

यह महसूस करते हुए कि यहाँ एक चमत्कार हुआ था, वह उन्हें छोड़कर स्वयं पहाड़ पर चढ़ गया; संत और डीकन को प्रार्थना में खड़े हुए पाकर, वह ग्रेगरी के पैरों पर गिर पड़ा, और ईसाई बनने की अपनी इच्छा व्यक्त की, जो उसे प्रदान कर दी गई; और एक उत्पीड़क होने से, वह मसीह का सेवक बन गया और अन्य ईसाइयों के साथ छिप गया।

एक दिन, जब संत ग्रेगरी ईश्वर से अपनी नियमित प्रार्थना कर रहे थे, तो वे चकित रह गए और विस्मय से भरकर, लंबे समय तक चुपचाप खड़े रहे, मानो किसी मार्मिक दृश्य को निहार रहे हों। जब पर्याप्त समय बीत गया, तो उसका चेहरा प्रसन्न हो गया और, आनंद से भरकर, उसने ऊँचे स्वर में ईश्वर का धन्यवाद करना और एक गंभीर भजन गाना शुरू कर दिया, यह कहते हुए: *'धन्य है प्रभु, जिसने हमें उनके दाँतों का शिकार नहीं बनाया!'* (भजन संहिता 123:6)।

डीकन ने उनसे पूछा:

'पिताजी, आप में इस बदलाव का कारण क्या है, कि आप अब इतने प्रसन्न दिखाई दे रहे हैं?'

संत ने उत्तर दिया:

'मैंने देखा है, मेरे बच्चे, एक अद्भुत दर्शन: एक छोटा लड़का बड़े शैतान से कुश्ती कर रहा था और, उस पर विजय प्राप्त करके, उसे ज़मीन पर पटक दिया और जीत हासिल की।'

लेकिन डीकन इन शब्दों का अर्थ नहीं समझा। तब संत ने फिर से कहा:

'आज, ट्रॉएडियस नामक एक ईसाई युवक[7955] को यातना देने वाले के न्यायालय में लाया गया; मसीह के लिए कई कठोर यातनाएँ सहने के बाद, उसे मृत्युदंड दिया गया और, विजयी होकर, वह स्वर्ग पर चढ़ रहा है। पहले तो मैं परेशान था, क्योंकि मुझे डर था कि यातनाएँ उस पर हावी हो जाएँगी और वह मसीह का त्याग कर देगा; लेकिन अब मैं प्रसन्न हूँ, यह देखकर कि उसने अपना शहीदी जीवन पूरा कर लिया है और स्वर्ग पर चढ़ रहा है।

यह सुनकर, डीकन यह देखकर चकित रह गया कि संत दूर होने पर भी पास की तरह देख सकते थे। फिर उसने अपने धर्मपरायण शिक्षक से विनती करनी शुरू कर दी कि उसे अपनी आँखों से देखने और यह जानने की अनुमति दें कि क्या हुआ था, और उसे उस स्थान पर जाने से न रोकें जहाँ यह अद्भुत घटना घटी थी। ग्रेगरी की इस चेतावनी पर कि हत्यारों की तलाश में जाना खतरनाक था, डीकन ने विश्वास के साथ उत्तर दिया कि इसके बावजूद, वह अपनी प्रार्थनाओं की मदद पर भरोसा करते हुए, साहसपूर्वक जाने का दृढ़ संकल्प कर चुका था।

[7954] डेसियस – एक रोमन सम्राट और ईसाई धर्म का क्रूर उत्पीड़क – ने 249 से 251 तक शासन किया।

[7955] संत ट्रोएडियस शहीद का पर्व दिवस 2 मार्च को मनाया जाता है।

उसने संत से कहा, 'मुझे ईश्वर के हवाले कर दीजिए, और शत्रुओं का कोई भय मुझे छू नहीं पाएगा।'

और जब ग्रेगरी ने अपनी प्रार्थना के माध्यम से उसे ईश्वर की सहायता भेजी—मानो एक साथी—तो डीकन ने आत्मविश्वास के साथ यात्रा की, और रास्ते में मिले किसी से भी नहीं छुपा। शाम को शहर पहुँचने पर और अपनी यात्रा से थके हुए, उसने सार्वजनिक स्नानागार में स्नान करके अपनी थकान दूर करना आवश्यक समझा। उस स्थान पर एक राक्षस रहता था, जिसकी दुष्ट शक्ति रात के अंधकार में वहाँ आने वालों को प्रभावित करती थी और कई लोगों को मार डालती थी; इस कारण से, कोई भी सूर्यास्त के बाद उस स्नानागार में नहीं जाता था या उसका उपयोग नहीं करता था। स्नानागार के पास पहुँचकर, डिकिन ने परिचारक से उसके लिए दरवाज़ा खोलने और उसे वहाँ स्नान करने की अनुमति देने के लिए कहा; लेकिन चौकीदार ने उसे आश्वासन दिया कि उस समय स्नान करने की हिम्मत करने वाला कोई भी व्यक्ति सुरक्षित नहीं निकला है; कि संध्या के बाद वह राक्षस वहाँ हर किसी पर काबू पा लेता है; और यह कि कई लोग, अज्ञानता के कारण, पहले ही असाध्य बीमारियों का शिकार हो चुके थे, और अपेक्षित राहत के बजाय, रोते-बिलखते लौटते थे। लेकिन डीकन अपने संकल्प में और भी दृढ़ हो गया, और परिचारक, उसकी अडिग इच्छा के आगे झुककर, उसे चाबी दे दी, और स्वयं स्नानागार से काफी दूर हट गया। जब डीकन ने कपड़े उतारकर स्नानागार में प्रवेश किया, तो राक्षस ने उसे विभिन्न भयों और आतंक से घेर लिया, और आग और धुएं, जानवरों और लोगों के रूप में तरह-तरह के भूत-प्रेत दिखाकर डराने लगा। लेकिन डीकन ने, खुद को क्रॉस के चिह्न से सुरक्षित करते हुए और मसीह के नाम का स्मरण करते हुए, स्नानागार के पहले कक्ष से बिना किसी नुकसान के निकल गया। लेकिन जब वह भीतर के कक्ष में प्रवेश किया, तो वह और भी अधिक भयानक दृश्यों से घिर गया। फिर भी, उसी हथियार से उसने इन वास्तविक और काल्पनिक दोनों ही भयों को दूर कर दिया। अंत में, जब वह स्नानागार से बाहर निकलने ही वाला था, तो राक्षस ने दरवाज़े ज़बरदस्ती बंद करके उसे रोकने की कोशिश की। लेकिन क्रॉस के चिह्न से, दरवाज़ा खुल गया। तब राक्षस ने मानव आवाज़ में डिकिन से चिल्लाकर कहा, और उसे चेतावनी दी कि वह उस शक्ति को अपने लिए न माने जिससे उसे विनाश से बचाया गया था; क्योंकि यह उसी का स्वर था जिसने उसे ईश्वर की सुरक्षा में सौंपा था जिसने उसे सुरक्षित रखा था। इस तरह बचने के बाद, डिकिन ने स्नानागार के परिचारकों को चकित कर दिया। इसके बाद, उन्होंने उन्हें वह सब कुछ बताया जो उनके साथ हुआ था, यह जानकर कि शहीदों के वीर कर्म शहर में ठीक वैसे ही हुए थे जैसे संत ग्रेगरी द वंडरवर्कर ने भविष्यवाणी की थी, और अपने गुरु के पास लौट आए, अपने समय के लोगों और आने वाली पीढ़ियों के लिए, एक सार्वभौमिक सुरक्षा का साधन, जिसमें प्रत्येक व्यक्ति पुरोहितों के माध्यम से स्वयं को ईश्वर के हवाले करता है[7956] ।

जब उत्पीड़न समाप्त हो गया, ग्रेगरी अपने धर्मप्रांत में लौट आए और अपने अनुयायियों को इकट्ठा करके, बाधित हुए व्यवस्था को बहाल करने का काम शुरू किया। सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण, उन्होंने पिछले उत्पीड़न के दौरान पीड़ित पवित्र शहीदों की स्मृति का आयोजन किया। मसीह की महिमा फैली, जबकि शैतानी बहुदेववाद को संत ग्रेगरी के प्रयासों से परास्त किया गया, जिन्होंने अपनी मृत्यु तक मसीह के सुसमाचार का प्रचार करना बंद नहीं किया, और अपनी शिक्षा और चमत्कारों के माध्यम से नेओकेसरेया और उसके आसपास के निवासियों को ईश्वर की ओर ले गए – और उन्हें सच्चे धर्म में लाया, उन्हें मूर्तिपूजक बलिदानों से शुद्ध किया, और इसे एक रक्तहीन बलिदान से पवित्र किया। अपने जीवन के अंत के करीब, उन्होंने अपने भाई एथेनोडोरस, जो पोंटस के बिशप थे, के साथ मिलकर सामोसता के पॉल के खिलाफ परिषद में भाग लिया। अंत में, एक परिपक्व बुढ़ापे तक पहुँचने के बाद, वे एक धन्य निधन के करीब पहुँच गए। मरते समय, उन्होंने पास खड़े लोगों से पूछा:

'नियोकेसरेया में अभी भी कितने अविश्वासी हैं?'

उन्होंने उत्तर दिया:

'केवल सत्रह लोग ही अब भी मूर्तिपूजा करते हैं; पूरा शहर मसीह में विश्वास करता है।'

संत ने कहा:

'जब मैं बिशप का पद ग्रहण करने के लिए नियोकेसरिया आया था, तो मुझे ठीक उतने ही ईसाई मिले—कुल सत्रह—जबकि पूरा शहर राक्षसों के वश में था; लेकिन अब, जब मैं ईश्वर के पास जा रहा हूँ, तो उतने ही अविश्वासी बचे हैं जितने कि शुरुआत में विश्वासी थे, जबकि पूरा शहर मसीह का हो गया है।'

[7956] संत ग्रेगरी ऑफ निसा ने संत ग्रेगरी द वंडरवर्कर के जीवन पर अपने प्रवचन में इस चमत्कार का विस्तार से वर्णन किया है।

यह कहने के बाद, उन्होंने अपनी आत्मा ईश्वर के हाथों में सौंप दी[7957] । इस प्रकार नेओकेसरेया के संत ग्रेगरी चमत्कारकर्ता ने ईश्वर को प्रयि लगने वाला जीवन जयिा, और धार्मकिता से परलोक सधिार गए। प्रभु उनकी पवत्रि प्रार्थनाओं के द्वारा हम सभी को भी एक शुभ नधिन का वरदान दें। आमीन।

ट्रोपारयिन, स्वर 8:

प्रार्थना में जागते हुए और चमत्कार करते हुए, आपने अपने धार्मकि कर्मों से अपने नाम का सम्मान अर्जति कयिा है: परन्तु हे पतिा ग्रेगरी, मसीह हमारे ईश्वर से प्रार्थना करें, कि वह हमारी आत्माओं को प्रकाशति करे, ताकि हम मृत्यु में कभी नदि्रालु न हों।

कॉन्टाकयिन, स्वर 2:

अनेक चमत्कार करते हुए, आपने भयानक चहि्नों से दानवों में आतंक फैला दयिा, और सभी मानवीय दुर्बलताओं को दूर कर दयिा, हे सर्व-ज्ञानी ग्रेगरी: आपको चमत्कार-कर्ता कहा जाता है, एक उपाधि जो आपके कर्मों से प्राप्त हुई है।

हमारे पूजनीय पतिा नकिोन, राडोनेज़ के मठाधीश का जीवन[7958]

17 नवंबर को स्मरणोत्सव

आदरणीय नकिोन का जन्म युर्येव-पोलस्की नगर में[7959] , आदरणीय सर्गयिस के मठ से बहुत दूर नहीं हुआ था। उनका जन्म धर्मपरायण माता-पतिा के यहाँ हुआ था और उन्हें बचपन से ही ईश्वर के भय में पाला गया था। अपनी युवावस्था में ही, उन्होंने आदरणीय सर्गयिस के दैवीय जीवन के बारे में सुना था, जो राडोनेज़ नगर के पास अपने मठ में अपने भाइयों के साथ सेवा करते थे[7960] । संत सेरजयिस के कर्म, जनिकी ख्याति दूर-दूर तक फैल चुकी थी, ने नकिोन की आत्मा को गहराई से प्रभावति कयिा, और उसका हृदय इस पवत्रि पुरुष को देखने और अपने जीवन में उनका अनुकरण करने की इच्छा से जल उठा। टूटे हुए दलि और भरपूर आँसू बहाते हुए, नकिोन ने प्रभु ईश्वर से भक्तपिूर्वक प्रार्थना की:

'हे ईश्वर और प्रभु, शाश्वत और दयालु राजा, मुझे इस पवत्रि पुरुष को देखने और जीवन भर उनका अनुसरण करने की कृपा प्रदान करें, ताकि मैं भी उनके कारण उद्धार पा सकूँ और आपके उन शाश्वत आशीर्वादों का पात्र बनूँ, जनिका आपने अपने प्रेम करने वालों से वादा कयिा है।'

और इस प्रकार, कुछ ही समय बाद, वह अपने माता-पतिा का घर छोड़कर आदरणीय सेरजयिस के मठ के लिए नकिल पड़ा। मठ पहुँचने पर, नकिोन महान तपस्वी सेरजयिस से मलिने के लिए दौड़ा और उनके चरणों में गरिकर वनिम्रतापूर्वक नविेदन करने लगा कि उसे उनके पवत्रि मठ में भकि्षु दीक्षा दी जाए। आदरणीय सेरजयिस ने उस युवक

[7957] नयिोकेसरयिा के संत ग्रेगरी का नधिन माना जाता है कि 266 और 270 के बीच हुआ था। अपनी मृत्यु से कुछ समय पहले (264 में), उन्होंने अपने भाई एथेनोडोरस, जो पोंटस के बशिप थे, के साथ मलिकर सामोसता के पॉल के खलिाफ एंटओिक की परषिद में भाग लयिा था। – क्रीड के अलावा, जो अपनी उत्पत्ति के लिए उल्लेखनीय है, नेओकेसरयिा के संत ग्रेगरी 'कैनोनकिल एपस्टिल' (बोरेएट्स और गोथ्स द्वारा पोंटस और पूरे एशयिा माइनर पर आक्रमण के संबंध में) और 'ओरजिन के लिए स्तुति-पत्र' के लेखक भी हैं। – संत ग्रेगरी द वंडरवर्कर के अवशेष मूल रूप से नेओकेसरेया के चर्च में रखे गए थे, जसिकी उन्होंने स्थापना की थी; संत का सरि 1587 में उलसिपिन (लस्बिन) में स्थानांतरति कर दयिा गया था।

[7958] ट्रनिटिी-सर्गीय लव्रा के पांडुलपियिों, मॉस्को के मेट्रोपॉलटिन फलिारेत द्वारा संकलति आदरणीय नकिोन के जीवन, और अन्य स्रोतों से संकलति।

[7959] *यूरीव-पोलस्की* व्लादमिीर शहर से 86 वर्स्ट उत्तर-पश्चमि में स्थति है। इसकी स्थापना राजकुमार यूरी व्लादमिीरोवचि ने की थी, जनिके नाम पर इसका नाम पड़ा; इसे *'पोलस्की'* नाम इसके चारों ओर के खेतों के कारण और यूरीव-लविलैंडस्की से अलग करने के लिए दयिा गया था; यह अब व्लादमिीर गवर्नरेट में एक जलिा शहर है।

[7960] प्राचीन *रजोनेज़* की जगह पर गोरॉदशि्चे या गोरॉदोक् गाँव स्थति है; यह मास्को की दशिा में, ट्रनिटिी-सर्गीय लाव्रा से 12 वर्स्ट की दूरी पर है।

की वविेकशीलता और हृदय की पवत्रिता को देखा और तुरंत ही उसे पूरे हृदय से प्रेम करने लगे। हालाँकि, अपनी आध्यात्मकि आँखों से उसमें दविय प्रकाश के एक भवष्यि के दीपक को देखकर, उन्होंने नकिोन को परीक्षा से नहीं बख्शा, बल्कि उसके साथ ठीक वैसे ही व्यवहार कयिा जैसे कभी यूथमियिस महान ने सव्वा द सैंक्चुराइड के साथ कयिा था, जब बाद वाले, एक युवक होते हुए, उनके पास आए थे। उन्होंने सव्वा को अपने मठ में स्वीकार नहीं कयिा, बल्कि उसे एक दूरस्थ मठ में अपने साथी भकि्षु – आदरणीय थयिोकटस्टिस[7961] – के पास भेज दयिा। इसी तरह, आदरणीय सेरजयिस ने उस युवा लड़के को अपने ही शष्यि, अथानासयिस वसिोट्स्की, जो सेरपुखोव मठ के संस्थापक थे, से शकि्षा प्राप्त करने के लिए भेजा – एक ऐसे व्यक्ति जो अपने सदाचारी जीवन के लिए प्रसद्धि थे और मठ के तपस्या-जीवन में पारंगत थे[7962] ।

'एक क्षण की भी हचिकचिाहट के बनिा जाओ,' उन्होंने लड़के से कहा, 'और, यदि ईश्वर को प्रसन्न होगा, तो तुम वहाँ मठवासी संन्यास की शपथ ग्रहण करोगे।'

नकिॉन ने इस सम्मानति व्यक्ति का यह आदेश वनिम्रतापूर्वक स्वीकार कयिा। ईश्वर के प्रति प्रेम से जलते और भकि्षु बनने की तीव्र इच्छा से, वह धन्य अथानासयिस के पास दौड़ पड़ा।

जब वह अपने मठ पहुँचा, तो वह वनिम्रता से अथानासयिस के कक्ष के पास गया और दरवाज़े पर धीरे से खटखटाया। अथानासयिस ने छोटी खड़िकी थोड़ी सी खोलकर उससे पूछा:

'तुम्हें क्या चाहए, और तुम कसिे ढूंढ रहे हो?' – वृद्ध मौन प्रेमी थे और शायद ही कभी अपनी कोठरी से बाहर नकिलते थे।

युवक ने उनके सामने ज़मीन पर सरि झुकाकर उत्तर दयिा:

'महान बाबा, धन्य सेरजयिस ने मुझे आपके पास भेजा है, ताकि आप मुझे संन्यासी का वस्त्र पहनाएँ।'

यह सुनकर, बड़े भकि्षु ने उसकी ओर देखे बनिा ही सख्त लहजे में कहा:

'तुम भकि्षु नहीं बन सकते: भकि्षु जीवन एक बड़ा उपक्रम है; तुम जवान हो, और बड़ों के नयिम कठोर हैं।'

लड़के ने उत्तर दयिा:

'पतिाजी! सभी लोग एक जैसे नहीं होते; बस मुझे स्वीकार कर लें, और समय ही बताएगा कि मैं मठवासी जीवन की कठनिाइयों को सहन कर सकता हूँ या नहीं।'

लेकनि वरष्ठि ने कहना जारी रखा:

'कई लोग यहाँ आए हैं, लेकनि आलसी हो कर और उपवास व संयम की कठनिाइयों को सहन न कर पाने के कारण भाग गए; और मैं तुम्हें कहता हूँ कि तुम भी यहाँ नहीं टकि पाओगे; कसिी दूसरे स्थान पर जाओ और उपवास में अपना समय लगाओ।'

ये शब्द सुनकर, दविय अग्नि से उसकी आत्मा प्रज्वलति हो उठी, और उस युवक ने अपने आँसुओं के बीच वृद्ध से वादा कयिा कि वह हर दुख को धैर्यपूर्वक सहन करेगा। वृद्ध ने, उस युवक के प्रचुर आँसुओं और संन्यास जीवन के प्रति उसकी तीव्र इच्छा को देखकर, उसे अपनी कुटयिा में ले जाकर यह नरि्देश दयिा:

'मेरे बच्चे, मैंने जो कुछ भी तुमसे कहा है, उससे बुरा मत माननाा; संन्यासी जीवन एक महान उपक्रम है: संन्यासयिों को स्वैच्छकि शहीद कहा जाता है, और उनका दुख और भी अधकि कठनि होता है; कई शहीदों ने थोड़े समय तक पीड़ा सहकर अपना अंत पाया; कति भकि्षु अपने पूरे जीवन भर दुख सहते हैं, और यद्यपि उन्हें अपने उत्पीड़क से घाव नहीं मलिते, तथापि देह से घरि और अपने आध्यात्मकि शत्रुओं से युद्ध करते हुए, वे अपनी अंतमि साँस तक पीड़ति रहते हैं। 'इसलिए, मेरे पुत्र, यदि तुम प्रभु की सेवा करना चाहते हो, तो अपनी आत्मा को तैयार करो ताकि तुम अपने शत्रुओं द्वारा दी गई सभी परीक्षाओं और दुखों को धैर्य से सहन कर सको।'

[7961] संत यूथमियिस को यह उचति नहीं लगा कि एक ऐसे युवक को—जसिे उसकी उम्र के कारण कभी-कभी अलग मार्गदर्शन की आवश्यकता होती थी—उस परषिद में शामलि कयिा जाए, जसिमें मुख्य रूप से वृद्ध तपस्वी शामलि थे। संत सर्गयिस ने शायद युवा नकिोन के संबंध में भी इसी तरह तर्क कयिा। उन्होंने उसे आज्ञाकारति और वनिम्रता के गुणों में परखने का नश्चिय कयिा। अपने भवष्यि के भाग्य की पूर्वदृष्टि रखते हुए, उन्होंने चाहा कि जो व्यक्ति, अभी भी युवा होते हुए, लावरा के सबसे वरष्ठि तपस्वयिों की अध्यक्षता करने के लिए नयित था, वह उनके सामने एक युवक के रूप में नहीं, बल्कि पहले से ही पादरी के पद पर आसीन होकर प्रकट हो।" (सेंट नकिोन का जीवन, संकलन: फलिरेट, मॉस्को के मेट्रोपॉलटिन, पृ. 4)।

[7962] सेरपुखोव में वसिोट्स्की मठ के संस्थापक, परम पूज्य अथानासयिस वसिोट्स्की, परम पूज्य सर्गयिस के सबसे प्रयि शष्यिों में से एक थे।

तब वह युवक वृद्ध के चरणों में गिर पड़ा और बड़ी मुश्किल से कह पाया:

'मुझ पर दया करो!'

तब वृद्ध ने उसे उठाया और कहा:

'उठो, मेरे बच्चे! प्रभु तुम्हें अपने आज्ञाओं के मार्ग पर मार्गदर्शन करेंगे। मैंने तुम्हें यह सब इसलिए बताया है क्योंकि मैं स्वयं एक पापी मनुष्य हूँ, भले ही मैंने ईश्वर के कार्य का भार अपने ऊपर लिया है; अब तुम्हारी इच्छा पूरी होगी।'

यह कहकर, बुजुर्ग ने प्रार्थना की और निकोन को संन्यासी का वस्त्र पहनाया।

अथेनासियस ने युवा भिक्षु को सदाचार का उपदेश दिया और उसे ईश्वर तक ले जाने वाले सभी दुखों को सहन करना सिखाया, अपने आत्मा को साहस और शक्ति से भरने का प्रयास करते हुए और हर बात में उसके लिए एक आदर्श बनकर। निकोन, उनके मार्गदर्शन में प्रार्थना का अभ्यास करते हुए, सद्गुणों में, उपवास के तपस्वी कृत्यों में, और स्वयं पर निरंतर सतर्कता बनाए रखने में निपुण हो गया; उसने पवित्रता, विनम्रता और नम्रता बनाए रखी, और पवित्र धर्मग्रंथों का लगन से अध्ययन किया। युवा में ऐसी लगन देखकर, अथानासियस ने उसमें एक पितृसुलभ रुचि ली और उसे धर्मपरायणता के और भी महान कार्यों के लिए प्रोत्साहित करते हुए, मठवासी पूर्णता में उसके क्रमिक विकास को बढ़ावा दिया।

जब निकोन परिपक्वता की आयु में पहुँचे, तो अथानासियस और संपूर्ण मठवासी समुदाय के अनुरोध पर, उन्हें पुरोहित का पद प्रदान किया गया, जो ईश्वर के समक्ष खड़े होने के योग्य थे। पराक्रमी निकोन ने पुरोहित का पद ग्रहण क र और विशेष अनुग्रह प्राप्त करने के बाद, धर्म के कार्यों के प्रति और भी अधिक उत्साह दिखाना शुरू कर दिया।

मठ में कुछ समय बिताने के बाद, निकोन एक बार फिर से महान वरिष्ठ और तपस्वी, परम पूजनीय सेरजियस को देखने की एक अदम्य इच्छा से ग्रस्त हो गया, ताकि वह उनका आशीर्वाद प्राप्त कर सके और उनके ईश्वर-प्रेरित उपदेशों को सुन सके। निकॉन ने अथानासियस से एक भावुक निवेदन किया, उनसे प्रार्थना करने और फिर उसे शांतिपूर्वक मठ से विदा करने के लिए कहा। अथानासियस ने निकॉन को रोका नहीं और, एक प्रार्थनापूर्ण विदाई देकर, उसे जाने दिया।

आदरणीय सेरजियस की लावरा में पहुँचने पर और उस दैवीय पिता को देखकर, निकोन अपने चेहरे पर आँसू लिए, उनके पैरों पर गिर पड़ा और उनका आशीर्वाद माँगा। आदरणीय सेरजियस ने न केवल एक आगंतुक के रूप में उनका प्रसन्नता से स्वागत किया, बल्कि उन्हें अपने मठ में रहने की अनुमति भी दी।

इसके बाद, पूजनीय सेरजियस ने निकोन को मठ के भाइयों की पूरी लगन से सेवा करने का निर्देश दिया, और निकोन ने उन्हें सौंपी गई जिम्मेदारी को बड़ी लगन से निभाया, और बिना रुके प्रार्थना और जागने का अभ्यास किया। ऐसे कार्यों और उनके धार्मिक जीवन के लिए, आदरणीय सर्गियस ने निकोन को विशेष स्नेह और विश्वास दिखाया, और उन्हें अपने साथ ही कोठरी में रहने का निर्देश दिया। यहाँ, अपने ईश्वर-ज्ञानी गुरु के साथ बातचीत में, आदरणीय निकोन ने अपने लिए आध्यात्मिक ज्ञान का सर्वोच्च विद्यालय पाया और संत के निकट उदाहरण में, सद्गुणों के कार्यों के लिए नई प्रोत्साहना पाई; और उनकी सूक्ष्मदर्शी मार्गदर्शन और उत्कट प्रार्थना के माध्यम से, निकोन को प्रलोभनों से बचने, कमजोरियों के खिलाफ दृढ़ रहने, और इस प्रार्थना के संगम में स्वर्गीय सांत्वना पाने की शक्ति मिली। सेरजियस का प्रेमपूर्ण हृदय निकोन के लिए एक खुला द्वार था, जिससे अनुग्रह और शांति का प्रकाश उस पर चमका। और सेरजियस के प्रति निकोन का विश्वासपूर्ण हृदय भी एक खुला द्वार था, जिसके माध्यम से उसने अपने आध्यात्मिक पिता के सामने अपने सभी विचार और इरादे प्रकट किए, ताकि संदेह या भ्रम की कोई धुंध उसके विवेक की पवित्रता पर छा न जाए। और इस प्रकार, पानी के झरने के पास लगाए गए एक पेड़ की तरह, निकोन ने अपने शिक्षक की सभी आज्ञाओं और शिक्षाओं को निष्ठापूर्वक ग्रहण करते हुए, अपने कर्मों में सद्गुणों का भरपूर फल दिया।

प्रबुद्ध मार्गदर्शक, पूजनीय सेरजियस, ने अपनी अंतर्दृष्टि से उस दिव्य कृपा को भांप लिया जो निकोन में प्रकट होने वाली थी, और वे उन्हें अपनी जगह मठ का मठाधीश नियुक्त करना चाहते थे। शुरुआत में, सर्गियस ने भाइयों के लिए अपनी जिम्मेदारियों का एक हिस्सा निकोन को सौंप दिया, उसे, मानो, मठाधीश के बाद दूसरे स्थान पर रख दिया। निकोन ने इस नई सेवा को अत्यंत ध्यान और सतर्कता के साथ निभाया, अपने सुपुर्द किए गए भाइयों की अटूट देखभाल करते हुए, प्रत्येक के साथ प्रेम और पितृत्वपूर्ण स्नेह से पेश आए। भाइयों का ऐसा कुशल नेता निकोन में पाकर, सर्जियस का मन प्रसन्न हुआ और, अंतत; अपने निधन से छह महीने पहले, उन्होंने निकोन को बुलाया और सभी की उपस्थिति में,

एक कुशल नेता के रूप में, मठ और भाइयों की देखभाल का दायत्वि सौंप दयिा। हालाँकि निकिोन पूरी लाव्रा का नेतृत्व करने की कठनि जम्मिेदारयिाँ लेना नहीं चाहता था, उसने अपने गुरु की अवज्ञा करने की हम्मित नहीं की और वनिम्रता से, एक आज्ञाकारी पुत्र की तरह, उनके आदेश का पालन कयिा।

कुछ ही समय बाद, पूजनीय सर्जयिस प्रभु के पास चले गए[7963] । उनके वफादार शष्यि का हृदय गहरे दुख से भर गया।

गहरा शोक मनाते और भरपूर आँसू बहाते हुए, उन्होंने संत को इस प्रकार संबोधति कयिा मानो वे अभी भी जीवति हों, और कहा:

'आप चले गए, आदरणीय पति, मेरी सारी आशा। ईश्वर के बाद मैं कसिमें शरण लूँगा, और मुझे सांत्वना कहाँ मलिेगी?'

और, संत की शवयात्रा पर स्वयं को फेंककर और उनके पवत्रि अवशेषों को गले लगाकर, उन्होंने घोषणा की कि वे अपने गुरु के साथ दफ़न होना पसंद करेंगे बजाय इसके कि उनसे अलग रहें।

अपने गुरु के पवत्रि शरीर को बड़े वलिाप और शोक के बीच अंतमि संस्कार के बाद, नकिॉन लाव्रा के मठाधीश के रूप में उनके उत्तराधकिारी बने। उन्होंने यह सुनश्चिति कयिा कि मठ के महान संस्थापक, सेरगयिस द्वारा स्थापति और आज्ञा दी गई हर चीज को सटीकता के साथ पूरा कयिा जाए; और मठाधीश के रूप में भाइयों के कार्यों में भाग लेते हुए, उन्होंने उनमें से प्रत्येक के प्रति देखभाल और चति दखिाई। वे प्रभु की सेवा में उत्कृष्टता प्राप्त करने वालों को अपने प्रयासों में ढलिाई न करने के लिए प्रोत्साहति करते थे; जबकि वे लापरवाह और आलसी लोगों को दुख के साथ फटकारते थे, उन्हें याद दलिाते हुए कि उन्होंने संसार का त्याग कर दयिा है और, अपनी मुक्ति के लिए चंतिति होकर, उन्हें सांसारकि चंताओं में खुद को नहीं डुबोना चाहिए, अन्यथा वे अपना शाश्वत पुरस्कार खो देंगे। वह मठ के उन सभी हस्सिों का दौरा करने की आदत रखते थे जहाँ भक्षिु परश्रिम कर रहे थे, उन्हें प्रोत्साहति करते और धैर्य से अपने श्रम को सहने के लिए प्रेरति करते थे; वास्तव में, उन्होंने स्वयं सामुदायकि श्रम में भाग लेकर भाइयों के लिए एक उदाहरण स्थापति कयिा। अपनी नम्रता, भाइयों के प्रति अपनी पतृिसुलभ देखभाल, और प्रशासन तथा परामर्श में अपनी बुद्धमित्ता के कारण, नकिोन ने न केवल भाइयों का सम्मान और प्रेम अर्जति कयिा, बल्कि उनकी ख्याति सर्गेव मठ की दीवारों से भी बहुत आगे तक फैल गई, और नकिोन का नाम, 'एक नश्चिति पवत्रिता' के रूप में, शहरों और गांवों दोनों में हर जगह महमिामय हो गया। कई धर्मनष्ठि और प्रतष्ठिति लोग अपनी आत्मा के कल्याण के लिए मार्गदर्शन की तलाश में उनके पास आए, और उन्होंने सभी का पतृिसुलभ स्नेह से स्वागत कयिा, जसिसे उन्होंने खुद को एक महान आध्यात्मकि चकित्सिक साबति कयिा।

लेकनि नकिोन, जो सबसे बढ़कर एकांत में मौन और प्रार्थना से प्रेम करते थे, इस सांसारकि प्रसद्धि से मोहति नहीं हुए, और इसे एक भारी बोझ पाया। और इसलिए, यह मानते हुए कि जो कोई ईश्वर की इच्छा करना चाहता है, उसे सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण रूप से दुनयिा के सभी प्रलोभनों से घृणा और नफरत करनी चाहिए, नकिोन ने अपने अनुयायियों का नेतृत्व करने से पीछे हटना शुरू कर दयिा और, अंत में, खुद को एक एकांत कोठरी में बंद कर लयिा। भाइयों ने इस पर गहरा दुख व्यक्त कयिा, और यह न चाहकर कि वह उन्हें अपने मार्गदर्शन के बनिा छोड़ दें, उन्होंने आँसुओं के साथ उनसे वनिती की कि वे उन्हें एक चरवाहे रहति भेड़ों की तरह न छोड़ें। लेकनि वह अपने संकल्प पर अडगि रहे, और उन्होंने भाइयों से कहा कि वे अपनी वनितयिों से उनका दलि न तोड़ें। नकिॉन के दृढ़ संकल्प को देखकर, भाइयों ने उन्हें रोकने की कोशशि नहीं की, क्योंकि वे जानते थे कि वह नेतृत्व के बोझ से शारीरकि आराम के लिए नहीं, बल्कि सद्गुण और दैवीय मौन की उच्चतर उपलब्धयिों की प्राप्ति के लिए बच रहे थे। एक नेता के बनिा नहीं रह पाने के कारण, भाइयों ने नकिोन के शष्यिों में से एक, साव्हा नामक व्यक्ति को चुना—जो अपने सदाचारी जीवन के लिए प्रसद्धि था—और नकिोन के आशीर्वाद से, उसे अपना मठाधीश नयिुक्त कयिा[7964] ।

नकिॉन छह साल तक मौन रहे, जबकि साव्हा ने उत्साह के साथ और धन्य सेरजयिस की प्रार्थनाओं की सहायता से समुदाय का शासन कयिा। लेकनि, छह साल के अंत में, साव्हा ने भी अपना नेतृत्व त्याग दयिा। तब भाइयों ने, मानो आदरणीय नकिोन को प्रशासन के कर्तव्यों से कुछ वश्राम देने और उस मौन का आनंद लेने के लिए जसिकी वे इतनी

[7963] परम पूज्य सर्गयिस का 26 सतिंबर 1392 को नधिन हो गया।

[7964] डुब्नो के साव्वा (बाद में ज्वेनगिोरोड या स्टोरोज्हेव के)। उनका पर्व दविस 3 दसिंबर है।

लालसा करते थे, एक बार फरि उनके पास आकर, आँसुओं के साथ, उनसे वनिती की और उन्हें मना लयिा कि वे उन्हें फरि से अपने मार्गदर्शन में लें। यह देखकर कि निकिोन अभी भी नेतृत्व और अधकिार को अस्वीकार करने का इरादा रखते थे, भाइयों ने उनसे कहा:

'पतिाजी, यह उचति नहीं है कि आप केवल अपने लिए ही लाभ की चाह करें; अपने पड़ोसियों की मुक्ति का भी ध्यान रखें।'

भक्षिुओं की इस लगातार वनिती और उनके प्रेम ने नकिोन को अपनी प्रयि एकांतता से अलग होने के लिए मजबूर कर दयिा, और वह भाइयों की इच्छाओं के आगे झुक गए, लेकनि इस शर्त पर कि वे उन्हें प्रत्येक दनि का एक नश्चिति हस्सिा एकांत तपस्या और प्रार्थना के लिए दें।

पवत्रि मठ में जीवन शांति से और ईश्वर को प्रसन्न करने वाले तरीके से चल रहा था। जहाँ तक नकिोन का सवाल है, वह नरिंतर प्रार्थनापूर्ण जागरण में रहता था, ईश्वर के वचन और चर्च के पति के लेखों का अध्ययन करता था।

[7965]लेकनि फरि क्रूर एडगिेई के बर्बर दलों द्वारा रूसी भूमि पर आक्रमण की एक अफवाह फैल गई। ततार दलों के आगमन ने पूरी रूसी भूमि में आतंक और भय भर दयिा। आदरणीय नकिोन, दुष्ट शत्रु से मुक्ति के लिए प्रार्थना करते हुए, उन्होंने इस मठ के महान संस्थापक – आदरणीय सर्गयिस – का आह्वान कयिा, ताकि वह उनकी प्रार्थना को सभी के प्रभु, मसीह के सहिासन के सामने प्रस्तुत कर सकें, ताकि वह इस पवत्रि मठ को अधर्मी अगारयिनों के हाथों वनिाश में न जाने दें, और न ही अवश्विासयिों की वजिय को कमजोरों के वश्विास को हलिाने दें। और इस प्रकार, एक रात, नकिोन प्रार्थना के अपने श्रम के बाद वश्राम करने के लिए बैठ गए और अर्ध-नद्रिा या हल्की झपकी की अवस्था में थे। अचानक, उन्होंने संत पतरस और अलेक्सयिस को आदरणीय सर्गयिस के साथ अपनी कोठरी में प्रवेश करते देखा, जन्हिोंने उनकी ओर मुड़कर कहा:

'ईश्वर की यही इच्छा है कि विदेशियों का यह आक्रमण हो और इस स्थान को प्रभावति करे। लेकनि तुम, मेरे बच्चे, दुखी मत हो; साहस करो, और अपने हृदय को मजबूत करो: यह परीक्षा अल्पकालकि होगी, और मठ बर्बाद नहीं होगा, बल्कि और भी अधकि फैलेगा।'

तब, नकिोन पर शांति और आशीर्वाद प्रदान करने के बाद, संत अदृश्य हो गए। होश में आते ही, नकिोन जल्दी से उठा और अपनी कोठरी के दरवाज़ों तक गया, लेकनि उन्हें बंद पाया। उसने उन्हें खोला और बाहर नकिला, और संतों को अपनी कोठरी से चर्च की ओर जाते हुए देखा। तब उसे एहसास हुआ कि यह कोई सपना नहीं, बल्कि एक सच्चा दर्शन था।

ईश्वर की इच्छा के प्रति समर्पति होकर, नकिोन ने भवषि्यवाणी के पूर्ण होने की प्रतीक्षा की। जल्द ही, बर्बर लोग, जन्हिोंने रूस की भूमि में अपनी सेनाओं के साथ धावा बोल दयिा था, आदरणीय सेरजयिस के मठ तक पहुँचे और वहाँ की हर चीज़ को बर्बाद कर दयिा, और उसे आग लगा दी। आदरणीय नकिोन और उनके साथयिों ने, एक दव्यि प्रकटोक्ति से पहले ही आगाह होकर, समय रहते मठ छोड़ दयिा था, और अपने साथ कुछ पवत्रि अवशेष और व्यक्तगित सामान ले गए थे। इस प्रकार आदरणीय सेरजयिस की कुछ पुस्तकें और पूजा के बर्तन बच गए, जो आज भी सुरक्षति हैं।

खतरा टलने के बाद, नकिोन और उनके साथी पवत्रि मठ के खंडहरों में लौट आए। मठ को वधिर्मयिों ने जलाकर राख कर दयिा था और पवत्रि स्थान को अपवत्रि कर दयिा था। लेकनि नकिोन ने दुख या नराशिा को हावी नहीं होने दयिा, और न ही वह अपने प्रयास में वचिलति हुए। जैसे एक वीर योद्धा, दुश्मन के हाथों पहली हार झेलने पर भागता नहीं है, बल्कि साहसपूर्वक अपनी ताकत जुटाता है और जीत हासलि करता है, वैसे ही उन्होंने भी, शांत दृढ़ संकल्प के साथ, मठ के पुनर्नरि्माण का काम शुरू कयिा। एक अच्छे चरवाहे की तरह, उन्होंने पहले बखिरे हुए भाइयों को इकट्ठा कयिा और उनके साथ मठ की इमारतों पर काम कयिा। तीन साल से भी कम समय में, मठ के सामुदायकि जीवन के लिए आवश्यक इमारतें खड़ी कर दी गईं; सामूहकि प्रार्थनाओं के लिए, वे शायद शुरू में भोजनशाला के चैपल में इकट्ठा होते थे। साथ ही, नकिोन ने जीवन-दायक त्रमिूर्ति को समर्पति एक लकड़ी का चर्च बनाने की जल्दी की, जसिे 25 सतिंबर 1411 को, पूजनीय सेरजयिस के नधिन के दनि, पवत्रि कयिा गया था।

जब आसपास के क्षेत्रों में आदरणीय नकिोन की वापसी और मठ के पुनर्स्थापन की खबर फैली, तो भक्षिु और गृहस्थ सभी दशिाओं से बड़ी संख्या में उनके पास आने लगे। नकिॉन ने सभी का पतृसिुलभ दया से स्वागत कयिा और एक

[7965] एडगिेई का आक्रमण 1408 के अंत में हुआ था।

अच्छे चरवाहे की तरह, किसी को भी अपनी देखभाल से वंचित नहीं रखा, प्रत्येक व्यक्ति को सद्गुणी शिक्षाओं में निर्देशित किया, उनकी आत्माओं को ज्ञान प्रदान किया और उन्हें उनके जीवन को व्यवस्थित करने के लिए दिशानिर्देश दिए। मठ अपनी राख से पुनर्जीवित हो गया और लगातार बड़ा होता गया[7966] .

एक देखभाल करने वाले मठाधीश के रूप में, आदरणीय निकोन ने मठ के सौंदर्यीकरण के संबंध में अपने कर्तव्यों की उपेक्षा नहीं की। इस संबंध में उनका अंतिम कार्य अपने गुरु सेरजियस के मकबरे के ऊपर जीवन-दायक त्रिमूर्ति को समर्पित एक पत्थर के चर्च का निर्माण था।

काम की शुरुआत में ही, पत्थर के चर्च की नींव खोदते समय, आदरणीय सेरजियस के अक्षय अवशेष पाए गए और उनकी पूजा की गई[7967] । निकोन ने अपने महान गुरु के अवशेषों की इस खोज को अपने श्रम और धैर्य के लिए एक आनंदमय मुकुट और एक मीठा इनाम माना। सामान्य उत्सव के बीच, परम पूजनीय के पवित्र अवशेषों को एक नए अवशेष-पात्र में रखा गया और अस्थायी रूप से एक लकड़ी के चर्च में स्थापित किया गया[7968] , जब तक कि पत्थर के चर्च[7969] में उनके लिए एक स्थान तैयार नहीं हो गया। महान सेरजियस के अवशेषों के विश्राम स्थल के रूप में, नए चर्च का निर्माण किया गया और उसे श्रद्धापूर्ण प्रेम और उत्कट प्रार्थनाओं से सुशोभित किया गया। इस चर्च का निर्माण करने के लिए, निकोन ने बुद्धिमान वास्तुकारों और कुशल राजमिस्त्रियों को इकट्ठा किया, जिन्होंने ईश्वर की सहायता से, इसके निर्माण को शीघ्रता से पूरा किया। नई चर्च का अभिषेक किया गया, और अभिषेक के दौरान आदरणीय सेरजियस की पवित्र अवशेषों को स्थानांतरित करके उसमें रखा गया। संतों के कार्य और सेरजियस के विश्राम-स्थल के रूप में, जो सदियों से अडिग रही है, यह सुंदर चर्च आज भी इसमें प्रार्थना करने वालों को पवित्र करती रहती है, और दुष्ट शत्रुओं के हाथ इसे छू नहीं पाए हैं[7970] ।

निकॉन ने चर्च की आंतरिक सजावट और उसकी दीवारों पर चित्रकारी का भी ध्यान रखा। इस कार्य के लिए, उन्होंने दो तपस्वी भिक्षुओं को आमंत्रित किया, जो अपने सदाचारी जीवन के लिए प्रसिद्ध थे: डैनियल और एंड्रयू, जो आइकन चित्रकला में निपुण थे[7971] । उनकी लगन और उनके मार्गदर्शन के तहत, चर्च को आइकनोग्राफी से भव्य रूप से सजाया गया। जब निकॉन ने देखा कि भित्ति-चित्रों से चर्च की सजावट पूरी हो गई है, तो उन्होंने बड़ी खुशी के साथ ईश्वर का धन्यवाद किया:

उन्होंने कहा, 'हे प्रभु, मैं आपको धन्यवाद देता हूँ, और आपके परम पवित्र नाम की स्तुति करता हूँ कि आपने मेरी विनती को अनसुना नहीं किया, बल्कि मुझ जैसे अयोग्य को भी अपनी आँखों से यह सब देखने का अवसर दिया।'

इस समय तक, निकोन बहुत वृद्ध हो चुके थे, फिर भी उनका उत्साह और आत्मा की दृढ़ता उनमें बनी हुई थी, और न ही उनकी शारीरिक दुर्बलता ने उनके तपस्या के कठोर प्रयासों को कम किया। अपने तपस्या के प्रयासों में पूर्णता प्राप्त कर, उनके पास उस हर प्रकार की संपदा थी जिससे एक मनुष्य ईश्वर में समृद्ध होता है। वे ईश्वर के अनुसार

[7966] निकोन के नेतृत्व में, सेरगियेव मठ ने कई संपत्तियाँ प्राप्त कीं, कुछ दान के रूप में और कुछ खरीद के माध्यम से। निकोन की देखभाल के कारण, मठ आध्यात्मिक संपदा में भी समृद्ध हुआ। उनके नेतृत्व में और उनके निर्देशों के अनुसार, सर्गेव मठ ने कई पूजा-संबंधी पुस्तकों के अलावा, ग्रेगरी ऑफ़ सिनाई के अध्यायों, अबा डोरोथियस की शिक्षाओं, और फिलिप द हरमिट की *द डायोप्ट्रा* के साथ-साथ अबा बार्सानुफियस के उत्तरों और हेसकियस के निर्देशों सहित *लैडर* की दो प्रतियाँ तैयार कीं। (सेंट सर्जियस लाव्रा की सूची, पृष्ठ 155, 156, आदि)।

[7967] आदरणीय सेरगियस की अवशेषों की खोज संत के निधन के 30 साल बाद - 5 जुलाई 1422 को हुई; इस घटना की स्मृति में उत्सव दिवस स्थापित किया गया था।

[7968] आदरणीय सेरजियस की अवशेषों के ऊपर स्थित लकड़ी का चर्च एक नई जगह पर ले जाया गया (जहाँ अब पवित्र आत्मा के अवतरण का चर्च है), और पत्थर का चर्च बनने के दौरान पवित्र अवशेष वहाँ रखे गए।

[7969] यह पत्थर का चर्च, जो पवित्र त्रिमूर्ति को समर्पित है और जिसे आदरणीय निकोन ने बनवाया था, वही ट्रिनिटी कैथेड्रल है जो आज भी खड़ा है।

[7970] आदरणीय निकोन ने उन राजकुमारों और बोयारों की सहायता से ट्रिनिटी कैथेड्रल का निर्माण किया जो सेंट सर्जियस की स्मृति का सम्मान करते थे। इन भक्तों में सबसे प्रमुख, और जिसने चर्च के निर्माण में निकोन की सबसे अधिक सहायता की, वह सेंट सर्जियस का धर्मपुत्र – ज्वेनिगोरोड और गालिच के राजकुमार यूरी दिमित्रीविच थे। (डोंस्कोय के पुत्र)। [1422 या 1423 में चर्च का निर्माण शुरू करने के बाद, संत निकोन ने अपनी मृत्यु तक लगभग इसका निर्माण और सजावट जारी रखी]।

[7971] दानील चेर्नी और आंद्रेई रुबलेव - मास्को के एंड्रोनिकोव मठ के भिक्षु - अपने समय के प्रसिद्ध आइकन चित्रकार थे। उनके द्वारा चित्रित आइकन आज भी बहुत प्रसिद्ध हैं। उनके काम के जीवित उदाहरणों में, सेर्गेव लावरा के ट्रिनिटी कैथेड्रल में वेदी का आइकन विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

जीवन जीने के लिए एक अद्भुत उत्साह से जलते प्रतीत होते थे: संयम उनका आहार था, अनासक्ति उनकी संपत्ति थी; उनके वृद्ध शरीर पर केवल एक ही रोंगटे वाली कमीज़ थी।

अंतत; पूजनीय निकोन अपने निधन के करीब पहुँच गए। आंशिक रूप से वृद्धावस्था के कारण, लेकिन उनके महान तपस्यापूर्ण प्रयासों और कई लंबे रोगों के कारण भी, उनका शरीर थक गया था और उनकी शक्ति क्षीण हो गई थी।

यह महसूस करते हुए कि प्रभु के पास उनका प्रस्थान निकट है, निकोन ने अपने भाइयों को अपने पास बुलाने का आदेश दिया। जब वे उनके बिस्तर के चारों ओर रोते हुए खड़े थे, तो पूजनीय पिता, थोड़ा उठकर, उन्हें अपने अंतिम शिक्षाप्रद शब्दों से संबोधित हुए।

उन्होंने यह वसीयत की कि वे मठ में स्थापित दैनिक और रात्रिकालीन प्रार्थना के क्रम का पालन करें, मठ को बहुत बार न छोड़ें, प्रलोभनों का सामना करते हुए धैर्य बनाए रखें, मठ के वरिष्ठों के प्रति आज्ञाकारिता दिखाएं, आलस्य से घृणा करने – जो दुराचार का प्रजनन स्थल है – कड़ी मेहनत से प्रेम करने, उसे पवित्र भजनों के गायन के साथ मिलाने, और मौन का पालन आनंद के साथ करने, जो सद्गुणों की जननी है और पूर्णता की ओर ले जाती है। इसके साथ ही अपने पड़ोसी से प्रेम करने के लिए एक प्रोत्साहन जोड़ते हुए, उन्होंने भाइयों को यह वसीयत दी:

'यदि संभव हो, तो कोई भी आपकी उपस्थिति से खाली हाथ न जाए, कहीं आप अनजाने में स्वयं मसीह का तिरस्कार न करें, जो एक याचक के भेष में आपके सामने प्रकट हुए हैं। सचेत रहो और अविराम प्रार्थना करो, ताकि प्रभु तुम्हें शत्रु से सुरक्षित रखें, और तुम मेरे उपदेशों के अनुसार अपने पवित्रता और आज्ञाकारिता के व्रत का पालन कर सको।"

भाइयों को अपनी आज्ञाएँ—कि वे उन सभी नियमों का पालन करें जो उन्होंने उन्हें विरासत में दिए थे—देने के बाद, निकॉन चुप हो गए। और फिर, एक दर्शन में, उनकी आत्मा के शरीर से अलग होने से पहले ही, उन्हें आदरणीय सर्जियस के बगल में अपने भविष्य के विश्राम का स्थान दिखाया गया। भाइयों को यह स्पष्ट रूप से बताए बिना, अपनी ही विनम्रता के कारण, निकॉन ने, अपनी मृत्युशय्या की थकान में, अप्रत्याशित रूप से कहा:

– मुझे उस उज्ज्वल तीर्थस्थल पर ले जाओ जो मेरे पिता की प्रार्थनाओं द्वारा मेरे लिए तैयार किया गया है; मैं और अधिक समय यहाँ नहीं रहना चाहता।

यह कहने के बाद, निकोन ने मसीह के शरीर और रक्त के परम पवित्र रहस्यों को ग्रहण किया। बाद में, अपने भाइयों को अपनी निकट मृत्यु की चेतावनी देते हुए, उन्होंने घोषणा की:

'हे भाइयों, देखो, मैं इस सांसारिक शरीर से मुक्त हो गया हूँ और मसीह के पास जा रहा हूँ।'

उन्हें अपनी अंतिम आशीर्वाद देते हुए, स्वयं से संबोधित शब्दों के साथ – 'हे मेरी आत्मा, तेरे लिए तैयार की गई जगह की ओर बढ़ चली जा – आनंद के साथ बढ़ चली जा: मसीह तुझे बुला रहे हैं' – निकोन ने एक अंतिम बार क्रॉस का चिह्न बनाते हुए अपनी सम्मानित और परिश्रमी आत्मा को प्रार्थना में प्रभु के सुपुर्द कर दिया। यह 17 नवंबर 1426 को था।

निकॉन ने 36 वर्षों तक मठाधीश के रूप में सेवा की, अपनी संन्यासी भक्ति में कभी विचलित नहीं हुए, मसीह द्वारा उन पर सौंपी गई भेड़ों के झुंड का परमेश्वर को प्रसन्न करने वाले तरीके से पालन-पोषण किया, और उन्हें उच्चतम सद्गुणों में शिक्षित किया। भाइयों ने अपने पिता और शिक्षक से बिछड़ने पर गहरा शोक मनाया और आँसू बहाए। भजन और अंतिम संस्कार के गीत गाकर विदा करने के बाद, भाइयों ने एक सम्मानित पिता के अनुरूप सम्मान के साथ उनके पवित्र शरीर को विश्राम के लिए लिटाया, और उसे पूज्य सेरजियस के अवशेष-पात्र के पास रख दिया, जहाँ आज भी पवित्र त्रिमूर्ति की स्तुति में प्रार्थनाएँ की जाती हैं। – पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा[7972] ।

[7972] आदरणीय निकोन को ट्रिनिटी कैथेड्रल के बाहर, इसकी दक्षिणी दीवार के पास, उसी स्थान के सामने दफनाया गया है जहाँ आदरणीय सेरजियस को कैथेड्रल के भीतर ही दफनाया गया था। संत निकोन को 1547 की परिषद में संत घोषित किया गया था, लेकिन उनकी पूजा-विधि और जीवनी लगभग सौ साल पहले, मेट्रोपॉलिटन संत जोनाह के आदेश पर, पाखोमियस लोगोफेट द्वारा लिखी गई थी। 1548 में सेंट निकोन की कब्र के ऊपर एक चर्च का निर्माण किया गया था। 1623 में, यानी 76 साल बाद, इस पहले चर्च की जगह एक नया, बड़ा चर्च बनाया गया। यह दूसरा चर्च आज भी खड़ा है। [संत सेरजियस का अवशेष-कोष एक ही पत्थर की दीवार से उनके शिष्य, संत निकोन के अवशेष-कोष से अलग है। चर्च के उत्तर-पश्चिमी कोने में, उत्तरी दीवार के साथ, संत निकोन के अवशेषों के ऊपर एक अवशेष-कोष - एक मकबरा - बना है, जो जमीन में या फर्श के नीचे पड़े हैं।]

अपने महान कार्यों और पवित्र जीवन के लिए, आदरणीय निकोन को प्रभु द्वारा, जीवित रहते हुए, विवेक का वरदान, और मृत्यु के बाद, चमत्कार करने का वरदान प्राप्त हुआ। आदरणीय के कई चमत्कारों में से, हम यहाँ कुछ का उल्लेख करेंगे।

एक अवसर पर, निकोन ने अपने एक भिक्षु, जिसका नाम अकाकियोस था, को संत सर्जियस के मठ के एक गाँव में भेजने का इरादा किया। इस आज्ञा का पालन न करना चाहकर, अकाकियोस ने कहा:

'मैंने संसार त्यागकर नगरों और गांवों में घूमने के लिए नहीं छोड़ा।'

सम्माननीय पिताजी ने काफी देर तक अकाकियोस से विनती की, लेकिन उसने किसी भी परिस्थिति में अपने मठाधीश के आदेश का पालन करने से इनकार कर दिया। तब सम्माननीय पिताजी ने भविष्यवाणी की:

'सावधान रहना, अकाकिय, कहीं ऐसा न हो कि तुम अपनी मर्ज़ी से वहाँ पहुँच जाओ, और तब तुम्हें अपनी अवज्ञा का उचित फल मिलेगा।'

कुछ ही समय बाद, आदरणीय निकोन प्रभु के पास चले गए। हालाँकि, अकाकिय ने उस पवित्र पिता द्वारा बताई गई हर बात को दरकिनार कर दिया और उसी गाँव के लिए निकल पड़ा जहाँ आदरणीय निकोन ने उसे भेजा था। और वहाँ, संत की भविष्यवाणी के अनुसार, ईश्वर का न्याय अचानक उस पर आया: वह पागलपन की स्थिति में पहुँच गया, इसलिए भाइयों को उसे मठ वापस लाना पड़ा। वहाँ, संत निकोन उसे दिखाई दिए और अपने हाथों में एक लाठी पकड़े हुए, उन्होंने फटकारते हुए उससे कहा:

'अकाकियोस! क्या तुमने संसार का त्याग केवल नगरों और गांवों में भटकने के लिए किया था?'

तब अकाकियोस पर बहुत भय छा गया और वह पागलों की तरह चिल्लाने लगा। वह कई दिनों तक इसी दयनीय अवस्था में रहा, संत सर्जियस और निकोन के अवशेष-पात्र के पास रहकर अपने पाप की क्षमा के लिए प्रार्थना करते हुए रोता रहा; भाइयों ने भी उसके लिए उतनी ही लगन से प्रार्थना की। और फिर, मसीह की कृपा और संतों की प्रार्थनाओं के द्वारा, अकाकिय को अपने पाप के लिए क्षमा मिल गई और वह ठीक हो गया। उसने स्वयं यह सब उन कई लोगों को आँसुओं के साथ सुनाया, जिन्होंने उससे इसके बारे में पूछा।

अपने सांसारिक जीवन के दौरान, पूजनीय सेरजियस और निकोन एक-दूसरे के विशेष रूप से करीब थे। यह पारस्परिक निकटता उन्हें शाश्वत जीवन में भी नहीं छोड़ा है, क्योंकि संतों का प्रेम, दिव्य प्रेम की तरह, समय के नियमों के अधीन नहीं है। वे दोनों कई मौकों पर एक साथ प्रकट हुए हैं और संयुक्त रूप से चमत्कार किए हैं।

मास्को का एक निवासी, जिसका नाम सिमियोन था, जो संत की भविष्यवाणी के अनुसार पैदा हुआ था, इतना गंभीर रूप से बीमार पड़ गया कि वह न तो हिल सकता था, न सो सकता था और न ही कुछ खा सकता था, बल्कि अपने बिस्तर पर मृतक की तरह पड़ा था। इस तरह पीड़ित, एक रात उसने मदद के लिए संत सर्जियस को पुकारना शुरू कर दिया:

'हे पूजनीय सेरजियस, मेरी मदद करो, मुझे इस बीमारी से मुक्त दो; जब आप जीवित थे, तब भी आप मेरे माता-पिता पर बहुत दयालु थे और उन्हें मेरे जन्म की भविष्यवाणी की थी; मुझे न भूलें, जो इतनी गंभीर बीमारी से पीड़ित है।'

अचानक, उसके सामने दो साधु प्रकट हुए; उनमें से एक निकोन था; बीमार व्यक्ति ने उसे तुरंत पहचान लिया, क्योंकि वह इस संत को उनके जीवित रहते व्यक्तिगत रूप से जानता था; तब उसे एहसास हुआ कि प्रकट होने वालों में से दूसरे साधु स्वयं पूजनीय सेरजियस थे। उस चमत्कारी संत ने उस बीमार व्यक्ति पर क्रॉस का चिह्न बनाया, और बाद में निकोन को बिस्तर के पास रखी प्रतिमा लेने का निर्देश दिया – यह प्रतिमा कभी निकोन ने स्वयं सिमोन को दी थी। फिर उस बीमार व्यक्ति को ऐसा लगा मानो उसकी सारी त्वचा उसके शरीर से उतर गई हो; इसके बाद, संत अदृश्य हो गए। उसी क्षण, सिमियोन ने महसूस किया कि वह पूरी तरह से स्वस्थ हो गया है: वह अपने बिस्तर से उठ खड़ा हुआ, और अब कोई भी उसे सहारा नहीं दे रहा था; तब उसे एहसास हुआ कि उसकी त्वचा नहीं उतरी थी, बल्कि बीमारी उससे दूर हो गई थी। उसकी खुशी बहुत बड़ी थी; अपने पैरों पर खड़ा होकर, उसने अपने अप्रत्याशित और अद्भुत उपचार के लिए संत सेरजियस और परम आदरणीय निकोन का भक्तिपूर्वक धन्यवाद करना शुरू कर दिया।

लिसोव्स्की और सापेहा के नेतृत्व में पोलिश लोगों द्वारा ट्रिनिटी मठ की घेराबंदी के दौरान, जब पवित्र मठ को अपने दुश्मनों के हाथों अनगिनत आपदाओं का सामना करना पड़ा, तब आदरणीय सेरगियस और निकोन ने कई चमत्कार किए। लावा को घेराबंदी करने वाले दुश्मनों के सामने भी, जो लावा को घेर रहे थे, वे अक्सर प्रकट होते थे, उनके हृदय में भय पैदा करते और उन्हें ईश्वर के क्रोध से डराते थे, और वे सम्माननीय सेरजियस के साथ मिलकर घेराबंदी झेल रहे लोगों

के सामने भी प्रकट होते थे, उन्हें प्रोत्साहित करते और ईश्वर की सहायता में उनकी आशा को मजबूत करते थे[7973] । कई घेराबंदी करने वालों और उनके कमांडरों ने दो तेजस्वी साधुओं को, जो सर्गियस और निकोन जैसे दिख रहे थे, मठ की दीवारों के साथ-साथ चलते हुए देखा; एक दीवारों पर धूपदान से धूप जला रहा था, जबकि दूसरा उन पर पवित्र जल छिड़क रहा था।

एक बार, जब मठ अभी भी दुश्मन द्वारा घेराबंदी में था और भूख और हर तरह की तकलीफों के कारण घेराबंदी में रहे लोगों के बीच बीमारी फैलने लगी थी, तो निकॉन सेक्सटन इरिनारह के सपने में प्रकट हुए और उनसे कहा:

'बीमारी से पीड़ित सभी लोगों से कह दो कि आज ही रात बर्फ़ पड़ेगी, और जो कोई भी अपनी बीमारियों से ठीक होना चाहता है, वह इस बर्फ़ से अपना शरीर मल ले।'

इरिनारह चौंककर जाग उठा और अगली सुबह उसने अपने आसपास के लोगों को वह सब कुछ बताया जो चमत्कार करने वाले निकोन ने उसे बताया था। और वास्तव में, उस रात बर्फ बजी, और जिसने भी श्रद्धापूर्वक इस बर्फ से अपना शरीर मल लिया, वह स्वस्थ हो गया[7974] ।

यहाँ हाल के समय (1846) का एक और वृत्तांत है। मठ के अस्पताल में, कासोक पहनने वाले नवसिखिया गैब्रियल, एक तंत्रिका ज्वर से भयानक रूप से पीड़ित था; वह कई दिनों से बेहोश था, और ऐसा माना जा रहा था कि वह इस बीमारी से बच नहीं पाएगा। आदरणीय निकोन की स्मृति में मनाई जाने वाली रात को, उसने देखा कि उसकी आत्मा उसके शरीर से अलग होकर किसी गहरी खाई में गिरती जा रही थी। मन ही मन, उसने जीवन में लौटने के लिए आदरणीय सेरजियस और निकोन से प्रार्थना करना शुरू कर दिया, ताकि पश्चाताप के माध्यम से वह खुद को अनंत काल के लिए तैयार कर सके। (और इस सब दौरान, जैसा कि दूसरे देख सकते थे, वह बेहोश और अचल पड़ा रहा)। अचानक उसने देखा मानो दरवाज़े खुल गए हों; दो तेजस्वी वृद्ध व्यक्ति प्रवेश किए, जिनमें से एक के हाथ में लाठी थी – उसमें उसने आदरणीय सेरजियस को और दूसरे में आदरणीय निकोन को पहचान लिया। आदरणीय सेरजियस ने अपनी लाठी से उस बीमार व्यक्ति की ओर इशारा करते हुए आदरणीय निकोन से कहा: 'उसकी मदद करो!' आदरणीय निकोन पास आए, और केवल अपनी उपस्थिति से ही उस बीमार व्यक्ति को शक्ति और आनंद से भर दिया। वह बीमार व्यक्ति उठ बैठा, उसने क्रॉस का चिह्न बनाया, और वे आदरणीय व्यक्ति अदृश्य हो गए। गैब्रियल को होश आया; बीमारी दूर हो चुकी थी, केवल कमजोरी बची थी[7975] ।

ट्रोपारियन, स्वर 1:

हे सर्वदा स्मरणीय आदरणीय निकोन, आज्ञाकारिता के एक विश्वसनीय प्रबंधक होने के नाते, आपने अपने पिता की स्तुति के लिए पवित्र त्रिमूर्ति का सुंदर चर्च स्थापित किया। इसलिए हम भी, आपके प्रेम के बच्चों के रूप में, आपसे पुकारते हैं: महिमा उसको जो आपको शक्ति देता है, महिमा उसको जो आपको मुकुट पहनाता है, महिमा उसको जो आपके द्वारा सभी चंगाइयाँ करता है।

कॉन्टाकियन, स्वर 4:

अपने आध्यात्मिक पिता, फादर निकोन से हर तरह से जुड़कर, और उनसे उपदेश पाकर, आपने स्वयं को पूरी तरह से मसीह को समर्पित कर दिया; आप भिक्षुओं के मठाधीश और संतों के सह-भिक्षु थे: उनके साथ, हम सभी के लिए मसीह हमारे परमेश्वर से अविरत प्रार्थना करें।

[7973] लिसोव्स्की और सापिएहा के नेतृत्व में पोलिश लोगों द्वारा ट्रिनिटी मठ की घेराबंदी 23 सितंबर 1608 को शुरू हुई; यह घेराबंदी 12 जनवरी 1610 को समाप्त हुई।

[7974] 'ट्रिनिटी-सर्गीय मठ की घेराबंदी की कथा', अव्राम पालित्सिन द्वारा। मॉस्को, 1822, पृ. 157.

[7975] मोनैस्टिक लेटर्स, मॉस्को, 1863, पृ. 69–71। पत्र 19, दिनांक 18 नवंबर 1846।

मान्यवर लेखक लाजरस की स्मृति

17 नवंबर को स्मरणोत्सव

परमपूज्य लाजरस कॉन्स्टेंटिनोपल में रहते थे और उन्होंने कम उम्र से ही मठवासी तपस्या को समर्पित कर दिया था। अपने युवा काल से ही उन्होंने एक कठोर जीवन जिया, लगातार उपवास और प्रार्थना का पालन किया। लेकिन सबसे बढ़कर, उन्होंने दया के कार्य किए, भूखों को भोजन खिलाया और नंगों को कपड़े पहनाए। अपने तपस्वी और धार्मिक जीवन के लिए, परमपूज्य को पुरोहित नियुक्त किया गया। यह बाइजेंटाइन सम्राट थियोफिलिस के शासनकाल के दौरान हुआ था[7976] ।

आदरणीय लाजरस ने भी थियोफिलिस के शासनकाल में ही प्रतिमाओं की पूजा के प्रति अपने उत्साह के लिए उत्पीड़न सहन किया। ईश्वर की सेवा के लिए स्वयं को समर्पित करने के बाद, लाजरस ने प्रतिमा चित्रकला की कला का अध्ययन किया और ईश्वर, उनकी परम पवित्र माता और उनके संतों की महिमा के लिए उत्साहपूर्वक पवित्र प्रतिमाएँ चित्रित करने लगे। हालांकि, थियोफिलिस एक प्रतिमा-विरोधी था; उसने पवित्र प्रतिमाओं के सभी पूजकों को सताया और प्रतिमा-चित्रकारों को प्रतिमाओं पर थूकने और उन्हें पैरों तले कुचलने के लिए मजबूर किया। आदरणीय लज़ारस को, एक प्रतिमा-चित्रकार के रूप में, गिरफ्तार कर उनकी आस्था की परीक्षा के लिए रखा गया। लेकिन उन्हें प्रतिमा-भंग की विधिर्म को अपनाने के लिए मनाने के उनके प्रयास—चाहे चापलूसी भरी वनितियों से या धमकियों से—व्यर्थ रहे; लज़ारस अडिग रहे; जिस पर उन्होंने निर्दयता से उनकी पिटाई शुरू कर दी और फिर उन्हें एक कालकोठरी में डाल दिया। फिर भी जेल में भी, उस पवित्र पुरुष ने प्रतिमाएँ बनाना जारी रखा। तब उसके अत्याचारी उत्पीड़क ने आदेश दिया कि संत की उंगलियों को लाल-गरम लोहे की प्लेटों से दागा जाए, ताकि वह प्रतिमाएँ बनाने की किसी भी क्षमता से वंचित हो जाए। इस प्रक्रिया में, आदरणीय लाजरस को मृत्यु की धमकी भी दी गई। केवल पवित्र सम्राज्ञी थियोडोरा[7977] के हस्तक्षेप से ही बड़ी कठिनाई से उनकी जान बची। रिहाई के बाद, पूजनीय लज़ारस ने सेंट जॉन द बैपटिस्ट के चर्च में शरण ली, जहाँ उन्होंने एक प्रतिमा चित्रित की जिसने जल्द ही चमत्कारी होने की ख्याति प्राप्त कर ली। जब थियोफिलिस का निधन हो गया, तो आदरणीय लाजरस बिना किसी बाधा के पवित्र प्रतिमाएँ बनाने में स्वयं को समर्पित कर सके। इसके अलावा, संत ने कोई रंजिश नहीं रखी, बल्कि अपने उत्पीड़क के लिए भी प्रार्थना की।

[7978]सम्राट माइकल तृतीय[7979] , जो थियोफिलिस और थियोडोरा के पुत्र थे, के शासनकाल के दौरान, आदरणीय लाजरस पोप बेनेडिक्ट तृतीय[7980] को भेजे गए राजदूतों के दल के सदस्य थे, और रोम से लौटते समय उनकी मृत्यु हो गई। उनके पवित्र अवशेष कॉन्स्टेंटिनोपल ले जाए गए, जहाँ उन्हें सेंट इवांडर के चर्च में दफनाया गया।

दिसंबर

1 दिसंबर

18 नवंबर (पुराना संस्करण)

[7976] सम्राट थियोफिलिस ने 829 से 842 तक शासन किया।

[7977] सम्राज्ञी थियोडोरा को इतिहास में ऑर्थोडॉक्सी के प्रति उनकी सेवाओं के लिए जाना जाता है। जब थियोफिलिस की मृत्यु के बाद, अपने पुत्र माइकल की अल्पवयस्कता के कारण सम्राज्ञी साम्राज्य की रीजेंट बनीं, तो उन्होंने प्रतिमाओं की पूजा को बहाल किया। राजधानी में, महा-तपस्या के पहले रविवार को विशेष गंभीरता के साथ आराधना के लिए प्रतिमाओं को उनके निर्धारित स्थानों पर रखा गया। इस दिन को 'ऑर्थोडॉक्सी का पर्व' के रूप में जाना जाता है और चर्च द्वारा इसे सालाना मनाया जाता है।

[7978] 1200 में, रूसी तीर्थयात्री एंथनी ने कॉन्स्टेंटिनोपल में पूज्य लाजरस के अवशेष देखे, जो बाद में नोवगोरोड के आर्चबिशप बने।

[7979] सम्राट माइकल III ने 842 से 877 तक शासन किया।

[7980] पोप बेनेडिक्ट तृतीय ने 866 से 868 तक रोमन चर्च का नेतृत्व किया।

शहीद संत प्लेटो का कष्टकथा

18 नवंबर को स्मरणोत्सव

शहीद संत प्लेटो, शहीद संत एंटओकस के भाई, गलाटिया प्रांत के अंकीरा शहर के मूल निवासी थे[7981] । उनका जन्म ईसाई माता-पिता के यहाँ हुआ था और वे धार्मिकता में पले-बढ़े थे। वयस्कता तक पहुँचने से पहले ही, वे सद्गुणों में निपुण हो चुके थे। एक युवा व्यक्ति होते हुए भी, वे मन से परिपक्व थे। ईश्वर-विहीन मूर्तिपूजकों के बीच, उन्होंने निडर होकर अनंत ईश्वर, मसीह का प्रचार किया, और भटक गए अविश्वासियों को सिखाया, ताकि वे सत्य को जान सकें और दैवीय भ्रम से मुड़कर ईश्वर की ओर लौट सकें। इसके लिए, उन्हें अविश्वासियों द्वारा पकड़ लिया गया और परीक्षण के लिए प्रांतीय राज्यपाल एग्रिप्पीनस के सामने लाया गया।

उस समय एग्रिप्पीनस ज़ीउस के मंदिर में था और वहाँ मसीह के स्वीकारकर्ता का न्याय करने के लिए बैठा था। उसे देखकर उसने कहा:

'सम्पूर्ण संसार अपने देवताओं का सम्मान करता है – केवल तुम ही भ्रांति में हो और उनसे मुंह मोड़ रहे हो!'

संत ने उत्तर दिया:

'भटक तो तुम ही गए हो, जिन्होंने परमेश्वर को त्याग दिया, जिसने स्वर्ग और पृथ्वी और उनकी सारी सुंदरता को बनाया, और एक पत्थर और मानव हाथों की कृति, एक नश्वर वृक्ष की पूजा करते हो।'

अग्रिप्पीनस ने कहा:

'तुम्हारी जवानी तुम्हें साहसी और अभिमानी बनाती है। मुझे अपना नाम बताओ—तुम्हारा नाम क्या है, और तुम किस नगर से आए हो?'

संत ने उत्तर दिया:

'मेरे माता-पिता ने मेरा नाम प्लेटो रखा; मैं अपनी माँ के गर्भ से ही मसीह का सेवक और इस शहर का नागरिक रहा हूँ; अब, धर्मपरायणता के लिए, मैं आपके अन्यायपूर्ण न्यायालय के सामने खड़ा हूँ और एक अयोग्य मृत्यु की प्रतीक्षा कर रहा हूँ, जिसे मैं अपने प्रभु के लिए उत्सुकता से स्वीकार करना चाहता हूँ; तो, जो आप करने का इरादा रखते हैं, वह करें।'

'प्लेटो, तुम्हें ऐसा नहीं करना चाहिए,' प्रांतीय राज्यपाल ने आपत्ति जताई, 'तुमने सूली पर चढ़ाए गए की शिक्षा नहीं देनी चाहिए और न ही उसके नाम को अपने मन में रखना चाहिए, क्योंकि शाही आदेश है कि जो लोग उसकी स्वीकारोक्ति करते हैं उन्हें एक दुखद मृत्यु दी जाए, जबकि जो लोग उसका इनकार करते हैं उन्हें बड़े सम्मानों से सम्मानित किया जाना है: इसलिए मैं तुम्हें सलाह देता हूँ कि शाही आदेश के आगे समर्पण कर दो, और तब तुम्हारे पास एक घातक अंत से बचने का अवसर होगा।'

संत प्लेटो ने उत्तर दिया:

'मैं अपने राजा—ईश्वर—की आज्ञा मानता हूँ और उनके लिए लड़ता हूँ; मैं इस क्षणिक मृत्यु को स्वेच्छा से स्वीकार करता हूँ ताकि मैं अनंत राज्य का वारिस बन सकूँ।'

'इस पर विचार करो, प्लेटो,' प्रांतीय राज्यपाल ने जवाब दिया, 'तुम्हारे लिए क्या बेहतर है: जीवित रहना, या एक क्रूर मृत्यु सहना?'

प्लेटो ने उत्तर दिया:

'प्रभु जानें कि मेरे लिए क्या सबसे अच्छा है।'

प्रांतीय राज्यपाल ने आपत्ति जताते हुए कहा, "क्या तुम नहीं जानते, वे अपरिवर्तनीय शाही कानून जो आदेश देते हैं कि ईसाइयों को या तो देवताओं को बलिदान चढ़ाना होगा या मृत्यु का सामना करना होगा? तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई शाही कानूनों को तोड़ने और दूसरों को गुमराह करने की?"

[7981] गलातिया एशिया माइनर का एक छोटा, पहाड़ी लेकिन उपजाऊ क्षेत्र है, जो एशिया माइनर प्रायद्वीप के केंद्र में, फ्रीजिया, बिथिनिया, पोंटस और कैपैडोसिया के बीच स्थित है। यहाँ ईसाई धर्म की स्थापना संत पॉल द्वारा की गई थी, जिन्होंने गलातिया की कलीसिया की स्थापना की और बाद में गलातियों को एक पत्र लिखा, जिन्होंने उनकी बातें इस प्रकार सुनी मानो वह परमेश्वर का स्वर्गदूत हों (गला. 4:14)। – एन्सीरा – अब अंगोरा – गलातिया के प्रमुख शहरों में से एक है।

संत ने उत्तर दिया:

मैं अपने परमेश्वर की व्यवस्थाओं को जानता हूँ और उनके पवित्र तथा जीवन-दायक आज्ञाओं के अनुसार चलता हूँ; और वे आज्ञा देती हैं कि, शैतानी बलदिानों को अस्वीकार करके, हम एकमात्र सच्चे परमेश्वर की सेवा करें। मैं केवल उसी की सेवा करता हूँ, जबकि मैं तुम्हारे देवताओं से घृणा करता हूँ। लेकिन आप, राजा की आज्ञा के अनुसार, मुझे अपनी इच्छानुसार यातनाएँ दे सकते हैं – आप पहले से ही ईसाइयों को यातनाएँ देने के आदी हैं, और ईसाई मसीह के लिए पीड़ा सहने के आदी हैं।

प्रांतीय राज्यपाल एग्रिप्पीनस, जो अपने क्रूर स्वभाव के लिए जाना जाता था, ने जब देखा कि संत उसकी अधर्मी इच्छा के आगे नहीं झुक रहे थे और उसका विरोध कर रहे थे, तो वह भयानक क्रोध में आ गया और उसने संत को नग्न करके जमीन पर लटिाने का आदेश दिया और बारह सैनिकों को बारी-बारी से संत को पीटने के लिए नियुक्त किया। और उन्होंने उसे लंबे समय तक उसके पूरे शरीर पर निर्दयता से पीटा, यहाँ तक कि उसे पीटने वाले सैनिक बहुत थक गए, लेकिन पवित्र शहीद अपने प्रभु, यीशु मसीह के नाम को सहने और स्वीकार करने से नहीं थके।

तब, जब सैनिकों ने पिटाई बंद कर दी, तो प्रांतीय राज्यपाल, जैसे कि उस पर दया कर रहा हो, उससे स्नेहपूर्वक बात करने लगा:

'मैं तुम्हें एक मित्र के रूप में सलाह देता हूँ, प्लेटो: मृत्यु से मुंह मोड़ो और जीवन की ओर बढ़ो।'

शहीद ने उत्तर दिया:

'तुम मुझे अच्छी तरह सिखा रहे हो, एग्रिप्पीनस, कि मृत्यु से जीवन की ओर मुड़ूँ; मैं स्वयं अनंत मृत्यु से भागता हूँ और अमर जीवन की खोज करता हूँ।'

तब एग्रिप्पीनस ने क्रोधित होकर संत से कहा:

'मुझसे बताओ, दुर्भाग्यशाली, कितने प्रकार की मौतें हैं?'

संत ने उत्तर दिया:

'दो मौतें हैं: एक अस्थायी, दूसरी शाश्वत; इसी तरह, दो जीवन हैं: एक क्षणिक, दूसरा अनंत।'

प्रांतीय राज्यपाल ने पलटकर कहा, "अपनी ये परीकथाएँ सुनाना बंद करो, और देवताओं की पूजा करो, ताकि तुम्हें अपने भयानक कष्ट से मुक्ति मिल सके।"

संत ने उत्तर दिया:

'न आग, न घाव, न ही जानवरों का क्रोध, न ही मेरे अंगों का क्षय मुझे जीवित ईश्वर से अलग कर सकता है; क्योंकि मैंने इस वर्तमान युग से प्रेम नहीं किया है, बल्कि मेरे मसीह से प्रेम किया है, जो मेरे लिए मरे और फिर जी उठे।'

तब राज्यपाल ने आदेश दिया कि संत प्लेटो को जेल ले जाया जाए। जब उन्हें ले जाया जा रहा था, तो लोग उनका पीछा कर रहे थे, और वे उनके कष्ट को ऐसे देख रहे थे मानो यह कोई तमाशा हो। भीड़ में कई ईसाई थे। जैसे ही वह दृढ़ और महान आत्मा के साथ कालकोठरी के पास पहुँचा, मसीह का शहीद, प्लेटो, भीड़ की ओर मुड़ा और उन्हें चुप रहने का इशारा करके, ऊँचे स्वर में बोलने लगा:

'सत्य से प्रेम करने वाले पुरुष जानते हैं कि मैंने यह पीड़ा का कार्य केवल परमेश्वर की खातिर उठाया है, जिसने स्वर्ग और पृथ्वी और उनमें जो कुछ भी है, उसे बनाया है। मसीह के सेवकों, मैं आपसे विनती करता हूँ कि आप जो हो रहा है उससे निराश न हों, क्योंकि *'धर्मी पर कई विपत्तियाँ आती हैं, परन्तु प्रभु उन सब से उसे बचाता है'* (भजन संहिता 33:20)।

तो आओ, हम सब मिलकर उस शांत बंदरगाह और उस चट्टान में शरण लें, जिसकी बात महान प्रेरित करते हैं: *'वह चट्टान मसीह थे'* (1 कुरिन्थियों 10:4)। और मसीह के विश्वास के लिए हम जो परीक्षाएँ झेलते हैं, उनमें हम हताश न हों, यह याद रखते हुए कि *'हमारी वर्तमान कष्टों की तुलना उस महिमा से नहीं की जा सकती जो हम पर प्रकट होने वाली है'* (रोमियों 8:18)।

यह कहने के बाद, शहीद ने कालकोठरी में प्रवेश किया और, जमीन पर घुटने टेककर, ईश्वर से निम्नलिखित प्रार्थना की:

– हे प्रभु यीशु मसीह, सभी का सृष्टिकर्ता और प्रदाता, जो अपने सेवकों को धैर्य और विजय प्रदान करते हैं, यह अनुग्रह करें कि मैं भी, आपका दीन और अयोग्य सेवक, आपके पवित्र नाम के लिए योग्यतया अंत तक सहन कर सकूँ; और मुझे छलने वाले और अत्यंत दुष्ट साँप—एग्रिपिना—से बचाने के लिए अपना स्वर्गदूत भेजें— ताकि सभी जान

जाएँ कि मानव हाथों से बने हुए देवता नहीं हैं, बल्कि यह कि केवल आप ही एकमात्र सच्चे परमेश्वर हैं, जो धीरजवान और परम दयालु हैं, और सदा के लिए महिमा प्राप्त करते हैं। आमीन।

सात दिन बीत जाने के बाद, यातना देने वाले ने फिर से ज्यूस के मंदिर में न्यायपीठ पर अपनी सीट ली और पवित्र शहीद को अपने सामने लाने का आदेश दिया। सबसे पहले, उसने उसके सामने यातना के विभिन्न उपकरण रखे: तांबे के बड़े बर्तन, कीलों से जड़े जूते, लाल-गरम तोप के गोले, नुकीली छड़ियाँ, लोहे की फंदे, पहिये और कई अन्य, इस उम्मीद में कि वह मसीह के उस बहादुर योद्धा को उनसे डरा सके। फिर वह उससे बोलने लगा:

'प्रिय प्लेटो! तुम्हारी युवावस्था और तुम्हारे माता-पिता की कुलीनता को देखकर, और तुम्हारे शरीर की सुंदरता की परवाह करते हुए, इससे पहले कि मैं तुम्हें एक बार फिर यातना देना शुरू करूँ, मैं तुम्हें सलाह देता हूँ: हमारे देवताओं की बलिदान में भाग लो और हमसे एक हो जाओ, यह अच्छी तरह जानते हुए कि जो कोई भी मेरा विरोध करेगा वह जीवित नहीं रहेगा; इसके विपरीत, मेरी आज्ञा मानने वाले किसी को भी मैंने कभी उस सम्मान और उपहार से वंचित नहीं किया, जिनका मैंने वादा किया है। जहाँ तक तुम्हारा सवाल है, हे सुंदर प्लेटो, यदि तुम एक पिता की तरह मेरी बात मानने को तैयार हो, जो तुम्हें अच्छी सलाह दे रहा हो, तो मैं तुम्हें अपनी भाभी की एकमात्र बेटी, जिसके पास बहुत धन-संपत्ति है, तुम्हारी पत्नी के रूप में दूँगा, और मैं तुम्हें अपना बेटा मानूँगा।

लेकिन धन्य प्लेटो ने, उनका मज़ाक उड़ाते हुए, कहा:

'हे दुष्ट, मानवद्वेषी शैतान के पुत्र और सैतान के सेवक! अगर मैं इस संसार के मोह-जाल में बँधने का निश्चय करूँ, और अगर मैं पत्नी बनाने की इच्छा रखूँ, तो क्या मुझे तुम्हारे भाई की बेटी से बेहतर कोई नहीं मिल जाएगी! सचमुच, मैं उसकी जगह एक दासी को ही ले लूँगा। और फिर, क्या मैं उसे अब लेना चाहूँगा, जब मैं इस दुनिया को पीछे छोड़कर मसीह के साथ एक हो रहा हूँ?

तब यातना देने वाले ने क्रोधित होकर आदेश दिया कि संत को एक तांबे के बिस्तर पर लिटाया जाए, और उसके नीचे बड़ी मात्रा में कोयले बिछाकर आग लगा दी जाए, आग पर तेल, मोम और गोंद डाला जाए, और संत के शरीर को झुलसाया जाए, जबकि ऊपर से एक पतली छड़ी से उसकी पिटाई की जाए, ताकि पिटाई और जलन दोनों ही उसकी यातनाओं को और बढ़ा दें। इतनी लंबी यातना के बाद, एग्रिपिनस ने पवित्र शहीद से कहा:

'हे दुखी मनुष्य, अंततः अपनी ही दया कर! और यदि तुम देवताओं की पूजा नहीं करना चाहते, तो बस ये शब्द कहो: "महान है देवता अपोलो"—और मैं तुरंत तुम्हें पीड़ा देना बंद कर दूँगा, और तुम शांतिपूर्वक अपने घर चले जाओगे।'

लेकिन संत ने उत्तर दिया:

'मेरे लिए यह कतई उचित नहीं कि मैं अपनी आत्मा के लिए अग्निमय नरक तैयार करते हुए अपने शरीर को बचाऊँ।'

तीन घंटों के बाद, जब प्लेटो को ऐसी यातनाएँ दी गईं, तो उसे बिस्तर से नीचे उतारा गया, लेकिन उसका शरीर पूरी तरह से सही-सलामत, स्वस्थ और घावों या जलने के निशानों के बिना पाया गया, मानो वह अभी-अभी स्नान करके निकला हो। इसके अलावा, उसके शरीर से एक तेज सुगंध आ रही थी, जिससे वहाँ मौजूद सभी लोग चकित हो गए और कहने लगे:

'सचमुच, ईसाई ईश्वर महान है!'

तब प्रांतीय राज्यपाल ने संत से कहा:

'यदि तुम हमारे देवताओं को बलिदान नहीं चढ़ाना चाहते, तो कम से कम केवल अपने मसीह का त्याग कर दो, और मैं तुम्हें आज़ाद कर दूँगा।'

लेकिन संत ने उत्तर दिया:

'हे पागल और अधर्मी मनुष्य, तुम कैसे कह सकते हो कि मुझे अपने उद्धारकर्ता का त्याग करना चाहिए? क्या तुम सचमुच चाहते हो कि मैं तुम्हारे जैसा बन जाऊँ, हे दुष्ट मनुष्य? क्या तुम्हारा अपना विनाश तुम्हारे लिए पर्याप्त नहीं है? फिर भी तुम दूसरों को भी उसमें खींचना चाहते हो—जो मसीह के सैनिकों में से हैं! मुझसे दूर हो जाओ, हे अधर्मी।' मैं अपने ईश्वर पर विश्वास करता हूँ कि वह मुझे न छोड़ेंगे और न ही मुझे वैसे गिरने देंगे जैसे तुम गिरे हो।

तब एग्रिपिनस अपने सिंहासन से उठा और स्वयं संत को यातना देने लगा। उसने लोहे की अंगूठियाँ गर्म कीं, उन्हें उसके कंधों के नीचे रखा और उसकी पसलियों को झुलसा दिया। फिर उसने शहीद की छाती पर दो लाल-गरम लोहे की अंगूठियाँ रख दीं – और उसकी नाक से धुआँ उठने लगा, क्योंकि आग की गर्मी उसकी आंतों तक समा गई थी। कई लोगों ने सोचा कि वह पहले ही मर चुका है। लेकिन, थोड़ी देर बाद, उसने अपने यातनाकर्ता से कहा:

'तैयार यातनाएँ कुछ भी नहीं हैं, हे क्रूर रक्तपिपासु राक्षस!'

तब, संत ने स्वर्ग की ओर अपनी आँखें उठाकर घोषणा की:

– *'मैंने मुझे मारने वालों के लिए अपनी पीठ खोल दी, और मुझे दाढ़ी उखाड़ने वालों के लिए अपने गाल; मैंने उपहास और थूक से अपना चेहरा नहीं छिपाया'* (यशायाह 50:6)[7982] , *'हे प्रभु, मुझसे दूर न रहो, क्योंकि संकट निकट है'* (भजन संहिता 21:12), *'गैर-यहूदी क्यों कहें, "उनका परमेश्वर कहाँ है?"'* (भजन संहिता 78:10)। हे यीशु मसीह, अपने दास को, शत्रु के कष्टों से पूरी तरह मुक्त होकर, इस अच्छे काम को पूरा करने के बाद, आपके भयानक न्याय के सामने धैर्यपूर्वक उपस्थिति होने का अनुग्रह दें: क्योंकि आपके राज्य के प्रत्येक स्थान पर, महिमा, सम्मान और सामर्थ्य, अब और सदा और युगानुयुग तक आपका हो।

और जब उन्होंने 'आमीन' कहा, तो मंदिर हिल गया, और सभी भयभीत हो गए। फिर भी क्रूर उत्पीड़क परमेश्वर की शक्ति को स्वीकार करने से इनकार कर दिए।

तब यातना देने वाले ने आदेश दिया कि संत पोलेटो की खाल को पट्टियों में काटकर उसके शरीर से उधेड़ दिया जाए। लेकिन संत ने अपने शरीर से ढीली हो गई एक पट्टी को फाड़कर अग्रिपिना के मुँह पर फेंक दिया, और कहा:

'हे तुम जो किसी भी जानवर से भी अधिक अमानवीय और क्रूर हो! यह कैसे है कि हमें अपनी ही प्रतिमा में बनाने वाले ईश्वर को स्वीकार करने से इनकार करते हुए, तुम अपने ही जैसे मांस पर भी कोई दया नहीं दिखाते, और मेरे अंगों के टुकड़े-टुकड़े होते देखने में आनंद पाते हो?' लेकिन मुझे और भी क्रूर यातनाओं में डालो, ताकि तुम्हारी अमानवीयता और मेरी सहनशक्ति, दोनों ही सबके देखने के लिए स्पष्ट हो जाएँ; क्योंकि मैं यह सब अपने मसीह के लिए आनंदपूर्वक सहन करता हूँ, ताकि, उनकी कृपा से, मुझे आने वाले युग में विश्राम मिल सके।"

'ओह, तुम तो बिल्कुल पागल हो,' एग्रिपिपीनस ने पलटकर कहा, 'कि तुम अपने ही शरीर को भी नहीं बख्शते, जबकि तुम्हारे फेफड़ों से आंतें बाहर गिर रही हैं, और फिर भी तुम देवताओं की निंदा करना और मुझे क्रोधित करना बंद नहीं करते?'

तब एग्रिपिपीनस ने संत को एक पेड़ से लटकाने और उसके शरीर पर तब तक प्रहार करने का आदेश दिया जब तक कि बिची हुई मांसपेशियाँ हड्डियों से पूरी तरह से अलग न हो जाएँ और लगभग सारा खून निकल न जाए। और उसने लोहे के कसकरों से शहीद के पवित्र चेहरे को चीर-फाड़ डाला, ताकि मानव रूप का कोई निशान भी न बचे, बल्कि केवल हड्डियाँ ही रह जाएँ। फिर भी संत पोलेटो ने निडर होकर, यातना देने वाले को उसकी क्रूरता के लिए फटकारा और मूर्तियों तथा मूर्तिपूजकों को शाप दिया।

तब यातना देने वाले ने कहा:

'पोलेटो! अगर तुम इतने जिद्दी और अडिग नहीं होते, तो तुम उन सबसे बुद्धिमान पोलेटो, दार्शनिकों के नेता[7983] , जो दैवीय शिक्षाएँ रचते थे, जैसे होते।'

लेकिन संत ने उत्तर दिया:

'यद्यपि मेरा नाम भी पोलेटो जैसा ही है, पर मैं उसी विचारधारा का अनुयायी नहीं हूँ। केवल नाम ही उन लोगों को एक नहीं कर सकता जिन्हें उनके विश्वास विभाजित करते हैं। इसलिए, न तो मैं उस पोलेटो जैसा हूँ, और न ही पोलेटो मेरे जैसा है, सिवाय केवल नाम के।' मैं उस दर्शन को सीखता और सिखाता हूँ जो मसीह का है, जबकि वह उस दर्शन का शिक्षक है जो परमेश्वर के सामने मूर्खता है; क्योंकि लिखा है: *'मैं बुद्धिमानों की बुद्धि को नाश कर दूँगा, और समझदारों की समझ को अलग कर दूँगा'* (1 कुरिन्थियों 1:19; तुलना करें यशायाह 29:14)। जहाँ तक पोलेटो की बताई जाने वाली शिक्षाओं का प्रश्न है, जिन्हें आप 'दैवीय' कहते हैं, वे झूठी कल्पनाएँ हैं जो चालाकी भरे शब्दों के द्वारा, भोले-भाले मूर्खों के मन को भ्रष्ट करती हैं।

जब संत बोल चुके, तो एग्रिपिपीनस चुप हो गया, क्योंकि वह नहीं जानता था कि उत्तर में और क्या कहे या उसके साथ क्या करे, और वह उसके महान धैर्य और साहसी उत्तरों से चकित था। उसने उसे जेल ले जाने और यह सुनिश्चित

[7982] ये भविष्यसूचक शब्द, अपनी संपूर्णता में, हमारे प्रभु यीशु मसीह के उद्धारकारी दुखों को संदर्भित करते हैं। फिर भी, निष्पक्षता से कहें तो, वे कुछ हद तक मसीह के शहीदों पर भी लागू हो सकते हैं, क्योंकि अपने दुखों के माध्यम से वे मसीह के दुखों के साथ एकजुट होते हैं।

[7983] *दार्शनिक* – ग्रीक शब्द से, जिसका अर्थ है 'ज्ञान का प्रेमी'। यह नाम उन विद्वानों को दिया गया है जिन्होंने अस्तित्व के सर्वोच्च प्रश्नों के अध्ययन के लिए स्वयं को समर्पित किया है: जैसे कि ईश्वर, संसार और मानव की उत्पत्ति और नियम, तथा संसार के अस्तित्व के अंतिम उद्देश्य, आदि। – पोलेटो – प्राचीन काल के सबसे प्रसिद्ध और महान दार्शनिक (ईसा पूर्व 5वीं शताब्दी के अंत और 6वीं शताब्दी की शुरुआत), जिन्होंने अपने विचारों की गहराई के लिए उल्लेखनीय लेखन की एक विशाल संपदा छोड़ी।

करने का आदेश दिया कि उसका कोई भी परिचित उससे मिलने न आ सके। हालाँकि, कहीं पवित्र शहीद न मर जाएँ, इसलिए यातना देने वाले ने आदेश दिया कि उन्हें हर दिन थोड़ी सी रोटी और पानी दिया जाए। वह यह नहीं जानता था, वह दुष्ट इंसान, कि *'मनुष्य केवल रोटी से जीवित नहीं रहता, बल्कि प्रभु के मुख से निकले हर [वचन] से जीवित रहता है'* (व्यवस्थाविवरण 8:3)। फिर भी मसीह के शहीद ने मूर्तिपूजकों के हाथों से कुछ भी स्वीकार नहीं किया और अठारह दिनों तक बिना भोजन या पानी के रहे, ताकि धर्मग्रंथ का वचन उनमें पूरा हो जाए: *'धर्मी अपने विश्वास से जीवित रहेगा'* (हाबकूक 2:4)। उसे आशा थी कि जिसने दानिय्येल को सिंहों के बीच कूएँ में (दानिय्येल 6) जीवित रखा था, वही उसे जेल में भी अमर भोजन से जीवित रखेगा। रक्षकों ने, यह देखकर कि वह न रोटी स्वीकार कर रहा है और न पानी, उससे कहा:

'खाओ, मनुष्य, और पीओ, कहीं ऐसा न हो कि तुम मर जाओ, और हम तुम्हारे कारण मुसीबत में पड़ जाएँ।'

लेकिन धन्य ने उत्तर दिया:

'भाइयो, यह न सोचो कि यदि मैं आपका भोजन स्वीकार नहीं करता तो मैं मर जाऊँगा; आप रोटी से पोषण पाते हैं, परन्तु मैं परमेश्वर के वचन से पोषण पाता हूँ, जो युगानुयुग तक रहता है – आप मांस से तृप्त होते हैं, परन्तु मैं पवित्र प्रार्थनाओं से तृप्त होता हूँ – आप दाखरस से प्रसन्न होते हैं, परन्तु मैं मसीह, सच्ची दाख की लता से प्रसन्न होता हूँ।'

इसके बाद, प्रांतीय राज्यपाल एग्रिपिनस ने, यह देखकर कि वह किसी भी तरह से प्लेटो को मसीह से विमुख नहीं कर सकता, उसे तलवार से सिर कलम करने की सज़ा सुनाई। शहीद को शहर से बाहर ले जाया गया। प्रार्थना के लिए एक क्षण का समय माँगने के बाद, उसने अपने हाथ ऊपर उठाए और कहा:

'मैं तुझसे धन्यवाद करता हूँ, हे प्रभु यीशु मसीह, कि अपने पवित्र नाम से तूने मुझे, अपने दास को, शत्रु के फंदे से बचाया है और मुझे यह अनुग्रह दिया है कि मैं तेरे लिए उठाए गए इस संघर्ष के मार्ग को योग्य रूप से पूरा करूँ। और अब मैं तुझसे प्रार्थना करता हूँ: मेरी आत्मा को शांति से ग्रहण कर, क्योंकि तू युगानुयुग धन्य है। आमीन।'

तब, अपने पवित्र सिर को झुकाते हुए, उन्होंने उस सैनिक से कहा जो उनका सिर कलम करने वाला था:

'जैसा तुम्हें आज्ञा दी गई है, मेरे मित्र, वैसा ही करो।' और उसी क्षण उनका सिर कलम कर दिया गया। इस प्रकार पवित्र शहीद प्लेटो ने मसीह के लिए संघर्ष किया और मृत्यु को प्राप्त हुए, ताकि वे उनके साथ अनंतकाल तक जीवित रहें और राज्य करें[7984] ।

कॉन्टाकियन, स्वर 3:

आपकी पवित्र स्मृति संपूर्ण जगत को आनंदित करती है, जो सभी विश्वासियों को आपके अति सम्माननीय मंदिर में एकत्रित करती है, जहाँ, अब आनंद में एकत्रित होकर, हम भजनों और हर्षोल्लास के साथ गीत गाते हैं। इसी कारण, प्लेटो, हम आपसे पुकारते हैं: हे पवित्र एक, अपने नगर को मूर्तिपूजक आक्रमण से बचाओ।

पवित्र शहीदों रोमानुस और युवक वरुल का कष्टकथा

18 नवंबर को स्मरण किया जाता है

[7984] संत प्लेटो की शहादत लगभग 306 ईस्वी में हुई। – उनकी मृत्यु के बाद, कई लोगों को जिन्होंने उनसे प्रार्थना की, उन्हें उनके चमत्कारिक सहयोग प्राप्त हुआ। इस प्रकार, सातवें सार्वभौमिक परिषद (787) में, जॉन क्राइसोस्टोम के शिष्य, संत नील के एक पत्र से एक अंश पढ़ा गया, जो पवित्र शहीद प्लेटो द्वारा किए गए एक चमत्कार के बारे में था।

गालातिया के एक भिक्षु के बेटे को अचानक हमला करने वाले बर्बर लोगों ने बंदी बना लिया था। उस बूढ़े ने आँखों में आँसू लिए, इस मुश्किल घड़ी में मदद के लिए अपने देशवासी, शहीद प्लेटो से प्रार्थना की। और देखो, उसके बेटे के सामने एक घुड़सवार प्रकट हुआ, जो अपने साथ एक और घोड़ा लाया था, और उसने उस युवक से उस पर सवार होने के लिए कहा। युवक ने उसे शहीद के रूप में पहचान लिया, क्योंकि उसने अक्सर उसे एक प्रतिमा में इसी तरह चित्रित देखा था; युवक घोड़े पर सवार हो गया; और संत, उसे उसके पिता के हवाले करने के बाद, अदृश्य हो गए। कॉन्स्टेंटिनोपल में, सम्राट अनास्तासियस प्रथम (491–518) ने इस शहीद के सम्मान में एक चर्च बनवाया, और सम्राट जस्टिनियन (शासनकाल 527–565) ने इसे पुनर्स्थापित किया।

पवत्रि शहीद रोमन फलिसि्तीन के मूल नविासी थे और उन्होंने सेज़रयिा की कलीसयिा में एक डकिन के रूप में सेवा की। मूर्तपिूजकों द्वारा ईसाइयों के उत्पीड़न के दौरान, वे अंतीयक में रहे[7985] , सुसमाचार का प्रचार करते हुए और वशि्वासयिों को मजबूत करते हुए ताकि वे मसीह की गवाही में दृढ़ रह सकें। जब दुष्ट एपार्क एस्क्लेपयिाडेस ने स्थानीय ईसाई चर्च को धूल चटाने की कोशशि की, तो संत रोमनस ने ईसाई लोगों से एपार्क का वरिोध करने और उसे पवत्रि चर्च को नष्ट करने की अनुमतिन देने का आग्रह कयिा।

उन्होंने अपने साथयिों से कहा, 'अब हम ईश्वर के वेदयिों के लिए संघर्ष का सामना कर रहे हैं; एस्क्लेपयिाडेस देश का दुश्मन है और वह हमसे ईश्वर को छीनना चाहता है, और हम अच्छा करेंगे यदि ईश्वर की वेदयिों की रक्षा करते हुए, हम पवत्रि चर्च की दहलीज पर घायल होकर गरि जाएँ। यह संघर्ष चाहे जैसा भी समाप्त हो, हम ईसाई वजियी होंगे: यदि हम ईश्वर के घर को नष्ट होने से रोकते हैं, तो हम पृथ्वी पर संघर्षरत कलीसयिा में वजिय प्राप्त करेंगे; और यदि हम पवत्रि वेदी पर बलदिान हो जाते हैं, तो हम स्वर्ग में वजियी कलीसयिा में वजिय का गीत गाएंगे।

इन शब्दों से उन्होंने सभी को पवत्रि मंदरि की रक्षा करने और मृत्यु तक दृढ़ संकल्प के साथ वरिोध करने के लिए उत्साहति कयिा, और एपार्क को मंदरि में प्रवेश करके उसे नष्ट करने की अनुमतिन देने के लिए कहा।

उस समय, एक मूर्तपिूजक त्योहार चल रहा था, और मूर्तपिूजकों की एक बड़ी भीड़ अपने पत्नयिों और बच्चों के साथ मूर्तपिूजक मंदरि में उमड़ रही थी। तब संत रोमन दवि्य उत्साह से भर गए; वे नास्तकि लोगों के भीड़ में घुस गए और ऊँचे स्वर में उनकी भूल की नदिा करने लगे। उन्होंने तो ईपार्क एस्कलेपयिाडेस को खुद भी रोक लयिा जब वह मूर्तपिूजक मंदरि में प्रवेश कर रहा था, और उससे कहा:

'एपार्क, मूर्तयिों के पास जाकर तुम भटक गए हो: मूर्तयिाँ देवता नहीं हैं, बल्कि एक ही सच्चा ईश्वर है, यीशु मसीह।'

एपार्क ने तुरंत रोमानुस को पकड़ने और उसके मुँह पर बुरी तरह मारने का आदेश दयिा। फरि, न्यायपीठ पर बैठकर, उसने उसे लंबे समय तक मसीह का त्याग करने के लिए मजबूर कयिा; लेकनि जब उसने देखा कि वह अडगि रहा, तो उसने उसे यातना देने का आदेश दयिा। उसे लटकाया गया, वभिन्नि उपकरणों से पीटा गया, और लोहे के कसकर बंद होने वाले कंगनों से यातना दी गई। लेकनि संत रोमनस ने, इन यातनाओं को बहादुरी से सहते हुए, एकमात्र ईश्वर, सभी का सृष्टकिर्ता होने की गवाही दी, और सत्य को न मानने की अपनी मूर्खता के लिए एपार्क को फटकारा।

जब संत इस प्रकार कष्ट सह रहे थे और अपने यातनाओं को सहते हुए, साहसपूर्वक मसीह का प्रचार कर रहे थे, तो वहाँ एक बड़ी भीड़ खड़ी थी—अवशि्वासी और वशि्वासी दोनों—जो मसीह के लिए इस पीड़ति के पराक्रम को देख रही थी। पास में ही वरुला नाम का एक ईसाई लड़का खड़ा था। उस पर नज़र पड़ते ही, शहीद ने अपने यातनाकर्ता से कहा:

'यह जवान लड़का तुमसे, जो वरषि्ठ हो, अधकि बुद्धमिान है, भले ही वह अभी भी एक बच्चा है – क्योंकि वह सच्चे ईश्वर को जानता है, जबकि तुम, अपनी उन्नत आयु में, उन्हें नहीं जानते।'

तब राज्यपाल ने उस लड़के को अपने पास बुलाकर उससे पूछा:

'तुम कसि ईश्वर की पूजा करते हो?'

'मैं मसीह की पूजा करता हूँ,' लड़के ने उत्तर दयिा।

एपार्क ने उससे पूछा:

– एक ईश्वर की पूजा करना बेहतर है, या कई की?

'एक ही ईश्वर, यीशु मसीह की पूजा करना बेहतर है,' लड़के ने उत्तर दयिा।

गवर्नर ने उससे फरि पूछा:

'मसीह सभी देवताओं से कसि तरह बेहतर हैं?'

लड़के ने उत्तर दयिा:

'मसीह श्रेष्ठ हैं क्योंकि वे सच्चे ईश्वर हैं और उन्होंने हम सभी को बनाया है, जबकि आपके देवता राक्षस हैं और उन्होंने कसिी को नहीं बनाया है।'

[7985] यह घटना 17 नवंबर 303 को, रोमन सम्राट डायोक्लेटयिन के सह-शासक मैक्समियिन गैलेरयिस के शासनकाल के दौरान हुई।

और उस लड़के ने कई अन्य बातों के बारे में कहा, मानो वह सबसे वदि्वान धर्मशास्त्री हो: पवत्रि आत्मा, जो उसके भीतर काम कर रहा था, ने उसके होठों से ऐसी स्तुति कराई कि वह अधर्मी एपार्क और सभी मूर्तपिूजक लज्जति हो गए।

यातना देने वाले और वहाँ मौजूद सभी लोग, उस लड़के की बुद्धि और उसके बुद्धमिानी भरे शब्दों से चकति होकर, उसकी बातों का खंडन न कर पाने की अपनी अक्षमता पर बहुत शर्मदिगी महसूस कर रहे थे। इसलिए, यातना देने वाले ने आदेश दिया कि वरुण को बेरहमी से कोड़ा मारा जाए। लंबी कोड़ों की पटिाई के बाद, वरुल कमजोर होने लगा और उसने एक पेय माँगा। लेकनि उसकी माँ, जो भीड़ के बीच खड़ी होकर अपने बेटे के कष्टों को देखकर आनंदति हो रही थी, उसे कमजोर होते और पानी मांगते देख, ने दृढ़ता से आदेश दिया कि वह अंत तक साहसपूर्वक पीड़ा सहन करे। जब यातना देने वाले ने लड़के का सरि तलवार से कलम करने का आदेश दिया, तो उसकी माँ ने उसे अपनी बाहों में उठा लिया और उसे फांसी के स्थान पर ले गई। उसे गले लगाते और चूमते हुए, उसने उसे सांत्वना दी और मजबूत किया, ताकि वह अपने सरि के ऊपर तलवार देखकर न डरे:

'डरो मत, मेरे बेटे,' उसने कहा। 'डरो मत, मेरे प्यारे बच्चे! मृत्यु से मत डरना! तुम मरोगे नहीं, बल्कि तुम हमेशा के लिए जयिोगे! घबरा मत, मेरे फूल! तुम्हें तुरंत ही स्वर्ग के बगीचों में ले जाया जाएगा!' 'तलवार से मत डरो! जैसे ही तुम्हारा सरि कलम हो जाएगा, तुम तुरंत मसीह के पास जाओगे और उनकी महमिा को देखोगे। वह तुम्हें प्रेम से स्वीकार करेंगे, और तुम उनके साथ अकथनीय आनंद में जयिोगे, उनके पवत्रि स्वर्गदूतों के साथ परमानंद का आनंद लेते हुए।'

इस प्रकार अपने बच्चे को सांत्वना देते हुए, धर्मनष्ठि माँ उसे फांसी के स्थान पर ले गईं। लड़के का सरि कलम हो जाने के बाद, उसकी माँ ने उसके रक्त को एक साफ पात्र में इकट्ठा किया और, उसका शरीर लेकर, उसे आनंद के आँसुओं से स्नान कराया, उसे प्यार से चूमते हुए और इस बात की प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कि उसके पुत्र ने मसीह के लिए अपना रक्त बहाया था, वह रक्त जसिे उसने स्वयं जन्म दिया था। बाद में, उसने अपने पुत्र के शरीर को सम्मानपूर्वक दफनाया।

संत बरुल की गर्दन कटने के बाद, संत रोमन को खंभे से बाँधकर जलाने की सज़ा दी गई। बँधे हुए और लकड़ी के घेरे से घरि हुए, संत रोमन—जबकि नौकरों ने अभी आग नहीं लगाई थी या लकड़ी को प्रज्वलति नहीं किया था, और वे न्यायाधीश के अंतमि आदेश का इंतजार कर रहे थे—ने चिता के बीच से अपने अत्याचारियों को संबोधति करते हुए ज़ोर से पुकारा:

'आग कहाँ है? तुम इसे क्यों नहीं जलाते? इसे जलाओ, ताकि लपटें मुझे चारों ओर से घेर लें।'

जब आग जलाई गई और लकड़ी चारों ओर से भड़क उठी, तो अचानक मूसलाधार बारशि हुई और लपटों को बुझा दिया। संत रोमन जीवति रहे और आग से उन्हें कोई भी हानि नहीं हुई। इसके बाद, पवत्रि शहीद के साहसी शब्दों के कारण—क्योंकि उसने नर्दियी मूर्तपिूजकों को फटकारा था, उनकी मूर्खता की नंदिा की और उनके देवताओं को शाप दिया, जबकि एकमात्र ईश्वर, मसीह की महमिा की—अत्याचारी ने आदेश दिया कि उसकी जीभ काट दी जाए। लेकनि उसने स्वयं अपनी जीभ अपने अत्याचारियों को काटने के लिए दे दी। फिर भी, ईश्वर की महमिा करने वाली उसकी जीभ काट दिए जाने के बाद भी, मसीह का यह स्वीकारकर्ता चुप नहीं हुआ; बल्कि एक अलौककि तरीके से, बिना जीभ के, वह पहले की तरह ही स्पष्ट रूप से बोला, एकमात्र ईश्वर की महमिा करता रहा। फिर उसे एक कालकोठरी में डाल दिया गया, जहाँ वह लंबे समय तक अपने पैरों में बेड़ियाँ पड़ी रहने के साथ रहा। जब सम्राट मैक्समियिन को यह बताया गया कि जीभ कट जाने के बाद भी वह अच्छी तरह बोल सकता है, तो सम्राट ने उसे घुटन से मारने का आदेश दिया। सैनकिों ने कालकोठरी में जाकर उसके गले में रस्सी कस दी और उसे घुटन से मार डाला[7986] ।

इस प्रकार पवत्रि शहीद रोमानस ने मसीह के लिए अपने दुख सहने का कार्य पूरा किया, जनिके राज्य में अब वह महमिामय है, और सदा-सदा पवत्रि त्रमिूर्ति की महमिा करता है। आमीन।

पवत्रि शहीदों ज़क्केयस और अल्फीयस का स्मरणोत्सव

18 नवंबर को स्मरणोत्सव

[7986] 303 में नधिन हुआ।

पैलेस्टाइन के केसरिया में, जब सम्राटों के शासन की बीसवीं वर्षगांठ नजदीक आई, तो जेलों में बंद कैदियों को उनके अपराधों के लिए परंपरागत रूप से क्षमादान दिया जाता था। डायोक्लेटियन के शासनकाल में भी ऐसा ही हुआ। फिर भी, जहाँ प्रांतीय राज्यपाल सबसे घोर अपराधियों को भी स्वतंत्रता प्रदान कर देता था, वहीं वह ईसाइयों को सबसे क्रूर यातनाएँ देता था। उस समय, गादारा के चर्च के एक डिकन, ज़कैयस[7987] को ईसाई धर्म की शिक्षा देने के लिए गिरफ्तार किया गया था। जब अदालत में उनके धर्म के बारे में पूछा गया, तो उन्होंने निडरता और साहस से मसीह की गवाही दी। इसके लिए, उसे क्रूर यातनाएँ दी गईं: उसे कोड़ों से पीटा गया, फिर पंजे से नोचा गया और अंत में, उसके पैरों को हत्थे में डालकर, उसे एक कालकोठरी में डाल दिया गया। संत ने बहादुरी से अपनी यातनाओं को सहन किया। जब संत ज़कैयस को यातनाएँ दी जा रही थीं, तब मसीह के नाम के एक अन्य स्वीकारकर्ता, अल्फियस नामक व्यक्ति को अदालत में लाया गया। वह एक कुलीन परिवार से था और ज़कैयस का रिश्तेदार था; उसका जन्म फ़िलिस्तीन के शहर एलेउथेरोपोलिस में हुआ था[7988] । जब डायोक्लेटियन द्वारा ईसाइयों पर अत्याचार शुरू हुआ, तब अल्फियस सेज़रिया के चर्च में रीडर (पाठक) का पद संभाल रहा था। ईसाई धर्म के स्वीकारियों के खिलाफ शुरू किया गया उत्पीड़न अत्यंत क्रूर था, और कई ईसाई, यातनाओं की कठोरता को सहन न कर पाकर, ईसाई धर्म से भटक गए और मूर्तियों को बलिदान चढ़ाने के लिए पहले से ही तैयार थे। तब ईश्वर के प्रति उत्साही अल्फीयस, धर्मत्यागी लोगों के भीड़ में घुस गए और उन्हें मूर्तिपूजक बलिदानों से हटा दिया। इसके लिए उन्हें पकड़ लिया गया और बेड़ियों में जकड़कर एक कालकोठरी में ले जाया गया। कुछ दिनों बाद, उन्हें अपने रिश्तेदार ज़कैयस के समान ही यातनाएँ दी गईं: उन्हें कोड़ों से पीटा गया, पंजे से नोचा गया, और अंत में धर्मी ज़कैयस के साथ ही एक ही कील्हू से बाँध दिया गया। वे एक दिन और एक रात इसी स्थिति में रहे। जब इन यातनाओं के बाद भी, पवित्र शहीदों ने बिना रुके मसीह की गवाही देना जारी रखा, तो उनका सिर कलम कर दिया गया[7989] । इस प्रकार पवित्र शहीदों का निधन हुआ, जिन्होंने मसीह के नाम के लिए बहुत कष्ट सहन किए।

2 दिसंबर

19 नवंबर (पुराना कैलेंडर)

पैगंबर सेंट ओबादिया का जीवन

19 नवंबर को स्मरण किया जाता है

पवित्र भविष्यवक्ता ओबद्याह शेchem के पास बेथ-अरामा गाँव के मूल निवासी थे[7990] ; उन्होंने इस्राएल के राजाओं के दरबार में सेवा की और राजा अहब के व्यवस्थापक थे[7991] । जवानी से ही वह परमेश्वर का बहुत भयभीत था, और जब सारा इस्राएल परमेश्वर से भटक गया और घृणित baal की उपासना करने लगा[7992] , तो उसने गुप्त रूप से अपने पूर्वजों के एकमात्र सच्चे परमेश्वर की सेवा की, जिन्होंने इस्राएल को मिस्र से छुड़ाया था और उन्हें लाल सागर को

[7987] गादारा शहर गलीलियाई सागर के दक्षिण-पूर्व में, हयरोमैक्स नदी के दक्षिणी तट पर स्थित था।

[7988] एलेउथेरोपोलिस फिलिस्तीन के दक्षिणी भाग में, जो पहले यहूदिया था, स्थित था।

[7989] यह वर्ष 303 का था।

[7990] शेchem – अब नाब्लस – जो फ़िलिस्तीन के प्राचीन शहरों में से एक था – माउंट एफ्राइम पर सामरिया में स्थित था, यह यरूशलेम से 18 घंटे की यात्रा पर, गेरीज़िम और गेबाल के पहाड़ों के बीच एक ऊँची, समृद्ध और उपजाऊ घाटी में था। आज, इस शहर ने अपनी पूर्व की प्रमुख स्थिति खो दी है, हालांकि यह अपने कई प्राचीन स्मारकों में समृद्ध है जिन्हें संरक्षित किया गया है।

[7991] इज़राइल का सबसे दुष्ट राजा ओम्री का पुत्र आहाब, 924 से 903 ईसा पूर्व तक राज किया।

[7992] बाअल, जिसका हिब्रू में अर्थ 'प्रभु' या 'स्वामी' है, का फिनिशियाई लोगों द्वारा सर्वोच्च देवता के रूप में सम्मान किया जाता था, जिसकी इज़राइलियों ने भी अपने धर्म को त्यागकर पूजा की। उसकी ही तरह, मूर्तिपूजकों ने सूर्य और पुरुष प्रजनन क्षमता को देवता का दर्जा दिया, जो उसकी सहधर्मिणी अस्तार्टे के माध्यम से कार्य करता था, जिसकी ही प्रतिमा में चंद्रमा को भी देवता का दर्जा दिया गया था। इन देवताओं की पूजा अत्यधिक पतन और कामुक, अनैतिक अनुष्ठानों से चिह्नित थी।

सूखी भूमि पर पार कराया था। जब दुष्ट यज़ेबेल प्रभु के सभी भविष्यद्वक्ताओं का संहार कर रही थी[7993] , तब ओबद्याह ने एक सौ भविष्यद्वक्ताओं को लिया, उन्हें दो गुफाओं में छिपा दिया—प्रत्येक में पचास—और भविष्यवक्ता एलियाह के दिनों में हुई अकाल के दौरान उन्हें रोटी और पानी से खिलाया। एक दिन आहाब ने ओबद्याह को बुलाया और उससे कहा:

'देश भर में सभी झरनों और नदियों के पास जाओ; शायद हमें अपने घोड़ों और खच्चरों को खिलाने के लिए कुछ घास मिल जाए, ताकि हमारा पशुधन नष्ट न हो जाए।'

इस प्रकार उन्होंने खोज करने के लिए देश को आपस में बाँट लिया: आहाब एक मार्ग से चला गया, और ओबद्याह दूसरे मार्ग से। जब ओबद्याह सड़क पर चल रहा था, तो एलियाह उसके सामने प्रकट हुआ। उसने उसे पहचान लिया, मुँह के बल गिर पड़ा, और कहा:

'क्या यह आप हैं, मेरे स्वामी एलियाह?'

उसने उत्तर दिया,

'यह मैं हूँ; जाओ, अपने स्वामी से कहो: "इल्याह यहाँ हैं।"'

उसने कहा:

'मैंने क्या बुरा किया है कि आप अपने सेवक को अहाब के हाथ सौंप दें ताकि उसे मार डाला जाए? यहोवा आपके परमेश्वर की कसम! ऐसा कोई राष्ट्र या राज्य नहीं है जहाँ मेरे स्वामी ने आपको खोजने के लिए संदेश न भेजा हो; और जब उन्होंने उसे बताया कि आप वहाँ नहीं थे, तो उसने उस राज्य और उसके लोगों से यह शपथ करवाई कि वे आपको नहीं ढूँढ पाए। और अब आप कहते हैं, 'जाकर अपने स्वामी से कहो: एलियाह यहाँ है।' जब मैं तुम्हें छोड़कर जाऊँगा, तो यहोवा का आत्मा तुम्हें ले जाएगा, मुझे नहीं पता कहाँ; और यदि मैं अहब को सूचित करने जाऊँ, और वह तुम्हें न पाए, तो वह मुझे मार डालेगा, परन्तु आपका सेवक अपनी जवानी से परमेश्वर का भय मानता आया है। क्या मेरे स्वामी को यह नहीं बताया गया कि जब यज़ेबेल यहोवा के भविष्यद्वक्ताओं को मार रही थी, तब मैंने क्या किया—कि कैसे मैंने यहोवा के सौ भविष्यद्वक्ताओं को, एक समय में पचास-पचास करके, गुफाओं में छिपाया और उन्हें रोटी और पानी खिलाया? फिर भी अब आप कहते हैं, 'जाओ, अपने स्वामी से कहो: एलियाह यहाँ है।' वह मुझे मार डालेगा।

और इलियाह ने कहा:

'जिस सेनाओं के यहोवा जीवित हैं, जिसके सामने मैं खड़ा हूँ! आज मैं उसे दर्शन दूँगा।'

इस प्रकार ओबद्याह अहब से मिलने गया और उसे इल्या के बारे में बताया। और जब अहब ने इल्या को देखा, तो परमेश्वर के भविष्यवक्ता ने उसे उसकी भूल के लिए फटकारा और फिर एक बड़ा चमत्कार किया: उसने बलिदानों और पानी पर स्वर्ग से आग उतारी, जैसा कि तीसरी राजाओं की पुस्तक में लिखा है (3 राजा 18:4–8)। यह देखकर ओबद्याह अपने परमेश्वर की सर्वशक्तिमान शक्ति में आनन्दित हुआ, और वह उस के प्रति प्रेम से भर गया और उस के लिए उत्साह से जल उठा, और उसने उसकी आज्ञा का पालन करते हुए और अधिक लगन से उसकी सेवा की। फिर, जब अहब की मृत्यु हो गई और उसका पुत्र यहोआहाज़िया[7994] इस्राएल का राजा बना, तो ओबद्याह सेना में सेवा करता था। संत डोरोथेयस और धन्य जेरोम की गवाही के अनुसार, वह अहज़ियाह द्वारा भविष्यवक्ता एलियाह के पास भेजे गए तीन अधिकारियों में से एक था; इनमें से, दो स्वर्ग से भविष्यवक्ता के वचन पर गिरी आग में भस्म हो गए, जबकि तीसरा—जो ओबादियाह था—बचा रहा: वह विनम्रता से पवित्र भविष्यवक्ता एलिया के पास गया और उनसे विनती की, और ने उससे कहा: 'हे परमेश्वर के मनुष्य! न तो मेरी आत्मा और न ही तेरे सेवकों—इन पचास की—आत्माओं को तेरी दृष्टि में तुच्छ समझा जाए।'

[7993] जेज़ेबेल, सिडोन के राजा-पुजारी की बेटी और आहाब की पत्नी, अत्यधिक दुष्टता और व्यभिचारी व्यवहार के लिए जानी जाती थी। उसके प्रभाव में अंधाधुंध आकर, अहब ने अपने सभी पूर्वजों को दुष्टता में पीछे छोड़ दिया और स्वयं को सबसे शर्मनाक मूर्तिपूजा में समर्पित कर दिया। उसने सामरिया में बाल का एक मंदिर बनवाया, जेजेबल को अपनी भूमि पर सीरिया और सिदोन के देवताओं के लिए वेदी बनाने की अनुमति दी, और अपनी सेवा में झूठे मूर्तिपूजक नबियों की एक फौज रखी। अंत में, यज़ेबेल ने सच्चे परमेश्वर के भविष्यद्वक्ताओं पर अत्याचार शुरू किया, और यदि राजा का व्यवस्थापक ओबद्याह उन्हें उसकी क्रोध से नहीं छिपाता, तो वे सभी मर जाते (1 राजा 18:4)।

[7994] इज़ेकियाह, इज़राइल का राजा और अहब का उत्तराधिकारी, अपने शासन के दूसरे वर्ष में, जब उसके पिता जीवित थे, मर गया और सिंहासन अपने भाई यहोराम को छोड़ गया।

इसीलिए एलियाह ने उसे बचाया; और उठकर वह उसके साथ राजा के पास गया। उस समय से ओबद्याह ने राजा की सेवा छोड़ दी और पवित्र नबी एलियाह का अनुसरण किया, भविष्यवाणी की आत्मा प्राप्त की, प्रभु के नबियों को पोषित और संरक्षित किया और स्वयं नबी का अनुयायी बना (2 राजा 1:13–15)। उनकी मृत्यु के बाद उन्हें उनके पूर्वजों के साथ दफनाया गया[7995] ।

भारत के राजकुमार आदरणीय बरलाम और जोआसाफ तथा उनके पिता, राजा अवनेर का जीवन

19 नवंबर को स्मरण किया जाता है

पूर्व में भारत नामक एक देश है, जो वास्तव में विशाल है, जिसमें कई लोग रहते हैं और जो हर प्रकार की संपत्ति और उपज में अन्य भूमि से श्रेष्ठ है; इसकी सीमाएँ फारस की सीमाओं के करीब तक फैली हुई हैं। इस देश में एक बार पवित्र प्रेरित थॉमस ने सुसमाचार का प्रचार किया था, लेकिन इसने मूर्तियों की पूजा को पूरी तरह से नहीं छोड़ा, क्योंकि कई लोग, जो मूर्तिपूजा में गहराई से जड़ें जमाए हुए थे, उद्धारदायक सिद्धांत को स्वीकार नहीं करते थे और दैवीय भ्रम से चिपके रहे। समय के साथ, दुष्टता कांटे की तरह फैल गई और धार्मिकता के अच्छे बीज को दबाने लगी, जिससे भारत में विश्वासियों की तुलना में बहुत अधिक मूर्तिपूजक हो गए।

उस देश में, अवनीर नामक एक राजा सिंहासन पर बैठा; वह शक्ति और धन में महान और गौरवशाली था, फिर भी आत्मा में बहुत गरीब था, क्योंकि वह एक मूर्तिपूजक था और ईश्वर के बजाय राक्षसों की सेवा करता था, निर्जीव मूर्तियों की पूजा करता था, और उसने मसीह की कलीसिया का, विशेष रूप से कलीसिया के शिक्षकों, बुजुर्गों और संतों का क्रूरता से उत्पीड़न किया। उसके कुछ दरबारी, मसीह में विश्वास करने और इस संसार की व्यर्थता को समझने के बाद, सब कुछ त्यागकर भिक्षु बन गए; जिसके परिणामस्वरूप, राजा को बहुत क्रोध आया। उसने कई भिक्षुओं को पकड़कर उन्हें मार डाला, और आदेश दिया कि हर जगह ईसाइयों को मूर्तियों की पूजा करने के लिए मजबूर किया जाए। उसने अपने शासन के सभी क्षेत्रों में राजकुमारों और प्रांतीय गवर्नरों को एक फरमान भी भेजा, जिसमें उन्हें उन सभी को हर तरह से यातना देने और मार डालने का आदेश दिया गया था जो मसीह में विश्वास करते थे और मूर्तियों की पूजा करने से इनकार करते थे। परिणामस्वरूप, कई विश्वासी डगमगा गए - और कुछ, यातनाओं को सहने की शक्ति न होने के कारण, विश्वास से भटक गए; लेकिन अन्य स्वेच्छा से यातनाओं को स्वीकार कर, अपने प्रभु के लिए बहुत कष्ट सहते हुए, अपने प्राण त्याग दिए। हालाँकि, अधिकांश लोगों ने खतरे को देखते हुए अपने विश्वास को छिपाए रखा, और गुप्त रूप से प्रभु की सेवा करते हुए उनके पवित्र आज्ञाओं का पालन किया, जबकि अन्य—विशेषकर भिक्षु—मरुभूमियों में भाग गए और वहाँ पहाड़ों और जंगली स्थानों में शरण ली।

उस समय, राजा के यहाँ एक पुत्र का जन्म हुआ और उसका नाम जोआसाफ रखा गया। वह शिशु अत्यंत सुंदर था, और इस असाधारण सुंदरता से ऐसा प्रतीत होता था कि यह उसकी महान आंतरिक सुंदरता का पूर्वाभास दे रही थी जो उसमें पाई जानी थी। राजा ने बहुत से ज्योतिषियों और भविष्यवक्ताओं को इकट्ठा किया, और उनसे पूछा कि जब वह शिशु वयस्क हो जाएगा तो उसके लिए क्या लिखा है। बहुत निरीक्षण करने के बाद, उन्होंने कहा कि वह उससे पहले आए सभी राजाओं से महान होगा। लेकिन भविष्यवक्ताओं में से एक, जो उन सभी में सबसे बुद्धिमान था—न तो तारों की चाल से, बल्कि, जैसा कि बिलाम ने एक बार दिव्य प्रकटीकरण के माध्यम से किया था[7996] —ने राजा से कहा:

[7995] ओबद्याह का दफ़न सामरिया में हुआ; वे ईसा पूर्व 10वीं शताब्दी के अंत और 9वीं शताब्दी की शुरुआत में रहे और सेवा की; उन्होंने एक भविष्यवाणी की पुस्तक छोड़ी, जो तथाकथित लघु भविष्यवक्ताओं में चौथे स्थान पर है और एक ही अध्याय से मिलकर बनी है। उनकी लगभग सभी भविष्यवाणियाँ आदोमियों, या एदोमियों के विरुद्ध निर्देशित हैं। पुस्तक के अंत में सियोन से उद्धार और प्रभु के राज्य की स्थापना के बारे में एक मसीही भविष्यवाणी है, जो स्पष्ट रूप से नए नियम की कलीसिया की ओर इशारा करती है।

[7996] (गिनती 22:1–41, 23:1–30, 24:1–25)। बिलाम मेसोपोटामिया में हरार के पास पेओर नगर का एक भविष्यवक्ता था। उसके बारे में यह अफवाह थी कि जिसे वह आशीर्वाद देता था, वह धन्य हो जाता था, और जिसे वह शाप देता था, वह शापित हो जाता था। मोआब का राजा बालक, इस्राएलियों की विजयों से भयभीत होकर, उन्हें शाप देने के लिए बिलाम को बुलाया; लेकिन, ईश्वर के मार्गदर्शन में, बिलाम ने शाप के बजाय आशीर्वाद के शब्द बोले।

'यह शिशु तुम्हारे राज्य में नहीं, बल्कि एक दूसरे राज्य में वयस्क होगा—जो बेहतर और अतुलनीय रूप से महान है; मैं यह भी मानता हूँ कि वह उस ईसाई धर्म को अपनाएगा जिसका तुम उत्पीड़न करते हो, और मुझे उम्मीद है कि मेरी भविष्यवाणी झूठी साबित नहीं होगी।'

जब राजा ने सुना कि उसका पुत्र ईसाई बनेगा, तो वह बहुत दुखी हुआ और इस बात पर विचार करने लगा कि वह इस भविष्यवाणी को सच होने से कैसे रोक सकता है। उसने कई उज्ज्वल कमरों के साथ एक विशेष, भव्य इमारत बनवाई, जहाँ जोआसाफ को पाला जाना था। जब वह बड़ा होने लगा और होश में आने लगा, तो राजा ने उसके लिए शिक्षकों और नौकरों को नियुक्त किया, जो कम उम्र के और सुंदर रूप वाले थे, और आदेश दिया कि वे राजकुमार के पास किसी बाहरी व्यक्ति को न आने दें, ताकि वह उनसे सिवाय किसी और को न देखे। इसके अलावा, राजा ने आदेश दिया कि वे राजकुमार से इस जीवन के दुखों: मृत्यु, बुढ़ापा, बीमारी और इस तरह की अन्य पीड़ाओं के बारे में कुछ भी न कहें, जिनका ज्ञान उसके आनंद में बाधा डाल सकता है; बल्कि वे उसके सामने केवल वही प्रस्तुत करें जो सुंदर और सुखद हो, ताकि उसका मन, हमेशा सुख-आनंद में व्यस्त रहने के कारण, भविष्य के बारे में न सोचे। उन्होंने यह भी आदेश दिया कि कोई भी मसीह के बारे में एक शब्द भी कहने की हिम्मत न करे, ताकि जोआसाफ मसीह का नाम भी न सुन सके; क्योंकि सबसे बढ़कर राजा इस नाम को उससे छिपाना चाहता था, इस डर से कि ज्योतिषी की भविष्यवाणी सच हो सकती है; और यदि कोई नौकर बीमार पड़ जाए, तो उसे राजकुमार की उपस्थिति से हटा दिया जाए, और उसकी जगह कोई और, जवान और सुंदर नियुक्त किया जाए, ताकि राजकुमार की आँखों को कुछ भी दुखद न दिखाई दे। जब राजा को पता चला कि उसके राज्य में अभी भी कुछ भिक्षु जीवित हैं—जिनके बारे में, उसे लगा, कोई निशान भी नहीं बचा था—तो वह बहुत क्रोधित हो गया और तुरंत सभी प्रांतों और शहरों में संदेशवाहक भेज दिए यह घोषणा करने के लिए कि, तीन दिनों के भीतर, पूरे राज्य में एक भी भिक्षु नहीं रहना चाहिए; और निर्दिष्ट समय के बाद उपस्थित पाए जाने वाले किसी भी व्यक्ति को जलाकर या सिर कलम करके मृत्युदंड दिया जाए: क्योंकि, राजा ने कहा, वे लोगों को सूली पर चढ़ाए गए की ईश्वर के रूप में पूजा करना सिखाते हैं।

इस प्रकार, राजा का पुत्र, उसके लिए तैयार की गई कोठरी में बंद, वयस्क हुआ, भारत और मिस्र के सभी ज्ञान में पारंगत हो गया, और अत्यंत बुद्धिमान और सूक्ष्मदर्शी था, तथा हर गुण से युक्त था। उसने इस बात पर विचार किया कि उसके पिता उसे इतनी एकांतवास में क्यों रखे हुए थे और उसने अपने एक संरक्षक से इस बारे में पूछा। उसने देखा कि उस युवक का मन पक्का था और वह बहुत दयालु था, उसने उसे विस्तार से वह सब कुछ बताया जो ज्योतिषियों ने उसके जन्म के समय उसके बारे में भविष्यवाणी की थी, और यह भी कि कैसे उसके पिता ने ईसाइयों, विशेषकर भिक्षुओं के खिलाफ उत्पीड़न शुरू किया था, जिनमें से कई को उसने मार डाला था, जबकि अन्य को उसने अपनी भूमि से निर्वासित कर दिया था; क्योंकि, दाई ने कहा, उसे डर था कि तुम ईसाई बन सकते हो। यह सुनकर राजकुमार चुप हो गया और अपने पालक पिता द्वारा कही गई बातों पर मन ही मन विचार करने लगा।

राजा अक्सर अपने पुत्र से मिलने आता था, क्योंकि वह उससे बहुत प्यार करता था। एक दिन, जोसाफ ने उससे कहा:

'पिताजी, मैं आपसे एक ऐसे मामले के बारे में कुछ पूछना चाहता हूँ जो मुझे लगातार दुख और उदासी देता है।'

उसके पिता, हृदय की पीड़ा से अभिभूत, ने उत्तर दिया:

'मुझे बताओ, मेरे प्रिय बच्चे, तुम्हें किस दुख ने घेर रखा है, और मैं तुरंत ही उसे खुशी में बदलने की कोशिश करूँगा।'

तब जोसाफ ने पूछा:

'मुझे यहाँ बंद रखने का कारण क्या है? आप मुझे दीवारों और द्वारों के पीछे क्यों छिपाते हैं, किसी भी निकास से वंचित क्यों रखते हैं, और मुझे सभी की दृष्टि से अदृश्य क्यों बना देते हैं?'

उसके पिता ने उत्तर दिया:

'मेरे बच्चे, मैं नहीं चाहता कि तुम कुछ भी ऐसा देखो जिससे तुम्हारे दिल में दुख हो और तुम एक आनंदमय जीवन से वंचित रहो; मैं चाहता हूँ कि तुम अपना पूरा जीवन अटूट आराम में, हर तरह के आनंद और उल्लास के साथ जियो।'

'तो फिर, पिताजी, यह जान लीजिए,' लड़के ने उत्तर दिया, 'कि यह कैद मुझे न तो आनंद देती है और न ही प्रसन्नता, बल्कि इतना दुख और शोक देती है कि मेरा भोजन और पेय भी मुझे मीठे नहीं बल्कि कड़वे लगते हैं: मैं इन द्वारों के परे की हर चीज़ को देखने के लिए तरसता हूँ; इसलिए, यदि आप नहीं चाहते कि मैं दुख से मर जाऊँ, तो मुझे अपनी पसंद की जगह जाने दें और अपनी आत्मा को उन दृश्यों के दर्शन से प्रसन्न करने दें जिन्हें मैंने अभी तक नहीं देखा है।

यह सुनकर राजा उदास हो गया, और उसने सोचा कि अगर वह अपने बेटे को बाहर जाने से रोकेगा, तो वह और भी अधिक दुख और शोक में डूब जाएगा; और इसलिए उसने अपने बेटे से कहा:

'ठीक है, मेरे बच्चे, जैसा तुम चाहो।'

और तुरंत उसने आज्ञा दी कि उत्तम घोड़े लाए जाएँ और राजसी सम्मान के अनुरूप सब कुछ तैयार किया जाए, और उसने अब अपने बेटे को जहाँ वह चाहता था वहाँ जाने से नहीं रोका। साथ ही, उन्होंने राजकुमार के परिचारकों को आदेश दिया कि वे यह सुनिश्चित करें कि कोई भी शर्मनाक या दुखद बात उसकी जानकारी में न आए, बल्कि वे उसे केवल वही दिखाएँ जो अच्छा और सुंदर हो, ऐसी चीजें जो आँखों और दिल को प्रसन्न करें; रास्ते में, उसने हर जगह गायकों के समूहों की व्यवस्था करने और विभिन्न मनोरंजक दृश्यों के साथ, हर तरह के संगीत को अपने आगे चलने का आदेश दिया, ताकि राजकुमार की आत्मा इन सब से प्रसन्न हो सके।

अक्सर इतने सम्मान और आनंद के साथ महल से निकलते हुए, राजकुमार एक दिन, अपने सेवकों की लापरवाही के कारण, दो आदमियों को देखता है, जिनमें से एक को कुष्ठ रोग था और दूसरा अंधा था। वह अपने साथ चल रहे लोगों से पूछता है: ये कौन हैं और वे ऐसी स्थिति में क्यों हैं? उसके परिचारक, जो अब मानवीय दुर्बलता को छिपाने में असमर्थ थे, ने उत्तर दिया:

'ये मानवीय दुख हैं, जो आम तौर पर लोगों पर हमारी नश्वर प्रकृति और हमारे शरीर की दुर्बलता के कारण आते हैं।'

लड़के ने पूछा:

'क्या यह हर किसी के साथ होता है?'

उन्होंने उत्तर दिया:

'हर किसी के साथ नहीं, बल्कि उन लोगों के साथ जिनके स्वास्थ्य को सांसारिक सुखों के दुरुपयोग से कमजोर किया जाता है।'

तब उस लड़के ने पूछा:

'यदि यह आमतौर पर सभी के साथ नहीं होता है, तो क्या जिन्हें इन दुर्भाग्यों का सामना करना है, वे पहले से जानते हैं, या ये अचानक और अप्रत्याशित रूप से आते हैं?'

उसके साथ चल रहे लोगों ने उत्तर दिया:

'मनुष्यों में से कौन भविष्य जान सकता है?'

राजकुमार ने सवाल पूछना बंद कर दिया, लेकिन जो उसने देखा था उससे उसका मन बेचैन था—एक ऐसी घटना जो उसके लिए असाधारण थी—और उसके चेहरे का भाव बदल गया। कुछ दिनों बाद, एक बार फिर यात्रा करते समय, उसकी मुलाकात एक कमजोर बूढ़े आदमी से हुई जिसका चेहरा झुर्रियों से भरा था, अंग सुस्त थे, पीठ झुकी हुई थी, बाल पूरी तरह से सफेद थे, दाँत नहीं थे और वह मुश्किल से बोल पा रहा था। उसे देखकर, युवा राजकुमार भयभीत हो गया और, उसे अपने सामने लाने का आदेश देते हुए, उन लोगों से पूछा जिन्होंने उसे लाया था: यह आदमी कौन था और वह ऐसी हालत में क्यों था? उन्होंने जवाब दिया:

'वह बहुत बूढ़ा है, और जैसे-जैसे उसकी ताकत धीरे-धीरे कम होती गई और उसके अंग कमजोर पड़ गए, वह उतना ही नाजुक हो गया है जितना आप उसे देख रहे हैं।'

युवक ने कहा:

'भविष्य में उसका क्या होगा, जब वह और भी कई साल जी लेगा?'

उन्होंने उत्तर दिया:

'और कुछ नहीं, सिवाय इसके कि मृत्यु उसे ले जाएगी।'

युवक ने पूछा:

'क्या यह सभी लोगों का भाग्य है, या यह केवल कुछ लोगों के साथ ही होता है?'

उन्होंने उत्तर दिया:

'यदि मृत्यु किसी व्यक्ति को उसके युवावस्था में न पकड़े, तो कई वर्षों के बाद उसके वृद्धावस्था की उसी दशा तक पहुँचना असंभव है।'

उस युवक ने पूछा:

'यह लोगों को कसि उम्र में होता है, और अगर मृत्यु बनिा कसिी अपवाद के सभी के लिए अनविार्य है, तो क्या इसे टालने और ऐसी नयिति से बचने का कोई तरीका नहीं है?'

उन्होंने उत्तर दयिा:

– अस्सी या सौ वर्ष की आयु में, लोग दुर्बलता की ऐसी अवस्था में पहुँच जाते हैं, और फरि वे मर जाते हैं; और ऐसा अन्यथा हो ही नहीं सकता, क्योंकि मृत्यु मनुष्य की स्वाभाविक नयिति है, और इसका आना अनविार्य है।

यह सब देखकर और सुनकर, उस बुद्धमिान युवक ने हृदय की गहराई से आह भरते हुए कहा:

'यदि ऐसा है, तो यह जीवन कड़वा और हर तरह के दुखों से भरा है; और कौन बेफक्रि रह सकता है, जो हमेशा मौत का इंतज़ार कर रहा हो, जसिका आना न केवल नश्चिति है बल्कि, जैसा आपने कहा, अज्ञात भी है?'

और वह अपने महल में गया, और बहुत दुखी था, लगातार मृत्यु पर वचिार करता हुआ और अपने आप से कहता हुआ:

'अगर हर कोई मरता है, तो मैं भी मरूँगा, और फरि भी मुझे नहीं पता कि कब... जब मैं मरूँगा, तो मुझे कौन याद करेगा? बहुत समय बीत जाएगा, और सब कुछ भुला दयिा जाएगा... क्या मृत्यु के बाद कोई और जीवन और कोई दूसरी दुनयिा नहीं है?'

और वह इन वचिारों से बहुत परेशान हो गया; फरि भी उसने अपने पति से कुछ नहीं कहा, बल्कि उपर्युक्त शक्षिक से वस्तिार से पूछा कि क्या वह कसिी ऐसे व्यक्ति को जानता है जो उसे यह सब बताकर उसका मन शांत कर सके, क्योंकि वह इस तरह के वचिारों से थका हुआ था। शक्षिक ने कहा:

'मैं तुम्हें पहले ही बता चुका हूँ कि तुम्हारे पति ने उन ज्ञानी संन्यासयिों के साथ क्या कयिा करते थे जो हमेशा ऐसे ही मामलों पर वचिार कयिा करते थे—उन्होंने कुछ को मार डाला और अपने गुस्से में, दूसरों को नर्विासति कर दयिा; और अब मुझे पता है कि उनमें से कोई भी हमारी सीमाओं के भीतर नहीं बचा है।'

इस पर वह युवक गहराई से दुखी हुआ, उसकी आत्मा बहुत कष्टति हुई, और उसने अपना जीवन अनवरत दुख में बतिाया: इस कारण, इस संसार की सारी मठिास और सुंदरता उसकी दृष्टि में घृणा और अशुद्धि के रूप में दखिाई दी। और ईश्वर, , जो चाहते थे कि सभी का उद्धार हो और वे सत्य के ज्ञान को प्राप्त करें, ने मानवजाति के प्रति अपनी प्रचलति प्रेम और दया में, उस युवक को नम्निलखिति प्रकार से सही मार्ग पर मार्गदर्शन कयिा।

उस समय बरालम नामक एक अति बुद्धमिान, सदाचार में पूर्ण, और दीक्षा प्राप्त पुरोहति संन्यासी थे, जो सेनारडि मरुभूमि में रहते थे। दविय प्रकटवाणी से नर्दिेशति होकर, उन्होंने राजकुमार की स्थति के बारे में जाना, रेगस्तिान छोड़ दयिा, एक व्यापारी का वेश धारण करने के लिए अपने कपड़े बदल लिए, एक जहाज पर चढ़ गए, और भारत के राज्य के लिए समुद्री यात्रा पर नकिल पड़े। जसि नगर में राजकुमार का महल था, वहाँ पहुँचकर, वह कई दनिों तक वहाँ रहा और राजकुमार तथा उसके अनुचर दल के बारे में वस्तिृत जानकारी इकट्ठी की। यह जानकर कि उपर्युक्त शक्षिक राजकुमार का सबसे करीबी था, वह बूढ़ा उसके पास गया और कहा:

'जानिए, मेरे स्वामी, कि मैं एक व्यापारी हूँ और एक दूर के देश से आया हूँ; मेरे पास एक ऐसा कीमती पत्थर है जैसा पहले कहीं नहीं मलिा है, और जसि मैंने अब तक कसिी को नहीं दखिाया है; लेकनि मैं आपको इसके बारे में इसलिए बता रहा हूँ क्योंकि मैं देखता हूँ कि आप एक बुद्धमिान और समझदार व्यक्ति हैं; इसलिए, मुझे राजकुमार के पास ले चलिए, और मैं उसे वह रत्न दूँगा, जसिका मूल्य कोई भी नहीं आंक सकता, क्योंकि वह सभी अच्छी और कीमती चीजों से श्रेष्ठ है: यह अंधों को दृष्टि, बधरिों को सुनने की शक्ति, मूक को वाणी और रोगयिों को स्वास्थ्य प्रदान करता है; यह लोगों से भूत-प्रेत भगाता है; यह सभी मामलों में मूर्खों को बुद्धि प्रदान करता है; और यह इसे प्राप्त करने वालों को सभी इच्छति आशीर्वाद प्रदान करता है।

पालक पति ने उससे कहा:

'तुम बूढ़े आदमी लगते हो, फरि भी व्यर्थ की बातें करते हो और बेहसिाब डींगें हाँकते हो: मैंने चाहे जतिने भी कीमती पत्थर और मोती देखे हों, और चाहे जतिने मेरे पास रहे हों, मैंने न तो ऐसा कोई पत्थर देखा है और न ही उसके बारे में सुना है जसिके पास तुम्हारे द्वारा वर्णति शक्ति हो।' हालाँकि, उसे मुझे दखिाओ, और यदि तुम्हारे शब्द सच साबति हुए, तो मैं तुरंत तुम्हें राजकुमार से मलिवाऊँगा, और वह तुम्हारा सम्मान करेगा और तुम्हें एक उपयुक्त इनाम देगा।

तब बरलाम ने कहा:

'आप यह कहने में सही हैं कि आपने ऐसा पत्थर कहीं भी न देखा है और न सुना है, लेकिन मेरे शब्दों पर विश्वास करें: वह मेरे पास है। मैं अपनी वृद्धावस्था में न तो डींगें हाँक रहा हूँ और न ही झूठ बोल रहा हूँ, बल्कि सत्य कह रहा हूँ। और चूँकि आपने उसे देखने के लिए कहा है, तो जो मैं कहूँ उसे सुनिए: मेरे कीमती पत्थर में, अपनी सभी शक्तियों और चमत्कारों के साथ, यह गुण भी है कि उसे कोई भी ऐसा व्यक्ति नहीं देख सकता जिसके पास स्वस्थ आँखें और एक शुद्ध, पूरी तरह से निर्दोष शरीर न हो; और यदि कोई, अनजाने में अपवित्र हो जाने पर, उस पत्थर को देख ले, तो वह अपनी दृष्टि और अपना मन दोनों खो देगा। जहाँ तक मेरी बात है, मैं चिकित्सा की कला में पारंगत हूँ, मैं देख सकता हूँ कि आपकी आँखें कमज़ोर हैं, और इसलिए मुझे आपको अपना रत्न दिखाने में डर लगता है, कहीं मैं आपकी अंधापन का कारण न बन जाऊँ; जहाँ तक राजा के बेटे की बात है, मैंने सुना है कि वह निष्कलंक जीवन जीता है और उसकी आँखें स्वस्थ और साफ़ हैं, और इसीलिए मैं उसे अपना खज़ाना दिखाना चाहता हूँ; इसलिए लापरवाही न करें और अपने स्वामी को इतनी महत्वपूर्ण खरीददारी से वंचित न करें।

नर्स ने उत्तर दिया:

'अगर ऐसा है, तो मुझे वह पत्थर मत दिखाओ, क्योंकि मैंने कई अशुद्ध कर्मों से खुद को अपवित्र कर लिया है और, जैसा आपने कहा, मैं अस्वस्थ दिखता हूँ; फिर भी मैं आपके शब्दों पर विश्वास करता हूँ और उन्हें अपने स्वामी को बताने में चूकूँगा नहीं।'

और महल जाकर, पालक-पिता ने सब कुछ क्रम से राजकुमार को सुनाया, और उसने, पालक-पिता की बातें सुनकर, अपने हृदय में एक विशेष आनंद और आत्मिक प्रसन्नता महसूस की, और व्यापारी को तुरंत अपने सामने लाने का आदेश दिया।

बर्लम राजकुमार के सामने आया, उसे प्रणाम किया, और बुद्धिमानी भरे सुखद शब्दों से अभिवादन किया। राजकुमार ने उसे बैठने का आदेश दिया। जब पालक पिता चले गए, तो जोसाफ ने बूढ़े से कहा:

'मुझे वह पत्थर दिखाओ जिसके बारे में तुमने मेरे शिक्षक को इतनी महान और अद्भुत बातें बताईं।'

तब वरलाम ने उससे ये शब्द कहे:

'राजकुमार, मेरे बारे में जो कुछ भी आपको बताया गया है, वह सब सत्य और निस्संदेह है, क्योंकि आपके समक्ष कुछ भी झूठ बोलना मेरे लिए अनुचित है; लेकिन जब तक मैं आपके विचारों को नहीं जान लेता, मैं यह महान रहस्य आपको नहीं बता सकता, क्योंकि मेरे प्रभु ने कहा है: "एक बीजारोपण करने वाला बीज बोने निकला। और जब वह बो रहा था, तो कुछ बीज मार्ग के किनारे गिरे और पक्षियों ने आकर उन्हें चट कर लिया। कुछ चट्टानी जमीन पर गिरे, और जब वे उगे तो सूख गए, क्योंकि उनमें नमी नहीं थी। कुछ काँटों में गिरे, और काँटों ने उन्हें घुटन में डाल दिया। कुछ अच्छी मिट्टी पर गिरे और सौ गुना फल दिए' (मत्ती 13:3–8)। अत; यदि मुझे आपके हृदय में उपजाऊ और अच्छी मिट्टी मिले, तो मैं आपके भीतर दिव्य बीज बोने और आपको यह महान रहस्य प्रकट करने में संकोच नहीं करूँगा। परन्तु यदि यह भूमि पथरीली और काँटों से भरी हो, या राह के किनारे पड़ी हो, जहाँ से गुजरने वाले लोग उसे रौंदते हों, तो यह बेहतर है कि उसमें उद्धार का बीज डालने का प्रयास ही न किया जाए, और न ही इसे पक्षियों और जानवरों द्वारा लूटने के लिए छोड़ दिया जाए, जिनके सामने मोती फेंकना सख्त मना है। परन्तु मुझे आशा है कि मुझे तुममें सर्वोत्तम भूमि मिलेगी, ताकि तुम वचन के बीज को ग्रहण करो, और अनमोल रत्न को देखो, और प्रकाश की किरण से प्रबुद्ध होओ, और सौगुना फल उत्पन्न करो; तुम्हारे ही लिए मैंने बहुत परिश्रम उठाया है और लंबा मार्ग तय किया है, ताकि तुम्हें वह दिखाऊँ जो तुमने नहीं देखा और सिखाऊँ वह जो तुमने कभी नहीं सुना।

जोआसाफ ने उससे उत्तर दिया:

'मैं, आदरणीय बृद्ध, नए और अच्छे वचन सुनने की एक अकथनीय इच्छा से ग्रस्त हूँ, और मेरे हृदय में एक अग्नि जलती है जो मुझे कुछ महत्वपूर्ण और आवश्यक बातों के ज्ञान के लिए प्रेरित करती है; और आज तक मुझे कोई ऐसा पुरुष नहीं मिला जो मेरे मन में क्या है, उसे समझा सके, या मुझे सही मार्ग पर ले जा सके। यदि, तथापि, मुझे ऐसा कोई व्यक्ति मिल जाए, तो मैं उससे सुने हुए शब्दों को पक्षियों और जानवरों के खाने के लिए नहीं छोड़ूँगा; मैं, जैसा आपने कहा, पत्थर और काँटों वाली ज़मीन जैसा नहीं बनूँगा, बल्कि उन्हें कृतज्ञतापूर्वक ग्रहण करूँगा और अपने हृदय में रखूँगा। और आप, यदि आप कुछ जानते हैं, तो मुझसे न छिपाएँ, बल्कि मुझे बताइए; क्योंकि जैसे ही मैंने सुना कि आप दूर देश से आए हैं, मेरी आत्मा तुरंत आनंदित हो गई और मुझे आशा हुई कि मैं आपके द्वारा वह प्राप्त कर लूँगा जिसकी मुझे इच्छा

थी: इसीलिए मैंने आपको तुरंत अपनी उपस्थिति में स्वीकार किया और खुशी से आपका स्वागत किया, जैसे मैं अपने किसी भी परिचित या समकक्ष का करता।

तब बारलाम ने, पवित्र आत्मा की कृपा से परिपूर्ण होकर, उससे एक ईश्वर, सभी चीजों के सृष्टिकर्ता, और संसार की शुरुआत से जो कुछ भी घटित हुआ था, उसके बारे में बात करना शुरू किया: आदम के पतन और स्वर्ग से उसके निष्कासन, पुरखों और नबियों के बारे में; फिर—परमेश्वर के पुत्र के अवतार, उनके स्वैच्छिक कष्ट और पुनरुत्थान; पवित्र त्रिमूर्ति, बपतिस्मा और पवित्र विश्वास के सभी रहस्यों के बारे में; क्योंकि बरलाम अत्यंत बुद्धिमान और पवित्र शास्त्रों में पारंगत थे। उपमाओं और दृष्टान्तों के माध्यम से सिद्धांत की व्याख्या करते हुए, सुंदर कथाओं और कहावतों से अपने भाषण को सजाते हुए, उन्होंने राजकुमार के हृदय को मोम की तरह नरम कर दिया; राजकुमार ने अत्यधिक ध्यान और आनंद के साथ उनकी बात सुनी। अंत में, राजकुमार को एहसास हुआ कि वह अनमोल रत्न स्वयं प्रभु मसीह थे, क्योंकि उसकी आत्मा में एक प्रकाश चमका और उसके मन की आँखें खुल गईं, जिससे उसने बारलाम द्वारा कही गई हर बात पर बिना किसी संदेह के विश्वास कर लिया। और अपने सिंहासन से उठकर, वह उस बुद्धिमान वृद्ध के पास गया और उसे प्रसन्नता से गले लगाकर कहा:

'हे पुरुषों में परम योग्य! यह, मुझे विश्वास है, वही अनमोल रत्न है जिसे आप छिपाकर रखते हैं और हर पूछने वाले को नहीं बताते, बल्कि केवल योग्य लोगों को, जिनकी आध्यात्मिक इंद्रियाँ प्रबल हैं; क्योंकि जैसे ही आपके शब्द मेरे कानों में पड़े, मेरे हृदय में एक मधुर प्रकाश प्रवेश कर गया और तुरंत ही दुःख का भारी आवरण, जो लंबे समय से मेरी आत्मा पर छाया हुआ था, ओझल हो गया। अब, मुझे बताइए, क्या मैं इस मामले में अपने तर्क में सही हूँ, और यदि आप इससे भी बेहतर कुछ जानते हैं, तो मुझे बताइए।

और बरलाम ने, अपना प्रवचन जारी रखते हुए, उससे शुभ और अशुभ मृत्यु, सार्वभौमिक पुनरुत्थान, शाश्वत जीवन, धर्मी लोगों के पुरस्कार और पापियों की यातना के बारे में कहा; और अपने शब्दों से उन्होंने उसे महान करुणा और हार्दिक पश्चाताप के लिए प्रेरित किया, जिससे वह आँसुओं से भर गया और लंबे समय तक रोता रहा। इसके अलावा, बारलाम ने उसे इस दुनिया की व्यर्थता और क्षणभंगुरता, और इसके त्याग, तथा मठवासी और तपस्वी जीवन के बारे में बताया।

खज़ाने के कमरे में कीमती रत्नों की तरह, जोआसाफ ने बरलाम के सभी शब्दों को अपने हृदय में संजो लिया; उसे उसकी बातचीत में इतनी प्रसन्नता हुई और वह उससे इतना स्नेह करने लगा कि वह हमेशा उसके साथ, अविभाज्य रूप से रहना और उसकी शिक्षाओं को सुनना चाहता था। उसने उससे रेगिस्तान के जीवन, भोजन और वस्त्रों के बारे में पूछा, यह कहते हुए:

'मुझे बताओ, मरुभूमि में तुम्हारा और तुम्हारे साथ रहने वालों का भोजन क्या है? तुम अपने कपड़े कहाँ से लाते हो, और वे कैसे होते हैं?'

बरलाम ने कहा:

हमारा भोजन पेड़ों के फलों और रेगिस्तान में उगने वाली जड़ी-बूटियों से होता है। हालांकि, यदि कोई विश्वासी हमारे लिए थोड़ी सी रोटी लाता है, तो हम जो लाया जाता है उसे दैवीय प्रावधान द्वारा भेजा गया उपहार मानकर स्वीकार करते हैं; जहाँ तक हमारे कपड़ों का सवाल है, वे बाल और भेड़ की खाल और बकरी की खाल से बने होते हैं, बहुत घिसे-पिटे और पैबंद लगे होते हैं, सर्दी और गर्मी दोनों में एक जैसे; और वह वस्त्र जिससे मैं ऊपर से ढका हुआ हूँ, मैंने एक धर्मनिष्ठ गृहस्थ से लिया है ताकि वे मुझे एक भिक्षु के रूप में न पहचान सकें: अगर मैं अपने कपड़ों में यहाँ आता, तो मुझे आपके पास प्रवेश नहीं मिलता।

जोसाफ ने बूढ़े से अपने सामान्य संन्यासी के वस्त्र दिखाने के लिए कहा, और फिर बरलाम ने अपना बाहरी वस्त्र उतार दिया, और जोसाफ की आँखों के सामने एक भयानक दृश्य उपस्थित हुआ: वरिष्ठ का शरीर पूरी तरह से सूरज से झुलसा और काला पड़ गया था; उसकी खाल केवल हड्डियों से चिपकी हुई थी; उसकी कमर से घुटनों तक वह एक फटी-पुरानी और काँटों जैसी बालों वाली कमीज़ पहने हुए था, और उसने अपने कंधों पर भी इसी तरह का एक लबादा ओढ़ रखा था। जोसाफ ऐसे कठिन तप से चकित रह गया और वृद्ध की महान सहनशक्ति से विस्मित होकर, उसने आह भरकर रोया और उनसे उसी मरुभूमि के जीवन को अपनाने के लिए अपने साथ ले जाने का आग्रह किया।

बरलाअम ने कहा:

'अभी ऐसा न चाहो, कहीं ऐसा न हो कि तुम्हारे कारण तुम्हारे पिता का क्रोध भाइयों पर पड़े; परन्तु बपतिस्मा ग्रहण करो और यहीं ठहरो, जब तक मैं अकेला चल जाता हूँ; और जब प्रभु चाहेगा, तब तुम भी मेरे पास आओगे, क्योंकि मुझे विश्वास है कि हम इस जीवन में और आने वाले जीवन में दोनों में एक साथ रहेंगे।'

जोसाफ ने आँखों में आँसू लिए हुए कहा:

'यदि प्रभु ईश्वर की यही इच्छा है, तो मुझ पर पवित्र बपतिस्मा संस्कार करो, और भोजन तथा वस्त्रों के लिए मेरे पास से जितना सोना ले जा सकते हो, ले जाओ।'

बरलाम ने उत्तर दिया, 'अमीर गरीबों को देते हैं, गरीब अमीरों को नहीं: तो फिर, आप स्वयं गरीब होते हुए भी हम अमीरों को क्या देंगे? क्योंकि हमारे भाइयों में से सबसे छोटा भी आपसे अतुलनीय रूप से अधिक धनी है।' मुझे आशा है कि आप भी, ईश्वर की कृपा से, जल्द ही इस सच्ची संपत्ति से धनी हो जाएँगे; लेकिन जब आप इसी तरह धनी हो जाएँगे, तो आप कंजूस और अकेलेपन पसंद हो जाएँगे।

जोसाफ यह नहीं समझ पाया कि उससे क्या कहा गया था, और तब बरलाम ने उसे अपने शब्दों की व्याख्या की, जिसका अर्थ था कि जो लोग मसीह के लिए सभी सांसारिक चीजों को त्याग देते हैं, वे स्वर्गीय आशीर्वाद प्राप्त करते हैं, जबकि इस दुनिया की सभी संपत्तियों से सबसे छोटा स्वर्गीय उपहार भी अधिक कीमती है। उन्होंने जोसाफ से कहा:

'सोना अक्सर पाप का कारण होता है, और इसीलिए हम इसे अपने पास नहीं रखते; फिर भी आप चाहते हैं कि मैं अपने भाइयों के पास उस साँप को ले जाऊँ जिसे वे पहले ही रौंद चुके हैं।'

तब उन्होंने जोसाफ को पवित्र बपतिस्मा के लिए तैयारी करने की सलाह दी, उन्हें लंबे समय तक उपवास करने और प्रार्थना करने का निर्देश दिया, और एक एकांत स्थान पर जाकर उनके लिए ईश्वर से प्रार्थना करने हेतु उनसे दूर हो गए। अगले दिन वह फिर उसके पास आया और उसे सच्चे विश्वास के बारे में विस्तार से समझाया। और इस प्रकार, लंबे समय तक, वह बूढ़ा प्रतिदिन राजकुमार के पास आता और उसे नबियों और प्रेरितों की शिक्षाओं और पवित्र पिताओं की परंपराओं की व्याख्या करता था। उसी दिन जब उसने जोसाफ को बपतिस्मा देने का इरादा किया था, बरलाम ने उसे निम्नलिखित निर्देश दिया:

'देखो, तुम मसीह की मुहर ग्रहण करना चाहते हो, परमेश्वर के मुख के प्रकाश से चिह्नित होना चाहते हो, और परमेश्वर के पुत्र तथा पवित्र और जीवन-प्रदायक आत्मा का मंदिर बनना चाहते हो: अब विश्वास करो पिता में, और पुत्र में, और पवित्र आत्मा में, पवित्र और जीवन-प्रदात्री त्रिमूर्ति में, जो तीन व्यक्तियों में महिमामय और एक दिव्यता में एक है, व्यक्तियों और व्यक्तियों के गुणों में भिन्न, फिर भी सार में एक है। इसलिए, एक परमेश्वर पिता, अजन्मे में, और हमारे एक प्रभु यीशु मसीह में विश्वास करो, जो प्रकाश से प्रकाशमान, सच्चे परमेश्वर से सच्चे परमेश्वर हैं, जो सर्व युगों से पूर्व उत्पन्न हुए; क्योंकि सर्व-सद्गुणवान पिता से सर्व-सद्गुणवान पुत्र उत्पन्न हुए, अजन्मे प्रकाश से अनंतकालिक प्रकाश प्रकट हुआ, सच्चे जीवन से जीवन-प्रदायक स्रोत उत्पन्न हुआ, स्वयं पिता की शक्ति से पुत्र की शक्ति उत्पन्न हुई, जो महिमा का तेज और सार का वचन है, जो आरंभ से परमेश्वर के साथ विद्यमान था और स्वयं परमेश्वर है, बिना आरंभ के और सदा विद्यमान, जिसके द्वारा सभी दृश्य और अदृश्य वस्तुएँ उत्पन्न हुईं। और एक पवित्र आत्मा में विश्वास करो, जो परमपिता से निकलता है, जो पूर्ण और जीवन-प्रदायक परमेश्वर है, पवित्र करने वाला, एक ही इच्छा वाला, सर्वशक्तिमान, एकसार, जो अपनी ही स्वभाविक सत्ता में निवास करता है। इसलिए, पिता और पुत्र और पवित्र आत्मा की उपासना करो, जो तीन व्यक्तियों में, विशिष्ट गुणों के साथ, फिर भी एक ईश्वरत्व में हैं। वे सभी दिव्यता में समान हैं, और उनकी प्रकृति एक है, और उनका सार एक है, और उनकी महिमा एक है, उनका राज्य एक है, उनकी शक्ति एक है, और उनका अधिकार एक है; जो बात पुत्र और पवित्र आत्मा में समान है वह यह है कि वे पिता से हैं; जो बात पिता के लिए विशेष है वह यह है कि वे अजन्मे हैं, पुत्र के लिए यह है कि वे जन्मे हैं, और आत्मा के लिए यह है कि वे उत्पन्न होते हैं। इस पर विश्वास करो; परन्तु जन्म या उत्पत्ति के तरीके को समझने का प्रयास मत करो, क्योंकि यह अगम्य है; बल्कि, एक धर्मी हृदय से, बिना किसी जाँच-पड़ताल के, यह स्वीकार करो कि पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा हर मामले में एक हैं, सिवाय अजन्मा होने, जन्म लेने और उत्पन्न होने के; और यह कि एकमात्र पुत्र, परमेश्वर का वचन और स्वयं परमेश्वर, हमारे उद्धार के लिए, पिता की सुसन्तुष्टि से और पवित्र आत्मा के सहयोग से पृथ्वी पर अवतरित हुए, पवित्र कुँवारी और ईश्वर की माता मरियम के गर्भ में बिना बीज के संकल्पित हुए, और उनसे अक्षुण्ण रूप से जन्मे, और एक पूर्ण मनुष्य थे; क्योंकि वे दोनों ही पूर्ण ईश्वर और पूर्ण मनुष्य हैं, दो स्वभावों के, अर्थात्, देवत्व और मानवता – दो स्वभावों में जो तर्कशील, स्वतंत्र और सक्रिय हैं, और प्रत्येक स्वभाव के गुणों के

अनुसार हर तरह से पूर्ण हैं, जिनमें इच्छा, वाणी और शक्ति है – देवत्व और मानवता के एकल संयोग में – और यह सब बिना मन से परखने के स्वीकार करें, और इस बात को समझने का प्रयास न करें कि यह सब कैसे हुआ: कि परमेश्वर का पुत्र कैसे स्वयं को नम्र किया, और कैसे एक मनुष्य कुँवारी के गर्भ से बिना बीज और बिना क्षय के उत्पन्न हुआ, या यह मलिन किसी साधन से हुआ। हमें यह सब विश्वास द्वारा मानने की शिक्षा दी गई है, जैसा कि हमें दिव्य शास्त्रों में विरासत में मिला है, लेकिन हम इसके वास्तविक सार को न तो समझ सकते हैं और न ही व्यक्त कर सकते हैं। ईश्वर के पुत्र पर विश्वास करो, जो अपनी दया के द्वारा मनुष्य बने और उन्होंने पाप को छोड़कर मानव स्वभाव के सभी गुणों को अपने ऊपर ले लिया: क्योंकि उन्होंने मानवता के लिए भूख और प्यास महसूस की, सोए, परिश्रम किया और दुखित हुए, और हमारे अपराधों के लिए उन्हें मृत्यु के हवाले किया गया, सूली पर चढ़ाया गया और दफनाया गया, उन्होंने मर्त्य देह का स्वाद चखा, , सच्ची मृत्यु, जबकि उनमें विद्यमान दिव्यता अप्रभावित और अपरिवर्तित रही। हम किसी भी प्रकार से दुख-क्लेश को उनके अमर दिव्य स्वभाव पर लागू नहीं करते, बल्कि हम यह स्वीकार करते हैं कि उन्होंने उस मानवीय स्वभाव में दुख-क्लेश भोगा और दफनाए गए जिसे उन्होंने धारण किया था, और दिव्य शक्ति से अक्षुण्ण होकर मृतकों में से जी उठे और स्वर्ग में आरोहण कर गए, और जीवितों और मृतकों का न्याय करने के लिए महिमा में फिर आएँगे (यूहन्ना 5:20) और प्रत्येक को उसके कर्मों के अनुसार न्यायसंगत परिमाण में प्रतिफल देने के लिए (मत्ती 16:27; प्रकाशितवाक्य 22:12): क्योंकि मिरे हुए जी उठेंगे, और जो कब्रों में पड़े हैं वे उठ खड़े होंगे; और जिन्होंने मसीह की आज्ञाओं का पालन किया और सच्चे विश्वास में स्वर्ग सिधार गए हैं, वे अनंत जीवन के वारिस होंगे, जबकि जो पापों से अपवित्र हुए और सच्चे विश्वास से भटक गए हैं, वे अनंत यातना में जाएँगे। और यह न सोचें कि बुराई का कोई आदमि सार या क्षेत्र है, न ही यह कल्पना करें कि यह बिना आरंभ का है, या स्वतंत्र है, या कि इसका उद्गम परमेश्वर से हुआ है: ऐसा सोचना मूर्खता है। सत्य में, बुराई हममें हमारी अपनी गलती और शैतान की करतूतों के कारण प्रवेश करती है, जो हमारे आत्म-अनुशासन की कमी के कारण होती है। चूँकि हमारे पास स्वतंत्र इच्छा है, हम अपनी मर्जी से, या तो अच्छाई चुन सकते हैं या बुराई। पापों की क्षमा के लिए जल और आत्मा से होने वाले एक ही बपतिस्मा का भी अंगीकार करो। मसीह के परम पवित्र रहस्यों को यह विश्वास करते हुए ग्रहण करो कि ये वास्तव में हमारे परमेश्वर मसीह का शरीर और लहू हैं, जिन्हें उन्होंने विश्वासियों को पापों की क्षमा के लिए दिया है; क्योंकि जिस रात उनके साथ विश्वासघात किया गया था, उन्होंने स्पष्ट रूप से उन्हें अपने पवित्र शिष्यों और प्रेरितों और अपने सभी भविष्य के अनुयायियों को यह कहते हुए सौंपा: *'लो, खाओ; यह मेरा शरीर है, जो तुम्हारे लिए तोड़ा गया है... इसी प्रकार, भोज के बाद, उसने प्याला लिया और कहा: "यह मेरे रक्त में नई वाचा है; इसे मेरे स्मरण में करो"* (मत्ती 26:26–28; 1 कुरिन्थियों 11:24–25)।

यह स्वयं परमेश्वर का वचन है, जो अपनी शक्ति से सक्रिय और सर्व-सृष्टिकर्ता है; वह पवित्र शब्दों और पवित्र आत्मा के अवतरण के द्वारा, अर्पित रोटी और दाखरस को अपने शरीर और रक्त में परिवर्तित करता है, और उन्हें विश्वास के साथ भाग लेने वालों के पवित्रिकरण और ज्ञानोदय के लिए प्रदान करता है।

उसी प्रकार विश्वास के साथ आराधना करो, और परमेश्वर के वचन की माननीय प्रतिमा (चित्र) को चूमो, जो हमारे लिए मसीह बनकर आए, यह ध्यान में रखते हुए कि इस प्रतिमा में आप स्वयं सृष्टिकर्ता को निहार रहे हैं: क्योंकि, जैसा कि संत बेसिल द ग्रेट कहते हैं, 'प्रतिमा को दिया गया सम्मान, मूल व्यक्ति को प्राप्त होता है'। और मूल वही हैं जिनका चेहरा चित्रित किया गया है और जो उस प्रतिमा का कारण थे: इस प्रकार, प्रतिमा पर चित्रित को निहारते हुए, हम अपने मन की आँखों से उस परमेश्वर तक उठते हैं, जिसकी यह प्रतिमा चित्रित करती है, और, हमारे लिए हमारे शरीर को धारण करने वाले की प्रतिमा की श्रद्धापूर्वक पूजा करते हुए, हम स्वयं चित्रित प्रतिमा को देवता नहीं बनाते, बल्कि दृढ़ता और प्रेम से मसीह की देहधारी प्रतिमा को चूमते हैं, जिन्होंने हमारे लिए स्वयं को एक दास के स्वरूप तक नम्र किया; इसी प्रकार, उनकी परम पवित्र माता और सभी संतों की प्रतिमाओं को चूमो। सम्माननीय और जीवन-दायक क्रूस की प्रतिमा की आस्थापूर्वक आराधना करो, और उसे संसार के ईश्वर और उद्धारकर्ता मसीह के लिए चूमो, जो मानव जाति के उद्धार के लिए देह में उस पर क्रूस पर चढ़ाया गया था, और जिसने हमें शैतान पर विजय के प्रतीक के रूप में क्रूस का चिह्न प्रदान किया है, जो क्रूस की शक्ति से डरता और कांपता है। यही वह है जिस पर आपको विश्वास करना चाहिए, और इसी विश्वास के साथ आप पवित्र बपतिस्मा प्राप्त करते हैं: इसलिए इस विश्वास को बिना किसी परिवर्तन या विधर्मी जोड़ के अपनी अंतिम सांस तक बनाए रखें... अत; इस निर्मल विश्वास के विपरीत सभी शिक्षाओं से घृणा करें और उन्हें ईश्वर के विरोधी मानें, क्योंकि, प्रेरित के शब्दों में: *'परन्तु यदि हम या स्वर्ग से कोई दूत तुमको उस सुसमाचार के सिवाय कोई और सुसमाचार सिखाए, तो वह श्रापित हो'* (गलातियों 1:8)। – और वास्तव में, कोई दूसरा सुसमाचार नहीं

है, कोई दूसरा वशि्वास नहीं है, सविाय उस के जो प्रेरतिों द्वारा प्रचारति कयिा गया और वभिन्नि परषिदों में ईश्वर-वाहक पतिरों द्वारा पुष्टि कयिा गया और कैथोलकि चर्च को सौंपा गया।

यह कहने और राजा के पुत्र, जोसाफ को नकियिा परषिद में नर्धिारति धर्म-वशि्वास में शकि्षति करने के बाद, बरलाम ने उसे शाही बगीचे में स्थति एक तालाब में पति, पुत्र और पवत्रि आत्मा के नाम पर बपतस्मिा दयिा। इस प्रकार पवत्रि आत्मा की कृपा जोसाफ पर उतरी। इसके बाद जोसाफ के शयनकक्ष में प्रवेश करके, बरलाम ने वहाँ दव्यि लटिर्जी का अनुष्ठान कयिा और उन्हें परम शुद्ध और जीवन-प्रदायक रहस्य प्रदान कएि, और वे दोनों आध्यात्मकि आनंद में रहे, ईश्वर की स्तुति करते हुए। इसके बाद, बार्लाम ने राजकुमार को उसके बपतस्मिा के बाद कैसे जीवन यापन करना चाहएि, इस पर उपदेश दयिा, उसे सदाचार के सद्धिांत सखिाए, और फरि अपने आवास में चले गए।

इस बीच, जोसाफ के सेवक और परचिारक, राजकुमार के बूढ़े के साथ बार-बार होने वाले भेंट-मुलाकात को देखकर हैरान थे; और इसलएि उनमें सबसे बड़े, ज़ार्डन नामक एक व्यक्ति—जसिे राजा ने उसकी वफादारी और भक्ति को देखते हुए राजकुमार के घर की देखरेख के लएि नयिुक्त कयिा था—ने एक दनि जोसाफ से कहा:

'आप भली-भाँति जानते हैं, मेरे स्वामी, कि मैं आपके पति का कतिना सम्मान करता हूँ और उनके प्रति कितिना वफादार हूँ—इसीलएि उन्होंने मुझे आपकी सेवा के लएि नयिुक्त कयिा है। अब, हालाँकि, यह देखकर कि यह अजीब आदमी कतिनी बार आपके पास आता है और आपसे बात करता है, मुझे डर है कि वह ईसाई धर्म का हो सकता है, जसिका आपके पति इतनी कड़ी मुखालफत करते हैं, और कि मैं उसकी वजह से मौत की सजा पा सकता हूँ। इसलएि, या तो ज़ार को उसके बारे में बताएं, या उससे बात करना पूरी तरह से बंद कर दें, या मुझे अपने पास से दूर भेज दें, ताकि मुझे जवाबदेह न ठहराया जाए।

राजकुमार ने उत्तर दयिा:

'ज़ार्डन, हम पहले यह करेंगे: तुम पर्दे के पीछे छपि रहना और मेरी उससे होने वाली बातचीत सुनना – फरि मैं तुम्हें बताऊँगा कि क्या करना है।

और जब एक दनि वरलाम् महल में प्रकट हुए, तो जोसाफ ने पहले ज़ार्डन को पर्दे के पीछे छपिाकर, वृद्ध से कहा:

'मुझे संक्षेप में अपनी शकि्षाओं की याद दलिाओ, ताकि वे मेरे हृदय में और गहराई से जड़ जमा सकें।'

तब बार्लाम बोलने लगे और उन्होंने उन्हें ईश्वर, धर्मपरायणता, भवषि्य के आशीर्वाद और अनंतकालकि यातनाओं के बारे में बहुत कुछ बताया; और अंत में, एक लंबी बातचीत के बाद, वे उठे, एक प्रार्थना की और अपने नविास में चले गए।

तब राजकुमार ने ज़ार्डन को बुलाया और परीक्षा लेते हुए उससे पूछा:

'क्या तुमने सुना कि वह धूर्त बूढ़ा मुझसे क्या कह रहा था? वह अपनी शकि्षाओं से मुझे बहकाने, मेरी सभी सुख-सुवधिाओं से वंचति करने और मुझे एक अजनबी ईश्वर की ओर ले जाने की कोशशि कर रहा है।'

ज़ार्डन ने उत्तर दयिा:

'मुझे परीक्षा में न डालएि, मेरे स्वामी, आपके सेवक को: मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि इस आदमी के शब्द आपके हृदय में कतिनी गहराई तक उतर गए हैं, और हम सभी जानते हैं कि उसका उपदेश सत्य है। लेकनि जब से आपके पति ने ईसाइयों के खलिाफ एक भयंकर उत्पीड़न शुरू कयिा है, उनका धर्म वनिाश के कगार पर है; और यदि फरि भी यह आपके हृदय में प्रयि हो गया है, और आप इससे जुड़ी पीड़ाओं और कठनिाइयों को सहन कर सकते हैं, तो आपकी इस महान इच्छा को पूर्णता मलि। लेकनि मैं क्या करूँ? मैं ऐसी पीड़ा और उनके अत्यंत दुखद जीवन को देख भी नहीं सकता। राजा के क्रोध के भय से मेरा हृदय कांप जाता है; मुझे नहीं पता कि मैं उसे क्या उत्तर दूँ कि मैंने उस व्यक्ति को आपकी उपस्थति में आने की अनुमति क्यों दी।

इस पर राजकुमार ने ज़ार्डन से कहा:

मैं तुम्हारी महान भक्ति और मुझ पर की गई नषि्ठावान सेवा के लएि इससे बेहतर पुरस्कार नहीं दे सकता, सविाय इसके कि मैं तुम्हें अकथनीय आशीर्वादों का ज्ञान दूँ: अपने स्रष्टा का ज्ञान और उस पर वशि्वास। मुझे उम्मीद थी कि जैसे ही तुम सच्ची शकि्षा को सुनोगे, तुम तुरंत ही उससे प्रेम करोगे और मेरे साथ उसका अनुसरण करोगे। लेकनि मैं देखता हूँ कि मेरी आशा ने मुझे धोखा दयिा है, क्योंकि आपका हृदय कठोर हो गया है और आप सत्य जानना नहीं चाहते।

कम से कम मेरी यह एक इच्छा पूरी कीजिए: फिलहाल अपने पिता से कुछ भी न कहिए, क्योंकि ऐसा करने से आप कुछ भी हासिल नहीं करेंगे, बल्कि केवल उन्हें दुख और कष्ट देंगे।

अगले दिन, बरलाम राजकुमार के पास आए और उन्होंने उसे छोड़ने का अपना इरादा बताया। जोसाफ, बिछिड़न को सहन न कर सके, गहराई से दुखी हो गया और जोर-जोर से रोने लगा। बूढ़े ने उसके साथ देर तक बात की, उसे आस्था और सदाचार में मजबूत किया और उससे अपने लिए न रोने का आग्रह किया। उन्होंने राजकुमार को यह भी पूर्वानुमान दिया कि जल्द ही वे हमेशा के लिए फिर से मिलेंगे। तब जोसाफ, बड़भागी को कोई कष्ट नहीं पहुँचाना चाहकर, और साथ ही यह डरते हुए कि ज़ार्डन ने शायद बड़भागी के आगमन की सूचना राजा को दे दी होगी, अपने आँसुओं के बीच बार्लाम से कहा:

– चूंकि आप, मेरे आध्यात्मिक पिता और दयालु गुरु, चाहते हैं कि मैं इस व्यर्थ संसार में रहूँ, जबकि आप स्वयं अपने आध्यात्मिक विश्राम के स्थान पर प्रस्थान कर रहे हैं, मैं अब आपको और अधिक रोकने का साहस नहीं करता। तो शांति से जाओ, ईश्वर की रक्षा में रहो, और अपनी पवित्र प्रार्थनाओं में मेरी दीनता को सदैव याद रखो, ताकि समय आने पर मुझे भी तुम्हारे पास आकर तुम्हारा सम्माननीय मुखमंडल सदा के लिए दर्शन करने का अवसर मिले। लेकिन मुझे अपना प्रेम दिखाइए: मुझे अपने मठवास के जीवन और शिक्षाओं की यादगार के रूप में, और शैतान के हर काम से सुरक्षा के लिए, अपना यह पतला, घिसा-पिटा चोगा दे दीजिए।

वरिष्ठ ने उसे अपना चोगा दिया, जिसे जोआसाफ ने शाही बैंगनी चोगा से भी अधिक मूल्यवान समझा। फिर बरलाम प्रार्थना करने के लिए उठे और गहरी भावना के साथ जोआसाफ के लिए प्रार्थना की, तथा नव-प्रबुद्ध युवक को ईश्वर की व्यवस्था और सुरक्षा के हवाले कर दिया। अपनी प्रार्थना समाप्त करने के बाद, वे राजकुमार की ओर मुड़े, उसे चूमकर कहा:

'हे दिव्य पिता के पुत्र! तुम्हें शान्ति और अनन्त मोक्ष प्राप्त हो।'

फिर वह राजमहल से निकल गया, आनंदित होकर और उस ईश्वर का धन्यवाद करते हुए, जिसने उसके मार्ग को सही दिशा दिखाई थी।

बर्लाम के जाने के बाद, धन्य जोसाफ ने स्वयं को निरंतर प्रार्थना और तपस्या के जीवन में समर्पित कर दिया। यह देखकर, ज़रदान बहुत परेशान हो गया और बीमारी का बहाना करके अपने घर चला गया। राजा ने ज़रदान की बीमारी के बारे में जानकर, उसका इलाज करने के लिए अपने स्वयं के एक बहुत ही कुशल चिकित्सक को भेजा। चिकित्सक ने ज़ार्डन की स्थिति की सावधानीपूर्वक जाँच की और राजा को सूचित किया कि उसे ज़ार्डन की बीमारी का कोई अन्य कारण नहीं मिला, सिवाय किसी प्रकार के दुख के, जिससे वह पीड़ित था। तब राजा ने अनुमान लगाया कि उसके बेटे ने ज़रदान से किसी बात पर नाराज़गी जताई होगी, जिससे वह दुख के मारे बीमार पड़ गया, और वह स्वयं उस बीमार व्यक्ति से मिलना चाहता था ताकि उससे उसकी बीमारी का कारण और सटीक रूप से जान सके। लेकिन ज़ार्डन स्वयं राजा के सामने उपस्थित होने के लिए जल्दी से आया, उसके सामने ज़मीन पर गिर पड़ा, और राजकुमार की रक्षा करने में लापरवाही बरतने के लिए खुद को किसी भी सज़ा का हक़दार माना, और राजा को वह सब कुछ बताया जो जोसाफ के साथ हुआ था।

उसने कहा, 'बर्लाम नाम का एक दुष्ट आदमी, जो एक जादूगर और धोखेबाज़ है, रेगिस्तान से आया और आपके पुत्र से ईसाई धर्म के बारे में बात की, और अब राजकुमार पहले ही ईसाई बन चुका है।'

यह सुनकर राजा शोक से काँप उठा, और फिर उसे अकथनीय क्रोध आ गया। उसने तुरंत अपने कुलीनों में सबसे प्रमुख, अराचिया नामक एक व्यक्ति, जो एक बुद्धिमान सलाहकार और कुशल ज्योतिषी था, को बुलाया, और उसे सब कुछ ठीक उसी क्रम में सुनाया, जैसा कि हुआ था।

उसे सांत्वना देने के लिए अराखियस ने उत्तर दिया:

'हे राजा, शोक न करें, क्योंकि यदि हम बरलाम को पकड़ लेते हैं तो हम आपके पुत्र को ईसाई धर्म से बहुत आसानी से हटा देंगे; लेकिन अगर हमें वह नहीं मिल पाता, तो मैं एक और बुजुर्ग जानता हूँ—जो पहले से ही हमारे धर्म का है—जिसका नाम नहोर है, जो रेगिस्तान में रहता है और ज्योतिष का अभ्यास करता है; मैंने खुद उसके अधीन अध्ययन किया है, और वह बारलाम से बहुत मिलता-जुलता है—क्योंकि मैं बारलाम का चेहरा अच्छी तरह जानता हूँ, उसे पहले भी देखा है। इसलिए, इस नहोर को रेगिस्तान से बुलाकर, हम उसे वार्लाम होने का नाटक करने और धर्म पर बहस करने का आदेश देंगे; वह हार का नाटक करेगा और ईसाई धर्म को झूठा घोषित करेगा, और आपका बेटा, यह देखकर, ईसाई धर्म से मुंह मोड़ लेगा और अपने पिता के देवताओं के पास लौट आएगा।

राजा को यह सलाह ठोस लगी, जिससे उसे अपने दुख में कुछ सांत्वना मिली, वह व्यर्थ की आशाओं में खो गया, और उसने जल्दबाजी में स्वयं अराचियास को सैनिकों के एक दल के साथ बारलाम को खोजने के लिए भेज दिया। अराचियास, लंबा सफर तय करने के बाद, अंततः सेनारडि मरुभूमि में पहुँचा। वहाँ वह लंबे समय तक बिना किसी रास्ते के, मुश्किल से पार हो सकने वाले झाड़ियों से होकर भटकता रहा, जब तक कि एक स्थान पर पहाड़ के नीचे उसे संन्यासियों का एक छोटा सा समूह नहीं मिल गया और उसने उन्हें पकड़ लिया। उनमें से एक उनका नेता था और वह अपने साथ कुछ पवित्र संतों की हड्डियों से भरा एक बालू का बोरा रखता था, जो उससे पहले निधन हो चुके थे – मृत्यु की निरंतर याद दिलाने के लिए। अरकियास ने संन्यासियों से पूछा:

'वह धोखेबाज़ कहाँ है जिसने राजा के पुत्र को बहकाया है?'

'वह हमारे साथ नहीं है,' बाकी लोगों की ओर से बाल-बुने हुए थैले को उठाए हुए ने उत्तर दिया, 'और न ही वह हमारे साथ रहेगा, क्योंकि वह मसीह की शक्ति से प्रेरित होकर हमसे भागता है, और वह तुम लोगों के बीच रहता है।'

"क्या आप उसे जानते हैं?" अराचियास ने पूछा।

'मैं उसे जानता हूँ,' संन्यासी ने उत्तर दिया, 'धोखेबाज़, शैतान; वही तुम्हारे बीच रहता है, और तुम उसे प्रसन्न करते हो।'

'लेकिन मैं तुमसे बारलाम के बारे में पूछ रहा हूँ।'

'अगर आप बारलाम के बारे में पूछ रहे हैं,' तपस्वी ने उत्तर दिया, 'तो आपको कहना चाहिए था: "वह कहाँ है जिसने राजा के बेटे को भ्रम से दूर कर दिया?" वह हमारा भाई है और हमारे साथ मठ के उपवास का तपस्वी जीवन बिताता है, लेकिन हमने उसे कई दिनों से नहीं देखा है।'

– तो वह कहाँ है?

'हम जानते हैं कि रेगिस्तान में उसका कोठरी कहाँ है, लेकिन मैं तुम्हें उसका ठिकाना नहीं बताऊँगा।'

अरखियस, क्रोधित होकर, उन्हें मौत की धमकी देने लगा, लेकिन वे मौत के विचार से प्रसन्न हो गए। उसने उन पर कई घाव किए और उन्हें भयंकर यातनाएँ दीं, यह माँग करते हुए कि वे बरलाम का ठिकाना बता दें, लेकिन वे चुप रहे। इसके बाद, अराखिया ने एक बार फिर बारलाम को हर जगह अच्छी तरह से खोजा और जब वह कहीं नहीं मिला, तो वह ऊपर बताए गए सत्तर संन्यासियों को ही साथ लेकर खाली हाथ राजा के पास लौट आया। राजा ने बरालम के ठिकाने का खुलासा करने और मसीह का त्याग करने के लिए उन्हें मजबूर करने के हर संभव तरीके आजमाए; लेकिन उन्होंने न केवल उसकी आज्ञा मानने से इनकार कर दिया, बल्कि उन्होंने उसकी अधर्मीता के लिए उसे फटकारा भी, जिस पर राजा ने आदेश दिया कि उनकी जीभें काट दी जाएँ, उनकी आँखें निकाल ली जाएँ, और उनके हाथ-पैर काट दिए जाएँ। इस प्रकार इन वीर शहीदों ने अपना अंत किया।

उनकी मृत्यु के बाद, राजा के आदेश पर, अराचियास रात में जादूगर नाहोर के पास गया, जो राक्षसों के साथ रेगिस्तान में रहता था और जादू-टोना करता था, और उसे सब कुछ विस्तार से बताकर, उससे बारलाम होने का नाटक करने का आग्रह किया। फिर वह राजा के पास लौट आया, और अगले दिन उसने सैनिकों का एक दल इकट्ठा किया और एक बार फिर यह अफवाह फैलाई कि वह बारलाम की तलाश में जा रहा है, और रेगिस्तान की ओर फिर से चल पड़ा। वहाँ, जब वे झाड़ियों से बाहर निकले तो नाहोर उस दल के सामने प्रकट हुआ; सैनिकों ने उसे देखते ही उसका पीछा किया और जब वे उससे मिल गए, तो उन्होंने उसे पकड़ लिया और अराचिया के सामने ले आए, जिसने नाहोर को पहचानने का नाटक करते हुए उससे पूछा कि वह कौन है। नाहोर ने जवाब दिया कि वह बारलाम है। सभी बहुत प्रसन्न हुए और उसे बँधी हुई अवस्था में राजा के सामने ले गए। इस बीच, यह खबर दूर-दूर तक फैल गई कि बिरलाम को पकड़ लिया गया है, और जोआसाफ इस पर बहुत दुखी हुआ और जोर-जोर से रोया। लेकिन ईश्वर, जो सर्वव्यापी सांत्वनादाता हैं, ने जोआसाफ को एक दर्शन में यह प्रकट किया कि पिकड़ा गया बरलाम नहीं, बल्कि उसकी जगह जादूगर नाहोर था।

राजा पहले अपने पुत्र के महल में गया और—कभी दयालु और कोमल शब्दों से, तो कभी कठोर और कड़क शब्दों से—उसे ईसाई धर्म त्यागने और अपने पूर्वजों के देवताओं के पास लौटने के लिए मनाने की कोशिश की; लेकिन वह किसी भी तरह से उसे मसीह के प्रति उसके प्रेम से दूर नहीं कर सका: जोसाफ ने अपने पिता के सभी शब्दों का उत्तर बड़ी बुद्धिमानी से दिया, जिसमें उसने मूर्तिपूजक देवताओं की व्यर्थता को साबित किया, एकमात्र सच्चे ईश्वर, सभी चीजों के सृष्टा की महिमा की, और इस ईश्वर का अनुसरण करने के लिए घावों और मृत्यु तक जाने की अपनी तत्परता की घोषणा की। लेकिन चूँकि एक पिता का अपने बेटे के प्रति स्वाभाविक प्रेम राजा को उसे यातना देने से रोक रहा था, और

इसके अलावा, जब उसने राजकुमार द्वारा प्रचारित सत्य को सुना तो उसका अपना अंतरात्मा उसे कोस रहा था, उसने कहा:

'हे मेरे बच्चे, तुझे हर बात में अपने पिता की इच्छा का पालन करना चाहिए, परन्तु तू अभद्र, अवज्ञाकारी और हठी है, और अपने आपको सब से बुद्धिमान समझकर मेरी बात का विरोध करता है: इसलिये, आओ हम इस निष्फल वाद-विवाद को छोड़ दें और स्वयं सत्य को अपनाएँ। देखो, मैं सबसे बड़ी सभा इकट्ठा करूँगा और हमारे पूरे राज्य के सभी बुद्धिमानों को बुलाऊँगा; मैं ईसाइयों को भी आमंत्रित करूँगा, और मैं अपने उद्घोषकों को आदेश दूँगा कि वे हर जगह ज़ोर से घोषणा करें कि किसी भी ईसाई को किसी बात का डर नहीं होना चाहिए, बल्कि उन्हें बिना डर के सभा में जाना चाहिए, जहाँ, एक सामान्य निर्णय द्वारा, हम यह निर्धारित करेंगे कि कौन सा धर्म बेहतर है। मेरे अधिकार में बार्लाम भी है, जिसने तुम्हें गुमराह किया है, जो अब जंजीरों में बंधा है – मैंने उसे पकड़ लिए बिना चैन से नहीं बैठे: मैं उसे सभा के सामने लाऊँगा, और उसे, उसके साथी ईसाइयों के साथ, हमारे विद्वानों के विरुद्ध खड़ा होने और विश्वास के मामलों पर उनसे बहस करने दूँगा। और यदि तुम, हे ईसाइयों, अपने बर्नबा के साथ, हमारे लोगों पर विजय प्राप्त करते हो, तो जो कुछ भी तुम चाहोगे वह तुम्हें मिलेगा; परन्तु यदि तुम पराजित हो जाते हो, तो तुम्हें हर बात में मेरी आज्ञा का पालन करना होगा।

'प्रभु की इच्छा पूरी हो,' धन्य जोसाफ ने उत्तर दिया, 'और सब कुछ आपकी इच्छानुसार हो; परन्तु सच्चा परमेश्वर हमें सही मार्ग से भटकने से बचाए!'

तब राजा ने, दूर-दूर तक भेजे गए पत्रों के माध्यम से और नगरों तथा गांवों में शाही फरमान को जोर-जोर से सुनाने वाले उद्घोषकों द्वारा, सभी मूर्तिपूजकों और ईसाइयों को एक स्थान पर इकट्ठा होने का आदेश दिया, – बाद वाले (ईसाइयों) को कुछ भी डर नहीं था – ताकि मूर्तिपूजक पुरोहितों और जादूगरों के नेतृत्व में ईसाइयों और बरलाम के बीच एक प्रतियोगिता के माध्यम से सच्चे धर्म के प्रश्न को सुलझाया जा सके। इस उद्देश्य के लिए, राजा ने अपने राज्य में रहने वाले फारस और काल्दी के सभी सबसे बुद्धिमान पुरोहितों, जादूगरों और जादूबाजों को बुलाया, जो ईसाइयों को पराजित करने वाले थे। और इस प्रकार, मूर्तिपूजकों की एक बड़ी भीड़ राजा के सामने इकट्ठी हुई—ऐसे शिक्षक जो दुष्टता में बुद्धिमान और धोखे में चालाक थे, जो, *'बुद्धिमान होने का दावा करते हुए, मूर्ख बन गए'* (रोमियों 1:22), जबकि ईसाई—जिनमें से कुछ को अविश्वासियों ने पीटा था, जबकि अन्य पहाड़ों और गुफाओं में बिखरकर छिप गए थे—बहुत कम संख्या में इकट्ठा हुए; और उनमें केवल एक था, जिसका नाम बराखियास था, जो दिव्य धर्मग्रंथों में पारंगत था: केवल वही कथित बार्लाम की सहायता के लिए आया, यह न जानते हुए कि वास्तव में यह बार्लाम नहीं, बल्कि जादूगर नाहोर था।

राजा एक ऊँचे सिंहासन पर बैठ गया, और अपने बेटे को अपने साथ बैठने का आदेश दिया; लेकिन राजकुमार, अपने पिता के सम्मान के कारण, उसके बगल में नहीं बल्कि सिंहासन के पास फर्श पर बैठ गया। सभी विधर्मी ऋषि राजा के सामने उपस्थित हुए, और नाहोर—कथित बरलाम—को भी सामने लाया गया।

'देखो,' राजा ने अपने ऋषियों से कहा, 'तुम्हारे सामने एक बड़ा काम है, और तुम्हारा एक में से दो भाग्यों का इंतज़ार है: या तो, वरलाam और उसके समान विचारधारा वाले ईसाइयों के खिलाफ बहस में विजय प्राप्त करके, तुम्हें हर तरह से सम्मानित किया जाएगा; या, पराजित होकर, तुम्हें अपमान सहना पड़ेगा, अपमान और क्रूर मृत्युदंड; क्योंकि मैं तुम सभी को बिना दया के नष्ट कर दूँगा, तुम्हारे शवों को जानवरों और पक्षियों के खाने के लिए फेंक दूँगा, और तुम्हारे बच्चों को शाश्वत दासता में डाल दूँगा, जब तक कि तुम ईसाइयों पर विजय न प्राप्त कर लो।

जब राजा ने ये शब्द कहे, तो जोसाफ ने पुकारा:

'हे राजा, आपने अब एक धर्मी निर्णय सुनाया है! और मैं भी अपने शिक्षक से कुछ इसी प्रकार कहूँगा।'

और, नाहोर की ओर मुड़कर, उसने कहा:

'बर्लाअम! किस महिमा में और कितने आनंदों के बीच तुमने मुझे पहली बार जाना था! फिर भी, अपने लंबे प्रवचनों के द्वारा तुमने मुझे देवताओं और मेरे पूर्वजों के कानूनों से मुँह मोड़ने, एक अज्ञात ईश्वर की सेवा करने, और मेरे पिता तथा मेरे स्वामी के क्रोध को भड़काने के लिए प्रेरित किया है। इसलिए, अब कल्पना करो कि तुम, मानो, एक तराजू पर खड़े हो: यदि तुम आगे आने वाली प्रतियोगिता में विजयी निकलते हो और यह साबित कर देते हो कि तुम्हारा उपदेश सत्य है, तो तुम्हारा यश सत्य के प्रचारक के रूप में होगा, और मैं तुम्हारे उपदेश के प्रति विफादार रहूँगा, और अपनी अंतिम साँस तक मसीह की सेवा करूँगा; लेकिन अगर तुम हार गए और इस प्रकार मेरे अपमान का कारण बने, तो मैं स्वयं इस अपमान का बदला लूंगा: मैं अपने पैरों से तुम्हारे सीने पर खड़ा हो जाऊँगा और, अपने ही हाथों से तुम्हारा दिल और जीभ

फाड़कर, मैं उन्हें, तुम्हारे बाकी शरीर के साथ, कुत्तों को नोचने के लिए फेंक दूँगा, ताकि बाकी सब तुम्हारे उदाहरण से यह सीख लें कि राजा के बच्चों को धोखा देने की हिम्मत न करें।

इन शब्दों को सुनकर नाहोर भयभीत हो गया, यह समझते हुए कि वह अपनी ही बिछाई गई जाल में फँस गया था और उसी गड्ढे में गिर पड़ा था जिसे उसने खुद खोदा था। राजकुमार को भड़काने पर अपनी अनिवार्य मृत्यु से डरते हुए—जिसे राजकुमार जब चाहें उसे सताने का पूरा अवसर था—नाहोर ने जोआसाफ का साथ देने और ईसाई धर्म की रक्षा करने का संकल्प लिया। और जब पुरोहितों और ईसाइयों के बीच वाद-विवाद शुरू हुआ, तो नहोर ने उसी तरह बोलना शुरू किया जैसे पुराने समय के प्रसिद्ध बिलाम ने किया था, जिसे राजा बालाक ने इस्राएल को शाप देने के लिए भेजा था, लेकिन उसने उन्हें शाप देने के बजाय कई आशीर्वादों से आशीर्वाद दिया (गिनती 22:1–41): ठीक उसी तरह, नाहोर ने बहस शुरू करके उसे सुबह से शाम तक जारी रखा, और ऐसा बोलता रहा मानो पवित्र आत्मा से प्रेरित हो: इस प्रकार, कभी-कभी, परमेश्वर का अनुग्रह अपनी पवित्र महिमा के लिए अपवित्र पात्रों में भी काम कर सकता है। और नाहोर ने इतनी बुद्धिमानी से मूर्तिपूजक देवताओं की व्यर्थता और मिथ्यापन को उजागर किया, और इतनी अकाट्य रूप से यह साबित किया कि केवल ईसाई धर्म ही सच्चा धर्म है, कि कोई भी विरोध में एक शब्द भी नहीं जोड़ सका। संत जॉन ऑफ़ डमास्कस ने अपने संत बरलाम और जोआसाफ के वृत्तांत में, नाहोर और मूर्तिपूजक पुरोहितों के बीच इस बहस के बारे में विस्तार से और खूबसूरती से लिखा है।

इस प्रकार, सभी विधर्मी ऋषि, पुरोहित और दार्शनिक उदास होकर नाहोर के सामने खड़े रहे और चुप रहे, मानो मौन हो गए हों, शर्म से पानी-पानी हो गए हों, और उनके पास उसे चुनौती देने के लिए कुछ भी नहीं था। हालाँकि, राजकुमार अपने हृदय में आनंदित हुआ और प्रभु की महिमा की, जिन्होंने, ठीक वैसे ही जैसे उन्होंने एक बार शाऊल के साथ किया था, अब नाहोर को - एक उत्पीड़क से सत्य के शिक्षक और प्रचारक में बदल दिया था। राजा और अराचिया, नाहोर के अप्रत्याशित हृदय परिवर्तन से चकित, उससे बहुत क्रोधित हुए। राजा चाहता था कि वह नाहोर को ईसाइयों के साथ यातना दे, लेकिन वह अपने शाही वचन से मुकर नहीं सकता था, जिसके द्वारा उसने ईसाइयों को विश्वास की प्रतियोगिता में स्वतंत्र रूप से और बिना किसी डर के उपस्थित होने के लिए आमंत्रित किया था, और राजा के रूप में उन्हें कोई हानि पहुँचाने का वादा किया था। इसलिए, उसने सभा को तितर-बितर होने का आदेश दिया, यह कहते हुए कि बहस कथित तौर पर अगली सुबह फिर से होगी।

तब राजकुमार ने अपने पिता से कहा:

'हे राजा! शुरुआत में, मुकदमा आपकी आज्ञा के अनुसार ठीक से चला; तो अंत तक न्याय करें और एक बात का फैसला करें: या तो मेरे शिक्षक को आज रात मेरे साथ बिताने का आदेश दें, ताकि हम उनके साथ मिलकर यह विचार कर सकें कि हमें कल क्या कहना है, और आप अपने समान विचारधारा वाले लोगों के साथ भी ऐसा ही करें; या तो उन्हें मेरे हवाले कर दें, और मेरे गुरु को अपने ठिकाने पर ले जाएँ, क्योंकि यदि दोनों विरोधी पक्ष बहस तक आपके पास रहेंगे, तो मेरे गुरु अनिवार्य रूप से कष्ट और भय में रहेंगे, जबकि आपके बुद्धिमान आनंद और शांति में रहेंगे; और उस स्थिति में, मेरी राय में, मामले ठीक से आगे नहीं बढ़ सकते, बल्कि इसका परिणाम केवल यह होगा कि मिजबूत कमजोरों पर अत्याचार करेंगे और आपके द्वारा ईसाइयों से किए गए वादे का उल्लंघन होगा।

राजा, अपने पुत्र के बुद्धिमानी भरे शब्दों से प्रभावित होकर, नाहोर को अपने पास छोड़ गया, अपने बाकी पुजारियों को अपने साथ ले गया और यह उम्मीद करता रहा कि नाहोर अपना वादा (जोआसाफ को मूर्तिपूजा पर वापस लाने का) पूरा करेगा; राजकुमार, हालांकि, नाहोर को अपने साथ लेकर, अपने उद्धारकर्ता परमेश्वर में आनंदित होकर अपने महल के लिए रवाना हो गया।

अपने कक्ष में लौटने पर, उन्होंने नहोर से कहा, 'क्या तुम्हें नहीं लगता कि मैं यह नहीं जानता कि तुम बार्लाम नहीं, बल्कि नाहोर हो? फिर भी, तुमने ईसाई धर्म की सच्चाई को साबित करने और मूर्तियों की निरर्थकता को उजागर करने में अच्छा काम किया है: इसलिए, उस ईश्वर पर विश्वास करो, जिसके नाम पर तुमने इतनी बहादुरी से खड़े होए।'

जोसाफ के शब्दों से प्रभावित होकर, नाहोर ने अपने सभी पिछले पापों से पश्चाताप किया और, सच्चे ईश्वर की ओर मुड़ने की सच्ची इच्छा रखते हुए, जोसाफ से विनती की कि वह उसे गुप्त रूप से रेगिस्तान में भाग जाने, वहाँ छिपे हुए संन्यासियों के पास जाने और पवित्र बपतिस्मा ग्रहण करने की अनुमति दे। जोसाफ ने उन्हें आस्था में शिक्षित करके शांति से विदा कर दिया। वह रेगिस्तान में भाग गया, वहाँ उसे पवित्र जीवन जीने वाला एक पुरोहित मिला, और उससे बपतिस्मा ग्रहण करने के बाद, उसने पश्चाताप का जीवन जीना शुरू कर दिया।

अगली सुबह, राजा को नाहोर के साथ जो हुआ था, उसके बारे में पता चलने पर, वह उस पर लगाए गए अपने भरोसे पर निराश हो गया। यह देखकर कि उसके विद्वान पूरी तरह से पराजित हो गए थे और एक निराशाजनक स्थिति में थे, वह उन पर आग-बबूला हो गया, उन्हें शर्मनाक अपमान सहने के लिए मजबूर किया, और कुछ को कठोर शारीरिक दंड दिया; उसने उनके चेहरों पर कालिख पोतने का आदेश दिया और उन्हें अपनी उपस्थिति से निष्कासित कर दिया। उस समय से, उसने न तो पुरोहितों का सम्मान किया और न ही मूर्तियों को बलिदान चढ़ाया, बल्कि उनका अपमान किया। हालाँकि, मूर्तियों की पूजा करने से इनकार करते हुए भी और ईसाई धर्म को न अपनाते हुए, वह खुद को पूरी तरह से भ्रम और मानसिक उथल-पुथल की स्थिति में पाया। इस बीच, कई मूर्तिपूजक जोसाफ के पास आए और उसके साथ अपनी उद्धारकारी बातचीत से प्रसन्न होकर, मसीह की ओर मुड़ गए। इसलिए, पुजारियों ने जब अपना अपमान और उपहास देखा, और राजा को अपने देवताओं से मुँह मोड़ते हुए पाया, तो वे जल्दबाजी में फेउड नामक एक प्रसिद्ध जादूगर के पास दूत भेजने लगे, जो रेगिस्तान में राक्षसों के साथ रहता था; और जो कुछ भी हुआ था, उसे बताकर, उन्होंने उससे मदद की सच्ची विनती की। फेवदा, राक्षसों के एक बड़े दल के साथ, साहसपूर्वक राजा के पास गया— , जिसे वह व्यक्तिगत रूप से जानता था और पसंद करता था—और एक बार फिर, अपनी चापलूसी भरी बातों से, उसे मूर्तिपूजा पर लौटने के लिए मना लिया और मूर्तियों के सम्मान में उनके साथ एक बड़ा उत्सव आयोजित किया। धन्य जोसाफ को एक बार फिर मूर्तिपूजा की ओर मोड़ने के लिए, जादूगर ने राजा को एक चालाकी भरी सलाह दी: कि वह जोसाफ की उपस्थिति से सभी सेवकों को हटा दे और, उनकी जगह, उसकी सेवा के लिए सुंदर चेहरे वाली महिलाओं और खूबसूरत कुंवारी लड़कियों को नियुक्त करे।

'और मैं,' उसने कहना जारी रखा, 'एक राक्षस को उसके भीतर कामवासना की आग भड़काने के लिए भेजूँगा, और जैसे ही राजकुमार व्यभिचार के पाप में पड़ जाएगा, हे राजा, सब कुछ आपकी इच्छानुसार हो जाएगा।'

राजा ने इस दुष्ट सलाह पर ध्यान दिया, सुंदर कन्याओं और युवतियों की एक भीड़ इकट्ठी की, और उन्हें महँगे वस्त्रों और सोने के आभूषणों से सजाकर अपने बेटे के महल में ले गया; फिर उसने अपने सभी सेवकों को निकाल दिया, ताकि महल में एक भी पुरुष न रहे, और राजकुमार की सेवा के सभी कार्य महिलाओं और कन्याओं द्वारा किए जाने लगे। अदृश्य रूप से, जादूगर फेबदा द्वारा भेजी गई दुष्ट आत्माएँ भी वहाँ पहुँच गईं और उन्होंने उस युवक में कामुक वासना को भड़काना और उसमें अशुद्ध विचारों को भरना शुरू कर दिया। धन्य जोसाफ ने एक महान प्रलोभन और अपने भीतर एक संघर्ष को सहन किया – विशेष रूप से जब एक युवती, जो उन सभी में सबसे सुंदर थी, जिसे न केवल राजा बल्कि राक्षसों ने भी निर्देशित किया था, ने अपनी सुंदरता का जाल उस पर डाल दिया। वह एक राजा की बेटी थी; कैद होकर और अपनी मातृभूमि से दूर ले जाई जाने के बाद, वह राजा अवेनिर के हाथों में उसकी सबसे कीमती लूट के रूप में पड़ गई। उसकी असाधारण सुंदरता पर भरोसा करके, उसके पिता ने उसे अपने बेटे को बहकाने के लिए भेजा; उसमें प्रवेश करने के बाद, धोखेबाज़ राक्षस ने उसे बुद्धिमानी भरे शब्द और चालाक बातें सिखाईं, और साथ ही, पहले-पहले पवित्र युवक के हृदय में बिना किसी वासना के प्रेम भर दिया, ताकि वह धीरे-धीरे उसे अपनी जाल में फँसा सके। और वास्तव में, जोआसाफ उसे उसकी बुद्धि और सदाचार के लिए प्रेम करने लगा; इसके अलावा, उसे उस पर दया भी आई क्योंकि, एक राजा की बेटी होते हुए भी, वह एक कैदी बन गई थी और अपने देश तथा उच्च पद से वंचित हो गई थी; अंत में, उसने इस पर भी विचार किया कि वह उसे मूर्तिपूजा से कैसे दूर कर सकता है और उसे एक ईसाई कैसे बना सकता है।

इन विचारों को मन में रखकर, और अपने भीतर कोई तीव्र इच्छा महसूस न करते हुए, उसने उससे इस प्रकार कहना शुरू किया:

'हे कन्या, उस परमेश्वर को जानो जो सदा जीवित रहता है, कहीं ऐसा न हो कि तुम भ्रम में नाश हो जाओ। सृष्टिकर्ता को जानो, और तुम धन्य होओगी, क्योंकि तुमने स्वयं को अमर वर के साथ सगाई कर ली है।'

उसने उससे इसी प्रकार और भी बहुत कुछ कहा, और देखो, अशुद्ध आत्मा ने उसे बहकाने का काम शुरू करना और निर्दोष आत्मा को विनाश की ओर ले जाना सिखाया। और कन्या ने कहा:

'यदि आप, हे स्वामी, मेरी मुक्ति की परवाह करते हैं और मेरी आत्मा को मूर्तिपूजक भ्रमों से मुक्त करना चाहते हैं, तो मेरी यह एक विनती मान लें, और मैं तुरंत अपने पूर्वजों के देवताओं का त्याग कर दूँगी, आपके ईश्वर की ओर मुड़ जाऊँगी, और उनकी सेवा अपनी अंतिम साँस तक करूँगी; और इस प्रकार, मेरे धर्म परिवर्तन के लिए आपको एक पुरस्कार मिलेगा।"

'तो, तुम्हारी क्या मांग है?' पवित्र युवक ने कन्या से पूछा।

उसने अपनी दृष्टि और स्वर के मोहकपन से उसे मोहित करते हुए उत्तर दिया:

'मुझसे विवाह कर लो, और मैं तुम्हारी हर आज्ञा का पालन करूँगी।'

उसने कहा, "तुमने व्यर्थ में मुझसे ऐसी मांग करने की हिम्मत की है, क्योंकि यदि यह मैं तुम्हारे उद्धार की कामना करता हूँ, मैं स्वयं को कलंकित करने के लिए सहमति नहीं दूँगा।"

पाप के मार्ग को आसान बनाने की कोशिश में, उसने बदले में कहा:

'हे स्वामी, आप स्वयं इतने बुद्धिमान होकर व्यर्थ ही विवाह को अपवित्र कहते हैं: मैं भी ईसाई धर्मग्रंथों को जानती हूँ; मैं उन्हें अपने देश में अक्सर पढ़ती हूँ और कई अवसरों पर ईसाइयों से बात कर चुकी हूँ। क्या तुम्हारी किताबों में यह लिखा नहीं है: *'विवाह सभी के लिए सम्मानित हो, और विवाह का शयनपाट अशुद्ध न हो'* (इब्रानियों 13:4), और फिर: *'वासना से जलने की अपेक्षा विवाह करना उत्तम है'* (1 कुरिन्थियों 7:9)? – क्या आपके धर्मग्रंथ इस बात की गवाही नहीं देते कि प्राचीन कुलपिता, नबी और धर्मी पुरुष विवाह को जानते थे? क्या धर्मग्रंथ यह नहीं घोषित करते कि पतरस, जिन्हें आप प्रमुख प्रेरित कहते हैं, की एक पत्नी थी? तो फिर, हे प्रभु, किसने आपको विवाह को अपवित्र कहना सिखाया है? सच्चाई तो यह है कि आप स्वयं अपनी ही शिक्षा की सच्चाई से भटक गए हैं।

– 'यद्यपि तुमने जो कुछ भी कहा है, वह वास्तव में धर्मग्रंथ में पाया जाता है,' संत ने उत्तर दिया, 'और यह सच है कि यदि कोई चाहे तो विवाह करने के लिए स्वतंत्र है, सिवाय उन लोगों के जिन्होंने मसीह को अपनी कुँवारी अवस्था बनाए रखने का व्रत लिया है; और मैंने, जैसे ही पवित्र बपतिस्मा प्राप्त किया, निर्मल कुँवारी अवस्था में स्वयं को मसीह के समक्ष प्रस्तुत करने का व्रत लिया: तो फिर मैं ईश्वर से किया गया अपना व्रत तोड़ने की हिम्मत कैसे कर सकती हूँ?

प्रलोभी ने उससे कहा:

'यदि आप मुझे अपनी पत्नी नहीं बनाएंगे, तो मेरी एक और इच्छा पूरी करें—जो आसानी से पूरी हो सकती है और जिसका कोई परिणाम नहीं होगा। यदि आप मेरी आत्मा को बचाना चाहते हैं, तो आज रात मेरे साथ रहें। यदि आप ऐसा करते हैं, तो मैं आपसे वादा करती हूँ कि कल मैं ईसाई धर्म अपना लूँगी, और तब न केवल आपको मेरे धर्म परिवर्तन को संभव बनाने की आपकी देखभाल के लिए पापों की क्षमा मिलेगी, बल्कि आपको एक बड़ा इनाम भी मिलेगा; क्योंकि *'एक पापी के लौटने पर स्वर्ग में बहुत आनंद होगा'* (लूका 15:7), जैसा कि आपकी पवित्र शास्त्र कहती है; और यदि एक पापी के परिवर्तित होने पर स्वर्ग में आनंद होता है, तो क्या उस व्यक्ति के लिए पुरस्कार महान नहीं होगा जो पापी को परिवर्तित करता है और उस पापी के लिए ऐसे आनंद का कारण बनता है? निस्संदेह—हाँ, क्योंकि आपके प्रेरितों ने भी एक बड़े आज्ञा के लिए एक छोटी दिव्य आज्ञा को अलग रखकर, अपनी विवेक-बुद्धि से कई काम किए। क्या प्रेरित पौलुस ने तिमोथी का खतना नहीं कराया (प्रेरितों के काम 16:3), जबकि खतना ईसाइयों के लिए अनिवार्य नहीं है? और फिर भी, उन्होंने प्रचार के कार्य की महान भलाई के लिए ऐसा करने से नहीं डरा। और आपको अपनी ही किताबों में ऐसे कई समान उदाहरण मिलेंगे। इसलिए, यदि आप वास्तव में मेरी आत्मा को बचाना चाहते हैं, तो मेरी इस विनम्र इच्छा को पूरा करें।

जब उसने ये शब्द कहे, तो संत की आत्मा, विरोधी विचारों से घिरकर, भलाई और बुराई के बीच डगमगाने लगी; अपनी कुँवारी अवस्था बनाए रखने का उसका संकल्प डगमगाने लगा, और उसकी इच्छाशक्ति और विवेक कमजोर पड़ते दिखे। यह देखकर, पाप का बोने वाला—शैतान—खुशी से भर गया और अन्य राक्षसों को घोषणा की:

'देखो, यह कन्या वह करने की इच्छा रखती है जो हमारे बस की भी नहीं है! इसलिए, अब हम विशेष उत्साह के साथ उस युवक पर आक्रमण करें, क्योंकि हमें भेजने वाले की इच्छा और आज्ञा को पूरा करने का इससे अधिक अनुकूल समय नहीं मिलेगा।'

यह कहकर, वह अशुद्ध आत्मा अपने सेवकों के साथ, हिम्मत करके मसीह के योद्धा पर टूट पड़ा और उसकी सारी आध्यात्मिक शक्ति को अस्त-व्यस्त कर दिया, उसके भीतर कन्या के लिए एक अशुद्ध प्रेम और एक प्रबल वासना को प्रज्वलित करते हुए। तब संत ने छाती पर हाथ मारते हुए और हृदय की गहराई से ईश्वर के लिए आहें भरते हुए, प्रार्थना के लिए शीघ्रता की, और, भरपूर आँसू बहाते हुए, सर्वशक्तिमान से अपने संकट और तूफ़ान से बचाने के लिए पुकार लगाई, यह कहते हुए:

– *'हे प्रभु, मैं तुझ में शरण लेता हूँ; मुझे कभी लज्जित न होने दे... मेरे शत्रु मुझ पर जय न पाएँ'* (भजन संहिता 30:2; भजन संहिता 24:2), जो आपकी शक्ति पर भरोसा करता है; परन्तु इस घड़ी मेरी रक्षा करें और अपनी इच्छा के अनुसार मेरे मार्गों को निर्देशित करें, ताकि आपके सेवक, मुझ पर, आपके पवित्र और भयानक नाम का महिमामंडन हो।

संत ने बहुत देर तक प्रार्थना की, भर-भर कर रोए और कई बार प्रणाम किया, और अंत में जमीन पर गिरकर सो गए। नींद में उसने जल्द ही देखा कि कुछ अज्ञात पुरुष उसे ले जा रहे थे, जो अद्भुत स्थानों से होकर गुज़र रहे थे और उसे

सुंदर और अत्यंत सुगंधति फूलों से ढाए हुए एक वशिाल मैदान में ले गए। वहाँ उसने वभिन्नि और सुंदर पेड़ों की भीड़ देखी, जो अज्ञात और असाधारण फल दे रहे थे, जो देखने में मनभावन थे और उन्हें चखने की इच्छा जगाते थे; इन पेड़ों की पत्तयिाँ हल्की हवा में आनंद से सरसराती और धीरे-धीरे हलिती थीं, जसिसे एक नरिंतर सुगंध फैल रही थी। पेड़ों के नीचे शुद्ध सोने, कीमती पत्थरों और मोतयिों के सहिासन खड़े थे, जो एक तीव्र, चमकीली रोशनी बखिेर रहे थे; वहाँ वभिन्नि प्रकार की अकल्पनीय सुंदरता और वैभव वाली छतरयिों से ढके पलंग भी थे। बीच में पानी बह रहा था, जो साफ और सुंदर था, और आँखों को आनंद दे रहा था। उल्लेखति असाधारण पुरुषों ने जोआसाफ को वर्णति पूरे क्षेत्र में घुमाया और उसे उस शहर में ले आए, जो एक अकथनीय प्रकाश से दमक रहा था; उसकी दीवारें शुद्ध सोने और कीमती पत्थरों की थीं, जैसी पहले कसिी ने कभी नहीं देखी थीं, जबकि दीवारों के स्तंभ और द्वार ठोस मोतयिों से बने थे... लेकनि इस शहर की पूर्ण सुंदरता और वैभव को कौन व्यक्त कर सकता है?! वह प्रकाश, प्रचुर करिणों से चमकता हुआ, शहर की सभी सड़कों को भर रहा था, और कुछ पंखों वाले योद्धा, जो तेजस्वी रूप वाले थे, शहर में ऐसे सुरम्य गीत गाते हुए घूम रहे थे जो कसिी भी मानव कान ने पहले कभी नहीं सुने थे। और जोसाफ ने एक आवाज़ सुनी:

'देखो—धर्मयिों का अवशेष! देखो—उन लोगों का आनंद जन्हिोंने अपने जीवन में प्रभु को प्रसन्न कयिा है।'

जोआसाफ को पकड़ने वाले पुरुष उसे शहर से बाहर ले जाकर वापस ले जाना चाहते थे। लेकनि उसने, देखी गई सुंदरता और वैभव से मोहति होकर, कहा:

'मैं आपसे वनिती करता हूँ, मुझे इस अवर्णनीय आनंद से वंचति न करें; मुझे इस शहर के कसिी कोने में रहने दें।'

वे बोले, 'तुम अब यहाँ नहीं ठहर सकते, परन्तु अपने बहुत से कर्मों और प्रयत्नों के कारण तुम अन्ततःयहाँ प्रवेश करोगे, बशर्ते कि तुम उस उद्देश्य के लिए अपनी सारी शक्ति लगा दो, क्योंकि *"जो यत्न करते हैं, वे इसे बल से ले लेते हैं"* (मत्ती 11:12)।'

उसके बाद, वे उसे फरि से ऊपर बताए गए महान मैदान के पार ले गए और उसे उदासी और दुख से भरी अंधेरी जगहों में ले आए, और हर तरह से यह उस प्रकाश और आनंद के वपिरीत था जो जोसाफ ने पहले देखा था। वहाँ एक नरिाशाजनक, उदास अंधकार था, और सब कुछ दुख और भ्रम से भरा था। वहाँ एक अग्नि भट्टी जल रही थी, और उसके चारों ओर , मानव मांस को चट कर जाने वाले कीड़े रेंग रहे थे, जबकि प्रतशिोध की आत्माएँ पहरा दे रही थीं। कुछ लोगों को आग में क्रूरतापूर्वक जलाया जा रहा था, और एक आवाज़ सुनाई दी:

'देखो—यह पापयिों का स्थान है! देखो—यह उन लोगों का स्थान है जन्हिोंने शर्मनाक कर्मों से स्वयं को कलंकति कयिा है!'

तब जो उस दर्शन में जोआसाफ का मार्गदर्शन कर रहे थे, उन्होंने उसे अंधकार से बाहर नकिाला, और जैसे ही वह जागा, वह होश में आ गया, यद्यपि वह पूरे शरीर से कांप रहा था, और उसकी आँखों से आँसू बह रहे थे। और फरि अपनी जवान बहकाने वाली और अन्य महलिाओं और कन्याओं की सारी सुंदरता उसे कीचड़ और पीब से भी बदतर लगी। जब वह अपने दर्शन को याद करता, तो कभी-कभी उसे प्रकाश के नगर तक पहुँचने की तीव्र लालसा होती, और कभी-कभी अनंत यातना के भय से काँप उठता; थका-हार कर, वह बस्तिर पर पड़ा रहता, उठने में असमर्थ।

राजा को उसकी बीमारी के बारे में सूचना दी गई, और वह तुरंत उसके बस्तिर के पास आया और उससे उसकी बीमारी के कारण के बारे में पूछने लगा। जोसाफ ने उसे वह सब कुछ बताया जो उसे दर्शन में दखिाया गया था, और कहा:

'तुमने मेरे लिए फंदे क्यों बछिाए हैं, मुझे पकड़ने और मेरी आत्मा को वनिाश में डालने की कोशशि क्यों कर रहे हो? क्योंकि यदि परमेश्वर ने मेरी सहायता न की होती, तो मेरी आत्मा नश्चिय ही नरक में होती। परन्तु इस्राएल का परमेश्वर कतिना भला है, जसिने मुझे, एक पापी को, सहिों के जबड़ों से छुड़ाया है! मैं अपनी पीड़ा में सो गया; परन्तु परमेश्वर, मेरे उद्धारकर्ता, ने ऊपर से मेरी सुधि ली और मुझे दखिाया कि जो लोग उसे चढ़ाते हैं, वे कनि-कनि आशीषों से वंचति हो जाते हैं, और वे अपने लिए कैसी यातनाएँ तैयार कर रहे हैं... इसलिए, हे पति, यदि आप, मानो, अपने कान बंद कर लेते हैं और जब भी मैं आपसे सच्ची भलाई के बारे में बात करता हूँ तो मेरी बात सुनने से इनकार कर देते हैं, तो कम से कम मुझे सही मार्ग पर चलने से न रोकें। क्योंकि मैं केवल एक ही बात की कामना करता हूँ: सब कुछ पीछे छोड़कर उस स्थान पर जाना जहाँ मसीह के संत, बरलाम, वास करते हैं, और अपना शेष जीवन उनके साथ बतिाना। लेकनि यदि आप मुझे जबरदस्ती रोकने का प्रयास करेंगे, तो आप जल्द ही मुझे दुख और नरिाशा से मृत देखेंगे; और तब, पुत्रहीन होकर, आपको अब पति नहीं कहा जाएगा।

एक बार फरि, राजा गहरे दुख से भर गया, और, शोकाकुल होकर, वह अपने महल में चला गया। दुष्ट आत्माएँ भी, मसीह के अजेय योद्धा को छोड़कर शर्मदिगी के साथ फ्यूडा के पास लौट आईं, जसिने उन्हें डाँटना शुरू कर दयिा:

उसने कहा, 'देखो तुम कतिने शक्तहिीन हो, हे दुष्टों, तुम एक युवक को भी हरा नहीं सके!'

और वे, अपनी इच्छा के वरिुद्ध ईश्वर की शक्ति से ववशि होकर, उन्होंने स्वीकार कयिा:

'हम मसीह की शक्ति का सामना नहीं कर सकते; हम तो उस क्रूस के चह्नि को भी नहीं देख सकते जसिसे वह युवक अपनी रक्षा करता है।'

कुछ समय बाद, राजा, फेवदा को अपने साथ लेकर, एक बार फरि अपने बेटे के पास आया; और इस बार फेवदा ने उस युवक से अपने देवताओं का बचाव करते हुए बातचीत की, लेकनि वह उस पर वजिय प्राप्त नहीं कर सका जसिे उच्च स्थान से ओठ और बुद्धि दी गई थी - एक ऐसी बुद्धि के वरिुद्ध कोई भी टकि नहीं सकता। पराजति और लज्जति होकर, फेवदा लंबे समय तक चुप रहा, मानो गूंगा हो गया हो, और उसे कहने के लिए कुछ भी सूझ नहीं रहा था; और अंत में, बड़ी मुश्कलि से अपने आप को संभालकर और राजा की ओर मुड़कर, उसने कहा:

'हे राजा! पवत्रि आत्मा आपके पुत्र में वास करता है; हम वास्तव में पराजति हैं और उनके उत्तर में कहने के लिए हमारे पास कुछ भी नहीं है... सचमुच, ईसाई परमेश्वर महान है, उनका वश्विास महान है, और उनके संस्कार महान हैं!'

और, राजकुमार की ओर मुड़कर, उसने पूछा:

'मुझसे कहो, तुम जनिकी आत्मा पवत्रि है: क्या मसीह मुझे स्वीकार कर लेंगे यदि मैं अपने बुरे कर्मों को त्याग दूँ और उनकी ओर मुड़ जाऊँ?'

संत जोआसाफ ने उनसे पापयिों के पश्चाताप और ईश्वर की दया के बारे में बात करना शुरू कयिा, जो सच्चे दलि से पश्चाताप करने वालों को तुरंत स्वीकार कर लेती है। फेवदा का हृदय परविर्तति हो गया, और वह तुरंत अपनी गुफा में भागा, जहाँ उसने जादू-टोने के लिए इस्तेमाल की जाने वाली सभी कतिाबें जला दीं; फरि उसने नहोर के उदाहरण का अनुसरण कयिा: उसने पवत्रि बपतस्मिा ग्रहण कयिा और अपना बाकी जीवन पश्चाताप में बतिाया।

चूँकि राजा को अब यह समझ नहीं आ रहा था कि अपने बेटे के साथ क्या करें, अराचयिास ने उन्हें अपना राज्य दो भागों में बाँटने और एक हस्सिा अपने बेटे को देने की सलाह दी।

उसने कहा, 'यदि आप अपने पुत्र को पीड़ा देना चाहते हैं, तो आप स्वयं प्रकृति के शत्रु बन जाएँगे और आपको पति नहीं, बल्कि अपने ही पुत्र के यातनादाता कहा जाएगा; इसके अलावा, आप उसे नष्ट कर देंगे, और आप स्वयं संतानहीन रह जाएँगे तथा अपनी ही पीड़ा को और बढ़ा देंगे।' अब केवल एक ही काम बचा है: अपने राज्य को आधा बाँट दें और अपने बेटे को उसके हस्सिे पर शासन करने दें। जैसे-जैसे वह दैनकि जीवन की चतिाओं में व्यस्त होगा, वह धीरे-धीरे हमारे जीवन के आदी हो जाएगा, और सब कुछ हमारी इच्छानुसार होगा, क्योंकि आत्मा में गहराई से जमी हुई आदतें बल से नहीं बल्कि वश्विास से बदलती हैं। भले ही वह ईसाई धर्म के प्रति विफादार रहे, यह तथ्य कि आप नश्चिंतान नहीं हैं, कि आपका एक पुत्र—एक राजा—है, आपके दुख में आपके लिए कुछ सांत्वना होगी।

अराची की सलाह मानते हुए, राजा ने ठीक वैसा ही कयिा: उसने राज्य को दो भागों में बाँट दयिा और जोसाफ को आधे राज्य का राजा नयिुक्त कर दयिा। हालाँकि जोआसाफ ने कभी राजसी शक्ति के बारे में नहीं सोचा था, बल्कि वह तो नर्जिन स्थान में एक संन्यासी जीवन की इच्छा रखता था, फरि भी उसने यह नष्किर्ष नकिाला कि सब कुछ सबसे अच्छे के लिए हो रहा है; इसलिए उसने अपने हस्सिे में मलिी रयिाया को स्वीकार कर लयिा और सहिासन पर बैठते ही सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण, मूर्तपिूजक बहुदेववाद को जड़ से उखाड़ फेंकने और एक सच्चे ईश्वर में आस्था फैलाने का काम शुरू कर दयिा। उसने अपनी सारी भूमि में मूर्तयिों को नष्ट कर दयिा और उनके पूजा स्थलों को धूल-चटा कर दयिा; उनकी जगह उसने ईसाई चर्च बनवाए और हर संभव तरीके से मसीह के धर्म का प्रचार कयिा। यह सुनकर, ईसाई बशिप, प्रेस्बटिर और डीकन पहाड़ों और रेगस्तिानों से उतर आए और उस धर्मनष्ठि राजा के पास आ जुटे, जन्होंने उन्हें खुशी से स्वागत कयिा और उनके साथ मलिकर मानव आत्माओं के उद्धार के लिए खुद को समर्पति कर दयिा। जल्द ही उसने अपने सभी प्रजाजनों को आस्था के प्रकाश से प्रकाशति कयिा और उनका बपतस्मिा दयिा, साथ ही वह अपने पति के धर्म परविर्तन के लिए ईश्वर से अखंड रूप से आँसुओं के साथ प्रार्थना करता रहा।

और दयालु ईश्वर ने उनकी प्रार्थनाओं और आँसुओं को अनसुना नहीं कयिा: उन्होंने अपने अनुग्रह के प्रकाश से एवेनरि के हृदय को छू लयिा, और उसके मन की आँखों से अंधकार का पर्दा उठ गया, और उसने सत्य का प्रभात देखा और झूठे देवताओं की व्यर्थता को पहचाना। एवनियिर ने अपने सलाहकारों को इकट्ठा कयिा और उन्हें ईसाई धर्म

अपनाने की अपनी हार्दकि इच्छा बताई। सभी ने उनके इरादे की प्रशंसा की, क्योंकि जोसाफ की प्रार्थनाओं के द्वारा, 'ऊँचे स्थान से *भोर हम पर आई है*' (लूका 1:78)। तुरंत, राजा ने अपने पुत्र को बुलाने के लिए एक पत्र भेजा, ताकि वह उससे विश्वास और धार्मकिता सीख सके। जब जोसाफ ने देखा कि उसके पिता सच्चे ईश्वर की ओर मुड़ रहे हैं, तो उसके हृदय में कितनी आनंद और प्रसन्नता भर गई! कई दिनों तक अपने पिता को धर्म में पर्याप्त रूप से शिक्षित करने और उन्हें पवित्र धर्म के रहस्यों को सिखाने के बाद, ठीक वैसे ही जैसे कि आदरणीय बरलाम ने उन्हें सिखाया था, जोसाफ उन्हें पवित्र बपतिस्मा के लिए ले गए और स्वयं उन्हें पवित्र जल-कुंड से ग्रहण किया। यह वास्तव में एक नया और अद्भुत घटना थी! वह अपने ही पिता के लिए पिता बन गया और जिसने उसे देह में जीवन दिया था, उसके लिए वह उसके आध्यात्मिक पुनर्जन्म का मध्यस्थ बन गया। राजा के अनुकरण में, उसके कुलीनों, सैनिकों और सेवकों ने—संक्षेप में, पूरे भारत ने—पवित्र बपतिस्मा ग्रहण किया। और तब पृथ्वी और स्वर्ग में महान आनंद हुआ: पृथ्वी पर, विश्वासियों ने अविश्वासियों के धर्म परिवर्तन पर आनंद मनाया, और स्वर्ग में, स्वर्गदूतों ने अनगिनत पश्चातापी पापियों पर आनंद मनाया।

अपने बपतिस्मा के बाद, अवनीर ने सभी राजसी अधिकार अपने पुत्र को सौंप दिए, जबकि वह स्वयं एकांत और मौन में रहने लगा, लगातार अपने सिर पर राख डालता और अपने पापों पर शोक मनाता था: इस प्रकार वह चार साल तक रहा और ईश्वर से अपने पापों की क्षमा प्राप्त करने के बाद, शांतिपूर्वक निधन कर गया।

राजा एवनीर के निधन के चालीसवें दिन, जोआसाफ ने उनकी स्मृति के सम्मान में अपने सभी कुलीनों, सलाहकारों, सैन्य कमांडरों और अन्य महत्वपूर्ण अधिकारियों को बुलाया, और उन्हें अपना रहस्य बताया, अर्थात् कि वह अपने सांसारिक राज्य और सभी सांसारिक चीजों को त्यागकर, रेगिस्तान में जाकर एक भिक्षु के रूप में रहना चाहता था। सब दुखी हो गए और आँसू बहाने लगे, क्योंकि वे सभी उसकी कोमलता, विनम्रता और परोपकार के लिए उससे बहुत प्यार करते थे। वह अपनी जगह पर अपने एक कुलीनों को राजा नियुक्त करना चाहता था, अर्थात् बराकियाह को, जो लंबे समय से एक ईसाई था – वही व्यक्ति जिसने सभी विधर्मी ऋषियों के विरुद्ध विश्वास पर हुए वाद-विवाद में कथित बिलाम के पक्ष में खड़ा था। योआसाफ जानता था कि बिराकियाह अपने विश्वास में बहुत दृढ़ था और मसीह से बहुत प्रेम करता था।

लेकिन बराकियाह ने राजसिंहासन ठुकरा दिया, और कहा:

'हे राजा, अपने पड़ोसी से वैसे ही प्रेम करो जैसे तुम स्वयं से करते हो। यदि शासन करना अच्छा है, तो स्वयं शासन करो। लेकिन यदि नहीं, तो आप मुझे राज्य क्यों दे रहे हैं? आप मुझ पर वह बोझ क्यों लाद रहे हैं जिससे आप स्वयं भाग रहे हैं?'

तब सभी ने बड़ी विनम्रता और आँसुओं के साथ संत जोसाफ से उन्हें छोड़कर न जाने का आग्रह करना शुरू कर दिया। लेकिन उस रात उन्होंने संपूर्ण सिकिलाइट और सभी मजिस्ट्रेटों को एक पत्र लिखा, जिसमें उन्होंने उन्हें ईश्वर के सुपुर्द किया और उन्हें आदेश दिया कि वे बराकियाह के सिवा किसी को अपना राजा न बनाएँ; और, यह पत्र अपने शयनकक्ष में छोड़कर, वे स्वयं चुपके से निकल गए और रेगिस्तान की ओर तेज़ी से चल पड़े। अगले सुबह, उनके प्रस्थान की खबर आग की तरह फैल गई। लोग हक्का-बक्का रह गए और गहरे दुख में डूब गए। कई लोग रो पड़े। अंततः राजधानी के सभी निवासी उनकी तलाश में निकल पड़े और उन्हें एक सूखी नदी के बहाव में हाथ उठाकर प्रार्थना करते हुए पाया। वहाँ उन्होंने उसे घेर लिया और उसके सामने भूमि पर लोट कर, आँसुओं से विनती की कि वह महल लौट आए और उन्हें न छोड़ें। जोआसाफ, इन विनतियों से विवश होकर, लौट आए, लेकिन जल्द ही उन्होंने फिर से सभी को इकट्ठा किया और कहा:

'मुझे रोककर, आप व्यर्थ ही प्रभु की इच्छा का विरोध कर रहे हैं।'

उसने फिर गंभीरतापूर्वक अपने शब्दों की पुष्टि की, ताकि उस क्षण से वह एक दिन के लिए भी राजा न रह सके। बराकियाह की इच्छा के विरुद्ध, उसने उस पर अपना मुकुट रखा, उसे अपने सिंहासन पर बिठाया और एक राजा के कर्तव्यों के संबंध में उचित निर्देश दिए; जबकि स्वयं, लोगों को विदा कहकर, महल और शहर छोड़कर, मरुभूमि की ओर तेज़ी से चल पड़ा। सभी लोग, विराचियस और सभी अधिकारियों के साथ, यह समझ गए कि जोआसाफ राज्य त्यागने के अपने निर्णय पर दृढ़ था—न तो वे उसे विनती करके मना सके और न ही जबरदस्ती उसे वापस मोड़ने की हिम्मत कर सके—वे रोते हुए उसके पीछे हो लिए और काफी दूर तक उसके साथ चले; उसने, अपनी ओर से, उनसे दुखी न होने और उसे अकेला छोड़ देने के लिए कहा; लेकिन कुछ लोग फिर भी दूर से रोते हुए उसका पीछा करते रहे, जब तक कि सूर्य अस्त नहीं हो गया, जब रात ने उनके प्रिय शासक को उनकी दृष्टि से छिपा दिया और वे एक-दूसरे को और नहीं देख सके।

इस प्रकार बराखिया ने भारतीय राज्य का राजदंड ग्रहण किया, जबकि जोआसाफ *ने 'मसीह को प्राप्त करने के लिए सब कुछ व्यर्थ समझा'* (फिलि. 3:8)। अपनी यात्रा की पहली ही रात को, वह एक गरीब आदमी के घर में गया और उसे अपने कपड़े दे दिए, जबकि वह स्वयं बार्लाम द्वारा एक बार दिए गए बालों वाले वस्त्र को पहनकर रेगिस्तान के तपस्वी जीवन पर निकल पड़ा। उसने अपने साथ न तो रोटी रखी, न ही जीवन-यापन के लिए कोई और आवश्यक वस्तु, यहाँ तक कि पानी भी नहीं: उसने अपनी सारी आशा ईश्वर की व्यवस्था में रखी और अपने प्रभु के लिए अग्निमय प्रेम से जल उठा। रेगिस्तान पहुँचने पर, उसने मसीह की ओर अपनी दृष्टि उठाई और पुकारा:

'हे मेरे प्रभु, मेरी आँखें अब इस संसार के आशीर्वादों को न देखें, और मेरा हृदय मेरी आशा, आप के सिवाय किसी अन्य में आनंद न ले! मेरे मार्ग का मार्गदर्शन करें और मुझे अपने संत, बरलाम के पास ले जाएँ! मुझे वह दिखाओ जिसके द्वारा मैं उद्धार पाऊँगा, और हे प्रभु, जिसने मुझे आपको जानना सिखाया, वह मुझे मरुभूमि का मार्ग सिखाए!

दो वर्षों तक संत जोआसाफ बर्लम की तलाश में अकेले रेगिस्तान में भटकते रहे। वे वहाँ उगने वाली जड़ी-बूटियों पर गुज़ारा करते थे और अक्सर उन जड़ी-बूटियों की भी कमी के कारण भूख से पीड़ित रहते थे, क्योंकि उस रेगिस्तान की मिट्टी सूखी और बहुत उपजाऊ नहीं थी। उन्होंने शैतान के हाथों कई परीक्षाओं को सहा, जिसने उन पर हमला किया, कभी-कभी विभिन्न विचारों से उनके मन को भ्रमित करके, कभी-कभी प्रेतों से उन्हें डराकर; कभी-कभी वह उनके सामने दाँत पीसते हुए एक काले आकृति के रूप में प्रकट हुआ; अन्य समयों में वह हाथ में तलवार लेकर उन पर झपट पड़ा, मानो उन्हें मारना चाहता हो; और अन्य समयों में उसने विभिन्न जानवरों, साँपों और विषैले साँपों का रूप धारण किया। लेकिन मसीह का यह साहसी और अजेय योद्धा इन सभी दृश्यों पर काबू पा गया और प्रार्थना की तलवार तथा क्रूस के हथियार से उन्हें भगा दिया।

दूसरे वर्ष के अंत में, जोआसाफ को सेनारडि रेगिस्तान में एक गुफा मिली और उसमें उसे एक ऐसा भिक्षु मिला जिसने मौन में शरण ले रखी थी; उससे उसे पता चला कि बिरलाम कहाँ थे। अत्यंत प्रसन्न होकर, वह तुरंत उसे बताए गए मार्ग पर चल पड़ा, बरलाम की गुफा तक पहुँचा और प्रवेश द्वार पर खड़े होकर, दरवाज़ा धकेलकर खोलते हुए कहा:

'मुझे आशीर्वाद दीजिए, पिताजी, मुझे आशीर्वाद दीजिए!'

बर्लाम, आवाज़ सुनकर, गुफा से बाहर आए और दिव्य प्रेरणा से जोसाफ को पहचान लिया, जिसे उसके रूप से पहचानना असंभव था, क्योंकि वह तपती धूप से काला पड़ गया था, उसके बाल लंबे हो गए थे, और उसके गाल पतले तथा आँखें बहुत अंदर धँसी हुई थीं। वरिष्ठ ने पूर्व की ओर मुख करके ईश्वर को धन्यवाद का प्रार्थना निवेदन किया; फिर उन्होंने प्रेमपूर्वक एक-दूसरे को गले लगाया और पवित्र चुंबन का आदान-प्रदान किया, उनके चेहरे आनंद के गर्म आँसुओं से सराबोर थे। बैठकर, उन्होंने बातचीत शुरू की, और बरलाम ने पहले कहा। उन्होंने कहा:

'तुम आकर अच्छा किया, मेरे बच्चे, हे ईश्वर के बच्चे और स्वर्ग के राज्य के वारिस! प्रभु आपको कृपणकि के स्थान पर शाश्वत आशीर्वाद दें, और नश्वर के स्थान पर अमर आशीर्वाद दें। परन्तु मैं आपसे विनती करता हूँ, हे प्रिय, मुझे बताइए: आप यहाँ कैसे आए? मेरे जाने के बाद आपके साथ क्या हुआ है? क्या आपके पिता ने परमेश्वर को जान लिया है, या वे अभी भी अपनी पुरानी भ्रांति में ही हैं?

जोसाफ ने उसे विस्तार से वह सब कुछ बताया जो बिलाम के जाने के बाद हुआ था और प्रभु ने अपनी सर्वशक्तिमान सहायता से क्या-क्या किया था। बूढ़े ने यह सब सुनकर बहुत आनंदित होकर आश्चर्य किया, और अंत में कहा:

'महिमा तेरी हो, हे मसीह परमेश्वर, कि तूने अपनी कृपा दिखाई और अपने दास योआसाफ की आत्मा में मेरे द्वारा बोए गए अपने वचन के बीज को इस प्रकार बढ़ने और सौ गुना फल देने दिया।'

इस बीच, शाम हो चुकी थी, और अपनी रोज़ की प्रार्थनाएँ करने के बाद, तब जाकर उन्हें आखिरकार खाना खाने का ध्यान आया। और इस प्रकार, बार्लाम ने आत्मा-उद्धारक वार्तालाप से भरपूर, आध्यात्मिक पोषण से पूर्ण, लेकिन शारीरिक पोषण में न्यून भोजन तैयार किया, क्योंकि इसमें केवल कच्ची, बिना पकी सब्जियां, थोड़ी मात्रा में खजूर और पास के झरने का पानी शामिल था। ऐसे भोजन से बल प्राप्त कर, उन्होंने उस ईश्वर का धन्यवाद किया, जो अपना हाथ खोलता है और अपनी उदारता से हर जीवित प्राणी को तृप्त करता है। फिर उन्होंने अपनी रात की प्रार्थनाएँ कीं और एक बार फिर अपनी आत्मा-उद्धारक बातचीत शुरू की, और सुबह की स्तुति के समय तक पूरी रात बातें करते रहे।

इस तरह का अद्भुत और दैवीय जीवन जीते हुए, जोसाफ और बरलाम कई वर्षों तक एक साथ रहे। अंत में, पूजनीय बरलाम को एहसास हुआ कि उनका अंत निकट आ गया है; उन्होंने अपने आध्यात्मिक पुत्र जोसाफ को, जिसे उन्होंने नए जीवन में वापस लाया था, बुलाया और उससे कहा:

'मेरे पुत्र, मैं अपनी मृत्यु से पहले तुम्हें देखने की बहुत दिनों से इच्छा रखता था, और जब मैंने एक बार तुम्हारे लिए प्रार्थना की, तो हमारे प्रभु यीशु मसीह मुझे प्रकट हुए और उन्होंने मुझे तुम्हें मेरे पास लाने का वचन दिया। अब प्रभु ने मेरी इच्छा पूरी कर दी है: मैं तुम्हें संसार और सभी सांसारिक चीजों का त्याग करके मसीह के साथ एकीकृत होते हुए देखता हूँ। और चूँकि अब मेरे प्रस्थान का समय आ गया है, मेरे शरीर को पृथ्वी को सौंप दो, मिट्टी को मिट्टी में मिला दो, और तुम स्वयं इसी स्थान पर रहो, अपना आध्यात्मिक जीवन जारी रखो और इस दीन बंधु को याद करते रहना।

ये वचन सुनकर जोसाफ अपने पूज्य पिता से बिछड़ने के विचार से जोर-जोर से रोया, और वरिष्ठ उसे आध्यात्मिक उपदेश से मुश्किल से ही सांत्वना दे सके; फिर उन्होंने उसे उसी रेगिस्तान में रहने वाले कुछ भाइयों के पास भेज दिया और उसे दिव्य अनुष्ठान के आयोजन के लिए आवश्यक सभी चीजें लाने का निर्देश दिया। जोसाफ जल्दी से रवाना हुआ, आवश्यक सामान इकट्ठा किया, और उतनी ही तेजी से वापस लौट आया, इस डर से कि कहीं उसका आध्यात्मिक पिता उसके बिना ही न चल बसें और वह उनकी अंतिम आशीर्वाद से वंचित न रह जाए। बरलाम ने दैवीय लिटुर्गी का अनुष्ठान किया, और दोनों ने पवित्र कम्युनियन ग्रहण किया। तब आदरणीय गुरु ने अपने शिष्य से आत्मा के कल्याण के लिए लाभकारी बातों पर विस्तार से चर्चा की और स्वयं तथा अपने शिष्य के लिए गहरी भावना के साथ ईश्वर से प्रार्थना की; प्रार्थना के बाद, जोसाफ को पिता की भाँति गिले लगाकर, वृद्ध ने उसे अंतिम बार चूमा और आशीर्वाद दिया, क्रॉस का चिह्न बनाया, और अपने बिस्तर पर लेट गए; जिस पर उनका चेहरा दीप्तिमान और प्रसन्न हो गया, मानो कोई मित्र उनसे मिलने आ गया हो; इस प्रकार वे प्रभु के पास चले गए, उन्होंने 70 वर्ष रेगिस्तान में और जन्म से कुल मिलाकर लगभग 100 वर्ष जीवन यापन किया।

जोसाफ, उनके लिए भरपूर आँसू बहाते हुए, दिन-रात उनके पास भजन गाते रहे; अगले सुबह, गुफा के पास एक कब्र खोदकर, उन्होंने पूजनीय वृद्ध की लाश को सुला दिया और कब्र के पास बैठकर इतना रोए कि रो-रोकर थक गए और सो गए। नींद में, उन्होंने एक बार फिर उन अद्भुत पुरुषों को देखा जिन्हें उन्होंने एक बार अपने परीक्षण के दौरान देखा था: वे उनके पास आए, उनका हाथ पकड़ा, और उन्हें एक बार फिर उस महान मैदान में ले गए जिसे उन्होंने पहले ही देखा था, और उस तेजस्वी शहर में। जब वे शहर के द्वार में प्रवेश किए, तो उनका सामना परमेश्वर के स्वर्गदूतों से हुआ, जो अकथनीय सुंदरता के दो मुकुट धारण किए हुए थे।

जोआसाफ ने पूछा:

'ये तेजस्वी मुकुट किसके हैं?'

देवदूतों ने उत्तर दिया, 'दोनों आपके हैं, कई आत्माओं को बचाने के लिए और ईश्वर के लिए अपना सांसारिक साम्राज्य त्यागकर, मठवासी जीवन को समर्पित करने के लिए; लेकिन उनमें से एक आपके पिता को दिया जाना चाहिए, क्योंकि आपकी मदद से उन्होंने विनाश के मार्ग को त्याग दिया, पूरे दिल और लगन से पश्चाताप किया, और प्रभु से मेल-मिलाप कर लिया।

'लेकिन यह कैसे संभव है,' जोसाफ ने आपत्ति जताई, 'कि मेरे पिता को मेरे बराबर का इनाम मिले—मैंने इतनी कठिनाइयाँ झेली हैं—केवल उनके पश्चाताप के लिए?'

जैसे ही उसने यह कहा, उसने बिलाम को देखा, जो उससे बोला:

'क्या मैंने तुमसे कभी नहीं कहा, जोसाफ, कि जब तुम अमीर बनोगे, तो तुम कंजूस और हठी हो जाओगे? लेकिन फिर, अब तुम अपने पिता के लिए अपने बराबर का सम्मान क्यों नहीं चाहते? इसके विपरीत, क्या तुम्हें पूरे दिल से इस बात पर प्रसन्न नहीं होना चाहिए कि तुम्हारी उनके लिए की गई प्रार्थनाओं का उत्तर मिल गया है?'

जोसाफ ने वरलाम से, जैसा कि वह अपने जीवनकाल में हमेशा कहा करता था, कहा: 'मुझे क्षमा करें, पिताजी, मुझे क्षमा करें', और फिर बोला:

'मुझसे कहो, तुम स्वयं कहाँ रहते हो?'

बर्लाम ने उत्तर दिया, 'मुझे इस सुंदर और महान शहर में एक उज्ज्वल निवास प्रदान किया गया है।'

जोसाफ ने बिलाम से अनुरोध करना शुरू किया कि वह उसे अपने निवास पर ले जाए और एक अतिथि के रूप में प्रेम से उसका स्वागत करे। बिलाम ने उत्तर दिया:

'तुम्हारे लिए, जो देह का भार उठाते हो, यहाँ आने का समय अभी नहीं आया है; परन्तु यदि तुम मेरे आज्ञानुसार संन्यासी तपस्या में अंत तक धैर्यपूर्वक बने रहोगे, तो तुम शीघ्र ही यहाँ आओगे और तुम्हें यहाँ अनंत जीवन, इस स्थान की महिमा और आनन्द प्राप्त होगा, और तुम सदा के लिए मेरे साथ रहोगे।'

जागने पर, उसकी आत्मा उस प्रकाश और अनुपम महिमा से भरी हुई थी जो उसने देखी थी, और जोसाफ ने सभी के प्रभु की स्तुति की, और प्रभु को धन्यवाद का एक प्रेरित गीत अर्पित किया।

संत जोसाफ उसी स्थान पर रहे जहाँ वे अपने जीवन के अंत तक आदरणीय बरलाम के साथ रहे थे। अपने जीवन के पच्चीसवें वर्ष में, उन्होंने सांसारिक जीवन का त्याग किया और तपस्वी जीवन अपनाया; पैंतीस वर्ष तक रेगिस्तान में रहने के बाद, वे प्रभु के पास चले गए।

नज़दीक रहने वाले एक पवित्र तपस्वी ने, यह जानकर, पारलौकिक प्रेरणा से, संत जोसाफ के निधन के बारे में जानकर, एक निश्चित पवित्र तपस्वी जो पास ही रहता था, उनके निधन के समय पर ही उनके पास आया, ने उनके पवित्र शरीर पर प्रेम के आँसुओं के साथ पारंपरिक अंतिम संस्कार के भजन गाए, और उन्हें आदरणीय बरलाम के अवशेषों के बगल में सुला दिया, ताकि जो आत्मा में अविभाज्य थे, उनके शरीर भी एक ही स्थान पर अविभाज्य रूप से विश्राम करें। संत जोसाफ के दफ़न के बाद, उस तपस्वी को ईश्वर से एक दिव्य दर्शन मिला, जिसमें उन्हें भारत के राज्य में जाने और राजा बराकियाह को संत के निधन की सूचना देने का आदेश दिया गया। यह समाचार पाकर, राजा बड़ी संख्या में लोगों के साथ रेगिस्तान के लिए रवाना हुआ; और, पूजनीय संतों की गुफा में पहुँचकर, उसने उनकी कब्र खोली और पाया कि संत बरलम और जोआसाफ की अवशेष अक्षत थे, जिससे एक अत्यंत सुगंधित खुशबू निकल रही थी। पवित्र अवशेषों को लेकर, बराकियास ने उन्हें सम्मानपूर्वक रेगिस्तान से अपने देश ले आए और उन्हें संत जोआसाफ द्वारा स्थापित चर्च में रख दिया, त्रिमूर्ति में परमेश्वर की महिमा करते हुए, जिनको हमसे अब और हमेशा और युगों-युगों तक सम्मान और आराधना प्राप्त हो। आमीन।

ट्रोपारियन, स्वर 4:

एक आध्यात्मिक मार्गदर्शक द्वारा सिखाए जाने पर, राजा जोसाफ ने ईश्वर को जानना सीखा और बपतिस्मा के माध्यम से प्रबुद्ध हुए; आपने लोगों को विश्वास की ओर मोड़ा; और, बपतिस्मा के कुंड से अपने पिता के साथी रहे, आपने राज्य त्याग दिया और मरुभूमि में पहुँचे, जहाँ आपने परिश्रम से सेवा की: हमारे आत्माओं के उद्धार के लिए अपने शिक्षक बरलाम के साथ मसीह परमेश्वर से प्रार्थना करें।

कॉन्टाकियन, स्वर 8:

जोआसाफ, तुम्हारी बाल्यकाल से ही शुभ-इच्छा को जानते हुए, केवल ईश्वर ही हृदय को जानता है। और आपको सांसारिक राज्य से भिक्षु जीवन की ओर ले जाने के बाद, यह अनुग्रह प्रदान करें कि हम महान बार्लाम का अनुसरण करने के योग्य माने जाएँ; उनके साथ, अब स्वर्गीय यरूशलेम, सर्व-प्रकाशमान स्वदेश, और पवित्र त्रिमूर्ति की वांछित भलाई में आनंदित होकर, हम आपसे विनती करते हैं, हे राजसी सौंदर्य, कि आप हमें याद रखें जो विश्वास में आपका सम्मान करते हैं।

पवित्र शहीद बरलाम का कष्टकथा

19 नवंबर को स्मरणोत्सव

पवित्र शहीद बार्लाम सीरिया के एंटिओक के मूल निवासी थे। अपने वृद्धावस्था में, उन्हें यीशु मसीह के नाम का प्रचार करने के आरोप में गिरफ्तार किया गया और मुकदमे के लिए एक मूर्तिपूजक राजकुमार के समक्ष पेश किया गया। बार्लाम को मूर्तियों को बलिदान चढ़ाने के लिए मजबूर किया गया। जब उसने ऐसा करने से इनकार कर दिया, तो उसे प्रभु मसीह के लिए कई क्रूर यातनाएँ दी गईं: पहले, उसे बैल की खाल की रस्सियों से निर्दयता से पीटा गया, और फिर लोहे की पंजाओं से खुरच दिया गया। इसके बाद, मूर्तिपूजकों ने पवित्र शहीद को मूर्तिपूजक मंदिर में ले गए और वहाँ, यातना देने

वाले के आदेश पर, उनके हाथ को उस वेदी पर फैला दिया जिस पर आग जल रही थी, और उस पर धूप के साथ मिले हुए गर्म कोयले रख दिए, ताकि वह उनके दुष्ट देवताओं की वेदी पर धूप अर्पित कर सके। यातना देने वालों को लगा कि असहनीय पीड़ा में संत शहीद धूप के साथ गरम कोयले मूर्तियों के सामने फेंक देंगे। और अगर उन्होंने ऐसा किया होता, तो वे उनसे कहते:

'अब तुमने हमारे देवताओं को बलिदान अर्पित कर दिया है।'

लेकिन मूर्तिपूजकों को अपनी इच्छा पूरी नहीं हुई, क्योंकि मसीह का शहीद एक स्तंभ की तरह अडिग खड़ा रहा, अपने हाथ में जलती आग को थामे हुए, और वह कांस्य और लोहे से भी अधिक शक्तिशाली था, क्योंकि उसने आग को तब तक अपने हाथ में थामे रखा जब तक कि उसकी उंगलियाँ जलकर आग के साथ जमीन पर नहीं गिर गईं। इसके बावजूद, उन्होंने अपना हाथ नहीं हिलाया और न ही मूर्तियों के सामने वेदी पर धूप की राख रखी। – मसीह के ऐसे वीर और अजेय पीड़ित और योद्धा के रूप में स्वयं को प्रदर्शित करते हुए, संत बरलाम ने, बहादुरी से अपने विश्वास की घोषणा करते हुए, अपना प्राण प्रभु को सौंप दिया[7997] ।

- पवित्र शहीद बार्लाम पर संत बेसिल द ग्रेट के शब्द

प्राचीन समय में, संतों की मृत्यु पर विलाप और आँसुओं के साथ शोक मनाया जाता था। यूसुफ मृतक याकूब के लिए कड़के से रोया (उत्पत्ति 50:1); यहूदियों ने मूसा के निधन पर बहुत विलाप किया (व्यवस्थाविवरण 34:8), और शमूएल को बहुत आँसुओं के साथ सम्मानित किया गया (1 शमूएल 25:1). लेकिन अब हम धर्मी लोगों के निधन पर आनंदित होते हैं; क्योंकि सूली के बाद शोक का स्वरूप बदल गया है। अब हम संतों के साथ मृत्यु में शामिल होते समय नहीं रोते, बल्कि उनके ताबूतों पर परमानंद के साथ आनंदित होते हैं; क्योंकि धर्मी लोगों के लिए मृत्यु एक निद्रा है, या यूँ कहें, एक बेहतर जीवन में प्रवेश है। इसलिए, शहीद होने पर आनंदित होते हैं; परम धन्य जीवन की इच्छा उनके भीतर फाँसी के दर्द की अनुभूति को सुन्न कर देती है। शहीद खतरों को नहीं, बल्कि मुकुटों को देखता है; वह प्रहारों से नहीं डरता, बल्कि पुरस्कारों को गिनता है; वह यहाँ पृथ्वी पर जल्लादों को कोड़ा मारते हुए नहीं देखता, बल्कि कल्पना करता है कि स्वर्गदूत स्वर्ग से उसका स्वागत कर रहे हैं; उसके मन में क्षणिक खतरों को नहीं, बल्कि शाश्वत पुरस्कारों को रखा है। और हमारे शहीद पहले ही महिमा के उज्ज्वल वादे को काट रहे हैं; क्योंकि, सभी द्वारा आनंदपूर्ण जयकारों से सराहे जा रहे हैं, वे अपनी ताबूतों से हजारों लोगों को अपनी जाल में खींच रहे हैं।

अब यही बात बहादुर बार्लाम के संबंध में घटित हुई है। शहीद की लड़ाई की तुरही बज चुकी है, और, जैसा कि आप देखते हैं, इसने धर्मपरायणता के योद्धाओं को एकत्र कर लिया है। मसीह का तपस्वी, जो वहाँ लेटा है, की घोषणा की गई है, और उसने कलीसिया का दृश्य प्रकट किया है। और जैसा कि विश्वासियों के प्रभु ने कहा: *'यीशु ने उससे कहा, "मैं ही पुनरुत्थान और जीवन हूँ; जो मुझ पर विश्वास करता है, वह मर भी जाए तो भी जीवित रहेगा"* (यूहन्ना 11:25)।

इस प्रकार पराक्रमी बरलाम की मृत्यु हुई, और फिर भी वह गंभीर सभाओं का आह्वान करता है; ताबूत में समाहित होकर, वह हमें एक दावत पर बुलाता है।

अब समय है कि हम उद्घोष करें: *'ज्ञानी कहाँ है? लेखक कहाँ है? इस युग का वाद-विवादकर्ता कहाँ है?'* (1 कुरिन्थियों 1:20)।

आज हमारे पास धर्म का अजेय शिक्षक एक सिपाही है जिसे यातना देने वाले ने आसान शिकार समझकर खींच लिया था, लेकिन जिसमें, परीक्षण के बाद, उसने एक अजेय योद्धा को पहचाना—जिसका उसने उसकी दोषपूर्ण वाक्पटुता के लिए मज़ाक उड़ाया था, और जिसने स्वदूत-सी वीरता से उसके हृदय में भय भर दिया: क्योंकि उसका चरित्र उसकी वाक्-शक्ति के साथ घृणित नहीं हो गया था, और न ही उसके मन ने वही कमियाँ दिखाईं जो उसके शब्दों में पाई जाती थीं। परन्तु वह दूसरे पौलुस के समान बन गया, पौलुस के साथ बोलते हुए: *'यद्यपि मैं वाक्पटुता में अकुशल हूँ, तौभी मैं ज्ञान में अकुशल नहीं हूँ* (2 कुरिन्थियों 11:6)। जिन्होंने उसे कोड़ा मारा वे आश्चर्य से दंग रह गए, जबकि शहीद और भी अधिक शक्तिशाली होता गया; जिन्होंने उसे पीटा उनके हाथ कमजोर पड़ गए, लेकिन जिसे पीटा जा रहा था उसका मन नहीं डगमगाया; कोड़ों ने उसकी नसों के नाजुक जाल को फाड़ दिया, फिर भी उसके विश्वास की शक्ति और भी अटूट हो गई; उसके चीरे हुए पार्श्वों का मांस गायब हो गया, फिर भी उसके मन की बुद्धि फिलती-फूलती रही; उसका अधिकांश शरीर सुन्न हो गया था, फिर भी शहीद सचेत रहा, मानो उसने अभी अपनी वीरताएँ शुरू भी न की हों।

[7997] संत बरलाम शहीद का निधन 304 ईस्वी में कैपाडोसिया के सेज़रिया में हुआ।

जब आत्मा में धर्मपरायणता के प्रति प्रेम जड़ जमा लेता है, तो उसके लिए संघर्ष के सभी रूप हास्यास्पद लगने लगते हैं, और जो लोग उसके प्रिय उद्देश्य के लिए उसे पीड़ित करते हैं, वे उसे हानि पहुँचाने के बजाय और अधिक आनंद देते हैं। प्रेरितों का प्रेम इसकी गवाही देता है, एक ऐसा प्रेम जिसने एक बार यहूदियों द्वारा दी गई कोड़ों की पिटाई को उनके लिए आनंद का स्रोत बना दिया था। क्योंकि लिखा है: *'वे सनेहद्रनि से इस बात पर आनंदित होकर चले गए कि उन्हें प्रभु यीशु के नाम के लिए अपमान सहने के योग्य समझा गया था'* (प्रेरितों के काम 5:41)।

ऐसे योद्धा का हम अब महिमामंडन करते हैं। वह अपनी यातनाओं को आनंद का स्रोत मानता था; कोड़े खाते समय, वह सोचता था कि वे उस पर गुलाबों की बारिश कर रहे हैं; वह दुष्टता की चोटों से वैसे ही बचता था जैसे कोई तीरों से बचता है, और न्यायाधीश के क्रोध को धुएँ की एक लकीर मानता था; वह सैनिकों के क्रूर आदेशों पर हँसा; वह खतरों को देखकर इस तरह प्रसन्न हुआ जैसे वे ताज हों; उसे पिटाई में इस तरह आनंद आया जैसे वे सम्मान हों; सबसे भयानक यातनाओं में भी वह इस तरह कूदा जैसे उसे सबसे गौरवशाली पुरस्कार मिल रहे हों; उसने खींची हुई तलवारों का तिरिस्कार किया; उसने अपने जल्लादों के हाथों को उसी सहजता से स्वीकार किया जैसे वे मोम से भी नरम हों; उसने फांसी के तख्ते को चूमा जैसे वह जीवनरक्षक हो; वह जेल की सलाखों से इस तरह आनंदित हुआ जैसे वे विभिन्न प्रकार के फूल हों। उसका दाहिना हाथ उस आग से भी मजबूत था जिसका इस्तेमाल उसके दुश्मनों ने अंतिम उपाय के रूप में उसके खिलाफ किया था। क्योंकि दानवों को बलिदान चढ़ाने के लिए वेदी पर अग्नि प्रज्वलित करने के बाद, उन्होंने शहीद को लाया और उसे वेदी के सामने खड़ा कर दिया; और, उसे वेदी के ऊपर अपना दाहिना हाथ उठाने का आदेश देकर, उन्होंने उसे कांस्य की वेदी के स्थान पर इस्तेमाल किया, और चालाकी से उस पर जलता हुआ धूप रख दिया। वे आशा कर रहे थे कि आग की शक्ति से पराजित होकर, वह हाथ जल्द ही, मजबूरी में, धूप को वेदी पर रख देगा।

हाय, दुष्टों की क्या चालाकी भरी धोखाधड़ी थी! वे कहते हैं, 'चूंकि हजारों घावों ने भी उसकी इच्छा को नहीं डिगाया है, तो आइए हम कम से कम इस जिद्दी योद्धा के हाथ को आग की लपट से हिला दें। चूंकि विभिन्न साधन उसकी आत्मा को हिलाने में विफल रहे हैं, तो आइए हम कम से कम आग लगाकर उसके दाहिने हाथ को हिला दें।' लेकिन इन दुष्ट लोगों ने इस आशा को पूरा होते नहीं देखा। क्योंकि यद्यपि लौ ने उसके हाथ को जला दिया, फिर भी हाथ राख की तरह ही लौ को अपने ऊपर धारण किए रहा; उसने शत्रु की आग के सामने भगोड़ों की तरह पीठ नहीं दिखाई; बल्कि दृढ़ खड़ा रहा, बहादुरी से लौ से लड़ता रहा, और शहीद को पैगंबर के शब्दों में यह कहने का कारण दिया: *'धन्य है प्रभु, मेरी चट्टान, जो मेरे हाथों को युद्ध के लिए और मेरी उंगलियों को लड़ाई के लिए प्रशिक्षित करता है'* (भजन संहिता 143:1)।

आग ने हाथ से युद्ध किया; और आग की पराजय हुई। लपट और शहीद के दाहिने हाथ के बीच संघर्ष जारी रहा, और उस हाथ ने ऐसी प्रतियोगिताओं में अभूतपूर्व विजय प्राप्त की; यद्यपि लिपट ने हाथ में प्रवेश कर लिया, हाथ फैला हुआ, युद्ध के लिए तैयार रहा। वास्तव में, यह एक ऐसा हाथ है जो दृढ़ता में आग से भी आगे है! एक ऐसा हाथ जिसने आग के आगे कभी झुकना नहीं सीखा! आग, हाथ के हाथों से हारना सिखाई गई! लोहा आग के आगे झुक जाता है, उसकी यातना देने वाली शक्ति से नरम पड़कर। तांबा उसके प्रभुत्व का विरोध नहीं करता। फिर भी, शहीद के फैले हाथ को जलाते हुए, आग की सर्व-विजयी शक्ति उसे हिला नहीं सकी! धर्मनिष्ठता से, शहीद उस क्षण प्रभु से पुकार सकते थे: *'किन्तु मैं सदा तेरे संग हूं; तू मुझे दाहिने हाथ से पकड़े रहता है; तू मुझे अपनी युक्ति से मार्ग दिखाता है, और फिर मुझे महिमा में ग्रहण करेगा'* (भजन संहिता 72:23-24)।

हे मसीह के पराक्रमी योद्धा, मैं तुम्हारा नाम क्या रखूँ? क्या मैं तुम्हें एक मूर्ति कहूँ? लेकिन इससे तुम्हारे धैर्य का बहुत अपमान होगा। आग, जब

एक मूर्ति, उसे नरम कर देती है; फिर भी उसने आपके दाहिने हाथ को एक भी हरकत करने के लिए मना नहीं किया। क्या मैं आपको 'लोहा' कहूँ? फिर भी मुझे लगता है कि यह छवि भी आपके पराक्रम के अभाव में कम पड़ती है। केवल आपने ही लौ को अपने हाथ को नुकसान न पहुँचाने के लिए मनाया; केवल आपने ही अपने हाथ को एक वेदी बनाया। केवल आपने ही अपने ज्वलंत दहिने हाथ से राक्षसों के मुख पर प्रहार किया, और फिर, उसी हाथ को कोयले में बदलकर, उनके सिर काट डाले; और अब, अपने दहिने हाथ को राख में बदलकर, आप उनकी सेनाओं पर पाँव रखते और उन्हें अंधा कर देते हैं।

लेकिन मैं इस वीर तपस्वी का अपमान बचकाने बकवास से क्यों करूँ? आइए, उनकी प्रशंसा का काम उन लोगों पर छोड़ दें जिनकी जीभ कहीं अधिक वाक्पटु है; आइए, इस कार्य के लिए शिक्षकों की सबसे ऊँची तुरही बजाएँ। अब मेरे सामने उठ खड़े हो, हे तपस्या के गौरवशाली चित्रकारों! कमांडर के इस अधूरे चित्रण को अपनी कला से और निखारो!

उस मुकुटधारी को अपनी बुद्धि के रंगों से प्रकाशित करो, जिसे मैंने इतनी धुंधली रूपरेखा में चित्रित किया है! शहीद के वीर कर्मों के अपने चित्रण से मुझे पराजित कर दो; मैं अभी भी अपनी उपर तुम्हारी ताकत की ऐसी जीत को खुशी-खुशी स्वीकार करूँगा। मैं इस हाथ का आग से संघर्ष देखूँगा, जिसे तुमने और अधिक सटीकता से चित्रित किया है। मैं इस योद्धा को निहारूँगा, जिसे आपकी चित्रकला में और भी जीवंत रूप से दर्शाया गया है। शापित हों वे राक्षस, जो अब आपके भीतर के शहीद के पराक्रम से परास्त हो गए हैं! उस हाथ को, जो प्रहार करता है और विजय प्राप्त करता है, उन्हें एक बार फिर दिखाया जाए! इन संघर्षों में पराक्रम के प्रेरक, मसीह को भी चित्र में दर्शाया जाए। उसकी महिमा युगों-युगों तक हो! आमीन।

- पवित्र शहीद बार्लाम पर संत जॉन क्रिसिस्टम के वचन

धन्य बार्लाम को इस पवित्र पर्व और उत्सव के लिए बुलाया गया था, ताकि हम उनकी महिमा करें, ऐसा नहीं, बल्कि ताकि हम उनका अनुकरण करें; ताकि हम केवल उनकी प्रशंसा के सुनने वाले ही न रहें, बल्कि उनके कर्मों के अनुकरणकर्ता बनें। दुनियावी मामलों में, जो उच्च पद प्राप्त करते हैं, वे कभी नहीं चाहते कि दूसरे भी उनके समान सम्मान में भागीदार हों, क्योंकि ईर्ष्या और घृणा प्रेम को बिगाड़ देती हैं; लेकिन आध्यात्मिक मामलों में ऐसा नहीं है, बल्कि इसके ठीक विपरीत है: शहीद अपने सम्मान को सबसे तीव्र रूप से तब महसूस करते हैं जब वे अपने जैसे साथी सेवकों को अपनी आशीर्वादों में भागीदार होते देखते हैं; इसलिए जो कोई भी शहीदों की प्रशंसा करना चाहता है, उसे शहीदों का अनुकरण करना चाहिए; जो कोई भी धर्मनिष्ठा के संन्यासियों की स्तुति करना चाहता है, उसे उनके श्रम का अनुकरण करना चाहिए - इससे शहीदों को उतनी ही प्रसन्नता होगी जितनी उन्हें अपने पराक्रम से होती है। और यह विश्वास दिलाने के लिए कि वे वास्तव में अपनी आशीषों को तब सबसे अधिक महसूस करते हैं जब वे हमें सुरक्षित देखते हैं, और इसे अपने लिए सबसे बड़ा सम्मान मानते हैं, पौलुस को सुनें, जो कहते हैं: *'क्योंकि अब हम जीवित हैं, जब तुम प्रभु में स्थिर खड़े हो'* (1 थिस्स. 3:8)।

और उनसे पहले मूसा ने परमेश्वर से कहा: *'उनके पाप को क्षमा कर; परन्तु यदि नहीं, तो मुझे अपनी उस पुस्तक से मिटा दे जिसमें तूने मेरा नाम लिखा है'* (निर्ग. 32:32)।

वह कहते हैं, 'मुझे ऐसा नहीं लगता कि उनकी दुर्भाग्य मुझे कोई बड़ा सम्मान दिलाती है। विश्वासियों का समुदाय एक متحد शरीर है: जब पैरों को पीड़ा दी जा रही हो तो सिर के मुकुट पहनने का क्या फायदा?'

और आप पूछ सकते हैं, अब कोई शहीदों का अनुकरण कैसे कर सकता है? अब उत्पीड़न का समय नहीं है। मैं यह भी जानता हूँ; यह उत्पीड़न का समय नहीं, बल्कि शहादत का समय है; ऐसे कारनामों का समय नहीं, बल्कि मुकुटों का समय है; उत्पीड़न करने वाले लोग नहीं, बल्कि राक्षस हैं; आपको आगे धकेलने वाला कोई यातनाकर्ता नहीं, बल्कि शैतान है, जो सभी यातनाकारों से भी बदतर है; आप अपने सामने अंगारे नहीं देखते, बल्कि वासना की भड़कती लौ देखते हैं। वे अंगारों पर चले, पर तुम्हें देह की आग पर चलना है; उन्होंने जंगली जानवरों से लड़ाई लड़ी, पर तुम्हें क्रोध, उस जंगली और अदम्य जानवर को काबू करना है; उन्होंने असहनीय यातनाओं को सहा, पर तुम्हें अपने हृदय में प्रचुर मात्रा में पाए जाने वाले अश्लील और दुष्ट विचारों पर विजय प्राप्त करनी है – इस प्रकार शहीदों का अनुकरण करो। *'क्योंकि हमारा संग्राम मांस और रक्त से नहीं, बल्कि हाकिमों और अधिकारों से, इस अँधेरी दुनिया की सरकारों और स्वर्ग में बुराई की आत्मिक सेनाओं से है'* (इफिसियों 6:12)।

मांस का वासना एक आग है, एक न बुझने वाली और अनंत आग है; यह एक पागल और उन्मत्त कुत्ता है; भले ही आप इसे हजार बार भगा दें, यह हजार बार हमला करता है और रुकता नहीं है; जलते कोयलों की लौ प्रचंड होती है, लेकिन यह—वासना की लौ—और भी बदतर है; इस युद्ध में हमें कभी भी युद्धविराम नहीं मिलता, इस जीवन में एक पल का भी आराम नहीं मिलता, बल्कि संघर्ष निरंतर चलता रहता है, ताकि मुकुट महिमामय हो सके। इसीलिए पौलुस हमें हमेशा हथियारबंद करते हैं, क्योंकि यह हमेशा युद्ध का समय है, क्योंकि शत्रु हमेशा चौकस रहता है। क्या आप जानना चाहते हैं कि कामवासना आग से कम नहीं जलाती? सुलैमान को सुनें, जो कहते हैं: *'क्या कोई जलते हुए कोयलों पर चल सकता है और उसके पैर न जलें? उसी प्रकार है जो अपने पड़ोसी की पत्नी के पास जाता है: जो कोई भी उसे छूता है, वह दंड से नहीं बचेगा'* (नीतिवचन 6:28-29)।

क्या आप देखते हैं कि कामुकता, अपनी प्रकृति से ही, आग की प्रकृति की प्रतिद्वंद्वी है? जैसे आग को छूने वाला जलना तय है, वैसे ही सुंदर चेहरों पर एक नज़र, अपनी दृष्टि को नियंत्रित न करने वाले आत्मा को आग से भी तेज़ी से निगल लेती है; और जैसे कुछ ज्वलनशील पदार्थ आग के लिए ईंधन का काम करते हैं, वैसे ही शारीरिक सुंदरता कामुक

लोगों की आँखों के लिए ईंधन का काम करती है। इसलिए, हमें वासना की आग को नहीं भड़काना चाहिए - यानी, बाहरी चतिन - बल्कि हर तरह से इसे धार्मिक विचारों से दबाना और बुझाना चाहिए, लौ के और फैलने को रोकना चाहिए और इसे हमारी आत्मा की दृढ़ता को कुचलने नहीं देना चाहिए। और जब तक वासनाएँ प्रबल रहती हैं, तब तक हर सुख आत्मा को आग से भी ज़्यादा भयानक रूप से भस्म कर देता है, जब तक कि कोई साहस, धैर्य और विश्वास के साथ हर वासना का विरोध न करे, ठीक वैसे ही जैसे मसीह के धन्य और वीर तपस्वी, बारलाम ने अपने ही हाथ से किया था। उन्होंने अपने दाहिने हाथ में एक पूरी अलाव पकड़ रखी थी और दर्द के आगे नहीं झुके, बल्कि एक मूर्ति से भी अधिक अचल बने रहे; या—और भी बेहतर—हालाँकि उन्हें दर्द महसूस हो रहा था और वे कष्ट सह रहे थे—क्योंकि उनका शरीर था और वे लोहे के नहीं बने थे—फिर भी, दर्द और कष्ट महसूस करते हुए, उन्होंने अपने नश्वर शरीर में अदेह शक्तियों की बुद्धिमत्ता का प्रदर्शन किया।

2. लेकिन इस कहानी को और स्पष्ट करने के लिए, मैं अब उनकी शहादत का वृत्तांत जारी रखूँगा, जबकि आप शैतान की चालाकी को देखें। कुछ संतों को उसने तवे पर रखा, दूसरों को आग से भी ज़्यादा उबलते हुए बड़े-बड़े बर्तन में डाल दिया; कुछ के शरीर के किनारों को उसने खुरच दिया, कुछ को उसने समुद्र में फेंक दिया; कुछ को उसने जंगली जानवरों के हवाले कर दिया; दूसरों को उसने भट्टियों में डाल दिया; कुछ के अंग-प्रत्यंग काट डाले; कुछ की जीवित ही खाल उधेड़ दी; दूसरों के खून से लथपथ शरीरों के नीचे उसने अंगारे रख दिए, और उनके घावों में गिरने वाली चिंगारियाँ उन्हें किसी भी जानवर से भी अधिक क्रूरता से पीड़ित करती थीं; और भी दूसरों के लिए उसने और भी अधिक भयानक यातनाएँ रचीं। लेकिन यह देखकर कि इन सबका मज़ाक उड़ाया गया था, और पीड़ितों ने इसे बड़ी दृढ़ता से सहन किया था और उनके बाद आने वालों के लिए समान कारनामे करने हेतु साहस की सबसे बड़ी प्रेरणा का काम किया था – तो वह क्या करता है? वह एक नई तरह की युक्ति रचता है, ताकि यातना की अप्रत्याशित और असामान्य प्रकृति के माध्यम से वह शहीद की आत्मा को तोड़ सके; क्योंकि हम जो जानते हैं और जिसके बारे में सुन चुके हैं, वह चाहे कितना भी असहनीय क्यों न हो, उसे अक्सर पहले से ज्ञात और अपेक्षित चीज़ के रूप में खारिज कर दिया जाता है, जबकि अप्रत्याशित, भले ही वह थोड़ी सी ही क्यों न हो, सभी में सबसे असहनीय साबित होती है। तो, एक नया संघर्ष हो, और असाधारण चालाकी हो, ताकि नवीनता और आश्चर्य, तपस्वी को चकरा कर, उसे आसानी से नीचे ला सकें। तो, फिर वह क्या करता है? वह संत को बेड़ियों में जकड़कर कालकोठरी से बाहर ले आता है। और इस विश्वासघात की यही प्रकृति थी कि शुरू से ही भारी हथियारों का सहारा लेकर भयानक यातनाएँ न दी जाएँ, बल्कि संघर्ष की शुरुआत किसी मामूली चीज़ से की जाए। क्यों? ताकि, यदि तपस्वी पराजित हो गए, तो उनकी पराजय शर्मनाक हो, क्योंकि वे एक मामूली चुनौती के सामने भी दृढ़ नहीं खड़े रहे; लेकिन यदि वे जीत गए और विजय प्राप्त कर ली, तो, एक छोटी सी बात पर अपनी शक्ति खर्च कर देने के बाद, वे एक बड़ी चुनौती का सामना करते समय आसानी से पराजित हो जाएँगे। इसलिए, उसने पहले छोटे परीक्षणों का इस्तेमाल किया, ताकि, चाहे वह उन पर काबू पा ले या न पा सके, वह धोखा न खाए: 'अगर मैं उन पर काबू पा लूँ,' उसने कहा, 'तो मैं हँसूँगा; लेकिन अगर नहीं, तो मैं भविष्य के लिए उन्हें कमजोर कर दूँगा।' इस प्रकार, वह उसे कालकोठरी से बाहर ले आया, और वह एक ऐसे पराक्रमी एथलीट की तरह बाहर निकला जिसने लंबे समय तक पलेस्ट्रा[7998] में प्रशिक्षण लिया हो; और वास्तव में, कालकोठरी शहीद के लिए संघर्ष का एक विद्यालय थी, और वहाँ, ईश्वर के साथ अकेले संवाद करते हुए, उसने उनसे संघर्ष का हर रूप सीखा, क्योंकि जहाँ ऐसे बंधन हैं, वहाँ मसीह हैं।

इस प्रकार, वह जेल में अपने लंबे प्रवास से और भी मज़बूत होकर बाहर निकला; लेकिन जब, उसकी रिहाई पर, शैतान ने अपने अन्याय के सेवकों के माध्यम से उसे खुले में निकाला, तो उसने उसे किसी पेड़ से नहीं बाँधा और न ही उसके चारों ओर जल्लादों को खड़ा किया, क्योंकि उसने देखा कि वह यही चाहता था और इस सज़ा के विचार को पहले ही स्वीकार कर चुका था; परन्तु वह इस मीनार के विरुद्ध एक अजीब, नई और अप्रत्याशित हथियार का उपयोग करता है, जो इसके पतन का कारण बन सकता है: क्योंकि हर मामले में वह संतों को पीड़ा देकर प्रताड़ित करने की तुलना में छल से उन्हें गिराने का अधिक प्रयास करता है। तो, यह हथियार क्या है? उसे वेदी के ऊपर अपनी हथेली नीचे की ओर करके अपना हाथ फैलाने का आदेश देने के बाद, उन्होंने उस पर गर्म कोयले और धूप रख दी, ताकि अगर वह दर्द महसूस करके अपना हाथ पलट दे, तो वे इसे एक बलिदान और (विश्वास का) त्याग मान लें। क्या आप देखते हैं कि शैतान कितना धूर्त है? लेकिन देखो कि *वह 'ज्ञानियों को उनकी ही चालाकी में* कैसे *पकड़ता है'* (1 कुरिन्थियों 3:19)। उसने उसकी योजनाओं को

[7998] पलाएस्ट्रा एक चौकोर मैदान था जहाँ यूनानी और रोमी व्यायाम संबंधी खेल या प्रतियोगिताएँ आयोजित करते थे।

व्यर्थ कर दिया, और उसकी अनेक चालाकियों की तीव्रता को ही शहीद की महान महिमा के उत्थान और वृद्धि के लिए मोड़ दिया। जब दुश्मन, अनगिनत दुष्ट युक्तियों का उपयोग करने के बाद, पराजित होकर चला जाता है, तो भक्ति का तपस्वी और भी अधिक महिमामय प्रतीत होता है, जैसा कि यहाँ हुआ। धन्य बार्लाम दृढ़ खड़े रहे, न तो उन्होंने अपना हाथ मोड़ा और न ही घुमाया, मानो वह लोहे का बना हो; जबकि, यदि उनका हाथ मुड़ भी जाता, तो यह शहीद की गलती नहीं होती।

३. अब, हम सब मेरी बात ध्यान से सुनें, ताकि हम इस बात से आश्वस्त हो सकें कि, भले ही उसका दाहिना हाथ मुड़ गया होता, तो भी यह हार नहीं होती। क्यों? क्योंकि जैसे हम उन लोगों का न्याय करते हैं जिनकी पसलियाँ भेदी गई हों, या जिन्हें किसी अन्य प्रकार से यातना दी गई हो, वैसे ही हमें इस मामले में भी न्याय करना चाहिए। यदि वे इसे सहन नहीं कर पाते और बलिदान दे देते हैं, तो यह उनकी कमजोरी का दोष है कि वे पीड़ा सहन करने में असमर्थ होकर बलिदान दे देते हैं; लेकिन यदि, यातना सहते हुए, वे अपनी पीड़ा से बीमार पड़ जाते हैं फिर भी अपनी धार्मिकता का त्याग नहीं करते, तो कोई भी इन बीमारियों के लिए उन्हें दोष नहीं देता; बल्कि, हम उनकी और भी अधिक प्रशंसा करते हैं और इस बात पर आश्चर्य करते हैं कि, अपनी पीड़ा से थके होने पर भी, वे डटे रहे और अपने विश्वास का त्याग नहीं किया। तो यहाँ भी ऐसा ही है: यदि धन्य बार्लाम, जिदा जले का दुख सहन न कर पाने के कारण, बलिदान देने का वचन दे देता, तो वह पराजित हो जाता; और यदि वह दृढ़ बना रहता, तब भी उसका हाथ आग से हट जाता, तो यह शहीद की इच्छा की गलती नहीं होती: यह उसकी इच्छा की कमजोरी से नहीं, बल्कि उसकी प्राकृतिक बनावट की कमजोरी से होता; उसकी ताकत के अनुसार, संत की इच्छा के विरुद्ध उसका हाथ आग से हट जाता। जिस प्रकार हम उन लोगों की निंदा नहीं करते जिनकी पसलियाँ टूट गई हैं, इस तथ्य के लिए कि उनका मांस फाड़ दिया गया है—या यूँ कहें, एक और नज़दीकी उदाहरण देने के लिए, – ठीक उसी तरह जैसे कोई भी बुखार और मरोड़ से पीड़ित लोगों को इस बात के लिए दोष नहीं देता कि उनके हाथ मुड़े हुए हैं, क्योंकि यह उनकी कमजोरी से नहीं बल्कि बुखार की गर्मी से होता है जो शरीर के द्रवों को खत्म कर देती है और नसों के संबंधों को असामान्य रूप से सिकोड़ देती है, इसलिए कोई भी इस संत को भी दोष नहीं देगा यदि उनका हाथ मुड़ गया होता। यदि बुखार, पीड़ित की किसी इच्छा के बिना, आमतौर पर अंगों को सिकोड़ता और मरोड़ता है, तो उसके दाहिने हाथ पर रखे कोयले भी ऐसा ही कर सकते थे, भले ही शहीद ने हार न मानी हो। हालाँकि, उन्होंने ऐसा नहीं किया, ताकि आप पूरी तरह से आश्वस्त हो सकें कि ईश्वर की कृपा मौजूद थी, जो तपस्वी को बल दे रही थी और प्रकृति की कमियों की पूर्ति कर रही थी; इसी कारण, उसके हाथ ने भी वह अनुभव नहीं किया जो उसके लिए स्वाभाविक था, बल्कि, मानो वह अडामेंट[7999] का बना हो, वह बिना मुड़े रहा। तो फिर, इसे देखकर कौन चकित नहीं होता? किसका हृदय नहीं पसीज जाता? स्वर्गदूत ऊपर से निहार रहे थे, महादूत इसे घूर रहे थे; यह दृश्य शानदार और वास्तव में मानवीय स्वभाव से परे था। सचमुच, कौन उस मनुष्य को देखने की इच्छा नहीं करेगा जिसने परिश्रम किया और वह अनुभव नहीं किया जो मनुष्यों के लिए उचित है, जो स्वयं वेदी, बलिदान और पुरोहित तीनों थे? इसलिए, दोहरा धुआँ ऊपर उठा: एक जलते हुए धूप से, और दूसरा मांस के जलने से; और बाद वाला धुआँ पहले वाले से अधिक प्रसन्न करने वाला था, बाद वाली सुगंध पहली से बेहतर थी। यहाँ भी वैसा ही हुआ जैसा झाड़ी के साथ हुआ था: जैसे वह झाड़ी जल गई पर भस्म नहीं हुई, वैसे ही यहाँ हाथ जल गया, पर आत्मा भस्म नहीं हुई; शरीर नष्ट हो गया, पर विश्वास समाप्त नहीं हुआ; मांस थक गया, लेकिन उत्साह नहीं; हाथ के बीच में जलते हुए अंगारे, जमीन पर गिर पड़े, लेकिन आत्मा का साहस नहीं डगमगाया; हाथ घायल हुआ और गायब हो गया—क्योंकि वह मांस का था, निर्मलबेन का नहीं—लेकिन आत्मा ने एक और हाथ की मांग की, ताकि वह उस पर भी अपना धैर्य प्रदर्शित कर सके। ठीक वैसे ही जैसे एक वीर योद्धा, जो अपने शत्रुओं के बीच घुसकर उनसे लड़ने वालों की कतारें तोड़ देता है, और अपनी तलवार को अनगिनत वारों से तोड़ डालता है, वह दूसरी तलवार की तलाश में निकल पड़ता है, क्योंकि उसे अपने शत्रुओं को मारकर तृप्ति नहीं मिली होती, – उसी प्रकार धन्य बार्लाम की आत्मा ने भी, दैवीय झुंडों को परास्त करते हुए एक हाथ खोने के बाद, दूसरे हाथ की भी मांग की, ताकि वह उसके माध्यम से भी अपने उत्साह का प्रदर्शन कर सके। मुझे यह न कहें कि उसने केवल एक हाथ ही त्यागा; बल्कि पहले यह कल्पना करें कि जिसने अपना हाथ त्यागा, वह अपना सिर भी त्याग देता, अपनी पसलियाँ भी त्याग देता, आग, जंगली जानवरों, समुद्र, गर्त, सूली, चक्का और अब तक सुनी गई हर यातना का सामना करता, और उन सभी को सहन करता, यदि वास्तविक

[7999] अडिग – एक हीरा – एक ऐसा पत्थर है जिसकी कठोरता इतनी अधिक होती है कि वह स्वयं को बिना किसी क्षति के अन्य पत्थरों को खरोंच और काट सकता है। धार्मिक साहित्य में, यह नाम अक्सर उन संतों को दिया जाता है जो अपने विश्वास और चरित्र की दृढ़ता के लिए प्रसिद्ध हैं।

अनुभव से नहीं तो कम से कम अपने संकल्प में। शहीद किसी विशिष्ट यातना का सामना करने के लिए नहीं निकलते, बल्कि वे स्वयं को अज्ञात दंडों के लिए तैयार करते हैं; वे अपने अत्याचारियों की इच्छा के अधीन नहीं होते, न ही वे अपने अत्याचारों के लिए कोई सीमा या मापदंड निर्धारित करते हैं; बल्कि, उनके अत्याचारियों की अमानवीय और क्रूर इच्छा जो भी विपत्तियाँ उन पर थोपना चाहे, वे उनका दृढ़ संकल्प के साथ सामना करते हैं - सिवाय इसके कि, शायद, शरीर, यातनाओं के बीच थककर, अत्याचारियों की इच्छा को अधूरा छोड़ दे। इस प्रकार, जब उसका शरीर कष्टों से झुलस रहा था, तब उसकी इच्छाशक्ति और भी अधिक प्रबल होती गई, जो अपनी चमक में अंगारों से भी आगे थी और उनसे भी अधिक प्रकाशमान थी, क्योंकि उसके भीतर एक आध्यात्मिक अग्नि जल रही थी, जो उस आग से कहीं अधिक तेज थी। इसीलिए उसे बाहरी लपटों का एहसास नहीं हुआ, क्योंकि उसके भीतर मसीह का उज्ज्वल और ज्वलंत प्रेम जल रहा था।

४. तो फिर, प्रियजनो, हम न केवल इसे सुनें, बल्कि इसका अनुकरण भी करें। जैसा मैंने शुरुआत में कहा था, वैसे ही मैं अब कहता हूँ: प्रत्येक व्यक्ति न केवल इस क्षण शहीद पर आश्चर्य करे, बल्कि, जब वह घर जाए, तो वह इस संत को अपने साथ ले जाए; वह उसे अपने घर में लाए, या—और भी बेहतर—कही गई बातों की याद के माध्यम से उसे अपने हृदय में बसाए। उपरोक्त के अनुसार उसे स्वीकारें, और फैले हुए हाथों से उसे अपने हृदय में स्थान दें; मुकुटधारी विजेता को स्वीकारें और उसे कभी भी अपने मन से न जाने दें। इसीलिए हम आपको पवित्र शहीदों के समाधियों तक '' लेकर आए हैं, ताकि उनके दर्शन से ही आप सद्गुण के लिए कुछ प्रेरणा प्राप्त करें और उसी उत्साह के लिए स्वयं को तैयार करें। जिस प्रकार एक योद्धा किसी वीर की अफवाहों से उत्साहित होता है, उससे कहीं अधिक उसके दर्शन और उसे देखने से होता है, विशेषकर जब वह योद्धा, वीर के तंबू में प्रवेश करके, खून से सनी तलवार, दुश्मन का धड़ से अलग किया हुआ सिर, ऊपर लटका माल-संपत्ति, और ट्रॉफी रखने वाले के हाथों से टपकता ताजा खून देखता है, हर ओर भाले और ढालें बिखरी हुई हैं, साथ ही तीर और हर तरह के अन्य हथियार भी। इसीलिए हम भी यहाँ इकट्ठा हुए हैं। शहीद की कफ़न ही योद्धा का तंबू है; और यदि आप विश्वास की आँखें खोलें, तो आप यहाँ धार्मिकता का कवच, विश्वास की ढाल, उद्धार का टोप, सुसमाचार के जूते, आध्यात्मिक तलवार, और स्वयं शैतान के सिर को, जो ज़मीन पर फेंका गया है, पड़ा हुआ देखेंगे (इफिसियों 6:14-17)। जब, शहीद की कफ़न पर, आप एक दानव-ग्रस्त व्यक्ति को पीठ के बल लेटे और अक्सर खुद को नोचते हुए देखते हैं, तो आप दुष्ट के कटे हुए सिर के सिवा और कुछ नहीं देखते। ये हथियार आज भी मसीह के योद्धाओं के पास पड़े हैं; और जैसे राजा अपने हथियारों के साथ ही वीरों को दफनाते हैं, वैसे ही मसीह ने भी उन्हें उनके हथियारों के साथ दफनाया, ताकि पुनरुत्थान से पहले ही वह संतों की पूरी महिमा और शक्ति को प्रकट कर सकें। तो आओ, उनके पूरे आध्यात्मिक कवच को पहचानों, और तुम यहाँ से सबसे बड़ा लाभ प्राप्त करके लौटोगे। प्रिय, तुम्हारी शैतान के विरुद्ध लड़ाई भी महान है—महान, शक्तिशाली और अनवरत।

इसलिए, संघर्ष के तरीकों का अध्ययन करो ताकि तुम उनकी विजयों का अनुकरण कर सको; धन-दौलत, पैसों और अन्य सभी सांसारिक वैभवों को तुच्छ समझो; जो लोग अमीर बनते हैं उन्हें धन्य मत मानो, बल्कि शहीदों का सम्मान करो—न कि उन लोगों का जो ऐश-ओ-आराम में जीते हैं, लेकिन जो तवे पर हैं; एक भव्य दावत में नहीं, बल्कि उबलते कड़ाह में; रोज़ाना जाने वाले स्नानघरों में नहीं, बल्कि क्रूर भट्टियों में; धूप की सुगंध से नहीं, बल्कि जलते हुए मांस से निकलने वाले धुएँ और बदबू से महकते हुए। यह सुगंध उससे बेहतर और अधिक लाभकारी है; पहला तो उन लोगों के लिए यातनाओं का कारण बनता है जो इसमें लिप्त होते हैं, जबकि दूसरा पुरस्कारों और स्वर्गीय मुकुटों की ओर ले जाता है। और ताकि आप इस बात से आश्वस्त हो सकें कि विलासिता एक बुराई है, ठीक वैसे ही जैसे सुगंधित इत्रों से अभिषेक करना, नशा करना, और शराब का अत्यधिक सेवन, और भव्य दावतें, तो सुनिए कि निबी क्या कहते हैं: *'तुम हाथीदाँत के पलंगों पर लेटते हो और अपने आराम कुर्सियों पर आराम करते हो; तुम झुंड के सबसे बढ़िया मेमनों और मोटे चरागाहों के बछड़ों को खाते हो... तुम कटोरों से दाखरस पीते हो और अपने आप को उत्तम-उत्तम तेलों से मलते हो'* (आमोस 6:4–6)। यदि यह पुराने नियम में निषिद्ध था, तो मसीह की अनुग्रह के तहत, जहाँ अधिक बुद्धि है, वहाँ यह और भी अधिक निषिद्ध है। मैं यह बात पुरुषों और महिलाओं दोनों से कहता हूँ; युद्ध का मैदान सभी के लिए सामान्य है—मसीह के शिविर में लिंग का कोई भेद नहीं है, बल्कि एक ही सभा है। और महिलाएँ भी कवच धारण कर सकती हैं, खुद को ढक सकती हैं, और तीर चला सकती हैं, चाहे शहादत के समय में हो या अन्य समय में जब महान साहस की आवश्यकता हो। जैसे एक कुशल धनुर्धर, धनुष की डोरी से निपुणता से तीर छोड़कर, पूरे शत्रु दल को भ्रम में डाल देता है—वैसे ही पवित्र शहीद और सत्य के सभी योद्धा, शैतान की युक्तियों का विरोध करते हुए, अपनी जीभ से, जैसे धनुष की डोरी से, निपुणता से शब्द प्रक्षेपित करते हैं, कौशलपूर्वक शब्दों को प्रक्षेपित करते हैं, और ये, हवा में उड़ते तीरों की तरह, राक्षसों के अदृश्य झुंड को भेदते हैं और

उनकी पूरी सेना को भ्रम में डाल देते हैं। धन्य वरलाम के साथ भी यही हुआ: उसने साधारण शब्दों से, जैसे वे उड़ते तीर हों, शैतान के शविरि को भ्रम में डाल दयिा। आइए, हम भी इस कला का अनुकरण करें। क्या आप नहीं देखते कि तमाशे से लौटने वाले कतिने थके हुए होते हैं? इसका कारण यह है कि वे इस बात पर पूरा ध्यान देते हैं कि वहाँ क्या हो रहा है, और वे अपनी आत्मा में न केवल आँखों की टेढ़ी-मेढ़ी चालों को, बल्कि हाथों की हरकतों, पैरों की थरिकन, और प्रदर्शति की गई शारीरकि यातना के सभी रूपों की छवयिों को भी बनाए रखकर लौटते हैं। तो यह कतिनी बेतुकी बात है कि वे अपनी आत्मा के वनिाश के लिए इतनी चंति करें और लगातार उस पर वचिार करते रहें जो वहां होता है, जबकि हम, जन्हिें यहां जो कुछ है उसकी नकल करके स्वर्गदूतों के समान होना है, उस बात पर उतना उत्साह नहीं दखिाते जतिना वे दखिाते हैं? नहीं, मैं आपसे वनिती और प्रार्थना करता हूं; आओ हम अपनी ही मुक्ति के प्रति इतने लापरवाह न हों, बल्कि हम सभी शहीदों को अपने मन में बसाए रखें, उनके तवा, उनके भगोने और अन्य यातनाओं के साथ; और जैसे चत्रिकार अक्सर धुएँ, कालखि और समय के साथ काले पड़ गए चत्रि को फरि से संवारता है, वैसे ही, मेरे प्रयि, पवत्रि शहीदों की स्मृति का उपयोग करो: जब भी इस जीवन की चन्ताओं से आपकी आत्मा म्लान हो जाए, तो उसे शहीदों की स्मृति से शुद्ध करें। यदि आप इस स्मृति को अपनी आत्मा में बनाए रखें, तो आप न तो धन-संपत्ति से चकति होंगे, न ही गरीबी पर शोक करेंगे, न ही महमिा और शक्ति की प्रशंसा करेंगे; और सभी मानवीय मामलों में—आप शानदार को कुछ भी महान नहीं मानेंगे, न ही दुखद को असहनीय; लेकनि, इन सब से ऊपर उठकर, आप इस छवि के नरिंतर मनन में सद्गुण का एक पाठ पाएंगे। जो कोई भी दनि-प्रतदिनि युद्धों और लड़ाइयों में बहादुरी से लड़ते योद्धाओं को देखता है, वह कभी भी वलिासति की इच्छा नहीं करेगा, न ही वे एक आरामपसंद और आलसी जीवन की प्रशंसा करेंगे, बल्कि एक ऐसा जीवन जसिकी वे प्रशंसा करेंगे जो कठोर, दृढ़ और वीरता के कारनामों के लिए तैयार हो। और नशे और युद्ध, पेटूता और साहस, सुगंधति इत्र और हथयिारों, युद्ध और दावतों में क्या समानता है? प्रयि, तुम मसीह के सपिाही हो: तो हथयिार बान्धो, और आभूषणों की परवाह मत करो; तुम एक पराक्रमी तपस्वी हो: तो साहसी बनो, और दखिावटी साज-सज्जा की परवाह मत करो। तो आइए हम इन संतों का अनुकरण करें, आइए हम इन वीरों, इन मुकुटधारी वजिेताओं, ईश्वर के इन मत्रिों का सम्मान करें, और, उनके समान पथ पर चलकर, ताकि हम भी उनके समान मुकुटों के योग्य ठहरें, जो हम सभी हमारे प्रभु यीशु मसीह की अनुग्रह और प्रेम से प्राप्त करें, जनिका महमिा पति और पवत्रि आत्मा के साथ, अब और सदा और युगानुयुग हो। आमीन।

कॉन्टाकयिन, स्वर 4:

हे बार्लाम, तुमने शक्ति को देखकर वस्मिति हुए; तुमने मसीह के लिए लेबनान का सुगंधति धूप जलकर चढ़ाया; और सम्मान का मुकुट प्राप्त करके, हे शहीद, हमारे लिए सदा प्रार्थना करो।

गुफाओं के पूजनीय बार्लाम का जीवन

१९ नवंबर को स्मरणोत्सव

उस समय, जब हमारे पूजनीय पति एंथनी, थयिोडोसयिस और नकिोन अपने वीर कर्मों द्वारा कीव की गुफाओं में, पवत्रि त्रमिूर्ति के सहिासन के सामने खड़े होने के योग्य तीन दीपों की तरह, चमक रहे थे, एक वरलाम, जो कुलीन और मसीह-प्रेमी माता-पति—प्रसि इज़यिास्लाव के बोयारों में प्रमुख, जॉन, और मैरी—का पुत्र था, जो महमिामय और पराक्रमी वशिता का पोता और वोइवोड ओस्त्रोमीर[8000] का परपोता था, वह अक्सर उनके पास उनके मधुर संभाषण का आनंद लेने आता था।

अपने युवा काल से ही, वर्लाम शारीरकि सुंदरता और आत्मा की पवत्रिता से दमकता था, और उसने उपर्युक्त पूजनीय पतिाओं के प्रति एक ऐसा प्रेम वकिसति कयिा, जो इतना प्रबल था कि वह उनके साथ रहना और सांसारकि जीवन

[8000] इज़्यास्लाव यारोस्लावचि, महा राजकुमार यारोस्लाव द वाइज़ के पुत्र और संत व्लादमिीर द ग्रेट के पोते, ने 1054 से 1068 तक कीव पर शासन कयिा। – वशिाता कीव मलिशियिा के कमांडर थे, जन्होंने यारोस्लाव के अधीन 1042 में अपने बेटे व्लादमिीर के साथ ग्रीकों से लड़ने के लिए प्रस्थान कयिा था। – ओस्ट्रोमरि – नोवगोरोड का पोसादनीक; उनके नाम से जुड़ी एक सुसमाचार आज भी मौजूद है – जो चर्च स्लावोनकि साहत्यि की सबसे पुरानी स्मारकों में से एक है।

को त्यागना चाहता था, महिमा और धन-संपत्ति को कुछ भी नहीं समझता था। वह विशेष रूप से प्रभु के उन वचनों से प्रभावित हुए, जो उन्हें अन्य बातों के साथ-साथ, पूजनीय पादरियों द्वारा बताये गए थे: *'धनवान के लिए परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना, सुई के छेद से ऊँट के निकलने से भी कठिन है'* (मत्ती 19:24)।

और इस प्रकार, एक बार आदरणीय एंथनी के पास आकर, उसने उन्हें अपना इरादा बताया।

उसने कहा, 'पिताजी, मैं चाहता हूँ कि ईश्वर की इच्छा से, एक भिक्षु बनकर आपके साथ रहूँ।'

'मेरे बच्चे, तुम्हारी इच्छा अच्छी है,' बुजुर्ग ने उत्तर दिया, 'और तुम्हारा इरादा धन्य है; लेकिन सावधान रहना कि इस दुनिया का धन-वैभव तुम्हें पीछे न कर दे, क्योंकि, जैसा कि प्रभु ने कहा है, *"जो कोई हल पर हाथ रखकर पीछे मुड़ता है, वह परमेश्वर के राज्य के योग्य नहीं"* (लूका 9:62)।

वरलाम के आध्यात्मिक लाभ के लिए उस वृद्ध ने विस्तार से बात की, और ईश्वर के प्रति प्रेम से उसका हृदय और भी अधिक प्रज्वलित हो उठा।

इस मनोभाव में, वह घर के लिए रवाना हो गया। वृद्ध के साथ बातचीत के ठीक अगले दिन, न केवल अपने माता-पिता बल्कि अपनी मंगेतर को भी पीछे छोड़कर, वह अपने घोड़े पर सवार हो गया, सुंदर और महंगे कपड़े पहन लिए, और सजा-धजाए घोड़ों को ले जा रहे कई नौकरों के साथ, एक गंभीर जुलूस में गुफा पर पहुँचा। जब पवित्र पुरुष बाहर आए और उसके सामने जमीन पर झुक गए—जैसा कि उन दिनों कुलीनों को श्रद्धांजलि देने की प्रथा थी—तो वह भी (अपने घोड़े से उतरकर) उनके सामने झुक गया। फिर उसने अपने बोयार (अधिकारी) के वस्त्र उतारकर उन्हें पूजनीय एंथनी के पैरों तले रख दिया, और साधारण घोड़ों को उसके सामने रखकर कहा:

'पिताजी, देखिए इस संसार के व्यर्थ धन-संपत्ति को: आप इनके साथ जो चाहें करें; *"मैं मसीह यीशु को जानने की उत्तम कीमत के कारण सब चीज़ों को हानि समझता हूँ"* (फिलि. 3:8), और मैं इस गुफा में आपके साथ रहना चाहता हूँ; मैं अब कभी घर वापस नहीं जाऊँगा।'

'हे मेरे बच्चे,' पूजनीय एंथनी ने उत्तर दिया, 'तुम किसके प्रति अपना वचन देते हो, और किसके सिपाही बनना चाहते हो? क्योंकि देखो, परमेश्वर के स्वर्गदूत यहाँ अदृश्य रूप में खड़े हैं, और तुम्हारा वचन ग्रहण कर रहे हैं।' सावधान रहो कि कहीं तुम्हारा पिता सशस्त्र सेना लेकर यहाँ आकर तुम्हें यहाँ से न ले जाए, भले ही तुम न चाहो: क्योंकि हम तुम्हारी मदद के लिए कुछ भी नहीं कर सकते, और तब तुम परमेश्वर के सामने एक झूठे और धर्मत्यागी के रूप में प्रकट होओगे।

वरलाम ने पुकारा, 'पिता, मुझे अपने ईश्वर पर विश्वास है! भले ही मेरा पिता मुझे यातना देना चाहे, मैं सांसारिक जीवन में वापस नहीं जाऊँगा; मैं आपसे केवल एक बात का अनुरोध करता हूँ: कृपया मेरी मुंडन-संस्कार में शीघ्रता करें।'

तब आदरणीय एंथनी ने आदरणीय निकोन को वार्लाम का मुंडन करने और उसे संन्यासी का वस्त्र पहनाने का आदेश दिया, जो किया गया।

बोयार जॉन को जब यह पता चला कि उसके प्रिय पुत्र ने संन्यास की शपथ ले ली है, तो वह संतों पर बहुत क्रोधित हो गया और अपने साथ नौकरों के एक समूह को लेकर, गुफा में शरण लेने वाले भिक्षुओं पर हमला कर दिया और उन सभी को वहाँ से भगा दिया, और जबरदस्ती अपने बेटे को बाहर खींच लिया; उसका चोगा और मुनियों का वस्त्र फाड़कर, उन्हें धारा में फेंक दिया। तब उन्होंने उसे उसके जन्म के योग्य सुंदर, कीमती वस्त्र पहनाए; लेकिन संत ने तुरंत उन्हें उतार दिया, उन्हें देखने से भी इनकार कर दिया, और यह कई बार दोहराया गया, यहाँ तक कि उसके पिता ने आदेश दिया कि उसके हाथ बाँध दिए जाएँ, उसे जबरदस्ती फिर से कपड़े पहनाए जाएँ, और उसी हालत में शहर के बीचों-बीच से घर ले जाया जाए। लेकिन बार्लाम ने रास्ते में गंदगी से भरी एक खाई देखकर, जल्दी से उसमें उतर गया और, जल्दबाजी में अपने कपड़े उतारकर, उन्हें कीचड़ में रौंद डाला, और उनके साथ उस धूर्त की योजनाओं को भी रौंद डाला। जब वे घर पहुँचे, तो उसके पिता ने उसे अपने साथ मेज पर बैठने का आदेश दिया: उसे आज्ञा माननी पड़ी, लेकिन उसने परोसे गए भोजन में से कुछ भी नहीं खाया और सिर झुकाए बैठा रहा। भोजन के अंत में, उसके पिता ने वरलाम को उसके कमरे में भेज दिया, और उस पर नज़र रखने के लिए नौकरों को नियुक्त किया ताकि वह भाग न सके। फिर उसने संत से सगाई की हुई युवती को आदेश दिया कि वह उसे लुभाने के लिए अपना सबसे अच्छा आभूषण पहन ले और हर तरह से उसकी सेवा करे। लेकिन मसीह का सेवक वरलाम, एक कमरे में गया और एक कोने में फर्श पर बैठ गया। उसकी मंगेतर, उसे दिए गए आदेश के अनुसार, उसके पीछे-पीछे आई और उससे विनती करने लगी कि वह उसके बिस्तर पर बैठ जाए। तब, उसकी मूर्खता को देखकर और यह समझकर कि उसके पिता ने उसे प्रलोभन देने के लिए भेजा था, उसने परीक्षा से छुटकारा पाने के लिए सर्व-दयालु ईश्वर से अपने हृदय की गहराई से एक गुप्त प्रार्थना की। तीन दिनों तक वह उसी स्थान पर बिना उठे बैठा रहा,

कुछ भी नहीं खाया, कोई कपड़ा नहीं पहना, और केवल एक बाल-कपड़े में लिपटा रहा। इस बीच, आदरणीय एंथनी और गुफा में उनके साथ मौजूद लोग उनकी दुर्दशा से गहराई से दुखी थे और उनके लिए ईश्वर से प्रार्थना कर रहे थे। और ईश्वर ने उनकी प्रार्थना सुनी, क्योंकि, भजन संहिताकार के शब्दों में, *'धर्मी पुकार लगाते हैं, और प्रभु उन्हें सुनते हैं; वह उन्हें उनकी सभी परेशानियों से बचाता है'* (भजन संहिता 33:18), और, संत के धैर्य और विनम्रता को देखकर, उन्होंने पिता के कठोर हृदय को अपने पुत्र के प्रति दया की ओर मोड़ दिया। नौकरों ने बोयार को बताया कि अब चौथा दिन हो गया था कि उसके बेटे ने न तो कोई भोजन लिया था और न ही कोई कपड़े पहने थे। पिता को अपने बेटे पर तरस आ गया और यह डरकर कि वह भूख और ठंड से मर सकता है, उसने उसे बुलाया; प्यार से चूमने के बाद, उसे गुफा में वापस भेज दिया। और फिर कुछ बहुत ही आश्चर्यजनक हुआ: घर में सिसकियों और विलाप की आवाज़ें गूँजने लगीं, मानो किसी मृतक के लिए; हर कोई रो रहा था: पिता और माता—क्योंकि वे अपने बेटे को खो रहे थे; दुल्हन—क्योंकि उसे अपने मंगेतर से अलग किया जा रहा था; नौकर-चाकर—क्योंकि उनका दयालु स्वामी उन्हें छोड़कर जा रहा था। और संत बरलाम, एक जाल से छूटे पक्षी की तरह, गुफा की ओर दौड़े। अंदर मौजूद संन्यासी बरलाम को देखकर पूरे दिल से प्रसन्न हुए और उस ईश्वर की स्तुति करने लगे, जिन्होंने उनके लिए उनकी प्रार्थनाएँ सुनी थीं।

जब गुफा में भाइयों की संख्या बारह हो गई, तो आदरणीय एंथनी, बरलाम के वीर तप और सद्गुणों में उसकी प्रगति को देखकर, उन्होंने पूरे दिल से ईश्वर का धन्यवाद किया कि इस उत्कृष्ट युवा ने एक वरिष्ठ के विशिष्ट आध्यात्मिक फल दिए थे, और उसमें ऐसी कृपा प्रकट हुई थी कि वह दूसरों के लिए जीवन में मार्गदर्शक बनने में पूरी तरह से सक्षम था। इसलिए, गुफा में रहने वाले सभी भाइयों से परामर्श करने के बाद, उन्होंने वर्लाम को अपने स्थान पर मठाधीश नियुक्त किया, जबकि वे स्वयं, अकेले रहने के आदी होने और लोगों की हलचल और बातचीत को बर्दाश्त न कर पाने के कारण, नए मठ के पास एक दूसरी पहाड़ी पर चले गए, और वहाँ एक गुफा खोदकर रहने लगे, जहाँ वे मौन में लीन रहकर हमेशा एकमात्र ईश्वर से संवाद करते थे। उनके पूजनीय अवशेष आज भी वहीं पड़े हैं।

आदरणीय बार्लाम ने समुदाय का नेतृत्व संभालने के बाद और भी अधिक कठोर तपस्वी जीवन जीना शुरू कर दिया। जब भाइयों की संख्या काफी बढ़ गई, जबकि गुफा में सामूहिक प्रार्थना के दौरान 20 से अधिक लोग समा नहीं सकते थे, तो उन्होंने आदरणीय एंथनी का आशीर्वाद लिया और उन्होंने गुफा के ऊपर एक छोटी लकड़ी की चर्च बनवाई, जो परमेश्वर की परम पवित्र माता के निद्रोपवेश को समर्पित थी, ताकि भाईचारे के वे सदस्य जो तंग जगह के कारण गुफा में सेवा के दौरान गायन में भाग नहीं ले पाते थे, वे इस चर्च में धार्मिक गायन के लिए इकट्ठा हो सकें। उस समय से, गुफा का स्थल, जो अब तक अनदेखा रहा था, स्पष्ट रूप से दिखाई देने लगा। कुछ वर्षों बाद, ग्रैंड प्रिंस इज़्यास्लाव यारोस्लाविच, जिनका बपतिस्मा का नाम दिमित्री था, ने अपने नाम के समान, महान शहीद दिमित्री को समर्पित एक पत्थर का चर्च बनवाया और उसके बगल में एक मठ की स्थापना की। राजकुमार ने इस मठ के मठाधीश के रूप में आदरणीय बरलाम को नियुक्त किया, जो उनके रिश्तेदार और मठवासी जीवन में अनुभवी व्यक्ति थे। यहाँ आदरणीय बरलाम ने वही जीवन शैली अपनाई जिसके वे गुफा में आदी हो गए थे; जहाँ तक भाइयों और सामान्य रूप से के सभी लोगों का सवाल है, उन्होंने सबसे बढ़कर उन्हें सिखाया और प्रोत्साहित किया कि वे पूरी लगन से अपनी आत्माओं के उद्धार का ध्यान रखें और एक ऐसा विवेक बनाए रखें जो हमेशा ईश्वर और अपने पड़ोसियों के सामने शुद्ध हो। और ईश्वर ने, आदरणीय के भाइयों के प्रति प्रेम और उनके प्रति उनकी चिंता को देखकर, उन्हें सभी सद्गुणों में बढ़ने में मदद की।

अपने कई अन्य कारनामों में, पूजनीय बरलाम ने यहाँ एक और कारनामा जोड़ा: उन्होंने एक अनुकूल समय चुनकर पवित्र नगर यरूशलेम के लिए प्रस्थान किया, और पवित्र भूमि की तीर्थयात्रा करने के बाद अपने मठ लौट आए। कुछ समय बाद, वे कॉन्स्टेंटिनोपल के लिए रवाना हुए, वहाँ के सभी मठों का दौरा किया और मठ के लिए आवश्यक सभी चीजें खरीदने के बाद, अपनी वापसी यात्रा पर निकल पड़े। यात्रा के दौरान, वह गंभीर रूप से बीमार पड़ गया और व्लादिमीर शहर पहुँचने पर, वह उसके पास के होली माउंटेन नामक एक मठ में ठहरा, जहाँ उसने प्रभु के साथ शांतिपूर्वक देहांत किया[8001] , और अपनी मृत्यु से पहले यह वसीयत की कि उसके साथी उसके शरीर को दफनाने के लिए कीव ले जाएँ, पेचेर्सक मठ में ले जाया जाएँ, और मठ की ज़रूरतों के लिए खरीदी गई आइकन और अन्य सभी चीजें परम पूज्य थियोडोसियस को सौंप दी जाएँ। परम पूज्य की अंतिम इच्छा पूरी की गई, और उनके पवित्र अवशेष आज भी गुफा में अपरिवर्तित पड़े हैं।

[8001] 1065 में निधन हुआ।

परम पूज्य बार्लाम की प्रार्थनाओं के द्वारा, हम भी अपने सांसारकि जीवन में प्रभु की आज्ञाओं का पालन करके, प्रभु यीशु मसीह में हमारे स्वर्गीय स्वदेश के वारसि बनें, जनिका महमिा पता और पवत्रि आत्मा के साथ युगानुयुग हो। आमीन।

पवत्रि शहीद अज़ा और उनके साथ 150 योद्धाओं का स्मरणोत्सव

19 नवंबर को स्मरण कयिा जाता है

पवत्रि शहीद अज़ा सम्राट डायोक्लेटयिन के शासनकाल में इसौरयिा के एक सैनकि थे।[8002] लेकनि बाद में, एक सांसारकि राजा के नहीं बल्कि स्वर्गीय राजा के सैनकि बनने की इच्छा से, उन्होंने अपने सैन्य पद से त्याग दयिा और रेगस्तिान में चले गए। वहाँ अनेक चमत्कार करने और बीमारों को चंगा करने के बाद, उन्हें मसीह के एक उत्साही अनुयायी के रूप में गरिफ्तार कर आइसौरयिा प्रांत के राज्यपाल अक्वलिनिस के समक्ष मुकदमे के लिए लाया गया। जब सैनकि संत को मुकदमे के लिए ले जा रहे थे, तो संत अज़ा ने उन्हें ईसाई धर्म के बारे में समझाया, और संत द्वारा उनकी आँखों के सामने एक चमत्कार करने के बाद सैनकिों ने वशि्वास कर लयिा। चूँकि शहीद के साथ चल रहे सैनकिों को बपतस्मिा लेने की बहुत इच्छा थी, अज़ा ने प्रार्थना में ईश्वर से प्रार्थना की, और संत की प्रार्थना से पानी फूट पड़ा। फरि भी, संत द्वारा उपदेश पाए सैनकिों ने—जनि्होंने उन पर यह बात गहराई से अंकति कर दी थी कि उन्हें सत्ता में बैठे अधकिारयिों की आज्ञा माननी चाहए—आज़ा को मुकदमे के लिए राज्यपाल के सामने ले आए और उसके साथ ही स्वयं को ईसाई होने की घोषणा की। तब राज्यपाल एक्वलिनिस ने दूसरों को डराने के लिए आदेश दयिा कि शहीद को कठोर यातना दी जाए, उसके शरीर को लोहे के पंजे से नोचा जाए और अंत में, उसे एक पहयि से बाँधकर उसे घुमाने के लिए मजबूर कयिा जाए। हालाँकि, ईश्वर की मदद से, संत को कोई नुकसान नहीं हुआ। यह देखकर, राज्यपाल की पत्नी और उसकी बेटी ने मसीह में वशि्वास करना शुरू कर दयिा और अपने धर्म की घोषणा की। तब राज्यपाल इतना क्रोधति हो गया कि उसने तुरंत अपनी पत्नी और बेटी के सरि कलम करने का आदेश दयिा, साथ ही उन सभी 150 सैनकिों के भी, जनि्होंने वशि्वास करना शुरू कर दयिा था।

इसके बाद, संत अज़ा को और यातनाएँ दी गईं और अंततःउनका सरि कलम कर दयिा गया[8003] ।

पवत्रि शहीद इलिओडोर की स्मृति

19 नवंबर को स्मरण कयिा जाता है

ऑरेलयिन के शासनकाल के दौरान[8004] , पैम्फलियिाई[8005] के शहर मैगडिसि में, जसिका शासन एटयिस के अधीन था, इलिओडोर नामक एक धर्मनष्ठि व्यक्ति ने नडिर होकर मसीह का उपदेश दयिा। इसके लिए, उसे गरिफ्तार कर राज्यपाल के सामने लाया गया, उस पर एक उत्पीड़ति सद्धिांत का प्रचार करने का आरोप लगाया गया। संत को मुकदमे के लिए लाया गया। पड़ताल के दौरान, राज्यपाल एटयिस ने इलिओडोर को मसीह का त्याग करने और मूर्तयिों को बलदिान चढ़ाने के लिए मनाने में बहुत समय लगाया। लेकनि संत ने साहसपूर्वक और दृढ़ता से मसीह को ईश्वर के रूप में स्वीकार कयिा। तब राज्यपाल ने आदेश दयिा कि उसे फांसी दी जाए और उसके शरीर को लोहे की पंजाओं से खुरच दयिा जाए। अपने यातना के दौरान, संत इलिओडोर ने ऊँचे स्वर में पुकारा:

'हे प्रभु यीशु मसीह! मेरी मदद करो!'

तुरन्त स्वर्ग से एक आवाज़ आई:

'डरो मत! मैं तुम्हारे साथ हूँ!'

[8002] इसौरयिा – एशयिा माइनर के दक्षणि में एक छोटा सा क्षेत्र।

[8003] चौथी शताब्दी की शुरुआत में।

[8004] *ऑरेलयिन* – रोमन सम्राट, 270 से 276 तक शासन कयिा।

[8005] पम्फलियिा – एशयिा माइनर के दक्षणि में एक क्षेत्र।

यह आवाज़ जल्लादों ने सुनी, जिन्होंने उसी क्षण चार स्वर्गदूतों को भी देखा। इस दृश्य का उन पर इतना प्रभाव पड़ा कि वे हमारे प्रभु यीशु मसीह में विश्वास करने लगे और राज्यपाल की निंदा करने लगे। क्रोधित राज्यपाल ने तुरंत उन्हें समुद्र में फेंकने का आदेश दिया। साथ ही, उसने कांसे के बैल को आग लगाकर शहीद को उसमें फेंकने का आदेश दिया। जब संत को उसमें फेंका गया, तो उनकी प्रार्थनाओं से बैल तुरंत ठंडा हो गया, और संत ने ईश्वर का एक स्तुतिगान गाया।

यह जानकर शासक चकित हो गया और कांसे के बैल के पास जाकर उसने स्वयं देखा कि वह तुरंत ठंडा हो गया था। संत की ओर मुड़कर उसने कहा:

'हे दुष्ट मनुष्य! तुम्हारे जादू ने तो आग को भी जीत लिया है!'

लेकिन संत ने उत्तर दिया:

'यह जादू-टोना नहीं था, बल्कि मसीह की मदद थी।'

यह कहकर, संत ने अपने यातनाकर्ता से यह विचार करने के लिए तीन दिन की मोहलत माँगी कि क्या करना है।

जब संत को रिहा किया गया, तो वे गुप्त रूप से मंदिर गए और वहां प्रार्थना करने लगे; संत की प्रार्थना के बाद, एक भूकंप आया, जिसमें मूर्तियाँ गिरकर चूर-चूर हो गईं। यह जानकर, राज्यपाल ने सेंट इलिओडोर को एक बार फिर अदालत में लाने का आदेश दिया और, क्रोध से भरकर, उसे फांसी देने और उसके सिर में लाल-गरम कीलें ठोकने का आदेश दिया। भयंकर दर्द सहते हुए, संत ने मदद के लिए ईश्वर को पुकारा, और तुरंत उनका कष्ट दूर हो गया। तब राज्यपाल ने आदेश दिया कि उस पर भारी लोहे की बेड़ियाँ डाल दी जाएँ और उसे पड़ोसी शहर के राज्यपाल के पास ले जाया जाए। जब संत इलिओडोर को उस राज्यपाल के सामने लाया गया, तो राज्यपाल ने उससे लंबी बात की, उसे मूर्तियों की बलि चढ़ाने के लिए मजबूर करने की कोशिश की। लेकिन उसकी दृढ़ता को देखकर, राज्यपाल ने आदेश दिया कि उसके हाथों और पैरों को चार लकड़ी के फट्टों में बाँधा जाए और फिर उसे जलते हुए तेल के एक बड़े पात्र में फेंक दिया जाए। पात्र में रहते हुए, संत ने प्रार्थना की, और साथ ही पास खड़े लोगों से भी उसके साथ शामिल होने का आग्रह किया, यह कहते हुए कि इससे उन्हें कोई नुकसान नहीं होगा। और वहाँ मौजूद कई लोग हमारे प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास करने लगे।

उन्होंने कहा, 'सचमुच, ईसाई ईश्वर महान है।'

जब राज्यपाल ने देखा कि कई लोग इलिओडोर के ईश्वर में विश्वास करने लगे हैं, और उसे इस बात का डर सताने लगा कि जिन्होंने विश्वास किया है वे पवित्र शहीद को आश्रय दे सकते हैं, तो उसने उसे मगदिा ले जाने का आदेश दिया। तब सैनिकों ने उसे पकड़ लिया और उसके साथ चल पड़े। मगदिा पहुँचने पर, वे उसे एक बार फिर अदालत के सामने ले आए। संत को यातना देने के बाद, राज्यपाल ने आदेश दिया कि उसे फांसी दी जाए, उसके शरीर की खाल उड़ा दी जाए, और फिर उसका सिर काट दिया जाए। जब इलिओडोरा को शहर से बाहर ले जाया जा रहा था, तो पवित्र शहीद ने उसे ले जा रहे लोगों को अपने हाथ से रुकने का इशारा किया; और जब उन्होंने उनकी बात मानी, तो उन्होंने एक प्रार्थना की, जिसके बाद उनका सिर कलम कर दिया गया[8006] ।

3 दिसंबर

20 नवंबर (पुराना कैलेंडर)

हमारे पूजनीय पिता ग्रेगरी द डेकापोलिट के जीवन

20 नवंबर को स्मरणोत्सव

[8006] लगभग 273 ईस्वी में।

आदरणीय ग्रेगरी का जन्म डेकापोलसि के इरनिोपोलसि शहर में[8007] ईसाई माता-पति, सेरजयिस और मार्था, जो एक धार्मकि और ईश्वर-भयभीत महलि थीं, के यहाँ हुआ था। आठ वर्ष की आयु में, उन्हें पढ़ना और लखिना सीखने के लिए भेजा गया, और कशिोरावस्था में ही उन्होंने ईश्वर के वचन का गहन अध्ययन कयिा और ईश्वर के घर के प्रत अिपनी भक्त से खुद को वशिष्टि बनाया। आत्मकि चीज़ों के लिए प्रयास करते हुए, उन्होंने सांसारकि सभी चीज़ों से घृणा करने लगे: वे स्वादष्टि व्यंजनों का सेवन नहीं करते थे, केवल साधारण और मोटा भोजन करते थे; उन्होंने महँगे और मुलायम वस्त्र पहनने से इनकार कर दयिा; वे शारीरकि श्रम से अपनी आजीवकिा चलाते थे, और बची हुई राश गिरीबों को दे देते थे। वह अक्सर मौन में खो जाते थे और वहाँ, एकांत में, ईश्वर से प्रार्थना करते थे क वि ह उन्हें अपना एक वफादार सेवक बनाने की कृपा करें।

जब ग्रेगरी वयस्क हुए, तो उनके माता-पति उन्हें शादी कराना चाहते थे, लेकनि वे चोरी-छपि भाग गए और एक सुनसान मठ में चले गए, जहाँ उन्होंने मठवासी संन्यास ग्रहण कयिा और खुद को उत्साहपूर्वक उपवास और संयम, प्रार्थना और अखंड रात्र जागरण के लिए समर्पति कर दयिा, तथा स्वयं पर सबसे कठोर मठवासी जीवन की सभी कठनिाइयाँ थोप लीं।

इस बीच, ग्रगिोरी के पति का शीघ्र ही नधिन हो गया; उनकी धर्मपरायण माता, उन्हें लंबी खोज के बाद पाकर, न केवल उन्हें डांटने से रहीं बल्क उन्होंने उनके मठवास के जीवन में स्वयं को समर्पति करने के इरादे को भी मंजूरी दे दी; उन्होंने उनसे केवल इतना कहा क वि वे दूसरे मठ में चले जाएँ, जहाँ उनका भाई ठहरा हुआ था। अपनी माता की इच्छा का पालन करते हुए, वह आदरणीय वहाँ चले गए; लेकनि जब उन्हें पता चला क उिस मठ के मठाधीश एक मूर्तभिंजक थे, तो उन्होंने, ऑर्थोडॉक्सी के एक उत्साही रक्षक के रूप में, पूरे समुदाय के सामने उनकी नदिा की। तब मठाधीश ने गुस्से में आकर उसे बुरी तरह पीटा, जसिके बाद ग्रेगरी एक दूसरे मठ में चले गए, जहाँ के मठाधीश उनकी माँ के रश्तिेदार, समियिन थे। समियिन ने, जो तपस्या के जीवन में अनुभवी व्यक्त थि, ग्रेगरी का खुशी से स्वागत कयिा और उस युवा व्यक्त को सभी सद्गुणों में शकि्षति कयिा। वहाँ लगभग चौदह वर्ष तक रहने के बाद, आदरणीय ग्रेगरी ने सभी का सम्मान अर्जति कयिा, और हर कोई उन्हें एक सदाचारी और पवत्रि व्यक्त के रूप में पूजने लगा। गहन वनिम्रता में उत्कृष्ट और एक पूर्ण भकि्षु बनने की इच्छा रखते हुए, उन्होंने मठाधीश से एक एकांत कोठरी में रहने की अनुमत मांगी, ताक वि वे कसिी भी सांसारकि चति से मुक्त होकर अपना समय मौन में बति सकें। मठाधीश ने, उनके इरादों की अच्छाई को पहचानकर, उनके तपस्या के प्रयासों के लिए एक गहरी, खड़ी घाटी में एक गुफा उनके लिए अलग रख दी। और संत ने उस गुफा में और भी अधकि उत्साह के साथ अपनी तपस्या में खुद को समर्पति करना शुरू कर दयिा। हालाँक, लोगों की अफवाहों से वचिलति हुए बनि, उन्होंने वहाँ राक्षसों के हाथों महान यातनाएँ सहन कीं, जो हर तरह से उन्हें कड़वा करने और लुभाने की कोशशि करते थे, ताक उिन्हें उनके नविास से भगा सकें। कभी-कभी वे उस पर चल्लिाकर धमकी देते: 'हमारे नविास को छोड़ दो, वरना तुम हमारे हाथों बहुत कष्ट सहोगे'; तो कभी वे भयानक बच्छिुओं का रूप धारण करके उस पर झपट पड़ते। लेकनि वह अजेय और नर्भिय बना रहा। जब वह प्रार्थना में खड़ा था, तो राक्षसों ने उसके हाथ-पैरों को घायल कर दयिा; लेकनि उसने उन घावों पर कोई ध्यान नहीं दयिा, और उन्हें कुछ भी नहीं समझा। और राक्षस शर्मदिा होकर पीछे हट गए। कुछ दनिों बाद, वे उसके सामने योद्धाओं के भेष में प्रकट हुए, और उसे मारने की धमकी देने लगे; लेकनि उसने क्रॉस का चन्हि बनाया, और वे गायब हो गए। इसके बाद, वे संत के सामने प्रकाश से दमकते हुए प्रकट हुए, और कहा क वि वे चालीस शहीद हैं और राक्षसों के वरिुद्ध उसे अनुग्रह और शक्त प्रिदान करने आए हैं; लेकनि उसने, उनकी चालाकी को भाँपते हुए, उन्हें फटकार लगाई, और वे एक बार फरि गायब हो गए। अन्य प्रलोभन भी शक्तहिीन थे, क्योंक ईश्वर की कृपा ने उसकी सहायता की और उसके भीतर शरीर की सभी इच्छाओं को जड़ से मटि दयिा। कुछ ही समय बाद, प्रभु ने अपने वफादार सेवक को एक अद्भुत दर्शन प्रदान कयिा: ग्रेगरी एक प्रकार के समाधि-सामान्य अवस्था में पहुँच गए, जसिके दौरान स्वर्ग से एक तेजस्वी प्रकाश उनके सामने प्रकट हुआ, जसिके साथ एक अकथनीय सुगंध भी थी जसिने गुफा को भर दयिा और कई दनिों तक वहीं बनी रही। संत ने इसे अपना कर्तव्य माना क वि ह इस चमत्कार की सूचना अपने मठाधीश को दे, ताक आध्यात्मकि जीवन में अनुभवी व्यक्त के रूप में उनसे पूछ सके क क्या यह दर्शन ईश्वर की ओर से था, या यह शैतान का कोई काम था, जसिे उसे लुभाने और धोखा देने के लिए

[8007] डेकापोलसि – ग्रीक में, डेकापोलसि – एशयिा माइनर के दक्षणिी भाग में, इसके पहाड़ों में स्थति एक छोटे से क्षेत्र इसौरयिा में दस शहरों का एक संघ था; इरनिोपोलसि इन शहरों में से एक था। इसी शहरों के संघ के कारण ही आदरणीय ग्रेगरी को डेकापोलीट के नाम से जाना जाने लगा।

भेजा गया था। ग्रेगरी का वृत्तांत ध्यान से सुनने के बाद, मठाधीश ने उसे आश्वस्त कयिा और उससे कसिी भी संदेह या भय को न रखने के लिए कहा, बल्कि यह बताया कि यह दैवीय प्रकाश था, जसिने अपनी सुगंध से दुष्ट की घातक बदबू को भगा दयिा था। 'जतिना हो सके अपने तपस्या के प्रयासों में जुटे रहो,' बुजुर्ग ने नष्किर्ष नकिाला, 'और इस बात पर भरोसा रखो कि ईश्वर तुम्हारा सहायक है।' और वास्तव में, संत ग्रेगरी उस अनुग्रह-पूर्ण दर्शन से चंगा हो गए और उस शारीरकि बीमारी से मुक्त हो गए जो उन पर हावी थी, साथ ही आध्यात्मकि बीमारी—शारीरकि प्रलोभन जसिसे राक्षसों ने उन्हें फँसाने की कोशशि की थी—और उनकी सभी दुर्भावनापूर्ण प्रलोभनों से भी मुक्त हो गए। उस समय से, उस धन्य व्यक्ति ने अपने तपस्या के कार्यों और प्रार्थनाओं को दोगुना कर दयिा, और अपनी आत्मा की गहराई से नरिंतर प्रभु से पुकार लगाते रहे। इस प्रकार शैतान की चालाकयिों पर वजिय प्राप्त करने के बाद, पूजनीय ग्रेगरी, अपने पवत्रि और नरि्दोष जीवन के कारण, परमेश्वर द्वारा चमत्कार करने की अनुग्रह-पूर्ण देन के लिए योग्य समझे गए। और चूँकि यह उपयुक्त नहीं था कि किलीसयिा के इस दैवी दीपक को छपिा हुआ रहे,

प्रभु ने स्वर्ग से उन पर पुकारा, जैसे उन्होंने एक बार पैट्रआर्क अब्राहम को पुकारा था (उत्पत्ति 12:1):

'ग्रेगरी! यदि तुम पूर्णता प्राप्त करना चाहते हो, तो अपनी भूमि और अपने परजिनों को छोड़ दो, और अपने भले के लिए यात्रा करो।'

इस दैवीय आवाज़ का पालन करते हुए, ग्रेगरी गुफा से नकिल गए और कॉन्स्टेंटनिोपल जाने के लिए जहाज़ खोजने हेतु एफ़सिुस के लिए रवाना हो गए: उस समय कॉन्स्टेंटनिोपल की कलीसयिा प्रतमिा-वरिोधी वधिर्म की चपेट में थी, और ईश्वर की महमिा तथा ऑर्थोडॉक्सी की पवत्रिता के प्रति उत्साही, संत का इरादा कलीसयिा की रक्षा के लिए आना और वधिर्मीयों की झूठी शकि्षाओं का पर्दाफाश करना था। लेकनि ईश्वर की इच्छा कुछ और थी: संत ग्रेगरी को दव्यि आह्वान के अनुसार, अपना बाकी जीवन भटकते हुए बतिाना था, *'क्योंकि यहाँ हमारा कोई स्थायी नगर नहीं है, परन्तु हम उस नगर की खोज में हैं जो आने वाला है'* (इब्रानयिों 13:14), ठीक वैसे ही जैसे हमारे प्रभु यीशु मसीह, जो पृथ्वी पर एक परदेशी थे और उनके सरि रखने के लिए कोई जगह नहीं थी (मत्ती 8:20; लूका 9:58)।

एफ़सिुस से कॉन्स्टेंटनिोपल के लिए प्रस्थान करते हुए, रेवरेंड फादर सबसे पहले रास्ते में प्रोकॉननिसि[8008] में रुके, जहाँ एक गरीब आदमी ने, मठवासयिों को आश्रय देने पर रोक लगाने वाले प्रतमिा-वरिोधी सम्राटों[8009] के सख्त फरमानों के बावजूद, प्रभु के प्रेम के लिए उनका अपने घर में गर्मजोशी से स्वागत कयिा, जसिके लिए प्रभु ने कुछ ही दनिों में उसे धनवान बना दयिा। वहाँ से संत बज़िान्टयिम के लिए और आगे बढ़े, लेकनि एक बाधा आने पर उन्हें एहसास हुआ कि वहाँ जाना ईश्वर की इच्छा नहीं थी, इसलिए वे एनोस[8010] चले गए। वहाँ एक घुड़सवार ने उसे बुरी तरह पीटा, जसिे शैतान ने ऐसा करने के लिए उकसाया था; लेकनि उस धर्मी व्यक्ति ने प्रहार सहते हुए ईश्वर से प्रार्थना की कि वह अपने हमलावर को क्षमा कर दें, और वह व्यक्ति, उसकी नम्रता को देखकर, पश्चाताप कर गया, क्षमा याचना करने लगा, और रेवरेंड फादर से यह शकि्षा प्राप्त की कि वह फरि कभी कसिी का अहति न करे। वहाँ से जहाज द्वारा प्रस्थान करके, रेवरेंड क्रसि्टोपोलसि[8011] पहुँचे, जहाँ से उन्होंने थ्रेसलॉनीकी के लिए पार कयिा।

कुछ दनिों तक थ्रेसलॉनीकी में रहने के बाद, संत ग्रेगरी कोरंथि के लिए ज़मीन मार्ग से रवाना हुए। वहाँ से रोम के लिए समुद्र मार्ग से प्रस्थान करते हुए, वे रास्ते में रेजयिो[8012] में कुछ समय के लिए रुके। यहाँ, कुछ लोगों ने जब देखा कि आदरणीय के पास कुछ भी नहीं था, तो उन्होंने उन्हें कुछ सोना दे दयिा। हालाँकि संत दाताओं को नहीं जानते थे, लेकनि दैवीय कृपा से उन्हें एहसास हो गया कि उन्हें दयिा गया सोना अन्यायपूर्ण तरीके से प्राप्त कयिा गया था; इसलिए, उन्हें अन्याय से दूर रहने की शकि्षा देने के लिए, उन्होंने दोषी व्यक्ति को बेनकाब कयिा और अन्याय से प्राप्त धन वापस कर दयिा। रेजयिो को छोड़कर, संत रोम के लिए और आगे बढ़ गए। रास्ते में, यात्रयिों में से एक जहाज से गरिकर समुद्र में जा पड़ा, उस तट के पास जहाँ उन्हें रोम की अपनी यात्रा जारी रखने के लिए उतरना था। और फरि एक चमत्कार हुआ,

---

[8008] प्रोकोननिसि – अब मार्मारा, मार्मारा सागर के पश्चमिी भाग में एक द्वीप।

[8009] लयिो तृतीय इसौरीय (716–741), वशिेष रूप से उनके पुत्र कांस्टेंटनि कॉप्रोनमिस (741–775) और बाद वाले के पुत्र और उत्तराधकिारी, लयिो चतुर्थ खज़ार (775–780)।

[8010] एनोस – वर्तमान रुमेलयिा के दक्षणि में, कॉन्स्टेंटनिोपल के पश्चमि में स्थति एक तटीय बंदरगाह शहर।

[8011] क्रसि्टोपोलसि – जसिे एम्वोलाई के नाम से भी जाना जाता है, मैसेडोनयिा में स्ट्रमिोन नदी पर स्थति एक नगर है, जो थेस्सालोनकिी से 50 वर्स्ट उत्तर-पूर्व की ओर बहती है।

[8012] रजियिम – इटली के दक्षणि-पश्चमिी भाग में, ससिलिी जलडमरूमध्य के तट पर एक शहर।

जो स्पष्ट रूप से इस बात की गवाही देता है कि परमेश्वर की कृपा आदरणीय संत पर थी; क्योंकि एक ही प्रार्थना से उन्होंने उस आदमी को किनारे पर ला दिया और उसे निश्चित मृत्यु से बचा लिया।

रोम पहुँचने पर, पूजनीय ग्रेगरी ने एक एकांत कोठरी में तीन महीने मौन में बिताए, ताकि किसी को उनकी उपस्थिति का पता भी न चले। लेकिन एक दैत्य-ग्रस्त व्यक्ति ने शहर में उनकी उपस्थिति का खुलासा किया: क्योंकि संत ने उससे अशुद्ध आत्मा को निकालकर उसे ठीक कर दिया था, और हर कोई उसे एक संत मानने लगा। इसके बाद ग्रेगरी वहाँ से चले गए और सिसिली पहुँचकर एक मीनार में खुद को बंद कर लिया, जहाँ वे मौन में रहे। वहाँ, राक्षसों ने उन पर हमला किया, जिस चटाई पर वे सोते थे उसे नष्ट कर दिया, और हर तरह से उन्हें बहकाने की कोशिश की, तथा उन पर विभिन्न दुष्ट कृत्य किए; लेकिन उन्होंने प्रार्थना के द्वारा उन्हें भगा दिया। यहीं पर उन्होंने एक पापी महिला को भी शाश्वत नरक से बचाया; उसने अनगिनत चालाकियों से पुरुषों—विशेषकर विदेशी भूमि से आने वाले नाविकों—को व्यभिचार की अशुद्धता में फँसाया था। उसकी शाश्वत यातनाओं की धमकी देकर, संत ने अपनी समझाइश से उसे संसार त्यागने और मठवासी संन्यास ग्रहण करने के लिए प्रेरित किया, और कामुक अशुद्धता के उस स्थान का रूपांतरण एक मठ में हो गया। इसके बाद, एक राक्षस-ग्रस्त महिला मीनार में रेवरेंड ग्रेगरी के पास आई, और उन्होंने अपनी प्रार्थना के माध्यम से उसके भीतर के राक्षस को भगा दिया। उसने उस स्थान पर कई अन्य चमत्कार भी किए। जब सभी को इस बात का पता चला और उन्होंने उनकी पूजा करना शुरू कर दिया, तो संत वहाँ से भी चले गए।

एक बार, यात्रा के दौरान, उनकी मुलाकात एक सारसेन सेना से हुई[8013] । उनमें से एक अपने घोड़े को कुएँ पर पानी पिला रहा था, और जब संत उसके पास पहुँचे, तो उस व्यक्ति ने उन्हें मारने के लिए अपनी भाला उठा ली। लेकिन अचानक उसका हाथ हवा में जम गया, जिससे वह उसे नीचे नहीं ला सका। तब वह सम्माननीय पिता के पीछे-पीछे चल पड़ा, और उनसे ठीक होने की भीख माँगने लगा। संत ने अपने हाथ से उसके हाथ को छूकर उसे ठीक कर दिया। आगे रास्ते में, संत की मुलाकात एक ऐसे व्यक्ति से हुई जिस पर एक राक्षस सवार था और जो क्रूरतापूर्वक प्रताड़ित किया जा रहा था। उस पर दया करके, संत ने ईश्वर से प्रार्थना की, और राक्षस उस पीड़ित व्यक्ति को छोड़ गया।

अंतत; ग्रेगरी थ्रेसलॉनीकी लौट आए और सेंट मीना के मठ में बस गए। उन्होंने इतनी गरीबी में जीवन यापन किया कि उनके पास खाने के लिए कुछ नहीं था, न ही ढकने के लिए कुछ, और वे केवल एक ही वस्त्र पहनते थे, जो दिन-रात काम आता था। जब उन्हें बहुत ज़्यादा भूख लगती, तो वे '' के चर्च से बाहर निकलते और अगर वे कहीं भी लोगों को खाते हुए देखते, तो वे उनके साथ जुड़ जाते और थोड़ा-सा भोजन बाँट लेते। लेकिन फिर उन्हें एहसास हुआ कि उन्हें खुद काम किए बिना दूसरों की मेहनत पर नहीं जीना चाहिए, और उन्होंने यह संकल्प लिया कि जब तक प्रभु उन्हें स्वर्ग से सहायता नहीं भेजते, तब तक वे चर्च में बिना भोजन के ही रहेंगे। और प्रभु, जिन्होंने एक बार कबूतर के द्वारा भविष्यवक्ता एलिया (3 राजा 17:6) और अपने कई अन्य धर्मात्मा सेवकों को चमत्कारिक ढंग से जीवित रखा था, उन्होंने अपने इस वफादार सेवक को सहायता के बिना नहीं छोड़ा; दैवीय प्रेरणा से, एक ईश्वर-भयभीत विधवा उसे हर दिन भोजन लाती थी।

शीघ्र ही, पूजनीय ग्रेगरी अपने चमत्कारों के लिए आसपास के पूरे क्षेत्र में प्रसिद्ध हो गए। इस प्रकार, एक अवसर पर, एक राक्षस-ग्रस्त महिला उनके पास आई और संत से अपनी छोटी झोपड़ी की मरम्मत में मदद मांगी, क्योंकि वह जर्जर हो गई थी। उसकी विनती के जवाब में, संत ने कहा:

'जाओ, काम शुरू करो, और अनाथों के पिता परमेश्वर तुम्हें मदद भेजेंगे।'

वह महिला आस्था के साथ गई और भवन की नींव रखने के लिए जमीन खोदने लगी। और देखो, उस स्थान से बड़ी मात्रा में पिच (एक प्रकार का गोंद) बहने लगा। महिला ने उसे बेच दिया और उससे प्राप्त धन से न केवल अपना छोटा सा घर बनाया, बल्कि इस पिच की बिक्री से अपनी आजीविका भी चलायी और अपनी अन्य ज़रूरतों को भी पूरा किया।

[8014]संत मीना के मठ के पास एक स्तंभ पर तपस्या कर रहे एक निश्चित भिक्षु को, पवित्र आत्मा द्वारा पहले से सूचित होकर, पूजनीय ग्रेगरी ने, जैसा कि उन्होंने कुछ अन्य लोगों के साथ भी किया था, उसके निकटवर्ती मृत्यु की भविष्यवाणी की। अपने स्वयं के आध्यात्मिक विकास पर अथक रूप से काम करते हुए, आत्मा की पवित्रता का पवित्रता से पालन करते हुए और ईसाई सद्गुणों में खुद को परिपूर्ण करते हुए, आदरणीय ग्रेगरी में प्रभु के प्रति महान धैर्य था और उन्होंने खुद को पवित्र आत्मा का निवास स्थान बनने के लिए तैयार किया; दिव्य मार्गदर्शन से, उन्होंने विनम्र

[8013] सारासेन – अरबों को दिया गया नाम, जो अरब की एक खानाबदोश, लूटपाट करने वाली जनजाति थी; बाद में, यह नाम सामान्य रूप से सभी मुसलमानों पर लागू होने लगा।

[8014] ग्रीगरी, ग्रीक शब्द से, का अर्थ है *'सतर्क रहने वाला।*

और बुद्धमिानी भरे तपस्या के संकीर्ण मार्ग पर चलना जारी रखा, और अथक सतर्कता के माध्यम से सभी लापरवाही और शत्रु के प्रलोभनों को दूर कयिा, ताकि शत्रु उनकी नींद में भी उनकी कल्पना या वचिारों को प्रभावति न कर सके; अपने नाम के अनुरूप, वह अपने सभी कर्मों और वचिारों में वास्तव में सतर्क थे, और उन्होंने अपनी आत्मा और शरीर को सभी वासनाओं से शुद्ध कयिा। एक पुरोहति के रूप में अभषिक्ति होकर, उन्होंने एक पश्चात्तापी हृदय और एक वनिम्र आत्मा के साथ दैवीय सेवाओं का अनुष्ठान कयिा; उन्होंने घमंड और दंभ को पूरी तरह से त्याग दयिा। सबसे बढ़कर, उन्होंने वचन और कर्म दोनों में ऑर्थोडॉक्सवाद की पवत्रिता को बनाए रखा; उन्होंने अपनी पूरी क्षमता से वधिर्मयिों का सफाया कयिा, और अपने शब्दों और लेखों के माध्यम से पवत्रि प्रतमिाओं की पूजा करना और चर्च की परंपरा के अनुसार उनका सम्मान करना सखिाया; उन्होंने कई शहरों को मूर्तभिंजन की अशुद्धता से शुद्ध कयिा और यदि आवश्यक हुआ तो पवत्रि प्रतमिाओं के लिए अपना रक्त बहाने को भी तैयार थे; वह स्वयं उनके लिए मृत्यु को स्वीकार करने के लिए तैयार थे और अपनी स्वेच्छा से एक शहीद थे। सभी गुणों से बढ़कर, उनमें नरिंतर पवत्रि प्रार्थना थी, जो हमेशा अपने मन को ईश्वर की ओर नर्दिेशति करते थे; पवत्रि स्वर्गदूतों के साथ मलिकर ईश्वर की स्तुति और महमिा करते हुए, उन्हें यहाँ पृथ्वी पर भी शाश्वत आनंद की अनुपम आनंद की पहली झलक प्राप्त हुई। एक रात, प्रभु का स्वर्गदूत एक दर्शन में उनके सामने प्रकट हुआ, जसिने उन्हें सभी दैवीय शक्तयिों को परास्त करने और चर्च से वधिर्मी सद्धिांतों को, तथा हृदय से पापी वासनाओं को दूर करने के लिए एक ज्वलंत तलवार सौंपी।

कभी-कभी, ईश्वर के ध्यान में मग्न रहते हुए, परम पूज्य को स्वर्गदूतों का गायन सुनाई देता था: वह ईश्वर और स्वर्गदूतों को इतना प्रयि था कि अपने नश्वर शरीर में रहते हुए भी, उसे अमर, दव्यि आनंद प्रदान कयिा गया था; उसे स्वर्गदूतों का वह गायन सुनने के योग्य माना गया, जसिे कसिी भी मानव कान ने पहले कभी नहीं सुना था, और उसमें अकथनीय आनंद लेने के योग्य समझा गया।

थेस्सालोनकिी में कई साल बतिाने के बाद, पूजनीय ग्रेगरी अपने एक शष्यि के साथ बुल्गारयिा—जो उस समय तक भी मूर्तपिूजक था—के लिए रवाना हुए, लेकनि वहाँ पहुँचने से पहले ही वापस लौट आए। जब शष्यि ने उनसे पूछा कि उन्होंने इतनी जल्दी अपना मन क्यों बदल लयिा, तो पूजनीय ने उत्तर दयिा:

'मैं उस स्थान पर जाना चाहता था, लेकनि मुझे दखि रहा है कि वहाँ सूरज नहीं चमकता।'

इन शब्दों के साथ, उन्होंने भवष्यिवाणी की कि थोड़ी ही देर बाद वहाँ अशांति फैल जाएगी, जसिमें रक्त नदी की तरह बहेगा और पूरा देश तबाह हो जाएगा।

बाद में, पूज्य ग्रेगरी थस्सिलोनकिी से बाइजेंशयिम और वहाँ से ओलंपस पर्वत[8015] गए, जहाँ से वे पुनःथस्सिलोनकिी लौट आए।

इस प्रकार, इस प्रकार परश्रिम करते हुए और पृथ्वी पर रहते हुए स्वर्गीय बातों पर ध्यान लगाते हुए, आदरणीय ग्रेगरी इस जीवन से प्रस्थान करने के समय के नकिट आ गए। मर्गिी की गंभीर बीमारी से पीड़ति होकर, वे अपने बस्तिर पर नष्क्रयि पड़े थे और उन्होंने ईश्वर से प्रार्थना की कि वह उन्हें इस बीमारी से मुक्त कर दें और इसके स्थान पर दूसरी बीमारी - व्रणशोथ (dropsy) - दे दें। ईश्वर ने उनकी प्रार्थना सुनी: उन्हें पहली बीमारी से मुक्त करने के बाद, उन्होंने उन्हें वह बीमारी दे दी जसिकी उन्होंने प्रार्थना की थी। और इस प्रकार उनका शरीर इतना सूज गया कि ऐसा लगने लगा मानो वह हवा से भरा एक थैला हो। थेस्सालोनकिा छोड़कर, रेवरेंड फादर वहाँ के प्रतमिा-भंजनवाद के वधिर्म से लड़ने के लिए बड़ी कठनिाई से कॉन्स्टेंटनिोपल पहुँचे[8016] , और फरि कभी वापस नहीं लौटे। वे अपने साथ अपने दो शष्यिों और साथयिों, जोसेफ और जॉन को भी ले आए। उन्होंने जल्द ही उनमें से पहले वाले को, ऑर्थोडॉक्स संतों के अनुरोध पर, रोम में पोप लयिो तृतीय के पास भेजा[8017] ताकि पवत्रि प्रतमिाओं पर होने वाले संभावति उत्पीड़न के मामले में उनकी

[8015] यह, बेशक, एशयिा माइनर के उत्तर में, बथिनियिा और मसियिा की सीमाओं पर स्थति बथिनियिा और मसियिा में माउंट ओलंपस को संदर्भति करता है, जहाँ उस समय मठवाद फल-फूल रहा था।

[8016] यह सम्राट लयिो द आर्मेनयिन (813–820) के शासनकाल के दौरान हुआ। कॉन्स्टेंटनिोपल के पैट्रआर्क, नकिफिोरोस को प्रतमिा-भंग की वधिर्म को अपनाने के लिए मनाने में असमर्थ, इस सम्राट ने उन्हें मार्च 816 में अन्य बशिपों के साथ नर्वािसन में भेज दयिा, मठाध्यक्षों और भक्षिुओं ने धृष्टता से पवत्रि प्रतमिाओं की पूजा का बचाव कयिा था, और उन्हें कॉन्स्टेंटनिोपल की कोठरयिों में बंद कर दयिा या नर्वािसति कर दयिा।

[8017] पोप लयिो तृतीय (795–816)

सहायता मांगी जा सके; लेकिन, रास्ते में, उन्हें प्रतिमा-भंजक सम्राट लियो द आर्मेनियन द्वारा घूस दिए गए समुद्री डाकुओं ने पकड़ लिया और साइप्रस द्वीप पर कैद कर दिया।

जोसेफ का अपने महान गुरु को फिर से जीवित देखने का भाग्य नहीं था। पूजनीय ग्रेगरी ने कुछ ही समय बाद अपना शुद्ध आत्मा प्रभु को सौंप दिया। अपनी मृत्यु से बारह दिन पहले, उन्होंने अपने निधन के दिन की पूर्व सूचना पा ली थी और आदेश दिया कि उन्हें एक धर्मशाला में ले जाया जाए, जहाँ 20 नवंबर को, उन्होंने शांतिपूर्वक देह त्याग दिया[8018] । जब वे उनके पवित्र शरीर को दफनाने आए, तो एक बीमार व्यक्ति विश्वास के साथ उनके पास आया; वह एक गंभीर बीमारी से पीड़ित था, इसलिए वह सीधा खड़ा नहीं हो सकता था, बल्कि उसका चेहरा लगातार जमीन की ओर मुड़ा हुआ था। और फिर उसे ऐसा लगा कि किसी ने पीछे से उस पर हाथ रखा है, और वह मुड़ा और अपने पास खड़े व्यक्ति से पूछने लगा कि क्या उसने ही उसे छुआ था। उस आदमी ने मना कर दिया, और बीमार आदमी को इससे यह एहसास हुआ कि यह ईश्वर की शक्ति थी, जो संत पर उतरी थी, जिसने उसे चंगा किया था - और वह अपनी बीमारी से पूरी तरह ठीक होकर सीधा खड़ा हो गया। एक और आदमी अशुद्ध आत्मा से पीड़ित था, लेकिन जैसे ही वह पूजनीय संत की ताबूत के पास पहुंचा, दानव उससे चला गया। एक भाई को कामुक वासना से बहुत कष्ट हो रहा था और वह गिरने की कगार पर था, लेकिन संत की कब्र पर आकर, उसने आँसू भरी आँखों से मदद की भीख माँगी – और कामुक संघर्ष समाप्त हो गया, और उसने संत की महिमा की और ईश्वर का धन्यवाद किया।

इस प्रकार, एक अत्यंत कठिन सांसारिक तीर्थयात्रा के बाद, आदरणीय ग्रेगरी ने स्वर्ग में पवित्र स्वर्गदूतों के बीच शाश्वत विश्राम प्राप्त किया, जिनका दर्शन और जिनकी वाणी को उन्होंने अपने सांसारिक जीवन के दौरान भी देखने का सौभाग्य प्राप्त किया था, और अब, उनके साथ मिलकर, वे त्रिमूर्ति में एक ईश्वर की 'थ्रीसैंक्चुफाइड' भजनों के साथ युगों-युगों तक महिमा करते हैं।

कॉन्टाकियन, स्वर 3:

चर्च आपको एक तेजस्वी सूर्य के रूप में पहचानती है, जो अपने सद्गुणों की सुंदरता और अपने चंगा करने वाली किरणों से सभी को प्रकाशित करते हैं, हे मसीह के सेवक: अतः हम आपकी सम्मानित स्मृति का उत्सव मनाते हैं और आपके कार्यों का सम्मान करते हैं, सर्व-धन्य और अति-प्रज्ञावान पिता ग्रेगरी।

कॉन्स्टेंटिनोपल के पैट्रिआर्क, संत प्रोक्लस का जीवन

20 नवंबर को स्मरणोत्सव

संत प्रोकॉल्स, संत जॉन क्राइसोस्टोम[8019] के शिष्य थे और उन्हें यह अनुग्रह प्राप्त हुआ कि उन्होंने देखा कि कैसे पवित्र प्रेरित पौलुस, एक अद्भुत दर्शन में, गुप्त रूप से संत जॉन के कान में बोले।

कॉन्स्टेंटिनोपल का एक कुलीन व्यक्ति, उसकी ईर्ष्यालु प्रतिद्वंद्वियों द्वारा सम्राट आर्काडियस[8020] के समक्ष बदनाम किया गया, उसे महल से निर्वासित कर दिया गया और उसके उच्च पद से हटा दिया गया। संत जॉन से मदद मांगने की इच्छा से, उसने उनकी अनुपस्थिति में उनसे रात में उनके पास आने की अनुमति मांगी, क्योंकि वह दिन में

[8018] डेकापोलिस के पूजनीय ग्रेगरी की मृत्यु 826 में हुई - पूजनीय जोसेफ अपने गुरु को देखने के लिए जीवित नहीं रहे। छह साल बाद निर्वासन से कॉन्स्टेंटिनोपल लौटने पर, उसका एकमात्र सांत्वना अपने हाथों से संत ग्रेगरी के अक्षुण्ण शरीर को छूना था, और वह अपने शिष्य जॉन के साथ उनकी कब्र के पास बस गया। जॉन की मृत्यु के बाद, जोसेफ उस स्थान को छोड़कर सेंट जॉन क्राइसोस्टोम के चर्च में बस गए, जहाँ उन्होंने सेंट ग्रेगरी द डेकापोलिट और उनके शिष्य जॉन के अवशेष रखे, जो अपनी अक्षुण्णता और चमत्कारों के लिए प्रसिद्ध थे; कुछ समय बाद, इस चर्च के पास ही, उन्होंने कासुल के संत निकोलस को समर्पित एक मठ समुदाय की स्थापना की और संतों के अवशेषों को वहाँ स्थानांतरित कर दिया। जोसेफ द हाइमनोग्राफर ने संत ग्रेगरी के सम्मान में एक सेवा भी रची। संत ग्रेगरी के अक्षुण्ण और अक्षत अवशेष वर्तमान में रोमानिया में, रामनिक के धर्मप्रांत में, बिस्ट्रित्सा मठ में रखे गए हैं।

[8019] संत प्रोकलस ने संत जॉन क्राइसोस्टोम के अधीन एक डिकन के रूप में सेवा की, बाद में एक हाइरोमोंक और, साथ ही, एक सिकिलोस—यानी, पैट्रिआर्क के व्यक्तिगत परिचारक, जो उनके साथ ही रहते थे—बने और वे उनके सबसे करीबी शिष्य भी थे।

[8020] थेओडोसियस महान के पुत्र आर्काडियस, 395 से 408 तक पूर्वी रोमन साम्राज्य का सम्राट था।

जाने से डरता था, कहीं उसका कोई दुश्मन उसे देखकर सम्राट के सामने उस पर और भी बदनामी न कर दे। तब संत जॉन ने प्रोकलस को बुलाया, जो उनकी सेवा करते थे—एक धार्मिक व्यक्ति जो हर सद्गुण से परिपूर्ण थे—और उन्हें निर्देश दिया कि वे उस रात उस कुलीन व्यक्ति को याद दिलाएँ और उसे अंदर ले आएँ: क्रिसोस्टोम की सेवा में प्रोकलस का कर्तव्य ठीक यही था कि वे पैट्रिआर्क को आने वालों के बारे में रिपोर्ट करें और उन्हें उनके पास ले जाएँ। जब रात हुई, तो वह कुलीन व्यक्ति पादरी से बात करने और उन्हें अपनी दुर्भाग्य के बारे में विस्तार से बताने आया। और इस प्रकार प्रोकलस, अपने बिस्तर से उठकर, पैट्रिआर्क के शयनकक्ष के दरवाजे के पास गया और, दरवाजे की दरार से देखा कि जॉन बैठे-बैठे लिख रहे थे, जबकि संत पौलुस प्रेरित पीछे से उन पर झुके हुए थे और, उनके दाहिने कान की ओर झुककर, उनसे बात कर रहे थे। प्रेरित रूप में पवित्र नबी एलिशा जैसे दिखते थे, जिनका सिर आगे से गंजा था और दाढ़ी बड़ी तथा चौड़ी थी। दरवाज़े से यह समझना असंभव था कि वे किस बारे में चर्चा कर रहे थे। दरवाज़े से हटकर, प्रोकलस ने आगंतुक से कहा:

'निराश न हों – थोड़ी देर और धैर्य रखें: आपसे पहले कोई और पैट्रिआर्क के कक्ष में प्रवेश कर चुका है, और इसलिए, जब तक वह नहीं निकलता, मैं आपको अंदर नहीं जाने दे सकता।'

लेकिन सच तो यह था कि प्रोकलस डर गया था, क्योंकि उसे कोई अंदाज़ा नहीं था कि पैट्रिआर्क से मिलने कौन आया है: प्रोकलस के अलावा कोई भी पैट्रिआर्क तक नहीं पहुँच सकता था, और वह यह नहीं जानता था कि यह प्रेरित पौलुस का साक्षात्कार था।

उस कुलीन व्यक्ति ने वहाँ काफी देर तक इंतजार किया, और अंत में उसने फिर से प्रोकलस से पैट्रिआर्क को अपनी उपस्थिति के बारे में सूचित करने के लिए कहना शुरू कर दिया।

प्रोक्लस ने उत्तर दिया, 'आप खुद देख सकते हैं कि मैं कितनी देर से उस व्यक्ति का बाहर आने का इंतज़ार कर रहा हूँ जो पैट्रिआर्क से बात कर रहा है; फिर भी, मैं जाकर दरार से देखता हूँ कि क्या उनकी बातचीत खत्म हो गई है।'

प्रोक्लस गया और उसने देखा कि बातचीत अभी भी जारी थी। वह लौट आया और बैठ गया। फिर वह तीसरी बार दरवाज़े के पास गया और उसने वही देखा।

तब उस अधिकारी ने कहा, 'पिताजी, आपको मुझसे पहले किसी को अंदर नहीं आने देना चाहिए था, क्योंकि आप जानते थे कि मैं बहुत दुख में हूँ और किसी भी दिन मौत की उम्मीद कर रहा हूँ।'

प्रोक्लस ने उत्तर दिया, 'भाई, मेरा विश्वास करो, मैंने उसे अंदर नहीं आने दिया, और न ही मैं जानता हूँ कि वह कौन है, और यहाँ इस दरवाज़े के अलावा कोई दूसरा प्रवेश द्वार भी नहीं है जिससे कोई अंदर आ सकता था। हालाँकि, थोड़ा और इंतज़ार करो।'

लेकिन उसी क्षण मैटिन्स की घंटी की आवाज सुनाई दी, और प्रोक्लस ने आगंतुक से कहा:

'अब शांति से जाओ: इस क्षण से, पैट्रिआर्क रात की प्रार्थना के लिए निर्धारित समय के दौरान किसी से बात नहीं करते और किसी भी बाहरी बात के बारे में नहीं सोचते, बल्कि भोर तक अकेले ही रहते हैं, उनका पूरा मन प्रार्थना में और केवल ईश्वर से संवाद करने में डूबा रहता है। अगली रात फिर आओ, और मैं, चाहे जो भी हो जाए, किसी और से पहले तुम्हें अंदर आने दूँगा।

उस कुलीन व्यक्ति ने अपनी सीट से उठकर, दुखी मन से, आँखों में आँसू लिए, घर लौट गया।

अगली रात वह एक बार फिर से पैट्रिआर्क के घर आया। प्रोकलस, पहले की तरह, उठे और उनके आगमन की सूचना देने चले गए, और एक बार फिर उन्होंने प्रेरित को संत जॉन के कान में कुछ फुसफुसाते हुए देखा; वह वापस मुड़ गए, उनकी बातचीत में बाधा डालने की हिम्मत नहीं कर सके, और एक बार फिर, जब मैटिन्स के लिए घंटियाँ बजीं, तो वह कुलीन व्यक्ति कुछ भी हासिल किए बिना, उदास होकर घर चला गया।

अपनी ओर से, प्रोकलस इस बात से बहुत हैरान और उलझन में था कि आखिर कौन पैट्रिआर्क से मिलने आ रहा था और वह उनसे कब मिलने में कामयाब हो रहा था। और इसलिए, उसने खुद से संकल्प लिया कि जब तक वह उस दुर्भाग्यशाली कुलीन को जॉन के पास नहीं ले आता और यह पता नहीं लगा लेता कि कौन, किसी अज्ञात साधन से, पैट्रिआर्क तक पहुँच रहा था, तब तक वह न तो कुछ खाएगा, न पिएगा, न सोएगा और न ही पैट्रिआर्क के दरवाज़े से हटेगा। उस रात, वह कुलीन व्यक्ति हमेशा की तरह प्रकट हुआ। प्रोक्लस, इस बात का निश्चय कर कि पैट्रिआर्क के पास कोई और नहीं है, उनसे कहा:

'आपके लिए, मेरे स्वामी और भाई, मैं इस जगह से बिल्कुल भी नहीं हटा हूँ, और अब मैं जाकर पैट्रआर्क को आपके आगमन की सूचना दूँगा।'

और वह तुरंत चला गया; दरवाज़े के पास पहुँचकर, उसने एक बार फिर प्रेरित को महाधर्माध्यक्ष के कान में कुछ कहते हुए देखा। फिर प्रोकलस, लौटकर, आगंतुक से बोला:

'घर जाओ, मेरे भाई, और ईश्वर से प्रार्थना करो कि वह तुम्हारी मदद करे; क्योंकि, जैसा मैं देख सकता हूँ, जो व्यक्ति पैट्रआर्क से बात कर रहा है, उसे ईश्वर ने उनके पास भेजा है और वह अदृश्य होकर प्रवेश करता है; इन दरवाज़ों से, पैट्रआर्क के अलावा कोई और प्रवेश नहीं किया है।'

वह कुलीन व्यक्ति संत जॉन से कोई मदद मिलने की पूरी उम्मीद छोड़कर आँसुओं में डूबा हुआ चला गया। लेकिन जब सुबह हुई, तो जॉन को आखिरकार उसकी याद आई और उन्होंने प्रोकलस को बुलाकर पूछा:

'क्या वह आदमी आया जिसे मैंने तुम्हें मेरे पास लाने के लिए कहा था?'

प्रोक्लस ने जवाब दिया, 'हाँ, फादर, वह वाकई लगातार तीसरी रात यहाँ आ रहा है, लेकिन आप निजी तौर पर किसी और से बात कर रहे थे, और इसलिए मैं अंदर आने और आपको उसकी मौजूदगी के बारे में बताने की हिम्मत नहीं कर सका।'

'मैं किससे बात कर रहा था?!' जॉन ने आपत्ति जताई। 'उस रात मेरे साथ कोई नहीं था।'

फिर प्रोकल्स ने उस आकृति का वर्णन किया जो उसने पैट्रआर्क के साथ देखी थी और यह भी बताया कि कैसे वह अजनबी, जोहन के पीछे से झुककर उससे बात कर रहा था, और उसके कान में कुछ फुसफुसा रहा था। फिर प्रोकल्स की नज़र अचानक जोहन की कोठरी की दीवार पर लटकी संत पॉल द एपोस्टल की प्रतिमा पर पड़ी, और वह अचानक चिल्ला उठा:

'वह वही है—जिसके बारे में मैंने आपको बताया था, पिताजी, आपसे बात करते हुए! यह उसका असली रूप है!'

इस प्रकार दोनों—जॉन और प्रोकलस—ने यह महसूस किया कि यह प्रेरित पौलुस ही थे जो पहले वाले को दिखाई दिए थे, और दोनों ने ईश्वर का धन्यवाद किया: एक ने अपने लेखन में प्रेरित द्वारा गुप्त रूप से प्रेरित होने के लिए, और दूसरे ने स्वर्गवासी इस प्रेरित पौलुस को देखने का सौभाग्य प्राप्त होने के लिए।

इसके बाद, यूहन्ना ने उस उत्पीड़ित कुलीन व्यक्ति को आवश्यक सहायता प्रदान की, जबकि संत प्रोकलस, अपने पवित्र शिक्षक और आध्यात्मिक पिता, संत यूहन्ना के मार्गदर्शन में, सद्गुणों में फलते-फूलते रहे और ईश्वर को प्रिय लगने वाले जीवन में स्वयं को परिपूर्ण किया।

[8021][8022]संत जॉन क्राइसोस्टोम के निर्वासन और मृत्यु के बाद, कॉन्स्टेंटिनोपल के पैट्रआर्क सिसिनस द्वारा प्रोक्लस को साइज़िकस का बिशप नियुक्त किया गया। हालांकि, अपने धर्मप्रांत में पहुँचने पर, उन्हें स्थानीय पुरोहित वर्ग ने स्वीकार नहीं किया, जो विधर्म में पड़ चुके थे, और इसलिए वे कॉन्स्टेंटिनोपल लौट आए, जहाँ वे पूरे एक वर्ष तक रहे। पैट्रआर्क संत मैक्सिमियिन[8023] की मृत्यु के बाद, उनके दफ़न से पहले ही, संत प्रोक्लस को कॉन्स्टेंटिनोपल का पैट्रआर्क चुना गया, और पवित्र और महान गुरुवार को उन्हें इस उच्च पद पर पदोन्नत किया गया[8024] ।

पात्रियार्क के सिंहासन पर आसीन होने के बाद, संत प्रोक्लस ने अपने जीवन के अंत तक मसीह के झुंड का बहादुरी से मार्गदर्शन किया। अन्य बातों के अलावा, उन्होंने सम्राट आर्कैडियस के पुत्र सम्राट थियोडोसियस[8025] को संत जॉन क्राइसोस्टोम के अवशेषों को कोमाना[8026] से कॉन्स्टेंटिनोपल स्थानांतरित करने के लिए मनाया।

संत प्रोकॉस के पैट्रआर्केट के दौरान, बीजान्टिन साम्राज्य में छह महीने तक चलने वाला एक बड़ा भूकंप आया, जिसने कई शानदार इमारतों – चर्चों, महलों और इसी तरह की अन्य इमारतों – के साथ-साथ पत्थर की शहर की दीवारों को भी नष्ट कर दिया; कई गाँव और छोटे शहर, मानो, धरती में समा गए; कुछ द्वीप पूरी तरह से गायब हो गए; कुछ झरने और नदियाँ अचानक सूख गईं, जबकि सूखे क्षेत्रों में नदियाँ प्रवाहित होने लगीं। इस भयानक भूकंप को पूरे साम्राज्य में

[8021] सिसिनियस 426 से 427 तक कॉन्स्टेंटिनोपल के पैट्रआर्क थे।

[8022] साइज़िकस एशिया माइनर के उत्तरी तट पर एक छोटा सा शहर था। सेंट प्रोकलस को वर्ष 426 में बिशप के रूप में अभिषिक्त किया गया था।

[8023] संत मैक्सिमियिन 431 से 434 तक पैट्रआर्क थे।

[8024] यह वर्ष 434 का था।

[8025] थेओडोसियस द्वितीय युवा 408 से 450 तक शासन किया।

[8026] कोमाना आर्मेनिया का एक शहर है जहाँ सेंट जॉन क्राइसोस्टोम निर्वासन जाते समय मृत्युपर्यंत पहुँचे और मूल रूप से दफनाए गए थे।

महसूस कयिा गया, लेकनि यह बथिनियिा, हेलेस्पोंट और फ्रीजयिा[8027] में वशिेष रूप से गंभीर था। जैसे ही कॉन्स्टेंटनिोपल की सबसे अच्छी और सबसे मजबूत इमारतें ढह रही थीं, सम्राट थयिोडोसयिस और सम्राज्ञी पल्केरयिा, पैट्रआिर्क और सभी नविासयिों के साथ, शहर से बाहर गए और प्रभु से दया की वनिती करते हुए एक लटिनी (प्रार्थना) की। और एक बड़ा चमत्कार हुआ। जबकि भयभीत लोग *'हे प्रभु, दया करो!'* की प्रार्थनात्मक पुकारों से वायु गूँज रही थी, – अचानक, एक अदृश्य शक्ति द्वारा एक बच्चे को भीड़ से उठा लयिा गया और सभी की आँखों के सामने, दृष्टि की पहुँच से परे एक ऊँचाई पर ले जाया गया; एक घंटे बाद, उसे उसी तरह बनिा कसिी चोट के वापस नीचे उतार दयिा गया। उसने सम्राट, धर्मगुरु और सभी लोगों को बताया कि उसने स्वर्ग में स्वर्गदूतों को एक भजन गाते हुए सुना था:

– पवत्रि परमेश्वर, पवत्रि सर्वशक्तमिान, पवत्रि अमर।

सभी लोगों ने तुरंत इस त्रसिगयिोन को दोहराना शुरू कर दयिा, और इसमें यह प्रार्थना जोड़ दी: 'हम पर दया करो', और भूकंप रुक गया; और जसि लड़के ने स्वर्ग से त्रसिगयिोन लाया था, उसने तुरंत अपनी आत्मा ईश्वर को सौंप दी और उसे सेंट आइरीन के चर्च में सम्मान के साथ दफनाया गया: उस समय से, त्रसिगयिोन का गायन पूरे ईसाई चर्च में प्रचलन में आ गया।

संत प्रोकॉल्स ने 20 वर्ष और पाँच महीने तक पैट्रआिर्क के रूप में सेवा की और प्रभु के पास शांतपिूर्वक नधिन कर गए[8028] ।

कॉन्टाकयिन, स्वर 4:

आज, सभी शहरों में सबसे सम्मानति, हे बुद्धमिान प्रोकल्स, पतिाओं के पति, आपके गौरवशाली नधिन का उत्सव सचमुच मनाता है।

पवत्रि शहीदों यूस्टैथयिस, फेस्पेशयिस और अनातोलयिस का कष्टकथा

20 नवंबर को स्मरण कयिा जाता है

पवत्रि शहीदों यूस्टैथयिस, फेस्पेशयिस और अनातोलयिस जन्म से भाई थे और नकिोमेडयिा शहर में पैदा हुए थे[8029] । उनके पति का नाम फलिोथयिस और उनकी माता का नाम यूसेबयिा था। फलिोथेउस गैलैटयिा[8030] के मूल नविासी थे, गंग्रा[8031] शहर से; उन्होंने अपनी मातृभूमि छोड़ दी, नकिोमेडयिा चले गए और वहाँ यूसेबयिा से ववािह करने के बाद, उनसे तीन पुत्र हुए – स्वर्गीय नगर के तीन नामति नविासी।

शुरू में, फलिोथयिस, उसकी पत्नी और बच्चे मूर्तपिूजक थे; उसने अपने सबसे बड़े बेटे यूस्टैथयिस को मूर्तपिूजक दर्शन का अध्ययन करने के लिए भेजा, जबकि उसने थेस्पेसयिा और अनातोलयिस को व्यापार के जीवन के लिए तैयार कयिा, क्योंकि वह स्वयं एक व्यापारी था और एक बहुत अमीर व्यापारी था। लेकनि एक दनि, अपने सबसे छोटे बेटे, अनातोलयिस को अपने साथ लेकर, वह माल खरीदने के लिए गलाटयिा के लिए रवाना हो गया; और अपनी वापसी की यात्रा में, अंत्योखयिा के पुरोहति संत ल्यूकयिन से मलिने के बाद, उन्होंने उसे ईसाई धर्म की शक्षिा दी और अपने बेटे के साथ, रास्ते में मलिने वाली एक नदी में बपतस्मिा दलिाया। घर लौटने पर, वह नकिोमेडयिा के बशिप एम्फमिस[8032] को खोजने

[8027] बथिनियिा, हेलेस्पोंट और फ्रीजयिा एशयिा माइनर में बाइजेंटाइन साम्राज्य के प्रांत थे।

[8028] संत प्रोकल्स का नधिन 446 में हुआ। – सेंट प्रोकल्स एक उत्कृष्ट धार्मकि वक्ता थे। उनकी वाक्पटुता में सेंट बेसलि द ग्रेट की गंभीरता और क्रसिोस्टोम का आकर्षण देखने को मलिता है; उनका भाषण ववििध, जीवंत, स्पष्ट और साथ ही संक्षप्ति था। इसके अतरिक्ति, उनके पत्र भी प्रसद्धि हैं, जनिमें *वशि्वास* और *धर्मवधि की परंपरा पर अर्मेनयिाई लोगों को लखि गए पत्र* भी शामलि हैं।

[8029] नकिोमेडयिा (अब नेमडि) – बोस्फोरस जलडमरूमध्य के दक्षणि-पूर्व में स्थति, एशयिा माइनर के बथिनियिा प्रांत की राजधानी थी। यह बाइजेंटाइन सम्राटों डायोक्लेटयिन और संत कॉन्स्टेंटनि द ग्रेट का केंद्र था।

[8030] गलातयिा – बीजान्टनि साम्राज्य का एक प्रांत, जो एशयिा माइनर प्रायद्वीप के ठीक केंद्र में स्थति था।

[8031] यह शहर वहाँ आयोजति स्थानीय परषिद (340 ईस्वी) के लिए उल्लेखनीय है, जसिके कैनन को चर्च द्वारा कैननकिल के रूप में मान्यता प्राप्त है।

[8032] इसका पर्व दविस 5 सतिंबर है।

नकिला, जो एक गुप्त स्थान पर छपि रहे थे (उस समय, सम्राट मैक्समियिन और डायोक्लेटयिन के शासनकाल में, ईसाइयों पर एक भयंकर उत्पीड़न हो रहा था और कई वशि्वासी अपने उत्पीड़कों से छपि रहे थे); और उन्हें खोज लेने के बाद, उसी रात उसे अपने घर ले आए, जसिके बाद संत अम्फमिस ने फलिोथेई परविार के पूरे घर का बपतस्मिा दयिा। तब उन्होंने दैवीय धर्मवधि सिंपन्न की, नव-बपतस्मिा प्राप्त लोगों को पवत्रि रहस्य प्रदान कयि, फलिोथयिस को पादरी और अपने सबसे बड़े बेटे यूस्टाथयिस को डकिन के रूप में अभषिक्ति कयिा, और अपने मूर्तपिूजक उत्पीड़कों से छपिते हुए चले गए, जबकि फलिोथयिस और उसके परविार ने गुप्त रूप से सच्चे ईश्वर की सेवा की और एक धार्मकि जीवन जयिा।

शीघ्र ही वह और उनकी पत्नी प्रभु के पास चले गए, और पीछे तीन धर्मपरायण युवक अनाथों के रूप में छोड़ गए: डकिन यूस्टैथयिस, थेस्पेसयिस और अनातोलयिस – जो देह और आत्मा दोनों में भाई थे, क्योंकि उन्होंने एक ही हृदय से परमेश्वर की सेवा की, जो उत्साह से जलते थे और सद्गुणों में उत्कृष्ट थे। एक बार अक्वलिनिस नामक एक दरबारी अधकिारी ने अपने नौकर को कुछ सामान खरीदने के लिए भेजा। उस नौकर को इन तीन धर्मपरायण युवकों के बारे में पता था, कि वे बड़े और समृद्ध व्यापार वाले व्यापारी थे, और वह उनकी दुकान पर गया, जो उसे खुली मलिी। अंदर जाकर वहाँ कसिी को न पाकर, वह घर की तीसरी मंज़लि पर जाने वाली सीढ़ियों से ऊपर गया और उसे यूस्टैथयिस की दाऊद के भजन पढ़ने की आवाज़ सुनाई दी। नौकर चुपचाप सीढ़ियाँ चढ़ा, बनिा आवाज़ के ऊपरी कक्ष में गया[8033] और वहाँ उसने यूस्टैथयिस को अपने हाथों में भजन-संग्रह पकड़े हुए और पढ़ते हुए देखा: *'जो मूर्तयिों की सेवा करते हैं वे सब लज्जति हों, जो झूठे देवताओं पर घमण्ड करते हैं। हे सब देवताओं, उसके सामने दण्डवत करो* (भजन संहति 96:7)। उसने दीवारों पर क्रॉस और पवत्रि प्रतमिाएँ भी देखीं। एक शब्द कहे बनिा, वह तुरंत अपने स्वामी के पास लौट आया और उसे वह सब कुछ बताया जो उसने देखा और सुना था। अक्वलिनिस तुरंत सम्राट मैक्समियिन के पास गया और उसे वह बताया जो दास ने कहा था। यूस्टाथयिस और उसके भाइयों को गरिफ्तार करने के लिए तुरंत सैनकि भेजे गए। अकलिनि के दास के साथ उस स्थान पर पहुँचने पर, सैनकिों ने दुकान बंद पाया: उस समय, घर के सभी नविासी एकत्रति थे और प्रभु के दनि के अवसर पर मसीह के पवत्रि रहस्यों को ग्रहण करते हुए पूर्ण मौन का पालन कर रहे थे। सैनकिों ने दरवाज़ा खटखटाया और पुकारा, लेकनि कोई जवाब नहीं मलिा।

संत यूस्टेथयिस ने अपने मन में यह जानकर कि सैनकि उन्हें और उनके भाइयों को गरिफ्तार करने और उन्हें शहादत की ओर ले जाने के लिए भेजे गए थे, अपने भाइयों से कहा:

'भाइयों, हौसला रखो और डरो मत – हमारे प्रभु हमें हमारे मुकुट के लिए बुला रहे हैं... कल रात मैंने देखा कि हमें मैक्समियिन के सामने एक अन्यायपूर्ण मुकदमे के लिए ले जाया जा रहा था, और एक आदमी, जो देखने में काला था, हमें रोते-बलिखते हुए, अपना चेहरा पीटते हुए और चलि्लाते हुए पीछा कर रहा था: 'हाय, मेरी वनिाश! क्योंकि अब मुझ पर वजिय प्राप्त हो रही है।' हमारे आगे एक तेजस्वी युवक चल रहा था, जसिके हाथों में तीन मुकुट और तीन पुस्तकें थीं, और उसने मुझसे कहा: 'हे ईस्टाथयिस, मसीह के डकिन! यह वही है जो दया के पति और सभी आनंद के ईश्वर ने आपके लिए तैयार कयिा है। इसलिए, अपने यातना देने वालों से न डरें, जैसे कि संत स्टीफन उनसे नहीं डरे थे।' यह कहने के बाद, वह युवक स्वर्ग में आरोहण कर गया, जबकि वह सांवले रंग वाला व्यक्ति, रोते हुए, पश्चमि की ओर प्रस्थान कर गया[8034] ।

अपना दर्शन सुनाने के बाद, यूस्टाथयिस ने अपने भाइयों को साहस से मजबूत कयिा, यह कहते हुए:

'प्रयि, मनुष्यों के सामने हम अपने परमेश्वर मसीह का इनकार न करें, कहीं ऐसा न हो कि वह भी अपने पति और अपने पवत्रि स्वर्गदूतों के सामने हमारा इनकार कर दें' (मत्ती 10:32)।

'हमारे भाई, प्रभु और पति,' फेशेसयिस और अनातोलीयस ने उत्तर दयिा, 'हम अपने सृष्टकिर्ता के लिए मरने को तैयार हैं, और कुछ भी हमें उनसे अपने प्रेम से दूर नहीं कर सकता।'

जब वे इस प्रकार बात कर ही रहे थे, तो सैनकिों ने दरवाज़ों पर ज़ोर से धक्का देते हुए उन्हें खोलने के लिए ज़ोर से चलि्लाया। आखरिकार, फेस्पेसयिस और अनातोलयिस दरवाज़ों तक गए और उन्हें खोल दयिा। सैनकि, अंदर घुसते हुए, उनसे पूछने लगे कि उनके साथ और कौन है, और फरि, अकीलनि के नौकर के आदेश पर, ऊपर चले गए। प्रार्थना कक्ष

[8033] प्रेरतिों के समय से, ईसाई चर्च ने घर के ऊपरी, नर्जिन हस्सि में उपासना सभा आयोजति करने की प्रथा को संरक्षति रखा और लंबे समय तक बनाए रखा (देखें प्रेरतिों के काम 1:13, 14, 20, 8), और यह केवल कॉन्स्टेंटाइन महान के अधीन था, जब ईसाइयों को उत्पीड़न से मुक्ति मलिी, कि सार्वजनकि पूजा के लिए चर्चों का नर्माण शुरू हुआ (हालांकि कुछ संख्या में चर्च पहले भी वभिन्नि स्थानों पर मौजूद थे)।

[8034] पश्चमि – वह स्थान जहाँ सूरज डूबता है और, यों कहें, अंधकार का साम्राज्य; इसलिए, इस 'प्रकाश की भूमि' के नाम को शैतान के राज्य के प्रतीक के रूप में समझा जा सकता है, जो संत यूस्टैथयिस को स्पष्ट रूप से दखिाई दे रहा था।

में प्रवेश करने पर, उन्होंने यूस्टैथियिस को अपने हाथों में पवत्रि सुसमाचार पकड़े हुए देखा। अचानक इसे खोलकर, उन्होंने पढ़ा: *'उनसे मत डरो जो शरीर को मारते हैं पर आत्मा को नहीं मार सकते'* (मत्ती 10:28)।

– सैनकिों के प्रभारी अधकिारी ने उस पर चल्लिाया कि वह जो पकड़े हुए है उसे नीचे रख दे (वह स्वयं पवत्रि सुसमाचार को छूने की हम्मित नहीं कर सका, क्योंकि वह ईसाई माता-पति का बेटा था)। यूस्टैथियिस ने पवत्रि सुसमाचार को अपनी छाती से लगा लयिा, उसे चूमा, और मेज पर रख दयिा, जसि पर एक सैनकि ने टप्पिणी की:

– देखो ईसाई अपनी कतिाबों से कैसे प्यार करते हैं, जसिमें उनकी सारी जादू-टोना समाहति है।

सैनकिों ने यूस्टाथयिस को पकड़ लयिा और उसे नीचे ले गए। लेकनि उसने, चारों ओर देखते हुए और पवत्रि पुस्तकों को देखकर, उन्हें जीवति मानकर संबोधति करते हुए कहा:

'हम तुमसे वादा करते हैं!'

तब, उनके द्वारा व्यापार की जा रही कई कीमती वस्तुओं पर नज़र डालते हुए, उन्होंने कहा:

'हम तुम्हें और सभी नश्वर चीज़ों को त्यागते हैं, और हम मसीह का अनुसरण करते हैं!'

फरि वे सभी बाहर चले गए। घर के दरवाज़े बंद करके उन पर मुहर लगा दी गई, और सैनकिों ने तीनों पवत्रि भाइयों को एक साथ बाँधकर सम्राट मैक्समियिन के पास ले गए।

उन्हें देखकर, सम्राट मुस्कुराया और कहा:

'इन युवकों को बांधने का आदेश कसिने दयिा? मुझे यकीन है कि वे हमारे देवताओं के मत्रि हैं।'

और उसने उन्हें तुरंत खोल देने का आदेश दयिा और उनसे पूछा:

'सबसे पहले, तुम में से हर एक, मुझे अपना नाम और यह बताओ कि तुम कसि कुल से हो।'

'हमारे लिए सबसे प्रयि और सम्मानति नाम "ईसाई" है,' सभी की ओर से सबसे बड़े होने के नाते यूस्टाथयिस ने उत्तर दयिा, 'जन्म के समय, मेरा नाम यूस्टाथयिस रखा गया था, मेरे दाईं ओर मेरा भाई फेस्पेशयिस और बाईं ओर अनातोलीयस नाम रखा गया था; हम खून के भाई हैं, यहाँ एक ही माता-पति से जन्मे, और हमारे पति, जो गालाटयिा के मूल नविासी थे, एक ईसाई पादरी थे।

मैक्समियिन ने पूछा, 'आपके पति को एक प्रेस्बटिर के रूप में कसिने नयिुक्त कयिा था?'

यूस्टाथयिस ने उत्तर दयिा, 'जसिको आपने हाल ही में और अन्यायपूर्ण ढंग से मृत्युदंड दयिा: हमारे शहर के बशिप, संत एम्फमिस; उन्होंने मुझे एक डकिन भी नयिुक्त कयिा, ताकि मैं परमेश्वर के पुरोहतिों की सेवा कर सकूँ जब वे मसीह के सबसे पवत्रि और सबसे शुद्ध संस्कारों का अनुष्ठान करते हैं।'

तब राजा ने कहा:

'बकवास बंद करो; तुम्हारे लिए बेहतर है कि तुम अपने भाइयों के साथ हमारे देवताओं के सामने सरि झुकाओ, और मैं तुम्हें अपनी दरबार में एक सम्मानजनक और गौरवशाली पद दूँगा। अगर नहीं, तो मैं तुम्हें तलवार से मौत की सज़ा दूँगा।'

संतों ने एक स्वर में उत्तर दयिा:

'जो करना हो कर लो: हम ईसाई हैं और केवल एक ही ईश्वर की पूजा करते हैं जसिने स्वर्ग और पृथ्वी की रचना की, उनके पुत्र, हमारे प्रभु यीशु मसीह, और पवत्रि जीवन-दायक आत्मा की; लेकनि हम कभी भी तुम्हारी घृणति और घनिौनी मूर्तयिों की पूजा नहीं करेंगे।'

इस उत्तर से क्रोधति होकर, मैक्समियिन ने उन्हें ज़मीन पर फेंकने और लाठयिों से पीटने का आदेश दयिा। लंबे समय तक यातना देने के बाद, संतों ने, मानो एक ही स्वर में, ईश्वर से पुकारा:

'हे प्रभु, तेरा यश हो, कि हमें तेरे पवत्रि नाम के लिए दुख सहने के योग्य समझा गया।'

और संत यूस्टाथयिस ने जोड़ा:

– *'उन्होंने जवानी से ही मुझे बहुत सताया है; इस्राएल कहे: "उन्होंने जवानी से ही मुझे बहुत सताया है, परन्तु वे मुझ पर हावी नहीं हुए"* (भजन संहति 128:2-3), – हे परमेश्वर, हमारे उद्धारकर्ता, हमारी सहायता करो।

जब संतों को थकने तक पीटा जा चुका था, तो मैक्समियिन ने यातना देने वालों को रुकने का आदेश दयिा और शहीदों से कहा:

– 'हे अधर्मी लोगों! तुम कतिनी देर तक ऐसी यातना सहोगे? देवताओं को बलदिान चढ़ाओ और कसिी ऐसे मनुष्य पर अपने वश्विास के कारण व्यर्थ में अपनी जान मत गंवाओ, जसिे तुम्हारे ही समान पीटा गया और जसिने एक हसिक मृत्यु पाई।'

'हम कभी भी मसीह उद्धारकर्ता का परित्याग नहीं करेंगे,' संतों ने उत्तर दिया, 'जिन्हें हम सच्चे ईश्वर के रूप में जानते हैं, भले ही उन्होंने हमारे उद्धार के लिए क्रूस पर पीड़ा सहन की।'

तब यातना देने वाले ने उन्हें जेल में डालने का आदेश दिया, उनके पैरों को मजबूत काठघोंघा में कस दिया गया[8035] और उन्हें खाने-पीने से वंचित कर दिया गया, ताकि उन्हें बंधन, भूख और प्यास से कमजोर किया जा सके। और इस प्रकार, जब वे कालकोठरी में बैठे थे, तो एक रात आधी रात को उन पर एक प्रकाश चमका; प्रभु का स्वर्गदूत उन्हें दिखाई दिया, उसने उन्हें उनके बंधनों से मुक्त किया, उन्हें चंगा किया, उन्हें मन्ना[8036] से खिलाया और कहा:

'मसीह के लिए भले काम करने का यत्न करो, और मैं तुम्हें न छोड़ूँगा; मैं तुम्हारी सभी पीड़ाओं में तुम्हारे साथ रहूँगा, क्योंकि मुझे प्रभु मसीह ने तुम्हारी रक्षा के लिए भेजा है।'

यह कहने के बाद, स्वर्गदूत अदृश्य हो गया, और संत, अकथनीय आनंद से भरकर, परमेश्वर का धन्यवाद करने लगे, जबकि यूस्टाथियस ने कहा: *'प्रभु बंदियों को मुक्त करता है, प्रभु अंधों की आँखें खोलता है, प्रभु झुके हुए लोगों को सीधा करता है, प्रभु धर्मी प्रेम करता है। प्रभु परदेशी लोगों की रक्षा करते हैं'* (भजन संहिता 145:7–9)।

कुछ समय बाद, मैक्सिमियिन एक बार फिर अदालत में उपस्थित हुआ और उसने यीशु के बंदियों को दूसरी बार पूछताछ के लिए उसके सामने लाने के लिए सैनिकों को कालकोठरी में भेजा। सैनिक रवाना हुए और उन्होंने संतों को उनके बंधनों से मुक्त, पूरी तरह से स्वस्थ और शांति से सोते हुए पाया। उन्होंने शोर मचाया, जेलर की निंदा की और यह जानना चाहा कि किसने कैदियों को उनके बंधनों से मुक्त किया था। जेलर ने उनसे कसम खाकर कहा कि किसी ने उन्हें मुक्त नहीं किया था और न ही कोई कैदियों के कोठरी में घुसा था और न ही उन्हें खाने-पीने के लिए कुछ दिया था। सैनिकों ने संतों को फिर से बांधा और उन्हें राजा के सामने ले गए।

राजा, उन्हें स्वस्थ और प्रसन्न देखकर, यह देखकर चकित रह गया कि न तो पिटाई, न ही बंधन, न ही भूख, न ही प्यास का उन पर कोई असर पड़ा था, और उसने उनसे कहा:

'हे नीच मनुष्यों! ध्यान से विचार करो कि तुम्हारे हित में क्या है, और जब तुम अपना मन बना लो, तो देवताओं को बलिदान चढ़ाओ – और मैं तुम्हें सम्मान के साथ रिहा कर दूँगा।'

लेकिन संत यूस्टेथियस ने उत्तर दिया:

'चापलूसी, धमकियों या यातनाओं से हमारे दृढ़ संकल्प को बदलने की आशा मत करो: हम इस जीवन से किसी भी चीज़ से बँधे नहीं हैं, क्योंकि हम जानते हैं कि जैसे हम अपनी माँ के गर्भ से नग्न आए थे, वैसे ही हमें इस व्यर्थ जीवन से नग्न ही विदा होना है।'

राजा ने आदेश दिया कि उन्हें तुरंत जानवरों के सामने फेंक दिया जाए ताकि वे उन्हें नोच-नोच कर खा जाएँ, और उन्हें सर्कस में ले जाया गया[8037] , जहाँ जानवरों को उन्हें खाना था; और निकोमेडिया के सभी लोग उनके पीछे-पीछे चले—जिनमें कई गुप्त ईसाई थे—और सभी शहीदों की मृत्यु का साक्षी बनना चाहते थे। जब उन्हें अखाड़े के बीच में रखा गया, तो दो शेर और तीन भालू उन पर टूट पड़े, और सभी दर्शक इन जानवरों की दहाड़ से भयभीत हो गए। हालांकि, संत यूस्टाथियस ने भजन गाए।

[8035] बेड़ियाँ – एक उपकरण जो अपराधी को भागने से रोकने के लिए बनाया गया था। दिखावट में, यह एक मोटे लट्ठे या तख्ते का एक टुकड़ा था, जो लंबवत दो भागों में फटा हुआ था; दोनों आधों में, एक-दूसरे में फिट होने के लिए दो खांचे बनाए गए थे, जिनमें पैरों को रखा जा सकता था; अपराधी के पैरों को एक आधे के खांचों में रखने के बाद, दूसरे आधे को ऊपर रखा जाता था, और लट्ठे के दोनों सिरों को कसकर बांध दिया जाता था।

[8036] मन्ना (एक हिब्रू शब्द जिसका अर्थ है *'यह क्या है?'*) उस भोजन का नाम था जो ईश्वर ने इस्राएलियों को रेगिस्तान में चालीस वर्षों तक भटकने के दौरान चमत्कारिक रूप से भेजा था, रोटी के स्थान पर, जो वे प्राप्त नहीं कर सकते थे, और जो महीन बीजों जैसा दिखता था; इस बीज को ओखली में पीसा या कुटा जाता था, उबाला जाता था, और उससे रोटी बनाई जाती थी (देखें निर्गमन 15:15–34; गिनती 11:7); व्यापक अर्थ में, मनना का अर्थ ईश्वर द्वारा चमत्कारिक रूप से भेजा गया कोई भी भोजन हो सकता है।

[8037] सर्कस एक इमारत है जिसमें रोमनों और ग्रीकों द्वारा घोड़ों की दौड़ आयोजित की जाती थी; इसका नाम ही (सर्कस - वृत्त) इसके गोलाकार लेआउट को इंगित करता है। प्रतियोगिताएँ स्वयं वृत्त के अंदर होती थीं, जबकि दर्शक इसके किनारे के चारों ओर विशेष क्षेत्रों में बैठे होते थे। उत्पीड़न के समय, ईसाइयों को सर्कस में जानवरों के सामने फेंक दिया जाता था या इस उद्देश्य के लिए विशेष रूप से नियुक्त लोगों द्वारा मार दिया जाता था।

उन्होंने गाया, "'*मुझे सिंह के मुँह से बचा;*" *और जंगली बैलों की सींगों से; जब मैं पुकारूँ, मुझे [छुड़ा]। मैं अपने भाइयों में तेरा नाम प्रचार करूँगा; मैं मंडली के बीच में तेरी स्तुति करूँगा।*" (भजन संहिता 21:22–23)[8038]।

फेस्पीसियस और अनातोलीयस जानवरों की दहाड़ से भयभीत हो गए, और यूस्टाथियस ने, उनका भय देखकर, कहा:

'हे भाइयो, आप इन जानवरों से क्यों डरते हैं? क्या आप नहीं जानते कि हमारा प्रभु उनकी क्रूरता को वश में करने के लिए पर्याप्त शक्तिशाली है, जैसे उसने दानियेल के बाड़े में किया था? क्या आपको स्वर्गदूत के वचन याद नहीं हैं, जिन्होंने हमारे सभी दुखों में हमारे साथ रहने और हमारी रक्षा करने का वादा किया था?'

जब यूस्टैथियस ने ये शब्द कहे, तो सिंह शहीदों की ओर बढ़े; लेकिन, उनके पास पहुँचकर वे रुक गए और अपने मालिक को पहचानने वाले कुत्तों की तरह अपनी पूँछ हिलाने लगे, जबकि यूस्टैथियस ने उनके सिर पर अपने हाथ रखे और उन्हें कुत्तों की तरह सहलाकर, उन्हें पूरी तरह से वश में कर लिया। हालाँकि भालू एक-दूसरे से कुश्ती कर रहे थे, एक-दूसरे को ज़मीन पर पटक रहे थे, और वे पवित्र शहीदों के पास भी नहीं आए। इस दृश्य को देखने के लिए इकट्ठी हुई भीड़ में हड़कंप मच गया, जिसमें मूर्तिपूजक चिल्ला रहे थे: 'वे जादूगर हैं और उन्होंने जादू-टोने से जानवरों को वश में कर लिया है!' जबकि ईसाई चिल्ला रहे थे: 'महान है ईसाई ईश्वर, जिसने जानवरों के मुँह पर ताला लगा दिया है ताकि वे उसके पवित्र सेवकों को नुकसान न पहुँचा सकें!'

अंत में, राजा ने शहीदों को वापस जेल में डालने का आदेश दिया, और वहाँ उन्हें एक स्वर्गदूत के प्रकट होने से फिर से सांत्वना मिली और मन्ना से उनका पालन-पोषण हुआ।

इस बीच, राजा मैक्सेंटियस का पुत्र[8039] गंभीर रूप से बीमार पड़ गया, और राजा, उसकी बीमारी से दुखी और परेशान होकर, ने शहीदों को निकी के कोमिटि[8040] एंथनी के हवाले कर दिया।

उन्होंने कोमितास से कहा, 'ईसाइयों को अपने शहर ले जाओ और वहाँ उन्हें देवताओं की पूजा करने के लिए मजबूर करो; और अगर वे तुम्हारी आज्ञा मानते हैं, तो उन्हें सम्मान के साथ वापस यहाँ भेज दो; लेकिन अगर नहीं, तो लंबी यातना के बाद, उन्हें जंगली जानवरों की तरह मार डालो।'

कमीटे ने बंदियों को लिया और उनके साथ निकिया के लिए रवाना हो गया। घर पहुँचने पर, उसने अपनी पत्नी को बीमार पाया। उसने शहीदों को रात के लिए एक कालकोठरी में बंद करने का आदेश दिया, और अगली सुबह उन्हें अपने सामने लाने का आदेश दिया; वह न्यायाधीश की कुर्सी पर बैठ गया और, उनकी ओर मुड़कर, कहा:

'युवको, मैं तुम्हारी तकदीर से बहुत परेशान हूँ, और मैं वास्तव में तुम्हें माफ करके राजा के पास भेजना चाहता हूँ ताकि तुम उससे सभी सम्मान प्राप्त कर सको। मुझे अपने दोस्त के रूप में भरोसा करो, मेरी आज्ञा मानो, और देवताओं को बलिदान चढ़ाओ।'

'हम प्रार्थना करते हैं,' संतों ने उत्तर दिया, 'हमारे प्रभु यीशु मसीह से कि वह हमें उस विश्वास में निर्दोष रखे जो उन्होंने हमें सिखाया है और जिसके लिए हम मरने को तैयार हैं, और यह कि वह हमें उनसे दूर होने और उसी विनाश में नष्ट होने न दे जिसमें आप नष्ट हो रहे हैं।'

यह सुनकर, राज्यपाल क्रोध से आग-बबूला हो गया और उसने उन्हें पैरों से लटकाने, सिर नीचे करके, और लोहे की पंजाओं से खुरचने का आदेश दिया। उन्हें लंबे समय तक इस तरह यातना दी गई; उनका खून धाराओं की तरह बह गया, उनका मांस-कलेजा चीर-फाड़ दिया गया, उनकी हड्डियाँ नंगी हो गईं... अंत में, संतों ने ज़ोर से परमेश्वर से पुकारा:

'हे युगों के राजा और ईश्वर! अपनी पवित्र निवास-स्थली से हम पर, अपने अयोग्य सेवकों पर, जो आपके पवित्र नाम के लिए कष्ट सह रहे हैं, दृष्टि डालिए!'

और स्वर्ग से संतों के लिए अदृश्य सहायता भेजी गई, जिससे वे इतनी क्रूर यातनाओं को साहस के साथ सहन कर सके।

[8038] भजन संहिता 2:22–23। भजनकार इन शब्दों को अपने बारे में और अपनी ओर से कहता है ('मुझे बचा...', 'मैं घोषणा करूँगा...', आदि)। *यूनिकॉर्न* एक जंगली और खतरनाक जानवर है जिसके माथे पर एक सींग होता है, लेकिन यह गैंडा नहीं है, क्योंकि इसे शुद्ध और बलिदान के लिए उपयुक्त माना जाता था; यह वास्तव में किस प्रकार का जानवर है, यह अज्ञात ही है। यहाँ 'चर्च' शब्द का अर्थ, बेशक, सामान्यतः लोगों के एक बड़े जमावड़े से है।

[8039] मैक्सेंटियस बाद में सम्राट बना – 306 से 312 तक।

[8040] कोमटिसि – एक नगर मजिस्ट्रेट।

शहीदों का अटूट धैर्य देखकर, यातना देने वाले ने उन्हें नीचे उतारकर कालकोठरी में ले जाने का आदेश दिया। लेकिन संत अपने घावों और दर्द के कारण बिना सहारे के चल नहीं सकते थे: उन्हें उठाकर कालकोठरी में इस तरह फेंक दिया गया जैसे वे केवल बोझ हों। और फिर से, पहले की तरह, प्रभु का स्वर्गदूत एक महान प्रकाश से दीप्तिमान होकर उनके पास प्रकट हुआ; उसने उन्हें आनंदमय आशाओं से सांत्वना दी और उनके घावों को चंगा किया। और संतों ने परमेश्वर की महिमा करते हुए कहा:

'महिमा तेरी हो, हे ईश्वर, क्योंकि तू उन पर कभी नहीं छोड़ता जो तुझ पर भरोसा करते हैं और तेरे लिए दुख सहते हैं! *मैं प्रभु का उसके सभी अनुग्रहों के लिए कैसे प्रतिफल दूँगा? [हमारे] ईश्वर जैसा महान ईश्वर और कौन है! तू चमत्कार करने वाला परमेश्वर है*' (भजन संहिता 115:3; भजन संहिता 76:14–15)। इसके तुरंत बाद, यातना देने वाले ने पवित्र शहीदों को एक बार फिर से कालकोठरी से बाहर निकाला और उन्हें अपने सामने खड़ा करने का आदेश दिया। उसने उनके सामने अपनी मूर्तियाँ रख दीं और उन्हें इन मूर्तियों की पूजा करने के लिए मजबूर किया, अवज्ञा करने पर दंड की धमकी दी।

उसने कहा, 'यदि तुम राजा की आज्ञा का पालन नहीं करते और हमारे देवताओं की पूजा नहीं करते, तो मैं तुम्हें तलवार से मार डालूँगा, और तुम्हारे शरीर जंगली जानवरों और पक्षियों को खाने के लिए दे दूँगा।'

लेकिन संतों ने एक स्वर में उत्तर दिया:

– हम अपने प्रभु मसीह से मुँह नहीं मोड़ेंगे, और न ही हम घृणित मूर्तियों की पूजा करेंगे—जो बहरी और गूँगी हैं—जिनकी आँखें हैं पर वे नहीं देखतीं, कान हैं पर वे नहीं सुनतीं, मुँह हैं पर वे नहीं बोलतीं, और पैर हैं पर वे नहीं चलतीं। जो भी उन्हें बनाता है और जो भी उनकी पूजा करता है, वे भी उनके समान हों।

ये शब्द सुनते ही, यातना देने वाला एक सिंह की तरह क्रोध से गरजा और शहीदों को शहर के बाहर ले जाकर जंगली जानवरों की तरह तलवार से मार डालने का आदेश दिया, और उनके शवों को जानवरों और पक्षियों द्वारा नोचा जाने के लिए बिना दफनाए छोड़ देने का हुक्म दिया। संतों को फांसी के स्थान पर ले जाया गया। उस स्थान पर जैतून का एक बगीचा था, और शहीदों को मौत की सजा देने के लिए पेड़ों से बांध दिया गया। संतों के दो करीबी दोस्त, ईसाई पल्लैडियस और अकासियस, इस बगीचे में आए। जब जल्लाद दंडित पुरुषों को मारने ही वाले थे, तो आगंतुक उनके पैरों पर गिर पड़े, उन्हें बहुत सारा सोना दिया, और उनसे विनती की कि वे थोड़ा इंतजार करें ताकि वे दंडित पुरुषों से बात कर सकें, और केवल उसके बाद ही फांसी पर अमल करें। सोना लेने के बाद, जल्लादों ने शहीदों से थोड़ी दूरी बना ली, जबकि पिल्लैडियस और अकाकियस उनके पास गए, स्नेहपूर्वक उन्हें चूमा, जोर-जोर से रोए और उनसे उनके लिए प्रार्थना करने का अनुरोध किया। जब संत अपनी अंतिम प्रार्थना कर रहे थे, तो स्वर्ग से एक आवाज़ सुनाई दी जो उन्हें शाश्वत विश्राम के लिए बुला रही थी, और तुरंत उन्होंने आनंदपूर्वक अपनी आत्माएँ ईश्वर के हाथों में सौंप दीं। यातना देने वाले के सेवकों ने, भले ही देखा कि शहीद पहले ही मर चुके थे, फिर भी अपने स्वामी से डरकर, मृतकों पर भी उसके आदेश का पालन किया: उन्होंने यूस्टैथियस और फेस्पेसियस की गला रेत दिया, और अनातोलियस की पसलियों में छेद कर दिया; और फिर, जब मृतकों के शरीर पहले ही जमीन पर पड़े थे, उन्होंने उनके सिर काट दिए और, उन्हें बिना दफनाए, चले गए[8041] । तब छह स्वर्गदूत गरुड़ के रूप में स्वर्ग से उतरे और पल्लैडियस और अकाकियस द्वारा सम्मानपूर्वक दफनाए जाने तक शवों के ऊपर मंडराते रहे।

उसी दिन, सूर्यास्त के समय, काउंट एंथनी बीमार पड़ गए; और अगली सुबह, पहले उनकी पत्नी की मृत्यु हुई, फिर वे स्वयं, अपनी पत्नी के शव पर गिरकर, पीड़ा में अपनी अंतिम सांस ली। और अब वे नरक में पीड़ा भोग रहे हैं, जबकि पवित्र शहीद हमारे परमेश्वर मसीह के राज्य में आनंदित हो रहे हैं। उसकी महिमा युगानुयुग होती रहे। आमेन।

शहीद संत दासियस की स्मृति

20 नवंबर को स्मरणोत्सव

[8041] पवित्र शहीदों यूस्टैथियस, फेस्पेशियस और अनातोलीयस ने लगभग 312 ईस्वी में यातनाएँ सहन कीं।

डायोक्लेटियिन और मैक्समियिन के शासनकाल के दौरान, पैगन शहर डोरोस्टोल[8042] में, पैगन देवता क्रोनस[8043] के सम्मान में त्योहार से 30 दिन पहले, सैनिकों में से एक सुंदर युवक को उसकी बलि चढ़ाने के लिए चुनने की प्रथा थी। अगले 30 दिनों तक, बलदिान के त्योहार तक, चुने गए युवक को शाही वस्त्र पहनाए जाते थे और उसकी कोई भी इच्छा पूरी की जा सकती थी। इसके बाद, उस युवक को क्रोनस की बलि के रूप में वध कर दिया जाता था। और इस प्रकार यह दुखद भाग्य सभी सैनिकों में सबसे बहादुर और सबसे सुंदर, दासियस पर पड़ा। उस समय तक, वह एक गुप्त ईसाई था। अब, अपने भाग्य के बारे में सुनकर, संत डासियस ने उस घृणित मूर्तपिूजक देवता को प्रसन्न करने के लिए अपनी जान देने के बजाय खुद को मसीह का अनुयायी घोषित करने का संकल्प लिया।

उन्होंने अपने साथियों से कहा, 'अगर मुझे मरना ही है, तो मसीही के रूप में मरना बेहतर है, मसीह के लिए।'

इसलिए, संत दासियस ने उन सांसारिक आशीर्वादों और सुखों को ठुकरा दिया, जिनका वह पैगन रीति-रिवाज के अनुसार तीस दिनों तक आनंद ले सकता था। उसने पैगनों के सभी अनुग्रहकारी वादों को अस्वीकार कर दिया, और प्रेरित के शब्दों को दृढ़ता से अपने मन में रखते हुए कहा कि, *'मैं मसीह को प्राप्त करने के लिए सब कुछ हानि समझता हूँ'* (फिलि. 3:8)। महोत्सव और दावत के बजाय, संत ने मूर्तपिूजकों की दुष्टता और मूर्तियों की उनकी बेतुकी पूजा की निंदा करना शुरू कर दिया, और साहसपूर्वक मसीह की शिक्षाओं का प्रचार किया। पवित्र आत्मा की कृपा से प्रेरित होकर, मसीह के इस स्वीकारकर्ता ने उत्साहपूर्वक सभी को एक सच्चे ईश्वर और ईश्वर के एकमात्र पुत्र, यीशु मसीह में विश्वास करने के लिए प्रेरित किया। जब यह खबर मूर्तपिूजक शासकों डायोक्लेटियिन और मैक्समियिन तक पहुँची, तो संत डासियस को उनके आदेश पर मसिया के प्रांतीय गवर्नर वासा के पास मुकदमे के लिए लाया गया। मुकदमे में, संत ने एक बार फिर मूर्तपिूजकों की मूर्खता की निंदा की और मसीह की गवाही दी। ईसाई धर्म की इस स्वीकारोक्ति के लिए, उन्हें क्रूर यातनाएँ दी गईं और फिर तलवार से सिर कलम कर दिया गया[8044] ।

पवित्र शहीदों निरिसास और जोसेफ का स्मरणोत्सव

20 नवंबर को स्मरणोत्सव

संत निरिसास फारस की भूमि में एक बिशप थे और उनके शिष्य जोसेफ उनके साथी थे। वे दोनों, मसीह के सच्चे सेवकों के रूप में, परमेश्वर का भय मानते थे, जिसने स्वर्ग, पृथ्वी, समुद्र और उनमें जो कुछ भी है, उसे बनाया (भजन संहिता 145:6), और मसीह की व्यवस्था को पूरा करते हुए एक सदाचारी जीवन जीने का प्रयास करते थे।

अपने शिष्य जोसेफ के सदाचारी जीवन और ईश्वर के नाम की महिमा के प्रति उसके उत्साह को देखकर, संत निरिस ने उसे बिशप पद की दीक्षा दी। उनके साथी फारसी, सूर्य को एक देवता मानकर, अग्नि की पूजा करते थे और विभिन्न विकृतियों में लिप्त रहते थे। संत निरिसास और जोसेफ, अपनी भूल पर शोक करते हुए, मसीह की कलीसिया के लाभ के लिए उत्साहपूर्वक परिश्रम करने लगे। मसीह की कृपा और आपसी उत्साह से दृढ़ होकर, उन्होंने कई मूर्तपिूजकों को सच्चे ईश्वर के प्रति विश्वास में परिवर्तित किया और उन्हें धार्मिकता सिखाई।

उस समय, फारसी राजा सावर ने ईसाइयों के खिलाफ एक क्रूर उत्पीड़न शुरू किया[8045] , और उन्हें सूर्य और अग्नि की पूजा करने के लिए मजबूर किया। यह सुनकर कि बिशप नर्स और जोसेफ, फारसियों की गलती की निंदा करके, उनमें से कई को मसीह के धर्म में परिवर्तित कर रहे थे, राजा ने उन्हें पकड़कर अपने सामने लाने का आदेश दिया[8046] ।

एक 80 वर्षीय बुजुर्ग अपने शिष्य और साथी के साथ राजा के सामने उपस्थित हुए। जब राजा ने उन्हें आग की पूजा करने या यातना और मृत्यु के लिए तैयार होने का आदेश दिया, तो संतों ने साहसपूर्वक उत्तर दिया:

[8042] डोरोस्टोल, जिसे अब सिलिस्ट्रिया के नाम से जाना जाता है, मेसिया के प्राचीन क्षेत्र में इस्टर नदी (डैन्यूब) पर स्थित है, जो ब्लैक सी के तट से बहुत दूर नहीं है।

[8043] क्रोनस, जिसे सैटर्न के नाम से भी जाना जाता है, पगन किंवदंतियों के अनुसार, देवताओं में सबसे क्रूर है। उसे प्रसन्न करने के लिए, पगन हर साल मानव बलदिान देते थे।

[8044] चौथी शताब्दी की शुरुआत में

[8045] पर्स में ईसाइयों पर यह उत्पीड़न चौथी शताब्दी के मध्य के आसपास हुआ था।

[8046] संत निरिसास और जोसेफ को शापूर (लगभग 343–347) द्वारा भड़काए गए उत्पीड़न के चौथे वर्ष में फारसी शहर स्कायार्काडेट में गिरफ्तार कर कैद कर दिया गया था, और 20 नवंबर को उनका सिर कलम कर दिया गया।

'भले ही हे राजा, तुम हमारे मरने के बाद हमें सात बार मृतकों में से जलिा कर हमें यातनाओं में डाल सको, तब भी वह हमें मसीह से प्रेम करने से नहीं हटा सकता।'

मसीह के लिए दुख सहने के दृढ़ संकल्प से भरे पवत्रि कन्फेशर्स से ऐसा उत्तर सुनकर, क्रोधति उत्पीड़क ने तुरंत उनका सरि कलम करने का आदेश दयिा।

इस प्रकार इन पवत्रि शहीदों ने स्वर्ग में अपने अक्षय मुकुट प्राप्त कएि।

पवत्रि शहीदों जॉन, सेवेरयिस, इसाक, हाइपैटयिस और उनके साथ अन्य लोगों का स्मरणोत्सव

20 नवंबर को स्मरण कयिा जाता है

पवत्रि शहीदों जॉन, सेवेरयिस, इसाक और हाइपैटयिस फारस के वभिन्नि शहरों में बशिप थे।

जब फ़ारस के राजा, धर्महीन अग्नि-पूजक शपूर ने ईसाइयों को सूर्य और अग्नि की पूजा करने के लिए मजबूर कयिा, तो इन संतों ने वश्विासयिों को मसीह के दृढ़ अनुयायी बने रहने के लिए मजबूत कयिा, और धर्महीन फ़ारसयिों को मसीह के धर्म में परविर्तति कयिा। उन्होंने अग्नि-पूजकों की त्रुटयिों की नदिा की, और उन्हें यह वश्विास दलिाया कि सूर्य और अग्नि देवता नहीं हैं, बल्कि सृष्टकिर्ता की महमिा करने और मानवता की सेवा करने के लिए बनाई गई केवल रचनाएँ हैं।

जब उनके उपदेश की खबर राजा शपूर तक पहुँची, तो उसने उन नगरों में सैनकि और अपने कुलीनों को भेजा जहाँ संत उपदेश दे रहे थे, और उन्हें गरिफ्तार करने का आदेश दयिा।

पकड़े जाने के बाद, वे बनिा डरे स्वयं राजा के सामने न्याय के लिए उपस्थति हुए। राजा ने उन्हें धमकी भरे अंदाज में संबोधति करते हुए कहा:

'क्या तुम नहीं जानते कि मैं देवताओं की संतान हूँ, कि मैं सूर्य की प्रार्थना करता हूँ और अग्नि की पूजा करता हूँ? और तुम – तुम कौन होते हो, जो मेरे आदेशों का वरिोध करते हो, सूर्य का अपमान करते हो और अग्नि का कोई सम्मान नहीं करते?'

संतों ने सर्वसम्मति से एक ईश्वर में अपने वश्विास की घोषणा की।

'हमारे लाभ के लिए,' संतों ने कहा, 'ईश्वर ने सूर्य और अग्नि को अस्तत्वि में लाया। लेकनि सच्चा ईश्वर एक है, जसिने सभी चीजों को बनाया, और केवल उसी के लिए पूजा और महमिा है।'

यह सुनकर, राजा चल्लिाया:

'ओर्मुज़्द से अधकि महमिामय कौन सा ईश्वर है, या अह्रमिन से अधकि भयानक कौन है[8047] ?'

और जसिे सूर्य की पूजा नहीं करता, उसे बुद्धमिान कैसे कहा जा सकता है?!

बशिप सेवेरस ने सभी की ओर से एक बार फरि से आस्था की स्वीकारोक्ति की पुष्टि की:

'हे राजा, हम कसिी अन्य ईश्वर को नहीं जानते, सवािय उस ईश्वर के जसिने स्वर्ग और पृथ्वी, सूर्य और चंद्रमा, और सभी दृश्य और अदृश्य चीजों को बनाया; और हम उसके पुत्र, जसिे नासरत का यीशु कहा जाता है, में वश्विास करते हैं।'

तब राजा ने आज्ञा दी कि संत के मुँह पर वार कयिा जाए, और यह इतनी क्रूरता से कयिा गया कि उसके दाँत टूट गए। फरि राजा ने उपहास करते हुए कहा:

'यीशु से कहो कि वह तुम्हारे दाँत वापस लगा दे।'

[8047] ओर्मुज़्द प्राचीन फ़ारसयिों के बीच सर्वोच्च देवता का नाम है। वे उसे बुद्धमिान देवता, संपूर्ण दुनयिा के स्रष्टा के रूप में पूजते थे, जसिने सूर्य, चंद्रमा, तारे, स्वर्ग, पृथ्वी, पानी और मानव जाति की रचना की; उनके वश्विास के अनुसार, वह अच्छाई का मत्रि और रक्षक, झूठे लोगों का शत्रु, और अन्याय का प्रतशिोधक है। फारसी धर्म में, अह्रमिन बुराई का प्रतीक है। वह परोपकारी देव ओर्मुज़्द के साथ नरिंतर संघर्ष में रहता है और अपनी सृष्टि के भीतर बुराई के बीज बोने का प्रयास करता है। इसलिए, अह्रमिन प्रकृति की वनिाशकारी शक्तयिों, बीमारयिों, फसल वनिाश और अन्य आपदाओं का स्रोत है।

जब सेवेरस ने इसके लिए राजा को नास्तिक कहा, तो उसे आधा मार डाला गया और फिर एक कालकोठरी में फेंक दिया गया। इसके बाद, यातना देने वाले ने सेंट आइज़ैक को बुलाया और उससे धमकी भरे अंदाज में पूछा:

'क्या तुम्हारा भी वही मत है जो सेवेरियस का है, तो क्या मुझे तुम्हारा भी खून बहाना पड़ेगा?'

सेवेरियस के दृढ़ उदाहरण और विश्वास के बयानी से प्रेरित होकर, संत इसाक ने राजा को इस प्रकार उत्तर दिया:

'हे राजा, हमारा मानसिक एकत्व परम बुद्धिमत्ता है, जिसे आप नहीं समझते।'

ईसाइयों के दृढ़ निश्चय से चिढ़कर, राजा ने धमकी दी कि अगर उसने इस तरह बोलना जारी रखा तो वह उसकी जीभ काट देगा। इसके बाद राजा ने ईसाक के खिलाफ फारसी जादूगरों के आरोप के दूसरे भाग[8048] पर ध्यान दिया और यह स्पष्टीकरण मांगा कि वह ईसाई चर्च क्यों बना रहा था।

इस पर इसाक ने उत्तर दिया:

'और मैंने ऐसा करना कब बंद किया है, ताकि ईश्वर का नाम मूर्तिपूजकों के बीच भी महिमामय हो?!'

तब राजा ने शहर के कुलीन नागरिकों से संबोधित किया, जिन्होंने राजा की क्रूरता देख कर पहले ही ईसाई धर्म त्याग दिया था। उसने उन्हें कड़ी फटकार लगाई और चेतावनी दी कि अगर वे ईसाई धर्म में लौटे तो उन्हें मौत की सजा दी जाएगी। उसने कसम खाई कि जब तक वह राज करेगा, अपने राज्य में एक भी ईसाई को बर्दाश्त नहीं करेगा। फिर उसने डर से कांप रहे धर्मत्यागियों को इसाक पर पत्थर फेंककर उसकी हत्या करने का आदेश दिया। और वास्तव में, धर्मत्यागी कुलीनों ने स्वयं अपने बिशप को शहर के बाहर एक शिविर में पत्थर मारकर मार डाला।

इसके बाद, सभी फ़ारसियों, विशेष रूप से कुलीनों और अधिकारियों ने ईसाइयों के खिलाफ हथियार उठा लिए। इस प्रकार सेल्यूकिया के बिशप जॉन, जो वेट-गास्किटि के किले में एक कालकोठरी में कष्ट भोग रहे थे, को गाडियाब के गवर्नर के आदेश पर मृत्युदंड दिया गया। एक अन्य इसाक — गुलसाली गाँव के पादरी — को पत्थर मारकर हत्या कर दी गई।

जहाँ तक स्वीकारकर्ता सेवेरियस का सवाल है, वह दो दिन बाद जेल में उस यातना के कारण मर गया जो उसे दी गई थी। जब यह खबर राजा को दी गई, तो उसने अपनी दुर्भावना में इस खबर पर विश्वास करने से इनकार कर दिया और आदेश दिया कि मृतक का सिर काटकर उसके सामने लाया जाए।

राजा साpor के धर्मत्यागी कुलीनों, जो उसकी क्रूरता से भयभीत थे, के बावजूद, कई सामान्य ईसाई अपने विश्वास पर अडिग रहे और अपने पादरियों के उदाहरण का अनुसरण करते हुए, दृढ़ संकल्प के साथ मसीह के लिए पीड़ा सहने के लिए आगे बढ़े।

इस प्रकार गादियाब के राज्यपाल के एक नपुंसक, अज़त को, अन्य ईसाइयों के साथ, उस मंदिर में लाया गया जहाँ फारसी बलिदान देते थे। हालाँकि, बचपन से ही ईसाई के रूप में पले-बढ़े होने के कारण, उन्होंने अन्य विश्वासियों के साथ मिलकर दुष्टता की निंदा की और सूर्य को बलिदान चढ़ाने से इनकार कर दिया, यह जानते हुए *कि 'जब अन्यजाति बलिदान चढ़ाते हैं, तो वे परमेश्वर को नहीं बल्कि दुष्टात्माओं को चढ़ाते हैं'* (1 कुरिन्थियों 10:20; तुलना करें व्यवस्थाविवरण 32:17)।

इसके लिए, उन्हें यातना के विभिन्न रूपों से गुज़रना पड़ा।

बाद में अज़ात को एक धर्मत्यागी के हाथों गला घोंटकर मार डाला गया। सस्सोनियस को भी उसके साथ यातनाएँ दी गईं और मार डाला गया।

अब्राहम नामक एक ईसाई की आँखें लाल-गरम कीलों से निकाल दी गईं, जिसके बाद वह दो दिन बाद भयानक पीड़ा में मर गया, और मसीह के नाम को पुकारना कभी बंद नहीं किया।

फ़ारसियों ने एक ईसाई, शिमोन को, उसकी छाती तक ज़मीन में गाड़ दिया और उसके बाकी खुले शरीर में तीर घोंप दिए।

फारस की भूमि में इसी उत्पीड़न के दौरान, कई ईसाई महिलाएँ और कुँवारियाँ भी शहादत के मुकुट से जगमगाईं, और मसीह के प्रति अपने प्रेम में उपर्युक्त पवित्र पुरुषों से प्रतिस्पर्धा की।

[8048] फ़ारसियों के मगी एक बंद पुरोहित समुदाय के सदस्य थे। वे मूल रूप से सभी विद्वतापूर्ण ज्ञान और धार्मिक अनुष्ठानों के संरक्षक थे; उन्होंने खुद को तारों की स्थिति से भविष्य बताने में सक्षम लोगों के रूप में प्रस्तुत किया, और लोगों के बीच उन्हें अपार सम्मान और काफी राजनीतिक प्रभाव प्राप्त था।

इस प्रकार कन्याएँ थेक्ला और अन्ना, साथ ही एक कुलीन महिला बोगुटा, मामिया, टाटोना, मामा और नीना, और कई अन्य, जिन्होंने नडिर होकर फारसियों की दुष्टता और उत्पीड़क की क्रूरता की निंदा की, उन्हें तलवारों से काट-काट कर टुकड़े-टुकड़े कर दिया गया। इन शहीदों के रक्त से सिंचित पृथ्वी ने, जैसे, उत्पीड़क की निंदा करने के लिए एक उपचारात्मक अंजीर का वृक्ष उत्पन्न किया। कुछ समय बाद, मनीकिय विधर्मी, इस चमत्कार को सहन न कर सके—जिससे स्वयं धरती ने मसीह के स्वीकार करने वालों के सच्चे विश्वास की गवाही दी—उन्होंने इस अंजीर के पेड़ को काट डाला; लेकिन इसके लिए उन्हें एक गंभीर बीमारी से दंडित किया गया।

इस प्रकार, फारस की भूमि में, प्रभु ने शहीदों और स्वीकारकर्ताओं की एक विशाल सेना को खड़ा किया जिन्होंने मसीह के लिए कष्ट सहे।

4 दिसंबर

21 नवंबर (पुराने कैलेंडर के अनुसार)

परमेश्वर की अति पवित्र माता और सदा कुंवारी मरियम का मंदिर प्रवेश का पर्व

21 नवंबर को स्मरणोत्सव

जब परमेश्वर की अति पवित्र माता, अति धन्य कुँवारी मरियम, तीन वर्ष की आयु तक पहुँच गईं, तो उनके पवित्र और धर्मी माता-पिता, योआकिम और अन्ना ने, जो व्रत उन्होंने लिया था, उसे पूरा करने का संकल्प लिया – कि वे अपने द्वारा जन्म दिए गए बच्चे को परमेश्वर की सेवा के लिए समर्पित करेंगे। उन्होंने नासरत, जहाँ वे रहते थे, में अपने सभी शाही और पादरियाना वंश के रिश्तेदारों को बुलाया – क्योंकि धर्मी योआकिम स्वयं शाही वंश के थे, जबकि उनकी पत्नी, संत अन्ना, पादरियाना वंश की थीं – साथ ही निर्मल कुंवारीयों के एक गायन मंडली को भी बुलाया; उन्होंने कई मोमबत्तियाँ तैयार कीं और सर्वशुद्ध कुँवारी मरियम को राजसी वैभव से घेर लिया, जैसा कि यह सब पवित्र पिताओं द्वारा प्रमाणित है।

यरूशलेम के आर्चबिशप, संत जेम्स, जोआकिम की ओर से बोलते हुए, इस प्रकार कहते हैं:

'यहूदियों की निष्कलंक बेटियों को बुलाओ, ताकि वे जलती हुई मोमबत्तियाँ ले लें।'

धर्मपरायण अन्ना की ओर से बोलते हुए, कॉन्स्टेंटिनोपल के पैट्रिआर्क सेंट जर्मनस कहते हैं:

'मैं प्रभु के सामने उस व्रत को पूरा कर रही हूँ जो मैंने अपने दुख के समय में लिया था; और इस उद्देश्य के लिए मैंने मोमबत्तियों के साथ कुँवारियों का एक समूह इकट्ठा किया है, पुरोहितों को बुलाया है, और अपने रिश्तेदारों को आमंत्रित किया है, और सभी से कहा है: "मेरे साथ आनंद मनाओ, क्योंकि मैं अब एक माँ और अभिभावक बन गई हूँ, अपनी बेटी को किसी सांसारिक राजा को नहीं, बल्कि स्वर्ग के राजा, परमेश्वर को अर्पित कर रही हूँ।"'

ईश्वर की माता के राजसी शृंगार के संबंध में, बुल्गारिया के आर्चबिशप, संत थियोफिलिक्ट कहते हैं:

'यह उचित था कि परम दिव्य कन्या का समर्पण उनके योग्य हो, ताकि इतनी तेजस्वी और अनमोल मोती को फटे-पुराने वस्त्रों से न छुआ जाए; यह वास्तव में उचित था कि उन्हें राजसी वस्त्रों से सजाया जाए, क्योंकि यह सबसे बड़ी महिमा और शोभा के लिए था।'

इस प्रकार एक सम्मानजनक और गौरवशाली प्रस्तुति के लिए आवश्यक सभी व्यवस्था करने के बाद, वे नासरत से यरूशलेम की यात्रा पर रवाना हुए, जिसमें तीन दिन लगे।

यरूशलेम नगर में पहुँचने पर, वे विधिवत मंदिर में प्रवेश किए और उसमें ईश्वर के जीवित मंदिर, तीन वर्षीय कन्या, परम पवित्र कुँवारी मरियम को ले आए। कन्याओं का एक समूह उसके आगे-आगे चल रहा था, जो जलती हुई मोज़े वाली मोमबत्तियाँ ( ) लिए हुए थीं, जैसा कि कॉन्स्टेंटिनोपल के आर्चबिशप, संत तारासियस द्वारा प्रमाणित है, जिन्होंने संत ऐनी के मुख से निम्नलिखित शब्द कहे हैं:

'यात्रा आरंभ करो, दीपक धारण करने वाली कन्याओं, और मेरे तथा ईश्वर की माता के आगे-आगे चलो।'

जहाँ तक पवत्रि माता-पिता का प्रश्न है, एक एक ओर और दूसरा दूसरी ओर, उन्होंने अपनी ईश्वर-प्रदत्त बेटी का हाथ पकड़कर, उसे कोमलता और सम्मान के साथ अपने बीच में ले लिया। उनके पीछे रिश्तेदारों, पड़ोसियों और परिचितों की एक बड़ी भीड़ आनंदपूर्वक चल रही थी, जो हाथों में मोमबत्तियाँ लिए हुए थी और सबसे पवत्रि कुँवारी को घेर रही थी, जैसे तारे चमकते चंद्रमा को घेरे होते हैं, जो पूरे यरूशलेम को चकित कर रही थी। संत थियोफिलैक्ट इसका वर्णन इस प्रकार करते हैं:

'बेटी अपने पिता के घर को भूल जाती है और उस राजा के पास ले जाई जाती है जिसने उसकी सुंदरता की कामना की है – उसे सम्मान और महिमा के बिना नहीं, बल्कि एक भव्य जुलूस के साथ ले जाया जाता है। देखो, उसे महिमा में उसके पिता के घर से बाहर लाया जाता है, और उसके प्रस्थान पर सर्वजन तालियाँ बजाते हैं; उसके माता-पिता के पीछे रिश्तेदार, पड़ोसी और जो भी उन्हें प्यार करते थे, चल रहे थे; पिता पिता के साथ, और माताएँ माता के साथ आनंदित हुईं; हाथों में मोमबत्तियाँ लिए युवतियाँ और कुँवारियाँ ईश्वर की माता के आगे-आगे चल रही थीं। पूरा यरूशलेम, चाँदनी में चमकते तारों के घेरे की तरह, इस अभूतपूर्व जुलूस का साक्षी बनने और तीन साल की कन्या को देखने के लिए इकट्ठा हुआ, जो ऐसी महिमा से घिरी हुई थी और मोमबत्तियाँ लेकर सम्मानित की जा रही थी। और केवल सांसारिक यरूशलेम के नागरिक ही नहीं, बल्कि स्वर्गीय यरूशलेम के निवासी—पवत्रि स्वर्गदूत—भी परम पवत्रि कुँवारी मरियम के गौरवपूर्ण प्रवेश का साक्षी बनने के लिए उमड़ पड़े, और इसे देखकर चकित हो गए कि कैसे कलीसिया इसके बारे में गाती है: 'स्वर्गदूत, परम पवत्रि की प्रवेश को देखकर चकित हुए: कुँवारी पवत्रितम पवत्रि स्थान में कैसे प्रवेश कर गई?'[8049] .

निर्दोष कुंवारीओं के दृश्य गायन-मंडली में शामिल होकर, अदेह पदवियों की अदृश्य गायन-मंडली आगे बढ़ी, परम पवत्रि कुंवारी मरियम को परम पवत्रि स्थल में ले जा रही थी और, प्रभु की आज्ञा से, उसे ईश्वर की चुनी हुई पात्र के रूप में घेरे हुए थी। निकोमेडिया के आर्चबिशप, संत जॉर्ज, इस प्रकार कहते हैं:

– उनके माता-पिता पहले से ही देवदूतों से घिरी कन्या को मंदिर के द्वार की ओर ले जा रहे थे, और सभी स्वर्गीय सेनाओं में साझा हर्षोल्लास छाया हुआ था। क्योंकि देवदूत, यद्यपि वे उस रहस्य की शक्ति को नहीं जानते थे, फिर भी प्रभु की आज्ञा से, जब वह मंदिर में प्रवेश कर रही थीं, तो उनकी सेवा कर रहे थे। इस प्रकार, प्रथम तो वे यह देखकर चकित हुए कि वह सद्गुणों का एक कीमती पात्र होगी, कि वह शाश्वत पवत्रिता के चिह्न धारण करती थी और उसके पास ऐसा शरीर था जिसे कोई पापी कलंक कभी छू भी नहीं सकता था; और द्वितीय, प्रभु की इच्छा को पूरा करते हुए, उन्होंने वह सेवा की जो उन्हें आज्ञा दी गई थी।

इस प्रकार, निष्कलंक कन्या को न केवल मनुष्यों द्वारा बल्कि स्वर्गदूतों द्वारा भी सम्मान और महिमा के साथ प्रभु के मंदिर में ले जाया गया। और यह उचित ही था: क्योंकि यदि पुराने नियम का सन्दूक, जिसमें मानना था और जो केवल परम पवत्रि कन्या की पूर्वसूचक के रूप में था, को बड़े सम्मान के साथ मंदिर में लाया गया था, पूरे इस्राएल की उपस्थिति में, तो उससे भी अधिक सम्मान के साथ, स्वर्गदूतों और मनुष्यों की उपस्थिति में, मंदिर में उस जीवित सन्दूक[8050] का प्रवेश किया जाना था — जिसमें मानना, अर्थात् मसीह, थे — परम धन्य कुँवारी का, जो ईश्वर की माता बनने के लिए नियत थीं।

जब पुराने नियम का सन्दूक प्रभु के मन्दिर में लाया गया था, तो उसके आगे पृथ्वी का राजा, जो उस समय इस्राएल पर शासन करता था, दाऊद, परमेश्वर का पिता, चल रहा था; लेकिन जब यह जीवित सन्दूक, परम पवत्रि कुँवारी, परमेश्वर के मन्दिर में लाई गईं, तो उनके आगे कोई पृथ्वी का राजा नहीं, बल्कि स्वर्गीय राजा चल रहा था, जिससे हम हर दिन प्रार्थना करते हैं: 'स्वर्गीय राजा, सांत्वनादाता, सत्य का आत्मा'। इस बात की पुष्टि कि यह ठीक वही राजा था जिसने इस राजसी पुत्री का नेतृत्व किया, वर्तमान भजनों में पवत्रि चर्च द्वारा इस प्रकार की गई है: 'पवत्रितम, पवत्रि और निर्दोष को पवत्रि आत्मा द्वारा भीतर लाया जाता है'[8051] । जब संदूक लाया गया, तो संगीत और गायन था, क्योंकि दाऊद

[8049] कैनन के नौवें गीत का अंश।

[8050] वाचा का सन्दूक – एक लकड़ी का संदूक, जिसके बाहरी हिस्से पर सोने की परत चढ़ी हुई थी। इसमें थे: वाचा की पट्टियाँ, मन्ना और हारून का दण्ड। यह परमेश्वर की माता का एक प्रारूप था, और यही कारण है कि पवत्रि कुँवारी को भी वाचा का सन्दूक कहा जाता है।

[8051] महान वेस्पर्स पर पर्व के स्टिचेरा।

ने लेवियों के नेताओं को आज्ञा दी कि वे वीणाएँ[8052] , सारंगियाँ[8053] , झालरें[8054] और वीणाएँ[8055] बजाने के लिए गायक नियुक्त करें, और आनंद के गीत गाएँ; और जब परम पवित्र कुँवारी को भीतर लाया गया, तो इस आनंद के साथ सांसारिक संगीत और गायन नहीं, बल्कि स्वर्गदूतों के गायन ने साथ दिया, जो उस क्षण अदृश्य रूप से उपस्थित थे। क्योंकि जब वह प्रभु की सेवा करने के लिए परम पवित्र स्थान में प्रवेश कीं, तो उन्होंने स्वर्गीय स्वरों में गाया, जैसा कि कलीसिया अब स्मरण करती है, कोंडाक में गाते हुए[8056] : 'दिव्य आत्मा में निहित अनुग्रह को एकत्र करते हुए, जिसे ईश्वर के स्वर्गदूत गाते हैं: यही स्वर्गीय निवास-स्थान है।' हालाँकि, मंदिर में परम पवित्र थिओटोकोस की प्रस्तुति मानव भजनों के बिना नहीं हुई, ऐसा भी चित्रित किया गया है। क्योंकि धर्मी अन्ना (संत तारासियस के प्रवचन में) आगे चल रही कुंवारी कन्याओं से कहती हैं:

– उसकी स्तुति में एक गीत गाओ, वीणा के स्वर में उसकी स्तुति करो, उसके लिए एक आध्यात्मिक गीत गाओ, और दस-तारों वाले सारंगी पर उसकी महिमा करो।

चर्च यही याद करती है, यह कहते हुए: 'योआकिम और अन्ना आत्मा में आनंदित होते हैं, और कुंवारी प्रभु के लिए गीत गाती हैं, भजन गाती हैं और उनकी माता का सम्मान करती हैं'[8057] ।

इससे यह स्पष्ट होता है कि उस समय परम पवित्र कुँवारी के आगे-आगे चलने वाली कुँवारियों की मंडली ने दाऊद की भजनों में से कुछ गीत गाए थे।

इसके अनुरूप, वर्तमान कैनन के संकलनकर्ता ने इन कुंवारीयों से कहा: 'आरंभ करो, हे कुंवारीयों, और गीत गाओ, अपने हाथों में मोमबत्तियाँ थामे हुए'[8058] ।

जहाँ तक पवित्र और धर्मी माता-पिता, योआक्विन और अन्ना की बात है, संत तारासियस की गवाही के अनुसार, उनके होठों पर पूर्वज दाऊद का यह गीत था: *'हे पुत्री, सुन, और देख, और अपना कान लगा, और अपने लोगों और अपने पिता के घर को भूल जा। और राजा तुम्हारी सुन्दरता की इच्छा करेगा'* (भजन संहिता 44:11–12)।

ईश्वर की माता के इस गौरवमय प्रवेश का स्वागत करने के लिए, थियोफिलैक्ट के अनुसार, मंदिर में सेवा करने वाले पुरोहित बाहर आए और भजनों के साथ, परम पवित्र कुँवारी का स्वागत किया, जो स्वर्ग में आरोहण करने वाले महा महाधर्मपिता की माता बनने वाली थीं[8059] । उसे मंदिर के द्वार तक ले जाने के बाद, संत एनी (जैसा कि संत तारासियस लिखते हैं) ने इस प्रकार कहा:

'जाओ, मेरी बेटी, उस तक जो तुम्हें मुझे प्रदान कर चुका है; जाओ, पवित्र सन्दूक, कृपालु प्रभु के पास; जाओ, जीवन के द्वार, दयालु दाता के पास; जाओ, वचन की सन्दूक, प्रभु के मंदिर में; प्रवेश करो प्रभु की कलीसिया में, हे जगत के आनन्द और हर्ष।'

एक भविष्यवक्ता, महायाजक और उनके चचेरे भाई[8060] के रूप में ज़कारियाह से, उन्होंने योआकिम के साथ मिलकर कहा:

'स्वीकार करो, ज़कारियाह, शुद्ध आवरण; स्वीकार करो, याजक, निर्दोष सन्दूक; स्वीकार करो, नबी, अदेह कोयले का धूपदान; स्वीकार करो, धर्मी, आध्यात्मिक धूपदान।'

और इसके अलावा, धर्मी अन्ना ने, जैसा कि संत हर्मन बताते हैं, महापुजारी से कहा:

[8052] ऑर्गन – एक वायु यंत्र, संभवतः बांसुरी के समान (चरवाहों द्वारा उपयोग किया जाने वाला एक वाद्य यंत्र)।

[8053] सलामी एक तार वाला वाद्य यंत्र है, जो वीणा या लीर जैसा होता है। इसका उपयोग मुख्य रूप से पवित्र गीतों या भजनों के गायन के साथ किया जाता था।

[8054] सबिल एक तालवाद्य यंत्र है जिसमें दो चौड़ी धातु की डिस्क होती हैं, जो एक-दूसरे से टकराने पर तेज आवाज निकालती हैं।

[8055] गुस्ली एक तार वाला वाद्य यंत्र है जिसका आकार त्रिकोण जैसा होता है।

[8056] कोंडाक एक पवित्र भजन है जो संक्षेप में एक पर्व दिवस के सार को व्यक्त करता है।

[8057] महान वेस्पर्स पर एक स्टिचेरा।

[8058] कैनन, गीत 4।

[8059] 'महान महायाजक' जो स्वर्गों से होकर गुज़रे हैं, निस्संदेह यीशु मसीह हैं। इब्रानियों 4:14.

[8060] परंपरा के अनुसार, यही वही जकरियाह हैं जो यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के पिता थे। सुसमाचार उन्हें अबीया के विभाग के एक याजक के रूप में संदर्भित करता है (लूका 1:5)।

'हे नबी, मेरी बेटी को स्वीकार करो, जो ईश्वर द्वारा दी गई है; उसे स्वीकार करो और उसे भीतर लाकर, उसे पवित्र स्थल के पर्वत पर, ईश्वर द्वारा तैयार की गई निवास-स्थली में बठिा दो, और जब तक ईश्वर, जसिने उसे यहाँ बुलाया है, अंततः उसके बारे में अपनी इच्छा प्रकट न करे, तब तक कोई और प्रश्न न पूछो।'

धन्य जेरोम लखिते हैं, 'वहाँ चर्च के प्रवेश द्वार पर पंद्रह सीढ़ियाँ थीं, जो सीढ़ियों के पंद्रह भजनों के अनुरूप थीं, क्योंकि इन सीढ़ियों में से प्रत्येक पर पूजा के लिए चढ़ने वाले याजक और लेवी एक अलग psalm[8061] गाते थे।' इस प्रकार धार्मकि माता-पिता ने उस निर्मल कन्या को पहले सीढ़ी पर रख दिया। वह तुरंत और बहुत तेजी से अपनी इच्छा से शेष सीढ़ियाँ चढ़ गई, बिना किसी के मार्गदर्शन या सहारे के; सबसे ऊँची सीढ़ी पर पहुँचकर, वह वहाँ परमेश्वर की अदृश्य शक्ति से समर्थित खड़ी रही। तीन साल की कन्या को इन सीढ़ियों पर इतनी तेजी से चढ़ते देख कर सभी चकित रह गए; महापुजारी जकरियाह विशेष रूप से स्तब्ध रह गए, और एक भविष्यवक्ता के रूप में, दिव्य प्रकटकिरण के माध्यम से, उन्होंने इस कुँवारी के भविष्य की पूर्वदृष्टि प्राप्त की, क्योंकि थियोफलिक्ट के अनुसार, वह आत्मा से परिपूर्ण थे। संत तारासियस भी इस बारे में कहते हैं, कि ज़कारियाह, पवित्र आत्मा से भरकर, ने पुकार लगाई:

'हे पवित्र कन्या! हे कुँवारी, जो किसी प्रलोभन को नहीं जानती! हे सुन्दर कुँवारी! हे स्त्रियों के भूषण! हे पुत्रियों की शोभा! तुम स्त्रियों में धन्य हो! तुम अपनी पवित्रता से परम महिमामय हो; तुम अपनी कुँवारीपन से मुहरबंद हो; तुम आदम की शपथ की पूर्ति हो!'

कन्या को थामे हुए, ज़कारियाह, – संत हरमन कहते हैं, – एक आनंदित आत्मा के साथ उन्हें परम पवित्र स्थान में ले गए[8062] , और उनसे इस प्रकार कहा:

'आओ, मेरी भविष्यवाणी की पूर्ति; आओ, प्रभु के वचनों की पूर्ति; आओ, उनकी वाचा की मुहर; आओ, उनके परामर्श का प्रकाशन; आओ, उनके रहस्यों की पूर्ति; आओ, सभी भविष्यद्वक्ताओं का दर्पण; आओ, पाप से थके हुए लोगों का नवीनीकरण; आओ, हे अंधकार में पड़े वालों के प्रकाश, जाओ, हे नवीनतम और सबसे दैवीय उपहार। अब अपने प्रभु के मंदिर के निचले भाग में प्रवेश करो, जो मनुष्यों के लिए सुलभ है, और थोड़ी ही देर में – ऊपरी भाग में, जो उनके लिए अप्राप्य है।

वह कन्या, अत्यंत हर्षित और आनंदित होकर, प्रभु के भवन में जैसे किसी राजसी महल में गई; क्योंकि यद्यपि वह आयु में छोटी—केवल तीन वर्ष की—थी, परन्तु वह परमेश्वर की कृपा से परिपूर्ण थी, क्योंकि उसे संसार की रचना से पहले ही परमेश्वर द्वारा पूर्वज्ञान और पूर्व-चयन प्राप्त था।

इस प्रकार परम पवित्र और परम धन्य कुँवारी मरियम को प्रभु के मंदिर में लाया गया। उसी क्षण, महापुजारी जकरियाह ने एक ऐसा कार्य किया जो सभी के लिए असाधारण और आश्चर्यजनक था: उन्होंने उस छोटी लड़की को तंबू के सबसे भीतरी भाग, जिसे 'पवित्रतम स्थान' कहा जाता है, में ले गए, जो दूसरे पर्दे के पार था और जहाँ वाचा का संदूक, जिसे चारों ओर सोने से मढ़ा गया था, और महिमा के करूब प्रायश्चित के स्थान पर छाया किए हुए रखे गए थे (इब्रानियों 9:3-5), एक ऐसी जगह जिसमें न केवल महिलाओं बल्कि पुरोहितों को भी प्रवेश करना वर्जित था, और जिसमें केवल महापुजारी को वर्ष में एक बार प्रवेश करने की अनुमति थी। वहाँ, महापुजारी जकरियाह ने परम पवित्र कुँवारी के लिए प्रार्थना करने हेतु एक स्थान निर्धारित किया। जहाँ तक मंदिर में रहने वाली अन्य सभी कुंवारी कन्याओं का प्रश्न है, अलेक्जेंड्रिया के संत सिरिल और नाइसा के संत ग्रेगरी की गवाही के अनुसार, उनके लिए चर्च और वेदी के बीच प्रार्थना के लिए एक स्थान निर्धारित किया गया था[8063] । इन कुंवारी कन्याओं में से किसी को भी किसी भी तरह से वेदी के पास आने की अनुमति नहीं थी, क्योंकि यह मुख्य पुरोहितों द्वारा उन्हें सख्त मनाही थी; जहाँ तक परम पवित्र कुँवारी का प्रश्न है, उनकी प्रस्तुति के समय से ही, उन्हें किसी भी घड़ी दूसरे पर्दे के पीछे के भीतरी पवित्र स्थान में प्रवेश करने और वहाँ प्रार्थना करने से मना नहीं किया गया था। यह महापुजारी द्वारा अनुमत था: ईश्वर की एक रहस्यमय प्रेरणा से, जिसके बारे में संत थियोफलिक्ट इस प्रकार कहते हैं:

[8061] ये पंद्रह सीढ़ियाँ परम पवित्र स्थान के प्रवेश द्वार पर स्थित थीं, जिसमें पुरोहितों और महापुरोहित के सिवा किसी को प्रवेश की अनुमति नहीं थी। जब पुरोहित परम पवित्र स्थान में चढ़ते थे, तो वे प्रत्येक सीढ़ी पर एक भजन गाते थे; जैसे-जैसे वे एक सीढ़ी से दूसरी सीढ़ी पर जाते, वे कुल 16 भजन गाते थे; इसलिए इन भजनों को 'सीढ़ियों के गीत' या 'सीढ़ी भजन' कहा जाता है। ये भजन 119–133 हैं (भज. 119:1–7, 133:1–3)।

[8062] परम पवित्र स्थान मंदिर का सबसे महत्वपूर्ण और सबसे पवित्र हिस्सा था। केवल महापुजारी को ही उसमें प्रवेश करने की अनुमति थी, और वह भी साल में केवल एक बार।

[8063] अर्थात्, पुरोहितों का आँगन, जहाँ बलिदान चढ़ाए जाते थे और ईश्वर को समर्पित लोगों के लिए आवास थे, और पवित्र स्थान।

– महापुजारी, उस क्षण परमेश्वर की आत्मा से भरकर, यह महसूस कर गए कि यह कन्या दिव्य अनुग्रह का पात्र थी और वह हर समय परमेश्वर के साक्षात दर्शन के लिए उनसे अधिक योग्य थी। पवित्र संदूक के संबंध में व्यवस्थाविवरणी में जो लिखा था, उसे याद करते हुए, अर्थात् कि इसे परम पवित्र स्थान में रखा जाना था, उन्हें तुरंत एहसास हुआ कि इस कुंवारी के बारे में भी इसकी भविष्यवाणी की गई थी; बिना किसी संदेह या देरी के, उन्होंने व्यवस्था का उल्लंघन करते हुए, उन्हें परम पवित्र स्थान में लाने का साहस किया।

जैसा कि धन्य जेरोम कहते हैं, धर्मी माता-पिता योआकिम और अन्ना ने, अपनी संतान को स्वर्गीय पिता की इच्छा के हवाले कर, परमेश्वर को भेंटें—बलिदान और होमबलि—अर्पित कीं, और महायाजक तथा याजकों की पूरी मंडली का आशीर्वाद प्राप्त कर, अपने सभी रिश्तेदारों के साथ लौट आए, घर लौटे और वहाँ परमेश्वर का धन्यवाद करते हुए और आनंद मनाते हुए एक भोज किया। जहाँ तक परम धन्य कुँवारी का प्रश्न है, प्रभु के भवन में उनके जीवन की शुरुआत से ही, उन्हें युवा कन्याओं के आवास में रखा गया था; क्योंकि यरूशलेम में स्थित मंदिर, जिसे सुलैमान ने बनवाया था और बाद में जेरूब्बाबेल द्वारा नष्ट और पुनर्निर्मित किया गया था[8064] , में कई आवासीय कक्ष थे, जैसा कि प्राचीन यहूदी इतिहासकार जोसेफस लिखते हैं[8065] । बाहर, मंदिर की दीवारों से जुड़ी हुई, तीस पत्थर की इमारतें थीं, जो एक-दूसरे से अलग, विशाल और बहुत सुंदर थीं; कुछ पर और इमारतें बनी थीं, और कुछ पर और भी, ताकि उनकी कुल संख्या नब्बे हो गई, और वे रहने की हर सुविधा से सुसज्जित थीं। उनकी ऊँचाई मंदिर के बराबर थी; वे, मानो, बाहरी तरफ से उसकी दीवारों को सहारा देने वाले स्तंभ थे। इन भवनों के भीतर विभिन्न लोगों के लिए आवास थे; कुंवारी, जो कुछ समय के लिए ईश्वर की सेवा के लिए समर्पित थीं, अलग रहती थीं; विधवाएं, जिन्होंने मृत्यु तक अपनी पवित्रता बनाए रखने का ईश्वर से व्रत लिया था, जैसे कि भविष्यवक्ता अन्ना, फानूएल की पुत्री, अलग रहती थीं; अलग-अलग निवास करते थे नाज़ीरीत नामक पुरुष[8066] , जो भिक्षुओं की तरह ब्रह्मचारी जीवन जीते थे। ये सभी लोग मंदिर में प्रभु की सेवा करते थे और मंदिर की आय से उनका भरण-पोषण होता था। शेष भवनों को उन यात्रियों और आगंतुकों के लिए आरक्षित किया गया था जो यरूशलेम में पूजा करने के लिए दूर-दूर से आते थे।

तीन वर्षीय कन्या, परम पवित्र कुंवारी मरियम, जैसा कि पहले कहा गया है, युवा लड़कियों के क्वार्टरों में रखी गई थी, जहाँ उनकी देखभाल बड़ी और लेखन तथा सिलाई में निपुण लड़कियों द्वारा की जाती थी, ताकि ईश्वर की माता शिशु अवस्था से ही लेखन और सिलाई दोनों सीख सकें। उनके पवित्र माता-पिता, योआकिम और अन्ना, अक्सर उनसे मिलने आते थे; एक माँ के रूप में अन्ना विशेष रूप से अपनी बेटी से मिलने और उसे सिखाने के लिए आती थीं। संत एम्ब्रोस और इतिहासकार जॉर्ज की गवाही के अनुसार, कुँवारी मरियम ने जल्द ही हिब्रू पुराने नियम के धर्मग्रंथों में पूर्ण महारत हासिल कर ली – और केवल धर्मग्रंथ ही नहीं, बल्कि वह सुई के काम में भी निपुण हो गईं, जैसा कि संत एपिफेनियस कहते हैं:

– वह अपनी बौद्धिक क्षमता और सीखने के प्रति प्रेम के लिए विशिष्ट थीं; उन्होंने न केवल पवित्र धर्मग्रंथों का अध्ययन किया, बल्कि ऊन और सन कातने और रेशम से सिलाई करने का अभ्यास भी किया। उन्होंने अपनी सूझबूझ से सभी को चकित कर दिया; उन्होंने मुख्य रूप से उन कार्यों को अपनाया जो मंदिर में पुरोहितों की सेवा में आवश्यक हो सकते थे; उन्होंने इन शिल्पों में इतनी महारत हासिल कर ली कि बाद में वह अपने पुत्र की देखभाल करते हुए भी अपने लिए जीविकोपार्जन करने में सक्षम थीं; उन्होंने अपने हाथों से प्रभु यीशु के लिए एक चोगा बनाया, जो सिले वाला नहीं, बल्कि पूरी तरह से बुना हुआ था।

सबसे पवित्र कुँवारी (उसी एपिफानियस के अनुसार), अन्य कन्याओं की तरह, मंदिर से साधारण भोजन प्राप्त करती थीं; लेकिन इसे गरीब और यात्रियों द्वारा खा लिया जाता था, क्योंकि, जैसा कि किलीसिया गाती है, वह स्वर्ग के रोटी

[8064] सोलोमन का मंदिर बेबीलोन के राजा नबूकदनेसर द्वारा नष्ट कर दिया गया था। पहले मंदिर के विनाश के 62 साल बाद जेरुब्बाबेल द्वारा एक नया मंदिर बनाया गया।

[8065] वह पहली शताब्दी ईस्वी में रहते थे।

[8066] नज़ीरिति वे लोग थे जिन्होंने ईश्वर से विवाह न करने, शराब और सभी मादक पेयों से परहेज़ करने, और अपने बाल न काटने की शपथ ली थी। आमतौर पर, नज़ीर का व्रत एक निश्चित अवधि के लिए होता था और विभिन्न कारणों से स्वेच्छा से लिया जाता था; लेकिन कभी-कभी माता-पिता अपने बच्चों की ओर से नज़ीर का व्रत लेते थे: विशेष रूप से, जब उनके अपने बच्चे नहीं होते थे और वे उन्हें ईश्वर से प्राप्त करना चाहते थे।

पर जीवित रहीं। संत जर्मैनस उनके बारे में कहते हैं कि वह आमतौर पर परम पवित्र स्थान में निवास करती थीं, और एक देवदूत से मीठा भोजन ग्रहण करती थीं; और क्रीट के संत एंड्रयू[8067] इस प्रकार कहते हैं:

'पवित्रतम स्थान में, एक महल की तरह, उन्होंने असाधारण और अक्षय भोजन प्राप्त किया।'

परंपरा आगे बताती है कि परम पवित्र कुँवारी अक्सर मंदिर में कुँवारियों के सामान्य आवास के बजाय, दूसरे पर्दे के पार स्थित भीतरी मंडप में निवास करती थीं, जिसे 'पवित्रतम कक्ष' कहा जाता था; क्योंकि यद्यपि उनके लिए उन आवासों में एक निवास स्थान तैयार किया गया था, फिर भी उन्हें प्रार्थना करने के लिए पवित्रतम कक्ष में प्रवेश करने से नहीं रोका गया था। परिपक्वता प्राप्त करने पर, उन्होंने—जो बचपन से ही पवित्र धर्मग्रंथों का अध्ययन कर चुकी थीं और लगन से सिलाई का अभ्यास कर चुकी थीं—प्रार्थना के लिए स्वयं को और भी अधिक समर्पित कर दिया, और उनकी आदत थी कि वे पूरी रातें और दिन का अधिकांश समय प्रार्थना में बिताती थीं। वह प्रार्थना करने के लिए परम पवित्र स्थान में प्रवेश करती थी, लेकिन सुई का काम करने के लिए अपने निवास में लौट आती थी, क्योंकि, कानून के अनुसार, परम पवित्र स्थान में कुछ भी करना या कुछ भी लाना निषिद्ध था। और उन्होंने अपना अधिकांश जीवन मंदिर में, दूसरे पर्दे के पीछे, भीतरी पवित्र स्थल में, प्रार्थना में बिताया, न कि अपने लिए निर्धारित निवास में सुई का काम करने में। इसीलिए चर्च के सभी शिक्षक सर्वसम्मति से कहते हैं कि अति पवित्र कुँवारी ने बारह वर्ष की आयु तक अपना संपूर्ण जीवन पवित्रतम कक्ष में बिताया, क्योंकि वह शायद ही कभी उसे अपने निवास स्थान में जाने के लिए छोड़ती थीं।

जहाँ तक उनके शुरुआती वर्षों में उनका जीवन कैसा था, इसका जेरोम ने इस प्रकार वर्णन किया है:

– धन्य कुँवारी मरियम, अपने बचपन और शिशुकाल में भी, जब वह अपनी उम्र की अन्य कन्याओं के साथ मंदिर में थीं, एक सख्त दिनचर्या के अनुसार अपना जीवन जीती थीं: सुबह से दिन के तीसरे घंटे तक वह प्रार्थना में खड़ी रहती थीं; तीसरे घंटे से नौवें घंटे तक, वह सिलाई का काम करती थीं या किताबें पढ़ती थीं; नौवें घंटे से, वह अपनी प्रार्थना फिर से शुरू कर देती थीं और तब तक नहीं रुकती थीं जब तक कि देवदूत उनके सामने प्रकट न हो जाएँ, जिनके हाथों से वह आमतौर पर अपना भोजन ग्रहण करती थीं। इस प्रकार वह ईश्वर के प्रति प्रेम में दिन-ब-दिन बढ़ती गईं[8068] ।

बचपन में उनका जीवन ऐसा ही था, जब वे अपनी उम्र की अन्य कन्याओं के साथ रहती थीं। जैसे-जैसे वे दिन-प्रतिदिन आत्मा में बढ़ती और बलवती होती गईं, उन्होंने तपस्या के कार्यों में भी स्वयं को निपुण बनाया और प्रार्थना तथा लगन में बल प्राप्त किया, और एक से बढ़कर एक श्रेष्ठ होती गईं, जब तक कि सर्वोच्च की शक्ति उन पर अवतरित नहीं हुई। जहाँ तक उस स्वर्गदूत का प्रश्न है जो उनके सामने प्रकट हुआ और उन्हें भोजन लाया, इसको महापुजारी जकरियाह ने अपनी आँखों से देखा था, जैसा कि निकोमेडिया के संत ग्रेगरी द्वारा वर्णित है, जो कहते हैं:

'जैसे-जैसे वह दिन-प्रतिदिन बड़ी होती गईं, वर्ष बीतने के साथ पवित्र आत्मा के वरदान उनके भीतर बढ़ते गए, और वह स्वर्गदूतों के साथ संवाद में रहीं।' ज़कारियाह को इसका एहसास हुआ; क्योंकि जब वह पुरोहित के रीति-रिवाज़ के अनुसार पवित्रस्थान में था, तो उसने असाधारण रूप वाले किसी व्यक्ति को कुँवारी से बात करते और उसे भोजन देते देखा। यह एक देवदूत था जो प्रकट हुआ था; और जकरियाह चकित रह गए, और मन ही मन विचार करने लगे: यह नई और असाधारण दृश्य क्या है? रूप में वह एक देवदूत जैसा है, और पवित्र कुँवारी से बात करता है; अदेह होकर भी, वह ऐसा भोजन लाता है जो देह को पोषण देता है; स्वभाव से अदृव्य होते हुए भी, वह कुँवारी को एक मूर्त टोकरी प्रदान करता है। यहाँ, दैवीय प्रकटियाँ केवल पुरोहितों को होती हैं, और वह भी अक्सर नहीं; लेकिन एक महिला के सामने—और वास्तव में इतनी युवा कन्या के सामने—एक देवदूत का प्रकट होना, जैसा कि अब स्पष्ट है, अत्यंत असाधारण है। अगर वह विवाहित महिलाओं में से एक होती, और बाँझपन की पीड़ा से ग्रस्त होकर, एक संतान के वरदान के लिए प्रार्थना कर रही होती, जैसे कभी हन्नाह ने प्रार्थना की थी, तो मैं जो दृश्य देख रहा हूँ, उससे हैरान नहीं होता; लेकिन कुँवारी यह नहीं माँगती[8069] ; फिर भी, जैसा कि मैं अब देख रहा हूँ, स्वर्गदूत हमेशा उसके सामने प्रकट होता है, और इसीलिए मैं और भी अधिक आश्चर्य, भय और हैरानी से भर गया हूँ: इसका क्या परिणाम होगा? स्वर्गदूत क्या शुभ समाचार लाता है? और वह जो भोजन लाता है, उसकी प्रकृति क्या है? यह किस कोष से लिया गया है? और इसे किसने तैयार किया है? यह रोटी किसके हाथ से बनी है? क्योंकि स्वर्गदूतों का स्वभाव शरीर की जरूरतों का ध्यान रखना नहीं है; भले ही कई लोग उनसे पोषित हुए

[8067] एक व्यक्ति जो 8वीं शताब्दी में रहता था

[8068] इस्राएलियों दिन के घंटों की गिनती सूर्योदय से शुरू करते थे, इसलिए तीसरा घंटा हमारी सुबह 9 बजे के बराबर होता था; छठे घंटे का अंत हमारे दोपहर के समय के बराबर होता था; और नौवें घंटे से दिन समाप्त होने लगता था।

[8069] अर्थात्, उसके गर्भ में एक संतान प्रदान करने के संबंध में।

हैं, फरि भी यह भोजन मानव हाथों द्वारा तैयार कयिा गया था। दानयिेल की सेवा करने वाला स्वर्गदूत, यद्यपि वह सर्वोच्च की शक्ति से, जो आज्ञा उसे कसिी और के माध्यम से नहीं बल्कि स्वयं परदी गई थी, उसे पूरा कर सकता था, फरि भी उसने इस उद्देश्य के लिए पात्रों के साथ हबक्कूक को भेजा, ताकि जिसे भोजन कराया जा रहा था वह स्वर्गदूत के असाधारण दर्शन और अस्वाभावकि भोजन से डर न जाए। यहाँ, हालाँकि, स्वर्गदूत स्वयं कुँवारी के पास आते हैं—एक रहस्य से भरा मामला, जसिके बारे में मैं चकति हूँ; अपने शशिुकाल में ही उन्हें ऐसे उपहारों से सम्मानति कयिा गया कि अदेह प्राणी उनकी सेवा करते हैं। यह क्या है? क्या भवषि्यवक्ताओं की भवषि्यवाणयिाँ उन्हीं में पूरी नहीं होंगी? क्या वे हमारी आशा का वषिय नहीं हैं? क्या वही नहीं है, जो हमारे वंश को बचाने के लिए आने वाले हैं, जन्हिोंने मानव स्वभाव को धारण कयिा? क्योंकि इस रहस्य की भवषि्यवाणी बहुत पहले की गई थी, और वचन उस एक की खोज में था जो इस रहस्य की सेवा कर सके। और नश्चिय ही इस रहस्य की सेवा के लिए इस कुँवारी के सवि और कसिी को नहीं चुना गया है, जसि पर मैं नहिार रहा हूँ। हे इस्राएल के घर, तू धन्य है, जसिसे ऐसा बीज उत्पन्न हुआ है! हे येशै की जड़, तू धन्य है, जसिसे यह टहनी नकिली है, जो संसार में उद्धार का फूल लाने के लिए नयित है! मैं भी धन्य हूँ, जो ऐसी दृष्टि में आनंदति होता हूँ और इस कुँवारी को वचन की वधू बनने के लिए तैयार करता हूँ।

ये नकिोमेडयिा के जॉर्ज के शब्द हैं। जेरोम भी इसी तरह की बात कहते हैं:

'देवदूत हर दनि उनसे मलिने आते थे, और अगर कोई मुझसे पूछे: कि कैसे परम पवत्रि कुँवारी ने अपना यौवन वहाँ व्यतीत कयिा, तो मैं उत्तर दूँगा: यह केवल स्वयं परमेश्वर, और उनके सर्वदा उपस्थति रक्षक महादूत गब्रयिल, तथा उन अन्य स्वर्गदूतों को ही ज्ञात है जो अक्सर उनके पास आते थे और उनसे प्रेमपूर्वक वार्तालाप करते थे।

पवत्रितम स्थान में स्वर्गदूतों के साथ इस प्रकार अपना समय बतिाते हुए, अत्यंत पवत्रि कुँवारी ने स्वर्गदूतों जैसी पवत्रिता और नर्दिोष कुँवारीपन में हमेशा के लिए जीने की इच्छा की। पवत्रि शकि्षकों—नसि़ा के ग्रेगरी, जेरोम और अन्य—की गवाही के अनुसार, यह कुंवारी पहली थीं जन्हिोंने अपनी कुंवारी अवस्था को ईश्वर को वचनबद्ध कयिा, क्योंकि पुराने नयिम में कुंवारी का ववािह न करना असामान्य था, क्योंकि कुंवारी अवस्था की तुलना में ववािह को अधकि सम्मान दयिा जाता था[8070] । तथापि, परम पवत्रि कुँवारी दुनयिा में पहली थीं जन्हिोंने ववािह के बजाय कुँवारीपन को प्राथमकिता दी और, स्वयं को ईश्वर से सगाई करके, दनि-रात अपनी पवत्रि कुँवारीपन से उनकी सेवा की। परम पवत्रि आत्मा ने, परमपति ईश्वर की इच्छा से, उनमें ईश्वर वचन के लिए एक नविास स्थान तैयार कयिा। महमिा और धन्यवाद परम पवत्रि, एकसार और अवभिाज्य त्रमिूर्ति को हो; और हमारी परम पवत्रि माता, परमेश्वर की माता, सदा कुंवारी मरयिम को, सभी पीढ़यिों से युगानुयुग सम्मान और स्तुति मिले। आमीन[8071] ।

ट्रोपारयिन, स्वर 4:

आज, ईश्वर की कृपा की पूर्वसूचना और मानव जाति के उद्धार की घोषणा के रूप में, कुँवारी स्पष्ट रूप से ईश्वर के मंदरि में प्रकट होती हैं और सभी को मसीह की घोषणा करती हैं। आइए हम भी उनसे ऊँचे स्वर में पुकारें: हे सृष्टकिर्ता की योजना की पूर्ति, आनन्दति हो।

[8070] उस समय, हर कोई संतान चाहता था ताकि उनकी स्मृति पृथ्वी पर अधकि समय तक बनी रहे और ताकि, यदि स्वयं नहीं तो उनके वंशज प्रत्याशति मसीहा-उद्धारकर्ता के राज्य के आशीर्वाद में भागीदार हो सकें।

[8071] यरूशलेम के मंदरि में परमेश्वर की परम पवत्रि माता के समर्पण की स्मृति में, चर्च ने 21 नवंबर को एक पर्व दविस स्थापति कयिा। इस पर्व के संदर्भ चौथी शताब्दी जतिने पुराने पाए जाते हैं – फलिस्तीन के ईसाइयों की परंपराओं में, जो आज भी माँ के समर्पण की प्राचीन चर्च की ओर इशारा करते हैं और इस चर्च के नर्माण का श्रेय संत रानी हेलेना को देते हैं। 4वीं शताब्दी में, इस पर्व का उल्लेख नाइसा के ग्रेगरी की रचनाओं में भी मलिता है। 8वीं शताब्दी में, जैसा कि ऊपर उल्लेख कयिा गया है, कॉन्स्टेंटनिोपल के पैट्रआर्क जर्मनस और तारासयिस ने इस दनि उपदेश दयि।

कॉन्टाकयिन, स्वर 4:

उद्धारकर्ता का परम पवत्रि मंदरि, अनमोल महल और कन्या, परमेश्वर की महमिा का पवत्रि खजाना, आज प्रभु के भवन में लाई गई है, अपने साथ दव्यि आत्मा में नहिति अनुग्रह लाती है; क्योंकि परमेश्वर के स्वर्गदूत गाते हैं: 'यह स्वर्गीय नविास-स्थान है।'

5 दसिंबर

२२ नवंबर (पुराने कैलेंडर के अनुसार)

उसी दनि, ट्वेर के पवत्रि और धर्मी राजकुमार माइकल का स्मरणोत्सव

पवत्रि शहीद ककिलियिा का कष्टकाल और उनके साथ पवत्रि शहीदों वलेरयिन, तवियिर्तआि और मैक्समिस का कष्टकाल

22 नवंबर को स्मरणोत्सव

पवत्रि कुंवारी ककिलियिा[8072] का जन्म रोम में प्रतष्ठिति और धनी माता-पतिा के यहाँ हुआ था। सुसमाचार का उपदेश सुनने के बाद, वह मसीह में वश्विास करने लगी और, उनके प्रतहिार्दकि प्रेम से जलते हुए, उसने कभी शादी न करने और अपने नर्दिोष वर – मसीह परमेश्वर – के लिए अपनी कुँवारी अवस्था को बनाए रखने का संकल्प लयिा। लेकनि उसके माता-पतिा ने उसकी मर्जी के खलिाफ, उसे वैलेरयिन नामक एक कुलीन युवा मूर्तपिूजक से सगाई कर दी, और उसे कीमती कपड़े और सोने के आभूषण पहनने के लिए मजबूर करने लगे। फरि भी, अपने कीमती वस्त्रों के नीचे उसने एक खुरदरी बाल वाली कमीज़ पहनी थी, और अपने हृदय में वह मसीह को बसाए हुए थी; वह हर समय उनसे वनिम्रता से प्रार्थना करती थी, कि वह स्वयं, जैसा उन्हें उचति लगे, उसे शुद्ध, नर्दिोष और ववािह के बंधनों से मुक्त रखें। जब ववािह का दनि आया और ववािह समारोह शुरू हुए, तो उसने अपने पश्चात्तापी हृदय की गहराई से आह भरते हुए, गुप्त रूप से प्रभु से पुकारा: *'मेरा हृदय तेरी आज्ञाओं में नर्दिोष रहे, ताकि मैं लज्जति न होऊँ'* (भजन संहति 118:80)।

और आँसुओं के साथ, उसने वनिती की कि वह अपनी दूत को उसकी कुँवारीपन की रक्षा के लिए भेजे। जैसे ही रात हुई, नववविाहतिों को वधू कक्ष में ले जाया गया, और ककिलियिा ने अपने दूल्हे से कहा:

'मेरे प्रयि युवक, मैं तुम्हें एक रहस्य बताना चाहती हूँ: मेरी कुँवारीपन का एक रक्षक है जसिे तुम नहीं देख सकते—परमेश्वर का एक स्वर्गदूत—और यदि तुम मुझे छूओगे, तो वह तुम्हें तुरंत मार डालेगा, क्योंकि वह यहाँ कसिी भी हसिा से मेरी रक्षा करने के लिए तैयार खड़ा है।'

यह सुनकर वैलेरयिन भयभीत हो गया, क्योंकि वास्तव में ककिलियिा के बगल में एक अदृश्य देवदूत था, जसिे स्वर्ग से भेजा गया था ताकि वह मसीह की वधू को एक मूर्तपिूजक युवक के साथ मलिन से बचा सके। उसने ककिलियिा से वनिती करनी शुरू कर दी कि वह उसे वह देवदूत दखिाए। युवती ने उत्तर दयिा:

'तुम एक ऐसे मनुष्य हो जो सच्चे परमेश्वर को नहीं जानते, और इसलिए तुम परमेश्वर के स्वर्गदूत को तब तक नहीं देख सकते जब तक कि तुम अपने मूर्तपिूजकवाद की अशुद्धता से स्वयं को शुद्ध नहीं कर लेते।'

वैलेरयिन ने पूछा, 'लेकनि मैं कैसे शुद्ध हो सकता हूँ?'

उसने उत्तर दयिा, 'एक वृद्ध हैं, जनिका नाम उरवान है, जो एक ईसाई बशिप हैं: वे बपतस्मिा के द्वारा मूर्तपिूजकों को शुद्ध कर सकते हैं और उन्हें स्वर्गदूतों को देखने में सक्षम बना सकते हैं।' यदि तुम शुद्ध होना चाहते हो और परमेश्वर के स्वर्गदूत को देखना चाहते हो, तो उसके पास जाओ और जो कुछ भी तुमने यहाँ मुझसे सुना है, वह सब उसे बता दो; और जब वह तुम्हें शुद्ध कर दे, तो यहाँ वापस आओ, और तुम स्वर्गदूत को देखोगे और उससे जो कुछ भी तुम चाहोगे, वह प्राप्त करोगे।

'लेकनि मुझे यह वृद्ध कहाँ मलिेगा?' वैलेरयिन ने पूछा।

[8072] कइिकलियिा नाम रोमन नाम सेसलियिा का एक रूपांतर है, जसिका अर्थ है *'अंधा'।*

'जाओ,' ककिलियिा ने उत्तर दयिा, 'एपयिन मार्ग[8073] के साथ, और जब रास्ते में भखिारयिों से मलिो, तो उनसे कहना: "ककिलियिा, मुझसे वृद्ध उर्वान तक एक रहस्य पहुँचाना चाहती है, इसलएि उसने मुझे तुम्हारे पास भेजा है ताकि तुम मुझे उनके पास ले जाओ।"'

वेलेरयिन चल पड़ा और एपयिन मार्ग पर, ठीक वैसे ही जैसे उसकी मंगेतर ने नर्दिेश दयिा था, वह कुछ भखिारयिों से मलिा जो संत ककिलियिा को अच्छी तरह जानते थे, क्योंकि वह अक्सर उन्हें दान देती थीं: उन्होंने उसे बशिप उरवान के पास ले जाया, जो कब्रों, गुफाओं और खंडहर, जर्जर चर्चों के बीच अपने उत्पीड़क से छपि रहे थे। जब वेलेरयिन ने संत ककिलियिा के शब्द बशिप को सुनाए, तो बशिप अत्यंत प्रसन्न हुए और घुटनों के बल गरिकर तथा स्वर्ग की ओर अपने हाथ उठाकर, आँसुओं के साथ कहा:

'देखो प्रभु यीशु, वह आपकी क्या सेवकिा है, जो एक मधुमक्खी की तरह मण्डली के लिए मधु लाई है! जसि युवक को उसने एक सहि की तरह स्वीकार कयिा था, उसे उसने मेरे पास एक नम्र मेमने की तरह भेजा है, क्योंकि यदि उसने उसकी बातों पर वशि्वास न कयिा होता, तो वह मेरे पास न आता।' इसलिए, हे प्रभु, उसके हृदय को अंत तक सत्य के ज्ञान के लिए खोल दे—ताकि वह तुझे, सच्चे परमेश्वर को जान जाए, और शैतान और उसके कामों का परत्यिाग करे।

जब वह इस प्रकार प्रार्थना कर रहा था, तो अचानक एक वृद्ध व्यक्ति प्रकट हुआ, जो देखने में सम्माननीय था, बर्फ़ जैसे सफ़ेद वस्त्र पहने हुए था और उसके हाथ में एक पुस्तक थी; वह वैलेरयिन के सामने खड़ा हुआ, और पढ़ने के लिए पुस्तक खोली। वैलेरयिन, इस दृश्य से भयभीत होकर, ज़मीन पर गरि पड़ा, लेकनि जो वृद्ध व्यक्ति प्रकट हुआ था, उसने उसे उठाया और कहा:

'मेरे पुत्र, इस पुस्तक में जो लखिा है उसे पढ़ो, और तुम शुद्ध होने तथा उस स्वर्गदूत को देखने के योग्य ठहरेगा, जसिे तुम्हारी मंगेतर ने तुम्हें दखिाने का वादा कयिा था।'

वेलेरयिन ने पुस्तक में देखा और सोने के अक्षरों में लखिे नम्निलखिति शब्दों को पढ़ा: *'एक प्रभु, एक वशि्वास, एक बपतस्मिा, सभी का एक परमेश्वर और पति, जो सब के ऊपर है, और सब में से होकर, और हम में से प्रत्येक में है'* (इफसियिों 4:5-6)।

जब वेलेरयिन ने ये शब्द पढ़ लिए, तो प्रकट हुआ वृद्ध उससे पूछा:

'क्या तुम वशि्वास करते हो, मेरे बच्चे, कि यह सत्य है, या क्या तुम्हें अभी भी संदेह है?'

वेलेरयिन ने ज़ोर से उत्तर दयिा:

'सचमुच, इन शब्दों से अधकि नशि्चति कुछ भी नहीं है।'

और जो प्रकट हुआ था वह तुरंत ही गायब हो गया, जबकि बशिप उरवान ने वैलेरयिन द्वारा पढ़े गए शब्दों से आरंभ करते हुए, वैलेरयिन को पर्याप्त रूप से उपदेश दयिा और उसे बपतस्मिा देकर उसकी पवत्रि मंगेतर के पास वापस भेज दयिा।

वेलेरयिन, अपने आवास में लौटकर, ने संत ककिलियिा को उनके कक्ष में प्रार्थना करते हुए पाया, और उनके पास उन्होंने परमेश्वर के स्वर्गदूत को खड़ा देखा, जो महान प्रकाश और सुंदरता से दमक रहे थे; स्वर्गदूत के हाथों में लाल गुलाबों और सफेद कमलों से बुने हुए दो मालाएँ थीं, जो एक असाधारण सुगंध बखिेर रही थीं; उसने एक माला युवती के सरि पर और दूसरी वैलेरयिन के सरि पर रखते हुए कहा:

'इन मालाओं को रखो, तुम दोनों हृदय से शुद्ध और शरीर से नर्दिोष रहो – मैं उन्हें तुम्हारे लिए स्वर्ग से लाया हूँ, और उनमें इतनी अद्भुत शक्ति है कि वे कभी मुरझाएँगी नहीं और न ही अपनी सुगंध खोएँगी, और तुम्हारे जैसे शुद्धता के रक्षक के अलावा कोई भी उन्हें देख नहीं सकता।' 'तुम, वेलेरयिन, अपनी मंगेतर के पवत्रिता बनाए रखने के नर्णिय से सहमत हुए हो: इसके लिए, ईश्वर ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है, ताकि तुम उससे जो कुछ भी मांगोगे, वह तुम्हें प्राप्त हो।'

'इस दुनयिा में मेरे भाई तभिूर्तयिा से बढ़कर मुझे कोई प्रयि नहीं है,' देवदूत को प्रणाम करते हुए वेलेरयिन ने उत्तर दयिा। 'इसलिए, मैं प्रभु से प्रार्थना करता हूँ कि वह मेरे भाई को वनिाश और शैतान की शक्ति से बचाए, जैसे उन्होंने मुझे बचाया; कि वह उसे अपनी ओर मोड़े; और कि वह हम दोनों को अपने पवत्रि नाम का प्रचार करने के कार्य में सदि्ध बनाए।'

[8073] एपयिन मार्ग रोम से दक्षणिी इटली तक जाता था; इसका नाम इसके नर्माता, चौथी शताब्दी ईसा पूर्व के एक अंधे एपयिस क्लॉडयिस के नाम पर रखा गया था; इसके अवशेष आज भी मौजूद हैं।

देवदूत ने प्रसन्न मुख से उससे कहा:

'तुम्हारी याचना परमेश्वर को भाती है, और वह तुम्हारे हृदय की इच्छा पूरी करेगा: वह तुम्हारे भाई तिमोथियुस को तुम्हारे द्वारा बचाएगा, जैसे उसने तुम्हें उस कन्या के द्वारा बचाया था, और तुम दोनों साथ में शहीद होने का कार्य करोगे।'

यह कहकर, स्वर्गदूत अदृश्य हो गया, जबकि वेलेरियन और संत कैसिलियुस मसीह में आनंदित हुए और उन्होंने अपना समय धर्मोपयोगी वार्तालाप में बिताया।

उस समय, एक दिन टिबुर्तियुस उनके पास आए और कहा:

'मैं चकित हूँ: मैंने यहाँ गुलाब और कमल की खुशबू सूंघी है, लेकिन यह खुशबू कहाँ से आ रही है, जिसने मुझे इतना प्रसन्न किया है कि मुझे ऐसा लगा जैसे मेरा पूरा अस्तित्व ही नवीनीकृत हो गया हो?'

'प्रिय भाई, आपने वास्तव में इस सुगंध का आनंद लिया है,' वेलेरियन ने टिबुर्तुस से कहा, 'क्योंकि मैंने आपके लिए ईश्वर से प्रार्थना की थी, कि आपको भी एक न मुरझाने वाला मुकुट प्राप्त हो और आप उस पर प्रेम करें, जिनका रक्त गुलाब के रंग जैसा है, और जिनका शरीर सफेद कमल के फूलों जैसा है।'

टिबुर्तियुस ने आह भरते हुए कहा, "क्या मैं यह सपना देख रहा हूँ, या आप सच कह रहे हैं?"

'अब तक तो हम सचमुच एक सपने में ही जी रहे थे,' वैलेरियन ने उत्तर दिया, 'हम झूठे देवताओं और अशुद्ध राक्षसों की पूजा करते थे, लेकिन अब हम परमेश्वर के सत्य और अनुग्रह में जीते हैं।'

'यह आपको किसने सिखाया?' टिबुरतीयस ने पूछा।

'मुझे ईश्वर के एक स्वर्गदूत ने सिखाया है,' वैलेरियन ने उत्तर दिया। 'और तुम भी उसे देख पाओगे यदि तुम मूर्तिपूजा की अशुद्धि से स्वयं को शुद्ध कर लो।'

टिबुर्तियुस उस देवदूत को देखना चाहता था, लेकिन वैलेरियन ने कहा कि पहले एक सच्चे ईश्वर में विश्वास करना और पवित्र बपतिस्मा ग्रहण करना आवश्यक था; तभी देवदूत के प्रकट होने की प्रतीक्षा करना संभव होगा, और संत कैसिलियुस ने स्वयं यह जिम्मेदारी ली कि वे तिबुर्तियुस को ईसाई धर्म के सत्यों की शिक्षा दें, और उन्होंने एक ओर तो मूर्तिपूजक देवताओं की मिथ्या और निर्जीव मूर्तियों की शक्तिहीनता को साबित किया, और दूसरी ओर, सच्चे ईश्वर, हमारे प्रभु यीशु मसीह की शक्ति और सर्वशक्तिमानता को सिद्ध किया। और पवित्र कन्या के ईश्वरीय प्रवचनों का तिबुर्तियुस पर इतना प्रभाव पड़ा कि उसने पूरी तरह से मूर्तिपूजा का त्याग कर दिया और एक दिन कैसिलियुस से कहा:

'मुझे विश्वास है कि ईसाई ईश्वर के सिवा कोई दूसरा ईश्वर नहीं है, और अब से मैं केवल उसी की सेवा करना चाहता हूँ।'

यह सुनकर, कैसिलियुस अतिशय प्रसन्न हुई और उसने तिबुर्तियुस को और भी अधिक उत्साह के साथ उपदेश देना शुरू कर दिया, उसे परमेश्वर के पुत्र के अवतार, उसके चमत्कारों, उसकी स्वेच्छा से उठाई गई पीड़ाओं और मानव जाति के प्रति प्रेम में उसकी मृत्यु के बारे में बताया। अपनी ओर से, तिबुर्तियुस का हृदय लगातार प्रभावित हो रहा था, और प्रभु के प्रति उसका प्रेम और भी प्रबल होता गया। उसकी आस्था के उत्साह को देखकर, युवती ने उससे कहा:

'यदि तुम हमारे प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास करते हो, तो अपने भाई के साथ हमारे ईसाई बिशप के पास जाओ और उनसे पवित्र बपतिस्मा ग्रहण करो: तब, अपने पापों से शुद्ध होकर, तुम स्वर्गदूत को देखने के योग्य हो जाओगे।'

टिबुर्तियुस ने अपने भाई की ओर देखते हुए उससे पूछा:

'तुम मुझे किसके पास ले जाना चाहते हो?'

'हम उरवान के पास जाएँगे, जो ईश्वर के पुरुष हैं,' वैलेरियन ने उत्तर दिया। 'वह एक ईसाई बिशप हैं, एक वृद्ध, बुद्धिमान और धर्मी व्यक्ति; उनका चेहरा एक देवदूत जैसा है, और उनके सभी शब्द सत्य हैं।'

'क्या तुम उस उर्वान की बात नहीं कर रहे हो,' तिबुर्तियुस ने अपनी बात जारी रखी, 'जिसके बारे में मैंने सुना है कि उसे दो बार मौत की सज़ा दी गई थी और अब वह कहीं छिपा रहा है, अपनी जान बचाने के लिए भाग रहा है? लेकिन अगर हम उसके पास गए, और अगर उसकी मौत के तलाश में लगे लोग हमें वहाँ पा गए, तो वे निश्चित रूप से हमें भी मार डालेंगे।'

संत कैसिलियुस ने तिबुर्तियुस के प्रश्न का उत्तर दिया। उन्होंने उनसे स्वर्ग में शाश्वत जीवन के बारे में बात करना शुरू किया, जहाँ कुछ भी कभी किसी की शांति भंग नहीं कर सकता, और मसीह के लिए मृत्यु भोगने वाले पवित्र शहीदों के लिए प्रतीक्षारत पुरस्कार के बारे में बताया।

तब तिबुर्तिआ, अपने विश्वास के लिए कष्ट सहने की इच्छा से जलती हुई, ने कहा:

'जो लोग वविेकहीन हैं, वे इस क्षणभंगुर जीवन से प्रेम करें; जहाँ तक मेरी बात है, मैं अनंत जीवन की कामना करता हूँ: मुझे ले चलो, भाई, बशिप के पास, और उन्हें मुझमें पवत्रिता लाने दो और मुझे अनंत जीवन का सहभागी बनाने दो!'

वेलेरयिन अपने भाई को बशिप उरवान के पास ले गया, जन्हिें उसने सब कुछ बता दयिा। तवुिर्त कि धर्म परविर्तन से प्रसन्न होकर, उरवान ने उसे प्रेम से स्वीकार कयिा, उसका बपतस्मिा दयिा, और उसे सात दनिों तक अपने पास रखा जब तक कि उसने उसे पवत्रि वशि्वास के सभी रहस्यों में पूरी तरह से शकि्षति नहीं कर दयिा।

बपतस्मिा के बाद, तवुिर्तसि को इतना अनुग्रह मलिा कि वह पवत्रि स्वर्गदूतों को देखता था, उनसे बात करता था, और ईश्वर से जो कुछ भी वह माँगता था, वह उसे प्राप्त करता था। अपने भाई के साथ, उन्होंने कई चमत्कार कएि, और बीमारों को ठीक कयिा। उन्होंने अपनी संपत्ति बेसहारा ईसाइयों, अनाथों और वधिवाओं में बाँट दी; उन्होंने काल-कोठरयिों से कैदयिों को रहिा कराया; और उन्होंने मसीह के लएि पवत्रि शहीदों के शवों को सम्मानपूर्वक दफनाया, जन्हिें उस समय बड़ी संख्या में मारा जा रहा था।

शहर के राज्यपाल, जसिका नाम अल्माच था, जसिने सम्राट के आदेश पर नर्दियता से ईसाइयों का खून बहाया था और उन्हें यातना और मृत्यु के हवाले कयिा था, ने अपने मुखबरिों से यह सब जानकर आदेश दयिा कि तिवुिर्तआि और वलेरयिन को तुरंत पकड़कर उसके सामने पेश कयिा जाए।

उसने उनसे पूछा, 'तुम अपने कुलीन वंश का अपमान क्यों करते हो, और उन लोगों को दफनाते हो जन्हिें उनके अनेक अपराधों के लएि शाही फरमान से मृत्युदंड दयिा गया था, और अपना धन उन लोगों में बाँटते हो जन्हिें हर कोई ठुकराता है? क्या तुम भी उनके जैसे ही भ्रम में रहते हो और उनकी ही तरह बनना चाहते हो?'

सबसे बड़े होने के नाते, टभिुरटस ने उत्तर दयिा, 'काश, ईश्वर हमें अपने उन सेवकों में गनिता, जन्होंने उस चीज़ को अस्वीकार कर दयिा है जो मौजूद प्रतीत होती है लेकनि वास्तव में नहीं है, और उसकी जगह उस चीज़ को पाया है जो मौजूद नहीं प्रतीत होती लेकनि वास्तव में है।'

उसके वरषि्ठ ने पूछा, 'वह क्या है, जो तुम्हारी दृष्टि में मौजूद तो प्रतीत होता है, पर वास्तव में है नहीं? मुझे समझ नहीं आ रहा कि तुम क्या कह रहे हो।'

तवुिर्त ने उसे समझाया कि यह क्षणभंगुर संसार जो कुछ भी रखता है, दखिाता है और लोगों को देने का वादा करता है—जो केवल कुछ ठोस प्रतीत होता है लेकनि वास्तव में कुछ भी नहीं है, क्योंकि यह थोड़े ही समय में नष्ट हो जाता है; जहाँ तक आने वाले जीवन की बात है, इस संसार से जुड़े लोगों की राय में, उसका अस्तत्वि बल्किुल नहीं होगा, क्योंकि वे इसे देख नहीं सकते; फरि भी इसका अस्तत्वि है और यह हमेशा के लएि अपरविर्तति रहेगा, और इसमें धर्मी और वशि्वासयिों को उदार पुरस्कार मलिेगा, जबकि दुष्ट और अवशि्वासी आग और शाश्वत यातनाओं का सामना करेंगे।

राज्यपाल ने उनके साथ एक लंबी बातचीत की और पवत्रि वशि्वास और संसार का त्याग करने पर उनकी धन्य शकि्षा सुनी, लेकनि वह इस शकि्षा से सहमत नहीं हुआ और उसने उन्हें मूर्तपिूजक देवताओं को बलदिान चढ़ाने का आदेश दयिा। जब उन्होंने उसके आदेश का पालन करने से इनकार कर दयिा, तो उसने वेलरयिन को लाठयिों से बुरी तरह पीटने का आदेश दयिा; लेकनि संत यातनाओं के बीच भी प्रसन्न थे, और कहने लगे:

'देखो, वह समय आ गया है जसिकी मैंने अपने पूरे हृदय से लालसा की थी; देखो, मेरा पर्व का दनि; देखो, मेरे लएि आनंद का दनि।'

उस क्षण, उद्घोषक ने पुकारा:

'देवताओं और देवयिों का अपमान मत करो!'

लेकनि वेलेरयिन ने भी अपने आस-पास के लोगों से जोर से पुकारा:

'पुरुषों, रोम के नागरकिों! मेरी पीड़ा तुम्हें सत्य से भटकाए नहीं; साहसी बनो और लकड़ी व पत्थर के देवताओं को तोड़-फोड़ डालो, क्योंकि जो कोई भी उनकी पूजा करता है, वह शाश्वत अग्नि में भस्म हो जाएगा।'

इस बीच, टारक्वनियिस नामक एक कुलीन व्यक्ति नगिरपालकि के पास आया और उससे धीरे से कहा:

'यदि आप इन ईसाइयों को जल्द से जल्द मौत की सज़ा नहीं देते हैं, तो उनके सभी संपत्ति उनके साथी वशि्वासयिों द्वारा गरीबों में बाँट दी जाएँगी, और आपके पास कुछ भी नहीं बचेगा।'

[8074]टार्क्वनियिस को सुनने के बाद, शहर के राज्यपाल ने शहीदों को जुपटिर के मंदरि के पास एक जगह, जसिे 'पाग' कहा जाता था, ले जाने का आदेश दयिा, जहाँ उन्हें तलवार से मौत की धमकी देकर उसकी बलदिान चढ़ानी थी। फाँसी देने वालों और सैनकिों के साथ, उसने अपना चेंबरलेन, मैक्समिस नामक, भेजा, ताकि शहीदों का सरि कलम करने की क्रयिा उसकी देखरेख में हो सके। लेकनि रास्ते में, मैक्समिस ने पवत्रि कष्ट-भोगयिों को देखकर आँसू बहाए और कहा:

'हे यौवन के अनमोल फूल! हे भाईचारे के बंधन! हे कुलीन और सम्माननि युवकों की सुंदर जोड़ी! तुम इतनी उत्सुकता से मृत्यु की ओर क्यों बढ़ रहे हो, मानो कसिी बड़े भोज में जा रहे हो?'

'यदि हमें,' संत तविुर्ट ने उत्तर दयिा, 'इस मृत्यु के बाद हमारे लएि प्रतीक्षा कर रहे अनंत जीवन का नश्चिति ज्ञान न होता, तो हम अपने क्षणकि जीवन से वदिा होने पर इतना आनंदति न होते।'

मैक्समि ने पूछा, 'तो फरि, इस सांसारकि जीवन के बाद वाला जीवन क्या है?'

तविुर्तनि ने उत्तर दयिा:

– जैसे हमारे शरीर को वस्त्रों से ढका जाता है, वैसे ही आत्मा को शरीर से ढका जाता है; और मृत्यु के बाद, शरीर धूल में मलि जाएगा – हालाँकि जब समय आएगा, तो यह फनिक्सि[8075] की तरह फरि से जीवति हो उठेगा, – और आत्मा – यदि वह पवत्रि और धर्मी सद्धि होती है – तो उसे तुरंत (देवदूतों द्वारा) स्वर्गीय महलों में ले जाया जाएगा और वहाँ, आनंद में नविास करते हुए, सामान्य पुनरुत्थान की प्रतीक्षा करेगी।

'और मैं भी,' टविुर्तुस के शब्दों से प्रभावति होकर मैक्समिस ने कहा, 'इस क्षणकि जीवन को त्याग दूँगा यदि मुझे नश्चिति पता हो कि मुझे उस जीवन की प्राप्ति होगी जसिके बारे में आप बात कर रहे हैं।'

वेलेरयिन ने उससे कहा, 'यदि तुम अनंत जीवन के प्रति आश्वस्त होना चाहते हो, तो हमें अपना वचन दो कि तुम सच्चे मन से पश्चाताप करोगे और मूर्तपिूजा का त्याग करके, उस ईश्वर की ओर मुड़ोगे, जसिकी हम प्रचार करते हैं; और हम तुम्हें वादा करते हैं कि जैसे ही हमारा सरि कलम कर दयिा जाएगा और हमारी आत्मा हमारे शरीर से अलग हो जाएगी, ईश्वर तुरंत तुम्हारी आँखें खोल देगा और तुम हमें प्रदान की गई शाश्वत जीवन की महमिा देखोगे।

मैक्समिस ने एक गंभीर संकल्प लयिा:

उसने कहा, 'अगर मैं उस क्षण से एक ईश्वर में वश्विास नहीं करता, जो इस अस्थायी जीवन के बाद शाश्वत जीवन प्रदान करता है—बशर्ते कि आप अपना वादा पूरा करें, तो मैं आग में जल जाऊँ।'

पवत्रि लोगों ने कहा, 'तब अपने सेवकों को आज्ञा दो, कि वे हमें थोड़ी देर के लएि तुम्हारे घर में प्रवेश करने से न रोकें, और हम तुम्हारे पास ऐसा पुरुष लाने का प्रयत्न करेंगे जो तुम्हारी आत्मा को प्रकाशति कर दे, ताकि तुम स्पष्ट रूप से देख सको कि हमने क्या प्रतज्ञि की है।'

मैक्समिस ने खुशी-खुशी उन्हें अपने घर में बुलवा लयिा, क्योंकि उनके साथ आए हुए कसिी को भी उनसे कसिी भी तरह से वरिोध करने की हम्मिति नहीं हुई। वहाँ संतों ने उद्धार का उपदेश देना शुरू कयिा और हमारे प्रभु यीशु मसीह में वश्विास सखिाया; घर में मौजूद सभी लोग शाम तक ध्यान से उनकी बात सुनते रहे और वश्विास करने लगे – मैक्समिस अपने पूरे घर-परविार और कई पहरेदारों सहति। उस रात, संत ककिलियिा पुरोहतिों के साथ उनके पास आईं, और जो भी वश्विास लाए थे, उनका बपतस्मिा हुआ। उन्होंने रात प्रार्थना और शाश्वत जीवन के बारे में बातचीत में बतिाई, और जब भोर होने लगा, तो पवत्रि कुंवारी ने मसीह के कष्ट-भोगयिों से कहा:

'हे मसीह के योद्धाओं, साहसी और नडिर बनो! देखो, रात का अँधेरा बीत रहा है और प्रकाश चमकने लगा है: तुम भी प्रकाश के कवच से स्वयं को सुसज्जति करो और अपने पराक्रम को पूरा करने के लएि आगे बढ़ो। तुमने उत्तम संग्राम कयिा है, तुमने वश्विास बनाए रखा है – तो फरि जाओ, 'धर्म का मुकुट' (देखें 2 तीमु. 4:8) प्राप्त करो, जो प्रभु तुम्हें प्रदान करेंगे।

[8074] जुपीटर रोमनों का प्रमुख मूर्तपिूजक देवता था।

[8075] फीनक्सि प्राचीन काल का एक पौराणकि पक्षी है। प्राचीन लोगों (मस्रिवासयिों) की मान्यताओं के अनुसार, यह पक्षी (जो पूरी दुनयिा में अकेला था) हर 500 साल में खुद को जला देता था और अपनी राख से पुनर्जीवति हो जाता था। कुछ ईसाई लेखकों, जैसे कि रोम के संत क्लेमेंट, यरूशलेम के संत सरिलि और अन्य लोगों द्वारा भी इसका उल्लेख कयिा गया है, जन्हिोंने इसके बारे में पगन कविदंती में इस बात का प्रमाण देखा कि पगन शरीर के पुनरुत्थान की संभावना में वश्विास करते थे। प्राचीन ईसाई स्मारकों पर, फनिक्सि को अमरत्व के प्रतीक के रूप में दर्शाया गया है।

और संत उस नियत स्थान की ओर बढ़ चले। जब वे जुपिटर के मंदिर के पास से गुज़र रहे थे, तो उसके पुरोहितों ने उन्हें देवता की वेदी पर धूप जलाने के लिए मजबूर करना शुरू कर दिया, क्योंकि इसके बिना कोई भी उस मंदिर के पास से गुज़रने की हिम्मत नहीं करता था; पुरोहितों ने शहर में प्रवेश करने और बाहर निकलने वाले सभी को रोक दिया और उन्हें जुपिटर को निर्धारित बलिदान चढ़ाने के लिए मजबूर किया। लेकिन संतों ने न केवल पुरोहितों की अवज्ञा की, बल्कि उनकी मूर्खता का मज़ाक भी उड़ाया, और इसके लिए उन्हें तुरंत तलवार से सिर कलम कर दिया गया।

जैसे ही मृत्युदंड का पालन किया गया, मैक्सिमिस ने सभी के सामने शपथ लेकर गवाही दी कि उसने परमेश्वर के स्वर्गदूतों को, सूर्य की तरह चमकते हुए, देखा, जो संतों की आत्माओं को उनके शरीरों से इस प्रकार बाहर ले गए जैसे वे महल की सुंदर कन्याएँ हों, और उन्हें बड़ी महिमा के साथ स्वर्ग में ले जा रहे थे। परिणामस्वरूप, कई विधर्मी मसीह में विश्वास करने लगे। हालाँकि, शहर के राज्यपाल को जब यह पता चला कि मैक्सिमि ने ईसाई धर्म अपना लिया है, तो उसने उसे डंडों से बेरहमी से पिटवाया; पिटाई के दौरान, मैक्सिमि ने अपनी आत्मा प्रभु को सौंप दी, और उसके शरीर को संत कैकिलिया ले गईं और शहीदों टिबूर्टिया और वैलेरियन के शरीरों के साथ दफना दिया। संत मैक्सिमिस की कब्र पर, यह संकेत करने के लिए कि उन्होंने मृतकों के भविष्य के पुनरुत्थान में विश्वास किया था—जैसे राख से फिनिक्स पक्षी का उठना—उसने इस पक्षी को चित्रित करने का आदेश दिया।

टिबुर्तिआ और वैलेरियन को मौत के घाट उतारने के बाद, शहर के राज्यपाल ने उनकी संपत्ति जब्त करने का सोचा, लेकिन उसे कुछ भी नहीं मिला, क्योंकि संत कैकिलिया पहले ही सब कुछ गरीबों में बाँट चुकी थीं; इसी कारण, उसे राज्यपाल के नौकरों ने उसके आदेश पर गिरफ्तार कर लिया। जब वे संत के पास आए, तो उन्होंने उनसे कहा:

'मेरे साथियों और भाइयो, मेरी बात सुनो! यद्यपि तुम राज्यपाल के सेवक हो, परन्तु मुझे विश्वास है कि तुम अपने हृदय में उसकी अविश्वासिता को नहीं मानते। मैं अपने मसीह के लिए दुख सहना और मरना चाहती हूँ, क्योंकि मैं इस क्षणिक सांसारिक जीवन को बिल्कुल भी महत्व नहीं देती, बल्कि अनंत जीवन की खोज में हूँ; ताकि मैं उसमें शीघ्र ही पहुँच सकूँ, मुझे ले जाओ, मुझे यातना दो, मेरी जवानी की परवाह मत करो, और मुझे मार डालो।"

जो लोग उसे सुन रहे थे, उन्हें इस बात का गहरा खेद हुआ कि इतनी सुंदर, कुलीन और बुद्धिमान कन्या अपने लिए मृत्यु की कामना करे, और उन्होंने उससे विनती की कि वह अपनी इच्छा से अपनी सुंदरता को नष्ट न करे। लेकिन उसने उनसे कहा:

'मैं अपनी खिलती जवानी को नष्ट नहीं कर रही हूँ, बल्कि केवल इसे किसी बेहतर चीज़ के लिए बदल रही हूँ; मैं कीचड़ को सोने के लिए, मिट्टी को कीमती पत्थरों के लिए, इस सांसारिक, देह की जेल को दिव्य स्वर्गीय महलों के लिए बदल रही हूँ। क्या ऐसा आदान-प्रदान बुरी बात है? मैं आपके लिए भी यही कामना करती हूँ।'

उसने उनसे धर्मात्माओं के लिए प्रतीक्षारत पुरस्कार के बारे में विस्तार से बात की, जिससे जो भी उसे सुन रहे थे वे गहराई से प्रभावित हुए; और उनके घर में पुरुष और महिलाएं, दोनों की एक बड़ी भीड़ इकट्ठा हुई थी। अंत में, संत ने उनसे ऊँचे स्वर में पूछा:

'क्या तुम विश्वास करते हो कि मैं जो कुछ भी कहती हूँ वह सब सत्य है?'

और वे सभी, एक स्वर में, उत्तर देने लगे:

'हाँ, हम विश्वास करते हैं और स्वीकार करते हैं कि मिसीह, जिनका आप प्रचार करते हैं, सच्चे ईश्वर हैं, और आप उनके सच्चे सेवक हैं।'

इस उत्तर से अपनी आत्मा की गहराई तक प्रसन्न होकर, पवित्र कुंवारी ने तुरंत बिशप उरवान को बुलवाया, और जब वह उनके घर पहुँचे, तो उन्होंने मसीह में विश्वास करने आए लगभग 400 पुरुषों और महिलाओं का बपतिस्मा दिया। और कैकिलिया का घर परमेश्वर का एक चर्च बन गया।

इसके बाद, राज्यपाल अल्माच ने आदेश दिया कि मिसीह की धर्मी दासी को अदालत में पेश किया जाए; और, उसके विश्वास के बारे में उससे पूछताछ करने के बाद, उसने मसीह के नाम की एक साहसी स्वीकारोक्ति सुनी।

'तुम्हें ऐसी हिम्मत कहाँ से मिलती है?' उसने क्रोधित होकर उससे पूछा।

'एक निर्मल अंतरात्मा से,' संत ने उत्तर दिया, 'और अटूट विश्वास से।'

अल्माह ने पलटकर कहा, "क्या तुम्हें नहीं पता, हे नीच स्त्री, कि सम्राटों ने मुझे नागरिकों के जीवन और मृत्यु पर अधिकार दिया है?"

'तुम झूठ बोलते हो,' संत ने उत्तर दिया, 'जब तुम कहते हो कि तुम्हारे पास जीवन पर अधिकार है: तुम्हें यह कहना चाहिए था कि तुम्हारे पास केवल जीवन लेने की शक्ति है, उसे देने की नहीं, क्योंकि तुम मार सकते हो, लेकिन तुम मृतकों को जीवित नहीं कर सकते।'

न्यायाधीश ने ज़ोर देकर कहा, 'देवताओं को बलिदान चढ़ाओ, और मसीह का त्याग कर दो, और तुम्हें आज़ाद कर दिया जाएगा।'

लेकिन संत ने घोषणा की कि वह मसीह के लिए मरने को तैयार है। तब यातना देने वाले ने उसे घर ले जाकर एक बहुत गर्म स्नानागार में दम घोंटकर मार डालने का आदेश दिया। तीन दिन और तीन रात तक उन्होंने उसे गर्मी और धुएँ से यातना दी, लेकिन ईश्वर की कृपा ने उसे ठंडक पहुँचाई और पुनर्जीवित कर दिया। जब यह जानकर कि शहीद उबलते हुए स्नानागार में इतने लंबे समय तक जीवित रही, अल्मा ने वहीं पर तलवार से उसका सिर कलम करने का आदेश दिया। जल्लाद, उसके सामने आकर, अपनी तलवार से उसकी गर्दन पर तीन बार वार किया, लेकिन उसका सिर पूरी तरह से नहीं कट पाया; उसे वहीं छोड़कर वह चला गया। विश्वासी लोगों ने स्पंज और कपड़ों से उसका खून इकट्ठा किया, और संत तीन दिन और जीवित रहीं, पूरी तरह से होश में रहकर अपने आस-पास के ईसाइयों के विश्वास को मजबूत करती रहीं; और अंत में, प्रार्थना करते हुए, उन्होंने अपनी आत्मा ईश्वर को सौंप दी और विश्वासियों द्वारा सम्मान के साथ दफनाया गईं।

पवित्र प्रेरितों फलिमोन, आखिप्पस और अफ्फिया की स्मृति

22 नवंबर को स्मरण किया जाता है

[8076][8077][8078]पवित्र प्रेरित फिलिमोन, आखिप्पस और अफ़िया पवित्र प्रेरित पौलुस द्वारा ईसाई धर्म में परिवर्तित हुए थे और उन्होंने सम्राट नीरो के शासनकाल में कोलोसा शहर में यूनानी मूर्तिपूजकों के हाथों मसीह के लिए दुख उठाया। एक बार, जब वे अन्य ईसाइयों के साथ एक प्रार्थना सभा में इकट्ठा थे, तो मूर्तिपूजकों ने अचानक उन पर हमला कर दिया। फिलिमोन, आखिप्पस और अप्फिया को छोड़कर सभा में मौजूद सभी लोग भाग गए, जबकि तीनों को पकड़कर एफ़िसुस के अनाज-गृह के रक्षक आर्टोकल्स के सामने लाया गया।

पहले, अर्किप्पस को बुरी तरह पीटा गया, जबकि राहगीरों ने, यहाँ तक कि बच्चों ने भी, चाकुओं से उसके पूरे शरीर पर वार किया। फिर संत फिलिमोन को बेरहमी से यातना दी गई और पत्थर मारे गए। संत अप्फिया को भी इसी तरह पत्थर मारे गए।

इस प्रकार, अपने दुख-क्लेशों के बीच, ये पवित्र शहीद प्रभु के पास चले गए[8079] ।

कॉन्टाकियन, स्वर 2:

पृथ्वी के छोर पर चमकते तारों की भाँति, हम मसीह के प्रेरितों की स्तुति करें: महिमामय फिलिमोन, पवित्र अर्किप्पस, ओनेसिमिस, मरकुस और अपोलोस, और उनके साथ सर्व-ज्ञानी अप्फिया, यह पुकारते हुए: हम सभी के लिए निरंतर प्रार्थना करो।

[8076] अपनी अमानवीय क्रूरता के लिए कुख्यात सम्राट नीरो ने 54 से 68 ईस्वी तक शासन किया।

[8077] कोलोसाई – एशिया माइनर के फ्रीजिया क्षेत्र में स्थित एक शहर, जो प्रायद्वीप के पश्चिमी भाग में था; मध्य युग में, इस शहर का नाम बदलकर कोनी (अब कोनास या कोनस) कर दिया गया था। प्रेरित पौलुस ने कोलोसाई के निवासियों को एक पत्र लिखा था। यह शहर चर्च के इतिहास में 6 सितंबर को महादूत माइकल के चमत्कार के लिए जाना जाता है।

[8078] अनाज संरक्षक – एक विशेष शहर, क्षेत्र या राज्य के अनाज भंडार का प्रभारी अधिकारी। एफिसुस – एशिया माइनर के प्राचीन सबसे प्रसिद्ध शहरों में से एक, जो प्रायद्वीप के पश्चिमी तट पर स्थित था। प्रेरित पौलुस, जिन्होंने वहाँ सुसमाचार का प्रचार किया, ने इसके निवासियों को एक पत्र लिखा।

[8079] इन संतों का पर्व दिवस 19 फरवरी को मनाया जाता है।

धर्मवीर योद्धा माइकल की स्मृति[8080]

22 नवंबर को स्मरण किया जाता है

संत माइकल, माइकल तृतीय के शासनकाल में रहते थे[8081] । जन्म से वह बुल्गेरियाई थे और पोटुका शहर में पैदा हुए थे[8082] , जो उस समय ग्रीक साम्राज्य का हिस्सा था। माइकल के कुलीन माता-पिता पहले बुल्गेरियाई ईसाइयों में से थे; माइकल स्वयं भी बचपन से ही ईसाई थे, और उनके माता-पिता और परिचित उनकी धार्मिकता के कारण उन्हें *'पवित्र बालक'* कहते थे। जन्म से ही वह अपने जीवन की पवित्रता के लिए विशिष्ट थे; उन्होंने हमेशा अपने हृदय में ईश्वर का भय बनाए रखा, स्वयं को उपवास और प्रार्थना के लिए समर्पित कर दिया, गरीबों को दान दिया और बीमारों से मिलने गए, विनम्रता, नम्रता और हर प्रकार के सद्गुणों से सुशोभित थे।

पच्चीस वर्ष की आयु प्राप्त करने पर, माइकल ने सैन्य सेवा में प्रवेश किया और एक बड़े सैन्य दल का नेतृत्व किया।

उस समय इथियोपियाई और अगारियन—अर्थात् मुस्लिम धर्म के अरब[8083] —ने ग्रीक राज्य के खिलाफ युद्ध छेड़ा और ग्रीक राज्य की राजधानी की ओर बढ़े। एक बड़ी ग्रीक सेना अपने देश की रक्षा के लिए निकल पड़ी और उसने विशाल अगारियन सेनाओं से भिड़ंत की। जब उन्होंने देखा कि इथियोपियाई और अगारियन शक्ति में श्रेष्ठ थे और विजय की ओर अग्रसर थे, तो ग्रीक पहाड़ों की ओर भाग गए और सुरक्षित स्थानों में शरण ली।

ग्रीक ईसाई सेना में अपने दस्ते के साथ माइकल योद्धा भी था। वह दुश्मन से नहीं घबराया, न ही भागा, बल्कि लगातार अपने सैनिकों को मजबूत और प्रोत्साहित करता रहा। ग्रीकों की भारी पराजय देखकर, वह रो पड़ा और जमीन पर लोट कर, ईसाइयों की मुक्ति के लिए प्रभु ईश्वर से प्रार्थना करने लगा। अपनी प्रार्थना समाप्त करने के बाद, वह और उसकी टुकड़ी ने दुश्मन पर प्रबल आक्रमण किया, इथियोपियाई और अगारियन के सीने में घुस गए, और खुद या अपनी टुकड़ी को कोई नुकसान पहुँचाए बिना दुश्मनों को भारी चोट पहुँचाई। उसी समय, ईसाई योद्धाओं की सहायता के लिए अचानक एक तूफान आ गया: बिजली चमकी और गरज से दुश्मन दहशत में आ गए, और वे सभी भाग खड़े हुए। ईश्वर की मदद से, माइकल ने सभी दुश्मनों को खदेड़ दिया, जबकि वह और उसकी टुकड़ी पूरी तरह से सुरक्षित रहे।

अपने ऊपर मिली विजय के लिए ईश्वर का धन्यवाद करने के बाद, माइकल ने अपनी सेना को भंग कर दिया और कुछ सेवकों के साथ अपने देश की वापसी यात्रा पर निकल पड़ा। इस यात्रा के दौरान, निम्नलिखित चमत्कार हुआ।

[8084]माइकल आराम करने के लिए 'एज़ेबेल' नामक एक जगह पर रुके। वहाँ एक बड़ी झील थी, जिसमें से एक राक्षसी साँप निकलता था और लोगों तथा मवेशियों को निगल जाता था।

माइकल के एक सेवक ने झील के पास उनके विश्राम स्थल से धुआं देखा और कुछ राशन जल्दी से इकट्ठा करके धुएं की ओर चला गया। वहाँ उसने एक युवती को आँसुओं में डूबी हुई बैठी देखा, जो किसी चीज का इंतजार कर रही थी। नौकर ने उससे सवाल करना शुरू किया और वह उस भयानक साँप की कहानी में इतना मग्न हो गया कि जिस भोजन को वह पकाने आया था, वह आग पर जल गया। जब नौकर अपने मालिक के पास लौटा, तो योद्धा माइकल ने उससे पूछा कि वह देर से क्यों लौटा और खाना क्यों जल गया। तब नौकर ने उस युवती से साँप के बारे में जो कुछ भी उसने देखा और सुना था, सब विस्तार से बताया।

[8080] हागियोग्राफी, सबसे पहले, एक स्लावोनिक सिनैक्सारियन विवरण पर आधारित है, जिसके प्राचीन ग्रंथों को उनकी उत्कृष्टता आर्चबिशप फिलारेट और अकादमिक ए.एन. वेसेलोव्स्की द्वारा प्रकाशित किया गया था; यह वही विवरण, कुछ भिन्नताओं के साथ, मुद्रित स्लावोनिक प्रोलॉग में भी शामिल किया गया था; दूसरे, टर्नोव के पैट्रिआर्क यूथिमियस (1375–1393) द्वारा लिखित 'योद्धा माइकल को प्रशंसा-पत्र' पर, जिसे 1901 में विएना में श्री कलुझ्नित्स्की द्वारा यूथिमियस की कृतियों के भाग के रूप में प्रकाशित किया गया था।

[8081] बाइज़ेंटाइन सम्राट माइकल तृतीय की मृत्यु 867 में हुई।

[8082] माना जाता है कि यह वर्तमान-कालीन बाटाक है, जो प्लोवदिव या फिलिपोपोलिस शहर की सीमाओं के भीतर है।

[8083] यह संभवतः865 में अरबों के खिलाफ सम्राट माइकल तृतीय के युद्ध को संदर्भित करता है।

[8084] साँप से जुड़े चमत्कार के स्थल को मुद्रित प्रोलाग में 'राइफ़' कहा गया है, और उनकी उत्कृष्टता फिलारेट का मानना है कि यह प्रसिद्ध राइफ़ रेगिस्तान को संदर्भित करता है, जो सिनाई से दो दिन की यात्रा पर है। हालांकि, प्राचीन पांडुलिपियों में संतों के जीवन-चरित्रों में 'राइफ़्स्की' स्थान का उल्लेख नहीं है, बल्कि 'स्टरिन' या 'टरिन' स्थान का उल्लेख है। शायद, अकादमिक वेसेलोव्स्की के अनुसार, 'टरिन' स्थान का अर्थ टरिन्ना है, जो बाल्कन प्रायद्वीप पर एड्रियाटिक सागर के पास डुराज़ो और एलेसियो के पास एक शहर और क्षेत्र है।

यह वृत्तांत सुनकर, संत माइकल ने वहाँ जाने का नर्णिय लयिा और अपने नौकरों को बुलाने लगे, लेकनि वे, डर से भरकर, अपने स्वामी के साथ जाने से इनकार कर दएि। तब माइकल ने प्रभु ईश्वर से प्रार्थना की और अपने चेहरे पर क्रॉस का चह्नि बनाया, अपने घोड़े पर सवार हुए और झील की ओर चल पड़े, अपने साथ केवल अपने सबसे बड़े नौकर को ले गए।

उस स्थान पर पहुँचने पर, उन्होंने युवती से पूछना शुरू कयिा कि वह वहाँ क्यों आई थी।

पहले तो, युवती ने योद्धा माइकल को जाने के लएि मनाने की कोशशि की, ताकि वह उस भयानक साँप द्वारा न खाया जाए; लेकनि, संत के आग्रह पर, उसने उन्हें उस रवािज के बारे में बताया जो शहर में बच्चों को बारी-बारी से साँप को खाने के लएि अर्पति करने का चलन बन गया था।

युवती के बयान से चकति होकर, माइकल ने अपने सेवक को घोड़े के साथ पीछे हटकर कुछ दूरी पर इंतजार करने का आदेश दयिा, जबकि वह स्वयं जमीन पर गरि पड़ा और प्रभु ईश्वर से प्रार्थना करने लगा। जब संत ने अपनी प्रार्थना समाप्त कर ली और खड़े हो गए, तो झील के बीच में एक साँप प्रकट हुआ; अपना सरि ऊँचा उठाकर और अपनी पूंछ से पानी में हलचल मचाते हुए, वह अपने तीन मुँह खोलकर कनिारे की ओर बढ़ने लगा। संत ने अपनी ढाल और तलवार उठाई और उस सांप के तीन सरि काट दएि, जनिके साथ वह प्रकट हुआ था। हालाँकि, सांप ने अपनी पूंछ से संत के दाहनि गाल और बाएं हाथ पर वार कयिा, जसिसे वह घायल हो गया। माइकल बेहोश हो गया, लेकनि जल्द ही होश में आकर खड़ा हो गया।

माइकल के सेवक ने, इस चमत्कार को देखकर, शहर में दौड़ गया और जो कुछ हुआ था उसकी सूचना दी। शहर के लोग शहर से बाहर आ गए और उन्होंने अपने उद्धारकर्ता का भक्तपिूर्वक स्वागत कयिा, जबकि उस युवती को उसके माता-पति के पास लौटा दयिा गया।

इस प्रकार, ईश्वर को योद्धा माइकल को उसी चमत्कार से महमिामंडति करना उचति लगा जो प्राचीन काल में वजियी संत जॉर्ज द्वारा कयिा गया था।

इसके बाद, नागरकिों को ईसाई धर्म पर दृढ़ रहने के लएि प्रोत्साहति करते हुए, योद्धा माइकल अपने रास्ते पर आगे बढ़े और अपने घर लौट आए। कुछ ही समय बाद, उन्होंने शांतपिूर्वक अपनी धन्य आत्मा को प्रभु के हवाले कर दयिा।

जो लोग वश्विास के साथ संत माइकल की कब्र पर आए, उनके लएि संत माइकल की कब्र पर कई चह्नि, चमत्कार और बीमारयिों से उपचार होने लगे।

कई वर्षों बाद, दूसरी बुल्गारयिाई साम्राज्य के दौरान, बुल्गारयिाई ज़ार कलायान ने ग्रीक साम्राज्य के भीतर युद्ध छेड़ते हुए—जसिकी राजधानी उस समय लैटनिों के कब्जे में थी—पोतूका शहर पर कब्जा कर लयिा और संत माइकल द वॉरयिर के अवशेषों को अपनी बुल्गारयिाई राजधानी, तर्नोवो शहर में स्थानांतरति करने का नर्णिय लयिा। पवत्रि अवशेषों के आगमन की सूचना पाकर, बुल्गारयिाई पैट्रआिर्क बेसलि अपने सभी पुरोहतिों और नागरकिों के साथ एक जुलूस, मोमबत्तयिों और धूपदानों के साथ उनका स्वागत करने के लएि बाहर गए। बुल्गारयिाई सम्राट और पैट्रआिर्क ने पवत्रि अवशेषों को अपने कंधों पर उठाया और उन्हें अपने हाथों से पैट्रआिर्कल कैथेड्रल[8085] तक ले जाकर वहाँ स्थापति कयिा।

शहीद संत प्रोकॉपयिस की स्मृति

22 नवंबर को स्मरण कयिा जाता है

[8085] 14वीं शताब्दी में, टर्नोव के अंतमि पैट्रआिर्क, यूथमियिस के शासनकाल के दौरान—जनिहोंने सेंट माइकल के सम्मान में एक प्रशंसा-गीत रचा था—अवशेष टर्नोव में पैट्रआिर्कल कैथेड्रल में रखे गए थे। 19वीं शताब्दी की शुरुआत में, उन्हें वलाचयिा में स्थानांतरति कर दयिा गया।

संत प्रोकॉपियस यरूशलेम के मूल निवासी थे। उन्होंने एक कठोर जीवन जिया और वे कई गुणों से विशिष्ट थे। सेसरेया के चर्च[8086] में रीडर के रूप में नियुक्त और धर्मग्रंथों को समझने का वरदान प्राप्त होने के कारण, प्रोकॉपियस ने विश्वासियों को परमेश्वर का वचन समझाया। इसके अलावा, वह पवित्र शास्त्रों का सीरियाक भाषा में अनुवाद करने में लगे हुए थे और अपने जीवनकाल में, उन्होंने दुष्टात्माओं को भगाकर दैवीय कब्जे से पीड़ित लोगों को चंगा किया।

एक अवसर पर, स्किथोपोलिस की यात्रा के दौरान, उन्होंने ईसाई चर्चों में ईश्वर के वचन का पाठ किया, जिसमें उन्होंने व्याख्या भी की। जब सेसरेया के राज्यपाल को संत प्रोकॉपियस के बारे में पता चला, तो उन्होंने उन्हें एक ईसाई होने के आरोप में गिरफ्तार करने का आदेश दिया। उस समय, ईसाइयों का उत्पीड़न हो रहा था[8087] । सेज़रिया के गवर्नर ने संत प्रोकॉपियस से पैगन मूर्तियों को बलिदान चढ़ाने और उस समय साम्राज्य पर शासन करने वाले चार राजाओं को श्रद्धांजलि देने की मांग की[8088] । लेकिन संत ने साहसपूर्वक उत्तर दिया:

'ईसाइयों को कई देवताओं और स्वामियों का सम्मान या पूजा नहीं करनी चाहिए। हमारा एक ही प्रभु, एक ही राजा और उद्धारकर्ता, सभी चीजों का सृष्टिकर्ता और निर्माता है।'

यह सुनकर, केसरिया का राज्यपाल संत के प्रति क्रोध से भर गया और उसने आदेश दिया कि उसकी तलवार से सिर कलम कर दिया जाए। इस प्रकार संत प्रोकॉपियस ने अपना सांसारिक जीवन समाप्त किया और हमारे ईश्वर मसीह से शहीद का मुकुट प्राप्त कर शीघ्र ही स्वर्ग में आरोहण किया।

पवित्र शहीद मेनिग्नस की स्मृति।

22 नवंबर को स्मरण किया जाता है

संत मेनिग्न हेलेस्पोंट क्षेत्र के पेरिया शहर के मूल निवासी थे[8089] । पेशे से वे कपड़े और कैनवास धोने और साफ करने का काम करते थे। नदी के किनारे यह काम करते हुए, संत मेनिग्न ने दो बार स्वर्ग से एक आवाज सुनी जिसने उन्हें मसीह के नाम के लिए एक पराक्रम करने के लिए बुलाया। यह घटना ईसाइयों के क्रूर उत्पीड़क डेसियस के शासनकाल के दौरान हुई[8090] ।

सम्राट के आदेश पर, मेनिग्न के रहने वाले शहर में कई ईसाइयों को गिरफ्तार कर लिया गया; उन्हें यातना देने और कैद करने की सज़ा दी गई। जब जेल के दरवाज़े सील कर दिए गए थे और सैनिकों द्वारा उनकी रखवाली की जा रही थी, तो प्रभु का स्वर्गदूत कैदियों को उनकी कोठरी में दिखाई दिया। कैदियों की बेड़ियाँ खोलकर, स्वर्गदूत ने उन्हें बिना किसी चोट के कालकोठरी से मुक्त कर दिया।

यातना देने वालों ने जब यह महसूस किया कि कैदी लापता हैं और वे उन्हें कालकोठरी में नहीं पाए, तो उन्होंने पहरेदारों से उनके बारे में पूछा, लेकिन सैनिक कुछ नहीं कह सके, क्योंकि दरवाज़े सीलबंद ही रहे। पगान (मूर्तिपूजक) भ्रम में पड़ गए, जबकि सैनिकों से यह खबर पूरे शहर में फैल गई कि नासरत का यीशु रात में जेल आए थे और कैदियों को बाहर ले गए थे। क्रोध से अंधे हो गए पगानों ने ईसाइयों की तलाश शुरू कर दी। हालाँकि, विश्वासियों ने, जो उन्होंने जो देखा था उस चिह्न से मजबूत होकर, खुशी-खुशी अपने कष्टों के लिए खुद को तैयार कर लिया।

[8086] यह, बेशक, फिलिस्तीन के केसरिया को संदर्भित करता है - भूमध्य सागर के पूर्वी तट पर एक शहर; यरूशलेम के विनाश (ईस्वी 79 में) के बाद, यह फिलिस्तीन का प्रमुख शहर और बिशप का आसन बन गया, जिसके अधीन यरूशलेम भी कुछ समय के लिए था। सीज़रिया को बाद में नष्ट कर दिया गया और अब यह खंडरों के ढेरों के साथ एक पूरी तरह से वीरान जगह है।

[8087] सम्राट डायोक्लेटियन (294–305) के अधीन।

[8088] सम्राट डायोक्लेटियन ने साम्राज्य का शासन मैक्सिमियन के साथ साझा किया, जिन्हें उन्होंने पूर्वी आधा हिस्सा सौंप दिया। साथ ही, प्रत्येक सम्राट का अपना सह-शासक था: डायोक्लेटियन के सह-शासक मैक्सिमियन गैलेरियस थे, जो डायोक्लेटियन की मृत्यु पर पूर्व के सम्राट बने; जबकि साम्राज्य के पश्चिमी में, मैक्सिमियन हर्क्युलस ने कॉन्स्टैंटियस क्लोरस के साथ मिलकर शासन किया। इस प्रकार, 303 में सेंट प्रोकॉपियस की शहादत के समय, साम्राज्य में चार शासक थे। पैगनों द्वारा राजाओं को देवताओं के समकक्ष पूजित जाता था; उनके सम्मान में वेदी और मूर्तियाँ स्थापित की जाती थीं, और उन्हें बलिदान चढ़ाए जाते थे। शहीद प्रोकोपियस ने इस पैगन भ्रम में भाग लेने से इनकार कर दिया।

[8089] हेलेस्पोंट एशिया माइनर का उत्तरी क्षेत्र है, जो ब्लैक सी के तट पर स्थित है।

[8090] डेसियस – एक रोमन सम्राट जिसने 249 से 251 तक शासन किया।

सैनकिों से यह वृत्तांत सुनकर संत मेनग्नि, मसीह के प्रतउित्कट प्रेम से भर गए और उन्हें वह स्वर्गीय आवाज़ याद आई जसिने उन्हें इस पराक्रम के लएि बुलाया था। बनिा कसिी हचिकचिाहट के, उसने धोने के लएि सौंपे गए कपड़े अपने ग्राहकों में बाँट दएि और खुद को मसीह का अनुयायी घोषति कर दयिा। उसने दुष्ट राजा डसियिस के उस फरमान को फाड़ दयिा, जसिमें आदेश दयिा गया था कि सभी ईसाइयों को यातना और मृत्यु का सामना करना पड़ेगा यदि वे मनाए जाने के बाद भी मसीह का त्याग नहीं करते। इसके बाद, मेनग्निस को पकड़ लयिा गया और अधकिारयिों के सामने पेश कयिा गया। न्यायाधीश ने उसकी उंगलयिों को काटने की सज़ा सुनाई—उसी उंगलयिों को जन्हिोंने राजा के फरमान को फाड़ा था। जब उसकी उंगलयिाँ काट दी गईं, तो उनमें से खून नहीं बल्कि दूध बहने लगा। इसके बाद, शहीद को और अधकि यातना और मृत्यु से बचने के लएि मूर्तयिों को बलदिान चढ़ाने के लएि कहा गया। लेकनि संत ने बहादुरी से मसीह की गवाही दी। तब यातना देने वाले ने उसे बेरहमी से पीटने और यातना देने का आदेश दयिा। जल्लादों के प्रचंड प्रहारों से वह जमीन पर गरि पड़ा, फरि उसे एक पेड़ से लटकाकर लोहे से खुरोचा गया। हालाँकि, इससे मसीह के स्वीकारकर्ता का उत्साह कम नहीं हुआ। फरि उसे पेड़ से उतारकर उसका सरि कलम कर दयिा गया। उसी क्षण, संत के होठों से एक पवत्रि कबूतर स्वर्ग की ओर उड़ गया। इस प्रकार, दव्यि आह्वान का पालन करते हुए, संत मेनग्नि ने मसीह के लएि अपना पराक्रम पूरा कयिा, और उनकी आत्मा प्रभु से शहीद का मुकुट प्राप्त करने के लएि स्वर्ग में चली गई।

संत की मृत्यु के बाद, ईसाई रात के अँधेरे में चुपके से उनके शहादत स्थल पर आए और उनके शरीर को ले गए। उनका सरि, जो वहीं छूट गया था, बाद में एक ईसाई को मलिा। यह पवत्रि शहीद इस ईसाई को एक दर्शन में दखिाई दएि, जसिने उस दर्शन का अनुसरण करते हुए, उसके ऊपर चमकते एक तेज तारे के मार्गदर्शन से संत का सरि ढूंढ लयिा।

आदरणीय अगावा का पर्व दविस

22 नवंबर को स्मरण कयिा जाता है

आदरणीय अगावा इसमाएल के मूल नविासी थे। अपनी मातृभूमि, अपने माता-पतिा और अपनी संपत्ति को छोड़कर, उन्होंने एक नश्चिति भक्षिु का अनुसरण कयिा, जनिसे उन्हें भक्षिु जीवन की दीक्षा मलिी। संत अगावा के गुरु महान तपस्वी यूसेबयिस से मलिने के लएि उनके साथ रवाना हुए: संत अगावा ने उन्हीं से प्रार्थनापूर्ण जागरण में लंबे समय तक बतिाने की कला सीखी। धन्य यूसेबयिस की मृत्यु के बाद, संत अगावा अपनी कोठरी में ही रहे और वहाँ 38 वर्षों तक रहे। उन्होंने कभी जूते नहीं पहने और अपने कमर के चारों ओर भारी बेड़यिाँ पहन रखी थीं; उनका भोजन पानी में मलिाए हुए ब्रेड के टुकड़ों से बनता था। दनि-रात, वह अपना अधकिांश समय खड़े या घुटने टेके हुए, सर्वोच्च को वधिवित प्रार्थनाएँ अर्पति करते हुए बतिाता था। वह बैठने से पूरी तरह इनकार कर देता था: कसिी ने भी उसे कभी बैठे हुए नहीं देखा। एक तपस्वी के रूप में, उसने ज्ञान और आज्ञाकारति का एक उदाहरण स्थापति कयिा। ऐसे तपस्वी प्रयासों में अपना जीवन जीने के बाद, वह प्रभु में शांतपिूर्वक देहांत कर गया[8091] ।

6 दसिंबर

23 नवंबर (पुराने कैलेंडर के अनुसार)

उसी दनि, वोरonezh के प्रथम बशिप, संत मट्रिोफान की स्मृति

हमारे पवत्रि पति अम्फलिोखयिस, इकोनयिम के बशिप का जीवन

23 नवंबर को स्मरण कयिा जाता है

[8091] मान्यवर अगावा के पराक्रम और शहादत 5वीं शताब्दी की हैं।

संत अम्फलिोचयिस[8092] , इकोनयिम के बशिप, जो महान सार्वभौमकि शकि्षकों संत बेसलि द ग्रेट और ग्रेगरी द थयिोलोजयिन के मत्रि थे, कैपैडोसयिा के मूल नविासी थे और सेज़ारयिा शहर में पैदा हुए थे। उनके पता, जनिका नाम भी अम्फलिोचयिस था, धन्य नॉन्ना[8093] , जो संत ग्रेगरी द थयिोलोजयिन की माता थीं, के भाई थे। वे महान बुद्धि और गहरे ज्ञान के धनी थे, जसिमें उन्होंने वाक्पटुता के साथ-साथ दया और धर्मपरायणता को भी मलिाया था; उन्होंने अपने सभी रश्तिेदारों की सहायता की और वचन में एक मार्गदर्शक के रूप में कार्य कयिा। अपने बच्चों का ध्यान रखते हुए, उन्होंने उन्हें उत्कृष्ट शकि्षा दी और उन्हें ईसाई धर्मपरायणता की भावना में पाला।

उनके सबसे छोटे बेटे ने, वयस्क होने पर, शुरुआत में एक वक्ता और वकील के रूप में अपनी पहचान बनाई। फरि भी, अपने शुरुआती वर्षों से ही, वह हर चीज़ से बढ़कर ईश्वर से प्रेम करता था और इसलएि, सेंट ग्रेगरी द थयिोलोजयिन द्वारा मनाए जाने के तुरंत बाद, वह सांसारकि चतिाओं और व्यर्थता को त्यागकर रेगस्तिान में चला गया, जहाँ उसने कठोर तपस्या वाले एकान्तवासी जीवन की शुरुआत की, और स्वयं को पूरी तरह से केवल ईश्वर को समर्पति कर दयिा। वहाँ, उनकी दनिचर्या प्रार्थना, धर्मग्रंथों का पाठ और उपवास थी। संत एम्फलिोचयिस ने काफी समय तक ऐसे कठोर आत्म-त्याग और उपवास के कारनामों के साथ जीवन व्यतीत कयिा, जब तक कि प्रभु ने उन्हें एक अन्य, उच्चतर, एपस्किोपल मंत्रालय के लएि नयिुक्त नहीं कयिा, और उन्हें, मानो, चर्च की दीवार पर रखे दीपक की तरह स्थापति नहीं कर दयिा।

जब इकोनयिम के बशिप, ए[8094] का नधिन हो गया, तो प्रभु का एक स्वर्गदूत रात में अम्फलिोचयिस के पास आया और उसे शहर में जाकर आध्यात्मकि झुंड की देखभाल करने के लएि कहा; लेकनि अम्फलिोचयिस जाने की हम्मित नहीं कर सके। अगली रात, स्वर्गदूत फरि से उसके पास आया और कहा:

'अम्फलिोखयिस, नगर में जाओ, और उस झुंड की देखभाल करो जसिे परमेश्वर ने तुम्हें सौंपा है।'

लेकनि अम्फलिोचयिस ने इस बार भी देवदूत की बात पर ध्यान नहीं दयिा, यह सोचकर कि यह प्रकट रूप एक दुष्ट आत्मा का धोखा है: 'और शैतान,' संत ने सोचा, 'कभी-कभी खुद को एक तेजस्वी देवदूत में बदल सकता है।' तीसरी रात, देवदूत उसके सामने प्रकट हुआ और पुकारा:

'अम्फलिोचयिस! अपने बस्तिर से उठो!'

जल्दी से उठते हुए, अम्फलिोचयिस ने भयभीत होकर कहा:

'यदि आप ईश्वर के दूत हैं, तो आइए हम दोनों प्रार्थना में खड़े हों।' अपना सरि झुकाते हुए, अम्फलिोचयिस ने गाना शुरू कयिा: 'पवत्रि, पवत्रि, पवत्रि है सेनाओं का प्रभु; स्वर्ग और पृथ्वी तेरी महमिा से परपूर्ण हैं।' लेकनि आगंतुक भी उनके साथ गाने लगा। तब स्वर्गदूत ने उसका दाहनिा हाथ पकड़ा और उसे पास ही एक चर्च में ले गया, जसिके दरवाज़े उनके सामने अपने आप खुल गए। जब वे अंदर गए, तो एम्फलिोचयिस ने एक तेज रोशनी और सफेद वस्त्रों में लपिटे बहुत से पुरुषों को देखा, जन्होंने उसे पकड़कर वेदी तक ले गए और उसके हाथों में पवत्रि सुसमाचार रख दयिा, और कहा: ' ' 'प्रभु आप सबके साथ हों!' उनमें से एक, जो जाहरि तौर पर सबसे बुज़ुर्ग था, ने ज़ोर से घोषणा की: 'आओ हम सब प्रार्थना करें,' और फरि कहा:

– 'पवत्रि अनुग्रह से, हमारे भाई एम्फलिोचयिस को इकोनयिम नगर का बशिप नयिुक्त कयिा गया है; आइए हम उनके लएि प्रार्थना करें, कि ईश्वर की कृपा उन पर बनी रहे।'

प्रार्थना के बाद, अम्फलिोचयिस को वदिा कहने के बाद, वे सभी दृष्टि से ओझल हो गए, जबकि वह स्वयं वहाँ खड़ा रहा, उस अद्भुत दर्शन और एक बशिप के रूप में अपने अजीब अभषिेक पर आश्चर्यचकति होकर, और ईश्वर से प्रार्थना की, स्वयं को उनकी पवत्रि इच्छा के हवाले करते हुए। जैसे ही भोर होने लगी, वह चर्च से नकिल गया और अपनी गुफा के लएि रवाना हो गया। और देखो, रास्ते में उनकी मुलाकात सात बशिपों से हुई जो उस शहर के लएि एक बशिप का चुनाव करने और उसे नयिुक्त करने के लएि इकोनयिम के पड़ोसी शहरों से इकट्ठा हुए थे। उन्हें ईश्वर से आदेश मलिा था कि वे भकि्षु एम्फलिोचयिस को खोजें। इकोनयिम से नकिलकर, उन्होंने हर जगह उनकी तलाश की और अंततः उन्हें ढूंढकर पूछा:

[8092] इकोनयिम – एशयिा माइनर के उपजाऊ पूर्वी मैदान पर, माउंट टॉरस की तलहटी में स्थति एक शहर; यह कभी लाइकोनयिन क्षेत्र की राजधानी था; मध्य युग में, यह सेलजुक सुल्तानों (1096–1308) की राजधानी थी। आज, यह तुर्की का शहर कोन्या है। यहाँ ईसाई धर्म की स्थापना सबसे पहले प्रेरति पौलुस और बरनबास ने की थी।

[8093] धर्मपरायण नॉना का पर्व 5 अगस्त को मनाया जाता है।

[8094] यह वर्ष 372 का था।

'क्या तुम अम्फलिोखयिस नहीं हो? हमें सच बताओ, क्योंकि हर झूठ दुष्ट से आता है।'

'मैं पापी एम्फलिोचयिस हूँ,' उसने नम्रता से उत्तर दयिा। वे उसे सम्मानपूर्वक चर्च ले गए ताकि उसे बशिप पद की दीक्षा दी जा सके, लेकनि उसने उनसे कहा:

'यदि ईश्वर ने यह उचति समझा है कि मैं, जो अयोग्य और पापी हूँ, को बशिप के रूप में चुनाव के लिए आपके सामने प्रस्तुत कयिा जाए, तो अब मुझे उनके अद्भुत कार्यों को छपिाना या उनके बारे में चुप नहीं रहना चाहए; इसके वपिरीत, हमें नश्चिति रूप से उनका प्रचार करना चाहए और सारी महमिा ईश्वर को देना चाहए।'

और संत एम्फलिोचयिस ने उन्हें शुरू से ही सब कुछ बताया कि कैसे, रात में, उन्हें एक दर्शन में बशिप के रूप में अभषिक्ति कयिा गया था। यह सुनकर, बशिप आश्चर्यचकति हो गए और उन्होंने अम्फलिोचयिस के चमत्कारकि अभषिेक के लिए परमेश्वर का धन्यवाद कयिा; उन्होंने दूसरी बार उनका अभषिेक करने की हम्मित नहीं की, बल्कि, सम्मानपूर्वक उन्हें प्रणाम करके और प्रेम से उन्हें चूमकर, उन्हें सीधे बशिप के सहिासन पर बठिा दयिा (वैलेंटाइनयिन और वैलेंस के शासनकाल के दौरान[8095])।

काफी लंबे समय तक, संत एम्फलिोचयिस ने मसीह के झुंड का मार्गदर्शन कयिा: वह सम्राट थयिोडोसयिस महान और उनके बेटों के समय तक जीवति रहे। ऑर्थोडॉक्स धर्म के एक शक्षिक के रूप में, उन्होंने एरयिन वधिर्म के खलिाफ लड़ाई लड़ी[8096] , वधिर्मयिों के हाथों बहुत उत्पीड़न और दुर्व्यवहार सहन कयिा, यूनोमयिस की ईश्वरनदिा के खलिाफ उठ खड़े हुए पवत्रि पतिाओं के एक साथी थे, और दूसरे सार्वभौमकि परषिद में वधिर्मी मेसेडोनयिस[8097] और स्वयं एरयिस के अनुयायियों के खलिाफ बहुत प्रयास कयिा। धार्मकिता के प्रति अपने उत्साह और अपने सदाचारी जीवन के लिए, उन्हें पवत्रि पतिाओं द्वारा सर्वत्र प्रशंसा और उच्च सम्मान प्राप्त था, वशिेष रूप से संत बेसलि द ग्रेट और ग्रेगरी द थयिोलोजयिन द्वारा, जन्हिोंने उन्हें एक करीबी दोस्त माना और उनके साथ पत्र व्यवहार कयिा[8098] ।

महान थयिोडोसयिस के शासनकाल के दौरान[8099] , संत एम्फलिोचयिस एक बार सम्राट के समक्ष उपस्थति हुए और उनसे सभी शहरों में एरयिन प्रार्थना सभाओं को समाप्त करने का आग्रह कयिा। लेकनि सम्राट उनकी यह प्रार्थना स्वीकार नहीं करना चाहते थे, क्योंकि वे लोगों की नजर में एक उत्पीड़क नहीं दखिना चाहते थे। तब अम्फलिोचयिस चुपचाप महल से चले गए, लेकनि कुछ दनिों बाद लौटे और अपनी बुद्धमित्ता के कारण कुछ ऐसा कयिा जो स्मरण योग्य था। उन्होंने सहिासन पर वराजमान राजा को उचति सम्मान देते हुए नमस्ते की और सम्मानपूर्वक अभवािदन कयिा; लेकनि उन्होंने अपने पुत्र आर्कैडयिस पर बलि्कुल भी ध्यान नहीं दयिा, जसिे हाल ही में सहिासन पर बठिाया गया था और जो अपने पति के बगल में बैठा था, और न ही उन्होंने उसे वह सम्मान दयिा जो उसे मलिना चाहए था। थयिोडोसयिस ने, यह सोचकर कि अम्फलिोचयिस भूल गए हैं, उन्हें आर्काडयिस को उचति सम्मान देने का आदेश दयिा।

अम्फलिोचयिस ने टप्पिणी की, 'ज़ार को सम्मान देने के लिए इतना ही काफी है।'

[8095] सम्राट वैलेंटाइनयिन (पश्चमि में) ने 364 से 375 तक और वैलेंस (पूर्व में) ने 364 से 378 तक शासन कयिा। सेंट एम्फलिोचयिस का बशिप के रूप में अभषिेक वर्ष 373 में हुआ था।

[8096] प्रथम सार्वभौमकि परषिद द्वारा नदिति एरयिस ने यह सखिाया कि परमेश्वर का पुत्र परमेश्वर नहीं है, बल्कि केवल सर्वोच्च प्राणी है जसिके माध्यम से परमेश्वर ने संपूर्ण जगत की रचना की।

[8097] दूसरा सार्वभौमकि परषिद (कॉन्स्टेंटनिोपल का पहला परषिद) 381 में आयोजति कयिा गया था। परषिद द्वारा नदिति मैसेडोनयिस ने यह सखिाया कि पवत्रि आत्मा एक प्राणी है जसिे पति और पुत्र की दव्यिता और महमिा में कोई हस्सिा नहीं है।

[8098] संत एम्फलिोचयिस, संत बेसलि द ग्रेट से मलिने के लिए बार-बार केसरयिा की यात्रा करते थे। ऐसी ही एक यात्रा पर, उन्होंने डोकेटस्टिों का खंडन करने के लिए संत बेसलि द ग्रेट से पवत्रि आत्मा के बारे में लखिने का आग्रह कयिा। वभिन्नि चर्च-सम्बंधी मामलों पर व्यक्तगित परामर्श के अलावा, अम्फलिोचयिस ने बेसलि महान से बार-बार चर्च-सम्बंधी अनुशासन के बारे में अपने संदेहों को लखिति रूप में सुलझाने के लिए कहा। अम्फलिोचयिस के अनुरोध पर, महान फादर ने अन्य बातों के अलावा, प्रसद्धि 'कैनोनकिल एपस्टिल' लखिी। 375 में, संत बेसलि द ग्रेट ने, एक बार फरि एम्फलिोचयिस को अपने पास बुलाकर, अपनी बीमारी के कारण सेसारयिा के चर्च का प्रभार उन्हें सौंप दयिा; लेकनि एम्फलिोचयिस, जो स्वयं बीमार थे और साथ ही बेसलि की बीमारी से अनजान थे, ने उन्हें परषिद के लिए इकोनयिम आमंत्रति कयिा। हालाँकि, बेसलि की बीमारी बनी रही, और उनकी जगह उन्होंने परषिद (376; इस परषिद में ड्यूसेटस्टिों को नदिा कयिा गया था) में पवत्रि आत्मा पर एक ग्रंथ भेजा। इसके बाद, यूनोमयिनों - चरम एरयिनों - का प्रभावी ढंग से मुकाबला करने के लिए, संत अम्फलिोचयिस ने संत बेसलि से यूनोमयिन तर्कशास्त्र के कई बदिुओं को स्पष्ट करने के लिए कहा, और संत बेसलि ने अपनी गंभीर बीमारी के बावजूद, उन्हें अपने उत्तर लखिे। संत अम्फलिोचयिस का अपने रश्तिेदार, संत ग्रेगरी द थयिोलॉजयिन के साथ भी उतना ही घनष्ठि और मैत्रीपूर्ण संबंध था, जनिके आग्रह पर वे मूल रूप से रेगस्तिान में चले गए थे, और जो उन्हें वहाँ पत्रों के साथ-साथ भोजन की आपूर्ति भी भेजते थे।

[8099] थेओडोसयिस महान ने 379 से 395 तक शासन कयिा।

यह सुनकर सम्राट-पिता को बहुत क्रोध आया और अपने पुत्र के प्रति किसी भी अपमान को बर्दाश्त न करते हुए, उन्होंने संत अम्फिलोचियस को अपमानपूर्वक महल से बाहर निकालने का आदेश दिया।

संत एम्फिलोचियस ने उससे कहा:

'हे सम्राट, क्या आप देखते हैं कि आप अपने पुत्र के प्रति अपमान सहन नहीं कर सकते और मुझ पर कैसे क्रोधित हैं? उसी प्रकार ईश्वर पिता भी अपने पुत्र के प्रति अपमान सहन नहीं करते; वे उन लोगों से मुंह मोड़ लेते हैं और उनसे प्रेम नहीं करते जो उनकी निंदा करते हैं, और वे उन लोगों पर क्रोधित होते हैं जो निंदकों के साथ मिलते-जुलते हैं।'

तब सम्राट को समझ आया कि अम्फिलोचियस ने उनके पुत्र का सम्मान क्यों नहीं किया था - क्योंकि वह यह दिखाना चाहते थे कि परमेश्वर के पुत्र को भी पिता के बराबर सम्मान मिलना चाहिए - और वह संत की बुद्धिमानी पर चकित रह गए; अपने सिंहासन से उठकर, उन्होंने उनके सामने झुककर क्षमा याचना की। तुरंत, थियोडोसियस ने पूरे साम्राज्य में आदेश जारी किए, जिसमें सभी शहरों से एरियनों को निकालने का निर्देश दिया गया, यदि आवश्यक हो तो बल और धमकियों से। इस प्रकार, संत एम्फिलोचियस ने मसीह की कलीसिया को विधर्मियों से शुद्ध किया।

लगभग इसी समय, मेसालिएन विधर्म[8100] लाइकोनिया के क्षेत्र में फैल गया। संत एम्फिलोचियस ने इस संक्रामकता के खिलाफ भी अपने चर्च की उत्साहपूर्वक रक्षा की। उन्होंने विधर्मियों की व्यक्तिगत रूप से और अपने ईश्वर-प्रेरित शब्दों की शक्ति के माध्यम से निंदा की, और बाद में पम्फिलिया में सिडोन परिषद[8101] में भाग लिया, जहाँ इस विधर्म की निंदा की गई। इस समय तक, संत एम्फिलोचियस ने इतनी आध्यात्मिक परिपक्वता प्राप्त कर ली थी कि वह अपने प्रार्थनाओं के माध्यम से बीमारों के ठीक होने के लिए मध्यस्थता कर सकते थे।

दीर्घायु प्राप्त करने के बाद, संत एम्फिलोचियस प्रभु में शांतिपूर्वक निधन कर गए[8102] ।

कॉन्टाकियन, स्वर 2:

दिव्य गर्जन, आत्मा का तुरही, विश्वास का माली, और विधर्मों का संहारक, पवित्र-पदधारी अम्फिलोखियस, त्रिमूर्ति का महान सेवक: स्वर्गदूतों के समक्ष सदैव खड़े रहकर, हम सभी के लिए अनवरत प्रार्थना करें।

हमारे पवित्र पिता ग्रेगरी, आक्रैगैंटियम के बिशप का जीवन

23 नवंबर को स्मरणोत्सव

[8100] मेसालिएन, जिन्हें यूकाइट्स के नाम से भी जाना जाता है, ने ईश्वर में व्यक्तियों की त्रिमूर्ति, संस्कारों, उपवास, बाहरी तपस्या की प्रथाओं और सभी चर्च संबंधी संस्थानों से इनकार किया। उस राक्षस से लड़ने के लिए, जिसके नियंत्रण में, उनके अनुसार, हर व्यक्ति होता है, केवल गहन प्रार्थना की आवश्यकता थी, जिसके बाद पवित्र आत्मा प्रार्थना करने वाले व्यक्ति के भीतर वास करता था। वे ध्यान और रहस्यमय नृत्यों में लिप्त रहते थे, और दावा करते थे कि वे अपने भौतिक नेत्रों से देवता को देखते हैं। – मेसालिएन विधर्म चौथी शताब्दी में उत्पन्न हुआ, 431 में एफ़ेसस की तीसरी सार्वभौमिक परिषद में इसकी निंदा की गई, लेकिन सातवीं शताब्दी तक यह पहले ही गायब हो चुका था।

[8101] पम्फिलिया – एशिया माइनर का एक दक्षिणी क्षेत्र। यह परिषद साइड में हुई, जो पम्फिलिया का एक प्रमुख शहर था।

[8102] इकोनियम के संत एम्फिलोचियस, लगभग 395 – संत एम्फिलोचियस ने धर्मशास्त्रीय लेखन का एक विशाल और विविध संग्रह पीछे छोड़ा: उन्होंने पुस्तकें, कविताएँ, पत्र और उपदेश लिखे। इनमें से सबसे महत्वपूर्ण उनके अपोलोजेटिक (तर्कसंगत) कार्य थे, जो रूढ़िवादी सिद्धांत की रक्षा के लिए और विधर्मियों का खंडन करने के लिए लिखे गए थे। इनमें पवित्र आत्मा पर उनका प्रबंध और यूकाइट्स के खिलाफ उनका कार्य शामिल है, जिनमें से कोई भी आज तक संरक्षित नहीं है; 'प्रभु के अवतार पर' नामक प्रबंध, जिसे सार्वभौमिक परिषदों में पढ़ा गया था और जिसके केवल अंश ही बचे हैं; और यशायाह भविष्यवक्ता पर एक भाष्य, जो इसी प्रकार संरक्षित नहीं है। संत एम्फिलोचियस का सेल्यूसस को लिखा एक लंबा पत्र हमें मिला है, जो संत ओलंपियास के भतीजे और जनरल ट्राजन के पोते थे; यह 333 श्लोकों से मिलकर बना है और इसका स्वरूप शैक्षिक है। सैन्य कमांडर ट्राजन के पोते सेल्यूसस को संबोधित संत अम्फिलोचियस का धर्मपत्र भी ज्ञात है, जो पवित्र त्रिमूर्ति और परमेश्वर के पुत्र के अवतार पर है, साथ ही कई अन्य पत्र और धर्मपत्राएँ भी हैं, जो मुख्य रूप से पवित्र त्रिमूर्ति और विशेष रूप से पवित्र आत्मा पर हैं। इसके अलावा, संत एम्फिलोचियस ने कई कथन और शिक्षाएँ छोड़ी हैं - जो मुख्य रूप से धर्मशास्त्रीय प्रकृति की हैं।

संत ग्रेगरी का जन्म ससिलि द्वीप के[8103] पर, अक्रागास[8104] शहर के पास प्राटोरयि गाँव में, धर्मपरायण और सदाचारी माता-पति - कैरटिाँ और थयिोडोटा के घर हुआ था। उनके माता-पति बहुत अमीर लोग थे और उन्होंने अपनी संपत्ति से उदारतापूर्वक सभी जरूरतमंदों को दयि।

शशिु ग्रेगरी के बपतस्मिा के समय, फव्वारे पर उनके धर्मपति आक्रगान्टयिम के बशिप धन्य पातामयिन थे। अपने आठवें वर्ष में, ग्रेगरी को पुस्तकों का अध्ययन कराने के लिए डेमयिन नामक एक कुशल शक्षिक के पास सौंपा गया, और दो वर्षों के भीतर उसने पढ़ना, लखिना और चर्च के भजन गाना में महारत हासलि कर ली। अपने बारहवें वर्ष में, उन्हें बशिप पाटामयिन द्वारा एक क्लेरकि के रूप में अभषिक्ति कयि गया और आर्चडीकन[8105] डोनाटस की देखभाल में सौंप दयि गया, जो उन्हें आध्यात्मकि प्रयासों और एक सदाचारी जीवन में मार्गदर्शन करने वाले थे। उस युवा लड़के ने प्रार्थना में स्वयं को समर्पति कर दयि और पूरे दनि-रात पवत्रि धर्मग्रंथों और पवत्रि पतिाओं के जीवन को पढ़ने में बतिाए; इससे, जनिके बारे में उसने पढ़ा था, उनके पदचन्हिों पर चलने की उसकी इच्छा और भी प्रबल हो गई।

जब वह 22 वर्ष का हुआ, तो उसने पवत्रि स्थानों की पूजा करने के लिए यरूशलेम जाने का संकल्प लयि; और उसने ईश्वर से भक्तपिूर्वक प्रार्थना करना शुरू कर दयि कि वह उसकी यात्रा को सुरक्षति बनाए। एक रात, जब वह आर्चडीकन के घर में सो रहा था, तो कसिी ने अचानक उसके बस्तिर के पास से उसे पुकारा:

'ग्रेगरी!'

उसने उत्तर दयि, 'मैं यहाँ हूँ,' और उठकर आर्चडीकन से पूछा:

'आपने मुझे क्यों बुलाया, मेरे स्वामी?'

'मैंने तुम्हें नहीं बुलाया, मेरे बच्चे,' आर्चडीकन ने उत्तर दयि।

तो ग्रेगरी वापस गया, फरि से लेट गया और सो गया। लेकनि वही आवाज़ उसे दूसरी बार पुकार गई, और वह फरि से आर्चडीकन के पास गया, यह पूछते हुए कि उन्होंने उसे क्यों बुलाया; और एक बार फरि आर्चडीकन ने जवाब दयि कि उन्होंने कसिी को नहीं बुलाया; लेकनि इस बार, यह समझते हुए कि यह स्वयं ईश्वर ही थे जो ग्रेगरी को बुला रहे थे, आर्चडीकन भय से कांप उठा और उस लड़के से कहा:

'यदि वही आवाज़ तुम्हें एक बार और बुलाए, तो उत्तर देना: "क्या आज्ञा है, हे प्रभु? आप अपने दास से क्या कहते हैं?"'

जब ग्रेगरी, आर्चडीकन को छोड़कर, फरि से अपने बस्तिर पर लेट गया, तो उस आवाज़ ने तीसरी बार उसका नाम लेकर उसे बुलाया। बुलाने वाले प्रभु का स्वर्गदूत था। ग्रेगरी ने जैसा उससे कहा गया था, वैसा ही उत्तर दयि, और स्वर्गदूत ने उससे कहा:

– तुम्हारी प्रार्थना सुनी गई है: समुद्र तट पर जाओ, और वहाँ तुम्हें ऐसे लोग मलिेंगे जो तुम्हें अपने साथ पवत्रि स्थानों पर ले जाएँगे।

ग्रेगरी तुरंत उठे और कसिी से एक शब्द भी कहे बनिा, सुबह-सुबह समुद्र की ओर चल पड़े; और जब वे तट पर पहुँचे, तो उन्हें वहाँ एक जहाज़ मलिा और उन्होंने नावकिों से पूछा कि वे कहाँ जा रहे हैं। उन्होंने जवाब दयि कि वे कार्थेज[8106] जा रहे थे, और उन्होंने उनसे वनिती की कि वे उन्हें भी अपने साथ ले जाएँ। वे सभी जहाज पर सवार हो गए और तीन दनि बाद सुरक्षति रूप से कार्थेज पहुँच गए।

ग्रेगरी कई दनिों तक कार्थेज में रहे, इस दौरान वे अक्सर पवत्रि शहीद जूलयिन के चर्च में जाते थे। एक दनि, जब वे इस चर्च में पवत्रि धर्मग्रंथ पढ़ रहे थे, तीन सम्मानति रूप वाले भक्षिु अंदर आए और प्रार्थना करने लगे। जब

[8103] ससिलि द्वीप एपेनाइन प्रायद्वीप की दक्षणि नोक के पास भूमध्य सागर में स्थति है, जसिसे यह मेसनि जलडमरूमध्य द्वारा अलग कयि गया है।

[8104] अक्रैगस का शहर – जो अब एग्रीजेंटो है – ससिलि द्वीप के दक्षणि-पश्चमि तट पर स्थति है।

[8105] ग्रीक भाषा से व्युत्पन्न 'आर्चडीकन' शब्द का अर्थ है 'डीकनों का प्रमुख', यानी वरष्ठि या उच्चतम रैंक का मंत्री। वर्तमान में, यह उपाधि मठवासी क्रम के उन डीकनों को दी जाती है जो मंत्रालय में एक प्रमुख पद धारण करते हैं (जबकि धर्मनरिपेक्ष पादरी वर्ग के वरष्ठि डीकनों को प्रोटोडीकन कहा जाता है)। हालांकि, प्रारंभकि चर्च में, आर्चडीकन बशिप के नकिटतम सहयोगी होते थे और चर्च के प्रशासन में उनकी सहायता करते थे; परषिदों जैसे अवसरों पर, वे उनके प्रतनिधि के रूप में भी कार्य करते थे।

[8106] कार्थेज – अफ्रीका के उत्तरी तट पर एक शहर; आज यह खंडहरों में पड़ा है।

उन्होंने प्रार्थना समाप्त कर ली, तो उनमें से एक बैठ गया, जबकि अन्य दो उसके बगल में खड़े रहे। ग्रेगरी ने उन्हें देखकर उन्हें प्रणाम किया। जो भिक्षु बैठा था, उसने ग्रेगरी की ओर देखा और कहा:

'हे परमेश्वर के सेवक ग्रेगरी, तुम यहाँ क्या कर रहे हो, जिसने प्रभु के वचन के अनुसार, बेहतर हिस्सा चुना है, जो तुमसे नहीं छीना जाएगा?' (लूका 10:42)।

अपना नाम सुनकर, ग्रेगरी भय से भर गया और वरिष्ठ के सामने झुककर कहा:

'मुझे क्षमा करें, पिताजी, और मेरे लिए प्रार्थना करें, जो एक पापी और लापरवाह हूँ।'

वरिष्ठ ने उत्तर दिया:

'ओह, काश मेरे पास तुम्हारे पाप होते, मेरे पुत्र[8107] !' उन्होंने आगे कहा, 'यह जान लो, कि दयालु ईश्वर ने तुम्हारे बारे में सब कुछ हमें प्रकट कर दिया है; और आनंदित हो, क्योंकि उन्होंने हमें तुम्हें लेने और तुम्हें पवित्र स्थानों पर ले जाने के लिए भेजा है, जैसा तुम चाहते हो—हम स्वयं भी वहाँ जा रहे हैं।'

तब ग्रेगरी, आँसू भरी आँखों से, बोला:

'धन्य है वह ईश्वर, जो सभी चीजों को हमारे भले के लिए निर्धारित करता है!' फिर वे चारों अपनी यात्रा पर निकल पड़े। रास्ते में, बूढ़े ने ग्रेगरी की परीक्षा लेते हुए एक दिन उससे पूछा:

'मेरे पुत्र ग्रेगरी! क्या तुम्हें अपने माता-पिता की याद नहीं आती?'

'हमारे प्रभु ने कहा,' ग्रेगरी ने उत्तर दिया, *'"जो कोई पिता या माता से मुझसे अधिक प्रेम करता है, वह मुझसे प्रेम करने के योग्य नहीं है; और जो कोई पुत्र या पुत्री से मुझसे अधिक प्रेम करता है, वह मुझसे प्रेम करने के योग्य नहीं है"* (मत्ती 10:37)। 'लेकिन फिर भी, पिताजी, आइए हम ईश्वर से प्रार्थना करें कि वह मेरे माता-पिता (जिन्होंने मुझे खो दिया है) को सांत्वना दें, और मुझे, एक पापी को, शत्रु के जालों से बचाएं।'

कई दिनों की यात्रा के बाद, वे पवित्र नगर के पास पहुँचे और रास्ते में मिले एक मठ में प्रवेश किया। इस बीच, चालीस दिनों का उपवास शुरू हो गया था, और इसलिए वे और आगे नहीं गए, बल्कि पवित्र सप्ताह तक उसी मठ में रहे। वहाँ, ग्रेगरी ने भिक्षुओं के कठोर उपवास और उनकी जागरणों को देखा: उनमें से कई पूरे सप्ताह न तो खाए और न ही सोए। यहाँ उन्होंने लोगों को स्वर्गदूतों की तरह जीते और निरंतर परमेश्वर की महिमा करते देखा, ठीक वैसे ही जैसे वे स्वर्ग में करते हैं; उन्होंने भिक्षुओं को झरनों की तरह आँसू बहाते और दिन-रात प्रार्थना में खड़े देखा; उन्होंने उनके अन्य कार्यों और अविश्वसनीय कारनामों को देखा, और भय से भरकर अपने सीने पर हाथ मारा और पुकार उठा:

'हाय मेरे भाग्य! मैं क्या हूँ? मैं क्या करूँ, मैं जो लापरवाह और आलसी हूँ? मैं न्याय के दिन संतों के बगल में कैसे खड़ा हो सकूँगा?!'

लेकिन, फिर भी, निराशा की खाई में पूरी तरह से डूबना नहीं चाहकर, उसने अपने आप से कहा:

'यदि, जैसा कि दाऊद कहते हैं, *"प्रभु टूटे हुए दिल वालों के पास है और आत्मा से पश्चातापी लोगों को बचाता है"* (भजन संहिता 33:19), तो वह मुझे भी बचा सकता है, ठीक वैसे ही जैसे उसने ग्यारहवें घंटे पर आए लोगों को बचाया[8108] और जिन्होंने पुरस्कार के योग्य कुछ भी नहीं किया था।'

भिक्षुओं ने, उसका उदास चेहरा देखकर, उसे सांत्वना दी, यह सोचकर कि वह अपनी मातृभूमि और अपने माता-पिता के लिए तरस रहा था।

उन्होंने उससे कहा, 'दुखी मत हो, मेरे बच्चे, कि तुम हमारे साथ इतनी दूर आ गए हो: हमें उम्मीद है कि, ईश्वर की मदद से, तुम अपने देश लौट जाओगे और अपने माता-पिता को जीवित देखोगे।'

उसने उत्तर दिया, 'ईश्वर के लिए कोई परदेश नहीं है: सब कुछ उसी का है, और उसकी सर्व-दृष्टा आँख हर जगह व्याप्त है। और मुझे इस बात का दुख नहीं है कि मैं इतनी दूर आ गया हूँ, न ही मैं अपने माता-पिता के लिए तरसता हूँ; बल्कि, मैं इस बात की खुशी मनाता हूँ कि, अपने माता-पिता को छोड़कर, मैंने ईश्वर को पाया है, जो मेरी परवाह करते हैं।' नहीं, मेरे हृदय पर एक और दुख का बोझ है। मैं आपसे विनती करता हूँ, हे पवित्र पिताओं, कि आप मेरे लिए, एक दीन आत्मा के लिए, प्रभु से प्रार्थना करें।

इस उत्तर के बाद, भिक्षु चुप हो गए।

[8107] अर्थात्: 'काश मैं भी तुम्हारी तरह पाप से मुक्त होता।'

[8108] सुसमाचार की दृष्टांत कथा का अर्थ है कि पश्चाताप और ईश्वर की ओर मुड़ने के लिए कभी भी देर नहीं होती।

जब मसीह के पुनरुत्थान का पर्व आया, तो यात्री यरूशलेम के लिए रवाना हुए और पवित्र स्थलों पर अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करने के बाद, आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए पैट्रआर्क – संत मकारियस[8109] – के पास आए। उन्हें देखकर, पैट्रआर्क ने कहा:

'प्रभु में आनन्दित हो, अबा मार्क! आपने इस ईश्वर-भयभीत युवक, ग्रेगरी को, हमारे यहाँ कहाँ से लाया है?'

मार्क ने उत्तर दिया, 'महाधर्माध्यक्ष, उसे हमने नहीं लाया, बल्कि प्रभु ने लाया है, जो सभी का उद्धार चाहता है, और आपकी पवित्र प्रार्थनाओं ने।'

ग्रेगरी यह देखकर चकित था कि पैट्रआर्क ने उसका और उस वृद्ध का नाम लेकर बुलाया था, और उसे उस वृद्ध का नाम जानकर बहुत प्रसन्नता हुई; क्योंकि उस समय तक, उनके साथ इतना समय बिताने के बावजूद, वह न तो वृद्ध का नाम जानता था और न ही उसके दो अन्य साथियों का, और उसने उनसे यह पूछने की हिम्मत भी नहीं की थी कि वे कहाँ से हैं या उनके नाम क्या हैं - वह इतना मौनप्रिय और जिज्ञासु-रहित था।

तब पैट्रआर्क ने दूसरे दो भिक्षुओं की ओर देखा और कहा:

'सरापियन और फादर लियोन्टियस, तुम लोगों का आना अच्छा हुआ। मैं परमेश्वर का धन्यवाद करता हूँ, जिन्होंने तुम्हें यहाँ आने और अपने साथ इस युवक को लाने की शक्ति दी है, जो आत्मा से जलता हुआ, प्रभु की सेवा करता हुआ, आशा से सांत्वना पाता हुआ, प्रार्थना में दृढ़ है, जैसा कि प्रभु ने मुझे उसके बारे में प्रकट किया है।'

यह कहकर, धर्मगुरु दिव्य लिटिर्जी का अनुष्ठान करने के लिए चर्च में गए, और सभी यात्रियों ने परम पवित्र रहस्यों को ग्रहण किया। अगले सुबह, बाबा मार्क, दो भाइयों के साथ, धर्मगुरु का आशीर्वाद लेकर, मउंट सियोन के आसपास रहने वाले भाइयों से मिलने के लिए निकल पड़े। ग्रेगरी को नहीं पता था कि वे जा रहे थे, और पीछे रह जाने के कारण, वह इस बात से बहुत दुखी हुआ कि वह उनसे पीछे छूट गया था। लेकिन पैट्रआर्क ने उसे सांत्वना देते हुए कहा कि वे संत पहले मठ वापस आए बिना अपने देश नहीं लौटेंगे।

तब ग्रेगरी ने पैट्रआर्क को प्रणाम करके हिम्मत करके उनसे पूछा कि ये तीन महान पुरुष कहाँ से आए थे। पैट्रआर्क ने उत्तर दिया कि वे रोम से आए थे। जब भिक्षु यरूशलेम लौटे, तो अबा मार्क ने ग्रेगरी का हाथ पकड़कर उसे पैट्रआर्क के पैरों पर झुकाया और कहा:

'हे पवित्र पिता! यह भी मसीह के झुंड का है: यह चर्च में अधिकार ग्रहण करेगा और, एक चप्पू की तरह, आध्यात्मिक शिक्षा के माध्यम से इसे अच्छाई की ओर ले जाएगा। और आप, पिताजी, इसका ध्यान रखना, ताकि यह अपने आध्यात्मिक पूर्णता की पवित्रता को बनाए रखे और युवावस्था के विशिष्ट पापी विचारों से कलंकित न हो।'

'ईश्वर ने उसे अपने लिए चुना है,' महाधर्माध्यक्ष ने उत्तर दिया, 'उसकी माँ के गर्भ से ही, और उसे अपने भय से संरक्षित रखा है: वही उसे अंत तक सुरक्षित रखेंगे।'

तब, ग्रेगरी को उठाते हुए और यह देखकर कि वह रो रहा था, महाधर्माध्यक्ष ने उससे कहा:

'यदि तुम, मेरे बच्चे, यहाँ खुश हो, तो हमारे साथ रहो,' और हमारे प्रभु यीशु मसीह तुम्हारे भले के लिए सब कुछ व्यवस्थित कर देंगे; लेकिन यदि तुम उनके साथ जाना चाहते हो, तो शांति से जाओ।'

'नहीं, परम पावन पिता,' ग्रेगरी ने उत्तर दिया, 'मैं यहाँ से जाना नहीं चाहता, परन्तु मैं केवल परमेश्वर से यही प्रार्थना करता हूँ कि वह मुझे इस जीवन में इन पवित्र पिताओं को एक बार फिर देखने का अनुग्रह दे।'

इस प्रकार, पितृप्रधान से अपनी यात्रा के लिए आशीर्वाद और प्रार्थनाएँ लेकर, भिक्षु पवित्र नगर से चले गए, जबकि ग्रेगरी पितृप्रधान मकरियुस के साथ यरूशलेम में ही रहे।

रोम जाते समय, अबा मार्क को सेरापियन और लियोन्टियस के साथ अक्रागस के पास से होकर गुजरना पड़ा। वे वहाँ रुके, बिशप पाटामियन को प्रणाम किया, और कुछ समय के लिए बिशप के आवास में ठहरे, क्योंकि संत पतरस और पवित्र पौलुस प्रेरितों का पर्व नजदीक आ रहा था। उत्सव के बाद, जब वे विदा होने वाले थे और उन्होंने बिशप से आशीर्वाद माँगा था, तो ग्रेगरी के माता-पिता, चारिटोन और थियोडोटा, अपने गाँव से पाटामियन के पास अपने पुत्र की पहली पुण्यतिथि मनाने आए, क्योंकि ठीक उसी दिन ग्रेगरी ने अपनी मातृभूमि छोड़ दी थी। थियोडोटा अपने बेटे के लिए जोर-जोर से रोई, और कोई भी उसे सांत्वना नहीं दे सका। अब्बा मार्क ने बिशप से पूछा:

'पिताजी, ये लोग इतनी ज़ोर से क्यों रो रहे हैं?'

[8109] मकारियस द्वितीय 663 से 674 तक यरूशलेम के पैट्रआर्क थे।

बिशप ने आह भरते हुए, अपनी आँखों में आँसू भरकर उत्तर दिया:

उनका एकमात्र पुत्र था, जिसका मैंने बपतिस्मा दिया था। जब वह आठ साल का हुआ, तो उसके माता-पिता उसे मेरे पास ले आए, और मैंने आदेश दिया कि उसे पढ़ना-लिखना सिखाया जाए; और ईश्वर ने उसे इतने गुण दिए कि दो साल के भीतर ही उसने पढ़ना, लिखना और चर्च में खूबसूरती से गाना सीख लिया। जब वह बारह वर्ष का हुआ, तो उसके माता-पिता ने उसे मेरे पापी हाथों द्वारा ईश्वर को समर्पित किया, और मैंने उसे एक पुरोहित नियुक्त किया और अपने महादीकन के हवाले कर दिया, ताकि वह उसे प्रभु की आज्ञाओं के मार्ग सिखाए; और वह लड़का पवित्र शास्त्र में इतना पारंगत हो गया कि आज भी आप पूरे सिसिली में उसका कोई सानी नहीं पाएंगे। और अब हम नहीं जानते कि उसका क्या हुआ; वह कहाँ गया? वह अचानक बिना किसी सुराग के गायब हो गया; और लंबे समय तक हमने पूरे द्वीप में उसकी तलाश की—शहरों और गांवों में, पहाड़ों, गुफाओं और रेगिस्तानों में—लेकिन हमें वह नहीं मिला, और हम नहीं जानते कि किसी ने उसे मारकर दफना दिया, या उसे अगवा करके किसी विदेशी देश ले जाया गया। और अब हम सभी को उसके लिए गहरी दया आती है, जबकि उसके माता-पिता ने उसी दिन उसके लिए एक स्मृति सभा आयोजित करना शुरू कर दिया था जिस दिन वह गायब हुआ था।

इस बीच, बाबा मार्क ने चैरिटिन के चेहरे को ध्यान से देखकर यह महसूस किया कि वह ग्रेगरी का पिता था – क्योंकि ग्रेगरी हर तरह से अपने पिता से बहुत मिलता-जुलता था – और उन्होंने रो रहे माता-पिता से कहा:

'तुम अपने बेटे के लिए इतना गहरा शोक क्यों मना रहे हो? इसके विपरीत, तुम्हें तो आनंदित होना चाहिए और परमेश्वर का धन्यवाद करना चाहिए, जो अपने सेवकों के भले के लिए सभी बातों को व्यवस्थित करता है।'

और, बिशप की ओर मुड़कर, उन्होंने कहा:

'अपने आर्चडीकन को यहाँ बुलाओ।'

बिशप ने तुरंत आर्चडीकन को बुलाने का आदेश दिया, और जब वह उपस्थित हुआ, तो मार्क ने उससे प्रश्न किया:

'बताइए, आपके हवाले किए गए लड़के का क्या हुआ, और आप अपने स्वामी, बिशप को, उस लड़के में प्रकट हुई ईश्वर की महिमा क्यों नहीं बता रहे हैं?'

ये शब्द सुनकर, आर्चडीकन ने बुजुर्ग के सामने सिर झुकाया और क्षमा याचना की, और फिर अपना वृत्तांत सुनाना शुरू किया:

एक रात, जब मैं अपनी कोठरी में सो रहा था और वह लड़का मुझसे ज़्यादा दूर नहीं आराम कर रहा था, तो किसी ने अचानक उसे पुकारा: "ग्रेगरी"! वह उठा, मेरे पास आया और पूछा कि मैंने उसे क्यों बुलाया था। मैंने उससे कहा कि मैंने उसे नहीं बुलाया था। जब वह लेटने गया, तो आवाज़ ने दूसरी बार उसे बुलाया, और वह फिर मेरे पास आया और बोला, 'मैं यहाँ हूँ—आपने मुझे क्यों बुलाया?' तभी मुझे एहसास हुआ कि यह पुकार मानवीय नहीं, बल्कि ईश्वर की थी, और मैंने उसे निर्देश दिया कि यदि वह आवाज़ उसे फिर से पुकारे , तो उसे जवाब देना है: 'मैं यहाँ हूँ, प्रभु: आप अपने सेवक को क्या आज्ञा देते हैं?' वह अपने बिस्तर पर वापस चला गया, और मैंने एक बार फिर उसे आवाज़ देते हुए सुना: 'ग्रिगोरी! तुहारी प्रार्थना सुनी गई है: समुद्र तट पर जाओ, और वहाँ तुम्हें लोग मिलेंगे जो तुम्हें अपने साथ ले जाएँगे।' लेकिन यद्यपि मैंने स्वयं यह आवाज़ सुनी थी, मैं पूरी तरह से नहीं समझ पाया कि वह क्या कह रही थी, और मैं तुरंत सो गया; और अगली सुबह, जब मैं उठा, तो मुझे ग्रेगरी कहीं नहीं मिला, और आज तक उसका पता नहीं चला है; मैंने उस आवाज़ के बारे में किसी को बताने की हिम्मत नहीं की, क्योंकि मुझे डर था कि वे कहेंगे कि मैं झूठ बोल रहा हूँ, और मेरे शब्दों पर विश्वास न करके, यह तक कह सकते थे कि मैंने खुद ही उस लड़के को मार डाला था या उसे किसी परदेस में बेच दिया था।

आर्चडीकन की बात सुनकर, बिशप और माता-पिता को अपने दुख में सांत्वना मिली और उन्होंने ईश्वर का धन्यवाद किया, जबकि धन्य अबा मार्क ने कहा:

'जैसे हम राजाओं की पुस्तक में शमूएल के बारे में पढ़ते हैं (1 शमूएल 3:3–8), वैसे ही हमारे दिनों में ग्रेगरी के साथ भी हुआ है: जैसे प्रभु के स्वर्गदूत ने तम्बू में सो रहे लड़के शमूएल को तीन बार पुकारा, "शमूएल, शमूएल"! 'इसी प्रकार धन्य युवक ग्रेगरी को भी इसी प्रकार के आह्वान से सम्मानित किया गया। निस्संदेह, वह भविष्यवक्ता शमूएल के समान होगा! अब मैं तुम्हारे युवा काल के बारे में जो कहूँगा उसे सुनो: जब मैं रोम में था, तो मैं एक बार अपने भाइयों के साथ संत पतरस और पवित्र पौलुस की चर्च में प्रार्थना करने गया था। जैसे ही रात हुई, हमने एक भिक्षु के घर में रात बिताई, और उसी रात दो तेजस्वी पुरुष, जो प्रेरितों जैसे दिखते थे, मुझे एक दर्शन में दिखाई दिए और उन्होंने कहा:

'शीघ्र उठो, सेरापयिन और लयिोन्टयिस के साथ; एक जहाज पर चढ़ो और कार्थेज की ओर नौकायन करो: वहाँ तुम्हें ससिलिी द्वीप का एक यात्री मलिेगा, जसिका नाम ग्रेगरी है, जो अक्रागास के चर्च से है; उसे अपने साथ ले जाओ और उसे पवत्रि नगर यरूशलेम में पैट्रआर्क मकरयिस के पास ले चलो; हम पहले ही इस युवक के बारे में पैट्रआर्क से कह चुके हैं और उन्हें उसे स्वीकार करने का आदेश दयिा है, क्योंकि हमारी आत्मा उसी पर टकिी हुई है, जैसे एलयिाह की आत्मा एलीशा पर टकिी थी।

यह कहने के बाद, जो मेरे सामने प्रकट हुए थे, वे मेरी दृष्टि से ओझल हो गए। जागने पर, मैं अपने भाइयों सेरापयिन और लयिोन्टयिस के साथ बंदरगाह गया, जहाँ, ईश्वर की कृपा से, मुझे कार्थेज के लिए रवाना होने के लिए तैयार एक जहाज मलिा। हम उस पर चढ़ गए और जल्द ही वहाँ पहुँच गए। नाव से उतरने के बाद, हम पवत्रि शहीद जूलयिन के चर्च में गए और वहाँ हमें ग्रेगरी कतिाबें पढ़ते हुए मलिा। हम उसे अपने साथ ले आए, यरूशलेम के लिए रवाना हुए और वहाँ उसे पैट्रआर्क के पास छोड़ आए।

अब्बा के सभी श्रोता उनके शब्दों से बहुत हैरान रह गए और उन्होंने ईश्वर का धन्यवाद कयिा, जबकि चारटिॉन और थयिोडोटा, भावनाओं में बहकर, बेहोश होकर ज़मीन पर गरि पड़े; लेकनि मार्क ने उन्हें उठाया और कहा:

'ईश्वर की स्तुति करो कि तुम्हारा पुत्र जीवति है और एक पुण्य जीवन व्यतीत कर रहा है।'

और चैरटिन और थयिोडोटा ने अपने वलिाप को बंद कर दयिा, और बशिप तथा वहाँ मौजूद सभी लोगों के साथ मलिकर ईश्वर का धन्यवाद कयिा; उन्होंने ग्रेगरी की देखभाल के लिए अबा मार्क का भी धन्यवाद कयिा और अब वे दुख में नहीं डूबे रहे।

इस बीच, संत ग्रेगरी यरूशलेम में परम पावन पैट्रआर्क मकरयिस के अधीन रहे और उन्हें उनके द्वारा एक डकिन के रूप में नयिुक्त कयिा गया। कुछ समय बाद, उन्होंने पैट्रआर्क से जैतून का पर्वत[8110] जाने की अनुमति मांगनी शुरू कर दी, ताकि वहां रहने वाले संतों से मलि सकें, और अनुमति मिलने पर, उन्होंने एक पूरा साल बहादुर तपस्वयिों से मलिकर और उनसे हर तरह का आध्यात्मकि लाभ प्राप्त करके बतिाया। तब उन्होंने भीतरी रेगस्तिान[8111] के लिए नकिलने का नश्चिय कयिा, अपने इरादे को संतों को बताया और उनसे प्रार्थना करने के लिए कहा। उन्होंने उनके लिए प्रार्थना करने के बाद उन्हें वदिा कयिा, यह कहते हुए:

'शांति से जाओ, मेरे बच्चे: मसीह के प्रति तुम्हारा वश्विास और प्रेम तुम्हें बचाएगा।'

जैतून के पहाड़ से उतरकर, ग्रेगरी ने रेगस्तिान में गहराई तक प्रवेश कयिा और तीन दनि बाद, ईश्वर की कृपा से, दनि के छठे घंटे पर प्रार्थना कर रहे एक भकि्षु से मलिा। अपने अंतर्मन में यह महसूस करते हुए कि युवा ग्रेगरी मोक्ष की तलाश में है, भकि्षु ने उसे इशारे से बुलाया और पूछा:

'तुम कहाँ जा रहे हो, मेरे बच्चे?'

'जहाँ भी मसीह मुझे इस मरुभूमि से ले जाएँ,' ग्रेगरी ने उत्तर दयिा।

'मेरे साथ चलो,' भकि्षु ने कहा।

बीस दनि तक यात्रा करने के बाद, वे एक ऐसी जगह पर पहुँचे जहाँ से भकि्षु ने ग्रेगरी को दूर एक कोठरी दखिाई, जसिके सामने दो खजूर के पेड़ थे, और कहा:

'उस कोठरी में एक महान पति रहते हैं: यदि तुम मोक्ष पाना चाहते हो, तो उनके पास जाओ, लेकनि मुझे दूसरी दशिा में जाना होगा।'

और एक-दूसरे को प्रणाम करके, वे अपने-अपने रास्ते चले गए।

जैसे ही ग्रेगरी महान संन्यासी की कोठरी के पास पहुँचा, उसे पहले एक बड़े गायक मंडली का गायन सुनाई दयिा; लेकनि जब वह और करीब गया, तो उसे केवल तीन गायकों की आवाज़ें सुनाई दीं, और जैसे ही वह कोठरी के दरवाज़े के पास पहुँचा, उसे एहसास हुआ कि केवल वही संन्यासी गा रहे थे, जनि्होंने अभी-अभी नौवाँ प्रार्थना-समय समाप्त कयिा था; लेकनि ग्रगिोरी में दरवाज़ा खटखटाने की हम्मित नहीं हुई और वह डरकर बाहर ही खड़ा रहा। अपनी प्रार्थना समाप्त करने पर, पवत्रि पति ने दरवाज़े से बाहर देखा, उस युवक को देखा और आत्मा से तुरंत ही उसे पहचानकर, उसे अपने सेल में बुलाया, और उसका नाम लेकर पुकारा, जसिसे ग्रगिोरी और भी ज़्यादा डर गया। कोठरी में प्रवेश करने पर, ग्रेगरी ने

[8110] यरूशलेम के पूर्व में, कद्रिोन घाटी के पार। यहीं पर प्रभु ने संसार, यरूशलेम और मंदरि के वनिाश की भवष्यिवाणी की, और यहीं से वे स्वर्ग में आरोहण हुए। जैतून का पर्वत समुद्र तल से 2,600 फीट ऊपर है।

[8111] भीतरी मरुभूमि यरूशलेम और यरीहो के बीच स्थति है; यह एक चट्टानी, जंगली और बंजर स्थान है।

देखा कि उस एक संन्यासी के अलावा वहाँ कोई और नहीं था, और वह इस बात पर हैरान रह गया कि जब केवल एक संन्यासी गा रहा था तो उसे कई आवाज़ों का गायन कैसे सुनाई दिया; इससे उसे एहसास हुआ कि पवित्र स्वर्गदूत उस संन्यासी के साथ मिलकर गा रहे थे। वह संन्यासी के पैरों पर गिर पड़ा और, आँसुओं के साथ, उससे विनती करने लगा:

'पिताजी, मुझ पर दया करें और मेरे लिए प्रार्थना करें, एक पापी के लिए, कि ईश्वर मेरी आत्मा को बचा ले।'

'ईश्वर तुम पर दया करेंगे, मेरे बच्चे,' बुज़ुर्ग ने उत्तर दिया, 'और तुम्हारी मेहनत का फल देंगे।'

ग्रेगरी पवित्र संन्यासी के साथ चार साल तक रहे और उनसे आध्यात्मिक ज्ञान और मठवासी जीवन के बाहरी आचरण, दोनों में बहुत कुछ सीखा; उन्होंने दैवीय प्रेरित धर्मग्रंथों की व्याख्या का अध्ययन किया और अत्यंत विवेकी तथा वाक्पटु हो गए। महात्मा, उसकी बुद्धि और सद्गुण को देखकर और यह पूर्वानुमान लगाते हुए कि वह दुनिया के लिए एक महान प्रकाश बनेगा, उसे और अधिक समय तक रेगिस्तान में नहीं रखना चाहते थे और उन्होंने उसे अपना एकांत छोड़कर युद्ध में चर्च की सहायता के लिए आने का निर्देश दिया। साथ ही, उन्होंने ग्रेगरी को भविष्यवाणी की कि उसे अपने ईर्ष्यालु दुश्मनों के हाथों कई उत्पीड़नों का सामना करना पड़ेगा और उसे धैर्यवान और द्वेष से मुक्त रहने की हिदायत दी; फिर, उसके लिए प्रार्थना करने और उसे अपना आशीर्वाद देने के बाद, उन्होंने उसे विदा कर दिया।

विष्ठ से विदा लेकर, ग्रेगरी एक बार फिर यरूशलेम लौट आए, जहाँ पैट्रआर्क ने उनकी हर्षोल्लास के साथ स्वागत की। यरूशलेम में एक साल रहने के बाद, संत फिर अंतीयक और वहाँ से कॉन्स्टेंटिनोपल के लिए रवाना हुए, जहाँ उन्होंने पवित्र शहीदों सेरजियस और बक्कस के मठ में निवास किया। मठ के मठाधीश ने ग्रेगरी के तपस्वी कारनामों और आत्म-अनुशासन को देखा—क्योंकि उसने पूरे एक सप्ताह तक कुछ नहीं खाया था और अपना सारा समय किताबें पढ़ने और लिखने में बिताया था—और उसने पैट्रआर्क यूटिकियस को उसकी सूचना दी।

उन्होंने पादरी को बताया, 'एक असाधारण भिक्षु मठ में मेरे पास आया है—सुंदर रूप और अनुकरणीय आचरण वाला एक डीकन, एक महान उपवासी, सभी मठवासी तपस्या का उत्साही आचरणकर्ता, और पवित्र धर्मग्रंथों का एक उत्कृष्ट विद्वान। मुझे लगता है कि इस समय पूरे कॉन्स्टेंटिनोपल में उसकी तरह कोई और नहीं है।'

यह समाचार सुनकर पैट्रआर्क बहुत प्रसन्न हुए और उन्होंने ग्रेगरी को सम्मानपूर्वक बुलाकर उनसे बातचीत की; और उनकी बुद्धिमत्ता से प्रभावित होकर, उन्होंने ईश्वर का धन्यवाद किया कि उन्होंने ऐसे व्यक्ति को उस समय भेजा जब चर्च विधर्मी लोगों द्वारा मचाई गई बड़ी उथल-पुथल से जूझ रही थी।

इस बीच, अक्रागान्टियम के बिशप और धन्य पाटामियन के उत्तराधिकारी थियोडोर का निधन हो गया। अक्रागान्टियम के लोगों में असहमति और कलह उत्पन्न हो गई: कुछ लोग पादरी सावनिस को बिशप के रूप में देखना चाहते थे, कुछ एक निश्चित क्रिसैन्स को, कुछ पॉल को, जो तब आर्चडीकन थे, जबकि कुछ अन्य प्रभु की इच्छा पर भरोसा करते थे:

उन्होंने कहा, 'जिसको भी प्रभु चुनें, वही हमारा बिशप हो।'

इसे देखते हुए, सभी पुरोहित, नगर के अधिकारी और नागरिक एकत्रित हुए और पोप से मिलने के लिए रोम की ओर प्रस्थान किया; उनमें ग्रेगरी के पिता चारिटॉन भी थे। पोप के समक्ष पहुँचने पर, वे तीन गुटों में बँट गए: एक का नेतृत्व सावनिस ने किया, दूसरे का क्रिसिरेंटस ने, और तीसरे का यूप्लेम और चारिटॉन ने। पहले समूह ने सवनिस को बिशप नियुक्त करने का अनुरोध किया, दूसरे समूह ने क्रिसिरेंटस को नियुक्त करने का, जबकि यूप्लेस, चैरिटिन और अन्य लोगों ने पोप से कहा:

'जिसको भी ईश्वर आपकी पवित्रता को नियुक्त करें, उसे ही हमारा बिशप नियुक्त करें।'

पोप ने, उनके मतभेद और झगड़ा देखकर, उन्हें अपने पास से चले जाने का आदेश दिया। और जब वह ऐसी दुविधा में था, तो रात में एक दर्शन में दो भव्य पुरुष प्रेरितों के सदृश उसके सामने प्रकट हुए और कहा:

'तुम अक्रागास के लोगों के मतभेद से इतने व्यथित क्यों हो?' वे सभी जिन्हें उन्होंने प्रस्तुत किया है, बिशप के पद के अयोग्य हैं। लेकिन रोम में एक अजनबी है, जिसका नाम ग्रेगरी है, जो अब तक संत सावस के मठ में रहता था, और अब, अक्रागास के लोगों के आगमन के बारे में सुनकर, वह उस मठ से भाग गया है और संत मर्करी के मठ में छिप गया है: उसे बुलाओ और उसे अपना बिशप नियुक्त करो, क्योंकि अक्रागस को एक ऐसे बिशप की आवश्यकता है जिस पर ईश्वर की आत्मा विशेष रूप से विराम ले सके।

ये शब्द कहते ही, आगंतुक गायब हो गए। पोप के जागने पर, उन्होंने पुरोहितों और बाबा मार्क को बुलाया, जो उस समय संयोग से अपनी मठ से रोम आए थे; उन्होंने उन्हें अपने दर्शन के बारे में बताया और तुरंत दो बिशपों को, अन्य

पुरोहतिों के साथ, ग्रेगरी को खोजने और सम्मान के साथ वापस लाने के लिए भेज दयिा। वे संत सावस के मठ गए और वहाँ पूछा कि ग्रेगरी कहाँ है। भक्षिुओं ने उत्तर दयिा कि दो दनि पहले वह संत मर्करी के मठ के लिए रवाना हो गए थे। वे उस मठ के लिए रवाना हो गए, लेकनि संत ग्रेगरी, जो अभी-अभी मठ से नकिलने ही वाले थे, ने दूर से आते हुए बशिपों को देख लयिा और उन्हें पहचान लयिा – क्योंकि वह उन्हें पहले कॉन्स्टेंटनिोपल की परषिद में देख चुके थे – और, अपने मन में यह भांपकर कि वे उनके लिए ही आ रहे हैं, वे दीवार के पीछे दौड़ गए और मठ के बगीचे में छपि गए। मठ में प्रवेश करने पर, बशिपों ने उनके बारे में पूछा, और भक्षिुओं ने जवाब दयिा कि उस दनि वास्तव में मठ में एक अजनबी था, लेकनि उन्हें नहीं पता था कि वह कहाँ गया था। महाधर्माध्यक्षों ने मठाध्यक्ष से कहा और ज़ोर देकर कहा कि अगर उन्होंने इस यात्री को तुरंत उनके पास नहीं लाया, तो उन्हें कठोर दंड का सामना करना पड़ेगा। मठाध्यक्ष ने उनसे थोड़ी देर प्रतीक्षा करने का अनुरोध कयिा जब तक कि वह ग्रेगरी की अच्छी तरह से तलाश न कर लें और, अंतत; उन्हें बगीचे में घास में छपिा हुआ पाया। उन्होंने उसे गुस्से में खींचकर बाहर नकिाला और डाँटते हुए कहा:

'हे मनुष्य, तुम कहाँ से आए हो? तुमने कौन से पाप कयि हैं, और क्या कयिा है, कि इतने सम्माननति लोग तुम्हें ढूंढ रहे हैं? तुमने हमारे मठ पर मुसीबत ला दी है – अब जाओ और अपने पापों का प्रायश्चति करो।'

संत ग्रेगरी ने कुछ नहीं कहा और चुपचाप मठाधीश के पीछे चल दयि, जो उनका हाथ पकड़े हुए थे। जब उसे बशिपों के सामने लाया गया, तो उन्होंने उसे तुरंत पहचान लयिा – उन्होंने उसे परषिद में देखा था, जब सभी संतों ने उसकी प्रशंसा की थी और स्वयं सम्राट ने भी उसे सम्माननति कयिा था – और उठकर, उन्होंने उसके सामने झुककर उसे प्रेम से गले लगा लयिा। लेकनि वह स्वयं उनके पैरों पर गरि पड़ा और कहा:

'हे पवत्रि पतिाओं, मुझे क्षमा करें, क्योंकि मैं एक पापी हूँ। आप मेरी इस दीनता को, मुझ जैसे अयोग्य व्यक्ति को, क्यों ढूँढ़ रहे हैं?'

उन्होंने उसे जमीन से उठाते और चूमते हुए उत्तर दयिा, 'परम पावन पोप आपको बुला रहे हैं।'

मठाधीश यह देखकर हैरान और चकति था कि बशिपों ने उसी ग्रेगरी के प्रति इतना सम्मान दखिाया, जसिे वह एक तरह का खलनायक मानता था। हालाँकि, बशिपों ने ग्रेगरी को सम्मानपूर्वक पोप के पास ले गए।

जब ग्रेगरी अंदर आया और पोप के सामने झुका, तो पोप ने उससे कहा:

'तुम हमारे पास सही समय पर आए हो, मेरे पुत्र ग्रेगरी; धन्य है ईश्वर, जसिने तुम्हें हमारे पास भेजा है।'

और उठकर, उन्होंने उसे पवत्रि चुंबन दयिा, और फरि जारी रखा:

'मेरे पुत्र ग्रेगरी! हमारे प्रभु यीशु मसीह तुम्हें अकरगस में अपनी कलीसयिा के लिए बशिप के पद पर बुला रहे हैं, ताकि तुम्हारे द्वारा वहाँ रहने वाले लोग उद्धार पा सकें।'

'मुझे क्षमा करें, महाधर्माध्यक्ष महोदय,' ग्रेगरी ने उत्तर दयिा। 'मैं ऐसे पद के लिए अयोग्य हूँ।'

'अवज्ञा न करो,' पोप ने उत्तर दयिा, 'ईश्वर का भय मानो और याद रखो कि कई लोगों ने अपनी अवज्ञा के द्वारा सर्वोच्च के क्रोध को भड़काया है।'

तब ग्रेगरी ने कहा:

'महान सम्माननीय पति, मुझे वचिार करने और परम पावन को एक नश्चिति उत्तर देने के लिए थोड़ा समय दें।'

पोप ने ग्रेगरी को अगली सूचना तक बाबा मार्क के हवाले कर दयिा। बाबा को देखते ही ग्रेगरी, आनंद के आँसुओं के साथ, उनके पैरों पर लोट गया।

'मैं ईश्वर का धन्यवाद करता हूँ,' उसने कहा, 'कि उन्होंने मुझे इस जीवन में आपको एक बार फरि देखने की कृपा दी है, मेरे प्रयि पति!'

अब्बा मार्क उसे एक नजिी कमरे में ले गए, और उन्होंने पूरी रात जागते हुए आध्यात्मकि बातचीत में बतिाई। इससे पहले, ग्रेगरी स्पेन जाने की योजना बना रहा था, खासकर जब उसे पता चला कि उसके पति, चैरटिन, रोम आ गए थे। लेकनि मार्क ने उसे रुकने के लिए मना लयिा।

उन्होंने कहा, 'मेरे बेटे, ईश्वर को क्रोधति मत करो और—उनके आशीर्वाद के बजाय—अपने ऊपर शाप मत लाओ।'

उस समय से, ग्रेगरी ने अपनी योजना छोड़ दी। जल्द ही, पोप ने अक्रागस के नविासयिों को बुलाया और पूछा कि क्या वे अंततःएक बशिप के चुनाव पर सहमत हो गए हैं।

उन्होंने जवाब दिया, 'हम नहीं जानते, परम पावन, कि आपसे क्या कहें: हमने अपना भरोसा ईश्वर और आपकी पवित्र प्रार्थनाओं पर रखा है, और ईश्वर जिस व्यक्ति को आपको बताएँ, उसे हमें दें; हम उसे प्रेम से स्वीकार करेंगे।'

पोप ने चैरटिन के चेहरे को ध्यान से देखा, और उनके आश्चर्यजनक समान रूप से यह समझ गए कि वह ग्रेगरी के पिता थे।

तब उन्होंने कहा, 'चलो चर्च चलते हैं, और ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि वह हमें दिखाएँ कि वह स्वयं किसे योग्य मानते हैं।'

और इस प्रकार, जब पोप, बिशपों और संपूर्ण पुरोहित वर्ग के साथ, प्रमुख प्रेरितों संत पीटर और पॉल के चर्च में प्रार्थना कर रहे थे, और ग्रेगरी उनके साथ थे, तब पवित्र मेज़ के ऊपर एक उड़ती हुई कबूतर प्रकट हुई और संत ग्रेगरी के सिर पर आकर बैठ गई। इस अप्रत्याशित चमत्कार से सभी श्रद्धापूर्ण भय से भर गए।

पोप ने कहा, 'देखो, ईश्वर ने हमें प्रकट कर दिया है कि उन्होंने बिशप के पद के लिए किसे योग्य चुना है,' और उन्होंने ग्रेगरी को अक्रागस की चर्च का बिशप नियुक्त किया।

अक्रगंत के सभी नागरिक इससे प्रसन्न हुए और उन्होंने ग्रेगरी का प्रेमपूर्वक स्वागत किया, जैसे कि उन्हें स्वयं ईश्वर ने चुना हो। और चैरिटिँ ने अपने बेटे को पहचान लिया और ईश्वर का हार्दिक धन्यवाद किया कि उन्होंने उसे अपने बेटे को जीवित देखने का आशीर्वाद दिया और, उससे भी बढ़कर, इतनी ऊँची पदवी पर देखा।

कुछ दिनों बाद, अक्रागेंटियम के लोगों ने पोप का आशीर्वाद प्राप्त कर, अपने नव-नियुक्त बिशप के साथ अपने शहर लौट आए। जब वे पैनोर्मिया[8112] से गुज़र रहे थे, तो उस शहर के बिशप पुरोहितों और पूरी मंडली के साथ उनसे मिलने बाहर आए और उन्होंने उनका गर्मजोशी से स्वागत किया: उन्होंने ग्रेगरी के सदाचारी जीवन के बारे में सुना था और उनसे चर्च में प्रवेश करने और लोगों पर अपना आशीर्वाद देने के लिए कहा। जैसे ही ग्रेगरी चर्च में प्रवेश कर रहे थे, कुष्ठ रोग से बुरी तरह पीड़ित एक भिक्षु उनके पास आया और ज़ोर से चिल्लाया:

'हे मसीह के सेवक, मुझ पर दया करो और मेरी खातिर ईश्वर से प्रार्थना करो, कि वह मेरी इस भयंकर बीमारी से मुझे राहत दे।'

संत ने उससे कहा, 'प्रभु के नाम पर, अपनी पीड़ा से चंगा हो जा।'

और वह भिक्षु तुरंत ठीक हो गया और कुष्ठ रोग से मुक्त हो गया, यहाँ तक कि उसका शरीर एक छोटे बच्चे के शरीर जैसा हो गया।

सभी ने परमेश्वर की स्तुति और प्रशंसा की, जो अपने संत के माध्यम से चमत्कार करते हैं।

ग्रेगरी और उसके साथी पैनोर्मिया से चले गए और अक्रागस पहुँचे। वहाँ उनका स्वागत परम पवित्र माता परमेश्वर के उपनगरीय मठ के मठाधीश ने किया। जब ग्रेगरी मठ में प्रवेश किया, तो एक बहरा-मूंगा भिक्षु उसके पैरों पर गिर पड़ा; मठाधीश ने उसे बिशप के पैरों से हटाने की कोशिश की, लेकिन संत ग्रेगरी ने उससे कहा:

'भाई, उसे रहने दो: उसे हमें बताने दो कि उसे क्या चाहिए।'

मठाधीश ने कहा:

'यह एक पवित्र मूर्ख है, महाशय, और इसके अलावा, यह बहरा और गूंगा भी है।' संत ने आह भरकर, स्वर्ग की ओर अपने हाथ उठाकर प्रार्थना की; फिर उन्होंने उस भिक्षु को जमीन से उठाया और उससे कहा:

'हमारे प्रभु यीशु मसीह के नाम पर, जिसने उसे बहरा और गूंगा करने वाले दानव को ईश्वर की सृष्टि से निकलने की आज्ञा दी थी, बोलना शुरू करो, भाई, और सुनो, और उस ईश्वर की महिमा करो, जिसने यह तुम्हारे लिए किया है!'

और तुरंत ही भिक्षु बोलने लगा और ऊँचे स्वर से चिल्लाया:

'हे प्रभु, इस मनुष्य के लिए आपने जो कार्य किए हैं, वे महान हैं!'

संत ने भिक्षु से पूछा कि उसने आखिरी बार बोलने के बाद कितने साल बीत गए हैं।

'मुझे याद नहीं, पिताजी,' ठीक हुए आदमी ने उत्तर दिया, 'वह समय जब मैं बोलता या सुनता था।'

तब मठाधीश ने उसकी ओर से कहा:

'आपकी कृपा से, आज बीस साल हो गए जब हमने उसका मुंडन किया था; उसका मुंडन आठ साल की उम्र में किया गया था और वह आज तक बहरा और गूंगा था; लेकिन अब वह आपकी प्रार्थनाओं से चंगा हो गया है।'

[8112] पैनोर्मिया, जो अब पैलेर्मो है, सिसिली द्वीप के उत्तर-पश्चिमी तट पर एक शहर है।

चमत्कार देखकर सभी पर एक श्रद्धापूर्ण भय छा गया, और सभी ने ईश्वर का धन्यवाद किया, जिन्होंने उन्हें एक चमत्कार करने वाले बिशप का वरदान दिया था।

संत ग्रेगरी सुबह तक इस मठ में रहे, और सुबह वे अक्रागस के लिए रवाना हो गए। शहर के लोग जो घर पर ही रहे थे, यह सुनकर कि एक नया बिशप आ रहा है, एक-दूसरे से पूछने लगे: 'उनमें से किसे चुना गया है: सैवनि, क्रिसेन्स्ट, या यूफ्लस?' – और, यह जानकर कि इन तीनों में से कोई भी बिशप पद के लिए योग्य नहीं माना गया था, बल्कि ग्रेगरी नामक एक अकेले यात्री को चुना गया था, वे बहुत हैरान हो गए; और यह सुनकर कि वह एक चमत्कार करने वाले थे और उन्होंने पहले ही एक बधिर-मूक को ठीक कर दिया था, वे श्रद्धा से भर गए। शहर की पूरी आबादी उसे मिलने के लिए बाहर आई और उन्होंने उसका आशीर्वाद लिया, और जब उन्होंने उन्हें आशीर्वाद दिया, तो उन्होंने सभी पर अपना हाथ रखा। उनमें उनकी माँ थियोडोटा भी थीं, साथ ही अन्य वृद्ध महिलाएँ भी थीं, जिन्हें अभी तक यह नहीं पता था कि नया बिशप उनका बेटा था। लेकिन, उसे देखते ही, वह उसे तुरंत पहचान गईं और कहा:

'सचमुच, यह मेरा पुत्र है जो खो गया था और मिल गया है' (लूका 15:24)।

ग्रेगरी ने अपनी माँ को देखकर कहा:

'नमस्ते, लेडी थियोडोटा, मेरी माँ!'

– धन्य हो परमेश्वर,' उसने बड़ी प्रसन्नता से उत्तर दिया, 'जिसने तुम्हें अपने लोगों का चरवाहा बनने के लिए चुना है और मुझे तुम्हें देखने का सौभाग्य प्रदान किया है, मेरे प्रिय पुत्र!

फिर, गाते हुए, वे सभी चर्च में प्रवेश कर गए। और जब संत ग्रेगरी दैवीय अनुष्ठान का अनुष्ठान कर रहे थे, तो कुछ योग्य लोगों ने पवित्र आत्मा की कृपा को कबूतर के रूप में उन पर उतरते और उन पर छा जाते देखा, ठीक वैसे ही जैसे उनकी दीक्षा के समय हुआ था। चर्च में बहुत सारे बीमार लोगों को लाया गया, और संत ग्रेगरी ने उन पर अपने हाथ रखकर उन्हें स्वस्थ कर दिया, जिससे हर कोई चकित हो गया और कहने लगा:

'सचमुच, वह नेओकेसरिया के चमत्कार करने वाले संत ग्रेगरी के समान हैं।'

और नगर में बहुत आनंद हुआ।

अपना झुंड संभालने के बाद, ग्रेगरी ने गरीबों की गहरी परवाह की, बीमारों को चंगा किया और दुष्ट आत्माओं को भगाया। उनके पिता, चारिटिन, शायद ही कभी चर्च छोड़ते थे, और वे उपवास और प्रार्थना के माध्यम से दिन-रात ईश्वर की सेवा करते थे; इसी तरह उनकी माता, थियोडोटा, ने सभी सांसारिक चिंताओं को त्यागकर, केवल अपनी मुक्ति के लिए समर्पित हो गईं, और बीमारों तथा गरीबी से पीड़ितों की सेवा करती थीं, उन्हें अपने खर्च पर भोजन और वस्त्र देती थीं। इस प्रकार, ग्रेगरी, अपने माता-पिता के साथ, मसीह की कलीसिया के लिए एक शोभा थे और सभी के लिए एक सदाचारी जीवन का उदाहरण थे।

एक अवसर पर, संत ग्रेगरी बीमारों और बेसहारा लोगों से मिलने के लिए शहर गए, और जिन सभी निवासियों के रिश्तेदार बीमार थे, उन्होंने उन्हें उस सड़क पर लिटा दिया जिससे होकर वह पवित्र चिकित्सक गुजरने वाले थे; फिर वह अपने हाथों के एक स्पर्श से ही हर तरह की बीमारियों को ठीक कर देते थे। संयोग से, पादरी सावनि की एक लकवाग्रस्त बेटी थी जो बिस्तर पर पड़ी थी, पूरी तरह से शक्तिहीन, इसलिए वह अपनी कोई भी हरकत नहीं कर सकती थी, और दूसरों को ही उसे पलटना पड़ता था। उसकी माँ ने, यह सुनकर कि बिशप उनके घर से होकर जाएँगे, उसे बाहर ले जाकर संत के मार्ग पर लिटा दिया। जब ग्रेगरी पास आए, तो वह रोते हुए उनके पैरों पर गिर पड़ी और कहा:

'हे ईश्वर के सेवक, मुझ पर दया करें और मेरी पक्षाघातग्रस्त बेटी पर तरस खाएँ।'

संत ने उससे पूछा कि वह किसकी पत्नी है। तब पादरी सावनि घर से बाहर आए और बिशप के सामने झुककर बोले:

'वह आपकी दासी है, मेरे स्वामी, और मेरी पत्नी है।'

'आपकी बेटी कितने समय से बीमार है?' बिशप ने पूछा।

'नौ साल, महाधर्माध्यक्ष महोदय,' उन्होंने उत्तर दिया, 'जब से उसकी शक्ति चली गई है।'

एक प्रार्थना कहने के बाद, संत ने युवती पर क्रॉस का चिह्न बनाया और कहा:

'यीशु मसीह के नाम पर, युवती, उठ और अपने पैरों पर खड़ी हो जा।'

और तुरंत वह लड़की उठ खड़ी हुई, उसकी तबीयत पूरी तरह से ठीक हो चुकी थी, और उसने अपने उपचारक का धन्यवाद किया। संत के पीछे-पीछे चल रहे लोग उनके द्वारा किए जा रहे चमत्कारों को देखकर चकित रह गए।

लेकिन कुछ वर्षों बाद, सभी अच्छाइयों का शत्रु – शैतान – संत के विरुद्ध उठ खड़ा हुआ और उसने उसी सावनिस, जिसकी बेटी को संत ग्रेगरी ने ठीक किया था, और उपर्युक्त क्रिसैन्स के माध्यम से संत को उनके पद से वंचित करने की साजिश रची। दोनों अक्रागस में पुरोहित थे और, जैसा कि पहले ही उल्लेख किया गया है, दोनों में से प्रत्येक ने एक बार बिशप पद की चाह की थी, यही कारण था कि वे एक-दूसरे से असहमत थे। अब, हालांकि, वे सुलह कर चुके थे और संत ग्रेगरी के खिलाफ हाथ मिला लिया था; शैतान की ईर्ष्या से प्रेरित होकर, उन्होंने एक-दूसरे से कहा:

'हम कितनी देर तक इस आदमी की आज्ञा मानते रहेंगे—एक जादूगर जो अपने जादू-टोने से चमत्कार करता है और आम लोगों को चकित करता है? या क्या हम यह नहीं जानते कि वह एक बार हमारे शहर से भाग गया था, एक जादूगर के साथ रहा और उससे जादू सीखा, और अब, यहाँ लौटकर, वह लोगों को यह कहकर बहकाता है कि वह ईश्वर का पुरुष है, जबकि वास्तव में वह एक राक्षस की तरह है, क्योंकि वह न तो खाता है और न ही पीता है, ठीक एक राक्षस की तरह?!

धर्मी व्यक्ति के विरुद्ध यह सारी बदनामी और निंदा ग्रेगरी की उच्च पदवी और प्रसिद्धि से ईर्ष्या के कारण थी। उन्होंने कुछ पुरोहितों और नागरिकों को अपने पक्ष में कर लिया और एक-दूसरे से यह शपथ ली कि वे तब तक चैन से नहीं बैठेंगे जब तक वे ग्रेगरी को शहर से बाहर नहीं निकाल देते; और वे उसकी जगह एक निश्चित एलीउसिस को बिशप नियुक्त करना चाहते थे - एक विधर्मी जिसे पुरोहित पद से हटा दिया गया था और लाओडिकिया की परिषद द्वारा निंदा किया गया था[8113] ; वह गुप्त रूप से अक्रागस पहुँचा था और संत ग्रेगरी को इसकी जानकारी न रहते हुए, शहर के एक निवासी थियोडोरा के साथ छिपा हुआ था। संत ग्रेगरी पहले पूर्व में इस एलेउसियस से मिले थे, जहाँ उन्होंने ईश्वर के पुत्र के अवतार पर उनके साथ बहस की थी और उन्हें पराजित किया था। यही वही एलेउसियस था जिसने अक्रागस में अपने तीन महीने के प्रवास के दौरान सावनिस, क्रिसैन्स और कई अन्य लोगों में संत ग्रेगरी के प्रति ईर्ष्या और शत्रुता भड़काने में सफलता प्राप्त की। ग्रेगरी के दुश्मनों ने, आपस में सलाह-मशविरा करने के बाद, यूडोशिया नाम की एक युवती को रिश्वत दी—जो देखने में सुंदर लेकिन शर्महीन और दुराचारी स्वभाव की थी—ताकि वह सार्वजनिक रूप से, सबके सामने, बिशप से कह दे कि उसने उसके साथ व्यभिचार किया था। पहले तो उसने इनकार कर दिया, यह कहते हुए कि अक्रागस के नागरिक, जो ग्रेगरी को ईश्वर का एक देवदूत मानते थे, उस पर विश्वास नहीं करेंगे, और उसे डर था कि लोग उसे पत्थर मार देंगे; लेकिन उन्होंने उसे विश्वास दिलाया कि उसे कोई नुकसान नहीं होगा, और एक बड़ी रिश्वत देकर उसे अपने प्रस्ताव के लिए राज़ी कर लिया; फिर उन्होंने ग्रेगरी पर आपदा और अपमान लाने के लिए एक अनुकूल क्षण की प्रतीक्षा करना शुरू कर दिया। एक रात, जब संत ग्रेगरी चर्च में मध्यरात्रि की प्रार्थना में शामिल थे, तब सावनि और क्रिसैन्स्ट करिए की वेश्या को अपने साथ ले गए और उसे गुप्त रूप से बिशप के आवास में ले गए। वहाँ उन्होंने दरवाज़े पर पहरा देते हुए द्वारपाल को पाया और सोने की मदद से उसे चुप रहने के लिए मना लिया, जबकि उन्होंने स्वयं यूडोक्सिया को संत के शयनकक्ष में ले जाकर, उसे वहाँ बंद कर दिया और चले गए। ग्रेगरी, जिन्हें इस सब की कोई खबर नहीं थी, मैटिन्स की प्रार्थना के अंत तक चर्च में ही रहे। दिन निकल आया, और जब बिशप आखिरकार चर्च से बाहर निकले, तो मैटिन्स में शामिल हुए सभी लोग उनके पीछे हो लिए, क्योंकि अक्रैगस के लोगों में यही रिवाज था - हमेशा अपने बिशप को चर्च से उनके घर तक साथ ले जाना। अपने दरवाज़े पर पहुँचने पर, संत ग्रेगरी ने उनके साथ आए लोगों की ओर मुड़कर उन्हें विभिन्न निर्देश दिए और उनका आशीर्वाद दिया। भीड़ में सावनि, क्रिसैन्स्ट और बाकी साज़िशकर्ता भी थे: वे बिशप के शयनकक्ष में घुस गए, और बिशप तथा पूरी भीड़ की मौजूदगी में वहाँ से एक महिला को बाहर ले आए, और ज़ोर से चिल्लाए:

'देखो, लोगों, हमारे बिशप क्या कर रहे हैं! क्या उन्हें ऐसे जीना चाहिए? हम सब कहते थे कि वह एक संत हैं, लेकिन वह एक व्यभिचारी निकले हैं: अब से, वह बिशप के पद के अयोग्य हैं!'

भीड़ स्तब्ध रह गई और सभी पत्थर की मूर्ति बिनकर खड़े रह गए, यह नहीं जानते कि क्या कहें। स्वयं संत ग्रेगरी भी ऐसी अप्रत्याशित विपत्ति से चकित रह गए और चुप रहे।

उन्होंने उस महिला से सवाल करना शुरू किया कि क्या बिशप उसके साथ था, और उसने सभी के सामने पुष्टि की कि वह पिछली रात उसके साथ था। आर्चडीकन और बिशप के अन्य करीबी लोगों ने उससे पूछा कि वह रात के किस

[8113] लाओदीकिया की परिषद (फ्राइजिया में) दूसरी सार्वभौमिक परिषद से ठीक पहले, चौथी शताब्दी के अंत में हुई। इसके कैनन (60) पूजा के क्रम, पुरोहित वर्ग के अनुशासन, पारिवारिक जीवन और सामान्य लोगों के नैतिकता, उस समय के दुर्गुणों और त्रुटियों, और विधर्मी शिक्षाओं के विभिन्न विवरणों से संबंधित हैं; इस अर्थ में, वे उस समय के ईसाइयों की पूजा-संबंधी प्रथाओं और जीवन के बारे में विशिष्ट अंतर्दृष्टि का खजाना प्रदान करते हैं।

सटीक घंटे पर उसके साथ था। उसने, जो पहले से ही ग्रेगरी के दुश्मनों द्वारा जानकारी दी गई थी, जवाब दिया कि यह संध्या के बाद का समय था।

'जिस प्रकार प्रभु जीवित हैं,' बिशप के करीबी सहयोगियों ने पुकारा, 'यह कपटी महिला झूठ बोल रही है!'

लेकिन उसके दुश्मनों ने जवाब दिया:

'तुम उसके अपने लोग हो और तुम पर भरोसा नहीं किया जा सकता, क्योंकि तुम अपने स्वामी के पापों को छिपाने की कोशिश कर रहे हो?'

यह सुनकर, फिलिडेल्फस नामक एक युवा डिकन ने एक भजन के शब्दों का उद्धरण दिया: *'वे झूठे होंठ चुप हो जाएँ, जो धर्मी के विरुद्ध गर्व और तिरस्कार के साथ बुराई बोलते हैं'* (भजन संहिता 30:19)।

क्रिसैन्ट फिलाडेल्फस के पास भागा और उसे गालों पर मारने लगा। भीड़ में से कई लोग बहक गए और इस बदनामी पर विश्वास कर बैठे, जब उन्होंने उस महिला को शयनकक्ष से बाहर आते देखा और उसे बिशप की मौजूदगी में यह कहते सुना कि वह उसके साथ था; हालाँकि, अन्य लोग सब कुछ जानने के बावजूद उस पर विश्वास करने से इनकार कर दिए। हालाँकि, विरोधी पक्ष हावी हो गया, और बिशप को पकड़ लिया गया, उनके घर से बाहर ले जाया गया और उस कालकोठरी में कैद कर दिया गया जहाँ लिबिया के पवित्र शहीद ग्रेगरी ने एक बार मसीह के लिए कष्ट सहे थे: वहाँ दुश्मनों ने इस संत ग्रेगरी को भी बंद कर दिया, उनके पैरों को एक पत्थर से जंजीरों से बाँध दिया और दरवाज़े बंद करके उन पर कड़ी नज़र रखी। तब वे शीघ्रता से सिसिली में पोप के एक्ज़ार्क, ए[8114] , को एक पत्र भेजने लगे, जिसमें उन्होंने जो कुछ हुआ था उसकी सूचना दी और अनुरोध किया कि वे ग्रेगरी के मुकदमे की अध्यक्षता करने के लिए अक्रागस आएं।

इस बीच, न केवल अक्रैगस में, बल्कि पिड़ोसी कस्बों और गांवों में, और यहां तक कि पूरे सिसिली में भी यह अफवाह फैल गई कि बिशप ग्रेगरी को एक वेश्या के साथ पकड़ा गया था।

संत से प्रेम करने वाले और इस बदनामी पर विश्वास न करने वाले लोगों की एक बड़ी भीड़ जेल के बाहर इकट्ठा हो गई; वे रोते हुए बाहर बैठे रहे।

इस बीच, संत ग्रेगरी ने ईश्वर का धन्यवाद किया, जिन्होंने उन्हें निर्दोष होने के बावजूद पीड़ा सहने के योग्य समझा। आधी रात को, जब वह प्रार्थना कर रहे थे, तो एक बड़ी रोशनी ने कालकोठरी को प्रकाशित कर दिया; प्रभु का स्वर्गदूत प्रकट हुआ, उसने ग्रेगरी को उसकी की बेड़ियों से मुक्त कर दिया और धैर्य के वचनों से उसे बल प्रदान करने के बाद अदृश्य हो गया, जबकि कालकोठरी के दरवाज़े अपने आप खुल गए। कालकोठरी के बाहर इकट्ठा हुए लोग संत के सामने झुक गए, और कहने लगे:

'अब हमें पूरा विश्वास हो गया है कि ईश्वर आपके पक्ष में है, और आपके विरुद्ध जो कुछ भी कहा गया था वह बदनामी थी।'

वे सावनि और क्रिसैन्स्ट को मारने जाना चाहते थे, लेकिन संत ने उन्हें ऐसा करने से रोका और उन्हें फिर से विवाद खड़ा करने या खून बहाने से मना किया, और उन्हें उस फैसले का इंतजार करने के लिए मनाया जो उन पर सुनाया जाना था। एक्ज़ार्क, अक्रागस पहुँचने के बाद, ने पूरे नगर की सभा बुलाई और न्यायाधीश की पीठ पर अपनी सीट लेने के बाद, ग्रेगरी को लाने का आदेश दिया और उसे अपने सामने खड़ा कर दिया। ग्रेगरी के विरोधी भी यूडोक्सिया के साथ अदालत में खड़े थे, जिससे एक्ज़ार्क ने पूछा:

'क्या यह सच है जो आप कह रहे हैं, कि बिशप आपके साथ था?'

'हाँ, महाशय, यह सच है; वह मेरे साथ था।'

उसके ये शब्द कहते ही एक राक्षस ने तुरंत उसे पकड़ लिया, उसे ज़मीन पर पटक दिया, और वह दुष्ट आत्मा से पीड़ित होकर दर्द से तड़पने लगी और एक भयानक चीख मारने लगी। सभी पर भय छा गया।

धर्मी ने कहा, 'ग्रेगरी किसी भी बुराई का दोषी नहीं है, क्योंकि देखो—जिसने उस पर बदनामी की, उस पर ईश्वर का दंड पड़ा है।'

लेकिन संत के विरोधियों ने, शर्म की सारी हदें पार करते हुए, कहा:

'क्या हमने यह नहीं कहा था कि वह एक जादूगर और जादू-टोना करने वाला है? और अपनी जादू-टोने से उसने इस महिला को भूत-प्रेत बाधित कर दिया है।'

[8114] एक एक्ज़ार्क एक बिशप होता है जो केवल पोप के अधीन होता है और वह स्थानीय बिशप पर निर्भर नहीं होता, चाहे वह कहीं भी जाए।

इस बीच, पादरी सावनि की पत्नी, अपनी बेटी के साथ—जसिे संत ग्रेगरी ने उसकी बीमारी से ठीक कयिा था—सभा में दौड़ी आईं और गुस्से में अपने पतसि चल्लिाईं:

'अरे नीच! तुम इस पवत्रि व्यक्तकिी दया को भूल गए, जसिने हमारी बेटी को ठीक कयिा, और फरि भी तुम एक नरि्दोष व्यक्तपिर बदनामी कर रहे हो! मेरे घर से नकिल जाओ; मैं अब तुम्हारे साथ नहीं रहना चाहती!'

तब वह संत के चरणों में गरि पड़ी और आँसुओं से भरी आँखों से उनसे वनिती करने लगी:

'हे ईश्वर के सेवक, हम पर दया करो, और उन दुष्ट, ईर्ष्यालु लोगों द्वारा आपके साथ कएि गए अन्याय को हमारे खलिाफ न गनिो!'

लोगों में एक हलचल मच गई: कुछ चल्लिा उठे कग्रिेगरी नरि्दोष है, जबकअिन्य, इस बदनामी पर वश्विास करके, यह दावा करते रहे कउिसने अपनी जादू-टोने से उस महलिा पर एक राक्षस भेजा था जो उसके साथ थी। एक्ज़ार्क, सावनि और क्रस्कि्रेंट से रश्वित लेकर, उनके पक्ष में हो गया; लेकनि लोगों में मची हलचल को देखकर वह डर गया और अपनी कुर्सी से उठकर अदालत से नकिल गया, यह घोषणा करते हुए कइिस मामले की और गहन जांच होनी चाहएि। तब संत ग्रेगरी स्वेच्छा से जेल लौट आए और एक प्रतविादी के रूप में वहीं रहे, अपने खलिाफ लाए गए मामले के परणिाम की प्रतीक्षा करते हुए।

एक्ज़ार्क ने, यह देखकर कवि ह लोगों के बीच अशांतपिैदा कएि बनिा ग्रेगरी के बारे में कुछ नहीं कर सकता, उसे स्वयं पोप के पास रोम भेजने का फैसला कयिा और उसके लएि एक वशिेष जहाज तैयार करने का आदेश दयिा; साथ ही, उसने पोप को एक पत्र लखिा जसिमें ग्रेगरी पर लगे आरोपों को बताया गया था; ग्रेगरी के बदनाम करने वालों ने भी अपनी पहल पर पोप को इसी तरह का एक पत्र लखिा। एक्ज़ार्क ने रात होने तक इंतज़ार कयिा और, सैवनिस और क्रसिेरेंटस के साथ, ग्रेगरी को अपने साथ ले गए और उसे गुप्त रूप से जहाज पर चढ़ा दयिा। उसके माता-पतिा और घर वाले उसके पीछे-पीछे रोते और वलिाप करते हुए चले आए; हालाँकि, उन्होंने उन्हें सांत्वना दी और उन्हें न रोने के लएि कहा, यह आश्वासन देते हुए कवि े जल्द ही उन्हें अच्छे स्वास्थ्य में और बशिप के सहिासन पर फरि से देखेंगे। उन्हें जहाज पर बठिाने के बाद, उनके दुश्मनों ने उन्हें जहाज के कप्तान, प्रोकोपयिस नामक व्यक्तकिी हरिासत में सौंप दयिा, जन्हिें उन्होंने पोप के लएि अपने पत्र भी सौंपे। आर्चडीकन यूफ्लस ने अन्य डीकनों के साथ मलिकर एक्सार्क को घेर लयिा और उनसे वनिती की कवि े उन्हें अपने पतिा और शक्षिक के साथ प्रस्थान करने दें, लेकनि उन्होंने उनकी बात तक नहीं सुनी, और उनमें से केवल एक, डीकन प्लेटोनकिस को ही ग्रेगरी के साथ यात्रा करने की अनुमतदिी। आखरिकार, जहाज रवाना हो गया, और ग्रेगरी के प्रयिजन, उसके माता-पतिा के साथ, तट पर उसके लएि देर तक रोए और, दुखी होकर, घर चले गए।

अगली सुबह, वरष्ठि पुरोहतिों के साथ एक बड़ी भीड़ जेल के बाहर इकट्ठा हुई। जेल में ग्रेगरी को न पाकर, वे भ्रमति हो गए और बशिप के अन्यायपूर्ण मुकदमे के बारे में रोने और शकिायत करने लगे। फरि वे एक्ज़ार्क के पास गए और, उसे घेरकर, पूछा:

'तुमने हमारे पतिा और अच्छे चरवाहे को कहाँ ले गए हो? क्या तुमने सचमुच उसे मार डाला है?'

'नहीं, भाइयो,' एक्ज़ार्क ने उत्तर दयिा, 'हमने उसे कोई हानि नहीं पहुँचाई है, बल्कउिसे शांतपिूर्वक पोप के पास भेज दयिा है, जैसा कउिसने स्वयं हमसे करने के लएि कहा था।'

वहाँ इकट्ठा हुए लोगों ने आर्चडीकन यूप्ला और अन्य डीकनों को बुलाया और उनसे पूछा:

'तुम्हें पता होना चाहएि कहिमारा पवत्रि बशिप कहाँ है - तुम कल उसके साथ उसके कालकोठरी में थे: हमें सच बताओ, वह अब कहाँ है?'

यूफुलस और अन्य लोगों ने उत्तर दयिा कि रात के दौरान एक्ज़ार्क ने ग्रेगरी को पोप के पास भेज दयिा था। एक्ज़ार्क, यह देखकर कलिोगों के बीच अशांतफिैल रही है, डर गया और अक्रागस से भाग गया। क्रोधति भीड़ ने वश्विासघाती पुरोहतिों सैवनिस और क्रसिैन्स के घरों में आग लगा दी और उन्हें मौत के घाट उतारने के लएि उनकी तलाश की, लेकनि वे चर्च में शरण ले चुके थे। लोग उनके पीछे भागे, लेकनि चैरटिन, चर्च के दरवाज़े पर खड़े होकर, क्रोधति भीड़ से अपने बेटे के कारण खून न बहाने की वनिती करने लगे, यह कहते हुए कयिदि उनके बशिप—और उनके बेटे—पर लगाए गए आरोप सच साबति हुए, तो वे खुद भी न्याय का सामना करेंगे।

भीड़ ने खारथिॉन की बात मानी और ततिर-बतिर हो गई। हालाँकि, ग्रेगरी के समर्थकों ने सरिाक्यूज़ शहर में रहने वाले ससिलिी के राज्यपाल और उस शहर के बशिप को एक संदेश भेजा, जसिमें उन्हें अपने बशिप के साथ हुई सभी घटनाओं

की जानकारी दी गई; सरिाक्यूज़ के राज्यपाल और बशिप ग्रेगरी के धार्मकि जीवन को अच्छी तरह से जानते हुए, उनके लिए अत्यंत आश्चर्यचकति और गहराई से दुखी हुए। अकरागास के सबसे प्रतष्ठिति नागरकिों को संदेश लेकर उनके पास भेजा गया, जबकि चर्च के मामलों का प्रबंधन आर्चडीकन यूफ़ुलस को तब तक सौंपा गया जब तक कि ग्रेगरी पोप के समक्ष अपना पक्ष साबति करके वापस नहीं आ गए।

कुछ समय बाद, ग्रेगरी के वरिोधयिों ने एक बार फरि से जुटकर यूफ़ुलस को मारने का अवसर तलाशा; उनकी दुर्भावना को भांपकर, वह ग्रेगरी के आगमन तक भागकर छपि गया, जबकि सैवनिस और क्रसिैन्स ने अपने समान वचिारधारा वाले अनुयायियों के साथ मलिकर उपर्युक्त वधिर्मी एलेउसयिस को सहिासन पर बठिा दयिा। शहर के अधकिारयिों और पुरोहतिों ने, कैरटिॉन के मनाने पर, अपनी नाराज़गी का कोई संकेत नहीं दयिा और जब उन्हें कैरटिॉन से पता चला कि ग्रेगरी sooner या बाद में सहिासन पर लौटेंगे तो वे पूरी तरह चुप हो गए। इस प्रकार, उस समय, परमेश्वर की कलीसयिा एक चरवाहे के बजाय, जंगली जानवरों द्वारा, अपनी इच्छा से चलाई जा रही थी: वधिर्मी एलेउसयिस ने वेदी में रखे संतों के अवशेष उठा लिए और उन्हें जलाने का प्रयास कयिा, लेकनि आग ने उन्हें छुआ भी नहीं; जसि पर उसने उन्हें रात में, सभी से गुप्त रूप से, समुद्र में फेंकने का आदेश दयिा।

जब संत ग्रेगरी रोम पहुँचे, तो उनके साथ आए प्रोकॉपयिस ने पोप को एक्सार्क और ग्रेगरी की बदनामी करने वालों के पत्र सौंपे। ये पत्र पढ़ने के बाद, पोप ग्रेगरी पर बहुत क्रोधति हो गए और, उसे मलिने का समय दएि बनिा या यह पूछे बनिा कि क्या वह अपना दोष स्वीकार करता है, उन्होंने आदेश दयिा कि उसके हाथ-पैर बाँध दएि जाएँ और उसे कैद कर दयिा जाए; उन्होंने यह भी आदेश दयिा कि डीकन प्लेटोनकिस को एक अलग कोठरी में बंद कर दयिा जाए। जब संत जेल में प्रार्थना कर रहे थे, तो रात के समय उन पर एक प्रकाश चमका, और प्रेरतिों के सदृश दो पुरुष प्रवेश कएि और कहा:

'हे ग्रेगरी, मसीह के सेवक और हमारे प्रयि, आनन्दति हो! प्रभु ने हमें तुम्हें तुम्हारी बेड़यिों से मुक्त करने के लिए भेजा है, और हम यह देखकर आनन्दति हैं कि तुम कतिनी बहादुरी और धैर्य से अपने दुख को सहते हो। ईश्वर इस नगर में भी तुम्हारे द्वारा अनेक चमत्कार करने में प्रसन्न हैं।'

यह कहकर, उन्होंने उसके बंधनों को छुआ, और तुरंत उसके हाथ से बेड़यिाँ उतर गईं; और, पूरी तरह से मुक्त होकर, वह अपने पैरों पर खड़ा हो गया और उन प्रकट हुए लोगों के सामने जमीन पर झुक गया, जन्होंने उसे चूमने के बाद अदृश्य हो गए। इसी तरह, वे डकिन प्लेटोनकिोस के पास आए और उसे जेल से बाहर नकिालकर ग्रेगरी के पास ले आए। अब मुक्त हुए दोनों व्यक्तयिों ने मलिकर प्रभु की स्तुति और धन्यवाद कयिा।

कैदयिों की रखवाली करने वाले जेलर का एकमात्र बेटा था, जो छब्बीस साल का था और छह साल से एक दुष्ट आत्मा द्वारा पीड़ति था, जो उसे सड़कों पर और जंगल में भटकाती थी; कई बार उसके पति ने उसे लोहे की बेड़यिों से बांधा और एक अलग कमरे में बंद कर दयिा, लेकनि वह बेड़यिाँ तोड़ देता, दरवाजा फाड़ देता और फरि भाग जाता। ऐसा हुआ कि जब ग्रेगरी अपनी बेड़यिों से मुक्त होकर कालकोठरी में बैठे थे और प्लेटोनकि उनके साथ था, तो भूतग्रस्त व्यक्ति के पति ने प्लेटोनकि को पकड़ लयिा और उसे उसके हाथों, पैरों और गर्दन से एक स्तंभ से मजबूती से जकड़ दयिा। लेकनि आधी रात को, भूत-ग्रस्त व्यक्ति ने लोहे के बंधन तोड़ दएि, भाग गया, और, जब उसने कालकोठरी के दरवाज़े खुले पाए, तो वह अंदर गया और संत ग्रेगरी के पैरों तले भूतहा अवस्था में गरि पड़ा, जन्होंने स्वर्ग की ओर अपने हाथ उठाकर ईश्वर से प्रार्थना की और फरि दानव से कहा:

'हमारे प्रभु यीशु मसीह तुम्हें आज्ञा देते हैं, हे अशुद्ध आत्मा, कि तू उनकी सृष्टि से नकिल आ।'

दैत्य तुरंत ही चला गया। इस बीच, पहरेदार अपने लापता बेटे की बहुत समय से तलाश कर रहा था और खोजते हुए, जब उसने कोठरी का दरवाज़ा खुला देखा, तो यह सोचकर कि कैदी भाग गया है, वह घोर भय से भर गया। लेकनि, अंदर जाने पर, उसने ग्रेगरी और प्लेटो को वहाँ खड़े देखा, जो ईश्वर के लिए पवत्रि भजन गा रहे थे, और उनके साथ उसका बेटा भी था – जो पूरी तरह से ठीक था। पहरेदार संत के पैरों पर गरि पड़ा और बोला:

'सच्चे अर्थ में, आप ईश्वर के पुरुष हैं! मुझे क्षमा करें कि मैंने आपके वरिुद्ध हाथ उठाकर आपसे पाप कयिा।'

उस क्षण से, जेलर ने श्रद्धापूर्वक संत की दनि-रात सेवा की, और उनका सम्मान ऐसे कयिा मानो वे ईश्वर के कोई देवदूत हों।

लगभग उसी समय, एक महलिा जसिकी बेटी लंगड़ी थी, यह सुनकर कि संत ग्रेगरी ने जेलर के बेटे को ठीक कर दयिा था, अपनी बेटी के साथ उसकी कोठरी में आई और उसके सामने ज़मीन पर गरिकर, उससे अपनी बेटी को ठीक करने

की विनती करने लगी। उन्होंने उससे कहा कि यह उनका काम नहीं, बल्कि केवल ईश्वर का काम था, जो एक ही शब्द से सभी चीजें बना सकते हैं। लेकिन वह लगातार उनसे विनती करती रही, यहाँ तक कि अंत में उन्होंने प्रार्थना की और अपनी हथेली विकिलांग लड़की पर रखी, जिस पर वह तुरंत ठीक हो गई। माँ और बेटी ने ईश्वर का धन्यवाद किया और संत के सामने नमन करके, आनंदित होकर घर लौट आईं।

पड़ोसियों ने माँ से पूछा, 'आपकी बेटी को किसने ठीक किया?'

उसने जवाब दिया, 'कहीं और का एक बिशप, जिसे, वे कहते हैं, किसी अपराध के लिए दोषी ठहराकर कैद कर दिया गया है: पहले उसने जेलर के बेटे को ठीक किया, और अब मेरी बेटी को।'

संत ग्रेगरी द्वारा भूतग्रस्त और लंगड़ी लड़की के चमत्कारी उपचार की खबर पूरे रोम में फैल गई, और लोग कई बीमार लोगों को उनके पास लाने लगे, जिन्हें उन्होंने ठीक भी किया।

रोम में ग्रेगरी के आगमन को एक साल बीत चुका था, और पोप को अंततः उस बिशप का ध्यान आया जो कैद में था और उन्होंने बाबा मार्क को बुलवाया, जिनके बारे में ऊपर पहले ही बहुत कुछ कहा जा चुका है। जब बाबा मार्क अपनी मठ से आए, तो पोप ने पूछा:

'क्या तुम्हें नहीं पता, भाई, कि अक्रागान्टियम के बिशप ग्रेगरी को यहाँ बेड़ियों में लाया गया है और सातवें आज्ञा के विरुद्ध पाप करने के कारण जेल में रखा गया है?'

अब्बा मार्क ने एक आह भरते हुए उत्तर दिया:

'ओह, काश कि मैं भी न्याय के दिन उसकी ही नियति का भागी बनूँ!'

तब पोप का चेहरा बदल गया और उन्होंने कहा:

'देखो, सिसिली में मेरे एक्ज़ार्क ने मुझे क्या लिखा है।' मार्क ने एक्ज़ार्क का संदेश पढ़ा, हँसे, और फिर ज़ोर से कहा:

'जिस प्रकार प्रभु जीवित हैं, यह एक निर्दोष और पवित्र व्यक्ति के खिलाफ बदनामी है, जो, जैसा कि आप स्वयं जानते हैं, परम पावन, अपने जीवन और चमत्कारों में पुराने महान संतों के समान हैं।'

'मुझे पता है,' पोप ने जवाब दिया, 'कि उसके पतन से पहले ईश्वर की कृपा उस पर थी; लेकिन जब उसने पाप किया, तो वह कृपा उससे छीन ली गई।'

मार्क ने उत्तर दिया, 'ईश्वर अपने सत्य को जानते हैं।'

'और तो और, हम उसके साथ क्या करें?' पोप ने पूछा। 'आपकी क्या सलाह है?'

अब्बा मार्क ने उत्तर दिया:

'महोदय, मेरी बात सुनें और मेरी सलाह मानें: एक परिषद बुलाएँ, बिशपों को बुलाएँ – केवल पश्चिम में अपने बिशपों को ही नहीं, बल्कि पूर्व में भी संदेश भेजें। आओ, हम पवित्र सम्राट और कोंस्टेंटिनोपल के पैट्रिआर्क की जानकारी के बिना ग्रेगरी का न्याय न करें, बल्कि उन्हें भी अपने चुने हुए लोगों को भेजे दें। सिसिली में भी संदेशवाहक भेजें और यहाँ अभियोजकों और उस महिला को बुलाएँ, और फिर हम वही करेंगे जो ईश्वर प्रकट करेंगे।

पोप को मार्क की सलाह उचित लगी और उन्होंने तुरंत सम्राट जस्टिनियन और परम पावन कॉन्स्टेंटिनोपल के पैट्रिआर्क को पत्र लिखे, जिसमें उन्हें सब कुछ सूचित किया और परिषद के लिए चुने हुए लोगों को भेजने के लिए कहा; उन्होंने सिसिली में अपने एक्ज़ार्क को, साथ ही अक्रागस के अधिकारियों और नागरिकों को भी पत्र लिखा, जिसमें उन्हें आदेश दिया गया कि वे उन सभी आरोपियों और उस महिला को, जिसके बारे में कहा जाता था कि उसने ग्रेगरी के साथ व्यभिचार किया था, बिना किसी देरी के रोम में उनके पास भेजें।

सम्राट और पैट्रिआर्क, पोप के पत्र प्राप्त करके, ग्रेगरी पर लगाए गए अपमानजनक आरोपों से स्तब्ध रह गए और उस पर बिल्कुल भी विश्वास किए बिना, इस बात पर दुख व्यक्त किया कि ग्रेगरी, जो किसी भी गलत काम से निर्दोष था, को इतने लंबे समय तक जेल में रखा गया था। इसलिए उन्होंने अपनी ओर से रोम में प्रतिष्ठित पुरुषों को भेजने में शीघ्रता की: सम्राट ने मार्शियन नामक एक प्रतिष्ठित व्यक्ति को भेजा, जबकि पैट्रिआर्क ने तीन बिशप—एन्किया, साइज़िकस और कोरिथ के—और चार्टोफिलैक्स[8115] कॉन्स्टेंटिन को भेजा।

[8115] चार्टोफिलाक्स का अर्थ है 'अभिलेखों का रक्षक'। यह कॉन्स्टेंटिनोपल के पैट्रिआर्क के अधीन एक विशेष अधिकारी का पदनाम था; उसके कर्तव्यों में, अन्य बातों के अलावा, धार्मिक मामलों पर निर्णय लेना शामिल था।

सभी दूत – कोंस्टेंटिनोपल और सिसिली दोनों से आए – संत ग्रेगरी की कैद के दूसरे वर्ष के दौरान रोम में एकत्रित हुए। लेकिन मार्सियन, जब वह रोम से लगभग अठारह स्टेडियम दूर था, तो वह गंभीर रूप से बीमार पड़ गया, जिससे हर कोई उसके ठीक होने की आशा खो बैठा और उसके साथ यात्रा करने वाले बिशप गहरे दुख में डूब गए। वह मुश्किल से ही रोम पहुँच सका। उसके आसपास के सभी लोग उसकी अत्यंत देखभाल कर रहे थे, फिर भी कोई चिकित्सक उसकी मदद नहीं कर सका। एक शाम, एक महिला जो संत ग्रेगरी द्वारा अपनी बेटी को ठीक किए जाने के कारण आभारी थी, संयोग से उस घर के पास से गुज़र रही थी जहाँ मार्शियन ठहरे हुए थे । अपने नौकरों को रोते हुए सुनकर, उसने उनसे पूछा कि वे क्यों रो रहे हैं।

'क्योंकि,' उन्होंने उत्तर दिया, 'हमारा मालिक मर रहा है।'

उसने कहा, 'अगर आप चाहते हैं कि आपके स्वामी जीवित और स्वस्थ रहें, तो उन्हें मेरे पीछे-पीछे ले चलो, और मैं तुम्हें एक ऐसे डॉक्टर के पास ले चलूँगी जो उन्हें एक ही शब्द से ठीक कर देगा: इस डॉक्टर ने हमारे शहर में कई लोगों को ठीक किया है, और कोई भी बीमार व्यक्ति ऐसा नहीं रहा है जो उसके पास से ठीक हुए बिना गया हो।'

दासों ने उस पर विश्वास किया, अपने मालिक को उसके बिस्तर सहित उठाया, और उस महिला के पीछे उसे ले चले। हालाँकि, मार्शियन को इस बात का अंदाज़ा नहीं था कि उसके साथ क्या किया जा रहा था, क्योंकि वह एक तेज बुखार की चपेट में था और बेहोश पड़ा था। उन्हें उस तहखाने तक ले जाने के बाद जहाँ संत ग्रेगरी को रखा गया था, उसने कहा:

'यहाँ वह चिकित्सक बैठे हैं जो एक ही शब्द से रोगों को ठीक करते हैं।'

दासों ने अपने स्वामी को तहखाने में ले जाकर ग्रेगरी के पैरों में लिटा दिया और आँसुओं के साथ उस बीमार व्यक्ति को ठीक करने के लिए विनती की। संत ने मार्शियन को दो बार पुकारा, लेकिन वह उन्हें जवाब नहीं दे सका। संत, जो आँसुओं से भावुक हो गए थे, ने बीमार व्यक्ति पर अपना हाथ रखा, और वह तुरंत सो गया, जबकि वह कई दिनों से सोया नहीं था। आधी रात को, नौकर उसके पास आए और उसे छूने पर उन्हें बुखार का कोई भी निशान नहीं मिला, और उन्होंने ईश्वर का धन्यवाद किया। जब रात खत्म हुई और संत मैटिन्स (प्रार्थना) गाने लगे, तो मार्शियन जाग उठा और पूरी तरह से ठीक होकर उठ खड़ा हुआ; वह समझ नहीं पा रहा था कि वह कहाँ है, लेकिन ग्रेगरी को देखकर वह उन्हें पहचान गया और यह महसूस करते हुए कि संत की प्रार्थनाओं से वह अपनी बीमारी से ठीक हो गया था, वह उनके पैरों पर गिर पड़ा। उस दोपहर, मार्शियन के साथ यात्रा कर रहे बिशप उसे मिलने आए लेकिन वे उसे घर पर नहीं पाए। यह जानकर कि उसे उस कालकोठरी में ले जाया गया था जहाँ ग्रेगरी को रखा गया था, वे वहाँ गए और मार्शियन को अच्छे स्वास्थ्य में, ग्रेगरी के साथ बैठे और बातें करते हुए देखकर, वे चकित हो गए और ग्रेगरी से कहा:

'धन्य हैं आप, फादर ग्रेगरी, क्योंकि आपको ईश्वर की कृपा और मानव रोगों को ठीक करने का वरदान प्राप्त हुआ है।'

उन्होंने ग्रेगरी को स्नेहपूर्वक चूमा और पूछा कि वह कितने समय से जेल में था। उसने जवाब दिया कि दो साल और चार महीने हो गए थे। बिशप इस बात से बहुत नाराज़ थे कि पोप ने एक गहन जांच किए बिना एक निर्दोष व्यक्ति को इतने लंबे समय तक हिरासत में रखा था। वे उसे जेल से रिहा करना चाहते थे, लेकिन उसने उन्हें ऐसा करने से मना कर दिया, यह कहते हुए कि मुकदमे और पोप के आदेश के बिना उसके लिए अपनी हिरासत की जगह छोड़ना असंभव था। फिर बिशप चले गए और पोप को सब कुछ बताया, जो उनके शब्दों से बहुत हैरान और परेशान थे।

इसके बाद, पोप ने कालकोठरी के पास स्थित सेंट हिप्पोलीटस के चर्च में एक परिषद बुलाने का आदेश दिया। पोप के साथ कुल 154 बिशपों ने परिषद में भाग लिया, साथ ही रोमन भिक्षुओं और नागरिकों की इतनी बड़ी भीड़ थी कि सभी लोग चर्च के अंदर समा नहीं सके। अभियोजकों को भी सिनिस के साथ परिषद में लाया गया।

पोप ने आरोपियों से पूछताछ शुरू की:

'आप अपने बिशप पर क्या आरोप लगाते हैं?' उन्होंने उनसे पूछा।

'हमने उसे पकड़ा, महामहिम,' उन्होंने बिना किसी शर्म के जवाब दिया, 'एक महिला के साथ पाप करते हुए।'

'क्या तुमने यह अपनी आँखों से देखा, या महिला ने खुद तुम्हें इसके बारे में बताया?' पोप ने अपनी पूछताछ जारी रखी।

उन्होंने जवाब दिया, 'हम, महामहिम, जैसा कि रिवाज है, बिशप को प्रणाम करने के लिए अंदर गए; हमने उनके बिस्तर पर एक महिला को सोते हुए पाया और उसे हिरासत में ले लिया, और उसने पहले ही एकज़ार्क और लोगों की उपस्थिति में स्वीकार कर लिया है कि पाप वास्तव में किया गया था।'

पूर्वी इलाकों से आए बिशपों ने मांग की कि उस महिला को खुद अदालत में पेश किया जाए, ताकि वह पूरी परिषद के सामने ग्रेगरी की निंदा कर सके। लेकिन अभियोजकों ने आपत्ति जताई:

'जब वह पिशाचग्रस्त है तो वह उसकी निंदा कैसे कर सकती है? जब से उसने बिशप के साथ पाप किया है, तब से एक राक्षस उसे सता रहा है।'

फिर भी, उस भूतग्रस्त महिला को परिषद के सामने लाया गया। दो पुरुष उसे मजबूती से पकड़े हुए थे, और वह, अपनी पीड़ा से अपना होश खो चुकी थी, इस बात से अनजान थी कि वह कहाँ थी।

पोप ने बदनाम करने वालों से कहा, 'अदालत में, भूत-प्रेत ग्रस्त और पागलों से पूछताछ नहीं की जाती, लेकिन तुम, नीच लोगों, को सच बोलना होगा।'

'हम तो पहले ही बता चुके हैं,' उन्होंने जवाब दिया, 'अब खुद आरोपी से पूछताछ करो; शायद वह अपने बारे में कुछ बताए।'

तब संत ग्रेगरी ने अपनी आत्मा की गहराई से आह भरते हुए कहा:

'धर्महीन मेरे विरुद्ध उठ खड़े हुए हैं; वे मुझसे ऐसी बातों के बारे में पूछते हैं जिनका मुझे कुछ भी पता नहीं; वे भलाई के बदले मुझे बुराई का प्रतिफल देते हैं, और मेरी आत्मा को उजाड़ देते हैं (भजन संहिता 34:11–12)।

भजन के ये शब्द उसके मुख से निकलते ही, दैत्यग्रस्त स्त्री गिर पड़ी और संत के चरणों में लोटने लगी, उसके मुँह से झाग निकल रहा था और वह मूर्छित हो गई। वहाँ उपस्थित सभी लोग भय से भर गए। लेकिन संत ने प्रार्थना करने के बाद कहा:

'हमारे प्रभु यीशु मसीह के नाम पर और यहाँ इकट्ठा पवित्र पितरों के नमित्त, हे अशुद्ध आत्मा, इस ईश्वर की सृष्टि से निकल जा, और इस स्त्री को होश में आने दे, ताकि वह मेरे विषय में सत्य बोले!'

तुरंत आत्मा ने उस स्त्री को झकझोरा और उसे छोड़ दिया। स्त्री मृतप्राय लेटी रही, लेकिन संत ने उसका हाथ पकड़कर उसे उठा लिया। पहले उन्होंने उससे उसका नाम पूछा, और फिर चार्टोफलैक्स ने उससे यह प्रश्न किया:

'क्या तुम अपने बिशप को जानते हो?'

उसने उत्तर दिया:

'मैं उसे बहुत अच्छी तरह जानती हूँ, क्योंकि मैंने उसे कई बार शहर में घूमते, गरीबों, बीमारों और अनाथों से मिलते और उदारतापूर्वक दान देते देखा है। और मैं खुद, एक बेचारी होते हुए भी, कई बार उसकी दया का सम्मान प्राप्त कर चुकी हूँ।'

'क्या आपके बिशप ने कभी आपके साथ कोई पाप किया है?' उन्होंने पूछना जारी रखा।

अपने हृदय की गहराई से आह भरते हुए और आँखों में आँसू लिए, उसने अपनी आवाज़ उठाई और कहा:

'जिस सेनाओं के प्रभु जीवित हैं, उसने मुझे कभी नहीं जाना, और यह केवल ये दो कपटी पुरुष जो आपके सामने खड़े हैं, सैविनि और क्रिसैन्ट, थे, जिन्होंने मुझे बहुत सारा पैसा देने का वादा करके, मुझे एक धर्मी व्यक्ति पर झूठा आरोप लगाने के लिए मजबूर किया! ईश्वर उन्हें मेरे पाप के लिए भी दंड देगा, क्योंकि उन्होंने मुझे ऐसी विपत्ति में डाला। जब से ये विश्वासघाती प्रलोभक मेरे पास आए और मैं उनके शब्दों के आगे झुक गई, मैं बहुत कष्ट में हूँ: एक राक्षस मुझमें प्रवेश कर गया है और आज तक मुझे पीड़ा देता है।

यह कहकर, वह संत के पैरों पर गिर पड़ी और अपने आँसुओं के बीच उनसे कहा:

'हे परमेश्वर की दासी, मुझ पर दया करो, और मुझे क्षमा करो, इस दुष्ट स्त्री को जिसने आपके सामने घोर पाप किया है! मैं अपने प्रभु परमेश्वर की शपथ खाती हूँ - जब तक आप मुझे क्षमा का वचन नहीं देते, तब तक मैं आपके पैरों से नहीं उठूँगी!'

उसने उससे उत्तर दिया:

'पापों को क्षमा करना हमारे अधिकार में नहीं है, बल्कि केवल एकमात्र परम दयालु ईश्वर के अधिकार में है; और हमारा केवल इतना कर्तव्य है कि हम उनसे अपराधों की क्षमा के लिए विनती करें – और मैं उनसे, सर्व-दयालु से, आपके पापों को क्षमा करने के लिए प्रार्थना करूँगा।'

बिशप ने उस महिला को ज़मीन से उठाया। परिषद में उपस्थित सभी लोगों पर आश्चर्य और भय छा गया, और वे सभी ईश्वर की स्तुति करते हुए बोले:

'धन्य है प्रभु परमेश्वर, जिसने अपने सेवक को प्रकट किया और झूठी बदनामी का पर्दाफाश किया!'

पोप और सभी बशिप बदनाम करने वालों से बहुत क्रोधति हो गए और उन्होंने उन्हें फटकारना और शर्मदिा करना शुरू कर दयिा; फरि उन्होंने उन्हें दो समूहों में वभिाजति करने का आदेश दयिा: पुरोहति वर्ग, जसिमें सैवनिस और क्रसिैन्सेन्टस शामलि थे, और सामान्य वर्ग (जनिमें से पहले की कुल संख्या तीस और बाद की अस्सी थी), यूडोशयिा, जसिने एक नरि्दोष व्यक्ति के खलिाफ झूठ बोला था, को अदालत द्वारा दंड से छूट दी गई, क्योंकि उसे पहले ही ईश्वर द्वारा दंडति कर दयिा गया था, क्योंकि उनकी अनुमति से एक राक्षस ढाई साल से उसे सता रहा था – जबकि अपराध के दोषयिों को नरि्वासन की सजा दी गई: सावनिस को थ्रेस, क्रसिैन्ट को स्पेन भेजा गया, जबकि अन्य पादरयिों को अपमानपूर्वक रावेना[8116] नरि्वासति कयिा गया और उन्हें वहाँ कैद और गरीबी में रहना था। अदालत ने आम लोगों—जो ग्रेगरी के वरिोधी थे—को सम्राट द्वारा भेजे गए एक प्रतषि्ठति व्यक्ति मार्शयिन के हवाले कर दयिा, और उसने उन सभी को कैद कर दयिा, और बाद में उन्हें कठोर दंड देने का इरादा कयिा; लेकनि जब सैनकि उन्हें जेल ले गए, तो वे सभी फूट-फूट कर रो पड़े और उन्होंने रेवरेंड को जोर से पुकारा:

'हे मसीह के सेवक, हम पर दया करो; हमें भयानक यातनाओं के हवाले मत करो।'

और संत ग्रेगरी, जो अत्यंत क्षमाशील व्यक्ति थे, पोप और पूरी परषिद के सामने घुटनों के बल झुक गए और, आँसुओं के साथ, उनसे वनिती की कि वे उनके दुश्मनों को क्षमा करें और उनके कारण उन्हें दंड न दें; और वे तब तक वनिती करते और रोते रहे जब तक कि हर कोई, आँसुओं से वभिोर होकर, यह न कहने लगा:

'यदि आप उन्हें क्षमा कर दें और उनके लिए मध्यस्थता करें, तो हम शक्तहिीन हो जाएँगे।'

और उन्होंने पहरेदारों को उन्हें चैन से जाने देने का आदेश दयिा। लेकनि जब सभी बदनाम करने वाले परषिद के सामने खड़े थे, तो अचानक एक भयंकर तूफान उठ खड़ा हुआ; धरती हलि गई, आकाश अँधेरा हो गया, और अँधेरे ने उन सभी को घेर लयिा। परषिद में मौजूद लोग, भयभीत होकर, सोचने लगे कि धरती फट जाएगी और उन्हें नगिल जाएगी, और अपने हाथ उठाकर चलि्ला उठे: 'हे प्रभु, दया करें!' तूफान थम गया, प्रकाश लौट आया, और तुरंत ही ईश्वर का दंड उन बदनाम करने वालों पर प्रकट हुआ: उनके सभी चेहरे काले पड़ गए, मानो कोयले से ढँक गए हों, जबकि सावनि और क्रसिैन्स्ट के होंठ नीचे की ओर खचि गए, ताकि वे उन्हें बंद न कर सकें और न ही बोल सकें: इस प्रकार ईश्वर का क्रोध उन पर पड़ा। ऐसा चमत्कार देखकर सारी सभा चलि्लाई: *'अब मैं जानता हूँ कि यहोवा अपने अभषिक्ति की रक्षा करता है; वह उसे स्वर्ग से अपने पवत्रि हाथ की सामर्थ्य से उत्तर देता है'* (भजन संहति 19:7)।

इसके बाद, पोप ने बदनाम करने वालों से कहा:

– सुनो, हे अधम लोगो! देखो, तुम अपने पति, शैतान के समान हो गए हो, जो बहुत पहले भ्रष्ट हो गया था, क्योंकि तुमने एक धर्मी और पवत्रि मनुष्य पर बदनामी की है। इसलिए, मैं तुम्हें आज्ञा देता हूँ: आज से, तुम, तुम्हारे बच्चे और तुम्हारे सभी वंशज हमेशा के लिए अक्रागान्टयिम के बशिप और उनके उत्तराधकिारयिों के दास रहोगे; तुम्हारे वंश में से कोई भी पुरोहति या पादरी वर्ग का सदस्य भी न बने; और कोई भी बशिप जो तुम्हारे कुल के कसिी व्यक्ति को पुरोहति, डकिन, या वास्तव में पादरी वर्ग का कोई सदस्य बनाने की हमि्मत करता है, तुम्हारे इस वर्तमान गैर-कानूनी कृत्य को जानते हुए, वह एक शपथ से बँध जाएगा।

पूरा परषिद पोप के नरि्णय से सहमत हो गया। और जसि महलि ने संत पर बदनामी की थी, वह जमीन पर गरि पड़ी और बशिपों से पुकार कर बोली:

उसने कहा, 'हे पवत्रि पतिाओं, मुझ पर दया करें, मुझे कसिी मठ में भेज दें: मैं अब अपने शहर नहीं लौट सकती।'

उसकी वनिती के अनुसार, उसे संत ककिलियिा शहीद के मठ में भेज दयिा गया और उसने दैवीय सद्गुणों का जीवन अपनाया, जसिमें वह 22 वर्षों तक नरिंतर भक्ति के कार्य करती रही, और अपने सभी पापों से पश्चाताप करते हुए उसकी मृत्यु हुई।

ग्रेगरी की रहिाई से सर्वत्र हर्ष छा गया। इस बीच, नौवाँ घंटा हो गया था, और पोप ने संत को दैवीय धर्मवधि का अनुष्ठान करने का आदेश दयिा। जब यह अनुष्ठान हो रहा था, तो कई बशिपों ने—उनमें से सबसे योग्य ने—पवत्रि आत्मा की कृपा को ग्रेगरी पर उतरते हुए देखा। लि॥७जी के समापन पर, पोप के खर्च पर सभी को एक भव्य भोजन परोसा गया, और सभी ने ईश्वर की महमिा के लिए खाया और पयिा।

[8116] रवेना एपेनाइन प्रायद्वीप के उत्तर-पूर्वी तट पर एड्रयिाटकि सागर पर एक बंदरगाह और कलि वाला शहर है। रवेना आज भी मौजूद है और इसी नाम के इतालवी क्षेत्र का प्रमुख समृद्ध शहर है।

[8117]उसी समय, रोम में नम्निलखिति चमत्कार हुआ। संत पेत्रुस और पौलुस के बेसलिकि को सजाने के लिए लाए गए दस वशिाल, सावधानी से चुने गए पेड़, जन्हिें टायबर नदी से लाया गया था, नदी के बीच में रुक गए, मानो वे जमीन पर अटक गए हों या लोहे के लंगरों से जकड़े हुए हों; और, नदी की लगभग पूरी चौड़ाई को अवरुद्ध करते हुए, उन्होंने नावों को ऊपर की ओर जाने से रोक दयिा। बार-बार, शहर के नविासयिों ने मलिकर इन पेड़ों को खींचने की कोशशि की, लेकनि वे ऐसा करने में असमर्थ रहे, क्योंकि उन्हें कसिी अदृश्य शक्ति ने रोक रखा था। अंत में, पोप ने स्वयं संत ग्रेगरी से अपनी प्रार्थनाओं के द्वारा इन पेड़ों को हलिाने के लिए कहा। संत ने उनकी बात मान ली और एक बड़ी भीड़ के साथ नदी पर चले गए। नदी की ओर जाते समय, उन्होंने एक तपती हुई भट्टी देखी और सड़क से उतरकर, अपने चोगा की कनिारी में गर्म कोयले भरकर उन्हें ले चले; जब वह उन पेड़ों तक पहुँचे, तो उन्होंने कोयलों पर धूप डाल दी और प्रार्थना करते हुए, अपने चोगा की खोखली जगह का—जो मूसा की जलती हुई झाड़ी की तरह जल रही थी लेकनि नष्ट नहीं हुई—धूपदान के रूप में इस्तेमाल कयिा। फरि उन्होंने लोगों को आदेश दयिा कि वे पेड़ों को कनिारे पर खींचें; पेड़ असाधारण रूप से हल्के हो गए और ऐसा लगा मानो वे अपने आप चल रहे हों, इसलिए उन्हें बनिा कसिी कठनिाई के नदी से बाहर खींच लयिा गया। उन पर नम्निलखिति शलिालेख मलिा: *'पवत्रि प्ररेरति पतरस के लिए पाँच पेड़ और पवत्रि प्ररेरति पौलुस के लिए पाँच'*।

तब पोप ने एक बार फरि बशिपों की सभा बुलाई; इसके बाद, वधिर्मी एलेउसयिस को दोषी ठहराकर स्पेन नर्विासति कर दयिा गया, जबकि संत ग्रेगरी को सम्मानपूर्वक अक्रागस भेज दयिा गया, हालांकि वे पहले कॉन्स्टेंटनिोपल गए, जहाँ सम्राट और पैट्रआिर्क ने उनका उचति स्वागत कयिा, और उसके बाद ही वे ससिलिी लौटे। अक्रैगस के लोगों ने उनका भव्य स्वागत कयिा, लेकनि संत ने चर्च में प्रवेश करने से इनकार कर दयिा, जसिे वधिर्मयिों द्वारा अपवत्रि कर दयिा गया था, या बशिप के नविास में जाने से भी इनकार कर दयिा; इसके बजाय, उन्होंने संतों पतरस और पॉल प्रेरतिों को समर्पति एक नया, भव्य चर्च बनवाया, और अपने लिए एक नया बशिप नविास बनवाया, जसिमें वे लंबे समय तक रहे और बहादुरी से मसीह के झुंड की देखभाल करते रहे।

संत ग्रेगरी ने कई शकि्षाप्रद ग्रंथ लखिे और चमत्कार कए; और अपनी वृद्धावस्था में उन्होंने ईसा मसीह के प्रभु के साथ स्वर्ग में अनंत जीवन प्राप्त क[8118] र इस संसार से वदिा ली, जनिका महमिा युगों-युगों तक हो। आमीन।

कॉन्टाकयिन, स्वर 4:

पवत्रि आत्मा की कलीसयिा दव्यि तेज से दमकती है, हे अतधिन्य पति ग्रेगरी, आपके गौरवपूर्ण नधिन का उत्सव मनाते हुए।

पवत्रि शहीद ससिीनयिस की स्मृति

23 नवंबर को स्मरणोत्सव

पवत्रि शहीद ससिीनस, साइज़किस शहर के मूल नविासी थे[8119] । उन्होंने डायोक्लेटयिन के शासनकाल में शहर के राज्यपाल, अलेक्जेंडर के हाथों शहादत प्राप्त की। मसीह की गवाही देने के लिए, उन्हें जंगली घोड़ों से बांध दयिा गया, नर्दियता से पीटा गया, और उनकी नाक में तेज सरिका डाल दयिा गया। उन्होंने कई अन्य यातनाएं सहन कीं और सभा के सामने महान चमत्कार कए। इसके बाद, उनकी गर्दन तलवार से काट दी गई।

पवत्रि शहीद थयिोडोर की स्मृति

23 नवंबर को स्मरण कयिा जाता है

[8117] टायबर मध्य इटली की सबसे महत्वपूर्ण नदयिों में से एक है; इटली की राजधानी रोम इसके तट पर स्थति है।

[8118] छठी शताब्दी के अंत या सातवीं शताब्दी की शुरुआत में।

[8119] क्यज़किोस – ग्रीस में प्रोपोंटसि की उपनविेशों में से एक पर स्थति एक शहर।

संत थियोडोर अंकोई शहर में रहते थे और एक व्यापारी थे। सम्राट जूलियन द एपोस्टेट[8120] के आदेश पर, उन्हें स्थानीय गवर्नर ने निम्नलिखित कारण से हिरासत में ले लिया था।

[8121]डैफ्ने में दफ़न शहीद बेबिलास और अन्य शहीदों की पवित्र अवशेषों को स्थानांतरित करते समय, ईसाइयों ने—जिनमें संत थियोडोर भी शामिल थे—दाऊद की भजनों के छंद गाते हुए पवित्र अवशेषों को ले जाया।: *'मूर्तियों की सेवा करने वाले सभी लज्जित हों, जो अपनी मूर्तियों पर घमंड करते हैं। हे सभी देवताओं, उसकी आराधना करो* (भजन संहिता 96:7)।

इसी कारण से, संत थियोडोर को गिरफ्तार कर लिया गया। उन्हें एक पेड़ से लटकाया गया, बैल की टेंडन से कंधों पर पीटा गया और लोहे की जंजीरों में जकड़कर कैद कर दिया गया। अगली सुबह, जूलियन को एपार्क से पता चला कि मसीह के लिए संत थियोडोर द्वारा सहन किए जा रहे यातनाएं मूर्तिपूजकों के लिए निंदा और अपमान का कारण बन रही थीं, जबकि उत्पीड़ित (ईसाइयों) के लिए महिमा और आनंद ला रही थीं। तब ईश्वर-विरोधी ने संत थियोडोर को जेल से रिहा करने का आदेश दिया। जब संत थियोडोर से उनके द्वारा सहन किए गए क्रूर यातनाओं के बारे में पूछा गया, तो उन्होंने कहा कि शुरुआत में उन्हें केवल थोड़ा दर्द महसूस हुआ था। तब एक आकृति उसके सामने प्रकट हुई और बर्फ़ की तरह सफ़ेद, सुगंधित तौलिये से उसके चेहरे का पसीना पोंछते हुए, उसे दृढ़ रहने का आदेश दिया; ताकि जब यातना देने वालों ने अपनी यातना बंद कर दी, तो संत ने आनंदित होकर नहीं, बल्कि पीड़ा महसूस करना शुरू कर दिया और फिर से यातना पाने की लालसा करने लगे।

वास्तव में, यातना देने वालों ने देखा कि एक देवदूत संत थियोडोर के पास आ रहा था और उसे बल प्रदान कर रहा था।

धर्मनिरपेक्ष सम्राट जूलियन को फ़ारसियों के साथ युद्ध के दौरान अपनी क्रूरताओं के लिए मृत्युदंड दिया गया, जबकि संत थियोडोर, आनंदित होकर, प्रभु में निद्रित हो गए।

- उसी दिन, पवित्र और धर्मी राजकुमार अलेक्जेंडर नेव्स्की की स्मृति

7 दिसंबर

24 नवंबर (पुराने कैलेंडर के अनुसार)

महान शहीद संत कैथरीन का जीवन और शहादत

24 नवंबर को स्मरणोत्सव

ईश्वरहीन रोमन सम्राट मैक्सिमिनिस के शासनकाल में[8122] , अलेक्जेंड्रिया शहर में[8123] , कैथरीन नाम की एक कन्या रहती थी, जो राजपरिवार की वंशज थी[8124] । वह असाधारण रूप से सुन्दर थी और अपनी बुद्धिमत्ता के लिए प्रसिद्ध थी। केवल अठारह वर्ष की आयु में ही कैथरीन ने सभी विधर्मी लेखकों और सभी प्राचीन कवियों और दार्शनिकों, जैसे होमर, वर्जिल, अरस्तू, प्लेटो और अन्य के कार्यों में महारत हासिल कर ली थी। कैथरीन न केवल प्राचीन ऋषियों की रचनाओं में पारंगत थीं, बल्कि उन्होंने सबसे प्रसिद्ध चिकित्सकों, जैसे एस्कलेपियस, हिप्पोक्रेट्स और गैलेन की रचनाओं का भी अध्ययन किया था; इसके अलावा, उन्होंने वाक्पटुता और तर्कशास्त्र की पूरी कला में महारत हासिल कर ली थी और कई भाषाओं और बोलियों में भी पारंगत थीं, जिससे हर कोई उनके ज्ञान और विद्वता को देखकर चकित

[8120] जूलियन द एपोकेटेट 361 से 363 तक शासन किया।

[8121] डैफ्ने – एंटिओक का एक उपनगर।

[8122] मैक्सिमिनिस ने 306 से 313 तक शासन किया।

[8123] अलेक्जेंड्रिया – मिस्र में, नील नदी की पश्चिमी शाखा पर स्थित एक शहर; इसकी स्थापना सन 331 ईसा पूर्व में महान अलेक्जेंडर ने की थी।

[8124] राष्ट्रीयता के अनुसार, कैथरीन अलेक्जेंड्रियाई यूनानियों से संबंधित थीं। यह उनके जीवन के शुरुआती विवरणों से अनुमान लगाया जा सकता है; वास्तव में, महान शहीद का नाम ही यूनानी है (जिसका अर्थ है 'हमेशा शुद्ध')। कैथरीन नाम का एक संशोधित रूप है।

रह जाता था। कई अमीर और कुलीन पुरुषों ने उससे विवाह के लिए हाथ माँगा और इस उद्देश्य के लिए वे उसकी माँ के पास आए, जो एक गुप्त ईसाई थी और मैक्सिमिनिस द्वारा उस समय विश्वासियों पर किए गए कड़े उत्पीड़न के कारण अपने धर्म को छिपाती थी। उसके रिश्तेदार और उसकी माँ अक्सर कैथरीन को शादी करने की सलाह देते थे, ताकि उसके पिता की शाही विरासत किसी अजनबी के हाथ न चली जाए, जिसका मतलब था कि वे उस विरासत से स्थायी रूप से वंचित हो जाएँगे। लेकिन कैथरीन, एक बुद्धिमान युवती होने के नाते, ने अपने दिल में दृढ़ संकल्प कर लिया था कि वह अपने शेष जीवन के लिए अपनी कुँवारीपन की पवित्रता को बनाए रखेगी और वह शादी करने के लिए बिल्कुल अनिच्छुक थी। जब उसके रिश्तेदारों ने उस पर शादी करने के लिए कड़ा दबाव डालना शुरू किया, तो उसने उनसे कहा:

'यदि आप चाहते हैं कि मैं शादी करूँ, तो मुझे ऐसा युवक ढूंढकर लाओ जो उन चार गुणों का धनी हो, जिनमें, जैसा कि आप जानते हैं, मैं सभी अन्य कुंवारी लड़कियों से श्रेष्ठ हूँ; और फिर मैं उसे अपना पति चुनने के लिए सहमत हो जाऊँगी; लेकिन मेरी इच्छा ऐसे व्यक्ति से शादी करने की नहीं है जो किसी भी मामले में मुझसे नीच हो।' इसलिए, दूर-दूर तक खोजो कि क्या तुम्हें ऐसा कोई युवक मिल सकता है जो जन्म, धन, सुंदरता और बुद्धि की कुलीनता में मेरा समकक्ष हो; जो भी युवक इन गुणों में से किसी एक में भी कमी रखता है, वह मेरे लायक नहीं है।

कैथरीन के घर वालों ने, यह देखकर कि ऐसा युवक खोजना असंभव था, उसे बताया कि ज़ार के बेटे और अन्य कुलीन वर उससे विवाह करके और भी कुलीन और अमीर बन सकते हैं, लेकिन सुंदरता और बुद्धिमित्ता के मामले में, कोई भी उसकी बराबरी नहीं कर सकता। इस पर, कैथरीन ने जवाब दिया:

'मैं चाहती हूँ कि मेरा पति कोई और नहीं, बल्कि वही हो जो ज्ञान में मेरा समकक्ष हो।'

अपनी बेटी के दृढ़ निश्चय को देखकर, उसकी माँ ने एक दूसरा रास्ता अपनाने का निश्चय किया। उन्होंने अपने आध्यात्मिक पिता, जो शहर के बाहर एक एकांत स्थान पर रहते थे, से सलाह ली। वह कैथरीन को अपने साथ ले गईं और उस धर्मात्मा व्यक्ति से मिलने गईं। उसने, उस सुंदर युवती को देखकर और उसके बुद्धिमानी भरे, यद्यपि विनिम्र, शब्दों को सुनकर, स्वर्ग के राजा मसीह के ज्ञान में उसे शिक्षित करने का निश्चय किया।

'मैं एक अद्भुत युवक को जानता हूँ,' उसने उससे कहा, 'जो अपनी सभी प्रतिभाओं में तुमसे कहीं बढ़कर है। उसकी सुंदरता सूर्य की रोशनी से भी अधिक तेज है; उसकी बुद्धि सभी भौतिक और आध्यात्मिक प्राणियों पर शासन करती है; उसके खजाने की संपत्ति पूरी दुनिया में फैली हुई है और कभी कम नहीं होती, बल्कि जैसे-जैसे इसे दिया जाता है, यह और भी बढ़ती जाती है; और उसकी वंशावली की महानता अकथनीय और अकल्पनीय है। पूरी दुनिया में उसकी तरह कोई और नहीं है।"

बुजुर्ग की बातें सुनकर, एकेतेरिना ने सोचा कि वह किसी सांसारिक राजकुमार के बारे में बात कर रहे हैं – वह घबरा गई, उसका चेहरा बदल गया, और उसने बुजुर्ग से पूछा कि जो कुछ भी वह उसे बता रहे थे, क्या वह सब सच था।

उसने उत्तर दिया कि यह सब सत्य है, और कहा कि इस युवक में अन्य महान गुण भी हैं, जिन्हें गिनना असंभव है। युवती ने उससे पूछा:

'तो फिर, इस युवक का, जिसकी आप इतनी प्रशंसा कर रहे हैं, बेटा कौन है?'

वृद्ध ने उत्तर दिया:

'पृथ्वी पर उसका कोई पिता नहीं है, बल्कि वह परम पवित्र और निर्मल कुँवारी से, जो सबसे सम्मानित वंश की थीं, एक अकथनीय और अलौकिक तरीके से जन्मे थे। उन्हें अपनी परम पवित्रता और शुद्धता के कारण ऐसे पुत्र को जन्म देने के योग्य माना गया था; वह आत्मा और शरीर से अमर हैं और स्वर्गों से भी ऊपर उठाई गई हैं, जहाँ सभी पवित्र स्वर्गदूत उन्हें सभी सृष्टि की रानी के रूप में पूजते हैं।

एकातेरिना ने साधु से पूछा:

'क्या मैं उस युवक को देख सकती हूँ, जिसके बारे में आप इतनी अद्भुत बातें कर रहे हैं?'

'यदि तुम मेरी बात मानोगी,' बुजुर्ग ने उत्तर दिया, 'तो तुम्हें उनके परम तेजस्वी मुख का दर्शन होगा।'

कैथरीन ने उत्तर दिया:

'मैं देख सकती हूँ कि आप एक बुद्धिमान और पूजनीय वृद्ध हैं, और इसलिए मुझे विश्वास है कि आप सत्य कह रहे हैं। मैं आपकी हर आज्ञा मानने को तैयार हूँ, बशर्ते मैं उसको देख सकूँ जिसकी आप इतनी प्रशंसा कर रहे हैं।'

तब साधु ने उसे परमेश्वर की अति पवित्र माता का एक चित्र दिया, जिसमें उन्होंने दिव्य शिशु को अपनी बाहों में धारण किया हुआ था, और उससे कहा:

'यह उस परमेश्वर की कुँवारी माता की प्रतिमा है, जिनके बारे में मैंने तुम्हें इतनी सारी अद्भुत बातें बताई हैं। इस प्रतिमा को अपने साथ घर ले जाओ और, अपने कमरे का दरवाज़ा बंद करके, इस कुँवारी, जिनका नाम मरियम है, को भक्तिपूर्वक एक प्रार्थना अर्पित करो; उनसे विनती करो कि वे कृपा करके अपने पुत्र को तुम्हें दिखाएँ।' मुझे विश्वास है कि यदि तुम श्रद्धापूर्वक उनसे प्रार्थना करोगी, तो वह तुम्हारी प्रार्थना सुनेगी और तुम्हें उस परमेश्वर का दर्शन कराएगी, जिसके लिए तुम्हारी आत्मा तरसती है।

तब युवती कैथरीन, पवित्र प्रतिमा लेकर घर लौट आई और उस रात, अपने कमरे में जाकर, जैसा कि एल्डर ने उसे सिखाया था, प्रार्थना करने लगी। अपनी लंबी प्रार्थना के दौरान, कैथरीन थकान के कारण सो गई और एक दर्शन में उसने स्वर्ग की रानी को ठीक वैसा ही देखा जैसा वह आइकन पर चित्रित थी, पवित्र शिशु के साथ, जो एक तेजस्वी प्रकाश से घिरी हुई थीं। कैथरीन उसका चेहरा नहीं देख सकी, क्योंकि उसने उससे अपना चेहरा मोड़ लिया था और अपनी माँ की ओर कर लिया था। उसे देखने की कोशिश करते हुए, कैथरीन दूसरी तरफ से आई, लेकिन मसीह ने वहाँ भी उससे अपना चेहरा मोड़ लिया। यह तीन बार हुआ। इसके बाद, कैथरीन ने परमेश्वर की माता को अपने पुत्र से कहते सुना:

'देखो, मेरे बच्चे, तुम्हारी दासी कैथरीन; वह कितनी सुन्दर और अच्छी है।'

और शिशु मसीह ने उनसे उत्तर दिया:

'नहीं, यह कन्या इतनी गहराई से भ्रष्ट और इतनी भद्दी है कि मैं उसकी ओर देख भी नहीं सकता।'

तब परमेश्वर की अति पवित्र माता ने प्रभु से एक बार फिर कहा:

'क्या यह कन्या सभी दार्शनिकों से अधिक बुद्धिमान नहीं है? क्या वह धन-संपत्ति और जन्म की कुलीनता में अन्य सभी कन्याओं से श्रेष्ठ नहीं है?'

लेकिन मसीह ने उससे उत्तर दिया:

'मैं तुझसे फिर कहता हूँ, हे मेरी माता, कि यह कन्या मूर्ख, गरीब और नीच कुल की है, और मैं तब तक उसकी ओर नहीं देखूँगा जब तक वह अपनी दुष्टता को नहीं त्याग देती।'

इस पर, प्रभु की परम धन्य माता ने उनसे कहा:

'मैं आपसे विनती करती हूँ, हे मेरे प्रियतम बालक, अपनी सृष्टि को तिरिस्कार न करें, बल्कि उसे ज्ञान दें और सिखाएँ कि उसे आपकी महिमा का आनंद लेने और आपके परम तेजस्वी और गौरवशाली मुखमंडल को देखने के लिए क्या करना चाहिए, जिसे देखने के लिए सभी स्वर्गदूत लालायित हैं।'

तब मसीह ने उत्तर दिया:

'उसे उस वृद्ध के पास जाने दो जिसने उसे प्रतिमा दी है, और जो कुछ वह उससे कहे, वैसा ही करे; तब वह मुझे देखेगी और मेरी दृष्टि में अनुग्रह पाएगी।'

यह सब देखकर और सुनकर, कैथरीन अपनी नींद से जागी और उस दर्शन से चकित रह गई। जब सुबह हुई, तो वह अपनी कुछ दासियों के साथ पवित्र वृद्ध के कोठरी में गई और, आँसुओं से उनके पैरों पर गिरकर, उन्हें अपने दर्शन के बारे में बताया और उनसे विनती की कि वे उसे बताएं कि उसे अपने प्रिय वरा, मसीह, को देखने के लिए क्या करना चाहिए।

उस पूजनीय वृद्ध ने उसे सच्चे ईसाई धर्म के सभी रहस्यों के बारे में विस्तार से बताया, जिसमें संसार की सृष्टि और हमारे पूर्वज आदम की सृष्टि से लेकर हमारे प्रभु मसीह के पृथ्वी पर दूसरी बार आगमन तक शामिल था; उन्होंने उसे धर्मी लोगों की अनुपम स्वर्गीय महिमा और पापियों के अनंत, अत्यंत पीड़ादायक यातनाओं के बारे में भी बताया। एक अति बुद्धिमान कन्या के रूप में, जो ईश्वर द्वारा प्रबुद्ध और सत्य तथा मोक्ष की प्यासी थी, कैथरीन ने जल्द ही संपूर्ण ईसाई धर्म को समझ लिया, यीशु मसीह पर पूरे हृदय से विश्वास किया, और उसी साधु से पवित्र बपतिस्मा ग्रहण किया। इसके बाद, उस वृद्ध ने उसे परमेश्वर की परम पवित्र माता से एक बार फिर बड़ी लगन के साथ प्रार्थना करने का निर्देश दिया, ताकि वह पहली रात की तरह फिर से उसके सामने प्रकट हों।

इस प्रकार, पुराने स्वभाव को त्यागकर (देखें कुलुस्सियों 3:9) और आत्मा की नवीनता को धारण करके, कैथरीन अपने घर लौट आईं और पूरी रात आँसुओं भरी प्रार्थना में बिताई, और तब तक भोजन से परहेज़ करती रहीं जब तक कि वे सो नहीं गईं। और एक बार फिर उसने स्वर्ग की रानी को अपनी बाहों में दिव्य शिशु के साथ देखा। शिशु ने कैथरीन की ओर बड़ी दया और कोमलता से देखा। ईश्वर की माता ने अपने पुत्र से पूछा:

'क्या यह कन्या तुम्हें प्रिय है, मेरे पुत्र?'

प्रभु ने अपनी अतिपवित्र माता को उत्तर दिया:

'वह मुझे सबसे अधिक प्रिय है, क्योंकि अब वह सुंदर और महिमामय है, और पहले की तरह बदसूरत और अपमानजनक नहीं रही; अब वह धनी और बुद्धिमान है, और पहले की तरह गरीब नहीं रही; अब मैं उससे प्रेम करने लगा हूँ, और वह मुझे इतनी प्रिय है कि मैं उसे एक अमर दुल्हन के रूप में अपने साथ सगाई करना चाहता हूँ।'

तब कैथरीन ज़मीन पर गिर पड़ी और चिल्लाई:

– हे परम महिमामय प्रभु, मैं आपका राज्य देखने के लिए अयोग्य हूँ, परन्तु यह अनुग्रह कीजिए कि मैं कम से कम आपकी दासियों में गिनी जाऊँ।

उस क्षण, परमेश्वर की परम पवित्र माता ने कन्या का दाहिना हाथ पकड़ा और अपने पुत्र से कहा:

'मेरे पुत्र, उसे अपनी सगाई की अंगूठी दे दो, जो उसकी ओर तुम्हारी सगाई का प्रतीक हो; उसे स्वयं से सगाई कर लो, ताकि वह तुम्हारे राज्य की योग्य मानी जाए।'

तब प्रभु मसीह ने कैथरीन को सबसे सुंदर अंगूठी दी और कहा:

'देखो, मैं अब तुम्हें अपनी अविनाशी और शाश्वत दुल्हन के रूप में चुनता हूँ। इसलिए, इस मलिन को अत्यंत सावधानी से बनाए रखना, इसे अटूट रखना, और किसी भी तरह से अपने लिए कोई सांसारिक वर न चुनना।'

प्रभु मसीह के इन वचनों के बाद, वह दर्शन समाप्त हो गया। वह कन्या जाग उठी और उसने अपने दाहिने हाथ पर एक अद्भुत अंगूठी स्पष्ट रूप से देखी। उसके हृदय में इतनी आनंद और प्रसन्नता भर गई कि उस क्षण से उसका हृदय पूरी तरह से दिव्य प्रेम के लिए समर्पित हो गया। उसमें इतना बड़ा परिवर्तन आया कि वह अब किसी भी सांसारिक चीज़ के बारे में नहीं सोचती थी, बल्कि केवल दिन-रात अपने प्रिय वर के बारे में निरंतर ध्यान लगाती थी; वह केवल उसी की इच्छा करती थी, और जागते हुए और सपनों में, दोनों ही अवस्थाओं में केवल उसी के बारे में जानती थी।

कैथरीन के ईसाई धर्म अपनाने के कुछ ही समय बाद, अधर्मी राजा मैक्सिमिनिस अलेक्जेंड्रिया पहुँचा; वह अपने निर्जीव देवताओं के प्रति एक अतार्किक जुनून रखता था, और वह स्वयं, मानो, असंवेदनशील और मूक था। इन देवताओं के सम्मान में एक भव्य उत्सव आयोजित करने की इच्छा से, उसने आसपास के देशों और शहरों में एक आदेश भेजा, जिसमें अपने सभी प्रजाजनों को इकट्ठा होकर बलिदान चढ़ाने का आदेश दिया गया, ताकि पूरे राष्ट्र द्वारा देवताओं का सम्मान किया जा सके। अनगिनत लोगों की भीड़ जमा हो गई, प्रत्येक व्यक्ति बलिदान के लिए जो कुछ भी ला सकता था, वह लाया: कुछ ने बैल लाए, कुछ ने भेड़ें, जबकि जो ऐसा करने में असमर्थ थे, उन्होंने पक्षी या इसी तरह की कोई अन्य चीज़ लाई। जब उस घृणित उत्सव का दिन आया, तो ज़ार ने एक सौ तीस बछड़े बलिदान किए; राजकुमारों और कुलीनों ने कम बलिदान किए, और प्रत्येक ने अपनी सामर्थ्य अनुसार बलिदान किया। पूरा शहर वध किए जा रहे जानवरों की चीखों और बलिदानों की बदबू से भर गया था; हर तरफ भीषण भीड़भाड़ और अव्यवस्था थी, और हवा बदबूदार धुएँ से घिरी हुई थी। जब यह सब हो रहा था, तब धर्मनिष्ठ और अत्यंत सुंदर कैथरीन, मानव आत्माओं के लिए ऐसी विनाशकारी प्रलोभन को देखकर, अपने हृदय में गहराई से आहत हुईं, और उनके विनाश पर शोक मना रही थीं। दिव्य उत्साह से जलते हुए, वह अपने साथ कई नौकरों को लेकर उस मंदिर में गई जहाँ पागल लोग बलिदान दे रहे थे। जब वह दरवाज़े पर खड़ी हुईं, तो सभी की नज़रें उन पर टिक गईं: क्योंकि वह अपनी असाधारण सुंदरता से चमक रही थीं, जो उनकी आत्मा की आंतरिक सुंदरता की गवाह थी। उसने आदेश दिया कि राजा को सूचित किया जाए कि उसे उससे कहने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण बात है। राजा ने उसे अपने सामने आने का आदेश दिया। राजा के सामने खड़ी होकर, कैथरीन ने पहले उसे उचित सम्मान देते हुए प्रणाम किया, और फिर कहा:

'हे राजा, उस धोखे को पहचानो जिसमें तुम्हें राक्षसों ने डाला है। तुम इन नश्वर और निर्जीव मूर्तियों को देवताओं के रूप में पूजते हो और उनकी आराधना करते हो। इतनी अंधी और मूर्ख बनकर ऐसी घृणित वस्तुओं की पूजा करना बहुत शर्म की बात है।' कम से कम अपने ही ऋषि डायोडोरस[8125] पर तो विश्वास करें, जो कहते हैं कि आपके देवता कभी मनुष्य थे, और उन्होंने अपना जीवन दुष्टता में समाप्त किया; फिर भी, जीवन में किए गए कुछ कर्मों के कारण, लोगों ने उनके सम्मान में स्मारक और मूर्तियाँ स्थापित कीं। बाद की पीढ़ियों ने, हालांकि, अपने पूर्वजों के इरादों से अनजान—जिन्होंने इन स्मारकों को केवल एक स्मृति-चिह्न के रूप में खड़ा किया था—लेकिन यह सोचकर कि स्मारक स्वयं ही धार्मिक और

[8125] डायोडोरस सिकुलस एक प्रसिद्ध पैगन लेखक, इतिहासकार और दार्शनिक थे, जो अपनी निष्पक्षता और तीक्ष्ण पर्यवेक्षण शक्ति के लिए प्रसिद्ध थे।

उचति थे, उन्हें देवताओं के रूप में पूजना शुरू कर दयिा। और चेरोनयिा के प्रसद्धि प्लूटार्क[8126] ने इन देवताओं से घृणा की और उन्हें तुच्छ समझा। तब, हे राजा, अपने इन शक्षिकों पर वशि्वास करो, और इतने सारे आत्माओं के वनिाश का कारण न बनो, जसिके लएि तुम्हें अनंतकालकि यातना सहनी पड़ेगी। एकमात्र सच्चे ईश्वर, , को जानो, जो शाश्वत, आदि-विहीन और अमर हैं, और जन्हिोंने, अंतमि दनिों में, हमारे उद्धार के लएि मानव देह धारण कयिा। उनके द्वारा राजा राज्य करते हैं, राष्ट्रों पर शासन होता है, और संपूर्ण वशि्व का पालन-पोषण होता है। उनके एकमात्र वचन से सभी वस्तुएँ सृजति हुईं और अस्तत्वि में बनी हुईं। यह सर्वशक्तमिान और परम कृपालु ईश्वर आपके जैसे बलदिानों की मांग नहीं करता, न ही वह नर्दिोष पीड़तिों की बलि से प्रसन्न होता है, बल्कि वह केवल यह चाहता है कि हम उसके आज्ञाओं का दृढ़ता और अटूटता से पालन करें।

यह सुनकर राजा क्रोध से भर गया और पहले तो बहुत देर तक चुप रहा। फरि, उसके शब्दों का उत्तर न दे पाने पर, उसने कहा:

'इन कुछ दनिों के लएि हमें यज्ञ करने के लएि शांति से रहने दो, और बाद में हम तुम्हारी बात सुनेंगे।'

अपनी अधर्मी उत्सव को समाप्त कर, दुष्ट राजा ने संत कैथरीन को अपने शाही कक्षों में अपने समक्ष लाने का आदेश दयिा और उससे कहा:

'बताओ, कन्या, तुम कौन हो, और जो तुमने पहले हमें बताया था, उसे दोहराओ।'

'मैं राजा की बेटी हूँ,' संत ने उत्तर दयिा, 'और मेरा नाम कैथरीन है।' 'मैं पहले वभिन्नि शास्त्रों का अध्ययन बड़े प्रेम से कयिा करती थी: मैंने अलंकार शास्त्र और दर्शन, ज्यामति और अन्य वज्ञिानों पर ग्रंथों का अध्ययन कयिा; लेकनि अब मैं इन सभी को व्यर्थ और नरिर्थक प्रयास मानती हूँ, और प्रभु मसीह की वधू बन गई हूँ, जन्हिोंने अपने भवष्यिवक्ता यशायाह के माध्यम से कहा:

'उसके बुद्धमिानों की बुद्धि नाश हो जाएगी, और उसके समझदारों की समझ लुप्त हो जाएगी' (यशायाह 29:14)।

राजा उसके शब्दों और असाधारण बुद्धि से चकति हुआ, लेकनि वह उसकी उल्लेखनीय सुंदरता से और भी अधकि प्रभावति हुआ, और उसने सोचा कि वह नश्वर माता-पति से नहीं, बल्कि उन देवताओं से उत्पन्न हुई थी जनिकी वह पूजा करता था। इतना अवशि्वसनीय था कि इतनी अतुलनीय सुंदरता वाली एक कन्या नश्वर माता-पति से पैदा हुई होगी, कि वह—उसकी सुंदरता से मोहति होकर और बेधड़क नगिाहों से उसे घूरते हुए—वलिासति भरी बातें करने लगा। हालाँकि, संत ने उसके दुष्ट वचिारों को भाँपते हुए, उससे कहा:

'वे राक्षस जन्हिें तुम देवताओं के रूप में पूजते हो, तुम्हें बहकाते हैं और तुम्हें मूर्खतापूर्ण वासनाओं में ले जाते हैं; मैं, हालांकि, खुद को मट्टिी और धूल मानती हूँ; ईश्वर ने मुझे अपनी ही छवि और समानता में बनाया है और मुझे ऐसी सुंदरता से नवाज़ा है कि लोग सृष्टकिर्ता की बुद्धमित्ता पर आश्चर्य करें, जो इतनी तुच्छ और नश्वर प्राणी पर ऐसी बुद्धमित्ता और सुंदरता प्रदान कर सकते हैं।

राजा उसके शब्दों से क्रोधति हो गया और कहा:

'देवताओं के बारे में इतना बुरा मत बोलो, जनिके पास अमर महमिा है।'

लेकनि संत ने उससे उत्तर दयिा:

'यदि तुम भ्रम से उत्पन्न हुई उदासी और भ्रम को थोड़ा भी दूर करना चाहती हो, तो अपने देवताओं की पूर्ण तुच्छता को समझो और सच्चे ईश्वर को जानो। केवल उनका नाम लेने मात्र से, या हवा में केवल एक क्रॉस का चह्नि बनाने से ही, तुम्हारे देवता दूर भाग जाते हैं और कुचल जाते हैं; और यदि तुम चाहो, तो मैं तुम्हें अपने शब्दों की सच्चाई स्पष्ट रूप से साबति कर दूँगा।'

राजा, उसकी स्पष्टवादति को देखकर और इस बात से डरकर कि कहीं वह उसकी बातों से पराजति और लज्जति न हो जाए, उससे बोला:

'एक राजा के लएि महलिाओं से बात करना अनुचति है। लेकनि मैं तुम्हारे साथ बहस करने के लएि सबसे बुद्धमिान दार्शनकिों को इकट्ठा करूँगा, और तुम अपने ही वचिारों की नरिर्थकता को पहचानोगे और हमारी शक्षिाओं पर वशि्वास करने लगोगे।'

[8126] चेरोनयिा के प्लूटार्क एक प्रसद्धि यूनानी इतहिासकार थे। चेरोनयिा मध्य ग्रीस का एक शहर है।

यह कहकर, उसने उस पवत्रि कन्या को अत्यंत कड़ी नगिरानी में रखने का आदेश दयिा। उसने स्वयं तुरंत अपने शासन के सभी शहरों में नम्निलखिति फरमान भेजा:

'मैं, राजा मैक्समिनिस, अपने क्षेत्रों में रहने वाले सबसे बुद्धमिान दार्शनकिों और वक्ताओं को प्रसन्न करना चाहता हूँ। जो भी सबसे बुद्धमिान देवता हर्मीस[8127] की सेवा करते हैं, और जो मन की मार्गदर्शक, म्यूज़ों[8128] का आह्वान करते हैं, वे मेरे सामने इकट्ठा हों, ताकि हम इन दनिों प्रकट हुई एक अत्यंत बुद्धमिान कन्या के मुँह को बंद कर सकें, जो महान देवताओं का उपहास करती है और उनके सभी कार्यों को कविदंतयिाँ और व्यर्थ की बातें कहती है। तो आओ, अपनी सारी बुद्धमित्ता का प्रदर्शन करो, जसिकी लोग प्रशंसा करेंगे, जबकि मुझसे तुम अपने श्रम का पुरस्कार प्राप्त करोगे।

और इस प्रकार वे इकट्ठा हुए, पचास की संख्या में, चुने हुए और सबसे बुद्धमिान वक्ता, जो अपने तीव्र बुद्धि और वाक्पटुता के लिए प्रसद्धि थे। राजा ने उनसे इन शब्दों में संबोधति कयिा:

एकमात्र युवती के साथ एक वीरतापूर्ण प्रतस्पिर्धा के लिए अत्यंत सावधानी और ध्यान के साथ स्वयं को तैयार करो, ताकि तुम देवताओं के बारे में एक बहस में अपने तर्कों से उस पर वजिय प्राप्त कर सको; इस बात को हल्के में न लो कि तुम एक युवती से बात कर रहे हो, बल्कि अपनी पूरी लगन लगाओ और अपनी बुद्धमित्ता का प्रदर्शन करो जैसे कि तुम कसिी पराक्रमी प्रतद्विंद्वी और सबसे बुद्धमिान वक्ता का सामना कर रहे हो; क्योंकि, जैसा कि मैंने सावधानीपूर्वक पता लगाया है, वह अपनी बुद्धमित्ता में महान प्लेटो से भी आगे है[8129] । इसलिए मैं आपसे वनिती करता हूँ कि आप उसके साथ अपनी वाद-ववािद में उतनी ही लगन दखिाएँ जतिनी आप स्वयं इस ऋषि के खलिाफ प्रतस्पिर्धा करते समय दखिाते। यदि आप वजियी होते हैं, तो मैं आपको महान उपहारों से पुरस्कृत करूँगा; लेकनि यदि आप पराजति होते हैं, तो आपको बहुत शर्मदिगी उठानी पड़ेगी, और उपहारों के बजाय आपको एक पीड़ादायक मृत्यु का सामना करना पड़ेगा।

राजा के इन शब्दों पर, सबसे प्रतष्ठिति और बुद्धमिान वक्ताओं में से एक ने उत्तर दयिा:

'हे राजा, भय न करें: हमारी प्रतद्विंद्वी यद्यपि असाधारण रूप से चतुर हो सकती है, परन्तु एक महलिा होने के नाते उसमें पूर्ण ज्ञान नहीं हो सकता, और न ही वह वाक्पटुता में पूरी तरह नपिुण हो सकती है; बस उसे हमारे सामने आने का आदेश दें, और आप देखेंगे कि, जैसे ही वह इतने सारे दार्शनकिों और वक्ताओं को देखेगी, वह तुरंत लज्जति हो जाएगी।'

दार्शनकि की घमंडी बातें सुनकर राजा को आश्वासन मलिा और वह उत्साहति हो गया, यह आशा करते हुए कि वद्विानों की अधर्मी और अहंकारी बातें उस कन्या को पराजति कर देंगी, जो नम्रता और दैवीय ज्ञान से परपिूर्ण थी। उसने तुरंत उसे अपने सामने लाने का आदेश दयिा। ईसाई युवती और मूर्तपिूजक ऋषयिों के बीच बहस सुनने के लिए एक बड़ी भीड़ भी इकट्ठा हुई। लेकनि इससे पहले कि दूत कैथरीन तक पहुँच पाते, स्वर्ग से महादूत माइकल उसके सामने प्रकट हुए और कहा:

'हे प्रभु की कन्या, मत डर! तुम्हारा प्रभु तुम्हारे ज्ञान में और भी ज्ञान बढ़ाएगा, और तुम उन पचास दार्शनकिों के वरिुद्ध वाद-ववािद में वजियी रहोगी। और केवल वे ही नहीं, बल्कि और भी बहुत से लोग तुम्हारे द्वारा वश्विास में आएँगे और शहीद का मुकुट प्राप्त करेंगे।'

यह कहकर, देवदूत प्रस्थान कर गया।

इस बीच, राजा के दूत कैथरीन के पास आए; उन्होंने उसे पकड़कर राजा और दार्शनकिों के सामने सबके देखने के लिए ले आए। और तुरंत ही वह घमंडी दार्शनकि, जसिने पहले इतनी डींगें हांकी थीं, ने गर्व से संत कैथरीन से कहा:

'क्या तुम वही हो, जो इतनी धृष्टता और मूर्खता से हमारे देवताओं की नदिा करते हो?'

'यह मैं हूँ,' संत ने नम्रता से उत्तर दयिा, 'लेकनि मैं तुम्हारे कहने के अनुसार अहंकार या मूर्खता से नहीं, बल्कि नम्रता और सत्य के प्रेम से बोलती हूँ, यह घोषति करते हुए कि तुम्हारे देवता कुछ भी नहीं हैं।'

[8127] हर्मीस (Hermes) या मर्करी को देवताओं का संदेशवाहक, व्यापार और वक्ताओं का संरक्षक माना जाता था, और वह सबसे लोकप्रयि पगन देवताओं में से एक था। इस प्रकार, लूस्त्र और लकिोनयिा के शहरों के अज्ञानी लोग प्रेरति पौलुस और बरनबास के चमत्कारों से इतने चकति हो गए कि उन्होंने बरनबास को 'ज़ीउस' और पौलुस को 'हर्मेस' कहा, क्योंकि वह मुख्य वक्ता था। (प्रेरतिों के काम 14:12)।

[8128] वज्ञिान और कलाओं की संरक्षक देवयिाँ।

[8129] प्लेटो – ईसा पूर्व चौथी शताब्दी के एक प्रसद्धि यूनानी दार्शनकि, प्रसद्धि यूनानी दार्शनकि अरस्टिोटल के समकालीन और शक्षिक। प्लेटो प्रसद्धि और प्रतष्ठिति दार्शनकि सुकरात के शष्यि थे। यह उल्लेखनीय है कि अपने दार्शनकि वचिारों में, वशिेष रूप से ईश्वर, संसार की रचना और परलोक पर अपने उपदेशों में, प्लेटो ईसाई सद्धिांत के बहुत करीब आते हैं।

तब दार्शनिक ने उससे कहा:

'महान कवियों[8130] उन्हें सर्वोच्च देवता कहते हैं; तो फिर आप उन लोगों के खिलाफ इतनी बेधड़क कैसे बोल सकती हैं, जिनसे आपने स्वयं ज्ञान प्राप्त किया है, और जिनकी मीठी देन का आपने स्वाद चखा है?'

कैथरीन ने उत्तर दिया, 'मैंने ज्ञान आपके देवताओं से नहीं, बल्कि अपने एक सच्चे ईश्वर से प्राप्त किया है।' वह स्वयं ज्ञान और जीवन है, और जो कोई भी उसका भय मानता है और उसकी दिव्य आज्ञाओं का पालन करता है, वह एक सच्चा दार्शनिक है। जहाँ तक आपके देवताओं के कर्मों और उनके बारे में बताई जाने वाली कहानियों का प्रश्न है, वे उपहास और निंदा के योग्य हैं, और प्रलोभन से भरे हुए हैं। और मुझे बताओ, आपके किस महान कवि ने उन्हें देवता कहा है, और किस शब्दों में?

'सभी में सबसे बुद्धिमान, होमर[8131] ,' ऋषि ने उत्तर दिया, 'जो ज्यूस[8132] को प्रार्थना संबोधित करते हुए, सबसे पहले कहते हैं: "हे अति-महिमामय ज्यूस, हे सर्वशक्तिमान देव, और हे अन्य अमर देवताओं।"' और प्रतिष्ठित ऑर्फियस[8133] , अपोलो[8134] को धन्यवाद देते हुए, इस प्रकार कहते हैं: 'हे लाटो के पुत्र, जो दूर से बाण चलाता है! शक्तिशाली फीबस, जो सब कुछ देखता है और नश्वर तथा अमर प्राणियों पर शासन करता है, सुनहरा पंख फैलाकर उड़ने वाला सूर्य।'

'यही है,' विधिर्मी ऋषि ने अपनी वाणी समाप्त करते हुए कहा, 'कि सर्वप्रथम और सबसे प्रतिष्ठित कवियों ने देवताओं का सम्मान किया और उन्हें स्पष्ट रूप से अमर कहा; अत; तुम भी क्रूस पर चढ़ाए गए को एक देवता के रूप में पूजने के भ्रम में न पड़ो[8135] ; कोई भी प्राचीन ऋषि केवल उसे ईश्वर कहने या स्वीकार करने में विफल रहे, बल्कि वे उसके बारे में जानते भी नहीं थे।

संत कैथरीन ने उत्तर दिया:

– लेकिन आपका अपना होमर, एक अन्य अंश में, आपके महान देवता ज्यूस के बारे में कहते हैं कि वह एक चालाक और धोखेबाज़ था, और अन्य देवता—हेरा, पोसीडॉन और एथेना[8136] —उसे बांधना चाहते थे, लेकिन वह उनसे बच निकला। आपकी किताबों में ऐसे कई विवरण हैं जो आपके देवताओं के प्रति घृणा पैदा करते हैं। लेकिन चूँकि आपने कहा है कि प्राचीन शिक्षकों में से किसी ने भी क्रूस पर चढ़ाए गए को ईश्वर के रूप में नहीं पहचाना, हालाँकि यह साबित करने के लिए कि वह सच्चे ईश्वर और स्वर्ग तथा पृथ्वी, समुद्र के अकल्पनीय, अकथनीय सृष्टिकर्ता हैं, किसी को उन पर गहराई से विचार करने की आवश्यकता नहीं है, सूर्य, चंद्रमा और संपूर्ण मानव जाति का सृष्टिकर्ता है, फिर भी, इस सत्य की अधिक पुष्टि के लिए, मैं आपकी ही पुस्तकों से प्रमाण उद्धृत करूँगा। सुनें कि आपकी सबसे बुद्धिमान

[8130] यह होमर, वर्जिल और अन्य कवियों को संदर्भित करता है। सामान्यत; मूर्तिपूजकों ने अपने देवताओं की कहानियाँ मुख्य रूप से काव्यात्मक कृतियों से ली थीं।

[8131] होमर सबसे विद्वान और प्रसिद्ध यूनानी कवियों में से एक थे, जो सामान्य युग से बहुत पहले रहते थे। उन्होंने प्रसिद्ध महाकाव्य लिखे: *इलियड* और *ओडिसी*।

[8132] ज्यूस (या जुपिटर) एक ग्रीक-रोमन देवता थे, जिन्हें मूर्तिपूजकों द्वारा स्वर्ग और पृथ्वी के शासक, सभी देवताओं और मनुष्यों के पिता के रूप में पूजित किया जाता था।

[8133] ऑर्फियस एक पौराणिक व्यक्ति थे जिन्हें मूर्तिपूजकों के बीच विशेष श्रद्धा प्राप्त थी।

[8134] अपोलो, या फीबस, ज्यूस और लेटो का पुत्र, सबसे अधिक पूजे जाने वाले ग्रीक-रोमन मूर्तिपूजक देवताओं में से एक था। उसकी पूजा सूर्य और बौद्धिक प्रबोधन के देवता के रूप में, साथ ही सामाजिक कल्याण और व्यवस्था, कानून के संरक्षक, और भविष्यवाणी के देवता के रूप में की जाती थी।

[8135] मूर्तिवादियों को यह विशेष रूप से अस्वीकार्य लगता था कि ईसाई सूली पर चढ़ाए गए मसीह की पूजा करते थे, क्योंकि सूली पर चढ़ाकर मृत्युदंड देना एक अपमान माना जाता था। यही कारण है कि प्रेरित पौलुस कहते हैं कि सूली पर चढ़ाए गए मसीह का संदेश यूनानियों (यानी मूर्तिवादियों) के लिए मूर्खता है (1 कुरिन्थियों 1:23)।

[8136] हेरा (जूनो) का प्राचीन यूनानियों और रोमनों द्वारा उनके प्रमुख देवता ज्यूस की बहन और पत्नी के रूप में सम्मान किया जाता था, और वह देवियों में सबसे सम्मानित थीं; उन्हें पृथ्वी और प्रजनन की देवी और विवाह की संरक्षक माना जाता था। पोसीडॉन को समुद्रों का देवता माना जाता था। एथेना को बुद्धि की देवी माना जाता था, मुख्य रूप से सैन्य स्वभाव की। ऊपर उद्धृत अंश रोमन कवि ओविड की *मेटामॉर्फोसिस* से लिया गया है। सामान्यत; उनके विश्वासों के अनुसार, रोमनों और यूनानियों के देवता मानवों की ही तरह की भावनाओं और आपराधिक प्रवृत्तियों से ग्रस्त थे।

साइबलि[8137] उनके बारे में क्या कहती है, जो उनके दैवी अवतार और उद्धारकारी सूली पर चढ़ाए जाने की गवाही देती है: 'आने वाले समय में, एक विशेष व्यक्ति इस पृथ्वी पर आएगा और स्वयं पर पापरहित देह धारण करेगा। ईश्वरत्व की असीम सर्वशक्तिमानता से, वह असाध्य वासनाओं के भ्रष्टाचार को नष्ट कर देगा, और अविश्वासी उससे ईर्ष्या करेंगे; और उसे एक ऊँची जगह पर लटकाया जाएगा, मानो वह मृत्यु का पात्र हो।' याद करो कि तुम्हारे अपने ऋषि अपोलोनियस[8138] ने भी, अपनी इच्छा से नहीं, बल्कि उसकी दिव्य शक्ति से विवश होकर, मसीह को ईश्वर स्वीकार किया: वह कहता है, 'एक, स्वर्गीय, मुझे उसे स्वीकार करने के लिए विवश करता है।' वह त्रि-प्रकाशमान ज्योति हैं; जो पीड़ित हुए ईश्वर वही हैं, फिर भी यह दिव्य स्वभाव स्वयं नहीं था जो पीड़ित हुआ: क्योंकि उनमें दोनों मौजूद हैं: वह देह में नश्वर हैं, फिर भी एक ही समय में क्षय से अछूते हैं। और यह मनुष्य, जो मनुष्यों के हाथों सब कुछ सहन करता है—क्रूस, अपमान, दफ़न—वही ईश्वर है।' यह वही है जो अपोलोनियस ने सच्चे ईश्वर के बारे में कहा, जो उन्हें जन्म देने वाले के सह-शाश्वत और एकसार हैं। वह सभी सृजित आशीर्वादों की शुरुआत, नींव और स्रोत हैं; उन्होंने शून्य से संसार की सृष्टि की और उसका शासन करते हैं। परमपिता के साथ एकसार होकर, वे हमारे लिए मनुष्य बने, पृथ्वी पर रहे, लोगों को उपदेश देते हुए, सिखाते हुए और भलाई करते हुए; फिर उन्होंने हम कृतघ्न लोगों के लिए मृत्यु को स्वीकार किया, ताकि हमें प्राचीन शाप से मुक्त कर सकें और हमें हमारी पूर्व आनंद और परमानंद प्रदान कर सकें। इस प्रकार, उन्होंने हमारे लिए स्वर्ग के द्वार फिर से खोल दिए, जिन्हें हमने पतन के कारण बंद कर दिया था। तीन दिनों के बाद, वह मरे हुओं में से जी उठे, स्वर्ग में आरोहण किए—जहाँ से वह आए थे—और अपने शिष्यों को पवित्र आत्मा भेजा; और वे सारी दुनिया में गए और उनकी दिव्यता का प्रचार किया, जिस पर आपको भी, हे दार्शनिक, विश्वास करना चाहिए, ताकि आप सच्चे ईश्वर को जान सकें और उस दयालु और कृपालु के सेवक बन सकें जो सभी पापियों को बुलाता है, यह कहते हुए: *'मेरे पास आओ, हे सब जो परिश्रम करते हो और बोझ से दबे हो, और मैं तुम्हें विश्राम दूँगा'* (मत्ती 11:28)। अत; कम से कम अपने ही शिक्षकों और देवताओं—प्लेटो, ऑर्फियस और अपोलोनियस—पर तो विश्वास करो, जिन्होंने स्पष्ट और साफ़ तौर पर, यद्यपि अपनी इच्छा के विरुद्ध, मसीह को परमेश्वर के रूप में स्वीकार किया।

अत्यंत बुद्धिमान कैथरीन ने ये और भी कई शब्द कहे, जिससे दार्शनिक इतना चकित रह गया कि वह उसके जवाब में कुछ भी कहने में असमर्थ, मौन रह गया। ज़ार ने, उसे पराजित और चकित देखकर, दूसरों को उस पवित्र कन्या के साथ बातचीत शुरू करने का आदेश दिया। लेकिन उन्होंने मना कर दिया, यह कहते हुए:

'हम सत्य के विरुद्ध नहीं खड़े हो सकते, क्योंकि यदि हम में सबसे विद्वान, पराजित होकर चुप हो जाए, तो हम क्या कह सकते हैं?'

तब क्रोधित राजा ने शहर के बीचों-बीच सबसे भयंकर आग जलाने और सभी दार्शनिकों और वक्ताओं को जला देने का आदेश दिया। ऐसे निर्णय और राजा के आदेश को सुनकर, वे कैथरीन के पैरों में गिर पड़े, और उनसे विनती करने लगे कि वे उनके लिए एकमात्र सच्चे ईश्वर से प्रार्थना करें, कि वह अज्ञानता में किए गए उनके सभी पापों को क्षमा कर दें, और उन्हें पवित्र बपतिस्मा और परम पवित्र आत्मा के वरदान प्रदान करें।

संत, आनंद और हर्ष से भरकर, उनसे कहने लगे:

'तुम सचमुच धन्य और सुखी हो, क्योंकि, अंधकार को छोड़कर, तुमने सच्ची रोशनी को जान लिया है, और, नश्वर सांसारिक राजा को ठुकराकर, तुम अमर स्वर्गीय एक के करीब आ गए हो; उसकी दया पर अपनी दृढ़ आशा रखो, और विश्वास करो कि वह आग जिससे दुष्ट तुम्हें डराते हैं, वह तुम्हारे बपतिस्मा और स्वर्ग की ओर ले जाने वाली सीढ़ी का काम करेगी। इस आग में तुम शरीर और आत्मा की हर अशुद्धि से शुद्ध हो जाओगे, और महिमा के राजा के सामने तारों की तरह चमकते और शुद्ध होकर खड़े होगे, और उनके प्रिय मित्र बन जाओगे।

[8137] प्राचीन रोम में, महिला भविष्यवक्ताओं को सिबिलि कहा जाता था। उनकी भविष्यवाणियों को तीन पुस्तकों में संकलित किया गया था, जिन्हें कैपिटोलिन हिल पर ज्यूस (जुपीटर) के मंदिर में, और बाद में पलाटिन हिल पर अपोलो के मंदिर में रखा गया था। इन 'सिबिलिन पुस्तकों' को मूर्तिपूजक दुनिया भर में सर्वोच्च सम्मान दिया जाता था। ईसाई लेखकों ने भी उनकी भविष्यवाणियों पर ध्यान दिया, और उनमें मसीह के राज्य के आगमन के कुछ संकेत पाए।

[8138] टायना का अपोलोनियस – एक मूर्तिपूजक ऋषि जिसने झूठे चमत्कार किए और कई अनुयायी बनाए (3वीं शताब्दी)। उसकी कहावतों को एक विशेष पुस्तक में दर्ज किया गया था, जिन्हें अलेक्जेंड्रिया में विशेष रूप से सम्मानित किया जाता था, जहाँ इस पुस्तक को एक मूर्तिपूजक मंदिर के सबसे गुप्त और पवित्र स्थान पर रखा गया था।

यह कहने के बाद, संत कैथरीन ने उनमें से प्रत्येक पर क्रॉस का चह्नि बनाया, और वे आनंदपूर्वक अपने शहादत के लिए आगे बढ़ गए। सैनकिों ने उन्हें आग में डाल दयिा, और इस प्रकार उन्होंने शहादत प्राप्त की[8139] । शाम को, कुछ धर्मनष्ठि और मसीह-प्रेमी लोग पवत्रि शहीदों के अवशेषों को दफनाने आए, लेकनि उन्होंने उनके शरीर पूरी तरह से सुरक्षति पाए, आग ने उनके सरि के एक भी बाल को नहीं छुआ था। इस चमत्कार के द्वारा, कई वधिर्मी सत्य के ज्ञान की ओर ले जाए गए, और पवत्रि शहीदों के अवशेषों को उचति सम्मान के साथ दफनाया गया।

इस बीच, मैक्समिनिस ने संत कैथरीन को अपनी दुष्टता के मार्ग पर ले जाने के लिए कोई कसर न छोड़ने का संकल्प लयिा। दार्शनकि बहसों के माध्यम से असफल होने पर, उसने चापलूसी और चालाकी से उसे लुभाना शुरू कर दयिा। उसे बुलाकर, उसने कहा:

'मेरी बात सुनो, मेरी प्यारी बेटी; एक प्यार करने वाले पता के रूप में, मैं तुम्हें महान देवताओं की पूजा करने की सलाह देता हूँ, और वशिेष रूप से हर्मीस की, जो वज्ञिान के संरक्षक हैं, जन्होंने तुम्हें इतने दार्शनकि उपहार दए हैं। 'और यदि तुम मेरी बात मान लो, तो मैं अपना राज्य और अपनी शक्ति तुम्हारे साथ बाँट लूँगा—देवता मेरी गवाही हैं—और तुम मेरे साथ अनंत आनंद में रहोगी।'

लेकनि अत्यंत बुद्धमिान कैथरीन, उसके इरादों को भांपते हुए और उसकी चालाकी और चापलूसी को पहचानते हुए, उससे बोलीं:

'हे ज़ार, अपनी चालाकी बंद करो, और लोमड़ी की तरह मत बनो। मैंने तुम्हें पक्की और अंतमि बात कह दी है कि मैं एक ईसाई हूँ और मैंने स्वयं को मसीह के लिए वधू के रूप में अर्पति कर दयिा है। वही मेरे वधू-वर, मेरे मार्गदर्शक और मेरी कुँवारीपन की शोभा हैं; मुझे शाही बैंगनी रंग के परधिान से प्रलोभति मत करो[8140] – मैं इसके बजाय एक शहीद के वस्त्रों को अधकि पसंद करूँगी।

तब राजा ने उससे फरि कहा:

'तुम मुझे, मेरी इच्छा के वरिुद्ध, तुम्हारे सम्मान का अपमान करने और तुम्हारे सुंदर शरीर को अनगनित घावों से ढकने के लिए मजबूर कर रहे हो।'

संत ने उत्तर दयिा, 'आप जो चाहें करें: इस अस्थायी अपमान के द्वारा आप मेरे लिए शाश्वत महमिा सुनश्चिति करेंगे, और (जैसा मुझे वशि्वास है) बहुत से लोग मेरे माध्यम से मेरे मसीह पर वशि्वास करने आएँगे; और आपके महलों से कई लोग मेरे साथ पवत्रि स्वर्गीय आवासों में जाएँगे।'

इस प्रकार संत ने कहा; और ईश्वर ने, स्वर्ग से उन पर दृष्टि डालते हुए, उनकी भवष्यिवाणी को साकार कर दयिा।

तब राजा, अत्यधकि क्रोधति होकर, ने आदेश दयिा कि कैथरीन का बैंगनी चोगा उतार लयिा जाए और नग्न अवस्था में उसे बैल की खाल की रस्सयिों से नर्दियतापूर्वक कोड़ा मारा जाए। नौकरों ने शहीद को दो घंटे तक उसके कंधों और पेट पर क्रूरता से पीटा, जसिसे उसका पूरा शरीर घावों से ढक गया और वकिृत हो गया; खून की धाराएँ बहीं और जमीन लाल हो गई। फरि भी संत ने इस सभी यातना को इतनी हम्मित और वीरता से सहन कयिा कि इसे देखने वाले बहुत आश्चर्यचकति रह गए। इसके बाद, क्रूर राजा ने कैथरीन को कैद करने का आदेश दयिा और जब तक वह उसके वनिाश के लिए नई यातनाएं सोच नहीं लेता, तब तक उसे न तो भोजन और न ही पानी देने का आदेश दयिा।

इस बीच, राजा की पत्नी अगस्टा, संत कैथरीन को व्यक्तगित रूप से देखने के लिए बहुत उत्सुक थी। उनके गुणों, ज्ञान और साहस के बारे में सुनकर, वह उनसे मलि बनिा ही उनसे बहुत प्रेम करने लगी थी। एक सपने में देखे गए एक वशिेष दर्शन के बाद, अगस्टा का दलि कैथरीन के लिए इतने प्यार से भर गया कि वह सो भी नहीं सकी। जब ज़ार कसिी काम से शहर से बाहर गए और कई दनिों तक लौटने में देरी हुई, तो ज़ारनिा ने अपनी इच्छा पूरी करने का एक उपयुक्त अवसर पाया। उस समय दरबार में एक कुलीन व्यक्ति था, जो ज़ार का वफादार दोस्त और पद में एक सैन्य कमांडर था, जसिका नाम पोर्फ़रिी था - एक व्यक्ति जो अपनी सूझबूझ के लिए प्रसद्धि था। त्सारनिा ने अपनी गुप्त इच्छा इसी पोर्फ़रिी को बताई।

[8139] यह 17 नवंबर, 307 ईस्वी था।

[8140] एक बैंगनी चोगा – खून जैसा लाल रंग में रंगा हुआ एक लंबा वस्त्र, जो प्राचीन काल में बहुत कीमती माना जाता था और राजसी गरमिा का प्रतीक माना जाता था।

'कुछ ही दिन पहले एक रात,' उसने उससे कहा, 'मैंने सपने में कैथरीन को देखा, जो सुंदर युवकों और कन्याओं की भीड़ के बीच, सफेद वस्त्रों में बैठी थीं। उनके चेहरे से ऐसी किरणें निकल रही थीं कि मैं उन्हें देख भी नहीं सकती थी। मुझे अपने बगल में बिठाकर, उन्होंने मेरे सिर पर एक सुनहरा ताज रखा और कहा: 'हमारे प्रभु मसीह ने तुम्हें यह ताज भेजा है।' तब से, मुझे उन्हें देखने की इतनी तीव्र इच्छा हो रही है कि मुझे अपने दिल में कोई चैन नहीं मिलता; मैं आपसे विनती करता हूँ, पोर्फिरियस, कि किसी तरह ऐसा प्रबंध करें कि मैं उन्हें गुप्त रूप से देख सकूँ।

'मैं आपकी इच्छा पूरी करूँगा, महारानी,' पोर्फ़िरियस ने उत्तर दिया।

जब रात हुई, तो पोर्फ़िरियस दो सौ सैनिकों को लेकर रानी के साथ कालकोठरी में गया; पहरेदारों को रिश्वत देकर, वे पवित्र शहीद की कोठरी में प्रवेश कर गए। जब रानी ने संत को देखा, तो वह उनके चेहरे की किरणों से चकित रह गईं, जो दैवीय अनुग्रह से दमक रहा था। तुरंत कैथरीन के पैरों पर गिरते हुए, रानी ने अपने आँसुओं के बीच कहा:

'अब मैं खुद को खुश और धन्य मानती हूँ, क्योंकि मुझे आपको देखने की कृपा मिली है। अपनी प्यास बुझाने के लिए तरसते हिरण की तरह (देखें भजन संहिता 41:2), मैं आपको देखने के लिए अत्यधिक लालायित थी, और आपके मीठे शब्दों को सुनने के लिए तरसती थी। अब जब मुझे मेरे हृदय की इच्छा पूरी हो गई है, तो मैं अब और दुखी नहीं हूँ, भले ही मैं अपना जीवन और अपना राज्य खो दूँ; तुम्हें देखकर मैं कितनी प्रसन्न हूँ! धन्य हो तुम और प्रशंसा के योग्य हो, क्योंकि तुमने स्वयं को सर्वशक्तिमान प्रभु के हवाले कर दिया है, जिन्होंने तुम्हें इतने बड़े उपहार प्रदान किए हैं।

संत ने उससे उत्तर दिया:

'धन्य हैं आप भी, रानी, क्योंकि मैं आपके सिर पर एक मुकुट देखती हूँ, जिसे स्वर्गदूतों के हाथ ऊपर उठाए हुए हैं; तीन दिनों में आप उसे मसीह के लिए सहने वाले अपने थोड़े से दुखों के कारण प्राप्त करेंगी, ताकि उनके द्वारा आप सदा के लिए राज्य करने के लिए सच्चे राजा के पास जा सकें।

तथापि रानी ने कैथरीन से उत्तर दिया:

'मुझे उन यातनाओं का भय है जिनकी आप मेरे लिए भविष्यवाणी कर रही हैं, और उससे भी अधिक अपने पति का, जो अत्यंत क्रूर और अमानवीय है।'

संत ने उससे कहा, 'डरो मत, मसीह स्वयं तुम्हारी मदद करेंगे; वे तुम्हारे हृदय को बल देंगे, और कोई यातना तुम्हारी आत्मा को नहीं छू पाएगी; केवल तुम्हारा शरीर ही यहाँ थोड़े समय के लिए थोड़ा कष्ट सहन करेगा, और फिर उसे भी अनंत विश्राम मिलेगा।'

जब संत ने ये शब्द कहे, तो पोर्फिरीउस ने उससे पूछा:

'मसीह उन लोगों को क्या देते हैं जो उन पर विश्वास करते हैं? क्योंकि मैं भी उन पर विश्वास करना चाहती हूँ और उनके योद्धाओं में से एक बनना चाहती हूँ।'

शहीद ने उससे उत्तर दिया:

'क्या तुमने ईसाई धर्मग्रंथों में से कुछ भी नहीं पढ़ा, या सुना नहीं है?'

'जवानी से ही,' पोर्फिरियस ने उत्तर दिया, 'मैंने सैन्य अभ्यास में प्रशिक्षण लिया है, और किसी और बात की परवाह नहीं की है।'

संत ने उससे कहा:

'सबसे दयालु और परोपकारी ईश्वर ने उन लोगों के लिए जो उससे प्रेम करते हैं और उसकी आज्ञाओं का पालन करते हैं, जो आशीर्वाद तैयार किए हैं, उन्हें मानव शब्दों में व्यक्त करना असंभव है।'

तब पोर्फिरियस, असीम आनंद से भरकर, मसीह पर विश्वास कर गया, और दो सौ सैनिकों तथा रानी ने भी ऐसा ही किया; और वे सभी, शहीद से श्रद्धापूर्वक विदा लेकर, चले गए।

मनुष्यजाति के प्रति कृपालु और प्रेममय मसीह ने अपनी पवित्र वधू को बिना देखभाल के नहीं छोड़ा, बल्कि एक प्रेममय पिता की तरह उसकी देखभाल की। हर दिन एक कबूतर उसकी खिड़की से उड़कर आता और उसे भोजन लाता। अंत में, सामर्थ्य के दयालु दाता स्वयं, हमारे प्रभु यीशु मसीह, महान महिमा और सभी स्वर्गदूतों के साथ, उनके पास आए और उनके साहस को और भी अधिक मज़बूत किया, उन्हें धैर्य की आत्मा से भर दिया:

'डरो मत, मेरी प्रिय वधू,' उन्होंने उससे कहा, 'मैं हमेशा तुम्हारे साथ हूँ, और कोई यातना तुम्हें नहीं छूएगी; अपने धैर्य से तुम कई लोगों को मेरी ओर ले जाओगी, और इसके इनाम में तुम्हें कई अक्षय मुकुट प्रदान किए जाएँगे।'

इन शब्दों से उसे सांत्वना देने के बाद, प्रभु अदृश्य हो गए।

अगली सुबह, राजा, न्यायालय में बैठे, ने कैथरीन को अपने सामने लाने का आदेश दिया। वह आध्यात्मिक अनुग्रह और एक प्रकार की आनंदमय किरणों से दमकती हुई राजा की उपस्थिति में आई, इतना कि उसके पास खड़े लोग उसकी सुंदरता की भव्यता से चकाचौंध हो गए। राजा बहुत आश्चर्यचकित हुआ, और उसने सोचा कि कोई उसके कालकोठरी में उसे भोजन लाकर दे रहा होगा, और इसीलिए वह शरीर से कमजोर नहीं हुई थी और न ही उसके चेहरे की सुंदरता फीकी पड़ी थी; इसलिए, वह उसके रक्षकों को मौत की सज़ा देना चाहता था। लेकिन संत कैथरीन, यह नहीं चाहती थीं कि दूसरों को अन्याय से पीड़ा दी जाए, उन्होंने उसे पूरा सच बताया, और कहा:

'हे राजा, जान लो कि मुझे किसी मानव हाथ ने भोजन नहीं पहुँचाया है, बल्कि मेरे प्रभु मसीह ने, जो अदृश्य रूप से अपने सेवकों की देखभाल करते हैं, मुझे पोषित किया है।'

राजा, संत कैथरीन की असाधारण सुंदरता से चकित होकर, एक बार फिर चापलूसी और मीठी बातों से उसे प्रभावित करने का प्रयास करने लगा, और उससे कहा:

'हे सूर्य-प्रभा वाली कन्या, तुम तो अपार सौंदर्य में स्वयं आर्टेमिस से भी आगे हो[8141] ; तुम राज करने के लिए ही जन्मी हो, मेरी बेटी। तो आओ, झुककर हमारे देवताओं को बलिदान चढ़ाओ, और तुम हमारे साथ राज करोगी तथा आनंद से जीवन जियोगी; मैं तुमसे विनती करता हूँ: ऐसी तेजस्वी सुंदरता को कष्टों से नष्ट मत करो।'

संत ने उत्तर दिया, 'मैं मिट्टी और धूल हूँ। सभी सुंदरता, एक फूल की तरह मुरझा जाती है और, एक सपने की तरह, थोड़ी सी बीमारी या वृद्धावस्था से मिट जाती है, और मृत्यु के बाद पूर्ण क्षय के हवाले हो जाती है; इसलिए, हे राजा, मेरी सुंदरता की परवाह न करें।'

संत कैथरीन के साथ इस बातचीत के दौरान, खुरसादेन नामक एक कुलीन व्यक्ति – जो ईसाइयों का एक क्रूर और निर्दयी उत्पीड़क था – राजा के प्रति अपना प्रेम और कृपा दिखाने की इच्छा से, उससे कहा:

'हे राजा, मैंने एक ऐसी यातना की विधि सोची है जिससे तुम इस कन्या को वश में कर लोगे। आदेश दो कि चार लकड़ी के पहिये एक ही धुरी पर लगाए जाएँ, जिनमें चारों ओर विभिन्न लोहे की काँटें ठोंकी गई हों: दो पहिये दाईं ओर और दो बाईं ओर घूमें; और उस युवती को उनके बीच में बाँध दिया जाए, ताकि घूमते पहिये उसके शरीर को टुकड़े-टुकड़े कर दें। लेकिन पहले, इन पहियों को एकातेरिना को दिखाया जाए, ताकि उन्हें देखकर वह इस क्रूर यातना के डर से दहशत में आ जाए और आपकी इच्छा के आगे झुक जाए; यदि, तथापि, वह इसके बाद भी पहले की तरह ही जिद्दी बनी रहती है, तो उसे दर्दनाक मृत्यु का सामना करना पड़ेगा।

राजा इस सलाह से प्रसन्न हुआ, और उसने आदेश दिया कि खुरसादेन द्वारा वर्णित ऐसे पहिये बनाये जाएँ। जब पहिये तैयार हो गए, तो संत को यातना स्थल पर लाया गया, और पहले उसे डराने के लिए उसके सामने पहियों को बड़ी ताकत से घुमाया गया; फिर यातना देने वाले ने उससे कहा:

'देखो तुम्हारे लिए क्या-क्या यातनाएँ तैयार की गई हैं! और अगर तुम देवताओं की पूजा नहीं करोगी तो इन यातनाओं में सबसे भयानक मृत्यु का सामना करोगी।'

लेकिन इस पर कैथरीन ने उत्तर दिया:

'मैंने पहले ही कई बार ईसाई बने रहने का अपना संकल्प व्यक्त किया है; अतः हे ज़ार, अपना समय व्यर्थ में बर्बाद मत करो, बल्कि जो करना है कर डालो।'

यातना देने वाले ने, यह देखकर कि वह कैथरीन को डरा नहीं सकता या उसे मसीह से दूर नहीं कर सकता, उसे पहियों से बांधने और उन्हें बहुत ज़ोर से घुमाने का आदेश दिया, ताकि वह चीर-फाड़ कर टुकड़े-टुकड़े हो जाए और इस प्रकार सबसे भयानक मृत्यु प्राप्त करे। लेकिन जैसे ही उन्होंने यह यातना शुरू की, अचानक स्वर्ग से एक देवदूत उतरा, उसने संत को उसके बंधनों से मुक्त कर दिया, और पहियों को चकनाचूर कर दिया; और जैसे ही पहिये जोरदार तरीके से टूटकर बिखर गए, वे हर दिशा में उड़ गए और कई अविश्वासियों को कुचलकर मार गिराया। ऐसा शानदार चमत्कार देखकर, पूरी भीड़ चिल्ला उठी:

'महान है ईसाई ईश्वर!'

[8141] आर्टेमिस – जिन्हें डायना के नाम से भी जाना जाता है – यूनानियों और रोमनों के बीच एक प्रसिद्ध पैगन देवी थीं, जो उनकी विशेष भक्ति के साथ पूजा करते थे; (उन्हें चंद्रमा की देवी माना जाता था और एक सुंदर, गोरी रंगत वाली युवती शिकारी के रूप में चित्रित किया जाता था)।

लेकिन राजा, अपने क्रोध में, क्रोध से अँधा हो गया और भड़क उठा, तथा शहीद के लिए नए-नए यातनाएँ सोचने लगा।

रानी अगस्टा, इस चमत्कार के बारे में सुनकर, अपने कक्षों से बाहर आईं और राजा को डाँटने लगीं।

उसने कहा, 'सचमुच, तुम अभद्र और पागल हो, क्योंकि तुम जीवित परमेश्वर के विरुद्ध लड़ने और उनके सेवक को अन्याय से सताने की हिम्मत करते हो।'

अचानक ये शब्द सुनकर राजा क्रोध से पागल हो गया और किसी भी जानवर से भी अधिक क्रूर हो गया। संत कैथरीन को छोड़कर, उसने अपना सारा क्रोध अपनी पत्नी पर उतार दिया। उसके लिए अपने स्वाभाविक प्रेम को भी भूलकर, उसने एक बड़ी संदूक मंगवाई और उसे टिन से भरवाया ताकि वह अचल हो जाए, और संदूक के ढक्कन में कीलें ठोकवा दीं; फिर, अपनी पत्नी के स्तनों को संदूक और ढक्कन के बीच कसकर, उसने उन्हें निचोड़ा। और यातना देने वालों ने संत को अकथनीय पीड़ा पहुँचाते हुए, उसके निप्पल को तब तक निचोड़ा जब तक कि वे भयानक दर्द के साथ उखड़ नहीं गए। हालाँकि, धन्य अगस्टा, इस भयानक दर्द को सहते हुए, इस बात से प्रसन्न हुई कि वह सच्चे ईश्वर के लिए पीड़ा सह रही थी, और उसने उनसे प्रार्थना की कि वह उसकी सहायता के लिए अपनी कृपा भेजें। जब उसके निप्पल फाड़े गए, तो खून नदी की तरह बहने लगा, और उपस्थित सभी लोग दया से भर गए और उन्होंने उस पर अपनी सहानुभूति व्यक्त की, जब वह इतनी भयानक और असहनीय यातना सह रही थी। लेकिन निर्दयी यातनाकर्ता ने अपनी पत्नी पर कोई दया नहीं दिखाई और तलवार से उसका सिर कलम करने का आदेश दिया। उसने, हालांकि, इस सजा को खुशी से सुना और सेंट कैथरीन से कहा:

'सच्चे ईश्वर की दासी, मेरे लिए प्रार्थना करो!'

'शांति से जाओ,' पवित्र कुँवारी ने उत्तर दिया, 'ताकि तुम मसीह के साथ सदा राज्य करो।'

और धन्य रानी का सिर[8142] के तेईस नवंबर को शहर के बाहर कलम कर दिया गया। राज्यपाल पोर्फिरियस ने रात में उनका शरीर ले जाकर उसे सम्मानपूर्वक दफनाया। अगले ही दिन सुबह, पोर्फिरियस स्वयं, उन सैनिकों के साथ जो मसीह में विश्वास करने लगे थे, राजा के समक्ष उपस्थित हुए और कहा:

'हम भी मसीही हैं, महान ईश्वर के सिपाही।'

यह सुनकर सहन न कर पाने के कारण, राजा ने अपने हृदय की गहराई से एक आह भरी और कहा:

'हाय, मैं बर्बाद हो गया, क्योंकि मैंने अद्भुत पोर्फिरियस को खो दिया है।' फिर, दूसरे सैनिकों की ओर मुड़कर, उन्होंने कहा:

'और तुम, मेरे सबसे प्रिय सैनिकों, भटक गए हो और उन देवताओं का त्याग कर दिया है जिन पर तुम्हारे पूर्वज विश्वास करते थे; देवताओं ने तुम्हारे साथ ऐसा क्या किया है कि तुमने उनका त्याग कर दिया?'

लेकिन उन्होंने उसे एक शब्द भी उत्तर नहीं दिया। केवल पोर्फ़िरी ने उससे कहा:

'तुम सिर को अनदेखा करके पैरों से सवाल क्यों कर रहे हो? मुझसे बात करो।'

'तुम दुष्ट सिर हो, उनके पतन का कारण,' मैक्सिमिनिस ने कहा।

और, क्रोध के मारे बोल न पाकर, उसने आदेश दिया कि सभी के सिर काट दिए जाएँ। इस प्रकार उन्होंने अपनी जान दे दी। इस प्रकार संत कैथरीन की भविष्यवाणी पूरी हुई, जिन्होंने राजा से कहा था कि उसकी अपनी दरबार के कई लोग उसके माध्यम से मसीह ईश्वर पर विश्वास करने लगेंगे।

अगले दिन, यातना देने वाले ने कैथरीन को अदालत के सामने लाकर उससे कहा:

'तुमने मुझे बहुत दुख और गहरी पीड़ा दी है। तुमने मेरी पत्नी को बहकाया और मेरे वीर सेनापति का पतन किया, जो मेरे सेना की असली ताकत था; तुम्हारे कारण मुझ पर कई अन्य बुराइयाँ भी आई हैं, इसलिए यह उचित होगा कि तुम्हें बिना किसी दया के मौत की सजा दी जाए; लेकिन मैं तुम्हें माफ करता हूँ, क्योंकि मैं तुम्हारे जैसे सुंदर और बुद्धिमान युवती को नष्ट नहीं करना चाहता। तो अंततः मेरी आज्ञा मानो, मेरी प्रिये; देवताओं को बलिदान चढ़ाओ, और मैं तुम्हें अपनी रानी बना लूँगा; मैं तुम्हारे साथ कभी अन्याय नहीं करूँगा, और न ही मैं तुम्हारी सलाह के बिना कोई काम करूँगा; और तुम मेरे साथ ऐसी आनंद और परमानंद में रहोगी जैसा किसी रानी ने कभी अनुभव नहीं किया।

[8142] चर्च 24 नवंबर को संत रानी अगस्टा (या वासिलिसा) का स्मरण करता है; इसी दिन, चर्च पोर्फिरियस और 200 सैनिकों का भी स्मरण करता है, जिनका सिर उनके मसीह के प्रति अपने विश्वास की गवाही देने के कारण कलम कर दिया गया था।

उसने ये और भी बहुत कुछ शब्द बोले, मसीह की चुनी हुई वधू की चापलूसी करते और उसे लुभाते हुए; फिर भी वह अपनी चापलूसी भरी बातों से उसे मसीह से अलग नहीं कर सका, जिसके साथ वह सच्चे प्रेम के दृढ़ बंधन से बँधी हुई थी। जब उसने देखा कि चापलूसी, वादे, धमकियाँ या यातनाएँ भी उस पवित्र कन्या को, जो adamant[8143] की तरह दृढ़ थी, अपनी इच्छा के अनुसार नहीं मोड़ सकीं, तो उसने अंततः शहर के बाहर तलवार से उसका सिर कलम करवाने का निर्णय लिया। सैनिकों ने कैथरीन को पकड़ लिया और उसे फांसी के स्थान पर ले गए। बहुत से लोग—पुरुष और महिलाएँ दोनों—कैथरीन के साथ गए; सभी रोए और इतनी सुंदर और बुद्धिमान युवती के नुकसान पर शोक मनाया। उसके पीछे-पीछे चलने वाली कई कुलीन और सबसे सम्मानित महिलाओं ने अपने आँसुओं के बीच उससे बात की:

'हे अति सुन्दर और तेजस्वी कन्या! तुम अपने प्रति इतनी क्रूरता क्यों कर रही हो, एक मधुर जीवन को मृत्यु पर क्यों तरजीह दे रही हो? तुम अपनी जवानी के फूल को इतनी जल्दी और व्यर्थ क्यों बर्बाद कर रही हो? क्या यह तुम्हारे लिए बेहतर नहीं होगा कि तुम ज़ार की बात मानो और इस जीवन के आशीर्वादों का आनंद लो, बजाय इसके कि तुम इतनी शर्मनाक मौत मरो?'

'अपनी व्यर्थ की विलाप बंद करो,' संत ने उत्तर दिया, 'बल्कि इस बात की प्रसन्नता मनाओ कि अब मैं अपने प्रिय वरों, यीशु मसीह—अपने सृष्टिकर्ता और उद्धारकर्ता—को देख रही हूँ, जो शहीदों की शोभा, मुकुट और महिमा हैं। वह मुझे स्वर्ग की अनुपम आनंद की ओर बुला रहे हैं। मैं उनके साथ अनंत काल तक राज्य करूँगी और आनंदित रहूँगी। इसलिए, मेरे लिए मत रोओ, बल्कि अपने लिए रोओ, क्योंकि अपने अविश्वास के कारण तुम अनंत यातनाओं को सहने के लिए शाश्वत अग्नि में जाओगे।

जब संत को सिर कलम करने की जगह ले जाया गया, तो उन्होंने निम्नलिखित प्रार्थना कही:

'हे प्रभु यीशु मसीह, मेरे ईश्वर! मैं आपको धन्यवाद देती हूँ कि आपने मेरे पैरों को धैर्य की चट्टान पर स्थापित किया और मेरे कदमों का मार्गदर्शन किया। अब अपने सबसे पवित्र हाथ फैलाइए, जो एक बार क्रूस पर भेदे गए थे, और मेरी आत्मा को ग्रहण कीजिए, जो आपके प्रति प्रेम के कारण बलिदान के रूप में आपके समक्ष अर्पित है। हे प्रभु, याद रखो कि मैं भी मांस और रक्त की बनी हूँ, और अंतिम न्याय में मेरे क्रूर यातना देने वालों को मेरी अज्ञानता में की गई गलतियों को उजागर करने की अनुमति न देना; परन्तु उन्हें उस लहू से धो डालो जो मैंने आपके लिए बहाया है, और यह अनुग्रह करें कि यह देह, जो आपके लिए पीड़ा में घायल हुई और तलवार से काटी गई है, मेरे शत्रुओं और उत्पीड़कों के लिए अदृश्य हो जाए। हे प्रभु, अपनी ऊँचाइयों से इन लोगों पर दृष्टि डालो जो यहाँ खड़े हैं, और उन्हें अपने ज्ञान के प्रकाश से प्रबुद्ध करो; और उन लोगों की प्रार्थनाओं को स्वीकार करो जो मेरे द्वारा आपके पवित्र नाम का आह्वान करते हैं, सभी के भले के लिए, ताकि आपकी महिमा का सभी द्वारा सदा के लिए गान किया जाए।

अपनी प्रार्थना समाप्त करने के बाद, संत ने जल्लाद से कहा:

'जो आदेश दिया गया है, उसे पूरा करो।'

तब योद्धा ने अपनी तलवार उठाई और कैथरीन का कुलीन सिर काट दिया[8144] , और घाव से खून के बजाय दूध बहने लगा। उनकी पवित्र अवशेषों को, जिन्हें योग्य समझे गए विश्वासियों ने देखा, तुरंत पवित्र स्वर्गदूतों द्वारा उठाकर

[8143] एडेमेंट (हीरा) एक ऐसा कठोर पत्थर है कि वह स्वयं को बिना कोई नुकसान पहुँचाए अन्य पत्थरों को खरोंच सकता है और काट सकता है। चर्च के साहित्य में, यह नाम कई संतों (विशेषकर चर्च के फादर और शिक्षकों) को दिया गया है जो अपने विश्वास और चरित्र की दृढ़ता के लिए प्रसिद्ध हुए।

[8144] आज भी, अलेक्जेंड्रिया में, भक्त यात्रियों को महान शहीद कैथरीन के शहादत स्थल दिखाया जाता है, जिसे स्थानीय ईसाइयों द्वारा हमेशा से विशेष श्रद्धा की गई है। अलेक्जेंड्रिया के कुछ नागरिकों ने, सूली पर चढ़ाए गए प्रभु में अपने विश्वास से प्रेरित होकर, आज तक एक छोटे से संगमरमर के स्तंभ को संरक्षित रखा है, जिस पर, परंपरा के अनुसार, महान शहीद का पवित्र सिर काटा गया था। यह स्तंभ अलेक्जेंड्रिया में सेंट सावस के ऑर्थोडॉक्स मठ में आज भी श्रद्धापूर्वक संरक्षित है और इस संत को समर्पित चर्च के बाईं ओर स्थित है।

सनिाई पर्वत[8145] पर ले जाया गया, मसीह ईश्वर की महमिा के लिए, जो पति और पवत्रि आत्मा के साथ एक ईश्वरत्व में अनंतकाल तक राज्य करते हैं। आमीन[8146] ।

ट्रोपारयिन, स्वर 4:

अपने सद्गुणों से, सूर्य की करिणों के समान, आपने अवश्विासी बुद्धमिानों को प्रबुद्ध कयि; और रात में चलने वालों के लिए सबसे तेजस्वी चंद्रमा की तरह, आपने अवश्विास के अंधकार को दूर कयि, और आपने रानी को वश्विास दलिाया[8147] , साथ ही उत्पीड़क को भी उजागर कयि, हे ईश्वर-आहूत वधू, धन्य कैथरीन: आपकी लालसा द्वारा आप स्वर्गीय महल में, अपने महमिामय वधूवर मसीह के पास आरोहण कीं, और उनसे आपको राजसी मुकुट पहनाया गया: स्वर्गदूतों के साथ खड़ी होकर, हम उनके लिए प्रार्थना करें, जो आपकी अति सम्मानति स्मृति का उत्सव मनाते हैं।

कॉन्टाकयिन, स्वर 2:[8148]

हे शहीदों के प्रेमी, दव्यि प्रतमिा के सम्मानति चत्रि, अब हमें ऊपर उठाओ, क्योंकि हम सर्व-ज्ञानी कैथरीन का सम्मान करते हैं: क्योंकि उन्होंने मसीह के त्रगिुण परीक्षण में सुसमाचार का प्रचार कयि, और साँप को कुचल दयि, वक्ताओं के मन को वश में करते हुए।

[8145] काफ़ी समय तक, कैथरीन के पवत्रि अवशेष ज़मीन में छपि रहे और लगभग 200 साल बाद ही खोजे गए। यह इस प्रकार हुआ। एक दनि, लगभग 6वीं शताब्दी ईस्वी के 30वें–40वें वर्ष में, सनिाई मठ के भक्षिुओं को—जो अलेक्जेंड्रयिा से लगभग 800 वर्स्ट की दूरी पर, बाइजेंटाइन सम्राट जस्टनियिन द्वारा स्थापति कयि गया था— उन्हें स्वर्ग से चमत्कारकि रूप से सूचति कयि गया कि पवत्रि महा शहीद कैथरीन के अवशेष उनके पास अक्षुण्ण अवस्था में पड़े हैं, और उन्हें सनिाई मठ के नवनर्मिति चर्च में स्थानांतरति करने का आदेश दयि गया। धर्मनष्ठि बुजुर्ग आनंदपूर्वक मठ से बहुत दूर नहीं, उनके द्वारा बताए गए पहाड़ की ओर दौड़ पड़े। यह पहाड़ी 1,200 सैज़ेन की ऊँचाई तक उठती थी; लेकनि संन्यासयिों ने, धार्मकि उत्साह से प्रेरति होकर और ईश्वर की कृपा से, यात्रा की सभी कठनिाइयों पर काबू पाया और जल्द ही इसके शखिर पर पहुँच गए, जहाँ उन्हें महान शहीद कैथरीन के पवत्रि अवशेष, अपरविर्तति और सुगंधति मलि। केवल देवदूत ही उन्हें वहाँ रख सकते थे। – संत कैथरीन के अवशेष पूरे नहीं मलि, बल्कि केवल उनका सरि और बायाँ हाथ मलि। मसीह की इस प्रशंसनीय शहीद के अक्षत शरीर के इन अंगों को फरि भक्तपिूर्वक सीनाई मठ में स्थानांतरति कयि गया, और आज भी वे अपने प्राचीनत्व के लिए प्रसद्धि इस मठ में वरिाजमान हैं। 1689 में, रूसी सम्राट पीटर द ग्रेट ने सेंट कैथरीन के अवशेषों के लिए सनिाई मठ को चांदी जड़ा हुआ एक अवशेष-पात्र दान कयि। हालाँकि, यह उपहार सैक्राइस्टी (गरिजाघर का एक कोठरीनुमा कक्ष) में रखा गया है। 'मुसलमानों की लालच और यात्रयिों की अफवाहों के डर ने,' सनिाई की यात्रा करने वाले प्रसद्धि बशिप पोर्फीरी ने टप्पिणी की, 'सनिाई के भक्षिुओं को इस खजाने को छपिाने के लिए प्रेरति कयि है।' वर्तमान में, महान शहीद कैथरीन के पवत्रि अवशेष सनिाई मठ के महान चर्च के वेदी के भीतर, सहिासन के दाईं ओर, एक छोटे संगमरमर के अवशेष-पात्र में रखे गए हैं, जो प्रभु के रूपांतरण को समर्पति है। मसीह की वधू के पवत्रि सरि पर अब एक सुनहरा ताज है, और उसकी एक उंगली में एक कीमती अंगूठी है, जो संत कैथरीन के स्वर्गीय वरों - मसीह के साथ उनके रहस्यमय सगाई की याद में है। रलिक्वरी में, पवत्रि अवशेष एक चांदी की थैली पर रखे जाते हैं, जसिके नीचे अवशेषों की सुगंध से परपिूर्ण कपास की एक मोटी परत होती है। जब मठवासी समुदाय द्वारा पूजा के लिए अवशेषों को बाहर लाया जाता है, तो उन्हें कई अन्य पवत्रि अवशेषों के साथ, इस उद्देश्य के लिए वशिेष रूप से तैयार की गई एक मेज पर, चर्च के केंद्र में रखा जाता है। संत कैथरीन के अवशेष दूर-दराज से आने वाले आगंतुकों के लिए कसिी भी समय खुले रहते हैं, लेकनि मठवासी समुदाय और स्थानीय आगंतुकों के लिए, इन्हें प्रभु के पर्व के दनिों में मैटनि्स (प्रार्थना सभा) के समापन के बाद ही प्रदर्शति कयि जाता है।

[8146] संत कैथरीन की स्मृति को समूचे ऑर्थोडॉक्स जगत में वशिेष श्रद्धा और भव्यता के साथ सम्मानति कयि जाता है। उनके सम्मान में चर्च बनाए जाते हैं, और कई मठ उनके नाम पर हैं; बहुत सी ऑर्थोडॉक्स और गैर-ऑर्थोडॉक्स ईसाई महलिाएं उनका नाम धारण करती हैं। इस शहीद की ख्याति प्राचीन काल में भी महान थी। पौला, प्रसद्धि रोमन महलिा, जन्होंने 386 में बेथलहम में एक मठ की स्थापना की, ने वहाँ शहीद के नाम एक चर्च समर्पति कयि कैथरीन, जनिके बारे में संत एपफिानयिस ने पॉल को बताया था कि कैथरीन का जन्म साइप्रस द्वीप पर, उनके धर्मप्रांत के भीतर, सलामसि शहर में हुआ था; वहां से वह अलेक्जेंड्रयिा गईं, यरूशलेम में पवत्रि स्थानों का भ्रमण कयि, और बेथलहम में खुरे के सामने कुँवारी रहने का व्रत लयि और मसीह से एक अंगूठी प्राप्त की। पश्चमि में, उन्हें युवा छात्रों, वशिेष रूप से दर्शनशास्त्र का अध्ययन करने वालों की संरक्षक संत माना जाता है। पवत्रि महान शहीद का सम्मान कुछ मूर्तपिूजकों द्वारा भी कयि जाता है, उदाहरण के लिए, ट्रांसबाइकालयिा के मंगोल-बुर्यात लोगों द्वारा।

[8147] अर्थात्, मैक्समियिन की पत्नी, अगस्टा।

[8148] जहाँ तक महा शहीद के प्रति सेवा और उनके सम्मान में रचति चर्च भजनों का प्रश्न है, ये प्राचीन काल से चले आ रहे हैं। 9वीं शताब्दी में, नकिया के थयिोफेंस, जो एक प्रसद्धि ईसाई भजनकार थे, और वावलि नामक एक अज्ञात भक्षिु ने महा शहीद कैथरीन के सम्मान में कई भजन रचे, जन्हें ऑर्थोडॉक्स चर्च आज भी 24 नवंबर को, उनके नधिन के दनि, गाती है। सम्माननीय थयिोफानेस ने पवत्रि महा-शहीद के सम्मान में एक कैनन रचा, जसिकी अंतमि पंक्तयिाँ नम्निलखिति वचिार व्यक्त करती हैं: 'मैं अपने गीतों में सदा-स्मरणीय कैथरीन का गायन करता हूँ'।

पवत्रि महान शहीद मर्करी का कष्टकथा

24 नवंबर को स्मरणोत्सव

धर्मद्रोही रोमन सम्राटों, डेसयिस और वैलेरयिन[8149] ने अपने राजकुमारों और कुलीनों को बुलाकर, अपने झूठे देवताओं की पूजा के प्रसार और पवत्रि ईसाई धर्म के उन्मूलन और वनिाश के संबंध में उनके साथ एक परषिद की। और सर्वसम्मतसि, सामान्य सहमतसि, उन्होंने कैपटिल में नम्निलखिति फरमान जारी कयिा[8150] :

– रोमन राजा, अजेय वजिेता, सर्वदा सम्मानति, महान और वशि्वासयोग्य, डेसयिस और वैलेरयिन, कुलीनों के साथ: क्योंकहिमने अपने देवताओं के आशीर्वाद और उपहारों का अनुभव कयिा है और, साथ ही, अपने शत्रुओं पर उनकी प्रदान की हुई वजियों का आनंद लयिा है; क्योंक, इसके अलावा, हम अनुकूल जलवायु के माध्यम से उनसे प्रचुर मात्रा में सभी प्रकार के फल प्राप्त करते हैं; और क्योंकहिम उन्हें अपने कल्याणकारी और हमारी सामान्य समृद्धकि नरि्माता मानते हैं; इसलएि, कुलीनों से परामर्श करने के बाद, हम सर्वसम्मतसि यह आदेश देते हैं कहिर पद के लोग—मुक्त नागरकि और दास, सैनकि और नागरकि—देवताओं को बलदिान चढ़ाएँ, उनके सामने मस्तक झुकाएँ और उनसे वनिम्रतापूर्वक प्रार्थना करें। हालाँक, यदकिोई हमारे द्वारा एक आम परषिद में जारी हमारे शाही फरमान का उल्लंघन करने की हम्मित करता है, तो हम आदेश देते हैं कएिसे व्यक्तकिो बाँधा जाए, जेल में डाल दयिा जाए, और फरि वभिन्नि यातनाओं का शकिार बनाया जाए। यदवि ह पश्चाताप करके आदेश का पालन करता है, तो हम उसे उतना ही सम्मान देंगे; लेकनि यदवि ह वरिोध करता है, तो, बहुत यातनाओं के बाद, उसे तलवार से मार डाला जाए, या उसे समुद्र में फेंक दयिा जाए, या पक्षयिों और कुत्तों को खलिा दयिा जाए। वशिेष रूप से, यदकिसिी के पास उनका धर्म पाया जाता है तो ईसाइयों को इसी प्रकार मृत्युदंड दयिा जाना है; हालाँक, जो हमारे आदेश का पालन करते हैं, उन्हें महान सम्मान और उपहार प्राप्त होंगे। हम आपके अच्छे स्वास्थ्य और समृद्धकि कामना करते हैं।

जब यह शाही फरमान जारी कयिा गया, तो पूरा रोम उथल-पुथल में पड़ गया, क्योंकयिह अधर्मी आदेश पूरे शहर में घोषति कयिा गया और आसपास के कस्बों और प्रांतों में भेजा गया। उस समय, बर्बर लोगों[8151] ने रोमन साम्राज्य के खलिाफ वद्रिोह कर दयिा था; राजा अपने सैनकिों को इकट्ठा कर रहे थे और सभी शहरों की सैन्य रेजमिेंटों को रोम में एकत्र होने का आदेश दे रहे थे। तब वह रेजमिेंट आई जसिमें मर्करी सेवा कर रहा था; इस रेजमिेंट को ' Martenses' कहा जाता था, जो प्रथम आर्मेनयिा[8152] के अधीन, ट्राइब्यून[8153] सैटरननिस के नेतृत्व में थी। राजा डसियिस के युद्ध के लएि प्रस्थान करने के बाद, वैलेरयिन रोम में ही रहे।

जब रोमनों और बर्बरों के बीच युद्ध के दौरान उनके बीच एक लंबा युद्ध हुआ, तो प्रभु का एक स्वर्गदूत मर्करी के पास एक महान पुरुष के रूप में प्रकट हुआ। सफेद वस्त्र पहने और हाथ में तलवार पकड़े, उसने उससे कहा:

'हे मर्करी, न डरो और न भयभीत हो, क्योंकमैं तुम्हारी सहायता करने और तुम्हें वजियी बनाने के लएि भेजा गया हूँ। यह तलवार लो और बर्बर लोगों पर टूट पड़ो; और जब तुम उन्हें परास्त कर दो, तो अपने प्रभु परमेश्वर को न भूलना।'

एक समाधकि अवस्था में, उसने उस आकृतकिो रोमन राजकुमारों में से एक समझ लयिा; उसे दी गई तलवार लेकर, वह बड़े पराक्रम से दुश्मनों पर टूट पड़ा और उन्हें घास की तनों की तरह काट डाला। शत्रुओं की कतारों को चीरते

[8149] डेसयिस ने 249 से 251 तक शासन कयिा। वेलेरयिन ने कुछ समय बाद (253–260) अकेले शासन कयिा। यह संस्मरण उसे डेसयिस के शासनकाल के दौरान भी साम्राज्य के प्रशासन में भाग लेते हुए दर्शाता है।

[8150] कैपटिोलनि – सर्वोच्च देवता जुपटिर और देवयिों जूनो और मनिर्वा का मंदरि, जो उन पहाड़यिों में से एक पर स्थति था, जसि पर प्राचीन रोम, रोमन साम्राज्य की राजधानी, फैला हुआ था। यह पहाड़ी, मंदरि के साथ, मुख्य तीर्थस्थल थी और इसे कैपटिोलनि कहा जाता था।

[8151] ग्रीक और रोमनों वदिेशी लोगों को 'बर्बर' कहते थे। यह नाम उन लोगों के लएि था जनिकी भाषा समझ से परे थी। यह संभवतःगोथों को संदर्भति करता है, जनिके खलिाफ युद्ध में डसियिस की बाद में मृत्यु हो गई थी।

[8152] आर्मेनयिा की सीमा उत्तर में कोल्चसि, इबेरयिा और अल्बानयिा, पश्चमि में एशयिा माइनर, और दक्षणि-पूर्व तथा पूर्व में मीडयिा और असीरयिा से लगती थी। शुरू में, यह असीरयिनों, मेदों और फारसयिों के अधीन था; बाद में, यह पार्थयिनों और रोमनों के बीच, और बाद में रोमनों और फारसयिों के बीच ववािद का वषिय बन गया, और अपनी नष्ठिा एक समूह से दूसरे समूह में बदलता रहा। *पहली* आर्मेनयिा पोंटस यूक्सनिस (ब्लैक सी) के दक्षणिी तट के पूर्वी भाग के पास स्थति थी; *दूसरी* और *तीसरी* आर्मेनयिा दक्षणि-पश्चमि में थीं; और *चौथी* आर्मेनयिा पहली के दक्षणि में स्थति थी।

[8153] ट्रबि्यून – एक सैन्य इकाई के कमांडर के लएि रोमन उपाधि, एक पद जो हमारे कर्नल और कंपनी कमांडर के बीच का होता था।

हुए, वह स्वयं शत्रु राजा तक पहुँच गया, उसे अपनी तलवार से मार गरिाया और उसके साथ आए अनेक पराक्रमी योद्धाओं को भी काट गरिाया, यहाँ तक कि तलवार खून से उसके हाथ से चपिक गई; इस प्रकार शत्रु पराजति हो गए और रोमनों द्वारा भागने पर मजबूर हो गए।

तब डेसयिस ने, मर्करी की महान वीरता के बारे में जानकर, उसे अपनी उपस्थतिि में बुलाया और उसे भव्य उपहारों से सम्मानति करने के बाद, उसे पूरी सेना का कमांडर नयिुक्त कयिा। डेसयिस, यह मानकर कि दुश्मनों को देवताओं की मदद से हरा दयिा गया है, अत्यंत प्रसन्न हुआ; उसने सैनकिों में बहुत सारा सोना बाँटा और उनमें से प्रत्येक को घर भेज दयिा; जबकि वह स्वयं, मर्करी के साथ रोम की ओर यात्रा करते हुए, रास्ते में पड़ने वाले शहरों में भव्य दावतें देता गया। एक रात, जब कमांडर मर्करी सो रहे थे, तो देवदूत पहली बार की तरह ही उनके पास आए और उन्हें बगल में ठेलकर जगाया। उठकर अपने सामने खड़ी आकृति को देखकर, वह मानो भय से अकड़ गए। देवदूत ने उनसे कहा:

'मरकरी! क्या तुम्हें याद नहीं कि मैंने तुम्हें युद्ध के दौरान क्या कहा था? सावधान रहो, अपने प्रभु परमेश्वर को मत भूलना, क्योंकि तुम्हारा भाग्य है कि तुम उनके लिए दुख सहोगे और सभी संतों के साथ, उनके महमिामय राज्य में वजिय का मुकुट प्राप्त करोगे।'

यह कहकर, स्वर्गदूत अदृश्य हो गया। होश में आकर, उसने ईश्वर का धन्यवाद करना शुरू कयिा और उस ईसाई धर्म को याद कयिा, जसिके बारे में उसने अपने दादा और अपने पति से सुना था। उसके पति, जनिका नाम गॉर्डयिन था, ने उसी रेजमिेंट में एक सैनकि के रूप में सेवा की थी जसिमें बाद में उसे खुद नयिुक्त कयिा गया था, और अक्सर कहा करते थे:

'धन्य है वह जो स्वर्गीय राजा का सपिाही बनता है, क्योंकि उसे स्वर्ग के राज्य में उससे अपना इनाम मलिेगा। क्योंकि यह राजा, जसिने अपने वचन से सभी चीजों की रचना की, जीवतिों और मृतकों का न्याय करेगा और प्रत्येक को उनके कर्मों के अनुसार पुरस्कृत करेगा।'

अपने पति के इन शब्दों को याद करते हुए और स्वर्गदूत के प्रकट होने पर मन में वचिार करते हुए, मर्करी अपने हृदय की गहराई तक वचिलति हो गया और रोने तथा ससिकने लगा, यह कहते हुए:

'हाय, मैं पापी! एक हरे पेड़ की टहनी की तरह, मैं मुरझा गया हूँ—अब ईश्वर के ज्ञान की जड़ से वंचति[8154] ।'

जब वह अपनी ससिकयिों के बीच ऐसा कह रहा था, तभी राजा के नौकर उसे परषिद के लिए बुलाने आए। बुध ने बीमार होने का बहाना बनाकर मना कर दयिा, और राजा ने परषिद को अगले दनि तक के लिए टाल दयिा, क्योंकि वह बुध के बनिा कसिी भी बात पर वचिार-वमिर्श नहीं करना चाहता था - वह उसे इतना अधकि प्रेम और सम्मान करता था। सुबह, महान सम्मान के साथ मर्करी को अपनी उपस्थतिि में आमंत्रति करने के बाद, राजा ने रोमन साम्राज्य की भलाई से संबंधति मामलों पर उनसे परामर्श कयिा। परामर्श के अंत में, राजा ने मर्करी से कहा:

'आओ हम दोनों मलिकर आर्टेमसि के मंदरि चलें और वहाँ उसकी पूजा करें।'

संत, राजा से चोरी-छपिे नकिलकर अपने आवास पर चले गए। हालाँकि, कुलीनों में से एक ने राजा के सामने उनकी नंदिा करते हुए कहा:

'हे महान राजा, अजेय वजिेता, राज्य पर शासन करने के लिए देवताओं द्वारा चुने गए! कृपा करके मेरी बात दयालुता से सुनें। जसिने आपके राजसी दाहनि हाथ से सम्मान प्राप्त कयिा, जसि आपकी शक्ति ने महमिामंडति और गौरवान्वति कयिा है—वह आपके शासन के लिए बलदिान चढ़ाने के लिए महान देवी के मंदरि में नहीं आया है।'

राजा ने पूछा:

'वह कौन है जो हमसे सहमत होकर, पूजनीय आर्टेमसि को बलदिान चढ़ाने से इनकार कर रहा है?'

परामर्शदाता कैटुलस ने उत्तर दयिा:

'मर्करी, जसि महामहमि ने गौरवान्वति कयिा है – वह हमारे देवताओं की पूजा करने से इनकार करता है।'

राजा ने कहा:

'क्या ईर्ष्या के कारण ही तुम उस पर बदनामी कर रहे हो? मैं तब तक तुम्हारी बात पर वशि्वास नहीं करूँगा जब तक कि मैं स्वयं उसकी परीक्षा न कर लूँ और सच्चाई को संदेह से परे न कर लूँ। और यदि तुम्हारी बात झूठी साबति हुई,

[8154] यह मुहावरा सुसमाचार से लयिा गया है (तुलना करें लूका 23:31, यूहन्ना 15:1–6)। इन शब्दों में, संत मर्करी यह वचिार व्यक्त करते हैं कि, यद्यपि उनके पति एक ईसाई थे, वे स्वयं तब तक एक मूरतपिूजक रहे थे, जनिहोंने ईसाई धर्म की शकि्षा पर कोई ध्यान नहीं दयिा था।

तो तुम्हें अपनी बदनामी के लिए कई सज़ाएँ मिलेंगी; लेकिन यदि यह सच साबित हुई, तो हम देवताओं और हमारे राज्य के प्रति तुम्हारी निष्ठा के लिए तुम्हारा सम्मान करेंगे।'

यह कहकर, राजा ने तुरंत मर्करी को सम्मान के साथ अपने सामने लाने का आदेश दिया, और जब वह उपस्थित हुआ, तो डेसियस ने कहा:

'क्या यह मैं ही नहीं था जिसने आपको सभी राजकुमारों का कमांडर नियुक्त करके सम्मानित किया था, इस आधार पर कि आपने देवताओं की मदद से हमारे दुश्मनों को हराया था? तो फिर, तुम मेरे द्वारा तुम पर किए गए ऐसे उपकारों के लिए कृतघ्नता क्यों दिखा रहे हो, और हमारे ईश्वरभक्तों से हमें मिली सूचना के अनुसार, मेरे अधिकार और आज्ञा का तिरस्कार करते हुए हमारे देवताओं को उचित सम्मान देने में विफल क्यों हो रहे हो?

मसीह के पराक्रमी योद्धा ने, प्रेरितों के वचन के अनुसार, अपने कर्मों सहित पुराने मनुष्य को उतारकर, बपतिस्मा के द्वारा, परमेश्वर के स्वरूप में बनाए गए नए मनुष्य[8155] को धारण कर, साहसपूर्वक उत्तर दिया:

'आपका सम्मान आपके साथ रहे, क्योंकि मैंने अपने शत्रुओं को आपके दुर्बल देवताओं की सहायता से नहीं, बल्कि मेरे ईश्वर मसीह की शक्ति से पराजित किया है; (तथापि) जो आपने मुझे दिया है, वह मुझसे वापस ले लीजिए, क्योंकि मैं अपनी माता के गर्भ से नग्न आया था, और नग्न ही प्रस्थान करूँगा[8156] ।'

यह कहकर, उसने अपनी सैन्य कमरबंद और अपने कमांडर की पोशाक उतार ली और उन्हें एक ऊँचे उद्घोष के साथ राजा के पैरों तले फेंक दिया:

'मैं एक ईसाई हूँ! हर कोई यह सुन ले – मैं एक ईसाई हूँ।'

यह सुनकर डेशियस भय से भर गया; संन्यासी को चुपचाप निहारते हुए, वह उनके साहसी शब्दों और कर्मों पर चकित हुआ, और उनके रूप की सुंदरता से और भी प्रभावित हुआ, क्योंकि संन्यासी लंबे कद के, सुर्ख गालों वाले थे, और उनकी दृष्टि ही साहस का प्रतीक थी। फिर उसने उसे जेल में डालने का आदेश दिया, कहते हुए:

'इस मनुष्य ने अपने सम्मान का मूल्य नहीं जाना, परन्तु जब वह अपमान और कष्ट अनुभव करेगा, तब मुझे विश्वास है कि वह धार्मिक विचारों की ओर मुड़ेगा।'

जब संत को कालकोठरी में ले जाया गया, तो उन्होंने ईश्वर की स्तुति की और धन्यवाद दिया। उस रात, प्रभु का स्वर्गदूत एक बार फिर उनके पास आया, और कहा:

'साहसी बनो, मर्करी, और डरो मत; उस प्रभु पर भरोसा रखो जिसकी तुमने गवाही दी है, और वह तुम्हें हर दुख से बचाएगा।'

मर्करी इस दैवीय दर्शन से बहुत प्रोत्साहित हुआ। अगले ही सुबह, राजा डिसियस दरबार में बैठे थे, और जब मर्करी उनके सामने उपस्थित हुआ, तो उन्होंने उससे कहा:

'तुम्हारी मूर्खता के कारण, तुमने ऐसा सम्मान अर्जित किया[8157] है कि तुम यहाँ, एक मृत्युदंडित व्यक्ति के रूप में, अदालत के सामने खड़े हो।'

संत ने उत्तर दिया:

'सचमुच, ऐसा सम्मान[8158] मेरे प्रभु की खातिर मुझ पर शोभा देता है। तुमने वह लिया है जो शीघ्र नष्ट हो जाता है[8159] , जबकि मुझे वह मिलेगा जो हमेशा के लिए बना रहता है[8160] ।'

[8155] एफि. 4:24। यह अभिव्यक्ति संत मर्करी के विचारों और भावनाओं में आए परिवर्तन की ओर इशारा करती है, जो मसीह की कृपा की शक्ति द्वारा बपतिस्मा के माध्यम से हुआ। पगन जीवन शैली के प्रति अपनी पूर्व आसक्ति के बजाय, वह अब ईसाई आत्म-बलिदान के कार्य करने के लिए तत्पर था।

[8156] यहाँ, संत मर्करीय दीर्घ-सहनीय अय्यूब (अय्यूब 1:21) के शब्दों को दोहराते हैं, जिसमें अय्यूब ने शैतान द्वारा, ईश्वर की अनुमति से, उस धर्मी व्यक्ति को उसकी सभी संपत्तियों से वंचित करने के बाद ईश्वर की इच्छा के प्रति अपनी समर्पण भावना व्यक्त की थी। इन शब्दों का अर्थ यह है: मैं इस दुनिया में कुछ भी लेकर नहीं आया, और जब मैं मरूँगा तो मुझे दुनिया की किसी भी चीज़ की ज़रूरत नहीं पड़ेगी।

[8157] व्यंग्यात्मक अर्थ में, 'अपमान' के स्थान पर 'सम्मान' शब्द का प्रयोग किया गया है।

[8158] संत, यातना देने वाले के उपरोक्त कथन का सहारा लेते हुए, इस विचार की पुष्टि करते हैं कि मसीह के नाम के लिए पीड़ा सहना उनके लिए कोई कलंक नहीं, बल्कि इसके विपरीत, एक महान सम्मान है।

[8159] अर्थात्, वे चीजें जो किसी व्यक्ति के लिए केवल उनके संकुचित सांसारिक जीवन की अवधि के लिए मायने रखती हैं, जैसे कि धन, प्रसिद्धि, सम्मान, और इसी तरह की चीजें। ये सभी चीजें किसी व्यक्ति को पीछे छोड़ देती हैं और मृत्यु के आगमन पर उससे खो जाती हैं।

[8160] अर्थात् – आध्यात्मिक, स्वर्गीय आशीर्वाद। यह मुहावरा मत्ती 6:19–20 से लिया गया है।

राजा ने कहा:

– हमें अपनी वंशावली और स्वदेश के बारे में बताइए।

संत ने उत्तर दिया:

'जहाँ तक मेरी वंशावली और मातृभूमि का प्रश्न है, यदि आप जानना चाहते हैं, तो मैं आपको बताऊँगा। मेरे पिता का नाम गॉर्डियन था; वह स्कैथियाई मूल का था[8161] और मार्टेंस रेजिमेंट में एक सैनिक के रूप में सेवा करता था; जहाँ तक मेरी मातृभूमि का प्रश्न है, जिसकी ओर मैं उत्सुकता से यात्रा कर रहा हूँ, वह स्वर्गीय यरूशलेम है – स्वर्ग के राजा का शहर[8162] ।' राजा ने कहा:

'तुम हमारी इच्छा का पालन क्यों नहीं करते? हमने जो आज्ञा सभी को दी है, उसे तुम क्यों नहीं पूरा करते? तुम देवताओं की पूजा क्यों नहीं करना चाहते, ताकि तुम अपनी पूर्व पदवी पुनःप्राप्त कर सको? या क्या तुम यातनाओं में मरना चाहते हो? जल्दी उत्तर दो, क्योंकि इसी कारण तुम्हें बुलाया गया है।'

संत मर्करी ने कहा:

'मैं तुम्हें और तुम्हारे पिता, शैतान, जो सभी बुराइयों का स्रोत है, को हराने और विजय के दाता[8163] , मेरे प्रभु यीशु मसीह से विजय का मुकुट प्राप्त करने (यहाँ) आया हूँ।' जो कुछ तुमने मेरी योजना बनाई है, उसे बिना देरी के मुझ पर अमल करो, क्योंकि मेरे पास कवच और एक ढाल है, जिससे मैं तुम्हारे द्वारा मेरे खिलाफ रची गई सभी यातनाओं पर विजय प्राप्त करूँगा।

तब राजा ने क्रोध में कहा:

'चूंकि तुम कहते हो कि तुम्हारे पास विश्वास का कवच और ढाल है, मैं आदेश देता हूँ कि तुम्हें नग्न लटका दिया जाए, चार स्तंभों के बीच फैलाकर।'

जब यह हो गया, तो यातना देने वाले ने कहा:

'तो फिर, तुम्हारे संघर्ष के हथियार कहाँ हैं?'

संत मर्करी ने आकाश की ओर देखते हुए कहा:

'हे प्रभु यीशु मसीह, अपने दास की सहायता करो!'

राजा ने आदेश दिया कि संत के शरीर को चीरने के लिए तेज चाकू और तलवारें लाई जाएँ, और उसके नीचे जमीन पर आग जलाई जाए, ताकि ऊपर से चाकुओं और तलवारों से घायल और नीचे से आग से झुलसकर, वह भयंकर पीड़ा सहन करे। जब उन्होंने ऐसा करना शुरू किया, तो उसके शरीर से खून की धाराएँ बहने लगीं, इतना कि खून से आग भी बुझ गई, फिर भी संत ने यह सब बहादुरी से सह लिया।

इसके बाद, डेशियस ने आदेश दिया कि उसे बाँध दिया जाए – ताकि वह (बहुत जल्द) न मर जाए – और उसे एक कमरे में अच्छी तरह से बंद कर दिया जाए। नौकरों ने उसे उठा लिया और ले गए, क्योंकि वह मुश्किल से ज़िंदा था और अकेले चल नहीं सकता था, और उसे जेल में डाल दिया, यह सोचकर कि वह तुरंत मर जाएगा। और संत अपने भयानक घावों के कारण, जैसे मृत पड़ा था, मुश्किल से सांस ले रहा था। जैसे ही रात हुई, प्रभु का स्वर्गदूत उसके पास आया और कहा:

'हे शुभ पीड़ित, शांति तुम्हारे साथ हो!' – और उन्होंने उसके घावों को चंगा कर दिया। संत ने, जब अपनी शक्ति वापस पाई, तो अच्छे स्वास्थ्य में उठ खड़े हुए और उस ईश्वर का धन्यवाद किया, जिन्होंने अपने स्वर्गदूत के माध्यम से उन पर कृपा की थी।

सुबह, राजा ने फिर से आदेश दिया कि मिर्करी को उसके सामने लाया जाए। सैनिकों ने उसके पीछे जाकर उसे ठीक पाया और उसे पकड़कर राजा के पास ले गए। राजा ने, यह देखकर कि वह ठीक है और बिना सहारे के चल रहा है, कहा:

'जो आदमी कल मृतक की तरह हमें उठाकर ले जाया गया था, वह अब बिना सहारे के चल रहा है, मानो उस पर कोई घाव ही न हों,' और उन्होंने सैनिकों को उसके घावों की जांच करने का आदेश दिया।

शहीद के शरीर की जाँच करने के बाद, उन्होंने राजा से कहा:

[8161] स्कुथाई एक प्राचीन लोग थे जो आंशिक रूप से पश्चिमी एशिया के उत्तरी क्षेत्रों में, कैस्पियन सागर तक, लेकिन मुख्य रूप से ब्लैक सी के उत्तरी तटों के साथ रहते थे; इसके अलावा, स्कुथाई लोगों की बस्ती की उत्तरी सीमाएँ प्राचीन लोगों के लिए अज्ञात थीं।

[8162] अर्थात् – स्वर्ग का राज्य। यह अभिव्यक्ति इब्रानियों को लिखे पत्र 12:22 से ली गई है।

[8163] मसीह को ऐसा इसलिए कहा जाता है क्योंकि, अपने पृथ्वी पर के जीवन के द्वारा—और विशेष रूप से क्रूस पर अपनी पीड़ा और मृत्यु के द्वारा—उन्होंने परमेश्वर की इच्छा के प्रति आज्ञाकारिता और मानवता की निस्वार्थ सेवा का सर्वकालिक परम उदाहरण प्रस्तुत किया।

'हम आपके राज्य की अखंडता की कसम खाते हैं – बुध का पूरा शरीर अक्षुण्ण है, बिना किसी दाग के, मानो किसी यातना ने कभी उसे छुआ ही न हो।'

राजा ने कहा:

'वह निश्चित रूप से दावा करेगा कि मसीह ने उसे ठीक कर दिया है – क्या तुमने उसके कालकोठरी में कोई डॉक्टर नहीं भेजा था?'

उन्होंने उत्तर दिया:

'हम आपके सार्वभौम अधिकार की कसम खाते हैं, जो पूरे संसार पर शासन करता है, कि किसी ने भी उसकी जाँच नहीं की, क्योंकि हमें लगा कि वह तुरंत मर जाएगा; और जहाँ तक इस बात का सवाल है कि वह कैसे ठीक हुआ और अब स्वस्थ है, हम नहीं जानते।'

राजा ने कहा:

'देखो ईसाइयों की जादू-टोना: जो कल मृत प्रतीत हो रहा था, वह अब हमारे सामने अच्छे स्वास्थ्य में खड़ा है,' और उसने संत से क्रोध में कहा:

'तुम्हें किसने ठीक किया? हमें सच बताओ! क्योंकि मुझे विश्वास नहीं है कि तुम्हें जादू-टोने के अलावा किसी और तरीके से ठीक किया जा सकता था।'

संत ने उत्तर दिया:

'जैसा कि आपने स्वयं शुरुआत में अपनी इच्छा के विरुद्ध कहा था, वैसा ही हुआ है: हमारे प्रभु यीशु मसीह, जो आत्माओं और शरीरों के सच्चे चिकित्सक हैं, ने मुझे चंगा किया है – वही, जिन्होंने सभी जादूगरों और जादू-टोना करने वालों को, मूर्तियों की पूजा करने वालों के साथ, अटूट बंधनों में बाँध रखा है, और उन्हें सृष्टि के सच्चे परमेश्वर को न पहचान पाने के कारण गेहेन्नोम की आग में डाल देंगे।

राजा ने कहा:

'मैं एक बार फिर से तुम्हारे शरीर पर घाव करूँगा और देखूँगा कि क्या वह मसीह, जिसकी तुम दावा करते हो, तुम्हें चंगा करेगा।'

संत ने उत्तर दिया:

'मैं अपने प्रभु यीशु मसीह में विश्वास करता हूँ, कि तुम मुझ पर जो भी यातनाएँ थोपोगे, उनसे तुम मुझ पर विजय नहीं पाओगे, क्योंकि मैं अपने प्रभु के वचनों से बल प्राप्त करके, उन से बिलकुल भी नहीं डरता, जिन्होंने कहा, *"उनसे मत डरो जो शरीर को तो मार सकते हैं, पर आत्मा को नहीं मार सकते; बल्कि उस से डरो जो आत्मा और शरीर दोनों को गेहन्ना में नाश कर सकता है"* (मत्ती 10:28)। मेरी मृत्यु के बाद, वह मुझे धर्मी न्याय के भयानक दिन पर फिर से जीवित कर देगा।

राजा ने आग और घावों से एक बार फिर यातना देने का आदेश दिया। जब संत को पीटा जा रहा था और आग से जलाया जा रहा था, तो उनकी झुलसी हुई देह से बदबू के बजाय एक अद्भुत सुगंध निकली। शहीद ने इसे इतनी वीरता से सहन किया कि उन्होंने न तो कोई चीख निकाली, न कोई कराह, न ही कोई आह, जिससे सभी उनकी सहनशक्ति पर चकित रह गए। राजा ने उपहास करते हुए उनसे कहा:

'अब तुम्हारा चंगा करने वाला कहाँ है? उसे यहाँ आने दो और तुम्हें चंगा करे, क्योंकि तुमने कहा था कि वह तुम्हें मृतकों में से भी जिला सकता है।'

संत मर्करी ने उत्तर दिया:

'तुम जो चाहो करो; तुम्हारा अधिकार मेरे शरीर पर है, लेकिन मेरी आत्मा पर ईश्वर का अधिकार है: भले ही तुम मेरे शरीर को मार डालो, मेरी आत्मा हमेशा के लिए अक्षुण्ण रहेगी।'

राजा ने आदेश दिया कि उसे उल्टा लटका दिया जाए, और उसके गले में एक बड़ा पत्थर बाँध दिया जाए, ताकि पत्थर के वज़न से दबकर उसकी मृत्यु हो जाए। हालाँकि, शहीद ने ईश्वर की कृपा से बल पाकर, कई घंटों तक जीवित रहते हुए इस यातना को सहन किया। तब, पत्थर को खोलने के बाद, राजा ने उसे तांबे की नोकों वाली कोड़ों से पिटवाया; और उन्होंने उसे इतनी निर्दयता से पीटा कि उसका खून जमीन तक लथपथ हो गई। वह, हालांकि, हीरे की तरह अडिग रहा, और साहसपूर्वक इसे सहन करता रहा, यह कहते हुए:

'हे प्रभु, मैं तुझे धन्यवाद देता हूँ, क्योंकि तूने मुझे अपने नाम के लिए दुख सहने के योग्य समझा।'

राजा ने, यह देखकर कि शहीद को किसी भी तरह से अपनी इच्छानुसार झुकाया नहीं जा सकता, और उसके साथ अत्याचार करने के लिए उसके पास और समय नहीं था, क्योंकि वह रोम के लिए रवाना होने की जल्दी में था, उस पर यह अंतिम सजा सुनाई:

'मर्क्यूरियस, जिसने हमारे देवताओं को कुछ नहीं समझा और हमारी कृपा के सम्मानित आदेश का तिरस्कार किया, उसे हमारे अधिकार द्वारा कैपाडोसिया की भूमि[8164] में ले जाया जाए और वहाँ उसका सिर कलम कर दिया जाए, ताकि कई लोगों के लिए यह एक चेतावनी हो—क्योंकि जो कोई भी राजा का विरोध करेगा, उसे बहुत यातनाओं के बाद तलवार से मार डाला जाएगा।'

सैनिकों ने संत को पकड़कर एक जानवर पर बिठाया[8165] और उसे मजबूती से बाँध दिया (क्योंकि उसकी देह अनेक कष्टों से अत्यंत दुर्बल हो गई थी), फिर उसे कापाडोसिया ले गए। जब वे केसरिया में थे[8166] , प्रभु संत के समक्ष प्रकट हुए और कहा:

'मरकरी! मेरे पास आओ और शांति पाओ; तुमने अपना मार्ग पूरा कर लिया है और विश्वास बनाए रखा है – अब अपने श्रम का मुकुट ग्रहण करो[8167] , क्योंकि यहीं तुम्हें विदा होना है।'

शहीद, उद्धारकर्ता के इस दर्शन से अत्यधिक बल प्राप्त कर और यथाशीघ्र अपने शरीर से मुक्त होकर मसीह के साथ रहने की इच्छा रखते हुए[8168] , ने अपने साथ मौजूद सैनिकों से कहा:

'जो आज्ञा तुम्हें दी गई है, उसे बिना किसी विलंब के पूरा करो। प्रभु, जो सभी को पश्चाताप के लिए बुलाते हैं, तुम्हें अपनी कृपा प्रदान करें; दया में धनी, वह उन पर अपने उपहारों की भरमार करते हैं जो उनके पास आते हैं।'

यह कहने के बाद, 24 नवंबर को, जब वह हमारे उद्धारकर्ता यीशु मसीह की गवाही दे रहे थे, उनका सिर कलम कर दिया गया। संत के निधन के दूसरे दिन, उनका शरीर बर्फ की तरह सफेद पाया गया, और उससे कीमती मूर्रा और धूप की सुगंध आ रही थी; और इस चमत्कार के कारण, कई लोग मसीह में विश्वास करने लगे।

उनके पवित्र शरीर को सम्मान के साथ एक गौरवशाली स्थान पर सुलाया गया, जहाँ उन्होंने कई रोगियों को स्वास्थ्य लाभ प्रदान किया। यह योद्धा, पवित्र महा-शहीद मर्करी, जिसकी आत्मा पहले ही स्वर्ग में आनंदित हो रही है, को कुछ समय बाद, चुनी हुई सेनापति, परमेश्वर की अति पवित्र माता द्वारा, अपनी अगली सैन्य अभियान के लिए बुलाया गया।

जब संत बेसिल द ग्रेट[8169] परम पवित्र मसीह की माता की एक प्रतिमा के सामने प्रार्थना कर रहे थे - जिस पर पवित्र महा शहीद मर्करी को एक योद्धा के रूप में भाले के साथ भी चित्रित किया गया था - तब दुष्ट सम्राट जूलियन द एपोस्टेट[8170] , जो ऑर्थोडॉक्स ईसाइयों का महान उत्पीड़क और संहारक था, वह ईसाई धर्म को नष्ट करने के लिए

[8164] कैपाडोसिया – एशिया माइनर के पूर्व में एक क्षेत्र।

[8165] यह एक खच्चर या गधे को संदर्भित करता है, जिन पर सवारी की जाती थी और हल्का सामान ढोने के लिए उपयोग किया जाता था। ऊँटों का उपयोग भारी सामान ढोने के लिए किया जाता था।

[8166] कई रोमन शहरों का नाम सीज़रिया था। यहाँ, बेशक, यह कैपाडोसिया की राजधानी सीज़रिया को संदर्भित करता है, जिसका नाम सम्राट टिबेरियस ने रखा था (जिसे पहले मज़ाना के नाम से जाना जाता था)।

[8167] यह अभिव्यक्ति 2 तीमुथियुस 4:8 में है। '*दौड़* सांसारिक जीवन के मार्ग को संदर्भित करती है, विशेष रूप से शहादत और मृत्यु की पीड़ाओं को; '*विजय का मुकुट* स्वर्ग के राज्य में महिमा का मुकुट है, जो शहादत के कार्य से अर्जित किया जाता है।

[8168] यह अभिव्यक्ति फिलिप्पियों 1:23 से ली गई है। प्रेरित ने जल्द ही मरने की अपनी इच्छा व्यक्त की ताकि, शरीर से मुक्त होकर, वह स्वर्ग के राज्य में मसीह के साथ आत्मा में और भी अधिक निकटता से एक हो सके।

[8169] संत बेसिल द ग्रेट का जन्म 330 में कैपैडोसिया के एक धर्मनिष्ठ परिवार में हुआ था, और उन्होंने व्यापक सांसारिक और आध्यात्मिक शिक्षा प्राप्त की। प्रारंभ में, अपने मित्र संत ग्रेगरी द थियोलोजियन के साथ, उन्होंने एकांत जीवन जिया; फिर उन्हें पहले एक प्रेस्बिटर और बाद में, 370 में, केसरिया के बिशप के रूप में नियुक्त किया गया। अलेक्जेंड्रिया के संत अथेनासियस की तरह, वह एरियन उपद्रवों के युग के दौरान ऑर्थोडॉक्सी के एक उत्साही रक्षक थे और उन्होंने ऑर्थोडॉक्स सिद्धांत का बचाव और व्याख्या करने के लिए कई उल्लेखनीय कृतियाँ लिखीं, जिसके लिए चर्च ने उन्हें '*महान*' *की* उपाधि से सम्मानित किया / उनकी मृत्यु 379 में हुई।

[8170] सम्राट जूलियन ने 361 से 363 तक शासन किया। सम्राट बनने पर, उन्होंने ईसाई धर्म का त्याग कर दिया और मूर्तिपूजा को पुनर्स्थापित करना अपना जीवन भर का काम बना लिया। इसी कारण से, उन्हें 'धर्मत्यागी' के नाम से जाना जाता है।

फारसी युद्ध[8171] से वापस नहीं आएगा, उसने देखा कि वहाँ, परम पवित्र मसीह की माता की प्रतिमा के सामने, संत मर्करी की छवि थोड़ी देर के लिए अदृश्य हो गई, फिर खून से सनी भाला लेकर फिर से प्रकट हुई। और उसी क्षण, पर्सियन युद्ध में जूलियन द एपोस्टेट एक अज्ञात योद्धा की भाले से भेद दिया गया, जो तुरंत बाद अदृश्य हो गया। शापित जूलियन, अपने घाव से फूटते खून को ऊपर उगलते हुए, ईसा मसीह के विरुद्ध इन अपमानजनक शब्दों के साथ आकाश की ओर मुड़ा:

'तुम जीत गए, गलीलियाई!' — और अपने होठों पर द्वेष लिए मर गया।

यह चमत्कार उस समय प्रकट हुआ, क्योंकि संत बेसिल द ग्रेट की प्रार्थनाओं के माध्यम से, स्वयं परमेश्वर की परम पवित्र माता ने परमेश्वर के इस सेवक और अपने स्वयं के, पवित्र, विजयी महान शहीद मर्करी को भेजा, विजयी कलीसिया से संघर्षरत कलीसिया तक, धर्मद्रोही अधर्मी जूलियन के निष्पादन के लिए, पवित्र विश्वास और ऑर्थोडॉक्स ईसाइयों की रक्षा में। उनकी पवित्र मध्यस्थता और संरक्षण के द्वारा, हम भी अधर्मी शत्रुओं से सुरक्षित रहें, जिन्हें हम उनकी सहायता से परास्त करेंगे, और हम, उनके साथ मिलकर, परमेश्वर और परमेश्वर की माता की महिमा युगानुयुग करते रहें, आमीन।

कॉन्टाकियन, स्वर 4:

युद्ध में एक अजेय योद्धा, और संकट के समय में एक निश्शंकोच मध्यस्थ, आइए हम मर्करी की स्तुति गाने में आनंद लें: क्योंकि जो लोग खुशी से उनकी स्मृति का उत्सव मनाते हैं, वे हमें परेशानियों और दुखों से बचाते हैं।

स्मोलेंस्क के पवित्र शहीद मर्करी की स्मृति

24 नवंबर को स्मरण किया जाता है

13वीं शताब्दी की शुरुआत में रूसी भूमि पर एक बड़ी और दुखद विपत्ति आई। ईश्वर की अनुमति से, हमारे अनेक पापों के कारण, रूसी लोगों पर दुष्ट शत्रुओं - तातारों - ने आक्रमण किया। कई निवासी मारे गए या बंदी बना लिए गए; पूरे रूस की भूमि में बड़े विनाश का प्रसार हो गया। खेत-खलिहान वीरान पड़ गए – खेतों में केवल जंगली जानवर बड़ी संख्या में घूमते थे, जो मानव शवों को नोच-नोच कर खाते थे। तब कई रूसी राजकुमार अपने देश की रक्षा करते हुए मारे गए। अधर्मी दुश्मनों ने न तो शिशुओं को बख्शा और न ही असहाय निवासियों को। उन्होंने सभी को पीटा और निर्दयता से उनका कत्ल किया। कई लोगों को शर्मनाक और क्रूर अत्याचारों का शिकार होना पड़ा। क्रूर विजेताओं ने कैदियों को उनके ही बालों से बांधा और उन्हें जानवरों की तरह अपने आगे धकेल दिया, और उन पर बेरहमी से कोड़ों की बरसात की। पवित्र चर्चों और मठों को लूटा गया और भिक्षुओं का कत्लेआम किया गया। कीव को पहले ही बर्बर लोगों द्वारा जला दिया गया था और वह खंडहर में तब्दील हो गया था। ततार खान बटू ने अन्य शहरों को जीतने के लिए प्रस्थान किया; वह मास्को पहुँचा और उसे जीत लिया। फिर वह स्मोलेंस्क पर आगे बढ़ा और उसे तबाह करने का संकल्प लिया; वास्तव में, वह पहले ही एक विशाल सेना के साथ शहर के पास पहुँच रहा था। उन बर्बरों में, एक विशालकाय और उसका बेटा अपनी ताकत के लिए विशेष रूप से प्रसिद्ध थे। उनकी ताकत असाधारण थी; इस अत्याचारी के हाथों पहले ही कई लोग मारे जा चुके थे। वह अग्रिम पंक्ति का नेतृत्व कर रहा था। स्मोलेंस्क के निवासियों पर भय और आतंक छा गया: उनके लिए निश्चित विनाश प्रतीक्षा कर रहा था। उनकी एकमात्र आशा स्वर्ग की रानी की सुरक्षा में थी; उन्होंने परमेश्वर की परम पवित्र माता से विनम्रतापूर्वक प्रार्थना करना शुरू कर दिया कि वह उन्हें उनके अधर्मी दुश्मनों और क्रूर अत्याचारियों से बचाए। स्वर्ग की रानी, उन सभी की अजेय सहायक जो विश्वास के साथ उनकी पुकार करते हैं, ने इस शहर को दुश्मनों के हाथों में गिरने नहीं दिया, जिनकी अग्रिम सेना पहले ही स्मोलेंस्क से बहुत दूर नहीं थी और तथाकथित डोलगोमोस्ट पर रुकी हुई थी।

[8171] फ़ारसी लोग फ़ारस की खाड़ी के पास एशिया में रहते थे। समय के साथ देश की सीमाएँ बदलती रहीं। सासैनियन वंश (226 ईस्वी में) के उत्थान के साथ, उन्होंने कई मौकों पर रोमनों के खिलाफ युद्ध छेड़ा। फारसी युद्ध, जिसमें जूलियन मारा गया था, फारसी राजा शापूर द्वितीय के शासनकाल के दौरान हुआ था।

उस समय, संत मर्करी स्मोलेंस्क में रहते थे। उनका जन्म पश्चिम में एक कुलीन परिवार में हुआ था जो ऑर्थोडॉक्स धर्म का पालन करता था। अपनी युवावस्था में ही, वह स्मोलेंस्क चले आए और स्थानीय राजकुमार की सेवा में प्रवेश कर गए। एक योद्धा के रूप में, मर्करी अपनी ताकत और लंबी कद-काठी के लिए प्रसिद्ध थे। उनकी आध्यात्मिक शक्ति भी कम महान नहीं थी; कम उम्र से ही उन्होंने अपने धार्मिक जीवन के कारण लोगों का ध्यान आकर्षित किया: उन्होंने उपवास और ब्रह्मचर्य को अपनाया, और हर रात, सभी से गुप्त रूप से, वे प्रभु के प्रति कृतज्ञता के भजन गाते थे। दुष्ट शत्रुओं के आगमन और ईश्वर के चर्चों के अपमान की खबर सुनकर, संत मर्करी दुखी हुए और उनका आत्मा कष्ट में था; प्रत्येक बीतते दिन के साथ वे दिव्य उत्साह से अधिक भरते गए, और मसीह के धर्म के लिए दुख सहने तथा अपना जीवन बलिदान करने की इच्छा रखते थे। और उनकी प्रार्थना सुनी गई।

एक रात, कैथेड्रल चर्च में, वहाँ सेवा करने वाला एक सेक्सटन परम पवित्र परमेश्वर की माता की प्रतिमा के सामने प्रार्थना कर रहा था। अपनी आँखों में आँसू लिए, वह परमेश्वर की अति पवित्र माता से शहर को उसके शत्रुओं से बचाने की विनती कर रहा था। अचानक, उसे प्रतिमा से एक आवाज़ सुनाई दी।

'पोडॉली में मेरे सेवक मर्करी के पास जाओ।'

यह सुनते ही, परमेश्वर की अति पवित्र माता ने उन्हें वह दरवाज़ा दिखाया जहाँ संत मर्करी रहते थे।

'अब, उस बताए गए घर के आँगन में जाओ और उससे धीरे से कहो: "मरकरी! देवी तुम्हें बुला रही हैं। दुश्मनों के खिलाफ अपने कवच में निकल पड़ो।"'

मंदिर का सेवक प्रतिमा से आई इस आवाज़ से चकित रह गया। वह तुरंत कैथेड्रल से निकलकर उस घर पर गया जिसे सर्वपवित्र माता ने स्वयं उसे बताया था।

उसे प्रांगण में संत मर्करी मिले; पवित्र तपस्वी प्रार्थना कर रहे थे और अपने हाथ स्वर्ग की ओर उठाए हुए थे। उन्होंने अपने सैन्य कवच को पहन रखा था, क्योंकि ठीक उसी क्षण जब सेक्सटन ने परम पवित्र की प्रतिमा से आवाज़ सुनी, संत मर्करी को चमत्कारिक रूप से सेक्सटन के आगमन की पूर्व सूचना मिल गई थी।

इस बीच, सेक्सटन संत के पास गया और उनसे कहा:

'मरकुरी, तुरंत जाओ, क्योंकि देवी तुम्हें बुला रही हैं।'

संत मर्करी, सेक्सटन के साथ, परम पवित्र ईश्वर की माता के चर्च के लिए रवाना हुए। चर्च के अंदर, उन्होंने ईश्वर की माता की प्रतिमा के सामने एक जलती हुई मोमबत्ती देखी। संत मर्करी, प्रतिमा के सामने साष्टांग दंडवत होकर, आँसुओं के साथ प्रार्थना करने लगे, परम पवित्र देवी से मदद और मध्यस्थता के लिए विनती करने लगे। फिर अचानक प्रतिमा से एक आवाज गूँजी:

'मेरे सेवक मर्करी, मैं तुम्हें इस शहर से दुश्मनों को भगाने और इस चर्च की रक्षा करने के लिए भेजती हूँ। इस उद्देश्य के लिए, मैंने तुम्हें रोमन साम्राज्य से यहाँ बुलाया है। दुश्मनों ने गुप्त रूप से आज रात ही इस शहर पर हमला करने और इसे बर्बाद करने की योजना बनाई है। लेकिन मैं इस नगर को नहीं छोड़ूँगा: मेरी प्रार्थनाओं के द्वारा, यह शत्रुओं के हाथों में नहीं पड़ेगा। मेरे सेवक, तुरंत शत्रुओं का सामना करने के लिए निकल पड़; उस स्थान पर जाओ जिसे डोलगोमोस्टिये के नाम से जाना जाता है। वहाँ दुष्ट बर्बरों का एक सशस्त्र दल खड़ा है। मत डर: तुम शत्रु सेनापति को परास्त करोगे। मैं तुम्हें नहीं छोड़ूँगा। इस युद्ध में तुम शत्रुओं को पराजित करोगे और स्वयं प्रभु से विजय का मुकुट तथा अनंत आनंद प्राप्त करोगे।

यह आवाज़ सुनकर, संत मर्करी खुशी से भर गए। स्वर्ग की रानी ने स्वयं उससे वह वचन दिया था जिसकी वह अपनी पूरी आत्मा से लंबे समय से तलाश कर रहा था, क्योंकि वह हमेशा से अपने भाइयों और मसीह के विश्वास के लिए कष्ट सहने की इच्छा से भरा रहा था। परमेश्वर की परम पवित्र माता का धन्यवाद करने के बाद, वह चर्च से निकल गया और दैवीय उत्साह से भरकर, तुरंत बताए गए स्थान के लिए रवाना हो गया।

अधरा रात का समय था। इतनी जल्दी दुश्मन के हमले की उम्मीद न होने के कारण, नागरिक गहरी नींद में थे। चुपके से और बिना देखे, संत मर्करी शहर के द्वारों पर पहरेदारों के पास से निकल गए। डोलगोस्टोये पहुँचने पर, उन्होंने अपनी तलवार खींची और, 'हे परमेश्वर की परम पवित्र माता, मेरी मदद करो!' चिल्लाते हुए, तातारों के झुंड पर टूट पड़े। अपनी ताकत पर घमंड करने वाला एक गर्वीला विशालकाय व्यक्ति सबसे पहले संत मर्करी के हाथों मारा गया: जिस ताकत का वह इतना घमंड करता था, वह मसीह का योद्धा उसके सामने आते ही उससे छिन गई। अग्रिम पंक्ति के कई अन्य दुश्मन संत मर्करी की तलवार से मारे गए। बचे हुए दुश्मन दहशत में आ गए और भाग गए। संत मर्करी एक तरफ

हट गए और प्रार्थना करने लगे, उन्होंने परम पवित्र देवी को उनके अद्भुत और गौरवशाली हस्तक्षेप के लिए धन्यवाद दिया।

'हे सर्व-शुद्ध, सर्व-महिमामयी और सर्व-धन्य देवी! अपनी मध्यस्थता से, आपने इस शहर को बचाया है और अपने लोगों को ईसाइयों के दुष्ट दुश्मनों के हाथों पड़ने से रोका है। अब, हे परमेश्वर की परम पवित्र माता, मैं आपसे विनती करता हूँ कि आप अपने इस पापी और अयोग्य सेवक को न त्यागें: मैं जानता हूँ कि शहीदी के गौरवमय मुकुट से विभूषित होना और पवित्र धर्म के लिए अपना रक्त बहाना मेरा भाग्य है। यह मुझे डराता नहीं है, क्योंकि मैं लंबे समय से *'छुड़ाए जाने और मसीह के साथ* होने' *की* इच्छा रखता हूँ। हमारे नगर की महिमामय मध्यस्थ, अपने पुत्र और हमारे ईश्वर से मेरी भी प्रार्थना करें: कि वे मुझे अपनी चुनी हुई भेड़-बकरियों में गिनें और मुझे हमेशा के लिए उनके पवित्र नाम की स्तुति करने का वरदान दें।

तब एक आवाज़ सुनाई दी:

'तथास्तु।'

इस बीच, दुश्मनों को अतिरिक्त सेना मिल जाने पर, उन्होंने एक बार फिर संत मर्करी पर धावा बोल दिया। लेकिन मसीह के योद्धा ने, प्रभु का नाम लेकर, उन्हें फिर से धराशायी कर दिया; दुश्मन एक बार फिर शर्मिंदगी में पीछे हट गए:

वे चिल्लाए, 'हाय हमारे! हम इस योद्धा का सामना नहीं कर सकते, क्योंकि उसके साथ बिजली की तरह तेज कुछ पुरुष हैं जो हमें मार गिराते हैं। और उनके ऊपर हम उस तेजस्वी महिला को देखते हैं।'

उस क्षण, मारे गए दैत्य के पुत्र ने, अपने पिता की मृत्यु का बदला लेने की इच्छा से, विश्वासघातपूर्वक सेंट मर्करी पर आक्रमण किया और अपनी तलवार से उनका उत्कृष्ट सिर काट दिया। सभी शत्रुओं में महान भय छा गया: उन्होंने अपने हथियार त्याग दिए और किसी अज्ञात शक्ति से प्रेरित होकर, वे उस नगर से भाग गए, जिसके नीचे इतने उत्कृष्ट योद्धा मारे गए थे, और स्मोलेंस्क की सीमाओं के परे चले गए।

भोर होते ही, नागरिकों ने परमेश्वर की परम पवित्र माता के एक चमत्कारी हस्तक्षेप को देखा: उनके सामने शवों से लदी एक खेत पड़ी थी। कृतज्ञतापूर्वक, उन्होंने शहर के गौरवशाली रक्षक – संत मर्करी – के शरीर को उठाया और उसे परमेश्वर की परम पवित्र माता के कैथेड्रल में, बाईं ओर के कोरस के पास सम्मान के साथ दफनाया।

उनकी मृत्यु के तुरंत बाद, संत मर्करी उपर्युक्त सेक्सटन को सपने में दिखाई दिए और कहा:

'इस नगर के नागरिकों से कहो: वे मेरी कोफ़िन के ऊपर मेरे हथियार लटका दें, इस गौरवशाली मध्यस्थ और परम पवित्र मसीह की माता की सहायता की स्मृति में।'

तब, संत ने उन सभी को अपनी सहायता का वादा किया जो उनसे मदद मांगते हैं। नागरिकों ने तुरंत संत के हथियार उनकी कब्र के ऊपर लटका दिए।

आज, संत मर्करी की अवशेषें स्मोलेंस्क अव्रामियेव मठ में, मसीह के गौरवशाली योद्धा के सम्मान में बनी एक चर्च में विराजमान हैं, जो संकट और क्लेश के समय सभी को चंगा करने और सहायता प्रदान करते हैं। काश कि वह हमें अपने सांसारिक जुनून पर काबू पाने और निरंतर पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा की स्तुति करने में भी मदद करें। आमीन।

कॉन्टाकियन, स्वर 4:

एक अजेय योद्धा युद्ध में प्रकट हुआ, जन्म से रोमनों का पुत्र, जो स्मोलेंस्क नगर के नाम को धारण करता था: क्योंकि उन्हीं के लिए उसे यह नाम दिया गया था, जब उसे परमेश्वर की माता द्वारा नगर का एक शक्तिशाली रक्षक बनाकर भेजा गया था। आइए हम मर्करी की स्तुति भजनों से करें, उसकी स्मृति का आनन्दपूर्वक उत्सव मनाते हुए, ताकि यह योद्धा हमारे नगर को विपत्ति से बचाए।

सोइगनिो के पूजनीय साइमन की स्मृति

२४ नवंबर को स्मरण किया जाता है

आदरणीय साइमन सोल्वयेगोडस्क नगर के मूल निवासी थे। छोटी उम्र से ही, ईश्वर की कृपा उन पर बनी रही। उन्होंने सांसारिक व्यर्थताओं से परहेज किया। अपनी युवावस्था में, उन्होंने अपने माता-पिता का घर छोड़ दिया और कोमेल

के आदरणीय कॉर्नेलयिस के मठ में चले गए। पूज्य को देखकर, संत साइमन उनके सामने घुटनों के बल गरि पड़े और आँसुओं से भरी आँखों के साथ, उस धन्य व्यक्ति से एक भिक्षु के रूप में उनका मुंडन करने का अनुरोध किया। पूज्य कॉर्नेलयिस की सूक्ष्मदर्शी आँखों से यह नहीं छूटा कि उनके सामने ईश्वर का एक भावी तपस्वी खड़ा था। उनकी विनती मानते हुए, उन्होंने साइमन को स्वीकार कर लिया और उन्हें एक अनुभवी एल्डर को उनके आध्यात्मिक मार्गदर्शक के रूप में नियुक्त किया। संत कॉर्नेलयिस के उदाहरण का अनुसरण करते हुए, संत साइमन ने उपवास और प्रार्थना में खुद को समर्पित कर दिया। उन्होंने बिना किसी शिकायत के अपने सौंपे गए सभी कर्तव्यों का पालन किया और अपनी असाधारण विनम्रता के लिए जाने गए। इस प्रकार, कई वर्षों तक, उन्होंने संत कॉर्नेलयिस के मठ में अथक परिश्रम किया। 1537 में, अपने महान गुरु के निधन के बाद, संत साइमन, अपने धर्मपरायण जीवन के लिए प्रसिद्ध वृद्ध लोंगिनस के साथ, अपने पैतृक स्थल, सोल्वयेगोडस्क के लिए रवाना हुए। दोनों तपस्वी एकांत की तलाश में थे। वे शहर से लगभग 15 वर्स्ट दूर, कोरियाज़ेमा नदी के मुहाने पर रुके। यहाँ, पूजनीय लोंगिनस ने घने जंगल के बीच बसने का निश्चय किया। संत साइमन ने लोंगिनस की सहायता करने का निश्चय किया, जो अपनी मठवासी मेहनत से पहले ही थके हुए थे और वृद्ध भी थे। दोनों ने मिलकर वहाँ एक कोठरी और एक चैपल बनाया। कुछ समय के लिए, पूजनीय साइमन इसी क्षेत्र में लोंगिनस के साथ रहे। लेकिन फिर, अपने लिए एक अधिक एकांत स्थान खोजने का संकल्प लेकर, उन्होंने संत लोंगिनस से विदा ली और विचेगदा नदी के ऊपरी प्रवाह की ओर चल पड़े।

कोरियाज़ेमा से साठ वर्स्ट दूर, व्येचेग्डा के ऊँचे किनारे पर, सोइगा नदी के मुहाने पर, एक जंगली जंगल के बीच, संत ने अपने लिए एक कोठरी बनाई, और फिर हमारे प्रभु यीशु मसीह के सम्माननीय और गौरवशाली रूपांतरण को समर्पित एक चर्च का निर्माण किया[8172] । इस चर्च का 17 मई 1541 को अभिषेक किया गया था। इसी जंगली और दूरस्थ क्षेत्र में आदरणीय साइमन ने अपना तपस्वी जीवन शुरू किया। उनका संयम और प्रार्थना की निगिरानी वास्तव में अद्भुत थी।

लोग उनके चारों ओर इकट्ठा होने लगे, वे इस पवित्र पुरुष के मार्गदर्शन में रेगिस्तान में तपस्या करना चाहते थे, जो अपनी धार्मिकता के लिए विख्यात थे। और उस धन्य व्यक्ति ने सभी को उपदेश दिया और सिखाया। एक सच्चे चरवाहे की तरह, उन्होंने अपने उदाहरण से ही सभी को मोक्ष और शाश्वत आनंद का मार्ग दिखाया। इस प्रकार, पूरे बीस वर्षों तक, उस संत ने अपने रेगिस्तान में तपस्या की। अपनी मृत्यु से ठीक पहले, रेवरेंड फादर यह सुनकर अत्यंत प्रसन्न हुए कि उनके आध्यात्मिक मित्र और गुरु, संत लोंगिनस, चमत्कारों के माध्यम से महिमामय हो गए थे। तपस्या के ऐसे जीवन के बाद, उन्होंने 24 नवंबर 1562 को शांतिपूर्वक अपना पुण्य आत्मा प्रभु को सौंप दिया, और उनके शोकाकुल शिष्यों ने शोक मनाया। उनकी पवित्र अवशेषें, रेवरेंड फादर द्वारा स्थापित मठ के भीतर, संत कैथरीन द ग्रेट मार्टायर को समर्पित चर्च के फर्श के नीचे विराजमान हैं, जिसे बाद में भंग कर दिया गया था।

आदरणीय मास्ट्रडिया की स्मृति

24 नवंबर को स्मरण

मिस्र के अलेक्जेंड्रिया शहर में मास्ट्रडिया नाम की एक पवित्र कुंवारी रहती थी, जो अपनी आत्मा की परवाह करते हुए, मसीह के लिए मौन, उपवास, निरंतर जागरण और प्रार्थना में रहती थी, और साथ ही बहुत दान भी देती थी। लेकिन शैतान, जो हमेशा लोगों को ईश्वर भक्ति के जीवन जीने के प्रयासों में बाधा डालता है, पवित्र कन्या में ऐसी सद्गुणों को सहन नहीं कर सका और इस तरह उससे संघर्ष करने लगा। उसने एक युवक के मन में इस कन्या के लिए एक अशुद्ध इच्छा उत्पन्न कर दी। वह युवक स्वयं उसके घर आता या किसी को भेजता, उसे इस वासना में फँसाने की कोशिश करता; हालाँकि, उसे कोई जवाब नहीं मिलता था। जब भी मास्ट्रडिया ईश्वर से प्रार्थना करने के लिए चर्च जाने हेतु अपने घर से निकलतीं, तो वह युवक उनके ठीक पीछे-पीछे चलता था, जिससे पवित्र कन्या को बहुत दुख होता था। वह उनसे इस तरह बात करता था जो केवल पापी लोगों को ही भाती है, जिसके कारण संत मास्ट्रडिया ने अपना घर छोड़ना ही बंद कर दिया, यहाँ तक कि चर्च भी नहीं जाती थीं।

[8172] स्पासो-प्रयिोब्राज़ेन्स्की-सोयगस्की या सोएझ्स्की मठ, जो अब सोयगस्की-प्रयिोब्राज़ेन्स्की कब्रस्तान है, वोल्गोडा प्रांत के सोल्वयेचेगोडस्क जिले में, सोल्वयेचेगोडस्क से 82 वर्स्ट दूर, सोयगा नदी के दाहिने किनारे पर, विचेगदा नदी के संगम पर स्थित है। 1791 में, इस मठ को पूरी तरह से समाप्त कर दिया गया और इसे एक पैरिश चर्च में बदल दिया गया।

एक दनि, मास्ट्रडियिा ने अपनी दासी को उस युवक के पास इन शब्दों के साथ भेजा:

'आओ, मेरी मालकनि तुम्हें बुला रही हैं।'

वह युवक खुशी-खुशी उसके पास आया, यह सोचकर कि वह उसकी अधार्मकि इच्छा के लिए राजी हो जाएगी। जब वह युवक अंदर आया, तो मास्ट्रडियिा कपड़ा बुनने में व्यस्त थी, और उसने उससे पूछा:

'भाई, तुम मुझे इतना दुख और कष्ट क्यों देते हो कि तुम मुझे चर्च जाने भी नहीं देते?'

युवक ने उत्तर दयिा, 'सचमुच, मैं तुमसे बहुत प्यार करता हूँ, और जब मैं तुम्हें देखता हूँ, तो मुझे ऐसा लगता है मानो मैं आग में जल रहा हूँ।'

मास्ट्रडियिा ने उस युवक से पूछा, 'तुम्हें मुझमें क्या दखिाई देता है?'

युवक ने कहा, 'मैं देखता हूँ कि तुम्हारी आँखें इतनी खूबसूरत हैं कि वे मुझे मंत्रमुग्ध कर देती हैं।'

पवत्रि कन्या ने यह सुनकर कि उसकी आँखें लोगों को बहकाती हैं, तुरंत उस सुई से अपनी आँखें नकिाल लीं जसिका वह कपड़ा बुनने के लिए उपयोग कर रही थी।

यह देखकर वह युवक भयभीत हो गया। लेकनि जब उसे एहसास हुआ कि उस पवत्रि कन्या ने यह सब मसीह के प्रति उत्साह और अपने पड़ोसी को प्रलोभन से बचाने के लिए कयिा था[8173] , तो उस पर ईश्वर का भय छा गया और उसने पश्चाताप कयिा। एक आश्रम में जाकर, उस युवक ने काले वस्त्र धारण कर लिए और एक कठोर संन्यासी बन गया, जो अपनी भक्ति और संयम में पवत्रि पतिाओं का अनुकरण करता था।

जहाँ तक मास्ट्रडियिा का सवाल है, उसने अपना जीवन प्रभु की सेवा में समाप्त कयिा, जनिके सामने वह अब खड़ी है।

8 दसिंबर

25 नवंबर (पुराने कैलेंडर के अनुसार)

रोम के पोप संत क्लेमेंट का जीवन और शहादत

25 नवंबर को स्मरणोत्सव

महान और गौरवशाली प्राचीन शहर रोम में फाउसटस नाम का एक कुलीन वंशज व्यक्ति रहता था, जो प्राचीन रोमन राजाओं के वंश से था। उसकी पत्नी का नाम मैथफडियिा था, जो शाही वंश की भी थी और रोमन सम्राटों अगस्टस और टबिेरयिस की रश्तिेदार थी[8174] । पति-पत्नी बड़े उत्साही मूर्तपिूजक थे और मूर्तयिों की पूजा करते थे। पहले उनके जुड़वां बेटे हुए, जनिमें से एक का नाम उन्होंने फाउस्टनिस और दूसरे का फाउस्टनियिानुस रखा; फरि एक तीसरा बेटा हुआ, जसिका नाम उन्होंने क्लेमेंट रखा।

फाउसटस का एक भाई था, जो एक दुष्ट और अनैतकि व्यक्ति था। माटफडियिा की सुंदरता को देखकर, वह उसकी ओर आकर्षति हो गया और उसे पाप के लिए लुभाने लगा; लेकनि वह, जो अत्यंत पवत्रि थी, न तो अपने पति के वश्विास को तोड़ना चाहती थी और न ही वैवाहकि शय्या को कलंकति करके अपने कुलीन वंश की गरमिा का अपमान करना चाहती थी; और इसलिए उसने अपने प्रलोभक को दूर रखने के लिए हर संभव प्रयास कयिा। उसे खुले तौर पर बेनकाब नहीं करना चाहती थी, इसलिए उसने इस बारे में कसिी से कुछ नहीं कहा, यहाँ तक कि अपने पति से भी नहीं, इस डर से कि

[8173] मसीह उद्धारकर्ता ने अपने अनुयायियों को दुष्ट वासनाओं पर काबू पाना सखिाते हुए कहा: 'और यदि तुम्हारी आँख तुम्हें ठोकर खलिाती है, तो उसे नकिाल डालो: दो आँखों से आग की गेहेना में फेंके जाने से तो एक आँख से परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना तुम्हारे लिए बेहतर है' (मरकुस 9:47)। संत मास्ट्रडियिा ने मसीह के प्रति उत्साह के कारण अपनी आँखें नकिाल लीं ताकि वह युवक के लिए प्रलोभन के कारण को दूर करके उसे मोक्ष की ओर ले जा सकें।

[8174] ऑक्टेवयिन अगस्टस – रोम में गणराज्य के वनिाश के बाद पहले रोमन सम्राट – ने 30 ईसा पूर्व से 14 ईस्वी तक शासन कयिा। उसका सौतेला बेटा टबिेरयिस, 14वें से 37वें वर्ष तक राज कयिा; उसके शासनकाल के दौरान, हमारे प्रभु यीशु मसीह ने दुख उठाया और उन्हें सूली पर चढ़ाया गया।

उनके बारे में कोई बदनाम करने वाली अफवाहें फैल सकती हैं और उनके परविार की प्रतषि्ठा पर दाग लग सकता है। लेकनि फास्टस का भाई लंबे समय से उसे वनिती और धमकयिों दोनों से अपनी अशुद्ध इच्छाओं के आगे झुकने के लएि दबाव डाल रहा था। मैटफडियिा ने यह महसूस कयिा कि जब तक वह उससे मलिना बंद नहीं कर देगी, तब तक वह उसकी अश्लील पेशकशों से बच नहीं सकती, इसलएि उसने नम्निलखिति कार्रवाई करने का संकल्प लयिा।

एक सुबह उसने अपने पति से नम्निलखिति शब्दों में कहा: 'महाराज, मैंने कल रात एक अद्भुत सपना देखा: मैंने एक सम्माननीय वृद्ध व्यक्ति को देखा, मानो वह देवताओं में से कोई हों, जिन्होंने मुझसे कहा : "यदि तुम और तुम्हारे जुड़वां पुत्र दस वर्षों तक रोम नहीं छोड़ोगे, तो तुम उनकी साथ एक दर्दनाक और अचानक मृत्यु को प्राप्त करोगी।"'

ये शब्द सुनकर फाउसटस चकति रह गया; उसने इस बात पर देर तक वचिार कयिा और यह नश्चिय कयिा कि वह उसे और उसके दो बेटों को दस साल के लएि रोम से दूर भेज देगा, यह तर्क देते हुए: 'यह बेहतर है कि मेरी प्रयि पत्नी और बच्चे कसिी वदिेशी भूमि में रहें, बजाय इसके कि वे यहाँ अचानक मृत्यु का शकिार हो जाएँ।' एक जहाज को तैयार करके और उसमें सभी आवश्यक सामान भरकर, उसने उसे उसके दो बेटों, फाउस्टनिस और फाउस्टनियिानुस के साथ ग्रीस, एथेंस भेज दयिा। उसने उनके साथ बड़ी संख्या में पुरुष और महलिा दास भेजे और उन्हें पर्याप्त धन-संपत्ति प्रदान की, तथा माटफडियिा को नर्दिेश दयिा कि वह अपने बेटों को ग्रीक ज्ञान का अध्ययन करने के लएि एथेंस में दाखलि दलिाए।

इस प्रकार वे अकथनीय दुख और आँसुओं के साथ एक-दूसरे से अलग हो गए। मैटफडियिा अपने दो बेटों के साथ समुद्र यात्रा पर नकिल पड़ी, जबकि फाउस अपने छोटे बेटे, क्लेमेंट के साथ रोम में ही रह गया।

जब मटफडियिा समुद्र पार कर रही थी, तब एक भयंकर तूफ़ान आ गया और लहरें ऊँची हो गईं; जहाज लहरों और हवा से बहकर एक अज्ञात भूमि पर पहुँच गया, जहाँ आधी रात को वह टूट गया और सभी डूब गए। हालाँकि, उग्र लहरों द्वारा बहकर मैटफडियिा एशयिा की भूमि से बहुत दूर नहीं एक द्वीप की चट्टानों पर फेंक दी गई[8175] । और वह अपने डूबे हुए बच्चों के लएि बेसुध होकर रोई; अपने गहरे दुख में वह खुद को समुद्र में फेंक देना चाहती थी, लेकनि उस देश के नविासयिों ने, उसे नग्न, चलि्लाती और जोर-जोर से वलिाप करती देख, उस पर दया की, उसे अपने शहर में ले आए और उसके कपड़े दएि।

यात्रा के शौकीन कुछ महलिाएँ उसके पास आईं और उसके दुख को कम करने लगीं; उनमें से प्रत्येक ने उसे अपने जीवन में घटी सभी दुखद घटनाओं के बारे में बताया, और अपनी सहानुभूति से उन्होंने उसके दुख को कुछ हद तक कम कर दयिा। उनमें से एक ने कहा: 'मेरे पति एक नावकि थे; वह बहुत कम उम्र में ही समुद्र में डूब गया, और मैं एक युवा वधिवा रह गई; कई लोग मुझसे शादी करना चाहते थे, लेकनि मैंने, अपने पति से प्रेम करते हुए और उनकी मृत्यु के बाद भी उन्हें भूल न पाने के कारण, वधिवा ही रहने का नश्चिय कयिा। यदि आप चाहें, तो मेरे घर में रुकें और मेरे साथ रहें; आप और मैं अपनी मेहनत से अपनी आजीवकिा कमाएंगे।'

मैटफडियिा ने उनकी सलाह मानी, और, उनके घर में रहने लगी, अपनी मेहनत से अपनी रोजी-रोटी कमाई और चौबीस साल तक इसी स्थति में रही।

उसके बच्चे, फाउस्टनिस और फाउस्टनियिानुस, भी ईश्वर की इच्छा से जहाज के मलबे से बच गए; कनिारे पर बहकर आने पर, वहाँ मौजूद कुछ समुद्री डाकुओं ने उन्हें देख लयिा; इन्होंने उन्हें अपनी नाव पर चढ़ा लयिा, उन्हें सेज़ारयिा स्ट्रैटोनकि[8176] ले आए और वहाँ जस्टनिा नाम की एक महलिा को बेच दयिा, जसिने उन्हें अपने बच्चों की तरह पाला और स्कूल भेजा। इस प्रकार उन्हें वभिन्नि मूर्तपिूजक वज्ञिान सखिाए गए, लेकनि बाद में, मसीह के बारे में सुसमाचार का संदेश सुनने पर, उन्होंने पवत्रि बपतस्मिा ग्रहण कयिा और प्रेरति पतरस का अनुसरण कयिा।

जहाँ तक उनके पति फाउसटस का सवाल है, जो रोम में क्लेमेंट के साथ रह रहे थे और अपनी पत्नी और बच्चों पर आई वपित्तयिों के बारे में कुछ नहीं जानते थे, उन्होंने एक साल बीत जाने के बाद यह पता लगाने के लएि कि उनकी पत्नी और बच्चे कैसे हैं, कुछ दासों को एथेंस भेजा और उनके साथ कई तरह की चीजें भेजीं; लेकनि उनके दास वापस नहीं

[8175] रोमनों 'एशयिा' उस प्रांत को कहते थे जो अब एशयिा माइनर (एनाटोलयिन प्रायद्वीप) में, भूमध्य सागर के तट पर स्थति है; इसमें कई शहर और उनके आसपास के क्षेत्र शामलि थे, और पर्गामोन को इसकी राजधानी माना जाता था।

[8176] प्राचीन काल में कई नगरों के नाम सीज़रयिा थे। सीज़रयिा स्ट्रैटोनकिा नाम भूमध्य सागर के पूर्वी तट पर स्थति उस फलिस्तिीनी नगर को संदर्भति करता है, जसिे सामान्यतः फलिस्तिीन की सीज़रयिा के नाम से जाना जाता है। यह शहर यहूदी राजा हेरोद द्वारा प्राचीन शहर स्ट्रैटन की जगह पर बनाया गया था और सीज़र ऑगस्टस (रोमन सम्राट ऑक्टेवयिन ऑगस्टस) के सम्मान में इसका नाम कैसरयिा रखा गया था। आज केवल खंडहर बचे हैं, जो जंगली वनस्पतयिों से ढके हुए हैं।

आए। तीसरे वर्ष, जब फाउस्टस को अपनी पत्नी और बच्चों की कोई खबर नहीं मिली, तो वह बहुत दुखी हुआ और अन्य नौकरों को एथेन्स भेज दिया, साथ ही वे जो कुछ भी चाहते थे, वह सब कुछ भेज दिया। वहाँ पहुँचने पर, उन्हें कोई नहीं मिला, और चौथे वर्ष में वे फाउसटस के पास लौट आए और उन्हें बताया कि वे एथेन्स में अपनी मालकिन को बिल्कुल भी नहीं ढूंढ पाए, क्योंकि वहाँ किसी ने उनके बारे में सुना भी नहीं था, और वे उनका कोई सुराग नहीं लगा सके, क्योंकि उन्हें अपने ही लोग भी नहीं मिले। यह सब सुनकर फाउसटस और भी अधिक दुखी हो गया और जोर-जोर से रोने लगा। वह रोमन प्रांत के सभी तटीय शहरों और बंदरगाहों में अपनी पत्नी और उसके बच्चों के बारे में जहाज के कप्तानों से पूछता हुआ घूमा, लेकिन किसी से भी कुछ पता नहीं चल पाया। तब, एक जहाज बनाकर और अपने साथ कुछ दास तथा अपनी कुछ संपत्ति लेकर, वह अपनी प्रिय पत्नी और प्यारे बच्चों की तलाश में अकेले निकल पड़ा, और अपने सबसे छोटे बेटे, क्लेमेंट को, घर पर अपने वफादार दासों के साथ विज्ञान का अध्ययन करने के लिए छोड़ गया। वह लगभग पूरी दुनिया में, जमीन और समुद्र दोनों मार्गों से, कई वर्षों तक अपने प्रियजनों की तलाश करता रहा, लेकिन उन्हें खोज नहीं सका। अंततः उन्हें फिर से देखने की भी आशा छोड़ देने पर, वह गहरे दुख से भर गया, इतना कि वह घर लौटने की भी इच्छा नहीं रखता था, क्योंकि वह मानता था कि अपनी प्रिय पत्नी के बिना इस संसार के सुखों का आनंद लेना एक भारी बोझ है, जिसके प्रति उसके मन में उसकी पवित्रता के कारण बहुत प्रेम था। इस संसार के सभी सम्मान और महिमा को अस्वीकार कर, वह एक भिखारी की तरह विदेशी भूमि में भटकता रहा, और अपनी पहचान किसी को नहीं बताई।

इस बीच, युवा क्लेमेंट वयस्क हो गया था और उसने सभी दार्शनिक शिक्षाओं का गहन अध्ययन कर लिया था। फिर भी, पिता-माता दोनों के न होने के कारण, वह हमेशा दुख से भरा रहता था। अब तक, उसकी माँ के घर छोड़ने को चौबीस साल और उसके पिता के लापता होने को बीस साल हो चुके थे।

यह आशा खो देने के बाद कि वे जीवित हैं, क्लेमेंट ने उनके लिए ऐसा शोक मनाया मानो वे मर गए हों। साथ ही, उसने अपनी मृत्यु के बारे में भी सोचा, क्योंकि वह अच्छी तरह जानता था कि कोई भी मर सकता है; लेकिन यह न जानते हुए कि मृत्यु के बाद वह कहाँ जाएगा, और न ही यह कि इस क्षणिक जीवन के अलावा कोई और जीवन है भी या नहीं, वह लगातार रोता रहा और किसी भी सांसारिक सुख या आनंद से सांत्वना पाना स्वीकार नहीं किया। उस समय, क्लेमेंट ने मसीह के संसार में आगमन के बारे में सुनकर, इसके बारे में सच्चाई जानने की खोज शुरू कर दी। ऐसा हुआ कि वह एक बुद्धिमान व्यक्ति से बात करने लगा, जिसने उसे बताया कि परमेश्वर का पुत्र यहूदिया में आया था, और उन सभी को अनंत जीवन प्रदान कर रहा था जो उसे भेजने वाले पिता की इच्छा के अनुसार चल रहे थे। यह सुनकर, क्लेमेंट मसीह और उनकी शिक्षाओं के बारे में और अधिक जानने की एक असाधारण इच्छा से भर गया। इस उद्देश्य के लिए, उसने यहूदिया की यात्रा करने का संकल्प लिया, जहाँ मसीह का सुसमाचार प्रचारित किया जा रहा था। अपना घर और अपनी विशाल संपत्ति पीछे छोड़कर, वह अपने वफादार सेवकों और पर्याप्त मात्रा में सोने के साथ एक जहाज पर सवार हो गया और यहूदिया की भूमि के लिए रवाना हो गया। समुद्र में उठे एक तूफान के कारण, वह हवा के झोंके से अलेक्जेंड्रिया पहुँच गया, जहाँ उसे प्रेरित बरनबास मिला। फिर वह सीज़रिया स्ट्रैटोनिका गया और वहाँ उन्होंने पवित्र प्रेरित पतरस को पाया। उनसे पवित्र बपतिस्मा ग्रहण करने के बाद, वह अन्य शिष्यों के साथ उनका अनुसरण करने लगा, जिनमें उनके दो भाई, जुड़वाँ फाउस्टिनस और फाउस्टिनियानुस भी शामिल थे। लेकिन क्लेमेंट उन्हें पहचान नहीं पाया, और न ही उसके भाई उसे पहचान पाए, क्योंकि जब वे अलग हुए थे तब वे बहुत छोटे थे और एक-दूसरे को याद नहीं कर पाए। सीरिया के लिए रवाना होते समय, पतरस ने फाउस्टिनस और फाउस्टिनियानुस को अपने से पहले भेज दिया, जबकि वह क्लेमेंट को अपने साथ रख गया; वे सभी एक साथ एक जहाज पर चढ़े और रवाना हो गए।

जब वे नाव से जा रहे थे, तो प्रेरित ने क्लेमेंट से उसकी उत्पत्ति के बारे में पूछा। तब क्लेमेंट ने उसे विस्तार से बताया: कि वह किस वंश का था, और कैसे उसकी माँ, एक सपने से प्रेरित होकर, अपने दो छोटे बेटों के साथ रोम चली गई थी; कैसे उसके पिता, चार साल बाद, उन्हें खोजने निकले थे और वापस नहीं आए थे; इस पर उन्होंने यह भी जोड़ा कि बीस साल हो गए थे जब से उन्होंने अपने परिवार के बारे में कुछ सुना था, और क्यों उनका मानना था कि उनके माता-पिता और भाई मर चुके थे। पतरस, उनकी कहानी सुनकर, बहुत भावुक हो गए।

इस बीच, ईश्वर की कृपा से, जहाज़ उसी द्वीप पर लंगर डाल गया जहाँ क्लेमेंट की माँ, मैटफ़िडिया, ठहरी हुई थीं। जब चालक दल के कुछ सदस्य शहर में रोज़मर्रा की ज़रूरतें खरीदने के लिए उतरे, तो पीटर भी किनारे पर उतर गया, जबकि क्लेमेंट जहाज़ पर ही रहा। शहर जाते समय, पीटर ने द्वार पर एक वृद्ध महिला को बैठा हुआ भीख मांगते देखा; वह मैटफिडिया थी, जो अपने हाथों की कमजोरी के कारण अब अपनी मेहनत से अपना भरण-पोषण नहीं कर सकती थी,

और इसलिए वह अपने लिए और एक अन्य वृद्ध महिला के लिए भीख मांगती थी जिसने उसे अपने घर में आश्रय दिया था—वह महिला भी लकवाग्रस्त थी और घर में बीमार पड़ी थी। प्रेरित ने, मैट्रोनिया को वहाँ बैठे हुए देखकर, अपने आत्मा में यह जान लिया कि यह महिला एक परदेशी थी, और उससे उसके स्वदेश के बारे में पूछा। गहरी आह भरते हुए, मैट्रोनिया फूट-फूट कर रो पड़ी और कहा: 'हाय, मेरी दुर्दशा, एक परदेशी, क्योंकि संसार में मुझसे अधिक गरीब या अधिक दीन कोई नहीं है।'

प्रेरित पतरस ने उसकी गहरी उदासी और हार्दिक आँसू देखकर, सावधानी से उससे पूछना शुरू किया कि वह कौन थी और कहाँ से आई थी।

उसकी बातचीत से, उन्हें पता चला कि वह क्लेमेंट की माँ थी, और उन्होंने उसे सांत्वना देते हुए कहा:

'मैं तुम्हारे सबसे छोटे बेटे, क्लेमेंट को जानती हूँ; वह इसी देश में है।'

अपना बेटा का नाम सुनकर, मातृनिया भय और डर से मौत की तरह पीली पड़ गई; लेकिन पतरस ने उसका हाथ पकड़कर उससे जहाज तक अपने पीछे चलने को कहा:

'दुखी मत हो, बूढ़ी महिला,' चलते-चलते प्रेरित ने उससे कहा, 'क्योंकि तुम जल्द ही अपने बेटे के बारे में सब कुछ जान जाओगी।'

जैसे ही वे जहाज़ की ओर बढ़े, क्लेमेंट उनसे मिलने बाहर आया और पीटर के पीछे चलती हुई उस महिला को देखकर हैरान रह गया। लेकिन वह, क्लेमेंट को ध्यान से देखते ही, उसके पिता से मिलने वाले उसके हुलिया से उसे तुरंत पहचान गई, और पीटर से पूछा:

'क्या यह मेरे पुत्र क्लेमेंट नहीं है?'

पतरस ने कहा:

'वही है।'

और मैट्रोनिया ने क्लेमेंट की गर्दन में अपनी बाहें डाल दीं और रोने लगी। लेकिन क्लेमेंट, यह न जानते हुए कि यह महिला कौन थी या वह क्यों रो रही थी, उसे दूर धकेलने लगा। तब पतरस ने उससे कहा: 'उसे दूर मत धकेलो, मेरे बच्चे; यही वह है जिसने तुम्हें जन्म दिया है।'

यह सुनकर क्लेमेंट भावुक हो गया और उसके पैरों पर गिर पड़ा, उसे चूमते हुए रोने लगा। और वे परम आनंद से भर गए, क्योंकि उन्होंने एक-दूसरे को खोज लिया था और पहचान लिया था। पतरस ने उसके लिए परमेश्वर से प्रार्थना की और उसके हाथों को चंगा कर दिया। तब वह प्रेरित से विनती करने लगी कि वह उस वृद्ध महिला को चंगा कर दें जिसके साथ वह रह रही थी। प्रेरित पतरस उसके घर में गए और बूढ़ी स्त्री को चंगा किया; क्लेमेंट ने, अपनी ओर से, उसकी माँ की देखभाल करने के लिए पुरस्कार के रूप में उसे 1,000 ड्रैक्मा[8177] दिए। फिर, अपनी माँ को चंगी हुई बूढ़ी स्त्री के साथ ले जाकर, वह उन्हें जहाज पर ले गया और वे समुद्र यात्रा पर निकल पड़े।

रास्ते में, मैट्रोनिया ने अपने पति फाउस्टस के बारे में अपने बेटे से पूछा और यह जानकर कि वह उसे खोजने के लिए निकला था और बीस साल से उसके बारे में कोई खबर नहीं मिली थी, वह उसके लिए इस तरह सिसक-सिसक कर रोई मानो वह मर गया हो, क्योंकि उसे उसके जीवित होने की कोई उम्मीद नहीं थी। एंटैड्रोस[8178] तक नाव से यात्रा करने के बाद, वे जहाज से उतर गए और अपनी यात्रा ज़मीन के रास्ते जारी रखी। लाओडिसिया[8179] पहुँचने पर, उनका सामना फाउस्टिनस और फाउस्टिनियानस से हुआ, जो उनसे पहले वहाँ पहुँच चुके थे। उन्होंने क्लेमेंट से पूछा: 'यह अजनबी कौन है जो आपके साथ है, साथ ही दूसरी वृद्ध महिला के साथ?'

क्लेमेंट ने उत्तर दिया: 'मेरी माँ, जिसे मैंने एक विदेशी भूमि में पाया था।'

[8177] ड्रैक्मा वज़न की एक प्राचीन ग्रीक इकाई और 21 कोपेक के मूल्य का एक चांदी का सिक्का है।

[8178] एंटैड्रॉस – एशिया माइनर के एक उत्तर-पश्चिमी क्षेत्र, मिसिया में एड्रामटियम की खाड़ी पर एक शहर। इस प्राचीन शहर के खंडहर आज भी मौजूद हैं।

[8179] लाओदिकिया – पश्चिमी एशिया माइनर में प्राचीन फ्रीजिया की राजधानी। लाओदिकिया का चर्च प्रकाशन की पुस्तक में उल्लेखित एशिया माइनर के सात प्रसिद्ध चर्चों में से एक था। आज, केवल एक नीची पहाड़ी पर खंडहर, जो सुनसान गाँव एस्की-गिस्सर के पास है, प्राचीन शहर के स्मारक के रूप में खड़े हैं। चर्च के इतिहास में, लाओदिकिया 365 ईस्वी में वहाँ आयोजित परिषद के लिए जानी जाती है, जिसमें पूजा के क्रम, पादरियों और आम लोगों के नैतिक आचरण, और उस समय के विभिन्न दुराचारों और त्रुटियों के संबंध में विस्तृत नियम निर्धारित किए गए थे।

और उसने उन्हें क्रम से बताना शुरू किया कि उसने अपनी माँ को देखे हुए कितना समय हो गया था और वह जुड़वाँ बच्चों के साथ घर से कैसे चली गई थी।

यह सुनकर, उन्हें एहसास हुआ कि क्लेमेंट उनका भाई था और वह महिला उनकी माँ थी, और वे खुशी के मारे रो पड़े, और बोले: 'तो यह हमारी माँ, मैट्रिडिया हैं, और आप हमारे भाई, क्लेमेंट हैं, क्योंकि हम जुड़वाँ फाउस्टिनस और फाउस्टिनियानुस हैं, जो अपनी माँ के साथ रोम से चले आए थे।'

यह कहकर, उन्होंने एक-दूसरे की गर्दन पर बाहें डाल दीं, जोर-जोर से रोए और स्नेहपूर्वक एक-दूसरे को चूमा। अपनी माँ को अपने बच्चों को सलामत देखकर कितनी खुशी हुई, यह देखकर, और जब उन्होंने एक-दूसरे को बताया कि कैसे ईश्वर की कृपा से वे डूबने से बचे थे, तो उन्होंने ईश्वर की स्तुति की; उनकी एकमात्र दुख यह था कि कोई भी उनके पिता के बारे में कुछ नहीं जानता था। फिर उन्होंने प्रेरित पतरस से अपनी माँ का बपतिस्मा देने के लिए कहना शुरू कर दिया। सुबह-सुबह वे समुद्र के पास आए; एक अलग कमरे में, संत पतरस प्रेरित ने मातिडिया और उसके साथ आई वृद्ध महिला को पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम पर बपतिस्मा दिया, और, उसे और उसके बेटों को अपने घर भेजकर, वे स्वयं एक अलग रास्ते पर चल पड़े।

और वहाँ, रास्ते में, उनकी मुलाकात एक गरिमामय, सफेद दाढ़ी वाले, साधारण कपड़े पहने व्यक्ति से हुई, जो प्रेरित पतरस का इंतजार कर रहा था और उसने उनका सम्मानपूर्वक अभिवादन किया:

'मैं देख सकता हूँ कि आप एक अजनबी हैं और कोई साधारण व्यक्ति नहीं; आपका चेहरा ही दिखाता है कि आप एक बुद्धिमान व्यक्ति हैं: इसलिए मैं आपसे थोड़ी बातचीत करना चाहता हूँ।'

पतरस ने उत्तर दिया:

'बोलिए, महोदय, यदि आप चाहें।'

'मैंने आपको आज पहले तट पर एक सुनसान जगह पर प्रार्थना करते देखा था; तुम्हें बिना देखे एक नज़र देखने के बाद, मैं वहाँ से चला गया और थोड़ी देर के लिए यहीं इंतज़ार करने लगा, यह बताने की इच्छा से कि ईश्वर से प्रार्थना करके तुम व्यर्थ में परिश्रम कर रहे हो, क्योंकि न तो स्वर्ग में कोई ईश्वर है और न ही पृथ्वी पर, और हमारे संबंध में कोई दैवीय व्यवस्था नहीं है, बल्कि इस संसार में सब कुछ केवल संयोग है। इसलिए, ईश्वर से प्रार्थना करने के मोह में न पड़ो और न ही खुद को परेशान करो, क्योंकि उसका अस्तित्व नहीं है।"

संत पतरस ने ये तर्क सुनकर उससे कहा:

'तुम्हें ऐसा क्यों लगता है कि सब कुछ ईश्वर की योजना और प्रबंध के अनुसार नहीं, बल्कि संयोग से होता है, और तुम यह कैसे साबित करोगे कि ईश्वर नहीं है? अगर ईश्वर नहीं है, तो फिर किसने स्वर्गों को बनाया और उन्हें तारों से सजाया? किसने पृथ्वी को बनाया और उसे फूलों से सजाया?'

उस आदमी ने अपने दिल की गहराई से आह भरते हुए कहा:

– 'मैं, सर, खगोल विज्ञान के बारे में थोड़ा जानता हूँ, और मैंने देवताओं की किसी और से अधिक भक्तिपूर्वक सेवा की है; और मैं यह महसूस करने लगा हूँ कि ईश्वर में सारी आशा व्यर्थ है, और कि ईश्वर बिल्कुल भी नहीं है; यदि स्वर्ग में कोई ईश्वर होता, तो वह रोने वालों की आहें सुनता, प्रार्थना करने वालों की प्रार्थनाओं पर ध्यान देता, और दुख से दबे हृदय की पीड़ा पर दया करता। लेकिन चूँकि दुख के समय सांत्वना देने वाला कोई नहीं है, मैं इससे यही निष्कर्ष निकालता हूँ कि कोई ईश्वर नहीं है। अगर कोई ईश्वर होता, तो वह मेरी प्रार्थना और मेरे दुख में मेरे आँसू सुनता; क्योंकि, मेरे स्वामी, बीस साल और उससे भी अधिक समय से मैं बड़े दुख में रहा हूँ, और मैंने सभी देवताओं से कितनी प्रार्थना की है, मैंने उनके लिए कितने बलिदान चढ़ाए हैं, मैंने कितने आँसू और सिसकियाँ बहाई हैं! और देवताओं में से एक ने भी मेरी नहीं सुनी, और मेरी सारी मेहनत व्यर्थ गई है।

इसके बाद, पीटर ने कहा:

'इसीलिए तुम्हारी इतनी देर से नहीं सुनी गई है: क्योंकि तुम एक सच्चे ईश्वर, जिन पर हम विश्वास करते हैं और जिनसे हम प्रार्थना करते हैं, के बजाय कई व्यर्थ और झूठे देवताओं से प्रार्थना कर रहे हो।'

जब वह उस आदमी से बात कर रहा था और ईश्वर के बारे में चर्चा कर रहा था, तो पीटर को एहसास हुआ कि वह फाउस्टस से बात कर रहा था, जो मैट्रिडिया का पति, क्लेमेंट और उसके भाइयों का पिता था, और उसने उससे कहा:

'यदि तुम उस एक सच्चे ईश्वर में विश्वास करना चाहते हो, जिसने स्वर्ग और पृथ्वी की रचना की है, तो अब तुम अपनी पत्नी और बच्चों को सुरक्षित और सलामत देखोगे।'

इस पर उसने उत्तर दिया:

'क्या सचमुच मेरी पत्नी और बच्चे मृतकों में से जीवित नहीं हो उठेंगे? मैंने यह स्वयं तारों से जाना है, और मुझे बुद्धिमान ज्योतिषी अनूबियन से पता है कि मेरी पत्नी और मेरे दो बच्चे दोनों समुद्र में डूब गए थे।'

तब पतरस फाउसटस को अपने घर ले गया; जब वह अंदर गया और मैटफिडिया को देखा, तो वह स्तब्ध रह गया और, हैरानी से उसे घूरता हुआ, चुप हो गया। फिर उसने कहा: 'किस चमत्कार से यह सब हुआ है? मैं अब किसे देख रहा हूँ?' और पास आकर, वह चिल्लाया: 'सचमुच, मेरी प्रिय पत्नी यहाँ हैं!'

तुरंत, अचानक खुशी से अभिभूत होकर, वे दोनों बोल नहीं पाए, इसलिए वे एक-दूसरे से बात नहीं कर सके, क्योंकि मैटफिडिया ने भी अपने पति को पहचान लिया था। जब वह आखिरकार कुछ संभल गई, तो उसने कहा: 'हे मेरे प्रिय फास्टस! यह कैसे हो सकता है कि आप जीवित हैं, जबकि हमने सुना था कि आप मर गए थे?'

तब सभी के लिए अकथनीय आनंद हुआ, और उस आनंद के साथ महान विलाप भी हुआ, क्योंकि पति-पत्नी एक-दूसरे को पहचान गए, और बच्चे अपने माता-पिता को पहचान गए; और एक-दूसरे को गले लगाकर, वे रोए, आनंदित हुए, और परमेश्वर का धन्यवाद किया। और इतने लंबे अलगाव के बाद उनके अप्रत्याशित पुनर्मिलन का साक्षी बनकर, वहाँ मौजूद सभी लोग भावुक हो गए और परमेश्वर का धन्यवाद किया। फावस्टस ने, अपनी ओर से, प्रेरित के चरणों में गिरकर बपतिस्मा देने का अनुरोध किया, क्योंकि वह सच्चे मन से एक ईश्वर में विश्वास करने लगा था; और बपतिस्मा पाकर, उसने आँसुओं के साथ परमेश्वर को धन्यवाद की प्रार्थनाएँ अर्पित कीं। फिर वे सभी वहाँ से अंताकिया के लिए प्रस्थान कर गए।

जब वे वहाँ मसीह में विश्वास सिखा रहे थे, तब अंतीयकिया के राज्यपाल को फावस्टस, उसकी पत्नी और बच्चों, उनकी कुलीन वंशावली और उनके कारनामों के बारे में सब कुछ पता चला, और उसने तुरंत ही सम्राट को सब कुछ सूचित करने के लिए रोम में दूत भेजे। सम्राट ने राज्यपाल को आदेश दिया कि वह फावस्टस और उसके परिवार को यथाशीघ्र, बड़े सम्मान के साथ रोम लाए। जब यह हो गया, तो सम्राट उनकी वापसी पर प्रसन्न हुआ, और जब उसे उनके साथ हुई सभी घटनाओं का पता चला, तो वह लंबे समय तक रोया। उसी दिन उसने उनके सम्मान में एक भोज का आयोजन किया; अगले दिन उसने उन्हें बहुत सारा पैसा, साथ ही पुरुष और महिला दास भी दिए। और सभी द्वारा उनका बहुत सम्मान किया गया।

गहरी भक्ति का जीवन जीते हुए, गरीबों के प्रति दान का अभ्यास करते हुए और अपनी वृद्धावस्था में, अपनी सारी संपत्ति जरूरतमंदों में बाँट देने के बाद, फाउस्टस और मैथिडिया प्रभु के पास चले गए।

जहाँ तक उनके बच्चों का सवाल है, जब पतरस रोम आए, तो उन्होंने स्वयं को प्रेरितीय शिक्षाओं को समर्पित कर दिया; और धन्य क्लेमेंट पतरस के सभी यात्राओं और परिश्रमों में उनके स्थायी साथी थे, और मसीह की शिक्षाओं के एक उत्साही प्रचारक थे। इसीलिए, पतरस ने उसे अपनी सूली पर चढ़ाए जाने से पहले एक बिशप के रूप में नियुक्त किया, जो नीरो के हाथों हुआ था[8180] । प्रेरित पतरस की मृत्यु के बाद, फिर बिशप लिनस और बिशप अनाक्लेटस की मृत्यु के बाद, क्लेमेंट ने रोम में उथल-पुथल और संघर्ष के समय में, मसीह की कलीसिया के जहाज[8181] को बुद्धिमानी से चलाया, जिस पर तब उत्पीड़क हमला कर रहे थे, और गरजते शेरों और दरिंदों भेड़ियों से चारों ओर से घिरे होने के बावजूद, बड़ी मेहनत और धैर्य के साथ मसीह के झुंड की देखभाल की, कठोर उत्पीड़क जो मसीह के विश्वास को निगलने और नष्ट करने की कोशिश कर रहे थे। इतनी तकलीफ में होने पर भी, उन्होंने मानव आत्माओं के उद्धार के लिए बड़ी लगन से परवाह करना कभी बंद नहीं किया, और इस प्रकार उन्होंने न केवल आम लोगों को बल्कि शाही दरबार, कुलीनों और गणमान्य व्यक्तियों को भी मसीह के धर्म में परिवर्तित किया, जिनमें सिसीनस नामक एक गणमान्य व्यक्ति और राजा नेर्वा के परिवार के भी कई लोग शामिल थे[8182] । अपने उपदेश के माध्यम से, संत क्लेमेंट ने एक बार ईस्टर पर, चार सौ चौबीस कुलीन जन्म के लोगों को मसीह के प्रति परिवर्तित किया और उन सभी का बपतिस्मा कराया; जहाँ तक डोमिसीला की बात है, जो उनके भतीजी थीं और प्रमुख रोमन गणमान्य व्यक्ति के पुत्र ऑरेलियन से सगाईशुदा थीं, उन्होंने उन्हें उनकी कुँवारीपन की रक्षा के लिए समर्पित किया। इसके अलावा, उन्होंने रोम को सात लेखकों में विभाजित किया ताकि वे उन शहीदों के दुखों को दर्ज कर सकें जिन्हें तब मसीह के लिए मृत्युदंड दिया जा रहा था।

[8180] 29 जुलाई 67.

[8181] संत क्लेमेंट प्रेरित ने 91 से 100 ईस्वी तक रोम के चर्च का नेतृत्व किया।

[8182] नेर्वा – एक रोमन सम्राट जिसने 96 से 98 ईस्वी तक शासन किया।

जब, उनके उपदेश और परश्रिम, उनके चमत्कारकि कार्यों और सदाचारी जीवन के माध्यम से, मसीह की कलीसयिा बढ़ने लगी, तो ईसाई धर्म के उत्पीड़क, काउंट टॉर्क्वशियिन[8183] ने, मसीह में वश्विास करने के लिए आए अनगनित लोगों की भीड़ को देखकर, जो क्लेमेंट द्वारा शक्षिति थे, कुछ लोगों को क्लेमेंट और ईसाइयों के खलिाफ उठ खड़े होने के लिए उकसाया। लोगों में हड़कंप मच गया, और वद्रिोहयिों ने शहर के एपार्क, मामर्टनिस के पास जाकर चल्लिाना शुरू कर दयिा, 'क्लेमेंट हमारे देवताओं का अपमान करना कब बंद करेगा?' हालाँकि, क्लेमेंट का बचाव करते हुए दूसरों ने कहा: 'इस आदमी ने क्या बुरा कयिा है, या उसने कोई अच्छा काम करने में क्या चूक की है? जो कोई भी बीमारी में उसके पास आता था, वह उसे ठीक कर देता था; जो कोई भी दुख में उसके पास आता था, उसे सांत्वना मलिती थी; उसने कभी कसिी को कोई हानि नहीं पहुँचाई, बल्कि सभी पर कई आशीर्वाद लुटाए।"

हालाँकि, बाकी सभी, शत्रुता की भावना से भरकर, चल्लिाए: 'वह यह सब जादू-टोने से करता है, और वह हमारे देवताओं की पूजा को खत्म कर रहा है। वह ज्यूस को देवता नहीं कहता; वह हमारे संरक्षक हरक्यूलसि को एक अशुद्ध आत्मा कहता है; वह सम्माननीय एफ्रोडाइट को एक वेश्या के सवि कुछ नहीं कहता; वह कहता है कि महान वेस्टा को जला दयिा जाना चाहिए; वह एथेना, आर्टेमसि, हर्मीस, क्रोनस और एरेस का भी अपमान और बदनामी करता है; वह लगातार हमारे सभी देवताओं और उनके मंदरिों की बदनामी और नंदिा करता है। इसलिए, या तो उसे देवताओं को बलदिान चढ़ाने दयिा जाए या दंडति कयिा जाए।'

तब मामेर्तनि के राज्यपाल ने भीड़ के शोर और हंगामे से प्रभावति होकर, संत क्लेमेंट को अपने सामने लाने का आदेश दयिा और उनसे कहने लगा: 'आप कुलीन वंश से हैं, जैसा कि सभी रोमन नागरकि कहते हैं, लेकनि आपको गुमराह कर दयिा गया है, और इसी कारण से वे आपसे सहन नहीं कर सकते या चुप नहीं रह सकते; यह अज्ञात है कि आप कसि देवता की पूजा करते हैं—कोई नया जसिे मसीह कहा जाता है, जो हमारे देवताओं का वरिोधी है। आपको सभी भ्रम और कट्टरता को त्याग देना चाहिए और उन देवताओं की पूजा करनी चाहिए जन्हिें हम नमन करते हैं।'

संत क्लेमेंट ने उत्तर दयिा: 'मैं आपकी बुद्धि से वनिती करता हूँ: मेरी सुनें, न कि उस असभ्य भीड़ के बेतुके शब्दों की जो व्यर्थ में मुझ पर उठ खड़ी होती है; क्योंकि यद्यपि कई कुत्ते हम पर भौंकते हैं, वे हमसे वह नहीं छीन सकते जो हमारा है; क्योंकि हम समझदार और वविेकी लोग हैं, जबकि वे नरिर्थक कुत्ते हैं, जो एक अच्छे उद्देश्य पर व्यर्थ ही भौंक रहे हैं; अशांति और वद्रिोह हमेशा एक वचिारहीन और मूर्ख भीड़ से उत्पन्न हुए हैं। इसलिए, पहले उन्हें चुप रहने की आज्ञा दें, ताकि, जब खामोशी हो जाए, तो एक समझदार व्यक्ति उद्धार के महत्वपूर्ण वषिय पर बात कर सके, ताकि हम सच्चे ईश्वर की खोज की ओर मुड़ सकें, जसिके प्रति हमें वश्विास में नमन करना चाहिए।'

[8184]संत ने ये और भी कई शब्द कहे, और एपार्क को उनमें कोई दोष नहीं मलिा; इसलिए, उसने सम्राट ट्राजन को यह संदेश भेजा कि लोगों ने देवताओं के मामले को लेकर क्लेमेंट के खलिाफ वद्रिोह कर दयिा है, यद्यपि उसके खलिाफ आरोप लगाने के लिए पर्याप्त सबूत नहीं थे। ट्राजन ने एपार्क को जवाब दयिा कि क्लेमेंट को या तो देवताओं को बलदिान देना होगा या उसे चेरसोनेसस के पास पोंटस में एक सुनसान जगह पर नरि्वासति कर दयिा जाएगा[8185] । सम्राट से यह जवाब मलिने के बाद, एपार्क मामर्टनिस को क्लेमेंट पर तरस आ गया और उसने उससे वनिती की कि वह स्वेच्छा से नरि्वासन का चुनाव न करे, बल्कि देवताओं को बलदिान दे – और इस प्रकार नरि्वासन से बच जाए। संत ने एपार्क से कहा कि वह नरि्वासन से नहीं डरते; बल्कि, वह इसे और भी अधकि चाहते थे। क्लेमेंट के शब्दों में, जो ईश्वर द्वारा उन्हें प्रदान की गई कृपा का प्रभाव था, इतनी शक्ति थी कि यहाँ तक कि एपार्क भी अपने दलि की गहराई तक प्रभावति हुआ, रो पड़ा, और कहा: 'ईश्वर, जसिकी आप पूरे दलि से सेवा करते हैं, आपके नरि्वासन में आपकी मदद करें, जसिके लिए आपको दंडति कयिा गया है।'

और, एक जहाज़ और आवश्यक सभी चीज़ें तैयार करने के बाद, उन्होंने उसे आज़ाद कर दयिा।

कई ईसाई संत क्लेमेंट के साथ नरि्वासन की यात्रा पर भी नकिले, इस संकल्प के साथ कि स्वतंत्रता में उनके बनिा रहने की तुलना में नरि्वासन में अपने चरवाहे के साथ रहना बेहतर है।

[8183] रोमनों ने प्रांतीय गवर्नरों के अधकिारयिों और अनुचर को संदर्भति करने के लिए 'कोमाइट्स' (एक लैटनि शब्द) शब्द का उपयोग कयिा।

[8184] ट्राजन – 98 से 117 ईस्वी तक रोमन सम्राट।

[8185] चेर्सोनेसस – ब्लैक सी प्रायद्वीप (अब क्रीमयिा) पर, तौरीडा में एक शहर; यह वर्तमान सेवस्तोपोल के पास स्थति था। यहीं पर रूसी राजकुमार, व्लादमिीर द इक्वल-टू-द-अपोस्टल्स ने ईसाई धर्म अपनाया था।

अपनी कैद की जगह पर पहुँचने पर, संत क्लेमेंट ने वहाँ दो हज़ार से अधिक ईसाइयों को पहाड़ों में पत्थर तोड़ने की सज़ा भुगतते हुए पाया। क्लेमेंट को भी उसी काम में लगा दिया गया। ईसाइयों ने संत क्लेमेंट को देखकर आँसुओं और दुख के साथ उनके पास आकर कहा:

'हमारे लिए प्रार्थना करें, हे पवित्र पिता, कि हम मसीह के वचनों के योग्य बन सकें।'

संत ने उत्तर दिया:

'मैं प्रभु की ऐसी कृपा का अयोग्य हूँ, जिन्होंने मुझे केवल आपके मुकुट में सहभागी होने के योग्य समझा है!'

और उनके साथ काम करते हुए, संत क्लेमेंट ने उन्हें सांत्वना दी और उपयोगी सलाह से उनका मार्गदर्शन किया। यह जानकर कि उन्हें पानी की बहुत कमी थी, क्योंकि उन्हें छह पोप्रीश्ची[8186] की दूरी से उसे अपने कंधों पर लाना पड़ता था, संत क्लेमेंट ने कहा: 'आओ हम अपने प्रभु यीशु मसीह से प्रार्थना करें कि वह अपने अनुयायियों के लिए जीवन के जल का एक सोता खोलें, जैसे उन्होंने मरुभूमि में प्यासे इस्राएल के लिए किया था जब उन्होंने चट्टान पर प्रहार किया और पानी बह निकला; और उनसे यह अनुग्रह प्राप्त करके, हम आनन्दित हों।'

और वे सभी प्रार्थना करने लगे। जब प्रार्थना समाप्त हुई, तो संत क्लेमेंट ने एक मेमने को एक स्थान पर खड़े होकर एक पैर उठाए हुए देखा, मानो वह स्थान बता रहा हो। क्लेमेंट को एहसास हुआ कि यह वही प्रभु थे जो प्रकट हुए थे, जिन्हें कोई और नहीं देख सकता था, सिवाय उनके, और वह उस स्थान पर गए, यह कहते हुए: 'पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम पर, यहाँ खोदो।'

और सभी, इकट्ठा होकर, अपनी कुदालों से खोदने लगे, लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ, क्योंकि वे उस जगह को नहीं ढूंढ सके जहाँ मेमना खड़ा था।

इसके बाद, संत क्लेमेंट ने एक छोटी कुदाल ली और उस जगह खोदना शुरू कर दिया जहाँ मेमने का पैर खड़ा था, और तुरंत ही स्वादिष्ट, शुद्ध पानी का एक झरना फूट पड़ा; और उस झरने से एक पूरी नदी बन गई। तब सभी आनंदित हुए, और संत क्लेमेंट ने कहा: *'नगर की नदियाँ परमेश्वर के नगर को आनंदित करती हैं'* (भजन संहिता 45:5)।

इस चमत्कार की खबर आसपास के पूरे क्षेत्र में फैल गई; और लोग संत की प्रार्थनाओं से अप्रत्याशित और चमत्कारिक रूप से बनी इस नदी को देखने और उनके उपदेश सुनने के लिए बड़ी संख्या में आने लगे। कई लोग मसीह में विश्वास करने लगे और उन्हें संत क्लेमेंट ने पानी में बपतिस्मा दिया। इतने सारे लोग संत के पास आए, और इतने सारे ईसा मसीह की ओर मुड़े, कि हर दिन पाँच सौ या उससे अधिक लोगों का बपतिस्मा हुआ। एक ही गर्मियों में, विश्वासियों की संख्या इतनी बढ़ गई कि पिचहत्तर चर्च बनाए गए, सभी मूर्तियों को तोड़ दिया गया, और देश भर में सभी मूर्तिपूजक पूजा स्थलों को नष्ट कर दिया गया, क्योंकि सभी निवासियों ने ईसाई धर्म अपना लिया था।

जब सम्राट ट्राजन को पता चला कि खेरसोनोस में अनगिनत लोगों ने मसीह में विश्वास कर लिया है, तो उन्होंने तुरंत अफ्फिडियिन नामक एक उच्च अधिकारी को वहाँ भेजा, जिसने वहाँ पहुँचने पर कई मसीहियों को यातनाएँ दीं और कई को मौत की सज़ा दे दी। हालाँकि, यह देखकर कि हर कोई आनंदपूर्वक मसीह के लिए शहादत स्वीकार कर रहा था, उस अधिकारी ने अब लोगों को सताना बंद कर दिया और पूरी ताकत से केवल क्लेमेंट को बलिदान चढ़ाने के लिए मजबूर करने की कोशिश की। लेकिन, जब उन्होंने देखा कि वह अपने विश्वास में अटूट और मसीह में दृढ़ विश्वासी है, तो उन्होंने आदेश दिया कि उसे एक नाव में बिठाकर समुद्र के बीच में ले जाया जाए, और वहाँ उसके गले में एक लंगर बाँधकर समुद्र के सबसे गहरे हिस्से में फेंक दिया जाए और डुबो दिया जाए, ताकि मसीही उसके शरीर को न ढूँढ़ सकें। जब यह सब हो चुका था, तो विश्वासियों तट पर खड़े होकर जोर-जोर से रोने लगे। तब उनके दो सबसे वफादार शिष्य, कोर्नेलियस और थेब्स, ने सभी ईसाइयों से कहा: 'आओ हम सब प्रार्थना करें कि प्रभु हमें शहीद का शरीर दिखाएँ।'

जब लोग प्रार्थना कर रहे थे, तो समुद्र तट से तीन स्टेडियम की दूरी तक पीछे हट गया, और लोग, लाल सागर पर इस्राएलियों की तरह, सूखी जमीन पर पार कर गए और उन्हें एक संगमरमर की गुफा मिली जो ईश्वर के चर्च जैसी दिखती थी, जिसमें शहीद का शरीर पड़ा था; उन्हें उसके पास वह लंगर भी मिला जिससे शहीद क्लेमेंट को डुबोया गया था। जब विश्वासियों ने वहाँ से शहीद के पवित्र शरीर को हटाना चाहा, तो उपर्युक्त शिष्यों को एक दिव्य-दर्शन हुआ कि उनके शरीर को वहीं छोड़ दिया जाए, क्योंकि हर साल, उनकी स्मृति में, समुद्र इसी प्रकार सात दिनों के लिए पीछे हट जाएगा,

---

[8186] पोप्रीश्चे – मूल रूप से, एक लड़ाई का मैदान या अखाड़ा; बाद में, इस शब्द का अर्थ 'स्टेडियम' के समान हो गया, यानी 125 कदमों के बराबर लंबाई की एक इकाई।

जसिसे जो लोग आकर श्रद्धांजलि देना चाहें, वे आ सकें। और ऐसा ही कई वर्षों तक हुआ, ट्राजन के शासनकाल से लेकर ग्रीस के राजा निकिफोरस के शासनकाल तक[8187] । संत की मध्यस्थता से वहाँ कई अन्य चमत्कार भी हुए, जिन्हें प्रभु ने महिमामय बनाया था।

एक दिन, सामान्य समय पर, समुद्र ने गुफा तक पहुँच खोल दी, और बहुत से लोग पवित्र शहीद के अवशेषों की पूजा करने आए। संयोग से, एक बच्चा गुफा में ही छूट गया था, जिसे उसके माता-पिता उसके जाने के समय भूल गए थे। जब समुद्र अपने पूर्व स्तर पर वापस जाने लगा और पहले ही गुफा को ढक चुका था, तो अंदर मौजूद सभी लोग यह डरकर निकलने के लिए दौड़े कि कहीं समुद्र उन्हें भी न निगल ले; और उस अकेले बच्चे के माता-पिता भी यह सोचकर बाहर निकले कि उनका बच्चा तो भीड़ के साथ पहले ही निकल चुका होगा। चारों ओर देखकर और भीड़ में हर जगह उसे खोजने पर, वे उसे नहीं ढूंढ पाए, और गुफा में वापस जाना अब संभव नहीं था, क्योंकि समुद्र ने उसे ढक दिया था; माता-पिता फूट-फूट कर रो पड़े और बड़े रोने और दुख के साथ घर लौट गए। अगले वर्ष, समुद्र फिर से पीछे हट गया, और बच्चे के माता-पिता संत की पूजा करने के लिए फिर से आए। गुफा में प्रवेश करने पर, उन्होंने बच्चे को संत की कब्र के पास जीवित और कुशल पाया। उसे गोद में उठाकर, माता-पिता, अकथनीय आनंद से भरकर, उससे पूछा कि वह कैसे बच गया।

बच्चे ने शहीद की कब्र की ओर इशारा करते हुए कहा, 'इस संत ने मुझे जीवित रखा, मुझे पोषित किया, और समुद्र के सभी भय को मुझसे दूर भगा दिया।'

तब माता-पिता और उत्सव में आए लोगों के बीच बड़ी खुशी हुई, और सभी ने ईश्वर और उनके संत की स्तुति की।

ग्रीस के राजा निकिफोरस के शासनकाल में, संत क्लेमेंट के पर्व के दिन, समुद्र पिछली वर्षों की तरह पीछे नहीं हटा, और यह पचास वर्षों या उससे अधिक समय तक जारी रहा। हालाँकि, जब धन्य जॉर्ज चेरसोनेसोस के बिशप बने, तो उन्हें इस बात का गहरा दुख हुआ कि समुद्र पीछे नहीं हटता था और ईश्वर के इतने महान संत की अवशेष, मानो, पानी में डूबी हुई, छिपी पड़ी थीं।

उनके बिशप के कार्यकाल के दौरान, दो ईसाई शिक्षक, मेथोडियस और कॉन्स्टेंटिन द फिलॉसफर—जिन्हें बाद में सिरिल[8188] के नाम से जाना गया—चेरसोनेस में आए; वे खज़ारों[8189] को उपदेश देने जा रहे थे और, यात्रा के दौरान, उन्होंने संत क्लेमेंट के अवशेषों के बारे में पूछा; यह जानकर कि वे समुद्र में थे, इन दोनों धार्मिक शिक्षकों ने बिशप जॉर्ज से इस आध्यात्मिक खजाने – पवित्र शहीद के अवशेषों – को उजागर करने का आग्रह करना शुरू कर दिया।

[8190]शिक्षकों के आग्रह पर बिशप जॉर्ज कॉन्स्टेंटिनोपल के लिए रवाना हुए और उन्होंने तत्कालीन शासक सम्राट माइकल III[8191] तथा परम पावन पैट्रिआर्क इग्नेशियस[8192] को सब कुछ बता दिया। सम्राट और पैट्रिआर्क ने उनके साथ चुने हुए लोगों और हागिया सोफिया के सभी पुरोहितों को भेजा। चर्सोनेसस पहुँचने पर, बिशप ने सभी लोगों को इकट्ठा किया, और भजनों तथा गायन के साथ वे सभी समुद्र तट की ओर चल पड़े, अपनी इच्छा की पूर्ति की आशा में, लेकिन पानी नहीं बँटा। जब सूरज डूब गया और वे जहाज पर चढ़ गए, अचानक, आधी रात के अंधेरे में, समुद्र एक प्रकाश से जगमगा उठा: पहले एक सिरि दिखाई दिया, और फिर संत क्लेमेंट के सभी अवशेष पानी से बाहर आ गए। पवित्र बिशपों ने उन्हें श्रद्धापूर्वक उठाया, उन्हें जहाज पर रखा और, उन्हें भव्यता से शहर में ले जाकर, चर्च में स्थापित कर दिया। जब पवित्र धर्मविधि शुरू हुई, तो कई चमत्कार हुए: अंधों को दृष्टि प्राप्त हुई, लंगड़ों और सभी प्रकार के बीमार लोग चंगे हो गए, और जिन पर राक्षसों का साया था, वे हमारे प्रभु यीशु मसीह की कृपा से, संत क्लेमेंट की प्रार्थनाओं द्वारा, उनसे मुक्त हो गए, जिनका महिमा युगानुयुग हो। आमीन[8193] .

[8187] बाइज़ेंटाइन सम्राट निकिफ़ोरस ने 802 से 811 तक शासन किया।

[8188] संत मेथोडियस और सिरिल

[8189] खज़ार तुर्की मूल के लोग थे जो कैस्पियन सागर के पास, वोल्गा के निचले इलाकों और सिस्काकासिया क्षेत्र में रहते थे। कुछ मूर्तिपूजक थे, कुछ मुस्लिम थे, और कुछ यहूदी धर्म का पालन करते थे।

[8190] हागिया सोफिया – कॉन्स्टेंटिनोपल का कैथेड्रल।

[8191] बाइज़ेंटाइन सम्राट माइकल तृतीय ने 855 से 867 तक शासन किया।

[8192] संत इग्नाशियस ने 847 से 857 तक कॉन्स्टेंटिनोपल के चर्च का नेतृत्व किया, और फिर, फोटियस के बाद, 867 से 877 तक।

[8193] यह ज्ञात है कि संत सिरिल और मेथोडियस ने संत क्लेमेंट के कुछ अवशेष अपने साथ ले गए और पोप एड्रियन द्वितीय (867) के पोन्तिफिकेट के दौरान उन्हें रोम भेज दिया; फिर भी, संत का शरीर, उनके पूजनीय सिर के साथ, चेरसोनेसोस में तब तक रहा जब तक कि शहर पर रूसी ग्रैंड प्रिंस, संत व्लादिमीर ने कब्जा नहीं कर लिया। खेरसोनोस में पवित्र बपतिस्मा प्राप्त करने के बाद, उन्होंने संत क्लेमेंट के अवशेषों को 'अपने आशीर्वाद के लिए और सभी लोगों के पवित्रीकरण के लिए' अपने साथ ले लिया और उन्हें कीव में पवित्र वर्जिन के चर्च में रख दिया। पवित्र

संत पीटर हायरोमार्टायर, अलेक्जेंड्रिया के आर्चबिशप का जीवन और शहादत

25 नवंबर को स्मरणोत्सव

अलेक्जेंड्रिया के आर्चबिशप संत पीटर को उनके शिशु काल में उसी अलेक्जेंड्रिया नगर के धन्य थियोनास, आर्चबिशप, ने पाला था, और उन्होंने उस समय बिशप की गद्दी संभाली जब दुष्ट रोमन सम्राट डायोक्लेटियन और मैक्सिमियन ने ईसाइयों के खिलाफ भयंकर उत्पीड़न शुरू कर रखा था। उस समय, सभी कालकोठरियाँ मसीह के शहीदों से खचाखच भरी हुई थीं, और उनका रक्त सड़कों, शहरों और आसपास के खेतों को लथपथ कर रहा था; इस भयानक और दुखद कष्ट और दुर्भाग्य के समय में, संत पतरस ने धैर्य और महान परिश्रम से परमेश्वर की कलीसिया का शासन किया। अपने उपदेश और अटूट धैर्य के द्वारा, उन्होंने हतोत्साहित और भयभीत लोगों को सहारा दिया; उन्होंने कई लोगों को धर्मत्याग और विनाश से बचाया, और बड़ी संख्या में विश्वासियों को शहीद के मुकुट तक पहुँचाया। मसीह के लिए निर्वासित, टायर, फिनिसिया और फिलिस्तीन में रहते हुए, संत ने पत्रों के माध्यम से अपने झुंड का समर्थन किया और उन्हें पवित्र आत्मा की शक्ति से मजबूत किया; यह डरते हुए कि कोई भी, यातनाओं से भयभीत होकर, मसीह से भटक न जाए, उन्होंने उनके लिए दिन-रात ईश्वर से प्रार्थना की। एक बार फिर अलेक्जेंड्रिया लौटने पर, पतरस ने कालकोठरी में बंद छह सौ पचास कैदियों की सेवा की, जिनमें से कई वरिष्ठ पादरी और पुरोहित थे; उन सभी को विभिन्न यातनाएँ सहने के बाद मृत्युदंड दिया गया। हालाँकि, पतरस उनकी पीड़ा और सहनशीलता को देखकर आत्मा में आनंदित हुए। अपने झुंड के प्रति अपनी निष्ठावान सेवा के दौरान, अलेक्जेंड्रिया में भेड़ के भेष में एक क्रूर भेड़िया उत्पन्न हुआ – विधर्मी एरियस, जिसने गेहूँ के बीच शापित दैवीय शिक्षा की खरपतवार बोनी शुरू कर दी, यीशु मसीह की दिव्यता की निंदा की और इस प्रकार ऐसी निंदा से परमेश्वर की कलीसिया को हानि पहुँचाई। सच्चे चरवाहे ने अक्सर इस भेड़िये को चुप करा दिया और उसे रोक दिया, उसे फटकार लगाई और पवित्र त्रिमूर्ति की सही स्वीकारोक्ति का उल्लंघन करने से मना किया, जिसे दोषरहित रूप से मसीह की कलीसिया को सौंपा गया था। लेकिन जब एरियस उतना ही सुधारने लायक नहीं रहा और उसकी दुर्भावना सत्य के आगे झुकने से इनकार कर दिया, तो संत पतरस ने उस धर्मनिंदा करने वाले को शाप दिया और उसे एक अयोग्य सदस्य के रूप में चर्च से बहिष्कृत कर दिया। और प्रतिशोधी एरियस, मसीह के झुंड से निकाल दिए जाने के बाद, स्वयं को छिपा बैठा, जैसे अंधकार प्रकाश से छिपता है; क्योंकि, जैसा कि कहा गया है, जो कोई बुराई करता है, वह प्रकाश से घृणा करता है और प्रकाश में नहीं आता, कहीं ऐसा न हो कि उसके दुष्ट कर्मों का पता चल जाए (यूहन्ना 3:20); और अधर्मी इस चौकस चरवाहे के पास आने की हिम्मत नहीं करता, जिसे वह किसी भी चापलूसी या चालाकी भरी बातों से बहका नहीं सका।

कठिन समय के बावजूद, अलेक्जेंड्रिया में मसीह में विश्वास करने वालों की संख्या लगातार बढ़ती गई; क्योंकि जो लोग मोक्ष चाहते थे, उनके लिए मसीह के मार्ग में कोई यातना बाधा नहीं बन सकती थी; कई लोगों ने न केवल अपनी संपत्ति बल्कि अपना जीवन भी दांव पर लगा दिया, और मूर्तियों की पूजा त्यागकर बपतिस्मा लेने के लिए संत पीटर के पास दौड़ पड़े।

धर्मनिरपेक्ष सम्राट मैक्सिमियन, जो पूर्वी प्रांतों पर शासन करता था और निकोमेडिया में रहता था, ने जब यह सुना कि संत पतरस की शिक्षाओं के माध्यम से कई लोग मूर्तिपूजा से ईसा मसीह की ओर मुड़ रहे थे, तो उसने एक ट्रिब्यून को सैनिकों के साथ संत को पकड़ने और उसे बँधकर अपने सामने लाने के लिए भेजा[8194] । जब दूत अलेक्जेंड्रिया पहुँचे, तो उन्होंने सेंट पीटर को चर्च में विश्वासियों की भीड़ के साथ सभी संतों की स्मृति मनाते हुए पाया; उन्होंने उन्हें

शहीद के अवशेष तातार आक्रमण तक वहीं रहे। यह ज्ञात नहीं है कि तातार आक्रमण के दौरान इन अवशेषों का क्या हुआ—क्या उन्हें श्रद्धालुओं द्वारा छिपा दिया गया था या किसी अन्य स्थान पर स्थानांतरित कर दिया गया था। आज, इन अवशेषों के केवल अंश ही मिलते हैं, उदाहरण के लिए सेंट पीटर्सबर्ग में अलेक्जेंडर नेवस्की लावरा के वेदी के एक क्रॉस में।

[8194] सबसे शुरुआती समय से, रोम की आबादी को कई समूहों में विभाजित किया गया था, जिन्हें जनजातियाँ कहा जाता था। कबीलों के नेताओं या बुजुर्गों को ट्राइब्यून के रूप में जाना जाने लगा। समय के साथ, यह उपाधि कई सार्वजनिक अधिकारियों पर लागू होने लगी, लेकिन मुख्य रूप से हमारे कर्नलों के समान सैन्य कमांडरों पर। यहाँ, बेशक, ऐसा ही एक कमांडर अभिप्रेत है।

पकड़ लिया और भारी बेड़ियों में जकड़ दिया। तब लोगों में भारी हलचल मच गई; कई लोग सेंट पीटर के लिए रोए, जबकि अन्य चिल्ला रहे थे: 'तुम हमारे चरवाहे को हमसे क्यों ले जा रहे हो?' और पूरे अलेक्जेंड्रिया के लोग अपने शिक्षक के लिए अपनी जान देने को तैयार होकर एकत्रित हो गए, और सारी जनता राजा और उसके दूतों के विरुद्ध चिल्लाने लगी। लोगों में मची भारी हलचल और हंगामा देखकर, ट्रिब्यून ने आदेश दिया कि संत को चर्च के पास एक कालकोठरी में रखा जाए, और जो कुछ भी हुआ था, उसके बारे में राजा को लिखि भेजा। पत्र पढ़ने पर राजा बहुत क्रोधित हो गया और उसने लिखित रूप में आदेश दिया कि ईसाई शिक्षक पीटर का सिर कलम कर दिया जाए और जो भी विरोध करे उसे तलवार से मार डाला जाए। ट्रिब्यून ने राजा का संदेश पाकर, उसके आदेश को पूरा करने का प्रयास किया और पीटर को सिर कलम करने के लिए बाहर लाने का प्रयत्न किया, लेकिन लोगों की भीड़, जो दिन-रात कालकोठरी के पास जमा थी, अपने पिता को मौत के घाट पर जाने नहीं दे रही थी। पुरुषों और महिलाओं, बूढ़ों और जवानों, भिक्षुओं और भिक्षुणियों की एक अनगिनत भीड़ थी, जो ईश्वर के बिशप के प्रति प्रेम से बँधी हुई थी, और जेल नहीं छोड़ रही थी। जब उन्होंने सशस्त्र सैनिकों को पीटर को ले जाने खातिर जेल की ओर मार्च करते देखा, तो वे सब एक स्वर में चिल्ला उठे: 'अगर तुम्हें अपने राजा का आदेश मिला है, तो पहले हम सबको मार डालो, और फिर हमारे पिता को ले जाओ; हम अपने चरवाहे से मुंह नहीं मोड़ेंगे, और न ही हम अपनी आत्मा के शिक्षक और उपचारक को पीड़ित होने देंगे।'

ट्रिब्यून ने यह सुनकर और भीड़ को देखकर, एक बड़ा खून-खराबा नहीं करना चाहा; फिर भी, राजा के आदेश को पूरा करने के लिए, उसने गुप्त रूप से पतरस का सिर कलम करने की कोशिश की।

जब यह सब हो रहा था, एरियस ने यह जानकर कि जिसे महाधर्माध्यक्ष ने उसे पवित्र, कैथोलिक और प्रेरितिक चर्च से बहिष्कृत किया था, वह एक तहखाने में बेड़ियों में जकड़ा हुआ था और मसीह के लिए उसे मृत्युदंड दिया जाना था, चापलूसी और पाखंडपूर्ण पश्चाताप के साथ उसके पास गया, इस आशा में कि वह उसके उत्तराधिकारी बनकर अलेक्जेंड्रिया का महाधर्माध्यक्ष बनेगा। वह दिखावे के लिए क्षमा माँगने और अपनी विधर्म की पाप से पश्चाताप करने के बहाने आया, और उसने कुछ पुरोहितों—विशेषकर अकिलीज़ और अलेक्जेंडर से—पीटर के समक्ष उसके पक्ष में मध्यस्थता करने का आग्रह किया, ताकि वह उसकी अवहेलनाओं को क्षमा कर दे और उसे चर्च की संगति में पुनर्स्थापित कर दे। ईश्वर, जो मानव हृदय के सभी विचारों को जानता है, अरियस के कपटपूर्ण हृदय से अवगत था; और इसलिए, उस रात धन्य पतरस के समक्ष प्रकट होकर, उसने उस शापित विधर्मी के सभी कपट का खुलासा किया और उन्हें चर्च में प्रवेश न देने का आदेश दिया। सुबह, अचिला और अलेक्जेंडर नामक पुरोहितों के नेतृत्व में कई धर्मनिष्ठ और सम्मानित नागरिक जेल आए और उसके पैरों पर गिरकर पवित्र आर्चबिशप से अरियस को क्षमा करने और उसे उसकी शपथ से मुक्त करने का आग्रह करने लगे। धन्य पतरस, रोते और आहें भरते हुए, उनसे उत्तर दिए: 'प्रिय, आप नहीं जानते कि आप किसके लिए विनती कर रहे हैं – आप उस व्यक्ति के लिए विनती कर रहे हैं जो मसीह की कलीसिया को सता रहा है। आप जानते हैं कि मैं अपनी भेड़ों से प्रेम करता हूँ और नहीं चाहता कि उनमें से कोई भी नाश हो जाए। सबसे बढ़कर, मैं परमेश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि वह सभी को पापों की क्षमा और उद्धार प्रदान करे; मैं केवल एरियस को ही अस्वीकार करता हूँ, क्योंकि उसे स्वयं परमेश्वर ने अस्वीकार कर दिया है, और पवित्र चर्च से निष्कासित किया है, न कि मेरे निर्णय से, बल्कि परमेश्वर के निर्णय से, क्योंकि उसने मनुष्य के सामने नहीं, बल्कि परमेश्वर के सामने पाप किया है, पवित्र त्रिमूर्ति के रहस्य का अपमान किया है, जिसे खेरूब और सेराफ देख भी नहीं सकते और केवल अनवरत गाते हैं: पवित्र, पवित्र, पवित्र हैं सेनाओं के प्रभु, और स्वर्गीय सेनाएँ उद्घोषणा करती हैं: 'तेरा महिमा स्वर्ग और पृथ्वी पर भर जाएँ[8195] । यह निर्लज्ज विधर्मी, अपनी ईश्वर-निन्दा के द्वारा, पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के बीच विभाजन करने का दुस्साहस करता है; उसे कैसे क्षमा किया जा सकता है, जब सारी सृष्टि अपने सृष्टिकर्ता की ओर से उस पर क्रोधित है? 'अतः एरियस इस युग में और आने वाले युग में दोनों में शापित हो।'

जब धन्य पतरस ने यह कहा, तो अरिअस की ओर से विनती कर रहे सभी लोग उनके पैरों पर गिर पड़े और फिर उन्हें परेशान करने की हिम्मत नहीं की। तथापि, उन्होंने पुरोहित अकिलिस और अलेक्जेंडर को एक ओर ले जाकर उनसे कहा: 'मैं एक पापी मनुष्य हूँ, परन्तु मैं जानता हूँ कि प्रभु परमेश्वर मुझे शहीद के मुकुट के लिए बुला रहे हैं, और मरने से पहले, मैं तुमसे, कलीसिया के स्तंभों से, उस परमेश्वर के रहस्य का प्रकटीकरण करूँगा जो प्रभु ने मुझे आज रात प्रकट किया है।' आप, सम्माननीय अकिलिस, मेरे बाद आर्चबिशप के सिंहासन पर आरूढ़ होंगे, और आपके बाद, योग्य पुरोहित

[8195] यह भविष्यवक्ता यशायाह के एक दर्शन का संदर्भ है; यशायाह 6 और अन्यत्र देखें।

अलेक्जेंडर। जहाँ तक अरिस्तु का प्रश्न है, यह न सोचिए कि मैं उसके प्रति अन्यायी हूँ या पाप करने वालों के प्रति कठोर हूँ, क्योंकि किसी और में किया गया पाप, भले ही वह सबसे बड़ा हो, अरिस्तु की दुर्भावना से कम है। जो लोग दुर्बलता से पाप करते हैं, उन्हें क्षमा किया जा सकता है; परन्तु मैं उस शापित मनुष्य को कैसे क्षमा कर सकता हूँ, जिसके विषय में तुम बात करते हो, जबकि उसकी आत्मा कपट और ईश्वरनिन्दा से भरी है? क्योंकि उसके हृदय से परमेश्वर के सर्वशक्तिमान पुत्र के विरुद्ध अपमान की एक बाढ़ बहती है; वह उसे एक प्राणी कहता है, जो स्वयं सभी दृश्य और अदृश्य वस्तुओं का सृष्टिकर्ता है, और जिसे भविष्यवक्ताओं, प्रेरितों और सुसमाचार प्रचारकों ने प्रचार किया। तुम मुझसे अपनी विनती मानकर एरियस को माफ करने के लिए कैसे कह सकते हो, जबकि उसने मेरी सजा और चेतावनी पर ध्यान नहीं दिया है? और अगर मैंने उस पर श्राप भी लगाया है, तो वह मेरी मर्जी से नहीं था, बल्कि मेरे ईश्वर मसीह की इच्छा से था, जो आज ही रात मुझे प्रकट हुए थे। जब मैं प्रार्थना कर रहा था, तो अचानक एक बड़ी रोशनी ने कालकोठरी को प्रकाशित कर दिया, और मैंने अपने प्रभु यीशु मसीह को देखा - एक बारह वर्षीय लड़के के रूप में, जिसका चेहरा सूर्य से भी अधिक चमक रहा था, इसलिए मैं उसकी अनुपम महिमा को निहार नहीं सका। उसने सफेद रंग की एक चोगा पहन रखी थी, जो ऊपर से नीचे तक फटी हुई थी; वह उसे दोनों हाथों से अपनी छाती पर दबाए हुए था, जिससे वह अपनी नग्नता को ढक रहा था। जब मैंने यह सब देखा, तो मैं भय और कांपने से भर गया, और मैंने भय से उसकी प्रार्थना करते हुए कहा: 'हे सृष्टिकर्ता, किसने आपकी चोगा फाड़ दी है?' प्रभु ने उत्तर दिया: 'पागल एरियस ने इसे फाड़ दिया है, क्योंकि उसने मुझसे उन लोगों को अलग कर दिया है जिन्हें मैंने अपने लहू से मोचन दिया है। सावधान रहो और उसे कलीसिया की संगति में प्रवेश न करने दो: वह मुझ और मेरी प्रजा के विरुद्ध कपटी और शत्रुतापूर्ण योजनाएँ बना रहा है। देखो, वे उसकी ओर से तुमसे यह प्रार्थना करना चाहते हैं कि तुम उसे क्षमा कर दो; परन्तु उनकी न सुनना, और भेड़िये को भेड़ के भेष में झुंड में प्रवेश न करने दो। अचिलीज़ और अलेक्जेंडर को, जो तुम्हारे बाद बिशप बनेंगे, आज्ञा दो कि वे उसे स्वीकार न करें, बल्कि सबके सामने उस पर श्राप डालें।' 'देखो, मैंने तुम्हें वह बता दिया है जो मुझे आज्ञा दी गई थी; परन्तु यदि तुम आज्ञा का पालन नहीं करते और जो आज्ञा तुम्हें दी गई है उसे पूरा नहीं करते, तो मैं इस मामले में निर्दोष रहूँगा।'

यह कहने के बाद, वे घुटने टेककर प्रार्थना करने लगे, और सभी ने उनके साथ प्रार्थना की। जब उन्होंने प्रार्थना करना समाप्त कर लिया, तो उन्होंने कहा, 'भाइयों, मेरे लिए प्रार्थना करो।' उपस्थित लोगों ने प्रार्थना करने के बाद उत्तर दिया, 'आमीन।' जहाँ तक अकीलिस और अलेक्जेंडर की बात है, उन्होंने उसके हाथ चूमे और रोए, क्योंकि उसने उनसे कहा था कि वे उसे फिर कभी नहीं देखेंगे। और बुज़ुर्गों ने लोगों को धन्य पतरस द्वारा एरियस के बारे में कहे गए सभी वचन सुनाए, और यह भी कि उन्होंने उन्हें एरियस को चर्च की संगति में स्वीकार न करने की आज्ञा दी थी, एक भेड़िये और परमेश्वर के पुत्र के शत्रु के रूप में।

तब संत पतरस ने, यह देखकर कि उत्साह से जल रहे ईसाई लोग राजा के दूतों को उसे कालकोठरी से मृत्यु के लिए बाहर ले जाने की अनुमति नहीं देंगे, और यह डरते हुए कि लोगों और राजा के दूतों के बीच टकराव से बड़ा रक्तपात हो सकता है, और इसके अलावा, यह इच्छा रखते हुए कि वह शीघ्र ही शरीर से मुक्त होकर प्रभु के पास जाएँ, उन्होंने लोगों को सुरक्षित रखने और अपने इच्छित अंत को शीघ्र करने के लिए, अपने आपको गुप्त रूप से अपने यातना देने वालों के हवाले करने का निश्चय किया। उन्होंने लोगों को बिना बताए, अपने पास नियुक्त एक भरोसेमंद सेवक को ट्रिब्यून के पास भेजा, यह कहते हुए: 'यदि आप राजा मैक्सिमियिन को प्रसन्न करना चाहते हैं, तो रात में गुप्त रूप से कालकोठरी में आएं और दीवार तोड़कर मुझे ले जाएं और राजा की आज्ञा का पालन करें।'

और ऐसा ही हुआ: रात हो गई, और मसीह के झुंड के पवित्र चरवाहे को बंद किए गए कालकोठरी के द्वार पर एक बड़ी भीड़ इकट्ठा हो गई, जिसने किसी को भी उसके पास आने नहीं दिया। ट्रिब्यून सैनिकों के साथ आया और पीछे से दीवार में एक ऐसा छेद कर दिया, जिससे केवल एक व्यक्ति ही गुजर सके। यह एक सर्दियों की, तेज़ हवा वाली रात थी, और किसी भी ईसाई ने दीवार टूटने की आवाज़ नहीं सुनी। संत पतरस ने, क्रॉस का चिह्न बनाकर, कहा: 'सभी लोगों के नाश हो जाने से एक व्यक्ति का मरना बेहतर है' – और दीवार में बने दरार से कालकोठरी से बाहर निकल आए, ताकि श्रद्धालुओं में से किसी को भी इसकी जानकारी न हो।

जब संत अपनी मृत्यु की ओर बढ़े तो ट्रिब्यून और उसके सैनिक संत के साहस को देखकर चकित रह गए; उन्होंने उन्हें पकड़ लिया और उस स्थान पर ले गए जहाँ पवित्र प्रेरित मार्क ने शहादत दी थी, और वहाँ उन्होंने उनका सिर कलम कर दिया।

संत मार्क की कब्र के पास एक युवती, एक संन्यासिनी रहती थी; जिसे रात संत पीटर का सिर कलम किया गया था, जब वह ईश्वर से प्रार्थना कर रही थी, तब उसने स्वर्ग से एक आवाज सुनी जो कह रही थी: 'पीटर प्रेरितों की शुरुआत हैं, पीटर अलेक्जेंड्रिया के शहीदों का अंत हैं'[8196] .

जैसे ही सुबह हुई, सभी लोगों को जब यह पता चला कि उनके चरवाहे को चुपके से जेल से बाहर ले जाया गया और मरकुस की कब्र पर उसका सिर कलम कर दिया गया, तो वे रोते हुए उसके पवित्र शरीर के पास दौड़ पड़े और उसे उठाकर चर्च में ले गए। वहाँ, उन्होंने उसका सम्मानजनक सिर उसके शरीर पर रख दिया और उसे सिंहासन पर, यानी सम्मान की जगह पर, इस आधार पर बिठा दिया: अपने जीवनकाल में, अपने संपूर्ण पादरीय कार्यकाल के दौरान, यह पवित्र बिशप कभी भी सम्मान के स्थान पर नहीं बैठे, लेकिन जब समय आता था, तो वे केवल सीढ़ियों के नीचे ही बैठते थे और कभी भी सीढ़ियों पर नहीं चढ़ते थे; इस कारण से लोगों और उनके पुरोहितों को अक्सर ठेस पहुँचती थी, और वे उनसे सम्मान के स्थान पर बैठने के लिए कहते थे, लेकिन वे कभी भी मान नहीं गए। एक बार, दिव्य अनुष्ठान के बाद, सभी पुरोहितों को बुलाकर, उन्होंने कहा: 'क्या आप जानते हैं कि मैं अपने सम्मान के स्थान पर क्यों नहीं बैठता और उसकी सीढ़ियों पर क्यों नहीं चढ़ता? क्योंकि जब मैं वेदी के पास जाता हूँ, तो मैं उस पर एक स्वर्गीय प्रकाश देखता हूँ, और, मानो, एक दिव्य शक्ति वहाँ निवास करती है। मुझ पर एक भय का भाव हावी हो जाता है, और मैं वहाँ बैठने की हिम्मत नहीं करता, क्योंकि मैं खुद को इसके लायक नहीं समझता, लेकिन मैं वेदी के पैर में बैठता हूँ, और तब भी डर के साथ। मैं आपको यह इसलिए बता रहा हूँ ताकि आप अब मुझ पर ज़ोर न डालें।'

इसी आधार पर, उनकी मृत्यु के बाद, उनके लोगों ने उन्हें, मृत अवस्था में, ऊँचे स्थान पर रख दिया, और सभी चिल्ला उठे: 'हमारे लिए प्रार्थना करें, हे ईश्वर के पवित्र सेवक!'

तब उन्होंने पवित्र त्रिमूर्ति की महिमा करते हुए, उन्हें सम्मान के साथ दफनाया:

पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा, एक ईश्वर; महिमा और आराधना हमसे उन्हीं को मिले, अब और सदा और युगानुयुग। आमीन।

सभी पवित्र धर्मगुरुओं के लिए सामान्य ट्रॉपारियन, स्वर 4:

हे ईश्वर, हमारे पिता, जो अपनी नम्रता में सदैव हमारे साथ कार्य करते हैं, हमसे अपनी दया न रोकें: परन्तु उनकी प्रार्थनाओं के द्वारा, हमारे जीवन को शान्ति में मार्गदर्शन करें।

कॉन्टाकियन, स्वर 4:

अडिग कलीसिया और दैवीय समाधियाँ, दैवीय धर्मपरायणता के वास्तव में दृढ़ स्तंभ, सर्व-स्तुत्य क्लेमेंट और पतरस, अपनी प्रार्थनाओं द्वारा हम सभी की रक्षा करें।

[8196] यह वर्ष 311 में हुआ था। प्रसिद्ध चर्च इतिहासकार यूसेबियस, केसरिया के बिशप, जो अलेक्जेंड्रिया के संत पीटर के समकालीन थे, ने बाद वाले का वर्णन 'पवित्रता और पवित्र कर्तव्यों के पालन दोनों में बिशपों की पवित्र शोभा' के रूप में किया है। उनके आह्वान पर, अलेक्जेंड्रिया के पूरे विश्वासी जनसमूह को शहीद के मुकुट से विभूषित किया गया। कुछ लोगों की कमजोरी, जो अपने यातनाओं की क्रूरता को सहन नहीं कर सके, ने उन्हें 306 में पश्चाताप के नियम जारी करने के लिए प्रेरित किया, जिन्हें प्राचीन काल से सार्वभौमिक चर्च के नियमों में शामिल किया गया है, जो ईसाई प्रेम से परिपूर्ण हैं, और पवित्र धर्मग्रंथ की शिक्षाओं पर आधारित हैं। ऐसा करते हुए, उन्होंने सबसे बढ़कर गिर गए लोगों को चर्च की गोद में वापस लाने का प्रयास किया, उन्हें उनके पतन की परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए श्रेणियों में वर्गीकृत किया, सभी को पश्चाताप के लिए बुलाया, और केवल एक ही अपराध को अक्षम्य घोषित किया - पश्चाताप न करना। इसके अलावा, ईस्टर पर उनका प्रबंध अच्छी तरह से जाना जाता है, जैसे कि उनके ग्रंथ *दिव्यता पर* से उद्धरण, जिनमें से ईश्वर के पुत्र के अवतार से संबंधित उत्कृष्ट अंशों को तीसरे (एफ़िसुस) और चौथे (कालसेडोनियन) सार्वभौमिक परिषदों, साथ ही उनका प्रबंध 'उद्धारकर्ता के आगमन पर' और दार्शनिक तथा धर्मशास्त्रीय प्रकृति के कई अन्य कार्यों के लिए जाना जाता है।

आदरणीय पीटर मौन का स्मरणोत्सव

25 नवंबर को स्मरणोत्सव

हमारे पवित्र पिता पतरस का जन्म पोंटस में धर्मपरायण माता-पिता के यहाँ हुआ था, जिनके साथ वह केवल सात वर्ष रहा। उसने अपने जीवन का शेष भाग तपस्या में बिताया, पहले गलातिया में; फिर, आध्यात्मिक पूर्णता की खोज में, वह फिलिस्तीन गया, जहाँ उसने स्वयं को प्रार्थना के लिए समर्पित कर दिया, और बाद में अंतीयक में बस गया। एक खलिहान में खुद को बंद करके, उन्होंने अपनी आत्मा की परवाह करते हुए अपना समय अखंड प्रार्थना में लगाया। उन्होंने रोटी के सिवा कुछ नहीं खाया और पानी के सिवा कुछ नहीं पिया, और वह भी हर दो या तीन दिनों में थोड़ी मात्रा में ही। उन पर दुष्टात्माओं का वश नहीं चलता था। इस प्रकार, संत पतरस ने डेनियल नामक एक व्यक्ति को एक दानव से मुक्त कराया; चंगा होने के बाद, और संत पतरस के मार्गदर्शन और शिक्षा का अनुसरण करते हुए, वह उनके जीवन के तरीके का अनुकरण करने वाला बन गया। संत पतरस ने अंधों की आँखें खोल दीं और विभिन्न बीमारियों को ठीक किया। उन्होंने अपनी शिक्षाएँ लिखित या मौखिक रूप से दीं। अपने पवित्र जीवन के माध्यम से, वह पूरे अंतीयक और उसके आसपास के क्षेत्रों में प्रसिद्ध हो गए। नब्बे वर्ष तक जीवित रहने के बाद, कई सद्गुणों और मौन के कार्यों से सुशोभित, संत लगभग 429 ईस्वी में शांतिपूर्वक प्रभु के पास चले गए[8197] ।

9 दिसंबर

26 नवंबर (पुराना कैलेंडर)

हमारे पूजनीय पिता अलपियिस द स्टाइलाइट का जीवन

26 नवंबर को स्मरणोत्सव

अलपियिस, मसीह के एक सेवक, पफ्लागोनिया के एड्रियिनोपोलिस शहर के मूल निवासी थे[8198] । प्रभु ने उन्हें उनके जन्म से पहले ही अपनी सेवा के लिए चुन लिया था। एक रात, अपने पुत्र के जन्म से ठीक पहले, उनकी माँ को निम्नलिखित दर्शन हुआ। उन्हें ऐसा प्रतीत हुआ कि वे अपनी बाहों में एक अत्यंत सुंदर मेमना पकड़े हुए थीं, जिसके सींगों पर दो जलती हुई मोमबत्तियाँ थीं। जब अलीपियिस के जन्म का समय आया, तो कमरा एक दिव्य प्रकाश से भर गया: यह अलीपियिस के भविष्य के धार्मिक जीवन के प्रकाश का संकेत था, क्योंकि वह दुनिया के लिए एक प्रकाश बनने के लिए नियत था। अलीपीयस के जन्म के बाद, उसकी माँ को नींद आ गई, और नींद में उन्हें एक बार फिर निम्नलिखित दृष्टि हुई: शहर के सभी निवासी उनके कमरे में उमड़ रहे थे और शिशु को घेरे हुए भजन और पवित्र गीत गा रहे थे। उसकी माँ को ये दृष्टियाँ याद आईं, उन्होंने उन्हें अपने दिल में संजो लिया और अपने बेटे के भविष्य के भाग्य पर विचार किया।

कुछ समय बाद, उनके पति का निधन हो गया, और, पुनर्विवाह करने की कोई इच्छा न होने के कारण, उन्होंने अपनी विधिवावस्था उपवास और प्रार्थना में बिताई, अपने जीवन की पवित्रता के द्वारा परमेश्वर को प्रसन्न करते हुए और अपने पुत्र के साथ, अपनी सारी आशा अनाथों और विधिवाओं के सच्चे पिता में रखकर।

अपने पुत्र को पाल-पोसकर परमेश्वर की सेवा के लिए समर्पित करने के बाद, उसने प्राचीन अन्ना की तरह, जो शमूएल की माता थी (1 शमूएल 1:24–28), उसे परमेश्वर के मंदिर में ले जाकर एद्रियिनोपोलिस के बिशप, धन्य थियोडोर के हवाले कर दिया। आत्मा द्वारा उस युवक पर ईश्वर की कृपा को भांपते हुए, बिशप को उससे बहुत स्नेह हुआ और उन्होंने उसे पवित्र शास्त्रों का अध्ययन कराना आरंभ किया। जब वह वयस्क हुआ, तो अलपियिस ने ज्ञान और बुद्धि में अपने समवयस्कों को पीछे छोड़ दिया; अपने उत्तम आचरण और सद्गुणों के द्वारा उसने ईश्वर और मनुष्यों दोनों का प्रेम अर्जित किया। उसकी आत्मा परमेश्वर के भय, नम्रता और कोमलता से परिपूर्ण थी; और अपनी बुद्धि से उसने, मानो, बुजुर्गों की बुद्धि का प्रदर्शन किया, और इस बात का अधिकारी था कि *'बुद्धि मनुष्यों के लिए सफेद बाल है, और*

[8197] संत पीटर द साइलेंट का पर्व दिवस 1 फरवरी को भी मनाया जाता है।

[8198] पाफ्लागोनिया – उत्तरी एशिया माइनर में रोमन साम्राज्य का एक प्रांत, जिसकी राजधानी गंग्रा थी।

निर्दोष जीवन वृद्धावस्था है (ज्ञान 4:9)। इन गुणों के कारण, उन्हें चर्च का कोषाध्यक्ष नियुक्त किया गया और बाद में एक डिकन के रूप में अभिषिक्त किया गया, और इस पद पर उन्होंने ईश्वर की निर्दोष सेवा की।

कुछ समय बाद, अलीपियस ने एकांत जीवन की लालसा की, ताकि वह चुपचाप, अकेले, अधिक उत्साह के साथ परमेश्वर की सेवा कर सके और परमेश्वर के अनवरत मनन में आनंदित हो सके। उसने अपने हृदय की इस इच्छा को अपनी धर्मी माता को बताया, जो भविष्यवक्ता अन्ना की तरह[8199] कभी चर्च से विमुख नहीं हुईं और उपवास तथा प्रार्थना के द्वारा दिन-रात ईश्वर की सेवा करती रहीं; उन्होंने अपने सारे सम्पत्ति पहले ही गरीबों में बाँट दी थी और मसीह से व्रतबद्ध होकर, एक डिकनेस के रूप में अभिषिक्त हुई थीं। संत अलीपियस ने अपनी मंशा का भरोसा प्रभु की इसी धर्मपरायण सेविका, अपनी ही माँ को किया:

उसने उससे कहा, 'मैं पूर्व की ओर जाना चाहता हूँ, क्योंकि मैंने सुना है कि वहाँ, रेगिस्तानों में, कई पवित्र पिता मौन में रहते हैं; मैं उनके बीच बस जाऊँगा और, उनके ईश्वर भक्तिपूर्ण जीवन का पालन करते हुए, ईश्वर की सहायता से, उनके सदाचारी जीवन का अनुकरण करने का प्रयास करूँगा।' और आप, माँ, मेरी प्रार्थना करें, कि प्रभु अपनी पवित्र इच्छानुसार मेरे मार्ग का मार्गदर्शन करें और मेरा यह प्रयास उन्हें प्रसन्न करे।

अपने बेटे से बिछड़ने से बिल्कुल भी दुखी हुए बिना, उसकी माँ ने स्वर्ग की ओर अपने हाथ उठाए और ईश्वर से प्रार्थना करने के बाद, उसे आशीर्वाद दिया और उसे शांति से विदा किया। अपनी माँ के अलावा किसी को बताए बिना, संत अलीपिअस अपने पैतृक नगर एड्रियानोपल से चले गए और एक दिव्य लालसा से जलते हुए, अपनी यात्रा पर निकल पड़े, ठीक वैसे ही जैसे एक हिरण पानी के झरने के लिए तरसता है। उनके प्रस्थान की खबर ने बिशप थियोडोर, पुरोहित वर्ग और आम जनता को गहराई से दुखी कर दिया, जिन्होंने उनमें एक ऐसे अच्छे सह-नागरिक को खो दिया था, जिसने अपने सदाचारी, दैवीय जीवन के उदाहरण से ईश्वर की कलीसिया को सुशोभित किया था और उसके कई भक्त बच्चों के लिए बहुत लाभदायक रहे थे। बिशप ने तुरंत अपने सेवकों को संत की तलाश में दूर-दूर तक भेजा; कुछ ही समय बाद, उन्हें यूकैटा[8200] में पवित्र शहीद थियोडोर के स्मृति दिवस पर मिला। बड़ी कठिनाई से, कभी विनती और कभी धमकी देकर, वे उसे उसके स्वदेश वापस लाने में सफल हुए; क्योंकि ईश्वर की इच्छा यह नहीं थी कि पाफलैगोनिया को ऐसे प्रकाशस्तंभ से वंचित किया जाए, जिसके द्वारा कई लोगों को पाप के अंधकार से निकालकर ईश्वरीय जीवन के प्रकाश में बुलाया जाना था। घर लौटने पर, संत अलीपियस अपनी असफल यात्रा और अधूरी इच्छा पर गहराई से दुखी हुए। लेकिन परमेश्वर, जो सभी सांत्वना का स्रोत है, ने उन्हें एक दिव्य दर्शन से सांत्वना दी। एक अद्भुत पुरुष—या यूँ कहें कि परमेश्वर का एक स्वर्गदूत—एक दर्शन में उनके सामने प्रकट हुआ और कहा:

'अलिपियस, अपनी प्रिय यात्रा से लौटने पर शोक मत करो, बल्कि यह निश्चित रूप से जान लो कि एक ईश्वर-प्रेमी व्यक्ति द्वारा एक धार्मिक और ईश्वर-प्रसन्न जीवन के लिए चुनी गई हर जगह पवित्र होती है।'

इस दर्शन से सांत्वना पाकर, अलीपियस ने दुख करना छोड़ दिया और ईश्वर की लगन से सेवा करते हुए अपना संन्यासी जीवन जारी रखा। हालाँकि, किसी सुनसान जगह पर चले जाने की इच्छा उसे छोड़ नहीं पाई। इसलिए, वह अक्सर अपना घर छोड़कर आसपास के पहाड़ों, खेतों और जंगलों में भटकता रहता था, ध्यान के लिए एक उपयुक्त स्थान की तलाश में। एक दिन शहर के दक्षिण में स्थित एक पहाड़ पर चढ़ते हुए, उसे वहाँ शहर के शोर और हलचल से बहुत दूर, एक ऊँचा और मनोरम स्थान मिला। उसे वह जगह पसंद आ गई और, खुदाई के औजार लाकर, उसने वहाँ खुद के लिए एक कुआँ खोदा। ऐसा करते समय, उसने अपनी कुदाल से काम करने की तुलना में अपने होठों से ईश्वर से विनम्रतापूर्वक प्रार्थना करके ज़्यादा पानी निकाला। यह काम पूरा करने के बाद, संत अलीपियस बिशप के पास गए और वहाँ बसने तथा एक चर्च बनाने की अनुमति माँगी। हालाँकि बिशप ने उन्हें यह इच्छा पूरी करने से नहीं रोका, लेकिन उन्होंने गुप्त रूप से नौकरों को भेजा कि वे बड़े पत्थरों से झरने को बंद कर दें और उसे मिट्टी से ढक दें: वह नहीं चाहते थे कि वह धन्य व्यक्ति उस स्थान पर बस जाए, क्योंकि वह पहाड़ बहुत ऊँचा था और संत से मिलने आने वाले किसी भी व्यक्ति के लिए लगभग दुर्गम था, और इसके अलावा वह शहर से दूर स्थित था; बिशप चाहते थे कि अलीपियस शहर के करीब और अधिक सुविधाजनक स्थान पर बस जाएँ। अपना कुआं भरा हुआ पाकर, उस धन्य व्यक्ति ने उस पहाड़ को छोड़ दिया और शहर के आसपास दूसरी जगह तलाशने लगा।

[8199] संत अन्ना भविष्यवक्ता का पर्व दिवस 3 फरवरी को मनाया जाता है।

[8200] यूकाइट – उत्तरी एशिया माइनर का एक शहर, जिसे अब मेरिविन के नाम से जाना जाता है।

शहर के ठीक बाहर एक सुनसान जगह थी जहाँ, प्राचीन काल में, मूर्तिपूजक यूनानियों ने अपने मृतकों को दफनाया था। उस सुनसान जगह पर अनगिनत अशुद्ध आत्माएँ रहती थीं; परिणामस्वरूप, हर कोई उस जगह से डरता था और राक्षसों द्वारा पैदा की गई दहशत के कारण कोई भी वहाँ से नहीं गुजर सकता था। यह देखकर कि हर कोई इस रेगिस्तान से बचता था, धन्य अलीपियस वहाँ एक कब्र में बस गए[8201] ; कब्र के ऊपर एक पत्थर का स्तंभ था, और स्तंभ पर एक मूर्ति खड़ी थी। उस मूर्ति को मिट्टी के बर्तन की तरह चकनाचूर करते हुए, पूजनीय पिता ने उसकी जगह एक पवित्र क्रूस स्थापित किया। इस प्रकार, राक्षसों के आतंक या हमलों के प्रति तनिक भी भय न रखते हुए, उन्होंने वहाँ रहने लगे, और क्रूस के हथियार तथा अपनी प्रार्थनाओं के बाणों से दुष्ट शक्तियों को अपने से दूर भगाते रहे। एक बार, सोते समय, पुरोहित के वस्त्रों में लिपटे दो सम्मानित पुरुष संत अलीपियस को एक दर्शन में दिखाई दिए और उनसे कहा:

'हे ईश्वर के मनुष्य, आपने हमें यहाँ इतना लंबा इंतज़ार क्यों कराया? यदि आप वही अलीपियस हैं जिन्हें ईश्वर ने इस स्थान को पवित्र करने और यहाँ ईश्वर की स्तुति बढ़ाने के लिए नियत किया है, तो उस कार्य को बिना किसी देरी के आरंभ करें जिसके लिए आपको बुलाया गया है।'

जागने पर, वे आदरणीय पुरोहित उन पुरुषों के शब्दों से चकित हो गए, जिन्हें उन्होंने देखा था, और सोचने लगे कि वे कौन थे और ईश्वर की स्तुति को बढ़ाने के लिए उन्हें इस स्थान पर क्या करना है। कुछ ही समय बाद, एड्रियानोपल के बिशप थियोडोर को किसी कारणवश सम्राट के पास यात्रा करनी पड़ी, और संत अलीपियस को एक पुरोहित के रूप में उनका साथ देना था। अपनी इच्छा के विरुद्ध, और केवल बिशप के आदेश का पालन करते हुए, वह यात्रा पर निकल पड़ा और उसे चाल्सेडोन तक साथ ले गया, जहाँ बिशप का इरादा कॉन्स्टेंटिनोपल जाने के लिए जहाज पर चढ़ने का था।

इस बीच, अलीपियस समुद्र के किनारे स्थित एक चर्च में गया और वहाँ प्रार्थना करने के बाद, झपकी ले गया। और फिर एक कन्या, जो सूर्य के समान सुंदर थी, उसे एक दर्शन में दिखाई दी और बोली:

'अलीपियस, जल्दी उठो!'

उसकी सुंदरता से चकित होकर, अलीपियस ने उससे पूछा:

'आप कौन हैं, महोदया, और आप मुझे इतनी जल्दी उठने के लिए क्यों कह रही हैं?'

उसने उत्तर दिया, 'मैं यूफेमिया हूँ, मसीह की दासी और एक शहीद। उठो, और यदि तुम चाहो, तो चलो हम तुम्हारे स्वदेश चलते हैं! ईश्वर की इच्छा से, मैं तुम्हारी साथी और सहायक बनूँगी।'

जब पवित्र शहीद ने ये शब्द कहे, तो अलीपियस जाग उठा और उसने अपने सामने किसी को नहीं देखा, फिर भी उसका हृदय आध्यात्मिक आनंद से भर गया। उसे एहसास हुआ कि ईश्वर चाहते थे कि वह मौन के जीवन में लौट आए। इसलिए, बिशप से विदा लेकर, वह पवित्र महा-शहीद यूफेमिया की अदृश्य सहायता और प्रार्थनाओं के साथ अपने देश लौट आया, जिनकी अद्भुत छवि और मधुर संवाद को वह हर समय अपने हृदय में रखता था, और आत्मा में आनंदित होता था।

एड्रियिनोपल में अपने शांत मरुभूमि आश्रम में पहुँचने पर, उन्होंने उस स्थान पर संत यूफेमिया के नाम पर एक चर्च बनाने का संकल्प लिया। उसके पास इसके लिए आवश्यक धन की कमी थी, क्योंकि, अपनी सारी संपत्ति दान कर देने और हमारे लिए गरीब हो गए प्रभु का अनुसरण करने के बाद, उसके पास एक भिखारी की तरह न तो सोना था, न चांदी, और न ही उसकी कमर में तांबा भी था। तब उसने अपने साथियों और पड़ोसियों से मदद की विनती की। उनकी इच्छा के बारे में जानकर, उन्होंने उत्सुकता से उनके लिए वह सब कुछ लाया जो उन्हें चाहिए था, और जल्द ही, मूर्तिपूजक कब्रों के बीच, पवित्र शहीद यूफेमिया को समर्पित एक चर्च का निर्माण हुआ। जब नींव खोदी गई थी, तो उपरोक्त दोनों व्यक्ति, पुरोहित के वस्त्र पहने हुए, संत एलियस को एक बार फिर सपने में दिखाई दिए। उनमें से एक के हाथ में धूपदान था और उसने नींव में धूप दी, जिससे यह संकेत मिला कि वहाँ एक महान चर्च बनने वाला था, जबकि दूसरा गा रहा था:

'इस स्थान के लिए होसन्ना!'

यह ज्ञात नहीं है कि ये लोग कौन थे - लेकिन कुछ समय बाद, उन दो लोगों के अपक्षीय और सुगंधित अवशेष, जो संत अलीपियस को दो बार एक दर्शन में दिखाई दिए थे, वहाँ पाए गए। उनके आदेश पर, इन पवित्र अवशेषों को उनके द्वारा निर्मित चर्च में रखा गया।

[8201] उस समय, कब्रें आमतौर पर पहाड़ों की गुफाएं होती थीं—कभी-कभी प्राकृतिक, कभी-कभी खोदी हुई या कृत्रिम रूप से बनाई गई—जिनमें मृतकों के शरीरों को विशेष कफ़न या चादरों में लपेटकर सुलाया जाता था।

चर्च के अभिषिक्ति होने से पहले ही, राक्षसों की सेनाओं ने यह देखकर कि संत अलीपियस के प्रयासों से उनके निवास के बीच में संतों का एक बस्ती बन रही थी, और यह कि ठीक उसी स्थान पर जहाँ उन्होंने पहले सभी में भय और आतंक भर रखा था, वहाँ ईश्वर की कृपा प्रकट होने लगी थी; एक बड़े चीख और चीख-पुकार के साथ, वे नव-निर्मित चर्च और संत की कोठरी पर टूट पड़े, भवन को उसकी नींव तक गिराने और उस संत को डरा-धमका कर वहाँ से भगा देने का प्रयास करते हुए। अपने क्रोध में, राक्षस विभिन्न आवाज़ों में चिल्लाए, जैसे क्रोधित जानवर या क्रोधित योद्धा; लेकिन मसीह का सिपाही, , प्रार्थना में खड़ा रहा, उसे एक अजेय हथियार के रूप में धारण कर, और तुरंत राक्षसों की भ्रामक शक्ति को परास्त कर दिया, ताकि राक्षस अपमानित होकर, हवा से उड़ती धूल की तरह भाग गए।

जब चर्च का अभिषेक हो गया, तो लोग परमेश्वर की महिमा करने और संत की शिक्षाओं से उपदेश ग्रहण करने के लिए शहर से वहाँ आने लगे। तब अलीपियस, शत्रु के विरुद्ध स्वयं को और भी अधिक दृढ़ता से सशस्त्र करके, संत सिमियन, जो पहले स्टाइलाइट थे, की तरह एक स्तंभ पर चढ़ गया और मानो एक पहरेदार की तरह खड़ा हो गया, जो दूर से आगे बढ़ती हुई दानवों की सेनाओं को देखता और दिन-रात बहादुरी से उनसे लड़ता था। हालाँकि राक्षस हमेशा उससे हार जाते थे, फिर भी उन्होंने संत पर अपने निर्लज्ज हमले बंद नहीं किए।

एक रात, दुष्ट आत्माओं ने अलीपियस पर पत्थर फेंकना शुरू कर दिया, जिससे उसे गंभीर घाव लगे। पत्थरों के प्रहारों को सहते हुए, संत ने दुष्ट आत्माओं से कहा:

'तुम मुझसे क्या चाहते हो, हे मानवद्वेषी और विनाशकारी राक्षसों? तुम व्यर्थ में ही ईश्वर के सेवकों के विरुद्ध उत्तेजित हो और दुष्टतापूर्वक विद्रोह कर रहे हो। ये पत्थर जो तुम मुझ पर फेंकते हो, वे मसीह के सामने दूसरे आगमन के दिन तुम्हारी निर्लज्ज धृष्टता और दुष्टता की गवाही देंगे। जान लो कि मैं तुम्हारे पत्थर फेंकने पर कोई ध्यान नहीं देता और इसे एक बच्चे के खेल से अधिक कुछ नहीं मानता। देखो, मैं अपने सिर के ऊपर आश्रय के लिए रखी गई हल्की तख्तियाँ हटा रहा हूँ, ताकि मैं अधिक आराम से प्रहार सह सकूँ और अपने प्रभु के लिए वही सहन करूँ जो पवित्र प्रथम शहीद स्तेफन ने सहा था। तुमने उसे यहूदियों के हाथों मार डाला, जिनके साथ तुम अग्निमय गहन्ना में अपना भाग पाओगे।

ये शब्द सुनकर और यह समझकर कि वह अजेय पीड़ित ईश्वर के लिए कुछ भी सहने को तैयार था, दुष्टात्माएँ उस स्थान से चारों दिशाओं में बिखर गईं। यह बात उस रात कुछ राहगीरों ने सुनी, जिन्होंने दुष्टात्माओं को विभिन्न रूपों में वहाँ से भागते हुए भी देखा, जो जोर-जोर से रोते और चिल्लाते हुए कह रहे थे:

'अलपियिस ने हमें हमारे निवास से भगा दिया है! हम कहाँ जाएँ? हमारे लिए कहीं कोई जगह नहीं है!'

तथापि, उस पूज्य ने अपने सिर से स्तंभ पर लगी हल्की छतरी को हटा दिया और वहाँ खड़े हो गए, जिनका एकमात्र आश्रय आकाश था, और उन्होंने बहादुरी से ठंड और गर्मी, बारिश और ओले, बर्फ और पाले को सहन किया। और वे ऐसे स्वैच्छिक शहीद कम समय के लिए नहीं, बल्कि 53 वर्षों तक रहे, अपने स्तंभ पर इस प्रकार पीड़ा सहते रहे मानो उन्हें सूली पर चढ़ा दिया गया हो। और इस दौरान, लोगों की भीड़—पुरुष और महिलाएँ, जवान और बूढ़े—उनकी शिक्षाओं को सुनने और अपनी बीमारियों से ठीक होने के लिए उनके पास उमड़ती थी। चूँकि उनमें से कई लोग ठीक उनके बगल में बस गए, संत ने दो मठों की स्थापना का आदेश दिया, एक पुरुषों के लिए और एक महिलाओं के लिए, एक स्तंभ के एक तरफ और दूसरा दूसरी तरफ। वे स्वयं बीच में स्तंभ पर खड़े रहे, अपनी शिक्षा और अपने दैवीय जीवन के उदाहरण से दोनों मठों को ज्ञान प्रदान करते हुए, और अपनी प्रार्थनाओं से उनकी रक्षा करते हुए। अलपियिस ने उन्हें मठवासी जीवन के नियम और कानून दिए, और उन्हें राक्षसों की चालाकियों से सावधानीपूर्वक खुद की रक्षा करने का आदेश दिया; इसके अलावा, उन्होंने विशेष रूप से महिलाओं को पुरुषों की उपस्थिति में कभी भी दिखाई न देने का निर्देश दिया।

धन्य अलीपियस की माता अपनी बेटी और उसकी बहन के साथ कन्वेंट में रहती थीं, मैरी, और एड्रियानोपल की अन्य कुलीन महिलाएँ, जिनमें कुछ यूफेमिया और यूवुला भी शामिल थीं, जिन्होंने स्वर्गदूतों के समान रूप धारण करने और अपने जीवन के माध्यम से स्वयं स्वर्गदूतों के समान बनने के लिए, अपनी सभी संपत्तियाँ, संतान, रिश्तेदार और मित्र, तथा इस संसार के सभी व्यर्थता और सुखों को त्याग दिया था।

आदरणीय की माता का पद डीकोनेस का था और, यद्यपि वह एक मठवासी जीवन जीती थीं, वह मठवासी संकल्प नहीं लेना चाहती थीं,

वे कहा करती थीं, 'एक डीकोनेस होना या एक नन होना, दोनों एक ही बात है।'

उसका बेटा बार-बार उससे मठ का वेश धारण करने का आग्रह करता रहा, लेकिन उसने उसकी बात पर ध्यान नहीं दिया, जब तक कि उसे एक रात्रि-दर्शन में इसी संबंध में एक प्रकटवाणी प्राप्त नहीं हुई। तब उसने स्वयं अपने बेटे

से एक नन के रूप में उसके सरि मुंडवाने के लिए कहा। अपने दर्शन में, उसने शानदार कक्ष देखे, जिनके भीतर से ईश्वर की स्तुति में मधुर गायन की ध्वनि आ रही थी। जब वह प्रवेश करना चाहती थी, तो कक्षों के प्रवेश द्वार पर खड़े एक गौरवशाली और तेजस्वी पुरुष ने उसका रास्ता रोक लिया और कहा:

'तुम यहाँ प्रवेश नहीं कर सकतीं, क्योंकि यहाँ प्रभु की दासियाँ, जिन्होंने संन्यासी जीवन में उनकी सेवा की है, आनंद मना रही हैं। तुमने तो संन्यासी वेश नहीं धारण किया है; अत; तुम यहाँ प्रवेश करके उनके आनंद में भाग नहीं ले सकतीं।'

इन शब्दों ने संत अलीपियस की माँ को गहराई से लज्जित कर दिया, और, जागने पर, उन्होंने अपने बेटे से विनती करना शुरू कर दिया कि उन्हें एक नन के रूप में मुंडन कराया जाए। अपने मुंडन के बाद, उन्होंने अपने पिछले प्रयासों में नए कार्य जोड़ते हुए, अपनी मेहनत दोगुनी कर दी।

भिक्षु जीवन में कई और वर्ष बिताने के बाद, उन्होंने पृथ्वी पर प्रभु को प्रसन्न कर, प्रभु के पास गमन किया। जहाँ तक उनके पुत्र, हमारे पूजनीय पिता अलीपियस का प्रश्न है, वे परमेश्वर को इतने प्रिय थे कि अपने जीवनकाल में ही वे स्वर्गीय प्रकाश से प्रकाशित हुए: कई अवसरों पर उनके सिर के ऊपर एक अग्नि स्तंभ प्रकट हुआ, जो बादलों तक पहुँचता और उनके चारों ओर के पूरे क्षेत्र को प्रकाशित कर देता था। यह घटना अक्सर होती थी, कभी-कभी दिन में, कभी-कभी रात में, हालांकि ज़्यादातर रात में; और जब गरज और बिजली होती थी, तो संत के ऊपर यह स्वर्गीय प्रकाश उस पत्थर के स्तंभ से भी ऊँचा दिखाई देता था जिस पर वह खड़े थे।

पवित्र जीवन जीने वाले कई श्रद्धालुओं को इसकी एक झलक देखने का सौभाग्य मिला; अन्य लोग, जिन्होंने दूर से इस प्रकाश को देखा, उन्हें लगा कि संत का स्तंभ वास्तविक, ठोस आग से जल रहा है। जहाँ तक योग्य माने गए लोगों की बात है, वे स्वर्गीय महिमा के इस अकथनीय संकेत को स्पष्ट रूप से देख सकते थे: इस प्रकार ईश्वर ने अपने प्रिय सेवक को महिमामय बनाया।

और संत ने मसीह की कृपा से कई चमत्कार किए: उन्होंने बीमारों को ठीक किया, लोगों से भूत-प्रेत निकाले, और भविष्य की भविष्यवाणी की। अपनी मृत्यु से चौदह साल पहले, उनके पैरों को एक गंभीर बीमारी हो गई थी, इसलिए उस पूरे समय वह खड़े नहीं हो सकते थे और अपने निधन के क्षण तक एक तरफ लेटे रहते थे। जब संत के शिष्य उन्हें दूसरी ओर पलटना चाहते थे, तो वे उन्हें ऐसा करने की अनुमति नहीं देते थे, बल्कि एक दूसरे यॉब की तरह सब कुछ सहन करते थे, और परमेश्वर का धन्यवाद करते थे, जिनके पास वे आनंद के साथ गए[8202] । और उनके निधन के बाद, उनके पवित्र अवशेषों के माध्यम से कई रोगियों को चंगा किया गया, हमारे परमेश्वर मसीह की महिमा के लिए, जो पिता और पवित्र आत्मा के साथ युगानुयुग महिमामय हैं। आमीन।

ट्रोपारियन, स्वर 1:

आप धैर्य के स्तंभ, उत्साही अग्रदूत थे, अपने कष्टों में अय्यूब के समान, अपनी परीक्षाओं में यूसुफ के समान, और देह में रहते हुए तपस्या का जीवन जीते हुए, हमारे पिता अलीपियस; हमारे परमेश्वर मसीह से प्रार्थना करें कि हमारी आत्माएँ बच जाएँ।

कॉन्टाकियन, स्वर 8:

सद्गुणों के स्रोत और उपवास करने वालों के पोषण के रूप में, कलीसिया आज आपका महिमामंडन करती है और आपके बारे में गीत गाती है, अलपियिस: आपकी प्रार्थनाओं के द्वारा, उन लोगों को प्रदान करें जो प्रेम से आपका सम्मान करते हैं, आपका पराक्रम और संघर्ष, और घातक पापों से मुक्ति, जैसे आपके नाम वाले को मिली।

[8202] सम्माननीय अलीपियस का निधन सम्राट हेराक्लियस (610–641) के शासनकाल के दौरान पाफ्लागोनिया में एड्रियानोपल के पास हुआ। उनका पवित्र सिर वर्तमान में माउंट अथोस पर कुट्लुमुश मठ में रखा गया है।

आदरणीय जेम्स तपस्वी की स्मृति

26 नवंबर को स्मरणोत्सव

हमारे पूजनीय पिता जेम्स ने पहाड़ पर परिश्रम किया, उनके पास न तो बिस्तर था, न कोई कोठरी, और न ही मौसम से बचने के लिए कोई आवरण था। जब वह सभी लोगों से अलग हो गए थे, तो उन्हें आंतों की एक गंभीर बीमारी हो गई। फिर भी, जब भी कोई उनके पास आता था, तो वह अपनी तीव्र पीड़ा के बावजूद बाहर निकलते और आए हुए लोगों को धार्मिकता में उपदेश देते थे। वे लोहे की जंजीरों और उनके ऊपर एक बाल-कमीज़ पहनते थे। उनका भोजन उबली हुई दाल था, जिसे वे शाम को खाते थे। इस प्रकार के श्रम और कष्टों के माध्यम से, उन्हें दिव्य अनुग्रह का ऐसा वरदान मिला कि वे मृतकों को जीवित कर सकते थे। एक बार, एक मृत बालक के पिता उनके पास आए और रोते हुए संत से कहा:

'हे ईश्वर के सेवक, मैं जानता हूँ कि आपके लिए सब कुछ संभव है, यदि आप प्रार्थना करने के इच्छुक हों।'

संत जेम्स ने पिता के आँसू देखकर घुटने टेक दिए और ईश्वर से प्रार्थना कर, मृतक लड़के को जीवित कर दिया, जिसे उन्होंने फिर उसके पिता को लौटा दिया। पूजनीय संत ने और भी कई अद्भुत चमत्कार किए।

संत जेम्स ने राक्षसों से कई प्रलोभनों का सामना किया और केवल प्रार्थना के द्वारा ही उन्हें भगाया। एक व्यक्ति सिप्ताह में दो बार दूर से संत के लिए पानी लाया करता था। शैतान, संत को प्यास से मार डालने की सोचकर, स्वयं को संत के समान रूप में बदलकर रास्ते में पानी ले जा रहे व्यक्ति से मिलने लगा; वह उससे पानी छीन लेता और उसे वापस लौटने के लिए मजबूर कर देता। हालाँकि, एक बार इस व्यक्ति ने अपने विरोधी को पता लगे बिना, पवित्र संत के पास पानी पहुँचाने में सफलता हासिल कर ली। संत ने उसे और उसके लाए हुए पानी को देखकर कहा:

'बेटा, तुमने इतने लंबे समय से मेरे लिए पानी क्यों नहीं लाया, जिससे मैं प्यास से बहुत कष्ट उठा रहा हूँ?'

उसने उत्तर दिया, 'पिताजी, मैं हमेशा नियत दिन और नियत समय पर पानी लाया हूँ। लेकिन रास्ते में कोई मुझसे मिलता था और मुझे इस जगह तक पहुँचने से रोक देता था।'

संत ने कहा, 'अब से, अगर कोई तुमसे मिलता है और तुम्हें आगे जाने से रोकता है, तो इस जगह पर पहुँचने तक उन्हें पात्र मत देना।'

इस तपस्या का अभ्यास करके, वह एक महान चमत्कार करने वाले बन गए, और प्रभु के पास आनंदपूर्वक चले गए[8203] ।

कीव में महान शहीद सेंट जॉर्ज के चर्च के अभिषेक का स्मरणोत्सव।

26 नवंबर को स्मरणोत्सव

रूसी भूमि के धन्य और सदा-स्मरणीय राजकुमार, संत व्लादिमीर के समकक्ष राजकुमार यारोस्लाव के पुत्र, ने महान शहीद जॉर्ज[8204] के सम्मान में एक चर्च का निर्माण करना चाहा, यानी उनके संरक्षक देवदूत के नाम पर, क्योंकि यारोस्लाव को उनके पवित्र बपतिस्मा में जॉर्ज नाम मिला था। उन्होंने इस चर्च के लिए सेंट सोफिया कैथेड्रल से बहुत दूर नहीं, विशेष रूप से इसके पश्चिम में, गोल्डन गेट की ओर एक स्थान चुना।

जब इस चर्च का निर्माण शुरू हुआ, तो मजदूर बहुत कम थे।

यह देखकर, यारोस्लाव ने त्यून[8205] को बुलाया और उससे पूछा:

'ईश्वर के घर में इतने कम मजदूर क्यों हैं?'

ट्यून ने उत्तर दिया:

'चूंकि यह शासक का मामला है (अर्थात् यह गिरिजाघर राजकुमार के अपने खर्च पर बनाया जा रहा है), लोग डरते हैं कि उन्हें अपने श्रम का वेतन नहीं मिलेगा।'

[8203] संत जेम्स तपस्वी 5वीं शताब्दी में सीरिया के साइरस के पास एक तपस्वी के रूप में रहते थे। ऐसा माना जाता है कि उनकी मृत्यु 457 में हुई थी।

[8204] सेंट जॉर्ज चर्च के कोई अवशेष आज तक नहीं बचे हैं।

[8205] ट्यून – राजकुमार द्वारा नियुक्त एक प्रशासक, एक निम्न-श्रेणी का न्यायाधीश; हालाँकि, यहाँ यह राजकुमार के किसी निर्माण परियोजना पर एक फोरमैन को संदर्भित करता है।

तब राजकुमार ने अपने खजाने को सुनहरे द्वारों की मेहराबों के नीचे से गुज़रवाया और बाज़ार की चौक में लोगों को घोषणा की कि हर कोई अपने श्रम के लिए राजकुमार से प्रतिदिन एक नोगाट[8206] प्राप्त कर सकता है। बहुत सारे मजदूर आ गए, काम और भी सफलतापूर्वक आगे बढ़ा, और चर्च जल्द ही पूरा हो गया।

इसका अभिषेक 26 नवंबर 1051 को मेट्रोपॉलिटन हिलारियन[8207] द्वारा किया गया था। राजकुमार ने आदेश दिया कि अभिषेक का दिन हर साल पूरे रूस में महान शहीद सेंट जॉर्ज[8208] के सम्मान में मनाया जाए।

ट्रोपारियन, स्वर 4:

आज पृथ्वी के छोर दिव्य चमत्कारों से परिपूर्ण होकर आपको धन्यवाद देते हैं, और पृथ्वी आपके रक्त से सिंचित होकर आनंदित है: और मसीह के नाम पर स्थित कीव नगर के लोग, आपकी दिव्य चर्च के अभिषेक पर आनंद से भर गए हैं, हे कष्ट-सहिष्णु जॉर्ज, पवित्र आत्मा के चुने हुए पात्र, मसीह के सेवक: अपने पवित्र मंदिर में आने वालों के लिए विश्वास और विनती के साथ प्रार्थना करो, कि वे अपने पापों से शुद्ध हो जाएँ, कि संसार में शांति स्थापित हो, और हमारी आत्माएँ उद्धार पाएँ।

कॉन्टाकियन, स्वर 2:

आओ हम मसीह के दिव्य और मुकुटधारी महान शहीद, जॉर्ज की स्तुति करें, जिन्होंने अपने शत्रुओं पर विजय प्राप्त की, जब हम इस अभिषिक्त चर्च में विश्वास के साथ एकत्रित होते हैं; जिन्हें परमेश्वर ने अपनी महिमा के लिए बनाया, और जो संतों में अकेले विश्राम करते हैं।

10 दिसंबर

27 नवंबर (पुराना संस्करण)

संत जेम्स फारसी का कष्टकथा

27 नवंबर को स्मरणोत्सव

पवित्र शहीद जेम्स का जन्म ईरान में ईसाई माता-पिता के यहाँ हुआ था, जिन्होंने उन्हें धर्मपरायणता से पाला। एक ईसाई महिला से विवाह करने के बाद, वह धन-संपत्ति और सम्मान में रहते थे, क्योंकि उन्हें ईरानी राजा इज़दिगर्द और उनके उत्तराधिकारी वहरामन[8209] का संरक्षण प्राप्त था, जिन्होंने उन्हें अपने महल का प्रबंधक नियुक्त किया था। फ़ारसी राजाओं की कृपा प्राप्त करने के बाद, वह सांसारिक सम्मान का दीवाना हो गया, ईसाई धर्म से भटक गया और राजा के साथ मिलकर मूर्तियों की बलि चढ़ाने और उनकी पूजा करने लगा। यह जानने पर, उसकी माँ और पत्नी ने उसे एक पत्र भेजा जिसमें उन्होंने उससे इन शब्दों में संबोधित किया:

– हे दीन प्राणी, तूने स्वर्ग के राजा, परमेश्वर को मानव महिमा के लिए क्यों त्याग दिया? एक क्षणिक राजा को खुश करने की कोशिश करके, तूने स्वयं को अनंत जीवन से अलग कर लिया है। नश्वर की सेवा करके, तू अमर से मुंह मोड़

[8206] नोगाटा – पुरानी रूसी सिक्के का एक प्रकार, जो आधे четвертак, यानी 12.5 कोपेक के बराबर होता था।

[8207] हिलारियन – रूसी मूल के रस' के पहले मेट्रोपॉलिटन। उन्हें स्वयं राजकुमार और बिशपों की परिषद द्वारा चुना गया था और उनके तपस्वी जीवन और शिक्षा के लिए मेट्रोपॉलिटन का पद देकर सम्मानित किया गया; उन्होंने 1051 से 1054 तक रूसी चर्च का नेतृत्व किया। उन्होंने *द वर्ड ऑन लॉ एंड ग्रेस* और *द कन्फेशन ऑफ फेथ* लिखे, और उनके अन्य शिक्षाप्रद पत्र और उपदेश भी संरक्षित हैं।

[8208] संत जॉर्ज का यह ही पर्व दिवस 26 नवंबर को, जैसा कि आज भी है, ग्रीस में भी मनाया जाता था, जो इस संत के सम्मान में एक ग्रीक चर्च के अभिषेक का प्रतीक भी था।

[8209] इसडियिगरद प्रथम ने 399 से 420 तक शासन किया; उनके पुत्र वराक्रान ने 420 से 438 तक शासन किया।

गया है। तुम्हें सत्य के बजाय झूठ को चुना है, क्योंकि मसीह के विश्वास को त्यागकर, तुम शैतान के जाल में फँस गए हो। एक नश्वर राजा की आज्ञा मानकर, तुम जीवितों और मृतकों के न्यायी का तिरस्कार कर चुके हो, और, मानवीय प्रेम की खोज में, तुमने स्वयं को परमेश्वर के प्रेम के अयोग्य बना लिया है और स्वर्गीय आशीर्वादों से वंचित हो गए हो। हम आपके लिए रोते और विलाप करते हैं, क्योंकि एक समय प्रकाश के पुत्र रहे आप, अब अंधकार और गेहन्ना के पुत्र बन गए हैं। यह जान लें: यदि आप शैतान के भ्रम से नहीं मुड़ते हैं, तो आपका हमसे कोई मेलजोल नहीं होगा, क्योंकि हम आपको मूर्ति-पूजक के रूप में देखना भी नहीं चाहते। और हम आँसुओं के साथ आपसे विनती करते हैं: मसीह की ओर लौट आइए, ताकि आप परमेश्वर के क्रोध से बच सकें। हमारी विनती तुरंत मानिए और देरी न कीजिए, कहीं देर न हो जाए। और जब परमेश्वर का क्रोध आप पर, राजा और उसके मंत्रियों के साथ, आ पड़ेगा, तब पीछे हटने का कोई मार्ग नहीं होगा, और आप आग की गेहन्ना में खुद को पाकर बहुत रोएँगे।

याकूब की माँ और पत्नी का यह पत्र उसे तब मिला जब वह राजा के साथ शहर से बाहर था। पत्र पढ़कर याकूब भावुक हो गया और उसने सोचा:

'यदि मेरी माँ और पत्नी ने भी मसीह को अस्वीकार करने के कारण मुझसे अपना नाता तोड़ लिया है और मुझे देखना भी नहीं चाहतीं, तो आने वाले युग में मेरा क्या होगा, जब परमेश्वर जीवितों और मृतकों का न्याय करने आएगा और प्रत्येक व्यक्ति को उनके कर्मों के अनुसार पुरस्कृत करेगा?'

और पत्र को फिर से ध्यान से पढ़कर, वह जोर-जोर से रोया और अपने पाप पर पश्चाताप करने लगा। फिर उसने अपने आप से कहा:

'मैं यह करूँगा, ताकि मैं पूरी तरह से नष्ट न हो जाऊँ। मैं परमेश्वर की दया के द्वार पर तब तक लगातार दस्तक देता रहूँगा जब तक कि वह मेरे लिए नहीं खुल जाता। और मुझे विश्वास है कि वह खुल जाएगा, क्योंकि परमेश्वर अनुग्रहकारी और दयालु है: वह पापी की मृत्यु नहीं चाहता, बल्कि *'यह चाहता है कि पापी अपने मार्ग से लौट आए और जीवित रहे'* (यहे. 33:11)।

जब उसने ये शब्द कड़वी रोदन के साथ कहे, तो कुछ विधर्मी, यह जानकर कि वह एक ईसाई था, जाकर इस बात की सूचना राजा वहरान को दे दी। राजा ने जेम्स को बुलाया और उससे कहा:

'हमें पूरा सच बताओ—क्या तुम एक नासरी हो?'

याकूब ने उत्तर दिया:

'हाँ, मैं एक नासरी हूँ।'

'तो, क्या आप एक मगस हैं?' राजा ने फिर पूछा।

'नहीं, मैं एक मगस नहीं हूँ,' जेम्स ने कहा, 'बल्कि एक ईसाई हूँ।'

तब राजा ने कहा:

'तुम कृतघ्न आदमी! क्या तुमने मुझसे और मेरे पिता से कई उपहार नहीं पाए, और क्या तुमने हमारा सम्मान नहीं भोगा?'

याकूब ने उत्तर दिया:

'तुम्हारे पिता अब कहाँ हैं? उनका शरीर ताबूत में सड़ रहा है, और उनकी आत्मा को नरक में डाल दिया गया है।'

संत ने उत्तर दिया, 'धर्मी लोगों के लिए मृत्यु एक विश्राम है, लेकिन आपके लिए, अविश्वासियों और पापियों के लिए, यह अनंत यातना की शुरुआत है।'

तब राजा ने अपने सलाहकारों और मंत्रियों को बुलाया और उनसे परामर्श करना शुरू किया कि जेम्स पर क्या यातनाएँ दी जाएँ। अन्य पारसियों के दिलों में डर पैदा करने के लिए, ताकि वे भी जेम्स की तरह अपने धर्म को न त्यागें, उसने संत के लिए यह सज़ा सोची: उसने आदेश दिया कि उसके शरीर के हर अंग को अलग-अलग काटकर कुचल दिया जाए। और इस प्रकार, राजा की आज्ञा पर, जल्लादों ने जेम्स को पकड़ लिया और उसे उसके शरीर के अंगों की संख्या के अनुसार टुकड़े-टुकड़े करने के लिए मृत्युदंड के स्थान पर ले गए। संत जेम्स के पीछे मृत्युदंड के स्थान पर कई लोग गए जो उन्हें जानते थे, जिनमें काफी सैनिक और गणमान्य व्यक्ति शामिल थे; वे सभी संत के यातनाओं को देखने के लिए वहाँ गए थे।

फांसी के स्थान पर पहुंचने पर, संत ने अपने जल्लादों से थोड़ी देर प्रतीक्षा करने का अनुरोध किया जब तक कि वह प्रार्थना कर लें। फिर, स्वर्ग की ओर अपनी आँखें उठाकर, उन्होंने इस प्रकार प्रार्थना करना शुरू किया।

'हे मेरे प्रभु परमेश्वर! मुझे सुनें, अपने सेवक को; स्वर्ग की ऊँचाइयों से मेरी ओर देखें और इस घड़ी मुझे शक्ति और साहस दें, ताकि मैं अपने सामने आने वाले कष्टों को सह सकूँ और अपने पाप का प्रायश्चित अपने ही रक्त से कर सकूँ, क्योंकि मैं आपसे, मेरे सृष्टिकर्ता और प्रभु से, मुँह मोड़ गया हूँ। अब मैं इस पर शोक करता हूँ और अपने ईश्वर, आप की ओर मुड़ता हूँ, आपके पवित्र नाम का अंगीकार करते हुए, और अपनी आत्मा आपको सौंपता हूँ। परन्तु हे प्रभु, मेरी पीड़ा में मेरी सहायता करें, ताकि मेरे शत्रु आपकी सामर्थ्य देखकर लज्जित हों, *'क्योंकि हे प्रभु, आपने मेरी सहायता की और मुझे सांत्वना दी है'* (भजन संहिता 85:17)।

जब संत इस प्रकार प्रार्थना कर रहे थे, जल्लाद उनके पास आए और उन्हें नग्न करके उनके हाथ-पैर फैला दिए, और कहने लगे:

'अब तुम क्या करोगे, जेम्स? तुम्हारे लिए कोई दया नहीं है; तुम्हारे शरीर को टुकड़ों में फाड़ने का आदेश दिया गया है: हमें तुम्हारी उंगलियाँ और पैरों की उंगलियाँ काटनी हैं और तुम्हारे पूरे शरीर को गर्दन से एड़ी तक चीरना है, और यह सब करने के बाद हम तुम्हारा सिर भी काट देंगे।' सोचो कि तुम्हारे लिए सबसे अच्छा क्या है – राजा की इच्छा के आगे झुकना और सुरक्षित व स्वस्थ रहना, या क्रूर यातनाओं के बीच मरना?

उसके कुछ मित्रों ने भी रोते हुए उससे कहा:

'तुम अपनी आत्मा को व्यर्थ में क्यों नष्ट कर रहे हो? अपनी ही दया करो, और अपनी जवानी बर्बाद मत करो; राजा की आज्ञा मानो, हमारे देवताओं की पूजा करो, ताकि तुम जीवित रह सको; और, अगर तुम चाहो, तो अपने ईश्वर की गुप्त रूप से सेवा करो।'

बहुत रोने-धोने के बीच कही गई इन बातों को सुनकर, संत ने अपना मुँह खोला और कहा:

'मेरे लिए मत रोओ, बल्कि अपने और अपने बच्चों के लिए रोओ। मैं तो शाश्वत विश्राम को जा रहा हूँ, परन्तु तुम सब शाश्वत यातना में जाओगे। मेरे अंग भंग करके, तुम मेरे लिए स्वर्ग में अकथनीय आनंद और अपने लिए नरक में भयानक यातनाएँ तैयार कर रहे हो, जहाँ तुम उन राक्षसों के साथ अविनाशी आग में जलोगे, जिनकी तुम अब पूजा करते हो।

संत के ये वचन सुनते ही, राजा के एक अधिकारी ने मुनाफाखोरों[8210] को पीटना शुरू कर दिया, और कहा:

'तुम वहाँ खड़े उसे घूर क्या रहे हो? जो करने का आदेश मिला है, वह करो।'

और तुरंत जल्लादों में से एक ने संत का हाथ पकड़कर उनकी तर्जनी उंगली काट डाली। लेकिन उस धन्य ने स्वर्ग की ओर दृष्टि घुमाकर पुकारा:

'हे प्रभु परमेश्वर, मेरी सहायता और मेरी आशा आप में ही है!' हे प्रभु परमेश्वर, आप एक ही दिव्य अंगुली से राक्षसों को दूर भगा देते हैं; तो फिर, राक्षसों की शक्ति से कटकर अलग हुई मेरी इस अंगुली को – जैसे किसी वृक्ष की टहनी – स्वीकार करें, और मुझ पापी पर दया करें; क्योंकि अंगूर की बेल की टहनियाँ भी इसलिए काटी जाती हैं ताकि वह बेल फल-फूलकर खूब फल दे सके।

तब राजा के अधिकारी ने संत पर दया करके उनसे कहा:

'अपने आप को बचाओ, जेम्स, और राजा की आज्ञा का पालन करो: हमारे देवताओं की पूजा करो। तुम देखते हो, हम सभी को तुम पर दया आती है। और अपनी कटी हुई उंगली के लिए दुखी मत हो: डॉक्टर तुम्हारा इलाज कर देंगे। बस अपने स्वास्थ्य और अपनी सुंदरता को और मत बिगाड़ो।'

धन्य ने उत्तर दिया:

'क्या तुम नहीं जानते कि यदि अंगूर की बेल की डालियों की छँटाई की जाए, तो जब सूरज उन्हें गर्म करना शुरू करता है, तो वे उन जगहों पर मुरझा जाती हैं जहाँ उन्हें काटा गया है, और फिर वे बढ़ने और फलने लगती हैं? परमेश्वर के विश्वासयोग्य पुत्रों, के साथ भी ऐसा ही है। परमेश्वर की दाख की बारी में रोपे गए और सच्ची बेल—प्रभु यीशु—पर गूँथे गए हैं, जिन्होंने कहा: *'मैं बेल हूँ और तुम डालें हो'* (यूहन्ना 15:5)।

वे अस्थायी मृत्यु के माध्यम से छाँटे जाते हैं और आने वाले युग में फिर से उठते हैं, जहाँ वे फलते-फूलते हैं और अक्षय महिमा से सुशोभित होते हैं, और अनंत पुरस्कार के फल प्राप्त करते हैं।

[8210] रोमन साम्राज्य में, 'स्पेक्युलेटर्स' शब्द का अर्थ प्राटोरियनों की एक विशिष्ट टुकड़ी से था, जिन्हें स्वयं सम्राट की सेवा का कार्य सौंपा गया था। यहाँ, 'स्पेक्युलेटर्स' शब्द फारसी राजा की सेवा में रहने वाले सैनिकों को संदर्भित करता है। संत जेम्स को उनके सभी अंग काट दिए जाने की सज़ा देने के बाद, वराहरन ने स्वाभाविक रूप से इस सज़ा को अपने निजी अंगरक्षकों को सौंप दिया।

संत के भाषण समाप्त करते ही जल्लाद एक बार फिर उसके पास आया और उसकी दूसरी उँगली काट डाली। लेकिन संत ने धैर्यपूर्वक यातनाओं को सहते हुए पुकारा:

'हे प्रभु, अपनी बगिया की यह दूसरी डाल स्वीकार करो, जिसे तेरे दाहिने हाथ ने लगाया है।'

उसका चेहरा प्रसन्नता और आनंद से भरकर दमक रहा था, मानो वह कोई महान यातना नहीं बल्कि परम आनंद का अनुभव कर रहा हो। फिर उन्होंने उसकी तीसरी उंगली काट दी, लेकिन वह त्रिमूर्ति परमेश्वर की स्तुति गाता रहा।

'तीन प्रलोभनों (अर्थात् कामवासना, नेत्रों की लालसा, और सांसारिक अहंकार) से मुक्त होकर, मैं पिता और पुत्र और पवित्र आत्मा की महिमा करता हूँ, और आग से बचाए गए तीन जवानों के साथ, मैं तुझे स्वीकार करता हूँ, हे प्रभु, और शहीदों की सेना के साथ मैं तेरा नाम गाता हूँ, हे मसीह।'

जब उसकी चौथी उंगली काट दी गई, तो वह चिल्लाया:

'हे प्रभु, जिन्होंने चार जीवित प्राणियों से स्तुति प्राप्त की है, अपने पवित्र नाम की गवाही के लिए काटी गई मेरी चौथी उंगली के दुख को अपने लिए बलिदान के रूप में स्वीकार करें।'

याकूब की पाँचवीं उंगली कटने के बाद, वह ज़ोर से चिल्लाया:

'मेरे पास आनंद आ रहा है, ठीक वैसे ही जैसे दिव्य वर के विवाह में पाँच बुद्धिमान कुँवारियों के लिए होता है[8211] ।' फिर जिन्होंने उसे यातना दी, उसके बाएँ हाथ की उंगलियाँ काटने से पहले, उसे समझाने लगे:

'जेम्स, अब अपनी आत्मा को बचा; अपना नाश मत कर, बल्कि राजा की आज्ञा का पालन कर, और तब तू सुरक्षित रहेगा; क्या यह तेरे लिए बेहतर नहीं है कि तू सुरक्षित रहे और जिए, बजाय इसके कि ऐसी यातनाएं सहकर मर जाए?' जहाँ तक तुम्हारे हाथ की चोट का सवाल है, उस पर दुख मत करो, क्योंकि इस संसार में बहुत से लोग केवल एक हाथ से भी रहते हैं, और फिर भी महान धन-संपत्ति और सम्मान का आनंद लेते हैं तथा समृद्धि और हर प्रकार के आशीर्वादों में सुख पाते हैं।

संत ने उत्तर दिया:

'जब चरवाहे भेड़ की दाहिनी ओर की ऊन काटते हैं, तो क्या वे बाईं ओर की ऊन बिना काटे छोड़ देते हैं? मैं मसीह के झुंड का एक मेमना हूँ, जिसने अपने प्रभु की खातिर अपना आप तुम्हारे हाथों में सौंप दिया है, ताकि तुम मेरे अंगों को वैसे ही काट डालो जैसे ऊन की कतरन की जाती है – और जब मेरा दाहिना हाथ काट दिया जाएगा, तो क्या मैं अपना बायाँ हाथ बचाऊँगा? नहीं, मैं न तो अपने अंगों को बचाऊँगा और न ही अपने पूरे नश्वर शरीर को, ताकि मैं अमरत्व का वस्त्र धारण कर सकूँ।

तब, संत ने स्वर्ग की ओर अपनी आँखें उठाकर कहा:

– हे प्रभु, मैं तेरे सामने छोटा और नीच हूँ! तू, महान ईश्वर, ने मानव रूप धारण करके स्वयं को नम्र किया, और हमारे लिए सूली पर चढ़ाए जाने तथा वध को सहन किया; और मैं, हे मेरे प्रभु, आपके दुखों की नकल नहीं कर सकता; फिर भी मैं स्वयं को यातना और मृत्यु के हवाले करता हूँ, ताकि आप, सार्वभौमिक पुनरुत्थान के समय, मुझे जीवित, पूर्ण और अक्षुण्ण कर सकें।

जब संत बोलना समाप्त कर चुके, तो उनके यातना देने वालों ने एक बार फिर उन पर हमला किया और उनके बाएँ हाथ की पहली उंगली काट दी।

फिर उन्होंने कहा:

'हे अति स्तुत्य प्रभु! मैं आपको धन्यवाद देता हूँ कि आपने मुझे अपनी छठी उंगली आपको बलिदान करने के योग्य समझा, जिन्होंने छठे दिन और घंटे पर क्रूस पर अपने परम पवित्र हाथ फैलाए थे[8212] ।'

तब उन्होंने संत की सातवीं उंगली काट दी, और उन्होंने पुकारा:

'इससे पहले, सप्ताह के प्रत्येक सात दिनों में, मेरे होंठ, भविष्यवक्ता दाऊद के साथ मिलकर, आपके धर्मी न्याय के लिए आपकी स्तुति करते थे; परन्तु आज मैं इन सात उंगलियों से, जो आपकी महिमा करने के लिए मेरी कबुली के कारण काट दी गई हैं, आपकी दया की महिमा करता हूँ।'

और उन्होंने याकूब की आठवीं उंगली काट दी; और उसने परमेश्वर से पुकारा:

[8211] यह, बेशक, मसीह की पाँच समझदार और पाँच मूर्ख कुँवारियों की दृष्टान्त कथा को संदर्भित करता है। (मत्ती 25:1–13)

[8212] प्रभु यीशु मसीह को सप्ताह के छठे दिन, रविवार से गिनती करके, दिन के छठे घंटे (हमारी गिनती के अनुसार दूसरे घंटे) पर क्रूस पर ठोंका गया था।

'हे प्रभु! आप स्वयं, व्यवस्था के अनुसार, आठवें दिन खतना कराये गए थे; मैं, तथापि, आठ उँगलियों का कटवाना सहन करता हूँ, ताकि, अधर्मी लोगों से अलग होकर, मैं आपसे एक हो जाऊँ, मेरे उद्धारकर्ता, और इस शरीर को त्यागकर, तेरा परम पवित्र मुख दर्शन करने के लिए, जिसे मेरी आत्मा उतनी ही तीव्रता से देखना चाहती है जितना एक प्यासा हिरण जल-झरनों के लिए तरसता है (देखें भजन संहिता 41:2)।

इसके बाद, संत की नौवीं उंगली काट दी गई; तब संत ने पुकारा:

'हे मसीह, क्रूस पर नौवें घंटे में आपने अपनी आत्मा अपने पिता के हाथों में सौंपी; और मैं, अपनी नौवीं उंगली से वंचित होकर, अपने दुखों के बीच, आपको धन्यवाद देता हूँ कि आपने मुझे आपके पवित्र नाम के लिए अपने अंगों के अपंग होने हेतु फैलाए जाने के योग्य समझा।'

जब जेम्स की दसवीं उंगली काटी गई, तो उन्होंने प्रभु की स्तुति करते हुए ऊँचे स्वर में पुकारा:

'हे ईश्वर, मैं दस-तारों वाले सारंगी पर तेरी स्तुति करता हूँ, और तेरे वाचा के दस आज्ञानविर्णों, जो दो पट्टियों पर लिखे हैं, के निमित्त, दोनों हाथों की उंगलियों के कटने को सहन करने में मेरी सहायता करने के लिए तुझे धन्यवाद देता हूँ।'

तब वहाँ उपस्थित कुछ लोगों—शाही कुलीनों और संत के मित्रों—ने कड़वी रोते हुए, उससे विनती करनी शुरू कर दी:

– हमारे प्रिय मित्र, हम आपसे विनती करते हैं, हमारी बात सुनें और राजा की आज्ञा का पालन करें, कहीं आप क्रूर यातनाओं के बीच न मर जाएँ। जहाँ तक आपकी उंगलियों की बात है, उनके लिए शोक न करें, क्योंकि कुशल चिकित्सक आपको ठीक कर सकते हैं; बस अपनी जान बचाएँ, कहीं आप इस वर्तमान संसार के सुखों और आनंद से भरे आशीर्वादों से वंचित न हो जाएँ: आपके पास महान धन-संपत्ति है, और इसलिए आप शांति का आनंद ले सकते हैं। अगर आप एक भिखारी होते, तो भी आप सोचते: इस जीवन में मुझे क्या उम्मीद है, मैं अपने लिए क्या लाभ की उम्मीद कर सकता हूँ, जब मैं कुछ भी नहीं कर सकता और, परिणामस्वरूप, अपनी आजीविका भी नहीं कमा सकता? लेकिन आप अमीर हैं, आपके पास सोने की कोई कमी नहीं है, और यदि आप चाहें तो, आप इस दुनिया के सभी सुखों का आनंद लेते हुए एक शानदार जीवन जी सकते हैं और अपनी पत्नी, अपनी माँ और अपने प्रिय दोस्तों के साथ आनंद मना सकते हैं। तुम व्यर्थ ही अपनी आत्मा को क्यों बर्बाद करना चाहते हो? तो, राजा की इच्छा के अनुसार, केवल एक शब्द बोलो, और तुम तुरंत अपने कष्टों से मुक्त हो जाओगे।

धन्य ने, उन्हें देखकर, उत्तर दिया:

'कोई भी दो मालकिों की सेवा नहीं कर सकता (मत्ती 6:24), और *'जो कोई हल पर हाथ रखकर पीछे मुड़ता है, वह परमेश्वर के राज्य के योग्य नहीं है'* (लूका 9:62), क्योंकि प्रभु ने कहा: *'जो मुझसे अधिक पिता या माता से प्रेम करता है, वह मुझ योग्य नहीं* (मत्ती 10:37–38), *'और जो अपना क्रूस उठाकर मेरे पीछे नहीं चलता, वह मेरा चेला नहीं हो सकता'* (लूका 14:27)। इसलिए, मैं तुम्हारी सलाह नहीं मानूँगा, क्योंकि तुम्हारे शब्द मुझे विनाश की ओर ले जाते हैं; परन्तु मैं तुमसे केवल यही निवेदन करता हूँ, मुझ पर रहम मत करना, बल्कि जैसा तुम्हें आज्ञा दी गई है, वैसा ही करना।

तब संत को यातना देने वालों को क्रोध आ गया; वे उस पर टूट पड़े और उसके दाहिने पैर की बड़ी उँगली काट डाली। संत जेम्स ने पुकारा:

'मैं तुझे महिमा देता हूँ, हे मेरे मसीह, जिसके हाथों ही नहीं बल्कि पैरों में भी छेद किए गए, और मैं तुझ से प्रार्थना करता हूँ: यह अनुग्रह कर कि मेरा यह दाहिना पैर, जिसने अपनी पहली उँगली कटवा ली है, आगे चलकर तेरे दाहिने हाथ के पास खड़ा हो।'

और उन्होंने उसी पैर की दूसरी उंगली भी काट डाली। लेकिन संत ईश्वर की स्तुति करते रहे:

'आज, हे प्रभु, मेरी प्रति आपकी भलाई और दया दोगुनी हो गई है, क्योंकि इस दूसरी उंगली का भी अंगच्छेदन सहन करके, मैं आपके पास जाऊँगा, हे सर्वशक्तिमान और जीवन-दायक परमेश्वर, जो मुझे दूसरी अनंत मृत्यु से बचाते हैं।'

उन्होंने धन्यजन की तीसरी उंगली भी काट दी, जिसे उन्होंने उनके पास ही फेंक दिया। हालाँकि, धन्यजन ने उसे देखते ही, प्रसन्नता से मुस्कुराते हुए, पुकारा:

'जाओ, हे तीसरी उँगली, पवित्र त्रमिूर्ति के चह्नि के रूप में अपने भाइयों के पास; मसीह के सदृश इस क्षणकि मृत्यु को स्वीकार करते हुए, जो मृत्यु के तीन दनि बाद पुनर्जीवति हुए, तुम, पृथ्वी में डाले गए गेहूँ के दाने के समान, मेरे शरीर के अन्य अंगों के साथ, सार्वभौमकि पुनरुत्थान के दनि एक महान पुरस्कार प्राप्त करोगी।'

इसके बाद, उन्होंने संत की चौथी उंगली काट दी। तब धन्य व्यक्ति ने ज़ोर से पुकारा: *'हे मेरी आत्मा, तू क्यों उदास है, और तू क्यों हतोत्साहति है? ईश्वर पर भरोसा रख'* (भजन संहति 41:6), जो चार-कोनी क्रूस की शक्ति से बचाता है, क्योंकि मैं उसके पवित्र नाम का अंगीकार करता हूँ।

उन्होंने जेम्स की पाँचवीं उंगली भी काट दी, फरि भी संत प्रभु परमेश्वर की स्तुति करते रहे, यह कहते हुए:

– हे प्रभु, अब मैं तेरा धन्यवाद करूँगा, जसिने क्रूस पर पाँच घाव सहे[8213] , और मैं तेरी सहायता का गुणगान करूँगा, क्योंकि तू मुझे अपने वफादार सेवकों के भाग का योग्य बनाता है, जन्होंने तेरे लिए दुख उठाया और उन्हें दिए गए पाँच प्रतभिाओं को बढ़ाया[8214] ।

इसके बाद, उसके यातना देने वालों ने उसके बाएँ पैर की उंगलयिों को काटना शुरू कर दयिा। जब उन्होंने उसकी छोटी उंगली काटी, तो संत जेम्स ने पुकारा:

'मजबूत रहो, छोटी उंगली, जो काटी जाने वाली छठी उंगली है; क्योंकि मैं अपनी आशा उस महान ईश्वर में रखता हूँ जो कृपापूर्वक मुझे बल देता है, जसिने तुम्हें अन्य लोगों के साथ छठे दनि बनाया, और जो तुम्हें भी, हे छोटी, वैसे ही जलिा उठायेगा जैसे वह अन्य लोगों को जलिा उठायेगा।' क्योंकि यदि मनुष्य के सरि का एक भी बाल ईश्वर की इच्छा के बनिा नष्ट नहीं होता, तो तुम, छोटी उँगली, अन्य उँगलयिों से और भी अधकि अलग नहीं होओगी, बल्कि उनके साथ महमिामय होओगी, क्योंकि तुम भी उनके समान ही पीड़ा सह रही हो।

और उन्होंने संत जेम्स की सातवीं उंगली काट दी, और वह ज़ोर से चल्लिाया:

'इस जीर्ण-शीर्ण मंदरि को नष्ट कर दो, जसिमें सात-सरि वाला सर्प[8215] छपिा है, क्योंकि सृष्टकिर्ता, जो सातवें दनि अपने कार्यों से वश्रिाम करते थे, मेरे लिए स्वर्ग में एक और मंदरि तैयार कर रहे हैं, जो हाथों से नहीं बना और शाश्वत है।'

जब संत जेम्स की आठवीं उंगली काट दी गई, तो उन्होंने पुकारा:

'जसिने नूह की नाव में बाढ़ से आठ प्राणयिों को बचाया (1 पतरस 3:20), वह मुझे भी बचाएगा, जो रक्त को पानी की तरह बहाता है।' देखो, उन्होंने मेरी आठवीं उँगली काट दी है, पर मैं प्रहारों के नीचे एक लोहे की चक्की की तरह हूँ, जो दर्द महसूस नहीं करती, बल्कि और भी कठोर और मजबूत हो जाती है: क्योंकि जब मेरे अंग कट जाते हैं तो मुझे कोई पीड़ा नहीं होती, क्योंकि दयालु वैद्य, स्वयं मेरे स्रष्टा, मुझे बल देते हैं और मेरी पीड़ा को कम करते हैं: वह मेरे पृथ्वी पर जीवन के सभी सप्ताहों के बाद मुझे पूरी तरह से बहाल कर देगा, जब अनंत काल का सर्वधन्य आठवां दनि उदय होगा।

तब उन्होंने जेम्स की नौवीं उंगली काट दी; लेकनि संत ने साहसपूर्वक प्रार्थना की:

'हे ईश्वर, मैं आपसे वनिती करता हूँ, मुझे धैर्य में मजबूत करें! मेरी आत्मा तेरे पर भरोसा करती है, जसिने अपनी कृपा से मुझे नौ स्वर्गदूतों के आदेशों की पवित्रिता में स्थापति कयिा है। अत; यह अनुग्रह कर कि मैं भी, इन नौ उंगलयिों के कटने का दुख सहने के बाद, तेरे साथ रहूँ, जैसे कि सभी नौ स्वर्गदूतों के आदेश तेरे साथ नविास करते हैं।

और उन्होंने उसकी दसवीं उंगली काट दी; लेकनि संत ने ज़ोर से पुकारा:

'हे यीशु मसीह, पूर्ण परमेश्वर और पूर्ण मनुष्य, देखो, मैं अपनी बीस उंगलयिों को बलदिान के रूप में आपको अर्पति करता हूँ'; और उन्होंने जोड़ा: *'हे परमेश्वर, मेरा न्याय करो, और इस दुष्ट लोगों के वरिुद्ध मेरा मुकदमा लड़ो'* (भजन संहति 42:1), क्योंकि अधर्मीयों ने आपकी सृष्टि को नहीं बख्शा, बल्कि, भेड़यिों की तरह, मेरे सभी अंगों को चीर-फाड़ डाला है।

चारों ओर खड़े पुरुषों और महलिाओं, बूढ़ों और जवानों की भीड़, जो संत के कष्टों को नहिार रही थी, उसके धैर्य पर चकति थी। लेकनि मसीह के लिए पीड़ति, उसे यातना देने वालों को देखकर, उनसे कहने लगा:

'तुम चुपचाप क्यों खड़े हो? उस पेड़ को काट डालो जसिकी डालें पहले ही काट दी गई हैं।'

[8213] जब प्रभु यीशु मसीह को क्रूस पर चढ़ाया गया, तो उन्हें चार कीलों से ठोंका गया, जो उनके दोनों हाथों और दोनों पैरों में ठोकी गईं। इस प्रकार उन्हें चार घाव लगे; पाँचवाँ घाव क्रूस पर उनकी मृत्यु के बाद एक सपिाही ने तब लगाया, जब उसने अपनी भेरी से उनकी पसली को भेद दयिा।

[8214] यह प्रतभिाओं की दृष्टान्त का संदर्भ है, जसिमें प्रतभिाएँ लोगों के आध्यात्मकि उपहारों का प्रतीक हैं। (मत्ती 25:14–30)।

[8215] बेशक, शैतान, जसिने पाप के माध्यम से मानव स्वभाव को भ्रष्ट कर दयिा है।

और यातना देने वालों ने, उसके पास आकर, उसका दाहिना पैर काट दिया; लेकिन संत ने पुकारा:

'अब मैं स्वर्गीय राजा को उपहार स्वरूप अपनी उनके समक्ष खड़े होने का साधन अर्पित करता हूँ, और मैं उनके प्रति प्रेम के कारण इन यातनाओं को सहन कर रहा हूँ, ताकि मेरा कटा हुआ दाहिना पैर उनके राज्य में खड़ा हो सके।'

उन्होंने उसका बायाँ पैर भी काट दिया; और उसने स्वर्ग की ओर अपनी आँखें उठाकर पुकारा:

– हे प्रभु, आपने मेरी सुनी है, क्योंकि आपकी दया महान है: हे चमत्कार करने वाले ईश्वर, आपने मुझे अपने बाएँ पैर पर खड़े होने से बचाया है, इस प्रकार मुझे एक शुभ संकेत दिया है, क्योंकि बाईं ओर शाश्वत विनाश का प्रतीक है[8216]।

इसके बाद संत का दाहिना हाथ काट दिया गया; और उन्होंने पुकारा:

'हे प्रभु, मैं युगानुयुग तेरे प्रेम का गायन करूँगा; पीढ़ी-दर-पीढ़ी मैं तेरी सच्चाई का प्रचार करूँगा, क्योंकि तेरे ये वचन मुझ में स्पष्ट रूप से पूरे हुए हैं: *"और यदि तेरा दाहिना हाथ तुझे ठोकर खिलाता है, तो उसे काटकर अपने से दूर फेंक दे"* (मत्ती 5:30)।'

तब संत जेम्स का बायाँ हाथ काट दिया गया; और उन्होंने कहना शुरू किया:

– हे प्रभु, मृतक तुझे स्तुति नहीं करेंगे, न ही वे जो नरक में उतरेंगे और जीवन के बाएँ मार्ग पर चलेंगे—अर्थात् अधर्म के कर्मों का मार्ग—परन्तु हम जो जीवित हैं, जो बाएँ मार्ग (अर्थात् मिथ्या) को अस्वीकार करते हैं, हे प्रभु, हम तुझे सदा के लिए धन्यवाद देंगे!

इसके बाद संत का दाहिना कंधा काट दिया गया, और फिर उन्होंने कहा:

'हे मेरी आत्मा, यहोवा की स्तुति कर। मैं जब तक जीवित रहूँगा, यहोवा की स्तुति करूँगा; मैं जब तक जीवित हूँ अपने परमेश्वर के लिये गीत गाऊँगा' (भजन संहिता 145:1–2), क्योंकि जिसने अपनी खोई हुई भेड़ को पाकर अपने कंधे पर उठा लिया और उसे अपने दाहिने हाथ पर रख दिया (लूका 15:4–7; मत्ती 27:23), मेरे दाहिने कंधे को भी याद रखेंगे, और उसे कटा हुआ पाकर, उसे अपने दाहिने हाथ पर रखेंगे।

और उन्होंने उसका बायाँ कंधा काट डाला, और संत ने कहा:

'शत्रु मुझे चारों ओर से घेरे हुए हैं। परन्तु यहोवा मेरा सहायक और मेरी स्तुति है, जिस पर सब के भाग्य का भार है; वह मेरा उद्धारकर्ता है: वह मुझे, अपने बाएँ कंधे को कटवा लेने के बाद, बाईं ओर अँधकार के अधिकार में भटकने नहीं देगा।'

तब उन्होंने संत जेम्स की पिंडली को घुटनों तक काटना शुरू कर दिया। संत ने भयंकर पीड़ा सहते हुए पुकारा:

'हे मेरे प्रभु ईश्वर, जो उन लोगों की सहायता के लिए आते हैं जो आपसे डरते हैं और आप पर भरोसा करते हैं, अपने सेवक की भी सहायता करें, क्योंकि मैं एक घातक बीमारी से पीड़ित हूँ।'

यह सुनकर, उसके यातना देने वालों ने उससे कहा:

'क्या हमने तुम्हें नहीं बताया था कि तुम्हें क्रूर यातनाओं और भयानक पीड़ा को सहना होगा? तुमने हमारी बात पर विश्वास नहीं किया।'

लेकिन उस पराक्रमी पीड़ित ने उनसे उत्तर दिया:

– क्या तुम जानते हो कि मैंने क्यों कष्ट उठाया है? ताकि यह स्पष्ट हो सके कि मैं देहधारी मनुष्य हूँ; अब तक, ईश्वर की कृपा से, मैंने सभी यातनाओं को इस तरह अनदेखा किया है जैसे कि मैं निराकार हूँ; लेकिन अब, अपने इस कष्ट में, मैं देहधारी मनुष्य के रूप में प्रकट हुआ हूँ। फिर भी, जल्द ही प्रभु मुझे एक नया शरीर प्रदान करेंगे, जिसे तुम्हारे उपकरणों से अब और यातना नहीं दी जा सकती।

यह सारा यातना सुबह से लेकर नवें घंटे तक चली, और इस पूरे समय संत जेम्स के यातनाग्रस्त शरीर से एक शक्तिशाली सुगंध निकलती रही। जब, अंतत; यातना देने वालों ने अपनी यातना बंद कर दी, तो मसीह का सैनिक, जिसने अपने दुःखों के माध्यम से शैतान को परास्त कर दिया था, ने ईश्वर से पुकारा:

'पवित्र, पवित्र, पवित्र हैं आप, सर्वशक्तिमान ईश्वर, पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा, जिनकी कीर्ति खेरुबिम द्वारा गाई जाती है, स्तुति सेराफिम द्वारा की जाती है, और सभी स्वर्गदूतों तथा प्रत्येक प्राणी द्वारा की जाती है, जीवितों

[8216] बाईं ओर शाश्वत नरक को दर्शाता है, क्योंकि प्रभु स्वयं, अंतिम न्याय के अपने चित्रण में कहते हैं कि मनुष्य का पुत्र पापियों को अपनी बाईं ओर रखेगा।

और मृतकों के ईश्वर। मेरी मदद करो, मैं मुश्कलि से जीवति हूँ, क्योंकमिेरे सभी अंग काट दएि गए हैं और मेरा शरीर मृत की तरह पड़ा है, मुझमें जीवन की केवल एक मद्धमि सी करिण बची है: हे प्रभु, मेरे पास आपके सामने खड़े होने के लएि कोई पैर नहीं हैं; मेरे पास आपके, मेरे स्वामी, सामने प्रार्थना करने के लएि कोई हाथ नहीं हैं; मेरे पास घुटने नहीं हैं जनि पर मैं आपको, मेरे स्रष्टा, की पूजा करते हुए झुक सकूँ: मेरे हाथ, पैर, कंधे और पडिलयिाँ काट दी गई हैं, और मैं आपके सामने, हे प्रभु, एक खंडहर मंदरि, या बनिा टहनयिों वाले पेड़ की तरह, लोटता हुआ पड़ा हूँ; इसलएि मैं आपसे वनिती करता हूँ, हे मानवता के प्रेमी, अंत तक मुझे न छोड़ें, बल्कमिेरी आत्मा को इस कालकोठरी से मुक्त करें।

[8217]जब वह इस प्रकार प्रार्थना कर रहा था, तो संत की फाँसी पर मौजूद लोगों में से एक ने चाकू नकिालकर उसका सम्माननि सरि काट दयिा; और संत ने इस प्रकार अपना बलदिान पूरा कर, अपनी पवत्रि आत्मा ईश्वर के हाथों में सौंप दी। हालाँकि, उसका सम्माननि शरीर, टुकड़ों में कटा हुआ, रात ढलने तक जमीन पर पड़ा रहा। उस रात, वश्विासयिों ने सभी अंगों को इकट्ठा कयिा और उन्हें शरीर के साथ दफना दयिा, और उन्होंने पति, पुत्र और पवत्रि आत्मा की महमिा की। आमीन।

ट्रोपारयिन, स्वर 4:

अद्भुत और भयानक कष्टों द्वारा, और आपके धीरज की वीरता से, हे परम सहनशील, आपने सभी को चकति कर दयिा; आपके शरीर के प्रत्येक अंग पर, जसि पर तलवार पड़ी, आपने प्रभु के प्रतअिद्भुत कृतज्ञता की प्रार्थनाएँ कीं। इस प्रकार, अपने कष्टों का मुकुट प्राप्त कर , हे याकूब, आप स्वर्गीय राजा मसीह परमेश्वर के सहिासन पर आरोहण हुए: हमारे प्राणों को बचाने के लएि उनसे प्रार्थना करें।

कॉन्टाकयिन, स्वर 2:

एक अच्छी और धैर्यवान पत्नी पाकर, और भयानक न्याय के भय से, आपने फारसी फरमान और जेम्स के भय को ठुकरा दयिा, और स्वयं को एक कुलीन शहीद साबति कयिा, आपका शरीर जैसे लाठी से काटा गया हो।

आदरणीय रोमन की स्मृति

27 नवंबर को स्मरण कयिा जाता है

धन्य रोमन का जन्म अंकोई के पास 'Rose[8218] ' नामक नगर में हुआ था; परपिक्व होने पर, वह अंकोई में बस गया। वहाँ वह शहर के बाहर एक छोटी सी कोठरी में चला गया, जहाँ वह वृद्धावस्था तक बनिा आग के रहा। उनके भोजन में रोटी, नमक और पानी शामलि थे, और वह भी इतनी कम मात्रा में कि वह मुश्कलि से अपना जीवन चला पाते थे। वह बाल-युक्त चोगा पहनते थे और उसके नीचे, भारी लोहे की बेड़यिाँ पहनते थे। इन सब के लएि, संत रोमन को इतना दैवीय अनुग्रह प्राप्त हुआ कि उन्होंने वभिन्नि बीमारयिों को ठीक कयिा और, अपनी प्रार्थनाओं के माध्यम से, कई बांझ महलिाओं को बांझपन से मुक्ति मलिी। अपने उपदेशों के माध्यम से, संत रोमन ने कई भटके हुए लोगों को परमेश्वर के राज्य के सही मार्ग पर वापस लाया। इस प्रकार जीवन जीने के बाद, वे एक सम्माननि वृद्धावस्था में पहुँचे और शांतपिूर्वक प्रभु के पास चले गए[8219] ।

[8217] संत जेम्स की शहादत 421 में हुई थी। जब बाद में फ़ारस में शहीदों के पवत्रि अवशेषों को जलाने का आदेश जारी कयिा गया, तो ईसाइयों ने जेम्स के अवशेषों को यरूशलेम भेज दयिा, जहाँ से, सम्राट मार्सयिन के शासनकाल में (5वीं शताब्दी के मध्य में), उन्हें एडसा के बशिप पीटर द्वारा मस्रि के ताबेना में स्थानांतरति कर दयिा गया। एक अन्य वृत्तांत के अनुसार, उन्हें फारस से इटली ले जाया गया, जहाँ पवत्रि शहीद का सरि आज भी वैटकिन बेसलिकिा में रखा है। उनके कुछ अवशेष पुर्तगाल के ब्रागा में भी हैं, जहाँ उनके स्थानांतरण का उत्सव 22 मई को मनाया जाता है।

[8218] रॉस – सीरयिा में एक शहर, एंटओक से बहुत दूर नहीं।

[8219] आदरणीय रोमन का जीवन और करम 5वीं शताब्दी के हैं।

रोस्तोव के बशिप संत जेम्स का स्मरणोत्सव[8220]

27 नवंबर को स्मरण कयिा जाता है

संत जेम्स रोस्तोव क्षेत्र के मूल नविासी थे; उन्होंने कम उम्र में ही संन्यास की शपथ ली और अपने धार्मकि जीवन के लिए, मेट्रोपॉलटिन पमिेन और ग्रैंड प्रंसि दमित्रिी इओआनोवचि डॉन्स्कोय[8221] के अधीन रोस्तोव के बशिप के पद से सम्मानति कएि गए। हालाँकि, उन्होंने लंबे समय तक रोस्तोव के बशिप के रूप में सेवा नहीं की और नम्निलखिति कारण से अपने पद को छोड़ दयिा।

एक महलिा पर कुछ अपराधों का आरोप लगाया गया था और रोस्तोव के राजकुमार तथा रोस्तोव के बोयारों द्वारा उसे मृत्युदंड की सजा सुनाई गई थी। अपनी इस मुसीबत में, वह रोस्तोव के संत जेम्स के चरणों में भागी और उनसे मृत्यु से बचाने की भीख माँगी। संत जेम्स को उस पर दया आ गई और उन्होंने मसीह के उदाहरण का अनुसरण करते हुए, जन्हिोंने उनके सामने लाई गई वेश्या को दोषी नहीं ठहराया था, उस दंडति महलिा को मृत्युदंड के लिए सौंपने के बजाय, उसे अपने शेष जीवन के लिए पश्चाताप के लिए एक वशिेष स्थान दयिा। इस कृत्य के कारण, रोस्तोव के राजकुमार और नागरकि संत जेम्स पर क्रोधति हो गए और उन्होंने अपने अच्छे चरवाहे को उनके पद से हटा दयिा।

जब वह शहर छोड़कर जा रहे थे, तो संत जेम्स रोस्तोव झील के कनिारे गए और अपना बशिप का चोगा उतारकर पानी पर रख दयिा; फरि, क्रॉस का चह्निन बनाकर, वह उस पर खड़े हो गए और झील पार तैर गए; शहर से डेढ़ वर्स्ट तैरकर आगे जाने के बाद, वह उस स्थान पर फरि से कनिारे पर आ गए जहाँ अब याकोवलेव्स्की मठ स्थति है।

इस असाधारण चमत्कार ने राजकुमार और लोगों को चकति कर दयिा। सभी को एहसास हुआ कि उन्होंने अपने संत के साथ अन्याय और क्रूरता की है; उन्होंने अपने पापों के लिए क्षमा मांगी और आँसुओं से भरी आँखों के साथ उनसे अपने धर्मप्रांत में लौटने का आग्रह कयिा। संत ने, अपनी दया और नम्रता में, उनके गंभीर पाप को क्षमा कर दयिा; वह कभी कसिी पर गुस्सा नहीं हो सके, लेकनि उन्होंने दृढ़ता से धर्मप्रांत में लौटने से इनकार कर दयिा।

[8222]उसी स्थान पर, शहर से डेढ़ वर्स्ट की दूरी पर, जहाँ संत जेम्स कनिारे पर उतरे थे, उन्होंने अपने लिए एक एकांत झोपड़ी बनाई और वहीं रहने लगे।

संत के कई प्रशंसक थे, और उनमें से कई वहाँ रहने के लिए उनके पास आने लगे। तब उन्होंने भाइयों के लिए कोठरयिाँ बनवाईं, और बाद में संत एनी के गर्भाधान को समर्पति एक चर्च का नरि्माण कयिा। इसी मठ में संत जेम्स ने अपने शेष जीवन व्यतीत कयिा[8223] ।

रॉस्तोव में बशिप के रूप में सेंट जेम्स के कार्यकाल के दौरान, मार्शयिन नामक एक वधिर्मी प्रकट हुआ, जसिने यह सखिाया कि किसी को पवत्रि प्रतमिाओं की पूजा नहीं करनी चाहिए, उन्हें मूर्तयिाँ कहकर बुलाया, और अन्य अधार्मकि वचिार फैलाए। अपनी वाक्पटुता और वद्विता के कारण, उसने रॉस्तोव के राजकुमार, बोयारों और लोगों का ध्यान आकर्षति कयिा। लेकनि रोस्तोव के संत जेम्स ने राजकुमार और लोगों की उपस्थतिि में उस वधिर्मी के साथ बहस की और उसकी झूठी शकि्षाओं का पर्दाफाश कयिा, जसिसे वह वधिर्मी अपमानति होकर रोस्तोव से चला गया।

संत जेम्स के अवशेष उनके द्वारा स्थापति मठ में रखे गए हैं, जसिे याकोवलेव्स्की मठ के नाम से जाना जाता है, जसिका नाम इसके संस्थापक के सम्मान में रखा गया है।

[8220] संत जेम्स की कोई प्राचीन जीवनी सुरक्षति नहीं बची है। 1840 के दशक की शुरुआत में ही, रोस्तोव में याकोवलेव्स्की मठ के पास एक प्राचीन जीवनी थी, जसिसे पुस्तक: 'रोस्तोव स्पासो-याकोवलेव्स्की-दमित्रिीव मठ का ववरिण' के लिए संत के जीवन के ववरिण लिए गए थे, सेंट पीटर्सबर्ग, 1849; ये ववरिण यहाँ दोहराए गए हैं। सेंट जेम्स की सेवा 16वीं शताब्दी से भी पुराने पांडुलपियिों में पाई जाती है और मुद्रति धार्मकि कैलेंडर (मेनोलॉजी) में 28 अक्टूबर के अंतर्गत आती है। सेंट जेम्स की सेवा की सामग्री और प्राचीन आइकनों पर अंकति शलिालेख प्राचीन संतों की जीवनी में दएि गए ववरिणों के अनुरूप हैं।

[8221] यह 1386 में हुआ; संत जेम्स को बशिप मैथ्यू, जो एक ग्रीक थे, के उत्तराधकिारी के रूप में रोस्तोव का बशिप नयिुक्त कयिा गया।

[8222] लगभग तीन सौ साल पहले, यहीं पर संत लयिोन्टयिस, जन्हिें मूर्तपिूजकों ने नरि्वासति कयिा था, रोस्तोव शहर से हट गए थे। संत लयिोन्टयिस द्वारा स्थापति आर्कएन्जेल माइकल का चर्च, अब याकोवलेव्स्की मठ की दीवार से 30 सैज़ेन की दूरी पर स्थति है।

[8223] संत जेम्स की मृत्यु 1392 में हुई।

ट्रोपारयिन, स्वर 4:

हे संत जेम्स, आप अपने यौवन से ही ईश्वर द्वारा चुने गए थे, और इसी कारण आपको बशिप का पद देकर सम्मानति कयिा गया; आपने ईश्वर द्वारा आपको सौंपे गए लोगों का मार्गदर्शन कयिा; और इस प्रकार, आपके देहांत के बाद भी, आपको ईश्वर से वभिन्नि रोगों को ठीक करने के लिए चमत्कारों का वरदान प्राप्त हुआ: हम आपकी सम्मानति स्मृति का उत्सव मना रहे हैं, हमारे लिए प्रार्थना करें, ताकि हम सदैव आपकी महमिा कर सकें।

कॉन्टाकयिन, स्वर 8:

हे संत जेम्स, बशिपों के सहकर्मी और संतों के योग्य रक्षक के रूप में, अपनी मातृभूमि, अपने नगर और उन लोगों की नरिंतर रक्षा करें जो वश्विास के साथ आपका सम्मान करते हैं और आपके पवत्रि अवशेषों की पूजा करते हैं, ताकि हम आपसे ऊँचे स्वर में पुकार सकें: हे परमेश्वर-ज्ञानी जेम्स, आनन्दति हो।

हेलेनोपोलसि के बशिप, संत पल्लैडयिस का स्मरणोत्सव

27 नवंबर को स्मरण कयिा जाता है

संत पल्लैडयिस गालाटयिा के मूल नविासी थे[8224] । बीस वर्ष की आयु में, वे अलेक्जेंड्रयिा पहुँचे[8225] , जहाँ उन्होंने तपस्वी जीवन को समर्पति कयिा, पहले उस शहर के आसपास, फरि, तीन साल बाद, नाइट्रयिन रेगस्तिान[8226] और साइट रेगस्तिान[8227] में, जहाँ उन्होंने नौ वर्षों तक कठोर मौन में जीवन व्यतीत कयिा। हालाँकि, बीमारी ने उन्हें अपना प्रयि मरुभूमि छोड़ने के लिए मजबूर कर दयिा और जलवायु परविर्तन की तलाश में वे फलिस्तीन के बेथलेहेम चले गए, और एक साल बाद बथिनियिा[8228] चले गए, जहाँ हेलेनोपोलसि शहर के नागरकिों ने जल्द ही उन्हें बशिप के पद पर चुना।

संत पैलाडयिस को संत जॉन क्रसिस्टम का वशिष वश्विास प्राप्त था और वे स्वयं महान सार्वभौमकि शक्षिक के एक उत्साही समर्थक और प्रशंसक थे। इसलिए, जब संत जॉन क्राइसोस्टोम अन्यायपूर्ण उत्पीड़न का शकिार हुए[8229] , तो पल्लैडयिस, जो परमेश्वर के उस पवत्रि पुरुष के प्रति अपनी भक्ति के लिए जाने जाते थे, को वभिन्नि स्थानों पर छपिने के लिए मजबूर होना पड़ा, जब तक कि वह अंततः रोम नहीं पहुँच गए[8230] । पश्चमिी रोमन साम्राज्य के सम्राट होनोरयिस ने, पूर्वी सम्राट आर्कैडयिस के समक्ष जॉन क्राइसोस्टोम के मामले की पैरवी करने के लिए भेजे गए राजदूतों के दल में पैलाडयिस को शामलि कयिा। हालाँकि, रोमन राजदूत खाली हाथ लौट आए, जबकि पल्लाडयिस को हरिासत में लेकर सएिना[8231] में नर्विासति कर दयिा गया, जहाँ से, आर्काडयिस की मृत्यु के बाद, उसे एंटनिोए[8232] भेज दयिा गया। अंतत; और चार साल बाद, वह अपने धर्मप्रांत में लौट आए, जहाँ, लाउस नामक एक धार्मकि और प्रतष्ठिति दरबारी के अनुरोध पर, उन्होंने उनके नाम पर एक पुस्तक, *लाउसाइओस* संकलति की; इस पुस्तक में उन्होंने मस्रि, सीरयिा, मेसोपोटामयिा, गैलैटयिा, कैपडोसयिा और रोम के पवत्रि पुरुषों और महलिाओं के कार्यों और चमत्कारों का वर्णन कयिा,

---

[8224] गलातयिा एशयिा माइनर का एक छोटा, पहाड़ी लेकनि उपजाऊ क्षेत्र है।

[8225] यह वर्ष 388 का था।

[8226] नाइट्रयिन मरुभूमि - मस्रि के नचिले हस्सि में, अलेक्जेंड्रयिा से 70 मील दूर, शुरुआती ईसाई तपस्वयिों के लिए तपस्या का एक पसंदीदा स्थान।

[8227] नट्रियिन पर्वत से एक दनि की यात्रा (25-30 वर्स्ट) की दूरी पर, मस्रि के उत्तर-पश्चमिी भाग में स्थति, स्केट रेगस्तिान एक शुष्क, चट्टानी रेगस्तिान था - मस्रि के रेगस्तिानवासयिों का एक पसंदीदा स्थान, जसिे वहाँ शरण लेने वाले संतों के तपस्या के कारनामों ने प्रसद्धि बनाया। यही वह क्षेत्र था जसिसे बाद में 'स्केट्स' के नाम से जाने जाने वाले मठवासी मरुभूमि बस्तयिों का नाम पड़ा; ये वे स्थान थे जहाँ सबसे अधकि भक्तमिय भक्षिु परम एकांत और अखंड मौन की खोज में बस गए थे - एकमात्र ईश्वर में नविास करने के उद्देश्य से।

[8228] बत्थिनियिा – एशयिा माइनर का एक उत्तरी क्षेत्र।

[8229] अप्रैल 404 से

[8230] 405 में

[8231] सएिना – ऊपरी (उत्तरी) मस्रि का एक शहर, इथयिोपयिा की सीमा पर, नील नदी के पहले जलप्रपात के उत्तरी हस्सि में, नदी के पूर्वी तट पर, इसके तेज बहाव के पास स्थति था; यह आज भी असवान नाम से मौजूद है।

[8232] एंटीनोए – प्राचीन काल में मध्य मस्रि में स्थति एक काफी महत्व का शहर।

जो चौथी और पाँचवीं शताब्दी की शुरुआत में रहते थे[8233] । अपने जीवन के अंत के करीब, संत पल्लाडियस को गलाटिया के अस्फुका शहर में बिशप का पद सौंपा गया, जहाँ, अपने सुपुर्द किए गए झुंड का वफादारी से मार्गदर्शन करने के बाद, उन्होंने प्रभु में शांतिपूर्वक देह त्याग दिया[8234] ।

11 दिसंबर

28 नवंबर (पुराने कैलेंडर के अनुसार)

नए संत स्टीफन की शहादत

28 नवंबर को स्मरणोत्सव

परमपूज्य स्टीफन का जन्मस्थान यूनानी साम्राज्य की राजधानी - कॉन्स्टेंटिनोपल था। उनके माता-पिता अपनी धार्मिकता और गरीबों से प्रेम के लिए विख्यात थे। दो बेटियों के होने के कारण, वे इस बात से दुखी थे कि ईश्वर ने उन्हें एक पुत्र नहीं दिया था, क्योंकि वे एक पुरुष उत्तराधिकारी चाहते थे। ईश्वर की कृपा प्राप्त करने के लिए, उन्होंने गरीबों को दान दिया और प्रभु से भक्तिपूर्वक प्रार्थना की, उनसे एक पुत्र प्रदान करने का अनुरोध करते हुए। आदरणीय स्टीफन की माता, जिनका नाम अन्ना था, ने ईश्वर के समक्ष आँसुओं भरी प्रार्थनाओं में विशेष उत्साह के साथ अपना हृदय खोलकर रख दिया, और इस उत्साह में उन्होंने भविष्यवक्ता सैमुअल की माता का अनुकरण किया, जिनका नाम भी वही था।

एक शुक्रवार को, जब वह ब्लाचेर्नाई के चर्च में प्रार्थना कर रही थीं[8235] , तो उन्होंने अपनी दृष्टि परम पवित्र ईश्वर की माता की प्रतिमा पर टिकाई और आँसुओं के साथ उनसे एक पुत्र प्रदान करने की विनती की; साथ ही, उसने परमेश्वर की माता से यह व्रत लिया कि यदि उसकी प्रार्थना स्वीकार हुई, तो वह बच्चे को एकमात्र पुत्र और परमेश्वर के वचन को, जो परम पवित्र एक के माध्यम से अवतार लिए थे, एक भेंट के रूप में अर्पित करेगी। अपनी लंबी प्रार्थना और आँसुओं से थककर, वह चर्च में सो गई और, सोते समय, उसने परम पवित्र ईश्वर की माता, हमारी लेडी को, अकथनीय सुंदरता से दमकते हुए देखा। स्वर्ग की रानी ने उससे इन शब्दों में कहा:

'शांति से जाओ, हे स्त्री, क्योंकि तूने एक पुत्र को गर्भ में धारण किया है, जैसा तूने माँगा है।'

यह कहकर, वह महिला अदृश्य हो गईं। जहाँ तक अन्ना की बात है, पहले तो वह भय से उछल पड़ी, लेकिन फिर वह महान आनंद से भर गईं; और, घर लौटकर, उन्होंने वास्तव में महसूस किया कि उन्होंने अपने गर्भ में संतान धारण कर ली है।

उस समय, धर्मनिष्ठ ग्रीक सम्राट अनास्तासियस के शासनकाल में (ज़ेनो के बाद सिंहासन पर चढ़ने वाले और एक विधर्मी वाले नहीं[8236] , बल्कि एक अन्य जो बाद में सिंहासन पर आए[8237]), संत जर्मनस[8238] को कॉन्स्टेंटिनोपल में पैट्रिआर्क के रूप में चुना गया और पदस्थ किया गया। नए पैट्रिआर्क के सिंहासनारोहण के दिन, लोगों की भीड़ सेंट सोफिया चर्च में नव निर्वाचित संत की एक झलक पाने के लिए उमड़ पड़ी। भीड़ में अपनी पति के साथ अन्ना भी थी, जो

[8233] लौसाइक का संकलन वर्ष 420 में किया गया था। इस संग्रह की शिक्षाप्रद और सूचनात्मक प्रकृति को देखते हुए, चर्च के नियम यह निर्धारित करते हैं कि पवित्र चालीस दिनों के दौरान मैटिन्स के समय इसका पाठ किया जाना चाहिए।

[8234] हेलेनोपोलिस के संत पैलाडियस का निधन वर्ष 430 में हुआ।

[8235] प्रसिद्ध ब्लैचर्ने चर्च, कॉन्स्टेंटिनोपल के एक जिले ब्लैचर्ने में, लगभग मरमरा सागर के तट पर ही स्थित था। यहाँ परमेश्वर की परम पवित्र माता की चमत्कारी प्रतिमा और उनका चोगा रखा जाता था, जिसे एक विशेष अवशेष-पात्र में संरक्षित किया गया था, और जिसे 5वीं शताब्दी में निस्सा लाया गया था।

[8236] बाइज़ेंटाइन सम्राट ज़ेनो ने 474 से 491 तक शासन किया। उनके बाद अनास्तासियस प्रथम ने 491 से 518 तक शासन किया।

[8237] यह, बेशक, सम्राट अनास्तासियस द्वितीय (713–715) को संदर्भित करता है।

[8238] पितृमुनि जिर्मैनस प्रथम ने 715 से 730 तक बाइजेंटाइन चर्च का नेतृत्व किया।

पहले से ही गर्भावस्था के अंतमि चरण में थी। जब वह चर्च में खड़ी थी, पैट्रआर्क संयोग से उसके पास से गुज़रे। अन्ना ने संत को संबोधति करते हुए कहा:

'धन्य कहए, पतिाजी, मेरे गर्भ में संवर रहे इस बच्चे को!'

उस पर एक नज़र डालते हुए और अपनी अंतर्दृष्टि से भवष्यि को देख कर, पैट्रआर्क ने कहा:

'प्रभु उस संतान को आशीर्वाद दें जो पवत्रि प्रथम शहीद की प्रार्थनाओं से गर्भ में आई है!'

इन शब्दों के साथ, उन्होंने भवष्यिवाणी की कि अन्ना एक पुत्र को जन्म देंगी, जसिका नाम प्रथमाग्रशहीद स्टीफन के सम्मान में स्टीफन रखा जाएगा। पवत्रि पैट्रआर्क की भवष्यिवाणी के साथ एक चमत्कारकि संकेत भी हुआ, और मानो उसकी पुष्टि भी हुई: जैसे ही उन्होंने भवष्यिवाणी कही, उनके मुँह से उनके शब्दों के साथ एक अग्नि की लपट नकिली, जसि अन्ना ने स्पष्ट रूप से देखा (जैसा कि उसने बाद में शपथ के साथ अपने शब्दों की पुष्टि करते हुए बताया)।

जब कुछ दनि बीत गए, तो अन्ना ने एक पुत्र को जन्म दयिा; और संत पैट्रआर्क हर्मन की भवष्यिवाणी के अनुसार उसका नाम स्टीफन रखा गया[8239] । महा शनचिर की शाम को, नवजात शशिु का बपतस्मिा स्वयं पैट्रआर्क ने ही कयिा।

अपने शुद्धकिरण के दनि, उस प्रसन्न माँ ने शशिु को लेकर व्लाचेर्ना में परमेश्वर की परम पवत्रि माता के चर्च में लाया, और उसे अपनी बाहों में थामे, स्वर्ग की रानी की पवत्रि प्रतमिा के सामने खड़ी हो गई, जसिके सामने उसने पहले एक पुत्र की प्राप्ति के लिए प्रार्थना की थी। प्रतमिा को नहिारते हुए, उसने कहा:

'हे परम पवत्रि, मेरे इस प्रयि पुत्र को स्वीकार करो, जसिे आपने मुझे प्रदान कयिा है; स्वीकार करो उसको जसिे, उसके गर्भधारण से पहले ही, मैंने आपको और आपके एकमात्र पुत्र को समर्पति करने का वचन दयिा था। ईश्वर के बाद, मैं उसे आपके हवाले करती हूँ। उसके लिए माता और पोषक दोनों बनो, और उसकी रक्षा करना।'

यह और भी बहुत कुछ कहने और पवत्रि प्रतमिा के सामने प्रार्थना करने के बाद, वह अपने घर लौट आई और पूरे मन से अपने बेटे की देखभाल करने लगी।

इस बीच, अनास्तासयिस के बाद, थयिोडोसयिस ने शाही सहिासन संभाला[8240] , और थयिोडोसयिस के बाद, लयिो द इसाउरयिन[8241] ने सहिासन संभाला। इस पूरे समय, धन्य युवक स्टीफन शरीर से बढ़ रहा था और आत्मा में दृढ़ हो रहा था, तथा दव्यि धर्मग्रंथों का अध्ययन कर रहा था। प्रभु की कृपा से, वह समझ और परमेश्वर की बुद्धि में नपिुण हो गया, क्योंकि उसने पवत्रि पुस्तकों को पढ़ने, दनि-रात परमेश्वर के वचन का अध्ययन करने में बहुत उत्साह दखिाया; वह वशिेष रूप से संत जॉन क्राइसोस्टोम की रचनाएँ पढ़ना पसंद करता था।

प्रतमिा-वरिोधी वधिर्म के कारण परमेश्वर की कलीसयिा में महान उथल-पुथल मच गई, जसिके सबसे उत्साही अनुयायी स्वयं सम्राट, लयिो द इसाउरयिन थे। बाद वाले यहूदी ज्योतषियिों के प्रभाव में एक प्रतमिा-वरिोधी बन गए, जैसा कि नम्निलखिति कविदंती में वर्णति है।

लयिो द इसाउरयिन के शासन से कुछ साल पहले, फनिसियिा के लाओदकियिा से आए कुछ यहूदी[8242] अरब के राजकुमारों में से एक, इसफि[8243] के पास गए। झूठी भवष्यिवाणी करते और जादू-टोना करते हुए, उन्होंने उसे चालीस साल का जीवन और अरबों पर प्रभुत्व का वादा कयिा, बशर्ते कि वह आदेश दे कि अपने पूरे राज्य के सभी चर्चों से पवत्रि प्रतमिाओं को हटाकर नष्ट कर दयिा जाए। इसफि ने उनकी बात पर वशि्वास कयिा और एक आदेश जारी कयिा कि हर जगह चर्चों से पूजनीय प्रतमिाओं को हटाकर आग के हवाले कर दयिा जाए। लेकनि प्रतशिोध के स्वामी, ईश्वर ने , उसे मार गरिाया, जसिसे वह एक साल भी जीने से पहले ही मर गया। उसके बेटे ने, राजकुमार के रूप में अपने पति का स्थान

[8239] यह 715 में था।

[8240] यह, बेशक, एड्रामटियिम के थयिोडोसयिस तृतीय को संदर्भति करता है, जन्हिोंने 715 से 716 तक शासन कयिा।

[8241] सम्राट लयिो तृतीय इसाउरयिन ने 716 से 741 तक शासन कयिा। उन्हें 'इसौरीयन' कहा जाता था क्योंकि वे एशयिा माइनर के दक्षणि में स्थति एक प्रांत इसौरयिा के मूल नविासी थे।

[8242] फ़निशियिन लाओडसियिा भूमध्य सागर के तट पर, सीरयिाई एंटओक से कुछ दक्षणि में स्थति थी।

[8243] अरब दक्षणिी एशयिा में, लाल सागर और काला सागर तथा फारस की खाड़ी के बीच स्थति एक काफी बड़ा प्रायद्वीप है। अरब की आबादी सेमेटकि मूल की है और मुख्य रूप से खानाबदोश जीवन शैली अपनाती है। साथ ही, अरब कई छोटी-छोटी रयिासतों में वभिाजति है, जनिमें से प्रत्येक का नेतृत्व एक शेख करता है। ईसाई धर्म अरब में बहुत जल्दी पहुँच गया था (जैसा कि प्रेरतिों के काम 2:11; गलातयिों 1:17 से अनुमान लगाया जा सकता है), और परंपरा है कि प्रेरति बार्थोलोम्यू ने वहाँ ईसाई धर्म का प्रचार कयिा।

संभालने के बाद, उन यहूदियों को झूठे नबियों और जादूगरों के रूप में एक कठोर दंड देना चाहा; लेकिन वे, राजकुमार के क्रोध से भागते हुए, अरब छोड़कर इसौरिया में शरण ले गए।

एक दिन वे वहाँ एक झरने के पास आराम कर रहे थे। तभी एक युवक—लियो नाम का एक इसाउरियन, जो कद-काठी और सुंदरता में महान था—वहाँ से गुज़र रहा था। वह उसी झरने के पास आराम करना चाहता था जहाँ यहूदी ज्योतिषी बैठे थे, और रास्ते से उतरकर उनके साथ बैठ गया। उस युवक पर नज़र डालते ही, ज्योतिषियों ने भविष्यवाणी करनी शुरू कर दी कि वह ग्रीस का राजा बनेगा। साधारण पृष्ठभूमि से होने और, इसके अलावा, गरीब होने तथा एक साधारण शिल्प से मुश्किल से अपना गुज़ारा करने के कारण, लियो ने यहूदियों पर विश्वास नहीं किया। लेकिन उन्होंने लगातार अपनी भविष्यवाणी दोहराई, यह कहते हुए कि यदि वह उनसे यह वचन दे दे कि सिंहासन संभालने के बाद वह उनकी कोई भी मांग पूरी करेगा, तो वह निश्चित रूप से राजा बनेगा। और उसने उस स्थान के पास सेंट थियोडोर के चर्च में उनसे अपनी मांग पूरी करने की कसम खाई; इस कसम के बाद, वे अपने-अपने रास्ते चले गए।

थोड़ी ही देर बाद, उस युवक को पैट्रसियिन सेसनियस[8244] ने सेना में भर्ती कर लिया, जहाँ वह शीघ्र ही पदोन्नति पाकर स्पैथारियस[8245] बन गया। तत्पश्चात् सम्राट अनास्तासियस द्वितीय ने उसे पैट्रसियिन की उपाधि प्रदान की और एशिया माइनर का राज्यपाल नियुक्त किया। अनास्तासियस की मृत्यु पर, थियोडोसियस को सम्राट घोषित किया गया, लेकिन लियो ने उसे मान्यता देने से इनकार कर दिया और विद्रोह कर दिया। ईश्वर की कृपा से, वह थियोडोसियस को उखाड़ फेंकने और स्वयं के लिए शाही सिंहासन पर कब्ज़ा करने में सफल रहा। शुरुआत में वह एक धर्मपरायण और रूढ़िवादी सम्राट था, लेकिन बाद में वह अधर्मी हो गया, क्योंकि जिल्द ही वे यहूदी उसके पास आए जिन्होंने जादू-टोने के द्वारा उसके शासन की भविष्यवाणी की थी। उन्होंने लियो को उसके वादे की याद दिलाई, जिसे उसने शपथ के साथ पुष्ट किया था, और कहा कि अब समय आ गया है कि वे उससे जो कुछ भी मांगें, उसे पूरा किया जाए। राजा ने उनसे पूछा:

'तो, तुम मुझसे क्या चाहते हो?'

लेकिन उन्होंने, मसीह और ईसाई धर्म के शत्रु होने के कारण, उससे न तो सोना, न चाँदी और न ही कोई अन्य खजाना माँगा, बल्कि यह मांगा कि वह परमेश्वर के गिरिजाघरों से पवित्र प्रतिमाओं को हटा दे।

उन्होंने कहा, 'राजा! यदि आप ऐसा करते हैं, तो ईश्वर आपका राज बहुत वर्षों तक बनाए रखेंगे; लेकिन यदि आप नहीं करते हैं, तो आप जल्द ही अपना राज्य और अपनी जान दोनों खो देंगे।'

यह याद करते हुए कि उन ज्योतिषियों की पहली भविष्यवाणी—कि उसे एक राज्य मिलेगा—सच्ची साबित हुई थी, लियो को डर था कि यह भविष्यवाणी—कि वह अपना राज्य और अपनी जान दोनों खो देगा—भी सच हो जाएगी यदि वह उनकी आज्ञा न माने। इसलिए, उसने एक फरमान जारी किया जिसमें चर्चों और घरों से पवित्र प्रतिमाओं को बाहर फेंकने और उन्हें पैरों तले रौंदने का आदेश दिया गया; ऐसा करते हुए, उस अधर्मी राजा ने प्रतिमाओं को मूर्तियाँ कहा, और जो उनकी पूजा करते थे उन्हें मूर्तिपूजक कहा।

और मसीह की कलीसिया में बड़ा उथल-पुथल मच गया, क्योंकि जहाँ कुछ लोग राजा की आज्ञा का पालन करते हुए पूजनीय प्रतिमाओं को बाहर फेंक रहे थे और उन्हें पैरों तले रौंद रहे थे, वहीं अन्य लोगों ने राजा का विरोध किया और प्रतिमाओं के प्रति अपनी श्रद्धा के लिए अनेक यातनाएँ सहन कीं। कॉन्स्टेंटिनोपल के पैट्रिआर्क, सेंट जर्मनस ने भी राजा की विधर्मिता का समर्थन करने से इनकार कर दिया और लियो के अधर्मी फरमान का कड़ा विरोध किया। इसके लिए, सम्राट ने संत को अपमानजनक रूप से पैट्रिआर्केट से हटा दिया और उनकी जगह एक समान विचारधारा वाले व्यक्ति, अनास्तासियस नामक एक विधर्मी को नियुक्त कर दिया।[8246] और उस समय कई बिशपों और पुरोहितों ने पवित्र प्रतिमाओं की पूजा करने के लिए विभिन्न यातनाएं झेलीं।

कॉन्स्टेंटिनोपल में, सेंट सोफिया चर्च के पास, 'क्यूरियोसिटी गार्डन' के नाम से एक विशाल इमारत खड़ी थी। प्राचीन काल से, इसमें तीन लाख से अधिक संख्या में पुस्तकों का एक विशाल संग्रह था। इन किताबों के लिए, इस इमारत

[8244] 'पैट्रसियिन' की उपाधि मूल रूप से केवल सीनेटरों के बच्चों के लिए थी, जिन्हें लैटिन में 'राइजेस' कहा जाता था। बाद में, यह उपाधि कुलीन रोमन वंश के सभी व्यक्तियों पर लागू होने लगी। हालाँकि, सम्राट कॉन्स्टेंटाइन ने 'पैट्रसियिन' की उपाधि को एक व्यक्तिगत सम्मान बना दिया, जो उच्च-पदस्थ अधिकारियों को प्रदान की जाती थी लेकिन वह आनुवंशिक नहीं थी।

[8245] स्पैथारियस – एक घोड़सवार और ज़ार का अंगरक्षक। बाद में, स्पैथारियस की उपाधि केवल एक मानद उपाधि बन गई जो सैन्य अधिकारियों को प्रदान की जाती थी, और इसमें अब ज़ार की रक्षा करने का कर्तव्य शामिल नहीं था।

[8246] कॉन्स्टेंटिनोपल के पैट्रिआर्क अनास्तासियस ने 730 से 753 तक चर्च का नेतृत्व किया।

में कई सबसे वदि्वान और बुद्धमिान पुरुष रहते थे, जनि्हें सम्राट ने बार-बार अपनी नास्तकि वधिर्म में लुभाने की कोशशि की, लेकनि हर बार असफल रहा। फरि उसने इमारत को झाड़यिों और लकड़ी से घेरकर आग लगा देने का आदेश दयिा, और इस तरह वह कतिाबों और वहाँ मौजूद वदि्वानों सहति जलकर राख हो गई। नव-नयिुक्त पैट्रआिर्क अनास्तासयिस ने, राजा को खुश करने के लिए, आदेश दयिा कि उद्धारकर्ता का प्रतमिा, जो उपर्युक्त घर के तांबे के द्वार पर स्थति था, उतारकर जमीन पर फेंक दयिा जाए।

पतिृसत्ता के आदेश का पालन करते हुए, एक सैनकि ने द्वार पर एक सीढ़ी लगाई और उसे नीचे फेंकने के इरादे से प्रतमिा की ओर चढ़ना शुरू कर दयिा। लेकनि वहाँ मौजूद धर्मपरायण महलिाओं ने, जो धर्मपरायणता के उत्साह से भरपूर थीं, उसके नीचे से सीढ़ी खींच ली और उसे ज़मीन पर फेंक दयिा; सैनकि गरि पड़ा, कुचल गया और मर गया। के बाद, महलिाओं ने जल्दबाजी में उस चर्च में शरण ली, जहाँ उस समय पैट्रआिर्क थे; वे पवत्रि स्थान में वनिाश की घृणास्पद वस्तु[8247] के रूप में खड़े थे, जनि्होंने परम पावन हरमन की जगह ले ली थी। पात्रआिर्क को देखते ही, महलिाओं ने उसे ज़ोर-ज़ोर से पवत्रि सद्धिांतों का वनिाशक, एक भाड़े का सैनकि और भेड़ों को लूटने वाला भेड़यिा कहना शुरू कर दयिा, न कि मसीह के झुंड का एक सच्चा चरवाहा; फरि उन्होंने उस पर पत्थर फेंकना शुरू कर दयिा। पैट्रआिर्क, डरकर, तुरंत ज़ार के पास गया और उसे उन महलिाओं द्वारा उस पर (पैट्रआिर्क पर) कएि गए अपमान के बारे में बताया। क्रोधति ज़ार ने पैट्रआिर्क का अपमान करने वाली महलिाओं को दंडति करने के लिए खचिी हुई तलवारों के साथ सैनकि भेजे - और धर्मपरायणता के लिए उन्होंने जो उत्साह दखिाया था, उसके लिए उन सभी पवत्रि महलिाओं को तलवारों का शकिार कर दयिा गया। तब ऑर्थोडॉक्स पर महान शोक का समय आया। उनमें से कई को कैद करके बेड़यिों में जकड़ दयिा गया; अन्य को नर्दियी यातनाएँ दी गईं और मृत्युदंड दयिा गया, जबकि कुछ ने अपने घर, गाँव और जमींदारयिाँ छोड़ दीं और अपने उत्पीड़क के हाथों से भागकर रेगस्तिान में शरण ली।

[8248]स्टीफन के माता-पति, जो अपनी माँ के गर्भ से ही धन्य थे, भी ऑर्थोडॉक्स के क्रूर उत्पीड़न से बचना चाहते थे, ताकि वे अपनी भक्ति को अछूत रख सकें। वे केवल अपने बेटे के वयस्क होने का इंतजार कर रहे थे, ताकि वे उसे मठवासी जीवन में ईश्वर की सेवा के लिए समर्पति कर सकें, जैसा कि उन्होंने ईश्वर की माता से वादा कयिा था। हालाँकि, वे स्टीफन को कसिी भी बीजान्टनि मठ में नहीं भेजना चाहते थे, जो अपने उत्पीड़क से बचने के लिए भागे हुए लोगों से खचाखच भरे हुए थे। वे अपने बेटे को बथिनियिा में स्थति माउंट ऑक्सेंटयिस पर ईश्वर को समर्पति करना पसंद करते थे, जो सम्माननीय पति ऑक्सेंटयिस के नाम पर रखा गया था, जो शांति की तलाश में वहाँ बसने वाले पहले व्यक्ति थे। यह स्थान एकांत में था और सभी सांसारकि कलह से दूर था। ऑक्सेंटयिस के बाद, उनके शष्यि और उनके पवत्रि जीवन के अनुयायी सर्जयिस यहाँ रहे; सर्जयिस के बाद वेंडयिन आए, जो सद्गुणों में परखे गए थे; फरि धन्य ग्रेगरी; और उनके बाद, आदरणीय जॉन। यही थे जनिके पास स्तेफन के माता-पति अपने 16 वर्षीय पुत्र को ले आए; उन्होंने उस लड़के को पवत्रि वृद्ध के हवाले कर दयिा और उनसे वनिती की कि वे उनके पुत्र को एक स्वर्गदूत के समान गढ़ें और उसे परमेश्वर की सेवा करना सखिाएँ। स्तेफन पर दृष्टि डालते ही और अपनी सूक्ष्म दृष्टि से उसमें परमेश्वर की कृपा को पहचानकर, वृद्ध ने कहा:

'सत्य में, ईश्वर की आत्मा इस लड़के पर वरिाजमान है।'

और उन्होंने उस धन्य युवक को स्नेहपूर्वक स्वीकार कयिा, उसे संन्यास की दीक्षा दी, और उसे मौन जीवन के तपस्वी अभ्यासों में शक्षिति करना शुरू कयिा।

स्वर्गदूत सदृश रूप धारण कर, धन्य युवक स्तेफानो ने स्वर्गदूतों जैसा जीवन जयिा, और स्वयं को एक परपिूर्ण भक्षिु साबति कयिा। वह उपवास और प्रार्थना में कभी ढीला नहीं पड़ता था; उसमें एक कोमल स्वभाव, एक वनिम्र हृदय और एक नम्र आत्मा थी; वह लगातार मौन रहता था; वह शारीरकि शुद्धता और अपनी कुँवारीपन की अखंडता का पालन करता था; और अपने जीवन में उसने सच्ची गरीबी और संन्यासी के सांसारकि संपत्ति से वैराग्य का उदाहरण प्रस्तुत कयिा। उन्होंने मठवासी आज्ञाकारति के श्रम को बनिा कसिी शकिायत के सहन कयिा और उन पर सौंपी गई हर चीज़ को लगन से पूरा कयिा, हर काम में उत्साह दखिाया और अपनी परश्रिमशीलता से खुद को वशिष्टि बनाया। संयोग से, पीने के लिए आवश्यक पानी उस गुफा से काफी दूर एक जगह से प्राप्त कयिा जाता था जहाँ स्टीफन रहते थे। फरि भी संत हर

[8247] 'वरिाने की घृणा' (abomination of desolation) अभव्यिक्ति दानयिेल की पुस्तक 9:27 से ली गई है; तुलना करें मत्ती 24:15 से; इसका प्रयोग अनास्तासयिस पर यह इंगति करने के लिए कयिा गया कि वह संत जर्मनस का उत्तराधकिारी बनने के अयोग्य था।

[8248] माउंट ऑक्सेन्टयिस नकिोमेडयिा की खाड़ी के पास, कॉन्स्टेंटनिोपल के सामने स्थति था।

दनि आवश्यक मात्रा में पानी लाते थे, इस उद्देश्य के लिए एक लंबा सफर तय करते और फिर पानी के साथ पहाड़ पर चढ़ने के लिए कड़ी मेहनत करते थे। और यह केवल पानी ही नहीं था, बल्कि उन्हें जो कुछ भी और चाहिए होता था, वह सब कुछ वे दूर-दराज के स्थानों से लाते थे, और थका देने वाली मेहनत से खुद को थका देते थे। फिर भी धन्य स्टीफन ने अपने तपस्वी प्रयासों की कठिनाई के बारे में कभी शिकायत नहीं की, एक बार भी बड़बड़ाया नहीं, और अपनी आज्ञाकारिता के साथ, अपने पूजनीय गुरु को एक सच्चा और निस्वार्थ प्रेम दिखाया। जहाँ तक उनके अन्य गुणों, कारनामों और परिश्रमों का सवाल है, जिन्हें उन्होंने अपने युवा दिनों से ही अपनाया था, उन्हें कौन गिन सकता है?

धन्य स्टीफन के गुरु, आदरणीय जॉन, अपने शिष्य के तपस्वी जीवन में उत्साह देखकर, आत्मा में आनंदित हुए और, हवा की तरह अपने ईश्वर-प्रेरित वचनों और शिक्षाओं के द्वारा, आत्मा के हृदय में जलती हुई आग में हवा फूँकते हुए, प्रभु की महिमा के लिए और भी महान कार्यों की इच्छा, उनके प्रति और भी गहरा प्रेम, और ईश्वर का भय जगाया। इसके अलावा, वह स्वयं सद्गुणों में परिपूर्ण, ईश्वर की कृपा से परिपूर्ण और ईश्वर द्वारा भविष्य-दृष्टि के वरदान से संपन्न व्यक्ति थे।

एक बार, जब धन्य स्तेफन ने एक निश्चित कार्य पूरा करके अपने गुरु के पास लौटे, तो उन्होंने देखा कि वे, गुफा की छोटी सी खिड़की पर अपना सिर रखकर, जोर-जोर से रो रहे थे। स्तेफन खिड़की के पास रुके और पवित्र वृद्ध के अपने ऊपर अपनी प्रथागत आशीर्वाद प्रदान करने की प्रतीक्षा करने लगे। और वह वहाँ लंबे समय तक चुपचाप खड़ा रहा, संत के कड़वे रोने पर आश्चर्यचकित होकर और उनके आँसुओं का कारण पूछने की हिम्मत नहीं कर सका। लेकिन संत ने स्वयं उससे कहा:

'प्रिय पुत्र, तुम ही मेरे दुख का कारण हो; तुम्हारे ही लिए मैं इतना कड़ुवा रो रहा हूँ; क्योंकि प्रभु ने मुझे प्रकट किया है कि यह स्थान तुम्हारे द्वारा फल-फूल उठेगा और महिमामय होगा, परन्तु मूर्तिभंजक इसे लूटेंगे और उजाड़ देंगे।'

अपने गुरु से यह सुनकर, धन्य स्टीफन ने गहरी आह भरते हुए कहा:

'मुझसे कहिए, हे पवित्र पिता, वह सब कुछ जो प्रभु ने आपके सामने मेरे विषय में प्रकट किया है: मेरा क्या होगा? और क्या मैं मूर्तिभंजकों की विधर्मी शिक्षाओं से भटककर नष्ट नहीं हो जाऊँगा?'

वरिष्ठ ने उत्तर दिया:

'नहीं, मेरे बच्चे, ऐसा तुम्हारे साथ कभी नहीं होगा; परन्तु मैं तुम्हें प्रेरित के वचनों से चेतावनी देता हूँ: एफिसियों 5 – *"इसलिये चौकस रहो और सावधानी से चलो"*, और मत्ती 24 – *"जो अन्त तक टिकेगा, वह उद्धार पाएगा"*।

उन्होंने स्टीफन से ये और भी कई शब्द कहे और उसे भविष्य में होने वाली सभी घटनाओं के बारे में बताया।

इस बीच, पूजनीय स्टीफन के पिता का निधन हो गया। यह जानकर, पूजनीय संत ने अपने आध्यात्मिक पिता का आशीर्वाद लिया और बिज़ान्टियम के लिए रवाना हो गए और वहाँ अपने सांसारिक पिता का यथोचित अंतिम संस्कार किया; फिर उन्होंने अपने पिता द्वारा छोड़ी गई सारी संपत्ति बेच दी और उसका पैसा गरीबों में बाँट दिया। इन मामलों को निपटाने के बाद, वह अपनी माँ और अपनी एक बहन को अपने साथ ले गया (संत की दूसरी बहन पहले ही बाइज़ेन्टाइन के एक मठ में संन्यास का संकल्प ले चुकी थी) और उन्हें उपरोक्त पूजनीय ऑक्सेन्टियस द्वारा स्थापित और समर्पित एक मठ में रख दिया, जिसका नाम उन्होंने रखा: 'ट्रिचिनिरिया', यानी 'बालों की'। यह नाम मठ को आंशिक रूप से इसलिए दिया गया था क्योंकि वहाँ जाने का रास्ता कठिन और असुविधाजनक था, और आंशिक रूप से इसलिए कि उसमें साधु जीवन की कठिनाइयाँ थीं, क्योंकि यह मठ अपने नियमों की सख्ती के लिए प्रसिद्ध था, और वहाँ रहने वाली ननों को बालों से बने वस्त्र पहनने होते थे। इसी मठ में संत स्टीफन ने अपनी माँ और बहन का संन्यासी के रूप में मुंडन संस्कार किया; वह स्वयं अपने पूजनीय गुरु के पास लौट आए और उनके साथ रहकर, उन्होंने पारंपरिक मठवासी तपस्या और श्रम में खुद को समर्पित कर दिया।

कुछ समय बीत जाने के बाद, धन्य स्टीफन के आध्यात्मिक पिता और शिक्षक, परम पूज्य जॉन, प्रभु के पास शांतिपूर्वक चल बसे; उनके लिए रोने के बाद, संत पास के तपस्वियों को उनकी मृत्यु की सूचना देने गए, और सभी, एकत्र होकर, रोते-बिलखते और उपयुक्त भजनों के साथ, परम पूजनीय जॉन के सम्मानित शरीर को उचित अंतिम संस्कार दिया। इस बीच, धन्य स्टीफन, जो 30 वर्ष से कुछ अधिक आयु के थे, ने एक गुफा में अकेले एक तपस्वी के रूप में रहने लगे।

अपने पवित्र गुरु, जो प्रभु के पास चले गए थे, और उससे पहले वहाँ रहे अन्य सम्मानित पिताओं से गुफा विरासत में मिलने पर, धन्य स्टीफन ने उनके सद्गुणों से परिपूर्ण आदर्श जीवन को भी विरासत में प्राप्त किया। परिणामस्वरूप, आसपास के क्षेत्रों से संन्यासी उसके पास आने लगे, जो उसके साथ रहना और उसे अपना मार्गदर्शक तथा शिक्षक

बनाना चाहते थे। उनमें थे: मारनि, एक दयालु और सदाचारी व्यक्ति; जॉन और क्रिस्टोफ़र; ज़कारियास, एक धार्मिक व्यक्ति; और अंत में, दो दुर्भावनापूर्ण व्यक्ति, सेरजियस और स्टीफन, जिनके बारे में नीचे और बताया जाएगा। छह अन्य व्यक्ति भी पूजनीय स्टीफन के पास आए, जिनके नाम मसीह प्रभु के लिए परिश्रम करने वालों की पुस्तक में दर्ज हैं। इस प्रकार एक मठ की स्थापना हुई, जिसके भ्रातृगण संत स्टीफन को अपना मठाधीश मानकर, निरंतर तपस्या में लगे रहे। वे सभी अपने हाथों की मेहनत से, अपने माथे के पसीने की कमाई से अपना भोजन अर्जित करते थे; परन्तु आदरणीय स्टीफन पुस्तकों की नकल करने की कला में निपुण थे; उन्हें नकल करके और बेचकर, उन्होंने अपने और दूसरों का भरण-पोषण किया। और परमेश्वर, जिन्होंने जंगल में इस्राएल का पालन-पोषण किया था, ने अपने इन सेवकों को भी वह सब कुछ भेजा जो आवश्यक था, ताकि मत्ती 6 के वचन उनके जीवन में पूरे हों: *'पहले परमेश्वर के राज्य और उसकी धार्मिकता की खोज करो, और ये सब बातें तुम्हें अतिरिक्त रूप से मिल* जाएँगी'। जैसे-जैसे धन्य स्टीफन के शिष्यों की संख्या बढ़ी, उन्हें एहसास हुआ कि जिसे शांति की उन्होंने इतनी लालसा की थी, वह भंग हो गई थी। तब संत ने उपर्युक्त मारिनस को बुलाया और मठ का नेतृत्व तथा उसकी देखभाल का दायित्व सौंप दिया। वह स्वयं उस पहाड़ पर एक अन्य स्थान पर चले गए और अपने लिए एक छोटी सी कोठरी बनाई, जिसमें वे 42 वर्ष की आयु में स्वयं को बंद कर लिए[8249] । इस कोठरी की कोई छत नहीं थी। कुछ समय तक वहाँ पूर्ण एकांत और मौन में रहने के दौरान, संत ने निरंतर ईश्वर से संवाद किया और स्वयं को प्रार्थना में समर्पित कर दिया। फिर भी, अपने तपस्या जीवन के इस नए स्थान पर भी, धन्य स्टीफन उन लोगों से बच नहीं सके जो उनसे आध्यात्मिक लाभ की तलाश में थे। जैसे पहाड़ पर बसा एक नगर अनदेखा नहीं रह सकता, और जैसे सुगंधित मसाले ढोने वाला व्यक्ति छिपा नहीं रह सकता – उसी प्रकार एक सदाचारी व्यक्ति, जो पूर्णता की ऊँचाइयों पर, मानो किसी पहाड़ पर, चढ़ गया है, और जो पुण्य कर्मों की सुगंध बिखेरता है, वह लोगों से छिपा या अनदेखा नहीं रह सकता। धन्य स्टीफन के साथ भी ठीक ऐसा ही था। उनके तपस्वी जीवन की ख्याति दूर-दूर तक फैल गई, और जैसे मधुमक्खियाँ शहद की ओर आकर्षित होती हैं, वैसे ही मोक्ष की चाह रखने वाले लोग भी दूर-दूर से उस पूजनीय व्यक्ति के पास आते थे, ताकि वे उनके उपदेशात्मक शब्दों और उनके जीवन जीने के तरीके से स्वयं को शिक्षित कर सकें। रविवार के पास आने वालों में केवल धार्मिक पुरुष ही नहीं, बल्कि महिलाएँ भी थीं। इनमें, अन्ना नाम की एक कुलीन विधवा का विशेष उल्लेख किया जाना चाहिए। अपने पति की मृत्यु के समय बहुत कम उम्र और संतानहीन होने के कारण, उसने अपनी सारी संपत्ति बेच दी और उसे गरीबों में बाँट दिया; फिर, परम पूजनीय स्टीफन के पास आकर, उन्होंने उसे भिक्षु जीवन के लिए दीक्षा दी और त्रिचिनारिया के मठ में भेज दिया।

उस समय, ज़ार लियो द इसाउरियन की मृत्यु हो गई। उनके उत्तराधिकारी उनके पुत्र, कॉन्स्टेंटिन कॉप्रोन्यमस[8250] हुए, जिन्होंने अपने पिता से भी अधिक उग्रता से ईश्वर की कलीसिया के विरुद्ध विद्रोह किया, चर्चों से पवित्र प्रतिमाओं को बाहर फेंका और उन्हें जला दिया। उनकी दुष्टता की निंदा मठवासी समुदाय के कई सबसे प्रतिष्ठित और बुद्धिमान लोगों ने की, जिन्होंने उन्हें यह साबित कर दिया कि वह गलत थे और उन पर विधर्म का आरोप लगाया। तब कोप्रोन्यमस को भिक्षुओं के प्रति एक अनियंत्रित क्रोध सवार हो गया, और उसने उन्हें क्रूर उत्पीड़न का शिकार बनाया तथा हर संभव तरीके से उनकी निंदा की। उसने संन्यासी वेश को 'अंधकार का वस्त्र' कहा, और भिक्षुओं को स्वयं मूर्तिपूजक करार दिया क्योंकि वे बड़ी लगन से पवित्र प्रतिमाओं की पूजा का बचाव करते थे। इसी समय, उस अधर्मी ज़ार ने मूर्ख लोगों की एक बड़ी भीड़ इकट्ठी की जो उसकी आज्ञाओं का पालन करती थी, और उन्हें यह शपथ दिलाई कि वे पवित्र प्रतिमाओं की पूजा नहीं करेंगे, बल्कि उन्हें मूर्तियाँ कहेंगे; कि वे भिक्षुओं के साथ कोई लेन-देन नहीं करेंगे, और न ही उनके हाथों से परम पवित्र संस्कार ग्रहण करेंगे, – और जो कोई भी भिक्षु से मिले, उसे पत्थर फेंकने थे, और उसे भटका हुआ, अंधकार का पुत्र और मूर्तिपूजक कहने थे।

जब यह सब हो रहा था, तब कॉन्स्टेंटिनोपल के दुष्ट पैट्रिआर्क अनास्तासियस, जिन्हें सेंट जर्मनस के बाद लियो द इसाउरियन ने पैट्रिआर्केट में पदोन्नत किया था, की मृत्यु हो गई। अनास्तासियस की जगह, कोप्रोनिमस ने उसी नाम के एक भिक्षु, कॉन्स्टेंटिन को पैट्रिआर्केट में पदोन्नत किया, जो उनका समान विचारधारा वाला सहयोगी था[8251] । इसके अलावा, उस अधर्मी सम्राट ने उसे केवल अपने अधिकार से, किसी परिषद चुनाव के बिना, पादरी-प्रधान के सिंहासन पर पदोन्नत किया: उसने स्वयं उसे उपदेश-मंच पर चढ़ाया और उस पर ओमोफोरीऑन रखा, यह घोषित करते हुए कि वह

[8249] यह वर्ष 756 ईस्वी में था।

[8250] सम्राट कॉन्स्टेंटिन पंचम कॉप्रोन्यमस ने 741 से 775 तक शासन किया।

[8251] यह, बेशक, कॉन्स्टेंटिन द्वितीय, कॉन्स्टेंटिनोपल के पैट्रिआर्क, के बारे में है, जिन्होंने 754 से 766 तक बाइज़ेंटाइन चर्च का नेतृत्व किया।

पादरी-प्रधान के पद के योग्य था। इसके बाद, सम्राट और नए पैट्रआर्क दोनों ने एक-दूसरे से परामर्श करने के बाद, सभी शहरों को पत्र भेजे, जिसमें सभी बिशपों को आइकन की पूजा की निंदा और उन्मूलन के लिए एक परिषद हेतु शाही शहर में बुलाया गया। और उस समय कॉन्स्टेंटिनोपल में बड़े-बड़े अन्यायपूर्ण कृत्य हुए। यहाँ तक कि वे पवित्र पात्र भी जिनमें दैवीय रहस्यों का अनुष्ठान किया जाता था, पैरों तले रौंद दिए गए, क्योंकि उन पर पवित्र छवियाँ थीं। पवित्र प्रतिमाओं को फेंक दिया गया—कुछ दलदलों में, कुछ समुद्र में, कुछ आग में, जबकि अन्य को काटकर कुल्हाड़ियों से तोड़ दिया गया। जहाँ तक चर्च की दीवारों पर लटकी प्रतिमाओं की बात है, कुछ को लोहे से खुरच दिया गया, जबकि अन्य पर नई रंगत कर दी गई। अत्याचारियों ने ब्लाचेर्ना में स्थित परमेश्वर की परम पवित्र माता को समर्पित सबसे भव्य चर्च को भी नहीं बख्शा, जो प्रभु यीशु मसीह के अवतार से लेकर उनके क्रूस पर चढ़ाए जाने और पुनरुत्थान तक, उनके पृथ्वी पर जीवन की सभी घटनाओं के चित्रों से भव्य रूप से सुसज्जित था। इस चर्च में, निर्दयी ज़ार कोप्रोनिमि ने सोने और कीमती पत्थरों से जगमगाती इसकी सभी प्रतिमा-संबंधी सजावट को नष्ट करने का आदेश दिया, और, मानो, इसे एक रानी की बैंगनी पोशाक छीन लेने के समान, पूरी तरह से नंगा कर दिया; इन सबके स्थान पर, उसने इसकी दीवारों पर पेड़ों, जानवरों और पक्षियों की तस्वीरें बनाने का आदेश दिया। और उस समय दाऊद का वचन पूरा हुआ: भजन संहिता 78:1–2 – *'हे परमेश्वर, अन्यजाति तेरी विरासत में आ गए हैं; उन्होंने तेरे पवित्र मन्दिर को अपवित्र किया है; उन्होंने यरूशलेम को खण्डहर बना दिया है; उन्होंने तेरे दासों के शव आकाश के पक्षियों को खिला दिए हैं, और तेरे पवित्र लोगों के शरीर पृथ्वी के जानवरों को खिला दिए हैं*'

क्योंकि उसी समय मूर्तिभंजकों ने संतों की पवित्र वस्तुओं को गिरिजाघरों से बाहर फेंक दिया और उन्हें या तो आग में या समुद्र में डाल दिया, या उन्हें शहर के बाहर खींचकर पहाड़ों से खाइयों और दलदलों में फेंक दिया। जहाँ तक उन लोगों का सवाल है जो पवित्र प्रतिमाओं और अवशेषों के सम्मान के लिए साहसपूर्वक खड़े हुए, दुष्ट विधर्मीयों ने उन्हें निर्दयता से यातनाएँ दीं और उन्हें एक कड़वी मृत्यु दी, उनका खून पानी की तरह बहाया; जबकि प्रतिमाओं के लिए यातना दिए गए लोगों के शवों को बिना दफ़नाए छोड़ दिया गया और शिकारी पक्षियों और जंगली जानवरों द्वारा खाए जाने के लिए छोड़ दिया गया। तब सभी ऑर्थोडॉक्स ईसाइयों के लिए महान दुख का समय आया, जैसा कि संसार की शुरुआत से नहीं देखा गया था।

ऑर्थोडॉक्स के खिलाफ शुरू किए गए उत्पीड़न से भागकर, कई भिक्षु कॉन्स्टेंटिनोपल छोड़कर पूजनीय स्टीफन के पास गए, इस उम्मीद में कि उन्हें उनसे सही सलाह और शिक्षा मिलेगी। संत ने उन्हें अपने ईश्वर-प्रेरित शब्दों से विस्तार से सांत्वना दी और उन्हें धर्मपरायणता में दृढ़ रहने तथा पवित्र प्रतिमाओं के लिए अपना रक्त बहाने से भी न डरने की शिक्षा दी; जिनमें पर्याप्त साहस नहीं था और जो यातनाओं से डरते थे, उन्हें उन्होंने अन्य देशों में भाग जाने की सलाह दी जहाँ प्रतिमा-विरोधियों द्वारा कोई उत्पीड़न नहीं था। इसके बाद, सभी बाइज़ेंटाइन मठ सुनसान हो गए, और शाही शहर में एक भी भिक्षु दिखाई नहीं दिया। कुछ संतों ने, जो ऑर्थोडॉक्सी (सही आस्था) के लिए दृढ़ रहे, अपनी जान दे दी, जबकि अन्य, जो अपना जीवन और सच्ची आस्था दोनों बचाना चाहते थे, अन्य देशों में भाग गए और पूरी पृथ्वी पर बिखर गए। ईस्वी वर्ष 754 में, कॉन्स्टेंटिनोपल में एक मूर्तिभंजक परिषद बुलाई गई, जिसमें 838 पूर्वी बिशप शामिल हुए, लेकिन एक भी पैट्रआर्क उपस्थित नहीं था, सिवाय कॉन्स्टेंटिनोपल के एक झूठे पैट्रआर्क, विधर्मी कॉन्स्टेंटिनोके, जो सम्राट का सहयोगी था। परिषद के लिए निर्धारित स्थान ब्लाचेर्ने में स्थित 'चर्च ऑफ द मोस्ट होली मदर ऑफ गॉड' था, जिसे इसकी प्रतिमा संबंधी सजावट से वंचित कर दिया गया था, और यह एक रेगिस्तान और लुटेरों के अड्डे जैसा प्रतीत होता था। इसी चर्च में सभी आए हुए बिशप, कानून-विहीन सम्राट और झूठे पैट्रआर्क के साथ इकट्ठा हुए। और लंबे विचार-विमर्श और विवादों के बाद, ज़ार ने सभी बिशपों को अपने साथ सहमत होने और उसकी अधर्मी निंदा में शामिल होने के लिए मना लिया। साथ ही, कई बिशपों ने राजा और पादरी की गलती को स्पष्ट रूप से देखा; फिर भी, राजा और पादरी के क्रोध से डरकर, और इस डर से कि ऑर्थोडॉक्स पर नई विपत्तियाँ आ सकती हैं, उन्होंने राजा के खिलाफ कुछ भी कहने की हिम्मत नहीं की और इस अधर्मी विधर्म में शामिल हो गए। बाद में, कांस्टेंटिन द यंगर और उसकी माँ आइरीन के शासनकाल के दौरान आयोजित सच्ची सप्तम सार्वभौमिक परिषद में[8252] , उन्होंने प्रतिमा-भंजक विधर्म का

[8252] बेशक, कॉन्स्टेंटिन VI पोर्फ्योजेनिटिस, जिसने 780 से 797 तक शासन किया। महारानी आइरीन, उसकी माँ और लियो VI की पत्नी, जो प्रतिमा पूजा की एक उत्साही रक्षक थीं, ने दस वर्षों तक अपने बेटे की ओर से साम्राज्य पर शासन किया और 802 तक उसकी जगह पर शासन किया।

परत्याग कयिा और पश्चाताप के साथ सच्चे धर्म में लौट आए; फरि भी अब वे नर्दियी ज़ार और पादरी के अनुयायी बन गए, और उनकी वधिर्मी कल्पनाओं से सहमत हो गए। और ऐसे दुष्ट तथा ईश्वर-घृणति झूठे सद्धिांत तैयार कएि गए:

1) यह आदेश दयिा गया कि पवत्रि प्रतमिाओं को मूर्तयिाँ माना जाए।

२) पवत्रि प्रतमिाओं की पूजा करने वालों को सभी को चर्च से बहष्किृत कर दयिा गया; इसके अलावा, संतों के बीच के पैट्रआिर्क अनास्तासयिस से पहले के पैट्रआिर्क सेंट हर्मन पर भी बहष्किार की घोषणा की गई (ये कानूनवहिीन वधिर्मी, जो स्वयं शापति थे, उन्होंने एक पवत्रि और धर्मी व्यक्ति को शापति कयिा, परन्तु परमेश्वर ने उस पर आशीर्वाद कयिा, ताकि पवत्रिशास्त्र की यह बात पूरी हो: भजन संहति 108 – *'वे शाप देते हैं, परन्तु आप आशीर्वाद देते* हैं'।

3) यह आदेश दयिा गया कि हमें यह स्वीकार करना चाहएि कि नि केवल संत, अपनी मृत्यु के बाद, अपनी मध्यस्थता के माध्यम से हमारी मदद नहीं कर सकते, बल्कि स्वयं ईश्वर की माता भी नहीं कर सकतीं।

४) प्रेरतिों, शहीदों, कन्फेशर्स, पूजनीयों और उन सभी जनि्हें परमेश्वर ने प्रसन्न कयिा है, उन्हें 'संत' कहने पर प्रतबिंध लगा दयिा गया।

5) यह अधर्मी परषिद, जसिने ऐसे आदेश जारी कएि, को पहले छह सार्वभौमकि परषिदों में गनिा गया, और यह आदेश दयिा गया कि इसे सातवीं सार्वभौमकि परषिद कहा जाना चाहएि। जो कोई भी उस परषिद को स्वीकार नहीं करता था, उसे अरअिस, नेस्टोरयिस, यूटकिस और डयिोस्कोरस की तरह ही शाप दयिा जाता था[8253] ।

इस परषिद में, पैट्रआिर्क के बाद सबसे प्रमुख बशिप थे: थयिोडोसयिस, एफ़सिुस के बशिप; नकिोमेडयिा के कॉन्स्टेंटनि; नाकोलयिस के नाकोलयिस; साथ ही ससिीनयिस और बेसलि।

अन्याय का कृत्य करने के बाद, बशिपों ने तैयार कएि गए फरमानों पर हस्ताक्षर कएि, ताकि शास्त्र के वचन उन पर पूरे हुए: *'अन्याय बबेल से, बुज़ुर्गों और न्यायाधीशों से नकिला है जो लोगों पर शासन करते प्रतीत होते थे'* (दानयिेल 13:5), और फरि: *'कई चरवाहों ने मेरी दाख की बारी को उजाड़ दयिा है; उन्होंने मेरे खेत को रौंद डाला है; उन्होंने मेरे प्रयि खेत को सुनसान वीरान में बदल दयिा है'* (यर्मियाह 12:10)।

परषिद की वचिार-चर्चा के समापन पर, परषिद में भाग लेने वाले बशिपों ने लोगों को आनंदपूर्वक और गंभीरता से यह उद्घोषति करना सखिाया: 'आज संसार के लएि उद्धार है', क्योंकि हे राजा, आपकी परवाह से हम मूर्तयिों से छुड़ाए गए हैं'।

इस बीच, अधर्मी राजा कॉन्स्टेंटाइन कॉप्रोन्यमस ने पूजनीय स्टीफन के बारे में सुना, जो माउंट ऑक्सेन्टयिस पर एक तपस्वी के रूप में रह रहे थे। राजा के ध्यान में यह बात आई कि वह एक धर्मपरायण और सदाचारी व्यक्ति था, वह पवत्रि शास्त्रों का गहरा ज्ञाता था, और उसकी ख्याति दूर-दूर तक फैली हुई थी, इसलएि हर कोई उसे प्राचीन पवत्रि पतिाओं के समकक्ष मानता था – और, अंत में, कि वह एक उत्साही प्रतमिा-पूजक था, जो दूसरों को पवत्रि प्रतमिाओं की पूजा करना सखिाता था। यह सब जानने के बाद, कोप्रोनमिस ने धन्य स्टीफन को बहकाने और उसे अपने वचिारों से सहमत कराने का नश्चिय कयिा, इस आशा में कि यदि वह उसे अपने पक्ष में कर ले, तो इससे उसकी वधिर्म को वशिेष दृढ़ता और शक्ति मलिेगी। और इसलएि उसने अपने एक करीबी सहयोगी, कैलस्टिस नामक एक पैट्रसियिन, जसिे राज्य परषिद में प्रमुख व्यक्ति माना जाता था, को बुलाया। कैलस्टिस एक कुशल और वाक्पटु वक्ता था, और अधर्मी राजा ने अपनी आशा उसकी कला की शक्ति में रखी। उसने उसे आज्ञा दी कि वह आदरणीय स्टीफन के पास जाए और राजा की आज्ञा-पत्र पहुँचाए, जसिमें यह माँग की गई थी कि आदरणीय स्टीफन प्रतमिाओं की पूजा का त्याग करें और अवैध प्रतमिा-भंजक परषिद में तैयार कएि गए आदेशों पर हस्ताक्षर करें। इसी समय, राजा ने कैलकिस्टस के माध्यम से रेवरेंड को वभिन्नि उपहार भेजे; हालाँकि, ये सोने या चांदी के नहीं थे (क्योंकि वह जानता था कि रेवरेंड को ऐसी चीजों की कोई

[8253] एरयिस, नेस्टोरयिस, यूटकिस और डयिोस्कोरस वधिर्मी नेता थे। एरयिस ने यह सखिाया कि परमेश्वर का पुत्र एक सृजति प्राणी है, जो परमेश्वर पति के समान पद का नहीं है। नेस्टोरयिस ने यह सखिाया कि यीशु मसीह सच्चे ईश्वर नहीं हैं, बल्कि एक मनुष्य हैं, जसिे उनके जीवन की पवत्रिता के कारण ईश्वर की ओर से एक वशिेष अनुग्रह प्रदान कयिा गया था। यूटकिस और डयिोस्कोरस मोनोफज़िटि संप्रदाय के समर्थक थे, जो यह सखिाता था कि यीशु मसीह में एक ही दव्यि स्वभाव था, जसिने उनके मानवीय स्वभाव को अपने में समा लयिा था। यह वचिार सबसे पहले यूटकिस द्वारा प्रस्तुत कयिा गया था - जो कॉन्स्टेंटनिोपल के एक मठ का आर्चमिांड्राइट था। इस बीच, डयिोस्कोरस (जो 444 से 451 तक अलेक्ज़ेंड्रयिा के पैट्रआिर्क के रूप में सेवारत था), इस सद्धिांत का एक उत्साही रक्षक के रूप में उभरा।

आवश्यकता नहीं थी), बल्कि विभिन्न प्रकार के फल थे जिन्हें रेवरेंड आमतौर पर खाते थे: खजूर, बादाम और अंजीर[8254] ।

सम्माननीय स्टीफन के निवास[8255] पर पहुँचने पर, कैलकिस्टस ने उन्हें उपहार दिए और फिर एक कुशलता से रचित भाषण दिया, जिसमें उसने विस्तार से सम्माननीय संत को ज़ार की आज्ञा मानने और मूर्तिभंजन परिषद के आदेशों पर हस्ताक्षर करने के लिए मनाने की कोशिश की। कैलिस्टस ने अपने शब्दों को पवित्र पुस्तकों के उद्धरणों से मजबूत करने की कोशिश की, और धर्मग्रंथों के कुछ अंशों की अपनी समझ के अनुसार पुनर्व्याख्या की। लेकिन संत ने कैलिस्टस के सभी शब्दों के लिए बुद्धिमानी भरे प्रतिवाद पाए और अंत में, साहसपूर्वक उससे कहा:

'मैं तुम्हारी परिषद के आदेशों पर हस्ताक्षर नहीं करूँगा, जो झूठ और मिथ्या से भरी है, क्योंकि मैं *"कड़वी चीज़ों को मीठी, और अँधेरे को प्रकाश"* नहीं कहना चाहता, कहीं ऐसा न हो कि मैं अपने सिर पर भविष्यवाणी का श्राप "[8256] " ले आऊँ; और न ही मैं राजा की धमकियों से डरता हूँ, और मैं पवित्र प्रतिमाओं के लिए मृत्यु को भी स्वीकार करने को तैयार हूँ।'

तब उन्होंने अपना हाथ बढ़ाया और अपनी उंगलियाँ मुट्ठी में भींचते हुए कहा:

'भले ही मेरे अंदर इस मुट्ठी भर खून भी न होता, तब भी मैं अपने मसीह की प्रतिमा के लिए उसे बहाने से नहीं डरता। जहाँ तक आपके राजा की ओर से मेरे लिए लाए गए उपहारों की बात है, उन्हें वापस ले जाइए; क्योंकि मैं पवित्र धर्मग्रंथ के अनुसार चलना चाहता हूँ, जो कहता है: *'दुष्टों का तेल मेरे सिर पर न लगे, और विधर्मी भोजन मेरी गले को प्रसन्न न करे'* (देखें भजन संहिता 140:5)।

कुछ हासिल न कर पाने पर, कैलकिस्टस लौट आया और उसने राजा को वह सब कुछ बता दिया जो उसने स्टीफन से सुना था। यह सुनकर राजा आग-बबूला हो गया और उसने तुरंत कैलकिस्टस को स्वयं सैनिकों के साथ माउंट ऑक्सेन्टियस भेज दिया, यह आदेश देकर कि वे उस पूजनीय को पकड़ लें, उन्हें पहाड़ के नीचे स्थित त्रिचिनिरियस के मठ में ले जाएँ और वहाँ उन्हें कैद कर दें। कैलिस्टस और उसके साथ भेजे गए सैनिकों ने ठीक वैसा ही किया: उन्होंने संत की कोठरी पर धावा बोल दिया, लात मारकर दरवाज़ा तोड़ दिया और, बिना किसी दया के पादरी को बाहर घसीटकर, उसे ट्राइचिनिरियस के मठ में ले गए, जहाँ उन्होंने उसे कैद कर दिया। संत स्टीफन के साथ-साथ उनके सभी शिष्यों को भी पकड़ लिया गया और उसी कालकोठरी में ले जाया गया। सैनिकों ने कालकोठरी के दरवाज़ों पर मोर्चा संभाल लिया और सभी कैदियों की रखवाली करने लगे, राजा के अगले आदेशों का इंतज़ार करते हुए।

कैद में रहते हुए, धन्य स्टीफन और उनके सभी शिष्यों ने साहसपूर्वक गाया: 'हे सत्पुरुष, हम आपकी परम पवित्र प्रतिमा की पूजा करते हैं'[8257] ।

और वे छह दिन तक कालकोठरी में रहे, इस दौरान उन्होंने कुछ भी खाया-पिया नहीं। सातवें दिन, राजा की ओर से आदेश आया कि स्टीफन को उसकी कोठरी में वापस भेज दिया जाए; क्योंकि उस समय राजा को अपने राज्य पर स्कैथियन आक्रमण की खबर मिली थी[8258] । स्कैथियन आक्रमण को पीछे हटाने का इरादा रखते हुए, राजा ने उस पूजनीय व्यक्ति पर हो रहे अत्याचार को अस्थायी रूप से रोक दिया।

लेकिन कैलकिस्ट, राजा की ही तरह उसके प्रति द्वेष रखता था, उसने उस धन्य पुरुष के शिष्यों में से एक, अर्थात् सेरजियस, जिसे हम यहाँ बताना चाहते हैं, को गुप्त रूप से बुलाया। उसे बुलवाने के बाद, कैलकिस्टस ने चापलूसी भरे शब्दों और बड़ी मात्रा में सोने-चांदी से उसे फुसलाया, और उसे उस आदरणीय व्यक्ति के खिलाफ विभिन्न प्रकार की बदनामी

[8254] *खजूर* ताड़ के पेड़ों का फल है और बेर जैसा दिखता है; इसका आकार भिन्न-भिन्न होता है: कुछ ताड़ के पेड़ों पर फल मटर के आकार का होता है, जबकि अन्य पर यह मानव सिर से भी बड़ा होता है। जब ताड़ के पेड़ों का फल पक जाता है, तो इसे या तो हाथ से तोड़ा जाता है या पेड़ को हिलाया जाता है ताकि फल जमीन पर बिछाए गए चटाई पर गिर जाए। खजूर ताज़ा और सूखे दोनों रूपों में खाए जाते हैं। *अंजीर* अंजीर के पेड़ का फल है, जो पवित्र शास्त्रों से अच्छी तरह जाना-माना पेड़ है। अपनी प्राकृतिक अवस्था में, ये फल नाशपाती जैसे दिखते हैं। *बादाम* बादाम के पेड़ का फल है (जो स्लाव भाषाओं में 'अमिग्डाल' के नाम से जाना जाता है)।

[8255] साल 763 में।

[8256] यह भविष्यवक्ता यशायाह (यशा. 5:20) के निम्नलिखित शब्दों को संदर्भित करता है: *'हाय उन लोगों पर जो बुराई को भलाई और भलाई को बुराई कहते हैं, जो अँधेरे को प्रकाश और प्रकाश को अँधेरा, जो कड़वे को मीठा और मीठे को कड़वा कहते हैं!'*

[8257] मसीहा के निर्दोष छवि के स्थानांतरण के पर्व के लिए एक स्टिचेरा।

[8258] स्कुथाई एक जंगली लोग थे जो ब्लैक सी के उत्तर में, आज के दक्षिणी रूस की सीमाओं के भीतर, और डेन्यूब नदी के निचले इलाकों में रहते थे।

गढ़ने के लिए मना लिया। ऐसा करते हुए, कैलकिस्टस को उम्मीद थी कि उस आदरणीय व्यक्ति के शिष्य द्वारा रची गई बदनामी पर अधिक आसानी से विश्वास किया जाएगा, क्योंकि लोग सोचेंगे कि स्तेफन के जीवन से परिचित कोई व्यक्ति उसके खिलाफ गवाही दे रहा है। हालाँकि, सर्जियस, एक दूसरे यहूदा की तरह, चाँदी और सोने से प्रेम करने लगा, उसने अपने गुरु को धोखा दिया और पवित्र और निर्दोष पिता के खिलाफ झूठी बदनामी का जाल बुनने के हर संभव तरीके सोचना शुरू कर दिया। लेकिन अपने पूरे निर्दोष जीवन में वह एक भी दोष नहीं खोज सका, जैसे सूर्य में नहीं होता; इसलिए, संत स्टीफन के मठ को छोड़कर, झुंड से भटक गए किसी आवारा भेड़ की तरह, वह निकोमेडिया में राजा के लिए कर वसूलने वाले अव्लकिलाम नामक एक शाही अधिकारी से दोस्ती कर गया: उसी को उसने अपनी दुर्भावना में साथी बनाया, और दोनों ने मिलकर संत के खिलाफ झूठे आरोप तलाशे। एक-दूसरे से सहमत होकर, उन्होंने एक लंबा दस्तावेज़ तैयार किया जिसमें उन्होंने दावा किया कि स्टीफन राजा का अपमान कर रहे थे और उसे एक विधर्मी के रूप में तुच्छ समझ रहे थे – और वह लोगों को गुमराह कर रहे थे और उनके पास आने वाले सभी लोगों को राजा के खिलाफ विद्रोह करने के लिए उकसा रहे थे। उन्होंने उस पूजनीय के खिलाफ और भी कई निंदापूर्ण बातें रचीं, जिनका उल्लेख हम यहाँ नहीं करेंगे, ताकि अनावश्यक विस्तार से बचा जा सके और पाठकों के कानों को ठेस न पहुँचे (क्योंकि दुष्ट निंदकों ने बहुत कुछ अश्लील कहा)। उन अधर्मी लोगों ने धन्य अन्ना के बारे में भी लिखा, जिन्होंने व्यर्थ की दुनिया को छोड़ दिया था, जिन्हें रेवरेंड स्टीफन ने दैवीय तरीके से संन्यास दीक्षा दी थी और जिन्होंने त्रिचिनिरापल्ली मठ में एक संन्यासी जीवन जिया था। बदनाम करने वालों ने उनके बारे में झूठ गढ़ा, यह दावा करते हुए कि वह रात में स्टीफन से मिलती थीं और उनके साथ अशुद्ध पाप में लिप्त रहती थीं। इस बदनामी में भाग लेने के लिए, उन्होंने धन्य अन्ना की एक दासी को शामिल किया, और उसे उसी बात की गवाही देने के लिए मनाया; इसके इनाम में, उन्होंने न केवल उसे आजादी और बड़ी मात्रा में सोने का वादा किया, बल्कि उससे यह भी कहा कि वे उसे शाही दरबार में सेवा करने वाले एक उच्च पदस्थ व्यक्ति से विवाह करा देंगे। यह दस्तावेज़ तैयार करने के बाद, जिसमें रेवरेंड के खिलाफ बदनामी भरी थी, और इस पर अन्ना की दासी की झूठी गवाही संलग्न कर दी, सर्जियस और अवलकिलाम ने यह सब एक सैनिक के साथ राजा को भेज दिया, जो उस समय स्कैथियनों की भूमि में था।

जब राजा ने उसे भेजे गए दस्तावेज़ पढ़ लिए, तो वह अत्यंत प्रसन्न हुआ और उसने तुरंत कॉन्स्टेंटिनोपल में अपने राज्यपाल, एम्फटिस को एक पत्र भेजा, जिसमें उसे आदेश दिया गया कि वह माउंट ऑक्सेन्टियस पर स्थित मठ में जाए, वहाँ से नन अन्ना को ले आए, और उसे उसके पास भेज दे। यह शाही आदेश प्राप्त करते ही, राज्यपाल तुरंत ही बहुत सारे सशस्त्र सैनिकों को साथ लेकर, मानो युद्ध के लिए, त्रिचिनिरायिन मठ के लिए रवाना हो गया। मठ पहुँचने पर, उन्होंने खींची हुई तलवारों से उस पर हमला कर दिया। उसी क्षण, सभी नन चर्च में इकट्ठी थीं और तीसरे घंटे का भजन गा रही थीं; मठ पर हमला करते सैनिकों को देखकर, वे बहुत भयभीत हो गईं; उनमें से कुछ दिव्य सिंहासन के नीचे पवित्र स्थल में छिप गईं, जबकि अन्य पहाड़ों में भागने की कोशिश करने लगीं; लेकिन सैनिकों ने उन्हें सबको पकड़ लिया। फिर मठ की वृद्ध अधिष्ठात्री, सैनिकों का सामना करने के लिए बाहर आकर, उनसे निडर होकर कहा:

'तुम क्या कर रहे हो, खुद को ईसाई कहते हो? तुमने ईश्वर को समर्पित, मसीह की इन वधूओं पर हमला क्यों किया, जिन्होंने तुम्हारा कोई अहित नहीं किया?'

उन्होंने उत्तर दिया:

'स्टेफ़न की वेश्या अन्ना को सौंप दो; ज़ार तुम्हें उससे ही चाहिए।'

तब मठाधीश ने, थियोफन्ना नामक एक अन्य भिक्षुणी के साथ अन्ना को बुलाकर, उन्हें दुश्मन के प्रलोभन से सावधान रहने और अपने पवित्र तथा आदरणीय पिता और शिक्षक, स्टीफन की निर्दोषता के लिए निडर होकर खड़े रहने की शिक्षा दी। फिर, उन्हें ईश्वर की सुरक्षा में सौंपकर, उन्होंने उन्हें सैनिकों के साथ भेज दिया।

सैनिकों ने ननियों को हिरासत में लेकर उन्हें तुरंत राजा के पास ले गए, जिसने आदेश दिया कि उन्हें अलग-अलग कर दिया जाए और प्रत्येक की अलग-अलग निगरानी की जाए। फिर, अन्ना को अपने पास बुलाकर, राजा ने उससे इस प्रकार कहना शुरू किया:

'मुझे तुम्हारे बारे में जो बताया गया है, उस पर मुझे बिल्कुल भी संदेह नहीं है। इसीलिए मैंने तुम्हें बुलाया है, ताकि तुम खुद मुझे बिना किसी छिपाव के और अपनी मर्ज़ी से बताओ कि उस जादूगर और अधर्मी आदमी ने तुम्हें कैसे बहकाया, और तुमसे अपनी जमींदारियाँ त्यागने, अपने कुलीन वंश को कुछ भी न मानने, और एक आम आदमी का वेश धारण करने

के लिए कहा?' यह सब, जैसा मैंने सुना है, उसने इसलिए किया ताकि तुम उसकी वेश्या बन जाओ। और तुमने उसमें ऐसा क्या अच्छा पाया, कि तुम उसके बहकावे में आ गईं और उस दुष्ट व्यक्ति के साथ अवैध रूप से व्यभिचार किया?

राजा से ऐसे घृणित शब्द सुनकर, धन्य और पवित्र अन्ना ने कहा:

'नहीं, हे राजा! मैंने अपनी आत्मा को कामुक वासनाओं और व्यभिचार की दासता में बाँधने के लिए अपने माता-पिता से मिली विरासत का त्याग नहीं किया, और न ही मैंने अपने रिश्तेदारों और इस दुनिया के सभी सुखों को त्यागा। जहाँ तक इस मामले में मेरी बदनामी करने वालों का सवाल है, दाऊद के शब्दों में, *"वे अपनी जीभ को साँप की तरह मरोड़ते हैं; साँप का विष उनके होठों के नीचे है"* (भजन संहिता 139:4)। मेरा शरीर आपके सामने पड़ा है, और आप इसे चाहे जो यातनाएँ दें, मैं सत्य से विश्वासघात नहीं करूँगी। जब तक मेरी आत्मा इस शरीर में है, आप मुझसे और कुछ नहीं सुनेंगे सिवाय इसके कि स्टीफन एक पवित्र और धर्मी व्यक्ति हैं और मेरे उद्धार का कारण हैं।

जब सम्राट ने ये शब्द सुने, तो वह बहुत हैरान हो गया और पूरे एक घंटे तक चुप रहा। फिर उसने अन्ना को हिरासत में लेने और थियोफानिया को मठ वापस भेजने का आदेश दिया। उसके लौटने पर, उसने जो कुछ भी हुआ था, वह सब कुछ मठाधीश और परम पूजनीय स्टीफन को सुनाया।

कुछ समय बाद, कोप्रोन्यमस युद्ध से कॉन्स्टेंटिनोपल लौट आया। वहाँ उसने नन अन्ना को एक अंधेरी और भयानक कालकोठरी में बंद करने का आदेश दिया, और फिर अपने क्यूवकिुलारिसि, ई[8259] , को उसके पास भेजा। जब वह अन्ना के पास आया, तो उसने उससे कहना शुरू किया:

'औरत, अपनी ही दया कर, और अपने काले वस्त्र त्यागकर, एक सम्मानजनक जीवन अपना; तब तू महल में महारानी के साथ रहेगी, बशर्ते कि तू कल पूछताछ में सभी के सामने अपने और स्टीफन के बारे में सच्चाई स्वीकार कर ले।' यहाँ एक दासी है जो सब कुछ जानती है और तुम्हारे मामलों के बारे में तुमसे आमने-सामने बात करने को तैयार है। और अगर तुम कुछ भी छिपाने की कोशिश करोगी, तो वह तुम्हारा भेद खोल देगी। तब मैं, सत्य के न्यायाधीश और रक्षक के रूप में, तुम्हारे शरीर के टुकड़े-टुकड़े कर दूँगा और यह सुनिश्चित करूँगा कि तुम जानो कि राजा क्या कर सकता है, और स्टीफन, जिसने तुम्हें बहकाया है, वह क्या कर सकता है। लेकिन यदि तुम मेरी अच्छी सलाह मानोगे और स्टीफन के व्यभिचारों का खुलासा करोगे, तो हम तुम्हें बहुत सम्मान देंगे।

ये शब्द सुनकर, संत ऐनी ने गहरी आह भरी, आँसू बहाए, और फिर उत्तर दिया:

'राजा जो चाहे करने दो। लेकिन मैं अपने पवित्र और पूजनीय पिता के विरुद्ध झूठ नहीं बोलना चाहती। प्रभु की इच्छा पूरी हो!'

अगली सुबह, राजा अपने महल से निकलकर, इकट्ठी भीड़ के सामने एक ऊँचे मंच पर खड़ा हुआ, और उसने पवित्र अन्ना को उसके कालकोठरी से बाहर निकालकर, शर्म के प्रतीक के रूप में सभी के सामने नग्न कर देने का आदेश दिया। संत के सामने उन्होंने लकड़ियों का एक पूरा ढेर लगा दिया और झूठी गवाह, उसकी दासी, को उसके सामने खड़ा कर दिया। निर्दोष पत्नी सभी के सामने नग्न खड़ी रही, कपड़ों के स्थान पर अपनी लज्जा को ही दुष्टों से बचाव का एकमात्र साधन मानकर। जब उनसे उन पर लगाए गए आरोपों के बारे में पूछा गया, तो वह अपने प्रभु की नकल करते हुए चुप रहीं, जिन्होंने अपने अन्यायपूर्ण न्यायाधीशों *को 'कोई उत्तर नहीं दिया'*[8260] । इस बीच, उस निर्लज्ज दासी ने उनके खिलाफ झूठी गवाही दी, झूठ को सच बताकर उसे सत्य का रूप दे दिया। तब उन्होंने फिर से धन्य अन्ना पर यह कहने के लिए दबाव डालना शुरू कर दिया कि स्टीफन ने उसके साथ एक पापी संबंध बनाया था, लेकिन संत, 'अपने कतरने वाले के सामने मेमने की तरह', चुप रहीं[8261] और उन्होंने अपना मुँह नहीं खोला।

तब यातना देने वाला क्रोधित हो गया और बहुत गुस्से में आ गया। उसने अन्ना को वेश्या कहकर उसे जमीन पर लिटाने और डंडों से पीटने का आदेश दिया। और चार मजबूत सैनिकों ने अन्ना को जमीन पर लिटा दिया और उसकी पीठ और पेट पर बहुत देर तक पीटा। ऐसी यातनाएँ सहते हुए, उस धन्य ने निम्नलिखित शब्दों के अलावा कुछ नहीं कहा:

'मैं किसी पुरुष को नहीं जानती, जैसा आप कह रहे हैं—नहीं! मैं नहीं जानती,' और फिर उसने कहा: 'हे प्रभु, दया करो!'

[8259] क्वकिुलारिसि राजा का कोषाध्यक्ष था, और अधिकांशतः वह राजा के सबसे करीबी व्यक्तियों में से एक था।

[8260] यूहन्ना 19:9; तुलना करें मत्ती 26:63, 27:12–14; मरकुस 14:61, 15:5; लूका 23:9.

[8261] यह अभिव्यक्ति यशायाह की पुस्तक से ली गई है, जहाँ इसे मसीहा-उद्धारकर्ता (यशायाह 53:7) पर लागू किया गया है।

इस बीच, उसके अत्याचारियों ने उसे इतनी बुरी तरह पीटा कि वह लगभग दम तोड़ने ही वाली थी। तब राजा, यह देखकर कि वह मुश्किल से सांस ले रही थी फिर भी स्टीफन के खिलाफ कुछ नहीं कह रही थी, अपने सिंहासन से उठकर शर्म के मारे महल की ओर दौड़ पड़ा। फिर उसने आदेश दिया कि अन्ना को शहर के एक मठ में ले जाया जाए, जो खाली था, और वहाँ उसे बंद कर दिया जाए। कुछ समय बाद, वहीं संत अन्ना प्रभु के पास चली गईं।

इस बीच, राजा इस बात पर लंबा विचार करता रहा कि वह स्टीफन पर किसी अपराध का आरोप कैसे लगा सकता है, ताकि वह उसे एक अपराधी के रूप में दंडित कर सके। अंत में, उसने निम्नलिखित योजना बनाई।

कॉप्रोनमिस ने अपने एक पसंदीदा युवक, जिसका नाम जॉर्ज था और जिसने महल में उसकी वफादारी से सेवा की थी, को बुलाया और उससे पूछा:

'जॉर्ज! मुझसे तुम्हारा प्रेम कितना गहरा है?'

'यह असीम है,' उसने उत्तर दिया।

'लेकिन क्या तुम मेरे लिए, मेरे प्रेम में, मेरी खातिर मौत का सामना करने को तैयार हो?'

'मैं आपके लिए मरने को तैयार और इच्छुक हूँ,' उस युवक ने उत्तर दिया। फिर राजा ने उसे खुशी और स्नेह से चूमते हुए कहा:

'देखो, एक नया इसहाक।'

फिर उसने जॉर्ज से कहा:

'लेकिन मैं तुम्हें मेरे लिए मरने नहीं भेज रहा हूँ, और न ही मैं चाहता हूँ कि तुम मेरे लिए कोई कष्ट सहो। मैं तुमसे केवल एक ही बात चाहता हूँ। माउंट ऑक्सेंटियस जाओ, स्टीफन के पास—जिसका उल्लेख करना भी उचित नहीं है—और उससे विनती करो कि वह तुम्हें एक भिक्षु की तरह सिर मुंडवा दे और अपने शिष्यों में स्वीकार कर ले। जब वह ऐसा कर ले, तो तुरंत हमारे पास वापस आ जाना।'

उस युवक ने राजा द्वारा कही गई हर बात को ठीक-ठीक पूरा करने का वादा किया। फिर कोप्रोन्यमस ने उसे सौंपी गई जिम्मेदारी को सबसे अच्छी तरह से पूरा करने के लिए निर्देश देना शुरू किया; और इन निर्देशों के बाद, वह युवक माउंट ऑक्सेन्टियस के लिए रवाना हो गया।

रात में वह धन्य स्टीफन के मठ के पास पहुँचा और ज़ोर से चिल्लाने लगा:

'मुझ पर दया करो, यहाँ रहने वाले ईसाइयों, दया करो! मैं अपना रास्ता भूल गया हूँ और मुझे नहीं पता कि कहाँ जाऊँ, कहीं मैं किसी खाई में न गिर जाऊँ या किसी जंगली जानवर का शिकार न बन जाऊँ।'

धन्य स्टीफन ने ये पुकारें सुनीं और, अपनी करुणा के कारण, उस खोए हुए व्यक्ति पर दया की। उन्होंने भिक्षु मारिन को बुलाया और उसे उस खोए हुए व्यक्ति को खोजने और उसे मठ में लाने के लिए भेजा। जब मारिन जॉर्ज को लेकर आए, तो जॉर्ज उस आदरणीय के पैरों पर गिर पड़े और उनका आशीर्वाद मांगने लगे। आदरणीय को एहसास हुआ कि उनके सामने कोई साधारण व्यक्ति नहीं था, और उन्होंने जॉर्ज से पूछताछ शुरू कर दी:

'तुम कौन हो, और कहाँ से आए हो?'

जॉर्ज ने इस बात को नहीं छिपाया कि वह शाही दरबार में था, और कहा कि उसने ज़ार की सेवा इसलिए छोड़ दी थी क्योंकि ज़ार सही रास्ते से भटक गया था और सभी को विनाश की ओर ले जा रहा था।

युवक ने कहा, 'मैं यहाँ हूँ, और मैं आपके पास इसलिए जल्दी आया हूँ ताकि आप मुझे दैवीय आदेश (एन्जेलिक ऑर्डर) में दीक्षा दें, जिसकी मैं बहुत आकांक्षा करता हूँ। मैं आपसे विनती करता हूँ, आदरणीय पिता, मुझे अयोग्य समझकर न ठुकराएँ।'

राजा से परेशानी होने के डर से, धन्य स्टीफन ने पहले तो उस युवक को मठवासी समुदाय में शामिल करने से इनकार कर दिया। लेकिन युवक ने उन्हें आश्वासन दिया कि राजा उसके कारण क्रोधित नहीं होंगे, और साथ ही संत से विनम्रतापूर्वक निवेदन किया कि वे उसे अपने शिष्यों में गिनें और एक भिक्षु के रूप में उसका मुंडन करें।

'यदि आप मुझे अभी संन्यास नहीं दिलाते हैं तो आप मेरी आत्मा के लिए ईश्वर के समक्ष उत्तरदायी होंगे।'

ये शब्द सुनकर रेवरेंड भावुक हो गए और शैतान की चालाकी को पहचानने में असफल होकर, उन्होंने जॉर्ज से कहा:

'चूँकि मैं देखता हूँ कि तुम मोक्ष की तीव्र इच्छा से यहाँ आए हो, मैं प्रभु की आज्ञा के विरुद्ध नहीं जाना चाहता, और अब जब तुम हमसे मिलने आए हो, तो मैं तुम्हें वापस नहीं करूँगा।'

यह कहने के बाद, उन्होंने तुरंत उसे ईश्वर-प्रेरित और आत्मा-रक्षक शब्दों से उपदेश देना शुरू कर दिया; और फिर, उसके सांसारिक वस्त्र उतारकर, उन्होंने उसे एक नवोदित की वेशभूषा पहनाई, और उसे पूर्ण भिक्षु संस्कार लेने की तैयारी करने का आदेश दिया[8262] । तीन दिन बीत जाने के बाद, आदरणीय पिता ने जॉर्ज को भी यह वेशभूषा पहनाई। स्वर्गदूतिक क्रम ग्रहण करने के तुरंत बाद, यह विश्वासघाती व्यक्ति कांस्टेंटिनोपल में राजा के पास दौड़ गया।

जॉर्ज को भिक्षु वेश में देखकर सम्राट प्रसन्न हुआ, इस लिए नहीं कि वह भिक्षुवाद का पक्षधर था, बल्कि इसलिए कि उसे स्टीफन पर अपने नौकरों को बहकाने का आरोप लगाने का बहाना मिल गया था।

अगली सुबह चौक में जाकर, सम्राट ने नए मुंडित संन्यासी को सामने लाया और जमा भीड़ के सामने सभी संन्यासियों, और विशेष रूप से स्टीफन के बारे में शिकायत करने लगा, उस पर— —आरोप लगाते हुए कि वह अपनी शिक्षाओं से लोगों को धोखा देता है, जैसा कि उसने उदाहरण के लिए, सम्राट के इस प्रिय सेवक के साथ किया था। भीड़ चिल्लाने लगी:

'घृणित प्रलोभक को मौत!'

तब राजा ने आदेश दिया कि जॉर्ज के संन्यासी के वस्त्र उतारकर जमीन पर फेंक दिए जाएँ। जैसे ही ऐसा हुआ, भीड़ ने उस दिव्य वस्त्र को पैरों तले रौंदना शुरू कर दिया, संन्यासियों पर अपमान की बौछार कर दी और संन्यासी जीवन का तिरस्कार करने लगी। इसके बाद, राजा ने पानी मंगवाया और जॉर्ज को नहलाया, मानो उसकी साधु की पदवी को धोकर मिटा दिया जाए; अंत में, उसने उसे सैन्य पोशाक पहनाई, उसके सिर पर हेलमेट रखा, और उसे 'hippokom[8263] ' की पदवी प्रदान की। यह सब करने के बाद, उसने माउंट ऑक्सेन्टियस पर सैनिक भेजे और उन्हें स्टीफन के मठ को लूटने का आदेश दिया।

[8264]सैनिकों ने झुंड पर भेड़ियों की तरह मठ पर हमला किया। सभी संतों को भगाने के बाद, उन्होंने मठ की चर्च में आग लगा दी, जबकि पूजनीय स्टीफन को खुद उनकी कोठरी से बेरहमी से खींचकर शर्मनाक ढंग से कॉन्स्टेंटिनोपल के काल्सेडोनियन उपनगर में ले जाया गया। रास्ते में, उन्होंने उसके साथ कई अपमान किए और उसे निर्दयता से यातना दी: कुछ लोग उसे ज़मीन पर बेरहमी से घसीट रहे थे, कुछ ने उसकी आँखों में थूका, जबकि कुछ और ने अन्य अकथनीय दुर्व्यवहार किए। जब वे समुद्र तट पर पहुँचे, तो सैनिकों ने संत को एक नाव में बिठाया और उन्हें क्रिसोपोलिस में स्थित फिलिपिकोस के मठ ले गए, जो बाइजेंटाइयम के पास था। वहाँ संत को 70 दिनों तक हथकड़ी और लोहे की जंजीरों में बंद करके पहरे में रखा गया, और इस पूरे समय उन्होंने कुछ भी नहीं खाया। और यद्यपि सम्राट ने उसके लिए बहुत सारे भोजन भेजे, संत ने कुछ भी स्वीकार नहीं किया और सब कुछ वापस भेज दिया।

70 दिनों के अंत में, सम्राट और पैट्रिआर्क ने सबसे प्रभावशाली विधर्मियों को संत के पास भेजा – अर्थात्: थियोडोसियस, एफेसस के बिशप; निकोमेडिया के कॉन्स्टेंटिन; नाकोलियस; सिसिनिया और बेसिल, साथ ही कैलिस्टस और अन्य सबसे कुशल वक्ताओं को भेजा, ताकि वे स्टीफन के साथ धर्म पर बहस कर सकें और उसे प्रतिमा-विरोधीवाद अपनाने के लिए मना सकें। फिलिप्पिकोस के मठ में पहुँचने पर, उन्होंने आज्ञा दी कि धन्य स्टीफन को उनके सामने लाया जाए। वह लोहे की जंजीरों में जकड़ा हुआ उनके सामने उपस्थित हुआ, इतना भारी बोझ था कि वह बिना सहायता के खड़ा या हिल नहीं सकता था: वह दो व्यक्तियों के बीच चल रहा था, जिन पर वह सहारा लिए हुए था।

एफ़िसुस के बिशप थियोडोसियस ने सबसे पहले बोलना शुरू किया। धन्य स्टीफ़न को संबोधित करते हुए, उन्होंने कहा:

'हे ईश्वर के मनुष्य, आप किस आधार पर हमें विधर्मी मानते हैं और स्वयं को राजाओं, पैट्रिआर्कों, बिशपों और अन्य सभी ईसाइयों से ऊपर रखते हैं? क्या हम सभी, तब, भ्रांति में हैं और विनाश की ओर बढ़ रहे हैं?'

इस पर, संत ने नम्रता से उत्तर दिया:

'पवित्र धर्मग्रंथ में भविष्यवक्ता एलिया के विषय में क्या कहा गया है, उसे सुनो। उन्होंने एक बार राजा आहाब से कहा था: *"इज़राइल पर भ्रम मैं नहीं लाया, बल्कि तुम और तुम्हारे पिता का घर लाया है"* (1 राजा 18:18)। अब भी ऐसा ही है: ईश्वर की कलीसिया में उथल-पुथल मचाने वाला मैं नहीं हूँ, बल्कि वे हैं जिन्होंने प्राचीन पवित्र पितरों की परंपराओं

[8262] नवसिख – तैयारी की एक अवधि, जिसके बिना किसी को भिक्षु के रूप में दीक्षा नहीं दी जाती; इस स्थिति में रहने वालों को नवसिख कहा जाता है।

[8263] इप्पोकोम – एक शाही अस्तबल-प्रमुख; दरबारी कार्यालयों में से एक।

[8264] क्रिसोपोलिस – बिथिनिया में बोस्फोरस के दूसरी ओर स्थित कॉन्स्टेंटिनोपल का एक उपनगर; अब स्कुटारी के नाम से जाना जाता है।

को तोड़कर कलीसिया में नए सिद्धांतों को लाया है। क्योंकि बेसिल महान ने कहा: 'पवित्र पिताओं द्वारा अनादि काल से जो कुछ भी परंपरागत रूप से प्राप्त हुआ है, वह श्रद्धा के योग्य है; फिर भी जो कुछ भी नवीन रूप से स्थापित किया गया है, वह अनुचित है और किसी भी महत्व का नहीं हो सकता'; ऐसे हैं पवित्र प्रतिमाओं की श्रद्धा के विरुद्ध आपके आदेश, ऐसे आदेश जिन्हें कैथोलिक चर्च के पुत्रों ने नहीं, बल्कि अधर्मी व्यभिचारियों ने तैयार किया है। इसलिए, इसी क्षण भविष्यवाणी का वचन स्मरण आता है: (भजन संहिता 2:2) – *'पृथ्वी के राजा खड़े हो जाते हैं, और हाकिम प्रभु के विरुद्ध* और उसकी पवित्र प्रतिमा के विरुद्ध *मिलकर योजना बनाते हैं*।

ये शब्द सुनते ही, निकोमेडिया के बिशप कॉन्स्टेंटिन, अपनी कुर्सी से झपटकर उठे, जमीन पर बैठे पूजनीय संत के पास गए और अपने पैर से उनके चेहरे पर वार किया। इसी तरह, घटनास्थल पर मौजूद एक हथियार-वाहक ने संत के पेट में मारा; वह धन्य व्यक्ति जमीन पर गिर पड़े, और हथियार-वाहक ने उनके सीने पर पैर पटकना शुरू कर दिया।

कैलसिटस इस तरह के निर्लज्ज और गैर-कानूनी कृत्य से आक्रोशित हो गए और सभी को चुप रहने का आदेश दिया। फिर उन्होंने स्टीफन से निम्नलिखित शब्दों में कहा:

'तुम्हारे सामने दो विकल्प हैं: या तो हाल की परिषद के फरमानों पर हस्ताक्षर करो, या परमेश्वर द्वारा सिखाए गए पवित्र पिता-पुरखों के फरमानों को अस्वीकार करने वाले के रूप में मर जाओ। बिना किसी देरी के इनमें से एक चुन लो।'

तब दैवीय प्रेरित स्टीफन ने उद्घोष किया:

'मेरी बातों पर ध्यान दो, प्रभु पैट्रसियिन! मैं यह महान प्रेरित पौलुस के साथ उद्घोषित करता हूँ: *"क्योंकि मेरे लिए जीना मसीह है, और मरना लाभ है"* उनके पवित्र प्रतिमा के लिए (Phil. 1:23). मैं तुमसे पहले भी कह चुका हूँ, और मैं यह फिर कहूँगा: यदि मेरे पास खून का एक भी मुट्ठी-भर हो, तो मैं उसे मसीह के पवित्र प्रतिमाओं के लिए बहाने में संकोच न करूँगा। हालाँकि, अपने परिषद के आदेशों को पढ़ने का आदेश दो, ताकि मुझे पता चल सके कि तुम दिव्य प्रतिमाओं की पूजा को किन आधारों पर अस्वीकार करते हो।

और तुरंत निकोमेडिया के कॉन्स्टेंटिन ने पुस्तक लेकर उसे पढ़ना शुरू कर दिया। पुस्तक का शीर्षक था: 'पवित्र सप्तम सार्वभौमिक परिषद के कृत्य'। यह शीर्षक पढ़ते ही संत ने अपने हाथ से चुप्पी का इशारा किया, और फिर जोर से उद्घोषणा की:

'तुमने अपनी डगमगाती इमारत को एक कमजोर नींव पर बनाया है। तुम अपने परिषद को "पवित्र" क्यों कहते हो? क्योंकि तुमने सभी संतों से "पवित्र" की उपाधि छीन ली है और आज्ञा दी है कि न तो प्रेरितों को, न शहीदों को, न भविष्यद्वक्ताओं को, और न ही परमेश्वर को प्रसन्न करने वाले किसी अन्य मनुष्य को उस नाम से बुलाया जाए। आपकी परिषद पवित्र कैसे हो सकती है, जब वह उन सभी चीजों को रौंदती और अपवित्र करती है जो पवित्र हैं? आप अपनी परिषद को 'एकुमेनिकल' कहते हैं; लेकिन यह एकुमेनिकल कैसे हो सकती है, जबकि न तो एक भी पैट्रिआर्क उपस्थित था, न ही उनके द्वारा अधिकृत कोई प्रतिनिधि, और न ही ऐसे पत्र भी थे जिनमें उन्होंने परिषद के आयोजन के लिए अपनी सहमति व्यक्त की हो? आपकी परिषद को सार्वभौमिक नहीं कहा जा सकता, क्योंकि यह झूठी है। आप इसे सातवीं भी कहते हैं। लेकिन यह सातवीं कैसे हो सकती है, यदि यह पहले छह परिषदों से भटकती है? यदि यह सातवीं होती, तो इसे हर तरह से छठी, पाँचवीं और इससे पहले की अन्य परिषदों का अनुसरण करना चाहिए था। क्योंकि पहली, दूसरी, तीसरी, चौथी, पाँचवीं और छठी के बिना, कोई सातवीं नहीं हो सकती। इस प्रकार, आपकी परिषद किसी भी तरह से सातवीं नहीं है, क्योंकि इसने इससे पहले की छह परिषदों की परंपराओं को खारिज कर दिया है।

इन शब्दों पर बिशपों ने उत्तर दिया:

'तो फिर, हम छह परिषदों द्वारा विरासत में मिली हुई चीज़ों में से क्या अस्वीकार करते हैं? नहीं, हम पिछली परिषदों या उनसे विरासत में मिली चीज़ों को अस्वीकार नहीं करते, बल्कि हम उन सभी को स्वीकार करते हैं।'

तब संत ने उत्तर दिया:

'क्या पिछली परिषदें पवित्र चर्चों में आयोजित नहीं हुई थीं? यानी, मैं उन चर्चों की बात कर रहा हूँ जो प्रतिमाओं से सुसज्जित थे। पहली परिषद निकिया में, उस शहर के विशाल चर्च में हुई थी। दूसरी – कॉन्स्टेंटिनोपल में, सेंट आइरीन के चर्च में। तीसरी एफ़िसुस में, सेंट जॉन द थियोलॉजियन के चर्च में हुई। चौथी कालसेडोन में, मेट्रोपॉलिटन कैथेड्रल में हुई। पाँचवीं और छठी फिर से कॉन्स्टेंटिनोपल में हुईं; पहली सेंट सोफिया के चर्च में आयोजित की गई थी, जबकि दूसरी ट्रुलम के नाम से जाने जाने वाले महल के चर्च में हुई थी। क्या वे सभी चर्च पूजनीय प्रतिमाओं से सुसज्जित नहीं थे? और आपकी परिषद की तरह, उनमें से किसी ने भी उन्हें अस्वीकार नहीं किया। इस पर आपके पास क्या कहने को है?

वे संत स्टीफन की बुद्धमिानी से चकति रह गए और चुप हो गए, क्योंकि उनके पास उसे उत्तर देने के लिए कुछ भी नहीं था। उनके साथ बैठे लोगों में से केवल एक ने ही बोलकर कहा:

'सचमुच, स्टीफन ने जो कहा वह सही है!'

तब रेवरेंड ने अपनी आँखें स्वर्ग की ओर उठाईं; फरि, अपने हाथ उठाकर और हृदय की गहराई से आह भरकर, उन्होंने ऊँचे स्वर में पुकारा:

'यदि कोई भी प्रभु यीशु मसीह का, जो मानवीय रूप में आइकन में चत्रिति हैं, सम्मान नहीं करता है, तो वह अनाथेमा हो और उसका भाग्य उन लोगों जैसा हो जो चल्लिाए थे: *"इसे ले जाओ, इसे ले जाओ, इसे सूली पर चढ़ा दो!"* (यूहन्ना 19:15)[8265] ।'

तब दुष्ट वधिर्मी, यह देखकर कि वे बहस में संत को परास्त नहीं कर सके, उसे जेल में डालने का आदेश दे दयिा, जबकि वे स्वयं लज्जति होकर उन्हें भेजने वालों के पास लौट गए।

जब वे राजा के सामने आए, तो राजा ने पूछा:

'तुमने क्या हासलि कयिा है?'

बशिप अपनी अपमान को छपिाने वाले ही थे, लेकनि कैलकिस्टस ने राजा को पूरा सच बताकर उन्हें रोक दयिा।

उसने कहा, 'हे राजा!' 'हम बहस में स्टीफन से हार गए हैं। वह एक बुद्धमिान व्यक्ति है, और उसके शब्दों में एक अकथनीय शक्ति है। इसके अलावा, वह साहसी और नडिर है, और वह न केवल नषिेधों से बल्कि स्वयं मृत्यु से भी नहीं डरता।'

तब क्रोधति राजा ने आदेश दयिा कि आदरणीय स्टीफन को हेलेस्पोंटनि भूमि, 'Prokonnis[8266] ' द्वीप पर नर्विासन में भेजा जाए।

द्वीप के लिए रवाना होने से पहले, संत फलिपिकिोवा मठ के मठाधीश की सहायता के लिए आए, जो बीमार थे और मृत्युशय्या पर थे। उनके लिए प्रार्थना करने और उन पर अपना हाथ रखने के बाद, उस धन्य व्यक्ति ने उन्हें ठीक कर दयिा और उनके बस्तिर से उठा दयिा। फरि, उनके लिए तैयार की गई नाव पर चढ़कर, वे अपने नर्विासन के स्थान के लिए रवाना हो गए। प्रोकोनसिोस द्वीप पर पहुँचने पर, उन्होंने पहले उस पर सभी सुनसान स्थानों की खोज करना शुरू कयिा और अंत में, एक सुंदर गुफा मलिी, जसिे उस भूमि के नविासयिों द्वारा कसिुडा के नाम से जाना जाता था। इसके भीतर संत ऐन को समर्पति एक छोटा सा चर्च था, जो देह के अनुसार प्रभु की पूर्वज और परम पवत्रि थयिोटोकोस की माता थीं। संत अति प्रसन्न हुए और गुफा के पास एक कोठरी बनवाई। यहाँ, ईश्वर की महमिा के लिए जीते हुए, उन्होंने स्थानीय पौधों की जड़ों पर जीवन यापन कयिा।

इस बीच, पूजनीय स्टीफन के शष्यि, माउंट ऑक्सेन्टयिस पर उनके मठ से नष्किासति होने के बाद, बनिा चरवाहे के भेड़ों की तरह वभिन्नि देशों में बखिर गए थे। लेकनि, यह सुनकर कि उनका शक्षिक प्रोकोनसिोस द्वीप पर कैद में था, वे सभी उसके पास इकट्ठा हो गए, सवािय दो के जो पवत्रि चरवाहे से भटक गए थे, ठीक वैसे ही जैसे यहूदा मसीह से भटक गया था, या डेमास और हर्मोगेनेस पौलुस से (2 तीमु. 1:15, 4:10)। ये थे सेरजयिस, जसिने उस आदरणीय के वरिुद्ध बदनाम करने वाले आरोपों की एक सूची तैयार की थी, और स्तेफन, जो शुरू में एक सांसारकि पुरोहति था लेकनि बाद में उस संत के हाथों से मठवासी मुंडन ग्रहण कर चुका था।

एक बार फरि से संन्यासी जीवन—और साथ ही ईश्वर—को अस्वीकार कर, और सांसारकि वस्त्र धारण कर, वह राजा के पास गया और उससे कहा:

'हे धर्मनष्ठि राजा! आपकी देखभाल से मैं शैतान के बंधनों से मुक्त हो गया हूँ और अपने अंधकारमय वस्त्रों को उतारकर, अब मैंने प्रकाशमय वस्त्र धारण कर लिए हैं।'

राजा बहुत प्रसन्न हुआ और उसे पसंद करने लगा; उसने उसे सेंट सोफयिा के कक्ष का व्यवस्थापक नयिुक्त कयिा, जहाँ वह स्वयं अक्सर जाता था। उसी समय, कोप्रोन्यमस ने उसे 'हर्ष का पति' कहा, हालांकि यह वनिाश का पुत्र केवल अपने लिए वलिाप को ही जन्म दे सकता था। इस प्रकार, वे दोनों—सर्गीयस और स्टीफन—परम पूज्य के शष्यिों की संगति से अलग हो गए; जबकि अन्य सभी, जैसा कि कहा गया है, परम पूज्य स्टीफन के चारों ओर इकट्ठा हो गए और

[8265] यह उस समय था जब प्रभु पलितुस के न्यायालय के सामने खड़े थे (यूहन्ना 19:15)।

[8266] प्रोकोनसि – मर्मरा सागर में एक द्वीप, जसिे अब मर्मरा के नाम से जाना जाता है। हेलेस्पोंटनि क्षेत्र – मर्मरा सागर के बीच में स्थति भूमि, जसिे प्राचीन काल में हेलेस्पोंट कहा जाता था।

एक मठ स्थापति कयि। उसकी माँ भी अपनी बेटी—जो उसकी बहन थयिोडोशयि थी—के साथ धन्य व्यक्ति के पास आईं और उन्होंने उसकी गुफा के पास अपने लिए एक आवास स्थापति कयि, जहाँ वे सदाचार से रहती थीं, और कभी-कभी अपने गुरु, आदरणीय स्टीफन के मधुर शब्दों का आनंद लेती थीं। आदरणीय ने, अपनी ओर से, अपने लिए एक स्तंभ बनाया, और उस पर एक तंग झोपड़ी बनाई। स्तंभ पर चढ़कर, उन्होंने खुद को उस झोपड़ी में बंद कर लयि; उस समय उनकी आयु 49 वर्ष थी। संत के महान कार्यों के लिए, ईश्वर ने उनकी महमिा की और उन्हें चमत्कार करने का वरदान दयि। इस प्रकार, धन्य स्टीफन ने अंधों की दृष्टि वापस की, एक भूतग्रस्त युवक को दुष्ट आत्मा से मुक्त कयि, रक्तस्राव वाली महलि को प्रार्थना करके ठीक कयि, कई मौकों पर तूफानी समुद्र को शांत कयि, और कई जहाजों को डूबने से बचाया; इसके अलावा, नावकिों ने उसे बार-बार पानी पर चलते, या जहाज चलाते, या पाल फैलाते हुए देखा।

जब संत प्रोकॉनसिोस द्वीप पर अपने चमत्कारों के लिए प्रसद्धि हो रहे थे, तब उनकी माँ का नधिन हो गया। यह घटना पूजनीय की कैद के दूसरे वर्ष में हुई। जब वह प्रभु के पास जा रही थीं, तो उनकी बेटी थयिोडोटा उनके लिए बहुत रोई। लेकनि स्टीफन की माँ, धन्य अन्ना, ने उससे कहा:

'तुम्हारे पास रोने का कोई पर्याप्त कारण नहीं है, क्योंकि तुम भी मेरे साथ हमारे प्रभु मसीह के पास जाओगी।'

और ऐसा ही हुआ: आदरणीय स्टीफन की माता, धन्य अन्ना की मृत्यु के सातवें दनि, थयिोडोटा का नधिन हो गया।

उस समय, प्रोकॉनसिोस द्वीप पर एक सैनकि था जसिका नाम आदरणीय संत के नाम के समान ही था (क्योंकि उसका नाम स्टीफन था)। वह आर्मेनयिाई मूल का था और यूरोपीय भूमि से यात्रा कर रहा था। रास्ते में, वह एक भयानक बीमारी से ग्रस्त हो गया, जसिसे उसके शरीर का बायाँ आधा हसि्सा सूख गया। यह सुनकर कि आदरणीय स्टीफन हर तरह की बीमारयिों को ठीक करते थे, वह बड़ी कठनिाई से उनके पास गया, उनके सामने जमीन पर गरि पड़ा, और आँसुओं के साथ, उनसे ठीक होने की भीख माँगी। आदरणीय स्टीफन ने उसे मसीह और परमेश्वर की परम पवत्रि माता की प्रतमिाओं की पूजा करने का नरि्देश दयि, और जब उसने भक्ति के साथ ऐसा कयि, तो वह तुरंत और पूरी तरह से ठीक हो गया। जब यह सैनकि अपने दोस्तों के पास लौटा, तो उन्होंने उससे पूछना शुरू कयि: वह कैसे ठीक हो गया था? सैनकि ने, उस पर प्रकट हुई ईश्वर की दया को छपिाने का कोई प्रयास कएि बनि, बताया:

'जब मैं प्रोकोनsus के भाई स्टीफन के नरि्देशानुसार मसीह और परमेश्वर की परम पवत्रि माता की प्रतमिाओं के सामने झुका, तो मैं अपनी बीमारी से ठीक हो गया।'

योद्धाओं ने यह बात अपने कमांडर को बताई, जो थ्रेस का शासक था। कमांडर ने ठीक हो चुके योद्धा को बुलाया और उससे ठीक होने के बारे में पूछने के बाद, उसे तुरंत राजा के पास भेज दयि। राजा ने भी उस सैनकि से उसके ठीक होने के बारे में पूछना शुरू कयि और जब उसे पता चला कि वह पवत्रि प्रतमिाओं के सामने झुकने से ठीक हो गया था, तो उसने उसे मूर्तपिूजक कहना शुरू कर दयि, और उस पर इस तरह गुस्से से डाँट-फटकार लगाई मानो उसने कोई अधर्मी कृत्य कर दयि हो। तब ठीक हुआ आदमी, राजा के सामने लज्जति होकर, प्रतमिाओं के सामने झुकने पर पछताया और सार्वजनकि रूप से उनकी पूजा का परत्यिाग कर दयि, और कसम खाई कि वह फरि कभी उनके सामने नहीं झुकेगा। इसके लिए, उस अधर्मी राजा को वह पसंद आ गया और उसने उसे सेंचुरयिन (शतमुखी) का पद देकर सम्मानति कयि। लेकनि जब वह अधर्मी सैनकि शाही महल से नकिलकर अपने घोड़े पर सवार होने ही वाला था, तो घोड़ा अचानक उन्मत्त हो गया और उसे नीचे फेंककर उस बेचारी आदमी को पैरों तले कुचलने लगा, और तब तक उसे कुचलता रहा जब तक कि उसकी जान नहीं नकिल गई। इस कृतघ्न धर्मत्यागी को यही दंड मलि।

[8267]धन्य स्टीफन द्वारा कएि गए अन्य चमत्कारों के साथ इस चमत्कार ने राजा को बहुत क्रोध और रोष से भर दयि; क्योंकि राजा जानता था कि वह आदरणीय संत, प्रोकॉनसिोस में रहते हुए, अपने चमत्कारों के लिए प्रसद्धि थे और सभी को पवत्रि प्रतमिाओं की पूजा करना सखिाते थे। इसलिए उसने संत की जान लेने का नश्चिय कयि, और इस उद्देश्य के लिए उसे उसके नरि्वासन स्थल से लाने का आदेश दयि। जब संत को कोप्रोनमिस के सामने लाया गया, तो उस अधर्मी राजा ने पहले उसे लोहे की जंजीरों में बांधने, उसके पैरों को बेड़यिों में जकड़ने, और उसे फयिालयिन नामक एक अंधेरी कोठरी में बंद करने का आदेश दयि। कुछ दनिों के बीत जाने के बाद, कोप्रोनमिस ने अपने देहाती महलों में से एक में अपने दो मुख्य पदाधकिारयिों के साथ रहते हुए, धन्य स्टीफन को अपने सामने लाने का आदेश दयि।

[8267] यह जेल स्वयं शहर के भीतर स्थति थी।

जब उन्हें राजा के पास ले जाया जा रहा था, तो पूजनीय ने एक भक्त से राजा की प्रतिमा वाला एक सिक्का माँगा और उसे चुपके से अपने चोगा में रख लिया।

जैसे ही ज़ार की नज़र संत पर पड़ी, उसने तुरंत ज़ोर से चिल्लाना शुरू कर दिया:

'हाय रे मेरी किस्मत, हाय रे मेरी किस्मत! मुझे यह सब क्यों सहना पड़ता है? यह आदमी मेरे अधिकार का अपमान करता है, मुझे बेइज्जत करता है और मेरी कोई कद्र नहीं करता!'

और उसने संत के प्रति कई अपमानजनक और निंदात्मक शब्द कहे। लेकिन वह धन्य व्यक्ति मौन खड़ा रहा, सिर झुकाए हुए। फिर राजा ने कहा:

– हे दुष्ट मनुष्य, तू मुझसे कुछ क्यों नहीं कहता?

जवाब में, धन्य स्टीफन ने कोमलता से कहा:

'हे राजा, यदि आपने मुझे मारने का निश्चय किया है, तो मुझे तुरंत मार डालिए। परन्तु यदि आपने मुझसे कुछ पूछने के लिए मुझे बुलाया है, तो आपको अपने क्रोध को शांत करना चाहिए और मुझसे शांत भाव से बात करनी चाहिए।'

ये शब्द सुनकर, राजा ने संत से पूछा:

'मुझे बताओ, तुम हमें विधर्मी क्यों कहते हो? हम चर्च की किन परंपराओं का उल्लंघन कर रहे हैं?'

रेवरेंड ने उत्तर दिया:

'आप पवित्र प्रतिमाओं की पूजा को अस्वीकार करते हैं, जो हमें प्राचीन काल से ईश्वर-वाहक पितरों द्वारा विरासत में मिली है।'

यातना देने वाले ने आपत्ति जताई:

'इन्हें पवित्र प्रतिमाएँ मत कहो: ये पवित्र प्रतिमाएँ नहीं हैं, बल्कि मूर्तियों की छवियाँ हैं; और संतों और मूर्तियों के बीच क्या संगति हो सकती है?'

इस पर उस पवित्र पुरुष ने उत्तर दिया:

'जो कोई प्रतिमा की पूजा करता है, वह पदार्थ की पूजा नहीं करता; क्योंकि प्रतिमा को अर्पित की गई पूजा मूल में स्थानांतरित हो जाती है, जैसा कि संत बेसिल द ग्रेट कहते हैं।'

यातना देने वाले ने संत से कहा:

'क्या यह संभव है कि भौतिक रंगों से उस चीज़ को चित्रित किया जाए जो कई मायनों में मन के लिए अस्पष्ट और अव्यक्त है? और क्या यह उचित है कि इंद्रियजन्य प्रतिमा के माध्यम से उनकी पूजा की जाए जिनकी प्रकृति किसी को भी ज्ञात नहीं है?'

सम्माननीय ने उत्तर दिया:

'बुद्धि-सम्पन्न लोगों में से कौन कहेगा कि ईश्वर की अदृश्य प्रकृति को दृश्य रंगों से चित्रित किया जा सकता है? मन भी ईश्वर के सार का वर्णन नहीं कर सकता; तो फिर, रंगों से तो और भी कम ही चित्रित किया जा सकता है। लेकिन जब हम एक आइकन पर मसीह को चित्रित करते हैं, तो हम उनके दिव्य स्वभाव को नहीं, बल्कि उनके मानवीय रूप को चित्रित करते हैं—जो हमारे अपने जैसा है—जिसे प्रेरितों ने देखा और छुआ, जैसा कि संत जॉन द थियोलोजियन ने कहा: *'जो हमने अपनी आँखों से देखा है, जिस पर हमने दृष्टि डाली है और जिसे हमारे हाथों ने छुआ है'* (1 यूहन्ना 1:1)। और यदि आप मुझे मूसा के शब्दों की ओर इशारा करते हैं: निर्गमन 20 – *'अपने लिए कोई मूर्ति या ऊपर स्वर्ग में, या नीचे पृथ्वी पर, या पृथ्वी के नीचे पानी में जो कुछ भी है, उसकी कोई प्रतिमा नहीं बनाओ* – तो मैं आपसे कहूँगा कि मूसा ने स्वयं दो सुनहरी करूबों की प्रतिमाएँ बनाईं, जिनके बारे में दिव्य प्रेरित इस प्रकार कहते हैं: इब्रानियों 9: *'महिमा के करूब जो पवित्र तम्बू पर छाया करते* थे'। लेकिन वेदी स्वयं, पवित्र तम्बू, और परम पवित्र स्थान भी एक स्वर्गीय समानता का प्रतिनिधित्व करते थे, जैसा कि वही प्रेरित कहते हैं: इब्रानियों 8: *'जो स्वर्गीय वस्तुओं की प्रतिमा और छाया की सेवा करते* हैं'।

तो फिर, एक आइकन पर मसीह के मानवीय स्वरूप को चित्रित करने और उसकी पूजा करने में क्या अनुचित है? या जब हम किसी भौतिक पदार्थ से बने क्रूस की पूजा करते हैं, तो क्या हम वास्तव में उस पदार्थ की ही पूजा कर रहे होते हैं? इसी तरह, जब हम पवित्र पात्रों का सम्मान करते हैं, तो हमारे विवेक पर कोई पाप नहीं चढ़ सकता, क्योंकि हम जानते हैं कि ये पात्र मसीह के नाम के आह्वान द्वारा पवित्र किए गए हैं। तो फिर, आप इन सब के विरुद्ध क्यों विद्रोह करते हैं? इसके बाद, आप मसीह के पवित्र शरीर और रक्त को भी अस्वीकार करना चाहेंगे, जो रोटी और दाखरस के रूप

में रहस्यमय तरीके से प्रस्तुत कि जाते हैं, जो उस मसीह के शरीर का प्रतिनिधित्व करते हैं जिसने क्रूस पर दुख उठाया और अब स्वर्ग में वास करता है – और जिसकी हम उपासना करते हैं और पवित्र सहभागिता में उन्हें ग्रहण करके, शाश्वत आशीर्वादों का उत्तराधिकार प्राप्त करते हैं। आप, हालाँकि, पवित्र और अपवित्र के बीच कोई अंतर नहीं करते हुए, मसीह की प्रतिमा को अपोलो की मूर्ति के बराबर और परमेश्वर की माता की प्रतिमा को आर्टेमिस की मूर्ति के बराबर एक मूर्ति मानते हैं; आप उन्हें पैरों तले रौंदते हैं और आग में जला देते हैं।

इस पर राजा ने उत्तर दिया:

'क्या तुम सच में सोचते हो, हे मूर्ख अधर्मी मनुष्य, कि इन प्रतिमाओं को रौंदकर हम मसीह को रौंद रहे हैं?'

तब ईश्वर-ज्ञानी स्टीफन ने, कुश्ती के माहिर पहलवानों की तरह, अपने ही हथियारों से अपने दुश्मन को हराने की इच्छा से, अपने मुँडौल से एक सिक्का निकाला, जिस पर अधर्मी राजा कोप्रोन्यमस की छवि अंकित थी, जिसे उसने पूछताछ के लिए जाते समय एक धर्मपरायण व्यक्ति से भीख माँगी थी। यह सिक्का दिखाते हुए, रेवरेंड ने राजा से उन्हीं शब्दों में पूछा जिनमें मसीह ने एक बार फरीसियों से पूछा था:

'यह किसकी प्रतिमा और शिलालेख है?' (मत्ती 22:20)।

राजा ने आश्चर्य से भरकर उत्तर दिया:

– और तो और, राजा की ही।

संत ने फिर पूछा:

– 'क्या होगा अगर कोई राजा की प्रतिमा को जमीन पर फेंक दे और उसे पैरों तले रौंद दे? क्या उसे इसके लिए दंडित नहीं किया जाएगा?'

बहस में उपस्थित लोगों ने उत्तर दिया:

'हाँ! ऐसे व्यक्ति को कठोर दंड भुगतना पड़ेगा, क्योंकि उसने राजा की प्रतिमा का अपमान किया होगा।'

तब उस पादरी ने भारी आह भरते हुए कहा:

'तुम्हारी अंधाधुंध कितनी गहरी है और तुम्हारी मूर्खता कितनी बड़ी! यदि तुम एक सांसारिक और नश्वर राजा की प्रतिमा का अपमान करने के लिए एक भयानक मृत्युदंड देते हो, तो ईश्वर के पुत्र और उनकी माता की प्रतिमा को पैरों तले कुचलने और उन्हें आग में फेंकने के लिए तुम्हें किस दंड का भागीदार बनना चाहिए?'

यह कहकर, संत ने सिक्के पर थूक दिया, उसे ज़मीन पर फेंक दिया, और उसे पैरों तले रौंदना शुरू कर दिया। यह देखकर, वहाँ मौजूद लोग क्रोध से संत पर टूट पड़े, उनका इरादा उसे हॉल से समुद्र में फेंकने का था, क्योंकि जिस हॉल में उस पूजनीय व्यक्ति से बातचीत हो रही थी, वह समुद्र के ऊपर था। लेकिन राजा ने नम्रता का ढोंग करते हुए—हालाँकि उसके भीतर एक भयंकर क्रोध उबल रहा था—उन्हें ऐसा करने से मना कर दिया, बल्कि आदेश दिया कि संत को सार्वजनिक काल-कोठरी में ले जाया जाए और वहाँ कैद कर दिया जाए।

इस कालकोठरी में प्रवेश करते ही संत ने कहा:

'यह कालकोठरी इस वर्तमान जीवन में मेरा आश्रय होगी; मुझे यहाँ अपनी अंतिम साँस तक रहना है, और मैं अपने निवास के इस स्थान को पवित्र प्रतिमाओं के प्रति अपनी निष्ठा का पुरस्कार मानूँगा।'

कारागार के सबसे दूरस्थ कक्ष में बंद, संत ने वहाँ तीन सौ बयालीस भिक्षुओं को बैठे हुए पाया, जिन्होंने विभिन्न देशों और मठों में परिश्रम किया था और पवित्र प्रतिमाओं की पूजा करने के कारण कारागार में डाल दिए गए थे। उनमें से कुछ की नाक काट दी गई थी, दूसरों के कान काट दिए गए थे, और कुछ के हाथ काट दिए गए थे: क्रूरता का यह अंतिम कृत्य उन पर किया गया था जिन्होंने प्रतिमा पूजा के बचाव में किताबें लिखी थीं। कुछ के शरीर पर घाव थे जो अभी तक पूरी तरह से ठीक नहीं हुए थे; कुछ के चेहरे झुलसा दिए गए थे और उन पर कोयला मल दिया गया था; अन्य के सिर उपहास के तौर पर मुंडवा दिए गए थे। उन सभी कष्ट सहने वालों ( ) को देखकर, जिन्होंने ये यातनाएँ झेली थीं, पूज्य पिताजी ने उनके धैर्य और सहनशक्ति की प्रशंसा की और इस बात पर गहराई से शोक मनाने लगे कि उन्हें स्वयं पवित्र प्रतिमाओं के लिए ऐसी यातनाएँ सहने योग्य नहीं समझा गया था। हालाँकि, उन पवित्र संतों ने धन्य स्टीफन का प्रेम से स्वागत किया और उसे अपना नेता और शिक्षक चुना। और वह कालकोठरी, मानो, एक मठ बन गई, और उसमें मठ के अनुशासन और नियम के अनुसार प्रथागत भजन और प्रार्थनाएँ की जाती थीं।

कारावास के दौरान, रेवरेंड को एक ईश्वर-भयभीत महिला से भोजन मिलता था, जो एक गार्ड की पत्नी थी। वह हर शनिवार और रविवार को कालकोठरी में थोड़ी सी रोटी और पानी लाती और चुपके से संत को दे देती। पहले तो, उस धन्य

संत ने उसके हाथों से लाया हुआ भोजन स्वीकार करने से इनकार कर दिया, क्योंकि वह नहीं जानते थे कि वह धर्मनिष्ठ थी या वह प्रतिमाओं की पूजा करती थी; क्योंकि वह विधर्मियों से घृणा करते थे और उनके हाथों से कुछ भी लेना नहीं चाहते थे। लेकिन उस महिला ने, अपनी भक्ति साबित करने के लिए, उसे परम पवित्र ईश्वर की माता और पवित्र प्रमुख प्रेरितों पतरस और पॉल के प्रतिमाचित्र लाए, जिन्हें उसने छिपा कर रखा था। सम्माननीय पिता की उपस्थिति में इन पवित्र प्रतिमाओं को प्रणाम करने के बाद, उसने उन्हें चूमा, और फिर उन्हें उन्हें दे दिया, ताकि धन्य स्टीफन, उन पूजनीय प्रतिमाओं को अपने पास रखकर, अपनी पवित्र प्रार्थनाओं में उसकी याद रख सकें।

एक दिन, संत स्टीफन अन्य पूजनीय पादरियों के साथ शाही राज्यपालों, एम्फीपेट्स और hegemon[8268] द्वारा धर्मनिष्ठों पर दी गई अनेक और विविध यातनाओं के बारे में बात कर रहे थे। अन्य बातों के अलावा, कैदियों में से एक, साइप्रस के एंथनी ने, साइप्रस के भिक्षु पॉल की शहादत को याद किया। क्रीट के बिशप थियोफेंस, जिन्हें लार्डोतिरि के नाम से जाना जाता था, ने उनके सामने जमीन पर एक ओर मसीह के सूली पर चढ़ाए जाने की एक प्रतिमा और दूसरी ओर यातना के उपकरण रखे, और उनसे कहा:

'पॉल, अपने लिए दो चीजों में से एक चुनो: या तो जीवित रहने के लिए मसीह की प्रतिमा को पैरों तले कुचलने के लिए सहमत हो जाओ; या तुम इन उपकरणों से यातना भोगते हुए एक क्रूर मृत्यु का सामना करोगे जो तुम्हारे सामने रखे गए हैं – जब तक कि तुम दिए गए आदेश का पालन करने का विकल्प न चुनो।'

लेकिन साहसी पॉल ने ज़ोर से पुकारा:

'मैं आपके पवित्र प्रतिमा पर पैर नहीं रखूँगा, हे प्रभु यीशु मसीह, परमेश्वर के एकलौते पुत्र।'

यह कहकर, पॉल घुटनों के बल बैठ गए और श्रद्धापूर्वक पवित्र प्रतिमा को चूम लिया, जिससे यह स्पष्ट हो गया कि वह यातना देने वाले की धमकियों से नहीं डरते थे और मसीह की प्रतिमा के लिए मरने को तैयार थे। तब यातना देने वाला क्रोध से आग-बबूला हो गया और क्रोध से भर गया। सबसे पहले, उसने आदेश दिया कि उस कन्फेशर के शरीर को दो लोहे की पट्टियों से कसकर बाँधा जाए; फिर, पौलुस को उल्टा लटका कर, उसने उसके शरीर को लोहे की छड़ी से यातना देने का आदेश दिया; और अंत में, उसने उसके नीचे एक चिता तैयार करके उसे आग लगाने का आदेश दिया। यही यातना सहते हुए पॉल की मृत्यु हुई, वह आग से जलकर प्रभु के लिए एक सुगंधित बलिदान बन गए।

एंटोनी द्वारा यह सुनाने पर, सभी पादरियों ने गर्म आँसू बहाए। इसके बाद, एक अन्य कैदी बोलने लगा; उसका नाम थियोस्टरिक्टस था, एक वृद्ध व्यक्ति जिसे एक पुरोहित के रूप में बहुत सम्मान दिया जाता था, जिसका नाक काट दिया गया था और आइकन की पूजा के प्रति उसकी निष्ठा के लिए उसका पूरा चेहरा उबलते हुए तारकोल से झुलसा दिया गया था।

"एक बार, हमारे पेलकिति नामक मठ में," उन्होंने कहा, "पवित्र सप्ताह के पवित्र और महान गुरुवार को एक रक्तहीन बलिदान किया जा रहा था।" अचानक, यातनाकर्ता लाहानोड्रैगन ने योद्धाओं की एक सेना के साथ मठ पर आक्रमण किया। साहसपूर्वक पवित्र स्थल में प्रवेश कर, उसने गायन बंद करने का आदेश दिया और मसीह के पवित्र तथा जीवन-दायक रहस्यों को जमीन पर फेंक दिया।

फिर, बयालीस चुने हुए भिक्षुओं को पकड़कर, उसने उन्हें लोहे की जंजीरों में बाँध दिया; बाकी लोगों में से, उसने कुछ पर क्रूर घाव किए, उनके शरीरों को चीर-फाड़ डाला, जबकि दूसरों की दाढ़ियाँ और चेहरे जला दिए, पहले उन पर कोयला लगाकर; और अन्य लोगों के, जिनमें मैं भी शामिल था, उसने उनकी नाक काट दी। इसके बाद, उसने चर्च में आग लगा दी और पूरे मठ को जला दिया। जहाँ तक उन बत्तीस चुने हुए संतों का सवाल है जिन्हें जंजीरों में बांधा गया था, यातना देने वाले ने उन्हें एफ़सिस के क्षेत्र में कैद कर दिया, और सभी को एक जर्जर स्नानागार में बंद कर दिया, जिसका प्रवेश द्वार लकड़ी के तख्तों से बंद कर दिया गया था। वहाँ वे सभी भूख से मर गए।

ऐसे वृत्तांत सुनकर, आदरणीय स्टीफन ने भाइयों से भी उसी साहस और धैर्य को दिखाने का आग्रह किया। फिर उन्होंने स्वयं व्लाचेर्ना में रहने वाले एक पीटर को याद किया। पूछताछ के लिए राजा के सामने लाए जाने पर, इस पीटर को प्रतिमा पूजा के प्रति अपनी निष्ठा के लिए बैल की खाल की रस्सियों से निर्दयतापूर्वक कोड़ा मारा गया, फिर भी उसने इतना धैर्य दिखाया कि वह बिल्कुल भी कराहया या चिल्लाया नहीं, मानो उसे कोई दर्द ही महसूस नहीं हो रहा हो। इतना ही नहीं, बल्कि वह स्वयं तसर को एक धारदार ब्लेड जैसी तीखी फटकार के शब्दों से मारने से भी नहीं डरता था, और उसे

[8268] एम्फिपैटस कई प्रांतों पर مشتمل एक क्षेत्र का राज्यपाल था; एक हेगेमोन किसी प्रांत का राज्यपाल होता था।

' ' एक नया जूलियन द एपोस्टेट[8269] कहता था। धन्य स्टीफन ने एक जॉन नामक व्यक्ति का भी स्मरण किया, जिसे तसर मसीह और परमेश्वर की परम पवित्र माता की प्रतिमाओं को पैरों तले कुचलने के लिए मजबूर नहीं कर सका। कई असफल प्रयासों के बाद, यातना देने वाले ने आदेश दिया कि उसे एक मदिरा-मशक में सिल दिया जाए और मशक से एक पत्थर बाँधकर उसे समुद्र में फेंक दिया जाए और डुबो दिया जाए।

जब वे एक-दूसरे को इस प्रकार की कहानियाँ सुना रहे थे, तो मसीह के लिए सभी सबसे धन्य पिता और कैदी पवित्र प्रतिमाओं के लिए दुख सहने की तीव्र इच्छा से भर गए, और उन्होंने एक-दूसरे को यह कहते हुए प्रोत्साहित किया:

'भाइयो, प्रभु के लिए धीरज धरो, और अपनी अंतिम साँस तक उनके लिए दुख सहो। *"यदि हम उसके साथ दुख उठाते हैं, ताकि हम भी उसके साथ महिमामय हों"* (रोमियों 8:17)।

इस संसार के सभी आशीर्वाद उस महिमा के सामने कुछ भी नहीं हैं जो हमारे लिए रखी गई है।

धन्य स्तेफन ग्यारह महीने तक सार्वजनिक जेल में रहे। वहाँ, ईश्वर ने उन्हें एक दर्शन में यह प्रकट किया कि वे चालीस दिनों में मर जाएँगे। जब, इस प्रकटवाणी के बाद, जेलर की पत्नी आदरणीय के लिए भोजन लेकर उनके पास आई, तो उन्होंने उससे कहा:

'प्रभु तुम्हें उस दया का प्रतिफल दे जो तुमने मुझ पर दिखाई है। तुमने मेरी अच्छी सेवा की है। अब वह नश्वर भोजन और पेय जो तुम लाया करती थीं, मुझे और मत लाओ।'

ये शब्द सुनकर पत्नी दुखी हो गई, क्योंकि उसे लगा कि संत ने उसकी भेंट को तुच्छ समझा है। उसकी पीड़ा देखकर, पूजनीय ने उससे कहा:

'मेरे मृत्यु का समय निकट आ गया है, क्योंकि चालीस दिनों में मैं मर जाऊँगा। और मैं चाहता हूँ कि इन शेष दिनों में, मैं अपने संन्यासी तप को और तीव्र करूँ और भोजन-पेय से पूरी तरह परहेज़ करूँ, ताकि मैं मृत्यु के लिए स्वयं को तैयार कर सकूँ।'

तब, पहरेदार की पत्नी को भेज देने के बाद, पूज्यनीय ने स्वयं को प्रार्थना में समर्पित कर दिया और दिन-रात प्रार्थना में लगे रहे। उस समय के दौरान जो कुछ नागरिक वफादार रहे, वे आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए उनके पास आए। इस उद्देश्य के लिए, उन्होंने अपने कपड़े बदले, मोटे फटे-पुराने कपड़े पहने और संत के पास आकर, उनके अत्यंत लाभकारी और ईश्वर-प्रेरित शब्दों का आनंद लिया।

जब नियुक्त चालीस दिन समाप्त होने वाले थे और अड़तीसवां दिन आ ही चुका था, तो पूज्य पिता ने उक्त महिला को एक बार फिर बुलाया और तहखाने में मौजूद सभी पवित्र पुरोहितों की उपस्थिति में उससे कहा:

'भगवान तुम्हें तुम्हारी कृपा के लिए सौ गुना फल दें, और वह अपनी ऊँचाइयों से तुम पर दयालु दृष्टि डालें। क्योंकि तुमने स्वयं को उस का एक सच्चा शिष्य साबित किया है जिसने कहा: *'जो कुछ भी तुमने मेरे इन सबसे छोटे भाइयों में से किसी एक के लिए किया, वह तुमने मेरे लिए किया* (मत्ती 25:40), और फिर: *'जो कोई एक धर्मी व्यक्ति को एक धर्मी व्यक्ति के नाम पर ग्रहण करता है, वह एक धर्मी व्यक्ति का पुरस्कार प्राप्त करेगा'* (मत्ती 10:41); और तीसरे: *'और जो कोई मेरे नाम पर तुम्हें एक प्याला पानी देगा, क्योंकि तुम मसीह के हो, मैं तुम से सच कहता हूँ, वह अपना इनाम खोएगा नहीं'* (मरकुस 9:41)। तुमने मेरी सेवा करके यह सब पूरा किया है, और इसलिए तुम अपना इनाम खोओगे नहीं।

तब संत ने उसे वे पवित्र प्रतिमाएँ सौंपीं जो उसने पहले उनके पास लाई थीं, और उससे कहा:

'अपना अनमोल खजाना ग्रहण करो। यह सभी बुराइयों से तुम्हारी रक्षा करेगा और इस वर्तमान युग तथा आने वाले युग में तुम्हारी ऑर्थोडॉक्सी (सही आस्था) की गवाही देगा।'

ये वचन कहने के बाद, संत ने गहरी आह भरकर कहा:

'एक दिन मैं इस सांसारिक जीवन को छोड़कर दूसरी दुनिया में चला जाऊँगा, जहाँ मैं स्वर्गीय राजा के सामने खड़ा होऊँगा।'

महाधर्माध्यक्ष के ये वचन सुनकर, वह महिला जोर-जोर से रो पड़ी। फिर, प्रतिमाएँ लेकर और संत स्टीफन से आशीर्वाद प्राप्त कर, उसने उन्हें एक तौलिये में लपेटा और अपने महान पिता और शिक्षक से बिछड़ने के विचार से दुखी

[8269] जूलियन द एपोकेटेट – एक रोमन सम्राट जिसने 361 से 363 तक शासन किया। एक ईसाई के रूप में जन्मे और पले-बढ़े, उन्होंने मसीह का त्याग कर दिया और एक उत्साही मूर्तिपूजक बन गए।

होकर घर चली गई। उनके लिए, पूज्यनीय ने अपने नधिन के दनि तक का शेष समय अपने साथी वशि्वासयिों के साथ बताया, पवत्रि भजन गाते हुए और प्रभु ईश्वर की महमिा करते हुए।

जब उनतीसवां दनि आया, तो राजा ने अपनी तीसरी पत्नी, यूडोक्सयिा नाम की रानी के साथ, व्रूमालयिा नामक एक मूर्तपिूजक त्योहार मनाना शुरू कर दयिा[8270] ; क्योंकि उस अधर्मी वधिर्मी ने अपने कई ईश्वर-द्वेषी दुष्कृत्यों के बीच, मूर्तपिूजक समारोहों की भी उपेक्षा नहीं की थी। इस उत्सव के दौरान, कुछ दुष्ट वधिर्मीयों ने धन्य स्टीफन पर राजा के सामने यह आरोप लगाया कि उसने अपनी जेल की कोठरी को एक मठ में बदल दयिा था और अपने शब्दों से उसके पास आने वाले कई लोगों को बहकाकर मूर्तपिूजा (जैसा कि वे आइकनों की पूजा को कहते थे) की ओर ले गया। राजा, क्रोधति होकर, तुरंत एक जल्लाद को स्टीफन को शहर से बाहर ले जाकर तलवार से मार डालने का आदेश दे दयिा। लेकनि जब स्टीफन को फांसी देने के लिए बेड़यिों में जकड़कर ले जाया जा रहा था, तो राजा को उस धन्य व्यक्ति को इतनी शीघ्र मृत्युदंड देने पर पछतावा होने लगा।

उसने कहा, 'तलवार से सरि कलम करवाकर यथाशीघ्र अपनी जान गंवाने से स्टीफन के लिए और क्या अधकि वांछनीय हो सकता है?' और, उस पूजनीय व्यक्ति को और भी भयानक मौत देना चाहकर, उसने उसे वापस जेल भेजने का आदेश दयिा। उसकी ओर से, उसने उस दनि अपने महल में अपने कुलीनों और समान वचिारधारा वाले लोगों के लिए एक बड़ा भोज आयोजति कयिा, और वे संगीत वाद्ययंत्रों की धुन और तुरहयिों की तेज ध्वनि पर आनंदति हुए और मस्ती करने लगे। भोज के बीच में, राजा को धन्य स्टीफन याद आए और उन्होंने अपने बगल में खड़े दो युवकों से कहा—जो सुंदर चेहरे वाले, अपनी बहादुरी के लिए प्रसद्धि, और उनके सगे भाई थे—

'सार्वजनकि जेल जाओ और माउंट ऑक्सेन्टयिस के स्टीफन से यह कहो। राजा कहते हैं: क्या तुम देखते हो कि वह तुम्हारी कतिनी परवाह करता है? देखो, उसने तुम्हें मृत्यु के दरवाज़ों से वापस लाया है और तुम्हें जीवन दयिा है। तो, तुम कतिने समय तक राजा की इच्छा का पालन करने से इनकार करते रहोगे? उसे यह सब बता दो। मैं जानता हूँ कि वह मेरे सामने नहीं झुकेगा, बल्कि मुझ पर और भी अधकि अपमान करना शुरू कर देगा—और तब तुम उसे पकड़कर जतिनी जोर से हो सके, तब तक पीटना जब तक कि वह मर न जाए।"

राजा की आज्ञा सुनकर, जवान लोग कालकोठरी में गए; लेकनि जब उन्होंने स्टीफन का चेहरा देखा, जो एक देवदूत के समान था, तो वे उसकी पवत्रिता से वस्मिति हो गए और, उस धन्य पुरुष के पैरों पर गरि पड़े, और उससे आशीर्वाद और प्रार्थनाएँ माँगीं। फरि, राजा के पास लौटकर, उन्होंने उससे कहा:

'हमने उस भक्षिु को अवज्ञाकारी पाया, और इसलिए हमने उसे नर्दियता से पीटा और उसे मुश्कलि से जीवति छोड़ा; हमें नहीं लगता कि वह सुबह तक जीवति रहेगा – हमने उसे इतनी बुरी तरह मारा है।'

यह सुनकर राजा को सांत्वना मलिी और वह अपने समान वचिारधारा वाले साथयिों के साथ प्रसन्नचत्ति होकर दावत करना जारी रखे रहा।

इस बीच, पूजनीय स्टीफन ने मृत्यु की तैयारी करते हुए पूरी रात प्रार्थना में बतिाई। जब भोर का तारा चमका, तो उन्होंने अपने साथ कैद सभी पूजनीय संतों को बुलाया और उनसे इस प्रकार कहा:

'पति और भाइयो, मैं आपको अपना अंतमि प्रणाम और अंतमि चुंबन अर्पति करता हूँ: मेरे मृत्यु का समय अब नकिट है, और शहीद का मुकुट मेरा इंतजार कर रहा है। जहाँ तक आपकी बात है, अंत तक ऑर्थोडॉक्स धर्म के प्रति सच्चे रहो और दृढ़ खड़े रहो।'

ये शब्द सुनकर, पूजनीय पतिाओं ने जोर-जोर से रोना शुरू कर दयिा, उनके चेहरे गर्म आँसुओं से लथपथ हो गए। हालाँकि, संत स्टीफन ने अपने कपड़े उतारना शुरू कर दयिा। फरि अन्य पूजनीय पतिाओं ने उनसे कहा:

'पतिाजी, यह बेहतर होगा कि आप अपने पवत्रि मठवासी वस्त्रों में ही मृत्यु का सामना करें।'

लेकनि ईश्वर-प्रेरति स्टीफन ने उत्तर दयिा:

'एक योद्धा के लिए नग्न होकर युद्ध में जाना ही उचति है। इसके अलावा, यदि अवैध पुरुषों द्वारा मठवासी व्यवस्था को पैरों तले रौंदा जाए तो उसका क्या लाभ?'

[8270] व्रमलयिा या ब्रुमालयिा – एक बहुदेववादी त्योहार जो शीतकालीन संक्रांति (लैटनि: *ब्रूमा*) के दनि मनाया जाता था / प्राचीन रोम में, यह त्योहार सैटर्न (रोमन कृषि और फसलों के देवता) के मंदरि के सामने बलदिान के साथ शुरू होता था, इसीलिए इसे सैटर्नलयिा भी कहा जाता था; इसके बाद एक भोज होता था जसिमें सीनेटर और सभी गणमान्य व्यक्ति शामलि होते थे।

यह कहकर, धन्य व्यक्ति ने अपने सभी कपड़े उतार दिए और केवल एक चमड़े की चादर ओढ़कर, पवित्र संतों के साथ अपने मृत्यु के समय की प्रतीक्षा में बैठ गया।

उसी रात, जब राजा भोज के बाद अपने बिस्तर पर विश्राम कर रहा था, तो जो दानव हमेशा उसके साथ रहता था, उसने उसे सूचित किया कि उसके दूतों ने स्टीफन को कोई हानि नहीं पहुँचाई थी, बल्कि उन्होंने केवल उसके सामने झुककर उसका आशीर्वाद प्राप्त किया था। तब राजा, नींद से जागकर, अपने महल के भीतरी कक्षों से बाहर निकला और, एक गर्जने वाले शेर की तरह, चिल्लाने लगा:

'हाय, क्या बड़ी अपमान की बात है! मेरा कोई सहायक नहीं, कोई वफादार सेवक नहीं। हर कोई मुझे कुछ भी नहीं समझता, और मुझे नहीं पता कि उन लोगों का क्या करूँ जो याद किए जाने के भी लायक नहीं हैं' (इस तरह वह आमतौर पर संतों को संबोधित करता था)।

राजा की चीखें सुनकर राजमहल के सभी लोग स्तब्ध रह गए, बेचैन हो उठे और उसकी ओर दौड़ पड़े। अपनी ओर दौड़ते हुए लोगों पर एक नज़र डालते हुए, राजा ने कहा:

'तुम कहाँ जा रहे हो, और किसे ढूंढ रहे हो?'

उन्होंने विनम्रता से उत्तर दिया:

'हम आपके पास आए हैं, हमारे दयालु स्वामी और राजा।'

तब राजा ने ऊँचे स्वर में पुकारा:

'मैं न तो तुम्हारा स्वामी हूँ और न ही तुम्हारा राजा। तुम्हारा एक और राजा है, एक और स्वामी, जिसके चरणों में तुम प्रणाम करते हो, उसकी प्रार्थना और आशीर्वाद माँगते हो। और कोई भी ऐसा नहीं है जो मेरी बात सुने या मेरी निष्ठापूर्वक सेवा करे, ताकि मैं अपने शत्रु का नाश कर सकूँ और अपनी आत्मा को सांत्वना दे सकूँ।'

कोप्रोनमिस के आसपास के लोगों ने पूछना शुरू किया कि उसका यह दुश्मन कौन था, जिसे वे स्वयं राजा से भी अधिक सम्मान देते थे। तब कोप्रोनमिस ने उत्तर दिया:

'राजा मैं नहीं हूँ, बल्कि माउंट ऑक्सेन्टियस का स्टीफन है।'

जैसे ही उसने ये शब्द कहे, एक ज़ोरदार चीख के साथ वे सब सार्वजनिक काल-कोठरी में घुस गए और रक्षकों की ओर मुड़कर चिल्लाए:

'हमें ऑक्सेंटियस का स्टीफन दो।'

लेकिन पूजनीय स्टीफन स्वयं एक प्रसन्न मुख और आनंदित हृदय के साथ कालकोठरी से उनके पास आए।

'मैं ही वह हूँ जिसे तुम ढूंढ रहे हो,' उन्होंने दौड़कर आए लोगों से कहा। फिर उन्होंने संत को वैसे ही पकड़ लिया जैसे भेड़िये एक भेड़ को पकड़ते हैं, उन्हें ज़मीन पर पटक दिया और उनकी सभी ज़ंजीरों को तोड़कर, निर्दयता से उन्हें चौक तक घसीटते हुए ले गए, उनके ऊपर पैर पटकते हुए और डंडों से पीटते हुए। जब उस धन्य व्यक्ति को जेल के द्वारों के बाहर घसीटकर महान शहीद संत थियोडोर के चर्च के सामने लाया गया, तो उन्होंने अपने हाथ जमीन पर टिकाए, अपना सिर यथासंभव ऊपर उठाया, और अपने चर्च के सामने पवित्र शहीद को अपनी अंतिम श्रद्धांजलि अर्पित की, इस प्रकार उन्होंने प्रचंड यातनाओं के बीच एक धर्मपरायण कार्य पूरा किया। यह देखकर, संत को घसीट रहे खून के प्यासे लोगों में से एक, जो फिलोमैटियस नाम का था, ने लकड़ी का एक बड़ा टुकड़ा पकड़ लिया और उससे संत के सिर पर जोर से वार करके उनकी खोपड़ी तोड़ दी। और तुरंत ही परम पूजनीय ने अपनी आत्मा ईश्वर के हाथों में सौंप दी। लेकिन उसी क्षण, एक राक्षस ने अचानक उसके हत्यारे को पकड़ लिया, जिससे वह दुष्ट व्यक्ति एक भयानक आवाज़ में चिल्लाया, और ज़मीन पर गिरकर भयानक रूप से चीखा, पूरे शरीर से मचलते हुए और दाँत पीसते हुए, जबकि उसके मुँह से झाग निकल रहा था। और वह दुर्भाग्यशाली, उस दानव द्वारा तब तक पीड़ित किया गया, जब तक कि वह अपनी भयानक पीड़ा के बीच प्राण नहीं त्याग दिया।

इसके बावजूद, स्टीफन को घसीटते हुए गुस्से से उन्मत्त खून के प्यासे लोगों की भीड़ ने उसके शरीर का मज़ाक उड़ाना बंद नहीं किया, बल्कि उन्होंने मृतक पर अपनी पशुवत क्रूरता दिखाई, और आदरणीय व्यक्ति के शरीर को सड़कों पर घसीटा तथा उस पर पत्थर बरसाए। रास्ते में, संत के पवित्र शरीर से अंग-विच्छेद करके उन्हें सड़कों पर छोड़ दिया गया: ऐसा ही उनके उंगलियों, हाथों और आंतों के साथ हुआ। इसके अलावा, उन कानूनविहीन लोगों में से एक ने दोनों हाथों से एक विशाल पत्थर उठाया और उससे संत के पेट पर वार किया; तुरंत ही उसका पेट फट गया और उसके आंतें बाहर गिर पड़ीं, जिससे शहर की सड़कों पर संत के खून के दाग लग गए, जो पानी की तरह बह रहा था। और न केवल पुरुषों ने, बल्कि

महलिाओं और छोटे बच्चों ने भी, जो अपने स्कूलों से बाहर आ रहे थे, पादरी के नरि्जीव शरीर पर पत्थर फेंके। क्योंकि राजा ने यह फरमान जारी कयि था: जो कोई ऑक्सेंटयिस के स्टीफन पर पत्थर नहीं फेंकेगा, वह राजा का दुश्मन होगा और उसे मृत्युदंड दयि जाएगा। इसीलिए दुष्ट वधिर्मी लोगों की पूरी भीड़, चाहे वे जवान हों या बूढ़े, उस मारे गए व्यक्ति को पीट रही थी। जब संत के शरीर को मवेशी बाज़ार तक घसीटा गया, तो एक सरायकयि, जो उस समय मछली तल रहा था, ने शरीर को घसीटते हुए देखा और यह सोचकर कि संत अभी भी जीवति है, उसने एक जलता हुआ अंगारा उठाया और उससे संत के सरि पर वार कयि, जसिसे उसके दमिाग़ तुरंत बाहर गरि पड़े।

उस वदि्रोही भीड़ के पीछे, जो उस पूजनीय संत के शरीर पर तरह-तरह के अत्याचार कर रही थी, थयिोडोर नाम का एक ईसाई चल रहा था, जो यह जानना चाहता था कि संत का शरीर कहाँ फेंका जाएगा। उसके सरि से बह रहे दमिाग को देखकर, उसने ठोकर खाने का नाटक कयि, जमीन पर गरि पड़ा और, गुप्त रूप से पूजनीय के दमिाग को एक साफ रूमाल में इकट्ठा करके, उन्हें अपने कपड़ों में छपिा लयि और एक बार फरि उन लोगों का पीछा करने नकिल पड़ा जो संत के शरीर का मज़ाक उड़ा रहे थे।

उस समय, पूज्य स्टीफन की बड़ी बहन जीवति थीं; उन्होंने बाइज़ेन्टाइन के एक मठ में संन्यासी का व्रत ग्रहण कयि था। संत का शरीर इसी मठ में घसीटकर लाया गया था, ताकि पूज्य व्यक्ति की बहन, ज़ार के आदेश के अनुसार, उस पर पत्थर फेंक सके। लेकनि यह जानने पर, वह अपनी कोठरी से नकिल आई और एक ताबूत के अंदर छपि गई; उन्होंने हर जगह उसकी तलाश की, लेकनि उसे ढूंढ नहीं सके। फरि पूजनीय स्टीफन के शरीर को वहां से पेलagia के कब्रस्तिान नामक स्थान पर घसीटकर ले जाया गया। कभी वहां पवत्रि शहीद पेलagia का चर्च हुआ करता था, जो जर्जर होने के कारण खंडहर बन चुका था; दुष्ट राजा ने इसके नींव तक को उखाड़ने का आदेश दयि, और उसकी जगह एक गहरी खाई खोदने का, जसिमें मारे गए काफरिों के शव फेंके गए। परम पूजनीय स्टीफन के शरीर को इस खाई तक घसीटकर उसमें फेंक दयि गया, और धर्मी को अधर्मी के साथ गनि लयि गया।

इस प्रकार हमारे पूजनीय पति स्टीफन ने 28 नवंबर को, अपने जीवन के 53वें वर्ष में, अपना सांसारकि प्रवास समाप्त कयि।[8271]

उस दनि की शुरुआत एक बहुत ही साफ़ सुबह से हुई, और सूरज ने पृथ्वी पर तेज रोशनी बखिेरी; लेकनि दनि के तीसरे घंटे में, पूर्व से, जहाँ माउंट ऑक्सेन्टयिस स्थति था, एक अग्नमिय बादल दखिाई दयि; शहर के ऊपर की हवा तुरंत अँधेरी हो गई, और दनि रात में बदल गया। फरि एक तूफ़ान उठा, और भारी ओले पड़ने लगे, जसिसे कई लोग मारे गए।

फरि भी ईश्वर के क्रोध के ये सभी दृश्यमान संकेत, जो पादरयिों ने आदरणीय स्टीफन पर कए गए अत्याचारों और उनके पवत्रि शरीर का अपमान करने के लए दुष्टों को दंड स्वरूप कॉन्स्टेंटनिोपल पर भेजे थे, दुष्ट राजा को होश में लाने में वफिल रहे। इस प्रकार उसने अपने दो भाइयों को—जन्हिें उसने पहले पूजनीय स्टीफन को मारने के लए भेजा था—शाही इच्छा के वदि्रोही होने के आरोप में मृत्युदंड का आदेश दयि। फरि उसने पूजनीय स्टीफन के साथ कैद अन्य पवत्रि संतों को भी मौत की सज़ा दी।

इस बीच, थयिोडोर, जसिने आदरणीय स्टीफन के बखिरे हुए मस्तष्कि को इकट्ठा कर लयि था, संत डयि के मठ के लए रवाना हो गया और उसे स्टीफन की मृत्यु के बारे में सब कुछ बताया जो वह जानता था। मठाधीश ने, थयिोडोर का बयान आँसू भरी आँखों से सुनने के बाद, राजा को एक वधिर्मी और धर्मत्यागी घोषति कर दयि, जबकि संत के मस्तष्कि को एक अनमोल खजाने के रूप में स्वीकार कयि; उन्होंने इसे एक साफ पात्र में रखा और पहले शहीद संत स्टीफन के चर्च में छपिा दयि। लेकनि यह बात उस दुर्भावनापूर्ण राजा की नज़र से नहीं छूटी। यह इस प्रकार हुआ।

जब मठाधीश ने संत स्टीफन के पूजनीय मस्तष्कि को पात्र में रखकर चर्च में छपिा दयि, तो संत डयि के मठ में रहने वाला एक युवक वहाँ मौजूद था। कुछ समय बाद, इस युवक ने मठाधीश से डीकन का पद देने के लए वनिती करना शुरू कर दयि। लेकनि मठाधीश, उसे इस पद के योग्य न समझते हुए, ने उसकी वनिती मानने से इनकार कर दयि। तब वह युवक मठाधीश से नाराज़ हो गया और राजा के पास जाकर, उसे संत स्टीफन के मस्तष्कि के बारे में जो कुछ भी पता था, सब कुछ बता दयि। राजा ने तुरंत आदेश दयि कि उस पवत्रि मस्तष्कि वाले पात्र को उसके सामने लाया जाए और उसकी उपस्थति में खोला जाए।

[8271] यह वर्ष 768 ईस्वी में था।

जब पात्र खोला गया, तो वह पूरी तरह से खाली नकिला, क्योंकि दिव्य प्रावधान द्वारा स्टेफन के मस्तष्कि को अदृश्य रूप से ले जाया गया था और आज तक कसिी को भी पता नहीं कि उसे कहाँ छपिाया गया था। राजा आग-बबूला हो गया, और उस युवक को बदनाम करने वाला कहकर नर्विासति कर दयिा गया।

यहाँ उस युवती पर ईश्वर द्वारा दी गई अद्भुत सज़ा का भी स्मरण करना आवश्यक है, जो धन्य भक्षिुणी अन्ना की नौकरानी थी, और उसने उनके और धन्य स्टीफन के बारे में झूठ बोला था, यह दावा करते हुए कि वे रात में गुप्त रूप से मलिते थे और अवैध पाप में पड़ गए थे। उसे बथिनियिा में राजा के लिए कर वसूलने वाले एक प्रतष्ठिति व्यक्ति के पास ववािह के लिए दे दयिा गया, और उसने जुड़वां बेटों को जन्म दयिा। एक रात, जब वह अपने बच्चों के साथ अपने बस्तिर पर आराम कर रही थी, तो वे अचानक बेचैन हो गए और कसिी अद्भुत शक्ति के वश में होकर, उन्होंने अपनी माँ के स्तनों को ज़ोर से पकड़ लयिा और उन्हें चूसना शुरू कर दयिा—बच्चों की तरह नहीं, बल्कि शेर के बच्चों या भालू के बच्चों की तरह—ताकि वह बेचारी महलिा उन्हें अपनी छाती से अलग न कर सके। और इस प्रकार, अपनी माँ के स्तनों को बेरहमी से नोच-नोच कर, उन्होंने उसकी जान ले ली; फरि वे स्वयं, एक वषिैले साँप के बच्चों की तरह, उसके साथ ही मर गए। शापति झूठे गवाह पर यही दंड पड़ा। कन्तिु धन्य पवत्रि शहीद स्तेफन, नर्दिोष और शुद्ध हृदय वाले, त्रमिूर्ति में एक ईश्वर, पति, पुत्र और पवत्रि आत्मा को नहिारते हैं, जनिका युगानुयुग महमिा हो। आमीन।

ट्रोपारयिन, स्वर 4:

हे सर्वधन्य, पर्वत पर तपस्या करके, आपने क्रूस के पूर्ण कवच से शत्रु की सेनाओं का नाश कयिा; और फरि आप दुख सहने के लिए वीरतापूर्वक सशस्त्र हुए, और वश्विास की तलवार से कोप्रोनमिस का वध कयिा: और इन दोनों कर्मों के लिए आपको ईश्वर द्वारा मुकुट पहनाया गया, हे सदा-स्मरणीय पवत्रि शहीद स्टीफन।

कॉन्टाकयिन, स्वर 8:

हम, उत्सव के प्रेमी, त्रमिूर्ति के व्यवस्थापक और दव्यि स्टीफन की अपने हृदय की गहराई से गीतों द्वारा नष्ठिापूर्वक प्रशंसा करें, क्योंकि उन्होंने प्रभु और उनकी माता की महमिामय प्रतमिा का सम्मान कयिा; और अब, सामंजस्य और प्रेम से, हम उन्हें आनंदपूर्वक पुकारें: आनंदति हो, हे सदा-महमिामय पति।

कॉन्टाकयिन, स्वर 3:

हे पूजनीय, एक बाँझ जड़ से शाखाएँ फूटीं: प्रथम शहीद के समान नाम धारण करते हुए, आप संतों के लिए एक महान पति और मार्गदर्शक के रूप में प्रकट हुए, और आप उस राजा के क्रोध से नहीं डरे, जसिने मसीह की प्रतमिा का सम्मान करने से इनकार कर दयिा था। इसी कारण, आपने अपना अंत पाया और शहीद का मुकुट प्राप्त कयिा, हे स्तेफान।

हमारे पवत्रि पति थयिोडोर, रोस्तोव के आर्चबशिप का जीवन[8272]

28 नवंबर को स्मरणोत्सव

रॉस्तोव के प्रथम आर्चबशिप, संत थयिोडोर, उस परविार से आए थे जो अपनी धार्मकिता के लिए प्रसद्धि था, जसिमें रूसी भूमि के महान तपस्वी और प्रार्थना करने वाले व्यक्ति, रडोन्येज़ के परम पूजनीय सर्गयिस भी शामलि थे।

[8272] प्रसद्धि एपफिेनयिस द वाइज़, जन्हिोंने रेडोनज़ के आदरणीय सेरजयिस और परम के बशिप सेंट स्टीफन के जीवन लखि थे, ने सेंट थयिोडोर का जीवन लखिने का इरादा कयिा था; हालाँकि, एपफिेनयिस का इरादा कभी साकार नहीं हुआ। संत थयिोडोर की कोई प्राचीन जीवनी नहीं मलिी है। एक पांडुलपिि मौजूद है जसिमें थयिोडोर की एक वस्तिृत जीवनी है, जसिे 17वीं शताब्दी में वभिन्नि स्रोतों से संकलति कयिा गया है (उपरोक्त सनिोडल पांडुलपिि के आधार पर, यह जीवनी 1877 में यारोस्लाव में एक अलग खंड के रूप में इस शीर्षक के तहत प्रकाशति हुई थी: 'हमारे पति थयिोडोर, रोस्तोव के आर्चबशिप, चमत्कार करने वाले और साइमनोव मठ के संस्थापक, जो संतों में गनि जाते हैं, का जीवन')। यह जीवनी वर्तमान ववरिण का आधार है, जसिे वृत्तों और दस्तावेजों से जांचा गया है।

रॉस्तोव के संत थियोडोर, परम पूजनीय सर्गियस के भतीजे थे, जो उनके बड़े भाई स्टीफन के पुत्र थे। यह स्टीफन, आदरणीय सर्गियस की तरह, अपने पिता, बोयार करिलि के साथ, रोस्तोव क्षेत्र से मास्को के पास राडोनेज़ क्षेत्र में आकर, अपने जीवन का पहला आधा हिस्सा मास्को के राजकुमार इवान दानिलोविच कालिता के पुत्र, राडोनेज़ के राजकुमार एंड्रे इवानोविच की सेवा में बिताया। वह राडोनेज़ के राजकुमार के प्रमुख कुलीनों में से एक थे, जो अपनी सैन्य उपलब्धियों के लिए प्रसिद्ध थे, लेकिन सभी से बढ़कर अपनी धार्मिकता के लिए विख्यात थे। उनकी शादी हुई थी और उनकी पत्नी अन्ना से उनके दो बच्चे, क्लेमेंट और जॉन, हुए। स्टीफन की धर्मपरायण पत्नी का जल्द ही निधन हो गया, और फिर स्टीफन ने संसार को त्यागने और संन्यास की शपथ लेने का संकल्प लिया। उन्हें खोट्कोवो में स्थित 'मॉस्ट होली मदर ऑफ गॉड' के इंटरसेशन मठ में संन्यास की दीक्षा दी गई और उन्होंने अपना पूरा जीवन संन्यास की तपस्या, उपवास और प्रार्थना को समर्पित कर दिया। थोड़ी ही देर बाद, वह खोटकोवो मठ छोड़कर मास्को चले गए, जहाँ उन्होंने एपिफेनी मठ में एक एकांत कोठरी में रहने लगे, और शराब तथा बीयर से परहेज़ करते हुए तथा फटे-पुराने कपड़े पहनकर, उपवास और प्रार्थना का एक कठोर और संयमी जीवन व्यतीत किया। उस समय, उस मठ में अन्य प्रसिद्ध तपस्वी भी थे, जैसे कि सेंट एलेक्सियस, जो बाद में एक मेट्रोपॉलिटन बने, एल्डर गेरोन्टियस, और अन्य। उन्हें उस समय के सभी रूस के मेट्रोपॉलिटन, महामहिम थियोग्नोस्टस[8273] , द्वारा बहुत सम्मान दिया जाता था, जो अक्सर उन्हें अपनी उपस्थिति में बुलाते थे और उनका सम्मान करते थे।

स्टीफन के धार्मिक और तपस्वी जीवन के बारे में जानकर, इवान दानिलोविच के पुत्र, ग्रैंड प्रिंस सिमियन इवानोविच[8274] ने मेट्रोपॉलिटन थिओग्नोस्ट को उसे पुरोहित पद की दीक्षा देने और बाद में एपिफेनी मठ का मठाधीश नियुक्त करने का आदेश दिया, और उसे अपना आध्यात्मिक पिता चुना। कई बोयार और कुलीनों ने भी स्टीफन के आध्यात्मिक पुत्र बनने की इच्छा व्यक्त की। ग्रैंड प्रिंस सिमियन स्टीफन से प्रेम करते थे, उन्हें बहुत सम्मान देते थे, और अक्सर उनसे बातचीत करते थे।

ऐसे ही थे संत थियोडोर के पिता, जिनका सांसारिक नाम जॉन था। सात वर्ष की आयु प्राप्त करने पर, जॉन को उनके धर्मपरायण माता-पिता द्वारा पढ़ना और लिखना सीखने के लिए भेजा गया, और उन्होंने जल्द ही जो कुछ भी सिखाया गया था, उसमें महारत हासिल कर ली।

अपनी माता की मृत्यु के बाद, युवा जॉन अपने पिता के साथ रहे, जिन्होंने संन्यास की शपथ ले ली थी। अपने चाचा, महान तपस्वी राडोनेज़ के सर्गियस के जीवन के बारे में सुनकर, जो उस समय अपना नया मठ स्थापित कर रहे थे—जहाँ सभी वर्ग और पद के लोग आध्यात्मिक प्रयासों के लिए दूर-दूर से आ रहे थे—जॉन में सर्गियस से मिलने और उनके पदचिन्हों पर चलने की प्रबल इच्छा जागृत हुई। ईश्वर की कृपा से, जॉन के पिता स्टीफन, अपने पुत्र जॉन को साथ लेकर मॉस्को से राडोनेज़ क्षेत्र के लिए, जीवन-दायक त्रिमूर्ति मठ के लिए रवाना हुए। ऊ ने अपने पुत्र को सीधे चर्च में ले जाकर, उसका दाहिना हाथ पकड़कर, उसे व्यक्तिगत रूप से अपने भाई, मठाधीश सर्गियस की देखभाल के लिए सौंप दिया।

जॉन की कम उम्र—वह केवल बारह वर्ष का था—के बावजूद, पूजनीय सर्गियस ने उसमें एक सच्चे तपस्वी को पहचान लिया और उसी समय उसे मठवासी संप्रदाय में दीक्षा देकर मुंडन करा दिया, 20 अप्रैल को, पूजनीय थियोडोर ट्राइकिना के पर्व के दिन, जिनके सम्मान में जॉन का नाम बदलकर थियोडोर रखा गया था: उस समय यह प्रथा थी कि मुंडन के समय उस संत का नाम दिया जाता था, जिसका पर्व उसी दिन पड़ता था।

नव-संघीय भिक्षु थियोडोर महान संस्थापक के मार्गदर्शन में ट्रिनिटी मठ में ही रहे। उन्होंने संयम, ब्रह्मचर्य और पवित्रता का जीवन जिया; वे चर्च की प्रार्थना सभाओं में लगन से शामिल होते थे, पवित्र धर्मग्रंथों को ध्यान से सुनते थे और अक्सर स्वयं पवित्र ग्रंथों का पाठ करते थे। जहाँ तक उनके गुरु, आदरणीय सेरजियस की बात है, उन्होंने नम्रता, विनम्रता और मौन के साथ हर बात में उनकी आज्ञा का पालन किया। चर्च और एकांत में प्रार्थना, उपवास और जागरण के लिए युवा भिक्षु का उत्साह, भजन संहिता का उसका भक्तिपूर्ण पाठ, और भक्ति के आँसू, इन सबने उसके आस-पास के लोगों को आश्चर्यचकित कर दिया। यह विशेष रूप से उल्लेखनीय था कि उसने आदरणीय सेरजियस से कुछ भी नहीं छिपाया, और दिन-रात अपने सभी विचार उन्हें बता देता था।

[8273] संत थियोग्नोस्ट ने 1328 से 1353 तक मेट्रोपॉलिटन पद संभाला।

[8274] सिमिओन इवानोविच द प्राउड ने लगभग 1340 से 1353 तक शासन किया।

उचित आयु प्राप्त करने पर, थियोडोर को पुरोहित नियुक्त किया गया और उन्होंने मठवासी तपस्या और आध्यात्मिक जीवन में स्वयं को परिपूर्ण करना जारी रखा। जब उन्होंने आदरणीय सेरजियस और अपने पिता स्टीफन के साथ मिलकर लिटर्जी का अनुष्ठान किया, तो कुछ भिक्षुओं ने, जिन्हें ईश्वर की विशेष कृपा प्राप्त थी, इन पवित्र पुरोहितों के बगल में वेदी पर सेवा करते हुए ईश्वर के एक स्वर्गदूत को देखा।

उस समय, थियोडोर के मन में अपना एक नया मठ स्थापित करने, एक उपयुक्त स्थान खोजने और एक मठवासी समुदाय की स्थापना करने का विचार आने लगा। उन्होंने यह विचार अपने गुरु, परम पूजनीय सेरजियस को बताया, और एक से अधिक अवसरों पर दोहराया। आदरणीय संत ने, यह देखकर कि यह विचार थियोडोर के मन में दृढ़ता से बस गया था, इसमें ईश्वर की इच्छा की क्रिया को पहचाना।

थेओडोर ने अपनी आदत के अनुसार, अपनी रात की प्रार्थनाओं में अधिक रूप से खुद को समर्पित कर दिया। और इस प्रकार, एक दिन, प्रार्थना करते हुए, उन्होंने एक आवाज़ सुनी जो कह रही थी: 'थेओडोर, रेगिस्तान में जाओ; तुम एक मठ स्थापित करोगे, वहाँ कई तपस्वियों—आध्यात्मिक लालसा वाले पुरुषों—को इकट्ठा करोगे और स्वर्ग में एक बड़ा इनाम प्राप्त करोगे।' इन शब्दों **को स्वर्ग से प्राप्त एक दिव्य संकेत मानकर**, उस धन्य व्यक्ति ने जो कुछ भी हुआ था, उसे किसी के सामने प्रकट नहीं किया। लेकिन कुछ समय बाद, महान दर्शक सेरजियस ने अपने भतीजे से कहा:

उन्होंने कहा, 'मेरे बेटे, मुझे उम्मीद थी कि तुम मेरी अस्थियों को एक मकबरे में रखोगे और इस जगह पर मेरे उत्तराधिकारी बनोगे; लेकिन अगर तुम अब अपना यह विचारित कार्य शुरू करना चाहते हो, तो ईश्वर और ईश्वर की परम पवित्र माता तुम्हारी मदद करें।'

अपने भतीजे और शिष्य को आशीर्वाद देकर, उन्होंने उसे उन भाइयों के साथ विदा किया जो उसके साथ जाना चाहते थे।

आदरणीय थियोडोर अपने साथियों के साथ मठ से निकल गए और एक मठ के लिए एक उपयुक्त स्थान की तलाश में निकल पड़े। और उन्हें मॉस्को शहर के पास, मस्क्वा नदी के बाएं किनारे पर, साइमनोवो नामक एक शानदार जगह मठ बनाने के लिए मिली।

यह समाचार पाकर, पूजनीय सर्गियस स्वयं स्थल का निरीक्षण करने आए; एक मठ के निर्माण के लिए इसे उपयुक्त पाकर, उन्होंने थियोडोर को अपनी नियोजित परियोजना को आगे बढ़ाने का आशीर्वाद दिया।

आवश्यक धर्माध्यक्षीय अनुमति प्राप्त करने के बाद, पूजनीय थियोडोर ने चुने हुए स्थान पर परम पवित्र मसीह की माता को समर्पित एक चर्च का निर्माण किया, उनके जन्म के सम्मान में, मठ के लिए आवश्यक भवनों का निर्माण किया, दूर-दूर से एक बड़ी मठवासी समुदाय को इकट्ठा किया, और मठ को सामुदायिक मठों के सख्त नियम के अनुसार व्यवस्थित किया।

मठ के संस्थापक ने स्वयं एक कठोर तपस्वी जीवन का उदाहरण प्रस्तुत किया और वे आंतरिक गुणों के साथ-साथ बाहरी वैभव और शारीरिक सुंदरता से भी चमकते थे, साथ ही अपनी बुद्धि और विवेक से भी खुद को विशिष्ट बनाया। इन सभी गुणों ने सभी के मन में उनके प्रति सम्मान और श्रद्धा पैदा की, और उनकी ख्याति और भी बढ़ गई, इतनी कि उनके चाचा, परम पूजनीय सेरजियस, को डर था कि उनका भतीजा इस सम्मान और महिमा से मोहित हो सकता है, और उन्होंने अधिक प्रार्थना की कि प्रभु ईश्वर थियोडोर को जीवन के उतार-चढ़ाव से मुक्त जीवन जीने में मदद करें।

जब नव-स्थापित मठ में कई आगंतुक आने लगे, तो थियोडोर, जो हलचल भरी ज़िंदगी से बचना चाहता था, ने अपने लिए एक अधिक एकांत और सुनसान जगह खोजने का फैसला किया। उसे मठ के पास ही ऐसा एक स्थान मिल गया, जो मॉस्को क्रेमलिन से पाँच वर्स्ट दूर, मॉस्क्वा नदी के पास एक घने जंगल में, धनुष की दूरी पर था। वहाँ उसने अपने लिए एक एकांत कोठरी बनवाई और नए परिश्रमों के साथ नए उत्साह से तपस्या में स्वयं को समर्पित कर दिया।

लेकिन यहाँ भी, शिष्य उसके चारों ओर इकट्ठा होने लगे, जो उसके साथ तपस्या का अभ्यास करना चाहते थे। यहीं पर पूजनीय सर्जियस उनसे मिलने आए और उन्होंने इस नई जगह को तपस्या और एक मठ के निर्माण के लिए उपयुक्त माना। मेट्रोपॉलिटन अलेक्सियस ने नए साइमनोव में एक चर्च की स्थापना के लिए अपनी स्वीकृति दे दी, जबकि परम पवित्र माता ईश्वर की जन्म चर्च का नाम 'पुराने साइमनोव' ही रहा।

सर्वपवित्र माता परमेश्वर की निद्रा को समर्पित भव्य और विशाल पत्थर के चर्च की नींव का पत्थर 1379 में परम पूज्य थियोडोर द्वारा रखा गया था, लेकिन संस्थापक की मृत्यु के 26 साल बाद, 1405 में ही इसका निर्माण पूरा हुआ; नव-निर्मित चर्च का अभिषेक मेट्रोपॉलिटन साइप्रियन द्वारा किया गया।

चर्च के साथ ही, अन्य नई, विशाल मठवासी इमारतें भी बनाई गईं, जिनमें भोजनशाला और भिक्षुओं के कक्ष शामिल थे। नव-स्थापित मठ के कई परोपकारी थे: राजकुमार और बोयार, साथ ही स्वयं ग्रैंड प्रिंस दिमित्री इवानोविच[8275], और बाद में उनके बेटे और उत्तराधिकारी, ग्रैंड प्रिंस वासिली दिमित्रीयेविच[8276], जिन्होंने खजाने से और विभिन्न दानों के माध्यम से उदारतापूर्वक मठ के निर्माण में योगदान दिया।

इस प्रकार नया साइमनोव मठ स्थापित हुआ, जबकि पुराना साइमनोव भिक्षुओं के लिए एक कब्रिस्तान बना रहा।

जब मेट्रोपॉलिटन अलेक्सियस पद पर थे, तब थियोडोर को साइमनोव मठ का मठाधीश नियुक्त किया गया; परम पूजनीय सर्गियस इसका विरोध करते थे: वे चाहते थे कि थियोडोर उस एकांत जीवन को जिए जिसकी वह आकांक्षा करते थे; लेकिन उन्हें ग्रैंड प्रिंस दिमित्री इओआनोविच और मेट्रोपॉलिटन अलेक्सियस के आग्रह के आगे झुकना पड़ा।

महान राजकुमार दिमित्री इवानोविच ने मठाधीश थियोडोर को अपना आध्यात्मिक पिता चुना; कई बोयार और कुलीनों ने भी थियोडोर के आध्यात्मिक पुत्र बनने की इच्छा व्यक्त की।

महान राजकुमार और कई बोयारों के आध्यात्मिक सलाहकार, और प्रसिद्ध तपस्वी सर्गियस के भतीजे के रूप में—जो धार्मिक अधिकारियों के लिए एक सुपरिचित हस्ती थे—साइमनोव मठ के मठाधीश थियोडोर का चर्च के मामलों में सक्रिय भाग लेना स्वाभाविक था।

मेट्रोपॉलिटन अलेक्सियस की मृत्यु के बाद रूसी मेट्रोपोलिस में भ्रम का माहौल छा गया। कीव में साइप्रियन थे, जिन्हें सेंट अलेक्सियस के जीवित रहते ही कीव का मेट्रोपॉलिटन नियुक्त किया गया था और जो मॉस्को चर्च पर भी अपना अधिकार बढ़ाना चाहते थे; जबकि 1380 में कॉन्स्टेंटिनोपल में, मॉस्को के ग्रैंड प्रिंस की जानकारी या सहमति के बिना, पिमेन को कीव और पूरे रूस का मेट्रोपॉलिटन नियुक्त किया गया। महान राजकुमार चाहते थे कि साइप्रियन उनके मेट्रोपॉलिटन बनें और उन्होंने अपने धर्मगुरु, साइमनोव मठ के मठाधीश थियोडोर को, उन्हें मॉस्को बुलाने के लिए भेजा; जिन्होंने यह कार्य सफलतापूर्वक पूरा किया। इसके बाद, थियोडोर ने कई मौकों पर इसी तरह के मिशन पूरे किए। इस प्रकार, 1384 में, महा राजकुमार के कहने पर, उन्होंने रूसी मेट्रोपोलिस से संबंधित मामलों के लिए सुज़दाल के आर्चबिशप डायोनिसियस के साथ मिलकर कॉन्स्टेंटिनोपल की यात्रा की, क्योंकि उथल-पुथल अभी भी जारी थी: मॉस्को में, मेट्रोपॉलिटन का पद बारी-बारी से साइप्रियन और पिमेन के पास था।

कॉन्स्टेंटिनोपल की इस यात्रा के दौरान, मठाध्यक्ष थियोडोर को पैट्रिआर्क नीलस[8277] द्वारा आर्चिमांड्राइट का पद दिया गया, और सिमोनोव मठ को एक पैट्रिआर्कल स्टाउरोपेजियल मठ बना दिया गया। 1387 में, आर्चिमांड्राइट थियोडोर मेट्रोपोलिस से संबंधित मामलों के सिलसिले में एक बार फिर कॉन्स्टेंटिनोपल की यात्रा पर गए, उस समय जब दोनों मेट्रोपॉलिटन, पिमेन और साइप्रियन भी वहाँ यात्रा कर रहे थे। इस यात्रा से, थियोडोर मेट्रोपॉलिटन पिमेन के साथ, रोस्तोव के आर्चबिशप के पद के साथ लौटे।

और सेंट जेम्स[8278] को हटाए जाने के बाद से खाली पड़े रोस्तोव के आर्चबिशप पद पर अपनी नियुक्ति के बाद, थियोडोर ने धार्मिक मामलों में सक्रिय भाग लेना जारी रखा। इस प्रकार, 1389 में, अन्य बिशपों के साथ, वह कॉन्स्टेंटिनोपल की अपनी तीसरी और अंतिम यात्रा पर पिमेन के साथ मॉस्को से रियाज़ान तक गए।

19 मई 1389 को, ग्रैंड प्रिंस दिमित्री इओआनोविच का निधन हो गया। उनके पुत्र और उत्तराधिकारी, ग्रैंड प्रिंस वासिली दिमित्रीविच ने आर्चबिशप थियोडोर को वही सम्मान और ध्यान दिया जो उनके पिता ने दिया था, और धार्मिक मामलों में उनकी सेवाओं पर भरोसा किया।

नए पैट्रिआर्क एंथनी[8279] द्वारा पिमेन को निश्चित रूप से पदच्युत कर दिया गया और कुछ ही समय बाद उनकी मृत्यु हो गई[8280]। ग्रैंड प्रिंस वासिली दिमित्रीविच ने कॉन्स्टेंटिनोपल में मौजूद मेट्रोपॉलिटन साइप्रियन को मॉस्को

[8275] दिमित्री इओआनोविच डॉन्स्कोय ने 1363 से 1389 तक शासन किया।

[8276] वासिली दिमित्रीविच ने 1389 से 1425 तक शासन किया।

[8277] नीलस ने 1378 से 1388 तक पैट्रिआर्क के रूप में कार्य किया।

[8278] संत जेम्स का पर्व 27 नवंबर को मनाया जाता है।

[8279] एंथनी ने 1388 से 1395 तक पैट्रिआर्क के रूप में कार्य किया।

[8280] मेट्रोपॉलिटन पिमेन का 11 सितंबर 1389 को एशिया माइनर के कालसेडोन शहर में, जो लगभग सीधे कॉन्स्टेंटिनोपल के विपरीत स्थित है, निधन हो गया और वहीं दफनाया गया।

आमंत्रति करने का फैसला कयिा, और इस उद्देश्य के लिए उन्होंने नमिंत्रण देने के लिए रोस्तोव के अनुभवी आर्चबशिप थयिोडोर को भेजा, जो पहले भी कई मौकों पर वहां जा चुके थे।

1 अक्टूबर 1389 को, मेट्रोपॉलटिन साइप्रयिन, अपने को लेने आए थयिोडोर के साथ, कॉन्स्टेंटनिोपल से कीव होते हुए रवाना हुए, जहाँ वे फरवरी 1390 तक रुके; और उस वर्ष महा-प्रायश्चति के दौरान क्रॉस के बुधवार को, वे मॉस्को के लिए प्रस्थान कर गए।

इस प्रकार रूसी मेट्रोपोलसि का उथल-पुथल समाप्त हुआ, और इसके साथ ही आर्चबशिप थयिोडोर की भटकन भी खत्म हुई। इस समय के दौरान उन्हें कई कठनिाइयों, जमीन और समुद्र में खतरों, दुख और परेशानयिों को सहना पड़ा, लेकनि अपनी जवानी से ही उन्होंने खुद को कड़ी मेहनत और वीरता के कारनामों का आदी बना लयिा था और उन्होंने आराम के बारे में नहीं सोचा। प्रभु परमेश्वर ने उनकी आत्मा और शरीर दोनों को बलवान बनाया।

साइमोनोव मठ के मठाध्यक्ष और आर्चमिंड्राइट के रूप में, थयिोडोर, यद्यपि समग्र चर्च से संबंधति मामलों में व्यस्त थे, फरि भी उन्होंने नरिंतर और अथक रूप से मठवासी जीवन का मार्गदर्शन कयिा और अपने शष्यिों में कई महान और प्रतष्ठिति तपस्वयिों का पोषण कयिा। एक कुलीन वंश का युवक, जसिका नाम कोस्मा था और जसि बोयार वेल्यामनिोव के घर में मॉस्को में पाला गया था, उसे धन्य स्टीफन ऑफ मख्रशि्च[8281] द्वारा उनके पास लाया गया था और साइमनॉव मठ में सरिलि नाम से संन्यास दीक्षा दी गई थी। वे करिलिो-बेलोज़ेर्स्की मठ के प्रसद्धि संस्थापक बने। उन्होंने सबसे पहले साइमनोव मठ में मठवासी आज्ञाकारति के अपने शुरुआती कार्यों, जैसे बेकरी, रसोई और अन्य कर्तव्यों में काम करके, सभी का ध्यान अपनी ओर आकर्षति कयिा। यहीं पर, मठ में अक्सर आने वाले परम पूज्य सर्जयिस ने उन पर ध्यान दयिा और उनके साथ बातचीत करना पसंद कयिा। जब आर्चमिंड्राइट थयिोडोर को रोस्तोव के आर्चबशिप के पद पर पदोन्नत कयिा गया, तो साइमनोव मठ के भाइयों ने सरिील को मठाध्यक्ष चुना। हालाँकि, एकांत तपस्या के जीवन की लालसा में, करिलि को यह पद बोझलि लगा; उन्होंने मठाध्यक्ष पद त्याग दयिा और अपनी कोठरी में चले गए। फरि भी, उनके तपस्वी कार्यों की ख्याति ने वहाँ भी प्रशंसकों और आगंतुकों को आकर्षति कयिा, और उन्होंने उत्तर की ओर जाने का फैसला कयिा, जहाँ उन्होंने अपना खुद का मठ स्थापति कयिा, जो बाद में प्रसद्धि हो गया।

यहीं, साइमनोव मठ में, आर्चमिंड्राइट थयिोडोर के अधीन, वोल्कोलामस्क के एक युवा कुलीन व्यक्ति, थयिोडोर पोस्कोचनि—जन्हिोंने मठवासी नाम फेरापोंट अपनाया—को संन्यास ग्रहण कराया गया था। सरिलि की तरह, वह भी अपने तपस्या-भाव के लिए प्रसद्धि हुए और राडोनेज़ के सेरगयिस के परचिति थे। अपने मत्रि सरिील के साथ, वे बेलोजेरो क्षेत्र में चले गए और वहाँ एक मठ की स्थापना की, जो फेरपोंटोव मठ के नाम से प्रसद्धि हुआ। बेलोजेरो के मालकि प्रसि आंद्रेई दमित्रिीवचि मोजायस्की द्वारा बुलाए जाने पर, फेरपोंट ने मोजायस्क में एक नया मठ, लुज़हेत्स्की मठ, स्थापति कयिा, जहाँ उन्होंने अपने मठ के आर्चमिंड्राइट के रूप में अपना नधिन कयिा[8282] ।

अन्य कई लोगों ने भी आर्चमिंड्राइट थयिोडोर के मार्गदर्शन में समिोनोव मठ में मठवासी जीवन को अपनाया। समिोनोव मठ में स्थापति कठोर सामुदायकि जीवन अन्य सामुदायकि मठों के लिए एक आदर्श के रूप में काम कयिा, जनिके संस्थापकों ने पहले इस मठ में रहना या इसकी यात्रा की थी।

रूसी मेट्रोपोलसि के मामलों से संबंधति अपने कर्तव्यों को पूरा करने के बाद, आर्चबशिप थयिोडोर रोस्तोव पहुँचे और, ईश्वर की माता की प्रतमिा और संत लयिोन्टयिस के अवशेषों को नमन करने के बाद, उन्होंने अपना पूरा जीवन अपनी नई पादरी सेवा को समर्पति कर दयिा। वह रोस्तोव के राजपरविार के साथ शांति और प्रेम से रहता था और उन्हें धार्मकिता के मार्ग पर मार्गदर्शन करता था। उस समय के रोस्तोव के राजकुमार, अलेक्जेंडर कॉन्स्टेंटनिोवचि इओन, आँखों की बीमारी से पीड़ति हो गए और अपनी दृष्टि खो बैठे। उसके पति ने संत थयिोडोर से प्रार्थना करने के लिए कहा कि वह उस बीमार लड़के के लिए प्रार्थना करें। थयिोडोर ने राजकुमारों को रोस्तोव के कैथेड्रल में संत लयिोन्टयिस के अवशेषों के पास भेजा, और एक प्रार्थना सभा के बाद, बीमार राजकुमार ठीक हो गया और उसकी दृष्टि वापस आ गई। बाद में, सेंट थयिोडोर की मृत्यु के बाद, राजकुमार जॉन—जन्हिें इस चरवाहे ने पढ़ाया था—जब उन्हें एक बार फरि से आँखों

[8281] उनका पर्व दविस 14 जुलाई को मनाया जाता है।

[8282] आदरणीय फेरापोंट का 27 मई 1420 को बहुत वृद्धावस्था में नधिन हो गया; उनका जीवन इसी तथि के अंतर्गत दर्ज है।

की बीमारी हुई, तो उन्होंने एक बार फरि से चमत्कारी लयिोन्टयिस से भक्तपिूर्वक प्रार्थना की और उन्हें एक बार फरि से स्वास्थ्य लाभ मलिा[8283] ।

आर्चबशिप थयिोडोर ने रोस्तोव में लड़कयिों के लिए नेटीवटिी कॉन्वेंट की स्थापना करके भी एक स्थायी वरिासत छोड़ी, जो आज भी मौजूद है।

संत थयिोडोर के बारे में यह भी ज्ञात है कि, जब वह समिोनोव मठ के मठाधीश थे, तो उन्होंने आइकन चत्रिकला का अभ्यास कयिा और मास्को के वभिन्नि चर्चों को अपनी आइकन चत्रिों से सुशोभति कयिा[8284] ।

रोस्तोव के सभी संतों में से, थयिोडोर पहले आर्चबशिप के रूप में अभषिक्ति हुए, यह पद जो तब तक रूस में केवल प्राचीन नोवगोरोड द ग्रेट के बशिप के पास था। संत थयिोडोर ने रोस्तोव धर्मप्रांत का नेतृत्व लंबे समय तक नहीं कयिा। उनका 28 नवंबर 1395 को शांतपिूर्वक नधिन हो गया। उनके अवशेष रोस्तोव कैथेड्रल ऑफ द डॉर्मशिन के फर्श के नीचे, दक्षणि-पश्चमिी कोने में स्थति हैं। उनके ऊपर एक सुनहरे छत्र के नीचे, भव्य रूप से सजाया गया एक मकबरा है[8285] ।

पवत्रि शहीद इरनिार्च की स्मृति

28 नवंबर को स्मरण कयिा जाता है

संत इरनिारह सेबास्टे शहर के मूल नविासी थे[8286] । कम उम्र में, उन्होंने पवत्रि शहीदों की शहादत के दौरान जल्लाद के रूप में काम कयिा। डायोक्लेटयिन के अधीन, गवर्नर मैक्समियिन द्वारा सात पवत्रि महलिाओं पर अत्याचार के दौरान, इरनिारह पर ईश्वर की कृपा से ज्ञान का प्रकाश हुआ: महलिाओं को मसीह के लिए यातनाएं देते देख और यातनाकर्ता को शर्मदिा कर, उन्होंने साहसपूर्वक मसीह की गवाही दी और खुद को एक ईसाई घोषति कर दयिा। तब, राज्यपाल के आदेश पर, उसे एक दलदल में फेंक दयिा गया, जसिसे वह बनिा कसिी चोट के बाहर नकिल आया, और बाद में एक आग की भट्टी में डाल दयिा गया, लेकनि इससे भी उसे कोई हानि नहीं हुई। इसके बाद, वर्ष 303 में उसकी तलवार से सरि कलम कर दी गई।

पवत्रि शहीदों की स्मृति, साथ ही नए संत स्टीफन की, उन लोगों के पवत्रि आइकनों के लिए जन्हिोंने कष्ट सहे

28 नवंबर को स्मरण कयिा जाता है

कॉन्स्टेंटाइन कोप्रोन्यमस[8287] के शासनकाल के दौरान, कई ऑर्थोडॉक्स सैनकिों ने अपने सैन्य पदों का त्याग कर दयिा और संन्यास की शपथ ली। उस अत्याचारी सम्राट ने उन्हें यातना देने के बाद उनमें से कई को मौत की सजा देने का आदेश दयिा। उनमें से एक, जसिका नाम बेसलि था, को पहले अंधा कर दयिा गया। जब संत बेसलि को अंधा कए जाने

[8283] यह रोस्तोव के चमत्कार-कर्ता संत लयिोन्टयिस के जीवन में वर्णति है।

[8284] संत थयिोडोर के एक आइकनोग्राफर के रूप में कार्य का उल्लेख 'पवत्रि आइकनोग्राफर्स की कथा' (बसलाव, हस्टिोरकिल एसेज़ II, 379) में मलिता है।

[8285] पंद्रहवीं शताब्दी से आगे के संतों के जीवन-चरतिों में थयिोडोर संतों में शामलि दखिाई देते हैं। उनके सम्मान में लखिा गया एक ट्रोपारयिन और एक कोन्डाक पांडुलपियिों में पाए जाते हैं।

[8286] यह, बेशक, आर्मेनयिा में सेबास्टे को संदर्भति करता है, जसिे कैपाडोसयिा की सेबास्टे से अलग, आर्मेनयिा की सेबास्टे के रूप में जाना जाता है।

[8287] कांस्टेंटनि कोप्रोन्यमस ने 741 से 776 तक शासन कयिा। वह सबसे नर्दियी प्रतमिा-वरिोधी सम्राटों में से एक था। चूंकि पवत्रि प्रतमिाओं के उत्पीड़न के दौरान, भक्षिु उनके मुख्य रक्षक थे, इसलिए कांस्टेंटनि कोप्रोन्यमस ने मठों को जलाने और ऑर्थोडॉक्स भक्षिुओं के सरि उन्हीं प्रतमिाओं से कुचलने का आदेश दयिा, जनिकी रक्षा के लिए वे आगे आए थे, या फरि उन्हें अन्य क्रूर तरीकों से मार डाला। ईश्वर-वहिीन सम्राट की इच्छा का पालन करने वाले सैनकि, ऑर्थोडॉक्स की दृढ़ता और अपमानति मूरतयिों द्वारा कए गए कई चमत्कारों को देखकर, अक्सर उत्पीड़क से ऑर्थोडॉक्स वशि्वासी बन जाते थे और पवत्रि मूरतयिों के उत्साही पूजक बन जाते थे। इसके लिए, अत्याचारी का क्रोध उन पर टूट पड़ा, और उन्हें क्रूर सज़ाओं, यातनाओं और स्वयं मृत्यु को सहना पड़ा।

के बाद भी पवत्रि प्रतमिाओं की पूजा करते रहे, तो उनके यातनाकर्ता ने बेसलि के पेट में तलवार घुसा दी, जसिसे उनकी आंतें बाहर आ गईं। इसी समय, कॉन्स्टेंटनिोपल में संत स्टीफन ने भी पवत्रि प्रतमिाओं के लिए शहीद का मुकुट प्राप्त कयिा। इनके अलावा, ग्रेगरी नाम के दो पुरुषों को, कई अन्य लोगों के साथ, नर्विासति कर दयिा गया, जहाँ वे बाद में मर गए। अंत में, संत जॉन को डाफ्ने[8288] भेजा गया, जहाँ, राजा के आदेश पर, उन्हें अक्सर पीटा जाता था, जसिसे वे अंततःमर गए।

12 दसिंबर

29 नवंबर (पुराने कैलेंडर के अनुसार)

हमारे पूजनीय पति सनिाई के अकाकयिोस की स्मृति

29 नवंबर को स्मरणोत्सव

धन्य योहन क्लाइमैकस[8289] अपनी पुस्तक में आदरणीय अक्काकयिॉस के बारे में इस प्रकार लखिते हैं: महान योहन द सवाइट ने मुझे एक सच्ची कहानी और एक योग्य वृत्तांत सुनाया।

एक वृद्ध थे जो बहुत आलसी और दुष्ट स्वभाव के थे; मैं यह उनकी नदिा करने के लिए नहीं कह रहा हूँ, बल्कि संत के धैर्य को दर्शाने के लिए कह रहा हूँ, और मैं आपको यही बताऊँगा। उस वरष्ठि का अकाकयिोस नाम का एक युवा शष्यि था, जो स्वभाव से सरल और मन से पवत्रि था, जसिने उस वरष्ठि के हाथों इतना बुरा बर्ताव सहन कयिा कि कई लोगों को यह अवश्विसनीय भी लगेगा; क्योंकि वह वरष्ठि न केवल उसे डांट-फटकार और अपमान से पीड़ति करता था, बल्कि हर दनि उसे शारीरकि यातनाएँ भी देता था। हालाँकि, उसका धैर्य व्यर्थ नहीं गया: क्योंकि अपनी नश्रिब्द सहनशीलता और द्वेषरहति पीड़ा के माध्यम से, अकाकयिोस ने स्वयं के लिए परमेश्वर की कृपा प्राप्त की, जसिने उसे अनंत यातना से मुक्त कर दयिा। जहाँ तक मेरी बात है (सेववाइट जॉन, क्लाइमैकस जॉन से कहते हैं), उसे हर दनि एक खरीदे हुए दास या एक कैदी की तरह देखते हुए, और परम दुख सहते हुए, मैं जानबूझकर उससे मलिने जाता और पूछता:

'कैसे हो, भाई अक्काकयिो? यह दनि कैसे बति रहे हो?'

और वह जवाब देता:

'जैसा प्रभु ईश्वर के सामने—वैसा ही मैं भी हूँ।' और वह कभी-कभी मुझे अपनी काली आँखें, कभी अपनी गर्दन, और कभी घावों से ढका हुआ सरि दखिाता था। यह जानते हुए कि वह सदाचार का आचरण कर रहा था, मैं उससे कहता:

'बहुत अच्छा, बहुत अच्छा; सहन करो, भाई, ताकि तुम मोक्ष प्राप्त कर सको।'

इस अवस्था में, धन्य अकाकयिोस उस कठोर एल्डर के साथ नौ वर्ष तक रहे और, अपनी मृत्यु से पहले एक संक्षप्ति बीमारी के बाद, प्रभु के पास प्रस्थान कर गए[8290] । जब उन्हें पारविारकि समाधि में दफनाया गया, तो पाँच दनि बाद वह एल्डर वहाँ रहने वाले एक महान फादर के पास गया और उनसे कहा:

'पतिाजी, भाई अक्काकयिोस, मेरा शष्यि, मर गया है।'

यह सुनकर, वृद्ध ने कहा:

'मैं तुम्हारी बात पर वश्विास नहीं करता, हे वृद्ध, क्योंकि अक्काकयिोस नहीं मरा है।'

वृद्ध ने कहा:

'पतिाजी, अगर आप मेरी बात पर वश्विास नहीं करते, तो खुद जाइए और उसकी कफ़न में झाँककर देख लीजिए।'

तब पादरी पति जल्दी से उठे, बुजुर्ग के साथ धन्य शहीद की कब्र पर गए, और अककयि की कब्र के ऊपर ज़ोर से चल्लिाए, उसे ऐसे संबोधति करते हुए जैसे वह जीवति हो:

[8288] डैफ्ने – कॉन्स्टेंटनिोपल का एक उपनगर।

[8289] जॉन क्लाइमक्स – अज्ञात मूल के, उन्होंने 20 वर्ष की आयु में संन्यास की शपथ ली और अपने जीवन के अंतमि चार वर्ष सनिाई मठ के मठाध्यक्ष के रूप में बतिाए; वे छठी शताब्दी के अंत में 80 वर्ष की आयु में एक वरष्ठि के रूप में नधिन हो गए; उनका पर्व दविस 30 मार्च है।

[8290] वह छठी शताब्दी के पहले भाग में नधिन हो गया।

'भाई अकाकयि, क्या तुम मर गए?'

समझदार नवसखिुआ ने, मृत्यु में भी आज्ञाकारिता दखिाते हुए, उत्तर दयिा:

'मैं मरा नहीं हूँ, पतिाजी, क्योंकि आज्ञाकारिता का पालन करने का व्रत लेने वाले की मृत्यु हो ही नहीं सकती।'

जब वह वरष्ठि, जसिके साथ अकाकयि रहते थे, ने यह सुना, तो वह भय से भर गया और रोते हुए जमीन पर गरि पड़ा; फरि उसने मठाधीश से उसके ताबूत के पास एक कोठरी माँगी और वहाँ खुद को बंद करके, अपने शेष जीवन को धार्मकि रूप से जयिा, अपनी आत्मा के उद्धार का ध्यान रखते हुए, और, कई भक्तपिूर्ण कार्यों के बाद, प्रभु परमेश्वर के पास चला गया, जसिकी महमिा युगानुयुग होती रहे। आमेन।

पवत्रि शहीद पारामोन की स्मृति

29 नवंबर को स्मरणोत्सव

दुष्ट राजा डेसयिस[8291] के शासनकाल में, पूर्व में अक्वलिनिस नाम का एक राजकुमार था, जसिने ईसाइयों पर क्रूर अत्याचार कयि। एक अवसर पर, उसने तीन सौ सत्तर ईसाइयों को कैद कर लयिा और वल्साइटयिा[8292] के गर्म पानी के झरनों के लिए प्रस्थान करते समय, आदेश दयिा कि शहीदों को भी उसके साथ ले जाया जाए; पॉसीडॉन के मूर्तपिूजक मंदरि[8293] के पास से गुजरने का इरादा रखते हुए, वह उन्हें मूर्तपिूजक बलदिान करने के लिए मजबूर करना चाहता था। मंदरि पहुँचने पर, उसने संतों को झूठे देवता पॉसीडॉन की मूर्ति को बलदिान चढ़ाने के लिए मजबूर करने में बहुत समय लगाया, लेकनि वह न तो दयालुता से और न ही धमकयिों से उन्हें मना सका। उसी क्षण, पारामोन नामक एक धार्मकि व्यक्ति, जो वशि्वास से ईसाई था, वहाँ से गुजर रहा था। इतने सारे पवत्रि शहीदों को मृत्युदंडति होते देख, वह मूर्ति के मंदरि के सामने खड़ा हुआ और ऊँचे स्वर में चलि्लाया:

'ओह, उस दुष्ट राजकुमार ने कतिने धर्मनष्ठि पुरुषों को अन्यायपूर्वक मार डाला है, केवल इसलिए कि वे नरि्जीव और बहरी मूर्तयिों के सामने सरि झुकाने से इनकार करते हैं!'

यह सब कहकर वह अपने रास्ते चल पड़ा। हालाँकि, राजकुमार ने पारामोन के शब्द सुनकर क्रोध से भर गया और अपने नौकरों को तुरंत उसका पीछा करने और उसे मार डालने का आदेश दयिा। अत्यंत दुष्ट राजकुमार के दुष्ट नौकरों ने धन्य पारामोन को पकड़ लयिा, जो इस आदेश से अनजान था और अपने रास्ते जा रहा था, और उसे पकड़ लयिा। सबसे पहले उन्होंने उसकी जीभ काट दी—जन्हिोंने उसके यातनाकर्ता की नदिा और फटकार की थी—और उसे टुकड़े-टुकड़े कर दयिा; फरि उन्होंने उसके शरीर के हर हस्सि को चीर-फाड़ दयिा और अंत में, उसके शरीर को भाले से भेद दयिा। इस प्रकार पवत्रि शहीद पारामन ने अपनी दैवी आत्मा को ईश्वर के हाथों में सौंप दयिा।

उसी क्षण, उपर्युक्त तीन सौ सत्तर पवत्रि शहीदों को मसीह में उनके वशि्वास के लिए पोसाइडन के मंदरि के सामने तलवार से वध कर दयिा गया।

पवत्रि शहीद फलिुमेनस की स्मृति।

29 नवंबर को स्मरण कयिा जाता है

पवत्रि शहीद फलिुमेनस सम्राट ऑरेलयिन[8294] के शासनकाल में, लकिाओनयिा[8295] में रहते थे, जबकि वे गलाटयिा के एन्क्रा[8296] शहर में गेहूं का व्यापार कर रहे थे। संत फलिुमेन पर प्रांतीय राज्यपाल फेलक्सि के समक्ष झूठे आरोप

[8291] डेसयिस – 249 से 251 तक रोमन सम्राट।

[8292] टबिर नदी के मुहाने पर स्थति वाल्साटवि के जल, बथिनियिाई क्षेत्र में स्थति हैं।

[8293] पोसीडॉन, जसि रोमनों ने नेप्च्यून के नाम से जाना, समुद्रों और जल स्रोतों का मूर्तपिूजक देवता था।

[8294] ऑरेलयिन डोमटियिस ने 270 से 275 तक शासन कयिा।

[8295] लकिोनयिा एशयिा माइनर का एक प्राचीन क्षेत्र था। 25 ईसा पूर्व से यह रोमन प्रांत गलाटयिा का हस्सि बन गया। इसकी राजधानी मूल रूप से फ्रीजयिन शहर इकोनयिम (अब कोन्या) थी।

[8296] अंकीरा गालाटयिा प्रांत के शहरों में से एक है।

लगाए गए, जनिके सामने उन्होंने स्वयं को एक ईसाई स्वीकार कयि, जसिके लिए उन्हें फांसी दी गई, कोड़ों से पीटा गया और फरि आग में फेंक दयि गया, जसिमें से, ईश्वर की कृपा से, वे बनि कसिी चोट के बाहर नकिले। इसके बाद, उसके सरि, हाथों और पैरों में कीलें ठोंकी गईं, और उसे 30 स्टेडयिम तक घसीटा गया[8297] , जसिके बाद संत, अपनी सारी शक्ति खोकर, अपनी आत्मा ईश्वर को सौंप बैठे[8298] ।

13 दसिंबर

30 नवंबर (पुराना तरीका)

दसिंबर

पहले बुलाए गए प्रेरति संत एंड्रयू के चमत्कार और कष्ट

30 नवंबर को स्मरणोत्सव

मसीह के प्रथम-आहूत प्रेरति संत एंड्रयू, जोना नामक एक यहूदी के पुत्र और पवत्रि प्रधान प्रेरति पतरस के भाई, बेत्सैदा नगर के मूल नविासी थे[8299] । इस संसार के व्यर्थ के मोह को त्यागकर और ववािह की अपेक्षा ब्रह्मचर्य को प्राथमकिता देते हुए, वह ववािह नहीं करना चाहता था; लेकनि, यह सुनकर कसिंत यूहन्ना बपतस्मिा दाता यॉर्डन नदी के कनिारे पश्चाताप का उपदेश दे रहे थे[8300] , उसने सब कुछ छोड़ दयि, उनके पास गया और उनका शष्यि बन गया। जब बपतस्मिा देने वाले संत योहन ने यीशु मसीह की ओर इशारा करते हुए कहा: 'देखो, परमेश्वर का मेमना'[8301] , तब संत एंड्रयू ने बपतस्मिा देने वाले के एक अन्य शष्यि—जसिे सुसमाचारकार योहन माना जाता है—के साथ मलिकर बपतस्मिा देने वाले को छोड़ दयि और मसीह का अनुसरण कयि। उन्होंने अपने भाई समिोन (पतरस) को खोज नकिाला और उससे कहा: 'हमने मसीहा, जसिे मसीह कहा जाता है, को पा लयि है,' और उसे यीशु के पास ले आए (यूहन्ना 1:41-42)। इसके बाद, जब वह गलील की झील के कनिारे पतरस के साथ मछली पकड़ रहा था[8302] , तो यीशु ने उन पर चल्लिाकर कहा, *'मेरे पीछे चलो, और मैं तुम्हें मनुष्यों का मछली पकड़नेवाला बनाऊँगा'* (मत्ती 4:19), एंड्रयू ने प्रभु के बुलावे पर तुरंत अपनी जालें छोड़ दीं और अपने भाई पतरस के साथ मसीह का अनुसरण कयि (मत्ती 4:20)। एंड्रयू को 'पहले बुलाए गए' कहा जाता था क्योंकि वह अन्य सभी प्रेरतिों से पहले यीशु मसीह का अनुयायी और शष्यि बन गए थे। तब, प्रभु की स्वेच्छा से हुई पीड़ाओं और उनके पुनरुत्थान के बाद, संत एंड्रयू ने अन्य प्रेरतिों की तरह प्राप्त कयि पवत्रि आत्मा प्राप्त हुआ, जो उन पर आग की जीभों के रूप में अवतरति हुआ (प्रेरतिों के काम 2:3), और जब क्षेत्रों का वभिाजन कयि जा रहा था, तो

[8297] 'पोपरिश्चे' रेसकोर्स पर दूरी मापने की एक इकाई है, जहाँ दौड़ प्रतयिोगताएँ आयोजति की जाती थीं। एक 'पोपरिश्चे' 690 साज़ेन्ज़ के बराबर होता था। परणिामस्वरूप, 30 'पोपरिश्चे' 40 वर्स्ट से अधकि होते हैं।

[8298] संत फलिुमेनस की शहादत लगभग 274 ईस्वी में हुई थी।

[8299] बेत्सैदा – टबिेरयिास की झील के उत्तर-पश्चमिी तट पर एक नगर, जो पवत्रि प्रेरतिों पतरस, अन्द्रयिास और फलिपि की जन्मभूमि है, जसिके तट पर पाँच हजार लोगों को रोटी के पावों से भोजन कराने का चमत्कार हुआ था (लूका 9:10)।

[8300] यॉर्डन – पवत्रि भूमि की मुख्य नदी, जो उत्तर से दक्षणि की ओर बहती है; इसका उद्गम लेबनान और एंटी-लेबनान पर्वत की तलहटी में होता है और यह मृत सागर में मलि जाती है।

[8301] यूहन्ना 1 – यीशु मसीह को परमेश्वर के मेमने के रूप में नामति कयि जाना यह इंगति करता है कि वह मानव जाति के लिए स्वयं को बलदिान के रूप में अर्पति करने के लिए अवतार में आए।

[8302] गालील की झील, या झील गालील, को जेनेसरत की झील या टबिेरयिास की झील के नाम से भी जाना जाता था; यह फलिस्तीन के उत्तरी भाग (गालील में) में स्थति है, लगभग 30 स्टेडयिम लंबी और लगभग 8 स्टेडयिम चौड़ी है, और यॉर्डन नदी इसके माध्यम से बहती है।

उन्हें लॉटरी द्वारा बथिुनयिा[8303] और प्रोटोंटसि[8304] के क्षेत्र, साथ ही कालसेडोन[8305] और बाइजेंशयिम[8306] आवंटति कएि गए, थ्रेस[8307] और मैसडिोनयिा[8308] , जो ब्लैक सी[8309] और डैन्यूब[8310] तक फैले हुए थे, साथ ही थेस्साली[8311] , हेलेस[8312] , अकेया[8313] , अमटिस[8314] , ट्रेबज़िॉन्ड[8315] , हेराक्लयिा[8316] और अमास्ट्रसि[8317] ।

संत एंड्रयू ने इन शहरों और देशों में यात्रा की, मसीह के वशि्वास का प्रचार करते हुए, और प्रत्येक शहर में उन्होंने बहुत दुख और कष्ट सहन कएि; ईशव्वर की सर्वशक्तमिान सहायता से समर्थति, उन्होंने मसीह के लएि इन सभी परीक्षाओं को आनंदपूर्वक सहन कयिा। उन्होंने सनिोपे नामक शहर में सबसे बड़े यातनाएँ सहन कीं[8318] : वहाँ उन्होंने उन्हें ज़मीन पर फेंक दयिा और, उनके हाथों और पैरों को पकड़कर, उन्हें घसीटा, लट्ठों से पीटा, पत्थरों से मारा, और उनकी उंगलयिाँ और दाँत उखाड़ दएि; लेकनि वह, अपने उद्धारकर्ता और शक्षिक की कृपा से, एक बार फरि से स्वस्थ हो गए और उनके घाव भर गए। वहाँ से प्रस्थान करके, वह वभिन्नि प्रदेशों से होकर गुज़रा: नेओकेसरयिा[8319] , सामोसाटा[8320] , एलान[8321] , अबस्क[8322] , ज़गि[8323] , और बोस्पोरेन[8324] ।

[8303] बथिनियिा एक क्षेत्र था जो ब्लैक सी, बोस्फोरस और कॉन्स्टेंटनिोपल की जलडमरूमध्य के तटों पर स्थति था। 75 ईसा पूर्व से, यह रोमन साम्राज्य का हस्सिा बन गया और दो प्रांतों में वभिाजति हो गया, जनिके मुख्य शहर ब्रूसा (प्राचीन प्रूसयिा) और नकिोमेडयिा थे।

[8304] अर्थात् - मरमरा सागर के तटों के साथ स्थति भूमि।

[8305] चल्कीस – बोस्फोरस के एशयिाई तट पर, मरमरा सागर के करीब एक शहर।

[8306] बाइज़ेंटाइम – बोस्फोरस के प्रवेश द्वार के पास, यूरोपीय तट पर। 330 में, सम्राट सेंट कॉन्स्टेंटनि द ग्रेट ने इस शहर को अपने साम्राज्य की राजधानी बनाया और इसका नाम अपने नाम पर रखा (कॉन्स्टेंटनिोपल)। आज, यह तुर्की की राजधानी है।

[8307] थ्रेस नामक क्षेत्र बाल्कन प्रायद्वीप के उस हस्सिे को दयिा गया था जो मैसेडोनयिा, एजयिन सागर (द्वीपसमूह) और मार्मारा सागर के उत्तर में स्थति है, जसिमें आज नम्निलखिति क्षेत्र शामलि हैं: हंगरी का पूर्वी भाग, ट्रांसल्विेनयिा, बेसरबयिा, मोल्डोवा, वलाचयिा, बुल्गारयिा, सर्बयिा और रुमेली के पूर्वी भाग।

[8308] थ्रेस के दक्षणि-पश्चमि में, एजयिन सागर के उत्तर-पश्चमिी तट के साथ एक देश।

[8309] भूमध्य सागर का एक भाग – बाल्कन प्रायद्वीप और कॉकेसयिन इशमस, रूस के दक्षणिी कनिारे और एशयिा माइनर प्रायद्वीप के उत्तरी तट के बीच।

[8310] यूरोप की सबसे बड़ी नदयिों में से एक, यह मध्य यूरोप में नकिलती है, फरि ऑस्ट्रयिा से होकर और बाल्कन प्रायद्वीप की उत्तरी सीमा के साथ, पश्चमि से पूर्व की ओर बहते हुए, काला सागर में मलि जाती है।

[8311] थेस्साली – एजयिन सागर के पश्चमिी तट पर एक क्षेत्र, जो उत्तर में ओलंपकि पर्वत द्वारा मैसेडोनयिा से अलग है।

[8312] हेलेस बाल्कन प्रायद्वीप के दक्षणिी भाग में स्थति था, जो कोरंथि के इस्थमस (अब मोरयिा) द्वारा इससे जुड़ा था; पश्चमि में इसकी सीमा आयोनयिन सागर से और पूर्व में अकेया और आर्काडयिा से लगी थी।

[8313] अकाया – कोरंथि की खाड़ी के दक्षणिी तट पर स्थति एक क्षेत्र।

[8314] नीचे दएि गए शहरों के स्थान को ध्यान में रखते हुए, यह मानना होगा कयिह ब्लैक सी के दक्षणिी तट पर, पोंटस प्रांत में, गेलसि और आइरसि नदयिों के मुहाने के बीच स्थति अमन्सि या अमआि को संदर्भति करता है; इसे अब साम्सुन कहा जाता है।

[8315] पॉन्ट्स प्रांत का एक शहर, जो पाफ्लागोनयिा और आर्मेनयिा के बीच, काला सागर के दक्षणिी तट पर स्थति था। ट्रेबज़िॉन्ड समुद्र के कनिारे, अमीसस से काफी पूर्व में स्थति था।

[8316] वभिन्नि स्थानों पर इस नाम के कई शहर थे। यहाँ, हमें काले सागर के दक्षणिी तट पर स्थति हेराक्लयिा को समझना चाहएि, जो अमास्ट्रसि से कुछ पश्चमि में है, जसिका उल्लेख आगे कयिा गया है।

[8317] पाफ्लागोनयिा का एक शहर, जो ब्लैक सी के दक्षणिी तट पर, पोंटस और बथिनियिा के बीच स्थति था, अमास्ट्रसि – जसिे अमास्ट्रडिा के नाम से भी जाना जाता है।

[8318] एक शहर जो मूल रूप से पाफलैगोनयिा का हस्सिा था, और बाद में पोंटस का; यह काला सागर के दक्षणिी तट पर, एक संकरे भू-भाग पर स्थति था जो वहाँ समुद्र द्वारा नरि्मति छोटी उपद्वीप को मुख्यभूमि से जोड़ता था।

[8319] पोंटस में एक शहर, जहाँ सेंट ग्रेगरी द वंडरवर्कर का जन्म हुआ था और लगभग 240 ईस्वी में वे पहले बशिप बने।

[8320] सामोसाटा, जसिे सेमसिट या समिसट के नाम से भी जाना जाता है – यूफ्रेटसि नदी के ऊपरी भाग पर स्थति एक सीरयिाई शहर।

[8321] एलान – एक देश जो समान नाम के सरमाटयिन लोगों द्वारा बसा था, और जो अब उत्तरी काकेशस में, काला सागर और कैस्पयिन सागर के बीच, बाद वाले के करीब स्थति है।

[8322] अबस्की एक जनजाति थी जो एलानों के पश्चमि में, ब्लैक सी के करीब रहती थी, और जनिके नाम पर ही आज का अब्खाज़यिा क्षेत्र पड़ा है।

[8323] ज़गिी अबास्की के ठीक उत्तर में, काला सागर के तट पर रहते थे।

[8324] यह बोस्पोरोस के राज्य को संदर्भति करता है, जो अब साइमकि बोस्पोरोस (अब केर्च जलडमरूमध्य) के पास, टॉरकि प्रायद्वीप पर स्थति है।

फरि वह थ्रेसयिाई नगर बज़िान्टयिम[8325] की ओर नौका से गया, जहाँ वह मसीह का उपदेश देने वाला पहला व्यक्ति था; कई लोगों को शक्षिति करने के बाद, उसने चर्च के लिए वरष्ठि नयिुक्त कयि; और उसने स्टैक्ससि को बज़िान्टयिम का बशिप नयिुक्त कयिा, जो पवत्रि प्रेरति पौलुस द्वारा रोमयिों के नाम अपने पत्र (रोमयिों 16:9) में उल्लेखति व्यक्ति था। उन्होंने स्वयं मसीह के सुसमाचार के प्रचार में प्रेरतिीय कष्टों और परशि्रमों को स्वीकार करते हुए पोंटस[8326] , काला सागर तट, स्कथियिा[8327] और चेरसोनसिीज़[8328] से यात्रा की। ईश्वर की व्यवस्था से, वे रूसी भूमि[8329] में नदी डनिपर[8330] तक पहुँचे, और कीव[8331] की पहाड़यिों पर पहुँचकर रात के लिए वहीं ठहरे। सुबह नींद से जागकर, उन्होंने अपने साथ मौजूद शष्यिों से कहा:

'मेरा वशि्वास करो, ईश्वर की कृपा इन पहाड़यिों पर चमकेगी; यहाँ एक महानगर बसेगा, और प्रभु वहाँ कई चर्च स्थापति करेंगे और पवत्रि बपतस्मिा के माध्यम से पूरे रूस देश को प्रकाशति करेंगे।'

पहाड़यिों पर चढ़कर, संत ने उनका आशीर्वाद दयिा और एक क्रॉस स्थापति कयिा, जो उनके द्वारा बज़िान्टयिम[8332] में स्थापति प्रेरतिकि सहिासन से वहाँ रहने वाले लोगों द्वारा धर्म को स्वीकार करने का पूर्वसंकेत था। अधकि उत्तर में स्थति रूसी शहरों - जहाँ अब महान नोवगोरोड स्थति है[8333] - से होते हुए और रोम[8334] की यात्रा करने के बाद, वह एपरिस के ग्रीक क्षेत्र[8335] में लौट आए, और एक बार फरि थ्रेस आए, जहाँ उन्होंने ईसाइयों को मजबूत कयिा और उनके लिए बशिप और शक्षिकों की नयिुक्ति की। कई देशों की यात्रा करने के बाद, वह पेलोपोनेस पहुँचे[8336] और, अकेयन शहर पैट्रास में प्रवेश करने पर[8337] , उन्होंने सोसयिास नामक एक सम्मानति व्यक्ति के यहाँ ठहरने का प्रबंध कयिा; उन्होंने उसे बस्तिर से उठाया और बाद में पैट्रास शहर को पूरी तरह से मसीह के धर्म में परविर्तति कर दयिा। इसी समय, स्थानीय राज्यपाल एगेअटस एंटपिाटस की पत्नी, मैक्समिलिा नाम की महलिा, बीमारी की गंभीर बेड़यिों से मुक्त होकर और शीघ्र स्वास्थ्य लाभ प्राप्त कर, मसीह में वशि्वास करने लगी। और एंटपिाट्स का भाई, बुद्धमिान स्ट्रैटोक्लीज़, और वभिन्नि बीमारयिों से पीड़ति कई अन्य लोग, प्रेरति के हाथ रखने से चंगा हो गए। तब एगेटस एंटपिाटस क्रोध से भर गया, और, पवत्रि प्रेरति को पकड़कर, उसे क्रूस पर ठोक दयिा, जसिके बारे में Achaea प्रांत के पुरोहतिों और डकिनों ने इस प्रकार लखिा:

हम, अकैया के सभी पुरोहति और डकिन, पवत्रि प्रेरति एंड्रयू के दुख-क्लेश के बारे में, जसिे हमने अपनी आँखों से देखा है, सभी चर्चों को लखिते हैं—पूर्व और पश्चमि, दक्षणि और उत्तर में स्थति चर्चों को। आप पर और उन सभी पर जो एक ईश्वर में वशि्वास करते हैं, जो त्रमिूर्ति में पूर्ण हैं, शांति बनी रहे: सच्चे पति, जो कसिी से उत्पन्न नहीं हुए; सच्चे पुत्र, जो उत्पन्न हुए; और सच्चे पवत्रि आत्मा, जो पति से नकिलकर पुत्र पर वरिाम लेते हैं; यह वशि्वास हमने यीशु मसीह के प्रेरति, संत एंड्रयू से सीखा है, जनिके दुखों का, जनिके हम स्वयं साक्षी हैं, हम अब वर्णन करते हैं।

जब एगेटस एंटपिैटस पात्रास शहर में पहुँचे, तो उन्होंने मसीह में वशि्वास करने वालों को मूर्तयिों की बलि चढ़ाने के लिए मजबूर करना शुरू कर दयिा। संत एंड्रयू ने उनका रास्ता रोकने के लिए आगे बढ़कर कहा:

[8325] अर्थात्, वह काला सागर पार करके थ्रेसयिन बोस्फोरस तक नौकायन करके गया, जहाँ बज़िेंटीयम स्थति था।

[8326] नीरो के अधीन (पहली शताब्दी में), पोंटस को एक रोमन प्रांत बनाया गया और इसे तीन भागों में वभिाजति कयिा गया: गलाटयिा, पोलमिोनयिा और कैपैडोसयिा।

[8327] 'स्कैथयिा' शब्द का तात्पर्य आंशकि रूप से वर्तमान रूस के दक्षणि में और आंशकि रूप से कैस्पयिन सागर के आसपास के क्षेत्रों से था। स्कैथयिा की सटीक उत्तरी और पूर्वी सीमाएँ प्राचीन लोगों के लिए अज्ञात थीं।

[8328] पुरातन काल में चेरसोनेसोस नाम कई स्थानों पर लागू कयिा गया था। यहाँ, यह टॉरकि चेरसोनेसोस (आधुनकि क्रीमयिा) में रहने वाले लोगों को संदर्भति करता है।

[8329] यह एक बाद का नाम है, जो 'रस' नामक स्लाव जनजाति से लयिा गया है।

[8330] यह वर्तमान रूस के दक्षणि से होकर बहती है और काला सागर में मलि जाती है।

[8331] अर्थात्, यह द्नीपर नदी के ऊपरी प्रवाह के साथ एक नश्चिति पहाड़ी क्षेत्र तक बहती थी, जसि पर बाद में कीव शहर बसा।

[8332] यह भवष्यिवाणी पूरी हुई: रूसी लोगों का बपतस्मिा यूनानयिों द्वारा और कॉन्स्टेंटनिोपल से भेजे गए चर्च शक्षिकों द्वारा दयिा गया।

[8333] वोलखोव नदी पर स्थति, रस' के सबसे पुराने शहरों में से एक। यह क्यवि से प्रेरति के यात्रा की उत्तरी सीमा को चह्निति करता है।

[8334] प्राचीन रोमन साम्राज्य की राजधानी और आज के इटली राज्य का शहर, टबिर नदी पर।

[8335] एपरिस – आयोनयिन सागर के तट पर एक यूनानी क्षेत्र, जो पडिस पर्वत श्रृंखला से पूर्व की ओर तक फैला हुआ है।

[8336] अब मोरयिा के नाम से जाना जाने वाला यह शहर कोरंथि के इस्थमस द्वारा बाल्कन प्रायद्वीप से जुड़ा हुआ है।

[8337] पैट्रास के नाम से भी जाना जाता है – कोरंथि की खाड़ी के प्रवेश द्वार पर स्थति एक शहर।

'हे मनुष्यों के न्यायाधीश, तुम्हें अपने उस न्यायाधीश को जानना चाहिए जो स्वर्ग में है, और उसे जानकर उसकी आराधना करनी चाहिए; और सच्चे ईश्वर की आराधना करने के बाद, तुम्हें झूठे देवताओं से मुंह मोड़ लेना चाहिए।'

एगेटस ने उससे कहा:

'क्या तुम वही एंड्रयू हो जो देवताओं के मंदिरों को नष्ट कर रहे हो और लोगों को उस नए उभरे हुए जादुई धर्म की ओर ले जा रहे हो जिसे रोमन सम्राटों ने मिटाने का आदेश दिया है?'

प्रेरित संत एंड्रयू ने उत्तर दिया:

'रोमन सम्राट यह पहचानने में असफल रहे कि परमेश्वर के पुत्र ने, मानव जाति के उद्धार के लिए पृथ्वी पर आकर, स्पष्ट रूप से दिखाया कि ये मूर्तियाँ न केवल देवता नहीं हैं, बल्कि अशुद्ध राक्षस हैं, जो मानव जाति के शत्रु हैं, जो लोगों को परमेश्वर के क्रोध को भड़काने और उसे अपने से दूर करने की शिक्षा देते हैं, ताकि वह उनकी नहीं सुने। जब परमेश्वर, अपने क्रोध में, लोगों से मुख मोड़ लेते हैं, तो दानव उन्हें दास बना लेते हैं और धोखा देते हैं, जब तक कि उनकी आत्माएँ नग्न होकर अपने शरीरों से बाहर नहीं निकल जातीं[8338] , और अपने साथ केवल अपने पाप ही ले जाती हैं।

एजियिट ने कहा:

'जब तुम्हारे यीशु ने ये नारी-सुलभ और खोखले शब्द प्रचार किए, तो यहूदियों ने उसे सूली पर चढ़ा दिया।'

एंड्रयू ने उत्तर दिया:

'ओह, काश तुम क्रूस के रहस्य को समझने का प्रयास करते: कि कैसे मानव जाति के स्रष्टा ने, हमसे अपने प्रेम के कारण, स्वेच्छा से क्रूस पर पीड़ा सहन की, क्योंकि वह अपनी पीड़ा के समय को भी जानते थे, और तीसरे दिन अपने पुनरुत्थान की भविष्यवाणी की थी; और, जब वे हमारे साथ अंतिम भोज में बैठे थे, तो उन्होंने अपने विश्वासघातक की भविष्यवाणी की, भविष्य को अतीत की तरह बयां करते हुए, और स्वेच्छा से उस स्थान पर गए जहाँ उन्हें यहूदियों के हाथों सौंपा जाना था।

'मैं तुम पर हैरान हूँ,' एगेथ ने आपत्ति जताई, 'कि तुम, एक बुद्धिमान व्यक्ति होते हुए, उस व्यक्ति का अनुसरण करोगे जिसके बारे में तुम दावा करते हो कि उसे क्रूस पर चढ़ाया गया था—इस बात की परवाह किए बिना कि यह तुम्हारी अपनी मर्जी से था या नहीं[8339] ।'

प्रेरित ने उत्तर दिया:

'क्रूस का रहस्य महान है,' और यदि आप सुनना चाहते हैं, तो मैं आपको बताऊँगा।

'यह कोई रहस्य नहीं, बल्कि दुष्टों की सज़ा है,' यगयिात ने आपत्ति जताई। संत एंड्रयू ने उत्तर दिया:

'यह दंड मानव नवीनीकरण का रहस्य है; कृपया बस मुझे धैर्यपूर्वक सुनें।'

'मैं धैर्यपूर्वक सुनूँगा,' न्यायाधीश ने कहा, 'लेकिन यदि तुम मेरी आज्ञा का पालन नहीं करोगे, तो तुम स्वयं उस cross[8340] के रहस्य को अपने ऊपर उठाओगे।

इस पर प्रेरित ने उत्तर दिया:

'अगर मुझे सूली पर चढ़ाए जाने का डर होता, तो मैं कभी भी क्रूस की महिमा नहीं करता।'

एजियिटस ने कहा:

'जैसे तुम अपनी मूर्खता में क्रूस की प्रशंसा करते हो, वैसे ही तुम मृत्यु से नहीं डरते – अपनी धृष्टता के कारण।'

प्रेरित ने उत्तर दिया:

'मैं मृत्यु से साहस के कारण नहीं, बल्कि विश्वास के कारण नहीं डरता; क्योंकि धर्मी की मृत्यु सम्मानजनक है[8341] , जबकि पापियों के लिए मृत्यु क्रूर है। मैं चाहता हूँ कि आप उस रहस्य के बारे में सुनें जो मैं क्रूस के विषय में कहूँगा, और, सत्य को जानकर, विश्वास करें; और विश्वास करने के बाद, अपनी आत्मा को पाएं[8342] ।'

एगेटस ने कहा:

[8338] अर्थात् – जिन्होंने कोई पुण्य कर्म नहीं किया है।

[8339] सलीब पर चढ़ाकर मृत्युदंड देना सजा के सबसे शर्मनाक रूपों में से एक माना जाता था; यह केवल दासों और, आम तौर पर, सबसे घृणित और अपराधी व्यक्तियों को दी जाती थी।

[8340] अर्थात् – तुम्हें सूली पर चढ़ाया जाएगा।

[8341] अर्थात् – धर्मी लोग जिन्होंने ईश्वर को प्रसन्न किया है।

[8342] दूसरे शब्दों में, आप अपनी आत्मा को बचाएंगे। यह मुहावरा मत्ती 16:25–26 से लिया गया है।

'वे[8343] जो खो गया है[8344] उसे पुनःप्राप्त करते हैं। क्या मेरी आत्मा सचमुच खो गई है, कि आप मुझे विश्वास के द्वारा उसे पुनःप्राप्त करने का आदेश देते हैं—हालाँकि मुझे नहीं पता कि किस विश्वास से?'

संत एंड्रयू ने उत्तर दिया:

'यह वही है जो आप मुझसे सीख सकते हैं; मैं आपको मानव आत्माओं के विनाश का कारण दिखाऊँगा, ताकि आप उनके उद्धार को जान सकें, जो क्रूस के द्वारा पूरा हुआ। पहले मनुष्य ने उल्लंघन के वृक्ष के द्वारा मृत्यु को लाया[8345] , और मानव जाति के लिए यह आवश्यक था कि मृत्यु को पीड़ा के वृक्ष के द्वारा नष्ट किया जाए[8346] । और जैसे पहला मनुष्य, जिसने उल्लंघन के वृक्ष के द्वारा मृत्यु लाई, शुद्ध मिट्टी से बना था, वैसे ही यह उचित था कि मसीह, जो एक सिद्ध मनुष्य हैं—जो परमेश्वर के पुत्र और पहले मनुष्य के सृष्टिकर्ता भी हैं—एक पवित्र कुँवारी से जन्म लें, ताकि वे सभी मानवजाति द्वारा खोए हुए अनंत जीवन को पुनर्स्थापित कर सकें: और जैसे पहले मनुष्य ने भले और बुरे के ज्ञान के वृक्ष की ओर अपने हाथ बढ़ाकर पाप किया था, वैसे ही, मानव जाति के उद्धार के लिए, यह उचित था कि परमेश्वर के पुत्र ने मानव हाथों की अतार्किकता के लिए, और निषिद्ध वृक्ष के मीठे फल के लिए क्रूस पर अपने हाथ फैलाए, और उन्होंने कड़वी पित्त का स्वाद चखा[8347] ।

एजियट ने उत्तर दिया:

'ये बातें उन लोगों से कहो जो तुम्हारी सुनेंगे। परन्तु यदि तुम मेरी आज्ञा का पालन नहीं करते, और यदि तुम देवताओं को बलिदान चढ़ाने से इनकार करते हो, तो, तुम्हें डंडों से पीटने के बाद, मैं तुम्हें उस क्रूस पर सूली पर चढ़ा दूँगा जिसकी तुम महिमा करते हो।'

एंड्रयू ने उत्तर दिया:

– हर दिन मैं एकमात्र, सच्चे और सर्वशक्तिमान ईश्वर को न तो धूप का धुआँ, न बैलों का मांस, न बकरियों का लहू अर्पित करता हूँ, बल्कि उस निर्दोष मेम्ने को अर्पित करता हूँ, जो क्रूस की वेदी पर बलिदान किया गया[8348] । सभी विश्वासी उसके परम पवित्र शरीर का सेवन करते हैं और उसका रक्त पीते हैं; फिर भी यह मेमना संपूर्ण और जीवित रहता है, यद्यपि वह सचमुच वध किया गया है; सचमुच, सभी उसके मांस का सेवन करते हैं और उसका रक्त पीते हैं – फिर भी, जैसा कि मैं कहता हूँ, वह हमेशा संपूर्ण, निर्दोष और जीवित रहता है।

एगेट ने कहा:

'यह कैसे हो सकता है?'

एंड्रयू ने उत्तर दिया:

'यदि तुम जानना चाहते हो, तो शिष्य बनो, ताकि तुम वह सीख सको जिसके बारे में तुम पूछ रहे हो।'

एजिएट ने कहा:

'मैं तुम्हें यातना देकर यह शिक्षा निकालूँगा।'

प्रेरित ने उत्तर दिया:

मैं हैरान हूँ कि तुम, एक बुद्धिमान व्यक्ति होते हुए, एक अज्ञानी की तरह बात करते हो; क्या तुम यातनाओं के द्वारा मुझसे परमेश्वर के रहस्यों को जान सकते हो? तुमने क्रूस के रहस्य के बारे में सुना है, और तुमने बलिदान के रहस्य के बारे में भी सुना है। यदि तुम विश्वास करते हो कि मिसीह, परमेश्वर का पुत्र, जिसे यहूदियों ने सूली पर चढ़ाया था, सच्चा परमेश्वर है, तो मैं तुम्हें यह रहस्य बताऊँगा कि कैसे वह, मृत्युदंड पाकर भी, जीवित है, और कैसे, बलिदान होकर और भस्म हो जाने पर भी, अपने राज्य में अखंड बना रहता है।

एजियटस ने कहा:

[8343] दूसरे शब्दों में: वे इसे पाते हैं।

[8344] दूसरे शब्दों में: यह खो गया है, चला गया है।

[8345] यह, बेशक, भलाई और बुराई के ज्ञान के वृक्ष (उत्पत्ति 2:16–17) को संदर्भित करता है; इसे ऐसा इसलिए कहा जाता है क्योंकि इस वृक्ष का फल—जिसे परमेश्वर ने मना किया था—चखने के बाद मनुष्य ने उल्लंघन किया।

[8346] यह, बेशक, उस क्रूस को संदर्भित करता है जिस पर मसीह ने पीड़ा सहन की और मृत्यु को प्राप्त हुए, अपनी ही मृत्यु द्वारा मृत्यु पर विजय प्राप्त करते हुए।

[8347] एक विशेष पौधे का रस, जो स्वाद में अत्यंत कड़वा और सुन्न करने वाला होता है। भविष्यवाणी (भजन संहिता 68:22) की पूर्ति के लिए, सिरके में मिलाया गया पित्त, प्रभु को सूली पर चढ़ाए जाने के समय पीने के लिए दिया गया था (मत्ती 27:34-48)।

[8348] अर्थात् – क्रूस पर प्रभु के उद्धारकारी दुखों की शक्ति पर स्थापित वेदी पर।

'यदि उसे मृत्युदंड दिया गया और, जैसा आप कहते हैं, लोगों द्वारा भोजन के रूप में खा लिया गया, तो वह जीवित और पूर्ण कैसे हो सकता है?'

'यदि तुम पूरे हृदय से विश्वास करते हो,' प्रेरित ने उत्तर दिया, 'तो तुम इस रहस्य को समझ सकते हो; परन्तु यदि तुम विश्वास नहीं करते, तो तुम इस रहस्य को कभी नहीं समझ पाओगे।'

तब एगेटस, क्रोधित होकर, प्रेरित को जेल में डालने का आदेश दे दिया। जब संत को जेल में डाल दिया गया, तो देश भर से एक बड़ी भीड़ उनके चारों ओर इकट्ठा हो गई, जो एगेटस को मारने और एंड्रयू को जेल से मुक्त कराने की इच्छा रखती थी। लेकिन पवित्र प्रेरित ने उन्हें रोका, उन्हें समझाते हुए कहा:

'हमारे प्रभु यीशु मसीह की शांति को शैतानी विद्रोह में न बदलें; क्योंकि हमारे प्रभु ने, जब उन्हें मृत्यु के हवाले किया गया था, हर तरह का धैर्य दिखाया: उन्होंने शिकायत नहीं की, उन्होंने पुकार नहीं लगाई, और उनकी आवाज़ गलियों में नहीं सुनी गई; इसलिए, तुम्हें भी चुप रहना चाहिए और शांत रहना चाहिए। न केवल आपको मेरे बलिदान में बाधा नहीं डालनी चाहिए, बल्कि आपको स्वयं, मसीह के अच्छे तपस्वियों और सैनिकों के रूप में, अपने शरीरों पर हर प्रकार की यातनाओं और घावों को धैर्यपूर्वक सहने के लिए खुद को तैयार करना चाहिए। यदि किसी को यातनाओं से डरना ही चाहिए, तो केवल उन्हीं से डरना चाहिए जिनका कोई अंत नहीं है[8349] ; जबकि मानवीय धमकी और खौफ धुएँ की तरह हैं—वे दिखाई देते हैं और फिर अचानक गायब हो जाते हैं। और यदि किसी को पीड़ा से डरना है, तो उसे उस पीड़ा से डरना चाहिए जो कभी खत्म न होने के इरादे से शुरू होती है[8350] । अस्थायी दुख, यदि वे मामूली हों, तो आसानी से सहन किए जाते हैं; यदि वे बड़े हों, तो आत्मा के शरीर से अलग होने पर वे अपने आप ही समाप्त हो जाएँगे। लेकिन वे दुख भयानक होते हैं जो शाश्वत हैं। इसलिए, अस्थायी दुखों से होकर शाश्वत आनंद में प्रवेश करने के लिए तैयार रहो, जहाँ तुम आनंदित होओगे, हमेशा फलोगे और हमेशा मसीह के साथ राज्य करोगे।

इस प्रकार लोगों को उपदेश देते हुए संत एंड्रयू ने पूरी रात बिताई। सुबह, एगेटस एंटिपास ने न्यायपीठ पर अपनी सीट ली; उसे बुलवाकर, उसने संत एंड्रयू को बुलाया और उससे कहा:

'क्या तुमने इस मूर्खता को त्यागने और मसीह का प्रचार करना बंद करने का निश्चय कर लिया है, ताकि तुम इस जीवन में हमारे साथ आनंदित हो सको? क्योंकि स्वेच्छा से अपने यातनाओं और आग में जाना एक बड़ी मूर्खता है।'

संत ने उत्तर दिया:

'मैं तब आपके साथ आनंद मना सकूँगा जब आप मसीह पर विश्वास करेंगे और मूर्तियों का त्याग करेंगे, क्योंकि मसीह ने मुझे इस देश में भेजा है, जहाँ मैंने कई लोगों को उनके लिए जीता है।'

एजियिटस ने कहा:

मैं तुम्हें बलिदान चढ़ाने के लिए मजबूर करता हूँ ताकि तुम्हारे द्वारा धोखा खाए हुए लोग तुम्हारी शिक्षा की व्यर्थता को त्याग दें और देवताओं को प्रसन्न करने वाले बलिदान चढ़ाएँ; क्योंकि अकेया में ऐसा कोई नगर नहीं है जहाँ देवताओं के मंदिर उजाड़ न छोड़ दिए गए हों; इसलिए अब यह आवश्यक है कि, आपके द्वारा, उनका सम्मान बहाल किया जाए—ताकि जिन्हें आपने क्रोधित किया है वे आपसे प्रसन्न हों, और आप स्वयं हमारे साथ मैत्रीपूर्ण प्रेम में बने रहें। यदि नहीं, तो उनके अपमान के लिए आप विभिन्न यातनाएं सहेंगे और उस क्रूस पर लटकाए जाएंगे जिसकी आप महिमा करते हैं।

संत एंड्रयू ने उत्तर दिया:

'सुन, हे मृत्यु के पुत्र, जो अनंतकालिक यातनाओं के लिए अभिशप्त है; मेरी बात मान, मैं प्रभु का सेवक और यीशु मसीह का प्रेरित हूँ! अब तक मैं तुझसे कोमलता से बोलता रहा हूँ, यह इच्छा रखते हुए कि मैं तुझे पवित्र विश्वास में शिक्षा दूँ, ताकि तू, एक विवेकशील प्राणी के रूप में, सत्य को जान सके और मूर्तियों को त्यागकर, स्वर्ग में रहने वाले परमेश्वर की उपासना कर सके। लेकिन चूँकि तुम अपनी निर्लज्जता पर अड़े हो और सोचते हो कि मैं तुम्हारे यातनाओं से डरता हूँ, तो मेरे लिए अपनी सबसे कठोर यातनाएँ रचो, क्योंकि मैं उनके लिए जितनी अधिक कठोर यातनाएँ सहूँगा, मैं अपने राजा को उतना ही अधिक प्रिय लगूँगा।

[8349] अर्थात् – अंतिम न्याय में निन्दा।

[8350] अर्थात् – नरक में पापियों का अनंतकालीन यातना।

तब एगेथ ने उसे फैलाकर पीटने का आदेश दिया। और जब उसे पीटने वाले लोगों को तीन-तीन के समूह में सात बार बदलने के बाद, संत को उठाकर न्यायाधीश के सामने लाया गया।

न्यायाधीश ने उससे कहा:

'मेरी बात सुनो, एंड्रयू, और अपना खून व्यर्थ में मत बहाओ; क्योंकि अगर तुम मेरी बात नहीं मानोगे, तो मैं तुम्हें सूली पर चढ़ा दूँगा।'

संत एंड्रयू ने उत्तर दिया:

'मैं मसीह के क्रूस का सेवक हूँ और मैं क्रूस पर मरना चाहता हूँ। तुम, हालाँकि, शाश्वत यातना से बच सकते हो यदि, मेरी सहनशीलता को देखकर, तुम मसीह में विश्वास करने लगो; क्योंकि मुझे अपनी पीड़ा से अधिक तुम्हारे विनाश का दुख है: मेरी पीड़ा एक दिन, या अधिकतम दो में समाप्त हो जाएगी, जबकि तुम्हारी यातना का अंत एक हजार वर्षों के बाद भी नहीं होगा; इसलिए, अपने ही कष्टों को और मत बढ़ाओ और अपने लिए शाश्वत अग्नि को प्रज्वलित मत करो।

क्रोधित एजियटस ने सेंट एंड्रयू को सूली पर चढ़ाने का आदेश दिया, उसके हाथ और पैर बाँध दिए गए: क्योंकि वह उसे क्रूस पर कीलें नहीं ठोकना चाहता था, कहीं वह बहुत जल्दी न मर जाए, बल्कि यह चाहता था कि, वहाँ बँधा हुआ लटकने पर, वह और भी अधिक यातना सहन करे।

जब यातना देने वाले के सेवक उसे सूली पर चढ़ाने के लिए ले जा रहे थे, तो भीड़ इकट्ठा हो गई, और चिल्ला रही थी:

'इस धर्मी मनुष्य और ईश्वर के मित्र ने ऐसा कौन सा पाप किया है, कि उसे सूली पर चढ़ाया जा रहा है?'

हालाँकि, एंड्रयू ने लोगों से विनती की कि वे उसके दुख को न बढ़ाएँ, और वह आनंदपूर्वक अपने यातना स्थल पर गया, और सिखाना कभी बंद नहीं किया। जब वह उस स्थान पर पहुँचा जहाँ उसे सूली पर चढ़ाया जाना था, और उसने दूर से अपने लिए तैयार की गई सूली को देखा, तो वह ऊँचे स्वर में चिल्लाया:

हे क्रूस, आनंदित हो, जो मसीह के शरीर से पवित्र हुआ है और उनके अंगों से मोतियों की तरह सुसज्जित है! इससे पहले कि प्रभु तुझ पर चढ़ाया जाए, तू मनुष्यों के लिए एक भय था; पर अब तुझ से प्रेम किया जाता है और उत्सुकता से स्वागत किया जाता है, क्योंकि विश्वासियों को पता है कि तू अपने भीतर क्या आनंद रखता है, और तेरे लिए क्या इनाम रखा गया है। मैं निडरता और आनंद के साथ तेरे पास आता हूँ; मुझे हर्ष के साथ ग्रहण कर, क्योंकि मैं उस का शिष्य हूँ जो तुझ पर लटकाया गया था। मुझे स्वीकार करो, क्योंकि मैं तुम्हें हमेशा से प्रेम करता आया हूँ और तुम्हें गले लगाने के लिए तरसता रहा हूँ, हे सम्मानित क्रूस, जिसे प्रभु के अंगों से सुंदरता और महिमामय भूषण प्राप्त है, जिसकी मुझे दीर्घकाल से लालसा थी, जिससे मैं अत्यंत प्रेम करता हूँ, और जिसे मैं अनवरत खोजता रहा हूँ। मुझे मनुष्यों के बीच से उठाकर अपने शिक्षक के हवाले कर दो, ताकि तुम्हारे द्वारा ही, जिसने मुझे मोचन दिया, वह मुझे स्वीकार कर ले।

जैसे ही उसने यह कहा, उसने अपने कपड़े उतारे और उन्हें अपने यातना देने वालों को दे दिया। उन्होंने उसे सूली पर चढ़ाया, उसके हाथ और पैर रस्सियों से बाँधे, उसे सूली पर चढ़ाया और वहाँ लटका दिया। लगभग बीस हज़ार की एक बड़ी भीड़ उसके चारों ओर खड़ी थी; उनमें एगेटस का भाई, स्ट्रैटोक्लियोस नामक व्यक्ति भी था, जिसने भीड़ के साथ मिलकर पुकारा:

'यह अन्याय है कि एक ऐसे पवित्र व्यक्ति को इस प्रकार कष्ट सहना चाहिए।'

हालाँकि, संत एंड्रयू ने मसीह में विश्वास करने वालों को मजबूत किया और उन्हें अपने अस्थायी दुखों को सहने के लिए प्रोत्साहित किया, यह सिखाते हुए कि उनके इंतजार में जो इनाम है, उसकी तुलना में कोई भी यातना कुछ भी नहीं है।

तब सारी भीड़ ईजियटस के घर गई, चिल्लाते हुए और कहती हुई:

'एक पवित्र और सम्मानित व्यक्ति, एक अच्छे, सदाचारी, नम्र और बुद्धिमान शिक्षक को इस तरह पीड़ित नहीं होना चाहिए; उसे सूली से उतार लिया जाना चाहिए, क्योंकि, दो दिनों तक वहाँ लटके रहने के बाद भी, उसने सत्य सिखाना बंद नहीं किया है।'

तब एगेटस, लोगों से डरकर, तुरंत उनके साथ एंड्रयू को सूली से उतारने गया। एंड्रयू ने, एगेटस को देखकर, कहा:

'एगेथ, तुम यहाँ क्यों आए हो? यदि तुम मसीह पर विश्वास करना चाहते हो, तो अनुग्रह का द्वार तुम्हारे लिए खुल जाएगा, जैसा कि मैंने वादा किया था। लेकिन यदि तुम केवल मुझे सूली से उतारने आए हो, तो मैं जब तक जीवित हूँ, सूली से उतारे जाने की इच्छा नहीं करता; क्योंकि मैं पहले ही अपने राजा को देख रहा हूँ, मैं पहले ही उनकी आराधना कर रहा हूँ,

मैं पहले ही उनके सामने खड़ा हूँ, फरि भी मैं तुम्हारे लिए पीड़ा सह रहा हूँ, क्योंकि तुम्हारे लिए तैयार की गई अनंत विनाश की प्रतीक्षा कर रहा है। जब तक आप सक्षम हैं, तब तक अपना ध्यान रखें, कहीं ऐसा न हो कि जब आप अब सक्षम न रहें, तो आप[8351] शुरू करने के लिए प्रलोभित हो जाएँ।

जब सेवकों ने उसे सूली से खोलने की कोशिश की, तो वे उसे छू भी नहीं सके; कई अन्य लोगों ने, एक के बाद एक, उसे खोलने की कोशिश की, पर वे नहीं कर सके, क्योंकि उनके हाथ सुन्न हो गए थे। इसके बाद, संत एंड्रयू ने ऊँचे स्वर में पुकारा:

हे प्रभु यीशु मसीह! उस क्रूस से मुझे उतारने न दें जिस पर मैं आपके नाम के लिए लटका हूँ, बल्कि मुझे स्वीकार करें, हे मेरे शिक्षक, जिन्हें मैं प्रेम करता हूँ, जिन्हें मैं जान चुका हूँ, जिनका मैं अंगीकार करता हूँ, जिन्हें मैं देखने के लिए तरसता हूँ, जिनके द्वारा मैं जो कुछ भी हूँ, वह बना हूँ! हे प्रभु यीशु मसीह, मेरी आत्मा को शांतिपूर्वक ग्रहण करें, क्योंकि अब मेरा समय आ गया है कि मैं आप तक आकर आपको निहारूँ, जिनकी मुझे इतनी तीव्र लालसा है! हे अच्छे शिक्षक, मुझे ग्रहण करें, और जब तक आपने मेरी आत्मा को ग्रहण नहीं कर लिया, तब तक यह आज्ञा न दें कि मुझे सूली से उतार दिया जाए!

जब उन्होंने ये शब्द कहे, तो स्वर्ग से एक प्रकाश बिजली की कड़क के समान उन पर चमका, जो सभी के सामने था, और उनके चारों ओर दमक उठा – जिससे नश्वर मानव आँखों के लिए उन्हें देखना असंभव हो गया। यह दिव्य प्रकाश आधे घंटे तक उनके चारों ओर दमकता रहा, और जब प्रकाश पीछे हट गया, तो पवित्र प्रेरित ने अपनी अंतिम साँस ली और उस प्रकाश की किरणों में प्रभु के सामने खड़े होने के लिए प्रस्थान कर गए। मॅक्सिमिला, जो एक कुलीन कुल की महिला थी, जो मसीह में विश्वास रखती थी और एक पवित्र जीवन जीती थी, ने जब यह सुना कि संत एंड्रयू प्रभु के पास चले गए हैं, तो उसने बड़े सम्मान के साथ उनके शरीर को उतारकर, उसे कीमती इत्रों से अभिषिक किया और उसे अपनी ही ताबूत में रख दिया, जिसमें उसे स्वयं दफ़नाया जाना था। एजियिटस, लोगों पर क्रोधित होकर, उनसे बदला लेने और उन लोगों को सार्वजनिक रूप से मृत्युदंड देने की साजिश रचने लगा जिन्होंने उसके खिलाफ विद्रोह किया था; जहाँ तक मैक्सिमिला का सवाल है, उसका इरादा राजा के सामने उसकी बदनामी करने का था। जब वह इस पर विचार कर रहा था, तो एक राक्षस ने अचानक उस पर काबू पा लिया, और उससे पीड़ित होकर, एजियिटस शहर के बीचों-बीच मर गया। जब यह बात उनके भाई स्ट्रैटोक्लेस को बताई गई, जो मसीह में विश्वास रखते थे, तो उन्होंने आदेश दिया कि उसे उचित अंतिम संस्कार दिया जाए; अपनी ओर से, उन्होंने अपने भाई की संपत्ति में से कुछ भी नहीं माँगा, यह कहते हुए:

'हे प्रभु यीशु मसीह, मेरे उद्धारकर्ता, यह अनुग्रह करो कि मैं अपने भाई के किसी भी धन-संपत्ति पर अपना हाथ न रखूँ, कहीं मैं उसके पाप से अशुद्ध न हो जाऊँ; क्योंकि व्यर्थ के धन-संपत्ति के प्रेम में, उसने प्रभु के प्रेरित को मार डालने का दुस्साहस किया।'

यह नवंबर के आखिरी दिन, अकेया में, पत्रास शहर में हुआ – जहाँ, आज भी, प्रेरित की प्रार्थनाओं के माध्यम से, लोगों पर कई आशीर्वाद प्रदान किए जाते हैं। सभी पर भय छा गया, और कोई भी ऐसा नहीं था जो हमारे उद्धारकर्ता परमेश्वर में विश्वास नहीं करता था, जो सभी को बचाना और उन्हें सत्य के ज्ञान[8352] तक पहुँचाना चाहता है, जिसकी महिमा युगानुयुग होती रहे, आमीन।

कई वर्षों बाद, इस पवित्र प्रेरित एंड्रयू के अवशेष शहीद आर्टेमियस द्वारा कॉन्स्टेंटिनोपल लाए गए, महान सम्राट कॉन्स्टेंटिन के आदेश से[8353] , और उन्हें सबसे पवित्र प्रेरितिक चर्च में, पवित्र वेदी के भीतर, संत ल्यूक सुसमाचार लेखक और संत पॉल प्रेरित के शिष्य संत टिमोथी के साथ दफनाया गया।

हे मसीह परमेश्वर, अपने प्रेरित की प्रार्थनाओं के द्वारा, अपने विश्वासीयों को ऑर्थोडॉक्स धर्म में दृढ़ करो, और हमें बचाओ। आमीन।

- *संत जॉन क्राइसोस्टोम द्वारा संत एंड्रयू प्रथम-आहूत के लिए प्रशंसा-गीत*

प्रेरितों के जाल की पकड़ दृढ़ है[8354] , एंड्रयू की स्मृति अद्भुत है और उस जाल की स्मृति भी अद्भुत है, जिसका उपयोग उन्होंने राष्ट्रों को मसीह के विश्वास में पकड़ने और खींचने के लिए किया था। क्योंकि इन अमर मृतकों द्वारा

[8351] अर्थात् - मसीह की ओर मुड़ना; जब आप अब और सक्षम न हों - मृत्यु से ठीक पहले, जब मृत्यु निकट आ रही हो।

[8352] यह अभिव्यक्ति (1 तीमुथियुस 2:4) से ली गई है।

[8353] स्वाभाविक रूप से, संत कॉन्स्टेंटाइन महान (324–337), जिन्होंने पहली बार रोमन साम्राज्य में ईसाई धर्म को प्रमुख धर्म बनाया।

[8354] 'मछली पकड़ना' से अभिप्रेत है पवित्र प्रेरितों द्वारा लोगों को मसीह में विश्वास की ओर आकर्षित करना।

उपयोग कए गए ड्रैगनेट को वस्मिृत कभी भी फाड़ नहीं सकती। वे मछली पकड़ने के उपकरण, जो मानव कौशल से नहीं बल्क ईश्वर की कृपा से बने हैं, समय के साथ पुराने नहीं होंगे। यद्यप मिछुआरे स्वयं हमसे चले गए हैं, परन्तु वे उपकरण जनिका उन्होंने उपयोग कयि—वह जाल जसिसे उन्होंने स्वयं संसार को घेरा—वे कभी पुराने नहीं हुए हैं। जब वे अपनी जालें फेंकते और खींचते हैं, तो वे अदृश्य होते हैं; फरि भी उनकी जालें भरी हुई पाई जाती हैं। उन्होंने समय के साथ मुरझा जाने वाली कसिी खर-पतवार[8355] की टहनी नहीं ली, और न ही उन्होंने पानी में सड़ जाने वाले सूती धागे डाले। उन्होंने जंग लगने वाला कोई काँटा नहीं बनाया, और न ही उन्होंने काँटे[8356] पर मछली पकड़ने के लिए कोई चारा लगाया। वे पानी से छूई कसिी चट्टान[8357] पर नहीं बैठे, और न ही वे लहरों से टूटी कसिी नाव में सवार हुए। उन्होंने जो पकड़ा, वे मछलयिाँ नहीं थीं, वे बेजान प्राणी; बल्क जिसि कला का उन्होंने प्रयोग कयि, उतनी ही अद्भुत उनके उपकरण भी नए और असाधारण थे। क्योंक एक सरकंडे के बजाय उन्होंने उपदेश का उपयोग कयि, एक जाल के बजाय – स्मृत, एक कांटे के बजाय – शक्त[8358] , चारे के बजाय – चमत्कार, एक चट्टान के बजाय – स्वर्ग, जसिसे वे ऐसा शकिार करते हैं; नाव के बजाय उनके पास एक वेदी है; मछली के बजाय, वे स्वयं राजाओं को पकड़ते हैं; खींचने वाले जाल के बजाय, वे सुसमाचार का प्रसार करते हैं; कौशल के बजाय, वे दैवीय अनुग्रह का उपयोग करते हैं; समुद्र के बजाय, वे मानव जीवन पर शासन करते हैं; जाल के बजाय, वे क्रूस का उपयोग एक खींचने वाले जाल की तरह करने के आदी हैं।

और कसिने कभी मृत मछुआरों को जीवति लोगों को मछली की तरह पकड़ते देखा है? हे क्रूस पर चढ़ाए गए की महान शक्त! हे दव्यि गरमिा की परम सुंदरता! जीवन में प्रेरतिों की कृपा की ऊँचाई जैसा कुछ भी नहीं हो सकता। मानव जीवन ने कई ऐसी चीजों को देखा है जो वास्तव में अद्भुत और तर्क से परे हैं; क्योंक इसने पुकार लगाते हुए खून और बनिा जीभ के बोलते हुए हत्या देखी है, और ईर्ष्या के कारण प्रकृत को स्वयं के वरिुद्ध वभिाजति होते देखा है[8359] ; इसने एक भाई को अपने ही खून-ख़राब वाले भाई की मृत्यु का कारण बनते देखा है, और ईर्ष्या के घाव से मृत्यु के द्वार को खुलते देखा है। इसने उस बाइबलि के जलप्रलय के दौरान नूह की कश्ती को डूबने से बचा हुआ देखा है जसिने दुनयि को बर्बाद कर दयि और मानव जात का वनिाश कर दयि। उसने उस वृद्ध को देखा जसिने, वश्विास के द्वारा, अपनी ही कोख—अर्थात् अपने पुत्र—के वरिुद्ध हथयिार उठाए, और जसिे मृत्युदंड नहीं दयि गया, उसे बलदिान के रूप में अर्पति कयि गया[8360] । उसने चोरी[8361] के माध्यम से प्राप्त आशीर्वाद और सृष्टकिर्ता परमेश्वर का सेवक के साथ संघर्ष[8362] देखा। मैंने भाइयों के बीच उत्पन्न ईर्ष्या देखी[8363] , और उस दासता को जसिने राज्य की स्थापना की[8364] । मैंने स्वप्नों के माध्यम से तैयार सहिासन देखा[8365] और भाई के वश्विासघात करने वालों को, जनिहें भूख ने लुभाया[8366] । मैंने वह छड़ी देखी जसिने चमत्कार कए[8367] , और झाड़ी को ओस की तरह आग से ढका हुआ[8368] । मैंने व्यवस्था देने वाले मूसा को तत्वों

[8355] यहाँ 'छड़ी' से तात्पर्य मछली पकड़ने की छड़ी से है।

[8356] चारा मछली पकड़ते समय कांटे पर लगाया जाने वाला भोजन है (कीड़ा, कीट, रोटी का टुकड़ा आदि)।

[8357] एक मछुआरा छड़ी के साथ आमतौर पर नदी के कनिारे, पानी के पास कसिी चट्टान या ऐसी ही कसिी जगह पर बैठता है।

[8358] अर्थात् – धन्य।

[8359] अर्थात् - स्वयं के वरिुद्ध हो जाना (मत्ती 12:25–26 से लयि गया एक मुहावरा)। यह, बेशक, काईन द्वारा अपने भाई एबेल की ईर्ष्या के कारण हत्या करने की ओर संकेत करता है (उत्पत्त 4:1–12); इस भातृहत्या में, मानव स्वभाव ने स्वयं के वरिुद्ध अपराध कयि।

[8360] यह, बेशक, अब्राहम के वश्विास के कार्य को संदर्भति करता है – ईश्वर के वचन के प्रत आज्ञाकारति में अपने पुत्र इसहाक को बलदिान के रूप में अर्पति करना (उत्पत्त 22:1–13)।

[8361] बेशक, जन्मसद्धि अधकिार का आशीर्वाद, जो जन्म से एसाव का था, लेकनि याकूब ने छल द्वारा प्राप्त कयि था (उत्पत्त 27:1–40)।

[8362] बेशक, यह परमेश्वर का कुलपति याकूब के पास रहस्यमय पहलवान के रूप में प्रकट होना है, ताक वह अपने भाई एसाव से अपनी आने वाली मुलाकात के लिए उसे प्रोत्साहति कर सके (उत्पत्त 32:24–32)।

[8363] बेशक, जोसेफ के बड़े भाइयों द्वारा उससे ईर्ष्या करना, क्योंक उनके पति का उससे वशिेष प्रेम था (उत्पत्त 37 आदि)।

[8364] बेशक, यूसुफ का मस्रि में दासत्व का समय, जसिके अंत में वह मुख्य मंत्री के पद पर पहुँचा – जो फरिौन के बाद राज्य में दूसरा सबसे शक्तशिाली व्यक्त थि (उत्पत्त 39–41)।

[8365] जोसेफ परमेश्वर से प्राप्त एक वशिेष प्रकट हुए द्वारा फरिौन के स्वप्नों की व्याख्या करके मस्रि में प्रसद्धि हुआ (उत्पत्त 41:1–37)।

[8366] योसेफ के भाई अनाज खरीदने के लिए कनान देश से मस्रि आए (उत्पत्त 42, 43)।

[8367] मूसा का छड़ी, जो परमेश्वर की एक वशिेष शक्त से, एक साँप में बदल जाती थी और फरि अपनी पूर्व अवस्था में लौट आती थी (नरि्गमन 4:1–5)।

[8368] जलती हुई झाड़ी।

को आज्ञा देते देखा[8369] । मैंने पानी को पत्थर की तरह कठोर होते, गहरे समुद्र को उजागर होते, अचानक एक मार्ग तैयार होते देखा[8370] , और दिन में बादल का स्तंभ और रात में आग का स्तंभ देखा, जो लोगों की भीड़ के मार्गदर्शन के लिए प्रदान किया गया था[8371] । मैंने बिना मिट्टी के अंकुरित होते एक दंड को देखा[8372] । मैंने रोटी के स्थान पर स्वर्ग से उतरे मानना को देखा[8373] । मैंने सूर्य को मानव प्रार्थना से, जैसे लगाम से, रुकते देखा[8374] , और एक बाँझ महिला की प्रार्थनाओं से प्राप्त पैगंबर की गर्भधारण[8375] । मैंने आटे का एक मुट्ठी देखा, जो अनाज के भंडारों से भी बड़ा था, और तेल का एक घड़ा, जो झरनों से भी अधिक प्रचुर था[8376] । मैंने हवा में ले जाया गया एक रथ देखा, और उसमें पैगंबर को उठाया जा रहा था[8377] । तब मैंने देखा कि मृतकों की हड्डियाँ जीवन के लिए एक औषधि थीं[8378] । – मानव जीवन ने ऐसी कई महान और अद्भुत चीजें देखी हैं; लेकिन वे घास की तरह नष्ट हो गईं, और सूर्योदय पर दीपक की तरह मुरझा गईं। प्रेरितों के समान कुछ भी कभी नहीं रहा। वे, परमेश्वर के वचन के सेवक[8379] , ने मसीह के साथ संगति की, जो देहधारी हैं और जिनका कोई रूप नहीं है[8380] । उन्होंने उसी का अनुसरण किया जो चलता है और सर्वत्र है[8381] । वे उसी के साथ विश्राम करते थे जिसे कोई भी स्थान समाहित नहीं कर सकता। उन्होंने उसी की आवाज़ सुनी जिसने अपने वचन से सभी चीज़ों की रचना की (देखें यूहन्ना 1:3; भजन संहिता 32:6)। उन्होंने अपनी जीभों से, एक प्रकार के जाल की तरह, संपूर्ण जगत को गले लगाया। अपनी यात्राओं के दौरान, वे पृथ्वी के छोर तक गए। उन्होंने त्रुटियों को जड़ से उखाड़ फेंका – जैसे भूसी[8382] , मंदिरों को काट डाला[8383] – जैसे काँटे, मूर्तियों का संहार किया – जैसे जंगली जानवर, और दुष्टात्माओं को भगा दिया – जैसे भेड़िये। उन्होंने चर्च को एक झुंड की तरह एकजुट किया, और ऑर्थोडॉक्स को गेहूँ की तरह इकट्ठा किया। उन्होंने विधर्मों को खरपतवार की तरह उखाड़ फेंका, यहूदी धर्म को घास की तरह मुरझा दिया, और यूनानी मूर्तियों को आग से जला दिया, जैसे वे केवल पौधे हों। उन्होंने मानव स्वभाव को क्रूस से – जैसे हल से – जोता और परमेश्वर के वचन को – जैसे बीज को – बोया। अंत में, उनके सभी कर्म तारों की तरह चमक उठे। इसलिए, प्रभु ने उनसे स्पष्ट रूप से कहा: *'तुम संसार का प्रकाश हो'* (मत्ती 5:14)।

क्योंकि पूर्व, एक ईसाई के लिए, वह है जो कुँवारी से जन्मे थे। उसके लिए, भोर वह है जिसने बपतिस्मा की स्थापना की। प्रकाश सूली पर चढ़ाए गए मसीह का अनुग्रह है। करिंथ ये अद्भुत जीभें हैं[8384] ; दिन आने वाला युग है। दोपहर वह समय है जब प्रभु स्वयं क्रूस पर थे। पश्चिम उनके कब्र में बिताए गए समय का प्रतिनिधित्व करता है। साँझ इस संक्षिप्त मृत्यु का प्रतिनिधित्व करती है। सूर्य का प्रकाश मृतकों में से पुनरुत्थान का प्रतिनिधित्व करता है। 'तुम जगत की रोशनी हो,' उन्होंने कहा।

[8369] बेशक, मिस्र की विपत्तियाँ (निर्गमन 7–12)।

[8370] यह, बेशक, इस्राएलियों द्वारा लाल सागर को चमत्कारिक रूप से पार करने की ओर इशारा करता है (निर्गमन 14:1–31)।

[8371] आग और बादल का स्तंभ जो इस्राएलियों के भटकने के दौरान उनके आगे-आगे जाता था, और उन्हें रास्ता दिखाता था (निर्गमन 13:21-22)।

[8372] हारून की लाठी, जो मंडप में एक ही रात में चमत्कारिक रूप से अंकुरित हुई, यह इस बात का संकेत था कि परमेश्वर द्वारा हारून के याजकत्व की स्थापना हो चुकी थी (गिनती 17:1–13)।

[8373] (निर्गमन 16:1–36)।

[8374] यहोशू की प्रार्थना, जो कनानी लोगों को हमेशा के लिए हराने के लिए दिन को लंबा करना चाहता था (यहोशू 10:12–13)।

[8375] नबी शमूएल की गर्भधारण (शमूएल का अर्थ है 'ईश्वर से माँगा गया') उनकी माता हन्ना की प्रार्थनाओं के द्वारा, जो पहले बाँझ थीं (1 शमूएल 1:1–28)।

[8376] ज़ारेफ़थ की विधवा, भविष्यवक्ता एलिया के वचन पर (3 राजा 17:10–16)।

[8377] बेशक, भविष्यवक्ता एलिया का स्वर्ग में आग की रथ में जीवित उठा लिए जाना (2 राजा 2:8–12)।

[8378] बेशक, पहले दिवंगत हो चुके नबी एलिशा की हड्डियों के स्पर्श से मृतक को जीवित करना (2 राजा 13:20–21)।

[8379] यह वह नाम है जिससे पवित्र शास्त्र में यीशु मसीह का उल्लेख किया गया है (यूहन्ना 1:1–14; प्रकाशितवाक्य 19:13; यूहन्ना 5:7)। इस पदनाम का आधार मुख्य रूप से इस तथ्य में निहित है कि यीशु मसीह ने लोगों को परमेश्वर की इच्छा प्रकट की (यूहन्ना 15:16)।

[8380] अर्थात् – यीशु मसीह के साथ, जिनका दिव्य स्वभाव अकल्पनीय और अकथनीय है।

[8381] दैवीय दृष्टिकोण से।

[8382] मैदानों के किनारों और अनाज की फसलों के बीच पाई जाने वाली एक खरपतवार (अय्यूब 31:40)।

[8383] 'कपिश' शब्द विशेष रूप से उन मूर्तिपूजक मंदिरों को संदर्भित करता था जहाँ मूर्तियाँ खड़ी थीं। लेकिन चूँकि मूर्तिपूजकों को उन्हें छायादार बगीचों और जंगलों में बनाना पसंद था, इसलिए यहाँ यह सबसे सीधे तौर पर इन पवित्र बगीचों को संदर्भित करता है।

[8384] अर्थात् – जो पेंटेकोस्ट के दिन प्रेरितों पर चमका (प्रेरितों के काम 2)।

इन तारों को देखो, और उनकी करिणों से वसि्मति हो जाओ। इसलिए, एंड्रयू, जनिका हम अब स्मरण करते हैं, जब उन्होंने सभी के प्रभु को प्रकाश के खजाने के रूप में पाया, तो अपने भाई पतरस की ओर मुड़कर चलि्ला उठे:

'हमने मसीहा को पा लयिा है।'

ओ, भ्रातृत्वपूर्ण प्रेम की सर्वोच्चता! ओ, प्राकृतकि व्यवस्था का उलटफेर! – एंड्रे पेत्रुस के बाद जन्मा था, और वही था जसिने सबसे पहले पेत्रुस को सुसमाचार की ओर ले जाया, और – जब वह उससे मलिा: 'हमने पाया है,' उसने कहा, 'मसीहा।' ये शब्द आनंद में बोले गए थे; ये उस मलिी हुई चीज़ की खुशी से भरी शुभ-सूचना थे। 'हमने यह खजाना पा लयिा है,' उसने कहा, 'भागो, पतरस, खतना की गरीबी[8385] , स्वयं को व्यवस्था के फटे-पुराने वस्त्रों से मुक्त करो[8386] , अक्षर के बोझ को उतार फेंको[8387] , इसे तुच्छ समझो, वर्तमान की उपेक्षा करो – जैसे कि यह कोई सपना हो, और बेतसैदा से घृणा करो – जैसे कि यह कोई बुरी और अस्वीकार की गई जगह हो। जाल को त्यागो – गरीबी के साधन के रूप में; नाव को – बाढ़ के दौरान रहने की जगह के रूप में; मछली पकड़ना – समुद्र के उथल-पुथल के अधीन एक व्यवसाय के रूप में; मछली को – लालच के लिए माल के रूप में; यहूदी लोगों को – परमेश्वर के सामने गर्व का स्रोत के रूप में; कैफा को – एक दुष्ट सभा के पिता के रूप में। हमने मसीहा को पा लयिा है, जसिकी भवषि्यद्वक्ताओं ने भवषि्यवाणी की थी, जसिे व्यवस्था ने अपनी शकि्षा के माध्यम से, मानो एक तुरही द्वारा, हम पर उद्घोषति कयिा था। हमें व्यवस्था का खजाना मलि गया है। पतरस, धर्मग्रंथों की लालसा से बचो: हमें मसीहा मलि गया है, जसिकी प्राचीन चहि्नों ने पूर्वसूचना दी थी[8388] , जसिे मीका ने महमिा के सहिासन पर देखा (मीका 4:1–3), जनि्हें यशायाह ने सेराफमि के बीच देखा (यशायाह 6:1–3), जनि्हें यहेजकेल ने करूबों पर देखा (यहेजकेल 1:1–28), जनि्हें दानयि्येल ने बादलों के बीच देखा (दानयि्येल 7:13–14), जनि्हें नबूकदनेसर ने उस भट्टी में देखा (दानयि्येल 3:92), जनि्हें अब्राहम ने अपनी तम्बू में स्वागत कयिा, जनि्हें याकूब ने तब तक नहीं जाने दयिा जब तक कि उसने उनसे आशीर्वाद प्राप्त नहीं कर लयिा (उत्पत्ति 32:24–32), जसिकी पीठ मूसा ने चट्टान पर देखी थी[8389] – यही वह हैं जनि्हें हमने पाया है, जनिका जन्म बनिा आरंभ के हुआ और जो अंतमि दनिों में प्रकट हुए[8390] । हे महान खजाने, जसिकी पूर्णता कभी समाप्त नहीं हो सकती! ये ऐसे धन हैं जो पदार्थ के नयिमों के अधीन नहीं हैं, जनिके अस्तत्वि की कोई शुरुआत नहीं है और जनिका अस्तत्वि ही नया है। 'हमने मसीहा को पा लयिा है, जसिका अर्थ है: मसीह।' कई मसीह हैं[8391] , लेकनि वे सभी नश्वर हैं। अब्राहम एक मसीह थे, लेकनि वे कब्र में सड़ गए; इसहाक भी एक मसीह थे, लेकनि उनकी हड्डयिाँ कब्र में पड़ी हैं। याकूब एक मसीह थे, लेकनि वे नश्वर थे। और मूसा एक मसीह थे, लेकनि उन्हें दफनाया गया—कसि स्थान पर, हम नहीं जानते। इसी प्रकार, दाऊद एक मसीह थे, लेकनि वे सभी मृत्यु के शकिार हुए, सभी मृत्यु के कैदी थे। केवल मसीह ही स्वभाव से सचमुच परमेश्वर हैं, लेकनि उन्होंने, मानवजाति के प्रति अपनी दया में, अपनी आगमना से कुँवारी के गर्भ को एक प्रकार की मुहर की तरह सील कर दयिा, और इन मछुआरों को अपनी चंगाइयों के स्रोतों के रूप में स्थापति कयिा। उसे सामर्थ्य, राज्य, महमिा और आराधना मलि, नरि्दोष और एकसार स्वभाव वाले पिता और पवत्रि आत्मा के साथ, एक ही सार के, अब और सदा के लिए, और युगों-युगों तक, आमीन।

[8385] अर्थात् – याद रखें कि पुराने नयिम का खतना अपने आप में कसिी व्यक्ति को उद्धार नहीं दे सकता।

[8386] 'वधिि के फटे-पुराने वस्त्र' – पुराना नयिम, जो मसीह के आगमन से अप्रचलति हो गया, अर्थात् जसिने अपनी पूर्व की महत्ता खो दी।

[8387] लखि हुए वधिान का जुआ – अर्थात् मूसा की व्यवस्था के आदेश और वधिान, जो मनुष्य के लिए एक भारी जुआ थे, वशिेष रूप से इसलिए क्योंकि व्यवस्था ने उन्हें उन्हें पूरा करने के लिए अनुग्रह-भरी शक्ति नहीं दी, ठीक वैसे ही जैसे, उदाहरण के लिए, मसीही धर्म में ऐसी शक्ति प्रदान की जाती है (2 पतरस 1:3), जसिे इसलिए एक 'अच्छा जुआ' और एक 'हल्का बोझ' कहा जाता है। (मत्ती 11:30)। लखिति व्यवस्था के जूए के भारी होने के बावजूद, इसने लोगों को इसके माध्यम से उद्धार की आनंदमय जागरूकता नहीं दी, न ही यह उनकी आध्यात्मकि भूख को शांत कर सकी (इसीलिए पाठ में आगे 'लखिति व्यवस्था की भूख' के बारे में बताया गया है)।

[8388] बेशक, पुराने नयिम के प्रकार थे, जो वभिन्नि स्तरों की स्पष्टता के साथ मसीह की ओर इशारा करते थे; उदाहरण के लिए, बलदिान के रूप में इसहाक की अब्राहम द्वारा की गई भेंट, मूसा को दखिाई देने वाली जलती हुई झाड़ी, पासोवर का मेमना, बादल और आग का स्तंभ, मन्ना, हारून की मुरझाई हुई लाठी, काँस्य का सर्प, नबी योना का व्हेल की पेट में तीन दनि का प्रवास, और इसी तरह।

[8389] मूसा परमेश्वर की महमिा देखना चाहते थे। लेकनि प्रभु ने उनसे कहा कि वे परमेश्वर का मुख नहीं देख सकते; तब उसने उसे चट्टान की एक दरार में रख दयिा, और अपने दाहनि हाथ से उसके ऊपर छा गया, और जब वह पास से गुज़रा, तो अपना हाथ हटा लयिा; और मूसा ने परमेश्वर की पीठ देखी, अर्थात् उसने परमेश्वर को कसिी बाहरी रूप या प्रतीक में देखा (नरि्गमन 33:18-23 और बाद के)।

[8390] यीशु मसीह के आगमन के समय के लिए पुराने नयिम में एक सामान्य संदर्भ (गनिती 24:14; नरि्गमन 2:2; मीका 4:1 और कई अन्य)।

[8391] यहाँ 'मसीह' शब्द सामान्यतः अभषिक्ति व्यक्ति के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है, अर्थात् वह व्यक्ति जसिे ईश्वर ने एक वशिेष सेवा के लिए बुलाया है।

ट्रोपारयिन, स्वर 4:

प्रेरतिों में प्रथम बुलाए गए और सर्वोच्च प्रभु के भाई, एंड्रयू, प्रार्थना करें कि सारी दुनिया को शांति मिले, और हमारी आत्माओं को महान दया मिले।

कॉन्टाकयिन, स्वर 2:

आओ हम ईश्वर-वाहक के नामधारी, कलीसिया के परम अनुयायी और पतरस के संबंधी की वीरता की प्रशंसा करें; क्योंकि जैसे उन्होंने प्राचीन काल में पुकारा था, वैसे ही अब वे हमसे पुकारते हैं: 'आओ, हमें वह मिल गया जिसे हम खोज रहे थे।'

भारत के आर्चबिशप, संत फ्रुमेंशियस का स्मरणोत्सव।

30 नवंबर को स्मरणोत्सव

कांस्टेनटाइन महान के शासन के अंत के करीब, मेरोपियस नामक एक ईसाई व्यापारी भारत[8392] और ब्लैक सी के तटों पर अन्य भूमि की यात्रा पर निकला। मेरोपियस के दो भतीजे थे: फ्रुमेंशियस और एडीसियस, जिन्हें वह अपने साथ ले गया, ताकि वह इन युवकों को उनके लिए अज्ञात भूमि, और अन्य लोगों के विभिन्न प्राकृतिक परिवेश, रीति-रिवाजों और परंपराओं से परिचित करा सके।

जब वे समुद्र पार कर रहे थे, तो प्रतिकूल हवाओं और ऊँची लहरों ने उनकी नाव को इथियोपिया के तट पर लाकर लगा दिया, जो जंगली बर्बर लोगों का देश था, जिन्होंने यात्रियों को बंदी बना लिया। कुछ मारे गए, जबकि अन्य समुद्र में डूब गए। मेरोपियस स्वयं मारा गया, लेकिन उसके भतीजों, फ्रुमेंशियस और ईदेसियस को बचा लिया गया और इथियोपिया के राजा को उपहार के रूप में अक्सुम शहर भेज दिया गया। राजा को दोनों युवकों से लगाव हो गया और वह उन्हें अपनी दरबार में रखना चाहता था। राजा के आदेश पर, युवकों को पढ़ाने के लिए विशेष पर्यवेक्षक और शिक्षक नियुक्त किए गए, ताकि उनकी शिक्षा पूरी होने पर उन्हें दरबार में पद दिए जा सकें।

बचपन से ही ईसाई धर्म में पले-बढ़े फ्रुमेंटियस और एडीसियस ने जल्द ही राजा के दरबारियों में अपनी बुद्धि और विद्वता के लिए खुद को अलग पहचान बना ली, और जल्द ही वे उसके दरबार में शक्तिशाली और प्रभावशाली हस्तियाँ बन गए।

राजा की मृत्यु के बाद, जब उनका छोटा बेटा अयज़ान इथियोपिया के सिंहासन पर बैठा, तो उन्हें और भी अधिक सम्मान मिला। फ्रुमेंशियस को अयज़ान का शिक्षक चुना गया। तब से, फ्रुमेंशियस, अपने भाई एडीशियस के साथ, पूरे देश पर अधिक प्रभाव डालते हुए, स्वतंत्र रूप से अपने धर्म का पालन करने में सक्षम थे। उस समय, कई रोमन और ग्रीक व्यापारी, जिनमें से अधिकांश ईसाई थे, ने इथियोपिया के साथ व्यापारिक संबंध स्थापित किए। एडेसियस और फ्रुमेंटियस व्यापार के सिलसिले में आने वाले व्यापारियों से परिचित हुए और उनके साथ पूजा सेवाओं का आयोजन किया, जिसके लिए उन्होंने एक छोटा सा चर्च बनाया। इसी समय, इथियोपियाई धीरे-धीरे फ्रुमेंशियस और एडीसियस के माध्यम से ईसाई धर्म से परिचित हुए और थोड़े-थोड़े करके, उन्होंने ईसाई धर्म और नैतिकता के सत्य को समझना शुरू कर दिया।

इस बीच, अयज़ान बड़ा हो गया था। तब एदेसियस और फ्रुमेंटियस ने राजा से अपने देश लौटने की अनुमति देने के लिए कहना शुरू कर दिया। कुछ हिचकिचाहट के बाद, अयज़ान ने उन्हें इथियोपिया छोड़ने की अनुमति दे दी। अनुमति मिलने पर, फ्रुमेंटियस और एदेसियस सबसे पहले जहाज से ग्रीस के लिए रवाना हो गए। ग्रीस पहुँचने पर, एदेसियस अपने माता-पिता की तलाश में अपने पैतृक देश टायर के लिए रवाना हो गया, ताकि वह अपने शेष जीवन में उनसे फिर कभी अलग न

[8392] यहाँ 'भारत' शब्द सामान्यतः ब्लैक सी (काला सागर) और हिंद महासागर के तटों पर स्थित देशों को संदर्भित करता है। इस सामान्य शब्द में इथियोपियाई, अरबी और ब्राह्मणिक भारत शामिल थे। इसलिए, प्रस्तावना में, संत फ्रुमेंशियस को भारत का आर्चबिशप कहा गया है, जो मिस्र के दक्षिण में स्थित भारत—विशेष रूप से, इथियोपियाई भारत—का सुसमाचार प्रचारक थे। अधिक सटीक रूप से, यह अब नूबिया और अबिसिनिया है।

हो। लेकिन फ्रुमेंटियस ने उसी इरादे से इथियोपिया नहीं छोड़ा। वह इस देश से जुड़ गया था, जो ईश्वर की कृपा से उसका दूसरा वतन बन गया था। वह इस बात की तीव्र इच्छा रखते थे कि यह देश आस्था में भी उनका अपना बन जाए। इसलिए, फ्रुमेंटियस ने पारिवारिक पुनर्मिलन की खुशियों पर परम आध्यात्मिक आनंद को चुना, और नई अबिसिनियाई चर्च का विवाह मसीह से कर दिया।

इस तरह के पवित्र विचारों से प्रेरित होकर, फ्रुमेंशियस टायर के लिए नहीं बल्कि अलेक्जेंड्रिया के लिए रवाना हो गए, जहाँ उस समय मसीह के चर्च के एक उत्साही रक्षक, संत अथेनासियस द ग्रेट, बिशप थे। संत अथेनासियस के निवास पर पहुँचने पर, फ्रुमेंटियस ने उन्हें विस्तार से बताया कि उसने और एडेसियस ने अबिसिनिया में क्या-क्या सहा था, जिसकी शुरुआत उस चमत्कारी दिव्य व्यवस्था से हुई थी जिसने उनकी रक्षा तब की थी जब उन्हें उन बर्बर लोगों द्वारा बंदी बना लिया गया था, जिन्होंने क्रूरता से मेरोपियस और उनके साथ के अन्य ईसाइयों का कत्लेआम कर दिया था। उन्होंने महान संत को समझाया कि ये बर्बर अब ईसाइयों से दूर नहीं भागते थे और यहाँ तक कि उन्होंने उनके जीवन-शैली और शिक्षाओं में भी झाँकना शुरू कर दिया था; अब उन्हें मसीह के सत्य के प्रकाश से आसानी से ज्ञान प्राप्त हो सकता था। इसके लिए पहले ही जमीन तैयार हो चुकी थी, और यह भूमि एक बोने वाले के आने की लालसा कर रही थी। इसलिए, फ्रुमेंटियस ने संत से विनम्रतापूर्वक आग्रह किया कि वे तुरंत एक बिशप और पुरोहितों को इथियोपिया भेजें।

फ्रुमेंशियस का वृत्तांत सुनने के बाद, संत अथेनासियस ने इन भाइयों की नियति में ईथियोपियाई लोगों के मसीह धर्म में धर्मांतरण के लिए ईश्वर की अद्भुत व्यवस्था को देखा। उस क्षण, उनके मन में आया कि सबसे अच्छा कदम यही होगा कि स्वयं फ्रुमेंटियस को इथियोपिया का बिशप नियुक्त किया जाए, क्योंकि वह देश के निवासियों की प्रथाओं, परंपराओं और भाषा को अच्छी तरह से जान गया था और वहाँ उनका सम्मान और स्नेह अर्जित कर चुका था।

तब धन्य अथेनासियस ने फ्रुमेंतियस से कहा:

'पैगनवाद के अंधकार को दूर करने और वहाँ दिव्य सुसमाचार की भोर लाने के लिए हम में से आपसे बेहतर कौन है?'

इसके बाद, संत अथेनासियस ने फ्रुमेंटियस को बिशप नियुक्त किया और, प्रेरितों के उत्साह के साथ, मूर्तिपूजकों को ज्ञान देने के लिए एक बार फिर इथियोपिया के लिए रवाना हो गए। सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण, उन्होंने स्वयं राजा आइज़ान को पवित्र बपतिस्मा ग्रहण करने के लिए मनाना शुरू किया। युवा राजा, जो फ्रुमेंशियस की सलाह लेने का आदी था और मन ही मन अपने शिक्षक के धर्म को अपनाने के लिए झुका हुआ था, ने पुनरुत्थित प्रभु पर उसके उपदेश को सच्ची आस्था के साथ सुना और मसीह के नाम पर बपतिस्मा लिया। उसके बाद राजा के कई दरबारी भी बपतिस्मा लेने लगे। प्रभु ने इस प्रेरितों के समान संत को चमत्कार करने का वरदान प्रदान किया; संत फ्रुमेंतियस ने, मसीह के नाम की शक्ति से, दानवों के वश में आए लोगों और विभिन्न रोगों से पीड़ित लोगों को ठीक किया। जहाँ तक उन लोगों का सवाल है, जिन्होंने अपनी ही तुर्कतापूर्ण दलीलों के माध्यम से मसीह की शिक्षाओं का इनकार किया और संत फ्रुमेंशियस द्वारा प्रचारित सुसमाचार पर विश्वास करने से इनकार कर दिया, उन्होंने उन्हें शैतान की शक्ति में सौंप दिया, *'ताकि उनकी आत्मा बच जाए',* जैसा कि प्रेरित कsays[8393] ने कहा; जिद्दी लोगों में से अन्य लोगों को उन्होंने पूरे शरीर के सूख जाने की बीमारी से पीड़ित कर दिया, जबकि अन्य लोगों को उन्होंने नेत्रहीन कर दिया। इस ईश्वर-पुरुष के वचन पर हुए ऐसे अचानक और भयानक चिह्नों के सामने, यहाँ तक कि सबसे हठी विधर्मी भी उसके सामने सिर झुकाने लगे और मसीह को परमेश्वर का पुत्र स्वीकार कर, फ्रुमेंतियुस से चंगाई प्राप्त की और बपतिस्मा लिया।

लोग उपदेशक के सुसमाचार की शक्ति से चकित रह गए, और राजा स्वयं यह उद्घोष करने से नहीं रोक सका:

'आप इतने वर्षों से हमारे बीच रहे हैं, और हमने आपसे एक भी चमत्कार नहीं देखा! तो फिर, अब यह कृपा कहाँ से आई है, और वह भी इतने कम समय में!?'

धन्य फ्रुमेंटीयस ने राजा और उसके आसपास के उन सभी लोगों को उत्तर दिया जो उसे अच्छी तरह जानते थे:

'यह मेरा वरदान नहीं है, मेरे मसीह में आदरणीय मित्रों, बल्कि स्वयं प्रभु मसीह का पुरोहितत्व का वरदान है। मैंने बहुत पहले ही आपके अच्छे इरादों और मसीह को स्वीकार करने की आपकी तत्परता को देख लिया था। इसलिए, अपना देश-विदेश छोड़कर और पारिवारिक बंधनों को त्यागकर, मैं प्रभु की पुकार का पालन करते हुए अलेक्जेंड्रिया के लिए रवाना हुआ और अलेक्जेंड्रिया की कलीसिया के प्रमुख, स्वयं महान अथानासियस को आपकी आध्यात्मिक प्यास के

[8393] अर्थात्, चर्च से बहिष्कार (1 कुरिन्थियों 5:5)।

बारे में बताया। उन्होंने मुझे पवित्र अभिषेक प्रदान किया और, प्रेरितिक अनुग्रह से प्रकाशित करके, मुझे प्रार्थना और आशीर्वाद के साथ आप लोगों के पास भेजा। यह परमेश्वर का वही पवित्र वर है, जो मुझमें होकर आप लोगों के बीच कार्य करता है—आप लोगों ने जो विश्वास के साथ सुसमाचार का वचन ग्रहण किया है—वे चिन्ह जो आप देखते हैं।

इस प्रकार इथियोपिया में मसीह की कलीसिया की नींव रखने के बाद, संत फ्रुमेंशियस ने इसके बाहरी और आंतरिक संगठन की उत्साहपूर्वक देखभाल करना शुरू कर दिया। उन्होंने नए धर्मांतरितों के लिए पूरे देश में चर्च बनवाए और हर जगह दिव्य सेवाओं की स्थापना की।

साथ ही, उन्होंने पवित्र शास्त्रों का इथियोपियाई भाषा में अनुवाद भी किया। इसके बाद, सुसमाचार का प्रचार पूरे इथियोपिया में और भी सफलतापूर्वक फैल गया।

और इस प्रकार संत फ्रुमेंशियस ने कई वर्षों तक एक ईश्वरीय जीवन जिया, अपने उदाहरण और अपने शब्दों से विश्वासियों को ईश्वर की आज्ञाओं का पालन करने में मजबूत किया, जिसके बाद वे लगभग 360 ईस्वी में शांतिपूर्वक प्रभु के पास चले गए, और इथियोपियाई चर्च को दृढ़ता से स्थापित छोड़ गए[8394] । संत की पवित्र अवशेषों से, उन सभी पर जो विश्वास और प्रार्थना के साथ उनकी ओर मुड़े, बिना रुके विभिन्न चमत्कारिक उपचार प्रदान किए गए , हमारे परमेश्वर, सच्चे मसीह की महिमा के लिए। आमीन।

14 दिसंबर

1 दिसंबर (पुराने कैलेंडर के अनुसार)

संत नूम द पैगंबर की स्मृति

1 दिसंबर को स्मरणोत्सव

पैगंबर सेंट नौम – तथाकथित 'छोटे पैगंबरों' में से बारह में से एक – गलील के एल्कोशा गाँव से थे[8395] ।

नाहूम की पुस्तक की मुख्य सामग्री ननिवे की गिरावट और विनाश के बारे में भविष्यवाणी[8396] , उन विपत्तियों की भविष्यवाणी जो धर्मी प्रभु इस शहर पर लाएंगे, और इस महान और भारी किलेबंदी वाले शहर के अंतिम और पूर्ण विनाश का एक जीवंत चित्रण है। नबी नहूम, ननिवे के पापों के दंड स्वरूप, और विशेष रूप से इस्राएल के राज्य के विनाश और सेनाकेरिब द्वारा यहोवा के विरुद्ध की गई धर्मनिंदा[8397] के लिए, ननिवे के विनाश की भविष्यवाणी करते हैं[8398] । इस प्रकार, नहूम उस भयानक भविष्यवाणी को दोहराते हैं जो भविष्यवक्ता योना द्वारा ननिवे के विरुद्ध की गई थी; ननिवे के

[8394] इस प्रकार, प्राचीन इथियोपिया का हिस्सा, वर्तमान अबिसिनिया, संत फ्रुमेंशियस द्वारा लाए गए ईसाई धर्म का उत्तराधिकारी है। अबिसिनियाई चर्च ने अलेक्जेंड्रिया की चर्च के साथ घनिष्ठ संबंध बनाए रखे, जिसके पैट्रिआर्क के अधीन अबिसिनियाई बिशप था। परिणामस्वरूप, एरियन अशांति और विवादों के दौरान, यह संत अथेनासियस महान की शिक्षाओं के प्रति वफादार, अर्थोडॉक्स बना रहा, इस तथ्य के बावजूद कि एरियन सिद्धांत के अनुयायी सम्राट कॉन्स्टैंटियस ने एबिसिनियाई लोगों के बीच एरियनवाद को फैलाने के लिए विभिन्न साधनों का इस्तेमाल किया। हालाँकि, अलेक्जेंड्रिया के चर्च के साथ इसी संबंध के परिणामस्वरूप, 5वीं शताब्दी में अबिसिनियाई चर्च भी, उसके साथ मिलकर, मोनोफिज़िटिवाद की विधर्म में भटक गया, जबकि विश्वास और पूजा के अन्य सभी पहलुओं में ऑर्थोडॉक्स सिद्धांत के प्रति वफादार रहा।

[8395] यही कारण है कि नबी स्वयं को एक एल्कोशियन या एल्कोसियन (नाहूम 1:1) कहता है। स्लावोनिक और अन्य अनुवादों के अनुसार, नबी नाहूम को एल्केसियस का पुत्र बताया गया है; लेकिन अधिकांश टीकाकार (उदाहरण के लिए, धन्य जेरोम, जेरूसलम के संत सिरिल, एपिफेनियस और अन्य लोग हिब्रू शब्द 'एलकोशी' (जिसे स्लावोनिक में 'एलकेसी का पुत्र' अनुवादित किया गया है) को नहूम के जन्मस्थान का नाम मानते हैं। धन्य जेरोम द्वारा दर्ज की गई एक परंपरा के अनुसार, एलकोशा नामक गाँव गलील के उत्तर में, इज़राइल के राज्य में स्थित था।

[8396] ननिवे असीरियनों की राजधानी थी, जिनसे यहूदी उस समय टकराव में थे। ननिवे मेसोपोटामिया में टिग्रिस नदी के पूर्वी तट पर स्थित थी। यह प्राचीन दुनिया का सबसे अधिक आबादी वाला और सबसे अमीर शहर था; इसका परिधि लगभग 84 वर्स्ट था।

[8397] *सनाकेरिब* – अस्सिरिया का राजा, शलमानेसर का पुत्र और उत्तराधिकारी, जिसने इस्राएल के राज्य को नष्ट कर दिया था।

[8398] यहोवा (हिब्रू 'यहोवा' से, जिसका अर्थ है 'वह जो है') ईश्वर के नामों में से एक है। यह दिव्य सत्ता की विशिष्टता, शाश्वतता और अपरिवर्तनीयता को दर्शाता है, और पवित्र धर्मग्रंथ में एकमात्र सच्चे ईश्वर को संदर्भित करने के लिए इसका लगातार उपयोग किया जाता है।

वनिाश के संबंध में योना की भवषि्यवाणी (योना 2:2) रद्द नहीं की गई थी, बल्कि केवल स्थगति कर दी गई थी। नबी योना के उपदेश के बाद थोड़े समय के लिए पश्चाताप करने वाले ननिदेह के लोग, यह देखकर कि योना की भवषि्यवाणी उनके वरिुद्ध पूरी नहीं हुई, अपने पूर्व दुष्ट कर्मों पर लौट आए; इस प्रकार उन्होंने फरि से परमेश्वर को क्रोधति कयिा और उनकी दीर्घ सहनशीलता का अपमान कयिा।

भवषि्यवाणी का अवसर इस प्रकार था: जब सनहेरीब की सेना यरूशलेम की दीवारों के नीचे चमत्कारकि रूप से नष्ट हो गई, और सनहेरीब धमकयिों के साथ पीछे हट गया, यहूदी, यद्यपि इस मुक्ति से प्रसन्न थे, उन्हें डर था कि सेनानाशरब अपनी असफलता से क्रोधति होकर, पहले से भी बड़ी सेना इकट्ठा करेगा और जैसा उसने धमकी दी थी, यरूशलेम की दीवारों पर वापस आ जाएगा। यहूदी लोगों को आश्वस्त और प्रोत्साहति करने के लिए, नबी नहूम ने अपना भाषण दयिा, जसिमें उन्होंने ननिदिेह के अंतमि वनिाश की भवषि्यवाणी की, जसिे एक प्रचंड बाढ़ द्वारा उजाड़ दयिा जाएगा, जबकि शिहर के खजाने लूट लिए जाएंगे और आग में नष्ट हो जाएंगे[8399] ।

नहूम की पूरी पुस्तक ननिदिेह के वनिाश के संबंध में परमेश्वर के भयानक वधिान का एक एकल, सुसंगत ववरिण है, क्योंकि वही (अर्थात् सनहेरीब) प्रभु के वरिुद्ध बुराई की साजशि रचने वाला वहाँ से आया था; जबकि यहूदा के राज्य को अस्सूर के जुए से मुक्त होने की भवषि्यवाणी की गई है। इसके बाद ननिदिेह की घेराबंदी और उसके वनिाश का वर्णन है, और अंत में यह समझाया गया है कि ननिदिेह अपनी मूर्तपिूजा, और वशिेष रूप से अपनी अश्लीलता और जादू-टोने के कारण, जसिके द्वारा उसने राष्ट्रों को दास बना लयिा था, ऐसे भाग्य का पूरी तरह से हकदार था। इसलिए, कोई भी रक्षा साधन इसे नहीं बचा पाएगा, और सभी राष्ट्र एक ऐसे क्रूर उत्पीड़क से मुक्त होकर प्रसन्न होंगे[8400] ।

नबी नहूम की सेवा का काल यहूदी राजा हजिकयि्याह के शासन के दूसरे भाग में आता है, यानी 745 से 714 ईसा पूर्व तक (इज़राइल के राज्य के वनिाश के बाद)।

नबी के जीवन के बारे में और कुछ ज्ञात नहीं है। परंपरा के अनुसार, उनकी मृत्यु 45 वर्ष की आयु में हुई और उन्हें उनके मूल देश में दफनाया गया।

कॉन्टाकयिन, स्वर 4:

आत्मा द्वारा शुद्ध कयिा गया आपका हृदय भवषि्यवाणी का सबसे उज्ज्वल धाम बन गया: क्योंकि आपने दूर की बात को भी उपस्थति के रूप में देखा। इसी कारण हम आपको सम्मानति करते हैं, धन्य भवषि्यवक्ता, महमिामय नहूम।

पवति्र और धर्मी दयालु फलिारेट का जीवन

1 दसिंबर को स्मरणोत्सव

[8399] *पानी* और आग *से* ननिवे के वनिाश के बारे में यह भवषि्यवाणी अक्षरशः पूरी हुई। ननिवे, जो अपने दुश्मनों (मीडयिा के राजा साइयाक्सारसि और बेबीलोन के राजा नबोपोलसर, लगभग 600 ईसा पूर्व) द्वारा घेराबंदी में था, तीन साल तक घेराबंदी में डटी रही; केवल तभी दुश्मन शहर में घुसने और उसे धूल चटाने में सफल हुए—जब ननिवे के लोग एक नई दीवार बना पाते—जब tigris नदी अपने तट से बाहर नकिलकर शहर की दीवारों को क्षय कर गई (नाहूम 3:14)। ननिवे के राजा sardanapalus ने, अपनी ही मुक्ति से नराश होकर और बंदी बनने के डर से, महल में ही एक बड़ी चति बनवाने का आदेश दयिा, अपने सारे खजाने को वहाँ इकट्ठा कयिा, और अपनी सभी उपपतयिों के साथ खुद को जला दयिा। इस प्रकार नहूम और एक अन्य महान भवषि्यवक्ता यशायाह (यशायाह 30:33) के भयानक वचन पूरे हुए।

[8400] ननिवे के पतन के वषिय की भवषि्यवाणी के अलावा, नहूम की पुस्तक में मसीही तत्व भी नहिति हैं: 'नहूम घोषणा करता है,' आदरणीय कहते हैं थयिोडोरेट, 'ननिवे, उसकी सेना और शहर का वनिाश, क्योंकि यद्यपि उन्होंने योना की उपदेश के बाद पश्चाताप कयिा, फरि भी उन्होंने इसे जल्द ही भूलकर इस्राएल के वरिुद्ध हथयिार उठा लिए'; लेकनि, वह आगे कहते हैं, 'इस पुस्तक में उद्धारकर्ता के वषिय में भी नम्निलखिति भवषि्यवाणी है: *'तुम्हारे वरिुद्ध एक वनिाशक उठ रहा है: कलिों की रखवाली करो, मार्ग पर पहरा दो, कमर कस लो, अपनी सारी सेना इकट्ठी करो'* (नाहूम 2:1) (स्लावोनकि में: 'जो तुम्हारे मुख पर फूँकता है'), क्योंकि जैसे परमेश्वर ने आदम में जीवन की साँस फूँकी, वैसे ही प्रभु मसीह *ने,* इस प्रतमिा को नया करते हुए, प्रेरतिों पर *'फूँका' और उनसे कहा: "पवति्र आत्मा ग्रहण करो"* (यूहन्ना 20:22)। इसलिए, नहूम की पुस्तक में, 'अश्शूरयिों के संपूर्ण कुचले हुए राज्य' से हम शैतान की शक्ति को समझते हैं, जसिे प्रभु मसीह ने परास्त कयिा, और 'यहूदा के आनंदति होने' से हम ब्रह्मांड को उसके उद्धार में आनंदति होते हुए समझते हैं। – नबी नहूम की पुस्तक का उपयोग ऑर्थोडॉक्स चर्च की दैवीय सेवाओं में नहीं कयिा जाता है।

'धन्य हैं दयालु, क्योंकि उन्हें दया मिलेगी' (मत्ती 5:7), प्रभु ने कहा। यह धन्य दयालु फलिरेत के मामले में सच हुआ, जिन्होंने गरीबों के प्रति अपनी महान दया के लिए, इस जीवन में और आने वाले जीवन में ईश्वर से एक समृद्ध पुरस्कार प्राप्त किया – जैसा कि उनका धन्य जीवन गवाही देता है।

धन्य फलिरेत पाफ्लागोनिया[8401] के अम्निया नामक गाँव[8402] में रहते थे। उनके कुलीन माता-पिता, जॉर्ज और अन्ना, ने उन्हें बचपन से ही धार्मिकता और ईश्वर के भय में पाला, और उनका जीवन पवित्रता और अन्य सभी प्रकार के सद्गुणों से परिपूर्ण था। वयस्क होने पर, फलिरेट ने थियोज्वा नाम की एक कुलीन और धनी युवती से विवाह किया, जिनसे उनके तीन संतान हुए: एक पुत्र, जॉन, और दो बेटियाँ, हाइपैटिया और इवान्थिया। ईश्वर ने धन्य फलिरेत को, जैसे प्राचीन काल में उन्होंने धर्मी अय्यूब को आशीर्वाद दिया था, उसकी संपत्ति में वृद्धि और प्रचुर धन-संपत्ति के साथ आशीर्वाद दिया। उनके पास अनगिनत झुंड और गाँव, उपजाऊ खेत और हर चीज़ की प्रचुरता थी; उनके खज़ाने हर सांसारिक भलाई से भरे थे, और उनके घर में बहुत सारे पुरुष और महिला नौकर काम करते थे। और फलिरेत उस देश के सबसे प्रतिष्ठित कुलीनों में से एक के रूप में जाने जाते थे। इतनी बड़ी संपत्ति के मालिक होते हुए भी, यह देखते हुए कि कितने लोग गरीबी और अत्यंत दरिद्रता से पीड़ित थे, उन्हें उनके प्रति दया आई और, अपने हृदय में भावुक होकर, उन्होंने अपने आप से कहा:

क्या मैंने वास्तव में प्रभु के हाथ से इतनी सारी आशीर्वादें केवल इसलिए प्राप्त की हैं कि मैं अकेले ही उनका आनंद लूँ और अपनी इच्छाओं की पूर्ति करते हुए सुख में जिएँ? क्या मुझे उस महान धन को, जो ईश्वर ने मुझ पर प्रदान किया है, उन दरिद्रों, विधवाओं, अनाथों, यात्रियों और गरीबों के साथ साझा नहीं करना चाहिए, जिन्हें प्रभु स्वर्गदूतों और मनुष्यों के सामने अंतिम न्याय के दिन अपने भाइयों कहने में लज्जित नहीं होंगे, क्योंकि वे कहते हैं: *' : "जो कुछ भी तुमने मेरे इन सबसे छोटे भाइयों में से किसी एक के लिए किया, वह तुमने मेरे लिए किया"'* (मत्ती 25:40)[8403] ? और न्याय के दिन मेरी सारी संपत्ति मुझे क्या लाभ पहुँचाएगी यदि मैं अपनी ही कंजूसी के कारण उन्हें केवल अपने लिए रखूँ? क्योंकि उस न्याय में, जिन्होंने दया नहीं दिखाई, उन्हें दया नहीं मिलेगी (याकूब 2:13)। क्या मेरी संपत्ति आने वाले जीवन में मेरे लिए अमर भोजन और पेय के रूप में काम करेगी? क्या मेरे सुंदर वस्त्र वहाँ अविनाशी वस्त्रों के रूप में काम करेंगे? नहीं, ऐसा नहीं होगा! क्योंकि प्रेरित कहते हैं: *'हम संसार में कुछ नहीं लाए, और यह स्पष्ट है कि हम* इसमें से *कुछ भी नहीं ले जा सकते'* (1 तीमुथियुस 6:7)। इसलिए, चूँकि हम यहाँ से अपने किसी भी सांसारिक सामान को अपने साथ नहीं ले जा सकते, तो यह कहीं बेहतर है कि हम उन्हें गरीबों के हाथों के द्वारा, एक तरह से उधार पर, ईश्वर को दे दें; क्योंकि परमेश्वर मुझे, न मेरी पत्नी को, न मेरे बच्चों को कभी त्यागेंगे। भविष्यवक्ता दाऊद मुझे इसकी गारंटी देते हैं, कहते हुए: *'मैं जवान था और अब बूढ़ा हो गया हूँ फिर भी मैंने कभी धर्मी को त्यागा हुआ नहीं देखा, न ही उनके वंशजों को रोटी के लिए भीख मांगते देखा है'* (भजन संहिता 36:25)।

अपने हृदय में इस प्रकार चिंतन करते हुए, धन्य फलिरेट गरीबों के प्रति दयालु हो गए, जैसे एक पिता अपने बच्चों के प्रति होता है: उन्होंने भूखों को भोजन दिया, नंगों को कपड़े दिए, यात्रियों का अपने घर में स्वागत किया, और स्नेहपूर्वक उन्हें हर संभव आराम प्रदान किया। और यह धर्मी पुरुष प्राचीन अतिथि-सत्कार करने वाले अब्राहम[8404] और गरीबों के प्रेमी अय्यूब के समान था। इसलिए, दया के कार्यों से सुसज्जित प्रकाश के ऐसे स्तंभ का छिपा रहना असंभव था, और वह एक पहाड़ी पर बसा नगर की तरह, पूरे देश में प्रसिद्ध हो गया (मत्ती 5:14)। सभी गरीब और बेसहारा लोग आश्रय की तलाश में उसकी ओर दौड़ते थे, मानो वह एक सुरक्षित ठिकाना हो। और उनमें से कोई भी उससे जो कुछ भी माँगता—चाहे वह भोजन हो, कपड़े हों, एक घोड़ा, एक बैल, एक गधा, या कुछ और—फलिरेत उसे उदारतापूर्वक प्रदान करता था।

[8401] *पाफ्लागोनिया* – एशिया माइनर के उत्तर में, बिथिनिया के पूर्व में एक क्षेत्र।

[8402] *अम्निया* – इसी नाम की नदी के मनोरम तट पर स्थित एक गाँव।

[8403] मत्ती 25:10. – प्रभु स्वयं पर वह सब कुछ मानते हैं जो कोई व्यक्ति इस सांसारिक जीवन में अपने पड़ोसियों या मसीह के अनुयायियों के लिए करता है, और उन्हें ऐसा इनाम देते हैं मानो उन्होंने यह व्यक्तिगत रूप से उनके लिए किया हो।

[8404] अर्थात्, पुराने नियम के पुरखों अब्राहम। अपने जीवन में, अब्राहम हमारे सामने कई और सबसे शिक्षाप्रद सद्गुणों का एक आदर्श प्रस्तुत करते हैं, जैसे: अपने पड़ोसी के प्रति प्रेम, नम्रता, धार्मिकता, धैर्य, शांतिप्रियता, उदारता, निस्वार्थता, अतिथि सत्कार, और विशेष रूप से – भक्ति, ईश्वर में दृढ़ और अटूट विश्वास और आशा, उनके प्रति गहरी नम्रता और श्रद्धा, उनके प्रति पूर्ण समर्पण, और उनकी इच्छा के प्रति पूर्ण समर्पण। – देखें (उत्पत्ति 11:1–32) और आगे।

लेकिन फिर वह समय आया जब प्रभु, जो मानवता के प्रेमी हैं, जो मानव जाति के भले के लिए सभी चीजों को निर्धारित करते हैं, ने धर्मी फिलारेट को, अपने प्राचीन सेवक अयोब की तरह, परीक्षाओं के अधीन होने दिया, ताकि संत का धैर्य भी अयोब की तरह प्रकट हो सके, और ताकि कसौटी में सोने की तरह परीक्षाओं से शुद्ध होकर, वह स्वयं को परमेश्वर का एक योग्य सेवक साबित कर सकें। यह तब शुरू हुआ जब धन्य फिलारेट गरीबी में पड़ गए; फिर भी इससे गरीबों के प्रति उनकी करुणा और दया में बिल्कुल भी कमी नहीं आई, और जो कुछ थोड़ा बहुत उनके पास बचा था, उससे वे ज़रूरतमंदों को देते रहे।

उस समय, ईश्वर की अनुमति से, इसमाइलियों ने[8405] उस भूमि पर आक्रमण किया जहाँ फिलारेट रहते थे; एक विनाशकारी आंधी और एक भस्म करने वाली लौ की तरह, उन्होंने पूरे देश को तबाह कर दिया और उसके कई निवासियों को बंदी बना लिया; फिलारेत के भेड़ों के सभी झुंड और बैलों, घोड़ों और गधों के सभी झुंड भी ले लिए गए, और उसके कई नौकर कैद कर लिए गए। फिर यह दयालु व्यक्ति इतनी बर्बादी में आ गया कि अंत में उसके पास केवल दो नौकर, एक जोड़ी बैल, एक घोड़ा और एक गाय ही बचे। जहाँ तक फ़िलारेत की बाकी संपत्ति का सवाल है, उसे या तो उसके अपने हाथों से दरिद्रों में उदारतापूर्वक बाँट दिया गया या इस्माइलियों द्वारा लूट लिया गया; जबकि उसके गाँव, बगीचे और खेत पड़ोसी किसानों द्वारा जब्त कर लिए गए, कुछ ने विनती करके और कुछ ने जबरदस्ती। और फ़िलारेत के पास जो कुछ बचा था, वह घर जिसमें वह रहता था और एक खेत था। इतनी गरीबी, अभाव और दुर्भाग्य सहने के बावजूद, इस नेक व्यक्ति ने कभी शोक नहीं मनाया और न ही शिकायत की और, एक दूसरे धर्मी अय्यूब की तरह, ईश्वर के सामने कोई पाप नहीं किया—एक शब्द से भी नहीं: 'उसने अपने होठों से पाप नहीं किया'[8406] । लेकिन जैसे कुछ लोग अपनी संपत्ति की प्रचुरता में आनंदित होते हैं, वैसे ही वह अपनी गरीबी में आनंदित था, जिसे वह एक महान खजाने के रूप में मानता था, यह समझते हुए कि गरीबी धन-संपत्ति की तुलना में मोक्ष का एक अधिक निश्चित मार्ग है, जैसा कि प्रभु ने कहा था कि *'एक धनी के लिए परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना कठिन है'* (मत्ती 19:23)[8407] .

एक दिन, अपने दो बैलों को लेकर, फिलारेट उस खेत की जुताई करने गया जो उसके पास अभी भी था। काम करते हुए, उसने परमेश्वर की स्तुति की और आनंदपूर्वक धन्यवाद दिया कि वह उनकी पवित्र आज्ञा के अनुसार अपनी ललाट की पसीने से अपना भोजन कमाना शुरू कर रहा था (उत्पत्ति 3:19), और यह कि श्रम उसे आलस्य से बचाता है—जो सभी बुराइयों का शिक्षक है।

उन्होंने प्रेरित के उन शब्दों को भी याद किया, जो आलसी और सुस्ती प्रेमियों को खाने से मना करते हैं: *'यदि कोई काम करने को तैयार नहीं है, तो उसे खाने न दिया जाए'* (2 थिस्सलुनीकियों 3:10)। और धन्य फिलारेत ने अपनी भूमि जोती, ताकि वह अपना भोजन खाने के लिए अयोग्य न सिद्ध हो।

उसी दिन एक साथी गाँववाला भी अपनी खेत जोत रहा था। और अचानक उसकी एक गाय बीमार पड़ गई और गिर पड़ी। किसान जोर-जोर से रोया और अत्यंत दुखी हुआ, और वह इस बात से और भी अधिक दुखी था क्योंकि वे गायें उसकी अपनी भी नहीं थीं - उसने उन्हें खेत जोतने के लिए बड़ी मुश्किल से अपने पड़ोसी से भीख माँगकर लिया था। तब उसे धन्य फिलारेट याद आए और उसने कहा:

'हाय, काश कि वह गरीबों का दयालु प्रेमी स्वयं गरीबी में न पड़ गया होता! मैं अब उसके पास जाता और निश्चय ही उससे एक नहीं, बल्कि दो बैल पाता। लेकिन वह स्वयं अब बहुत ज़रूरतमंद है, और उसके पास किसी की मदद करने के लिए कुछ भी नहीं है, चाहे उसकी इच्छा कितनी भी प्रबल क्यों न हो।' 'फिर भी, मैं उसके पास तो जाऊँगा ही,' उसने सोचा;

[8405] यहाँ *'इश्माएलियों'* (यानी इश्माएल की संतान) शब्द का अर्थ अरब - मुसलमानों से है - जिनकी शक्ति 8वीं शताब्दी ईस्वी में अपने चरम पर थी। मुस्लिम शक्ति का तीव्र और असाधारण विकास बाइजेंटाइयम के लिए एक आपदा था। मुसलमानों ने ग्रीकों के खिलाफ लगातार और विनाशकारी युद्ध किए। प्रसिद्ध अरब खलीफ़ा, हारून अल-रशीद ने बीजान्टियम के खिलाफ आठ विनाशकारी अभियानों का नेतृत्व किया; एशिया माइनर के क्षेत्र, जहाँ धर्मपरायण फ़िलारेत रहते थे, हमेशा इन हमलों से सबसे पहले पीड़ित होते थे। जब क्रूर दुश्मन पास आते, तो निवासी पहाड़ी दर्रों और जंगलों में शरण लेने के लिए दौड़ पड़ते, अपने घरों और आजीविका को किस्मत की दया पर छोड़ देते। अक्सर, दुश्मनों के चले जाने के बाद, फलते-फूलते क्षेत्र रेगिस्तान में बदल जाते थे। धर्मी फिलारेट के दिनों में भी ठीक ऐसा ही हुआ था।

[8406] *'क्या हम परमेश्वर से भलाई ग्रहण करें और विपत्ति न ग्रहण करें? इन सब में, अय्यूब ने अपने होठों से पाप नहीं किया'* (अय्यूब 2:10) – अर्थात्, उसने परमेश्वर के विरुद्ध कोई निन्दा नहीं की।

[8407] उद्धारकर्ता के इन वचनों पर टिप्पणी करते हुए, संत जॉन क्राइसोस्टोम कहते हैं: 'इन शब्दों से, मसीह धन को नहीं, बल्कि उन लोगों को निन्दा करते हैं जो इसके आदी हैं।'

'कम से कम, वह मुझ पर तरस तो खाएगा और, भले ही सरि्फ एक दयालु शब्द से ही सही, मुझे सांत्वना देगा और मेरे भारी दुख और गम को कम करेगा।'

अपना लाठी उठाकर, वह ग्रामीण धन्य फ़लिारेत से मलिने चल पड़ा और जब वह उन्हें खेत में काम करते हुए मलिा, तो उन्हें प्रणाम कयिा और आँखों में आँसू लिए, उन्हें अपनी दुखद खबर सुनाई – उसके बैल की अप्रत्याशति मृत्यु। धन्य फ़लिारेत ने, यह देखकर कि वह आदमी कतिना परेशान था, तुरंत अपनी एक गाय को जुए से खोल दयिा, उसे उस ग्रामीण को दे दयिा और कहा:

'भाई, मेरी यह गाय ले लो, और प्रभु का धन्यवाद करते हुए अपनी ज़मीन पर काम करो।'

जब उस कसिान ने यह उदार उपहार स्वीकार कयिा तो वह कृतज्ञतापूर्वक धन्य फ़लिारेत को प्रणाम करके बोला:

'हे प्रभु! आपका नरि्णय महान और सचमुच अद्भुत है, और आपकी दया परमेश्वर को प्रसन्न करती है; परन्तु जो दो बैल एक साथ काम कर रहे हों, उन्हें अलग करना अच्छा नहीं है, और आपके लिए केवल एक के साथ काम चलाना मुश्कलि होगा।'

धर्मी व्यक्ति ने उत्तर दयिा, 'भाई, यह बैल लो जो मैं तुम्हें दे रहा हूँ, और शांति से जाओ; मेरे घर पर अभी एक और बैल है।'

कसिान धन्य पुरुष के सामने जमीन पर झुक गया और, बैल लेकर, ईश्वर की स्तुति और अपने दयालु उपकारी को धन्यवाद करते हुए अपने रास्ते चल पड़ा।

फलिारेट, बचे हुए बैल को लेकर और जुए को कंधे पर लादकर, घर के लिए रवाना हो गया। जब वह अपने घर के दरवाजे पर पहुँचा, तो उसकी पत्नी ने, यह देखकर कि बैल आगे चल रहा था और उसका पति कंधों पर जुआ लादे पीछे-पीछे आ रहा था, उससे कहा:

'प्रभु! आपकी दूसरी बैल कहाँ है?'

फलिारेत ने उत्तर दयिा:

'जब मैं काम के बाद आराम कर रहा था, और बैल आजाद चर रहे थे, तो उनमें से एक भटक गया और खो गया - या शायद कसिी ने उसे ले जाकर छपिा दयिा।'

यह सुनकर, फलिारेट की पत्नी बहुत परेशान हो गई और उसने अपने बेटे को खोए हुए बैल की तलाश में भेजने की जल्दी की। कई खेतों में खोजने के बाद, युवक को आखरिकार अपना बैल उस कसिान की गाड़ी से जुता हुआ मलिा। बैल को पहचानकर, उसने गुस्से में कसिान से कहा:

'तुम दुष्ट, बेईमान इंसान! तुम्हारी हम्मित कैसे हुई कसिी और की गाय को जोतकर उससे काम कराने की? यह गाय तुम्हें कहाँ और कैसे मलिी और तुमने इसे अपने लिए जोत लयिा? क्या यह वही गाय नहीं है जो मेरे पति के खेत से खो गई थी? और तुमने, इसे पाकर, भेड़ये की तरह चुरा लयिा और इसे अपना बता दयिा। मुझे अपना बैल वापस कर दो, और अगर तुमने ऐसा नहीं कयिा, तो तुम्हें एक चोर के रूप में अदालत में इसका जवाब देना होगा!

कसिान ने नम्रता से जवाब दयिा:

'युवा व्यक्ति, एक संत के पुत्र, मुझ पर क्रोधति न हो, और जब मैं पूरी तरह से नरि्दोष हूँ तो मेरा अन्याय न करो। क्योंकि तुम्हारे पति ने, मेरी दुर्दशा और गरीबी पर दया करके, स्वेच्छा से मुझे अपनी यह गाय दी थी, क्योंकि मेरी अपनी गाय, जुए के नीचे काम करते समय, अचानक और अनपेक्षति रूप से गरि पड़ी थी।'

यह सुनकर, उस युवक को अपने अनुचति क्रोध पर शर्म आई। वह घर की ओर भागा और अपनी माँ को सारी बात बताई। वह, उसकी बात सुनकर, आँसू भरी आँखों से बोली:

'हाय रे मेरी कस्मित, एक नरि्दयी पति की गरीब पत्नी!'

और वह अपने बाल नोचने लगी और रोती-बलिखती अपने पति के पास दौड़ी और उन्हें फटकारने लगी:

'तुम एक नरि्दयी इंसान हो, पत्थर का दलि रखने वाले! तुमने समय से पहले हमें भूख से मार डालने का नश्चिय क्यों कर लयिा है? हमारे पापों के कारण, हम पहले ही अपनी सारी संपत्ति खो चुके हैं, लेकनि प्रभु, जो पापयिों पर भी दया करते हैं, ने हमें दो बैल दए हैं ताकि उनकी मदद से हम अपने बच्चों का पेट भर सकें; और तुम, जो कभी बड़ी दौलत में रहते थे और कभी अपने हाथों से काम नहीं करते थे, अब जब कि तुम गरीबी में हो, तो आलसी हो गए हो और मेहनत करने तथा जमीन जोतने से इनकार करते हो, बल्कि केवल अपने कमरे में आराम से रहना चाहते हो। और इसलिए तुमने अपना बैल

गाँववाले को परमेश्वर के लिए नहीं दिया, बल्कि अपने ही लिए दिया, ताकि तुम्हें उसे जुताई के लिए जोतने में मेहनत न करनी पड़े, और तुम आलस्य और आराम में जी सको। फिर भी, अगर तुम्हारी आलस्य के कारण मैं और तुम्हारे बच्चे भूख से मर गए, तो तुम प्रभु को क्या उत्तर दोगे?

अपनी पत्नी की ओर देखते हुए, धन्य फिलारेट ने उससे कोमल स्वर में कहा:

'सुनो कि स्वयं परमेश्वर, जो दया में धनी हैं, क्या कहते हैं: *"आकाश के पक्षियों को देखो: वे न बोते हैं, न काटते हैं, और न भण्डारों में इकट्ठा करते हैं; फिर भी तुम्हारा स्वर्गीय पिता उन्हें खिलाता है। क्या तुम उनसे कहीं अधिक मूल्यवान नहीं हो?"* (मत्ती 6:26); क्या वह हमारे लिए प्रावधान नहीं करेगा, जो पक्षियों से भी अनंत रूप से अधिक कीमती हैं? वह उन लोगों को सौगुना पुरस्कार देने का वादा करते हैं जो उनके और सुसमाचार के लिए अपने धन-संपत्ति को गरीबों में बाँटते हैं। तो, इस पर विचार करो: यदि एक बैल के बदले हमें सौ मिलते हैं, तो उस बैल के लिए हमें दुख क्यों करना चाहिए जिसे मैंने प्रभु के नाम पर ज़रूरतमंदों को दे दिया है?

इस कृपालु व्यक्ति ने ये शब्द इसलिए नहीं कहे कि वह इस सांसारिक जीवन में सौ गुना पुरस्कार की आशा से स्वयं को सांत्वना दे रहा था, बल्कि अपनी हतोत्साहित पत्नी को आश्वस्त करने के लिए कहे थे। और वह चुप हो गई, क्योंकि उसे अपने पति के बुद्धिमानी भरे शब्दों पर कोई आपत्ति नहीं हुई।

तब से पाँच दिन भी नहीं बीते थे कि वही बैल जिसे धन्य फिलारेट ने गाँव वाले को दिया था, एक जहरीली जड़ी-बूटी खाकर मर गया। इससे गाँव वाला हैरान रह गया, और फिलारेट के पास वापस आकर, उसने उससे कहा:

'महाराज! मैंने आपके और आपके बच्चों के खिलाफ पाप किया है, आपके जोड़े बैलों को अलग करके; निस्संदेह इसीलिए परमेश्वर ने मुझे आपके बैल से लाभ उठाने नहीं दिया, क्योंकि उसने किसी तरह की जड़ी-बूटी खा ली और मर गया।'

एक शब्द बोले बिना, धन्य फिलारेट ने तुरंत अपना आखिरी बैल लाया और उसे किसान को सौंपते हुए कहा:

'भाई, इस बैल को ले जाओ और इसे अपने साथ ले चलो; क्योंकि मुझे एक दूर की यात्रा पर जाना है, और मैं नहीं चाहता कि यह काम करने वाला बैल मेरे घर में मेरे बिना बेकार पड़े।'

उस धन्य व्यक्ति ने यह इसलिए कहा ताकि वह आदमी उससे दूसरे बैल को भी लेने से इनकार न कर दे। उस गाँव वाले ने बैल स्वीकार कर अपने घर लौट आया, और उस धन्य व्यक्ति की महान दया पर हैरान रह गया। इस बीच, फिलारेट के घर में, सभी को जल्द ही उसके इस काम के बारे में पता चल गया। बच्चों ने अपनी माँ के साथ रोना शुरू कर दिया और कहा:

'सचमुच, हमारे पिता निर्दयी हैं और अपने बच्चों से प्यार नहीं करते, क्योंकि वे हमारे आखिरी सामान को बर्बाद कर रहे हैं; हमारे पास भूखे न मरने के लिए बस दो बैल बचे थे, और उन्होंने वे भी एक अजनबी को दे दिए।'

अपने बच्चों के दुख और आँसू देखकर, धन्य फिलारेट ने उनसे ये शब्द कहे:

'मेरे बच्चों! तुम दुख में क्यों डूब रहे हो? तुम अपना और मेरा दुख क्यों बढ़ा रहे हो? क्या तुम सच में सोचते हो कि मैं निर्दयी हूँ? क्या मैंने सचमुच तुम्हें बर्बाद करने का निश्चय कर लिया है?' हौसला रखो: तुम्हें एक अज्ञात स्थान पर मैंने इतना धन और ऐसे खजाने संजोए हैं कि वे तुम्हारे जीवन के सौ वर्षों के लिए पर्याप्त होंगे, भले ही तुम कुछ भी न करो और किसी चीज़ की परवाह न करो। मैं स्वयं उन सभी खजानों को गिन भी नहीं सकता जो तुम्हारे लिए तैयार किए गए हैं।

ऐसा कहते हुए, धर्मी फिलारेट अपने बच्चों को धोखा नहीं दे रहे थे, बल्कि उन्होंने अपनी आध्यात्मिक आँखों से सचमुच देखा था कि भविष्य में क्या होने वाला था।

थोड़ी ही देर बाद, उस भूमि पर एक शाही फरमान पहुँचा, जिसमें सभी सैनिकों को अपनी-अपनी रेजिमेंट में इकट्ठा होकर ग्रीक साम्राज्य के विरुद्ध विद्रोह करने वाले अधर्मी बर्बर लोगों के खिलाफ मार्च करने का आदेश दिया गया था; यह आवश्यक था कि हर सैनिक पूरी तरह से सशस्त्र होकर और दो घोड़ों के साथ उपस्थित हो। और मुसलियिस नामक एक गरीब सैनिक को उन रेजिमेंटों में से एक में नियुक्त किया गया; उसके पास केवल एक ही घोड़ा था, लेकिन वह भी उसी क्षण अचानक बीमार पड़ गया और गिर पड़ा। घोड़ा खरीदने का कोई साधन न होने के कारण, वह गरीब सैनिक धन्य फिलारेट के पास गया और उनसे कहा:

'हे स्वामी! मुझ पर दया करें, मेरी मदद करें। मैं जानता हूँ कि आप स्वयं भी अत्यंत गरीबी में हैं, और आपके पास भी केवल एक ही घोड़ा है। लेकिन, दयालु प्रभु के वास्ते, मैं आपसे विनती करता हूँ, मुझे अपना घोड़ा दे दें, ताकि मैं ट्रिब्यून के हाथों में न पड़ूँ, और वह मुझे क्रूरता से न पीटे।'

धन्य फलिारेत ने उत्तर दयिा:

'भाई, मेरा घोड़ा ले लो और शांतसि जाओ; लेकनि यह जान लो: मैं तुम्हें यह सेनापतकिी सजा के डर से नहीं, बल्कि ईश्वर की दया के लिए दे रहा हूँ।'

उस योद्धा ने संत से घोड़ा लेकर, ईश्वर की स्तुतकिरते हुए उनसे वदिा ली। और संत फलिारेट के पास अपनी सारी संपत्तमिें से जो कुछ बचा था, वह था एक बछड़े वाली गाय, एक गधा और कुछ मधुमक्खी के छत्ते। इस बीच, दूर के एक प्रदेश का एक गरीब आदमी, दयालु फलिारेट के बारे में सुनकर, उनके पास आया और उनसे वनिती करने लगा, कहने लगा:

'हे स्वामी! मुझे अपने झुंड में से एक बछड़ा दे दें, ताकि आपका यह उपहार मुझ पर आपका आशीर्वाद बन जाए, क्योंकि मैं जानता हूँ कि आपकी उदारता कसिी भी घर में आशीर्वाद लाती है और उसे हर तरह से समृद्ध करती है।'

तब धन्य फ़लिारेत ने आनंदपूर्वक अपना एकमात्र बछड़ा लाया और उसे याचना करने वाले को देते हुए कहा:

'भगवान तुम्हें आशीर्वाद दें, भाई, और तुम्हारी हर ज़रूरत को पूरा करें।'

और वह आदमी फलिारेट को प्रणाम करके बछड़े को साथ लेकर चला गया। इस बीच, गाय अपने बछड़े को न देखकर उसे ढूंढने लगी और जब वह उसे कहीं नहीं मलिा, तो उसने एक ऐसा वलिापपूर्ण गर्जन कयिा जो पूरे आँगन में गूँज उठा। फलिारेत के पूरे घर वालों को उस गाय पर बहुत तरस आया, और फलिारेत की पत्नी वशिेष रूप से दुखी थी। आँखों में आँसू लिए, वह अपने पतकिो डाँटने लगी, कहती हुई:

'और कतिनी देर तक हमें तुमसे यह सब सहना पड़ेगा? तुम्हारी लापरवाही पर कौन हँसेगा? अब मुझे साफ़ दखि रहा है कि तुम अपनी पत्नी यानी मुझसे ज़रा भी प्यार नहीं करते, और तुमने अपने बच्चों को बर्बाद कर दयिा है; और अब तो तुमने अपनी बछड़ी को दूध पलिा रही एक बेज़ुबान जानवर को भी नहीं बख्शा, बल्कि उसे नर्दियता से उसकी माँ से छीन लयिा है। तो फरि, तुमने यह करके कसि पर एहसान कयिा है? तुमने अपने ही घर से आराम छीन लयिा और उसे दुख पहुँचाया है, और तुमने उस आदमी को भी अमीर नहीं बनाया जसिने तुमसे बछड़े के लिए भीख माँगी थी, क्योंकि उसका बछड़ा भी अपनी माँ के बनिा मर जाएगा, और यहाँ हमारी गाय अपने बछड़े के बनिा दुखी होगी और म्याऊँ-म्याऊँ करेगी; तो हमारे लिए या उस आदमी के लिए इसमें क्या लाभ है?

अपनी पत्नी के ये शब्द सुनकर, धर्मात्मा फलिारेट ने उसे सौम्य स्वर में उत्तर दयिा:

'अब तुमने बलि्कुल सच कहा, मेरी पत्नी! वास्तव में, मैं न तो दयालु रहा और न ही दयावान, क्योंकि मैंने छोटे बछड़े को उसकी माँ से अलग कर दयिा है; लेकनि अब मैं इससे बेहतर करूँगा।'

और, बछड़े को ले गए आदमी के पीछे दौड़ते हुए, फलिारेट ने उसे पुकारा:

'भाई, वापस आओ, बछड़े के साथ वापस आओ; गाय, अपने बछड़े के बनिा, हमें चैन नहीं देती—वह घर के दरवाज़े पर म्याँ-म्याँ कर रही है।'

यह सब सुनकर उस गरीब आदमी ने सोचा कि वह उसे दयिा हुआ बछड़ा वापस लेना चाहता है, और मन ही मन कहा: 'लगता है कि मैं इस धर्मात्मा आदमी से यह एक छोटा सा जानवर भी पाने का अधकिारी नहीं हूँ; शायद उसे उस पर दया आ गई है और वह मुझे इसे वापस करने के लिए बुला रहा है।' जब वह आदमी फलिारेट के पास लौटा, तो बछड़ी अपनी माँ को देखकर उसकी ओर दौड़ी, और माँ भी, एक आनंदति मधुर गर्जना के साथ, उसकी ओर भागी। बछड़ा, उसकी थनों से चपिका हुआ, लंबे समय तक अपनी माँ के पास से नहीं हटा, और फलिारेट की पत्नी थयिोज़ुवा, यह देखकर प्रसन्न हुई कि बछड़ा घर लौट आया था। जहाँ तक धन्य फलिारेट की बात है, उस गरीब आदमी को वहाँ उदास खड़े और एक शब्द बोलने की हम्मित भी न करते हुए देखकर, उन्होंने उससे कहा:

'भाई, मेरी पत्नी कहती है कि मैंने बछड़े को उसकी माँ से अलग करके पाप कयिा है, और वह सच कहती है। इसलिए, गाय को बछड़े के साथ ले जाओ और शांतसि जाओ; प्रभु तुम्हें आशीर्वाद दें और तुम्हारे झुंड को बढ़ाएँ, जैसे उन्होंने एक बार मेरे झुंड को बढ़ाया था!'

और वह आदमी गाय और बछड़े को लेकर आनंदति होकर घर चला गया। और परमेश्वर ने अपने सेवक फलिारेट के नमित्ति उसके घर को आशीष दी; उसे दी गई गाय और बछड़े से, कुछ ही वर्षों में उसके पास बैलों और गायों के दो से अधकि झुंड हो गए थे।

थोड़ी ही देर बाद, देश में अकाल पड़ा, और धर्मी फलिारेट गहरी गरीबी में आ गया; अपनी पत्नी और बच्चों को खलिाने के लिए उसके पास कुछ भी न होने पर, फलिारेट ने अपना एकमात्र गधा लयिा, जो उसे से मलिा था, और अपने एक दोस्त से मलिने के लिए वपिरीत दशिा में चल पड़ा; उससे छह माप गेहूँ उधार लेकर और उसे गधे पर लादकर, वह खुशी-

खुशी अपने घर लौटा और अपनी पत्नी और बच्चों को खाना खलिाया। जब फलिारेट अपनी यात्रा के बाद घर पर आराम कर रहे थे, तो एक भखिारी उनके पास आया और एक छलनी भर गेहूँ माँगने लगा।

'पत्नी!' अब्राहम के इस योग्य अनुयायी ने गेहूँ बोते समय उससे कहा, 'मैं इस भखिारी को एक माप गेहूँ देना चाहता हूँ।'

उसकी पत्नी ने उत्तर दयिा:

'जब तक तुम्हारे बच्चे और तुम्हारी पत्नी भरपेट खा लें, तब तक इंतज़ार करो, और सबसे पहले मुझे एक माप दो, और अपने बच्चों को एक-एक माप दो, और हमारे नौकर को भी एक माप दो; और जो कुछ बच जाए, उसे जसिे चाहो दे देना।'

उसने उसकी ओर देखा और हँसते हुए कहा:

'और मेरे लिए कुछ भी नहीं छोड़ोगी?'

'हाँ, क्योंकि आप एक देवदूत हैं,' थयिोज्वा ने जवाब दयिा, 'न कि एक इंसान, और आपको भोजन की ज़रूरत नहीं है; अगर आपको भोजन की ज़रूरत होती, तो आप उधार लयिा हुआ गेहूँ दूसरों को नहीं देते।'

फलिारेत चुपचाप दो माप गेहूँ नापकर भखिारी को दे दयिा। फरि फलिारेत की पत्नी ने अंततः दुख और खीझ में अपना आपा खो दयिा और उससे चल्लिाकर कहा:

'चलो, भखिारी को तीसरा हस्सिा भी दे दो, क्योंकि तुम्हारे पास बहुत सारा गेहूँ है।'

फलिारेत ने एक और माप नापकर उस गरीब आदमी को भेज दयिा। उससे नाराज़ फीओज्वा ने बची हुई गेहूं खुद और अपने बच्चों में बाँट ली। इस बीच, उधार ली हुई गेहूं जल्द ही खत्म हो गई, और फीओज्वा और उसके बच्चे फरि से भूखे रह गए।

तो वह अपने पड़ोसयिों के पास गई, उनसे आधा रोटी उधार माँगी, उसके साथ खाने के लिए कुछ भेड़ के पत्तों की सब्ज़ी पकाई, और उसे अपने भूखे बच्चों को दे दयिा; उसने खुद भी उनके साथ खाया, जबकि उन्होंने उस बूढ़े आदमी को अपने भोजन पर बुलाने का सोचा भी नहीं।

इस बीच, फलिरेट के एक पुराने दोस्त, जो एक अमीर आदमी था, ने उसकी दुर्दशा के बारे में सुना। उसने उसके लिए गेहूं से लदी चार गाड़यिाँ भेजीं, जनिमें से प्रत्येक में दस माप गेहूं था, और उसे लखिा: 'हमारे प्रयि भाई, हे ईश्वर के पुरुष! मैं तुम्हें और तुम्हारे परविार के लिए चालीस माप गेहूँ भेज रहा हूँ; और जब तुम यह सब खर्च कर लोगे, तो मैं तुम्हें उतना ही फरि से भेजूँगा; और तुम, हमारे लिए ईश्वर से प्रार्थना करना।"

यह उपहार स्वीकार करने के बाद, प्रभु की दया के लिए कृतज्ञता स्वरूप, फलिारेट जमीन पर गरि पड़े; फरि, उठकर स्वर्ग की ओर अपने हाथ फैलाकर, उन्होंने कहा:

'मैं तुझसे धन्यवाद करता हूँ, हे प्रभु मेरे परमेश्वर, कि तूने मुझे, अपने दास को, नहीं त्यागा, जसिने अपनी सारी आशा तुझ पर रखी है।'

ईश्वर की ऐसी कृपा देखकर, फलिारेट की पत्नी को आश्वासन मलिा और उसने वनिम्रता से अपने पति से कहा:

'प्रभु, मेरे और हमारे बच्चों के लिए जतिना गेहूँ आपको आवश्यक लगे, उतना अलग रख लीजए, और हमारे पड़ोसयिों से लयिा हुआ कर्ज भी चुका दीजए; जहाँ तक आपकी बात है, अपना हस्सिा लीजए और उससे अपनी इच्छा अनुसार कीजए।'

फलिारेत ने अपनी पत्नी की बात मानी और गेहूँ बाँट दयिा, अपने लिए पाँच माप रख लिए, जन्हिें उन्होंने दो दनिों में गरीबों में बाँट दयिा। इसने फरि से थयिोज्वा के क्रोध को भड़काया, और उसने उनके साथ खाना तक खाने से इनकार कर दयिा; इसके बजाय, वह बच्चों के साथ अलग, उनसे चोरी-छपिे भोजन करने लगी। एक दनि, धन्य फलिारेट ने उन्हें भोजन करते हुए देख लयिा और उनसे कहा:

'बच्चों! मुझे अपने भोजन में शामलि होने दो, अगर पति के रूप में नहीं, तो एक मेहमान और यात्री के रूप में।'

वे हँस पड़े और उन्होंने उनका स्वागत कयिा; भोजन करते समय, उनकी पत्नी ने उनसे कहा:

'हे स्वामी! आप वह खजाना हमसे और कतिनी देर तक छपिाए रखेंगे, जसिे आपने कहीं छपिा कर रखा है, जैसा कि आप कहते हैं?' शायद आप हमसे मज़ाक उड़ा रहे हैं और बेवकूफ़ बच्चों की तरह झूठे वादों से हमें चढ़ा रहे हैं? अगर यह सच है, तो हमें अपना खज़ाना दखिाएँ – फरि हम उसे लेकर अपने लिए कुछ खाना खरीदेंगे, और जैसा पहले करते थे, फरि से साथ में भोजन करेंगे।

'थोड़ा और इंतज़ार करो,' धन्य फलिारेट ने उत्तर दयिा, 'और जल्द ही तुम्हें वह महान खजाना दखिाया और दयिा जाएगा।'

आखरिकार, संत फलिारेट इतनी गरीबी में आ गए थे कि उनके पास शहद से भरे कुछ मधुमक्खी के छत्ते के अलावा कुछ भी नहीं बचा था, जनि पर वह, उनकी पत्नी और उनके बच्चे नरि्भर थे। फरि भी, ऐसी भीषण परस्थितियिों में भी, जब भी कोई ज़रूरतमंद उनके पास आता, तो वह अपना शहद उनके साथ बाँट देते, क्योंकि उनके पास देने के लिए रोटी नहीं थी। उनके परविार ने, यह देखकर कि इस प्रकार वे अपने जीवन-यापन के अंतमि साधन से भी वंचति हो रहे थे, चुपचाप शेष मधु इकट्ठा करने के लिए मधुमक्खयिों के छत्तों पर गए, लेकनि उन्हें केवल एक ही छत्ता मलिा, जसिसे उन्होंने अपने लिए सारा मधु ले लयिा। ठीक अगली सुबह एक भखिारी फरि से फलिारेट के पास आया और उससे भीख माँगी। फलिारेत मधुमक्खी के छत्ते पर गया, लेकनि वह पहले ही खाली हो चुका था; यह देखकर कि उसके पास भखिारी को देने के लिए कुछ भी नहीं है, धन्य फलिारेत ने अपना बाहरी वस्त्र उतारकर उसे दे दयिा। जब वह केवल अपने अंडरगारमेंट्स पहनकर घर लौटा, तो उसकी पत्नी ने उससे कहा:

'तुम्हारे कपड़े कहाँ हैं? क्या तुमने वे भी भखिारी को दे दएि?'

फलिारेत ने अपनी पत्नी को जवाब दयिा, 'मैं मधुमक्खी के छत्तों के पास चल रहा था, और उन्हें वहीं छोड़ आया।'

तब उसका बेटा उस जगह गया और अपने पति के कपड़ों का कोई नशिान न पाकर उसने अपनी माँ को इस बारे में बताया। अपने पति को इस तरह अव्यवस्थति देखकर शर्मदिा होकर, उसने अपनी ही एक पोशाक को पुरुषों की कमीज़ में बदल दयिा और फलिारेट को वह पहना दयिा।

[8408]उन दनिों, यूनानी साम्राज्य का सहिासन मसीह-प्रेमी रानी आइरीन और उनके पुत्र कॉन्स्टेंटाइन के पास था। चूंकि वह पहले ही वयस्क हो चुका था, इसलिए पूरे यूनानी साम्राज्य में सुंदर, सदाचारी और कुलीन कन्या की खोज के लिए चुने हुए, भरोसेमंद और समझदार पुरुषों को भेजा गया, जो युवा राजा कॉन्स्टेंटाइन से ववािह करने के योग्य हो। राजा की आज्ञा को यथासंभव सफलतापूर्वक पूरा करने के लिए उत्सुक, दूतों ने हर क्षेत्र, शहर और सबसे दूर-दराज के गाँवों तक की छानबीन की; अन्य स्थानों के अलावा, वे पाफ्लागोनयिा में अम्नयिा गाँव में पहुँचे।

जैसे ही वे पास पहुँचे, उन्हें दूर से ही फलिारेट का सुंदर और भव्य घर दखिाई दयिा, जो भव्यता में सभी से श्रेष्ठ था। यह सोचकर कि वहाँ आसपास का कोई कुलीन और धनी जमींदार रहता होगा, उन्होंने अपने नौकरों को वहाँ ठहरने की व्यवस्था और भोजन तैयार करने के लिए भेज दयिा। लेकनि शाही दूतों के साथ आए सैनकिों में से एक ने उनसे कहा:

'सज्जनो, उस घर में मत जाना, क्योंकि यद्यपि वह बाहर से बड़ा और सुंदर है, परन्तु भीतर से खाली है, इसलिए आपको वहाँ न तो कोई आराम मलिेगा, बल्कि बुनयिादी ज़रूरतें भी नहीं मलिेंगी; वहाँ एक अकेला बूढ़ा रहता है, जो इस क्षेत्र में सबसे गरीब है।'

हालाँकि, राजा के दूतों ने सैनकि की बातों पर वशि्वास नहीं कयिा और अपने नौकरों को आदेश दयिा कि वे जाकर उन्हें दयिा गया काम करें।

जहाँ तक धन्य फलिारेट की बात है, जैसे ही उन्होंने उन लोगों को अपने घर की ओर आते देखा, उन्होंने अपनी लाठी ली और उनसे मलिने बाहर गए; उनके सामने जमीन पर झुककर, उन्होंने उन्हें खुशी से स्वागत कयिा और कहा:

'प्रभु ने नश्चिय ही आपको, मेरे स्वामयिों, मेरे पास, अपने सेवक के यहाँ पहुँचाया है; मैं इसे अपना महान सम्मान मानता हूँ कि मुझे अपने इस वनिम्र आवास में ऐसे अतथियिों की मेजबानी करने का योग्य समझा गया।'

तब उस धन्य पुरुष ने अपनी पत्नी के पास दौड़ते हुए कहा:

'मेरी प्रयि थयिोज्वा, इन दूर से आए सम्मानति अतथियिों की मेजबानी के लिए एक शानदार भोज तैयार करो; मैं उनसे बहुत प्रभावति हूँ।'

थयिोज्वा ने उत्तर दयिा:

[8408] सम्राज्ञी आइरीन सम्राट लयिो चौथे खज़ार, जो एक मूर्तभिंजक थे, की पत्नी थीं। मूर्तयिों के प्रति उनकी उत्साही श्रद्धा के कारण, उन्हें अपने पति के हाथों उत्पीड़न सहना पड़ा। उनकी मृत्यु के बाद, आइरीन अपने छोटे बेटे कॉन्स्टेंटनि (780) के साथ सहिासन पर बैठीं। उनके शासनकाल में प्रतमिाओं की पूजा बहाल की गई और, उनकी ज़दि पर, सप्तम सार्वभौमकि परषिद बुलाई गई, जसिमें प्रतमिा पूजा की सच्चाई की घोषणा की गई और प्रतमिा-भंजन की नदिा की गई। [यह परषिद 787 में नकियिा में हुई थी।] आइरीन और लयिो चौथे का बेटा, कॉन्स्टेंटनि, 797 तक कॉन्स्टेंटनि छठे, पोर्फ्योरजेनटिस के रूप में शासन कयिा। अपने बेटे की मृत्यु के बाद, आइरीन ने 802 तक शासन करना जारी रखा।

'लेकिन मैं एक अच्छा भोजन तैयार करने के लिए क्या इस्तेमाल करूँ? हमारे पूरे घर में न तो कोई मेमना है और न ही कोई मुर्गी। मैं बस कुछ क्वैकग्रास पका सकती हूँ, जो हम खुद खाते हैं, और वह भी बिना तेल के; जहाँ तक तेल और शराब की बात है, मुझे याद भी नहीं कि वे आखिरी बार हमारे घर में कब थे।'

लेकिन उसके पति ने उससे फिर कहा:

'बस आग जलाओ और ऊपरी कक्ष तैयार करो, और हमारी पुरानी हाथीदांत की खाने की मेज़ धो दो – क्योंकि प्रभु, जो सभी प्राणियों को पोषण देते हैं, हमें उन लोगों का सत्कार करने के लिए भोजन प्रदान करेंगे।'

फीओज्वा ने अपने पति की आज्ञा और इच्छा को पूरा करने का काम शुरू कर दिया। इस बीच, उस गाँव के धनी निवासियों को जब पता चला कि राजा के दूत फिलारेट के घर ठहरे हुए हैं, तो वे भेड़ें, नर भेड़ें, मुर्गियाँ और कबूतर, रोटी और शराब तथा इतने सारे मेहमानों की मेजबानी के लिए आवश्यक सभी चीजें लेकर वहाँ दौड़े-दौड़े आए। इन भेंटों को प्राप्त कर, फियोज्वा ने उनसे विभिन्न व्यंजन तैयार करना आरंभ किया और ऊपरी कक्ष में रात्रिभोज का आयोजन किया। यहीं शाही दूत रात्रिभोज के लिए एकत्रित हुए, एक अत्यंत गरीब व्यक्ति के घर में उस कक्ष की भव्यता और सोने से दमकते हाथीदांत के शानदार भोजन-मंच को देखकर विस्मित हुए। लेकिन सबसे अधिक उन्हें मेज़बान की गहरी आत्मीयता से भरी आतिथ्य-सत्कार ने प्रभावित किया, जो अपने रूप-रंग और आचरण में स्वयं अतिथि-प्रेमी अब्राहम की तरह था। जब मेहमान मेज पर बैठे थे, तब धन्य फिलारेट का पुत्र – जॉन, जो अपने पिता जैसा ही दिखता था – अंदर आया, और धन्य व्यक्ति के पोते भी इकट्ठा हो गए, और वे बड़ी लगन से मेज पर मेहमानों की सेवा करने लगे। उन्हें देखकर, मेहमान उनके गरिमामय और उचित आचरण पर चकित हो गए और फिलारेट से पूछा:

'हमसे कहिए, अति सम्माननीय पुरुष, क्या आपकी कोई पत्नी है?'

'हाँ, मेरे स्वामिनो,' फ़िलारेत ने उत्तर दिया, 'और ये युवक मेरे बच्चे और पोते-पोतियाँ हैं।'

और ज़ार के दूतों ने उससे कहा:

'तो अपनी पत्नी को यहाँ आने दो कि वह हमारा अभिवादन करे।'

फीओज्वा आगे आईं। उन्हें देखकर—एक ऐसी महिला जो यद्यपि अब एक निश्चित आयु की थीं, फिर भी सुंदर थीं—उन्होंने पूछा:

'क्या तुम्हारी कोई बेटियाँ हैं?'

'मेरी बड़ी बेटी,' धन्य फिलारेट ने उत्तर दिया, 'की तीन बेटियाँ हैं।'

तब मेहमानों ने कहा:

'उन युवतियों को यहाँ आने दो ताकि हम उन्हें देख सकें; क्योंकि हमें हमारे राजाओं, जिन्होंने हमें भेजा है, से आदेश मिला है कि हम पूरे ग्रीक प्रांतों की सभी युवतियों का निरीक्षण करें और उनमें से सबसे सुंदर, शाही विवाह के योग्य, को चुनें।'

लेकिन धन्य व्यक्ति ने कहा:

'ये बातें हम पर, हे हमारे स्वामियों और शासकों, लागू नहीं होतीं, क्योंकि हम तो आपके सेवक, गरीब और बेसहारा हैं। फिर भी, अब परमेश्वर ने जो कुछ दिया है, उसे खाओ और पियो, और आनंद करो, और अपनी यात्रा से विश्राम करो, और सो जाओ; और कल – प्रभु की इच्छा पूरी हो!'

सुबह, जब सूरज पहले ही निकल चुका था, फिलारेत के विशिष्ट मेहमान जाग उठे और उन्होंने उससे कहा:

'मेरे स्वामी, आज्ञा करें कि आपकी पोतियों को हमारे पास लाया जाए, ताकि हम उन्हें देख सकें।'

धन्य फिलारेट ने उत्तर दिया, 'जैसा आप आज्ञा दें, मेरे स्वामिनो, वैसा ही होगा। हालाँकि, मैं आपसे विनम्रतापूर्वक निवेदन करता हूँ कि कृपया मेरे घर के भीतरी कक्षों में आइए, जहाँ आप हमारी कन्याओं को देखेंगे, क्योंकि वे पहले कभी हमारी इस साधारण कुटिया से बाहर नहीं निकली हैं।'

मेहमान तुरंत उठे और फिलारेट के पीछे उनके पारिवारिक कक्षों में चले गए; वहाँ उनकी मुलाकात तीन युवतियों से हुई, जिन्होंने विनम्रता और सम्मानपूर्वक मेहमानों के सामने सिर झुकाया। जब शाही दूतों ने देखा कि फ़िलारेत की पोतियाँ ग्रीक प्रांतों में अब तक देखी गई सभी युवतियों में सबसे सुंदर थीं, तो वे अपनी उमड़ती हुई विस्मय की भावना व्यक्त किए बिना नहीं रह सके, और बोले:

'हम प्रभु का धन्यवाद करते हैं, जिन्होंने हमारी हृदय की इच्छा पूरी की है, क्योंकि इन कन्याओं में से एक हमारी ज़ार के लिए एक योग्य वधू होगी - हम इससे बेहतर नहीं पा सकते थे, भले ही हमें पूरे ब्रह्मांड में खोज करनी पड़ती।'

और, राजा की गरमिा के अनुरूप, उन्होंने वर के लिए धन्य फलिारेट की सबसे बड़ी पोती, मारयिा नाम की, को चुना, जो अपनी बहनों से लंबी थी। अपने मशिन की सफलता से संतुष्ट होकर, शाही दूतों ने मारयिा को, उसके पतिा और माता, उसके दादा और सभी करीबी रश्तिेदारों के साथ - कुल तीस लोगों को - आमंत्रति कयिा और उनके साथ शाही राजधानी, कॉन्स्टेंटनिोपल के लिए रवाना हो गए। उनके साथ अन्य क्षेत्रों से चुनी गई दस और कन्याएँ थीं, जनिमें गेरोन्टयिस नामक एक कुलीन व्यक्तकिी सुंदर पुत्री भी शामलि थी। इस यात्रा के दौरान, धन्य फलिारेट की बुद्धमिान और वनिम्र पोती ने अपनी सहेलयिों, अन्य कन्याओं से, इन शब्दों में संबोधति कयिा:

'हे मेरी बहनों, कन्याओं! चूँकि हम सभी यहाँ एक ही कारण से एकत्रति हैं—राजा के समक्ष प्रस्तुत होने के लिए—तो आइए हम आपस में यह तय कर लें कि जब स्वर्ग का राजा हम में से कसिी एक को राजा की रानी बनाकर एक सांसारकि राज्य प्रदान करे, तो हमें कैसे व्यवहार करना है। चूंकि हम सभी के लिए इस उत्कृष्ट पद को प्राप्त करना असंभव है, और हम में से केवल एक ही चुनी जाएगी, तो वह अपनी शाही महमिा में हमारी याद रखे और अपनी सुरक्षा से हमें वंचति न करे।

कुलीन गेरोंटयिस की पुत्री ने मरयिम से उत्तर दयिा:

'यह आप सभी को ज्ञात हो कि आप में से कोई भी मेरी सवािय राजा की पत्नी के रूप में नहीं चुना जा सकता, क्योंकि मैं कुलीन जन्म, धन, सुंदरता और ज्ञान में आप सभी से श्रेष्ठ हूँ; आपकी गरीबी, कुरूपता और सादगी को देखते हुए, आप केवल अपने चेहरों की सुंदरता पर भरोसा करके शाही कक्षों में प्रवेश करने की उम्मीद कैसे कर सकती हैं?'

ये मूर्खतापूर्ण और घमंडी शब्द सुनकर मरयिम चुप हो गईं, लेकनि उन्होंने स्वयं को ईश्वर की इच्छा के हवाले कर दयिा और अपने दादा, पवत्रि वृद्ध की प्रार्थनाओं पर अपना भरोसा रखा।

आखरिकार, राजदूतों का काफलिा कॉन्स्टेंटनिोपल पहुँचा और युवतयिों को शाही महल ले जाया गया, जहाँ उनके आगमन की सूचना तुरंत राजा के वश्विस्त और महल के प्रबंधक, स्टैव्रकियिोस को दी गई। अन्य लोगों से पहले जेरोंटयिस की बेटी को स्टाव्रकियिोस के सामने पेश कयिा गया। अनुभवी दरबारी की तीक्ष्ण दृष्टि से उसका अहंकार छुपा न रह सका, और उसने उससे कहा:

'तुम सुन्दर और मनोहर हो, युवती, लेकनि तुम राजा की पत्नी नहीं हो सकतीं।'

और, उस पर उदारतापूर्वक उपहार लुटाकर, उसे घर भेज दयिा। इस प्रकार धर्मग्रंथ का वचन पूरा हुआ: *'जो कोई अपने आप को बड़ा करता है, वह नीचा कयिा जाएगा, और जो कोई अपने आप को नीचा करता है, वह बड़ा कयिा जाएगा'* (लूका 18:14)।

इन सब के बाद, धर्मी फलिारेट की पोती, मारयिा को, उसकी माँ, उसके दादा और उसके सभी रश्तिेदारों के साथ प्रस्तुत कयिा गया। उन्हें देखकर, राजा, उसकी माँ और स्टाव्रकिी उनकी आंतरकि अच्छाई और शष्टिाचार से प्रभावति हुए। हर कोई मरयिम की सुंदरता को देखकर बहुत चकति हुआ, क्योंकि उसके अच्छे गुण—वनिम्रता, नम्रता और ईश्वर का भय—उसके चेहरे पर स्पष्ट रूप से झलक रहे थे। अपनी आँखें शर्मीलेपन से झुकाए, मरयिम राजा के सामने खड़ी थी, जबकि उसके गालों पर एक तेज लाली छा गई थी। राजा को वह बहुत पसंद आई, और उसने उसे अपनी दुल्हन के रूप में सगाई कर ली। उनकी दूसरी बहन को राजा के करीबी एक कुलीन व्यक्त, प्रतष्ठिति कुलीन[8409] कॉन्स्टेंटयिस ने अपनी दुल्हन के रूप में चुना, जबकि उनकी तीसरी बहन का ववािह लोम्बार्ड्स के शासक[8410] से कर दयिा गया, ताकि इस रश्तिेदारी के माध्यम से, धन्य फलिारेट की पोती के साथ राजा के ववािह के साथ बड़ी धूमधाम से उत्सव मनाया जा सके; जसिमें राजा के कुलीनों, जनता और धन्य फलिारेट के पूरे परविार ने भाग लयिा। राजा ने धन्य एल्डर से सच्चे मन से प्रेम कयिा और उन्हें गर्मजोशी से गले लगाकर उनके पूजनीय सरि पर चूम लयिा। फलिारेत और उनके पूरे परविार की धार्मकिता की प्रशंसा करने के बाद, ज़ार ने उन सभी को बड़े सम्मान दिए और उन्हें चाँदी, सोना और कीमती पत्थर, शानदार वस्त्र, बड़े और सुंदर घर, और अन्य संपत्तयिाँ भेंट कीं। इस प्रकार धन्य वृद्ध को सम्मानति करके और उन्हें चूमकर, राजा ने उन्हें और उनके परविार को उस भव्य आवास में भेज दयिा जो उन्होंने उन्हें प्रदान कयिा था।

[8409] *'पैट्रसियिन' की* उपाधि मूल रूप से केवल सीनेटरों के बच्चों के लिए थी, जन्हिें लैटनि में 'रेंजयिा' के नाम से जाना जाता था। बाद में, यह उपाधि सभी कुलीन रोमन वंशज लोगों पर लागू होने लगी। हालाँकि, सम्राट कॉन्स्टेंटनि ने 'पैट्रसियिन' की उपाधि को एक व्यक्तगित सम्मान बना दयिा, जो उच्च-पदस्थ अधकिारयिों को प्रदान की जाती थी लेकनि यह वंशानुगत नहीं थी।

[8410] *लोम्बार्ड* जर्मनकि जनजातयिों में से एक थे।

इतने भव्य उपहार प्राप्त करने के बाद, फलिारति की पत्नी, उसके बच्चे और उसके पूरे परविार ने फलिारति के उन शब्दों को याद कयिा, जन्हिोंने उन्हें एक से अधकि बार बताया था कि वह एक गुप्त स्थान पर खजाने रखते थे, जसिे ईश्वर ने उनके लिए तैयार कयिा था। संत के चरणों में गरिकर, उन्होंने उनसे कहा:

'हे हमारे स्वामी, हमें उस मूर्खता के लिए क्षमा करें, जसिसे हम सभी ने आपके वरिुद्ध पाप कयिा है!' गरीबों और ज़रूरतमंदों को आपके उदार दान के लिए आपको दोष देने और फटकारने के लिए हमें क्षमा करें। हमें अब जाकर एहसास हुआ है कि *'धन्य है वह जो गरीबों [और ज़रूरतमंदों] के बारे में सोचता है!'* (भजन संहति 40:2)। सचमुच, जो कुछ भी कोई मनुष्य ज़रूरतमंद भाई को देता है, वह स्वयं परमेश्वर को देता है, जो इस संसार में उसे सौ गुना फल देते हैं और अनंतकाल में उसे धन्य जीवन प्रदान करते हैं। देखो, हे परमेश्वर के जन, गरीबों को दिए गए तुम्हारे दान के कारण, प्रभु ने तुम्हारे और हम सभी के लिए अपनी प्रचुर दया भेजी है।

तब धन्य वृद्ध ने स्वर्ग की ओर अपने हाथ उठाए और पुकार कर कहा:

'धन्य है वह परमेश्वर, जसिकी दृष्टि में यह प्रसन्न करने वाला था। *"अब से और सदा के लिए यहोवा का नाम धन्य हो"* (भजन संहति 112:2)।

तब अपने परविार की ओर मुड़कर, फलिारेट ने कहा:

'मेरी बात सुनो: हम एक बढ़यिा भोजन तैयार करें और हमारे राजा और प्रभु से, उनके सभी कुलीनों के साथ, हमारे यहाँ आकर भोजन करने का आग्रह करें।'

'जैसा आप चाहें,' उन्होंने उत्तर दयिा, 'वैसा ही हो!'

जब दावत के लिए सब कुछ तैयार हो गया, तो वह धन्य व्यक्ति अपने घर से बाहर नकिला और शहर तथा उसके आसपास के इलाकों में गरीबों, कोढ़यिों, अंधों, लंगड़ों, बुज़ुर्गों और बीमारों को ढूंढने लगा। जब वह उनमें से लगभग दो सौ को इकट्ठा कर चुका, तो वह उन्हें अपने घर ले आया और, उन्हें कुछ समय के लिए द्वार पर छोड़कर, अकेले अपने घर में गया और उनसे कहा:

'मेरे बच्चों! राजा अपने कुलीनों के साथ आ रहे हैं। भोज के लिए सब कुछ तैयार है क्या?'

'सब कुछ तैयार है, आदरणीय पतिाजी,' उन्होंने उत्तर दयिा।

परम धन्य ने भखिारयिों को अपने हाथ से इशारा कयिा, और, अपने घरवालों के अकथनीय आश्चर्य के लिए, भखिारयिों और दरदि्रों की एक बड़ी भीड़ घर में प्रवेश कर गई; फलिारेट ने उनमें से कुछ को मेज पर बठिाया, जबकि अन्य, , जगह की कमी के कारण, फर्श पर बैठने पड़े, और घर का स्वामी स्वयं उनके बीच में बैठ गया। यह देखकर, फलिारेत के घर वालों को एहसास हुआ कि जब वह ज़ार की बात कर रहे थे, तो उनका मतलब स्वयं मसीह से था, जो अब भखिारयिों के भेष में उनके घर में प्रकट हो रहे थे, और यह कि स्वर्गीय ज़ार के कुलीनों का कोई और नहीं बल्कि गरीबों का पूरा समुदाय था, जो अपनी प्रार्थनाओं के माध्यम से परमेश्वर के सामने बहुत कुछ प्राप्त कर सकते हैं। और घर वालों ने अपने पति की महान वनिम्रता पर आश्चर्य कयिा, जन्हिोंने इतनी महमिा प्राप्त करने और रानी के दादा होने के बावजूद, दान-पुण्य के प्रति अपना प्रेम नहीं भूला था, और अब भखिारयिों और गरीबों के बीच बैठकर, एक सेवक की तरह उनकी सेवा कर रहे थे। और उन्होंने कहा:

– सचमुच, वह परमेश्वर का मनुष्य और मसीह का सच्चा चेला है, जसिने मसीह की आज्ञा को अच्छी तरह सीखा है, जसिने कहा: *'मेरे से सीखो, क्योंकि मैं मन में कोमल और दीन हूँ* (मत्ती 11:29)।

धन्य ने अपने पुत्र यूहन्ना – जो पहले से ही एक स्पैथारयिो[8411] थे – तथा अपने पोते-पोतयिों को भी आज्ञा दी कि वे भोजन-पटल पर उपस्थति रहें और वहाँ लेटे हुए भाइयों की सेवा करें। तत्पश्चात् अपने सम्पूर्ण परविार को बुलाकर, धन्य ने कहा:

'देखो, मेरे बच्चों, तुमने ईश्वर की दया पर भरोसा करके, बलि्कुल अप्रत्याशति रूप से ईश्वर से धन प्राप्त कयिा है, जैसा कि मैंने तुमसे वादा कयिा था। यह वादा पूरा हो गया है। बताओ, क्या मैं तुम पर अभी भी कुछ बकाया हूँ?'

वे, उनके पूर्ववर्ती शब्दों को याद करते हुए, रो पड़े और एक स्वर में कहा:

'सत्य कहता हूँ, हे स्वामी, आप ईश्वर के पुरुष की भाँति भविष्यदृष्टा हैं; परन्तु हम मूर्ख थे कि हमने आपको, हे आदरणीय वृद्ध, क्रोधति कयिा। अतः हम आपसे वनिती करते हैं: हमारे अज्ञान के पापों को स्मरण न करें!'

[8411] *एक स्पैथारयिस* एक घोड़सवार और शाही अंगरक्षक था।

तब धन्यवर ने उनसे कहा:

'प्रभु दयालु और उदार हैं, उन्होंने हमारे द्वारा उनके नाम पर गरीबों को दिए गए थोड़े से दान के लिए हमें सौ गुना का इनाम दिया है; लेकिन यदि आप अनंत जीवन का वारिस बनना चाहते हैं, तो आप में से प्रत्येक इस गरीब भाईचारे के लिए दस सोने के सिक्के अलग रखे, और प्रभु उन्हें आपसे विधवा के दो पैसे की तरह स्वीकार करेंगे।'

वे पूरे दिल से उसकी इच्छा पूरी करने के लिए दौड़े-भागे। और धन्य फिलारेत ने, गरीबों को पर्याप्त भोजन कराने के बाद, उनमें से प्रत्येक को एक सोने का सिक्का दिया और उन्हें विदा कर दिया।

कुछ समय बाद, धन्य फिलारिति ने अपनी पत्नी और बच्चों को एक बार फिर बुलाया और कहा:

'हमारे प्रभु ने कहा: *"मेरे लौटने तक उन्हें काम पर लगा दो"* (लूका 19:13)। और मैं इस दैवीय आज्ञा का पालन करना चाहता हूँ; मैं राजा द्वारा मुझे प्रदान की गई संपत्ति का एक हिस्सा बेचना चाहता हूँ; तो, तुम मुझसे यह हिस्सा खरीदना और मुझे सोना देना, क्योंकि मुझे इसकी आवश्यकता है; लेकिन यदि तुम इसे खरीदने के इच्छुक नहीं हो, तो मैं इसे अपना सब कुछ मेरे भाइयों - गरीबों में बाँट दूँगा; क्योंकि मेरे लिए रानी का दादा कहलाना ही काफी है।

उन्होंने उसकी संपत्ति का मूल्यांकन किया, और उससे 60 लीटर[8412] सोने के लिए खरीद ली। यह सोना प्राप्त करने पर, उस धन्य व्यक्ति ने इसे गरीबों में बाँट दिया। जब राजा और उनके कुलीनों को यह पता चला, तो वे फिलारेट की उदारता से बहुत प्रसन्न हुए और तब से उन्होंने उस धर्मी व्यक्ति को गरीबों में बाँटने के लिए बहुत सारा सोना देना शुरू कर दिया। एक दिन, फिलारेट ने आकार और दिखावट में एक जैसे तीन डिब्बे तैयार किए, और एक को सोने के सिक्कों से, दूसरे को चांदी के सिक्कों से, और तीसरे को तांबे के सिक्कों से भर दिया। उन्होंने इनकी देखभाल की जिम्मेदारी अपने वफादार सेवक कैलसिटस को सौंपी। जब भी कोई गरीब व्यक्ति मदद मांगने के लिए उनके पास आता था, तो फिलारेट कैलसिटस को उस याचक को देने का निर्देश देते थे। जब सेवक पूछता था कि उसे याचक को किस डिब्बे से देना चाहिए, तो संत जवाब देते थे:

'जिससे भी ईश्वर तुम्हें आज्ञा दें, क्योंकि ईश्वर सभी की, गरीब और अमीर दोनों की, ज़रूरत जानते हैं, और अपनी इच्छा के अनुसार सभी जीवित प्राणियों का पालन-पोषण करते हैं (भजन संहिता 144:16)।'

धर्मी व्यक्ति ने ये शब्द भीख माँगने वाले गरीबों के बीच अंतर दिखाने के लिए कहे। क्योंकि कुछ भिखारी ऐसे भी होते हैं जो कभी अमीर थे, लेकिन विभिन्न दुर्भाग्यों और विपत्तियों के कारण, वे न केवल अपनी सारी संपत्ति से बल्कि अपनी रोज़ी-रोटी से भी वंचित हो गए हैं; फिर भी, अपने कुछ पुराने कपड़े रखकर, वे अपनी ज़रूरत को उसके नीचे छिपा लेते हैं, इससे शर्मिंदा होकर, और केवल अंतिम उपाय के रूप में मदद माँगते हैं। ऐसे अन्य भिखारी भी हैं जो जानबूझकर फटे-पुराने कपड़े पहनते हैं और अपनी संपत्ति छिपाकर, गरीबी के बहाने भीख माँगते हैं; इन्हें वसूली करने वाले और मूर्तिपूजक कहा जा सकता है। इन सब बातों को ध्यान में रखते हुए, दयालु फिलारेट ने कहा:

'ईश्वर हर व्यक्ति की आवश्यकता जानता है, और जैसा वह उचित समझता है, वह दानकर्ता के हाथ को मार्गदर्शन देता है।'

इस प्रकार, गरीबों के यह धन्य प्रेमी, जब दान देते थे, तो बिना देखे दान-पेटिका में हाथ डालते थे, और जो कुछ भी उनके हाथ लगता था—तांबा, चांदी या सोना—वे उसे याचक को दे देते थे। और इस सम्मानित वृद्ध ने शपथ लेते हुए और ईश्वर को अपना साक्षी मानकर बताया कि कई मौकों पर, जब वह किसी सम्मानजनक कपड़े पहने व्यक्ति को देखता था, तो वह तांबे का सिक्का निकालने के इरादे से खज़ाने में हाथ डालता था, क्योंकि उसके कपड़ों को देखकर वह ऐसे व्यक्ति को गरीब नहीं मानता था, और हर बार उसका हाथ अपने आप चाँदी या सोने वाले डिब्बे में चला जाता, जिसे वह फिर उस याचक को दे देता। हालाँकि, कभी-कभी, फटे-पुराने कपड़े पहने एक बिल्कुल अलग तरह का व्यक्ति फिलारेट से मदद माँगता, और वह पहले से ही अधिक उदार दान देने की इच्छा से अपना हाथ बढ़ाता; फिर भी उसका हाथ, मानो, रुक जाता, और वह बहुत कम निकालता। फिर भी, यह सब संयोग से नहीं हुआ, बल्कि ईश्वर की दिव्य योजना द्वारा निर्देशित था, जो हमारी सच्ची ज़रूरतों को जानती है।

[8412] *एक 'लित्रा* एक पाउंड है, जो वजन की एक बीजान्टिन इकाई है और 72 'ज़ोलोटनिक' के बराबर है; चांदी में इसका मूल्य 42 रूबल तक और सोने में 606 रूबल तक था। इस इकाई को 'लित्रा' - जो कि ठोस और तरल पदार्थों के माप की इकाई है - से अलग किया जाना चाहिए।

हर चार साल में, धन्य फ़लिारेत अपनी पोती - त्सारनिा - से मलिने के लिए शाही महल आते थे, लेकनि वहाँ रहते हुए उन्होंने कभी सुनहरी पट्टी वाली बैंगनी पोशाक नहीं पहनी। जब भी उन्हें ऐसा शानदार परधिान पहनने के लिए मजबूर कयिा जाता था, तो वे कहते थे:

'मुझे रहने दो – मैं अपने ईश्वर का धन्यवाद करता हूँ और उनके महान और अद्भुत नाम की स्तुति करता हूँ कि उन्होंने मुझे गरीबी और गुमनामी से उठाकर इतनी ऊँचाई पर पहुँचाया। क्या रानी का दादा कहलाना मेरे लिए पर्याप्त सम्मान नहीं है? और मेरे लिए इतना ही काफी है।'

और वह इतना वनिम्र रहा कि वह कोई पद या उपाधि भी नहीं रखना चाहता था, वह खुद को बस 'अम्नयिाट्स का फलिारेट' कहता था। इस प्रकार, वनिम्रता और परोपकार में अपना पूरा जीवन बतिाने के बाद, फलिारेट अपने जीवन के धन्य अंत के करीब पहुँच गया। ईश्वर द्वारा पहले से ही आगाह कए जाने के कारण, धन्य फलिारेट, जब वे अभी भी अच्छे स्वास्थ्य में थे और सभी से गुप्त रूप से, अपने एक वश्विसनीय सेवक को साथ लेकर कॉन्स्टेंटनिोपल में 'रोडोल्फयिा' नामक एक मठ में चले गए, जहाँ काली पोशाक वाली नन साधुता का जीवन जी रही थीं। मठ की ज़रूरतों के लिए एक बड़ी रकम सोने के रूप में मठाधीश को सौंपने के बाद, उन्होंने उससे एक नई ताबूत लाने के लिए कहा और कहा:

'मैं चाहता हूँ कि तुम जानो—लेकनि इस बात को कसिी से मत कहना—कि कुछ ही दनिों में मैं इस सांसारकि जीवन को त्यागकर दूसरे लोक और दूसरे राजा के पास चला जाऊँगा। और मैं तुमसे अनुरोध करता हूँ कि मेरा शरीर इसी नए ताबूत में सुलाया जाए।'

उसने अपने सेवक को तब तक कसिी से भी इस बारे में बात न करने का आदेश दयिा जब तक कि वह स्वयं इसका खुलासा न कर दे। कुछ ही समय बाद, अपनी सारी संपत्ति गरीबों और ज़रूरतमंदों में बाँटने के बाद, फलिारेट उस मठ में बीमार पड़ गया और बस्तिर पर लेट गया। नवें दनि, उसने अपनी पत्नी, बच्चों और अपने पूरे परविार को अपने पास बुलाया, और उनसे दयालुता से, धीमी आवाज़ में कहा:

'मेरे बच्चों, यह जान लो: पवत्रि राजा आज मुझे अपने पास बुला रहे हैं, और इसलिए मैं तुमसे वदिा होकर उनके पास जा रहा हूँ।'

हालाँकि, वे इन शब्दों को समझ नहीं पाए, और यह सोचकर कि फलिारेट कसिी सांसारकि राजा के बारे में बात कर रहे थे, उन्होंने उत्तर दयिा:

'आज राजा के पास जाना तुम्हारे लिए असंभव है, क्योंकि तुम बीमार पड़े हो।'

फलिारेत ने उन्हें उत्तर दयिा:

'जो मुझे ले जाकर राजा के सामने पेश करना चाहते हैं, वे पहले से ही तैयार हैं।'

तब उन्हें एहसास हुआ कि फलिारेट उन्हें स्वर्गीय राजा के पास अपने प्रस्थान के बारे में बता रहे थे, और उन्होंने एक जोरदार वलिाप कयिा, ठीक वैसे ही जैसे प्राचीन काल में यूसुफ और उसके भाइयों ने अपने पतिा याकूब के लिए कयिा था (उत्पत्ति 50:1, 10)। हालाँकि, उन्होंने उन्हें चुप रहने का इशारा कयिा और यह कहते हुए उन्हें उपदेश देने और सांत्वना देने लगे:

'मेरे बच्चों, तुम जानते हो और देख चुके हो कि मैंने अपनी जवानी से कैसा जीवन जयिा है; परमेश्वर जानते हैं, मैंने दूसरों की मेहनत पर नहीं जयिा, बल्कि अपनी रोटी अपनी मेहनत से कमाई है; और मैंने उस धन पर गर्व नहीं कयिा जो ईश्वर ने मुझे दयिा था, बल्कि, घमंड से बचते हुए, मैंने नम्रता को प्रेम कयिा, प्रेरति की आज्ञाकारति के कारण, जो आज्ञा देते हैं: *'इस वर्तमान युग के धनी लोगों को घमंडी न होने की चेतावनी दो* (1 तीमु. 6:17)—अपने बारे में बहुत ऊँचा न सोचना, घमंडी न होना। इसी तरह, जब मैं गरीबी में पड़ गया, तो मैंने शोक नहीं मनाया और न ही ईश्वर की नदिा की, बल्कि, धर्मी अय्यूब की तरह, मैंने उनका धन्यवाद कयिा कि, अपने प्रेम के कारण, उन्होंने मुझे अनुशासति कयिा था, और, मेरी कृतज्ञ सहनशीलता देखकर, उन्होंने मुझे एक बार फरि गरीबी से उबार लयिा और मुझे राजाओं और राजकुमारों के साथ सम्मानजनक संगति और रश्तिेदारी तक पहुँचाया। फरि भी जब मैं इतनी ऊँचाइयों पर पहुँचा, तब भी मेरा हृदय हमेशा गहरी नम्रता में रहा: *'प्रभु! मेरा हृदय घमंडी नहीं हुआ, न मेरी आँखें गर्व से भरीं, और न ही मैं उस में प्रवेश कयिा जो महान है और मेरे लिए, , अप्राप्य है*' (भजन संहति 130:1)[8413] । जहाँ तक उन धन-संपत्तयिों का सवाल है जनिसे

[8413] भजन के इस पद में, दाऊद ईश्वर के समक्ष गवाही देते हैं कि उनका हृदय घमंडी न था और न ही उनकी दृष्टि गर्वीली थी, बल्कि जैसे उनका हृदय वनिम्र था, वैसे ही उनकी आँखों में भी वनिम्रता झलकती थी। – 'महान और अद्भुत लोगों के बीच चलना' का अर्थ महान और गौरवशाली

सांसारकि राजा ने मुझे सम्मानति कयिा था, मैंने उनका उपयोग सांसारकि वस्तुओं के लिए नहीं कयिा, बल्कि उन्हें गरीबों के हाथों के द्वारा स्वर्गीय राजा को सौंप दयिा। इसलिए मैं आपसे भी, हे प्रयिजन, नविेदन करता हूँ कि आप मेरे द्वारा दखिाए गए उदाहरण का अनुसरण करें; और यदि आप इससे भी अधकि भलाई करेंगे, तो आपको और भी अधकि आनंद की प्राप्ति होगी। क्षणकि धन-संपत्ति पर अपना हृदय न लगाएँ, बल्कि उन्हें उस स्थान पर भेज दें जहाँ मैं अब जा रहा हूँ। अपना सामान यहाँ न छोड़ें, कहीं ऐसा न हो कि अजनबी या आपके शत्रु, जो आपसे द्वेष रखते हैं, उनका उपयोग कर लें। मेहमाननवाज़ी करना न भूलो (इब्रानयिों 13:2)। वधिवाओं का पक्ष लो, अनाथों की मदद करो, बीमारों और कैदयिों से मलिो। कलीसयिा की संगति से दूर न रहो; दूसरों की चीज़ों पर हाथ न मारो; कसिी का अन्याय न करो; बदनामी न करो; यहाँ तक कि अपने शत्रुओं के दुख और वपित्ति पर भी आनन्द न करो। मृतकों को दफ़नाओ और पवत्रि गरिजाघरों में उनकी स्मृति करो; इसी प्रकार, मुझ जैसे अयोग्य को भी अपनी प्रार्थनाओं में याद करो, जब तक कि आप स्वयं धन्य अनंत जीवन में प्रवेश न कर लें।

अपनी आत्मा-रक्षक शक्षिा समाप्त करने के बाद, धन्य फलिारेट ने अपने पुत्र जॉन से कहा:

'अपने बेटों—मेरे पोतों—को मेरे पास लाओ।'

जब वे आए, तो उन्होंने उन्हें बताया कि उनके जीवन में क्या होगा। अपने सबसे बड़े पोते से उन्होंने कहा:

'तुम एक दूर के देश से एक पत्नी चुनोगे और उसके साथ ईश्वर-भय और समझदारी से रहोगे।'

अपने दूसरे पोते से उन्होंने कहा:

'चौबीस वर्षों तक, एक भक्षिु के रूप में, तुम मसीह का जुआ अच्छी तरह से उठाओगे और, परमेश्वर को प्रसन्न करने वाला जीवन जीने के बाद, प्रभु के पास चले जाओगे।'

इसी तरह, उस धन्य व्यक्ति ने अपने तीसरे पोते के लिए भी भवष्यिवाणी की। और उस धन्य पुरुष की सभी भवष्यिवाणयिाँ बाद में उनके वंशजों के लिए सच हुईं। जैसे प्राचीन काल में कुलपति याकूब ने कयिा था, वैसे ही इस धन्य पुरुष ने भी, एक नबी की तरह, पूरे भवष्यि को देखा और अपने पोते-पोतयिों की तकदीर की स्पष्ट रूप से भवष्यिवाणी की। उनकी दो पोतयिाँ, जो युवतयिाँ थीं, दूसरों के साथ फलिारेट के पास आईं और उससे कहा:

'पतिाजी, हमें भी आशीर्वाद दीजिए!'

'और प्रभु आपको आशीष दे,' फलिारेत ने उनसे कहा। 'आप अपना जीवन पवत्रिता में बतिाएंगे, इस पाप-प्रेमी संसार से अलग और इसके कामुक वासनाओं से अछूते; और प्रभु की थोड़े समय तक सेवा करके, फरि भी उनके प्रसन्न करने वाले तरीके से, आप उनसे महान आशीषें प्राप्त करने के योग्य माने जाएंगे!'

और उस धर्मी पुरुष के ये सभी अंतमि शब्द सच हो गए; क्योंकि ये दोनों धर्मनष्ठि कुंवारी कन्याएं कॉन्स्टेंटनिोपल में परमेश्वर की अति पवत्रि माता के मठ में प्रवेश कर गईं, और कुंवारी पवत्रिता, उपवास, प्रार्थनापूर्ण जागरण और अन्य मठवासी परश्रिमों में बारह वर्षों के तपस्या के बाद, दोनों, एक ही समय में, प्रभु के पास शांतपिूर्वक चल बसीं।

अपनी पत्नी, अपने बच्चों, अपने सभी रश्तिेदारों और पूरी दुनयिा के लिए प्रार्थना करने के बाद, धन्य फलिारेट का चेहरा सूर्य की तरह चमक उठा, और उन्होंने आनंदपूर्वक दाऊद का भजन गाना शुरू कयिा: '[8414] ' (भजन संहति 100:1)।

जब उन्होंने भजन समाप्त कयिा, तो पूरा कमरा एक अद्भुत सुगंध से भर गया (जैसे सुगंधति तेलों को उंडेल दयिा गया हो)। उस भजन के बाद, धन्य व्यक्ति ने प्रार्थना का पाठ करना शुरू कयिा: *'हे हमारे पति, जो स्वर्ग में हो'* – और जब उन्होंने कहा: *'तव इच्छा पूरी हो!'* कहकर, उन्होंने स्वर्ग की ओर अपने हाथ उठाए और, अपने बस्तिर पर लेटकर, अपनी आत्मा प्रभु को सौंप दी; तब उनकी आयु 90 वर्ष थी। फरि भी, इतनी अधकि आयु में भी, उनका चेहरा नहीं बदला था, बल्कि एक पके सेब की तरह अकथनीय सुंदरता से दमक रहा था।

कार्यों का घमंड करना भी है। भजनकार वनिम्रतापूर्वक स्वीकार करता है कि, गरमिा की ऊँची सीढ़ी पर खड़े होते हुए भी, उसने घमंड की तुलना में वनिम्रता पर अधकि भरोसा कयिा; और इसलिए, न तो वचन में और न ही कर्म में उसने अपने पद से ऊपर उठकर अपनी बड़ाई की।

[8414] 'हे प्रभु, मैं तेरी दया और तेरे न्याय का भजन करूँगा'

संत के निधन की खबर सुनते ही, ज़ार अपनी रानी और कुलीनों के साथ मठ की ओर दौड़े, और उन्होंने फ़लिरेत के पवित्र मुख और हाथों को चूमा। और सभी उनके निधन पर रोए और उनकी स्मृति में गरीबों को उदारतापूर्वक दान दिया[8415]।

जब फलिरेत की कफ़न को दफ़नाने की जगह ले जाया गया, तो सभी की आँखों के सामने एक चौंकाने वाला और मार्मिक दृश्य आया: उसके अंतिम संस्कार के लिए भिखारियों और बेसहारा लोगों का एक अनगिनत समूह विभिन्न कस्बों और गांवों से जमा हो गया था, और वे सभी विलाप करते और रोते हुए, चींटियों की तरह उसकी कफ़न के चारों ओर उमड़ पड़े; कुछ लंगड़ाते हुए, कुछ रेंगते हुए और पुकार रहे थे:

'हे प्रभु ईश्वर! हे ईश्वर, आपने हमें ऐसे पिता और पालनहार से क्यों वंचित कर दिया? उसके बिना, हमारी इस बेबसी में, नग्न और भूखे, हमें कौन खिलाएगा और पहनाएगा? कौन राहगीरों को अपने घर में पनाह देगा? कौन सड़कों पर पड़े मृतकों को उठाकर उन्हें उचित अंतिम संस्कार देगा? हमारे इस उपकारी से वंचित होने से तो हमारे लिए उससे पहले मर जाना ही बेहतर होगा!

इन बेचारों के आँसू और विलाप सुनकर, राजा और रानी स्वयं, ताबूत के पीछे चल रहे अपने कुलीनों के साथ, दयालु हो गए और रो पड़े।

जब धन्य व्यक्ति के शव को तैयार कब्र तक ले जाया जा रहा था, तभी अचानक भीड़ में कावोकोकोस नाम का एक गरीब आदमी दिखाई दिया; उसने अक्सर संत फिलिलेट से भीख प्राप्त की थी। जन्म के क्षण से ही, इस व्यक्ति पर एक अशुद्ध आत्मा का साया था, जो अमावस्या के दिनों में उसके दौरे के दौरान उसे कई बार आग या पानी में फेंक चुकी थी। जब इस गरीब व्यक्ति ने फिलिरेट के निधन के बारे में सुना और यह भी कि उनका पवित्र शरीर पहले ही दफन के स्थान पर ले जाया जा रहा था, तो वह तुरंत ताबूत के पीछे दौड़ पड़ा। और इसलिए, जब वह ताबूत तक दौड़ा, तो उसके भीतर का दुष्ट आत्मा संत के प्रति ऐसी भक्ति सहन नहीं कर सका और उसे सताना शुरू कर दिया, उसे संत के खिलाफ अपमानजनक बातें कहने के लिए उकसाया; और वह पीड़ित व्यक्ति कुत्ते की तरह भौंकने लगा और उस ताबूत से इतनी कसकर चिपक गया जिस पर मृतक का शरीर रखा था कि उसे उससे अलग करना असंभव हो गया। लेकिन जब ताबूत को तैयार कब्र तक ले जाया गया, तो दुष्ट आत्मा, पीड़ित को ज़मीन पर पटकने के बाद, उससे चली गई, और वह अच्छे स्वास्थ्य के साथ उठ खड़ा हुआ, ईश्वर की स्तुति और महिमा करते हुए। यह चमत्कार देखकर सभी लोग चकित रह गए और उन्होंने परमेश्वर की महिमा की, जिन्होंने अपने सेवक फिलिलेट पर ऐसी कृपा की थी। इसके बाद, उनके पवित्र शरीर को कन्वेंट में, एक विशेष ताबूत में, उसी स्थान पर सुलाया गया जिसे उन्होंने जीवित रहते हुए अपने लिए चुना था।

इस प्रकार ईश्वर दयालु लोगों को इस जीवन में (जैसा कि हमने अभी-अभी पढ़कर देखा है) और आने वाले जीवन में (जैसा कि हम आगे जानेंगे) आशीर्वाद देते हैं।

फलिरेत के एक करीबी दोस्त, जो एक होशियार, धर्मपरायण और ईश्वर-भयभीत व्यक्ति थे, ने ईश्वर को अपना साक्षी मानकर, शपथ के तहत निम्नलिखित बातें बताईं:

वे बताते हैं, 'धन्य फिलिरेट के निधन के कुछ समय बाद, एक बार मैं आधी रात को भय से एक ऐसी जगह पहुँच गया जो वर्णनातीत है; वहाँ मैंने एक पुरुष को देखा, जो रूप में तेजस्वी था, जिसने मुझे आग की एक नदी दिखाई, जो इतनी तेज़ आवाज़ में और भयावह रूप से बह रही थी कि कोई भी मनुष्य उसे देख नहीं सकता था। हालाँकि, नदी के दूसरी तरफ एक सुंदर स्वर्ग दिखाई दे रहा था, जो अकथनीय आनंद और प्रसन्नता से भरा था, और जिसकी सुगंध अकथनीय थी; वहाँ विशाल, सुंदर और फलदार पेड़ हल्की हवा में लहरा रहे थे, जिससे एक अद्भुत सरसराहट की आवाज़ हो रही थी। और उस स्वर्ग की सभी आशीषों को शब्दों में बयां करना भी असंभव है, *'जिसे परमेश्वर ने उन लोगों के लिए तैयार किया है जो उससे प्रेम करते हैं'* (1 कुरिन्थियों 2:9)।

और वहाँ मैंने सफेद वस्त्रों में अनेक लोगों को देखा, जो आनंद मना रहे थे और उन स्वर्गीय वृक्षों के फलों का सेवन कर रहे थे। उन लोगों को ध्यान से देखने पर, मैंने एक आदमी को देखा (वह फिलिरेट था, हालांकि मैंने उसे पहचाना नहीं), जो चमकीले वस्त्रों में लिपटा हुआ, उस बगीचे के बीच में एक सुनहरे सिंहासन पर बैठा था; एक ओर, नए प्रबुद्ध बच्चे मोमबत्तियाँ लेकर उसके बगल में खड़े थे; दूसरी ओर, सफेद वस्त्रों में लिपटे भिखारियों और बेसहारा लोगों की भीड़ उसके चारों ओर इकट्ठी हो रही थी, क्योंकि उनमें से प्रत्येक उसके और करीब आना चाहता था। और फिर वहाँ एक

[8415] संत फिलिरेत अपनी पोती की शादी के बाद 788 में चार साल तक जीवित रहे – और इसलिए 792 में निधन हो गया।

युवक प्रकट हुआ, जिसका चेहरा सुंदर था लेकिन मुखड़ा भयानक था, और उसके हाथ में एक सुनहरा राजदंड था। तब मैंने, भय और कांपते हुए, उससे पूछने की हिम्मत की:

'प्रभु! वह कौन है जो उन प्रकाश पुरुषों के बीच सबसे तेजस्वी सिंहासन पर विराजमान है? क्या वह अब्राहम नहीं है?'

और उस तेजस्वी युवक ने मुझसे उत्तर दिया:

'यह अम्नियोट्स का फिलारेत है, जो गरीबों के प्रति अपने महान प्रेम और दान-पुण्य, और अपने ईमानदार तथा पवित्र जीवन के कारण, अब्राहम की तरह, यहाँ निवास करता है।'

उसके बाद, इस नए अब्राहम, पवित्र और धर्मी फिलारेट ने, मुझ पर अपनी दिव्य दृष्टि डालते हुए, मुझे अपनी ओर इशारा करके बुलाया और धीरे से कहा:

'मेरे बच्चे, तुम भी यहाँ आओ, ताकि तुम भी उन्हीं आशीर्वादों का आनंद ले सको।'

जिस पर मैंने उत्तर दिया:

'मैं वहाँ नहीं पहुँच सकता, हे धन्य पिता: यह आग का नदी मुझे डराती और रोकती है; इसका मार्ग संकरा है और पुल पार करना कठिन है, और बहुत से लोग इसके भीतर की आग में नष्ट हो रहे हैं; मुझे डर है कि मैं भी वहाँ पहुँच जाऊँगा – और फिर वहाँ से मेरा उद्धार कौन करेगा?'

तब संत ने कहा:

'डरो मत, बल्कि निडर होकर पार करो, क्योंकि जो भी अब यहाँ हैं, वे इसी रास्ते से आए हैं, और इस रास्ते के अलावा कोई दूसरा मार्ग नहीं है। इसलिए तुम भी, मेरे बच्चे, बिना किसी डर के हमारे पास आ जाओ, और मैं तुम्हारी मदद करूँगा।'

और उन्होंने मुझे बुलाते हुए अपना हाथ बढ़ाया। मैं, हिम्मत करके, नदी को सुरक्षित रूप से पार करने लगा, और जब मैं संत के हाथ के पास पहुँचा और उसे छुआ, तो यह अद्भुत दृश्य तुरंत ही गायब हो गया; मैं जाग गया और, कड़वा रोते हुए, अपने आप से कहा: तो फिर मैं उस भयानक नदी को कैसे पार करूँगा, और मैं स्वर्गीय निवास तक कैसे पहुँचूँगा?

इस वृत्तांत की पुष्टि धन्य फिलिरेट के एक रिश्तेदार ने शपथपूर्वक की थी, ताकि हम जान सकें कि परमेश्वर के नाम पर गरीबों को दान देने वालों पर परमेश्वर की कैसी कृपा होती है।

जहाँ तक धन्य थियोज्वा का प्रश्न है, संत फिलिरेट की पत्नी, अपने पति के पवित्र शरीर के दफन के बाद, कॉन्स्टेंटिनोपल से अपने पैतृक देश, पाफ्लागोनिया की भूमि पर लौट आईं, और वहाँ उन्होंने राजा और रानी से प्राप्त अपनी संपत्ति का उपयोग ईश्वर के चर्चों का निर्माण और पुनर्स्थापना करने के लिए किया, जिन्हें अतीत में फारसियों ने जला दिया था। उन्होंने उन चर्चों को पवित्र पात्र और वेषभूषाएँ भी प्रदान कीं। इसके अलावा, उन्होंने वहाँ गरीबों और बीमारों के लिए मठ, अतिथिशालाएँ और आश्रय स्थापित किए, और फिर अपनी पोती, सम्राज्ञी मैरी से मिलने के लिए एक बार फिर कॉन्स्टेंटिनोपल के लिए रवाना हो गईं। वहाँ, ईश्वर की सेवा में अपना शेष जीवन व्यतीत करने के बाद, उन्होंने प्रभु में शांतिपूर्वक देह त्याग दिया और उन्हें उनके धर्मी पति की कब्र के बगल में दफनाया गया।

उनकी प्रार्थनाओं के द्वारा, हम भी न्याय के दिन हमारे एक, उदार और दयालु प्रभु यीशु मसीह से दया प्राप्त करें। उसी को, उसके अनंत पिता और पवित्र आत्मा के साथ, युगानुयुग सम्मान और महिमा प्राप्त हो। आमीन।

ट्रोपारियन, स्वर 4:

विश्वास में अब्राहम का अनुकरण करते हुए और धैर्य में अय्यूब का अनुसरण करते हुए, फादर फिलारेट, आपने पृथ्वी की संपदा को गरीबों के साथ बाँटा, और दृढ़ता के साथ अभाव सहन किया। इसी कारण, हमारे ईश्वर मसीह, जो शुभ कर्मों के दाता हैं, ने आपको एक तेजस्वी मुकुट पहनाया है; उनसे प्रार्थना करें कि हमारी आत्माएँ बच सकें।

कॉन्टाकयिन, स्वर 3:

नश्चिय ही, आपका सौदा अति उत्तम देखा जाता है, और सभी बुद्धमिानों द्वारा बुद्धमिानी भरा माना जाता है: क्योंकि आपने सांसारकि और क्षणकि को त्याग दयिा, और स्वर्गीय और शाश्वत की खोज की। अत; हे दयालु फलिारेट, आपने यथोचति रूप से शाश्वत महमिा प्राप्त की है।

१५ दसिंबर

2 दसिंबर (पुराना संस्करण)

पवत्रि नबी हबक्कूक का स्मरणोत्सव

2 दसिंबर को स्मरणोत्सव

पवत्रि नबी हबक्कूक, अस्फत के पुत्र थे और शमिोन के कुल से थे, जैसा कि साइप्रस के संत एपफिानयिस अपनी पुस्तक *ऑन द लाइव्स ऑफ द प्रोफेट्स* में वर्णन करते हैं। पवत्रि पतिाओं द्वारा दर्ज की गई एक परंपरा के अनुसार[8416] , हबक्कूक का जन्मस्थान बेथ-जोहार का छोटा सा गाँव था, जसिे वज़िाहरि के नाम से भी जाना जाता है।

उनके जन्म के समय दयिा गया नाम 'हबक्कूक'[8417] ही इस बात का संकेत देता था कि वह एक आध्यात्मकि रूप से मजबूत तपस्वी बनेंगे। परपिक्वता प्राप्त करने पर, उन्होंने ईश्वर के नाम की महमिा के लिए अपने लोगों के अधर्म की उत्साहपूर्वक नदिा की। वह स्वयं प्रभु के प्रति उत्साह से जलते हुए, परमेश्वर की आज्ञाओं का कड़ाई से पालन करते थे, सदाचार के मार्ग पर दृढ़ रहे, और उन्हें प्रभु द्वारा भवष्यिवाणी का वरदान प्राप्त हुआ।

हबक्कूक ने धार्मकि यहूदी राजा हजिकयि्याह के शासन के बाद भवष्यिवाणी की और जीवन यापन कयिा, उस समय जब सहिासन पर दुष्ट राजा राज कर रहे थे: हजिकयि्याह के पुत्र मनश्शेह, और बाद में मनश्शेह के पुत्र आमोन्[8418] । पवत्रि शास्त्रों के अनुसार (2 इतहिास 33:9; 4 राजा 21:2–10), मनश्शेह के शासनकाल में यहूदी लोगों के बीच नरिंतर संघर्ष और दुष्टता थी: शक्तशिाली लोग कमजोरों का शोषण करते थे, और न्याय की तलाश के लिए कहीं कोई जगह नहीं थी। राजा मनश्शे स्वयं नरि्दोषों का सबसे बड़ा उत्पीड़क था: उसने इतना नरि्दोष रक्तपात कयिा कि उसने यरूशलेम को एक छोर से दूसरे छोर तक भर दयिा (4 राजा 21:16)। परंपरा के अनुसार, पवत्रि भवष्यिवक्ता यशायाह उन लोगों में से थे जन्हिोंने उस समय कष्ट उठाया, ठीक वैसे ही जैसे राजा और लोगों के अन्याय और दुष्टता के कई अन्य आलोचकों ने भी कष्ट उठाया।

बाद में, राजा मनasseh को ईश्वर द्वारा दंडति कयिा गया और अश्शूरयिों ने उसे बंदी बना लयिा, तब उसने पश्चाताप कयिा और सच्चे ईश्वर की ओर लौट आया। लेकनि उसने जो बुराई बोई थी, वह यहूदी लोगों के बीच पहले ही गहरी जड़ें जमा चुकी थी; और मनश्शेह के बाद उसका दुष्ट पुत्र आमन सत्ता में आया, जो अपने पति की तरह ही घोर मूर्तपिूजा में लीन था।

नबी हबक्कूक अपने समकालीनों के भ्रष्टाचार पर गहराई से दुखी थे। कहीं भी धार्मकिता न पाकर, उन्होंने अपना दुख प्रभु के प्रति व्यक्त कयिा, पुकार कर कहा:

'हे प्रभु, मैं कब तक तुझ से पुकारूँ, और तू मुझे न सुन; हसिा के वरिुद्ध चलि्लाऊँ, और तू उद्धार न कर? आप मुझे दुष्टता क्यों दखिाते हैं और वपित्ति पर क्यों दृष्टि रखते हैं? लूट और हसिा मेरे सामने हैं; ववािद उठता है, और कलह छाई हुई है। इसी कारण, न्याय अपनी शक्ति खो चुका है, और कोई धर्मी नरि्णय नहीं है: क्योंकि दुष्ट धर्मी पर हावी हो जाते हैं, न्याय वकि्रत हो गया है (हाब. 1:2-4)।

[8416] साइप्रस के धन्य एपफिानयिस और हस्पिालयिा के संत इसडिोर।

[8417] हबक्कूक – हब्रिू से, शाब्दकि रूप से 'जो आलगिन करता है' या 'जो घेरे में लेता है', और बाद में 'एक मजबूत योद्धा' या 'एक भक्त'।

[8418] हबक्कूक की भवष्यिवाणी की सेवा की शुरुआत मनश्शे के शासन के उन वर्षों से मानी जानी चाहिए जब इस अधर्मी राजा को एसरहद्दोन ने बंदी बना लयिा था, और उसने बंदी जीवन में स्वयं को नम्र कयिा और पश्चाताप कयिा। हबक्कूक की भवष्यिवाणयिाँ 660 ईसा पूर्व से शुरू होकर, अमन के उत्तराधकिारी, धर्मनष्ठि राजा योशयिाह के शासनकाल के दौरान, 611 ईसा पूर्व तक की अवधि को कवर करती हैं।

इस प्रकार भविष्यवक्ता ने प्रभु से पुकारा, लोगों के अधर्म का साक्षी बनते हुए और स्वयं परमेश्वर से धर्मी न्याय की प्रतीक्षा करते हुए। इसके उत्तर में, प्रभु ने अपने चुने हुए को घोषणा की कि सार्वभौमिक दुष्टता के लिए दंड शीघ्र ही आएगा। परमेश्वर की आज्ञा से, भविष्यवक्ता हबक्कूक ने यहूदियों को एक ऐसी भयानक घटना की भविष्यवाणी की कि उसके समय में उस पर विश्वास करना भी कठिन था: अर्थात्, मंदिर और स्वयं यरूशलेम का विनाश, और बेबीलोन की बंधुआई[8419] ।

नबी ने स्पष्ट रूप से कहा कि प्रभु ने इस दंड के साधन के रूप में खलदानीयों को चुना था[8420] – एक उग्र और बेकाबू लोग जो विदेशी बस्तियों पर कब्जा करने के लिए पृथ्वी की सतह पर तेजी से फैल जाते हैं।

भयानक आक्रमण की बेचैन प्रतीक्षा में, भविष्यवक्ता हबक्कूक ने सोचा: क्या धर्मी प्रभु वास्तव में गर्वित और दुष्ट काल्दीयों को अपने चुने हुए लोगों का सर्वनाश करने देंगे? यह आशा करते हुए कि यह दंड अस्थायी होगा, वह प्रभु से एक नए प्रकाशन की प्रतीक्षा कर रहा था; और अपनी प्रार्थनापूर्ण पहरेदारी में वह एक पहरेदार की तरह था, जो शत्रु के आगमन की चेतावनी देने के लिए शहर के मीनार से दूर तक ध्यान से निहार रहा था[8421] । उन्होंने यहूदी लोगों को बेबीलोन की कैद से बचाने के लिए प्रभु से विनम्रतापूर्वक प्रार्थना की, ठीक वैसे ही जैसे उन्होंने एक बार उन्हें मिस्र की दासता से बचाया था, और प्रभु के उनसे बात करने का इंतजार किया।

तब प्रभु ने अपने भविष्यवक्ता को प्रकट किया कि इन विपत्तियों के बीच चुने हुए लोगों के लिए एकमात्र उद्धार विश्वास में ही था, जबकि घमंडी और अनियंत्रित खलदीयियों को स्वयं उसी भाग्य का सामना करना पड़ेगा जो उन्होंने उन राष्ट्रों के लिए तैयार किया था जिन्हें उन्होंने जीता था (हाब. 2:4)। इसके बाद, भविष्यवक्ता हबक्कूक ने, अपने देशवासियों को परमेश्वर द्वारा उनके सामने रखी गई परीक्षा में निराशा में डूबने से बचाने के लिए, खलदीयियों के पतन के बारे में एक दृष्टान्त दिया, और उत्पीड़क लोगों पर पाँच बार 'हाय!' की घोषणा की (हबक्कूक 2:9-19)। इस दृष्टांत में, उन्होंने सच्चे परमेश्वर की महिमा के सामने मूर्तियों की पूर्ण व्यर्थता और काल्दीयों की सामर्थ्य को प्रकट किया, जो अपने लोगों को बचाने के लिए आगे बढ़ते हैं। भविष्यवक्ता ने, स्वर्ग से प्राप्त एक प्रकाशन में, यह भविष्यवाणी की कि परमेश्वर झाड़ियों से ढके पहाड़ (पारान) से अपने लोगों को बचाने के लिए आ रहे हैं, अपने अभिषिक्त को बचाने के लिए, और यह कि एक समय आएगा जब पूरी पृथ्वी प्रभु की महिमा के ज्ञान से उस प्रकार भर जाएगी, जैसे समुद्र जल से भर जाता है (हाब. 3:13)[8422] ।

[8419] नबी हबक्कूक की पुस्तक (हब. 1:6–12)। मनश्शे और उसके पुत्र के शासनकाल में लोगों की दुष्टता के लिए यही दंड 2 राजा 21:12–14 में भी उल्लेखित है।

[8420] खल्दीय – हिब्रू में: *हासदीम* – अब्राहम के भाई नाहोर के पुत्र चेसेद के वंशज थे (उत्पत्ति 22:22)। एक सेमेटिक मूल से उत्पन्न, खल्दीय मूल रूप से मेसोपोटामिया के उत्तरी पहाड़ी क्षेत्र में, आर्मेनिया के करीब, वान झील के दक्षिण में रहते थे। इस प्राचीन क्षेत्र से, काल्दीय लोग फरात नदी के साथ-साथ दक्षिण और पूर्व की ओर पूरे मेसोपोटामिया और बेबीलोन में फैल गए, और जल्द ही प्रमुख लोग बन गए। अश्शूर के शासन के दौरान, उन्होंने अश्शूरियों के साथ मिलकर कई विजय अभियानों को अंजाम दिया और अश्शूर से बेबीलोनिया के पृथक्करण के बाद, नाबोपोलसर और विशेष रूप से नेबुचadnezzar के अधीन, उन्होंने कई लोगों और राज्यों को हराया। अपने विजय अभियानों के दौरान जहाँ भी गए, खल्दीयियों की पहचान अत्यधिक क्रूरता और युद्धप्रियता से थी।

[8421] (हब. 2:1)। यह मुहावरा पहाड़ों और ऊँची जगहों पर पहरेदार मीनारें बनाने की प्रथा से लिया गया है ताकि पहरेदार बस्तियों को किसी भी खतरे का तुरंत पता लगा सकें और दुश्मन के आने की चेतावनी देने के साथ-साथ जीत और हार की सूचना भी दे सकें। पवित्र भविष्यवक्ता पहरेदार थे, जिन्हें परमेश्वर ने, मानो, अपनी इच्छा को देखने और घोषित करने के लिए ऊँची जगह पर नियुक्त किया था। इस *दैवीय* पहरे पर, पवित्र भविष्यवक्ता हबक्कूक ने सभी सांसारिक चीजों को त्यागकर, आत्मा में जागते रहे और अपने लोगों के संबंध में उसकी इच्छा के प्रकटीकरण के लिए परमेश्वर से प्रार्थना की। इस अवस्था में, वह आदरपूर्वक परमेश्वर के प्रकाश की किरण के अपने मन में प्रवेश करने, अपनी आत्मा की आँखों को प्रबुद्ध करने, और प्रभु के उससे बात करने की प्रतीक्षा कर रहे थे।

[8422] यहाँ न केवल यहूदियों की बेबीलोन की कैद से मुक्ति की भविष्यवाणी की गई है, बल्कि मानव जाति के उद्धार की भी। इस प्रकार, यह भविष्यवाणी मसीही स्वभाव की है। फिलिस्तीन के दक्षिण में स्थित भूमि की ओर इशारा करते हुए, जहाँ छायादार जंगल से ढका हुआ पर्वत पारान स्थित था, हबक्कूक ने यहूदियों को बताया कि उन्हें दक्षिण से आने वाली एक प्रजाति द्वारा बेबीलोन की कैद से मुक्ति मिलेगी। वास्तव में, फारस के राजा साइरस ने, पलेस्टाइन के सापेक्ष, दक्षिण से मीदियों और फारसियों का नेतृत्व किया, और बेबीलोनियों को वश में कर के यहूदियों को मुक्त किया। लेकिन भविष्यवक्ता की दृष्टि ने दासता के एक और रूप से मुक्ति की भविष्यवाणी की थी—पाप की दासता से, जिससे पूरी मानव जाति अपने नवीनीकरण के माध्यम से मुक्त होगी। सम्माननीय की व्याख्या के अनुसार थियोडोरेट, हाबक्कूक 'ईश्वर और हमारे उद्धारकर्ता के अवतार की भविष्यवाणी करते हैं, जो बेथलहम में हुआ, जो यरूशलेम के दक्षिण में स्थित है'। 'छाया हुआ पर्वत' से, पवित्र चर्च ईश्वर की माता को समझती है, मानो वह सद्गुणों का एक पर्वत हो, जिस पर पवित्र आत्मा की छाया पड़ी हो। 'हे पर्वत, परमेश्वर की कृपा से छाया हुआ, अवक्कूम की सूक्ष्मदर्शी आँखों से तुझे देखकर,' – कैनन में कलीसिया गाती है – 'उसने पवित्र एक को यह घोषणा की कि तुझ से

परंपरा के अनुसार, जब नबूकदनेसर यरूशलेम के पास आ रहा था, तो भविष्यवक्ता हबक्कूक शहर से दूर चला गया। यह जानते हुए कि अब तबाही अवश्यंभावी थी और इतने शक्तिशाली विजेता के खिलाफ प्रतिरोध करना व्यर्थ होगा, भविष्यवक्ता ने अपने देश को दुख के साथ छोड़ दिया ताकि वह उसकी तबाही का गवाह न बने और विजेता की क्रूरता से बच सके। ईश्वर की आज्ञा से, हबक्कूक अरब की भूमि में, Ostrakin[8423] नामक नगर में बस गए, और तब तक वहाँ स्वैच्छिक निर्वासन में रहे जब तक कि दुश्मनों को उनकी मातृभूमि से खदेड़ नहीं दिया गया।

एक बार जब काल्दीयों को भगा दिया गया, तो वह अपनी भूमि पर लौट आया, उसकी दुर्भाग्य पर शोक मनाया और अपने लोगों के बचे हुए लोगों के साथ मिलकर खेती करने लगा। अपने लोगों के लिए ईश्वर से अपनी प्रार्थनाओं में, वह बेबीलोन में बंदी बनाए गए लोगों की वापसी का इंतजार करता रहा।

एक दिन, फसल काटने के समय, नबी ने एक स्टू पकाया और कुछ रोटी लेकर खेत में कटाई करने वालों के लिए यह भोजन ले गए। लेकिन रास्ते में, प्रभु का एक स्वर्गदूत उसके सामने प्रकट हुआ और कहा:

'यह भोजन ले जाओ और इसे बेबिलोन में दानियेल को, सिंहों के बिल में दे दो।'

वास्तव में, उस समय नबी दानियेल, जो बेबीलोन के राजा के दरबार में रहते थे, दुष्ट बेबीलोनियों की घृणा के कारण सिंहों के बिल में फेंक दिए गए थे।

लेकिन हबक्कूक, जो बेबीलोन शहर को नहीं जानता था, ने स्वर्गदूत से उत्तर दिया:

'प्रभु! मैंने कभी बाबेल नहीं देखा है, और न ही मैं सिंहों के बिल को जानता हूँ।'

तब प्रभु का स्वर्गदूत अपनी आत्मा की शक्ति से हबक्कूक को पकड़कर, उसे उसके सिर के बाल पकड़कर उठा लिया और उसे बबेल ले जाकर उसी खाई के ठीक ऊपर उतार दिया जिसमें दानियेल को डाला गया था।

और अबकुक ने पुकारा:

'दानियेल! दानियेल! वह भोजन ले लो जो परमेश्वर ने तुम्हारे पास भेजा है।'

दानियेल ने अपनी ओर से परमेश्वर का धन्यवाद किया और कहा:

'हे परमेश्वर, आपने मुझे याद किया है, और आपने अपने प्रेम करने वालों को नहीं छोड़ा है।'

दानियेल उठा और भोजन करने लगा। प्रभु का स्वर्गदूत तुरंत ही हबक्कूक को उसकी पूर्व अवस्था में वापस ले आया।

दानियेल से इस चमत्कारी भेंट के बाद, भविष्यवक्ता हबक्कूक अपने कटनी करने वालों के पास लौट आए जब वे अपना दोपहर का भोजन कर रहे थे, और उन्होंने किसी को भी यह नहीं बताया कि क्या हुआ था। उन्हें एहसास हुआ कि यहूदी लोगों को प्रभु द्वारा बेबीलोन से यरूशलेम वापस लाया जाएगा, ठीक वैसे ही जैसे उनका अपना बेबीलोन तक चमत्कारिक रूप से जाना और वहाँ से लौटना हुआ था। लेकिन परमेश्वर के लोगों की यह परीक्षा 70 वर्षों तक चली, और हबक्कूक यहूदियों को बंदी से लौटते हुए देखने के लिए जीवित नहीं रहे; वे वृद्धावस्था से मर गए और अपने ही खेत में सम्मान के साथ दफनाए गए[8424] ।

इस्राएल का उद्धारकर्ता हमारे उद्धार और नवीनीकरण के लिए प्रकट होगा'। 'मसीह, हमारे ईश्वर, जो आने वाले हैं, आएँगे और विलंब नहीं करेंगे; घने पत्तों से छायादार पहाड़ से, वह कुँवारी जो निर्दोष को जन्म देती है—इस प्रकार प्राचीन भविष्यवक्ता कहते हैं' (वाइ के रविवार के लिए कैनन की चौथी ओड)। 'हे महिमामय, मसीह, तू कुँवारी से प्रकट हुआ, पहाड़ से, छायादार बगीचे से' (मसीह के जन्म के लिए चौथा ओड)। सामान्य रूप से, सभी चर्च संबंधी कैननों का चौथा ओड प्रभु के अपने लोगों को बचाने, 'अपने अभिषिक्तों को बचाने' के लिए आने की हबक्कूक की भविष्यवाणी पर आधारित है। हबक्कूक की भविष्यवाणी के इस स्पष्ट मसीही महत्व को देखते हुए, ईसाई चर्च ने उन्हें 'ईश्वर-वक्ता' (प्रेज़ कैनन, चौथा ओड, इरमोस) की उपाधि से सम्मानित किया है। – हबक्कूक का उपरोक्त प्रार्थनात्मक भजन चर्च के कैनन के चौथे ओड का आधार बनाता है, जो ईश्वर की सर्वशक्तिमानता और उनमें हमारी अटूट आशा को दर्शाता है।

[8423] ओस्ट्राकिनि अरब, फिलिस्तीन और मिस्र की सीमा पर एक शहर है।

[8424] नबी हबक्कूक की मृत्यु मसीह से लगभग 600 वर्ष पहले हुई थी। चौथी सदी के चर्च इतिहासकार यूसेबियस ऑफ सेसरिया के अनुसार, नबी हबक्कूक का मकबरा यहूदा के कुल में केइला, या किला में था। 5वीं सदी के चर्च इतिहासकार सोजोमेन के अनुसार, दैवीय प्रकटीकरण द्वारा, इस पवित्र पैगंबर के अवशेष थियोडोसियस द्वितीय द यंगर (408–450) के शासनकाल के दौरान पवित्र पैगंबर मीका के अवशेषों के साथ पाए गए थे। दोनों नबियों के शरीर ज़ेवेनवु को एक दैवीय सपने के माध्यम से प्रकट हुए, जो उस समय एलेउथेरोपोलिस चर्च के बिशप थे।

कॉन्टाकयिन, स्वर 8:

हे ईश्वर-वक्ता हबक्कूक, दक्षणि से संपूर्ण संसार में कुँवारी से ईश्वर के आगमन की घोषणा करते हुए, और दव्यि पहरे में खड़े होकर, प्रकाश-धारण करने वाले दूत से संदेश सुनकर, आपने संसार में मसीह के पुनरुत्थान की घोषणा की। इसी कारण हम आनंदपूर्वक आपको पुकारते हैं: हे नबयिों की दीप्तमिान भलाई, आनन्दति हो।

पवत्रि शहीद मायरोपयिा का कष्टकथा

2 दसिंबर को स्मरणोत्सव

पवत्रि कुंवारी मायरोपयिा एफ़सिुस शहर की नविासी थीं[8425] । उनके माता-पतिा ईसाई थे। उनके पतिा के नधिन के बाद, उन्होंने पवत्रि बपतस्मिा ग्रहण कयिा। अपनी माँ द्वारा ईश्वर के भय में पाली गई, वह पवत्रि प्रेरति फलिपि की बेटयिों में से एक, पवत्रि शहीद हरमयिोनयिा की कब्र पर जाने में उत्सुक रहती थी। वह संत हरमयिोनयिा के अवशेषों से नकिलने वाला चंगा करने वाला मूर्रा लेती थी और इसे बीमारों को देकर उन्हें ठीक कर देती थी।

उस समय, डेसयिस[8426] का शासन था। जब उन्होंने ईसाइयों के खलिाफ उत्पीड़न शुरू कयिा, तो मायरोपयिा की माँ अपनी बेटी के साथ खयिोस द्वीप[8427] चली गईं, जहाँ उनकी एक पैतृक संपत्ति थी। वहाँ वह अपनी बेटी के साथ अपने घर में बंद होकर ईश्वर से प्रार्थना करती रहीं। एक दनि, राजकुमार नुमेरयिन द्वीप पर पहुँचे। उसके आदेश पर, धन्य इसडिोर, जो पेशे से एक सैनकि और एक अद्भुत तथा धर्मनष्ठि व्यक्ति थे, को ईसाई धर्म का प्रचार करने के आरोप में गरिफ्तार कर लयिा गया। चूँकि उन्होंने मसीह का त्याग करने और मूर्तयिों की पूजा करने से इनकार कर दयिा, राजकुमार ने उन्हें वभिन्नि यातनाएँ देने के बाद तलवार से मृत्युदंड दे दयिा। तब उसके शरीर को जंगली जानवरों और पक्षयिों द्वारा खाए जाने के लिए नर्जिन स्थान पर फेंक दयिा गया, जबकि कुछ दूरी पर एक पहरा लगाया गया ताकि ईसाई शहीद के शरीर को चुरा न सकें। दव्यि उत्साह से भरकर, पवत्रि कुंवारी मरिोपयिा अपनी दासयिों के साथ रात में आईं, गुप्त रूप से शहीद का शरीर ले गईं और सम्मानपूर्वक अंतमि संस्कार की प्रार्थना करने के बाद, उसे एक वशिेष रूप से तैयार की गई जगह पर दफना दयिा।

जब राजकुमार को यह पता चला कि इसडिोर का शरीर चुरा लयिा गया है, तो उसने पहरेदारों को हथकड़ी पहना दी और उन्हें पूरे द्वीप में घुमाकर यातना देने का आदेश दयिा, यह घोषणा करते हुए कि यदि उन्होंने नर्धिारति समय तक चोरी हुआ शरीर नहीं ढूंढ नकिाला, तो उनके सरि काट दएि जाएँगे।

जब संत मायरोपयिा ने हथकड़ी में जकड़े और घसीटकर ले जाए जा रहे रक्षकों का कष्ट देखा और सुना कि उन्हें मृत्युदंड का सामना करना है, तो उनका हृदय द्रवति हो गया और उन्होंने सोचा:

'यदि ये रक्षक मेरे कारण, जो मैंने गुप्त रूप से शव को ले लयिा था, पीड़ति हो रहे हैं और उन्हें मृत्युदंड दयिा जाना है, तो ईश्वर के न्याय के दनि मेरी दुर्दशा होगी, और मेरी आत्मा, जो उन पुरुषों की हत्या की दोषी है, यातनाओं से ग्रस्त होगी।'

और, सभी को आश्चर्यचकति करते हुए, उसने सैनकिों से पुकारा:

'मत्रिों! मैंने उस आदमी का शव ले लयिा है जसिे तुमने सोते समय मारा था।'

यह सुनकर, सैनकिों ने तुरंत उसे पकड़ लयिा और राजकुमार नुमेरयिन के सामने ले गए, यह कहते हुए:

'हे स्वामी, यह रही वह जसिने मृतक का शव चुराया था।'

राजकुमार ने संत से पूछा:

[8425] एफ़सिुस – एशयिा माइनर में एशयिा प्रांत का प्रमुख शहर; एशयिा माइनर के पश्चमिी तट पर, ईजयिन सागर से बहुत दूर नहीं, कैस्ट्रस नदी पर स्थति था। एफ़सिुस एक वाणज्यिकि केंद्र के रूप में प्रसद्धि था। यह प्रसद्धि मूर्तपिूजक मंदरि आर्टेमसि या डायना का घर भी था। प्रेरतिों के समय में ही यहाँ ईसाई धर्म जड़ें जमा चुका था: पहले, यूहन्ना बपतस्मिा देने वाले के शष्यिों ने यहाँ उपदेश दयिा; फरि प्रेरति पौलुस ने सुसमाचार का प्रचार कयिा और बाद में इस शहर के नविासयिों के लिए अपना पत्र लखिा; बाद में, धर्मशास्त्री, सुसमाचार लेखक संत यूहन्ना ने भी वहाँ उपदेश दयिा और वहाँ रहे। इसलिए, सेंट आइरेनयिस के अनुसार, एफ़सिुस का चर्च प्रेरतिकि परंपरा का एक सच्चा साक्षी था। आज, प्राचीन एफ़सिुस की जगह पर, आया सोलुक नामक एक गरीब तुर्की गाँव बसा हुआ है।

[8426] डेसयिस – एक रोमन सम्राट जसिने 249 से 251 तक शासन कयिा।

[8427] चयिोस – एजयिन सागर (द्वीपसमूह) में, स्मर्ना शहर के सामने एक द्वीप।

'क्या जो वे आपके बारे में कहते हैं, वह सच है?'

– यह सच है, – संत ने उत्तर दिया।

'तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई, तुम शापित महिला, ऐसा करने की?' राजकुमार ने कहा।

मिरोपिया ने उत्तर दिया:

'मैंने हिम्मत इसलिए दिखाई क्योंकि मैं तुम्हारी दुष्टता और अधर्मीता से घृणा करती हूँ और उस पर थूकती हूँ।'

ये शब्द सुनते ही, घमंडी राजकुमार क्रोध से आग-बबूला हो गया और तुरंत उसे बेरहमी से लाठी-डंडों से पीटने का आदेश दे दिया। और उन्होंने उसे बहुत देर तक पीटा; फिर, उसके बाल पकड़कर, उसे पूरे द्वीप में घसीटा और उसके शरीर के हर अंग को यातना दी; अंत में, मुश्किल से जीवित, उन्होंने उसे एक कालकोठरी में बंद कर दिया। आधी रात को, जब संत प्रार्थना कर रही थीं, तो एक प्रकाश ने पूरे कालकोठरी को रोशन कर दिया और स्वर्गदूतों के रूप उनके सामने प्रकट हुए; उनके बीच संत इसिडोर थे, और उन्होंने सभी ने मिलकर त्रिसिगियोन का गायन किया। शहीद को देखकर, इसिडोर ने कहा:

'शांति तुम्हारे साथ हो, मायरोपिया – तुम्हारी प्रार्थनाएँ ईश्वर तक पहुँच गई हैं, और अब तुम हमारे साथ रहोगी और तुम्हारे लिए तैयार किया गया मुकुट प्राप्त करोगी।'

जैसे ही संत इसिडोर ने ये शब्द कहे, पवित्र शहीद मायरोपिया ने खुशी-खुशी अपना प्राण ईश्वर को सौंप दिया[8428]। और कुंड एक अकथनीय सुगंध से भर गया, जिससे कुंड के पहरेदार भय और आश्चर्य से भर गए। उनमें से एक ने, यह सब स्पष्ट रूप से देखकर और सुनकर, पुरोहित के पास दौड़ा, उसे सब कुछ विस्तार से बताया, पवित्र बपतिस्मा ग्रहण किया, और बाद में स्वयं भी शहीद के मुकुट से सम्मानित हुआ। ईसाइयों ने संत मायरोपिया के शरीर को उठाया और ईश्वर की महिमा करते हुए सम्मान के साथ दफनाया।

गुफाओं के पूजनीय अथेनासियस का जीवन

2 दिसंबर को स्मरणोत्सव

'मैं पुनरुत्थान और जीवन हूँ; जो मुझ पर विश्वास करता है, वह मर भी जाए तो भी जीवित रहेगा' (यूहन्ना 11:25)। उद्धारकर्ता ने हमारे पूजनीय पिता अथानासियस, गुफाओं के तपस्वी के जीवन में, लाजरुस के विषय में कहे गए इस वचन को पूरा किया, जो चार दिन से मरा हुआ था, यह इच्छा करते हुए कि हम भी गरीब लाजरुस के विषय में धनी मनुष्य के कहे शब्दों को पूरा करें: *'यदि कोई मरे हुओं में से जी उठे और उनके पास जाए, तो वे पश्चाताप करेंगे'* (लूका 16:30)।

ये पूजनीय अथेनासियस गुफाओं के पवित्र मठ में एक भिक्षु थे, जो एक पवित्र और ईश्वर-प्रसन्न जीवन व्यतीत कर रहे थे। एक लंबी बीमारी के बाद, उनकी मृत्यु हो गई। भाइयों ने उनके शरीर को धोया और उसे कफ़न में लपेटा, जैसा कि एक दिवंगत भिक्षु के लिए उचित है। थोड़ी देरी के कारण, दिवंगत शरीर दो दिनों तक बिना दफ़नाए पड़ा रहा। रात के दौरान, मठाधीश को एक दर्शन हुआ, और उन्होंने एक आवाज़ सुनी जो कह रही थी:

'ईश्वर के पुरुष, अथानासियस, दो दिनों से बिना दफ़नाए पड़े हैं, और तुमने इसकी कोई परवाह नहीं की।'

जैसे ही सुबह हुई, मठाधीश भाइयों के साथ मृतक के पास उसे दफनाने आए – और अचानक उन्होंने देखा कि वह उठकर बैठा है और रो रहा है। यह देखकर कि वह जीवित है, सभी भयभीत हो गए, और उससे पूछने लगे कि वह कैसे जीवित हो गया, और उसने क्या देखा या सुना था। लेकिन उसने केवल एक ही बात का जवाब दिया:

'अपने आप को बचाओ!'

लेकिन उन्होंने उससे और भी ज़िद की, इस उम्मीद में कि उससे कुछ उपयोगी सुनने को मिले। तब उसने उनसे कहा:

'अगर मैं तुम्हें बताऊँ, तो तुम न तो मेरा विश्वास करोगे और न ही मेरी सुनुवाई करोगे।'

तब भाइयों ने उससे शपथ ली कि वे उसकी बताई हर बात का पालन करेंगे। फिर पुनर्जीवित व्यक्ति ने उनसे कहा:

सभी बातों में मठाधीश की आज्ञा का पालन करो, हर घंटे पश्चाताप करो, और प्रभु यीशु मसीह से, उनकी अति पवित्र माता से, और पूजनीय पिता एंथनी और थियोडोसियस से प्रार्थना करो, कि यहाँ, इस मठ में, तुम अपना जीवन

[8428] संत मायरोपिया की मृत्यु लगभग वर्ष 251 में, सम्राट डेसियस के शासनकाल के दौरान हुई।

समाप्त करो और पवत्रि पतिरों के साथ गुफा में दफनाए जाने के योग्य ठहरो: क्योंकि ये तीनों गुण सभी गुणों से श्रेष्ठ हैं। और यदि कोई नयिम के अनुसार इन सभी का यथोचति रूप से पालन करता है, तो वह धन्य होगा, बशर्ते कि वह अहंकारी न हो जाए। मुझसे और कुछ न पूछो, पर मैं तुमसे वनिती करता हूँ: मुझे क्षमा करो।

यह कहने के बाद, वह गुफा में गया और अपने पीछे दरवाज़े बंद कर के, बारह साल तक बनिा बाहर नकिले वहीं रहा। उसने फरि कभी सूरज नहीं देखा; वह दनि-रात लगातार रोता रहा; वह केवल हर दूसरे दनि थोड़ा सा रोटी और पानी खाता था; और इस पूरे समय के दौरान उसने कसिी से एक भी शब्द नहीं कहा। जब अथानासयिस के नधिन का समय नकिट आया, तो उन्होंने भाइयों को बुलाया और उन्हें वह सब कुछ बताया जो उन्होंने पहले आज्ञाकारिता और पश्चाताप के बारे में कहा था; और वे प्रभु में चैन से वश्रिाम करने लगे, और उसी गुफा में सम्मान के साथ दफनाए गए जहाँ वे एक तपस्वी के रूप में रहते थे[8429] ।

उनके नधिन के बाद, पूजनीय अथेनासयिस ने एक चमत्कार के द्वारा भाइयों को अपनी धन्य अवस्था के बारे में सूचति कयिा। एक भक्षिु, जसिका नाम वावलिा था, जो कई वर्षों से पैरों की बीमारी से पीड़ति था, उसे इस धन्य अथानासयिस के अवशेषों के सामने लाया गया; और उनके शरीर को छूते ही वह तुरंत ठीक हो गया, और उस समय से लेकर अपनी मृत्यु तक वह कसिी भी बीमारी से कभी पीड़ति नहीं हुआ। वावलिा ने अपने पूजनीय चकित्सिक के इस चमत्कार का वर्णन भाइयों को सुनाया, जनिमें से एक संत साइमन थे, जो इस जीवन के इतहिासकार थे[8430] :

'जब मैं वहाँ दर्द से कराहते हुए पड़ा था, तो यह धन्य अथानासयिस अचानक आए और मुझसे कहा: "मेरे पास आओ, और मैं तुम्हें चंगा कर दूँगा।" मैं उससे यह पूछने ही वाला था कि वह यहाँ कैसे और कब आया, लेकनि वह अचानक अदृश्य हो गया। मुझ पर प्रकट हुए उस एक पर वश्विास करके, मैंने उससे ले जाए जाने का आग्रह कयिा, और अब मैं ठीक हो गया हूँ।

उस समय से, सभी को एहसास हुआ कि आदरणीय तपस्वी अथानासयिस को प्रभु की कृपा प्राप्त हुई थी और उन्हें परमानंद प्रदान कयिा गया था। उनकी पवत्रि प्रार्थनाओं के द्वारा, हम भी पाप की मृत्यु से उठकर, पश्चाताप में परमेश्वर को भाता जीवन जएिँ, और फरि हमारे जीवन-दाता मसीह यीशु में अनंत जीवन प्राप्त करें, जसिे महमिा हो पति परमेश्वर और जीवन-दायक आत्मा के साथ, अब और सदा और युगानुयुग। आमीन।

सर्बयिा के राजा संत स्टीफन का जीवन[8431]

2 दसिंबर को स्मरण कयिा जाता है

संत स्टीफन उरोश प्रसदि्ध सर्बयिाई शासक स्टीफन डुसान[8432] के पुत्र थे, जन्होंने लगभग सभी सर्बयिाई भूमि को अपने शासन के अधीन करके और ग्रीक साम्राज्य के कई क्षेत्रों पर वजिय प्राप्त करके, स्वयं को सर्बों और ग्रीकों का राजा घोषति कर दयिा था। स्टेफान उरोश का जन्म दुशान और बुल्गारयिाई सम्राट अलेक्ज़ेंडर एसेन की बहन एलेना के यहाँ[8433] हुआ था। उरोश का बचपन उनके पति की सबसे तीव्र गतविधियिों के चरम पर बीता। शाही उपाधि धारण करने के बाद, 1346 में स्टीफन डुसान को उनकी पत्नी के साथ शाही मुकुट पहनाया गया, जबकि उनके बेटे उरोश, जो केवल दस साल का था, को भी शाही मुकुट पहनाया गया और आगे से दस्तावेजों में उन्हें 'क्राल्ज' (kralj) की उपाधि से संबोधति कयिा गया। इस प्रकार, बचपन से ही, उरोश 'युवा' क्राल बन गए - एक उपनाम जो हमेशा उनके साथ रहा।

1355 में अपने पति, स्टीफन डुसान की मृत्यु के बाद, स्टीफन उरोश को अठारह वर्ष की आयु में ज़ार का ताज पहनाया गया और उन्हें वशिाल सर्बयिाई ज़ारशाही का प्रभार संभालना पड़ा। यह एक अत्यंत कठनि कार्य था। स्टेफान

[8429] धन्य अथेनासयिस लगभग 1176 में प्रभु में नधिन हो गए। उनके अवशेष संत एंथनी की गुफा में वरिाजमान हैं।

[8430] संत साइमन – प्रारंभ में कीव-पेचेरस्क लाव्रा के एक भक्षिु, बाद में 1220 में व्लादमिीर के बशिप; वे आठ पेचेरस्क भक्षिुओं के बारे में आठ कथाओं के लेखक के रूप में जाने जाते हैं, जो उन्होंने अपने मत्रि, पेचेरस्क के भक्षिु पॉलीकार्प को लखिी थीं, और 'पेचेरस्क मठ की स्थापना की कथा' के लेखक भी थे। उनका पर्व दवित 10 मई को है।

[8431] यह जीवनी एक प्राचीन सर्बयिाई जीवनी पर आधारति है, जो 'सर्बल्याक' (सर्बयिाई संतों की सेवाओं का एक मुद्रति संग्रह) में शामलि एक चर्च सेवा और सर्बयिाई वृत्तांतों में वर्णति है।

[8432] स्टेफान डुसान ने 1331 से 1355 तक शासन कयिा।

[8433] उनका जन्म 1337 में हुआ था।

डुसान ने स्वयं, अपनी विविधि आबादी (सर्बियाई, बुल्गेरियाई, अल्बानियाई और ग्रीक) वाले अनेक क्षेत्रों पर शासन करने के लिए, उन्हें कुलीनों के अधिकार में रख दिया, जिन्हें ग्रीक रीति-रिवाज के अनुसार राजा द्वारा विभिन्न खिताब - जैसे कि सीज़र, डेस्पॉट और अन्य - प्रदान किए गए थे। ये कुलीन, लगभग पूर्ण स्वायत्तता का आनंद लेते हुए, राजा का विरोध करने में सक्षम थे, और उन्हें काबू में रखने के लिए दुशान के दृढ़ हाथ की आवश्यकता पड़ी।

दुशां के युवा उत्तराधिकारी, स्टीफन उरोश, स्वभाव से अपनी शारीरिक सुंदरता, आत्मा की कोमलता और मन की सादगी के लिए विख्यात थे। उनके लिए इतनी विशाल राज्य पर शासन करना मुश्किल था। अपने पिता के उदाहरण का पालन करते हुए, उन्हें कुलीनों के माध्यम से शासन करने के लिए बाध्य होना पड़ा, लेकिन उनमें उन्हें उचित आज्ञाकारिता में रखने के लिए दृढ़ चरित्र और कौशल की कमी थी। विभिन्न क्षेत्रों के शासकों ने राजा के निर्देशों का पालन करने के बजाय अपनी पहल पर काम करना शुरू कर दिया। मार्जानोविच के कुलीनों—वोल्काशिन भाइयों, उग्ल्येशा और गोयको—ने राज्य के भीतर विशेष प्रभाव प्राप्त किया। वोल्काशिन को पहले राजा द्वारा सीज़र की उपाधि दी गई, और बाद में सर्बिया के राजा की उपाधि दी गई, इसलिए उसने अपने नाम पर शाही फरमान भी जारी किए, । स्टेफान उरोश के पास कोई वास्तविक शक्ति नहीं थी; वह केवल ज़ार की उपाधि से ही संतुष्ट था। उसे बहुत दुख, कठिनाई और अपमान सहना पड़ा, लेकिन उसने यह सब नम्रता से सहन किया।

हालांकि, महत्वाकांक्षी कुलीनों के लिए यह पर्याप्त नहीं था: वे उरोश को पूरी तरह से हटाना चाहते थे। राजा वोल्काशिन, अपने भाइयों के समर्थन से, इस बात के लिए विशेष रूप से उत्सुक थे। अपनी शक्ति से वंचित, उरोश बारी-बारी से विभिन्न सर्बियाई शहरों और क्षेत्रों में रहा; कुछ समय के लिए वह राजकुमार लाजार के साथ रहा, जो वोल्काशिन की तरह एक विशिष्ट क्षेत्र—डैन्यूब क्षेत्र—पर शासन करता था, लेकिन उसने उरोश के साथ दयालुता से व्यवहार किया।

बाहरी तौर पर, वोल्काशिन ने उरोश के प्रति सद्भावना भी दिखाई और उसकी माँ एलेना को आश्वस्त करने की कोशिश की, जो अभी भी जीवित थीं—स्टीफन दुशान की विधवा—और जो अपने बेटे की तकदीर को लेकर डरी हुई थीं। उरोश के प्रति अपनी सद्भावना दिखाने के लिए, वोल्काशिन ने एक बार उसे कोसोवो फील्ड के पास के पहाड़ी क्षेत्र में शिकार के लिए अपने साथ आने का निमंत्रण दिया। इस शिकार के दौरान, वोल्काशिन ने अवसर का लाभ उठाया और विश्वासघात से उरोश की हत्या कर दी। उस रात, शव को गुप्त रूप से पेट्रिच किले के पास स्थित 'चर्च ऑफ द डॉर्मिशन ऑफ द मोस्ट होली मदर ऑफ गॉड' में एक तैयार कब्र में दफनाया गया, जो अक्सर सर्बियाई शासकों का निवास स्थान हुआ करता था[8434] ।

वोल्काशिन ने दावा किया कि शिकार के दौरान उरोश कहीं पीछे छूट गया था और उसे उसकी लोकाभितिरण के बारे में कुछ नहीं पता था। उरोश की शोकाकुल माँ, एलेना, और उसकी पत्नी, अन्ना[8435] ने लापता राजा की तलाश के लिए हर संभव प्रयास किया, लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ। हालाँकि, कोई भी रहस्य अंततः उजागर हो ही जाता है। पेट्रिच के पास चर्च ऑफ द एसम्प्शन में किसी के रात में दफनाए जाने की अफवाहें फैल गईं।

जब कब्र से पट्टा हटाया गया, तो उन्होंने निर्दोष रूप से मारे गए शहीद, ज़ार स्टीफन उरोश का शरीर देखा। उनकी माँ, उनकी पत्नी और वहाँ मौजूद सभी लोगों ने दिवंगत की गहराई से शोक मनाया और उसी चर्च ऑफ़ द असम्प्शन में शाही अंतिम संस्कार की रस्में गंभीरता से संपन्न कीं। स्तेफान उरोश अंतिम सर्बियाई राजा और प्रतिष्ठित नेमान्यिच वंश के अंतिम शासक थे।

राजा स्टीफन उरोश के पवित्र अवशेष उस चर्च में लंबे समय तक रहे जहाँ उन्हें दफनाया गया था, लेकिन बाद में, मुसलमानों द्वारा अपवित्र किए जाने के डर से, ऑर्थोडॉक्स सर्बियाई बस्तियों के लोगों द्वारा उन्हें तुर्की से ऑस्ट्रियाई श्रेम के यासाक मठ में स्थानांतरित कर दिया गया।

सभी सर्बियाई शासकों की तरह, स्टीफन उरोश ने अपने लिए एक समाधि-मंदिर बनवाया – स्कोप्जे में 'ईश्वर की माता के जन्म' का मठ। स्टेफान उरोश के लिए चर्च सेवा उन्हें एक संत के रूप में महिमामंडित करती है, जो 'अपनी युवावस्था से ही प्रभु के प्रति समर्पित थे, विधवाओं और अनाथों की एक पिता की तरह देखभाल करते थे, विवादों को सुलझाते और शांति स्थापित करते थे, गरीबों पर दया दिखाते थे, और उत्पीड़ितों की रक्षा करते थे'।

[8434] पेट्रिच *जेजेरस्का प्लाटनिन* में नेरोदिमिले के ऊपर स्थित था, यानी वह पर्वत श्रृंखला जो प्रिज़्रेन शहर के समीप के क्षेत्र पोड्रिन्जे को कोसोवो के मैदान से अलग करती है।

[8435] वह वलाचिया के वोयवोड अलेक्ज़ेंडर बसारब की बेटी थी।

आदरणीय जॉन, हेराक्लेमोन, एंड्रयू और थियोफलिस की स्मृति

2 दसिंबर को स्मरण कयि जाता है

आदरणीय पति जॉन, हेराक्लेमोन, एंड्रयू और थियोफलिस ऑक्सरिन्च शहर के मूल नविासी थे[8436] और ईसाई माता-पति की संतान थे। छोटी उम्र से ही उन्होंने शक्षिाप्रद कतिाबें पढ़ने का अभ्यास कयि, और बाद में, ईश्वर को प्रसन्न करने वाला जीवन जीने की इच्छा से प्रेरति होकर, वे अपने देश के भीतरी रेगस्तिान में चले गए[8437] , जहाँ उन्हें ईश्वर द्वारा नर्दिेश दयि गया: वहाँ, रेगस्तिान में, उनकी मुलाकात एक पवत्रि व्यक्ति से हुई जो पहले ही वृद्धावस्था को प्राप्त कर चुका था, और उन्होंने एक साल तक उसके साथ रहकर उसके आध्यात्मकि मार्गदर्शन से लाभ उठाया। जब वह व्यक्ति मर गया, तो वे उसी सुनसान स्थान पर रहे और साठ वर्षों तक एक कठोर उपवास का पालन करते हुए तपस्वी जीवन जयि। वे जंगली सब्जयिों और पानी पर जीवति रहते थे, लेकनि इन्हें भी वे सप्ताह में केवल दो बार ही खाते थे। सप्ताह के दनिों में वे अपने-अपने रास्ते चले जाते थे, और प्रत्येक व्यक्ति आसपास के पहाड़ों और गुफाओं में एकांत में समय बताता था; जबकि शनविार और रवविार को वे एक साथ इकट्ठा होते और संयुक्त रूप से ईश्वर को धन्यवाद अर्पति करते , एक दव्यि स्वर्गदूत से पवत्रि सहभागति प्राप्त करते, और इस प्रकार वे शांतपिूर्वक नधिन कर गए। यह वृत्तांत महान तपस्वी पाफनुटयिस (थेबाइड के) द्वारा सुनाया गया था, जन्होंने स्वयं उन पुरुषों को देखा था और उनके जीवन का वर्णन कयि था[8438] ।

16 दसिंबर

3 दसिंबर (पुराने कैलेंडर के अनुसार)

पवत्रि नबी सफन्याह की स्मृति

3 दसिंबर को स्मरणोत्सव

संत ज़ेफ़न्याह, बारह लघु भवष्यिवक्ताओं में से एक[8439] , हुशयिाह के पुत्र, गेदालयिाह के पोते, अमोरयिाह के परपोते और हेज़ेकयिाह के पर-परपोते थे, जो परंपरा के अनुसार, शमिोन के कुल से थे, और सारावा या वराफ के पहाड़ी क्षेत्र के रहने वाले थे[8440] । वे कुलीन वंश के थे[8441] और यहूदी राजा योशयि्याह, अमन के पुत्र, के शासनकाल में रहते थे, जो हमारे प्रभु यीशु मसीह के पृथ्वी पर आगमन से लगभग 600 वर्ष पहले था। अपने समय में, धर्मनष्ठि राजा योशयि्याह, जो यहूदयिों द्वारा लगभग भुला दए गए ईश्वर की सच्ची उपासना को बहाल करने का सच्चे मन से प्रयास कर रहे थे, ने अपने लोगों के बीच मूर्तपिूजा का उन्मूलन कर दयि। उन्होंने सुलैमान के मंदरि को, जो पूरी तरह से खस्ताहाल हो चुका था, उसकी पूर्व वैभव में बहाल कयि; उन्होंने मूर्तपिूजक वेदयिों को ध्वस्त कर दयि, मूर्तपिूजक पुरोहतिों को मौत की सजा दी, और सभी को मूसा की व्यवस्था का सख्ती से पालन करने का आदेश दयि। फरि भी, सच्चे धर्म को बहाल करने के लए राजा के उत्साह के बावजूद, लोगों को—जो पहले ही दुष्टता में गहरे धँस चुके थे—ईश्वर की ओर वापस लाना

[8436] मध्य मस्रि में, नील नदी के बाएं कनिारे पर।

[8437] अर्थात् थेबाइड। थेबाइड मरुभूमि ऊपरी (दक्षणिी) मस्रि में स्थति थी और प्राचीन संन्यासयिों के साहसकि कार्यों के लए एक पसंदीदा स्थान थी।

[8438] चौथी शताब्दी में।

[8439] नबयिों का *'प्रमुख'* और *' गौण'* में वभिाजन उनकी व्यक्तगित या आध्यात्मकि गुणों पर नहीं, बल्कि उनके द्वारा लखिी गई पुस्तकों की संक्षप्तिता पर आधारति है।

[8440] शमिोन का कुल, जसिके क्षेत्र में सारवे पर्वत स्थति था, ने फलिस्तीन के दक्षणि-पश्चमिी सीमा क्षेत्र पर कब्जा कयि था।

[8441] इसका आधार यह है कि ज़ेफ़न्याह अपनी पुस्तक की शुरुआत में अपने पूर्वजों का उल्लेख करता है। उस समय की प्रथा के अनुसार, केवल कुलीन वंश के लोगों को ही ऐसा करने की अनुमति थी।

कठनि था। राजा के अधकिार के डर से, यहूदयिों ने खुले तौर पर मूर्तयिों की पूजा करना बंद कर दयिा, लेकनि अपने दलिों में उन्होंने वधिर्मी दुष्टता के प्रतभिक्तको पनपाया। इसलएि, प्रभु ने—जैसा कपिवत्रि शास्त्र कहता है—अपने क्रोध की महान प्रचंडता को नहीं रोका, जो यहूदा के वरिुद्ध भड़क उठी थी (2 राजा 23:29)। लोग परमेश्वर के न्याय के लएि परपिक्व हो रहे थे, जो जल्द ही उन पर टूटने वाला था। ऐसी दुष्टता और मूर्तपिूजक अंधकार के बीच, सपन्याह रात में एक चमकते तारे की तरह भक्तसे दमक उठे। एक सच्चे इस्राएली के रूप में, वह अपने लोगों की दुष्टता पर गहराई से शोक मनाता था, और प्रभु के एक पहरेदार और परमेश्वर के रहस्यों के एक मननकर्ता[8442] के रूप में, जो मन और हृदय से शुद्ध था, उसने अपने देशवासयिों के सत्य के मार्ग पर लौटने और वनिाश से उनकी मुक्तके लएि उत्कट प्रार्थना की। और इस प्रकार, मानो इस प्रार्थना के उत्तर में, 'यहोवा का वचन सेफ़न्याह के पास आया' (सेफ़न्याह 1:1)। परमेश्वर, जो मनुष्यों के हृदयों को देखता है, ने उसे अपना भवष्यिवक्ता चुना और उसे यहूदयिों को उन भयानक दंडों की घोषणा करने की आज्ञा दी जो उनकी दुष्टता और झूठे देवताओं की उपासना के लएि उनका इंतजार कर रहे थे। प्रभु की आज्ञा का पालन करते हुए, सपन्याह यहूदी नगरों और गांवों में घूमा, और हर जगह लोगों से सुधार करने और पश्चाताप करने का आग्रह कयिा। उसका उपदेश लंबा नहीं था, लेकनि अपनी शक्तऔर गहराई में यह महान भवष्यिवक्ताओं यशायाह और यर्मियाह के प्रचंड भाषणों जैसा था।

ज़ेफ़न्याह ने अपनी भवष्यिवाणी इस प्रकार शुरू की, 'यहोवा की यह बात है, मैं पृथ्वी के मुख से सब कुछ नाश कर डालूँगा: मैं मनुष्यों और पशुओं को, आकाश के पक्षयिों और समुद्र की मछलयिों को नाश कर डालूँगा, और मैं दुष्टों को पृथ्वी के मुख से मटिा डालूँगा। और मैं यहूदा और यरूशलेम के सभी नवािसयिों के वरिुद्ध अपना हाथ बढ़ाऊँगा, और मैं उन लोगों को काट डालूँगा जो प्रभु से मुँह फेर लेते हैं और उसकी खोज नहीं करते। इसलएि, हर कोई प्रभु के सामने काँपे: वह एक बलदिान तैयार कर रहा है, और उसका दनि नकिट है। यह क्रोध का दनि होगा, संकट और कष्ट का दनि, उथल-पुथल और भय का दनि, अंधकार और घोर अँधेरे का दनि। तब लोग अंधों की तरह इधर-उधर टटोलते फरिेंगे, क्योंकउिन्होंने यहोवा के वरिुद्ध पाप कयिा है; और उनका लहू रेत की तरह बहा दयिा जाएगा, और उनकी लाशें गोबर के समान होंगी (सपन्याह 1:2–4, 14–18)।

यहूदयिों पर ऐसी सजा की घोषणा करते हुए, सपन्याह ने मूर्तपिूजक राष्ट्रों के नकिट वनिाश की भी भवष्यिवाणी की। उन्होंने कहा, 'फलिस्तीय, मोआब, अम्मोन, इथयिोपयिाई और Assyrians[8443] नष्ट कर दएि जाएँगे; उनके देश उजाड़ कर दएि जाएँगे और सदोम और गमोरा की तरह काँटों से भरपूर खेत और एक अनंतकाल का उजाड़ प्रदेश बन जाएँगे। 'यह उनके अहंकार, परमेश्वर के लोगों का अपमान करने और स्वयं को उनसे ऊपर मानने का दंड है'[8444] । एक बार फरि अपने मूल यरूशलेम की ओर मुड़ते हुए, भवष्यिवक्ता दुख के साथ देखते हैं कविह दुष्ट मूर्तपिूजक राष्ट्रों पर दी गई सज़ा के उदाहरणों पर कोई ध्यान नहीं देता और अपनी गलती पर अड़ा रहता है। नबी के अनुसार, यरूशलेम 'न तो उपदेश स्वीकार करता है, न ही आवाज़ सुनता है, और न ही यहोवा पर भरोसा करता है, और न ही अपने परमेश्वर के समीप आता है। इसके

[8442] ज़ेफ़न्याह (गुप्त पर्यवेक्षक) नाम की यही व्याख्या की जाती है; यह हब्रिू क्रयिा 'त्साफ़' - देखना, नगिरानी रखना - या क्रयिा 'त्साफ़ान' से लयिा गया है, जसिका अर्थ है छपिाना या छुपाना।

[8443] *फलिश्तीयहूदयिों* के पड़ोसी थे, जो पैलेस्टाइन के पश्चमिी भाग में, भूमध्य सागर के तट पर बसे थे। वे मस्रि के पूर्वज हाम के पुत्र मज़िराइम के पुत्र पशलूखमि और कफ़्तोरमि की संतान थे (उत्पत्त10:14; व्यवस्थावविरण 2:23; 1 इतहिास 1:12; यर्मियाह 47:4; आमोस 9:7)। वे फ़लिस्तीन के स्वदेशी नवािसी नहीं थे, बल्कनिए आए और बसे हुए लोग थे, जैसा कि'फ़लिस्तीन' (Pelishtim) शब्द से ही स्पष्ट है – जसिका अर्थ है भटकना, प्रवास करना। कास्लूहीत और काफ़्गोरीयत के वंशज, जो उत्तरी मस्रि के कसिी भाग में रहते थे, फ़लिश्ती प्राचीन काल में पहले क्रीट द्वीप पर और फरि फ़लिस्तीन में प्रवास कर गए। *मोआबयिों* की उत्पत्तसिेमेटकि थी, वे मोआब के वंशज थे, जो लूत और उसकी सबसे बड़ी बेटी का अवैध पुत्र था (उत्पत्त19:30-37)। उन्होंने मृत सागर के पूर्वी तट पर पहाड़ी लेकनि सुंदर और उपजाऊ भूमपिर कब्ज़ा कर लयिा था। पश्चमि में, उनकी सीमा मृत सागर थी, और पूर्व में, मरुभूम। *अम्मोनी* लोग मोआबयिों से संबंधति थे, जो लूत और उसकी बड़ी बेटी के अवैध पुत्र अम्मोन और उसकी छोटी बेटी बेन-अम्मी (उत्पत्त19:38) की संतान थे। वे यॉर्डन नदी के पूर्वी तट पर, गलिाद के पहाड़ों के पास, जब्बोक और अर्नोन नदयिों के बीच रहते थे। *इथयिोपयिाई,* या *कुशी,* हम् के पुत्र कुश या हुश के वंशज थे। प्राचीन काल में, 'अब्सीनयिों' नाम सभी गहरे रंग के लोगों (उत्तर-पूर्वी अफ्रीका और दक्षणि-पश्चमिी एशयिा के) के लएि प्रयुक्त होता था; लेकनि बाद में यह नाम वशिेष रूप से असली अब्सीनयिा के नवािसयिों के लएि प्रयुक्त होने लगा, जो मस्रि के दक्षणि में, लाल सागर, लीबयिा के रेगस्तिान और अब्सीनयिाई उच्चभूमके बीच स्थति था। *अश्शूरयिाई* लोग सेमटिकि मूल के लोग थे, जो नूह के पुत्र शेम के पुत्र अश्शूर के वंशज थे। उनका राज्य, जो पूरे एशयिा के सबसे शक्तशिाली राज्यों में से एक था, आर्मेनयिा, मेसोपोटामयिा, मीडयिा और बेबीलोनयिा के बीच, टग्रिसि नदी के कनिारे के क्षेत्रों में फैला हुआ था।

[8444] सपन्याह 2:1। ये भवष्यिवाणयिाँ बेबीलोन के राजा नबूकदनेसर के अधीन पूरी हुईं, जसिने न केवल यहूदयिों को बल्कमिोआबयिों, अम्मोनयिों और फलिस्तीनयिों को भी वश में कर लयिा। हालाँकि, अस्सरियिा नबूकदनेसर के पतिा, नाबोपोलसर के अधीन गरि गया।

राजकुमार दहाड़ते शेर हैं, इसके न्यायाधीश साँझ के भेड़िये हैं, इसके लोग घमंडी हैं, और इसके याजक पवित्र स्थल का अपमान करते हैं और व्यवस्था को नष्ट करते हैं। भविष्यवक्ता ने कहा, 'इसके लिए,' 'दुष्ट नगर उजाड़ दिया जाएगा, और इसके साथ यहूदा का देश भी नष्ट हो जाएगा'[8445] ।

लेकिन सपन्याह ने केवल निराशाजनक भविष्यवाणियों तक ही खुद को सीमित नहीं रखा; उनकी भविष्यवाणी की दृष्टि उन धन्य समयों तक पहुँची जब इस्राएल का सांत्वनादाता और राष्ट्रों की आशा प्रकट होने वाला था, और उनके साथ, सारी पृथ्वी के लिए आनंद और शांति। इन समयों के आगमन पर मनन करते हुए, सपन्याह ने घोषणा की कि प्रभु के न्याय के महान दिन पर सारा इस्राएल, न ही सारी भूमि नष्ट की जाएगी। भयानक दण्डों के बाद, प्रभु शेष बचे लोगों को एक शुद्ध जीभ देंगे, ताकि वे उनके नाम का आह्वान कर सकें और एकमत होकर उनकी सेवा कर सकें। और इस्राएल में से केवल कोमल और नम्र ही बचेंगे, जो यहोवा का भय मानते हैं। इस्राएल का यह अवशेष अब और अधर्म नहीं करेगा और इसलिए उसे शांति मिलेगी, जो उसके किसी भी शत्रु से अछूती रहेगी[8446] । इन धन्य समयों की ओर इशारा करते हुए, नबी भविष्यवाणी की गई भयानक और निकट की विपत्तियों को भूल जाते हैं और आनंद के साथ उद्घोष करते हैं:

'हे सियोन की बेटी, आनन्द मना; हे यरूशलेम की बेटी, जयजयकार कर; सज-धज कर और पूरे मन से आनन्द मना, क्योंकि यहोवा ने तेरी सारी अधार्म्यताओं को दूर कर दिया है और तेरे शत्रुओं के हाथ से तुझे छुड़ा लिया है; यहोवा तेरे बीच में राज्य करेगा, और तू फिर कभी कोई विपत्ति नि देखेगी।' उस दिन यहोवा सियोन से कहेगा: 'हे सियोन, मज़बूत हो, और अपने हाथों को कमज़ोर न होने दे; क्योंकि यहोवा तेरा परमेश्वर तेरे बीच में है; वह सामर्थी है—वह तुझे बचाएगा और तुझे आनन्द देगा, और अपनी प्रेमपूर्ण दया से तुझे नया कर देगा' (सेफ़. 3:14-17)।

पवित्र कलीसिया जेफ़न्याह के इन शब्दों में सामान्य रूप से धन्य मसीही युगों का, और विशेष रूप से प्रभु यीशु मसीह के यरूशलेम में विजयी प्रवेश का एक स्पष्ट संदर्भ देखती है, जब सारा सियोन, अपने हाथों में खजूर की डालियाँ लेकर और उत्साही जयकारों के साथ: 'दाऊद के पुत्र के लिए होसन्ना', ने उनका राजा के रूप में स्वागत किया, जो अपने लोगों के बीच रहने वाले थे। इसीलिए, पाम संडे पर, पवित्र सपन्याह की पुस्तक से एक अंश पढ़ने की प्रथा है, विशेष रूप से वह अंश जहाँ नबी सियोन के लिए प्रतीक्षित आनंद के दिन के बारे में बात करते हैं।

इस प्रकार जेफ़न्याह ने भविष्यवाणी की, पापियों को पश्चाताप के लिए प्रेरित करने हेतु परमेश्वर के भयानक न्याय की भविष्यवाणी करते हुए, और प्रभु की असीम दया की घोषणा करते हुए—मसीहा के दिनों में पृथ्वी पर परमेश्वर के राज्य की स्थापना—ताकि दीन लोग इन बातों की आशा से सांत्वना और बल प्राप्त कर सकें।

वे सामान्य पुनरुत्थान की प्रतीक्षा करते हुए देहांत को प्राप्त हुए और, परंपरा के अनुसार, उन्हें उनके अपने घर में ही दफनाया गया।

कॉन्टाकियन, स्वर 4:

हे नबी सफन्याह, आप दिव्य आत्मा से प्रकाशमान होकर प्रकट हुए, और ईश्वर के प्रकाशन की घोषणा की: 'हे सियोन की पुत्रियों, अति आनन्द मनाओ; हे यरूशलेम, यह प्रचार करो: देखो, तुम्हारा राजा, उद्धारकर्ता, आ रहा है।'

हमारे पूजनीय पिता जॉन मौनजी का जीवन

3 दिसंबर को स्मरणोत्सव

[8445] वास्तव में, दुष्टों के लिए दंड आने में देर नहीं हुई। योशियाह के शासनकाल के दौरान ही, मिस्रियों ने—जो उस समय एक शक्तिशाली शत्रु थे—आक्रमण कर दिया। उनके राजा, फिरौन नकोह ने, मेगिद्दो की लड़ाई में, यिज्रेएल की घाटी में (फिलिस्तीन के दक्षिण में) यहूदियों को हरा दिया। धार्मिक योशियाह इस लड़ाई में मारे गए। उस दुर्भाग्यपूर्ण दिन से यहूदियों पर दंड शुरू हो गया, और भविष्यवाणियों की धमकियाँ पूरी हुईं। योशियाह की मृत्यु के तुरंत बाद, यहूदियों को मिस्रवासियों ने अपने अधीन कर लिया और उन पर भारी कर लगा दिया; बाद में, बेबीलोनियों ने यहूदिया पर आक्रमण करना शुरू कर दिया। ईसा पूर्व 607 में, उनके राजा नबूकदनेस्सर ने यरूशलेम पर कब्जा कर लिया, उसे उजाड़ दिया, और लोगों को बंदी बनाकर ले गया, जहाँ वे 70 वर्षों तक रहे। इस प्रकार यहूदियों के दुष्टाचार के लिए दंड के बारे में की गई भविष्यवाणियाँ पूरी हुईं।

[8446] सैफ़न्याह 3:9-14। दूत सैफ़न्याह की इस्राएल के अवशेषों के विषय में भविष्यवाणी को धन्य थियोडोरेट प्रेरितों से जोड़ते हैं, जो हृदय से नम्र और विनम्र थे।

मौन व्यक्ति[8447] , अखंड स्तुति के योग्य, हमारे पवित्र और आदरणीय पिता जॉन का जन्म आर्मेनिया के निकोपोलिस[8448] में, उनके पिता एनक्रैटियस और उनकी माता यूफेमिया के यहाँ, धर्मपरायण सम्राट मार्सियन[8449] के शासन के चौथे वर्ष में, जनवरी के आठवें दिन हुआ था, और वे पवित्र बपतिस्मा द्वारा प्रबुद्ध हुए। जॉन के माता-पिता धर्मनिष्ठ ईसाई थे और अपनी संपत्ति और प्रतिष्ठा के लिए पूरे आर्मेनिया में प्रसिद्ध थे; उनके पिता एक सैन्य कमांडर थे और राजा के पास बहुत अधिकार रखते थे, क्योंकि उन्हें राजा की पूरी कृपा प्राप्त थी: धन्य जॉन ऐसे गौरवशाली पिता के पुत्र थे। यह जॉन की कुलीनता के लिए महिमामंडन या प्रशंसा करने के लिए नहीं कहा गया है (क्योंकि संतों को उनके गुणों के लिए महिमामंडित किया जाता है, न कि उनकी कुलीनता के लिए), बल्कि इसलिए कहा गया है कि यह जाना जा सके कि ईश्वर के इस सेवक ने किस महिमा से उतरकर कितनी नम्रता तक पहुँच प्राप्त की।

जॉन को अपने भाइयों के साथ अच्छे उदाहरणों का अनुसरण करने के लिए पाला गया और उसने पवित्र शास्त्रों में पूरी तरह महारत हासिल की। जब उसके माता-पिता का निधन हुआ, तब वह अभी भी एक युवा था, और उन्होंने अपने बच्चों के लिए एक बड़ी संपत्ति छोड़ दी। जब यह संपत्ति भाइयों के बीच बांटी गई, तो धन्य जॉन ने अपने हिस्से का उपयोग निकोपोलिस शहर में सबसे पवित्र और सबसे धन्य वर्जिन मैरी को समर्पित एक चर्च बनाने के लिए किया। बाद में संसार का त्याग करके, उन्होंने अठारह वर्ष की आयु में संन्यास की शपथ ली और दस अन्य संतों के साथ इस चर्च में रहे, तथा स्वयं को पुण्य कार्यों में समर्पित कर दिया। अपने पूरे युवा जीवन में, उन्होंने शरीर को आत्मा के अधीन करने, अपनी भूख का गुलाम न बनने, और अपनी इच्छाओं—विशेषकर अहंकार—को अपने ऊपर हावी न होने देने के लिए बहुत प्रयास किया। और वह असाधारण सद्गुणों वाले, अपने भाइयों के लिए एक दयालु और कुशल मार्गदर्शक और मठाधीश थे।

[8450]जब जॉन अठ्ठाईस वर्ष के हो गए, तो कोलोनिया के बिशप, ई[8451] का निधन हो गया। नागरिक सेबास्टे के मेट्रोपॉलिटिन,[8452] के पास गए और उनसे एक नए बिशप की नियुक्ति करने के लिए कहा। इस पद के योग्य उम्मीदवार का चयन करते समय, निकोपोलिस मठ के मठाधीश जॉन का नाम कोलोनिया चर्च के सिंहासन पर बैठने के लिए उपयुक्त व्यक्ति के रूप में सभी की जुबान पर था। जो लोग उनकी महान विनम्रता को जानते थे, वे मानते थे कि वह बिशप का पद स्वीकार नहीं करना चाहेंगे; इसलिए, मेट्रोपॉलिटिन ने उन्हें किसी धार्मिक मामले के बहाने बुलाया, और जब संत पहुँचे, तो उन्होंने उन्हें बिशप बनने के लिए मना लिया। फिर उन्हें कोलोनिया चर्च के बिशप के रूप में अभिषिक्त और प्रतिष्ठित किया गया। धार्मिक पद संभालने के बाद भी, जॉन ने अपने मठवासी नियम या अपने तपस्वी आचरण को नहीं बदला। इस प्रकार, उन्होंने कभी स्नानागार में प्रवेश नहीं किया, और न ही अपने शरीर को धोया, ईश्वर की महिमा के भय से कि कहीं कोई बाहरी व्यक्ति उनकी नग्नता न देख ले, बल्कि इससे भी कि वे स्वयं कभी खुद को नग्न न देख लें: उन्हें आदम की नग्नता याद थी (उत्पत्ति 3:7)। उपवास, प्रार्थना, और शरीर तथा आत्मा की पवित्रता के द्वारा परमेश्वर को प्रसन्न करना; अपने सभी विचारों को शुद्ध करना; परमेश्वर की इच्छा के विरुद्ध हर प्रकार के घमंड को अपने भीतर नम्र करना; और अपने मन को मसीह के अधीन लाना (2 कुरिन्थियों 10:5)—यही यूहन्ना की संपूर्ण चिंता का सार था। इतनी सदाचारपूर्ण जीवन जीते हुए, वह दूसरों के लिए एक अच्छे जीवन का उदाहरण बने; उसकी ओर देखकर, अन्य लोग सुधर गए और सदाचारपूर्ण जीवन जीने लगे। उनमें से एक पेरगामीयस था, जो उसका रक्त संबंधी भाई था, एक महान प्रसिद्ध व्यक्ति जिसे राजा ज़ेनो और ज़ेनो के बाद शासन करने वाले अनास्तासियस दोनों द्वारा बहुत सम्मान दिया जाता था[8453] । यह देखकर कि उसका भाई, धन्य जॉन, एक पवित्र जीवन जीता था, पेरगामीयस अपने हृदय में गहराई से प्रभावित हुआ और ईश्वर को प्रसन्न करने के लिए बहुत प्रयास किए। इसी तरह, जॉन के भतीजे थियोडोर, जो बाद में धर्मपरायण

[8447] 'मौन रहने वाले' या 'मौन के भिक्षु' धर्मनिष्ठ पुरुष थे जिन्होंने स्वेच्छा से मौन रहने का संकल्प लिया था और उसे पूरा किया था। सम्माननीय जॉन के अलावा, मौन के सबसे कड़े पालन करने वालों में सम्माननीय इसकियस भी हैं, जो माउंट अथोस पर हेसकैस्ट स्केटा के संस्थापक थे, जो 12 वर्षों तक मौन रहे (उनका पर्व दिवस 3 अक्टूबर है; वाणी से परहेज़ पर, देखें मत्ती 1:36, एफ़ि. 4:29, 5:3–4, याकूब 3, आदि।

[8448] आर्मेनिया – एशिया माइनर प्रायद्वीप के पश्चिम में, इबेरिया या कॉकेसस के दक्षिण में, और टिग्रिस और यूफ्रेटिस के उत्तर में स्थित एक क्षेत्र। निकोपोलिस – आर्मेनिया के प्रमुख शहरों में से एक

[8449] मार्शियन, एक पूर्वी रोमन सम्राट, ने 450 से 457 तक शासन किया। परिणामस्वरूप, जॉन का जन्म 454 में हुआ था।

[8450] (उत्पत्ति 3:7, 10, 11) आदम की अपनी नग्नता की जागरूकता पतन का परिणाम था; आदम की संतानों के लिए, यह उनके पूर्वज के पाप और सभी मानवजाति के लिए उस पाप के दुखद परिणामों की एक याद दिलाता है।

[8451] कोलोनिया रोमन आर्मेनिया का एक शहर था।

[8452] सेबास्टे आर्मेनिया की राजधानी थी, जो गैलियन नदी के स्रोत से बहुत दूर नहीं स्थित थी।

[8453] ग्रीक सम्राट ज़ेनो ने 474 से 491 तक शासन किया; अनास्तासियस ने 491 से 527 तक शासन किया।

सम्राट जस्टनियिन[8454] के बहुत प्रयि हुए, को अपने चाचा के दैवी जीवन से लाभ हुआ। थयिोडोर, अपने पूरे परविार के साथ, ईश्वर को प्रसन्न करने वाला जीवन जयिा और इतना सदाचारी था कि स्वयं सम्राट और कुलीनों ने भी उसके सम्मानजनक आचरण और बुद्धि, उसके सच्चे वशि्वास और उसकी दया को देखकर आश्चर्य व्यक्त कयिा। थयिोडोर ने यह सब अपने धन्य चाचा जॉन द्वारा अपनाए गए नरि्दोष जीवन के उदाहरण का पालन करके हासलि कयिा।

दविय और ईश्वर-धारी पति जॉन पहले ही दस वर्षों से बशिप के रूप में सेवा कर रहे थे, और मसीह की कलीसयिा के भले के लिए उसका शासन कर रहे थे, जब उनकी बहन मैरी के पति, पासनिकि नामक एक व्यक्ति, आर्मेनयिा का शासक बना। शैतान के उकसावे पर, उसने जॉन के सुपुर्द की गई चर्च में बाधा डालनी शुरू कर दी और उसे नुकसान पहुँचाया, जसिसे धन्य व्यक्ति को दुख हुआ: धार्मकि मामलों में हस्तक्षेप करके, उसने चर्चों से उन लोगों को जबरदस्ती हटा दयिा जो वहाँ दंड से शरण लेने आए थे[8455] , और चर्च के सेवकों और नरि्माताओं को धार्मकि मामलों में ध्यान देने की अनुमति नहीं दी। कई अवसरों पर, धन्य योहन ने वनिम्रतापूर्वक उनसे याचना की कि वे धार्मकि मामलों में हस्तक्षेप न करें और चर्च को कोई हानि या हसिा न पहुँचाएँ। लेकनि राज्यपाल अडगि रहे और सुधार का कोई संकेत नहीं दखिाया; वास्तव में, धन्य व्यक्ति की बहन के नधिन के बाद उनका व्यवहार और भी बदतर हो गया। चर्च पर हो रहे अत्याचार से गहराई से दुखी होकर, संत को सम्राट ज़ेनो से मलिने के लिए कॉन्स्टेंटनिोपल की यात्रा करने के लिए मजबूर होना पड़ा, जहाँ उन्हें कॉन्स्टेंटनिोपल के आर्चबशिप, यूथमियिस[8456] का समर्थन मलिा, जन्हिोंने सम्राट के समक्ष उनकी ओर से मध्यस्थता की।

इस संसार के व्यर्थता और कलह को देखकर, धन्य जॉन ने बशिप पद छोड़ने का संकल्प लयिा और पवत्रि नगर यरूशलेम में जाकर, मौन में ईश्वर के लिए कार्य करने लगे। ईश्वरीय अनुष्ठान का अनुष्ठान करने के बाद, उन्होंने अपने साथ मौजूद पुरोहतिों और पादरयिों को वदिा कर दयिा, और स्वयं, कसिी को भी पता न चलने देते हुए, समुद्र तट पर चले गए, एक जहाज पर सवार हुए और पवत्रि नगर यरूशलेम के लिए रवाना हो गए। पवत्रि नगर के पहले अस्पताल में पहुँचने पर, जहाँ महान शहीद सेंट जॉर्ज को समर्पति एक प्रार्थना गृह था, वह कुछ समय के लिए एक भखिारी का भेष धारण करके वहाँ ठहरे। लोगों की भीड़-भाड़ को देखकर, जॉन को गहरा दुख हुआ; वह एक शांत स्थान के लिए तरस रहे थे और आँसुओं के साथ, उन्होंने परमेश्वर से प्रार्थना की कि वह उन्हें मोक्ष के लिए एक शांतपिूर्ण, उपयुक्त और अनुकूल स्थान दखिाएँ। एक रात, जब वह इस बात के लिए भक्तपिूर्वक प्रार्थना कर रहे थे, तो उन्होंने ऊपर देखा और एक अत्यंत तेजस्वी, क्रॉस के आकार का तारा देखा, जो अचानक प्रकट हुआ था; वह उनके करीब आया, और तारे की करिणों से उन्होंने एक आवाज़ सुनी जो कह रही थी: 'यदि तुम बचना चाहते हो, तो इस प्रकाश का अनुसरण करो।'

आदरणीय पति तुरंत ही आनंदपूर्वक प्रस्थान कर गए और तारा उन्हें उनके जीवन के उनतीसवें वर्ष में हमारे आदरणीय और ईश्वर-वाहक पति सव्वा के महान मठ तक ले गया, जब सलस्टयिस यरूशलेम के पैट्रआर्क थे[8457] ।

जॉन ने सम्माननीय सव्वा को एक सौ चालीस तपस्वी भाइयों के प्रमुख के रूप में पाया, जो महान शारीरकि गरीबी में लेकनि महान आध्यात्मकि धन में रहते थे। और पूजनीय सव्वास ने धन्य योहन का स्वागत कयिा, और व्यवस्थापक को उसे मठ के कर्तव्य सौंपने का नरि्देश दयिा, यह जाने बनिा कि योहन के भीतर दविय अनुग्रह का कतिना खजाना छपिा था। यद्यपि संत सव्वा के पास ववेक का वरदान था, फरि भी ईश्वर ने उनसे यह रहस्य छपिा रखा था कि जॉन एक बशिप थे, जन्हिोंने ईश्वर के लिए अपना बशिप पद त्याग दयिा था और एक साधारण व्यक्ति के रूप में उनके पास आए थे। कसिी को आश्चर्य नहीं होना चाहिए कि दूरदर्शति का वरदान रखने वाले भी हमेशा सब कुछ नहीं देख पाते: क्योंकि वे केवल वही देख पाते और भवषि्यवाणी करते हैं जो ईश्वर उन्हें प्रकट करते हैं, और जो वे प्रकट नहीं करते, उसे वे नहीं जानते। इसीलिए भवषि्यवक्ता एलशिा ने शुनम की स्त्री के वषिय में अपने दास से कहा: *'उसे अकेला छोड़ दो; उसकी आत्मा में क्लेश है, और यहोवा ने यह मुझसे छपिा रखा है और मुझे यह नहीं बताया'* (2 राजा 4:27)[8458] ।

[8454] जस्टनियिन महान ने 527 से 566 तक शासन कयिा।

[8455] यह उत्पीड़तिों और दंडतिों के चर्चों में शरण लेने के प्राचीन अधकिार को संदर्भति करता है।

[8456] यूथमियिस 490 से 496 तक कॉन्स्टेंटनिोपल के पैट्रआर्क थे।

[8457] सैलस्टयिस – 486 से 494 तक यरूशलेम के पैट्रआर्क।

[8458] 2 राजा 4:27। शुनेम की एक स्त्री, जसिने भवषि्यवक्ता एलशिा की मेहमाननवाजी की थी, ने अपने पुत्र को खो दयिा। दुख से अभभिूत होकर, वह भवषि्यवक्ता से मलिने के लिए कर्मोल पर्वत की ओर चल दी। उसे दूर से देखकर, एलशिा ने अपने सेवक गेहाजी को उसके पास भेजा और उसके पति तथा बच्चों की कुशल-क्षेम पूछने को कहा। जब वह पास आई, और बनिा एक शब्द बोले, बड़े दुख में एलशिाये के पैरों पर गरि पड़ी,

मठ में स्वीकार कए जाने के बाद, जॉन ने व्यवस्थापक द्वारा सौंपी गई वभिन्नि जम्मिेदारयिों को पूर्ण वनिम्रता और उत्साह के साथ नभिाया। उस समय, लाव्रा में एक अतथिि गृह का नर्मिाण हो रहा था, और धन्य जॉन को उस पर काम करने वालों की सेवा करने का कार्य सौंपा गया था। उन्होंने उनके लए भोजन पकाया, पानी लाया, पत्थर दए और भवन पर हो रहे सभी कार्यों में भाग लया।

लाव्रा में उनके आगमन के दो साल बाद, जॉन को यात्रयिों का स्वागत करने का कार्य सौंपा गया; और यहाँ, उन्होंने वनिम्रता, नम्रता और प्रेम के साथ अपने पड़ोसयिों की सेवा की। बाद में, पूजनीय सावा ने मठ जीवन में प्रवेश करने वालों के लए एक नवोदति गृह[8459] की स्थापना की, ताकि संसार को त्यागना चाहने वालों को पहले नवोदति गृह में प्रशक्षिति कया जा सके और फरि ही लाव्रा में प्रवेश दया जा सके।

संत ने कहा, 'जसि प्रकार फल से पहले फूल आता है, उसी प्रकार संन्यास जीवन से पहले नवोदति जीवन होना चाहए; नवोदति व्यक्ति नवोदति-गृह में अपने श्रम की शुरुआत के माध्यम से एक रोपे गए पेड़ की तरह फल-फूलें, और मठ में अपने पूर्ण कर्मों के फल दें।'

आदरणीय संत का मठ रेगस्तिान में था, जबकि सामुदायकि मठ दुनया के करीब था; और जब इसका नर्मिाण हो रहा था, तो धन्य जॉन को एक बार फरि से काम में सहायता के लए नयिुक्त कया गया था। उस समय, आदरणीय श्रमकि ने एक साथ दो कर्तव्य नभिाए: उन्होंने अतथिि गृह में यात्रयिों की सेवा की, जबकि सामुदायकि मठ के नर्मिाणकर्ताओं के लए अपने कंधों पर रोटी की रोटयिाँ और वभिन्नि स्वादष्टि व्यंजन ढोए; सेनोबयिम स्वयं अतथिगिृह से दस स्टेडयिम से अधकि दूर स्थति था[8460] । जब उसने एक वर्ष तक इस सेवा में परश्रिम कया, और भाइयों की अच्छी सेवा की, तो पूजनीय सावस ने उसे मौन के लए एक कोठरी दी; उसमें धन्य जॉन तीन वर्ष तक रहे। सप्ताह में पाँच दनि वह अपनी कोठरी में बंद रहता था, उन दनिों कुछ भी नहीं खाता था और कसिी को दखिाई नहीं देता था, केवल ईश्वर के साथ एकांत में रहता था; हालाँकि, शनविार और रवविार को वह कसिी से पहले चर्च पहुँच जाता था और वहाँ वस्मिय और भक्ति के साथ खड़ा रहता था; दविय प्रार्थना सभा के दौरान उनकी आँखों से आँसुओं की धाराएँ नरिंतर बहती थीं, और संपूर्ण समुदाय उनके भीतर इस आँसुओं के वरदान को देखकर चकति था। उन दो दनिों में वे भाइयों के साथ भोजन भी करते थे। तीन साल बाद, धन्य जॉन को कोषाध्यक्ष नयिुक्त कया गया; उनके परश्रिम और सेवा से, ईश्वर की कृपा से, मठ की समृद्धि में बहुत वृद्धि हुई, क्योंकि ईश्वर ने हर बात में उनका साथ दया।

यह देखकर कि जॉन ने कोषाध्यक्ष का पद अपनी पूरी क्षमता से नभिाया था, पूजनीय सावस उन्हें एक योग्य और पूर्णता प्राप्त भक्षिु के रूप में एक पुरोहति के रूप में अभषिेक करना चाहते थे। वह उनके साथ पवत्रि नगर यरूशलेम के लए रवाना हुआ, उसने पैट्रआर्क एलयिाह[8461] (सैलस्टयिस के उत्तराधकिारी) को जॉन के सदाचारी जीवन के बारे में बताया, और उनसे जॉन को एक प्रेस्बटिर के रूप में नयिुक्त करने का अनुरोध कयि। पैट्रआर्क ने जॉन को चर्च में बुलाया और उसे पद की दीक्षा देने ही वाले थे। यह समझते हुए कि वह इससे बच नहीं सकता, जॉन ने पवत्रि पैट्रआर्क से कहा:

'परम पूज्य पतिाजी, मेरे पास आपसे चर्चा करने के लए एक गुप्त मामला है; कृपया मुझे नजिी रूप से मलिने का समय दें, और यदि आप मुझे पुरोहति के पद के लए योग्य समझें, तो मैं इनकार नहीं करूँगा।'

जब पैट्रआर्क ने उन्हें एक तरफ ले लया, तो पूजनीय जॉन ने दैवी एलयिाह के चरणों में प्रणाम कयि, और उनसे वनिती की कि वे जो शब्द उनसे कहने वाले हैं, उन्हें कसिी को न बताएँ। पैट्रआर्क ने रहस्य बनाए रखने का वादा कयि। जॉन ने कहा:

और गेहाजी ने उसे हटाने की कोशशि की, तो एलशिाये ने उससे उपरोक्त शब्दों में कहा, जसिसे पता चलता है कि भवष्यिवक्ता ने उस महलि के दुख को देखा था लेकनि इसके कारण को नहीं जानते थे।

[8459] कनिोवयि (ग्रीक शब्द 'साझा' या 'जीवन' से) से तात्पर्य उन सामुदायकि मठों से है जनिमें मठवासी न केवल अपना भोजन बल्कि मठ से नर्दिेशानुसार अपने कपड़े और इसी तरह की अन्य चीजें भी प्राप्त करते हैं; अपने हस्सि के लए, वे मठ की सामान्य जरूरतों के लए अपनी सारी मेहनत और उसके फल का योगदान करने के लए बाध्य हैं। इन मठों में जीवन उतना कठनि नहीं है जतिना कि रेगस्तिान में जीवन, जसिमें सभी सुख-सुवधिाओं का पूर्ण त्याग शामलि है।

[8460] 'स्टेडयिा' लंबाई की एक ग्रीक इकाई है जो हमारे 'साज़ेन' की लगभग 88 इकाइयों के बराबर है।

[8461] ४९४–५१७ से

'पतिाजी! मैं कोलोनयिा का बशिप था; अपने अनेक पापों के कारण, मैंने बशिप पद त्याग दयिा, भाग गया, और, जब मैं शरीर से अभी भी मजबूत था, तब मैंने स्वयं को भाइयों की सेवा में समर्पति कर दयिा, ताकि उनकी प्रार्थनाएँ मेरी दुर्बल आत्मा की सहायता कर सकें।'

यह सुनकर पैट्रआर्क एलयिाह स्तब्ध रह गए; उन्होंने पूजनीय सावस को बुलाया और कहा:

– जॉन ने मुझे अपने गुप्त मामलों के बारे में बताया है, जो उसे एक पुरोहति बनने से रोकते हैं; अब से वह चुप रहे, और कोई भी उसे परेशान न करे।

पैट्रआर्क ने ऐसा कहा, और उन्होंने दोनों को जाने दयिा।

आदरणीय सव्वास गहरे दुख से भर गए। अपनी महान मठ से तीस स्टेडयिम दूर एक गुफा में चले जाने के बाद, वे आँसुओं के साथ ईश्वर के सामने साष्टांग दण्डवत हो गए और कहा: 'हे प्रभु, आपने मुझे क्यों त्याग दयिा, और मुझसे यूहन्ना की नयिति क्यों छपिाई? मैं यह मानकर गलत था कि वह पुरोहति के पद के योग्य है! हे प्रभु, कम से कम अब तो मुझे बताइए कि उसका क्या हुआ है: *'मेरी आत्मा गहराई से दुखी है'* (मत्ती 26:38; मरकुस 14:34)। क्या हो सकता है कि वह पात्र जसिे मैं चुना हुआ, पवत्रि, उपयुक्त और मूरा ग्रहण करने के योग्य समझता था – वह, आपकी महमिा की दृष्टि में, अयोग्य और अकुशल दोनों है?"

इस प्रकार पूजनीय सव्वा ने सारी रात आँसुओं के साथ प्रार्थना की। तब परमेश्वर का एक स्वर्गदूत उन्हें दखिाई दयिा और कहा: 'यूहन्ना कोई अयोग्य पात्र नहीं है, बल्कि एक चुना हुआ है; फरि भी वह एक बशिप है और उसे प्रेसीबरी के पद पर अभषिेक नहीं कयिा जा सकता।'

एन्जलि ने ऐसा कहा, और वह दृष्टि से ओझल हो गया। और पूजनीय सव्वा आनंदपूर्वक जॉन की कोठरी की ओर दौड़े, उन्होंने उन्हें गले लगा लयिा और कहा:

'फादर जॉन! आपने मुझसे अपने भीतर के ईश्वर का वरदान छपिाया, लेकनि ईश्वर ने इसे मुझे प्रकट कर दयिा है।'

'मैं इस बात पर दुखी हूँ, फादर,' जॉन ने उत्तर दयिा, 'मैं चाहता था कि यह रहस्य कसिी को पता न चले, लेकनि आप जान गए हैं। मैं इस भूमि पर नहीं रह सकता।'

साव्वा ने जॉन से कसम खाई कि वह उसके रहस्य के बारे में कसिी को नहीं बताएगा। उस समय से, धन्य जॉन मौन का पालन करने लगे और अपनी कोठरी में ही रहने लगे। वह चर्च भी नहीं गए, कसिी से बात नहीं की, और उनकी सेवा करने वाले एक नवसखिुआ के अलावा कोई उनकी कोठरी में प्रवेश नहीं करता था। केवल एक अवसर पर, सर्व पवत्रि सदा-कुंवारी मरयिम के पर्व पर, जनिके नाम पर लावरा का चर्च समर्पति था, जब पैट्रआर्क एलयिाह पर्व के लिए लावरा आए, तो जॉन अपने सेल से बाहर आकर पैट्रआर्क को प्रणाम करने आए। पैट्रआर्क जॉन से प्रेम करते थे और उनके वनिम्र स्वभाव के कारण उन्हें बहुत सम्मान देते थे। जॉन चार साल तक मौन रहे। फरि पूजनीय पति सव्वा स्कथिोपोलसि के क्षेत्र[8462] के लिए रवाना हो गए और वहीं ठहरे, जबकि धन्य जॉन, सबसे एकांतपूर्ण मरुभूमि जीवन की तलाश में, पीछे हट गए, अपने जीवन के पचासवें वर्ष में, रूवा नामक एक रेगस्तिान[8463] में चले गए, और वहाँ नौ साल तक रहे, उस रेगस्तिान में उगने वाली मेलाग्रयिा[8464] नामक एक जड़ी-बूटी पर जीवति रहे। एक दनि भोजन के लिए इस जड़ी-बूटी को इकट्ठा करते समय, अपने तपस्वी जीवन की शुरुआत में, जॉन झाड़ियों और घाटियों में खो गया; वह अपना आश्रय नहीं ढूंढ सका और चलने से थककर, मुश्कलि से जीवति, गरि पड़ा; लेकनि अचानक, ईश्वर की एक अदृश्य शक्ति द्वारा, ठीक वैसे ही जैसे भवष्यिवक्ता हबक्कूक को एक बार उठाया गया था, उसे उठाकर उसके आश्रय में वापस ला दयिा गया। समय के साथ, पूजनीय पति ने उस रेगस्तिान के रास्तों का पता लगाया और जाना कि उनके तपस्थल से उस स्थान तक की दूरी जहाँ वे रास्ता भूल गए थे, पाँच पोप्रीष्चा[8465] थी। इसके बाद, एक भाई उनके पास आया और कुछ समय के लिए उनके साथ रहा। जैसे ही ईस्टर का पर्व नज़दीक आया, भाई ने बड़े से कहा:

[8462] स्कफि़ोपोलसि – यरूशलेम से 620 स्टेडयिम दूर स्थति एक शहर। उस समय यह फल-फूल रहा था और इसे 'स्वर्ग का द्वार', खजूर और जैतून के पेड़ों का शहर के रूप में जाना जाता था। अब यह एक बंजर रेगस्तिान के बीचों-बीच एक गरीब गाँव है।

[8463] यहूदी मरुभूमि, जहाँ जॉन बपतस्मिादाता ने शरण ली थी, कई भागों में वभिाजति थी। मृत सागर के उत्तर-पश्चमिी तटों के पास के भीतरी भाग को *रूवा* कहा जाता था /

[8464] मेलग्रयिा फ़लिस्तिीन का एक कम-ज्ञात रेगस्तिानी पौधा है जसिका स्वाद कड़वा होता है।

[8465] 'पॉप्रश्चि' हमारे एक वर्स्ट से थोड़ा अधकि होता है।

'पिताजी, आइए हम मठ चलते हैं, वहाँ ईस्टर मनाते हैं, और फिर लौट आते हैं। यह बहुत बड़ा पर्व है, और यहाँ हमें इन जंगली जड़ी-बूटियों के सिवा खाने के लिए कुछ भी नहीं है!'

संत जॉन नहीं जाना चाहते थे, क्योंकि आदरणीय सावा अभी तक स्कथिोपोलिस के प्रदेशों से लावरा में वापस नहीं आए थे, और उन्होंने अपने भाई की विनती का उत्तर दिया:

'भाई! हमें इस स्थान को नहीं छोड़ना चाहिए। आइए हम उस पर भरोसा करें जिसने चालीस वर्षों तक जंगल में इज़राइल के छह लाख लोगों का पालन-पोषण किया, वह हमें यहाँ भी बनाए रखेगा और ईस्टर के पर्व पर हमें न केवल आवश्यक चीजें, बल्कि प्रचुर मात्रा में भेजेगा। पवित्र शास्त्र में लिखा है: *'मैं तुम्हें कभी न छोड़ूँगा और न त्यागूँगा'* (इब्रानियों 13:5); और सुसमाचार में: *'इसलिये यह चिन्ता न करो कि क्या खाएँगे, या क्या पिएँगे, या क्या पहिनेंगे... क्योंकि तुम्हारा स्वर्गीय पिता जानता है कि तुम्हें इन सब चीज़ों की आवश्यकता है। परन्तु पहिले परमेश्वर के राज्य और उसकी धार्मिकता की खोज करो, और ये सब बातें तुम्हें इनके साथ मिल जाएँगी'* (मत्ती 6:31-33)। धैर्य रखो, मेरे बच्चे, और दुख के मार्ग पर चलो; इस संसार में शरीर का विश्राम और भोग अनंतकालिक दंड लाते हैं, जबकि शरीर को वश में करना मनुष्य को अनंत विश्राम के लिए तैयार करता है।

उस भाई ने पूजनीय की नसीहतों पर ध्यान नहीं दिया; वह उन्हें छोड़कर मठ चला गया। उसके जाने के बाद, एक आदमी, जो पूजनीय के लिए बिल्कुल अजनबी था, उनके सामने प्रकट हुआ; उसकी गधी कई अच्छी चीजों से लदी हुई थी: उसमें ताज़ा, गर्म रोटी, शराब और तेल, ताज़ा पनीर, अंडे और शहद की एक बाल्टी थी। उस अजनबी ने यह सब जॉन के सामने रख दिया और तुरंत ही चल दिया। इस घटना को ईश्वर की ओर से एक संकेत मानते हुए, पूजनीय ने ईश्वर का आनंदपूर्वक धन्यवाद किया। जहाँ तक उस भाई का सवाल है जो मठ के लिए निकला था, वह रास्ता भटक गया, तीन दिनों तक रेगिस्तान और दुर्गम इलाकों में भटकता रहा, बहुत थक गया, और भूखा-प्यासा, कठिन यात्रा से थका-हार कर, वह मुश्किल से ही आदरणीय के निवास को फिर से ढूंढ सका। भोजन और पेय की उस प्रचुरता को देखकर वह चकित रह गया जो उत्सव के लिए परमेश्वर ने पूजनीय के लिए भेजी थी; अपने अविश्वास पर शर्मिंदा होकर, और पवित्र वृद्ध की आँखों में देखने की हिम्मत न करते हुए, वह उनके पैरों पर गिर पड़ा और क्षमा याचना करने लगा। संत ने उसे क्षमा कर दिया और कहा:

'भाई, निश्चित रहो कि ईश्वर अपने सेवकों के लिए रेगिस्तान में भी भोजन तैयार कर सकते हैं।'

उस समय, फारस के अधीनस्थ सेरेकेन सरदार अलामुन्दार ([8466]) ने अरब ([8467]) और फलिस्तीन पर आक्रमण किया, और निवासियों पर बड़ी निर्दयता से हमला कर उन्हें बंदी बना लिया। तब जहाँ जॉन ठहरे हुए थे, उस रेगिस्तान में बर्बरों का एक समूह फैल गया, और मठों में यह खबर फैल गई कि उन्हें बर्बर आक्रमण का सामना करने के लिए तैयार रहना चाहिए। महान मठ के प्रमुखों ने जॉन मौन को बर्बरों के बारे में सूचित किया और उन्हें मठ में लौटने और अपनी कोठरी में रहने की सलाह दी। लेकिन धन्य जॉन, यद्यपि वह कुछ हद तक बर्बरों से डरता था, फिर भी वह रेगिस्तान में अपना मौन जीवन त्यागना नहीं चाहता था। उसने अपने आप से कहा: *'प्रभु मेरा प्रकाश और मेरा उद्धार है; मैं किससे डरूँ? प्रभु मेरे जीवन का गिढ़ है; मैं किससे भयभीत होऊँ?'* (भजन संहिता 26:1)। 'यदि प्रभु मेरी रक्षा न करें या मेरी परवाह न करें, तो मैं जीने के लिए क्यों रहूँ?'

और, सर्वोच्च की सहायता में इस प्रकार विश्वास करके, वह बिना डगमगाए अपनी जगह पर बना रहा। ईश्वर, जो हमेशा अपने सेवकों की परवाह करते हैं और उनके सभी मार्गों में उनकी रक्षा करते हैं, ने अपने इस सेवक को सुरक्षित और अक्षुण्ण रखना चाहा, और उसे एक महान और भयानक सिंह को रक्षक के रूप में भेजा, जो दिन-रात, अथक रूप से उसकी रखवाली करता था; और चाहे दुष्टों ने संत पर कितनी भी बार हमला किया, यह सिंह हमेशा बड़ी क्रूरता से उन पर झपटता, उन्हें गिरा देता और भागने पर मजबूर कर देता, जबकि धन्य योहन परमेश्वर का धन्यवाद करते रहे, *'क्योंकि प्रभु धर्मी लोगों पर दुष्टों की लाठी टिकने न देगा'* (भजन संहिता 124:3)।

जब पूजनीय सावा अपने मठ में लौटे, तो वे रेगिस्तान में धन्य जॉन के पास गए और उनसे कहा:

[8466] 'सारासेन' शब्द का प्रयोग आमतौर पर अरब में घूमने वाले अरब डाकुओं के दस्तों के लिए किया जाता है। हालाँकि, कभी-कभी इस नाम का उपयोग सामान्य रूप से सभी मुस्लिम लोगों के लिए भी किया जाता है।

[8467] अरब एशिया के विशाल दक्षिण-पश्चिमी प्रायद्वीप पर स्थित है, जिसे फारस की खाड़ी के पानी से धोया जाता है।

'देखो, प्रभु ने तुम्हें बर्बर लोगों के आक्रमण से बचाया है, और तुम्हें एक दृश्यमान रक्षक प्रदान किया है। फिर भी तुम्हें वही करना चाहिए जो दूसरे लोग करते हैं: अपनी तैयारी करो और भाग जाओ, ठीक वैसे ही जैसे अन्य मरुभूमि के संतों ने किया है।'

आदरणीय संत सव्वा ने जॉन से लंबी बात की, उसे रेगिस्तान छोड़ने के लिए प्रेरित किया, और उसे ऐसा करने के लिए मना लिया। उसे महान मठ में लाने के बाद, उन्होंने उसे एक कोठरी दी – और एक बार फिर धन्य जॉन ने अपने जीवन के पैंसठवें वर्ष में मठ में रहना शुरू कर दिया।

[8468]उनके पवित्रता पैट्रिआर्क एलियाह और आदरणीय सावस के अलावा, कोई भी जॉन के रहस्य को नहीं जानता था—कि वह एक बिशप थे—और उन्होंने इसे छिपाए रखा। लेकिन बहुत समय बीत गया, और ईश्वर ने सभी भाइयों के सामने इसे प्रकट करना उचित समझा। यह इस प्रकार हुआ। एशिया की भूमि से एफ्राइम नामक एक व्यक्ति महाधर्माध्यक्ष के माननीय पद पर आसीन होकर आया; प्रभु के क्रूस के जीवन-दायक वृक्ष और पवित्र स्थानों को श्रद्धांजलि अर्पित करने, और गरीबों तथा मठों में बहुत सारा सोना बाँटने के बाद, उसने अपने देश लौटने का निर्णय लिया, पवित्र नगर को छोड़ दिया और एक जहाज पर सवार हो गया। एक छोटी यात्रा के बाद, समुद्र में विपरीत हवा चलने लगी, जिससे एफेरियस को अस्कलॉन लौटना पड़ा। वहाँ दो दिन रहने के बाद, वह फिर से समुद्र यात्रा करना चाहता था, लेकिन प्रभु के एक स्वर्गदूत ने उसे एक सपने में दर्शन दिए और कहा:

'अपने स्वदेश लौटने से पहले, तुम्हें पवित्र नगर लौटना होगा और बाबा[8469] सावस के मठ जाना होगा; वहाँ तुम्हें बाबा जॉन द साइलेंट मिलेंगे, जो एक धर्मी और सदाचारी व्यक्ति हैं, एक बिशप जिन्होंने ईश्वर के लिए सब कुछ त्याग दिया है और स्वैच्छिक गरीबी तथा आज्ञाकारिता के माध्यम से स्वयं को नम्र बनाया है।'

जागने पर, एफ्राइम यरूशलेम लौट आया, आदरणीय सावस के मठ में गया और जॉन द साइलेंट के बारे में पूछताछ की; उसे जॉन की कोठरी दिखाई गई। वह अंदर गया और दो दिन तक उनके साथ रहा, उनसे विनती करता रहा और ईश्वर के नाम पर आग्रह करता रहा कि वे उसे अपनी वंशावली, अपने मूल देश और अपने बिशप पद के बारे में बताएँ। इसमें ईश्वर की इच्छा को पहचानते हुए, जॉन ने सब कुछ विस्तार से बताया। उस समय से, पूरे मठ में यह बात फैल गई कि जॉन द साइलेंट एक बिशप थे, और सभी उनकी महान विनम्रता पर बहुत चकित हुए।

[8470]जॉन के जीवन के सत्तरवें वर्ष में, 5 दिसंबर को, पूजनीय और ईश्वर-धारी पिता सव्वा प्रभु के पास चले गए। पूजनीय सव्वा के निधन के समय जॉन उपस्थित नहीं थे, और वे आत्मा में गहराई से दुखी हुए और रोए। लेकिन पूजनीय सव्वा एक दर्शन में उनके सामने प्रकट हुए और कहा:

'पिता जॉन, मेरे प्रस्थान पर शोक मत करो: यद्यपि मैं देह में आपसे अलग हो गया हूँ, मैं आत्मा में आपके साथ ही रहता हूँ।'

जॉन ने उनसे कहा:

'प्रभु से प्रार्थना करें, पिता, कि वह मुझे आपके साथ ले जाए।'

सावा ने उत्तर दिया, 'यह अभी संभव नहीं है, क्योंकि मठ पर एक बड़ी परीक्षा की प्रतीक्षा है; लेकिन ईश्वर की इच्छा है कि आप उन लोगों को मजबूत करने के लिए सेवा करें जो विधर्मियों के खिलाफ सच्चे धर्म के लिए खड़े होंगे।'

आदरणीय सावा के साथ इस दर्शन और संवाद ने धन्य जॉन को आध्यात्मिक आनंद से भर दिया, फिर भी आने वाली परीक्षा को लेकर उनका हृदय दुखी था। तब उसमें यह इच्छा उत्पन्न हुई कि वह देखे कि आत्मा शरीर से कैसे अलग होती है; और जब उसने इसके लिए ईश्वर से प्रार्थना की, तो उसका मन पवित्र बेथलहम[8471] ले जाया गया, जहाँ उसने एक तीर्थयात्री के प्राण निकलते देखा, जो वहाँ चर्च में रह रहा था, जिसकी आत्मा को स्वर्गदूत मधुर गायन के साथ स्वर्ग में ले जा रहे थे। धन्य जॉन ने यह अपने मन की आँखों से देखा। वह तुरंत बेथलहम के लिए रवाना हो गया और उसने दिवंगत व्यक्ति का शरीर चर्च के पास पड़ा हुआ पाया, ठीक वैसे ही जैसे उसे दर्शन में दिखाया गया था: यह व्यक्ति ठीक उसी घड़ी पर निधन कर गया था जब जॉन, अपनी कोठरी में बैठे, ने अपने स्वर्गदूतों के गायन के साथ अपने आत्मा

[8468] अश्केलोन एक फिलिस्तीनी शहर है जिसमें एक बंदरगाह है, जो भूमध्य सागर के पूर्वी तट पर स्थित है, और यह यरूशलेम से 520 स्टेडिया दूर है।

[8469] अब्बा – पिता; यह उपाधि मुख्यतः मठों के प्रमुखों को प्रदान की जाती थी।

[8470] आदरणीय सव्वा का 532 में निधन हो गया।

[8471] बेथलहम – वह नगर जहाँ यीशु मसीह का जन्म हुआ था, यरूशलेम के दक्षिण में।

को स्वर्ग ले जाते हुए देखा था। प्यार से गले लगाकर और शव को चूमकर, जॉन ने उसे उसी स्थान पर दफना दिया और अपनी कोठरी में लौट आए।

धन्य योहन के दो शिष्यों, थियोडोर और योहन ने, भिक्षु सिरिल को, जिन्होंने उनके जीवन पर लिखा था, निम्नलिखित बातें सुनाईं:

'आदरणीय सावा के निधन के बाद, हमें हमारे पिता द्वारा लवियादा के एक मिशन पर भेजा गया था[8472] । यॉर्डन पार करते समय, कुछ लोग हमसे मिले और कहा: "सावधान, आपके आगे एक शेर है।" लेकिन हमने सोचा: "ईश्वर हमारे पिता की प्रार्थनाओं के माध्यम से हमारी रक्षा करने के लिए पर्याप्त शक्तिशाली हैं, जिनके आदेश पर हम यात्रा कर रहे हैं।" इसलिए हमने यही कहा और आगे बढ़ गए। अचानक हमने एक भयंकर सिंह को अपनी ओर आते देखा। हम भयभीत हो गए; हमारी शक्ति छूट गई, इसलिए हम दौड़ भी नहीं सके और लगभग मृतक समान हो गए। और फिर, अचानक, हमारे पिता, आदरणीय जॉन, हमारे बीच प्रकट हुए, और उन्होंने हमें डरने के लिए मना किया। तब वह शेर, जैसे कि कोड़े की चोट से भगा दिया गया हो, हमसे भाग गया, और हमारे पिता अदृश्य हो गए। आराम करने के बाद, हम बिना किसी नुकसान के फिर से चल पड़े। हमें सौंपा गया काम पूरा करने के बाद, हम अपने पिता के पास लौटे, और जब उन्होंने हमें देखा तो कहा: 'तुम देखते हो, मेरे बच्चों, कि आज्ञाकारिता में मैं तुम्हारे साथ था, और यहाँ तक कि यहाँ भी मैंने तुम्हारे लिए ईश्वर से विनतीपूर्वक प्रार्थना की, और उन्होंने तुम पर अपनी दया दिखाई है।'

यहाँ जॉन के एक अन्य शिष्य ने सिरिल को जो बताया, वह यह है। इस महान तपस्वी ने कई वर्षों तक केवल रोटी पर ही जीवन यापन किया; नमक के स्थान पर वह आमतौर पर राख का उपयोग करता था, और अपनी रोटी राख के साथ खाता था। एक बार, जब वह भोजन कर रहा था, तो उसने अपनी कोठरी की छोटी खिड़की बंद करना भूल गया; एक शिष्य ने खिड़की से झाँका और देखा कि जॉन राख के साथ रोटी खा रहा था। वरिष्ठ इस बात से दुखी हुए कि उनके तपस्या के इस रूप को इस तरह देखने को मिला, लेकिन शिष्य ने उन्हें सांत्वना देते हुए कहा: 'पिताजी, ऐसा करने वाले आप अकेले नहीं हैं, बल्कि इस मठ के कई अन्य संत भी धर्मग्रंथ के इन शब्दों को पूरा करते हैं: *"मैं राख को रोटी की तरह खाता हूँ"* (भजन संहिता 101:10)' – और इस तरह उसने वरिष्ठ को सांत्वना दी।

उस समय, ओरिजिन का विधर्म उत्पन्न हुआ। कई लोग इससे भटक गए और परमेश्वर की कलीसिया में भ्रम पैदा किया, जबकि अन्य लोगों ने दृढ़ता से इस विधर्म का विरोध किया; और उन्हें आदरणीय जॉन द साइलेंट का समर्थन मिला, जिन्होंने उस समय अपनी मौनता को त्याग दिया और, अपने मुख के वचन को तलवार की तरह लेकर, विधर्मियों को परास्त कर दिया, और ओरिजिन की धर्मनिंदा करने वाली शिक्षाओं को काटकर नष्ट कर दिया। ठीक यही परीक्षा, जो मठ पर आने वाली थी, का पूर्वानुमान आदरणीय जॉन सव्वा को एक दर्शन में दिया गया था: क्योंकि मठ को विधर्मी लोगों से थोड़ी-बहुत उत्पीड़न का सामना नहीं करना पड़ा, बल्कि इतना अधिक कि कई तपस्वी पिता भी विधर्मी शिक्षाओं से प्रभावित होकर संदेह में पड़ गए और उनके मन में हिलजुल मच गई। इसी कारण से ईश्वर ने यह उचित समझा कि जॉन उस मठ में ही रहें, ताकि वे हतोत्साहित लोगों को सांत्वना दें और कमजोरों को मजबूत करें। उस समय, स्किथोपोलिस जिले से सिरिल उनके पास आए; वही थे जिन्होंने बाद में उनकी जीवनी लिखी। सिरिल अपने बारे में निम्नलिखित का वर्णन करते हैं:

'जब मैं अपना घर छोड़कर पवित्र नगर यरूशलेम की यात्रा करना चाहता था, ताकि वहाँ किसी मठ में मैं संन्यासी जीवन अपना सकूँ, तो मेरी मसीह-प्रेमी माँ ने मुझे आज्ञा दी कि मैं धन्य योहन के परामर्श और आज्ञा के बिना अपनी आत्मा के उद्धार के लिए कोई भी प्रयास न करूँ, 'कहीं ऐसा न हो कि तुम किसी भी तरह से,' उसने कहा, 'ओरिजेन के धर्मद्रोह से भटक जाओ और अपने आध्यात्मिक प्रयास की शुरुआत में ही गिर पड़ो।' यरूशलेम पहुँचने पर, मैं संत सावस के मठ गया, परम धन्य जॉन को प्रणाम किया, अपने विचार उन्हें बताए, और उनकी बुद्धिमानी भरी सलाह माँगी। उन्होंने मुझसे कहा:

'यदि तुम मोक्ष पाना चाहते हो, तो महान यूथिमियस के मठ में जाओ।'

मैं उनसे विदा लेकर, युवा और मूर्ख होने के कारण, उनके आदेश का पालन नहीं किया; लेकिन, यॉर्डन नदी तक पहुँचने पर, मैं अरुंडनिाइट (बंजर मठ) नामक मठ में प्रवेश कर गया। मेरी यात्रा अच्छी नहीं रही; मैं गंभीर रूप से बीमार

[8472] लविाडिया – यॉर्डन के पूर्व में एक क्षेत्र।

पड़ गया, और एक अजनबी होने तथा शरीर से कमजोर होने के कारण दुख और पीड़ा से अभिभूत हो गया। तब पूजनीय जॉन मुझे एक सपने में दिखाई दिए और कहा:

'चूँकि तुमने मेरी अवज्ञा की, इसलिए तुम्हें इस बीमारी से दंडित किया गया है। अब उठो और यरीहो[8473] जाओ; वहाँ, बाबा यूथिमियस के अतिथि-गृह में, तुम्हें एक वृद्ध भिक्षु मिलेगा; उसके पीछे यूथिमियस के मठ तक चलो – और तुम बच जाओगे।'

मैं तुरंत जाग गया, मैं पूरी तरह से स्वस्थ महसूस कर रहा था, और पवित्र पिता के आदेशानुसार यरीहो के लिए निकल पड़ा; वहाँ, ठीक वैसे ही जैसे उन्होंने मुझे बताया था, मुझे एक वृद्ध, सदाचारी और विवेकी भिक्षु मिला, जिसने मुझे महान यूथिमियस के मठ तक ले गया, जहाँ मैंने निवास कर लिया। मैं अक्सर परम पूज्य जॉन से मिलने के लिए संत सव्वा की लावरा भी जाता था, और उनसे अपनी आत्मा को बहुत लाभ मिला। एक बार मैं शैतानी विचारों से परेशान और दबे हुए थे, लेकिन जब मैंने उन्हें परम पूज्य को बताया, तो उनकी पवित्र प्रार्थनाओं के माध्यम से मुझे तुरंत राहत मिली, और मेरे दिल में शांति लौट आई।

इस प्रकार भिक्षु सिरिल ने अपनी कहानी सुनाई। यही सिरिल थे जिन्हें आदरणीय जॉन ने आदरणीय संन्यासी सिरिएकस के लिए किताबों के साथ सुकी मठ भेजा था[8474] ।

एक दिन, सिरिल आदरणीय जॉन की कोठरी की छोटी सी खिड़की के पास बैठे थे। तब जॉर्ज नाम का एक व्यक्ति आया, जो अपने उस बेटे को लेकर आया था जिसे एक राक्षस सता रहा था; उसने लड़के को खिड़की के सामने लिटा दिया और पीछे हट गया। संत जॉन को एहसास हुआ कि वहाँ लेटे और रो रहे लड़के पर एक अशुद्ध आत्मा का कब्ज़ा था; करुणा से प्रेरित होकर, उन्होंने एक प्रार्थना की और उसे पवित्र तेल से अभिषेक किया, और तुरंत ही अशुद्ध आत्मा लड़के को छोड़ गई, और उस क्षण से वह ठीक हो गया।

अब्बा यूस्टैथियस, जो पूज्य सावास की गुफा में सर्जियस के बाद एक भिक्षु के रूप में रहते थे, जो गहरी आध्यात्मिकता और भक्ति के पुरुष थे, ने अपने बारे में कहा:

'एक बार, ईश्वर-निंदा की एक आत्मा मुझ पर आई और उसने ईश्वर और दिव्य के विरुद्ध ईश्वर-निंदा के विचारों से मुझे बहुत परेशान किया, और मैं बड़ी पीड़ा में था। मैं धन्य जॉन द साइलेंट के पास गया, उन्हें अपनी पीड़ा के बारे में बताया, और उनकी पवित्र प्रार्थनाओं की मदद मांगी। जॉन ने मेरे लिए ईश्वर से प्रार्थना की और फिर मुझसे कहा: 'ईश्वर धन्य हो, मेरे बच्चे! ईश्वर-निंदा के विचार अब कभी भी तुम्हारे पास नहीं आएँगे।' वरिष्ठ के शब्द सच साबित हुए, क्योंकि उस समय से अब तक मैंने अपने भीतर कभी भी कोई ईश्वर-निंदा का विचार अनुभव नहीं किया है।

कापाडोसिया[8475] की एक महिला, वासिलिना नाम की एक डीकोनेस[8476] , जो कॉन्स्टेंटिनोपल के पवित्र चर्च की थीं, अपने भतीजे के साथ यरूशलेम आईं, जो कुलीन वंश का व्यक्ति थी; वह वास्तव में एक सदाचारी व्यक्ति थी , यद्यपि वह उत्तरी विधर्म[8477] का अनुयायी था और इसलिए पवित्र कैथोलिक चर्च के साथ एकता में नहीं था। उस धर्मनिष्ठ

[8473] यरहिो – फिलिस्तीन के सबसे प्राचीन शहरों में से एक – यरूशलेम से छह घंटे की यात्रा पर, यॉर्डन नदी के पश्चिमी तट पर स्थित था।

[8474] 29 सितंबर को मनाई जाने वाली, सूकी की लावरा (जिसे 'सीरियाई लावरा' और, ग्रीक में, 'ओल्ड लावरा' के नाम से जाना जाता है) की स्थापना चौथी शताब्दी के पहले भाग में सेंट चारिटोन द्वारा की गई थी और यह यहूदी रेगिस्तान के एक जंगली, दूरस्थ क्षेत्र में स्थित थी।

[8475] कैपाडोसिया - एशिया माइनर का सबसे पूर्वी प्रांत, चर्च के महान पिताओं और शिक्षकों: ग्रेगरी ऑफ नाज़ियनज़स, बिशप ऑफ निसिकेसरेआ का जन्मस्थान।

[8476] डीकोनेस – ग्रीक भाषा से। यह चर्च के एक विशिष्ट वर्ग के मंत्रियों को दिया गया नाम था, जिसकी स्थापना प्रेरितिय काल से हुई थी (रोमियों 16:1; 1 तीमुथियुस 5:3–10)। वृद्ध (40 वर्ष या उससे अधिक आयु की) कुंवारी या विधवाओं को डीकोनेस के पद के लिए चुना जाता था। उनके कर्तव्य थे: धर्म परिवर्तन करने वाली महिलाओं और छोटी लड़कियों को बपतिस्मा के दौरान अपने आचरण के बारे में निर्देश देना, उनके बपतिस्मा के समय बिशप की सहायता करना और उनकी ओर से ललाट के अलावा शरीर के अन्य अंगों पर अभिषेक करना, आदि। ईश्वरीय सेवाओं के दौरान महिलाओं के बीच व्यवस्था और शिष्टाचार सुनिश्चित करना, बीमारों, बेसहारा लोगों और कालकोठरियों में बंद लोगों से मिलना, हिरासत में रखे गए धर्म-स्वीकारकों और शहीदों की सेवा करना, गरीबों की सहायता करना, आदि। कॉन्स्टेंटिनोपल के चर्च को 40 तक डीकोनेस रखने की अनुमति थी। डीकोनेस के संबंध में कई कैननिकल नियम हैं, अर्थात्: चौथे सार्वभौमिक परिषद का नियम 15, चौथे परिषद का नियम 14, और सेंट बेसिल द ग्रेट का नियम 44।

[8477] सेवरस – 512 से 518 तक अंकोई के पैट्रिआर्क – मोनोफिज़ाइट विधर्म के मध्यमार्गी समर्थकों में से एक थे, जो मसीह में केवल एक दिव्य स्वभाव को मानते थे, जिसने कथित तौर पर उनमें मानव स्वभाव को पूरी तरह से समा लिया था। हालाँकि, मसीह के स्वभाव की एकता पर जोर देते हुए भी, सेवेरस ने इसके भीतर दैवी और मानवीय गुणों के बीच एक अंतर को स्वीकार किया, और यह माना कि पुनरुत्थान से पहले मसीह का शरीर हमारे अपने नश्वर शरीर के समान था।

दीकोनेस ने उसे सच्चे धर्म में परिवर्तित करने और उसे पवित्र चर्च में लाने के लिए हर संभव प्रयास किया, और उसने प्रत्येक पवित्र पिता से विनम्रतापूर्वक प्रार्थना की कि वे उसके लिए ईश्वर से प्रार्थना करें। संत जॉन के बारे में सुनकर, वह उन्हें भी श्रद्धांजलि अर्पित करना चाहती थी; लेकिन जब उसे पता चला कि महिलाओं को मठ में प्रवेश की अनुमति नहीं है, तो उसने थियोडोर, जॉन के शिष्य, को बुलाया और उससे कहा कि वह उसके साथ आए व्यक्ति को पवित्र वृद्ध के पास ले जाए। उसे विश्वास था कि, जॉन की प्रार्थनाओं के माध्यम से, ईश्वर विधर्मी के कठोर हृदय को नरम कर देगा और उसे कैथोलिक चर्च के साथ संप्रदायिकता के लिए योग्य बना देगा। थियोडोर उस व्यक्ति को, जिसे विधर्म ने भटका दिया था, लेकर वृद्ध के पास गया, प्रथा के अनुसार झुका, और कहा:

'हमें आशीर्वाद दीजिए, फादर!'

तब वृद्ध ने अपने शिष्य से कहा:

'मैं तुम्हें आशीर्वाद दूँगा, लेकिन जो तुम्हारे साथ आया है, उसके लिए कोई आशीर्वाद नहीं है।'

शिष्य ने आपत्ति जताई, 'नहीं, पिताजी, हम दोनों पर आशीर्वाद करें।'

वृद्ध ने उत्तर दिया:

– नहीं, मैं दूसरे को तब तक आशीर्वाद नहीं दूँगा जब तक वह अपनी बुरी विधर्मी शिक्षाओं का त्याग नहीं कर देता और कैथोलिक चर्च में शामिल होने का वादा नहीं कर लेता।

मूर्तिभंजक उस संत की दिव्य दृष्टि से चकित रह गया; इस चमत्कार ने उसमें परिवर्तन ला दिया, और उसने वास्तव में ऑर्थोडॉक्स में शामिल होने का वादा किया। तब साधु ने उस पर आशीर्वाद दिया, अपनी दिव्य प्रेरित शिक्षाओं से उसके सभी आंतरिक संदेहों को दूर किया, उसे परम पवित्र संस्कार प्रदान किए, और उसे सच्चे धर्म की ओर मोड़कर शांति से विदा कर दिया। यह जानकर, धर्मनिष्ठ डीकोनेस वासिलिना में पवित्र एल्डर को अपनी आँखों से देखने की इच्छा और भी प्रबल हो गई। उसने पुरुषों के कपड़े पहनने, मठ में उनके पास जाने और अपने इरादों का इज़हार करने का निश्चय किया। एक स्वर्गदूत द्वारा वासिलिना के इरादे की सूचना पाकर, एल्डर ने उसे संदेश भेजा, जिसमें कहा गया:

'यह जान लो: भले ही तुम मेरी योजना के अनुसार मेरे पास आओ, तब भी तुम मुझे नहीं देख पाओगी; इसलिए, खुद को परेशान मत करो, बल्कि वहीं रहो जहाँ तुम अभी हो, और मैं तुम्हें सपने में प्रकट होऊँगा, तुम्हारी बात सुनूँगा जो तुम मुझसे कहना चाहती हो, और स्वयं तुम्हें वह बताऊँगा जो ईश्वर मुझे तुम्हें बताने का निर्देश देते हैं।'

संत योहन की दूरदर्शिता—कि वह दूर से ही मानव विचारों को जान सकते थे—से डिकॉनेस चकित रह गईं और वहीं रुककर उनके प्रकट होने की प्रतीक्षा करने लगीं। एक रात, संत उन्हें सपने में प्रकट हुए और कहा:

'देखो, ईश्वर ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है; तो मुझे बताओ, तुम क्या चाहती हो?'

उसने अपने विचारों का इकरार उनसे किया और उनसे उचित आध्यात्मिक उपचार प्राप्त किया। उसे अपनी शिक्षा देने के बाद, पूजनीय पिता अदृश्य हो गए, और वासिलिना, जागने पर, ईश्वर का धन्यवाद करने लगी।

जिस स्थान पर पूजनीय की कोठरी थी, वह पथरीला और सूखा था; मिट्टी की कठोरता, जो पूरी तरह से नमी से रहित थी, ने वहाँ पेड़ों या घास के उगने से रोक दिया था। एक दिन, पूजनीय ने एक अंजीर का बीज लिया[8478] और अपने शिष्यों, थियोडोर और जॉन से कहा:

'मेरी बात सुनो, मेरे बच्चों: यदि ईश्वर की कृपा से यह बीज इस कठोर चट्टान पर अंकुरित हो जाता है, डालियाँ निकालता है, और फल देता है, तो जान लो कि ईश्वर मुझे स्वर्ग के राज्य में विश्राम का स्थान प्रदान करेंगे।'

यह कहने के बाद, उन्होंने अपने सेल के पास एक चट्टान पर बीज लगाया। जिस परमेश्वर की इच्छा से हारून की सूखी लाठी पर फूल खिले थे, उसी ने कठोर चट्टान में नमी दी और अंजीर के बीज को पनपने दिया, ताकि यह दिखाया जा सके कि उनके वफादार सेवक को उनकी दृष्टि में कितनी कृपा प्राप्त थी। ज़मीन से एक अंजीर का पेड़ उग आया और धीरे-धीरे बढ़ते हुए, वह कोठरी की छत तक भी पहुँच गया; फिर उसने अपनी डालियों से पूरी कोठरी को ढक लिया, और समय आने पर उसमें फल लगे - तीन अंजीर। उन्हें तोड़ने के बाद, उस साधु ने आँसुओं के साथ ईश्वर का धन्यवाद किया, उन्हें चूमा और अपने शिष्यों के साथ उनका स्वाद चखा। उन अंजीरों का स्वाद चखने के बाद, वह अपने निधन की तैयारी करने लगा, क्योंकि वह पहले से ही अपने जीवन के अंतिम पड़ाव में था[8479] ।

[8478] अंजीर का पेड़ यहूदिया में एक बहुत आम पेड़ है, जिसके चौड़े पत्ते होते हैं, और जिस पर बहुत स्वादिष्ट फल - अंजीर - लगते हैं।

[8479] संत जॉन द साइलेंट का 558 में निधन हो गया। 12वीं शताब्दी की शुरुआत में, रूसी तीर्थयात्री हेगुमेन डैनियल ने उनके अवशेष, जैसे कि वह अभी भी जीवित हों, को संत सावस द सैंक्चुडाइड के मठ में देखा था।

कुल एक सौ चार वर्ष की आयु पूर्ण करके, वे हमारे उद्धारकर्ता प्रभु में निधन कर गए[8480] , जिनका महिमा युगानुयुग हो। आमीन।

स्टोरोज़हेव के पूजनीय सावा का निधन

3 दिसंबर को स्मरण किया जाता है

हमारे पूजनीय पिता सावा ने अपने आरंभिक वर्षों से ही मसीह से प्रेम किया और संसार से घृणा की। वे राडोनेज़ के पूजनीय सर्गियस के पास गए और उनसे मठवासी मुंडन ग्रहण किया। एक भिक्षु के रूप में, प्रभु की प्रसन्नता पाने वालों के लिए प्रभु द्वारा तैयार की गई स्वर्गीय आशीर्वादों के लिए प्रयास करते हुए, उन्होंने अपने जुनून के विरुद्ध विशेष उत्साह के साथ संघर्ष किया और सद्गुणों का अभ्यास किया। उन्होंने शैतान के प्रलोभनों और फुसलावे से कई परीक्षाएँ झेलीं, लेकिन ईश्वर की मदद से, उन्होंने उन सभी पर विजय प्राप्त की, और निरंतर उपवास, जागरण, प्रार्थना और अन्य आध्यात्मिक संघर्षों में लगे रहे।

सद्गुणों में स्थापित होकर, आदरणीय सावा ने अच्छी ख्याति और राजकुमारों का सम्मान अर्जित किया। मसीह-प्रेमी राजकुमार जॉर्जी दिमित्रीविच[8481] आदरणीय के मठ में आए और धन्य सावा से अपनी पैतृक संपत्ति में एक उपयुक्त स्थान पर मठ स्थापित करने का आग्रह किया। तब सावा ने आदरणीय सर्गियस के मठ को छोड़ दिया और ज्वेनिगोरोड के पास, मास्कोवा नदी के ऊपरी इलाकों में, सम्राटीय शहर मास्को से लगभग 50 वर्स्ट दूर, स्टोरोझी नामक पहाड़ पर एक सुनसान स्थान पर बस गए; उन्होंने अपने भविष्य के मठ के लिए इसी स्थान को चुना। यहाँ संत सावा पूर्ण मौन और एकांत में रहते थे, और ठंड और गर्मी दोनों को सहते थे। हालाँकि, आदरणीय संत को लंबे समय तक अकेले नहीं रहना पड़ा। उनके पराक्रम और पवित्र जीवन की ख़बर तेज़ी से फैलने लगी, और दूर-दूर से भिक्षु और गृहस्थ संत सावा के पास आने लगे, और उनसे अपने आध्यात्मिक जीवन में मार्गदर्शन करने के लिए कहने लगे। आदरणीय फादर ने प्रेम से उनके पास आने वाले सभी का स्वागत किया, और उन्हें विनम्रता तथा मठवासी श्रम का उदाहरण दिया: वे स्वयं नदी से पानी लाते, उसे अपने कंधों पर उठाकर ऊँचे पहाड़ पर ले जाते, और अन्य आवश्यक कार्य करते थे। इस प्रकार, वे भाइयों को श्रम का आदी बनाना चाहते थे, ताकि वे अपने दिनों को आलस्य में बर्बाद न करें, जो सभी दुराचारों की जननी है।

इसके बाद, मसीह-प्रेमी राजकुमार जॉर्जी दिमित्रीविच ने माननीय पिता को एक चर्च बनाने के लिए आवश्यक धन प्रदान किया, और सावा ने परम पवित्र ईश्वर की माता के सम्मानित और गौरवशाली जन्म के सम्मान में एक चर्च का निर्माण किया और संतों के आत्मा-उद्धार के प्रवास के लिए एक अद्भुत और भव्य मठ स्थापित किया।

आदरणीय पिता इस मठ में एकत्रित मसीह के झुंड के लिए एक अच्छे चरवाहे थे और, उन्हें आध्यात्मिक चरागाहों की ओर ले जाकर, उन्होंने उन्हें कई सद्गुणों में मजबूत किया। उन्नत आयु प्राप्त करने के बाद, संत सव्वा बीमार पड़ गए और, भाइयों को बुलाकर, उन्हें दिव्य शास्त्रों में उपदेश दिया, उन्हें शारीरिक शुद्धता बनाए रखने, एक-दूसरे के साथ प्रेम में रहने, विनम्रता से स्वयं को सजाने, और उपवास और प्रार्थना में निरंतर बने रहने के लिए प्रेरित किया। इसके बाद, पूज्यनीय ने अपने शिष्यों में से एक को उनका मठाधीश नियुक्त किया और सभी भाइयों को आज्ञा दी कि वे मठाधीश

[8480] जब संत बहुत वृद्ध हो गए थे, तो उनके शिष्य ने उनकी देखभाल करने के लिए उनकी कोठरी खोली। 'तब,' वह बताता है, 'उनकी कोठरी में प्रवेश करके और एक पौधे से जुड़ी अद्भुत दृश्य का साक्षी बनकर, मैंने ध्यान से विचार किया कि यह कैसे जड़ पकड़ गया था और क्या पत्थर में कोई दरार थी, लेकिन मुझे कोई नहीं मिली; इसलिए, अपनी हैरानी में, मैंने कहा: *'हे परमेश्वर की धनाढ्यता, बुद्धि और ज्ञान की गहराई!' (रोमियों 11:33), क्योंकि जो लोग लंबा समय लाव्रा में रहे हैं, वे जानते हैं कि न तो खुले स्थानों में और न ही आश्रय वाले स्थानों में अंजीर के पेड़ होते हैं। उसकी समझ कितनी अगम्य और उसकी बुद्धि कितनी अथाह है!'* (रोमियों 11:33), क्योंकि जो लोग लंबे समय से मठ में रहे हैं, वे जानते हैं कि मठ की हवा में तीव्र गर्मी और शुष्कता के कारण, न तो खुले स्थानों में और न ही आश्रय वाले स्थानों में अंजीर का पेड़ या कोई अन्य पेड़ उगता है। यदि कोई सड़क के किनारे लाव्रा के छोटे सिनोबिया के पेड़ों की ओर इशारा करता है, तो उन्हें यह जान लेना चाहिए कि वे धन्य सावा की प्रार्थनाओं का फल हैं, जिन्हें गहरी मिट्टी और सर्दियों की धारा का प्रचुर पानी मिला था, साथ ही यह सिनोबिया के संतों के काम का भी परिणाम है, जो आज भी सर्दियों में इन पेड़ों को धारा के पानी से पानी देते हैं; इसके अलावा, कई लोगों ने धारा के किनारे पेड़ों पर मेहनत की, जहाँ मिट्टी गहरी थी, और, भले ही उन्होंने पूरे सर्दियों में उन्हें पानी दिया, वे शुष्कता और तीव्र गर्मी के कारण एक साल में मुश्किल से ही कोई वृद्धि हासिल कर पाते थे'।

[8481] ज्वेनिगोरोडस्की राजकुमार, मास्को के ग्रैंड प्रिंस दिमित्री डोंस्कोय के सबसे छोटे बेटे।

के साथ आज्ञाकारिता और समर्पण में रहें। सभी को विदा कहने और अंतिम चुंबन देने के बाद, संत साव्वा ने एक पुण्यपूर्ण स्वीकारोक्ति की और वर्ष[8482] के 3 दिसंबर को अपना प्राण ईश्वर के हाथों में सौंप दिया।

संत के निधन की खबर आसपास के पूरे क्षेत्र में तेजी से फैल गई, और ज्वेनगोरोड के सभी मसीह-प्रेमी नागरिक, कुलीनों और आम लोगों दोनों, दिवंगत संत के अंतिम संस्कार के लिए बड़ी श्रद्धा के साथ इकट्ठा हुए, और अपने साथ बीमार और अस्वस्थ लोगों को भी लाए। मृतक के लिए अंतिम संस्कार की प्रार्थना करने के बाद, उन्होंने उन्हें सम्मान के साथ परम पवित्र ईश्वर माता के जन्म के चर्च में दफनाया, जिसकी स्थापना उन्होंने स्वयं की थी। आज भी, पूज्य सावा के पवित्र अवशेष, उन सभी पर अनेक और विविध प्रकार के चमत्कार करते हैं जो श्रद्धा से उनके पास आते हैं, हमारे ईश्वर मसीह की महिमा के लिए, जो अपने संतों के माध्यम से कार्य करते हैं, और उनके देहांत के बाद, शानदार चमत्कार करते हैं। महिमा हो हमारे प्रभु की, अब और हमेशा और युगों-युगों तक। आमीन।

- आदरणीय सावा के चमत्कारों की कथा

संत सवा के निधन के कई वर्षों बाद, उनके मठ के मठाधीश डायोनिसियस, एक रात, अपनी नियमित प्रार्थनाएँ पूरी करके सोने के लिए लेट गए। और देखो, एक सम्माननीय भिक्षु उनके सामने प्रकट हुए, जिनका मुखमंडल शालीन और सफेद बालों से सुशोभित था, और उन्होंने उनसे कहा: 'डायोनिसियस, जल्दी उठो और मेरी प्रतिमा बनाओ।'

डायोनिसियस ने वरिष्ठ से पूछा:

'आप कौन हैं, पिताजी, और आपका नाम क्या है?'

उस पूज्य वृद्ध ने उत्तर दिया:

'मैं सव्वा हूँ, इस स्थान का प्रमुख।'

नींद से जागने पर, डायोनिसियस ने तुरंत अवक्कम नामक एक वृद्ध को बुलाया, जो परम पूज्य सावा के शिष्यों में से एक थे, और पूछा कि धन्य सावा कैसे दिखते थे। अवक्कम ने मठाधीश को बताया कि उनके आबा और गुरु कैसे थे और वे किस उम्र में परलोक सिधार गए थे। मठाधीश ने उनसे कहा:

'ठीक इसी तरह आज ही की रात मुझे पूज्य सावा दिखाई दिए और उन्होंने मुझे उनका एक आइकन बनाने का आदेश दिया।'

चूँकि डायोनिसियस स्वयं एक प्रतिमाकार थे, इसलिए उन्होंने तुरंत ही आदरणीय सावा की एक प्रतिमा बनाने की जल्दी की।

जुडास नामक एक दानव के वश में आया हुआ व्यक्ति, आदरणीय सवा के मठ में लाया गया। जब संत सवा के सम्मान में प्रार्थना सभा चल रही थी, तो दानवग्रस्त व्यक्ति चिल्लाया:

'मैं पीड़ा में हूँ: मैं जल रहा हूँ,' और उसी क्षण वह ठीक हो गया।

जब उससे पूछा गया कि उसने इतनी ज़ोर से क्यों पुकारा, तो उसने कहा:

'मैंने एक गौरवशाली वृद्ध को देखा। वह परम पूज्य सावा की कफ़न के पास खड़े थे, एक क्रॉस पकड़े हुए, और उन्होंने उससे मेरे ऊपर क्रॉस का चिह्न बनाया। उस क्रॉस से एक बड़ी ज्वाला निकली और मुझे पूरी तरह से झुलसा दिया। इसीलिए मैं चिल्लाया, और उस ज्वाला से अशुद्ध आत्मा मुझसे निकल गई।'

एक अवसर पर, संत सावा के मठ के भिक्षुओं ने अपने मठाध्यक्ष, डायोनिसियस के खिलाफ विद्रोह कर दिया। उन्होंने ग्रैंड प्रिंस जॉन के पास उनके खिलाफ एक झूठा आरोप लगाया। राजकुमार ने उनकी बदनामी पर विश्वास कर लिया और मठाध्यक्ष को तुरंत उसके सामने पेश होने का आदेश दिया। यह जानकर, मठाध्यक्ष बहुत दुख में पड़ गए। और इस प्रकार, उस रात, एक सपने में, धन्य सावा उसे दिखाई दिए और कहा:

'भाई, तुम क्यों दुखी हो? महा राजकुमार के पास जाओ और उनसे निडर होकर बात करो; संदेह में न पड़ो, क्योंकि प्रभु परमेश्वर तुम्हारे साथ होंगे और तुम्हें सहायता भेजेंगे।'

ईश्वर के पुरुष उन कुछ लोगों के सामने भी प्रकट हुए जो महाधर्माध्यक्ष के विरुद्ध बड़बड़ा रहे थे और उनसे कहा:

[8482] 1407 में।

'क्या इसीलिए तुम संसार से अलग हुए—कि तुम शिकायत करते हुए अपना तपस्या का प्रयास करो? तुम शिकायत करते हो, फिर भी मठाधीश तुम्हारे लिए आँसुओं से प्रार्थना करते हैं: कौन सी प्रबल होगी—तुम्हारी बदनामी या तुम्हारे पिता की प्रार्थनाएँ?'

जब मठाधीश और भ्राता राजकुमार के सामने उपस्थिति हुए और अदालत में अपना पक्ष रखा, तो बदनाम करने वाले लज्जित हो गए, और मठाधीश सम्मान के साथ मठ लौट आए।

आदरणीय सव्वा के मठ के एक भिक्षु को लंबे समय से आँखों की बीमारी से बहुत कष्ट हो रहा था और वह प्रकाश को बिल्कुल भी नहीं देख पाता था। वह संत सव्वा की कब्र पर आया, उसके सामने घुटनों के बल गिर पड़ा और आँसुओं के साथ, चंगा होने की भीख माँगी। उसने संत की कफ़न पर पड़े कपड़े से अपनी पीड़ित आँखों को पोंछना शुरू कर दिया। यह देखकर, वहाँ खड़े एक अन्य भिक्षु ने उस पर गाली-गलौज करना शुरू कर दिया, कहते हुए:

'तुम्हें ठीक नहीं होगा; तुम तो अपनी आँखों में और भी ज़्यादा रेत भर लोगे।'

संत साव्वा की कब्र के सामने श्रद्धापूर्वक प्रणाम करने वाले भिक्षु को ठीक हो गया, जबकि उस भाई को जो उसका मज़ाक उड़ा रहा था, अचानक अंधा कर दिया गया और उसने एक आवाज़ सुनी जो उससे कह रही थी:

'तुम्हें वही मिला है जो तुम चाहते थे, ताकि तुम्हारे द्वारा दूसरों को सिखाया जा सके कि वे ईश्वर के संत से आने वाले चमत्कारों पर न हँसें और न ही उनकी निंदा करें।'

तब अंधा आदमी, बड़े भय से भरकर और रोते हुए, पूजनीय सावा की कब्र के सामने गिर पड़ा और क्षमा याचना करने लगा, जो उसे मिली—तुरंत नहीं, बल्कि कई प्रार्थनाओं, आँसुओं और पश्चाताप के बाद।

एक रात, चोर सबसे पवित्र परमेश्वर की माता के चर्च को लूटने के इरादे से मठ में आए। लेकिन जब वे पूजनीय की ताबूत के ऊपर की खिड़की के पास पहुँचे, तो उनके सामने अचानक एक विशाल पहाड़ प्रकट हो गया, जिस पर चढ़ना पूरी तरह से असंभव था। उन्हें तुरंत भय और आतंक सताने लगा, और वे खाली हाथ लौट गए। यह सब बाद में स्वयं चोरों ने बताया, जो प्रायश्चित करने के लिए मठ आए थे और अपने बाकी जीवन तपस्या में बिताया।

इसके बाद, इवान रटशिचेव नामक एक बोयार (जागीरदार) अपने बीमार बेटे जॉर्ज को स्ट्रेचर पर लादकर मठ में आया; लड़का इतना कमजोर था कि वह बोल भी नहीं पा रहा था। जॉर्ज के ठीक होने के लिए प्रार्थना सेवा करने के बाद, भिक्षुओं ने मठ के क्वास (एक प्रकार का शरबत) का कुछ हिस्सा उस बीमार लड़के के मुँह में डाल दिया। बीमार लड़का तुरंत बोलने लगा, उसने संतों के भोजन में से कुछ रोटी चखी, और वह स्वस्थ हो गया। अपने बेटे के ठीक होने की अत्यधिक प्रसन्नता में, उसके पिता ने ईश्वर और उनके संत, संत साव्वा, का बहुत-बहुत धन्यवाद किया, और सम्माननीय संत से, जैसे कि वह जीवित हों, कहा:

'आदरणीय पिताजी! मेरे घर में कई नौकर-नौकरानियाँ हैं जो विभिन्न बीमारियों से पीड़ित हैं; मुझे विश्वास है कि, यदि आप चाहें, तो आप उन्हें भी ठीक कर सकते हैं।'

मठाध्यक्ष से कुछ क्वास माँगकर, बोयार अपने ठीक हो चुके बेटे के साथ लौट आया। जब वह अपने घर पहुँचा, तो उसने अपनी एक दासी, इरिना नाम की, जो बधिर और अंधी थी, को अपने सामने लाने का आदेश दिया; उसने मठ का क्वास उसके कानों में डाला और उसकी अंधी आँखों पर लगाया। तुरंत ही इरिना देखने और सुनने लगी। सभी ईश्वर की महानता को देखकर विस्मित हो गए। इसी प्रकार, बोयार ने अपने एक दास, आर्टेमियोस, जिसे सात साल से बहरा था, को बुलाया और उसके कानों में वही क्वास डाल दिया, और वह दास ठीक हो गया। इसके बाद, वह ककिलिया नाम की एक अंधी युवती को लाया, और जैसे ही क्वास से उसकी आँखों पर लेप लगाया गया, वह ठीक हो गई। लेकिन ये सभी चमत्कार स्वयं क्वास से नहीं, बल्कि आदरणीय सावा की प्रार्थनाओं और बोयार इवान के महान विश्वास के माध्यम से हुए। कुछ समय बाद, बोयार स्वयं बीमार पड़ गया। उसी उपचार को लेने पर, वह भी ठीक हो गया।

स्टोरोज़हेव्स्क के पूजनीय सावा के मठ के मठाध्यक्ष, मिसाएल, गंभीर रूप से बीमार पड़ गए और ठीक होने की सारी आशा खोकर, मृत्यु के कगार पर थे। एक दिन, मठ का सेवक, गुरी, प्रातःकालीन प्रार्थना (मैटिन्स) के लिए घंटियाँ बजाने जा रहा था। जब वह चर्च के दरवाज़े से गुज़र रहा था, तो पूजनीय एल्डर उससे मिले और उन्होंने उससे पूछा:

'आपके मठाधीश की तबीयत कैसी है?'

गुरिया ने उसे महंत की बीमारी के बारे में बताया। तब पूजनीय वृद्ध ने कहा:

'जाओ और मठाधीश से कहो कि वह परमेश्वर की अति पवित्र माता और इस स्थान के प्रमुख, वृद्ध सव्वा से सहायता की प्रार्थना करें—तब वह ठीक हो जाएगा; और तुम, भाई, मेरे लिए दरवाज़े खोलो, और मैं चर्च में प्रवेश करूँगा।'

गुरयि संशय में था और घंटी बजने से पहले दरवाज़े खोलना नहीं चाहता था, लेकनि वह वृद्ध से यह पूछने की हम्मित नहीं कर सका कि वह कौन था या कहाँ से आया था। प्रकट हुए वृद्ध, बनिा एक और शब्द कहे, चर्च के दरवाजों की ओर चल दिए। दरवाज़े तुरंत अपने आप खुल गए, और साधु उन दरवाज़ों से होकर चर्च में प्रवेश कर गए। गुरी डरकर अपनी कोठरी में लौट आया और अपने सहायक को डाँटने लगा:

'आज शाम तुमने चर्च के दरवाज़े क्यों नहीं बंद कयि? मैंने अभी-अभी एक अजनबी को खुले दरवाज़ों से चर्च में घुसते देखा है।'

लेकनि गुरी के सहायक ने कसम खाई कि उसने पछिली शाम चर्च के दरवाज़े अच्छी तरह से बंद करके ताला लगा दयिा था। फरि उन्होंने कुछ मोमबत्तयिाँ जलाईं, चर्च की ओर दौड़े, और पाया कि दरवाज़े अच्छी तरह से बंद थे, क्योंकि गुरी के सहायक ने वास्तव में उन्हें पछिली शाम बंद करके सावधानी से ताला लगा दयिा था। भोर की प्रार्थना के अंत में, गुरी ने भाइयों को वह सब कुछ बताया जो उसने देखा और सुना था। सभी ने सर्वसम्मति से यह नष्किर्ष नकिाला कि जो वृद्ध दखिाई दिए थे, वे स्वयं संत साव्वा ही थे। यह सुनकर, अबॉट मसिाइल ने आदेश दयिा कि उसे पूजनीय की कफन तक ले जाया जाए और उपचार के लिए वनिम्रतापूर्वक प्रार्थना करने पर, परमेश्वर की अतपिवत्रि माता और पूजनीय साव्वा की प्रार्थनाओं के माध्यम से वह पूर्ण स्वास्थ्य को पुनःप्राप्त कर गया।

ईश्वर के इस पुरुष की कब्र पर कई अन्य चमत्कार और चंगाई हुई हैं। और आज भी, ईश्वर की कृपा और परम पवत्रि ईश्वर माता तथा पूजनीय सव्वा की प्रार्थनाओं के द्वारा, यह आशीर्वाद उन लोगों को प्राप्त होता है जो वश्विास के साथ आते हैं। हम भी उन्हीं से प्रार्थना करेंगे कि वे हमारे प्रभु और ईश्वर मसीह के समक्ष अपनी हार्दकि मध्यस्थता के द्वारा हमारी आध्यात्मकि और शारीरकि दुर्बलताओं को दूर करें, जनिकी महमिा युगानुयुग होती रहे। आमीन।

ट्रोपारयिन, स्वर 8:

हे पूज्यवर, आप मरुभूमि में दया का स्रोत बनकर प्रकट हुए: क्योंकि आपने अपनी युवावस्था से ही एक पवत्रि जीवन चुना, अपने आध्यात्मकि गुरु का अनुसरण कयिा और उनकी शक्षिा के माध्यम से अपना मन स्वर्ग पर केंद्रति कयिा, और आपने स्वयं को अपने झुंड के लिए एक अतबिुद्धमिान मार्गदर्शक सद्धि कयिा। इसलिए मसीह ने, आपको एक अत्यंत दीप्तमिान दीपक मानकर, चमत्कारों से आपको समृद्ध कयिा है: हे हमारे पति सव्वस, प्रार्थना करें कि हमारी आत्माएँ उद्धार पाएँ।

कॉन्टाकयिन, स्वर 2:

प्रभु की इच्छा से प्रज्वलति होकर, आपने आत्म-संयम द्वारा शरीर के वासनाओं को त्याग दयिा, और दव्यि तेज के एक न मुरझाने वाले प्रकाश के रूप में प्रकट हुए: अपने चमत्कारों की करिणों से आप उन सभी को प्रबुद्ध करते हैं जो हमारे पूजनीय पति सव्वस की पवत्रि अवशेषों के तीर्थस्थल पर आते हैं।

17 दसिंबर

4 दसिंबर (पुराना संस्करण)

महान शहीद संत बार्बरा का जीवन और शहादत

4 दसिंबर को स्मरणोत्सव

अधर्मी रोमन सम्राट मैक्सिमियिन[8483] के शासनकाल के दौरान, पूर्व में, हेलीओपोलसि[8484] में, एक कुलीन वंश का, धनी और प्रसद्धि व्यक्ति रहता था, जसिका नाम डयिोस्कोरस था, जो जन्म और वशि्वास दोनों से एक मूर्तपिूजक था। उसकी एक बेटी, बार्बरा थी, जसिे वह अपनी आँख के तारे की तरह लाड़-प्यार करता था, क्योंकि वह उसकी इकलौती संतान थी। जब वह वयस्क हुई, तो वह अत्यंत सुंदर हो गई, इतनी कि पूरे क्षेत्र में कोई भी युवती सुंदरता में उसकी बराबरी नहीं कर सकती थी; इस कारण, डयिोस्कोरस ने उसके लिए एक ऊँचा और कुशलता से नर्मिति मीनार बनवाया, और मीनार के भीतर शानदार कक्षों की व्यवस्था की। वहाँ उसने अपनी बेटी को बंद कर दयिा, और उसके लिए भरोसेमंद शक्षिकिाओं और नौकरानयिों को नयिुक्त कयिा, क्योंकि उसकी माँ पहले ही मर चुकी थी। उसने ऐसा इसलिए कयिा ताकि आम और नीच लोग ऐसी सुंदरता को न देख सकें, क्योंकि उसका मानना था कि उनकी आँखें उसकी बेटी के सुंदर चेहरे को देखने के अयोग्य थीं। उस मीनार में, उन ऊँचे कक्षों में रहते हुए, उस युवती को उस ऊँचाई से ऊपर और नीचे दोनों जगह परमेश्वर की रचनाओं - दव्यि पंडिों और सांसारकि दुनयिा की सुंदरता को नहिारने में सांत्वना मलिती थी। एक दनि, आकाश को नहिारते हुए और सूर्य की करिणों, चंद्रमा के पथ और तारों की सुंदरता को देखकर, उसने अपनी साथ रहने वाली शक्षिकिाओं और नौकरानयिों से पूछा:

'यह सब कसिने बनाया?'

इसी तरह, पृथ्वी की सुंदरता—हरयिाली से ढके खेत, बगीचे और बाग़, पहाड़ और जल—को नहिारते हुए उसने पूछा:

'यह सब कसिके हाथ से बना है?'

उन्होंने उससे कहा:

'यह सब देवताओं ने बनाया है।'

युवती ने पूछा:

'कौन से देवता?'

दासयिों ने उत्तर दयिा:

'वे देवता जन्हिें आपके पता सम्मान देते हैं और अपने महल में रखते हैं – सोने, चांदी और लकड़ी के – और जन्हिें वे पूजते हैं; उन्होंने वह सब कुछ बनाया जो आपकी आँखों के सामने है।'

ये शब्द सुनकर, युवती को संदेह हुआ और उसने अपने मन में वचिार कयिा:

'जनि देवताओं का मेरे पता सम्मान करते हैं, वे मानव हाथों से बने हैं: सोने और चांदी वाले एक सुनार ने बनाए, पत्थर वाले एक राजमस्त्री ने, और लकड़ी वाले एक नक्काशीगर ने। तो फरि, ये मानव-नर्मिति देवता ऐसा तेजस्वी, ऊँचा आकाश और ऐसी सांसारकि सुंदरता कैसे बना सकते हैं, जबकि वे स्वयं न तो अपने पैरों पर चल सकते हैं और न ही अपने हाथों से काम कर सकते हैं?'

जब वह इस पर वचिार करती, तो वह अक्सर दनि-रात आकाश को नहिारती, सृष्टकिर्ता को उनकी रचना के माध्यम से पहचानने का प्रयास करती। एक दनि, जब वह लंबे समय तक आकाश को नहिार रही थी और उसे यह जानने की तीव्र इच्छा हो रही थी कि आकाश का इतना सुंदर वस्तिार, वशिालता और चमक कसिने बनाई है, तो अचानक दव्यि अनुग्रह का प्रकाश उसके हृदय में प्रकट हुआ और उसने उसके मन की आँखें उस एक अदृश्य, अगम्य और असीम ईश्वर के ज्ञान के लिए खोल दीं, जसिने बुद्धमिानी से स्वर्ग और पृथ्वी की रचना की थी। उसने अपने आप से कहा:

'ऐसा केवल एक ही ईश्वर हो सकता है, जसिे कसिी मानव हाथ ने नहीं बनाया है, बल्कि जो अपनी ही सत्ता के स्वामी हैं, और जन्हिोंने अपनी ही शक्ति से सभी चीजों को बनाया है। एक ऐसा ईश्वर अवश्य होना चाहिए जसिने आकाश का वस्तिार कयिा है, पृथ्वी की नींव स्थापति की है, और ऊपर से सूर्य की करिणों, चंद्रमा की चमक और तारों के वैभव से पूरे ब्रह्मांड को प्रकाशति कयिा है, जबकि नीचे वह वभिन्नि पेड़ों और फूलों से पृथ्वी को सजाता है और इसे नदयिों और झरनों से सींचता है। केवल एक ही ईश्वर होना चाहिए, जो सभी चीज़ों को सहारा देता है, सभी चीज़ों को जीवन देता है और सभी चीज़ों का प्रबंध करता है।

[8483] यह, बेशक, मैक्सिमियिन गैलेरयिस को संदर्भति करता है, जो रोमन साम्राज्य के पूर्वी भाग में सम्राट डायोक्लेटयिन के दामाद और सह-शासक थे, और बाद में 305 से 311 तक उनके उत्तराधकिारी रहे।

[8484] यह संभवतःफलिस्तीन के उत्तर में, फनिसियिा में स्थति हेलीओपोलसि को संदर्भति करता है, कोएले-सीरयिा में, जो अब एशयिाई तुर्की के सीरयिाई क्षेत्र में है, जो प्राचीन काल में मूर्तपिूजक फनिशियिाई देवता बाअल की प्रमुख पूजा स्थली और सभी पूर्वी मूर्तपिूजा का केंद्र बदिु था, लेकनि चौथी शताब्दी के अंत तक यह ईसाई धर्म का गढ़ बन गया था; बाद में, इस शहर को धीरे-धीरे नष्ट कर दयिा गया।

इस प्रकार कन्या बारबरा ने उसकी सृष्टि के माध्यम से सृष्टिकर्ता को जानना सीखा, और दाऊद का वचन उसके विषय में पूरा हुआ: *'मैं तेरे सब कामों पर ध्यान करता हूँ; मैं तेरे हाथों के कामों पर मनन करता हूँ* (भजन संहिता 142:5)। इस प्रकार के चिंतन से, बारबरा के हृदय में दैवी प्रेम की अग्नि प्रज्वलित हुई और उसने उसकी आत्मा को ईश्वर के प्रति तीव्र लालसा से भर दिया, जिससे उसे दिन-रात कोई चैन नहीं मिला, वह केवल एक ही बात के बारे में सोचती थी, केवल एक ही चीज़ की इच्छा रखती थी: ईश्वर और सभी चीजों के स्रष्टा को निश्चित रूप से जानना। लोगों में, उसे कोई ऐसा गुरु नहीं मिला जो उसे पवित्र विश्वास के रहस्यों का खुलासा कर सके और उसे मोक्ष के मार्ग पर लगा सके; क्योंकि उसके पिता, डियोस्कोरस, ने उसे चौकस पहरे में रख दिया था, इसलिए उसकी नियुक्त नौकरानियों के अलावा किसी को भी उसके क्वार्टर में प्रवेश की अनुमति नहीं थी। लेकिन स्वयं परम बुद्धिमान शिक्षक और मार्गदर्शक, पवित्र आत्मा, ने अदृश्य रूप से आंतरिक प्रेरणा के माध्यम से उन्हें अपनी कृपा के रहस्यों में निर्देशित किया और उनके मन में सत्य का ज्ञान प्रदान किया। और वह कन्या अपने मीनार में, छत पर एकाकी पक्षी की तरह रहती थी[8485] , सांसारिक चीज़ों के बजाय स्वर्गीय बातों पर मनन करती थी; क्योंकि उसका हृदय किसी भी सांसारिक वस्तु से जुड़ा नहीं था; वह न तो सोने से प्रेम करती थी, न ही मोतियों और रत्नों से, न ही सुंदर वस्त्रों से, और न ही किसी भी प्रकार के कन्याओं के आभूषणों से, उसने कभी विवाह के बारे में नहीं सोचा, बल्कि उसका पूरा मन एकमात्र ईश्वर की ओर लगा हुआ था, और वह उनके प्रति अपने प्रेम में मग्न थी।

जब उस युवती की शादी का समय आया, तो बार्बरा की अद्भुत सुंदरता के बारे में सुनकर, कई अमीर, कुलीन और प्रतिष्ठित युवकों ने डायोस्कोरस से उसकी शादी के लिए हाथ माँगा। बारबरा से मिलने के लिए मीनार पर चढ़कर, डियोस्कोरस ने उससे विवाह के बारे में बात करना शुरू किया और, विभिन्न उपयुक्त वरों की ओर इशारा करते हुए, पूछा कि उनमें से वह किसके साथ सगाई करना चाहेगी। अपने पिता से ऐसे शब्द सुनकर, वह पवित्र कन्या लजा गई, और विवाह के बारे में सुनने या सोचने से भी शर्मिंदा हो गई। उसने हर तरह से इनकार कर दिया, अपने पिता की इच्छाओं के आगे झुकने से इनकार कर दिया, क्योंकि वह अपनी पवित्रता के फूल को मुरझाने और अपनी कुँवारीपन के अनमोल मोती को खोने को अपने लिए एक बड़ी हानि मानती थी। अपने पिता के लगातार आग्रह के जवाब में कि वह उनकी इच्छा के आगे झुक जाए, उसने उनसे दृढ़ता से विरोध किया और, अंत में, घोषणा की:

'यदि, मेरे पिता, आप इस बारे में फिर से बात करेंगे और मुझे सगाई के लिए मजबूर करेंगे, तो मैं आपको अपना पिता नहीं कहूँगी, क्योंकि मैं अपनी जान दे दूँगी, और आप अपना एकमात्र संतान खो देंगे।'

यह सुनकर डायोस्कोरस भयभीत हो गया और उससे दूर हो गया, अब वह उसे जबरदस्ती शादी के लिए मजबूर करने की हिम्मत नहीं कर सका। उसका मानना था कि जबरदस्ती करने के बजाय उसकी अपनी इच्छा से सगाई करना बेहतर होगा, और उसे उम्मीद थी कि वह समय आएगा जब वह खुद अपना मन बदल लेगी और शादी करना चाहेगी। इसके बाद, उसने व्यापार के सिलसिले में एक लंबी यात्रा पर निकलने का निश्चय किया, यह मानते हुए कि उसकी अनुपस्थिति में वरवर उसे याद करेगी, और जब वह लौटेगा, तो उसके लिए उसे अपनी आज्ञाओं और सलाह मानने के लिए मनाना आसान होगा। रवाना होने से पहले, डियोस्कोरस ने बगीचे में स्नान मंडप के बगल में दो दक्षिण-मुखी खिड़कियों वाला एक शानदार स्नानागार बनवाने का आदेश दिया। उन्होंने अपनी बेटी की देखभाल के लिए नियुक्त लोगों को निर्देश दिया कि वे उसे मनमाने ढंग से टावर से बाहर जाकर जहाँ चाहें वहाँ जाने और जो चाहे करने से न रोकें। डायोस्कोरस ने सोचा कि उसकी बेटी, कई लोगों से बात करने और यह देखने पर कि कई युवतियाँ सगाईशुदा थीं और शादीशुदा थीं, खुद भी शादी करने की इच्छा करेगी।

जब डियोस्कोरस अपनी यात्रा पर निकले, तब बारबरा ने घर से बाहर निकलने और अपनी इच्छानुसार किसी से भी बिना रोक-टोक बात करने की अपनी स्वतंत्रता का लाभ उठाकर कुछ ईसाई कुंवारी लड़कियों से दोस्ती की और उनसे यीशु मसीह का नाम सुना। उस नाम से उसकी आत्मा आनंदित हुई, और उसने उनसे उनके बारे में और अधिक जानने की कोशिश की। उसकी नई सहेलियों ने उसे मसीह के बारे में सब कुछ बताया: उनकी अगणित दिव्यता के बारे में, पवित्रतम कुँवारी मरियम से उनके अवतार के बारे में, उनकी स्वैच्छिक पीड़ा और पुनरुत्थान के बारे में, साथ ही भविष्य के न्याय, मूर्तिपूजकों की अनंत यातना, और स्वर्ग के राज्य में विश्वास करने वाले मसीहियों की अनंत आनंद के बारे में। जब उसने यह सब सुना , बारबरा के हृदय में एक मिठास भर गई; वह मसीह के लिए प्रेम से जल उठी और बपतिस्मा लेने की लालसा

[8485] एक भजनसंग्रही वचन: तुलना करें भजनसंग्रह 101

करने लगी। संयोग से, उस समय एक पुरोहति व्यापारी का भेष धारण करके हेलीओपोलसि आया था। उसके बारे में जानने पर, बारबरा ने उसे अपने घर आमंत्रति कयिा और गुप्त रूप से उससे सभी चीजों के एक सृष्टकिर्ता और सर्वशक्तमिान ईश्वर के बारे में, और हमारे प्रभु यीशु मसीह में वशि्वास के बारे में जाना, जसिकी वह लंबे समय से उत्सुकता से इच्छा करती थी। उस पुरोहति ने उसे पवत्रि वशि्वास के सभी रहस्यों की व्याख्या करने के बाद, उसे पतिा, पुत्र और पवत्रि आत्मा के नाम पर बपतस्मिा दयिा, और उसे उपदेश देने के बाद अपने देश लौट गया। अपने बपतस्मिा से प्रबुद्ध होकर, संत बार्बरा ईश्वर के प्रतऔिर भी अधकि प्रेम से भर गईं, और दनि-रात उपवास और प्रार्थना में संलग्न होकर अपने प्रभु की सेवा करने लगीं; उन्होंने स्वयं को प्रभु के लिए व्रतबद्ध कर लयिा, और अपनी कुँवारी अवस्था को पवत्रिता से बनाए रखने की शपथ ली।

इस बीच, डयिोस्कोरस के आदेशानुसार स्नानागार का नरि्माण हो रहा था। एक दनि, संत बार्बरा नरि्माण कार्य देखने के लिए अपनी मीनार से नीचे आईं, और स्नानागार में दो खड़िकयिाँ देखकर उन्होंने कामगारों से पूछा:

'तुमने केवल दो खड़िकयिाँ ही क्यों बनाईं? क्या तीन बनाना बेहतर नहीं होता? तब दीवार और भी सुंदर दखिती और स्नानागार भी और अधकि उज्जवल होता।'

मजदूरों ने उत्तर दयिा:

'आपके पतिा ने हमें दक्षणि की ओर दो खड़िकयिाँ लगाने का आदेश दयिा था।'

लेकनि बारबरा ने ज़ोर देकर कहा कवि े तीन खड़िकयिाँ बनाएँ (पवत्रि त्रमिूर्त कि े रूप में)। और जब उन्होंने अपने पतिा के डर से ऐसा करने से इनकार कर दयिा, तो उसने उनसे कहा:

'मैं अपने पतिा के सामने तुम्हारा पक्ष लूंगी और तुम्हारी ज़मि्मेदारी लूंगी, इसलिए बस वैसा ही करो जैसा मैं कहती हूँ।'

तब कामगारों ने, उसकी इच्छानुसार, स्नानागार में एक तीसरी खड़िकी बना दी। जैसा कि उल्लेख कयिा गया है, वहाँ एक स्नान कक्ष था, जसिके बगल में स्नानागार का नरि्माण हो रहा था। इस स्नान कक्ष की दीवारें तराशे हुए संगमरमर के पत्थरों से बनी थीं। एक दनि सेंट बार्बरा इस स्नान कक्ष में आईं और पूर्व की ओर देखते हुए, उन्होंने अपनी उंगली से संगमरमर पर पवत्रि क्रॉस की छवि बनाई, जो पत्थर पर इतनी स्पष्ट रूप से अंकति हो गई मानो उसे लोहे से ठोंका गया हो। इसके अलावा, उसी स्नानागार में, पत्थर पर, उनकी कन्या के पैर का नशिान भी अंकति था; इस नशिान से पानी बहने लगा, और बाद में वशि्वास के साथ आने वालों के लिए यहाँ कई चमत्कार हुए[8486] ।

एक बार, अपने पतिा के कक्षों में से गुज़रते हुए, संत बार्बरा ने उनके देवताओं—नरि्जीव मूर्तयिों—को सम्मान के स्थान पर खड़ा देखा, और मूर्तयिों की पूजा करने वाले लोगों की आत्माओं के वनिाश के लिए उन्होंने गहरी आह भरी। फरि उन्होंने मूर्तयिों के चेहरों पर थूक दयिा, यह कहते हुए:

'हे नरि्दयी, जो भी तुम्हारी पूजा करते हैं और तुमसे मदद की आशा रखते हैं, वे सब तुम्हारे जैसे ही हों!'

यह कहकर वह अपने मीनार पर चढ़ गई। वहाँ, अपनी प्रथा के अनुसार, उसने प्रार्थना और उपवास में स्वयं को समर्पति कर दयिा, और अपना पूरा मन ईश्वर के चतिन में लगा दयिा।

इस बीच, उसके पतिा अपनी यात्रा से लौट आए। जब वह जायदाद की इमारतों का नरीक्षण कर रहे थे, तो वह नए बने स्नानागार के पास गए और उसकी दीवार में तीन खड़िकयिाँ देखकर, उन्होंने गुस्से में नौकरों और मजदूरों को डाँटना शुरू कर दयिा, यह पूछते हुए कि उन्होंने उनके आदेशों की अवज्ञा क्यों की और दो के बजाय तीन खड़िकयिाँ क्यों बनाईं। उन्होंने जवाब दयिा:

'यह हमारी अपनी इच्छा नहीं थी, बल्कि आपकी बेटी बारबरा की इच्छा थी; उसने हमें तीन खड़िकयिाँ बनाने का आदेश दयिा, भले ही हम ऐसा नहीं करना चाहते थे।'

डायोस्कोरस ने तुरंत बारबरा को बुलाया और उससे पूछा:

'तुमने स्नानागार में तीसरी खड़िकी लगवाने का आदेश क्यों दयिा?'

[8486] और तीन खड़िकयिों वाला स्नानागार, जो पवत्रि त्रमिूर्त कि े स्वरूप में बनाया गया था, और झरने के पास क्रूस की छवि वाला संगमरमर का पत्थर, और संत बारबरा के पदचनि्ह – ये सभी समियिन मेटाफ्रस्टेस के समय तक सुरक्षति रहे, जनि्होंने दमश्कि के जॉन के बाद, इस पवत्रि शहीद के दुखों का वर्णन कयिा। अपनी इतहिास में, वे इसके बारे में इस प्रकार कहते हैं: 'आज भी, यह झरना मौजूद है, जो मसीह से प्रेम करने वालों के बीच हर तरह की बीमारयिों को ठीक करता है; यदि कोई इसकी तुलना यॉर्डन के पानी या सलिोम के कुंड, या बेथेस्दा से करे, तो वे गलत नहीं होंगे, क्योंकि मसीह की शक्ति इस झरने में भी उतने ही चमत्कार करती है।'

उसने उत्तर दिया:

'दो की तुलना में तीन बेहतर हैं, क्योंकि आप, मेरे पिता, ने दो खिड़कियाँ बनवाने का आदेश दिया था—जो, मेरा मानना है, दो खगोलीय पिंडों, सूर्य और चंद्रमा[8487] , के अनुरूप थीं—ताकि वे स्नानागार को रोशन कर सकें; लेकिन मैंने त्रिमूर्ति के प्रकाश की छवि में, त्रिमूर्ति के अथाह, अकथनीय, अक्षीण और अमर प्रकाश के लिए, तीसरी खिड़की बनवाने का आदेश दिया, तीन खिड़कियाँ[8488] , जिनके माध्यम से संसार में आने वाला प्रत्येक व्यक्ति प्रबुद्ध होता है।

उसकी बेटी के नए, वास्तव में अद्भुत शब्दों से उसका पिता चकित था, जो हालांकि उसके लिए समझ से परे थे। उसे स्नानागार में उस स्थान पर ले जाकर जहाँ सेंट बारबरा की उंगली से बनाया गया क्रॉस पत्थर में उकेरा गया था—जिसे उसने अभी तक नहीं देखा था—डायोस्कोरस ने उससे पूछना शुरू किया:

'तुम क्या कह रही हो? तीन खिड़कियों की रोशनी हर व्यक्ति को कैसे ज्ञान प्रदान करती है?'

संत ने उत्तर दिया:

'ध्यान से सुनो, मेरे पिता, और समझो कि मैं क्या कह रही हूँ: पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा—त्रिमूर्ति में एक ईश्वर के तीन व्यक्ति, जो अगम्य प्रकाश में वास करते हैं—हर जीवित आत्मा को ज्ञान प्रदान करते हैं और जीवन देते हैं। इसीलिए मैंने स्नानागार में तीन खिड़कियाँ लगवाने का आदेश दिया, ताकि एक पिता का, दूसरी पुत्र का और तीसरी पवित्र आत्मा का प्रतिनिधित्व कर सके, ताकि स्वयं दीवारें भी पवित्र त्रिमूर्ति के नाम का महिमामंडन करें।

फिर, संगमरमर पर अंकित क्रूस की ओर हाथ से इशारा करते हुए, उसने कहा:

'मैंने परमेश्वर के पुत्र के चिह्न को भी चित्रित किया है: परमपिता की प्रसन्नता से और पवित्र आत्मा की सहायता से, मानव जाति के उद्धार के लिए, उन्होंने परम पवित्र कुँवारी से अवतार लिया और, अपनी इच्छा से, उस क्रूस पर पीड़ा सहन की, जिसकी प्रतिमा आप देखते हैं। मैंने यहाँ क्रूस का चिह्न अंकित किया है ताकि क्रूस की शक्ति इस स्थान से सभी दुष्टात्माओं की शक्ति को दूर भगा सके।'

उस अति बुद्धिमान कन्या ने अपने कठोर-हृदय पिता से पवित्र त्रिमूर्ति, मसीह के अवतार और कष्ट-सहन, क्रूस की शक्ति और पवित्र विश्वास के अन्य रहस्यों के बारे में ये और भी बहुत कुछ कहा – जिससे वह भयंकर क्रोध में आ गया।

डायोस्कोरस क्रोध से भर गया और अपनी बेटी के प्रति अपने स्वाभाविक प्रेम को भूलकर, उसने अपनी तलवार खींच ली और उसे भेदने का प्रयास किया, लेकिन वह मुड़कर भाग गई। हाथ में तलवार लिए, डायोस्कोरस भेड़ का पीछा करने वाले भेड़िये की तरह उसका पीछा करने लगा। वह मसीह के निर्दोष मेमने को पकड़ ही रहा था, तभी अचानक एक चट्टानी पहाड़ ने उसका रास्ता रोक लिया। संन्यासिनी को नहीं पता था कि वह अपने पिता—या यूँ कहें कि अपने यातनाकर्ता—के हाथ और तलवार से कहाँ भागे; उसके पास एक ही शरण थी—ईश्वर, जिनसे उसने मदद और सुरक्षा के लिए प्रार्थना की, और अपनी आत्मा और शरीर की दृष्टि उनकी ओर उठाई। सर्वोच्च ने शीघ्र ही अपनी सेविका की सुनी और उसकी सहायता के लिए आए, तथा चट्टानी पहाड़ को उसके सामने दो भागों में विभाजित होने का आदेश दिया, ठीक वैसे ही जैसे एक बार पहले शहीद थेकला के लिए किया गया था जब वह दुष्ट पुरुषों से भाग रही थी। पवित्र कुंवारी बार्बरा ने उस दरार में शरण ली जो बन गई थी, और तुरंत चट्टान उसके पीछे बंद हो गई, जिससे संत को पहाड़ पर चढ़ने का रास्ता मिल गया। वहाँ चढ़ने के बाद, वह एक गुफा में छिप गई। क्रूर और हठी डायोस्कोरस, अपनी भागती बेटी को अपने सामने न देखकर, हैरान रह गया। यह सोचकर हैरान कि वह उसकी नज़रों से कैसे ओझल हो गई, उसने लंबे समय तक लगन से उसकी तलाश की। जब वह बारबरा की तलाश में पहाड़ के चारों ओर घूम रहा था, तो उसे पहाड़ पर दो चरवाहे दिखाई दिए, जो अपने भेड़ों के झुंड की देखभाल कर रहे थे। इन चरवाहों ने संत बारबरा को पहाड़ पर चढ़ते और एक गुफा में छिपते देखा था। उनके पास जाकर, डायोस्कोरस ने पूछा कि क्या उन्होंने उसकी भागती हुई बेटी को देखा था। चरवाहों में से एक, जो एक दयालु व्यक्ति था, ने डायोस्कोरस को क्रोध से भरा हुआ देखकर, उस मासूम युवती का विश्वासघात नहीं करना चाहा और कहा:

'मैंने उसे नहीं देखा है।'

[8487] फ़िनिशियिन मुख्य रूप से खगोलीय पिंडों की पूजा करते थे। वे बाअल, या मोलक—जिसके रूप में वे सूर्य की पूजा करते थे—और अस्तारते, जिसके रूप में वे चंद्रमा की पूजा करते थे, को अपने प्रमुख देवता मानते थे।

[8488] यह, बेशक, त्रिमूर्ति में महिमामंडित एक ईश्वर के तीन हाइपोस्टेसीस या व्यक्तियों को संदर्भित करता है।

लेकिन दूसरे ने, बिना एक शब्द कहे, अपने हाथ से उस जगह की ओर इशारा किया जहाँ संत छिपी हुई थीं। डायोस्कोरस वहाँ भागा, जबकि संत को धोखा देने वाले चरवाहे को उसी जगह पर ईश्वर की सज़ा मिली: वह खुद एक पत्थर के खंभे में बदल गया, और उसके भेड़ें टिड्डियों में बदल गईं।

गुफा में अपनी बेटी को पाकर, डायोस्कोरस ने उस पर निर्दयता से पिटाई शुरू कर दी; उसे जमीन पर फेंककर, उसके ऊपर पैर पटक दिए और, उसके बाल पकड़कर, उसे अपने घर तक घसीट ले गया। फिर उसने उसे एक तंग, अँधेरी झोपड़ी में बंद कर दिया, दरवाज़े और खिड़कियाँ बंद कर दीं, उसे सील कर दिया, एक पहरा लगा दिया, और उसे भूखा-प्यासा छोड़ दिया। इसके बाद, डायोस्कोरस उस देश के शासक मार्टियनस के पास गया और उसे अपनी बेटी के बारे में सब कुछ बताया, यह समझाते हुए कि उसने उनके देवताओं को अस्वीकार कर दिया था और क्रूस पर चढ़ाए गए मसीह में विश्वास किया था।

डायोस्कोरस ने शासक से अनुरोध किया कि वह उसे विभिन्न यातनाओं की धमकी देकर अपने पिता के धर्म में लौटने के लिए मनाए। फिर उसने संत को उसके बंदी गृह से बाहर निकाला, उसे शासक के पास ले गया और उसे सौंपते हुए कहा:

'मैं उससे अपना नाता तोड़ता हूँ, क्योंकि वह मेरे देवताओं को अस्वीकार करती है; और जब तक वह हमारे पास वापस नहीं आती और मेरे साथ उनकी पूजा नहीं करती, तब तक वह मेरी बेटी नहीं रहेगी, और मैं उसका पिता नहीं रहूँगा: हे शक्तिशाली शासक, उसे यातना दो, जैसा तुम्हारी इच्छा हो।'

अपने सामने कन्या को देखकर, शासक उसकी असाधारण सुंदरता से चकित हो गया और उसकी सुंदरता और कुलीनता की प्रशंसा करते हुए, उससे धीरे और दयालुता से बात करने लगा। उसने उसे पुरखों के प्राचीन कानूनों से भटकने और अपने पिता की इच्छा का उल्लंघन करने के लिए नहीं, बल्कि देवताओं की पूजा करने और हर बात में अपने पिता की आज्ञा मानने के लिए समझाया, ताकि वह उनकी पूरी संपत्ति पर अपना वारिस होने का अधिकार न खो दे। लेकिन संत बार्बरा ने एक बुद्धिमानी भरी वाणी से मूर्तिपूजक देवताओं की व्यर्थता को उजागर किया , यीशु मसीह के नाम का अंगीकार किया और महिमामंडन किया, और स्वर्ग के आशीर्वाद के लिए प्रयास करते हुए सभी सांसारिक व्यर्थता, धन और सांसारिक सुखों का त्याग कर दिया। शासक ने उसे अपने परिवार का अपमान न करने और अपनी सुंदर और खिलती जवानी को बर्बाद न करने के लिए मनाना जारी रखा। अंत में, उसने उससे कहा:

'हे सुन्दर कन्या, अपनी पर दया कर और हमारे साथ देवताओं को बलिदान चढ़ाने के लिए उत्सुकता से आ, क्योंकि मैं तेरे प्रति दयालु हूँ और तुझे बचाना चाहता हूँ, ऐसी सुन्दरता को यातनाओं और घावों में नहीं डालना चाहता; परन्तु यदि तू मेरी बात नहीं मानेगी और समर्पण नहीं करेगी, तो तू मुझे, मेरी इच्छा के विरुद्ध भी, क्रूरता से तुझे यातना देने पर मजबूर कर देगी।'

संत बार्बरा ने उत्तर दिया:

'मैं हमेशा अपने ईश्वर को स्तुति का बलिदान अर्पित करती हूँ और स्वयं एक बलिदान बनना चाहती हूँ, क्योंकि केवल वही सच्चे ईश्वर हैं, स्वर्ग और पृथ्वी और उनमें जो कुछ भी है, उसके सृष्टिकर्ता हैं; लेकिन आपके देवता कुछ भी नहीं हैं और उन्होंने कुछ भी नहीं बनाया है, क्योंकि वे निर्जीव और निष्क्रिय हैं; वे स्वयं मानव हाथों का काम हैं, जैसा कि ईश्वर का नबी कहता है: *'उनकी मूरतें चाँदी और सोने की हैं, मनुष्यों के हाथों की बनाई हुई। क्योंकि सब जातियों के देवता मूरतें हैं, परन्तु यहोवा ने आकाश को बनाया'* (भजन संहिता 113:12; भजन संहिता 95:5)। मैं इन भविष्यसूचक वचनों को स्वीकार करता हूँ और एक ही ईश्वर, सभी चीजों के सृष्टिकर्ता, में विश्वास करता हूँ; जहाँ तक आपके देवताओं का सवाल है, मैं घोषणा करता हूँ कि वे झूठे हैं और उनमें आपकी आशा व्यर्थ है।

संत बार्बरा के शब्दों से क्रोधित होकर, राज्यपाल ने तुरंत उसे नग्न करने का आदेश दिया। यह पहला यातना—कई पुरुषों की आँखों के सामने नग्न खड़ा होना, जो निर्लज्जतापूर्वक और ध्यानपूर्वक उसके नग्न, कुंवारी शरीर को घूर रहे थे—उस पवित्र और शुद्ध कन्या के लिए, घावों से भी अधिक दुखद पीड़ा थी। तब यातना देने वाले ने आदेश दिया कि उसे जमीन पर लिटा दिया जाए और लंबे समय तक बैल की खाल से बुरी तरह कोड़ा मारा जाए, जब तक कि उसकी खून से जमीन लाल न हो जाए। राज्यपाल के आदेश पर कोड़ा मारना बंद करने के बाद, यातना देने वालों ने उसके कष्ट को और बढ़ाने के लिए, संत के घावों पर बालों वाली कमीज़ और मिट्टी के बर्तनों के तेज टुकड़ों से रगड़ना शुरू कर दिया। हालाँकि, ये सभी यातनाएँ, जो उसकी युवा और नाजुक कन्या के शरीर पर तूफान और हवा से भी अधिक प्रचंड रूप से टूटीं, शहीद

बारबरा के अटूट वशि्वास को हलिा नहीं सकीं, क्योंकि उसका वशि्वास चट्टान - प्रभु मसीह पर आधारति था, जसिके लिए उसने खुशी-खुशी ऐसी भयानक पीड़ाएँ सहन कीं।

इसके बाद, राज्यपाल ने उसे तब तक कैद में रखने का आदेश दयिा जब तक कि वह उसके लिए सबसे क्रूर यातनाएँ रच न सके। कठोर यातनाओं से बमुश्कलि जीवति, संत बार्बरा ने अपनी कोठरी में अपने प्रयि वरा, मसीह ईश्वर से आँसुओं के साथ प्रार्थना की, कि वे इतनी भयानक पीड़ा में उसे न छोड़ें, और दाऊद के वचन बोले: *'हे प्रभु, हे मेरे परमेश्वर, मुझे न छोड़!' मेरे से दूर न हो। हे प्रभु, हे मेरे उद्धारकर्ता, मेरी सहायता के लिए शीघ्र आ!'* (भजन संहति 37:22-23)। जब वह इस प्रकार प्रार्थना कर रही थी, तो मध्यरात्रि में उस पर एक महान प्रकाश चमका; संत ने अपने हृदय में भय और आनंद दोनों महसूस कयि: उनका अवनिाशी वधूवर अपनी वधू से मलिने की इच्छा से उनके नकिट आ रहे थे। और देखो, महमिा का राजा स्वयं अकथनीय महमिा में उसके सामने प्रकट हुआ। ओह, जब उसने उसे देखा तो उसकी आत्मा कतिनी प्रसन्न हुई, और उसके हृदय में कतिनी मधुरता भर गई! प्रभु ने प्रेम से उसकी ओर देखते हुए, अपने सबसे मधुर होठों से उससे कहा:

'हौसला रखो, मेरी वधू, और मत डरना, क्योंकि मैं तेरे संग हूँ; मैं तेरी रक्षा करता हूँ; मैं तेरा संघर्ष देखता हूँ और तेरी पीड़ाओं को दूर करता हूँ। तुम्हारे दुखों के लिए, मैं तुम्हारे लिए अपने स्वर्गीय महल में एक शाश्वत पुरस्कार तैयार कर रहा हूँ; इसलिए, अंत तक धैर्य रखो, ताकि तुम जल्द ही मेरे राज्य में शाश्वत आशीर्वादों का आनंद ले सको!

प्रभु मसीह के वचन सुनकर, संत बार्बरा, एक लौ के सामने मोम की तरह, ईश्वर के साथ एक होने की इच्छा से पघिल गईं और, बाढ़ की नदी की तरह, उनके प्रति प्रेम से भर गईं। अपनी प्रयि वधू, बारबरा को सांत्वना देकर और उसे अपने प्रेम से मधुर बनाकर, परम मधुर यीशु ने उसके घावों को चंगा कर दयिा, ताकि उसके शरीर पर उनका कोई नशिान न रहे। इसके बाद, वे अदृश्य हो गए, और उसे अकथनीय आध्यात्मकि आनंद में छोड़ गए। और संत बार्बरा तहखाने में ऐसे रहीं मानो स्वर्ग में हों, सेराफमि की तरह ईश्वर के प्रेम से जलती हुईं, अपने हृदय और होठों से उनकी महमिा करती हुईं, और प्रभु का धन्यवाद करती हुईं कि उन्होंने अपनी दासी, जो उनके नाम के लिए पीड़ति हो रही थी, की उपेक्षा नहीं की बल्कि उस पर कृपा की।

उस नगर में जुलयिाना नाम की एक महलिा रहती थी, जो मसीह में वशि्वास करने वाली और ईश्वर-भयभीत थी। जसि क्षण से संत बार्बरा को उसके अत्याचारयिों ने पकड़ा, जुलयिाना दूर से ही उस पर नज़र रखती रही और उसके दुखों को देखती रही; और जब संत को जेल में डाल दयिा गया, तो वह जेल की खड़िकी से चपिक गई, यह आश्चर्य करते हुए कि अपनी जवानी और सुंदरता के चरम पर एक इतनी युवा कन्या ने अपने पति को ठुकरा दयिा था, अपने पूरे परविार, अपनी संपत्ति और इस संसार के सभी आशीर्वादों और सुखों को त्याग दयिा था, और अपने जीवन को भी नहीं बख्शा था, बल्कि उसे उत्साहपूर्वक मसीह के लिए बलदिान कर दयिा था। जब उसने देखा कि मसीह ने संत बार्बरा के घावों को ठीक कर दयिा है, तो वह भी उनके लिए दुख सहने की इच्छा करने लगी, और इस महान कार्य के लिए खुद को तैयार करने लगी, तथा शहादत देने वाले यीशु मसीह से प्रार्थना करने लगी कि वह उसे अपने दुखों में धैर्य प्रदान करें। जैसे ही दनि चढ़ा, संत बार्बरा को और अधकि यातना देने के लिए एक अधर्मी न्यायाधकिरण का सामना करने हेतु उसके कालकोठरी से बाहर ले जाया गया; जुलयिाना दूर से उसका पीछा करती रही। जब संत बार्बरा राज्यपाल के सामने खड़ी हुईं, तो वह और उसके साथ आए ' ' के लोग यह देखकर चकति रह गए कि वह कन्या पूरी तरह से स्वस्थ थी, उसका चेहरा दमक रहा था और पहले से भी अधकि सुंदर दखि रहा था, और उसके शरीर पर उसके घावों का कोई नशिान भी नहीं था। यह देखकर, राज्यपाल ने कहा:

'देखो, हे कन्या, हमारे देवता तुम्हारी कतिनी परवाह करते हैं? कल तुम्हें क्रूरता से यातना दी गई थी और तुम अपने दुख से थक गई थीं, फरि भी अब उन्होंने तुम्हें पूरी तरह से ठीक कर दयिा है और तुम्हें उत्तम स्वास्थ्य प्रदान कयि है। तो उनकी इस कृपा के लिए आभारी बनो – उनके सामने सरि झुकाओ और बलदिान चढ़ाओ।'

संत ने उत्तर दयिा:

'आप क्या कह रहे हैं, शासक, कि आपके देवताओं ने—जो स्वयं अंधे, गूंगे और असंवेदनशील हैं—मुझे ठीक कर दयिा है?' वे अंधों को दृष्टि, बधरिों को सुनने की शक्ति, मूक लोगों को वाणी, या लंगड़ों को चलने की क्षमता नहीं दे सकते; वे बीमारों को ठीक नहीं कर सकते या मृतकों को जीवति नहीं कर सकते: तो फरि, उन्होंने मुझे कैसे ठीक कयि होगा, और मुझे उनकी पूजा क्यों करनी चाहए? मुझे मेरे ईश्वर, यीशु मसीह ने चंगा कयि—वह जो सभी बीमारयिों को ठीक करते हैं

और मृतकों को जीवन देते हैं; मैं कृतज्ञतापूर्वक उनकी आराधना करता हूँ और स्वयं को बलदिान के रूप में अर्पति करता हूँ। लेकनि तुम्हारा मन अंधा हो गया है, और तुम इस दव्यि चकित्सिक को नहीं देख सकते, और न ही तुम उनके योग्य हो।

पवत्रि शहीद के इन शब्दों ने राज्यपाल को क्रोधति कर दयिा: उसने आदेश दयिा कि उसे एक पेड़ से लटका दयिा जाए, उसके शरीर को लोहे की पंजाओं से खुरच दयिा जाए, उसकी पसलयिों को जलती हुई मोमबत्तयिों से झुलसा दयिा जाए, और उसके सरि पर हथौड़े से वार कयिा जाए। संत बार्बरा ने इन सभी कष्टों को बड़ी बहादुरी से सहन कयिा। ऐसी यातनाओं से न केवल उसके लिए, एक युवा कन्या के लिए, बल्कि एक मजबूत पुरुष के लिए भी बच नकिलना असंभव होता; फरि भी मसीह के मेमने को परमेश्वर की अदृश्य शक्ति से बल मलिा।

संत बार्बरा की यातना को देखने वाली भीड़ में जूलयिाना भी खड़ी थी। संत बार्बरा का महान दुख देखकर, जूलयिाना अपने आँसू नहीं रोक सकी और जोर-जोर से रोने लगी। उत्साह से भरकर, उसने भीड़ से ऊपर अपनी आवाज़ उठाई और नर्दियी शासक के अमानवीय यातनाओं की नदिा करने और मूर्तपिूजक देवताओं का अपमान करने लगी। उसे तुरंत पकड़ लयिा गया, और जब उससे उसके धर्म के बारे में पूछा गया, तो उसने घोषणा की कि वह एक ईसाई है। तब शासक ने आदेश दयिा कि उसे भी बारबरा की तरह ही यातना दी जाए। जुलयिाना को बारबरा के साथ फांसी दी गई, और उसके बाल लोहे की कंघयिों से नोचे गए। और पवत्रि महान शहीद बारबरा, यह देखकर और अपने स्वयं के यातनाओं को सहते हुए, अपनी दुखी दृष्टि ईश्वर की ओर उठाई और प्रार्थना की:

'हे ईश्वर, जो मनुष्यों के हृदयों की परीक्षा करते हैं, आप जानते हैं कि मैंने अपना सम्पूर्ण अस्तत्वि बलदिान के रूप में आपको अर्पति कर दयिा है और स्वयं को आपके सर्वशक्तमिान दायें हाथ की शक्ति के हवाले कर दयिा है, आपके प्रति प्रयत्नशील रहते हुए और आपके पवत्रि आज्ञाओं से प्रेम करते हुए। हे प्रभु, मुझे न छोड़एि, बल्कि मुझ पर और मेरी सह-पीड़ति जुलयिाना पर दया की दृष्टि डालएि; हम दोनों को बल प्रदान कीजएि और हमें यह सच्चा पराक्रम पूरा करने की शक्ति दीजएि: *'आत्मा तो इच्छुक है, पर देह दुर्बल है'* (मत्ती 26:41; मरकुस 14:38)।

इस प्रकार संत ने प्रार्थना की, और शहीदों को उनके दुखों को साहसपूर्वक सहने के लिए स्वर्गीय सहायता अदृश्य रूप से प्रदान की गई। इसके बाद, यातना देने वाले ने आदेश दयिा कि दोनों के स्तन काट दएि जाएँ। जब यह कयिा गया और शहीदों का दुख बढ़ गया, तो संत बार्बरा ने एक बार फरि अपने चकित्सिक और उपचारकर्ता की ओर अपनी आँखें उठाकर पुकार लगाई: *'हे प्रभु, अपना पवत्रि आत्मा हम से न ले; हे प्रभु, हमें अपने उद्धार का आनंद फरि से दे, और अपने सर्वशक्तमिान आत्मा से हमें अपने प्रेम में दृढ़ कर!'* (भजन संहति 50:13-14)।

इस तरह की यातनाओं के बाद, राज्यपाल ने संत जुलयिाना को जेल भेजने का आदेश दयिा, जबकि संत बारबरा को, उनकी महान अपमान के लिए, नग्न करके शहर में घुमाया जाना था, जहाँ उनका उपहास और पटिाई की गई। पवत्रि कुँवारी बारबरा, लज्जा से स्वयं को इस प्रकार ढकते हुए मानो वह एक वस्त्र हो, अपने प्रयि वधूवर, मसीह ईश्वर से पुकार उठीं:

'हे ईश्वर, जो आकाश को बादलों से और पृथ्वी को धुंध से इस प्रकार ढाँपता है जैसे कसिी नवजात शशिु को लपेटों से clothes[8489] , हे राजा, आप स्वयं मेरी नग्नता और महा-शहीद बार्बरा के दुख को ढाँपें; यह अनुग्रह करें कि दुष्टों की आँखें मेरा शरीर न देखें, और आपकी दासी का अंत तक उपहास न उड़ाया जाए!'

प्रभु यीशु मसीह, जन्हिोंने अपनी सभी पवत्रि स्वर्गदूतों के साथ स्वर्ग से अपनी दासी के पराक्रम पर दृष्टि डाली, तुरंत उसकी सहायता के लिए दौड़े और पवत्रि शहीद के नग्न शरीर को ढकने के लिए तेजस्वी वस्त्रों में एक प्रकाशमान स्वर्गदूत को उसकी ओर भेजा। इसके बाद, दुष्ट अब शहीद के नग्न शरीर को नहीं देख सके, और उसे उसके यातनाकर्ता के पास वापस ले जाया गया। उसके बाद, संत जुलयिाना को भी नग्न अवस्था में शहर में घुमाया गया। अंत में, यातना देने वाले ने, यह देखकर कि वह उन्हें मसीह के प्रति उनके प्रेम से नहीं हटा सका या मूर्तयिों की पूजा करने के लिए मना नहीं सका, दोनों को तलवार से सरि कलम करने की सज़ा सुनाई।

बारबरा के नर्दियी पति डायोस्कोरस, शैतान से इतने वषिाक्त हो गए थे कि उन्होंने न केवल अपनी बेटी के भयानक कष्टों को देखकर कोई दुख नहीं दखिाया, बल्कि उसे मौत की सजा देने वाले के रूप में कार्य करने में उन्हें शर्म भी नहीं आई। अपनी बेटी को पकड़कर और हाथ में खींची हुई तलवार लेकर, डयिोस्कोरस उसे शहर के बाहर, एक पहाड़ पर,

[8489] पवत्रि शास्त्र से लिए गए वाक्यांश: देखें भजन संहति 146:9; अय्यूब 38:10।

नामक स्थान पर, निष्पादन के लिए घसीटकर ले गया, जबकि एक सैनिक संत जुलियाना को उनके पीछे-पीछे ले जा रहा था। जैसे ही वे चल रहे थे, संत बारबरा ने ईश्वर से इस प्रकार प्रार्थना की:

– हे आदि-विहीन ईश्वर, जिसने आकाश को एक छत्र की तरह फैलाया और पृथ्वी को जल पर स्थापित किया, जो अपने सूर्य को भले और बुरे दोनों पर चमकाने का आदेश देता है और धर्मी और अधर्मी दोनों पर वर्षा करता है[8490] , अब अपने उस दास की सुन जो तुझसे प्रार्थना करता है; सुन, हे राजा, और हर उस व्यक्ति को अपनी कृपा प्रदान कर जो मुझे और मेरे दुखों को याद करता है, कि उन पर कोई अचानक बीमारी न आए और अप्रत्याशित मृत्यु उन्हें न ले जाए, क्योंकि हे प्रभु, आप जानते हैं कि हम मांस और रक्त हैं और आपकी सबसे पवित्र हाथों की रचना हैं।

जब वह इस प्रकार प्रार्थना कर रही थी, तब स्वर्ग से एक आवाज़ सुनाई दी, जो उसे और जुलियाना को स्वर्गीय निवासों में बुला रही थी और उसकी प्रार्थना को पूरा करने का वादा कर रही थी। और इस प्रकार दोनों शहीदों, बारबरा और जुलियाना, ने बड़ी प्रसन्नता से अपनी मृत्यु को प्राप्त किया, अपने शरीरों से मुक्त होकर प्रभु के सामने खड़े होने की लालसा करते हुए। नियत स्थान पर पहुँचने पर, मसीह के मेमने बारबरा ने तलवार के नीचे अपना सिर झुकाया और अपने निर्दयी पिता के हाथों उसका सिर कलम कर दिया गया, इस प्रकार पवित्रशास्त्र के वचन पूरे हुए: *'एक पिता अपने बच्चे को मृत्यु के हवाले कर देगा'* (मत्ती 10:21; मरकुस 13:12)। इस बीच संत जुलियाना का एक सैनिक ने सिर कलम कर दिया। इस प्रकार उन्होंने अपना पराक्रम पूरा कि[8491] । उनकी पवित्र आत्माएँ आनंदपूर्वक अपने वधूवर, मसीह के पास चली गईं, जहाँ उन्हें स्वर्गदूतों ने मिला और स्वयं प्रभु ने प्रेमपूर्वक स्वीकार किया। डियोस्कोरस और राज्यपाल मार्टियन पर अचानक ईश्वर का दंड पड़ा। तुरंत फाँसी के बाद, दोनों पर एक तूफान आ गया, और बिजली की एक चिंगारी से उनके शरीर राख हो गए।

उस नगर में गैलेंटियन नामक एक धार्मिक पुरुष रहता था। पवित्र शहीदों के पवित्र अवशेष लेकर, वह उन्हें शहर में ले आया, उन्हें उचित सम्मान के साथ दफनाया, और उनके ऊपर एक चर्च बनवाया, जिसमें पवित्र शहीदों के अवशेषों के माध्यम से, पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा, त्रिमूर्ति में एक, ईश्वर की प्रार्थनाओं और अनुग्रह से कई लोग चंगे हुए। उसकी महिमा सदा के लिए हो। आमीन।

- महान शहीद बार्बरा की पवित्र अवशेषों पर

बाद में, महा शहीद बार्बरा के पवित्र अवशेष ग्रीस से रूस, कीव में स्थानांतरित किए गए, जब पवित्र बपतिस्मा के माध्यम से रूसी भूमि के प्रबोधन के बाद, रूसी राजकुमारों ने ग्रीक राजाओं के साथ विशेष रूप से घनिष्ठ और मैत्रीपूर्ण संबंध बनाए और उनकी बहनों और बेटियों को अपनी पत्नियों के रूप में स्वीकार किया[8492] । ग्रीक और रूसी शासकों के बीच घनिष्ठ और मैत्रीपूर्ण संबंधों की इसी अवधि के दौरान कीव को ग्रीस से एक अनमोल उपहार मिला – महान शहीद संत बार्बरा के चमत्कारी अवशेष, जैसा कि 1670 में कीव के सेंट माइकल के गोल्डन-डोम मठ के मठाधीश द्वारा लिखे गए एक वृत्तांत में वर्णित है[8493] , हिरोमोंक थियोडोसियस साफोनोविच[8494] , एक अत्यंत विश्वसनीय व्यक्ति।

कीव के महा राजकुमार स्वियातोपोलक इज्यास्लावकि[8495] की पहली पत्नी, जिनका बपतिस्मा का नाम माइकल था, बाइज़ेंटाइन सम्राट अलेक्सियोस कोम्नेनोस[8496] की बेटी, ग्रीक राजकुमारी वरवारा थीं। कॉन्स्टेंटिनोपल से रूस के

[8490] पवित्र शास्त्र से अभिव्यक्तियाँ: देखें भजन संहिता 103:2, 135:6; मत्ती 5:45.

[8491] पवित्र महान शहीदों बार्बरा और जुलियाना का धन्य निधन वर्ष 306 में हुआ।

[8492] इस प्रकार, संत व्लादिमीर, प्रेरितों के समान, ने यूनानी सम्राटों बेसिल और कॉन्स्टेंटिन की बहन राजकुमारी अन्ना को अपनी पत्नी के रूप में स्वीकार किया। उनके पोते, यारोस्लाव के पुत्र, महा राजकुमार व्लादिमीर, जिन्होंने अपने बड़े भाई इज्यास्लाव यारोस्लाविच के बाद कीव पर शासन किया, ने भी यूनानी सम्राट कॉन्स्टेंटिन मोनोमाखोस की एक बेटी से विवाह किया था, जिनसे उन्हें एक पुत्र, व्लादिमीर मोनोमाखोस हुआ, जो बाद में कीव का महा राजकुमार बना।

[8493] प्राचीन परंपरा के अनुसार, सेंट माइकल का स्वर्ण-गुंबद वाला मठ, कीव और ऑल रस के पहले मेट्रोपॉलिटिन, माइकल द्वारा रूस में ईसाई धर्म की शुरुआत के तुरंत बाद के वर्षों में बनाया गया था, जिन्होंने कीव के लोगों को डिनीपर नदी में उसी स्थान पर बपतिस्मा दिया था जहाँ कभी पेरुन की मुख्य मूर्ति खड़ी थी। हालांकि, सबसे शुरुआती वृत्तांतों के अनुसार, इसकी स्थापना 1108 में कीव के महाप्रसि स्वियातोपोलक इज्यास्लावकि द्वारा की गई थी।

[8494] फेओदोसी साफोनोविच – कीव में एक शिक्षक और उपदेशक, और 1665 से स्वर्ण-गुंबद वाले सेंट माइकल मठ के मठाधीश।

[8495] स्वेतोस्लाव इज्यास्लावकि – यारोस्लाव द वाइज़ के पोते और संत व्लादिमीर, प्रिंसि इक्वल-टू-द-अपोस्टल्स के परपोते – ने 1093 से 1114 तक कीव के ग्रैंड डची पर शासन किया।

[8496] अलेक्सियस प्रथम कोमनेनस, बीजान्टिन सम्राट, ने 1081 से 1118 तक शासन किया।

लिए प्रस्थान करने से पहले, राजकुमारी वरवारा ने अपने पिता से पवित्र महा शहीद वरवारा के अवशेष देने का आग्रह किया, जिन्हें वह अपने साथ कीव ले आईं। उनके पति, ग्रैंड प्रिंस माइकल ने, 1108 में अपने संरक्षक, सेंट माइकल द आर्कएन्जेल को समर्पित कीव में एक पत्थर का चर्च बनवाया, और उसमें महान शहीद के पवित्र अवशेषों को सम्मानपूर्वक स्थापित किया[8497] । तातार खान बटो[8498] द्वारा रूसी भूमि पर आक्रमण के दौरान, पवित्र महा-शहीद की अवशेषों को पुरोहितों ने चर्च तक जाने वाली पत्थर की सीढ़ियों के नीचे एक गुप्त स्थान पर छिपा दिया था। बाटू की तबाही के कई वर्षों बाद, ईश्वर की कृपा से, पवित्र अवशेषों की खोज हुई, उन्हें उनके छिपाने की जगह से निकालकर, उसी चर्च में सम्मानपूर्वक सार्वजनिक रूप से स्थापित किया गया।

1644 में, ऑर्थोडॉक्सी के महान रक्षक, कीव के मेट्रोपॉलिटन पीटर मोहिला[8499] के कार्यकाल के दौरान, पोलैंड के साम्राज्य के चांसलर जॉर्जी ओसोलिंस्की ने कीव का दौरा किया। महान शहीद बारबरा की पवित्र अवशेषों को श्रद्धांजलि देने के लिए सेंट माइकल मठ के चर्च में प्रवेश करने पर, उन्होंने निम्नलिखित का वर्णन किया:

'मुझे पवित्र महा-शहीद बार्बरा की मध्यस्थता में गहरी आस्था है, क्योंकि कई लोग गवाही देते हैं कि जो कोई भी स्वयं को उनकी मध्यस्थता के हवाले कर देता है, वह पश्चाताप किए बिना और दिव्य रहस्यों को प्राप्त किए बिना नहीं मरता।' मैं रोम और पश्चिमी देशों में गया हूँ, और हर जगह मैंने पूछा कि पवित्र महा-शहीद बार्बरा के अवशेष कहाँ मिलेंगे—पश्चिम में या पूर्व में। मुझे बताया गया कि पवित्र महा-शहीद के अवशेष न तो पश्चिम में मिलते हैं, और न ही पूर्व में, जैसा कि वहां गए लोग दावा करते हैं, बल्कि वे इन हिस्सों में रखे गए हैं। अब मुझे विश्वास है कि पवित्र महा-शहीद बारबरा के सच्चे अवशेष यहीं कीव में पाए जाते हैं।

पवित्र अवशेषों को भक्तिपूर्वक प्रणाम करके और श्रद्धापूर्वक चूमने के बाद, चांसलर ने इन पवित्र अवशेषों का एक हिस्सा देने का अनुरोध किया। उनके महान विश्वास के सम्मान में, उन्हें संत की दाहिनी उंगली का एक टुकड़ा दिया गया, जिसे उन्होंने बड़ी कृतज्ञता से स्वीकार किया।

1650 में, कीव के मेट्रोपॉलिटन सिल्वेस्टर कोसोव के कार्यकाल के दौरान[8500] , लिथुआनियाई हेतमैन, प्रिंस यानुश रादज़िविल ने कीव शहर पर आक्रमण कर दिया। उनके अनुरोध पर, उन्हें महान शहीद संत बारबरा के अवशेषों के दो टुकड़े दिए गए, जो उनकी छाती की हड्डी और पसली से लिए गए थे। हेटमैन ने महा शहीद के स्तनों का वह हिस्सा अपनी पत्नी, मोल्दावियाई-वालाचियाई शासक वासिले की धार्मिक पुत्री, राजकुमारी मारिया को दे दिया। जब मारिया का निधन हो गया, तो अवशेषों का वह हिस्सा जो उसने रखा था, कीव के मेट्रोपॉलिटन, जोसेफ तुकालस्की[8501] को मिल गया, और उसे उनके द्वारा कानिव शहर[8502] ले जाया गया; उनकी मृत्यु के बाद, इसे बट्यूरिन शहर[8503] में स्थानांतरित कर दिया गया, जहाँ यह अब संत निकोलस द वंडरवर्कर के मठ में विराजमान है और श्रद्धापूर्वक सम्मानित होकर, चमत्कारी उपचार प्रदान करता है। जहाँ तक महान शहीद की पसली के दूसरे भाग का प्रश्न है, उसी राजकुमार रादज़िविल ने उसे विल्नियस के कैथोलिक बिशप, जॉर्ज टिश्केविच को, उनकी इच्छा और विनम्र अनुरोधों को पूरा करते हुए, एक उपहार के रूप में भेजा। यह उपहार स्वीकार करने के बाद, बिशप ने इसे अपने कक्षों में एक भव्य रूप से सुसज्जित अवशेष-पात्र में सम्मानपूर्वक रखा। कुछ समय बाद, बिशप का घर जल गया, लेकिन पवित्र महा-शहीद बार्बरा की अवशेषों वाली अवशेष-पेटिका सुरक्षित और सही-सलामत रही। यह जानकर, सभी लोग अत्यंत आश्चर्यचकित हो गए और उन्होंने ईश्वर तथा पवित्र महा-शहीद बार्बरा की स्तुति की। इस चमत्कार की खबर 1657 में सेंट माइकल मठ तक पहुँची। एक साल पहले,

---

[8497] स्वर्ण-गुंबद वाले सेंट माइकल मठ में, जहाँ आज भी महान शहीद सेंट बारबरा की अवशेषें 1847 में एक भव्य रूप से सुसज्जित चांदी-सुनहरे आवरण वाले अवशेष-पात्र में स्थापित हैं।

[8498] बटू खान का आक्रमण 1240 में हुआ था।

[8499] ऑर्थोडॉक्स धर्म के प्रसिद्ध पैरोकार, प्योटर मोहिलेनको 1631 से 1646 तक कीव के मेट्रोपॉलिटन थे; वे कैथोलिकों और यूनिएट्स के खिलाफ ऑर्थोडॉक्सी के लिए अपने संघर्ष, कीव-ब्रदरहुड स्कूल की स्थापना, पूजा-संबंधी और प्रेरणादायक पुस्तकों के प्रकाशन, और अपने उपदेशों और अन्य लेखनों के लिए जाने जाते हैं।

[8500] सिल्वेस्टर कोसोव – कीव के मेट्रोपॉलिटन – ने 1647 से 1657 तक कीव में सेवा की।

[8501] जोसेफ नेल्युबोविच-तुकालस्की – 1663 से कीव के मेट्रोपॉलिटन, ऑर्थोडॉक्सी के एक प्रसिद्ध पैरोकार, को बाद में पोलिश लोगों द्वारा कैद कर दिया गया और उनकी मृत्यु चिहिरिन में हुई।

[8502] कानीव – नदी डेन्यूपर पर स्थित कीव गवर्नोरेट का एक जिला शहर।

[8503] बट्यूरिन – चेर्निगिव गवर्नोरेट के कोʜᴏᴛᴏп जिले का एक कस्बा।

1656 में, अंताकिया के पैट्रआर्क, मकरियस[8504] , कीव आए थे। उन्होंने बड़ी आस्था और प्रेम के साथ, और अपनी आँखों में आँसू लिए, महा शहीद की पवित्र अवशेषों की पूजा की और निम्नलिखित बातें बताईं:

'मेरे पैट्रआर्केट में, एंटिओक से बहुत दूर नहीं, हेलीओपोलिस नामक एक शहर है, जहाँ पवित्र महा शहीद बार्बरा ने यातनाएँ झेलीं। जब मैंने वहाँ उनके पवित्र अवशेषों के बारे में पूछताछ की, तो मुझे बताया गया कि आदिकाल से वे न तो वहाँ मिले हैं, और न ही पूर्व के किसी अन्य स्थान पर, बल्कि वे रूसी भूमि में रखे गए हैं, जिसे कुछ लोग बर्बरों की भूमि कहते हैं। अब मुझे निस्संदेह विश्वास है कि पवित्र महा-शहीद के सच्चे अवशेष यहीं विराजमान हैं।

पैट्रआर्क ने विनम्रतापूर्वक अनुरोध किया कि उन्हें इन पवित्र अवशेषों का एक हिस्सा प्रदान किया जाए। कीव के मेट्रोपॉलिटन सिल्वेस्टर द्वारा उनके अनुरोध को स्वीकार कर लिया गया, और पैट्रआर्क ने बड़ी खुशी और कृतज्ञता के साथ पवित्र अवशेषों का वह हिस्सा प्राप्त किया।

महान शहीद की पवित्र अवशेषों के माध्यम से कई चमत्कार और उपचार सेंट माइकल के स्वर्ण-गुंबद वाले मठ में हुए हैं और होते रहते हैं। ये चमत्कार सबसे तेज तुरही से भी अधिक शक्तिशाली ढंग से पूरी दुनिया को सत्य का घोषणा करते हैं, और सभी को अवशेषों की प्रामाणिकता और उनके माध्यम से काम करने वाली अनुग्रह-भरी शक्ति का आश्वासन देते हैं। हम यहाँ इन चमत्कारों में से कुछ का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत करेंगे।

चेर्निगोव के आर्चबिशप लाज़ार बारानोविच[8505] , 1640 से, अपना बिशप पद संभालने से पहले ही, परमेश्वर के वचन का प्रचार करने के लिए प्रयासरत थे। दूसरे अवसरों के अलावा, पवित्र महान शहीद बार्बरा के पर्व के दिन उनके पूजनीय अवशेषों के सामने उपदेश देते हुए, उन्होंने गहरी कृतज्ञता और भावना के साथ, एक गंभीर बीमारी से अपने ठीक होने के चमत्कार की महिमा की, जो उन्हें उन पवित्र अवशेषों के माध्यम से प्राप्त हुआ था। और, इस चमत्कार की अधिक प्रशंसा करते हुए, उन्होंने 1674 में प्रकाशित अपनी पुस्तक *फेस्टिव सेरमन्स* में निम्नलिखित का वर्णन किया:
'एक गंभीर बीमारी से पीड़ित, मैं किसी अन्य डॉक्टर के पास नहीं गया, बल्कि पवित्र महा-शहीद बार्बरा की अवशेषों से प्रार्थना करने लगा; मैंने उस पानी को श्रद्धापूर्वक पिया जिसमें महा-शहीद का हाथ डुबोया गया था, और वही पानी मेरे उद्धार का कारण बना।'

कीव में स्थित होली माइकल के गोल्डन-डोम मठ के मठाधिकारी, हिरोमोंक थियोडोसियस, बताते हैं कि जब कीव के मेट्रोपॉलिटन, सिल्वेस्टर कोसोव, के आशीर्वाद से, ने 1655 में मठ का प्रभार संभाला, उसी वर्ष स्लुट्स्की नामक एक नागरिक उनके पास आया और चांदी से बना एक हाथ लाया, जिसे उसने पवित्र महा-शहीद बार्बरा की अवशेषों के पास लटकाने का आग्रह किया। जब आगंतुक से पूछा गया कि उसने ऐसा क्यों किया, तो उसने स्पष्ट रूप से निम्नलिखित बात बताई:

'मेरा हाथ एक गंभीर बीमारी से ग्रस्त था और इतना मुड़ा हुआ था कि मैं उसे सीधा भी नहीं कर सकता था। इस असाध्य रोग से पीड़ित, मुझे महान शहीद संत बारबरा की पवित्र अवशेषों से प्रवाहित होने वाले चमत्कारों की याद आई। मैंने अपने हाथ के ठीक होने के लिए पवित्र महा शहीद से प्रार्थना की और उनकी पवित्र अवशेषों की पूजा करने आने का व्रत लिया। और इस प्रकार, संत बार्बरा की मध्यस्थता से, मेरा मुरझाया हुआ हाथ ठीक हो गया; और मैंने, अपना व्रत पूरा करते हुए, कृतज्ञता स्वरूप यहाँ आकर अपने ही हाथ के ठीक होने के चिह्न के रूप में यह चाँदी का हाथ महान शहीद की पवित्र अवशेषों पर चढ़ाया।

उसी थियोडोसियस ने यह भी बताया है कि 1660 में, उस समय चल रहे गृह युद्ध के दौरान, वह अपने मठ की गरीबी और अपने स्वास्थ्य तथा जीवन के खतरों के कारण बहुत दुखी था। एक रात, सोते समय, उसने खुद को पवित्र महा-शहीद बार्बरा की अवशेषों के सामने खड़ा हुआ देखा और देखा कि उनका अवशेष-पात्र पवित्र तेल से भरा हुआ था। पवित्र महा शहीद ने उससे कहा:

'निराश न हो; मैं तेरे साथ हूँ।'

जागने पर, उन्होंने अपने द्वारा देखे गए दर्शन पर विचार करना शुरू किया और यह याद करते हुए कि पवित्र धर्मग्रंथ में तेल दया का प्रतीक है[8506] , उन्होंने अपने आप से कहा:

[8504] मैकारियस, 1648 से 1672 तक एंटिओक के पैट्रआर्क।

[8505] लाज़ार बरानोविच – 1647 से 1693 तक चेरनिखिव के आर्चबिशप, रूसी चर्च के एक प्रमुख व्यक्ति, जो जेसुइट्स के खिलाफ अपनी विवादास्पद रचनाओं और अन्य लेखनों के साथ-साथ अपने उपदेशों के लिए भी जाने जाते थे।

[8506] एलेओस – ग्रीक शब्द, जिसका अर्थ है 'कृपा, दया'।

'तेल से भरा वह खोल, जिसमें मैंने महा शहीद को लेटे हुए देखा था, इस बात का संकेत है कि उनकी पवित्र प्रार्थनाओं के माध्यम से, मठ में अब और कोई अभाव या दुर्भाग्य नहीं होगा।'

और ऐसा ही हुआ।

1666 में, क्रिसमस के उपवास के दौरान—एक ऐसा समय जब पवित्र महान शहीद की स्मृति मनाई जाती है—दो सैनिकों, आंद्रेई और फ्योडोर ने महान शहीद की अवशेषों पर रखा एक कीमती आभूषण चुराने की साजिश रची। रात में मठ पहुँचकर उन्होंने सेंट माइकल चर्च के दक्षिणी द्वार तोड़ दिए और संत बारबरा की अवशेषों की ओर दौड़ पड़े। जैसे ही वे उनके पवित्र अवशेष-पात्र के पास पहुँचे, अचानक एक भयंकर गरज की आवाज़ गूँजी, और संत के अवशेष-पात्र से आग की चिंगारियाँ उन पर बरसने लगीं। अपने भय के मारे, चोर मृतक की भाँति जमीन पर गिर पड़े; उनमें से एक तुरंत बहरा हो गया, जबकि दूसरा पागल हो गया। होश में आते ही, बहरे व्यक्ति ने यह महसूस किया कि उसे ईश्वर और पवित्र महा-शहीद की सज़ा मिली है, और वह अपने पागल साथी को चर्च से बाहर ले गया, चर्च के दरवाज़े फिर से बंद कर दिए और कुछ भी लिए बिना घर लौट आया। सात दिन बाद, टूटे हुए दिल के साथ, वह बहरा आदमी स्वयं अपने साथी के साथ सेंट माइकल चर्च में आकर, इस चमत्कार का अपने आध्यात्मिक पिता, हायरोमोंक सिमियन के सामने इकरार किया। कन्फेशनर ने उन्हें यथासंभव सच्ची पश्चाताप करने का निर्देश दिया और उन्हें पवित्र महान शहीद से सहायता और उपचार की आशा के साथ विदा कर दिया। इसके बाद, सिमोन, जब वे पवित्र वेदी के सामने दैवीय लिटिर्जी का अनुष्ठान करने वाले थे, तो उन्होंने अपने मठाधीश, हेग्यूमेन थियोडोसियस को वह सब कुछ बताया जो हुआ था।

12 अगस्त 1669 को, एक सैनिक चर्च में पवित्र महा-शहीद बार्बरा की पूजनीय अवशेषों के पास आया, उन्होंने बड़ी श्रद्धा से उनके सामने सिर झुकाया और, आह भरते हुए, सेxton और कई अन्य लोगों को निम्नलिखित बताया:

'मुझे पवित्र महा-शहीद की महान और चमत्कारिक मध्यस्थता प्राप्त हुई है। एक बार, अपनी रेजिमेंट में सेवा करते समय, मैं कुछ साथियों के साथ घास काटने गया था, और अचानक तातारों ने हम पर हमला कर दिया और मेरे सभी साथियों को बंदी बना लिया; मैं अकेला बच निकला। जब मैं अपनी मुक्ति के लिए ईश्वर का धन्यवाद कर रहा था और अपने साथियों के लिए दुखी था, तब पवित्र कुँवारी बारबरा मुझे दिखाई दीं, उन्होंने बिल्कुल वही वस्त्र पहने थे और वही मुकुट धारण किया था जैसा कि वह यहाँ लेटी हैं, और मुझसे कहा: 'जान लो कि मैं शहीद बारबरा हूँ, जिसने तुम्हें तातारों से बचाया है।' और इसलिए मैं उनकी चमत्कारिक मध्यस्थता के लिए धन्यवाद देने और आपको इस चमत्कार के बारे में बताने के लिए, उनके पवित्र अवशेषों के पास यहाँ आया हूँ।

अगले वर्ष, 1670 में, कीव का एक व्यक्ति जॉन नामक, जो पहले एक सामान्य नागरिक था और बाद में नगर प्रमुख बना, बुखार से बीमार पड़ गया। लंबे समय तक इस बीमारी से पीड़ित रहने के बाद, उसे पवित्र महान शहीद बारबरा का स्मरण हुआ, जो अपने पवित्र अवशेषों के माध्यम से चमत्कारी उपचार प्रदान करती हैं। बीमारी के कारण इतना कमजोर होने के कारण कि वह बिस्तर से उठकर चर्च तक नहीं जा सकता था, उसने उपचार में विश्वास करते हुए सेंट माइकल मठ को एक संदेश भेजा और संत बार्बरा के अवशेषों पर डाला गया कुछ पानी माँगा। उसी समय, वह इतनी भयंकर बुखार से पीड़ित था कि उसकी जीभ सूख गई थी। उनके परिवार ने उन्हें बुखार कम करने के लिए कुछ पीने की सलाह दी। लेकिन उन्होंने जवाब दिया:

'भले ही मैं मर जाऊँ, जब तक पवित्र महान शहीद के अवशेषों से पानी नहीं लाया जाता, मैं कुछ भी नहीं पिऊँगा।'

पवित्र महान शहीद में उनकी आस्था की गहराई ऐसी थी। जब उनके पवित्र अवशेषों से पानी लाया गया, तो जॉन ने उसे खुशी से ग्रहण किया और, आस्था के साथ प्रार्थना करने के बाद, उसे पी लिया। तुरंत ही वह गहरी नींद में सो गया, जबकि पहले वह बिल्कुल भी सो नहीं पा रहा था। और अपने सपने में उसने देखा मानो वह संत माइकल द आर्कएंजल के चर्च में है, और एक सुंदर कन्या ने उससे कहा:

'क्या तुम जानते हो मैं कौन हूँ?'

जब उसने उत्तर दिया कि वह नहीं जानता, तो उस कन्या ने फिर कहा:

'तो जान लो कि मैं शहीद बार्बरा हूँ। बहुत से लोग हैं जो यह विश्वास नहीं करते कि मेरे अपक्षीय अवशेष सेंट माइकल के मठ में विराजमान हैं। अब स्वयं मेरे अवशेषों की प्रामाणिकता देखो और सभी को उपदेश दो ताकि वे इस पर विश्वास करें; और इसके संकेत के रूप में, अब से स्वस्थ रहो।'

यह कहकर, वह स्वयं अपने रिलिक्विरी (अवशेष-पात्र) में लेट गई, जो एक सुसज्जित स्थान पर रखा था, जबकि जॉन, तुरंत जागने के बाद, खुद को पूरी तरह से स्वस्थ महसूस करने लगा, मानो वह कभी बीमार ही न हुआ हो। ईश्वर और

संत बार्बरा का धन्यवाद करने के बाद, उसने न केवल अपने बड़े भाई—संत माइकल मठ के मठाधीश थियोडोसियिस—को, बल्कि सभी को, पवित्र महान शहीद की मध्यस्थता से अपने चमत्कारी उपचार और उनके अवशेषों की प्रामाणिकता के उनके प्रमाण के बारे में बताया।

यहाँ पवित्र महान शहीद के बाएँ हाथ का भी उल्लेख करना उचित है, जो प्राचीन काल से उनके अक्षुण्ण शरीर के साथ नहीं है: यह ग्रीस में ही रह गया था। कई साल बाद, कीव के मेट्रोपॉलिटन पीटर मोहिले के समय में, इसे मोसेल नामक एक ग्रीक द्वारा पोलैंड लाया गया था, जो वहाँ बस गया था। वह कांतकौज़ेनोस के शाही वंश से था और चिकित्सा का एक कुशल शिक्षक था। उसने जो हाथ लाया था, उसे वोल्हिनियिन शहर लुत्स्क में, पवित्र क्रूस की उन्नति के सम्मान में, उसने जो पत्थर का पैरिश चर्च बनवाया था, उसमें रखा गया। कई साल बाद, लुत्स्क के ऑर्थोडॉक्स बिशप, गेडियिन (चेट्वर्टिन्स्की राजपरिवार से), जिनके कार्यकाल के दौरान बाद में कीव के मेट्रोपॉलिटन बने[8507] , के कार्यकाल के दौरान, यहूदियों ने लुट्स्क के चर्च में लूटपाट की और चांदी के ताबूत में रखे पवित्र हाथ को, जो अन्य चर्च के सामान के साथ था, चुरा लिया और उसे एक जलती हुई शराबखाने की भट्टी में फेंक दिया, जहाँ, एक पूरे दिन और रात आग में जलने के बावजूद, वह सुरक्षित रहा। यह देखकर, अधर्मी चोरों ने चमत्कारिक रूप से अक्षुण्ण पवित्र हाथ को जलती भट्टी से बाहर निकाला और, रात के अँधेरे में गुप्त रूप से, उसे लोहे के हथौड़ों से तोड़ने का प्रयास किया; और, बहुत मेहनत के बाद, उसे छोटे-छोटे टुकड़ों में तोड़कर, उन्होंने उसे वापस उसी जलती भट्टी में फेंक दिया।

ईश्वर की अद्भुत व्यवस्था से, धर्मद्रोही यहूदियों द्वारा किया गया यह अत्याचार, चोरी की गहन जांच और उन पड़ोसियों की गवाही से जल्द ही उजागर हो गया, जिन्होंने रात के समय हथौड़ों की आवाज़ सुनी थी। जब यातना दी गई, तो अपहरणकर्ताओं ने अपना अपराध कबूल करने से इनकार कर दिया। तब पूछताछकर्ताओं के मन में यह विचार आया कि भट्टी की राख को निकालकर उसे छलनी से छाना जाए। तुरंत ही, भट्टी में राख के साथ-साथ महा-शहीद के कुचले हुए हाथ के छोटे-छोटे टुकड़े भी मिले; वहाँ उन्हें उस हाथ पर पहने हुए मूंगा का आभूषण भी मिला, जो राख में नहीं बदला था, बल्कि आग से केवल सफेद हो गया था। इसके बाद, यातनाओं के एक बार फिर से दिए जाने पर, स्वयं विधर्मी यहूदियों ने भी अपना अपराध कबूल कर लिया। बिशप गेदियिन की अनुमति से, दुष्टों द्वारा कुचले गए महा-शहीद का पवित्र हाथ, मिले हुए सभी टुकड़ों और मूंगा के साथ, इस उद्देश्य के लिए विशेष रूप से बनाए गए एक भव्य अवशेष-पात्र में रखा गया। इस अवशेष-पात्र को, एक क्रॉस और मोमबत्तियों के साथ एक जुलूस के साथ, और पूरी पवित्र कैथेड्रल मंडली और लोगों की एक बड़ी भीड़ द्वारा एस्कॉर्ट किए जाने पर, लुट्स्क में सेंट जॉन द थियोलोजियिन के कैथेड्रल चर्च में सम्मानपूर्वक ले जाया गया। कुछ वर्षों बाद, ऑर्थोडॉक्सी के उत्पीड़न के परिणामस्वरूप लुट्स्क से लिथुआनिया जाते समय, बिशप गेदियिन अपने साथ महान शहीद बार्बरा का टूटा हुआ पवित्र हाथ रखने वाला वही रिलिक्वरी ले आए। जब उन्हें कीव के मेट्रोपॉलिटन के रूप में पदस्थ किया गया, तो उन्होंने उस पवित्र हाथ को, जो उसी संदूक में था, कीव के मेट्रोपॉलिटन कैथेड्रल के वेदी में उचित सम्मान के साथ स्थापित किया, जो संत सोफिया - ईश्वर की बुद्धि को समर्पित है, जहाँ आज भी श्रद्धापूर्वक पूजित किया जाता है[8508] ।

[8507] लुत्स्क – वोल्हिनिया गवर्नोरेट में एक जिला शहर। गेदेओन ने 1685 से 1690 तक कीव में एक बिशप के रूप में सेवा की।

[8508] इसके अलावा, महान शहीद संत बारबरा के अवशेषों का एक हिस्सा - एक उंगली - मास्को में, वर्वरका पर उनके नाम से समर्पित चर्च में रखा गया है; माउंट अथोस पर भी संत बारबरा के अवशेषों के कुछ हिस्से हैं। उपरोक्त चमत्कारों, जो उनकी मध्यस्थता से हुए, में बाद के समय के चमत्कारों को भी जोड़ना चाहिए। इस प्रकार, 1710 में उनकी चमत्कारी मध्यस्थता के माध्यम से, उस प्लेग के दौरान जो दस महीने से अधिक समय तक चला और कीव तथा पूरे लिटिल रूस को भयंकर रूप से तबाह कर गया, घातक प्लेग ने सुनहरे गुंबदों वाले सेंट माइकल मठ को नहीं छुआ, जहाँ सेंट बारबरा के अवशेष रखे हैं, और मठ के एक भी भिक्षु की इस बीमारी से मृत्यु नहीं हुई, भले ही मठ के द्वार प्रार्थना में सांत्वना खोजने वाले सभी के लिए लगातार खुले रहे। सन् 1770 में, जब प्लेग ने दूसरी बार दक्षिणी रूस को तबाह किया, तब पवित्र महान शहीद बारबरा ने वही कृपापूर्ण और चमत्कारी मध्यस्थता दिखाई, और हमारे अपने समय में हैजा महामारियों के दौरान कई मौकों पर भी। हर साल - 4 दिसंबर को - पवित्र महा शहीद के पर्व को समर्पित दिन पर, उनकी पूजनीय अवशेषों को लोगों की एक बड़ी भीड़ के बीच, मिखाइलोव्स्की मठ के चर्च के चारों ओर एक शोभायात्रा में भक्तिपूर्वक ले जाया जाता है। 18वीं शताब्दी की शुरुआत में, क्रोकीव के मेट्रोपॉलिटन जोआसाफ (1708–1718) ने संत बार्बरा महान शहीद के लिए एक अकाथिस्ट रचा, जिसे आज भी उनके पवित्र अवशेषों के सामने गाया जाता है। लोकप्रिय मान्यता के अनुसार, महा शहीद संत बार्बरा को ईश्वर द्वारा एक विशेष कृपा प्रदान की गई थी – लोगों को अप्रत्याशित और अकाल मृत्यु, प्लेग, और अन्य अचानक आपदाओं से बचाने के लिए। यह विश्वास आंशिक रूप से उनके जीवन के संजीवनी वृत्तांत पर आधारित है, जिसके अनुसार उन्होंने ईश्वर से प्रार्थना की कि जो कोई भी व्यक्ति प्रार्थनापूर्वक उनका और उनके दुखों का स्मरण करेगा, उसे अचानक बीमारी और अप्रत्याशित मृत्यु से बचाया जाए, और आंशिक रूप से महामारी के समय सेंट माइकल मठ में उनके द्वारा किए गए उपरोक्त चमत्कारों पर भी आधारित है। रोमन

ट्रोपारयिन, स्वर 8:

आओ हम संत बार्बरा का सम्मान करें: क्योंकि उन्होंने शत्रु के जाल तोड़ डाले, और एक पक्षी की तरह उनसे मुक्ति पाई, क्रूस की सहायता और हथियार से, हे अति पूजनीय।

कॉन्टाकयिन, स्वर 4:

हे कष्ट-सहिष्णु, जिन्होंने त्रिमूर्ति में भक्तिपूर्वक गाए गए एक ईश्वर का अनुसरण किया, तुमने मूर्तिपूजा के स्थानों को नष्ट कर दिया; फिर भी, हे बार्बरा, अपने संघर्ष के बीच पीड़ा सहते हुए, तुम, जो आत्मा से बुद्धिमान थीं, ने यातना देने वालों की सजा से नहीं डरा, और जोर से तथा सदा पुकारा: 'मैं त्रिमूर्ति, एक ईश्वर की पूजा करती हूँ।'

हमारे पूज्य पिता जॉन ऑफ़ डमास्कस का जीवन

4 दिसंबर को स्मरणोत्सव

आदरणीय जॉन ऑफ़ डमास्कस का जन्म सीरिया की राजधानी डमास्कस में हुआ था[8509] , उनके माता-पिता कुलीन और धार्मिक थे[8510] , जिनका मसीह में गहरा विश्वास, दुःखों और प्रलोभनों द्वारा परखा गया, आग में परखे गए सोने से भी अधिक मजबूत और अधिक कीमती साबित हुआ। वे कठिन समय थे। सारासेंस ने उस भूमि पर विजय प्राप्त की थी और इस गौरवशाली नगर पर कब्जा करने के बाद, उन्होंने ईसाइयों पर हर तरह की विपत्तियाँ लाद दीं, कुछ को मार डाला, दूसरों को दासता में बेच दिया, और किसी को भी खुले तौर पर मसीह की घोषणा करने से रोक दिया। उस समय, जॉन के माता-पिता, ईश्वर की दयालुता द्वारा संरक्षित, अपने सभी सामान के साथ सुरक्षित और सलामत रहे; उन्होंने पवित्र विश्वास को भी बनाए रखा, क्योंकि ईश्वर ने उन्हें सरासिनों की कृपा प्राप्त करने का अवसर प्रदान किया, ठीक वैसे ही जैसे उन्होंने एक बार मिस्रियों के बीच यूसुफ को[8511] और बेबीलोनियों के बीच दानियेल को[8512] प्रदान किया था, ताकि दुष्ट अगारियों[8513] ने संत के माता-पिता को मसीह में विश्वास करने और खुले तौर पर उनके पवित्र नाम की महिमा करने से न रोका। इसके अलावा, उन्होंने संत जॉन के पिता को नगर न्यायाधीश और लोक निर्माण विभाग का प्रमुख नियुक्त किया[8514] । ऐसी समृद्धि में रहते हुए, उन्होंने अपने साथी विश्वासियों के लिए बहुत भलाई की: उन्होंने बंदियों को छुड़ाया, कैदियों को उनकी बेड़ियों से मुक्त किया और उन्हें मृत्यु से बचाया, और सभी पीड़ितों की मदद के लिए हाथ बढ़ाया। परम पूजनीय के माता-पिता दमिश्क में अगारियों के बीच थे, रात में दीयों की तरह, इस्राएल में एक बीज की तरह, राख में एक चिंगारी की तरह। इसी कारण से उन्हें ईश्वर द्वारा संरक्षित रखा गया था, ताकि उनके माध्यम से मसीह की कलीसिया में एक दीपक प्रज्वलित हो सके, जो पूरे संसार के लिए चमकता हुआ हो - दमिश्क के धन्य योहन। मांस में जन्म देने के बाद, उन्होंने

कैथोलिक चर्चों में, सेंट बार्बरा को न केवल लोगों को अचानक और हिंसक मृत्यु से बचाने का वरदान प्राप्त है, बल्कि समुद्र में तूफानों और जमीन पर आग से बचाने का वरदान भी प्राप्त है; उन्हें कैथोलिकों द्वारा तोपखाने की संरक्षक संत भी माना जाता है।

[8509] दमास्कस सीरिया का प्रमुख और सबसे अमीर वाणिज्यिक शहर है, और दुनिया के सबसे पुराने शहरों में से एक है; यह फिलिस्तीन के उत्तर-पूर्व में, बरादा नदी के तट पर स्थित है, जो इसके बीच से होकर गुजरती है, और यह एंटी-लेबनान पहाड़ों के पूर्वी ढलान पर एक सुंदर और उपजाऊ मैदान में है। आज भी, दमिश्क, जो उस्मानी साम्राज्य का हिस्सा है, एशिया के सबसे अमीर शहरों में से एक है, जिसकी आबादी 150,000 से अधिक है।

[8510] सेंट जॉन ऑफ़ डमास्कस का जन्म लगभग 680 में हुआ था। उनका पारिवारिक नाम मंसूर था।

[8511] उत्पत्ति 41:37.

[8512] दानियेल 2:48।

[8513] हागारी, या सारासेन, अरब के बेदुइन थे। 'हागारी' शब्द, जो मूल रूप से इस खानाबदोश जनजाति को संदर्भित करता था, बाद में ईसाई लेखकों द्वारा सभी अरबों पर लागू किया गया, और बाद में सामान्य रूप से मुसलमानों को दर्शाने लगा। अरब बेदुइनों को 'अगारीयन' कहा जाता था क्योंकि, यहूदी परंपरा के अनुसार, वे हागर, अब्राहम की दासी, के पुत्र इसमाइल की संतानें थे।

[8514] सेंट जॉन ऑफ़ डमास्कस के पिता, सेरजियस मंसूर, ने दमास्कस के खलीफ़ा, अब्द अल-मलिक (686–705) के अधीन मुख्य लोगोथेट का पद—अर्थात्, कोषागार के प्रशासक, या कोषाध्यक्ष—संभाला था।

उसे बपतस्मिा के माध्यम से प्रकाश का बच्चा बनाने की जल्दी की, जो उस समय एक बहुत ही कठनि कार्य था। अगारयिों को कसिी को भी बपतस्मिा देने की अनुमतनिहीं थी, फरि भी संत के माता-पतिा ने सफलतापूर्वक अपने बच्चे को बपतस्मिा के माध्यम से पुनर्जीवति कयिा और उसे God[8515] की कृपा का प्रतीक एक नाम दयिा। लड़के के पतिा ने इस बात का पूरा ध्यान रखा कि उसका पालन-पोषण सही सद्धिांतों में हो और उसे सरैसेन की प्रथाएँ, न तो सैन्य वीरता, न ही शकिार करना, और न ही कोई अन्य सांसारकि कौशल सखिाया जाए, बल्कि नम्रता, वनिम्रता, ईश्वर का भय और दविय धर्मग्रंथों का ज्ञान सखिाया जाए। इसलिए उन्होंने ईश्वर से वनिम्रतापूर्वक प्रार्थना की कि वह उनके पुत्र के लिए एक बुद्धमिान और धार्मकि व्यक्तभिेजें जो उस लड़के को अच्छे कर्मों में एक अच्छा शक्षिक और मार्गदर्शक बने। संत के पतिा की प्रार्थना ईश्वर ने सुनी और उन्हें इस प्रकार उनकी इच्छा प्राप्त हुई।

दमश्कि के समुद्री डाकू भूमआिैर समुद्र दोनों मार्गों से पड़ोसी देशों पर अक्सर छापे मारते थे; वे ईसाइयों को बंदी बनाते और उन्हें अपने शहर में लाकर, कुछ को बाजारों में बेच देते जबकि अन्य को मौत की सजा दे देते थे। एक अवसर पर, उन्होंने कोस्मास नामक एक भक्षिु को पकड़ लयिा, जो इटली का रहने वाला था और एक कुलीन व्यक्तत्वि तथा सुंदर आत्मा का धनी था। अन्य बंदयिों के साथ मलिकर, उन्होंने उसे बाज़ार में बेचने का नर्णिय लयिा। जनि लोगों को डाकू तलवार से मार डालना चाहते थे, वे भक्षिु के पैरों पर गरि पड़े और रोते हुए उससे अपने प्राणों के लिए ईश्वर से प्रार्थना करने की वनिती करने लगे। मृत्युदंड पाए लोगों द्वारा भक्षिु को दखिाए गए सम्मान को देखकर, सारासेनों ने उससे पूछा कि अपने देश में ईसाइयों के बीच उसका क्या पद और सम्मान था। उसने उत्तर दयिा:

'मेरे पास कोई पद नहीं था; मुझे पादरी का पद भी नहीं मलिा था। मैं तो बस एक पापी भक्षिु हूँ, जो दर्शनशास्त्र में पारंगत हूँ—सर्फि ईसाई दर्शनशास्त्र ही नहीं, बल्कि मूर्तपिूजक ऋषयिों द्वारा रचति दर्शनशास्त्र में भी!'

यह कहकर, भक्षिु जोर-जोर से रो पड़ा। पास में ही जॉन का पतिा खड़ा था; रोते हुए बूढ़े आदमी को देखकर और उसके वस्त्रों से उसे एक भक्षिु के रूप में पहचानकर, वह उसके पास आया और उसे उसके दुःख में सांत्वना देने के लिए कहा:

'हे ईश्वर के पुरुष, तुम उस संसार के लिए व्यर्थ में रो रहे हो, जसिे तुमने बहुत पहले ही त्याग दयिा था और जसिके लिए तुम मरे भी, जैसा कि मैं तुम्हारी आकृतिऔर वस्त्रों से देख सकता हूँ।'

'मैं रोता हूँ,' भक्षिु ने उत्तर दयिा, 'इस संसार के नाश के लिए नहीं—क्योंकि, जैसा आपने कहा, मैं इसके लिए मृत हूँ—और न ही मुझे सांसारकि कसिी चीज़ की परवाह है, यह जानते हुए कि एक और जीवन है—एक बेहतर, अमर और शाश्वत जीवन, जो मसीह के सेवकों के लिए तैयार कयिा गया है, जसिे मैं भी ईश्वर की मदद से प्राप्त करने की आशा करता हूँ; परंतु मैं इसलिए रो रहा हूँ क्योंकि मैं इस संसार को नश्चिंतान छोड़ रहा हूँ, पीछे कोई वारसि नहीं छोड़ गया।

जॉन के पतिा भक्षिु के शब्दों से चकति हो गए और कहा:

'पतिाजी, आप एक भक्षिु हैं जनि्होंने अपनी पवत्रिता बनाए रखने के लिए स्वयं को ईश्वर को समर्पति कयिा है, न कि संतान पैदा करने के लिए: आप संतान के लिए शोक क्यों करते हैं?'

भक्षिु ने उत्तर दयिा:

'आप नहीं समझते, महोदय, कि मैंने क्या कहा है: मैं न तो देहधारी पुत्र की बात कर रहा हूँ और न ही सांसारकि वरिासत की, बल्कि एक आध्यात्मकि वरिासत की। जैसा कि आप स्वयं देख सकते हैं, मैं एक गरीब भक्षिु हूँ और मेरे पास कुछ भी नहीं है, फरि भी मेरे पास ज्ञान की महान संपत्तिहै, जसिसे मैंने स्वयं को समृद्ध कयिा है, क्योंकि मैंने अपने युवा दनिों से ही ईश्वर की मदद से परश्रिम कयिा है। मैंने वभिन्नि मानवकिी वज्ञिानों का अध्ययन कयिा है: अलंकारशास्त्र, द्वंद्वशास्त्र, और स्टैगरिाइट तथा अरस्टिोन के पुत्र[8516] द्वारा सखिाए गए दर्शनशास्त्र का; मैं सर्वेक्षण और संगीत में पारंगत हूँ, और मैंने स्वर्गीय पंडिों की गतिऔर तारों के मार्ग का गहन अध्ययन कयिा है, ताकि सृष्टकिी सुंदरता और उसके सबसे बुद्धमिानी भरे डज़िाइन से मैं स्वयं सृष्टकिर्ता की स्पष्ट समझ तक पहुँच सकूँ। अंत में, मैंने यूनानी और

[8515] 'जॉन', हबिरू से अनुवादति, का अर्थ है 'ईश्वर की कृपा'।

[8516] स्टाजरियिा कैल्सेडोनयिन प्रायद्वीप पर एक शहर है, जहाँ यूनानी दार्शनकि अरस्तू (चौथी शताब्दी ईसा पूर्व) का जन्म हुआ था; इसीलिए उन्हें स्टाजरिटि कहा जाता था। यूनानी दार्शनकि प्लेटो (चौथी शताब्दी ईसा पूर्व) को अरस्तोन का पुत्र कहा जाता है, जो स्टाजरियिा का रहने वाला था। दर्शनशास्त्र अस्तत्वि के सर्वोच्च प्रश्नों के अध्ययन से संबंधति वज्ञिान है: ईश्वर; दुनयिा और मानवता की उत्पत्ति, प्रकृति और नयिम; मानवता का उद्देश्य; और दुनयिा के अस्तत्वि के अंतमि लक्ष्य, आदि। अलंकारशास्त्र और द्वंद्वशास्त्र वे वज्ञिान हैं जो वचिार के नयिमों और उन तरीकों की जांच करते हैं जनिसे उन्हें व्यक्त कयिा जाता है।

रोमन धर्मशास्त्रियों द्वारा निर्धारित ऑर्थोडॉक्सी के रहस्यों के सिद्धांत का भी गहन अध्ययन किया है। ऐसा ज्ञान स्वयं प्राप्त करने के बाद भी, मैंने इसे किसी को नहीं सिखाया है, और अब मैं जो सीखा है, वह किसी को भी सिखाने में असमर्थ हूँ, क्योंकि मेरे पास न तो समय है और न ही कोई शिष्य, और मुझे लगता है कि मैं यहाँ अगारियों की तलवार से मर जाऊँगा और अपने प्रभु के सामने उस वृक्ष की तरह उपस्थित होऊँगा जिसने कोई फल नहीं दिया, उस सेवक की तरह जिसने अपने स्वामी की प्रतिभा को जमीन में गाड़ दिया[8517] । इसीलिए मैं रोता और विलाप करता हूँ। जैसे सांसारिक पिता इस बात पर दुखी होते हैं कि विवाहित होने के बावजूद उनके कोई संतान नहीं है, वैसे ही मैं इस बात पर दुखी और विलाप करता हूँ कि मेरे पास एक भी आध्यात्मिक पुत्र नहीं है जो मेरे ज्ञान की संपत्ति का उत्तराधिकारी बन सके।

ये वचन सुनकर, संत जॉन के पिता को वह लंबे समय से प्रतीक्षित खजाना मिलने पर हर्ष हुआ, और उन्होंने वरिष्ठ से कहा:

'पिताजी, दुःख मत कीजिए: ईश्वर आपके हृदय की इच्छा पूरी कर सकता है।'

यह कहकर, वह सरैसेन राजकुमार के पास दौड़ा और उसके पैरों पर गिरकर, उससे बंधक भिक्षु को सौंप देने के लिए विनम्रतापूर्वक निवेदन किया; उसकी विनती अस्वीकार नहीं की गई: राजकुमार ने उसे यह उपहार दे दिया, जो वास्तव में कई अन्य उपहारों से अधिक कीमती था। खुशी से, जॉन के पिता ने धन्य कोस्मास को अपने घर लाया और उनकी लंबी पीड़ा के बाद उन्हें सांत्वना दी, उन्हें आराम और शांति प्रदान की।

उसने कहा, 'पिताजी, मेरे घर के स्वामी बनें और मेरी सभी खुशियों और गमों में मेरे साथी बनें।'

और उन्होंने जोड़ा:

'देखो, ईश्वर ने न केवल तुम्हें स्वतंत्रता दी है, बल्कि तुम्हारी इच्छा को भी पूरा किया है। मेरे दो बच्चे हैं: एक मेरा रक्त का पुत्र—जॉन—और दूसरा एक युवक जिसे मैंने पुत्र के रूप में गोद लिया है, जो यरूशलेम का निवासी है, और बचपन से अनाथ है; उसका नाम भी तुम्हारे नाम जैसा ही है, क्योंकि उसे भी कोस्मास कहा जाता है। मैं आपसे विनती करता हूँ, पिता, कि आप उन्हें बुद्धि और अच्छे आचरण की शिक्षा दें, और हर अच्छे काम में उनका मार्गदर्शन करें; उन्हें अपना आध्यात्मिक पुत्र बना लें, अपनी शिक्षा के माध्यम से उन्हें नया करें और पोषित करें, और उन्हें उस आध्यात्मिक धन का अपना उत्तराधिकारी बना दें जिसे कोई भी छीन नहीं सकता।

धन्य वृद्ध कोस्मास आनंदित हुए, उन्होंने परमेश्वर की महिमा की, और दोनों युवकों को बड़ी लगन से पालने और सिखाने लगे। वे युवक, अपनी ओर से, बुद्धिमान थे; उन्होंने अपने शिक्षक द्वारा सिखाई गई हर बात को आत्मसात कर लिया और अपनी पढ़ाई में उत्कृष्ट प्रगति की। जॉन, हवा में उड़ान भरने वाले एक गरुड़ की तरह, शिक्षा के उच्च रहस्यों को समझ गया, जबकि उसका आध्यात्मिक भाई कोस्मास, अनुकूल हवा से तेजी से आगे बढ़ने वाले जहाज की तरह, जल्द ही ज्ञान की गहराइयों को समझ गया। लगन और परिश्रम से अध्ययन करके, उन्होंने कम समय में महान ज्ञान प्राप्त कर लिया; उन्होंने व्याकरण, दर्शन और अंकगणित में महारत हासिल कर ली, और पाइथागोरस और डायोफैंटस जैसे हो गए[8518] ; उन्होंने सर्वेक्षण का भी अध्ययन किया, ताकि उन्हें नए यूक्लिड्स[8519] माना जा सके। उन्होंने जो चर्च के भजन और कविताएँ रचीं, वे इस बात की गवाही देती हैं कि वे कविता में कितने निपुण थे। उन्होंने खगोल विज्ञान की भी उपेक्षा नहीं की, और उन्होंने धर्मशास्त्र के रहस्यों का भी गहन अध्ययन किया। इसके अलावा, उन्होंने अच्छे आचरण और एक सदाचारी जीवन शैली सीखी, और ज्ञान तथा आध्यात्मिक और सांसारिक बुद्धि दोनों में पूरी तरह से पारंगत हो गए। विशेष रूप से जॉन ने उत्कृष्टता हासिल की। यहाँ तक कि उसके अपने शिक्षक भी उससे चकित थे, क्योंकि उसने ज्ञान के कुछ क्षेत्रों में उनसे भी बढ़कर प्रदर्शन किया था। और जॉन एक महान धर्मशास्त्री थे, जैसा कि उनके दैवीय रूप से प्रेरित और ईश्वर-ज्ञान से परिपूर्ण लेखों से स्पष्ट होता है। फिर भी, उन्होंने अपनी बुद्धि पर गर्व नहीं किया। जैसे एक फलदार वृक्ष, जितना अधिक फल वह देता है, उसकी शाखाएँ उतनी ही अधिक धरती की ओर झुकती हैं; वैसे ही योहन, जितना अधिक वह ज्ञान में उत्कृष्ट हुआ, उसने अपने बारे में उतना ही कम सोचा, और जितना अधिक वह अपने भीतर युवावस्था के व्यर्थ सपनों और भावुक विचारों को वश में करने में सक्षम हुआ, और अपनी आत्मा को, तेल से भरे दीपक की भाँति, दिव्य इच्छा की अग्नि से प्रज्वलित करते हुए।

[8517] प्रतिभाओं की दृष्टान्त से एक सुसमाचार अभिव्यक्ति मत्ती 25:16।

[8518] पाइथागोरस – छठी शताब्दी ईसा पूर्व के एक प्रसिद्ध यूनानी दार्शनिक; डायोफैंटस – चौथी शताब्दी ईस्वी के एक अलेक्जेंड्रियाई गणितज्ञ।

[8519] यूक्लिड – तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व का एक गणितज्ञ।

और एक बार कोस्मास के शिक्षक ने जॉन के पिता से कहा: 'सर, आपकी इच्छा पूरी हो गई है: आपके युवकों ने अच्छी तरह से सीखा है, इतनी अच्छी तरह से कि वे पहले ही ज्ञान में मुझसे आगे निकल गए हैं; ऐसे छात्रों के लिए, केवल अपने शिक्षक के बराबर होना ही काफी नहीं है। अपनी उत्कृष्ट स्मृति और अथक परिश्रम के कारण, उन्होंने ज्ञान की पूरी गहराई को पूरी तरह से समझ लिया है; और ईश्वर ने उनकी प्रतिभा को और बढ़ा दिया है। मुझे अब उन्हें और कुछ सिखाने की आवश्यकता नहीं है: वे स्वयं दूसरों को सिखाने में सक्षम हैं। अत; मैं आपसे विनती करता हूँ, महोदय, कि मुझे मठ जाने दें, जहाँ मैं स्वयं एक शिष्य बनकर सिद्ध भिक्षुओं से परम ज्ञान प्राप्त करूँगा। क्योंकि जो सांसारिक दर्शन मैंने सीखा है, वह मुझे आध्यात्मिक दर्शन की ओर ले जाता है, जो सांसारिक से अधिक योग्य और शुद्ध है, क्योंकि यह लाभ पहुँचाता है और आत्मा को मोक्ष प्रदान करता है।'

यह सुनकर जॉन के पिता दुखी हो गए, क्योंकि वे इतने योग्य और बुद्धिमान गुरु से वंचित नहीं होना चाहते थे। हालाँकि, उन्होंने उस वरिष्ठ को रोकने की हिम्मत नहीं की, कहीं वह उन्हें दुखी न कर दे; इसलिए उन्होंने उसकी इच्छा पूरी की और उसे उदारतापूर्वक पुरस्कृत करके शांति से विदा कर दिया। फिर वह भिक्षु पूजनीय सावा की लावरा में चले गए और वहाँ अपने निधन तक शांतिपूर्वक जीवन यापन करने के बाद, परम पूर्ण ज्ञान - ईश्वर - के पास चले गए। कुछ वर्षों बाद, जॉन के पिता का भी निधन हो गया। एक सारासेन राजकुमार ने जॉन को बुलाया और उसे अपना मुख्य सलाहकार बनने का पद प्रस्तावित किया; जॉन ने इनकार कर दिया, क्योंकि उसके हृदय की इच्छा मौन में ईश्वर की सेवा करने की थी। हालाँकि, उसे आज्ञा मानने और अपनी इच्छा के विरुद्ध यह पद स्वीकार करने के लिए मजबूर किया गया, और दमिश्क शहर में उसने अपने पिता से भी अधिक अधिकार प्राप्त कर लिए[8520] ।

उस समय, ग्रीस में लियो द इसाउरियन[8521] का शासन था, जो एक गरजते हुए शेर की तरह, परमेश्वर की कलीसिया के विरुद्ध क्रूरता से खड़ा हुआ। पवित्र कलीसियाओं से प्रतिमाओं को बाहर फेंककर, उसने उन्हें आग के हवाले कर दिया, जबकि उसने ऑर्थोडॉक्स विश्वासियों और पवित्र प्रतिमाओं की पूजा करने वालों को निर्दयता से भयानक यातनाएँ दीं। यह सुनकर, जॉन धर्मपरायणता के उत्साह से भर गए, और उन्होंने तिशबी एलियाह तथा मसीह के अग्रदूत का अनुकरण किया, जिनका नाम उनके ही नाम के समान था। परमेश्वर के वचन की तलवार उठाकर, उन्होंने दुष्ट राजा के विधर्मी तर्क का सिर कलम करना शुरू कर दिया; उन्होंने उन ऑर्थोडॉक्स विश्वासियों को, जिनके बारे में उन्हें पता था, पवित्र प्रतिमाओं की पूजा के संबंध में कई पत्र भेजे। इन पत्रों में, पवित्र शास्त्र और ईश्वर-वाहक पिताओं की प्राचीन परंपरा से प्रेरणा लेते हुए, उन्होंने बुद्धिमानी से यह प्रदर्शित किया कि पवित्र प्रतिमाओं को उचित पूजा कैसे अर्पित की जानी चाहिए। जॉन ने जिन लोगों को लिखा, उनसे यह अनुरोध किया कि वे उनके पत्र को अन्य साथी विश्वासियों को दिखाएँ ताकि उन्हें ऑर्थोडॉक्स विश्वास में मजबूत किया जा सके। इस प्रकार संत ने अपने दैवीय प्रेरित पत्रों से पूरी दुनिया को भरने का प्रयास किया[8522] । पूरे ग्रीक साम्राज्य में फैल जाने के बाद, उन्होंने ऑर्थोडॉक्स को उनकी

[8520] खलीफ़ा वलीद (705–716) के शासनकाल के दौरान सेंट जॉन ऑफ़ डेमास्कस ने दरबार में सर्वोच्च पद प्राप्त किया, और उनके सबसे करीबी सलाहकार तथा मंत्री के रूप में कार्य किया। फिर भी, अपने नए पद के कर्तव्यों को निभाते हुए, उन्होंने अपनी सर्वोच्च पुकार – यीशु मसीह के प्रति – को कभी नहीं भुलाया और हमेशा मसीह की सच्चाई के प्रति विफादार रहने और पवित्र चर्च की सेवा करने का प्रयास किया। मसीह की सच्चाई का प्रचार करना और झूठी शिक्षाओं का खंडन करना जॉन के जीवन का मुख्य उद्देश्य बन गया। और अपनी सेवकाई की शुरुआत से ही, उन्होंने अपने समय के विधर्मियों के खिलाफ लड़ाई शुरू कर दी: नेस्टोरियन, जिन्हें सीरिया में सुरक्षा प्राप्त थी, जिन्होंने यीशु मसीह में मानवीय और दैवीय स्वभाव को अलग किया और यह सिखाया कि मनुष्य यीशु का जन्म कुँवारी मरियम से हुआ था, जिनके साथ, उनके गर्भधारण के क्षण से ही, परमेश्वर वचन अपनी कृपा से एकजुट थे और उनमें एक मंदिर के समान वास करते थे; और मोनोफिसाइट्स या जैकबाइट्स के विरुद्ध, जो मसीह में एक ही दिव्य स्वभाव को मानते थे, जिसने कथित तौर पर अपने भीतर मानव स्वभाव को समा लिया था। बाद वालों के विरुद्ध, दमिश्क के जॉन ने शुद्ध ऑर्थोडॉक्स धर्म की रक्षा में एक काफी लंबा और विस्तृत ग्रंथ लिखा। इसके अलावा, उन्होंने मोनोफिज़िटिज़्म से पतित हुए मोनोफेनटिज़्म के विरुद्ध, जिसने मसीह में केवल दैवी इच्छा को स्वीकार किया था, और प्राचीन ग्नोस्टिक शिक्षाओं के अवशेषों के विरुद्ध, जो मनीकोनीय विधर्मों के साथ संयुक्त थे - अर्थात् तथाकथित 'पॉलिशियनों' के विधर्म के विरुद्ध तर्क किया। जो शुद्ध आत्मा को रचने वाले और ईसाई धर्म में स्वयं को प्रकट करने वाले सद् ईश्वर के अलावा, एक दुष्ट सिद्धांत – डेमियर्ज़ – को मानते थे, जिसने दृश्यमान संसार और मानव शरीर की रचना की और यहूदी धर्म तथा मूर्तिपूजा में स्वयं को प्रकट किया। पॉलिसियन शिक्षा के अनुसार, परमेश्वर के पुत्र का अवतार केवल एक भ्रम था: उन्होंने चर्च के सभी अनुष्ठानों और बाहरी संस्थानों को अस्वीकार कर दिया। अंत में, दमिश्क के जॉन ने इस्लाम के खिलाफ एक औचित्य-प्रदर्शन ग्रंथ भी लिखा, जो उस समय सीरिया में प्रचलित था।

[8521] लेओ ऑफ इसौरिया ने 716 से 741 तक बाइजेंटाइन साम्राज्य पर शासन किया।

[8522] सेंट जॉन ऑफ डेमास्कस ने पवित्र प्रतिमाओं के बचाव में एक ग्रंथ लिखा और उसे कॉन्स्टेंटिनोपल भेजा, जिसमें, अन्य बातों के अलावा, उन्होंने लिखा: 'अपनी अयोग्यता को जानते हुए, मुझे निस्संदेह चुप रहना चाहिए और केवल ईश्वर के समक्ष अपने पापों पर शोक मनाना चाहिए;

धार्मकिता में मजबूत कयि, जबकि विधिर्मयिों को, मानो, काँटों से [8523] घोंपा। इसकी खबर राजा लयिो तक पहुँची, जो अपनी अधार्मकिता की नदिा सहन नहीं कर सका, उसने अपने वचिारों से सहमत वधिर्मयिों को बुलाया और उन्हें धार्मकिता के झूठे बहाने के तहत आदेश दयि, ऑर्थोडॉक्स के बीच जॉन द्वारा अपने हाथ से लखिा कोई पत्र खोजें, और उसे अपने कथति लाभ के लिए पढ़ने की मांग करें। बहुत प्रयास के बाद, इस दुर्भावनापूर्ण साजशि के सहयोगयिों को वशि्वासयिों के बीच कहीं जॉन के अपने हाथ से लखिा एक पत्र मलि गया, और चापलूसी से मांगने के बाद, उन्होंने उसे राजा को सौंप दयि। तब ज़ार ने कुशल लपिकिारों को नर्दिेश दयि कि वे यूहन्ना के पत्र का संदर्भ लेते हुए, उसी लखिावट में, ज़ार लयिो को संबोधति एक संदेश की नकल करें, मानो यह यूहन्ना के अपने हाथ से लखिा और दमश्कि से भेजा गया हो। संदेश इस प्रकार था:

'हे राजा, आनन्दति हो, और मैं भी हमारे साझा धर्म के नाम पर आपके शासन में आनन्दति हूँ, और मैं आपकी शाही महमिा को श्रद्धांजलि और उचति सम्मान अर्पति करता हूँ। मैं आपको सूचति करता हूँ कि हमारा शहर दमश्कि, जो सरासेंस के हाथ में है, उसकी रक्षा कमजोर है और वहाँ कोई भी मजबूत चौकी नहीं है; उसमें मौजूद सेना कमजोर और संख्या में कम है। मैं आपसे वनिती करता हूँ, इस शहर पर दया करें; भगवान के लिए, अपनी वीर सेना भेजें। कहीं और मार्च करने का बहाना करके, यह दमश्कि पर एक आश्चर्यजनक हमला कर सकता है, और फरि आप आसानी से शहर पर कब्ज़ा कर लेंगे; मैं भी इसमें बहुत मदद करूँगा, क्योंकि शिहर और पूरा देश मेरे हाथ में है।

जॉन के नाम से यह संदेश खुद को लखिने के बाद, उस चालाक राजा ने अपने नाम से सारासेन राजकुमार को नम्निलखिति लखिने का आदेश दयि:

'मेरा मानना है कि शांति और दोस्ती में जीतने से बेहतर कुछ भी नहीं है, क्योंकि शांति के वादों को नभिाना सबसे प्रशंसनीय और ईश्वर को प्रसन्न करने वाला है; इसलिए, मैं आपके साथ हुई शांति को अंत तक सम्मानपूर्वक और नष्ठिापूर्वक बनाए रखना चाहता हूँ। हालाँकि, आपके राज्य में रहने वाला एक ईसाई, अपनी बार-बार की चट्ठियिों के द्वारा, मुझे शांति भंग करने के लिए उकसा रहा है और वादा कर रहा है कि यदि मैं अचानक अपनी सेना भेज दूँ तो वह बनिा कसिी कठनिाई के दमश्कि शहर मेरे हाथों में सौंप देगा। मैं आपको उस ईसाई द्वारा लखिे गए पत्रों में से एक भेज रहा हूँ - यह आपको मेरी मत्रिता का वशि्वास दलिाएगा, जबकि उस व्यक्ति में जो मुझसे इस तरह लखिने की हम्मित करता है, आप वशि्वासघात और शत्रुता देखेंगे, और आप जान जाएंगे कि उसे कैसे दंडति करना है।

ये दोनों पत्र दुष्ट राजा लयिो ने, अपने एक दरबारी के माध्यम से, दमश्कि में सरैसेन राजकुमार को भेजे थे। उन्हें प्राप्त कर पढ़ने के बाद, राजकुमार ने जॉन को बुलाया और उसे राजा लयिो को लखिा गया वह नकली पत्र दखिाया। पत्र को पढ़कर और जांचकर, जॉन ने कहा:

'इस दस्तावेज़ में लखिावट कुछ हद तक मेरी अपनी जैसी है, फरि भी यह मेरा लखिा नहीं है, क्योंकि ग्रीक राजा को लखिने का वचिार मेरे मन में कभी आया भी नहीं; यह हो ही नहीं सकता कि मैं अपने स्वामी की सेवा धोखे से करूँ।'

जॉन को एहसास हुआ कि यह शत्रुतापूर्ण, दुर्भावनापूर्ण, वधिर्मी चालाकी का काम था। लेकनि राजकुमार क्रोध से आग-बबूला हो गया और उसने आदेश दयि कि नर्दिोष जॉन का दाहनिा हाथ काट दयि जाए। जॉन ने राजकुमार से वनिती की कि वह थोड़ी प्रतीक्षा करे और उसे अपनी बेगुनाही साबति करने तथा दुष्ट, वधिर्मी राजा लयिो द्वारा उसके प्रति पालति घृणा को समझाने के लिए कुछ समय दे, लेकनि उसकी वनिती पर कोई ध्यान नहीं दयि गया। बहुत अधकि क्रोधति राजकुमार ने तुरंत फांसी देने का आदेश दयि। और जॉन का दाहनिा हाथ काट दयि गया—वह हाथ जसिने ईश्वर में ऑर्थोडॉक्सों के वशि्वास को मजबूत कयि था; वह हाथ, जसिने अपने लेखों के माध्यम से प्रभु से नफरत करने वालों का भंडाफोड़ कयि था, अब उस स्याही के बजाय अपने ही खून में लथपथ था, जसिसे उसने प्रतमिाओं की पूजा के बारे में लखिा था। फांसी के बाद, जॉन का हाथ शहर के केंद्र में, बाजार चौक में लटका दयि गया, जबकि जॉन स्वयं, दर्द और रक्तस्राव

लेकनि यह देखकर कि ईश्वर की कलीसयि एक प्रचंड तूफान में उछाली जा रही है, मुझे लगता है कि अब चुप रहने का समय नहीं है; मैं एक सांसारकि शासक से अधकि ईश्वर से डरता हूँ, जबकि शासक की शक्ति इतनी महान है कि वह आसानी से लोगों को प्रभावति कर सकता है।' फरि भी, सेंट जॉन ने इस कृति में सम्राट लयिो को आपत्तजिनक लगे ऐसा कुछ भी नहीं कहा। अपने मत्रिों के अनुरोध पर, जॉन ने पवत्रि प्रतमिाओं के बचाव में लगातार दो और पत्र लखि। जॉन के पत्रों को कॉन्स्टेंटनिोपल और अन्यत्र बड़ी उत्सुकता से पढ़ा गया; कमजोर लोगों को ऑर्थोडॉक्स वशि्वास में इनसे सहारा मलि, जबकि मजबूत लोग अपने संकल्प में दृढ़ हुए।

[8523] ओस्टेन, ओस्टना, ओस्न – एक नुकीला डंडा जसिका उपयोग गधों और बैलों को तेज़ चलने के लिए उकसाने के लिए कयि जाता है।

से थके हुए, को उनके घर वापस ले जाया गया। जैसे ही शाम हुई, यह महसूस करते हुए कि राजकुमार का गुस्सा शांत हो गया है, धन्य व्यक्ति ने उन्हें निम्नलिखित विनती भेजी:

'मेरी बीमारी और बिगड़ती जा रही है और मुझे शब्दों से परे पीड़ा दे रही है; जब तक मेरा कटा हुआ हाथ हवा में लटका रहेगा, मुझे कोई सांत्वना नहीं मिल सकती; मैं आपसे विनती करता हूँ, मेरे स्वामी, कि आदेश दें कि मेरा हाथ मुझे वापस कर दिया जाए, ताकि मैं उसे जमीन में दफना सकूँ, क्योंकि मेरा मानना है कि अगर इसे दफना दिया गया, तो मुझे अपनी बीमारी से राहत मिलेगी।'

यातनाकर्ता ने इस अनुरोध का पालन किया और आदेश दिया कि हाथ को सार्वजनिक स्थान से हटाकर जॉन को दे दिया जाए। काटकर अलग किया गया हाथ लेकर, जॉन अपने प्रार्थना कक्ष में गया और ईश्वर की अति पवित्र माता की पवित्र प्रतिमा के सामने, जिसमें उन्होंने शिशु यीशु को अपनी बाहों में धारण किया हुआ है, जमीन पर गिर पड़ा, काटकर अलग किया गया हाथ जोड़ के पास रखा और अपने हृदय की गहराई से उठती आँसुओं और आहों के साथ प्रार्थना करने लगा:

'हे परम पवित्र माता, जिन्होंने मेरे ईश्वर को जन्म दिया, यह मेरा दाहिना हाथ है, जो दैवीय प्रतिमाओं के लिए काटा गया है। आप जानती हैं कि लियो का क्रोध क्या भड़काया; मेरी सहायता के लिए शीघ्र आओ और मेरे हाथ को चंगा करो। सर्वोच्च का दयालु हस्त, जो आपसे अवतारित हुए हैं, आपकी प्रार्थनाओं द्वारा अनेक चमत्कार करते हैं; अतः मैं प्रार्थना करता हूँ कि वह आपकी मध्यस्थता से मेरे दाहिने हाथ को चंगा करें। हे ईश्वर की माता! यह मेरा हाथ वही लिखे जिसकी आप स्वयं अनुमति दें, आपकी और आपके पुत्र की स्तुति में, और यह अपने लेखन के माध्यम से ऑर्थोडॉक्स धर्म की सेवा करे। यदि आप चाहें तो सब कुछ कर सकती हैं, क्योंकि आप परमेश्वर की माता हैं।

ये शब्द आँसुओं के साथ कहने के बाद, जॉन सो गया और उसने एक सपने में परमेश्वर की परम पवित्र माता को देखा, जो प्रतिमा से अपनी तेजस्वी और दयालु आँखों से उस पर निहार रही थीं और कह रही थीं:

'तुम्हारा हाथ अब ठीक हो गया है; बाकी के लिए दुख मत करो, बल्कि मेरे दिए वचन के अनुसार इस पर परिश्रम करो और इसे लेखक की कलम बना दो।'

जागने पर, जॉन ने अपना हाथ छुआ और देखा कि वह चंगा हो गया था। वह अपने हृदय में अपने उद्धारकर्ता ईश्वर और उनकी निर्मल माता में आनंदित हुआ, कि सर्वशक्तिमान ने उस पर ऐसा चमत्कार किया था। उठकर उसने अपने हाथ स्वर्ग की ओर उठाए और ईश्वर तथा ईश्वर की माता का धन्यवाद किया। और वह सारी रात अपने पूरे घर-परिवार के साथ एक नया भजन गाते हुए आनंदित हुआ:

– *'हे प्रभु, तेरा दाहिना हाथ सामर्थ्य में महिमामय है'* (निर्गमन 15:6); तेरे दहिने हाथ ने मेरे कटे हुए दहिने हाथ को चंगा कर दिया है और उन शत्रुओं को कुचल डालेगा जो तेरी और तेरी अति पवित्र माता की पवित्र प्रतिमा का सम्मान नहीं करते, और उससे, तेरी महिमा की उन्नति के लिए, उन शत्रुओं को नष्ट कर देगा जो प्रतिमाओं को नष्ट करते हैं।"

जब यूहन्ना अपने परिवार के साथ इस प्रकार आनंद मना रहा था और धन्यवाद के गीत गा रहा था, तो उसके पड़ोसियों ने यह सुना और उसकी खुशी और हर्ष का कारण जानकर वे बहुत चकित हुए। जल्द ही सारासेन राजकुमार को भी इस बात की खबर मिली और उसने तुरंत यूहन्ना को बुलाकर उसे अपना कटा हुआ हाथ दिखाने का आदेश दिया। जिस जोड़ से हाथ काटे जाने के बाद अलग हो गया था, वहाँ ईश्वर की माता की इच्छा से एक लाल धागे जैसा निशान बना हुआ था, जो हाथ के पहले कटने का स्पष्ट प्रमाण था। यह देखकर, राजकुमार ने पूछा:

'किस डॉक्टर ने, और किस दवा से, इतनी कुशलता से हाथ को जोड़ से जोड़ दिया और इतनी तेजी से उसे ठीक कर दिया और जीवित कर दिया, मानो वह कभी कटा ही न हो और मृत न हो?'

जॉन ने चमत्कार को छिपाया नहीं और खुलकर इसके बारे में बताया:

'हे मेरे प्रभु, सर्वशक्तिमान चिकित्सक, जिन्होंने अपनी परम पवित्र माता के माध्यम से मेरी प्रार्थना सुनी, ने अपनी सर्वशक्तिमान शक्ति से मेरे घाव को ठीक कर दिया और उस हाथ को स्वस्थ कर दिया जिसे आपने काटने का आदेश दिया था।'

तब राजकुमार ने कहा:

'हाय रे मेरी किस्मत! इस बदनामी की जांच किए बिना, मैंने एक अच्छे इंसान, तुम्हें, अन्यायपूर्वक दोषी ठहराया और गलत तरीके से फांसी दे दी। मैं तुमसे विनती करता हूँ कि हमें इतनी जल्दबाज़ी और मूर्खता से तुम्हें दोषी ठहराने के

लिए माफ़ कर दो; हमसे अपना पूर्व पद और सम्मान स्वीकार करो, और हमारे मुख्य सलाहकार बनो। आज से, हमारे राज्य में तुम्हारे और तुम्हारी सलाह के बिना कुछ भी नहीं किया जाएगा।'

लेकिन जॉन, राजकुमार के पैरों पर गिरकर, उससे देर तक विनती करने लगा कि उसे जाने दे और उसे उन संतों के साथ अपने प्रभु का अनुसरण करने से न रोके, जिन्होंने संसार का त्याग कर दिया था और प्रभु का जुआ उठा लिया था। हालाँकि राजकुमार उसे जाने देने के लिए अनिच्छुक था, और उसने जॉन को अपने परिवार का प्रमुख और अपने पूरे राज्य का प्रशासक बने रहने के लिए मनाने की कोशिश की। उनके बीच एक लंबी बहस हुई: प्रत्येक ने दूसरे से विनती की, प्रत्येक अपनी विनतियों के माध्यम से हावी होने का प्रयास कर रहा था। बड़ी कठिनाई से, जॉन अपनी मंज़िल तक पहुँच गया: हालाँकि इसमें कुछ समय लगा, लेकिन अंततःउसने राजकुमार को मना ही लिया, और उसे अपनी इच्छा से काम करने की आज़ादी मिल गई।

अपने घर लौटने पर, जॉन ने तुरंत अपनी अनगिनत जागीरों को ज़रूरतमंदों में बाँट दिया, अपने दासों को आज़ाद कर दिया, और अपने सहपाठी, कोस्मास के साथ यरूशलेम के लिए रवाना हो गया। वहाँ, पवित्र स्थानों को श्रद्धांजलि अर्पित करने के बाद, वह संत सावस के मठ गए और मठाधीश से विनती करने लगे कि वह उन्हें एक खोई हुई भेड़ के रूप में स्वीकार करें और उन्हें अपने चुने हुए झुंड में शामिल करें। मठाधीश और पूरे समुदाय ने संत जॉन को पहचान लिया, क्योंकि वे अपने अधिकार, सम्मान और महान बुद्धिमत्ता के कारण पहले से ही प्रसिद्ध और सभी के जाने-पहचाने थे। और मठाधीश इस बात से प्रसन्न हुए कि इतने बड़े आदमी विनम्रता और गरीबी में आए थे और भिक्षु बनना चाहते थे। उसे प्रेम से स्वागत करने के बाद, मठाध्यक्ष ने भाइयों में से एक को बुलाया, जो सबसे अनुभवी और तपस्या के प्रयासों में सबसे अधिक परिश्रमी था, और जॉन को उसकी देखभाल में सौंपना चाहा ताकि वह उसे आध्यात्मिक ज्ञान और मठवासी , तपस्या की प्रथाओं[8524] दोनों में शिक्षित कर सके। लेकिन उस भाई ने मना कर दिया, क्योंकि वह ऐसे व्यक्ति का शिक्षक बनना नहीं चाहता था, जो अपनी शिक्षा से कई लोगों से श्रेष्ठ था। मठाधीश ने एक अन्य भिक्षु को बुलाया, लेकिन उसने भी मना कर दिया; इसी प्रकार, तीसरे, चौथे और बाकी सभी ने इनकार कर दिया, उनमें से प्रत्येक ने स्वीकार किया कि वह इतने बुद्धिमान व्यक्ति का मार्गदर्शक बनने के लिए अयोग्य था; इसके अलावा, वे सभी जॉन की विशिष्ट प्रतिष्ठा से भयभीत थे। जब सभी को बुलाया जा चुका था, तो एक साधारण लेकिन बुद्धिमान वरिष्ठ को बुलाया गया; उसने जॉन का मार्गदर्शक बनने से इनकार नहीं किया। जॉन को अपनी कोठरी में ले जाकर और उसके भीतर एक सदाचारी जीवन की नींव रखना चाहकर, उस वृद्ध ने सबसे पहले उसे ये नियम दिए: कि वह अपनी इच्छा से कुछ भी न करे; कि वह अपनी मेहनत और उत्कट प्रार्थनाओं को एक प्रकार की बलिदान के रूप में ईश्वर को अर्पित करे; कि यदि वह अपने अतीत के पापों से स्वयं को शुद्ध करना चाहता है तो उसे अपनी आँखों से आँसू बहाने चाहिए, क्योंकि यह ईश्वर के समक्ष किसी भी महँगे इत्र से अधिक कीमती है। ये नियम शारीरिक श्रम के माध्यम से किए गए कर्मों का आधार बने। जहाँ तक आत्मा का संबंध है, बुजुर्ग ने निम्नलिखित नियम बनाए: कि जॉन के मन में सांसारिक कुछ भी न हो; उसे न केवल अपनी कल्पना में कोई अश्लील छवि नहीं लानी चाहिए, बल्कि उसे अपने मन को हर व्यर्थ की प्रवृत्ति और खोखले अहंकार से अछूत और शुद्ध रखना चाहिए; उसे अपनी बुद्धि या जो कुछ उसने सीखा है, उस पर घमंड नहीं करना चाहिए, न ही यह सोचना चाहिए कि वह अंत तक हर चीज़ को पूरी तरह से समझ सकता है; ताकि वह किसी भी रहस्योद्घाटन या छिपे हुए रहस्यों के ज्ञान की खोज न करे; और न ही उसे अपने बाकी जीवन के लिए यह उम्मीद करनी चाहिए कि उसका मन अडिग है और पाप करने या त्रुटि में पड़ने में असमर्थ है; इसके विपरीत, उसे यह जानना चाहिए कि उसके विचार दुर्बल हैं और उसका मन पाप करने में सक्षम है; और इसलिए उसे अपने विचारों को भटकने न देने का प्रयास करना चाहिए, बल्कि उन्हें एकत्रित करने का ध्यान रखना चाहिए, ताकि इस प्रकार उसका मन ईश्वर द्वारा प्रबुद्ध हो, उसकी आत्मा पवित्र हो, और उसका शरीर सभी अशुद्धियों से शुद्ध हो जाए; उसका शरीर और आत्मा उसके मन के साथ एक हो जाएँ, और तीनों पवित्र त्रिमूर्ति की प्रतिमा में हों; और मनुष्य न तो देहधारी बने, न ही भावनात्मक, बल्कि सभी बातों में आध्यात्मिक बने, जिसने अपनी स्वैच्छिक इच्छा से, मनुष्य के दो भागों—शरीर और आत्मा—को एक तीसरे और सबसे महत्वपूर्ण भाग, अर्थात् मन, में बदल दिया हो। ऐसे नियम थे जो एक आध्यात्मिक पिता ने अपने आध्यात्मिक पुत्र को और एक शिक्षक ने अपने शिष्य को सिखाए थे, जिनमें उन्होंने निम्नलिखित शब्द जोड़े:

[8524] संत सावस द पवित्र के नियम के अनुसार, परीक्षण, पर्यवेक्षण और मार्गदर्शन के उद्देश्यों के लिए, प्रत्येक नवागंतुक को आध्यात्मिक जीवन में अनुभवी एक वरिष्ठ के हवाले कर दिया जाता था। जॉन के साथ भी ऐसा ही किया गया, इस तथ्य के बावजूद कि उनका धार्मिक जीवन और व्यापक ज्ञान पूरे पूर्व में जाना जाता था।

'न केवल तुम्हें किसी को कोई पत्र लिखना नहीं चाहिए, बल्कि तुम्हें सांसारिक विज्ञानों से संबंधित किसी भी चीज़ के बारे में बात भी नहीं करनी चाहिए। विवेक के साथ मौन का पालन करो, क्योंकि तुम जानते हो कि न केवल हमारे दार्शनिक मौन सिखाते हैं, बल्कि पाइथागोरस ने भी अपने शिष्यों को लंबे समय तक मौन का पालन करने का आदेश दिया था; और यह मत सोचो कि अनुचित समय पर अच्छी बात करना एक अच्छी चीज़ है। दाऊद को सुनें, जिन्होंने कहा: *'मैं भलाई के विषय में भी चुप रहा'* (भजन संहिता 38:3)। उसे इससे क्या लाभ हुआ? सुनें: *'मेरा हृदय मेरे भीतर प्रज्वलित हो गया'* (भजन संहिता 38:4), अर्थात् दिव्य प्रेम की अग्नि से, जो भविष्यवक्ता में ईश्वर के चिंतन से प्रज्वलित हुई थी।

वरिष्ठ की ये सभी आज्ञाएँ जॉन के हृदय में अच्छे भूमि पर गिरे हुए बीज की तरह समा गईं; और अंकुरित होकर जड़ें जमा लीं, क्योंकि जॉन, उस ईश्वर-प्रेरित वृद्ध के साथ लंबे समय तक रहकर, उसने उसकी सभी आज्ञाओं का सावधानीपूर्वक पालन किया और उसकी आज्ञाओं पर ध्यान दिया, उसे ईमानदारी से, बिना किसी विरोध या किसी बड़बड़ाहट के आज्ञाकारी रहा; उसने अपने विचारों में भी कभी वृद्ध की आज्ञाओं का विरोध नहीं किया। इसी बात को उसने अपने हृदय में, जैसे पट्टियों पर, इस प्रकार अंकित किया: '[8525] ' 'पिता की हर आज्ञा, प्रेरितों की शिक्षा के अनुसार, बिना क्रोध या संदेह के पूरी की जानी चाहिए' (तुलना करें 1 तीमुथियुस 2:8)। और आज्ञाकारी व्यक्ति को क्या लाभ होगा यदि उसके हाथों में कर्म हों लेकिन उसके होंठों पर बड़बड़ाहट हो, यदि वह जीभ या मन से आज्ञा का विरोध करते हुए उसका पालन करे, और ऐसा व्यक्ति कभी परिपूर्ण कब होगा? कभी नहीं। ऐसे लोग व्यर्थ में परिश्रम करते हैं और सोचते हैं कि वे सदाचार से जी रहे हैं; आज्ञाकारिता को बड़बड़ाहट के साथ मिलाकर, वे अपने भीतर गहराई से एक साँप पालते हैं।

तथापि, धन्य यूहन्ना, एक सच्चे आज्ञाकारी शिष्य के रूप में, उन पर सौंपी गई सभी कर्तव्यों में बिना शिकायत के थे।

एक बार, जॉन की आज्ञाकारिता और विनम्रता की परीक्षा लेने के लिए, बुजुर्ग ने कई टोकरियाँ इकट्ठी कीं—जिनकी बुनाई उनका काम था—और जॉन से कहा:

'मैंने सुना है, मेरे बच्चे, कि दमिश्क में टोकरियाँ फ़िलिस्तीन की तुलना में अधिक दाम पर बिकती हैं, जबकि यहाँ हमारी कोठरियों में हमें कई सबसे आवश्यक चीज़ों की कमी है, जैसा कि तुम स्वयं देख सकते हो। इसलिए, ये टोकरियाँ ले लो, जल्दी से दमिश्क जाओ और वहाँ बेच दो। लेकिन ध्यान रखना कि उन्हें तय किए गए दाम से कम में न बेचना।'

और वृद्ध ने टोकरियों की कीमत उनके मूल्य से कहीं ज़्यादा तय कर दी। सच्चे नवसिखिए ने न तो शब्द में और न ही विचार में कोई आपत्ति जताई; उसने यह नहीं कहा कि टोकरियों की कीमत तय की गई कीमत के बराबर नहीं है या कि यात्रा बहुत लंबी थी; न ही उसने यह विचार भी किया कि उसे उस शहर में जाने में शर्म आएगी, जहाँ हर कोई उसे जानता था और जहाँ वह पहले अपने अधिकार के लिए प्रसिद्ध था; उसने इस तरह की कोई बात न कही और न ही सोचा, और इस प्रकार उसने स्वयं को प्रभु मसीह का अनुकरण करने वाला दिखाया, जो मृत्यु तक आज्ञाकारी रहे।

'मुझे आशीर्वाद दीजिए, पिताजी,' कहने और अपने आध्यात्मिक पिता का आशीर्वाद प्राप्त करने के बाद, यूहन्ना ने तुरंत टोकरियाँ अपने कंधों पर लाद लीं और दमिश्क की ओर दौड़ पड़ा। फटे-पुराने कपड़े पहने, यूहन्ना शहर से होकर गया और बाज़ार में अपनी टोकरियाँ बेच दीं। टोकरी खरीदने के इच्छुक लोगों ने पूछा कि उनकी कीमत क्या है, और उनकी ऊँची कीमत जानकर, उन्होंने जॉन को गाली दी और हँसे, उसका अपमान और निंदा की। उस धन्य पुरुष के परिचित उसे पहचान नहीं पाए, क्योंकि जो कभी सोने की कढ़ाई वाले वस्त्र पहनता था, वह अब एक भिखारी के फटे कपड़ों में था; उपवास से उसका चेहरा बदल गया था, उसके गाल पतले पड़ गए थे, और उसकी सुंदरता फीकी पड़ गई थी। लेकिन एक नागरिक, जो कभी जॉन का नौकर था, ने उसके चेहरे को ध्यान से देखा, संत को पहचान लिया, और उसकी भिखारी सी आकृति को देखकर चकित रह गया। दया से प्रेरित होकर और हृदय से आह भरते हुए, वह जॉन के पास एक अजनबी की तरह गया और उसने सभी टोकरीओ के लिए संत द्वारा निर्धारित मूल्य का भुगतान किया - इसलिए नहीं कि उसे टोकरीओं की ज़रूरत थी, बल्कि एक ऐसे व्यक्ति के प्रति दिया के कारण जो महान महिमा और धन-संपत्ति से आकर, ईश्वर के लिए, ऐसी विनम्रता और गरीबी के लिए। टोकरियों का भुगतान प्राप्त करने के बाद, जॉन उस व्यक्ति के पास लौट आए जिन्होंने

[8525] ये पत्थर की पट्टियाँ हैं जिनका उपयोग प्राचीन काल में लेखन के लिए किया जाता था; ईश्वर के विधान की दस आज्ञाएँ सिनाई पर्वत पर पट्टियों पर अंकित की गई थीं। रूपक अर्थ में, ये पट्टियाँ मानव हृदय का प्रतीक हैं।

उन्हें भेजा था, मानो वे युद्ध से लौट रहे विजेता हों, जिन्होंने आज्ञाकारिता और विनम्रता के माध्यम से दुश्मन, शैतान को, और उसके साथ ही अहंकार और व्यर्थ महिमा को भी जमीन पर पटक दिया हो।

कुछ समय बाद, उस मठ के एक भिक्षु की मृत्यु हो गई। उसकी मृत्यु के बाद अकेला रह गया उसका अपना भाई, उसके लिए बेइंतहा रोया। जॉन ने उसे बहुत समझाया, लेकिन वह अपने भाई को सांत्वना नहीं दे सका, जो अत्यंत दुखी और शोकाकुल था। आँखों में आँसू लिए, उसने जॉन से अपने लिए कोई मार्मिक अंतिम संस्कार का भजन लिखने की विनती करनी शुरू कर दी, ताकि उसे सांत्वना मिल सके और उसका दुख कम हो सके। जॉन ने मना कर दिया, क्योंकि उसे डर था कि वह बड़े भैया की आज्ञा का उल्लंघन कर देगा, जिन्होंने उसे अपनी अनुमति के बिना कुछ भी करने से मना किया था। लेकिन शोकग्रस्त भाई ने जॉन से विनती करना बंद नहीं किया, और कहा:

'तुम मेरे दुखी प्राण पर दया क्यों नहीं करते और मेरे इस बड़े दिल के दर्द के लिए कम से कम कोई थोड़ा सा इलाज क्यों नहीं देते? अगर तुम शरीर के डॉक्टर होते और मैं किसी शारीरिक बीमारी से पीड़ित होता, और मैं तुमसे इलाज करने के लिए कहता, तो क्या तुम सच में, ठीक करने की क्षमता होते हुए भी, मुझे मना कर देते, ताकि मैं उस बीमारी से मर जाऊँ?' क्या तुम्हें मेरी ओर से ईश्वर के सामने उत्तर नहीं देना पड़ेगा, क्योंकि तुम मेरी मदद कर सकते थे लेकिन तुमने इनकार कर दिया? अब, हालाँकि, मैं इस हृदय की बीमारी से और भी अधिक पीड़ित हूँ और आपसे थोड़ी सी भी मदद माँगता हूँ, फिर भी आप मुझे अनदेखा करते हैं। और अगर मैं दुख से मर जाऊँ, तो क्या आपको मेरी ओर से ईश्वर के सामने एक गंभीर हिसाब नहीं देना होगा? अगर आप अपने बड़े की आज्ञाओं से डरते हैं, तो मैं आपने जो लिखा है उसे इतनी अच्छी तरह छिपा दूँगा कि आपके बड़े न तो इसके बारे में जानेंगे और न ही सुनेंगे।

जॉन ने अंततः इन सुझावों को स्वीकार किया और निम्नलिखित अंतिम संस्कार ट्रोपारिया रचित कीं:

– 'हे जीवन की मधुरता', 'सभी मानवीय व्यर्थता', 'हम नश्वर, जो व्यर्थ परिश्रम करते हैं' और अन्य, जिन्हें अभी भी चर्च में दिवंगत लोगों के लिए अंतिम संस्कार सेवाओं के दौरान गाया जाता है[8526] ।

एक दिन, जब वरिष्ठ अपनी कोठरी से बाहर गए थे, जॉन वहाँ बैठकर अपने द्वारा रचित ट्रॉपारिया गा रहे थे। कुछ देर बाद, वरिष्ठ लौटे और जैसे ही वे कोठरी के पास पहुँचे, उन्होंने जॉन को गाते हुए सुना। वे तुरंत कोठरी में घुसे और गुस्से से उससे बात करने लगे:

'तुमने अपने वादों को कितनी जल्दी भूल गए? रोने के बजाय, तुम खुश और प्रसन्न हो, अपने लिए कुछ गीत गा रहे हो?'

जॉन ने अपने गाने का कारण समझाया और कहा कि उसके भाई के आँसुओं ने ही उसे ये गीत लिखने के लिए मजबूर किया था, और वह जमीन पर लोटकर बड़े से क्षमा याचना करने लगा। हालाँकि, बड़े, जो एक चट्टान की तरह अडिग थे, ने तुरंत उस धन्य व्यक्ति को उनके समुदाय से बहिष्कृत कर दिया और उसे कोठरी से बाहर निकाल दिया। बहिष्कृत किए जाने के बाद, जॉन को आदम का स्वर्ग से निष्कासन याद आया, जो अवज्ञा के कारण हुआ था, और वह बड़े भाई के कोठरी के सामने जोर-जोर से रोया, ठीक वैसे ही जैसे आदम एक बार स्वर्ग के सामने रोया था। इसके बाद, वह अन्य संतों के पास गया, जिन्हें वह सद्गुणों में पूर्ण मानता था, और उनसे बड़का संत के पास जाकर उससे अपने अपराध को क्षमा करने का निवेदन करने का आग्रह किया। वे गए और बड़का संत से अपने शिष्य को क्षमा करने और उसे अपनी कुटिया में वापस लेने का आग्रह किया, लेकिन वह उनकी विनतियों के प्रति अडिग रहा। संतों में से एक ने उससे कहा:

[8527]'पापी पर प्रायश्चित लगाओ, लेकिन उसे अपने साथ रहने से वंचित मत करो।'

[8526] उदाहरण के लिए, ऐसे हैं, 'जहाँ सांसारिक लगाव है', 'मुझे याद है कि भविष्यवक्ताओं ने पुकार कर कहा था: मैं धूल और राख हूँ', 'मैं रोता और विलाप करता हूँ' और अन्य, जिन्हें तथाकथित 'स्व-संतोष भजन' कहा जाता है। इन सभी की विशिष्टता असाधारण मार्मिकता है; वे स्वाभाविक और शक्तिशाली ढंग से आदम के बेटों की शवपेटिका पर, मिट्टी के पुत्र की नियति, सभी सांसारिक चीजों की व्यर्थता और क्षणभंगुरता को चित्रित करते हैं, और वे दिवंगत की आत्मा की शांति के लिए ईश्वर से हार्दिक प्रार्थना करते हैं। वे सभी दिवंगत की अंतिम संस्कार की रस्मों का हिस्सा बन गए हैं और आज भी ऑर्थोडॉक्स चर्च में उपयोग किए जाते हैं।

[8527] 'एपिटिमिया', ग्रीक शब्द से, का अर्थ है 'प्रतिशोध, दंड, निषेध'। प्राचीन काल में चर्च में पश्चातापी लोगों के लिए एपिटिमिया स्थापित किया गया था और यह प्रेरित पौलुस के शब्दों पर आधारित है, जो कोरिंथियों को पश्चातापी लोगों के पापों को क्षमा करने और उन्हें अपनी संगति में स्वीकार करने के लिए एक सलाह या नियम (कैनन) देते हुए कहते हैं: 'प्रतिबिंध (एपिटिमिया) लगाना पर्याप्त है' – और यह जोड़ता है कि यदि वे उसे अपने प्रेम में स्वीकार करते हैं, तो उसे भी स्वीकार किया जाएगा। संस्कार संबंधी पुस्तक में, एपिटिमिया को 'संतुष्टि का नियम (कैनन)' कहा जाता है। इस प्रकार, प्रेरित की शिक्षा के अनुसार, एपिटिमिया में पापी को चर्च के साथ संचार (कम्युनियन) से अस्थायी रूप से वंचित करना शामिल है, और यही कारण है कि यह एक सजा है। फिर भी, साथ ही, यह एक दंडात्मक उपाय या चर्च के सदस्य के अधिकारों से वंचित करना नहीं

बड़े भिक्षु ने उत्तर दिया:

'मैं उस पर यह प्रायश्चित लगाता हूँ, यदि वह अपनी अवज्ञा के लिए क्षमा प्राप्त करना चाहता है: उसे अपनी ही हाथों से सभी कोठरियों के रास्ते साफ़ करने हैं और मठ की सभी बदबूदार जगहों को धोना है।'

पिताजी इन शब्दों से शर्मिंदा हो गए और वरिष्ठ की कठोर और अडिग प्रकृति पर आश्चर्य करते हुए, हैरानी में वहाँ से चले गए। उन्हें मिलते हुए और प्रथा के अनुसार झुकते हुए, जॉन ने पूछा कि वरिष्ठ ने उनसे क्या कहा था। वृद्ध की कठोरता का वर्णन करने के बाद, उन्होंने यह बताने की हिम्मत नहीं की कि वृद्ध ने उसे परीक्षा के रूप में क्या कार्य सौंपा था; वे वृद्ध के ऐसे आदेशों को आगे बताने में बहुत शर्मिंदा थे। लेकिन जॉन ने लगातार उन पर दबाव डाला कि वे उसे बताएं कि पिता ने उन्हें क्या काम सौंपा था, और जब उन्होंने यह सुना, तो वे उनकी उम्मीद से कहीं ज़्यादा प्रसन्न हुए, और उन्होंने वह काम खुशी-खुशी स्वीकार कर लिया, भले ही उससे शर्म की भावना पैदा हुई। तुरंत सफाई के लिए बर्तन और औजार तैयार करके, उसने उत्साह के साथ आज्ञा का पालन करना शुरू कर दिया, और उन्हीं हाथों से गंदगी को छूने लगा जिन्हें उसने पहले विभिन्न सुगंधों से अभिषिक्त किया था, और उसी दाहिने हाथ को गंदगी से अशुद्ध कर दिया जिसे परमेश्वर की परम पवित्र माता ने चमत्कारिक रूप से ठीक किया था। हे इस अद्भुत पुरुष और सच्चे शिष्य की गहरी विनम्रता! जॉन की विनम्रता देखकर वृद्ध दया से भर गए, और उसके पास आकर, उसे गले लगाया और उसके सिर, कंधों और हाथों को चूमते हुए कहा:

'ओह, मैंने उसे मसीह के लिए कितना कष्ट सहने वाला बना दिया है! देखो, धन्य आज्ञाकारिता का एक सच्चा पुत्र!'

हालाँकि, जॉन वृद्ध की बातों से लज्जित होकर, परमेश्वर के सामने की तरह उनके सामने साष्टांग दण्डवत कर पड़ा; और, पिता की प्रशंसा के शब्दों से घमंडी न होकर, बल्कि स्वयं को और भी अधिक नम्र करते हुए, उसने उनसे अपने अपराध को क्षमा करने का अनुरोध किया। वरिष्ठ ने जॉन का हाथ पकड़कर उसे अपनी कोठरी में ले गए। जॉन इस पर इस प्रकार प्रसन्न हुआ मानो उसे स्वर्ग का आनंद पुनःप्राप्त हो गया हो, और वह वरिष्ठ के साथ पहले की तरह ही सौहार्दपूर्ण जीवन जीने लगा।

थोड़ी ही देर बाद, संसार की रानी, परम पवित्र और परम धन्य कुँवारी, एक रात्रि-दर्शन में उस वृद्ध के समक्ष प्रकट हुईं और कहा:

'तुमने मीठे और प्रचुर पानी से बहने वाले झरने को क्यों रोक दिया—वह पानी जो रेगिस्तान में चट्टान से निकले पानी से भी बेहतर है[8528] —वह पानी जिसे दाऊद पीना चाहता था[8529] —वह पानी जिसका मसीह ने सामरी स्त्री से वादा किया था[8530] ? झरने को बहने से न रोकें: यह प्रचुर मात्रा में बहेगा, और यह पूरे ब्रह्मांड में बहकर उसकी प्यास बुझाएगा, विधर्म के समुद्रों को ढक देगा और उन्हें अद्भुत मिठास में बदल देगा। जो प्यासे हैं वे इस जल को खोजें, और जो शुद्ध जीवन की चाँदी से वंचित हैं, वे अपनी वासनाओं को बेच दें और यूहन्ना के सद्गुण का अनुकरण करके इससे शिक्षा और कर्मों में पवित्रता प्राप्त करें। वह भविष्यद्वक्ताओं की लीर, दाऊद का भजन संहिता उठाएगा, और प्रभु परमेश्वर के लिए नए गीत गाएगा, जो मूसा और मरियम के गीतों[8531] से भी श्रेष्ठ होंगे। ओर्फियस[8532] के व्यर्थ गीत, जिनके बारे में कथाएँ बताई जाती हैं, उसकी तुलना में कुछ भी नहीं हैं; वह एक आध्यात्मिक, स्वर्गीय गीत गाएगा और केरूबीयों के भजनों का अनुकरण करेगा। वह यरूशलेम की सभी कलीसियाओं को, मानो टिम्पाणी बजाने वाली कन्याओं की तरह बना देगा, ताकि वे प्रभु के लिए गा सकें, मसीह की मृत्यु और पुनरुत्थान की घोषणा करते हुए; वह ऑर्थोडॉक्स विश्वास के सिद्धांतों को स्थापित करेगा और विधर्मी झूठी शिक्षाओं की निंदा करेगा: *'मेरे हृदय से एक अच्छा वचन फूटा है; मैं कहता हूँ: मेरा गीत राजा का है'* (भजन संहिता 44:2)।

है; यह केवल 'आध्यात्मिक उपचार' है। चर्च संबंधी नियमों की भाषा में, प्रायश्चित का अर्थ है प्रायश्चितकर्ता द्वारा, आध्यात्मिक पिता द्वारा निर्धारित, कुछ धार्मिक कृत्यों (दीर्घकालीन प्रार्थना, दान-पुण्य, कठोर उपवास, तीर्थयात्रा, आदि) का स्वैच्छिक रूप से पालन करना।

[8528] गिनती 20:11। यह उस पानी को संदर्भित करता है जिसे मूसा ने अपनी लाठी से चट्टान पर मारकर चमत्कारिक रूप से निकाला था।

[8529] 2 शमूएल 23:15.

[8530] यूहन्ना 4:14। प्रभु ने सामरी स्त्री को जीवित जल का वादा किया, जो अनन्त जीवन में बहता है, अर्थात् पवित्र आत्मा की अनुग्रह।

[8531] निर्ग. 20। जैसा कि सर्ववदित है, इस्राएलियों के लाल सागर पार करने के बाद मूसा और मरियम के भजन जोहान ऑफ़ डेमास्कस के कई भजनों में शामिल किए गए थे और, संयोग से, कैनन के पहले ओड (ode) के लिए आधार बने।

[8532] ऑर्फियस – यूनानी पौराणिक कथाओं का एक गायक और नायक, जिसकी गीत गाने की शक्ति इतनी महान थी कि वह पेड़ों और चट्टानों को गति दे सकता था और जंगली जानवरों को वश में कर सकता था।

अगली सुबह, वृद्ध ने यूहन्ना को बुलाया और उससे कहा:

'हे मसीह की आज्ञाकारिता के पुत्र! आत्मा को ग्रहण करने के लिए अपना मुँह खोलो, और अपने होठों से वही बोलो जो तुम्हारे हृदय में आया है; उन्हें उस ज्ञान के बारे में बोलने दो जो तुमने ईश्वर पर मनन करके सीखा है। अपना मुँह कसिसों के लिए नहीं, बल्कि सत्य के वचनों के लिए खोलो; अनुमान के लिए नहीं, बल्कि धर्मसद्धिान्तों के लिए। यरूशलेम के हृदय से बात करो, जो परमेश्वर का चन्तिन करता है—अर्थात्, शान्तिमें वरिाजमान मण्डली से; हवा में उड़ा देने वाले व्यर्थ के शब्द न बोलो, बल्कि वे बोलो जन्हिें पवत्रि आत्मा ने तुम्हारे हृदय पर अंकति कयिा है। ईश्वर के दर्शन और दैवीय रहस्यों के प्रकटीकरण के ऊँचे सनिाई पर्वत पर चढ़ो; और अपनी महान वनिम्रता के कारण, जसिसे तुम बहुत गहराई तक उतरे हो, अब कलीसयिा के पर्वत पर चढ़ो और यरूशलेम को सुसमाचार का प्रचार करते हुए उपदेश दो। अपनी आवाज़ बुलंद करो, क्योंकि ईश्वर की माता ने मुझे तुम्हारे बारे में कई गौरवशाली बातें बताई हैं। जहाँ तक मेरी बात है, मैं प्रार्थना करता हूँ, अपनी असभ्यता और अज्ञानता के कारण आपके लिए एक ठोकर का कारण बनने के लिए मुझे क्षमा करें।

उस समय से, धन्य योहन ने पवत्रि पुस्तकें लखिना और मधुर भजन रचना करना शुरू कर दयिा। उन्होंने ऑक्टोएकोस संकलति कयिा, जो एक आध्यात्मकि बांसुरी की तरह, आज भी ईश्वर की कलीसयिा को आनंदति करता रहता है। योहन ने अपनी पहली पुस्तक इन शब्दों से शुरू की: 'हे ईश्वर, तेरा वजियी दाहनिा हाथ शक्तिमें महमिामय है'[8533] .

अपने दाहनिे हाथ के चमत्कारी उपचार के संबंध में, उन्होंने आनंद के भाव में ईश्वर की माता से पुकारा: 'हे अनुग्रह से परपिूर्ण, हर प्राणी आप में आनंदति होता है'[8534] ।

[8533] ओक्टेइकोस में पहले स्वर का पहला इरमोस। ओक्टेइकोस संत जॉन ऑफ़ डेमास्कस के धर्मवधिि संगीत के शुरुआती कार्यों में से एक था। यरूशलेम के पैट्रिआर्क जॉन के अनुसार, पवत्रि प्रतमिाओं की आराधना के लिए एक अडगि स्वीकारकर्ता और शहीद, सेंट जॉन ऑफ़ डेमास्कस ने अपने हाथ के चमत्कारी ठीक होने से प्रेरति होकर—जसिे धर्म के दुश्मनों ने काट दयिा था—यह गंभीर भजन रचा: 'तेरा वजियी दाहनिा हाथ कलि के भीतर वैभव से महमिामय है', जो इस्राएलयिों के लाल सागर पार करने के दौरान मूसा के वजियी धन्यवाद गीत पर आधारति है, इसके बाद अन्य पवत्रि भजनों की एक शृंखला आई, जन्हिोंने मलिकर ऑक्टोएकोस, या 'आठ-स्वर वाली पुस्तक' (रवविार की सेवाएँ आठ स्वरों में वभिाजति) का नर्मिाण कयिा, जसिके आगमन ने चर्च सेवा की पूरी संरचना में एक परविर्तन ला दयिा। संत जॉन ऑफ़ डमास्कस के जीवनकाल में ही, उनके ऑक्टोएकोस को पूरे पूर्व में अपना लयिा गया था, और कुछ समय बाद यह पश्चमि में भी फैल गया; बाद में, ऑक्टोएकोस को अन्य ईसाई भजनकारों के भजनों से वस्तिारति कयिा गया, लेकनि अपने वर्तमान रूप में भी, रवविार की सेवाओं की मुख्य संरचना संत जॉन ऑफ़ डमास्कस की ही देन है। ऑक्टोएकोस में सप्ताह के प्रत्येक दनि की सेवा शामलि है, जो आठ स्वरों या धुनों में से एक के अनुसार मनाई जाती है, जसिमें सप्ताह के दनिों के लिए वेस्पर्स, कॉम्प्लाइन, मैटन्सि और लटिर्जी का क्रम होता है; और रवविारों के लिए, इसके अतरिक्ति, लटिलि वेस्पर्स और मडिनाइट ऑफसि भी शामलि हैं। सभी संतों के रवविार के बाद सप्ताह के दनिों में ऑक्टोएकोस का गायन शुरू होता है और मीटफेयर सप्ताह के शनविार से पहले समाप्त हो जाता है; रवविार को, यह सभी संतों के रवविार के बाद वाले रवविार को शुरू होता है और महान लेंट के छठे रवविार तक जारी रहता है। उल्लेखति अवधयिों के अलावा, बारह महान पर्वों पर और सप्ताह के दनिों में पड़ने वाले उनके पूर्व-पर्व दनिों पर, दव्यि सेवाओं में ऑक्टोएकोस का उपयोग नहीं कयिा जाता है। ऑक्टेओचोस ने चर्च सेवा में अधकि स्पष्टता और एकरूपता लाई। चर्च के गायन को उचति एकरूपता और ईसाई पूजा के अनुरूप भावनाएँ प्रदान करके, संत दमास्कनि ने इस प्रकार अपने ऑक्टेओचोस का उपयोग अपने समय से पहले चर्च के गायन में व्याप्त अव्यवस्था को समाप्त करने के लिए कयिा। धुनयिों की वस्तिृत ववधिता में से, उन्होंने चर्च के भजनों के लिए मुख्य रूप से उन धुनों को चुना जो ईसाइयों के लिए उपयुक्त भावनाओं को व्यक्त करने में सक्षम थीं, और उन धुनों का उपयोग नहीं कयिा जो ईसाई धर्म की गंभीरता के अनुकूल नहीं भावनाओं को जगा सकती थीं। उन्होंने स्वयं को आठ स्वरों तक सीमति कर लयिा ताकि भक्तों का ध्यान धुनों की ववधिता और बार-बार होने वाले बदलावों से भटक न जाए, और ताकि धुनों की एक नश्चिति संख्या, सभी के लिए गरमिापूर्ण और समझ में आने वाले भजनों पर ध्यान केंद्रति रखकर, कुछ गरमिापूर्ण गुणों को प्रेरति करे और सामूहकि ध्यान में, गाई जा रही प्रार्थनाओं की भावना और सामग्री को सुदृढ़ करे। भजनों की यही नश्चितिता एक परष्कृत, बखिरी हुई और असम्मानजनक कला की मनमाने आवष्किारों को समाप्त कर देती है, जबकि ओस्मोग्लास्नकि के भजनों की सादगी, जो ईसाई प्रार्थना की वनिम्र सादगी को व्यक्त करती है, आत्मा को ऐसी प्रार्थना के लिए तैयार करती है और, जैसे-जैसे यह आत्मा को सांसारकि व्यर्थता के कोलाहल से अलग करता है, यह उसे ईश्वर के सहिासन तक उठा ले जाता है। साथ ही, आठ स्वर स्वर्गीय पदानुक्रम के आठ स्वरों की ओर इशारा करते प्रतीत होते हैं, जो अथक रूप से ईश्वर की महमिा करते हैं: ईश्वर की माता, स्वर्गदूत, नबी, प्रेरति, पवत्रि पति, शहीद, पूजनीय और धर्मी; और इसलिए ऑक्टोएकोस का गायन आध्यात्मकि और रहस्यमय रूप से संतों के सदृश अखंड प्रार्थनात्मक गायन का प्रतीक हो सकता है, जो स्वर्ग में ईश्वर के सहिासन के सामने अनंत काल तक आनंदति होते हैं। संत जॉन ऑफ़ डेमास्कस के ऑक्टोएकोस का संगीत संकेतन नोटकि्लाइन्स से बना था।

[8534] बाद में, परम पवत्रि परमेश्वरी की सम्मान और स्तुति में इस गंभीर भजन को संत बेसलि द ग्रेट की धर्मवधिि में 'ज़ादोस्तोइनकि' के रूप में शामलि कयिा गया। संत जॉन ऑफ डेमास्कस के कई अन्य भजनों में से, वशिेष रूप से बड़ी संख्या में भजन परमेश्वर की माता के सम्मान में रचे गए थे, जनिकी वशिेष अनुग्रह-पूर्ण सुरक्षा और मध्यस्थता में वे रहे। उदाहरण के लिए, ऐसे ही उनके घोषणा के लिए कैनन, नदि्रारोहण के लिए,

जॉन अपने सरि पर वह कपड़ा पहनते थे जसिमें उनके काटे गए हाथ को लपेटा गया था, परमेश्वर की अतपिवत्रि माता के अद्भुत चमत्कार की स्मृतमिें। उन्होंने कुछ संतों के जीवन भी लखि, उत्सव के भजन और वभिन्नि मार्मकि प्रार्थनाएँ रचीं, और वश्विास के सद्धिांतों तथा धर्मशास्त्र के कई रहस्यों की व्याख्या की; उन्होंने वधिर्मयिों के खलिाफ भी लखिा, वशिष रूप से मूर्तभिंजकों के खलिाफ; और उन्होंने अन्य धर्मोपकारी कृतयिाँ भी रचीं, जनिसे वश्विासयिों को आज भी आध्यात्मकि भोजन के रूप में पोषण मलिता है, और जनिसे वे एक मीठी धारा की तरह पयिते हैं[8535] ।

धन्य कोस्मास ने इन कार्यों में आदरणीय जॉन को प्रोत्साहति कयिा; वह उनके साथ बड़े हुए थे और एक ही शक्षिक के अधीन अध्ययन कयिा था। उन्होंने उन्हें पवत्रि ग्रंथ लखिने और चर्च के भजन रचने के लएि प्रेरति कयिा, और स्वयं इसमें उनकी सहायता की। बाद में, कोस्मास को यरूशलेम के पैट्रआर्क द्वारा मायूम का बशिप नयिुक्त कयिा गया। इसके बाद, उसी पैट्रआर्क ने आदरणीय जॉन को बुलाया और उन्हें एक प्रेस्बटिर (पादरी) के रूप में नयिुक्त कयिा। लेकनि जॉन दुनयिा में लंबे समय तक नहीं रहना चाहते थे। सांसारकि महमिा को त्यागकर, वे आदरणीय सावस के मठ में लौट आए और, घोंसले में पक्षी की तरह अपनी कोठरी में अकेले रहकर, उन्होंने पवत्रि पुस्तकों को लखिने और अपने स्वयं के मोक्ष के कार्य में लगन से खुद को समर्पति कर दयिा। अपने द्वारा पहले लखिी गई सभी पुस्तकों को इकट्ठा करके, जॉन ने उन्हें एक बार फरि से पढ़ा और जहाँ आवश्यक समझा, वहाँ वशिष रूप से शब्दावली और वाक्यांशों में सावधानीपूर्वक सुधार कयिा, ताकि उनमें कुछ भी अस्पष्ट न रहे। इस प्रकार के कार्यों में, जो स्वयं के लएि लाभकारी और मसीह की कलीसयिा के लएि महत्वपूर्ण थे, और अपने संन्यासी तपस्या में, जॉन ने बहुत समय व्यतीत कयिा और

ईश्वर की माता के जन्म के लएि, 'हम पर दया के द्वार खोलो', 'हे महमिामय सदा कुंवारी, मसीह ईश्वर की माता, हमारी प्रार्थना अपने पुत्र तक पहुंचाओ', 'मैं अपनी सारी आशा तुम पर रखता हूँ' और अन्य हैं। आम तौर पर, एक चर्च स्तोत्रकार के रूप में, दमास्कस कसिी भी अन्य पहलू की तुलना में अधकि उत्कृष्ट हैं और वास्तव में अनुकरणीय हैं; इसीलएि उन्हें उनके स्तोत्रों के लएि *'स्वर्ण-स्वर'* कहा जाता है, और यह नाम उनके लएि पूरी तरह से उपयुक्त है: उनके सभी स्तोत्र अनुकरणीय कहे जाने के योग्य हैं। उन सभी में, एक महान स्तोत्रकार की वशिषता वाली उल्लेखनीय प्रेरणा देखी जा सकती है। उन्होंने जनि 64 कैनन की रचना की, उनमें सबसे उत्कृष्ट, गंभीर और दव्यि होली पास्खा का कैनन है। संत जॉन ऑफ डेमास्कस ने भी पूरी ईस्टर सेवा की रचना की; मानवीय रचनात्मकता के इतहिास में, इतनी ऊँची भावनाओं से भरा कोई दूसरा भजन नहीं मलिता, जो पवत्रि और वास्तव में अलौककि आनंद से परपिूर्ण हो। मसीह के जन्म, प्रभु के प्रकट होने और प्रभु के स्वर्गारोहण के लएि कैनन, उनके स्टचिैरा के साथ, ईस्टर कैनन के करीब आते हैं। उनकी रवविार की सेवाएँ अपनी काव्यात्मक शक्ति के लएि उतनी ही उत्कृष्ट हैं जतिनी कि अपने धर्मशास्त्रीय वषिय-वस्तु के लएि। यह दमास्कस ही थे जन्होंने सुंदर ट्रॉपारयिन लखिा था: 'हे सद्गुणी, हम आपकी सबसे पवत्रि प्रतमिा की पूजा करते हैं'। उनके एंटफिोन और अंतमि संस्कार के भजन भी उल्लेखनीय हैं – एक पश्चातापी आत्मा के अनुकरणीय और मार्मकि गीत। दमास्कनिस ने कई स्टचिैरा और अन्य चर्च के भजन भी रचे। वास्तव में, दमास्कनिस चर्च के इतहिास में, न तो इससे पहले और न ही इसके बाद, एक ऐसे भजनकार हैं जनिका कोई मुकाबला नहीं है।

[8535] अपने भजनों के अलावा, दमश्कि के संत जॉन अपने धर्मशास्त्रीय लेखनों के लएि प्रसद्धि हैं, जो उन्हें चर्च के महान पतिाओं में एक सम्मानजनक स्थान दलिाते हैं। यूनानी वद्विान अरस्टिोटल के दर्शन के उनके गहन अध्ययन ने उन्हें एक स्पष्ट-चतिक व्यक्ति बनाया, जो अपनी अवधारणाओं और शब्दों में सटीक थे। संत जॉन चर्च के उन पतिाओं में से पहले थे जन्होंने ऑर्थोडॉक्स चर्च के धर्मशास्त्रीय सद्धिांत को एक सुसंगत, व्यवस्थति क्रम में प्रस्तुत कयिा, जसिके लएि वे यथोचति रूप से प्रसद्धि हैं। अपनी रचनाओं में, दमास्कस एक मतवादी और ववािदकार, एक इतहिासकार और दार्शनकि, एक वक्ता और एक संस्कार संबंधी कवि हैं। उन्होंने अपने तीन प्रमुख कार्यों—*डायलेक्टक्सि*, *ऑन हेरेसीज़* और *एक्सपोजशिन ऑफ़ द फेथ*, जो वषिय-वस्तु में पूरी तरह से भन्नि हैं—को एक ही सामूहकि शीर्षक दयिा: *द फाउंटेन ऑफ़ नॉलेज*। इनमें से सबसे महत्वपूर्ण *ऑर्थोडॉक्स वश्विास की व्याख्या* है, जो प्रकाशन के चतिनशील सत्यों पर एक सुसंगत और व्यवस्थति रूप से प्रस्तुत सद्धिांत है, और यह पूर्व तथा पश्चमि दोनों के धर्मशास्त्रयिों के लएि एक आदर्श के रूप में कार्य करता है। इसके अलावा, संत जॉन ने 'पवत्रि समानांतर' को उसी कठोर तरीके से लखिा – वश्विास और धार्मकिता के सद्धिांतों से संबंधति पवत्रि धर्मग्रंथ के अंशों की तुलना चर्च के पतिा और शक्षिकों के कथनों से करना; यहाँ वषियों को सामान्य समझ को सुवधिाजनक बनाने के लएि वर्णानुक्रम में व्यवस्थति कयिा गया है; 'मार्गदर्शकि' – सबसे महत्वपूर्ण धर्मशास्त्रीय शब्दों की व्याख्या, जनिकी प्राचीन काल में गलत व्याख्या ही संप्रदायों के उदय का कारण बनी; धर्मतत्त्व पर कई लघु ग्रंथ: 'सही तर्क पर' – छह सार्वभौमकि परषिदों की शक्षिाओं की व्याख्या करते हुए; 'पवत्रि त्रमिूर्तपिर', 'मनुष्य में ईश्वर की प्रतमिा पर', 'मनुष्य की प्रकृतपिर' और इसी तरह। संतों के वरिोधी पादरयिों के वरिुद्ध सेंट जॉन की कृतयिों में, प्रतमिाओं की नदिा करने वालों के वरिुद्ध उनकी तीन रचनाएँ सबसे प्रमुख स्थान रखती हैं; वह मुसलमानों के वरिुद्ध एक प्रतरिक्षा-लेख और नेस्टोरयिनों, मोनोफसिाइट्स, मोनोथेलटि्स और मनखियिों के वरिुद्ध कृतयिों के लेखक भी हैं। इसके अलावा, प्रेरति पौलुस के पत्रों पर उनकी संक्षप्ति टीकाओं, पवत्रि शहीद आर्टेमयिस का एक वस्तिृत वृत्तांत, और उनके प्रवचनों का उल्लेख कयिा जाना चाहएि—उदाहरण के लएि, प्रभु के रूपांतरण, परमेश्वर की माता के जन्म और स्वर्गारोहण पर, वश्विास में सो चुके लोगों पर एक प्रवचन, आठ दुष्ट वचिारों पर एक नरि्देश, और इसी तरह। अंत में, दमास्कस के संत ने पवत्रि सावा द्वारा संकलति यरूशलेम के पूजा-वधिि नियिम में संशोधन और पूरकता करके, तथा एक मासकि कैलेंडर संकलति करके, दैवीय उपासना के क्रम को एक महत्वपूर्ण सेवा प्रदान की।

पूर्ण संन्यासवाद और पवित्रता प्राप्त की। ईश्वर को प्रसन्न करके, वह मसीह और उनकी परम पवित्र Mother[8536] के पास चले गए, और अब, उन्हें प्रतिमाओं में नहीं बल्कि स्वर्गीय महिमा में उनके मुखमंडल को निहारते हुए पूजते हैं, और हमारे लिए प्रार्थना करते हैं, कि हम भी उनकी पवित्र प्रार्थनाओं और मसीह की कृपा के द्वारा उसी दैवीय मनन के योग्य माने जाएँ, उन्हें, उनकी परम पवित्र और परम धन्य माता के साथ, युगों-युगों तक सम्मान, महिमा और आराधना मिले। आमीन।

ट्रोपारियन, स्वर 8:

ऑर्थोडॉक्सी के मार्गदर्शक, धर्मपरायणता और पवित्रता के शिक्षक, ब्रह्मांड के प्रकाश, मठाधीशों के ईश्वर-प्रेरित सांत्वनादाता, हे परम बुद्धिमान योहन, आपने अपने शिष्यों के माध्यम से सभी को प्रकाशित किया है, हे आध्यात्मिक झरने। हमारे ईश्वर मसीह से प्रार्थना करें कि हमारी आत्माओं का उद्धार हो।

कॉन्टाकियन, स्वर 4:

आओ हम यूहन्ना, भजन-रचयिता और परमेश्वर के सम्माननीय प्रचारक, कलीसिया के अनुशासक और शिक्षक, और विधर्मी-विरोधी का भजन करें: क्योंकि उसने प्रभु के शस्त्र, क्रूस को उठा लिया, और विधर्म के सभी छल-कपटों को दूर भगाया; और परमेश्वर के समक्ष एक उदार मध्यस्थ के रूप में, वह सभी को पापों की क्षमा प्रदान करता है।

पवित्र जॉन ऑफ पोलविॉट्स की स्मृति

4 दिसंबर को स्मरणोत्सव

अपनी युवावस्था से ही संत जॉन ने स्वादिष्ट भोजन का त्याग किया और सांसारिक सुखों से दूर रहे, तथा अपने जीवन को उपवास, ब्रह्मचर्य और दान से सर्वोपरि सुशोभित किया; इस कारण उन्हें पोलविोतस्क के बिशप के रूप में नियुक्त किया गया[8537] , हालाँकि उन्होंने पहले सभी धार्मिक पदों से क्रमशःहोकर गुज़रना पड़ा। जब उन्हें इस प्रकार लोगों के लिए सर्वोच्च अधिकार और देखभाल सौंपी गई, तो उन्होंने अपने प्रयासों को दोगुना कर दिया और अपने पूर्व कार्यों में नए कार्य जोड़े। उस समय, सम्राट लियो द इसाउरियन[8538] , जो अयोग्य रूप से शाही सिंहासन पर चढ़ा था, ने पवित्र प्रतिमाओं का अपमान करना शुरू कर दिया: आदरणीय पिता ने सम्राट के ऐसे अधर्म की कड़ी निंदा की और, अपने विश्वास के बयानी के माध्यम से, अपने अनुयायियों को प्रतिमा-भंग के विधर्मी भ्रम से बचाया। अपने जीवनकाल में, अगेरियनों ने एक बार अमोरिया नगर[8539] को घेरा, लेकिन ईश्वर की कृपा से उन्हें पीछे हटना पड़ा; तब इस पवित्र पुरुष के मध्यस्थता से दुश्मन द्वारा बंदी बनाए गए सभी ईसाइयों को मुक्त कर दिया गया। उनका शरीर आज भी अपरिवर्तित बना हुआ है; पेंटेकोस्ट के दिन, इसे अवशेष-पात्र से बाहर निकाला जाता है और, बिशप के वस्त्र पहनाने के बाद, पहले पवित्र वेदी तक ले जाया जाता है और सीधा खड़ा किया जाता है, और फिर एक ऊँची जगह पर उठा दिया जाता है जहाँ यह दिव्य बलि के दौरान दो पुरोहितों द्वारा सहारा दिए जाने पर बना रहता है। जहाँ तक पूजनीय पिता द्वारा किए गए चमत्कारों का प्रश्न है—भूत-प्रेत ग्रस्त लोगों के ठीक होने और रोगियों के उपचार—उनकी बड़ी संख्या को देखते हुए, उन्हें सभी को लिखित रूप में दर्ज करना असंभव है।

[8536] संत जॉन ऑफ़ डमास्कस का लगभग 777 में, 104 वर्ष की आयु में निधन हो गया, और उन्हें संत सब्बास द सैंक्चुडाइड की लावरा में, लावरा के पवित्र संस्थापक के अवशेष-पात्र के बगल में दफनाया गया था। बाइजेंटाइन सम्राट एंड्रोनिकोस द्वितीय पलाइओलोगोस (1282–1328) के शासनकाल के दौरान, उनके पवित्र अवशेष कॉन्स्टेंटिनोपल ले जाए गए थे।

[8537] एशिया माइनर में, 8वीं शताब्दी में।

[8538] उन्होंने 717 से 741 तक शासन किया।

[8539] फ्रीजिया क्षेत्र में।

18 दसिंबर

5 दसिंबर (पुराने कैलेंडर के अनुसार)

हमारे पूजनीय पिता सव्वा द पवित्र के जीवन और कर्म

5 दसिंबर को स्मरण कयिा जाता है

आदरणीय सावा का जन्म यूनानी सम्राट थयिोडोसयिस द यंगर[8540] के शासन के एकतीसवें वर्ष में, कैपाडोसयिा प्रांत के मुतालस्का नामक एक गाँव में हुआ था, जो सेज़रयिा[8541] के अधकिार क्षेत्र में था; यह शुरू में अज्ञात था, लेकनि बाद में, वहाँ सावस के जन्म के माध्यम से, यह अर्माफमि से भी अधकि प्रसद्धि हो गया, जहाँ दव्यि नबी शमूएल बड़े हुए (1 शमूएल 1 ff.)। धन्य सव्वा के माता-पिता जॉन और सोफयिा थे, जो कुलीन और धार्मकि लोग थे। जब बच्चा पाँच साल का था, तो वे अलेक्ज़ेंड्रयिा[8542] के लिए रवाना हुए, क्योंकि जॉन राजा की सेवा में था और उसे उच्च सैन्य पद प्राप्त था। ईश्वर की व्यवस्था से, सव्वा को उसकी माता के भाई, यर्मियाह की देखभाल में, माता-पिता की संपत्ति के साथ छोड़ दयिा गया। हालाँकि, हर्मयिस की पत्नी दुष्ट और झगड़ालू थी, इसलिए लड़के को बहुत कष्ट झेलना पड़ा और अंततः वह अपने पिता के भाई, ग्रेगरी, के पास रहने चला गया, जो स्कंडा नामक दूसरे गाँव में रहता था[8543] । परणिामस्वरूप, सव्वा के चाचाओं के बीच ववािद खड़ा हो गया। उसके माता-पिता लंबे समय तक अलेक्ज़ेंड्रयिा में रहे, जबकि हरमयिास और ग्रेगरी आपस में लड़ते रहे, उनमें से प्रत्येक की इच्छा लड़के की देखभाल करने की बजाय उसके पिता की संपत्ति का उपयोग करने की थी। उस धन्य लड़के ने, जो बचपन से ही अपने परपिक्व मन के लिए वख्यिात था, अपने चाचाओं के बीच संघर्ष और झगड़े देखकर, अपनी सारी संपत्ति का त्याग कर दयिा और मुतालस्का से साढ़े तीन वर्स्ट की दूरी पर स्थति फ्लावयिंस के मठ[8544] में चले गए, और आठ वर्ष की आयु में दैवी जीवन जीने लगे; वहाँ रहते हुए, उन्होंने जल्द ही भजन संहति और पवित्र धर्मग्रंथ की अन्य पुस्तकें सीख लीं, सत्कर्मों में उत्कृष्टता प्राप्त की और हर तरह से मठ के नयिम का पालन कयिा। थोड़ी ही देर बाद, धन्य सव्वा के चाचाओं ने आपस में सुलह कर ली, मठ में उनके पास आए और उन्हें बहकाने लगे, उन्होंने उन्हें पवित्र नविास की दीवारों को छोड़ने और एक पत्नी लेकर अपने पिता की संपत्ति पर रहने की सलाह दी। लेकनि वह, पापयिों के बस्तयिों में रहने के बजाय परमेश्वर के घर में ही रहने की इच्छा रखते हुए[8545] , और सांसारकि जीवन से अधकि मठवासी जीवन से प्रेम करते हुए, अपने चाचाओं की नहीं सुनी और उनके प्रलोभनकारी प्रस्ताव को ठुकरा दयिा:

'साँपों की तरह,' उन्होंने कहा, 'मैं उन लोगों से दूर भागता हूँ जो मुझे ईश्वर के मार्ग से भटकने की सलाह देते हैं, क्योंकि बुरी संगत चरित्र को बगिाड़ देती है (1 कुरन्थियिों 15:33), और मुझे उस शाप का डर है जसिसे भवष्यिवक्ता उन लोगों को शाप देते हैं जो व्यभचिार की ओर मुड़ते हैं: *'धक्किार है उन पर जो मेरी आज्ञाओं से भटक जाते हैं* (देखें भजन संहति 118:21)। इन शब्दों के साथ, उन्होंने अपने चाचाओं को खाली हाथ लौटा दयिा, जबकि उन्होंने स्वयं और भी अधकि उत्साह के साथ परश्रिम करना शुरू कर दयिा, अपने शरीर को कष्ट और संयम के द्वारा दंडति करते हुए और उसे आत्मा के अधीन करते हुए।

[8540] थेओडोसयिस द्वतीय, या युवा, जो बज़िंटाइन सम्राट थेओडोसयिस महान के पोते थे, ने 408 से 450 तक शासन कयिा। संत सव्वास द सैंक्चुडाइड का जन्म वर्ष 439 में हुआ था।

[8541] कैपाडोसयिा – पूर्वी एशयिा माइनर का एक क्षेत्र। केसरयिा – कैपाडोसयिा की राजधानी। मुतालस्का – अब तालासी – केसरयिा से 8 वर्स्ट दूर एक गाँव।

[8542] अलेक्ज़ेंड्रयिा – मस्रि के उत्तरी तट पर अफ्रीका में स्थति एक तटीय शहर, जो व्यापक व्यापार करता था और मूर्तपिूजक वद्विता का एक गढ़ था, तथा बाद में ईसाई धर्मशास्त्र का केंद्र बना।

[8543] स्कंद नामक गाँव मुतालस्का से तीन स्टेडयिम दूर, यानी *12 वर्स्ट* से थोड़ा अधकि दूरी पर स्थति था *(एक रोमन स्टेडयिम 86 सैज़ेन के बराबर होता था)।*

[8544] आज, संत जॉन द बैपटस्टि का मठ चट्टान के कनिारे पर स्थति है।

[8545] एक भजन संहतिात्मक अभव्यिक्ति। भजन संहति 83:11।

जब इस साँप—जिन्होंने उसे धन और विवाह के प्रलोभन से मठ छोड़ने के लिए उकसाया था, मानो यह एक स्वर्ग हो—को परास्त कर दिया गया, तो एक अन्य प्रलोभक ने संत को प्रलोभित करना शुरू कर दिया: अतिभक्षण का दानव। एक दिन, मठ के बगीचे में काम करते हुए, सव्वा ने एक पेड़ से लटका एक सुंदर सेब देखा; वह खुद को रोक नहीं सका, उसने सेब तोड़ लिया और निर्धारित समय और प्रथागत आशीर्वाद से पहले ही उसे खाने ही वाला था। लेकिन, यह याद करते हुए कि इसी फल के साथ सांप ने प्रथम मनुष्य को स्वर्ग में पाप की ओर ले जाया था (उत्पत्ति 3:1–24), सव्वा ने खुद को रोका, उसे खाने से परहेज किया और खुद को फटकारते हुए कहा:

'वही फल जिसने आदम की मृत्यु को आमंत्रित किया था, देखने में मनोहर और स्वाद में आनंददायक था।'

और, सेब को ज़मीन पर फेंककर, उसने उसे पैरों तले कुचल दिया, और साथ ही अपने विचारों को भी कुचल दिया, और इसके अलावा, लालच के राक्षस के सिर को भी कुचल दिया - और शपथ ली कि वह अपने बाकी जीवन में कभी सेब नहीं खाएगा। उस समय से, उन्होंने संयम के द्वारा हर सांसारिक इच्छा पर विजय प्राप्त की; वे कम खाते थे, कम सोते थे, और लगातार श्रम में लगे रहते थे, और उनके हाथ केवल प्रार्थना या काम के लिए उठते थे।

और जल्द ही उस संत ने, अपनी युवावस्था के बावजूद, उस मठ के सभी वरिष्ठों के समान सद्गुण प्राप्त कर लिए।

एक दिन ऐसा हुआ कि वहाँ के भाइयों में से एक, जो रोटी पकाने की ड्यूटी पर था, बारिश में भीग गया; और चूँकि सर्दी का मौसम था, धूप नहीं निकल रही थी, और उसके पास अपने कपड़े सुखाने के लिए कोई जगह नहीं थी, इसलिए उसने उन्हें लकड़ी के ऊपर ब्रेड ओवन में रख दिया और उनके बारे में भूल गया। कुछ ही देर बाद, भाई रोटी पकाने के लिए इकट्ठा हुए और उन्होंने भट्टी में आग लगा दी, यह जाने बिना कि रिसोइए ने अपने कपड़े वहाँ सुखाने के लिए रखे थे। जब आग भड़क चुकी थी, तो रसोइए को अपने कपड़ों का ध्यान आया और वह उनके लिए बहुत दुखी हुआ। धन्य सव्वा भी वहाँ थे: अपने भाई का दुख देखकर, उन्होंने अपने बारे में नहीं सोचा और, क्रॉस का चिह्न बनाकर, जलते हुए भट्टी में प्रवेश किया। और, अरे चमत्कार! जिस प्रकार बाबेल की भट्टी में पड़े जवानों को एक बार उनके विश्वास के कारण जलने से बचाया गया था (दानिय्येल 3:1–100), उसी प्रकार युवा सवा भी, अपने भाई के प्रति प्रेम से, भट्टी से बिना किसी चोट के बाहर निकला, अपने हाथों में अपने भाई के कपड़े—जो आग से अप्रभावित रहे—पकड़े हुए, जबकि उसके अपने कपड़े भी जलने से बचे रहे।

भाइयों ने यह चमत्कार देखकर चकित हो गए, और एक-दूसरे से कहने लगे:

'यदि अपने यौवन में ही उसे परमेश्वर से इतनी कृपा प्राप्त हो चुकी है, तो यह लड़का भविष्य में कैसा होगा!'

उस धन्य व्यक्ति ने उस मठ में दस वर्ष तक रहकर दिन-प्रतिदिन शक्ति और महिमा में वृद्धि की। तब उन्हें यरूशलेम जाकर पवित्र स्थानों का पूजन करने और आसपास के रेगिस्तान में रहने वाले संतों से मिलने, उनके उपदेश से लाभ उठाने और वहाँ अपने लिए एक स्थान खोजने की इच्छा हुई जहाँ वे एक तपस्वी के रूप में रह सकें। वे आर्चिमंड्राइट के पास गए और उनसे प्रार्थना और आशीर्वाद के साथ पवित्र नगर जाने की अनुमति माँगी। लेकिन आर्चिमंड्राइट उन्हें जाने देना नहीं चाहते थे, उन्होंने कहा:

'तुम्हारे लिए, इतने युवा होकर, इधर-उधर भटकना अच्छा नहीं है; एक ही स्थान पर रहना बेहतर है।'

लेकिन ईश्वर, जो सभी चीजों को भलाई के लिए व्यवस्थित करते हैं, ने आर्चिमंड्राइट को सावा को रोकने के लिए आदेश दिया।

'सावा को रेगिस्तान में मेरी सेवा करने दो,' उसने एक दर्शन में आर्चिमांड्राइट को प्रकट किया।

[85468547]तब, उस धन्य व्यक्ति को बुलाकर, आर्चिमांड्राइट ने उसे अपना आशीर्वाद दिया और एक प्रार्थना के साथ उसे विदा कर दिया। सर्वोच्च के दिव्य हस्त की प्रेरणा से, वह अपने जीवन के अठारहवें वर्ष में यरूशलेम पहुँचा, जो मार्सियन के शासनकाल के अंत और पवित्र नगर में जुवेनाल के पैट्रिआर्काट के समय था। वह सर्दियों में संत पसरियन के मठ में पहुँचा, जहाँ आर्चिमैंड्राइट एल्पिडियस ने उसका स्वागत किया और उसे कैपैडोसिया के एक वृद्ध संत के मार्गदर्शन में सौंप दिया। वहाँ, सव्वा ने सर्दियाँ बिताईं, और एक तपस्वी के एकांत जीवन का सपना देखा, जिसकी वह

[8546] मार्शियन – बीजान्टिन सम्राट, 450 से 467 तक शासन किया। सेंट जुवेनल 420 से 458 तक। सम्माननीय सावा द सैंक्टिफाइड का अबा पासारियन के मठ में स्थानांतरण 456 में हुआ था। सम्माननीय पासारियन – यरूशलेम के मठों में से एक के संस्थापक, सम्माननीय यूथिमियस द ग्रेट के बिशप और मार्गदर्शक – का स्मरण 11 अगस्त और चीज़ वीक के शनिवार को किया जाता है।

[8547] महान संत यूथिमियस के साथी, संत थियोक्टिस्टस का पर्व 3 सितंबर को मनाया जाता है; संत थियोक्टिस्टस का निधन वर्ष 467 में हुआ था।

लंबे समय से अपने हृदय में लालसा करता था। यरूशलेम के पूर्व में मरुभूमि में पुण्य और चमत्कारों से दमकने वाले महान यूथमियस[8548] के बारे में सुनकर, सव्वास उन्हें देखना चाहते थे। अपने वरिष्ठों का आशीर्वाद लेकर, वह अपनी यात्रा पर निकल पड़ा और महान यूथमियस के लव्रा में पहुँचने पर, वहाँ कई दिनों तक उनके दर्शन का अवसर मिलने का इंतजार करता रहा, क्योंकि वह आदरणीय संत हमेशा गिरिजाघर नहीं आते थे, बल्कि सप्ताह में केवल एक या दो बार विशेष दिनों में ही आते थे। जब सब्बाथ का दिन आया, तो सावा ने पूजनीय यूथमियस को चर्च जाते हुए देखा और उनके पैरों पर गिर पड़ा, उनसे विनम्रतापूर्वक अपने मठ में स्वीकार करने का आग्रह करने लगा। लेकिन यूथमियस ने उसकी युवावस्था को देखकर, उसे यरूशलेम से भी और अधिक दूर स्थित एक मठ में भेज दिया, जो धन्य थियोक्टिस्टस के मार्गदर्शन में था, और उसे इस युवा भिक्षु की देखभाल करने का निर्देश दिया, – और उनके विषय में भविष्यवाणी की कि, उचित समय पर, मसीह की कृपा से, वह मठवासी जीवन में कई अन्य लोगों से अधिक चमकेंगे, सभी फिलिस्तीनी संन्यासियों के लिए एक गौरवशाली उदाहरण होंगे, और उस देश के सभी मठों से बड़ा एक मठ स्थापित करेंगे।

थेओक्टिस्ट द्वारा मठ में स्वीकार किए जाने के बाद, सव्वा ने खुद को पूरी तरह से ईश्वर को समर्पित कर दिया और सभी मठवासी कर्तव्यों को बिना किसी शिकायत के, आज्ञाकारिता, विनम्रता और उत्साह के साथ पूरा किया। दिव्य सेवा के निर्वहन में सक्षम और अत्यधिक उत्साही होने के कारण, वह चर्च में प्रवेश करने वाले पहले और उसे छोड़ने वाले आखिरी व्यक्ति थे। महान आध्यात्मिक शक्ति के साथ-साथ, वह शरीर से भी विशाल और मजबूत थे – यही कारण था कि जबकि रेगिस्तान के सभी भिक्षु टोकरियों के लिए केवल टहनियों का एक गट्ठा काटते और उसे मठ तक ले जाते थे, सव्वा तीन गट्ठे काटते और ले जाते थे। इसके अलावा, वह कभी-कभी पानी और लकड़ी भी लादता था, इस तरह सभी की सेवा करने का प्रयास करता था। काफी समय तक उसने गधों का रखवाला बनकर सेवा की, और उसने कई अन्य कर्तव्य भी निभाए; उसने यह सब इतनी त्रुटिहीनता और निष्कलंकता से किया, कि मठ के संत युवा सव्वा के महान उत्साह और मददगार स्वभाव को देखकर चकित रह गए।

तब शैतान, उसे बाधित करने की इच्छा से, निम्नलिखित योजना बनाई। उस मठ में अलेक्जेंड्रिया का एक भिक्षु था, जिसका नाम जॉन था। इस भिक्षु को अपने माता-पिता की मृत्यु की खबर मिली। और इस प्रकार शैतान ने उसमें एक ऐसा विचार डाला जो एक भिक्षु के लिए अनुचित था—अपने माता-पिता द्वारा छोड़ी गई संपत्ति की देखभाल करने का—और उसने मठाधीश थियोक्टिस्टस को बार-बार यह अनुरोध किया कि उसे अलेक्जेंड्रिया जाने दिया जाए और साथ ही सावास को भी उसके साथ जाने की अनुमति दी जाए, क्योंकि वह मजबूत कद-काठी का व्यक्ति था और यात्रा में उसकी बहुत मदद कर सकता था। थियोक्टिस्टुस भिक्षु की लगातार विनतियों के आगे झुक गए और उसे उसके पैतृक गांव वापस भेज दिया; और, उसकी प्रार्थना के अनुसार, उन्होंने सव्वा को भी उसके साथ भेज दिया, और इस प्रकार वे चल पड़े। जब वे अलेक्जेंड्रिया पहुँचे और दिविंगत व्यक्ति द्वारा छोड़ी गई संपत्ति के प्रबंध करने लगे, तो धन्य सावा के माता-पिता, जॉन और सोफिया, जो संयोग से वहाँ मौजूद थे (क्योंकि सावा के पिता को उनके सैन्य पद के कारण, शाही आदेश से अक्सर अलेक्जेंड्रिया भेजा जाता था), ने उन्हें पहचान लिया। तब धन्य सव्वा के सामने एक नई परीक्षा आई, अ र एक पहला से भी बड़ा संघर्ष उत्पन्न हुआ, जब उनके चाचा उन्हें मठ से दुनिया में, संन्यासी जीवन से विवाह की ओर खींचना चाहते थे: सावा के माता-पिता, बारी-बारी से आँसुओं भरी विनतियों और कोमल, लुभावन शब्दों से, उसे और भी अधिक आग्रह करने लगे कि वह अपना काला चोगा उतारकर सफेद चोगा पहन ले, उनके उदाहरण के अनुसार जिए और सैन्य सेवा में प्रवेश कर ले। तथापि, परम पावन ने यह महसूस करते हुए कि शत्रु की उकसावे पर उनके माता-पिता ने उन्हें पहचान लिया था, अपने स्वाभाविक झुकाव का दृढ़ता से विरोध किया। उन्होंने अपने माता-पिता के प्रति स्वाभाविक प्रेम को नियंत्रित किया, उनकी लगातार विनतियों और आँसुओं को ठुकरा दिया, और अपने सद्संकल्प में अडिग रहते हुए, अपने माता-पिता को उत्तर दिया:

'मुझे उस से डर लगता है जिसने कहा: *"जो पिता या माता से मुझसे अधिक प्रेम करता है, वह मुझ योग्य नहीं; और जो पुत्र या बेटी से मुझसे अधिक प्रेम करता है, वह मुझ योग्य नहीं; और जो अपना क्रूस उठाकर मेरे पीछे नहीं चलता, वह मुझ योग्य नहीं"* (मत्ती 10:37–38)। तो फिर, मैं तुम्हें ईश्वर से, तुम्हारे व्यर्थ जीवन को मेरे क्रूस से, सांसारिक सैन्य सेवा को आध्यात्मिक सेना से कैसे श्रेष्ठ रख सकता हूँ? यदि सांसारिक राजा भी उन सैनिकों को दंडित करते हैं जिन्होंने

[8548] 473 में निधन करने वाले संत यूथमियस महान की स्मृति 20 जनवरी को यरीहो की सीमाओं के भीतर मनाई जाती है: पहला मठ, जिसे यूथमियस ने अपने मित्र और साथी संत थियोकटिस्टस की देखभाल में सौंपा था, यरूशलेम से 14 वर्स्ट उत्तर-पूर्व में स्थित था; दूसरा मठ संत यूथमियस द्वारा पहले मठ से 4 वर्स्ट दूर स्थापित किया गया था और यह उनके अपने प्रशासन के अधीन रहा।

अपनी रेजमिेंट छोड़ दी है, तो स्वर्गीय राजा उन पर कतिनी अधकि दया नहीं दखिाएगा, जो उसकी महमिामय सेना में भर्ती हुए और फरि चुनी हुई रेजमिेंट से भाग गए।

अंत में, धन्य सव्वा ने कहा:

'यदि तुम मुझे मसीह की महमिामय सेना को छोड़ने के लिए आग्रह करते रहोगे, तो मैं तुम्हें फरि अपना माता-पिता नहीं कहूँगा।'

तब यूहन्ना और सोफयिा, यह देखकर कि उनके पुत्र का हृदय अडगि था, उसे मनाना बंद कर दयिा और, कड़वे रोने और भारी मन के साथ, उसे जाने दयिा; और जब वे वदिा हुए, तो उन्होंने उससे कहा कि वह यात्रा के लिए जो कुछ भी उसे चाहिए, अपने साथ ले ले, और उसे चालीस सोने के सक्कि दे दिए; लेकनि वह कुछ भी लेना नहीं चाहता था; हालाँकि, अपने माता-पिता को पूरी तरह से नराश न करने के लिए, उसने केवल तीन सक्कि लिए, और अपनी वापसी पर, उन्हें मठाधीश, थयिोक्टस्टि को सौंप दयिा।

मठ में सव्वा के दसवें वर्ष के अंत के करीब, आदरणीय थयिोक्टस्टि का नधिन हो गया; उनकी जगह, आदरणीय यूथमिियस ने मारनि नामक एक सदाचारी भक्षिु को नयिुक्त कयिा; लेकनि दो साल बाद उनकी भी मृत्यु हो गई, जसिके बाद लॉन्जनिस नामक एक सदाचारी भक्षिु ने मठाध्यक्ष का पद संभाला। उस समय, धन्य सावा की आयु तीस वर्ष थी। उन्होंने मठ के दक्षणि में एक चट्टान पर स्थति एक गुफा में अधकि एकांत जीवन के लिए जाने की अनुमति के अनुरोध के साथ महाधर्माध्यक्ष लोंगनिस के पास गए। लॉन्गनिस ने इस इच्छा की सूचना अपने वरषि्ठ यूथमियिस को दी। यूथमियिस ने, साव्हा के नर्दिोष जीवन, उसके उपवास और प्रार्थनाओं, उसकी नम्रता और वनिम्रता, और उसके अन्य दैवीय कार्यों के बारे में बहुत कुछ सुनने के बाद, लॉन्गनिस को लखिा:

'साव्वा को अपनी इच्छानुसार तपस्या करने से न रोकें।'

शुरुआत में, उस धन्य व्यक्ति को सप्ताह में पाँच दनि गुफा में रहने का नर्दिेश दयिा गया; बाद में, उनके अनुरोध पर, उन्हें वहाँ पाँच साल तक रहने की अनुमति दी गई। गुफा में उनका जीवन इस प्रकार था: पाँच दनिों तक वे उपवास करते थे, कुछ भी नहीं खाते-पीते और गुफा से बाहर नहीं नकिलते थे; वहाँ वह टोकरी बुनता था, एक दनि में दस टोकरी बनाता था – जबकि उसके होंठ और वचिार लगातार ईश्वर की प्रार्थनाओं से भरे रहते थे। सब्बाथ की शुरुआत में, सुबह-सुबह, वह पचास टोकरी अपने साथ लेकर गुफा से मठ के लिए नकिल जाता था; शनविार और रवविार को वह सामूहकि प्रार्थना में भाग लेते थे और भोजन से अपना शरीर तरोताज़ा करके, रवविार की शाम को गुफा में लौट आते थे, साथ में पचास टोकरी बुनने के लिए आवश्यक खजूर की शाखाएँ ले आते थे। उन्होंने उस गुफा में ऐसे श्रम और उपवास में पाँच साल बतिाए, जसिके बाद महान यूथमिियस उन्हें अपने संन्यासी यात्राओं पर एक सद्धि भक्षिु के रूप में साथ ले गए, जो अपनी कम उम्र के बावजूद, सदाचार में बूढ़े हो चुके संतों के बराबर थे। इसलिए यूथमिियस ने उन्हें 'युवा वरषि्ठ' कहा: यद्यपि शिरीर से युवा, वे आध्यात्मकि ज्ञान में सफेद-बालों वाले और अपने नष्किलंक जीवन में वृद्ध थे। जनवरी के 14वें दनि, महान यूथमिियस उनके साथ लावरा से रवाना हुए, साथ में धन्य डोमेटयिन[8549] को भी लेकर, और वे ग्रेट लेंट के दौरान पाम संडे तक रूवा के महान रेगस्तिान[8550] के लिए नकिल पड़े।

एक दनि, वृद्ध ने मृत सागर के दक्षणि में स्थति पूरे रेगस्तिान को पार करने की इच्छा जताई, और वह अपने दोनों शष्यिों, डोमेटयिन और सव्वा, के साथ एक नर्जिल क्षेत्र में आए। गर्मी भयानक थी, और धन्य सव्वा प्यास से व्याकुल होकर थक गए, और आगे चलने में असमर्थ होकर गरि पड़े। यूथमिियस ने उन पर दया की और एक पत्थर की दूरी पीछे हटकर इस प्रकार प्रार्थना करने लगे:

'हे प्रभु परमेश्वर, इस सूखी भूमि पर जल प्रदान कर, ताकि मेरे मुरझाए हुए भाई की प्यास बुझ जाए।'

अपनी प्रार्थना समाप्त करने के बाद, उन्होंने एक छड़ी से, जो उन्हें मलि गई थी, तीन बार जमीन पर टकिाया, और तुरंत ही फव्वारे का पानी बहने लगा। सावा ने पानी का स्वाद चखा और वह ताज़ा हो गया, और उस समय से उसे रेगस्तिान में प्यास सहने के लिए दैवीय शक्ति प्राप्त हुई। जब पाम संडे आया, तो वे लौरा लौट आए।

[8549] फलिस्तिीन के संत डोमेटयिन का स्मरण चीज़फेयर शनविार को कयिा जाता है।

[8550] रुवा मरुभूमि मृत सागर के उत्तर-पश्चमिी तटों पर, मृत सागर और यरूशलेम की आज की सड़क, तथा संत सावस द सैंक्चुअइड की लव्रा के बीच स्थति थी।

कुछ ही समय बाद, पूजनीय और ईश्वर-वाहक यूथमिीयस का नधिन हो गया; यह यरूशलेम के अनास्तासयिस के पैट्रआिर्कात् के दौरान हुआ था[8551] । यूथमिीयस के नधिन और लावरा के कई अन्य वरषि्ठ पतिाओं की मृत्यु के बाद, सव्वा ने देखा कि मठ के नयिम बदले जा रहे थे, तो वे यॉर्डन के पास पूर्वी रेगस्तिान में चले गए, जो उस समय आदरणीय गेरासमिस के जीवन से एक चमकते तारे की तरह प्रकाशति हो रहा था। धन्य सव्वा पैंतीस वर्ष के थे जब वे अकेले रेगस्तिान में बस गए, उन्होंने स्वयं को उपवास और अखंड प्रार्थना के लिए समर्पति कर दयिा, और अपने मन को दव्यि चीजों का एक शुद्ध दर्पण बना लयिा। तभी शैतान ने उनके खलिाफ साजशि रचनी शुरू कर दी। एक रात आधी रात को, जब संत अपने परशि्रम के बाद जमीन पर सो रहे थे, तो शैतान ने खुद को साँपों और बचि्छुओं की एक भीड़ में बदल लयिा और सव्वा के पास आकर उन्हें डराने की कोशशि की। लेकनि वह तुरंत प्रार्थना करने के लिए उठ खड़े हुए, और दाऊद के भजन के शब्दों का उच्चारण कयिा: *'तुम रात के भय से और दनि में उड़ने वाले तीर से न डरोगे... तुम वषैले साँप और फनफनाने वाले सर्प पर पाँव रखोगे'* (भजन संहति 90:5-13)। ये शब्द सुनते ही, वह दानव, अपने सभी भयों के साथ, तुरंत गायब हो गया। कुछ दनिों बाद, शैतान ने खुद को एक भयानक शेर में बदल लयिा और संत पर झपट पड़ा, मानो उसे नगिल जाना चाहता हो; जैसे ही वह झपटता, वह पीछे हट जाता, फरि से झपटता और एक बार फरि पीछे हट जाता। यह देखकर कि वह जानवर बारी-बारी से झपट रहा था और पीछे हट रहा था, पूजनीय ने उससे कहा:

'यदि तुझमें मुझे नगिलने की ईश्वर की शक्ति है, तो फरि पीछे क्यों हटता है? यदि नहीं, तो व्यर्थ में क्यों परशि्रम करता है? क्योंकि मैं अपने मसीह की शक्ति से तुझ पर वजिय प्राप्त कर लूँगा, हे सहि!'

और तुरंत वह दानव, जो एक जानवर के रूप में प्रकट हुआ था, अपमानति होकर भाग गया। उस समय से, ईश्वर ने सव्वा के लिए सभी जानवरों और साँपों को वश में कर लयिा, और वह उनके बीच ऐसे चलने लगा मानो वे कोमल भेड़ें हों।

मरुभूमि में चलते समय, सावा एक बार चार सारासेन[8552] से मलिा, जो बहुत भूखे और थके हुए थे; उसने उन्हें बैठने के लिए कहा और अपने कपड़ों से मेलाग्रयिा नामक कुछ जड़ें नकिालीं, जनि पर वह स्वयं जीवति रहता था, और सरकंडों का गूदा[8553] । उन्होंने खाया और अपनी ताकत वापस पा ली, और, जहाँ सावा था उस जगह को नोट कर लयिा, वे चले गए; लेकनि कुछ दनिों बाद वे अकाल के दनि उन्हें खाना खलिाने की उनकी दया के लिए आभार व्यक्त करते हुए रोटी, पनीर और खजूर लेकर उसके पास लौटे। सावा गहराई से प्रभावति हुआ और, आँखों में आँसू लिए, उसने खुद से कहा:

'हाय, मेरी आत्मा! ये लोग तो बस एक बार दखिाई गई थोड़ी सी दया के लिए भी कतिने आभारी हैं! तो फरि हम क्या कर रहे हैं, जो घड़ी-घड़ी ईश्वर के अनुपम उपहारों को प्राप्त कर रहे हैं और फरि भी कृतघ्न बने हुए हैं, आलस्य और उपेक्षा में जी रहे हैं, और उनके पवत्रि आज्ञाओं का पालन करने में वफिल हो रहे हैं!'

[8554]उसके बाद, अंफ नामक एक पुण्यशील भक्षिु[8555] सावा के पास आया; वह पहले लंबे समय तक परम पूजनीय थयिोडोसयिस के साथ रहा था। वह धन्य सावा से स्नेह करने लगा, उससे जुड़ गया, और उसके साथ रहने लगा। एक दनि, अगारयिों ने उन पर हमला कयिा और उन्हें मारने के लिए अपने में से एक को आगे भेजा; लेकनि, पूजनीय पतिाओं की प्रार्थनाओं के द्वारा, पृथ्वी अचानक खुल गई और उस अगारी को नगिल गई, जबकि शेष अगारयिों ने यह चमत्कार देखकर भयभीत होकर भाग गए।

अपने साथी तपस्वी अंफा के माध्यम से, धन्य सव्वा बाद में आदरणीय थयिोडोसयिस से परचिति हुए, और उनके बीच गहरा प्रेम वकिसति हो गया। मरुभूमि में अपने चौथे वर्ष के अंत के करीब, जंगल में भटकते हुए, संत सव्वास एक बार एक ऊँची पहाड़ी पर चढ़े[8556] , जहाँ सम्राट थयिोडोसयिस द यंगर की धर्मपत्नी, धन्य रानी यूडोक्सयिा ने एक बार महान

[8551] 473 में, अनास्तासयिस प्रथम – 468 से 478 तक यरूशलेम के पैट्रआिर्क।

[8552] सारासेन – जनि्हें अरब भी कहा जाता था, जो अरब प्रायद्वीप और सीरयिा, और कुछ हद तक फलिस्तीन में रहते थे।

[8553] मेलग्रयिा – फलिस्तीन का एक कम-ज्ञात रेगस्तिानी पौधा जसिका स्वाद कड़वा होता है। – यहाँ 'रीड' शब्द तथाकथति सुगंधति रीड को संदर्भति करता है – एक ऐसा पौधा जो अपनी सुगंधति और सुखद, फरि भी कड़वे स्वाद वाली जड़ के लिए जाना जाता है। इसका उपयोग आम तौर पर धार्मकि अनुष्ठानों के लिए लोबान बनाने के साथ-साथ औषधीय सुगंधति तेलों और मलहमों के लिए कयिा जाता था; लेकनि रेगस्तिान के नविासी इस पौधे की ताज़ी कोंपलों और नरम गूदे को भी खाते थे।

[8554] अगारयिन, जनि्हें सारासेन के नाम से भी जाना जाता है, अरब के बेदुइन हैं। उन्हें अगारयिन इसलिए कहा जाता था क्योंकि, यहूदी परंपरा के अनुसार, वे हगार, अब्राहम की दासी की संतान इसमाइल के वंशज थे। यह नाम, जो मूल रूप से इस खानाबदोश जनजाति को संदर्भति करता था, बाद में ईसाई लेखकों द्वारा सभी अरबों पर लागू कयिा गया, और बाद में सामान्य रूप से मुसलमानों को दर्शाने लगा।

[8555] उनका पर्व दविस 12 दसिंबर है।

[8556] यह पहाड़ी वर्तमान में मुंतार है।

यूथमिीयस[8557] से आनंदपूर्वक शक्षिा प्राप्त की थी। वहाँ, सव्वा ने अपनी प्रार्थनाओं में रात बतिाई। और उन्हें एक दर्शन हुआ। उन्होंने परमेश्वर के एक तेजस्वी स्वर्गदूत को देखा, जसिने उन्हें वह घाटी दखिाई जसिके माध्यम से एक बार सलिोम[8558] के दक्षणि से एक धारा बहती थी, और जसिने कहा:

'यदि तुम इस नर्जिन स्थान को एक नगर की तरह बसाना चाहते हो, तो इस धारा के पूर्वी कनिारे की ओर मुड़ो, और तुम्हारे सामने एक ऐसी गुफा दखिाई देगी जसिमें कभी कसिी ने वास नहीं कयिा; वहाँ चढ़ो और बस जाओ।' वह जो *'पशुओं और जब जवान काग उससे पुकारते हैं तो उनके लिए भोजन* प्रदान करता *है'* (भजन संहति 146:9) वह तुम्हारे लिए भी प्रदान करेगा।

जब वह दर्शन समाप्त हो गया और दनि चढ़ आया, तो सव्वा उस पहाड़ी से उतर आए; ईश्वर की सहायता से, उन्होंने वह गुफा ढूंढ ली जो देवदूत ने उन्हें दर्शन में दखिाई थी, और वहीं रहने लगे। तब उनकी आयु चालीस वर्ष थी। उस वर्ष, यरूशलेम के पैट्रआर्क अनास्तासयिस का नधिन हो गया, और उनके स्थान पर मार्टरियिस को पैट्रआर्क के सहिासन पर बठिाया गया[8559] ; उसी वर्ष, सम्राट ज़ेनो ने तानाशाह बेसलिस्कि को मारकर अपना शाही अधकिार पुनःप्राप्त कयिा[8560] ।

जसि गुफा में आदरणीय सावा ने नविास ग्रहण कयिा था, उसका प्रवेशद्वार बहुत असुवधिाजनक था; इसलिए उन्होंने एक रस्सी लटकाई, जसिकी मदद से वे गुफा से उतरकर एप्टास्ट नामक झील से पानी लाते थे, जो गुफा से पंद्रह स्टेडयिम दूर स्थति थी[8561] । इस गुफा में रहते हुए, रेवरेंड ने शुरू में पास में उगने वाली जड़ी-बूटयिों पर गुज़ारा कयिा। हालाँकि, ईश्वर, जन्हिोंने सावा को वहाँ बसने का आदेश दयिा था, ने लोगों, यानी बर्बरों[8562] के माध्यम से भी उनके लिए भोजन भेजा, ठीक वैसे ही जैसे उन्होंने एक बार होरेब में पैगंबर एलयिाह के लिए कागों के माध्यम से भोजन भेजा था (3 राजा 17:5–6)। कुछ ही समय बाद, चार सारासेन (Saracens) गुज़र रहे थे; उन्होंने पूजनीय सावा की गुफा देखी और उसमें प्रवेश करना चाहा, लेकनि वे नहीं कर सके, क्योंकि प्रवेश द्वार तक पहुँचना बहुत मुश्कलि था। उन्हें ऊपर से देखकर, धन्य व्यक्ति ने उनके लिए एक रस्सी नीचे उतारी ताकि वे उस पर चढ़कर उसके पास आ सकें। गुफा में प्रवेश करने पर, सारासेंसों को सव्वा के पास कुछ भी नहीं मलिा; वे उनके जीवन-यापन और धार्मकिता के तरीके से चकति हुए और, करुणा से प्रेरति होकर, उन्हें भोजन लाने के लिए सहमत हो गए। इस प्रकार वे अक्सर उनके पास आते और रोटी, पनीर, खजूर और अन्य सामान लाते थे। और पूजनीय पति गुफा में पाँच वर्षों तक अकेले रहे, केवल ईश्वर से संवाद करते हुए और अपनी अथक प्रार्थनाओं के माध्यम से अदृश्य शत्रुओं को परास्त करते हुए। तब ईश्वर प्रसन्न हुए कि वे कई लोगों की आत्माओं को उन पर सौंप दें और उन्हें वचन के झुंड का एक मार्गदर्शक और चरवाहा बना दयिा। अर्थात्, गुफा में पाँच वर्षों के मौन प्रवास के बाद, वभिन्नि स्थानों से कई लोग उनके पास रहने की इच्छा से आने लगे; उन्होंने सभी का खुशी-खुशी स्वागत कयिा और प्रत्येक को रहने के लिए एक उपयुक्त स्थान दयिा। उन्होंने अपने लिए कोठरयिाँ बनाईं और परमेश्वर को प्रसन्न करने वाले तरीके से रहे, तथा पूजनीय सावा के सदाचारी जीवन को अपना आदर्श बनाया। थोड़े ही समय में, लगभग सत्तर भाई उनके चारों ओर इकट्ठा हो गए थे; उनमें नम्निलखिति प्रमुख थे: जॉन, जो बाद में नए मठ के मठाधीश बने; जेम्स, जन्हिोंने बाद में यॉर्डन पर एक मठ बनवाया, जसि परिगयिन के नाम से जाना जाता है[8563] ; फर्मयिन और सेवेरयिन, जनिमें से एक ने मखमास में एक मठ की स्थापना की[8564] , जबकि दूसरे ने वारखिा में एक मठ की स्थापना

[8557] सम्राज्ञी यूडोक्सयिा, थयिोडोसयिस द्वतिीय की पत्नी, की मृत्यु 460 में यरूशलेम में हुई।

[8558] सलिोम – सलिोम का झरना या तालाब और उसके बगल में बना स्नानागार यरूशलेम के दक्षणि-पूर्वी हस्सि में, मउंट ज़ायोन और मउंट मोरयिाह के तल पर स्थति थे।

[8559] यह वर्ष 478 का था। मार्टरियिस – 478 से 486 तक यरूशलेम के पैट्रआर्क।

[8560] ज़ेनो – 474 से 491 तक का बाइज़ेंटाइन सम्राट। 475 में, बेसलिस्कि ने उससे शाही सत्ता छीन ली और 477 के अंत तक शासन कयिा, जब ज़ेनो ने उसे एक कलि में कैद कर दयिा, जहाँ वह और उसका पूरा परविार भूख से मर गए।

[8561] एप्टास्ट, ग्रीक से अनुवादति, का अर्थ है 'सात-मुखी'। 16 स्टेडयिम – लगभग 4 वर्स्ट।

[8562] अर्थात्, क्रूर वदिेशी, जो इस मामले में खानाबदोश सारासेन थे।

[8563] मठ को यह नाम इसकी कलिबंदी की मीनारों से मलिा, जो ग्रीक शब्द 'याओर्ट' से लयिा गया है – जसिका अर्थ है 'मीनार' या 'कलि'। 'परिगयिन' का अर्थ है 'मीनारों वाला मठ'।

[8564] वर्तमान मखिमास।

की; जूलियिन, जो जॉर्डन पर नेस्क्लेरावा के नाम से जाना जाने वाला मठ बनाने वाले थे[8565] ; और कई अन्य पवत्रि पुरुष, जनिके नाम जीवन की शाश्वत पुस्तकों में अंकति हैं; इन सभी का नेतृत्व आदरणीय सावा ने कयिा। जो कोई भी उनके पास आता था, उन्हें वह एक उपयुक्त स्थान देता था, जसिमें एक छोटी गुफा और एक कोठरी होती थी। ईश्वर की कृपा से, स्वर्गदूतों के समान जीवन के लिए प्रयास करने वाले तपस्वयिों की संख्या सत्तर तक बढ़ गई, और सावा उनके नेता, मार्गदर्शक और चरवाहे थे। उन्होंने पहाड़ पर एक मीनार बनाने का नश्चिय कयिा, जो उनके मठ के लिए एक कलि के रूप में काम आती; उन्होंने अपने शष्यिों को इकट्ठा कयिा और इसे बनाना शुरू कर दयिा, और यह उनके महान लव्रा की नींव के रूप में काम आई।

जब इस प्रकार, भाइयों की संख्या बढ़ने लगी और धारा के उत्तरी कनिारे पर पहाड़ी पर लाव्रा ([8566]) की स्थापना हो रही थी, तो आदरणीय पति ने घाटी में, सूख चुकी मग़रबियि धारा ( ) के बीच में एक छोटा सा चर्च बनाया; और जब भी कोई पादरी नयिुक्त कयिा गया व्यक्ति उनके पास आता था, वे उनसे दव्यि लटिर्जी का अनुष्ठान करने के लिए कहते; अपनी वनिम्रता के कारण, वे स्वयं अभषिक्ति होना नहीं चाहते थे, और न ही उन्होंने भाइयों में से कसिी को पुरोहति पद पर अभषिक्ति कयिा। चूंकि वह झरना उस स्थान से दूर था, इसलिए वहाँ पर्याप्त पानी नहीं था। और इस प्रकार, एक रात, संत ने प्रार्थना करते हुए कहा:

'हे सेनाओं के प्रभु परमेश्वर! यदि यह आपकी इच्छा है कि यह स्थान आपके परम पवत्रि नाम की महमिा के लिए बसाया जाए, तो हम पर, अपने सेवकों पर, दृष्टि डालें और हमारी प्यास बुझाने के लिए हमें पानी प्रदान करें!'

जब वे प्रार्थना कर रहे थे, तो संत ने धारा से एक आवाज़ सुनी; उन्होंने उस दशिा में देखा और पूर्णमिा की रोशनी में, एक जंगली गधे को अपने खुर से जमीन खोदते और छेद पर अपने होंठ रखकर पानी पीते हुए देखा। रेवरेंड फादर तुरंत नीचे गए और उसी जगह खुद खोदने लगे जहाँ उन्होंने गधे को देखा था; थोड़ी खुदाई करने पर, सावा को झरने का पानी मलिा, और वहाँ एक प्रचुर झरना फूट नकिला, जो पूरी लावरा के लिए पर्याप्त था और कभी कम नहीं हुआ[8567] ।

एक और रात, जब सावा धारा के कनिारे चल रहे थे और दाऊद के भजन गा रहे थे, तो धारा के पश्चमि में एक खाई के कनिारे आग का एक स्तंभ प्रकट हुआ; यह जमीन में मजबूती से जड़ जमाए हुए था, और इसकी चोटी स्वर्ग को छू रही थी; और संत भोर होने तक वहाँ प्रार्थना में खड़े रहे। प्रातःकाल वह उस स्थान पर गया जहाँ उसने स्तंभ देखा था और उसे एक बड़ी, अद्भुत गुफा मलिी, जो एक चर्च की तरह थी, और जसिे मानव हाथों ने नहीं बल्कि ईश्वर के हाथ ने बनाया था; इसका प्रवेश द्वार दक्षणि की ओर था, और सूर्य की रोशनी उसमें पर्याप्त प्रकाश प्रदान करती थी। उस गुफा को सजाने के बाद, सावा ने वहाँ एक चर्च स्थापति कयिा और भाइयों को आज्ञा दी कि वे पूजा के लिए हर सप्तक और रवविार को वहाँ इकट्ठा हों: वह स्वयं वहाँ रहने चले गए, इस मानव नर्मिति नहीं चर्च के पास, एक ऊँची चट्टान पर अपने लिए एक कोठरी बनाई, और चर्च में एक गुप्त मार्ग बनाया; जसिके माध्यम से वह दनि-रात प्रार्थना करने के लिए चर्च जाता था।

भाइयों की संख्या दनि-ब-दनि बढ़ रही थी - अब वे लगभग एक सौ पचास हो गए थे - और धारा के दोनों कनिारों पर पहले ही कोठरयिाँ बन रही थीं। साथ ही, पादरयिों ने लावरा के नर्मिाण और अन्य आवश्यकताओं के लिए खींचने वाले जानवर भी प्राप्त कए। क्योंकि सावा्हा यह सुनश्चिति करने का ध्यान रखते थे कि लावरा के भीतर सभी आवश्यक सुवधिाएं उपलब्ध हों, ताकि भाइयों को लावरा छोड़कर बाहरी दुनयिा में जाने और सांसारकि कलह और व्यर्थता के संपर्क

[8565] वरखि या कार्पावरखि में मठ – जो अब खेव्रयिा के दक्षणि में बेनी-नैम है। ये सभी मठवासी बस्तयिाँ नदी यॉर्डन के मार्ग के साथ, उससे बहुत दूर नहीं, रेगस्तिान में स्थति थीं।

[8566] वर्तमान में पवत्रि संत सावस की लावरा। – जहाँ तक उनके मठ को 'लावरा' का दर्जा दए जाने की बात है, इसका अर्थ इस प्रकार है। 'लावरा' – ग्रीक शब्द से – कसिी शहर के एक हस्सि, एक गली को संदर्भति करता है; वशिेष रूप से, मठाध्यक्ष के आवास के चारों ओर शहर की गलयिों की तरह व्यवस्थति कोठरयिों की एक पंक्ति, जो एक बाड़ या दीवार से घरिी होती है। लावरा में रहने वाले संन्यासी एकान्तवासी जीवन जीते थे और तपस्या करते थे, प्रत्येक अपनी-अपनी कोठरी में रहता था, और सप्ताह के पहले और आखरिी दनिों में दैवीय सेवाओं के लिए एकत्रति होता था, जबकि शेष दनिों में सख्त मौन का पालन करता था; अन्य मठों की तुलना में लावरा में जीवन बहुत कठनि था। प्राचीन काल से, 'लावरा' नाम बड़े और महत्वपूर्ण मठों के लिए प्रयुक्त होता आया है। यह सबसे पहले मस्रि में और बाद में पादयिोटपि में प्रकट हुआ। वर्तमान में, हमारे देश में 'लावरा' नाम का उपयोग वशिेष रूप से एक सम्मान के रूप में कयिा जाता है।

[8567] संत सावस के जीवन के वंशावलीकार, भक्षिु सरिलि, जन्होंने अपने शष्यिों के वृत्तांतों के आधार पर सावस के जीवन का वर्णन कयिा, इस पर यह जोड़ते हैं: 'यही कारण है कि आज भी लावरा के केंद्र में पानी है: यह संतों को बहुत आराम देता है, और न तो सर्दयिों में बढ़ता है और न ही गर्मयिों में घटता है, भले ही लगभग हर कोई इससे पानी भरता है।'

में आने के लिए मजबूर न होना पड़े। सम्माननीय संत के कुशल मार्गदर्शन में भिक्षुओं ने अपने ध्येय के योग्य फल दिए, और उन्होंने अपने शरीर को उस अक्षयत्व से भी पहले आध्यात्मिक बना लिया जिसे हम आने वाले जीवन में प्राप्त करने की आशा करते हैं। लेकिन सावा ने उपरोक्त गुफा—अर्थात् ईश्वर द्वारा निर्मित चर्च—के अभिषेक में देरी की, क्योंकि वह एक पुरोहित के रूप में अभिषिक्त नहीं होना चाहते थे और, अपनी विनम्रता में, पादरियों में गिने जाने की इच्छा को महत्वाकांक्षी विचारों की शुरुआत और जड़ मानते थे। चर्च के ऊपर एक ऊँची, खुरदरी चट्टान पर, आदरणीय सावा ने अपने लिए एक मीनार बनवाया; और गुफा के भीतर, जैसे किसी शंख में, मीनार तक जाने वाला एक गुप्त मार्ग खोजकर, वे अपने नियम का पालन करने और अपने तपस्वी कर्म करने के लिए वहाँ एकांतवास करते थे। आदरणीय सावा की ख्याति बढ़ी, और ईश्वर-प्रेमी लोग उनके पास बहुत सारा सोना लाए, जिसका उन्होंने लावरा के निर्माण के लिए उपयोग किया। इसी प्रकार, यरूशलेम के पैट्रिआर्क, परम पावन मार्टायर, सावा से बहुत प्रेम करते थे, उन्हें अत्यधिक सम्मान देते थे, और उन्हें उनकी आवश्यकता की हर वस्तु भेजते थे।

धन्य मार्टिरियिन अपने धर्मगुरु के पद पर रहने के आठवें वर्ष में निधन हो गए, और उनके बाद सैलस्टियस[8568] ने सिंहासन संभाला; उस समय आदरणीय सव्वा अपनी अड़तालीसवीं वर्षगाँठ मना रहे थे। इस समय, कुछ भ्रष्ट भिक्षु, जो सांसारिक सुखों में लिप्त थे और *'आत्मा रहित' थे* (यहूदा 1:19)—जैसा कि धर्मग्रंथ में लिखा है—जिन्होंने लंबे समय से संत पर अन्यायपूर्वक आरोप लगाया था और हर तरह से उन्हें दुखी किया था। जैसे खरपतवार अक्सर गेहूं और दाख की बारी में कांटों के बीच उगते हैं, वैसे ही प्रेरितों में से एक भी एक विश्वासघाती निकिला[8569] , और एलीशा का एक अविश्वासी शिष्य, गेहाजी था[8570] । इन भ्रष्ट भाइयों—या यूँ कहें कि झूठे भाइयों—ने संत के खिलाफ एक साज़िश रची और पवित्र नगर के कुलपिता के पास जाकर उनसे अपने लिए एक मठाधीश नियुक्त करने का अनुरोध किया। जब उनसे पूछा गया कि वे कहाँ से हैं, तो उन्होंने उत्तर दिया:

'हम रेगिस्तान में एक एकांत धारा के किनारे रहते हैं।'

इस उत्तर से, उन्होंने धन्य सावा का नाम छिपाने की कोशिश की, क्योंकि वे जानते थे कि उनका नाम प्रसिद्ध था और हर कोई उन्हें प्यार से याद करता था।

पैट्रिआर्क ने उनसे कई बार पूछा और ज़ोर देकर पूछा कि वे कहाँ से हैं। अनिच्छा से, उन्होंने कहा कि वे एक निश्चित भिक्षु, सव्वा के नाम पर बहे वाली धारा से हैं। पैट्रिआर्क ने पूछा:

'तो फिर सव्वा कहाँ है?'

लेकिन उन्होंने, सवाल का जवाब दिए बिना, आदरणीय सावा की निंदा करना शुरू कर दिया, यह कहते हुए कि वह एक असभ्य, अनकुशल व्यक्ति था, कि वह इतने बड़े समुदाय का नेतृत्व करने में असमर्थ था, और यह कि, अपनी असभ्यता और अज्ञानता के कारण, वह ऐसी लावरा का शासन करने में असमर्थ था। उन्होंने अपनी बदनामी में यह भी जोड़ दिया कि सव्वा स्वयं दीक्षा लेना नहीं चाहता था और न ही वह अपने किसी भाई को ऐसा करने देगा। जब वे महाधर्माध्यक्ष के सामने यह बदनामी कर रहे थे, तो वहाँ एक सम्माननीय और पूजनीय व्यक्ति, किरिकि नामक, उपस्थित थे, जो मसीह के पुनरुत्थान के गौरवशाली चर्च के पुरोहित और प्रभु के जीवन-दायक क्रूस के संरक्षक थे। यह निंदा सुनकर, उन्होंने पूछा:

'क्या आपने सव्वा को उस पद पर स्वीकार किया था, या सव्वा ने आपको स्वीकार किया था?'

उन्होंने उत्तर दिया:

'साव्वा ने हमें स्वीकार किया, लेकिन वह असभ्य है और अब जब हमारी संख्या बढ़ गई है तो वह हमारा शासन नहीं कर सकता।'

तब किरिकि ने उनसे कहा:

'अगर सव्वा उस सुनसान जगह पर तुम्हें एक साथ इकट्ठा कर सके, तो ईश्वर की मदद से वह और भी अच्छी तरह से तुम्हारा मार्गदर्शन कर सकता है।'

[8568] सल्लूसियस – 486 से 494 तक यरूशलेम के पैट्रिआर्क।

[8569] अर्थात् यहूदा इस्करियोती।

[8570] 2 राजा 5:20–27। नबी एलिशा द्वारा नामान को कोढ़ से ठीक करने के बदले में धोखे से दो प्रतिभा चाँदी और दो जोड़े कपड़े प्राप्त करने के कारण, गेहाजी को स्वयं अपनी लालच के लिए कोढ़ से पीड़ित होकर नबी की उपस्थिति से निष्कासित कर दंडित किया गया।

वे इसका जवाब नहीं दे सके और चुप हो गए। और महाधर्माध्यक्ष ने मुकदमा सुबह तक के लिए टाल दिया, और तुरंत ही संत सव्वा को बुलावा भेजा, उन्हें सम्मानपूर्वक आमंत्रित किया, मानो किसी अन्य मामले के लिए हो। धन्य व्यक्ति आ गए, लेकिन पैट्रिआर्क ने उन निंदकों के बारे में उनसे कुछ नहीं कहा, न ही उन्होंने निंदकों से कुछ कहा या उन्हें फटकार लगाई; इसके बजाय, उन्होंने तुरंत पूजनीय सव्वा को, यद्यपि उनकी इच्छा के विरुद्ध, एक प्रेस्बिटिर (पादरी) के रूप में अभिषिक्त कर दिया[8571] । उन्हें अभिषिक्त करने के बाद, उन्होंने निंदकों से कहा:

'यह है तुम्हारे पिता और तुम्हारी लव्रा के मठाधीश, जिन्हें ईश्वर ने स्वर्ग से चुना है, मनुष्यों ने नहीं। मैंने तो केवल ईश्वर की पसंद की पुष्टि की है।'

यह कहने के बाद, पैट्रिआर्क ने संत सवा और उन भिक्षुओं को अपने साथ लिया और लाव्रा के लिए रवाना हो गए; उन्होंने ईश्वर द्वारा निर्मित चर्च का अभिषेक किया, पूरे लाव्रा को आशीर्वाद दिया, और सभी भाइयों को अपने मठाधीश, धन्य सवा, की आज्ञा मानने का निर्देश देकर लौट आए।

जब धन्य सव्वा की आयु पचास-तीन वर्ष की थी, ज़ेनो की मृत्यु के बाद अनास्तासियुस[8572] सिंहासन पर आरूढ़ हुआ। उसी वर्ष, आर्मेनियाई मूल का एक धार्मिक व्यक्ति, जिसका नाम यिर्मयाह था, दो शिष्यों, पतरस और पौलुस के साथ लाव्रा में आया। परम पूज्य सावा को उन्हें देखकर बहुत प्रसन्नता हुई; उन्होंने उन्हें वह गुफा दे दी जिसमें वह स्वयं पहली बार नदी के किनारे अकेले रहते थे, और उन्हें शनिवार और रविवार को छोटी चर्च में आर्मेनियाई रीति से अपनी प्रार्थना सभा करने की अनुमति दे दी; इस प्रकार, धीरे-धीरे लाव्रा में आर्मेनियनों की संख्या बढ़ गई। उसी समय, हमारे पूजनीय पिता जॉन, जिन्हें मौन व्यक्ति के नाम से जाना जाता था, लावरा में आए; वे कोलोना शहर में एक बिशप थे, लेकिन, ईश्वर के लिए, उन्होंने अपना बिशप पद त्याग दिया और अपनी पदवी छिपाकर, लावरा में एक साधारण भिक्षु के रूप में परिश्रम किया।

आदरणीय सव्वा ने संत यूथिमियस महान के उदाहरण का अनुसरण किया, जो आमतौर पर हर साल 14 जनवरी को रेगिस्तान में चले जाते थे और वहाँ पूरे बड़े उपवास (ग्रेट लेन्ट) को बिताते थे। उनके उदाहरण का अनुसरण करते हुए, पूजनीय सव्वा ने भी जनवरी के उसी महीने में ऐसा ही किया, हालांकि उसी दिन नहीं, क्योंकि उन्होंने लाव्रा में महान यूथिमियस के पर्व का उत्सव मनाने के लिए बीस तारीख तक प्रतीक्षा की; स्मरणोत्सव के बाद, वे मरुस्थल में चले जाते थे, और लोगों से अलग होकर, विचार और प्रार्थना में ईश्वर के समीप आकर, पाम शनिवार तक वहीं रहते थे।

एक दिन, अपनी आदत के अनुसार, वह लाव्रा से निकल गया और मृत सागर के पास चलते हुए, उसने एक छोटा सा सुनसान द्वीप देखा[8573] ; वह वहाँ अपने उपवास के दिन बिताना चाहता था और उसी की ओर चल पड़ा; लेकिन राक्षसों की ईर्ष्या ने उसे रोक दिया, और वह रास्ते में मिले एक गड्ढे में गिर पड़ा, जिससे धुआँ और आग निकल रहे थे जैसे किसी अंधेरी भट्टी से। सावा का चेहरा और दाढ़ी झुलस गए, शरीर के अन्य हिस्सों में चोटें आईं, और वह गंभीर रूप से बीमार पड़ गया। जब वह मठ लौटा, तो भाइयों ने उसे केवल उसकी आवाज़ से पहचाना: उसका चेहरा इतना बुरी तरह झुलस गया था। और वह कई दिनों तक वहीं पड़ा रहा, उसकी आवाज़ चली गई थी, जब तक कि दिव्य शक्ति ऊपर से उस पर अवतरित नहीं हुई और उसे चंगा नहीं कर दिया, और उसे अशुद्ध आत्माओं पर अधिकार प्रदान किया। जहाँ तक उसकी दाढ़ी की बात है, वह पहले जैसी वापस नहीं उगी; वह छोटी और पतली हो गई, और उसने अपनी दाढ़ी की लंबाई में कमी के लिए ईश्वर का धन्यवाद किया, कहीं ऐसा न हो कि वह उसकी सुंदरता पर घमंड करने लगे।

अगले वर्ष, अपनी प्रथा के अनुसार, वह अपने शिष्य अगापटिस के साथ फिर से रेगिस्तान में चले गए। कुछ दिनों के बाद, अगापटिस थका और भूखा रेत पर लेट गया और सो गया, जबकि धन्य सव्वा उससे कुछ दूरी पर खड़े होकर प्रार्थना कर रहे थे; अचानक एक विशाल सिंह प्रकट हुआ, सोए हुए अगापटिस के ऊपर आकर रुक गया और उसे सिर से पैर तक सूंघने लगा। अपने शिष्य के ऊपर सिंह को देखकर, धन्य सव्वा को डर लगा कि वह सोए हुए को खा जाएगा, और उन्होंने तुरंत अपने शिष्य के लिए विनती की, कि ईश्वर उसे उस जानवर से बचाए। ईश्वर ने अपने सेवक की प्रार्थना सुनी, सिंह के जबड़े बंद कर दिए, और सिंह, अगपटिस को कोई हानि पहुँचाए बिना, जैसे चाबुक से मारा गया हो, जंगल में भाग गया।

[8571] इसलिए उन्हें 'समर्पित' के नाम से जाना जाने लगा, यानी आधुनिक शब्दावली में, *एक हायरोमोंक*: क्योंकि उन दिनों में भिक्षु और मठाधीश आम तौर पर शायद ही कभी संन्यास ग्रहण करते थे।

[8572] अनास्तासियस प्रथम डिकोर, या थ्रेसियन, बीजान्टिन सम्राट, ने 491 से 518 तक शासन किया।

[8573] यह मृत सागर का एकमात्र द्वीप है, जो जॉर्डन नदी के मुहाने के पश्चिम में बहुत दूर नहीं है।

भागते समय, उसने अपनी पूंछ से सोए हुए व्यक्ति के चेहरे पर वार किया; वह युवक जाग गया, शेर को देखकर कांप गया, और पवित्र पिता की ओर दौड़ा, जबकि सावा ने उसे समझाना शुरू किया कि वह लंबी नींद में न मग्न हो, कहीं वह एक दिन जानवरों, विशेषकर अदृश्य जानवरों का भोजन न बन जाए।

आगामी वर्षों में से एक वर्ष में, वह धन्य व्यक्ति, अपनी प्रथा के अनुसार और उसी शिष्य के साथ, यॉर्डन के उत्तर में रेगिस्तान में चल रहे थे और उन्हें एक पहाड़ में एक गुफा मिली, और उसमें एक दूरदर्शी तपस्वी मिला। जब उन्होंने प्रार्थना की और बोलना शुरू किया, तो तपस्वी ने आश्चर्य से पूछा:

'हे अद्भुत सव्वा, आप यहाँ हमारे पास कैसे आए? या इस स्थान को आपको किसने दिखाया? देखो, मैं यहाँ परमेश्वर की कृपा से अड़तीस साल से हूँ, और मैंने एक भी व्यक्ति को नहीं देखा है: आप यहाँ कैसे आए?'

धन्य सव्वा ने उत्तर दिया:

'यह ईश्वर ही थे, जिन्होंने तुम्हें मेरा नाम बताया, और जिन्होंने मुझे यह स्थान भी दिखाया।'

एक आत्मा को झकझोर देने वाली बातचीत के बाद, उन्होंने एक-दूसरे को चूमा, और सव्वा अपने शिष्य के साथ रेगिस्तान में चले गए। लौवरा लौटने का समय नजदीक आ रहा था, और सव्वा ने अपने शिष्य से कहा:

'चलो, भाई, हम गुफा में ईश्वर के सेवक को विदा करें।'

जब वे पहुँचे, तो उन्होंने उन्हें पूर्व की ओर मुख करके घुटने टेके हुए पाया; उन्होंने सोचा कि वे प्रार्थना कर रहे हैं, और वे काफी देर तक इंतजार करते रहे। जैसे ही दिन ढलने लगा, और सावा ने देखा कि विरिष्ठ अभी भी अपनी प्रार्थना से नहीं उठे थे, तो उन्होंने कहा: 'हमें आशीर्वाद दीजिए, पिताजी।'

लेकिन कोई उत्तर नहीं आया।

साव्वा उसके और करीब गए और देखा कि उसकी मृत्यु हो चुकी थी। फिर साव्वा ने अपने शिष्य की ओर मुड़कर कहा:

'मेरे बेटे, पास आओ; चलो हम संत के शरीर को उचित अंतिम संस्कार देते हैं: हमें ईश्वर ने यहीं के लिए भेजा है।'

मरहूम पर पारंपरिक अंतिम संस्कार की प्रार्थना करने के बाद, उन्होंने उसे उसी गुफा में दफनाया, मुंह पर एक पत्थर रखकर उसे सील कर दिया, और लाव्रा लौट आए।

जिस वर्ष ईश्वर द्वारा निर्मित चर्च का अभिषेक किया गया था, उसी वर्ष धन्य जॉन के पिता, जो इसौरिया के जिले में महान अधिकार रखते थे[8574] , अलेक्जेंड्रिया में निधन हो गया; और उनकी धन्य माता, सोफिया, जो अब बहुत वृद्ध हो चुकी थीं, ने अपनी सारी संपत्ति बेचकर, बहुत सारा धन लेकर अपने पुत्र सव्वा के पास यरूशलेम आ गईं। उन्होंने उनका स्वागत किया और उन्हें वेला धारण करने के लिए मना लिया; कुछ समय तक एक नन के रूप में रहने के बाद, वह प्रभु के पास चली गईं। सव्वा ने उनके द्वारा लाए गए पैसे मठ की जरूरतों और अतिथि-गृहों के निर्माण पर खर्च कर दिए; उन्होंने यरीहो के पास एक[8575] और लावरा में दूसरा बनाया, ताकि पहला सामान्य यात्रियों को और दूसरा भिक्षुओं को आश्रय दे सके। जब लावरा में अतिथि गृह का निर्माण चल रहा था, तो पूजनीय सव्वा ने मठ के पशुओं के साथ एक भाई को वहाँ से भवन के लिए लकड़ी लाने के लिए यरीहो भेजा। वापसी की यात्रा में, बहुत गर्मी थी, और भिक्षु को भयंकर प्यास लगी; लेकिन चूंकि उस क्षेत्र में कहीं भी पानी नहीं मिला—क्योंकि वह इलाका रेगिस्तानी और सूखा था—वह गर्मी से थककर जमीन पर गिर पड़ा। फिर उसे पवित्र वृद्ध की याद आई और उसने पुकारा:

'हे मेरे आबा सावा के प्रभु ईश्वर, मुझे न छोड़ो!'

और तुरंत उसके ऊपर एक बादल प्रकट हुआ, जिसने ओस गिराई और उसे तथा लकड़ी ढो रहे मवेशियों को ठंडक पहुँचाई; और यह बादल लव्रा तक उसके ऊपर बना रहा, उसे छाँव देता रहा और गर्मी से बचाता रहा। यह सब उनके पवित्र पिता सव्वा की प्रार्थनाओं के कारण हुआ, जिनका नाम उन्होंने अपनी विपत्ति में पुकारा था।

एक बार, लेंट के दौरान, पूजनीय सव्वा लावरा के उत्तर में बीस स्टेडियम दूर स्थित माउंट कास्टेली पर चढ़ना चाहते थे[8576] ; वह पहाड़ लोगों के लिए दुर्गम था और अपनी खतरनाक और कठिन चढ़ाई तथा वहां हुई भयानक घटनाओं

[8574] इसौरिया एशिया माइनर के दक्षिण में एक छोटा पर्वतीय क्षेत्र है।

[8575] जेरिको यॉर्डन नदी के पश्चिमी तट पर स्थित एक शहर है, जो यरूशलेम से बहुत दूर नहीं है।

[8576] कास्टेली – जिसे अब खिरबेत मिर्द के नाम से जाना जाता है, जो संत साव्वा द सैंक्टिफाइड की लव्रा से लगभग साढ़े तीन वर्स्ट की दूरी पर स्थित है

के कारण डरावना माना जाता था: उस पहाड़ पर कई राक्षस रहते थे और वे विभिन्न भूत-प्रेतों के रूप में राहगीरों को डराते थे।

हालाँकि, पूजनीय पिता ने, भजन संहिताकार के वचनों के अनुसार, सर्वोच्च को अपना शरणस्थल चुनकर (भजन संहिता 90:9), उन्होंने उस पर्वत पर चढ़ाई की, उसे पवित्र क्रूस के दीपक से निकाले गए तेल से चारों ओर छिड़का, और खुद को क्रूस के चिह्न से एक अभेद्य दीवार की तरह ढककर, महा-व्रत की पूरी अवधि वहाँ रहे। लेकिन शुरू में, उन्हें हर दिन राक्षसों से लड़ना पड़ता था; वे कभी-कभी जानवरों के रूप में, कभी-कभी सरपटों में बदलकर, और कभी-कभी पक्षियों के रूप में उन पर हमला करते थे, और चीखें, कराहें और शोर मचाते थे, ताकि मानवीय स्वभाव के कारण आदरणीय पिता भयभीत हो गए और पहाड़ से उतरने की कगार पर आ गए। लेकिन जिसने एक बार एंथनी महान को राक्षसों के खिलाफ इसी तरह के संघर्ष में मजबूत किया था[8577] , वह इस संत के सामने भी प्रकट हुआ और उसे क्रूस की शक्ति पर भरोसा रखते हुए साहसी होने की आज्ञा दी। और धन्य व्यक्ति बिना किसी डर के रहा, और प्रार्थना तथा क्रूस के चिह्न के द्वारा राक्षसों द्वारा पैदा किए गए सभी भयों को अपने से दूर भगाता रहा। महा-व्रत के अंत के करीब, जब एक रात संत इस स्थान को वहाँ बसे अशुद्ध आत्माओं से शुद्ध करने के लिए प्रार्थना कर रहे थे, तो राक्षसों ने अचानक उन पर अपना अंतिम और सबसे भयानक आक्रमण कर दिया: उनमें से एक बड़ी भीड़ प्रकट हुई – जैसा कि वे आमतौर पर करते हैं, जानवरों, रेंगने वाले जीवों और पक्षियों के रूप में – और उन्होंने एक ज़ोरदार चीख के साथ संत पर हमला किया; ऐसा लगा मानो पूरा पहाड़ काँप रहा हो। लेकिन संत बिल्कुल भी नहीं डरे, और ईश्वर से प्रार्थना करते रहे। तब राक्षसों ने चिल्लाकर कहा:

'हाय, सव्वा, तुम हमें कितना कष्ट देते हो! तुम्हारे लिए घाटी में नदी के किनारे बसना ही काफी नहीं था; तुम्हारे लिए गुफा और चट्टान होना ही काफी नहीं था: तुमने तो उस रेगिस्तान को भी रहने योग्य बना दिया है जिससे तुम गुज़रे थे! तुम यहाँ तक, हमारे निवास में, हमें भगाने के लिए आ गए हो!' देखो, हम पहले ही इस जगह को छोड़ रहे हैं; हम तुम्हारा विरोध नहीं कर सकते, क्योंकि ईश्वर तुम्हारी मदद कर रहे हैं!

और तुरंत ही, रोते-बिलखते, जोर-जोर से चीखों और एक भयानक कोलाहल के साथ, वे उसी रात कौवों के रूप में पहाड़ से उड़ गए। उस पहाड़ से बहुत दूर नहीं, चरवाहे अपनी भेड़ों के झुंड के साथ रात बिता रहे थे; उन्होंने पहाड़ से उड़ते हुए राक्षसों को देखा, उनकी चीखें सुनीं, और इस बात की सूचना देने के लिए पूजनीय सावा के पास आए। उन्होंने, राक्षसों के निष्कासन के लिए ईश्वर का धन्यवाद करने के बाद, उपवास के दिनों के बीत जाने पर भाइयों के साथ मिलकर मसीह के पुनरुत्थान के आगामी पर्व का जश्न मनाने के लिए लावरा लौट आए। जब त्योहार के दिन समाप्त हो गए, तो वे अपने साथ कई भाइयों को लेकर कास्टेली लौट आए और स्थल को साफ करके कोठरियाँ बनाने लगे; काम करते समय, उन्हें पहाड़ी के नीचे एक बड़ा गुंबददार घर मिला, जो सुंदर पत्थर से खूबसूरती से बना और रहने के लिए उपयुक्त था; उन्होंने इस घर को साफ करके सजाया, इसे एक चर्च में बदल दिया, और इसे पवित्र कर दिया। इस प्रकार आदरणीय व्यक्ति ने यहाँ एक मठ की स्थापना की। जब यह मठ स्थापित हो रहा था, तो एक बार उनके पास सारा भोजन समाप्त हो गया। और फिर प्रभु का स्वर्गदूत एक दर्शन में सेंट बेथलेहेम के पास के मठ के मठाध्यक्ष मार्शियन के पास प्रकट हुआ, जो[8578] थे, और कहा:

'और तुम यहाँ, मार्शियन, शांति से बैठे हो, तुम्हारे पास तुम्हारी हर ज़रूरत की चीज़ है, जबकि ईश्वर के सेवक, सावा, ईश्वर के प्रेम के लिए अपने भाइयों के साथ कास्टेली में परिश्रम कर रहे हैं, और उनके पास भोजन या पानी की कोई व्यवस्था नहीं है, और उन्हें उनकी ज़रूरत की चीज़ें लाने वाला कोई नहीं है। इसलिए, उन्हें बिना देरी के भोजन भेजो, कहीं वे भूख से बेहोश न हो जाएँ।'

मार्शियन ने तुरंत मवेशियों पर विभिन्न प्रकार का सामान लादकर उन्हें कास्टेली में आदरणीय सव्वा के पास भेज दिया; आदरणीय सव्वा ने, भेजा गया सामान प्राप्त कर, ईश्वर का धन्यवाद किया, जो अपने सेवकों का पालन-पोषण करते हैं।

एक तपोवन स्थापित करने के बाद, सव्वा ने वहाँ पर्याप्त संख्या में भाइयों को इकट्ठा किया और इसे पॉल नामक एक तपस्वी को सौंप दिया, जो अपने शिष्य थियोडोर के साथ वहाँ लंबे समय से रहता था। लेकिन कुछ समय बाद पॉल का

[8577] अर्थात्, प्रभु यीशु मसीह। जो, सबसे कठिन प्रलोभनों के बीच, संत एंथनी महान को एक उज्ज्वल बादल के रूप में प्रकट हुए और उन्हें मजबूत किया, एक दिव्य स्वर में उन्हें आश्वस्त करते हुए कि वे हमेशा उनके साथ हैं।

[8578] बेथलहम – यहूदा के कुल में एक छोटा सा शहर, यरूशलेम से दक्षिण में दो घंटे की यात्रा पर – मसीह के जन्मस्थान।

नधिन हो गया, और थयिोडोर ने प्रबंधन संभाल लयिा। वह मठ में अपने भाई सर्जयिस और एक अन्य पॉल— —अपने चाचा को लाया, जन्हिोंने बाद में कास्टेलयिा का नेतृत्व कयिा और बाद में ऐले और अमाफुंटे में बशिप के रूप में कार्य कयिा[8579] ।

कास्टेलयिा में एक सेनोबयिम की स्थापना करने के बाद, पूजनीय सावा ने इसे सदाचारी पुरुषों, तपस्या के प्रयासों में नपिुण भक्षिुओं से भरने का हर संभव प्रयास कयिा; जहाँ तक मठवासी संस्कार लेना चाहने वाले सामान्य लोगों, और बनिा दाढ़ी वाले युवकों का सवाल है, उन्होंने उन्हें न तो कास्टेलयिा सेनोबयिम में और न ही लावरा में रहने की अनुमतदिी; उनके लएि उन्होंने उत्तरी ओर एक और छोटा मठ बनाया और नवोदतिों को मठवासी जीवन के नयिमों में प्रशक्षिति करने के लएि उन्हें अनुभवी मार्गदर्शक प्रदान कएि। नवोदतिों को सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण रूप से भजन संहति और पूजा-पाठ के गायन की पूरी वधिा सीखनी होती थी, साथ ही उन्हें पूरे मठवासी नयिमों से भी परचिति होना होता था, फरि उन्हें तपस्या के प्रयासों और परश्रिमों के आदी होना था, अपने मन को सांसारकि और व्यर्थ वचिारों से बचाना था और बुरी प्रवृत्तयिों का वरिोध करना था, अपनी इच्छाओं को नयिंत्रति करना था और आज्ञाकारी, नम्र, वनिम्र, मौन, सतर्क और सावधान रहना था, और खुद को दुश्मन के प्रलोभनों से बचाना था। जो लोग मठवासी जीवन के इन सद्धिांतों में सफलतापूर्वक पारंगत हो जाते थे, उन्हें रेवरेंड फादर द्वारा ग्रेट कनिोवयिा या लाव्रा में स्थानांतरति कर दयिा जाता था, जबकि कुछ नवसखिुओं को, वशिेष रूप से छोटे लोगों को, उन्होंने पूजनीय पति थयिोडोसयिस के पास भेजा, जो तब तक काफसिमाटा के चर्च को छोड़कर लाव्रा के पश्चमि में पैंतीस स्टेडयिम दूर एक मठ स्थापति कर चुके थे[8580] ।

वे दोनों, सावस और थयिोडोसयिस, एकमत थे और एक-दूसरे से पूरी तरह सहमत थे; इस कारण से, यरूशलेम के लोगों ने उन्हें पतरस और पौलुस की जोड़ी के समान, नई प्रेरति जोड़ी कहा। सभी मठाधीशों का अधकिार उन्हें सौंपा गया। यह इस प्रकार हुआ। धन्य अर्कमिंड्राइट मार्शयिन की मृत्यु के बाद, लावरा और मठों, पहाड़ों और रेगस्तिानों के सभी भक्षिु, उस समय बीमार पड़े पैट्रआर्क सालस्टयिस से मलिने के लएि बशिप के आवास पर एकत्रति हुए; और, सामान्य सहमतसिे, उन्होंने थयिोडोसयिस और सावस को उनके समक्ष प्रस्तुत कयिा, ताकि वह उन्हें पवत्रि नगर के पास स्थति सभी मठों के आर्चमिांड्राइट और अधीक्षक नयिुक्त कर सकें, क्योंकि ये पवत्रि पुरुष तपस्वी थे, उनके पास कोई संपत्ति नहीं थी, वे जीवन और वचन दोनों में वशिष्टि थे, और दैवीय वरदानों से परपिूर्ण थे। उस समय से, आदरणीय थयिोडोसयिस ने सामुदायकि मठों का संचालन कयिा, जबकि आदरणीय सावस ने एकांतवासयिों का संचालन कयिा।

जब पैट्रआर्क सैलुस्टयिस के नधिन के बाद एलयिाह[8581] उनके स्थान पर सहिासनारूढ़ हुए, उस समय धन्य सावा अपनी लाव्रा से सटी एक भूमि का टुकड़ा बेच रहे थे; वे उस पर दूर-दराज से आने वाले भक्षिुओं के लएि कोठरयिाँ बनाना चाहते थे। हालाँकि मालकि बहुत सोना माँग रहा था, जबकि उस समय वृद्ध के पास केवल आधा ज़ोलोटत्सिा[8582] था; फरि भी, ईश्वर में अपनी आशा रखकर, जनि पर वह गहराई से और प्रेमपूर्वक वशि्वास करते थे, सव्वा ने वक्रिेता से कहा:

'भाई, इसे सुबह तक की रसीद के तौर पर ले लो; और अगर मैं सुबह पूरी रकम नहीं चुका पाता, तो यह रसीद मेरे पास ही रह जाए।'

रात के दौरान, जब भोर हो रहा था, संत प्रार्थना में खड़े थे; अचानक एक अजनबी आया और उनके हाथों में एक सौ सत्तर सोने के सक्कि रखकर, यह बताए बनिा कि वह कौन था या कहाँ से आया था, तुरंत चला गया। ईश्वर की व्यवस्था से चकति होकर और ईश्वर का धन्यवाद करने के बाद, आदरणीय संत ने वक्रिेता को पैसा वापस कर दयिा और दूर-दराज के देशों से आने वाले भाइयों के रहने के लएि एक दूसरा अतथिि गृह बनाया। उन्होंने कास्टेलएिट कनिोवयिा के लएि दो आश्रय-गृह भी खरीदे, एक पवत्रि शहर में, डेवडि के टावर के पास[8583] , और दूसरा यरीको में।

[8579] अमाफुंट - साइप्रस द्वीप पर एक शहर, जसिे अब पैलयिो-लीसो के नाम से जाना जाता है। ऐला - फलिस्तिीन का सबसे दक्षणिी शहर, जो लाल सागर की खाड़ी के अंदर गहराई में स्थति था; आज यह अक़बा के पास खंडहरों में पड़ा है।

[8580] काफसिमाटा का चर्च, जसिका ग्रीक में अनुवाद 'सीट' है, यरूशलेम के बाहरी इलाके में 'प्राचीन सीट' के नाम से जाने जाने वाले स्थान पर, परमेश्वर की परम पवत्रि माता के सम्मान में एक धर्मनष्ठि वधिवा द्वारा बनाया गया था। इस स्थान का नाम कांस्टेंटनि महान द्वारा वहाँ स्थापति 'सीट' या ऊँचे मंच के नाम पर पड़ा, जहाँ बाद में लंबे समय तक पवत्रि क्रूस के उत्थान का अनुष्ठान मनाया जाता था।

[8581] एलयिह द्वतिीय – 494 से 517 तक यरूशलेम के पैट्रआर्क।

[8582] ज़ूलातत्सिा – सोना, चेरवोनत्सि।

[8583] डेवडि का टावर सयिोन के उत्तरी कोने पर स्थति है, जहाँ पर्वत श्रृंखला उत्तरी पहाड़यिों से मलिती है, जाफ़ा गेट के पास, जहाँ अब एल-कल्ला का कलि खड़ा है, जो वभिन्नि आकारों और अनयिमति आकृतयिों के कई टावरों से बना है।

उस समय, संत थियोडोसियस महान ने इस चर्च को छोड़ दिया और एक सामुदायिक मठ की स्थापना की, जिसमें लगभग 700 भाई रहते थे। यह मठ संत साव्हा की लावरा से छह वर्स्ट से थोड़ी अधिक दूरी पर स्थित था।

उस समय, इसौरिया के मूल के दो भाई, थियोडुलस और गेलासियस नामक, लाव्रा में आए; वे, मानो, दूसरे बेज़ालेल और ओहोलीआब थे, जो मंडप के कुशल निर्माता थे (निर्गमन 31:2–6), जिन्हें ईश्वर ने आदरणीय सावा के पास भेजा था; उनकी मदद से, उन्होंने अंततः लाव्रा का निर्माण पूरा किया। उन्होंने और कोठरियाँ जोड़ीं, एक अस्पताल और एक बेकरी बनाई, धारा के पास एक बपतिस्मा का कुंड, और परमेश्वर की अति पवित्र माता को समर्पित एक बड़ा चर्च बनाया; वह चर्च, जो मनुष्य के हाथों का बना नहीं था, जिसे परमेश्वर ने एक आग के स्तंभ के माध्यम से पूजनीय पिता को दिखाया था, पहले ही बहुत छोटा हो गया था और सेवाओं के दौरान पूरे समुदाय को समा नहीं सकता था, क्योंकि उनकी संख्या बहुत बढ़ गई थी; इसलिए, इसके पास, सव्वा ने एक और चर्च, बड़ा और अधिक विशाल, बनाया जो परमेश्वर की अति पवित्र माता को समर्पित था; इसका अभिषेक पैट्रिआर्क एलियाह ने किया था। सावास ने आदेश दिया कि मिंडली को ईश्वर की महिमा के लिए परम पवित्र माता ईश्वर की इस चर्च में इकट्ठा होना चाहिए, जबकि उन्होंने अर्मेनियाई लोगों को एपिफेनी के चर्च में स्थानांतरित कर दिया और वहां रविवार और प्रमुख त्योहारों के दिनों में पूरी रात जागरण स्थापित किया।

उस समय कुछ अर्मेनियाई भाइयों ने पीटर, जिसे फुलोन के नाम से जाना जाता था, की व्यर्थ विधर्मी शिक्षाओं का अनुसरण किया[8584] : उन्होंने एंजेलिक त्रिसगियन में ये शब्द जोड़े:

– हमारे लिए सलीब पर चढ़ाए गए, हम पर दया करो।

भाइयों के बीच इस त्रुटि को जड़ से मिटाने के लिए, धन्य सव्वा ने अर्मेनियाई लोगों को त्रिसगियोन को अर्मेनियाई में नहीं, बल्कि ग्रीक में गाने का आदेश दिया।

और इस प्रकार उन्होंने पूरी प्रार्थना सभा अर्मेनियाई में गाई, लेकिन त्रिसगियोन ग्रीक में; और इस तरह, अर्मेनियाई लोगों ने त्रिसगियोन में फुलोन के गलत शब्दों को जोड़ना बंद कर दिया।

[8585]सावास ने सब कुछ बहुत अच्छी तरह से संचालित किया। लेकिन एक बार फिर, उपरोक्त बदनाम करने वालों ने, शैतान द्वारा उकसाए जाकर, उनके सुशासन से ईर्ष्या की और उनसे नफरत में उठ खड़े हुए। उन्होंने अपने पक्ष में चालीस तक भाइयों को खींच लिया, जो मठवासी जीवन में अनुभवहीन, भ्रष्ट चरित्र के और मूर्ख थे, और उन्होंने संत को बहुत परेशानी दी। तब सव्वा, जो राक्षसों के विरुद्ध अपनी लड़ाई में प्रबल लेकिन लोगों के प्रति निम्र था, उनके अनुचित क्रोध के आगे झुककर, लाव्रा छोड़ गया, स्किथोपोलिस की भूमि[8586] में चला गया और गादरेनियन नामक नदी के पास रेगिस्तान में बस गया। एक शेर का बिल पाकर, वह उसमें प्रवेश किया और प्रार्थना करने के बाद, शेर के बिल पर सोने के लिए लेट गया, क्योंकि रात हो चुकी थी। आधी रात को, एक शेर आया और सोते हुए संत को उसके बिल पर पाकर, उसे अपने दाँतों से उसके कपड़ों से पकड़ लिया और उसे गुफा से बाहर खींच लिया, ताकि वह अपनी जगह उसे दे दे। तथापि, वह आदरणीय व्यक्ति जाग गया और भयानक शेर को देखकर डरा नहीं; इसके बजाय, वह तुरंत उठ खड़ा हुआ और अपनी मध्यरात्रि की प्रार्थनाएँ करने लगा, जबकि शेर बाहर चला गया और तब तक प्रतीक्षा करता रहा जब तक उसने

[8584] मोनोफिसाइट विधर्म (5वीं शताब्दी के दूसरे भाग में) के प्रसार के दौरान, जिसने यह दावा किया कि यीशु मसीह में, गुप्त रूप से, एक एकल दिव्य स्वभाव निवास करता था जिसने मानवीय स्वभाव को आत्मसात कर लिया था, एक निश्चित पीटर फुलोन, जिन्हें कनाफेई के नाम से भी जाना जाता है, जिसका अर्थ है 'कपड़ा पीटने वाला', क्योंकि उन्होंने अपनी युवावस्था में इस व्यवसाय को किया था (फुलोन कपड़ा पीटने वाले के लिए लैटिन शब्द है, जबकि कनाफेई ग्रीक शब्द है), जब वे अभी भी एक पुरोहित थे (बाद में वे अंऀoओकिया के झूठे पैट्रिआर्क बने), ने 'ट्रिसैगियन' में जोड़ दिया ("हे पवित्र परमेश्वर, हे पवित्र सर्वशक्तिमान, हे पवित्र अमर, हम पर दया करो") – "हमारे लिए सूली पर चढ़ाया गया"। चूँकि वह एक मोनोफिज़ाइट था (यानी वह मसीह में दो नहीं बल्कि एक दिव्य इच्छा को मानता था), उसने इस जोड़ के द्वारा यह व्यक्त करने का इरादा किया कि उद्धारकर्ता के दुखों में केवल उसकी दिव्यता ही नहीं बल्कि संपूर्ण पवित्र त्रिमूर्ति ने भी पीड़ा सहन की। पितरस के अनुयायियों ने थियोपास्काइट्स नामक एक अलग संप्रदाय का गठन किया, जिससे ऑर्थोडॉक्स जगत में बहुत चिंता पैदा हो गई। बाद में, यह जोड़, पूर्व के ऑर्थोडॉक्स चर्चों की निराशा के बावजूद, - गलतफहमियों और ग्रीक शब्दों और अभिव्यक्तियों की समझ की कमी के परिणामस्वरूप - अर्मेनियाई चर्च में पहुँच गया, जो ऑर्थोडॉक्सी के प्रति विफादार रहा था, जहाँ इसका उपयोग आज भी धार्मिक अनुष्ठानों में किया जाता है।

[8585] ट्रांसजॉर्डन में, यर्मूक नदी के किनारे, वर्तमान गादारा शहर के पास, जो अब शरियात अल-मेनादरि के नाम से जाना जाता है, निकटवर्ती एमकेस (Mkes) के पास।

[8586] स्किथोपोलिस, जो अब बैसान है, फिलिस्तीन का एक शहर, दमिश्क से मिस्र तक के महान प्राचीन कारवाँ मार्ग पर स्थित था, जो गेनेसरेथ झील के पूर्वी तट के साथ-साथ चलता था, जॉर्डन को पार करता था और मिस्र की ओर बढ़ता था। स्किथोपोलिस यरूशलेम से 100 वर्स्ट की दूरी पर स्थित था

नरि्धारति प्रार्थनाएँ पूरी नहीं कर लीं। अपनी आधी रात की प्रार्थना समाप्त करने के बाद, संत उसी स्थान पर फरि से बैठ गए जहाँ शेर लेटा था, और शेर एक बार फरि से अंदर आया; अपने दाँतों से उनके चोगा की कनिारी पकड़कर, उसने उस पवत्रि संत को गुफा से बाहर खींचना शुरू कर दयिा। तब संत ने शेर से कहा:

'हे दानव! यह गुफा हम दोनों के लएि काफी वशिाल है, और हम साथ रह सकते हैं: एक ही सृष्टकिर्ता ने हम दोनों को बनाया है। लेकनि अगर तुम मेरे साथ नहीं रहना चाहते, तो तुम्हारे लएि बेहतर है कि तुम इस जगह को छोड़ दो: मैं तुमसे अधकि योग्य हूँ, क्योंकि मुझे ईश्वर के हाथों बनाया गया था और उनकी ही छवि में सम्मानति कयिा गया था।'

यह सुनकर, शेर वृद्ध से लज्जति हो गया और चला गया।

स्कैथोपोलसि और गदारा के लोगों को पता चला कि धन्य व्यक्ति उस गुफा में रह रहे थे, और वे उनके पास आने लगे। उनमें बेसलि नाम का एक युवक भी था, जसिने संसार का त्याग कर दयिा था, आदरणीय पतिा सव्वा के अधीन संन्यासी की शपथ ली थी, और उनके साथ रहने चला गया था। डकैतों को बेसलि के मुंडन के बारे में पता चला और उन्होंने सोचा कि वह अपने साथ बहुत सारा सोना लेकर आदरणीय सावा की गुफा में आया है, क्योंकि यह युवक कुलीन और अमीर घर का था। रात में, डकैतों ने उन पर हमला कयिा, लेकनि उन्हें उनके पास कुछ भी नहीं मलिा और सांसारकि वस्तुओं से उनकी नरि्लप्तिता को देखकर हैरान होकर चले गए। और अचानक उन्होंने देखा कि दो बड़े, भयानक सहि उनकी ओर आ रहे थे। उन्होंने सोचा कि ईश्वर अपने सेवकों पर हमला करने की हम्मित करने के लएि उन्हें दंडति कर रहे थे। और उन्होंने ज़ोर से आवाज़ में जानवरों से पुकारा:

'हम आपसे पतिा सव्वा की प्रार्थनाओं के लएि वनिती करते हैं, कि आप रास्ते से हट जाएँ और हमारे रास्ते में न आएँ!'

संत सव्वा का नाम सुनते ही, शेर ऐसे भागे मानो कोड़े से भगा दएि गए हों। इस चमत्कार से चकति डाकू, पूजनीय पतिा के पास लौट आए और उन्हें जो हुआ था वह बता दयिा; उन्होंने अपने बुरे कर्मों से तौबा की, डकैती का जीवन त्याग दयिा, और अपने श्रम के फल से जीने लगे।

जब इस घटना की खबर फैली, तो बहुत से लोग सव्वा के पास आने लगे; क्योंकि कुछ ही दनिों में उन्होंने अपने लएि एक कुटयिा बना ली थी। लेकनि जैसे ही सव्वा ने देखा कि सांसारकि लोग उन्हें परेशान करने लगे हैं, वे एकांत और शांति की तलाश में एक पक्षी की तरह, चुपचाप एक अन्य सुनसान जगह पर चले गए; और उन्होंने भाईचारे को प्रभु के हवाले कर दयिा, और उनका नेतृत्व करने के लएि एक मठाधीश नयिुक्त कयिा। काफी समय मौन में बतिाने के बाद, आदरणीय संत एक बार फरि लावरा लौट आए, इस उम्मीद में कि असंतुष्ट लोग अपनी शकिायत और द्वेष बंद कर चुके होंगे; लेकनि यह पता चला कि वे सुधर नहीं थे, बल्कि वे अपना द्वेष पालते रहे, और उनकी संख्या भी बढ़कर लगभग साठ पुरुष हो गई थी। वे उनके लएि इस तरह शोक मना रहे थे मानो वे खोई हुई आत्माएँ हों और उन्होंने उन्हें एक पतिा के प्रेम से फटकार लगाई: उन्होंने उनकी अभद्रता का सामना धैर्य से, उनकी घृणा का सामना प्रेम से कयिा, और अपने शब्दों में आध्यात्मकि ज्ञान और ईमानदारी का समावेश कयिा; लेकनि फरि, यह देखकर कि वे बुराई में और भी अधकि गहरे डूबते जा रहे थे, शर्मनाक व्यवहार कर रहे थे और वनिम्रता के मार्ग पर चलने से इनकार कर रहे थे, वह लावरा छोड़कर नकिोपोलसि के क्षेत्र में चला गया[8587] ; वहाँ वह तथाकथति हॉर्न्ड ट्री के नीचे बस गया[8588] । सव्वा उस पेड़ के फल पर जीवति रहता था और उसकी शाखाओं के नीचे आश्रय लेता था। उस भूमि के स्वामी ने, सव्वा के बारे में जानकर, उसके पास आकर उस स्थान पर उसके लएि एक कोठरी बनवाई; और कुछ दनिों बाद, मसीह की कृपा से, भ्रातृगण उस पूजनीय के चारों ओर इकट्ठा हो गए; इस प्रकार उस स्थान पर एक मठवासी समुदाय का गठन हुआ। धन्य सव्वा वहाँ रहे, जबकि लाव्रा में उनके शत्रुओं ने भाइयों के बीच यह अफवाह फैलाई कि सव्वा को रेगस्तिान में जंगली जानवरों ने खा लयिा है; वे धन्य पैट्रआर्क एलयिाह के पास गए और कहा:

'हमारे पतिा, मृत सागर के पास रेगस्तिान में भटकते समय, शेरों द्वारा चीर दएि गए; हम आपकी पवत्रिता से वनिती करते हैं कि हमें एक मठाध्यक्ष प्रदान करें।'

लेकनि धन्य एलयिा, जो सावा के जीवन को उनके यौवन से जानते थे, ने भक्षिुओं से कहा:

[8587] वर्तमान अम्वास, रोमला से यरूशलेम जाने वाले रास्ते पर।

[8588] करूब का पेड़, या सेंट जॉन की रोटी, जो सीरयिा और पूर्व में अच्छी तरह से जाना जाता है, की छाल राख-धूसर रंग की और तना मोटा और खुरदरा होता है, तथा इसकी कई टेढ़ी-मेढ़ी, फैली हुई डालयिाँ और शाखाएँ मोटे पत्तों से ढकी होती हैं; इसके फलों को हम सूखे रूप में 'कॉन्स्टेंटनिोपल पॉड्स' के नाम से जानते हैं।

'मैं तुम्हारा वशि्वास नहीं करता, क्योंकि मैं जानता हूँ कि प्रभु न्यायी हैं। वह तुम्हारे पिता के अनेक पुण्यों का तिरस्कार नहीं करेंगे, और न ही उन्हें जंगली जानवरों द्वारा खाए जाने देंगे; तुम्हारे लिए बेहतर है कि तुम जाकर अपने पिता को खोजो, या अपनी कोठरियों में रहो और तब तक चुप रहो जब तक ईश्वर उनकी खबर न दे दें।'

और इस प्रकार, सव्वा के दुश्मन लज्जित होकर लौट गए।

यरूशलेम में पवित्र सेपुलक्र की कलीसिया के समर्पण का पर्व आ गया, और सभी फिलिस्तीनी बिशप और मठाधीश इकट्ठा हुए; पूजनीय सवा भी निकोपोलिस के मठ के कई भाइयों के साथ आए। पैट्रिआर्क उन्हें देखकर अत्यंत प्रसन्न हुए और अकेले में, उन्होंने एक बार फिर से उन्हें लाव्रा लौटने के लिए आग्रह करना शुरू कर दिया। लेकिन उन्होंने मना कर दिया, यह कहते हुए कि इतने बड़ी संख्या में भाइयों का शासन करना और उनकी देखभाल करना उनकी शक्ति से परे था, और उन्होंने क्षमा मांगी। लेकिन पैट्रिआर्क ने कहा:

'यदि तुम मेरी विनती और सलाह नहीं मानते, तो मुझसे अपना मुख मत मिलाओ: मैं यह सहन नहीं कर सकता कि दूसरे तुम्हारी मेहनत का फल काटें।'

तब धन्य सव्वा ने, यद्यपि अपनी इच्छा के विरुद्ध, पैट्रिआर्क को लव्रा से अपने प्रस्थान का कारण बताया:

उन्होंने आगे कहा, 'भाइयों के बीच झगड़ों और मतभेदों के लिए मुझे जिम्मेदार न ठहराया जाए,' और उन्होंने उन लोगों के बारे में बताया जो उनसे नफरत में उठ खड़े हो रहे थे।

साव्वा पैट्रिआर्क की अवज्ञा नहीं कर सके और मान गए: उन्होंने निकोपोल से अपने साथ आए अपने शिष्य को निकोपोल मठ का मठाधीश नियुक्त किया, जबकि वे स्वयं अपने लावरा के लिए रवाना हो गए। पैट्रिआर्क ने अपने साथ मौजूद भाइयों को निम्नलिखित फरमान भेजा:

'मैं तुम मसीह में भाइयों से घोषणा करता हूँ कि तुम्हारे पिता सव्वा जीवित हैं और जंगली जानवरों द्वारा नहीं खाए गए हैं, जैसा कि तुमने सुना है और बता रहे हो: वे उत्सव के लिए मेरे पास आए थे, और मैंने उन्हें रोक लिया, क्योंकि यह अन्यायपूर्ण था कि वे अपनी लव्रा छोड़ दें, जिसे उन्होंने ईश्वर की मदद से अपनी मेहनत से स्थापित किया था; मैंने उन्हें वहाँ लौटने के लिए मना लिया।' इसलिए, अपने पिता का गर्मजोशी और उचित सम्मान के साथ स्वागत करो, और हर बात में उनकी आज्ञा मानो, क्योंकि उन्हें चुनने वाले आप नहीं थे, बल्कि उन्होंने ही आपको एक साथ इकट्ठा किया है। यदि, हालाँकि, आप में से कुछ—घमंडी और अवज्ञाकारी—अपने आपको नम्र करने और उनके अधीन होने से इनकार करते हैं, तो हम आपको आज्ञा देते हैं कि आप तुरंत लावरा छोड़ दें: यह उचित नहीं है कि यह पिता अपनी सही जगह न ले।

जब यह संदेश चर्च के बीचों-बीच लावरा में पढ़ा गया, तो सव्वा के दुश्मन, द्वेष से अंधे होकर, शोर मचाने और हंगामा करने लगे, और उन्होंने निर्दोष और शुद्ध-हृदय वाले पवित्र पिता पर आरोप लगाया; कुछ ने उनकी निंदा की, उनका अपमान किया और उनकी बदनामी की, जबकि अन्य, अपने कपड़े और सामान इकट्ठा करके, लावरा छोड़ने की तैयारी कर रहे थे, जबकि कुछ लोगों ने कुल्हाड़ी और लोहे की छड़ियाँ उठाकर उस कोठरी पर धावा बोल दिया जिसे पूजनीय सावा ने स्वयं बनाया था; अपने उन्मत्त क्रोध में, उन्होंने उसे धूल-चटा कर दिया, लकड़ी और पत्थरों को धारा में फेंक दिया, और सुकिया लाव्रा के लिए रवाना हो गए[8589] । उस लाव्रा के मठाधीश, अक्विलिनि, जो ईश्वर के प्रति समर्पित व्यक्ति थे, ने उनकी दुर्भावना को जानकर उन्हें स्वीकार नहीं किया और उन्हें अपने लाव्रा से बाहर निकाल दिया। फिर वे फेकोय धारा[8590] गए, जहाँ उन्होंने अपने लिए कोठरियाँ बनाईं और बस गए। इस प्रकार इन खरपतवारों को मठ से उखाड़ फेंका गया, जबकि शेष भ्राता, गेहूँ की तरह, ईश्वर को प्रसन्न करने वाला फल थे; और, बढ़ते हुए, उन्होंने बिना किसी बाधा के ईश्वर को हृदय की पवित्रता अर्पित की। कुछ समय बीता, और संत साव्वा को पता चला कि मिठ छोड़ने वाले कहाँ थे और वे बहुत कठिनाइयाँ झेल रहे थे; तो उन्होंने लाव्रा के घोड़ों और गधों पर भरपूर भोजन लाद दिया और उन्हें यह भोजन पहुँचाने के लिए निकल पड़े, एक ओर तो वे उनका क्रोध शांत करना चाहते थे और दूसरी ओर उनकी ज़रूरत में उनकी मदद करना चाहते थे। लेकिन उनमें से कुछ ने, जब देखा कि धन्य सावा उनकी ओर आ रहे हैं, तो कहने लगे:

'अच्छा, तो यह पाखंडी भी यहाँ आ गया!'

[8589] सुकी लावरा की स्थापना आदरणीय चारिटोन (जिनका स्मरण 28 सितंबर को किया जाता है) ने बेथलहम के दक्षिण में एक गुफा के पास की थी, जहाँ वे शुरू में एकांत में रहते थे; आज इसे खैरिटुन का मोगारेट के नाम से जाना जाता है। सुकी लावरा इसका सिरियाक नाम है; ग्रीक में, इसे ओल्ड लावरा कहा जाता था।

[8590] फेकोआ नदी फेकोआ रेगिस्तान से होकर बहती थी, जो सुकी लावरा के दक्षिण में स्थित महान यहूदी रेगिस्तान का एक हिस्सा था।

और उन्होंने अपने क्रोध और आक्रोश में अन्य बदनाम करने वाले शब्द बोले। लेकिन वह, द्वेष से मुक्त होकर, उन्हें प्रेम से देखा, उनसे दयालु शब्द बोले, और भोजन से उनका सांत्वना दिया। उनकी तंग हालत, उनकी ज़रूरत और उनके अव्यवस्था को देखकर – क्योंकि वे एक चरवाहे के बिना भेड़ों की तरह थे – उन्होंने पैट्रआर्क को सब कुछ बताया और उनसे उनकी देखभाल करने के लिए कहा। पैट्रआर्क ने उन्हें उनके हवाले कर दिया, उन्हें एक लीटर सोना[8591] और कई अन्य ज़रूरी चीज़ें दीं। साव्वा उनके पास जाने के लिए निकल पड़े, पाँच महीने उनके साथ रहे, उनके लिए एक चर्च और एक बेकरी बनाई, और एक नया मठ[8592] स्थापित किया; उन्होंने पुराने मठ से एक अनुभवी पिता, जॉन नामक व्यक्ति को, जो एक दूरदर्शी और भविष्यवाणी की प्रतिभा वाले व्यक्ति थे, स्थानांतरित किया और उन्हें उनका मठाधीश नियुक्त किया। इसके बाद, वे अपने स्वयं के मठ में लौट आए।

जॉन ने सात वर्षों तक इस नए मठ का संचालन किया और प्रभु में निधन कर गए[8593] । अपनी मृत्यु से पहले, उन्होंने नए मठ के भविष्य की भविष्यवाणी की; वे रो पड़े और अपने आसपास के लोगों से कहा:

'देखो, वे दिन आने वाले हैं जब इस स्थान के निवासी सच्चे धर्म से भटक जाएँगे और अपने अहंकार में, अपने लिए बड़े-बड़े सपने देखेंगे; लेकिन उनका घमंड चूर-चूर हो जाएगा, उनकी महानता अचानक समाप्त हो जाएगी, और उन्हें भगा दिया जाएगा।'

जॉन के बाद, मठाध्यक्ष रोम के मूल निवासी पॉल हुए; वह बहुत सरल-स्वभाव के थे और दिव्य गुणों से प्रकाशमान थे, लेकिन उन्होंने केवल छह महीने तक शासन किया और कलह को सहन न कर पाने के कारण अरब भाग गए, जहाँ वे सेवेरियन के मठ में[8594] की मृत्यु हो गई। पॉल के भाग जाने की खबर मिलते ही, सावस ने अपने शिष्य अगापटिस को नए मठ का मठाधीश नियुक्त किया। अगापटिस ने पाया कि कुछ भाई ओरिजिन[8595] की शिक्षाओं का पालन कर रहे थे: यह उनके मुंह में सांप के जहर की तरह और उनकी जीभ के नीचे एक दर्दनाक अल्सर की तरह था। उनमें सबसे प्रमुख थे , एक निश्चित फिलिस्तीनी जिसका नाम नॉनस था, जो एक सच्चा ईसाई प्रतीत होता था और सतह पर धार्मिक लगता था, लेकिन वह अंतर्मन से मूर्तिपूजक और यहूदी झूठी शिक्षाओं और हानिकारक संप्रदायों से भरा था: मनीकिय[8596] ,

---

[8591] लित्रा एक पाउंड है, जो वजन की एक बीजान्टिन इकाई है और 72 ज़ोलोटनिक के बराबर होती है; सोने में, इसका मूल्य 506 रूबल तक होता था।

[8592] अब खिरबत अल-कुसैर के नाम से जाना जाता है, जो मुक्ता अल-जुस और वादी मु'अलान नदियों के संगम पर स्थित है। इस मठ की स्थापना 507 ईस्वी में हुई थी।

[8593] यह वर्ष 514 का था। संत सावस द सैंक्चुडाइड के जीवन के वृत्ताकार, भिक्षु सिरिल के अनुसार, यह जॉन एक चमत्कार-कर्ता था। उनका पर्व दिवस चीज़ शनिवार को मनाया जाता है।

[8594] वैकल्पिक रूप से, वारखि, या कार्पावरखि के मठ में।

[8595] अपने लेखन में, ओरिजिन के कुछ गैर-पारंपरिक विचार थे, हालांकि उन्होंने उन्हें अकाट्य सच्चाइयों के रूप में प्रस्तुत नहीं किया; फिर भी, उनके सिद्धांतों के कट्टर अनुयायियों ने, उनका लगातार प्रचार-प्रसार करके, पारंपरिकों को भ्रमित किया और मसीह की कलीसिया में उथल-पुथल मचा दी। इस प्रकार, ओरिजिन ने मसीह के संबंध में गलत विचार रखे: उन्होंने आत्माओं के पूर्व-अस्तित्व के गैर-पारंपरिक सिद्धांत को विकसित किया और यह मान लिया कि ईश्वर ने समान गरिमा के एक निश्चित संख्या में आध्यात्मिक प्राणियों को बनाया, उन्होंने आगे यह दावा किया कि इन सृजित आत्माओं में से एक परमात्मा की ओर इतनी तीव्र प्रेम से आकर्षित हुई कि वह दिव्य वचन के साथ अविभाज्य रूप से एक हो गई और उसकी सृजित वाहिनी बन गई, और यह, जैसे कि, वही मानवीय आत्मा है जिसके माध्यम से परमेश्वर वचन पृथ्वी पर अवतार ले सके, क्योंकि कहा जाता है कि दिव्यिता का प्रत्यक्ष अवतार अकल्पनीय है। इसके अलावा, ओरिजिन ने क्रूस पर मसीह की मृत्यु को एक गैर-पारंपरिक अर्थ में समझा, इसे आध्यात्मिक जगत में आध्यात्मिक रूप से दोहराई जाने वाली और वहाँ स्वर्गदूतों की मुक्ति पर प्रभाव डालने वाली घटना के रूप में प्रस्तुत किया, और उद्धार के कार्य को हमारी प्रकृति से जुड़ी सामान्य शक्तियों की कार्रवाई का बहुत अधिक श्रेय दिया। ओरिजिन ने पुनरुत्थान और आने वाले जीवन पर अपने उपदेश के कुछ पहलुओं में भी गलती की, उदाहरण के लिए, यह मानकर कि शैतान का उद्धार हो सकता है; और पवित्र धर्मग्रंथ की अपनी व्याख्या में, उन्होंने एक रहस्यमय, गूढ़ अर्थ पर बहुत अधिक जोर दिया, जिससे धर्मग्रंथ के सच्चे ऐतिहासिक अर्थ को मिटा दिया गया।

[8596] मनीकवाद एक विधर्म है जो फारस में ईसाई धर्म को फारसी धर्म ज़राथुष्ट्र के सिद्धांतों के साथ मिलाने के प्रयास के प्रभाव में उत्पन्न हुआ, जो द्वैतवाद का प्रचार करता था, अर्थात् दो स्वतंत्र सिद्धांतों या क्षेत्रों - अच्छाई और बुराई - के शाश्वत अस्तित्व का। मनीखीय धर्म के संस्थापक, मनी (जो 3वीं शताब्दी में रहते थे), शुरू में एक मूर्तिपूजक जादूगर थे; बाद में, ईसाई धर्म अपनाने के बाद, वे एक पादरी (presbyter) भी बन गए, लेकिन मूर्तिपूजक फारसी धर्म की ओर झुकाव के कारण उन्हें जल्द ही चर्च से बहिष्कृत कर दिया गया। उनकी शिक्षा के अनुसार, मसीह केवल एक प्रकाशमान युग (आत्मा) हैं, जो प्रकाश के पिता से उत्सर्जन के माध्यम से उत्पन्न हुए; उसका आधा भाग पदार्थ में समा गया और दृश्यमान दुनिया की आत्मा बना, जिसे कथित रूप से पीड़ित यीशु कहा जाता है, जबकि दूसरा आधा भाग, एक अन्य युग, जीवन-दायक आत्मा की सहायता से, पदार्थ से मुक्त हो गया और सूर्य में निवास करने लगा; यही कथित रूप से अकल्पनीय यीशु है। मनीषी शिक्षा के अनुसार, मसीह का अवतार, पीड़ित यीशु को मुक्त करने के लिए अचंचल यीशु का सूर्य से अवतरण है, जिनके प्रकाशमान कणों को शैतान ने, मानो, एकत्र किया

डडिाइमयिन, इवाग्रयिन[8597] और ओरजिनिसि्ट। ऐसे भाइयों को खोजने पर, अगपयिस को डर था कि अन्य भी उन्हीं वधिर्मों से संक्रमति हो सकते हैं, इसलिए उन्होंने उन्हें पैट्रआर्क को सूचति कयिा और उनकी सलाह पर उन्हें मठ से नष्किासति कर दयिा। पाँच साल बाद, अगपयिस का नधिन हो गया। उनके बाद, मठाध्यक्ष का पद कसिी मामंत नामक व्यक्ति को सौंपा गया। हालाँकि, नोनो ने अपने समान वचिारधारा वाले अनुयाययिों के साथ, अगपयिुस की मृत्यु की खबर सुनकर, नए मठ में वापसी की, लेकनि वह साव्वा से डर गया और अपनी वधिर्म की वषिाक्तता को छपिाए रहा। इस बीच, पूजनीय सव्वा को कैस्टेलयिा के पास, अपने पुराने मठ से दस स्टेडयिम उत्तर में एक गुफा मलिी, और वे वहाँ एक मठ बनाने में व्यस्त थे, जसिका उन्होंने 'केव मॉनास्ट्री' (गुफा मठ) नाम रखा।[8598] । उन्हें सेंट ज़ायोन के पुरोहति मार्शयिन और उनके बेटों, एंथनी और जॉन ने आर्थकि रूप से सहायता की। यह जॉन एलयिाह के बाद यरूशलेम का पैट्रआर्क था[8599] ।

पूर्वी रेगस्तिान में, उस पहाड़ पर जहाँ रानी यूडोक्सयिा ने एक मीनार बनवाई थी[8600] , दो भक्षिु रहते थे जो नेस्टोरयिस के वधिर्म का पालन करते थे[8601] । परम पूज्य सावास उनके लिए गहराई से दुखी थे, क्योंकि वे सच्चे मार्ग से भटक गए थे, और उन्होंने अपने तीन मठों के इतने करीब होने के बावजूद बड़ी पीड़ा सहन की। उस समय, उन्हें एक दर्शन हुआ: उन्हें ऐसा प्रतीत हुआ कि वे पवत्रि पुनरुत्थान के चर्च में लोगों की भीड़ के बीच थे, जनिमें उन्होंने उन दो नेस्टोरयिनों को देखा। जब संचार का समय आया, तो सभी भाइयों ने बनिा कसिी बाधा के दव्यि रहस्यों के पास जाकर संचार ग्रहण कयिा; लेकनि जब ये दोनों वधिर्मी संचार के पास जाना चाहा, तो भयानक सैनकि अचानक प्रकट हुए, जन्हिोंने उन्हें संचार से दूर भगा दयिा और चर्च से बाहर नकिाल दयिा। धन्य व्यक्ति ने सैनकिों से वनिती करना शुरू कयिा कि वे इन दो भक्षिुओं को भाइयों के साथ चर्च में रहने दें और उन्हें प्रभु-भोजन ग्रहण करने की अनुमति दें। हालाँकि, सैनकिों ने उत्तर दयिा:

'उन्हें दव्यि रहस्यों में भाग लेने की अनुमति नहीं दी जानी चाहिए, क्योंकि वे स्पष्ट रूप से यहूदी हैं और न तो मसीह को ईश्वर के रूप में स्वीकार करते हैं, और न ही अति पवत्रि कुँवारी मरयिम को ईश्वर की माता के रूप में।'

इस दर्शन के बाद, धन्य व्यक्ति और भी अधकि दुखी हो गए, और उनकी आत्माओं के वनिाश पर शोक मनाने लगे; उन्होंने उनके लिए उपवास करके और ईश्वर से प्रार्थना करके बहुत परश्रिम कयिा, कि वह उन्हें सत्य के ज्ञान के प्रकाश से प्रबुद्ध करें। और वह अक्सर उनके पास जाता था , उन्हें सखिाता और नर्दिेश देता था, उनसे वनिती करता और उन्हें प्रोत्साहति करता था, जब तक कि, अंतत; ईश्वर की कृपा से, उसने उन्हें वापस मसीह की ऑर्थोडॉक्स चर्च में नहीं ला लयिा: इस प्रकार उसने मानव आत्माओं के उद्धार की परवाह की। उन्होंने उन्हें उस पहाड़ी से दूर कर दयिा

था और उन पर आसान नयिंत्रण के लिए, उन्हें एक मानव के रूप में बंद कर दयिा था। इस शक्षिा के अनुसार, मसीह का अवतार केवल मायाजाल था (डॉकेटज़िम)। नैतकि दृष्टकिोण से, इसने पदार्थ के खलिाफ एक संघर्ष का प्रचार कयिा, जसिका उद्देश्य स्वयं के भीतर शरीर को धीरे-धीरे कष्ट देकर प्रकाश को उससे मुक्त करना था। मनीकोली संप्रदाय वशिेष रूप से चौथी और पांचवीं शताब्दी में व्यापक रूप से फैला हुआ था।

[8597] डायडमिस और इवाग्रयिस सख्त मायने में वधिर्मी नहीं थे, हालांकि अपनी शक्षिाओं में वे कुछ गैर-पारंपरकि वचिारों को मानते थे।
डायडिमिस - चौथी शताब्दी के एक अत्यंत उल्लेखनीय प्राचीन धर्मशास्त्री - अपनी अंधापन के बावजूद, अपने समय के सबसे बड़े वद्विानों में से एक थे और उन्होंने 50 से अधकि वर्षों तक प्रसद्धि अलेक्जेंड्रयिाई धर्मशक्षिण वद्यिालय का नेतृत्व कयिा। व्याकरण, अलंकारशास्त्र, तर्कशास्त्र, भूगोल, खगोल वज्ञिान, पवत्रि शास्त्र और धर्मशास्त्र का उनका ज्ञान उन्हें अपने युग का अद्भुत व्यक्ति बनाता था। साथ ही, वह एक कठोर तपस्वी भी थे। डायडिमिस ने एरयिनों और मनखियिों के खलिाफ लड़ाई लड़ी। हालाँकि, वह ओरजिन का एक उत्साही अनुयायी था, जसिके लिए उसकी आलोचना की गई; इसके अलावा, वह ओरजिन के कुछ अपरंपरागत वचिारों का पालन करता था।
एवाग्रयिस – डडिमिस द ब्लाइंड के शष्यि, सेंट ग्रेगरी द थयिोलोजयिन के अधीन एक डीकन, और बाद में एक मस्रि के तपस्वी और संन्यासी। वह महान वद्विता और कठोरता वाले व्यक्ति थे; संन्यासी जीवन जीते हुए, उन्होंने कई उपयोगी ग्रंथ लखि, मुख्यतःतपस्या संबंधी प्रबंध; लेकनि ओरजिन के प्रति सम्मान के कारण वे कई लोगों की अप्रयिता में आ गए।

[8598] अब बरि एल-केट्यार के नाम से जाना जाता है।

[8599] उन्होंने 517 से 524 तक जॉन तृतीय के नाम से यरूशलेम के पैट्रआर्क के रूप में कार्य कयिा।

[8600] यह पूरे पूर्वी रेगस्तिान का सबसे ऊँचा पर्वत था। अब इसे मुंतार के नाम से जाना जाता है।

[8601] नेस्टोरयिस, जो कुछ समय के लिए कॉन्स्टेंटनिोपल के पैट्रआर्क (428–431) थे, ने यह सखिाया कि मनुष्य यीशु का जन्म कुँवारी मरयिम से हुआ था, और गर्भधारण के क्षण से ही परमेश्वर वचन उनकी कृपा से उनके साथ एकजुट हो गए थे और एक मंदरि में रहने के समान उनमें नविास करते थे; इसलिए उन्होंने परम पवत्रि कुँवारी को 'ईश्वर की माता' के बजाय 'मसीह की माता' कहा। इस प्रकार, नेस्टोरयिस ने मसीह में दैवी और मानवीय स्वभाव के बीच अंतर कयिा। नेस्टोरयिस के धर्मद्रोह को 431 में तीसरे सार्वभौमकि धर्मसभा (एफ़सिुस की परषिद) में चर्च द्वारा नंदिा कयिा गया था।

और उन्हें संत थियोडोसियस के मठ के हवाले कर दिया, जबकि उन्होंने उनकी जगह उस पहाड़ी को अपने एक शिष्य, बाइज़ेंटाइन के जॉन को दे दिया: वहाँ, ईश्वर की मदद से, कुछ समय बाद एक मठ स्थापित किया गया।

उस महान मठ में जेम्स नाम का एक भिक्षु था, जो यरूशलेम का मूल निवासी और साहसी तथा अभिमानी स्वभाव का था। उसने अपने जैसे कई भिक्षुओं के साथ साज़िश रची और, धन्य सव्वा की अनुपस्थिति में, जो उस समय अपनी परंपरा के अनुसार महा-उपवास की अवधि रेगिस्तान में पूर्ण मौन में बिता रहे थे, लाव्रा छोड़ दिया और सम्माननीय सव्वा को टक्कर देने की इच्छा से, उपर्युक्त हेप्टास्टोम झील के किनारे अपने लिए एक मठ बनाना शुरू कर दिया। जब मठ के अन्य संतों को इससे आपत्ति होने लगी और उन्होंने उसके इस प्रयास में बाधा डालनी शुरू कर दी, तो उसने उन सभी को यह कहकर धोखा दिया कि पवित्र पिता ने ही उसे ऐसा करने का आदेश दिया था। मरुभूमि से लौटने पर और जेम्स के कार्यों के बारे में जानने पर, सावास उसके पास गए और उसे अपनी योजना छोड़ने के लिए मनाने की कोशिश की, यह कहते हुए कि धृष्टता और अहंकार से उत्पन्न किसी भी चीज़ में कोई लाभ नहीं होगा; लेकिन उसने वरिष्ठ की बात पर कोई ध्यान नहीं दिया और उनके शब्दों पर कान नहीं दिया। तब संत ने उससे कहा:

'यदि तुम आज्ञा नहीं मानोगे, तो सावधान रहो कि कहीं तुम्हें दंड न भुगतना पड़े।'

यह कहकर, वह अपनी कोठरी में चले गए। जहाँ तक जेम्स की बात है, वह भय और आतंक से ग्रस्त हो गया; वह गंभीर रूप से बीमार पड़ गया और छह महीने तक बिस्तर पर पड़ा रहा, लगभग एक शब्द भी नहीं बोल पा रहा था। जीवन से पहले ही निराश हो चुका, उसने आदेश दिया कि उसे अपनी मृत्यु से पहले क्षमा मांगने के लिए धन्य सावा के पास ले जाया जाए। जब सावा ने उसे देखा, तो उन्होंने उसे पिता समान सलाह दी, फिर अपना हाथ बढ़ाकर उसे बिस्तर से उठा लिया। जेम्स उठ खड़ा हुआ, वह इतना स्वस्थ था मानो वह कभी बीमार ही न हुआ हो। उसे परम पवित्र रहस्य प्रदान करने के बाद, सावा ने उसे कुछ खाने के लिए दिया। जेम्स अपने नए निर्माण कार्य पर कभी वापस नहीं आया।

[8602]इस बीच, पैट्रिआर्क एलियाह ने यह सुनकर कि क्या हुआ था, याकूब की इमारत को ध्वस्त करने का आदेश दिया। हालाँकि, संत सावस मठ से कई मजबूत संतों को लेकर, ध्वस्त इमारत के उत्तर में लगभग पाँच स्टेडियम की दूरी पर एक स्थल पर गए, वहाँ एक चैपल और उसके चारों ओर कोठरियाँ बनवाईं, और वहाँ के मठाध्यक्षों के रूप में महान मठ के कुछ संतों, पौल और एंड्रयू को नियुक्त किया, उन्होंने वहाँ अन्य भाइयों को भी बसाया और इस स्थल पर एक मठ की स्थापना की, जिसका नाम उन्होंने 'सात-मुखी' रखा।

ग्रेट लावरा लौटने पर, उन्होंने पवित्र उपहार और धन्य रोटी उपर्युक्त स्थान पर भाइयों के पास भेजीं, और उस स्थान की बहुत देखभाल की।

कुछ समय बीत जाने के बाद, उपर्युक्त जेम्स को अतिथि-गृह में यात्रियों की सेवा करने का कार्य सौंपा गया। अपने कर्तव्यों में लापरवाह होने के कारण, उसने एक बार ज़रूरत से ज़्यादा राजमाँस पका दिया; रात के खाने से इतने ज़्यादा राजमाँस बच गए थे कि वे अगले दिन के भोजन के लिए भी काफी थे, लेकिन उसने बचे हुए राजमाँस को खिड़की से बाहर बहाव में फेंक दिया; और उसने यह सिर्फ एक बार नहीं, बल्कि कई बार किया। यह देखकर, आदरणीय सावा चुपके से धारा तक उतर गए, फेंके हुए बीन्स को इकट्ठा किया, उन्हें अपनी कुटिया में वापस ले आए और धूप में थोड़ा सुखाया। कुछ ही समय बाद, आदरणीय सावा ने इन बीन्स को पकाया और उनसे भोजन तैयार करके, जैकब को अपने साथ खाने के लिए बुलाया। भोजन के दौरान, बड़े भाई ने जैकब से कहा:

'मुझे माफ़ करना भाई, मैं तुम्हारे साथ वैसा व्यवहार नहीं कर पाया जैसा मैं चाहता था, और शायद यह भोजन तुम्हें पसंद भी नहीं आया होगा; मैं खाना पकाने में बहुत अच्छा नहीं हूँ।'

जिस पर जेम्स ने उत्तर दिया:

'सचमुच, पिताजी, आपने ये दालें बहुत अच्छी पकाई हैं; मैंने बहुत लंबे समय से ऐसा भोजन नहीं खाया है।'

बड़े भाई ने उत्तर दिया:

'मेरे बच्चे, मुझ पर विश्वास करो, ये वही दालें हैं जिन्हें तुमने धारा में डाला था; यह जान लो: जो व्यक्ति सही माप में दाल का एक बर्तन नहीं पका सकता, ताकि कुछ भी बर्बाद न हो, वह न तो किसी मठ का प्रबंधन कर सकता है और न ही भाइयों का नेतृत्व कर सकता है। इसी प्रकार प्रेरित भी कहते हैं: *'क्योंकि यदि कोई अपना घर ठीक से नहीं संभालता,*

[8602] हेप्टास्टोमा झील, या 'सात-मुँह वाली' के नाम पर नामकरण।

तो वह परमेश्वर की कलीसिया की देखभाल कैसे करेगा?' (1 तीमुथियुस 3:5)। यह सुनकर, याकूब को अपनी पूर्व स्वच्छंदता और अपनी लापरवाह सेवा पर शर्म आई; उसने पश्चाताप किया और क्षमा मांगी।

अपनी कोठरी में, याकूब को कामुक वासना और अशुद्ध विचारों वाले एक राक्षस ने प्रलोभित किया: यह प्रलोभन लंबे समय तक चला, और याकूब अब और सहन नहीं कर सका; उसने एक चाकू उठाया और स्वयं का वंधन कर लिया। जब एक भयंकर दर्द होने लगा, तो वह पास में रहने वाले भाइयों से मदद के लिए पुकारने लगा। भाई आए और जो हुआ देखकर उन्होंने दवाओं से उसका दर्द कम करने की भरसक कोशिश की; और बहुत समय बाद वे मुश्किल से ही उसे ठीक कर पाए । यह खबर पूज्य सावा तक पहुँची, और उन्होंने जेम्स—जो अपने घाव से पहले ही ठीक हो चुका था—को एक भयानक अपराधी मानकर मठ से निष्कासित कर दिया। वह परम पूज्य थियोडोसियस के पास गया, उन्हें अपनी दुर्भाग्य और निष्कासन के बारे में बताया, और उनसे विनती की कि वे परम पूज्य सावा से उसकी ओर से मध्यस्थता करें, ताकि उसे एक बार फिर से मठ में प्रवेश और एक कोठरी दी जा सके। थियोडोसियस, अपने भाई की विनतियों को मानते हुए, धन्य सावा के पास गए और निर्वासित भाई के लिए मध्यस्थता की। उनके इतने बड़े पिता और मित्र के अनुरोध पर, सावास ने जेम्स को स्वीकार कर लिया, और उस पर यह आज्ञा लगा दी: अपने परिचारक के अलावा किसी से बात न करना, भाइयों के साथ कोई संगति न करना, यहाँ तक कि अपनी कोठरी से बाहर भी न निकलना; और, इसके अलावा, उन्होंने उसे परम पवित्र और दिव्य रहस्यों को प्राप्त करने से भी वंचित कर दिया। इस प्रकार याकूब मौन में रहा, पश्चाताप में डूबा रहा और परमेश्वर के सामने बहुत आँसू बहाता रहा, जब तक कि उसे स्वर्ग से क्षमा नहीं मिल गई, और धन्य सव्वा को दिव्य प्रकटिकरण द्वारा सूचित नहीं किया गया कि याकूब का पाप क्षमा कर दिया गया है। एक दिन, पूजनीय सव्वा ने एक दर्शन में एक तेजस्वी पुरुष को पास में खड़ा देखा, और जेम्स के पैरों तले एक मृत व्यक्ति को लेटे देखा, जिसके पुनरुत्थान के लिए जेम्स प्रार्थना कर रहे थे; और ऊपर से एक आवाज सुनाई दी:

'याकूब! तुम्हारी प्रार्थनाएँ सुनी गई हैं; मृतक को छूओ और उसे उठाओ।'

और जब जेम्स ने इस आज्ञा के अनुसार मृतक को छुआ, तो मृतक तुरंत उठ खड़ा हुआ; और उस तेजस्वी पुरुष ने सव्वा से कहा:

'देखो, मृतक जीवित हो उठा है; अब उस पर लगे बंधन खोल दो।'

यह देखकर, सावा ने तुरंत जेम्स को बुलाया, उसका प्रायश्चित हटा दिया, उसे गिरिजाघर में प्रवेश करने और भाइयों के साथ परम पवित्र रहस्यों में भाग लेने की अनुमति दी। अपनी क्षमा के सात दिन बाद, जेम्स प्रभु के पास चला गया।

महान मठ में जन्म से दो भाई थे, जिनके नाम ज़ान और बेंजामिन थे, जो ईश्वर की विनम्र सेवा में एकजुट रहे और दिव्य गुणों से सुशोभित थे। दोनों ने सर्वसम्मति से संत सावास से उस संन्यासी की कुटिया को देने का अनुरोध किया जिसे उन्होंने स्वयं मठ से लगभग पंद्रह स्टेडियम दूर लीबिया की ओर बनाया था[8603] । यह जानते हुए कि वे ईश्वर के सच्चे सेवक थे, बड़े भाई ने उनके अनुरोध को स्वीकार कर लिया और उन्हें वह कुटिया दे दी। इस प्रकार, उनके पास अपना एक संन्यासी का कोठरी था और उनके मठ में एक और था। तपस्थल में, उन्होंने अपनी मेहनत से और अपने महान बाबा की मदद से एक मठवासी समुदाय की स्थापना की; क्योंकि उन्होंने उन्हें आवश्यक धन और अन्य आवश्यक वस्तुएँ प्रदान कीं। जब इस स्थान पर भाइयों की संख्या बढ़ गई, तो सव्वा ने अपनी देखभाल से एक चर्च का निर्माण किया, उसका अभिषेक किया, और इस मठवासी समुदाय में अपने अन्य समुदायों के नियम लागू किए।

और हमारे पूजनीय पिता सव्वा एक अद्भुत वृक्ष के समान थे, जिससे सुंदर शाखाएँ निकलती हैं; इस प्रकार, अपने पवित्र जीवन के उदाहरण और ईश्वर से अपनी लगन भरी प्रार्थनाओं द्वारा, उन्होंने अपने मठ में पवित्र पिताओं और तपस्वियों की संख्या बढ़ाई, और वे पवित्र थे, जैसे कि वह थे, शास्त्र के अनुसार: *'यदि मूल पवित्र है, तो शाखाएँ भी पवित्र हैं'* (रोमियों 11:16)। इन पवित्र शाखाओं में, हमें बिथुनिया के धन्य एल्डर एंफमिस का उल्लेख करना चाहिए, जिन्होंने कई मठवासी उपलब्धियों से युक्त जीवन जिया। लावरा में अपने प्रवास की शुरुआत में, उन्होंने पूजनीय सव्वा के स्तंभ के सामने, पूर्वी ओर, धारा के दूसरी तरफ अपने लिए एक छोटी सी कोठरी बनाई, और वहाँ तीस साल तक रहे। अपने वृद्धावस्था में, वह कमजोर हो गया, बीमार पड़ गया और बिस्तर पर ही सीमित हो गया। उसे इतना कमजोर और बीमार देखकर, धन्य सव्वा उसे चर्च के पास की एक कोठरी में ले जाना चाहते थे, ताकि भाई बिना किसी कठिनाई के उससे मिल

[8603] वर्तमान डेब ए-सेन्ने, बेट सौर एल-अतकि के सामने, पवित्र सव्वास की लव्रा से यरूशलेम जाने वाली सड़क के बाईं ओर।

सकें और उसकी देखभाल कर सकें; लेकनि उसने अनुरोध कयिा कि उसे वहीं मरने दयिा जाए जहाँ वह पहली बार बसा था। इस प्रकार उन्हें बीमार अवस्था में उनकी कोठरी में ही छोड़ दयिा गया। एक रात, पूज्य सावा ने, अपनी प्रथा के अनुसार प्रातकालीन प्रार्थना से पहले प्रार्थना करने के लिए उठकर, कुछ सुंदर आवाज़ें सुनीं, मानो कई लोग गा रहे हों; उन्होंने सोचा कि वे चर्च में मैटनि्स गा रहे हैं, और आश्चर्य हुआ कि वे उनके बनिा और उनकी प्रथागत आशीर्वाद के बनिा मैटनि्स कैसे गा सकते हैं। लेकनि, सीधे चर्च जाकर, उन्हें वहाँ कोई नहीं मलिा, और उसके दरवाज़े बंद थे; वे लौटे, यह सोचते हुए कि उन आवाज़ों का क्या हो सकता है, और अचानक उन्होंने फरि से वही सुंदर गायन सुना; वे यह गा रहे थे: *'मैं भीड़ के बीच से होकर चला, उनके साथ परमेश्वर के भवन में प्रवेश कयिा, जय-जयकार और उत्सव की भीड़ के स्वर के साथ'* (भजन संहति 41:5)।

यह महसूस करते हुए कि ये अद्भुत स्वर धन्य अंफमिस की कोठरी की दशिा से आ रहे थे, सव्वा ने अनुमान लगाया कि अंफमिस का नधिन हो गया है। तुरंत चर्च के व्यवस्थापक को जगाकर, उन्होंने भाइयों को इकट्ठा करने के लिए घंटी बजाने का आदेश दयिा; अपने साथ कई भाइयों को लेकर, वे मोमबत्तयिाँ और धूप ( ) लेकर बूढ़े की कोठरी में गए। अंदर प्रवेश करने पर, उन्हें वहाँ कोई नहीं मलिा; केवल धन्य अंफमि का नर्जिीव शरीर वहाँ पड़ा था, जबकि उनकी आत्मा स्वदूतों के गायन के साथ प्रभु के पास चली गई थी। उन्होंने उनके पूजनीय शरीर को उठाया, उसे चर्च में ले गए और, अंतमि संस्कार की प्रार्थना करने के बाद, उन्हें पवत्रि संतों के बगल में दफना दयिा।

[8604]थेओडोसयिस के मठ का एक भाई, एफ्रोडसियिस नामक एक ताकतवर आदमी, एक काम से भेजा गया था; रास्ते में, वह उस गधे पर गुस्सा हो गया जसि पर वह गेहूं ले जा रहा था और उसे जोर से मारा; गधा उस वार से गरि पड़ा और मर गया। इसके लिए, परम पूज्य थयिोडोसयिस द्वारा एफ्रोडसियिस को उसके मठ से नकिाल दयिा गया। तब वह परम पूज्य सावा के पास गया और उन्हें अपने कृत्य के बारे में बताया, उनसे सलाह मांगी। परम पूज्य सावा ने उसे एक कोठरी दी और कहा:

'अपनी कोठरी में रहो, दूसरी कोठरी में मत जाओ, मठ मत छोड़ो, अपनी जीभ पर काबू रखो, अपने पेट की मांगों को नयिंत्रति करो, और तुम बच जाओगे।'

एफ्रोडसियिस ने इस आज्ञा को स्वीकार कर लयिा और कसिी भी तरह से उसका उल्लंघन नहीं कयिा; तीस साल तक वह मठ से बाहर नहीं गया, उसके पास कुछ भी नहीं था—खाने के लिए बर्तन या बस्तिर तक नहीं—वह एक चटाई से खुद को ढककर पेड़ों की टहनयिों पर सोता था, और उबली हुई, मामूली सब्जी के व्यंजनों की बची-खुची चीज़ों पर गुज़ारा करता था। उनके रात में रोने से वहाँ रहने वालों की नींद में खलल पड़ता था। अंततः उन्हें दूरदर्शता का वरदान मलिा, वे एक सप्ताह पहले ही अपने मृत्यु का दनि जान गए थे। इसके बाद, उन्होंने सवास से उन्हें धन्य थयिोडोसयिस के मठ में भेजने के लिए कहा। माननीय ने उनके साथ दो भाइयों को भेजा और उन्हें थयिोडोसयिस से कहने का नर्देश दयिा:

'देखो, हमारा सामान्य भाई एफ्रोडसियिस, जसि मैंने एक बार तुमसे एक मनुष्य के रूप में प्राप्त कयिा था, उसे मैं अब मसीह की कृपा से एक स्वर्गदूत के रूप में तुम्हारे पास भेजता हूँ।'

थेओडोसयिस ने प्रेम से उनका स्वागत कयिा, उन्हें क्षमा कर दयिा और उन्हें शांति से वदिा कर दयिा; एफ्रोडसियिस, अपनी ओर से, संत सावा के पास लौट आए और, थोड़ी बीमारी के बाद, प्रभु में नवृित्त हो गए।

यॉर्डन के दूसरी ओर स्थति मेडावा नगर के नविासी[8605] अक्सर आदरणीय संत के पास आते थे; उन्हें उनसे महान आध्यात्मकि लाभ मलिता था और वे मठ में अनाज और सब्जयिाँ लाते थे, बदले में उनका आशीर्वाद प्राप्त करते थे। उनमें से एक सम्मानति व्यक्ति थे जनिका नाम गेरोन्टयिस था; वे पवत्रि नगर आए और बीमार पड़ गए। प्रार्थना करने के लिए जैतून के पहाड़ पर जाने की इच्छा से, वे अपने घोड़े से गरि पड़े, उन्हें चोटें आईं और वे और भी बीमार हो गए, यहाँ तक कि उन्होंने बचने की उम्मीद छोड़ दी। आदरणीय सावास ने उन पर पवत्रि तेल का अभषिेक कयिा और उन्हें चंगा कर दयिा। एक अवसर पर, जब वे गेरोंटयिस के बेटे थॉमस के साथ भोजन कर रहे थे, तो सावास ने अचानक समाप्त हो जाने पर सरिके को बेहतरीन शराब में बदल दयिा। ऐसा हुआ कि मजदूरों के लिए पकाए गए कद्दू कड़वे नकिल गए थे; सावास ने क्रॉस का चह्नि बनाकर उन्हें मीठा बना दयिा। एक बार, रेवरेंड अपने युवा शष्यि के साथ यरीहो से यॉर्डन तक पैदल जा रहे थे, और

[8604] 24 दसिंबर को फलिस्तिीन के संत एफ्रोडसियिस की स्मृति।

[8605] अब ट्रांसजॉर्डन में मेडेबा के नाम से जाना जाता है।

वे शहरवासियों के एक बड़े समूह से मिले, जिनमें एक सुंदर युवती भी थी। जब वे उनके पास से गुज़र रहे थे, तो गुरु, अपने शिष्य की परीक्षा लेने के लिए, बोले:

'तुम्हें वह लड़की कैसी लगी जो अभी-अभी गुज़री? मुझे तो ऐसा लगा कि वह एक आँख से नेत्रहीन थी।'

शिष्य ने उत्तर दिया:

'नहीं, उसकी दोनों आँखें देख सकती हैं।'

'तुम गलत हो,' वृद्ध ने कहा, 'उस लड़की की एक ही आँख है।'

लेकिन शिष्य ने ज़ोर देकर कहा कि उसकी दोनों आँखें ठीक थीं। बूढ़े ने पूछा:

– तुम्हें कैसे पता चला?

शिष्य ने उत्तर दिया, "पिताजी, मैंने उसके चेहरे को ध्यान से देखा और पाया कि उसकी दोनों आँखें देख सकती हैं।"

तब वृद्ध ने उससे कहा:

'अगर तुमने उसके चेहरे को इतनी बारीकी से देखा, तो तुम्हें पवित्र शास्त्र की आज्ञा याद कैसे नहीं आई: *"उसकी सुंदरता को अपने हृदय में न चाहो, [नहीं तो तुम अपनी आँखों के फंदे में पड़ जाओगे,] और उसकी पलकों से बहकने न पाओ"* (नीतिवचन 6:25)। तब जान लो कि अब से तुम मेरे साथ कोठरी में नहीं ठहरोगे, क्योंकि तुम अपनी आँखों की रक्षा नहीं करते हो' – और उन्होंने उसे दंड स्वरूप फास्टेली के पास भेज दिया।

कुछ समय वहाँ रहने और अपनी दृष्टि पर सतर्क नजर रखने तथा हर तरह से अपने विचारों की रक्षा करने के लिए पर्याप्त सीखने के बाद, साव्हा ने उसे मठ में वापस स्वागत किया और उसे एक कोठरी दी।

एक दिन, जब रेवरेंड फादर रूवा नामक रेगिस्तान में थे, तो उन्हें अपने रास्ते में एक शेर मिला जिसके पंजे में काँटा था; शेर संत के पैरों में गिर पड़ा और दहाड़ते हुए अपना पंजा दिखाने लगा, मानो उपचार की भीख माँग रहा हो। संत ने शेर के पंजे से काँटा निकाल दिया, जिससे उसका दर्द दूर हो गया; इसके बाद, शेर संत के पीछे-पीछे चलने लगा और '' ने उसकी सेवा की। उस समय, बड़े संत के फ्लाइस नाम का एक शिष्य था, और उनके पास एक गधा था। जब भी साव्हा शिष्य को किसी काम से भेजता था, तो वह शेर को गधे की देखभाल करने का निर्देश देता था; शेर अपनी मुँह में लगाम ले लेता और गधे को चराने के लिए बाहर ले जाता, और शाम को, उसे पानी पिलाने के बाद, उसे वापस बड़े संत के पास ले आता था। कुछ दिनों बाद, फ्लाइस को किसी काम से भेजा गया और एक राक्षस के प्रभाव में आकर, वह एक अशुद्ध पाप में पड़ गया; उसी समय, शेर ने चरागाह में गधे को खा लिया। फ्लाइस को एहसास हुआ कि शेर ने उसके पाप के कारण, उसे बेनकाब करने के लिए गधा खाया था, और वह खुद को संत के सामने दिखाने से डर गया। भारी मन से, वह एक गाँव में भाग गया, और वरिष्ठ ने उसे बहुत खोजा; अंततः उन्होंने उसे ढूंढ लिया, वापस लाया, एक कोठरी में बंद कर दिया, और उस पर एक तपस्या थोप दी। उसने हृदय से पश्चाताप किया और, बहुत आँसुओं के साथ, पवित्र वरिष्ठ की प्रार्थनाओं द्वारा अपने पाप से शुद्ध हो गया, जो मानव आत्माओं के उद्धार के लिए गहराई से चिंतित थे।

यह याद करना उचित है कि साव्हा ने कॉन्स्टेंटिनोपल में चर्च के मामलों के लिए अपनी यात्राओं के दौरान ईश्वर की कलीसिया की भलाई के लिए चिंता व्यक्त की; उसे वहाँ निम्नलिखित कारण से भेजा गया था। सम्राट अनास्तासियस, जो एक विधर्मी थे, ने कालसीडोन में पवित्र पिताओं के चौथे सार्वभौमिक परिषद[8606] को अस्वीकार कर दिया और उस समय चर्च में बहुत उथल-पुथल मचा दी। उसने कॉन्स्टेंटिनोपल के पैट्रिआर्क यूथिमियस[8607] को निर्वासित कर दिया था, और वह अंकोना के फ्लावियन[8608] और यरूशलेम के एलियास से नाराज़ था, जिन्हें वह निर्वासित करना भी चाहता था, क्योंकि उन्होंने उसकी विधर्म को स्वीकार नहीं किया था। चर्च में शांति बहाल करने के लिए सम्राट को मनाने की इच्छा से, एलियाह ने उसे फिलिस्तीन के रेगिस्तानों के मठाध्यक्ष भेजे, जिनमें सव्वस भी थे, इस निम्नलिखित लिखित अनुरोध के साथ:

हम अपनी प्रार्थनाओं सहित, आपके समक्ष ईश्वर के चुने हुए सेवकों, शुभ और विश्वासयोग्य मरुभूमिवासियों को भेजते हैं, और उनके साथ साव्हा को भी, जो सम्पूर्ण मरुभूमि के प्रमुख और पूरे फिलिस्तीन के प्रकाशस्तंभ हैं। और

[8606] इस परिषद में, यूटिकिस (मोनोफिज़िटिज़्म) के धर्मद्रोह की निंदा की गई; इस धर्मद्रोह ने मसीह में एक ही दिव्य स्वभाव को स्वीकार किया और यह दावा किया कि यीशु मसीह में मानवीय स्वभाव, हाइपोस्टैटिक संघ में दिव्य स्वभाव में समाहित हो गया था।

[8607] यूथिमियस – 490 से 496 तक कॉन्स्टेंटिनोपल के पैट्रिआर्क।

[8608] फ्लैवियन – 506 से 512 तक अंतीयक के पैट्रिआर्क।

हे राजा, उनके श्रम और भक्ति को स्वीकार कर, चर्च के भीतर के विवाद को समाप्त कर और बुराई को बढ़ने न दे: हम जानते हैं कि आप ईश्वर को प्रसन्न करने में संलग्न हैं, जिन्होंने आपको राजसी मुकुट प्रदान किया है।"

मठाधीश कॉन्स्टेंटिनोपल पहुँचे, और जब वे शाही कक्षों में प्रवेश कर रहे थे, तो सव्वा बाकी लोगों के पीछे चल रहे थे। दरवाज़े पर खड़े पहरेदारों ने, उन्हें उनके पतले और पैबंद लगे कपड़ों में देखकर, उन्हें एक भिखारी समझ लिया और उन्हें अंदर आने से मना कर दिया। राजा ने, उनके पास आए संतों का सम्मानपूर्वक स्वागत करने और महाधर्माध्यक्ष का पत्र पढ़ने के बाद, पूछा कि उनमें से सव्वा कौन है, जिसकी महाधर्माध्यक्ष ने अपने पत्र में इतनी प्रशंसा की थी। संतों ने इधर-उधर देखा और कहा कि वह उनके साथ चल रहा था, लेकिन उन्हें नहीं पता कि वह कहाँ गया। तुरंत राजा ने उसकी तलाश का आदेश दिया, और अंततः वे उसे एक कोने में खड़ा हुआ पाया, जो दाऊद के भजन पढ़ रहा था। जब वे उसे राजा के पास ले गए, तो राजा ने अपने सामने एक तेजस्वी स्वर्गदूत को चलते हुए देखा और यह समझते हुए कि सव्वा ईश्वर के पुरुष हैं, उन्होंने सिंहासन से उठकर उनका सम्मान किया, और फिर सभी को अपनी-अपनी जगह पर बैठने का आदेश दिया। लंबी बातचीत के दौरान, धन्य सव्वा ने उपस्थित अन्य सभी संतों से अधिक खुद को प्रतिष्ठित किया, उन्होंने राजा को दिव्य प्रेरित शब्दों से चर्च के साथ शांति बनाने के लिए प्रोत्साहित किया और बदले में उसे ईश्वर की ओर से अपने शत्रुओं पर विजय का वादा किया। भेजे गए पादरियों को कोई खास सफलता नहीं मिली और उन्हें घर भेज दिया गया, जबकि पूजनीय सव्वा तब तक रुके रहे जब तक कि उन्होंने राजा को मना नहीं लिया और उसे पैट्रिआर्क इलियाह से सुलह नहीं करा दी। पूजनीय सव्वा ने सर्दियाँ बिज़ान्टियम में बिताईं, और वे अक्सर राजा से मिलते तथा उसके साथ ऑर्थोडॉक्सी और यरूशलेम के पैट्रिआर्क के बारे में बातचीत करते थे। उन्हें महल में बिना किसी रोक-टोक के आने-जाने की अनुमति मिली; वे बिना किसी देरी या पहरेदारों द्वारा पूछताछ के, अपनी इच्छा से आ-जा सकते थे, और इस दौरान उन्होंने राजा को यह समझा दिया कि वे पैट्रिआर्क पर क्रोध न करें और फिलिस्तीन के चर्चों को शांति प्रदान करें। इसके बाद वे यरूशलेम लौट आए, जहाँ राजा ने उनकी यात्रा के लिए उदारतापूर्वक प्रबंध किया था। उन्हें राजा से दो हजार सोने के सिक्के मिले, जिन्हें वे अपने साथ वापस ले गए और अपने मठों में बाँट दिया, साथ ही एक निश्चित हिस्सा अपने जन्मस्थान, मुतालस्क गाँव को भी भेजा, ताकि उनके पिता के घर पर पवित्र शहीदों कोस्मास और डेमियन के नाम पर एक चर्च का निर्माण हो सके।

[8609]धन्य पैट्रिआर्क एलियाह, संत सावस की बदौलत फिलिस्तीनी चर्चों और अपने लिए शांति सुनिश्चित करने के बाद, लंबे समय तक शांत रूप से नहीं रहे: विधर्मी उन्हें राजा के पास बदनाम करना और मसीह की कलीसिया तथा उसके चरवाहों के विरुद्ध उन्हें उकसाना कभी बंद नहीं करते थे, ताकि उन्हें परेशानी में डाल सकें। इसलिए, राजा ने सिडोन में एक परिषद बुलाई[8610] , , और इसके अध्यक्ष दो बिशपों को बनाया जो यूटिकिस और डियोस्कोरस के धर्मद्रोह में साझा थे[8611] , अर्थात्: सोतेरिकिस, कैपाडोसिया के सेज़रिया के बिशप, और हिएरापोलिस के फिलोक्सेनस[8612] , ताकि उस परिषद में काल्सेडन की परिषद को निंदा किया जा सके, और फ्लावियन और एलियास को उनके पदों से हटाया जा सके। और ऐसा ही हुआ: एक अवैध परिषद बुलाई गई, और अधर्मी लोगों ने राजा की सहायता से, धन्य फ्लावियन, अंकोइया के पैट्रिआर्क को अपमानपूर्वक भगा दिया, जिन्होंने उनकी परिषद में शामिल होने से इनकार कर दिया था; और उनकी जगह, अधर्मी सेवरस ने सिंहासन संभाला और उन ऑर्थोडॉक्स लोगों को बहुत कष्ट पहुँचाया जिन्होंने उनके साथ कोई संगति करने से इनकार कर दिया था। उसने परिषद में अपनाए गए अपने विश्वास के स्वीकारोक्ति को यरूशलेम के एलियाह के पास

[8609] प्रांतीय राज्यपाल। फिलिस्तीनी धर्मप्रांतों को अन्य की तुलना में अधिक अधिकार प्राप्त थे और उन्हें 'हेगेमोन' (ग्रीक शब्द) या 'प्रोक्युरेटर' (रोमन शब्द) के नाम से भी जाना जाता था।

[8610] यह वर्ष 511 के अंत में था। – सिडोन – फोनीशिया का सबसे पुराना शहर, भूमध्य सागर के तट पर, लेबनान पर्वत श्रृंखला से बहुत दूर नहीं, एक सुंदर बंदरगाह के साथ। सीडोन में ईसाई धर्म बहुत जल्दी प्रकट हो गया था, और यीशु मसीह के सांसारिक जीवन के दौरान भी वहाँ उनके कई शिष्य थे। बाद में, सीडोन कई बार नष्ट हुआ, फिर से बनाया गया, और अंततःहमेशा के लिए ध्वस्त हो गया; अब यह 10,000 की आबादी के साथ सईदा के नाम से जाना जाता है, जिसमें अधिकांश मुस्लिम हैं।

[8611] मोनोफिज़िटों के नेता और संप्रदाय-प्रवर्तक: यूटिकीस – कॉन्स्टेंटिनोपल के एक मठ का मठाधीश और आर्चिमांड्राइट; डियोस्कोरस – 444 से 451 तक अलेक्ज़ेंड्रिया के पैट्रिआर्क।

[8612] मोनोफिज़िटिवाद के सबसे उत्साही और कट्टर अनुयायी, विशेष रूप से हिएरापोलिस के बिशप फिलोक्सेनस, जिनका उपनाम ज़ीनाइया था, ने अपने प्रति विफादार कट्टर भिक्षुओं के गिरोहों के माध्यम से स्थानीय आबादी को जबरदस्ती मोनोफिसाइट कुफ़्र स्वीकार करने के लिए मजबूर किया, जबकि अंटीओक के ऑर्थोडॉक्स पैट्रिआर्क को यातना देकर मार डाला गया।

भेजा[8613] ; बाद वाले ने, वधिर्मी नयिमों को स्वीकार करने से इनकार करते हुए, उन्हें वापस भेज दयिा। यह जानकर, ज़ार को धन्य एलयिाह पर बहुत क्रोध आया और उसने सेवरस के धर्म-स्वीकरण को तुरंत यरूशलेम भेजने का आदेश दयिा, साथ ही कई पुरोहतिों और सैनकिों का एक बड़ा दल भी भेजा, ताकि यरूशलेम के पैट्रआिर्क को ज़बरदस्ती सडिोन परषिद के नयिमों को स्वीकार करने के लिए मजबूर कयिा जा सके। जब वे यरूशलेम पहुँचे, तो बड़ा हंगामा मच गया, और पैट्रआिर्क खुद को एक बहुत ही मुश्कलि स्थतिि में पाया। तब पूजनीय सावस ने अपने मठों के सभी भकि्षुओं को इकट्ठा कयिा और पवत्रि शहर में प्रवेश करके, सेवरस द्वारा भेजे गए अधकिारयिों और सेना को भगा दयिा; जहाँ तक स्वयं सेवरस और उसके समान वचिारधारा वाले अनुयायियिों का सवाल है, उसने उन्हें सभी के सामने चर्च से बहषि्कृत कर दयिा। वे वधिर्मी शर्मदिा होकर उन्हें भेजने वालों के पास लौट गए, और उन्होंने ऑर्थोडॉक्स के महान साहस और अपनी खुद की अपमानजनक पराजय का ब्योरा सुनाया। तब सम्राट, अकथनीय क्रोध में, पलेस्टाइन के एपार्क ओलंपियिस को एक बड़ी सेना के साथ यरूशलेम भेजा और बनिा कसिी कानून या मुकदमे के, शाही अधकिार से आदेश दयिा कि पैट्रआिर्क एलयिाह को उनके सहिासन से हटा दयिा जाए। ओलंपयिस एक बड़ी सैन्य टुकड़ी के साथ पहुँचा और तुरंत राजा की आज्ञा का पालन कयिा: उसने बनिा मुकदमे के पैट्रआिर्क को पदच्युत कर दयिा और उन्हें ऐला में नर्विासति कर दयिा, जबकि उनकी जगह उसने प्रेस्बटिर मार्शयिन के पुत्र जॉन[8614] को स्थापति कयिा, जसिने चल्सेडॉन परषिद की नदिा करने और सेवरस के साथ संप्रदाय बनाए रखने का वादा कयिा था। यह जानकर, धन्य सवास ने एक बार फरि, जैसा उन्होंने पहली बार कयिा था, अपने आध्यात्मकि दल को इकट्ठा कयिा और एक सेनापति की तरह पवत्रि शहर के लिए रवाना हो गए; लेकनि उन्हें वहाँ अब एपार्क ओलंपयिस नहीं मलिा; ओलंपयिस ने उससे कहा गया दुष्ट कार्य कर दयिा था और संतुष्ट होकर राजा के पास लौट गया था। परम पुण्यशील व्यक्ति निर्दोष एलयिाह के नर्विासन पर गहराई से दुखी हुए और उनके लिए रोए। जब उन्होंने देखा कि नए पैट्रआिर्क जॉन वधिर्मी वचिारों में लप्ति थे, तो सव्वा ने उन्हें पुरज़ोर आग्रह कयिा कि वे सेवरस के साथ कोई संगति न रखें, बल्कि काल्सेडोन परषिद का बचाव करें और अंतमि सांस तक उसका साथ दें; क्योंकि यदि वे ऐसा करने में वफिल रहे, तो एक वधिर्मी के रूप में, सभी मरुस्थल-नवािसी पतिृपुरुषों द्वारा उन पर श्राप लगाया जाएगा। जॉन लज्जति हुआ, और साथ ही उसे संत सव्वा के साथ एकत्रति हुए इतने सारे दैवीय प्रेरति पतिाओं से डर भी लगा; उसने सेवेरस और उसके सभी वधिर्म का त्याग कर दयिा, काल्सेडोन परषिद में पुष्टि की गई ऑर्थोडॉक्सी को अपना लयिा – और पवत्रि पतिाओं को आश्वासन मलिा।

जल्द ही राजा के ध्यान में आया कि नव-नयिुक्त पैट्रआिर्क जॉन ने सडिोन परषिद को अस्वीकार कर दयिा और काल्सेडोन की परषिद को स्वीकार कर लयिा। राजा ओलंपयिास पर बहुत क्रोधति हुआ और उसने इतने बड़े पैमाने पर चुनाव कराने के लिए उसे पदच्युत कर दयिा; ओलंपयिास की जगह, उसने एक अनास्तासयिस को पूरे फलिस्तीन का बशिप नयिुक्त कयिा और उसे यरूशलेम भेज दयिा ताकि वह या तो पादरी जॉन को सेवरस के साथ संप्रदाय में शामलि होने के लिए मना सके या उन्हें सहिासन से हटा सके। अनास्तासयिस पहुँचा और तुरंत ही पैट्रआिर्क को गरिफ्तार कर उसे कैद कर दयिा। पैट्रआिर्क ने एपार्क से दया करने की वनिती की, यह वादा करते हुए कि वह उसके सभी आदेशों का पालन करेगा, बशर्ते कि ऐसा न लगे कि वह जबरदस्ती सम्राट की इच्छा का पालन कर रहा है; और उसने यह वादा कयिा कि अगले रवविार को, चर्च में पूरी मंडली के सामने, वह काल्सेडोन परषिद की नदिा करेगा, सडिोन परषिद की महमिा करेगा, और सेवेरस के साथ संप्रदाय में प्रवेश करेगा। पैट्रआिर्क को जेल से रहिा कर दयिा गया और उसने सम्मानति पादरयिों सव्वास और थयिोडोसयिस को गुप्त रूप से संदेश भेजकर उनसे सभी पादरयिों को इकट्ठा करने और रवविार को चर्च में उसके पास आने का आग्रह कयिा। ऐसा हुआ कि हाइपैटयिस, जो सम्राट का रश्तिेदार था, उस समय तीर्थयात्रा पर यरूशलेम में था; रवविार को, दोनों मठाध्यक्ष, सावस और थयिोडोसयिस, दस हजार भकि्षुओं के साथ पहुँचे[8615] । चर्च में[8616] , जहाँ बशिप अनास्तासयिस और हाइपैटयिस, जो ज़ार का एक रश्तिेदार था, अपने सैनकिों के साथ भी पहुँच चुके थे, और लोगों की एक बड़ी भीड़ इकट्ठा हो गई थी, पैट्रआिर्क सव्वास और थयिोडोसयिस के साथ मलिकर उपदेश-मंच पर चढ़े; फरि संपूर्ण भीड़, भकि्षुओं के साथ मलिकर, पैट्रआिर्क से चलि्लाई:

[8613] वर्ष 513 में।

[8614] उन्होंने 517 से 524 तक जॉन तृतीय के नाम से पैट्रआिर्क के रूप में सेवा की।

[8615] यह 517 की शुरुआत में था।

[8616] सेंट स्टीफन प्रथम शहीद और आर्चडीकन के चर्च में, जो अब दमास्कस गेट के उत्तर में है। इस चर्च को उस अवसर के लिए आर्चबशिप ने इसकी वशिालता के कारण चुना था, क्योंकि कैथेड्रल में इकट्ठी हुई बड़ी भीड़ को समा नहीं पा रहा था।

'मूर्तभिंजकों को शाप दो और काल्सेडोन परषिद का समर्थन करो!'

पैट्रआर्क ने हम्मिंत जुटाई और ऊँचे स्वर में कहा:

'जो कोई भी यूटकिस, नेस्टोरयिस, सेवरस और सोतेरकिस की तरह सोचता है, वह धक्किारति हो!'

इसी प्रकार, धन्य थयिोडोसयिस और आदरणीय सव्वा ने जोर से पुकारा:

'जो कोई भी चार परषिदों को चार सुसमाचार लेखकों के समान स्वीकार नहीं करता, वह शापति हो!'

यह देखकर, एपार्क अनास्तासयिस, भक्षिुओं और लोगों की भीड़ से डरकर, जल्दबाजी में चर्च छोड़कर सेसरयिा भाग गया। और राजा के नातेदार ने महात्माओं से शपथ ली कि वह सेवरस की शक्षिाओं का समर्थन करने नहीं, बल्कि पवत्रि स्थानों की पूजा करने और पवत्रि कैथोलकि चर्च में शामलि होने आया था। और उसने आदरणीय महात्मा सावास और थयिोडोसयिस को बहुत सारा सोना दयिा, ताकि वे उसे अपने साथ आए भक्षिुओं में बाँट सकें। इसके बाद, सभी संतों ने पूरे परषिद की ओर से राजा को नम्निलखिति लखिा: 'हमारे प्रभु यीशु मसीह, जो सभी के शाश्वत राजा और परमेश्वर हैं, ने अपनी कृपा से सांसारकि राज्य का राजदंड आपके अधकिार में सौंप दयिा है, ताकि आपके माध्यम से वह सभी चर्चों पर और वशिेष रूप से चर्चों की माता – पवत्रि सय्यिोन पर, शांति का सच्चा आशीर्वाद प्रदान कर सकें; सभी जानते हैं कि इस चर्च में सच्चे वश्विास का महान रहस्य आरंभ हुआ और पृथ्वी के छोर तक फैल गया। हम, इन दव्यि स्थानों के नविासी, इसे पवत्रि प्रेरतिों से प्राप्त कयि हैं, इसे आज तक पूर्ण और अक्षुण्ण बनाए रखे हैं, और मसीह की कृपा से इसे हमेशा बनाए रखेंगे, न तो अपने वरिोधयिों को हमें सच्चे मार्ग से भटकाने देंगे, और न ही उनके नीच और व्यर्थ शब्दों के आगे झुकेंगे। इसी नर्दिोष और अटूट वश्विास में, हे राजा, आपको भी पाला-पोसा गया और आप परपिक्व हुए, – और अब हम आश्चर्य करते हैं कि कैसे, पवत्रि नगर यरूशलेम में आपके शासन के दनिों में, ऐसी बगावत और ऐसा उथल-पुथल मच गया है कि उन्होंने परमेश्वर के सेवकों, बुज़ुर्गों और भक्षिुओं को भी नहीं बख्शा, जन्हिोंने अपने युवा दनिों से ही सदाचार से प्रेम कयि और अपने लयि मौन में एक नम्र जीवन चुना था; यहूदयिों और अन्य अवश्विासयिों की आँखों के सामने, उन्हें स्वयं पवत्रि सय्यिोन से शहर की सड़कों पर घसीटकर बाँझ भूमि में नर्वासति कर दयिा जाता है। उन्हें तो सच्चे धर्म के अनुकूल न होने वाले कार्य करने के लयि भी मजबूर कयि जाता है, ताकि जो लोग यहाँ प्रार्थना करने आते हैं, वे अपनी आत्मा के लयि लाभ प्राप्त करने के बजाय हानि उठाते हैं और भटककर लौट जाते हैं। इसलयि हम आपकी महमिा से वनिती करते हैं कि हमें इन अनेक बुराइयों से बचाएँ, जनिका कारण उत्तर है, जसिके हाथों में हमारे पापों के कारण अंतीयक की कलीसयिा सौंप दी गई है, जसिसे उसकी अपनी आत्मा का वनिाश और सभी कलीसयिाओं के लयि परीक्षा उत्पन्न हुई है। हम, यरूशलेम के लोग, अब बनिा भटकाए हुए वश्विास में कैसे शक्षिति हो सकते हैं? जैसे कि हम, जो कभी धर्म के वचन में सभी के लयि पति और शक्षिक थे, केवल अब, इतनी देरी से, वश्विास की सच्ची स्वीकारोक्ति को जानते हैं! क्या हम यह नहीं जानते कि हमारे पूर्वजों द्वारा वरिासत में मलिी सच्ची और सुदृढ़ आस्था में यह नव-उभरा, तथाकथति सुधार कोई सुधार नहीं है, बल्कि एक वकिृति और भ्रष्टता है, और यह कि यह उन लोगों को उनके आत्माओं के वनिाश के पुरस्कार के लयि तैयार करता है जो इसे स्वीकार करते हैं? हम नकियि के तीन सौ अठारह पवत्रि पतिाओं और तीन बाद के सार्वभौमकि परषिदों[8617] द्वारा स्थापति धर्म-स्वीकृति में कसिी भी अतरिक्ति या परविर्तन को बर्दाश्त नहीं करेंगे; बल्कि हम इसके लयि अपनी आत्मा तक बलदिान करने और यदि संभव हो तो अनगनित मौतें सहने को तैयार हैं। ईश्वर की शान्ति, जो सर्वज्ञान से परे है[8618] , हमारी पवत्रि आस्था की रक्षा करे और इसके वरिुद्ध उठाए गए तूफान को शांत करे, उसकी पवत्रि महमिा और आपके अपने राज्य की शोभा के लयि।"

पवत्रि पतिाओं से यह संदेश पाकर, राजा बहुत क्रोधति हो गया और उसने पतिृश्रेष्ठ जॉन को, दोनों मठाध्यक्षों—सब्बाह और थयिोडोसयिस—के साथ, यरूशलेम की सीमाओं से बाहर नकिालने का संकल्प लयि। लेकनि ईश्वर की इच्छा ने इस दुष्ट कृत्य को होने नहीं दयिा। उस समय, कुछ बर्बर लोगों के साथ युद्ध छड़ि गया, और इसलयि राजा ने चर्च और पूजनीय पतिरों पर अपना उत्पीड़न फलिहाल के लयि स्थगति कर दयिा और बर्बर लोगों के खलिाफ युद्ध की तैयारी करने लगा।

पवत्रि पैट्रआर्क इलयिास के अन्यायपूर्ण नर्वासन के बाद, ईश्वर के धर्मी न्याय द्वारा, पूरे फलिस्तीन में अकाल और सूखा और भारी फसल वनिाश आया, ठीक उसी प्रकार जैसे पैगंबर इलयिास के दनिों में (3 राजा 17; याकूब

[8617] यह, बेशक, सार्वभौमकि परषिदों (Ecumenical Councils) को संदर्भति करता है: पहली (नकिाया परषिद) 325 में, दूसरी (कॉन्स्टेंटनिोपल परषिद) 381 में, तीसरी (एफ़सिुस परषिद) 431 में, और चौथी (काल्सेडॉन परषिद) 461 में।

[8618] प्रेरति का कथन। देखें फलिप्पियों 4

5:17–18): आकाश बंद हो गए और कोई वर्षा नहीं हुई, और पानी के झरने सूख गए; इसके अलावा, टिड्डियों का एक विशाल झुंड प्रकट हुआ, जिसने पूरी भूमि को ढक लिया और खेतों में सारी घास और पेड़ों की पत्तियों को खा डाला। ईश्वर की यह सजा पाँच वर्षों तक चली, और कई लोग भूख और प्यास से मर गए। और यरूशलेम के निवासियों ने कहा कि परमेश्वर, पैट्रआर्क एलियाह को अनुचित रूप से निकालने के कारण, अकाल से फिलिस्तीन को दंडित कर रहे थे। उस समय, धन्य सावास ने अपने द्वारा बनाए गए सात मठों के मठाधीशों को बुलाया और उन्हें सांसारिक प्रकृति की किसी भी चीज़ से परेशान न होने का निर्देश दिया, उन्हें सुसमाचार के शब्दों की याद दिलाते हुए: *'इसलिए चिन्ता मत करो और न कहो: "हम क्या खाएँगे?" या "हम क्या पिएँगे?" या "हम क्या पहनेंगे?" क्योंकि अन्यजाति इन सब बातों की खोज करते हैं, और तुम्हारा स्वर्गीय पिता जानता है कि तुम्हें इन सब चीज़ों की आवश्यकता है। परन्तु पहले परमेश्वर के राज्य और उसकी धार्मिकता की खोज करो, और ये सब बातें भी तुम्हें मिलेंगी'* (मत्ती 6:31–33)।

और वे परमेश्वर की सर्वशक्तिमान व्यवस्था द्वारा पोषित थे।

एक दिन, पुनरुत्थान से पहले, महान मठ के व्यवस्थापक ने आदरणीय से कहा:

'पिताजी, हम इस शनिवार और रविवार को दिव्य सेवा के लिए घंटी नहीं बजा सकते, क्योंकि न केवल पुजारियों के पास जब वे इकट्ठा होते हैं तो खाने के लिए कुछ भी नहीं है, बल्कि पवित्र अर्पण के लिए भी पर्याप्त रोटी नहीं है: इस तरह हम दिवालिया हो गए हैं।'

इस पर संत ने उत्तर दिया:

'मैं भोजन की कमी के कारण सेवा नहीं छोड़ूँगा: वही तो न्यायी है जिसने हमें कल की चिंता करने का आदेश नहीं दिया, और जो अकाल के समय हमें जीवित रख सकता है; चर्च के व्यवस्थापक एक पात्र या कुछ कपड़े शहर में बेचने के लिए भेजे और पवित्र अनुष्ठान के लिए आवश्यक चीजें खरीद लाए।'

इस प्रकार संत ने व्यवस्थापक को उत्तर दिया, और ईश्वर में अपनी आशा रखकर, उन्होंने प्रतीक्षा की। और रविवार के आने से पहले ही, ईश्वर की कृपा से भेजे गए कुछ युवक अचानक उसके पास आए, जो अपने साथ रोटी, गेहूँ, शराब और तेल से लदे तीस गधे और अन्य विभिन्न खाद्य पदार्थ लाए थे, और उन्होंने यह सब माननीय पिता को दे दिया। उन्होंने ईश्वर का धन्यवाद किया और व्यवस्थापक से कहा:

'भाई, आप क्या कहते हैं – क्या हमें इस शनिवार और रविवार को घंटी बजाने से नहीं रोकना चाहिए, क्योंकि हमारे पास इकट्ठे हुए पादरियों को देने के लिए कुछ भी नहीं है?'

प्रबंधक संत के महान विश्वास और उनके प्रति ईश्वर की दिव्य व्यवस्था की देखभाल देखकर चकित रह गया, और उसने अपने अविश्वास के लिए क्षमा मांगी।

इसके बाद, पूजनीय पिताजी निर्वासित यरूशलेम के पैट्रआर्क, परम पावन एलियाह से मिलने जाना चाहते थे; तब सव्वा अस्सी वर्ष के थे[8619] । वे अपने साथ दो मठाध्यक्ष, स्टीफन और यूफेलियस को लेकर चल पड़े। सव्वा और उनके साथ आए लोगों को देखकर, एलियाह प्रसन्न हुए और उन्हें कई दिनों तक अपने पास रखा। उन दिनों के दौरान, वह नौवें घंटे[8620] पर अपनी कोठरी से निकलते थे, क्योंकि वेस्पर्स की विदाई से लेकर नौवें घंटे तक वह किसी को दिखाई नहीं देते थे, बल्कि दरवाज़े बंद करके चुपचाप रहते थे; नौवें घंटे पर, वह उनके पास आते थे, उनके साथ भोजन करते थे और आध्यात्मिक बातचीत का आनंद लेते थे; सांध्य प्रार्थना के बाद, वह अपने मौन के कोठरी में लौट जाता था। एक दिन, 9 जुलाई को, वह हमेशा की तरह उनके पास नहीं आया। उन्होंने पूरे दिन उसका इंतजार किया और एक निवाला भी नहीं खाया। शाम के छह बजे[8621] पैट्रआर्क आँसुओं से भरी आँखों के साथ बाहर आए और उनसे कहा:

'तुम खा सकते हो; मेरे पास समय नहीं है, क्योंकि मैं एक मामले में व्यस्त हूँ।'

जब उन्होंने चिंता से पूछा कि वह इतना देर से क्यों आए और इतना क्यों रो रहे हैं, तो उन्होंने एक गहरी आह भरते हुए, रोना शुरू कर दिया, और संत साव्वा से कहा:

'हे धन्य पिता, हाय, ज़ार अनास्तासियस का अभी-अभी निधन हो गया है; दस दिनों में, इस जीवन को त्यागने और ईश्वर के भयानक न्याय के समक्ष उनके साथ न्याय का सामना करने की मेरी बारी है।'

[8619] यह वर्ष 518 का था।

[8620] यहूदी समय गणना प्रणाली के अनुसार, जिसे ईसाई पूजा-संबंधी प्रथाओं में बनाए रखा गया है, नौवां घंटा दोपहर के तीन बजे के अनुरूप था।

[8621] बारहवें घंटे पर।

और ऐसा ही हुआ: दस दिन बाद, परम पावन पैट्रआर्क एलिया का निधन हो गया[8622] , जो अपने निधन से पहले थोड़े अस्वस्थ थे; पूजनीय सव्वा ने उन्हें सम्मानपूर्वक दफनाया और अपने मठ लौट आए। जहाँ तक ज़ार अनास्तासियस की मृत्यु की बात है, कहा जाता है कि उसी रात जब पैट्रआर्क एलियाह को उनके बारे में एक दर्शन हुआ था, तब गरज के साथ गड़गड़ाहट हुई और राजसी कक्ष पर बिजली गिरी; इसने ज़ार को एक जगह से दूसरी जगह, एक कोने से दूसरे कोने तक भगाया, और अंत में एक कोने में उसे पकड़ लिया और मार डाला। इस प्रकार उस दुष्ट व्यक्ति का दुष्ट अंत हुआ।

धर्मद्रोही ज़ार अनास्तासियस की मृत्यु के बाद, धार्मिक जस्टिन प्रथम[8623] सिंहासन पर आरूढ़ हुए और अपने राज्य के सभी कोनों में एक फरमान जारी किया, जिसमें आदेश दिया गया कि ऑर्थोडॉक्सों को निर्वासन से वापस लाया जाए और उनमें से प्रत्येक को उनके पद और प्रतिष्ठा में बहाल किया जाए, कि कॉल्सेडन परिषद के फरमानों को पवित्र पुस्तकों में दर्ज किया जाए, और मसीह के चर्च में शांति बनी रहे। जब यह शाही फरमान पवित्र नगर यरूशलेम पहुँचा, तो सभी ने बहुत प्रसन्नता व्यक्त की, और पैट्रआर्क जॉन ने पूजनीय सावस से सेसरेया और स्किथोपोलिस[8624] जाने का आग्रह किया, ताकि वे इस शाही संदेश का प्रचार करें और काल्सेडन परिषद के निर्णयों को चर्च के अभिलेखों में दर्ज करें। यद्यपि आदरणीय पितामह पहले से ही वृद्धावस्था के कारण शारीरिक रूप से कमजोर और अपने कई मठवासी श्रमों से थके हुए थे, फिर भी, मसीह की कलीसिया के लिए, उन्होंने इस आज्ञा का पालन करने से इनकार नहीं किया; उन्होंने इतनी कठिन यात्रा करने से पीछे नहीं हटे, बल्कि कुछ अन्य वरिष्ठ भिक्षुओं के साथ निकल पड़े और काइसारिया में उनकी मुलाकात उस समय के बिशप, संत जॉन द होज़ेवाइट से हुई। स्कैथोपोलिस में, परम आदरणीय का मेट्रोपॉलिटन थियोडोसियस और सभी नागरिकों द्वारा सम्मानपूर्वक स्वागत किया गया, और उन्होंने वहाँ चमत्कार किए। उन्होंने सिलवानस नामक एक कुलीन सामरी के बारे में भविष्यवाणी की, जो ईसाइयों के विरुद्ध विद्रोह कर रहा था, कि वह शहर के बीच में आग से भस्म हो जाएगा - इस विषय पर नीचे चर्चा की जाएगी; उन्होंने रक्तस्राव से पीड़ित एक महिला और एक राक्षस-ग्रस्त छोटी लड़की को चंगा किया, और इस प्रकार चर्च को महान लाभ पहुँचाने के बाद, यरूशलेम लौट आए।

जब जस्टिन का उपर्युक्त फरमान यरूशलेम लाया गया, तो अनगिनत संन्यासी और सामान्य लोग इकट्ठा हुए; संत सावस भी कई बिशपों के साथ आए; और 6 अगस्त को, प्रभु के रूपांतरण के पर्व पर, चार (एकुमेनिकल) परिषदों के फरमान, जैसा कि आदरणीय के जीवन के वंशावलीकार द्वारा उल्लिखित है पवित्र सिनाथ, को पवित्र आदेशों में शामिल किया गया। जीवनीकार निष्कर्ष निकालते हैं, 'इस प्रकार, सम्राट अनास्तासियस के संबंध में दैवी वृद्ध की भविष्यवाणी पूरी हुई।'

पैलेस्टाइन में सूखे के चौथे वर्ष के अंत के करीब, पानी की गंभीर कमी के बीच, भाइयों ने लिखर जाने की इच्छा व्यक्त की और संत से उन्हें जाने देने के लिए कहा। उनकी अधीरता के लिए उन्हें फटकारते हुए, संत ने उन्हें ईश्वर में विश्वास रखने का आदेश दिया, और तीसरे दिन मठ के ऊपर एक वर्षा-मेघ दिखाई दिया, बारिश हुई, और मठ की खाइयाँ पानी से भर गईं; यह बारिश केवल मठ के भीतर ही हुई; आसपास के इलाकों में ओस की एक बूंद भी नहीं पड़ी। फिर पड़ोसी मठों के मठाधीश वृद्ध के पास आए और कहा:

'हे पिता, हमने आपके विरुद्ध ऐसा क्या पाप किया है कि आप हमें भूल गए और केवल अपने मठ के लिए ही ईश्वर से वर्षा माँगी है?'

उन्होंने उन्हें धीरे से सांत्वना दी और आश्वासन दिया कि जब तक ईश्वर पूरे फिलिस्तीन में बारिश नहीं भेजेंगे, तब तक उनके मठों में पानी खत्म नहीं होगा। अकाल का पाँचवाँ वर्ष आ गया; पानी इतना दुर्लभ था कि पवित्र शहर में गरीब प्यास से मर रहे थे: झरने सूख गए थे, और कुएँ, तालाब और नदियाँ सूखे पड़े थे। पैट्रआर्क जॉन ने गहरा शोक मनाया और एक समय दलदली व नम रहने वाली जगहों का दौरा कर पानी खोजने के लिए खाई और कुएँ खोदने का आदेश दिया, लेकिन पानी नहीं मिला। सिलोम के तालाब के स्थान पर, बहुत प्रयास से, कई मजदूरों ने चालीस साज़ेन की गहराई तक

[8622] 20 जुलाई 517।

[8623] जस्टिन – 518 से 527 तक बाइजेंटाइन सम्राट। जब जस्टिन का फरमान यरूशलेम लाया गया, तो भिक्षुओं और सामान्य लोगों की एक विशाल भीड़ इकट्ठा हुई; संत सावस भी आए, और कई बिशप; और 6 अगस्त को, प्रभु के रूपांतरण के पर्व पर, चार (एकुमेनिकल) परिषदों के फरमान, जैसा कि पूजनीय सव्वास द सैंक्टुडाइड के जीवन के वंशावलीकार द्वारा उल्लेख किया गया है, को पवित्र कैनन में शामिल किया गया। 'इस प्रकार,' संजीवनी ग्रंथ के लेखक का निष्कर्ष है, 'ईश्वरीय वरिष्ठ की भविष्यवाणी सम्राट अनास्तासियस के व्यक्तित्व में पूरी हुई।'

[8624] यह, बेशक, फिलिस्तीन में केसरिया को संदर्भित करता है।

खुदाई की - और उन्हें पानी नहीं मिला; निराश होकर, पैट्रआर्क ने पूरे शहर पर आई इस आम विपत्ति पर शोक व्यक्त किया। यह सितंबर का महीना था, और **नवीकरण का पर्व** नजदीक आ रहा था। यह जानकर कि आदरणीय सव्वा ने अपनी प्रार्थनाओं के द्वारा लाव्रा में बारिश कराई थी, पैट्रआर्क ने उन्हें बुलवाया और उनसे प्रार्थना करने को कहा कि वे ईश्वर से अपने लोगों पर दया करने और उन्हें अकाल और प्यास से नष्ट न करने के लिए कहें। लेकिन आदरणीय सव्वा ने यह कहते हुए मना कर दिया:

'ईश्वर के प्रकोप को टालने वाला मैं क्या हूँ? मैं स्वयं एक पापी हूँ।'

पैट्रआर्क ने उनसे और भी अधिक विनम्रता से अनुरोध किया। तब आदरणीय साब्बा ने कहा:

'आज्ञा पालन के लिए, मैं अपनी कुटिया में जाऊँगा और दया के लिए ईश्वर से प्रार्थना करूँगा; यदि तीन दिन बीत जाएँ और बारिश न हो, तो समझ लेना कि ईश्वर ने मेरी नहीं सुनी; आप भी प्रार्थना करें, कि मेरी प्रार्थना ईश्वर तक पहुँच जाए।'

यह कहकर वे चल दिए। अगले दिन सुबह भयंकर गर्मी थी; अनेक मजदूर दिन भर उपर्युक्त खंदक में खोदते रहे, और शाम को वे अपने सभी बर्तन और टोकरियाँ वहीं छोड़ गए, इस उम्मीद में कि वे अगले सुबह काम पर वापस आ जाएँगे। रात हो गई, और दक्षिण से एक हवा चली; एक गरज के साथ बारिश शुरू हो गई, और पूरी रात जोर की बारिश होती रही, जिससे नाले भर गए और हर तरफ से नदियाँ बहने लगीं। जहाँ वे खोद रहे थे, वहाँ पानी भर गया, और वह मिट्टी, जिसे उन्होंने इतनी मेहनत और इतने लंबे समय तक खाई से निकाला था, तुरंत अपनी जगह पर वापस आ गई, जिससे बर्तन और टोकरियाँ ढक गईं, और वह जगह जमीन के बराबर हो गई, ताकि यह बताना असंभव हो गया कि उन्होंने कहाँ खोदा था; आदरणीय सव्वा की प्रार्थनाओं से पवित्र शहर के सभी जलाशय पानी से भर गए, और सभी ने आनंद के साथ ईश्वर का धन्यवाद किया।

आदरणीय सव्वा के जीवन के अस्सी-छठे वर्ष में, पैट्रआर्क जॉन का निधन हो गया, और उन्होंने अपने उत्तराधिकारी के रूप में एलेउथेरियोपोलिस के सदाचारी व्यक्ति, पीटर को नियुक्त किया[8625] । फिर, तीन साल बाद, सम्राट जस्टिन ने वृद्धावस्था और बीमारी के कारण सिंहासन त्याग दिया, और राज्य अपने भतीजे जस्टिनियन को सौंप दिया[8626] । पति पीटर ने आदरणीय सव्वा से प्रेम किया और उन्हें उच्च सम्मान दिया, जैसा कि पिछले पितृगण करते थे, और अक्सर उन्हें रेगिस्तान में मिलने आते थे। पति की एक बहन थी, जिसका नाम इसिचियस था, जो एक धार्मिक और सदाचारी महिला थी। वह गंभीर रूप से बीमार पड़ गई, इतना कि चिकित्सक उसके ठीक होने की आशा खो बैठे। तब पैट्रआर्क ने संत सावास से उस बीमार महिला के घर आकर उसके लिए प्रार्थना करने का अनुरोध किया। वे आए और उन्होंने उस पर तीन बार क्रॉस का चिह्न बनाया, और वह तुरंत उठ खड़ी हुई, और ईश्वर की स्तुति करने लगी।

माननीय सावस के जीवन के नब्बेवें वर्ष की शुरुआत में, संत बाबा थियोडोसियस[8627] का निधन हो गया। इस समय, फिलिस्तीन में रहने वाले सामरी[8628] ग्रीक राजा के अधिकार से अलग हो गए, उन्होंने अपने ही कबीले से जूलियन नामक एक राजा चुना, ईसाइयों के खिलाफ विद्रोह कर दिया और बहुत नुकसान पहुँचाया: उन्होंने कई चर्चों पर कब्ज़ा कर उन्हें जला दिया, गाँवों और कस्बों पर छापा मारा, और कई ईसाइयों को पीट-पीट कर मार डाला, विशेष रूप से नेपल्स के क्षेत्र[8629] में, जहाँ स्थानीय बिशप, सामन, को पकड़कर तलवार से मार डाला गया, जबकि उनके साथ मौजूद पुरोहितों के टुकड़े-टुकड़े कर दिए गए और उन्हें पवित्र शहीदों की अवशेषों के साथ मिलाकर जला दिया गया। यह जानकर, सम्राट ने

[8625] यरूशलेम के पैट्रआर्क जॉन की 524 में मृत्यु हो गई। उनके उत्तराधिकारी, पैट्रआर्क पीटर, ने 524 से 544 तक पैट्रआर्केट संभाला। 'एलेउथेरोपोलिस के' के रूप में जाने जाने वाले, उनका नाम उनके गृहनगर - दक्षिणी फिलिस्तीन में एलेउथेरोपोलिस शहर के नाम पर रखा गया था।

[8626] अभी जीवित रहते हुए, वृद्धावस्था और शारीरिक दुर्बलता के कारण, और पूरी सीनेट की सहमति से, जस्टिन ने अपने भतीजे जस्टिनियन—जो पहले से ही राज्य के मामलों का प्रबंधन कर रहे थे—को कॉन्स्टेंटिनोपल के पैट्रआर्क, एपिफानियस द्वारा सम्राट के रूप में अभिषिक्त करवाया। जस्टिनियन ने 527 से 565 तक शासन किया।

[8627] 12 जनवरी 529 को।

[8628] समारियाई, जॉर्डन के पश्चिम में, फिलिस्तीन के केंद्रीय क्षेत्र सामरिया के निवासी थे, जिन्होंने अपना नाम राजधानी सामरिया से लिया था। समारियाई यहूदियों के प्रति शत्रुतापूर्ण एक संप्रदाय थे, जो पवित्र पुस्तकों में से केवल मूसा के पेंटेटेउक (Pentateuch) को ही ईश्वर का सच्चा प्रकटीकरण मानते थे, अन्य सभी पुस्तकों को अस्वीकार करते हुए धर्मग्रंथों की अन्य सभी पुस्तकों और यहूदी परंपराओं को अस्वीकार करते थे, और मसीहा, स्वर्गदूतों, मृतकों के पुनरुत्थान और परलोक आदि के बारे में कुछ गलत विचार रखते थे।

[8629] नेपल्स – अब नाब्लस – प्राचीन शेकेम है, जो माउंट गेरीज़िम, जहाँ सामरी मंदिर स्थित था, और माउंट हेब्रोन के बीच की घाटी में एक शहर है, यह एक ऐसा क्षेत्र है जो आज भी खूबसूरती से हरा-भरा है।

सामरी लोगों के खलिाफ एक बड़ी सेना भेजी, और सामरी लोगों के राजा जूलयिन की लड़ाई में मृत्यु हो गई; उसी समय, सल्विानस, जसिकी मृत्यु की भवष्यिवाणी आदरणीय सावस ने की थी, को ईसाइयों ने बंदी बना लयिा और स्कथिोपोलसि में शहर के ठीक केंद्र में जला दयिा। उसका पुत्र आर्सेनयिस कॉन्स्टेंटनिोपल के लिए रवाना हुआ और जल्द ही—हालांकि यह ज्ञात नहीं है कि कैसे—उसने सम्राट का अनुग्रह प्राप्त कर लयिा; दरबार में उसका बहुत सम्मान कयिा जाता था और सम्राट का वश्विास जीतने के बाद, उसने फलिस्तिीन के ईसाइयों पर बदनामी और झूठे आरोप लगाना शुरू कर दयिा। (वह स्वयं सामरी अवश्विास का पालन करता था), यह दावा करते हुए कि वे सामरी वद्रिोह के दोषी थे और उन्होंने सम्राट के प्रति अपनी नष्ठिा का त्याग कर दयिा था। राजा ने सामरी आर्सेनयिस की बदनामी पर वश्विास कर लयिा और वह फलिस्तिीनयिों पर क्रोधति हो गया। यह जानकर, यरूशलेम के पैट्रआर्क पीटर और उनके अधकिार क्षेत्र के बशिपों ने धन्य सावास से राजा के क्रोध को शांत करने और चर्च तथा लोगों की अनेक आवश्यकताओं के संबंध में उससे वनिती करने के लिए कॉन्स्टेंटनिोपल की यात्रा करने का कार्यभार संभालने का अनुरोध कयिा। यद्यपि पूजनीय सव्वा पहले से ही बहुत बूढ़े थे, फरि भी उन्होंने चर्च की ज़रूरतों को अपनी आराम की परवाह कएि बनिा, कांस्टेंटनिोपल की यात्रा पर नकिलने में जल्दबाजी की। उनके आगमन की खबर मलिते ही, धर्मपरायण सम्राट जस्टनियिन और कांस्टेंटनिोपल के पैट्रआर्क एपफिानयिस[8630] ने उन्हें मलिने के लिए वशिष्टि व्यक्तयिों को भेजा। जब वह सम्राट की उपस्थति में पहुँचा, तो ईश्वर ने सम्राट जस्टनियिन की आँखें खोल दीं, ठीक वैसे ही जैसे उन्होंने एक बार अनास्तासयिस के लिए कयिा था: और उसने परमेश्वर की कृपा को देखा, जो आदरणीय सावा के सरि के ऊपर चमक रही थी, सूर्य की करिणें बखिेर रही थी और उनके सरि को एक मुकुट की तरह घेरे हुए थी। चकति होकर, वह अपने सहिासन से उठ खड़ा हुआ और झुककर आशीर्वाद मांगा; फरि, पूजनीय सव्वा का सरि पकड़कर, उसने उन्हें प्रेम और आनंद से चूमा और बड़े भाई से अपने और अपनी रानी थयिोडोरा पर अपना आशीर्वाद देने का आग्रह कयिा। जब रानी ने पूजनीय सव्वा को देखा, तो वह उनके सामने झुक गई और कहा:

'पतिाजी, मेरे लिए प्रार्थना करें, कि मुझे संतान प्राप्त हो।'

बड़े ने उत्तर दयिा:

'ईश्वर, जो सभी का स्वामी है, आपका राज्य सुरक्षति रखे।'

रानी ने फरि कहा:

'पतिाजी, प्रार्थना कीजिए ईश्वर से कि वह मेरी बाँझपन को दूर कर दे और मुझे एक पुत्र दे।'

वृद्ध ने फरि उत्तर दयिा:

'महमिा के ईश्वर आपके राज्य को सच्चे धर्म में सुरक्षति रखें और आपको आपके शत्रुओं पर वजिय प्रदान करें।'

तीसरी बार, रानी ने बूढ़े से अपनी बांझपन के इलाज के लिए प्रार्थना करने को कहा और पहले जैसा ही जवाब सुना, और वह परेशान हो गई। जब सम्मानति पादरी रानी के पास से चले गए, तो उनके साथ आए अन्य पादरयिों ने उनसे पूछा:

'पतिाजी, आपने रानी को क्यों परेशान कयिा और उनके लिए प्रार्थना करने से इनकार क्यों कयिा?'

वृद्ध ने उनसे उत्तर दयिा:

'मुझ पर वश्विास करो, पादरयिों, उसकी कोख से कोई संतान नहीं नकिलेगी, वरना वह सेवरस की शक्षिाओं से पोषति होगी और अनास्तासयिा मसीह के चर्च में और अधकि कलह पैदा करेगी।'

इन शब्दों के साथ, पादरी ने यह स्पष्ट कर दयिा कि रानी गुप्त रूप से वधिर्म का पालन कर रही थी। राजा ने पादरी की प्रार्थना पर ध्यान दयिा, और अपना क्रोध फलिस्तिीनी ईसाइयों से हटाकर सामरी लोगों पर केंद्रति कर दयिा, और एक कानून जारी कयिा जसिमें सामरयिों को सभाएँ आयोजति करने से रोका गया, उनके बच्चों को माता-पति की वरिासत से वंचति कर दयिा गया, और अंत में, उनके वद्रिोह के सरगनाओं को मौत की सज़ा देने का आदेश दयिा गया। तब आर्सेनयिस—एक सामरी—छपि गया, क्योंकि राजा ने उसे मृत्युदंड देने का आदेश दयिा था; बाद में, वह संत सव्वा के पास गया, उनके पैरों पर गरि पड़ा और संत से बपतस्मिा की याचना की, ताकि वह इस प्रकार राजा के क्रोध से बच सके और मृत्यु से बच जाए; और वह स्वयं, अपने पूरे परविार के साथ, बपतस्मिा ग्रहण कर लयिा।

[8630] संत एपफिानयिस – 520 से 535 तक कॉन्स्टेंटनिोपल के पैट्रआर्क। उनका पर्व दविस 25 अगस्त है।

राजा, अपनी कृपा दखिाने और पूजनीय सव्वा को प्रसन्न करने के इच्छुक होकर, उनसे कहने लगा कि वे जो कुछ भी चाहें माँग लें और अपने मठों की आवश्यकताओं के लिए जितिना सोना चाहें ले लें। हालाँकि, आदरणीय संत ने अपने लिए धन-संपत्ति नहीं बल्कि ईसाइयों की भलाई की कामना करते हुए, राजा से वनिती की कि वे फ़लिस्तीन में अपने ही हति में लगाए गए करों को माफ़ कर दें, क्योंकि सामरी युद्ध से लोग बर्बाद हो गए थे; सामरयिों द्वारा जलाई गई चर्चों को राजा के खर्च पर फरि से बनाया जाए; पवत्रि शहर में ईसाइयों को आश्रय देने के लिए एक अतथिि गृह बनाया जाए, जो पवत्रि सेपल्चर की पूजा करने दूर-दराज से आए थे, यात्रयिों के लिए वहाँ एक अस्पताल बनाने और उन्हें डॉक्टर उपलब्ध कराने, पैट्रआिर्क एलयिाह द्वारा स्थापति परम पवत्रि माता परमेश्वर की चर्च का नर्मिाण पूरा करने, अपने मठों के नीचे रेगस्तिान में एक शहर बसाने और बर्बर आक्रमणों से रक्षा के लिए वहाँ चौकयिाँ तैनात करने का अनुरोध कयिा; सबसे बढ़कर, उन्होंने राजा से अपने राज्य से एरयिस, नेस्टोरयिस और ओरजिन की वधिर्म और अन्य वधिर्मयिों को, जो ईश्वर की कलीसयिा में अशांति पैदा कर रहे थे, मटिाने का प्रयास करने का आग्रह कयिा - और इसके बदले में, उन्होंने राजा से ईश्वर की कृपा से, रोम और अफ्रीका के ग्रीक साम्राज्य के साथ पुनर्मलिन का वादा कयिा - वे भूमि जो पछिले राजाओं ने खो दी थी। राजा इन सब बातों से सहमत हो गया और आदेश दयिा कि संत की प्रार्थना पूरी की जाए, और उसने स्वयं यह सुनश्चिति करने की जम्मिेदारी ली कि महात्मा की इच्छाओं को हर संभव जल्द से जल्द पूरा कयिा जाए। जब राजा अपने सलाहकारों और कोषाध्यक्षों के साथ संत की प्रार्थना पर चर्चा कर रहा था, तब महात्मा, थोड़ी दूरी पर हटकर, तीसरे घंटे का उत्सव मनाते हुए दाऊद के भजन पढ़ने लगे। और उनके शष्यिों में से एक, यर्मियाह नामक, उनके पास आया और कहा:

'आदरणीय पतिाजी, आप राजा से पीछे क्यों हट गए हैं, जबकि वह आपकी प्रार्थना को पूरा करने का इतना प्रयास कर रहे हैं, और आप अलग क्यों खड़े हैं?'

बड़े संत ने उत्तर दयिा:

'मेरे बच्चे, वे अपना काम कर रहे हैं, और हम अपना।'

इसके बाद, राजा ने संत को एक लखिति प्रमाणपत्र दयिा और उन्हें शांति से वदिा कर दयिा। ईश्वर ने धन्य सावा के प्रति दखिाई गई दया और उनकी प्रार्थना स्वीकार करने के लिए राजा को हजार गुना पुरस्कृत कयिा। महात्मा की भवष्यिवाणी सच हुई: कुछ समय बाद, राजा ने वास्तव में अपने दुश्मनों पर दो शानदार जीत हासलि कीं, रोम और अफ्रीका पर वजिय प्राप्त की, और दोनों राजाओं—रोम के वटिगि[8631] और कार्थेज के गेलीमर[8632] —को कैदी बनाकर कॉन्स्टेंटनिोपल लाया गया। इस बीच, पूजनीय सवा यरूशलेम लौट आए और, पैट्रआिर्क तथा बशिपों के अनुरोध पर, शाही फरमान[8633] का प्रचार करने के लिए एक बार फरि से केसरयिा और स्कैथोपोलसि के लिए रवाना हुए; वहाँ उन्होंने सरिलि नामक एक छोटे लड़के (इस जीवनी के संकलक) को देखा, उसे अपना शष्यि बना लयिा, और भवष्यिवाणी की कि वह उनके मठ में एक भक्षिु बनेगा।

वहाँ से लौटने के कुछ ही समय बाद, सव्वा बीमार पड़ गए; यह जानकर, पैट्रआिर्क पीटर उनसे मलिने आए और जब उन्होंने देखा कि उस साधु की कोठरी में एक छोटी मात्रा में फलयिों और कुछ पुरानी खजूरों के अलावा और कुछ भी नहीं था—यहाँ तक कि उनकी बीमारी के लिए बुनयिादी ज़रूरतें भी नहीं थीं—तो उन्होंने उन्हें उठाया और एक स्ट्रेचर पर बछिाकर अपने बशिप के आवास पर ले गए, जहाँ उन्होंने स्वयं उनके हाथों से उनकी देखभाल की । कुछ दनिों बाद, पूज्य सावा को एक दव्यि दर्शन हुआ, जसिमें उनके नकिटवर्ती नधिन की भवष्यिवाणी की गई थी।

उन्होंने जो देखा था, वह पैट्रआिर्क को सुनाया और लाव्रा भेजने का अनुरोध कयिा ताकि वे अपनी कोठरी में ही प्राण त्याग सकें। पैट्रआिर्क, जो हर तरह से उनकी इच्छा पूरी करना चाहते थे, उन्हें बीमार व्यक्ति की आराम के लिए

[8631] वटिगि इटली में ओस्ट्रोगोथकि साम्राज्य के अंतमि शासकों में से एक थे, जसिकी स्थापना 493 में थयिोडोरकि द ग्रेट ने की थी। वटिगि ने 537 से 538 तक शासन कयिा। ओस्ट्रोगोथकि साम्राज्य पर 564 में बीजान्टनि सम्राट जस्टनियिन के प्रसदि्ध सेनापतयिों बेलीस□□□अस और अंततःनार्सेस ने वजिय प्राप्त की।

[8632] गेलमिर उत्तरी अफ्रीका में, प्राचीन कार्थेज के स्थल पर स्थति, वैंडल साम्राज्य का अंतमि राजा था। वैंडल साम्राज्य को 531 में बीजान्टनि सेनापति वर्डसिैरयिस द्वारा नष्ट और जीत लयिा गया था। बंधी बनाए जाने के बाद, गेलीमर को कॉन्स्टेंटनिोपल भेजा गया, जहाँ वह बेलीस□□□अस के साथ उसकी वजियी शोभायात्रा में शामलि हुआ।

[8633] यह शाही फरमान मुख्य रूप से एरयिन, मोनोफसिाइट, नेस्टोरयिन और ओरजिनस्टि वधिर्मों के साथ-साथ सामरी झूठी शक्षिाओं के उन्मूलन और ऑर्थोडॉक्सी (सही आस्था) की पुष्टि से संबंधति था।

आवश्यक सभी चीजों के साथ उनकी कोठरी में भेज दिया। वरिष्ठ अपने सेल में लेट गए, सभी पादरियों और भाइयों को बुलाया, उनसे आखिरी बार विदा ली, और अपनी जगह पर मेलिटो नामक एक योग्य व्यक्ति को मठाध्यक्ष नियुक्त किया, और उन्हें सभी मठ की परंपराओं को अटूट रूप से बनाए रखने का दायित्व सौंपा। चार दिनों तक उन्होंने कुछ नहीं खाया और किसी से बात नहीं की। शनिवार की शाम उन्होंने परम पवित्र रहस्यों का निवेदन किया और, परमप्रसाद ग्रहण करने के बाद, अपने अंतिम शब्द कहे:

'हे प्रभु, मैं अपनी आत्मा तेरे हाथों में सौंपता हूँ!'

इस प्रकार 5 दिसंबर को, चौरासी वर्ष की आयु में, उनका निधन हो गया और वे परमेश्वर के स्वर्गदूतों और पवित्र martyrs[8634] के साथ अनंत जीवन में प्रवेश कर गए।

उस पूजनीय की मृत्यु की खबर पूरे यरूशलेम में फैल गई, और सभी लावरा और मठों से अनगिनत संन्यासी इकट्ठा हो गए; पादरी भी बिशपों और नागरिक अधिकारियों के साथ पहुँचे। अंत्येष्टि सेवा के बाद, उनके शरीर को सम्मान के साथ दो चर्चों के बीच, ठीक उसी स्थान पर दफनाया गया जहाँ रेवरेंड फादर ने एक बार आग का एक स्तंभ देखा था[8635] । और यह कि उनकी पवित्र आत्मा को स्वर्ग तक स्वर्गदूतों और शहीदों ने पहुँचाया था, यह निम्नलिखित वृत्तांत से ज्ञात हुआ। उस पवित्र नगर में रोमूलस नामक एक चाँदीकार रहता था, जो दमिश्क का मूल निवासी और सेंट गेथसेमनी में सेवा करने वाले डिकन (सेवकों) का प्रमुख था; उसने स्वयं बताया कि कैसे, पूजनीय पिता सव्वा के निधन के समय, चोरों ने उनके घर के नीचे सुरंग बनाकर बहुत सारा चाँदी का सामान चुरा लिया था—उनका अपना और उनके पास मौजूद दूसरों का भी—जिसकी कुल मात्रा एक सौ लीटर थी[8636] । गहरे दुःख से अभिभूत, रोमूलस पवित्र शहीद थियोडोर के चर्च में गया और पाँच दिनों तक रोता रहा और वेदी के सामने एक मोमबत्ती जलाई। पाँचवीं रात, वह सो गया और उसने संत थियोडोर द मार्टिर को देखा, जिन्होंने उससे पूछा:

'भाई, क्या बात है? तुम इतने परेशान और दुखी क्यों हो?'

उसने उत्तर दिया:

'मेरी चाँदी चोरी हो गई है—मेरी और दूसरों की भी; चोरों ने मुझसे लूट लिया है, इसीलिए मैं रोता और दुखी हूँ, और प्रार्थना करता हूँ, लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ; तुमने मेरी नहीं सुनी।'

तब संत ने कहा:

'भाई, मेरा विश्वास करो, मैं पिछले कुछ दिनों से यहाँ नहीं आया हूँ; हम सभी शहीदों को आज्ञा दी गई थी कि हम पूजनीय सावा की पवित्र आत्मा से मिलने के लिए इकट्ठा हों, जो उनके शरीर से विदा हो गई थी, और उसे उसके विश्राम स्थल तक ले जाएँ; लेकिन अब रोओ नहीं, बल्कि अमुक स्थान (उन्होंने स्थान का नाम बताया) पर जाओ और तुम्हें वह मिल जाएगा जो चोरी हुआ था।'

रोम्यूलस तुरंत उठा, अपने कुछ परिचितों को साथ लेकर, बताए गए स्थान पर गया, और उसने सब कुछ ठीक वैसा ही पाया जैसा संत थियोडोर ने अपने साक्षात्कार में कहा था।

हमें कुछ अन्य चमत्कारों का भी उल्लेख करना चाहिए जो आदरणीय सव्वा के निधन के बाद हुए। दो मेहमाननवाज़ भाइयों के पास एक अंगूर का बाग़ था और वे अक्सर धन्य सव्वा के मठ से आने वाले भिक्षुओं को आश्रय देते थे; जैसे ही अंगूर की कटाई शुरू हुई, वे किसी गंभीर बीमारी से ग्रस्त हो गए, जिससे वे न तो शराब प्राप्त करने और न ही जीवित रहने की आशा छोड़ बैठे। वे पूज्य सावा के स्वर्गीय हस्तक्षेप में विश्वास रखते थे और अक्सर उनकी स्मृति में प्रार्थना

[8634] संत सावस का 532 में निधन हो गया।

[8635] संत सावस के अवशेषों के संबंध में, उनकी जीवनी के लेखक, भिक्षु सिरिल ने बहुत बाद में लिखा: 'उनका शरीर आज तक ताबूत में सुरक्षित है, अखंड और अपरिवर्तित। मैंने यह पिछली इंडिक्शन के दौरान अपनी आँखों से देखा था। जब धन्य कैसियन के अवशेषों को उसमें रखने के लिए उस कीमती ताबूत को खोला गया, तो मैं उस दिव्य वृद्ध के अवशेषों को श्रद्धांजलि देने के लिए उसमें उतर गया, और मैंने देखा कि वे पूरे और अक्षुण्ण थे।" 7वीं (?) शताब्दी के आरंभिक रूसी तीर्थयात्री, मठाधीश डैनियल द्वारा, सेंट सावस के अवशेषों को उनकी लावरा में देखा गया, मानो वह अभी भी जीवित हों। उनका मठ जेरूसलम से लगभग 13 वर्स्ट पूर्व में किद्रोन धारा के किनारे आज भी स्थित है, और यह पूर्व में अपने संतों के कठोर, तपस्वी जीवन के लिए व्यापक रूप से जाना जाता है। बाद में, संत सावस के अवशेषों को लैटिनों द्वारा वेनिस ले जाया गया, जहाँ वे अब सेंट मार्क्स बेसिलिका में विराजमान हैं।

[8636] एक लिट्रा, एक बाइज़ेंटाइन वज़न की इकाई जो 72 ज़ोलोटनिक के बराबर थी, चांदी में 42 रूबल तक की कीमत रखती थी; इस प्रकार, चांदी की एक सौ लिट्रा की कीमत एक हज़ार रूबल से भी कहीं ज़्यादा थी।

करते हुए उनसे मदद की याचना करते थे; और संत ने जल्द ही उनकी प्रार्थना सुनी, प्रत्येक के पास अलग-अलग प्रकट हुए और कहा:

'मैंने तुम्हारे स्वास्थ्य के लिए ईश्वर से प्रार्थना की है, और उन्होंने तुम्हारी प्रार्थना स्वीकार कर ली है; उठो और अपने काम पर लग जाओ।'

होश में आते ही, वे फिर से स्वस्थ हो गए, उन्होंने ईश्वर की स्तुति की और संत को धन्यवाद दिया। तब से, हर साल जिस दिन यह चमत्कार हुआ, वे एक बड़ा उत्सव मनाते थे।

गनिार नाम की एक धार्मिक और सदाचारी महिला ने कास्टेली और गुफा में चर्चों को सजाने के लिए दो परदे दान करने का व्रत लिया था; लेकिन, बुनकर की आलस्य के कारण, परदे लंबे समय तक तैयार नहीं हुए। गनिार इस बात से बहुत दुखी थी। तब पूज्य सावा उसे दिखाई दिए और कहा:

'दुखी मत हो; कल काम अच्छी तरह से होगा, क्योंकि तुम्हारी भेंट प्रसन्न करने वाली होगी।'

वे बुनकर के सामने भी प्रकट हुए और उसकी आलस्य के लिए उसे गुस्से में फटकार लगाई। अगले सुबह, एक ने दूसरी को जो देखा था वह बताया, और काम जल्द ही पूरा हो गया।

महान लावरा के व्यवस्थापक ने मृत सागर से खरीदे गए गेहूं को लाने के लिए सारासेन ऊंटों को काम पर रखा। जब ऊंट गेहूं के साथ लावरा पहुँचे, तो उनमें से एक दाईं ओर सड़क से भटक गया, अपने माल के साथ किनारे से गरिकर धारा में जा पड़ा और कीचड़ में लोट गया। ऊंट का मालकि, एक सारासेन, चिल्लाया:

'फादर सव्वा, मेरी मदद करो और मेरी ऊँट को बर्बाद होने मत देना।'

और तुरंत, पलक झपकते ही, उसने देखा कि धर्मात्मा वृद्ध ऊँट पर बैठे हुए थे; वह एक दूसरे रास्ते से दौड़ता हुआ, नदी तक गया और उसने अपने ऊँट को सुरक्षित पाया, लेकिन अब वह उस पर बैठे व्यक्ति को नहीं देख सका। गेहूँ भी सुरक्षित मिला। उस समय से, हर साल यह सारासेन लाव्रा आता था ताकि वह पूजनीय सावा के मकबरे को श्रद्धांजलि दे सके।

एक अवसर पर, ओरजिन के अनुयायी, जो विभिन्न स्थानों से एक लेओन्टियस नामक व्यक्ति के नेतृत्व में इकट्ठा हुए थे, ने महान लावरा पर आश्चर्यजनक हमला करने, आदरणीय सव्वा के ऑर्थोडॉक्स झुंड को तितर-बितर करने, और लावरा को धूल-चटा देने का इरादा किया। इस उद्देश्य के लिए उन्होंने बड़ी संख्या में बेल्चे और अन्य लोहे के औजारों के साथ-साथ हथियार भी तैयार किए, और वे बड़े क्रोध से भरे एक विशाल समूह में निकल पड़े। दिन का दूसरा घंटा था, और अचानक यात्रा करते समय उन पर अंधकार और कोहरा छा गया; वे पूरे दिन भटकते रहे और लावरा को नहीं ढूंढ सके, लेकिन वे एक अतिकठिन इलाके में भटक गए, जहाँ रात हो गई; बड़ी मुश्किल से, अगले दिन वे खुद को संत मार्शियन के मठ के पास पाया[8637] । यह महसूस करते हुए कि वे कुछ भी हासिल नहीं कर पाएंगे, वे बिखर गए, और प्रत्येक अपमानित होकर घर लौट गया; और भविष्यवक्ता यशायाह के वचन उन पर पूरे हुए: *'उनके मार्ग में उजाड़ और विनाश पड़ा है... हम अंधों की तरह दीवार के सहारे टटोलते हैं, और जैसे हमारी आँखें न हों, वैसे टटोलते हुए चलते हैं; हम दोपहर के समय ठोकर खाते हैं'* (यशायाह 59:7, 10)। हालाँकि, ईश्वर ने अपने प्रिय सेवक, आदरणीय सव्वा के लिए लाव्रा को संरक्षित रखा, जिन्होंने वहाँ महिमामय रूप से परिश्रम किया। उनकी पवित्र प्रार्थनाओं के द्वारा, परम धन्य ईश्वर, त्रिमूर्ति में एक—पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा—हमें भी सभी बुराइयों से बचाए; उन्हें सदा और सदा के लिए महिमा हो, आमीन[8638] ।

[8637] संत अबा मार्शियन का मठ बेथलहम के पास स्थित था।

[8638] संत सावस द सैंक्टिफाइड ने चर्च सेवाओं के पालन के लिए पहला नियम लिखा, जिसे यरूशलेम नियम के नाम से जाना जाता है और जिसे सभी फिलिस्तीनी मठों ने अपनाया। थेस्सालोनिकी के सिमियन की गवाही के अनुसार, 'हमारे दैवी पिता सावस ने यह नियम प्रतिष्ठित यूथिमियस और थियोक्टिस्टस (जो मरुस्थल में सावस के तपस्या के प्रथम मार्गदर्शक थे) से प्राप्त करके स्थापित किया, और उन्होंने इसे अपने से पहले आए लोगों और धर्मोपदेशक कैरिटों से प्राप्त किया था, जिनकी मृत्यु वर्ष 270 में हुई थी, अर्थात्, प्रेरित परंपरा के अनुसार।' बाद में, पवित्र सावास के नियम को भक्ति की आवश्यकताओं के अनुसार कई आवश्यक और महत्वपूर्ण परिवर्धन के साथ समृद्ध किया गया; और भी बाद में, यह खो गया और यरूशलेम के पैट्रिआर्क सोफ्रोनीयस द्वारा पुनर्जीवित किया गया।

कॉन्टाकयिन, स्वर 8:

क्योंकि बचपन से ही आप अपने पुण्य के द्वारा परमेश्वर को एक निर्दोष बलिदान के रूप में अर्पित हुए, हे धन्य सव्वा, जो भक्ति के साधक थे: इस प्रकार आप आदरणीय संतों के लिए शिक्षा का स्रोत और मरुस्थल के एक प्रशंसनीय निवासी थे। अतः हम आपसे पुकारते हैं: हे अति धन्य सव्वा, आनन्दित हो।

आदरणीय भिक्षु करिऑन और उनके पुत्र जकरियाह की स्मृति

5 दिसंबर को स्मरणोत्सव

[8639]मिस्र में कारीयोन नाम का एक व्यक्ति रहता था। उसके दो बच्चे थे, जिन्हें उसने अपनी पत्नी के पास छोड़ दिया, जबकि वह स्वयं स्केटे[8640] गया और एक भिक्षु बन गया। कुछ समय बाद, मिस्र में अकाल पड़ा; करिओन की पत्नी , बड़ी कठिनाइयाँ सहते हुए, अपने बच्चों—ज़कारियास नामक एक लड़का और एक लड़की—को साथ लेकर तपस्वी आश्रम गई और एक झरने के किनारे एक पेड़ के नीचे बैठ गई। आश्रम में यह रिवाज था कि यदि कोई महिला किसी भिक्षु से बात करने आती, तो वे नदी के उस पार से ही बातचीत करते थे। और उस महिला ने नदी के उस पार से करिऑन को पुकारा:

'तुम एक भिक्षुनी हो, और अब एक बड़ी अकाल है: तुम्हारे बच्चों का पालन-पोषण कौन करेगा?'

क्यरियन ने अपनी पत्नी से कहा:

'लड़की को अपने पास रख लो और चली जाओ, और मुझे लड़के को रखने दो।'

और करिऑन ने बच्चे ज़कारियास को अपना मान लिया, उसे आश्रम में पाला, और सभी जानते थे कि वह उसका बेटा है। जब वह लड़का बड़ा हुआ, तो उसके कारण भिक्षुओं में असंतोष फैल गया। यह सुनकर, करिऑन ने ज़कारियास से कहा:

'उठो और इस जगह को छोड़ दो, क्योंकि तुम्हारी वजह से पिता मुझसे नाराज़ हैं।'

लेकिन ज़कारियास ने उत्तर दिया:

'मैं तुम्हारा बेटा हूँ; मैं तुमसे दूर कहाँ जाऊँ?'

तब वे दोनों, पिता कैरियन और उनका पुत्र, चल पड़े और थेबाइड[8641] गए, और वहाँ कई दिनों तक एक कोठरी में रहे। लेकिन वहाँ भी एक फुसफुसाहट उठ खड़ी हुई, और वे एक बार फिर से स्केटे लौट आए, हालाँकि वहाँ भी भाई लोग फुसफुसाना बंद नहीं हुए। तब ज़कारियास ज़हरीले पानी की झील पर गए, पानी में अपनी नाक तक डूब गए और एक घंटे तक वहाँ रहे; इसके बाद, वे एक कोढ़ी जैसे हो गए, और उनके पिता उन्हें मुश्किल से पहचान पाए। जब वे पवित्र Communion ग्रहण करने आए, तो पवित्र पुरोहित इसिडोर को ज़कारियास के बारे में एक दर्शन हुआ, और उन्होंने उनसे कहा:

'मेरे बच्चे, पिछले रविवार तुम एक मनुष्य के रूप में संप्रभु भोज ग्रहण करने आए थे, लेकिन अब तुम एक स्वर्गदूत के रूप में आए हो।'

जब कैरियन ईश्वर के पास जाने की तैयारी कर रहे थे, तो उन्होंने भाइयों से कहा:

'मैंने अपने पुत्र ज़कारियास से अधिक परिश्रम किया है, फिर भी मैं उसके समान विनम्रता और मौन की उस स्थिति को प्राप्त नहीं कर सका।'

[8639] मिस्र उत्तरी-पूर्वी अफ्रीका में एक देश है, जो नील नदी के किनारे स्थित है।

[8640] 'स्कित' - एक मिस्र का शब्द - का अर्थ है 'तराजू', हृदय की परीक्षा। अन्य लोग इसे ग्रीक 'स्कितिस' - 'चमड़ा' - से व्युत्पन्न करते हैं, एक व्युत्पत्ति जो यह इंगित करती है कि मूल स्केट निवासी और तपस्वियों के पास ठीक से बने आवास नहीं थे, बल्कि वे जंगली जानवरों की खाल से बने आश्रयों में ही काम चलाते थे। 'स्केट' शब्द एक विशिष्ट प्रकार की मठवासी बस्ती को संदर्भित करता था, अर्थात् एकांतवासी संन्यासियों के लिए व्यक्तिगत कोठरियाँ। यह नाम मुख्य रूप से मिस्र के उत्तर-पश्चिमी भाग में, माउंट नाइट्रिया से 25-30 वर्स्ट की दूरी पर स्थित एक प्रसिद्ध क्षेत्र पर लागू किया जाता था।

[8641] थेबाइड प्राचीन मिस्र के शहर थेब्स के आसपास का क्षेत्र था; इस नाम का उपयोग इसके प्रमुख शहर के नाम पर पूरे ऊपरी (दक्षिणी) मिस्र को संदर्भित करने के लिए भी किया जाता था। थेबाइड रेगिस्तान प्रारंभिक ईसाई संतों के लिए तपस्या के सबसे पसंदीदा स्थानों में से एक था;

और वृद्ध का नधिन हो गया। इसके बाद, फादर मूसा ने जकरयिा से कहा:
'तो मुझे बताओ, मुझे उद्धार पाने के लिए क्या करना चाहिए?'
ज़कारयिास उनके पैरों पर गरि पड़े, कहते हुए:
'क्या आपको मुझसे यह पूछना चाहिए, पतिा?'
और वृद्ध ने उससे कहा:
'मेरी बात मानो, ज़कारयिाह के पुत्र, मैंने पवत्रि आत्मा को तुम पर उतरते देखा; इसीलिए मैंने तुमसे पूछा।'
तब ज़कारयिा ने अपने सरि से मुकुट उतारकर, उसे उसके पैरों तले रख दयिा, पैरों तले कुचल दयिा और कहा:
'जब तक कसिी मनुष्य को इस तरह कुचला नहीं जाता, वह भक्षिु नहीं बन सकता।'
जब ज़कारयिास की मृत्यु नकिट थी, तो मूसा ने उनसे पूछा:
– तुम क्या देख रहे हो, भाई?
उसने उत्तर दयिा:
'क्या चुप रहना बेहतर नहीं होगा, पतिा?'
तब मूसा ने कहा:
'हाँ, मेरे पुत्र, मौन रहो।'
उनके नधिन के ठीक उसी क्षण, पतिा इसडिोर ने आकाश की ओर देखते हुए कहा:
'खुश हो, मेरे पुत्र ज़कारयिास, क्योंकि स्वर्ग के राज्य के द्वार तुम्हारे लिए खुल गए हैं!'
और फरि ज़कारयिा ने अपनी आत्मा ईश्वर को सौंप दी[8642] और संतों ने उसे तपस्थल में दफ़नाया।

19 दसिंबर

6 दसिंबर (पुराना संस्करण)

चमत्कार करने वाले संत नकिोलस, मायरा के आर्चबशिप का जीवन

6 दसिंबर को स्मरणोत्सव

लसियिा की भूमनि े संत नकिोलस को जन्म दयिा, जो महान चमत्कारकर्ता, शीघ्र सहायक और ईश्वर के समक्ष वशि्वासयोग्य मध्यस्थ थे। उनका जन्म पातारा नगर में हुआ था[8643] । उनके माता-पतिा, थयिोफेनेस और नॉन्ना, धार्मकि, कुलीन और धनी लोग थे। यह धन्य जोड़ा, अपने ईश्वरीय जीवन, अपने कई परोपकारी कार्यों और अपने महान सद्गुणों के कारण, एक पवत्रि संतान को जन्म देने के लिए योग्य समझा गया और *'जल की धाराओं के कनिारे लगाया हुआ वृक्ष, जो अपने मौसम में अपना फल देता है'* (भजन संहतिा 1:3) माना गया।

जब यह धन्य बालक पैदा हुआ, तो उसे *नकिोलस* नाम दयिा गया, जसिका अर्थ है *'राष्ट्रों का वजिेता'।* और उसने, ईश्वर के आशीर्वाद से, वास्तव में स्वयं को पूरे वशि्व के भले के लिए, बुराई का वजिेता साबति कयिा। उनके जन्म के बाद, उनकी माँ, नॉना, को तुरंत उनके रोग से चंगा कर दयिा गया और वह उस समय से लेकर अपनी मृत्यु तक नश्चिंतान रहीं। इस प्रकार, प्रकृति स्वयं इस बात की गवाही देती प्रतीत हुई कि इस महलिा का संत नकिोलस जैसा कोई और पुत्र नहीं हो सकता था: वही पहला और आखरिी थे। ईश्वर की कृपा से अपनी माँ के गर्भ में ही पवत्रि हुए, उन्होंने दनि का प्रकाश देखने से पहले ही स्वयं को ईश्वर का एक भक्तिपूर्ण उपासक साबति कयिा, अपनी माँ का दूध पीना शुरू करने से पहले ही चमत्कार करना शुरू कर दयिा, और भोजन खाने की आदत पड़ने से पहले ही एक उपवास करने वाले तपस्वी थे। उनके जन्म के बाद, बपतस्मिा के कुंड में रहते हुए, वह बनिा कसिी सहारे के तीन घंटे तक अपने पैरों पर खड़े रहे, और इस

[8642] संत ज़कारयिास की मृत्यु चौथी शताब्दी ईस्वी के अंत में हुई।
[8643] पतारा एशयिा माइनर (अब अनातोलयिा) के लसियिा प्रांत में एक तटीय व्यापारकि शहर था। इसकी स्थापना फ़नि शियिाई लोगों ने की थी; आज यह खंडहरों में पड़ा है।

प्रकार उन्होंने परम पवित्र त्रिमूर्ति का सम्मान किया, जिनके वे बाद में एक महान सेवक और मध्यस्थ बने। भविष्य के चमत्कार करने वाले को उनकी माँ के स्तनों को चूसने के तरीके से भी पहचाना जा सकता था; क्योंकि वह केवल उसके दाहिने स्तन से ही दूध पीता था, जिससे यह संकेत मिलता था कि वह भविष्य में धर्मी लोगों के साथ प्रभु के दाहिने हाथ में रहेगा। उसने अपने अनुकरणीय तपस्या का प्रदर्शन इस प्रकार किया कि वह बुधवार और शुक्रवार को अपनी माँ का दूध केवल एक बार ही पीता था, और वह भी शाम को, जब उसके माता-पिता अपनी प्रथागत प्रार्थनाएँ कर लेते थे। यह देखकर उसके माता-पिता बहुत आश्चर्यचकित हुए और उन्होंने पहले से ही भांप लिया था कि उनका बेटा अपने जीवन में कितना कठोर उपवासी बनेगा। बचपन से ही ऐसी संयम-वृत्ति के आदी होने के कारण, संत निकोलस ने अपने पूरे जीवन में, अपनी मृत्यु तक, हर बुधवार और शुक्रवार को कठोर उपवास में बिताया। जैसे-जैसे साल बीतते गए, वह लड़का ज्ञान में बढ़ता गया, और अपने धर्मनिष्ठ माता-पिता द्वारा सिखाए गए गुणों में खुद को निखारता गया। और वह एक फलदायी खेत की तरह था, जो शिक्षा के अच्छे बीज को ग्रहण करता और पोषित करता था और हर दिन गुणों के नए फल देता था। जब पवित्र धर्मग्रंथों का अध्ययन करने का समय आया, तो संत निकोलस ने अपने मन की शक्ति और तीक्ष्ण बुद्धि तथा पवित्र आत्मा की सहायता से, कम समय में बहुत ज्ञान प्राप्त किया और विद्वतापूर्ण शिक्षा में उत्कृष्टता हासिल की, जैसा कि मसीह के जहाज के एक अच्छे नाविक और वचन के झुंड के एक कुशल चरवाहे के लिए उचित है। शब्द और शिक्षा में पूर्णता प्राप्त करने के बाद, उन्होंने अपने जीवन-यापन के तरीके में भी स्वयं को सिद्ध किया। उन्होंने हर तरह से तुच्छ मित्रों और व्यर्थ की बातचीत से परहेज किया, महिलाओं से बात करने से बचे और उनकी ओर देखा भी नहीं। संत निकोलस ने सच्ची ब्रह्मचर्य का पालन किया, हमेशा शुद्ध मन से प्रभु का चिंतन किया और लगन से परमेश्वर के घर में उपस्थित रहे, उस भजनकार का अनुसरण करते हुए जो कहता है: भजन संहिता 83 – *'मैं तो प्रभु के भवन का द्वारपाल होना ही पसंद करूँगा'*।

परमेश्वर के मंदिर में, उन्होंने भक्तिपूर्ण प्रार्थना और पवित्र शास्त्रों के पाठ में पूरे दिन-रात बिताए, अपनी आध्यात्मिक समझ को विकसित करते हुए, पवित्र आत्मा की दिव्य कृपा से समृद्ध होते हुए, और शास्त्रों के वचनों के अनुसार अपने भीतर उनके योग्य एक निवास स्थान का निर्माण करते हुए: *'तुम परमेश्वर का मन्दिर हो, और परमेश्वर का आत्मा तुम में वास करता है'* (1 कुरिन्थियों 3:16)।

ईश्वर की आत्मा वास्तव में इस सदाचारी और पवित्र युवक के भीतर निवास करती थी, और प्रभु की सेवा करते हुए, वह उत्साह से भर गया था। उसने युवाओं की विशिष्ट आदतों में से कोई भी नहीं दिखाई: अपने आचरण में वह एक वृद्ध के समान था, इसीलिए सभी उसका सम्मान करते थे और उस पर आश्चर्य करते थे। एक बूढ़ा व्यक्ति जो युवा उत्साह दिखाता है, वह सभी का मज़ाक बन जाता है; इसके विपरीत, यदि एक युवा व्यक्ति में एक वृद्ध का चरित्र हो, तो सभी उसे प्रशंसा के साथ सम्मानित करते हैं। वृद्धावस्था में युवापन अनुचित है, लेकिन युवावस्था में वृद्धावस्था सम्मान की पात्र और सुंदर होती है।

संत निकोलस के एक चाचा थे, जो पतारा के बिशप थे, जिनका नाम भी उनके भतीजे के नाम पर निकोलस रखा गया था। जब इस बिशप ने देखा कि उसका भतीजा एक सदाचारी जीवन में उत्कृष्टता प्राप्त कर रहा था और संसार से पूरी तरह अलग हो रहा था, तो उन्होंने अपने माता-पिता को सलाह देना शुरू कर दिया कि उन्हें अपने बेटे को ईश्वर की सेवा के लिए समर्पित कर देना चाहिए। उन्होंने इस सलाह पर अमल किया और अपने बच्चे को प्रभु को समर्पित कर दिया, जिसे उन्होंने स्वयं उनसे एक उपहार के रूप में प्राप्त किया था। क्योंकि प्राचीन लेख बताते हैं कि वे संतानहीन थे और उन्होंने संतान होने की आशा छोड़ दी थी, लेकिन कई प्रार्थनाओं, आँसुओं और दान-पुण्य के द्वारा उन्होंने ईश्वर से एक पुत्र की याचना की थी, और अब वे उसे उसी को एक उपहार के रूप में अर्पित करने में संकोच नहीं कर रहे थे जिसने उन्हें वह उपहार दिया था। बिशप ने, इस युवा एल्डर को प्राप्त कर, जिसके पास *'ज्ञान के सफेद बाल और वृद्धावस्था की आयु, एक निष्कलंक जीवन'* (देखें ज्ञान 4:9) था, उसे पुरोहितत्व प्रदान किया।

जब वे संत निकोलस को पुरोहित पद की दीक्षा दे रहे थे, पवित्र आत्मा से प्रेरित होकर, उन्होंने चर्च में इकट्ठी भीड़ को संबोधित किया और भविष्यवाणी के रूप में कहा:

'हे भाइयो, मैं पृथ्वी पर एक नया सूर्य उदय होते देखता हूँ, जो शोक मनाने वालों को दयालु सांत्वना देता है। धन्य है वह झुंड जिसे उसे अपना चरवाहा बनाने का योग्य समझा जाएगा, क्योंकि वह भटक गए हुए लोगों की आत्माओं की देखभाल करेगा, उन्हें धर्मपरायणता के चरागाहों में पोषित करेगा, और कष्ट और दुख के समय में एक दयालु सहायक सिद्ध होगा।

यह भविष्यवाणी वास्तव में समय आने पर पूरी हुई, जैसा कि आगे के विवरण से स्पष्ट होगा।

एक पादरी के रूप में अभिषिक्त होने के बाद, संत निकोलस ने अथक परिश्रम किया; पहरेदारी करते हुए और निरंतर प्रार्थना और उपवास में रहते हुए, उन्होंने, यद्यपि निश्चय थे, परम आत्माओं की नकल करने का प्रयास किया। इस प्रकार का दैवी जीवन जीते हुए और अपनी आत्मा की सुंदरता में दिन-ब-दिन फलते-फूलते हुए, वे चर्च का शासन करने के लिए पूरी तरह से योग्य थे। उस समय, बिशप निकोलस, पवित्र स्थानों की पूजा करने के लिए फिलिस्तीन की यात्रा करना चाहते थे, उन्होंने चर्च का प्रशासन अपने भतीजे को सौंप दिया। ईश्वर के इस पुरोहित, संत निकोलस ने, अपने चाचा की जगह संभालकर, चर्च के मामलों का संचालन ठीक वैसे ही किया जैसे बिशप स्वयं करते थे। उस समय, उनके माता-पिता का निधन हो गया और वे अनंत जीवन में प्रवेश कर गए। उनकी संपत्ति विरासत में मिलने पर, संत निकोलस ने उसे ज़रूरतमंदों में बाँट दिया। क्योंकि उन्होंने क्षणिक धन-संपत्ति पर कोई ध्यान नहीं दिया और उसकी वृद्धि की परवाह नहीं की, बल्कि सभी सांसारिक इच्छाओं को त्यागकर, उन्होंने पूरे दिल से एकमात्र ईश्वर को समर्पित होने का प्रयास किया, और पुकार उठे: भजन संहिता 24– *'हे प्रभु, मैं अपनी आत्मा तेरी ओर उठाता हूँ'* भजन संहिता 142: *'मुझे अपनी इच्छा करना सिखा, क्योंकि तू मेरा परमेश्वर है'*; भजन संहिता 21: *'मैं गर्भ से ही तेरे भरोसे में हूँ; मेरी माता के गर्भ से ही तू मेरा परमेश्वर रहा है।'*

और उसका हाथ ज़रूरतमंदों की ओर बढ़ा रहता था, जिन पर वह धाराप्रवाह दान बरसाता था, जैसे नदियों से लबालब भरी नदी। यहाँ उसकी कई दयालुता की कृत्यों में से एक है।

पातारा नगर में एक कुलीन और धनी व्यक्ति रहता था। अत्यंत गरीबी में पड़कर, उसने अपना पूर्व सम्मान खो दिया, क्योंकि इस संसार का जीवन क्षणभंगुर है। इस व्यक्ति की तीन बेटियाँ थीं, जो बहुत सुंदर थीं। जब उसने अपनी ज़रूरत की हर चीज़ खो दी, यहाँ तक कि उसके पास खाने और पहनने के लिए कुछ भी नहीं बचा, तो उसने अपनी गहरी गरीबी के कारण, अपनी बेटियों को वेश्यावृत्ति में बेचने और अपने घर को एक कुख्यात घर में बदलने का निश्चय किया, ताकि इस तरह वह अपनी और अपनी बेटियों की आजीविका चला सके और उनके लिए भोजन और वस्त्र जुटा सके। हाय, चरम गरीबी किस अयोग्य विचारों तक ले जाती है! यह अशुद्ध विचार मन में लाने के बाद, यह आदमी अपनी बुरी योजना को अंजाम देने के लिए पहले से ही तैयार था। लेकिन सर्व-दयालु प्रभु, जो मनुष्य को नष्ट होते नहीं देखना चाहते और जो दयालुता से हमारी परेशानियों में हमारी मदद करते हैं, ने अपने सेवक, पुरोहित संत निकोलस की आत्मा में एक अच्छा विचार डाला, और गुप्त प्रेरणा द्वारा उन्हें उस व्यक्ति के पास भेज दिया जिसकी आत्मा नष्ट हो रही थी, ताकि वे उसकी गरीबी में उसे सांत्वना दें और उसे पाप से सावधान करें। संत निकोलस, उस व्यक्ति की अत्यधिक गरीबी के बारे में सुनकर और दिव्य प्रकटीकरण के माध्यम से, उसके बुरे इरादे के बारे में जानकर, उसके प्रति गहरी सहानुभूति महसूस करने लगे और अपने दयालु हाथ से, उसे और उसकी बेटियों को गरीबी और पाप से, जैसे आग से, बचाने का संकल्प लिया। हालाँकि, वह उस आदमी पर अपनी दया खुलेआम नहीं दिखाना चाहता था, बल्कि उसने गुप्त रूप से उसे उदार दान देने का निश्चय किया। संत निकोलस ने ऐसा दो कारणों से किया। एक ओर, वह स्वयं व्यर्थ मानवीय महिमा से बचना चाहते थे, सुसमाचार के शब्दों का पालन करते हुए: मत्ती 6 – *'सावधान रहो, कि तुम मनुष्यों के सामने अपनी धार्मिकता का अभ्यास न करो'*।

दूसरी ओर, वह उस व्यक्ति को ठेस पहुँचाना नहीं चाहता था, जो कभी अमीर था लेकिन अब अत्यधिक गरीबी में गिर गया था। क्योंकि वह जानता था कि दान उस व्यक्ति के लिए कितना दर्दनाक और अपमानजनक होता है जो धन-संपत्ति और महिमा से दरिद्रता में चला गया हो, क्योंकि यह उसे उसकी पूर्व समृद्धि की याद दिलाता है। इसलिए, संत निकोलस ने मसीह की इस शिक्षा के अनुसार कार्य करना सबसे अच्छा समझा: *'परन्तु जब तुम दान करो, तो अपने दाहिने हाथ को यह न जाने दो कि तुम्हारा बायाँ हाथ क्या कर रहा है'* (मत्ती 6:6)।

उन्होंने मानवीय महिमा से इतना परहेज़ किया कि वे उस व्यक्ति से भी खुद को छिपाने की कोशिश करते थे जिसकी वे मदद कर रहे थे। वे सोने की एक बड़ी बोरी लेकर आधी रात को उस आदमी के घर आए, बोरी को खिड़की से अंदर फेंका, और खुद जल्दी से घर लौट गए। सुबह, वह आदमी उठा और, बोरा पाकर, उसने उसे खोल दिया। सोने के सिक्कों को देखकर, वह बहुत डर गया और अपनी आँखों पर विश्वास नहीं कर सका, क्योंकि उसने कहीं से भी ऐसे उपहार की उम्मीद नहीं की थी। हालाँकि, जब उसने सिक्कों पर अपनी उंगलियाँ फेरें, तो उसे एहसास हुआ कि यह वास्तव में सोना ही था। उसका हौसला बढ़ गया और वह आश्चर्य से भरकर, खुशी के मारे रो पड़ा; वह देर तक इस बात पर विचार करता रहा कि किसने उस पर ऐसा आशीर्वाद दिया होगा, लेकिन उसे कुछ भी सूझ नहीं रहा था। इसे दैवीय कृपा का काम मानकर, वह अपने हृदय में अपने उपकारी का लगातार धन्यवाद करता रहा, और उस प्रभु की स्तुति करता रहा जो सभी की परवाह

करता है। इसके बाद, उसने अपनी सबसे बड़ी बेटी का विवाह कर दिया, और उसे दहेज के रूप में वह सोना दे दिया जो उसे चमत्कारिक रूप से मिला था। संत निकोलस को जब पता चला कि इस आदमी ने उसकी इच्छानुसार काम किया है, तो वह उससे प्रसन्न हो गया और उसने उसकी दूसरी बेटी के प्रति भी वही दया दिखाने का संकल्प लिया, ताकि वह भी एक वैध विवाह के माध्यम से पाप से बची रहे। पहले की तरह सोने की एक और बोरी तैयार करके, उन्होंने उसे रात में किसी को भी पता न चले, उसी खिड़की से उस आदमी के घर में फेंक दिया। जब वह सुबह उठा, तो उस गरीब आदमी ने एक बार फिर अपने पास सोना पाया। वह एक बार फिर आश्चर्य से भर गया और, जमीन पर गिरकर और जोर-जोर से रोते हुए, उसने कहा:

'हे दयालु ईश्वर, हमारे उद्धार के निर्माता, जिन्होंने मुझे अपने ही रक्त से मोचन दिया और अब, सोने से, मेरे घर और मेरे बच्चों को शत्रु के जालों से मुक्त कर रहे हैं, स्वयं मुझे अपनी दया और अपनी दयालु भलाई का सेवक दिखाइए। मुझे वह सांसारिक देवदूत दिखाइए जो हमें पापी विनाश से बचाता है, ताकि मैं जान सकूँ कि कौन हमें उस गरीबी से मुक्त करता है जो हमें दबा रही है और हमें बुरे विचारों और इरादों से आजाद करता है। हे प्रभु, आपकी दया से, जो आपके सेवक के उदार हाथ से मुझ पर गुप्त रूप से प्रदान की गई है, मैं अपनी दूसरी बेटी का विवाह कानून के अनुसार कर पा रहा हूँ, और इस प्रकार शैतान के जालों से बच पा रहा हूँ, जिसने अवैध रूप से अर्जित धन के माध्यम से मेरे पहले से ही बड़े विनाश को और बढ़ाने की कोशिश की थी।

प्रभु से इस प्रकार प्रार्थना करके और उनकी भलाई के लिए धन्यवाद देकर, उस व्यक्ति ने अपनी दूसरी बेटी का विवाह कर दिया। ईश्वर पर भरोसा रखते हुए, पिता को अटूट आशा थी कि वह अपनी तीसरी बेटी के लिए भी एक विधिवत पति का प्रबंध करेंगे, और इसके लिए आवश्यक सोना भी अपने दाता के गुप्त रूप से परोपकारी हाथ के माध्यम से प्रदान करेंगे। यह जानने के लिए कि उसे सोना कौन और कहाँ से ला रहा था, पिता सारी रात जागता रहा, अपने दाता की प्रतीक्षा में और उसे देखने की लालसा में। जल्द ही, अपेक्षित दाता प्रकट हो गया। मसीह के सेवक, संत निकोलस, तीसरी बार चुपचाप आए और अपनी सामान्य जगह पर रुककर, उसी खिड़की से सोने की एक समान बोरी फेंकी, और तुरंत घर लौट गए। खिड़की से सोने के गिरने की खनक सुनकर, वह आदमी परमेश्वर के सेवक के पीछे जितनी तेज़ी से हो सके दौड़ा। उसका पीछा कर पकड़ लेने और उसे पहचान लेने के बाद—क्योंकि उसके पुण्य और कुलीन जन्म के कारण संत को न पहचानना असंभव था—यह आदमी उसके पैरों पर गिर पड़ा, उन्हें चूमने लगा और उस संत को उन आत्माओं के उद्धारकर्ता, सहायक और रक्षक कहने लगा जो पूर्ण विनाश के कगार पर थीं।

उसने कहा, 'यदि दयामय प्रभु ने आपकी उदारता के द्वारा मुझे उठाया न होता, तो मैं, एक दुखी पिता, बहुत पहले ही सोदोम की आग में अपनी बेटियों के साथ नष्ट हो गया होता। अब, हालाँकि, हम आपके द्वारा बचाए गए हैं और पाप में एक भयानक पतन से उद्धार पाया है।'

और उसने संत से आँसुओं भरी आँखों से ऐसे ही और भी कई शब्द कहे। उसे बड़ी मुश्किल से ज़मीन से उठाकर, उस संत ने उससे यह कसम ली कि वह अपने पूरे जीवन में किसी से भी यह नहीं बताएगा कि उसके साथ क्या हुआ था। उसे और भी बहुत सी सलाह देने के बाद, संत ने उसे उसके घर वापस भेज दिया।

ईश्वर के इस पुरुष द्वारा किए गए कई दयालु कार्यों में से, हमने केवल एक का ही वर्णन किया है, ताकि यह ज्ञात हो सके कि वह गरीबों के प्रति कितना दयालु था। क्योंकि यदि हम विस्तार से यह बताने लगें कि वह ज़रूरतमंदों के प्रति कितना उदार था, उसने कितने भूखे लोगों को खिलाया, कितने नग्न लोगों को कपड़े दिए, और कितनों को साहूकारों से छुड़ाया, तो हमारे पास समय ही नहीं होगा।

इसके बाद, पूजनीय पिता निकोलस पलेस्टाइन के लिए निकलना चाहते थे, ताकि उन पवित्र स्थानों को देख सकें और उनकी पूजा कर सकें जहाँ हमारे प्रभु ईश्वर, यीशु मसीह, अपने सबसे पवित्र चरणों से चले थे। जैसे ही जहाज मिस्र के पास से गुज़र रहा था और यात्रियों को इस बात का अंदाज़ा नहीं था कि आगे क्या होगा, उनके बीच मौजूद संत निकोलस ने पहले से ही देख लिया कि जल्द ही एक तूफान आने वाला है, और उन्होंने अपने साथियों को इसकी चेतावनी दी, यह बताते हुए कि उन्होंने स्वयं शैतान को जहाज में प्रवेश करते देखा था, जिसका इरादा उन सभी को समुद्र की गहराई में डुबाने का था। और उसी क्षण, आकाश अचानक बादलों से ढक गया, और एक भयंकर तूफान ने समुद्र में एक भीषण आँधी-तूफान खड़ा कर दिया। यात्री बहुत भयभीत हो गए और अपनी मुक्ति की आशा छोड़कर तथा मृत्यु की आशंका से, संत निकोलस से प्रार्थना करने लगे कि वे उनकी मदद करें क्योंकि वे समुद्र की गहराई में डूब रहे थे।

उन्होंने कहा, 'हे ईश्वर के सेवक, यदि आप अपनी प्रार्थनाओं से प्रभु से हमारी सहायता नहीं करते हैं, तो हम तुरंत ही मर जाएँगे।'

उनका हौसला बढ़ाते हुए, उन्हें ईश्वर में अपनी आशा रखने और बिना किसी संदेह के अपने निकट उद्धार की प्रतीक्षा करने के लिए कहते हुए, संत ने प्रभु से भक्तिपूर्वक प्रार्थना करना शुरू कर दिया। तुरंत ही समुद्र शांत हो गया, एक बड़ी शांति छा गई, और उनका सामूहिक दुःख आनंद में बदल गया।

प्रसन्न यात्रियों ने ईश्वर और उनके सेवक, संत निकोलस का धन्यवाद किया, और तूफान की उनकी भविष्यवाणी तथा उनकी पीड़ा के अंत, दोनों पर और भी अधिक आश्चर्यचकित हुए। बाद में, नाविकों में से एक को मस्तूल के शीर्ष पर चढ़ना पड़ा। जब वह नीचे आ रहा था, तो उसका पैर फिसल गया और वह जहाज के बिलकुल ऊपर से बीच में गिर पड़ा; वह मौके पर ही मर गया और निर्जीव पड़ा रहा। संत निकोलस, जो मदद माँगे जाने से पहले ही मदद के लिए हमेशा तैयार रहते थे, ने तुरंत अपनी प्रार्थना के द्वारा उसे मृतकों में से जीवित कर दिया, और वह आदमी जैसे नींद से जाग उठा हो, वैसे उठ खड़ा हुआ। इसके बाद, सभी पाल चढ़ाने के बाद, यात्रियों ने अनुकूल हवा के साथ अपनी यात्रा सुरक्षित रूप से जारी रखी और अलेक्जेंड्रिया के तट पर शांतिपूर्वक उतरे। वहाँ कई बीमार और भूत-प्रेत बाधित लोगों को चंगा करने और शोक में डूबे लोगों को सांत्वना देने के बाद, ईश्वर के सेवक, संत निकोलस, एक बार फिर से अपने नियोजित यात्रा के लिए फिलिस्तीन की ओर रवाना हो गए।

पवित्र नगर यरूशलेम पहुँचने पर, संत निकोलस गोलगोथा गए, जहाँ हमारे ईश्वर मसीह ने क्रूस पर अपने परम पवित्र हाथ फैलाकर मानव जाति का उद्धार किया। वहाँ, ईश्वर के इस सेवक ने प्रेम से जलते हृदय से हार्दिक प्रार्थनाएँ अर्पित कीं और हमारे उद्धारकर्ता का धन्यवाद किया। उन्होंने सभी पवित्र स्थलों का दौरा किया, और हर जगह भक्तिपूर्वक पूजा अर्पित की। और जब, रात में, वे प्रार्थना के लिए '[8644] ' के पवित्र चर्च में प्रवेश करना चाहते थे, तो चर्च के बंद दरवाजे अपने आप खुल गए, और उस व्यक्ति को निर्बाध प्रवेश की अनुमति दी, जिसके लिए स्वर्ग के द्वार भी खोले गए थे। यरूशलेम में काफी समय तक रहने के बाद, संत निकोलस ने रेगिस्तान में तपस्या करने का इरादा किया, लेकिन स्वर्ग से एक दैवीय आवाज ने उन्हें रोक दिया, जिसने उन्हें अपने देश लौटने के लिए प्रोत्साहित किया। प्रभु परमेश्वर, जो हमारे भले के लिए सभी चीजों की व्यवस्था करते हैं, यह नहीं चाहते थे कि यह दीपक—जो ईश्वर की इच्छा से, लिसिया की महानगर पर चमकना था—मरुभूमि में छिपा रहे। जहाज पर चढ़ने पर, संत ने नाविकों के साथ व्यवस्था की कि वे उन्हें उनके मूल देश ले जाएँ। लेकिन उन्होंने उसे धोखा देने की साजिश रची और अपनी नाव को लिसिया की ओर नहीं, बल्कि किसी दूसरे देश की ओर मोड़ दिया। जब वे बंदरगाह से रवाना हुए, तो संत निकोलस ने, यह देखते हुए कि नाव एक अलग दिशा में जा रही थी, नाविकों के पैरों पर गिर पड़े और उनसे नाव को लिसिया की ओर मोड़ने की विनती करने लगे। लेकिन उन्होंने उनकी विनतियों पर कोई ध्यान नहीं दिया और अपने नियत मार्ग पर आगे बढ़ते रहे: उन्हें यह नहीं पता था कि ईश्वर अपने सेवक को नहीं छोड़ेंगे। अचानक, एक तूफान आ गया, जिसने जहाज को दूसरी दिशा में मोड़ दिया और उसे तेजी से लिसिया की ओर ले गया, जिससे दुष्ट नाविकों को पूर्ण विनाश का खतरा हो गया। इस प्रकार, दैवीय शक्ति से समुद्र पार होकर, संत निकोलस अंततः अपने देश पहुँचे। अपनी दयालुता के कारण, उन्होंने अपने विश्वासघाती दुश्मनों को कोई नुकसान नहीं पहुँचाया। न केवल वे उन पर क्रोधित नहीं हुए या एक भी शब्द में डाँट-फटकार नहीं की, बल्कि उन्होंने उन्हें आशीर्वाद देकर उनके अपने देश भेज दिया। वह स्वयं अपने चाचा, पाटारा के बिशप, द्वारा स्थापित मठ में गए, जिसका नाम संत ज़ायोन के नाम पर रखा गया था, जहाँ वह पूरे समुदाय के लिए एक अतिथि के रूप में स्वागत योग्य साबित हुए। उन्होंने उन्हें परमेश्वर के एक स्वर्गदूत के रूप में बड़े प्रेम से स्वागत किया, वे उनके दैवीय प्रेरित शब्दों में आनंदित हुए और उस सदाचारी चरित्र का अनुकरण करते हुए, जिससे परमेश्वर ने अपने वफादार सेवक को सुशोभित किया था, वे उनके स्वर्गदूत जैसे जीवन-यापन से प्रेरित हुए। इस मठ में मौन का जीवन और चिंतन के लिए एक शांतिपूर्ण आश्रय पाकर, संत निकोलस ने वहाँ से निकले बिना अपने जीवन का बाकी समय बिताने की आशा की। लेकिन ईश्वर ने उन्हें एक अलग मार्ग दिखाया, क्योंकि वे नहीं चाहते थे कि सद्गुणों का इतना समृद्ध खजाना—जिससे संसार को समृद्ध किया जाना था—मठ के भीतर, जमीन में दबे खजाने की तरह, सीमित रहे, बल्कि वे चाहते थे कि यह सभी के लिए खुला हो,

---

[8644] यह माउंट ज़ायोन पर एक छोटा सा चर्च था, जो उस समय पूरे यरूशलेम शहर में एकमात्र था, जहाँ मूर्तिपूजक रहते थे और जिसका नाम एलिया कैपिटोलिना था। परंपरा के अनुसार, यह चर्च उस घर की जगह पर बनाया गया था जहाँ प्रभु यीशु मसीह ने यूखरिस्त की संस्कार की स्थापना की थी और जहाँ बाद में पवित्र आत्मा प्रेरितों पर अवतरित हुआ था।

ताकि वे आध्यात्मिक रूप से लाभान्वित हो सकें, और इस प्रकार कई आत्माओं को जीत सकें। और इस प्रकार एक दिन, जब संत प्रार्थना में खड़े थे, तो उन्होंने ऊपर से एक आवाज़ सुनी:

'निकोलस, यदि तुम मुझसे मुकुट प्राप्त करना चाहते हो, तो जाओ और संसार के कल्याण के लिए परिश्रम करो।'

यह सुनकर, संत निकोलस भय से भर गए और इस बात पर विचार करने लगे कि यह आवाज़ उससे क्या चाहती और क्या माँगती है। और फिर उन्होंने सुना:

'निकोलस, यह वह क्षेत्र नहीं है जहाँ से मैं तुम्हारे द्वारा फल की अपेक्षा करता हूँ; बल्कि मुड़ो और संसार में निकल पड़ो, और मुझमें मेरा नाम महिमामय हो।'

तब संत निकोलस को एहसास हुआ कि प्रभु उनसे अपने मौन जीवन को छोड़कर लोगों की मुक्ति के लिए सेवा करने के लिए आगे आने को कह रहे थे।

वे सोचने लगे कि उन्हें कहाँ जाना चाहिए: अपने पैतृक नगर, पाटारा, या किसी अन्य स्थान पर। अपने साथियों के बीच व्यर्थ की कीर्ति से बचते हुए और उससे डरते हुए, उन्होंने किसी ऐसे दूसरे नगर में चले जाने का निश्चय किया जहाँ कोई उन्हें न जाने। उसी लिसिया के क्षेत्र में मायरा का प्रतिष्ठित शहर था, जो पूरे लिसिया का मेट्रोपॉलिटिन सिंहासन था[8645] । ईश्वर की इच्छा से संत निकोलस इसी शहर में आए। यहाँ कोई भी उन्हें नहीं जानता था; और वे इस शहर में एक भिखारी के रूप में रहे, उनके पास सिर रखने के लिए कोई जगह नहीं थी। उसे केवल प्रभु के घर में ही शरण मिली, क्योंकि ईश्वर ही उसका एकमात्र आश्रय थे। उस समय, उस शहर के बिशप—जो पूरे लिसिया के आर्चबिशप और प्राइमेट थे—जॉन का निधन हो गया। इसलिए, लिसिया के सभी बिशप रिक्त पद के लिए एक योग्य उत्तराधिकारी चुनने के लिए मायरा में एकत्रित हुए। जॉन के उत्तराधिकारी के रूप में कई सम्मानित और विवेकी पुरुषों के नाम प्रस्तावित किए गए। मतदाताओं के बीच भारी असहमति थी, और उनमें से कुछ, दैवीय उत्साह से प्रेरित होकर, कहने लगे:

'इस पद के लिए एक बिशप का चुनाव मानवीय निर्णय का विषय नहीं, बल्कि ईश्वर की इच्छा का मामला है। यह उचित है कि हम प्रार्थना करें, ताकि प्रभु स्वयं प्रकट करें कि इस पद को प्राप्त करने और पूरे लिसिया के चरवाहे बनने के लिए कौन योग्य है।'

इस बुद्धिमानी भरी सलाह को सर्वसम्मति से स्वीकार कर लिया गया, और सभी ने भक्तिपूर्वक प्रार्थना और उपवास में स्वयं को समर्पित कर दिया। प्रभु, जो अपने भय रखने वालों की इच्छाओं को पूरा करते हैं, ने बिशपों की प्रार्थना को सुनकर, इस प्रकार उनमें से सबसे बड़े के प्रति अपनी सद्भावना प्रकट की। जब यह बिशप प्रार्थना में खड़े थे, तो प्रकाश के रूप में एक पुरुष उनके सामने प्रकट हुए और उन्हें आज्ञा दी कि वे उस रात चर्च के दरवाजों पर जाएँ और देखें कि चर्च में सबसे पहले कौन प्रवेश करेगा।

उसने कहा, 'यह व्यक्ति मेरा चुना हुआ है; उसे सम्मान के साथ स्वीकार करो और उसे आर्चबिशप नियुक्त करो; इस व्यक्ति का नाम निकोलस है।'

बिशप ने इस दैवीय दर्शन के बारे में अन्य बिशपों को बताया, और यह सुनकर उन्होंने अपनी प्रार्थनाएँ और भी बढ़ा दीं। जिस बिशप को प्रकटवाणी प्राप्त हुई थी, वह उस स्थान पर खड़ा रहा जो उसे दर्शन में बताया गया था और वह उस व्यक्ति के आने का इंतजार करने लगा जिसे वह ढूंढ रहा था। जब सुबह की प्रार्थना का समय आया, तो पवित्र निकोलस, आत्मा से प्रेरित होकर, किसी और से पहले चर्च पहुँच गए, क्योंकि उनकी आदत थी कि वे आधी रात को प्रार्थना करने के लिए उठते थे और दूसरों से पहले सुबह की प्रार्थना में पहुँचते थे। जैसे ही वह प्रवेश-कक्ष में प्रवेश किया, जिस बिशप को प्रकटवाणी प्राप्त हुई थी, उसने उसे रोक लिया और उससे अपना नाम बताने के लिए कहा। संत निकोलस चुप रहे। बिशप ने उससे वही सवाल फिर से पूछा। संत ने नम्रता और शांति से उत्तर दिया:

'मेरा नाम निकोलस है; मैं आपकी पवित्र धर्मपीठ का सेवक हूँ, महाधर्माध्यक्ष महोदय।'

ऐसे संक्षिप्त और विनम्र शब्द सुनकर, धर्मनिष्ठ बिशप को एहसास हुआ—'निकोलास' नाम से ही, जिसकी भविष्यवाणी उन्हें एक दर्शन में दी गई थी, और विनम्र तथा नम्र उत्तर से—कि उनके सामने वही व्यक्ति खड़ा था जिसे ईश्वर ने मायरा की कलीसिया का प्रमुख बनने के लिए चुना था। क्योंकि वह पवित्र शास्त्र से जानता था कि प्रभु नम्र,

[8645] मायरा (अब मिरी, जिसे तुर्क डेम्ब्रे के नाम से जानते हैं) प्राचीन लिसिया का प्रमुख शहर था और यह समुद्र के पास, एंड्रक नदी के किनारे स्थित था, जिसके मुहाने पर एंड्रियाके बंदरगाह था।

मौन रहने वालों और जो परमेश्वर के वचन से काँपते हैं, उन पर अनुग्रह की दृष्टि रखते हैं। वह बहुत आनंदित हुआ, मानो उसे कोई गुप्त खजाना मिल गया हो। तुरंत संत निकोलस का हाथ पकड़कर, उन्होंने उनसे कहा:

'मेरे पीछे चलो, मेरे बच्चे।'

जब उन्होंने संत को सम्मानपूर्वक बिशपों के सामने लाया, तो वे दैवीय मधुरता से भर गए और यह आत्मा में सांत्वना पाकर कि उन्हें स्वयं ईश्वर द्वारा नियुक्त व्यक्ति मिल गया है, उन्होंने उन्हें चर्च के अंदर ले गए। इसकी खबर दूर-दूर तक फैल गई, और लोगों की अनगिनत भीड़ पक्षियों की तरह तेजी से चर्च में उमड़ पड़ी। जिस बिशप को वह दर्शन मिला था, उसने लोगों को संबोधित करते हुए कहा:

'हे भाइयों, अपने चरवाहे को स्वीकार करो, जिन्हें स्वयं पवित्र आत्मा ने अभिषिक्त किया है और जिन्हें उन्होंने आपकी आत्माओं की देखभाल का दायित्व सौंपा है। उन्हें किसी मानवीय सभा द्वारा नहीं, बल्कि स्वयं परमेश्वर द्वारा नियुक्त किया गया है। अब हमारे पास वह है जिसकी हम इच्छा करते थे, और हमने उसे खोज लिया है और स्वीकार कर लिया है जिसे हम खोज रहे थे। उनके नेतृत्व और मार्गदर्शन में, हमें इस बात की आशा नहीं छोड़नी चाहिए कि हम उनके प्रकट होने और प्रकाशन के दिन परमेश्वर के सामने खड़े होंगे।

सभी लोगों ने परमेश्वर का धन्यवाद किया और अकथनीय आनंद से आनंदित हुए। मानवीय प्रशंसा सहन न कर पाने के कारण, संत निकोलस ने लंबे समय तक यह पवित्र पद स्वीकार करने से इनकार कर दिया; लेकिन बिशपों की परिषद और सभी लोगों की विनम्र प्रार्थनाओं के आगे झुकते हुए, उन्होंने अपनी इच्छा के विरुद्ध बिशप का पदभार ग्रहण किया। उसे ऐसा करने के लिए एक दैवीय दर्शन ने प्रेरित किया था, जिसका अनुभव उन्होंने आर्चबिशप जॉन की मृत्यु से पहले ही कर लिया था। कॉन्स्टेंटिनोपल के पैट्रिआर्क, संत मेथोडियस, इस दर्शन को सुनाते हैं। वे कहते हैं, 'एक रात, संत निकोलस ने देखा कि उद्धारकर्ता अपनी पूरी महिमा में उनके सामने खड़े थे, और उन्हें सोने और मोतियों से सुसज्जित एक सुसमाचार दे रहे थे।' अपने दूसरी ओर, संत निकोलस ने परमेश्वर की अति पवित्र माता को अपने कंधों पर एक बिशप का ओमोफोरीयॉन रखते हुए देखा। इस दर्शन के कुछ ही दिनों बाद, मिरा के आर्चबिशप जॉन का निधन हो गया।

इस दृष्टि को याद करते हुए और उसमें ईश्वर की कृपा का एक स्पष्ट संकेत मानते हुए, तथा धर्मसभा की सच्ची विनतियों को अस्वीकार न करना चाहकर, संत निकोलस ने झुंड का प्रभार स्वीकार कर लिया। बिशपों की धर्मसभा ने, सभी पुरोहितों के साथ मिलकर, उनका अभिषेक किया और ईश्वर द्वारा प्रदान किए गए चरवाहे, मसीह के संत, पवित्र निकोलस में आनंदित होकर, हर्षोल्लास के साथ उत्सव मनाया। इस प्रकार, ईश्वर की कलीसिया को एक तेजस्वी दीपक मिला, जिसे छिपाकर नहीं रखा गया, बल्कि उसे उसके योग्य बिशप और चरवाहे के पद पर स्थापित किया गया। इस महान पद से सम्मानित होकर, संत निकोलस ने सत्य के वचन का यथोचित प्रचार किया और अपने झुंड को विश्वास की शिक्षाओं में बुद्धिमानी से शिक्षित किया।

अपने पादरीय मंत्रालय की शुरुआत में ही, ईश्वर के इस पुरुष ने अपने आप से कहा:

'निकोलस! जिस पद को तुमने स्वीकार किया है, वह तुमसे जीवन जीने के अलग तरीके की मांग करता है, ताकि तुम अपने लिए नहीं, बल्कि दूसरों के लिए जियो।'

अपने आध्यात्मिक झुंड को सद्गुण सिखाने की इच्छा से, उन्होंने अब पहले की तरह अपने सदाचारी जीवन को छिपाए नहीं रखा। क्योंकि पहले वह गुप्त रूप से अपना जीवन जीते थे, ईश्वर की सेवा करते थे, जो अकेले ही उनके कर्मों को जानते थे। अब, हालाँकि, एक बिशप के रूप में अभिषिक्त होने के बाद, उनका जीवन सभी के लिए खुला हो गया—मनुष्यों के सामने दिखावे के लिए नहीं, बल्कि उनके लाभ के लिए और परमेश्वर की महिमा के लिए, ताकि सुसमाचार के वचन पूरे हो सकें: मत्ती 5 – *'तुम्हारा प्रकाश इस प्रकार मनुष्यों के सामने चमके, कि वे तुम्हारे भले काम देखकर तुम्हारे पिता की महिमा करें जो स्वर्ग में* है'।

अपने अच्छे कर्मों के द्वारा, संत निकोलस अपने झुंड के लिए एक तरह से एक दर्पण थे और, प्रेरित के शब्दों में, 1 तीमुथियुस 4: *'वचन में, आचरण में, प्रेम में, आत्मा में, विश्वास में और पवित्रता में विश्वासियों के लिए एक आदर्श* बनें'।

वे नम्र और सौम्य स्वभाव के थे, आत्मा से विनम्र थे और हर तरह के घमंड से दूर रहते थे। उनके कपड़े साधारण थे, उनका भोजन शाकाहारी था, जिसे वे हमेशा दिन में केवल एक बार, और वह भी शाम को ही खाते थे। वे अपना पूरा दिन अपने पद के अनुरूप कार्यों में लगे हुए बिताते थे, और उनके पास आने वालों की मांगों और जरूरतों को सुनते थे। उसके घर

के दरवाज़े सभी के लिए खुले थे। वह सभी के प्रति दयालु और मिलनसार था; अनाथों के लिए वह एक पिता था, गरीबों के लिए एक उदार संरक्षक, रोने वालों के लिए एक सांत्वना देने वाला, अन्यायग्रस्तों के लिए एक सहायक, और सभी के लिए एक महान उपकारी था। चर्च के प्रशासन में उनकी सहायता के लिए, उन्होंने दो सदाचारी और विवेकी सलाहकारों को चुना, जो प्रेस्बिटर के पद पर थे। ये पूरे ग्रीस में प्रसिद्ध पुरुष थे – रोड्स के पॉल और अस्कलॉन के थियोडोर।

इस प्रकार संत निकोलस ने उन पर सौंपी गई मसीह की आध्यात्मिक भेड़ों के झुंड का मार्गदर्शन किया। लेकिन ईर्ष्यालु और चालाक साँप, जो परमेश्वर के सेवकों के विरुद्ध युद्ध करना कभी बंद नहीं करता और मनुष्यों में धार्मिकता को फलते-फूलते देखना सहन नहीं कर सकता, ने अधर्मी सम्राटों डायोक्लेटियन और मैक्सिमियन के माध्यम से मसीह की कलीसिया पर उत्पीड़न छेड़ दिया[8646] । उसी समय, इन राजाओं ने पूरे साम्राज्य में एक आदेश जारी किया, जिसमें ईसाइयों को मसीह का त्याग करने और मूर्तियों की पूजा करने का आदेश दिया गया। जो इस आदेश का पालन नहीं करते थे, उन्हें जेल और कठोर यातनाओं द्वारा ऐसा करने के लिए मजबूर किया जाता और अंततः मृत्युदंड दिया जाता था। यह तूफ़ान, जो अंधकार और दुष्टता के पक्षधरों के जोश से भड़का हुआ और द्वेष से ओत-प्रोत था, जल्द ही मिस्र शहर में पहुँच गया। धन्य निकोलस, जो उस शहर में सभी ईसाइयों के नेता थे, ने निश्शंकोच और निडर होकर मसीह के सुसमाचार का प्रचार किया और मसीह के लिए पीड़ा सहने को तैयार थे। इसलिए, उसे दुष्ट यातना देने वालों ने पकड़ लिया और कई अन्य ईसाइयों के साथ एक कालकोठरी में कैद कर दिया। वहाँ वह काफी समय तक रहा, और उसने गंभीर पीड़ा, भूख, प्यास और कालकोठरी की तंग परिस्थितियों को सहन किया। उन्होंने अपने साथी विश्वासियों को परमेश्वर के वचन से पोषित किया और उनकी प्यास को भक्ति के मीठे जल से बुझाया; मसीह परमेश्वर में उनके विश्वास को मजबूत करते हुए, उन्हें एक अटूट नींव पर स्थापित किया, और उन्होंने उन्हें मसीह की गवाही में दृढ़ रहने और सत्य के लिए उत्साहपूर्वक कष्ट सहने के लिए प्रोत्साहित किया। इस बीच, ईसाइयों को एक बार फिर स्वतंत्रता प्रदान की गई, और अंधेरी घटाओं के बाद सूर्य की तरह धर्म-परायणता चमक उठी, और तूफान के बाद मानो एक प्रकार की शांत ठंडक छा गई। क्योंकि मानव जाति के प्रेमी मसीह ने, अपनी प्रजा को देखकर, दुष्टों का नाश किया, डायोक्लेटियन और मैक्सिमियन को शाही सिंहासन से उखाड़ फेंका और हेलेनिक अधर्मीपन के कट्टरपंथियों की शक्ति का विनाश कर दिया। सम्राट कॉन्स्टेंटिन महान को उनके क्रूस के प्रकट होने के माध्यम से, जिन्हें उन्होंने रोमन साम्राज्य सौंपने की कृपा की, प्रभु परमेश्वर ने अपने लोगों के लिए *'उद्धार की सींग' 'उठाया है'* (लूका 1:69)। सम्राट कॉन्स्टेंटाइन, एकमात्र ईश्वर को जानकर और अपनी सारी आशा उसी में रखकर, पवित्र क्रूस की शक्ति से अपने सभी शत्रुओं को पराजित कर दिया; और, मूर्तिपूजक पूजा-स्थलों को नष्ट करने तथा ईसाई चर्चों को पुनर्स्थापित करने का आदेश देकर, उसने अपने पूर्वजों की व्यर्थ आशाओं को चकनाचूर कर दिया। उन्होंने मसीह के लिए कैद किए गए सभी लोगों को मुक्त किया और उन्हें बहादुर योद्धाओं के रूप में बड़ी प्रशंसा के साथ सम्मानित करके, मसीह के इन स्वीकार करने वालों को, प्रत्येक को उसके अपने देश में वापस भेज दिया। उस समय, मिस्र शहर ने एक बार फिर अपने चरवाहे, महान बिशप निकोलस का स्वागत किया, जिन्हें शहीद का ताज प्रदान किया गया था। दिव्य अनुग्रह से परिपूर्ण, उन्होंने पहले की तरह ही लोगों के जुनून और कमजोरियों को ठीक करना जारी रखा—न केवल विश्वासियों की, बल्कि अविश्वासियों की भी। उनके भीतर विद्यमान ईश्वर की महान कृपा के कारण, कई लोगों ने उनकी महिमा की, उन पर आश्चर्य किया और उनसे प्रेम किया। क्योंकि वह हृदय की पवित्रता से प्रकाशित थे और ईश्वर के सभी वरदानों से संपन्न थे, तथा उन्होंने भक्ति और धार्मिकता से अपने प्रभु की सेवा की। उस समय, अभी भी कई हेलेनिक तीर्थस्थल थे, जिनकी ओर अधर्मी लोग शैतान के प्रलोभन से आकर्षित होते थे, और मिस्र के कई निवासी विनाश में पड़े रहे। परम ईश्वर के बिशप, दैवीय उत्साह से प्रेरित होकर, इन सभी स्थानों में घूमे, मूर्तिपूजक पूजास्थलों को धूल में मिला दिया, और अपनी भेड़ों को शैतान के अपवित्रता से शुद्ध किया। इस प्रकार दुष्ट आत्माओं के विरुद्ध युद्ध छेड़ते हुए, संत निकोलस आर्टेमिस के मंदिर[8647] में आए, जो बहुत बड़ा और भव्य रूप से सुसज्जित था, और जो दुष्ट आत्माओं को भाने वाला निवास प्रतीत होता था। संत निकोलस ने इस अशुद्धता के मंदिर को तबाह कर दिया, इसकी ऊँची इमारत को धूल-मिट्टी में मिला दिया, और मंदिर की

[8646] सम्राट डायोक्लेटियन और मैक्सिमियन (284 से 305 तक) सह-शासक थे: पहले पूर्व में और दूसरे पश्चिम में शासन करते थे। डायोक्लेटियन द्वारा शुरू किए गए उत्पीड़न की विशेषता विशेष क्रूरता थी। यह निकोमेडिया शहर में शुरू हुआ, जहाँ, स्वयं ईस्टर के दिन, एक मंदिर में 20,000 तक ईसाइयों को जिंदा जला दिया गया था।

[8647] आर्टेमिस - जिन्हें डायना के नाम से भी जाना जाता है - एक प्रसिद्ध ग्रीक देवी थीं जो चंद्रमा का प्रतीक थीं और उन्हें जंगलों तथा शिकार की संरक्षक माना जाता था।

नींव, जो धरती में दबी हुई थी, को हवा में बखिेर दयिा, और अपना क्रोध मंदरि पर कम तथा राक्षसों पर अधकि उतारा। दुष्ट आत्माएँ, ईश्वर के संत के आगमन को सहन न कर सकीं, और वलिाप करने लगीं; लेकनि, मसीह के अजेय योद्धा, संत नकिोलस द्वारा धारण कएि गए प्रार्थना के हथयिार से पराजति होकर, उन्हें अपने नविास से भागने के लएि मजबूर होना पड़ा।

धार्मकि सम्राट कॉन्स्टेंटाइन, ईसाई धर्म को स्थापति करने की इच्छा से, ने नकियिा शहर में एक सार्वभौमकि परषिद बुलाने का आदेश दयिा। परषिद के पवत्रि पतिाओं ने सच्चा सद्धिांत प्रस्तुत कयिा, एरयिन वधिर्म की नदिा की और साथ ही स्वयं एरयिस की भी[8648] , और यह स्वीकार करते हुए कि परमेश्वर का पुत्र परमपति परमेश्वर के बराबर सम्मान का और एकसार है, उन्होंने पवत्रि, दव्यि और प्रेरतिकि चर्च में शांति बहाल की। परषिद के 318 पतिरों में से संत नकिोलस भी थे। उन्होंने अरअिस की अधर्मी शकि्षाओं के वरिुद्ध साहसपूर्वक खड़े होकर, परषिद के पवत्रि पतिरों के साथ मलिकर, ऑर्थोडॉक्स धर्म के सभी सद्धिांतों की पुष्टि की और उन्हें सभी तक पहुँचाया। स्टूडयिो मठ के एक भकि्षु जॉन, बताते हैं कि संत नकिोलस ने, भवष्यिवक्ता एलयिा की तरह ईश्वर के प्रति उत्साह से प्रेरति होकर, परषिद में न केवल शब्दों से बल्कि गाल पर थप्पड़ मारकर भी वधिर्मी एरयिस को शर्मदिा कयिा। परषिद के पतिरों को संत से आपत्ति हुई और उनके साहसी कार्य के कारण, उन्होंने उन्हें उनके बशिप के पद से हटाने का संकल्प लयिा। लेकनि हमारे प्रभु यीशु मसीह स्वयं और उनकी परम धन्य माता, स्वर्ग से संत नकिोलस के पराक्रम को देखकर, उनके साहसी कार्य को मंजूरी दी और उनके दव्यि उत्साह की प्रशंसा की। क्योंकि परषिद के कुछ पवत्रि पतिाओं को वही दर्शन हुआ था जो संत को स्वयं उनके बशिप पद पर अभषिेक होने से पहले प्राप्त हुआ था। उन्होंने देखा कि संत के एक ओर स्वयं प्रभु मसीह सुसमाचार के साथ खड़े थे, और दूसरी ओर - परमेश्वर की अति पवत्रि कुंवारी माता ओमोफोरीयॉन के साथ - और वे संत को उनके पद के प्रतीक प्रस्तुत कर रहे थे, जनिसे उन्हें वंचति कर दयिा गया था। इससे यह समझते हुए कि संत की यह साहसकिता ईश्वर को प्रसन्न कर रही थी, परषिद के पतिरों ने उन्हें फटकारना बंद कर दयिा और उन्हें ईश्वर के एक महान पुरुष के रूप में सम्मानति कयिा[8649] । परषिद से अपने झुंड के पास लौटकर, संत नकिोलस ने उन्हें शांति और आशीर्वाद दयिा। अपने मधुर शब्दों से, उन्होंने सभी लोगों को सद्ज्ञान प्रदान कयिा, अन्यायपूर्ण वचिारों और अटकलों को जड़ से ही समाप्त कर दयिा, और, उग्र, नर्दियी और पुराने दुर्भावनापूर्ण वधिर्मयिों का भंडाफोड़ कर, उन्हें मसीह के झुंड से भगा दयिा। जैसे एक बुद्धमिान कसिान खलहिान और बोझा छानने वाली टोकरी में सब कुछ साफ करता है, सबसे अच्छी अनाज की बालयिाँ चुनता है, और भूसी को झाड़ देता है, ठीस ही प्रकार से मसीह के खलहिान में एक समझदार मजदूर, संत नकिोलस ने, आध्यात्मकि अनाज के घर को अच्छे फलों से भर दयिा, जबकि वधिर्मी भ्रम की भूसी को बखिेर दयिा और इसे प्रभु के गेहूं से दूर कर दयिा। इसीलएि पवत्रि चर्च उन्हें उस फावड़े के रूप में बुलाती है जो एरयिन शकि्षाओं की भूसी को बखिेरता है। और वह सचमुच संसार की रोशनी और पृथ्वी का नमक थे, क्योंकि उनका जीवन तेजस्वी था और उनके वचन ज्ञान के नमक से परपिूर्ण थे। इस भले चरवाहे ने अपनी भेड़ों का उनकी सभी आवश्यकताओं में बड़ी सावधानी से ध्यान रखा, न केवल उन्हें आध्यात्मकि चरागाह पर चराया, बल्कि उनके भौतकि पोषण का भी प्रबंध कयिा।

एक बार, लसियिा के क्षेत्र में एक बड़ी अकाल पड़ी, और मायरा शहर में भोजन की अत्यधकि कमी थी। भूख से मर रहे दुर्भाग्यपूर्ण लोगों पर दया करके, ईश्वर के बशिप रात में इटली के एक व्यापारी के सपने में प्रकट हुए, जसिने अपना पूरा जहाज अनाज से भर रखा था और कसिी दूसरे देश के लएि समुद्री यात्रा करने का इरादा रखता था। संत ने उसे एक प्रतज्ञि के रूप में तीन सोने के सकि्के दएि और उसे मायरा की ओर नौकायन करके वहाँ गेहूँ बेचने का आदेश दयिा। जागने पर और अपने हाथ में सोना पाकर, व्यापारी भयभीत हो गया, और ऐसे सपने पर हैरान था, जसिके साथ सकि्कों का

[8648] एरयिस ने यीशु मसीह की दव्यिता को अस्वीकार कर दयिा और उन्हें परमेश्वर पति के समान-तत्त्व (consubstantial) नहीं माना। 'प्रेरतिों के समान' सम्राट कॉन्स्टेंटाइन द्वारा बुलाई गई प्रथम सार्वभौमकि परषिद 325 में स्वयं सम्राट की अध्यक्षता में हुई और इसने धार्मकि उपयोग में नाइसन क्रीड को पेश कयिा; इसे बाद में 381 में कॉन्स्टेंटनिोपल में आयोजति दूसरी सार्वभौमकि परषिद में पूरक और अंतमि रूप दयिा गया।

[8649] ए. एन. मुरावयिोव के अनुसार, इस घटना के बारे में एक कविदंती आज भी नकियिा में, यहाँ तक कि तुर्कों के बीच भी, जीवति है। शहर की एक प्राचीर पर संत नकिोलस का कालकोठरी दखिाया जाता है। परंपरा के अनुसार, परषिद में एरयिस की नदिा करने के कारण उन्हें यहाँ कैद कयिा गया था, और उन्हें तब तक बेड़यिों में जकड़ा गया जब तक कि स्वर्ग से एक दव्यि नर्णिय द्वारा उन्हें नर्दोष साबति नहीं कर दयिा गया, जसिे सुसमाचार और ओमोफोरीयोन के प्रकट होने से चह्निति कयिा गया था, जैसा कि संत की प्रतमिाओं में दर्शाया गया है (Letters from the East, SPV. 1851, भाग 1, 106–107)।

चमत्कारकि प्रकट होना भी हुआ था। व्यापारी ने संत के आदेश की अवज्ञा करने की हम्मित नहीं की; वह मायरा शहर के लिए रवाना हो गया और अपने अनाज को वहाँ के नविासयिों को बेच दयिा। ऐसा करते हुए, उसने अपने सपने में देखे गए संत नकिोलस के साक्षात्कार के बारे में उनसे छपिाया नहीं। उनकी भूख में ऐसा सुकून पाकर और व्यापारी का वृत्तांत सुनकर, नागरकिों ने ईश्वर की महमिा की और धन्यवाद दयिा और अपने चमत्कारी प्रदाता, महान बशिप नकिोलस की प्रशंसा की।

उस समय, फ्राइजयिा के महान क्षेत्र में एक वद्रिोह भड़क उठा। यह जानकर, सम्राट कॉन्स्टेंटाइन ने वद्रिोही प्रांत को शांत करने के लिए अपने तीन गवर्नरों को उनकी सेनाओं के साथ भेजा। ये गवर्नर नेपोशयिन, उर्स और एर्पलियिन थे। वे बहुत जल्दबाजी में कॉन्स्टेंटनिोपल से रवाना हुए और लसियिा के धर्मप्रांत के एक बंदरगाह पर रुके, जसिे एड्रयिाटकि तट के नाम से जाना जाता है। वहाँ एक शहर था। चूँकि भारी समुद्र उन्हें और आगे बढ़ने से रोक रहा था, वे शांत मौसम का इंतजार करने के लिए इसी बंदरगाह पर रुके रहे। जब वे वहाँ लंगर डालकर रुके हुए थे, तो कुछ सैनकि, राशन खरीदने के लिए तट पर उतरकर, जबरदस्ती कई चीजें ले गए। चूँकि यह अक्सर होता था, उस शहर के नविासी कटु हो गए, जसिके परणिामस्वरूप प्लाकोमाटा नामक स्थान पर, उनके और सैनकिों के बीच ववािद, संघर्ष और झगड़े फूट पड़े। यह जानने पर, संत नकिोलस ने आंतरकि संघर्ष को समाप्त करने के लिए स्वयं उस शहर जाने का फैसला कयिा। उनके आगमन की खबर सुनकर, सभी नागरकि अपने कमांडरों के साथ, उनका स्वागत करने के लिए बाहर आए और उनके सामने झुक गए। संत ने कमांडरों से पूछा कि वे कहाँ से आए हैं और कहाँ जा रहे हैं। उन्होंने उन्हें बताया कि उन्हें राजा द्वारा फ्राइजयिा में हुए वद्रिोह को दबाने के लिए भेजा गया था। संत ने उन्हें अपने सैनकिों को काबू में रखने और लोगों पर अत्याचार न करने की सलाह दी। इसके बाद, उन्होंने गवर्नरों को शहर में आमंत्रति कयिा और उनका गर्मजोशी से स्वागत कयिा। गवर्नरों ने दोषी सैनकिों को दंडति कयिा, अशांति को शांत कयिा और संत नकिोलस से आशीर्वाद प्राप्त कयिा। जब यह सब हो रहा था, तो मयरा से कई नागरकि शोक मनाते और रोते हुए आए। वे संत के पैरों पर गरि पड़े और उनसे अन्यायग्रस्त लोगों की रक्षा करने की वनिती करने लगे, अपने आँसुओं के बीच उन्होंने बताया कि उनकी अनुपस्थति में, ईर्ष्यालु और दुष्ट लोगों द्वारा रश्वितखोरी के कारण, राज्यपाल यूस्टेथयिस ने उनके शहर के तीन नर्दिोष लोगों को मृत्युदंड दे दयिा था।

उन्होंने कहा, 'हमारा पूरा शहर शोक मना रहा है और रो रहा है और, महाधर्माध्यक्ष महोदय, आपके लौटने का इंतजार कर रहा है। क्योंकि अगर आप हमारे साथ होते, तो राज्यपाल इतने अन्यायपूर्ण नर्णिय पर अमल करने की हम्मित नहीं करता।'

यह सुनकर, ईश्वर के बशिप को गहरा दुख हुआ और वे अपने कमांडरों के साथ तुरंत नकिल पड़े। 'लायन' नामक स्थान पर पहुँचने पर, संत ने कुछ यात्रयिों से मुलाकात की और उनसे पूछा कि क्या वे मृत्युदंड पाए गए पुरुषों के बारे में कुछ जानते हैं। उन्होंने जवाब दयिा:

'हम उन्हें कैस्टर और पोलक्स के मैदान में छोड़ आए थे, जब उन्हें फांसी के लिए ले जाया जा रहा था।'

संत नकिोलस उन लोगों की अन्यायपूर्ण मृत्यु को रोकने का प्रयास करते हुए तेजी से आगे बढ़े। जब वे फांसी के स्थान पर पहुंचे, तो उन्होंने देखा कि वहां एक बड़ी भीड़ जमा हो चुकी थी। मौत की सजा पाए हुए लोग, जनिके हाथ क्रॉस की तरह बंधे हुए थे और चेहरों पर परदे पड़े थे, पहले ही जमीन पर झुक चुके थे, अपनी नंगी गर्दनें फैला ली थीं और तलवार के वार का इंतजार कर रहे थे। संत ने देखा कि जिल्लाद, गंभीर और उन्मत्त, पहले ही अपनी तलवार खींच चुका था। यह दृश्य देखकर हर कोई भय और दुख से भर गया। कोमलता को उत्साह के साथ मलिाते हुए, मसीह के संत लोगों के बीच स्वतंत्र रूप से चले; बनिा कसिी डर के, उन्होंने जल्लाद के हाथों से तलवार छीन ली, उसे जमीन पर फेंक दयिा, और फरि दंडति पुरुषों को उनके बंधनों से मुक्त कर दयिा। उन्होंने यह सब बड़ी नर्भीकता से कयिा, और कोई भी उन्हें रोकने की हम्मित नहीं कर सका, क्योंकि उनका वचन अधकिारपूर्ण था और उनके कार्यों में दैवीय शक्ति स्पष्ट थी: वह परमेश्वर और सभी लोगों के सामने महान थे। मौत की सजा से बचे और मौत की कगार से अप्रत्याशति रूप से जीवन वापस पाकर, वे पुरुष गरम आँसू बहा रहे थे और आनंद से चीख रहे थे, जबकि वहाँ इकट्ठा हुआ सारा जनसमूह अपने संत का धन्यवाद कर रहा था। पालक यूस्टैथयिस भी वहाँ आए और संत के पास जाने की इच्छा व्यक्त की। लेकनि ईश्वर के उस पुरुष ने तरिस्कार से मुँह फेर लयिा और जब पालक उनके पैरों पर गरि पड़े, तो उन्होंने उन्हें धक्का दे दयिा। ईश्वर का प्रतशिोध उन पर आने की बात कहते हुए, संत नकिोलस ने उन्हें उनके अन्यायपूर्ण शासन के लिए यातना की धमकी दी और उनके कर्मों की सूचना ज़ार को देने का वादा कयिा। अपनी अंतरात्मा से पीड़ति और संत की धमकयिों से भयभीत, राज्यपाल ने

आँसू भरी आँखों से दया की भीख माँगी। अपने कृत्य की बुराई से पश्चाताप करते हुए और महान पिता निकोलस के साथ मेल-मिलाप की इच्छा रखते हुए, उसने दोष शहर के बुजुर्गों, साइमोनडिस और यूडोक्सियस पर मढ़ दिया। लेकिन झूठ छिपा नहीं रह सका, क्योंकि संत को अच्छी तरह पता था कि राज्यपाल ने सोने की रिश्वत लेकर निर्दोष लोगों को मौत की सजा दी थी। राज्यपाल ने क्षमा के लिए लंबे समय तक विनती की, और जब उसने बहुत विनम्रता और आँसुओं के साथ अपना पाप स्वीकार किया, तब जाकर मसीह के सेवक ने उसे क्षमा कर दिया।

यह सब देखकर, संत के साथ आए सैन्य कमांडरों ने ईश्वर के महान बिशप के उत्साह और दयालुता पर आश्चर्य व्यक्त किया। उनकी पवित्र प्रार्थनाओं से सम्मानित होकर और अपनी यात्रा के लिए उनका आशीर्वाद प्राप्त कर, वे उन्हें दिए गए शाही आदेश को पूरा करने के लिए फ्राइजिया के लिए रवाना हो गए। विद्रोह के स्थल पर पहुँचने पर, उन्होंने उसे तुरंत दबा दिया और, राजा का काम पूरा करने के बाद, प्रसन्नतापूर्वक बिज़ान्टियम लौट आए। राजा और सभी कुलीनों ने उनकी बहुत प्रशंसा की और उन्हें सम्मानित किया, और उन्हें शाही परिषद में एक सीट प्रदान की गई। लेकिन दुष्ट लोग, राज्यपालों की महिमा से ईर्ष्या करके, उनके प्रति शत्रुता पालने लगे। उनके विरुद्ध षड्यंत्र रचते हुए, वे शहर के राज्यपाल, यूलावीयस के पास गए और उन पुरुषों पर इस प्रकार बदनामी फैलाई:

'कमांडर बुरी सलाह दे रहे हैं, क्योंकि, जैसा कि हमने सुना है, वे नवाचार ला रहे हैं और राजा के खिलाफ बुराई की साजिश रच रहे हैं।'

राज्यपाल को अपने पक्ष में करने के लिए उन्होंने उसे बहुत सारा सोना दिया। राज्यपाल ने इसकी सूचना राजा को दी। यह सुनकर राजा ने बिना किसी जांच के उन राज्यपालों को जेल में डालने का आदेश दिया, इस डर से कि वे गुप्त रूप से भागकर अपनी दुष्ट योजना को अंजाम दे सकते हैं। कैद में कष्ट भोगते हुए और अपनी बेगुनाही जानते हुए, राज्यपाल यह समझ नहीं पा रहे थे कि उन्हें जेल में क्यों डाला गया। थोड़ी ही देर बाद, निदिकों को डर सताने लगा कि उनकी बदनामी और दुर्भावना का पर्दाफाश हो जाएगा और उन्हें खुद को नुकसान पहुँचने का खतरा होगा। इसलिए, वे राज्यपाल के पास गए और उनसे विनती करने लगे कि उन लोगों को इतनी देर तक जीवित न रहने दें, बल्कि उन्हें जल्द से जल्द मौत की सजा सुना दें। लालच के जाल में फँसे राज्यपाल के पास अपने वादे को पूरा करने के अलावा कोई चारा नहीं था। वह तुरंत राजा के दरबार की ओर चल पड़ा और बुराई का दूत बनकर उदास चेहरे और दुखी दृष्टि के साथ उसके सामने उपस्थित हुआ। साथ ही, वह यह भी दिखाना चाहता था कि वह राजा के जीवन की बहुत परवाह करता है और उससे पूरी वफादारी से जुड़ा हुआ है। निर्दोषों के खिलाफ राजा का क्रोध भड़काने के लिए, उसने चापलूसी भरे और चालाकी भरे अंदाज में कहना शुरू किया, कहते हुए:

'हे राजा, कालकोठरी में बंद उन लोगों में से कोई भी पश्चाताप करने को तैयार नहीं है। वे सभी अपने दुष्ट इरादे पर अड़े हुए हैं, और निरंतर आपके खिलाफ साजिश रच रहे हैं। अत; आज्ञा दें कि उन्हें तुरंत यातना दी जाए, कहीं वे हमें चेतावनी देकर उस दुष्ट कृत्य को अंजाम न दे दें जिसकी उन्होंने गवर्नरों और आपके खिलाफ साजिश रची है।'

इन शब्दों से घबराकर, राजा ने तुरंत राज्यपालों को मृत्युदंड की सजा सुना दी। लेकिन चूँकि शाम हो चुकी थी, इसलिए उनकी फाँसी सुबह तक के लिए टाल दी गई। जेलर को यह बात पता चल गई। निर्दोषों पर मंडरा रहे इस संकट पर अकेले में बहुत रोने के बाद, वह राज्यपालों के पास गया और उनसे कहा:

'मेरे लिए यह बेहतर होता कि मैं तुम्हें कभी न जानता, न ही तुम्हारी संगत में सुखद बातचीत और भोजन का आनंद लिया होता। तब मैं हमारे बिछोह को अधिक आसानी से सहन कर लेता और तुम पर आई इस विपत्ति से अपने दिल में इतना गहरा दुख न होता। सुबह आएगी, और हमें अपने अंतिम और भयानक वियोग का सामना करना होगा। मैं अब आपके चेहरे, जो मुझे इतने प्रिय हैं, नहीं देख पाऊँगा, और न ही आपकी आवाज़ें सुन पाऊँगा, क्योंकि राजा ने आपको मृत्युदंड का आदेश दिया है। मुझे बताइए कि आपकी संपत्तियों का क्या किया जाए, जब तक समय है और मृत्यु ने आपको अपनी इच्छाएँ व्यक्त करने से नहीं रोका है।

वह सिसकियों में अपना भाषण अधूरा छोड़ गया। अपनी भयानक तकदीर के बारे में जानकर, कमांडरों ने अपने कपड़े फाड़े और अपने बाल नोचे, और कहा:

'किस दुश्मन ने हमारे जीवन से ईर्ष्या की है, कि हमें, खलनायकों की तरह, मृत्युदंड की सजा दी जा रही है? हमने ऐसा क्या किया है जो हमारी मौत का कारण बने?'

और वे अपने रिश्तेदारों और दोस्तों के नाम पुकारने लगे, और इस बात की गवाह के रूप में स्वयं ईश्वर को बुला रहे थे कि उन्होंने कोई बुराई नहीं की है, और वे जोर-जोर से रो पड़े। उनमें से एक, नेपोटियन नामक, ने संत निकोलस को

याद कयिा, कि कैसे वह, मायरा में एक गौरवशाली सहायक और एक दयालु मध्यस्थ के रूप में प्रकट होकर, तीन पुरुषों को मृत्यु से बचा चुके थे। और कमांडरों ने प्रार्थना करना शुरू कर दयिा:

'हे निकोलस के ईश्वर, जिन्होंने तीन पुरुषों को अन्यायपूर्ण मृत्यु से बचाया, अब हम पर दृष्टि डालो, क्योंकि मनुष्यों से हमें कोई सहायता नहीं है। हम पर एक बड़ी विपत्ति आई है, और हमें इस संकट से बचाने वाला कोई नहीं है। हमारी आवाज़ें थक गई हैं इससे पहले कि हमारी आत्माएँ हमारे शरीरों से निकिल जाएँ, और हमारी ज़बानें सूख गई हैं, दिल के दुख की आग से झुलस गई हैं, इसलिए हम आपसे प्रार्थना भी नहीं कर सकते। भजन संहिता 78: 'हे प्रभु, *अपनी कृपा शीघ्रता से हम तक पहुँचाएँ, क्योंकि हम पूरी तरह से थक चुके हैं*।' कल वे हमारा वध करने का इरादा रखते हैं; तो फिर, हमारी सहायता के लिए शीघ्रता करो और हमें, जो निर्दोष हैं, मृत्यु से बचाओ।

जो अपने भक्तों की प्रार्थनाएँ सुनता है और एक पिता की तरह अपने बच्चों पर अपनी कृपा बरसाता है, प्रभु परमेश्वर ने उन दण्डितों की सहायता के लिए अपने पवित्र सेवक, महान बिशप निकोलस को भेजा। उस रात, जब राजा सो रहा था, मसीह के पवित्र बिशप उसके सामने प्रकट हुए और कहा:

'तुरंत उठो और जेल में पीड़ित गवर्नरों को रिहा करो। उन पर झूठे आरोप लगाए गए हैं, और वे अन्याय से पीड़ित हैं।'

संत ने राजा को पूरी बात विस्तार से समझाई और कहा:

'यदि तुम मेरी बात नहीं मानोगे और उन्हें रिहा नहीं करोगे, तो मैं तुम्हारे खिलाफ एक विद्रोह भड़काऊंगा, जैसा कि फ्रीजिया में हुआ था, और तुम्हारा भयानक मृत्यु होगी।'

इतनी निर्भीकता देखकर राजा सोचने लगा कि यह आदमी रात में भीतरी कमरों में घुसने की हिम्मत कैसे कर गया, और उसने उससे कहा:

'तुम कौन हो, जो हम और हमारे राज्य को धमकी देने की हिम्मत करते हो?'

उस आदमी ने उत्तर दिया:

'मेरा नाम निकोलस है; मैं मायरा के मेट्रोपोलिस का बिशप हूँ।'

राजा हक्का-बक्का रह गया; उठकर खड़ा हो गया, और इस दृष्टि के अर्थ पर विचार करने लगा। इस बीच, उसी रात, संत राज्यपाल यूलावीयस के सपने में प्रकट हुए और उन्हें उन दंडित पुरुषों के बारे में वही संदेश दिया जो उन्होंने राजा को दिया था। चौंककर जागते ही, यूलावीयस भय से भर गया। जब वह इस दृष्टि पर विचार कर रहा था, तभी ज़ार द्वारा भेजा गया एक दूत आया और उसने उसे बताया कि ज़ार ने अपने सपने में क्या देखा था। ज़ार के पास दौड़कर जाने पर, राज्यपाल ने उसे अपनी दृष्टि के बारे में बताया, और दोनों इस बात पर चकित थे कि उन्होंने बिल्कुल एक ही चीज़ देखी थी। तुरंत, ज़ार ने राज्यपालों को कालकोठरी से लाने का आदेश दिया और उनसे कहा:

'तुमने किस जादू-टोने से हम पर ऐसे सपने लाए हैं? जो आदमी हमें दिखा, वह बहुत क्रोधित था और उसने हमें धमकी दी, डींगें हाँकते हुए कि वह जल्द ही हम पर युद्ध लाएगा।'

गवर्नरों ने एक-दूसरे की ओर हैरानी से देखा और कुछ भी न जानते हुए, एक-दूसरे की ओर उलझन भरी नज़रों से ताकते रहे। यह देखकर, राजा का मन पसीज गया और उसने कहा:

'कोई हानि होने का भय मत करो; मुझे सच बताओ।'

आँसुओं और सिसकियों के साथ, उन्होंने उत्तर दिया:

हे ज़ार, हम जादू-टोने के बारे में कुछ नहीं जानते और आपके राज्य के विरुद्ध कोई बुराई करने की साज़िश नहीं रची है; सर्व-द्रष्टा प्रभु स्वयं इसकी गवाही दें। लेकिन अगर हम आपको धोखा दे रहे हैं, और आपको हमारे बारे में कुछ भी बुरा मिलता है, तो हमारे या हमारी वंश-परंपरा के लिए कोई दया या क्षमा न हो। हमने अपने पूर्वजों से राजा का सम्मान करना और, सबसे बढ़कर, उसके प्रति विफादार रहना सीखा है। इसलिए अब भी, हम निष्ठापूर्वक आपके जीवन की रक्षा करते हैं और, अपने पद के अनुरूप, आपने हमें जो कार्य सौंपे हैं, उन्हें दृढ़ता से पूरा किया है। उत्साह के साथ आपकी सेवा करते हुए, हमने फ्रीजिया में विद्रोह को दबाया है, आपसी गृहयुद्ध को समाप्त किया है, और अपने कार्यों के माध्यम से अपनी वीरता का पर्याप्त प्रदर्शन किया है, जैसा कि इन मामलों से अच्छी तरह वाकिफ लोग गवाह हैं। महामहिम, आपने एक बार हमें सम्मानों से लाद दिया था; किन्तु अब, आप हमारे विरुद्ध क्रोधित हो गए हैं और हमें निर्दयतापूर्वक एक पीड़ादायक मृत्यु की सज़ा सुना दी है। अत; हे राजा, हमारा विश्वास है कि हम केवल आपके प्रति अपनी निष्ठा के कारण

ही कष्ट सह रहे हैं; इसी कारण हमें यह सज़ा दी गई है, और हमें प्राप्त होने की आशा वाले गौरव और सम्मान के स्थान पर, अब हम मृत्यु के भय का सामना कर रहे हैं।

ये शब्द सुनकर, ज़ार दयालु हो गया और अपने जल्दबाज़ी में कि गए काम पर पछता गया। क्योंकि वह परमेश्वर के न्याय के सामने काँप उठा और अपने शाही बैंगनी वस्त्रों पर शर्मिंदा हुआ, यह महसूस करते हुए कि, जबकि वह दूसरों के लिए कानून बनाने वाला था, वह खुद एक अन्यायपूर्ण न्याय करने के लिए तैयार था। उसने दंडित लोगों पर दया से देखा और उनसे कोमलता से बात की। जब उन्होंने गहरी भावना के साथ उनके शब्द सुने, तो कमांडरों ने अचानक देखा कि संत निकोलस ज़ार के बगल में बैठे थे, जो उन्हें क्षमा का वादा कर रहे थे। ज़ार ने उनकी बातचीत में हस्तक्षेप की और पूछा:

'यह निकोलस कौन है, और उसने कितने लोगों को बचाया है? मुझे इसके बारे में बताओ।'

नेपोटियन ने उसे सब कुछ क्रम से सुनाया। फिर ज़ार ने, यह जानकर कि संत निकोलस ईश्वर के एक महान सेवक थे, उनके साहस और उत्पीड़ितों की रक्षा के प्रति उनके महान उत्साह पर आश्चर्य व्यक्त किया; उसने उन राज्यपालों को रिहा कर दिया और उनसे कहा:

'यह मैं नहीं हूँ जो तुम्हें जीवन देता हूँ, बल्कि प्रभु का महान सेवक, निकोलस है, जिसे तुमने मदद के लिए पुकारा था। उसके पास जाओ और उसे अपना धन्यवाद दो। उससे मेरी ओर से कहो कि मैंने तुम्हारी आज्ञा का पालन किया है, ताकि मसीह का सेवक मुझ पर क्रोधित न हो।'

इन शब्दों के साथ, उन्होंने उन्हें एक सुनहरी सुसमाचार, कीमती पत्थरों से सुसज्जित एक सुनहरी धूपदान, और दो मोमबत्तीदान भेंट किए, और आज्ञा दी कि ये सभी मिर के चर्च को दे दिए जाएँ। यह चमत्कारिक मुक्ति प्राप्त करने के बाद, गवर्नर तुरंत अपने सफर पर निकल पड़े। मिरा पहुँचने पर, वे प्रसन्न हुए और उत्सव मनाया कि उन्हें एक बार फिर संत को देखने का सौभाग्य मिला था। उन्होंने संत निकोलस को उनकी चमत्कारी मदद के लिए हार्दिक धन्यवाद दिया और भजन संहिता 34 गाया: *'हे प्रभु! आप जैसे और कौन हैं, जो कमजोर को शक्तिशाली से, और गरीब और ज़रूरतमंद को उनके उत्पीड़क से बचाते हैं?'*

उन्होंने गरीबों और ज़रूरतमंदों में उदारतापूर्वक दान दिया और सुरक्षित रूप से घर लौट आए।

ईश्वर के ऐसे ही कार्य हैं, जिनके माध्यम से प्रभु ने अपने सेवक को गौरवान्वित किया। उनकी खबर पंखों की तरह दूर-दूर तक फैल गई, समुद्र पार कर पूरे ब्रह्मांड में फैल गई, ताकि कोई ऐसी जगह न बची हो जहाँ लोग महान बिशप निकोलस के महान और अद्भुत चमत्कारों के बारे में न जानते हों, जो उन्होंने सर्वशक्तिमान प्रभु द्वारा उन पर प्रदान की गई कृपा से किए थे।

एक बार, मिस्र से लिसिया की भूमि के लिए एक जहाज पर यात्रा कर रहे कुछ यात्री समुद्र में एक भयंकर तूफान में फँस गए। तेज हवाओं से पाल पहले ही फट चुके थे, जहाज लहरों से इधर-उधर उछल रहा था, और सभी ने अपनी मुक्ति की आशा छोड़ दी थी। उस क्षण, उन्हें महान बिशप निकोलस का स्मरण आया, जिन्हें उन्होंने कभी देखा नहीं था, पर केवल उनके बारे में सुना था—कि वह संकट के समय उन सभी के शीघ्र सहायक थे जो उनसे प्रार्थना करते थे। वे प्रार्थना में उन्हीं की ओर मुड़े और मदद के लिए पुकारने लगे। संत तुरंत उनके सामने प्रकट हुए, जहाज में प्रवेश किया और कहा:

'तुमने मुझे पुकारा है, और मैं तुम्हारी सहायता के लिए आया हूँ; डरो मत!'

सभी ने देखा कि उन्होंने पतवार संभाली और जहाज को चलाना शुरू कर दिया। जैसे हमारे प्रभु यीशु मसीह ने एक बार हवा और समुद्र को डांटा था (मत्ती 8:26), वैसे ही संत ने तुरंत तूफान को शांत होने का आदेश दिया, *और* यूहन्ना 14 में प्रभु के वचनों को याद किया: *'जो मुझ पर विश्वास करता है, वह वही काम करेगा जो मैं करता हूँ'*

इस प्रकार, प्रभु के विश्वासयोग्य सेवक ने समुद्र और हवा दोनों को आज्ञा दी, और उन्होंने उसकी आज्ञा मानी। इसके बाद, अनुकूल हवा के साथ, यात्री मायरा शहर में उतर गए। किनारे पर उतरने के बाद, वे उस व्यक्ति को देखने के लिए शहर में गए जिसने उन्हें उनकी मुसीबत से बचाया था। वे संत से चर्च जाते समय मिले और उन्हें अपना उपकारी मानकर, उनके पैरों पर गिर पड़े और उनका धन्यवाद करने लगे। अद्भुत निकोलस ने न केवल उन्हें संकट और मृत्यु से बचाया, बल्कि उनकी आध्यात्मिक उद्धार के लिए भी चिंता दिखाई। अपनी सूझबूझ से, उन्होंने अपनी आध्यात्मिक आँखों से उनमें व्यभिचार का पाप देखा, जो एक व्यक्ति को ईश्वर से अलग करता है और उन्हें ईश्वर की आज्ञाओं का पालन करने से भटकाता है, और उन्होंने उनसे कहा:

'मेरे बच्चों, मैं तुमसे विनती करता हूँ, अपने भीतर चिंतन करो और प्रभु को प्रसन्न करने के लिए अपने हृदय और विचारों को सुधारो। क्योंकि भले ही हम बहुत से लोगों से छिप जाएँ और खुद को धर्मी मानें, परमेश्वर से कुछ भी छिपा नहीं

सकता। इसलिए, अपनी आत्मा की पवित्रता और अपने शरीर की शुद्धता को बनाए रखने के लिए अपनी पूरी ताकत से प्रयास करें। क्योंकि, जैसा कि दिव्य प्रेरित पौलुस कहते हैं: *'क्या तुम नहीं जानते कि तुम परमेश्वर का मंदिर हो, और परमेश्वर का आत्मा तुम में वास करता है? यदि कोई परमेश्वर के मंदिर को नष्ट करता है, तो परमेश्वर उसे नष्ट कर देगा'* (1 कुरिन्थियों 3:16–17)।

आत्मा को सांत्वना देने वाले शब्दों से उन पुरुषों को उपदेश देकर, संत ने उन्हें शांतिपूर्वक विदा किया। क्योंकि अपने आचरण में संत एक स्नेहमय पिता के समान थे, और उनकी दृष्टि दैवीय अनुग्रह से प्रकाशमान थी, ठीक वैसे ही जैसे ईश्वर के एक स्वर्गदूत की दृष्टि होती है। उसके मुख से एक तेजस्वी किरण चमकती थी, ठीक वैसे ही जैसे मूसा के मुख से चमकती थी, और जो भी केवल उसे देखता था, उसे महान लाभ मिलता था। कोई भी व्यक्ति किसी भी जुनून या आध्यात्मिक दुख से त्रस्त हो, उसके लिए संत की ओर दृष्टि घुमाना ही अपने दुख में सांत्वना पाने के लिए काफी था; और जो कोई भी उनसे बात करता, वह पहले से ही सद्गुणों में प्रगति कर रहा होता। और केवल ईसाइयों ही नहीं, बल्कि अविश्वासियों ने भी: यदि उनमें से कोई भी संत के मीठे और मधुर शब्दों को सुन लेता, तो वे करुणा से भर उठते और, शिशु अवस्था से ही उनमें जड़ें जमा चुके अविश्वास की दुर्भावना को त्यागकर तथा सत्य के सच्चे वचन को अपने हृदय में ग्रहण करके, मोक्ष के मार्ग पर चल पड़ते।

ईश्वर के इस महान सेवक ने कई वर्षों तक मायरा नगर में दिव्य सद्गुणों का प्रकाश करते हुए जीवन यापन किया, जैसा कि धर्मग्रंथों में कहा गया है: *'बादलों के बीच भोर के तारे के समान, महीने के दिनों में पूर्ण चंद्रमा के समान, सर्वोच्च के मंदिर पर चमकते सूर्य के समान, और भव्य बादलों के बीच चमकते इंद्रधनुष के समान, वसंत के दिनों में गुलाब के रंग के समान, जल के झरनों के पास कमलों के समान, गर्मियों के दिनों में लेबनान की एक शाखा के समान'* (सरि. 50:6–8)।

परिपक्व आयु प्राप्त करने के बाद, संत ने अपने मानवीय स्वभाव के दायित्वों को पूरा किया और एक संक्षिप्त शारीरिक बीमारी के बाद, शांतिपूर्वक अपना सांसारिक जीवन समाप्त किया। आनंद और भजन-गायन के साथ, वे पवित्र स्वर्गदूतों के साथ-साथ स्वर्ग में प्रवेश कर गए और संतों के चेहरों द्वारा उनका स्वागत किया गया। लिसिया प्रांत के बिशप, संपूर्ण पुरोहित वर्ग और मठाधीशों के साथ, और सभी शहरों से लोगों की एक अनगिनत भीड़, उनके अंतिम संस्कार के लिए एकत्रित हुई। संत के पवित्र शरीर को सम्मानपूर्वक मायरा के मेट्रोपोलिस के कैथेड्रल चर्च में दिसंबर के छठे दिन[8650] को दफनाया गया। ईश्वर के इस पुरुष की पवित्र अवशेषों के माध्यम से कई चमत्कार हुए। क्योंकि उनकी अवशेषों से एक सुगंधित और उपचार करने वाला मूरा निकलता था, जिससे बीमारों पर अभिषेक किया जाता था और उन्हें स्वास्थ्य लाभ मिलता था। इस कारण से, लोग अपनी बीमारियों के उपचार की आशा में पृथ्वी के सभी कोनों से उनके मकबरे पर उमड़ पड़ते थे और उन्हें स्वास्थ्य लाभ मिलता था। क्योंकि उस पवित्र मिरा ने न केवल शारीरिक बल्कि आत्मा के रोगों को भी ठीक किया, और दुष्ट आत्माओं को भगा दिया। क्योंकि उस संत ने, न केवल अपने जीवनकाल में बल्कि अपने निधन के बाद भी, राक्षसों से युद्ध किया और उन्हें परास्त किया, ठीक वैसे ही जैसे वे आज भी करते हैं।

तानसि नदी के मुहाने पर रहने वाले कुछ ईश्वर-भयभीत पुरुषों ने, लिसिया के मयरा में विराजमान मसीह के संत निकोलस की मिरा-प्रवाह करने वाली और चंगा करने वाली अवशेषों के बारे में सुनकर, उन अवशेषों की पूजा करने के लिए समुद्र मार्ग से वहाँ जाने का संकल्प लिया। लेकिन वह दुष्ट दानव, जिसे एक बार संत निकोलस ने आर्टेमिस के मंदिर से बाहर निकाल दिया था, जब उसने देखा कि जहाज इस महान पिता के पास जाने के लिए तैयार हो रहा था, और मंदिर के विनाश तथा अपनी निष्कासन के लिए संत से क्रोधित होकर, उसने इन लोगों को अपनी नियोजित यात्रा पूरी करने से रोकने और इस प्रकार उन्हें पवित्र अवशेषों से वंचित करने का निश्चय किया। उसने पवित्र तेल से भरा पात्र उठाए हुए एक महिला का रूप धारण किया और उनसे कहा:

'मैं इस पात्र को संत की कब्र तक ले जाना चाहती हूँ, लेकिन मुझे समुद्री यात्रा से बहुत डर लगता है, क्योंकि एक कमजोर और पेट की बीमारी से पीड़ित महिला के लिए समुद्र में यात्रा करना खतरनाक है। अत; मैं आपसे विनती करती हूँ, इस पात्र को ले जाइए, इसे संत की कब्र तक पहुँचाइए और तेल को दीपक में डाल दीजिए।'

[8650] संत निकोलस की मृत्यु का सटीक वर्ष अज्ञात है: कुछ स्रोतों के अनुसार, ईश्वर के सेवक का निधन वर्ष 341 में हुआ था, जबकि अन्य उनके निधन के वर्ष को 346 और 352 के बीच मानते हैं।

ये शब्द कहकर, राक्षस ने वह पात्र भक्त लोगों को सौंप दिया। यह ज्ञात नहीं है कि उस तेल में किस तरह के शैतानी जादू मिले हुए थे, लेकिन इसका उद्देश्य यात्रियों को नुकसान पहुँचाना और उनका विनाश करना था। इस तेल के घातक प्रभावों से अनजान, उन्होंने अनुरोध को मान लिया और पात्र लेकर तट से रवाना हो गए और पूरे एक दिन तक सुरक्षित रूप से यात्रा की। लेकिन सुबह एक उत्तर की हवा चलने लगी, और उनकी यात्रा कठिन हो गई।

इस दुर्भाग्यपूर्ण यात्रा में कई दिनों की कठिनाइयों के बाद, वे लंबे समय से चल रहे उथले-से-उथले समुद्र से निराश हो गए और वापस मुड़ने का फैसला किया। उन्होंने जहाज का रुख पहले ही घर की ओर मोड़ लिया था, तभी संत निकोलस एक छोटी नाव में उनके सामने प्रकट हुए और कहा:

'हे पुरुषों, तुम किस ओर जा रहे हो, और अपनी मूल यात्रा को छोड़कर वापस क्यों मुड़ रहे हो? तुम तूफान को शांत कर सकते हो और यात्रा को सुरक्षित बना सकते हो। यह शैतान की चालाकी है जो तुम्हारी प्रगति में बाधा डाल रही है, क्योंकि तेल वाली नाव तुम्हें किसी महिला ने नहीं, बल्कि एक राक्षस ने दी थी। उस नाव को समुद्र में फेंक दो, और तुम्हारी यात्रा तुरंत सुरक्षित हो जाएगी।'

यह सुनकर, उन लोगों ने शैतान के पात्र को समुद्र की गहराई में फेंक दिया। तुरंत ही, उसमें से काला धुआं और लपटें निकलने लगीं; हवा एक भयानक बदबू से भर गई; समुद्र फट गया; पानी नीचे तक उबलने और बुलबुले करने लगा; और उसकी बौछार आग की चिंगारियों जैसी थी। नाव पर सवार लोग बहुत भयभीत हो गए और डर के मारे चिल्लाने लगे, लेकिन उनकी सहायता करने वाला, जिसने उन्हें धैर्य रखने और न डरने का आदेश दिया, उसने उग्र तूफान को शांत कर दिया और यात्रियों को उनके भय से मुक्त कर, लिसिया तक उनकी यात्रा को सुरक्षित बना दिया। क्योंकि तुरंत ही उन पर एक ठंडी और सुगंधित हवा चली, और वे आनंदपूर्वक और सुरक्षित रूप से उस शहर में पहुँचे जिसकी उन्होंने लालसा की थी। अपने तेज सहायक और मध्यस्थ की मूर्रा बहने वाली पवित्र अवशेषों के सामने नतमस्तक होकर, उन्होंने सर्वशक्तिमान ईश्वर का धन्यवाद किया और महान पिता निकोलस के लिए स्तुति-गीत गाए। इसके बाद, वे अपने देश लौट आए, और हर जगह सभी को अपनी यात्रा में उनके साथ हुई घटनाओं के बारे में बताते रहे। इस महान संत ने जमीन और समुद्र में कई महान और गौरवशाली चमत्कार किए। उन्होंने संकट में पड़े लोगों की सहायता की, डूबते लोगों को बचाया और उन्हें समुद्र की गहराइयों से किनारे पर लाया, बंदियों को मुक्त कराया और उन्हें घर वापस लाया, लोगों को बेड़ियों और काल-कोठरियों से मुक्त कराया, उन्हें तलवार से बचाया, उन्हें मृत्यु से बचाया, और कई लोगों पर कई चमत्कार किए: अंधों को दृष्टि, लंगड़ों को चलने की क्षमता, बधिरों को सुनने का वरदान, और मूक लोगों को बोलने का वरदान दिया। उन्होंने गरीबी और अत्यंत दरिद्रता में पीड़ित कई लोगों को समृद्ध किया, भूखों को भोजन प्रदान किया, और हर आवश्यकता में सभी के सामने एक तत्पर सहायक, एक स्नेही मध्यस्थ, और एक त्वरित वकील और रक्षक के रूप में प्रकट हुए। और आज भी वह उन लोगों की मदद करते हैं जो उनसे प्रार्थना करते हैं और उन्हें उनकी मुसीबतों से बचाते हैं। उनके चमत्कारों की गिनती करना असंभव है, ठीक वैसे ही जैसे उन सभी का विस्तार से वर्णन करना असंभव है। यह महान चमत्कार करने वाले पूर्व और पश्चिम में जाने जाते हैं, और उनके चमत्कार पृथ्वी के सभी कोनों में प्रसिद्ध हैं। त्रिमूर्ति ईश्वर—पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा—उनमें महिमा पाएं, और उनका पवित्र नाम सभी द्वारा युगों-युगों तक स्तुति पाएं। आमीन।

- संत निकोलस के चमत्कार जो उनकी मृत्यु के बाद हुए

संत निकोलस ने न केवल अपने जीवनकाल में बल्कि अपनी मृत्यु के बाद भी कई चमत्कार किए। उनके अद्भुत चमत्कारों को सुनकर कौन आश्चर्यचकित नहीं होगा! क्योंकि यह केवल एक देश या एक क्षेत्र ही नहीं है, बल्कि पूरी दुनिया संत निकोलस के चमत्कारों से भर गई है। ग्रीकों के पास जाओ, और वहाँ वे उन पर आश्चर्य करते हैं; लैटिनियों के पास जाओ - और वहाँ वे उन पर चकित हैं, और सीरिया में वे उनकी प्रशंसा करते हैं। सारी पृथ्वी पर, लोग संत निकोलस पर आश्चर्य करते हैं। रूस आओ, और तुम देखोगे कि ऐसा कोई शहर या गाँव नहीं है जहाँ संत निकोलस के चमत्कार प्रचुर मात्रा में न पाए जाते हों।

ग्रीक सम्राट लियो के शासनकाल में और पैट्रिआर्क अथानासियस के अधीन, संत निकोलस का निम्नलिखित गौरवशाली चमत्कार हुआ[8651] । मायरा के महाधर्माध्यक्ष, महान निकोलस, मध्यरात्रि को एक दृष्टि में थियोफानेस नामक एक धार्मिक, परोपकारी और अतिथि-सत्कार करने वाले वृद्ध व्यक्ति को प्रकट हुए, और कहा:

[8651] यह 8वीं शताब्दी के मध्य में, सम्राट लियो द इसाउरियन के शासनकाल के दौरान था।

'जागो, थियोफानेस, उठो और प्रतिमा-चित्रकार एगेउस के पास जाओ और उसे तीन प्रतिमाएँ बनाने का निर्देश दो: हमारे उद्धारकर्ता प्रभु यीशु मसीह की, जिन्होंने स्वर्ग और पृथ्वी की रचना की और मनुष्य को बनाया; परम पवित्र महिला, परमेश्वर की माता की; और ईसाई जाति के मध्यस्थ की, मायरा के आर्चबिशप निकोलस, क्योंकि यह उचित है कि मैं कॉन्स्टेंटिनोपल में प्रकट होऊँ। इन तीन आइकन को चित्रित करने के बाद, उन्हें पैट्रिआर्क और पूरी परिषद को प्रस्तुत करो। जल्दी जाओ और अवज्ञा मत करना।"

यह कहकर, संत दृष्टि से ओझल हो गए। अपनी नींद से जागने पर, वह ईश्वर-प्रेमी व्यक्ति थियोफेनेस उस दर्शन से विस्मित हो गया; वह तुरंत प्रतिमा-चित्रकार अगेउस के पास गया और उससे तीन महान प्रतिमाएँ बनाने का आग्रह किया: उद्धारकर्ता मसीह, परमेश्वर की अति पवित्र माता, और संत निकोलस की। दयालु उद्धारकर्ता, उनकी परम पवित्र माता और संत निकोलस की कृपा से, अग्गायोस ने तीनों प्रतिमाएँ बनाईं और उन्हें थियोफानेस के पास ले आए। उन्होंने प्रतिमाएँ लीं, उन्हें अपने ऊपरी कमरे में रख दिया और अपनी पत्नी से कहा:

'आओ हम अपने घर में भोजन तैयार करें और अपने पापों के लिए ईश्वर से प्रार्थना करें।'

वह खुशी-खुशी मान गई। थियोफानेस बाजार गया, तीस जूलाट्निकि में खाना-पीना खरीदा और उन्हें घर लाकर पैट्रिआर्क के लिए एक शानदार भोजन तैयार किया। फिर वह पैट्रिआर्क के पास गया और उनसे तथा पूरी सिनोद से अपने घर को आशीर्वाद देने और भोजन-पेय का सेवन करने का अनुरोध किया। पैट्रिआर्क ने सहमति दे दी, सिनेड के साथ थियोफानेस के घर आए और ऊपर के कमरे में प्रवेश करते ही उन्होंने देखा कि वहाँ तीन प्रतिमाएँ खड़ी थीं: एक हमारे प्रभु यीशु मसीह की, दूसरी परमेश्वर की अति पवित्र माता की, और तीसरी संत निकोलस की। पहली प्रतिमा के पास पहुँचकर, पैट्रिआर्क ने कहा:

'महिमा तेरी हो, हे मसीह हमारे परमेश्वर, जिसने सभी चीज़ों की रचना की। इस प्रतिमा को चित्रित करना उचित था।'

फिर, दूसरी प्रतिमा के पास आकर, उन्होंने कहा:

'यह अच्छा है कि परमेश्वर की अति पवित्र माता, जो संपूर्ण जगत की मध्यस्थ हैं, की यह प्रतिमा भी बनाई गई है।'

तीसरी प्रतिमा के पास आकर, पैट्रिआर्क ने कहा:

'यह मायरा के आर्चबिशप निकोलस की एक प्रतिमा है। उसे इतनी बड़ी प्रतिमा पर चित्रित नहीं किया जाना चाहिए था। आखिरकार, वह साधारण लोगों, थियोफेंस और नॉना, जो किसान थे, का बेटा था।'

घर के स्वामी को बुलाकर, पैट्रिआर्क ने उससे कहा:

'थेओफानेस, अग्गेउस को निकोलस की प्रतिमा इतने बड़े आकार में नहीं बनवाना।'

और उन्होंने संत की प्रतिमा को हटाने का आदेश दिया, कहते हुए:

'उसके लिए मसीह और परमेश्वर की अति पवित्र माता के बगल में खड़े होना अनुचित है।'

धर्मात्मा थियोफानेस, बहुत दुख के साथ संत निकोलस की प्रतिमा को ऊपरी कमरे से बाहर ले गए और उसे गोदाम में एक सम्मानजनक स्थान पर रख दिया; और, कैथेड्रल से एक धर्मकर्मी—कैलसिटस नामक असाधारण ज्ञान और विवेक वाले व्यक्ति—को चुनकर, उन्होंने उससे विनती की कि वह प्रतिमा के सामने खड़े होकर संत निकोलस की प्रशंसा करें। वह स्वयं महाधर्माध्यक्ष के शब्दों से गहराई से दुखी था, जिसने सेंट निकोलस की प्रतिमा को ऊपरी कक्ष से हटाने का आदेश दिया था। लेकिन धर्मग्रंथ में लिखा है: 1 राजा 2 – *'जो मेरी महिमा करेंगे, मैं उनकी महिमा* करूँगा'। यह प्रभु यीशु मसीह ने कहा था, जिनके द्वारा, जैसा कि हम देखेंगे, स्वयं संत की महिमा की जाएगी।

ईश्वर और परम पवित्र थियोटोकोस की महिमा करने के बाद, पैट्रिआर्क अपने पूरे सिनेड के साथ मेज पर बैठ गए, और भोजन परोसा गया। बाद में, पैट्रिआर्क उठे, उन्होंने ईश्वर और परम पवित्र थियोटोकोस की स्तुति की, और थोड़ी वाइन पीने के बाद, पूरे सिनेड के साथ आनंदित हुए। इस बीच, कैलिकिस्ट महान संत निकोलस की स्तुति और प्रशंसा कर रहे थे। लेकिन फिर शराब खत्म हो गई, जबकि पैट्रिआर्क और उनके साथी अभी भी पीना और आनंद लेना चाहते थे। और उपस्थित लोगों में से एक ने कहा:

'थेओफ़ेनेस, पैट्रिआर्क के लिए और वाइन लाओ और दावत को आनंददायक बनाओ।'

उसने उत्तर दिया:

'महाराज, अब और शराब नहीं है, और बाज़ार में अब यह नहीं बिक रही है; इसे खरीदने के लिए कहीं भी नहीं है।'

गहरे दुख में, उसे संत निकोलस याद आए, कि कैसे संत एक दर्शन में उसके सामने प्रकट हुए थे और उसे तीन प्रतिमाएँ बनाने का आदेश दिया था: उद्धारकर्ता, परमेश्वर की अति पवित्र माता, और स्वयं संत की। गुप्त रूप से तहखाने में प्रवेश करके, वह संत की प्रतिमा के सामने साष्टांग दंडवत हो गया और आँसुओं के साथ कहा:

'हे संत निकोलस! आपका जन्म चमत्कारिक था और आपका जीवन पवित्र था; आपने कई रोगियों को स्वस्थ किया है। मैं आपसे विनती करता हूँ, मेरी इस आवश्यकता के समय में मेरे लिए एक चमत्कार करें, और मुझे और वाइन प्रदान करें।'

यह कहकर और खुद को क्रॉस करके, वह उस जगह गया जहाँ शराब के पात्र रखे थे; और संत निकोलस चमत्कारकर्ता की मध्यस्थता से, वे पात्र शराब से भर गए। आनंदपूर्वक शराब लेकर, थियोफानेस उसे पैट्रिआर्क के पास ले गया। पैट्रिआर्क ने उसे पिया और उसकी प्रशंसा करते हुए कहा:

'मैंने कभी ऐसी मदिरा नहीं चखी।'

और जो लोग पी रहे थे उन्होंने टिप्पणी की कि थियोफानेस ने दावत के अंत के लिए सबसे अच्छी शराब बचा कर रखी थी। लेकिन उसने संत निकोलस के अद्भुत चमत्कार को गुप्त रखा।

उत्साहित होकर, पैट्रिआर्क और सिनिड सेंट सोफिया के घर में चले गए। सुबह, मिरिस्की द्वीप पर सिरिडाल्स्की नामक गाँव से थियोडोर नाम का एक कुलीन व्यक्ति पैट्रिआर्क के पास आया और उनसे विनती की कि वे उसके यहाँ आएँ, क्योंकि उसकी एकमात्र बेटी पर एक दैवीय पीड़ा का कब्ज़ा था, और उसके सिर पर पवित्र सुसमाचार पढ़ें। पैट्रिआर्क मान गए, उन्होंने चारों सुसमाचार उठाए, पूरे सिनिड के साथ जहाज पर सवार हुए, और प्रस्थान किया। जब वे खुले समुद्र में थे, तो एक तूफान उठ खड़ा हुआ; जहाज पलट गया, और सभी पानी में गिर गए और तैरने लगे, ईश्वर, परम पवित्र माता और संत निकोलस से पुकारते और प्रार्थना करते हुए। और परमेश्वर की अति पवित्र माता ने सिनिड की ओर से अपने पुत्र, हमारे उद्धारकर्ता यीशु मसीह से मध्यस्थता की, ताकि पुरोहित वर्ग नष्ट न हो जाए। तब जहाज़ सीधा हो गया, और परमेश्वर की कृपा से, संपूर्ण सिनिड एक बार फिर से उस पर चढ़ गया। डूबते समय, पैट्रिआर्क अथेनासियस को संत निकोलस के सामने अपना पाप याद आया और, पुकारते हुए, उन्होंने प्रार्थना की और कहा:

'हे मसीह के महान संत, मयरा के आर्चबिशप, चमत्कार करने वाले निकोलस, मैंने आपके सामने पाप किया है; मुझे क्षमा करें और मुझ पापी और दीन-हीन पर दया करें; मुझे समुद्र की गहराई से, इस कष्टदायक घड़ी से और एक बेमानी मृत्यु से बचाएँ।'

हे महिमामय चमत्कार – घमंडी स्वयं विनिम्र हो गया, जबकि विनिम्र को अद्भुत रूप से ऊँचा उठाया गया और सम्मानपूर्वक महिमामय बनाया गया।

अचानक संत निकोलस प्रकट हुए, जो समुद्र पर सूखी ज़मीन की तरह चल रहे थे; वे पैट्रिआर्क के पास आए और उनका हाथ थामते हुए बोले:

'अथेनासियस, क्या तुम्हें समुद्र की गहराई में मेरी मदद की ज़रूरत थी, मैं जो एक साधारण पृष्ठभूमि से आया हूँ?'

वह, मुश्किल से अपना मुँह खोलते हुए, थका-हार कर, कड़वा रोते हुए बोला:

'हे संत निकोलस, महान पवित्र पुरुष, मदद के लिए तत्पर, मेरे दुष्ट अहंकार को याद न करें; मुझे समुद्र की गहराई में इस अनावश्यक मृत्यु से बचा लें, और मैं अपने जीवन के सभी दिनों में आपकी महिमा करूँगा।'

और संत ने उससे कहा:

'भय मत करो, भाई; देखो, मसीह तुम्हें मेरे हाथ से बचा रहे हैं। अब और पाप मत करो, कहीं ऐसा न हो कि तुम्हें इससे भी बुरा कुछ हो जाए। अपनी नाव पर चढ़ जाओ।'

यह कहकर, संत निकोलस ने पैट्रिआर्क को पानी से बाहर निकाला और उन्हें जहाज पर बिठा दिया, यह कहते हुए:

'तुम बच गए हो; कॉन्स्टेंटिनोपल में अपनी सेवा में लौट जाओ।'

और संत अदृश्य हो गए। महाधर्माध्यक्ष को देखकर, सभी चिल्ला उठे:

'महिमा तेरी हो, हे उद्धारकर्ता मसीह, और तेरी महिमा हो, हे सर्व-पवित्र रानी, परमेश्वर की माता, जिन्होंने हमारे प्रभु को डूबने से बचाया है।'

नींद से जागने के जैसे, पैट्रिआर्क ने उनसे पूछा:

'मैं कहाँ हूँ, भाइयो?'

'आपके जहाज पर, महोदय,' उन्होंने उत्तर दिया, 'और हम सभी सुरक्षित हैं।'

रोते हुए, धर्मगुरु ने कहा:

'भाइयो, मैंने संत निकोलस के सामने पाप किया है; सचमुच वह महान हैं: वह समुद्र पर सूखी ज़मीन की तरह चलते हैं; उन्होंने मेरा हाथ पकड़कर मुझे जहाज पर बिठा दिया; सचमुच वह उन सभी की मदद करने में शीघ्र हैं जो विश्वास के साथ उनकी पुकार करते हैं।'

जहाज़ तेज़ी से कॉन्स्टेंटिनोपल वापस चला गया। पूरे संप्रदाय के साथ तट पर उतरकर, धर्मगुरु आँसुओं में सेंट सोफिया के चर्च गए और थियोफेंस को बुलाकर उसे तुरंत सेंट निकोलस की वह अद्भुत प्रतिमा लाने का आदेश दिया। जब थियोफेंस प्रतिमा ले आए, तो धर्मगुरु आँसुओं में उसके सामने गिर पड़े और कहा:

'हे संत निकोलस, मैंने पाप किया है; मुझे, एक पापी को, क्षमा करें।'

यह कहकर, उन्होंने उस प्रतिमा को अपनी बाहों में उठा लिया, सिनैड के सदस्यों के साथ मिलकर श्रद्धापूर्वक उसे चूमा, और उसे सेंट सोफिया चर्च में ले गए। अगले दिन, उन्होंने कॉन्स्टेंटिनोपल में सेंट निकोलस को समर्पित एक पत्थर के चर्च की नींव का पत्थर रखा। जब चर्च बन गया, तो पैट्रिआर्क ने स्वयं सेंट निकोलस के पर्व के दिन इसका अभिषेक किया। और उस दिन, उस पवित्र व्यक्ति ने *चालीस* बीमार पुरुषों और महिलाओं को ठीक किया। फिर पैट्रिआर्क ने चर्च की सजावट के लिए 30 लीटर सोना और कई गाँव और बगीचे दान किए। और उन्होंने इसके बगल में एक सम्मानित मठ की स्थापना की। वहाँ बहुत से लोग आए: अंधे, लंगड़े और कोढ़ी। संत निकोलस की उस प्रतिमा को छूने के बाद, वे सभी अच्छे स्वास्थ्य के साथ चले गए, और ईश्वर तथा उनके चमत्कार करने वाले की स्तुति करते रहे।

कॉन्स्टेंटिनोपल में निकोलस नाम का एक व्यक्ति रहता था, जो अपने हस्तशिल्प से अपनी आजीविका कमाता था। एक धर्मपरायण व्यक्ति होने के नाते, उसने यह संकल्प लिया कि वह सेंट निकोलस की स्मृति को समर्पित दिनों को ईश्वर के इस सेवक को याद किए बिना कभी नहीं बीतने देगा। उसने इसे धर्मग्रंथ के वचनों के अनुसार, अविराम रूप से पालन किया: नीतिवचन 3 – *'अपने धन और अपनी सारी उपज के प्रथम फल से प्रभु का सम्मान करो'*, और वह इसे हमेशा दृढ़ता से ध्यान में रखता था। इस प्रकार वह बुढ़ापे तक पहुँचा और, काम करने की शक्ति खोने के बाद, गरीबी में पड़ गया। संत निकोलस का पर्व निकट आ रहा था, और जब वह सोच रहा था कि क्या करे, तो बूढ़े ने अपनी पत्नी से कहा:

– मसीह के महान बिशप, निकोलस, जिन्हें हम पूजते हैं, का पर्व निकट आ रहा है; तो हम गरीब लोग, अपनी दरिद्रता में, इस दिन का उत्सव कैसे मना सकते हैं?

उसकी धर्मपरायण पत्नी ने अपने पति से उत्तर दिया:

'आप जानते हैं, मेरे स्वामी, कि हमारे जीवन का अंत निकट आ गया है, क्योंकि वृद्धावस्था आप पर और मुझ पर दोनों हावी हो गई है; भले ही हम आज ही मर भी जाएँ, अपने संकल्प में डगमगाएँ नहीं और संत के प्रति अपनी भक्ति न भूलें।'

उसने अपने पति को अपना गलीचा दिखाया और कहा:

'यह कालीन लो, जाओ और इसे बेच दो, और संत निकोलस के पर्व के एक भव्य उत्सव के लिए आवश्यक सभी चीजें खरीद लो। हमारे पास और कुछ नहीं है, और हमें इस कालीन की कोई ज़रूरत नहीं है, क्योंकि हमारे कोई बच्चे नहीं हैं जिन्हें हम इसे छोड़ सकें।'

यह सुनकर, उस धर्मपरायण बूढ़े ने अपनी पत्नी की प्रशंसा की और कालीन लेकर चल पड़ा। जब वह उस चौक से होकर जा रहा था जहाँ महान संत कॉन्स्टेंटिन का स्तंभ खड़ा है, और संत प्लेटो के चर्च के पास से गुज़र रहा था, तो उसकी मुलाकात संत निकोलस से हुई—जो मदद करने के लिए हमेशा तैयार रहते थे—एक सम्मानित बूढ़े व्यक्ति के भेष में, जिन्होंने कालीन ले जा रहे व्यक्ति से कहा:

'मेरे प्रिय मित्र, आप कहाँ जा रहे हैं?'

'मुझे बाज़ार जाना है,' उसने जवाब दिया।

नज़दीक आकर, संत निकोलस ने कहा:

'यह अच्छी बात है। लेकिन बताओ, तुम यह कालीन कितने में बेचना चाहते हो, क्योंकि मैं इसे खरीदना चाहता हूँ।'

बुज़ुर्ग ने संत से कहा:

'यह कालीन अपने समय में आठ ज़्लॉटी में खरीदा गया था; अब मैं इसके लिए जो कुछ भी आप मुझे देने को तैयार हैं, ले लूंगा।'

संत ने बूढ़े आदमी से कहा:

'क्या आप इसके लिए 6 ज़्लॉटी लेने पर सहमत हैं?'

– 'अगर आप मुझे उतने ही दे दें,' बूढ़े ने कहा, 'तो मैं खुशी-खुशी ले लूँगा।'

संत निकोलस ने अपनी चोगा की जेब में हाथ डाला, कुछ सोने के सिक्के निकाले, और बुढ़े के हाथों में छह बड़े ज़्लॉटी रखकर उससे कहा:

'यह लो, मेरे दोस्त, और मुझे कालीन दे दो।'

बुढ़े ने खुशी-खुशी सोना ले लिया, क्योंकि कालीन की कीमत उससे कम थी। बुढ़े के हाथों से कालीन लेकर, संत निकोलस ने विदा ली। जब वे अलग हो गए, तो चौक में मौजूद लोगों ने बुढ़े से कहा:

'बूढ़े आदमी, क्या तुम कोई भूत देख रहे हो, जो खुद से बात कर रहे हो?'

क्योंकि वे केवल बूढ़े आदमी को देख सकते थे और उसकी आवाज़ सुन सकते थे, जबकि संत उनके लिए अदृश्य और अनुनादित थे। उसी क्षण, संत निकोलस बूढ़े आदमी की पत्नी के घर पहुँचे और उससे कहा:

'आपके पति मेरे पुराने दोस्त हैं; जब वे मुझसे मिले, तो उन्होंने यह निवेदन किया: मेरे लिए प्यार के तौर पर, यह कालीन मेरी पत्नी के पास ले जाइए, क्योंकि मुझे एक चीज़ ले जानी है, जबकि आपको इसे अपना ही रखना चाहिए।'

यह कहकर संत अदृश्य हो गए। उस सम्मानित व्यक्ति को प्रकाशमान देखकर और उससे कालीन लेती हुई, उस महिला ने डर के मारे यह पूछने की हिम्मत नहीं की कि वह कौन थे। यह सोचकर कि उसके पति ने उसके कहे शब्दों और संत के प्रति उसके प्रेम को भूल गए हैं, वह महिला अपने पति से नाराज़ हो गई और बोली:

'हाय रे मुझ दरिद्र स्त्री! मेरा पति अधर्मी और झूठों से भरा है!'

ऐसे और इसी तरह के शब्द कहती हुई, वह संत के प्रति अपने प्रेम में इतनी मग्न थी कि उसने तो कालीन की ओर देखा भी नहीं।

क्या हुआ था, इस बात से अनजान, उसके पति ने संत निकोलस के पर्व के उत्सव के लिए आवश्यक सभी चीजें खरीद लीं और कालीन बिकने की खुशी और इस तथ्य से प्रसन्न होकर कि उसे अपनी धार्मिक प्रथा को नहीं छोड़ना पड़ेगा, अपनी झोपड़ी की ओर लौट रहा था। जब वह घर पहुँचा, तो उसकी गुस्से में पत्नी ने उसे कठोर शब्दों से मिलकर कहा:

'अब मुझे अकेला छोड़ दो, क्योंकि तुमने संत निकोलस से झूठ बोला है। सचमुच, ईश्वर के पुत्र मसीह ने लूका 9 में कहा है: *"जो कोई हल पर हाथ रखकर पीछे मुड़ता है, वह ईश्वर के राज्य के योग्य नहीं है।"*'

ये और इस जैसे अन्य शब्द कहने के बाद, उसने अपने पति के पास कालीन लाकर कहा:

'लो, इसे ले लो; तुम मुझे फिर कभी नहीं देखोगे। तुमने संत निकोलस से झूठ बोला, और इसलिए तुम वह सब कुछ खो दोगे जो तुमने उनकी स्मृति मनाकर प्राप्त किया है। क्योंकि लिखा है: *"जो कोई भी पूरे विधान का पालन करता है, पर एक ही बिंदु में चूक जाता है, वह पूरे विधान का दोषी हो जाता है"* (याकूब 2:10)।'

अपनी पत्नी से यह सुनकर और अपना कालीन देखकर, वह बूढ़ा चकित रह गया और उसे जवाब देने के लिए शब्द नहीं मिले। वह वहाँ काफी देर तक खड़ा रहा और अंत में उसे एहसास हुआ कि संत निकोलस ने एक चमत्कार किया था। अपने दिल की गहराई से आह भरते हुए और आनंद से भरकर, उसने अपने हाथ आकाश की ओर उठाए और कहा:

'महिमा तेरी हो, हे मसीह हमारे परमेश्वर, जो संत निकोलस के माध्यम से चमत्कार करते हो!'

और बूढ़े ने अपनी पत्नी से कहा:

'भगवान के लिए, मुझे बताओ, यह कालीन तुम्हारे लिए किसने लाया—एक आदमी ने या एक औरत ने, एक बूढ़े ने या एक जवान ने?'

उसकी पत्नी ने उत्तर दिया:

'एक तेजस्वी, सम्माननीय बूढ़े व्यक्ति, जो चमकीले वस्त्रों में लिपटे थे, हमें यह कालीन लाए और मुझसे कहा: "आपके पति मेरे मित्र हैं; इसलिए, जब वे मुझसे मिले, तो उन्होंने मुझसे यह कालीन आपके पास लाने के लिए कहा—इसे ले लो।" कालीन ले लेने के बाद, मैंने उस आगंतुक से यह पूछने की हिम्मत नहीं की कि वह कौन था, क्योंकि मैंने उसे प्रकाश से चमकते हुए देखा।'

अपनी पत्नी से यह सुनकर, वह बूढ़ा आदमी चकति हो गया और उसने उसे सोने का वह हस्सिा दखिाया जो उसके पास अभी भी था, और वह सब कुछ जो उसने संत नकिोलस के पर्व दविस का जश्न मनाने के लिए खरीदा था: भोजन, शराब, प्रॉस्फोरा और मोमबत्तयिाँ।

उसने कहा, 'प्रभु जीवति हैं! जसि व्यक्ति ने मुझसे यह कालीन खरीदी थी और अब इसे हमारे घर, हम जैसे गरीब और नम्र सेवकों के पास वापस लाया है, वह वास्तव में संत नकिोलस ही हैं; क्योंकि जिन्होंने मुझे उनसे बात करते देखा, उन्होंने कहा: "क्या तुम कोई भूत नहीं देख रहे हो?" उन्होंने केवल मुझे देखा, जबकि वह अदृश्य थे।'

तब वृद्ध और उसकी पत्नी दोनों ने परमेश्वर का धन्यवाद करते हुए, मसीह के महान बशिप, नकिोलस की स्तुति की, जो उन सभी का शीघ्र सहायक है जो वशि्वास के साथ उनकी प्रार्थना करते हैं। खुशी से भरकर, वे तुरंत सोना और एक कालीन लेकर संत नकिोलस के चर्च गए, और उन्होंने जो कुछ हुआ था, वह पूरी पुरोहति मंडली और चर्च में मौजूद सभी लोगों को सुनाया। और सभी लोगों ने, उनकी बात सुनकर, परमेश्वर और संत नकिोलस की महमिा की, जो अपने सेवकों पर दया दखिाते हैं। फरि उन्होंने पैट्रआर्क माइकल[8652] को संदेश भेजा और उन्हें सब कुछ बताया। पैट्रआर्क ने आदेश दयिा कि उस वृद्ध को सेंट सोफयिा चर्च की संपत्तयिों से एक भत्ता दयिा जाए। और उन्होंने स्तुति और भजन-कीर्तन के साथ एक भव्य उत्सव मनाया।

कॉन्स्टेंटनिोपल में एपफिानयिस नाम का एक धार्मकि व्यक्ति रहता था। वह बहुत अमीर था और सम्राट कॉन्स्टेंटनि[8653] द्वारा बहुत सम्मानति था, और उसके कई नौकर थे। एक दनि उन्होंने अपने नौकर के रूप में एक छोटे लड़के को खरीदने की इच्छा व्यक्त की, और दसिंबर के तीसरे दनि, 72 ज्लाट्नकि के मूल्य का एक लीटर सोना लेकर, वे अपने घोड़े पर सवार होकर उस बाजार में गए जहाँ रस के व्यापारी दास बेच रहे थे। वे एक दास नहीं खरीद सके, और इसलिए वे घर लौट आए। अपने घोड़े से उतरकर, वह अपने कक्ष में गया, उसने बाजार ले जाया गया सोना अपनी जेब से नकिाला, और कक्ष में कहीं रख दयिा, लेकनि यह भूल गया कि उसने उसे कहाँ रखा था। यह सब उसके साथ प्राचीन दुष्ट शत्रु, शैतान के कारण हुआ, जो पृथ्वी पर अपनी शक्ति बढ़ाने के लिए ईसाई जाति के खलिाफ नरिंतर युद्ध करता रहता है। उस आदमी की धार्मकिता को सहन न कर पाकर, उसने उसे पाप की खाई में धकेलने का नश्चिय कयिा। सुबह, कुलीन व्यक्ति ने अपने लिए काम करने वाले युवा नौकर को बुलाया और कहा:

'मुझे वह सोना ला दो जो मैंने तुम्हें कल दयिा था; मुझे बाज़ार जाना है।'

यह सुनकर, नौकर भयभीत हो गया, क्योंकि उसके मालकि ने उसे कोई सोना नहीं दयिा था, और उसने कहा:

'आपने मुझे कोई सोना नहीं दयिा है, मेरे स्वामी।'

स्वामी ने कहा:

'हे दुष्ट और कपटी नीच, बता मुझे मैंने जो सोना तुझे दयिा था, वह तूने कहाँ रखा है?'

लड़के के पास कुछ भी न होने पर, उसने कसम खाई कि उसे समझ ही नहीं आया कि उसका मालकि कसि बारे में बात कर रहा है। कुलीन व्यक्ति क्रोधति हो गया और अपने नौकरों को आदेश दयिा कि वे लड़के को बाँध दें, बेरहमी से पीटें और उसे बेड़यिों में जकड़ दें।

उसने स्वयं कहा:

'मैं सेंट नकिोलस के भोज के समाप्त होने के बाद उसकी कस्मित का फैसला करूँगा' – क्योंकि वह भोज अगले दनि होने वाला था।

मंदरि में अकेले बंद, उस लड़के ने संकट में पड़े लोगों के उद्धारकर्ता, सर्वशक्तमिान ईश्वर से आँसू भरी पुकार लगाई:

'हे प्रभु मेरे ईश्वर, यीशु मसीह, सर्वशक्तमिान, जीवति परमेश्वर के पुत्र, जो अप्राप्य ज्योति में वास करते हो! मैं तुझ से पुकारता हूँ, क्योंकि तू मानव हृदय को जानता है; तू अनाथों का सहायक, संकट में पड़े लोगों का उद्धारकर्ता, दुःखतिों का सांत्वनादाता है: मुझे इस वपित्ति से बचा, जसिके बारे में मुझे कुछ भी पता नहीं है। मुझे दयालुता से उद्धार प्रदान करें, ताकि मेरा स्वामी, मुझ पर कए गए पाप और अन्याय से मुक्त होकर, आनंदति हृदय से आपकी महमिा कर

[8652] माइकल केरुलारयिोस 1043 से 1058 तक।

[8653] बेशक, कॉन्स्टेंटनि मोनोमाकस, जसिने 1042 से 1060 तक शासन कयिा।

सके; और ताकि मैं, आपका विनम्र सेवक, इस विपत्ति से मुक्त हो सकूँ जो अन्यायपूर्वक मुझ पर आई है, और मानव जाति के प्रति आपके प्रेम के लिए आपका धन्यवाद कर सकूँ।

आँसुओं के साथ ये और इसी तरह के शब्द कहते हुए, प्रार्थना पर प्रार्थना और आँसू पर आँसू जोड़ते हुए, लड़के ने संत निकोलस से पुकारा:

'हे आदरणीय पिता, संत निकोलस, मुझे इस मुसीबत से बचाओ! आप जानते हैं कि मैं उस बात का निर्दोष हूँ जिसका मेरा मालिक मुझे दोषी ठहराता है। कल आपका पर्व है, और मैं बहुत दुख में हूँ।'

रात हो गई, और थका हुआ लड़का सो गया। और संत निकोलस उसके सामने प्रकट हुए—जो विश्वास के साथ पुकारने वालों की मदद करने के लिए हमेशा तैयार रहते हैं—और कहा:

'दुखी मत हो: मसीह तुम्हें मेरे, अपने सेवक के माध्यम से, मुक्ति देंगे।'

तुरंत ही उसके पैरों से बेड़ियाँ उतर गईं, और वह उठ खड़ा हुआ और उसने ईश्वर तथा संत निकोलस की स्तुति की। उसी क्षण, संत अपने स्वामी के सामने भी प्रकट हुए, और उसे फटकार लगाई:

'एपफिनियस, तुमने अपने सेवक पर अत्याचार क्यों किया? दोष तुम्हारा ही है, क्योंकि तुम भूल गए हो कि तुमने सोना कहाँ रखा था, फिर भी तुमने उस लड़के को बिना किसी कारण के सताया, जबकि वह तुम पर वफादार है। लेकिन चूँकि यह योजना आपने स्वयं नहीं बनाई थी, बल्कि आप प्राचीन शत्रु, शैतान, के द्वारा भटक गए थे, इसलिए मैं प्रकट हुआ हूँ ताकि ईश्वर के प्रति आपका प्रेम कम न हो जाए। उठें और उस लड़के को आज़ाद करें; क्योंकि यदि आप मेरी अवज्ञा करेंगे, तो आप पर स्वयं एक बड़ी विपत्ति आएगी।

तब, जहाँ सोना पड़ा था, उस जगह की ओर अपनी उंगली से इशारा करते हुए, संत निकोलस ने कहा:

'उठो, अपना सोना लो और उस लड़के को आज़ाद कर दो।'

यह कहकर वह गायब हो गया।

कुलीन एपफिनियस विस्मय की अवस्था में जागा, कमरे में उस स्थान पर गया जिसे संत ने उसे बताया था, और उसे वह सोना मिला जिसे उसने स्वयं वहाँ रखा था। फिर, भय से ग्रस्त और आनंद से भरकर, उसने कहा:

'महिमा तेरी हो, हे मसीह हमारे परमेश्वर, संपूर्ण ईसाई जाति की आशा; महिमा तेरी हो, हे निराशों की आशा, निराश लोगों का शीघ्र सांत्वनादाता; महिमा तेरी हो, जिन्होंने संपूर्ण जगत को एक प्रकाशस्तंभ और पाप में पड़े लोगों के शीघ्र उद्धार का मार्ग दिखाया है, संत निकोलस, जो न केवल शारीरिक रोगों बल्कि आत्मा के प्रलोभनों का भी उपचार करते हैं।

आँसुओं से अभिभूत होकर, वह संत निकोलस की पवित्र प्रतिमा के सामने गिर पड़ा और कहा:

'मैं आपको धन्यवाद देता हूँ, आदरणीय पिता, क्योंकि आपने मुझे बचाया है, जबकि मैं अयोग्य और पापी हूँ, और आप एक दीन प्राणी के पास आए हैं, मुझे मेरे पापों से शुद्ध करने के लिए। आपने मुझ पर दृष्टि डाली और मेरे पास आए, इसके लिए मैं आपका ऋण कैसे चुकाऊँगा?'

यह और इसी तरह के शब्द कहने के बाद, वह कुलीन व्यक्ति लड़के के पास गया और जब उसने देखा कि उसकी बेड़ियाँ उतर चुकी थीं, तो वह और भी अधिक भयभीत हो गया और उसने खुद को बुरी तरह फटकारा। उसने तुरंत लड़के को आज़ाद करने का आदेश दिया और उसे सांत्वना देने की भरसक कोशिश की; जबकि वह स्वयं पूरी रात जागता रहा, ईश्वर और संत निकोलस का धन्यवाद करता रहा, जिन्होंने उसे इतने बड़े पाप से मुक्त किया था। जब प्रातःस्तुति के लिए घंटियाँ बजीं, तो वह उठा, सोना ले लिया, और लड़के के साथ संत निकोलस के चर्च में चला गया। वहाँ, उसने खुशी-खुशी सभी को उस दया के बारे में बताया जिससे ईश्वर और संत निकोलस ने उसे सम्मानित किया था। और सभी ने ईश्वर की स्तुति की, जो अपने संतों के माध्यम से ऐसे चमत्कार करते हैं। जब प्रातकालीन प्रार्थना समाप्त हो गई, तो सज्जन ने चर्च में लड़के से कहा:

'मेरे बच्चे, तुम्हें गुलामी से मुक्त करने वाला मैं, एक पापी, नहीं हूँ, बल्कि तुम्हारे ईश्वर, स्वर्ग और पृथ्वी के स्रष्टा, और उनके पवित्र सेवक, निकोलस हैं, ताकि एक दिन मेरी अज्ञानता के कारण मैंने जो अन्याय तुम्हारे साथ किया है, उसके लिए मुझे भी क्षमा मिल सके।'

यह कहकर, उसने सोने को तीन भागों में बाँट दिया; पहला भाग उसने संत निकोलस के चर्च को दे दिया, दूसरा उसने गरीबों में बाँट दिया, और तीसरा उसने लड़के को देते हुए कहा:

'यह लो, मेरे बच्चे, और तुम्हारा किसी के प्रति कोई कर्ज नहीं रहेगा, सिवाय संत निकोलस के। जहाँ तक मेरी बात है, मैं एक प्यार करने वाले पिता की तरह तुम्हारा ख्याल रखूँगा।'

ईश्वर और संत निकोलस का धन्यवाद करने के बाद, एपिफिनियस आनंद के साथ अपने घर लौट आया।

एक दिन कीव में, पवित्र शहीदों बोरिस और ग्लेब के पर्व के दिन, पवित्र शहीदों का पर्व मनाने के लिए सभी कस्बों और गांवों से लोगों की भारी भीड़ उमड़ी। कीव का एक व्यक्ति, जिसे संत निकोलस और पवित्र शहीदों बोरिस और ग्लेब में गहरी आस्था थी, एक नाव पर चढ़कर पवित्र शहीदों बोरिस और ग्लेब के अवशेष-पात्र की पूजा करने के लिए वशिगोरोद गया[8654] , और अपने साथ मोमबत्तियाँ, धूप और प्रॉस्फोरा - एक उपयुक्त उत्सव के लिए आवश्यक सभी चीजें - ले गया। संतों की अवशेषों की पूजा करके और आत्मा में प्रफुल्लित होकर, वह अपनी वापसी की यात्रा पर निकल पड़ा। जब वह नदी डनीपर से नीचे की ओर जा रहा था, तो उसकी पत्नी, जो अपने बच्चे को गोद में लिए हुए थी, झपकी ले बैठी और बच्चा पानी में गिर गया, जिसके बाद बच्चा डूब गया। पिता ने अपने बाल नोचना शुरू कर दिया और चिल्लाया:

हाय मेरे भाग्य! संत निकोलस! क्या इसी के लिए मैंने तुम पर इतना बड़ा विश्वास किया था—कि तुम मेरे बच्चे को डूबने से नहीं बचाओगे? मेरी जायदाद का वारिस कौन बनेगा? तुम्हारी याद में एक शानदार भोज मनाना मैं किसे सिखाऊँ, हे मेरे मध्यस्थ? जब मेरा बच्चा डूब गया, तो आप ने संपूर्ण संसार और मुझ जैसे एक गरीब आदमी पर जो महान दया दिखाई, उसे मैं कैसे बयां करूँ? मैं उसे आपके चमत्कारों से प्रकाशित कर जीवित करना चाहता था, ताकि मेरी मृत्यु के बाद यह प्रशंसा हो सके कि मेरा वंशज संत निकोलस की स्मृति का सम्मान करता है। लेकिन आपने, हे पवित्र, केवल मुझ पर ही नहीं, बल्कि स्वयं पर भी दुख लाया है; क्योंकि जल्द ही मेरे घर में आपकी स्मृति भी मिट जाएगी, क्योंकि मैं बूढ़ा हूँ और अपनी मृत्यु की प्रतीक्षा कर रहा हूँ। यदि आप उस बच्चे को बचाना चाहते, तो उसे बचा सकते थे, लेकिन आपने स्वयं उसे डूबने दिया, और मेरे एकमात्र पुत्र को समुद्र की गहराई से नहीं बचाया। या क्या आप सोचते हैं कि मैं आपके चमत्कारों से अनभिज्ञ हूँ? वे अनगिनत हैं, और मानव जीभ उन्हें बयान नहीं कर सकती; और मैं, हे पवित्र पिता, विश्वास करता हूँ कि आपके लिए सब कुछ संभव है—जो कुछ भी आप करना चाहें—लेकिन मेरे पापों का प्रभाव अधिक हो गया है। अब, दुख से पीड़ित, मुझे एहसास हो रहा है कि, यदि मैंने परमेश्वर की आज्ञाओं का निष्कलंक रूप से पालन किया होता, तो सारी सृष्टि मेरी आज्ञा मानती, जैसे पतन से पहले स्वर्ग में आदम की आज्ञा मानती थी। किन्तु अब, सारी सृष्टि मेरे विरुद्ध हो उठती है: पानी मुझे डुबो देगा, जानवर मुझे चीर-फाड़ कर डालेंगे, साँप मुझे निगल जाएँगे, बिजली मुझे जला देगी, पक्षी मुझे चोंचों से चोंच-चोंच कर मार डालेंगे, मवेशी क्रोधित होकर सब कुछ पैरों तले कुचल देंगे, लोग मुझे मार डालेंगे, और भोजन के लिए हमें दिया गया अन्न हमें तृप्त नहीं करेगा, बल्कि, ईश्वर की इच्छा से, हमारी विनाश का कारण बनेगा। हम, हालाँकि, एक आत्मा और विवेक से संपन्न और ईश्वर की छवि में बनाए गए हैं, अपने सृष्टिकर्ता की इच्छा को वैसे नहीं निभाते जैसे हमें निभाना चाहिए। लेकिन मुझ पर क्रोधित न हों, हे पवित्र पिता निकोलस, कि मैं इतनी निडरता से बोल रहा हूँ, क्योंकि आप मेरे सहायक हैं, इसीलिए मैं अपनी मुक्ति के लिए निराश नहीं हूँ।

इस बीच उसकी पत्नी अपने बाल नोच रही थी और अपने गालों पर हाथ मार रही थी। अंततः वे शहर पहुँचे और दुख से भरकर अपने घर में प्रवेश किया। रात हो गई, और देखो, उन सभी की सहायता के लिए तत्पर जो उससे प्रार्थना करते हैं, मसीह के बिशप निकोलस ने एक अद्भुत चमत्कार किया, जैसा पहले कभी नहीं देखा गया था। रात के दौरान, उन्होंने डूबे हुए बच्चे को नदी से निकाल लिया और उसे सेंट सोफिया चर्च के गायन मंडप में जीवित और सुरक्षित रख दिया। जब सुबह की प्रार्थना का समय आया, तो चर्च का सेवक चर्च में आया और उसे गायन मंडप से एक बच्चे के रोने की आवाज़ सुनाई दी। और वह वहाँ काफी देर तक खड़ा रहा, सोचता रहा:

'महिला को कोर लॉफ्ट में किसने चढ़ने दिया?'

वह गायक मंडली में व्यवस्था के प्रभारी व्यक्ति के पास गया और उसे डाँटने लगा; उस व्यक्ति ने कहा कि उसे इस बारे में कुछ भी नहीं पता, लेकिन सेक्सटन ने उसे फटकारा:

'तुम्हें रंगे हाथों पकड़ा गया है, क्योंकि बिच्चों का रोना गायन मंडप से आ रहा है।'

गायक मंडली के प्रभारी व्यक्ति डर गया; ताले के पास जाकर उसने देखा कि वह अछूता था और उसे एक बच्चे की आवाज़ सुनाई दी। गायक मंडली में प्रवेश करने पर, उसने एक बच्चे को देखा, जो पूरी तरह से पानी में भीगा हुआ था, और जो सेंट निकोलस के आइकन के सामने खड़ा था। इस बात का कोई मतलब समझ नहीं पाकर, उसने यह मामला

[8654] उस समय संत बोरिस और ग्लेब के अवशेष अभी भी कीव के विशिगोरोद में थे। यह चमत्कार 1087 और 1091 के बीच हुआ था।

मेट्रोपॉलटिन को बताया। मैटनि्स (प्रार्थना सभा) मनाने के बाद, मेट्रोपॉलटिन ने लोगों को चौक में इकट्ठा करने और उनसे यह पूछने का आदेश दयिा कि सेंट सोफयिा चर्च के गायकों के मंडप में कसिका बच्चा पड़ा है। सारे नगरवासी चर्च गए, यह देखकर चकति थे कि पानी से भीगा हुआ बच्चा गायन मंडप में कैसे पहुँच गया। बच्चे का पति भी चमत्कार को देखने आया, और उसे देखते ही पहचान लयिा। लेकनि, अपनी आँखों पर वशि्वास न करते हुए, वह अपनी पत्नी के पास गया और उसे सब कुछ वसि्तार से बताया। वह तुरंत अपने पति को डाँटने लगी, कहती हुई:

'तुम्हें यह कैसे नहीं समझ आ रहा कि यह संत नकिोलस द्वारा कयिा गया चमत्कार है?'

वह चर्च की ओर दौड़ी, अपने बच्चे को पहचान लयिा, और उसे छुए बनिा, संत नकिोलस की प्रतमिा के सामने साष्टांग दंडवत हो गई और गहरी भावना और आँसुओं के साथ प्रार्थना करने लगी। उसका पति, दूर खड़ा होकर, रो रहा था। यह सुनकर, सभी लोग चमत्कार देखने के लिए उमड़ पड़े, और पूरा शहर इकट्ठा हो गया, ईश्वर और संत नकिोलस की स्तुति करते हुए। तब मेट्रोपॉलटिन ने एक भव्य पर्व स्थापति कयिा, जैसा कि संत नकिोलस की स्मृति के दनि मनाया जाता है, जसिमें पवत्रि त्रमिूर्ति, पति, पुत्र और पवत्रि आत्मा की महमिा की जाती है। आमीन।

ट्रोपारयिन, स्वर 4:

वशि्वास का एक आदर्श और नम्रता तथा आत्म-संयम का उदाहरण, आपने अपने झुंड के सामने स्वयं को सच्चा सत्य के रूप में प्रकट कयिा: इसी कारण आप, वनिम्रता के द्वारा, ऊँचाइयों को, और गरीबी के द्वारा, धन-संपत्ति को प्राप्त हुए, हे पति और पवत्रि धर्मगुरु नकिोलस, हमारे परमेश्वर मसीह से प्रार्थना करें कि हमारी आत्माओं का उद्धार हो।

कॉन्टाकयिन, स्वर 3:

पवत्रि भूमयिों में, आप संस्कारों के सेवक के रूप में प्रकट हुए: हे पूजनीय, मसीह के सुसमाचार को पूरा करने के बाद, आपने अपने लोगों के लिए अपनी आत्मा अर्पति की, और नर्दिोषों को मृत्यु से बचाया। इस कारण से, आपको परमेश्वर की कृपा का एक महान प्रबंधक के रूप में पवत्रि कयिा गया।

20 दसिंबर

7 दसिंबर (पुराना संस्करण)

हमारे पवत्रि पति एम्ब्रोज़, मलिान के बशिप का जीवन

7 दसिंबर को स्मरण कयिा जाता है

संत एम्ब्रोज़[8655] , कुलीन एम्ब्रोज़ के पुत्र थे, जो गॉल[8656] और अन्य पश्चमिी प्रांतों के रोमन गवर्नर थे। अपने पुत्र के प्रति प्रेम के कारण, इस कुलीन व्यक्ति ने उनका नाम अपने ही नाम पर रखा।

संत के शशिुकाल में ही, उस आध्यात्मकि सांत्वना का एक संकेत था जसिे वह एक दनि मसीह की कलीसयिा को प्रदान करेंगे। एक दनि, दनि के मध्य में, लपेटे हुए शशिु एम्ब्रोज़ बाहर सो रहे थे, उनका मुँह खुला हुआ था। अचानक, मधुमक्खयिों का एक झुंड आ गया, वह शशिु पर बैठ गया और उसके पूरे चेहरे और मुँह को ढक लयिा; और देखा जा सकता

[8655] मलिान के एम्ब्रोज़ का जन्म लगभग 340 ईस्वी में ट्रायर शहर में हुआ था, जहाँ उस समय उनके माता-पति रह रहे थे।

[8656] प्राचीन दुनयिा में, गॉल नामक एक वशिाल देश में न केवल आज का फ्रांस बल्कि बेल्जयिम, नीदरलैंड का एक हस्सिा, जर्मनी के राइनलैंड क्षेत्र और अधकिांश स्वट्जिरलैंड भी शामलि थे। इसके अलावा, मलिान के संत एम्ब्रोज़ के पति, जनिका नाम भी एम्ब्रोज़ था, स्पेन के राज्यपाल भी थे। एम्ब्रोज़ से बड़े उनके अन्य बच्चे भी थे - एक बेटी, मार्सेलनिा, और एक बेटा, सैटायरस, जन्हिें पश्चमिी चर्च द्वारा संत घोषति कयिा गया था।

था कि मधुमक्खियाँ शिशु के मुँह में प्रवेश कर रही थीं और उससे बाहर आ रही थीं, और अपनी शहद उसकी जीभ पर छोड़ रही थीं। यह देखकर दूध-माई मधुमक्खियों को भगाना चाहती थी, क्योंकि उसे डर था कि वे बच्चे को नुकसान पहुँचा सकती हैं। लेकिन एम्ब्रोज़ के पिता, जिन्होंने यह सब देखा था, ने दूध-माँ को रोक दिया, क्योंकि वह यह देखना चाहते थे कि यह चमत्कार कैसे समाप्त होगा। और इस प्रकार, कुछ ही देर बाद, मधुमक्खियाँ उड़कर ऊपर की ओर चली गईं जब तक कि वे नज़रों से ओझल नहीं हो गईं। शिशु के पिता चकित रह गए और उन्होंने कहा:

'यदि यह बच्चा बड़ा हुआ, तो वह मनुष्यों में महान होगा।'

इस प्रकार, अपने शिशु-काल में ही, प्रभु अपने सेवक के माध्यम से यह दिखा रहे थे कि धर्मग्रंथ के वचन उनमें पूर्ण होंगे: नीतिवचन 16 – *'सुहावने वचन शहद की छत्ते के समान हैं, आत्मा के लिए* मीठे'।

क्योंकि मधुमक्खियों के झुंड ने संत एम्ब्रोज़ की उन आनंददायक शिक्षाओं और लेखन का प्रतीक प्रस्तुत किया, जिनसे उन्होंने आध्यात्मिक शहद के छत्ते बनाए, लोगों के दिलों को प्रसन्न किया और उन्हें पृथ्वी से स्वर्ग तक उठाया। जब वह बड़ा हुआ और अपनी माँ के साथ रोम में रह रहा था—जो पहले से ही विधवा थीं और ईश्वर से कुँवारी रहने का व्रत ले चुकी थीं—तो एक दिन उसने लोगों को बिशप का हाथ चूमते हुए देखा। उसके बाद, अपने माता-पिता के घर में खेलते समय, उसने अपने परिवार की ओर अपना हाथ बढ़ाया और कहा:

[8657]'मुझे चूमो, क्योंकि मैं भी एक बिशप बनूँगा।'

ये शब्द भविष्य की घटनाओं के संकेत के रूप में पवित्र आत्मा द्वारा उनके माध्यम से बोले गए थे, लेकिन वयस्कों ने यह समझने में असफल रहे कि उस लड़के के भीतर वास कर रहे ईश्वर की कृपा उन्हें बिशप के पद के लिए तैयार कर रही थी, और उन्होंने उन्हें रोक दिया, मानो वे जल्दबाज़ी में बोल रहे हों।

संत एम्ब्रोज़ के पिता की मृत्यु के बाद, उनकी माँ रोम चली गईं और उन्होंने उन्हें और उनके बड़े भाई, सैटायरस को, उत्तम शिक्षा प्रदान की, जबकि उनकी बहन—एक कुंवारी—ने उनमें पवित्रता के प्रति प्रेम जगाया[8658] ।

अलंकार शास्त्र का अध्ययन करने के बाद, अम्ब्रोस स्वयं एक प्रसिद्ध वक्ता बन गए, जिनमें मनाने की शक्ति थी। उन्होंने अन्याय के शिकारों की रक्षा की, दुर्भाग्यशाली लोगों की मदद की, अन्याय करने वालों की निंदा की, और अदालत में सत्य स्थापित करने में सहायता की। अपनी बुद्धिमत्ता के कारण, रोम के मुख्य मजिस्ट्रेट, प्रॉबस ने उन्हें एक सलाहकार के रूप में अपनी सेवा में ले लिया। बाद में अम्ब्रोज़ को लिगुरिया[8659] और एमिलिया[8660] के रोमन प्रांतों का राज्यपाल नियुक्त किया गया। इस समय, मेडिओलानम[8661] शहर में बिशप ऑक्सेनटियस की मृत्यु हो गई; वह एक एरियन थे और उन्होंने ऑर्थोडॉक्स बिशप डायोनिसियस के बाद बिशप की पदवी संभाली थी, जिनकी कैद में मृत्यु हो गई थी। ऑर्थोडॉक्स और एरियनों के बीच बड़े विवाद और असहमति थी, क्योंकि प्रत्येक पक्ष मेडियोलानम में रिक्त बिशप की सीट पर अपनी संप्रदाय का बिशप नियुक्त करना चाहता था। मेडियोलानम के निवासियों के बीच अशांति और उथल-पुथल जारी रही। यह जानकर, रोम के गवर्नर प्रोबस ने एम्ब्रोस को मेडियोलानम जाने और वहाँ भड़की विद्रोह को दबाने का आदेश दिया, उनसे कहते हुए:

'वहाँ जाओ और न्यायाधीश के रूप में नहीं, बल्कि एक बिशप के रूप में कार्य करो[8662] ।'

[8657] संत अम्ब्रोज़ के जीवनचरित्र के लेखक, उनके डीकन और सचिव पॉलिनिस के शब्दों के अनुसार, इस मामले में 'प्रभु का आत्मा उनके माध्यम से बोला, और उन्हें पुरोहित पद के लिए तैयार किया'।

[8658] रोम में, कैपिटोलिन हिल से कुछ दूर, वह घर जहाँ सेंट एम्ब्रोज़ का पालन-पोषण हुआ था, आज भी दिखाया जाता है। उस घर को एक चर्च और कुंवारी लड़कियों के लिए एक कॉन्वेंट में बदल दिया गया है, जो उनके नाम को समर्पित है।

[8659] लिगुरिया एक ऐसा क्षेत्र था जिसकी पश्चिमी सीमा, गॉल की ओर, वर्स नदी और मैरीटाइम आल्प्स द्वारा निर्धारित थी; दक्षिण-पूर्व में, इटली की ओर, मकरा नदी द्वारा; उत्तर में पैडस नदी द्वारा; और दक्षिण में लिगुरियन की खाड़ी द्वारा। इस प्रकार, इस क्षेत्र में अब इटली से सटे दक्षिणी फ्रांस और उत्तर-पश्चिमी इटली का एक हिस्सा, जिसमें नाइस, जेनोआ, दक्षिणी पीडमोंट और पार्मा तथा पियाचेन्ज़ा के पश्चिमी भाग शामिल हैं, शामिल था।

[8660] एमिलिया - गॉल का एक प्रांत, जो लिगुरिया और फ्लेमिनिया के बीच, आज के उत्तरी इटली के लगभग मध्य भाग में स्थित था।

[8661] मेडियोलानम – सिसैलपाइन गॉल, या आज के उत्तरी इटली के रूप में जाने जाने वाले क्षेत्र में एक प्राचीन शहर – जो विज्ञान और कलाओं के लिए समृद्धि का केंद्र था; आज, यह इतालवी क्षेत्र लोम्बार्डी का प्रमुख और फलता-फूलता शहर है, जिसकी आबादी बड़ी है।

[8662] ये शब्द इस शहर में सेंट एम्ब्रोज़ की भविष्य की गौरवशाली एपिस्कोपल सेवा की भविष्यवाणी करते प्रतीत हुए।

मेडियोलानम पहुँचने पर, अम्ब्रोज़ उस चर्च में गए जहाँ चुनाव हो रहे थे और अपनी वाक्पटुता की पूरी शक्ति से लोगों को उन लोगों को समझौते और शांति के लिए मनाने के लिए प्रेरित करने लगे जो विवाद कर रहे थे। अचानक, भीड़ के बीच एक बच्चा, जो अभी बोलना भी नहीं जानता था, चिल्लाया:

'अम्ब्रोस – बिशप!'

यह सुनकर, चर्च में मौजूद सभी लोगों ने उस शिशु के शब्दों को दोहराया और जोर-जोर से एक स्वर में उद्घोष करने लगे:

'अम्ब्रोज़ बिशप हैं! अम्ब्रोज़ बिशप हैं!'

इस प्रकार, ईश्वर की कृपा की शक्ति से, वह शिशु, जो बोलने के योग्य भी नहीं था, बोल उठा, और दोनों विरोधी पक्ष—पारंपरिक ईसाई और एरियन—अमन और एकता पर पहुँचे, और वे केवल अंब्रोज़ को अपना बिशप चाहते थे, भले ही वह अभी पवित्र बपतिस्मा से प्रकाशित नहीं हुआ था, बल्कि केवल धर्मोपदेश ही प्राप्त किया था। लोगों के चिल्लाहट सुनकर, अम्ब्रोज़ चर्च से बाहर आए और यह दिखाने के लिए कि वे इतने उच्च पद के अयोग्य हैं, वे न्यायाधीश की कुर्सी पर बैठ गए और अपनी सामान्य प्रथा के विपरीत, अपराधियों को बिना किसी दया के सताना शुरू कर दिया। उन्होंने यह इस उद्देश्य से किया कि नागरिक, उनकी दया की कमी को देखकर, उनसे नफरत करने लगें और उन्हें अपना बिशप स्वीकार करने से इनकार कर दें। लेकिन लोगों ने यह चिल्लाना बंद नहीं किया कि वे अम्ब्रोज़ को अपना बिशप चाहते हैं। अम्ब्रोज़ ने हर संभव तरीके से इनकार किया, यह घोषणा करते हुए कि वह एक बड़ा पापी है और अभी तक बपतिस्मा नहीं लिया है, लेकिन उन सभी ने उनसे जवाब दिया:

'तुम्हारा पाप हम पर होगा।' क्योंकि वे जानते थे कि पवित्र बपतिस्मा एक व्यक्ति को सभी पापों से शुद्ध कर देता है।

अम्ब्रोज़ उलझन में घर लौटे और उन्होंने अपना पद छोड़ने और एक घुमक्कड़ संन्यासी का जीवन चुनने का निश्चय किया, जैसा कि उन दिनों कई यूनानी दार्शनिक करते थे, लेकिन उन्हें यह इरादा पूरा करने से रोक दिया गया। तब उन्होंने बिशप के पद से बचने के लिए एक और चाल चली, अर्थात् उन्होंने आदेश दिया कि कुख्यात महिलाओं को खुलेआम उनके घर लाया जाए, ताकि मेडियोलानम के निवासी यह देखकर उनसे घृणा करें और उन्हें एक व्यभिचारी के रूप में अस्वीकार कर दें। लेकिन लोगों ने और भी जोरदार तरीके से घोषणा की:

– अपना पाप हम पर डाल दो, बस बपतिस्मा और बिशप पद स्वीकार कर लो।

चूंकि पूरे जनसमूह की इच्छा का विरोध करना असंभव था, अम्ब्रोज़ ने शहर छोड़कर भागने का निर्णय लिया। रात में, किसी को भी पता नहीं चलने पर, वह शहर से निकल गया, यह मानकर कि वह किसी दूसरे शहर, टिसिनिम ([8663]) की ओर जा रहा है, और उसने उस सड़क पर पहले ही काफी दूरी तय कर ली है; लेकिन जब भोर हुई, तो पता चला कि वह उसी मेडिओलानम शहर के द्वारों पर खड़ा था, जिसे रोमन गेट्स के नाम से जाना जाता है। ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि ईश्वर, जिन्होंने एम्ब्रोज़ को अपनी कैथोलिक चर्च के लिए दुश्मनों के खिलाफ एक दीवार के रूप में तैयार किया था, ने उनकी भागने की कोशिश को रोक दिया और अपनी शक्ति से उन्हें उस रास्ते से वापस मोड़ दिया जिस पर वे चलना चाहते थे। जब मेडिओलानम के नागरिकों को इस प्रयास के बारे में पता चला, तो उन्होंने एम्ब्रोज़ पर नजर रखना शुरू कर दिया ताकि वह भाग न सकें; साथ ही, उन्होंने सम्राट वैलेंटाइनियन प्रथम[8664] को एक पत्र भेजकर अनुरोध किया कि वे अम्ब्रोज़ को बिशप का पद स्वीकार करने का आदेश दें। सम्राट को इस बात की प्रसन्नता हुई कि जिन्हें उन्होंने सांसारिक पदों पर नियुक्त किया था, उन्हें अब उच्च धार्मिक पद के लिए चुने जाने का सम्मान मिल रहा था। रोम के मुख्य मजिस्ट्रेट, प्रोबस को भी बहुत प्रसन्नता हुई, क्योंकि अम्ब्रोस के लिए उसकी भविष्यवाणी—जो उसने उसे मेडियोलानम भेजते समय की थी—सच हो गई थी; अर्थात्, प्रोबस ने उससे कहा था कि लोगों को आपसी सद्भाव के लिए प्रेरित करते समय, उसे एक न्यायाधीश के रूप में नहीं बल्कि एक बिशप के रूप में कार्य करना चाहिए। जब मेडिओलानम के निवासी सम्राट के पास भेजे गए लोगों की वापसी और शाही उत्तर का इंतजार कर रहे थे, तब अम्ब्रोस एक बार फिर भाग गए और लियोन्टियस नामक एक प्रतिष्ठित व्यक्ति की संपत्ति पर शरण ली। लेकिन जब शाही फरमान आया, तो लियोन्टियस ने अम्ब्रोस का ठिकाना बता दिया और उन्हें लोगों के सामने मेडिओलानम वापस ले आए। इस प्रकार, उसके लिए छिपने

[8663] टिसिनिस – सिसाल्पाइन गॉल में, रोम से गॉल जाने वाले मुख्य मार्ग पर स्थित एक प्राचीन शहर – अब पाविया है, जो उत्तरी इटली में टिसिनो नदी पर स्थित एक महत्वपूर्ण शहर है, और यह उस स्थान के पास है जहाँ यह पो नदी में मिलती है।

[8664] पश्चिमी रोमन साम्राज्य के सम्राट, वैलेंटाइनियन प्रथम, या वृद्ध, ने 364 से 375 तक शासन किया।

की कोई जगह नहीं बची—उसे जिसे ईश्वर ने बिशप के पद पर उन्नत करने की कृपा की थी, *'पहाड़ी पर बसा नगर'* (मत्ती 5:14) और एक खंभे पर रखी मशाल (मत्ती 5:15) की तरह—और उसे अपनी भेड़ों का चरवाहा बनाने के लिए। एम्ब्रोस, इस बात से आश्वस्त हो गए कि एक बिशप बनना उनकी ईश्वरीय इच्छा थी, उन्होंने राजा की आज्ञा और लोगों की इच्छा का पालन किया। हालाँकि, उन्होंने एक एरियन बिशप से बपतिस्मा लेने से इनकार कर दिया, और इसके बजाय एक ऑर्थोडॉक्स बिशप से बपतिस्मा लेना पसंद किया, क्योंकि वे विधर्मी एरियन धर्म से गहराई से सतर्क थे। पवित्र बपतिस्मा प्राप्त करने के बाद, वह सात दिनों के भीतर सभी चर्च संबंधी पदों से होकर गुज़रा, और आठवें दिन पूरे लोगों के अकथनीय आनंद के बीच[8665] बिशप के रूप में अभिषिक्त हुआ। सम्राट स्वयं उनके अभिषेक में उपस्थित थे, जैसा कि थियोडोरेट[8666] में वर्णन करते हैं, और उन्होंने आनंदपूर्वक घोषणा की:

'मैं धन्यवाद करता हूँ, हे सर्वशक्तिमान प्रभु, हमारे उद्धारकर्ता, कि जिसे व्यक्ति को मैंने अपने प्रजा के शारीरिक जीवन की जिम्मेदारी सौंपी थी, आपने उनके आत्माओं को भी उसी के हवाले कर दिया है, जिससे यह साबित होता है कि मेरे द्वारा उसके बारे में दिया गया निर्णय सही था।'

कुछ दिनों बाद, ऐसा हुआ कि संत एम्ब्रोस ने सम्राट के साथ एक स्पष्ट बातचीत में, शहर की अदालतों के गलत कार्यों की निंदा की। सम्राट ने उनसे उत्तर दिया:

'मैं तुम्हारी वाक्पटुता की सत्यनिष्ठा से लंबे समय से परिचित हूँ; इसलिए, न केवल मैंने तुम्हारे बिशप के रूप में चुनाव के रास्ते में कोई बाधा नहीं डाली, बल्कि मैंने स्वयं इसकी सुविधा भी प्रदान की। अत; दिव्य कानून के आदेशानुसार हमारी त्रुटियों को सुधारो, और हमारी आत्माओं के अन्याय को दूर करो।'

अपने बिशप के पदभार ग्रहण करने की शुरुआत में, अम्ब्रोज़ ने पोप डेमासस से[8667] निवेदन किया कि वे उन्हें सहायता के लिए, अपनी पसंद का एक विवेकी व्यक्ति भेजें। पोप ने उनके पास पुरोहित सिम्प्लिसियानुस को भेजा। अम्ब्रोज़ इस पुरोहित का बहुत आदर करते थे, जैसे वे एक पिता का करते, और उन्होंने उनकी सलाह पर ध्यान दिया[8668]। अम्ब्रोज़ ने अपने घरेलू मामलों के प्रबंधन का जिम्मा अपने भाई सैटायरस[8669] को सौंप दिया, जबकि उन्होंने खुद को

[8665] यह 7 दिसंबर 374 को हुआ। उस समय सेंट एम्ब्रोज़ केवल 34 वर्ष के थे। एम्ब्रोज़ के अभिषेक को पूर्वी और पश्चिमी दोनों चर्चों के बिशपों ने समान रूप से समर्थन दिया, जिन्होंने उनके काम को असाधारण माना। यद्यपि, यह अभिषेक सख्त रूप से कैननिकल (पवित्र-नियमों के अनुसार) नहीं था, लेकिन निकिया परिषद के कैनन ने एक अपवाद बनाया जब नियुक्ति एक उच्च दैवीय आदेश पर आधारित थी, जैसा कि यहाँ मामला था। संत बेसिल द ग्रेट ने, अम्ब्रोज़ के अभिषेक की खबर पर प्रतिक्रिया में, एक पत्र लिखा जिसमें उन्होंने इस चुनाव के लिए ईश्वर का धन्यवाद किया। 'ईश्वर, जिसने चरवाहे आमोस को एक भविष्यवक्ता बनाया,' सार्वभौमिक शिक्षक इस पत्र में लिखते हैं, 'ने अब अम्ब्रोज़ को एक बिशप बनाया है—एक कुलीन जन्म, उच्च पद, उत्कृष्ट चरित्र और अद्भुत वाक्पटुता वाला व्यक्ति, जिसने फिर भी मसीह को प्राप्त करने के लिए इन सभी सांसारिक भेदों को ठुकरा दिया... "तो हियाव रख, हे परमेश्वर के मनुष्य।"

[8666] सिरिनस के बिशप थियोडोरेट, पाँचवीं शताब्दी के एक चर्च इतिहासकार थे।

[8667] दामासस प्रथम – 366 से 384 तक रोम के पोप; चर्च के इतिहास में एरियनवाद और अन्य विधर्मों के खिलाफ संघर्ष में धर्मपरायणता की रक्षा के लिए अपने उत्साही प्रयासों के लिए जाने जाते हैं।

[8668] संत अम्ब्रोज़ ने इस सिम्प्लिसियिन से मौखिक शिक्षा प्राप्त की, जिसे वह अपने पिता के समान प्रेम करते थे; सिम्प्लिसियिन का अम्ब्रोज़ के विश्वास के मामलों में गठन पर बहुत बड़ा प्रभाव पड़ा और बाद में वह मेडिओलानम (मिलान) में उनके बिशप पद के उत्तराधिकारी बने। इसके अलावा, एम्ब्रोस ने प्रसिद्ध ओरिजिन, डिडिमस, सेंट बेसिल द ग्रेट—जिनके साथ उनके घनिष्ठ और मैत्रीपूर्ण संबंध थे—सेंट ग्रेगरी द थियोलोजियन, और चर्च के अन्य प्रमुख पादरियों और शिक्षकों की रचनाओं का उत्साहपूर्वक अध्ययन किया। धन्य ऑगस्टीन के अनुसार, जो बाद में हिप्पो के बिशप और चर्च के एक प्रसिद्ध डॉक्टर बने—और जिन्हें संत एम्ब्रोज़ द्वारा मूर्तिपूजा से ईसाई धर्म में परिवर्तित किया गया था—वे अपने घर में बिना रुके अध्ययन के लिए थोड़ी-थोड़ी देर तक बैठते थे, उनकी आँखें किताब पर टिकी होती थीं और वे अपने आस-पास हो रही हर चीज़ से अनजान रहते थे। इतनी लगन से अध्ययन करने, और धर्मनिरपेक्ष विज्ञानों, विशेष रूप से ग्रीक साहित्य, के महान कौशल और ज्ञान के साथ, अम्ब्रोज़ ने कम समय में ही ईसाई विद्वता में उल्लेखनीय सफलता हासिल की।

[8669] सैटर इस प्रयास में लगे हुए ही निधन हो गए – कुछ के अनुसार 378 में, और कुछ के अनुसार बाद में (रोमन चर्च 17 सितंबर को उन्हें एक संत के रूप में सम्मानित करती है, ठीक उसी तरह जैसे यह 17 जुलाई को संत एम्ब्रोज़ की बहन, मार्सेलिना को सम्मानित करती है)। – जहाँ तक स्वयं एम्ब्रोज़ का सवाल है, बिशप का पद संभालते ही, उन्होंने अपनी संपत्तियों का उचित वितरण करके खुद को सभी सांसारिक चिंताओं से मुक्त कर लिया। उन्होंने अपना चाँदी और सोना गरीबों को दे दिया, और अपनी संपत्तियाँ चर्च को विरासत में दे दीं, जबकि अपनी बहन को जीवन भर उनका उपयोग करने का अधिकार दिया।

पूरी तरह से चर्च के मामलों के लिए समर्पित कर दिया, प्रतिदिन दैवीय अनुष्ठान का आयोजन किया और लोगों को पवित्र धर्मग्रंथों में शिक्षित किया[8670] ।

संत अम्ब्रोज़ ने चर्च के पुरोहित वर्ग को सुधारने का भी पूरा ध्यान रखा। उनके बीच रहकर, उन्होंने स्वयं यह उदाहरण प्रस्तुत किया कि कैसे एक कठोर तपस्वी जीवन को चर्च के एक चरवाहे के कर्तव्यों के साथ जोड़ा जाए। वह महान आत्म-संयम, लंबी जागरण और परिश्रम के व्यक्ति थे; वह प्रतिदिन उपवास के माध्यम से अपने शरीर को दंडित करते थे, जिसे वे केवल शनिवार और रविवार को तथा सबसे प्रसिद्ध शहीदों के पर्वों पर ही तोड़ते थे। वे दिन-रात प्रार्थना में लगे रहते थे और अपने हाथों से पुस्तकें लिखने के श्रम से नहीं कतराते थे, जब तक कि कोई शारीरिक बीमारी उन्हें ऐसा करने से न रोकती। अपने प्रति सिख्त होते हुए भी, वह सभी के प्रति दियालु, सौम्य और मिलनसार थे। गरीबों को उनमें एक रक्षक और एक मित्र मिला। वह जो आनंदित होते थे, उनके साथ आनंदित होते थे और जो दुखी होते थे, उनके साथ दुखी होते थे। यदि कोई पाप में पड़कर उनसे अपना पाप स्वीकार करता, तो वह इतनी गहराई से रोते कि पाप स्वीकार करने वाले को भी रुला देते।

पुरोहित वर्ग की देखभाल में, संत एम्ब्रोज़ ने भिक्षुओं का संरक्षण किया और मेडिओलानम के पास स्थित उनके मठ से प्रेम किया। उन्होंने मठों की स्थापना का भी ध्यान रखा, और उनके अभिषेक को मुश्किल से तीन साल ही हुए थे कि कुंवारी कन्याएँ[8671] पियाचेन्ज़ा[8672] , बोलोग्ना[8673] और यहाँ तक कि मॉरिटानिया[8674] से मेडिओलानम में आ गईं।

कुछ वर्षों बाद, अम्ब्रोस अपने मूल नगर रोम की यात्रा पर गए। वहाँ उन्होंने अपनी बहन और घर की एक दीर्घकालीन नौकरानी को जीवित पाया; उनकी माता का निधन पहले ही हो चुका था। जब उन्होंने उनके हाथ चूमा, अम्ब्रोस ने हल्की मुस्कान के साथ नौकरानी से कहा:

'तो तुम यहाँ बिशप का हाथ चूम रही हो, ठीक वैसे ही जैसे मैंने तुमसे कभी कहा था।'

इस प्रकार अम्ब्रोज़ की अपनी भविष्यवाणी पूरी हुई, जिसका उल्लेख पहले किया गया था, अर्थात् कि एक बच्चे के रूप में वह घर वालों की ओर अपना दाहिना हाथ बढ़ाकर कहता था:

'इसे चूमो, क्योंकि मैं भी एक बिशप बनूँगा।'

[8675][8676]जब एम्ब्रोज़ रोम में ठहरे हुए थे, *तो* टिबर नदी के उस पार रहने वाली एक सम्मानित महिला ने उनसे अपने घर पर दिव्य लिटर्जी का अनुष्ठान करने का अनुरोध किया। यह सुनकर, एक अन्य महिला, जो लकवाग्रस्त थी, ने आदेश

[8670] पवित्र धर्मग्रंथों और पवित्र विश्वास के सत्यों को हृदय में ग्रहण करके, अम्ब्रोस ने लोगों को बड़े उत्साह से उपदेश देना शुरू कर दिया, रविवार या पर्व के दिनों में उन्हें बिना शिक्षा के कभी नहीं छोड़ते, ऐसा करने का हर अवसर का लाभ उठाते हुए, और कभी-कभी दिन में एक से अधिक बार उपदेश-पीठ पर चढ़ते थे; उनके शब्द समझने में आसान थे, उनकी आवाज़ कोमल थी, और इसलिए, जब वे चर्च में उपदेश देते थे, तो एक असाधारण शांति छा जाती थी, और लोग, जो प्रीफ़ेक्ट एम्ब्रोज़ से प्यार करते थे, बिशप एम्ब्रोज़ के शब्दों को और भी ध्यान से सुनते थे। उन्होंने पवित्र बपतिस्मा की तैयारी के लिए कैटेकुमेन (धर्म-शिक्षण प्राप्त करने वालों) को निर्देश देने में भी विशेष उत्साह दिखाया।

[8671] प्रारंभिक चर्च में, महिलाओं के मठवासी समुदायों के उदय से पहले और उनके अस्तित्व के शुरुआती दिनों में, कुंवारी महिलाओं का एक विशेष वर्ग था जो पूरी तरह से ईश्वर की सेवा के लिए समर्पित थीं और ब्रह्मचर्य का व्रत लेती थीं। ऐसी महिलाओं को कुंवारी कहा जाता था, और उन्हें चर्च के भीतर बहुत सम्मान दिया जाता था और उसकी शोभा माना जाता था। वे निजी घरों में, आध्यात्मिक जीवन में अनुभवी वृद्ध महिलाओं—मार्गदर्शकों—के मार्गदर्शन में मौन, ईश्वर पर चिंतन और प्रार्थना का अभ्यास करने के लिए एक साथ इकट्ठा होती थीं। अक्सर, चर्च ने उनका मार्गदर्शन और पर्यवेक्षण सबसे सम्मानित डीकोनिसेस (दीकननियों) को सौंपा। मिलान के संत एम्ब्रोज़ के समय में कुंवारी महिलाओं के समुदाय पूरी तरह से विकसित हो चुके थे, और उनकी अपनी बहन, मार्सेलिना, एक कुंवारी थी, क्योंकि उस समय महिलाओं के मठों का उदय अभी-अभी शुरू हुआ था।

[8672] प्लेसेंटिया - अब पियाचेन्ज़ा - सीज़रपिन गॉल (आज का उत्तरी इटली) में पो नदी के दाहिने किनारे पर एक रोमन कॉलोनी थी, उस स्थान के पास जहाँ यह ट्रेबिया नदी में मिलती है। इसकी प्रमुखता मुख्य रूप से इस तथ्य में निहित थी कि यह मिलान से पार्मा जाने वाले रास्ते पर स्थित थी।

[8673] बोलोग्ना – उसी काल के इतालवी प्रांत का प्रमुख शहर, जिसकी स्थापना प्राचीन काल में हुई थी और उत्तरी इटली से मध्य इटली के मार्ग पर अपनी अनुकूल भौगोलिक स्थिति के कारण आज भी इतालवी शिक्षा और व्यापार के केंद्रों में से एक के रूप में इसकी बहुत महत्वता है।

[8674] मॉरिटानिया - जो अब फज़, मोरक्को और अल्जीरिया के पश्चिमी भाग में है - उत्तरी अफ्रीका में एक रोमन प्रांत था।

[8675] टिबर – वह नदी जिस पर रोम शहर स्थित है – प्राचीन इतालवी क्षेत्र एट्रूरिया के उत्तर-पूर्व में एपेनाइन पर्वत श्रृंखला में उत्पन्न होती है।

[8676] मिलान के संत एम्ब्रोज़ के समय में, प्रेरित युग की प्रथा के अनुसार, निजी घरों में धर्मविधि मनाने की अनुमति अभी भी थी। पवित्र प्रेरित, जैसा कि प्रेरितों के काम की पुस्तक (अध्याय 20, श्लोक 7-8) से स्पष्ट है, एक ऊपरी कमरे में यूखरिस्त मनाने के लिए इकट्ठा हुए। उत्पीड़न के दौरान ईसाइयों के पास सार्वजनिक पूजा स्थल नहीं थे, लेकिन वे निजी घरों में, भूमिगत गुफाओं - कैटाकॉम्ब - में और शहीदों की कब्रों पर

दयिा कि उसे वहाँ ले जाया जाए – और जब पवत्रि बशिप प्रार्थना कर रहे थे, तो उसने उनके चोगा के कनिारे को छुआ, उसे चूमा, और वह तुरंत ठीक हो गई। इस चमत्कार की खबर पूरे रोम में फैल गई।

सम्राट वैलेंटाइनयिन द एल्डर की मृत्यु के बाद, पश्चमिी रोमन साम्राज्य का राजदंड उनके पुत्र ग्राटयिन[8677] के पास गया। जब वह गोथों[8678] के खलिाफ युद्ध की तैयारी कर रहे थे, तो उन्होंने संत एम्ब्रोज़ से अपनी यह इच्छा व्यक्त की कि वे उनके लिए पवत्रि वश्विास का एक बयाना लखिें। संत अम्ब्रोज़ ने सम्राट के लिए वश्विास पर पुस्तकें लखिीं[8679], उनके शत्रुओं पर उनकी वजिय की भवष्यिवाणी की, और उनके ध्वजों को आशीर्वाद दयिा, जनि पर मसीह का नाम अंकति था। और ग्रैशयिन ने इस ईश्वर-पुरुष की प्रार्थनाओं और उनके आशीर्वाद से गोथों पर एक शानदार वजिय प्राप्त की।

स्वर्गीय वैलेंटाइनयिन द एल्डर की पत्नी और ग्रेटयिन की सौतेली माँ, जस्टनिा, एक एरयिन थी; वह संत एम्ब्रोज़ से नफरत करती थी और उसने उन्हें नुकसान पहुँचाया। इस प्रकार, जब सरिमयिम के बशिप[8680] की मृत्यु हो गई, तो जस्टनिा एक साथी एरयिन को बशिप के सहिासन पर स्थापति करने की इच्छा से वहाँ गईं। संत एम्ब्रोस भी वहाँ पहुँचे, क्योंकि वह शहर उनके झुंड का हस्सिा था। उस महलिा के गुस्से की परवाह कएि बनिा, उन्होंने यह सुनश्चिति करने का प्रयास कयिा कि अनीमयिस नामक एक धार्मकि व्यक्ति बशिप चुना जाए। एक दनि, जब सभी चर्च में इकट्ठा हो गए थे और संत एम्ब्रोज़ वेदी पर अपने स्थान पर आ गए थे, तो वहां मौजूद रानी जस्टनिा, उसने एक एरयिन महलिा को भेजा, उसे यह नर्दिेश देते हुए कि वह बशिप को उनके चोगा से पकड़ ले, उन्हें उनकी सीट से धकेल दे और उन्हें उन महलिाओं के खड़े होने की जगह तक घसीट ले जाए, ताकि वे अपने हाथों से एम्ब्रोज़ को पीट सकें और उसे चर्च से बाहर नकिाल सकें। लेकनि जब यह नर्लिज्ज महलिा उस आदेश को पूरा करने के लिए नडिर होकर संत एम्ब्रोज़ के पास गई, तो संत ने उससे कहा:

'यद्यपि मैं अपने पद के योग्य नहीं हूँ, फरि भी तुम्हें ईश्वर के कसिी भी पुरोहति पर हाथ नहीं उठाना चाहए; ईश्वर के न्याय से डरो, कहीं तुम्हें कोई अनहोनी न हो जाए।'

संत एम्ब्रोज़ के ये शब्द वास्तव में उस अभद्र महलिा पर सच साबति हुए: अगली सुबह ही उसकी अचानक मृत्यु हो गई, और संत एम्ब्रोज़ ने स्वयं उसे दफनाया, बुराई का बदला भलाई से चुकाया। इस चमत्कार से भयभीत होकर, एरयिनों और रानी जस्टनिा ने अब संत अम्ब्रोज़ को उस प्रतष्ठिति व्यक्ति को बशिप के रूप में अभषिेक करने से रोकने की हम्मित नहीं की। इस प्रकार, अम्ब्रोज़ ने बनिा कसिी वरिोध के, उसी व्यक्ति को बशिप के रूप में अभषिेक कयिा जसिे उन्होंने चुना था, जसिके बाद वे मेडओिलानम लौट आए।

ऐसा हुआ कि दो अन्य एरयिन, जो राजा ग्रेटयिन के चेंबरलेन (अधकिारयिों) में से थे, ने संत एम्ब्रोज़ के साथ धर्म के मामलों पर सार्वजनकि बहस करने की इच्छा व्यक्त की; बहस का वषिय प्रभु यीशु मसीह के अवतार पर था। नर्धिारति समय पर, संत अम्ब्रोज़, लोगों के साथ, चर्च में उनका इंतज़ार कर रहे थे। वह उनके साथ बहस करने के लिए तैयार थे, क्योंकि वह परमेश्वर की आत्मा से परपिूर्ण थे। लेकनि वे अरअिन, घमंड के कारण और संत का अपमान करने की इच्छा से, बहस में नहीं आए; इसके बजाय, वे अपने घोड़ों पर सवार हो गए और शहर से बाहर ग्रामीण इलाकों में चले गए। जब वे एक ऊँची जगह पर पहुँचे, तो उनके घोड़ों को अचानक डर लग गया, और अरअिन, पहाड़ी से गरिकर, मारे गए। हालाँकि, संत अम्ब्रोज़ को इस घटना की कोई खबर नहीं थी, वे उनका बहुत देर तक इंतज़ार करते रहे और, अंत में, जब उन्होंने देखा कि वे नहीं आ रहे हैं, तो वे उपदेश-मंच पर चढ़े और लोगों को अपना प्रसद्धि उपदेश दयिा, जसिकी शुरुआत इन शब्दों से होती है: "भाइयो, मैं जैसा कि मुझे करना चाहए, वैसे ही प्रतीक्षा करने की कोशशि कर रहा हूँ, लेकनि मुझे कल के अपने लेनदार नहीं मलि रहे हैं" (और इसी तरह, जैसा कि संत एम्ब्रोज़ के प्रभु यीशु मसीह के अवतार पर प्रबंध में लखिा है)।

इकट्ठा होते थे। चर्च के इतहिासकार यूसेबयिस, अलेक्जेंड्रयिा के संत डायोनसियिस की नम्निलखिति गवाही दर्ज करते हैं: 'उत्पीड़न के दौरान, हर जगह—चाहे वह खेत हो, जहाज हो, सराय हो या कालकोठरी—हमारे लिए स्तुति का स्थान थी।'

[8677] ग्रेटयिन, सम्राट वैलेंटाइनयिन प्रथम का सबसे बड़ा पुत्र और उत्तराधकिारी, जो 367 से अपने पति के सह-शासक रहे थे, ने 376 से 388 तक शासन कयिा।

[8678] गोथ एक वशिाल जर्मनकि जनजाति थी जो डैन्यूब नदी के पार रहती थी और वे ओस्टगोथ (पूर्वी गोथ) और वसिगिोथ (पश्चमिी गोथ) में वभिाजति थे।

[8679] मलिान के संत एम्ब्रोज़ का प्रबंध *वश्विास पर* पाँच पुस्तकों से मलिकर बना था।

[8680] सरिमयिम नचिली पैनोनयिा में सावा नदी पर स्थति एक प्राचीन राजधानी थी, जो डनीपर की एक सहायक नदी है, और वर्तमान इलरियिा में स्थति थी।

थोड़ी ही देर बाद, गाउल में सैन्य कमांडर मैक्सिमिस ने विश्वासघात से ग्रेटियन की हत्या कर दी, जिसने[8681] उसके खिलाफ विद्रोह कर दिया था। फिर वैलेंटाइनियन द यंगर रोम में अपने साम्राज्य का सिंहासन संभाला, अपनी माँ जस्टिना के साथ; लेकिन चूंकि कमांडर मैक्सिमिस पहले ही स्पेन और गाउल पर नियंत्रण कर चुका था, उसका विरोध करना असंभव था; इसलिए जस्टिना, जो एक एरियन थी, को संत एम्ब्रोज़ के पास जाने के लिए मजबूर होना पड़ा, और उनसे अपने छोटे बेटे के लिए दया की याचना करने और शांति स्थापित करने हेतु मैक्सिमिस के पास जाने का अनुरोध किया। सच्चे चरवाहे ने विद्रोही से मिलने के लिए प्रस्थान किया, क्योंकि वह अपनी आध्यात्मिक भेड़ों के लिए अपना जीवन बलिदान करने को तैयार था।

अपने बुद्धिमानी भरे और विनम्र शब्दों से, अम्ब्रोज़ ने मैक्सिमिस को इतना मना लिया कि वह उस वर्ष इटली पर चढ़ाई नहीं कर सका, बल्कि गॉल में ही रहा।

लेकिन जस्टिना ने ईश्वर के उस पवित्र पुरुष को उनके परिश्रम का बदला कृतघ्नता से दिया: निरंतर उनके प्रति शत्रुता पालते हुए, उसने अपने बेटे की ओर से एम्ब्रोज़ को एक मांग भेजी, जिसमें यह मांग की गई कि वह मिलान के कैथेड्रल चर्च को, उसमें मौजूद सभी खजाने के साथ, एरियनों को सौंप दें। लेकिन संत एम्ब्रोज़ ने साहसपूर्वक राजा की आज्ञा की अवहेलना की। उन्होंने उत्तर दिया:

'मैं राजा को उसकी चीज़ देने से इनकार नहीं करता; मैं उसके लिए अपनी सेहत तक की कुर्बानी देने को तैयार हूँ, लेकिन मैं वह नहीं दे सकता जो ईश्वर का है; और, वास्तव में, राजा भी इसे नहीं ले सकता।'

इसके बाद, सम्राट की ओर से कार्यरत जस्टिनिस ने सैनिकों का एक दल भेजा, जिन्हें बलपूर्वक चर्च पर कब्जा करने और बिशप को उसमें से बाहर निकालने का आदेश दिया गया था। यह सुनकर, लोग चर्च में उमड़ पड़े, अपने पवित्र बिशप एम्ब्रोज़ के साथ अंदर ही खुद को घेर लिया, और सैनिकों को अंदर आने से इनकार कर दिया। तीन दिनों तक विश्वासी चर्च में बंद रहे, ईश्वर का भजन करते और उसकी महिमा करते रहे। उन्होंने अड़ियल ईसाइयों का दृढ़ता से विरोध किया और उन्हें बिशप को बाहर निकालने या चर्च पर कब्जा करने की अनुमति नहीं दी। और संत एम्ब्रोज़ ने, राजा द्वारा भेजे गए लोगों की मांगों का जवाब देते हुए, दोहराया:

'मैं अपनी मर्ज़ी से चर्च नहीं छोड़ूँगा, और न ही इसे त्यागूँगा; मैं मसीह के झुंड को विश्वासघात से भेड़ियों के हवाले नहीं करूँगा, और न ही मैं ईश्वर की निंदा करने वालों को ईश्वर के चर्च पर कब्ज़ा करने दूँगा। यदि यह आदेश दिया जाता है कि मुझे मृत्युदंड दिया जाए, तो मुझे यहाँ, चर्च की दीवारों के भीतर, तलवार या भाले से भेद दिया जाए: मैं ऐसी मृत्यु को स्वेच्छा और प्रेम से स्वीकार करने के लिए तैयार हूँ।

जब रानी जस्टिना को यह सब पता चला, तो वह शर्मिंदा हुई और साथ ही ऑर्थोडॉक्स के साहसी प्रतिरोध से डर गई, और अब वह खुले तौर पर चर्च के खिलाफ संघर्ष भड़काने की हिम्मत नहीं करती थी। लेकिन, अपनी हार पर शर्मिंदा होकर, उसने गुप्त रूप से एक भाड़े के हत्यारे को संत अम्ब्रोज़ के घर भेजा ताकि वह उस पवित्र व्यक्ति की हत्या कर दे। वह खलनायक अपनी खींची हुई तलवार लेकर बिशप के शयनकक्ष में घुस गया और जब उसने उस पवित्र व्यक्ति पर वार करने के लिए अपना हाथ उठा ही लिया था, तभी अचानक उसका हाथ सूख गया, और वह उसे नीचे नहीं ला सका। उसे पकड़ लिया गया, और उसने कबूल कर लिया कि उसे किसने और किस उद्देश्य से भेजा था। संत एम्ब्रोज़ ने अपनी दयालुता से उसके सूखे हाथ को ठीक कर दिया और उसे शांति से जाने दिया[8682] ।

[8681] यह वर्ष 383 में हुआ था।

[8682] यह वर्ष 385 में, ईस्टर से ठीक पहले हुआ था। अगले वर्ष, 386 में, एक और समान घटना घटी, जब जस्टिना ने वैलेंटाइनियन को एरियनों के पक्ष में एक कानून जारी करने के लिए मना लिया और फिर, ईस्टर के आसपास, उसने संत एम्ब्रोज़ के खिलाफ इतनी भयंकर उत्पीड़न की शुरुआत की कि वह चर्च में खुद को बंद करके वेदी के सामने नतमस्तक हो गया और ऊपर से मदद के लिए प्रार्थना करने लगा। लोगों को डर था कि उसे जबरदस्ती ले जाया जा सकता है, इसलिए उन्होंने उसे घेर लिया और चर्च में दिन-रात उसके साथ प्रार्थना की। इस दौरान, उस पवित्र पुरुष ने लोगों का समय पवित्र शास्त्रों के पाठ, उनके व्याख्यान और भजनों तथा स्तोत्रों के गायन में व्यस्त रखा। उस समय से, तथाकथित 'एंटीफोनल गायन'—अर्थात् दो भागों में गायन—जो संत अम्ब्रोज़ ने पूर्वी चर्च के उदाहरण का पालन करते हुए पश्चिमी चर्च में शुरू किया था, मिलान के चर्च में प्रचलन में आ गया। इस बीच, जस्टिना द्वारा भेजे गए सैनिकों ने लोगों को चर्च में आने देने शुरू कर दिया, लेकिन उन्हें बाहर निकलने की अनुमति नहीं दी। वे ऑर्थोडॉक्स श्रद्धालुओं के गायन से इतने प्रभावित हुए कि वे स्वयं बाहर से ही इसमें शामिल हो गए। उस समय, स्वयं एम्ब्रोज़ के दिव्य भजन भी परम पवित्र त्रिमूर्ति की स्तुति में गाए जा रहे थे। श्रद्धालुओं की प्रार्थनाएँ सुनी गईं, और संत को अपने झुंड के साथ रहने की अनुमति मिल गई।

उस समय[8683] ईश्वर ने अपने सेवक एम्ब्रोस को एक दर्शन में, पवित्र शहीदों प्रोटेशियस और जर्वेसियस के अवशेषों का खुलासा किया, जो जमीन में दबे हुए थे। जब इन पवित्र अवशेषों को खोदा गया, तो उनसे कई चमत्कार हुए। इस प्रकार, सेवर नामक एक अंधे व्यक्ति ने शहीदों के वस्त्रों को छूते ही तुरंत अपनी दृष्टि वापस पा ली; इसी तरह, उन लोगों से कई अशुद्ध आत्माएँ निकल गईं जो उन आत्माओं से ग्रस्त थे।

इस बीच, शाही महल में, कई एरियनों ने रानी जस्टिना के साथ मिलकर, हमारे प्रभु यीशु मसीह द्वारा अपने शहीदों के महिमामंडन में पवित्र चर्च पर प्रदान की गई ईश्वर की कृपा का उपहास उड़ाया और उसका मज़ाक उड़ाया । एरियनों ने दावा किया कि अम्ब्रोज़ लोगों को भूतग्रस्त होने का नाटक करने के लिए पैसे दे रहे थे, उन्हें शहीदों की कब्र पर ला रहे थे और ऐसा दिखावा कर रहे थे मानो ये कथित भूतग्रस्त लोग ठीक हो गए हों, और फिर ऐसे झूठे चमत्कारों की प्रसिद्धि लोगों में फैला रहे थे।

जब ये दरबारी आपस में ऐसी अधार्मिक बातें कर रहे थे, तभी अचानक, ईश्वर की अनुमति से, एक दानव उनमें से एक पर सवार हो गया और उसे सताना शुरू कर दिया। पीड़ित व्यक्ति भयानक चीखें मारने लगा और चिल्लाया:

'जो लोग पवित्र शहीदों का अपमान करते हैं, और जो त्रिमूर्तिवादी ईश्वर में विश्वास नहीं करते, उन सभी का यही हश्र हो, जिसमें एम्ब्रोज़ हमें विश्वास करना सिखाते हैं!'

उपस्थित सभी लोग भयभीत हो गए, लेकिन पश्चाताप करके विश्वास में आने के बजाय, उन्होंने उस पीड़ित व्यक्ति को पकड़ लिया और उसे झील में फेंककर डुबो दिया। एक अन्य अवसर पर, इन धर्मद्रोही एरियनों में से एक व्यक्ति चिर्च में प्रवेश कर गया, जब संत एम्ब्रोस बिशप वहाँ लोगों को उपदेश दे रहे थे। और इस एरियन ने देखा कि ईश्वर का एक देवदूत एम्ब्रोस के कान में कुछ फुसफुसा रहा था। इस दर्शन ने यह प्रकट किया कि पवित्र बिशप लोगों को स्वर्गदूत द्वारा प्रेरित शब्द सुना रहे थे। यह देखकर, वह एरियन तुरंत ही ऑर्थोडॉक्स धर्म में परिवर्तित हो गया और सर्वशक्तिमान ईश्वर की कृपा से, उसी धर्म का रक्षक बन गया जिसे वह पहले सताता था।

इस बीच, रानी जस्टिना संत के प्रति शत्रुता बनाए हुए थी और उन्हें नष्ट करने के अपने प्रयास में, उसे यूथिमियस नामक एक कुलीन व्यक्ति में एक सहयोगी मिल गया। उसने उपहार देकर उसे रिश्वत देकर मना लिया कि वह गुप्त रूप से एम्ब्रोज़ को पकड़ ले और उसे किसी दूर के देश में निर्वासित कर दे। रानी की इच्छा को पूरा करने के लिए, यूथिमियस ने चर्च के पास अपना एक घर बनवाया, ताकि उसके लिए एक उपयुक्त क्षण चुनकर ईश्वर के संत को पकड़ना आसान हो सके। उसने एक विशेष रथ तैयार किया जिसमें वह संत एम्ब्रोज़ को निर्वासन में ले जाने का इरादा रखता था; लेकिन, ईश्वर के न्याय से, *'उसकी दुष्टता उसी के सिर पर लौटेगी, और उसका अधर्म उसी के मुकुट पर गिरेगा'* (भजन संहिता 7:17)।

जिस दिन यूथिमियस संत एम्ब्रोज़ को पकड़ने का इरादा रखता था, उसी दिन एक अप्रत्याशित शाही फरमान मिला जिसमें आदेश दिया गया था कि यूथिमियस को तुरंत निर्वासन में भेजा जाए। और उसे उसी रथ में निर्वासन के लिए ले जाया गया जिसे उसने, उस दुष्ट व्यक्ति ने, संत एम्ब्रोज़ के निर्वासन के लिए तैयार किया था।

जब विद्रोही मैक्सिमिस ने इटली के खिलाफ अपना सैन्य अभियान फिर से शुरू किया, तो जस्टिना ने एम्ब्रोस के साथ शांति स्थापित करने में जल्दबाजी की और अपने बेटे के साथ मिलकर उनसे विद्रोही से फिर से विनती करने के लिए जाने का आग्रह करने लगी। अपने साथ हुए अन्याय को क्षमा करते हुए, संत अम्ब्रोज़ मैक्सिमिस के पास गए, लेकिन इस बार उन्हें इस निर्दयी और अहंकारी विद्रोही से अपनी विनतियों में कोई सफलता नहीं मिली। उसकी हठधर्मिता को देखकर, संत एम्ब्रोज ने इतनी हिम्मत दिखाई कि, सबके सामने, उन्होंने उसे एक हत्यारे के रूप में शाप दिया जिसने विश्वासघात से अपने निर्दोष शासक की हत्या की थी, और उसे पवित्र चर्च से बहिष्कृत कर दिया। मैक्सिमिस ने इटली पर आक्रमण किया और एक के बाद एक शहरों पर कब्जा कर लिया। युवा सम्राट उसका विरोध नहीं कर सके और अपनी माँ के साथ ग्रीस में थ्रेसैलॉनीकी[8684] भाग गए, पूर्वी सम्राट - थियोडोसियस महान[8685] - से मदद माँगने के लिए।

[8683] उसी वर्ष, 386 में।

[8684] थेस्लोनिका, या सोलुन, मैसेडोनिया में एक महत्वपूर्ण प्राचीन शहर है, जो थेस्लोनिका की खाड़ी या फर्मेआ की महान खाड़ी पर स्थित है। थेस्लोनिका संत पॉल द अपोस्टल द्वारा स्थापित ईसाई समुदाय का केंद्र था। आज, कॉन्स्टेंटिनोपल के बाद थेस्लोनिकी यूरोपीय तुर्की में सबसे प्रमुख वाणिज्यिक शहर है, जिसकी जनसंख्या बहुत बड़ी है।

[8685] थेओडोसियस महान – पूर्वी रोमन साम्राज्य का सम्राट, जिसने बाद में पश्चिमी साम्राज्य को भी अपने अधीन कर लिया; उसने 379 से 395 तक शासन किया।

थियोडोसियस ने एक सेना तैयार की, मैक्सिमस के खिलाफ चढ़ाई की और उसे हरा दिया। मैक्सिमस मारा गया[8686] ; उसकी मृत्यु सम्राट ग्रेटियन के निर्दोष रक्त का प्रतिशोध थी। हालाँकि, महारानी जस्टिना का भाग्य इस सुखद विजय को देखने का नहीं था, क्योंकि वह ग्रीस पहुँचने के कुछ ही समय बाद निधन हो गईं। उनके पुत्र, वैलेंटाइनियन ने सम्राट थियोडोसियस के आह्वान पर ध्यान दिया और ऑर्थोडॉक्स धर्म अपना लिया।

जस्टिना की मृत्यु के बाद, ऐसा हुआ कि एक जादूगर को मुकदमे में लाया गया और उसे यातना दी गई। अपनी यातना के दौरान, वह चिल्लाया कि संत एम्ब्रोज़ का रक्षक देवदूत उसे जल्लादों से भी अधिक पीड़ा दे रहा था। जब उससे पूछा गया कि वह देवदूत उसे किस अपराध के लिए दंडित कर रहा था, तो जादूगर ने निम्नलिखित बात कबूल की:

'जब सम्राज्ञी जस्टिना जीवित थीं, तब मेरा इरादा अपनी जादू-टोने के द्वारा मेडिओलानम के लोगों में शहर के बिशप, एम्ब्रोज़ के खिलाफ शत्रुता भड़काने का था। इस उद्देश्य के लिए, आधी रात को मैं गिरिजाघर की छत पर चढ़ा और वहाँ राक्षसों को बलिदान चढ़ाया; लेकिन जितना अधिक मैं दुष्ट साज़िशों के माध्यम से एम्ब्रोज़ को लोगों के लिए घृणित बनाने का प्रयास करता, उतना ही मेरे सामने इन लोगों का अपने चरवाहे के प्रति प्रेम और भक्ति बढ़ती गई, और यह झुंड ऑर्थोडॉक्स कैथोलिक धर्म में उतना ही अधिक फलता-फूलता गया। जब मैंने देखा कि मेरे प्रयास व्यर्थ हो रहे हैं, तो मैंने उन्हें मारने के लिए एम्ब्रोज़ के घर पर राक्षसों को भेजना शुरू कर दिया, लेकिन दुष्ट आत्माओं ने मुझे सूचित किया कि वे न तो स्वयं बिशप के पास जा सकते थे, और न ही उनके घर के दरवाजों के पास, क्योंकि दरवाजों से आग निकलती थी और उन्हें झुलसा देती थी।

यही बात जादूगर ने यातना के दौरान घोषित की, क्योंकि एम्ब्रोज़ वास्तव में दुष्टात्माओं के लिए एक भय थे। इस प्रकार, एक अवसर पर, कुछ लोगों ने एक अशुद्ध आत्मा से ग्रस्त युवक को संत एम्ब्रोज़ के पास ले गए; उनके उसे लेकर मेडिओलानम पहुँचने से पहले ही, दुष्ट आत्मा उस ग्रस्त युवक से निकल गई, और वह ईश्वर के बिशप के पास, चंगा होकर आ गया। यह युवक काफी समय तक संत एम्ब्रोज़ के साथ रहा। फिर वह मेडिओलानम से निकलकर अपने देश की ओर चला गया, और वहाँ, ठीक उसी जगह जहाँ राक्षस ने पहले उसे छोड़ा था, उस धूर्त दुश्मन ने उस लड़के पर एक बार फिर हमला किया और उसे सताना शुरू कर दिया। जब भूत-प्रेत भगाने वालों ने[8687] उस दुष्ट आत्मा से पूछा कि उसने मेडिओलानम में उस लड़के को क्यों नहीं सताया, तो राक्षस ने उत्तर दिया:

'मैं एम्ब्रोज़ से डरता था, और इसलिए, मेडियोलानम पहुँचने से पहले, मैं उस युवक से भाग गया और उसी जगह पर उसकी प्रतीक्षा करने लगा जहाँ मैंने उसे छोड़ा था; उसे लौटता हुआ देखकर, मैं फिर से उसमें प्रवेश कर गया।'

विद्रोही मैक्सिमस की मृत्यु के बाद, सम्राट थियोडोसियस मेडिओलानम पहुँचे; हालाँकि, उस समय संत एम्ब्रोज़ एक्विलिया में थे[8688] । और फिर निम्नलिखित घटना घटी। पूर्व के एक शहर में, ईसाइयों ने एक यहूदी सिनेगॉग में आग लगा दी क्योंकि यहूदियों ने कुछ भिक्षुओं का अपमान किया था। जब पूर्व के राज्यपाल ने इस बात की सूचना सम्राट को दी, तो सम्राट ने तुरंत उस शहर के बिशप को यहूदियों के लिए एक नया सिनेगॉग बनाने का आदेश दिया। यह आदेश जानकर, संत एम्ब्रोज़ ने सम्राट को एक पत्र भेजा (क्योंकि वह तुरंत व्यक्तिगत रूप से उनके पास नहीं जा सकते थे); इस पत्र में, उन्होंने सम्राट से तर्क दिया कि उनका फरमान अन्यायपूर्ण था और उनसे इसे रद्द करने तथा ईसाइयों को यहूदियों के उपहास का शिकार न बनाने का आग्रह किया। लेकिन थियोडोसियस ने अम्ब्रोज़ के पत्र पर कोई ध्यान नहीं दिया। इसके बाद, ईश्वर के बिशप, मेडिओलानम लौटकर, चर्च में उपदेश देते हुए सार्वजनिक रूप से सम्राट की निंदा करने लगे। उनसे संबोधित करते हुए, अम्ब्रोज़ ने ईश्वर की ओर से निम्नलिखित कहा:

'मैंने तुम्हें अज्ञात से उठाया और तुम्हें राजा बनाया। मैंने तुम्हारे शत्रु को तुम्हारे हाथों में सौंप दिया और उसकी सारी सेनाओं को तुम्हारे लिए वश में कर दिया। मैंने तुम्हारे वंशजों को राजसी सिंहासन प्रदान किया। मैंने यह सुनिश्चित

[8686] 388 में।

[8687] सबसे शुरुआती ईसाई चर्च में, एक विशेष, निम्न-श्रेणी का धार्मिक कार्यालय मौजूद था जिसे भूत-प्रेत भगाने वालों (एक्सॉर्सिस्ट) का कार्यालय कहा जाता था। उन लोगों से दुष्ट आत्माओं को भगाने का यह कर्तव्य, जो उन पर काबू पा चुकी थीं, निम्न-श्रेणी के पुरोहितों को यह दिखाने के उद्देश्य से सौंपा गया था कि मसीह का चर्च शैतान की व्यर्थ शक्ति से घृणा करता है। भूत-प्रेत भगाने वालों को कैटेकुमेन, यानी पवित्र बपतिस्मा संस्कार प्राप्त करने की तैयारी कर रहे लोगों पर निषेधात्मक या भूत-प्रेत भगाने वाली प्रार्थनाएँ भी पढ़नी होती थीं। आजकल, ये भूत-प्रेत भगाने वाली प्रार्थनाएँ, जो पवित्र बपतिस्मा संस्कार से पहले की जाती हैं, बपतिस्मा संस्कार करने वाला पुरोहित स्वयं पढ़ता है। पीटर मोहलि की सेवा पुस्तक में उन लोगों से अशुद्ध आत्माओं को निकालने के लिए एक विशेष अनुष्ठान शामिल है, जिन पर वे काबिज होती हैं।

[8688] अक्विलिया – नाटिसोन नदी पर स्थित एक प्रमुख व्यापारिक शहर, जो एड्रियाटिक तट से बहुत दूर नहीं है।

कयिा कि तुम बनिा कसिी कठनिाई के वजिय प्राप्त करो, फरि भी तुम मेरे शत्रुओं को मुझ पर वजिय प्राप्त करने का कारण दे रहे हो।'

सम्राट थयिोडोसयिस, इन शब्दों से प्रभावति होकर, अपने मन पर काबू पा लयिा और ईसाइयों को यहूदी सनिेगॉग बहाल करने का आदेश रद्द कर दयिा।

उसी समय, एक और घटना घटी: थ्रेसलॉनकिा के लोगों ने अपने राज्यपाल, बोटेरसिुस[8689] के खलिाफ वद्रिोह कर दयिा और उसे मार डाला। सम्राट, अत्यधकि क्रोधति होकर, उस शहर में एक सेना भेज दी, और उसके सात हजार तक नविासी मारे गए; इस प्रक्रयिा में, कई नरि्दोष लोग तलवार से मारे गए, क्योंकि शहर पर हमले के दौरान सैनकिों ने गवर्नर की हत्या के दोषयिों को बलि्कुल भी नहीं खोजा, बल्कि सड़कों पर हर कसिी को—बुजुर्गों, जवानों और यहां तक कि शशिुओं को भी—मार डाला।

जब एम्ब्रोज़ को इसकी खबर मलिी, तो वह गहराई से दुखी हुआ और इस लापरवाह रक्तपात के लिए राजा के प्रति धार्मकि आक्रोश से भर उठा। और इसलिए, एक दनि एक पर्व के दनि, जब सम्राट गंभीरतापूर्वक चर्च की ओर जा रहा था, ईश्वर-भयभीत बशिप नडिर होकर उससे मलिने के लिए आगे बढ़ा, उसने चर्च में प्रवेश रोक दयिा, और उसके अन्यायपूर्ण हत्या के लिए नम्निलखिति शब्दों में उसे फटकारने लगा:

'हे राजा, जब तुम ऐसे हत्याओं के प्रेरक बन चुके हो और उनके लिए कोई पश्चाताप नहीं दखिाया है, तो वशि्वासयोग्य ईसाइयों के साथ पवत्रि संचार में भाग लेना तुम्हारे लिए उचति नहीं है।' तो फरि आप मसीह के शरीर को कैसे ग्रहण कर सकते हैं, जबकि आपके हाथ[8690] नरि्दोषों के खून से रंगे हुए हैं, या आप उस मुख से प्रभु का रक्त कैसे पी सकते हैं, जसिसे आपने लोगों को क्रूरतापूर्वक पीटने का आदेश दयिा था?

'लेकनि दाऊद ने भी पाप कयिा था,' सम्राट ने आपत्ति जताई, 'उसने हत्या और व्यभचिार कयिा, फरि भी उसे ईश्वर की दया से वंचति नहीं कयिा गया।'

लेकनि संत ने थयिोडोसयिस से उत्तर दयिा:

'यदि तुमने दाऊद के पापों का अनुकरण कयिा है, तो उसके पश्चाताप का भी अनुकरण करो।'

[8691]सम्राट अपने महल लौट आए, अपने पाप के शोक में व्यथति। और जल्द ही उन्होंने वह प्रायश्चति कयिा जो संत एम्ब्रोज़ ने उन पर थोपा था: उन्होंने एक आम आदमी की तरह खुलेआम पश्चाताप कयिा, चर्च के सामने साष्टांग प्रणाम कयिा और अन्य पश्चातापी लोगों के साथ खड़े होकर भरपूर आँसू बहाए। इस बीच, मसीह के जन्म का पर्व आ गया, और थयिोडोसयिस अपने महल में आँसुओं में डूबा बैठा था, यह सोचते हुए कि परमेश्वर का घर दासों और गरीबों के लिए खुला था, फरि भी ऐसे समय में भी वह उसके लिए अप्राप्य था: रूफ़नि नामक एक मंत्री, जो राजा का वशिेष कृपापात्र था, जब उसकी आँखों में आँसुओं का कारण जान गया, तो वह राजा पर लगाई गई तपस्या को हटाने के लिए संत एम्ब्रोज़ को मनाने हेतु दौड़ा। थयिोडोसयिस स्वयं भी उसके पीछे चर्च में आ गया। ईश्वर के उस पवत्रि पुरुष ने शुरू में उन्हें सख्त लहजे में कहा और, उनके चड़िचड़ि स्वभाव को जानते हुए, यह मांग की कि वे एक ऐसा कानून जारी करें जसिके तहत जान या संपत्ति से वंचति करने वाले दरबारी फ़ैसलों की पुष्टि केवल 30 दनिों के बाद ही की जाएगी। राजा मान गए, और उन्हें चर्च में प्रवेश दयिा गया। वहाँ उन्होंने गहरे पश्चाताप के लक्षण दखिाए: उन्होंने अपने हाथों से अपने बाल नोचे, अपना माथा जमीन पर टकिाया, और आँसुओं की धाराओं से फर्श को भीग दयिा। इसके बाद, एम्ब्रोज़ ने अंततः सम्राट को पवत्रि Communion में स्वीकार कर लयिा। वास्तव में, सम्राट पवत्रि स्थल में प्रवेश कर चुके थे, क्योंकि उनका इरादा पुरोहतिों के साथ मलिकर Communion ग्रहण करने का था; लेकनि संत एम्ब्रोज़ ने उनके पास एक आर्चडीकन को यह नरि्देश लेकर भेजा कि वे अन्य सामान्य लोगों के साथ वेदी के सामने कम्युनयिन का इंतजार करें। संत ने कहा, 'क्योंकि बैंगनी चोगा केवल शाही, न कि पुरोहतिीय, गरमिा का प्रतीक है।' सम्राट ने वनिम्रतापूर्वक बशिप के आदेश का पालन कयिा और पवत्रि स्थल से बाहर चले गए। उन्होंने टप्पिणी की, 'कॉन्स्टेंटनिोपल में, राजाओं के लिए पवत्रि स्थल में पुरोहतिों के साथ मलिकर पवत्रि भोज ग्रहण करना प्रथा है।' लेकनि उसके बाद, थयिोडोसयिस ने चर्च में बाकी सभा के साथ पवत्रि भोज के समय का इंतजार कयिा। बाद में, जब सम्राट थयिोडोसयिस पहले से ही कॉन्स्टेंटनिोपल में थे, तो वे कम्युनयिन ग्रहण

[8689] बोटेरचि थेस्सालोनकिा का गवर्नर और सम्राट थयिोडोसयिस महान का मत्रि था।

[8690] उस समय, सामान्य लोगों को, जब वे मसीह के पवत्रि रहस्यों को ग्रहण करते थे, मसीह का शरीर उनके हाथों में दयिा जाता था। 9 नवंबर के अंतर्गत लेसबोस की संत थयिोक्टस्टिा का जीवन देखें।

[8691] संत नेक्टारयिस ने 381 से 397 तक कॉन्स्टेंटनिोपल के पैट्रआर्क के रूप में कार्य कयिा।

करने के लिए पवित्र स्थल में नहीं गए; और जब पैट्रआर्क नेक्टारियस ने उनसे पूछा कि वे शाही रीति-रिवाज का पालन करने के बजाय, आम लोगों के साथ पवित्र स्थल के बाहर कम्युनियन ग्रहण करने के लिए क्यों इंतजार कर रहे थे, तो उन्होंने एक आह भरते हुए जवाब दिया:

'मुझे पहले राजा और बिशप में अंतर नहीं पता था, लेकिन अब मैं जानता हूँ, सत्य के शिक्षक - एम्ब्रोज़ से सीखकर, जो अकेले ही बिशप कहलाने के योग्य हैं।'

बिशप एम्ब्रोस की ख्याति दूर-दूर तक फैल गई। इस प्रकार, फारस से दो अत्यधिक विद्वान संत मेडिओलन पहुँचे। संत एम्ब्रोस की बुद्धिमत्ता के बारे में बहुत कुछ सुनने के बाद, वे स्वयं इसकी पुष्टि करना चाहते थे और इसलिए उन्होंने कई प्रश्न तैयार किए, जिन्हें उन्होंने समाधान के लिए उनसे पूछा। उन्होंने उनसे लंबी बातचीत की और उनकी धर्मशास्त्रीय अंतर्दृष्टि की गहराई तथा उनकी बुद्धि की विशालता को देखकर चकित रह गए। उन्होंने सम्राट के समक्ष गवाही दी कि उन्होंने पूर्व से पश्चिम तक इतना लंबा सफर केवल एम्ब्रोज़ के लिए ही तय किया था, क्योंकि वे उन्हें देखना चाहते थे और उनकी बुद्धिमत्ता से आनंदित होना चाहते थे।

सम्राट थियोडोसियस के इटली से कॉन्स्टेंटिनोपल लौटने के बाद, और वैलेंटाइनियन द यंगर अचानक, अपने अंगरक्षकों के कमांडर के उकसावे पर – अर्बोगास्ट – को वियेन शहर में मार दिया गया[8692] , यूजिनियस[8693] को शाही सिंहासन पर बिठाया गया; वह नाम मात्र का ईसाई था, जबकि अपने दिल में वह मूर्तिपूजक और पगन अंधविश्वासों तथा जादू-टोने का प्रेमी था। रोमन अधिकारियों की कृपा प्राप्त करने की इच्छा से (और रोम में अभी भी कई मूर्तिपूजक और राक्षसों के सेवक थे), उसने मूर्तिपूजक मंदिरों को फिर से खोलने और राक्षसी बलिदानों के आयोजन का आदेश दिया। जैसे ही वह मेडिओलानम के पास पहुँचा, संत एम्ब्रोज़, ऐसे सम्राट को देखने की इच्छा न रखते हुए—जो पाखंडपूर्वक एक ईसाई होने का दिखावा कर रहा था जबकि वास्तव में एक अनैतिक और अधर्मी व्यक्ति था—मेडिओलानम के सिंहासन बोनोनिया[8694] चले गए, और फिर टस्कनी[8695] में स्थित फ्लोरेंस चले गए; वे अन्यायपूर्ण शासक के क्रोध से नहीं डरते थे, बल्कि उससे मिलने का विचार ही उन्हें घृणास्पद लगता था। उन्होंने निडर होकर उसे पत्र लिखा, उसे समझाया और ईश्वर के न्याय की धमकी दी; फिर भी वे कठोर-हृदय युजिनियस को होश में लाने में सफल नहीं हुए। ईश्वर के सेवक कुछ समय के लिए फ्लोरेंस में रहे, वे डेसेन्टा नामक एक धार्मिक और रूढ़िवादी व्यक्ति के घर में रहते थे, जिनके बेटे पैनसोफियोस नामक एक छोटे लड़के को एक अशुद्ध आत्मा द्वारा पीड़ा दी जा रही थी। संत एम्ब्रोज़ ने प्रार्थना और हाथ रखने से उस लड़के को ठीक कर दिया। कुछ दिनों बाद, लड़का अचानक बीमार पड़ गया और उसकी मृत्यु हो गई; उसकी माँ, जो एक धर्मनिष्ठ महिला, आस्था और ईश्वर के भय से परिपूर्ण थी, अपने बेटे को लेकर एम्ब्रोज़ के कमरे में गई और चूँकि संत वहाँ नहीं थे, उसने अपने बच्चे को उनके बिस्तर पर लिटा दिया और चली गई। जब संत एम्ब्रोज़ उस कमरे में लौटे जहाँ वे ठहरे हुए थे, तो उन्होंने देखा कि मृत लड़का उनके बिस्तर पर पड़ा हुआ था। तब उन्होंने अपने पीछे दरवाज़े बंद कर दिए और प्रार्थना करने लगे; बाद में, भविष्यवक्ता एलिशा (2 राजा 4:32-35) की तरह, वे बिस्तर के पास गए, लड़के पर झुके और उस पर फूँक मारी। लड़का जीवित हो उठा, और एम्ब्रोज़ ने उसे जीवित उसकी माँ के पास लौटा दिया।

इस बीच, यूजिनियस सम्राट थियोडोसियस के खिलाफ एक अभियान पर मेडिओलानम से रवाना हुआ। जब वह शहर से निकला, तो अधर्मी यूजिनियस ने घमंड किया कि अपनी विजय के बाद वह मेडिओलानम चर्च को एक अस्तबल में बदल देगा और पुरोहितों को तलवारें कमर में देगा। हालाँकि, जिस असाधारण द्वेष के साथ ये धमकियाँ दी गई थीं, वह

[8692] वियना – जिसे अब विएन के नाम से जाना जाता है – एक प्राचीन रोमन कॉलोनी थी और बाद में जर्मनिक जनजातियों द्वारा स्थापित विभिन्न राज्यों की राजधानी थी; यह रोन नदी के बाएं किनारे पर स्थित है। आज, यह शहर रोमन प्राचीन अवशेषों से समृद्ध है।

[8693] यूजिनियस – जो एक साधारण परिवार से थे – सम्राट वैलेंटाइनियन द्वितीय के सचिव थे; उनकी मृत्यु के बाद, उन्हें आर्बोगैस्ट ने सिंहासन पर बिठाया। हालाँकि, थियोडोसियस महान अपनी सेना के साथ आर्बोगैस्ट के खिलाफ मार्च किया, उसे हरा दिया, और यूजिनियस को मृत्युदंड देने का आदेश दिया।

[8694] बोनोनिया – उत्तरी इटली में, सिसिलपाइन गॉल में, तथाकथित वाया एमिलिया पर स्थित एक बहुत प्रसिद्ध शहर; अब बोल्लोना के नाम से जाना जाता है, जो इसी नाम के इतालवी प्रांत की राजधानी है, और अपनी शिक्षा तथा व्यापक व्यापार के लिए प्रसिद्ध है, जिसकी जनसंख्या बहुत बड़ी थी।

[8695] टस्कनी – जिसे इट्रूरिया के नाम से भी जाना जाता है – मध्य इटली का एक प्राचीन क्षेत्र था, जो रोम के उत्तर में टिर्रेनीयन सागर और एपेनाइन पहाड़ों से घिरा हुआ था। – आर्नो नदी पर स्थित फ्लोरेंस, इटली का एक घनी आबादी वाला शहर है, जो विज्ञान और कला के विकास के लिए प्रसिद्ध है।

शक्तिहीन रहने के लिए नियत थी: यूजनियिस सम्राट थियोडोसियिस द्वारा पराजित होकर युद्ध में अपमानजनक रूप से मारा गया। परमधर्मपिता ने धर्मपरायण सम्राट थियोडोसियिस का विजेता के रूप में भव्य स्वागत किया, लेकिन थियोडोसियिस, संत एम्ब्रोज़ के चरणों में गिरकर, अपनी जीत का श्रेय संत की प्रार्थनाओं को देते थे।

कुछ ही समय बाद, सम्राट थियोडोसियिस का शांतिपूर्वक निधन हो गया[8696] ; उन्होंने ईश्वर को प्रसन्न करने वाले तरीके से शासन किया और मसीह के शाश्वत राज्य में प्रवेश कर गए, जबकि उनके बेटों ने सांसारिक राज्य में उनका स्थान लिया: पूर्व में आर्कैडियिस[8697] और पश्चिम में होनोरियिस[8698] । होनोरियिस के शासनकाल में, संत एम्ब्रोज़ ने शहीदों नज़ारियिस और सेल्सस की अवशेषों की खोज की, जैसा कि पुरोहित पावलिन निम्नलिखित प्रकार से बताते हैं।

उस समय, अम्ब्रोज़ ने पवित्र शहीद नज़ारियिस के अवशेष—जो शहर के बाहर एक बगीचे में लिटे थे—को पवित्र प्रेरितों के चर्च में स्थानांतरित कर दिया। हमने उस ताबूत में, जहाँ शहीद के अवशेष रखे थे, खून देखा मानो वह अभी-अभी बहकर निकला हो; सिर, अपने बालों और दाढ़ी के साथ, इतनी अक्षुण्ण अवस्था में संरक्षित था जैसे कि उसे अभी-अभी ताबूत में रखा गया हो, और शहीद का चेहरा इतना दमक रहा था, जैसे कि उसे अभी-अभी धोया गया हो। और इसमें क्या आश्चर्य की बात है, जब प्रभु स्वयं ने अपनी सुसमाचार में यह वादा किया है: *'तुम्हारे सिर के सारे बाल भी गिने हुए हैं'* (लूका 12:7)। हमने एक ऐसी सुगंध भी महसूस की जो सभी अन्य सुगंधों से बढ़कर थी। पवित्र शहीद नज़ारियिस की अवशेषों को रथ में स्थानांतरित करने के बाद, हम तुरंत संत एम्ब्रोस के साथ पवित्र शहीद सेलसस की अवशेषों की ओर बढ़े, जो उसी क्षेत्र में पड़े थे। इस बगीचे के मालिकों से हमें पता चला कि उनके पूर्वजों ने उन्हें इस स्थान को न छोड़ने, बल्कि इसे पीढ़ी-दर-पीढ़ी संरक्षित रखने का आदेश दिया था, क्योंकि यहाँ महान खजाने रखे गए हैं। और सचमुच महान हैं ये खजाने, जिन्हें न तिलचट्टा न ही जंग नष्ट कर सकता है, और जिन्हें चोर न तो तोड़कर चुरा सकते हैं (मत्ती 6:20)। उनके रक्षक प्रभु हैं, और जिनके लिए 'जीना मसीह है और मरना लाभ है' (फिलि. 1:21), उनके लिए निवास स्थान स्वर्ग में है। जब पवित्र शहीदों के अवशेष प्रेरितों के गिरिजाघर में लाए गए, तो संत एम्ब्रोज़ ने लोगों को उपदेश दिया। उसी क्षण, भीड़ में किसी व्यक्ति ने, जो एक अशुद्ध आत्मा से ग्रस्त था, ज़ोर से चिल्लाकर कहा:

'अम्ब्रोज़ मुझे पीड़ा पहुँचा रहा है!'

लेकिन संत ने उसकी ओर मुड़कर कहा:

'चुप हो जा, शैतान! तुझे सता रहा है, अंब्रोज़ नहीं, बल्कि शहीदों का विश्वास और तेरी ईर्ष्या, क्योंकि तू देखता है कि लोग उस स्थान पर चढ़ रहे हैं जहाँ से तुझे फेंक दिया गया है। अंब्रोज़ को, हालाँकि, घमंड करना नहीं आता।'

संत एम्ब्रोस के इन शब्दों के बाद, दानव चुप हो गया, और उसने उस व्यक्ति को, जिस पर उसका अधिकार था, ज़मीन पर मुँह के बल गिरा दिया।

संत एम्ब्रोज़ की ख़बर मार्कोमनी के रानी[8699] – फ्रथिगिलिड – तक पहुँची और उसने संत को एक अनुरोध भेजा, जिसमें उसने एम्ब्रोज़ से ईसा मसीह के धर्म में उसे शिक्षित करने का आग्रह किया। एम्ब्रोज़ ने उसे ईसाई धर्म पर एक विस्तृत निर्देश लिखा और उसे ईसाई धर्म की सच्चाई से आश्वस्त किया। फ्रथिगिलिड ने अपने पति को भी ईसाई धर्म में परिवर्तित किया और उन्हें रोमन साम्राज्य के साथ एक शांति संधि करने के लिए मना लिया। फ्रटिगिलिडा अपने आध्यात्मिक गुरु, संत अम्ब्रोज़, से मिलने के लिए बहुत उत्सुक थीं, और इसी उद्देश्य से वे बाद में मेडिओलानम के लिए रवाना हुईं, लेकिन उन्हें संत अब जीवित नहीं मिले, क्योंकि वे कुछ ही समय पहले प्रभु के पास चले गए थे।

संत अम्ब्रोज़ महान संयम और परिश्रम के पुरुष थे, जो आध्यात्मिक ऊर्जा से भरपूर थे; वे शनिवार, रविवार, पर्व के दिनों और शहीदों की स्मृति के दिनों को छोड़कर लगातार उपवास करते थे। वे दिन-रात निरंतर प्रार्थना में लगे रहते थे; वे अपने कर्तव्यों का पालन लगन से करते थे और अपनी पुस्तकें स्वयं अपने हाथ से लिखते थे, जब तक कि शारीरिक बीमारी उन्हें ऐसा करने से न रोकती। वे अपने धर्मप्रांत के सभी चर्चों के प्रति परिवाह भरी चिंता से भरे थे और ईश्वर द्वारा उन पर सौंपे गए कर्तव्यों को पूरा करने के लिए उन्होंने इतनी कड़ी मेहनत की कि, उनकी मृत्यु के बाद, पाँच बिशप भी उस कार्यभार को मुश्किल से संभाल सके। गरीबों, बेसहारों और बंदियों के प्रति उनकी देखभाल का भी

[8696] वर्ष 395 में, संत एम्ब्रोज़ ने एक उपदेश के साथ थियोडोसियिस महान की स्मृति को सम्मानित किया।

[8697] आर्काडियिस – पूर्वी रोमन साम्राज्य के सम्राट, जिन्होंने 390 से 408 तक शासन किया।

[8698] होनोरियिस – पश्चिमी रोमन साम्राज्य का सम्राट, जिसने 390 से 423 तक शासन किया।

[8699] मार्कोमैननी एक जर्मनिक जनजाति थी जो बोहेमिया में रहती थी और अक्सर रोमन साम्राज्य के सीमावर्ती प्रांतों पर विनाशकारी छापेमारी करती थी।

पर्याप्त रूप से वर्णन नहीं कयिा जा सकता: उन्होंने अपनी अंतमि संसाधन भी उन पर खर्च कर दएि। बशिप के रूप में अपने अभषिेक के तुरंत बाद, एम्ब्रोज़ ने अपना सारा सोना, चाँदी और अन्य संपत्तिईश्वर के चर्चों की शोभा के लिए, गरीबों और अनाथों के भरण-पोषण के लिए, और बंदयिों की रहिाई के लिए बाँट दयिा; उन्होंने अपनी बहन के भरण-पोषण के लिए अपनी संपत्तिका केवल एक छोटा सा हस्सिा अलग रखा, जबकिअपने लिए कुछ भी नहीं रखा, ताकिसभी सांसारकि संपत्तिसे खुद को मुक्त करके, वे अपने प्रभु मसीह का और अधकि सहजता से अनुसरण कर सकें, जो हमारे लिए गरीब हो गए, ताकिहम उनकी गरीबी से धनी हो सकें (2 कुरन्थियिों 8:9)। आदरणीय एम्ब्रोस *'सभी के लिए सब कुछ बन गए'* (1 कुरन्थियिों 9:22); वे जो आनंदति होते थे उनके साथ आनंदति होते थे और जो वलिाप करते थे उनके साथ वलिाप करते थे। यदिकोई अपने पापों का प्रायश्चति करने के लिए उनके पास आता, तो अम्ब्रोज़ स्वयं उनके लिए इतनी गहराई से रोते कि पत्थर का दलि रखने वाला पापी भी पश्चाताप और करुणा से भरकर आँसू बहाने लगता।

जब संत एम्ब्रोज़ वृद्धावस्था में पहुँचे, तो उन्होंने ईश्वर के पास अपने प्रस्थान की पूर्वसूचना पायी और अपने पुरोहतिों से कहा:

– मैं ईस्टर तक ही आपके साथ रहूँगा।

उपरोक्त प्रेस्बटिर पावलनि, जन्हिोंने संत अम्ब्रोज़ का जीवन लखिा था, नम्निलखिति घटना का भी वर्णन करते हैं, जसिे उन्होंने स्वयं देखा था। 'बीमार पड़ने से ठीक पहले, संत एम्ब्रोज़ भजन संहति 43 की व्याख्या कर रहे थे, जबकि मैं,' पावलनि कहते हैं, 'उनकी बातों को लखि रहा था, क्योंकिएम्ब्रोज़ स्वयं वृद्धावस्था और कमज़ोरी के कारण अब ज़्यादा लखि नहीं सकते थे। अचानक, जब मैंने उनकी ओर देखा, तो मैंने उनके सरि के चारों ओर ढाल के आकार की एक आग देखी; यह आग धीरे-धीरे अंदर की ओर मुड़ते हुए उनके मुँह में प्रवेश कर गई; फरि संत अम्ब्रोज़ का चेहरा बर्फ की तरह सफेद हो गया। इस दृश्य से मैं इतना भयभीत हो गया कि डर के मारे लखि नहीं सका, लेकनि फरि अम्ब्रोज़ का चेहरा अपने सामान्य स्वरूप में लौट आया। मैंने यह बात आदरणीय डीकन कास्टुलस को बताई, और वे स्वयं ईश्वर की कृपा से परपिूर्ण होकर मुझे समझाने लगे कि मैंने जो देखा था वह पवत्रि आत्मा था, जो हमारे बशिप पर आग के रूप में अवतरति हुआ था, ठीक वैसे ही जैसे वह एक बार पवत्रि प्रेरतिों पर अवतरति हुआ था।"

जब जनरल स्टलिचिो[8700] ने सुना कि अम्ब्रोज़ घातक रूप से बीमार हैं, तो उन्होंने कहा:

'यदियिह पवत्रि व्यक्तिमर गया तो इटली नष्ट हो जाएगी!'

और उसने मलिान के कुछ सम्मानति नागरकिों को उस बीमार संत के पास भेजा—जनिसे वह जानता था कि संत एम्ब्रोज़ प्रेम करते थे—ताकिवे संत से वनिती करें कि वे प्रभु से उनके सांसारकि जीवन को दूसरों के भले के लिए बढ़ाने का अनुरोध करें। एम्ब्रोज़ ने उत्तर दयिा:

'मैंने आपके बीच ऐसा जीवन नहीं जयिा है कि मुझे आगे जीने में शर्म आए; फरि भी मैं मृत्यु से नहीं डरता, क्योंकि हमारे पास सर्व-सत्कार्य प्रभु हैं।'

जब अम्ब्रोज़ बस्तिर पर बीमार पड़े थे, उनके बस्तिर से कुछ दूरी पर, कमरे के दरवाज़े के पास, डकिन कास्टुलस, पोलमियिस, वेनेरयिस और फेलक्सि बैठे थे। वे आपस में बात कर रहे थे, लेकनि इतनी फुसफुसाहट में और इतनी धीरे से बात कर रहे थे कि उनकी बातचीत केवल वे ही सुन सकते थे। वे इस बात पर चर्चा कर रहे थे कि एम्ब्रोस के उत्तराधकिारी बशिप के रूप में कौन होगा; ऐसा करते हुए, उन्होंने पादरी सम्प्लिसियिानुस का उल्लेख कयिा। अचानक, संत एम्ब्रोस, जो उनसे कुछ दूरी पर लेटे थे, ने अपनी आवाज़ उठाई और जैसे उनसे बात कर रहे हों, तीन बार दोहराया: 'वह बूढ़ा है, लेकनि चौकस है'; इन शब्दों के साथ, उन्होंने अपने नधिन के बाद एपस्कोपेट (बशिप का पद) संभालने के लिए प्रेस्बटिर सम्प्लिसियिन को नयिुक्त कयिा।

अपनी बीमारी के दौरान, संत एम्ब्रोज़ ने प्रार्थना करते समय हमारे प्रभु यीशु मसीह को देखा, जो उनकी ओर एक प्रेमपूर्ण मुस्कान के साथ आ रहे थे – और उन्हें अपना दव्यि मुखमंडल दखिा रहे थे; एम्ब्रोज़ ने यह बात उस समय अपने बगल में बैठे लावडयिम के बशिप वासयिन[8701] को बताई। जब संत एम्ब्रोज़ की आत्मा के शरीर से प्रस्थान का समय

[8700] स्टलिचिॉन – होनोरयिस के दरबार में पश्चमिी रोमन साम्राज्य का एक प्रसद्धि सेनापति, जसिने कई मौकों पर इसे पतन से बचाया; वैंडल मूल का था, लेकनि बाद में, राज्य के प्रतिअपनी सेवाओं के बावजूद, दरबारी षड्यंत्रों के परणिामस्वरूप कथति राजद्रोह के लिए होनोरयिस के आदेश पर मार दयिा गया।

[8701] लाउदी – उत्तरी इटली में, मेडओलानम और क्रेयोन के बीच के लोग। अब लोदी वेचयिो के नाम से जाना जाता है।

नकिट आया, तो वेर्सेली के चर्च के बशिप ऑनोराटस[8702] , जो घर की ऊपरी मंजलि पर वशि्राम कर रहे थे, ने ऊपर से तीन बार एक आवाज सुनी, जो उनसे कह रही थी:

'शीघ्र उठो और एम्ब्रोज़ के पास जल्दी करो; वह प्राण त्यागने ही वाले हैं।'

तब पुरोहति उठे, अपने साथ परम पवत्रि रहस्य (संत Communion) ले गए, और सीढ़ियाँ उतरकर उस बीमार व्यक्ति के पास गए। संत अम्ब्रोज़ ने प्रार्थना की, दैवीय उपहार ग्रहण कए, और पवत्रि ईस्टर के दनि भोर में अपने पवत्रि आत्मा को अपने प्रभु के हाथों में सौंप दयि[8703] । उनके पवत्रि शरीर को मलिान के महान गरिजाघर में दफनाया गया, जबकि उनकी आत्मा स्वर्गदूतों के साथ पवत्रि त्रमिूर्ति के सहिासन के सामने प्रकट हुई—पति, पुत्र और पवत्रि आत्मा, एक ईश्वर, जन्हिें युगों-युगों तक महमिा हो, आमीन।

कॉन्टाकयिन, स्वर 3:

हे एम्ब्रोस, पुरोहति और चरवाहे, आपने दैवीय सद्धिांतों को बनाए रखकर एरयिस के भ्रम को दूर कयि; और पवत्रि आत्मा की शक्ति से चमत्कार करके, आपने हर प्रकार की व्याधयिों को दूर कयि। हे पूजनीय पति, हमारे ईश्वर मसीह से प्रार्थना करें कि हमारी आत्माओं का उद्धार हो।

नोवगोरोड के चमत्कार करने वाले, सम्मानति नीलस ऑफ स्टोलोबेन्स्क का जीवन

7 दसिंबर को स्मरणोत्सव

[8702] वेर्सेली – मेडओिलानम के पश्चमि में बहुत दूर नहीं एक शहर।

[8703] यह 4 अप्रैल 397 का दनि था। सेंट एम्ब्रोज़ का 67 वर्ष की आयु में नधिन हो गया। उनके जीवनीकार, पादरी पॉलनिस, आगे कहते हैं कि उस समय (ईस्टर की रात) बपतस्मिा लेने वाले कई बच्चों ने पानी से बाहर नकिलने के बाद एम्ब्रोज़ को देखा – कुछ ने उन्हें कैथेड्रा पर बैठे देखा, और कुछ ने उसे अपने माता-पति के सामने इशारा कयि जैसे कि वह चल रहे हों, लेकनि माता-पति, भले ही उन्होंने देखा, उन्हें देख नहीं सके, क्योंकि उनकी आँखें शुद्ध नहीं हुई थीं; कई लोगों ने कहा कि उन्होंने उनके शरीर के ऊपर एक तारा देखा। चर्च 7 दसिंबर को उनकी स्मृति मनाती है, जो बशिप के रूप में उनके अभषिेक का दनि है, शायद इसलिए क्योंकि उनके नधिन का दनि लेंट या ईस्टर के दनिों के साथ मेल खाता है। – मलिान के संत एम्ब्रोज़ ने लेखन की एक वशिाल संपदा पीछे छोड़ी; इनमें से कुछ पवत्रि धर्मग्रंथों की व्याख्या से संबंधति हैं, अन्य पवत्रि वशि्वास के सद्धिांतों की व्याख्या करते हैं, जबकि कुछ उच्च नैतकि शकि्षाएँ प्रदान करते हैं, और इसी तरह। इनमें लूका के सुसमाचार पर उनकी व्याख्या, सृष्टि के छह दनिों पर छह पुस्तकें, वशि्वास पर पाँच पुस्तकें, धर्मवशि्वास की व्याख्या, अवतार पर एक पुस्तक, पवत्रि आत्मा पर तीन पुस्तकें, संस्कारों पर एक पुस्तक, पश्चाताप पर दो पुस्तकें, पुनरुत्थान पर एक ग्रंथ जो दो पुस्तकों में प्रस्तुत कयि गया है, अपने भाई की मृत्यु पर और सम्राट वैलेंटाइनयिन और थयिोडोसयिस महान की मृत्यु पर दो प्रवचनों में, संसार से वमिुख होने पर, कुँवारीपन पर, वधिुरों पर, पुरोहति जेम्स पर और धन्य जीवन पर, एलयि्याह और उपवास पर, संयम की प्रशंसा के साथ; पतिृऋषि जोसेफ को पवत्रिता और अन्य सद्गुणों के आदर्श के रूप में; और इसी तरह। एम्ब्रोस की सभी रचनाओं में, उनकी तीन पुस्तकें 'कार्यों पर' (चर्च के पुरोहतिों के बारे में) प्रथम स्थान पर हैं। ईश्वरीय उपासना के संगठन पर संत अम्ब्रोज़ की रचनाएँ भी बहुत महत्व की हैं; उन्होंने अपनी कलीसयि के लिए लटिर्जी और अन्य सेवाओं दोनों का क्रम स्थापति कयि, जो पूरे उत्तरी इटली में फैल गया। यह क्रम आज भी मलिान में पालन कयि जाता है, और मलिान की संस्कार-वधि कई मामलों में रोमन संस्कार-वधि से भन्नि है, जो एम्ब्रोज़ में पूर्वी चर्च की रीतयिों के अनुरूप होने की स्पष्ट इच्छा को दर्शाती है। सेवा के क्रम में, संत एम्ब्रोज़ ने नम्निलखिति का परचिय दयि: 1) एक पठन-सूची, जसिमें उन्होंने सुसमाचार, पत्रों और भवष्यि्यद्वक्ताओं से होने वाले पठन की शुरुआत और अंत को नर्धिारति कयि; 2) प्रार्थनाओं और प्रस्तावनाओं के साथ यूखरस्ति का अनुष्ठान करने का क्रम; 3) एक प्रतगिान-सूची, जो पूर्व से अपनाई गई एक पूरी तरह से नई नवप्रवर्तन थी। संत अम्ब्रोज़ ने प्रतगिान-सूची के लिए संगीत संकेतन और भजनों दोनों की रचना की। संत एम्ब्रोज़ के प्रामाणकि भजनों में, *'हे ईश्वर, हम तुम्हारी स्तुति करते हैं'* भजन का वशिेष उल्लेख कयि जाना चाहए। यह भक्तपिूर्ण धन्यवाद गीत, जो आज भी प्रभु को हर भक्तपिूर्ण धन्यवाद में गाया जाता है, संत एम्ब्रोज़ ने एरयिनों पर अपनी पूर्ण वजिय के बाद रचा था।

आदरणीय नील का जन्म नोवगोरोड क्षेत्र के एक गाँव में, डेरेवस्काया प्ययातनि[8704] , के झाबेन्स्की पैरशि[8705] में हुआ था। उनके माता-पिता कौन थे, यह अज्ञात है; केवल यह ज्ञात है कि उनका स्नातक संस्कार प्सकोव क्षेत्र के 'क्रपिट्स' नामक एक मठ में हुआ था[8706] । इस मठ से वह रज़ेव जलि के नरि्जन क्षेत्र में चला गया और वहाँ चेरेम्खा नदी के पास बस गया[8707] । वहाँ वह जड़ी-बूटियों और ओक के पेड़ के अखरोट पर जीवति रहा, अपना समय उपवास और प्रार्थना में बिताता था। शैतान यह सहन नहीं कर सका, और इसलिए वह बड़े द्वेष के साथ संत पर टूट पड़ा, उसे उस स्थान से भगाने की कोशशि कर रहा था। शैतान ने नीलस को वभिन्नि भूत-प्रेतों से डराया, वह उसके सामने जानवरों और सभी प्रकार के रेंगने वाले जीवों के रूप में प्रकट हुआ, जो उस पूजनीय संत पर जंगली फुफकार और चीख-पुकार के साथ झपट पड़े। लेकनि संत ने, अपनी प्रार्थनाओं को तलवार की तरह इस्तेमाल करते हुए, इन सभी प्रलोभनों और दुश्मन की बुरी साज़शिों को भगा दयिा, अपने शरीर को क्रॉस के चहि्न से ढकते हुए और ईश्वर से अखंड रूप से प्रार्थना करते हुए। नीलस तेरह वर्षों तक इसी तरह रहे, उन्होंने अपना समय रेगस्तिान में कई तपस्यापूर्ण करतबों और परश्रिमों को समर्पति कयिा।

एक दनि, प्रार्थना के एक लंबे समय के बाद, नीलस की नींद लग गई और उन्होंने एक आवाज़ सुनी जो उन्हें आज्ञा दे रही थी:

'नीलस! इस जगह को छोड़ दो और स्टोलोबेन्स्की द्वीप जाओ; वहाँ तुम बच सकते हो।'

यह आज्ञा पाकर, रेवरेंड फादर बहुत प्रसन्न हुए, क्योंकि उन्होंने देखा कि प्रभु ने उनकी प्रार्थनाओं को अनसुना नहीं कयिा था। नील ने उनके पास आने वाले ईश्वर-प्रेमी लोगों से द्वीप के बारे में पूछना शुरू कर दयिा। उन्होंने उन्हें बताया कि यह द्वीप टवर गवर्नोरेट में, ओस्ताश्कोव शहर से सात वर्स्ट दूर, सेलीगर झील पर स्थति था। रेवरेंड उस द्वीप के लिए रवाना हुए, वहाँ पहुँचे और उसकी सुंदरता से अत्यंत मोहति हो गए। द्वीप की लंबाई-चौड़ाई में घूमने के बाद, नील ने देखा कि यह एकांतवास के लिए बहुत उपयुक्त था, और इसलिए उनकी आत्मा आनंदति हो उठी और वे प्रसन्नता से भर गए। उस द्वीप पर एक पहाड़ और एक बड़ा जंगल था। पहाड़ पर चढ़कर, नील ने एक प्रार्थना की और कहा:

'यहाँ मेरा वश्राम है; मैं यहाँ सदा-सदा के लिए नविास करूँगा।'

और उसने इस स्थान को दखिाने के लिए ईश्वर का धन्यवाद कयिा। वहाँ, पहाड़ में, उसने अपने लिए एक गुफा खोदी, जसिमें उसने अपनी पहली सर्दी बतिाई; बाद में, उसने वहाँ एक कोठरी और एक चैपल का नरि्माण कयिा। नीलस ने द्वीप पर अपना जीवन महान तपस्या और प्रार्थना, उपवास और परश्रिम में बिताया; उसका भोजन द्वीप पर उगने वाले अनाज और जामुनों के साथ-साथ उस जमीन से मलिने वाली सब्जयिों और फलों से होता था जसिे वह अपनी ही हाथों से उगाता था। लेकनि यहाँ भी शैतान ने संत पर हमला करना बंद नहीं कयिा, और उसे तरह-तरह के भूत-प्रेत दखिाकर डराया। इस प्रकार, एक अवसर पर, शैतान राक्षसों की एक पूरी सेना के साथ प्रकट हुआ और जब वह वहाँ प्रार्थना कर रहे थे तो उसने पूजनीय की कोठरी को घेर लयिा; कोठरी को रस्सयिों से घेरने के बाद, शैतान ने एक उन्मत्त चीख के साथ उसे झील में खींच लेने की धमकी दी, लेकनि संत ने अपनी प्रार्थना से राक्षसों की सेना को भगा दयिा।

संत नीलस के प्रति लोगों की नफ़रत भी व्यर्थ साबति हुई, जसिसे केवल उन्हें और अधकि महमिा मलिी। एक अवसर पर, स्टोलोबनी द्वीप के पास रहने वाले अधर्मी नविासयिों ने संत को द्वीप से भगाने का नश्चिय कयिा; इस उद्देश्य के लिए, उन्होंने लकड़ी काटी और जंगल में आग लगा दी, यह सोचकर कि आग उनकी कुटयिा तक पहुँचकर उसे जला देगी। यह देखकर, संत प्रार्थना में खड़े हो गए और, बहुत आँसुओं के साथ, इस वपित्ति से मुक्ति के लिए प्रार्थना की। दयालु प्रभु ने अपने उस सेवक की वनिती को, जसिने उन पर भरोसा कयिा था, अनसुना नहीं कयिा, और अपनी कृपा

[8704] नॉवगोरोड क्षेत्र को जनि पाँच जलिों में वभिाजति कयिा गया था, उन्हें '*प्याटनी* का नाम दयिा गया था। वे थे: वोत्स्काया, शेल्ओन्स्काया, ओबोनेज्स्काया, देरेव्स्काया और बेज्हेत्स्काया।

[8705] यह अब नोवगोरोड गवर्नरेट के वाल्डाई जलि में है। यह गाँव अभी भी नोवगोरोड जलि के भीतर स्थति है; और इस तथ्य की स्मृति में कि आदरणीय नील इस गाँव के मूल नविासी थे, वहाँ अभी भी एक पार्श्व चैपल है जो आदरणीय नील को समर्पति है।

[8706] इस मठ को भंग कर दयिा गया है; इसकी जगह अब 'रोज़हेक' नामक एक पैरशि है।

[8707] चेरेम्खा या सेरेम्खा नदी वाल्डाई जलि में स्थति है और यह नीलोव हर्मटिेज का हसि्सा है। आज भी, प्राचीन पेड़ों के झुरमुट से घरिी उनकी चैपल और कोठरी, चेरेम्खा नदी पर आदरणीय नील के प्रवास की एक स्मृति के रूप में बनी हुई हैं, और स्थानीय नविासयिों के लिए श्रद्धा का वषिय हैं।

से उसकी रक्षा की: जैसे ही ज्वाला पहाड़ तक पहुँची, वह अचानक बुझ गई। रेवरेंड फादर ने ईश्वर की त्वरित दया को देखकर आत्मा में आनंदित हुए, जबकि उनके शत्रु लज्जित होकर घर लौट गए।

एक अवसर पर, जब आदरणीय फादर अपनी कोठरी के बाहर काम कर रहे थे, तो चोरों ने उन पर हमला किया और धमकी देकर उनसे उनका खजाना सौंपने की मांग की; लेकिन संत ने उनसे कहा:

'मेरा सारा खजाना मेरी कोठरी के उस कोने में है; वहाँ जाओ और उसे ले लो।'

उस कोने में परमेश्वर की माता का एक चित्र था, जिसमें वे परम-शाश्वत शिशु के साथ थीं। लुटेरे सेल में घुसे और अचानक अंधे हो गए; फिर, आँसुओं के साथ, उन्होंने संत से क्षमा याचना करनी शुरू कर दी; पूजनीय संत ने ईश्वर से प्रार्थना की, और लुटेरों की दृष्टि वापस आ गई। इसके बाद, संत ने उन्हें आत्मा के उद्धार पर एक उपदेश दिया और उन्हें जो कुछ हुआ था, वह किसी को न बताने की मनाही की; वे उस समय चुप रहे, लेकिन संत नीलस की मृत्यु के बाद उन्होंने सब कुछ बता दिया।

अपने कर्मों और परीक्षाओं को सहने के लिए, पूजनीय नीलस को लोगों के गुप्त कर्मों को जानने और पापियों को सत्य के मार्ग पर मार्गदर्शन करने का वरदान मिला।

एक व्यक्ति संतों के पास कामुक अशुद्धि की अवस्था में आया। संतों ने उस पाप के लिए उसे फटकारा और उसे फिर से ऐसा न करने की चेतावनी देकर शांतिपूर्वक विदा कर दिया। उस समय से वह व्यक्ति ईश्वर से डरने लगा और एक ईश्वर-भक्त जीवन जीते हुए परलोक सिधार गया।

द्वीप के पास मछली पकड़ने वाले ईश्वर-भयभीत स्थानीय लोग, संत का बहुत सम्मान करते थे और उनका भरण-पोषण करने के लिए अपनी पकड़ी हुई मछली में से उन्हें मछली भेजते थे। एक अवसर पर, उन्होंने अपनी मछलियों के साथ अपने एक साथी को उनके पास भेजा। संत ने अपने अंतर्मन में यह भांप लिया कि मछुआरे ने व्यभिचार करके स्वयं को अशुद्ध कर लिया था, इसलिए उन्होंने उसके सामने अपनी कोठरी की खिड़की बंद कर दी और उससे मछली स्वीकार नहीं की। मछली पकड़ने वाले ने अपने साथियों के पास लौटकर उन्हें जो हुआ था, वह सब बताया। उन्होंने एक और आदमी को संत के पास मछलियाँ भेजने के लिए भेजा, और संत ने खुशी-खुशी उससे मछलियाँ स्वीकार कीं, उनका आशीर्वाद दिया और उसे विदा कर दिया।

एक अन्य अवसर पर, द्वीप पर एक आदमी घर बनाने के लिए कुछ पेड़ काटने ही वाला था, लेकिन अचानक गरज की एक भयंकर गड़गड़ाहट हुई और एक आवाज़ सुनाई दी जिसने उसे पेड़ काटने से मना किया। हालाँकि, वह इससे विचलित नहीं हुआ और उसने गाड़ी पर पेड़ लादना शुरू कर दिया, लेकिन घोड़ा उसे उस जगह से हिला भी नहीं सका। इस चमत्कार को देखकर वह आदमी डरकर भाग गया, और उसने कसम खाई कि वह ऐसा काम दोबारा कभी नहीं करेगा।

रेवरेंड स्टोल्बनोय द्वीप पर सत्ताइस साल तक रहे और अपनी मृत्यु से पहले, उन्होंने अपने हाथों से जमीन में (चैपल में) एक कब्र खोदी, और वहाँ एक ताबूत रख दिया। हर दिन वहाँ आकर, वह उस ताबूत पर रोते थे, और खुद से कहते थे:

'यह मेरा विश्राम है, यह मेरा निवास है!'

जब, अंततः संत ने महसूस किया कि उनका अंत निकट आ गया है, तो उन्होंने प्रभु से पवित्र सहभागिता प्रदान करने का अनुरोध किया। संत की प्रार्थना से, उनकी इच्छा पूरी हुई। निकोल्स्की मठ के मठाध्यक्ष सर्जियस, द्वीप पर आए और उन्होंने नील को पवित्र सहभागिता प्रदान की। इसके बाद, पूज्यनीय संत अपनी कोठरी में गए, अपनी नियमित प्रार्थनाएँ कीं और, धूपदान लेकर, पवित्र प्रतिमाओं और पूरी कोठरी में धूप दी; फिर, लकड़ी की बैसाखियों पर अपने हाथ टिकाकर, जिन पर वे आमतौर पर शारीरिक थकान से आराम करते थे[8708] , वे 1554 वर्ष के दिसंबर के सातवें दिन प्रभु के पास चले गए[8709] ।

[8708] ये 'हुक' या बैसाखी संत नीलस की कोठरी की दीवारों में ठोक दिए गए थे; वे उनकी कुर्सियों के रूप में काम करते थे; उन पर सहारा लेकर, वे थोड़ी देर आराम करते थे।

[8709] आदरणीय नीलस के तपस्या के कार्यों के स्थल पर, 1594 में हायरोमोंक जर्मन द्वारा नीलोव-स्टोलोबेन्स्की मठ की स्थापना की गई थी। – आदरणीय नीलस के अवशेषों की खोज 27 मई 1667 को हुई, यह एक ऐसा दिन है जिसे वार्षिक उत्सव के लिए निर्धारित किया गया है। आज, संत की पवित्र अवशेष एक चांदी के अवशेष-पात्र में विराजमान हैं। संत की अवशेषों के साथ उनकी निजी व्लादिमीर (सेलगिर कही जाने वाली) 'मां भगवती' की प्रतिमा, और साथ ही उनका संन्यासी चोगा भी रखा गया है, जो अपने चमत्कारों के लिए प्रसिद्ध है और 112 वर्षों तक जमीन में पड़ा

हमारे परमेश्वर की महमिा हो, अब और सदा और युगों-युगों तक।

ट्रोपारयिन, स्वर 4:

हे पूज्य पतिा नीलस, आप लेक सेलगिर के द्वीप पर एक दीप्तमिान दीपक के रूप में प्रकट हुए: क्योंकि अपनी युवावस्था से ही आपने मसीह का क्रूस अपने कंधों पर उठाया, उसे उत्साहपूर्वक अनुसरण कयिा, पवत्रिता के द्वारा ईश्वर के समीप आए, और इस प्रकार चमत्कारों के वरदान से संपन्न हुए। इसलिए, जब हम आपके पवत्रि अवशेषों के संदूक की ओर शीघ्रता से बढ़ते हैं, हम वनिम्रतापूर्वक प्रार्थना करते हैं: हे पूजनीय पतिा, हमारे ईश्वर मसीह से प्रार्थना करें कि हमारी आत्माओं का उद्धार हो।

कॉन्टाकयिन, स्वर 8:

हे आदरणीय, आपने अपना स्वदेश छोड़कर मरुस्थल में नविास कयिा; और सेलगिर झील के द्वीप पर चढ़कर, आपने एक कठोर जीवन जयिा, और अपने गुणों से कई लोगों को चकति कर, आपने मसीह से चमत्कारों का वरदान प्राप्त कयिा। हम जो आपकी स्मृति का सम्मान करते हैं, हमें याद कीजिए, ताकि हम आपको पुकार सकें: आनंदति हो, नील, हमारे पतिा।

शहीद संत एथेनोडोरस की स्मृति

7 दसिंबर को स्मरणोत्सव

पवत्रि शहीद एथेनोडोरस, जो सीरयिाई मेसोपोटामयिा के[8710] के थे, ने अपने युवा काल से ही एक संन्यासी जीवन व्यतीत कयिा। एक शकियत के बाद, उन्हें गरिफ्तार कर प्रांत के राज्यपाल, एलीसयिस के सामने लाया गया, जनिके सामने उन्होंने मसीह की गवाही दी; इसके लिए उन्हें तुरंत क्रूर यातनाओं की सज़ा दी गई: उन्हें दो स्तंभों के बीच खींचा गया और उनके शरीर के प्रत्येक अंग को जलती हुई मोमबत्तयिों से झुलसाया गया; उसकी बगल के नीचे लाल-गरम लोहा रखा गया, और उसकी नाक की नथनों में तेज सुइयाँ घुसा दी गईं; फरि उसे एक लाल-गरम तांबे की प्लेट पर फैला दयिा गया, जो चमत्कारकि रूप से ठंडी हो गई; फरि उसे एक तपे हुए तांबे के बैल में फेंक दयिा गया और कई अन्य यातनाएं दी गईं, लेकनि पवत्रि शहीद स्वर्गदूतों की मध्यस्थता से सुरक्षति रहे। ऐसे चमत्कारकि घटनाक्रमों ने अवशि्वासयिों को भी दव्यि धर्म की ओर मोड़ दयिा: संत एथेनोडोरस ने पहले पचास मूर्तपिूजकों को मसीह की ओर ले जाया, और फरि तीस और लोगों को। इसके लिए, उन्हें तलवार से सरि कलम करने की सज़ा दी गई; लेकनि जैसे ही जल्लाद ने अपना काम शुरू कयिा, वह ठोकर खाकर गरि पड़ा मानो मृत हो, और उसका हाथ, जो अभी भी तलवार को पकड़े हुए था, उसके कंधे से कट गया। इसके बाद, कोई भी संत के पास आने की हम्मित नहीं कर सका, और उन्होंने प्रार्थना करने के बाद, अपना प्राण प्रभु ईश्वर को सौंप दयिा[8711] ।

आदरणीय पॉल, पश्चातापी की स्मृति[8712]

7 दसिंबर को स्मरणोत्सव

रहा। 27 मई को, जसि दनि अवशेषों का अनावरण कयिा जाता है, ओस्ताश्कोव शहर से नीलोवा हर्मटिेज तक हर साल एक शोभायात्रा नकिाली जाती है, जसिमें बड़ी संख्या में लोग शामलि होते हैं।

[8710] सीरयिाई मेसोपोटामयिा – नदयिों के बीच की भूमि – टायग्रसि और यूफ्रेटसि नदयिों के बीच का एक वशिाल क्षेत्र है, जो आर्मेनयिा, फलिस्तीन और फनिसियिा से लेकर फारस की खाड़ी तक फैला हुआ है।

[8711] लगभग वर्ष 304।

[8712] 'पोवन्निकि' का अर्थ है 'आज्ञाकारी' – एक उपाधि जो परम पूज्य पॉल को उनकी गहरी वनिम्रता और अपनी इच्छा का पूर्ण त्याग करने के लिए दी गई थी।

पूज्य पॉल के माता-पिता संपन्न थे, और उन्होंने छोटी उम्र से ही अपने बेटे को पवित्र धर्मग्रंथों की सावधानीपूर्वक शिक्षा दी। जब संत वयस्क हुए, तो उन्होंने सांसारिक जीवन को त्यागने की इच्छा महसूस की। और इस प्रकार वह अपने शहर के एक मठवासी समुदाय में शामिल हो गया, जहाँ उसने दैवीय संस्कार ग्रहण किया और सभी सद्गुणों का अभ्यास करते हुए, ऐसी पूर्णता प्राप्त की कि वह अपने मठ के सभी भाइयों से आगे निकल गया और सद्गुणों का खजाना बन गया, इसलिए उसे महान और अद्भुत चमत्कार करने का वरदान मिला।

एक दिन, पूजनीय पॉल, अन्य भाइयों के साथ, लोहारखाने में पिच उबाल रहे थे। जब पिच पिघलकर उबलने लगी, तो उसमें बुलबुले उठने लगे और वह कड़ाही के किनारों से बाहर आने लगी। उस धन्य व्यक्ति के पास उबलती पिच को चलाने के लिए कुछ भी न होने पर, उन्होंने अपनी बाँह नंगी की, उसे कड़ाही में डाल दिया और पिच को चलाया, जिस पर बुलबुले उठना तुरंत ही बंद हो गया। संत का हाथ पूरी तरह से सुरक्षित और अछूता रहा, और उनके चेहरे पर कोई बदलाव नहीं आया और न ही उन्हें कोई नुकसान हुआ। यह देखकर, भाई-बंधु विस्मित हो गए; उनमें से कुछ ने उन्हें ईश्वर से प्रेरित व्यक्ति के रूप में पहचाना, जबकि अन्य ने इस मामले को लेकर बहुत संदेह व्यक्त किया। हालाँकि, पॉल खुद को मिट्टी और राख समझते थे और खुद को एक बदबूदार कुत्ता कहते थे। कुछ समय बाद, उन्हें एक अलग कार्य सौंपा गया। उस समय, मठ के प्रधान ने भाइयों को बुलाया और उनके साथ प्रार्थना और उपवास में कई दिन बिताए। बाद में, उन्होंने ईश्वर से पुकारा:

'हे प्रभु, यद्यपि हम इसके अयोग्य हैं, तथापि हमारे ज्ञान के लिए, जहाँ तक संभव हो, हमें यह प्रकट कर दें कि हमारा भाई पौलुस कैसा व्यक्ति है। उसने आध्यात्मिक पूर्णता का कौन सा स्तर प्राप्त किया है, और उसे किस बात के लिए योग्य समझा गया है?'

ईश्वर, जो अपने भक्तों की इच्छाओं को पूरा करते हैं, ने उनकी प्रार्थना स्वीकार कर ली। एक रात, जब भ्राता लोग सो रहे थे, तो ईश्वर की आज्ञा से उन्हें एक सौंदर्य से परिपूर्ण स्वर्ग में ले जाया गया। जब वे इस शानदार चमत्कार को देखकर विस्मित थे, तभी अचानक भिक्षु पॉल उनके सामने प्रकट हुए। भ्राताओं ने उनका अभिवादन किया और उनसे इस दर्शन का अर्थ समझाने का अनुरोध किया। पॉल ने अत्यंत विनम्रता से उत्तर दिया:

जो तुम देख रहे हो वह परमेश्वर का राज्य है, और यह सब तुम्हारे ही लिए हुआ है, हे भाइयों, क्योंकि अपनी प्रार्थनाओं में तुमने इस स्थान तक पहुँचने की इच्छा की थी, जहाँ मैं भी आया हूँ। यहाँ से जो कुछ भी तुम चाहो, जो कुछ भी तुम्हें भाता हो और वांछनीय हो, वह ले लो, और शांति से जाओ; और जहाँ तक मठ में मुझे सौंपी गई उस जिम्मेदारी का सवाल है, किसी और को नियुक्त करो, क्योंकि तुम मुझे फिर कभी नहीं देखोगे।

पौलुस को विदा कहने के बाद, भाई-बंधु चले गए, और वे पवित्र स्वर्ग से अपने-अपने साथ कुछ तो फूल, कुछ टहनी, कुछ सुंदर पत्तियाँ और कुछ घास ले गए।

जागने के बाद और एकत्रित होने पर, भाइयों ने एक-दूसरे को अपने-अपने दर्शन बताए और आनंदपूर्वक परमेश्वर की महिमा की; एक ने स्वर्ग से लाया हुआ एक फूल दिखाया, दूसरे ने कहा, 'और मैंने यहाँ एक खजूर की टहनी ली है', एक और ने स्वर्गीय सुगंध के बारे में बताया, और एक ने अपने हाथों में सुंदर पत्तियाँ पकड़ी हुई थीं: और सभी ने परमेश्वर की स्तुति की।

तब धन्य पौलुस यरूशलेम गए; वहाँ पवित्र स्थानों का दर्शन कर और प्रार्थना करने के बाद, वे साइप्रस द्वीप के लिए प्रस्थान कर गए। वहाँ उन्होंने एक ऊँचे पहाड़ पर चढ़कर कई वर्षों तक आध्यात्मिक तपस्या में स्वयं को समर्पित किया और एकांत जीवन जिया। हालाँकि, जैसे ही पूरे क्षेत्र में उनके पवित्र जीवन की खबर फैली और कई लोग उनके पास आने लगे, वे वहाँ से हटकर बाइज़ेंटाइन की सीमाओं के भीतर बस गए। ईश्वर को प्रसन्न करने वाला जीवन जीते हुए, उन्हें वही अनुग्रह प्राप्त हुआ जो प्राचीन काल में ईश्वर के दृष्टा मूसा को मिला था, अर्थात् ईश्वर की उस आवाज़ को सुनने का, जो उन्हें बुला रही थी: *'इस पहाड़ पर चढ़ जा ... और उस पहाड़ पर मर जा जिस पर तू चढ़ेगा'* (व्यवस्थाविवरण 32:48-50)।

और धन्य पौलुस, ईश्वर की आज्ञा से, पैरगिोरिया नामक एक पहाड़ पर चढ़े, और कुछ समय बाद प्रभु में निद्रित हो गए।

21 दसिंबर

8 दसिंबर (पुराना संस्करण)

हमारे पूजनीय पिता पाताफियोस का जीवन

8 दसिंबर को स्मरण किया जाता है

मिस्र में, नील नदी के किनारे, थेब्स नामक एक शहर था[8713] । इसी शहर में धन्य पाताफियोस का जन्म हुआ था। उनके माता-पिता ईसाई थे और उन्होंने अपने बेटे का पालन-पोषण धार्मिकता और ईश्वर के भय में किया। वयस्क होने पर, उन्होंने इस दुनिया की व्यर्थताओं को त्याग दिया और अपना घर, माता-पिता और दोस्त छोड़कर, मठवासी संन्यास की शपथ ली। मिस्र के रेगिस्तान में अलग-थलग रहने के बाद, वह ईश्वर के लिए जीया, और स्वयं को उपवास, प्रार्थना और विभिन्न प्रकार के तपस्या कार्यों में समर्पित कर दिया। जब उसकी ख्याति फैल गई और कई लोग उसके पास आने लगे और उसके सदाचारी जीवन की प्रशंसा करने लगे, तो उसे दुख हुआ कि उसकी मौनता भंग हो रही थी और उसकी प्रशंसा मानव होंठों द्वारा की जा रही थी। मिस्र छोड़कर, वह कॉन्स्टेंटिनोपल आया। यहाँ उसने खुद को एक कोठरी में बंद कर लिया, जिसे उसने ब्लाचर्ना[8714] के पास, शहर की दीवार के पास बनाया था, और वह मौन में रहा, जैसे कि रेगिस्तान में हो, एकमात्र ईश्वर के अलावा किसी को भी अज्ञात, निरंतर प्रार्थना में केवल ईश्वर से संवाद करते हुए। लेकिन जैसे पहाड़ पर बसा एक नगर[8715] छिप नहीं सकता, वैसे ही एक सदाचारी पुरुष जिसने पूर्ण पवित्रता प्राप्त कर ली है, वह अज्ञात नहीं रह सकता। ईश्वर स्वयं उन लोगों को महिमामय करते हैं जो उन्हें महिमामय करते हैं और उनके अनुग्रह से परिपूर्ण होते हैं, और उनके लाभ के लिए उन्हें दूसरों के सामने प्रकट करते हैं। इसी प्रकार यह व्यक्ति, जो पवित्रता में परिपूर्ण और चमत्कार करने के अनुग्रह से भरपूर था, जिसे ईश्वर ने प्रकट और महिमामय किया, उसे जल्द ही एक खेत में छिपे खजाने की तरह खोज लिया गया[8716] । एक जन्म से अंधा एक ईसाई युवक, जिसे स्वयं ईश्वर ने मार्गदर्शन किया था, पूजनीय पिता पाटाफियोस की कुटिया पर आया और उस धन्य व्यक्ति से प्रार्थना करने के लिए कहा कि वह ईश्वर से उसकी दृष्टि के लिए प्रार्थना करें, ताकि वह ईश्वर की सारी सृष्टि को देख सके और उसके माध्यम से स्वयं सृष्टिकर्ता के सबसे पूर्ण ज्ञान को प्राप्त कर सके और उनकी महिमा कर सके। सम्माननीय पिता ने, उसका विश्वास देखकर, उस पर दया की और कहा:

'यीशु मसीह के नाम पर, जो अंधों को दृष्टि और मृतकों को जीवन देते हैं, अपनी दृष्टि ग्रहण करो।'

और तुरंत जन्म से अंधे आदमी की आँखें खुल गईं, और वह देखने लगा; और उसने परमेश्वर की महिमा की और उसकी स्तुति की। वह युवक कई लोगों को अच्छी तरह से जानता था; इसलिए, यह देखकर कि उसने अपनी दृष्टि वापस पा ली है, हर कोई चकित हो गया और यह पूछने लगा कि यह कैसे हुआ; लेकिन उसने अपने चमत्कार करने वाले और कल्याणकर्ता का नाम नहीं छिपाया, जिसके द्वारा उसे परमेश्वर से चंगाई मिली थी . इस चमत्कार और उस पूजनीय व्यक्ति की खबर लोगों में फैल गई, और तब से कई लोग प्रार्थनाओं के लिए पाताफियोस के पास आने लगे।

बाइज़ेन्टियम का एक कुलीन व्यक्ति ड्रॉपसी (पानी की बीमारी) से पीड़ित था, और उसका पूरा शरीर सूज गया था। उसने डॉक्टरों पर बहुत सारा पैसा खर्च किया था, उनसे उपचार की उम्मीद की थी लेकिन उसे कोई फायदा नहीं मिला। संत पाताफियोस के बारे में सुनकर, उसने खुद को उनके पास ले जाने का आदेश दिया और आँसू भरी आँखों से संत से ईश्वर की उपचारकारी कृपा के माध्यम से अपनी शारीरिक दुर्बलता को ठीक करने का आग्रह किया। निस्वार्थ उपचारक ने पहले उसके लिए ईश्वर से भक्तिपूर्वक प्रार्थना की, फिर उस पर क्रॉस का चिह्न बनाया और उसे पवित्र तेल से अभिषेक किया; जिसके परिणामस्वरूप उसके शरीर पर बोझ बने हुए सभी तरल पदार्थ स्वाभाविक रूप से निकल गए, उसका पूरा शरीर शुद्ध हो गया, और वह पूरी तरह से ठीक हो गया।

[8713] थेब्स – ऊपरी (दक्षिणी) मिस्र की प्राचीन राजधानी।

[8714] ब्लाचेर्ना – कॉन्स्टेंटिनोपल का एक जिला जो शहर के पश्चिमी कोने में स्थित था; बीजान्टिन साम्राज्य के स्वर्ण युग के दौरान यह अपनी पवित्र स्थलों के लिए पूरे पूर्व में प्रसिद्ध था।

[8715] एक सुसमाचार अभिव्यक्ति। मत्ती 5:14.

[8716] एक सुसमाचार की दृष्टांत से एक अभिव्यक्ति। मत्ती 14:44.

एक और युवक एक दुष्ट दानव द्वारा पीड़ित था, जो उसे पहाड़ों और रेगिस्तानों में घुमाता था, कभी उसे नष्ट करने के लिए आग और पानी में फेंक देता था, और कभी उसके पूरे शरीर को चकनाचूर और कुचलने के लिए ऊँचे और खड़े पहाड़ों से नीचे फेंक देता था। ईश्वर की बलप्रद शक्ति के कारण ही वह युवक नष्ट नहीं हुआ, जिसने उसे शत्रु की निरंतर दुष्टता और पूर्ण विनाश से बचाया। एक अवसर पर, उस राक्षस ने उस युवक को डुबाने के उद्देश्य से भयानक गति से समुद्र तट की ओर धकेलते हुए, रास्ते में परम पूजनीय पाटापियोस से मुलाकात की, जो ईश्वर की आज्ञा से, ईश्वर के स्वरूप में बने एक प्राणी को शैतान के बंधन से मुक्त करने के इसी उद्देश्य से अपनी कुटिया से बाहर आए थे। दूर से उस धन्य व्यक्ति को देख कर, राक्षस उसकी ओर दौड़ा, अपनी आँखें घुमाते हुए, मुँह से झाग निकालते हुए, दाँत पीसते हुए और उसे पीटने की धमकी देते हुए। जैसे ही वह संत के पास पहुँचा, वह चिल्लाया:

'हाय! फिर पटापियोस! मैं क्या करूँ, कहाँ जाऊँ, इतनी मेहनत के बाद मैं कहाँ रहूँगा? मुझे बड़ी मुश्किल से एक रहने की जगह मिली थी, और अब मुझे जबरदस्ती वहाँ से भगाया जा रहा है। सचमुच, तुम भयानक हो, नासरी[8717] , और तुम्हारी शक्ति हर जगह और सर्वत्र है।' मैं कहाँ जाऊँ? चाहे मैं रेगिस्तान में जाऊँ, या शहर में, या कहीं और - आप मुझसे पहले वहाँ हैं और मुझे केवल क्रॉस के एक संकेत से और केवल अपने नाम से भगा देते हैं। मैं पराजित, कुचला और निकाल दिया गया हूँ!"

यह कहकर, अशुद्ध आत्मा ने उस युवक को हवा में उछाल दिया, जबकि चमत्कार-कर्ता पातापियोस ने अपनी उंगली से हवा में क्रॉस का चिह्न बनाते हुए आत्मा को फटकारते हुए कहा:

'दुष्ट आत्मा, निकल जा और निर्जन प्रदेश में भाग जा; मसीह ने मेरी माध्यम से तुझे आज्ञा दी है, जिसकी शक्ति की तूने अनजाने में ही स्वीकारोक्ति की है।'

संत के ये शब्द कहते ही, दैत्य ने उस युवक को ज़मीन पर फेंक दिया और धुएँ की तरह उसके मुँह से बाहर निकल गया। जब वह होश में आया, तो युवक खुशी से रो पड़ा और उसने अपनी अशुद्ध आत्मा से मुक्ति का श्रेय सर्वप्रथम ईश्वर को और साथ ही आदरणीय पातापियोस को भी दिया।

एक महिला स्तन की बीमारी से पीड़ित थी। डॉक्टरों द्वारा इसे لاعلاج घोषित किए जाने के बाद, जब उसकी बीमारी और बिगड़ गई और घाव में कीड़े भर गए, तो वह आदरणीय पिता के पास आई। उनके पैरों पर गिरकर, वह सिसकियों और भक्तिपूर्ण विनती के साथ उनसे ठीक होने की भीख माँगने लगी। संत ने घाव पर क्रॉस का चिह्न बनाकर उसी क्षण उसे ठीक कर दिया। कई अन्य चमत्कार करने के बाद, हमारे पूजनीय पिता पातापियोस अपने धन्य निधन के करीब आ गए और, अपनी वृद्धावस्था में, वे परमेश्वर के पास चले गए, जिन्हें उन्होंने अपने पूरे जीवन में प्रसन्न रखा था[8718] . उन्हें हमारे ईश्वर मसीह की महिमा के लिए, जो अपने संतों में महिमामय हैं, संत यूहन्ना बपतिस्मादाता के चर्च में सम्मान के साथ दफनाया गया; उन्हें, पिता और पवित्र आत्मा के साथ, युगानुयुग महिमा और आराधना हो। आमीन।

कॉन्टाकियन, स्वर 3:

हे आपके पवित्र मंदिर, जहाँ लोगों ने आध्यात्मिक उपचार पाया है, भक्तिपूर्वक आकर अपनी दुर्बलताओं के उपचार और अपने जीवन के पापों के समाधान की खोज की है: क्योंकि आप, हे पूजनीय पातापियोस, उन सभी के लिए एक मध्यस्थ के रूप में प्रकट हुए हैं जिन्हें आपकी आवश्यकता है।

पवित्र प्रेरित सोस्थेनेस, अपोलोस, केफास, तिकिकुस, एपफ्रोदितुस और सीज़र का स्मरणोत्सव

8 दिसंबर को स्मरणोत्सव

[8717] यह, बेशक, हमारे प्रभु यीशु मसीह को संदर्भित करता है, जिन्हें यहूदियों, और बाद में अन्यजातियों ने यह उपाधि दी थी।

[8718] संत पातापियोस की मृत्यु 7वीं शताब्दी की शुरुआत में हुई। क्रीट के संत एंड्रयू उनके चमत्कारों और उनके निधन के बारे में लिखते हैं। उनका जीवन संत एंड्रयू द्वारा तब लिखा गया था जब पातापियोस उन्हें सपने में प्रकट हुए थे, क्योंकि संत एंड्रयू ने, शुरू में पातापियोस के बारे में कई अद्भुत बातें सुनने के बाद, उन्हें तिरस्कार और संदेह की दृष्टि से देखा था।

पवत्रि प्रेरति सोस्थेनेस, अपोलोस, सेफास, टायकीकस, एपाफ्रोडटिस और सीज़र सत्तर प्रेरतिों की संख्या में से थे, जन्हिें प्रभु यीशु मसीह ने मसीह के सुसमाचार का प्रचार करने के लिए चुना था, बारह प्रेरतिों के प्रचार के लिए चयन और नयिुक्ति के कुछ समय बाद (लूका 10:1–24)।

कोरंथि में प्रेरति पौलुस के प्रवास के दौरान[8719] , प्रेरति सोसथेनेस यहूदी सनिागॉग के प्रमुख थे[8720] । प्रेरति के वरिुद्ध वहाँ मची अफरा-तफरी के दौरान, जब कुछ लोग उनकी नदिा की मांग कर रहे थे, तब प्रोकोन्सुल गालयिो[8721] , यह मामला अपने अधकिार क्षेत्र से बाहर पाकर, अभयिोग लगाने वालों को अदालत से नकिाल दयिा; जो उन्हें बाहर नकिाल रहे थे, वहाँ के सभी यूनानयिों के साथ मलिकर, सनिागॉग के शासक सोस्थेनेस को पकड़ लयिा और अदालत के सामने पीटा (प्रेरतिों के काम 18:12–17)। लेकनि बाद में वह प्रेरति द्वारा मसीह में वश्विास के लिए परविर्तति हो गया और सुसमाचार की सेवकाई में उसका सहकर्मी बन गया। इसके बाद, सोसथेनेस कोलोफ़ोन का बशिप बना[8722] ।

प्रेरति अपोलोस अलेक्जेंड्रयिा का रहने वाला था और वह एक वाक्पटु, वद्विान और धर्मग्रंथों में पारंगत व्यक्ति था। प्रारंभ में केवल मसीह की शक्षिाओं के मूल सद्धिांतों में ही प्रशक्षिति होने के कारण, वह उत्साह से भरकर प्रभु के वषिय में सही ढंग से बोलता और सखिाता था, लेकनि वह केवल यूहन्ना के बपतस्मिा को जानता था और उसे मसीही बपतस्मिा की पुनर्जन्म देने वाली शक्ति का कोई ज्ञान नहीं था। कुछ ही समय बाद, जब अपोलोस मसीह के वषिय में अपना प्रचार करता हुआ एफ़सिुस पहुँचा, तो अक्वलिा और प्रस्किल्लिा[8723] ने उसके वषिय में सुनकर उसे प्रेम से स्वागत कयिा और प्रभु की शक्षिा में उसे अच्छी तरह से समझाया। बाद में, जब उसने अक्वाइया जाने का नश्चिय कयिा, तो भाइयों ने वहाँ के शष्यिों को उसके बारे में खबर भेजकर उसे स्वागत करने के लिए कहा; और जब वह वहाँ पहुँचा, तो उसने उन लोगों की बहुत मदद की जो अनुग्रह से वश्विास में आए थे; क्योंकि उसने यहूदयिों का जोरदार खंडन कयिा, और धर्मग्रंथों से सार्वजनकि रूप से यह प्रमाणति कयिा कि यीशु ही मसीहा हैं (प्रेरतिों के काम 18:24–28)। इसके बाद, अपollos ने अवश्विासयिों को वश्विास में लाने के लिए कोरन्थि में कड़ी मेहनत की (प्रेरतिों के काम 19:1; 1 कुरन्थियिों 3:6)। कोरन्थि में, शष्यिों का उसके प्रति प्रेम चर्च के भीतर कुछ वभिाजन का कारण भी बन गया, जसिकी बाद में प्रेरति पौलुस ने फटकार लगाई: *'क्योंकि जब एक कहता है, "मैं पौलुस का हूँ", और दूसरा, "मैं अपोलोस का हूँ", तो क्या तुम मांसकि रीति से नहीं बरतते? पौलुस कौन है? अपोलस कौन है? वे तो केवल सेवक हैं जनिके द्वारा तुम वश्विास करने को पहुँचे, और वह भी केवल जतिना प्रभु ने प्रत्येक को बाँटा है। मैंने बोया, अपोलस ने सचिाई की, परन्तु परमेश्वर ने वृद्धि दी; इसलयि न तो बोनेवाला कुछ है, न सचिनेवाला, परन्तु केवल परमेश्वर, जो वृद्धि देता है'* (1 कुरन्थियिों 3:4–7)।

जब प्रेरति पौलुस ने प्रथम पत्र कुरन्थियिों को लखिा, उस समय अपोलोस एफ़सिुस में उनके साथ थे और जब समय उचति होगा तो उन्हें मलिने की इच्छा रखते थे (1 कुरन्थियिों 16:14)।

बाद में, अपोलुस क्रीट में थे[8724] और, उससे भी बाद में, उन्होंने केसरयिा के बशिप के रूप में सेवा की[8725] ।

[8719] कोरथि – प्राचीन ग्रीस का सबसे पुराना, सबसे प्रसद्धि और सबसे धनी शहर – अकेया में, कोरथि के इश्टमस पर स्थति है, जो पेलोपोनेस को जोड़ता है (दक्षणिी ग्रीस) को मध्य ग्रीस के साथ जोड़ता है, जो आयोनयिन और एजयिन सागरों के बीच, कोरथि की खाड़ी के दक्षणि-पूर्वी कोने में एक सुंदर और उपजाऊ मैदान पर स्थति है। ईसाई धर्म की स्थापना सबसे पहले प्रेरति पौलुस द्वारा वर्तमान कोरथि के पास हुई थी, जसिे उस समय कौरोंतो कहा जाता था और जसिकी आबादी केवल लगभग 5,000 थी।

[8720] सनिेगॉग (ग्रीक शब्द 'सभा' से) – यहूदयिों के लिए धार्मकि सभा के स्थान, जो सामूहकि पूजा और शक्षिण, ववािदास्पद धार्मकि मामलों को सुलझाने, और कानूनी कार्यवाही करने के लिए उपयोग कए जाने वाले खुले आसमान के नीचे बने ढांचे थे; ये इमारतें बहसों के लिए स्थल, बच्चों के लिए स्कूल और पुस्तकालय के रूप में भी काम करती थीं।

[8721] गैलयिो – सम्राट क्लॉडयिस के अधीन अकेया का रोमन प्रोकोन्सल (राज्यपाल), जो रोमन दार्शनकि सेनेका का भाई था।

[8722] कोलोफोन – एशयिा माइनर के उत्तर-पश्चमिी भाग में, लडियिा का एक प्राचीन शहर। इस शहर के खंडहर हाल ही में खोजे गए हैं।

[8723] अक्वलिा – एक यहूदी, मूल रूप से पोंटस का रहने वाला; प्रस्किल्लिा – उसकी पत्नी; वे तंबू बनाकर अपनी आजीवकिा चलाते थे; उन्हें प्रेरति पौलुस ने ईसाई धर्म में परविर्तति कयिा था और वे उसके वफादार शष्यि थे, जन्होंने सुसमाचार के प्रसार में बहुत बड़ा योगदान दयिा। बाद में वे कोरथि चले गए, और वहां से एफ़सिुस गए। अक्वलिा को सत्तर प्रेरतिों में गनिा जाता है।

[8724] क्रीट पूर्वी भूमध्यसागर में, एजयिन सागर के दक्षणि में एक बड़ा द्वीप है। अपनी वशिालता और उपजाऊपन के कारण, इसे पहले भूमध्यसागर के 'द्वीपों की रानी' के रूप में जाना जाता था। ईसाई धर्म की नींव प्रेरतिों पर पवत्रि आत्मा के अवतरण के प्रत्यक्षदर्शयिों द्वारा रखी गई थी, क्योंकि उस समय क्रीटवासी मौजूद थे (प्रेरतिों के काम 2:11); बाद में, ईसाई धर्म को यहाँ प्रेरति पौलुस द्वारा स्थापति और फैलाया गया। 15वीं शताब्दी में, क्रीट तुर्की के शासन में आ गया।

[8725] केसरयिा – फलिस्तीन में भूमध्य सागर के पूर्वी तट पर एक शहर। यहाँ ईसाई धर्म की नींव संत पतरस प्रेरति ने शतपति कोर्नेलयिुस और उसके पूरे घरवालों के साथ रखी (प्रेरतिों के काम 10:1–48)। यरूशलेम के वनिाश के बाद, केसरयिा फलिस्तीन का प्रमुख शहर और उस बशिप

प्रेरति केफास, जनि्होंने अन्य प्रेरतिों के साथ मलिकर मसीह के सुसमाचार का प्रचार करने के कार्य में बहुत परशि्रम कयिा, कोलोफोन में एक बशिप थे।

प्रेरति तकिकिुस एशयिा माइनर के मूल नविासी और पवत्रि प्रेरति पौलुस के एक शषि्य थे, जो अपनी पत्रीयों में उन्हें अपना प्रयि भाई और प्रभु में एक वशि्वासयोग्य सेवक और सहकर्मी कहते हैं (कुलु. 4:7, 6:21)। प्रेरति पौलुस की तीसरी धर्मप्रचार यात्रा के दौरान, जब वे मैसेडोनयिा और ग्रीस से यरूशलेम लौट रहे थे, तो तकिकिुस उनके साथ थे, और उन्होंने उनके कार्यों में भाग लयिा (प्रेरतिों के काम 20:1–5)। वह अपने पहले कारावास के दौरान रोम में प्रेरति पौलुस के साथ भी थे, जहाँ से पौलुस ने उन्हें एफसियिों (एफ. 6:21) और कुलुस्सयिों और अन्य कलीसयिाओं (कुलु. 4:7–9, 16) के लिए अपने पत्रों के साथ भेजा, ताकि उन्हें अपनी खबर दे सकें और उनके हृदयों को सांत्वना दे सकें; और उसने उसे अपनी आज्ञाओं को पूरा करने के लिए क्रीत भी भेजा (तीतुस 3:12)। टकिीकस रोम में प्रेरति की दूसरी कैद के दौरान उनके साथ थे, और एक अन्य अवसर पर प्रेरति ने उन्हें वहाँ से एफसिुस भेजा (2 तीमु. 4:12)। इसके बाद, पवत्रि प्रेरति टकिीकस ने प्रेरति सोस्थेनेस के बाद कोलोफोन में बशिप के रूप में सेवा की।

प्रेरति एपाफ्रोदतिुस पवत्रि प्रेरति पौलुस के सबसे करीबी सहयोगयिों और साथयिों में से एक थे। जब प्रेरति रोम में बेड़यिों में जकड़े हुए थे, तब फलिपि्पी की कलीसयिा ने संत एपाफ्रोदतिुस को संत पौलुस के लिए भोजन-सामग्री के साथ भेजा था। भक्ति का यह कार्य प्रेरति को अत्यंत प्रसन्न करने वाला था, मुख्यतःइसलिए कि फलिपि्पयिों के उनके प्रति प्रेम और उनकी पीड़ा में सच्ची सहानुभूति की गवाही देकर, इसने स्वयं वशि्वास के प्रति उनकी भक्ति की गवाही दी (फलि. 4:10-17)। प्रेरति के दुख के लिए, एपफ्रोदतिुस, उनके साथ रहते हुए, गंभीर रूप से बीमार पड़ गया; लेकनि प्रभु प्रेरति के दुख में और अधकि शोक नहीं जोड़ना चाहते थे: बीमार व्यक्ति ठीक हो गया और उसे प्रेरति का एक मार्मकि संदेश लेकर फलिपि्पयिों के पास वापस भेज दयिा गया। बाद में, संत एपाफ्रोडटिस Adria[8726] के बशिप बने।

प्रेरति सीज़र, जनि्होंने सुसमाचार प्रचार के कार्य में भी बहुत परशि्रम कयिा, डुर्रेचयिम के बशिप थे[8727] ।

मसीह के झुंड का वफादारी से चरवाहा करने के बाद, इन सभी पवत्रि प्रेरतिों ने शांतपिूर्वक अपनी आत्माएँ प्रभु को सौंप दीं और अब, परमात्मा के सहिासन के सामने अनंत आनंद में खड़े होकर, अपने अनगनित कार्यों और परशि्रमों के लिए परमेश्वर से अपना प्रतफिल प्राप्त करते हैं[8728] ।

अफ्रीका में एरयिनों के हाथों पीड़ति पवत्रि शहीदों की स्मृति।

8 दसिंबर को स्मरण कयिा जाता है

ये पवत्रि शहीद यूनानयिों के राजा ज़ेनो के समय में रहते थे[8729] , जब उनके पति गेन्सेरकि की मृत्यु के बाद, गुनेरचि[8730] —जो आर्य धर्म का अनुयायी था—अफ्रीका पर शासन करता था। एरयिन बशिप सलि्वेस्टर और वडिमिंडसि से परामर्श करने के बाद, जो उनके वचिारों से सहमत थे, उन्होंने ऑर्थोडॉक्स पर इतना भयंकर उत्पीड़न शुरू कयिा कि यह डायोक्लेटयिन और मैक्समियिन के उत्पीड़न से भी बढ़ गया। उसने अपने शासन के सभी शहरों और क्षेत्रों में पंद्रह हजार सैनकि भेजे, और उन्हें हर जगह से सभी ऑर्थोडॉक्स पुरोहतिों को भगा देने का आदेश दयिा। उस समय, ऑर्थोडॉक्स एक नशि्चति चर्च में इकट्ठा हुए थे और वहां गुप्त रूप से दैवीय पूजा (Divine Liturgy) मना रहे थे। यह

का आसन बन गया जसिके अधीन यरूशलेम था, जब तक कि अंतत; कालसीडोन के चौथे सार्वभौमकि परषिद (451) में, यरूशलेम एक स्वतंत्र पैट्रआर्कट नहीं बन गया। – आज, प्राचीन केसरयिा के खंडहर भी नहीं बचे हैं।

[8726] एड्रयिा या एड्रयिाका – थ्रेस में काले सागर पर एक शहर, जो फलिपि्पी से बहुत दूर नहीं है, यह फलिपि्पी थ्रेस की सीमा पर स्थति एक मैसडिोनयिाई शहर है।

[8727] डायराचयिम – मध्य ग्रीस के एक प्राचीन क्षेत्र, बोएशयिा का एक शहर।

[8728] इन पवत्रि प्रेरतिों के साथ, कलीसयिा इस दनि प्रेरति ओनेसफिोरस का भी स्मरण करती है, देखें 7 सतिंबर। अब इन सभी सात पवत्रि प्रेरतिों को दैवीय धर्मवधि में सम्मानति कयिा जाता है।

[8729] ज़ेनो – 474 से 491 तक का बीजान्टनि सम्राट।

[8730] जेन्सेरकि – उत्तरी अफ्रीका में वैंडल साम्राज्य का राजा और संस्थापक। उनके पुत्र गुन्नारचि ने 477 से 485 तक शासन कयिा। – वैंडल एक जर्मनकि जनजाति थी जो बाल्टकि सागर के तटों से आई थी, बाद में डेन्यूब नदी के दाहनि कनिारे पर पन्नोनयिा में चली गई, फरि इबेरयिन प्रायद्वीप पर कब्जा कर लयिा और अंत में उत्तरी अफ्रीका में बस गई।

जानने पर, बर्बरों ने चुपके से अपनी तलवारें खींच लीं और उन सभी वशि्वासयिों को मार डाला जो ईश्वर की स्तुतिऔर महमिा कर रहे थे। इस प्रकार उन्होंने गुनेरचि के उस आदेश का पालन कयिा, जसिमें उन सभी को अचानक मार डालने का कहा गया था, जन्हिोंने एरयिन संस्कार के अनुसार बपतस्मिा नहीं लयिा था। जो लोग यातनाओं को सहन नहीं कर सके, वे अपने घरों और गांवों को पीछे छोड़कर भागकर मोक्ष की तलाश में नकिल पड़े; जबकिजो ऑर्थोडॉक्स धर्म में दृढ़ रहे, उन्होंने स्वेच्छा से यातनाएं झेलीं। इस प्रकार, 300 लोगों को, जो सच्चे धर्म में दृढ़ रहे और एरयिन शकि्षाओं का पालन करने से इनकार कर दयिा, , तलवार से मार डाला गया। पुरोहतिों ने, अपनी ओर से, ऑर्थोडॉक्सी (सही आस्था) के लिए और भी अधकि उत्साह से आग पकड़ी और इसके लिए और भी अधकि पीड़ा सहन की: उनमें से दो को खंभे से बाँधकर जला दयिा गया; जबकिउनमें से साठ सबसे वाक्पटु लोगों की जीभ जड़ से ही काट दी गई। इसके बाद, वे ग्रीक भूमिमें चारों ओर फैल गए। और फरि ईश्वर की महान चमत्कारी शक्तिउनके सामने प्रकट हुई: अपनी जीभ से वंचति होने के बावजूद, उन्होंने नडिर होकर प्रचार कयिा, स्पष्ट रूप से बोले और एरयिन वधिर्मयिों का खंडन कयिा, जसिसे जो भी उन्हें देखता और सुनता था, वह आश्चर्य से भर जाता था। और उन्होंने वैंडल लोगों के सामने स्वीकार कयिा कईश्वर का पुत्र पति के समान ही तत्व का है।

उसी समय, रोम में, रोमन गवर्नर की पत्नी, सुनीला, जो एरयिन संप्रदाय से प्रभावति थी, एक रोमन कुलीन व्यक्तिअंफसिा की पत्नी पर एरयिन बपतस्मिा स्वीकार करने के लिए दबाव डाल रही थी, लेकनि वह उसे मना नहीं सकी और उसे केवल यह उत्तर मलिा कउिसे मलिान के बशिप एम्ब्रोस द्वारा 'जल और आत्मा से' बपतस्मिा दयिा गया था। तब, अपने क्रोध में, सुनील्डा ने संत अंफ़सिा को जला दयिा। पवत्रि शहीद के पतिभयभीत हो गया, और अपनी मर्जी से जाकर एरयिन संस्कार के अनुसार बपतस्मिा ले लयिा। कुछ ही समय बाद, सवारी पर जाने की इच्छा से, वह अपने घोड़े पर सवार हो गया; लेकनि सवारी करते समय, जब वह शहर के चर्च के सामने से गुज़रा, तो अचानक बजिली गरिने से वह आग की लपटों में घरि गया; वह अपने घोड़े से गरि गया और जलकर मर गया। इस प्रकार ईश्वर का न्याय उस पर हुआ, जो आने वाले गेहेना (नरक) की अनंत आग का एक पूर्वाभास था।

22 दसिंबर

9 दसिंबर (पुराना संस्करण)

संत एनी, ईश्वर की माता, की गर्भधारण की स्मृति, जब उन्होंने पवत्रि ईश्वर की माता को गर्भ में धारण कयिा

9 दसिंबर को स्मरण कयिा जाता है

हमारे प्रभु और परमेश्वर, अपने लिए एक जीवति चर्च और एक पवत्रि नविास स्थान बनाने की इच्छा से, अपने स्वर्गदूत को धर्मी योआक्वनि और अन्ना के पास भेजा। उनसे उन्होंने अपनी माता को देह में तैयार करने के लिए चुना, और बाँझ अन्ना के गर्भधारण तथा उससे कुँवारी के जन्म की भवष्यिवाणी की। इस प्रकार पवत्रि कन्या मरयिम, ईश्वर के वचन के अनुसार, संभोग से ही गर्भ में आईं और जन्म लयिा। क्योंकिकेवल एक ही प्रभु और ईश्वर, यीशु मसीह, परम पवत्रि कन्या मरयिम से बनिा पतिऔर बनिा ववािह के, शब्दों से परे और वर्णन से परे, पवत्रि आत्मा द्वारा, पूर्ण ईश्वर और पूर्ण मनुष्य के रूप में जन्म लिए। उनके अवतार के लिए, प्रभु ने मानव स्वभाव के लिए आवश्यक सभी चीज़ों को पूरी तरह से ग्रहण कयिा, ठीक वैसे ही जैसे उन्होंने शुरुआत में मानव स्वभाव की ही रचना और नरि्माण कयिा था। कुछ लोगों ने दावा कयिा है कपिरम पवत्रि कुँवारी ने सात महीने बाद जन्म दयिा - और उन्होंने बनिा पतिके जन्म दयिा - लेकनि यह अनुचति है। उन्होंने वास्तव में नौ महीने बाद और मानवीय मलिन के माध्यम से जन्म दयिा। गर्भाधान के सम्मान में उत्सव

हमारी परम पवत्रि माता, परमेश्वर की माता के सबसे सम्मानति चर्च में मनाया जाता है, जो *इवोरानयिा* में, पवत्रि और महान चर्च के पास स्थति है[8731] ।

ट्रोपारयिन, स्वर 4:

आज बाँझपन के बंधन टूट गए हैं, क्योंकि ईश्वर ने योआकमि और अन्ना की प्रार्थना सुनकर, उनसे—सारी आशा से परे—ईश्वर की माता को जन्म देने का वादा कयिा, जनिसे स्वयं उन्होंने, यद्यपि वे अवर्णनीय थे, मानव बनकर जन्म लयिा; और एक स्वर्गदूत को आज्ञा दी कि वह उन पर पुकार कर कहे: 'हे अनुग्रह से परपिूर्ण, आनन्दति हो, प्रभु तेरे संग हैं।'

कॉन्टाकयिन, स्वर 4:

आज संपूर्ण वशि्व ईश्वर द्वारा आना के गर्भधारण का उत्सव मनाता है: क्योंकि उन्होंने उस वचन को जन्म दयिा, जो वचन से ही उत्पन्न हुआ।

भवषि्यवक्ता सेंट ऐना, भवषि्यवक्ता सैमुअल की माता की स्मृति

9 दसिंबर को स्मरण कयिा जाता है

[8732]पवत्रि और धन्य भवषि्यवक्ता अन्ना एफ्राइम के वंशजों के प्रदेश के पहाड़ी देश में स्थति आर्माफेमा नगर की नविासी थीं[8733] , और उनका ववािह लेवी कुल के एक व्यक्ति एल्कना से हुआ था[8734] । चूंकि वह बाँझ थी और उसके कोई संतान नहीं थी, उसके पति एल्कना ने एक और पत्नी—पेननिा—से ववािह कयिा, जसिसे उसे संतान हुई, और वह उसके साथ आनंदति हुआ। अपनी प्रतिद्वंद्वी पेन्ननिा, अपने पति—हालांकि वह उससे प्यार करता था—और अपने पड़ोसयिों और रशि्तेदारों से मलिी बाँझपन की नदिा[8735] से दुखी होकर, हन्ना ने गहराई से दुख मनाया और परमेश्वर से भक्तपिूर्वक प्रार्थना की, और परमेश्वर के कानून की आज्ञाओं का उत्साहपूर्वक पालन कयिा; वह हर सुबह और हर शाम अपने पवत्रि बलदिान अर्पति करती थी, ताकि प्रभु उसे इस अपमान से मुक्ति दिलाएँ और उसे संतान प्राप्ति का वरदान दें।

[8731] ईश्वर की परम पवत्रि माता के गर्भधारण और जन्म का एक वसि्तृत वृत्तांत, 9 सतिंबर को मनाए जाने वाले संत जोआचमि और अन्ना के जीवन में मलिता है। यरूशलेम के मंदरि में धर्मी जोकमि और अन्ना की खुशी और ईश्वर के प्रति उनकी हार्दकि कृतज्ञता, जसिने उनकी बाँझपन को दूर कयिा और उन्हें उनके पड़ोसयिों की नदिा से मुक्त कयिा, वास्तव में गर्भाधान के उत्सव की ही शुरुआत थी। गर्भाधान में, न केवल उनके धर्मी माता-पति को, बल्कि संपूर्ण वशि्व को उद्धार की एक नशि्चति प्रतज्ञि मलिी, क्योंकि उनका गर्भाधान ईश्वर की वशिेष, अनुग्रह-पूर्ण व्यवस्था द्वारा हुआ था। हालांकि, लखिति अभलिेखों की कमी के कारण, चर्च द्वारा परमेश्वर की माता की गर्भधारण का उत्सव मनाने की सटीक उत्पत्ति का पता लगाना मुश्कलि है; फरि भी यह यथोचति रूप से माना जा सकता है कि यह उत्सव प्राचीन काल से चला आ रहा है; क्योंकि परमेश्वर की माता के जीवन की सभी परस्थितियिाँ प्रारंभकि ऑर्थोडॉक्स ईसाइयों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण और पवत्रि थीं। 7वीं शताब्दी में, क्रीट के संत एंड्रयू ने ईश्वर की माता के गर्भाधान के पर्व के लिए एक कैनन और एक उपदेश रचा। गर्भाधान का पर्व 9 दसिंबर को मनाया जाता है, क्योंकि यह तारीख ईश्वर की माता के जन्म से नौ महीने पहले आती है। कॉन्स्टेंटनिोपल में, ईश्वर की माता के गर्भाधान के सम्मान में यह पर्व इस दनि सेंट सोफयिा चर्च के पास एवोरानयिा—या, एक अन्य पठन के अनुसार, उरानास—में मनाया जाता था। यहाँ, महान कॉन्स्टेन्टाइन के शासनकाल के दौरान एक सेनेटर द्वारा ईश्वर की माता को समर्पति एक चर्च का नरि्माण कयिा गया था।

[8732] मूसा की व्यवस्था के अनुसार, देखें नरि्गमन 23:17।

[8733] आर्माफमि, जसिे *रामा के* नाम से भी जाना जाता है – जुफ़ क्षेत्र का एक शहर, जो बेंजामनि जनजाति के क्षेत्र की सीमा पर स्थति था। जब शमूएल इस्राएल के लोगों के न्यायी थे, तब उनका घर इसी नगर में था; उस समय वे यहीं रहते थे और उन्होंने शाऊल को राजा अभषिेक कयिा था (1 शमूएल 7:17, 9:5–27, 10:1–2)।

[8734] लेवी गोत्र का अपना कोई वारसि नहीं था; लेवयिों ने अन्य गोत्रों के बीच नविास कयिा (व्यवस्थाववरिण 18:1–2)।

[8735] यहूदयिों के लिए, संतान होना ईश्वर के आशीर्वाद का संकेत था, जबकि इसके वपिरीत, संतानहीनता को ईश्वर की अप्रसन्नता का संकेत और लोगों के बीच अपमान का कारण माना जाता था।

हर साल, एल्कना अपने पूरे परविार के साथ, कानून द्वारा नरि्धारति समय पर, सर्वशक्तमिान प्रभु परमेश्वर को बलदिान चढ़ाने के लएि अपने शहर से शीलो[8736] की यात्रा करते थे, यह बलदिान वे महापुजारी एली[8737] के हाथों द्वारा चढ़ाते थे।

और इस प्रकार एक दनि, परमेश्वर को बलदिान चढ़ाने के बाद, एल्कना ने बलदिान के अवशेष अपने परविार में बाँटते समय पेनीन और उसके बेटों और बेटयिों को एक हस्सिा दयिा, और दूसरा हस्सिा हन्नाह को दयिा, क्योंकि वह पेनीन से अधकि प्रेम करती थी, यद्यपि उसके कोई संतान नहीं थी: इस बात ने पेनीन के हृदय में ईर्ष्या और द्वेष भर दयिा, जबकि हन्नाह के लएि यह नए, और भी बड़े, दुख और अपमान का स्रोत बना। ईर्ष्यालु तानों से पीड़ति होकर, वह रोई और खाने से इनकार कर दयिा, उसे अपने प्यारे पति के सांत्वना में कोई सुकून नहीं मलिा (1 शमूएल 1:5, 8); उसका मुख उदास था, और वह नहीं जानती थी कि क्या करे। जब बलि का भोजन समाप्त हो गया, तो हन्नाह ने अपने पति और उनके परविार को वदिा कर दयिा और अकेले ही तम्बू की ओर दौड़ी; वहाँ, जमीन पर लोट कर, उसने परमेश्वर के सामने अपना हृदय खोलकर रख दयिा और नम्निलखिति व्रत लयिा:

'हे सेनाओं के यहोवा, यदि आप अपनी दासी की कष्ट-क्लेश पर दृष्टि करें, और मुझे स्मरण रखें, और अपनी दासी को न भूलें, और अपनी दासी को एक पुत्र दें, तो मैं उसे उसके जीवन भर के लएि यहोवा को भेंट कर दूँगी।'

जब हन्ना इतने लंबे समय तक प्रार्थना कर रही थी, तब तम्बू के द्वार पर बैठे महापुजारी एली ने उस पर ध्यान दयिा और यह देखकर कि उसके होंठ हलि रहे थे पर उससे कोई आवाज नहीं नकिल रही थी, उससे कहा:

'तुम कब तक नशे में रहेगी? अपनी शराब से होश में आओ और प्रभु की उपस्थति से दूर हो जाओ!'

'नहीं, मेरे प्रभु,' हन्ना ने उत्तर दयिा, 'मैं गहरे कष्ट में एक स्त्री हूँ; मैंने कोई मदरिा नहीं पी है; परन्तु मैं अपना मन की बात परमेश्वर के सामने खोल रही हूँ। अपनी दासी को एक नीच स्त्री न समझएि, क्योंकि मैं अपनी बड़ी उदासी और कष्ट के कारण अब तक बोलती रही हूँ।'

तब एली ने कहा:

'शांति से जाओ, और इस्राएल का परमेश्वर तुम्हारी वनिती पूरी करे।'

और परमेश्वर ने वास्तव में हन्ना की प्रार्थना को अस्वीकार नहीं कयिा; उन्होंने न केवल एली के मुख से उसे एक पुत्र दयिा, बल्कि उसके पुत्र को भवषि्यवाणी का वरदान भी प्रदान कयिा।

अटूट वशि्वास के साथ परमेश्वर का वचन पाकर, हन्नाह आनंदति होकर अपने पति के पास लौट आईं, और कुछ समय बाद उन्होंने संतान प्राप्ति की प्रार्थना की और सैमुएल का जन्म हुआ[8738] , जो बाद में इस्राएल के लोगों के लएि एक भवषि्यवक्ता और नेता बने। जब बच्चा दूध छुड़ा दयिा गया, तो हन्नाह ने उसे नयित समय पर अपने साथ लेकर अपने पति के साथ शीलो गई। वहाँ उसने फरि से प्रभु परमेश्वर के सामने दण्डवत करके धन्यवाद कयिा। एक बलदिान चढ़ाने के बाद, पति और माता ने शमूएल को महायाजक एली के पास लाया, और हन्नाह ने उससे कहा:

'हे स्वामी, मैं वही स्त्री हूँ जो यहाँ आपके सामने खड़ी थी, और इस बच्चे के लएि प्रभु से प्रार्थना कर रही थी, और प्रभु ने मेरी वह वनिती मानी जो मैंने उनसे माँगी थी; और अब मैं उसे जीवन भर के लएि प्रभु को समर्पति करती हूँ—ताकि वह प्रभु की सेवा करे।'

एलीजा ने हन्ना को आशीर्वाद दयिा और कहा:

'प्रभु तुम्हें शमूएल के बदले में संतान दें।'

[8736] शीलोह – एप्रैम गोत्र का एक नगर, जो प्रतज्ञिात देश के लगभग केंद्र में, यरदन के इस पार स्थति था। यहीं पर, यॉर्डन पार करने और प्रतज्ञिात भूमि पर वजिय प्राप्त करने के बाद, मूसा का तम्बू (यहूदी का वह पवत्रि स्थान जसिे उठाया जा सकता था) स्थापति कयिा गया था; यहाँ यहूदयिों ने प्रार्थना की, अपने त्योहार मनाए और अपनी सभाएँ आयोजति कीं। आज, केवल प्राचीन शहर के खंडहर ही बचे हैं।

[8737] एली – जो उच्च पुरोहति और साथ ही इस्राएल के न्यायाधीश थे, और हारून के सबसे छोटे बेटे इथामार की संतान थे – पहले व्यक्ति थे जनि्होंने अपने व्यक्तित्व में आध्यात्मकि और सांसारकि दोनों अधकिारों को एकीकृत कयिा। उनकी प्रकृति सौम्य थी जो प्रेम और वशि्वास को प्रेरति करती थी, और उन्होंने नषि्पक्ष न्याय का अभ्यास कयिा, जसिके लएि लोगों ने उन्हें आशीर्वाद दयिा; लेकनि उनकी दयालुता कमजोरी के कगार पर थी, जो वशिेष रूप से उनके बेटों—होफ़नी और फनिहास—के साथ उनके संबंधों में स्पष्ट थी, जो याजक होने के नाते, मंडप में वभिन्नि प्रकार के अन्यायपूर्ण कृत्य करने की अनुमति देते थे; इस कारण से, प्रभु ने उन्हें बार-बार फटकार लगाने के बाद, उन्हें कैद में एक शर्मनाक मृत्यु की सजा दी।

[8738] हब्रिू से: 'ईश्वर द्वारा सुना गया', 'ईश्वर से वनिती'।

हन्नाह ने आनंद मनाया और मंडप के सामने झुककर पूरे हृदय से स्तुति का एक गीत गाया: *'मेरा हृदय यहोवा में आनंद मनाता है; मेरा सींग मेरे परमेश्वर में ऊँचा किया गया है; मेरा मुँह अपने शत्रुओं के विरुद्ध खुल गया है, क्योंकि मैं तेरे उद्धार से आनंदित हूँ*[8739] (1 शमूएल 2:1)।

इसके बाद, एल्कना और उनकी धर्मपरायण पत्नी अर्माह लौट गए; लेकिन शमूएल प्रभु की सेवा करने के लिए तम्बू में ही रह गए। बाद में, हन्नाह ने तीन और पुत्र और तीन पुत्रियाँ जनीं, और अपनी वृद्धावस्था में वह अपने शाश्वत निवास के लिए चल बसीं[8740] ।

आदरणीय स्टीफन, नए प्रकाशक की स्मृति[8741]

9 दिसंबर को स्मरण किया जाता है

आदरणीय स्टीफन का जन्म और पालन-पोषण कॉन्स्टेंटिनोपल में हुआ था। उनके माता-पिता, ज़कारियास और थियोफैनी, अपनी धार्मिकता और ईसाई सद्गुणों के लिए प्रसिद्ध थे; वे पहले शहीद, आर्चडीकन स्टीफन के पवित्र चर्च से बहुत दूर नहीं रहते थे। आदरणीय की माता, थियोफानिया ने, उनके गर्भवती होने के दौरान भी भोजन से कठोर संयम बरता: उनके जन्म के क्षण तक, उन्होंने केवल सब्जियों के साथ रोटी खाई और केवल पानी पिया, इस प्रकार उन्होंने गर्भ में ही तपस्वी की तैयारी कर दी। और जैसे ही शिशु का जन्म हुआ, उसकी छाती पर एक सुंदर क्रॉस की छवि मिली, जो 'मांस और उसकी इच्छाओं और आवेगों के क्रूस पर चढ़ाए जाने' (गलातियों 5:24) का एक दृश्यमान संकेत था, जिसे उन्होंने अपने बाद के जीवन में प्रदर्शित किया। उन्होंने अपनी मासूमियत में ही, जब माँ का दूध पीते थे, संयम का अभ्यास करना शुरू कर दिया था: जब भी उनकी माँ भरपेट भोजन करने के बाद उन्हें दूध पिलाने का प्रयास करतीं, तो वे दूध नहीं पीते थे। यह बार-बार होता था और एक बार में दो या तीन दिनों तक चलता रहता था, इसलिए पवित्र शिशु के रिश्तेदार, यह देखकर हैरान और परेशान हो गए। फिर भी इससे बच्चे के स्वास्थ्य को बिल्कुल भी नुकसान नहीं हुआ। शिशु का बपतिस्मा हुआ, वह बड़ा हुआ, और उसकी माँ का दूध छूट गया। किशोरावस्था में पहुँचने पर, वह अपने माता-पिता के प्रति आज्ञाकारी रहते हुए, स्वेच्छा और लगन से अपनी पढ़ाई में जुट गया। जब संत मेथोडियस ने बिशप का पद संभाला, तो ईश्वर की व्यवस्था से, संतों के प्रति भक्ति रखने वाले ज़कारियास, स्टीफन के पिता, को एक प्रेस्बिटिर के रूप में नियुक्त किया गया और कॉन्स्टेंटिनोपल के महान चर्च के पुरोहित वर्ग में शामिल किया गया; इसी समय, परमेश्वर-ज्ञानी स्टीफन ने संन्यासी की शपथ ली और उसी चर्च के पुरोहित वर्ग में शामिल हो गए; अन्य बातों के अलावा, उन्होंने अपने

[8739] ई अद्भुत दिव्य भजन, जो परमेश्वर की प्रबंधकीय योजना के रहस्य पर भविष्यसूचक चिंतन से पूर्ण और गहरी नम्रता से ओत-प्रोत है, प्रथम राजा की पुस्तक के अध्याय 2 में दिया गया है और इस प्रकार है: 'मेरा हृदय यहोवा में आनंदित होता है; मेरी सींग मेरे परमेश्वर में ऊँची की गई है; मेरा मुँह अपने शत्रुओं के विरुद्ध खुल गया है, क्योंकि मैं तेरे उद्धार में आनन्दित हूँ। प्रभु के समान कोई पवित्र नहीं, क्योंकि तेरे सिवाय और कोई नहीं; और हमारे परमेश्वर के समान कोई चिल्ला नहीं; घमण्ड की बातें न बोल; तेरे होठों से कोई अभिमानी बात न निकले; क्योंकि प्रभु ज्ञान का परमेश्वर है, और उसके काम तौले हुए हैं। बलिष्ठों का धनुष टूट गया है, और निर्बलों को बल से कमर कसी गई है; भरपेट खाने वाले अपने भोजन के लिए परिश्रम करते हैं, जबकि भूखे विश्राम करते हैं; यहाँ तक कि बाँझ स्त्री सात बच्चों को जन्म देती है, जबकि अनेक बच्चों की माँ थक जाती है। प्रभु मारता भी है और जिलाता भी है, कब्र में उतारता भी है और उठाता भी है; प्रभु गरीब करता भी है और धनी भी बनाता है, नीचा दिखाता भी है और ऊँचा भी करता है। वह गरीबों को धूल से उठाता है और ज़रूरतमंदों को राख के ढेर से उठाकर, उन्हें राजकुमारों के साथ बिठाता है और उन्हें विरासत में महिमा का सिंहासन प्रदान करता है; क्योंकि यहोवा पृथ्वी की नींव है, और उसी पर उसने संसार को स्थापित किया है। वह अपने संतों के कदमों की रक्षा करता है, पर दुष्ट अंधकार में लुप्त हो जाते हैं; क्योंकि मनुष्य बल से नहीं बलवान होता। प्रभु उनके चूर कर देगा जो उससे विवाद करते हैं; वह स्वर्ग से उन पर गरजेंगे। प्रभु पवित्र है। न तो बुद्धिमान अपनी बुद्धि का घमंड करें, न बलवान अपनी ताकत का, और न धनी अपनी दौलत का; बल्कि जो घमंड करना चाहता है, वह इस बात का घमंड करे कि वह प्रभु को समझता और जानता है। 'प्रभु पृथ्वी के छोरों का न्याय करेंगे; वह अपने राजा को बल देंगे और अपने अभिषिक्त के सींग को ऊँचा करेंगे।' *मसीहा का* नाम यहाँ पहली बार उल्लेख किया गया है; यह राजा की उपाधि के अनुरूप है और *उस अभिषिक्त का* संकेत करता है जिसे स्वर्ग से पवित्र आत्मा के विशेष उपहार प्राप्त हुए हैं। यहाँ *राजा-मसीहा,* या *मसीह,* को प्रतिज्ञात उद्धारकर्ता के रूप में नामित किया गया है, जिसकी भविष्यवाणी याकूब ने यहूदा पर अपना आशीर्वाद देते समय, 'मेल कराने वाला' (Reconciler) के नाम से की थी, जिसके अधीन राष्ट्रों को होना चाहिए (उत्पत्ति 4:10), और जिसे स्वयं परमेश्वर ने, मूसा से अपनी बातचीत में, उनके भाइयों में से एक *भविष्यवक्ता के रूप में* नियुक्त किया, जो उत्पन्न होगा (व्यवस्थाविवरण 18:18-19)।

[8740] मसीह के जन्म से 1,100 वर्ष पहले।

[8741] संत स्टीफन को 'नया दीप्तिमान' कहा जाता है क्योंकि, प्राचीन तपस्वियों की तरह, उन्होंने पवित्र जीवन से प्रकाशित किया।

पिता की निकट मृत्यु की भविष्यवाणी की। अठारहवें वर्ष में, अपने पिता की मृत्यु के बाद, पूजनीय स्टीफन ने तपस्वी जीवन अपनाया; उन्होंने स्वयं को संत पतरस प्रधान प्रेरित के चर्च में एकांतवास में रख लिया, वहाँ निरंतर प्रार्थना में रहे और केवल सब्जियों पर जीवन यापन किया।

यहाँ उसे अपने प्रयास में जल्द ही ऊपर से प्रोत्साहन मिला: एक रात, मसीह के प्रेरित उसे दिखाई दिए और कहा:

'मेरे बच्चे, तुझ पर शांति बनी रहे। तेरे पुण्य जीवन की यह शुरुआत तेरे भले के लिए हो, और प्रभु तुझे इसमें बल दें।'

इस प्रकार तीन वर्ष तक जीवन व्यतीत करने के बाद, स्टीफन को पवित्र शहीद एंटिपास[8742] का एक और दर्शन हुआ, जो उन्हें प्रकट होकर बोले:

'शांति तुम्हारे साथ हो, मेरे बच्चे; अपना ध्यान रखना; मैं तुम्हें नहीं छोड़ूँगा।'

इस प्रेरणा से रेवरेंड ने प्रार्थना और उपवास में अपने तपस्या के प्रयासों को दोगुना कर दिया; उस समय से, वह सप्ताह में केवल एक या दो बार ही सब्जियां खाता था, और वह भी बिना नमक के। इस प्रकार जीवन यापन करते हुए, स्टीफन ने नैतिक शुद्धता की उच्चतम डिग्री प्राप्त की, उसे बिशप का पद देकर सम्मानित किया गया, और उसने कई चमत्कार किए।

धर्मनिष्ठ ज़ार बासिल के शासन के बारहवें वर्ष[8743] और स्टीफन के जीवन के चालीसवें वर्ष में, एक बड़ा भूकंप आया, जिसने सेंट एंटिपास के चर्च को पूरी तरह से नष्ट कर दिया, जहाँ उस समय रेवरेंड फादर निवास कर रहे थे। सम्माननीय पिता उस स्थान से हटकर एक कब्र-गुफा में रहने लगे, जहाँ उन्होंने बारह वर्ष व्यतीत किए। इस दौरान उनके सिर और दाढ़ी के सभी बाल तथा उनके दाँत झड़ गए, और उनका सम्पूर्ण शरीर दुर्बल हो गया, क्योंकि वह गुफा बहुत नम थी; और सम्माननीय पिता ने देह की मृत्यु-दशा की परम सीमा को प्राप्त कर लिया। इस प्रकार अपने शरीर को थका देने के बाद, वह गुफा से बाहर निकला, लेकिन इसके बाद भी मोटे कपड़ों से ढकी एक साधारण तख्ती ही उसका बिस्तर थी। फिर उसने एंजेलिक स्कीमा ग्रहण की और केवल प्रभु के पर्व के दिनों में, दिव्य लिटर्जी संपन्न होने के बाद ही, एक सब्जी और थोड़ा सा पानी ग्रहण करता था। इस प्रकार के आहार पर जीवित रहते हुए, स्वर्गीय मातृभूमि के इस धन्य नागरिक ने पचास वर्षों तक अपने कठोर, अत्यंत तपस्वी जीवन पथ का पालन किया, और अपने संपूर्ण जीवन के त्रिहत्तरवें वर्ष में[8744] —या यूँ कहें कि अपने शरीर को दंडित करते हुए—उन्होंने अपनी आत्मा ईश्वर को सौंप दी।

साइप्रस के आर्चबिशप, पूजनीय सोफ्रोनीयस की स्मृति

9 दिसंबर को स्मरण किया जाता है

आदरणीय सोफ्रोनीयस धर्मपरायण ईसाई माता-पिता के पुत्र थे जो साइप्रस द्वीप पर रहते थे। उन्होंने अच्छी शिक्षा प्राप्त की, लेकिन उन्होंने मुख्य रूप से पवित्र पिताओं की रचनाओं को समर्पित किया, दिन-रात ईश्वर के विधान का अध्ययन किया; साथ ही, उन्होंने अपने जीवन को प्रभु की आज्ञाओं के अनुसार व्यवस्थित किया। वे भक्ति और अच्छे कार्यों में इतने निपुण थे कि उन्हें प्रभु द्वारा चमत्कार करने का वरदान मिला और उन्होंने कई चमत्कार किए। साइप्रस की कलीसिया के बिशप, संत डेमियन की मृत्यु के बाद, सोफ्रोनीयस को पवित्र धर्मसभा और सभी लोगों द्वारा उनके स्थान पर चुना और स्थापित किया गया। जब उन्होंने बिशप का पद ग्रहण कर अपनी मूल चर्च का शासन संभाला, तो उन्होंने स्वयं को अपने झुंड का एक सच्चा पिता साबित किया: उन्होंने विधवाओं और गरीबों पर दया की, अनाथों और असहायों की मदद की, और उत्पीड़ितों और अन्यायग्रस्तों की रक्षा की। और इस प्रकार जीवन जीकर और परमेश्वर की कृपा प्राप्त कर, वे शांति में परलोक सिधार गए[8745] ।

[8742] पवित्र शहीद एंटिपास, एशिया के पेरगामोन के बिशप, का 95 ईस्वी में निधन हुआ; उनके पर्व दिवस (11 अप्रैल) को कॉन्स्टेंटिनोपल में विशेष रूप से सम्मानित किया जाता था, जहाँ थियोडोसियस महान (379–395) के शासनकाल में पेरगामोन से वह बैल लाया गया था जिसमें संत एंटिपास को जलाया गया था।

[8743] बेसिल द मेसेडोनियन, अर्थात् 879 में।

[8744] 912 में।

[8745] 6वीं शताब्दी में।

23 दसिंबर

10 दसिंबर (पुराने कैलेंडर के अनुसार)

पवत्रि शहीदों मीना, हर्मोजेनेस और इवग्राफस का कष्टकथा

10 दसिंबर को स्मरणोत्सव

रोमन सम्राटों डायोक्लेटयिन और मैक्समियिन के सहिासन पर से स्वेच्छा से त्याग-पत्र देने के बाद, पृथ्वी से मसीह के पवत्रि धर्म को मटिाने में असफल रहने पर, नम्निलखिति सहिासन पर बैठे: रोम में – मैक्सेंटयिस[8746] , पूर्व में – मैक्समिनिस[8747] , और गॉल में – कॉन्स्टेंटाइन, जो बाद में मसीह में वशि्वास करने लगे और उन्होंने ईसाई धर्म के प्रकाश से दुनयिा को प्रकाशति कयिा। उनके शासनकाल में भी ईसाइयों पर अत्याचार बंद नहीं हुए, वशिेष रूप से पूर्व में, जहाँ ऐसा लगता था मानो पृथ्वी और समुद्र काँप रहे थे और उथल-पुथल में थे, जो लगातार बढ़ रही मसीह की कलीसयिा के वरिुद्ध उठ रहे थे। लेकनि जतिना अधकि मसीह की कलीसयिा का उत्पीड़न कयिा गया, उतनी ही अधकि वह बढ़ी और फलती-फूलती गई, शहीदों के लहू से रंगी हुई, जैसे काँटों के बीच उगने वाली एक लली। हालाँकि, अधर्मी राजा मैक्समिनिस अपनी बहुदेववादी अधार्मकिता का एक दृढ़ रक्षक और ईसाई धार्मकिता का एक बड़ा घृणति और उत्पीड़क था। उसे यह सूचना मलिी कि मिस्रि का सबसे प्रतषि्ठति शहर, संपूर्ण अलेक्जेंड्रयिा, ईसाइयों की संख्या में वृद्धि और उनके तथा मूर्तपिूजकों के बीच उत्पन्न अशांति के कारण वद्रिोह पर उतारू हो गया था। खुद वहाँ नहीं जा पाने और बज़िेन्टयिम में ही रहना आवश्यक होने के कारण, मैक्समिनिस ने अपनी जगह पर अपने एक कुलीनों में से एक, एथेन्स का मूल नविासी मनिस नामक व्यक्ति को भेजा, जो ववेिकी, यूनानी वज्ञिानों में पारंगत और एक कुशल वक्ता था। उन्होंने उसे अलेक्जेंड्रयिा में भड़की अशांति को शांत करने और बाधति व्यवस्था को बहाल करने का काम सौंपा: शहर से ईसाई धर्म का उन्मूलन करना, अपने पूर्वजों के मूर्तपिूजक धर्म को फरि से स्थापति करना, और जो लोग मसीह में परविर्तति हो गए थे उन्हें मूर्तपिूजा में वापस लाना। बाहरी तौर पर, मीना राजा के धर्म का समर्थन करने और उसकी दुष्ट इच्छा को पूरा करने के लिए तैयार दखिाई दयिा; हालाँकि, अपने दलि में वह एक सच्चा ईसाई और ईश्वर की आज्ञाओं का पालन करने वाला था, लेकनि फलिहाल उसने अपने सच्चे धर्म को छपिा रखा था, और एक वीरतापूर्ण कार्य के लिए दैवीय आह्वान और शहीद के मुकुट का इंतजार कर रहा था।

राजा का आदेश मलिते ही, वह अलेक्जेंड्रयिा की ओर रवाना हो गया और वहाँ के अशांत माहौल को आसानी से शांत कर दयिा: बुद्धमिानी से समझा-बुझाकर, उसने दो वरिोधी पक्षों - ईसाइयों और मूर्तपिूजकों - के बीच सुलह कराई और प्रत्येक को बनिा कसिी रोक-टोक के अपने धर्म का पालन करने की अनुमति दी; बाद में कानूनों में मौजूद अन्यायपूर्ण प्रावधानों को सुधारने के बाद, मीना ने राजा को सब कुछ लखिति रूप में रपिोर्ट कर दयिा। उसने तुरंत सभी के सामने मसीह में अपने वशि्वास की घोषणा करने का संकल्प लयिा, एक ऐसा वशि्वास जसिे उसने अब तक छपिाया था – जसिका उद्देश्य दूसरों के लिए धार्मकिता का एक आदर्श और मोक्ष का स्रोत बनना, और स्वयं शहादत का कारनामा करना था। उसने अपने आप से कहा:

'यदि मैं कसिी अन्य समय शहादत प्राप्त करता, तो केवल मुझे ही पुरस्कृत कयिा जाता; लेकनि अब मैं दूसरों को भी शहादत के मुकुट तक ले जा सकता हूँ।'

इसलिए, मीना ने खुले तौर पर यीशु मसीह के नाम की महमिा करना और पवत्रि वशि्वास को सखिाना शुरू कर दयिा, और अवशि्वासयिों को न केवल अपने शब्दों से बल्कि अपने कर्मों से भी वशि्वास दलिाया, क्योंकि उन्हें स्वर्ग से मसीह के नाम का उच्चारण करके और पवत्रि क्रूस के आशीर्वाद से बीमारयिों को ठीक करने का वरदान मलिा था। एक दनि, जब मीना शहर में भीड़ के साथ चल रहे थे, तो उन्होंने सड़क पर बहुत से लंगड़े, लकवाग्रस्त, अंधे, बेसहारा, बहरे और

[8746] 305 से 312 तक।

[8747] मैक्समिनिस डाज़ा – 305 से 313 तक साम्राज्य के पूर्वी भाग का सम्राट।

दानवों के वश में पड़े लोगों को देखा। उन्होंने ईश्वर से प्रार्थना की कि वे उनकी हथेलियों से अपनी शक्ति प्रकट करें, ताकि वे मूर्तिपूजक लोगों को धर्म में परिवर्तित कर सकें, और उन्होंने मसीह का नाम लिया; तब उसने बीमारों पर अपने हाथ रखे, उनमें से प्रत्येक पर पवित्र क्रॉस का चिन्ह बनाया, और तुरंत वे सब चंगे हो गए: अंधों को दृष्टि मिल गई, गूंगे बोलने लगे, लंगड़े हिरणों की तरह कूद पड़े, और दुष्टात्माओं से ग्रस्त लोग अशुद्ध आत्माओं से मुक्त हो गए। यह देखकर लोग चकित रह गए और कई लोग मसीह पर विश्वास करने लगे; और संत मीना ने उन्हें सच्चा धर्म सिखाकर उन्हें ईसाई चर्च में शामिल कर लिया।

हालाँकि, कुछ विधर्मी, अविश्वास और दुर्भावना से अंधे—जो अपने राक्षसी त्योहारों में आनंद लेते थे, जिन्हें वे दावत, शराबखोरी और व्यभिचार के साथ मनाते थे—एक सदाचारी और संयमी जीवन के पक्ष में नहीं थे; क्योंकि वे स्वयं दुष्टता की संतान थे, वे प्रकाश से घृणा करते थे और अपने देवताओं के अपमान तथा उनके सम्मान में आयोजित त्योहारों के अपमान को सहन करने के इच्छुक नहीं थे, उन्होंने गुप्त रूप से राजा को सूचित किया कि मीना न केवल स्वयं सूली पर चढ़ाए गए गलीलियाई[8748] में विश्वास करता था, बल्कि उसने अलेक्जेंड्रिया के सभी लोगों को इस विश्वास से भ्रष्ट कर दिया था, और यह कि प्राचीन देवताओं के मंदिर पहले ही सुनसान हो चुके थे। यह जानकर राजा बहुत क्रोधित हो गया और अपने कुलीनों और सलाहकारों को बुलाकर मीना के बारे में उनसे शिकायत करने लगा, यह कहते हुए कि उसने उसके आदेशों के विरुद्ध काम किया था और अलेक्जेंड्रिया में ईसाई धर्म को खत्म करने के बजाय, उसे फैला दिया था, और हेलेनों[8749] — जो अपने पूर्वजों के प्राचीन कानूनों के प्रति समर्पित थे — को नए गलीलियाई धर्म[8750] में परिवर्तित कर दिया था। कुलीनों ने राजा को सलाह दी कि वह वहाँ किसी ऐसे व्यक्ति को भेजे जो मिना द्वारा बाधित की गई सभी चीज़ों को बहाल कर सके, और उसे मूर्तिपूजक देवताओं के पास लौटने के लिए मना सके या मजबूर कर सके; इस उद्देश्य के लिए, कुलीनों ने सलाह दी कि किसी ऐसे व्यक्ति को चुना जाए जो विशेष रूप से राजा के प्रति समर्पित हो और वफादारी से उसकी सेवा करे, और जो उससे दिए गए हर आदेश को पूरी तरह से संरक्षित करने और उसे अक्षरशः पालन करने का प्रयास करे। जब उन्होंने आपस में परामर्श करना और ऐसे व्यक्ति की तलाश करना शुरू किया, तो शहर का राज्यपाल, जिसका नाम हरमोजेनेस था—एक कुलीन जन्म और उच्च पद वाला व्यक्ति—सभी को इस उद्देश्य के लिए सबसे उपयुक्त लगा; और वे सभी इस बात पर सहमत हो गए कि उसे भेजा जाए, क्योंकि वह राजा द्वारा दिए गए सभी आदेशों को पूरा करने में सक्षम था। और तुरंत मैक्सिमिनिस ने हरमोजेनेस को अलेक्जेंड्रिया भेज दिया, और उसे बिज़ेंटियम से एक सैन्य टुकड़ी प्रदान की, ताकि वह मिस्र पर मुकदमा चला सके और शहर को उस चीज़ से शुद्ध कर सके जिसे वह ईसाई विधर्म मानता था। हरमोजेनेस स्वयं एथेंस का मूल निवासी था; वह हेलेनिक मूर्तिपूजा में जन्मा और पला-बढ़ा था, लेकिन स्वभाव से अच्छा और सौम्य था; हालाँकि वह मसीह, सच्चे परमेश्वर, को नहीं जानता था, फिर भी उसने केवल मसीहियों के योग्य कर्मों के द्वारा उनका सम्मान किया, *'क्योंकि जब गैर-यहूदी, जिनके पास व्यवस्था नहीं है, स्वभाव से वह करते हैं जो व्यवस्था की मांग करती है, तो वे अपने लिए व्यवस्था हैं, भले ही उनके पास व्यवस्था नहीं है'* (रोमियों 2:14)।

जब हरमोगेनेस अपनी सेना के साथ मिस्र जा रहा था, तो रास्ते में एक रात, तीन तेजस्वी पुरुष उसे सपने में दिखाई दिए और उससे कहा:

'हेरमोजेन, यह जान ले: परमेश्वर किसी भी छोटे से छोटे अच्छे काम को तुच्छ नहीं समझते; इसलिए, परमेश्वर तेरे अच्छे कामों को स्वीकार करते हैं, और वह तेरी यात्रा—जो कई मसीहियों को नष्ट करने के इरादे से की गई है—को स्वर्ग में तेरे गौरव और पुरस्कार का स्रोत बना देंगे। इसलिए, हमारे वचन को न भूलना, क्योंकि इस यात्रा के द्वारा तुम सच्चे और शाश्वत राजा को जानोगे। और हम तुम्हारे पास एक मनुष्य भेजेंगे जो तुम्हें उस धन्य राजा का मित्र बनाएगा, और तुम्हें उससे ऐसा सम्मान प्राप्त होगा जो तुम्हारा वर्तमान स्वामी तुम्हें नहीं दे सकता।

अपनी नींद से जागने पर, हरमोगेनेस ने भय और आश्चर्य के साथ, जो उसने देखा था उस पर मनन करना शुरू कर दिया, और सोचा कि उसके साथ क्या होने वाला है; और वह कुछ उच्च सम्मान प्राप्त करने की आशा करता था, लेकिन

[8748] अर्थात् यीशु मसीह, जिन्हें विधर्मीयों ने यह नाम दिया था, यह गलत मानकर कि उनका जन्म गलील के नासरत में हुआ था, जहाँ उन्होंने अपना पूरा बचपन बिताया।

[8749] मसीह से पहले, 'हेलेन्स' शब्द का अर्थ यूनानी था, जबकि पवित्र शास्त्र में यह नाम सामान्य रूप से मूर्तिपूजकों, यूनानियों और अन्य लोगों, दोनों के लिए प्रयुक्त होता है, क्योंकि उनमें से कई यूनानी बोलते थे।

[8750] अर्थात्, मसीह में विश्वास।

पृथ्वी पर अस्थायी रूप से शासन करने वाले राजाओं से, न कि ऊँचे स्थान के राजा से, जिसे वह अभी तक नहीं जानता था, क्योंकि उसकी आध्यात्मिक आँखें अभी तक प्रबुद्ध नहीं हुई थीं।

लंबी समुद्री यात्रा के कई दिनों के बाद, हरमोजेनेस अलेक्जेंड्रिया शहर के पास उतरा और ढोल-नगाड़ों और तुरहियों की ध्वनि के साथ महिमा में शहर में प्रवेश किया, जब सभी लोग उससे मिले और उसे सम्मान के साथ शाही महलों तक ले गए। जब शाम हुई और लोग तितर-बितर हो गए, तो धन्य मीना , हरमोजेनेस के पास आए, ताकि वे उनसे सच्चे ईश्वर और पवित्र विश्वास के बारे में अकेले में बात कर सकें, यह जानते हुए कि ऐसी परिस्थितियों में सलाह पर अधिक ध्यान दिया जाता है और उसे अधिक आसानी से स्वीकार किया जाता है; और यदि कुछ अप्रिय कहा जाना हो, तो उसे लोगों की उपस्थिति में होने की तुलना में अधिक आसानी से सहन किया जा सकता है।

हरमोजेनेस के समक्ष प्रवेश करते ही, मीना ने कहा:

'एक महान ईश्वर की महिमा हो, जिनकी कृपा से आप यहाँ आए हैं!'

हालाँकि, हरमोजेनेस ने एक ईश्वर के बारे में सुनकर और वहाँ कई दरबारियों को खड़ा देखकर, तुरंत मीना को हिरासत में लेने का आदेश दिया, इस डर से कि राजा के सामने उस पर यह बदनामी हो सकती है कि उसने राजा के दुश्मन को निजी बातचीत में बसाया था। और उसने उपस्थित लोगों से कहा:

'कल यह गलीलियाई का गुप्त अनुयायी जान जाएगा कि मैं राजा के दुश्मनों के लिए कितना मित्र हूँ, और उसे पता चल जाएगा कि एक ईश्वर है या कई।'

सुबह, जब चौक में मुकदमे के लिए जगह तैयार कर दी गई और एक बड़ी भीड़ इकट्ठा हो गई, तो हरमोजेनेस अपने रक्षकों से घिरे हुए न्यायाधीश की कुर्सी पर बैठ गया और सेंट मीना को अपने सामने लाने का आदेश दिया।

मसीह का योद्धा एक दीप्तिमान मुखमंडल और निडर आत्मा के साथ उसके सामने प्रकट हुआ – ईश्वर के प्रति उत्साह से जलता हुआ। और न्यायाधीश ने उससे कहा:

'मिना! प्रत्येक व्यक्ति के लिए यह उचित है कि वह राजाओं और राजाओं के देवताओं का सम्मान करे और उनकी कृपा के लिए आभारी रहे; फिर भी तुम न तो देवताओं का सम्मान करते हो और न ही राजाओं का, क्योंकि तुम उनकी कृपा भूल गए हो।'

संत ने उत्तर दिया:

– न्यायाधीश! जब तक किसी उपकारी की कृपा लाभदायक हो, तब तक उसकी कृतज्ञता व्यक्त करना उचित है – उपकारी और लाभार्थी दोनों के लिए। लेकिन जब वह दोनों को हानि पहुँचाती है, तो व्यक्ति को उस हानिकारक कृपा और कृपा करने वाले दोनों को अस्वीकार कर देना चाहिए। राजाओं का सम्मान करना उनका अधिकार और शासन के लिए एक पवित्र कर्तव्य है; लेकिन जब राजा ईश्वर—जो सभी चीजों का स्रोत है—का अनुचित और अधार्मिक तरीके से सम्मान करते हैं, और उसे वह सम्मान नहीं देते जो उसे मिलना चाहिए, तो तब राजाओं का सम्मान करना अन्याय है; और किसी को भी जल्दबाजी में उनके देवताओं का सम्मान नहीं करना चाहिए, जब तक कि हम पहले यह जांच न कर लें कि क्या वे सच्चे ईश्वर जितने शक्तिशाली हैं। क्या वे बिना आरंभ के, अनंत और अमर हैं? और यदि उनमें इनमें से एक भी गुण का अभाव है, तो उन्हें तिरिस्कृत किया जाना चाहिए; क्योंकि वे अपूर्ण होते हुए देवता कैसे हो सकते हैं? इसलिए, अच्छे इरादों और शुद्ध हृदय से, यह पता लगाना चाहिए कि वास्तव में ईश्वर कौन है। जब मैं, हे न्यायाधीश, आपके समान, एथेन्स में था—जैसा कि आप जानते ही हैं—मैंने अपने पूर्वजों के नियमों का पालन किया; अपनी युवावस्था में माता-पिता को छोड़कर, मैंने बड़ी उत्सुकता और लगन से किताबों को पढ़ने में अपना समय लगाया, और काफी प्रयास से पूरी हेलेनिक शिक्षा को पढ़ा, जो झूठी कथाओं पर आधारित है। हालाँकि, जब मुझे पता चला कि ईसाइयों की भी कुछ किताबें हैं, तो मैंने उन्हें भी पढ़ने की इच्छा व्यक्त की। और जब मैंने उन्हें पढ़ा, तो मुझे उनमें इतना गहरा आध्यात्मिक लाभ मिला कि उसे व्यक्त करना असंभव है; ईसाई धर्मग्रंथों की तुलना हेलेनिक शिक्षाओं से करने पर, मैंने पाया कि वे एक-दूसरे से बहुत अलग और, यों कहें, एक-दूसरे के विपरीत थीं: पहले में मैंने शक्ति और सत्य को देखा, जबकि दूसरे में मुझे भूल और धोखा मिला। क्योंकि ईसाई धर्मग्रंथों में जो कुछ भी निहित है, वह ईश्वर के अनुरूप मसीह की शक्ति को प्रकट करता है; जबकि यूनानी लेख ईश्वर को मानवीय दुर्बलताओं, जुनून और वासनाओं से युक्त, झूठ, क्रोध, असंयम और निर्लज्जता से भरा हुआ दर्शाते हैं; वे देवताओं को आपसी युद्ध लड़ते हुए, यहाँ तक कि साधारण मनुष्यों से भी पराजित और घायल होते हुए चित्रित करते हैं; ये कृतियाँ हर तरह के अन्य प्रकार के दुष्टता, झूठ और कल्पनाओं से भी भरी हैं। सामान्यतः ईसाई धर्मग्रंथों का अध्ययन सत्य के ज्ञान के माध्यम से मोक्ष की ओर ले जाता है, जबकि यूनानी लेख निश्चित विनाश,

दुष्टता, नीच भावनाओं और त्रुटि की ओर ले जाते हैं। फिर भी, यद्यपि ईसाई धर्मग्रंथ इतने उद्धारकर्ता हैं, मैंने तुरंत उनकी शिक्षाओं का पालन करने का संकल्प नहीं लिया, बल्कि मसीह की शक्ति का व्यवहार में परीक्षण करने का संकल्प लिया, ताकि मैं अपने स्वयं के अनुभव के माध्यम से सत्य जान सकूँ। और जब मैं लकवा से पीड़ित एक आदमी से मिला, तो मैंने उस पर मसीह का नाम लिया, और वह बीमार आदमी तुरंत चंगा हो गया। और मैं, सर्वशक्तिमान एकमात्र परमेश्वर को जानने के बाद, यूनानी भ्रम का त्याग कर दिया और, पवित्र बपतिस्मा ग्रहण करने के बाद, स्वयं को मसीह को समर्पित कर दिया। उस समय से अब तक, मैं मसीह के नाम का केवल एक बार उच्चारण करके, गंभीर बीमारियों और लाइलाज व्याधियों—जिन्हें केवल परमेश्वर ही ठीक कर सकते हैं—को शीघ्रता और आसानी से ठीक करने में सक्षम रहा हूँ। मैंने जो कुछ भी कहा है, उसकी गवाह इस चौक के चारों ओर खड़ी यह पूरी भीड़ है, और कोई यह नहीं कह सकता कि मेरे शब्द झूठे या भ्रामक हैं, क्योंकि मैंने जो कुछ भी कहा है, उसे आप स्वयं व्यवहार में परख सकते हैं।

जब संत ईश्वर मसीह के बारे में ये और कई अन्य बातें कह रहे थे, तो इर्द-गिर्द इकट्ठा भीड़ ने तीसरे घंटे से लेकर सातवें घंटे तक ध्यान से उनकी बात सुनी, और वे उनके और शब्द सुनना चाहते थे; वे तो और भी अधिक यह नहीं चाहते थे कि उन्हें कष्ट झेलते हुए देखें। अंत में, पूरी भीड़ ने, मानो एक ही स्वर में, हर्मोजेनेस को पुकारा:

'आदरणीय न्यायाधीश, अब और कष्ट न उठाइए! क्योंकि हम सभी मसीह की शक्ति से हुए चमत्कारों के साक्षी हैं; उसने एक भी झूठ नहीं बोला है, और उसके मुँह में कोई कपट नहीं है। और यदि आप स्वयं उस समय यहाँ होते, तो आप भी सत्य को जानते और इस बात से आश्वस्त हो जाते कि उस एक के सिवा कोई अन्य देवता की पूजा नहीं की जानी चाहिए, जिसकी मीना उपदेश देता है।"

हर्मोजेनेस, लोगों की निर्भीकता को देखकर और यह महसूस करते हुए कि जो भी मीना का उपदेश सुन रहे थे, वे सभी मसीह की ओर मुड़ रहे थे, उसे यातना देने से डर गया; फिर भी, सत्य का खंडन न कर पाने के कारण, वह लज्जित हुआ और उसे जेल में डालने का आदेश दिया; जबकि वह स्वयं उठकर, उदास मन से अपने कक्षों में चला गया, और लोग संत मीना की स्तुति करते हुए अपने-अपने घरों को लौट गए।

कारागार में बंद रहते हुए, संत ने गाया:

'आपने हमें हमारे शत्रुओं से छुड़ाया और हमें घृणा करने वालों को लज्जित किया; आपने एक दृष्टान्त में मेरा मुँह खोल दिया और प्राचीन काल की भविष्यवाणियाँ कही हैं' (देखें भजन संहिता 43:8, 77:2)।

इस बीच, हर्मोजेनेस, दुख और चिंता से ग्रस्त, न तो रात में कुछ खाता था और न ही सोता था, क्योंकि वह राजा और लोगों दोनों से डरता था: लोगों से, कि वे मीना के कारण हंगामा और अव्यवस्था न मचा दें; और उससे भी अधिक राजा से, कि यदि उसने मीना को दर्दनाक मृत्यु नहीं दी तो वह उससे नाराज़ हो जाएगा। और फिर सुबह, न्यायपीठ पर बैठकर और यातना के उपकरण तैयार करके, उसने संत को बँधा हुआ लाने का आदेश दिया और उससे कहा:

'मुझसे बताओ, हे दुष्ट मनुष्य, किस आधार पर तूने लोगों को राजा की अवज्ञा करने, निर्लज्ज होकर देवताओं का अपमान करने के लिए उकसाने की हिम्मत की, और तूने उन्हें अपने कपटी शब्दों पर ध्यान देने और अपने किसी अजनबी धर्म को अपनाने के लिए क्यों प्रेरित किया?'

इस पर संत ने उत्तर दिया:

'यह मैं नहीं हूँ जो लोगों को दुष्ट राजा की आज्ञा की अवज्ञा करने के लिए उकसाता हूँ, बल्कि ईश्वर का उत्साह है; क्योंकि लोग अपने प्रभु के प्रति उत्साही हैं, जिन्हें उन्होंने चिन्हों और आश्चर्यों के माध्यम से जाना है। और भले ही मैंने लोगों के सामने आपके राजा के देवताओं के बारे में बुरा कहा हो, निस्संदेह यह हर सच्चे और समझदार व्यक्ति के लिए उचित है कि वह उस चीज़ से नापसंद और नफरत करे जिसे वह झूठा देखता और पहचानता है; जबकि सत्य से प्रेम और सम्मान किया जाना चाहिए। और मानवजाति के लिए सत्य, जिसके बारे में कोई संदेह नहीं है, स्वयं मसीह ही हैं!

न्यायाधीश ने उत्तर दिया:

'अरे मूर्ख, मसीह सत्य है, यह केवल तुम्हारी राय है, परन्तु मैं तुम्हें अभी दिखा दूँगा कि क्रूस पर चढ़ाए गए की उपासना नहीं की जानी चाहिए, और कि सब कुछ तुमने कल कहा था: अगर मैं तुम्हारे शरीर का कोई अंग काट दूँ या जला दूँ – तुम जो मसीह की पूजा करते हो, क्या तुम उस कटे या जले अंग को फिर से स्वस्थ कर सकते हो! और अगर तुम ऐसा करने में असमर्थ हो, तो तुम दूसरों को किस तरह का चंगा कर सकते हो?

तब संत ने फिर कहा:

'हे न्यायाधीश, काश आप मुझे मसीह के लिए हर प्रकार की यातनाओं से गुज़रते, और मुझे उम्मीद है कि तब आप भी, इस क्षणिक महिमा को त्यागकर जो अब आपके पास है, उन लोगों में से एक होंगे जिन पर मेरा मसीह राज्य करता है।'

इन शब्दों से क्रोधित होकर, न्यायाधीश ने आदेश दिया कि मीना के पैर काट दिए जाएँ, उसकी पिंडलियों से त्वचा उधेड़ दी जाए, और उसे इस हालत में उसके सामने लाया जाए, ताकि अपने घावों के दर्द से पीड़ित होकर, वह देवताओं के बारे में उसके सवालों का जवाब न दे सके। लेकिन जब उसके पैरों से मांस काट दिया गया, तो संत अपनी नंगी हड्डियों पर खड़े होकर गाए: *'मेरा पाँव सीधे मार्ग पर चलता है; मैं मंडली में प्रभु का धन्यवाद करूँगा'* (भजन संहिता 25:12)।

और यद्यपि उसके पैरों से खून की धाराएँ बह रही थीं, शहीद ने आनंदित मुख और साहस के साथ अपने कष्ट को सहन किया; जबकि उसकी जीभ और भी स्वतंत्र रूप से बोल रही थी, एक सच्चे परमेश्वर की महिमा करते हुए और अधर्मीपन की निंदा करते हुए। यह देखकर न्यायाधीश ने मीना की जीभ काट देने का आदेश दिया; और जब नौकर आदेश को पूरा करने वाले थे, तो संत ने यातना देने वाले से कहा:

'भले ही तुम मेरी जीभ ही नहीं बल्कि मेरी आँखें भी निकाल फेंको, तुम मुझे परास्त नहीं कर सकते, क्योंकि मसीह का वचन मेरे पाँवों के लिए दीपक है (देखें भजन संहिता 118:105); वास्तव में, मुझे आशा है कि मेरी जीभ निकालने के बाद, तुम स्वयं मेरे मसीह की महानता का प्रचार करोगे।'

और वास्तव में, जब मीना की जीभ काट दी गई और उसके मुँह से खून बहने लगा, तो संत अपने साहस में नहीं डगमगाया, बल्कि अपनी दृष्टि से इस बात का संकेत दिया कि वह अपने शरीर के हर अंग से मसीह के लिए पीड़ा सहने को तैयार था।

तब न्यायाधीश ने आदेश दिया कि उसकी आँखें निकाल दी जाएँ, और जब यह किया गया, तो संत ने अपना सिर झुका लिया, इस प्रकार कम से कम इस तरह से परमेश्वर के प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त करने का प्रयास किया कि उन्होंने उसे अपनी खातिर ऐसे यातनाएँ सहने के योग्य समझा। और एक बार फिर उसे जेल में डाल दिया गया, जबकि न्यायाधीश चौक से चला गया, यह कहते हुए:

'कल मैं उसका शरीर पक्षियों को नोचने के लिए दे दूँगा।'

संत अपने घावों से थके हुए और अपने दुखों से मुश्किल से जीवित, कालकोठरी में पड़े थे। लेकिन रात में, तीसरे पहर, बिजली की चमक की तरह, अचानक एक रोशनी ने कालकोठरी को प्रकाशित कर दिया, और स्वयं प्रभु मसीह प्रकट हुए। जहाँ शहीद लेटे थे, उस स्थान पर आकर, उन्होंने पहले संत के हृदय को आनंद और साहस से भर दिया; फिर उन्होंने उनकी जीभ को ठीक कर दिया, उनकी आँखें खोल दीं, उनके पैरों को ठीक कर दिया, और, मानो, उन्हें उठाकर मृतकों में से जीवित कर दिया, उन्हें पूर्ण और अक्षुण्ण बना दिया। फिर उन्होंने शहीद से कहा:

'सुन, मीना! मैं यीशु मसीह हूँ, जिसके लिए तू कष्ट सह रहा है। मैं तुझसे मिलने आया हूँ, यद्यपि मैं पहले भी तुझसे दूर नहीं था, तेरे कर्म पर नज़र रखता था और न्यायाधीशों तथा अधिकारियों से मेरे प्रति तेरे प्रेम को स्वीकार करवाने का इंतज़ार कर रहा था; परन्तु चूँकि उन्होंने इसे पहले ही स्वीकार कर लिया है, अब से मैं खुले तौर पर तेरी रक्षा करूँगा। जहाँ तक हर्मोजेनेस की बात है, जो मुझसे शत्रुता रखता है और मेरे नाम से प्रेम नहीं करता, कल तुम उसे नम्र और तुमसे विनती करते हुए देखोगे, और जल्द ही वह तपस्या में भी तुम्हारा साथी होगा: क्योंकि वह तुम्हारे साथ कष्ट सहन करेगा, और साथ ही तुम मुकुट प्राप्त करोगे, क्योंकि यह मेरी भलाई के अनुकूल नहीं है कि उसके अज्ञान के कारण उसके अनेक अच्छे कर्म नष्ट हो जाएँ।

यह कहने के बाद, उद्धारकर्ता ने मीना पर अपनी पवित्र आत्मा से श्वास फूँका और उसे अकथनीय आनंद से भर दिया।

इस बीच, हर्मोजेनेस, अपने बिस्तर पर लेटे हुए, संत मीना की उत्पत्ति और मातृभूमि, उनकी बुद्धि और साहस, और उनकी पूर्व महिमा के बारे में विचार कर रहा था, जब वह राजा के साथ महान शक्ति रखता था और कई लोगों को राजा की कृपा प्राप्त करने के लिए मध्यस्थता करता था। जब वह इन सब पर विचार कर रहा था, तो उसने ऐसे व्यक्ति को यातना देने के लिए खुद को नीच समझा; और, यह मानते हुए कि वह व्यक्ति अपनी गंभीर पीड़ा से पहले ही मर चुका है, वह उसके लिए रोया और उसके शरीर को सम्मान के साथ दफनाने का संकल्प लिया।

जब दिन चढ़ा और अलेक्जेंड्रिया शहर भर से लोग इकट्ठा हो गए, तो हरमोजेनेस ने एक बार फिर न्यायाधीश के रूप में अपनी सीट संभाली और अपने सामने खड़े सैनिकों को आदेश दिया कि वे शहीद के शरीर को कालकोठरी से बाहर

निकालकर चौक में ले जाएँ। रवाना होते ही, सैनिकों ने पाया कि वह कालकोठरी, जो पहले बहुत अंधेरी थी, स्वर्गीय प्रकाश से भर गई थी; और संत के पास उन्होंने दो सुंदर और तेजस्वी पुरुषों को देखा, जो योद्धाओं जैसे दिख रहे थे, और दुश्मनों का बचाव करने तथा उन्हें पीछे हटाने के लिए तैयार थे; उन्होंने संत को न केवल जीवित पाया, बल्कि वह पूरी तरह से स्वस्थ भी थे, उनकी दृष्टि स्पष्ट थी, वे अच्छी तरह बोल रहे थे और गा रहे थे: *'यद्यपि मैं मृत्यु की छाया की घाटी में से भी गुज़रूँ तो भी मैं किसी बुराई से न डरूँगा, क्योंकि तू मेरे साथ है'* (भजन संहिता 22:4)।

अपनी हैरानी में, वे चुपचाप खड़े रहे, मानो बोल ही न पा रहे हों; यह पूरी तरह से यकीन कर लेने के बाद कि वे कोई भूत-प्रेत नहीं बल्कि ईश्वर की शक्ति से रची गई स्वयं वास्तविकता को देख रहे थे, उन्होंने कहा:

'महान है ईसाई परमेश्वर!'

और वे तुरंत मसीह पर विश्वास कर गए और उन्हें भेजने वाले के पास वापस नहीं गए। लेकिन न्यायाधीश, उन सैनिकों के लिए लोगों के साथ बहुत देर तक इंतजार करने के बाद, बेचैन हो गया और और भी सैनिक भेज दिए, उन्हें शहीद के शरीर को लाने का आदेश देते हुए, क्योंकि वह सोचता था कि वह पहले ही मर चुका है। लेकिन ये भी, पहले समूह की ही तरह वही दृश्य देखने के बाद, मसीह में विश्वास करने लगे और उनके साथ मिल गए। संत ने सैनिकों से यह जानने के बाद कि पूरा शहर चौक में इकट्ठा हो गया है और न्यायाधीश पहले से ही पीठ पर बैठ चुके हैं, स्वयं न्यायाधीश और लोगों के पास गए, साथ में उन सैनिकों के साथ जो मसीह में विश्वास कर चुके थे। जैसे ही वे चौक के पास पहुँचे, उन्होंने गाना शुरू कर दिया:

'यद्यपि सेना मेरी ओर डेरा डाले, तौभी मेरा हृदय न डरेगा' (भजन संहिता 26:3)। और तुरंत सभी ने अपनी आँखें उस पर टिका दीं और यह देखकर चकित हो गए कि वह जीवित और कुशल था, चल रहा था, देख रहा था और बोल रहा था, जबकि कल ही वह आधा मृत, अंधा और बोलने में असमर्थ था। और वे सब एक स्वर में चिल्ला उठे:

– मसीह की शक्ति महान है, जो स्वयं मृत्यु पर भी विजय प्राप्त करती है! धन्य है तू, अलेक्जेंड्रिया नगर, क्योंकि इस एक मनुष्य के द्वारा तूने दुष्टात्माओं की छल को पहचाना और मसीह की सच्चाई को जाना है: निश्चय ही, यह परमेश्वर की शक्ति और सामर्थ्य है! हे एक सच्चे परमेश्वर और उद्धारकर्ता के प्रचारक और तपस्वी, आनन्द मना! आनन्द मना!

न्यायाधीश इस नए और अद्भुत घटनाक्रम से और भी अधिक चकित हो गया, और इस डर से कि लोग उसके खिलाफ़ हो सकते हैं, वह चौक छोड़कर जाना चाहता था। लेकिन लोगों ने उसकी ओर चिल्लाकर कहा:

'जाएँ नहीं, माननीय न्यायाधीश, और इस शहर को ऐसी खुशी से वंचित न करें, कि आज यह एक सच्चे ईश्वर को जान सके और सत्य के प्रकाश की ओर धर्म के मार्ग पर चल सके।'

तब न्यायाधीश ने भीड़ को चुप रहने का इशारा किया और संत को अपने पास आने का आदेश दिया, क्योंकि वह जो देख रहा था उसे अभी भी एक धोखा ही मानता था, क्योंकि उसके भीतर मसीह का कोई ज्ञान नहीं था। उसने संत को ध्यान से देखा और यह जानने के लिए उसे अपने हाथों से छुआ कि क्या यह वास्तव में मीना ही था और क्या वह सचमुच अपने घावों से ठीक हो गया था। यह सब वास्तव में सच पाकर, हरमोजेनेस चकित रह गया और विस्मय से चुप हो गया। फिर, बड़ी मुश्किल से अपने आप को संभालते हुए, उसने कहा:

'मुझसे कहो, हे मनुष्य, ये अद्भुत और अप्रत्याशित घटनाएँ जो घट रही हैं, वे क्या हैं? क्या केवल तुम्हारा ईश्वर ही ऐसा कर सकता है, या कोई अन्य देवता भी ऐसा कर सकते हैं?'

जवाब में, संत ने पहले शाश्वत ईश्वर के सिद्धांत को विस्तार से बताया, फिर मनुष्य की सृष्टि और उसके पतन के बारे में बात की, जिसके बाद मसीह के अवतार, मानव जाति की मुक्ति, और क्रूस पर उनकी स्वेच्छा से हुई पीड़ा का वर्णन किया; और अंत में, अपनी बात समाप्त करते हुए, उन्होंने कहा:

'ईश्वर, अच्छा और दयालु होने के कारण, मानव जाति के उद्धार के लिए पृथ्वी पर अवतरित हुए, और किसी के भी विनाश या शाश्वत आशीर्वादों से वंचित होने की कामना नहीं करते। जैसे एक माँ अपने बेटे की देखभाल करती है, और उसके कारण होने वाले दुख और शिकायतों को सहन करती है, अपने लिए उसके प्रति स्वाभाविक प्रेम से अभिभूत हो जाती है, और यदि वह कुछ अनुचित करता है तो उससे नाराज़ नहीं होती, क्योंकि वह ऐसा अज्ञानता में और किसी दुर्भावना के बिना करता है, और इसलिए धैर्यपूर्वक उसकी वयस्कता और परिपक्वता का इंतजार करती है, यह चाहकर कि वह एक पूर्ण पुरुष बने, जो लोगों के बीच सम्मानित और प्रतिष्ठित हो; इसी प्रकार हमारे परमेश्वर, जिन्होंने हमें बनाया है, हमारी परवाह करते हैं और एक प्रेममय पिता की तरह, अपनी ही भलाई से अभिभूत होकर, हम जो अज्ञानता में सभी

बुराइयाँ करते हैं, उन्हें सहन करते हैं। वह इससे अधिक कुछ नहीं चाहता कि हम उसकी महिमा के वारिस बनें और अपनी आध्यात्मिक आयु के अनुरूप पूर्ण परिपक्वता तक बढ़ें। फिर भी, जब वह देखता है कि तुम शैतान द्वारा बहकाए जा रहे हो, सत्य के ज्ञान को प्राप्त करने में असफल हो रहे हो, और अपनी मूर्तिपूजा और झूठे देवताओं की उपासना के द्वारा उसके क्रोध को भड़का रहे हो, तो उसे तुम्हारे विनाश पर दुख होता है। साथ ही, आप सभी को अपनी संतान के रूप में संजोते हुए, परमेश्वर ने अब मुझसे आपको डांटा है और आपके भ्रम तथा आपके मूर्खतापूर्ण उत्साह को वश में कर लिया है, जैसा कि जो कोई भी मुझे देखता है, वह स्वीकार करता है। ताकि आप में से प्रत्येक यह पहचान सके कि मुझ में मसीह की सामर्थ्य है, मैं, एक ऐसा मनुष्य जो पहले ही वृद्धावस्था को प्राप्त कर चुका है, जो कल अपंग हो गया था, सारी शारीरिक शक्ति से वंचित कर दिया गया था और जैसे कि पहले ही मर चुका हो, जेल में डाल दिया गया था—यहाँ मैं अब आप के सामने पूरी तरह से सही-सलामत खड़ा हूँ, जैसे कि आज फिर से जन्मा हो और इस संसार में पहले से भी अधिक स्वस्थ होकर आया हो। और यदि कोई यह जानना चाहता है कि सच्चा परमेश्वर कौन है, तो वे यह विश्वास करें कि वही है जिसने मुझे मेरी वाणी, मेरी दृष्टि, मेरे पैर, और पूर्ण स्वास्थ्य लौटाया है; वे उसी पर विश्वास करें जिसने आरंभ से इस संसार और इसमें जो कुछ भी है, उसे बनाया, और सभी प्राणियों को जीवन प्रदान किया। हे न्यायाधीश, यह भी समझो, और उस पर अज्ञानी न रहो जो आपकी परवाह करता है और आपके धर्म-परिवर्तन की प्रतीक्षा कर रहा है। आपको भी मसीह की ओर मुड़ना चाहिए, जैसा कि मुझे स्वयं मसीह ने बताया है। तो आनंद मनाओ, कि तुम सर्व-सत्कार्यशील और शाश्वत राजा के पास पहुँचोगे और मेरे साथ, शहीद के संघर्ष में भाग लोगे!

न्यायाधीश, जो एक अच्छे चरित्र का व्यक्ति था और जिसकी आत्मा अनुग्रह के लिए ग्रहणशील थी, ने दिव्य प्रकाश द्वारा अपने हृदय की आँखों को छू लिए जाने के बाद, संत के शब्दों और घटित चमत्कार, दोनों के प्रभाव से, सच्चे ईश्वर को जानना शुरू कर दिया। अब उसे वह दर्शन याद आया जो उसने जहाज़ पर यात्रा करते समय देखा था, और उसने महसूस किया कि ईश्वर उसे अपने वफादार सेवकों और मित्रों की संगति में लाना चाहते थे। इसलिए, एक ऐसे व्यक्ति के रूप में जिसने कोई बड़ा उपहार प्राप्त किया हो, वह आनंदित हुआ और केवल यह सोच रहा था कि इतने लंबे समय तक दुष्टता में रहने के बाद वह ईश्वर की दया का पात्र कैसे बन सकता है।

जब वह इस पर विचार कर रहा था, तो दिव्य अनुग्रह ने, उसे सत्य की ओर बुलाते हुए, उसे एक अद्भुत दर्शन प्रदान किया: उसने, अपने दोस्तों के साथ, सेंट मीना के पास दो पुरुषों को खड़ा देखा, जो बिजली की तरह चमक रहे थे, जिनके पंख थे, और जो शहीद के सिर के ऊपर एक मुकुट पकड़े हुए थे। उन्हें देखकर वह बहुत डर गया और उसने अपने साथ मौजूद दोस्तों से पूछना शुरू किया कि क्या वे भी वही देख सकते हैं जो वह देख रहा था; उन्होंने जवाब दिया कि वे भी वही देख रहे थे। फिर हर्मोजेनेस, अपनी कुर्सी से उठकर और अपने हाथ से संत की ओर इशारा करते हुए, लोगों से जोर से चिल्लाया:

'सचमुच, यह सच्चे ईश्वर का सेवक है, और वह ईश्वर महान है जिसे वह हमें पूजना सिखाता है; क्योंकि वह चमत्कारिक रूप से स्वर्ग से अपने सेवकों की सहायता भेजता है, उनकी रक्षा करता है और उन्हें अपने विरोधियों पर विजय प्राप्त करने में सक्षम बनाता है।' मैं आज तक एक मूर्ख रहा हूँ, जो खुद को राक्षसों की सेवा में लगाता रहा और तुम्हें, जो मसीह में सही ढंग से विश्वास करना चाहते हो, उन्हें भी उन्हीं की ओर ले जाने का प्रयास करता रहा।

यह कहकर, वह शहीद के चरणों में गिरना चाहता था, लेकिन, दिव्य रूपों को देखकर, वह पास आने से डर गया। जब स्वर्गदूत अदृश्य हो गए, तो हरमोजेनेस संत मीना के पास गया, उनके पवित्र चरणों को गले लगा लिया और उन्हें चूमने लगा, यह कहते हुए:

'मेरे लिए प्रार्थना करो, हे ईश्वर के सच्चे सेवक; प्रार्थना करो, मैं तुमसे विनती करता हूँ, उसी सत्य के नाम पर जिसे तुम प्रचार करते हो; प्रार्थना करो कि मैं भी, यद्यपि अयोग्य हूँ, तुम्हारे ईश्वर का सेवक बनने के योग्य समझा जाऊँ – और यदि मैं उनकी कृपा के योग्य समझा गया, तो मैं अपनी पूर्व की भूल और मूर्खता पर पश्चाताप करना शुरू कर दूँगा।'

संत ने उत्तर दिया:

'हौसला रखो, हे न्यायाधीश, और ईश्वर की दया पर संदेह मत करो। क्योंकि मैं जानता हूँ कि वह कृपालु और दयालु है, और मुझे आशा है कि वह न केवल आपको स्वीकार करेगा, बल्कि आपके नाम को जीवन की पुस्तक ( ) में भी अंकित करेगा; आपके प्रति अपने दृढ़ विश्वास को स्वीकार करते हुए, उसने मुझे आपके बारे में यह प्रकट किया है कि वह चाहता है कि आप भी शहादत के माध्यम से उसके दिव्य नाम का महिमामंडन करें।

यह कहने के बाद, संत को याद आया कि लोग पूरे दिन से भूखे थे; क्योंकि जो कुछ हो रहा था उसे देखकर और उस पर अचंभित होकर हर कोई भोजन के बारे में भूल गया था, इसलिए कोई भी उस अद्भुत चमत्कार को देखकर और मसीह के स्वीकारकर्ता के मधुर वचनों को सुनते हुए चौक छोड़ना नहीं चाहता था। यह महसूस करते हुए, संत स्वयं चौक से चले गए और लोगों को तितर-बितर होने का आदेश दिया, यह वादा करते हुए कि वे सुबह चौक पर लौटेंगे ताकि पवित्र विश्वास के बारे में और भी विस्तार से बात कर सकें और उन्हें यह सिखा सकें कि उन्हें क्या करना चाहिए। हालाँकि, हरमोगेनेस संत मीना के पास से नहीं गए, बल्कि उन्होंने पूरी रात उनके साथ बिताई, और सच्चे ईश्वर के ज्ञान और ईसाई विश्वास के रहस्यों में शिक्षित हुए।

सुबह, अलेक्जेंड्रिया से इतनी बड़ी भीड़ चौक में इकट्ठी हो गई थी कि पूरा चौक भी उन्हें समा नहीं सका। जब संत मीना और हरमोगेनेस चौक के पास पहुँचे, तो उनका स्वागत करने के लिए निकली यूनानियों की एक विशाल भीड़ एक स्वर में चिल्लाई:

'हम सभी उस ईश्वर में विश्वास करते हैं जिसकी आप शिक्षा देते हैं; हम केवल उसी की सेवा करने का संकल्प लेते हैं, और हम अपनी सभी पूर्व गलतियों का परित्याग करते हैं।'

जवाब में, संत ने परमेश्वर का धन्यवाद किया, जो सबसे कठोर मूर्तिपूजकों को भी अपनी ओर मोड़ता है और खोए हुए लोगों को सत्य के मार्ग पर ले जाता है। उन्होंने परमेश्वर की ओर उनके त्वरित रूप से मुड़ने की प्रशंसा की और उन्हें दैवीय सलाह से सांत्वना दी, उन्हें परमेश्वर की भलाई में अपनी आशा रखने की शिक्षा दी, जो उन्हें पवित्र बपतिस्मा के माध्यम से प्रदान की जाएगी। चौक में प्रवेश कर वहाँ खड़े होकर, संत ने पूरी भीड़ को संबोधित करते हुए कहा:

'ईश्वर अपनी निशानी के द्वारा तुम्हें पूर्ण करें और तुम्हें हर अच्छे कार्य के लिए तत्पर बनाएं!'

इसके बाद, उन्होंने उनमें से प्रत्येक को ईश्वर के बारे में पूछने और जो कुछ भी वे जानना चाहें, सीखने का निर्देश दिया। न्यायाधीश ने सभी लोगों के साथ मिलकर उत्तर दिया: 'हे परमेश्वर के परम पवित्र पुरुष! हमें आपके ईश्वर के बारे में कोई संदेह नहीं है। हम सब स्पष्ट रूप से उन्हें जान गए हैं और इसलिए आप जो कुछ भी कहा है, उस पर विश्वास करते हैं; हम केवल एक ही बात का अनुरोध करते हैं: बपतिस्मा के माध्यम से ईश्वर के साथ एक हो जाना।"

लेकिन कुछ लोगों ने, हर्मोजेनेस को मसीह की ओर मुड़ते हुए देखकर, यह जोड़ दिया:

'सचमुच, परमेश्वर के यहाँ कोई पक्षपात नहीं है, क्योंकि उन्होंने एक मूर्तिपूजक को भी स्वयं को जानने की अनुमति दी है और गरीबों के प्रति उसकी महान उदारता के कारण उस पर दया दिखाई है।'

कुछ ही समय में, आसपास के क्षेत्रों से और deserts[8751] से बिशप अलेक्जेंड्रिया पहुँचे—कुछ अपने आध्यात्मिक झुंड से मिलने, तो कुछ शहीदों के कारनामों को देखने के लिए—और उनमें से लगभग तीस एकत्रित हुए; फिर, पानी तैयार करने के बाद, संत मीना ने हरमोजेनेस को बिशपों के सामने अपना सिर झुकाने का आदेश दिया। और जैसे ही उन्होंने उसके सिर पर पानी डाला, उन्होंने कहा:

[8752]'हर्मोजेनेस पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम पर पुनर्जन्म का स्नान ग्रहण करता है।'

इस प्रकार न्यायाधीश का सभी लोगों के सामने बपतिस्मा हुआ, और सभी लोगों ने मसीह परमेश्वर की महिमा की। लोगों की एक बड़ी भीड़ का भी बपतिस्मा हुआ, और पूरे शहर में बहुत आनंद हुआ, क्योंकि विश्वासियों ने अपने प्रभु परमेश्वर में आनंद मनाया।

कुछ दिनों बाद, हरमोजेनेस को अलेक्जेंड्रिया का बिशप नियुक्त किया गया – उसी समय, उन्होंने अपनी सारी संपत्ति जरूरतमंदों में बाँट दी। अपने संपूर्ण आध्यात्मिक झुंड के साथ, उन्होंने शैतान के खिलाफ एक दृढ़ संघर्ष शुरू

[8751] उस समय, उत्पीड़न के कारण, चर्च के बिशप अपनी ज़रूरतों के आधार पर हमेशा अपने झुंड के बीच नहीं रहते थे; बल्कि, कभी-कभी, उनके अपने भले के लिए—ताकि उन्हें उनकी आध्यात्मिक मार्गदर्शन से वंचित न करना पड़े—वे रेगिस्तान में शरण लेते थे, और केवल कभी-कभार ही अपने झुंड को सुदृढ़ और प्रोत्साहित करने के लिए प्रकट होते थे। लेकिन जब अपने उदाहरण से झुंड की डगमगाती आत्मा को मजबूत करने की आवश्यकता होती थी, तो पवित्र पिताओं ने अपने उत्पीड़कों के अत्याचारों को सहन किया।

[8752] पवित्र बपतिस्मा का यह रूप (डुबोने के बजाय, डालकर) प्रारंभिक चर्च में प्रथागत नहीं था; इसका उपयोग (और आज भी किया जाता है) केवल उन असाधारण मामलों में किया जाता था जहाँ पानी की आवश्यक मात्रा प्राप्त नहीं की जा सकती, विशेष रूप से बड़ी संख्या में लोगों के लिए, जैसा कि वर्तमान मामले में है, और अन्य समान चरम परिस्थितियों में। – 'पुनर्जन्म का स्नान प्राप्त करता है' यह अभिव्यक्ति 'बपतिस्मा लेता है' इस सामान्य अभिव्यक्ति के बिल्कुल समान है। यह प्रेरित पौलुस के पत्र (तीतुस 3:5) से लिया गया है और यह इस विचार को व्यक्त करता है कि बपतिस्मा का जल, शरीर को धोने के साथ-साथ, एक व्यक्ति को आध्यात्मिक रूप से भी पुनर्जीवित करता है, उनके पापों को धो देता है, ठीक वैसे ही जैसे एक शारीरिक स्नान शारीरिक अशुद्धि को धो देता है।

कयिा: थोड़े ही समय में उन्होंने मूर्तपिूजक मंदरिों को धूल चटा दी, मूर्तयिों को नष्ट कर दयिा, और उनकी जगह चर्चों की स्थापना की और अनगनित यूनानयिों का बपतस्मिा दयिा, उन्हें मसीह में परविर्तति कयिा। मसीह के नाम का उच्चारण करके और उनके पवत्रि क्रूस का चन्हि बनाकर, उन्होंने हर तरह की बीमारयिों को ठीक कयिा और लोगों से अशुद्ध आत्माओं को भगाया; उन्होंने सभी लोगों को धार्मकिता और पवत्रिता, नम्रता और प्रेम, वनिम्रता और अन्य सद्गुणों की शकि्षा दी, और अपने जीवन के तरीके से अपने झुंड के लिए एक आदर्श प्रस्तुत कयिा । जब यह सब हो रहा था, तो शाही सकि्लाइट[8753] के सदस्यों में से एक, रुस्टकिस नाम का एक कठोर-हृदय ग्रीक, राजा के पास गया और उसे अलेक्जेंड्रयिा में हुई सभी बातों के बारे में बताया: कि कैसे एपार्क हरमोजेनेस, मीना की शकि्षाओं का अनुसरण करते हुए, ईसाई बन गया था, और कैसे अलेक्जेंड्रयिा की पूरी आबादी ने हरमोजेनेस और मीना का अनुसरण करते हुए, उसी वशि्वास को अपना लयिा था। यह सुनकर राजा मैक्समिनिस न केवल हरमोजेनेस और मीना पर, बल्कि पूरे अलेक्जेंड्रयिा शहर पर भी बहुत क्रोधति हो गए; वह तुरंत 10,000 सशस्त्र सैनकिों को साथ लेकर अलेक्जेंड्रयिा के लिए रवाना हो गए। शहर में पहुँचने पर, उसने तुरंत मीना और हरमोजेनेस को गरिफ्तार कर लयिा, और जैसे ही मुकदमे के लिए जगह तैयार हो गई, उसने शहर के सभी नविासयिों को चौक में इकट्ठा होने का आदेश दयिा, जबकि वह स्वयं न्यायाधीश के रूप में बैठ गया। जब संतों को उसके सामने नर्णिय के लिए लाया गया—और, इसके अलावा, उसके आदेश से उन्हें नग्न कर दयिा गया—तो यातना देने वाले ने, उन्हें देखकर, ज़ोर से चल्लिाया:

'हे देवताओं! यह क्या हो रहा है—कि जिनिका हमने वशिेष सम्मान कयिा था, उन्होंने स्वेच्छा से उसे ठुकरा दयिा है, और इसके बजाय एक तुच्छ और अयोग्य जीवन चुना है, और खुद को, मानो, कसिी तरह के मसखरों जैसा बना लयिा है?'

तब उसने हर्मोजेनेस से कहना शुरू कयिा:

'मुझसे कहो, नीच, मैंने तुम्हें इस सारी भूमि और समुद्र पर अधकिार क्यों सौंपा, अगर इसलिए नहीं कि तुम स्वयं हमारे देवताओं और हमसे वफादार रहो, और मनिस को, जो भूल में भटक गया था, हमारे पूर्वजों के धर्म में वापस लाओ? फरि भी तुम न केवल उसे उसकी भूल से वापस लाने में असफल रहे, बल्कि तुम स्वयं ही उसका साथी बन गए।'

जबकि अहंकारी राजा क्रोध और प्रतशिोध की आग में जल रहा था, स्वर्ग का सर्वशक्तमिान राजा दयालुता से अपने सेवकों पर दृष्टि डाल रहा था; क्योंकि अचानक स्वर्गदूत उनके सामने प्रकट हुए, जन्होंने उनके हृदयों में साहस भर दयिा, उन्हें कष्ट सहने के लिए तैयार कयिा, और उन्हें राजा के क्रोध से न डरने का आदेश दयिा, क्योंकि अंतमि वजिय उनकी होगी। तब हरमोजेनेस ने राजा से उत्तर दयिा:

– हे राजा! यदि आप मुझसे धैर्यपूर्वक सुनने के लिए तैयार हैं, तो मैं आपको समझाऊंगा कि मैंने अपनी इच्छा से उस चीज़ को क्यों ठुकरा दयिा है जसिे आप समृद्धि का शखिर समझते हैं, और इसके बजाय यह क्यों चुना है कि मैं, मानो, एक मूर्ख भखिारी बन जाऊं, जसि पर अपमान कयिा जाता है और जसिे सम्मान से वंचति कर दयिा गया है—अर्थात्, एक ईसाई बन जाऊं और मसीह के लिए आग में कूदने को तैयार रहूँ, तलवार, जंगली जानवरों के नखों का सामना, और यहाँ तक कि जीवन से भी अधकि उसके लिए मृत्यु की कामना – मैं यह आपको बताऊँगा, लेकनि केवल तभी जब आप सुनेंगे।

राजा ने उत्तर दयिा:

'यदि तुम मुझे सत्य बताओगे, तो मैं तुम्हें सुनूँगा, परन्तु सावधान रहना कि सत्य के स्थान पर झूठ न बोलना।'

और हर्मोजेनेस ने उसके सामने इस प्रकार कहना शुरू कयिा:

'हे राजा! मुझे ईसाइयों और उनके उपदेशों का उत्पीड़न करने की प्रबल इच्छा थी, जबकि मैं मूर्तपिूजक देवताओं का सम्मान करता था और आपकी इच्छा का पालन करता था – आप यह जानते हैं, क्योंकि आपने स्वयं मुझे इस शहर में भेजा था ताकि मैं प्रलोभनों या धमकयिों के द्वारा, मनि् द वाइज़ को प्राचीन धर्म में वापस ला सकूँ। इस उद्देश्य के लिए, आपने मुझे यहाँ इतनी बड़ी सैन्य शक्ति के साथ भेजा कि अब आप स्वयं भी एक छोटी सी सेना के साथ आए हैं। इस शहर के सभी नविासी आपके सामने गवाही दें कि मैं शुरू में कैसा था, जब मैंने चापलूसी, धमकयिों और हर दूसरे साधन के माध्यम से मीना को ईसाई धर्म से हटाने की कोशशि की; मैं, अपनी मूर्खता में, यह नहीं समझ पाया कि मैं एक नडिर और साहसी व्यक्ति से मलिा था, जो हमेशा जवाब देने के लिए तैयार रहता था और जसिका हृदय मसीह का त्याग करने के बजाय यातनाओं और अत्यंत कष्टदायी पीड़ा को सहन करना पसंद करता था। जब मैंने देखा कि वह देवताओं की पूजा करने से इनकार कर रहा था, न तो उसे सत्ता का डर था और न ही यातनाओं का, और मेरी नसीहतों पर कोई ध्यान नहीं दे रहा था,

[8753] सकि्लाइट एक सैन्य और नागरकि सरकार थी जसिमें सबसे महत्वपूर्ण और प्रभावशाली सलाहकार और गणमान्य व्यक्ति शामलि थे।

तो मैंने उसे यातनाएँ दीं, क्योंकि उसका व्यवहार मुझे देवताओं का अपमान लगा, और यह और भी अधिक कष्टप्रद था क्योंकि लोग उसके प्रति सहानुभूति रखते थे, और विश्वास के बारे में उसकी सभी दलीलों से सहमत थे।

सबसे पहले मैंने आदेश दिया कि उसके पैरों को टखनों से हड्डी तक काट दिया जाए, फिर उसकी जीभ निकाल दी जाए और उसकी आँखें निकाल ली जाएँ; और जब वह अपने घावों से कमजोर हो गया था और मुश्किल से साँस ले रहा था, तो मैंने उसे जेल में डालने का आदेश दिया। सच कहूँ तो, मुझे अपने दिल में उसके लिए एक साथी नागरिक की तरह गहरा दुख हुआ कि इतना बुद्धिमान और वाक्पटु व्यक्ति नष्ट हो गया। सुबह मैंने उसके शरीर को बाहर ले जाने का आदेश दिया, यह मानकर कि वह पहले ही मर चुका था। और अचानक मैंने उसे जीवित देखा - मैंने देखा कि वह अपनी मर्जी से मेरी ओर चल रहा था, अपनी आँखों से मुझे देख रहा था और अपनी जीभ से बोल रहा था। उसे देखकर, मैंने सोचा कि वह एक भूत है, और इसलिए मैंने अपनी आँखें बंद कर लीं ताकि मैं देवताओं का शत्रु रहे उस व्यक्ति की प्रतिमा भी न देखूँ। लेकिन जब मैं बाद में अपनी सीट से उठा और, दूसरों के साथ मिलकर, उस प्रेत को करीब से परखने लगा—सिर्फ अपनी आँखों पर भरोसा न करके, बल्कि उसे अपने हाथों से छूकर—तो मुझे यकीन हो गया कि वह वास्तव में ही मीना था। और मैं तुरंत ही सत्य से अभिभूत हो गया, और मेरे अंतर्मन को मेरे अचूक साक्षी के रूप में पाकर। इसके अलावा, हे राजा, वह यहाँ आपके सामने खड़ा है! यहाँ वे लोग हैं जिन्होंने उसके कष्ट को देखा: उन्हें आपके सामने गवाही देने दो, या जैसा आप चाहें स्वयं पता लगा लें: कि क्या यह वास्तव में एक चमत्कार है। तो मुझे बताइए—मैं आपसे आपके देवताओं की शपथ लेकर विनती करता हूँ—यदि कोई, जैसा मैंने देखा, मसीह को एक आदमी को इतनी अचानक ठीक करते और जीवित करते हुए और ऐसे चमत्कार में अपनी शक्ति प्रकट करते हुए देखता, तो क्या वे यह नहीं समझते कि वही एकमात्र सच्चे ईश्वर हैं? वह पहले मनुष्य के एकमात्र सृष्टिकर्ता हैं, और उन्होंने उन लोगों से स्वर्ग में शाश्वत राज्य का वादा किया है जो उन पर विश्वास करते हैं। अगर कोई यह सब देखे और इसे समझ जाए, तो क्या वे सचमुच ऐसे ईश्वर से मुंह मोड़ लेंगे, और खुद को उसका मित्र कहने से इनकार कर देंगे? और क्या वे सचमुच ऐसी कृपामयी शक्ति से मुंह मोड़ लेंगे, जो उन्हें स्वयं ईश्वर की तरह, अंधों को दृष्टि देने, लंगड़ों को चंगा करने में सक्षम बनाती है, पहाड़ों को हिलाना, मृतकों को जीवित करना – और किसी भी सृजित वस्तु को एक ही शब्द या उनके हाथ की एक ही लहर से हिलाना – और साथ ही शाश्वत आनंद और स्वर्ग के राज्य की आशा रखना? निश्चय ही, ऐसा कौन होगा जो ऐसे ईश्वर को त्यागेगा और ऐसी आनंदमयता को ठुकराएगा, और इसके बजाय आपके देवताओं की पूजा करना और एक शासक तथा राजा बनना पसंद करेगा? आप ऐसे व्यक्ति के बारे में क्या सोचेंगे? क्या वह आपको एक पागल और एक अज्ञानी नहीं लगेगा, जिसे इस बात की कोई अवधारणा ही नहीं है कि वास्तव में अच्छा और सच्चा लाभ क्या होता है? इसीलिए, हे राजा, मैंने सभी भ्रम, तुम्हारी कथाओं और तुम्हारे नीच देवताओं, और सभी क्षणिक, व्यर्थ आशीर्वादों को अस्वीकार कर दिया है, और एकमात्र सच्चे ईश्वर की ओर मुड़ गया हूँ, और तुम्हारी दृष्टि में एक पागल समझा जाना—जैसा कि तुमने स्वयं मुझे कहा है—और दुर्भाग्य सहना पसंद किया है, बजाय इसके कि मैं तुम्हारे बीच बुद्धिमान और चुना हुआ समझा जाऊँ। तो, अब तुमने हमारे बारे में सब कुछ सुन लिया है। यदि, फिर भी, तुम मसीह की शक्ति को समझना चाहते हो, तो इसे तुरंत आज़माओ: हमारे लिए कोई अत्यंत कष्टदायक यातना रचो; लेकिन यदि आप ऐसा कोई उपाय नहीं सोच सकते, तो मुझे स्वयं आपको विभिन्न प्रकार की यातनाओं के बारे में बताने और उन्हें आपकी स्मृति में ताज़ा करने की अनुमति दें: क्योंकि मैं काफी लंबे समय तक एक न्यायाधीश और यातनाकर्ता रहा हूँ, और इसलिए मैं इस मामले में अत्यंत निपुण हूँ। हमें खाए जाने के लिए जानवरों के सामने फेंक दें, हमें पहाड़ से खाई में फेंक दें, हमें समुद्र में फेंक दो, हमें ज़िंदा दफ़ना दो, हमें तलवार से सिर कलम कर दो, हमें आग में जला दो; हमारे शरीर के हर एक अंग के लिए एक उपयुक्त यातना रचो, क्योंकि मैंने भी, जब मैं दुष्टता से अंधा हो गया था, तो अपनी मार्गदर्शक, संत मीना के साथ ये सब कुछ किया था, जिन्होंने मुझे सत्य के ज्ञान की ओर ले जाया था।

जब संत हरमोजेनेस राजा के सामने इतनी निडरता से बोल रहे थे, तो लोग उनके साहसी और बहादुर भाषण से चकित हो गए और उन्होंने इस बात की पुष्टि की कि संत मीना के साथ जो चमत्कार हुआ था, वह वास्तव में सभी की आँखों के सामने हुआ था। हालाँकि, राजा हरमोजेनेस को जवाब में एक भी शब्द नहीं बोल सका। हालाँकि यह महसूस करते हुए कि यदि वह हरमोगेनेस के साथ किसी लंबी बहस में पड़ता, तो वह केवल अपमानित होता, जबकि देवता अपमानित होते, उसने आदेश दिया कि उसकी बाहों को कंधों से और उसके पैरों को घुटनों से तुरंत काट दिया जाए, और उन्हें शहीद की आँखों के सामने आग में फेंक दिया जाए, ताकि वह खुद देख सके कि उसके शरीर के अंग कैसे जलेंगे। लेकिन शहीद ने अपनी बाहों और पैरों को आग में जलते देख, सिर को थोड़ा सा उठाकर कहा:

'मैं कतिना धन्य हूँ कि ईश्वर मेरे इन्हीं हाथों को बलदिान और भेंट के रूप में स्वीकार कर रहे हैं, जन्हिें मैं कभी झूठे देवताओं से प्रार्थना करने के लिए उठाता था, और इन्हीं पैरों से जनिसे मैं भूल के मार्ग पर चलता था!'

तब उसकी पेट में एक भाला घोंपा गया, और उसके सारे आँत-प्यांत बाहर गरि पड़े; और राजा के आदेश पर जल्लादों ने उसके मुश्कलि से साँस ले रहे शरीर के अवशेषों को नदी में फेंक दयिा। जहाँ तक संत मीना का सवाल है, राजा उनसे सवाल करके परीक्षा लेने से डरता था, कहीं वे उन चमत्कारों के बारे में अपनी साहसकि व्याख्या से उसे शर्मदिा न कर दें, जनिके बारे में उसने पहले ही नश्चिति रूप से सुना था, और कहीं इससे उसके साथी वश्विासयिों के बचे हुए लोग उसके देवताओं के प्रति आस्था से मुंह न मोड़ लें। इसलिए, बनिा कोई सवाल पूछे, उसने मीना को एक अंधेरी कोठरी में ले जाकर, हाथ बाँधकर और पैरों में एक बहुत बड़ा पत्थर बाँधकर लटका देने का आदेश दयिा; राजा ने यह इस उद्देश्य से कयिा कि मीना को लंबे समय तक लटकाए रहने के बाद एक क्रूर मौत दी जाए, जब उसके शरीर का हर अंग उस भारी वजन से चरम सीमा तक खचि जाए। हालाँकि, संत मीना ने यह सब सहते हुए, अपने होठों पर भजन के शब्द रखे थे: *'मेरी पीड़ा और मेरी थकान को देखो'* (भजन संहति 24:18), और प्रेरति के वचन: *'क्योंकि हमारी वर्तमान हल्की क्लेश उस महमिा के बराबर भी नहीं है जो हम पर प्रकट होने वाली है'* (रोमयिों 8:18)।

तब, जब पवत्रि शहीद के शरीर के सभी जोड़ अपनी जगह से उखड़ गए और उसका पूरा शरीर एक तार की तरह खचि गया, और इससे यातनाएं अत्यधकि बढ़ गईं, तो वह मौन हो गया। लेकनि परमेश्वर, जो अपने संतों में अपनी अद्भुत शक्ति का प्रकट करते हैं, न केवल यातना सहने वालों को उनकी पीड़ा के समय में नहीं छोड़ते, बल्कि उनके माध्यम से एक अद्भुत चमत्कार भी करते हैं: उनकी दैवी आज्ञा से, जैसे ही संत हरमोजेनेस, मुश्कलि से जीवति, नदी में फेंके गए, पवत्रि स्वर्गदूत तुरंत प्रकट हुए: उन्होंने उसे पानी से बाहर नकिाला और कनिारे पर ले गए; उन्होंने उसके कटे हुए हाथ-पैरों को ठीक कयिा और उसे पूर्ण स्वास्थ्य और सुरक्षा प्रदान की, मानो वह अभी-अभी नया जन्म लयिा हो। जब रात हुई, तो वे उसे सेंट मनिस के पास ले गए, जो कालकोठरी में लटक रहे थे और मुश्कलि से जीवति थे; वहाँ उन्होंने संत मीना को उनकी बेड़यिों से मुक्त कयिा और उन्हें चंगा करने के बाद, स्वर्ग में उनके लिए प्रतीक्षा कर रहे पुरस्कार से दोनों को सांत्वना देना शुरू कर दयिा, यह बताते हुए कि वहाँ उनके लिए मुकुट पहले से ही तैयार थे और स्वयं शहीद-नेता उनकी बहादुरी से अपने पराक्रम को पूरा करने का इंतजार कर रहे थे। इस प्रकार उन्हें उनके कष्टों के लिए मजबूत करते हुए, स्वर्गदूत सुबह तक शहीदों के साथ रहे।

जैसे ही दनि चढ़ा, राजा ने सभी लोगों को बहुत ही सुबह चौक में इकट्ठा होने का आदेश दयिा। थोड़ी ही देर बाद स्वयं वहाँ पहुँचकर, वह अपने सहिासन पर बैठ गया और यह जानते हुए कि अब पूरा शहर मसीह में वश्विास करता है, वह अपने वचिारों में उलझ गया, मन ही मन सोच रहा था: 'नगरवासयिों को बनिा सज़ा छोड़ देना सही नहीं है, लेकनि उन सभी को मार डालना व्यर्थ है।' इसलिए, यह दखिावा करते हुए कि उसे मसीह में उनके वश्विास के बारे में कुछ भी नहीं पता है, उसने लोगों को इस प्रकार संबोधति करना शुरू कयिा:

'मैं जानता हूँ कि तुम सभी बलदिान करते हो और हमारे महान देवताओं की पूजा करते हो, और यह कि तुम अपने राजाओं को सभी बातों में श्रद्धापूर्वक उचति आज्ञाकारति दखिाते हो; परन्तु चूंकि, आरम्भ से ही, तुम उन घृणति मनुष्यों के वरिुद्ध नहीं उठे जन्हिोंने सूली पर चढ़ाए गए की शक्षिाओं को फैलाने का साहस कयिा, और हमारे यहाँ आने से पहले तुमने उन पर पत्थर नहीं चलाए, इस प्रकार तुमने स्वयं पर देवताओं का महान क्रोध लाद लयिा है। यद्यपि मैं स्वयं नहीं चाहता कि आप में से कोई भी देवताओं द्वारा अनुमत कसिी भी दुर्भाग्य को झेले, फरि भी, मैं आपको बनिा कसिी दंड के नहीं छोड़ सकता; और इसलिए, देवताओं के क्रोध को भड़काने के प्रतफिलस्वरूप, मैं आदेश देता हूँ कि आपके शहर से उसका दीर्घकालकि सम्मान छीन लयिा जाए, ताकि अब से आप में से कोई भी सर्वोच्च पद प्राप्त न कर सके या उच्च अधकिार न पा सके। यह भी जान लो कि सूली पर चढ़ाया गया वह न केवल कसिी को वपित्तयिों से नहीं बचाता, बल्कि इसके वपिरीत, जो उस पर वश्विास करते हैं, उन्हें हर प्रकार की दुर्भाग्य और एक शर्मनाक मृत्यु की ओर ले आता है। और जहाँ तक मैंने जो कुछ भी कहा है, उसकी सच्चाई का सवाल है—इस बात की गवाही कल के तथाकथति दो जादूगर, हर्मोजेनेस और मीना, दें; जन्हिोंने अपनी यातना से पहले, मृतकों को जीवति करने का वादा कयिा था, फरि भी, अपनी ही गलती से मेरे द्वारा कठोर यातनाओं से दंडति होकर, वे स्वयं की भी मदद नहीं कर सके। तो फरि, इस धोखेबाज़, मसीह, की शक्ति कहाँ है?

जब राजा ये अपमानजनक शब्द बोल रहा था और मसीह के नाम का अपमान कर रहा था, तो सारा जनसमूह क्रोधति हो गया और आपस में बड़बड़ाने लगा, राजा के वरिुद्ध कुछ नया षड्यंत्र रच रहा था। लेकनि जैसे ही उद्घोषकों ने लोगों को

चुप रहने का संकेत दिया, और ठीक उसी समय जब राजा फिर से लोगों को संबोधित करने ही वाला था, संत मीना और हर्मोजेनेस अचानक उसके सामने प्रकट हो गए। सभी ने आश्चर्य से उनकी ओर देखा और मानो एक ही स्वर और एक ही मुख से चिल्ला उठे:

'सत्य में, केवल एक ही ईश्वर है – ईसाई ईश्वर!'

उन्हें देखकर, ज़ार बहुत आश्चर्य और भय से भर गया।

उस क्षण, लोगों के बीच खड़े उन लोगों में से एक, जिसका नाम इवग्राफ था, जो ग्रीक विज्ञान में पारंगत था और स्वयं उस समय का एक लिपिकि था जब संत मीना, एक न्यायाधीश के रूप में, शहर पर शासन करते थे—यह इवग्राफ, पवित्र शहीदों को जीवित और कुशल देखकर, दिव्य उत्साह से भर गया और, क्रॉस का चिह्न बनाकर, साहसपूर्वक चौक के केंद्र में आ गया और राजा के सामने खड़ा हो गया, और उससे कहा:

'हे राजा!' मैं भी एक ईसाई हूँ जो आपके आदेशों को नहीं मानता; मैं यहाँ आपके सामने खड़ा हूँ, मसीह के लिए अपने शरीर की भी परवाह नहीं करता; यह मत सोचिए कि आप मुझे धमकियों या चापलूसी से हरा लेंगे; और आप न केवल मुझे, बल्कि हम ईसाइयों में से किसी को भी हराने में असमर्थ हैं: क्योंकि हमारे लिए आपके साथ रहना मृत्यु के समान है, जबकि मसीह के लिए मरना वास्तव में जीवन प्राप्त करना है। तुम हमारे नगर में एक सिंह की भाँति आए हो, मसीह के झुंड को निगलने और मूर्तिपूजा के द्वारा पवित्र विश्वास को नष्ट करने की कोशिश कर रहे हो, लेकिन हम तुम्हारे क्रोध का तिरस्कार करते हैं, धर्म के लिए मृत्यु का सामना करने को तैयार हैं, और तुम पर वैसे ही हँसते हैं जैसे हम किसी चालाक लोमड़ी पर हँसते।

यह सुनकर राजा क्रोध से भर गया और, अपने सिंहासन से तेजी से कूदकर, वह ईसाइयों पर टूट पड़ा; अपने सामने खड़े एक व्यक्ति से तलवार छीनकर, उसने संत यूग्राफस को अपने हाथों से काट डाला और, अपने प्रचंड क्रोध में, उसे टुकड़े-टुकड़े करना शुरू कर दिया। हालाँकि, संत, टुकड़े-टुकड़े किए जाने के दौरान, जब तक हो सका, अपने अत्याचारी को उसके अधर्मीपन के लिए फटकारते रहे और, साथ ही, ईश्वर का धन्यवाद करते रहे कि वह दूसरों से पहले उनके पास जा रहे थे, और यह कि वह एक ही वार से नहीं, बल्कि कई घावों के कारण मर रहे थे, जिसने उनमें ईश्वर से कई मुकुटों की आशा जगाई। इस प्रकार उन्होंने चौक के बीच टुकड़े-टुकड़े होते हुए अपनी आत्मा ईश्वर के हाथों में सौंप दी।

राजा, अपने सिंहासन पर पुनःबैठकर, पवित्र शहीदों मीना और हर्मोजेनेस की ओर मुड़ा और कहा:

'मैं अपने देवताओं की शक्ति की शपथ लेता हूँ कि मैंने पहले कभी ऐसे जादूगर नहीं देखे!' आश्चर्य नहीं कि आम लोग उनकी बात सुनते हैं, क्योंकि वे अपनी चालाक जादू-टोने से अज्ञानों को बहकाकर, उन्हें उनके देवताओं से दूर कर देते हैं और उनमें सूली पर चढ़ाए गए के लिए मरने का संकल्प भर देते हैं। और इसलिए अब मैं तुम दुर्भाग्यों को बेनकाब करूँगा—चाहे तुम केवल प्रेत-आत्माएँ हो, जो केवल आँखों को चकाचौंध करती हैं, या वास्तव में नए सिरे से बने शरीर हो।

इस पर संतों ने उत्तर दिया:

– चूँकि तुम्हारा मन मूर्ख है, तुम्हारी आत्मा अंधी है और तुम्हारा हृदय कठोर है, इसीलिए एक वास्तविक वस्तु भी तुम्हें एक भूत-प्रेत के रूप में दिखाई देती है; क्योंकि क्या तुम, सचमुच, अंधे नहीं हो, यदि तुम एक ऐसी बात पर विश्वास नहीं करते जो स्वयं सूर्य से भी अधिक चमकती है? यदि तुम्हें संदेह है, तो यह देखने के लिए कि क्या हम वास्तव में हम ही हैं, हमें अत्यंत सावधानी से परखो; और यदि तुम क्रोध में हमें धमकाते हो, तो हमें एक बार फिर यातनाओं और घावों से आज़माओ, और यह जान लो कि हम मांस और रक्त हैं, कोई भूत-प्रेत नहीं। यदि आप अस्थायी लाभों के वादे से हमें अपनी ओर आकर्षित करना चाहते हैं, तो यह जान लें: भले ही आप हमें अपना राज्य ही क्यों न दे दें—जिसे आप सबसे कीमती मानते हैं—आप हमें उससे लुभा नहीं पाएंगे। इसलिए, हम पर अपना अंतिम निर्णय सुना दें और जान लें कि आप किसी भी तरह से हम पर विजय प्राप्त नहीं कर पाएंगे।

राजा ने, यह देखकर कि ये भूत नहीं बल्कि जीवित मनुष्य थे—क्योंकि कई लोगों ने उन्हें अपने हाथों से छूकर यह पता लगा लिया था कि उनके शरीर घावों से मुक्त थे—उनके सिर काट दिए जाने का आदेश दिया; और वह स्वयं उठकर अपने कक्षों में चला गया, इस बात पर लज्जित था कि वह किसी भी तरह से मसीह के सैनिकों पर विजय प्राप्त नहीं कर सका। जब संतों को फाँसी के स्थान पर ले जाया गया, तो सारा जनसमूह उनका अनुसरण करने लगा; और वे, स्वर्ग की ओर अपनी दृष्टि उठाकर, वहाँ बहुत देर तक खड़े रहे, ईश्वर से प्रार्थना करते रहे कि वे चर्चों और समस्त ईसाई जगत को शांति और सुकून प्रदान करें, और जो कोई भी उनकी मदद माँगने आए, वह खाली हाथ न लौटे; तब, एक-दूसरे को गले लगाकर और विदा लेकर, उन्होंने अपने सम्मानित सिर तलवार के नीचे झुका दिए और एक सैनिक ने उनका सिर कलम

कर दिया। और चूंकि महान मीना ने, जीवित रहते हुए, राजा से यह निवेदन किया था कि उनके शरीर को बज़िन्टियम में दफनाया जाए (जिसे उन्होंने अपनी मृत्यु से पहले उनके साथ खड़े उन विश्वासियों को एक बार फिर से करने का आदेश दिया था), राजा मैक्सिमिनिस ने एक लोहे का ताबूत बनवाने का आदेश दिया और उसमें पवित्र शहीदों के शरीर रखकर उन्हें समुद्र में फेंकवा दिया, ताकि ईसाई उनकी पूजा न कर सकें। वह स्वयं, लोगों के बीच फैल रही अफवाहों और अपने खिलाफ उठ रहे बड़े विरोध को देखकर, जल्दबाजी में शहर छोड़कर बज़िान्टियम के लिए रवाना हो गया, इस डर से कि कहीं उसके खिलाफ कोई विद्रोह न खड़ा हो जाए।

इस बीच, पवित्र शहीदों के अवशेषों वाली लोहे की नाव समुद्र में डूबी नहीं, बल्कि ईश्वर की शक्ति द्वारा जल में मार्गदर्शन पाकर, सम्राट से भी पहले चल पड़ी और उड़ते पक्षी की तरह तेजी से बज़िान्टियम पहुँच गई। जहाँ तक बज़िान्टियम के बिशप का सवाल है, उस रात उन्हें एक दिव्य दर्शन हुआ, जिसमें उन्हें तुरंत समुद्र तट पर जाने और संतों के अवशेषों वाली नाव को सम्मानपूर्वक प्राप्त करने का आदेश दिया गया। उसी रात, बिशप ने अपने पुरोहितों और नगर के श्रद्धालु लोगों में से कुछ विशिष्ट पुरुषों को बुलाकर, उनके साथ समुद्र तट पर गए; और उन्होंने सभी ने स्वर्ग से एक स्तंभ के रूप में प्रकाश को समुद्र पर उतरते और एक नाव में प्रवेश करते देखा; उस नाव में दो तेजस्वी पुरुष बैठे थे, जो उस तट की ओर बढ़ रहे थे जहाँ बिशप और उनके पुरोहित खड़े थे।

जब नाव में सवार लोग तट के पास पहुँचे, तो तट पर खड़े लोगों ने देखा कि वह एक नाव नहीं थी, बल्कि दो तेजस्वी स्वर्गदूतों द्वारा पानी पर चलाई जा रही एक नौका थी, जो तट पर नौका को रखने के तुरंत बाद अदृश्य हो गए। बिशप और लोगों ने, उस संदूक को खुशी से प्राप्त करके और यह महसूस करके कि वह लोहे की बनी थी, इस बात पर बहुत आश्चर्यचकित थे कि लोहे का इतना भारी वजन समुद्र की गहराई में नहीं डूबा था, बल्कि एक हल्की लकड़ी की तरह, पानी पर तैर रहा था। शहीदों के पवित्र अवशेषों को चूमने के बाद, उन्होंने उन्हें फिलहाल एक गुप्त स्थान पर रख दिया।

जहाँ तक राजा मैक्सिमिनिस का सवाल है, जो अभी भी रास्ते में था, वह ईश्वर की सजा से पीड़ित हुआ: लंबे समय से आध्यात्मिक रूप से अंधा होने के कारण, उसने अपनी शारीरिक दृष्टि भी खो दी; इसके अलावा, उसने स्वयं अपने परिवार और दोस्तों को बताया कि उसे किसी की अदृश्य हाथों द्वारा दंडित किया गया था; कुछ ही दिनों बाद, यह दुष्ट व्यक्ति मर गया। राजा की मृत्यु के बाद, बिशप ने पवित्र शहीदों के अवशेषों को शहर की दीवार के पास बड़े सम्मान के साथ दफनाया, ताकि वे शहर के रक्षक, समुद्र में यात्रा करने वालों के संरक्षक और बीमारों के उपचारक के रूप में कार्य करें, महान ईश्वर और हमारे उद्धारकर्ता यीशु मसीह की महिमा के लिए, अब और हमेशा और युगों-युगों तक। आमीन[8754]
.

द्रोपारयिन, स्वर 8:

आत्म-संयम द्वारा अपनी प्रबल कामनाओं को वश में कर, मसीह के शहीदों को दुर्बल लोगों की दुर्बलताओं को दूर करने और जीवन तथा मृत्यु के पश्चात् दोनों में चमत्कार करने की कृपा प्राप्त हुई। निश्चय ही यह एक अति गौरवशाली चमत्कार है, क्योंकि उनकी निर्विस्त्र हड्डियाँ ही चंगाई प्रदान करती हैं: एकमात्र सृष्टिकर्ता परमेश्वर की महिमा हो।

कॉन्टाकियन, स्वर 1:

आओ हम सभी पवित्र और मधुर भजनों के साथ, अद्भुत मिनस, दिव्य हर्मोजेनेस, और एवग्राफ की स्मृति का सम्मान करें, जो प्रभु की महिमा करने वाले, उनके लिए पीड़ा सहने वाले, स्वर्ग में अदेह प्राणियों की पंक्ति में शामिल होने वाले, और चमत्कार करते रहने वाले थे।

[8754] पवित्र शहीदों ने लगभग 313 ईस्वी में शहादत प्राप्त की। – संत मीना शहीद के अवशेषों की खोज (जो 11वीं शताब्दी में हुई थी) का उत्सव 17 फरवरी को मनाया जाता है। संत मीना को उनकी वाक्पटुता के कारण कल्लिकेलदास (वाक्पटु) के नाम से भी जाना जाता है। – 9वीं शताब्दी में, जोसेफ द हाइमनोग्राफर ने इन शहीदों के सम्मान में एक कैनन रचा, जिसमें उनके अवशेषों से जुड़े चंगाई के मामलों का भी उल्लेख है।

संत जेमेलस का स्मरणोत्सव

10 दसिंबर को स्मरणोत्सव

संत जेमेलस पाफ्लागोनयिा क्षेत्र के मूल नविासी थे[8755] । यह सुनकर कि सम्राट जूलयिन अपोस्टेट[8756] गालाटयिा के शहर एन्कयिारा[8757] में थे, वे उस शहर के लिए रवाना हो गए और सम्राट के सामने उपस्थति होकर, उन्होंने नडिरता से उनके धर्मत्याग और पवत्रि ईसाई धर्म के प्रतशित्रुता की नदिा की। जूलयिन क्रोधति हो गया और उसे क्रूर यातनाएँ दीं। जेमेला पर एक लोहे का घेरा रखा गया, जो इतना तपा हुआ था कि उससे जलती हुई चगिारयिाँ उड़ रही थीं, और शहीद के शरीर से खून बहने लगा। इस हालत में, उसे एडेसा शहर[8758] भेजा गया, जहाँ स्वयं धर्मत्यागी भी पहुँच चुका था। जब पवत्रि शहीद को उस शहर में लाया गया, तो उसके कंधों को लाल-गरम लोहे की कीलें घोंपकर फाड़ दयिा गया, और उसके सरि में लोहे की कीलें ठोंकी गईं; फरि उसे जमीन पर फैला दयिा गया और उसके पैरों से लेकर सरि तक उसकी खाल उधेड़ दी गई। अंत में, उन्हें सूली पर चढ़ाया गया, और उनके पैरों को क्रूस पर कीलों से ठोक दयिा गया। इस प्रकार इस दीर्घ-सहष्णिु शहीद का देहांत हुआ, जन्हिोंने ईश्वर का धन्यवाद करते हुए प्राण त्यागे[8759] ।

आदरणीय थॉमस डेफर्कनि की स्मृत[8760]

10 दसिंबर को स्मरणोत्सव

आदरणीय थॉमस का जन्म बथिनियिा में हुआ था[8761] । उनके माता-पति साधारण परविार के थे और संतोष से जीवन यापन करते थे। लेकनि अपने शुरुआती वर्षों से ही, थॉमस ने सभी सांसारकि, व्यर्थ सुखों से परहेज कयिा और साधु जीवन की ओर गहरी रुचि दखिाई। पड़ोस के एक मठ में रहने वाले एक संन्यासी के आदर्श जीवन से प्रेरति होकर, वह उस पवत्रि नविास से गहराई से जुड़ गया; कम उम्र से ही वह उपवास करने का आदी था और, बच्चों की उम्र के अनुसार उचति शैक्षणकि अध्ययन में उत्सुकता से लगे रहते हुए, उसने भजन संहति, प्रेरतिों के लेख और पूरी चर्च सेवा सीख ली। इस प्रकार, थॉमस का प्रारंभकि जीवन शांति और धार्मकिता से बीता, और उसकी आत्मा में बोए गए अच्छे बीजों को आगे बढ़ने के लिए जड़ें जमाने का समय मलि गया। हालाँकि, जब ईश्वर-भयभीत युवक परपिक्व हुआ, तो उसने संन्यासी वेश धारण कयिा और अटूट संकल्प के साथ, मोक्ष के शत्रु के वरिुद्ध आध्यात्मकि संघर्ष शुरू कयिा। वह अपने सदाचारी जीवन में इतना दृढ़ और परपिूर्ण हो गया कि उसकी आध्यात्मकि सुंदरता सभी के लिए स्पष्ट रूप से स्पष्ट थी।

उस समय, गैलोलक्ट नामक एक बीजान्टनि कुलीन व्यक्ति ने सागारसि नदी के तट पर एक नया मठ स्थापति कयिा और उस क्षेत्र के बशिप से इस मठ में सबसे योग्य और बुद्धमिान लोगों को इकट्ठा करने के लिए कहा। आदरणीय थॉमस को इस नए मठ का मठाधीश चुना और नयिुक्त कयिा गया, जो एक अनुभवी भक्षिु, आध्यात्मकि जीवन में सुस्थापति और संयम के एक दृढ़ रक्षक थे। यह बशिपों की परषिद को बताया गया, इस स्पष्टीकरण के साथ कि थॉमस कई वर्षों से आध्यात्मकि कार्यों में लगे हुए थे, और सभी उन्हें वभिन्नि गुणों से भरा एक पात्र मानते थे, हालांकि वे स्वयं, वनिम्रता के कारण, इसे दूसरों से छपिाने का प्रयास करते थे।

[8755] पाफ्लागोनयिा – एशयिा माइनर का एक प्राचीन क्षेत्र, जो ब्लैक सी के दक्षणिी तट पर स्थति था।

[8756] सम्राट जूलयिन ने 361 से 363 तक शासन कयिा। सम्राट बनने पर, उन्होंने ईसाई धर्म का त्याग कर दयिा और मूर्तपिूजा की बहाली को अपना जीवन कार्य बना लयिा, इसीलिए उन्हें 'धर्मत्यागी' के नाम से जाना जाता है।

[8757] एन्सक्रिा – एशयिा माइनर में गालाटयिा क्षेत्र का प्रमुख शहर – जसिे अब अंगोरा के नाम से जाना जाता है, एशयिा माइनर का एक महत्वपूर्ण शहर है जसिकी आबादी 30,000 है। गालाटयिा एशयिा माइनर प्रायद्वीप के ठीक केंद्र में स्थति था; हालाँकि, एन्सक्रिा प्रांत के उत्तर-पश्चमिी छोर पर स्थति था।

[8758] एडेस, एशयिा माइनर के दक्षणि-पूर्व में स्थति एक क्षेत्र, सलिसियिा का एक शहर है।

[8759] संत जेमेलस की शहादत लगभग 361 ईस्वी में हुई थी।

[8760] यह उपनाम आदरणीय थॉमस को दयिा गया था।

[8761] बथिनियिा – एशयिा माइनर का एक उत्तर-पश्चमिी क्षेत्र, जो ब्लैक सी, बोस्फोरस और कॉन्स्टेंटनिोपल जलडमरूमध्य के तटों पर स्थति है।

इस बीच, धन्य थॉमस की मठ के प्रमुख के रूप में यह अप्रत्याशित नियुक्ति—जो शैतान की बदनामी से हुई और दैवीय व्यवस्था (प्रोविडेंस) द्वारा अनुमत थी—से कुछ कलह उत्पन्न हो गई। इससे व्यथित होकर, थॉमस ने आत्म-दोष लगाते हुए, खुद से ताना मारते हुए कहा:

'मैं अपने बारे में क्या सोच रहा हूँ!'

और यह महसूस करते हुए कि उनकी प्रिय इच्छाओं के पूरा होने का समय आ गया है, उन्होंने भाइयों को अलविदा कहने, अपने हृदय के दुख को उनके सामने व्यक्त करने और उन्हें आध्यात्मिक सांत्वना देने के बाद, मौन की तलाश में मठ से एक रेगिस्तान में चले गए। नेता के बिना, एक चरवाहे के बिना भेड़ों की तरह, भिक्षुओं ने आदरणीय की वापसी की लालसा की; वे उनकी तलाश में निकल पड़े और उन्हें बहुत समय तक खोजते रहे, जब तक कि वे उसी रेगिस्तान में नहीं पहुँच गए जहाँ आदरणीय ने निवास किया था, और उन्होंने मौन रूप से सर्दियों की ठंड और गर्मियों की गर्मी दोनों को सहन किया, पहले को गर्मी और बाद वाले को ठंडक मानते हुए। और उन्होंने आदरणीय पिता से मठ में लौटने की विनती की, और उनके दुख को कम करने के लिए कहा:

'आप इतने कठोर जीवन-शैली से खुद को क्यों थका रहे हैं? इस पर विचार करें: हम पृथ्वी की धूल से बने हैं और, इसी तथ्य से, हमारे भीतर दुर्बलता है, इसलिए हमारे लिए उस दुर्बलता को पूरी तरह से त्यागना, जो हममें स्वाभाविक रूप से है, हमारे वश से परे है।'

लेकिन थॉमस अडिग रहे और, केवल भिक्षुओं की इच्छा के आगे झुकते हुए, उन्होंने उनके लिए एक छोटी सी कोठरी तैयार करने की अनुमति दे दी। जब वह तैयार हो गई, तो रेवरेंड उसमें गए और, जमीन पर घुटने टेककर, कहा:

'हे प्रभु, यह आपको प्रसन्न हो; और यह अनुग्रह करें कि जो पुरुष मेरी अयोग्यता के यहाँ आए हैं, उन्हें लौटने की अनुमति मिले।'

भिक्षु पीछे हट गए, और अपने आध्यात्मिक गुरु को रेगिस्तान के एकांत में छोड़ गए। लेकिन बाद में, जैसे किसी विशेष प्रकटोक्ति से, धर्मपरायण लोग सभी ओर से उस पवित्र तपस्वी को देखने आने लगे – गृहस्थ जो भिक्षु बनने की शपथ लेना चाहते थे – और उन्होंने पूज्य पिता से विनती की कि उन्हें आज्ञाकारिता में उनके साथ रहने की अनुमति दें। ऐसे सभी लोगों को, जो प्रभु की सेवा करने आए थे, उन्होंने मठवासी वस्त्र पहनाए, और उनमें से दो को, मसीह के पहले शिष्यों के रूप में, प्रेरितों के नाम पर नामित किया – एक को जॉन और दूसरे को पीटर का नाम दिया – और उनके साथ उन्होंने परमेश्वर से भक्तिपूर्वक प्रार्थना की।

लेकिन बुराई के कर्ता – शैतान – के लिए अपनी योजनाओं और दुर्भावनापूर्ण इरादों को विफल होते देखना असहनीय था। और इस प्रकार उन्होंने उस पूजनीय व्यक्ति पर, सबसे पहले, मच्छरों का इतना झुंड भेजा कि वह धन्य पुरुष बोल भी नहीं सकता था: मच्छरों ने उस पर हमला किया जब वह लेटता था और जब वह प्रार्थना करने उठता था - वे उसके मुँह में झुंड बनाकर घुसते थे, वे यहाँ तक कि उसकी कंठी तक पहुँच गए। उनके थोड़े से भोजन और संत की कोठरी की हर चीज़ पर भी मच्छरों का लगातार झुंड मँडराता रहता था। यह पीड़ा तीन साल तक चली, लेकिन पूज्यनीय पिता ने न केवल इसे बिना किसी शिकायत या आह के सहन किया, बल्कि उन्होंने ईश्वर का धन्यवाद भी किया, और अपने पापों की क्षमा याचना की। तब, जब ईश्वर की इच्छा से, मच्छरों के हमले बंद हो गए, तो बड़ी मक्खियाँ प्रकट हुईं, जो पूज्यनीय को काटती थीं और उनके शरीर को—जो तपस्या से थका हुआ था—मानो तीखे तीरों से भेद रही हों। यह पीड़ा भी, जो तीन साल तक चली थी, समाप्त हो गई। लेकिन उसके बाद, आदरणीय पर तिलचट्टियों ने हमला किया, जो उनकी आँखों और नाक में रेंग गईं; फिर भी वह, एक मजबूत ओक की तरह, अपने द्वारा अपनाए गए धैर्य के कार्य में अडिग रहे। धन्य वृद्ध में ऐसी दृढ़ता देखकर, जिसने इन नौ वर्षों की कष्टप्रद परीक्षाओं को ऐसे सहा मानो वे क्षणिक, केवल एक दिन की परीक्षाएँ हों, प्रलोभक ने उस पर और भी अधिक, अधिक उन्मत्त द्वेष के साथ आक्रमण किया। यह जानते हुए कि ईश्वर की छवि में रचा गया मनुष्य, स्वभाव से ही पहले पाप के उपकरण के रूप में सर्प से घृणा करता है (उत्पत्ति 3:1–6, 14–15), प्रलोभी ने, रेवरेंड की आंतरिक शांति को नष्ट करने और उनके हृदय—साथ ही उनके साथियों के हृदयों में—कड़वाहट की भावना भरने के लिए, उन पर अनेक साँपों को भेज दिया। यह कई लोगों को अविश्वसनीय लग सकता है, लेकिन यह किसी भी तरह से केवल एक भ्रम नहीं था। साँप केवल पूजनीय थॉमस की कल्पना में ही नहीं दिखे, बल्कि वे वास्तव में रेंगते हुए उनके पास आए और उन्हें घेरा—न केवल एक या दो बार, बल्कि लगातार।

और यह एक या दो साल के लिए नहीं, बल्कि पूरे ग्यारह साल तक था कि संत उनके घेरे में रहे, और एक बार भी उन्होंने शिकायत का एक शब्द नहीं कहा। यहाँ तक कि उनका बिस्तर भी साँपों से मुक्त नहीं था; जब वे विश्राम करते, तब साँप वहाँ घोंसला बना लेते थे। लेकिन ईश्वर की कृपा से संरक्षित, पूज्य पिता उन साँपों से अछूते रहे।

एक अवसर पर, धन्य पिता रक्तहीन बलिदान की दैवीय पूजा का अनुष्ठान कर रहे थे; सेवा समाप्त होने ही वाली थी, जब अचानक कहीं से एक विशाल सर्प निकलकर उस पूरे चर्च के चारों ओर एक छल्ला की तरह लिपट गया, जहाँ यह पवित्र अनुष्ठान हो रहा था। जो भिक्षु माननीय पिताजी की सहायता कर रहा था, वह पहले ही सेवा के लिए आवश्यक गर्म पानी लाने के लिए चर्च से बाहर गया था, जबकि वह साँप—जो पहले चर्च को घेरे हुए प्रतीत हो रहा था—तब तक चर्च के द्वार पर एक विशाल गाँठ की तरह लिपट गया था। और फिर एक अद्भुत चमत्कार हुआ: दिव्य अनुष्ठान का संचालन कर रहे रेवरेंड फादर ने, यह सोचकर कि परंपरा के अनुसार गर्म पानी समय पर क्यों नहीं लाया जा रहा है, चारों ओर देखा और उन्हें दहलीज पर पड़ा हुआ राक्षस दिखाई दिया, और उनकी सहायता कर रहा संन्यासी वहाँ भय से काँपता हुआ खड़ा था; और, पवित्र आत्मा से भरकर, उन्होंने अपने भाई से कहा:

'अंदर जाओ और डरो मत।'

उन्होंने स्वयं पवित्र सेवा जारी रखी। पादरियों के आदेश से उत्साहित होकर, भिक्षु पंखों की तरह उछलकर साँप के ऊपर से कूद गया और चर्च में प्रवेश कर गया। दैवीय अनुष्ठान के अंत में, धन्य वरिष्ठ, अपने पवित्र वस्त्रों में, उस दहलीज पर पहुँचे जहाँ राक्षस पड़ा था और कहा:

'हे सर्प, यदि तेरा यहाँ आना मेरे ईश्वर के हाथों तेरी मृत्यु का संकेत है, तो मेरा अनुसरण कर।'

साँप ने अपने दाँतों से संत के चोगे की बाँह पकड़ ली और उनका पीछा करने लगा; थॉमस, हालाँकि, चर्च से एक तीर की दूरी पर हट गए और एक झाड़ी में घुस गए जहाँ एक गहरी खाई थी, रुके और प्रार्थना करने लगे; अपनी कई प्रार्थनाओं में उन्होंने यह जोड़ा:

'हे ईश्वर, जिन्होंने आप में विश्वास करने वालों को साँपों और बिच्छुओं पर पैर रखने की शक्ति दी है, हे प्रभु, यह अनुग्रह करें कि मैं, जो सबसे तुच्छ हूँ, आपके वचन के अनुसार साँप के गले पर पैर रखूँ!' (लूका 10:19)

जैसे ही पूजनीय पिता ने यह प्रार्थना कही, साँप उसी क्षण अपनी जगह से उठ खड़ा हुआ और खाई में कूद गया; खाई के किनारे भी उसके साथ ही ढह गए, जिससे उस जगह एक समतल खोखला स्थान बन गया। ईश्वर का धन्यवाद करने के बाद, बुजुर्ग अपनी कोठरी में लौट आए। और फिर एक नया और अद्भुत चमत्कार हुआ: जिन साँपों ने आदरणीय की कोठरी के नीचे घोंसला बना रखा था और इतने वर्षों से उन्हें आतंकित किया था, वे उनके पवित्र मुखमंडल को देखकर, जैसे किसी आग की लपटों से भाग रहे हों, अचानक सभी उसी स्थान पर भाग गए जहाँ वह भयानक साँप मारा गया था। वहाँ, ईश्वर की इच्छा से, उनमें से बहुत से मर गए, और पक्षियों ने उन पर हमला कर उन्हें खा लिया।

उस समय से, संत थॉमस, प्रलोभन और कष्टों से मुक्त होकर, ईश्वर से चंगा करने और भविष्यवाणी करने का वरदान प्राप्त किया; फिर भी, उन्होंने एक ही समय में अपने आध्यात्मिक पूर्णता के लिए और भी लगन से खुद को समर्पित किया, और विशेष रूप से मौन के तपस्वी अभ्यास का पालन करने पर अपना ध्यान केंद्रित किया। और चूँकि मार्गदर्शन की तलाश में लोग अविराम रूप से उनके पास आते थे और उन्हें अपना मौन तोड़ने के लिए विवश करते थे, इसलिए वे नियमित रूप से अपने रेगिस्तान में एक पहाड़ी की चोटी पर एकांतवास करने लगे; जबकि उनके चुने हुए, करीबी शिष्य, उनके निर्देशों के अनुसार, भाइयों और आगंतुकों दोनों का मार्गदर्शन करते थे: जॉन प्रार्थनाओं और चर्च सेवाओं के संचालन की अध्यक्षता करते थे, जबकि पीटर ने उन्हें विवेक के अनुग्रह-पूर्ण उपहार के माध्यम से सुदृढ़ किया। और यद्यपि यह सब इस प्रकार व्यवस्थित था, फिर भी पिता के मार्गदर्शन की आध्यात्मिक शक्ति उससे कमजोर नहीं हुई, क्योंकि सभी बातों में एक ही इच्छा प्रकट हुई—सभी को वरिष्ठ-पिता की इच्छा से पोषण मिला, जिनके प्रेम ने सभी को प्रेरित किया और उन्हें मोक्ष के मार्ग पर निर्देशित किया।

जबकि एकांत मठ में सब कुछ इस स्थापित क्रम में चल रहा था, एक दिन धर्मपरायण ग्रीक राजा लियो, बेसिल के पुत्र[8762] के हृदय में एक प्रकार की उलझन थी, उन्होंने इसे एक पत्र में व्यक्त किया और अपनी शाही मुहर से सील करके एक विशेष दूत के माध्यम से पूजनीय वृद्ध के पास भेजा, ताकि उन्हें अपनी उलझन का समाधान मिल सके। शाही

[8762] लियो VI विद्वान, बेसिल द मेसेडोनियन के पुत्र। बीजान्टिन सम्राट, 886 से 911 तक शासन किया।

दूत चल पड़ा, और जैसे ही वह धन्य पिता की कोठरी के द्वार पर पहुँचा, वैसे ही वे उसे मिलते हुए बाहर आए, उसे अपना सील किया हुआ पत्र थमा दिया और कहा:

'भाई, इसे लो और अपने भेजने वाले के पास लौट जाओ।'

इस घटनाक्रम ने राजदूत को भयभीत कर दिया, और वह हतबुद्धि होकर आपत्ति करने लगा:

'मैं उस व्यक्ति को, जिसने मुझे भेजा है, उसकी लिखित पूछताछ के बारे में क्या उत्तर दूँ, जबकि आपने तो ज़ार का पत्र अपने हाथों में उठाया भी नहीं है?'

इस पर पूजनीय ने उत्तर दिया:

'बस, मेरे बच्चे: ईश्वर की यही इच्छा है।'

संत थॉमस का संदेश पाकर, दूत लौटा और उसने राजा को वह सब कुछ बताया जो हुआ था, जिससे राजा बहुत चकित हुआ। जब राजा ने बड़े संत का उत्तर पढ़ा और उसमें अपनी उलझन का समाधान पाया, तो उसने उस पूजनीय संत से व्यक्तिगत रूप से मिलने की तीव्र इच्छा व्यक्त की। लेकिन थॉमस ने दुनिया से किनारा कर लिया और, अपनी विनम्रता में, राजा के सामने उपस्थित होने से इनकार कर दिया। हालाँकि, यह बात बाद में केवल संक्षेप में ही उनके एक शिष्य द्वारा बताई गई। जिस किसी को भी कोई आध्यात्मिक आवश्यकता होती, वह बिना किसी भय के, दूरी या समय के बीतने से अप्रभावित होकर, उस आदरणीय पिता के पास जाता था, और उसे वह आध्यात्मिक सांत्वना मिलती थी जिसकी वह तलाश में था, साथ ही शारीरिक स्वास्थ्य भी प्राप्त होता था। और इस प्रकार, कई वर्षों तक कई लोगों को उनके आध्यात्मिक जीवन में मार्गदर्शन देने और एक परिपक्व उम्र तक पहुँचने के बाद, रेवरेंड फादर ने एक छोटी बीमारी के बाद अपना आत्मा ईश्वर को सौंप दिया[8763] .

24 दिसंबर

11 दिसंबर (पुराना कैलेंडर)

हमारे पूजनीय पिता डैनियल द स्टाइलाइट का जीवन

11 दिसंबर को स्मरणोत्सव

हमारे पूजनीय पिता डेनियल द स्टाइलाइट, यह स्वर्गीय शाखा, मेसोपोटामिया में पले-बढ़े[8764] । उनका जन्म ईसाई माता-पिता, एलियाह और मार्था के यहाँ, विफ़ार नामक एक गाँव में हुआ था, जो सामोसाटा शहर के पास स्थित है[8765] । उनकी माँ बाँझ थीं और उन्होंने कभी बच्चे को जन्म नहीं दिया था, और इस वजह से उन्हें अपने पति और रिश्तेदारों दोनों से बहुत कठिनाइयों और अपमान सहना पड़ा। एक रात आधी रात को, दिल के दर्द से व्याकुल होकर, वह चुपचाप अपने घर से निकल गई और, स्वर्ग की ओर अपने हाथ फैलाकर, ईश्वर से इस अश्रुपूरित प्रार्थना के साथ निवेदन किया:

'हे प्रभु, हमारे राजा! आरंभ से आपने पुरुष और स्त्री को बनाया और उनसे कहा: "फलो-फूलो और बढ़ो।" आपने सारा को उसके वृद्धावस्था में इसहाक दिया (उत्पत्ति 1:28), हन्नाह को शमूएल दिया (1 शमूएल 1:20), और एलिजाबेथ को यूहन्ना दिया (लूका 20:60)। तब मेरी दुर्दशा पर भी दया करें, और मुझ पर कृपा दृष्टि रखकर, मेरी बाँझपन को दूर करें, मेरी लज्जा दूर करें, और मेरी बाँझ कोख को एक संतान प्रदान करें, ताकि मैं आपको वह वरदान अर्पित कर सकूँ जो आपने मुझे दिया है, ठीक वैसे ही जैसे हन्नाह ने एक बार आपको शमूएल को अर्पित किया था।

एक पश्चात्तापी हृदय और एक नम्र आत्मा के साथ इस प्रकार प्रार्थना करने के बाद, मार्था अपने घर लौट आई और, अकेले सो जाने पर, उसने एक सपने में दो बड़े और बहुत चमकीले दीपक देखे, जो आकार में एक थाली जैसे थे, और जो धीरे-धीरे स्वर्ग से उसके सिर पर उतर रहे थे। सुबह उठने पर, उसने अपने पति और अपने परिवार को उस दर्शन

[8763] प्रतिष्ठित थॉमस डेफर्कनि का 10वीं शताब्दी में निधन हुआ।

[8764] मेसोपोटामिया (ग्रीक से अनुवादित 'नदियों के बीच') – टिग्रिस और फरात नदियों के बीच स्थित एक क्षेत्र। बाइबिल के वृत्तांतों और अन्य लोगों की परंपराओं के अनुसार, यहीं पर स्वर्ग, पहला मानव निवास स्थान, स्थित था।

[8765] सामोसता – कमगेन के सीरियाई प्रांत की राजधानी, फरात नदी के पश्चिमी तट पर।

के बारे में बताया, और उन्होंने प्रत्येक ने, अपने-अपने तरीके से, उसके सपने की व्याख्या करने की कोशिश की। इस बीच, यह अद्भुत सपना इस बात का शुभ संकेत था कि वह एक ऐसे पुत्र को जन्म देगी जो अपने गुणों की चमक से, मानो, स्वयं तारों को भी पीछे छोड़ देगा। कुछ ही समय बाद, मार्था गर्भवती हुईं और एक पुत्र को जन्म दिया; इस जन्म के द्वारा, वह उस बाँझपन से मुक्त हो गईं जिसने उन्हें इतना दुख दिया था। पृथ्वी पर धन्य दानियेल के जीवन की शुरुआत इतनी असाधारण थी, और वह इतनी अद्भुत रूप से इस दुनिया में आए—वह जो बाद में वास्तव में प्रकाश का पुत्र बनेंगे।

पाँच वर्ष की आयु तक, वह लड़का बिना नाम के ही बड़ा हुआ, क्योंकि उसके माता-पिता अपने बेटे को स्वयं नाम देना नहीं चाहते थे, बल्कि वे चाहते थे कि जिसका जन्म ईश्वर की देन के रूप में हुआ है, उसका नाम भी ईश्वर ही रखें। इसलिए, वे उसे एक मठ में ले गए, अपने साथ ईश्वर के लिए उपहार लेकर, और मठाधीश से अपने बेटे का नाम रखने के लिए कहा। ईश्वर से प्रेरित होकर, मठाधीश ने उत्तर दिया कि उसे वह नाम दिया जाना चाहिए जो स्वयं ईश्वर प्रकट करेंगे। लड़के को देखकर, उन्होंने चर्च के वेदी से एक पुस्तक लाने का आदेश दिया; और, उसे खोलने पर, उन्हें उसमें पवित्र के नबी दानियेल के कुछ शब्द मिले। इससे यह समझते हुए कि ईश्वर स्वयं ने चाहा था कि इस नबी का नाम ही लड़के को दिया जाए, उन्होंने उसका नाम दानियेल रखा। यह एक संकेत था कि यह लड़का नाम और धार्मिकता दोनों में महान नबी जैसा होगा। उसके माता-पिता चाहते थे कि उनके बेटे को तुरंत इस मठ में ईश्वर की सेवा के लिए समर्पित कर दिया जाए, लेकिन मठाधीश इस बात से सहमत नहीं थे, क्योंकि लड़का अभी बहुत छोटा था। इसलिए, ईश्वर की व्यवस्था से, उसके माता-पिता उसे लेकर घर लौट आए, ताकि यह लड़का बाद में दूसरों की इच्छा से नहीं, बल्कि अपनी स्वतंत्र इच्छा और अपनी समझ से एक सदाचारी जीवन चुन सके। फिर भी, इस लड़के के शुरुआती वर्षों से ही यह स्पष्ट था कि वह एक सदाचारी व्यक्ति बनेगा – ठीक वैसे ही जैसे एक अच्छा पेड़, लगाए जाने के दिन से ही, भविष्य में फलने के संकेत दिखाता है; सदाचार का आवरण हर जगह उसके साथ था, क्योंकि वह ईश्वर की कृपा के प्रकाश में चलता था।

जब वह लड़का 12 साल का हुआ, तो वह अपने जाने या अपने इरादे के बारे में किसी को बताए बिना अपने पिता का घर छोड़ गया; फिर भी उसने पहले ही ईसा मसीह के लिए पूरी तरह से अपने माता-पिता, अपने देश, अपने रिश्तेदारों और अपने दोस्तों को छोड़ने का संकल्प ले लिया था, और अपने मूल गाँव से 20 स्टेडियम[8766] दूर स्थित एक मठ के लिए निकल पड़ा। आबट के सामने घुटने टेकते हुए, दानियेल ने उनसे विनती की कि वे उसे भ्रातृत्व में स्वीकार कर लें और उसे स्वर्गदूतों की शैली में मुंडन करा दें[8767] ।

लेकिन मठाधीश ने याचनाकर्ता की कमजोरी और कम उम्र का हवाला देते हुए, डैनियल से कहा कि चूँकि वह अभी भी बहुत छोटा लड़का था, वह कई मठवासी कठिनाइयों को सहन नहीं कर पाएगा—जो वयस्कों के लिए भी आसान नहीं हैं—जैसे, उदाहरण के लिए, अखंड जागरण, प्रणाम, उपवास, कामुक संयम और अपनी इच्छा तथा हर सांसारिक वासना का पूर्ण त्याग। इसलिए उन्होंने उस लड़के को सलाह दी कि वह अपने माता-पिता के पास लौट जाए और कुछ समय के लिए वहीं रहे, बजाय इसके कि वह ऐसे कार्यों को करे, जो उसकी कम उम्र की ताकत से परे थे।

डैनियल ने मठाधीश से कहा, 'मैं ठीक इसी लिए यहाँ आया हूँ, मसीह के लिए जीने और संसार से मरने के लिए; भले ही मैं सबसे उत्तम संन्यासी करतब करते हुए मर भी जाऊँ, तो भी यह यहाँ से कुछ भी लिए बिना चले जाने से अतुलनीय रूप से बेहतर होगा, और - सुसमाचार का हवाला देते हुए - *'जो कोई हल पर हाथ रखकर पीछे मुड़कर देखता है, वह परमेश्वर के राज्य के योग्य नहीं है'* (लूका 9:62)।

मठाधीश ने एक बार फिर डैनियल को अपनी योजना छोड़ने के लिए मनाने में बहुत समय लगाया, लेकिन उसे भी कई आपत्तियों का सामना करना पड़ा। अंततः डेनियल को उसके संकल्प से विचलित करने में असमर्थ और उसमें दृढ़ संकल्प तथा ईश्वर के प्रति सच्चा प्रेम देखकर, मठाध्यक्ष ने भ्राताओं को बुलाया और उनसे परामर्श किया कि क्या इतने कम उम्र के लड़के को मठ में प्रवेश दिया जा सकता है। भाइयों ने उस लड़के के साहस और उसके दृढ़ आत्मा को देखकर, और उसमें ईश्वर की ओर से बुलावा पहचानकर, उसे अपने समुदाय में स्वीकार कर लिया। डैनियल, अपनी ओर से, उत्साह से भर गया, सद्गुणों में उत्कृष्ट हुआ और ईश्वर को समर्पित जीवन जिया।

इस बीच, कुछ समय बीत जाने के बाद, दानियेल के माता-पिता को पता चला कि वह उसी मठ में था। वे प्रसन्न हुए, लेकिन साथ ही इस बात पर चकित भी हुए कि एक इतने छोटे लड़के ने स्वयं को ईश्वर की सेवा के लिए समर्पित कर दिया

[8766] एक 'स्टेडियो' लगभग 88 साज़ेन के बराबर होता है; 20 स्टेडियो 3.5 वर्स्ट से थोड़ा अधिक है।

[8767] यह नाम संन्यास की शपथ ग्रहण करने की रस्म को दिया गया है, क्योंकि संन्यास का प्राथमिक उद्देश्य प्रार्थना और तपस्या के माध्यम से अदेह लोकों के समान बनना है।

था। जब वे उसे देखने गए और पाया कि उसका सिर अभी तक मुंडाया नहीं गया था और वह भिक्षुओं के बीच भिक्षु वस्त्रों के बिना घूम रहा था, तो उन्होंने मठाधीश से अपने बेटे का उनके सामने सिर मुंडवाने और उसे भिक्षु वस्त्र पहनाने के लिए कहना शुरू कर दिया। एक रविवार को, मठवासी समुदाय से परामर्श करने के बाद, मठाध्यक्ष ने डैनियल को मठवासी संप्रदाय में दीक्षा दी, और साथ ही उसके माता-पिता को निर्देश दिया कि वे अपने बेटे से बहुत अधिक बार न मिलें। इसके बाद, वे खुशी-खुशी अपने घर लौट गए; जहाँ एक ओर धन्य डैनियल आत्मा में फलता-फूलता और मजबूत होता गया, और न केवल उम्र में बल्कि सद्गुणों में भी परिपक्व हुआ।

[8768]इस पवित्र जीवन की शुरुआत और जो कुछ भी इसके बाद हुआ, उसका स्रोत इस प्रकार था। डैनियल का हृदय दिव्य प्रेम से प्रज्वलित हो गया, और उसे उन पवित्र स्थानों की पूजा करने की एक अदम्य इच्छा हुई जहाँ हमारे प्रभु यीशु मसीह ने हमारे लिए दुख उठाया, जहाँ उन्हें दफनाया गया और वे पुनर्जीवित हुए, और जहाँ से वे स्वर्ग में आरोहण किए। साथ ही, वह उस समय के महान तपस्वी – संत सिमियिन द स्टाइलाइट को देखने की तीव्र इच्छा से भर गया था। मठाधीश के पास जाकर, उसने अपनी इच्छा उन्हें बताई और चुने हुए यात्रा पर जाने की अनुमति मांगी। इस अवसर पर, मठाधीश ने डैनियल को रुकने के लिए मना लिया; लेकिन बाद में, जब उन्हें स्वयं चर्च की ज़रूरतों के लिए अंताकिया की यात्रा करनी पड़ी, तो वे डैनियल और मठ के कुछ अन्य सदस्यों को अपने साथ ले गए। जब वे तिलिनसिस्सा नामक एक गाँव में पहुँचे, जो सेंट सिमियिन द स्टाइलाइट के तपस्वी के रूप में रहने की जगह से बहुत दूर नहीं था, तो वे उनके स्तंभ की ओर चल पड़े। उन्होंने उस इलाके की कठोरता और स्तंभ की ऊँचाई देखी, और जाना कि चाहे जो भी हो, यह तपस्वी अपने स्तंभ पर सर्दियों की ठंड, गर्मियों की गर्मी, हवाओं और बारिश को सहन करता था। कुछ मूर्ख लोगों ने सोचा कि संत यह सब अहंकार के कारण सहन कर रहे थे; लेकिन धन्य डैनियल न केवल उनकी सहनशक्ति से चकित थे, बल्कि स्वयं भी उनके उदाहरण का अनुसरण करने के लिए प्रेरित हुए। जब आए हुए भिक्षु नीचे खड़े होकर उन्हें पुकारने लगे, तो संत सिमियिन ने ऊपर से उन्हें देखते हुए एक सीढ़ी लाने और यदि वे चाहें तो अपने पास आने का आदेश दिया। तब यह स्पष्ट हो गया कि उनमें से प्रत्येक ने आदरणीय संत को कैसे देखा: एक ने कहा कि उसके पैरों में दर्द है, दूसरे ने अपनी वृद्धावस्था के कारण मना कर दिया, जबकि अन्य ने विभिन्न अन्य कमजोरियों का हवाला देते हुए मना कर दिया; हालाँकि, दानियेल सीढ़ी पर चढ़ा, उस पर तेजी से चढ़ा, और बड़े सिमोन का खुशी-खुशी अभिवादन किया। और उसकी कोशिशें व्यर्थ नहीं गईं, क्योंकि पहले तो उसे तपस्वी से उपदेश मिला और इससे वह सदाचारी जीवन जीने के लिए और भी अधिक प्रेरित हुआ; फिर डैनियल को उससे हाथ रखकर आशीर्वाद मिला; और अंत में, उसने उससे अपने भविष्य के जीवन के बारे में सुना। तपस्वी ने उसे संबोधित करते हुए भविष्यवाणी के स्वर में कहा:

'हौसला रखो, मेरे बच्चे, और अपने हृदय को मज़बूत करो, क्योंकि तुम मसीह के लिए, सहन करना कठिन ऐसे परीक्षणों को झेलने जा रहे हो; परन्तु मसीह स्वयं हर बात में तुम्हारा सहायक होगा: वह तुम्हारी आत्मा को मज़बूत और शान्ति देगा।'

संत के साथ इतनी प्रेमपूर्ण और काफी लंबी बातचीत के बाद, धन्य दानियल नीचे गए और फिर मठ लौट आए।

कुछ समय बाद, जब उस मठ के मठाधीश प्रभु के पास चले गए, तो भाइयों ने डैनियल से उनके बाद मठाधीश बनने का आग्रह किया; लेकिन उन्होंने उनकी जगह किसी और को नियुक्त कर दिया और स्वयं एकांत की तलाश करने लगे, अपने आप से कहते हुए:

'देख, दानियेल, तू स्वतंत्र हो गया है, और वह समय आ गया है जिसे तूने कभी इतनी उत्सुकता से चाहा था; इसलिए, उस मार्ग पर चल जिसकी तू इच्छा करता है और अपने इरादे को पूरा कर।'

[8768] सीरिया में एंटिओक सीरिया के सबसे पुराने और सबसे अमीर शहरों में से एक है, और इसकी राजधानी है; यह ओरोन्टिस नदी पर स्थित है, जहाँ से यह भूमध्य सागर में मिलती है, उससे लगभग 10 वर्स्ट दूर, लेबनान और टॉरस की पर्वत श्रृंखलाओं के बीच; इसकी स्थापना ईसा मसीह से 300 साल पहले सेल्यूकस निकेटर ने की थी और इसका नाम उनके पिता, एंटिओकस के नाम पर रखा गया था। ईसाई चर्च के लिए, अंतीयक का यरूशलेम के बाद ईसाई धर्म के दूसरे महान केंद्र के रूप में, और अन्यजातियों के बीच स्थापित ईसाई चर्चों की जननी के रूप में विशेष महत्व है। प्रसिद्ध अंतीयक चर्च की स्थापना मूल रूप से पवित्र प्रेरित पौलुस और बरनबास द्वारा की गई थी, और बाद में प्रेरित पतरस द्वारा इसकी पुष्टि की गई। धर्मद्रोही (एरियन और नेस्टोरियन) विवादों के दौरान अंतीयक ने चर्च के पादरियों की कई उल्लेखनीय परिषदों की मेजबानी की। अनादि काल से, अंकोइया की कलीसिया को अलेक्जेंड्रिया, यरूशलेम, कॉन्स्टेंटिनोपल और रोम की कलीसियाओं के समकक्ष विशेष विशेषाधिकार प्राप्त हैं; इसके प्रमुखों ने एक पैट्रिआर्क का पद और विशेषाधिकार धारण किए हैं, और आज भी धारण करते हैं। वर्तमान में, अंत्योख तुर्की के शासन में है और यह 10,000 तक की आबादी वाला एक छोटा, गरीब शहर है।

अपना मन बना लेने के बाद, डैनयिल ने गुप्त रूप से मठ छोड़ दयिा और संत समियिन के स्तंभ के पास के घेरे में आ गया; वहाँ चौदह दनिों तक रहने के बाद, वह जाने की तैयारी कर रहा था। लेकनि संत समियिन ने, डैनयिल के प्रतप्रिेम के कारण, उसे अपने साथ रहने की सलाह दी; हालाँकि, दानाएल में यरूशलेम के पवत्रि स्थानों को देखने और मौन का अभ्यास करने के लिए भीतरी रेगस्तिान में जाने की तीव्र इच्छा थी, इसलिए वह फलिस्तिीन की ओर अपनी यात्रा पर नकिल पड़ा। उस समय, फलिस्तिीन में युद्ध चल रहे थे: सामरी ईसाइयों के खलिाफ उठ खड़े हुए थे, और इसी कारण उस क्षेत्र से होकर गुज़रने वाला रास्ता असुरक्षति था। दानयिैल को यह सब पता था, लेकनि उसने इस पर कोई ध्यान नहीं दयिा; दृढ़ संकल्प और नडिर हृदय के साथ, मृत्यु से न डरते हुए, वह अपनी यात्रा पर नकिल पड़ा, जो पूरी तरह से उस एक, प्रबल इच्छा में डूबा हुआ था कि वह अपनी लंबे समय से नयिोजति यात्रा को पूरा करे। काफी दूरी तय करने के बाद, उसकी मुलाकात एक सम्माननीय, वृद्ध, गरमिामय रूप वाले, सफेद बालों वाले संन्यासी से हुई, जो हर तरह से सम्माननीय समियिन द स्टाइलाइट जैसा दखिता था। वरष्ठि ने डैनयिल को गले लगाते हुए सीरयिाई भाषा में उससे पूछा कि वह कहाँ जा रहा है। डैनयिल ने उत्तर दयिा कि, ईश्वर की इच्छा से, वह पवत्रि स्थानों की ओर जा रहा है। वरष्ठि ने कहा:

'आपने सच कहा, "यदि ईश्वर इच्छा करें"; लेकनि नश्चिति रूप से जान लें कि आपकी यह वर्तमान यात्रा ईश्वर की कृपा से नहीं है। क्या आपने फ़लिस्तिीन में हुए वदि्रोह और संघर्ष के बारे में नहीं सुना?'

दानयिैल ने उत्तर दयिा:

'मैंने सुना है, लेकनि मैं अपनी आशा परमेश्वर में रखता हूँ; वह मेरा सहायक होगा, और इसलिए मेरा वश्विास है कि मुझ पर कोई बुराई नहीं आएगी; और यदि ऐसा कुछ भी हो भी जाए, तो मैं नहीं डरता: क्योंकि *"चाहे हम जएिँ या मरें, हम प्रभु के हैं"* (रोमयिों 14:8)।'

लेकनि उस वृद्ध ने, इसके उत्तर में, दानयिैल से एक भवष्यिद्वाणी का वचन उद्धृत कयिा: *'वह तेरे पाँव को फसिलने न देगा; जो तेरी रखवाली करता है वह सुस्त न होगा'* (भजन संहति 120:3)। स्वर्गदूत।

तथापि दानयिैल ने वृद्ध के वरिोध में कहा और इस यात्रा के दौरान मसीह के लिए मरने तक की अपनी तत्परता व्यक्त की।

तब वृद्ध ने क्रोध में मुँह फेर लयिा और कहा:

'ईश्वर ने हमें समय से पहले मृत्यु के मुंह में जाने या, मानो, अनचि्छा से नश्चिति मृत्यु की ओर चलने का आदेश नहीं दयिा है, जब उन्होंने कहा: *"जब वे तुम्हें एक नगर में सताएँ, तो दूसरे नगर में भाग जाओ"* (मत्ती 10:23)।'

दानयिैल वृद्ध की बात से प्रभावति होने लगा और उससे कहा:

'यदि, पतिाजी, आपका यही मत है, तो मैं वापस लौटने को तैयार हूँ।'

बूढ़े ने उत्तर दयिा:

'मैं तुम्हें अपना नर्णिय पूरी तरह से त्यागने की सलाह नहीं दे रहा हूँ, बल्कि केवल यह बता रहा हूँ कि इस वर्तमान प्रतकिूल समय में तुम्हारे लिए वहाँ जाना बुद्धमिानी नहीं होगी। अब बज़िान्टयिम जाओ, जो अपने पवत्रि स्थलों की प्रचुरता के कारण, एक दूसरे यरूशलेम के समान है, जसि पर अब परमेश्वर की आज्ञा से उनकी कृपा बनी हुई है; वहाँ तुम कई चर्चों का दर्शन कर सकते हो और अनेक पवत्रि स्थलों के चन्तिन से परपिूर्ण हो जाओगे। हालाँकि, यदि आप मौन के तपस्वी जीवन को अपनाने का संकल्प लेते हैं, चाहे ऊपरी थ्रेस में हो या समुद्र के मुहाने पर, तो यह आपके लिए उद्धारक होगा, और ईश्वर इसमें आपकी मदद करेंगे। सामान्य तौर पर, मेरे प्रयि, आपको यह नहीं सोचना चाहिए कि आप ईश्वर को यरूशलेम में वज़िींतयिम के बजाय पा सकते हैं; क्योंकि ईश्वर कसिी भी स्थान से बंधे नहीं हैं।

जब वे इस प्रकार बातें कर ही रहे थे, तब सूर्य अस्त होने लगा, और उन्हें रास्ते में एक मठ मलिा, जहाँ रात बतिाने के लिए उन्हें सड़क से हटकर जाना पड़ा; अतः वे उस मठ की ओर बढ़े। बड़े ने दानयिैल से कहा:

'तुम आगे जाओ, और मैं तुम्हारे पीछे आऊँगा।'

दानयिैल ने सोचा कि शायद बूढ़े को कसिी कारण से रुकना पड़ा होगा, इसलिए वह आगे बढ़ गया; और, मठ के द्वार पर पहुँचकर, वह बूढ़े का इंतजार करने के लिए बैठ गया। लेकनि जब बूढ़ा नहीं आया, तो दानयिैल ने सोचा कि वह रात कहीं और बतिाने गया होगा। मठ में प्रवेश करने पर, उसने मठाधीश और भाइयों को प्रणाम कयिा और उसके लिए परोसे गए भोजन का सेवन कयिा। जब वह बाद में सो गया, तो वृद्ध उसे फरि से सपने में दखिाई दिए और उन्होंने एक बार फरि उसे अपनी यात्रा के दौरान बताई गई बात को पूरा करने और जल्द से जल्द बज़िान्टयिम के लिए रवाना होने की सलाह दी।

नींद से जागने पर और अपने चारों ओर किसी को न देखकर, डैनियल ने सोचा कि यह कौन था जो उसे दिखाई दिया था: एक आदमी या एक देवदूत। यह सिमीओन था, महान स्तंभ-स्थायी।

इस दर्शन के बाद, दानियेल ने अपनी सुबह की प्रार्थनाएँ कहने और उस मठ में रहने वाले भिक्षुओं को शांति की कामना करने के बाद, बाइज़ेन्टियम के लिए प्रस्थान किया।

समुद्र तट पर पहुँचने पर, वह आदरणीय भिक्षु स्वर्गदूतों के सेनापति, सेंट माइकल के चर्च में प्रवेश किया, और वहाँ सात दिनों तक रुका। वहाँ उन्होंने सुना कि अनाप्ला में[8769] एक परित्यक्त मूर्तिपूजक मंदिर था, जिसमें कई अशुद्ध आत्माएँ वास करती थीं, इसलिए कोई भी उस जगह से नहीं गुज़र सकता था: वे पास से गुज़रने वाले नावकों को डुबो देती थीं, और लुटेरों की तरह पैदल गुज़रने वालों पर हमला कर उन्हें मार डालती थीं। यह सुनकर, संत ने वहाँ जाने और वहाँ रहने का निश्चय किया, महान एंथनी को याद करते हुए, जिन्होंने राक्षसों के हाथों बहुत बुराई सहन की थी और अंततः ईश्वर की मदद से, उन्हें परास्त करने के बाद, उन्हें महान सम्मान प्राप्त हुआ था। इसलिए, दानियेल निर्जन चर्च[8770] के लिए निकल पड़े, उन्होंने स्वयं को पवित्र क्रूस के एकमात्र अजेय हथियार से लैस किया, और गा रहे थे: *'यहोवा मेरा प्रकाश और मेरा उद्धार है; मैं किस से डरूँगा?'* (भजन संहिता 26:1)। लड़ाई शुरू होने से पहले ही, राक्षसों का झुंड पहले से ही आतंकित हो गया था। और यह आध्यात्मिक योद्धा, मंदिर के कोनों में घूमते हुए, उन्हें क्रॉस के चिह्न से चिह्नित करता गया, और हर बार घुटने टेककर ईश्वर से प्रार्थना करता गया। जब शाम हुई, तो राक्षसों का सरदार आ गया और उसने संत पर पत्थर फेंकना शुरू कर दिया; फिर एक भयानक गर्जना और चीखें सुनाई दीं, और हड़कंप मच गया; लेकिन दानियेल, निडर होकर प्रार्थना में खड़े होकर, बोले: *'भले ही एक सेना मेरी ओर मोड़ कर खड़ी हो जाए, मेरा हृदय भयभीत नहीं होगा; भले ही युद्ध मेरे विरुद्ध खड़ा हो जाए, तब भी मैं आशा रखूँगा'* (भजन संहिता 26:3)। इस प्रकार उन्होंने रात के पहले और दूसरे बिताए। हालाँकि, तीसरी रात को, उन्होंने सबसे शक्तिशाली दैत्यों के रूप में राक्षसों की एक भीड़ देखी, जिनके चेहरे उदास थे, जो नरभक्षियों की तरह भयानक थे, वे अपने दाँत पीस रहे थे, संत पर क्रोध से आग-बबूला थे और कह रहे थे:

'तुम्हें, हे नीच, यहाँ आने की सलाह किसने दी, जहाँ हम लंबे समय से रहते हैं और इस जगह के मालिक हैं?'

यह कहने के बाद, वे दानियेल पर टूट पड़े – कुछ उसे समुद्र में फेंकने का इरादा रखे हुए थे, कुछ उसे पत्थर मारने की कोशिश कर रहे थे; फिर भी उनमें से कोई भी उस संत के पास आने की हिम्मत नहीं कर सका। संत ने, हालांकि, प्रभु के वचनों को याद करते हुए कहा: *'इस प्रकार की आत्मा केवल प्रार्थना और उपवास से ही निकलती है।'* (मरकुस 9:29), ने निम्नलिखित किया: मंदिर के सभी प्रवेश द्वार बंद कर के, उन्होंने केवल एक छोटी सी खिड़की खुली रखी, जबकि उन्होंने स्वयं उपवास और प्रार्थना करना शुरू कर दिया। कुछ ही समय में, परमेश्वर की शक्ति से दुष्टात्माओं का पूरा झुंड वहाँ से भगा दिया गया, और लोग बिना किसी खतरे के उस स्थान से गुजरने लगे। यह बात दूर-दूर तक फैल गई, और कई स्थानीय निवासी संत डैनियल के पास आने लगे, यह देखकर आश्चर्यचकित हुए कि उसी स्थान पर जहाँ राक्षस रहते थे, वहाँ दिन-रात ईश्वर की स्तुति गूँज रही थी। लेकिन शैतान, जो अच्छाई से नफरत करता था और संत से पराजित होते देखना नहीं चाहता था, ने कुछ पुरोहितों में ईर्ष्या भर दी – और वे आपस में कहने लगे:

'वह यहाँ कैसे आ गया, और हर कोई उसके पास क्यों उमड़ रहा है और हर जगह उसकी प्रशंसा क्यों कर रहा है? चलो हम जाकर उसे पादरी के पास बदनाम करें, ताकि वह उसे यहाँ से हटा दें।'

कॉन्स्टेंटिनोपल के पैट्रिआर्क, अनातोलियस[8771] के पास जाकर, उन्होंने संत के बारे में उनकी निंदा की। लेकिन पैट्रिआर्क ने उनसे उत्तर दिया:

'तुम एक ऐसे व्यक्ति पर बदनामी क्यों कर रहे हो जिसके बारे में तुम कुछ नहीं जानते—कि वह कहाँ से आया है या उसका जीवन कैसा है? यदि वह एक धार्मिक जीवन जीता है, तो हमें भी उसकी पवित्रता के उदाहरण का पालन करना चाहिए; लेकिन यदि वह दुष्टता से रहता है, तो निस्संदेह वह निर्वासन का पात्र है। हालाँकि, उसे तुरंत निर्वासित नहीं किया जाना चाहिए, बल्कि एक गहन प्रारंभिक जाँच के बाद ही।'

महाधर्माध्यक्ष के उत्तर से लज्जित होकर, बदनाम करने वाले चुप हो गए।

[8769] अनाप्ल कॉन्स्टेंटिनोपल का एक उपनगर है।

[8770] यह 5वीं शताब्दी के दूसरे भाग में, बाइजेंटाइन सम्राट लियो प्रथम के शासनकाल के दौरान था।

[8771] अनातोलीयस – 449 से 458 तक कॉन्स्टेंटिनोपल के पैट्रिआर्क।

शैतान, यह देखकर कि उसकी चालाकियाँ विफल हो गई हैं, संत को पहले से भी अधिक तीव्र दृष्टि और भयावह दृश्यों से पीड़ित करने लगा, मानो वह अपनी पूरी सेना के साथ उस पर टूट पड़ा हो: कभी उसे समुद्र में डुबाने की कोशिश करता, तो कभी यह घमंड करता कि वह उसे मार डालेगा। लेकिन शैतान संत को जरा भी नुकसान पहुँचाने में असफल रहा। अपनी प्रार्थना जारी रखते हुए, दानियेल ने ईश्वर से पुकारा:

'हे मेरे प्रभु यीशु मसीह, जिन पर मैं विश्वास करता हूँ, वे स्वयं तुम्हें नरक की खाई में डाल देंगे।'

जैसे ही उसने ये शब्द बोले, विलाप और कराहने की आवाज़ें उठने लगीं, मानो कोई रो रहा हो, और संत ने देखा कि राक्षस चमगादड़ों की तरह उड़ते हुए उस स्थान से पीछे हट रहे थे। लेकिन इसके बाद भी, राक्षसों ने संत को कष्ट देना बंद नहीं किया; उन्होंने एक बार फिर उनके खिलाफ निंदकों को भड़काया, जो महाधर्माध्यक्ष के पास आकर बोले:

'महाधर्माध्यक्ष महोदय! दानियेल एक जादूगर और धोखेबाज़ है; वह जादू-टोने से लोगों को बहकाता है, और इसलिए हम उसे बर्दाश्त नहीं कर सकते।'

पैट्रिआर्क ने दानियेल को बुलाया और उससे पूछा कि वह कौन है, कहाँ से आया है, वह इन भूमियों में क्यों आया है, और वह ईश्वर में कैसे विश्वास करता है। दानियेल ने तुरंत अपने ऑर्थोडॉक्स धर्म की घोषणा की, फिर अपने देश और उत्पत्ति के बारे में बताया, और यह भी बताया कि वह ईश्वर के एक प्रकट वचन से बुलाए जाने पर बिज़ान्टियम आया था। यह सुनते ही, पैट्रिआर्क उठे और उन्होंने उसे गले लगा लिया, उसे ईश्वर के पुरुष के रूप में सम्मानित किया, और फिर उसे शांति से विदा कर दिया। कुछ दिनों बाद, पैट्रिआर्क गंभीर रूप से बीमार पड़ गए; उन्होंने तुरंत डैनियल को बुलाया और उससे पैट्रिआर्क के ठीक होने के लिए ईश्वर से प्रार्थना करने को कहा। जैसे ही संत ने प्रार्थना की, पैट्रिआर्क तुरंत उठ खड़े हुए, उन्हें स्वास्थ्य लाभ हो गया; और चिकित्सक, जिसने उनका इलाज बिना किसी शुल्क के किया था, ने अपने इलाज के बदले में पैट्रिआर्क से कुछ भी नहीं माँगा, सिवाय इसके कि वह उन लोगों को माफ कर दें जिन्होंने पैट्रिआर्क के सामने उसकी बदनामी की थी। पैट्रिआर्क ने कहा:

'मैं उन लोगों को माफ किए बिना कैसे रह सकता हूँ जो इतने बड़े आशीर्वाद के माध्यम बने हैं, कि मुझे न केवल आपको देखने, बल्कि आपके द्वारा चंगाई पाने का भी योग्य समझा गया है?'

महाधर्माध्यक्ष ने संत से उनके साथ रहने का आग्रह किया, लेकिन दानियेल ने अपनी कोठरी में वापस भेजे जाने को प्राथमिकता दी; और वहाँ पहुँचने पर, उन्होंने अपने पीछे दरवाज़े फिर से बंद कर दिए, और केवल उनके दर्शन के लिए आने वालों के लिए एक छोटा सा छेद छोड़ दिया।

इस प्रकार के कठोर जीवन के नौ वर्षों के बाद, ईश्वर ने उस आदरणीय संत को सबसे परिपूर्ण कृत्य के लिए बुलाने का निश्चय किया। इसके लिए, उन्हें ईश्वर से एक विशेष प्रकटीकरण प्राप्त हुआ: एक दर्शन में, उन्होंने अपने सामने एक स्तंभ को खड़ा देखा , जिसकी ऊँचाई बादलों से भी ऊपर थी; स्तंभ के शीर्ष पर परम पूज्य सिमोन खड़े थे, उनके साथ दो तेजस्वी युवक थे; और उन्होंने स्तंभ-निवासी की आवाज़ सुनी जो स्तंभ की ऊँचाई से बोल रही थी:

'दानियेल! मेरे पास आओ।'

कहा जाता है कि दानियेल ने उत्तर दिया:

'प्रभु! मैं इतनी ऊँचाई पर कैसे चढ़ सकता हूँ?'

तब आदरणीय सिमोन ने उन दो युवकों को आज्ञा दी कि वे नीचे आकर दानाएल को उनके पास ले आएं। युवकों ने तुरंत आज्ञा का पालन किया और उसे सिमोन के सामने खड़ा कर दिया। आदरणीय व्यक्ति ने दानाएल को गले लगाते हुए ऊँचे स्वर में उससे कहा:

'हौसला रखो, दानियेल! उदार और दृढ़ बनो! अटल रहो और साहसी बनो!'

जब संत सिमियन ने ये शब्द बोले, तो उनकी आवाज़ गड़गड़ाहट जैसी गूँजी, और उसकी आवाज़ सुनकर डैनियल जाग गया। इस दृष्टि ने इस बात का पूर्वाभास दिया कि डैनियल, संत सिमियन द स्टाइलाइट की तरह, स्तंभ पर चढ़ने और शरीर तथा आत्मा से उसके निकट आने के लिए नियत था।

उस समय, आदरणीय सिमीओन स्टाइलाइट के शिष्य सेर्गीयस, राजा से मिलने के लिए अंतीयोकिया से आए और उन्होंने आदरणीय सिमीओन का काउल (cowl)[8772] लाया, जिसे राजा को सभी बुराइयों से बचाने के लिए उपहार के रूप में

[8772] कुकुल – जिसका ग्रीक से अनुवाद 'टोपी' है – मूल रूप से सभी भिक्षुओं द्वारा पहना जाने वाला एक सिर ढकने वाला वस्त्र था, जो मौन, पवित्रता और परोपकार, ईश्वर के मौन चिंतन और अपने प्रति परम ध्यान का प्रतीक था; कभी-कभी कुकुल पर एक क्रॉस सिल दिया जाता था। बाद में, जैसा कि आज भी है, कूकुल उन लोगों का विशिष्ट परिधान बन गया था जिन्होंने महान स्कीमा ग्रहण की थी। इसे कौल के स्थान पर पहना

भेजा गया था। लेकिन चूँकि राजा का मन सांसारिक मामलों पर लगा था और वह पूरी तरह से सांसारिक कार्यों में डूबा हुआ था, सर्जियस ने उसे छोड़कर लौटने का निश्चय किया; और वह निद्रारहितों के मठ[8773] का दौरा करना चाहता था। जब वह उस स्थान से होकर गुज़र रहा था जहाँ पूजनीय डैनियल अपना तपस्वी जीवन बिता रहे थे, तो उसके कुछ साथियों को याद आया कि कैसे उन्होंने धैर्य से अपना जीवन जिया था, और यह भी कि उन्हें ईश्वर से बीमारियों को ठीक करने और दुष्ट आत्माओं को भगाने का वरदान प्राप्त था। यह सुनकर, सेरजियस ने जहाज को किनारे पर लंगर डालने का आदेश दिया और आदरणीय डैनियल से मिलने के लिए निकल पड़ा। डैनियल ने प्रेम से उनका स्वागत किया, और सेरजियस, एक काफी लंबी बातचीत के बाद, इस बात से आश्वस्त हो गया कि सिमीओन की आत्मा डैनियल पर विराजमान थी, ठीक उसी तरह जैसे एलियाह की आत्मा एलीशा पर विराजमान थी। (2 राजा 2:15), उसने उसे वह उपहार दे दिया जो वह अपने साथ लाया था, अर्थात् शमिोन का लबादा, क्योंकि यह किसी और की तुलना में दानियेल के लिए अधिक उपयुक्त था।

इसके बाद, एक सपने में, सेरजियस ने देखा कि तीन जवान उसके पास आए और कहा:

'उठो, सेरगियस, और दानियेल से कहो कि उस मंदिर में उसके रहने का समय अब समाप्त हो गया है; उसे, सेरगियस, अपना दर्शन दानियेल को सुनाना।'

जागने पर, सर्जियस ने यह बात दानियेल को बताई, और दानियेल ने यह समझते हुए कि ईश्वर उन्हें पूजनीय समिोन के जीवन का अनुकरण करने का आदेश दे रहे थे, सर्जियस से कहा कि वह रेगिस्तान में जाकर उनके लिए एक उपयुक्त स्थान खोजे जहाँ एक स्तंभ स्थापित किया जा सके। सर्गेयस, ईश्वर के निर्देशानुसार एक पहाड़ी के चारों ओर घूमकर, उस स्थान पर पहुँचे जहाँ स्तंभ स्थापित किया जाना था; अपने कठिन सफर से थके-हारे वहाँ विश्राम करने के लिए रुके, तो उन्हें एक दिव्यदृष्टि हुई। एक सफेद कबूतर उनके ऊपर से उड़ गया, और सर्गेयस ने उसे पकड़ने की कोशिश की। अचानक उन्होंने स्वर्ग से एक आवाज सुनी:

'क्या तुम जाल से कबूतर को पकड़ने का सोच रहे हो? तुम्हें इसे अपने हाथों से पकड़ना होगा।'

लेकिन कबूतर आकाश में बहुत ऊँचा उड़ गया और फिर दिखाई नहीं दिया। इससे यह समझते हुए कि ईश्वर उसे वह स्थान दिखा रहे थे जहाँ स्तंभ स्थापित किया जाना था, सेरजियस डेनियल के पास लौटे और उन्होंने जो कुछ भी देखा और सुना था, सब कुछ बता दिया। अत्यंत प्रसन्न होकर, दानियेल ने अपने मित्र, मार्क नामक व्यक्ति से, अपने लिए एक स्तंभ बनाने के लिए कहा। मार्क ने ईश्वर की मदद से, जल्दी से स्तंभ खड़ा कर दिया। जब निर्माण और उसकी छत पूरी हो गई, तो पूजनीय दानियेल रात में उस चर्च से चले गए ताकि कोई भी उनके बारे में न जाने, और स्तंभ के पास आकर, ईश्वर से प्रार्थना की:

'महिमा तेरी हो, हे मसीह हमारे परमेश्वर, कि तू मुझे ऐसे जीवन के योग्य समझा! हे प्रभु, तू जानता है कि तेरे द्वारा ही मैं बलवान हुआ हूँ, और तुझ पर भरोसा करके, मैं इस स्तंभ पर चढ़ता हूँ। अत; मेरी भेंट स्वीकार कर, मुझे इस प्रयास के लिए बल दे, और मेरे इस कार्य को पूर्ण कर।'

इस प्रकार प्रार्थना करने के बाद, वह स्तंभ पर चढ़ गया और एकमात्र ईश्वर के लिए स्वर्ग और पृथ्वी के बीच मौन एकांत में रहने लगा, सभी सांसारिक चीजों से मुंह मोड़कर, शरीर और आत्मा से स्वर्गीय चीजों के करीब आता गया। लेकिन शैतान, जो हमेशा ईश्वर के सेवकों से ईर्ष्या करता है, ने यहाँ भी संत को परेशान करना शुरू कर दिया, और उस जगह के मालिक, गेलासियस नामक व्यक्ति को, उनके खिलाफ भड़काया। जब उसे यह पता चला कि उसकी संपत्ति पर उसकी अनुमति के बिना एक स्तंभ खड़ा कर दिया गया था, और एक संन्यासी ने उसकी जानकारी के बिना उस पर निवास कर लिया था, तो वह बहुत क्रोधित हो गया और उसने इस बात की सूचना राजा और अनातोलियस के उत्तराधिकारी, पैट्रिआर्क जेनाडियस को दी। राजा ने इसकी कोई परवाह नहीं की, जबकि पैट्रिआर्क ने न केवल उसे स्तंभ से उतारने का आदेश दिया, बल्कि उसे दंडित भी करना चाहा, और गेलासियस को उसे अपमानपूर्वक स्तंभ से हटाने की अनुमति दे

जाता है, जिसे मठवासी जीवन में प्रारंभिक मुंडन के दौरान कामेलौका के ऊपर रखा जाता है और यह कौल से इस बात में भिन्न है कि यह सिर और कंधों को पूरी तरह से ढकता है; इसका हेडबैंड नुकीला होता है और पांच क्रॉस से सजा होता है।

[8773] 'कभी न सोने वाले भिक्षु' के नाम से जाना जाने वाला सामुदायिक मठ चौथी शताब्दी के अंत में संत अलेक्जेंडर द्वारा स्थापित किया गया था; शुरुआत में यह यूफ्रेटिस नदी के किनारे गहन एकांत में स्थित था, लेकिन बाद में इसे कॉन्स्टेंटिनोपल में स्थानांतरित कर दिया गया। इस मठ के निवासियों के मठवासी नियम और जीवन शैली विशेष कठोरता से चिह्नित थे। मठ का नाम इस तथ्य से पड़ा कि इसके भ्रातृगण, दिन और रात के 24 घंटों के अनुरूप 24 समूहों में विभाजित थे, जो दो पालियों में निरंतर प्रभु की महिमा करते थे, और दाऊद के भजन लंबी अवधि तक गाते थे, ताकि इस मठ में दैवीय सेवा बिना किसी रुकावट के हो और कभी बंद न हो।

दी। हेलासयिस, क्रोधति होकर, अपनी योजना को अंजाम देने के लिए निकिल पड़ा, लेकनि ईश्वर ने, उसे उसके बुरे इरादे से रोकते हुए, एक साफ़ दनि में अचानक बादल गरजने और बजिली चमकने के साथ बारशि और एक बड़ी आंधी भेज दी। हालाँकि, हेलासयिस नहीं रुका और उसने अपने दुष्ट संकल्प को नहीं छोड़ा; उसका हृदय द्वेष से जल रहा था, क्योंकि स्वयं शैतान उसके भीतर क्रोध भड़का रहा था। स्तंभ के पास पहुँचकर, गेलासयिस ने संत पर चढ़ि और फटकार के साथ चल्लिाना शुरू कर दयिा, यह मांग करते हुए कि वह तुरंत स्तंभ से उतर आए, और अगर वह मना कर दे तो उसे जबरदस्ती नीचे फेंक देने की धमकी देने लगा। गेलासयिस के साथ आए कुछ लोगों ने उसे रोकने की कोशशि की, यह कहते हुए:

'उसे रहने दो; आखरिकार, वह तुम्हें कोई नुकसान तो नहीं पहुँचा रहा है; और यह स्तंभ तुम्हारी जमीन पर भी नहीं है; इससे तुम्हें कोई हानि नहीं हो रही है, बल्कि इसके वपिरीत, तुम्हारे लिए ऐसा पड़ोसी होना बेहतर है जो तुम्हारे लिए प्रार्थना करता है।'

लेकनि गेलासयिस ने उनकी कोई बात नहीं सुनी, और गुस्से में संत से हमेशा के लिए स्तंभ छोड़ने का आदेश दयिा। जब संत उतरने लगे और छठे पायदान तक पहुँच चुके थे, तो सभी ने देखा कि दनि-रात बनिा रुके खड़े रहने से उनके पैर लकड़ी की तरह अकड़ गए थे और सुन्न हो गए थे। तब सभी को उस पर तरस आ गया, और यहाँ तक कि गेलासयिस स्वयं भी नरम पड़ गया और उससे अपने स्थान पर लौटने तथा उसे, गेलासयिस को, अपमानति करने की हम्मित करने के लिए क्षमा करने की वनिती करने लगा। उसके बाद, गेलासयिस ने संत के लिए उससे भी ऊँचा एक स्तंभ लगवाया और तब से उन्होंने संत का सम्मान करना शुरू कर दयिा, और स्वयं राजा की उपस्थतिि में भी उस पुण्य पुरुष के गुणों का बखान करने लगे।

एक दनि, थ्रेस से एक वृद्ध और सम्माननीय व्यक्ति संत के पास आया[8774] , अपने साथ अपने एकमात्र पुत्र को लाया, जो एक राक्षस के वश में था; उसे स्तंभ के पास बठिाकर, पति ने आँसू भरी आँखों से संत से दया करने और उसे क्षमा करने की वनिती की:

'देखो,' उन्होंने कहा, 'आज तीसवाँ दनि है जब से वह, एक राक्षस के वश में, नरिंतर तुम्हारा नाम जप रहा है, हे ईश्वर के सेवक।'

दयालु पादरी ने उससे उत्तर दयिा:

'यदि तुम वश्विास करते हो कि मेरे प्रभु यीशु मसीह मेरे द्वारा तुम्हारे पुत्र को चंगा करेंगे, तो तुम्हारा वश्विास पूरा हो!'

[8775]उसके बाद, उन्होंने आदेश दयिा कि उस भूतग्रस्त व्यक्ति पर पवत्रि तेल का अभषिेक कयिा जाए। जब यह हो गया, तो दानव ने उसे ज़मीन पर फेंक दयिा और उसे ज़ोर से हलिाते हुए चल्लिाया: 'मैं जा रहा हूँ, मैं जा रहा हूँ' - और फरि सचमुच चला गया। पति ने, अपने बेटे को स्वस्थ होते देख, उसे एक मठ में भेज दयिा, जहाँ वह एक कुशल भक्षिु बन गया। तब करि नामक एक और व्यक्ति प्रकट हुआ, जो बुद्धि और वाक्पटुता का धनी था। उसकी अलेक्ज़ेंड्रा नाम की एक बेटी थी, जसिे एक राक्षस सता रहा था, और वह भी उसे संत के पास ले आया। जैसे ही संत ने ईश्वर से प्रार्थना की और उस ग्रसति लड़की पर अपना हाथ रखा, राक्षस तुरंत ही उससे चला गया, और वह स्वस्थ हो गई। उस समय से, करि ने पूजनीय के प्रति गिहरा प्रेम और भक्ति विकिसति कर ली। एक अवसर पर, वह अपने एक योद्धा की पत्नी—जो भी एक राक्षस के वश में थी—को संत के पास लाया, और वह धन्य की प्रार्थनाओं से ठीक हो गई; इसके आभार में, करि ने संत के स्तंभ पर नम्निलखिति छंद अंकति कए:

– यहाँ एक पुरुष दृढ़ खड़ा है, जो हर ओर से प्रहार झेलता है: फरि भी वह न तो हवाओं से डरता है और न ही खराब मौसम से; उसका भोजन रक्त रहति, स्वर्गीय मन्ना है। समिीओन का वंशज दो दीवारों को एक युग्म स्तंभ से मजबूत करता है, और उस माता के पुत्र की महमिा करता है, जसिे ववािह का ज्ञान नहीं था।

ग्रीक राजा, लयिो द ग्रेट[8776] , जनिके उत्तराधकिारी के लिए कोई पुत्र नहीं था लेकनि वे एक पुत्र के लिए तरसते थे, ने परम पूज्य दानयिल से अपनी इच्छा पूरी करने के लिए उनके पक्ष में ईश्वर से नविेदन करने का अनुरोध कयिा। परम

[8774] प्राचीन काल में, थ्रेस में वह क्षेत्र शामलि था जो अब हंगरी का पूर्वी भाग, ट्रांसल्विेनयिा, बेसरबयिा, मोल्डोवा, वलाचयिा, बुल्गारयिा, सर्बयिा और रुमेली का पूर्वी भाग है।

[8775] सरिील – एक प्रसद्धि ईसाई कवि और भजनकार, सम्राट थयिोडोसयिस द यंगर के अधीन कॉन्स्टेंटनिोपल के गवर्नर (5वीं शताब्दी के पहले छमाही में), और बाद में स्मर्ना के बशिप।

[8776] संत लयिो प्रथम – 467 से 474 तक बाइजेंटाइन सम्राट।

पूज्य दानयिल, जो स्वयं 'प्रार्थना के पुत्र' थे—क्योंकि वे अपनी माँ की प्रार्थनाओं से ही पैदा हुए थे—ने पहले ही अपनी प्रार्थनाओं के माध्यम से दूसरों को ईश्वर की दया प्रदान की थी, जिससे उन्हें संतान प्राप्त हुई। इसलिए, इस अवसर पर भी, ईश्वर से प्रार्थना करने के बाद, उन्होंने सम्राट को भविष्यवाणी की कि अगले वर्ष उन्हें एक पुत्र होगा। यह भविष्यवाणी वास्तव में सच हुई। अपने पुत्र के जन्म पर प्रसन्न होकर, सम्राट ने संत की प्रार्थनाओं के लिए कृतज्ञता स्वरूप उनके लिए एक तीसरा स्तंभ खड़ा किया।

जब संत डैनियल की ख्याति दूर-दूर तक फैल गई, तो पूर्व राजा थियोडोसियस द यंगर[8777] की पत्नी रानी यूडोक्सिया उनके पास आईं; उन्होंने डैनियल से स्तंभ से उतरकर अपने राज्य में आने के लिए कहा, जहाँ, उनके अनुसार, कई सुनसान स्थान थे। उस धन्य व्यक्ति ने, उनकी अच्छी मंशा और उत्साह की प्रशंसा करते हुए भी, उस स्थान को छोड़ना नहीं चाहा जहाँ प्रभु ने उन्हें रहने की आज्ञा दी थी; रानी को आशीर्वाद देने के बाद, उन्होंने उन्हें शांति से विदा कर दिया, जबकि वे स्वयं गेलासियस द्वारा स्थापित सबसे ऊँचे स्तंभ पर चढ़ गए।

उस समय, बिज़ान्टियम में कुछ विधर्मीयों ने वासियाना नामक एक वेश्या को बड़ी रकम रिश्वत देकर संत के पास भेजने और उन्हें—या उनके किसी शिष्य को—बुराई में फँसाने के लिए कहा। वह निर्लज्ज और अशुद्ध महिला, उस पवित्र और शुद्ध पुरुष के पास चल दी, यह कल्पना करते हुए कि वह धन्य पुरुष पहली ही नज़र में मोहित हो जाएगा और उसके साथ पाप करने के लिए प्रेरित हो जाएगा: क्योंकि उसने सोने से बुने हुए वस्त्र पहने हुए थे और विभिन्न प्रकार के आभूषणों से सजी हुई थी। वहाँ पहुँचकर, उसने बीमार होने का नाटक किया और स्तंभ के सामने वाले खेत में, 'सद्-चरवाहे' के झुंड के बाड़े के पास रहने लगी; उसने खुद संत को नहीं तो कम से कम उनके शिष्यों को आध्यात्मिक रूप से नुकसान पहुँचाने के उद्देश्य से बीमार होने का नाटक किया। वहाँ काफी समय तक रहने और यह देखकर कि उसे कोई सफलता नहीं मिली—क्योंकि वह ऐसे मन को किसी भी तरह से बहका नहीं सकती थी जो पृथ्वी से नहीं जुड़ा था, बल्कि हमेशा स्वर्ग में परमेश्वर के साथ वास करता था—वह खाली हाथ लौट गई। बाद में, उसे काम पर रखने वाले विधर्मी लोगों के पास लौटकर, उस दुखिया महिला ने झूठ बोला, और दावा किया कि दानियेल, उसके बहकावे में आकर और उसकी सुंदरता को बहुत चाहकर, ने अपने शिष्यों को आदेश दिया था कि उसे स्तंभ पर उसके पास ले आएं; उसने आगे कहा, 'लेकिन मैंने इसकी सहमति नहीं दी; और वे, इस डर से कि उनकी अधर्मी इच्छा लोगों को पता चल सकती है, मुझे मारने की साजिश रचने लगे, और मैं बड़ी मुश्किल से उनकी चंगुल से बचकर भाग निकली।'

इस प्रकार उस दुष्ट वेश्या ने संत के बारे में झूठ बोला, जबकि विधर्मी लोगों ने उसके शब्द लोगों के बीच फैला दिए, और निर्दोष तथा पवित्र दानियेल पर लोगों को उसके विरुद्ध करने के उद्देश्य से बदनामी की। लेकिन ईश्वर का न्याय उस कपटी और नीच बदनाम करने वाली पर हुआ: एक दुष्ट आत्मा अचानक उस पर सवार हो गई और उसे सताना शुरू कर दिया; फिर, अनैच्छिक रूप से, उसने स्वीकार कर लिया कि उसे विधर्मीयों ने उकसाया था। इस प्रकार ईश्वर के संत के बदनाम करने वाले लज्जित हुए। और लोगों ने, उसे पकड़कर, संत के पास लाया और उनसे उसे राक्षसों के कष्ट से मुक्त करने का आग्रह किया। तब दानियेल, जो मसीह का एक सच्चा चेला था, जिसने हमें अपने शत्रुओं से प्रेम करना सिखाया और आज्ञा दी कि हम उन लोगों को सत्तर बार तक क्षमा करें जो हमारे विरुद्ध पाप करते हैं (मत्ती 18:21-22), ने उसके बुरे का बदला बुराई से नहीं दिया, बल्कि अपने विरोधी के साथ भलाई की: उसके लिए परमेश्वर के सामने प्रार्थना करने के बाद, उन्होंने उसे पवित्र तेल पीने का निर्देश दिया; और वह, चंगे हो जाने पर, संत के स्तंभ को चूमने लगी, सभी के सामने अपने पाप का खुलेआम इकरार करते हुए और क्षमा मांगते हुए। उस समय से, उसने अपने पापी रास्तों को त्यागकर एक पवित्र जीवन जीना शुरू कर दिया।

रेवरेंड के पास न केवल दुष्टात्माओं को भगाने और बीमारियों को ठीक करने की ईश्वर की शक्ति थी, बल्कि उन्हें भविष्यवाणी का वरदान भी प्राप्त था, अर्थात् भविष्य को पूर्व देखे और बताने की क्षमता। नगर पर आने वाले ईश्वर के क्रोध और दंड को पूर्व में ही भांपते हुए, उन्होंने इस बात की सूचना पैट्रआर्क जेनाडियस और राजा लियो को भेज दी, और उन्हें ईश्वर के धार्मिक क्रोध को टालने के लिए सप्ताह में दो बार प्रार्थना सभा आयोजित करने की सलाह दी। लेकिन धन्य व्यक्ति की सलाह पर किसी ने ध्यान नहीं दिया; और इसलिए, अपने पापों के कारण, उन्होंने वास्तव में उसकी भविष्यवाणी को पूरा होते देखा, जैसा कि नीचे बताया जाएगा। उस समय, राजा ने, परमेश्वर की आत्मा से प्रेरित होकर, पैट्रआर्क को महान दानियेल के पास जाने और उसे एक प्रेस्बिटिर के रूप में नियुक्त करने का निर्देश दिया।

[8777] 408 से 450 तक

पैट्रआर्क अपने पुरोहतिों के साथ रवाना हुए और स्तंभ पर पहुँचने पर उन्होंने पूजनीय से कहा कि वह उन्हें लंबे समय से देखना चाहते थे, लेकनि चर्च के मामलों के बोझ के कारण ऐसा नहीं कर सके।

उन्होंने कहा, 'अब, हालांकि, मैं आपको देखने और आपके प्रार्थनाओं तथा संगति से धन्य होने आया हूँ।'

तब पैट्रआर्क ने उनसे सीढ़ी लगाने और उनके पास चढ़ने की अनुमति माँगी। लेकनि संत ने उत्तर दयिा:

'जसिने तुम्हें व्यर्थ में हम तक भेजा है, उसने तुम पर इतना भारी बोझ डाल दयिा है।'

जब संत ने यह कहा, तो पैट्रआर्क यह देखकर चकति और स्तब्ध रह गए कि वह यह कैसे जान सकता था कि उनकी, पैट्रआर्क की, यात्रा स्वैच्छकि नहीं बल्कि अनविार्य थी; क्योंकि यदि राजा ने उन्हें ऐसा करने के लिए मनाया नहीं होता, तो वे उनके पास नहीं गए होते। काफी देर तक, पादरी और उनके साथ आए लोग संत से वनिती करते रहे कि वे सीढ़ियाँ मँगवा दें ताकि वे उनके पास चढ़ सकें, लेकनि उन्होंने हर संभव तरीके से मना कर दयिा। इस बीच, उमस भरी गर्मी थी; सूरज कड़कती धूप बरसा रहा था, और पादरी, यह देखकर कि गर्मी और प्यास से कई लोग बेहोश हो रहे थे, ने नीचे खड़े आर्चडीकन को दीक्षा के समय की प्रथागत प्रार्थनाएँ शुरू करने का आदेश दयिा। खुद प्रार्थना करते हुए और पुरोहति पद के लिए नरि्धारति प्रार्थनाओं का पाठ करते हुए, उन्होंने संत दानयिल को एक प्रेस्बटिर (पादरी) के रूप में नयिुक्त कयिा, भले ही वह स्तंभ पर उनसे बहुत ऊपर थे।

वहाँ इकट्ठा हुए सभी लोगों ने उद्घोष कयिा: 'अक्सओिस'[8778] । इसके बाद, धन्य दानयिल ने, इसमें ईश्वर की इच्छा को पहचानते हुए, स्तंभ के पास एक सीढ़ी रखने का आदेश दयिा और महाधर्माध्यक्ष के हाथों से पुरोहतिीय वस्त्र ग्रहण कएि; उन्होंने उनके साथ परम पवत्रि और दव्यि रहस्यों में भाग लयिा और स्तंभ पर आए सभी लोगों के लिए प्रार्थना करने के बाद, उन्हें सभी को शांति से वदिा कर दयिा। जब राजा को यह पता चला कि परम पूज्य दानयिल का अभषिेक हो गया है, तो वह प्रसन्न हुआ और स्तंभ की ओर दौड़ा। अपने शाही वस्त्र उतारकर, वह वनिम्रतापूर्वक स्तंभ पर परम पूज्य के पास चढ़ा और उनके चरणों में लोट गया। लेकनि जब उन्होंने देखा कि बहुत देर तक खड़े रहने के कारण आदरणीय पति के पैर सूज गए थे और उनमें कीड़े पड़ रहे थे, तो वे उनके महान धैर्य पर चकति हो गए और उनका आशीर्वाद प्राप्त कर आनंदपूर्वक घर लौट आए। इस बीच, संत की उस भवषि्यवाणी के पूर्ण होने का समय आ गया था, जो उन्होंने उस नगर पर आने वाले ईश्वर के प्रकोप के बारे में कही थी। सतिंबर के महीने में, पवत्रि शहीद मामंत के पर्व के दनि, जसिे आमतौर पर बज़िन्टयिम में बड़ी धूमधाम से मनाया जाता था, ठीक उसी समय जब उनके नाम से समर्पति चर्च में शाम को 'ऑल-नाइट वजिलि' शुरू हो रहा था, उस वशिाल राजधानी शहर में अचानक एक बहुत ही भयंकर आग लग गई; यह आग इतनी तेजी से फैली कि यह लगभग पूरे शहर को अपनी चपेट में ले लयिा, जो 'शपि वॉल' नामक समुद्री दीवार से शुरू होकर, कॉन्स्टेंटाइन मार्केट होते हुए जूलयिन तट[8779] तक पहुँच गई, और इस प्रकार शहर के पूरे केंद्र को घेर लयिा; ईश्वर का प्रचंड क्रोध जनता पर टूट पड़ा: आग ने न केवल अनगनित बड़े घरों और उनमें रखी चीज़ों, सुंदर महलों और पवत्रि चर्चों को नष्ट कर दयिा, बल्कि अनगनित लोगों को भी; कुछ आग से राख हो गए, दूसरों का आधा शरीर झुलस गया; और कुछ के हाथ या पैर, आँखें या सरि घायल हो गए। और आग बुझाने का कोई उपाय नहीं था; वे जतिना ज़ोर लगाकर उसे बुझाने की कोशशि करते, आग की लपटें उतनी ही ज़ोर से भड़कती थीं: इस प्रकार ईश्वर अपने लोगों को उनके पापों के लिए दंड दे रहे थे।

इस प्रकार कॉन्स्टेंटनिोपल एक ऐसी आग से भस्म हो गया जो लगभग वैसी ही थी जैसी एक बार सदोम नगर को नष्ट कर गई थी (उत्पत्ति 19:24-25)। तब उन्हें आदरणीय दानयिल की भवषि्यवाणी याद आई, जब उन्होंने इस दंड की भवषि्यवाणी की थी और लोगों से प्रार्थना करने और पश्चाताप करने का आह्वान कयिा था; और वे आँसुओं से भरी वनिती के साथ उनके पास गए, उनसे अपने प्रार्थनाओं से ईश्वर को प्रसन्न करने और आग की लपटों को बुझाने के लिए कहा। संत ने, आँखों में आँसू लिए, उन पर डाँट लगाई कि जब उन्होंने इस वपित्ति की भवषि्यवाणी की थी तो उन्होंने उनकी बात क्यों नहीं सुनी, और सप्ताह में दो बार सामूहकि प्रार्थना सभा आयोजति करने की उनकी सलाह पर क्यों नहीं चले। तब, उन्होंने स्वर्ग की ओर अपने हाथ उठाकर शहर और उसके नविासयिों के लिए ईश्वर से भक्तपिूर्वक प्रार्थना की; और उनकी प्रार्थना के बाद, उन्होंने घोषणा की कि आग सात दनिों में बुझ जाएगी। और वास्तव में ऐसा ही हुआ। राजा स्वयं,

---

[8778] अक्सयिोस – 'योग्य' – एक उद्गार जो उम्मीदवार के अभषिेक के लिए वशि्वासयिों की सहमति को दर्शाता है।

[8779] सम्राटों के नाम पर रखे गए स्थान: संत कॉन्स्टेंटनि द ग्रेट, प्रेरतिों के समकक्ष, और जूलयिन द एपोस्टेट।

ईश्वर के क्रोध से डरकर, रानी के साथ सम्मानित भिक्षु के पास आए, और सम्मानित भिक्षु के मध्यस्थता के माध्यम से ईश्वर की दया की याचना करने लगे।

जब गर्मियाँ बीत गईं, तो एक ऐसी ठंडी शरद ऋतु आई कि उसकी कठोरता का वर्णन करना कठिन है। फिर भी, यह न केवल उस वीर तपस्वी पर हावी होने में असफल रही, बल्कि वह स्वयं उसे परास्त कर गया: चार दिनों तक ऐसा प्रतीत हुआ मानो पूरे-पूरे नदी-नाले स्वर्ग से बरस रहे हों; कुछ पहाड़ बाढ़ की बहुतायत से क्षय हो गए, और गाँव बाढ़ की चपेट में आ गए; विपरीत दिशा से तेज हवाएँ लगातार चलती रहीं, मानो एक-दूसरे से कुश्ती कर रही हों; जबकि बवंडर और तूफ़ान इतने प्रचंड थे कि उनकी ताकत ने उन लोहे के हुकों को तोड़ दिया, जिन पर पूजनीय संत के दो स्तंभ लटके हुए थे। फिर भी रेवरेंड फादर धैर्यपूर्वक ऊपर खड़े रहे, जबकि स्तंभ हिल रहा था, और वे स्वयं हवा में उस पर ऐसे झूल रहे थे, मानो वे किसी पेड़ की टहनी हों; जबकि संत के शिष्य नीचे से आँसू भरी आँखों से उन्हें निहार रहे थे, इस डर से कि वे इतनी ठंड से मर सकते हैं या स्तंभ के साथ जमीन पर गिर सकते हैं। फिर भी, प्रभु में रेवरेंड डैनियल की आशा अटूट बनी रही, और वह निडर होकर स्तंभ पर खड़े रहे, और उस पर इस तरह से पैर जमाए रहे जैसे किसी पत्थर की नींव पर। किस कारण से उसे मृत्यु का भय होना चाहिए, जिसके लिए सांसारिक जीवन एक बोझ और जेल था, और मृत्यु एक मुक्ति और स्वतंत्रता थी, और जिसने दाऊद के वचनों को दोहराया: *'मेरी आत्मा को जेल से निकाल'*, यानी शरीर से (भजन संहिता 141:7)? जितना अधिक पादरियों ने ठंड सहन की, उतनी ही अधिक लगन से वे प्रार्थना में प्रभु की ओर मुड़े। और वास्तव में, धर्मी ने पुकारा, और प्रभु ने उनकी सुनी[8780] , और जैसे उन्होंने एक बार नाव से किया था (मत्ती 8:26), वैसे ही अब उन्होंने ऊपर से हवाओं को डांटा, और अचानक सबसे बड़ी शांति और सुकून छा गया।

इसके बाद, जब राजा संत के पास यह देखने आया कि क्या पिछली बारिश और हवाओं से उन्हें कोई नुकसान हुआ है, और जब उसने देखा कि लोहे के हुक टूटे हुए थे, तो उसने स्तंभों को यथासंभव मजबूत करने का आदेश दिया और उनका आशीर्वाद लेकर विदा हो गया। हालाँकि, रास्ते में उसके साथ निम्नलिखित हुआ: जिस घोड़े पर वह सवार था, वह किसी चीज़ से चौंककर उछला और पीछे गिरकर राजा को नीचे गिरा दिया, जिससे ताज उसके सिर से दूर उड़ गया और टूट गया, और ताज के मोती और कीमती पत्थर बिखर गए। राजा का सारथी जॉर्डन नाम का एक व्यक्ति था, जो आरेयियन पंथ का अनुयायी था; राजा को घोड़े से गिरता देख, उसे डर लगा कि इसके लिए उसे पूरी तरह से ज़िम्मेदार ठहराया जाएगा और उसे मौत की सज़ा दी जाएगी। इसलिए, पीछे मुड़कर, वह रेवरेंड फादर के पास गया और आँसू भरी आँखों से उनसे राजा के समक्ष मध्यस्थता करने का आग्रह किया, साथ ही एरियन संप्रदाय को त्यागने और ऑर्थोडॉक्स धर्म में प्रवेश की याचना की। आदरणीय पादरी ने उनकी भक्ति के सम्मान में राजा को लिखा कि, चूँकि जॉर्डन ने एरियन विधर्म का त्याग कर दिया था और ईसाई ऑर्थोडॉक्स धर्म में शामिल हो गया था, वह दया का पात्र था। इस पर राजा ने संत को उत्तर दिया:

मेरे गिरने का कारण कोई और नहीं बल्कि मैं स्वयं ही था, क्योंकि मैंने आपके पवित्र स्तंभ से कुछ दूरी पर हटकर चलने के बिना, आपके सामने ही एक घोड़े पर चढ़ने की हिम्मत की; इसलिए, न केवल मैं जॉर्डन के प्रति कोई रंजिश नहीं रखता, बल्कि मैं इस बात पर भी प्रसन्न हूँ कि घोड़े से मेरा गिरना ही उसके अपने आध्यात्मिक पतन से उठने का कारण बना।"

इसके बाद के समय में, राजा ने संत का इतना सम्मान किया कि न केवल उसने स्वयं उनका आदर किया, बल्कि दूसरों के सामने भी उन्हें दिव्य शक्ति के धारी के रूप में प्रस्तुत किया; उदाहरण के लिए, जब एक विदेशी राज्य के शासक, जिसका नाम गुबाज़ियस था, को ग्रीकों के राजा लियो के पास युद्धविराम करने के लिए आना पड़ा, तो राजा उसे सम्माननीय डेनियल द स्टाइलाइट के पास ले गया और उसकी ओर इशारा करते हुए कहा:

'मेरे राज्य में एक चमत्कार देखो!'

गबाज़ियस, उस पूजनीय की सहनशक्ति से चकित होकर, न केवल संत को बल्कि उस स्तंभ को भी प्रणाम करने लगा जिस पर वे खड़े थे, और आँसुओं के साथ कहा:

'मैं आपको धन्यवाद देता हूँ, हे स्वर्गीय राजा, कि आपने मुझे, पृथ्वी के राजा के पास आकर, स्वर्ग के एक मनुष्य और उसके निवास स्थान को देखने के लिए योग्य समझा है।'

[8780] भजन संहिता 33:18 से एक अभिव्यक्ति।

अपने देश लौटने पर, गुबाज़यिस अक्सर अपने दरबारयिों के बीच उस पूजनीय संत के बारे में बात करता था और उसे पत्र भेजता था, जसिमें अपने राज्य की रक्षा के लिए उनकी पवत्रि प्रार्थनाओं का अनुरोध होता था। और वह आदरणीय पति सभी के लिए आश्चर्य का स्रोत थे—नकिट और दूर, अपने लोगों और अजनबयिों, राजाओं और आम लोगों, यूनानयिों, रोमनों और वदिेशयिों के लिए—जो उनके पास परमेश्वर के एक स्वर्गदूत के रूप में आते थे, और जब वे जाते थे, तो उनसे मदद की याचना करते थे; और उन सभी को उनकी पवत्रि प्रार्थनाओं के माध्यम से वह सब कुछ मलि जसिकी उन्होंने मांग की थी।

उस पुजारी के धैर्य और साहस, जसिसे वह अपने स्तंभ पर खड़े होकर मौसम के सभी उतार-चढ़ावों को सहन करता था, का प्रमाण उपरोक्त वर्षा और तूफानों से भरपूर मलिता है; लेकनि, कहीं हम संत की स्मृति के योग्य कसिी बात को न भूल जाएँ, तो आइए नम्निलखिति को याद करें:

एक बार एक असाधारण रूप से कठोर सर्दयिाँ पड़ीं, जसिमें ऊपर वर्णति हवाओं से भी कहीं अधकि असहनीय तेज हवाएँ चल रही थीं: बर्फ, बरफ और कड़ाके की ठंड थी; और पूजनीय फादर के स्तंभ पर न तो कोई छत थी, बल्कि हवा ने उनके सरि पर पहनी हुई चमड़े की टोपी भी उड़ा ली, जसिे तेज हवा रेगस्तिान में बहुत दूर तक ले गई। इस प्रकार वह स्वेच्छा से शहीद होने वाले संत पूरी रात खड़े रहे, सर्दयिों की कठोरता और पाले की प्रचंडता को सहते हुए। हालाँकि, दनि के समय इतनी भयंकर बर्फीली आंधी उठी कि संत के शष्यि न तो स्तंभ की ओर अपनी आँखें उठा सके और न ही संत की कोई सहायता कर सके। जैसे ही दनि समाप्त हुआ, उससे भी अधकि कठोर रात छा गई, जसिके बाद ऐसा ही एक और दनि और एक और रात आई; केवल तीसरे दनि ही तूफान कुछ शांत हुआ। तब जाकर, सीढ़यिाँ लगाकर, शष्यि स्तंभ पर चढ़कर रेवरेंड फादर के पास पहुँचे और उन्हें सरि से पैर तक पूरी तरह बर्फ में जमे हुए पाया, वे मुश्कलि से साँस ले रहे थे; और उन्होंने उन्हें गर्म पानी और स्पंज से उनका शरीर पोंछकर बड़ी मुश्कलि से गर्म कयिा। होश में आने पर, रेवरेंड फादर ने अपने शष्यिों से कहा:

'तुम मेरी इतनी चंति क्यों कर रहे हो? तुमने मुझे मेरी मीठी नींद से क्यों जगाया? मैं तो बस होंठों पर एक प्रार्थना लिए ही सोया था; फरि भी, मैं तुमसे, मेरे बच्चों, अपने पति की देखभाल करने के लिए धन्यवाद करता हूँ।'

मसीह-प्रेमी ज़ार ने, यह जानकर, संत से बहुत वनिती की, रोते हुए और ज़मीन पर सरि झुकाते हुए, कि उसे स्तंभ पर कसिी तरह की छत लगाने की अनुमति दी जाए।

उन्होंने उससे कहा, 'अपने पर दया करो, अगर अपने लिए नहीं, तो कम से कम हमारे लिए, कहीं तुम समय से पहले मरकर हमें नराश्रति न छोड़ दो।'

राजा की आँसुओं भरी वनिती देखकर, पूजनीय पतिाजी ने अपने स्तंभ के ऊपर एक छत बनाने की अनुमति दे दी, अपने आराम के लिए नहीं, बल्कि राजा की सच्ची वनिती के लिए; क्योंकि राजा को संत के प्रति इतना प्रेम और सम्मान था कि वह अपने पास आने वाले सभी राजदूतों और बड़े राजकुमारों को पूजनीय पतिाजी के स्तंभ पर ले आता था, – कभी व्यक्तगित रूप से, तो कभी अपने दरबारी कुलीनों के साथ। जो भी आते थे, वे पूजनीय पतिाजी के महान धैर्य को देखकर चकति हो जाते थे, जसिसे वे दनि-रात, ठंड और गर्मी दोनों को सहते थे, और आमतौर पर अपने लिए आध्यात्मकि संवर्धन और महान आध्यात्मकि लाभ की भावना के साथ उनसे वदिा होते थे।

कुछ समय बाद, वैंडल राजा जेनसेरकि ने यूनानयिों पर युद्ध की घोषणा की और एक बड़ी सेना के साथ अलेक्जेंड्रयिा पर चढ़ आया। इस वदिेशी आक्रमण से घबराए यूनानी सम्राट अपनी परषिद के साथ पूजनीय डेनयिल द स्टाइलाइट के पास मदद के लिए उनकी पवत्रि प्रार्थनाओं के माध्यम से सहायता मांगने आए। भवष्यि की भवष्यिवाणी करते हुए, आदरणीय दानयिल ने राजा से कहा कि न केवल जेनसेरकि अलेक्जेंड्रयिा पर कब्जा करने में वफिल रहेगा, बल्कि वह अपने सभी प्रयासों में भी वफिल रहेगा और बनिा कसिी सफलता के घर लौट जाएगा। जो कुछ भी पूजनीय ने भवष्यिवाणी की थी, वह वास्तव में सच हो गया, और इसके लिए कृतज्ञता स्वरूप, धर्मनष्ठि राजा ने पूजनीय के स्तंभ के पास उनके शष्यिों के रहने के लिए कोठरयिाँ बनाने की इच्छा व्यक्त की; हालाँकि, पूजनीय ने राजा से इसके बजाय पूजनीय साइमन द स्टाइलाइट को समर्पति एक चर्च बनाने और उनके पवत्रि अवशेषों को अंतीयोक से यहाँ स्थानांतरति करने का अनुरोध कयिा। राजा ने तुरंत दानयिल के स्तंभ के उत्तरी हस्सि में संत समियिन के सम्मान में एक चर्च बनवाया, जसिके साथ ही एक अतथि गृह भी बनवाया; और फरि, संत दानयिल की इच्छानुसार, उन्होंने संत समियिन के पवत्रि अवशेषों को उचति सम्मान के साथ नव-नर्मिति चर्च में स्थानांतरति कर दयिा। आदरणीय दानयिल इस बात से अत्यंत प्रसन्न हुए, और अवशेषों के स्थानांतरण के अवसर पर, उन्होंने लोगों को एक उपयुक्त उपदेश दयिा।

अपने स्वभाव में, रेवरेंड फादर द्वेष से मुक्त थे और अपने दुश्मनों के साथ भी प्रेम से पेश आते थे। एक बार, एक व्यक्ति ने संत का अपमान किया, और जब उसे सुनने वाले लोग इससे आक्रोशित हो गए, तो उन्होंने उन्हें एक पकी हुई मछली का टुकड़ा दिखाते हुए कहा:

'यह है जो आपका तपस्वी खाता है!'

जब, इसके बाद, उन्होंने स्वयं अपनी पत्नी और बच्चों के साथ इस मछली को खाया, तो वे तुरंत गंभीर रूप से बीमार पड़ गए; पूज्य पिता ने उनसे कोई रंजिश न रखते हुए और अपमान का बदला अपमान से न लेते हुए, अपनी प्रार्थना के द्वारा उन्हें ठीक कर दिया। उन पर दयालु पिता द्वारा दिखाई गई इतनी बड़ी दया के लिए, उन्होंने उनकी एक चांदी की मूर्ति बनवाई, जिसमें उन्हें पूजनीय के पैरों तले लेटे हुए चित्रित किया गया था, और उस पर उनके नाम उकेरे गए थे; उन्होंने इस प्रतिमा को स्वर्गीय सेनाओं के संत माइकल के चर्च में स्थापित किया।

उनकी सहनशीलता के साथ-साथ, पूजनीय दानियल में अनुग्रह-पूर्ण भाषण का महान वरदान भी था, जिससे उनके उपदेशों को सुनने वाले गहराई से प्रभावित होते थे, और बहुत से लोगों ने उनसे महान आध्यात्मिक लाभ प्राप्त किया, और इस प्रकार अपने जीवन का सुधार किया। शाही दरबार में एड्रान नाम का एक प्रतिष्ठित योद्धा था, जो जन्म से गलातीय था और अपनी प्रबल सेहत और सैन्य वीरता के लिए प्रसिद्ध था। धन्य दानियल के पास आकर और उनकी आत्मा-रक्षक शिक्षाएँ सुनकर, वह गहराई से प्रभावित हुआ; उसने तुरंत संसार का त्याग कर दिया और अपने दो मित्रों के साथ मिलकर उस आदरणीय के शिष्यों में शामिल हो गया। यह सुनकर राजा को अपने इस नुकसान पर बहुत पछतावा हुआ, क्योंकि वह एक पराक्रमी योद्धा था, और उसने राजमहल में लौटने के लिए मनाने हेतु दूत भेजे। लेकिन उसने राजा की चिंता को अनसुना कर दिया:

उन्होंने कहा, *'एक मनुष्य को सारा संसार प्राप्त करके, परन्तु अपना प्राण खोकर या दांव पर लगाकर क्या लाभ होगा?'* (लूका 9:25)।

इसके बाद, रेवरेंड फादर द्वारा मुंडन कराने के बाद, उन्होंने संयम में उनका अनुकरण किया, और केवल इतना ही खाया जितना भूख से बचने के लिए आवश्यक था; इसी तरह, वे बहुत कम सोते थे, और वह भी केवल तब, जब वे लटकाए गए रस्सी पर खड़े या थोड़ा सा बैठे होते थे। बाद में, अपने सदाचारी जीवन के कारण, उन्होंने राजा का अनुग्रह प्राप्त कर लिया, और जब भी राजा आदरणीय डैनियल से मिलने आते, तो वे उनसे मिलने आते थे। इस प्रकार कुछ समय तक जीवन यापन करने के बाद, वे शांतिपूर्वक निधन कर गए। इसके बाद, उनके सेवक एंथनी ने इस तपस्वी के पदचिन्हों पर चलते हुए, टिटिस नामक संन्यासी जीवन अपना लिया।

कुछ समय बाद, राजा लियो ने अपनी बेटी एरियाडने का विवाह ज़ेनो द इसाउरियन[8781] से कर दिया, जिसे उन्होंने थ्रेस पर आक्रमण करने वाले बर्बर लोगों के खिलाफ एक सेना के साथ भेजा। अभियान पर निकलने से पहले, ज़ेनो सम्माननीय डेनियल द स्टाइलाइट के पास गए, और संत ने युद्ध के पूरे परिणाम की भविष्यवाणी की: कि वह सुरक्षित लौटेगा और, अपने ससुर, राजा लियो की मृत्यु के बाद, राजसी राजदंड प्राप्त करेगा; फिर भी, अपने रिश्तेदारों की ईर्ष्या के कारण, उसे राजसी शक्ति से वंचित कर दिया जाएगा, और बाद में ही वह उसे फिर से प्राप्त करेगा। यह सब समय आने पर सच हो गया। जब ज़ेनो, लियो की मृत्यु के बाद सिंहासन पर चढ़ा और तीन साल तक राज कर चुका था, तो बेसिलिस्क[8782], जो दिवंगत राजा लियो की पत्नी वेरिना का भाई था, ने उसके खिलाफ विद्रोह कर दिया। ज़ेनो को पदच्युत करने के बाद, उसने ग्रीस का सिंहासन हथिया लिया और यूटिकियन विधर्म का अनुयायी होने के नाते, उसने काल्सेडन परिषद[8783] को अस्वीकार कर और विधर्मी शिक्षाओं का प्रसार करके मसीह के चर्च में बड़ा संकट पैदा किया। उस समय, कॉन्स्टेंटिनोपल के पैट्रिआर्क अकाकियोस[8784] ने ऑर्थोडॉक्स बिशपों को इकट्ठा करके, राजा का विरोध किया, यद्यपि भय के साथ, लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ। इसलिए उन्होंने कई बिशपों को परम पूजनीय डैनियल के पास एक आँसुओं भरी विनती के साथ भेजा कि वे स्तंभ से उतरें और चर्च मिलिटेंट (लड़ाकू चर्च) की सहायता के लिए राजधानी में उनके

[8781] बाद में, बीजान्टिन सम्राट – 474 से 491 तक।

[8782] 474 से 477 तक शासन किया।

[8783] काल्सेडन की परिषद – चौथी सार्वभौमिक परिषद; 454 में आयोजित; इस परिषद में यूटिचिस के धर्मद्रोह, जिसे मोनोफिज़िटिज़्म भी कहा जाता है, को निंदा किया गया; इस धर्मद्रोह ने मसीह में केवल एक दिव्य स्वभाव को स्वीकार किया, जिसे मानव स्वभाव को अवशोषित कर लिया गया माना जाता था।

[8784] अकाकियोस ने 471 से 489 तक पैट्रिआर्क के रूप में कार्य किया।

सामने उपस्थिति हों। आदरणीय संत अपने पद को, थोड़े समय के लिए भी, छोड़ने के लिए बहुत अनिच्छुक थे; हालाँकि, चर्च की ज़रूरत को देखते हुए और ऊपर स्वर्ग से दिव्य आवाज़ द्वारा बुलाए जाने पर, वे स्तंभ से उतर आए और शहर में Patriarch और उनके साथ मौजूद बिशपों के पास गए। उनका बिशपों ने सम्मानपूर्वक स्वागत किया और अकथनीय हर्ष के साथ उनका अभिनंदन किया। रेवरेंड के आगमन की खबर सुनकर और उनसे मिलना न चाहकर, राजा राजधानी के पास स्थित अपनी संपत्ति पर शहर से चले गए; लेकिन रेवरेंड उनके पीछे-पीछे वहाँ भी चले गए। हालाँकि, चूँकि वह खुद वहाँ नहीं चल सकता था—क्योंकि उसके पैरों में सूजन आ गई थी और इतनी देर तक खड़े रहने से उन पर कई घाव हो गए थे—विश्वासी उसे अपने कंधों पर उठाकर ले गए। रास्ते में, उनकी मुलाकात कुष्ठ रोग से पीड़ित एक व्यक्ति से हुई। रेवरेंड को देखते ही वह रो पड़ा और उससे ठीक होने की भीख माँगने लगा; उस पर दया करके, रेवरेंड ने उसके लिए प्रार्थना की और उसे पास के समुद्र में स्नान करने का निर्देश दिया। उस व्यक्ति ने स्नान किया और पूरी तरह से स्वच्छ और स्वस्थ होकर बाहर निकला। इस चमत्कार की खबर तुरंत ही दूर-दूर तक फैल गई, और बीमार लोगों की भीड़ रेवरेंड के पास आने लगी, जो उनकी प्रार्थनाओं से ठीक हो गए। चमत्कारों के लिए इकट्ठी हुई लोगों की इतनी बड़ी भीड़ से घिरे, संत उस संपत्ति पर स्थित शाही महल के पास गए। गोथिया का एक व्यक्ति, खिड़की से बाहर झुककर जब संत को दूसरों की बाहों में उठाए जाते देख रहा था, तो हँस पड़ा और बोला:

'यह तो एक और एम्फीपेट है!' [8785]

जैसे ही उसने ये शब्द बोले, उसे तुरंत ईश्वर का दंड मिला: वह अचानक ऊपर से जमीन पर गिर पड़ा और कुचलकर मर गया। संत के आगमन की सूचना पाकर, राजा ने आदेश दिया कि उसे उसकी उपस्थिति में प्रवेश न करने दिया जाए; और संत ने अपने पैरों की धूल झाड़ते हुए पीछे हट गए। लेकिन फिर राजा को तुरंत उस पूजनीय संत को बुलाने के लिए संदेश भेजा, इस डर से कि संत का अनादर करने के कारण उस पर, राजा पर, कोई विपत्ति आ सकती है, और उसने उस पूजनीय संत से वापस आने का आग्रह किया। लेकिन उसने न केवल राजा की अवज्ञा की, बल्कि राजा के विनाश की भविष्यवाणी भी की।

उन्होंने कहा, 'जो स्वर्ग के राजा को उकसाता है, वह अपने ऊपर विपत्तियाँ लाता है और न्याय के दिन के लिए क्रोध इकट्ठा करता है।'

यह कहकर वह अपने रास्ते चल पड़ा। संदेशवाहक राजा के पास लौटे और पादरी के शब्द सुनाए ही थे कि उसी क्षण महल के खंभों में से एक ढह गया; राजा और वहाँ मौजूद सभी लोग बहुत डरे हुए थे: इस प्रकार एक निर्जीव वस्तु ने भी, ईश्वर की आज्ञा से, पादरी की भविष्यवाणी की अचूकता की गवाही दी और, अपने गिरने से, राजा के सिंहासन से पतन की निकटता का संकेत दिया। शहर लौटने पर, रेवरेंड डैनियल ने रास्ते में राक्षसों के वश में दो युवकों और एक विधवा की बेटी को ठीक किया; उन्होंने एक सांप को, जो अनजाने में उनकी टांग के चारों ओर लिपट गया था, एक ही शब्द से भगा दिया, और उसे से कोई भी नुकसान नहीं हुआ। शहर में ही, इराइडा नाम की एक सम्मानित महिला, जो बाँझ थी, दानियल के पास आई; उसने अपने आँसुओं से उसके पैर धोए, और रेवरेंड से अपनी बाँझपन को अपनी प्रार्थनाओं के माध्यम से ठीक करने की विनती की; संत ने भविष्यवाणी की कि वह एक पुत्र को जन्म देगी और यहाँ तक कि उसका नाम भी बताया: उन्होंने उससे कहा, 'हे स्त्री, तू एक पुत्र को जन्म देगी और उसका नाम ज़ेनो रखना।'

इस बीच, ज़ार ने अपनी गलती सुधारने और रेवरेंड से क्षमा मांगने का अवसर खोजना शुरू कर दिया, क्योंकि डैनियल का उत्तर सुनाए जाने के दौरान महल में स्तंभ के ढह जाने से वह बहुत डर गया था। पहले तो उसने सम्मानित लोगों के माध्यम से रेवरेंड से विनती की, लेकिन वह दिखावटी था, क्योंकि उसका हृदय दुष्टता की लालसा से कभी नहीं भरा था। तब वह स्वयं रेवरेंड फादर के समक्ष उपस्थित हुआ, उनके सामने घुटने टेककर क्षमा याचना करने लगा। लेकिन रेवरेंड फादर ने अपनी आध्यात्मिक दृष्टि से उसके दुष्ट विचारों को देख लिया और उपस्थित लोगों से कहा:

'उसकी विनम्रता और पश्चाताप दिखावा है; भेड़ की खाल के नीचे भेड़िये की क्रूरता छिपी है; लेकिन तुम जल्द ही देखोगे कि ईश्वर का धर्मी क्रोध उस पर पड़ेगा, क्योंकि सिर्वशक्तिमान परमेश्वर का दयालु हाथ घमंडियों को उनके सिंहासन से गिरा देता है।'

इन सभी घटनाओं के बाद, वह पूजनीय व्यक्ति अपने स्तंभ पर लौट आए, और कुछ ही समय बाद बेसलिस्क वास्तव में अपने सिंहासन से गिर गया, ठीक वैसे ही जैसे पूजनीय व्यक्ति ने भविष्यवाणी की थी। ज़ेनो ने, अपनी ओर से,

---

[8785] एन्फपितास – एक प्रांतीय गवर्नर, कभी-कभी एक शहर का मजिस्ट्रेट।

शाही राजदंड फिर से हासिल कर लिया और, पूजनीय व्यक्ति की भविष्यवाणी को पूरा होते देख, अपनी पत्नी के साथ उनके प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करने आए।

सम्माननीय ने अपने जीवन का शेष समय अपने स्तंभ पर अविराम खड़े रहकर, अनेक चमत्कार करते हुए बिताया। हालाँकि, अपनी विनिम्र बुद्धि के कारण और लोगों के बीच महिमामंद होने से बचने के लिए, उन्होंने चमत्कारों की शक्ति का श्रेय अपनी खुद की सदाचार को नहीं, बल्कि पूजनीय सिमोन की प्रार्थनाओं को दिया; और इसलिए उन्होंने अपने पास आने वाले सभी बीमार लोगों को सिमोन के चर्च, उनके पवित्र अवशेषों के पास भेज दिया। एक सुनार अपने बेटे को पूजनीय के पास लाया; लड़का जन्म से लंगड़ा था और अपने पैरों पर खड़ा भी नहीं हो सकता था, बल्कि एक कीड़े की तरह पेट के बल ज़मीन पर रेंगता था; उसे संत सिमियिन के चर्च भेजने के बाद, धन्य दानियिल ने आदेश दिया कि संत सिमियिन के अवशेष लंगड़े लड़के के पैरों पर रख दिए जाएँ; और जैसे ही ऐसा किया गया, लंगड़ा लड़का अपने पैरों पर कूद पड़ा और खुशी मनाते हुए और परमेश्वर की महिमा करते हुए, अपनी मर्जी से दानियिल के स्तंभ तक चला गया।

एक और आदमी, पूर्व से लौटते हुए, लुटेरों के हाथ लग गया। उन्होंने उसे बुरी तरह पीटा, उसके घुटने तोड़ दिए और लूटकर चले गए, उसे मुश्किल से जीवित छोड़ गए। गुज़रते हुए यात्रियों ने, उसे उसके घावों से थका हुआ देखकर, उस पर दया की और उसे एन्सीरा शहर ले गए[8786] । उस नगर के बिशप ने उस बीमार व्यक्ति की पूरी देखभाल की, उसे देखने के लिए सबसे अनुभवी चिकित्सकों को बुलाया और उसके घावों का इलाज करवाया। फिर भी, अपनी चोटों से उबरने के बाद भी, वह चल नहीं सका, क्योंकि उसके पैरों को गंभीर रूप से नुकसान पहुँचा था; हालाँकि उन पर के सभी घाव भर गए थे, लेकिन उसमें चलने के लिए आवश्यक शक्ति नहीं थी। अपने पैरों का उपयोग खोने के कारण, उस बीमार व्यक्ति ने बिशप से उसे पूजनीय डेनियिल के पास ले जाने का आग्रह करना शुरू कर दिया। उसे एक लट्ठी की तरह निष्क्रिय होकर एक गाड़ी में लिटाया गया और इस अवस्था में इस निस्वार्थ उपचारक के स्तंभ तक ले जाया गया। दानियिल ने लंगड़े आदमी को पूजनीय सिमीओन के चर्च में भेजकर उसे पवित्र अवशेषों से निकाले गए तेल से अभिषेक करने का आदेश दिया, और इसी से वह तुरंत ठीक हो गया: उसकी पिंडलियाँ और पैर अचानक मजबूत हो गए, और वह अपने आप खड़ा हो गया और ईश्वर तथा उनके पवित्र सेवकों – सिमियिन और डेनियिल – का धन्यवाद करते हुए चलने लगा।

एक स्पेनिश शताब्दी को पूजनीय एक के प्रति इतना गहरा विश्वास था कि जब भी उनके कोई नौकर, रिश्तेदार या परिचित बीमार पड़ता था, तो वह पूजनीय एक को पत्र लिखकर बीमार व्यक्ति को ठीक करने के लिए कहते थे। जब, बाद में, पूजनीय एक का उत्तर उनके पास लाया जाता था, तो वह उसे बीमार व्यक्ति पर रखते थे, और बीमार व्यक्ति तुरंत ठीक हो जाता था।

एक भिखारी महिला, जिसका 12 साल का बेटा जन्म से मूक था, उसे संत के स्तंभ के पास लाई और उसे स्तंभ के पास रखकर चली गई। संत ने स्तंभ से लड़के को देखा और अपने शिष्यों को उसे अपने पास रखने का आदेश दिया ताकि वह उनके बीच रह सके। हालाँकि शिष्यों ने यह सोचकर कि लड़का इसलिए चुप रहता है क्योंकि उसकी माँ ने उसे गरीबी के कारण और रोजी-रोटी कमाना आसान बनाने के लिए बहरा होने का नाटक करना सिखाया था, उस पर बहुत अत्याचार किया, और उसे धमकियों या पिटाई से कुछ बोलने के लिए मजबूर किया; अन्य समयों में वे सोते समय उसे एक तेज औजार से चुभते, या काँटेदार टहनियों से मारते, ताकि वह अचानक जागकर कोई शब्द बोल दे। लेकिन जब उन्हें अंततः उसके गूंगे होने का यकीन हो गया, तो उन्होंने यह बात पादरी को बताई; उन्होंने आदेश दिया कि गूंगे लड़के की जीभ पर पवित्र तेल लगाया जाए, और जब रविवार को दिव्य अनुष्ठान के दौरान, डीकन पवित्र सुसमाचार पढ़ने की तैयारी कर रहा था, और उपस्थित लोग, जैसा कि रिवाज था, गा रहे थे: 'महिमा तेरी हो, हे प्रभु!' – उस लड़के ने स्पष्ट और ऊँचे स्वर में कहा: 'महिमा तेरी हो, हे प्रभु!' और तब से वह अच्छी तरह बोलने लगा।

दीर्घायु प्राप्त कर, रेवरेंड फादर अपने धन्य निधन के समीप आ गए; इसकी पूर्वदृष्टि रखते हुए, उन्होंने अपने शिष्यों को इसकी भविष्यवाणी की और उन्हें निम्नलिखित वसीयत लिखी:

'मेरे बच्चों और भाइयों! क्योंकि तुम सचमुच मेरे बच्चे हो – क्योंकि मैंने तुम्हें आध्यात्मिक रूप से जन्म दिया है – और भाई हो – क्योंकि हम सभी का सामान्य पिता ईश्वर है, और मैं अब अपने सामान्य पिता के पास जा रहा हूँ। लेकिन मैं आपको, मेरे प्रियजनों, हमारे वियोग पर अनाथों की तरह रोने के लिए नहीं छोड़ता; बल्कि, मैं आपकी देखभाल आपके पिता

[8786] एन्सीरा – अब अंगोरा, गालाटिया (एशिया माइनर का एक छोटा केंद्रीय क्षेत्र) में एक प्राचीन शहर – अब एशिया माइनर के प्रांतों में से एक की राजधानी है, जिसकी आबादी 30,000 है।

के हाथों में सौंपता हूँ, जिन्होंने मुझे आपके साथ बनाया है, इसलिए, तर्क और ज्ञान से सभी चीजों को बनाने के बाद, और फिर स्वर्गों को झुकाकर पृथ्वी पर उतरने के बाद, उन्होंने मृत्यु को सहन किया, और, हमारे लिए जी उठने के बाद, वे शैतान के विरुद्ध आपके सर्व-ज्ञानी रक्षक के रूप में आपके साथ रहें। प्रभु के रूप में, वह आपको अपनी पवित्र इच्छा के प्रति आज्ञाकारिता में रखेंगे, और आपके पिता के रूप में, जब भी आप पाप करें और गिरें, वह आपको दया और खुली बाहों से अपने पास बुलाएंगे। जिसने हमारे लिए स्वयं को मृत्यु के हवाले कर दिया, वह आपको आपसी सामंजस्य में एकजुट करे और आपको अपने स्वर्गीय पिता के समीप लाए। नम्रता के लिए प्रयासरत रहो, आज्ञाकारी बनो, आतिथ्य, उपवास, जागरण और गरीबी का अभ्यास करो; और सबसे बढ़कर, पहली और सबसे महत्वपूर्ण आज्ञा—प्रेम की आज्ञा—के साथ-साथ वह सब कुछ जो ईश्वर-भक्त लोगों का लक्षण है, का पालन करो; सच्चे विश्वास पर दृढ़ रहो, विधर्मी झूठी शिक्षाओं से दूर रहो, और किसी भी तरह से अपनी माता – पवित्र कलीसिया – से अलग मत हो जाओ। यदि तुम यह सब पूरा करोगे, तो तुम सद्गुणों में सिद्ध हो जाओगे।

अपने आध्यात्मिक बच्चों के लिए ऐसा आध्यात्मिक प्रमाणपत्र लिखने के बाद, परम पूज्य ने निर्देश दिया कि इसे उन्हें पढ़कर सुनाया जाए, और वे उनसे विदा होने की तैयारी करते हुए रो पड़े।

आदरणीय की परमधाम गमन से तीन दिन पहले, आधी रात को, उनके कुछ सबसे योग्य शिष्यों को यह अनुग्रह प्राप्त हुआ कि वे देखें कि कैसे सभी पवित्र संत—नबी, प्रेरित और शहीद—दानियेल से मिलने आए; उन्होंने उसे नमस्कार किया, और उसे दैवीय रहस्यों को ग्रहण करने का आदेश दिया। जब परम पूज्य के निधन का वही दिन आ गया, तो अकाकियोस के उत्तराधिकारी, पैट्रिआर्क यूथमियस[8787] , अपने संपूर्ण पुरोहित वर्ग के साथ आए; जबकि उपरोक्त ईश्वर-भयभीत महिला, इराइडा—जिसकी बाँझपन दानियेल की प्रार्थनाओं से ठीक हो गई थी—ने संत के सम्मानजनक अंतिम संस्कार के लिए आवश्यक सभी चीजों की तैयारी की। उस समय, वहाँ एक दैत्य-ग्रस्त व्यक्ति आ गया; एक स्तंभ के पास खड़ा होकर, उसने घोषणा की कि वह स्वर्ग से आदरणीय पिता की ओर उतरते हुए स्वर्गदूतों और कई संतों को देख सकता है, और उसने उन संतों के नाम भी बताए जिन्हें वह देख सकता था। हमारे पूजनीय और ईश्वर-धारी पिता दानियेल, अपने निधन पर प्रसन्न होकर, 80 वर्ष और तीन महीने की आयु पूर्ण करके, अपना सम्मानजनक और पवित्र आत्मा ईश्वर के हाथों में सौंप दिया[8788] ।

डैनियल के निधन के तुरंत बाद, राक्षसों द्वारा ग्रस्त उपर्युक्त व्यक्ति को शैतान के कष्ट से मुक्ति मिल गई। जब आदरणीय संत का निधन हुआ, तो उनके स्तंभ के सामने आकाश में एक क्रॉस के आकार में तीन तारे प्रकट हुए; यहाँ तक कि दिन में, सूर्य की रोशनी में भी, वे अकथनीय शक्ति से चमकते रहे और तब तक दिखाई देते रहे जब तक कि आदरणीय संत का पवित्र शरीर उनके स्तंभों के पास वहाँ दफनाया नहीं गया। उनके साथ ही, पादरी की अंतिम इच्छा के अनुसार, बेबीलोन के तीन पवित्र युवकों—अनानियस, अज़ारियस और मिसैल—की अवशेषों को दफनाया गया, ताकि उनके मकबरे पर पूजा करने आने वाले लोग उनके अवशेषों का नहीं, बल्कि उन पवित्र युवकों के अवशेषों का सम्मान करें। इस प्रकार, जो अपने जीवनकाल में विनम्र थे, वे अपनी मृत्यु के बाद भी विनम्र बने रहे, उन्होंने मानवीय महिमा से परहेज़ किया; परन्तु परमेश्वर ने स्वयं उसको महिमामय किया जिसने उन्हें महिमामय किया, पृथ्वी पर लोगों के सामने चमत्कारों के द्वारा, और स्वर्ग में अपने स्वर्गदूतों के सामने, और स्वयं सृष्टि के सभी प्राणियों द्वारा युगों-युगों तक महिमामय हुए। आमीन।

ट्रोपारियन, स्वर 1:

हे उत्साही पूर्वज और पूजनीय, आप धैर्य के एक स्तंभ थे: अपने कष्टों में अय्यूब के समान, अपनी परीक्षाओं में यूसुफ के समान, और देह में रहते हुए भी अदेह लोक में निवास करने वाले के समान, हे हमारे पिता दानियेल। हमारे परमेश्वर मसीह से प्रार्थना करें कि हमारी आत्माएँ बच जाएँ।

[8787] संत यूथमियस – 490 से 496 तक कॉन्स्टेंटिनोपल के पैट्रिआर्क।

[8788] आदरणीय डेनियल द स्टाइलाइट का 489 या 490 में 11 दिसंबर को निधन हो गया। वे 30 से अधिक वर्षों तक एक स्तंभ पर रहे। उनके अवशेष 1200 में एक रूसी तीर्थयात्री, भिक्षु एंथनी द्वारा कॉन्स्टेंटिनोपल में देखे गए थे।

कॉन्टाकयिन, स्वर 8:

हे धन्य पति, अनेक प्रकाशों वाले तारे के समान, आप स्तम्भ पर आरोहण हुए और अपने पुण्य कर्मों से संसार को प्रकाशति कयि, तथा मोह के अंधकार को दूर भगाया। अतःहम आपसे प्रार्थना करते हैं: अब भी अपने सेवकों के हृदयों पर ज्ञान का अक्षय प्रकाश प्रसारति करें।

गुफाओं के पूजनीय नकिोन शुष्क का जीवन

11 दसिंबर को स्मरणोत्सव

'जो कैद में हैं, उन्हें ऐसा याद करो, जैसे कि तुम भी उनके साथ कैद में हो' (इब्रानयिों 13:3) – ऐसा प्रभु में कैदी, पवत्रि प्रेरति पौलुस ने आज्ञा दी। इस आज्ञा का पालन करते हुए, आइए हम धन्य बंदी नकिोन के चमत्कारों को याद करें, जनिके जीवन में प्रभु की शक्ति नसि्संदेह प्रकट हुई, और उन्होंने अपने बंदयिों को उनकी बेड़यिों से मुक्त कयि।

धन्य नकिोन कीव शहर के मूल नविासी थे और एक कुलीन परविार से थे; कीव के गुफाओं के मठ में पहुँचने पर, उन्होंने सबसे पहले स्वेच्छा से अपना मन और अपना पूरा अस्तत्वि मसीह की आज्ञाकारति के प्रति समर्पति कर दयि और एक अनुभवी भकि्षु बन गए। बाद में, दुष्ट पोलोव्त्सयिानों के आक्रमण के दौरान[8789] , उन्हें गुफाओं के संत यूस्ट्राटयिस के साथ एक ही समय में बंदी बना लयि गया, मठ से उनकी भूमि पर ले जाया गया, और वहाँ कैद में रखा गया। कीव शहर का एक धर्मनष्ठि ईसाई बंदयिों को छुड़ाने के लिए वहाँ गया, लेकनि धन्य नकिोन ने उसका प्रस्ताव ठुकरा दयि; उस धर्मनष्ठि व्यक्ति ने सोचा कि नकिोन ऐसा इसलिए कर रहे थे क्योंकि उनके स्वयं के अमीर रश्तिेदार कीव में थे, जनिके द्वारा वह छुड़ाया जाना चाहता था। कई बंदयिों को छुड़ाने के बाद, वह आदमी कीव लौट आया और उसने धन्य नकिोन के बारे में बताया। यह सुनकर, उसके रश्तिेदार महान खजाने के साथ नकिोन को छुड़ाने के लिए पोलोवत्सयिों के पास गए, लेकनि धन्य नकिोन ने उनसे कहा:

'मेरे कारण अपनी संपत्ति बर्बाद मत करो: यदि प्रभु मेरी स्वतंत्रता चाहते, तो वे मुझे इन अधर्मी लोगों के हाथों में न देते; वे स्वयं जसै चाहते हैं, उसे बंदी बनाते हैं। और *क्या* हम *कहें कि 'परमेश्वर से भलाई ग्रहण करें और वपित्ति न ग्रहण करें?'* (अय्यूब 2:10)।'

उनके रश्तिेदारों ने उस धन्य व्यक्ति को फटकारा, लेकनि उन्हें उसे छुड़ाए बनिा ही लौटना पड़ा, और वे अपने साथ जब्त की गई सारी संपत्ति ले गए। इसके बाद, जन्हिोंने उस धन्य व्यक्ति को बंदी बनाया था, उन्होंने अन्य पोलोव्त्सीयों के साथ मलिकर, यह देखकर कि उनका उद्देश्य पूरा नहीं हुआ था, परमेश्वर के सेवक को नर्दियता से सताना शुरू कर दयि। और पूरे तीन वर्ष तक वह धन्यजन उनके द्वारा नरिंतर उत्पीड़ति कयि गया: बँधा हुआ, हाथ-पैरों में बेड़ी पहनाया गया, आग से यातना दी गई, छुरी से काटा गया, भूख और प्यास से पीड़ति कयि गया, और एक, दो, तीन या उससे अधकि दनिों तक भोजन से वंचति रखा गया; गर्मयिों में वे उसे तीन दनिों तक सूरज की तपती करिणों के नीचे रखते थे, और सर्दयिों में वे उसे बर्फ और पाले में बाहर फेंक देते थे। अधर्मी पोलोव्त्सीयों ने यह सब उस पर जबरन फरिौती वसूलने के उद्देश्य से कयि; लेकनि धन्य नकिोन ने बस हर चीज़ के लिए प्रभु का धन्यवाद कयि और उनसे अवरिाम प्रार्थना की। कुछ समय बाद, उन्होंने अपने यातना देने वालों से कहा कि मसीह स्वयं अपनी इच्छा से उन्हें उनके हाथों से छुड़ा लेंगे और उन्हें इसकी सूचना पहले ही मलि चुकी थी।

"मेरे भाई यूस्ट्राटयिस मुझे दखिाई दए," उन्होंने कहा, "जन्हिें तुमने यहूदयिों के हवाले कयि था कि उन्हें सूली पर चढ़ाया जाए[8790] ; इसके लिए वे अपने पूर्वजों के साथ दंडति कए जाएंगे, जन्हिोंने एक बार पुकारा था: 'उसका लहू हम पर और हमारे बच्चों पर पड़े'[8791] ।" और तुम, दुष्ट लोगो, तुम यहूदा के साथ, जसिने प्रभु को धोखा दयि, क्रूस के कष्टों

[8789] खान बोनीयाक के नेतृत्व में पोलोव्त्सयिों द्वारा कीव पर यह आक्रमण 1096 में हुआ था। – पोलोवत्सी तुर्की मूल के एक खानाबदोश लोग थे जो 11वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में ट्रांस-कaspian घास के मैदानों से बड़ी संख्या में दक्षणिी रूसी घास के मैदानों में आए थे और, उस समय से लेकर 1220 के दशक तक, उन्होंने रस पर, वशिेष रूप से दक्षणि में, लगातार और वनिाशकारी छापे मारे।

[8790] संत यूस्ट्रैटयिस को पोलोवत्सीयों ने खेरसन के एक यहूदी को बेच दयि, जसिने अपने साथयिों के साथ मलिकर उन्हें मसीह का त्याग करने के लिए मजबूर करने के प्रयास में भयानक यातनाएँ दीं; लेकनि इसमें वफिल रहने पर, उन्हें एक क्रूस पर सूली पर चढ़ा दयि, जसि पर पवत्रि शहीद ने यहूदयिों की भाले से भेदकर अपनी आत्मा ईश्वर को सौंप दी।

[8791] ये वही यहूदी थे जन्हिोंने पलितुस से उद्धारकर्ता की मृत्यु की मांग की थी (देखें मत्ती 27:26)।

को सहोगे। जो शहीद मुझे दखिाई दएि, उन्होंने मुझे बताया कि तीसरे दनि, पवत्रि पति एंथनी और थयिोडोसयिस और गुफाओं के अन्य संतों की प्रार्थनाओं के द्वारा, मुझे गुफाओं के मठ में वापस लाया जाएगा।

यह सुनकर, उस पोलोव्त्सयिन ने जसिने रेवरेंड को बंदी बना रखा था, सोचा कि वह भागने की कोशशि कर रहा है, और इसलएि उसने उसके घुटनों के नीचे की अस्थि-बंधन काट दएि ताकि वह भाग न सके, और इसके अलावा उसे और भी सतर्कता से पहरा देने लगा। और इस प्रकार, तीसरे दनि, दनि के छठे घंटे पर, ठीक उसी क्षण जब पूरी चौकीदारों ने अपने हाथों में हथयिार लेकर आदरणीय पति को घेर लयिा था, धन्य कैदी अदृश्य हो गया, और उसकी रखवाली कर रहे लोगों ने केवल उसकी यह गाते हुए आवाज़ सुनी: 'स्वर्ग से प्रभु की स्तुति करो'!

इस प्रकार, एक अद्भुत तरीके से और कसिी के भी देखने में आए बनिा, संत को गुफाओं में स्थति परमेश्वर की अतपिवत्रि माता के चर्च में उसी क्षण पहुँचा दयिा गया जब दैवीय प्रार्थना सभा के दौरान संस्कार का श्लोक गाया जा रहा था। तुरंत, संपूर्ण भाईचारा उसके चारों ओर इकट्ठा हो गया और उससे पूछने लगा कि वह वहाँ कैसे आया। पहले तो वह इस अद्भुत चमत्कार को छपिाना चाहता था, लेकनि उसके चारों ओर खड़े सभी लोगों ने, उसे भारी जंजीरों में जकड़ा हुआ, उसके पूरे शरीर पर अक्षुण्ण घावों और सड़ती हुई पपड़यिों से ढका हुआ देखकर—और वशिेष रूप से उसकी फाड़ी हुई पडिली से बहते हुए खून को देखकर—उस पर हर तरह से सच बताने के लएि दबाव डाला। इसलएि, अपनी इच्छा के वरिुद्ध, उसने अंततःउन्हें सब कुछ वैसा ही बताया जैसा हुआ था, लेकनि उसने उन्हें अपने हाथों और पैरों से बेड़यिाँ हटाने की अनुमति नहीं दी। इस पर, मठाधीश ने उससे कहा:

'भाई! यदि प्रभु तुम्हारे इन बंधनों को चाहते, तो वे तुम्हें कैद से मुक्त नहीं करते; अतःहमारी वनिती मानो।'

इसके बाद, पूज्यनीय से जंजीरों को उतारने के बाद, भाइयों ने उन्हें वेदी के लएि आवश्यक वस्तुओं में ढाल दयिा।

कुछ ही समय बाद, जब पोलोव्त्सयिों के साथ पहले ही शांति स्थापति हो चुकी थी, वही पोलोव्त्सी जसिने धन्य नकिोन को बंदी बनाया था, कीव पहुँचा। कीव पहुँचने पर, वह पेचेरस्क मठ में प्रवेश कर गया। वहाँ अपने पूर्व बंदी, धन्य नकिोन को देखकर, उसने उसे पहचान लयिा और मठाधीश तथा भाइयों को सब कुछ वस्तिार से बताया; और वह अपने देश वापस नहीं गया, बल्कि घटी हुई सभी बातों से प्रेरति होकर, उसने पवत्रि बपतस्मिा ग्रहण कयिा और, अपने अन्य संबंधयिों—जो पोलोव्त्सी भी कीव आए थे—के साथ मलिकर एक भकि्षु बन गया और, उनके साथ ही, उसी पेचेरस्क मठ में पश्चाताप में अपना जीवन समाप्त कयिा, अपने पूर्व कैदी—धन्य नकिोन—की सेवा करते हुए।

हमारे इन धन्य और पवत्रि पति, नकिोन द्वारा कई अन्य अद्भुत चमत्कार भी कएि गए, जनिमें से हम नम्निलखिति का उल्लेख करेंगे।

एक अवसर पर, जब आदरणीय व्यक्ति अभी भी बंदी में थे, तो भूख और अभाव के कारण बंदी इतने बीमार पड़ गए कि वे मृत्यु के कगार पर थे; उनके साथ होने के नाते, आदरणीय व्यक्ति ने उन्हें अधर्मी लोगों के भोजन का एक नविाला भी लेने से मना कर दयिा, और अपनी प्रार्थना के माध्यम से उन्हें सभी को स्वास्थ्य लाभ और कसिी के भी द्वारा देखे बनिा अपनी कैद से रहिा होने का अवसर प्रदान कयिा।

एक अन्य अवसर पर, जब आदरणीय व्यक्ति अभी भी कैद में थे, तो जसि पोलोव्त्सयिन ने उन्हें बंदी बनाया था, वह स्वयं बीमार पड़ गया; चूँकि वह पहले से ही मृत्यु के कगार पर था, उसने अपनी पत्नयिों और बच्चों को वसीयत की कि नकिोन, जसिे उसने बंदी बनाया था, को उसकी कब्र के ऊपर सूली पर चढ़ाया जाए। लेकनि इस धन्य बंदी ने, अपनी आध्यात्मकि आँखों से यह पूर्वानुमान लगाते हुए कि जीवन के अंत में यह पोलोव्त्सीय पश्चाताप करेगा, उसके लएि प्रार्थना की और उसे चंगा कर दयिा, और इस प्रकार न केवल स्वयं को शारीरकि मृत्यु से बल्कि उस पोलोव्त्सीय को भी शारीरकि मृत्यु से और आध्यात्मकि मृत्यु से भी मुक्ति दलिाई।

इन धन्य नकिोन को 'सूखा हुआ' कहा जाता है क्योंकि, जीवति रहते हुए ही, वह रक्तस्राव से मर गया, अपने कई घावों से सड़ गया और अपनी यातनाओं से मुरझा गया, ताकि वह भवषि्यवक्ता दाऊद के शब्दों में अपनी सेहत—जो कैद में खो गई थी—के बारे में कह सके: *'मेरी ताकत एक मट्टिी के बर्तन के टुकड़े की तरह सूख गई है'* (भजन संहति 21:16), *'मेरी हड्डयिाँ जलते हुए कोयले की तरह झुलस गई हैं'* (भजन संहति 101:4)। उसकी इस अद्भुत शक्ति—जो शारीरकि नहीं, बल्कि अदेह स्वर्गीय शक्तयिों की वशिेषता है—पर चकति होकर हम प्रेरति के शब्दों के अलावा और क्या कह सकते हैं: *'हम इस धन-संपत्ति को मट्टिी के बर्तन में उठाए फरिते हैं'* (2 कुरन्थियिों 4:7)। सचमुच, यह कैदी, जो चमत्कारकि रूप से अपनी बेड़यिों से मुक्त हुआ था, अपनी सारी शारीरकि दुर्बलता के बावजूद, परमेश्वर के आग से जलता था, जो उसके अच्छे और धार्मकि कार्यों के माध्यम से प्रकाशति होती थी। इसीलएि उसे अपनी देह की बेड़यिों से मुक्ति

मलिी[8792] , और इस जीवन के क्षणकि और शीघ्र क्षीण होने वाले स्वास्थ्य के बदले में, उसे परमेश्वर से अपने शरीर की कभी न मुरझाने वाली अक्षुण्णता प्राप्त हुई, जसिमें वह आज भी गुफा में पड़ा हुआ है; जबकि आत्मा में उन्हें *'एक ऐसा उत्तराधकिार जो अक्षय, नरि्मल और न मुरझाने वाला है, जो स्वर्ग में रखा गया है'* (1 पतरस 1:4), जीवन के शाश्वत झरने पर प्राप्त करने के लिए योग्य ठहराया गया, और उन्होंने महमिा का एक न मुरझाने वाला मुकुट प्राप्त कयिा। इस मुकुट के साथ, परमेश्वर के आदरणीय सेवक, नकिोन की प्रार्थनाओं के द्वारा, हम भी महमिा के राजा, मसीह परमेश्वर द्वारा मुकुटति होने के योग्य ठहराए जाएँ, जनिकी महमिा हो, उनके आरंभहीन पति के साथ और परम पवत्रि, भले और जीवन-दायक आत्मा के साथ, अब और सदा और युगानुयुग। आमीन।

पवत्रि शहीदों एकेप्सयिा और आइफाला का स्मरणोत्सव।

11 दसिंबर को स्मरण कयिा जाता है

पवत्रि शहीद अकेक्सयिस और आइफालस फारस के मूल नविासी थे, जहाँ उन्होंने शहादत प्राप्त की। अकेप्सयिस शुरू में ईArbel[8793] शहर में एक मूर्तपिूजक पुरोहति था, लेकनि बाद में, ईसाई धर्म के बारे में सुनकर, उसने एक ईसाई बशिप को खोजने का संकल्प लयिा, इस उम्मीद में कि उसे उस बीमारी से ठीक कयिा जा सके जो उस समय उसे हो गई थी। बशिप ने उसे वशि्वास और ईसाई जीवन शैली में शकि्षति कयिा और अपनी प्रार्थनाओं के माध्यम से उसे उसकी बीमारी से ठीक कर दयिा। इसके बाद, अकेप्सउिस अर्बेल लौट आए, जहाँ, एक पादरी के रूप में अभषिक्ति होने के बाद, वे अपने साथी नागरकिों के बीच धर्म के प्रचारक और शकि्षक के रूप में प्रकट हुए। यह बात प्रांतीय राज्यपाल को पता चली, जसिने मसीह के इस नए प्रचारक को बुलाया और आदेश दयिा कि उसका कान काट दयिा जाए और उसे कैद कर दयिा जाए।

इस बीच, संत आइफल अर्बेल के चर्च के एक डकिन थे। मसीह की घोषणा करने के लिए गरिफ्तार कएि जाने पर, उसे बेरहमी से पीटा गया और मुख्य पुरोहति द्वारा अकेप्सयिस के कालकोठरी में भेज दयिा गया। बाद में, दोनों संतों को एक बार फरि राज्यपाल के सामने लाया गया और उन्होंने एक बार फरि उसके सामने मसीह में अपने वशि्वास की घोषणा की; जसिके लिए उन्हें सरि कलम करने की सज़ा सुनाई गई।

पवत्रि शहीद मरिाक्स का पर्व दविस

11 दसिंबर को स्मरण कयिा जाता है

पवत्रि शहीद मरिाक्स मस्रि मूल के थे; उनका जन्म टेनेस्टयिा नगर[8794] में ईसाई माता-पति के यहाँ हुआ था, उनका बपतस्मिा हुआ और उन्हें सच्ची भक्ति में पाला गया। हालाँकि, अपनी युवावस्था की लापरवाही में, वह सभी अच्छाइयों के शत्रु (शैतान) के प्रभाव में आ गया और अमीर[8795] के सामने उपस्थति होकर, उसने मसीह का त्याग कर दयिा। अपनी कमरबंद[8796] उतारकर और पवत्रि क्रूस को एक ओर रखकर, उसने एक सैनकि की तलवार उठाई और नरिाशापूर्ण, ऊँचे स्वर में चलि्लाया:

'मैं एक अगेरयिन हूँ। और आज से, मैं अब एक ईसाई नहीं हूँ।'

इस धर्मत्याग के माध्यम से, मरिाक्स ने अमीर और उसके अनुचरों से सम्मान और प्रतषि्ठा अर्जति की। और उस क्षण से बहुत समय बीत चुका था जब वह लापरवाह युवक, व्यर्थ की महमिा के बहकावे में आकर, अपने उद्धार के

[8792] गुफाओं के पूजनीय नकिोन सुखोई का परमधाम 12वीं शताब्दी की शुरुआत में हुआ।

[8793] एशयिा माइनर में फारस का एक शहर – वर्तमान अर्बलि।

[8794] टेनेस्टयिा या टेनेस, तानसि के उत्तर में, अरब से अलेक्जेंड्रयिा जाने वाले मार्ग पर एक तटीय शहर।

[8795] अनुमान लगाया जा सकता है कि सरासेन अमीर अमरू था, जसिे 639 में उमर ने मस्रि को जीतने के लिए भेजा था और जसिने 643 में अलेक्जेंड्रयिा पर कब्जा कर लयिा था। 'अमीर' या 'एमरि' शब्द का उपयोग सामान्य रूप से मस्रि के शासकों को संदर्भति करने के लिए भी कयिा जाता था।

[8796] यह ध्यान देने योग्य है कि ईसाइयों ने हमेशा उस अनुग्रह-प्रदान करने वाली शक्ति के प्रतीकात्मक महत्व को पहचाना है जो उन्हें आध्यात्मकि शत्रुओं के खलिाफ उनके संघर्ष में मजबूत करती है। (इफसियिों 4:14)

बारे में सोचना भी बंद कर चुका था। इस बीच, अपने बेटे के पतन पर दुखी उसके माता-पिता ने उम्मीद नहीं छोड़ी और उस भटके हुए धर्मत्यागी के धर्मपरायणता के मार्ग पर लौटने के लिए ईश्वर से विनम्रतापूर्वक प्रार्थना की। और उनकी प्रार्थनाएँ व्यर्थ नहीं गईं। प्रभु ने उनके माता-पिता की विनम्र प्रार्थनाओं पर अनुकूल दृष्टि डाली और उनकी अथक प्रार्थनाओं को सुना: ईश्वर की कृपा ने मिरिक्स के हृदय को प्रकाशित किया, और वह पश्चाताप करने लगा। फिर वह अपने माता-पिता के पास गया और कहा:

'मेरे सम्माननीय और प्रिय माता-पिता! पागलपन का एक बादल मुझ पर छा गया था, और मैंने इतना भयानक कृत्य किया; लेकिन अब मुझे उस पर गहरा पछतावा है और मैं प्रार्थना करता हूँ कि मैं फिर से एक ईसाई बन सकूँ और आपके साथ रहूँ।'

इस पर उसके माता-पिता ने उत्तर दिया:

'मेरे बच्चे, जब से तुम एगारीयनों के धर्म में परिवर्तित हुए थे[8797] , हम तुम्हारे लिए बहुत आँसू बहा चुके हैं और ईश्वर से अविराम प्रार्थना करते रहे हैं कि वह तुम्हें सत्य का ज्ञान प्रदान करे और तुम्हें मसीह के पास वापस लाए। और अब हम उसकी भलाई और उदारता के लिए धन्यवाद करते हैं, कि उसने हमारी कमजोर प्रार्थनाओं को अस्वीकार नहीं किया है। लेकिन, जैसा कि आप स्वयं समझते हैं, हमारे प्रिय पुत्र, हम अमीर के क्रोध से डरते हैं, इस डर से कि आपके कारण हम पर कोई विपत्ति न आ पड़े। इसलिए, यदि तुम इस भयानक पतन से बोझिल अपने विवेक को शांत करना चाहते हो, परमेश्वर की दया पाना चाहते हो, हमारी सुरक्षा बनाए रखना चाहते हो, और अपने सभी पड़ोसियों के लिए मध्यस्थता करना चाहते हो, तो अमीर के पास जाओ और उसे वहाँ खुलेआम बता दो—जैसे कि हमारी जानकारी के बिना—वह बात जो तुमने यहाँ हमसे गुप्त रूप से कबूल की है। परमेश्वर तुम्हारे संबंध में सभी बातों को अपनी इच्छा के अनुसार व्यवस्थित करे! तो जाओ, हमारे प्रिय बच्चे, और हम, यद्यपि अपने परमेश्वर की दया के अयोग्य हैं, आशा करते हैं कि वह, जो भला है, हमारी प्रार्थना सुनेगा।

मिरिक्स ने अपने माता-पिता की बात मानी और, उनका हौसला बढ़ गया तथा उनकी प्रार्थना की शक्ति पर भरोसा करके, उसी क्षण अपने पिता और माता की सलाह पर चलने का संकल्प लिया: उसने अपनी कमरपट्टा हाथों में उठाई और तुरंत अमीर और उसके अगेरियन सलाहकारों के पास चल पड़ा। अमीर और उसके अनुयायियों के सामने खड़े होकर, मिरिक्स ने अपनी कमरकस कसी; फिर, क्रॉस का चिह्न बनाकर और उसे चूमकर, वह ज़ोर से चिल्लाने लगा:

'हे प्रभु, मेरे मसीह, मुझ पर दया करो और मुझे बचा लो!'

उसकी इस हिम्मत से सभी भयभीत हो गए। अमीर ने मिरिक्स को पकड़ लिया और पूछा:

'तुम्हें क्या हो गया है?'

इस पर उसने उत्तर दिया:

'मुझ पर आए शैतानी भ्रम से मैं होश में आ गया हूँ और अपने ईश्वर मसीह के पास लौट आया हूँ; मैं फिर से एक ईसाई बन गया हूँ, जैसा मैं पहले था। और इसलिए मैं "होश में आ गया हूँ"[8798] ताकि मैं आपके और आपके सलाहकारों के सामने और सभी के सामने प्रभु मसीह की गवाही दूँ, और आप सभी को बता दूँ कि मैं आपको और आपके धर्म को शाप देता हूँ।'

यह सुनकर, अमीर ने मिरिक्स को जेल में डालने का आदेश दिया और तीन दिनों तक बिना भोजन के रखने के बाद, उसे मुकदमे के लिए पेश किया। मुकदमे में, मिरिक्स ने फिर से मसीह में अपने विश्वास की गवाही दी और ऐसा करने के लिए पीटे जाने के बाद, उसे वापस जेल में डाल दिया गया। तीन दिन बाद, उसे एक बार फिर अदालत के सामने लाया गया और और भी बुरी तरह पीटा गया। छह दिन बाद, शहीद को फिर से अदालत में लाया गया और उसने निडर होकर एक बार फिर मसीह की गवाही दी; इसके लिए, उसकी पिछली पिटाई से उसके शरीर पर बने घावों पर बैलों की नसों से बनी कोड़ों से उसे पीटा गया। इसके बाद, अमीर ने उसे सिर कलम करके मौत की सजा सुनाई। अमीर के नौकरों ने उस पवित्र स्वीकारकर्ता को लिया, उसे अपने साथ एक जहाज पर बिठाया, और उसे लेकर तट से नौ स्टेडियम दूर चले गए। वहाँ उन्होंने ईश्वर से प्रार्थना की, और उनका सिर कलम कर दिया गया, और उन्हें समुद्र में फेंक दिया गया[8799] । बाद में

[8797] यानी, इस्लाम (अर्थात् हागारी – विशेष रूप से हागर के पुत्र इसमाइल के वंशज – अरब; बाद में यह शब्द सामान्य रूप से सभी मुसलमानों के लिए अपनाया गया)।

[8798] पश्चातापी खोया हुआ पुत्र की सुसमाचार की दृष्टान्त से एक अभिव्यक्ति (लूका 15:17)।

[8799] लगभग 640.

शहीद के शरीर का क्या हुआ—क्या वह समुद्र से ऊपर तैरकर आया—यह अज्ञात है; लेकिन उनका पूजनीय सिर समुद्र से बाहर निकला और भक्तिपूर्ण ईसाइयों द्वारा पाया गया, जिन्होंने इसे सुरक्षित रखने के लिए एक कीमती उपहार के रूप में लिया। जब यह खबर अमीर को मिली, तो संत के भक्तों ने सौ सोने के सिक्कों का फिरौती चुकाई और शहीद के बरामद हुए सिर को बिना किसी बाधा के अपने पास रखने की अनुमति मिलने पर, एक चांदी का संदूक बनवाया और उसे उचित सम्मान के साथ उसमें रख दिया। उस समय से अब तक, इस पवित्र शहीद का यह सिर सुगंधित मूरा बहा रहा है और प्रभु तथा हमारे उद्धारकर्ता यीशु मसीह की महिमा के लिए हर प्रकार के चमत्कार कर रहा है, और उन लोगों के विश्वास को मजबूत कर रहा है जिनमें पवित्र शहीद के बारे में संदेह या कोई मोहक भ्रम उत्पन्न हो सकता था।

आदरणीय ल्यूक, नए स्टाइलाइट की स्मृति।

11 दिसंबर को स्मरणोत्सव

आदरणीय ल्यूक द स्टाइलाइट, यूनानी सम्राट रोमनस[8800] के शासनकाल में और कांस्टेनटाइन पोर्फोजेनिटस[8801] के अधीन रहते थे, जो सम्राट रोमनस के दामाद और सम्राट लियो द वाइज़[8802] के पुत्र थे। उस समय पाट्रिआर्की का पद सम्राट रोमनस के पुत्र थियोफिलैक्ट[8803] के पास था। उस समय, बुल्गारियाई लोगों ने बीजान्टिन साम्राज्य पर आक्रमण किया[8804] और, ज़ार के आदेश पर, ल्यूक को मिलिशिया में भर्ती कर लिया गया और उसने दुश्मनों के खिलाफ अपने देश की रक्षा में भाग लिया। युद्ध के दौरान, बीजान्टिन सेना में भगदड़ मच गई और उसके कई हज़ार सैनिक मारे गए; लेकिन ल्यूक, ईश्वर की कृपा से, सुरक्षित रहा। बाद में, उन्होंने संन्यास की शपथ ली और, संन्यासी जीवन में उत्कृष्टता प्राप्त कर, उन्हें एक पादरी के रूप में नियुक्त किए जाने का सम्मान मिला। सर्वोच्च आध्यात्मिक पूर्णता प्राप्त करने के उत्सुक, उन्होंने अपने शरीर को लोहे की जंजीरों से बाँध लिया और, एक स्तंभ पर चढ़कर, इतनी कठोर तपस्या की कि सप्ताह के छह दिनों तक उन्होंने बिल्कुल भी भोजन नहीं किया, और केवल सातवें दिन ही उन्होंने अपने लिए लाई गई प्रॉस्फोरा और थोड़ी सब्जियां खाईं: इस प्रकार उन्होंने तीन साल उस स्तंभ पर बिताए। बाद में, दिव्य प्रेरणा से प्रेरित होकर, वे माउंट ओलंपस[8805] गए, वहां से कॉन्स्टेंटिनोपल की यात्रा की और अपना मौन व्रत तोड़ने से बचने के लिए अपने मुंह में एक पत्थर रख लिया; अंत में, वे कालसेडोन[8806] शहर में चले गए। वहाँ भी उन्होंने एक स्तंभ पर चढ़कर, अनेक चमत्कारों के लिए प्रसिद्ध होकर, पैंतालीस वर्ष व्यतीत किए। इस प्रकार पृथ्वी पर धर्मपरायण जीवन जीने के बाद, संत ल्यूक स्वर्गीय पिता के धाम के लिए प्रस्थान कर गए[8807] ।

25 दिसंबर

12 दिसंबर (पुराना संस्करण)

हमारे पवित्र पिता स्पिरिडॉन ऑफ़ ट्रिमिथस का जीवन

12 दिसंबर को स्मरण किया जाता है

[8800] रोमन प्रथम लेकपेनोस ने 919 से 944 तक शासन किया।
[8801] कॉन्स्टेंटिन सप्तम पोर्फिरोजेनिटस ने 912 से 959 तक शासन किया।
[8802] लियो VI प्रज्ञावान ने 886 से 911 तक शासन किया।
[8803] थेओफाइलेक्ट – 933 से 956 तक कॉन्स्टेंटिनोपल के पैट्रिआर्क।
[8804] बुल्गारियाई ज़ार सिमियन, जिनकी मृत्यु 927 में हुई, ने ग्रीकों के खिलाफ युद्ध छेड़ा और 917 में लगभग ग्रीक साम्राज्य को कुचल दिया।
[8805] बिथिनिया, एशिया माइनर का एक उत्तर-पश्चिमी क्षेत्र।
[8806] काल्सेडोन – एशिया माइनर में, बोस्फोरस के तट पर, कॉन्स्टेंटिनोपल के सामने एक शहर।
[8807] लगभग 970.

चमत्कारी स्परिडॉन का जन्मस्थान साइप्रस द्वीप था[8808] । वनिम्र माता-पिता का पुत्र और स्वयं सरल-हृदय, नम्र और सदाचारी, वह बचपन से ही एक चरवाहा था; और जब वह वयस्क हुआ, तो उसने वैध ववािह कयिा और उसके बच्चे हुए। उन्होंने एक पवत्रि और ईश्वर-भक्त जीवन जयिा, नम्रता में दाऊद, हृदय की सच्चाई में इसहाक, और अजनबयिों के प्रतपि्रेम में अब्राहम का अनुकरण कयिा। ववािहति जीवन के कुछ वर्षों के बाद, उनकी पत्नी की मृत्यु हो गई, और उन्होंने अच्छे कर्मों के माध्यम से और भी स्वतंत्रता और उत्साह के साथ ईश्वर की सेवा करना शुरू कर दयिा, अपना सारा धन यात्रयिों का स्वागत करने और गरीबों को भोजन कराने पर खर्च कर दयिा; इस प्रकार, एक सामान्य व्यक्तकि े रूप में रहते हुए, उन्होंने ईश्वर को इतना प्रसन्न कयिा कि उन्हें चमत्कार करने का वरदान प्राप्त हुआ: उन्होंने एक ही शब्द से असाध्य रोगों को ठीक कयिा और दुष्ट आत्माओं को भगाया। इसके लिए, सम्राट कॉन्स्टेंटनि द ग्रेट के शासनकाल के दौरान स्परिडोन को ट्रमिायथस शहर का बशिप नयिुक्त कयिा गया। और बशिप के पद पर रहते हुए, उन्होंने महान और अद्भुत चमत्कार करना जारी रखा।

एक बार, साइप्रस द्वीप पर, बारशि की कमी और एक भयानक सूखा था, जसिके बाद अकाल पड़ा, और अकाल के बाद महामारी आई, और इस अकाल से बहुत से लोग मारे गए। स्वर्ग बंद हो गए थे, और स्वर्ग को उसकी प्रार्थना के माध्यम से खोलने के लिए एक दूसरे एलयिाह, या उसके समान कसिी की आवश्यकता थी (3 राजा 17): संत स्पाइरडिोन वही व्यक्तसिाबति हुए; लोगों पर आई वपित्तकिो देखकर और भूख से मर रहे लोगों पर पतिृसुलभ करुणा दखिाते हुए, उन्होंने परमेश्वर से भक्तपिूर्वक प्रार्थना की, और तुरंत ही आकाश चारों ओर से बादलों से ढक गया और पृथ्वी पर भरपूर वर्षा हुई, जो कई दनिों तक जारी रही; संत ने फरि से प्रार्थना की, और मौसम साफ हो गया। पृथ्वी पूरी तरह से नमी से सराबोर हो गई और भरपूर फल दए: खेतों में भरपूर फसल हुई, बगीचे और अंगूर के बाग़ फलों से लद गए, और, ईश्वर के सेवक स्पाइरडिॉन की प्रार्थनाओं के द्वारा, अकाल के बाद, सभी चीजों में बहुत प्रचुरता थी। लेकनि कुछ वर्षों बाद, लोगों के पापों के कारण और ईश्वर की अनुमतसि,े अकाल फरि से देश में पड़ा; और अनाज के धनी व्यापारी ऊँचे दामों पर प्रसन्न हुए, जनिके पास कई वर्षों की भरपूर फसल का अनाज जमा था, और, अपनी अनाज की कोठरयिों को खोलकर, उसे अत्यधकि कीमतों पर बेचने लगे। उस समय, ट्रमिाइफंट में एक अनाज का व्यापारी था जो धन की अतृप्त लालच और सुख के अदम्य जुनून से पीड़ति था। वभिन्नि स्थानों से बड़ी मात्रा में अनाज खरीदकर और उसे जहाज द्वारा ट्रमिीफंट लाकर, उसने उस समय शहर में प्रचलति मूल्य पर इसे बेचने की इच्छा नहीं की, बल्कअिकाल और भी बदतर होने की प्रतीक्षा में उसे गोदामों में संग्रहीत कर दयिा, ताकि वह बाद में इसे उच्च मूल्य पर बेचकर अधकि लाभ कमा सके। जब अकाल लगभग सर्वव्यापी हो गया और दनि-ब-दनि बगिड़ता जा रहा था, तो उसने अपनी रोटी को उच्चतम संभव कीमत पर बेचना शुरू कर दयिा। और इस प्रकार, एक गरीब आदमी उसके पास आया और नम्रता से झुककर, आँखों में आँसू लिए उससे दया दखिाने की भीख माँगी – उसे थोड़ी सी रोटी दे दे ताकि वह, एक गरीब आदमी, अपनी पत्नी और बच्चों के साथ भूख से न मर जाए। लेकनि नर्दियी और लालची अमीर आदमी ने भखिारी पर दया दखिाने से इनकार कर दयिा और कहा:

'दूर हटो, कुछ पैसे लाओ, और जो कुछ भी तुम खरीद सकते हो, वह तुम्हें मलि जाएगा।'

भूख से थका-हार गया वह गरीब आदमी संत स्पाइरडिॉन के पास गया और रोते हुए उन्हें अपनी गरीबी और अमीर आदमी की नर्दियता के बारे में बताया।

संत ने उससे कहा, 'रोओ मत, घर जाओ, क्योंकि पवत्रि आत्मा मुझे बता रहा है कि कल तुम्हारा घर रोटी से भर जाएगा, और अमीर आदमी तुमसे भीख मांगेगा और तुम्हें मुफ्त में रोटी देगा।'

गरीब आदमी ने आह भरकर घर चला गया। जैसे ही रात हुई, ईश्वर की आज्ञा से, मूसलाधार बारशि शुरू हो गई, जसिने उस नर्दियी कंजूस के अनाज के गोदामों को बहा दयिा, और पानी उसकी सारी रोटी बहा ले गया। अनाज का व्यापारी, अपने घर वालों के साथ, पूरे शहर में दौड़ता हुआ हर कसिी से मदद की भीख मांगने लगा कि वह अमीर से भखिारी बनने से बच जाए; इस बीच, गरीब लोग, सड़कों पर बाढ़ के पानी से बखिरी हुई रोटी को देख कर, उसे इकट्ठा करने लगे। यहाँ तक कि वह गरीब आदमी भी, जसिने कल अमीर आदमी से रोटी माँगी थी, अपने लिए पर्याप्त से अधकि इकट्ठा कर गया। अपने सामने ईश्वर की स्पष्ट सजा को घटते हुए देखकर, अमीर आदमी ने गरीब आदमी से वनिती करनी शुरू कर दी कि वह उससे जतिनी रोटी चाहे, मुफ्त में ले ले।

[8808] साइप्रस – भूमध्य सागर के पूर्वी भाग में, एशयिा माइनर के दक्षणि में स्थति एक बड़ा द्वीप।

इस प्रकार ईश्वर ने दया की कमी के लिए धनी व्यक्ति को दंडित किया और संत की भविष्यवाणी के अनुसार, गरीब व्यक्ति को गरीबी और भूख से मुक्ति दिलाई।

संत के परिचित एक किसान उसी अकाल के दौरान उसी अमीर के पास गया, और उससे अपने परिवार को खिलाने के लिए कुछ रोटी उधार देने को कहा, और वादा किया कि जब फसल आएगी तो जो कुछ भी उसे दिया गया है, वह उसे ब्याज सहित चुका देगा। बारिश में बहे भंडारों के अलावा, उस अमीर के पास रोटी से भरे अन्य अनाज के भंडार भी थे; लेकिन, अपनी पहली हानि से कुछ भी न सीखने और अपनी कंजूसी से न उबर पाने के कारण, वह इस गरीब के प्रति भी उतना ही निर्दयी साबित हुआ, यहाँ तक कि उसने उसकी बात तक नहीं सुनी।

उसने कहा, 'पैसे के बिना, तुम्हें मुझसे एक भी दाना नहीं मिलेगा।'

तब गरीब किसान रोया और संत स्पायरिडॉन के पास गया, जिन्हें उसने अपनी बदकिस्मती सुनाई। संत ने उसे सांत्वना दी और घर भेज दिया, और अगली सुबह वह स्वयं उसके पास आए और सोने का एक पूरा ढेर लाए (कि उन्हें यह सोना कहाँ से मिला – इस पर बाद में और बताया जाएगा)। उन्होंने यह सोना किसान को दे दिया और कहा:

'भाई, यह सोना लो और उस रोटी वाले के पास जाओ और इसे गिरवी रख दो; उससे कहो कि वह तुम्हें अभी जीने के लिए जितनी रोटी चाहिए, उतनी उधार दे दे; और जब फसल आए और तुम्हारे पास रोटी की भरमार हो जाए, तो इस गिरवी को छुड़ाकर इसे मेरे पास वापस ले आना।'

गरीब किसान ने संत के हाथों से सोना लिया और दौड़ता हुआ अमीर के पास गया। लालची अमीर सोने से बहुत खुश हुआ और तुरंत ही गरीब आदमी को उसकी ज़रूरत भर रोटी दे दी। फिर अकाल समाप्त हो गया, अच्छी फसल हुई, और फसल के बाद, किसान ने अमीर आदमी को उधार ली गई रोटी का ब्याज सहित भुगतान किया और, उससे अपनी गिरवी वापस लेकर, उसे कृतज्ञतापूर्वक संत स्पाइरिडॉन के पास ले गया। संत ने सोना लिया और किसान को अपने साथ लेकर अपने बगीचे की ओर चल दिए।

उसने कहा, 'भाई, मेरे साथ चलो, और आइए हम इसे उस एक को दें जिसने हमें इतनी उदारता से उधार दिया है।'

बाग में प्रवेश करते ही, उसने सोने को बाड़ के पास रख दिया, अपनी आँखें आकाश की ओर उठाईं और पुकार कर कहा:

'हे मेरे प्रभु, यीशु मसीह, जो अपनी इच्छा से सभी चीज़ों को बनाते और बदलते हैं! हे आप, जिन्होंने एक बार मिस्र के फिरौन की आँखों के सामने मूसा की लाठी को साँप में बदल दिया था (निर्गमन 7:10), – इस सोने को, जिसे आपने पहले एक जानवर से बदल दिया था, फिर से उसके मूल स्वरूप में बदलने की आज्ञा दें: तब यह आदमी पहचान जाएगा कि आप हमारी कितनी परवाह करते हैं और अपने अनुभव से वह सीख जाएगा जो पवित्र धर्मग्रंथ में कहा गया है – कि 'प्रभु वही करता है जो उसे अच्छा लगता है' (भजन संहिता 134:6)!

जब वह इस प्रकार प्रार्थना कर रहा था, तो सोने का टुकड़ा अचानक हिला और एक साँप में बदल गया, जो तड़पने और रेंगने लगा। इस प्रकार, पहले संत की प्रार्थना से साँप सोने में बदल गया, और फिर, उतनी ही चमत्कारिक रूप से, वह सोने से वापस साँप में बदल गया। यह चमत्कार देखकर, किसान भय से कांप उठा, जमीन पर गिर पड़ा और स्वयं को उस अद्भुत आशीर्वाद का अयोग्य घोषित किया जो उस पर प्रदान किया गया था। फिर साँप रेंगकर अपनी बिल में वापस चला गया, जबकि किसान, कृतज्ञता से भरकर, घर लौट आया और संत की प्रार्थनाओं के माध्यम से ईश्वर द्वारा किए गए चमत्कार की महानता पर आश्चर्यचकित हुआ।

एक पुण्यशील पुरुष, संत का मित्र, दुष्ट लोगों की ईर्ष्या के कारण नगर न्यायाधीश के समक्ष बदनाम किया गया, कैद किया गया, और बाद में मृत्युदंड सुनाया गया, यद्यपि वह पूरी तरह निर्दोष था। यह जानकर, धन्य स्पायरीडोन अपने मित्र को एक अन्यायपूर्ण मृत्युदंड से बचाने के लिए निकल पड़े। उस समय देश बाढ़ की चपेट में था, और संत के मार्ग में बहने वाली एक नदी पानी से उफान पर थी, अपने तटों को तोड़कर पार करना असंभव हो गया था। चमत्कार करने वाले संत ने याद किया कि कैसे यहोशू, वाचा के संदूक के साथ, उफान पर आए यॉर्डन नदी को सूखी जमीन पर पार कर गए थे (यहोशू 3:14–17), और ईश्वर की सर्वशक्तिमानता पर भरोसा करके, उन्होंने धारा को एक सेवक की तरह आज्ञा दी:

'ठहर जा! संपूर्ण संसार का प्रभु इस प्रकार आज्ञा देता है, कि मैं पार उतर जाऊँ और वह मनुष्य जिसके लिए मैं जल्दी कर रहा हूँ, उद्धार पाए।'

जैसे ही उन्होंने ये शब्द बोले, नदी का बहाव तुरंत रुक गया और एक सूखा रास्ता खुल गया – न केवल संत के लिए, बल्कि उनके साथ चल रहे सभी लोगों के लिए भी। चमत्कार के गवाह न्यायाधीश के पास दौड़े और उन्हें संत के आगमन

तथा रास्ते में उन्होंने जो कुछ किया था, उसके बारे में सूचित किया, और न्यायाधीश ने तुरंत दोषी व्यक्ति को रिहा कर दिया और उसे सुरक्षित रूप से संत के पास लौटा दिया।

सम्माननीय संत लोगों के छिपे हुए पापों को भी जान सकते थे। इस प्रकार, एक अवसर पर, जब वे एक विशिष्ट आतिथ्य-परायण मेज़बान के घर में अपनी यात्रा से विश्राम कर रहे थे, एक अवैध संबंध में जी रही महिला ने स्थानीय रीति-रिवाज के अनुसार संत के पैर धोना चाहा। लेकिन उन्होंने, उसके पाप को जानते हुए, उससे कहा कि उन्हें छूए नहीं। और उन्होंने यह इसलिए नहीं कहा कि वह पापी से घृणा करता था और उसे अस्वीकार करता था: क्योंकि प्रभु का एक चेला, जो महसूल वसूलने वालों और पापियों के साथ खाता-पीता था, वह पापियों से कैसे घृणा कर सकता था? (मत्ती 9:11) नहीं, वह चाहता था कि वह महिला अपने अपराधों को याद करे और अपने अशुद्ध विचारों और कर्मों पर लज्जित हो। और जब उस स्त्री ने लगातार संत के पैरों को छूने और उन्हें धोने का प्रयास किया, तो संत ने, उसे विनाश से बचाने की इच्छा से, प्रेम और नम्रता से उसे डांटा, उसे उसके पापों की याद दिलाई और उसे पश्चाताप करने के लिए प्रेरित किया। वह स्त्री यह देखकर चकित और स्तब्ध रह गई कि उसके सबसे गूढ़ कृत्य और विचार भी इस ईश्वर-पुरुष की सूक्ष्मदर्शी आँखों से छिपे नहीं थे। लज्जा से वह अभिभूत हो गई, और एक पश्चात्तापी हृदय के साथ वह संत के चरणों में गिर पड़ी और उन्हें पानी से नहीं बल्कि आँसुओं से धोया, और उन पापों का खुलकर इकरार किया जिनके लिए उसे फटकार लगाई गई थी। उसने ठीक वैसे ही किया जैसा सुसमाचार में उल्लेखित वेश्या ने एक बार किया था, और संत ने प्रभु की अनुकृति करते हुए, उससे दयालुता से कहा: लूका 7– *'तेरे पाप क्षमा हुए हैं'*, और आगे: *'देख, तू चंगी हो गई है; फिर पाप न करना'* (यूहन्ना 5:14)। और उस समय से, वह स्त्री पूरी तरह से सुधर गई और कई लोगों के लिए एक उपयोगी उदाहरण बनी।

इस बिंदु तक, हमने केवल संत स्पायरीडोन द्वारा उनके जीवनकाल में किए गए चमत्कारों के बारे में बात की है; अब हमें ऑर्थोडॉक्स धर्म के प्रति उनके उत्साह के बारे में भी बात करनी चाहिए।

पहले ईसाई सम्राट, महान कॉन्स्टेंटाइन के शासनकाल में, वर्ष 325 ईस्वी में, पहला सार्वभौमिक परिषद निकिया में विधर्मी एरियस की निंदा करने के लिए बुलाई गई थी, जिसने अपमानजनक रूप से परमेश्वर के पुत्र को सभी चीजों के सृष्टिकर्ता के बजाय एक प्राणी कहा था, और यह स्वीकार करने के लिए कि वह परमेश्वर पिता के समान सार का है। उसके इस अपमानजनक कृत्य में उस समय के प्रभावशाली चर्चों के बिशपों ने अरिउस का समर्थन किया: निकोमेडिया के यूसेबियस, कालसेडन के मारिस, निकिया के थियोगनिज और अन्य। हालाँकि, ऑर्थोडॉक्स (सही आस्था) के रक्षकों वे पुरुष थे जो अपने जीवन और शिक्षाओं के लिए विशिष्ट थे: महान संत अलेक्जेंडर, जो उस समय अभी भी एक पुरोहित और कॉन्स्टेंटिनोपल के पैट्रिआर्क संत मेट्रोफैन के कार्यवाहक उप-प्रतिनिधि थे[8809] , जो अपनी मृत्युशय्या पर थे और इसलिए परिषद से अनुपस्थित थे; और प्रतिष्ठित अथेनासियस, जिन्हें अभी तक पुरोहित नहीं बनाया गया था और वे अलेक्जेंड्रिया के चर्च में एक डिकन के रूप में सेवा कर रहे थे; इन दोनों ने विधर्मियों के बीच विशेष रूप से इस बात के कारण आक्रोश और ईर्ष्या जगाई कि वे विश्वास के सत्यों की अपनी समझ में कई लोगों से आगे थे, जबकि उन्हें अभी तक बिशप के पद से सम्मानित नहीं किया गया था; उनके साथ संत स्पाइरिडॉन भी थे, और उनमें निहित अनुग्रह ने अन्य लोगों के भाषणों, तर्कों और वाक्पटुता की तुलना में विधर्मियों को मनाने में अधिक प्रभावी और शक्तिशाली साबित हुआ। राजा की अनुमति से, पेरिपैटेक्टिक्स[8810] के नाम से जाने जाने वाले यूनानी दार्शनिक भी परिषद में उपस्थित थे; उनमें से सबसे बुद्धिमान एरियस के बचाव के लिए आए और अपने विशेष रूप से कुशल भाषण पर गर्व करते हुए, उन्होंने ऑर्थोडॉक्स की शिक्षाओं का उपहास उड़ाने का प्रयास किया। धन्य स्पिरिडोन, जो एक अनपढ़ व्यक्ति थे और केवल यीशु मसीह को जानते थे, *'और उसे सूली पर चढ़ाया गया'* (1 कुरिन्थियों 2:2), ने धर्मपरायणों से इस विद्वान के साथ बहस में प्रवेश करने की अनुमति मांगी; लेकिन पवित्र धर्मपरायणों ने, यह जानते हुए कि वह एक साधारण व्यक्ति थे और यूनानी दर्शन से पूरी तरह से अपरिचित थे, उन्हें ऐसा करने से मना कर दिया। हालाँकि, संत स्पिरिडोन, जो स्वर्गीय ज्ञान की शक्ति और उसकी तुलना में मानवीय ज्ञान की दुर्बलता को जानते थे, उस विद्वान की ओर मुड़े और कहा:

'हे दार्शनिक! यीशु मसीह के नाम पर, जो मैं कहना चाहता हूँ उसे सुनो।'

[8809] संत मेट्रोफान, 315–325। संत अलेक्जेंडर, उनके उत्तराधिकारी, ने 325 से 340 तक पैट्रिआर्क के रूप में कार्य किया।

[8810] पेरिपैटेटिक्स अरस्तूवादी दर्शन के अनुयायी थे। यह दार्शनिक विद्यालय (आंदोलन) ईसा पूर्व चौथी शताब्दी के अंत में उभरा और लगभग आठ शताब्दियों तक चला; इस दार्शनिक आंदोलन ने बाद में ईसाइयों के बीच भी अनुयायी बनाए। पेरिपैटेक्टिक का नाम इस तथ्य से पड़ा कि स्कूल के संस्थापक, थियोफ्रेस्टस ने स्कूल को एक वेदी और ढकी हुई पगडंडियों (पेरिपैटोस - स्तंभ-पंक्तियाँ, ढकी हुई गैलरी) वाले बगीचे की वसीयत की थी।

जब दार्शनिक ने उसे सुनने के लिए सहमति दे दी, तो संत बोलने लगे।

उन्होंने कहा, 'एक ईश्वर है, जिसने स्वर्ग और पृथ्वी की सृष्टि की, मनुष्य को मिट्टी से बनाया, और बाकी सभी चीज़ों को, दृश्य और अदृश्य दोनों को, अपने वचन और अपने आत्मा द्वारा स्थापित किया; और हम विश्वास करते हैं कि यह वचन परमेश्वर का पुत्र और स्वयं परमेश्वर है, जिसने हम भटके हुओं पर दया करके, कुँवारी से जन्म लिया, मनुष्यों के बीच रहा, हमारे उद्धार के लिए दुख सहे और मरा, और फिर जी उठा, और संपूर्ण मानव जाति को अपने साथ उठाया; हम सभी का न्याय करने और प्रत्येक व्यक्ति को उनके कर्मों के अनुसार पुरस्कृत करने के लिए उनके आगमन की प्रतीक्षा करते हैं; हम विश्वास करते हैं कि वह पिता के समान सार के हैं, शक्ति और महिमा में उनके बराबर हैं... इस प्रकार हम अपने विश्वास की घोषणा करते हैं, और हम जिज्ञासु मन से इन रहस्यों को परखने का प्रयास नहीं करते; न ही आपको यह पूछने की हिम्मत करनी चाहिए कि यह सब कैसे हो सकता है, क्योंकि ये रहस्य आपकी समझ से परे हैं और सभी मानवीय ज्ञान से बहुत ऊपर हैं।

फिर, एक संक्षिप्त विराम के बाद, संत ने पूछा:

'क्या तुम्हें भी यह ऐसा ही नहीं लगता, हे दार्शनिक?'

लेकिन दार्शनिक चुप रहा, मानो उसे पहले कभी बहस के लिए नहीं कहा गया हो। वह संत के शब्दों के विरुद्ध कुछ भी नहीं कह सकता था, जिनमें एक दिव्य शक्ति स्पष्ट थी, जैसा कि पवित्र धर्मग्रंथ में कहा गया है: *'क्योंकि परमेश्वर का राज्य वचन में नहीं, बल्कि सामर्थ्य में है'* (1 कुरिन्थियों 4:20)।

अंतत; उन्होंने कहा:

'और मुझे लगता है कि वास्तव में सब कुछ वैसा ही है जैसा आप कह रहे हैं।'

तब वृद्ध ने कहा:

'तो फिर, जाओ और पवित्र विश्वास के पक्ष में अपना स्थान लो।'

दार्शनिक ने अपने मित्रों और शिष्यों की ओर मुड़कर घोषणा की:

'सुनो! जब तक मुझसे बहस तर्कों के माध्यम से की जा रही थी, मैंने एक तर्क को दूसरे तर्क के विरुद्ध रखा और, बहस में अपनी कुशलता से, मेरे सामने जो कुछ भी रखा गया, उसे खंडित कर दिया। लेकिन जब, तर्कसंगत दलीलों के बजाय, इस संत के होठों से एक विशेष शक्ति प्रवाहित होने लगी – दलीलें इसके सामने शक्तिहीन हैं, क्योंकि मनुष्य ईश्वर का विरोध नहीं कर सकता। यदि आप में से कोई भी मेरी तरह सोचता है, तो वह मसीह में विश्वास करे और मेरे साथ मिलकर इस संत का अनुसरण करे, जिनके होठों से स्वयं ईश्वर ने बात की।

और दार्शनिक ने, ऑर्थोडॉक्स ईसाई धर्म को अपनाते हुए, इस बात पर प्रसन्नता व्यक्त की कि उसे एक संत द्वारा, उसके ही भले के लिए, प्रतियोगिता में हरा दिया गया था। सभी ऑर्थोडॉक्स प्रसन्न हुए, जबकि विधर्मी बहुत अपमानित हुए।

परिषद के समापन पर, एरियस की निंदा और बहिष्कार के बाद, संत स्पिरिडोन सहित परिषद में उपस्थित सभी लोग अपने-अपने घर लौट गए। इसी समय उनकी बेटी इरीना का निधन हो गया; उसने अपने यौवन का सर्वोत्तम समय पवित्र कुँवारीपन में बिताया था, और इस प्रकार उसे स्वर्ग के राज्य का योग्य समझा गया। इस बीच, एक महिला संत के पास आई और रोते हुए उन्हें बताया कि उसने अपनी कुछ सोने की ज्वेलरी उसकी बेटी इरिना को सुरक्षित रखने के लिए सौंपी थी; लेकिन चूँकि वह लड़की कुछ ही समय बाद मर गई थी, इसलिए वे आइटम गायब हो गए थे। स्पिरिडॉन ने यह देखने के लिए पूरा घर खोजा कि कहीं आभूषण कहीं छिपाए तो नहीं गए हैं, लेकिन उन्हें वे नहीं मिले। उस महिला के आँसुओं से भावुक होकर, संत स्पिरिडॉन अपने परिवार के साथ अपनी बेटी की कफ़न के पास गए और जैसे वह अभी भी जीवित हो, उससे संबोधित करते हुए कहा:

'मेरी बेटी इरिना! तुम्हें सुरक्षित रखने के लिए सौंपी गई आभूषणों की वस्तुएँ कहाँ हैं?'

इरिना, जैसे गहरी नींद से जागते हुए, ने उत्तर दिया:

'हे प्रभु! मैंने उन्हें घर में इसी जगह छिपाया था।'

और उसने उस स्थान की ओर इशारा किया।

तब संत ने उससे कहा:

– अब सो जाओ, मेरी बेटी, जब तक कि सिर्फ के प्रभु तुम्हें सर्वव्यापी पुनरुत्थान के समय जगा न दें।

इतना अद्भुत चमत्कार देखकर वहाँ मौजूद सभी लोगों के मन में भय समा गया। और संत ने उसी स्थान पर छपिाया हुआ सामान ढूंढ नकिाला, जसिे उसने बताया था, और वह महलिा को दे दयिा।

कांस्टेनटाइन महान की मृत्यु के बाद, उसका साम्राज्य दो भागों में वभिाजति हो गया। पूर्वी आधा हस्सिा उनके सबसे बड़े बेटे, कॉन्स्टैंटयिस को मलिा। एंटओिक में रहते हुए, कॉन्स्टैंटयिस गंभीर रूप से बीमार पड़ गया, और डॉक्टर उसे ठीक नहीं कर सके। तब सम्राट ने डॉक्टरों को हटा दयिा और अपनी आत्मा और शरीर के सर्वशक्तमिान चकित्सिक – ईश्वर – से अपनी चकित्सिा के लिए भक्तपिूर्वक प्रार्थना की। और इस प्रकार, उस रात एक दर्शन में, सम्राट ने एक देवदूत को देखा जसिने उन्हें बशिपों का एक पूरा समूह दखिाया, और उनमें, वशिेष रूप से, दो ऐसे थे जो बाकी लोगों के नेता और प्रमुख प्रतीत हुए; देवदूत ने राजा से कहा कि केवल यही दोनों ही उसकी बीमारी को ठीक कर सकते थे। जागने पर और जो उसने देखा था उस पर वचिार करने पर, वह यह अनुमान नहीं लगा सका कि जिन दो बशिपों को उसने देखा था वे कौन थे: उनके नाम और वंशावली उसके लिए अज्ञात रहे, और, इसके अलावा, उनमें से एक उस समय बशिप भी नहीं था।

लंबे समय तक राजा हैरान रहा और अंत में, कसिी की बुद्धमिानी भरी सलाह पर, उसने सभी पड़ोसी शहरों के बशिपों को बुलाया और उनमें से उन दो लोगों को खोजा जन्हिें उसने अपनी दृष्टि में देखा था, लेकनि वे उसे नहीं मलि। तब ने दूसरी बार बशिपों को बुलाया, इस बार बड़ी संख्या में और दूर-दराज के क्षेत्रों से, लेकनि उन्हें उन दोनों का पता नहीं चला जन्हिें उन्होंने देखा था। अंत में, उन्होंने अपने साम्राज्य के सभी बशिपों को अपने सामने इकट्ठा होने का आदेश दयिा। सम्राटीय फरमान—या यूँ कहें कि नविेदन—साइप्रस द्वीप और ट्रमिाइथस शहर पहुँचा, जहाँ संत स्पाइरडिोन बशिप के रूप में सेवा कर रहे थे; उन्हें ईश्वर ने सम्राट के बारे में पहले ही सब कुछ प्रकट कर दयिा था। तुरंत, संत स्पाइरडिोन अपने शष्यि ट्रायफलियिास को साथ लेकर सम्राट के पास रवाना हो गए, जनिके साथ वह एक दर्शन में सम्राट के सामने प्रकट हुए थे और जो, जैसा कि कहा गया है, उस समय तक बशिप नहीं बने थे। एंटओिक पहुँचने पर, वे सम्राट से मलिने महल गए। स्परिडिॉन साधारण वस्त्र पहने हुए थे और उनके हाथों में खजूर की लकड़ी का एक डंडा था; उनके सरि पर खजूर की पत्तयिों से बुना हुआ मुकुट था, और उनकी छाती पर मट्टिी का एक छोटा पात्र लटका हुआ था, जैसा कि यिरूशलेम के नविासयिों की प्रथा थी, जो आमतौर पर ऐसे ही पात्र में पवत्रि क्रूस से पवत्रि तेल ले जाते थे। जब संत इस वेश में महल में प्रवेश कए, तो महल के एक धनी सेवक ने उन्हें एक भखिारी समझ लयिा, उनका मज़ाक उड़ाया और, उन्हें अंदर जाने से मना करते हुए, उनके गाल पर थप्पड़ मारा; लेकनि उस पूजनीय ने अपनी नम्रता में और प्रभु के वचन (मत्ती 5:39) को याद करते हुए, दूसरी गाल फेर दी; सेवक को एहसास हुआ कि उसके सामने एक बशिप खड़े हैं और, अपने पाप को पहचानते हुए, उसने वनिम्रता से क्षमा मांगी, जो उसे मलि गई।

जैसे ही संत राजा की उपस्थति में पहुँचे, राजा ने उन्हें तुरंत पहचान लयिा, क्योंकि एक दर्शन में ठीक इसी रूप में वे राजा के सामने प्रकट हुए थे। कॉन्स्टैंटयिस उठे, संत के पास आए और उनके सामने झुककर आँसुओं से उनकी ईश्वर से प्रार्थना करने और अपनी बीमारी को ठीक करने का आग्रह कयिा। जैसे ही संत ने राजा के सरि पर हाथ रखा, राजा तुरंत स्वस्थ हो गया और संत की प्रार्थनाओं से मलिी इस आरोग्यता पर अत्यंत हर्षति हुआ। राजा ने उन्हें बड़े सम्मान से सम्मानति कयिा और अपनी प्रसन्नता में पूरे दनि उनके साथ बतिाया, अपने अच्छे चकित्सिक के प्रति गहरा सम्मान दखिाते हुए।

इस बीच, त्रफिलियिस सभी शाही वैभव, महल की सुंदरता, सहिासन पर वरिाजमान राजा के सामने खड़े कुलीनों की भीड़ – जो सभी अद्भुत दखि रहे थे और सोने से दमक रहे थे – और चमकीले वस्त्रों में सजे परचिारकों की कुशल सेवा को देखकर पूरी तरह से चकति था। स्परिडिोन ने उससे कहा:

'भाई, तुम इतने हैरान क्यों हो? क्या राजा की भव्यता और महमिा सचमुच उसे दूसरों से अधकि धर्मी बनाती है? क्या राजा भी सबसे नीचले भखिारी की तरह नहीं मरता, और क्या उसे दफनाया नहीं जाता? क्या वह भी सभी की तरह भयानक न्यायाधीश के सामने नहीं खड़ा होगा? आप नश्वर चीज़ को अमर चीज़ पर क्यों तरजीह देते हैं, और तुच्छता पर आश्चर्य क्यों करते हैं, जबकि आपको सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण रूप से उस चीज़ की खोज करनी चाहिए जो अवांछनीय और शाश्वत है, और अमर स्वर्गीय महमिा से प्रेम करना चाहिए?"

रेवरेंड ने स्वयं राजा को वस्तिार से उपदेश दयिा, और उसे ईश्वर की कृपा को याद रखने तथा अपने प्रजा के प्रति दयालु होने के लिए प्रेरति कयिा, पापयिों के प्रति दयालु, जो कुछ भी माँगते हैं उनके प्रति अनुकूल, जो याचना करते हैं उनके प्रति उदार, और सभी के लिए एक पति—प्यारा और दयालु; क्योंकि जो कोई अन्यथा शासन करता है उसे राजा

नहीं कहा जाना चाहिए, बल्कि एक यातनाकर्ता कहा जाना चाहिए। निष्कर्षत; संत ने राजा को धर्मपरायणता के नियमों का सख्ती से पालन करने और उन्हें बनाए रखने का निर्देश दिया, और ईश्वर की कलीसिया[8811] के विपरीत किसी भी चीज़ को स्वीकार न करने के लिए कहा।

राजा अपने प्रार्थनाओं से चंगा होने के लिए संत का धन्यवाद करना चाहता था और उन्हें बहुत सारा सोना भेंट किया, लेकिन संत ने यह स्वीकार करने से इनकार कर दिया, और कहा:

'हे राजा, प्रेम का बदला घृणा से चुकाना उचित नहीं है, क्योंकि मैंने आपके लिए जो किया है वह प्रेम है: वास्तव में, अपना घर छोड़ना, समुद्र के इतने विशाल विस्तार को पार करना, तीव्र ठंड और हवाओं को सहना – क्या यह प्रेम नहीं है? और इन सब के बदले में, क्या मैं सोना स्वीकार करूँ, जो सभी बुराइयों का कारण है और सभी सच्चाइयों को इतनी आसानी से नष्ट कर देता है?

संत ने कुछ भी स्वीकार करने से इनकार करते हुए ऐसा कहा, और केवल राजा की बहुत ज़िद करने पर ही वे राज़ी हुए – लेकिन केवल राजा से सोना स्वीकार करने के लिए, उसे अपने पास रखने के लिए नहीं, क्योंकि उन्होंने तुरंत जो कुछ भी प्राप्त किया था, उसे माँगने वालों में बाँट दिया।

इसके अलावा, इस संत के उपदेशों का पालन करते हुए, सम्राट कॉन्स्टैंटियस ने पुरोहितों, डिकन्स और सभी पादरियों तथा चर्च के सेवकों को करों से मुक्त कर दिया, यह निर्णय लेते हुए कि अमर राजा के सेवकों के लिए एक नश्वर राजा को कर देना अनुचित था। सम्राट से विदा लेकर अपनी वापसी की यात्रा पर निकलने के बाद, संत का स्वागत रास्ते में मिले एक धर्मनिष्ठ ईसाई के घर पर हुआ। वहाँ, एक गैर-ईसाई महिला जो ग्रीक नहीं बोलती थी, उनके पास आई। वह अपने मृत पुत्र को अपनी बाहों में लिए हुए थी और, जोर-जोर से रोते हुए, उसे संत के पैरों में लिटा दिया। कोई भी उसकी भाषा नहीं समझता था, लेकिन उसके आँसू ही स्पष्ट रूप से यह दिखा रहे थे कि वह संत से अपने मृत बच्चे को जीवित करने की विनती कर रही थी। लेकिन संत ने, व्यर्थ की महिमा से बचते हुए, पहले तो यह चमत्कार करने से इनकार कर दिया; और फिर भी, अपनी दया के कारण, वह माँ के कड़वे विलाप से विचलित हो गए और अपने डिकन, आर्टेमिडोتس से पूछा:

'हम क्या करें, भाई?'

'आप मुझसे क्यों पूछ रहे हैं, पिताजी?' डीकन ने उत्तर दिया। 'आप मसीह—जीवन के दाता—को पुकारने के अलावा और क्या कर सकते हैं, जिन्होंने आपकी प्रार्थनाओं का इतनी बार उत्तर दिया है? यदि आपने राजा को चंगा किया है, तो क्या आप निश्चित रूप से गरीबों और ज़रूरतमंदों को निराश कर देंगे?'

इस बुद्धिमानी भरी सलाह से दया के लिए और भी प्रेरित होकर, संत की आँखों में आँसू आ गए और, घुटनों के बल झुककर, उन्होंने प्रभु से एक उत्कट प्रार्थना की। और प्रभु, जिन्होंने एलियाह और एलीशा के द्वारा ज़ारेफथ की विधवा और शुनेम की स्त्री के पुत्रों को जीवन वापस दिया था (1 राजा 17:21; 4 राजा 4:35), ने संत स्पायरिडोन की प्रार्थना भी सुनी और उस मूर्तिपूजक शिशु में जीवन का श्वास पुनःस्थापित किया, जो जीवित होकर तुरंत रोने लगा। माँ ने अपने बच्चे को जीवित देखकर, आनंद से मर गई: यह केवल गंभीर बीमारी और दिल का दर्द ही नहीं है जो किसी व्यक्ति को मार सकता है, बल्कि कभी-कभी अत्यधिक आनंद का भी वही प्रभाव हो सकता है। इस प्रकार, वह महिला आनंद से मर गई, जबकि उसकी मृत्यु ने दर्शकों को – शिशु के पुनरुत्थान पर मिली अप्रत्याशित खुशी के बाद – अप्रत्याशित दुख और आँसुओं में डुबो दिया। फिर संत ने डीकन से एक बार फिर पूछा:

'हम क्या करें?'

डीकन ने अपनी पहले की सलाह दोहराई, और संत एक बार फिर प्रार्थना में लग गए। स्वर्ग की ओर अपनी दृष्टि उठाकर और अपना मन ईश्वर की ओर लगाकर, उन्होंने उस ईश्वर से प्रार्थना की जो मृतकों में जीवन का श्वास फूँकता है और जो अपनी एकल इच्छा से सभी चीजों को बदल देता है। फिर उन्होंने ज़मीन पर लेटी मृत महिला से कहा:

'उठो और अपने पैरों पर खड़ी हो जाओ!'

और वह जैसे नींद से जागी हो, उठ खड़ी हुई और अपने जीवित पुत्र को अपनी बाहों में ले लिया।

संत ने उस महिला और वहाँ मौजूद सभी लोगों को इस चमत्कार के बारे में किसी को न बताने की मनाही की; लेकिन डिकन आर्टेमिडोतस ने, संत की मृत्यु के बाद, ईश्वर के महान सेवक, स्पिरिडोन के माध्यम से प्रकट हुई ईश्वर की महानता और शक्ति के बारे में चुप न रहते हुए, विश्वासियों को वह सब कुछ बताया जो हुआ था।

[8811] यह ध्यान देने योग्य है कि सम्राट कॉन्स्टैंटियस एरियन विधर्मीयों का पक्षधर था।

जब संत घर लौटे, तो एक आदमी उनके पास आया और उनकी भेड़-बकरियों के झुंड में से सौ बकरियाँ खरीदने की इच्छा व्यक्त की। संत ने उससे कहा कि वह तय की गई कीमत चुकाए और फिर जो उसने खरीदा है, उसे ले जाए। लेकिन उस आदमी ने नब्बे-नौ बकरियों का भुगतान किया और एक बकरी की कीमत छिपा ली, यह सोचकर कि संत—जो अपनी हार्दिक सादगी में सांसारिक मामलों से पूरी तरह बेपरवाह थे—इस पर ध्यान नहीं देंगे। जब वे दोनों पशुओं के बाड़े में थे, तो संत ने खरीदार से कहा कि वह उतनी बकरियाँ ले जाए जितनी के लिए उसने भुगतान किया था, और खरीदार ने, सौ बकरियाँ अलग करके, उन्हें बाड़ के बाहर भगा दिया। लेकिन उनमें से एक, जैसे कि वह एक चतुर और अच्छी नौकरानी हो, यह जानकर कि उसे उसके मालिक ने नहीं बेचा है, जल्द ही वापस लौट आई और बाड़े में दौड़ गई। खरीदार ने उसे फिर से पकड़ लिया और अपने पीछे-पीछे खींचने लगा, लेकिन वह छूटकर वापस खोर में भाग गई। इस तरह, वह तीन बार उसकी पकड़ से छूटकर बाड़े में वापस भाग गई, जबकि वह जबरदस्ती उसे ले जा रहा था; अंत में, उसने उसे अपने कंधों पर उठा लिया और उसे ले गया, जबकि वह ज़ोर से बकर-बकर कर रही थी, अपने सींगों से उसके सिर पर वार कर रही थी, इधर-उधर उछल-कूद कर रही थी और संघर्ष कर रही थी, जिससे यह सब देखने वाले हैरान रह गए। तब संत स्पाइरिडॉन ने, यह समझते हुए कि क्या हो रहा है और साथ ही यह न चाहते हुए कि सबके सामने उस बेईमान खरीदार का भंडाफोड़ हो, उससे धीरे से कहा:

'देखो, मेरे बेटे, यह जानवर किसी कारण से ऐसा कर रहा है, यह तुम्हारे पास ले जाए जाने को नहीं चाह रहा है: क्या तुमने शायद इसके लिए उचित कीमत नहीं दी है? क्या इसलिए यह तुम्हारी पकड़ से छूटकर बाड़ की ओर भाग रहा है?'

खरीदार लज्जित हुआ, उसने अपना पाप स्वीकार किया और क्षमा मांगी; फिर उसने पैसे दे दिए और बकरी को ले लिया – और वह स्वयं विनम्रता और चुपचाप अपने नए मालिक का अनुसरण करते हुए, उस आदमी के घर में चली गई जिसने उसे खरीदा था।

साइप्रस द्वीप पर फ्रीरा नामक एक गाँव था। वहाँ किसी काम से आए हुए, संत स्पाइरिडोन चर्च में गए और वहाँ मौजूद एक डीकन को एक संक्षिप्त प्रार्थना करने का निर्देश दिया: संत अपनी लंबी यात्रा से थके हुए थे, और यह और भी अधिक था क्योंकि यह फसल काटने का समय था और गर्मी बहुत तेज थी। लेकिन उस डीकन ने उनकी आज्ञाओं का पालन धीरे-धीरे करना शुरू कर दिया, प्रार्थना को जानबूझकर खींचते हुए, मानो वह कुछ मंत्रों का उच्चारण कर रहा हो और एक तरह के गर्व के साथ गा रहा हो, और स्पष्ट रूप से अपने स्वर का दिखावा कर रहा हो। संत ने उसे गुस्से से देखा, हालांकि वह स्वभाव से दयालु थे, और उसे डांटते हुए कहा: 'चुप हो जाओ!' और तुरंत ही डीकन गूंगा हो गया: उसने न केवल अपनी आवाज़ बल्कि वाणी का वरदान ही खो दिया, और ऐसा खड़ा रह गया मानो उसकी जीभ ही न हो। उपस्थित सभी लोगों पर भय छा गया। जो कुछ हुआ था उसकी खबर पूरे गाँव में तेजी से फैल गई, और सभी निवासी चमत्कार देखने के लिए उमड़ पड़े और भय से भर गए। डीकन संत के पैरों में गिर पड़ा, और विनम्रतापूर्वक अपनी वाणी लौटाने का इशारा करने लगा, जबकि डीकन के दोस्तों और रिश्तेदारों ने भी बिशप से यही विनती की। लेकिन संत ने तुरंत उनकी प्रार्थना स्वीकार नहीं की, क्योंकि वह अहंकारी और घमंडी लोगों के प्रति सिख्त थे; और, अंत में, उन्होंने अपराधी को क्षमा कर दिया, उसकी वाणी को बहाल क र उसे बोलने का वरदान लौटा दिया; हालाँकि, उसी समय, संत ने उसके भाषण की पूर्ण स्पष्टता को बहाल न करके उस पर दंड का एक निशान छोड़ा, और उसे जीवन भर के लिए एक कमजोर आवाज़, तुतलाहट और हकलाहट के साथ छोड़ दिया, ताकि वह अपनी आवाज़ पर घमंड न करे या अपने भाषण की स्पष्टता का ढिंढोरा न पीटे।

एक दिन, संत स्पाइरिडॉन अपने शहर के एक चर्च में संध्या की प्रार्थना के लिए गए। ऐसा हुआ कि चर्च में पुरोहितों के अलावा और कोई नहीं था। फिर भी, उन्होंने कई मोमबत्तियाँ और दीपक जलाने का आदेश दिया और आध्यात्मिक श्रद्धा के साथ वेदी के सामने खड़े हो गए। और जब, निर्धारित समय पर, उन्होंने घोषणा की, 'आप सभी पर शांति हो!' – और संत की शांति की घोषणा का पारंपरिक उत्तर देने के लिए कोई मंडली नहीं थी – अचानक ऊपर से आवाज़ों का एक बड़ा समूह सुनाई दिया, जो घोषणा कर रहा था, 'और आपकी आत्मा को भी।' यह गायन मंडली विशाल और सुरमय थी, और इसकी आवाज़ें किसी भी मानवीय गायन से अधिक मधुर थीं। डीकन, जो एकटेनिया का पाठ कर रहा था, प्रत्येक एकटेनिया के बाद ऊपर से एक अद्भुत उद्घोष सुनकर विस्मित हो गया: 'हे प्रभु, दया करो!'. यह गायन चर्च से दूर रहने वालों ने भी सुना, जिनमें से कई लोग उसकी ओर दौड़ पड़े; और जैसे-जैसे वे चर्च के करीब पहुँचे, यह अद्भुत गायन उनके कानों में और अधिक गूँजने लगा और उनके हृदयों को आनंदित करने लगा। लेकिन जब वे चर्च में दाखिल हुए, तो उन्हें वहाँ

संत और कुछ चर्च के सेवकों के अलावा और कोई नहीं मिला, और वे अब वह दिव्य गायन नहीं सुन सके, जिससे वे अत्यंत आश्चर्यचकित हो गए।

एक अन्य अवसर पर, जब संत संध्या की प्रार्थना के दौरान चर्च में खड़े थे, तो दीपक का तेल खत्म हो गया और लौ बुझने लगी। संत इस बात से दुखी हो गए, उन्हें डर था कि एक बार दीपक बुझ गया, तो चर्च का गायन बंद हो जाएगा, और इस प्रकार चर्च का प्रथागत नियम पालन नहीं हो पाएगा। लेकिन परमेश्वर, जो अपने भक्तों की इच्छाओं को पूरा करते हैं, ने दीपक को तेल से लबालब कर दिया, ठीक वैसे ही जैसे भविष्यवक्ता एलिशा के दिनों में विधवा का घड़ा लबालब हो गया था (2 राजा 4:2–6)। चर्च के सेवकों ने पात्र लाए, उन्हें दीपक के नीचे रखा, और उन्हें चमत्कारिक रूप से तेल से भर लिया। यह मूर्त तेल स्पष्ट रूप से ईश्वर की प्रचुर कृपा के संकेत के रूप में काम करता था, जिससे संत स्पाइरिडॉन परिपूर्ण थे और जिसके द्वारा उन्होंने अपने शब्दों के माध्यम से अपने झुंड को पोषित किया।

साइप्रस द्वीप पर कैरेना नामक एक शहर है। एक अवसर पर, संत स्परिडिॉन वहाँ व्यापार के सिलसिले में अपने शिष्य, ट्रायफिलियस के साथ गए, जो तब तक साइप्रस द्वीप पर ल्यूकोसिया के बिशप बन चुके थे। जब वे माउंट पेंटाडाक्टिलोस पार कर रहे थे और पारमिना नामक स्थान पर पहुँचे (जो अपनी सुंदरता और हरी-भरी वनस्पतियों के लिए प्रसिद्ध था), तो ट्रिफिलियस उस जगह से मोहित हो गया और उसने अपने चर्च के लिए उस क्षेत्र में कुछ संपत्ति हासिल करने की इच्छा व्यक्त की। उन्होंने अपने मन में इस पर काफी देर तक विचार किया; लेकिन उनके विचार महान पिता की सूक्ष्म आध्यात्मिक दृष्टि से छिपे नहीं थे, जिन्होंने उनसे कहा:

'ट्राइफिलियस, तुम निरंतर व्यर्थ की बातों पर क्यों विचार करते हो और उन संपत्तियों और बगीचों की लालसा क्यों करते हो, जिनका, सच्चाई में, कोई वास्तविक मूल्य नहीं है और जो केवल कुछ ठोस प्रतीत होते हैं, और जिनका मायावी मूल्य लोगों के हृदय में उन्हें प्राप्त करने की इच्छा जगाता है? हमारा अविनाशी धन स्वर्ग में है (1 पतरस 1:4), हमारा *एक ऐसा निवास है जो हाथों से नहीं बनाया गया है* (2 कुरिन्थियों 5:4)—इनके लिए प्रयासरत रहो और (ईश्वर के चिन्तन के माध्यम से) पहले से ही इनका आनंद लो: ये एक अवस्था से दूसरी अवस्था में नहीं जा सकते, और जो कोई एक बार इनका स्वामी बन जाता है, उसे एक ऐसी विरासत प्राप्त होती है जिसे वह कभी नहीं खोएगा।

ये शब्द ट्रिफिलियस के लिए बहुत लाभदायक थे, और बाद में, अपने सच्चे ईसाई जीवन के माध्यम से, उन्होंने प्रेरित पौलुस की तरह मसीह के एक चुने हुए पात्र का दर्जा प्राप्त किया, और उन्हें परमेश्वर से अनगिनत वरदानों का पात्र माना गया।

इस प्रकार संत स्पाइरिडोन, स्वयं सदाचारी होने के कारण, दूसरों को सदाचार की ओर मार्गदर्शन करते थे; और जो उनके उपदेशों और निर्देशों का पालन करते थे, उनके लिए वे लाभदायक सिद्ध हुए, जबकि जिन्होंने उन्हें अस्वीकार कर दिया, उनका अंत दयनीय हुआ, जैसा कि निम्नलिखित से स्पष्ट है।

ट्रिमिफिुंट का ही एक व्यापारी व्यापार करने के लिए एक विदेशी देश के लिए समुद्र यात्रा पर निकला और वहाँ बारह महीने तक रहा। इस दौरान उसकी पत्नी ने व्यभिचार किया और गर्भवती हो गई। घर लौटने पर व्यापारी ने देखा कि उसकी पत्नी गर्भवती है और उसे एहसास हुआ कि उसकी गैरमौजूदगी में उसने व्यभिचार किया है। वह क्रोध से आग-बबूला हो गया, उसे पीटने लगा और उसके साथ रहने की इच्छा न रखते हुए उसे घर से निकाल दिया; फिर वह संत स्पाइरिडोन के पास गया और उन्हें सब कुछ बताकर सलाह मांगी। संत, उस महिला के पाप और उसके पति के गहरे दुख से बहुत दुखी होकर, पत्नी को बुलाया और, यह पूछे बिना कि क्या उसने वास्तव में पाप किया था—क्योंकि उसकी खुद की गर्भावस्था और उसके बेवफ़ाई से गर्भ में आए बच्चे ने ही उसके पाप की गवाही दे दी थी—उससे स्पष्ट रूप से कहा:

'तुमने अपने पति का बिस्तर क्यों कलंकित किया और उसके घर का अपमान क्यों किया?'

लेकिन उस स्त्री ने, लज्जा की सारी भावना खोकर, खुलेआम झूठ बोलने की हिम्मत की, यह दावा करते हुए कि उसने किसी और से नहीं, बल्कि अपने पति से गर्भधारण किया था। उपस्थित लोग इस झूठ के लिए उससे व्यभिचार से भी अधिक क्रोधित हुए, और उससे कहा:

'तुम यह कैसे कह सकती हो कि तुम्हारा गर्भ तुम्हारे पति से हुआ है, जबकि वह बारह महीने से घर से दूर है? क्या कोई गर्भ में रहने वाला बच्चा बारह महीने या उससे भी अधिक समय तक गर्भ में रह सकता है?'

लेकिन वह अपने रुख पर अड़ी रही और इस बात पर ज़ोर दिया कि उसके गर्भ में जो बच्चा था, वह अपने पिता की वापसी का इंतज़ार कर रहा था ताकि वह उनके सामने ही पैदा हो सके। इस और इसी तरह की झूठी बातों पर अड़े रहकर

और सभी से बहस करके, उसने हंगामा खड़ा कर दिया और चिल्लाने लगी कि उस पर झूठा आरोप लगाया गया है और उसके साथ अन्याय हुआ है। तब संत स्पायरिडोन, उसे पश्चाताप की राह पर लाने की इच्छा से, उससे धीरे से कहा:

'हे स्त्री! तू एक बड़े पाप में गिर गई है – और तेरा पश्चाताप भी बड़ा होना चाहिए, क्योंकि तेरे उद्धार की अभी भी आशा है: ईश्वर की दया से बड़ा कोई पाप नहीं है। लेकिन मैं देखता हूँ कि तुम्हारे व्यभिचार ने तुम्हें निराशा में डाल दिया है, और तुम्हारी निराशा ने तुम्हें निर्लज्ज बना दिया है, और यह न्यायपूर्ण होगा कि तुम एक उचित और त्वरित दंड भुगतो; और फिर भी, आपको पश्चाताप के लिए जगह और समय देते हुए, हम सभी के सामने आपको घोषित करते हैं: जब तक आप सत्य नहीं बोलतीं, और झूठ से उस बात को नहीं छिपातीं जिसे एक अंधा भी, जैसा कि कहा जाता है, देख सकता है, तब तक आपके गर्भ से बच्चा बाहर नहीं निकलेगा।

संत के शब्द जल्द ही सच साबित हुए। जब उस महिला को प्रसव का समय आया, तो वह एक भयंकर बीमारी से ग्रस्त हो गई, जिससे उसे बहुत कष्ट हुआ क्योंकि उसके गर्भ में बच्चा फँसा हुआ था। लेकिन, अपने हृदय में कठोर होकर, उसने अपना पाप स्वीकार करने से इनकार कर दिया, और इस प्रकार वह प्रसव किए बिना ही एक दर्दनाक मृत्यु से मर गई। यह जानकर, संत ने रोते हुए पश्चाताप किया कि उन्होंने पापी पर ऐसा निर्णय सुनाया था, और कहा:

'मैं अब लोगों पर न्याय नहीं करूंगा, अगर जो मैं कहता हूं वह उनके जीवन में इतनी जल्दी घटित हो जाता है।'

सोफ्रोनीया नाम की एक महिला, जो सदाचारी और धार्मिक थी, का पति एक मूर्तिपूजक था। वह कई मौकों पर संत स्पाइरिडॉन के पास जा चुकी थी और उनसे विनम्रतापूर्वक अनुरोध किया था कि वे उसके पति को सच्चे धर्म में परिवर्तित करने का प्रयास करें। उसका पति संत स्पाइरिडॉन का पड़ोसी था और वह उन्हें बहुत मान-सम्मान देता था; वास्तव में, पड़ोसियों के रूप में, वे कभी-कभी एक-दूसरे के घर भी जाया करते थे। एक अवसर पर, संत के पड़ोसियों और उस विधर्मी व्यक्ति के पड़ोसियों की एक बड़ी सभा एकत्र हुई थी; दंपति स्वयं भी उपस्थित थे। और अचानक, संत ने अपने एक सेवक से, सभी के सुनने के लिए पर्याप्त ऊँचे स्वर में कहा:

'दरवाजे पर एक दूत खड़ा है, जो मेरे झुंड की देखभाल करने वाले मजदूर ने भेजा है, यह खबर लेकर कि जब मजदूर सो रहा था, तब सारे मवेशी खो गए थे, पहाड़ों में भटक गए थे: जाओ और उसे बता दो कि जिसे मजदूर ने उसे भेजा है, उसने सारे मवेशी एक गुफा में सुरक्षित और सही-सलामत पा लिए हैं।'

नौकर गया और संदेशवाहक को संत के शब्द सुनाए। कुछ ही देर बाद, इकट्ठा हुए लोगों के मेज़ से उठने का भी समय नहीं मिला था कि चिरवाहे का एक और संदेशवाहक आ पहुँचा – यह खबर लेकर कि पूरा झुंड मिल गया था। यह सुनकर, वह विधर्मी यह देखकर पूरी तरह से चकित रह गया कि संत स्पाइरिडोन को यह पता था कि दृष्टि से दूर क्या हो रहा था, मानो यह ठीक उनकी आँखों के सामने हो रहा हो; उसने कल्पना की कि संत देवताओं में से एक थे, और वह उनके साथ वही करना चाहता था जो एक समय में लाइकोनिया के निवासियों ने प्रेरित बरनबास और पॉल के साथ किया था[8812] , अर्थात् बलि के जानवर लाना, मालाएँ तैयार करना और बलिदान करना। लेकिन संत ने उससे कहा:

'मैं कोई देवता नहीं हूँ, बल्कि केवल ईश्वर का एक सेवक और हर तरह से आप जैसा ही एक इंसान हूँ। जहाँ तक बंद दरवाजों के पीछे क्या होता है, इस बात की मेरी जानकारी का सवाल है, यह मुझे मेरे ईश्वर द्वारा दी गई है; और यदि आप भी उन पर विश्वास करने लगें, तो आप उनकी सर्वशक्तिमत्ता और शक्ति की महानता को जान जाएँगे।'

अपनी ओर से, उस विधर्मी की पत्नी सोफ्रोनिया ने इस अवसर का लाभ उठाते हुए अपने पति को विधर्मी भ्रांतियों को त्यागने और एकमात्र सच्चे ईश्वर को जानने और उस पर विश्वास करने के लिए मनाना शुरू कर दिया। अंत में, मसीह की कृपा की शक्ति से, वह मूर्तिपूजक सच्चे धर्म में परिवर्तित हो गया और पवित्र बपतिस्मा के माध्यम से प्रबुद्ध हुआ। इस प्रकार, जैसा कि प्रेरित संत पौलुस कहते हैं, *'अविश्वासी पति*[8813] (1 कुरिन्थियों 7:14) को बचाया गया।

धन्य स्पाइरिडॉन की विनम्रता के भी किस्से हैं, कि कैसे, यद्यपि वह एक संत और एक महान चमत्कारी थे, उन्होंने मूक भेड़ों की देखभाल करने से इनकार नहीं किया और स्वयं उनके पीछे जाते थे। एक रात, चोर भेड़शाला में घुस आए, कई भेड़ें चुरा लीं और भागने ही वाले थे। लेकिन ईश्वर ने, अपने सेवक से प्रेम करते हुए और उसकी थोड़ी-सी संपत्ति

[8812] एशिया माइनर के लिकोनिया में स्थित एक शहर ल्यस्ट्रा के निवासियों ने प्रेरितों पौलुस और बरनबास को मूर्तिपूजक देवताओं ज़ीउस और हर्मेस समझ लिया। (प्रेरितों के काम 14:13.)

[8813] इन शब्दों से पौलुस का तात्पर्य, सारतः यह है कि एक मूर्तिपूजक पति की अशुद्धता, मानो, ईसाई माँ की पवित्रता से संतुलित हो जाती है और ऐसे विवाह से जन्मे बच्चों को यह संचरित नहीं होती है। हालाँकि, यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि एक ईसाई महिला (या पुरुष) से विवाह, एक मूर्तिपूजक (चाहे पुरुष हो या महिला) के लिए, पूर्ण पवित्रता की ओर, यानी ईसाई धर्म को अपनाने की ओर, एक स्वाभाविक कदम है।

की रक्षा करते हुए, चोरों को अदृश्य जंजीरों से मजबूती से बाँध दिया, ताकि वे उस बाड़े से बाहर न निकल सकें, जहाँ वे अपनी इच्छा के विरुद्ध, सुबह तक उसी अवस्था में रहे। भोर होते ही, संत भेड़ों के पास आए और चोरों को हाथ-पैरों में ईश्वर की शक्ति से बँधा हुआ देखकर, उन्होंने अपनी प्रार्थना से उन्हें खोल दिया और उन्हें समझाया— —कि दूसरों की चीज़ों पर लालच न करें, बल्कि अपने हाथों की मेहनत से जीवन यापन करें; फिर उन्होंने उन्हें एक नर भेड़ दी ताकि, जैसा कि उन्होंने स्वयं कहा, 'उनकी मेहनत और नींदहीन रात व्यर्थ न जाए', और उन्हें शांतिपूर्वक विदा कर दिया।

ट्रिमिथुंट का एक व्यापारी अपने व्यापारिक लेन-देन के लिए संत से पैसा उधार लिया करता था, और जब वह अपनी व्यापारिक यात्राओं से लौटकर पैसा वापस लाता, तो संत आमतौर पर उसे वही पैसा उस डिब्बे में वापस रखने के लिए कहते थे, जिससे उसने वह पैसा लिया था। उन्हें सांसारिक लाभ की इतनी परवाह नहीं थी कि वे यह भी नहीं देखते थे कि कर्जदार सही ढंग से कर्ज चुका रहा है या नहीं! इस बीच, व्यापारी संत के आशीर्वाद से कई बार खुद ही संदूक से पैसे निकाल चुका था, और जो पैसे वह वापस लाया था, उन्हें फिर से उसी में रख देता था, और उसका व्यवसाय फल-फूल गया। लेकिन एक दिन, लालच में आकर, उसने जो सोना लाया था उसे डिब्बे में नहीं रखा, बल्कि अपने पास रख लिया, और संत से कह दिया कि उसने उसे उसमें रख दिया है। कुछ ही समय में, वह गरीबी में पड़ गया, क्योंकि छिपाया हुआ सोना न केवल उसे कोई लाभ नहीं दे सका, बल्कि उसने उसके व्यापार की सफलता भी छीन ली और आग की तरह उसकी सारी संपत्ति को भस्म कर दिया। फिर व्यापारी संत के पास फिर से गया और उनसे कर्ज मांगा। संत ने उसे अपनी शयनकक्ष में रखे संदूक के पास भेज दिया ताकि वह स्वयं उसे ले सके। उन्होंने व्यापारी से कहा:

'जाओ और उसे ले लो, अगर तुमने ही उसे वहाँ रखा है।'

व्यापारी गया, लेकिन संदूक में पैसे न पाकर, खाली हाथ संत के पास लौट आया। संत ने उससे कहा:

'लेकिन, मेरे भाई, अब तक उस संदूक को तुम्हारे सिवा किसी और का हाथ नहीं लगा है। तो, अगर तुमने सोना वहाँ रखा था, तो तुम उसे अब भी वापस ले सकते हो।'

शर्मिंदा होकर, व्यापारी संत के पैरों पर गिर पड़ा और क्षमा याचना करने लगा। संत ने उसे तुरंत क्षमा कर दिया, लेकिन साथ ही उसे एक सीख के तौर पर कहा कि उसे दूसरों की चीज़ों पर लालच नहीं करना चाहिए और न ही उसे धोखे और झूठ से अपने विवेक को कलंकित करना चाहिए। इस प्रकार, झूठ से प्राप्त लाभ कोई लाभ नहीं है, बल्कि अंततः एक हानि है।

एक बार अलेक्जेंड्रिया में बिशपों की एक परिषद बुलाई गई थी: अलेक्जेंड्रिया के पैट्रिआर्क ने अपने अधिकार के अधीन सभी बिशपों को बुलाया और सामूहिक प्रार्थना के माध्यम से, सभी मूर्तिपूजक मूर्तियों को उखाड़ फेंकने और नष्ट करने की इच्छा व्यक्त की, जिनकी संख्या वहाँ अभी भी बहुत अधिक थी। और इस प्रकार, जब ईश्वर के प्रति कई उत्कट प्रार्थनाएँ—सामूहिक और निजी दोनों—अर्पित की जा रही थीं, तो शहर और उसके आसपास की सभी मूर्तियाँ गिर गईं; केवल एक मूर्ति, जिसे मूर्तिपूजकों द्वारा विशेष रूप से पूजित किया जाता था, अपनी जगह पर अछूती रह गई। जब पैट्रिआर्क ने इस मूर्ति के विनाश के लिए लंबे समय तक और लगन से प्रार्थना की, तो एक रात, जब वह प्रार्थना में खड़े थे, उन्हें एक दिव्य दर्शन हुआ और उन्हें आज्ञा दी गई कि वे इस बात पर दुखी न हों कि मूर्ति नष्ट नहीं हुई थी, बल्कि साइप्रस के ट्रिमिथुस के बिशप स्पिरिडॉन को बुलाने के लिए, क्योंकि मूर्ति को ठीक इसलिए खड़ा छोड़ा गया था ताकि वह इस संत की प्रार्थनाओं से चूर-चूर हो जाए। पितृप्रधान ने तुरंत संत स्पिरिडॉन को एक पत्र लिखा, जिसमें उन्होंने उन्हें अलेक्जेंड्रिया बुलाया और अपने दर्शन के बारे में बताया, और यह पत्र तुरंत साइप्रस भेज दिया। पत्र प्राप्त करने पर, संत स्पिरिडॉन एक जहाज पर सवार हो गए और अलेक्जेंड्रिया के लिए रवाना हो गए। जब जहाज़ नेपोलिस नामक बंदरगाह पर रुका, और संत किनारे पर उतरे, ठीक उसी क्षण अलेक्जेंड्रिया में मूर्ति, अपने कई वेदियों के साथ, टुकड़े-टुकड़े हो गई; इसीलिए अलेक्जेंड्रिया के लोगों को संत स्पिरिडॉन के आगमन की खबर मिली। क्योंकि जब महाधर्माध्यक्ष को बताया गया कि मूर्ति गिर गई है, तो उन्होंने अन्य बिशपों से कहा:

'मित्रों! ट्रिमिथुस के स्पिरिडॉन आ रहे हैं।'

और वे सभी, अपनी तैयारियाँ करके, संत से मिलने के लिए बाहर निकले और, उन्हें सम्मानपूर्वक स्वागत करके, उनके बीच इतने महान चमत्कार करने वाले और जगत के प्रकाश के आगमन पर प्रसन्न हुए।

चर्च के इतिहासकार निकिफ़ोरस[8814] और सोज़ोमेन[8815] लिखते हैं कि संत स्पाइरिडॉन ने चर्च के अनुष्ठानों का सख्त पालन सुनिश्चित करने और पवित्र धर्मग्रंथों को उनके अंतिम शब्द तक पूरी तरह से संरक्षित रखने का पूरा ध्यान रखा। एक अवसर पर, निम्नलिखित घटना घटी। साइप्रस द्वीप पर, चर्च संबंधी मामलों पर चर्चा करने के लिए पूरे द्वीप के बिशपों की एक परिषद बुलाई गई थी। बिशपों में संत स्पाइरिडोन और उपर्युक्त ट्रायफिलियिस भी थे – एक ऐसे व्यक्ति जो विद्वतापूर्ण ज्ञान में पारंगत थे, जिन्होंने अपनी युवावस्था के कई वर्ष बेरिटिस[8816] में धर्मग्रंथ और विज्ञान का अध्ययन करते हुए बिताए थे।

एकत्रित धर्मगुरुओं ने उनसे चर्च में लोगों को उपदेश देने के लिए कहा। जब वह उपदेश दे रहे थे, तो उन्हें लकवाग्रस्त व्यक्ति से कहे गए मसीह के शब्द याद आए: *'उठ, और अपना बिस्तर उठा ले जा'* (मरकुस 2:12)। ट्रिफिलियिस ने *'बिस्तर'* शब्द को 'पलंग' से बदल दिया और कहा: *'उठो और अपना* पलंग *उठा लो।'* यह सुनकर, संत स्पिरिडॉन अपनी सीट से उठे और मसीह के शब्दों में इस बदलाव को सहन न कर सके, और ट्रिफिलियिस से कहा:

'क्या तुम सच में उस व्यक्ति से बेहतर हो जिसने "बिस्तर" कहा, कि तुम्हें उसके द्वारा प्रयुक्त शब्द से शर्म आती है?'

यह कहकर, वह सबके सामने चर्च से चला गया। और उसने ऐसा न तो द्वेष से किया, और न ही इसलिए कि वह स्वयं पूरी तरह से अनपढ़ था: उसने त्रिफिलियिस को—जो अपनी वाक्पटुता पर घमंड करता था—कोमलता से लज्जित करके उसे नम्रता और विनम्रता सिखाई। इसके अलावा, संत स्पाइरिडॉन (धर्मप्राचारियों में) उम्र में सबसे बड़े होने, अपने सदाचारी जीवन के लिए प्रसिद्ध, धर्मप्राचारिता में प्रथम और एक महान चमत्कार-कर्ता होने के कारण बहुत सम्मानित थे; और इसलिए, उनके व्यक्तित्व के सम्मान के कारण, हर कोई उनके शब्दों का भी सम्मान कर सकता था।

ईश्वर की इतनी महान कृपा और दया आदरणीय स्पिरिडॉन पर हुई कि दिन के सबसे गर्म समय में फसल काटने के दौरान एक बार उनका पवित्र सिर ऊपर से उतरती ठंडी ओस से ढका हुआ पाया गया। यह उनके जीवन के अंतिम वर्ष की बात थी। वे कटनी के लिए दाताओं के साथ खेत में गए (क्योंकि वे विनम्र थे और उनके साथ मिलकर काम करते थे, न कि अपने पद की उच्चता पर गर्व करते हुए), और देखो, जब वह अपने खेत की कटाई कर रहा था, तो अचानक, दिन की भीषण गर्मी में, उसके सिर पर ओस की बूँदें गिरने लगीं, ठीक वैसे ही जैसे एक बार गिदोन के ऊन पर हुआ था (न्यायियों 6:38), और खेत में उसके साथ जो भी थे, उन्होंने यह देखा और चकित रह गए। तब अचानक उसके सिर के बाल बदल गए: कुछ पीले, कुछ काले, और कुछ सफेद हो गए, और केवल परमेश्वर ही जानते थे कि ऐसा क्यों हुआ और इसका क्या संकेत था। संत ने अपने हाथ से अपने सिर को छुआ और उपस्थित लोगों से कहा कि उनकी आत्मा के शरीर से अलग होने का समय नजदीक आ गया है, और उन्होंने सभी को अच्छे कर्म करने, और विशेष रूप से ईश्वर और अपने पड़ोसी से प्रेम करने के लिए प्रोत्साहित करना शुरू कर दिया।

कुछ दिनों बाद, प्रार्थना करते समय, संत स्पाइरिडोन ने अपनी पवित्र और धर्मी आत्मा को प्रभु[8817] को सौंप दिया, जिनकी उन्होंने अपने पूरे जीवन में धार्मिकता और पवित्रता से सेवा की थी, और उन्हें ट्रिमीफंट में पवित्र प्रेरितों के चर्च में सम्मानपूर्वक दफनाया गया[8818] । यहीं पर उनकी वार्षिक स्मृति मनाने की प्रथा स्थापित की गई, और उनके

[8814] निकिफ़ोरस कैलिस्टोस – 14वीं शताब्दी में रहे एक चर्च इतिहासकार। उनकी *चर्च इतिहास*, 18 पुस्तकों में, बिज़ंtine सम्राट फोकास (611) की मृत्यु तक की अवधि को कवर करती है।

[8815] सोजोमेन – 5वीं शताब्दी के एक चर्च इतिहासकार, ने 323 से 439 तक चर्च का इतिहास लिखा।

[8816] बेरिटिस – अब बेरूत – भूमध्य सागर के तट पर एक प्राचीन फिनिशियाई शहर था; यह विशेष रूप से 5वीं शताब्दी में फल-फूल रहा था और अपनी प्रतिष्ठित वाक्पटुता, कविता और कानून की पाठशाला के लिए प्रसिद्ध था; आज यह एशियाई तुर्की सीरिया का मुख्य प्रशासनिक केंद्र और सीरियाई तट पर एक प्रमुख बंदरगाह है, जिसकी आबादी 80,000 तक है।

[8817] संत स्पिरिडोन का निधन लगभग 348 ईस्वी में हुआ।

[8818] ईश्वर की कृपा से, सेंट स्पिरिडॉन के पूजनीय अवशेष अपरिवर्तित रहे हैं और, सबसे उल्लेखनीय रूप से, उनके शरीर की त्वचा में मानव मांस की विशिष्ट कोमलता बनी हुई है। उनके अवशेष 7वीं शताब्दी के मध्य तक ट्रिमिइथस में रहे, जब बर्बर आक्रमणों के कारण, उन्हें कॉन्स्टेंटिनोपल में स्थानांतरित कर दिया गया। 12वीं शताब्दी के अंत या 13वीं शताब्दी की बहुत शुरुआत में, नोवगोरोड के आर्चबिशप एंथनी की गवाही के अनुसार, जो पवित्र स्थलों की यात्रा कर चुके थे, संत का पूजनीय सिर कॉन्स्टेंटिनोपल में होली एपोस्टल्स चर्च में रखा गया था, जबकि उनका हाथ और अवशेष सेंट मैरी ओडिगिट्रिया चर्च के वेदी के नीचे रखे गए थे। 14वीं और 15वीं शताब्दी के रूसी तीर्थयात्रियों के बारे में: नोवगोरोड के स्टीफन (1350), डीकन इग्नेशियस (1389), क्लर्क अलेक्जेंडर (1391–1395) और हाइरोडीकन ज़ोसिमा (1420) ने कॉन्स्टेंटिनोपल के पवित्र प्रेरितों के चर्च में संत स्पिरिडोन के पवित्र अवशेष देखे और उन्हें चूमा। 29 मई 1453 को, कलोकहेरेट के नाम से जाने जाने वाले जॉर्ज नामक एक पादरी, संत की अवशेषों के साथ सर्बिया के लिए रवाना हुए, और वहां से, 1460 में, कोर्फू द्वीप के लिए। 18वीं शताब्दी के पहले भाग

मकबरे पर अद्भुत ईश्वर की महमिा के लिए, जो अपने संतों, पतिा, पुत्र और पवत्रि आत्मा में महमिामय हैं, अनेक चमत्कार होते हैं, जन्हिें हम सदा-सदा के लिए महमिा, कृतज्ञता, सम्मान और आराधना अर्पति करें। आमीन।

ट्रोपारयिन, स्वर 1:

हे ईश्वर-धारी स्परिडिोन, हमारे पतिा, प्रथम परषिद में आप एक योद्धा और चमत्कार-कर्ता के रूप में प्रकट हुए। इस प्रकार, कब्र से मृतकों को जलिा उठाने के बाद, आपने साँप को सोने में बदल दयिा; और जब आपने अपनी पवत्रि प्रार्थनाएँ अर्पति कीं, तो आपको परम पवत्रि स्वर्गदूतों ने सहायता दी। उसकी महमिा हो जसिने आपको शक्ति दी, उसकी महमिा हो जसिने आपको मुकुट पहनाया, उसकी महमिा हो जो आपके द्वारा सभी चंगाइयाँ करता है।

कॉन्टाकयिन, स्वर 2:

हे परम पवत्रि, मसीह के प्रेम द्वारा तुम भेदे गए; आत्मा की प्रभात पर अपना मन केंद्रति करके, अपनी सूक्ष्मदृष्टि से तुमने परमेश्वर को प्रसन्न करने वाला कार्य पाया, एक दव्यि वेदी बनकर, सभी के लिए दव्यि तेज की याचना करते हुए।

पवत्रि शहीद और यरूशलेम के बशिप, संत अलेक्जेंडर का स्मरणोत्सव

12 दसिंबर को स्मरण कयिा जाता है

पवत्रि शहीद संत अलेक्जेंडर, जन्होंने मसीह के वश्विास के लिए बहादुरी से परश्रिम कयिा और कष्ट सहे, उन कई शष्यिों में से एक थे जन्हिें तीसरी शताब्दी के चर्च के सबसे प्रसद्धि शक्षिक, अलेक्जेंड्रयिा के क्लेमेंट[8819] ने अपने चारों ओर इकट्ठा कयिा था, और वे ओरजिन[8820] के करीबी दोस्त थे। तीसरी शताब्दी की शुरुआत में, संत अलेक्जेंडर को कैपाडोसयिा के फ्लैवयिा का बशिप नयिुक्त कयिा गया था[8821] । सेप्टमियिस सेवेरस के अधीन उत्पीड़न के दौरान[8822] , ईसाई धर्म के प्रतिअपने उत्साह के कारण, उन्हें कैद कर लयिा गया और कई वर्षों तक एक कालकोठरी में कष्ट भोगते रहे। कारावास से रहिा होने पर, संत को यरूशलेम[8823] के पवत्रि स्थलों की पूजा करने की इच्छा हुई, जहाँ उनका स्वागत लोगों और संन्यासयिों ने कयिा, जन्हिें उनके आगमन की दव्यि रूप से सूचना मलिी थी, और एक स्पष्ट स्वर्गीय प्रकटकिरण द्वारा, उन्हें यरूशलेम के वृद्ध पैट्रआर्क नार्कसि्सोस[8824] के साथ सह-शासक के रूप में चुना गया। एक

में, बार्स्की नामक एक रूसी तीर्थयात्री ने उन्हें उसी द्वीप पर, उसी नाम के शहर में, सेंट स्परिडिोन के चर्च में देखा; अवशेष पूरे थे, सवािय दाहनि हाथ के, जो रोम में पयिाज़ा पास्क्वनिो के पास, 'न्यू चर्च' के नाम से जाने जाने वाले मदर ऑफ गॉड के चर्च में रखा है।

[8819] अलेक्जेंड्रयिा के क्लेमेंट – प्रारंभकि शताब्दयिों के सबसे उल्लेखनीय और प्रतष्ठिति ईसाई वद्विानों में से एक – ने वर्ष 217 में, प्रसद्धि अलेक्जेंड्रयिाई 'कैटेकेटकिल' स्कूल में एक धर्मशक्षिक (अध्यापक) थे, जसिने वैश्वकि शक्षिा और वद्विता के केंद्र में अपनी स्थतिि के कारण, एक धर्मशास्त्रीय और वद्वितापूर्ण शैक्षणकि संस्थान का स्वरूप ले लयिा था, जो अपनी दीवारों के भीतर बड़ी संख्या में शक्षिति छात्रों को आकर्षति करता था।

[8820] ओरजिन – अलेक्जेंड्रयिा के क्लेमेंट के शष्यि और तीसरी शताब्दी के सबसे प्रसद्धि ईसाई शक्षिक – मूल रूप से अलेक्जेंड्रयिा के 'कैटेकेटकिल' स्कूल के सबसे प्रतष्ठिति व्याख्याताओं में से एक थे। बाद में, सेंट अलेक्जेंडर ने यरूशलेम की कलीसयिा की अध्यक्षता करते हुए, ओरजिन के प्रतिसम्मान और दोस्ती के कारण, उसे यरूशलेम की कलीसयिा में अपनी उपस्थतिि में उपदेश देने की अनुमतिदी; और बशिप की उपस्थतिि में कलीसयिा में एक सामान्य व्यक्ति को उपदेश देने की अनुमतिदेने के लिए, उन्हें डेमेट्रयिस द्वारा नदिा कयिा गया, जो अलेक्जेंड्रयिा के बशिप और ओरजिन के शत्रु थे; लेकनि संत अलेक्जेंडर ने उन्हें अन्य चर्चों द्वारा अपनाए गए उदाहरण की ओर इशारा कयिा, और बाद में ओरजिन को एक प्रेस्बटिर (पादरी) के रूप में नयिुक्त भी कयिा, जसिसे उनके और डेमेट्रउिस के बीच ववािद फरि से भड़क उठा।

[8821] कैपाडोसयिा – एशयिा माइनर के पूर्वी भाग में एक वशिाल क्षेत्र। फ्लेवयिा – कैपाडोसयिा के शहरों में से एक।

[8822] लगभग 209–210। – सेप्टमियिस सेवेरस – रोमन सम्राट – 193 से 211 तक शासन कयिा।

[8823] यह वर्ष 212 में था।

[8824] नार्ससिस ने लगभग 196 ईस्वी में और फरि 212 ईस्वी में पैट्रआर्क के रूप में सेवा की।

पूरी पीढ़ी—38 वर्षों तक—संत अलेक्ज़ेंडर ने यरूशलेम की चर्च का बुद्धमिानी से शासन कयिा[8825] । वे ज्ञान के प्रतिि अपने प्रेम के लिए प्रसद्धि थे।

यरूशलेम की कलीसयिा की सेवा करते हुए, उन्होंने अपने खर्च पर एक बड़ी पुस्तकालय की स्थापना की, जसिमें पवत्रि शास्त्र और उस समय उपलब्ध ईसाई लेखकों के कार्य शामलि थे[8826] । डसियिस के अधीन उत्पीड़न के दौरान, संत अलेक्ज़ेंडर को मुकदमे के लिए फलिस्तिीन के केसरयिा बुलाया गया[8827] , और वहाँ उन्होंने दूसरी बार मसीह की गवाही दी। कारावास में डाल दिए जाने के बाद, वह काफी समय तक वहीं रहे और वहाँ उन्होंने अपना प्राण प्रभु को सौंप दयिा[8828] ।

पवत्रि शहीद रजुम्नकि की स्मृतिि

12 दसिंबर को स्मरण कयिा जाता है

पवत्रि शहीद रजुम्नकि[8829] जन्म से एक रोमन थे, और कशिोरावस्था में ही, उन्हें उनके माता-पतिा द्वारा पवत्रि धर्मग्रंथों की शक्षिा के लिए रोम के बशिप को सौंपा गया था। और चूँकि धर्मग्रंथों का अध्ययन करते समय, उन्होंने अच्छे चरत्रि का भी प्रदर्शन कयिा, इसलिए उन्हें चर्च रीडर के पद पर नयिुक्त कयिा गया। इस पद पर रहते हुए, उन्होंने कई लोगों को धार्मकिता और सच्चे वशि्वास में शक्षिति कयिा, साथ ही मूर्तपिूजा की नदिा की और मूर्तयिों की पूजा करने वालों को फटकारा। जब यह बात राजा को पता चली और संत राजुम्नकि को पूछताछ के लिए उसके सामने लाया गया, तो उन्होंने राजा के सामने भी नडिरता से मसीह की गवाही दी। इसके लिए उन्हें क्रूर यातनाएँ दी गईं, और चूँकि वे अडगि रहे और मसीह का त्याग नहीं कयिा, लंबे समय तक कष्ट सहने के बाद उन्हें सरि कलम करने की सज़ा दी गई। इस प्रकार संत रजुम्नकि का नधिन हो गया[8830] ।

26 दसिंबर

13 दसिंबर (पुराने कैलेंडर के अनुसार)

पवत्रि शहीदों यूस्ट्रैटयिस, यूजनियिस, ऑक्सेन्टयिस, मार्डारयिस और ओरेस्ट्स के कष्ट कथा

13 दसिंबर को स्मरणोत्सव

सम्राट डायोक्लेटयिन और मैक्समियिन के शासनकाल में, रोमन साम्राज्य में मूर्तपिूजा का बोलबाला था, और मानो मूर्तयिों की पूजा में एक सार्वभौमकि प्रतस्पिर्धा थी, वशिष रूप से – जब सभी शहरों और गांवों में प्रांतीय गवर्नरों और न्यायाधीशों को शाही फरमान भेजे गए, जसिमें उन्हें वशिष दनिों और त्योहारों पर देवताओं को प्रचुर उपहार और बलदिान चढ़ाने का आदेश दयिा गया था। इन फरमानों में उन लोगों को शाही कृतज्ञता, सम्मान और राज्य में उच्चतम

[8825] 212 से 250 तक।

[8826] संयोगवश, इस पुस्तकालय का उपयोग अपने समय (चौथी शताब्दी में) प्रसद्धि चर्च इतहिासकार यूसेबयिस द्वारा भी कयिा गया था, जन्हिोंने अपनी इतहिास में यरूशलेम के संत अलेक्ज़ेंडर के जीवन का ववरिण संरक्षति कयिा।

[8827] फ़लिस्तिीन में केसरयिा – भूमध्य सागर के पूर्वी तट पर, फ़लिस्तिीन के सबसे समृद्ध और भव्य शहरों में से एक; इसका नाम यहूदयिों के राजा हेरोद द्वारा सीज़र (ऑक्टेवयिस) अगस्टस के सम्मान में रखा गया था, जन्हिोंने सीज़र के सम्मान में हर जगह शहर और मंदरि बनाए और केसरयिा को सुशोभति कयिा। आज, जहाँ कभी यह भव्य शहर स्थति था, वहाँ खंडरों के ढेरों के अलावा कुछ नहीं, एक वशिाल रेगस्तिान है।

[8828] यरूशलेम के संत अलेक्ज़ेंडर का नधिन वर्ष 251 में हुआ।

[8829] रोमनों ने उन्हें सनिसियिस कहा; यूनानयिों ने उन्हें सनिटोस – 'ज्ञानी' कहा।

[8830] इस वद्विान ने पोप सक्सिटस (257–258) के अधीन एक रीडर के रूप में सेवा की; उन्होंने सम्राट ऑरेलयिन (270–275) के अधीन शहादत प्राप्त की। – 830 में उनके अवशेष रोम से रीचेनाउ द्वीप और मठ में स्थानांतरति कर दिए गए थे।

पदों का वादा कयिा गया था जो उत्साहपूर्वक देवताओं की सेवा करते थे; जबकि मूर्तियों की पूजा करने से इनकार करने वालों को पहले उनकी संपत्ति की जब्ती और फिर, हर तरह की यातनाओं के बाद, मृत्युदंड का सामना करना पड़ता था। ईसाइयों पर अत्याचार दूर-दूर तक फैल गया, और हर जगह प्रांतीय गवर्नरों और आम तौर पर अधिकारियों ने ईसाई धर्म को पूरी तरह से पृथ्वी की सतह से मिटा देने की कोशिश की।

इस बीच, सम्राटों को सूचित कयिा गया कि ग्रेटर आर्मेनिया और कैपाडोसिया[8831] पूरी तरह से उनकी आज्ञाओं की अवहेलना कर रहे थे और, सूली पर चढ़ाए गए मसीह में सर्वसम्मति से विश्वास करते हुए और उन पर अपनी दृढ़ आशा रखते हुए, कथित तौर पर रोमन साम्राज्य से अलग होने का इरादा रख रहे थे।

इस खबर से चिढ़कर, सम्राट डायोक्लेटियन ने अपने सभी कुलीनों को बुलाया और तीन दिनों तक सुबह से रात तक उनके साथ इस बात पर विचार-विमर्श कयिा कि ईसाई धर्म को पूरी तरह से कैसे समाप्त कयिा जाए। तब उसने सबसे पहले, आर्मेनिया और कैपाडोसिया के राज्यपालों को पद से हटा दिया, उन्हें उन प्रांतों के अनुभवहीन और अक्षम शासक मानते हुए, जो उन्हें सौंपे गए थे और जो लोगों को आज्ञाकारिता में लाने में विफल रहे थे। उनकी जगह, उन्होंने दो ग्रीक, लासियास और एग्रिकोला को चुना, जो कठोर और क्रूर स्वभाव के व्यक्ति थे, जिन्हें उन्होंने दोनों प्रांतों का प्रभारी बनाया, लासियास को सीमाओं की निगिरानी और रक्षा का और एग्रिकोला को पूरे धर्मप्रांत के सामान्य प्रशासन का जिम्मा सौंपा। दोनों प्रांतों के सभी सैनिकों को भी उनके अधीन कर दिया गया।

जब दो नए राज्यपाल अपने पदों पर पहुँचे, तो ईर्ष्यालु दुश्मनों द्वारा किसी भी ईसाई के खिलाफ की गई निराधार बदनामी के आधार पर, बिना किसी जाँच के, सभी आयु वर्ग के लोगों का एक निर्दयी कत्लेआम शुरू हो गया: हर दिन, ईसाइयों को ढूँढा जाता, पकड़ा जाता और रक्तरंजित राज्यपालों को मृत्युदंड के लिए सौंप दिया जाता, मानो वे मांसाहारी जानवर हों। लाइसियस, जो Satalion[8832] शहर में तैनात था, जब भी उसे कहीं भी कोई ईसाई मिलता - चाहे वह पुरुष हो या महिला - – उन्हें बहुत यातना और कष्ट देने के बाद, उन्हें बँधा हुआ और भारी पहरे के साथ एग्रिकोला के पास भेज देता था, ताकि वे अपने देश में मरने और अपने रिश्तेदारों और परिचितों द्वारा ईसाई रीति-रिवाज के अनुसार दफनाए जाने से बच सकें; और इस प्रकार, एक विदेशी भूमि में मारे जाने के बाद, वे, मानो, बिना किसी निशान के गायब हो जाते। एग्रिकोला ने भी बिल्कुल उसी तरह काम कयिा, और , सेबास्टे[8833] में पकड़े गए ईसाइयों को सैटालयिन में लाइसियस के पास भेजा, क्योंकि दोनों कमांडर बड़े दोस्त थे और एक-दूसरे से पूरी तरह सहमत थे, और दोनों ने, वर्णित तरीके से काम करके, एक ही उद्देश्य को ध्यान में रखा था - ईसाइयों को उनके देश के बाहर मारकर उन पर और भी अधिक यातनाएँ डालना।

उस समय सतालिओन में यूस्ट्रैटियस नामक एक व्यक्ति रहता था। अपने सभी सहनागरिकों के बीच वह कुलीन जन्म और पदक्रम में नगर का सर्वोच्च माना जाता था – वह सैन्य कमांडर का पद धारण करता था – और साथ ही अपनी धार्मिकता, ईश्वरभक्ति और निर्दोष आचरण के लिए भी विख्यात था। ईसाइयों पर हो रहे अनवरत और क्रूर अत्याचार को देखकर उसकी आत्मा दुख और शोक से भर गई। कड़के आहें भरते और रोते हुए, उपवास और प्रार्थना में अपना समय बिताते हुए, उन्होंने हमारे प्रभु यीशु मसीह से पुकारा कि प्रिभु अपने सेवकों पर दया करें और, अपनी प्रजा पर तरस खाकर, उन्हें दुर्भाग्य से बचाएं और उन पर मंडरा रहे विनाश को टाल दें। साथ ही, यूस्ट्रैटियस स्वयं पवित्र शहीदों के पराक्रम का अनुकरण करना और उनके कष्टों में भागीदार बनने के योग्य समझा जाना चाहता था; फिर भी, यातनादाताओं की अनेक यातनाओं और क्रूरता के विचार से वह डर गया। अंततः उसने निम्नलिखित करने का संकल्प लिया। उसने अपनी कमरबंद एक वफादार सेवक को दे दी और उसे आदेश दिया कि वह इसे अरावरकी की चर्च में ले जाए, जहाँ से वह स्वयं था और जहाँ ऑक्सेंटियस, जिसने पहले ही सच्चे ईश्वर के प्रति उसकी निष्ठा की गवाही दे रखी थी, उस समय पुरोहित के रूप में सेवा कर रहा था। यूस्ट्रैटियस ने अपने सेवक से कहा कि वह चुपके से बेल्ट को वेदी के अंदर रख दे, जबकि वह

[8831] यह, बेशक, तथाकथित लघु आर्मेनिया को संदर्भित करता है - यूफ्रेट्स और गालास नदियों के उद्गम के बीच का रोमन प्रांत, जिसका नाम महान आर्मेनिया के विपरीत रखा गया था - एशिया माइनर प्रायद्वीप के पश्चिम में कूरा नदी और टिग्रिस तथा यूफ्रेट्स के उद्गम के बीच स्थित एक विशाल पर्वतीय देश, जिस पर दूसरी से पाँचवीं शताब्दी ईसा पूर्व तक इसके अपने ही कबीले के राजाओं ने शासन किया। – काप्पाडोसिया – एशिया माइनर के पूर्वी भाग के केंद्र में, फरात नदी के ऊपरी प्रवाह के पश्चिम में स्थित एक बहुत बड़ा क्षेत्र; यह कभी एशिया के प्रमुख राज्यों में से एक था, लेकिन इसने अपनी स्वतंत्रता खो दी और अंततः(ईस्वी संवत 17 या 18 में) रोमन साम्राज्य का एक प्रांत बन गया। कैपाडोसिया की सीमा लघु आर्मेनिया से मिलती थी, और बाद वाले को लंबे समय तक पहले वाले का हिस्सा माना जाता था।

[8832] सेटालीऑन – जिसे सताला के नाम से भी जाना जाता है – आर्मेनिया में एक शहर है।

[8833] सेबास्टे – एशिया माइनर के उत्तर-पूर्व में आर्मेनिया का एक शहर।

खुद यह देखने के लिए चर्च में छिपा गया कि आने वालों में से कौन सबसे पहले बेल्ट लेगा: यदि प्रिज़बाइटर ऑक्सेंटियस, प्रार्थना करने आए, उसे ले लेते, तो सेवक को बिना एक शब्द कहे घर लौट जाना था; लेकिन अगर कोई और पहले इसे लेने की कोशिश करता है, तो नौकर को किसी भी परिस्थिति में ऐसा नहीं होने देना चाहिए और बेल्ट वापस ले आना चाहिए। इन निर्देशों के साथ नौकर को भेजने के बाद, यूस्ट्रैटियस ने अपने मन में इस प्रकार संकल्प लिया: 'यदि पादरी स्वयं बेल्ट लेते हैं, तो यह इस बात का संकेत होगा कि ईश्वर स्वयं इस बात से प्रसन्न हैं कि यूस्ट्राटियस मसीह के लिए पीड़ा सहन करे; लेकिन यदि कोई और इसे लेना चाहे, तो इसका मतलब होगा कि उसे पीड़ा सहन नहीं करनी चाहिए, बल्कि उसे गुप्त रूप से पवित्र विश्वास को बनाए रखना चाहिए।'

कुछ ही देर में, नौकर लौट आया और उसने अपने स्वामी से कहा कि जैसे ही उसने पट्टा पवित्र स्थल में रखा, प्रेस्बिटर ऑक्सेन्टियस तुरंत आ पहुँचे, मानो किसी ने उन्हें जानबूझकर भेजा हो, और पवित्र स्थल में प्रवेश करके, उन्होंने वह पट्टा ले लिया। यह सुनकर यूस्ट्रैटियस बहुत प्रसन्न हुआ; उसके चेहरे पर आनंद की किरणें बिखर आईं, जिससे उसका एक मित्र यूजीन बहुत चकित हो गया।

थोड़ी ही देर बाद, धन्य ऑक्सेंटियस को अन्य लोगों के साथ गिरफ्तार कर लिया गया, अदालत में उससे पूछताछ की गई, उसे यातना दी गई और कैद कर दिया गया, जहाँ उसे बेड़ियों में जकड़कर रखा गया। फिर, शहर के केंद्र में एक ऊँचे मंच पर, मुकदमे के लिए एक बार फिर जगह तैयार की गई, और लाइसियस, न्यायाधीश की कुर्सी पर घमंड से बैठकर, ने कैदियों को पूछताछ के लिए लाने का आदेश दिया। संत यूस्ट्रैटियस, कालकोठरी में आकर, मसीह की खातिर उन सभी से जो बेड़ियों में जकड़े हुए थे, उसके लिए प्रार्थना करने को कहा, क्योंकि, जैसा कि उसने स्वयं कहा, वह उसी दिन उनकी शहादत में शामिल होने का इरादा रखता था। फिर सभी पवित्र कैदी, घुटने टेककर, उसके लिए ईश्वर से प्रार्थना करने लगे। जब उन्होंने अपनी प्रार्थना समाप्त कर ली, तो यूस्ट्रैटियस के नेतृत्व में सैनिकों ने उन्हें कालकोठरी से अदालत में ले गए। जब सैन्य दल, रीति के अनुसार, न्यायाधीश के सामने रुका, तो लाइसियस ने आदेश दिया कि जिन्हें पहले ही प्रारंभिक पूछताछ से गुज़रना पड़ा है, उन्हें एक-एक करके उसके सामने लाया जाए। जब मुकदमा शुरू हुआ, तो यूस्ट्रैटियस ने कहा:

'शाही फरमान के अनुसार, जो पहले जारी किया गया था और अब अदालत में फिर से पढ़ा गया है, सभी ईसाई, चाहे वे कहीं भी हों और राज्य में कोई भी पद धारण करते हों, मुकदमे के अधीन हैं: इस आदेश के तहत, ऑक्सेन्टियस को यहाँ लाया गया है—एक ऐसा व्यक्ति जो लंबे समय से अपनी वंशावली और धार्मिक जीवन के लिए जाना जाता है, और अब उस साहस और दृढ़ता के लिए और भी प्रसिद्ध है, जिसके साथ उसने स्वयं को स्वर्ग के राजा मसीह का सेवक घोषित किया। इस न्यायालय के समक्ष खड़े होकर, उन्होंने पहले ही अमरत्व का एक कारनामा कर दिखाया है और हे न्यायाधीश, आपकी अधर्मीता का पर्दाफाश कर दिया है, वचन और कर्म से गवाही देते हुए और अपने कष्टों को बहादुरी से सहते हुए। उस दिन से, उसे एक अपराधी की तरह कैद कर लिया गया, और आज आपने उसे अपने पवित्र साथियों के साथ पूछताछ के लिए लाने का आदेश दिया है: और देखो, वे सभी मेरे साथ यहाँ खड़े हैं, आत्मा में अटूट दृढ़ता के साथ और उन सभी चालाक योजनाओं को विफल करने और नष्ट करने के लिए तैयार हैं जो आपके पिता—शैतान—उनके खिलाफ भड़का रहे हैं!

यह सुनकर लाइसियस यूस्ट्राटियस की अप्रत्याशित साहसिकता से स्तब्ध रह गया। धमकी भरी नज़रों से उसे घूरते और क्रोध से दम घुटते हुए, वह गरजती आवाज़ में चिल्लाया:

'मैंने आज से पहले कभी भी आज के दिन से अधिक कठोर न्याय की अध्यक्षता नहीं की है, जब यह घृणित, अधर्मी नीच मेरे सामने बकबक करने की हिम्मत करता है! उसका कमरबंद और उसकी सैन्य वर्दी उतार ली जाए, और सबको यह बता दिया जाए कि उसे अब तक का अपना पद से हटा दिया गया है; और फिर, उसे नग्न करके, उसके हाथों और पैरों में रस्सियाँ बाँधकर, और जमीन पर पटक कर, अपनी बात जारी रखने दो!

नौकरों ने जल्दबाजी में लिसियास के आदेश का पालन किया, और फिर उसने यूस्ट्राटियस से कहा:

'क्या तुम अपना घातक इरादा नहीं छोड़ोगे? तो तुम मेरी कृपा प्राप्त करोगे और पूरी तरह से दंड से बच जाओगे। किसी भी हाल में, यातना शुरू होने से पहले, मुझे अपना नाम और मूल स्थान बताओ, और हमें अपना धर्म बताओ।'

संत ने उत्तर दिया:

'मैं अरव्रेक नगर में जन्मा था, और मेरा नाम यूस्ट्राटियस है; मेरी मातृभाषा में इसे करिसिकि कहा जाता है। मैं सभी के प्रभु—परमपिता परमेश्वर, उनके पुत्र प्रभु यीशु मसीह, और पवित्र आत्मा—का सेवक हूँ, और मुझे बचपन से ही त्रिमूर्ति में एक परमेश्वर की आराधना करना और उन पर विश्वास करना सिखाया गया है।'

लाइसियस ने कहा:

'सैनिकि बताएं कि वह कितने समय से सैन्य सेवा में है।'

सैनिकों ने उत्तर दिया:

'अब सत्ताईस साल हो गए हैं जब उन्होंने अपनी सेवा शुरू की थी, जब वह अभी भी एक नौजवान ही थे।'

तब लाइसियस ने संत से कहा:

'यूस्ट्राटियस! तुम स्वयं देख सकते हो कि तुम्हारी अवज्ञा ने तुम्हारे ऊपर क्या विपत्ति ला दी है: इसलिए अब अपनी मूर्खता छोड़ दो, होश में आओ, और अपनी इतनी वर्षों की सैन्य सेवा से अर्जित कीर्ति और पद को बर्बाद मत करो; देवताओं की दया और शक्ति को स्वीकार करो, और राजा की सौम्यता तथा न्याय की उदारता को अपने पक्ष में कर लो!'

'घृणित राक्षसों और बधिर मूर्तियों को—जो मानव हाथों का काम हैं,' संत ने उत्तर दिया, 'किसी भी होश में रहने वाले व्यक्ति ने कभी भी उन्हें पूजना आवश्यक नहीं समझा, क्योंकि हमारे धर्मग्रंथों में लिखा है: *'वे देवता जिन्होंने स्वर्ग और पृथ्वी की रचना नहीं की, वे पृथ्वी से और स्वर्ग के नीचे से लुप्त हो जाएँगे'* (यिर्मियाह 10:11)।

न्यायाधीश ने कहा:

'क्या सही समझ तो उस व्यक्ति की नहीं है जो क्रूस पर चढ़ाए गए ईश्वर की उपासना करता है, न कि तुम्हारी, जो पूर्ण भ्रम में पड़ गए हो?!'

'यदि आपकी आध्यात्मिक संवेदनशीलताएँ,' संत यूस्ट्रैटियस ने उत्तर दिया, 'यदि तुम्हारी आध्यात्मिक भावनाएँ व्यर्थ की पूजा से भ्रष्ट न हुई होतीं, और यदि तुम्हारा प्राण सांसारिक वस्तुओं के विचारों में पूर्णतः डूबा न होता, तो मैं तुम्हें प्रमाणित करता कि यह सूली पर चढ़ाया गया ईश्वर ही सभी सृष्टि का सच्चा उद्धारकर्ता, प्रभु और सृष्टिकर्ता है, जो युगों से पूर्व पिता में विद्यमान था, और जिसने अपनी अगोचर बुद्धि से पुनर्जन्म के द्वारा हमारी मृत्यु को पुनर्जीवित किया है।'

ये शब्द सुनते ही न्यायाधीश ने संत की बात को बीच में ही टोक दिया और कहा:

'इस अभिमानी आदमी को रस्सियों से लटका दो, और उसके नीचे तूतन की आग जला दो, जबकि ऊपर से तीन डंडों से एक साथ उसके कंधों पर वार करो: देखते हैं कि तब वह कितना वाक्पटु होगा!'

जब ऐसा किया गया, तो संत को लंबे समय तक यातना दी गई, नीचे से आग लगाई गई और ऊपर से बेरहमी से पीटा गया। फिर भी, इतनी यातना के बीच भी, उन्होंने दर्द की एक भी चीख नहीं निकाली, उनका चेहरा अपरिवर्तित रहा, और ऐसा लगा मानो यह वे नहीं बल्कि कोई और था जो पीड़ा सह रहा हो, इतना कि यातना देने वाला स्वयं हैरान रह गया। अंत में, लाइसियस ने यातनाएँ रोकने का आदेश दिया और एक दुष्ट मुस्कान के साथ संत से कहा:

'यूस्ट्रैटियस, तुम क्या सोचते हो? क्या तुम चाहते हो कि मैं तुम्हारे घावों का दर्द थोड़ा कम कर दूँ?'

और उसने तुरंत आदेश दिया कि सिरके में मिला हुआ नमक का पानी लाया जाए, और उसे जले हुए हिस्सों पर उदारतापूर्वक डाला जाए, जबकि साथ ही साथ शहीद के शरीर को मिट्टी के बर्तनों के तेज टुकड़ों से जोर-जोर से रगड़ा जाए। लेकिन पीड़ित ने इस यातना को धैर्यपूर्वक सहन किया, मानो उसे बिल्कुल भी दर्द महसूस नहीं हो रहा हो। यातना देने वाले ने तो यह भी सोचा कि संत यूस्ट्रैटियस किसी प्रकार की जादू-टोना का उपयोग कर रहे थे ताकि वे दर्द के प्रति असंवेदनशील हो सकें। तब संत यूस्ट्रैटियस ने उससे कहा:

'मुझे ऐसी यातनाएँ देकर, तुमने अपनी ही इच्छा के विरुद्ध, मुझ पर एक उपकार किया है; क्योंकि इन यातनाओं से तुमने मेरे चारों ओर छाई उस अंधकार को दूर कर दिया है, जो मेरी आत्मा की कामुक स्थूलता से उत्पन्न हुआ था, और तुमने मुझे एक स्वच्छंद मन के प्रलोभनों पर विजेता बना दिया है, जो लंबे समय से मुझे सता रहा था। आपने मुझे उन सभी उग्र वासनाओं और आंतरिक चिंताओं पर काबू पाने का अवसर दिया है, जिन्होंने मुझ पर कब्ज़ा कर लिया था। आपने मेरी आत्मा की आंतरिक दृढ़ता को किसी भी प्रलोभन से अछूता बनाए रखा है – जो अमर जीवन का वचन है, जहाँ सभी विश्वासियों के लिए अक्षय धन-संपत्ति एकत्रित है – और आपने मुझे एक संक्षिप्त और कष्ट-रहित मार्ग दिखाया है, जिसके द्वारा मैं, इस नश्वर शरीर में भी, स्वर्गदूतों का जीवन प्राप्त कर सकता हूँ, और अनंतकाल में, दिव्य आनंद

प्राप्त कर सकता हूँ। अब मैं जानता हूँ कि मैं जीवते परमेश्वर का और पवित्र आत्मा का मंदरि हूँ, जो मुझ में वास करता है (देखिए 1 कुरिन्थियों 3:16)। इसलिए, *'मेरे पास से दूर हो जाओ, हे तुम सब जो अधर्म करते हो, क्योंकि यहोवा ने मेरी विलाप की वाणी सुनी है; यहोवा ने म री विनती सुनी है; यहोवा मेरी प्रार्थना स्वीकार करेगा'* (भजन संहिता 6:9–10)। सचमुच, *'मेरी आत्मा यहोवा में आनंद मनाएगी; वह उसकी उद्धार में प्रसन्न होगी। मेरी सब हड्डियाँ यह कहेंगी: "हे यहोवा! तेरे समान कौन है, जो बलवन्त से निर्बल का, और अत्याचारी से दीन और दरिद्र का उद्धार करता है?"'* (भजन संहिता 34:9–10)।

तब, हे शैतान के सेवक, जल्दी कर; ध्यान रखना कि अपने पास मौजूद यातना के एक भी साधन का उपयोग किए बिना न छोड़ना; मुझे उस तरह आज़मा, जैसे सोने को भट्टी में परखा जाता है, या उससे भी अधिक कठोरता से, फिर भी तुझे मुझमें वह कोई भी दुष्टता नहीं मिलेगी, जिसे तू इतनी अधिक मानता है, और जिसकी तू अपने ही कर्मों से सेवा करता है। झूठे देवताओं की पूजा, जिसने तुम पर और तुम्हारे पागल राजा पर कब्ज़ा कर लिया है, वास्तव में घृणित है।

यातना देने वाले ने प्रत्युत्तर दिया:

'मुझे लगता है कि तीव्र पीड़ा ने तुम्हारे दिमाग को धुंधला कर दिया है, इसीलिए तुम इतनी बकवास बोल रहे हो। अगर तुम्हारा तथाकथित ईश्वर तुम्हें अमर बना सकता था, जैसा कि तुम दावा करते हो, तो वह तुम्हें ये घाव भी नहीं देता। तो, असंभव आशाओं से खुद को धोखा देना बंद करो और मुक्ति के उस अवसर का लाभ उठाने के लिए जल्दी करो जो मैं तुम्हें दे रहा हूँ।

यूस्ट्रैटियस ने उत्तर दिया, 'क्या तुम, जो अपनी सभी इंद्रियों से अंधा हो गया हो, यह स्वयं देखना चाहते हो कि मेरे ईश्वर के लिए कुछ भी असंभव नहीं है? सुनो और मुझे देखो, जिसे तुम अपने बनाए गए यातनाओं के माध्यम से मारने और नष्ट करने का सोचते हो!'

और देखो, जब सभी संत को ध्यान से देख रहे थे, तो अचानक उसके शरीर से पपड़ी जैसे छिलके गिरने लगे, और वह पूरी तरह से ठीक हो गया, उसके शरीर पर उसके घावों का एक निशान भी नहीं बचा। और ऐसा चमत्कार देखकर सभी ने एकमात्र सच्चे ईश्वर की स्तुति की, जबकि यूजिनियस, जो यूस्ट्राटियस का मित्र, साथी नागरिक और साथी योद्धा था, ने ऊँचे स्वर में पुकारा:

'लाइसियस! मैं भी एक ईसाई हूँ, और मैं तुम्हारे विश्वास को शाप देता हूँ और ज़ार के आदेश तथा तुम्हारी अवज्ञा करता हूँ—जैसे मेरे स्वामी यूस्ट्रैटियस करते हैं!'

क्रोधित होकर, लाइसियस ने आदेश दिया कि यूजीन को तुरंत पकड़कर अदालत के सामने पेश किया जाए, और उससे कहा:

– उनसे सभी से पूछताछ करने में बहुत समय और प्रयास लगेगा, और इस बीच मुझे अब अन्य सार्वजनिक मामलों का ध्यान रखना है। इसलिए मैं आदेश देता हूँ कि इस जादूगर और जादू-टोना करने वाले, यूस्ट्रैटियस, के साथ-साथ यूजिनियस, जो आज उसका साथी साबित हुआ, को पक्की ज़ंजीरों में कसकर बाँधकर अन्य ईसाइयों के साथ जेल में डाल दिया जाए, जहाँ उन्हें अगली पूछताछ तक पहरे में रखा जाएगा।

यह कहकर, लाइसियस अपनी कुर्सी से उठे और अदालत स्थगित कर दी। संत, यूस्ट्रैटियस के साहस और धैर्य तथा हमारे प्रभु यीशु मसीह के उस उद्धारक चमत्कार से प्रसन्न होकर जो उनके माध्यम से प्रकट हुआ था, उन्हें कालकोठरी में ले जाया गया। जब वे वहाँ पहुँचे, तो उन्होंने सभी ने एक स्वर में उस भजन का गायन किया जो इन शब्दों से शुरू होता है:

'कितना भला और सुखद है जब भाइयों का एकता में वास होता है!' (भजन संहिता 132:1), और, अपनी प्रार्थनाएँ अर्पित करने के बाद, वे बैठ गए, जबकि संत यूस्ट्रैटियस ने उन्हें समझाया और आने वाले मुकदमे के लिए तैयार किया।

इस प्रकार दिन समाप्त हुआ। उस रात, लाइसियस ने अपने साथ चल रहे सैनिकों को यात्रा की तैयारी करने का आदेश दिया, क्योंकि वह निकोपोलिस शहर पर चढ़ाई करने का इरादा रखता था[8834] । जब सैनिक रवाना होने की तैयारी कर रहे थे, लाइसियस स्वयं जेल गया, उसने यूस्ट्रैटियस को अपने सामने लाने का आदेश दिया और पाखंडपूर्ण मुस्कान के साथ उससे कहा:

[8834] निकोपोलिस – विभिन्न शहरों के लिए प्राचीन इतिहास में अक्सर आने वाला एक नाम। यहाँ, निश्चित रूप से, यह लघु आर्मेनिया में पोंटस की सीमा पर, इरिस की सहायक नदी लाइक्स पर स्थित शहर को संदर्भित करता है – जिसे अब एंडरेस के नाम से जाना जाता है।

'नमस्ते, प्रयि यूस्ट्राटयिस!'

संत ने उत्तर दयिा:

'जसि सर्वशक्तमिान ईश्वर की मैं सेवा करता हूँ, वह तुम्हारे अभविादन के लिए तुम्हें उचति प्रतफिल दे, न्यायाधीश!'

लाइसयिस ने कहा, 'तुम ईश्वर को प्रसन्न करने की चति करते हो, लेकनि अब ये जूते लो, इन्हें पहनो, और उत्साह के साथ हमारे साथ चल पड़ो।' हालाँकि, ये जूते लोहे के बने थे और उन पर लंबे, नुकीले कील ठोक दिए गए थे। उन्हें पट्टयिों से संत के पैरों में कसकर बाँधा गया था, और लाइसयिस ने अपनी अंगूठी से गाँठ को सील कर दयिा और आदेश दयिा कि संत को, अन्य कैदयिों के साथ बाँधकर, उसके पीछे-पीछे ले जाया जाए, और उसे तेज़ चलने के लिए रास्ते भर पीटा और भड़काया जाए। लाइसयिस स्वयं अपने सैनकिों के साथ आगे चल पड़ा। दो दनि बाद, वे अराव्रक शहर पहुँचे – जो यूस्ट्राटयिस और यूजनियिस का पैतृक नगर था। जैसे ही वे अरावरक पहुँचे, सभी नविासी उन्हें देखने के लिए बाहर आए, वे धन्य यूस्ट्राटयिस की एक झलक पाना चाहते थे; फरि भी, उसके कसिी भी दोस्त या परचिति ने गरिफ्तार होने के डर से उसके पास आने की हम्मित नहीं की, क्योंकि यह ज्ञात था कि लाइसयिस पहले ही संबंधति आदेश जारी कर चुका था। संयोग से, अरव्राक के रास्ते में मार्दरीउस नाम का एक व्यक्ति रहता था, जो वनिम्र मूल और साधारण साधन वाला था, फरि भी अपनी कस्मित से काफी संतुष्ट था। जब यूस्ट्राटयिस और अन्य ईसाइयों को ले जाया जा रहा था, तो वह अपने नए घर की छत लगाते हुए व्यस्त था। गुज़रते हुए पवत्रि बंदयिों पर नज़र डालते हुए, उसने उनमें संत यूस्ट्राटयिस को एक उज्ज्वल तारे की तरह देखा, और तुरंत छत से उतरकर अपनी पत्नी से अर्मेनयिाई में कहा:

'क्या तुम देखती हो, मेरी पत्नी, इस देश के शासकों में से एक को, जो अपनी वंशावली और धन-संपत्ति के लिए प्रसद्धि है और अपनी सैन्य सेवा के लिए सम्मानति है? क्या तुम देखती हो कि उसने सब कुछ त्याग दयिा है और स्वयं को ईश्वर को भाता हुआ बलदिान चढ़ाने जा रहा है? धन्य है वह जो इस जीवन में भी महमिामय था, और जो हमारे प्रभु मसीह से एक महान पुरस्कार प्राप्त करेगा और स्वर्गदूतों के साथ अकथनीय आनंद से वभिूषति होगा। धर्मपरायण महलिा ने अपने पति को उत्तर दयिा:

'मेरे प्रयि पति! आपको उसी मार्ग पर चलने से क्या रोक रहा है जसि पर वह जा रहे हैं, और उनके साथ एक पवत्रि मृत्यु प्राप्त करने से, ताकि आप स्वर्ग में मेरे, हमारे छोटे बच्चों, और अपने पूरे परविार के लिए एक मध्यस्थ बन सकें?' मारडारयिस ने उससे कहा:

'मुझे मेरे जूते दे दो, और मैं इस प्रतीक्षति यात्रा पर नकिल पड़ूँगा।' उसने खुशी-खुशी उसकी बात मान ली। मरदारी ने अपने जूते पहनकर, कपड़े बदले और कमर कसकर, अपने दो छोटे बेटों को गले लगा लयिा और पूर्व की ओर मुख करके प्रार्थना करने लगा।

'हे प्रभु परमेश्वर, सर्वशक्तमिान पति, प्रभु यीशु मसीह और पवत्रि आत्मा,' उसने कहा, 'एक ईश्वर और एक शक्ति! मुझ पापी पर दया करो; कृपालु बनो और अपने इस सेवक तथा इन दो शशिुओं के रक्षक बनो—हे वधिवाओं के रक्षक और अनाथों के संरक्षक! और मैं, हे प्रभु, बड़ी प्रसन्नता और हार्दकि इच्छा के साथ, तेरे पास जाता हूँ[8835] ।

फरि उन्होंने बच्चों को चूमा और कहा:

'वदिा, मेरी पत्नी; शोक मत करना और न रोना, बल्कि आनंदति हो और प्रसन्न रहो, क्योंकि मैं तुम्हें, हमारे बच्चों को, और अपनी आत्मा को हमारे सर्वशक्तमिान और सर्व-सत्पुरुष ईश्वर के सुपुर्द करता हूँ।'

ये शब्द कहते ही वह घर से बाहर नकिल गया, जबकि उसकी पत्नी खुशी-खुशी उसे वदिा कर रही थी। मार्दरीउस अवराकनिा के एक प्रतष्ठिति नागरकि मुकरोर के पास गया, जो धन-संपन्न और कुलीन व्यक्ति था; उसने उसे अभविादन कयिा और कहा:

'मैं यहाँ अपने मत्रि और रश्तिेदार करिसिकि के पास जा रहा हूँ, और, अगर ईश्वर को मंजूर हो, तो मैं उसका साथी बनूँगा और उसके साथ शहीद होने का कष्ट सहूँगा। ईश्वर के बाद, इस जीवन में मेरी पत्नी और मेरे बच्चों की रक्षा करना; और मैं, यदि मुझे ईश्वर की कृपा प्राप्त हुई, तो उस दनि तुम्हारी सहायता करूँगा जब हम सभी उनके सामने खड़े होंगे, और तुम्हें अपना प्रतफिल प्राप्त होगा।

[8835] संत शहीद मार्दरीउस की यह प्रार्थना, तीसरे घंटे के समापन पर और मैटन्सि में, नम्निलखिति रूप में जप की जाती है: 'हे प्रभु परमेश्वर, सर्वशक्तमिान पति, हे प्रभु, एकमात्र पुत्र, यीशु मसीह, और पवत्रि आत्मा, एक ईश्वरत्व, एक शक्ति, मुझ पापी पर दया करें, और जसि भी साधन को आप उचति समझें, उससे मुझे, अपने अयोग्य सेवक को, बचाएँ: क्योंकि आप युगानुयुग धन्य हैं, आमीन।'

'शांति से जाओ, मेरे बेटे,' धार्मिक मुकरोर ने उत्तर दिया, 'अपनी महान यात्रा पूरी करो और किसी भी बात की चिंता मत करो: मैं तुम्हारी पत्नी और तुम्हारे छोटे बच्चों का पिता बनूँगा।'

तब मर्दारी ने मुकरोर से विदा ली, चल पड़ा, और शहर के ठीक बाहर संतों से मिल गया। उसने यूस्ट्राटियस को ज़ोर से पुकारा:

'हे प्रभु क्रिसिकि! जैसे एक भेड़ अपने चरवाहे के पास आती है, वैसे ही मैं भी आप सभी के साथ चलने की इच्छा से आपके पास आया हूँ। तो मुझे स्वीकार कीजिए, और मुझे अपनी पवित्र संगति में गिन लीजिए, और मुझे—यद्यपि मैं इसके योग्य नहीं हूँ—शहीद होने के कार्य की ओर ले चलिए, ताकि मैं प्रभु यीशु मसीह का कबूलनामा करने वाला बन सकूँ।'

तब वह और भी ज़ोर से चिल्लाया:

'सुनो, शैतान के सेवको, सुनो! मैं भी एक ईसाई हूँ, ठीक अपने स्वामी यूस्ट्राटियस की तरह।'

तुरंत सैनिकों ने उसे पकड़ लिया और, उसे बाँधकर, अन्य ईसाइयों के साथ कालकोठरी में डाल दिया; उन्होंने यह बात लिसियास को बताई, जिसने तुरंत एक अदालत बुलाई। सैनिकों ने, अपनी प्रथा के अनुसार, ईसाइयों को कालकोठरी से बाहर लाना शुरू कर दिया। अन्य लोगों के बीच, ऑक्सेन्टियस को लाया गया—नग्न और रस्सियों से बँधे हाथों के साथ; अन्य ईसाई पास में खड़े होकर देख रहे थे।

न्यायाधीश ने संत से कहा:

'ऑक्सेन्टियस! हमें इस झंझट से बचाओ, और खुद को इस यातना से बचाओ; हमें बताओ: क्या तुमने अपनी व्यर्थ और आत्म-विनाशकारी अवज्ञा नहीं छोड़ दी है, और क्या तुम हमारे दयालु देवताओं के पास वापस नहीं आ गए हो?'

'एक क्षण के लिए सुनो, लाइसियस,' संत ऑक्सेनटियस ने उत्तर दिया: 'मैं उस सत्य की शपथ लेता हूँ जो सभी चीजों से ऊपर है और सभी चीजों को देखता है, कि मेरा मन हमेशा एक ही ईश्वर को स्वीकार करेगा, और मैं केवल उसी की उपासना करूँगा, भले ही तुम मेरे ऊपर अनगिनत घाव करो और मुझे इससे भी बड़े कष्टों में डाल दो जो मैंने पहले झेले हैं।' भले ही तुम मुझे तलवार या आग से मार डालो, तुम किसी भी तरह से मेरा मन नहीं बदल सकते। तो, जो तुम्हें ठीक लगे, कर डालो।

तब यातनाकर्ता ने निम्नलिखित मृत्युदंड सुनाया:

'ऑक्सेन्टियस, जो इतनी यातनाओं के बाद भी अपने पागलपन पर अड़ा है, को तलवार से सिर कलम करके उसके योग्य मृत्युदंड दिया जाएगा। यह सजा एक दूरस्थ जंगल में दी जाएगी, ताकि उसके घृणित शरीर को ठीक से दफनाया न जा सके।' और जो हाल ही में कैदियों में शामिल होने की हिम्मत कर सका है, उसे यहाँ बीच में लाया जाए; अब उसे वह सम्मान मिलेगा जिसकी वह तलाश कर रहा है।

जब सैनिक मारडारियस को उसके बंधनों से मुक्त कर रहे थे, तो उसने संत यूस्ट्रैटियस से कहा:

'हे स्वामी क्रिसिकि! मैं आपसे विनती करता हूँ, मेरे लिए ईश्वर से प्रार्थना करें और मुझे सिखाएँ कि विनाशकारी से क्या कहना है, कहीं यह क्रूर यातना देने वाला मुझे, एक साधारण और अनपढ़ व्यक्ति को, किसी भी तरह से धोखा न दे।'

संत यूस्ट्राटियस ने उससे कहा:

'मेरे भाई मार्दरीउस, केवल एक बात दोहराना और वह भी बिना चूके: "मैं एक ईसाई हूँ", "मैं मसीह का सेवक हूँ", और कुछ भी न कहना, चाहे वह तुमसे कुछ भी कहे या करे।'

जब सैनिकों ने मर्दरीउस को लिसियास के सामने लाया, तो उन्होंने कहा:

'यह एक कैदी है जिसे हाल ही में पकड़ा गया है।'

लिसियस ने कहा:

'उसे अपना नाम, अपना वतन, अपना पेशा, अपना रहने का स्थान, और वह धर्म बताने दो जिसका वह पालन करता है।'

'मैं एक ईसाई हूँ,' मरदरीउस ने उत्तर दिया, और अपने नाम और मातृभूमि के बारे में यातना देने वालों के सभी सवालों पर, वह यही दोहराता रहा:

'मैं एक ईसाई हूँ! मैं मसीह का सेवक हूँ।'

वे उससे और कुछ भी नहीं जान सके। लाइसियस ने, उसकी दृढ़ता को देखकर, आदेश दिया कि उसके पैरों में लोहे की कीलें ठोंकी जाएँ और उनमें रस्सियाँ डालकर उसे उल्टा लटका दिया जाए; फिर उसके पूरे शरीर को लाल-गरम लोहे की कीलों से भेदा और जलाया जाए। मार्दरीउस वहाँ लंबे समय तक लटका रहा और यातनाएँ सहता रहा, और अंत में वह चिल्लाया:

'हे प्रभु! मैं तेरा धन्यवाद करता हूँ कि तूने मुझे ये आशीषें दीं! मेरी यही एकमात्र इच्छा थी, कि मैं तेरे द्वारा बचाया जाऊँ, और मैंने यही एकमात्र खोजा: मेरी आत्मा को शान्ति में ग्रहण कर।'

यह कहकर, उसकी मृत्यु हो गई।

जब मार्दरीउस के शरीर को उसके यातना स्थल से हटा दिया गया, तो लिसीयस ने कहा:

'उन्हें सताला के यूजीन को लाने दो, जिसने यूस्ट्राटियस से पूछताछ के दौरान यहाँ आने की हिम्मत की। मैं यह दावा नहीं करता कि वह एक ईसाई है, जैसा कि वे खुद ही प्रचार करते रहते हैं, लेकिन मुझे वह एक बहुत ही हानिकारक व्यक्ति लगता है।'

जब यूजिनियस अदालत के सामने उपस्थिति हुआ, तो अधिकारियों ने कहा:

'यहाँ यूजिनियस है।'

न्यायाधीश ने कहा:

'मुझसे बताओ, हे नीच व्यक्ति, किस दुष्ट दानव ने तुम्हें सिखाया और तुम्हें इतनी हिम्मत दी कि तुमने बिना किसी शर्म के, इस अदालत की गंभीरता को कुछ भी नहीं समझते हुए, हम पर दोष मढ़ने की हिम्मत की?'

संत यूजीन ने उत्तर दिया:

'मेरे ईश्वर, जो उन राक्षसों को नीचे गिराता है जिन्हें तुम पूजते हो—उसी ने मुझे शक्ति दी है और मुझे तुम पर उपहास करने का साहस और वाक्-स्वातन्त्र्य प्रदान किया है, हे घृणित, बदबूदार कुत्ते, शैतान का पात्र, जो तुम्हारे साथ विनाश के घाट पर पहुँचाया जाएगा।'

यातना देने वाले ने पुकारा:

– उसकी ईश्वर-निंदा करने वाली जीभ काट दो, उसके दोनों हाथ काट दो और उसकी पिंडलियाँ तोड़ दो, ताकि वह हमसे और नम्रता से पेश आए!

इस यातना के दौरान, संत यूजीन ने अपनी आत्मा ईश्वर को सौंप दी।

थोड़ी ही देर बाद, एक दिन लाइसियस सैनिकों का निरीक्षण करने के लिए शहर से बाहर गया। निरीक्षण के दौरान, जब सभी सैनिक हथियारों के साथ अपनी कुशलता का प्रदर्शन कर रहे थे, उनमें से एक, ओरेस्ट्स नाम का, जो आकर्षक रूप वाला एक लंबा आदमी था, को उसके पद के अनुसार लाइसियस के सामने पेश होने के लिए कहा गया। उसे देखकर, लाइसियस ने उसकी प्रशंसा की, उसे 'एक सच्चा योद्धा' कहा, और उसे एक निशाने पर अपनी भाला फेंकने का आदेश दिया। जब ओरस्टिसि ने निशाना साधा और अपना भाला उठाया, तो झटके से उसके सीने पर पहना हुआ सुनहरा क्रॉस गिर पड़ा, और ई यह हर किसी ने देखा, जिसमें स्वयं लाइसियस भी शामिल था। ओरस्टिसि को तुरंत लाइसियस के पास बुलाया गया, जिसने उसके सीने से क्रॉस उठाकर उसे पकड़ते हुए पूछा:

'यह क्या है? क्या तुम भी सूली पर चढ़ाए गए के पूजकों में से एक हो?'

ओरेस्ट्स ने उत्तर दिया, "मैं सूली पर चढ़ाए गए के, मेरे प्रभु और ईश्वर के सेवक हूँ, और मैं इस चिह्न को अपने ऊपर इस लिए धारण करता हूँ ताकि मुझ पर मंडराने वाले सभी बुराइयों से रक्षा हो सके।"

तब लाइसियस ने कहा, 'इस वीर योद्धा को भी, अभियुक्त यूस्ट्रैटियस के साथ बाँध दो, और उसे निकोपोलिस ले जाओ, जहाँ समय आने पर उनसे पूछताछ की जाएगी।'

लाइसियस के निकोपोलिस पहुँचने पर, उस शहर में तैनात रेजिमेंट के बहुत सारे सैनिक उसके सामने आए और सभी ने एक स्वर में पुकारा:

'लाइसियस! हम भी हमारे प्रभु यीशु मसीह के सिपाही हैं: हमारे साथ जो चाहो करो!'

पहले तो लाइसियस हक्का-बक्का रह गया। उसे डर था कि जो लोग सामने आए थे वे उसके खिलाफ कोई साजिश रच रहे होंगे। लेकिन, जब उसने देखा कि वे अपनी कमरबंद खोलकर, निहत्थे भेड़ों की तरह आत्मसमर्पण कर रहे थे, तो उसने उन सभी को पकड़ने, बांधने और जेल में डालने का आदेश दिया। उसी समय, वह इस बात पर विचार करने लगा कि आगे आए सभी लोगों को उनके साथी नागरिकों या रिश्तेदारों के बीच कोई अशांति पैदा किए बिना कैसे फांसी दी जाए; सबसे

बढ़कर, वह यूस्ट्राटियस से डरता था, अर्थात् उसे डर था कि यह ईसाई अपने यातनाओं के दौरान पहले वाले चमत्कार जैसा ही कोई और चमत्कार कर सकता है, जिससे न केवल ईसाइयों का विश्वास मजबूत होगा, बल्कि वह मूर्तिपूजकों को मूर्तियों की पूजा से हटाकर अपने धर्म में परिवर्तित करने में भी विफल रहेगा। इसलिए, लिसियास ने अगले ही दिन सेंट्स यूस्ट्रैटियस और ओरेस्ट्स को गवर्नर एग्रिकोला के पास सेबास्टे शहर भेजने का फैसला किया।

और इस प्रकार उसने भोर होते ही अपने आदेश दिए, और एग्रिकोला को निम्नलिखित पत्र भेजा:

– उनके उच्चपदस्थ एग्रिकोला, राज्यपाल महोदय को: लिसियस, सरदार, अपनी शुभकामनाएँ भेजते हैं। हमारे दैवीय सम्राटों ने, यह जानते हुए कि संपूर्ण ब्रह्मांड में आपसे बेहतर कोई भी अज्ञात को नहीं पहचान सकता, आपको इन भूमिओं पर शासन करने का अधिकार प्रदान किया है, क्योंकि वे जानते हैं कि आप अपना दिन-रात सार्वजनिक मामलों में व्यस्त रहते हैं, और आपकी आँखों की तुलना में तो सतर्क रहने वाले तारों पर ही नींद हावी होने की अधिक संभावना है, जब तक कि वह साधारण भलाई के लिए आप जो प्रयास करते हैं, वह प्राप्त नहीं हो जाती। संक्षेप में, चूँकि उन्होंने केवल आप में ही महान सद्गुण पाए, उन्होंने आपको वह महान सम्मान प्रदान किया जिसका आप अब आनंद ले रहे हैं। इसलिए, आप में इतने सारे उत्कृष्ट गुण देखने के बाद, मैं आपके पास इस कैदी, यूस्ट्रैटियस को भेज रहा हूँ, जो ईसाई धर्म की बीमारी से ग्रस्त है; और भी इसलिए क्योंकि मैं स्वयं उसके भ्रम से उसे दूर करने के लिए कुछ भी सोच नहीं सका: मेरे द्वारा मेरे अधीन सेना में एक सम्मानजनक पद दिए जाने के बाद, वह और भी अहंकारी हो गया है और उसने हमें बहुत कष्ट दिया है। यद्यपि मैंने धमकियों का सहारा लिया है, वह अपने अहंकार में, अपनी जादू-टोने से शक्ति प्राप्त कर, भविष्य बताता है। और यद्यपि उसने दूसरों को यातनाएँ झेलते देखा, उसने न केवल अपनी अभद्रता नहीं छोड़ी, बल्कि उसने उन यातनाओं को ही दंड के बजाय एक आशीर्वाद माना। मैं उसी को, ओरेस्ट्स के साथ, जो इसी मानसिकता का है, सम्राट की आज्ञाओं की पूर्ति के लिए, आपके बुद्धिमानीपूर्ण निर्णय के लिए भेज रहा हूँ।

इस पत्र और पवित्र शहीदों की लिखित पूछताछ के साथ, सैनिकों ने संतों को पकड़कर अपनी यात्रा शुरू की। यात्रा के दौरान, संत यूस्ट्रैटियस और ओरिस्ट्स ने गाया: *'मैं तेरी आज्ञाओं के मार्ग में चलूँगा... मुझे शिक्षा दे, और मैं तेरी आज्ञाओं को सीख लूँगा'* (भजन संहिता 118:32, 73)।

तब यूस्ट्राटियस ने कहा:

'भाई ओरिस्टिस! मुझे बताओ, संत ऑक्सेन्टियस कैसे और कहाँ मरे?'

संत ओरिस्टेस ने कहा:

'न्यायाधीश द्वारा सजा सुनाए जाने के बाद, वह उन सैनिकों से विनती करने लगा जो उसे अदालत से ले जा रहे थे कि वे उसे एक बार आपके पास जाने और आपको अंतिम बार चूमने की अनुमति दे दें, लेकिन कोई भी उसकी इच्छा पूरी करने को तैयार नहीं था, क्योंकि दोपहर का भोजन का समय था और नौकर अपने आदेशों को जल्द से जल्द पूरा करने की जल्दी में थे; और इस प्रकार ऑक्सेंटियस को तुरंत जंगल में, *ओरॉरी* नामक स्थान पर ले जाया गया। रास्ते *में*, संत ने भजन पढ़ा: *'धन्य है वह जिसका आचरण निष्कलंक है, जो यहोवा की व्यवस्था पर चलता है'* (भजन संहिता 118:1), और इसी तरह अंत तक पढ़ते रहे। तब वह घुटने के बल झुका, प्रार्थना की, जैसे कोई भेंट ग्रहण करने के लिए अपने हाथ फैला दिए, और 'आमीन' कहने के बाद, चारों ओर देखा; और मुझे देखकर—मैं पास ही खड़ा था—उसने मुझे बुलाया और कहा:

'भाई ओरेस्ट्स! प्रभु यूस्ट्राटियस से कहना कि वे मेरे लिए प्रार्थना करें, और यह कि वे जल्द ही मुझसे फिर मिलेंगे, और मैं उनका इंतज़ार कर रहा हूँ।'

तब उनका सिर कलम कर दिया गया, और जो भी ईसाई होने के संदेह में थे, उन्हें फांसी के स्थान से भगा दिया गया। उसी रात अरावरका के पुरोहितों द्वारा उनके पवित्र शरीर को गुप्त रूप से ले जाया गया। लेकिन वे उनका सिर नहीं ढूँढ सके और वे रोने लगे और ईश्वर से प्रार्थना करने लगे कि वह उन्हें पवित्र शहीद का सिर दिखा दें। और, ईश्वर की कृपा से, एक कौआ एक ओक के पेड़ से काँव-काँव करने लगा; पुरोहितों ने उसकी पुकार का अनुसरण किया और संत का सिर उस पेड़ की फैली हुई शाखाओं के बीच पड़ा हुआ पाया, जहाँ कौआ बैठा था। उसे लेकर, पुरोहितों ने उसे उसके शरीर पर रख दिया और एक पवित्र और सम्मानित स्थान पर ले गए, जहाँ उन्होंने इसे दफना दिया।

यह सुनकर यूस्ट्रैटियस रोया और ईश्वर से प्रार्थना करने के बाद, ओरेस्ट्स से कहा:

'हम भी, भाई, संत ऑक्सेन्टियस के पदचिन्हों पर चलने का प्रयास करेंगे।'

पाँच दिन बाद, संतों को सेबास्टे लाया गया, और गवर्नर एग्रिकोलास ने, लाइसियस से एक पत्र प्राप्त करने के बाद, कैदियों को सबसे सख्त पहरे में रख दिया। अगले दिन, लोगों की मौजूदगी में, वह चौक में न्यायाधीश के मंच पर चढ़ा

और ईसाइयों को अपने सामने लाने का आदेश दिया; मुकदमा शुरू होने से पहले, उसने आदेश दिया कि लाइसियस द्वारा भेजा गया पत्र और कैदियों से की गई प्रारंभिक पूछताछ सभी के सुनने के लिए ज़ोर से पढ़ी जाए। पत्र पढ़े जाने के बाद, उसने कहा:

'एस्ट्रैटियस, यह मत सोचो कि यहाँ तुम्हारा वही कष्ट इंतज़ार कर रहे हैं जो तुमने लिसियस के हाथों झेले थे; सम्राटीय आदेशों का तुरंत पालन करना और देवताओं को बलिदान देना बेहतर है, ताकि तुम्हें क्रूर मृत्यु का सामना न करना पड़े।'

संत यूस्ट्रैटियस ने उनसे पूछा:

'हे न्यायाधीश! क्या कानून राजाओं पर भी लागू होते हैं, या नहीं?'

'हाँ,' राज्यपाल ने उत्तर दिया, 'राजा भी कानूनों का पालन करते हैं।'

'तो,' यूस्ट्रैटियस ने जारी रखा, 'क्या केवल आपके लिए ही कानून सिर्फ़ लिखित चीज़ें हैं, और व्यवहार में बाध्यकारी नहीं हैं?'

'तुम यह क्यों कह रहे हो, हे अधर्मी?' राज्यपाल ने कहा। 'किसने कभी किसी भी तरह से कानूनों को चुनौती देने की हिम्मत की है?'

संत यूस्ट्रैटियस ने उत्तर दिया:

'साम्राज्य के कानूनों में हम यह पढ़ते हैं: न तो शब्द में और न ही कर्म में हिंसा की जानी चाहिए, और लोगों पर मुख्य रूप से उपदेश के माध्यम से शासन किया जाना चाहिए। दो में से एक बात आवश्यक है: या तो उच्च अधिकारी को अधीनस्थ को फटकारना चाहिए, ताकि उससे वह प्राप्त हो सके जो उसका हक है, या अधीनस्थ, जिसे पहले ही सही का निर्देश दिया जा चुका है, को स्वतंत्र रूप से और स्वेच्छा से कानून के आदेश का पालन करना चाहिए; और, इसके अलावा, कानूनों में निम्नलिखित अंश है: हम यह आदेश देते हैं कि एक न्यायाधीश को कठोरता और दया को मिलाकर न्याय करना चाहिए, ताकि मुकदमे में आरोपी उसके प्रति घृणा या द्वेष न पालें, धमकियों से डरकर, और ताकि कोई भी उसकी उदारता की उम्मीद में कानून तोड़ने की हिम्मत न करे। 'हे न्यायाधीश, क्या यही लिखा है, या नहीं?'

'हाँ,' राज्यपाल ने उत्तर दिया।

'मैं आपसे निवेदन करता हूँ,' संत ने कहा, 'कि आप मेरे लिए भी इस कार्यवाही की व्यवस्था बनाए रखें।'

'आपके लिए, और सभी के लिए,' शासक ने उत्तर दिया, 'कानूनों का पालन बिना चूके, और पूरी श्रद्धा के साथ किया जाना चाहिए।'

'तो फिर,' संत ने कहा, 'आपकी कठोरता में दया भी हो, और आप, सभी में सबसे बुद्धिमान होने के नाते, स्वयं सलाह देने के बजाय सलाह सुनने के लिए अधिक इच्छुक रहें, और हर मामले पर विवेक से चर्चा करें।' अन्यथा, बिना किसी तर्क या कानून के – यातना दो, मार डालो, जो मन चाहे करो।

'निडर और स्वतंत्र रूप से बोलो, जो कुछ भी तुम चाहो,' शासक ने उत्तर दिया, 'न्याय भय की तुलना में अधिक समझाने पर आधारित होगा।'

संत यूस्ट्रैटियस ने पूछा:

'आप किन देवताओं को बलिदान चढ़ाने का आदेश देंगे?'

'सबसे पहले ज्यूस को,' राज्यपाल ने उत्तर दिया, 'और फिर अपोलो और पोसीडॉन को[8836] ।'

'आपने किस ऋषि, या इतिहासकार, या पैगंबर से सुना है कि किसी को ज्यूस और अन्य तथाकथित देवताओं की पूजा करनी चाहिए?'

शासक ने कहा, 'प्लेटो, अरस्तू, हर्मेस[8837] और अन्य दार्शनिकों से, और अगर तुम उन्हें जानते, यूस्ट्रैटियस, तो तुम देवताओं से प्रेरित और अपने आप में अद्भुत पुरुषों के रूप में उनकी स्मृति का सम्मान करते।'

[8836] ज़ीउस, या जुपिटर, एक ग्रीक-रोमन देवता थे जिन्हें मूर्तिवादियों द्वारा स्वर्ग और पृथ्वी के शासक, सभी देवताओं और मनुष्यों के पिता के रूप में पूजा जाता था। अपोलो प्राचीन यूनानियों और रोमनों द्वारा सबसे अधिक पूजे जाने वाले पैगन देवताओं में से एक था; उसे सूर्य और बौद्धिक प्रबोधन के देवता, साथ ही सार्वजनिक व्यवस्था, कानून के संरक्षक और भविष्यवाणी के देवता के रूप में माना जाता था। पोसीडॉन (नेप्च्यून) को ज्यूस के भाई और समुद्रों, नदियों, तथा सभी झरनों और जल निकायों का सर्वसमर्थ शासक माना जाता था।

[8837] *प्लेटो* – चौथी शताब्दी ईसा पूर्व के प्रसिद्ध यूनानी दार्शनिक, प्रसिद्ध और प्रतिष्ठित दार्शनिक सुकरात के शिष्य। यह उल्लेखनीय है कि अपने दार्शनिक विचारों में, विशेष रूप से ईश्वर, दुनिया की रचना और परलोक पर अपने उपदेशों में, प्लेटो ईसाई सिद्धांत के बहुत करीब आते

"मैं उनकी शिक्षाओं से अपरिचित नहीं हूँ," संत यूस्ट्रेटियस ने उत्तर दिया, "क्योंकि मैंने अपनी युवावस्था से ही उनका अध्ययन किया है और हेलेनिक विज्ञानों और कलाओं में पूरी तरह महारत हासिल कर ली है; और यदि आप आज्ञा दें, तो हम प्लेटो से आरंभ करेंगे।"

शासक ने प्लेटो की कृति *टीमेयस*[8838] का हवाला देना शुरू किया, जिससे कथित तौर पर यह स्पष्ट होता है कि प्लेटो ने आवेगपूर्वक मूर्तिपूजक देवताओं और देवियों की पूजा की[8839] । यूस्ट्राटियस ने, सबसे बुद्धिमान प्लेटो की उसी कृति का हवाला देते हुए, यह साबित किया कि उन्होंने ज़ीउस की स्वयं निंदा की, जिन्हें बहुदेववादी देवताओं और मनुष्यों, स्वर्ग और पृथ्वी का शासक मानते हैं, और यह प्रतिपादित किया कि ईश्वर सभी अच्छाइयों का स्रोत और कारण है, जो बहुदेववादी कथाओं के अनुसार ज़ीउस कतई नहीं था; साथ ही, संत ने विभिन्न मूर्तिपूजक कथाओं की ओर इशारा किया, और होमर और एस्कलिास जैसे सबसे प्रसिद्ध मूर्तिपूजक कवियों के शब्दों का भी हवाला दिया[8840] /

शासक ने उत्तर दिया, 'मैं तुम्हारी अभिरुचि को केवल इसलिए बर्दाश्त कर रहा हूँ, क्योंकि मुझे स्वयं बहस करना पसंद है। तो अब, मुझे बताओ, तुम उस ईश्वर को कैसे स्वीकार कर सकते हो जिसे तुम ईश्वर के रूप में पूजते हो, जबकि वह एक मनुष्य था जिसे दोषी ठहराया गया और सूली पर चढ़ाया गया था?'

संत ने उत्तर दिया:

'यदि आप धैर्यपूर्वक मेरी बात सुनने को तैयार हैं, तो मैं पहले आपसे उन कुछ बातों के बारे में पूछूँगा जो मैं आपसे पूछना चाहता था, और फिर मैं आपको क्रम से वह सब कुछ बताऊँगा जिसके बारे में आपने मुझसे पूछा है।'

'मैं तुम्हें अनुमति देता हूँ,' राज्यपाल ने कहा, 'कि तुम जो चाहो, उसके बारे में स्वतंत्र रूप से बोलो।'

यूस्ट्रेटियस ने अपनी बात जारी रखते हुए कहा, 'हर वह व्यक्ति, जिसके पास स्वस्थ दिमाग है, उसे ईश्वर को धार्मिक, अगम्य, अकथनीय और अगोचर, अपरिवर्तनीय और अपनी दिव्य विशेषताओं के द्वारा सभी अस्तित्वमानों से परे मानना चाहिए। क्या आप भी ऐसा ही नहीं सोचते, हे अति बुद्धिमान न्यायाधीश?'

'हाँ, मैं ऐसा ही मानता हूँ,' न्यायाधीश ने उत्तर दिया।

'इसमें हमें यह जोड़ना चाहिए,' संत ने कहा, 'कि ईश्वर में कोई दोष या अपूर्णता नहीं है, बल्कि वह हर तरह से परिपूर्ण है?'

'निस्संदेह,' एग्रिकोलास सहमत हुए।

'तो, फिर क्या?' यूस्ट्रेटियस ने बात जारी रखी। 'क्या हमें यह स्वीकार नहीं करना चाहिए कि कुछ अन्य देवता भी हैं जिनमें एक पूर्ण और अमर दिव्य स्वभाव है?'

लेकिन यह तो बेतुका होगा, क्योंकि यदि उनमें दैवीय पूर्णता और गुणों में, चाहे वह कितनी भी मामूली क्यों न हो, कोई कमी होती, तो मुझे लगता है कि वे पहले ही लोगों द्वारा देवताओं के रूप में सम्मानित होने के अयोग्य हो जाते: जैसा कि हमने पहले कहा है, ईश्वर में किसी भी प्रकार की कमी नहीं है, और सभी लोगों को उन पर विश्वास करना चाहिए और उनकी पूजा करनी चाहिए।

एग्रिकोला ने कहा:

हैं। – *अरस्तू* – एक प्रसिद्ध यूनानी दार्शनिक, प्लेटो के शिष्य और समकालीन, तथा मैसेडोनिया के राजा सिकंदर महान के शिक्षक; उनकी बुद्धि में प्राचीन दुनिया के सभी ज्ञात विज्ञान समाहित थे। – *हर्मेस,* जिन्हें ट्राइस्मेगिस्टस (अर्थात् *'तीन गुना महानतम')* के नाम से जाना जाता है – एक प्रसिद्ध प्राचीन मूर्तिपूजक दार्शनिक सिद्धांत के काल्पनिक लेखक, जिसे अक्सर 'थियोसोफिकल' बताया जाता है, जो 3वीं शताब्दी ईस्वी में उभरा; उसे मूर्तिपूजकों द्वारा एक बुद्धिमान व्यक्ति माना जाता था जिसे सर्वोच्च दैवीक प्रकटिकरण प्राप्त हुआ और, अपने तीन बेटों के माध्यम से, इसे मानवता तक पहुँचाया।

[8838] 'टीमेयस' प्लेटो की उत्कृष्ट कृतियों में से एक है, जिसमें, प्रसिद्ध और पूजनीय दार्शनिक पाइथागोरस के शिष्य टीमेयस के साथ संवाद के रूप में – जिसे उसने पाइथागोरस की शिक्षाओं से खुद को परिचित कराने के लिए खोजा था – वह अस्तित्व के कई उच्चतम प्रश्नों पर अपने स्वयं के विचार प्रस्तुत करता है।

[8839] इस संदर्भ में एग्रिकोला ने इस तथ्य का उल्लेख किया कि बुद्धिमान प्लेटो जानबूझकर पिरियस (थेस्साली में) एक निश्चित मूर्तिपूजक देवी की पूजा करने के लिए गए थे; फिर भी, यद्यपि प्लेटो के विचार और विश्वास पूरी तरह से मूर्तिपूजक त्रुटियों से मुक्त नहीं थे, उनका सामान्य चरित्र उनसे कहीं अधिक श्रेष्ठ था और कभी-कभी तो ईसाई सिद्धांत के काफी करीब भी आ गया।

[8840] *होमर* – ग्रीस के प्रसिद्ध, सबसे प्राचीन लोक कवि, जिनके बारे में केवल किंवदंतियाँ ही बची हैं – प्राचीन शास्त्रीय साहित्य की दो महान महाकाव्यों के लेखक हैं: *इलियड* और *ओडिसी*, जिनमें प्राचीन यूनानियों के विश्वासों का जीवंत प्रतिबिंब मिलता है – *एस्कलिास* – महान यूनानी त्रासदीकारों में सबसे पुराने, जिन्होंने अपनी कृतियों के माध्यम से विश्वव्यापी ख्याति अर्जित की।

'नस्संदेह, ऐसा ही है।'

तो, फरि क्या? शायद ये देवता स्वयं एक अक्षय और अमर स्वभाव के गुण हैं और, एक ही सत्ता की केवल वभिन्नि अभव्यिक्तयिाँ होने के नाते, सभी, मानो, एक ही बदिु पर—दव्यि में—मलि जाते हैं?' लेकनि अगर ऐसा है, तो उन्हें अलग-अलग देवता, बड़े और छोटे, न कहा जाए, बल्कि एकमात्र ईश्वर, ' ' कहा जाए, जो अकेले ही, अपनी अतुलनीय सर्वशक्तमिानता से, देवता का नाम धारण करते हैं, और न कि जैसा आप सोचते हैं—कि एक ईश्वर स्वर्ग में, दूसरा पृथ्वी पर, और तीसरा समुद्र में रहता है। 'क्या ऐसा नहीं है, न्यायाधीश?'

गवर्नर एग्रकिोला, इसका कोई खंडन न कर पाने के कारण, काफी देर तक चुप रहे, और अंत में केवल इतना ही कह सके:

'अपने तर्कों और लंबी-चौड़ी आपत्तयिों को एक तरफ रखो, और केवल उस प्रश्न का उत्तर दो जो तुमसे पूछा गया था: तुम सूली पर चढ़ाए गए को ईश्वर कैसे मान सकते हो?'

'मैं,' संत ने उत्तर दयिा, 'आपके कवि Hesiod[8841] के शब्दों से शुरू करूँगा: "आरंभ में एरेबस और काओस थे"[8842] , अर्थात् अंधकार और जल का गर्त। जब परमेश्वर ने संसार में व्यवस्था लाई और एक सुंदर अस्तत्वि बनाया—पहले से मौजूद पदार्थ से नहीं, बल्कि शून्य से उसे अस्तत्वि में लाकर—उसने मनुष्य को अपनी ही प्रतमिा और समानता में बनाया (उत्पत्ति 1:1–31)। परन्तु दुष्ट स्वर्गदूत[8843] , जसिे अन्य स्वर्गदूतों के एक समूह पर अधकिार दयिा गया था, अपनी इच्छा से अपने स्रष्टा से भटक गया, अभमिानी हो गया, और परमेश्वर द्वारा उसकी गरमिा छीनकर उसे स्वर्ग से नकिाल दयिा गया (यॉब 4:18; 2 पतरस 2:4; यहूदा 1:6)। जहाँ तक मनुष्य की बात है, परमेश्वर ने उसे एदेन के बगीचे में रखा और आज्ञा दी कि वह स्वर्ग की सभी आशीषों का आनंद लेते हुए भी, एक भी वृक्ष—अच्छाई और बुराई के ज्ञान का वृक्ष—को न छुए और न ही उसका फल खाए (उत्पत्ति 2:1–25)। ईश्वर ने यह कार्य उसके सामने इसलिए रखा ताकि मनुष्य ईश्वर की आज्ञा का उल्लंघन न करे या शैतान के प्रलोभनों का अनुसरण न करे, जो लगातार उसके वरिुद्ध षड्यंत्र रच रहा था; ताकि वह उस शत्रु को लज्जति कर सके, जो उसकी महान सम्मान से ईर्ष्या करता था; और ताकि वह अमर, क्षय से मुक्त हो जाए। अन्यथा, मनुष्य स्वर्ग में और नहीं रह सकता था और उसे बाहर नकिाल दयिा जाना था; कुछ समय पृथ्वी पर रहने के बाद, वह मर जाता। और इस प्रकार दुष्ट शैतान, मनुष्य के प्रति ईर्ष्या से लैस होकर, अपनी सारी चालाकी का सहारा लेकर, साँप के द्वारा, पहले मनुष्य की पत्नी को बहकाया और उसे स्वयं आज्ञा का उल्लंघन करने के लिए प्रेरति कयिा, जसिके कारण उसे परमेश्वर द्वारा स्वर्ग से नकिाल दयिा गया और उसे माथे के पसीने की कमाई करने और क्षय होने की सज़ा दी गई (उत्पत्ति 3:1–24)। इस प्रकार अत्यंत दुष्ट शैतान वजियी हुआ और घमंड करने लगा कि, मनुष्य के पाप के द्वारा, उसने उसे अपनी शक्ति के अधीन कर लयिा है। और जब, बाद में, मानव जाति बढ़ी, तो यातना देने वाले, शैतान ने हर आत्मा को अपना दास बनाने का प्रयास कयिा। जब अधकिांश लोग दुष्टता में गरि गए, तो परमेश्वर ने संसार को जलप्रलय से दंडति कयिा, जबकि धर्मी मनुष्य नूह को बचाया, जसिने दुष्ट शैतान के वरिुद्ध बहादुरी से लड़ाई लड़ी थी, उस पर वजिय प्राप्त की, और अपनी पत्नी और बच्चों के साथ जहाज़ में बच गया (उत्पत्ति 6:1–22, 7:1–24, 8:1–22)। बाढ़ के बाद पृथ्वी को उसकी मूल अवस्था में पुनर्स्थापति करने के पश्चात्, परमेश्वर ने नोआ को उस पर, मानो, उसका नया नविासी बनाकर बसाया (उत्पत्ति 9:1–29)। कई वर्ष बीत गए; लोग फरि से बढ़ गए, और उनके बीच हर तरह का अधर्म फरि से बढ़ गया; वे सभी पाप के बोझ तले दबे हुए थे और मृत्यु के बाद, धूर्त शैतान द्वारा वनिाश की ओर ले जाए गए, नरक की बेड़ियों में जकड़े हुए थे। तब हमारे सृष्टकिर्ता परमेश्वर ने दया की और, अपने हाथों के काम को बनिा सहायता के न छोड़ते हुए, सबसे पहले यूनानयिों पर ज्ञान प्रदान कयिा, ताकि वे सर्वशक्तमिान परमेश्वर को जान सकें और अपने वरिोधी, शैतान पर वजिय प्राप्त कर सकें। लेकनि यद्यपि वे कुछ हद

[8841] *हेसयिोड* – प्रसद्धि प्राचीन यूनानी कवि, जो पुरातन लोगों की आम सहमति के अनुसार, होमर के समय में या उससे भी पहले रहते थे। उनकी कृतयिों के बचे हुए अंशों में प्राचीन यूनानयिों के देवताओं के बारे में कई बहुदेववादी कथाएँ और कविदंतयिाँ शामलि हैं।

[8842] प्राचीन यूनानयिों की मान्यताओं के अनुसार, काओस (Chaos) एक वशिाल, अपार ब्रह्मांडीय शून्य था जो सभी चीजों से पहले मौजूद था – दुनयिा में सभी जीवन का अंधकारमय, जीवन-दायक स्रोत, जसिसे *एरेबस (Erebus)* – आदमि अंधकार और रात्रि (Night) – का जन्म हुआ, और, बाद में, पहले वाले के माध्यम से, दनि (Day) का, जसिके बाद पृथ्वी (गैया), आकाश (यूरेनस) आदि। प्राचीन लोग इन सभी को देवताओं के रूप में प्रस्तुत करते थे; फरि भी, अपनी इन मान्यताओं में, जो कच्ची मूर्तपिूजक अंधवश्विासों से धुंधली थीं, वे दुनयिा की सृष्टि के सच्चे सद्धिांत के कुछ हद तक करीब आ जाते हैं।

[8843] अर्थात्, शैतान, सैटन।

तक होश में आ गए प्रतीत हुए और सच्ची उपासना के मार्ग के करीब आ गए दिखाई दिए, फिर भी, जैसे किसी तरह के अंधकार में, वे केवल शब्दों में ही इन बातों की चर्चा करते थे, जबकि व्यवहार में वे फिर से अपने पूर्वजों की गलतियों में पड़ गए, और झूठे देवताओं में विश्वास के कारण उन पर काबू पा लिया गया; और, सच्चे मार्ग से बहुत दूर भटककर, वे और भी बड़े अधर्म की ओर मुड़ गए। फिर भी, तब भी, ईश्वर की महान दयालुता ने लोगों को पूरी तरह से पतन करने से रोका, और ईश्वर ने उन्हें व्यवस्था दी, नबी भेजे, और कई और विविध तरीकों से यहूदी लोगों को उद्धार का मार्ग दिखाया। इसके बावजूद, लोग और भी बुरे होते गए और अपने पूर्वजों के पापों को दोहराया, और अपने पापों के लिए वे मृत्यु के अधीन थे। अंत में, हमारे प्रभु परमेश्वर वचन ने हम जैसे संघर्ष को अपनाने की कृपा की और पाप को छोड़कर हर तरह से हमारे समान बनकर, हमें विरोधी - शैतान - पर विजय प्राप्त करने का मार्ग दिखाया: उन्होंने स्वयं को नम्र किया, दास का रूप धारण किया; वे एक कुँवारी से पैदा हुए, जबकि अपनी दिव्यता में अपरिवर्तित रहे; और वे मेमना थे, ताकि लालची भेड़िये—शैतान—को उसकी शक्ति से वंचित कर सकें। अब, माननीय महोदय, मैं अपनी कथा के लिए उपयुक्त एक उपमा का उपयोग करना चाहूँगा। मान लीजिए कि आप, इस शहर के शासक के रूप में, देखते कि एक भालू या किसी अन्य शक्तिशाली जानवर ने शहर के निवासियों पर हमला कर दिया है, और आपने अपने नौकर को उसे मारने के लिए भेजा; और नौकर, आपके आदेश का पालन करते हुए, जानवर का सामना करने के लिए बाहर गया, लेकिन, अनुभवहीन और पर्याप्त मजबूत न होने के कारण, वह उस पर काबू नहीं पा सका और, उसके द्वारा गिरा दिया गया, मरकर खा लिया गया: क्या तुम सच में दूसरे नौकर को, जो उतना ही अनुभवहीन और कमजोर हो, उस जानवर से लड़ने का आदेश देने की हिम्मत करते? और क्या यदि आप स्वयं शक्तिशाली और सक्षम होते और उस दानव से ठीक से लड़ना जानते, तो एक कुशल और बहादुर योद्धा की तरह स्वयं उसके खिलाफ नहीं जाते और उसे नहीं मार डालते—एक स्वामी के रूप में नहीं, बल्कि बिल्कुल एक साधारण सेवक के रूप में, जो केवल लड़ना जानता हो? बेशक, आपने अपने उदाहरण से अपने अन्य दासों को भी सिखाया होता कि यदि वे शक्तिशाली जानवरों का सामना करें तो उन पर विजय प्राप्त करें और उन्हें मार डालें। ठीक उसी तरह, हमारे प्रभु, जो सभी के उद्धारकर्ता हैं, जब उनके दास शैतान के खिलाफ अपने संघर्ष में पराजित और नष्ट हो गए, उन्होंने स्वयं अपनी अगणित दया से स्वयं को नम्र बनाया, परम पवित्र और निर्मल कुँवारी के गर्भ से अवतार लिया, और एक दास का रूप धारण किया, पाप को छोड़कर हर तरह से हमारे समान बन गए; और, सार्वजनिक सेवा में प्रवेश करने के बाद, उन्होंने अपनी स्वैच्छिक और सर्व-ज्ञानी नम्रता से दुष्ट शैतान से स्वयं की रक्षा की और उसे परास्त किया, क्योंकि शैतान ने प्रभु पर इस प्रकार आक्रमण किया मानो वे एक साधारण मनुष्य हों, और क्रूस पर उनके उद्धारकारी दुःखों के द्वारा उन्होंने शत्रु की सारी शक्ति को कुचल दिया, और हमें भी सिखाया – जब हम उनके इस पराक्रम पर मनन करते हैं – कि उसी प्रकार शैतान से लड़ें और उसकी शक्ति पर विजय प्राप्त करें। उन्होंने स्वयं हमारे पापों को अपने ऊपर ले लिया, और हमें अपना आत्म-नियंत्रण प्रदान किया; उन्होंने नरक में बंदियों को मुक्त किया और हमें ईश्वर की संतान बनने का अवसर प्रदान किया, जिसमें हमारे पास एक अजेय सहारा है और हम अपने कर्मों के लिए स्वर्गीय मुकुटों की आशा करते हैं। हम देह में पराजित हो सकते हैं, लेकिन आत्मा में विजय प्राप्त करते हैं; हम क्षय और मृत्यु के अधीन हैं, और फिर भी एक ही समय में हम अविनाशी और अमर हैं: इसलिए हम आपकी अनुशासनहीनता और पशुवत जीवन शैली से मुंह मोड़ते हैं, और स्वर्गदूतों जैसे जीवन और शाश्वत अस्तित्व के लिए प्रयास करते हैं। हम जानवरों की तरह नीचे नहीं देखते, बल्कि स्वर्ग की ओर निहारते हैं; और देह में रहते हुए भी, हम अपने जीवन-यापन में अदेह का अनुकरण करते हैं। हम जानते हैं कि हमारी आत्मा लगातार शरीर के साथ युद्ध में रहती है; अपनी बुद्धि और संयम के द्वारा, हम इस नश्वर शरीर के प्रति आसक्ति से मुंह मोड़ते हैं और, इसके कामुक सुखों और कामुक इच्छाओं को गंभीरता से अस्वीकार करते हुए, हम लगातार अपने विचारों को स्वर्ग तक उठाने और धैर्य तथा आत्म-संयम के माध्यम से, अपने सांसारिक अंगों को वश में करने के लिए स्वयं को प्रशिक्षित करते हैं। हम अपने परम पवित्र प्रभु पर चिंतन करके स्वयं को पोषित करते हैं; हमारा विश्वास अटूट है। ऐसी आशीर्वादें, और उनसे भी बड़ी, हमें उस ईश्वर द्वारा प्रदान की गई हैं, जिन्होंने स्वयं मानव देह धारण किया। लेकिन तुम, जैसा कि सभी जानते हैं, ने स्वयं को शरीर का दास बना लिया है और इसलिए उन 'देवताओं' को बुलाते हो, जिन्होंने तुम्हारे ही अनुसार, अशुद्ध और लज्जास्पद कृत्य किए; तुम उनके लिए पूजा स्थल बनाते हो और उन्हें श्रद्धांजलि देते हो। आप स्वर्ग के साथ संबंध से दूर भागते हैं और सदैव बेचैनी की अवस्था में रहते हैं – न केवल किसी विपत्ति के भय से, बल्कि इसलिए भी कि आप सांसारिक समृद्धि के लिए पूरी लगन से प्रयास करते हैं और जागते हुए संसार में भी जैसे स्वप्न में ही जीते हैं। आप केवल शरीर से ही नहीं बल्कि आत्मा से भी मर जाते हैं, और स्वयं को अनंत विनाश के हवाले कर देते हैं; हमने, तथापि, हमारे प्रभु यीशु मसीह से यह शिक्षा पाई है कि हमारा शरीर,

क्षय और मृत्यु के सार्वभौमिक नियम के अनुसार सड़कर धूल में मिल जाने के बाद, आत्मा के साथ फिर से जीवित हो उठेगा, और उसे अविनाशी स्वभाव प्राप्त होगा। – मैंने आपको यह सब संक्षेप में इसलिए बताया है, ताकि आप मुझसे सत्य जानकर अपने झूठे देवताओं का परित्याग करें।

गवर्नर एग्रिकोलास ने संत यूस्ट्राटियस की बुद्धिमानी भरी वाणी को अंत तक धैर्यपूर्वक सुना और फिर कहा:

'सम्राटों के निर्णयों और इच्छाओं पर सवाल उठाने का हमें कोई अधिकार नहीं है; हमें बस उनके कानूनों का पालन करना है और उनके आदेशों को पूरा करना है। इसलिए, यह बेकार की बकवास बंद करो, जाओ और देवताओं को बलिदान चढ़ाओ; नहीं तो, तुम ऐसी यातनाएँ सहोगे जिनके बारे में तुमने कभी सुना भी नहीं होगा।'

संत यूस्ट्रैटियस ने उत्तर दिया:

'तो फिर तुमने हमें इतनी बेवजह की परेशानी क्यों दी और हमें सताना बहुत पहले क्यों नहीं शुरू किया?'

इसके बाद, यातना देने वाले ने एक लोहे का बिस्तर लाने का आदेश दिया, जिसे अत्यधिक गर्म किया गया था, और संत ओरस्टिस को पहले उस पर रखा गया; उसने संत यूस्ट्रैटियस से कहा:

'तुम्हें पहले उन यातनाओं को देखना होगा जो तुम्हारा इंतज़ार कर रही हैं, जब वह उस पर लेटा हो, और फिर तुम खुद भी उन्हीं यातनाओं को सहोगे।'

इस बीच, जब संत ओरेस्ट्स जलते हुए अंगीठी के पास पहुँचे, तो उन्हें डर सा महसूस हुआ, और संत यूस्ट्रैटियस को देखकर उन्होंने कहा:

'मेरे लिए प्रार्थना करो, क्योंकि भय मुझ पर हावी हो रहा है।'

'हौसला न खोओ, भाई ओरस्टिसि,' संत यूस्ट्रैटियस ने उत्तर दिया, 'क्योंकि यह सब केवल डरावना और दर्दनाक लगता है; वास्तव में, तुम्हें कोई शारीरिक पीड़ा नहीं होगी, बशर्ते तुम निडर होकर पलंग पर लेट जाओ और अपनी आशा ईश्वर में रखो, क्योंकि प्रभु स्वयं हमारे सहायक और रक्षक होंगे।' संत ऑक्सेनियस और अन्य संतों के दृढ़ धैर्य को याद करो, और उनसे पीछे न रहो: ये यातनाएँ जल्द ही समाप्त हो जाएँगी, और स्वर्ग में हमारे लिए एक अनंत पुरस्कार की प्रतीक्षा कर रहा है!

यह सुनकर, संत ओरेस्टेस ने निडरता और दृढ़ निश्चय के साथ लाल-गरम बिस्तर पर चढ़ा; और उस पर खड़े होकर उसने क्रॉस का चिह्न बनाया और तुरंत लाल-गरम बिस्तर पर लेट गया। फिर उसने ऊँचे स्वर में पुकारा:

'हे प्रभु यीशु मसीह! मैं अपनी आत्मा तेरे हाथों में सौंपता हूँ!'

और उसने अपना पवित्र आत्मा प्रभु के हाथों में सौंप दिया, उसी समय संत यूस्ट्रैटियस ने पुकारा:

'आमेन!'

तुरंत बाद, एग्रिकोलास ने सेंट यूस्ट्राटियस को जेल ले जाने का आदेश दिया। वहाँ, अपनी प्रथा के अनुसार ईश्वर से प्रार्थना करने के बाद, यूस्ट्राटियस ने अपने साथ मौजूद दास को बुलाया और उससे कहा:

'मेरे बेटे, मेरे लिए कुछ कागज़ लाओ, और हम एक वसीयत तैयार करें, क्योंकि मुझे उम्मीद है कि कल मैं भी अपने प्रभु—मसीह—के सामने खड़ा होऊँगा।'

जब पर्चा लाया गया, तो उन्होंने अपनी वसीयत लिखी, जिसमें उन्होंने अपनी इच्छा व्यक्त की कि उनके शरीर को अराव्रक ले जाया जाए और कोई भी उनके अवशेषों से कुछ लेने की हिम्मत न करे, बल्कि उनका पूरा शरीर, अखंड, संत ऑक्सेंटियस के साथ, एनालिकोझोरा नामक स्थान पर, दफनाया जाए, ओरेस्टेस, मार्डारियस और यूजीन, क्योंकि इन संतों ने यूस्ट्रैटियस से विनती की थी कि, उनके निधन के बाद, उनके शरीर भी उनके अपने शरीर के बगल में अखंड रूप से दफनाए जाएँ। संत यूस्ट्रैटियस ने अपनी सारी संपत्ति पुरोहित वर्ग के भरण-पोषण के लिए छोड़ दी, और अपनी चल संपत्ति को समान रूप से विभाजित करने का आदेश दिया: पहली, गरीबों और ज़रूरतमंदों में, और दूसरी, अपनी बहनों में; उन्होंने यह भी आज्ञा दी कि उनके सभी दास मुक्त कर दिए जाएं और उन्हें सभी पुरस्कार प्रदान किए जाएं।

अपना वसीयतनामा लिखने के बाद, संत ने पूरे दिन का उपवास किया और पूरी अगली रात प्रार्थना में बिताई। उस रात, रक्षकों को दिए गए सोने की मदद से, सेबास्टे के बिशप, धन्य व्लासियस, जो उस समय ईसाइयों के उत्पीड़न के कारण छिपे रहे थे, उनके पास आए। उसने यूस्ट्राटियस की महान बुद्धिमत्ता और इस बात के बारे में सुना था कि कैसे उसने शासक और उसके देवताओं को शर्मिंदा किया था। कालकोठरी में प्रवेश करने पर, वह जमीन पर गिर पड़ा और संत के सामने झुक गया, यह कहते हुए:

'धन्य है तू, मेरे पुत्र यूस्ट्राटियस, कि सर्वशक्तिमान ईश्वर ने तुझे इस प्रकार बलवान बनाया है। मैं तुझसे विनती करता हूँ, अपनी प्रार्थनाओं में मेरा स्मरण रखना।'

'मेरे आध्यात्मिक पिता, मेरे प्रति नितमस्तक न हों,' संत यूस्ट्राटियस ने उत्तर दिया, 'बल्कि आपको प्रदान किए गए पद को ध्यान में रखते हुए, हम सामान्य लोगों से आपको वह सम्मान की अपेक्षा करें जो आपको मिलना चाहिए।'

फिर वे बैठ गए, और यूस्ट्राटियस ने बिशप से कहा:

'चूंकि ईश्वर की इच्छा से, कल दिन के तीसरे पहर मैं, जैसा कि मुझे स्पष्ट रूप से प्रकट किया गया है, अपने प्रभु मसीह के सामने उपस्थित होऊंगा, इसलिए मेरी यह वसीयत लो और इसे पढ़ो।'

जब बिशप ने इसे पढ़ लिया, तो संत ने उनसे और उनके साथ आए पुरोहितों से वसीयत पर हस्ताक्षर करने के लिए कहा, और बिशप से यह शपथ ली कि वे स्वयं शवों को इकट्ठा करेंगे—अपना, यूस्ट्राटियस, और संत ओरेस्ट्स, उन्हें वसीयत में निर्दिष्ट स्थान पर दफनाएँ, और उसमें लिखी गई बाकी सभी बातों को पूरा करने का प्रयास करें, और उनके श्रम और देखभाल के लिए, आने वाले जीवन में हमारे प्रभु यीशु मसीह से एक पुरस्कार का वादा करें। उसी समय, संत यूस्ट्रैटियस ने बिशप से पवित्र सहभाग (होली कम्युनियन) प्रदान करने का आग्रह किया, क्योंकि शहीद होने के लिए ले जाए जाने के क्षण से ही उन्होंने इस पवित्र संस्कार को ग्रहण नहीं किया था। जब सेवा के लिए आवश्यक सभी चीजें लाई जा चुकी थीं और निर्मल बलिदान (रक्तहीन बलिदान) का अनुष्ठान हो चुका था, तो यूस्ट्रैटियस आगे आए और पवित्र रहस्यों को ग्रहण किया। और अचानक एक प्रकाश, बिजली की चमक की तरह, कालकोठरी में चमका, और एक आवाज़ सुनाई दी:

'यूस्ट्राटियस! तुमने अच्छा संग्राम किया है। अब आगे बढ़ो और अपना मुकुट प्राप्त करने के लिए स्वर्ग में आरोहण करो!'

वहाँ मौजूद सभी ने यह आवाज़ सुनी, और वे सभी डर के मारे ज़मीन पर लोट गए। बिशप ने पूरी रात संत यूस्ट्रैटियस के साथ बिताई, उनसे बातचीत करके आनंदित हुए; और जब भोर हुआ, तो वे चले गए, यह वादा करते हुए कि वे वसीयत में लिखा सब कुछ अक्षरशः पूरा करेंगे।

जब सुबह हुई, तो एग्रिकोलास शहर के केंद्र में अपनी सामान्य जगह पर न्यायाधीश की कुर्सी पर बैठ गया और सेंट यूस्ट्रैटियस को अपने सामने लाने का आदेश दिया। जब यूस्ट्रैटियस उपस्थित हुआ, तो गवर्नर ने उसे अपने पास बुलाया और दूसरों से दूर, गुप्त रूप से उससे कहा:

'एस्ट्रैटियस, मैं सर्व-द्रष्टा सत्य को अपना साक्षी मानकर कहता हूँ कि मुझे अपने हृदय से गहरा दुख है कि तुम सम्राट के आदेश का पालन करने से इनकार कर रहे हो। लेकिन, कम से कम, लोगों के सामने दिखावे के लिए, यह दिखावा करो कि तुम हमारे धर्म को मानते हो, और केवल बाहरी रूप से देवताओं को प्रणाम करो; जबकि अपने दिल में अपने ईश्वर में विश्वास रखो और उनसे प्रार्थना करो, और वह तुम्हें उस काम के लिए माफ कर देंगे जो तुमने अपनी मर्जी से नहीं, बल्कि जबरदस्ती में किया है। एक खलनायक की तरह नष्ट होने की इच्छा मत करो, तुम जो इतने विद्वान और बुद्धिमान व्यक्ति हो। अगर मैं स्वयं इस वजह से खतरे में न होता, तो मैं तुमसे यह मांग भी नहीं करता। मैंने आपके कई साथी विश्वासियों को मौत के घाट उतारा है और उनमें से किसी पर भी दया नहीं दिखाई, फिर भी मुझे आपके लिए अत्यंत दया है; वास्तव में, मैंने आपके कारण पूरी रात बिना सोए और गहरे दुख में बिताई है।

'उसकी चिंता मत करो,' संत यूस्ट्रैटियस ने उत्तर दिया, 'और मेरे कारण अपने ऊपर दुर्भाग्य मत लाओ, बल्कि वैसा ही करो जैसा तुम्हारे राजाओं ने तुम्हें आज्ञा दी है। जहाँ तक मेरी बात है, मैं तुम्हारे देवताओं की न तो पाखंड करके और न ही किसी अन्य तरीके से पूजा करूँगा, बल्कि मैं सभी के सामने अपने ईश्वर की गवाही दूँगा और सभी के बीच उनकी स्तुति करूँगा। निश्चिंत रहो कि जो यातनाएँ तुम मुझे देते हो, वे मेरे लिए एक आशीर्वाद हैं, और, यदि तुम चाहो, तो इसे परख कर देखो।

राज्यपाल ने अपने हाथों से अपना चेहरा ढक लिया और बहुत देर तक रोता रहा, यहाँ तक कि उसके चारों ओर खड़े सभी लोगों ने इसे देख लिया। और सभी को एहसास हो गया कि उसे निर्दोष यूस्ट्राटियस पर दया आ गई थी, और वे भी ज़ोर-ज़ोर से रोने लगे। पूरे शहर में एक बड़ी विलाप की आवाज़ सुनाई दे रही थी। अंत में, संत यूस्ट्राटियस ने न्यायाधीश से कहा:

'परमेश्वर सर्वोच्च आपके पिता—शैतान की दुष्ट चालाकी का नाश करें! क्योंकि शैतान ने मुझे बहकाने के लिए, मेरे लिए प्रतीक्षा कर रहे पुरस्कार के मार्ग में एक बाधा डालने के लिए इस विलाप की रचना की है। तुम अपनी योजना

के अनुसार करो, क्योंकि मैं प्रभु मसीह का सेवक हूँ और सम्राटों की आज्ञाओं का पालन नहीं करूँगा; मैं मूर्तियों की घृणित वस्तुओं से घृणा करता हूँ: वे स्वयं और जो उनकी पूजा करते हैं, दोनों ही मुझे घृणित हैं!

एग्रिकोलास ने ईस्ट्रैटियस का ईसाई धर्म के प्रति अटूट समर्पण और मसीह के प्रति उसके महान प्रेम को देखा, और बड़ी कठिनाई से अपने आप को उस पर निम्नलिखित अंतिम निर्णय सुनाने के लिए तैयार कर सका:

'यूस्ट्रैटियस, जिसने सम्राटों की आज्ञा की अवज्ञा की है और देवताओं को बलिदान देने से इनकार कर दिया है, उसे जलाने का आदेश देता हूँ, ताकि वह अपनी हठधर्मिता के कारण आग की लपटों में नष्ट हो जाए।'

यह कहकर, वह उठ खड़ा हुआ और प्राटोरियम[8844] की ओर तेज़ी से चल पड़ा। जब संत को फाँसी के तख्ते पर ले जाया जा रहा था, तो उन्होंने ज़ोर से निम्नलिखित प्रार्थना की:

– हे प्रभु, मैं आपकी महिमा और स्तुति करता हूँ, क्योंकि आपने मेरी दीनता पर दृष्टि डाली है और मुझे मेरे शत्रुओं के हाथ में नहीं छोड़ा है, बल्कि मेरी आत्मा को विपत्ति से बचाया है! और अब, हे प्रभु, आपका हाथ मुझ पर हो और आपकी दया मुझ पर उतरे, क्योंकि मेरी आत्मा इस घृणित और अशुद्ध शरीर से विदा लेते समय क्लेश और पीड़ा में है। यह कभी भी विरोधी की दुष्ट योजनाओं का सामना न करे, और न ही इस जीवन में मेरे द्वारा किए गए पापों—ज्ञात और अज्ञात दोनों—के कारण अंधकार में रोका जाए! हे प्रभु, मुझ पर दया करो, और मेरी आत्मा कभी भी दुष्ट राक्षसों का उदास दृश्य न देखे, बल्कि इसे आपके उज्ज्वल और अत्यंत तेजस्वी स्वर्गदूतों द्वारा स्वीकार किया जाए! अपने पवित्र नाम का महिमामंडन हो, और अपनी शक्ति से मुझे अपने दिव्य न्याय के समक्ष लाओ। जब मेरा न्याय होगा, तो इस संसार के अधिपति का हाथ मुझे न पकड़े कि वह मुझे, एक पापी को, नरक की गहराइयों में फेंक दे; बल्कि मेरे सामने खड़े हो और मेरा उद्धारकर्ता और मध्यस्थ बनो, क्योंकि ये शारीरिक यातनाएँ आपके सेवकों के लिए एक आनंद हैं। हे प्रभु, इस जीवन के कामनाओं से कलंकित मेरी आत्मा पर दया करें, और उसे पश्चाताप और स्वीकारोक्ति से शुद्ध होकर ग्रहण करें। क्योंकि आप युगों-युगों तक धन्य हैं। आमीन[8845] ।

जब संत ने अपनी प्रार्थना समाप्त कर ली और भट्टी पहले से ही लाल-गरम थी, तो उन्होंने क्रॉस का चिह्न बनाया और उसमें प्रवेश किया, गाते और कहते हुए:

'हे प्रभु यीशु मसीह! मैं अपनी आत्मा तेरे हाथों में सौंपता हूँ!'

इस प्रकार उनका निधन हो गया। आग ने उनके पवित्र शरीर को कोई हानि नहीं पहुँचाई, और न ही उसके एक भी बाल को छुआ। उनका निधन 13 दिसंबर को हुआ। धन्य सेबास्टे के बिशप व्लासियस ने संतों यूस्ट्राटियस और ओरेस्ट्स के अवशेषों को लिया और शहीद की वसीयत में लिखा सब कुछ पूरा किया[8846] , और उन्होंने पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा, त्रिमूर्ति में एक परमेश्वर की महिमा की, जिनकी महिमा और सामर्थ्य युगानुयुग होती रहे। आमीन।

- पाँच पवित्र शहीदों का चमत्कार

कॉन्स्टेंटिनोपल के पास ओलंपस नामक एक मठ था, जिसमें पाँच पवित्र शहीदों: यूस्ट्रैटियस, ऑक्सेन्टियस, यूजिनियस, मार्डारियस और ओरेस्ट्स को एक चर्च समर्पित किया गया था। और आदिकाल से यह प्रथा थी कि पवित्र शहीदों की स्मृति में मनाए जाने वाले पर्व के दिन, सम्राट और पैट्रिआर्क इस मठ में आते थे और संतों की देखभाल के

[8844] प्राचीन काल में यह नाम शिविर में एक सैन्य कमांडर के निजी क्वार्टरों के साथ-साथ एक न्यायाधीश के क्वार्टरों को भी दिया जाता था।

[8845] संत यूस्ट्राटियस की यह मृत्यु-शय्या की प्रार्थना धार्मिक उपयोग के लिए अपनाई गई है और शनिवार आधी रात की प्रार्थना सभा में निम्नलिखित रूप में पढ़ी जाती है: 'मैं तेरा महिमामंडन करता हूँ, हे प्रभु, क्योंकि तूने मेरी विनम्रता पर दृष्टि डाली है, और यद्यपि तूने मुझे मेरे शत्रुओं के हाथों में सौंप दिया, फिर भी तूने मेरी आत्मा को संकट से बचाया है। और अब, हे प्रभु, तेरा हाथ मुझ पर छा जाए, और तेरा दयालुपन मुझ पर हो: क्योंकि मेरा प्राण व्याकुल है, और अपने मार्ग में क्लेशित है, मेरे दीन और अशुद्ध शरीर के कारण: कहीं ऐसा न हो कि दुष्ट इसके विरुद्ध षड्यंत्र रचे और इसे अंधकार में डाल दे, उन पापों के कारण जो मैंने इस जीवन में, जाने-अनजाने, किए हैं। हे प्रभु, मुझ पर दया करें, और मेरी आत्मा दुष्ट राक्षसों की अँधेरी दृष्टि न देखे: बल्कि आपके उज्ज्वल और परम तेजस्वी स्वर्गदूत इसे ग्रहण करें। अपने पवित्र नाम को महिमा प्रदान करें, और अपनी शक्ति से मुझे अपनी दिव्य न्याय-सिंहासन तक उठाएँ; जब मेरा न्याय होगा, तो इस संसार के अधिपति का हाथ मुझे न पकड़े, ताकि वह मुझे, एक पापी को, अधोलोक की गहराइयों में न फेंक दे: परन्तु मेरे सामने खड़े हो और मेरा उद्धारकर्ता और मध्यस्थ बनो, क्योंकि ये शारीरिक यातनाएँ आपके सेवकों के लिए आनंद हैं। हे प्रभु, इस जीवन के वासनाओं से कलंकित मेरी आत्मा पर दया करो, और उसे पश्चाताप और स्वीकारोक्ति के द्वारा शुद्ध रूप में ग्रहण करो, क्योंकि आप युगानुयुग धन्य हैं, आमीन।'

[8846] पवित्र शहीदों यूस्ट्रैटियस, ऑक्सेन्टियस, यूजिनियस, मार्डारियस और ओरेस्ट्स की मृत्यु चौथी शताब्दी की शुरुआत में हुई। बाद में, उनके मूल शहर अरावरका में, जहाँ उनके पवित्र अवशेष दफनाए गए थे, उनके सम्मान में एक चर्च बनाया गया, और उनके अवशेषों के माध्यम से चमत्कार हुए। तसरेग्राड गेट्स के बाहर इन शहीदों को समर्पित ओलंपस नामक एक मठ था। यहाँ, पैट्रिआर्क उनके स्मरण दिवस पर हर साल एक प्रार्थना सभा आयोजित करते थे। वर्तमान में, उनके अवशेष रोम में, रावेना के सेंट अपोलिनारिस चर्च में विराजमान हैं।

लिए आवश्यकतानुसार भेंटें चढ़ाते थे। क्योंकि मठ के संस्थापक ने यह आदेश दिया था कि उनके भिक्षुओं को न तो खेती-बाड़ी के काम में और न ही अंगूर की बेलों की खेती में संलग्न होना चाहिए, बल्कि उन्हें पूरी तरह से पवित्र शहीदों की मध्यस्थता के प्रति समर्पित होकर केवल अपनी मुक्ति पर ध्यान देना चाहिए। और चूँकि भिक्षुओं ने संस्थापक के इस आज्ञा का कड़ाई से पालन किया, पवित्र शहीदों ने मठ की आवश्यकताओं को पूरा करना कभी बंद नहीं किया। लेकिन ईश्वर की दया आमतौर पर परीक्षा से अविभाज्य होती है, ताकि यह और भी स्पष्ट हो जाए कि जो ईश्वर में आशा रखते हैं और उसकी खोज करते हैं, उन्हें किसी भी भलाई से वंचित नहीं किया जाएगा, ठीक वैसे ही जैसे जो अपनी संपत्ति पर निर्भर करते हैं, उन्हें उससे वंचित नहीं किया जाता।

और इस प्रकार ईश्वर, जो सभी का सार्वभौमिक प्रबंधक है, ने अपने कष्ट-भोगियों को समर्पित स्थान को और अधिक गौरवान्वित करने तथा उन लोगों पर अपनी दया दिखाने की इच्छा से जो उनकी पूजा करते हैं और यहाँ अभावों और दुखों के बीच परिश्रम करते हैं, ऐसा प्रबंध किया कि उत्सव के दौरान समुद्र से एक भयंकर तूफान उठा, जिसके साथ भारी बारिश और ठंड थी, ताकि शहर से कोई भी उत्सव में शामिल होने न आ सके। मठ के भिक्षुओं ने संध्या और कैनन का गायन करने के बाद निराशा में थे, क्योंकि उनके पास खाने के लिए बिल्कुल कुछ भी नहीं था; और उन्होंने पवित्र शहीदों से उनकी प्रतिमा के सामने यह कहते हुए शिकायत भी की:

'कल सुबह हम इस जगह को छोड़ देंगे और अपने-अपने रास्ते चले जाएँगे, प्रत्येक अपनी आजीविका की तलाश में।'

जब शाम हुई, तो द्वारपाल महाधर्माध्यक्ष के पास आया और कहा:

'मुझे आशीर्वाद दीजिए, पिताजी, कि मैं आपके सामने एक ऐसे व्यक्ति को ला सकूँ जो ज़ार के साथ दो लदे हुए ऊँटों के साथ आया है।'

मठाधीश ने आशीर्वाद दिया, और एक प्रतिष्ठित दिखने वाला व्यक्ति अंदर आया और बोला:

'ज़ार ने तुम्हारे लिए राशन और शराब भेजी है।'

भिक्षुओं ने प्रार्थना करके भोजन लाया, और सभी ने खाया-पिया, जबकि बची हुई सामग्री बाद के लिए अलग रख दी गई। और इससे पहले कि वे अपनी कोठरियों में जाने का समय भी निकाल पाते, द्वारपाल फिर से अंदर आया और घोषणा की कि रानी का एक संदेशवाहक आया है; उसे अंदर लाया गया और उसने मठाधीश को सूचित किया कि रानी ने उनके लिए उत्तम मछलियाँ और दस सोने के सिक्के भेजे हैं। राजदूत ने अपनी बात खत्म भी नहीं की थी कि द्वारपाल फिर से अंदर आया और उसने बताया कि पैट्रिआर्क की ओर से एक आदमी आया है। जब नए राजदूत को अंदर लाया गया, तो उसने मठाधीश को चर्च के बर्तन देते हुए कहा: 'पैट्रिआर्क की इच्छा है कि कल यहाँ लिटिर्जी का अनुष्ठान किया जाए'[8847] .

आचार्य ने आए हुए लोगों की ओर मुड़कर कहा:

'जो कुछ भी ईश्वर को प्रसन्न करता है, वह उसे साकार कर देगा। और जहाँ तक आपकी बात है – क्या आप यहाँ रात बिताएँगे, या तुरंत चले जाएँगे?'

उन्होंने उत्तर दिया:

'अगर हमें कोई जगह मिल जाए, तो हम सुबह तक यहीं रहेंगे।' मठाधीश ने आदेश दिया कि उन्हें चर्च के बरामदे में ठहराया जाए और, जब उन्होंने उन्हें रात के लिए विदा किया, तो उनके नाम पूछे। जो ज़ार के पास से आया था उसने अपना नाम ऑक्सेनटियस बताया, जो ज़ारिना के पास से आया था – यूजीन, और जिसने पात्र पाट्रिआर्क के पास से लाया था – मारडारियस।

जब मातिन्स (प्रभात-प्रार्थना) गाई जा रही थी, दो व्यक्ति चिर्च में दाखिल हुए। कैथिस्मा '[8848] ' के बाद, मठाधीश ने आदेश दिया कि पवित्र शहीदों के दुखों के बारे में निर्धारित पाठ पढ़ा जाए, लेकिन भिक्षुओं ने कहा:

'पढ़ने की क्या बात है: आखिरकार, उत्सव के लिए शहर से कोई नहीं आया है।'

तब चर्च में प्रवेश करने वाले एक अज्ञात व्यक्ति ने कहा:

[8847] ओलिपिस का यह गरीब मठ निश्चित रूप से एक पैट्रिआर्क की भव्य सेवा के लिए आवश्यक सभी चीज़ों का स्वामी नहीं था, और पैट्रिआर्क, यदि वह वहाँ सेवा करना चाहता था, तो स्वाभाविक रूप से उसे अपने संसाधनों से ही पूजा के बर्तन, वेस्टमेंट (धार्मिक वस्त्र) आदि भेजने पड़ते थे।
[8848] कैथिस्मा सुबह की दैवीय पूजा का एक अभिन्न अंग है और इसमें संक्षिप्त स्तुति-गीतों के साथ भजनों का पाठ शामिल होता है। पूरे भजन-संग्रह, जिसमें 150 भजन शामिल हैं, को 20 कैथिस्मा में विभाजित किया गया है, जिनमें से प्रत्येक को आगे तीन स्तुति-गीतों में विभाजित किया गया है। यह विभाजन प्राचीन काल में शुरू हुआ था।

'मुझे कतिाब दो; मैं इसे पढ़ूंगा।'

उन्होंने वह कतिाब उसे दे दी, और जब वह उस अंश पर पहुँचा जहाँ लखिा है: 'यूस्ट्राटयिस को नुकीले कीलों वाले लोहे के जूतों में जकड़ा गया था', तो उसने एक आह भरी और अपने हाथ में पकड़े हुए लाठी से चर्च के फर्श पर प्रहार कयिा – और वह लाठी फर्श में धँसकर शाखाएँ देने लगी और एक पेड़ में बदल गई।

उसके पीछे खड़े लोगों को एहसास हुआ कि वे कसिकी ओर देख रहे हैं और उन्होंने पूछा:

'क्या यह तुमने अपने लिए कयिा, यूस्ट्राटयिस?'

'नहीं,' उसने जवाब दयिा, 'मेरे अतीत के दुखों की तुलना उनके बदले मलिने वाले इनाम से कुछ भी नहीं; यह इसलिए कयिा गया ताकि हमारा उत्सव शहर से आने वाले मेहमानों के बनिा न रहे।'

और जैसे ही उसने यह कहा, वे पाँचों अदृश्य हो गए। मठाधीश, चर्च से बाहर आकर, मठ के तहखाने को रोटी और मछली से भरा हुआ पाया, और सभी खाली पात्र शराब से भरे हुए थे। वे हुए चमत्कार की सूचना राजा और धर्मगुरु को देने के लिए दौड़े; वे मठ आए, और सभी ने ईश्वर की स्तुति की और उनके पवत्रि शहीदों की प्रशंसा की। वह लाठी, जो एक पेड़ में बदल गई थी, को काटकर आशीर्वाद के रूप में बाँट दयिा गया, और उस दनि पवत्रि शहीदों की प्रार्थनाओं के द्वारा कई बीमारों का रोगमुक्त हो गया।

शहीद यूस्ट्राटयिस का कोंटाकयिन, स्वर 2:

हे कष्ट-भोगी, तुम अज्ञानता के अंधकार में बैठे लोगों के लिए एक अत्यंत तेजस्वी दीपक के रूप में प्रकट हुए हो: क्योंकि, वशि्वास को भाले के समान हथयिार बनाकर, तुमने शत्रुओं के डगमगाने से भय नहीं माना, हे वक्ताओं में सबसे वाक्पटु यूस्ट्राटयिस।

शहीद यूस्ट्राटयिस का एक और कोंटाकयिन, स्वर 3:

हे सर्वधन्य ख्रीस्त-शहीद यूस्ट्राटयिस, हम आपको इस कारण सम्मानति करते हैं, क्योंकि आपने दव्यि वषियों में अन्यायियों के समक्ष बहस करते हुए अत्यंत साहसपूर्ण हृदय से प्रहारों को सहन कयिा; क्योंकि आप ईश्वर की अद्भुत चन्हिों से सुसज्जति थे, और आपने भ्रम की ऊँची ज्वाला को बुझा दयिा।

संत लूसयिा का शहीदीकरण

13 दसिंबर को स्मरण कयिा जाता है

जब पवत्रि शहीद अगाथा की कीर्ति पूरे ससिलिी में फैल गई और सरिाक्यूज़ के नविासी[8849] शहीद की पवत्रि कफ़न को श्रद्धांजलि देने के लिए कैटानयिा[8850] उमड़ पड़े, तो ऐसा हुआ कि लूसयिा नाम की एक युवती, जो कुलीन वंश की थी और सरिाक्यूज़ के सभी लोगों द्वारा बहुत सम्मानति थी, अन्य लोगों के साथ त्योहार में शामलि होने के लिए जा रही थी, और उसकी माँ यूटकियिा, जो चार साल से रक्तस्राव से पीड़ति थीं और कसिी भी चकित्सिीय उपचार से ठीक नहीं हो पा रही थीं। शहीद की कब्र पर आयोजति चर्च सेवा के दौरान, सुसमाचार का वह अंश पढ़ा गया जसिमें उस रक्तस्राव वाली महलिा की कहानी बताई गई है जसिे मसीह के वस्त्र के कनिारे को छूकर चंगा कयिा गया था। जब सुसमाचार पढ़ा जा रहा था, तो लूसयिा ने अपनी माँ से कहा:

[8849] सरिाक्यूज़ ससिलिी द्वीप के पूर्वी तट पर पहली ग्रीक बस्तयिों में से एक थी, और बाद में द्वीप का सबसे बड़ा और सबसे अमीर शहर बन गया।

[8850] कैटानयिा ससिलिी द्वीप के पूर्वी तट पर एक प्राचीन शहर है; यह अब शक्षिा और वाणज्यि का एक संपन्न केंद्र है, और 100,000 से अधकि की आबादी वाला एक घनी आबादी वाला शहर है।

'माँ, यदि आप उस पर विश्वास करती हैं जो पढ़ा जा रहा है, तो यह भी विश्वास करें कि संत अगथिया, जिन्होंने मसीह के नाम के लिए कष्ट सहे, उन्हें उसी के सामने खड़े होने के योग्य समझा गया है, जिसके नाम के लिए उन्होंने कष्ट सहे। इसलिए, विश्वास के साथ उनकी कफ़न को छुएं, और आप ठीक हो जाएँगी।'

जब चर्च की प्रार्थना सभा समाप्त हुई और भीड़ छंट गई, तो माँ और बेटी पवित्र शहीद की कफ़न के सामने साष्टांग दंडवत हो गईं और आँसुओं के साथ उनसे मदद की विनती करने लगीं। उन्होंने बहुत देर तक प्रार्थना की, और अंत में लूसिया को नींद आ गई और, अपने सपने में, उन्होंने पवित्र शहीद अगाथा को स्वर्गदूतों के बीच, कीमती रत्नों से सुसज्जित देखा। उन्होंने लूसिया से कहा:

'मेरी बहन लूसिया, प्रभु की कुंवारी! तुम मुझसे वह क्यों मांगती हो जो तुम स्वयं इसी क्षण दे सकती हो? तुम्हारा विश्वास तुम्हारी माँ के लिए मदद लाता है, और वह पहले से ही ठीक हैं। और जैसे कैटानिया शहर मुझसे महिमामय है, वैसे ही सिराक्यूज़ तुम्हारे द्वारा सम्मानित होगा, क्योंकि अपनी कुंवारी अवस्था में तुमने मसीह को प्रसन्न करने वाला एक निवास तैयार किया है।'

लुसी तुरंत जाग उठी, काँपते हुए उठ खड़ी हुई, और अपनी माँ से कहा:

'माँ, माँ! आप ठीक हो गई हैं! मैं आपसे उस संत के नाम की कसम खाती हूँ, जिन्होंने अपनी प्रार्थनाओं से आपको ठीक किया: मुझे फिर कभी किसी मंगेतर के बारे में मत बताइए (उसकी सगाई पहले ही हो चुकी थी) और न ही मेरे पापी शरीर से किसी नश्वर बच्चे के जन्म की इच्छा करें; परन्तु वह सब मुझे दे दो जो तुमने एक नश्वर पुरुष से मेरी शादी के लिए मुझे देने का इरादा किया था, ताकि मैं अनश्वर वर, प्रभु मसीह, जो मेरे कुँवारीपन के रक्षक हैं, के पास जा सकूँ।

उसकी माँ ने उत्तर दिया:

'नौ साल तक तुम्हारे पिता की संपत्ति को सावधानी से संभालकर, मैंने तुम्हारी विरासत को कम करने के बजाय बढ़ाया है; और जो कुछ भी मैंने खुद अर्जित किया है और जो भविष्य में अर्जित कर सकती हूँ, वह भी तुम्हारे उपयोग के लिए है। लेकिन पहले मुझे दफ़ना दो, और फिर पूरी संपत्ति के साथ अपनी इच्छा के अनुसार व्यवहार करो।'

लूसिया ने अपनी माँ से कहा, 'माँ, मेरी बात सुनो, ईश्वर को वह वस्तु देना विशेष रूप से प्रसन्न नहीं करता जिसे कोई अपने साथ नहीं ले जा सकता या अपने लाभ के लिए उपयोग नहीं कर सकता। लेकिन यदि आप ईश्वर को वास्तव में कुछ प्रसन्न करने वाला देना चाहती हैं, तो उन्हें वह दें जिसका आप स्वयं उपयोग कर सकती हैं। जब आप मरणासन्न होंगी, तो आपको इस संसार की किसी भी चीज़ की आवश्यकता नहीं रहेगी, और जो कुछ भी आप तब देना चाहेंगी, उसे आप अपने साथ नहीं ले जा पाएँगी: इसलिए, जब तक आप जीवित और स्वस्थ हैं, अपनी संपत्ति मसीह को दे दें, और जो कुछ भी आप मुझे देना चाहती थीं, उसे अभी से उन्हें देना शुरू कर दें।

इस प्रकार लूसिया अपनी माँ से हर दिन यही कहती रही, जब तक कि आखिरकार संपत्ति का वितरण शुरू नहीं हो गया, और गरीबों की जरूरतों के लिए इसका दैनिक उपयोग होने लगा। लूसिया के मंगेतर को संपत्ति, कीमती बर्तन और रत्नों की बिक्री के बारे में पता चला; इस बात से दुखी होकर, उसने अपनी मंगेतर की दाई से सवाल करना शुरू कर दिया:

'इसका क्या मतलब है,' उसने पूछा, 'कि मैं अचानक जमीनों और गहनों की बिक्री के बारे में सुन रहा हूँ?'

नर्स, जो एक समझदार महिला थी, ने उत्तर दिया:

'आपकी मंगेतर को पता चला है कि एक विरासत में मिली संपत्ति 1,000 ज़्लॉटी या उससे अधिक में बिक रही है, जिसे वह आपके लिए खरीदना चाहती है; और इसलिए वह वह राशि जुटाने के लिए कुछ चीज़ें बेच रही है।'

दूल्हे ने उसकी बातों पर विश्वास किया और यह सोचकर कि यह एक भौतिक खरीद का मामला है, उसने कोई आपत्ति नहीं जताई और यहाँ तक कि अपनी मंगेतर और उसकी माँ को संपत्ति बेचने के लिए प्रोत्साहित भी किया। लेकिन जैसे ही उसे पता चला कि सब कुछ गरीबों और बेसहारों, विधवाओं और अनाथों में बाँट दिया गया था, और यात्रियों तथा ईश्वर के सेवकों पर खर्च कर दिया गया था, तो वह तुरंत गया और शहर के राज्यपाल, पास्कासियस को रिपोर्ट किया कि उसकी मंगेतर एक ईसाई है और, परिणामस्वरूप, राजा के फरमानों की विरोधी है[8851] .

पास्कासियस ने लूसिया को बुलाया और पहले तो उसे मौखिक रूप से मूर्तियों की बलि चढ़ाने के लिए मनाने की कोशिश की।

धन्य लूसिया ने उन्हें उत्तर दिया:

[8851] अर्थात् रोमन सम्राटों के वे आदेश, जिनके अनुसार सभी रोमन नागरिकों को मूर्तिपूजक देवताओं को बलिदान अर्पित करना अनिवार्य था।

'जीवित बलिदान और परमेश्वर पिता के सामने शुद्ध, निर्दोष भक्ति, अनाथों और विधवाओं की उनकी विपत्तियों में देखभाल करना है। पिछले तीन वर्षों से, मैंने जीवित परमेश्वर को बलिदान चढ़ाने के अलावा कुछ नहीं किया है। अब मेरे पास उसे अर्पित करने के लिए कुछ भी नहीं बचा है, और इसलिए मैं स्वयं को अर्पित करती हूँ; वह अपनी बलि से अपनी इच्छा के अनुसार करे।"

'ये शब्द,' पश्चासियस ने कहा, 'तुम अपने जैसे ईसाइयों से कह सकती हो, लेकिन मुझसे, जो राजा के कानूनों के प्रवर्तन की देखरेख करता हूँ, इसके बारे में बात करना व्यर्थ है।'

लूसिया ने उत्तर दिया, 'आप राजा के कानूनों का पालन करते हैं, लेकिन मैं ईश्वर के कानूनों का पालन करती हूँ; आप राजाओं से डरते हैं, लेकिन मैं ईश्वर से डरती हूँ; आप राजाओं को नाराज़ नहीं करना चाहते, लेकिन मैं बहुत सावधान रहती हूँ कि ईश्वर को नाराज़ न करूँ; आप राजाओं को खुश करने का प्रयास करते हैं, लेकिन मैं केवल मसीह को खुश करना चाहती हूँ। तो, तुम जो ठीक समझो वही करो; जहाँ तक मेरी बात है, मैं वही करूँगी जो मुझे मेरे भले के लिए जानती हूँ।

'तुमने अपनी विरासत को अपने साथ रहने वालों के साथ बर्बाद कर दिया है,' पास्कासियस ने कहा, 'और इसीलिए तुम खुद एक वेश्या की तरह बोलती हो।'

लूसिया ने उत्तर दिया, 'मैंने अपनी विरासत को एक सुरक्षित स्थान पर रख दिया है, और कभी भी खुद को उन लोगों के साथ जुड़ने नहीं दिया जो आत्मा और शरीर को भ्रष्ट करते हैं।'

पास्कासियस ने पूछा:

'और तुम आत्मा और शरीर के भ्रष्टकर्ता किसे कहती हो?'

लुसी ने उत्तर दिया:

– तुम आत्मा के भ्रष्टकर्ता हो, जिनके विषय में प्रेरित कहते हैं: *'बुरे साथ से अच्छा चरित्र बिगड़ जाता है'* (1 कुरिन्थियों 15:33): तुम लोगों की आत्माओं में व्यभिचार भरते हो[8852] , – ताकि वे स्वर्गीय वधूवर, अर्थात् अपने सृष्टिकर्ता को त्यागकर, शक्तिहीन और निर्जी मूर्तियों की पूजा के द्वारा शैतान का अनुसरण करें। और जो शरीर को भ्रष्ट करते हैं, वे वे हैं जिन्होंने शाश्वत आनंद के बजाय क्षणिक सुखों को प्राथमिकता दी है और अनंत आनंदों के ऊपर क्षणिक आनंदों को स्थान दिया है।

पास्कासियस ने कहा:

– यातना और घावों के विषय में तुम्हारी बकबक बंद हो जाएगी और तुम चुप हो जाओगे।

लुसी ने उत्तर दिया:

'ईश्वर के वचन कभी मौन नहीं होंगे।'

'लेकिन क्या तुम ईश्वर हो?' पास्कासियस ने आपत्ति जताई।

लूसिया ने कहा, 'मैं ईश्वर की सेविका हूँ, और इसलिए मैंने ईश्वर के वचन बोले, ठीक वैसे ही जैसे उन्होंने स्वयं कहा: *"क्योंकि यह तुम नहीं हो जो बोलते हो, बल्कि तुम्हारे पिता की आत्मा है जो तुममें बोलती है"* (मत्ती 10:20)।'

पास्कासियस ने कहा:

'तो क्या पवित्र आत्मा सचमुच आपके भीतर है, और क्या वही आपके द्वारा बोलता नहीं है?'

लुसी ने उत्तर दिया:

'प्रेरित कहते हैं कि जो लोग पवित्र जीवन जीते हैं, वे परमेश्वर के मंदिर हैं, और परमेश्वर का आत्मा उनमें वास करता है' (1 कुरिन्थियों 3:16)।

पास्कासियस ने कहा:

'तो फिर, मैं तुम्हें वेश्यालय भेजने का आदेश दूँगा, ताकि जब तुम अपवित्र हो जाओ तो परमेश्वर का आत्मा तुमसे दूर चला जाए।'

'आत्मा की इच्छा के बिना, शरीर कभी भी अपवित्र नहीं हो सकता,' – लूसिया ने उत्तर दिया: 'भले ही आप मेरे हाथ में धूप का बर्तन रखकर उसी हाथ से जबरदस्ती उसे मूर्तिपूजक वेदी पर फेंक दें, ईश्वर इस दृश्य को देखकर केवल आप पर हँसेंगे, क्योंकि वे हमें हमारे विचारों और स्वैच्छिक कर्मों के लिए न्याय करते हैं, न कि उन कार्यों के लिए जिन्हें

[8852] चर्च संबंधी शब्दावली में व्यभिचार से तात्पर्य केवल एक पुरुष और दूसरे पुरुष की पत्नी के बीच अवैध संबंध, सप्तम आज्ञा के विरुद्ध लज्जास्पद कृत्य तथा अशुद्ध विचारों से ही नहीं, बल्कि कभी-कभी (जैसा कि यहाँ मुख्यतः मामला है) अधर्मीता और मूर्तिपूजा से भी होता है।

दूसरे हमसे जबरदस्ती करवाते हैं; और वह केवल कुँवारी अवस्था से जबरदस्ती वंचित करने की अनुमति देते हैं, ठीक वैसे ही जैसे वह प्रलोभन, डकैती और मूर्तिपूजा की अनुमति देते हैं। इसलिए, भले ही आप आदेश दें कि मुझ पर अत्याचार किया जाए, आप केवल मेरी पवित्रता के पुरस्कार को बढ़ाएंगे।

पास्कासियस ने कहा, 'अगर तुम राजा की आज्ञा का पालन नहीं करोगी तो मैं आदेश दूँगा कि तुम्हें मृत्यु तक अपवित्र किया जाए।'

लुसी ने उत्तर दिया:

'मैं तुम्हें पहले ही बता चुकी हूँ कि तुम कभी भी मुझे पाप करने के लिए राज़ी नहीं कर सकते; तुम मेरे शरीर के साथ जो कुछ भी कर सकते हो, मसीह की दासी उसे सब कुछ तुच्छ समझती है।'

तब पाशासियस, उस भ्रष्ट और अन्यायपूर्ण न्यायाधीश ने, वेश्यालयों के रखवालों को बुलाया और संत को उनके हवाले कर दिया, यह कहते हुए:

'लोगों को इकट्ठा करो और उन्हें तब तक उस पर अपमानजनक शब्द कहने दो जब तक वह मर न जाए।'

जब संत को अपमानित करने के लिए घसीटा गया, तो ईश्वर ने उन्हें इतना भारी बना दिया कि उन्हें उस जगह से हिलाना असंभव हो गया। यातना देने वाले के आदेश पर, लोगों की भीड़ ने उन्हें खींचा और उस जगह से हटाने की कोशिश की; लेकिन जो भी कोशिश करता, वह थक जाता और पसीने से लथपथ हो जाता, जबकि प्रभु की कन्या अडिग खड़ी रहीं। उन्होंने रस्सियाँ लाईं और उन से उसके हाथ-पैर बाँधकर, एक बार फिर पूरी ताकत से उसे खींचने की कोशिश की, लेकिन वह एक पहाड़ की तरह अडिग बनी रही। पास्कासियस हतबुद्धि हो गया और उसे समझ नहीं आ रहा था कि क्या करे। उसने भविष्यवक्ताओं, जादूगरों और सभी मूर्तिपूजक पुरोहितों को बुलाया और उन्हें लुसिया को हिलाने के लिए उसके चारों ओर जादू-टोना करने का आदेश दिया, लेकिन वे कुछ भी हासिल नहीं कर सके: वह जैसे जमीन में कील से ठोक दी गई हो, वैसे खड़ी रही, और उसे एक भी कदम हिलाना असंभव था। उसे हिलाने और खींचकर ले जाने की कोशिश के लिए बैलों के कई जोड़े लाए गए, फिर भी वह अडिग रही।

अंत में, पास्कासियस ने उससे पूछा:

'तुम किस तरह का जादू कर रही हो?'

उसने कहा, 'यह मेरा जादू नहीं है, बल्कि ईश्वर की कृपा की शक्ति है।'

'तो फिर कारण क्या है कि एक हजार पुरुष तुम्हें, एक नाजुक कन्या को, हिला नहीं सकते?'

'यदि आप दस हज़ार पुरुष भी ले आएँ, तो वे भी महसूस करेंगे कि पवित्र आत्मा मुझसे कह रहा है: *"हज़ार तेरे पास गिरेंगे, और दस हज़ार तेरे दहिने हाथ; पर वह तेरे निकट न आएगा"* (भजन संहिता 90:6)।'

उस दुष्ट न्यायाधीश की दुष्ट आत्मा में गहरा कष्ट हुआ। उसके मन में भ्रम छा गया।

पवित्र कन्या ने पूछा, 'तुम क्यों पीड़ित हो, और तुम क्यों बेचैन हो? निश्चय ही तुमने पहले ही अनुभव कर लिया है कि मैं वास्तव में जीवित परमेश्वर का मंदिर हूँ, इसलिए विश्वास करो। यदि तुम अभी भी आश्वस्त नहीं हो, तो जैसा कर रहे हो वैसा ही करते रहो।'

पास्कासियस और भी अधिक क्रोधित और हैरान हो गया, जब उसने देखा कि संत ने उसकी योजनाओं का मज़ाक उड़ाया। उसने आदेश दिया कि उसके चारों ओर एक विशाल अलाव जलाया जाए और उस पर तारकोल, गंधक और उबलता तेल डाला जाए। लेकिन वह, हमारे प्रभु यीशु मसीह के नाम की ढाल लेकर, अडिग और अछूती रही, और अपने यातना देने वाले से कहा:

'मैंने हमारे प्रभु यीशु मसीह से प्रार्थना की कि यह आग मुझ पर कोई प्रभाव न डाले, और ताकि जो मसीह में अपनी आशा रखते हैं, वे आपका मज़ाक उड़ाएँ – मैंने अपने यातनाओं को जारी रखने का अनुरोध किया, ताकि विश्वासियों को यातना के भय से बचाया जा सके, और अविश्वासियों से ईसाई धर्म की निंदा करने का अवसर छीन लिया जाए।'

तब पास्कासियस के कुछ परिचारकों ने, उसे इस कठिन और उलझन भरी स्थिति से बाहर निकालने की इच्छा से, आदेश दिया कि संत को तलवार से गले में वार किया जाए; और फिर, पास्कासियस के साथ, वे अपने घरों में चले गए। हालाँकि, संत, चाहे वह कितनी भी बुरी तरह घायल क्यों न हो गई हो, अपनी ताकत नहीं खोई और लोगों से बात की, यह कहते हुए:

'मैं तुम्हारे लिए यह शुभ समाचार लाई हूँ कि परमेश्वर की कलीसिया को शांति प्रदान की गई है, क्योंकि डायोक्लेटियन ने साहसिन त्याग दिया है, और मैक्सिमियन अब मर गया है।' और जैसे कैटानिया नगर के पास परमेश्वर में

मेरी बहन, संत अगाथा, परमेश्वर के सामने उसकी मध्यस्थ के रूप में हैं, वैसे ही इस नगर के बारे में भी यह जान लो: मुझे परमेश्वर द्वारा इसे बचाने के लिए दिया गया है, बशर्ते कि आप, उनकी इच्छा को पूरा करते हुए, इस पर विश्वास करें।

जैसे ही लूसिया ने ये शब्द कहे, उसकी गर्दन तलवार से भेदी गई थी, तभी लोहे की बेड़ियों में जकड़ा हुआ पास्कासियस अचानक उसके सामने से ले जाया गया। वास्तव यह है कि सिसिलीवासियों ने अपने शासक की जानकारी के बिना, रोम को गुप्त रूप से एक निंदा पत्र भेजा था, जिसमें विस्तार से बताया गया था कि कैसे पास्कासियस ने निर्दयता से देश को लूटा था, और हर तरह की हिंसा के माध्यम से निवासियों को उनकी संपत्ति से वंचित कर दिया था। और इस प्रकार, उसी क्षण, रोम से एक आदेश आया कि पास्कासियस को हथकड़ियों में जकड़कर मुकदमे के लिए वहाँ लाया जाए: वहाँ, पूछताछ के बाद, उसे मौत की सजा सुनाई गई और तलवार से सिर कलम करके उसे फाँसी दे दी गई। जब उसे ज़ंजीरों में जकड़े हुए संत के पास से ले जाया गया, तब वह अभी भी जीवित थी; घातक रूप से घायल होने के बावजूद, वह अचल खड़ी रही, और जब तक पादरी नहीं आ गए और उसने मसीह के परम पवित्र और जीवन-दायक रहस्यों को ग्रहण नहीं कर लिया, तब तक उसमें जान थी – और केवल तब, जब सभी ने, कम्युनियन पूरा करने के बाद, कहा था: 'आमेन', कहकर पवित्र शहीद ने अपनी पवित्र आत्मा को प्रभु के हाथों में सौंप दिया[8853] । उन्हें उनके शहादत स्थल पर सम्मान के साथ दफनाया गया, और उनके अवशेषों पर उनके नाम पर और परमेश्वर की महिमा, एक त्रिमूर्ति में, पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा, जिनकी महिमा सदा रहे। आमेन।

लैट्रस के पूजनीय आर्सेनियस की स्मृति

13 दिसंबर को स्मरण किया जाता है

आदरणीय आर्सेनियस कॉन्स्टेंटिनोपल के मूल निवासी थे, जो कुलीन और धार्मिक माता-पिता के घर पैदा हुए थे। उन्होंने सम्राट की कृपा प्राप्त की और उन्हें कमांडर-इन-चीफ और पेट्रिसियन[8854] नियुक्त किया गया, जो कविरियोट[8855] के थे। एक अवसर पर, वे अपनी सेना के साथ समुद्र पार नाव से जा रहे थे, लेकिन एक भयानक तूफान आ गया, और जहाज, उन पर सवार सभी लोगों के साथ, डूब गए; केवल वे ही बच गए। उसके बाद, आर्सेनियस ने संसार का त्याग कर दिया, संन्यासी व्रत ग्रहण किए और स्वयं को पूरी तरह से प्रार्थना के अभ्यास में समर्पित कर दिया, उपवास, अनवरत जागरण और भारी बेड़ियों के द्वारा अपने शरीर को कष्ट देते हुए। एक सुनसान क्षेत्र में तपस्या के कई चमत्कार करने के बाद, वह एशिया माइनर के माउंट लैट्रस[8856] में आए, जहाँ उन्होंने प्रार्थना और क्रॉस के चिह्न[8857] से एक घातक साँप को मार डाला; फिर वे केलिवारी मठ[8858] में चले गए, जहाँ उन्हें मठाधीश बनाया गया, लेकिन वे उससे हटकर एक गुफा में चले गए, जहाँ से उन्होंने प्रार्थना के द्वारा आने वाले जंगली जानवरों को भगा दिया। भाई-बंधु उसके चारों ओर इकट्ठा हो गए, और उसने उन्हें अपने जीवन के उद्धारदायक उदाहरण और शिक्षाप्रद निर्देशों द्वारा मार्गदर्शन किया। एक पूरे सप्ताह के लिए, रेवरेंड फादर आमतौर पर गहरी मौन और एकांत में अपनी तंग कोठरी में खुद को बंद कर लेते थे; हालांकि, रविवार को वह भाई-बंधुओं को उपदेश देते और भोजन करते थे। अपने कठिन और परिश्रमी तपस्वी प्रयासों और अपने सदाचारी जीवन के माध्यम से, उन्होंने इतनी पूर्णता प्राप्त की कि उन्हें एक देवदूत द्वारा पोषित किया जाता

[8853] संत लूसी शहीद ने वर्ष 304 में शहीद की मृत्यु भोगी। उनकी अवशेषों को सबसे पहले सिरैक्यूज़ से इटली ले जाया गया, फिर मेट्ज़ (पहले लोरेन में एक प्रमुख फ्रांसीसी शहर; अब जर्मन लोरेन में एक प्रथम श्रेणी का किला) ले जाया गया; कॉन्स्टेंटिनोपल में रखे अवशेषों का एक हिस्सा वेनिस ले जाया गया।

[8854] पैट्रिशियन रोमन और, बाद में, बाइज़ेंटाइन साम्राज्य में सबसे ऊँची सामाजिक श्रेणी थे, जो हमारी अपनी वंशानुगत कुलीनता के अनुरूप थे।

[8855] करिया में – एशिया माइनर का एक दक्षिण-पश्चिमी क्षेत्र।

[8856] माउंट लात्रा – सही नाम लोमोस, करिया में एक पर्वत श्रृंखला जो मिलेटस और अमीसस शहरों के पास एशिया माइनर के आंतरिक क्षेत्रों से भूमध्यसागरीय तटरेखा को अलग करती थी; इसे लैट्रो नाम दिया गया, जिसका अर्थ है 'सेवा का पहाड़', क्योंकि यहाँ 11 ऑर्थोडॉक्स मठ थे, जिनका मध्य युग में एक ही आर्किमैंड्राइट द्वारा प्रशासन किया जाता था। तुर्की शासन के तहत, मठों को नष्ट कर दिया गया।

[8857] एस्प एक विशेष प्रकार का साँप है जिसका विष अत्यंत शक्तिशाली और अक्सर घातक होता है।

[8858] एशिया माइनर के दक्षिण-पश्चिम में, कैरिया में

था; अपनी लाठी से उन्होंने कड़वे पानी को मीठे पानी में बदल दिया; और, कई अन्य चमत्कार करने के बाद, वे भाइयों के बीच शांतिपूर्वक परलोक सिधार गए[8859] .

27 दिसंबर

14 दिसंबर (पुराने संस्करण)

पवित्र शहीदों फर्स, ल्यूकियस, कैलनिकिस, फलिमोन, अपोलोनियस और उनके साथियों का कष्टकथा

14 दिसंबर को स्मरणोत्सव

पवित्र शहीदों फरिस, ल्यूकियस और कैलनिकिस का जन्म बिथिनिया क्षेत्र[8860] में हुआ था, और उन्हें केसरिया शहर[8861] में पाला गया था। उन्होंने सम्राट डेसियस[8862] के शासनकाल में मसीह के लिए निम्नलिखित प्रकार से कष्ट उठाए।

[8863]एक प्रांतीय राज्यपाल, जिसका नाम कुम्ब्रसियिस था, निकोमेडिया से केसरिया आया और वहाँ मूर्तिपूजा को उत्साहपूर्वक बढ़ावा दिया, मूर्तिपूजक मंदिरों और बलिदानों तथा मानव जाति के शत्रु—शैतान—की प्रसन्न करने वाली हर चीज़ का बड़े ध्यान से ख्याल रखा। इसके अलावा, उसने सभी स्थानीय निवासियों को मजबूर किया, कुछ को दयालुता से मनाकर और दूसरों को धमकियों से डराकर। इस बीच, केसरिया के नागरिकों में ल्यूकियस नाम का एक व्यक्ति था, जो ईमानदारी, बुद्धिमत्ता, ज्ञान और कुलीनता से युक्त था। हो रहे अन्याय को देखकर, उसकी आत्मा गहराई से व्याकुल हो गई और वह परमेश्वर के लिए और भी अधिक उत्साह से भर गया। अंतत; वह अपने हृदय में जल रही उत्साह की ज्वाला को और अधिक दबा नहीं सका और उसने अपने द्वारा प्रचारित सच्चे धर्म को और अधिक छिपाने से इनकार कर दिया। अचानक, वह राज्यपाल के सामने उपस्थित हुआ और कहा:

'कुम्ब्रिक, हे नीच, तू असंवेदनशील और बधिर मूर्तियों की पूजा करके अपनी ही आत्मा के विरुद्ध हथियार क्यों उठाता है, और अपने साथ कई अन्य लोगों को भी इसी दुखद भूल में क्यों खींचता है?' ऐसे लोग पत्थरों और पेड़ों से भी अधिक असंवेदनशील होते हैं, क्योंकि वे अपने सच्चे ईश्वर और उद्धारकर्ता को जानने से इनकार करते हैं और भूल-चूक के अंधकार को त्यागकर प्रकाश में चलना नहीं चाहते।

पागल शासक, उससे कही गई सच्चाई को सहन न कर सका, और इन शब्दों पर क्रोधित हो उठा, और तुरंत, बिना किसी पूछताछ के, लेविकियस को कोड़े मारने का आदेश दे दिया। लेकिन लेविकियस ने स्वेच्छा से अपने कष्टों को स्वीकार करते हुए परमेश्वर का धन्यवाद किया, जिससे उसके यातनाकर्ता का क्रोध और भी बढ़ गया, और उसे तब तक यातना दी गई जब तक कि उसे पीटने वाले थक नहीं गए। पिटाई से उसका शरीर बुरी तरह पिटकर थक गया था, और उसने अपने शरीर से पूर्ण मुक्ति के लिए प्रार्थना की, क्योंकि वह प्रभु के पास जाना चाहता था। शासक ने स्वयं, , इस इच्छा को पूरा करने में सहायता की, और शहीद को शहर के बाहर ले जाकर सिर कलम करने का आदेश दिया। जब उसके यातना देने वालों ने संत को मृत्युदंड के लिए ले जाया, तो वह बिना किसी डर या चिंता के चला, उसके चेहरे पर दर्द या पीड़ा का कोई संकेत नहीं था, बल्कि वह आनंद और परमानंद से प्रकाशित हो रहा था, मानो उसे मृत्युदंड के लिए नहीं बल्कि राज्याभिषेक

[8859] सेंट आर्सेनियस ऑफ लैट्रस के जीवन की सटीक तारीखें अज्ञात हैं; आम तौर पर यह माना जाता है कि वे 8वीं और 10वीं शताब्दी के बीच की थीं।

[8860] बिथिनिया – एशिया माइनर के उत्तर-पश्चिम में रोमन साम्राज्य का एक प्रांत।

[8861] यह, बेशक, फिलिस्तीन में केसरिया को संदर्भित करता है।

[8862] उन्होंने 249 से 251 ईस्वी तक शासन किया।

[8863] निकोमेडिया – बिथिनिया का एक शहर। बाद में, डायोक्लेटियन और कॉन्स्टेंटिन द ग्रेट के शासनकाल के दौरान, यह रोमन सम्राटों की राजधानी रहा।

के लिए ले जाया जा रहा हो। शहर से बहुत दूर, उनका सिर कलम कर दिया गया, और वे अपने इस पराक्रम के लिए अपना अक्षय मुकुट प्राप्त करने हेतु स्वर्ग सिधार गए।

कुम्व्रकि की क्रूरता की खबर जल्द ही सभी पड़ोसी राज्यों में फैल गई, और ईसाई उसके क्रूरता के डर से छिपने लगे। लेकिन धन्य फरिस (हालांकि उसका अभी तक बपतिस्मा नहीं हुआ था, बल्कि वह केवल धर्मोपदेश-शिक्षार्थियों में से एक था), ईश्वर के प्रति उत्साह से लैस होकर, उत्पीड़क के सामने उपस्थिति हुआ और कहा: 'आपको नमस्कार, अति प्रतिष्ठित शासक!'

और जब यातनाकर्ता ने उनका अभिवादन लौटाया, तो फर्स ने जारी रखा:

'क्या किसी को आपके, न्यायाधीशों के, सामने अपनी मन की बात कहने की अनुमति है, या फिर व्यक्ति को आपके आदेश का इंतज़ार करना चाहिए और तब भी एक शब्द नहीं बोलना चाहिए?'

गवर्नर ने, मानो उसे ल्यूकियस के साथ किया गया अपना कृत्य भूल ही गया हो, उत्तर दिया:

'हाँ, इसकी अनुमति है, और आज तक यह बोलने की स्वतंत्रता किसी से भी नहीं छीनी गई है, खासकर यदि किसी के पास कुछ ऐसा कहने को हो जो सर्वजन हितिय हो।'

तब फरिस ने कहा:

'तो फिर, आत्मा के लिए लाभदायक चीज़ से अधिक लाभदायक और क्या हो सकता है? और फिर भी मैं देखता हूँ कि आप कई लोगों पर अत्याचार करते हैं और उन्हें मोक्ष से वंचित करते हैं, उन्हें सच्चे धर्म से भटकाते हैं और, अपनी ही दुर्भावना से, उन्हें मूर्ति पूजा में खींचते हैं। इससे तुम अपनी आत्मा पर संपूर्ण अग्निमय गेहेना (नरक) को प्रज्वलित कर रहे हो। इसलिए, मैंने तुमसे निडरता और स्वतंत्रता से बात करने और तुमसे यह जानने का संकल्प लिया है कि तुमने—स्वर्ग और पृथ्वी के सृष्टिकर्ता और सभी मानवजाति को त्यागकर—मानव हाथों की कृतियों की पूजा करना एक कानून क्यों बना दिया है, जैसे किसी वृक्ष से कह रहे हो: 'तुम मेरे पिता हो' (जैसे पवित्र भविष्यवक्ता यिर्मयाह भी मूर्तिपूजकों की निंदा करते हैं (यिर्म. 2:27)) और एक पत्थर से: 'तुमने मुझे जन्म दिया'? और ऐसा क्यों है कि आपकी एकमात्र चिंता यह है कि सभी लोगों को (यदि संभव हो तो) आपके हानिकारक विचारों के तरीके को अपनाने के लिए मना लें?

इस पर शासक ने उत्तर दिया:

'तुम्हारी अनुचित और अवांछनीय बात यह दर्शाती है कि तुम ईसाई धर्म से संक्रमित हो गए हो। हालाँकि, इन तुच्छ प्रश्नों और उनके झूठे समाधानों को उन लोगों पर छोड़ दें जो अपना समय स्कूलों में बिताते हैं और लोगों के मामलों की चिंताओं में समर्पित नहीं हैं; लेकिन अब शाही आदेश का पालन करें और देवताओं को बलिदान चढ़ाएँ। यदि आप ऐसा करने में विफल रहते हैं, तो आपको अपने शब्दों के लिए हमसे प्रतिशोध भुगतना होगा - आपके लिए तैयार की गई यातनाओं में।

'चूंकि आप ईश्वर की तर्कशील रचनाएँ हैं,' संत ने उत्तर दिया, 'आपको कोई भी काम जल्दबाज़ी में या बिना सावधानीपूर्वक विचार के नहीं करना चाहिए। लेकिन अगर आप अपने राजा के मूर्खतापूर्ण आदेश का पालन करना चाहते हैं, तो जैसा कहा जाता है वैसा ही करें।'

कुम्व्रकियोस ने कहा:

'मुझे लगता है कि हमारी सहनशीलता ही तुम्हें इतना अहंकारी बना रही है। लेकिन, यह देखते हुए कि तुम एक समझदार और बुद्धिमान व्यक्ति हो, मैं तुम्हें आज्ञा मानने की सलाह देता हूँ और इस प्रकार यातना से बचो। तो, वेदी पर जाओ और देवताओं को नमन करो, क्योंकि इस प्रकार तुम्हारे पिछले पापों को क्षमा कर दिया जाएगा, तुम महान राजा के मित्र बन जाओगे, और अपना शेष जीवन हमारे साथ बड़े सम्मान में बिताओगे।

'मैंने इस मामले पर बहुत विचार किया है,' धन्य व्यक्ति ने उत्तर दिया, 'और यह मत सोचो कि तुम मुझे बिना तैयारी के या पहले से सब कुछ सोचे-समझे पकड़ गए हो। क्योंकि मैंने पहले स्वयं से ही सब कुछ विस्तार से परखा, और सावधानीपूर्वक जांच के बाद मुझे यह विश्वास हो गया कि आपके देवता आत्मा रहित मूर्तियाँ हैं और उनके मंदिर अशुद्ध हैं; और मैंने उनका उपहास किया है और शुद्ध और सच्चे ईसाई धर्म को चुना है। इसलिए, उस आज्ञा को पूरा करने में देरी न करें जो राजा ने आपसे हम ईसाइयों के संबंध में दी है।"

संत के इन शब्दों से यातना देने वाले को क्रोध आ गया, और उसने तुरंत अपने कुछ नौकरों, जो अपनी ताकत के लिए जाने जाते थे, को आदेश दिया कि वे संत को अपने मुक्कों से बुरी तरह पीटें, और फिर उसके हाथों और पैरों में पट्टियाँ बाँधकर पूरी ताकत से अलग-अलग दिशाओं में खींचें। जब ऐसा किया गया, तो उसके अंग-प्रत्यंग अपने जोड़ों से उखड़ गए

और फट गए, लेकिन शहीद ने इसे धैर्यपूर्वक और शांत मुख से सहन किया। यातना देने वाले ने आदेश दिया कि उसके नाखूनों से उसकी आँखें निकाल दी जाएँ, उसके जबड़े तोड़ दिए जाएँ, और तांबे के हथौड़ों से उसके दाँत तोड़ दिए जाएँ। फिर भी, अपनी यातनाओं के बीच भी, संत यातना देने वाले पर हँस पड़े, जिससे वह और भी अधिक क्रोधित हो गया। कुम्ब्रिक ने टिन पिघलाने, एक लोहे का बिस्तर तैयार करने और शहीद को उस पर पेट के बल लिटाने का आदेश दिया; जबकि उसने स्वयं अपने जादूगरों और मनाने वालों को बुलाया, ताकि वे अपने शब्दों से शहीद को बहका सकें। उन्होंने संत से शासक के प्रति आज्ञाकारिता दिखाने के लिए कहना शुरू कर दिया, भले ही केवल कुछ समय के लिए और दिखावे के लिए ही क्यों न हो।

उन्होंने कहा, 'ऐसा करने से, आपको भयंकर यातनाओं से बचाया जाएगा और आप कई आशीर्वाद प्राप्त करेंगे, और आपका ईश्वर मानव स्वभाव की दुर्बलता को जानते हुए आपको क्षमा कर देंगे और क्रोधित नहीं होंगे, क्योंकि जैसा हमने सुना है, वह अच्छे और परम दयालु हैं।'

शहीद ने उत्तर दिया:

'यही तो कारण है कि वह भला और परम दयालु है कि मैं अपने ईश्वर के लिए इन यातनाओं को सहन कर रहा हूँ; क्योंकि यदि तुम, यह सुनने के बाद भी कि तुम्हारे लिए अनंत यातनाएँ प्रतीक्षा कर रही हैं, अपनी गलतियों से सच्चे मार्ग पर नहीं लौटते, तो मैं इन अस्थायी कष्टों को क्यों नहीं साहसपूर्वक सहन करूँ, जिनका पुरस्कार स्वर्ग का राज्य होगा?'

शहीद के इन शब्दों के बाद, उन्होंने उस पर उबलता हुआ टिन डालना शुरू कर दिया। लेकिन कड़ाही में लाया गया टिन तुरंत एक बाढ़ की तरह बह निकला, जिससे पास खड़े कई मूर्तिपूजकों को झुलसाकर मार डाला। हालाँकि, संत अपने बिस्तर से बिना किसी चोट के और पूरी तरह से स्वस्थ उठ खड़े हुए, और उनकी आँखें पहले की तरह ही स्पष्ट रूप से देख सकती थीं। यह चमत्कार देखकर सभी भयभीत हो गए, और राज्यपाल स्वयं भी अत्यंत आश्चर्यचकित रह गया। हालाँकि, उसे उस एक को पहचानना चाहिए था जिसने सब कुछ बनाया है, पर अपनी ही गलती से वह आध्यात्मिक अंधा बना रहा; इस प्रकार धर्मग्रंथ का वचन उस पर पूरा हुआ: *'तुमने बहुत देखा, पर ध्यान नहीं दिया; तुम्हारे कान खुले थे, पर तुमने नहीं सुना'* (यशायाह 42:20)।

और वह शहीद पर और भी अधिक क्रोधित हो गया और, उसे एक जादूगर और जादू-टोना करने वाला कहकर, उसे और भी अधिक यातनाएँ दीं। लेकिन संत ने सब कुछ साहसपूर्वक सहन किया; और ऊपर से एक आवाज सुनाई दी, जिसने तपस्वी को बल दिया, जिसने विधर्मी लोगों को बहुत डर से भर दिया और विश्वासियों को उनके विश्वास में दृढ़ किया।

अपनी ही लज्जा के डर से यातना जारी रखने से बचते हुए, यातना देने वाले ने शहीद को बाँधकर एक कालकोठरी में फेंकने का आदेश दिया, जबकि वह स्वयं घर चला गया, यह सोचते हुए कि वह फर्स पर और भी क्रूर यातनाएँ कैसे थोप सकता है। इस बीच, संत ने कालकोठरी में पूरी लगन से प्रार्थना की कि ईश्वर उन्हें पवित्र बपतिस्मा प्रदान करें। और अचानक, ईश्वर की कृपा से, रात के दौरान उसके बंधन ढीले हो गए, और कालकोठरी के दरवाजे अपने आप खुल गए। कालकोठरी से बाहर निकलने के बाद, संत कैसरिया के बिशप के पास गए, जो उस समय उत्पीड़न से बचने के लिए छिपे रहे थे। शहीद को देखकर बिशप तुरंत उसके पैरों पर गिर पड़े, क्योंकि उन्होंने पहले ही उसके साहस और धैर्य के बारे में सुना था और उसे बहुत मान-सम्मान देते थे। लेकिन शहीद ने बिशप को उठाया और स्वयं उनके पैरों पर गिरते हुए कहा:

'ऐसा न करें, अति सम्माननीय पिता! उस सम्मान को पहले न करें जो मुझे आपको देना चाहिए, क्योंकि मैं आशीर्वाद देने नहीं, बल्कि आशीर्वाद प्राप्त करने आया हूँ।'

बिशप ने उससे कहा:

'आपको ही हमें आशीर्वाद देना चाहिए, क्योंकि आपने सद्गुण की महान शक्ति को इतनी स्पष्ट रूप से प्रदर्शित किया है और इतनी भयंकर यातनाओं को सहकर आत्मा के सबसे उज्ज्वल वस्त्र से स्वयं को सुसज्जित किया है।'

शहीद ने उत्तर दिया, 'मैं ठीक इसी लिए यहाँ आया हूँ, जल और आत्मा से पुनर्जीवित होकर अक्षयत्व के वस्त्र धारण करने के लिए, क्योंकि मुझे अभी तक पवित्र बपतिस्मा का योग्य नहीं समझा गया है। अत; बिना विलंब के मेरी इच्छा पूरी करें और मेरा बपतिस्मा करें।'

बिशप ने तुरंत फर्स को बपतिस्मा दिया, जो जल-कुंड से निकलते हुए चिल्ला उठे:

'हे प्रभु यीशु मसीह, मेरे परमेश्वर, जिन्होंने मुझे जल और आत्मा द्वारा पुनर्जन्म दिया है! यह अनुग्रह करें कि मेरी पीड़ाओं के द्वारा मैं भी उस बपतिस्मा का योग्य ठहरूँ, जिससे आप बपतिस्मा पाए थे, और आपके दुःख के प्याले से पीकर, आपके दुःख में सहभागी बनूँ।'

तब, बशिप से बात करके और उनसे वदिा लेकर, मसीह का शहीद एक अद्भुत प्रकाश के आगे-आगे अपने कालकोठरी में लौट आया, जबकि पवित्र स्वर्गदूत उसके पीछे-पीछे चल रहे थे, जिसे कुछ योग्य लोगों ने स्पष्ट रूप से देखा। कालकोठरी में, उसने अपना समय अपनी नियमित प्रार्थनाओं में बिताया।

उस समय, सिल्वानस नामक एक प्रतिष्ठित व्यक्ति, जो जन्म से फारसी और एक क्रूर तथा निर्दयी व्यक्ति था, ने स्वयं को सम्राट का शुभचिंतक और सहयोगी दिखाने की इच्छा से, सम्राट से यह अधिकार मांगा कि वह यह जांच करे कि क्या ईसाइयों का विनाश करने के लिए नियुक्त यातना देने वाले वास्तव में सम्राट के आदेशों का पालन कर रहे थे। यह अधिकार प्राप्त करने के बाद, वह निकीआ[8864] और केसरिया की यात्रा पर गया, हर जगह मूर्तियों को बलिदान चढ़ाते हुए और ईसाई रक्त से पगन त्योहारों को चिह्नित करते हुए। अन्य बातों के अलावा, उसे महान फर्स के बारे में सूचित किया गया कि उसे किसी भी प्रकार की यातना से तोड़ा नहीं जा सकता[8865] और, साथ ही, ने लोगों को संकेतों और चमत्कारों से आश्चर्यचकित कर दिया। सिलिवानस ने तुरंत उसे अपने सामने पेश करने का आदेश दिया, जबकि वह स्वयं ज्यूस, प्रमुख मूर्तिपूजक देवता, को बलिदान चढ़ाने लगा। अगले दिन, उसने कुम्व्रसियिस के बगल में न्यायाधीश की कुर्सी पर अपनी जगह ली और, फर्स को बुलाने के बाद, पहले उसकी पिछली पूछताछ को ज़ोर से पढ़ने का आदेश दिया, और फिर शहीद से कहा:

'फिर्स, यह मत सोचो कि तुम्हें पहले की तरह ही पीड़ा सहनी पड़ेगी: यदि तुम अपनी हठधर्मिता पर अड़े रहे तो तुम और भी क्रूर यातनाएँ सहोगे।'

शहीद ने उत्तर दिया:

'वह जिसने मुझे मेरे पिछले सभी यातनाओं को सहने की शक्ति दी, मेरे प्रभु यीशु मसीह, अब मेरे सामने खड़े हैं, जो मुझे आपके हाथों से छुड़ा रहे हैं; क्योंकि मैं केवल उसी की सेवा करता हूँ और केवल उसी को परमेश्वर के रूप में स्वीकार करता हूँ, जबकि मैं आपकी मूर्तिपूजक मूर्तियों और देवताओं को पूर्ण भ्रम मानता हूँ।' हालाँकि, यदि आप मुझे बलिदान चढ़ाने के लिए मनाना चाहते हैं—न तो जबरदस्ती या हिंसा से, बल्कि सुिठली सलाह से, मेरी अपनी इच्छा से—तो मुझे बताइए: मैं बलिदान किसको और कैसे चढ़ाऊँ? और मैं, आपके शब्दों की धार्मिकता को देखकर, स्वेच्छा से समर्पण करूँगा और व्यर्थ में सत्य का विरोध नहीं करूँगा।

तब सिल्वान ने संत का हाथ पकड़कर कहा:

'आओ हम मंदिर चलते हैं, और वहाँ तुम्हें दिखाया जाएगा कि बलिदान किसे चढ़ाना है।'

जब वे पास के अपोलो के मंदिर में पहुँचे, तो सिल्वानस ने मूर्ति की ओर इशारा करते हुए कहा:

'देखो, यह वही देवता है जिसकी हम पूजा करते हैं; और यदि तुम, फिर्स, उनसे प्रार्थना करोगे और बलिदान चढ़ाओगे, तो तुम एक महान रक्षक प्राप्त करोगे और अन्य देवताओं की कृपा प्राप्त करोगे।'

शहीद ने कहा:

'तो देखो, मैं उसकी क्या बलि चढ़ाऊँगा और उससे कैसे विनती करूँगा।'

और जब सभी ने ध्यान से उसकी ओर देखा, तो उसने अपने हाथ उठाकर और अपनी आँखें स्वर्ग की ओर करके परमेश्वर की अथाह शक्ति का आह्वान किया; अचानक गरज हुई, और अपोलो की मूर्ति जिमीन पर गिरिकर धूल-मिट्टी में टूट गई। पवित्र शहीद ने पास खड़े लोगों की ओर मुड़कर कहा:

'देखो: तुम्हारे देवता तो केवल मानव हाथों की रचना हैं और वे सच्चे ईश्वर का नाम भी सहन नहीं कर सकते।'

क्रोध से उबलते हुए सिलिवानस ने उत्तर दिया:

'मैं तुम्हारे जादू-टोने को पूरी तरह से नष्ट कर दूँगा और मिटा दूँगा।' और तुरंत उसने आदेश दिया कि शहीद के शरीर को तेज लोहे की कंघियों से हड्डी तक नोचा जाए, ताकि संत का मांस टुकड़ों में जमीन पर गिर गया, जबकि यातना देने वाला चिल्लाया:

'तो फिर ईश्वर कहाँ है—तुम्हारा सहायक, जिसका तुम सम्मान करते हो और जिस पर तुम अपनी आशा रखते हो?'

शहीद ने उत्तर दिया:

[8864] निकाया – बिथिनिया के पश्चिमी भाग में एक शहर; प्रथम और सप्तम सार्वभौमिक परिषदें यहाँ आयोजित की गईं (325 और 787)।

[8865] अर्थात्, उसे मूर्तियों को बलिदान चढ़ाने के लिए मजबूर करना असंभव है।

'क्या तुम मेरे भीतर मसीह की शक्ति को काम करते हुए नहीं देख सकते, जो स्पष्ट रूप से तुम्हारे हमलों के खिलाफ मुझे मजबूत कर रही है? यह सांसारिक और कमजोर शरीर इन यातनाओं को कैसे सहन कर सकता था, यदि इसे स्वर्ग से प्राप्त दिव्य सहायता न मिली होती?'

तब सिलवानस ने एक विशाल पात्र लाने, उसे पानी से भरने और उसके नीचे आग जलाने का आदेश दिया। जब पात्र में उबाल आने लगा, तो शहीद के पैरों को रस्सी से बांधकर उसे सिर के बल उबलते पानी में डाल दिया गया। लेकिन संत ने मसीह का नाम पुकारा, और पात्र चकनाचूर हो गया, पानी बाहर गिर गया, जबकि वह स्वयं सुरक्षित रहा। यातना देने वाला लज्जित हुआ और क्रोध से भर गया; लेकिन चूँकि उसे अभी भी अन्य सार्वजनिक कार्यों को निपटाना था, उसने शहीद को जेल में डालने का आदेश दिया।

कुछ ही समय बाद, सिल्वानस, कुम्व्रसियिस के साथ, तटीय शहर अपामिया[8866] के लिए रवाना हुए, और आदेश दिया कि संत को—अभी भी बंधे हुए—उनके पीछे-पीछे ले जाया जाए। जब वे शहर के पास पहुँचे, तो वे रुके और शहीद को अपने पास बुलाकर कहा:

'फिरिस, यहाँ या तो देवताओं को बलिदान चढ़ाने का वादा करो और तुम जीवित रहोगे, या तुम्हें क्रूर मृत्यु दंड दिया जाएगा।'

संत ने वही शब्द दोहराए जो उन्होंने पहले कहे थे, और अंत में जोड़ते हुए कहा:

'तुम्हारी आत्माएँ तो इससे पहले ही तुमसे अलग हो जाएँगी।'

यातना देने वालों को फरस पर और भी अधिक क्रोध आ गया; उन्होंने आदेश दिया कि उसे मार-पीट कर शहर में घसीटा जाए और वहाँ, जिसे वे उसकी जादू-टोना कह रहे थे, उसे समुद्र में फेंक दिया जाए, ताकि वह एक दर्दनाक मौत मरे और उसकी मृत्यु के बाद उसे एक उचित अंतिम संस्कार भी न मिल सके। लेकिन वे शहर में प्रवेश भी नहीं कर पाए थे कि शहीद की भविष्यवाणी सच होने लगी: सिल्वानस अचानक अपनी सारी ताकत खो बैठा, जबकि कुम्व्रसियिस बुखार से बीमार पड़ गया, और चौथे दिन दोनों का दयनीय अंत हो गया। कहा जाता है कि जब तक पवित्र शहीद ने उनके लिए प्रार्थना नहीं की, तब तक पृथ्वी भी उनके अपवित्र शरीरों को स्वीकार नहीं कर रही थी। और संत नए राज्यपाल के आगमन तक, अपामिया में बेड़ियों में जकड़े हुए, तेईस दिनों तक रहे।

वावदा नामक एक नया राज्यपाल आया, जिसका चरित्र और ईसाइयों के प्रति द्वेष उसके पूर्ववर्तियों के समान ही था।

पिछले गवर्नरों के रिकॉर्ड की जांच करने और शहीद फरस के बारे में जानने के बाद, उसने पूछताछ के लिए उसे बुलाया। संत ईसाई धर्म में पहले की तरह ही अडिग रहे और, पहले की तरह ही, उन्होंने मूर्तिपूजकों की अधार्मिक मांगों को पूरा करने से इनकार कर दिया। वावदा ने उसे बाँधकर एक मदिरा-मशक में सिले और तट से तीस स्टेडियम[8867] दूर समुद्र में फेंकने का आदेश दिया। लेकिन मदिरा-मशक अचानक फट गई, बंधन ढीले पड़ गए, और कई तेजस्वी पुरुषों को समुद्र पर चलते हुए देखा गया; उन्होंने शहीद को उठाया और उसे तट पर ले आए। यह देखकर, राज्यपाल के नौकर डरकर उसके पास भागे और उसे जो हुआ था, वह बताया। तब वह स्वयं तट पर गया और शहीद को वहाँ अकेला खड़ा हुआ पाकर, उससे कहा:

'सचमुच, तुम्हारी ईसाई जादू-टोना और जादू अद्भुत है, अगर समुद्र स्वयं भी तुम्हारी आज्ञा मानता है, जैसा कि मैं देख रहा हूँ, और अगर तुम प्रकृति के नियमों को ही उनकी शक्ति से वंचित कर देते हो। लेकिन, इसके बावजूद, कोई जादू तुम्हारी मदद नहीं करेगी; यह केवल तुम्हारे लिए और भी अधिक क्रूर यातनाओं और एक अत्यंत दुखद मृत्यु का कारण बनेगी।'

शहीद ने उत्तर दिया:

'तुम कब तक अंधे बने रहोगे और, अपने देवताओं की तरह, देखने में असमर्थ रहोगे, जबकि तुम्हारी आँखें हैं? कोई भी व्यक्ति जादू-टोने से प्रकृति के नियमों को अपनी इच्छा के अधीन कैसे कर सकता है? तुम्हारे जादूगरों में से किसने, या जिन देवताओं की तुम पूजा करते हो—जो कुछ भी नहीं बल्कि जादुई भ्रम और धोखा हैं—कभी किसी आदमी को, जिसे

[8866] अपामेआ – बिथिनिया में एक शहर, चियानुस की खाड़ी के दक्षिणी तट से पंद्रह मिनट की यात्रा पर, एक बंदरगाह के साथ।

[8867] स्टेडियम लंबाई की एक इकाई है जो लगभग 88 फathom के बराबर होती है; 30 स्टेडियम 4 वर्स्ट से थोड़ा अधिक है।

समुद्र में फेंका गया हो, स्वर्गदूतों के हाथों उठाकर, बिना किसी चोट के और सुरक्षित, समुद्र पर सूखी ज़मीन की तरह चलने और किनारे पर आने के लिए प्रेरित किया है?

गवर्नर ने शहीद को पकड़ने, बांधने और लाठियों से बुरी तरह पीटते हुए ले जाने का आदेश दिया, जबकि वह स्वयं केसरिया के लिए रवाना हो गया। कैसरिया के निवासी, यह जानकर कि एक नया राज्यपाल उनके पास आ रहा है, जो अपने साथ पवित्र शहीद फर्स को ला रहा है, सब शहर से बाहर निकल आए, दिखावे के लिए राज्यपाल से मिलने के लिए, लेकिन असल में मसीह के इस पीड़ित को देखने के लिए, जिसे हर कोई देखना चाहता था। जैसे ही वे सब शहर में प्रवेश कर गए, शहीद को तुरंत जेल में डाल दिया गया। राज्यपाल ने इस बात पर लंबा विचार-विमर्श किया कि शहीद को किस प्रकार की मृत्युदंड दिया जाए और अंत में, उसे जंगली जानवरों से खिला देने का फैसला किया, क्योंकि वह इस मृत्यु को सबसे अधिक पीड़ादायक मानता था। उसने हर प्रकार के सबसे क्रूर जानवरों को इकट्ठा करने और उन्हें भूखा रखने का आदेश दिया, ताकि वे उस दंडित व्यक्ति को फाड़-फाड़कर खाने के लिए और भी क्रूरता से झपट सकें।

जब 30 दिनों के बाद, जानवर तैयार हो गए, तो यातना देने वाले ने ज़ीउस के मंदिर में सभी लोगों को इकट्ठा किया और उसके लिए एक भव्य बलिदान अर्पित किया। फिर उसने आदेश दिया कि फिर्स, जिसे जानवरों द्वारा खाए जाने की सज़ा दी गई थी, को कालकोठरी से बाहर लाया जाए।

इस बीच, शासक के गुप्त आदेश से, कई दोस्तों और परिचितों ने संत से उनकी कोठरी में मुलाकात की और उनसे खुद पर दया करने और उनसे जो मांगा जा रहा था, वह करके इस भयानक मृत्यु से बचने की विनती की।

उन्होंने कहा, 'इस तरह, आप विनाश से बच जाएँगे, सम्मानित होंगे, और राजा की कृपा पाएँगे।'

लेकिन संत, दाऊद के शब्दों में, *'एक बहरे मनुष्य के समान थे जो नहीं सुनता, और एक गूंगे के समान जो अपना मुँह नहीं खोलता'* (भजन संहिता 37:14)।

जब उसे शासक के सामने लाया गया, जो उस समय बलिदान कर रहा था, तो शासक ने उससे कहा:

'हमने तुम्हें विचार करने के लिए इतना समय देकर बहुत अधिक दया दिखाई है। 'अब, यदि तुम स्वयं को बचाना चाहते हो, जबकि तुम देखते हो कि तुम्हारा पूरा वतन महान देवता ज्यूस को बलिदान दे रहा है, तो आगे आओ और स्वयं बलिदान चढ़ाओ, ताकि तुम विनाश से बच सको। यदि नहीं, तो जंगली जानवरों के पंजे और दाँत तुम्हें चीर-फाड़ डालेंगे, और कोई भी तुम्हारी मदद नहीं करेगा या तुम्हें तुम्हारी दुर्भाग्य से नहीं बचाएगा।'

शहीद ने सहमत होने का नाटक करते हुए कहा:

'मैंने बहुत पहले ही अपने साथी नागरिकों के साथ मिलकर बलिदान देने का निर्णय ले लिया था। लेकिन मुझे डर है कि अगर मैं अपोलो को दरकिनार कर केवल ज्यूस को बलिदान दूँगा तो वह क्रोधित हो जाएगा।'

यह सुनकर, राज्यपाल प्रसन्न हुआ और कहा:

'केवल ज्यूस को बलिदान चढ़ाओ, और मैं गारंटी देता हूँ कि अन्य देवता तुमसे नाराज़ नहीं होंगे।'

सबके सामने, शहीद ज़ीउस की मूर्ति के पास गया और जब उसने सच्चे ईश्वर से मौन प्रार्थना की, तो एक भयंकर भूकंप आ गया, और ज़ीउस की मूर्ति ज़मीन पर गिर पड़ी। मूर्तिपूजक डरकर भाग गए, और मंदिर में केवल शहीद ही रह गए। क्रोध से भरकर, यातना देने वाले ने आदेश दिया कि संत को जंगली जानवरों के खाने के लिए ले जाया जाए।

यह तमाशा देखने के लिए एक बड़ी भीड़ जमा हो गई, और जब जानवरों को संत पर छोड़ दिया गया, तो ऐसा लगा मानो वह उनके बीच अकेले नहीं, बल्कि तीन अन्य आकृतियों के साथ खड़े हों; और जानवर उनके चारों ओर चक्कर लगाने लगे और उन्हें धीरे से सूंघने लगे, मानो वे उन्हें लंबे समय से जानते हों। हालाँकि, उन्होंने अपने हाथ ऊपर उठाकर कहा:

– हे प्रभु यीशु मसीह, मैं तुझे धन्यवाद देता हूँ कि तूने मुझमें अपने पवित्र नाम का गौरव किया और मुझ पर अपनी दया दिखाई, मेरे सामने की जानवरों को चुप कराकर, ठीक वैसे ही जैसे तूने एक बार अपने सेवक दानियेल के सामने किया था। हे प्रभु, जो तब और अब चमत्कार करते हैं, कृपा करें कि ये जंगली जानवर बिना किसी को यहाँ नुकसान पहुँचाए अपने-अपने बिलों में लौट जाएँ!

तब, प्रार्थना करने के बाद, उसने जानवरों से कहा:

'सच्चे परमेश्वर के नाम पर, जंगल में लौट जाओ, प्रत्येक अपनी उस बिल में जहाँ से तुम्हें लाया गया था, और किसी को कोई नुकसान न पहुँचाओ।'

और तुरंत ही जानवर भाग गए, उनके सामने दरवाज़े अपने आप खुल गए। वहाँ मौजूद सभी लोग डरकर इधर-उधर भाग खड़े हुए, हर कोई जहाँ-तहाँ भाग गया, उन्हें भागे हुए जानवरों से डर लग रहा था, जो खुद ही सरि पर पाँव रखकर रेगस्तिान में वापस भाग गए। यह चमत्कार देखकर, कई वधिर्मी मसीह के पास आ गए।

वावदा, यह नहीं जानते हुए कि क्या करें, ने संत को फरि से बांधने और जेल में डालने का आदेश दयिा। लेकनि कुछ दनिों बाद, जब वह केसरयिा से ज्यादा दूर नहीं स्थति अपोलोनयिा शहर के लिए रवाना हो रहे थे, तो उन्होंने फर्स को भी अपने पीछे वहीं ले जाने का आदेश दयिा। अपोल्लोनयिा पहुँचने पर, वावदा ने वहाँ अपोलो के मंदरि में एक सार्वजनकि उत्सव का आयोजन कयिा। यह मंदरि मूर्तयिों से भरा था। फरि्स को वहाँ लाकर, वावदा ने उसे मूर्तयिों के सामने डंडों से बुरी तरह पीटने का आदेश दयिा। लेकनि संत ने उन प्रहारों को धैर्यपूर्वक इस तरह सहन कयिा, मानो वे वास्तव में नहीं बल्कि एक सपने में हो रहे हों, और उन्होंने उस ईश्वर से प्रार्थना की, जो गर्तों को सूखा देता है और एक ही इशारे से पहाड़ों को पलट देता है।

उसने कहा, 'हे प्रभु, तेरा हाथ मुझ पर रहे, मुझ से अपनी सहायता मत रोके, परन्तु मेरी ओर देख और मेरी रक्षा कर, कहीं मैं लज्जति न हो जाऊँ, क्योंकि मैं ने तुझ को पुकारा है।'

जब उन्होंने इस प्रकार प्रार्थना की, तो अचानक शहर में एक भूकंप आ गया; शासक बीमारी से गरि पड़ा; संत को पीटने वालों के हाथ कमजोर पड़ गए; और कई मूर्तयिाँ जमीन पर गरिकर टुकड़े-टुकड़े हो गईं। और फरि्स, ईश्वर में आनंदति होकर, मूर्तयिों और अपने यातनाकर्ता पर हँसे, और कहा:

'तुम अपने देवताओं की मदद क्यों नहीं करते, जो इस तरह अपमान में जमीन पर पड़े हैं और तुमसे मदद की भीख माँग रहे हैं, परन्तु उन्हें सभी के देखने के लिए परत्यिक्त छोड़ देते हो – उन लोगों के लिए एक उपहास जो अंधे नहीं हैं?'

यद्यपि शासक एक गंभीर बीमारी से पीड़ति था, उसकी दुर्भावना कम नहीं हुई थी, और इसलिए उसने कहा:

'उस घृणति फर्स की जादू-टोने से मेरा जीवन मृत्यु से भी अधकि कठनि हो गया है!'

उस समय, मूर्तपिूजक पुरोहति कैलनिकिस अपोलोनयिा में था। पवत्रि शहीद फर्स द्वारा कएि गए चमत्कारों को शुरू से ही देखने के बाद, उसे अपने देवताओं की शक्तहिीनता का एहसास होने लगा। सच्चे वशि्वास के बीज को अपने हृदय में ग्रहण करते हुए, उसने अपने आप से कहा:

'हे फर्स द्वारा प्रचारति परमेश्वर, जो अद्भुत और महमिामय चमत्कार करते हैं! मुझे भी एक नव-चुने हुए योद्धा के रूप में स्वीकार करें, और उन लोगों के वरिुद्ध मेरी शक्ति बढ़ाएँ और मुझे सहारा दें जो आपके सत्य के वरिुद्ध उठते हैं!'

इस प्रकार ईश्वर से गुप्त रूप से वार्तालाप करके, वह शासक के सामने प्रकट हुआ और चालाकी से उसका मज़ाक उड़ाया।

'हे अतशिय प्रसद्धि शासक,' उसने कहा, 'उस मनुष्य ने, क्रूर यातनाएँ सहते हुए, पृथ्वी पर गरिकर सबसे बड़े देवता, ज्यूस को नष्ट कर दयिा, सूर्य-धारी अपोलो को, और ने अब तक तीसरी बार को कुचल दयिा है और स्वयं हरक्यूलसि को उखाड़ फेंका है[8868] , जो युद्ध में अजेय था—न हाथों से, न हथयिारों से, न तलवार से, बल्कि एक ही शब्द और मसीह के आह्वान से, जसिने क्रूस और मृत्यु को सहन कयिा। 'तो फरि,' शासक ने कहा, 'यदि आपकी आज्ञा हो तो हम देवता हरक्यूलसि को पुनःस्थापति करें, जो कुछ लोगों की मुसीबतों में सहायता करते हैं, और उनसे प्रार्थना करें कि वे अपनी पूर्व वीरता को याद कर, आकर पति ज्यूस और दव्यि अपोलो की सहायता करें, जनिके साथ बहुत बड़ा अन्याय हुआ है; क्योंकि मुझे लगता है कि वे स्वयं गहरी नींद में सो रहे हैं।'

शासक, व्यंग्य को समझने में असमर्थ, ने कहा:

'चूंकि मैं बीमार हूँ, तुम अकेले ही जाओ, हमारी ओर से देवताओं से प्रार्थना करो और उन्हें इस जादूगर फरि्स के खलिाफ जल्दी से उकसाओ।'

हालाँकि, कैलनिकिस ने कहना जारी रखा:

'लेकनि मुझे लगता है कि उन्हें नीचे गरिाने वाले देवता की शक्ति महान है, और मुझे डर है कि हमारे देवता स्वयं की भी मदद नहीं कर पाएंगे।'

तब शासक, अंततः कैलनिकिस के शब्दों के असली अर्थ को समझते हुए, बोला:

[8868] हरक्यूलसि – प्राचीन यूनानयिों की मान्यताओं के अनुसार, यूनानी नायकों में से एक, जो असाधारण शक्ति और साहस के लिए प्रसद्धि था, जसिने कई पराक्रमी कार्य कएि और अपनी मृत्यु के बाद अर्ध-देवता बन गया।

'क्या तुम भी, कैलनिकिस, इस जादूगर के जादू से बहक गए हो?'

कल्लनिकिोस, न तो अपनी शुरू की हुई बात जारी रखना चाहता था और न ही अपने वशि्वास को और छपिाना चाहता था, तुरंत घर चला गया, अपने बाल और दाढ़ी काट डाली, अपने पद के वस्त्र उतार दिए, और इन सभी चीजों को लेकर शासक के पास गया और उन्हें उसके पैरों तले फेंक दिया।

उसने कहा, 'हे शासक, यह लो, मेरे बाल और वस्त्र, जो बलदिानों की बदबू और धुएँ, रक्तपात और शैतानी अनुष्ठानों से अपवत्रि हो गए हैं: इनके साथ, मैं अपने पूर्व भ्रम का त्याग करता हूँ और एक नया जीवन शुरू करता हूँ, क्योंकि मैं अब एक ईसाई हूँ।'

गवर्नर कैलनिकिस के इस अप्रत्याशति परविर्तन से बहुत आश्चर्यचकति हुआ।

उसने कहा, 'कैलनिकिोस, तुम्हारे साथ क्या हो गया है, क्या इस जादूगर के चमत्कारों ने तुम पर इतना प्रभाव डाला है कि तुम्हारी महान आत्मा—देवताओं की एक सेवक की आत्मा, जसिने उनसे कई कृपाएँ प्राप्त की हैं—अपने पूर्वजों के धर्म से भटक गई है और पूर्ण वनिाश की ओर ले जाई गई है?'

कैलनिकिोस ने उत्तर दिया:

'मेरे परविर्तन के लिए सबसे अधकि दोष स्वयं हरक्यूलसि का है; वही, जसिके बारे में कहा जाता है कि उसने इतनी सारी जीतें हासलि की हैं, अब इस आदमी के एक भी शब्द का सामना नहीं कर सका और इतनी दयनीय स्थतिि में गरि पड़ा, जसिसे यह साबति होता है कि मनुष्यों के बीच उसके और अन्य देवताओं के बारे में प्रचलति कथाएँ उपहास के योग्य हैं।'

'बलि्कुल नहीं,' शासक ने आपत्ति जताई, 'बल्कि तुम फर्स की जादूगरी से बहक गए हो और उम्मीद कर रहे हो कि तुम स्वयं, जादू के माध्यम से, ऐसे चमत्कार करोगे। हालाँकि, न तो वह जादूगर और न ही तुम ईसाई जादू से लाभान्वति होगे जब तक कि तुम पश्चाताप नहीं करते और एक बार फरि देवताओं का सम्मान नहीं करते।'

कैलनिकिस, राज्यपाल की मूर्खता को स्पष्ट रूप से उजागर करने की इच्छा और दृढ़ वशि्वास के साथ कि ईश्वर फर्स के साथ रहे थे, वैसे ही उसके साथ रहेंगे, ने कहा:

'चूँकि आप, हे शासक, वर्तमान में बीमार हैं, और मुझे जादू-टोने के प्रभाव में मानते हैं, तो आइए, यदि आपको उचति लगे, तो हम महान एस्क्लेपयिस[8869] की ओर मुड़ें और आपकी शीघ्र स्वास्थ्य-लाभ के लिए साथ मलिकर उनसे प्रार्थना करें: तब आपको एहसास होगा कि मैं कसिी भी जादू-टोने के प्रभाव में नहीं हूँ।'

शासक, कैलनिकिस की बातों को ठीक से समझने में असफल रहा और यह सोचकर कि पुजारी एक बार फरि अपने देवताओं की ओर मुड़ रहा है, तुरंत उसके साथ मंदरि चला गया। जब वे अंदर गए, तो कैलनिकिस ने चुपचाप प्रार्थना करना शुरू कर दिया, यह कहते हुए:

'हे प्रभु यीशु मसीह, जन्हिें मैंने आपके सेवक फर्स के द्वारा सच्चे परमेश्वर के रूप में जाना है, और जन्हिें मैंने अनगनित बार क्रोधति किया है, फरि भी, आपने मुझे त्यागा नहीं है! अब मेरी सहायता के लिए उठें और मुझ में अपनी शक्ति प्रकट करें!'

जब वह अपने मन में ये शब्द कह ही रहा था, तो ऊपर से एक आवाज़ आई, जसिने उसे बल दिया और वीरता के एक कार्य के लिए बुलाया। और वह, साहस से भरकर और मसीह के नाम का स्मरण करते हुए, एस्क्लेपयिस की मूर्ति की नदिा करने लगा; और तुरंत ही वह मूर्ति, मानो कसिी शक्तशिाली हाथ से गरिा दी गई हो, उसके पैरों तले गरि पड़ी। तब कैलनिकिस ने राज्यपाल की ओर देखते हुए उपहासपूर्वक उससे कहा:

'तुम स्वयं देख सकते हो कि तुम्हारा देवता तब तक नहीं उठ सकता जब तक तुम स्वयं उसे न उठाओ। अतः इस बात का वशि्वास कर लो कि यह जादू-टोना नहीं, बल्कि मुझमें कार्यरत दैवीय शक्ति का काम है।'

लेकनि राज्यपाल, यद्यपि अपने हृदय में इस पर दुखी था और कैलनिकिस पर तरस खाता था, फरि भी उसने उसे कैद करने का आदेश दिया; और अगली सुबह उसने उस पर और फर्स पर इन शब्दों में मृत्युदंड सुनाया:

'मेरी आज्ञा है कि कैलनिकिोस, जो देवताओं की सेवा और उनकी पूजा से भटक गया है और ईसाई झूठ की ओर मुड़ गया है, को तलवार से मार डाला जाए; और जहाँ तक फर्स की बात है, जो अपने चमत्कारों पर घमंड करता है और

[8869] एस्कलेपयिस (एस्कुलेपयिस) – प्राचीन काल में रहने वाले एक यूनानी चकित्सिक; यूनानी वशि्वास के अनुसार, अपनी मृत्यु के बाद, हरक्यूलसि की तरह, उन्हें देवताओं में गनिा गया।

उसी से दुखी कैलनिकिोस को बहका गया है, मेरी आज्ञा है कि उसे एक लकड़ी के संदूक में डालकर आरी से दो टुकड़े कर दिया जाए।'

कैलनिकिोस को तुरंत सैनकिों द्वारा मृत्युदंड के लिए बाहर ले जाया गया। उन्होंने प्रार्थना के लिए समय मांगा और, एक लंबी प्रार्थना के बाद, उन्हें तलवार से सिर कलम कर दिया गया। तब, जब यातना देने वालों ने संत फिर्स को डिब्बे में रखा और उन्हें दो भागों में काटने के लिए आरी उठाई, तो आरी उनके हाथों में असाधारण रूप से भारी हो गई, इसलिए वे उसे मुश्किल से उठा या चला पा रहे थे; फिर भी डिब्बे की लकड़ी पर यह इतनी हल्की थी कि इसके दाँतों का निशान भी नहीं बचा। यातना देने वालों ने बहुत समय तक पसीना बहाकर मेहनत की, लेकिन सब व्यर्थ गया; अंत में, अचानक बक्सा खुल गया, और संत उसमें से एक दमकते चेहरे के साथ निकिले, उनका हृदय अलौकिक आनंद से भर गया था। आसपास खड़े लोग भय से भर गए, और घटित चमत्कार के कारण किसी में संत को छूने की हिम्मत नहीं हुई। और स्वर्ग से एक आवाज़ सुनाई दी, जो शहीद को उसके स्वर्गीय पुरस्कार के लिए बुला रही थी। यह महसूस करते हुए कि उसकी परीक्षा समाप्त हो गई है, संत ने अपने हाथ उठाए, और उनके साथ अपना मन स्वर्ग की ओर उठाया और पुकार कर कहा:

'हे प्रभु यीशु मसीह, मैं आपकी धन्यवाद करता हूँ कि आपने मुझे, एक अयोग्य व्यक्ति को, अपनी आशीर्वादों का वारिस स्वीकार किया, और मुझे उन लोगों में गिन लिया जिन्होंने आपकी कृपा प्राप्त की है। अब मेरी आत्मा को शांति से ग्रहण करें और उसे अपने पवित्र धामों में उस अनुपम आनंद की ओर ले जाएँ जो आप प्रदान करते हैं!'

तब, क्रॉस का चिह्न बनाने के बाद, फिर्स ने अपनी पवित्र आत्मा को ईश्वर के हाथों में सौंप दिया। इस प्रकार, वह जिसे अनेक क्रूर यातनाओं और प्रताड़नाओं से मारना नाकाम रहा, प्राकृतिक कारणों से अपने जीवन के अंत पर पहुँचा।

कई वर्षों बाद, क्रूर डायोक्लेटियिन[8870] सत्ता में आया, और एक बार फिर एक शाही फरमान दूर-दूर तक जारी किया गया, जिसमें आदेश दिया गया था कि सभी को मूर्तियों की पूजा में भाग लेना चाहिए, और जो मना कर दें उन्हें मौत की सज़ा दी जाए। उस समय, एक निश्चित एरियिन थेबाइड का राज्यपाल था[8871] । क्रूर सम्राट की दुष्ट आज्ञा का अक्षरशः पालन करने के लिए, एंटिनोए नगर में ठहरते हुए, उसने दो प्रतिष्ठित ईसाइयों, अस्कालोन और लियोनडिास को पकड़ लिया, और उन्हें विभिन्न यातनाओं के बाद मृत्युदंड दे दिया। फिर उसने वहां मौजूद सभी ईसाइयों को गिरफ्तार करने का आदेश दिया और उनके सामने यातना के उपकरण रखकर कहा:

'देखो, तुम्हारे लिए दोहरी नियति है: देवताओं को बलिदान चढ़ाओ, और तुम सुरक्षित और स्वतंत्र रहोगे; लेकिन अगर तुम आज्ञा मानने से इनकार करते हो, तो तुम्हें यातनाओं और मृत्यु का भी सामना करना पड़ेगा।'

गवर्नर ने बोलते ही, सत्ताइस पुरुषों ने निडरता से एक साथ आगे बढ़कर ऐसी अधर्मी आज्ञा का पालन करने की बजाय मरने के लिए अपनी तत्परता व्यक्त की। लेकिन, अनेक यातनाएँ सहने के बाद, उनमें से एक, अपोलोनियिस नामक एक चर्च पाठक, बहुविध यातनाओं का दृश्य देखकर भयभीत हो गया; वह आगे आने वाली पीड़ाओं के विचार से कांपने और मसीह से मुँह मोड़कर अपनी आत्मा खोने के भय के बीच हिल रहा था। वह इस बात पर विचार करने लगा कि वह मूर्तियों को बलिदान चढ़ाने और क्रूर यातनाओं, दोनों से कैसे बच सके, ताकि वह अपनी आत्मा को शैतान की शक्ति से बचा सके और अपने शरीर को अपने अत्याचारियों के हाथों से मुक्त करा सके। जब वह इस तरह हिचकिचा रहा था, तो फिलिमोन नाम का एक विधर्मी, जो राज्यपाल का संगीतकार था, पास में ही खड़ा था।

उसे देख कर, अपोलोनियिस ने उसे बुलाया और वादा किया कि अगर वह अपोलोनियिस का भेष धारण करके बलिदान चढ़ाए, और पहचाने न जाने के लिए अपना चेहरा अपोलोनियिस के कपड़ों से छिपाए, तो उसे चार सोने के सिक्के मिलेंगे। फिलिमोन मान गया: उसने अपोलोनियिस के कपड़े पहने, अपना चेहरा ढक लिया, और वेदी पर चला गया। लेकिन परमेश्वर, जो सभी लोगों के उद्धार के लिए अद्भुत तरीकों से काम करते हैं, ने अपोलोनियिस के माध्यम से फिलिमोन को और फिलिमोन के माध्यम से अपोलोनियिस को अपनी ओर खींचना चाहा। और जैसे ही फिलिमोन, अपोलोनियिस के वस्त्रों में, मूर्तिपूजक वेदी के पास पहुँचा, प्रभु की कृपा का प्रकाश उसके हृदय में चमका, और उसकी आध्यात्मिक आँखें सत्य

[8870] एक रोमन सम्राट जिसने 284 से 305 तक शासन किया।

[8871] थेबाइड – दक्षिणी मिस्र का एक क्षेत्र।

के ज्ञान के लिए खुल गईं। एक ईसाई के रूप में उसने क्रॉस का चिह्न बनाया और राज्यपाल के सामने खड़ा हो गया। राज्यपाल ने अपने आसपास खड़े लोगों से पूछा:

'यह कौन है?'

उन्होंने उत्तर दिया:

'ईसाइयों में से एक।'

गवर्नर ने उसे बलिदान चढ़ाने का आदेश दिया, लेकिन उसने ज़ोर से चिल्लाकर कहा:

'मैं नहीं करूँगा! मैं एक ईसाई हूँ, जीवित परमेश्वर मसीह का सेवक हूँ।'

गवर्नर ने कहा:

'क्या तुमने हाल ही में नहीं देखा कि अस्कलॉन और लियोनडिस ने क्या यातनाएँ झेलीं, और वे किस क्रूर मृत्यु से मरे?'

अपोल्लोनियस का भेष धारण किए हुए फिलिमोन ने उत्तर दिया:

'यह ठीक इसलिए है क्योंकि अस्कलॉन और लियोनिदि, जिन्होंने हाल ही में मसीह के लिए पीड़ा सहन की, ने हमें साहसी सहनशीलता का उदाहरण दिया है, जिसने मुझे अपने कष्टों का बिना डर के सामना करने के लिए प्रेरित किया। मैं उस चमत्कार से और भी अधिक प्रभावित हुआ जो आपकी नाव पर हुआ जब आप नदी पार करना चाहते थे, और नाव नदी के बीच में, सबसे गहरे स्थान पर रुक गई, और किनारे तक नहीं पहुँच सकी – क्योंकि आपने मसीह को ईश्वर कहने से इनकार कर दिया था[8872] ।

तब राज्यपाल ने संगीतकार फिलिमोन को बुलाने का आदेश दिया, इस आशा में कि उसकी बांसुरी-वादन से उस ईसाई की आत्मा मंत्रमुग्ध और कोमल हो जाएगी, उसके विचार आसानी से भटक जाएंगे और वह मूर्तियों को बलिदान चढ़ाने के लिए राजी हो जाएगा। उसे एहसास नहीं हुआ, उस मूर्ख को, कि उसके सामने खड़ा व्यक्ति स्वयं फिलिमोन ही था, और वह अपनी ही आवाज़ में बोल रहा था; क्योंकि पहले राज्यपाल ने उसे केवल विभिन्न वाद्ययंत्र बजाते हुए सुना था, लेकिन अब वह उसे स्पष्ट रूप से बोलते हुए सुन रहा था, जो पवित्र आत्मा से प्रेरित था। इस बीच, उन्होंने हर जगह फिलिमोन को खोजा लेकिन उसे नहीं ढूंढ सके। उन्होंने उसके भाई थियोन को बुलाया और पूछना शुरू किया कि फिलिमोन कहाँ है। उसने, अपोलोनियस के कपड़ों में अपने भाई को पहचानते हुए लेकिन जो कुछ हुआ था उसके बारे में कुछ नहीं जानते हुए, कहा:

'फिलिमोन तुम्हारे सामने खड़ा है।'

गवर्नर ने आदेश दिया कि वहां खड़े आदमी का चेहरा ढकने से हटा दिया जाए, और फिलिमोन को देखकर, वह जोर से हंसने लगा, यह सोचकर कि फिलिमोन ने यह ईसाइयों का मज़ाक उड़ाने और उपस्थित लोगों का मनोरंजन करने के लिए किया था। फिर उसने फिलिमोन को आदेश दिया कि वह विदेशी वस्त्र उतार दे और उसके साथ वेदी पर चले जाए। लेकिन फिलिमोन ने घोषणा की कि वह वास्तव में एक ईसाई है और उसने मूर्तिपूजक देवताओं का मज़ाक उड़ाना शुरू कर दिया। न्यायाधीश इस बात से अत्यंत आश्चर्यचकित हुआ और फिलिमोन को देखते हुए, चिल्लाया:

'रोमन लोगों की भलाई के नाम पर, क्या जो तुम अब कह रहे हो और कर रहे हो वह सच है, फिलिमोन, या क्या तुमने ईसाइयों का मज़ाक उड़ाने के लिए इसे गढ़ा है?'

फिलिमोन ने उत्तर दिया:

'मैं शपथ लेता हूँ—रोम की भलाई की नहीं, बल्कि अपनी मुक्ति और अपने प्रभु और राजा, मसीह की—कि मैं मसीहियों का मज़ाक नहीं उड़ा रहा हूँ, बल्कि अपने हृदय में हुई सच्ची परिवर्तन की घोषणा कर रहा हूँ, और मैं मसीह में अपने विश्वास की घोषणा करता हूँ और पुष्टि करता हूँ कि इस स्वीकारोक्ति के लिए मैं एक बार नहीं, बल्कि हज़ार बार मरने को तैयार हूँ।'

ये शब्द सुनकर राज्यपाल क्रोध से भर गया, और अपने आसपास खड़े लोगों से मुड़कर उसने पूछा कि क्या फिलिमोन को देवताओं का सार्वजनिक रूप से अपमान करने के लिए तुरंत मौत की सजा दी जाए, या उसे यातना और

[8872] इस चमत्कार का और विवरण 20 मई के मेनायोन में दर्ज है, जो अस्कलॉन के पवित्र शहीद का पर्व दिवस है। चमत्कार यह था कि, अस्कलॉन की प्रार्थना के बाद, शासक को ले जा रही नाव को ईश्वर की शक्ति द्वारा दो बार रोका गया, जिससे वह नदी पार नहीं कर सका, जबकि वह संत की मांग - एकमात्र सच्चे ईश्वर की आराधना करने - को मानने से इनकार कर रहा था; और केवल तब नाव चली, तथा शासक दूसरे किनारे पर पहुँचा, जब एरियन ने अपनी इच्छा के विरुद्ध, कागज पर इस पर हस्ताक्षर कर दिए।

पश्चाताप के लिए समय दिया जाए। लोग, जो फिलिमोन को उसकी सुंदर बांसुरी-वादन के लिए प्यार करते थे, उन्होंने राज्यपाल से पूरे शहर की खुशी को नष्ट न करने की विनती की। तब राज्यपाल ने फिलिमोन से कहा:

'देखो, लोग तुम्हें कितना प्यार करते हैं: वे तुम्हें "सभी का आनंद" कहते हैं।' तो, कम से कम इसके लिए कृतज्ञता स्वरूप, वही करो जो तुम करते आए हो – नगर के रक्षकों, देवताओं को बलिदान अर्पित करो। देखो, एक महान उत्सव आ रहा है, जिसमें तुम्हें भी तुरही और बांसुरी के साथ देवताओं की स्तुति करनी चाहिए, जिससे तुम स्वयं प्रसन्न होओ और हमारे कानों को आनंदित करो।

फिलिमोन ने कहा, 'यह आपका उत्सव मुझे स्वर्ग में मनाए जाने वाले उत्सव की याद दिलाता है, और तुरहियों की ध्वनि मुझमें स्वर्गदूतों के भजन सुनने की लालसा जगाती है।' तब जान लो कि मुझे अपने धर्म से हटाने की तुम्हारी कोशिश व्यर्थ है: इस तरह न तो तुम कोई सफलता प्राप्त करोगे, बल्कि इसके विपरीत, तुम मेरे हृदय में मसीह के लिए और भी अधिक लालसा जगाओगे।

गवर्नर ने कहा:

'लेकिन भले ही तुम जैसा वादा करते हो, मसीह के लिए सभी यातनाएँ सहन कर लो, तो भी इससे तुम्हें क्या लाभ होगा, जब तुम पूरे मसीही नहीं हो, क्योंकि तुमने उनके कानून के अनुसार बपतिस्मा नहीं लिया है?'

यह सुनकर, फिलिमोन ने कहा:

'हे शासक, मेरे हृदय में प्रज्वलित आध्यात्मिक अग्नि मेरे साथ बनी रहे! मैं आपके प्रति कितनी गहरी कृतज्ञता महसूस करता हूँ कि आपने, यद्यपि अपनी इच्छा के विरुद्ध, मुझे पवित्र बपतिस्मा की याद दिलाकर मुझ पर एक उपकार किया!'

गवर्नर से यह कहने के बाद, वह सभा के बीच में गया और ज़ोर से घोषणा की:

'यदि तुममें कोई ईसाई पुरोहित है, और यदि वह, सच्चे धर्म के लिए, यातनाओं को तुच्छ समझता है, तो मैं उससे विनती करता हूँ: वह तुरंत यहाँ आए और मुझे पवित्र बपतिस्मा दे!'

जब उसने देखा कि सभी भयभीत हो गए थे और कोई भी उसके पास आकर खुद को ईसाई पादरी घोषित करने की हिम्मत नहीं कर रहा था, तो उसका हृदय दुखित हुआ, और अंत में, वह भक्तिपूर्ण आँसुओं के साथ, ईश्वर से पुकार उठा:

'हे मेरे ईश्वर, प्रभु यीशु मसीह, जिन्होंने दया करके मेरी ओर देखा है और मुझे भूल-भुलैया की गहराइयों से बाहर बुलाया है! मुझे पवित्र बपतिस्मा के बिना न छोड़िए, बल्कि, जैसा भी आपको उचित लगे, मुझे एक पुरोहित और पानी भेजिए, ताकि मैं भी अन्य मसीहियों की तरह बपतिस्मा ले सकूँ!'

उनकी प्रार्थना के तुरंत बाद, ऊपर से एक बादल उतरा और उसे तीन बार चक्कर लगाकर उस पर वर्षा की, जिससे उनके पवित्र बपतिस्मा का संकेत मिला, और फिर वह वापस ऊपर चला गया। सभी चकित रह गए; लेकिन शासक, जो द्वेष से अंधा हो गया था, ने घोषणा की कि यह जादू-टोना और आँखों का धोखा है।

तब संत ने प्रार्थना की कि उसकी सभी बांसुरी और तुरहियाँ, जो उसने अपोलोनियस को तब दी थीं जब वे दोनों कपड़े बदल रहे थे, जला दी जाएँ, ताकि उसकी व्यर्थ कला की कोई स्मृति न बचे, और कोई भी異邦人 फिर कभी यह न कहे:

'देखो, ये फिलिमोन की तुरहियाँ हैं।'

और वास्तव में, स्वर्ग से आई आग ने उन्हें सभी को जला दिया और अपोलोनियस की आँखों के सामने ही नष्ट कर दिया।

इस बीच, अपोलोनियस के लिए भी कष्ट का समय नजदीक आ रहा था, क्योंकि फिलिमोन का भाई थियोन, राज्यपाल के सामने उपस्थित होकर, उसे विस्तार से बता गया कि कैसे अपोलोनियस ने फिलिमोन को अपने कपड़े पहना दिए थे और उसे अपनी जगह शहादत का कष्ट सहने के लिए मजबूर कर दिया था, जिससे उसकी बर्बादी हुई। अपोल्लोनियस को तुरंत उसके सामने लाया गया, और राज्यपाल एरियन, उसे बड़ी क्रोध और धमकी भरी नज़रों से घूरते हुए, कहा:

'हे अत्यंत दुष्ट मनुष्य, यह क्या है? तुमने हमसे, पूरे शहर से, और इस दयनीय मनुष्य से क्या किया है? तुमने, अपने अहंकार के कारण, देवताओं और कानूनों का तिरस्कार किया है, और कायरता के कारण यातना से बचा है; तुमने उसके साथ कपड़े बदले और, किसी जादू-टोने से, उसके हृदय को भटका दिया और पूरे शहर को उसकी महान खुशी से

वंचति कर दयिा। यदि तुम्हें यातनाओं का भय था, तो तुम्हें मेरे पास आकर अपना मन खोल देना चाहिए था, और मैं, मानवता के नयिम के अनुसार, तुम्हें सब कुछ क्षमा कर देता और तुम्हें स्वतंत्रता और चंति-मुक्त जीवन जीने देता।

शासक के इन शब्दों पर, अपोलोनयिस ने उत्तर दयिा:

तुम मुझे फटकारने और बदनाम करने में सही और न्यायसंगत हो, और मैं इसके खलिाफ कुछ नहीं कहूँगा: मैं भी खुद को दोषी मानता हूँ – लेकनि इसलिए नहीं कि मैं फलिमिोन के लिए इतनी बड़ी खुशयिों का कारण था, बल्कि इसलिए कि मैंने पहले इन खुशयिों को अपने लिए नहीं माँगा – और इसलिए नहीं कि वह मेरे कपड़ों में दखिाई दयिा, बल्कि इसलिए कि मैं खुद उसके वस्त्रों के नीचे छपि गया। लेकनि चूँकि हम दोनों, ईश्वर की इच्छा से, उद्धार के वस्त्र से परधिानति हुए हैं[8873] , यह नश्चिति रूप से जान लो कि न तो फलिमिोन और न ही अपोलोनयिस कभी तुम्हारे देवताओं को बलदिान चढ़ाएंगे; और यदि मैं पहले यातनाओं से डरता था, तो अब, अपने ईश्वर की मदद से, मैं और भी अधकि साहस दखिाऊँगा।

इन शब्दों से क्रोधति होकर, यातना देने वाले ने आदेश दयिा कि अपोलोनयिस को बाँधा जाए और और भी क्रूर यातना देने के लिए उसे उसी स्थति में छोड़ दयिा जाए; इस बीच, उसने तीन सैनकिों को फलिमिोन के चेहरे और आँखों पर वार करने का आदेश दयिा। भीड़, फलिमिोन को पीटा जाता देख, आक्रोशति हो गई और सैनकिों से रुकने के लिए चल्लिाई। इसके बाद, राज्यपाल ने फलिमिोन से कहा:

'फलिमिोन, खुद पर दया कर, या कम से कम उन लोगों पर दया कर, जनिके दलि तुम्हारी वजह से टूट रहे हैं। तुम्हें यह सोचना चाहिए कि अगर लोग तुम्हारी इस मामूली यातना को देखकर इतना क्रोधति हैं, तो जब तुम और भी बड़ी यातनाओं से गुज़रोगे तो क्या होगा?' 'एक बलदिान चढ़ाओ, फलिमिोन, और इस वर्तमान कष्ट के बदले में आने वाले सुखों से अपना इनाम खुद को दो, क्योंकि हम सेरापसि के मंदरि में दावत करेंगे[8874] और हर तरह के सुखों का आनंद लेंगे।'

'स्वर्ग में मेरे लिए एक भोज तैयार है,' फलिमिोन ने उत्तर दयिा, और फरि, लोगों की ओर मुड़कर, उन्होंने कहा:

'मुझे पटिता हुआ देखकर तुम क्यों दुखी हो? जब मैं तुम्हारे बीच बांसुरी-वादक था, तब क्या शासक के दरबारी हमें नहीं पीटते थे? कभी-कभी वे हमारे साथ इससे भी बुरा व्यवहार करते थे, और तुम तहे दलि से हँसते थे: तो फरि, इसमें तुम्हें आनंद क्यों नहीं आता? लेकनि यह जान लो: जब तुम शोक मनाते हो, तो स्वर्गदूत मेरे लिए आनंदति होते हैं, क्योंकि वे मुझे एक ईसाई और सच्चे धर्म का अनुयायी देखते हैं।"

यातनाकर्ता ने फलिमिोन की दृढ़ता देखकर आदेश दयिा कि उसकी और अपोलोनयिस की पंडिलयिाँ भेदी जाएँ, उन्हें रस्सयिों से बाँधा जाए, और शहीदों को पूरे शहर में घसीटा जाए। तब फलिमिोन को जैतून के पेड़ से लटका दयिा गया, और उस पर तीर चलाए गए, लेकनि तीर उसे छू नहीं पाए; उनमें से एक तीर उछलकर राज्यपाल की ओर लौट आया और उसकी दाहनिी आँख नकिाल दी। अपनी आँख खोने और असहनीय दर्द से, उसने मसीह और ईसाइयों के खलिाफ कई अपमानजनक शब्द और नंदिा की; लेकनि अंत में, दर्द से तड़पते हुए, उसने शहीद को खोलने का आदेश दयिा और उससे अपनी आँख ठीक करने का अनुरोध कयिा। लेकनि संत ने उत्तर दयिा:

'मैं तुम्हें अभी ठीक नहीं करूँगा, कहीं ऐसा न हो कि तुम इस आशीर्वाद को जादू-टोने का परणिाम मानने के प्रलोभन में पड़ जाओ। लेकनि जब मैं इस शरीर से चला जाऊँगा – क्योंकि मेरा अंत नकिट है – तब तुम मेरी कब्र पर आना, वहाँ से कुछ मट्टिी ले लेना, उसे अपनी आँख पर लगाना, और मसीह का नाम लेना, और वह तुरंत ठीक हो जाएगी।'

इसके बाद, राज्यपाल के आदेश पर, दोनों शहीदों, फलिमिोन और अपोलोनयिस का सरि कलम कर दयिा गया, और उनके पवत्रि शरीरों को अस्कलॉन और लयिोनडिास के पवत्रि शहीदों के पास दफनाया गया। और यातना देने वाला, जसिकी आँख में असहनीय दर्द था, अपनी मर्ज़ी के खलिाफ़, संतों की कब्र पर आया और, जैसा कि फलिमिोन ने बताया था, उससे कुछ मट्टिी लेकर अपनी दुखती आँख पर लगाई और कहा:

'हे यीशु मसीह, जनिके लिए ये शहीद स्वेच्छा से मृत्यु को प्राप्त हुए, आपके नाम पर मैं इस मट्टिी को अपनी आँख पर लगाता हूँ; और यदि मैं चंगा होकर देख सकूँ, तो मैं स्वयं यह स्वीकार करूँगा कि आप के सवि कोई और ईश्वर नहीं है।'

यह कहते ही उसे दोहरा चंगापन मलिा—उसकी दोनों आँखों और उसकी आत्मा का: अपनी आँखों से उसने सूरज को देखा, और अपनी आत्मा से उसने सत्य को देखा, जो सूरज से भी अधकि चमकदार था, और वह आनंदपूर्वक यह कहते हुए अपने रास्ते चल पड़ा:

[8873] यानी, दोनों का पहले ही बपतस्मिा हो चुका था – एक का सामान्य तरीके से, और दूसरे का चमत्कारकि तरीके से।

[8874] सेरापसि – प्राचीन मस्रि का एक मूर्तपिूजक देवता, जसिे दविंगत आत्माओं के देवता के रूप में पूजा जाता था और बीमारी तथा मृत्यु से उद्धारकर्ता के रूप में पुकारा जाता था, और इसलिए कई लोग इसे एस्क्लेपयिस के साथ पहचानते हैं,

'मैं एक ईसाई हूँ!'

उसने यह कई गवाहों के सामने स्वीकार किया और अपने पूरे घर के साथ पवित्र बपतिस्मा ग्रहण किया, और उसने उन छत्तीस ईसाइयों को मुक्त कर दिया जो मसीह के लिए बंदी बनाए गए थे। तब, कफ़न[8875] और कीमती धूप[8876] लेकर, वह एक बड़ी भीड़ और दो बिशपों के साथ, पवित्र शहीदों के मकबरे पर गया और उन्हें सम्मान के साथ दफनाया।

इस बीच, डायोक्लेटियन को खबर मिली कि एरियिन ने मूर्तिपूजा से ईसाई धर्म अपना लिया था और अब देवताओं को बलिदान नहीं चढ़ाना चाहता था। सम्राट ने चार रक्षकों[8877] को केसरिया भेजा, और उन्हें आदेश दिया कि वे एरियिन को उसके सामने लाएं, क्योंकि वह स्वयं यह जांचना चाहता था कि उसके बारे में जो कहा जा रहा था वह सच था या नहीं। रक्षकों ने एरियिन को पकड़कर उसे तुरंत चलने के लिए कहा, लेकिन उसने उनसे पवित्र शहीदों के मकबरे पर जाने की अनुमति देने की विनती की; और जब उन्होंने मना कर दिया, तो उसने उन्हें अस्सी सोने के सिक्के दे दिए और अंततः उन्हें मकबरे पर जाने की अनुमति मिल गई। वहाँ पहुँचने पर, वह साष्टांग दण्डवत हो गया और पवित्र शहीदों से अपने इस कार्य में मदद करने का आग्रह किया। और फिर कब्र से फिलिमोन की आवाज़ सुनाई दी, जो कह रही थी:

'हौसला रखो, एरियिन, और मत डरो, क्योंकि प्रभु स्वयं तुम्हें अपने पास बुला रहे हैं, तुम्हें तुम्हारे विश्वास के पराक्रम तक ले जा रहे हैं, और तुम्हारे लिए शहीद का मुकुट तैयार कर रहे हैं; और वही चार रक्षक जो तुम्हें लेने आए थे, वे तुम्हारे पराक्रम और उसके पुरस्कार में भागीदार होंगे।'

यह आवाज़ सुनकर, एरियिन भय से भर गया; और प्रभु की कृपा से प्रेरित होकर, वह घर लौट आया और अपने परिवार को अपने शहीद होने का समय और तरीका बता दिया। उसने अपने सेवकों को बुलाया और उनसे कहा:

'तुम हमसे अलेक्जेंड्रिया तक साथ चलना, और फिर मुझे सम्राट के सामने पेश किया जाएगा; और, ईश्वर की कृपा से, मैं अपना पराक्रम पूरा करूँगा। Phamenoph[8878] महीने की आठवीं तारीख को, मुझे एक मदिरा-मशक में सिलकर समुद्र में फेंक दिया जाएगा। जहाँ तक तुम्हारा सवाल है, उसी महीने के ग्यारहवें दिन, छठे घंटे पर, तट पर जाओ: वहाँ तुम्हें मेरी लाश मिलेगी, जो डॉल्फ़िनों द्वारा किनारे पर लाई गई होगी; उसे उठाकर अन्य शहीदों के साथ रख देना।

फिर एरियिन प्रोक्साइटर्स के साथ रवाना हुआ और राजा के दरबार में पहुँचने पर, उसे शुरू में राजा द्वारा सौहार्दपूर्ण तरीके से स्वागत किया गया। लेकिन उनके आगमन के तुरंत बाद, सम्राट के लिए एक स्नानागार तैयार किया गया; भवन के सामने अपोलो की एक मूर्ति खिड़ी थी, और राजा, उसकी ओर बढ़ते हुए, एरियिन को अपने साथ ले गए। स्नान करने के बाद, जब वह स्नानागार से बाहर निकल रहे थे और मूर्ति के पास पहुँच रहे थे, तो सम्राट ने एरियिन से कहा:

'महान देवता अपोलो को बलिदान अर्पित करो, और चलो प्रसन्न मन से रात्रिभोज पर चलते हैं।'

एरियिन ने उत्तर दिया:

'मसीह, जो सच्चे ईश्वर हैं, द्वारा किए गए इतने सारे महान और अद्भुत चमत्कारों के बाद मैं ऐसा कैसे कर सकता हूँ, जो कि कहानियाँ नहीं बल्कि निर्विवाद सत्य हैं? मेरी अपनी आँखों ने इनकी गवाही दी है: तो फिर मैं एक निर्जीव और असंवेदनशील मूर्ति को बलिदान कैसे अर्पित कर सकता हूँ?'

क्रोधित राजा ने आदेश दिया कि अरियिन के हाथ तुरंत लोहे की जंजीरों से बांध दिए जाएं, उसके पैरों से बड़े पत्थर बांध दिए जाएं, उसे एक गहरे गड्ढे में फेंक दिया जाए, और उसे मिट्टी और पत्थरों से भरने के बाद, उस टीले को जमीन के बराबर कर दिया जाए। भरी हुई खाई के ऊपर, उसने अपना सिंहासन लगाने का आदेश दिया और उस पर बैठ गया, सैनिकों को उसके चारों ओर अपनी तुरही बजाने का आदेश दिया, और कहा:

'आओ देखें कि क्या उसका मसीहा आएगा और उसे इस गड्ढे से बचाएगा।'

फिर वह महल गया, अपने शयनकक्ष में प्रवेश किया और देखा कि उसके बिस्तर के ऊपर अरियिन से बँधी लोहा और पत्थर लटक रहे थे, जबकि अरियिन स्वयं बिस्तर पर लेटा हुआ था।

यह देखकर सम्राट भय और भ्रम से ग्रस्त हो गया, और उसने सोचा कि उसके ही किसी आदमी ने उसे धोखा दिया है और गुप्त रूप से साज़िश रच रहा है। लेकिन संत एरियिन ने उससे कहा:

[8875] कफ़न एक बड़े लिनेन का टुकड़ा होता था जिसमें मृतक के शरीर को लपेटा जाता था।

[8876] पूर्व में, मृतक के शरीर पर धूप (तेल) से अभिषेक किया जाता था, जैसा कि जोसेफ और निकोदेमस ने उदाहरण के लिए, प्रभु के परम पवित्र शरीर के साथ किया था।

[8877] प्रोटेक्टर एक स्क्वायर होता है।

[8878] फेनोमेनोस हमारे मार्च महीने के अनुरूप था।

'घबराओ मत: तुम्हारे साथ कोई वशि्वासघात नहीं हुआ है और न ही कोई तुम्हारे खलिाफ़ बगावत कर रहा है; परन्तु मैं सचमुच अरीयन ही हूँ, जसिे, जब तुमने खाई में फेंका था, तब तुमने कहा था: "आओ देखें कि क्या उसका मसीह उसे आज़ाद करने आएगा।" और अब, मसीह ने मुझे आज़ाद कर दयिा है और मुझे तुम्हारे बस्तिर पर लेटने का आदेश दयिा है।'

हैरान होकर, डयिोक्लेशयिन लंबे समय तक चुपचाप खड़ा रहा और, अंत में, मुश्कलि से होश में आते हुए, डर और भ्रम में ज़ोर से चल्लिाया:

'हे चालाक जादूगर! पहले कसिी ने भी ऐसा कुछ नहीं देखा है!'

उसने और भी बहुत कुछ कहा और चल्लिाया, और अंत में आदेश दयिा कि संत को रेत से भरे बोरे में बाँधकर समुद्र में गहरे पानी में फेंक दयिा जाए। इस बीच, उल्लेखति चार प्रोक्लेटर्स, जनिमें सबसे बड़े एफोटस थे, सम्राट के सामने उपस्थति हुए और उन्होंने खुद को ईसाई घोषति कर दयिा। उन्हें भी रेत की बोरी में बाँधकर एरयिन के साथ समुद्र में फेंक दयिा गया; हालाँकि, डॉल्फ़नि[8879] ने उनके शवों को उठा लयिा और उन्हें अलेक्जेंड्रयिा के तट पर ले गए, जहाँ एरयिन के नौकर, उसकी इच्छानुसार, तट पर उनका इंतजार कर रहे थे। उन्होंने अपने स्वामी और चार रक्षकों के शवों को पानी से नकिाला और उन्हें सम्मानपूर्वक एक साथ दफनाया[8880] , और परमेश्वर—पति, पुत्र और पवत्रि आत्मा—की महमिा की, जसिकी महमिा हम सदा और सदा के लिए करते हैं। आमीन।

कॉन्टाकयिन, स्वर 2:

धर्मनष्ठि वशि्वास के योद्धाओं, दुष्ट शासक को फटकारने और उसके पशु-सदृश रक्तपात की नदिा करने के बाद, तुमने मसीह की सहायता से बल पाकर, फरि्से और लेवकयिा, उसके प्रबल वरिोध पर वजिय प्राप्त की: जो लोग कष्ट सह चुके हैं, उनके साथ हमारे लिए प्रार्थना करो।

28 दसिंबर

15 दसिंबर (पुराना कैलेंडर)

पवत्रि हयेरोमार्टायर एलेउथेरीउस और उनकी माता अम्फयिा का शहादत दविस

15 दसिंबर को स्मरणोत्सव

एलीउस Hadrian[8881] के शासनकाल में, जो एक उत्साही मूर्तपिूजक था, अद्भुत एलेउथेरीउस एक उज्ज्वल तारे की तरह चमका। उनका जन्म रोम में कुलीन और धनी माता-पति के यहाँ हुआ था। संत एलेउथेरीउस के पति को तीन बार कमांडर नयिुक्त कयिा गया, जबकि उनकी माँ को और भी बड़ा सम्मान और महमिा मलिी, क्योंकि पवत्रि प्रेरति पौलुस द्वारा शकि्षति होकर, उन्होंने उनसे बपतस्मिा ग्रहण कयिा और उनका नाम अम्फयिा रखा गया। उन्होंने अपने पुत्र का नाम एलेउथेरीउस रखा और उसे सख्त धार्मकिता में पाला; और जब वह वयस्क हो गया, तो उन्होंने उसे पोप

[8879] डॉल्फ़नि – स्तनधारी परविार के समुद्री जानवर।

[8880] पवत्रि शहीदों ने लगभग 287 ईस्वी में यातनाएँ झेलीं। कॉन्स्टेंटनिोपल की दीवारों के बाहर, लगभग 397 ईस्वी में, फ्लावयिस सीज़रयिस ने फर्सस का भव्य चर्च बनवाया, जसिमें उनकी अवशेषों को स्थापति कयिा गया था। बाद में वे सम्राज्ञी पुलकेरयिा को एक दर्शन में दखिाई दीं, और उन्होंने उन्हें आदेश दयिा कि सेबास्टे के 40 पवत्रि शहीदों (जनिका स्मरण 9 मार्च को कयिा जाता है) के अवशेष उनके पास रखें, जन्हिें जमीन में छपिाया गया था और उनकी आज्ञा पर, वर्ष 450 में खोदा गया था। सम्राट जस्टनियिन महान द्वारा तथाकथति थयिोडोसयिस मार्केट के पास, उनके सम्मान में एक और चर्च का नर्मिाण कयिा गया था।

[8881] हैड्रयिन – रोमन सम्राट, 117 से 138 ईस्वी तक शासन कयिा। यद्यपि उन्होंने ईसाइयों के कसिी वशिेष, लंबे समय तक चलने वाले उत्पीड़न को शुरू नहीं कयिा, फरि भी वह मूर्तपिूजा के एक उत्साही सेवक थे, और उनके शासन के दौरान कई ईसाई शहीदों को यातनाएँ झेलनी पड़ीं।

अनाक्लेटस[8882] के हाथों परमेश्वर को एक ऐसे उपहार के रूप में समर्पित कर दिया जो वास्तव में प्रभु के योग्य था। आर्चबिशप ने, यह देखकर कि एलेउथेरीउस अच्छे चरित्र का एक युवक था, उसे अपने पुरोहित वर्ग में स्वीकार कर लिया; और जब वह पंद्रह वर्ष का हो गया, तो उन्होंने उसे एक डिकन नियुक्त किया, और फिर, जब वह अठारह वर्ष का था, तो उसे एक पुरोहित नियुक्त किया; और जब संत बीस वर्ष के हुए, तो आर्चबिशप निकिता ने उन्हें इल्लिरिया का बिशप नियुक्त किया[8883] । वहाँ पवित्र बिशप एक दीवान पर रखे दीपक की तरह चमके, ईश्वर के वचन का प्रकाश फैलाया और कई लोगों को एकमात्र प्रभु के ज्ञान की ओर ले गए। लेकिन दुश्मन—शैतान—यह सहन नहीं कर सका और अपनी घातक द्वेष से भड़का हुआ, संत के विरुद्ध क्रोधित होकर उठ खड़ा हुआ।

उसने दुष्ट राजा एड्रियन को सच्चाई के विरुद्ध उठने और ईसाइयों पर अत्याचार शुरू करने के लिए उकसाया, और सबसे बढ़कर एलेउथेरीउस को मारने के लिए; उसने भक्ति के सभी उत्कृष्ट शिक्षकों को भी नष्ट करने की कोशिश की, क्योंकि वे मसीह की महिमा के उत्तम फल थे। और इस प्रकार सम्राट ने एक धमकी भरे संदेश के साथ, फेलिक्स नामक एक गवर्नर को भेजा ताकि वह एलेउथेरीउस को जबरदस्ती शाही दरबार में लाए। फेलिक्स, इलिरिया पहुँचकर, उस क्षण का इंतजार करने लगा जब वह शुभ-चरवाहा प्रभु के मंदिर में अपने झुंड को शिक्षाप्रद वचनों से पोषित कर रहा था; और, सैनिकों से चर्च को घेरने के बाद, वह मंदिर में घुस पड़ा, क्रोध से आग-बबूला और चारों ओर दुष्टता से घूरता हुआ। लेकिन जब उसने एलेउथेरीउस को शुद्ध शिक्षा की बाढ़ लाते और अपने श्रोताओं को मधुर स्वर में उपदेश देते देखा, तो वह भी ध्यान से सुनने लगा और उस मसीह की शक्ति पर चकित हुआ जिसका वह प्रचार कर रहा था, और तुरंत, उसका क्रोध नम्रता में बदल गया, और उसके हृदय की भूमि परमेश्वर के वचन के बीज को ग्रहण करने के लिए तैयार हो गई; वह, मानो, एक भेड़ बन गया और एक उत्पीड़क से मसीह का एक शिष्य बन गया; जैसे कि उसने जो कुछ भी पहले हुआ था, सब कुछ भूलकर, एक डाकू से मसीह का एक अच्छा और वफादार सेवक बन गया। राजा की आज्ञा की परवाह किए बिना, वह पवित्र बिशप के चरणों में गिर पड़ा, और तब से उसने अपने शिक्षक का साथ कभी नहीं छोड़ा, उसकी शिक्षा से प्रबुद्ध होकर और धार्मिकता में दृढ़ होकर।

इस प्रकार फेलिक्स मूर्तिपूजक दुष्टता से धर्मपरायणता की ओर मुड़ गया, और अब उस व्यक्ति के पास लौटने का कोई विचार भी उसके मन में नहीं आया जिसने उसे भेजा था। संत एलेउथेरीउस, जो मसीह के पवित्र विश्वास के लिए कष्ट सहना चाहते थे, अपने मार्ग पर तेजी से आगे बढ़े। फीलिक्स उनके साथ चला, लेकिन अब एक कैदी को ले जा रहे गवर्नर के रूप में नहीं; बल्कि, वह संत के पीछे-पीछे चला, जैसे एक मेमना अपने चरवाहे के पीछे चलता है। जब, अपनी यात्रा के दौरान, वे एक झरने पर पहुँचे, तो फेलिक्स, मानो, कैंडिस का एक दूसरा यूनानी बन गया और, प्रेरित फिलिप (प्रेरितों के काम 8:30-39) के हाथों उसके द्वारा प्राप्त बपतिस्मा की तरह, उसने दिव्य एलेउथेरीउस से बपतिस्मा प्राप्त किया और मूर्तिपूजा के अंधकार को इस तरह त्याग दिया जैसे कि वह कोई सड़ी हुई पोशाक हो।

तब फेलिक्स एलेउथेरीउस के साथ अपनी यात्रा पर निकल पड़ा।

जब वे रोम पहुँचे, तो ईसाइयों को पता चला कि फेलिक्स मसीह की कलीसिया में शामिल हो गया था; उसने बदले में उन्हें एलेउथेरीउस के बारे में सब कुछ बताया। और इस प्रकार एलेउथेरीउस, राजा के आदेश पर, अदालत के सामने उपस्थित हुआ। वह वहाँ साहसपूर्वक और निडर होकर आया, मानो उसे मुकदमे के लिए नहीं बल्कि उत्सव के लिए बुलाया गया हो। राजा ने उसकी ओर देखकर देखा कि वह अभी भी एक जवान आदमी था, सुंदर और हर प्राकृतिक गुण से युक्त था, और उससे कहा:

'एलेउथेरीउस, तुमने अपने पिता के धर्म को त्याग दिया है और हमारे देवताओं की पूजा को कुछ भी नहीं समझते हुए, तुम एक अज्ञात नए ईश्वर की पूजा करते हो, जो न केवल सभी के सामने मरा, बल्कि सबसे क्रूर मृत्यु मरा।'

एलेउथेरीउस ने इन शब्दों का उत्तर देने से इनकार कर दिया, मसीह की नकल करते हुए, जिन्होंने अपने दुश्मनों के बीच, पिलातुस के सामने कुछ नहीं कहा और हेरोद को कोई उत्तर नहीं दिया। फिर राजा ने फिर से कहा:

तो मुझे उत्तर दो: तुम इस पागल ईसाई धर्म में शामिल होकर इतने पागल क्यों हो गए हो? मुझसे स्वीकार करो और हमारे अजेय देवताओं को बलिदान चढ़ाओ। यदि तुम मेरी आज्ञा मानकर ऐसा करोगे, तो मैं तुम्हें बहुत सम्मान दूँगा; लेकिन यदि नहीं, तो मैं तुम्हें कठोर यातनाओं की सजा दूँगा।'

[8882] संत अनाक्लेटस 79 से 91 ईस्वी तक पोप थे।

[8883] इल्यरिकम, या इल्यरिया, एड्रियाटिक सागर के पूरे पूर्वी तटरेखा और उससे परे के क्षेत्रों (आज का डाल्मेशिया, बोस्निया और अल्बानिया) को शामिल करता था।

हालाँकि, एलेउथेरीउस ने प्रभु से प्रार्थना की, जिन्होंने कहा था: *'इसलिए इस बात की पहले से चिंता मत करो कि क्या कहना है, क्योंकि मैं तुम्हें ऐसे वचन और ज्ञान से युक्त करूँगा, जिसके विरोध में तुम्हारे कोई भी विरोधी टिक नहीं पाएगा'* (मत्ती 10:19, 21:15), और उत्तर दिया:

'मैं ऐसे देवताओं की सेवा कैसे कर सकता हूँ या उनकी सेवा करने वालों से सहमत कैसे हो सकता हूँ?' क्या मेरे लिए यह बेहतर नहीं होगा कि मैं आपको उनसे मुंह मोड़ने की सलाह दूँ? लेकिन चूँकि आप मेरी बात सुनना नहीं चाहते, इसलिए आपकी मूर्खता पर रोना आता है; क्योंकि आप, यद्यपि ईश्वर द्वारा बुद्धि से संपन्न हैं, पेड़ों और पत्थरों से भी बदतर हो गए हैं, क्योंकि आप उन्हें अपने देवता मानने लगे हैं, और सच्चे ईश्वर को त्याग दिया है, जिसने अपनी बुद्धि से पूरे ब्रह्मांड को बनाया: क्योंकि आकाश और पृथ्वी उसके हाथों का काम हैं, और हम—उसकी सभी रचनाओं में से—उसकी उत्तम और कुलीनतम रचनाएँ हैं। फिर भी हम अज्ञानता से भटक जाते हैं, मानो अंधकार में चल रहे हों, और यह न जानते हुए कि प्रभु को क्या प्रसन्न या अप्रसन्न करता है, हम उसके विरुद्ध अपने हाथ उठाते हैं। लेकिन जहाँ तक उन लोगों का सवाल है जो वास्तव में हमारे दुश्मन और विरोधी हैं—मैं शैतानों की बात कर रहा हूँ—उनको अपना स्वामी और देवता मानना और उन्हें सम्मान और बलिदान देना कितना पागलपन है! मैं, हालाँकि, अपने प्रभु से चिपका हूँ और हमेशा उनके प्रति विफादार रहूँगा और अपने मसीह की सेवा करूँगा; जहाँ तक तुम्हारी सभी चीज़ों का सवाल है—चाहे सम्मान हो, या अपमान और यातना—मैं उन्हें बच्चों का खेल या बच्चों की धमकी मानता हूँ। मेरे लिए, जैसा कि मेरे शिक्षक—संत पौलुस—कहते हैं, *'मैं संसार के लिए सूली पर चढ़ा दिया गया हूँ और वह मुझ पर'* (गलातियों 6:14), और मसीह के लिए मरना, मेरे लिए एक आनंद और एक आशीर्वाद है।

तब राजा क्रोध से भरकर आज्ञा दी कि एक काँसे का पलंग लाया जाए और उसके नीचे बहुत सारी जलती हुई कोयले की आग लगा दी जाए, और नग्न शहीद को उसी पलंग पर लिटा दिया जाए, और आग तब तक जलती रहे जब तक वह मर न जाए। जब पलंग तैयार हो गया, तो शहीद अपनी इच्छा से पूरे शरीर के साथ उस पर लेट गया। इस तमाशे को देखने के लिए इकट्ठा हुई भीड़ ने इन यातनाओं के लिए यातना देने वालों को फटकारना शुरू कर दिया, और कहा:

'यह ईमानदार, कुलीन व्यक्ति, जो अपनी बुद्धिमत्ता के लिए प्रसिद्ध है, किसी खलनायक की तरह इतनी क्रूरता से क्यों मारा जा रहा है?'

लेकिन ईश्वर ने, ऊपर से, शहीद के कष्ट को कम कर दिया; वह ओस से ठंडा होने और खिले हुए गुलाबों पर विश्राम करने की तरह प्रसन्न हुआ। फिर राजा ने, अपने क्रोध को कुछ शांत करके, शहीद के शरीर को चिता से उतारने का आदेश दिया, यह सोचकर कि वह पहले ही मर चुका था। लेकिन शहीद जीवित और कुशल होकर बिस्तर से उठ खड़ा हुआ, आग से पूरी तरह अछूता; आनंदित और उल्लसित होकर, उसने गाया: *'मैं तुझे बड़ा करूँगा, हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे राजा, और युगानुयुग तेरे नाम का धन्यवाद करूँगा... पीढ़ी-दर-पीढ़ी तेरे कामों की स्तुति करेगी और तेरी महत्ता का प्रचार करेगी'* (भजन संहिता 144:1, 4)।

ईश्वर की इस प्रकार महिमा करने के बाद, एलेउथेरीउस अपने अत्याचारी के सामने और भी अधिक धैर्य के साथ खड़ा हुआ और कहा:

'हे राजा, मुझ पर दृष्टि डालो, जिसे तुमने आग में भस्म हो जाने का सोचा था, और मसीह परमेश्वर को जानो, जिसका मैं प्रचार करता हूँ; और अपने देवताओं की दुर्बलता को भी जानो।'

परन्तु राजा ने, शहीद के इन साहसी और स्पष्ट शब्दों को अपने लिए अपमान समझकर, और स्वयं को पराजित मानकर, और भी बड़े-बड़े यातनाएँ सोचनी शुरू कर दीं। इस प्रकार, एक लोहे की जाली को फिर से बीच में लाया गया; उसके नीचे आग जलाई गई, जबकि ऊपर से उस पर तेल डाला गया, और इस प्रकार वह एक प्रचंड ज्वाला में लिपट गई। लेकिन जैसे ही शहीद को इस जाली पर रखा गया, आग तुरंत बुझ गई, अंगारे ठंडे पड़ गए, और लोहे की जाली ठंडी हो गई, मानो उस पर तेल नहीं बल्कि पानी डाल दिया गया हो, और इस प्रकार उसने शहीद को बिना किसी नुकसान के बचा लिया। लेकिन इससे क्या हुआ? क्या राजा का क्रोध भी उसके साथ शांत हो गया? बिल्कुल नहीं। कठोर क्रोध से भरा, वह शांत नहीं हुआ: जैसे अंधा हो, उसका एक ही इरादा था - संत को यातना देकर अपने देवताओं को खुश करना, जो वास्तव में राक्षस और हत्यारे थे।

तब राजा ने एक कड़ाही लाने, उसमें मोम, गोंद और सूअर की चर्बी पिघलाने और उसे तेज आग पर रखने का आदेश दिया, ताकि संत को फिर से उस पर रखा जा सके। जब यह सब हो गया, और कड़ाही आग में जलने लगी और मोम उबलने लगा, तो शहीद उन सभी यातनाओं को सहने के दृढ़ संकल्प के साथ उस पर खड़े हो गए। लेकिन राजा ने उनसे कहा:

'एलेउथेरीउस, चूंकि तुम जीवन और मृत्यु के बीच खड़े हो, इसलिए अपने लिए जो सबसे अच्छा है उसे चुनने में जल्दी करो। क्योंकि मुझे बहुत चिंता है कि तुम एक क्रूर मृत्यु से नष्ट न हो जाओ, और मैं तुमसे अपने ही बेटे की तरह प्रेम करता हूँ। और मैं यह भी नहीं चाहता— , मैं देवताओं की शपथ लेता हूँ—कि इतना कुलीन, इतना सदाचारी, इतना वाक्पटु और इतना उत्कृष्ट व्यक्ति लापरवाही से खुद को विनाश के हवाले करे—और वह भी केवल गर्वपूर्ण, व्यर्थ और निरर्थक अवज्ञा के कारण।

शहीद, राजा के सामने खड़ा होकर, उससे निडरता से बोलने लगा; राजा की चालाक चापलूसी का जवाब देते हुए, उसने उसे गाली दी, और उसे मसीह के भेड़ों पर झपटने वाला भेड़िया कहा। और उसने आगे कहा:

'तुम जो कुछ भी कर लो, तुम मुझे अपना ईश्वरीय जीवन त्यागने के लिए मना नहीं सकते।'

तब हैड्रियन क्रोध से आग-बबूला हो गया, उसने शब्दों को छोड़कर कार्रवाई की। उसने एक बार फिर आदेश दिया कि उसे अंगीठी पर रखा जाए। जब ऐसा किया गया, तो पहले की तरह ही हुआ: आग ओस में बदल गई, और एक ठंडी हवा पवित्र शहीद को तरोताज़ा करने लगी। हेड्रियन, यह देखकर कि सब कुछ उसकी इच्छा के विरुद्ध हो रहा था, यह नहीं जानता था कि क्या करे और वहाँ बैठकर विचार करने लगा। उस समय, शहर का एपार्क, जिसका नाम कोरिंथ था, उपस्थित था; वह ईश्वर द्वारा चुना गया एक व्यक्ति था: वह पहले से ही कुछ हद तक ईसाई शिक्षाओं से परिचित था, जानता था कि कैसे गवर्नर फेलिक्स ईसाई बन गया था, और, मानो एक बीज की तरह, उसने पहले ही अपने हृदय में ईसाई विश्वास की शुरुआत कर ली थी; फिर भी, जबकि वह अभी भी मूर्तिपूजा से जुड़ा हुआ था, वह राजा का बहुत पक्षधर था।

जब उन्होंने देखा कि राजा बहुत भ्रमित था और नहीं जानता था कि शहीद के साथ क्या करना है, तो उन्होंने उसे सलाह दी कि एक तांबे की भट्टी, जिसमें तेज लोहे की छड़ें ठूंसी हुई हों, गर्म की जाए और एलेउथेरीउस को उसमें डाल दिया जाए। जब भट्टी आग से तपने लगी, तो शहीद ने अपनी आँखें—शारीरिक और आध्यात्मिक दोनों रूप से—स्वर्ग की ओर उठाईं और अपना पूरा मन स्वर्ग पर केंद्रित किया, तो वह अकथनीय आनंद से भर गया और कहा:

'मैं तुझे धन्यवाद देता हूँ, हे प्रभु यीशु मसीह, मेरे परमेश्वर, कि तूने मुझे इतने बड़े आशीर्वादों के योग्य समझा, कि तूने मुझे अपनी शक्ति से सुसज्जित किया और अपने पवित्र नाम के लिए इन कष्टों के लिए मुझे बल दिया। और अब स्वर्ग से नीचे देखो और देखो कि कैसे जो मुझसे घृणा करते हैं, वे मेरे विरुद्ध षड्यंत्र रच रहे हैं, और मेरे प्राण को उनकी युक्तियों और रक्तरंजित लोगों से बचाओ[8884] , क्योंकि तुम भले हो; मुझे सुरक्षित रखो, ताकि संसार के छोर तक सब तुम्हें, एकमात्र परमेश्वर को जान सकें।

तब, पवित्र प्रथम शहीद स्तेफन की तरह, जिन्होंने उन लोगों के लिए प्रार्थना की थी जो उन पर पत्थर चला रहे थे, एलेउथेरीउस ने अपने यातना देने वालों के लिए इस प्रकार प्रार्थना करना शुरू कर दिया:

'हे परम दयालु प्रभु: उनके हृदयों को छूओ, यह अनुग्रह करो कि वे आपके पवित्र नाम को जान जाएँ, और वे आपको, एक सच्चे परमेश्वर को जान जाएँ, और मूर्तियों की हानिकारक पूजा को त्याग दें, क्योंकि आप युगों-युगों तक धन्य हैं, आमीन।'

जब शहीद इस प्रकार प्रार्थना कर रहे थे, तब कोरिंथ ने उनकी प्रार्थना के शब्दों को ध्यान से सुना; और तुरंत ही, मानो जलते हुए कोयलों से, इन पवित्र शब्दों से उसका हृदय आग में जल उठा, और वह पूरी तरह से बदल गया। वह राजा के पास गया और कहा:

'एलेउथेरीउस को बिना किसी कारण के, जैसे किसी अपराध के लिए, इतनी यातनाएँ क्यों दी जा रही हैं? और किस अपराध के लिए उसे इतनी क्रूर मृत्यु दी जा रही है?'

कोरिंथ से ये अप्रत्याशित शब्द सुनकर राजा क्रोधित हो गया और गुस्से से उसे घूरते हुए बोला:

'क्या यह वाकई तुम हो, कोरिंथ, जिन्हें हम सब इतनी अच्छी तरह जानते हैं? तुम पर क्या चढ़ा है? या क्या तुम उसकी माँ से लिए गए सोने के लालच में आ गए हो, कि तुम इतनी अप्रत्याशित रूप से बदल गए हो? क्या तुम मेरे उपहारों, मेरी संपत्ति, मेरी महिमा, मेरे सम्मान और मेरी जागीरों से संतुष्ट नहीं हो, जिन्होंने तुम्हें पूरे रोम में प्रसिद्ध कर दिया है? या क्या तुम मुझसे और अधिक चाहते हो? तुम्हारे लिए यह मना नहीं है। लो, मेरे सारे खजाने तुम्हारे सामने खुले पड़े हैं: दोनों

[8884] 'रक्तपिपासु' – भजनकार (भजन संहिता 5:7, 54, 54; 58:3, आदि) द्वारा प्रयुक्त एक अभिव्यक्ति, जो रक्तपिपासु और उग्र लोगों को दर्शाती है।

हाथों से जितना चाहो ले लो, लेकिन खुद को किसी औरत से सोने की तुच्छ रकम के लिए गुप्त रूप से रिश्वत लेने की अनुमति मत दो।"

लेकिन कोरिंथ, नेक इरादों से प्रेरित और शहीद की प्रार्थना से प्रबुद्ध होकर, चिल्लाया:

'तुम्हारा सोना ही तुम्हारा विनाश हो, क्योंकि उसी से अनंत अग्नि उत्पन्न होगी! तो फिर, तुम इतनी खुशी से खुद को अंधा क्यों बनाते हो और उस चीज़ को हिलाने की कोशिश क्यों करते हो जो अटूट है? क्योंकि तुम अच्छी तरह जानते हो कि तुम्हारे किसी भी देवता में यहाँ खड़े लोगों को आग से बचाने की शक्ति नहीं है, जबकि वह ईश्वर जिसका एलेउथेरीउस सम्मान करता है, ने उसे आग से भी अधिक शक्तिशाली और सभी अन्य यातनाओं से ऊपर बना दिया है।

ये शब्द सुनकर, यातना देने वाला एक अकथनीय क्रोध से भर गया (सचमुच, महान मित्रता कभी-कभी महान घृणा को जन्म देती है)। उसने आदेश दिया कि उसी रात, उस एपार्क को उसी भट्टी में फेंक दिया जाए जिसे उसने एलेउथेरीउस के लिए तैयार करने की सलाह दी थी। जब कोरिंथ पहले से ही भट्टी के पास खड़ा था, तो उसने शहीद एलेउथेरीउस से पुकारा:

'मेरे लिए प्रार्थना करो और मुझे उसी मसीह के हथियार से लैस करो जिससे तुमने राज्यपाल फेलिक्स को लैस किया था।'

और फिर, शहीद द्वारा क्रॉस के चिह्न से चिह्नित किए जाने के बाद, उसे भट्टी में डाल दिया गया, लेकिन वह उसमें सुरक्षित रहा, और एक घंटे बाद, ईश्वर की महिमा करते हुए उससे बाहर निकला। अंत में, क्रोध से थककर, हैड्रियन ने कोरिंथ का सिर कलम करने का आदेश दिया - और इस प्रकार उसे शहीद की मृत्यु प्राप्त हुई और, थोड़े ही समय में, उसने वह खजाना प्राप्त कर लिया जिसकी बहुत से लोग लालसा करते थे।

उसी रात, एलेउथेरीउस को भी भट्टी में डाल दिया गया; उसमें, वे उसे तेज लोहे की सलाखों पर घसीटने लगे, लेकिन आग, पहले की तरह, बुझ गई, भट्टी ठंडी हो गई, और लोहे की नोकें टूट गईं, मानो शहीद के शरीर को श्रद्धांजलि दे रही हों; यह सब, यातना देने वाले की आध्यात्मिक अंधता को उजागर करते हुए, पास खड़े लोगों को प्रभु के ज्ञान की ओर आकर्षित कर गया, जिन्होंने इतने गौरवशाली चमत्कार किए थे।

तब वहाँ खड़े सभी लोग चिल्ला उठे:

'महान है ईसाई परमेश्वर, जैसा कि एलेउथेरीउस ने प्रचार किया!'

एक बार फिर यातनाकर्ता यह समझ ही नहीं पा रहा था कि क्या करे, और उसने शहीद को जेल में डालने का आदेश दिया। अपनी ओर से, उसने अपने सलाहकारों को इकट्ठा किया और पूरे दिन इस बात पर विचार किया कि एलेउथेरीउस को कैसे नष्ट किया जाए। इस बीच, पवित्र शहीद एलेउथेरीउस भूख से कालकोठरी में तड़प रहे थे; परन्तु जिसने एक बार हबक्कूक के द्वारा दानिय्येल और कौवे के द्वारा एलियाह को पोषित किया था (दानिय्येल 14:37; 3 राजा 17:6) – उसने एलेउथेरीउस को भूख से मरने नहीं दिया। प्रभु ने उसे स्वर्गदूत के भोजन से जीवित रखा, जिसे उन्होंने एक कबूतर के द्वारा कालकोठरी में भेजा। अंत में, यातना देने वाले ने आदेश दिया कि जंगली बैलों को लाया जाए और शहीद को उनसे बाँध दिया जाए, ताकि वे उन्हें खींचकर और फाड़कर उन्हें इस प्रकार मृत्युदंड दे सकें।

जब यह सब हो रहा था, तब प्रभु का एक स्वर्गदूत स्वर्ग से उतर आया, उसने संत को बैलों से खोल दिया और अपने अत्याचारियों के हाथों से छीनकर, उन्हें शहर के पास एक पहाड़ पर ले गया: वह एक सुनसान जगह थी, और वहाँ कई जंगली जानवर थे। लेकिन पवित्र शहीद एलेउथेरीउस, प्रभु की स्तुति करते हुए, उनके बीच ऐसे रहे जैसे वे भेड़ें हों: सिंह उनके पास से गुजरते थे, और भालू भी उन पर प्यार लुटाते थे; मानो उनकी आवाज़ को पहचानते हुए, वे हर जगह उनका पीछा करते थे, जैसे नौकर अपने मालिक का पीछा करते हैं, उनकी सेवा और रक्षा करते थे। लेकिन कुछ समय बाद, शिकारियों को संत के बारे में पता चला; यह खबर यहाँ तक कि हैड्रियन तक भी पहुँच गई। तब उसने एलेउथेरीउस को पकड़ने के लिए सैनिक भेजे। जब सैनिकों ने संत को पाया, तो जानवर उन पर ऐसे टूट पड़े मानो वे उनके स्वामी के दुश्मन हों, और उन्हें लगभग चीर-फाड़ डाला; लेकिन एलेउथेरीयस ने उन्हें ऐसा करने से रोका और उन्हें रेगिस्तान में पीछे हटने का आदेश दिया। वह स्वयं, सैनिकों के साथ अपनी फाँसी की ओर इस तरह आनंदपूर्वक चल रहा था मानो किसी दावत पर आमंत्रित किया गया हो, और उसने उनसे परमेश्वर के राज्य और मूर्तिपूजकों के लिए तैयार की गई आग की गेहेना के बारे में बात की।

रास्ते में, एलेउथेरीउस ने उन्हें मसीह की शिक्षाओं में शिक्षित किया और अन्य लोगों के साथ - जो विश्वास में आए थे, उनकी संख्या पाँच सौ तक थी - उनका बपतिस्मा दिया। रोम में उनके आगमन पर, उन्हें जंगली जानवरों द्वारा

नोच डाला जाने का दंड दिया गया। जब संत को फांसी के स्थान पर ले जाया गया, तो पहले एक मादा शेर उस पर छोड़ी गई, और फिर एक शेर; लेकिन वे भेड़ों की तरह शांत थे और उसके पैरों को चाटने लगे; और वे उसे कैसे छू सकते थे, जब ईश्वर की आज्ञा से, इतने सारे जानवरों ने उसे जंगल में अपने स्वामी के रूप में सेवा दी थी? यह देखकर, सारी भीड़ चिल्ला उठी:

'महान है एलेउथेरीउस का ईश्वर!'

हालाँकि, अन्य लोगों ने पवित्र शहीद का अपमान किया, उसे जादूगर और जादू-टोना करने वाला कहा, लेकिन ईश्वर का दंड अचानक उन पर आ पड़ा: इन अपमान करने वालों में से कुछ गूंगे हो गए। यातना देने वाले को, यह न सूझते हुए कि और क्या करे, संत का सिर तलवार से काट देने का आदेश दिया। और जब यह हो गया, तो एलेउथेरीउस की माँ, एम्फिया, जो पूरे समय अपने बेटे के पराक्रम को खुशी से देख रही थी, ने उसके निर्जीव शरीर को गले लगा लिया और उसे चूमना शुरू कर दिया। यह देखकर और ईश्वर का धन्यवाद करते हुए कि उसका अपना खून मसीह के लिए बहाया गया था, वह स्वयं तलवार से मारी जाकर अपने बेटे के शरीर पर मृत गिर पड़ी। वहाँ मौजूद इल्लिरिया के विश्वासियों ने, रोमनों के साथ मिलकर, परमेश्वर के संतों के पवित्र शरीरों को सम्मानपूर्वक दफनाया और प्रभु की महिमा की, जिसकी महिमा युगों-युगों तक हो[8885] । आमीन।

पवित्र शहीद का कोंटाकियन, स्वर 2:

हे पूज्यवर, याजकों के उदाहरण और शहीदों की पूर्वछाया के रूप में, हम सभी आपकी स्तुति करते हैं, और हम आपसे विनती करते हैं, हे पवित्र शहीद एलेउथेरीयस: जैसे कि हम प्रेम के साथ आपकी स्मृति का उत्सव मनाते हैं, हमें अनेक कष्टों से बचाएँ, और हम सभी के लिए अनवरत प्रार्थना करते रहें।

सुरोज़ के आर्चबिशप, संत स्टीफन कन्फेशर का जीवन

१५ दिसंबर को स्मरणोत्सव

हमारे पूजनीय पिता स्टीफन का जन्म ग्रेटर कैपाडोसिया में ईसाई माता-पिता के यहाँ हुआ था, जिन्होंने उन्हें प्रभु के मार्गों में पाला। बचपन से ही वे अपने सदाचारी चरित्र के लिए विशिष्ट थे, और वे सामान्य बाल-क्रीड़ाओं से दूर रहते थे। सात वर्ष की आयु में, उनके माता-पिता ने उन्हें पढ़ना और लिखना सीखने के लिए भेजा; वह जल्दी सीखने वाले साबित हुए और जल्द ही पवित्र धर्मग्रंथों में पारंगत हो गए। जब वह पंद्रह वर्ष के हुए, तो वह अपनी मातृभूमि छोड़कर कॉन्स्टेंटिनोपल चले गए, ताकि अपनी शिक्षा वहीं पूरी कर सकें। यह एड्रामटियम के सम्राट थियोडोसियस[8886] के शासनकाल के दौरान और पवित्र पैट्रिआर्क जर्मनस के अधीन था। वहाँ, संत स्टीफन ने लगन से अध्ययन जारी रखा और दार्शनिक विज्ञानों में महारत हासिल करने के बाद, ज्ञान में कई लोगों - यहाँ तक कि अपने शिक्षकों - से भी आगे निकल गए, जिससे सभी उनकी महान बुद्धि से चकित हो गए।

स्टीफ़न के बारे में सुनकर, कॉन्स्टेंटिनोपल के पैट्रिआर्क सेंट जर्मनस ने उसे बुलाया और आशीर्वाद देने के बाद उससे पूछा कि वह किस देश से आया है। स्टीफ़न ने उन्हें अपने बारे में सब कुछ बता दिया। उसके अच्छे चरित्र, ज्ञान और विनम्रता से प्रभावित होकर, पैट्रिआर्क ने स्टीफ़न को अपने साथ रहने की अनुमति दे दी। धन्य स्टीफन कई वर्षों तक पैट्रिआर्क के साथ रहे, उन्होंने पवित्र चर्च की सेवा की और संयम तथा निर्मल अंतकरण का जीवन जिया। फिर, किसी को भी बताए बिना, वे कॉन्स्टेंटिनोपल से चले गए और एक मठ में पहुँचकर, वहाँ भिक्षु जीवन के संकल्प लिए और स्वयं को सद्गुणों के अभ्यास में समर्पित कर दिया। बाद में, पूर्ण मौन के जीवन की इच्छा से, वे मठ से अलग

[8885] पवित्र हयरोमॉर्टयिर एलेउथेरीउस और उनकी माता एम्फिया ने लगभग 120 ईस्वी में शहादत प्राप्त की। हयरोमॉर्टयिर एलेउथेरीउस के अवशेष वर्तमान में रोम में, शहीद सुसान्ना के चर्च में रखे गए हैं। चौथी शताब्दी के अंत में, सम्राट आर्कैडियस के शासनकाल के दौरान, कोंस्टेंटिनोपल में ज़ायरोलोफोस के पास (बेसिलि द पैट्रसियिन द्वारा) उनके नाम एक चर्च का निर्माण किया गया था। संत जोसेफ द हाइमनोग्राफर ने पवित्र शहीद के सम्मान में एक कैनन की रचना की, जिसके आठवें ओड में कहा गया है कि उनकी कब्र से चंगाई और चमत्कारों की नदियाँ बहती हैं।

[8886] एड्रामटियम के थियोडोसियस तृतीय – 715 से 716 तक के बाइजेंटाइन सम्राट।

हो गए और एक एकांत और अज्ञात स्थान पाकर, वहाँ काफी समय तक रहे, उपवास और प्रार्थना के माध्यम से ईश्वर की सेवा करते हुए।

उस समय, सुरोज़ शहर के बशिप[8887] का नधिन हो गया, और इसलिए सुरोज़ के नविासी सुरोज़ के लिए एक बशिप की मांग करने हेतु कॉन्स्टेंटनिोपल में परम पावन पैट्रआर्क जर्मनस के पास आए। और जब बशिप की नयिुक्ति के मामले पर चर्चा हो रही थी, तो एक असहमति उत्पन्न हुई, क्योंकि कुछ लोग एक उम्मीदवार का समर्थन कर रहे थे, जबकि अन्य दूसरे का। हालाँकि, सुरोज़ के लोगों ने ज़ार और परम पावन पैट्रआर्क से एक ऐसे बशिप को नयिुक्त करने का अनुरोध कयिा जो चर्च का अच्छी तरह से शासन कर सके, 'क्योंकि,' उन्होंने कहा, 'हमारे शहर में वधिर्म बढ़ गए हैं।'

एक रात, जब संत हरमन प्रार्थना में खड़े थे, तो प्रभु का एक स्वर्गदूत उनके पास प्रकट हुआ और कहा:

'कल, उस सुनसान स्थान पर जाओ जहाँ ईश्वर का चुना हुआ, स्टीफन, रहता है: उसे सुरोज़ का बशिप नयिुक्त करो, क्योंकि वह मसीह के झुंड की चरवाहा करने और वधिर्मयिों को सच्चे धर्म की ओर ले जाने में पूरी तरह सक्षम है। मैं भी ईश्वर द्वारा उसके पास भेजा गया हूँ, इस आज्ञा के साथ कि वह कसिी भी बात में तुम्हारी अवज्ञा न करे।'

'हे मेरे प्रभु,' महाधर्माध्यक्ष ने कहा, 'मुझे वह स्थान कैसे पता चलेगा जहाँ ईश्वर के चुने हुए, स्टीफन, नविास करते हैं?'

तब स्वर्गदूत ने पैट्रआर्क के एक दास को लेकर संत का ठकिाना दखिा दयिा, और दास ने लौटकर यह बात पैट्रआर्क को बता दी।

जहाँ तक संत स्टीफन का प्रश्न है, जो उस समय अपने छपिे हुए स्थान में ईश्वर से प्रार्थना कर रहे थे, प्रभु का वही स्वर्गदूत उनके सामने प्रकट हुआ, जो श्वेत वस्त्र पहने हुए था – और संत स्टीफन भय से भर गए और काँपते हुए डर के मारे ज़मीन पर गरि पड़े।

देवदूत ने संत का हाथ पकड़कर उन्हें आश्वस्त करते हुए कहा:

'मैं प्रभु का स्वर्गदूत हूँ, जो मसीह उद्धारकर्ता द्वारा तुम्हें शुभ समाचार देने और तुम्हें सूरोझ नगर जाने की आज्ञा देने के लिए भेजा गया हूँ, ताकि तुम लोगों को ईसाई धर्म की शकि्षा दे सको। कल महाधर्माध्यक्ष तुम्हें बुलाएंगे और तुम्हें अभषिेक करके महाधर्माध्यक्ष के रूप में वहाँ भेजेंगे; उनकी अवज्ञा मत करना, कहीं ऐसा न हो कि तुम परमेश्वर का क्रोध भड़का दो।'

तब, उसे वदिा कहकर, देवदूत स्वर्ग में आरोहण कर गया।

अगले दनि, पैट्रआर्क ने संत स्टीफन को लाने के लिए एक सेवक के साथ दो पुरोहतिों को भेजा, और उन्होंने उन्हें बहुत सम्मान के साथ पैट्रआर्क के पास लाया।

पैट्रआर्क ने संत स्टीफन का आनंदपूर्वक स्वागत कयिा; उन्हें अभषिेक करने के बाद, उन्होंने उन्हें सुरोज़ का आर्चबशिप नयिुक्त कयिा और उन्हें जहाज़ द्वारा उनके सुपुर्द कएि गए धर्मप्रांत में भेज दयिा।

सुरोज़ नगर में पहुँचने और महाधर्माध्यक्ष के सहिासन पर बैठने पर, संत स्टीफन ने लोगों को पवत्रि धर्मग्रंथों से उपदेश देना शुरू कयिा और पाँच वर्षों के दौरान, उन्होंने पूरे सुरोज़ नगर और उसके आसपास के सभी क्षेत्रों का बपतस्मिा दयिा।

उस समय, लयिो आइसो□□□न ने कॉन्स्टेंटनिोपल में सहिासन संभाला और दो यहूदयिों द्वारा सखिाए गए इस वचिार से प्रतमिा-भंग (आइकॉनोकलाज्म)[8888] को बढ़ावा दयिा। पहले, उसने पवत्रि प्रतमिाओं को ऊँचाई पर रखने का आदेश दयिा, कहते हुए:

'जो शुद्ध हैं, वे उन्हें चूमें।'

तब उसने आदेश दयिा कि प्रतमिाओं को हवा में लटका दयिा जाए, यह स्पष्ट करते हुए कि प्रतमिाओं को दीवार पर कील से नहीं ठोकना चाहिए। और उस दुष्ट व्यक्ति ने पवत्रि प्रतमिाओं की पूजा के खलिाफ कई अन्य उपाय भी कएि। संत पैट्रआर्क जर्मनस ने उन्हें बार-बार अपने दुष्ट कार्य को छोड़ने के लिए समझाया, और इस मामले पर पवत्रि

[8887] सुरोज़, या सुगदेया – क्रीमयिा के दक्षणिी तट पर एक प्राचीन यूनानी शहर, अब सुदाक – टौरीडा गवर्नोरेट में एक बस्ती।

[8888] बाइज़ेंटाइन सम्राट लयिो, जनिका परविार एशयिा माइनर के इसौरयिा क्षेत्र से था, ने 717 से 741 तक शासन कयिा। उन्होंने 726 में प्रतमिा पूजा के खलिाफ वशिेष रूप से कड़ा वरिोध व्यक्त कयिा। इससे उनके खलिाफ एक लोकप्रयि वद्रिोह भड़क उठा।

पुस्तकों के आधार पर चर्चा की[8889] । इन उपदेशों से क्रोधित होकर, मूर्ति-भंजक ने खुले तौर पर वह ज़हर प्रकट किया जिसे वह अब तक अपने दिल में छिपाए हुए था, और उसने दोगुने उत्साह के साथ पवित्र प्रतिमाओं को बाहर निकालना, उनकी निंदा करना और उनका अपमान करना शुरू कर दिया।

तब लेव ने पूरे शहर और आसपास के कई क्षेत्रों में आदेश जारी किए, जिसमें सभी को पवित्र प्रतिमाओं के साथ भी ऐसा ही व्यवहार करने का आदेश दिया गया, और घोषणा की:

'यदि कोई मेरा विरोध करेगा, तो मैं उसे विभिन्न यातनाएँ दूँगा और उसे मृत्युदंड दूँगा।'

उस समय शाही शहर में, ऑर्थोडॉक्स ईसाइयों पर किए जा रहे विभिन्न प्रकार के अत्याचारों को देखा जा सकता था। जहाँ तक पैट्रिआर्क जर्मनस का सवाल है, दुष्ट सम्राट ने उन्हें निर्वासित कर दिया और उनकी जगह सीरिया के मूल निवासी पैट्रिआर्क अनास्तासियस को नियुक्त कर दिया, जो उनके विधर्मी विचारों में सहमत थे।

इसके बाद, राजा और पादरी ने सूरोझ में महाधर्माध्यक्ष सेंट स्टीफन के पास अपने दूत एक दुष्ट आदेश के साथ भेजे कि प्रतिमाओं या क्रूस की पूजा न की जाए। सेंट स्टीफन ने दूतों को उत्तर दिया:

'ऐसा नहीं होगा; मैं अपने लोगों को मसीह के विधान से विमुख नहीं होने दूँगा: मैं न तो राजा की आज्ञा का पालन करूँगा और न ही उस शापित पादरी की।'

उस रात वह दूतों के जहाज पर गया और उनके साथ कॉन्स्टेंटिनोपल की यात्रा की।

अपने बिशप के वस्त्र धारण करने के बाद, संत स्टीफन सम्राट के समक्ष उपस्थित हुए। सम्राट ने उनसे पूछा:

– तुम कौन हो?

संत ने उत्तर दिया:

'मैं सुरोज़ का आर्चबिशप, स्टीफन हूँ।'

और सम्राट ने कहा:

'क्या तुम यह परिषद देखते हो, जो मेरे साथ यहाँ बड़े सम्मान में बैठी है? उन्होंने प्रतिमाओं को जलाया और टुकड़े-टुकड़े कर दिया है: यदि तुम मेरी बात मानोगे, तो तुम भी हमारे साथ ऐसे ही बड़े सम्मान में रखे जाओगे।'

संत स्टीफन ने उत्तर दिया:

'ऐसा न हो। भले ही तुम मुझे जला दो, या मेरे टुकड़े-टुकड़े कर दो, या मुझे किसी भी अन्य प्रकार की यातना से पीड़ा पहुँचाओ, मैं आइकॉन्स और प्रभु के क्रूस के लिए कुछ भी सहने को तैयार हूँ।'

तब संत ने राजा से कहा:

'हमें किताबों में एक भविष्यवाणी मिली है कि कॉन्स्टेंटिनोपल में एक दुष्ट राजा, एक मूर्तिभंजक जो पवित्र प्रतिमाओं को जलाता है, प्रकट होगा। लेकिन ईश्वर न करे कि यह आपके शासनकाल में हो!'

'और क्या तुम्हें उस राजा का नाम पता चला?' राजा ने पूछा।

'उसका नाम कोनोप है,' स्टीफन ने उत्तर दिया। और राजा ने कहा:

'तुम सही हो, स्टीफन, तुमने मेरा नाम जान लिया, क्योंकि मेरे पिता और माता ने मेरा नाम कोनोप रखा था।'

और स्टीफन ने कहा:

'हे राजा! ऐसा न हो कि यह आपके शासनकाल में हो। क्योंकि यदि आप ऐसा करेंगे, तो आप मसीह-विरोधी के अग्रदूत होंगे!'

संत से ये शब्द सुनकर, उस शापित राजा ने लोहे के दस्ताने से अपने चेहरे, मुँह और दाँतों पर वार किया, और चिल्लाया:

'तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई मुझे दज्जाल का अग्रदूत कहने की?'

और राजा ने आदेश दिया कि स्टीफन को उसके बाल और दाढ़ी से पकड़कर, पीटकर, जमीन पर घसीटकर एक कालकोठरी में डाल दिया जाए। जब उसे उसके यातना देने वाले घसीटकर ले जा रहे थे, तो संत ने ईश्वर का धन्यवाद किया, और उसे एक ऐसी कालकोठरी में डाल दिया गया जहाँ अन्य पवित्र पुरुष भी बंद थे। फिर राजा ने फिर से आदेश दिया कि स्टीफन को उसके सामने लाया जाए।

[8889] इसी समय, पैट्रिआर्क जर्मनस ने प्रतिमाओं की पूजा के खिलाफ सम्राट के फरमानों पर हस्ताक्षर करने से इनकार कर दिया, यह कहते हुए कि वह एक सार्वभौमिक परिषद के बिना आस्था के मामलों में कुछ भी नया नहीं ला सकते।

उसने कहा, 'सुरोज़ के बशिप की हम्मित कैसे हुई मुझे ऐसा कहने की!' 'उसे यहाँ लाओ, आते समय उसे पीटते हुए लाओ।'

संत सात बशिपों के साथ राजा के सामने उपस्थति हुए। अपने हाथों में प्रभु, परमेश्वर की माता और यूहन्ना बपतस्मिादाता की प्रतमिाएँ लिए हुए, राजा ने संत से कहा:

'तुमने मुझे मसीहा-वरिोधी का अग्रदूत क्यों कहा?'

संत ने उत्तर दयिा:

'क्योंकि तुम उसके काम कर रहे हो; मैं यह पहले ही कह चुका हूँ, और मैं तुम्हें एक बार फरि से यही कहता हूँ।'

तब राजा ने प्रतमिा पर थूक दयिा, उसे पैरों तले कुचलना शुरू कर दयिा, और स्टीफन से कहा:

'इस प्रतमिा के साथ भी वैसा ही करो।'

लेकनि संत ने, आँखों में आँसू लिए, कहा:

'हे ईश्वर के शत्रु, राज्य का अयोग्य! ऐसा कैसे है कि तेरी पागल आँखों पर अँधापन नहीं छाया और तेरे अधर्मी हाथ सूख नहीं गए? ईश्वर शीघ्र ही तेरा राज्य छीन ले और तेरे जीवन का अंत कर दे।'

यह सुनकर, राजा ने क्रोध में संत स्टीफन को कोड़े मारने का आदेश दयिा। फरि उन्होंने उसे एक घोड़े की पूंछ से बांधकर कालकोठरी में घसीट लयिा; लेकनि संत ने ईश्वर का धन्यवाद कयिा। कारागार में बंद सभी लोग ईश्वर से प्रार्थना करने लगे, और संतों की प्रार्थनाओं के कारण, दुष्ट राजा शीघ्र ही मर गया और उसका पुत्र, कॉन्स्टेंटाइन कॉप्रोन्यमस, सहिासन पर बैठ गया। उनकी पत्नी ने संत स्टीफन के गुणों और चमत्कारों के बारे में सुनकर अपने पति - राजा कॉन्स्टेंटनि - से संत को उनके पद पर लौटने के लिए रहिा करने को कहा। उसी समय, राजा का एक पुत्र हुआ, और संत स्टीफन ने उसका बपतस्मिा दयिा। स्टीफन को उपहार देकर पुरस्कृत करने के बाद, राजा ने उन्हें अपने झुंड के पास लौटने के लिए बड़े सम्मान के साथ रहिा कर दयिा। एक बार फरि, अच्छे चरवाहे ने अपना पदभार संभाला और लंबे समय तक ईश्वर द्वारा उन्हें सौंपी गई मसीह की भेड़ों का नष्ठिापूर्वक पालन कयिा। फरि, ईश्वर के पास अपने प्रस्थान का पूर्वाभास होते ही, उन्होंने अपने पुरोहति, फलिारेट को, उनकी जगह सुरोझ का आर्चबशिप नयिुक्त कयिा, और[8890] को दसिंबर के 15वें दनि ईश्वर के पास अनंत जीवन में प्रस्थान कर गए।

सुरोज़ में एफ्राइम नाम का एक व्यक्ति था – जो जन्मजात अंधा था – जसिकी संत स्टीफन भोजन, वस्त्र और अन्य आवश्यकताओं से मदद कर रहे थे। अपने परोपकारी की मृत्यु की खबर सुनकर, वह रो पड़ा और बोला:

'अब मेरी देखभाल कौन करेगा? मुझे उसके पास ले चलो, ताकि मैं उसके पवत्रि चरणों को चूम सकूँ।'

और जब उसे स्वर्गीय संत स्टीफन के शरीर के पास ले जाया गया, तो वह उनके पैरों पर गरि पड़ा, और रोने तथा वलिाप करने लगा – और तुरंत ही उसकी दृष्टि लौट आई। इस चमत्कार के माध्यम से, ईश्वर ने अपने सेवक के बारे में संकेत दयिा कि उसे चमत्कार करने वालों और धर्म-स्वीकारकों के साथ, संतों में गनिा जाएगा। उनके पवत्रि शरीर को सुरोझ के बशिपों और सभी लोगों द्वारा बड़े वलिाप के साथ सम्मानपूर्वक दफनाया गया, उस परमेश्वर की महमिा के लिए, जसिकी सर्वदा और युगानुयुग महमिा और ऊँचाई की जाती है। आमीन।

ट्रोपारयिन, स्वर 4:

हे पवत्रि शहीद स्तेफन, जो अदेह प्राणयिों के साथ एकता में नविास करते थे: क्योंकि आपने क्रूस को हथयिार के रूप में उठाया, और प्रतमिा-भंजकों और आत्मा-वरिोधयिों के वरिुद्ध दृढ़ खड़े रहे, जो हमारे ईश्वर मसीह की परम पवत्रि प्रतमिा की पूजा नहीं करते थे, और आपने दुष्टों के हर वधिर्म को समाप्त कर दयिा। इसी कारण, शहीद का मुकुट प्राप्त करके, आपने अपने नगर सूरोझ को सभी वपित्तयिों से मुक्त कराया। और अब हम आपसे प्रार्थना करते हैं, हे पवत्रि एक, कि आप हमें सभी बुरी परीक्षाओं, दुर्भाग्यों और अनंत यातनाओं से बचाएँ।

[8890] संत स्टीफन की मृत्यु लगभग 8वीं शताब्दी के मध्य में हुई।

कॉन्टाकयिन, स्वर 3:

सर्वोच्च की शक्ति से सुदृढ़ होकर, आपने राजा के मूर्तभिंजक उन्माद को ध्वस्त कर दिया। आज, सुरोज़ और हम विश्वासी महिमा और धन-संपत्ति प्राप्त करते हैं: आपके पवित्र अवशेष, जिन्हें स्वर्गदूतों के समूह ऊँचे स्वर्ग से लाते हैं, हे महान और पवित्र स्टीफन, गीतों और भजनों से आपकी महिमा करते हैं।

लात्रस के पूजनीय पॉल की स्मृति

15 दिसंबर को स्मरणोत्सव

लात्रसि के पूजनीय पॉल का जन्म एलेया नगर में[8891] कुलीन माता-पिता के यहाँ हुआ था। कम उम्र में ही अपने पिता को खो देने के बाद, उनका पालन-पोषण फ्राइजिया के संत स्टीफन के मठ में हुआ।[8892] फिर, कुछ ही समय बाद अपनी माँ का भी निधन हो जाने पर, एक युवा के रूप में ही, उन्होंने खुद को मिलेटस के पास माउंट लात्रा पर स्थित एक मठ में पूरी तरह से ईश्वर की सेवा के लिए समर्पित कर दिया। अपने शरीर को कष्ट देते हुए, यह पवित्र तपस्वी कभी बिस्तर या चटाई पर नहीं लेटा, बल्कि किसी पेड़ या पत्थर से सहारा लेकर केवल थोड़ी देर के लिए ही सोता था। अक्सर, नींद पर काबू पाने के लिए, वह अपनी पीठ पर दो बड़े पत्थर लटका लेता और भोर की प्रार्थना (मैटिन्स) तक मठ के चारों ओर घूमता रहता, या, पास की एक धारा के किनारे पर जाकर, किसी पेड़ की छाया में आँसुओं भरी प्रार्थना और ईश्वर के ध्यान में खो जाता। इन तपस्या के कारनामों से भी संतुष्ट न होकर, मसीह को पूरी तरह समर्पित होने के लिए, परम पूज्य पॉल एक गुफा में चुप्पी साधने के लिए चले गए; फिर वे एक ऊँचे पहाड़ पर चढ़े और वहीं रहने लगे। एक चरवाहा, जो अपने एकांत में परम पूज्य पॉल से आकस्मिक रूप से मिला, उनके लिए भोजन ले आया। जैसे-जैसे वे आध्यात्मिक पूर्णता में आगे बढ़े, पॉल को ईश्वर से अदृश्य दुनिया में अंतर्दृष्टि का वरदान मिला और उन्होंने चमत्कार किए। आदरणीय संत के अद्भुत कार्यों और पवित्र जीवन की ख्याति ने कई तपस्वियों को उनकी ओर आकर्षित किया, जिन्होंने चट्टान के पैर में बसकर एक मठ की स्थापना की। सम्राट कॉन्स्टेंटिन पोर्फिरोजेनिटस[8893] अक्सर उन्हें पत्र लिखते थे, उनकी प्रार्थना और सलाह मांगते थे; बुल्गारिया के ज़ार पीटर और रोम के पोप[8894] ने उनके दैवी जीवन के लिए उनका सम्मान किया। कई आगंतुकों द्वारा उनकी मौन साधना में बाधा डालने से परेशान होकर, परम पूजनीय पॉल दो बार सामोस द्वीप[8895] पर चले गए, जहाँ उन्होंने एक मठ की स्थापना की और अगारियों द्वारा तबाह किए गए तीन मठों को पुनर्स्थापित किया। लैट्र में अपनी दूसरी वापसी पर, उन्होंने अपनी मृत्यु का समय बता दिया। फिर वे पहाड़ से उतर आए और भाइयों को आशीर्वाद देकर, शांतिपूर्वक अपना प्राण प्रभु को सौंप दिया[8896] ।

ट्रोपारियन, स्वर 4:

हे सर्व-महिमामय पौलुस, अदेहियों के सहवासी और सभी संतों के साथी के रूप में, हम आपके गुणगान करते हैं और आपसे विनती करते हैं: हमारे लिए सदा प्रार्थना करें, ताकि हमें दया प्राप्त हो।

[8891] एलेया – मिसिया में एक शहर – पेरगेमोन के पास एशिया माइनर का एक उत्तर-पश्चिमी क्षेत्र।

[8892] फ्रासिया – एशिया माइनर का एक बड़ा क्षेत्र, जिसमें मूल रूप से प्रायद्वीप के पश्चिमी हिस्से का पूरा मध्य भाग शामिल था; बाद में, प्रोपोंटिस (मार्मारा सागर) का दक्षिणी तट हेलस्पोंट (डार्डानेल्स) तक भी मिसिया में शामिल कर लिया गया।

[8893] कॉन्स्टेंटिन सप्तम पोर्फ्योजेनिटस – बीजान्टिन सम्राट, जिसने 912 से 959 तक शासन किया।

[8894] यह, बेशक, पोप अगपिटस द्वितीय को संदर्भित करता है, जिन्होंने 946 से 955 तक रोम की धर्मपीठ संभाली।

[8895] सामोस – एजियन सागर (द्वीपसमूह) के मुख्य द्वीपों में से एक, एशिया माइनर के पश्चिमी तट के पास।

[8896] लैट्रिस के आदरणीय पॉल का 16 दिसंबर 956 को निधन हो गया।

कॉन्टाकयिन, स्वर 8:

हे प्राज्ञ, अपने यौवन से ही आपने पुरुषार्थपूर्ण उत्साह से ज्ञान की खोज की; आपने सांसारकि कलह का त्याग कयिा, और दविय त्रमिूर्तकि लिए आप त्रमिूर्तका नविास स्थान बन गए, और आपने वशि्वास के साथ आपके पास आने वालों को प्रकाशति कयिा। अतःहम पुकारते हैं: हे परम धन्य पौलुस, आनन्दति हो।

कुवकिुलारयिा के संत एलेउथेरीउस की स्मृत[8897]

15 दसिंबर को स्मरण कयिा जाता है

संत एलेउथेरीउस बज़िेन्टयिम के मूल नविासी थे और उन्होंने अपनी जीवन यात्रा को भक्तकि फूलों से शानदार ढंग से सुशोभति कयिा। उनका पालन-पोषण शाही दरबार में हुआ, जहाँ उन्होंने जल्द ही सम्मान का पद प्राप्त कर लयिा। उस समय, वे धन और महमिा में सभी से आगे थे; फरि भी, इन सब के बावजूद, वे सांसारकि व्यर्थता में नहीं बहके गए। अक्षय और शाश्वत का स्मरण करते हुए, और सभी सांसारकि चीजों को शून्य मानते हुए, एलेउथेरीउस ने *'दुष्टता के तंबुओं में रहने के बजाय परमेश्वर के भवन के द्वार पर खड़े होने को* प्राथमकिता दी' (भजन संहति 83:11); उसने अपनी आंतरकि, सूक्ष्म दृष्टईिश्वर की ओर मोड़कर, प्रतदिनि पवत्रि भजन गाने का अभ्यास कयिा और अपने जीवन को हर प्रकार के सद्गुणों से सुशोभति कयिा। आत्माओं को भ्रष्ट करने वाले शत्रु[8898] के लिए यह देखना असह्य था, और उसने उस धन्य पुरुष के एक सेवक को राजा के सामने अपने स्वामी पर कलंक लगाने के लिए उकसाया।

यह दास, राजा के सामने उपस्थति होकर, ने उसे बताया:

'मेरे स्वामी का बपतस्मिा हो चुका है, उन्होंने एक गरिजाघर[8899] बनवाया है और, क्रूस पर चढ़ाए गए मसीह में वशि्वास करके, राजा के आदेशों को ठुकराते हैं; उन्होंने कई पवत्रि प्रतमिाएँ प्राप्त की हैं, मसीही ईश्वर की उपासना करते हैं और, उपवास, रोने और प्रणाम करने के द्वारा, अपने शरीर को थका देते हैं।'

अपने सेवक द्वारा अपने स्वामी की नदिा सुनकर, राजा बहुत क्रोधति हो गया और उसने संत को अपनी उपस्थतिि में बुलाया; लेकनि जब संत प्रकट हुए, तो राजा ने अपने क्रोध को छपिाते हुए, सुलह-मलिाप के अंदाज़ में बात की और कहा:

'एलेउथेरीउस! ऐसा कैसे है कि तुमने खुद को दूर कर लयिा, हमें त्याग दयिा, और आम तौर पर दरबारयिों के लिए हमारे प्रेम, और वशिेष रूप से तुम्हारे प्रतमिेरे वशिेष स्नेह की भी अवहेलना कर दी?'

इस पर संत ने उत्तर दयिा:

'हे राजा! मैं अपने शरीर की वभिन्नि व्याधयिों के कारण ऐसा करने के लिए ववश हूँ।'

तब राजा ने कहा:

'यह क्यों है कि आप अकेले ही अपनी संपत्तपिर ताजी हवा का आनंद लेते हैं? क्या हम आपके पास आकर आपसे मलि नहीं सकते, और आपके साथ ग्रामीण जीवन के सुखों का आनंद नहीं ले सकते?'

उस भाग्यशाली व्यक्तनि इन शाही शब्दों पर कम ध्यान दयिा और उन्हें उचति महत्व नहीं दयिा। शाम के समय, वे अपनी पसंदीदा संपत्तपिर चले गए और, अपनी आदत के अनुसार एक अलग कमरे में खुद को बंद करके, ईश्वर के चतिन में लीन हो गए; और जब वे सो गए, तो उन्होंने एक सपने में एक कुएँ जतिनी गहरी खाई देखी, जसिमें वे उतरे और वहाँ एक सुंदर चर्च देखा। इस दृश्य से वस्मिति होकर, एलेउथेरीउस अगले ही दनि सुबह फरि से राजा के दरबार के लिए रवाना हो गए। राजा ने एक बार फरि से चापलूसी भरे शब्दों से उसे लुभाने की कोशशि की, ताकि मसीह में उसकी आस्था को हलिाया जा सके। लेकनि, जब उसके शब्द व्यर्थ गए और वह संत को भटकाने में असमर्थ रहा, तो राजा ने आदेश दयिा कि उसकी तलवार से सरि कलम कर दयिा जाए, और उसके सम्मानति शरीर को कुत्तों और पक्षयिों द्वारा खाए जाने के लिए बाहर फेंक दयिा जाए। इस प्रकार धन्य एलेउथेरीउस ने अपना प्राण ईश्वर को सौंप दयिा। हालाँकि, उनके शरीर को

[8897] कुवकिुलारीय – शाही चेंबरलेन।

[8898] अर्थात् शैतान।

[8899] बोस्फोरस के एशयिाई तट पर, बथिनियिा में, सांगारा नदी के कनिारे उनकी संपत्तपिर।

फेंक दिया गया था, जिसे पुरोहित वर्ग के एक ईसाई ने उठाया, जिसने उसे पवित्र तेल से अभिषिक्त करके और लोबान से सुगंधित करके, एक निर्धारित स्थान पर उचित रूप से दफनाया[8900] ।

आदरणीय परदा तपस्वी की स्मृति

15 दिसंबर को स्मरणोत्सव

संत पार्ड[8901] जन्म से रोमन थे और अपनी युवावस्था में ऊंट चालक के रूप में काम करते थे। एक दिन वे अपने ऊंटों के साथ यरीहो के लिए रवाना हुए और वहाँ एक सराय में ठहरे। और इस प्रकार हुआ कि, ईश्वर की अनुमति से, मानव जाति के शत्रु की साज़िशों के कारण, और पर्द की अपनी लापरवाही से, एक छोटा लड़का ऊँटों के पैरों तले आ गया: वह उनमें कुचल गया और उसकी मृत्यु हो गई। इस दुर्भाग्य से पर्दा को गहरा दुख हुआ, और वह माउंट एरियन पर चला गया, जहाँ उसने संन्यास की शपथ ली और लगातार विलाप करता रहा, अपनी सिसकियों के बीच यह दोहराते हुए:

'मैंने उस लड़के को मार डाला है और मुझे हत्यारा घोषित किया जाना चाहिए।'

जहाँ पर्दा रहता था, उस घाटी में एक शेर रहता था, और वह पवित्र पिता उसके बिल में जाता, और उस जानवर को गुलेल से गोदता ताकि वह क्रोधित होकर उसे चीर-फाड़ डाले। लेकिन शेर ने उसे बिल्कुल भी नुकसान नहीं पहुँचाया। तब उस बूढ़े ने, यह देखकर कि वह अपना उद्देश्य पूरा नहीं कर पा रहा था, उस रास्ते पर सोने का फैसला किया जहाँ से सिर पानी पीने के लिए नदी तक जाता था, इस उम्मीद में कि वह जानवर, उसके पास से गुजरते हुए उसे देखेगा और उसे चीर-फाड़ डालेगा; और इस प्रकार, यहाँ दुख सहकर, वह उस लड़के की हत्या के लिए आने वाले युग में होने वाली यातना से बच जाएगा। संत ने ठीक वैसा ही किया जैसा उन्होंने ठान लिया था: वे अपने कपड़े उतारकर रास्ते पर लेट गए और उन्हें अपने बगल में रख लिया। और देखो, वह शेर उस रास्ते से गुजरते हुए, संत के ऊपर ऐसे कूद गया जैसे वह कोई आदमी हो, चुपचाप और बिना उसे छुए। तब साधु को एहसास हुआ कि प्रभु ने उस पाप के लिए क्षमा कर दी थी, और वह पहाड़ पर अपने निवास में लौट आया, जहाँ वह अपने जीवन के बाकी दिनों तक रहा, और अपनी मृत्यु तक सभी के लिए एक सदाचारी व्यक्ति का उदाहरण प्रस्तुत करता रहा।

29 दिसंबर

16 दिसंबर (पुराना तरीका)

पवित्र भविष्यवक्ता हग्गै की स्मृति

16 दिसंबर को स्मरणोत्सव

पवित्र भविष्यवक्ता हग्गै लेवी वंश के थे[8902] और वे बेबीलोन के निर्वासन के दौरान पैदा हुए थे[8903] । जब वे अभी भी एक युवा व्यक्ति थे, तो वे बेबीलोन से यरूशलेम लौट आए और पवित्र भविष्यवक्ता जकर्याह के साथ छत्तीस वर्षों तक वहां भविष्यवाणी की। वे दोनों मसीह के अवतार से लगभग 500 वर्ष पहले जीवित थे। संत हग्गै यरूशलेम में दूसरे मंदिर के निर्माण के समकालीन थे, जो पहले – सुलैमान के मंदिर – की जगह पर बनाया गया था। इस मंदिर का निर्माण बेबीलोन

[8900] बिथिनिया में संत की संपत्ति को संत एलेउथेरीउस के दफन स्थल के रूप में मान्यता प्राप्त है। इस पवित्र शहीद ने चौथी शताब्दी की शुरुआत में मैक्सिमियन के अधीन यातनाएँ झेलीं।

[8901] आदरणीय पारद छठी शताब्दी में फलिस्तीन में रहे और कार्य किया।

[8902] लेवी, याकूब और लियाह के तीसरे पुत्र थे।

[8903] ईसा पूर्व 587 में, खलदानी राजा नबूकदनेसर ने यरूशलेम पर कब्जा कर लिया और उसे तबाह कर दिया। प्रमुख नागरिकों को, अपने परिवारों के साथ (14,000 से 18,000 लोगों के बीच), खलदानी राजधानी, बेबीलोन में बंदी बना लिया गया। यहूदी 538 ईसा पूर्व तक बेबीलोन की बंधुत्व में रहे, जब मीद और फारस के राजा साइरस, जिसने खल्दीय साम्राज्य को उखाड़ फेंका था, ने यहूदी बंदियों (लगभग 40,000 पुरुष) को उनके स्वदेश वापस भेज दिया।

के नर्िवासन से लौटने पर यहूदयिों के नेता जरुब्बाबेल द्वारा कयिा गया था, जनि्हें फारसी राजा साइरस ने अपने देश लौटने दयिा था, जनि्होंने उन्हें यहूदयिा का राज्यपाल नयिुक्त कयिा था। मंदरि का नर्िमाण बड़ी कठनिाइयों से भरा था, क्योंकि सामरी इसका वरिोध कर रहे थे, जनिकी मंदरि नर्िमाण में भागीदारी यहूदयिों द्वारा अस्वीकार कर दी गई थी, जो पूजा की पवत्रिता और शुद्धता को सभी अशुद्ध और मूर्तपिूजक चीजों से बचाना चाहते थे। समरीयों ने कुछ फारसी प्रांतों के राज्यपालों को रश्वित दी, और उन्होंने फारसी दरबार में यहूदयिों की बदनामी की। लेकनि मंदरि के सफल नर्िमाण में मुख्य बाधा यह थी कि यहूदयिों का पूर्व उत्साह ठंडा पड़ गया था। उन्होंने अपना ध्यान अन्य मामलों पर केंद्रति कर लयिा, और अपने घरों के नर्िमाण और सजावट में व्यस्त हो गए, यह मानते हुए कि ईश्वर का घर बनाने का समय अभी नहीं आया है; उन्होंने अपनी लापरवाही को सही ठहराने के लिए अन्य बहाने भी बनाए। और इस प्रकार, इस समय, प्रभु ने भवष्यिवक्ता हग्गै को यहूदयिों के पास फटकार और चेतावनयिों के साथ भेजा, साथ ही परम सहायता का वादा और पहले मंदरि पर दूसरे मंदरि की श्रेष्ठता और भव्यता के बारे में एक गौरवशाली भवष्यिवाणी भी दी। ईश्वर की मदद और हग्गै तथा ज़कार्याह नबयिों के प्रयासों से, ज़रूब्बाबेल अपने दुश्मनों की साज़शिों और यहूदयिों की नष्क्रियिता पर काबू पा गया, और 520 ईसा पूर्व में शुरू हुआ मंदरि, फारस के राजा दारा के शासन के छठे वर्ष, 516 ईसा पूर्व में पूरा हो गया। 'यहोवा *का हाथ इस घर की नींव रखता है, और यहोवा का हाथ ही इसे पूरा करेगा, और तुम जानोगे कि सेनाओं का यहोवा मुझे तुम्हारे पास भेजता है*' (जकर्याह 4:9)। हेगाई की भवष्यिवाणयिों में 'temple[8904] ' के नर्िमाण से संबंधति चार अंश हैं। इनमें, भवष्यिवक्ता यहूदयिों को उनकी लापरवाही और परमेश्वर के घर की उपेक्षा के लिए फटकार लगाकर, और उनके कार्यों में हुई वफिलता, भूमि की बंजरता, और परमेश्वर से मलिी अन्य सज़ाओं की ओर इशारा करके नर्िमाण करने के लिए प्रेरति करता है; उन्होंने नर्िमाण की सुरक्षा और समयबद्धता, इस प्रयास में परमेश्वर की उपस्थति और सुरक्षा की गारंटी, नए मंदरि की भव्यता और उत्कृष्टता, उनके लिए इसकी आवश्यकता, और प्रभु की इच्छा को पूरा करने के लिए परमेश्वर के आशीर्वाद के वादे पर जोर देकर भी उनका उत्साह बढ़ाया। नबी भव्यता से इस मंदरि की भवष्यि की महमिा और पृथ्वी पर एक अटूट राज्य, मसीह के राज्य की स्थापना का वर्णन करते हैं: *'सेनाओं का यहोवा यों कहता है: "एक बार फरि—और यह बहुत जल्द होगा—मैं आकाश और पृथ्वी, समुद्र और सूखी भूमि को हलि दूँगा, और मैं सब जातयिों को हलि दूँगा; और जसि की सब जातयिाँ लालसा करती हैं वह आएगा, और मैं इस घर को महमिा से भर दूँगा," सेनाओं का यहोवा कहता है। "मेरी चाँदी और मेरा सोना," सेनाओं का यहोवा कहता है। सेनाओं का यहोवा यों कहता है, 'इस दूसरे मन्दरि का तेज पहले वाले मन्दरि के तेज से अधकि होगा; और इस स्थान में मैं शान्ति दूँगा*' (हग्गै 2:6–10)।

और यहोवा का वचन भवष्यिद्वक्ता के पास पहुंचा: *'यहूदा के हाकमि जेरुब्बाबेल से कह, मैं आकाश और पृथ्वी को हलि दूंगा; मैं राज्यों के सहिासनों को उलट दूंगा, और मैं राष्ट्रों के राज्यों की शक्ति को नाश कर दूंगा; मैं रथों और उन पर सवारों को उलट दूंगा, और घोड़े और उनके सवार एक दूसरे की तलवार से गरि जाएंगे। 'उस दनि,' सेनाओं का यहोवा यों कहता है, 'मैं तुझे, शेअलतीएल के पुत्र जेरुब्बाबेल, अपने दास, को लूंगा,' यहोवा की यही वाणी है, 'और मैं तुझे मुहर की अंगूठी की नाईं करूँगा, क्योंकि मैं ने तुझे चुन लयिा है,' सेनाओं के यहोवा की यही वाणी है*" (हग्गै 2:21-24)।

उनकी मृत्यु पर, संत हग्गै को पुरोहतिों की कब्रों के पास सम्मान के साथ दफनाया गया, क्योंकि वे पुरोहति वंश के थे। वे परम सदाचार के व्यक्ति थे और एक गौरवशाली तथा महान भवष्यिवक्ता के रूप में, सभी द्वारा प्रयि और सम्मानति थे। जब उसका नाम हब्रिू से रूसी में अनुवादति कयिा जाता है, तो इसका अर्थ 'भोज' या 'उत्सव मनाने वाला' होता है[8905] ।

संत हग्गै को एक वृद्ध व्यक्ति के रूप में चत्रिति कयिा गया है, जसिका गरमिामय चेहरा गोल दाढ़ी से घरिा हुआ है; उसका सरि आधा गंजा था।

[8904] हग्गै 1:2–15, 2:1–9, 10–19, 20–23। हग्गै बारह तथाकथति लघु भवष्यिवक्ताओं में से एक थे; उनकी पुस्तक, जो दो अध्यायों से मलिकर बनी है, इन भवष्यिवक्ताओं की पुस्तकों की शृंखला में दसवीं है।

[8905] नबी हग्गै का नाम पवत्रि शास्त्र में कुछ भजनों (भजन संहति 137:1–8, 145:1–10, 147:1–9) के शीर्षकों में, एज्रा की पहली पुस्तक (1 एज्रा 1:1, 5:1, 6:1, 14:1) और प्रेरति पौलुस की इब्रानयिों के नाम पत्र में (इब्र. 12:26)।

धन्य रानी थियोफानिया का जीवन।

16 दिसंबर को स्मरणोत्सव

धन्य थियोफानिया का जन्म कॉन्स्टेंटिनोपल में हुआ था और वह राजसी वंश से थीं। उनके माता-पिता – कॉन्स्टेंटाइन, जो इलस्ट्रियस[8906] के पद पर थे, और उनकी माँ अन्ना – एक पवित्र विवाह में रहते थे लेकिन लंबे समय तक उन्हें संतान नहीं हुई, और इसलिए वे हमेशा इस बात से दुखी रहते थे कि उनके कोई बच्चे नहीं थे। अपने विवाह का फल पाने के लिए उत्सुक, उन्होंने परमेश्वर की परम पवित्र माता से प्रार्थना की और फोरकिया में उनके सबसे सम्मानित चर्च[8907] का बार-बार दौरा करते हुए, भक्तिपूर्ण प्रार्थना में अपने मन की बातें उनके सामने व्यक्त कीं।

उन्होंने प्रार्थना की, 'हे जगत की माता, यह प्रार्थना स्वीकार हो कि आपकी दया से हमारी बाँझपन की समस्या दूर हो जाए, और आपकी मध्यस्थता से हमें सृष्टिकर्ता से संतान प्राप्ति का वरदान मिले!'

और चूँकि उन्होंने विश्वास के साथ मांगा, उन्होंने उसी के अनुग्रह से वह प्राप्त किया, जिसकी उन्होंने प्रार्थना में आग्रहपूर्वक कामना की थी: उनकी बाँझपन दूर हो गया और उन्होंने एक बेटी को जन्म दिया, जिसका नाम उन्होंने थियोफानिया रखा।

छह वर्ष की आयु से ही थियोफानिया को पढ़ना-लिखना सिखाया गया और हर अच्छे कार्य की शिक्षा दी गई। अपने प्रारंभिक बचपन में ही, उनके भविष्य के महान सद्गुणों और पवित्रता के स्पष्ट संकेत दिखाई देते थे। उसके अच्छे चरित्र और बुद्धिमत्ता को देखकर, थियोफानिया के माता-पिता बहुत प्रसन्न हुए और भविष्य में उसकी धार्मिकता में सांत्वना पाने की आशा की। इसलिए, उन्होंने कानून के अनुसार उससे विवाह करने के लिए समान कुलीनता, अच्छे चरित्र और बुद्धिमत्ता वाले एक युवक की तलाश की, क्योंकि वह पहले ही वयस्क हो रही थी और हर मामले में अपने समकालीनों से अधिक प्रतिभाशाली थी।

उस समय, मैसेडोनिया के ज़ार बेसिल[8908] अपने पुत्र, बुद्धिमान लियो[8909] को शादी के लिए एक सुंदर और सदाचारी कन्या की तलाश में थे। थियोफानिया को सभी कन्याओं में सबसे उत्तम पाकर, उन्होंने उसका विवाह अपने पुत्र से कर दिया, जिसे पहले ही सिंहासन का उत्तराधिकारी घोषित किया जा चुका था। शाही विवाह सार्वभौमिक आनंद और हर्षोल्लास के बीच मनाया गया।

कुछ समय बाद, उस चालाक दुश्मन ने राजसी परिवार में पिता और पुत्र के बीच कलह बो दी, और पिता अपने पुत्र पर बड़े क्रोध से टूट पड़े। उन्होंने उसे और उसकी पत्नी थियोफानिया को पकड़कर कैद कर दिया और कड़ी निगरानी में रख दिया। यह यूकैटा के बिशप थियोडोर सैंटावरिन की गुप्त द्वेषपूर्णता और चालाक विश्वासघात के कारण हुआ – जो एक जादूगर था जिसे राजा लियो पसंद नहीं करता था।

यह इस प्रकार शुरू हुआ: जब ज़ार बासिल के प्रथम पुत्र और ज़ार लियो के बड़े भाई – कॉन्स्टेंटिन – की मृत्यु हुई, तो ज़ार बासिल ने उनका शोक मनाया और बेइंतहा रोए, क्योंकि वह उन्हें बहुत प्यार करते थे। तब उपर्युक्त जादूगर, ज़ार को अत्यंत दुख में देखकर और उसे सांत्वना देने की इच्छा से, अपनी जादूगरी का प्रयोग कर ज़ार को उसके दिवंगत पुत्र कॉन्स्टेंटिन को जीवित दिखाया – वह एक घोड़े पर सवार होकर उसकी ओर आ रहा था। अपने बेटे को गले लगाकर और स्नेह से उसे प्यार से चूमकर, ज़ार उसे फिर से खो बैठा, क्योंकि जादुई आकृति और दृष्टि गायब हो गई थी। ज़ार चकित और भयभीत था; उस दृष्टि को वास्तविकता समझकर, उसने सैंटावरिन को सर्वोच्च सम्मान देना शुरू कर दिया और उसे अपना सच्चा दोस्त मानकर, उसकी हर बात का पालन करने लगा। युवा लियो, हालांकि विवेकी और ईश्वर-भयभीत था, उस जादूगर से घृणा करने लगा और उसे ईश्वर का शत्रु मानकर तिरस्कार करने लगा। इस बीच थियोडोर, इस अपमान का बदला राजा लियो से कैसे ले सकता है, इस पर विचार करते हुए, एक चालाक युक्ति सोची। एक उपयुक्त क्षण चुनकर, वह निजी तौर पर राजा लेव के पास गया और, उनके प्रति सद्भावना और अनुग्रह का दिखावा करते हुए, कहा:

[8906] यह बाइजेंटाइयम में शाही दरबार के उच्चतम रैंक वाले अधिकारियों को दिया गया पदनाम था।

[8907] फ़ोराकिया – कॉन्स्टेंटिनोपल में एक जिला।

[8908] बासिल प्रथम मैसेडोनियाई – बाइज़ेंटाइन सम्राट, जिसने 867 से 886 तक शासन किया।

[8909] बेसिल द मेसेडोनियन के उत्तराधिकारी, लियो VI द वाइज़ ने 886 से 911 तक शासन किया।

'तुम जवान हो और अपने पिता के साथ शिकार पर जाते हो। इसलिए, तुम्हें एक छोटी तलवार छिपाकर अपने पास रखनी चाहिए, ताकि कभी तुम इसका इस्तेमाल किसी जानवर पर कर सको, और कभी ज़रूरत पड़ने पर उसे अपने पिता को भेंट कर सको; या, अगर कोई घरेलू दुश्मन—जिनकी तुम्हारे पिता के बहुत से हैं— तो वे अचानक और अप्रत्याशित रूप से आपके पिता पर हमला कर दें – तब आप, तुरंत अपने छिपे हुए तलवार को खींचकर, दुश्मन को मार गिरा सकते हैं और अपने पिता की जान बचा सकते हैं।

अपने दुश्मन की इस विश्वासघाती सलाह पर अमल करते हुए, और उसकी चालाकी से अनजान, लेव ने अपने पिता के साथ शिकार पर जाने पर, या जहाँ भी वह कहीं और जाता, अपने जूते में एक छोटी तलवार छिपाकर रखना शुरू कर दिया।

इसके बाद, चालाक सैंटावरिनि ने गुप्त रूप से राजा वासिली से कहा:

'तुम्हारा बेटा लेव तुम्हें अचानक मारकर अकेले ही राज करना चाहता है। उसके दुष्ट इरादे का सबूत यह है: जब तुम शिकार पर जाते हो और वह तुम्हारे साथ होता है, तो वह अपने जूते में एक तलवार छिपाए रखता है, जो किसी अनुकूल क्षण पर अचानक वार करके तुम्हें मारने के लिए तैयार रहती है।' यदि आप इसकी पुष्टि करना चाहते हैं, तो इसे आजमाएँ – उसके साथ शिकार पर जाएँ, और जब आप खेत में पहुँचें, तो यह देखने के लिए तलाशी लेने का आदेश दें कि उसके जूते में क्या है।

जल्द ही राजा वासिली, अपने जवान बेटे, युवा राजा को लेकर शिकार पर निकल पड़े और खुले मैदान में, उन्होंने यह जांचने का आदेश दिया कि राजा लेव के बूट में क्या है, जहाँ एक छोटी दोधारी तलवार छिपी हुई मिली। वासिली पर तुरंत अपने बेटे के प्रति अकथनीय क्रोध और गुस्से की आग भड़क उठी, क्योंकि वह सैंटार्वनि की बात को सच मान बैठा था— कि उसके बेटे ने उसे मारने का इरादा किया था।

'इसीलिए उसने तलवार तैयार की थी,' उसने कहा।

हालाँकि लियो, किसी भी गलत काम से निर्दोष, इस बात पर अड़ा रहा कि उसने तलवार अपने पिता को मारने के लिए नहीं, बल्कि उनकी जान बचाने के लिए रखी थी। लेकिन उसके पिता, जो अत्यधिक क्रोधित थे और उसकी एक भी बात सुनने को तैयार नहीं थे, ने तुरंत उसे और उसकी पत्नी, धन्य थियोफानिया को, शाही महलों के एक गुप्त कक्ष में बंद कर दिया, और उन पर एक मजबूत पहरा लगा दिया। इस प्रकार धूर्त जादूगर सैंटावरिनि ने राजा लियो से अपना बदला लिया; और इस घटना का सबसे भयानक पहलू यह था कि, स्वयं सैंटावरिनि के उकसावे पर, पिता ने अपने ही बेटे की आँखें फोड़ डालना चाहा। और यह कृत्य निश्चित रूप से हो भी जाता यदि पैट्रिआर्क और संपूर्ण सिनिड ने राजा को रोक न दिया होता।

तीन साल से भी अधिक समय तक, निर्दोष राजा लियो और धन्य थियोफानिया, जिन्होंने कोई बुराई नहीं की थी, कैद में रहे। वहाँ उन्होंने केवल प्रार्थना और उपवास के अलावा कुछ नहीं किया, अपनी कैद पर शोक मनाया और सर्व-द्रष्टा ईश्वर से अपनी बेगुनाही की गवाही देने का आह्वान किया। कई मौकों पर, सिक्लाइट अपने बेटे के लिए ज़ार से मध्यस्थता करना चाहता था, लेकिन उसे कोई उपयुक्त क्षण नहीं मिल सका। आखिरकार, एक ऐसा अवसर आया जब ऐसी मांग की जा सकती थी। यह इस प्रकार हुआ। ज़ार के कक्ष में एक पक्षी, एक तोता था, जिसे मानव आवाज़ में कुछ शब्द बोलने के लिए प्रशिक्षित किया गया था और जो अपनी बातों से ज़ार और उसे सुनने वालों को मनोरंजन देता था। एक दिन, जब पवित्र भविष्यवक्ता एलिया का पर्व मनाया जा रहा था, तो राजा ने अपने सभी दरबारियों को एक शाही दावत के लिए बुलाया और एक भोज का आयोजन करके, सभी को अपने साथ आनंद और उल्लास मनाने के लिए आमंत्रित किया। जहाँ तक उस पक्षी का सवाल है, वह अक्सर मानव आवाज़ में बोलता था, और—चाहे किसी ने सिखाया हो या संयोग से— निम्नलिखित शब्द दोहराता था:

'हाय, हाय, प्रभु लियो!'

यह सुनकर, दावत में मौजूद सभी दरबारी स्तब्ध होकर बैठ गए और अपना खाना-पीना छोड़कर रह गए। दरबारियों को इस तरह दुखी, न खाते-पीते देख, राजा ने पूछा कि वे इतने उदास क्यों हैं। फिर, समय को उचित समझकर, वे आँसुओं में डूबकर उठे और कहा:

'यदि एक पक्षी, जो विवेकहीन है, अपने स्वामी के लिए शोक मनाता है, जो निर्दोष होकर पीड़ित है, – और, रोते हुए और उसे खोजते हुए, कहता है: 'हाय, हाय, हे स्वामी सिंह!' – तो फिर हम, तर्कशील और वाक्पटु प्राणी, जो निस्संदेह जानते हैं कि आपका पुत्र, हमारा स्वामी, दुर्भावना के कारण निर्दोष होते हुए भी कष्ट सह रहा है, और बदनामी के कारण आपके पितृत्व-स्नेह के क्रोध को झेल रहा है – हम कैसे आनंदित हो सकते हैं, खा-पी सकते हैं?! क्या हमें, इसके बजाय,

और भी अधकि शोक नहीं करना चाहएि? हे राजा! यदआिपके पुत्र ने आप, अपने पता, के वरिुद्ध कोई पाप कयिा है, और आपके खलिाफ हाथ उठाने की साजशि रची है, तो उसे यहाँ लाओ— —और हम उसे टुकड़े-टुकड़े कर देंगे। लेकनि अगर वह हर बात में नरि्दोष है—जैसा कहिम नसि्संदेह जानते हैं—तो फरि आप अपने ही जगिर के टुकड़े को क्यों सता रहे हैं?

ये शब्द सुनते ही राजा दयालु हो गए और अपने हृदय की सहज करुणा से प्रेरति होकर, उन्होंने तुरंत आदेश दयिा कराजा लयिो को जेल से बाहर लाया जाए, उसके जेल में बढ़े हुए बाल काटे जाएँ, और राजसी वस्त्र पहनाकर सम्मानपूर्वक उनके सामने पेश कयिा जाए। जब यह सब हो गया, तो राजा रोते हुए उठ खड़ा हुआ; उसने अपने बेटे को गले लगा लयिा, उसे प्यार से चूमा, और उसे उसके पूर्व शाही पद पर बहाल कर दयिा।

इसके बाद कुछ ही समय जीवति रहने के बाद, राजा बेसलि बीमार पड़ गए और उनकी मृत्यु हो गई, और उन्होंने राजसी अधकिार अपने पुत्र को वरिासत में दे दएि। जहाँ तक लयिो का सवाल है, अपने पता की मृत्यु पर, उसने जादूगर सैंटावरनि को पकड़ लयिा, उसे कोड़े मारने और उसकी आँखें नकिालने का आदेश दयिा, और उसे एथेंस शहर में नरि्वासन में भेज दयिा[8910] ।

इस प्रकार जादूगर की दुर्भावना उसी पर टूट पड़ी। यह सैंटावरनि आस्था से मनीकयि, सद्धिांत से जादूगर, दखिावे से ईसाई और पद से बशिप था, और राजा बेसलि द्वारा एक संत माना जाता था—क्योंकि वह जादू-टोने के माध्यम से चमत्कार करता था।

इस बीच, धन्य थयिोफानयिा ने अपनी कैद के बाद राजसी जीवन में प्रवेश कर, पूरी लगन से अपनी आध्यात्मकि मुक्ति की खोज की, राजसी महमिा को कुछ भी नहीं समझते हुए और सांसारकि जीवन की मठिास और व्यर्थता को भूसी और एक सपने के समान तुच्छ जानते हुए। दनि-रात, बनिा रुके, उनके होठों पर भजन, आध्यात्मकि गीत और प्रार्थनाएँ रहती थीं, और उन्होंने अपना पूरा जीवन ईश्वर को प्रसन्न करने और दया के कार्यों के माध्यम से उनकी खोज करने में बतिाया। वह अपने शरीर के शाही आभूषणों पर कोई ध्यान नहीं देती थी; और यदएिक ओर वह कुछ वैभव से सुसज्जति होती थी, तो दूसरी ओर, अपने वस्त्रों के नीचे, अपने शरीर पर, वह एक मोटे बालों वाली कमीज़ पहनती थी, जसिसे उसका शरीर कष्ट में रहता था। उनका जीवन तपस्या से भरा था – वे साधारण रोटी और सूखी सब्जयिों पर ही जीवन यापन करती थीं; भव्य दावतों को उन्होंने अपनी मेज़ से पूरी तरह से हटा दयिा था।

जो धन-संपत्ति और कीमती खजाने उसके पास आए, उन्हें उसने जरूरतमंदों, गरीबों और बेसहारों, अनाथों और वधिवाओं में बाँट दयिा; कीमती वस्त्र और सामान भी उन्हें दएि गए। उसने संन्यासयिों और मठों के साधारण कक्षों को पुनर्स्थापति कयिा, उन्हें जमीनों और आवश्यक सभी चीजों से समृद्ध कयिा। इस मसीह-प्रेमी रानी ने सभी के प्रतिजो उत्साह और देखभाल दखिाई, वह ऐसी थी! वह अपने नौकरों और नौकरानयिों को भाई और बहन मानती थी, और कभी भी कसिी को केवल नाम से संबोधति नहीं करती थी, बल्कि प्रभु में उनके पदवी से सम्मानति करती थी, और प्रत्येक के नाम, पद और पदवी का सम्मान करती थी। न तो उन्होंने अपनी जीभ से कोई शपथ ली, और न ही उनके होठों से कोई भ्रष्ट शब्द नकिला—न कोई झूठ, न कोई बदनामी, और न ही वास्तव में कोई अश्लील शब्द। उन्होंने सभी के साथ प्रेम से व्यवहार कयिा—जो रोते थे उनके साथ रोती थीं, जो आनंदति होते थे उनके साथ आनंदति होती थीं। यद्यपि उसका बस्तिर उत्तम सूती कपड़े से बछिा हुआ था[8911] और सोने के आभूषणों से सजा हुआ था, वह उस पर नहीं सोती थी; इसके बजाय, फर्श पर एक साफ चटाई बछिाकर—जो जानवरों की नुकीली हड्डयिों और दाँतों को ढँकती थी—वह उस पर सोने के लएि लेट जाती थी, और हर रात वह अपने इस बस्तिर को आँसुओं से भीग जाती थी, जैसा कि भवषि्यवक्ता दाऊद ने कहा (भजन संहति 6:7), और बहुत ही संक्षप्ति नींद के बाद वह तुरंत उठकर परमेश्वर की महमिा करती थी। इस तरह के कठोर जीवन, जो हर तरह की कमी से भरा था, से थयिोफानयिा एक गंभीर शारीरकि बीमारी में पड़ गईं; फरि भी उनकी आत्मा अनवरत प्रार्थना से वचिलति नहीं हुई, और न ही उन्होंने दव्यि कानून का अध्ययन करना बंद कयिा, पवत्रि पुस्तकें पढ़ीं और जो पढ़ती थीं उसे व्यवहार में उतारा। उनका सारा प्रयास उत्पीड़तिों की मदद करने, वधिवाओं के लएि आवाज उठाने, अनाथों की देखभाल करने, दुखी लोगों को सांत्वना देने और रोने वालों के आँसू पोंछने पर केंद्रति था - और जो बेघर और बेसहारा थे, उनके लएि वह एक माँ थीं। दुनयिा में रहते हुए, उन्होंने सभी सांसारकि चीजों को अस्वीकार कर दयिा; ववािहति

[8910] एथेंस – प्राचीन यूनानी राज्य की राजधानी, जो अपनी वास्तुकला, कलाकृतयिों, व्यापार और उद्योग के वकिास, और वशिेष रूप से अपने स्कूलों और दार्शनकि अकादमयिों के लएि प्रसद्धि था। एथेंस मध्य ग्रीस के पूर्वी प्रायद्वीप पर, द्वीपसमूह के पास स्थति था।

[8911] वस्सिन – एक कीमती, महीन और मुलायम, चमकदार लनिन का कपड़ा।

होते हुए, उन्होंने मसीह के भले जुए से प्रेम किया और अपना क्रूस उठाकर उसे उठाए रखा, और इस प्रकार परमेश्वर को प्रसन्न किया।

जब उन्होंने महसूस किया कि उनकी आत्मा उनके शरीर से विदा होने वाली है, तो धन्य थियोफानिया ने सभी को विदाई देने के लिए उनके पास आने का निर्देश दिया। फिर, सभी को अंतिम चूमन देकर, वह सांसारिक राज्य से स्वर्गीय राज्य में चली गईं और महिमा के राजा के सामने खड़ी हुईं, अपने अनेक सद्गुणों से सुसज्जित, जैसे एक शाही बैंगनी चोगा[8912] पहनकर। इसलिए, उन्हें उन संतों में गिना गया जिन्होंने अपने सद्गुणों के द्वारा परमेश्वर को प्रसन्न किया, और उनके सम्मानित शरीर को सम्मान के साथ दफनाया गया[8913] ।

थेओफानिया के पति, ज़ार लियो द वाइज़ ने, जब वह जीवित थीं, उनकी महान पवित्रता को देखकर और उन्हें पत्नी के रूप में नहीं बल्कि पित्नी और ईश्वर के समक्ष मध्यस्थ के रूप में सम्मानित करते हुए, समय रहते उनके नाम पर एक चर्च बनाने का संकल्प लिया। हालाँकि, संत ने जब यह बात जानी, तो न केवल इसकी सहमति नहीं दी, बल्कि सिख्त मनाही कर दी। इसलिए, उनके नाम पर पहले से ही निर्माणाधीन चर्च का नाम बदलकर सभी संतों के सम्मान में रख दिया गया, और उसी राजा द्वारा, पूरी चर्च की सलाह पर, पेंटेकोस्ट के बाद पहले सप्ताह में सभी संतों का पर्व स्थापित किया गया। राजा ने कहा:

'यदि थियोफानिया एक संत हैं, तो उनकी स्मृति सभी संतों के साथ, परमेश्वर की महिमा के लिए मनाई जाए, जो सभी संतों के माध्यम से महिमामय होते हैं!

वे, और हम भी, सदा के लिए महिमामय हों। आमीन।

शहीद संत मरीना की स्मृति

16 दिसंबर को स्मरण किया जाता है

[8914]संत मारिन का जीवनकाल 'Karin[8915] ' के शासनकाल में था और कुलीन वंश से होने के कारण, कम उम्र के बावजूद उन्हें 'सिक्लिटिकिोस' या 'एपसिोकोस' की उपाधि प्राप्त थी। एक ईसाई होने के नाते, उन्हें गिरफ्तार कर मूर्तियों को बलिदान चढ़ाने के लिए मजबूर किया गया। लेकिन जब उसने इस मांग को मानने से इनकार कर दिया, तो उसे फांसी दी गई और तलवारों से काट-काट कर टुकड़े-टुकड़े कर दिया गया, फिर आग में फेंक दिया गया। इसके बाद, उसे एक लाल-गरम तवे पर और फिर उबलते हुए बर्तन में डाल दिया गया; फिर भी, ईश्वर की कृपा से, मारिन इन सभी यातनाओं के दौरान अक्षुण्ण रहा। तब उन्होंने संत पर जंगली जानवर—शेर और भालू—छोड़ दिए, लेकिन इन्होंने भी उन्हें कोई नुकसान नहीं पहुँचाया। इस बीच, ईसाई धर्म के इस दृढ़ स्वीकारकर्ता के प्रति मूर्तिवादियों का क्रोध और भी प्रबल हो गया: उन्होंने उसे जबरदस्ती मूर्तिवादी मंदिर में खींचकर ले जाने और बलिदान करने के लिए मजबूर करने का निश्चय किया। उसी क्षण, संत ने कहा:

'मैं देवताओं को बलिदान चढ़ाना चाहता हूँ।'

शहीद के वचन सुनकर राजा और उसके आसपास के सभी लोग प्रसन्न हुए। लेकिन मारिन, जो अन्य सभी के साथ मंदिर में प्रवेश कर चुका था, ने प्रभु यीशु मसीह से प्रार्थना की, और मूर्तियाँ गिरकर चूर-चूर हो गईं। राजा इस अप्रत्याशित घटनाक्रम से स्तब्ध रह गया और उसने तुरंत शहीद का सिर काट देने का आदेश दे दिया। इस प्रकार संत

[8912] बैंगनी चोगा – कarmesī रंग का एक औपचारिक परिधान, शाही परफ़ोरी – बीजान्टिन सम्राटों का एक अनिवार्य गुण और उनकी शाही गरिमा का प्रतीक था।

[8913] धन्य सम्राज्ञी थियोफैनिया की मृत्यु लगभग 893 में हुई। उन्हें उनके पति द्वारा निर्मित ऑल सेंट्स चर्च में, होली एपोस्टल्स चर्च के पास दफनाया गया था, जहाँ बाद में एक कन्वेंट स्थापित किया गया था। 1342 में, नोवगोरोड के रूसी तीर्थयात्री स्टीफन ने इस मठ को संत कॉन्स्टेंटिन का मठ कहा, जबकि हिएिरोडीकन ज़ोसिमा (1420) ने इसे फिलोस्ट्रैटस का मठ कहा; इन दोनों ने वहाँ रानी सेंट थियोफानिया के अवशेष देखे, साथ ही एन्क्रा के शहीद क्लेमेंट के अवशेष भी देखे, जिनका पर्व चर्च 23 जनवरी को मनाता है। वर्तमान में, थियोफानिया के अवशेष कॉन्स्टेंटिनोपल के पैट्रिआर्केट में हैं।

[8914] सिक्लिटिकी सबसे महत्वपूर्ण शाही सलाहकारों और गणमान्य व्यक्तियों में से थे, जो मिलकर सिक्लाइट (शाही परिषद) का गठन करते थे।

[8915] कैरिनस – 282 से 283 तक रोमन सम्राट।

मारनि ने अपना प्राण प्रभु को अर्पति कर दयिा; और उनकी अवशेषों को ईश्वर-भयभीत ईसाइयों ने श्रद्धापूर्वक दफनाया[8916] ।

30 दसिंबर

17 दसिंबर (पुराने कैलेंडर के अनुसार)

संत दानयिैल नबी और उनके साथ तीन पवत्रि युवक: अनानयिास, अजारीयास और मसिाएल का जीवन

17 दसिंबर को स्मरणोत्सव

पवत्रि नबी दानयिैल यहूदा के कुल के राजसी वंशज थे। अपनी युवावस्था में उन्हें नबूकदनेज़र द्वारा बंदी बना लयिा गया था[8917] और यहूदी राजा यहोयाकीम के साथ उन्हें यरूशलेम से बेबीलोन ले जाया गया[8918] ; वहाँ, एक युवा व्यक्ति होते हुए भी, वह अपनी दैवीय प्रतभिाओं के लिए प्रसद्धि हो गया – वशिेष रूप से जब उसने बुद्धमिानी से अन्यायपूर्ण और कानून तोड़ने वाले न्यायाधीशों को बेनकाब कयिा और नर्दिोष सुसन्ना को मृत्यु से बचाया।

उस समय, बेबीलोन की बंधुत्व में यहूदयिों के दो बुज़ुर्ग थे – उनके बीच उत्पन्न होने वाले ववािदों को सुलझाने के लिए नयिुक्त न्यायाधीश। कुछ वशिेष दनिों पर, ये बुज़ुर्ग जोआकमि नामक एक कुलीन और धनी व्यक्ति के घर इकट्ठा होते थे, और वहाँ वे यहूदी लोगों के बीच ववािदों का नपिटारा करते थे।

योआक़ीम की सुसन्ना नाम की एक पत्नी थी, जो हल्कियिाह की बेटी थी, और वह बहुत सुंदर तथा ईश्वर-भयभीत थी। उसके माता-पतिा धर्मनष्ठि पुरुष थे और उन्होंने अपनी बेटी का पालन-पोषण मूसा की व्यवस्था के सभी उपदेशों के अनुसार कयिा था। हालाँकि, वे बूढ़े अधर्मी पुरुष थे: उन्होंने न्याय के बहाने अन्याय कयिा, ताकि उनके वषिय में धर्मग्रंथ का वचन पूरा हो: *'अधर्म बबेल से, न्यायाधीश बूढ़ों से नकिल गया है'* (दानयिैल 13:5)।

यही बुज़ुर्ग हर दनि सुसन्ना को अपने पति के बगीचे में जाते और वहाँ से नकिलते हुए देखते थे, और उन पर वासना जागी। और उन्होंने अपने मन को भ्रष्ट कर लयिा और अपनी आँखें फेर लीं, ताकि वे न तो स्वर्ग की ओर देखें और न ही धर्मी न्याय को याद करें; फरि भी उन्होंने एक-दूसरे के सामने अपनी वासना का खुलासा नहीं कयिा, क्योंकि उन्हें इसे स्वीकार करने में शर्म आती थी। उनमें से प्रत्येक ने अपनी वासना को पूरा करने के लिए एक अनुकूल क्षण की तलाश की। और वे सुसन्ना को देखने के लिए हर दनि लगन से पहरेदारी करते रहे, और एक-दूसरे से कहने लगे:

[8916] संत मारनि लगभग 283 में शहीद हुए थे।

[8917] नबूकदनेसर – नाबोपोलसर के पुत्र, बेबीलोन का राजा (607 से 564 ईसा पूर्व तक), इतहिास के सबसे प्रसद्धि वजिेताओं में से एक। उसने मस्रि के फरिौन नेको की सेना को हराया और एशयिा में मस्रि की शक्ति का अंत कर दयिा (यर. 45:2; 2 राजा 24:7)। फरि उसने अपना ध्यान अपने अधीनस्थ, यहूदा के राजा यहोयाकीम पर केंद्रति कयिा। एक संक्षप्ति घेराबंदी के बाद यरूशलेम पर कब्ज़ा करने के बाद, उसने यहोयाकीम को राजा बनाए रखा, उसे अपना सामंत बना लयिा; उसने मंदरि के कुछ बर्तन उठाए और उन्हें बेबीलोन भेज दयिा, और यह भी आदेश दयिा कि शाही और राजकुमारों के परविारों से सुंदर और प्रतभिाशाली युवकों को चुना जाए और बेबीलोन ले जाया जाए, ताकि उन्हें दरबार में सेवा करने के लिए वहाँ पाला जा सके। और चूँकि तीन वर्ष बाद यहोयाकीम ने उसकी अधीनता त्याग दी, उसने फरि से यहूदा पर आक्रमण कयिा और वहाँ से तीन हजार से अधकि यहूदयिों को नर्वासति कर दयिा (597 ईसा पूर्व), और अगले वर्ष उसने स्वयं राजा (सदकयिाह) को बंदी बना लयिा और उसे बेड़यिों में जकड़ दयिा (2 इतहिास 36:6)।

[8918] बाबेल दुनयिा के सबसे पुराने शहरों में से एक है; इसे हम् के वंशज, हू के पुत्र नम्रिोद ने बनाया था, जसिने इस शहर को अपने राज्य की राजधानी बनाया (उत्पत्ति 10:6-10)। इसी शहर के नाम पर ही पूरे प्रदेश को बेबीलोनयिा कहा जाने लगा। इसे खलदीयों का देश भी कहा जाता है (यर्मि. 24:5; यहे. 12:13) – इसका नाम प्रमुख खलदीय कबीले के नाम पर रखा गया था, जो प्राचीन काल में उत्तर से, आर्मेनयिा के पहाड़ों से यहाँ आए थे और इस भूमि को अपना नाम दयिा। यह भूमि शिनार के उपजाऊ मैदान में, टग्रिसि और यूफ्रेट्स नदयिों के बेसनि में स्थति थी। बाबेल यहाँ यूफ्रेट्स नदी के दोनों कनिारों पर, बगदाद से 15 मील, फारसी खाड़ी से 40 मील और यरूशलेम से 130 मील की दूरी पर स्थति था। सभी दशिाओं से बाबेल में धन आता था, और इस प्रकार यह पूर्व के सबसे बड़े, सबसे प्रसद्धि और सबसे अमीर शहरों में शुमार था। नबूकदनेस्सर की मृत्यु के बाद, बेबीलोन का साम्राज्य तेजी से पतन करने लगा। आज, प्राचीन बाबेल के स्थल पर केवल खंडहर ही बचे हैं।

'चलो घर चलते हैं, क्योंकि दोपहर का भोजन का समय हो गया है,' और बाहर निकलकर वे अलग हो गए; लेकिन लौटकर वे उसी जगह पर वापस आए, और जब उन्होंने एक-दूसरे से इसका कारण पूछा, तो उन्होंने अपनी वासना स्वीकार कर ली। फिर, उन्होंने मिलकर एक समय तय किया जब वे उसे अकेला पा सकें।

एक दिन, जब वे एक उपयुक्त अवसर की प्रतीक्षा कर रहे थे, सुसन्ना हमेशा की तरह अपनी दो दासियों के साथ आई, और बगीचे में स्नान करना चाहती थी, क्योंकि गर्मी थी। और वहाँ दो बूढ़ों के सिवा कोई नहीं था, जो छिपकर उसे देख रहे थे। सुसन्ना ने अपनी दासियों से कहा:

'मुझे कुछ तेल और साबुन ला दो, और बगीचे के दरवाज़े बंद कर दो ताकि मैं स्नान कर सकूँ।'

उन्होंने ठीक वैसा ही किया जैसा उसने कहा था: उन्होंने बगीचे के दरवाज़े बंद कर दिए और जो लाने के लिए कहा गया था, वह लेने के लिए पार्श्व द्वार से बाहर चले गए, और उन्होंने उन बूढ़े आदमियों को नहीं देखा, क्योंकि वे छिप गए थे। और इस प्रकार, जब नौकरानी बाहर चली गईं, तो वे दोनों बूढ़े आदमी उठे, सुसन्ना के पास आए और कहा:

'बगीचे के द्वार बंद हैं और कोई हमें देख नहीं सकता, और हम तुझ पर मोहित हैं। इसलिए, हमारी बात मान और रात हमारे साथ बिता। अगर नहीं, तो हम तेरे खिलाफ गवाही देंगे कि एक जवान आदमी तेरे साथ था और इसलिए तूने अपनी नौकरानियों को भगा दिया था।'

तब सुसन्ना कराह उठी और बोली:

'मैं हर तरफ से फँस गई हूँ; क्योंकि अगर मैं ऐसा करूँगी तो मैं मर जाऊँगी; लेकिन अगर मैं नहीं करूँगी तो मैं तुम्हारे हाथों से बच नहीं पाऊँगी। ईश्वर के सामने पाप करने से तो मेरे लिए ऐसा किए बिना तुम्हारे हाथों में पड़ना ही बेहतर है।'

और सुसन्ना ने ऊँचे स्वर से पुकारा; और दोनों वृद्धों ने भी उसके विरुद्ध पुकारा। और उन में से एक दौड़ा और बगीचे के द्वार खोल दिए।

जब घर के अंदर वालों ने बगीचे से चीख सुनी, तो वे यह देखने के लिए कि सुसन्ना को क्या हुआ है, पार्श्व द्वारों से बाहर भागे। और जब बुज़ुर्गों ने अपने शब्द कह लिए, तो उसके दास बहुत लज्जित हुए, क्योंकि सुसन्ना के बारे में ऐसा कुछ भी कभी नहीं कहा गया था।

और ऐसा हुआ कि अगले दिन, जब लोग उसके पति योआकीम के पास इकट्ठा हुए, तो वे दोनों बुज़ुर्ग भी सुसन्ना को मार डालने के लिए, उसके विरुद्ध दुष्ट इरादों से भरे हुए आए। और उन्होंने लोगों के सामने कहा:

'सुसन्ना, हिल्कियाह की बेटी और योआकीम की पत्नी को बुलाओ,' और उन्होंने उसे बुलाया।

और वह अपने माता-पिता, अपने बच्चों और अपने सभी रिश्तेदारों के साथ आई। सुसन्ना बहुत नाज़ुक और सुंदर मुख वाली थी। और इन दुष्ट पुरुषों ने आज्ञा दी कि उसका मुख खोल दिया जाए (क्योंकि वह ढका हुआ था), ताकि वे उसकी सुंदरता को निहार सकें। उसके संबंधी और जो भी उसे जानते थे, वे रो पड़े। लेकिन वे दोनों वृद्ध, लोगों के बीच में खड़े होकर, उसके सिर पर अपने हाथ रख दिए। वह, इस बीच, आँसुओं से आकाश की ओर देख रही थी, क्योंकि उसका हृदय प्रभु पर भरोसा रखता था। और वृद्धों ने कहा:

'जब हम अकेले बगीचे में टहल रहे थे, तो यह औरत दो दासियों के साथ आई, बगीचे के द्वार बंद कर दिए, और दासियों को भेज दिया। फिर एक जवान आदमी, जो वहाँ छिपा हुआ था, उसके पास आया और उसके साथ लेट गया। हम, बगीचे के एक कोने में खड़े होकर और ऐसी अराजकता का गवाह बनकर, उनकी ओर दौड़े और उन्हें एक साथ देखा; लेकिन हम उस जवान को रोक नहीं सके, क्योंकि वह हमसे ज़्यादा ताकतवर था, और बगीचे के फाटक खोलकर भाग गया। लेकिन हमने इस औरत को पकड़ लिया और उससे पूछा: 'वह जवान कौन था?' लेकिन उसने हमें बताने से इनकार कर दिया। हम इसकी गवाही देते हैं।

और सभा ने उन पर विश्वास किया, क्योंकि वे लोगों के बुज़ुर्ग और न्यायाधीश थे, और सुसन्ना को मृत्युदण्ड दे दिया। तब सुसन्ना ने ऊँचे स्वर में पुकारा और कहा:

'हे अनंतकाल के ईश्वर, जो रहस्यमयी बातों को जानते हैं और सभी चीज़ों से तब भी अवगत हैं जब वे होने से पहले ही होती हैं। आप जानते हैं कि उन्होंने मेरे खिलाफ झूठी गवाही दी है, और मैं यहाँ मरने जा रही हूँ, जबकि मैंने उन बातों में से कोई भी नहीं किया है जो इन लोगों ने मेरे खिलाफ दुर्भावना से रची हैं।'

और प्रभु ने उसकी पुकार सुनी।

जब उसे मृत्युदंड के लिए ले जाया जा रहा था, तो परमेश्वर ने पवित्र आत्मा के द्वारा दानियेल नामक एक जवान को उत्तेजित किया। और उसने ऊँचे स्वर में पुकारा:

'मैं उसके लहू का दोषी नहीं हूँ!'

तब सारी भीड़ उसकी ओर मुड़ी और कहने लगी:

'तुमने यह क्या कहा?'

तब दानयेल उनके बीच में खड़ा होकर बोला:

'हे इस्राएल के पुत्रो, क्या तुम इतने मूर्ख हो कि बिना जांच-पड़ताल या सत्य का पता लगाए, तुमने एक इस्राएली बेटी को दोषी ठहरा दिया है? अदालत में लौट जाओ, क्योंकि इन बूढ़ों ने उसके खिलाफ झूठी गवाही दी है।'

और तुरंत सारी सभा लौट गई, और बुजुर्गों ने दानयेल से कहा:

'हमारे बीच अपनी जगह पर बैठो और हमें बताओ, क्योंकि परमेश्वर ने तुम्हें एक वृद्ध का अधिकार दिया है।'

और दानयेल ने लोगों से कहा:

'उन्हें एक-दूसरे से अलग करो, और मैं उनसे पूछताछ करूँगा।'

जब उन्हें एक-दूसरे से अलग कर दिया गया, तो दानयेल ने उनमें से एक को आगे बुलाया और उससे कहा:

'हे बुराई के दिनों में बूढ़ा हो जाने वाले! अब तेरे पाप प्रकट हो गए हैं—वे पाप जो तूने अतीत में अन्यायपूर्ण न्याय करके, निर्दोषों को दोषी ठहराकर और दोषियों को बरी करके किए थे, जबकि प्रभु कहते हैं: "तू निर्दोष और धर्मी को मृत्युदण्ड नहीं देगा" (व्यवस्थाविवरण 25:1)। अब, यदि तुमने इस स्त्री को देखा, तो मुझे बताओ, तुमने उन्हें किस वृक्ष के नीचे एक-दूसरे से बात करते देखा?

उसने कहा, 'मस्टकि वृक्ष के नीचे'[8919] । दानयेल ने कहा:

'निश्चय ही तूने अपने ही नुकसान के लिए झूठ बोला है, क्योंकि देख, परमेश्वर का स्वर्गदूत, परमेश्वर से आज्ञा पाकर, तुझे दो टुकड़े कर देगा।'

उसे भेजने के बाद, दानयेल ने दूसरे को लाने का आदेश दिया, और उससे कहा:

'तुम कनान के कुल से हो, यहूदा के नहीं!' सौंदर्य ने तुम्हें बहकाया है, और वासना ने तुम्हारे हृदय को भ्रष्ट कर दिया है। इस प्रकार तुमने इस्राएल की पुत्रियों के प्रति व्यवहार किया, और उन्होंने भय के मारे तुम्हारे साथ संबंध बनाए; पर यहूदा की बेटी तुम्हारी अधर्म को सहन नहीं करेगी। अब, मुझे बताओ: किस वृक्ष के नीचे तुमने उन्हें आपस में बात करते हुए पाया?

उसने कहा:

'हरे ओक के पेड़ के नीचे[8920] ।'

दानयेल ने उससे कहा:

'तुमने निश्चय ही अपने ही नुकसान के लिए झूठ बोला है, क्योंकि परमेश्वर का स्वर्गदूत तुम्हें आधा कर देने के लिए, तुम सबको नष्ट करने के लिए, तलवार लेकर तैयार खड़ा है।'

तब सारी सभा ने ऊँचे स्वर से पुकार लगाई और उस परमेश्वर का धन्यवाद किया, जो उन पर आशा रखने वालों को बचाता है, और वे दोनों बूढ़ों के विरुद्ध उठ खड़े हुए, क्योंकि दानयेल ने उनके ही शब्दों के द्वारा उन्हें उजागर कर दिया था, जिससे यह साबित हो गया कि उन्होंने झूठी गवाही दी थी। और उन्होंने उनके साथ वैसा ही किया जैसा उन्होंने अपने पड़ोसी के विरुद्ध दुष्टता से षड्यंत्र रचा था, मूसा की व्यवस्था के अनुसार, और उन्हें मृत्युदंड दिया; और उसी दिन निर्दोषों का रक्त बख्शा गया। और हिल्कियाह और उसकी पत्नी ने अपनी बेटी सुसन्ना के लिए परमेश्वर का धन्यवाद किया, साथ ही उसके पति योआकीम और उसके सभी रिश्तेदारों ने भी, क्योंकि उसमें कोई लज्जास्पद कृत्य नहीं पाया गया।

और उस दिन से दानयेल लोगों में अत्यंत सम्मानित हो गया – अपनी बुद्धि और उस पर प्रदान किए गए दैवीय वरदानों के कारण[8921] ।

उस समय, बेबीलोन के राजा नबूकदनेस्सर ने अपने दास-प्रमुख अशपेनाज़ को आज्ञा दी कि वह इस्राएल के राजकुमारों और कुलीन परिवारों के बंदियों में से उन युवकों को चुने जो शारीरिक रूप से निर्दोष हों, सुंदर रूप वाले, सीखने में

[8919] स्लावोनिक में, 'कांटेदार पेड़ के नीचे' – ग्रीक 'स्कीनोस' (मस्टिक पेड़)।

[8920] स्लाव शब्द 'पॉड टर्नोवम' ग्रीक 'स्कीनोस' (मस्टिक वृक्ष) से आता है।

[8921] सुसन्ना का यह वृत्तांत दानयेल की पुस्तक के अध्याय 13 में पाया जाता है और इसे बाइबिल की गैर-प्रामाणिक पुस्तकों के हिस्से के रूप में वर्गीकृत किया गया है।

तेज, बुद्धमिान और राजा के महल में सेवा करने के लिए उपयुक्त हों, और उन्हें कैलदी भाषा और साहत्यि की शक्षिा दें। राजा ने उनके लिए अपने भोजन की मेज से दैनकि भोजन और अपनी पीने की शराब नर्धिारति की, और आदेश दयिा कि उन्हें तीन साल तक प्रशक्षिति कयिा जाए, जसिके अंत में उन्हें राजा के सामने पेश होना था। उनमें यहूदा के पुत्रों में से एक दानयिेल और उसके साथ राजसी वंश के तीन अन्य युवक भी थे: अनान्याह, अजर्याह और मसिाएल। और दास-प्रमुख ने उन्हें नए नाम दए: दानयिेल का नाम बेलतशस्सर, अनान्याह का नाम शद्रक, मसिाएल का नाम मेशाक और अजर्याह का नाम अबेद्नेगो रखा गया[8922] । दानयिेल ने अपने तीन साथयिों के साथ मलिकर मन में ठान ली कि वह राजा की मेज़ के भोजन और उस दाखरस से स्वयं को अशुद्ध नहीं करेगा; और इसलए उसने मुख्य दासराज से इन चीज़ों से स्वयं को अशुद्ध न करने का अनुरोध कयिा। परमेश्वर ने दानयिेल को मुख्य दासराज की कृपा और अनुग्रह प्रदान कयिा, जसिने दानयिेल से कहा:

'मुझे अपने स्वामी राजा का भय है, जन्हिोंने स्वयं आपके लिए भोजन और पेय नयिुक्त कयिा है; यदि वह देखे कि आपकी शक्लें आपके साथ के अन्य जवानों से अधकि पीली पड़ गई हैं, तो आप मेरे सरि को राजा के सामने खतरे में डाल देंगे।'

तब दानयिेल ने अमेलसार् से कहा, जसिे नपुंसकों के प्रधान ने दानयिेल, अननयि, अजर्याह और मशिाएल के पास नयिुक्त कयिा था:

'अपने सेवकों को दस दनि तक आज़माइश पर रखए; हमें खाने के लिए सब्जयिाँ और पीने के लिए पानी दीजए। फरि हमारे चेहरों की तुलना उन युवकों से कीजए जो राजा का भोजन खा रहे हैं, और उसके बाद अपने सेवकों के साथ जैसा आपको ठीक लगे, वैसा कीजए।'

उसने इस बात को मान लयिा और उन्हें दस दनि के लिए आज़माया। दस दनि के अंत में, उनका रंग अधकि सुहावना और वे उन सभी जवानों की तुलना में अधकि तंदरुस्त थे जन्हिें राजा का भोजन दयिा जाता था। तब अमेलसरा ने उनका भोजन और दाखरस ले लयिा और उसके बदले में उन्हें सब्जयिाँ दे दीं। और परमेश्वर ने इन चारों जवानों को हर प्रकार के साहत्यि और ज्ञान का ज्ञान दयिा; और दानयिेल को उसने सब प्रकार के दर्शन और स्वप्नों को समझने की सामर्थ्य भी दी। जब उन दनिों के समाप्त होने पर राजा ने उन्हें अपने सामने लाने का आदेश दयिा, तो दासी-प्रधान ने उन्हें नबूकदनेसर के सामने पेश कयिा। और राजा ने उनसे बात की, और उन सभी युवकों में दाऊद, हनन्याह, अजर्याह और मशिाएल जैसे कोई नहीं थे – और वे राजा के सामने सेवा करने लगे। और हर उस मामले में जसिमें बुद्धमिानी भरी समझ की आवश्यकता थी, राजा ने उनसे जो कुछ भी पूछा, वह उन्हें अपने पूरे राज्य के सभी जादूगरों और ज्योतषियिों से दस गुना श्रेष्ठ पाया[8923] ।

अपने राज्य के दूसरे वर्ष में, नबूकदनेस्सर ने एक स्वप्न देखा, और उसका मन बेचैन हो गया, और स्वप्न उसके मन से नकिल गया। तब राजा ने जादूगरों, भवष्यिवक्ताओं, जादू-टोना करने वालों और खलदीययिों को बुलाने का आदेश दयिा[8924] , ताकि वे उसके स्वप्न की व्याख्या कर सकें। वे आकर राजा के सामने खड़े हो गए। और राजा ने उनसे कहा:

'मुझे एक स्वप्न आया है, और मेरा मन बेचैन है; मैं उस स्वप्न को जानना चाहता हूँ।'

और खलदानीयों ने राजा से कहा:

'हे राजा! आपकी आयु लंबी हो! अपने दासों को सपना बताइए, और हम उसका अर्थ समझा देंगे।'

राजा ने खलदीयों से उत्तर दयिा, और कहा:

[8922] उन्हें नेबूकदनेसर के अधीनता के प्रतीक के रूप में उनका नाम बदल दयिा गया था।

[8923] दानयिेल, अनानयिाह, अजर्यास और मशिाएल के शाही दरबार में पालन-पोषण के वृत्तांत दानयिेल 1:3–20 में मलिते हैं।

[8924] मोहनिी (रूसी: 'мистики'), जादूगर (रूसी: 'прорицатель'), जादू-टोना करने वाले, खलदीयी। ये बुद्धमिान पुरुषों के वभिन्नि नाम हैं, जनिके पास गहरी और व्यापक जानकारी थी, वशिेष रूप से प्रकृति की छपिी हुई शक्तयिों, पवत्रि लेखों (चत्रिलपिि), साथ ही खगोल वज्ञिान और चकित्सिा के क्षेत्रों में। उनका मुख्य व्यवसाय प्रकृति का अध्ययन, खगोलीय घटनाओं का अवलोकन, सपनों की व्याख्या और भवष्यिवाणी करना था; साथ ही, वे अधकिांशतः पुरोहति भी थे। ऐसे ही मागी थे, जो यूसुफ (उत्पत्ति 41:8) और मूसा (नर्गिमन 7:11) के समकालीन थे, और वे मागी जो यीशु मसीह की आराधना करने आए थे (मत्ती 2:1–2)। बलिाम (गनिती 22:5) और शमिोन (प्रेरतिों के काम 8:1) को भी इस श्रेणी में शामलि कयिा जा सकता है। उनमें से कई शब्द के सर्वोत्तम अर्थ में बुद्धमिान और वद्विान पुरुष थे, और उन्हें कभी-कभी ईश्वर से वशिेष प्रकाशन भी प्राप्त हुए, जैसे कि बलिाम और वे मगसि् (magi) जन्हिोंने यीशु मसीह की आराधना करने आए थे; जबकि अन्य नसि्संदेह अपने वद्वितापूर्ण कार्यों को जादू-टोने की नीच कला के साथ मलिाते थे, भवष्यिवाणी, मंत्र-उच्चारण, वभिन्नि छल-कपट और इसी तरह की अन्य बातों में संलग्न थे। शायद इसीलिए उन्हें अन्य बातों के अलावा, जादूगर और जादू-टोना करने वाले कहा जाता है।

'मेरे पास से वह बात चली गई है; यदि तुम मुझे सपना और उसकी व्याख्या नहीं बताओगे, तो तुम्हें टुकड़े-टुकड़े कर दिया जाएगा, और तुम्हारे घर खंडहर बना दिए जाएँगे।'

खलदीयियों ने राजा को उत्तर दिया और कहा:

'पृथ्वी पर कोई भी मनुष्य नहीं है जो राजा को यह बात बता सके; इसलिए, किसी भी महान और शक्तिशाली राजा ने कभी भी किसी भविष्यवक्ता, ज्योतिषी या खलदीय से ऐसी कोई बात नहीं माँगी है। राजा जो बात माँग रहा है वह इतनी कठिन है कि देवताओं के अलावा कोई और उसे राजा को नहीं बता सकता, जिनका निवास शरीर में नहीं है।'

राजा इस बात से बहुत क्रोधित हुआ, और उसने बबेल के सभी बुद्धिमानों को मार डालने का आदेश दिया। जब बुद्धिमानों को मारने का आदेश जारी हुआ, तो वे दानाएल और उसके साथियों को मारने के लिए उन्हें खोजने लगे। तब दानाएल ने परामर्श और बुद्धि के साथ राजा के अंगरक्षकों के सेनापति अरिओख से, जिसे बेबीलोन के बुद्धिमानों को मारने का आदेश मिला था, मुंह फेरकर उससे राजा के इस भयानक आदेश का कारण पूछा। तब अरिओख ने दानिय्येल को सारी बात समझाई। दानिय्येल ने भीतर जाकर राजा से विनती की कि उसे सपना व्याख्या करने के लिए समय दिया जाए। जब उसे उसकी माँगी हुई चीज़ मिल गई, तो दानिय्येल अपने घर लौट आया और उसने अपने साथियों अननिय्याह, अज़ारिय्याह और मिसाएल को सब कुछ बता दिया, ताकि वे इस रहस्य के संबंध में परमेश्वर की दया माँगें, कहीं ऐसा न हो कि वह, दानिय्येल, और उसके साथी बाबेल के अन्य बुद्धिमानों के साथ नष्ट हो जाएँ। और तब उस रहस्य का प्रकाशन दानिय्येल को रात के एक दर्शन में हुआ, और दानिय्येल ने परमेश्वर की महिमा की। इसके बाद, दानिय्येल अरिओख के पास गया – जिसे राजा ने बाबेल के बुद्धिमानों को मार डालने का आदेश दिया था – और उससे कहा:

'बाबेल के बुद्धिमानों को मार डालो नहीं; मुझे राजा के पास ले जाओ, और मैं स्वप्न का अर्थ बताऊँगा।'

अरियोख तुरंत दानिय्येल को राजा के पास ले गया और उससे कहा:

'मुझे यहूदियों के बेटों के बंदियों में एक ऐसा आदमी मिला है जो राजा को सपने का अर्थ बता सकता है।'

राजा ने दानिय्येल से कहा:

'क्या तुम मुझे वह स्वप्न बता सकते हो जो मैंने देखा था और उसका अर्थ?'

दानिय्येल ने राजा को उत्तर दिया:

जिन रहस्यों के बारे में राजा पूछता है, वे राजा को बुद्धिमान, जादूगर, ज्योतिषी या भविष्यवक्ता द्वारा नहीं बताए जा सकते। परन्तु स्वर्ग में एक परमेश्वर है जो रहस्य प्रकट करता है – और उसने राजा नबूकदनेस्सर को यह प्रकट किया है कि अन्त के दिनों में क्या होगा; और हमारी दीनता पर दया करके, उसने हमें आपका स्वप्न भी प्रकट किया है, क्योंकि मैंने यह अपनी बुद्धि से नहीं, बल्कि दयालु परमेश्वर के प्रकाशन से जाना है। आपका स्वप्न और आपके बिस्तर पर आपके मन में आए दर्शन इस प्रकार थे। हे राजा, आप अपने बिस्तर पर यह सोच रहे थे कि आगे क्या होगा (अर्थात् आपके बाद कौन राज्य करेगा) – और रहस्यों को प्रकट करने वाले ने आपको दिखाया कि क्या होने वाला है। हे राजा, आपने यह दर्शन देखा: देखो, एक महान मूर्ति; यह प्रतिमा विशालकाय थी; यह असाधारण वैभव के साथ आपके सामने खड़ी थी, और उसका रूप भयानक था। इस प्रतिमा का सिर शुद्ध सोने का था, उसकी छाती और भुजाएँ चाँदी की थीं, उसकी जाँघें काँसे की थीं, उसके पिंडुली लोहे की थीं, और उसके पैर आंशिक रूप से लोहे और आंशिक रूप से मिट्टी के थे। आप इसे तब तक देखते रहे जब तक कि पहाड़ से एक पत्थर अपने आप टूटकर नहीं आया, मूर्ति से—उसके लोहे और मिट्टी के पैरों से—टकराया और उन्हें चूर-चूर कर दिया। तब सब कुछ चूर-चूर हो गया: लोहा, मिट्टी, काँसा, चाँदी और सोना गर्मी में खलिहान की धूल के समान हो गए, और हवा उन्हें उड़ा ले गई, और उनका कोई निशान भी न बचा; परन्तु वह पत्थर जो मूर्ति से टकराया था, एक बड़ा पहाड़ बन गया और सारी पृथ्वी में फैल गया। हे राजा, यह आपका स्वप्न है। और इसका अर्थ यह है: सोने का सिर आपके और आपके पूर्ववर्ती बेबीलोन के राजाओं का प्रतिनिधित्व करता है। चांदी इस बात का संकेत है कि आपके बाद एक और राज्य उभरेगा, जो आपके राज्य से कमतर होगा। इसके बाद एक तीसरा राज्य होगा—काँसे का—जो सारी पृथ्वी पर शासन करेगा[8925] । फिर एक चौथा राज्य उठेगा, जो लोहे की तरह दृढ़ होगा; क्योंकि जैसे लोहा सब कुछ (काँसा, चाँदी और सोना) तोड़ और चूर-चूर कर देता है, वैसे ही वह सब कुछ चूर-चूर कर देगा और कुचल

[8925] इस राज्य का नाम भविष्यवक्ता द्वारा स्पष्ट रूप से नहीं बताया गया है, लेकिन, टीकाकारों (धन्य जेरोम) के अनुसार, यह मैसेडोनियाई राज्य है, जो यद्यपि अपने पूर्ववर्तियों की भव्यता से कमतर था—जैसे तांबा सोने और चांदी से कमतर होता है—लेकिन शक्ति में उनसे श्रेष्ठ था, जैसे तांबा सोने और चांदी से अधिक मजबूत होता है। इस व्याख्या की पुष्टि दानिय्येल की पुस्तक के अन्य अंशों से होती है, जहाँ यूनानी साम्राज्य—जो मदी-पारसी साम्राज्य के बाद आया—को विशेष रूप से इसके बाद के पहले साम्राज्य के रूप में पहचाना गया है (दानिय्येल 8:31–22, 11:2–4)

डालेगा। जहाँ तक आपने पैरों और पंजों को आंशकि रूप से लोहे का और आंशकि रूप से कुम्हार की मट्टिी का देखा, इसका अर्थ है कि राज्य वभिाजति हो जाएगा, और जबकि उसमें आंशकि रूप से लोहे की कठोरता होगी, उसमें कुछ भंगुरता भी होगी। जहाँ तक लोहे का मट्टिी के साथ मलिने का सवाल है, इसका मतलब है कि वे ववािह के गठबंधनों के माध्यम से एकजुट होने का प्रयास करेंगे; फरि भी वे एक-दूसरे में नहीं मलिेंगे, ठीक वैसे ही जैसे लोहा मट्टिी से नहीं जुड़ता[8926] । इन राजाओं के दनिों में, स्वर्ग का परमेश्वर एक ऐसा राज्य स्थापति करेगा जो कभी नष्ट नहीं होगा। यह इन सभी राज्यों को कुचलकर समाप्त कर देगा, और यह स्वयं हमेशा के लिए बना रहेगा; और इसका प्रभुत्व कसिी अन्य लोगों को नहीं सौंपा जाएगा। यह स्वप्न का अर्थ है, और इसकी व्याख्या सत्य है[8927] ।

तब राजा नबूकदनेस्सर मुँह के बल गरि पड़े और दानयिेल की आराधना की, और आज्ञा दी कि उपहार और सुगंधति धूप उसे लाया जाए। और राजा ने दानयिेल से कहा:

'नश्चिय ही, आपका परमेश्वर देवताओं का परमेश्वर, प्रभुओं का प्रभु और राजाओं का शासक है, क्योंकि आप यह रहस्य प्रकट करने में समर्थ हुए'[8928] .

तब राजा ने दानयिेल को पदोन्नत कयिा और उसे कई महान उपहार दिए; उसने उसे पूरे बबेल प्रांत का प्रशासक नयिुक्त कयिा और बबेल के सभी बुद्धमिानों का प्रधान प्रबंधक बनाया। इसी प्रकार, दानयिेल के अनुरोध पर, उसने दानयिेल के साथयिों—अननयिेल, अजर्याह और मशिाएल—को भी बड़े सम्मान से सम्माननति कयिा, और उन्हें बबेल प्रांत में अधकिारी नयिुक्त कयिा[8929] ।

बेबीलोन के बंदी जीवन के अठारहवें वर्ष में, बेबीलोन के राजा नबूकदनेस्सर ने एक सुनहरी मूर्त बिनवाई, जो साठ कोहनों ऊँची और छह कोहनों चौड़ी थी, और उसे बेबीलोन प्रांत के दुरा के मैदान में खड़ा कर दयिा[8930] । और राजा नबूकदनेसर ने सत्रपों[8931] , राज्यपालों, सेनापतयिों, मुख्य न्यायाधीशों, कोषाध्यक्षों, न्याय वशिषज्ञों, मजस्टि्रेटों और सभी प्रांतीय राज्यपालों को यह सूचना भेजने के लिए संदेश भेजा, ताकि वे उस प्रतमिा के भव्य अनावरण में उपस्थति हो सकें जसिे राजा नबूकदनेसर ने स्थापति कयिा था। इस प्रकार सत्रप, राज्यपाल, सैन्य कमांडर, मुख्य न्यायाधीश, कोषाध्यक्ष, वधिकि वशिषज्ञ, मजस्टि्रेट और सभी प्रांतीय अधकिारी मूर्त कि अनावरण के लिए एकत्रति हुए और उसके सामने खड़े हो गए। उसी चौक में, नबूकदनेस्सर ने एक भट्टी भी तैयार करवाई थी—उन लोगों को नष्ट करने के लिए जो उसके शाही फरमान का पालन नहीं करेंगे। फरि उद्घोषक ने ऊँचे स्वर में पुकारा:

[8926] चौथे राज्य को सीरयिाई-मस्रि का राज्य समझना चाहए। इस अंश का संदर्भ इसे उसी राज्य के रूप में समझने का आधार देता है, जो ऐतहिासकि क्रम में, मैसेडोनयिाई राज्य के बाद आया और मसीही राज्य से पहले था, और वह सीरयिाई-मस्रि का राज्य था। जैसा कि सर्ववदिति है, मकदोनयिाई साम्राज्य अपने संस्थापक, महान अलेक्जेंडर की मृत्यु के बाद चार भागों में टूट गया: सीरयिाई, थ्रेसयिन, मकदोनयिाई और मस्रि के साम्राज्य। ये साम्राज्य, एक-दूसरे से अलग होकर, एक मूर्त कि पैरों की तरह समानांतर रूप से मौजूद थे, और कभी भी एक-दूसरे के साथ नहीं जुड़े। लोहे की मट्टिी के साथ असंगत द्वारा चौथे राज्य की इसी वशिषता का संकेत दयिा गया है। भवषि्यवक्ता द्वारा बताई गई एक और वशिषता, जो सीरयिाई-मस्रि के राज्य से सबसे अधकि मेल खाती है, वह इस राज्य की परमेश्वर के लोगों के प्रत वशिष शत्रुता है (दानयि्येल 7:21–25, 11:28)। वास्तव में, इतहिास दखिाता है कि यहूदयिों के प्रत मूर्तपिूजक राजाओं की दुर्भावना सीरयिा और मस्रि के राजाओं के अधीन रहने की अवधि के दौरान क्रूरता की एक वशिष चरम सीमा पर पहुँच गई थी। सीरयिाई राज्य वशिष रूप से शत्रुतापूर्ण था, और उसके राजाओं में, अंटओिकस एपफिानसि सबसे अलग खड़ा था।

[8927] पहाड़ से बनिा कसिी मानवीय सहायता के गरिकर मूर्त को चूर-चूर कर देने वाला पत्थर, कलीसयिा की शक्षिा के अनुसार, मसीह, परमेश्वर का पुत्र है, जो एक शुद्ध और अवविाहति कुँवारी से, बनिा पति के, जन्म लेंगे। वह, सभी सांसारकि राज्यों को कुचलकर नष्ट करने के बाद, एक ऐसा राज्य स्थापति करेंगे जो कभी नष्ट नहीं होगा, और यह राज्य आध्यात्मकि होगा।

[8928] नबूकदनेसर द्वारा देखा गया स्वप्न केवल एक स्वप्न नहीं था, बल्कि ईश्वर की इच्छा का उसके लिए एक प्रकटीकरण था। अन्य मूर्तपिूजक राजाओं को भी इसी तरह ईश्वर से प्रकटीकरण प्राप्त हुए, उदाहरण के लिए गेरा के राजा अबीमेलेक (उत्पत्त 20:3), मस्रि का राजा फरिौन (उत्पत्त 41:1–9), और तेमान का राजा एलफिाज (अय्यूब 42:12–18)। यह कोई आश्चर्य की बात नहीं होनी चाहए कि मूर्तपिूजक राजा स्वर्गीय प्रकटवाणी प्राप्त करते हैं। पराये राजा, जो राष्ट्रों के भाग्य पर शासन करते थे, परमेश्वर की इच्छा के कार्यपालक, परमेश्वर की सर्वशक्तमिति के साधन थे; उन्होंने अपना उच्च पद परमेश्वर से प्राप्त कयिा था, और अपने कार्यों में परमेश्वर द्वारा अदृश्य रूप से नरि्देशति और समर्थति होते थे (यशायाह 44 और अन्य)। यह स्पष्ट करता है कि उन्हें कभी-कभी परमेश्वर से सीधे प्रकाशन क्यों प्रदान कए जाते थे।

[8929] नबूकदनेसर के स्वप्न और भवषि्यवक्ता दानयिेल द्वारा इसके अर्थ की व्याख्या का वृत्तांत दानयिेल की पुस्तक में मलिता है: दानयिेल 2:1–49 (दूसरे अध्याय का एक अंश क्रसिमस पर एक पेरकिोप के रूप में पढ़ा जाता है: दानयिेल 2:31–36, 44–45)।

[8930] नबी इस मूर्त को दी गई महत्त्वता का उल्लेख नहीं करते: शायद यह बेबीलोनयिों द्वारा पूजे जाने वाले कसिी देवता की मूर्त थी, या शायद यह मूर्त स्वयं नबूकदनेज़र के सम्मान में स्थापति की गई थी।

[8931] satraps फारसी दरबार में उच्चतम रैंक के अधकिारी थे, जो साम्राज्य के अलग-अलग प्रांतों पर शासन करते थे।

'हे सभी लोगों, राष्ट्रों और भाषाओं, यह सुनो! जैसे ही तुम तुरही, बांसुरी, सितार, हारप, लीर और हर प्रकार के वाद्य यंत्रों की ध्वनि सुनो, तो घुटने टेककर सोने की मूर्ति की पूजा करो, जिसे राजा नबूकदनेजर ने स्थापित किया है। और जो कोई भी गिरकर उसकी पूजा नहीं करता, उसे तुरंत भस्म करने वाली आग की भट्टी में डाल दिया जाएगा।

इसलिए, जब सभी लोगों ने तुरही, बांसुरी, सितार, सारंगी, लीर और हर प्रकार के वाद्य यंत्रों की ध्वनि सुनी, तो सभी लोग, कबीले और भाषाएँ गिर पड़े और सोने की मूर्ति की पूजा करने लगे।

उसी समय कुछ कल्दीय लोग आगे आए और अननिय्याह, अजर्याह और मिसैल के विरुद्ध राजा को दोष देते हुए कहने लगे:

वे आपके देवताओं की सेवा नहीं करते, और न ही वे उस सोने की मूर्ति की पूजा करते हैं जिसे आपने स्थापित किया है।

तब राजा ने उन्हें बुलाया और पूछा कि उनके बारे में जो कहा जा रहा था, वह सच था या नहीं। उन्होंने उत्तर दिया:

'जिस परमेश्वर की हम सेवा करते हैं, वह हमें भस्म करने वाली आग से बचाने में सक्षम है, और हे राजा, वह हमें आपके हाथ से भी छुड़ाएगा। लेकिन अगर वह ऐसा न भी करे, तो हे राजा, यह जान लें कि हम आपके देवताओं की सेवा नहीं करेंगे, और न ही हम उस सोने की मूर्ति की पूजा करेंगे जिसे आपने स्थापित किया है।'

तब नबूकदनेसर क्रोध से भर गया और आज्ञा दी कि भट्टी को सामान्य से सात गुना अधिक गर्म किया जाए, और अनन्या, अजर्या और मिसैल को बँधकर उसमें फेंक दिया जाए। राजा की आज्ञा का अक्षरशः पालन किया गया: इन लोगों को बाँधकर, पूरे कपड़ों सहित, जलती हुई भट्टी के ठीक बीच में फेंक दिया गया। इसके अलावा, चूँकि राजा की आज्ञा बहुत कठोर थी और भट्टी अत्यधिक गर्म थी, यहाँ तक कि जिल्लाद भी आग में मर गए। लेकिन ये तीनों पुरुष—अननयाह, अजर्याह और मिसैल—हालाँकि बँधे हुए और आग के भट्ठी के बीच में फेंके गए थे, उन्हें न केवल कोई भी हानि नहीं हुई, बल्कि वे आग के बीच स्वतंत्र रूप से चलते हुए परमेश्वर की स्तुति गा रहे थे और प्रभु का धन्यवाद कर रहे थे। इस बीच, उन्हें फेंकने वाले राजा के सेवक तेल, गोंद, तारकोल और झाड़ियों की लकड़ी से भट्टी में लगातार आग फूँकते रहे; और लपटें भट्टी से उनचास कोहनों तक उठ गईं; वे फूट पड़ीं और भट्टी के पास पहुँचने वाले खलदीयों को भस्म कर गईं। परन्तु यहोवा का दूत अजर्याह और उसके साथियों के संग भट्टी में उतर आया। उसने भट्टी की आग की लपटों को दूर भगा दिया, और भट्टी के बीच में एक शीतल, मधुर हवा बहने लगी; और आग ने उन्हें तनिक भी न छुआ, न उन्हें कोई हानि पहुँचाई, और न ही उन्हें कष्ट दिया। तब ये तीनों एक स्वर में भट्टी में गाने लगे, और परमेश्वर का धन्यवाद और स्तुति करने लगे:

'धन्य हैं आप, हे प्रभु, हमारे पूर्वजों के परमेश्वर, और सदा-सदा के लिए स्तुति और महिमा के योग्य हैं, और इसी प्रकार।'[8932]

राजा नबूकदनेस्सर, उन्हें गाते सुनकर, चकित हो गए और जल्दी से उठे, और अपने राजकुमारों से कहा:

'क्या हमने तीन आदमियों को, बँधा हुआ, आग में नहीं डाला था?'

उन्होंने राजा को उत्तर दिया:

'निश्चय ही, हे राजा!'

इस पर उन्होंने कहा:

'मैं चार पुरुषों को, बिना बँधे, आग के बीच में चलते हुए देखता हूँ, और उन्हें कोई हानि नहीं हुई है; और चौथे का रूप परमेश्वर के पुत्र के समान है।'

तब नबूकदनेस्सर आग से जलती भट्टी के मुँह के पास आया और कहा:

'शद्रक, मेशक और अबेद्नेगो, सर्वोच्च परमेश्वर के दास, बाहर आओ और यहाँ आओ!'

तब अनान्या, अज़ार्या और मिसैल आग के बीच से बाहर निकले। और जब राजकर्मचारी, प्रांतपति, सेनापति और राजा के सलाहकार इकट्ठा हुए, तो उन्होंने देखा कि आग ने इन लोगों के शरीरों पर कोई असर नहीं किया था: उनके सिर का एक भी बाल झुलसा नहीं था, उनके कपड़े बदले हुए नहीं थे, और न ही उन पर जलने की कोई गंध थी। और राजा उनके सामने झुक गया और कहा:

[8932] यह स्तुति-गीत उसी पुस्तक में पाया जाता है: दानियेल 3:52–90; यह भजन चर्च कैनों के 7वें और 8वें भजनों का आधार बनाता है। बाबेल की भट्टी में तीन युवकों का वृत्तांत, जैसा कि हमारी चर्च के पूजा-गीतों में पाया जाता है, को उद्धारकर्ता के कब्र में अक्षय निवास का पूर्वाभास माना जाता है। इसीलिए पैगंबर दानियेल की पुस्तक का अध्याय 3 चर्च में - महा शनिचर को संध्या के समय - पढ़ा जाता है।

'धन्य है शद्रक, मेशक और अबेद्नेगो का परमेश्वर, जसिने अपना दूत भेजकर उन सेवकों को बचाया जन्हिोंने उस पर भरोसा कयि। और मैं आज्ञा देता हूँ कि कोई भी व्यक्ति, चाहे वह कसिी भी राष्ट्र, कुल या भाषा का हो, जो शद्रक, मेशक और अबेद-नेगो के परमेश्वर के वरिुद्ध अपमानजनक बातें बोले, उसे टुकड़े-टुकड़े कर दयि जाएगा, और उसका घर खंडहर बना दयि जाएगा; क्योंकि ऐसा कोई अन्य परमेश्वर नहीं है जो अपने दासों को इस प्रकार बचा सके।

इसके बाद, राजा ने उन तीनों युवकों को और भी अधकि सम्मान दयि, उन्हें सभी से ऊपर उठाया और अपने राज्य के बाकी यहूदयिों पर अधकिार प्रदान कयि[8933] ।

इस बीच, सहिासन पर समृद्धि प्राप्त करते हुए, नबूकदनेस्सर बहुत घमंडी हो गया और, कुछ ही समय बाद, उसे एक और सपना आया जसिने उसके पतन और अपमान का पूर्वाभास दयि।

अपने स्वप्न में उसने पृथ्वी के मध्य में एक वृक्ष देखा। वह एक महान और शक्तशिाली वृक्ष था, और उसकी ऊँचाई स्वर्ग तक पहुँचती थी, और वह पृथ्वी के छोर तक दखिाई देता था। उसकी पत्तयिाँ सुंदर थीं, और उसमें भरपूर फल लगे थे, ताकि सभी को उससे भोजन मलि सके; खेत के जानवरों को उसके नीचे छाया मलिती थी, आकाश के पक्षी उसकी डालयिों में घोंसला बनाते थे, और सभी प्राणी इससे पोषति होते थे। और देखो, एक नगिहबान और पवत्रि व्यक्ति स्वर्ग से उतरा। ऊँचे स्वर में चल्लिाकर, उसने कहा:

'इस वृक्ष को काट डालो, इसकी डालयिाँ काट दो, इसके पत्ते झटक दो, और इसके फल बखिेर दो; जानवरों को इसके नीचे से और पक्षयिों को इसकी डालयिों से जाने दो; परन्तु इसकी मुख्य जड़ को मट्टिी में रहने दो, और इसे लोहे और काँसे की जंजीरों से बँधा हुआ, खेत की घास के बीच स्वर्गीय ओस से सींचने दो, और इसे पृथ्वी की घास में जानवरों के साथ रहने दो। उसका मानव का हृदय नकिाल लयि जाएगा, और उसे एक पशु का हृदय दयि जाएगा, और सात समय उसके ऊपर से बीतेंगे।

इस स्वप्न से राजा बेचैन हो गया, और उसने एक बार फरि बाबेल के सभी बुद्धमिानों, भवष्यि-वक्ताओं और जादूगरों को बुलाया, और उन्हें अपना स्वप्न सुनाया, ताकि वे उसका अर्थ उसे समझा सकें। लेकनि जब तक दानयिेल को नहीं बुलाया गया, तब तक कोई भी ऐसा नहीं कर सका, जसि पर परमेश्वर की आत्मा का वास था। राजा का स्वप्न सुनकर और उस पर मनन करके, दानयिेल ने कहा:

'हे स्वामी! यह स्वप्न आपके शत्रुओं का है, और इसका अर्थ आपके वैरयिों का है। हे राजा, जसि वृक्ष को आपने देखा है, वह आप ही हैं, जो महान और दृढ़ हो गए हैं; आपकी महानता बढ़कर स्वर्ग तक पहुँच गई है, और आपका राज्य पृथ्वी के छोर तक फैला हुआ है। परन्तु शीघ्र ही आप अपना राज्य खो देंगे: आपको मनुष्यों के बीच से नकिाल दयि जाएगा, और आपका नविास जंगली जानवरों के साथ होगा; आपको बैल की तरह घास खलिाई जाएगी; आप स्वर्ग की ओस से भीगेंगे, और इस प्रकार सात वर्ष बीत जाएँगे जब तक कि आप यह न जान लें कि सर्वशक्तमिान मनुष्यों के राज्य पर शासन करते हैं और उसे उस पर देते हैं जसिे वे चाहें। पेड़ की मुख्य जड़ को छोड़ने के आदेश के संबंध में, इसका अर्थ यह है कि आपका राज्य तब तक आपके साथ रहेगा जब तक आप स्वर्ग की शक्ति को नहीं पहचान लेते। इसलिए, हे राजा, मेरी सलाह आप पर अनुग्रह पाए: धार्मकिता के द्वारा अपने पापों का प्रायश्चति करें और गरीबों पर दया करके अपने अपराधों का—शायद परमेश्वर आपके अपराधों को क्षमा कर दे।

इस प्रकार संत दानयिेल ने राजा के लिए स्वप्न की व्याख्या की, और उन्होंने जो कुछ भी कहा था वह सब पूरा हुआ।

बारह महीने बाद, बेबीलोन के शाही महलों में घूमते हुए, राजा ने कहा:

'क्या यह वही भव्य बबेल नहीं है जसिे मैंने अपनी सामर्थ्य की शक्ति से और अपनी महमिा की कीर्ति के लिए राज्य के मध्य में बनवाया है!'

रaja के होठों से ये शब्द नकिले ही थे कि स्वर्ग से एक आवाज़ गूँजी:

'राजा नबूकदनेस्सर, तुझ पर यह वचन ठहराया जाता है: तेरा राज्य तुझ से छीन लयि गया है! तुझे मनुष्यों के बीच से नकिाल दयि जाएगा, और तू जंगली जानवरों के साथ रहेगा; तेरा चारा बैल की तरह घास होगा, और सात बार[8934] तेरे ऊपर

[8933] इस चमत्कार ने स्पष्ट रूप से नबूकदनेस्सर और उसके कुलीनों को गवाही दी, जन्हिोंने उसके सामने धर्मी लोगों की नदिा की थी, और इसी तरह हर युग के सभी लोगों को यह गवाही देता है कि परमेश्वर द्वारा संरक्षति धर्मी लोगों को कोई भी खतरा नुकसान नहीं पहुँचा सकता है और जो अपनी आशा उसी में रखते हैं (यशायाह 43:2; भजन संहति 90:1–7 और अन्य)।

[8934] अर्थात् वर्ष।

से होकर जाएगा, जब तक कि तू यह न मान ले कि परमप्रभु मनुष्यों के राज्यों पर शासन करता है और उसे उसको देता है जिसे वह चाहे।'

तुरन्त ही नबूकदनेस्सर के विषय में यह वचन पूरा हुआ: उसका मन अँधकारमय हो गया, और वह विक्षिप्त हो गया। तब उन्होंने उसे बेड़ियों में जकड़ दिया; और चूंकि उसे महल की छत के नीचे कोई शांति नहीं मिल सकती थी, इसलिए उसे खुले में छोड़ दिया गया, और वह मानव जाति से अलग हो गया; वह बैल की तरह घास खाता था, और उसका शरीर स्वर्ग की ओस से भीग गया, जिससे उसके बाल शेर जैसे और उसके नाखून पक्षी जैसे हो गए। सात वर्ष के अंत में, जब तक कोई और उसका राज्य लेने की हिम्मत नहीं कर सका, नबूकदनेस्सर ने स्वर्ग की ओर अपनी आँखें उठाईं, और उसकी समझ लौट आई; और उसने सर्वोच्च का धन्यवाद किया, और सनातन की स्तुति और महिमा की, जिसका प्रभुत्व एक शाश्वत प्रभुत्व है, और जिसका राज्य पीढ़ी-दर-पीढ़ी बना रहता है। राजा ने मन में विचार किया, और कहा, 'पृथ्वी पर रहने वाले सभी लोग कुछ भी नहीं हैं, क्योंकि वह स्वर्ग की सेनाओं और पृथ्वी पर रहने वालों, दोनों के बीच अपनी इच्छा के अनुसार काम करता है; और कोई भी उसके हाथ का विरोध नहीं कर सकता, या उससे यह कहने वाला कोई नहीं है: "तुम्हें क्या किया है?"' उस समय राजा की समझ वापस आ गई, और उसकी गरिमा और पूर्व का रूप उसकी राजशाही की महिमा के लिए उसे लौटा दिया गया; फिर उसके सलाहकारों और कुलीनों ने उसे ढूंढा, और वह अपनी राजशाही में बहाल हो गया, और उसकी महानता और भी अधिक ऊँची की गई[8935] ।

और नबूकदनेस्सर जीवित रहे, स्वर्ग के राजा की स्तुति, धन्यवाद और महिमा करते हुए। वह कुल मिलाकर तेतालीस वर्ष तक राज्य किया और शांतिपूर्वक निधन हुआ। नबूकदनेस्सर की मृत्यु के बाद, उनके पुत्र एविल-मेरोदाख बेबीलोन का राजा बना। उसने यहूदा के बंदी राजा यहोयाकीन को कालकोठरी से रिहा किया, जहाँ उसे बेड़ियों में जकड़कर रखा गया था। उसने उससे दयालुता से बात की और बेबीलोन में उसके साथ रहने वाले अन्य राजाओं के सिंहासन से उसका सिंहासन ऊँचा कर दिया; उसने उसके जेल के कपड़े बदल दिए, और जीवन भर वह हमेशा उसके साथ भोजन करता रहा (2 राजा 25:27–30; यिर्मयाह 52:31–34)।

एविल-मेरोदाक की मृत्यु पर, नबूकदनेस्सर के दामाद नबोनिदस सिंहासन पर बैठे, और उन्होंने अपने पुत्र बेलशस्सर को सह-शासक नियुक्त किया। उनके शासनकाल के दौरान, भविष्यवक्ता दानियेल को कई दर्शन प्राप्त हुए, जिनमें विभिन्न जानवरों की छवियों के माध्यम से, भविष्य के राजाओं और राज्यों, मसीह-विरोधी, युग के अंत और अंतिम न्याय का उल्लेख किया गया था[8936] ।

दानियेल कहता है, 'मैंने देखा, कि सिंहासन रखे गए, और प्राचीनकाल का पहिले आसीन हुआ; उसका वस्त्र हिम के समान श्वेत था, और उसके सिर के बाल शुद्ध ऊन के समान थे; उसका सिंहासन अग्नि के शोले के समान था, और उसके पहिये जलती हुई आग के समान थे। एक आग की नदी निकलकर उसके सामने बही; हजारों-हजारों उसकी सेवा करते थे, और अनगिनत लोग उसके सामने खड़े थे; न्यायी न्याय-आसन पर बैठ गए, और पुस्तकें खोली गईं।

और अन्य भयानक और डरावने प्रकाशन उन्हें दिखाई दिए, जैसा कि उनकी पुस्तक '[8937] ' में पूरी तरह से दर्ज है।

एक समय, राजा बेलशस्सर ने अपने हज़ार रईसों के लिए एक बड़ा भोज दिया, और उनके सामने ही शराब पी। शराब का स्वाद चखने के बाद, बेलशस्सर ने आदेश दिया कि सोने और चांदी के पात्र लाए जाएँ, जिन्हें उसके दादा नबूकदनेसर ने यरूशलेम के मंदिर से लिया था, ताकि राजा, उसके कुलीनों, उसकी पत्नियों और उसकी दासियों को उनमें से शराब पीने के लिए मिल सके। तब सोने और चांदी के पात्र लाए गए, और राजा तथा उसके राजकुमारों, उसकी पत्नियों और उसकी दासियों ने उनसे पिया। उन्होंने शराब पी और सोने, चांदी, काँसे, लोहे, लकड़ी और पत्थर की मूर्तियों की स्तुति

[8935] अपने घमंड के लिए नबूकदनेसर की सज़ा का विवरण दानियेल 4:1–34 में मिलता है।

[8936] दानियेल की महान लड़ाई की दृष्टि (दानियेल 10:1–21, 11:1–45, 12:1–13), पुस्तक की अपनी व्याख्या के अनुसार, एंटिओकस एपिफिनिस—यहूदियों का वह सबसे दुष्ट शत्रु—का उल्लेख करती है और यह यहूदियों पर उसके अत्याचार और उसकी अपनी अंतिम विनाश का संकेत देती है। कुछ व्याख्याकारों के अनुसार, यह भविष्यवाणी, यद्यपि कुछ विवरणों में एंटिओकस एपिफिनिस पर लागू नहीं होती है, फिर भी यह प्रकार्यात्मक रूप से मसीह-विरोधी, विश्वासियों पर उसके अत्याचार और उसके विनाश के बारे में बताती है। और प्रेरित पौलुस, संसार में मसीह-विरोधी के आगमन की भविष्यवाणी करते हुए, उसके लक्षणों का वर्णन करते हैं (2 थिस्स. 2:4), जो भविष्यवक्ता दानियेल द्वारा अंटिओकस के लिए बताए गए लक्षणों के समान हैं (दानियेल 8:9–12, 11:28–31, 36–39)।

[8937] दानियेल 7:9-10। 'दिनों के प्राचीन', अर्थात् शाश्वत (अर्थात् परमेश्वर)।

की—परन्तु उन्होंने उस शाश्वत परमेश्वर की महिमा नहीं की, जिसके अधिकार में वे हैं। उसी क्षण, एक मानवीय हाथ की उँगलियाँ प्रकट हुईं और वे राजा के महल की दीवार पर लिखने लगीं, जहाँ दीपक की रोशनी पड़ रही थी, और राजा ने उस लिखते हुए हाथ को देखा। तब राजा का चेहरा बदल गया; उसके विचार उसे परेशान करने लगे, उसकी कमर की नसें ढीली पड़ गईं, और उसके घुटने एक-दूसरे से टकराने लगे। राजा ने पुकार लगाकर जादूगरों, खलदीयों और भविष्यद्रष्टाओं को लाने का हुक्म दिया, और राजा ने बेबीलोन के बुद्धिमानों से कहा:

'जो कोई भी जो लिखा है उसे पढ़ सके और मुझे उसका अर्थ समझा सके, उसे बैंगनी रंग का वस्त्र पहनाया जाएगा, उसकी गर्दन में सोने की माला डाली जाएगी, और वह राज्य में तीसरा शासक होगा[8938] ।'

और राजा के सभी बुद्धिमान लोग आए, पर वे उस लेख को पढ़ नहीं सके और न ही राजा को उसका अर्थ समझा सके। राजा बेलशस्सर बहुत घबरा गया, और उसके कुलीन लोग हैरान रह गए। तब रानी—बेलशस्सर की दादी, नेबुचadnezzar की पत्नी, और उसे दानिय्येल के बारे में बताया, जिसमें परमेश्वर की आत्मा थी और जिसे उसके दादा नेबुचadnezzar के दिनों में सभी ज्योतिषियों, जादूगरों, खलदीयों और भविष्यवक्ताओं का प्रधान नियुक्त किया गया था – उसकी महान समझ और बुद्धि और स्वप्नों तथा दर्शनों की व्याख्या करने की उसकी क्षमता के कारण। तब दानिय्येल को भीतर लाया गया, और राजा ने उससे कहा:

'क्या तुम वही दानिय्येल हो, जो यहूदा से मेरे दादा, राजा नबूकदनेस्सर द्वारा लाए गए यहूदियों के निर्वासित बेटों में से एक हो? मैंने तुम्हारे बारे में सुना है कि परमेश्वर का आत्मा तुम में है, और यह कि प्रकाश, समझ और महान बुद्धि तुम में पाई गई है।' 'अब, उस दीवार पर जो एक अदृश्य हाथ की उंगलियों से लिखा गया है, उसे मुझे पढ़कर सुनाओ और उसका अर्थ समझाओ—ऐसा कुछ जो मेरे सामने आए कई बुद्धिमान, जादूगर और भविष्यवक्ता भी नहीं कर पाए।' इसलिए, यदि तुम जो लिखा है उसे पढ़ सकते हो और मुझे उसका अर्थ समझा सकते हो, तो तुम्हें बैंगनी रंग का वस्त्र पहनाया जाएगा, तुम्हारे गले में सोने का हार डाला जाएगा, और तुम मेरी राजगद्दी में तीसरे अधिकारी बन जाओगे।

तब दानिय्येल ने राजा से कहा:

'तुम्हारे उपहार तुम्हारे पास ही रहें, और अपना सम्मान किसी और को दे दो; परन्तु मैं राजा के लिए यह लेख पढ़कर उसका अर्थ समझाऊँगा।'

राजा से ऐसा कहने के बाद, संत दानिय्येल ने पहले उसे उसके दादा नबूकदनेसर की याद दिलाना शुरू किया, और बताया कि कैसे उसे उसके घमंड के लिए परमेश्वर द्वारा दंडित किया गया था - उसने अपना मानव रूप खो दिया, उसे लोगों के बीच से निकाल दिया गया, और वह घास खाता था। तब दानिय्येल ने राजा को उसके घमंड के लिए फटकारते हुए कहा कि उसने अपने दादा को ईश्वर द्वारा दी गई सज़ा को भूलकर, प्रभु के सामने अपना हृदय विनम्र नहीं किया, बल्कि स्वर्ग के प्रभु के विरुद्ध विद्रोह किया और अपने रईसों और दासीओं के साथ भोज में शराब पीकर उनके मंदिर के पात्रों को अपवित्र कर दिया। उन्होंने इस बात के लिए भी उसे फटकारा कि सोने, चांदी, कांस्य, लोहे, पत्थर और लकड़ी के देवताओं की पूजा करते हुए—जो न देखते हैं, न सुनते हैं, न समझते हैं—वह उस परमेश्वर की महिमा करने में विफल रहा, जिसके हाथ में उसका प्राण और उसकी पूरी नियति थी। यह सब कहने के बाद दानिय्येल ने शिलालेख की ओर मुड़कर पढ़ना शुरू

[8938] पापियों के प्रति ईश्वर के अदृश्य, निष्पक्ष और भयानक न्याय का एक समान मानवीय रूपक वर्णन सेंट जॉन द थियोलोजियन की प्रकाशितवाक्य (प्रकाशितवाक्य 4:1–4, आदि) में भी पाया जाता है। सबसे स्पष्ट और सटीक मसीही भविष्यवाणी दानिय्येल की तीसरी भविष्यसूचक दृष्टि (दानिय्येल 9:1-27) में पाई जाती है, जो दूसरे मंदिर के निर्माण के समय (453 ईसा पूर्व) से लेकर मसीह के आगमन और उनके द्वारा नए नियम की स्थापना तक के 70 सप्ताहों के बारे में है। महादूत गब्रियल द्वारा दानिय्येल को दिए गए स्पष्टीकरण के अनुसार, कुसरू के आदेश के समय से मंदिर के बनने तक सात सप्ताह बीतने थे; उसके बाद के 62 सप्ताहों में, अभिषिक्त को मार डाला जाएगा, नया नियम स्थापित किया जाएगा, बलिदान समाप्त कर दिए जाएंगे, और फिर पवित्र स्थान में विनाश करने वाली घृणित वस्तु स्थापित हो जाएगी। जिन विशेषताओं से यहाँ इस अभिषिक्त का वर्णन किया गया है, वे पूरी तरह से यीशु मसीह के अनुरूप हैं (तुलना करें दानिय्येल 7:24–27 से प्रेरितों के काम 20:43; लूका 3:24; मत्ती 11:16; लूका 24:25–27, 21:20)। 'सप्ताहों' को केवल सात-वर्षीय अवधियों के रूप में ही समझा जा सकता है; क्योंकि केवल इसी व्याख्या से दानिय्येल की भविष्यवाणियों और बाद के इतिहास के बीच एक पूर्ण अनुरूपता होगी। विशेष रूप से, पहले सात सप्ताह ठीक उन 49 वर्षों से मेल खाते हैं जो कुसरू के आदेश से लेकर यरूशलेम में शहर और मंदिर के निर्माण के पूरा होने तक बीते थे; बाद के 62 सप्ताह 434 वर्षों के अनुरूप हैं, जो पहले सप्ताह के 49 वर्षों के साथ मिलकर—कुल 483 वर्ष बनाते हैं—और यह अवधि टिबेरियस के 15वें वर्ष में मानव जाति की सेवा के लिए यीशु मसीह के प्रकट होने से पहले की अवधि से पूरी तरह मेल खाती है। भविष्यवाणी के अनुसार, मसीह की हत्या अंतिम सप्ताह के मध्य में, अर्थात् उस प्रकट होने के 3.5 वर्ष बाद होने वाली है, जैसा कि सुसमाचार लेखकों के विवरण के अनुसार वास्तव में हुआ भी। इस आधे सप्ताह के बाद, पवित्र स्थान पर विनाश की घृणा आएगी, अर्थात् यरूशलेम का विनाश, जिसे दानिय्येल के वचनों का संदर्भ देते हुए, उद्धारकर्ता ने भी (मत्ती 24:15) पूर्व में बताया था; और वास्तव में, यह सब टाइटस और वेस्पासियन द्वारा यरूशलेम के विनाश के साथ ही पूरा हुआ।

कयिा। और जो लखिा था वह यह था: 'मेने, टेकेल, फार्स।' दानयिेल ने उस लेख की व्याख्या इस प्रकार की: 'मेने' का अर्थ है कि परमेश्वर ने तुम्हारे राज्य की गनिती कर ली है और उसे समाप्त कर दयिा है; 'टेकेल' का अर्थ है कि तुम्हें तुला पर तौला गया और तुममें कमी पाई गई; 'फार्स' का अर्थ है कि तुम्हारा राज्य वभिाजति कर दयिा गया है और मीदयिा और फारसियिों को दे दयिा गया है। यह सुनकर, राजा ने अपने वादे के अनुसार दानयिेल को सम्मानति कयिा, यद्यपि वह उस भयानक भवष्यिवाणी से बहुत परेशान था। और उन्होंने दानयिेल को बैंगनी रंग का एक चोगा पहनाया, उसके गले में एक सोने की जंजीर डाली, और राजा ने उसे अपने राज्य में तीसरा शासक घोषति कर दयिा।

दानयिेल की भवष्यिवाणी सच हुई। उसी रात, बेल्शस्सर, बेबीलोन का राजा, मारा गया, और दाराईयस मीदी, फारस के कुसरू के साथ, बयासी वर्ष की आयु में सहिासन पर बैठा[8939] ।

अपने शासनकाल के दौरान, दारा ने पूरे राज्य में एक सौ बीस सात्रप नयिुक्त कए, और उनके ऊपर तीन राजकुमार नयिुक्त कए, जनिमें से एक दानयिेल था; इन सात्रपों को उन्हें रपिोर्ट करना था, ताकि राजा पर कसिी भी तरह का बोझ न पड़े। दानयिेल अन्य राजकुमारों और सात्रपों से श्रेष्ठ था, क्योंकि उसमें एक उत्कृष्ट आत्मा थी, और राजा पहले ही उसे पूरे राज्य का प्रमुख नयिुक्त करने पर वचिार कर रहा था।

तब राजकुमारों और सत्रपों ने राज्य के कुप्रबंधन का आरोप लगाने के लए दानाएल के वरिुद्ध एक बहाना ढूँढ़ना आरंभ कयिा; परन्तु वे कोई बहाना या दोष नहीं पा सके, क्योंकि वह वश्विासयोग्य था। और इन लोगों ने कहा:

'हम दानाय्य के वरिुद्ध कोई दोष नहीं खोज सकते, जब तक कि हम उसे उसके परमेश्वर की व्यवस्था में न खोज लें।'

तब ये राजकुमार और sátrap राजा के पास गए और उससे कहा:

'हे राजा दारयिस! आपकी आयु लंबी हो! राज्य के सभी राजकुमार, राज्यपाल, प्रांतपति, सलाहकार और सेनापतयिों ने आपस में यह सहमति की है कि एक शाही फरमान जारी कयिा जाए और एक आज्ञा घोषति की जाए: कि जो कोई भी, तीस दनिों के भीतर, हे राजा, आप के सवािय कसिी अन्य देवता या मनुष्य से प्रार्थना करेगा, उसे सहिों के बलि में फेंक दयिा जाएगा, ताकि उसे खा लयिा जाए। इसलए, हे राजा, इस फरमान की पुष्टि करें और इस आदेश पर हस्ताक्षर करें, ताकि यह मीदयिों और फारसियिों के कानून की तरह अपरविर्तनीय हो, और रद्द न कयिा जा सके।"

राजा दाराईयस, उनके दुष्ट इरादे को न समझते हुए, ने उस फरमान और इस आज्ञा पर हस्ताक्षर कर दए। दानयिेल, यह जानकर कि ऐसे फरमान पर हस्ताक्षर हो गए हैं, अपने घर गया; और उसकी ऊपरी कोठरी की खड़कियाँ यरूशलेम की ओर खुलती थीं, और वह दनि में तीन बार घुटने टेकता, अपनी प्रार्थना अपने परमेश्वर से करता और उसी का धन्यवाद करता था, जैसा कि वह पहले भी करता आ रहा था । तब उन लोगों ने उस पर जासूसी की और दानयिेल को प्रार्थना करते और अपने परमेश्वर से वनिती करते हुए पाया। तब वे आकर राजा को उसकी आज्ञा की याद दलिाई:

'हे राजा, क्या यह आप ही नहीं थे, जन्होंने यह आदेश दयिा था कि कोई भी व्यक्ति जो तीस दनिों तक आप के सवािय कसिी अन्य देवता या मनुष्य से प्रार्थना करेगा, उसे सहिों के बलि में डाल दयिा जाए?'

राजा ने उत्तर दयिा और कहा:

'यह आदेश अंतमि है, मीदयिा और फारसियिों के कानून की तरह, जसिे बदला नहीं जा सकता।'

तब उन्होंने राजा को उत्तर दयिा और कहा कि यहूदा के वंशजों में से एक नर्विासति दानयिेल ने न तो राजा की और न ही उसके द्वारा हस्ताक्षरति आदेश की परवाह की, बल्कि वह दनि में तीन बार अपनी प्रार्थना करता था। जब राजा ने यह सुना, तो वह बहुत दुखी हुआ, और उसने मन में दानयिेल को बचाने का नश्चिय कयिा; वास्तव में, सूर्यास्त तक वह उसे बचाने के लए पूरी कोशशि करता रहा। लेकनि उन लोगों ने राजा के पास आकर उससे कहा:

'हे राजा, जान लो कि मदीययिों और फारसयिों के कानून के अनुसार, राजा द्वारा पुष्ट कोई भी आदेश या फरमान बदला नहीं जा सकता।'

तब राजा ने दानयिेल को लाकर सहिों के बलि में फेंकने का आदेश दयिा; और राजा ने दानयिेल से कहा:

'जसि परमेश्वर की तू इतनी नष्ठिा से सेवा करता है, वही तुझे बचाए!'

इसके बाद, एक बड़ा पत्थर लाया गया और उसे सहि-खाई के मुँह पर रख दयिा गया, और राजा ने अपनी मुहर और अपने कुलीनों की मुहरों से उस पर मुहर लगा दी, ताकि दानाय्येल के दुश्मन उसे कोई नुकसान न पहुँचा सकें; क्योंकि वह

[8939] अर्थात्, राजा नाबोनडिस और बेलशद्दरक के बाद पहला।

दुष्ट मनुष्यों पर उतना ही भरोसा करता था जितना वह क्रूर जानवरों पर करता था। तब राजा अपने महल में गया, बिना रात्रि-भोजन के सोने लेट गया, और उसने भोजन मंगवाने का आदेश भी नहीं दिया, और नींद उससे कोसों दूर रही।

परन्तु परमेश्वर ने सिंहों के मुँह बन्द कर दिए, और उन्होंने दानिय्येल को कोई हानि नहीं पहुँचाई।

सुबह होते ही राजा उठकर जल्दी से सिंहों के बिल के पास गया। और राजा ने ऊँचे स्वर में पुकारा:

'दानिय्येल, जीवित परमेश्वर के सेवक! क्या तेरा परमेश्वर, जिसकी तू इतनी निष्ठा से सेवा करता है, तुझे सिंहों से बचा सका?'

तब दानिय्येल ने राजा से कहा:

'हे राजा! आप सदा जीवित रहें! मेरे परमेश्वर ने अपने स्वर्गदूत को भेजा और सिंहों के मुँह बंद कर दिए, और उन्होंने मुझे कोई हानि नहीं पहुँचाई, क्योंकि मैं उनके सामने निर्दोष पाया गया; और हे राजा, मैंने आपके विरुद्ध भी कोई अपराध नहीं किया है।'

तब राजा दानिय्येल के कारण अत्यन्त आनन्दित हुआ, और आज्ञा दी कि उसे खाई से बाहर निकाल लिया जाए; और दानिय्येल को खाई से बाहर निकाल लिया गया, और उस पर कोई चोट नहीं पाई गई। राजा ने आज्ञा दी, और जिन्होंने दानिय्येल पर दोष लगाया था, उन्हें लाकर उनके बच्चों और उनकी स्त्रियों सहित सिंहों के बिल में फेंक दिया गया; और वे बिल के तले पहुँचने से पहले ही सिंह उन पर हावी हो गए और उनकी सभी हड्डियाँ चूर-चूर कर दीं। इसके बाद, राजा दारा ने पृथ्वी पर रहने वाले सभी लोगों, राष्ट्रों और भाषाओं को लिखा:

तुम्हें शान्ति मिले! मैं आज्ञा देता हूँ कि मेरे राज्य के हर प्रांत में लोग दानिएल के परमेश्वर से काँपते और उसका भय मानते रहें; क्योंकि वह जीवित और स्थिर परमेश्वर है, और उसकी राजगद्दी अनन्तकाल तक बनी रहेगी, और उसकी प्रभुता का कोई अन्त नहीं। वह बचाता और मुक्ति देता है, और स्वर्ग और पृथ्वी पर चमत्कार और संकेत करता है; उसने दानिय्येल को सिंहों की शक्ति से बचाया[8940] ।

और दानिय्येल को राजा दारा द्वारा किसी और से अधिक सम्मान दिया गया, और राजा ने उसे अपना सबसे करीबी दोस्त घोषित कर दिया। दानिय्येल के तीन साथी—अनानियह, अजारीयाह और मिसाएल—को भी समान सम्मान दिया गया।

यहूदी इतिहासकार जोसेफस फ्लावियस बताता है कि दानिय्येल, एक प्रमुख व्यक्ति के रूप में, फारसी साम्राज्य में बहुत अधिकार रखता था, और उसने एक्बेटाना शहर में[8941] एक प्रसिद्ध मीनार बनवाई, जो उक्त इतिहासकार के समय में, इसके निर्माण के कई सौ साल बाद भी, इतनी नई लगती थी मानो अभी-अभी बनी हो। मीडिया और फारस के राजा इस मीनार में दफनाए गए थे, और इसकी देखभाल यहूदी पुरोहितों में से एक को सौंपी गई थी।

राजा दारा के बाद, राजा कुसरू ने भी सन्त दानिय्येल को बहुत सम्मान दिया, क्योंकि उन्होंने उन्हें लोगों के बीच अपना विश्वासपात्र और मध्यस्थ बनाया। और दानिय्येल राजा के साथ रहते थे और अपने सभी दोस्तों से अधिक सम्मानित थे।

बाबिलियों के पास बेल नाम की एक मूर्ति थी[8942] , और वे उस पर हर दिन गेहूँ के आटे के बीस बड़े माप, चालीस भेड़ें और शराब के छह माप खर्च करते थे। राजा उसकी पूजा करता था और हर दिन उसकी पूजा करने जाता था; लेकिन दानिय्येल अपने परमेश्वर की पूजा करता था। और राजा ने उससे कहा:

'तुम बेल की पूजा क्यों नहीं करते?'

उसने उत्तर दिया:

'क्योंकि मैं मानव हाथों से बनी मूर्तियों की पूजा नहीं करता, बल्कि मैं जीवित परमेश्वर की पूजा करता हूँ, जिसने स्वर्ग और पृथ्वी की रचना की और सभी प्राणियों पर शासन करता है।'

राजा ने कहा:

'क्या तुम्हें नहीं लगता कि बेल एक जीवित देवता है? क्या तुम नहीं देखते कि वह हर दिन कितना खाता-पीता है?'

दानिय्येल मुस्कुराया और कहा:

[8940] बेलशस्सर के भोज, उसके पतन और बेबीलोन के राज्य के पतन का वृत्तांत दानिय्येल 5:1–31 में मिलता है।

[8941] एक्बेटाना – मीदिया की राजधानी और फारसी, तथा बाद में पार्थियन शासकों का ग्रीष्मकालीन आवास। यह शहर बहुत प्राचीन था और अपने किलेबंद महल और असाधारण वैभव के लिए प्रसिद्ध था।

[8942] बेल या बाअल (फ़िनिशियन बाअल) बेबीलोन के प्रमुख सूर्य देवता का नाम है।

'हे राजा, धोखा न खाओ; क्योंकि इसके भीतर मिट्टी है, और इसके बाहर काँसा है, और इसने कभी कुछ खाया या पिया नहीं है।'

तब राजा ने क्रोध में अपने पुरोहितों को बुलाया और उनसे कहा:

'यदि तुम मुझे यह नहीं बताते कि यह सब कौन खा रहा है, तो तुम मर जाओगे। लेकिन यदि तुम मुझे यह साबित कर देते हो कि इसे बेल् खा रहा है, तो दानियेल मर जाएगा, क्योंकि उसने बेल् का अपमान किया है।'

और दानियेल ने राजा से कहा:

'जैसा आप कहते हैं, वैसा ही हो।'

बेल के सत्तर पुरोहित थे, उनकी पत्नियों और बच्चों को छोड़कर। और राजा दानियेल के साथ बेल के मंदिर में गया, और बेल के पुरोहितों ने कहा:

'देखो, हम वहाँ से बाहर निकलेंगे, और हे राजा, भोजन लगाओ; फिर, मदिरा ढालने के बाद, दरवाज़े बंद कर दो और अपनी अंगूठी से मुहर लगा दो। और यदि, जब तुम कल आओ, तो पाओ कि बेल ने सब कुछ नहीं खाया है, तो हम मर जाएँगे; या फिर दानियेल, जिसने हम पर झूठ बोला है, वह मरेगा।'

उन्होंने इस पर ध्यान नहीं दिया, क्योंकि उन्होंने मेज़ के नीचे एक गुप्त प्रवेशद्वार बनाया था, जिससे वे हमेशा चुपके से घुसकर भोजन कर लेते थे। जब वे बाहर चले गए, तो राजा ने भोजन बलि के सामने रख दिया, जबकि दानियेल ने अपने सेवकों को आदेश दिया; वे राख लाए और केवल राजा की उपस्थिति में मंदिर में चारों ओर बिखेर दिया। फिर, बाहर जाकर, उन्होंने दरवाज़े बंद किए, उन्हें राजा की मुहर से सील कर दिया, और चले गए। तथापि पुरोहित अपनी रीति के अनुसार रात को अपनी पत्नियों और बच्चों के साथ आए, और वे सभी खाए-पिए।

अगले दिन राजा सबेरे उठा, और उसके साथ दानियेल भी उठा, और राजा ने पूछा:

'क्या मुहरें सुरक्षित हैं, दानियेल?'

'वे सुरक्षित हैं, हे राजा,' उसने उत्तर दिया।

और जैसे ही दरवाज़े खोले गए, राजा ने मेज़ पर नज़र डालते ही ऊँचे स्वर में कहा:

'तुम महान हो, बेल, और तुममें कोई कपट नहीं है!'

दानियेल मुस्कुराया, राजा को अंदर जाने से रोकते हुए कहा:

– फर्श पर देखो और पता लगाओ कि ये किसके पैरों के निशान हैं?

राजा ने कहा, "मैं पुरुषों, महिलाओं और बच्चों के पैरों के निशान देख रहा हूँ।" और अपने क्रोध में, राजा ने पुरोहितों, उनकी पत्नियों और बच्चों को पकड़ने का आदेश दिया, और उन्होंने उन छिपे हुए दरवाजों का खुलासा किया जिनसे वे प्रवेश किए थे और मेज पर रखा भोजन खाया था। तब राजा ने उन्हें मौत की सज़ा देने का आदेश दिया, और उसने बेला को दानियेल के हवाले कर दिया, जिसने उसका और उसके मंदिर का नाश कर दिया[8943] ।

उस स्थान पर एक बड़ा अजगर था, और बेबीलोनियों ने उसकी पूजा की।

और राजा ने दानियेल से कहा:

'क्या तुम इस एक के बारे में भी यह नहीं कहोगे कि यह कांसे का बना है? यह यहाँ जीवित है, खाता-पीता है; तुम यह नहीं कह सकते कि यह देवता जीवित नहीं है; इसलिए, इसकी पूजा करो।'

दानियेल ने कहा:

'मैं अपने प्रभु परमेश्वर की आराधना करता हूँ, क्योंकि वह जीवित परमेश्वर है। परन्तु हे राजा, मुझे आज्ञा दे, और मैं बिना तलवार और लाठी के उस अजगर को मार डालूँगा।'

राजा ने कहा:

'मैं तुम्हें अनुमति देता हूँ।'

तब दानियेल ने कुछ तारकोल, चर्बी और बाल लिए, उन्हें एक साथ उबाला, मिश्रण से एक गोला बनाया, और उसे ड्रैगन के मुँह में फेंक दिया, और ड्रैगन फट गया। और दानियेल ने कहा:

'ये रहे तुम्हारे पवित्र वस्तुएँ!'

जब बबिलोनियों ने यह सुना, तो वे बहुत क्रुद्ध हुए और राजा के विरुद्ध उठ खड़े हुए, और कहने लगे:

[8943] बेल और अजगर का वृत्तांत दानियेल 14:3–23 में मिलता है; यह वृत्तांत पुस्तक के गैर-पवित्रशास्त्रीय अंशों से संबंधित है।

'राजा यहूदी बन गया है: उसने ड्रैगन को नष्ट कर दिया और मार डाला, और पुरोहितों को मौत की सजा दी।'

और राजा के पास आकर, उन्होंने कहा:

'दानिय्येल को हमें सौंप दो, नहीं तो हम तुम्हें और तुम्हारे परिवार को मार डालेंगे।'

और जब राजा ने देखा कि वे इतनी ज़िद कर रहे हैं, तो उसे दानिय्येल को उनके हवाले करने के लिए मजबूर होना पड़ा। तब उन्होंने उसे सिंहों के बिल में डाल दिया, और वह वहाँ छह दिन तक रहा। गड्ढे में सात शेर थे, और उन्हें हर दिन दो लाशें और दो भेड़ें दी जाती थीं; लेकिन इस अवसर पर उन्हें यह भोजन नहीं दिया गया, ताकि वे दानिय्येल को खा सकें। फिर भी परमेश्वर ने, पहले की तरह, शेरों के मुँह बंद कर दिए – और दानिय्येल उनके साथ गड्ढे में ऐसे बैठा मानो वे कोमल मेमने हों।

यहूदिया में हबक्कूक नाम का एक भविष्यवक्ता था, जिसने एक बर्तन में कुछ सूप पकाया और कुछ रोटी के टुकड़े करके, उसे काटने वालों के पास ले जाने के लिए खेतों में जा रहा था। लेकिन यहोवा का स्वर्गदूत हबक्कूक से बोला:

'यह भोजन जो तेरे पास है, उसे ले जा और बेबिलोन में सिंहों के बिल में दानिय्येल को दे।'

हबक्कूक ने कहा:

'प्रभु! मैंने न तो कभी बेबीलोन देखा है, और न ही मुझे किसी खाई के बारे में पता है।'

तब प्रभु के स्वर्गदूत ने उसके सिर के मुकुट को पकड़कर, उसके बालों से उठाकर, अपनी आत्मा की शक्ति से उसे बाबेल में सिंहों के गड्ढे के ऊपर रख दिया। और हबक्कूक ने पुकारकर कहा:

'दानिय्येल! दानिय्येल! वह भोजन ले जाओ जो परमेश्वर ने तुम्हारे पास भेजा है।'

दानिय्येल ने कहा:

'हे परमेश्वर, आपने मुझे याद किया है, और अपने प्रेमियों को नहीं छोड़ा है।'

और दानिय्येल उठकर खाने लगा; और परमेश्वर के स्वर्गदूत ने उसी क्षण हबक्कूक को उसकी जगह वापस पहुँचा दिया।

सातवें दिन, राजा दानिय्येल के लिए शोक मनाने आया; और खाई के पास आकर, उसने नीचे देखा, और देखो, दानिय्येल वहाँ बैठा था। और राजा ने ऊँचे स्वर में पुकार कर कहा:

'महान हैं आप, हे दानिय्येल के प्रभु परमेश्वर, और आप के सिवाय और कोई नहीं!'

और उसने आज्ञा दी कि दानिय्येल को बाहर निकाला जाए, और जो उसके विनाश के लिए जिम्मेदार थे, उन्हें खाई में फेंक दिया जाए – और वे उसी के सामने तुरंत ही खा लिए गए[8944] ।

दानिय्येल और उसके तीन मित्र दीर्घायु प्राप्त कर के जिए।

अलेक्ज़ेंड्रिया के संत सिरिल और कुछ अन्य लोग बताते हैं कि, नबूकदनेज़र और उन अन्य राजाओं की मृत्यु के बाद जिन्होंने दानिय्येल और उसके साथियों का सम्मान किया था, कैम्बिसिस नामक एक अन्य राजा सिंहासन पर चढ़ा[8945] । उनके विश्वास के बारे में जानने और अपनी दुष्टता के लिए उनसे फटकार सुनने के बाद, उसने आदेश दिया कि पहले अनानियास का सिर काट दिया जाए। हालाँकि अजारीया ने अपना वस्त्र फैलाया और उसे पकड़ लिया। फिर मीशाएल ने अजारीया का कटा हुआ सिर पकड़ा, जबकि दानिय्येल ने अपना वस्त्र फैलाकर मीशाएल का सिर पकड़ लिया। अंत में, दानिय्येल का सिर भी काट दिया गया। कहा जाता है कि उनके सिर कलम करने के बाद, प्रत्येक सिर अपने शरीर में वापस जुड़ गया, और प्रभु का स्वर्गदूत, संतों के शरीरों को लेकर, उन्हें गेवल पर्वत[8946] पर ले गया, जहाँ उन्हें एक चट्टान के नीचे आराम के लिए रखा गया। चार सौ साल बाद, हमारे प्रभु यीशु मसीह के पुनरुत्थान के दिन, ये संत, कुछ अन्य लोगों के साथ, मरे हुओं में से जी उठे और, कई लोगों के सामने प्रकट होकर, एक बार फिर आराम करने गए[8947] । पवित्र पिताओं ने यह विधान बनाया है कि उनकी स्मृति मसीह के जन्म से सात दिन पहले मनाई जाए, क्योंकि वे भी यहूदा के कुल से थे, जिससे हमारे उद्धारकर्ता का वंश जुड़ता है, और इस प्रकार वे इन संतों के मांस के अनुसार सम्बन्धी थे।

[8944] दानिय्येल के सिंहों के बिल में छह दिनों तक रहने का वृत्तांत दानिय्येल 14:28–42 में मिलता है।

[8945] कैम्बिसिस – एक फारसी राजा, साइरस (529–522 ईसा पूर्व) का पुत्र, जो अपनी क्रूरता के लिए प्रसिद्ध था।

[8946] गिविल एप्रैम गोत्र में, शेकेम नगर के उत्तरी भाग में एक पर्वत है।

[8947] मत्ती के सुसमाचार के अनुसार, हमारे प्रभु यीशु मसीह की मृत्यु के समय, *'कब्रें खुल गईं, और सो गए हुए कई संतों के शरीर उठा लिए गए; और मसीह के पुनरुत्थान के बाद कब्रों से निकलकर वे पवित्र नगर में गए और बहुतों को दिखाई दिए'* (मत्ती 27:52–53)।

इन संतों की प्रार्थनाओं के द्वारा, मसीह हमारे ईश्वर हमारे जीवन को शांति में व्यवस्थित करें, जिन्हें पिता और पवित्र आत्मा के साथ युगानुयुग महिमा हो। आमीन[8948] ।

ट्रोपारियन, स्वर 2:

विश्वास और धार्मिकता में महान[8949] : आग के फव्वारे में, जैसे विश्राम के तालाब में, तीनों पवित्र युवक आनंदित हुए, और भविष्यवक्ता दानियेल, एक चरवाहा, सिंहों को भेड़ों के रूप में देखा। उनकी प्रार्थनाओं द्वारा, हे मसीह हमारे परमेश्वर, हमारी आत्माओं को बचाओ।

नबी का कोंटाकियन, स्वर 3:

आत्मा द्वारा शुद्ध किया गया तेरा हृदय भविष्यवाणी का सबसे उज्ज्वल धाम बन गया; क्योंकि तूने दूर की बात को जैसे सामने हो वैसे देखा: तूने सिंहों को वश में किया, जो खाई में डाले गए थे। इसी कारण हम तुझे सम्मानित करते हैं, धन्य भविष्यवक्ता, महिमामय दानियेल।

युवकों का कोंटाकियन, स्वर 6:

आपने मानव हाथों से बनी मूर्ति का सम्मान नहीं किया, बल्कि अकथनीय सत्ता द्वारा संरक्षित, हे त्रि-धन्य, आप अग्नि की परीक्षा में महिमामय हुए; और असहनीय लपटों के बीच खड़े होकर, आपने ईश्वर से पुकारा: 'हे उदार, शीघ्रता करो, और चूंकि आप दयालु हैं, हमारी सहायता के लिए आओ, क्योंकि यदि आप चाहें तो आप सब कुछ कर सकते हैं।'[8950]

आदरणीय दानियेल धर्मोपदेशक की स्मृति

17 दिसंबर को स्मरण किया जाता है

आदरणीय डेनियल प्रारंभ में गैडरि के पास स्थित नविर्ट या वेरोई नामक द्वीप के शासक थे[8951] । उस समय के मुख्य समुद्री मार्ग पर अपने राज्य के अनुकूल स्थान का लाभ उठाते हुए, डेनियल ने महान संपत्ति अर्जित की; लेकिन, ईसाई भक्ति में पले-बढ़े होने के कारण, उन्होंने मम्मोन (मत्ती 6:24) या मानवीय इच्छाओं के बजाय परमेश्वर की सेवा करना पसंद किया – और, अंतत; *'उन्होंने सब कुछ त्याग दिया, और सब कुछ बकवास समझा, ताकि वह मसीह को प्राप्त कर सकें'* (फिलि. 3:8); उन्होंने अपना अधिकार और संपत्ति अपने बच्चों को छोड़ दी, जबकि वे स्वयं रोम चले गए और वहाँ मठवासी संन्यास की शपथ ली। रोम से वे कॉन्स्टेंटिनोपल गए, जहाँ उन्होंने सम्राट रोमानुस और कॉन्स्टेंटाइन[8952] से बातचीत की, जिनसे उन्होंने यरूशलेम जाने की अनुमति मांगी। यरूशलेम में, पवित्र स्थानों को नमन करने के बाद, दानियेल को स्थानीय पैट्रिआर्क क्रिस्टोडौलस[8953] से स्टीफन नाम के साथ महान स्कीमा प्राप्त हुआ; लेकिन वहाँ उन्हें अधर्मी सरासीनों के हाथों बहुत उत्पीड़न और यहाँ तक कि पिटाई भी सहनी पड़ी। वहाँ से वे मिस्र की यात्रा पर गए; जहाँ

[8948] संत क्वीन हेलेना ने नबी दानियेल के अवशेष कॉन्स्टेंटिनोपल लाए और उन्हें संत रोमानस के चर्च के पास रखा। उन्हें रूसी तीर्थयात्रियों एंथनी ने 1200 में, नोवगोरोड के स्टीफन ने 1342 में, 14वीं शताब्दी में डीकन अलेक्जेंडर ने, और 1420 में हाइरोडीकन जोसिमा ने देखा था। उनकी कब्र अभी भी फारसी साम्राज्य की राजधानी सुसा में दिखाई जाती है; उन्हें मूर्तिपूजकों द्वारा भी पूजित किया जाता है।

[8949] सुधार – सफलता, कारनामा।

[8950] दानियेल की सिंहों के बलि से चमत्कारिक मुक्ति का वृत्तांत दानियेल 6 में मिलता है।

[8951] गादिरा – दक्षिणी स्पेन में कादीज़, जिब्राल्टर के पास।

[8952] रोमानोस प्रथम लेकपेनोस – 917 से 944 तक बाइजेंटाइन सम्राट। कॉन्स्टेंटिन सप्तम – 912 से 959 तक बाइजेंटाइन सम्राट, जिन्होंने रोमानोस के साथ-साथ शासन किया

[8953] क्रिस्टोफ़र या क्रिस्टोडौलोस 947 से 967 तक यरूशलेम के पैट्रिआर्क थे।

उन्हें पकड़ लिया गया और कैद कर दिया गया, और उनके साथ कैद दो पुरोहितों के साथ छह महीने तक भूख, प्यास और हर तरह की यातनाओं को सहते हुए वे बेहाल रहे। इसके बाद, उस सदा-स्मरणीय संत को मिस्र के अमीर के सामने लाया गया, जिसने उन पर भारी बेड़ियाँ डाल दीं और उन्हें मसीह का त्याग करने के लिए मजबूर किया; लेकिन संत अडिग रहे और बिना किसी हिचकिचाहट के, उन्होंने साहसपूर्वक स्वीकार किया कि हमारे प्रभु यीशु मसीह सच्चे ईश्वर हैं, जिसके लिए उन्हें कई और विभिन्न प्रकार के कष्टों से गुज़रना पड़ा; इनसे थककर, उनकी मृत्यु हो गई। दानियेल को ईश्वर से अपनी मृत्यु की पूर्वसूचना मिली थी।

31 दिसंबर

18 दिसंबर (पुराना तरीका)

संत सेबेस्टियन शहीद और उनके साथियों का जीवन और शहादत

18 दिसंबर को स्मरण किया जाता है

संत सेबेस्टियन का जन्म नारबोन शहर में हुआ था[8954] , और उनका पालन-पोषण और शिक्षा मिलान में हुई[8955] । धर्म-विरोधी सम्राट, डायोक्लेटियन और मैक्सिमियन[8956] , उसे इतना पसंद करने लगे कि उन्होंने उसे महल के रक्षक दल का कमांड सौंप दिया और उसे हमेशा उनके सामने खड़े रहने का आदेश दिया, क्योंकि वह एक बहादुर और बुद्धिमान व्यक्ति था, जो ज्ञान से परिपूर्ण था, अपने शब्दों में सत्यवादी, अपने निर्णयों में न्यायप्रिय, अपनी सलाह में समझदार, अपनी सेवा और सौंपे गए सभी कार्यों में निष्ठावान और साहसी था, और वह अपने सद्गुण और ईमानदारी के लिए सभी से अलग था। उसके सैनिक उसे एक पिता के रूप में सम्मान देते थे, और सभी दरबारी उससे बहुत प्यार करते थे और उसका बहुत सम्मान करते थे - क्योंकि वह सच्ची भक्ति से विशिष्ट था। जैसा कि अपेक्षित था, जिसे भी ईश्वर ने अपनी कृपा-दानों से सम्मानित किया था, उसे सभी लोग प्यार और सम्मान देते थे! वह हर समय मसीह के लिए लगन से काम करता था, प्रार्थना करता था और उनके पवित्र आज्ञाओं का पालन करता था। हालाँकि, वह यह सब गुप्त रूप से करता था, ताकि अधर्मी राजाओं को मसीह में उसकी आस्था के बारे में पता न चल जाए। उन्होंने सांसारिक अधिकार के आवरण में, मसीह के सिपाही को अपने भीतर छिपाए रखा—इसलिए नहीं कि उन्हें यातनाओं से डर लगता था, या वे सम्मान और धन को प्यार करते थे और उन्हें खोने से डरते थे, बल्कि केवल इसलिए ताकि वे उन ईसाइयों की मदद कर सकें, जिन्हें उस समय क्रूरतापूर्वक सताया और यातना दी जा रही थी। जिन लोगों को वह उनके बंधनों और यातनाओं से मुक्त नहीं कर सका, या जिनका दुख कम नहीं कर सका, उन्हें उसने प्रभु के लिए साहसपूर्वक अपना जीवन त्यागने और अपनी अस्थायी पीड़ा के बाद शाश्वत पुरस्कार की आशा में अपना रक्त बहाने की सलाह और समझा-बुझाकर मजबूत बनाया, क्योंकि उन्हीं के लहू से उनका उद्धार हुआ था। इस प्रकार उन्होंने परमेश्वर के लिए आत्माओं को जीतने का प्रयास किया, उन आत्माओं को जिन्हें शैतान उनसे छीनकर अपने लिए नोचना चाहता था, ताकि उन्हें नष्ट कर सके। उन्होंने धर्मग्रंथ के वचन के अनुसार कार्य किया: उन्होंने विश्वासियों के कमजोर हाथों और डगमगाते घुटनों को बल दिया (देखें यशायाह 35:3-4), जबकि अपनी उपदेशों के माध्यम से उन्होंने डरपोकों, संदेह करने वालों और यातनाओं से डरने वालों के साहस को मजबूत किया, और उन्हें वीरता के लिए प्रेरित किया। अपने सामने कई ऐसे संतों को देखकर जिन्होंने पराक्रमी कार्य किए थे, दुख सहन किए थे, क्रूर यातनाओं के बीच मसीह में अपना विश्वास बनाए रखा था, और इस जीवन से प्रस्थान करने पर अनंत जीवन के मुकुट प्राप्त किए थे, सेबेस्टियन स्वयं मसीह के लिए दुख सहने की इच्छा से भर गया और उस क्षण की प्रतीक्षा करने लगा जब प्रभु इस कार्य के लिए उचित समय का संकेत देंगे। और इस प्रकार, अंततः वह घड़ी

[8954] नार्बॉन – अब नारबॉन – प्राचीन गॉल का एक समृद्ध व्यापारिक शहर, जो बाद में (दूसरी शताब्दी की शुरुआत में) दक्षिण-पूर्वी गॉल में अटाक नदी पर एक रोमन उपनिवेश बन गया; अब फ्रांस में एक अपेक्षाकृत तुच्छ शहर, जो ल्योन की खाड़ी से बहुत दूर नहीं, उसी नाम की नहर पर स्थित है, जो भूमध्य सागर को अटलांटिक महासागर से जोड़ती है।

[8955] मेडियोलान – अब मिलान – प्राचीन सिसाल्पाइन गॉल, या आज के उत्तरी इटली का एक प्रमुख शहर था।

[8956] डायोक्लेटियन और मैक्सिमियन – रोमन साम्राज्य के सह-सम्राट, जिन्होंने 284 से 305 तक शासन किया।

आ गई जब वह अपने भीतर जल रहे दैवी प्रेम और उत्साह की आग को और अधिक छिपा नहीं सका, और उसने सभी को घोषित कर दिया कि वह कौन था: प्रकाश अब अंधकार में छिपा नहीं रह सकता था।

उस समय, दो सम्मानित और कुलीन पुरुष, मार्सेलिनिस और मार्क, जो जन्म से भाई थे, को मसीह के नाम का प्रचार करने के लिए गिरफ्तार किया गया था और उन्हें लंबे समय तक जेल में रखा गया था; धन्य सेबेस्टियन अक्सर उनसे मिलने और उन्हें सांत्वना देने आते थे, वे उनसे पवित्र विश्वास के बारे में बात करते थे और उन्हें क्षणिक सांसारिक सुख-सुविधाओं को त्यागने और यातनाओं से न डरने के लिए प्रोत्साहित करते थे। उन्होंने उनकी सुबुद्धि की बात मानी, अपने अत्याचारियों द्वारा दिए गए घावों को बहादुरी से सहन किया और अपने विश्वास में दृढ़ बने रहे, और उन्हें तलवार से सिर कलम करने की सज़ा सुनाई गई। लेकिन जैसे ही वे, मरने के लिए तैयार, तलवार के नीचे अपना सिर झुका रहे थे, उन्हें उनके माता-पिता, पत्नियों और बच्चों के पास घर भेजने का आदेश आया। उनके वृद्ध माता-पिता, ट्रांक्विलिनिस और मार्सिया, अभी भी जीवित थे। उनके माता-पिता और पूरे परिवार ने रोमन गवर्नर, एग्रीस्टा क्रोमैटियस से मार्सेलिनिस और मार्कस को तीस दिन की मोहलत देने की विनती की, ताकि वे इन भाइयों को मूर्तिपूजक देवताओं की पूजा करने के लिए मना सकें, क्योंकि उनके माता-पिता, पत्नियाँ और सभी रिश्तेदार मूर्तिपूजक थे।

जब अनुरोधित समय दे दिया गया, तो उनके माता-पिता, पत्नियाँ, बच्चे, रिश्तेदार और दोस्त मार्सेलिनिस और मार्कस के चारों ओर इकट्ठा हो गए और रोते हुए उनसे खुद को और अपने प्रियजनों को बचाने की मिन्नतें करने लगे, और अपने संकल्प को त्यागकर, राजा की आज्ञा मानने को कहा। उनके पिता ने अपने सफेद बालों, अपनी वृद्धावस्था और अपनी शारीरिक दुर्बलता की ओर इशारा करते हुए, उनसे विनती की कि वे उनकी मृत्यु के बाद तक अपना धर्म न त्यागें और उन्हें रीति-रिवाज के अनुसार दफनाएं; वह पहले से ही जल्द मरने की उम्मीद कर रहे थे और बिना सहारे के नहीं चल सकते थे, बल्कि हमेशा दूसरों का सहारा लेते या उठाए जाते थे। माँ ने, जिस स्तन से उसने उन्हें दूध पिलाया था, उसकी ओर इशारा करते हुए, उनसे उचित सम्मान और पुत्रीय आज्ञाकारिता की मांग की; उसने उनसे अपने लिए अपनी जान बख्शने और स्वेच्छा से मृत्यु को न अपनाने की विनती की। छोटे बच्चों ने उनकी ओर अपने हाथ फैलाए, उनके पैरों से चिपक गए और, रोते हुए, उनसे उन्हें अनाथ न छोड़ने की विनती की। जहाँ तक बाकी बच्चों का सवाल था, जो अभी डायपर में थे और बोल भी नहीं सकते थे, उनकी उपस्थिति ही उनके अनाथ होने की आने वाली स्थिति की याद दिलाती थी और उनके माता-पिता के दिलों में दया जगाती थी। उनकी पत्नियों ने अपनी आने वाली विधवा होने की बात कही और, कड़वे आँसू बहाते हुए, उनसे विनती की कि वे मृत्यु का विकल्प चुनकर खुद के साथ-साथ उन्हें भी नष्ट न करें, जिससे वे विधवा जीवन की विभिन्न कठिनाइयों का सामना करने के लिए मजबूर हो जाएँ। उनके रिश्तेदारों ने, अपनी ओर से, उन्हें ऐसा अपमान न करने के लिए कहा कि वे अपने घर और पूरे परिवार पर कलंक न लगाएँ, और न ही एक शर्मनाक मृत्यु को अपनाकर अपने पड़ोसियों की अपमानित करने के लिए खुद को मजबूर करें। और सभी रोने और विलाप करने लगे। और इन पुरुषों, जो अपनी पवित्र साहस में अजेय थे, वे और क्या कर सकते थे? इन प्रलोभनों जितना कोई यातना उन्हें हिला नहीं सकती थी; वे अपने वृद्ध माता-पिता, पत्नियों, बच्चों और रिश्तेदारों के प्रति अपने स्वाभाविक प्रेम से अभिभूत थे, और दया से पस्त थे; और वे हवा में झूमते सरकंडे की तरह संदेह करने और डगमगाने लगे, और उनकी हृदयों की मोम की तरह पिघल गई। वे अपने प्रियजनों के साथ रोए और पहले ही लगभग अपने विनती करने वालों के आगे झुकने और पवित्र धर्म को त्यागने के लिए तैयार थे।

तब संत सेबेस्टियन, जो उस समय वहाँ मौजूद थे, यह देखकर कि वे अपना धर्म त्यागने और अपनी आत्माओं को नष्ट करने के लिए तैयार हैं, उन पर तरस खा गए; और यह महसूस करते हुए कि अब उनके लिए भी अपने धर्म की गवाही देने का समय आ गया है—दूसरों की मदद करने के लिए और स्वयं दुख सहने का कार्य करने के लिए—वे उपस्थित लोगों के बीच में खड़े हो गए और सभी को चुप रहने का आदेश देकर बोलने लगे:

[8957]— हे मसीह के पराक्रमी योद्धाओं! हे परमेश्वर की सेना के अति कुशल सैनिकों! अपनी उदारता के कारण, आप पहले ही धैर्य के साथ विजय के समीप आ चुके हैं, फिर भी अब, अपने पड़ोसियों के दुष्ट प्रलोभनों के कारण, आप अपना शाश्वत मुकुट त्यागना चाहते हैं। ऐसा न करें, बल्कि अपने कर्मों से मसीह के योद्धाओं को साहस सिखाएँ – उन्हें

[8957] पवित्रगीत, अन्य संतों के चरितों (उदाहरण के लिए, सेंट एंड्रयू द फूल-फॉर-क्राइस्ट की स्वर्ग की दृष्टि) और चर्च के पवित्र पिताओं की कृतियों में स्वर्ग को समान रूपक विशेषताओं के साथ दर्शाया गया है, जैसे कि एफ्रेम द सीरियन; बाद वाले ने यह भी जोड़ा है कि स्वर्गीय आनंद की ये सभी विशेषताएँ और छवियाँ, जो संवेदी विवरणों का रूप लेती हैं, उन्हें आध्यात्मिक अर्थ में समझना चाहिए, और यह कि भविष्य के आनंद का वर्णन मानवीय भाषा में नहीं किया जा सकता और यह मानवीय इंद्रियों और सांसारिक धारणाओं के लिए अप्राप्य है।

लोहे के बजाय वशि्वास से स्वयं को सशस्त्र करना सखिाएँ; स्त्रयिों के आँसुओं के लिए अपनी वजिय के झंडों को न फेंकें, और आपके चरणों में पराजति पड़े शत्रु के नेता को कोई वशि्राम न दें, कहीं ऐसा न हो कि वह अपनी शक्ति पुनःप्राप्त कर, एक बार फरि आपसे लड़ने लगे; क्योंकि, यद्यपि उसका पछिला वद्रिोह प्रचंड था, एक बार फरि उकसाए जाने पर, वह और भी बड़े क्रोध से भर जाएगा। तो फरि, सांसारकि वासनाओं के ऊपर अपने पराक्रम का गौरवशाली ध्वज फहराओ, और उसे व्यर्थ, बचकाने आँसुओं के लिए न छोड़ो। जनि लोगों को आप रोते हुए देखते हैं, वे यदि वह जान लें जो आप जानते हैं, तो वे अवश्य ही प्रसन्न होंगे, क्योंकि वे सोचते हैं कि जीवन केवल पृथ्वी पर ही है और जब यह समाप्त हो जाता है और शरीर मर जाता है, तो आत्मा का एक भी हस्सिा जीवति नहीं रहेगा। यदि उन्हें पता होता कि एक और जीवन है—अमर और दुख से मुक्त, जसिमें अनंत आनंद का राज है—तो वे नश्चिति रूप से आपके साथ उसमें प्रवेश करना चाहेंगे और इस क्षणकि जीवन को तुच्छ समझकर, शाश्वत जीवन को प्राप्त करने का प्रयास करेंगे। यह वर्तमान जीवन इतना क्षणकि, इतना अस्थायी और इतना अवशि्वसनीय है कि इससे जुड़े हुए लोग भी इसमें अपना वशि्वास खो देते हैं। दुनिया की शुरुआत से ही, इसने उन सभी को नष्ट कर दिया है जन्होंने इसमें अपनी आशा रखी; इसने उन सभी को धोखा दिया है जन्होंने इसकी इच्छा की; इसने उन सभी का मज़ाक उड़ाया है जन्होंने इसमें गर्व किया; इसने सभी से झूठ बोला है; इसने किसी को भी आशा में दृढ़ या अपने वशि्वास में बेदाग नहीं छोड़ा है; और यह पूरी तरह से छलपूर्ण साबति हुई है। काश यह धोखा केवल एक सपना होता, और वास्तव में लोगों को कड़वे भ्रम में न ले जाता! लेकनि इससे भी बुरा यह है कि यह क्षणकि जीवन अपने अनुयायियों को हर तरह के अन्याय की ओर ले जाता है: यह पेटू लोगों को अत्यधकि भोग और मद्यपान से प्रसन्न करता है; यह कामुकों को व्यभचिार और हर तरह की गंदगी में फंसाता है; यह चोर को चोरी करना, क्रोधी को क्रोधति होना, और झूठे को धोखा देना सखिाता है; यह पति से पत्नी को, दोस्तों के बीच दुश्मनी, शांत लोगों के बीच कलह, धर्मी लोगों के बीच झूठ, और संन्यासयिों के बीच प्रलोभन पैदा करती है; यह न्यायाधीशों से न्याय, पवत्रि लोगों से पवत्रिता, कलाकारों से उनकी कला, और सभी से अच्छे आचरण को छीन लेती है। आइए हम उन सबसे घृणति कृत्यों को भी याद करें जनिके लिए यह अपने अनुयायियों को प्रेरति करता है: जब एक भाई अपने भाई को मारता है, या एक बेटा अपने पति को, या एक दोस्त दूसरे दोस्त को मार डालता है - यह उन्हें यह क्या सखिाता है? जब वे ऐसी अराजकता करते हैं तो वे किस बात की उम्मीद करते हैं? क्या यह इसी जीवन के लिए नहीं है, जसिे वे इतनी प्रयि मानते हैं, कि लोग एक-दूसरे से नफरत करते हैं, और प्रत्येक अपने लिए एक बेहतर अस्तत्वि सुनश्चिति करने का प्रयास करता है? एक लुटेरा यात्री की हत्या क्यों करता है, अमीरों द्वारा गरीबों पर अत्याचार क्यों किया जाता है, अहंकारी नम्र लोगों का अपमान क्यों करते हैं, और दोषी नर्दिोषों को क्यों सताते हैं? वास्तव में, यह सब बुराई उन लोगों द्वारा की जाती है जो इसी वर्तमान जीवन के लिए परशि्रम करते हैं और लंबे समय तक इसके प्रेम में बने रहना और इसका आनंद लेना चाहते हैं। वह, बदले में, अपने अनुयायियों और सेवकों को बुराई करने की शक्षिा देकर, उन्हें अपनी बेटी—अनंत मृत्यु—के हवाले कर देती है, जसिमें पहले मनुष्यों को भी डाल दिया गया था, क्योंकि, यद्यपि उन्हें अनंत जीवन प्राप्त करने के लिए बनाया गया था, वे इस संसार के जीवन से मोहति हो गए और उन्होंने अपना जीवन लालच, कामुकता और आँखों की लालसा (1 यूहन्ना 2:16) में लगा दिया। और वहाँ से वे नरक में गरि गए, और अपने साथ सांसारकि वस्तुओं में से कुछ भी नहीं ले गए। और प्रयि मत्रिों, यही सांसारकि जीवन है जो आपको इतना धोखा देता है कि आप अपने अधर्मी परामर्श के द्वारा, अनंत जीवन की ओर यात्रा कर रहे अपने मत्रिों को वापस इसी की ओर मोड़ना चाहते हैं! यह आपको, सम्माननीय माता-पति, सखिाती है कि आप अपने उन्मत्त वलिाप से अपने बेटों का ध्यान भटकाएँ—जो स्वर्गीय सेना, अवनिाशी महमिा और शाश्वत राजा की दया की ओर यात्रा कर रहे हैं। यह आपको, संतों की पवत्रि पत्नियों को, अपने लाड़-प्यार से शहीदों के मन को भ्रष्ट करने, उन्हें उनके अच्छे इरादों से भटकाने, और उन्हें जीवन के बजाय शाश्वत मृत्यु, और स्वतंत्रता के बजाय दासता स्वीकार करने के लिए मनाने को प्रेरति करता है। यदि वे आपके सलाहे पर चलेंगे, तो वे आपके साथ अधकि समय तक नहीं रहेंगे; बाद में, उन्हें आपसे अलग होना पड़ेगा, – और इस तरह अलग हो जाओ कि तुम एक-दूसरे को सवािय शाश्वत यातना के स्थान के और कहीं न देख सको, जहाँ की लपटें अवशि्वासयिों की आत्माओं को भस्म कर देती हैं, जहाँ नरकीय साँप ईश्वर-नन्दिकों के होठों को नगिल जाते हैं, जहाँ वषिैले साँप मूर्तपिूजकों के स्तनों को चबाते हैं, जहाँ कड़वी रोना, भारी आहें और पीड़ा की अनवरत ससिकियाँ सुनी जाती हैं। तो उन्हें इन यातनाओं से बचने दो, और स्वयं इनसे मुक्त होने का प्रयास करो; उन्हें उनके लिए तैयार किए गए स्वर्गीय मुकुट की ओर एक बार फरि यात्रा करने से मत रोको। डरो मत: वे तुमसे अलग नहीं होंगे, बल्कि, इसके वपिरीत, वे तुम्हारे लिए स्वर्ग में चमकदार नविास तैयार करेंगे, जहाँ तुम, उनके और अपने बच्चों के साथ, शाश्वत आशीर्वादों का आनंद लोगे। यदि आप यहाँ सुंदर इमारतों की भी प्रशंसा करते

हैं, तो आप उन स्वर्गीय निवासों की सुंदरता पर कितनी अधिक विस्मित होंगे, जहाँ मेज़ शुद्ध सोने से दमकते हैं, जहाँ हॉल कीमती पत्थरों से बने हैं, मोतियों से सुसज्जित और महिमा से दमकते हुए, जहाँ बगीचे अमरत्व के फूलों से सदैव खिले रहते हैं, जहाँ फलदार खेत मीठी नदियों से सिंचित होते हैं, जहाँ हवा हमेशा सुगंधित रहती है, और एक मधुर हवा इंद्रियों को अकथनीय सुगंधों से सहलाती है, जहाँ एक अमर दिन है, अखंड प्रकाश और शाश्वत आनंद है; और वहाँ न तो आहें हैं, न रोना, न दुःख, और न ही कोई अपूर्णता; कुछ भी पापी नहीं देखा जाता, कोई दुर्गंध नहीं आती, कोई दुःखी, शोकपूर्ण या भयानक आवाज नहीं सुनी जाती, बल्कि केवल सुंदरता ही दिखाई देती है, केवल सुगंधित खुशबू ही सूंघी जाती है, और केवल आनंददायक ध्वनियाँ ही सुनी जाती हैं; वहाँ, बिना रुके, देवदूतों और महादूतों के गायक दल अमर ईश्वर की एक स्वर में स्तुति करते हैं। और कोई अस्थायी जीवन से चिपके रहते हुए, ऐसी जीवन को कैसे तुच्छ समझ सकता है? धन-संपत्ति के लिए? लेकिन वे जल्द ही नष्ट हो जाते हैं। और जो लोग उन्हें हमेशा के लिए अपनाना चाहते हैं, उन्हें अपने धन की इस घोषणा पर ध्यान देना चाहिए: 'तुम हमसे इतना प्यार करते हो,' वे कहते हैं, 'जैसे कि तुम हमसे कभी अलग नहीं होगे। जब तुम मरोगे, तो हम तुम्हारे पीछे नहीं आ सकते; लेकिन जब तक तुम जीवित हो, हम तुम्हारे साथ चल सकते हैं, बशर्ते कि तुम हमें आज्ञा दो, या हमें अपने से पहले भेज दो। सूदखोर साहूकार और मेहनती किसान को अपने लिए उदाहरण बनाओ: पहला एक आदमी को सोना उधार देता है ताकि बदले में दोगुना सोना प्राप्त कर सके; दूसरा सौ गुना फसल काटने के लिए धरती में विभिन्न बीज बोता है; कर्जदार अपने साहूकार को दोगुना सोना चुकाता है, और धरती बोने वाले को सौ गुना अनाज लौटाती है। क्या ईश्वर आपकी संपत्ति को कई गुना नहीं बढ़ा देगा, यदि आप उसे उसी के हवाले कर दें? अपना खजाना वहाँ भेजो, और स्वयं वहाँ आने का प्रयास करो। इस क्षणिक जीवन में क्या लाभ है? यदि कोई सौ साल भी जी ले, जब अंतिम दिन आएगा, तो क्या उसे ऐसा नहीं लगेगा जैसे बीते हुए सभी वर्ष और जीवन के सभी सुख कभी थे ही नहीं? क्या इन सबकी केवल एक धुंधली सी याद ही नहीं रह जाती, ठीक वैसे ही जैसे किसी यात्री के पदचिह्न जो एक दिन के लिए हमारे यहाँ रुका हो? सचमुच, केवल एक पागल व्यक्ति, जिसने सच्चे आशीर्वादों को नहीं जाना है, ही भविष्य, सबसे सुंदर जीवन से प्रेम करने में विफल हो सकता है! सचमुच, केवल एक मूर्ख व्यक्ति ही शाश्वत जीवन प्राप्त करने के लिए इस क्षणभंगुर जीवन को खोने से डर सकता है, जिसमें आनंद, धन-संपत्ति और खुशियाँ समाप्त नहीं होंगी, बल्कि हमेशा के लिए बनी रहेंगी। जो कोई भी शाश्वत जीवन का सेवक नहीं बनना चाहता, वह इस क्षणिक जीवन को व्यर्थ में बर्बाद करता है, शाश्वत मृत्यु प्राप्त करता है, और नरक में बंधा रहता है, जहाँ बुझने वाली नहीं आग, निरंतर दुःख, और शाश्वत यातना है; जहाँ दुष्ट आत्माएँ वास करती हैं, जिनकी मांसपेशियाँ साँप के सिर जैसी हैं, जिनकी आँखें आग के तीर चलाती हैं, उनके दांत हाथियों के दांतों जितने बड़े हैं; वे बिच्छू के डंक की तरह काटते हैं; उनकी आवाज़ें शेरों की दहाड़ जैसी हैं; उनकी मात्र एक झलक ही महान भय पैदा करती है, एक भयंकर बीमारी और सबसे कड़वी मृत्यु को जन्म देती है। क्या ऐसी भयानकता और यातनाओं के बीच मरना भयानक नहीं है? लेकिन इससे भी अधिक भयानक यह है कि वे केवल निरंतर मरने के लिए जीते हैं; वे नष्ट नहीं होते ताकि वे अंतहीन पीड़ा सहन कर सकें; वे केवल साँपों द्वारा शाश्वत रूप से निगल लिए जाने के लिए जीवित रहते हैं, और उनके निगल दिए गए अंग विषैले साँपों और अनंत कीड़ों के भोजन के लिए बार-बार फिर से पैदा होते हैं। हे मित्रों, हे माता-पिता, हे संतों की महिमामय पत्नियों! इस पवित्र जोड़े को शाश्वत जीवन से ऐसी भयानक शाश्वत मृत्यु में न धकेलने की कामना करो; उन्हें आनंद से वंचित कर विलाप में न डालो; उन्हें प्रकाश से अंधकार में जाने की सलाह न दो; उन्हें मधुर विश्राम से उठाकर कड़वी यातना में न बुलाओ।

हे पवित्र युगल, मार्सेलिना और मार्क! चतुर शत्रु द्वारा धोखा दिए जाने की अनुमति स्वयं को न दें, जो आपके परिवार के माध्यम से आपको इस प्रकार की परीक्षा में डालता है; स्वयं को अनंत यातना में न डालें; राक्षसों के हाथों में न पड़ें; इस क्षणिक जीवन के प्रति प्रेम, दृश्यमान दुनिया की सुंदरताओं, और व्यर्थ, सांसारिक सुखों से आकर्षित न हों; अपने माता-पिता की विनतियों, अपनी पत्नियों के विलाप से स्वयं को पराजित न होने दें, अपने बच्चों के आँसू, या रिश्तेदारों और दोस्तों के स्नेह से। प्रभु के वचन को याद रखें: *'एक मनुष्य के शत्रु उसके अपने घर के लोग होते हैं'* (मत्ती 10:36), जो हमें परमेश्वर से अलग करते हैं; वे हमारे मित्र नहीं, बल्कि हमारे शत्रु हैं, और हमारा प्रेम सच्चा नहीं, बल्कि झूठा है, क्योंकि वे हमें इतने बड़े आशीर्वाद से वंचित करते हैं, हमें परमेश्वर के प्रेम और स्वर्ग के राज्य से लूटते हैं, जो परमेश्वर से प्रेम करने वालों के लिए तैयार किया गया है। उस पुरस्कार को अपने हाथों से छीनने न दें, जिसके लिए आपने इतनी कड़ी मेहनत की है; क्योंकि आप पहले ही, मानो, अपने हाथों में अपने लिए तैयार की गई आशीष को थामे हुए हैं; आप पहले ही स्वर्गीय महल के द्वार पर खड़े हैं। आपके लिए मुकुट पहले ही बुन दिए गए हैं, और मसीह, जो विजय प्रदान करने वाले हैं, आपको मुकुट पहनाने और पवित्र स्वर्गदूतों के सामने आपको महिमान्वित करने की प्रतीक्षा कर रहे हैं।

देखो, अब तुम्हारी यात्रा का अंत आ गया है: लोत की पत्नी की तरह पीछे मुड़कर मत देखना, नहीं तो तुम एक नर्जिीव स्तंभ बन जाओगे (उत्पत्ति 19:26), क्योंकि ऐसा करके तुम अपनी आत्माओं को नष्ट कर दोगे। अपने माता-पिता, पत्नियों और बच्चों के प्रति अत्यधिक प्रेम से भटकें नहीं, कहीं ऐसा न हो कि आप मसीह के अयोग्य हो जाएँ, जिन्होंने कहा है: *'जो मुझ से अधिक पिता या माता से प्रेम करता है, वह मुझ योग्य नहीं; और जो मुझ से अधिक पुत्र या बेटी से प्रेम करता है, वह मुझ योग्य नहीं* (मत्ती 10:37)। आत्मा में आरंभ करके देह में समाप्त करने की मूर्खता न करो (देखें गलातियों 3:3)। हे प्रभु, मेरा ईश्वर मसीह, कृपा करके मुझे आप लोगों के सामने उनके लिए अपना रक्त बहाने का अवसर दे, ताकि आप मेरी पीड़ा के साक्षी बन सकें, और मेरी मृत्यु आपके लिए एक उदाहरण बने कि आप अपने ईश्वर और मेरे ईश्वर के लिए अपना जीवन कैसे अर्पित करें।

जब संत सेबस्टियन उन्हें इन और कई अन्य शिक्षाओं से शिक्षित कर रहे थे, अचानक दिव्य प्रकाश उन पर चमका और उनका चेहरा एक स्वर्गदूत की तरह दमक उठा, और अविश्वासियों को उनके मुखमंडल की भव्यता देखकर विस्मय हुआ। हालाँकि, कुछ लोगों ने देखा कि सात स्वर्गदूत धन्य सेबेस्टियन को तेजस्वी वस्त्र पहना रहे थे, और एक अतिसुन्दर युवक उन्हें आशीर्वाद दे रहा था, यह कहते हुए:

'तुम हमेशा मेरे साथ रहोगे।'

यह सब प्रोटोस्क्रनियिरीउस[8958] के घर में हुआ, जिसका नाम निकोस्ट्रैटस था, जिसकी हिरासत में मार्सेलिनस और मार्क को रखा गया था। निकोस्ट्रैटस की पत्नी, जिसका नाम ज़ोई था, जो एक गंभीर बीमारी के कारण छह साल से मूक थी, हालांकि उसका मन और सुनने की शक्ति अक्षुण्ण थी, ने सेबेस्टियन द्वारा कहा गया सब कुछ सुना और समझा; और, उसके चेहरे के चारों ओर प्रकाश को देखकर, वह उसके पैरों पर गिर पड़ी, और विनम्रतापूर्वक इशारे से उससे अपनी वाणी वापस दिलाने का अनुरोध करने लगी। धन्य सेबेस्टियन ने कहा:

'यदि मैं वास्तव में मसीह का एक सच्चा सेवक हूँ, और यदि यह सब जो इस महिला ने मुझसे सुना है और जिस पर उसने विश्वास किया है, सत्य है, तो मेरे प्रभु उसके होठों को खोलने और उसकी जीभ को मुक्त करने की आज्ञा दें, जैसा कि एक बार यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के पिता, भविष्यवक्ता जकर्याह के साथ हुआ था (लूका 1:64)।'

यह कहकर, उन्होंने उस महिला के होठों पर क्रॉस का चिह्न बनाया, और वह तुरंत ज़ोर से बोल उठी:

'धन्य हैं आप, और धन्य है वह वचन जो आपने कहा है, और धन्य हैं वे जो आपके द्वारा जीवते परमेश्वर के पुत्र मसीह में विश्वास करते हैं; क्योंकि मैंने स्वर्ग से आपके पास एक स्वर्गदूत को उतरते देखा है, जिसके हाथ में एक खुली पुस्तक थी, जिसे देखकर आपने वह सब कुछ पढ़ा जो आपने कहा है।' धन्य हैं वे सभी जो आपके द्वारा कही गई हर बात पर विश्वास करते हैं, और शापित हों वे सभी जो आपके द्वारा सुने गए एक भी शब्द पर संदेह करते हैं। जिस प्रकार उगती हुई भोर अँधेरे को दूर कर आँखों में प्रकाश लाती है, उसी प्रकार आपके वचनों के प्रकाश ने मेरी अज्ञानता और अंधापन के अँधेरे को दूर कर दिया है, मुझे सच्चे विश्वास के उज्जवल दिन से प्रकाशित किया है, और छह साल की खामोशी के बाद, ईश्वर की स्तुति करने के लिए मेरे होठों को खोल दिया है।

ऐसा चमत्कार देखकर, वहाँ उपस्थित सभी लोग मसीह में विश्वास करने लगे। ज़ोए के पति निकोस्ट्रैटस ने मसीह में ऐसी शक्ति देखकर, संत के चरणों में गिर पड़े, और राजा की आज्ञा से मार्सेलिनस और मार्क को बेड़ियों में जकड़ने के लिए क्षमा याचना की; और, उनके हाथों से लोहे की बेड़ियाँ उतारकर, उन्होंने उनके घुटनों को गले लगा लिया, उनसे जाने के लिए विनती की, और कहा:

'हे प्रभु, काश मैं भी आपके मुक्ति के लिए बेड़ियों का दुख सहने का सौभाग्य पाता! आपके लिए अपना रक्त बहाकर, मैं अपने पापों को धो डालता और अनंत मृत्यु से बचकर, उस जीवन को प्राप्त करता जिसे परमेश्वर ने सेबेस्टियन के मुख से हम तक पहुँचाया।'

जब निकोस्त्रटस ने संतों से अपने-अपने घर लौटने के लिए कहा, तो उन्होंने उससे कहा:

– हम अपनी पीड़ा का प्याला आप पर नहीं छोड़ना चाहते; हमारे प्रभु मसीह उदार और दयालु हैं, क्योंकि जो कोई भी उनके पास आता है और उनसे कुछ माँगता है, उस पर वे अपनी स्वर्गीय दया प्रदान करते हैं; वह इतना शक्तिशाली है कि यदि आप सच्चे मन से चाहें तो आपको भी वही प्याला दे सकता है। क्योंकि यदि आपको, जो कभी अविश्वासी थे,

[8958] प्रोटोस्क्रनियिरीउस एक दरबारी कोषाध्यक्ष था जो एपार्क (प्रांतीय गवर्नर) के अधीन काफी शक्ति का प्रयोग करता था; इस कारण से, वह सम्राट का विशेष विश्वासपात्र था और उसे विभिन्न जिम्मेदारियाँ सौंपी गई थीं।

सत्य के ज्ञान का प्रकाश मिला, तो अब जब आप विश्वास कर चुके हैं, तो और भी अधिक , आपको वह सब कुछ मिलेगा जो आप माँगेंगे, क्योंकि ईश्वर की कृपा हमेशा लोगों को वह सहायता प्रदान करने के लिए तैयार रहती है जिसकी वे माँग करते हैं, विशेष रूप से उन लोगों को जो बिना किसी संदेह के उस पर विश्वास करते हैं। आपका विश्वास आज की शिक्षा से शुरू हुआ, और एक ही घंटे में आपने वह सीख लिया है जो शायद ही कोई पूरे एक साल में सीख पाता; और, जैसा कि हम देखते हैं, हमारे प्रभु में आपके विश्वास में, आपके लिए मरने को तैयार होने से कुछ भी आपको नहीं रोकता—न माता-पिता, न बच्चे, न ही धन-संपत्ति। अचानक आपने उस चीज़ को त्याग दिया जिसे आप हमेशा से पसंद करते थे, और उस चीज़ की तलाश कर रहे हैं जिसे आप कभी नहीं जानते थे; आप एक अज्ञात पथ पर निकल पड़े हैं और तुरंत मसीह के पास आ गए हैं, और आपकी इच्छाएँ पहले से ही स्वर्ग पर केंद्रित हैं, क्योंकि आप पृथ्वी पर कोई आराम नहीं चाहते। यह कार्य कितनी बड़ी प्रशंसा का पात्र है! ऐसी सद्गुण की मिसाल अनुकरण के कितनी योग्य है! आप अभी तक बपतिस्मा के जल द्वारा मसीह के साथ एक नहीं हुए हैं, और न ही आपने अभी तक युद्ध की शुरुआत देखी है, फिर भी आप पहले से ही सच्चे राजा के लिए हथियार उठा रहे हैं और, उनके सैनिकों को उनके बंधनों से मुक्त करके, स्वयं कैदी बन रहे हैं, और आप दंडितों के लिए स्वयं को मृत्यु के हवाले करने से नहीं डरते।

सभी अपने हृदय की गहराई से विचलित हो गए और वे अपने पूर्व अज्ञान और मसीह के योद्धाओं को उनके उत्तम कार्य से रोकने के प्रयास पर पश्चाताप करते हुए रो पड़े। मार्क ने, तथापि, कहा:

हे प्रिय माता-पिता, और तुम पत्नियों, और तुम मित्रों, सीखो! शत्रु के विरुद्ध दृढ़ खड़े होना सीखो, विश्वास का ढाल उठाकर, जिससे तुम दुष्ट के प्रज्वलित तीरों को बुझा सकते हो (इफिसियों 6:16)। चाहे शैतान के सेवक उठ खड़े हों और हमारे विरुद्ध हथियार बाँध लें—चाहे वे हमारे शरीर को अपनी इच्छानुसार किसी भी यातना से पीड़ित करें: वे शरीर को तो मार सकते हैं, परन्तु विश्वास के लिए लड़ने वाली आत्मा को परास्त करने में वे शक्तिहीन हैं। जहाँ तक शरीर के मारे जाने और चीर-फाड़ किए जाने की बात है, हम उस पर कोई ध्यान नहीं देंगे: राजा के लिए प्राप्त घाव योद्धाओं को महिमा प्रदान करते हैं। शैतान हम पर ऐसी क्रूरता से भड़कता है जो स्वयं उसके लिए पीड़ादायक है, क्योंकि हमारी सहनशीलता को देखकर वह स्वयं पीड़ित होता है; वह हम पर विभिन्न प्रकार की यातनाएँ डालता है और हमें हर तरह की मृत्यु की धमकी देता है, ताकि हमारे हृदयों में भय भरकर वह हमें हमारे उत्तम प्रयास से हटा सके; जहाँ यातनाएँ विफल होती हैं, वहाँ वह चापलूसी का सहारा लेता है: वह जीवन का वादा करता है, केवल उसे छीनने के लिए; वह हमें गरीबी में डालने के लिए धन का वादा करता है; वह हमें लज्जित करने के लिए महिमा प्रदान करता है; वह एक बेफिक्र जीवन का वादा करता है, लेकिन इसके बजाय हमें दुर्भाग्य और शाश्वत दुख में डुबो देता है। उसके हमलों की युक्तियाँ ऐसी ही हैं, उसकी चालाक योजनाएँ ऐसी ही हैं – शरीर को यातना से बचाने के लिए, जबकि आत्मा को पाप से मार डालना। इसलिए आइए हम उसके विरुद्ध खड़े हों: आइए हम आत्मा की सहायता के लिए शरीर को तुच्छ समझें। हमें क्षणिक मृत्यु से क्यों डरना चाहिए, यदि हम हमेशा जीने की आशा रखते हैं! हमें इस जीवन पर क्यों पछताना चाहिए, जब हमें एक बेहतर जीवन प्राप्त करने की आशा है? जो लोग आने वाले जीवन की आशा नहीं रखते, उन्हें मृत्यु से डरना चाहिए। हे, इस जीवन के कितने ही सेवक अनपेक्षित विपत्ति से नष्ट हो गए हैं: बिजली गिरने से मारे गए, समुद्र में डूब गए, किसी गड्ढे में समा गए, या तलवार से वध कर दिए गए! और इन दुखी आत्माओं ने इस जीवन को भी दुख के साथ खो दिया है, फिर भी अगले जीवन को प्राप्त नहीं किया है! तो उन्हें इस जीवन के लिए रोने दो; उन्हें मृत्यु से कांपने दो; लेकिन मृत्यु से हमें क्या दुख होता है? इस जीवन के लिए हमें क्या चिंता होनी चाहिए, हम जो मसीह द्वारा हमारे लिए तैयार किए गए शाश्वत, धन्य जीवन की प्रतीक्षा कर रहे हैं, जो आँखों द्वारा न देखी गई, मानव कानों द्वारा न सुनी गई, और मन द्वारा न समझी जा सकने वाली आशीषों से पूर्ण है?

जब संत मार्क ने ऐसा कहा, तो सभी आने वाले जीवन की लालसा से भर गए, जबकि वे वर्तमान जीवन से घृणा करने लगे; सभी मसीह के प्रेम से प्रज्वलित हो गए, जबकि वे संसार से घृणा करने लगे, और उन्होंने परमेश्वर का धन्यवाद किया कि उन्होंने उनके अंधकार को दूर कर दिया, उनके मन की आँखें खोल दीं, और उन्हें उद्धार का मार्ग दिखाकर विनाश से बचा लिया। इस प्रकार, जो लोग पवित्र शहीदों को मसीह से हटाने आए थे, वे स्वयं मसीह की ओर मुड़ गए, और जो दूसरों को नष्ट करने की आशा कर रहे थे, वे स्वयं बच गए; जबकि निकोस्त्रटस और उसकी पत्नी ने संत से विनम्रतापूर्वक निवेदन किया, कह रहे थे:

'मैं तब तक न तो कुछ खाऊँगा और न ही पियूँगा जब तक मुझे ईसाई धर्म का संस्कार प्रदान नहीं किया जाता।'

सेबस्टयिन ने उत्तर दयिा, 'अपनी सेवा बदल दो, और एक राज्यपाल के बजाय मसीह के प्रोटोस्क्रनियिरीस के रूप में अधकि सेवा करना शुरू करो; मेरी सलाह मानो: उन सभी को इकट्ठा करो जन्हिें तुमने बेड़यिों और कालकोठरयिों में बंद कयिा है; मैं परमेश्वर के याजक को बुलाऊँगा, और तुम, वश्विास में आए सभी लोगों के साथ, उससे पवत्रि संस्कार ग्रहण करोगे। यदि शैतान मसीह के पवत्रि सेवकों को उनसे अलग करने का प्रयास करता है, तो हमें शैतान से उन लोगों को बचाने के लिए कतिनी अधकि कोशशि करनी चाहिए जन्हिें वह नष्ट करना चाहता है, और उन्हें हमारे सृष्टकिर्ता की ओर मोड़ना चाहिए!

नकिोस्त्रटस ने आपत्ति जताई:

'क्या संस्कार दुष्टों और मृत्युदंडति अपराधयिों पर प्रदान कयि जा सकते हैं?'

सेबस्टयिन ने उत्तर दयिा:

– हमारे उद्धारकर्ता हमारे जैसे पापयिों के लिए संसार में आए, और उन्होंने बपतस्मिा का संस्कार प्रदान कयिा, जसिके द्वारा लोगों के पाप और अधर्म दूर हो जाते हैं और दव्यि अनुग्रह प्रदान कयिा जाता है। अपने धर्म-परविर्तन की शुरुआत में ही , यह उपहार मसीह को अर्पति करें, दूसरों के उद्धार की चंति करें, और आपको अपने पुरस्कार के रूप में शहीद का मुकुट प्राप्त होगा, जो अनेक सद्गुणों के न खलिने वाले फूलों से बुना हुआ है।

यह सुनकर नकिोस्त्रटस, क्लाउडयिस, व्याख्याकार के पास गया[8959] , और उसे आदेश दयिा कि वह उन सभी को उसके घर भेज दे जन्हिें दोषी ठहराया गया था और जो बेड़यिों में जकड़े हुए थे। जब यह सब हो गया और लोहे की बेड़यिों में जकड़े हुए कैदी इकट्ठा हो गए, संत सेबेस्टयिन ने उन्हें उद्धार का एक शक्षिाप्रद संदेश दयिा और यह देखकर कि वे मसीह की आस्था के लिए तैयार थे और दव्यि अनुग्रह प्राप्त करने में सक्षम थे, उन्होंने आदेश दयिा कि सभी को उनके बंधनों से मुक्त कर दयिा जाए; फरि वे पुरोहति संत पॉलीकार्प के पास गए, जो उत्पीड़न के कारण अपना पद छपिा रहे थे, और उन्हें जो कुछ भी हो रहा था, सब कुछ बताया। इसके लिए ईश्वर को धन्यवाद देने के बाद, संत पॉलीकार्प सेबास्टयिन के साथ नकिोस्ट्रैटस के घर गए और वश्विासयिों की पूरी सभा को संबोधति करते हुए कहा:

'धन्य हैं तुम सब जन्हिोंने हमारे प्रभु यीशु मसीह का वचन सुना है, जो कहते हैं: *"मेरे पास आओ, हे सब जो परश्रिमति और बोझलि हो, और मैं तुम्हें वश्राम दूँगा; मेरा जूआ अपने ऊपर ले लो और मुझ से सीखो, क्योंकि मैं मन से कोमल और दीन हूँ, और तुम अपने प्राणों को वश्राम पाओगे; क्योंकि मेरा जूआ सुगम है, और मेरा बोझ हल्का है*" (मत्ती 11:28–30)। और तुम भाइयो, जो बपतस्मिा के जल से धोए जाने और पवत्रि होकर परमेश्वर के प्रयि पुत्र बनाए जाने वाले हो, तुम्हारे लिए अतीत के पापों की क्षमा प्राप्त करने के लिए पश्चाताप आवश्यक है। अब, हालाँकि, चूँकि आप हमारे परमेश्वर मसीह के लिए इतना उत्साह दखिाते हैं—कि, उस पर वश्विास करके, आप उसके लिए मरने को तैयार हैं, और जबकि पहले आप दूसरों को इससे रोकने की कोशशि करते थे, अब आप स्वयं इसकी इच्छा रखते हैं—आपने पहले ही अदृश्य शत्रु पर क्षमा और वजिय प्राप्त कर ली है। हमारे प्रभु मसीह शक्तमिान हैं: वह अंधकार से प्रकाश को उत्पन्न करते हैं और अस्वीकृत पात्रों में से चुने हुए लोगों को बनाते हैं; इस प्रकार उन्होंने साऊल को पौलुस, एक पतति को प्रेरति, और एक उत्पीड़क को शक्षिक बनाया। इसी प्रकार आज उन्होंने आपको मूर्तपिूजा से अपनी कलीसयिा में बुलाया है, और आपको अवश्विासयिों से अपने वश्विासयोग्य सेवकों में, और शत्रुओं से अपने मत्रिों में बदल दयिा है। आपके धर्म-परविर्तन पर, दुष्टात्माओं का सारा दल, अंधकार के पुत्र, रोते और वलिाप करते हैं; फरि भी पवत्रि स्वर्गीय स्वर्गदूतों की सारी पंक्तयिाँ, प्रकाश के पुत्र, आपके ज्ञानोदय पर आनंदति और हर्षति होते हैं। अत; आप में से प्रत्येक अपना नाम लखिकर मुझे दे। आपके बपतस्मिा से पहले उपवास हो: शाम तक उपवास करें; और जब भौतकि प्रकाश अस्त हो जाएगा, तो बपतस्मिा में अद्रव्य प्रकाश आप पर चमकेगा।

सभी आनंद से भर गए, और प्रत्येक ने बपतस्मिा के लिए तैयारी करना शुरू कर दयिा। जब यह सब हो रहा था, तब भाष्यकार क्लॉडयिस नकिोस्त्रातस के घर आया और उसे राज्यपाल के पास बुलाया, यह कहते हुए:

'यह जानकर कि तुमने सभी कैदयिों को अपने घर में इकट्ठा कर लयिा है, एपार्क क्रोधति हो गया है और उसने तुम्हें बुलाने का आदेश दयिा है; वचिार करो कि तुम उसे क्या उत्तर दोगे।'

जब नकिोस्त्रातस एपार्क के घर पहुँचा और एपार्क ने उससे कैदयिों के बारे में पूछा, तो उसने उत्तर दयिा:

[8959] कमेंटारयिस – रोमन साम्राज्य में जेलों का प्रमुख और अदालती कार्यवाहयिों का क्लर्क, जो आरोपयिों, वशिेष रूप से ईसाई शहीदों की प्रारंभकि जांच करता था।

'आपके हुक्म पर, मैंने दो ईसाइयों, मार्सेलनिस और मार्क को अपनी हिरासत में लिया है; और, उनमें अधिक भय पैदा करने के लिए, मैंने उनके बीच अन्य कैदियों को, भारी बेड़ियों में जकड़े और कसकर बंधे हुए, रख दिया है, ताकि उन्हें देखकर, वे अपने लिए भी उसी पीड़ा की कल्पना करें और इस प्रकार आपके आदेश का पालन करें।'

कमांडर ने उसकी प्रशंसा की और उसे विदा करते हुए कहा:

'यदि आपके द्वारा हमारे धर्म को अपनाने के लिए प्रेरित किए जाने के बाद, हम उन्हें सुरक्षित और कुशलक्षेम से रिहा कर देते हैं, तो आपको उनके माता-पिता से एक बड़ा इनाम मिलेगा।'

क्लॉडियस के साथ घर लौटते समय, निकोस्ट्राटस ने उसे सेंट सेबेस्टियन के बारे में बताना शुरू किया, यह समझाते हुए कि वह राजा का एक दोस्त, एक ईसाई था, जो दैवीय शिक्षाओं में पारंगत था, जिसने ईसाइयों के हृदय को विश्वास में मजबूत किया और इस वर्तमान जीवन को अस्थायी और क्षणिक बताया, साथ ही यह घोषणा की कि मृत्यु के बाद एक और जीवन है—जो बेहतर और शाश्वत है; फिर उसने बताया कि कैसे संत सेबेस्टियन का चेहरा स्वर्गीय प्रकाश से प्रकाशित हो गया था और कैसे उन्होंने उसकी पत्नी को छह साल से चली आ रही वाणी की अड़चन से ठीक कर दिया था, जिससे वह स्पष्ट रूप से बोलने लगी। निकोस्ट्रैटस से यह सुनकर, क्लॉडियस ने कहा:

'मेरे दो छोटे बेटे बहुत बीमार हैं: एक को सूजन की बीमारी है, और दूसरे के पूरे शरीर में छाले हैं; मैं उससे अपने बेटों को ठीक करने के लिए कहूँगा: मुझे कोई संदेह नहीं है कि जिसने आपकी पत्नी की गूंगीपन को ठीक किया, वह मेरे बच्चों को भी ठीक कर सकता है।'

यह कहकर, क्लॉडियस घर भागा, दोनों बच्चों को अपनी बाहों में उठाया, और उनके साथ निकोस्ट्रैटस के घर की ओर चल पड़ा। वहाँ वह पवित्र शहीदों सेबेस्टियन और पॉलीकार्प के चरणों में गिर पड़ा, और कहने लगा:

'मैं बिना किसी संदेह के, पूरे दिल से विश्वास करता हूँ कि मसीह, जिसका आप सम्मान करते हैं, सच्चे ईश्वर हैं; और मैं अपने इन बीमार बच्चों को यहाँ इसलिए लाया हूँ ताकि आप उन्हें मृत्यु से बचा सकें!'

पवित्र पुरुषों ने उससे कहा:

'जो भी कोई किसी बीमारी से पीड़ित है, वह आज, पवित्र बपतिस्मा के पात्र में प्रवेश करते ही ठीक हो जाएगा।'

क्लॉडियस ने फिर से घोषणा की कि वह मसीह में विश्वास करता है और एक ईसाई बनना चाहता है। वे सभी पवित्र बपतिस्मा के लिए तैयारी करने लगे, अपने नाम लिखकर उन्हें पुरोहित के सामने प्रस्तुत किया। अपना नाम प्रस्तुत करने वाले पहले व्यक्ति मार्सेलिना और मार्कस के पिता ट्रांक्विलिनिस थे, उनके बाद उनके छह मित्र थे: अरिस्टोन, क्रिसेन्टियन, यूटकियिन, उरवन, वाइटालियस और जस्टस, फिर निकोस्ट्रैटस अपने भाई कास्टोरियस और क्लाउडियस टीकाकार के साथ, उनके बाद उनके दो बेटे सिम्फोरीयन और फेलिक्स, मार्सिया, मार्सेलिनिस और मार्क की माँ, सिफिरोसा, क्लॉडियस की पत्नी; ज़ोई, निकोसट्रैटस की पत्नी; और निकोसट्रैटस का पूरा परिवार – कुल मिलाकर दोनों लिंगों के 33 लोग; और अंत में, तहखाने से लाए गए सभी लोग, जिनकी संख्या 16 थी। कुल मिलाकर 64 लोग थे जिन्होंने बपतिस्मा के लिए तैयारी की थी, और सभी को संत पॉलीकार्प ने बपतिस्मा दिया। संत सेबेस्टियन ने बपतिस्मा के कुंड पर गोडफादर के रूप में कार्य किया; महिलाओं के लिए, बीट्रिस और लुकिना ने गोडमदर के रूप में कार्य किया। सबसे पहले, क्लॉडियस के बच्चों को बपतिस्मा के कुंड तक ले जाया गया, और वे तुरंत अपनी बीमारियों से ठीक हो गए, ताकि उनके शरीर पर उनके पुराने घावों का कोई निशान भी न बचे। उनके बाद, ट्रांक्विलिनिस को आगे लाया गया; वह न केवल उम्र के कारण कमजोर था, बल्कि उसकी बाहों और पैरों में दर्द भी होता था, इसलिए उसे मुश्किल से उठाया जा सकता था; बपतिस्मा से पहले जब उसके कपड़े उतारे गए तो उसे बहुत तकलीफ हुई। संत पॉलीकार्प ने उससे पूछा:

'क्या आप निश्चिंदेह विश्वास करते हैं कि परमेश्वर के एकलौते पुत्र, हमारे प्रभु यीशु मसीह में, आपको स्वास्थ्य प्रदान करने और आपके पापों को क्षमा करने की शक्ति है?'

ट्रांक्विलिनिस ने उत्तर दिया:

'मैं विश्वास करता हूँ कि मसीह परमेश्वर के पुत्र हैं और परमेश्वर सब कुछ कर सकते हैं, लेकिन उनकी भलाई के कारण मैं केवल अपने पापों की क्षमा चाहता हूँ; जहाँ तक मेरी शारीरिक बीमारी का सवाल है, मैं इसकी परवाह नहीं करता।'

पास खड़े सभी लोग आनंद के आँसुओं से भर आए और उन्होंने प्रभु से प्रार्थना की कि वह शहीद की आस्था का फल प्रकट करें। जब बपतिस्मा आरंभ हुआ, और ट्रैंक्विलिनिस से पूछा गया, 'क्या आप ईश्वर पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा में विश्वास करते हैं?', और जब उन्होंने उत्तर दिया: 'मैं विश्वास करता हूँ', ये शब्द उसके होंठों से निकले ही थे कि

उसके हाथ और पैर अपने दर्दनाक बंधनों से मुक्त हो गए, उसके पैर और घुटने मजबूत हो गए, वृद्धावस्था की सारी दुर्बलता उससे दूर हो गई, और *'तेरी जवानी गरुड़ के समान* नूतन *होगी'* (भजन संहिता 102:5)[8960] – और उसने उद्घोष किया:

'आप ही एकमात्र सच्चे ईश्वर हैं, जिन्हें यह दुखी संसार नहीं जानता!'

उसके बाद, बाकी सभी को एक-एक करके बपतिस्मा दिया गया। और मार्सेलिनिस और मार्क को दिए गए समय के शेष 16 दिनों तक, वे दिन-रात चर्च के भजनों और भजन-संग्रहों से परमेश्वर की महिमा करते रहे, अपने विश्वास में दृढ़ हुए, और मसीह के नाम के लिए शहादत के लिए खुद को तैयार किया।

जैसे ही 30-दिन की अवधि समाप्त होने वाली थी, रोम के एपार्क, एग्रीस्टियस क्रोमैटिकिस ने मार्सेलिनिस और मार्क के पिता, ट्रांक्विलिनिस को बुलाया और उससे अपने बेटों के बारे में पूछा—कि क्या वे ईसाई धर्म त्यागने के लिए सहमत हो गए थे।

ट्रांक्विलिनिस ने उत्तर दिया:

मैं आपकी दया के लिए धन्यवाद करने के शब्द नहीं ढूंढ पा रहा हूँ; यदि आपने अपनी कोमलता से मेरे बेटों की मृत्युदंड को इतने दिनों तक टालकर न रोका होता, तो मैं भी उन्हें खो देता, और मेरे बेटों ने अपना पिता खो दिया होता। मेरे सभी रिश्तेदार, मेरे प्रिय मित्र, और—मुझे विश्वास है—आप महाशय भी मेरे साथ प्रसन्न होंगे, क्योंकि मृतकों को जीवन मिला है, दुखी लोगों को आनंद मिला है, और शोक में डूबे लोगों के लिए खुशी लौट आई है।

तब राज्यपाल ने, यह सोचकर कि ट्रैंक्विलिनिस के पुत्र देवताओं को श्रद्धांजलि अर्पित करना चाहते थे, कहा:

'अंतिम दिन आओ, और अपने बेटों को देवताओं को उचित धूप अर्पित करने दो।'

यह सुनकर, ट्रैंक्विलिनिस ने कहा:

'हे अति प्रतिष्ठित पुरुष! यदि आपने मेरे और मेरे पुत्रों पर जो बीता है, उस पर निष्पक्ष निर्णय लिया होता, तो आप समझ गए होते कि एक ईसाई का नाम कितना महान और शक्तिशाली है।'

गवर्नर ने कहा:

'क्या तुम्हें होश नहीं है, ट्रैंक्विलिनिस?'

ट्रैंक्विलिनिस ने उत्तर दिया, 'अब तक मैं शरीर और आत्मा दोनों से वशीभूत था, लेकिन जैसे ही मैंने मसीह में विश्वास किया, मुझे तुरंत आत्मा और शरीर दोनों का चंगापन मिला।'

'मेरी समझ से,' राज्यपाल ने कहा, 'मैंने आपके बेटों की फांसी इसलिए नहीं टाल दी थी कि आप उन्हें उनकी भूल से हटा सकें, बल्कि इसलिए कि वे आपको अपनी भूल में ले आएं!'

ट्रैंक्विलिनिस ने उत्तर दिया:

'मैं महाशय से विनती करता हूँ कि आप स्वयं निर्णय करें कि किन कर्मों को भूल कहा जाना चाहिए।'

गवर्नर ने कहा:

'आप स्वयं बताइए कि त्रुटि क्या कहलाती है।'

'त्रुटि का पहला रूप,' ट्रैंक्विलिनिस ने उत्तर दिया, 'जीवन के मार्ग को त्यागकर मृत्यु के मार्ग का अनुसरण करने में निहित है।'

'और यह मृत्यु का मार्ग क्या है?' एपार्क ने पूछा।

'क्या आपको नहीं लगता,' ट्रैंक्विलिनिस ने उत्तर दिया, 'कि मृत्यु का मार्ग है दिव्य नामों को नश्वर मनुष्यों पर थोपना और लकड़ी व पत्थर से तराशी गई उनकी मूर्तियों की पूजा करना?'

एपार्क ने आपत्ति जताई:

'क्या वे जिनकी हम पूजा करते हैं, देवता नहीं हैं?'

ट्रांक्विलिनिस ने उत्तर दिया:

'सचमुच, यह उचित नहीं है कि उन लोगों को देवता माना जाए जिनके बारे में आपकी अपनी पुस्तकों में लिखा है कि वे पाप में पैदा हुए थे, उनके माता-पिता अधर्मी, दुष्ट और कानून तोड़ने वाले थे, वे स्वयं भी अधर्मी, कानून तोड़ने वाले और

[8960] यह अभिव्यक्ति भजन संहिता 102:5 से ली गई है। – इस अभिव्यक्ति का उपयोग यहाँ यह दिखाने के लिए किया गया है कि वृद्ध ट्रैंक्विलिनिस, मसीह में अपने विश्वास का अंगीकार करने के बाद, एक जवान व्यक्ति की तरह, बलवान और जोशीला हो गया। इस नवीनीकरण की तुलना एक चील से की गई है, जो चील की जीवन शक्ति, तीक्ष्ण दृष्टि, शक्ति और उसकी उड़ान की ऊँचाई पर आधारित हो सकती है।

कपटी थे, और पाप में ही मरे। क्या क्रोनस, जो अपने ही बेटों का मांस खाता था, के क्रीटवासियों पर शासन करने के समय से पहले स्वर्ग में कोई ईश्वर नहीं था? या क्या क्रीट का अपना राजा था, जबकि स्वर्ग में कोई ईश्वर नहीं था? कई लोग भ्रमित हैं जो सोचते हैं कि क्रोनस का पुत्र डीयस—जो द्वेष और कामुक वासना की चपेट में था—वज्र घुमाता है और बिजली गिराता है। उसने किसका उत्पीड़न नहीं किया, जबकि उसने अपने ही पिता को भी नहीं बख्शा, और उसने किन-किन पापों से स्वयं को कलंकित नहीं किया, क्योंकि उसने अपनी ही बहन को अपनी पत्नी बना लिया? बाजारों में, सड़कों पर, घरों में और हर जगह, इस बात पर चर्चा की जाती है और किताबों में वर्णित है कि कैसे दुष्ट हेरा घमंड करती है कि वह ईDeus[8961] की बहन और पत्नी है। क्या आप यह विश्वास नहीं करते, हे अतिशय प्रतिष्ठित महोदय, कि आप ऐसे देवताओं का सम्मान करके भूल कर रहे हैं जो इतने दुष्ट कर्मों के दोषी हैं, जिनके लिए रोमन कानून किसी व्यक्ति को मृत्युदंड और मृत्यु की सजा देता है? फिर भी आप ऐसे प्राणियों की पूजा करते हैं और स्वर्ग में राज करने वाले सर्वशक्तिमान ईश्वर को त्यागकर, एक पत्थर से कहते हैं, 'तुम मेरे देवता हो', और एक पेड़ से कहते हैं, 'मेरी मदद करो!'

एपार्क ने कहा:

'जब से लोगों ने देवताओं का अपमान करना शुरू किया और उनकी पूजा से मुंह मोड़ लिया है, तब से रोमन साम्राज्य कई विपत्तियों से घिरा हुआ है।'

– यह सच नहीं है,' ट्रैंक्विलिनिस ने कहा, 'लिवी की दस पुस्तकें पढ़ो[8962] , और तुम जानोगे कि एक ही दिन में रोमन सेना के 42,000 से अधिक पुरुष, जो राक्षसों को बलिदान दे रहे थे, मारे गए थे; क्या यह तुम्हारे लिए कोई रहस्य है कि फ्रैंक्स ने कैपिटोलिन हिल पर कब्जा कर लिया और रोमन शक्ति का मज़ाक उड़ाया[8963] ? अतीत में, जब लोगों ने अभी तक सच्चे ईश्वर को जानना शुरू नहीं किया था , रोम नगर अनगिनत विपत्तियों, अभूतपूर्व कैद और विभिन्न नरसंहारों का शिकार हुआ; लेकिन अब, जब विश्वासी अदृश्य सच्चे ईश्वर का सम्मान करते हैं, रोमन साम्राज्य शांति में बना रहता है और लज्जित नहीं होता, क्योंकि ईश्वर ने अपने चुने हुओं के लिए इसे शांति से सुरक्षित रखा है। फिर भी तुम ऐसे दयालु ईश्वर को स्वीकार नहीं करते, और सृष्टिकर्ता द्वारा अपनी सृष्टि को भेजी गई सभी आशीषों का श्रेय उसी को देते हो!

इस प्रकार, उनकी बातचीत के दौरान, चर्चा मसीह यीशु पर आ गई, और ट्रांक्विलिनिस ने समझाया कि परमेश्वर का पुत्र स्वर्ग को छोड़े बिना, मानव आत्मा को विनाश से बचाने के लिए कैसे और क्यों पृथ्वी पर अवतरित हुआ, और देहधारी हुआ। और जो कुछ भी ट्रांक्विलिनिस ने स्वयं संत सेबेस्टियन और पॉलीकार्प से सीखा था, और जो कुछ भी उसे प्रभु की कृपा से और सिखाया गया था, जो विश्वासी को ज्ञान प्रदान करती है, वह सब उसने एपार्क को बताया; और प्रभु स्वयं उसकी मदद करने आए और उसे ऐसी बुद्धि प्रदान की जिसका उसका विरोधी विरोध नहीं कर सका। उन्होंने यह भी बताया कि कैसे भुजाओं और पैरों में लंबे समय से दर्द से पीड़ित होने के बाद, उन्हें उसी क्षण मसीह की कृपा से अचानक चंगा कर दिया गया जब उन्होंने पूरे दिल से उन पर विश्वास किया। एपार्क, जो लंबे समय से अपने पैरों में तीव्र दर्द से पीड़ित था, ने उपस्थित लोगों को ट्रैंक्विलिनिस को ले जाने का आदेश दिया, मानो उसे अगले दिन पूछताछ के लिए

[8961] प्राचीन यूनानियों का मानना था कि उनके पूजे जाने वाले देवताओं से पहले दुनिया पर अन्य लोगों का शासन था: क्रोनस और अन्य टाइटन्स – अर्ध-दैवीय, आधे मानव और आधे दिव्य, जिन्हें यूनानियों ने अधिक मानवीय गुणों का धनी माना। उनके विश्वास के अनुसार, क्रोनस, या सैटर्न, टायटन्स में सबसे छोटा था, जो यूरेनस (आकाश) और गैया (पृथ्वी) का पुत्र था; उसने क्रीट द्वीप पर शासन किया और बाद में पूरी दुनिया पर अपना प्रभुत्व स्थापित किया; अपनी बहन रेया से विवाह करने के बाद, उसके कई पुत्र और पुत्रियाँ हुए; लेकिन चूंकि गैया ने भविष्यवाणी की थी कि उसे उसके अपने बच्चों द्वारा उखाड़ फेंका जाएगा, इसलिए वह उन्हें जन्म देने के तुरंत बाद निगल जाता था, ज्यूस को छोड़कर, जिसे रिया ने बचाया था और जिसने बाद में क्रोनस को उखाड़ फेंका और उसे उन बच्चों को उगलने के लिए मजबूर किया जिन्हें उसने निगला था। ज्यूस, या डायोस, को यूनानियों द्वारा देवताओं और मनुष्यों के पिता, स्वर्ग और पूरे ब्रह्मांड के एक शक्तिशाली और भयंकर शासक के रूप में पूजा जाता था, जो पृथ्वी पर गरज और बिजली भेजता था। यूनानी विश्वास के अनुसार, हेरा सर्वोच्च देवी, ज्यूस की पत्नी और बहन थीं, जो अपनी उच्च गरिमा और वैवाहिक अधिकारों पर गर्व करती थीं। हालांकि, यूनानी मिथकों में ज्यूस को कई अन्य छोटी देवियों और यहां तक कि नश्वर महिलाओं के साथ शारीरिक संबंधों में भी दिखाया गया है। अन्य यूनानी देवताओं और देवियों को भी इसी तरह के अश्लील कामुक रूपों में चित्रित किया गया है, जिनमें यूनानियों ने सभी मानवीय विशेषताएं, जुनून और दुर्गुणों को मान लिया था। सामान्य रूप से, प्राचीन यूनानियों और रोमनों के धर्म में, हर चीज़ ने अधर्मीता के विकास में योगदान दिया; हर चीज़ ने इसमें उत्कृष्टता प्राप्त करने के लिए आदर्श प्रदान किए।

[8962] यह, बेशक, टाइटस लिवियस को संदर्भित करता है - जो पहली शताब्दी ईसा पूर्व के अंत और पहली शताब्दी ईस्वी की शुरुआत के सबसे महान रोमन इतिहासकार थे। उनका इतिहास 142 पुस्तकों से बना है, जिनमें से केवल 35 ही आज तक बची हैं।

[8963] कैपिटोलिन हिल रोम का आंतरिक किला है। 'फ्रैंक्स' शब्द का अर्थ उन गॉल लोगों से है जो सिसिल्पिन गॉल (उत्तरी इटली) में रहते थे। गैलिक आक्रमण ईसा पूर्व चौथी शताब्दी के उत्तरार्ध में हुए और शुरू में रोमनों की पूर्ण पराजय और रोमन गणराज्य के विनाश के साथ समाप्त हुए, जिससे वह लंबे समय तक उबर नहीं सका।

बुलाया जा रहा हो; लेकिन उसी रात उसने चोरी-छिपे उसे बुलवाया, उसे अपनी उपस्थिति में बुलाया और उपहार देकर उससे पूछा कि वह उस साधन का नाम बताए जिससे वह चंगा हुआ था। ट्रेंक्विलिनिस ने उत्तर दिया:

'आपके सम्मान को सूचित कर दूँ कि हमारे ईश्वर उन लोगों से अत्यंत क्रोधित हैं जो उनकी कृपा को बेचना या खरीदना चाहते हैं। यदि, तथापि, आप अपनी बीमारी से चंगा होना चाहते हैं, तो परमेश्वर के पुत्र मसीह पर विश्वास करें, और आप ठीक हो जाएँगे, जैसे आप मुझे चंगा हुआ देखते हैं; क्योंकि मैं ले जाए जाने के समय भी पीड़ित था, और मेरी सभी नसें और जोड़ ग्यारह वर्षों से एक अकथनीय बीमारी से बँधे हुए थे, इसलिए दूसरों को मेरे होठों तक भोजन लाना पड़ता था; परन्तु जब मैं मसीह परमेश्वर पर विश्वास करने लगा, तो मैं तुरन्त चंगा हो गया और अब अपने सच्चे उद्धारकर्ता की कृपा से पूरी तरह से स्वस्थ और तन्दुरुस्त हूँ।

एपार्क ने कहा:

'मैं आपसे विनती करता हूँ, मुझे वह व्यक्ति दो जो आपके ठीक होने का माध्यम था; और यदि वह मुझे चंगा कर दे, तो मैं भी ईसाई बन जाऊँगा।'

ट्रांक्विलिनिस तुरंत गया और संत पॉलीकार्प को बुलवाया। संत सेबेस्टियन को भी बुलाया गया और उन्होंने एपार्क एग्रीस्टियस क्रमाटियस और उनके पुत्र टिबर्टियस को प्रभु मसीह के पवित्र विश्वास में शिक्षा दी; उन्होंने अपने घर में मौजूद 200 से अधिक मूर्तियों को भी नष्ट किया – उन्होंने लकड़ी की मूर्तियों को जला दिया, पत्थर की मूर्तियों को तोड़ दिया, और सोने व चांदी की मूर्तियों को टुकड़ों में काटकर गरीबों को दे दिया।

जैसे ही मूर्तियों को तोड़ा और चकनाचूर किया जा रहा था, एक तेजस्वी युवक एपार्क के सामने प्रकट हुआ और कहा:

'हमारे प्रभु यीशु मसीह, जिन पर आपने अपना विश्वास रखा है, ने मुझे आपके सभी लोगों को स्वास्थ्य प्रदान करने के लिए भेजा है।'

तुरंत क्रोमैटिकस ने स्वयं को स्वस्थ महसूस किया और उठ खड़ा हुआ, वह प्रकट हुए व्यक्ति के पैरों पर गिरकर उन्हें चूमना चाहता था, लेकिन उस युवक ने कहा:

'मुझे छूने की हिम्मत मत करना, क्योंकि मूर्तिपूजा की गंध से तुम पवित्र बपतिस्मा द्वारा शुद्ध नहीं हुए हो।'

यह कहकर वह अदृश्य हो गया।

तब क्रोमातिउस और उसका पुत्र तिबुरतिउस संतों के चरणों में गिर पड़े और ऊँचे स्वर से पुकारने लगे:

'केवल एक ही सच्चा ईश्वर है, हमारे प्रभु यीशु मसीह, सर्वशक्तिमान परमेश्वर के एकमात्र पुत्र, जिनका प्रचार आप, हे अच्छे शिक्षकों, करते हैं!'

संतों ने क्रोमाटियस को बीमारी के बहाने, एपार्क के पद से इस्तीफा देने की सलाह दी, ताकि वह उन मुकदमों की अध्यक्षता न करे जिनमें उसे ईसाइयों को यातना देने, न्याय करने और प्रताड़ित करने की आवश्यकता होती थी, और न ही अधर्मी तमाशों में शामिल हो, बल्कि आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त करने के लिए वह खुद को ऐसी सभी चीजों से मुक्त कर सके। और कुछ ही समय बाद उसने ऐसा ही किया।

जब क्रोमैटिकस का बपतिस्मा होने वाला था, तो प्रश्न 'क्या आप एक ईश्वर में विश्वास करते हैं?' पर उन्होंने उत्तर दिया, 'मैं करता हूँ', और प्रश्न 'क्या आप मूर्तियों का परित्याग करते हैं?' पर उन्होंने कहा, 'मैं करता हूँ'।

इसके बाद, पुरोहित ने उससे पूछा:

'क्या तुम अपने सभी पापों का त्याग करते हो?'

क्रोमाटियस ने पुरोहित से कहा:

– तुम्हें यह सवाल मुझसे शुरू में ही पूछना चाहिए था: मैं फिर से अपने कपड़े पहनूँगा और जब तक मैं अपने पापों का त्याग नहीं कर लेता, तब तक पवित्र बपतिस्मा नहीं लूँगा; मैं उनसे मेल-मिलाप करूँगा जिनसे मेरी दुश्मनी थी और जिनसे मुझे गुस्सा आता था, उनसे प्रेम करूँगा; और जो मुझसे गुस्सा हैं, उनसे मैं क्षमा माँगूँगा। मैं मुझ पर बकाया सभी कर्ज माफ कर दूँगा; और अगर मैंने स्वयं किसी से जबरदस्ती कुछ लिया है, तो मैं उसे दोगुना करके चुका दूँगा। मेरी पत्नी की मृत्यु के बाद, म र दो रखेलियाँ रही हैं; मैं उनका विवाह कर दूँगा, उन्हें विवाह का उपहार दूँगा; मैं अपने पुरुष और महिला दासों को मुक्त कर दूँगा, और अपने सभी व्यावसायिक और घरेलू मामलों को ईश्वर की इच्छा के अनुसार व्यवस्थित करूँगा; और फिर मैं साहसपूर्वक कहूँगा: 'मैं अपने सभी पापों का परित्याग करता हूँ और पवित्र बपतिस्मा ग्रहण करूँगा'।

क्रोमाटियस के ये वचन संतों को भाए, और जब तक उसने अपनी सभी प्रतिज्ञाओं को पूरा नहीं कर लिया, तब तक उसका बपतिस्मा स्थगित कर दिया गया।

इसके बाद, एग्रीस्टियस क्रोमाटियस, अपने पुत्र टिवुर्तियस और अपने पूरे परिवार के साथ, पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम पर बपतिस्मा ग्रहण किया, जिससे नव-प्रबुद्ध लोगों की संख्या दोनों लिंगों के 1,400 लोगों तक पहुँच गई।

उस समय ईसाइयों पर गंभीर उत्पीड़न हो रहा था; वे न तो भोजन खरीद सकते थे और न ही पानी भर सकते थे, क्योंकि चौराहों पर हर जगह, सड़कों पर, कुओं के पास, झरनों और नदियों के किनारे, दुष्टों के आदेश पर, छोटी मूर्तियाँ स्थापित की गई थीं, जिनके पास चौकस पहरेदार तैनात थे, ताकि भोजन खरीदने या पानी भरने वाला कोई भी व्यक्ति पहले वहाँ खड़ी मूर्ति की पूजा करे। यह दुष्टों द्वारा बनाई गई एक योजना थी ताकि ईसाइयों की पहचान करना और उन्हें यातना देना आसान हो सके। यह देखकर सभी विश्वासियों को दुख हुआ, क्योंकि मूर्तियों की पूजा किए बिना भोजन या पानी प्राप्त करना असंभव था, और उन्होंने संकल्प लिया कि मूर्तियों की पूजा करने की तुलना में भूख और प्यास सहना बेहतर है। तब क्रोमियस ने रोम के सभी विश्वासियों को अपने घर से गुप्त रूप से भोजन और पेय लेने का आदेश दिया, क्योंकि वह बहुत अमीर था, और सभी विश्वासी ईश्वर की महिमा करने के लिए उसके घर में इकट्ठा होते थे।

उस समय, रोम के बिशप धन्य गैसियस[8964] थे, जो डियोक्लेटियन के रिश्तेदार और डलमेशिया के मूल निवासी थे; उन्होंने क्रोमैटियस के घर में धर्मपरायणता का अनुष्ठान किया और नव-धर्म परिवर्तित ईसाइयों को दिव्य रहस्य प्रदान किए। कठोर उत्पीड़न के कारण, क्रोमाटियस को रोम छोड़कर कैंपेनिया[8965] में अपनी संपत्ति पर जाने के लिए मजबूर होना पड़ा, क्योंकि उसे डर था कि रोम में मसीह में उसका विश्वास प्रकट हो जाएगा; वहाँ वह बिना किसी डर के रह सकता था और पवित्र विश्वास का अधिक स्वतंत्र रूप से प्रचार कर सकता था। उन्होंने सभी ईसाइयों को घोषणा की कि जो लोग उत्पीड़न से शरण लेना चाहते हैं और शांति से रहना चाहते हैं, वे उनकी संपत्ति पर जा सकते हैं, और उन्हें आवश्यक भोजन प्रदान करने का वादा किया। दोनों में से किसी एक—या तो सेबेस्टियन या पॉलीकार्प—का क्रोमैटिकस और उसके साथ यात्रा कर रहे ईसाइयों के साथ जाना आवश्यक था, ताकि वे विश्वासियों को सांत्वना दे सकें और उन्हें मजबूत कर सकें। इस मामले पर दोनों संतों के बीच एक धर्मपरायण विवाद उत्पन्न हुआ, क्योंकि उनमें से प्रत्येक शहीद का मुकुट प्राप्त करने के लिए रोम में ही रहना चाहता था। अपने विवाद के दौरान, परम पवित्र बिशप गैसियस ने कहा:

'यदि आप दोनों, मसीह के लिए मरने की इच्छा से, स्वयं को यातना देने वालों के हाथों में सौंप देते हैं, तो आप मसीह के लोगों को आध्यात्मिक सांत्वना से वंचित कर देंगे; इसलिए, मुझे लगता है कि आप, भाई पॉलीकार्प, एक पुरोहित के रूप में और दैवीय ज्ञान से परिपूर्ण होने के नाते, स्वामी क्रोमाटियस के साथ जाकर अपने उपदेश के माध्यम से विश्वासियों को सांत्वना दें, और जो लोग संदेह में हैं उन्हें दैवीय संस्कारों से मजबूत और पोषित करें।"

यह सुनकर, संत पॉलीकार्प ने बिशप की आज्ञा का पालन किया और क्रोमैटियस और अन्य ईसाइयों के साथ रोम छोड़ दिया। रविवार को, दैवीय अनुष्ठान मनाने के बाद, बिशप ने विश्वासियों से कहा:

'हमारे प्रभु यीशु मसीह ने, हमारी प्रकृति की दुर्बलता को जानते हुए, उन लोगों को जो उन पर विश्वास करते हैं, दो मार्ग दिखाए हैं: एक शहादत का मार्ग है, और दूसरा स्वीकारोक्ति का; जो शहादत के मार्ग पर नहीं चल सकता, वह स्वीकारोक्ति के मार्ग पर चले।' 'आप में से जो कोई हमारे आध्यात्मिक पुत्र क्रोमाटियस और टिवुर्तियस के साथ जाना चाहता है, वह चला जाए; लेकिन जो कोई हमारे साथ यहाँ शहर में रहना चाहता है, वह रहे: मसीह की कृपा से एक हुए लोगों को कोई दूरी अलग नहीं कर सकती; भले ही मैं आपको अपनी शारीरिक आँखों से न देखूँ, आप हमेशा मेरी आध्यात्मिक आँखों के सामने उपस्थित रहेंगे।'

जैसे ही बिशप ने ये शब्द कहे, तिवुर्तिउस ने उद्घोष किया:

'पिताजी, मैं आपसे विनती करता हूँ, मुझे इस स्थान को न छोड़ने दें, क्योंकि मैं लालसा करता हूँ, यदि संभव हो तो, ईश्वर के लिए हजारों बार मृत्युदंड पाने की, केवल यह प्राप्त करने के लिए कि मैं उनसे शाश्वत और अछूत जीवन प्राप्त करूँ!'

[8964] संत गैसियस 283 से 296 तक पोप थे, उसी वर्ष 11 अगस्त को उन्होंने मसीह के धर्म के लिए शहादत दी।

[8965] कैम्पेनिया प्राचीन इटली का एक तटीय क्षेत्र है, जो रोम के दक्षिण में, एपेनाइन पर्वतीप के पश्चिमी तट पर स्थित है।

उसके वशि्वास और ईशि्वर के प्रतिऐसे उत्साह को देखकर, बशिप की आँखों में आँसू आ गए और उन्होंने ईशि्वर से प्रार्थना की कि उनके साथ रहने वाले सभी लोग कोई पुण्य कार्य करें और शहीद की महमिा के योग्य माने जाएँ। अत्यंत पवत्रि बशिप के साथ मार्सेलनिस और मार्क अपने पतिा ट्रांक्वलिनिस के साथ, संत सेबेस्टयिन, युवा टबिर्टस, जो शरीर से सुंदर और आत्मा से और भी अधकि सुंदर था, प्रोटोस्क्रनिारयिस नकिोस्ट्राटस अपने भाई कास्टोरयिस और अपनी पत्नी ज़ोई के साथ, और क्लॉडयिस अपने भाई वक्टिोरनिस और अपने पुत्र सम्फिोरयिनस के साथ, जो सूजन की बीमारी से ठीक हो गए थे; केवल ये ही रोम में रहे, जबकि बाकी सभी क्रोमैटयिस और पॉलीकार्प के साथ चले गए।

उनके प्रस्थान के बाद, परम पवत्रि बशिप ने मार्सेलनिस और मार्क को डीकन नयिुक्त कयिा, उनके पतिा ट्रांक्वलिनिस को एक प्रेस्बटिर के रूप में अभषिक्ति कयिा, और सेंट सेबास्टयिन को, एक हथयिार धारण करने वाले के रूप में, चर्च के संरक्षक के रूप में नयिुक्त कयिा। चूँकि उनके पास दविय सेवाओं का अनुष्ठान करने के लिए कोई गुप्त स्थान नहीं था, इसलिए वे कास्टुलस नामक एक शाही अधकिारी के कक्षों में रहने लगे। यह घर इसलिए चुना गया क्योंकि कास्टुलस और उसका परविार गुप्त रूप से ईसाई थे, और मूर्तयिों की पूजा संबंधी कानून, हर जगह लागू होने के बावजूद, शाही महलों में रहने वालों पर लागू नहीं होता था; क्योंकि किसी ने भी यह कल्पना नहीं की होगी कि ईसाई धर्म वहाँ तक पहुँच गया होगा; और इस प्रकार संत कास्टुलस के घर में दविय लटिर्जी का अनुष्ठान करते हुए आराम से छपि सके। वहाँ उन्होंने अपने दनि-रात प्रार्थना, आँसुओं और उपवास में बतिाए, सभी बातों को सहते हुए और ईशि्वर से शहीद का मुकुट प्रदान करने का आग्रह करते हुए। पुरुष और महलिाएँ जो उनके द्वारा कएि गए चमत्कारों के साक्षी थे, वे उनसे मलिने के लिए गुप्त रूप से आते थे, क्योंकि संतों की प्रार्थनाओं से, बीमार स्वस्थ हो जाते थे, अंधों को दृष्टि वापस मलि जाती थी, और लोगों से अशुद्ध आत्माएँ नकिल जाती थीं; इसी कारण, कई लोगों ने संतों से गुप्त रूप से ईसाई धर्म को अपना लयिा।

एक दनि, संत तविुर्तसि सड़क पर चल रहे थे जब उन्होंने एक आदमी को देखा जो अपने घर की छत से गरिकर जानलेवा रूप से घायल हो गया था, और उसके माता-पतिा और परविार वाले उस पर रो रहे थे; उन्होंने अपनी प्रार्थना के द्वारा उसे ठीक कर दयिा, और तुरंत ही वह आदमी, अपने पूरे परविार के साथ, मसीह में वशि्वास करने लगा और बपतस्मिा ग्रहण कर लयिा।

अंत में, संतों के कष्ट का समय आ गया, और शहीद होने वाली पहली व्यक्ति निकिोस्ट्राटस की पत्नी, धन्य जोई थीं। जब वह संत प्रेरति पतरस की कब्र पर प्रार्थना कर रही थीं, तो उन्हें अधर्मी नगिरानों ने पकड़ लयिा और एक अदालत के सामने पेश कयिा, जहाँ उन्हें पैगन देवता एरेस की मूर्त[8966] को बलदिान चढ़ाने के लिए मजबूर कयिा गया। उसने आज्ञा मानने से इनकार कर दयिा, जसिके लिए उसे एक अंधेरी कोठरी में डाल दयिा गया, जहाँ उसे छह दनिों तक भूखा रखा गया; इसके बाद, ज़ोई को कोठरी से बाहर खींचा गया और सड़ते हुए कचरे से उठने वाली बदबूदार धुएँ के ऊपर उसके बालों से लटका दयिा गया, जसिसे उसकी मृत्यु हो गई, और उसके शरीर को टबिर नदी में फेंक दयिा गया।

संत एक दर्शन में संत सेबेस्टयिन के सामने प्रकट हुईं और उन्हें अपनी मृत्यु की सूचना दी। सेबेस्टयिन ने यह बात ट्रांक्वलिनिस को बताई, जसि पर उन्होंने कहा:

'हमारी पत्नयिाँ अपने मुकुट प्राप्त करने के लिए हमसे पहले जा रही हैं! तो फरि हम इंतज़ार क्यों कर रहे हैं?'

और वह ठीक उसी स्थान पर, प्रेरति की कब्र पर गया; वहाँ दुष्टों ने उस पर पत्थर बरसाकर उसकी हत्या कर दी और उसे टबिर नदी में फेंक दयिा। नकिोस्ट्राटस, कास्टोरयिस, क्लॉडयिस, वक्टिोरनिस और सम्फिोरयिनस को टबिर नदी के कनिारे संतों के शवों की तलाश करते हुए घूमते समय पकड़ लयिा गया, और शहर के प्रफिेक्ट, फावयिस के सामने पेश कयिा गया। दस दनिों तक राज्यपाल ने चापलूसी, धमकयिों और यातनाओं के माध्यम से उन्हें मूर्तयिों को बलदिान चढ़ाने के लिए मनाने की कोशशि की; इसमें वफिल होने पर, उसने आदेश दयिा कि उनके गलों में बड़े पत्थर बांधकर उन्हें समुद्र में डुबो दयिा जाए। जहाँ तक पवत्रि युवक थविर्टस का सवाल है, उसे टॉर्क्वेटस नामक एक पाखंडी ईसाई ने गुप्त रूप से pagans (मूर्तपिूजकों) के हवाले कर दयिा, जो भेड़ के भेस में भेड़यिे की तरह था। उन्होंने थविर्टस को पकड़ लयिा, उसे बाँध दयिा, और उसे टॉर्क्वेटस के साथ, उसी फावयिस के सामने मुकदमे के लिए पेश कयिा। मुकदमे के दौरान, टॉर्क्वाट ने तुरंत अपना धोखा उजागर कर दयिा, उसने स्वीकार कयिा कि वह केवल एक ईसाई होने का दावा कर रहा था जबकि उसका दलि दुष्टता से भरा था, और उसने टविुर्तसि के खलिाफ गवाही दी, उस पर रोमन देवताओं को राक्षस

[8966] एरेस (रोमन मंगल), प्राचीन यूनानयिों और रोमनों की मान्यताओं के अनुसार, युद्ध के देवता थे।

कहने का आरोप लगाया। हालाँकि, संत थविुर्टस ने मुकदमे में खुद को यीशु मसीह के नाम का एक सच्चा और साहसी स्वीकारकर्ता साबति कयि। न्यायाधीश ने उनसे कहा:

'अपने गौरवशाली वंश को कलंकति मत करो; तुम, इतने महमिामय पति के पुत्र, ने अपने लिए इस कठनि और अपमानजनक ईसाई जीवन को चुना है, जो अपने साथ अपमान और यातना, मृत्यु और कलंक लाता है।'

संत तविुर्ट ने उत्तर दयि:

'हे अति बुद्धमिान मनुष्य और रोमन न्यायाधीश! आप कहते हैं कि मैं अपनी वंशावली पर अपमान लाता हूँ, क्योंकि मैं कामुक वीनस[8967] , व्यभचिारी डीउस, कपटी हर्मेस[8968] और बाल-भक्षक क्रोनस को देवता के रूप में सम्मानति करने और स्वीकार करने से इनकार करता हूँ; परन्तु मैं कहता हूँ कि मैं एक सच्चे परमेश्वर, स्वर्ग में राज करने वाले का सम्मान करके, उनकी उपासना करके और स्वयं को उनका दास कहकर अपनी वंशावली पर अधकि सम्मान लाता हूँ। क्या तुम मुझे यातनाओं से डरा रहे हो? लेकनि क्या हम ईसाई अपने परमेश्वर के लिए पीड़ा सहने से डरते हैं? तलवार के वार से? इस प्रकार, देह के कारागार से मुक्त होकर, हम स्वर्गीय स्वतंत्रता प्राप्त करेंगे; आग से? लेकनि हमने अपने शरीरों में वासना की बड़ी ज्वाला को बुझा दयि है, और हम इस आग से नहीं डरेंगे; नरि्वासन से? लेकनि हमारा परमेश्वर सर्वत्र है, और जहाँ भी हम परमेश्वर के साथ हैं, वहीं हमारा स्थान है।

तब फैबयिन ने जलते हुए कोयले लाने का आदेश दयि, ताकि संत को उन पर नंगे पैर रखा जा सके, और कहा:

'या तो इन अंगारों पर देवताओं के लिए धूप रखो, या स्वयं नंगे पैरों पर इन पर चलो।'

सलीब का चहि्न बनाने के बाद, संत तविुर्तजि अपने नंगे पैरों से जलते हुए कोयलों पर खड़े हो गए, और उन पर चलते हुए, इस तरह पार हो गए जैसे वे नरम, सुगंधति फूलों पर चल रहे हों।

उन्होंने न्यायाधीश से कहा, 'अपना अवशि्वास त्यागो, और स्वयं देखो कि मेरा ईश्वर सत्य है, जो तत्त्वों[8969] और सारी सृष्टि को आज्ञा देता है।' 'यदि तुम कर सकते हो, तो अपनी दयि के नाम पर अपना हाथ उबलते पानी में डालो और देखो कि वह अछूता रहता है; लेकनि मैं, अपने प्रभु यीशु मसीह के नाम पर, आग पर ऐसे चलता हूँ जैसे पानी से भीगे फूलों पर: क्या तुम देखते हो कि सारी सृष्टि हमारे सृष्टकिर्ता की आज्ञा मानती है?'

न्यायाधीश ने कहा:

'कौन नहीं जानता कि तुम्हारे मसीह ने तुम्हें जादू-टोना सखिाया है!'

'चुप हो जा, नीच,' संत ने कहा, 'और अपने वषिैले होठों से उस महान और भयानक नाम का अपमान करने की हमि्मत मत करना! मेरे ईश्वर के नाम का अपमान करके मेरे कानों को दुखी मत कर!'

फावयिन उस पर क्रोधति हो गया और उसे मृत्युदंड की सजा सुनाई। थविर्टस को शहर से तीन वर्स्ट दूर लावकिन रोड[8970] पर ले जाया गया, और वहाँ, जब वह अपने ईश्वर से प्रार्थना कर रहा था, तो उसकी तलवार से सरि कलम कर दयि गया। एक ईसाई ने उसे मृत्यु स्थल पर ही दफना दयि, और जो लोग थविर्टस की कब्र पर आए, उन्होंने उसकी प्रार्थनाओं के माध्यम से प्रभु की कृपा प्राप्त की।

इसके बाद, उसी तथाकथति ईसाई, टॉर्क्वाटस ने दुष्टों को कास्टुलस, मार्सेलनि और मार्कस के बारे में सूचति कयि। संत कास्टुलस को तीन बार पूछताछ करने, फांसी देने और यातना देने के बाद एक खाई में फेंक दयि गया, जहाँ वे जीवति दफ़न होकर मर गए। जहाँ तक मार्सेलनि और मार्कस का सवाल है, फैबयिन ने उन्हें एक ही पेड़ के तने से बाँध दयि, उनके पैरों को लोहे की कीलों से ठोक दयि, और कहा:

[8967] वीनस (ग्रीक एफ्रोडाइट), ज़ीउस और डायना की बेटी, प्रेम और सुंदरता की वधिर्मी देवी थी; रोमन साम्राज्य के पतन के दौरान—एक ऐसा काल जसिमें शहीद सेबस्टयिन और उनके अनुयायियों का दुखद अनुभव आता है—उसे अशुद्ध कामुकता की देवी माना जाता था, जो शारीरकि इच्छाओं को जगाती थी; उनका चति्रण मूर्तयिों में नरि्लज्ज रूप से नग्न रूप में कयि जाता था, और उनके सम्मान में अनैतकि अनुष्ठानों के साथ जंगली उत्सव आयोजति कए जाते थे।

[8968] हर्मीस – जनि्हें हर्मीस (रोमन मर्करी) के नाम से भी जाना जाता है – को प्राचीन यूनानयिों और रोमनों द्वारा ज्यूस और माया के पुत्र, देवताओं के दूत, ज्यूस की इच्छा का पालन करने वाले संदेशवाहक, देवताओं और मनुष्यों के बीच मध्यस्थ, और वभिन्नि खोजों, आवष्किारों और शलि्पों के देवता के रूप में पूजति कयि जाता था। उद्योग और व्यापार के देवता, जो कथति तौर पर केवल तभी धन लाते हैं जब वे चालाकी और धोखे, यहाँ तक कि चोरी और झूठी गवाही के साथ हाथ में हाथ डालकर चलते हैं, बशर्ते कि यह सब एक तरह की प्रतष्ठिा की चादर में लपिटा हो; इसलिए Hermes को कभी-कभी चोरी और धोखे का संरक्षक भी माना जाता है, जो हर तरह के झूठ और शपथ-उल्लंघन को मंजूरी देता है।

[8969] मूल तत्त्व सभी पंडिों के मौलकि पदार्थ हैं, उदाहरण के लिए, अग्नि, पृथ्वी, वायु और जल।

[8970] यह सड़क रोम से दक्षणि-पूर्व की ओर बेनेवेंटो शहर तक जाती थी।

'जब तक तुम देवताओं की पूजा नहीं करते, तब तक तुम इसी तरह खड़े रहोगे।'

लेकिन वे, एक ही पेड़ से ठोक दिए गए, गाने लगे: *'भाइयों का एकता में एक साथ रहना कितना अच्छा और सुखद है!'* (भजन संहिता 132:1)। इस प्रकार वे दिन-रात ईश्वर से प्रार्थना करते हुए खड़े रहे, और सुबह उनकी पसलियों में भाले घोंप दिए गए। इस प्रकार उन्होंने अपने दुखों के बाद अपना अंत पाया।

इन संतों के दुख-क्लेश और मृत्यु के बाद, संत सेबेस्टियन को भी हिरासत में ले लिया गया, और राज्यपाल ने उसकी रिपोर्ट सम्राट डायोक्लेटियन को दी। उसे अपनी उपस्थिति में बुलाकर, डायोक्लेटियन ने कहा:

'मैं तुम्हें अपने दरबार में सबसे प्रमुख मानता था; फिर भी, मेरे खिलाफ साजिश रचकर, तुम मेरे और मेरे देवताओं के दुश्मन बन गए हो, और अब तक अपनी दुर्भावना को छिपाए हुए थे।'

संत सेबस्टियन ने उत्तर दिया:

'मैंने हमेशा मसीह से तुम्हारे स्वास्थ्य के लिए प्रार्थना की है और रोमन साम्राज्य में शांति की मांग की है; फिर भी मैं स्वर्ग के राजा की पूजा करता हूँ, क्योंकि मैं देखता हूँ कि एक पत्थर की पूजा करना और उससे मदद मांगना अन्यायपूर्ण है: यह स्पष्ट रूप से पागलों का आविष्कार है।'

क्रोधित होकर, डायोक्लेटियन ने उसे शहर के बाहर ले जाकर एक खेत के बीचों-बीच तीरों से भेदने का आदेश दिया, और उसे नग्न होकर एक पेड़ से बांध दिया गया। जब सेबस्टियन को तीरंदाजों के लिए निशाने के रूप में खड़ा किया गया, तो सैनिकों की भीड़ ने चारों ओर से उसके पवित्र शरीर पर तीर चलाने शुरू कर दिए, जिससे उसके पूरे शरीर में तीर घुस गए। यह सोचकर कि सेबेस्टियन पहले ही मर चुका है, उन्होंने उसे शरीर में तीर लगे हुए ही पेड़ से बंधा छोड़ दिया। पवित्र शहीद कास्टुलस की पत्नी, आइरीन नाम की महिला, रात में संत सेबेस्टियन का शरीर ले जाकर दफनाने आई; उसने उसे जीवित पाया और उसे अपने घर ले आई, जहाँ कुछ ही दिनों में संत अपने घावों से ठीक हो गए और पूरी तरह से स्वस्थ हो गए। जो ईसाई गुप्त रूप से उसके पास आए थे, उन्होंने उसे रोम छोड़ने के लिए आग्रह किया, जैसा कि कई विश्वासियों ने किया था, ताकि वह फिर से मूर्तिपूजकों के हाथों में न पड़े। लेकिन उसने, ईश्वर से प्रार्थना करने के बाद, जाकर हेलियोगाबलस के सीढ़ियों पर खड़ा हो गया[8971] ; वहाँ से गुजरते हुए राजाओं को देखकर, उसने कहा:

'हे राजाओं, आपके देवताओं के पुरोहित अपनी दुष्ट जादू-टोने से आपको गुमराह करते हैं, और झूठ बोलते हैं कि ईसाई रोमन राज्य के दुश्मन हैं; तो जान लो, कि ईसाई तुम्हारे लिए बहुत भलाई करते हैं, क्योंकि वे तुम्हारे शासन और संपूर्ण रोमन सेना की सेहत के लिए अविराम प्रार्थना करते हैं, और इसी प्रार्थना के कारण यह नगर समृद्धि प्राप्त करता है।

जब संत सेबेस्टियन ने ये शब्द कहे, तो डायोक्लेटियन ने उनकी ओर देखा और कहा:

'क्या तुम वही सेबेस्टियन हो, जिसे हमने हाल ही में गोली मारने का आदेश दिया था?'

संत ने उत्तर दिया:

'मेरे प्रभु यीशु मसीह ने मुझे मृतकों में से जिला कर उठाया है ताकि मैं आपके सामने आकर सभी लोगों के सामने आपके अन्याय की गवाही दे सकूँ, और आपको ईसाइयों के खिलाफ अन्यायपूर्ण रूप से उत्पीड़न भड़काने के लिए बेनकाब कर सकूँ।'

डायोक्लेटियन ने आदेश दिया कि उसे ले जाकर हिप्पोड्रोम ले जाया जाए[8972] ; वहाँ, उस पवित्र शहीद ने, जोर-जोर से मसीह की महिमा करते हुए और मूर्तियों तथा रोम की गलतियों की निंदा करते हुए, लाठियों से पीट-पीट कर मार डाला गया। एक आनंदमय उद्घोष के साथ, वह शहादत प्रदान करने वाले मसीह के पास चले गए, ताकि अपने इस पराक्रम के लिए विजय का मुकुट प्राप्त कर सकें। जहाँ तक उनके पवित्र शरीर का प्रश्न है, दुष्टों ने रात के समय इसे एक गहरे

[8971] हेलियोगाबलस – एक रोमन सम्राट जिसने 218 से 222 ईस्वी तक शासन किया। उसने, एक देवता के रूप में, रोम की पहाड़ियों में से एक, पलाटिन पर, शाही महल के बगल में अपना एक मंदिर बनवाया। हेलियोगाबलस की सीढ़ियाँ – उसके मंदिर तक जाने वाली सीढ़ियाँ।

[8972] हिप्पोड्रोम एक अखाड़ा था, एक ऐसी जगह जहाँ घुड़दौड़, जंगली जानवरों के साथ मुकाबले और तथाकथित ग्लैडिएटरियल मुकाबले होते थे, जो रोमनों का पसंदीदा मनोरंजन था। यहीं पर तानाशाह शासक ईसाइयों को जंगली जानवरों द्वारा खाए जाने के लिए लाते थे।

कूड़े के गड्ढे[8973] में फेंक दिया, ताकि कोई भी ईसाई इसे न ढूंढ सके और न ही ले जा सके। लेकिन संत एक दर्शन में धर्मपरायण लुकिनो को प्रकट हुए और उससे कहा:

'सर्कस के पास कचरे के गड्ढे में जाओ; वहाँ तुम्हें मेरा शरीर एक अटकी से लटका हुआ मिलेगा; उसे ले लो, उसे कैटाकॉम्ब्स[8974] ले जाओ और उसे गुफा के प्रवेश द्वार पर, प्रेरितों के मार्ग के पास दफना दो।'

उस धन्य महिला ने तुरंत अपने सेवकों को लिया और आधी रात को निर्दिष्ट खाई पर पहुँचकर, श्रद्धापूर्वक शहीद के शरीर को उठाया और उसे निर्दिष्ट स्थान[8975] पर सम्मानपूर्वक दफनाया, हमारे ईश्वर मसीह की स्तुति करते हुए, जिनका महिमा युगानुयुग होती रहे, आमीन।

यरूशलेम के आर्चबिशप संत मॉडेस्टस का स्मरणोत्सव

18 दिसंबर को स्मरणोत्सव

संत मोडेस्ट का जन्म सेबास्टे शहर में[8976] धर्मपरायण और ईश्वर-भयभीत माता-पिता के घर हुआ था। छोटी उम्र से ही, उन्हें प्रभु के प्रति हार्दिक आकर्षण महसूस हुआ और, संसार का त्याग करने के बाद, उन्होंने एक कठोर संन्यासी जीवन व्यतीत किया। बाद में वह फिलिस्तीन में थियोडोसियस मठ के मठाध्यक्ष बने। उस समय, फ़ारसी राजा खुसरू ने सीरिया और फ़िलिस्तीन पर एक विनाशकारी आक्रमण किया[8977] । चालीस हज़ार की संख्या वाले यहूदियों ने फ़ारसियों के साथ मिलकर फ़िलिस्तीन के सभी ईसाइयों का संहार करने का उद्देश्य बनाया। मसीह के नाम के शत्रुओं की क्रूरता यरूशलेम और उसके आसपास के क्षेत्रों पर पूरी ताकत से टूट पड़ी: हजारों भिक्षु और पुरोहित मारे गए, सभी चर्च लूट लिए गए और जला दिए गए, जिसमें चर्च ऑफ़ द होली सेपल्चर भी शामिल था, और पैट्रिआर्क ज़कारियास[8978] को, लोगों की एक बड़ी भीड़ और प्रभु के पवित्र क्रूस के साथ, बंधक बनाकर फ़ारस ले जाया गया। यहूदियों ने फ़ारसियों से कई हज़ार ईसाइयों को छुड़ाया और उन्हें मार डाला। मारे गए ईसाइयों की कुल संख्या 90,000 थी। इस कठिन समय के दौरान संत मोडेस्टस मौत से बच गए, और, के आक्रमण के अंत में, पैट्रिआर्क की अनुपस्थिति में, उन्हें पैट्रिआर्कल सीट के संरक्षक की उपाधि धारण करके फिलिस्तीन के चर्च के शासन का कार्य सौंपा गया। संत मोडेस्ट का पहला कार्य संत सावस द सैंक्चुडाइटेड के मठ में कत्लेआम किए गए भिक्षुओं के अवशेषों को इकट्ठा करना और उन्हें सम्मानपूर्वक मकबरे में दफनाना था। इसके बाद उन्होंने बड़ी लगन के साथ अपवित्र किए गए पवित्र स्थलों के पुनर्स्थापन का कार्य शुरू किया। ना तो यहूदियों की दुर्भावना से और ना ही फारसी अधिकारियों की मनमानी से डरते हुए, संत ने होली सेपल्चर चर्च और गोलगोथा तथा बेथलहम के चर्चों का जीर्णोद्धार किया, जिसमें उन्हें अलेक्ज़ेंड्रिया के पैट्रिआर्क, जॉन द मर्सीफुल से बहुत मदद मिली। यरूशलेम के धर्मगुरु धन्य ज़कारियास, जिन्हें फ़ारसियों ने बंदी बना रखा था, ने संत मॉडेस्टस और उनके अनुयायियों को अपने बारे में लिखित समाचार और विश्वास में दृढ़ रहने के लिए प्रोत्साहन देकर

[8973] संत सेबेस्टियन के शरीर को शहर के सीवेज के निकासी के लिए बनी एक खाई में फेंक दिया गया था, जिसे क्लोका मैक्सिमा के नाम से जाना जाता था, जो 'सर्कस मैक्सिमस' नामक अखाड़े के पास स्थित थी, यानी सबसे बड़ा सर्कस। – सेंट सेबेस्टियन की शहादत 18 दिसंबर 287 को हुई थी।

[8974] 'कैटाकॉम्ब' शब्द रोम के आसपास (साथ ही नेपल्स, सिराक्यूज़ और कई अन्य शहरों में) शुरुआती ईसाइयों द्वारा मृतकों के दफन के लिए खोदे गए भूमिगत मार्गों और गुफाओं को संदर्भित करता था। पहले उन्हें अन्य नामों से जाना जाता था, और 'कैटाकॉम्ब' शब्द पहली बार चौथी शताब्दी में सेंट स्टीफन के दफन स्थल के संबंध में स्थापित हुआ। इन मार्गों की दीवारों में कोठरियाँ बनाई गई थीं, जिनमें मृतकों के शवों को ताबूत के बिना रखा जाता था और फिर पत्थरों से सील कर दिया जाता था। कम आम तौर पर, उनके भीतर अलग कब्रें बनाई जाती थीं। कैटाकॉम्ब में दीवारों पर लगे दीपक और छत में बनी खुली जगहों से रोशनी आती थी। विश्वासी अपने रिश्तेदारों, दोस्तों, संतों और शहीदों की कब्रों पर उनकी स्मृति को मनाने, ईश्वर से सामूहिक प्रार्थना करने और यूखरिस्त की संस्कार मनाने के लिए इकट्ठा होते थे, जिसे यीशु मसीह के अंतिम भोज की नकल में एक सामूहिक भोज के साथ जोड़ा जाता था। संतों और शहीदों की कब्रों के ऊपर संगमरमर की पट्टियाँ यूखरिस्त के उत्सव के दौरान वेदी के रूप में काम करती थीं।

[8975] संत सेबेस्टियन शहीद की अवशेषें रोम में उनके नाम पर बने उपनगरीय चर्च में रखी गई हैं।

[8976] यह, बेशक, पूर्वी एशिया माइनर में, आर्मेनिया की सीमा पर, कैपाडोसिया में सेबास्टे को संदर्भित करता है।

[8977] फ़ारस के राजा खुसरू द्वितीय ने 590 से 628 ईस्वी तक शासन किया। उनका सीरिया और फ़िलिस्तीन पर आक्रमण 614 में हुआ।

[8978] संत ज़कारियास ने 609 से 633 तक यरूशलेम के पैट्रिआर्क के रूप में कार्य किया, जिसमें 614 से 628 तक फ़ारसी कैद का एक दौर भी शामिल था।

सांत्वना दी। चौदह साल बाद, पैट्रआिर्क ज़कारयिास प्रभु के क्रूस[8979] के साथ नर्िवासन से लौटे, लेकनि, अपने दुखों से थके हुए, वे उसी साल नधिन कर गए। उनकी मृत्यु के बाद, संत मॉडेस्टस को पैट्रआिर्क के पद पर पदोन्नत कयिा गया[8980] । संत मॉडेस्टस ने पैट्रआिर्क के रूप में यरूशलेम की चर्च का शासन पांच साल से अधकि नहीं कयिा। अपने सुपुर्द कएि गए झुंड का अच्छी तरह से शासन करने के बाद, संत मॉडेस्टस ने कई अद्भुत चमत्कार और उपचार कएि। एक परपिक्व बुढ़ापे तक पहुँचने के बाद, संत मॉडेस्टस ने अपने जीवन के नब्बे-सातवें वर्ष में, शांतपिूर्वक अपना प्राण प्रभु को सौंप दयिा और शाश्वत स्वर्गीय नविासों के लएि प्रस्थान कर गए[8981] ।

अमयिा के बशिप संत फ्लोरस का स्मरणोत्सव

18 दसिंबर को स्मरण कयिा जाता है

संत फ्लोरस यूनानी सम्राटों जस्टनि, टबिेरयिस और मॉरसि के शासनकाल में रहते थे[8982] ; उनके पतिा का नाम भी फ्लोरस था, और उनकी माँ का नाम यूफेमयिा था; उनके माता-पतिा ने उन्हें अच्छी शक्षिा दी। बाद में वे शाही दरबार की सेवा में शामलि हो गए और उन्हें पैट्रसियिन की उपाधि प्रदान की गई[8983] ; उन्होंने शादी की और उनके बच्चे हुए। जब उनकी पत्नी की मृत्यु हो गई, और बाद में उनके बच्चे भी चेचक से मर गए, तो वह गहराई से दुखी हो गए; अपने जीवन की इन परस्थितियिों में उन्होंने दैवीय व्यवस्था का एक संकेत देखा कि उन्हें अपनी मुक्ति के लएि प्रयास करना चाहएि, इसलएि उन्होंने शाही दरबार छोड़ दयिा और अनाप्ला में बस गए[8984] । वहाँ एक धार्मकि जीवन जीते हुए, फ्लोर को अमीनस शहर के बशिप के रूप में अभषिेक का सम्मान मलिा[8985] । मसीह के झुंड के एक अच्छे चरवाहे के रूप में, उन्होंने अपने सुपुर्द कएि गए झुंड की देखभाल की, अपने झुंड को ऑर्थोडॉक्स वश्विास सखिाया और उन्हें ईश्वर की इच्छा का पालन करने और आज्ञाओं का पालन करने का नर्िदेश दयिा, और इस प्रकार वे प्रभु में सो गए[8986] ।

आदरणीय माइकल सनिसेलस की स्मृति

18 दसिंबर को स्मरण कयिा जाता है

आदरणीय माइकल यरूशलेम के मूल नविासी थे। उनके माता-पतिा, जो धर्मपरायण लोग थे, ने उन्हें उत्कृष्ट शक्षिा दी। वे प्राचीन ग्रीक साहत्यि में पूरी तरह से पारंगत थे, उन्होंने ईसाई धर्मशास्त्रीय लेखकों का भी अच्छी तरह से अध्ययन कयिा था, और कम उम्र से ही उन्होंने स्वयं को मठवासी जीवन के लएि समर्पति कर दयिा था।

अपने पतिा की मृत्यु के बाद, उसकी माँ और बहनों ने एक मठ में वेला धारण कयिा। ब्रह्मचर्य का कड़ाई से पालन करते हुए एक सदाचारी और ईश्वरभक्त जीवन जीते हुए, माइकल को एक पादरी के रूप में अभषिक्ति कयिा गया। वनिम्रता और चतिन के प्रति गहरे प्रेम के कारण, वह एकांत स्थान पर चले गए, जहाँ थयिोडोर और थयिोफेंस द कन्फेसर[8987] धर्मशास्त्र के संयुक्त अध्ययन के लएि उनके पास आते थे; लेकनि यरूशलेम के पैट्रआिर्क [8988] ने, चर्च की

[8979] यह 628 में था, बाइजेंटाइन सम्राट हेराक्लयिस के शासनकाल के दौरान और फारस के राजा सरिीसे के शासन में, जो खसरो का उत्तराधकिारी था, जसिे हेराक्लयिस ने हराया था,

[8980] 633 में।

[8981] 18 दसिंबर 634।

[8982] बाइज़ेंटाइन सम्राट जस्टनि II 565 से 578 तक; टबिेरयिस 578 से 582 तक; और सेंट मॉरसि 582 से 602 तक थे।

[8983] पेट्रसियिस – बीजान्टनि आधकिारकि पदानुक्रम में एक काफी उच्च पद, जो सनिक्लटिकिोस या सीनेटर की उपाधि प्रदान करता है।

[8984] अनाप्ल – कॉन्स्टेंटनिोपल का एक उपनगर।

[8985] अमनिस या अमीस का शहर – कैपाडोसयिा में, एशयिा माइनर का एक पूर्वी क्षेत्र।

[8986] 7वीं शताब्दी की शुरुआत में।

[8987] थयिोडोर और थयिोफानसि – तथाकथति 'लखि हुए' – जुड़वां भाई थे जो उस समय ह्यरोमोंक (पुरोहति-भक्षिु) के पद पर थे; पहले का स्मरणोत्सव 27 दसिंबर को मनाया जाता है

[8988] थॉमस प्रथम, यरूशलेम के पैट्रआिर्क।

आवश्यकताओं के लिए उनकी प्रतिभा का उपयोग करने की इच्छा से, उन्हें वहाँ से बुलाया और उन्हें सिनिसेलस[8989] के पद पर पदोन्नत किया। फिर उन्हें उस समय एक विशेष महत्व का कार्य सौंपा गया। उस समय, रोम में प्रतिमा-भंजन संबंधी विधिर्म[8990] को लेकर तीव्र बहस छिड़ गई थी; ये विवाद न केवल निजी तौर पर, घरों के भीतर, बल्कि सार्वजनिक रूप से, शहर की सड़कों पर भी हुए, और इनके साथ लोकप्रिय अशांति भी जुड़ी हुई थी। पोप ने धर्मसभा और पितृसत्तात्मक परंपरा के अनुसार विधिर्म को समाप्त करने और ऑर्थोडॉक्स विश्वास को बनाए रखने में सहायता के लिए यरूशलेम के पैट्रिआर्क थॉमस से अपील की, और इस मामले पर उनसे कई प्रश्न पूछे। पोप के अनुरोध के जवाब में, यरूशलेम के पैट्रिआर्क ने सिसिलस माइकल को अपने सहयोगियों थियोडोर और थियोफेंस और अन्य लोगों के साथ चर्च को शांत करने और विधिर्म का खंडन करने के लिए भेजा, ताकि वे प्रतिमा-विरोधी सम्राट लियो द आर्मेनियन[8991] से ऑर्थोडॉक्सी पर अत्याचार करने से परहेज़ करने का अनुरोध कर सकें। लेकिन लियो ने उसे यातनाएँ दीं और निर्वासित कर दिया। हालांकि उन्हें बाद में इस कारावास से रिहा कर दिया गया, लेकिन मूर्तिभंजक सम्राट थियोफिलस[8992] के शासनकाल में — जिन्होंने पवित्र प्रतिमाओं की पूजा को पूरी तरह से अस्वीकार कर दिया था और परमेश्वर की कलीसिया पर एक क्रूर उत्पीड़न शुरू कर दिया था — आदरणीय माइकल और उनके साथियों को नए यातनाओं का सामना करना पड़ा। सत्य की घोषणा करने के लिए, थियोडोर और थियोफेंस को निम्नलिखित अपमान सहना पड़ा: अधर्मी सम्राट के आदेश पर, उनके चेहरों पर लाल-गरम लोहे की मुहरों से ईश्वर-निंदा शब्द उकेरे गए – अंकित[8993] ; यरूशलेम के पैट्रिआर्क और रोम के पोप के बीच का पत्राचार, जो उनके पास था, भी जब्त कर लिया गया, भले ही उन्होंने इसे सच्चे धर्म के उत्पीड़कों से छिपाने की कोशिश की थी। लेकिन आदरणीय और गौरवशाली पिताओं को इससे बिल्कुल भी डर नहीं लगा, और न ही वे अपने विश्वासों से विचलित हुए; बल्कि, अडिग हीरों की तरह[8994] , उन्होंने मूर्तिभंजक की मांगों का विरोध किया और बहादुरी से ऑर्थोडॉक्स सिद्धांत का बचाव किया। कई मौकों पर उन्होंने ऑर्थोडॉक्स धर्म पर विस्तार से चर्चा की और मूर्तिभंजक सम्राट के खिलाफ भाषण दिए, जिसके लिए उन्हें सम्राट द्वारा निर्वासन की सजा दी गई। धन्य माइकल को सबसे पहले उनके शिष्य और साथी जोब के साथ महल के कालकोठरी में कैद किया गया, जहाँ उन्हें भारी बेड़ियाँ पहनाई गईं; और फिर, उसी जोब के साथ, उन्हें एक मठ (पाव्सियाडस्की) में निर्वासित कर दिया गया। इस पूरे समय, संत ने बहुत कड़वे आँसू बहाए; उनकी पीड़ाओं ने उनके स्वास्थ्य को कमजोर कर दिया, और उनका शरीर झुक गया; फिर भी आत्मा में वह कन्फेशर अडिग और दृढ़ रहे। जब थियोफिलस की मृत्यु के बाद, उनकी पत्नी, रानी थियोडोरा[8995] , अपने पुत्र माइकल के साथ सिंहासन पर बैठीं, और प्रतिमाओं की पूजा को निर्णायक रूप से पुनर्स्थापित किया गया[8996] , जबकि ऑर्थोडॉक्स सिद्धांत के रक्षकों को निर्वासन से वापस लाकर उनके पूर्व पदों पर बहाल कर दिया गया, सम्राज्ञी

[8989] एक सिनिसेलस चर्च प्रशासन के मामलों के लिए जिम्मेदार पैट्रिआर्कात्मक परिषद का सदस्य था। सिनिसेलस पैट्रिआर्कों की ओर से विभिन्न कार्य करते थे, उनके जीवन के प्रत्यक्ष साक्षी थे, लगातार उनकी उपस्थिति में रहते थे, और अक्सर उनकी मृत्यु के बाद उनका उत्तराधिकारी बनते थे।

[8990] मूर्तिभंजन की विधिर्मता सम्राट लियो द इसाउरियन (717–741) के शासनकाल के दौरान स्पष्ट रूप से प्रकट हुई, जो पवित्र प्रतिमाओं के पहले उत्पीड़क थे; उनके उत्तराधिकारी मूर्तिभंजनवादी सम्राट कॉन्स्टेंटिन कॉप्रोन्यमस (741–775) और लियो चौथे खज़ार (775–780) हुए। इस विधिर्म को निकिया की दूसरी परिषद, सातवीं सार्वभौमिक परिषद (787) द्वारा, कांस्टेंटिन पोर्फोजेनिटस के शासनकाल के दौरान निंदा किया गया था, जब सम्राट की कम उम्र के कारण, उसकी माँ, आइरीन, राज्य के मामलों की प्रभारी थीं; फिर भी परिषद द्वारा इसकी निंदा किए जाने के बाद भी, यह विधिर्म 842 में प्रतिमा पूजा की अंतिम बहाली तक लंबे समय तक बना रहा।

[8991] लियो द आर्मेनियन ने 813 से 820 तक शासन किया। सम्माननीय माइकल सिनिसेलस को 817 में कॉन्स्टेंटिनोपल भेजा गया था। इससे भी पहले, उन्होंने उस समय के अन्य विधिर्मी, जैसे कि पॉलिशियंस, मोनोफिसाइट्स और नेस्टोरियंस के खिलाफ संघर्ष में ऑर्थोडॉक्सी के एक उत्साही रक्षक के रूप में खुद को प्रतिष्ठित किया था।

[8992] थेओफिलस ने 829 से 842 तक शासन किया।

[8993] यहीं से उन्होंने नीचे दिए गए नाम व्युत्पन्न किए।

[8994] एडामेंट – (हीरा) – एक ऐसा पत्थर जो इतना कठोर होता है कि वह स्वयं को बिना कोई नुकसान पहुँचाए अन्य पत्थरों को खरोंच सकता है और काट सकता है। चर्च के साहित्य में, यह उपाधि चर्च के कई फादरों और शिक्षकों को प्रदान की जाती है जो अपने विश्वास और चरित्र की दृढ़ता के लिए प्रसिद्ध हुए।

[8995] थियोडोरा ने 849 से 855 तक शासन किया, और माइकल, जिन्हें 'शराबी' के नाम से जाना जाता है, ने 855 से 867 तक शासन किया।

[8996] आइकन की पूजा की बहाली 842 में कॉन्स्टेंटिनोपल की परिषद में हुई, और ऑर्थोडॉक्सी की इस विजय की स्मृति में, उस समय चर्च में एक विशेष 'ऑर्थोडॉक्सी सेवा' स्थापित की गई थी, जिसे आज भी ग्रेट लेंट के पहले रविवार को मनाया जाता है।

थियोडोरा ने ऑर्थोडॉक्स धर्म के एक कन्फेशर, माइकल को, पदच्युत प्रतिमा-विरोधी पैट्रिआर्क जॉन ग्रामैटिकस[8997] के स्थान पर, कॉन्स्टेंटिनोपल के पैट्रिआर्क का पद प्रस्तावित किया, लेकिन उन्होंने इसे अस्वीकार कर दिया, और ऑर्थोडॉक्सी के एक प्रसिद्ध समर्थक, संत मेथोडियस को पैट्रिआर्क नियुक्त किया गया; इस बीच, सिसिलस का पद धारण करने वाले और कॉन्स्टेंटिनोपल के महान कैथेड्रल की देखभाल सौंपे गए माइकल को, अपने द्वारा सहन किए गए कठोर परीक्षणों के बाद शांति मिली। उन्होंने 85 वर्ष की आयु तक एक धार्मिक और ईश्वर-प्रसन्न जीवन जिया और प्रभु में शांतिपूर्वक निधन कर गए[8998] ।

[8997] जॉन सप्तम, जो अपनी विद्वता के लिए 'व्याकरणज्ञ' के नाम से जाने जाते थे, ने 832 से 842 तक पैट्रिआर्क के रूप में कार्य किया।

[8998] आदरणीय माइकल सिनिसेलस का लगभग 845 ईस्वी में 18 दिसंबर को निधन हो गया। कॉन्स्टेंटिनोपल के पैंटोक्रैटर मठ में उनके पवित्र अवशेष रूसी तीर्थयात्रियों ने देखे: 1342 में नोवगोरोड के स्टीफन ने, और 1420 में हाइरोडीकन ज़ोसिमा ने। आदरणीय माइकल सिनिसेलस ने कई कृतियाँ छोड़ीं, जिनमें सर्वश्रेष्ठ 'विश्वास का स्वीकारोक्ति' है; उनकी अन्य कृतियों में कई स्तुतियाँ और भजन शामिल हैं, जिनमें से कुछ प्रतिमा पूजा की पुनर्स्थापना का आह्वान करती हैं।